

# PAIA-SADDA-MAHANNAVO

#### A COMPREHENSIVE PRAKRIT HINDI DICTIONARY

with Sanskrit equivalents, quotations

complete references

BY

#### PANDIT HARGOVIND DAS T SHETH

Nyaya Vyakarana-tirtha Lecturer in Sanskrit, Prakrit and Gujrati
Cakutta University Author of "Haribhadrasuri Charitra
Late Editor of Yashovijaya Jaina Granthamala ,

Jaina Vividha Sahitya Shastra

mala etc etc.

GENERAL EDITORS

Dr V S AGRAWALA Banaras Hindu University

Pt. DALSUKH BHAI MALVANIA Lalbhai Dalpatbhai Vidya Bhavan Ahmedabad

PRAKRIT TEXT SOCIETY
VARANASI-5

SECOND EDITION

1963

Published by
Dalsukh Malvania :
Secretary
PRAKRIT TEXT SOCIETY
VARANASI-5

SECOND EDITION-1963
ALL RIGHTS RESERVED

Students Edition Rs. 20|-Library Edition Rs. 20|

#### Available from -

- 1 MOTILAL BANARASI DASS, NEPALI KHAPRA POST BOX 75 VARAHASI
- 2. CHOWKHAMBA VIDYABHAVAN CHOWK, VARANASI
- 3 GURJAR GRANTHARATNA KARYALAYA GANDHI ROAD AHMEDAHADA
- 4 SARASWATI PUSTAK BHANDAR RATAMPOLE, HATHIEBANA ARMEDABAD-1

Printed at
THE TARA PRINTING WORKS
VARABASI

प्राकृत ग्रन्थ परिपद् ग्रन्थाकु--७

# पाइत्र्य-सद्द-महग्गावो

( प्राकृत-शब्द-महार्णव )

बीबान फनेमालमी थीचन्दजी गोनेध्य जन्मर दालों की झोर से मेंट ॥

धर्यात्

विविध प्राष्ट्रत मापाओं के रान्त्रों का संस्कृत प्रतिराज्यों से युक्त, दिन्दी कार्यों से असंकृत, प्राचीन प्रन्यों के वनस्य व्यवसर्णों कीर परिपूर्ण प्रमाणों से विभूपित सुहस्कोप

क्रां--

गुजैरदेशाज्येव-राधनपुर-मगर-बालच्य कस्कला-विश्वविद्यालय के संस्कृत प्राइत धीर पुत्रराती आया के सम्यापक "इरिसद्रशूरिवरिज" के इर्ता "यरोदिवय-वैत-सन्यमासा" धीर 'वैत-विदिय-साहित्य साझमासा" के मुत्रपूर्व संपादक स्याय-स्याकरण-तीर्थ

स्व॰ पंडित इरगोविन्ददास श्रिकमचंद सेठ

संपादक

**बा**ं चासुदेच शरण अग्रवाल प्राप्यापर, काशी विश्वविद्यालय

पं० दलसुरूव भाई मालवणिया संचालक, बालमाई दलपदमाइ विद्यासवन, बाहमदावाद-१

মৰায়িকা

प्राक्तत प्रन्य परिपद्, धाराणसी-4

पिक्रम संदत् २०२३ चैत्र शुरु पंचमी द्वितीय मंस्क्रण

ईस्पी सन् १६६३

प्रकारक वससुख मासवणिया मन्त्री प्राकृत देशस्य सोसायटी धाराणमी-४

वितीय संस्करण-१९६३

### सर्व स्वत्व संरक्षित

मूल्य—साधारण संस्कृतण २०) पुस्तकालय संस्कृतण ३०)

#### प्राप्ति स्थान

- १ मोतीनास बनारसीयास नेपाची बाउड़ा पोस्ट बावस ७५, वारावसी ।
- २ जीवम्बा विद्या महत्त जीक वाराणसी।
- १ पुनर प्रन्य एक कार्याप्तय गांधी मार्ग बहुमदाबाद-१
- परस्त्रती पुस्तक मंद्रार, रातनपोत्त हावीखाता, नह्मदाबाद-१



ढॉ० राजेन्द्रप्रसाद जी भौ पाचार्वं विनवस्त्र सान प्रण्यार वस्त्रुर

# समर्पग्

#### बाकृत भाषा का यह महाकोश

स्वतन्त्र मारत के प्रयम राष्ट्रपति तया प्राकृत-प्रय-परिपद् (प्रा॰टे॰सो॰) के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक, भारतीय संस्कृति के अनन्य श्रद्धाल देशरतन

स्व० ढॉ० श्रीराजेन्द्र प्रसाद् जी

को सावर समर्पित है.

जिनकी अध्यक्षता में इस कोश के पुन मुद्रण का निश्चय किया गया और जिनके करकमलों से इसका प्रकाशन समारोह सम्पन होना प्रस्तावित या, किन्तु दैवेच्छा से २८ फरवरी १९६३ को जिनका स्वगवास हो जाने के कारण अय परिपद् की ओर से यह शदास्त्रलि रूप में समर्पित किया जा रहा है।

---प्राकृत ग्रन्थ परिपव् के सदस्य

### प्रकाशककी स्रोरसे

प्रस्तुत महान् कोपके कर्ता स्य प श्री हरगोधियदास त्रिकमवन्द सेठका जन्म राधनपुर (गुजरात) में जैन कुटुम्बमे वि स १९१४ में बुआ था। बनारसमें आचायश्री विजयसमेंसूरि द्वारा स्थापित श्री यशोविजय जैन पाठशाक्षा में संस्कृत और प्राकृतभाषाका बध्ययन तथा सिलीनमें आकर पालिमापाका अध्ययन उन्होंने किया था। कलकत्त्रेकी न्याय-व्याकरणतीर्थ परीक्षा उत्तीर्ण करके कलकत्ता गुनिर्वस्टीमें संस्कृत, प्राकृत और गुजरातीके मध्यापक निगुक्त हुए थे। उन्होंने यशोविजय जैन ग्रन्यमालामें संस्कृत-प्राकृतभाषाके कई ग्र योंका सपादन कीश्वर किया है। प्रस्तुत भाइज-सङ्-महण्यव्य-प्राकृत यध्यमहाणीद कीपकी रचना उन्होंने विना किसीकी सह्यायति के केले हो की थी और उसका प्रकाशन मी स्वर्थ हो किया था। उनका नियन वि से १९९७ में हुआ। जनकी सम्पत्तिका कुल अधिकार उनकी धर्मपन्नो सास हुआ। स्वर्थ हो हिया सास सम्प्राक्तको प्राप्त हुआ है।

श्री पं हरगोविददासके संसारपक्षके छोटेभाई सुनिराज श्री विशासिवजयओ तथा अन् आदि कई जैन तीर्थोंके इतिहास अर्थोंके रेखक स्व सुनिराज श्री जर्यंत विज्ञयंत्री एवं श्रीययोविजय कैन अन्यसालाके मंत्री श्री अभ्यवन्द गांधोंकी प्रेरणांसे और अपनी उदारतांसे श्री सुभद्रावहनने प्रस्तुत प्रयक्ती कॉवीराइट मावनगरित्यत ययोविजय जैन मन्यमालाको समंपित कर दिया है। श्री सुभद्रावहनकी ही प्रेरणांसे श्री परोविजय जैन अन्यमालाको कार्यकारिणो संगिति और मानाह मनी श्री बालाभाई बीरचंद देशाईने प्राकृत टेक्स्ट सोसायटीको प्रस्तुत द्वितीय भावत्तिके प्रकाशनकी अनुमति दी है। मैं यहाँ श्री सुमद्रावहन तथा प्रत्यमालाका आसार मानास है।

प्रस्तुत कोपमे सीमिल्त करनेके लिये पू मुनिराज श्री पृण्यविजयकाने कुछ ग्रन्थोंकी सूची दी थी, जो इसमें यधास्यान दिये गये हैं। इस उदारताके लिये मैं यहाँ उनका भाभार मानता है। प्रस्तुत कोपके मुद्रणका काय अस्वस्य होते हुए भी जिस तत्परता से काँ वासुदेवशरण अग्रवाक्ष ने करवाया है उसके लिये भें उनका विशेषत कृतक है।

their literally value has to be assessed apecially from the point of view of new words and meanings incorporated in them. The interpretation of the texts already known when the first edition of the Dictionary was compiled has also progressed and the technical meanings of many words have been recovered. They need to be incorporated in a revited edition or in a new presentation of word material of the Präkrit language as recorded in its literature. The problem is no doubt wast requiring stout organisation and finances but the work has to be done. The Govt, of India, various Universities Präkrit Institutes and the All-India Oriental Conference should put their heads together for evolving a scheme for the accomplishment of this task vis the preparation of an up-to-date dictionary on scientific principles of the Präkrit and Apabhraches hieratures which have contributed so much to the Middle Indo-Aryan languages and which truly hold the key to the problem of stymology and semantics relating to the many literary dialects of the medieval and modern period.

It is gratifying that a rich literature of such magnitude as that of Prätrit has been preserved as our heritage and it is high time when we should wake up to our responsibility. The Prätrit Text Scolety is keenly alive to this need but it has already committed itself to the publication of the critical texts of the Agamas and their commentaires and therefore its resources for some years cannot be diverted to the needs however urgent they may be, of a fresh dictionary of Prätria language as envisaged above

I cannot close this short statement without making a special appeal to those friends who are engaged on an intensive study of the difficult texts of Old-Hindi. Old Gujaran etc. They should cultivate the habit of going to the Prakrit and Apabhranas sources for recovering the meanings of the obscure vocabulry used in those texts which were written at a time when Prakrit and Apabhranas words found a predominant place in the linguistic conceiousness of the people. I would give a few examples —

1 "with we wire to the": (Padmavat 1484) The orus of the meaning of the simple line like this has in the word para meaning to turn as wenter of Skk bhrama (vie = wwg, Hemchandra, 416 Pasadda)—the earth and the sky both are turning like a mill

2. This is one of the most difficult lines of the Padmitvat and it had never been correctly understood by any previous translator. The secret of the meaning lies in the word use (wrongly translated previously as bends) which as recorded in the Pāndda, denoted a navai merchant. The meaning is that to take a sea faring merchant in the midst of the ocean and there to kill him is a mean thing, said Sarja (the Chief of Ahaddin). The meaning of this word is recorded in the Pāndda with only one reference to Harnbadra Suri (8th century), but I thought that its mage in the Pāndāva tin the 16th century must be evident in the literature of the intervening period. My search proved froutted and I tound it in the Bhavisyata Kahā of Dharapala (di sa fear us unt) sugge friew surefu Bhavisyata Kahā, 631 Barola edition p. 62—then the sea merchants met together and began to discuss loyluly their problems of sale and purchase. The word (Pauma-chariu 317 1. Singhi Jain Granthamala). On an inscription from Anbilavada dated VS 1343 its Skt. form Non-vittaks has been used (Indian Antiquary 1012 p. 21) and

Muni Chandra in his commentary on Haribhadra's Upaded-pada record a rittus as the Skt, form of Nayatta. This accomulation of evidence is the proper field of a dictionary and it is of value to show how our correct understanding of the old-texts may benefit from utilising the Prakrit and Apabhrand's sources. I should like to reinforce this point by drawing attention to some other words from the Avahatta text, Kirtilata of which in the recently published Satijvani commentary\* much valuable assistance from the Paia-sadda-mahanqayo has been taken. To take another pointed example:

```
been taken
       १ दशह = समीप बाता है। से क्प+ ६> प्रा छवे स्वि == पास बाला। जवेद क्षवह (पासह )।
+4
      १६ माच = अनुभव करना जानना। सं∗ मानसं> प्रा भाष (पासार् )।
      ३२ साह्रज—सं साम ⇒क्या में करना>प्रा साह्र>वन साह्रच (पासह )।
      ४ क्यरि—सं मा-+ हम् (० ब्राह्मण करना स्थातः) का कारवादेश क्या क्यारि ⇒ आह्मम करके (पासर ) ।
 77
      ४६ सम्पदी-सं श्रम्-वर्षम् = वर्षम् करना देशा त्रा समय>वप सम्प सप्ता (पासकः )।
       ६२. पेक्रिय— संपुरम् (>पूराकरना) का नास्नादेश लेका पेक्राद (पासह) । प्रमृत्य में पेक्रा बातु के चार सर्व हैं— १ सं क्षिप का
            वात्वादेश देश = फेंक्सा । २ सं प्रेरम्का वात्वादेश देश = प्रेरित करता । ६ सं पीडम् का वात्वादेश देश = दवावा ।
            ४ से पूरम् का वाल्यादेश वेद्या≂पूरा करना भरना।
       ७६ कृर—सं कुठ>प्रा कृष>सर मूर≖सुङ्कना मोटना(पासइ )।
       ६१ रिक-से रिक>मा क्य रिक्त = रीसना प्रसन्न होना रिक्स ह (पासह )।
      १२६ साहर⊏सुन्दर। संभावा(=कॉर्याशोधा)>प्राकामा(पासक्)।
      १२४ विष्वरि--विदूरे हुए। सं विस्तु>प्रा+ वित्वर = फैसाना बढ़ाना (पासह )।
            कारै--- मजीन पविद्यु, प्ररमान्धे रोववान वाले । सै स्टब्स > प्रा वज्रुड (पासद्द ) > वड्ड > वाट > वार + व = वारा वारे ।
      १८६ विवासित - निवट गया कुक समा। सं मुन् (= मुकना कुकना ) का जा मात्वादेश रिप्रमात्र (पास्तक )।
            क्यार से बाक्स का वास्तादेश क्य - बाक्सव करना दवाना (पासर )।
      211
      १४६ सिंह से मा-बाकाना करवारेत सह हुकुम रेता कारेत करना फरनाता। सहस् (पासर )।
             पद्ध-- सं प्रकटम् का बात्वाकेत पत्र (पासद ) सं पत् का भी धप में पद भारवाकेत होता है ( = पहना विस्ता )।
      211
            मबाबद्धि—श्रं का बातु का बारवादेश शुका, धकाण = पहुंचातवा (पासक्र )।
       २१७
            बरमंत्रिय = मॉटर, पूर्मित । सं मर्बम् का बालादेश प्रा अप बरमक = पूर्ण करना बसना मसन्त्र (पासद् )।
       244
       २६१ क्लं-प्रा ब्रह्म (सं ब्रिप् का बारवायेरा ) व्यक्तिना आतता वालना (वस्तहः ) ।
        Y= बोसए—सं व्यक्तिकमं वादु का बारवाचेरा शा बोख = क्लर्सकत करता खोड़ता। बोसह, बोसए (पासह )।
              सन = भाग्दोशन शीर। सं राज्य नान्योव का प्रा बारवादेश मुझ (पासह )।

    कान में यन का वालादेश सन = शीक्ता शोमित करता (हे ४)१

         ११ कोच-र्य यस का कल्लादेश बेला ≈ वसना यमन करना (पास्त्र )।
         १७ कर्वता = पहने हुए। प्रा कर्व = पहना तकारस करना, सं क्रंप् का बारानरेश कवव = पहना बचारस करना (हे
              vites पास्त ) भोजपुरी में 'कहान कहाना कहामी' वर्षाद गाँव स्वारण करो अभी तक कहा जाता है।
        १६१ पारक-र्थ राष्ट्रका प्राइत वास्त्राचेश पार = सकता समर्थ होता (हेम प्रादर्)।
        १६६ विक्रियर्ड-- से पूरवृका प्रा मालादेश वेद्य = पूरता सरता (पासा )।
        tor प्रेय-चे विश्वपु का बात्वाचेरा हा अप प्रकान विश्वाप ।
        २२६ क्लप्प-- सं तपुका वात्वादेश तक्काय = स्पना, वर्म होता (पासहः )।
        १७१ पम्प्पद्र च क्यूने लगा। सं प्रजनर का बाल्बाक्स पर्यप = क्यूना बीलना। पर्यप्य पर्वपद् (पासह )।
        १७२ पायरे - बोड़े बर सम्राह क्सकर, बंध को कमच से कम्पित करके । सं शंतालय का बालारेश परवार (पासह )।
        रेवरं नैरा—संश्रमुच का बालावेरा मा संगश्निक वैक्क = स्रोहता त्यासना ।
```

नेवप्र वैमन-वर्गर अवदारे की पूर्ता । से विगत का बालादेश विम्म क्षेम = टेक सहारा (पासर ) ।

"बहुम तरावा क्षेत्र क्षा को हुन क्षा क तराव का तरावो ॥" (Kirklatz 2.190 Sanjivani edition) In this line all seven words excepting the first depend on their meaning on a good Präkrit dictionary e. g

वरत्वर---चं नरत्वर्यतः - त्रा वरतवः, वरत्ववः, वरवदः ---चच्छः वरवः -- वरवः रातः king of bell;

tin = to cause pain from Sanskrit root g--Praant unvite gu ( iemenandra 4.23)

क्यो-Skt. बट-Prakrit वनी ;

gw = hastily, in quick succession; desya Prükrit gw (Derināma-mālā, 8,59, Sce Pāsadda). Such a seemingly simple word cannot be understood without the help of Prükrit, in Hindi it means a hand, but its Prükrit meaning was also as shown above, and that above suits the context.

-an Avahatta form of Arabic hadas signifying hazrat or showing the spirits.

m = shows ; from Skt, wis -- Prakrit wa -- Avahatta we

चारको - spirits living in hell, from 8kt, बारक> Prikert चारम (Pisadda)

The line thus means—the Makhdum (religious priest) like the king of hell was frightening the people when quokly he was showing the spirits by performing hades. This is an example which brings home how the problem of understanding the Middle Indo-Aryan hierature is closely connected with our understanding of the Prikti and Apabhranéa literature. For this purpose the Pris-Sadda-Mahanawo Dictionary will prove of mestimable help. With this hope it is now being affered in a becomd edition which the Priktrit Text Scorety is making available in an accessible form

The editors wish to record their grat ful thanks to thin Kapil Deva Giri Sahityacharya, Asstt, Research Scholar P T S and Pt. Madhvucharva, Farkatirtha Minianascohir; who have put in their best efforts in correcting the proofs of the ork ith praise orthy devotion.

24-8-1968.

Vasudeva S. Agravala

Professor

Banaras Hirdu University

# सकेत--सूर्ची

<b>π</b>	=	घय्य ।	(年)	=	पैराची मापा।
पड	-	यकर्गरु मातु ।	प्रयो		भेरणार्थक णिक्तः।
( मः )	=	घणमं रामापा।	₹	=	
(पर्याः)	=	महोक शिवानेख ।	নস্থ	_	बहुबचन ।
स्य	-	सक्तें ह तथा सक्तें ह बातु ।	मवि	-	मविष्यत्कृतन्तः ।
कर्षे	_	कर्मेश्च-बाच्य ।		-	मक्प्यानामः ।
44 <b>5</b>	=	पर्मेख-वर्तमान-इश्ल ।	मुख	=	भूवराम ।
5	_	इस्य-प्रध्ययान्तः ।	मुक	=	मू <del>व-इत्स्त</del> ।
fix	=	क्रियानद् ।	(मा)	2	मामणी भाषा।
बिवि	=	क्रिया विशेषण ।	पह	=	वर्तमान हत्वन्त ।
•	-	पुनराती ।	दि	=	विशेपस्य ।
( भूमे )	=	दुसिकापेशाची मापा ।	( सौ )	-	शौरसेनी भाषा ।
দি	=	त्रिसिद्ध ।	£	_	सर्वनाम ।
[1]	-	केस-राज ।	€ <u>r</u>	3	संबन्धक कुदन्त ।
म	-	नर्दुसरमिञ्च ।	<b>€</b> ≢	_	सदमें इस्तु।
4	~	पुँसिङ्गः ।	धीः	_	भौसि <b>ञ्ज</b> ा
পুৰ	=	्रीनिक्त तथा नर्पुसन्तिक्त ।	स्रीन		क्षीलय तथा नर्तुसकतिन्त्र ।
<b>पुंची</b>	=	पुनित तथा सीतित्त	<b>tr</b>	_	हेलार्थ करूल ।

#### प्रमाण-प्रन्यी [ रेफरेन्सेज ] के संकेता का विवरण

			•	
र्वतेष		द्भव का माम	र्यस्करल पार्थि	विसके शंक किए सर्हें वह
द्भंद द्भंग	a #	संपविषया संबद्धाः	प्रत्युच सन्द परिवय, वारागुणी—-१, १९१७ इस्तन्तिवत ।	
		यंत्र <b>प्रमा</b> णी	🙉 १ रॉक्स एशियाटिक सोसाइडी बंडन, १६ 🌞 🦳	
44	_	40121/141	र बावमोदय-समिति बंबई ११२	976
यम्ब	æ	प्र <del>वृ</del> द्धपद्धं	बाखीविकास प्रेस मंत्राव १०७२	नाना
परिष	~	ग्रविमर्गतिवर	स्थ-संपादित कसकता संबद् १६७ 🐣	•
W15	_	सम्पारमस्तपरीजा	१ सीमन्ति भारतक संतर् १६६६	•
41.3		4	२ वैत धारमानन्द समा ज्याननगर	
चत्	•	धलुमोस्तारमृत	१ राग भनविधिवृत्री बहादुर, क्लाकता धीरद ११९६	
-2			९ सामगोरन समिति ११९४ वस्य 🕏	पत्र
পর	_	स्र <u>वृत्तरीवशहस</u> ्यस्या	👸 १ प्रेंपन प्रोंडवाटिक प्रोसास्टी नंदन ११ 💌	
		•	२ भावमोदय-विमिति बम्बई, १८२ "	* ৭খ
चरि	_	यस्त्रिकानसम्बन	निर्दायकार प्रेस बन्दर्भ, १९१६ -	. 88
वरि	•	चरियारक	निवेत्र संस्कृत सिपोव	
भार	_	<i>मादरप<b>क्तवारा</b>पन</i> ी	१ मैन-वर्ग-प्रधारक प्राप्तः मानगवर, धेवत् १६६६	बावा
			२ शा. वालागाई कवलमाई मावूमवानार, संबद् १८६२	···
स्तक	-	१ भावस्थककचा	रस्त्रविश्विष	•••
		र प्रभारतक-एर <b>व्यानु</b> नेन्	र्वे. इ. स्कूमेन्-संपर्कतः, साहपनिष, १४१७	13
सम्ब	-	<b>बाक्यानक्मांत्रकोत</b>	शक्त प्रत्य परिवर्, शायखरी—र	
धार्चा	-	माना <b>धकपू</b> न	क्षे र गाँ, ज्वल्यु, शुक्तिय् संपादिक बादमन्त्रियः १८१	
			+ ९ पावमोध्य-समिति वस्वदै, १६१६	वनस्था सम
			के प्रो. रवणीमाई देवराण-संपर्मेका स्वकोट, १६ ६	
धावानि	=	भा <b>रार्धन निवृत्ति</b>	धारमोदन-धरिति सम्बर्द, १६९६	শাখ্য
CITY.	-	मानर <i>बन</i> पूर्व्य	हस्त् <u>ती</u> विका	••• धरम्बन
धारम	=	यात्मसंगो <b>नदृष</b> क	† इस्त्रिक्टि	শ্বৰা
ग्रासिह	-	सारपश्चितप्रदेत <del>ः पूर्</del> वक		,,
धारमानु	-			£,
भागि	-	यावस्थक <b>ितु</b> कि	र मरोनिम <del>न नैन</del> -चंत्रपत्ता चनारतः। २ इस्टविक्तिः।	

की देती निवानी बाने संस्कारणों में भारतार्थी कम से राम्य-पूर्ण क्यों हुई है, इवने देशे संस्करणों के दूस प्रारंह के संकों का उस्तेव प्राप्त में क्या में हिम्मा गया है, ब्योजेंक प्राप्त काम सम्बन्धी था है। धाँतार्थित राम के स्वयं को पुरुष पा बनते हैं। बहा कियी रिकेन प्रमोधन के पंत्र को में में मान्यनकार प्ररोध को हुई है, बहा पर क्यों एन को पात्री के प्रमुख्य संघ दिए क्या है, निवाने निवास की प्रमोध स्वयं निवास की में मान्यनकार प्रमाण की निवास की प्रमाण की प्रमाण की प्रमाण की प्रमाण की प्रमाण है।

<sup>•</sup> इन बेल्क्स्ची में मुकासम्म प्रत्यका और वहेत के यह समान होने तर वो तुनों के यह तिकतिक हैं। इस्ते प्रत और में
नित संस्थात ने वो तक लिया का है बयो ना मुचान्न व्यक्ति किता करा है। और वो नित्यों उसी वहेत या सम्बाद के प्रयम कुत से
स्थापन भी नहीं

क्षा के स्थापन के स्थापन

क्षा करें स्थापन

क्षा के स्

<sup>🕆</sup> ब्योव बीतुत नेशनबावकाई प्रेमकन नीती, वी. प् वस् प्रमुक्त नी. ये प्राप्त

संकेत		र्रन्थ का नाम	<b>धंस्कर</b> ख <b>धारि</b>	जिसके मेरु विद् सर्द हैं वह
ध्यप	=	मारावग्रप्रकरख	रा जानामाई क्लसमाहि सहमदानाद, संबद् १६६२	गादा
भारा	-	भारा <b>वतासार</b>	मानिकपॅद-विगॅबर-वैन-इंबमासा संबद् १६७३	n
बाव		<b>धानस्यस्मृत</b>	इस्तिनिवय "	
<b>धाव</b> टि	~	भावस्मक टिप्पस	देवचन्द्र नामगार्द	
बावदी	~	बावश्यक दीपिका	विवयसम्पूरि ग्रंथमाधा	
धादपदा	~	धावरपञ्चनुत्रे पत्रे गाया	(हरिमद्र टीका)	
धावम	~	बावरयकपुत्र मसयः गरि दीवा	<b>इ</b> स्त्रमि <b>बि</b> ष	
tft	=	<b>इन्द्रिय</b> ाराज्य <b>ण</b> तक	भीमसिंह मारीक, बंबदै, संबद् १८६×	यामा
77	=	वि कोस्मोगानी वेर् इंदेर	<ul> <li>डॉ. डबस्यू किर्पेल-कृत साइपनिम १६२</li> </ul>	
क्य	*	उत्तराम्प्यनमूत्र	१ राय बनर्रावर्षिष्ठ बहादुर, बसबसाः संबद् १८	६६ धम्पवन, नामा
			२ स्व-चंपादित वसक्ता १६२३	,,
			+ ३ इस्टमिबित	
सत	_	<del>प्रतराम्यमन मृथ</del>	देशकृत्द सामग्राह	
इस का	=	n	यो जे कारवेटियर-संगवित १९९१	-
<b>ৰ</b> ল্লি	-	<del>एत राम्पदननियु कि</del>	इस्तमित्रितः **	<b>n</b>
सत्तर	-	उत्तरसम्बरित	निर्णमसापर प्रेस, कम्बद्ध १६१४	प्रदर
संर	±	क्रादेशाद	इस्त्रमिकित	गाम्स
इप क्षे	-	चपदेगपर-धैका	इस्तमि <i>बित</i>	मृत-गामा
छपर्प	=	<b>चपदेशां वा</b> शिका	† "	माभा
ध्य प्	•	ब्यदेशपद	मैन विचा-प्रकारक वर्गे पासीतासा	<b>3.3</b>
रर	=	<del>प्रपदेशस्</del> रताकर	देवपन्य सामग्राई पुस्तानीद्वार फंड सम्बर्ध, १९१४	मेरा तर्ग
24		जनप्तमाचा	<ul> <li>डॉ एन् पी. टैसेडीरि-संपादित १६१३</li> </ul>	
ভৰতু	=	धवदेशरूमक	🕇 इस्त्रिविधित	यांचा
प्रवर	=	क्षादेशस्त्राय	सम्बन्धार मनुभाई, घड्डसदावाड संबद् १६६७	. ,
सरा	-	<b>उवास्परधायी</b>	<ul> <li>एक्सिमारिक सोसाइटी बंगाब क्सकताः १८६</li> </ul>	
इत्र	_	<b>ठम</b> र्भेष	विषेण्य ग्रीसूच-विशेष	••• ∉ড
मीप	-	धोपतितु कि	भावमोदन समिति अम्बर्ड, १९१६	~ यद
धोप भा	-	धोपनिषु कि-माध्य	***	•
धीप	-	मीरसर्कसमूच -	<ul> <li>व इ स्पूर्णन्स्यारिक सारप्रियः १००३</li> </ul>	•••
क्ष	=	कशयूष	• डॉ. एच्. अकोबी-संपारितः साहपनियः, १८७१	
क्ष्यू कृष्य १	3	वर्षुरमध्यस्य सर्वेतन सम्बद्ध	• हार्वरं श्रीत्पन्टन् विधीय, १६०१	
कम्भर कम्भर	-	कर्मदेव पर्सा	<ul> <li>धातमानन्य-वैत-पुस्तक-प्रचारक सएडत पामस</li> </ul>	१९१= गाचा
कम्पर शम्बर	_	ধুৰত গাঁহত	<b>▼</b> ₩ ₽	3535
TERY	-	्र <b>चौचा</b>	* "	1551 "
		M 4121	• ,,	W

<sup>+</sup> पुंबरीया समय अपूर नहुत देश है तिमूचित यह सत्तरायवर मूत ही इत्तर-निविद्य वित याचार्य सीतिवय-नेपनूरिशो के संगर हे बच्चेय पीद्रह के जे. बोरी हाल मान्य हुई सी दत्र मति हे पत १ वर हैं

<sup>†</sup> श्टेब सीपूर् के में भोधी शांत शांत (

1	o
١.	

क्षितके श्रेष किए

Pra ।	ुल्दकानाम	संस्करण धार्ष	त्यक धन ।वर नद है नह
कम्प १	# कर्मद्रम्थ प्रांचवर्ष	१ जीमस्बह् माणेक, बस्वई, संबद्ध १६६म २ केल-वर्ष प्रसारक सत्रा माधवरण, संबद्ध १६६०	गा <b>ना</b> •
नाम ६ रामान कद नाउँ कर्नूर कर्म कम्म	= ५ कटन = वर्गहरीय = वर्गहरमञ्जूषा - वर्गहरम = वर्गहरीय = कुर्गहरम = वर्गहरम = वर्गहरम	केन-वार्ग-प्रवादक-प्रवाद मावनपर, १६१७ प्रध्याकन-वेन-प्रया वादनपर, १६१६ विकेत-शेदक-प्रयोग प्रदानका क्षेत्रियन विशेष में, व १६६व मृद्ध-निर्वादण प्रश्यानका समा	यत्र १९ठ ज सम्बद्ध
ना कर क्या काम काम कास	<ul> <li>सन्य</li> <li>(इ.स.) करनपूर</li> <li>तपुरसी</li> <li>नाम्यप्रकरा</li> <li>नाम्यप्रकरा</li> </ul>	<ul> <li>शं. कसम्, तृहि-यंपारित कारपंत्रियः १६ १</li> <li>यद्वितः</li> <li>वानान्तर्यादेश दीकानुकः रिव्यंत्यावर देश वान्तरं</li> <li>वानान्तर्यादेश दीकानुकः रिव्यंत्यावर देश वान्तरं</li> <li>वान्तरं</li> <li>वान्तरं</li></ul>	<b>१</b> स्ड
रिच्छ दुव दुवा दुवक दुवक	- विकासकीय (कारोप)  प्रमासकारियोग  प्रमासकारिय  प्रमासकारिय  प्रमासकारिय  प्रमासकारिय  प्रमासकारिय  प्रमासकारिय	पास्त्रमात प्रोपिएचम् तिरोध नं कः १६१व साम्त्रमात श्रोपिएकम् प्रियोधः १६२ • श्रेष्ट्रे संस्थापनीय न १६ १४	म भ भ भूषा
का कैस सर्वे वस्त्र	<ul> <li>कडुवेश्वरमध</li> <li>वटडब्यूं</li> <li>व्यवद्यारमणी</li> </ul>	नीमित्य बालेक, वंशी, वंश्य ११६व वंशी-वंश्यक स्थिति १ तक १ हरतिभित्र २ सुप्ततः बोहोसाला गोठारीः सहस्वाता, १ ठेठ जनमामा नद्यारी, सहस्वाता, ११९४	स्रविकार, भाषा रोक्ट् १ व 3
पण करिड सा	ः अञ्चलसम्बर्धः ■ विश्वविश्वविश्वविष्यः ■ विश्वविश्वविषयः	स्क्र-प्रेमारित क्षावता, घेनते १६०० राम सक्तर्तिवह सहादुर, कसकता १०४२ +१ जो, ए देवर, न्येगावित, बारपवित १ वर २ क्तिंग्यसावर प्रेट कम्बर्ड, १६११	मामा १४ ११ ११
ड इस कुस	= द्वराखनसम्बद्ध = द्वराखनसम्बद्ध	स्व-संवाधित वयकता सेवत् १६० स्वयंत्रास्त्र गोवर्षकास वस्त्री, १६१६ स्रीवस्तित् गारीक सन्तर्वे संवत् ११६१	** वस्य ** वस्या
_	🕂 चड्रेच के जै जोडी द्वारा जल्ता।		

<sup>🕂</sup> चडेच के हैं भोड़ी हारा हान्त ।

<sup>+</sup> माप्यांतराते अंश्वरण या बाम "सन्तरहरू केत हाव है और यानाईशके का "मायासन्तरणी"। सन्य एक ही है, याना बार्क्यांचाने संस्करातु में बात शावनों के विकाल में नरीब क नावाई घरी हैं और नाइपनिकाले में तीने नंबर है बीक है क्ष्म को ग्राचार्य देशों ग्रांतरणों में एक-दो है, परशु श्रवारों के इस में नहीं नहीं वो चार मंतरों का मारा-निका है। ७ ० के नाव का थीर ७ के फैटर की बड़ी जार्बाक के समन्दर थी दिया है वह नंबर नेवल साहगतिय के ही श्रीकरण का है।

-इतिय		र्थंव का नाम	संस्करण मादि		वित्तके बंक रिए
					गर हैं वह
32	20	যুহস ধরিতা বুলক	र्धशासास गोवर्धनदास अम्बर्ध, १९६३		गाया
गीम -गीम	a= '	गीवमङ्गाङ	भीमसिंह माणेक बम्बई, संबद् १८६१		,,
चर्च	==	<b>प्रमण्डपम्प्रो</b>	१ केल कर्म प्रसारक-समा भावनगर, संबल् ११६६		
			२ शा बातामाई वनतमाई महमदाबाद, सदत् १८६२		
चड	=	चउपन्नमहापुरिसर्वारय	प्राष्ट्रत-६य-परिवद्, बारागुसी१ १६६१	••	
चंद	=	श्राह्रवसगरा	<ul> <li>प्रियारिक सोसामामटी बंगास कतकचा १६८</li> </ul>	***	
चंद	#	चंदपप्तति	<b>ह</b> स्तनि <b>नि</b> त		पाहुड
चार	=	चारदत्त	विवेग्द-संस्कृत-सिधिय	••	<b>9</b> 8
नेहय	_	च-पर्वहरणमङ्गामास	वैत बात्मानन्द समा, भावनगर, संबद् १८६२		षापा
-Pou	-	निरमकन्दन भाष्य	भीमसिंह माणेक कम्बई, संबद्ध १९६२		
af .	=	<b>नं</b> इद्वीपश्रक्तीत	१ देवचंद सामग्राई पुर्वत सम्बद्ध १८१	~	<b>पद्यस</b> ्थार
		-	२ इस्तनिश्चित	•••	
चय	=	जबविद्वयण-स्दीत	वैत प्रभावर प्रिटिम प्रेस-रतवाम प्रयमावृत्ति		पाषा
বিব	#	विनश्तास्थान	सिमी चैन सिरोज		
मो	•	बीवविचार	सारमाना र मैन-पुस्तक-प्रशास्त्र-मेहना सामरा संबद् ११:	\$ 5	,,
भीव	ø	पीतकस्य	हस्त्रमिक्ति "	•••	
बीव	<b>=</b>	<b>बीवाजीवाभियममूब</b>	वेनचंद सासमाई पुस्तकोद्धार एटंड चम्मई, १६१६		मतिपति
मीवस		<b>भीवसमास्त्रकर</b> स	† इस्विविधिय		याचा
जीवा	r=	कीमानुशासन <b>मु</b> त्तक	धीनामाल योगर्गेनशस्य वस्त्राह्म, १८१६		
वो	#	ण्डोति <b>ः स्ट</b> हरू	इस्तविश्वितः ** ***		पाहुङ
रि	=	+ टिप्पण (पाझन्तर)			
टी	=	‡ धीमा	***	_	
-81	=	ভাতানমুখ্য (ধেদাৰমুখ)	शायमोदय-समिति वस्त्रई, १६१व−१६२०		<b>अस्</b>
गुरि	=	<b>ग्</b> निसूच	१ हस्तिविधित		
			ए मानमोदम समिति वस्वई, १९२४		पश
खमि	-	श्रमिञ्ज्यु-स्मरस्	स्व-संगतित कमकता संवत् १२७८		भाषा
सामा	-	<b>छायानम्मन्द्रामुख</b>	धापमीषय समिति वस्वहे १६१६	••	युस्तम्ब प्रय
ď	=	र्दंदुलनेयासियनवद्गी	१ इस्तमिषित	-	
			२ वे सा पुरतनोद्धार प्रेष्ट सम्बद्ध १८६२		प्रम
R	-	वित्रमार्च	वैत-शाल-प्रधारक-मॅडल वस्पर्धः १६११		यान्य
হৈছে	-	तित्युरयानियसम्ब <b>ो</b>	हस्त्रनिष्ठित +++	_	_
đi G	=	दीचेनस्य विकास	हरविश्वित	_	<b>स्ट</b> प
भि	=	निपुरसम्ब (डिम)	गायक्तार सीरिएए क् मिरीज नै व १६१८	_	<b>92</b> 3

<sup>†</sup> भर्केंग भीपूर् के प्रे मीदी हारा प्राप्त ।

+ पाठाकर बाते संस्करामी के बी पाठात्वर हुमें क्यारेव मानूम पड़े हूं कोई मी इस कीय में स्वान दिया है और प्रमाण के पास

है' राज्य औड़ रिया है जिससे बन राज्य नो ससी स्थान के टियान का समाध्या नाहिए। ' बहुत पर प्रमास्त में देश-मीकत सीर स्थान-निर्देश के सम्बद 'से राज्य मिला है वहां कब मेन के बजी स्थान की टीका के माहजार

<sup>ै</sup> सही पर प्रमाश म ६०-अकेत भीर स्थान-निरंश के मन्तर 'दी शस्त्र लिखा है वहाँ वह मेंच के बता स्थान का टाका के माहण स्थि मतलब है।

,		١.
Ĺ	•	,

संकेत		र्श्व का नाम	वंसकरण प्रारं	f	बेसके बैक दिए पर्य <b>हें नर</b>
đ	=	रंग्डरण	१ फैन-बान-प्रसारन-मेडस वस्त्रई, १६९१ २ फीर्मासह पालोड वस्त्रई, ११ व		याचा ११
रंत	-	হঠপদুবিসহয়ত	क्रतमिक्ति		वस्त
करामगरम करनेषु	} •	कावैशासिक सकरव सिङ्ग्रीय	PTS	•••	
<b>रत</b>	-	श्चीकावितसूच	१ की विश्वह वाग्लेक वस्त्रहै १६ २ डॉ बीवराज केलाआई, ब्रह्मदानारः १६६९		सम्बद्धाः ग
_	_	<b>रतनेशांक वृद्धिका</b>	n n n		भूतिका
स्तर् रहति	=	रशनेकामिर निर्दे कि	१ जीमस्टिइ मारोड, बस्बई, १६ २ देवकद सलस्वर्ध		सम्पक्त नामा
रतीय	-	बत्तीकातिक द्वद विवरण	पुत्रित पूर्वत स्वयम्बेद केटरीयल		
<b>ए</b> डा	_	क्राम्बरसम्ब	इस्तनिकर	••	,,,
रीप	=	वैद्यानरप्रमधि	7	***	-
ৰুৱ ৰুৱ	_	<b>बुतकोहक</b> न	" प्रिवेत्त्र-संस्कृत-तिरीव		13
i i	_	देशीनाममान्या	कामा बाह्यक सिरीय १०४		वर्व दावा
è	_	धेतासम्बद्धाः सीर्योक	इस्त्रीतिकत	-	
रेनदिन	_	रेवरिय नपलक	•		
रेवेन्द्र	-	के <b>ल</b> नलेल्यप्रकरह	बैत घरमानन तथा जाननगर, १६२२		याचा
t	-	<b>र</b> म्पीर <b>र ए</b>	१ वैत-बर्ग-प्रशासक-राम्य मावतमारः संबत् १६५		n
			२ सा वैजी <b>र्थर तुर्त्यर, म्हेसल्या १</b> १ ६		,,
13	-	<b>स्थित</b>	वेत-क्षेत्र-एकाकर-कार्यावय क्षेत्रहे १६ ६		
শত	=	चरानपं <b>रतिका</b>	कान्यवासा सप्तम बुल्का, संबर्ध, १८१		n
वस्य	-	वर्षरामकराग् प्रयोक	१ केन विद्या-अभारक वर्ष पानीतात्वा १६ ६	•••	॥ मू <del>ष पा</del> वा
			र इस्त्रीमध्य		-
वस्य	=	वस्मिवर्द्धिः (वतुदेवद्विती सन्द	र्पत्र) धरमानक बमा		-
शको	-	वस्मीवर्षस्त्रक	र् इस्टिकिक्ट		-
कर्ष	-	वर्गदेशह	वैत-विद्या-समारक-गर्ग पत्त्रीतास्त्रात् १९ १	•••	धना धनिकार
चर्नर	•	वर्मराज्यासूत्रीत	यात्रासम्ब प्रया	-	वारकार
वर्मीव	_	वर्मीविविश्वकरात स्टीक	वेद्यवादे कोटावात पुरुषेया, स्ट्यस्यवाद १९९४		996
वर्मस	_	पर्नर्थ <b>व्य</b> की	दे वा पुरतकोत्रार एक क्वर्ड, १११९-१व		गुण गुणा
वर्मा	=	वर्धामुक्त	केन पारमागन्द-समा खदमक् १६१		4041 SE
चाला	-	মা <b>ন্ত</b> দ্বৰণ কৰা কৈ	प्रियारिक बीचाइटी घोष बेक्स, १६२४		98 98
=	-	<b>শ্ব্যালীক</b>	निर्धानसम्बद्धाः संबद्ध		_
4 Car		Magigarial	PTo		*
क्यू रूप	<b>7</b>	क्वरवर्शीएत (प्रतिकर्म)	केन्द्र चेपानित		

<sup>&</sup>lt;del>्विक्रेव केन्द्र</del> के के मोली क्राय प्राप्त ।

	•

६केट		द्रश्य का नाम	संस्करण मादि	ī	वसके र्मक दिए पए <b>दें</b> वह
-सद	E	नवतत्त्वप्रकरण	१ क्रास्पालक्ष-मैन-समा भावनगर २ क्रास-मैन वर्गप्रवर्णक-समा, सङ्गदानाद ११ ६		थामा श
नाट	=	‡ नाटकीक्प्राइक्टरम्बसूची	•		" धो्रा
निष्	=	क्रियोपपूर्विस	इस्तमिकित	***	व्यूरा वर्ते, सम्म
निर	•	निरमानसीसूत्र	१ इस्तति चित्र २ स्रापमोदय-समिति वस्वाई ११२२		49, NP4 #
निसा	=	निशाविशय <b>म्</b> सक	🕇 इस्त्रविधित	***	गुषा
निर्धी		निसीनसूत्र	इस्त्रिधिवात	***	चौरा
परम	=	पत्रसंबरिय	वैन-वर्गे प्रसारक-समा भावनपर, प्रथमावृत्ति		पर्वे पाचा
पुरुष	_	पद्रमण्डिय	प्राष्ट्रत-प्रेष-परिषष् वाराससी-५	••	
र्यम	=	पंचसंप्रह	१ इस्तिविधित		धार, पापा
44			२ बैन धारमानस्य समा भाषनगरः १२१६		
र्वश्रमा	_	पेषकराभाष्य	इस्त्रविकित		
पंचय	25	र्वजनस्तु	p <sup>2</sup>		TIT
पुर्वा		पंचासकाकरण	वैत-वर्ग-प्रदारक समा मावतपर, प्रथमावृत्ति		पत्रसम
de.	=	<b>वेशकायपू</b> र्णि	<b>इस्तमित्रिय</b>	***	
<del>र्य</del> ीन	=	पंचनिर्मन्दीप्रकरण	धालानन्द-बैन समा भावनगर, संबद्ध १६७४		माचा
đα	=	पंचरम	त्रिवेत्र संस्कृत-सिरीय	**	<b>9</b> 8
વંદ્	-	पेनसूत्र	इस्त्रीविच्य		सूत्र

मानती for **थावतीमाववय** Calcutta Edition of 1830 ٩n **बेडरवचन्द्रीस्म**म् 1854 विज्ञानियो fire a 1880 सर्विद्य साहित्यवर्षम Edition of Asiatic Society प्तर **च्यार**पम**ग**रित Calcutte Edition of 1881 रामावबी **UU** 1889 4 मुख्यक्टिक 1882 प्राप्त ঘারব্যক্ষর Mr Cowell's Edition of 1854 77 रक्षा Calcutta Edition of 1840 मानविकारितम् अ Tulberg's Edition of 1850 मध्यवि वेदिर वेधिसंबार Muktaram s Edition of 1855 र्चीयासारस्य प्राष्ट्रवास्थामः पाप महानीरचरित्रम् महानी Trithen a Edition of 1848 ile. विवयः Ma. ने ब्यायेम के. मैं मोची हाय प्राप्त ।

सीव		क्रम्ब का नाम	सल्बरण ग्राम्	वितुषे श्रेष रिय्
				म १ प
पश्चि	=	वस्थितुन	धीमसिद्ध मारोक सम्मद्धै संबद्ध १६६२	
44	-	महापुण्यसम्बद्धाः <b>ए</b> ययम्	शा बालाबाई करताबाई, प्रदूषशायतः संबद् १६६५	भाषा
प्रक्रि	-	पंच्यतिकनकापुत्र	१ वेत-सात-प्रसारक-मेक्स बस्बई १६११	
		-	र भारतातम् <del>य वैश-पृथ्यक-प्रचारक गंबन</del> भाषरः १६५१	
प <b>र</b> प्र	=	<i>बब्द्धवसायुत्त</i>	राम कनपतिसिंह बहापुर, बनारस संबत् ११४	पुर
401		प्रश्नियाकरणसूत्र	मायमेलक समिति, बम्बई, १९१६	कुतस्थ्य द्वार
पत्रा	*	प्रभावासम्ब	गीर्मास्त्र मारोक बन्मर् चेन्द् १९६९	•• बाब्य
पम		भव <b>न</b> नवारी <b>वा</b> र	१ छन्द ११३४	+ 107
			२ वे सा पुरतक्रीबार फीट, बस्बई, १९२२-२४	15
पद		प्रजापनोथा जु-तृती नगर्स ध्रहणी	बाह्मालच-बैन क्षत्र भावनवर, संबद् १६७४	याचा
THE	_	पाइसक्कीनाममाना	<ul> <li>वी वी प्राव लंपनी मानलबर, धंवत् ११७३</li> </ul>	
पार्च		पार्वस्यकम	भावकताव मोरिएय्टच किसेन में ४ १६१७	955
R	,	कामेरिक वेर् प्राकृत स्थाना	स सार् फिलेच् ¥च १३. ं	~- पैख
रिष	-	মন্ত্ৰ <b>িক</b> ৰ	<ul> <li>पतिमारिक योगाइटी वैकाब, क्लाकचा १६ २</li> </ul>	
FIE	3	Refre for	१ इस्त्रीनविषय	भाषाः
		•	२ वे सा पुस्तकोबार चंद्र-वस्माई, १८५२	
Frenz	=	प्रिकृष्टिकाम		ı
406	2	<u>पूज्यमालावकरख</u>	केत-मो मस्कर-पंदब म्हेतासा, १६११	
<b>ম</b> ট্ডি	_	प्रतियानस्थ	निवेश्व-चंस्तु त-सिपीय	22
भवी	-	प्रवीवचन्त्रीदन	निर्ख्यकापर प्रेष्ठ मध्यद्वी १६१	٠ ,
द्ममी	-	<b>प्रतिशामीकन्य स्टब्स्</b>	विवेत्र-संस्कृत सिरी४	n
प्रवि	_	प्रक्रमा-निवास-पुत्तक	† इस्वन्धित	गाना
<b>प्रा</b> क	E	प्राष्ट्रवतर्गस्य (भार्कप्रमेनक्य)	विभागस्तरम्, विस्तावापद्वस्त्रम्	183
MIN.	-	क्रावडकतन् द्व विभावत	<ul> <li>पंचाय पुनिवासियोः सामीदः १६१७</li> </ul>	
<b>WIX</b>	-	बाइन्वप्र र स्थ	<ul> <li>१ वा, कानेल्-संपादित संद्रम, १ १</li> </ul>	
			<ul> <li>२ वंश्वय-साक्ति-परिषद् कलकताः १११४</li> </ul>	
<b>प्राप्त</b>	-	प्राष्ट्रवयागींग चेतिमा -	• साह हर्पनंतु मृशकार, बनारस १९११	
RTT	Q	प्रा <b>हरुरम्भर</b> पालकी	<ul> <li>चेड ननगुणनाई वर्षुनाई, घड्नवाबाद, चेवत् ११६८</li> </ul>	
NI.A	-	মাকুবরুবংশে <b>না</b> লা	चैन विनिध-गाहित्य-राख-पाता वनारस १६१६	· धावा
नाव	-	খ্যনপথ্য	विवे <del>त्य-</del> चंदर त-विदेश	··· 95
<b>€</b> ₹	-	<b>गुरुतर</b> राज्य	इस्त्रीलिय 😁	ज्येत
==	**	<b>म</b> श् <b>क्तीभूम</b>		
			२ इस्वमिश्चित	रावक बहेरा
_	_	<b>वत्तपरिक्</b> चानमहो	के सामगोलय समिति कम्बई, १६१ । १६१६ १६९१	,
नत	-	नवशस्त्र स्वयु	र जन-जन-भ्रास्त्र-सन्ध मानवन्द्र संकत्त १०६५	क्रीवा
अस्तुरमा		वरवारतावृत्तिस्वा	२ ता नामाध्यद्यं करचनाई, ग्रहमसम्बद्धं, सन्त्य १८६२ देवचन्द्र सामाध्यद्	μ

<sup>+</sup> तर--नामन के पूर्व के बरताब के बिए 'पत' के बाद नेवब नावा के यक पिए कर हैं। न प्रदेव चीतुन के जे नीरी हारा तात ।

संदेव		प्रन्य का नाम	संस्करण भारि	विसके धंक दिए
मि	=	म्बिस <del>तक</del> ा	< रेडा- एवं जेक्नेकी-संपादित १११=	प्य हैं बह
			<ul> <li>र गामकवाड औरएएटम सिरीच १६२६</li> </ul>	
माव	=	भावकृतक	में वायकवाक स्थारप्यास स्थाप हुन्यू में वायामाल गोवर्भनदास वस्त्रहरू १९१३	
मास	_	मापारहस्य		सावा
मंगल	_	र्मगम <b>्स</b> क	धेठ मनपुत्रमाई भग्नमाई शहभदादाद 	77
मम्प	=	मध्यम <b>ध्या</b> योग	† इस्तमिबित विश्वतः-सस्कृत-सिरीज	n
मन	_	मनोनियहमावना		98
मक्	=	मानस्येभ्यास्ते एरस्यानुबन्	† इस्त्रिक्ति	गवा
	_	हन् महाचन्नी	क्षी वॉ एच जेकोबो-संपादित लाइपनिय १८व६	
महानि	=	महानिशोवसूत्र	हस्त्रमिक्षित	_
मा	=	मामविकारितमित्र <b>ः</b>	निर्णयसागर प्रेस सम्बद्ध १६१५	सम्ययन
माल	=	मालतीमाचव		28
मुखि	=	<b>पुनिमुद्</b> वस्थामित्रस् <u>त</u> ि	ग । इस्तितिकित	n
<del>पुत्रा</del>	=	मुद्राराष्ट्रस	वस्यई-संस्कृत-सिरीज १११४	ग्रमा
मुख्य	-	मुच्छकटिक	र निर्णमधानर प्रेस करकर्र, १९१६	213.
•		• ,,,,	र निर्माणनार प्रश्ने बानाइ, १९१६ २ बानाई-संस्कृत-सिरीज १०१६	77
मै	_	मैक्तिकस्याम	Hilleran Brown A.	,
मोड	_	मोहराजपराजय	माणिकजल-दिगम्बर-वैत-ग्रत्वमाला बम्बई ११७३	n
यति	-	<b>पविशिद्धापंचाशिका</b>	ध्यमक्षाङ्ग घोरिएस्टन सिरीज नं १ १११८ † हस्त्रीनिश्चित	 77
र्रवा	-	रमार्गवरी	• निर्धेयसायर प्रेस कम्बई, १८ १	••• गामा
<b>ए</b> न	=	<b>ध्लतपट्टलक</b>	† इस्तविश्वत	,,
रवरा	=	प्यसंबद्धानगरम्	। बर्चायाच्या स्व-यंपारित वनारस १६१८	यापा
राव	<b>=</b>	मिमलाराजेला	<ul> <li>वैत-प्रमाकर प्रिटिंग प्रेस, रतबाम</li> </ul>	12
राम	=	चयपदेखोपुच	र इस्तमिक्ति १ इस्तमिक्ति	
<b>प</b> रिम	=	र्यंत्रमणी-इरख ( ईहामूप )	र माममोचय-समिति बम्बई, १६२४	पश
समु	=	नपूर्वपङ्गी	यासक्याङ् घोष्टिएसल सिरीज संब १९१व भीमसिंह मारीक सम्बद्ध, १९ द	18
नहुष	-	समुप्रमिकसान्ति स्परस्	स्व-संवर्धनारित कतकता, सबत् ११७व	पाणा
बोद	-	मोन <b>प्रकार</b>	रेनपान कालवाई देवपान कालवाई	19
वमा	-	वकासम्ब	प्रियाटिक सोसाइटी बंगाल क्सकता	
दर	=	व्यवद्वारमूत्र सन्तस्य	राजनायक चासाइटा बमाल कर्तकता १ इस्टलिखित	98
			र पुनि माधेक संपादित मावनवर, १९२६	** च्हेरव
वमु	-	बनुदेवहिंडी	१ इस्तिविद्यतः	,
			र धारमानन्द सन्त	
दा	-	<b>नाम्</b> ध्यकाम्यानुसाहत	र मार्गानक समा निर्णियतायर मेव बस्वई, १९१४	
बाध	=	वापुनदासकार		78
रि		विषयायाची प <b>रेशपुलक</b>	त्र १६१६ † इस्त्रीतिकत	,
		•	. 4	• ग्राचा

विक     विकारितीय   विर्श्वमानस्य हें समार्त् हैं हैं हैं विकार केंद्र	संभेद	रम्ब हा नाम		श्रेसकरका धार्षि	क्सिके और पिए
िका — विकारणारिक साहिक्यण-सिंदा समाहै १६२३ खा साहिक्यण-सिंदा समाहै १६२३ खा साहिक्यण-सिंदा समाहै १६२३ खा साहिक्यण-सिंदा समाहै १६२३ खा साहिक्यण-सिंदा समाहे १६२३ खा साहिक्यण-सिंदा समाहे १६२३ खा साहिक्यण-सिंदा समाहे १६२४ खा साहिक्यण-सिंदा समाहे १६४४ खा साहिक्यण-सिंदा खा साहिक्यण-सिंद्र खा साहिक्यण-सिंद	474				सर्हे नइ
विकार = विकारकारिय सार्वाविक्यकर्नीयस्मानीय स्वेर्ण १६०२ व्याप्त विकार = विकारकारिय सार्वाविक्यकर्नीयस्मानीयि व्याप्त १६२३ व्याप्त विकार = विकारकारिय सार्वाविक्यकर्मीयिय व्याप्त १६२३ व्यापत विकार = विकारकार्य व्याप्त व्याप्त विकार विकार = व्याप्त विकार = विकारकार्य व्याप्त विकार	Grac	9	विक्रमोर्वे <b>री</b> य		93
तिचार = विचारवार पारशीय-विद्या वनाई, १६२३ व्याप्त विद्या = विचारवार पारशीय-विद्या वनाई, १६२३ व्याप्त विद्या = विचारवार पार्थिय वनाई विचारवार पार्थिय = विचारवारवार वन्ने विचारवार विचा		_		मासिकवन्द-दिवागर-वैत-प्रत्य-माता संदर् १६७२	
विशे = विश्वका स्वर्धीय क्रवका संस्त १८६६ स्वीवका संस्त्र १८६६ तावा १९६६ विश्वका संस्त्र १८६६ तावा १९६८ त		=	विचारताध्यक्रस्य	भावमोदय-समिति <i>वस्व</i> र्द्ध १९२६	वापा
तिरे				स्व-संपादित कलकता संबद् १८७६	मुक्तसम्ब मध्य
विधे = विशेषण्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच		E		स्व-संपादित कनारस संक्त् ११७१-७६	गाचा
हुर = स्वान्त्रा निर्वाचार हैय करते, १-६१ प्र हेयुं = स्वितिरा निर्वाचार हैय करते, १-६१ ग्रह्मा हे = स्वान्तरक निर्वाचार हैय करते, १-६१ ग्रह्मा सा व वाद्याविक स्वनुत्वाचे १ ता पुल्तीकार की स्वन्तराह, १६१ ग्रह्मा सारक = सारक स्वान्त्र १ त्येत्र वे स्वन्तर हैरे१ ग्रह्मा सारक = सारक स्वान्त्र १ त्येत्र वे स्वन्तर हैरे१ ग्रह्मा सारक = सारक स्वान्त्र १ त्येत्र वे स्वन्तर हैरे१ ग्रह्मा सारक = सारक सारक स्वन्तर हैरे१ ग्रह्मा सारक = सारक सारक सारक होता ११ १ स्व सारक सारक सारक ११ १ स्व सारक सारक सारक ११ १ स्व सारक सारक सारक ११ व्यव्यावात, ११ स्व सारक सारक सारक सारक सारक होता ११ व्यव्यावात, ११ स्व सारक सारक सारक सारक सारक सारक सारक सारक		-		स्व-संपर्वत बनारस बीर-संबद् २४२१	,,
वेशी = वेशीशेरर स्वित्वार हैय सम्बे १११६ ११ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८		=		निर्श्वकादर प्रेस <i>सम्ब</i> र्द, १८१४	<b>\$</b> 3
है — वेरायराज्य हिनुसारी कीमार्ग की स्वृत्यांता, हिर प्राचा या व व्यवस्थित स्वृत्तांता के स्वृत्तांता, हिर प्राचा यारक व व्यवस्थित है सा पुरुषा के स्वर्ता है है है प्राचा यारक व व्यवस्थित है है सा पुरुषा के स्वर्ता है है है प्राचा है से स्वृत्तांता है है सा प्राचा है है है से स्वर्ता के स्वर्ता है है है से स्वर्ता है है है से स्वर्ता है है है है से स्वर्ता है है है है से स्वर्ता है है है है है से स्वर्ता है है है है से स्वर्ता है है है है है है से स्वर्ता है है है है है से				किर्णवसावर प्रेस कावर, १६१६	,
पायक = पायपप्रकृति । स्पेतुन देशकाल सेत्रेयण वालीता १६ १ प्रांचा १ देश वर्ष प्रांचा १ वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष		_	•	क्ट्रिक्स है भी समाई पटेन अक्सवायत, १६२	गप्रका
पारण = पारणप्रकृति १ स्थित देखलास देखला द्यांच्य द्वांच्य १६ १ प्राण्या १ देण वर्ष ग्राण्या १ देण वर्ष वर्ष ग्राण्या १ वर्ष ग्राण्या १ देण वर्ष वर्ष १ देण वर्ष वर्ष वर्ष ग्राण्या १ वर्य १ वर्ष १ वर्ष ग्राण्या १ वर्ष ग्राण्या १ वर्ष ग्राण्या १ वर्ष ग	দা	•	या <b>, इ</b> तिहम् समृत्रवृति		मूलपाचा
प = पंतासार   हरतिर्विद्ध   ग्रह्मायार्थिका   व्यवहार विशेष १६१६   ग्रह्मायार्थिका   व्यवहार विशेष १६१६   ग्रह्मायार्थिका   व्यवहार विशेष १६१६   ग्रह्मायार्थिका   व्यवहार विशेष विशेष विशेष विशेष १६१६   ग्रामायार्थिका   व्यवहार १६१६   ग्रामायार्थिका   व्यवहार १६१६   ग्रामायार्थिका   व्यवहार १६६८   ग्रामायार्थिका   व्यवहार १६६८   ग्रामायार्थिका   व्यवहार विशेष १ व्यवहार १ व्यवहार विशेष १ व्यवहार व्यवहार विशेष १ व्यवहार व्यवहार व्यवहार विशेष १ व्यवहार		=		१ सीमुत केलकामा प्रेसमाम संगतित ११ १	माचा
पर्				२ मैन वर्ष शासा	
पर्	q	2	य शास्त्राप	🕈 हस्तर्मिष्ट	
स जनार करहा पृतिसादिक होगास्थे नेतास नकता १६ २६ छ नेतास स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्य		*	यक्त्रापाचन्त्रका		
स्व	-	3		वृतियारिक शोशास्त्री बेनास नसकता १६ २३	16
२ वीपार प्रेस विश्वविद्या नक्त्रणः, देववर्ष ध्रुप्त विश्वविद्या नक्त्रणः, देववर्ष ध्रुप्त विश्वविद्या नक्त्रणः, देववर्ष ध्रुप्त विश्वविद्या विश्वविद्या नक्त्रणः, देवव् देवव् देवव् व्याप्त विश्वविद्या प्रशास्त्रणः विश्वविद्या प्रशास्त्रणः विश्वविद्या प्रशास्त्रणः विश्वविद्या प्रशासः विद्या विश्वविद्या प्रशासः विश्वविद्या प्रशासः विश्वविद्या प्रशासः विश्वविद्या प्रशासः विश्वविद्या प्रशासः विश्वविद्या प्रशासः विद्या विद्या विश्वविद्या विश्वविद्या विद्या विद्	4	-	मंबी वसत् ये	विट्टनकार जीवामार परेस धर्मवानार, १८२	भाषा
संग = श्लेष्यहणे १ जीर्याद्व सम्ग्रे सेन्द्र १६६८ सम् १ विकास स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त १६६६ स्वाप्त स्वप्त स्वप्	प्रसि	_	<b>रुडिंड</b> मार	१ हस्त्रमित्रित	••
संग = क्ल्फ्रेब्ह्णो १ सीर्वाद माणेक मन्त्री, बेर्स् १६६८ याचा वेद = ग्रंगामान्यास्य हर्णानिवा प्रतासन्तर, संग्रं १६६१ महान्यास्य संग = ग्रानियसन्त्रांत्र (वेदचनपूर्ण-दर्ग) स्रात = वंशास्त्राच्याः १ केन्स्रम-श्रात्म-सम्म सम्बं, १६११ सान्या वेदा = वंशास्त्राच्याः १ क्ल्फ्रीका २ केन्स्यन-श्रात्म-सम्म सम्बं, १६११ सान्या संग्रं = वंशास्त्राच्याः १ क्ल्फ्रीका २ केन्स्यन-श्राद्म-सम्बद्धाः सम्बद्धाः १६६६ मृ संग्रं = वंशास्त्राच्याः १ क्ल्फ्रीका संग्रं = वंशास्त्राच्याः वंशास्त्राच्याः स्वर्गाः स्वर्गाः १६११ वयः = वंशास्त्राच्याः वर्णाः वंशास्त्राच्याः १६१६ स्वर्गाः वयः वर्णाः वर्णाः १६१६ स्वर्गाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः १६१६ स्वर्गाः वर्णाः १६१६ स्वर्गाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः १६१६ स्वर्गाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः १६१६ स्वर्गाः वर्णाः १६१६ स्वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः १६१६ स्वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः १६१६ स्वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः १६१६ स्वर्णाः वर्णाः वर्ण				२ संस्कृत प्रेम क्रिगेरिकस्थ नज्ञचा, १०४१	SA
श्रेष च संवाहायाम हार्लाहित प्रस्ताहित प्रस्ताहित प्रस्ताहित प्रस्ताहित प्रस्ताहित प्रस्ताहित स्वराहित स्वराहि	र्स्य	n	<b>ब्रह्स्ट्रियह</b> णी	१ त्रीवर्तिह मारोक कन्द <b>र,</b> बंदद ११६८	
वेश = धंशाधावायः हार्यमितियः प्रशासन्तर्भः वेश्वराद्याः प्रशासन्तर्भः विश्वराद्याः । विश्वराद्याः १ वैश्वराद्याः १ वैश्वराद्याः वास्तः ११११ पात्रः । विश्वराद्याः १ वैश्वराद्याः वास्तः ११११ पात्रः । विश्वराद्याः । विश्वरादः । विश्वरयः । विश्वरः । विश्वरादः । विश्वरः । विश्वरः । विश्वरः । विश्वरः । विश्वरः				२ मात्मातन्य कैन सना भावनवर, संबद् १६७३	
प्रेणि = पेरिकारणीय १ कैन्स्तरूपकार-पास कार्य, १८११ पास्ता १८११ १ स्वानायन्त्री मृत्यक्ष साम्रा १६११ १ स्वानायन्त्री मृत्यक्ष साम्रा १६११ १ १ स्वानायन्त्री मृत्यक्ष साम्रा १६११ १ १ स्वानाय साम्रा १६१६ १ १ १ स्वानाय साम्रा १६६६ स्वानाय सा	संद	2			
देवा = संवारपत्वयो (इस्तिविध " देवानपत्वयो (इस्तिविध " देवानपत्वयो (इस्तिविध " संवेष = संवारपत्वयो (इस्तिविध " स्वेष = संवारपत्वयो (इस्तिविध " स्वेष = संवारपत्वयो (इस्तिविध " स्वेष्ण = संवारपत्वयो (इस्तिविध " स्वेषण = संवारपत्वयो (इस्तिविध " स्वेषण = संवारपत्वयो (स्वेषण स्वार्थण स्वेषण स्वार्थण स्वेषण स्वार्थण स्वर्थण स्वर्यण स्वर्थण स्वर्थण स्वर्यण स्वर्यण स्वर्थण स्वर्यण स्वर्यण स्वर्यण स्वर्यण स्वर्यण स्वर्यण स्वर्यण स्वर्थण स्वर्यण स्वर		-			
वंश = वंशारणस्यो (इस्तिश्चित्र । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	सुनि	=	र्वतिकरम्योत		" पाना
हैवा = वंशास्त्रवयो (ह्राफ्रीविश : १ केन्यान्यान्याः वास्त्र ११६६ : १ केन्यान्यान्याः वास्त्र ११६६ : १ केन्यान्यान्याः वास्त्र ११६६ : १ वर्षे : १ केन्यान्यान्याः वास्त्र ११६६ : १ वर्षे : १ केन्यान्यान्याः ११६ : १ वर्षे : १ केन्यान्यान्याः ११६ : १ वर्षे : १ केन्यान्यान्याः ११६ : १ वर्षे : १ वरे : १ वर्षे				२ मात्रातनः <del>वैत-पुस्तक प्रभारक मैका मानस</del> ११२१	
र कनवाजनार-वार्य वान्तर हेवर १६६६ वर्षे = वर्षेणप्रविशाहमक हर्स्याविष्ठ पाला हेवर १६६६ (प्र वर्षे = वर्षेणप्रविशाहमक हर्स्याविष्ठ पाला हेवर १६६६ (प्र वर्षे = वर्षेणप्रविशाहमक हर्स्याविष्ठ पाला हेवर । वर्षे = वर्षेणप्रविशाहमक हर्स्याविष्ठ वाणात्त १६१० । वर्षे = वर्षेणप्रविश्व हर्मे वर्षेणप्रविष्य हर्मे वर्षेणप्रविश्व हर्मे वर्षेणप्रविश्व हर्मे वर्षेणप्रविष्य हर्मे वर्य हर्मे वर्षेणप्रविष्य हर्मे वर्य हर्मे वर्षेणप्रविष्य हर्य हर्मे वर्षेणप्रविष्य	र्धना	-	संबारपत्रबधो		••
स्वायः व स्वाप्तकार्धः व स्वत्यकारः व स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं स्य					
हरें व वरणावनातुक हे हरशांबाय पाना हरें व वरणावनातुक हे हरशांबाय पाना हरें व वर्षात्रवायाच्य हे स्वन्धेवायं स्वार्थे स्वर्थे स्वार्थे स्वर्ये स्वार्थे स्वार्थे स्वार्थे स्					
हर = ६९९३८।  सिंह = धर्मिक्सपाल १ त्वन्यंग्राहर वगास्य १११० = १ स्वयंग्राहर १११० = १ स्वयंग्राहर १११० = १ स्वयंग्राहर १११० = १ स्वयंग्राहर १११० = १ से ११ वर्षे वेश्वरंग्यास्य १११० = १ से १११० वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे ११४० = १ स्वयंग्राहर स्वयंग्य स्वयंग्राहर				† हस्त्रीनिवित्र **	
कार्ड = ध्युन्थनाराखं र त्वनंधारायं वनारतः १६१० १ शासीनकान्येन-व्यवसानं १६१६ १०० = वर्गादुकारपरितः । ग्री एषः वैकोनी-वर्गाखः १६११ वर्षः = वर्गारभागितः वंत्र वर्णन्यस्थानाः ध्यनम्य (१७६ पाणः वर्षः = वर्षारभागितः पाण्योत्त्यः वर्णाति सम्बर्धः १६१ छठ वर्षः = वर्षारभागितः वर्षातिः सम्बर्धः १६१ छठ					***
क्य = वरहामार्थार २ स्टे.ए. वेश्वेरी-वंशाव्य १८११ वर = वरिश्मार्थाता वंश वर्ष-व्याप्त-नामा व्यवस्य १६७६ पावा वर = वर्षामार्थ्य पारमोद्दा वार्षि वर्षाते, १८१ - १८ वर्ष = उद्भावन्य (वर्षाया) सरकात सीरिएस वर्षित वं ४११॥	साङ्क	•	स्राद्धनपरम्परम्	रे स्व-प्रेयादित बनारस १६१७	
बच = वरिक्रमनीवरा र्थत वर्ष-स्थारक-मात्रा प्रवत्त्रम्, संबद् १९७६ पाषा बच = नवर्गामापूच पार्मारेस्य बिगिष्ठ बन्दी, १९१ : छ बच = तनुमन्त्रम् (वत्तवार) नावस्त्रस्य विशिष्ट व स्वर्थात्रः	_		<b>-</b>	र धरवरित्रव-जैन-प्रन्यमाना नं. ६ ध्रह्मदावार, ११२।	پو ا
वत = नवरतांश्रृत्व धारतीय विश्वता विश्वता है । प्रश्ने विश्वता है । प्रश्ने विश्वता है । प्रश्ने विश्वता है । प्रश्ने विश्वता विश्वता के ।		-		• वर्षे एक वैक्रोसी-बंगायित १६६१	-
हनु = तनुप्रभ्यत् (बदरवार) नावकता स्थिति व स्थान				वन वय-प्रदारक-मना ध्यवनवर, संबन् १६७६	याचा
व्यवस्तात सीर्यम् विशेष के स्ट्राहरू		_	-	मानवारम् बीमिति वस्त्री, १८१	<del>1</del> 28
नर-वस प्रवाहत-तथा, मानवरा, तीरत् १६६६ वादा		_	बार्ग्यातम् (चनस्यार्)	नावक्रवांच सीरिएस्थ विरोध में स १११म कि	
				नव-चभ प्रताहत-सन्द्र, भावनवर, संबन् १६६१	नाय

<sup>ो</sup> चडेप थोपून के के नोरो हास ताह ।

संकेष		ग्रम्य का नाम	संस्करण धारि	जिसके मौक दिए गए <b>हैं नह</b>
सम्मत्त	-	सम्पद्धनसन्त्रति संटीक	दे सा पुस्तकोद्धार-र्शंड बस्बई, १८१६	पश
सम्प	=	सम्बद्धनसम्बद्धः पनीसी	र्धवासाम गोवर्धनदास बम्बई, १८११	याचा
सम्पन्तको	=	सम्मन्त्रोत्पादविधिषुत्तक	🕇 इस्तिपिश्चित	"
सा	=	सामान्यगुः छोपदेशनुः सक	p	**
सार्थ	=	वसमार्थशतकः	बीहरो बुल्नोसाम प्रशासास बस्बई १८१६	r
शिक्या	=	হিশাহারক -	🕇 हस्त्रसिनित	n
सिग्य	=	सिग् <b>ममग्रहरत्र-स्मर</b> स्य	स्व-संगदित कलकता संबद् ११७८	n
सिरि	-	सिरिपिरिशासकहा	दे सा पृत्तकीकार कंड बन्बई, १९२६	n
पुष	=	मुखबोबा टीका (क्लघम्पयनस्य	) इस्वसिबित	भूष्ययम् गावा
मुख	_	<b>मृ</b> वप्रक्रप्ति	भागमोत्य-सॉमिति <b>बम्बई, १९१९</b>	वाहुर
मुपा	=	<b>गुपासनाहण</b> रिश	स्य-संपाबित यनारस १११० ११	48
मुर	=	सुरमुदरी वरिम	वैन-विविध-साहित्य-शाक-माला वनारस १ <b>११</b> ६	परिच्छेत्र गाया
भूष	-	सूमगडांतमुख	+ १ श्रीमसिंह मास्रोक बंबई ११३६	युक्तसम्ब सम्ब
		-	२ बागमीदय-समिति अंबर्ड, संबद् १८१७	- n
सूपनि	=	मुमक्रवा हुनियु कि	१ हस्त्रसिचित्र	मृतसम् प
-			२ बायमोदय-समिति वंबई, संबद् १८७३	याचा
			३ भीमसिंहमारोक 🔐 🙀 १९३६	19
मूख	•	मुक्तपुरावनी	दे सा पुस्तकोद्धार फंड बंबई, १९२२	पत्र
सुवद्	=	सुनकतागकृतिः	PIS	
p.	æ	<b>छे</b> नुबंब	निर्ह्मयसम्परं प्रसः श्रेषद्रै १८११	माधासक पन
स्वान	-	स्बप्नवासम्बद्ध	দিবীশ্ব-জন্মতা-ডিবীস	श्र
हम्मीर	=	<b>इ</b> म्मीरमदम् <b>रं</b> त	मायकवाव मोरिएस्टन सिरीज नं १ ११२	n
इस्य	æ	हास्यचुड़ामशि (प्रदुष्तन)	p.	n
fξ	=	द्विवोप <i>देशनु</i> सक	🕇 इस्त्रजिबित	याया
हिच	=	द्वीपदेशसार <b>ह</b> मक	P	
t	-	हैमचन्द्र-आइत-म्याकरस्	<ul> <li>१ वॉ धार् पिरोन्-संपर्धित १८०</li> <li>२ वंबर्ड-संस्ट्रत-तिरोज १९</li> </ul>	पर, सूत्र
<b>≹</b> ₹T	2	<b>दे</b> मचन्द्र-साम्यानुग्राहर	र वनश्चार प्रेस वंबर्ध ११ १	१७

<sup>🕆</sup> अजीव भीवृत के में मोदी हास मारा ।

<sup>🗜</sup> देवी 'यस 🏄 नीचे नी टिप्पणी ।

<sup>+</sup> तुष के मंद्र दल दोनों में म्मिन किन हैं, बलुत बोद में बूचांद्र केरब बी, बा के संस्थरत के दिए समे हैं।

# प्रथम संस्करण में लेखक का निवेदन

कोई सो साथा के जान के सिद उस साथा का काकरात सीर को र प्रधान साथन है। प्राष्ट्रत साथा के प्राणीन स्थाकरण धनेक हैं, जिनमें चंड का प्राष्ट्रसम्भाव परकृषि का प्राष्ट्रसम्भाव के सिद्ध हो। प्राप्ट स्थान के प्रकृत के प्राप्ट के प्रकृत के साथ के सिद्ध हो। प्राप्ट स्थान के प्रमुख्य के प्रकृत के स्थान के स्थ

इसी बारी में भी रासेस्ट्र सरिजा का अभियानराजेस्ट्र नामक कोप का प्रथम भाग प्रकारित हुया और बारी वो वर्ष हुए इसका क्रमित्य भाग भी बाहर हो गया है। बड़ी बड़ी मात बिस्टों में यह कीय गुमान हमा है। इस संपूछ कीय का मुस्य २६ ) राये हैं जो धीरपय और प्रश्व-परिमाण में प्रविक्त नहीं कई वा सकते । यदापि इन कीय की विस्तृत मानोचना करने की न ती यहां प्राप्त है। न कारकेशकता ही तनापि यह को दिना नहीं रहा जा संकटा कि इसकी संप्यापि में इसके कर्ता भीर उसके सहकारियों को सचक्र भार परिधम करना पढ़ा है और प्रकाशन में बैन रवेतान्वर संब को भारी जन-मथ । परन्तु खेर के साब कहना पढ़ता है कि इसमें कर्ता को सञ्चला की धरेता निकारता ही प्रविक मिली है भीर प्रकारक के बतका बरस्यय ही विशेष हुया है। सकतता न मिलने का काराए भी क्या है। इस क्ष्म को बोड़े गौर से देखने पर यह सद्भम ही मालूम होता है कि इसके कर्ता को न तो प्राक्त आवासी का पर्याप्त कान सा और न प्रावत सन्द-कोप के निर्माण की उठनी प्रवत इच्छा जिठनो पैन-काँन-गाल भीर तर्क-गाल के विषय में प्राप्त वाधिशतप्रकाणन की कत । इसी घन ने प्रयने परिवन को योग्य दिशा में ने बानेशको दिनेक-वृद्धि का भी बास कर दिया है । यही कारण है कि इस कीए कर निर्माण केवन पण्डलर से भी रूम प्राप्तत केव पुस्तकों के हो, जिनमें समीमानभी के दर्शनविषयक संगी की बहुनता है माबार पर किया गमा है भीर प्राष्ट्रत की ही दवर मुदद ताबामों के तथा विभिन्न विचयों के स्रोतंत्र केन तथा कीशर बच्चों में इक का भी जायोग नहीं किया यया है। इससे यह बोच ब्यारक न होकर प्राक्ति भाषा का एकरेग्रीय कोच हुआ है। इनके निवा प्राकृत तवा संस्कृत प्रत्यों के विस्तृत संसीं को भीर कहीं-नहीं तो संशे-कहे संपूर्ण पत्न को ही धवतरण के का में उत्पूत करने के कारण बृह-संस्ता में बहुत बढ़ा होने पर सी शन्य-संस्था में इन ही नहीं महित्र बाबार-मून पेनों में बाय हुए कई उपयुक्त शन्यों को छोड़ देने से और विशेशपै-हीन अविशीपै सामासिक तम्बी की वाली से बालांकि राज्य-संकता में यह बीद पतिन्यून की है। इतना ही नहीं इस बीय में झावरी पुस्तरों की अवाववानी की भीर प्रेम की तो पर्यस्य प्रमुद्धियां है ही प्राष्ट्रत भाग के सदान के संकल रखनेवाली भूनों को भी कभी नहीं है। और सबसे बहकर वोच इस बोप में यह है कि बाबस्पास्य अनुझार अवशास अप्रक, राजाक प्रवादिस आहि बेबन ब्रांस्ट के बीए खेन इतिहास कैंद्रे

र केचे जिस्से राज्य की स्थानता में प्रतिमाहान करामक सरीक संस्कृत जन्म की मार्थि से लेकर सन्त तक सर्वत किया बना है। इस कंच की मील-संस्था करीन कीच हुआर है।

२ चद्र ⊭ मई मा€ ।

१ केम बारीक्षत्र-पोत बार्नुस्व-सम्म बारीकार-सम्मीक्षम बाहुक्त-मोवनिष्यो बावरी(?)उपनर-वर-नरेत बाँकमा(?)-कंब-एक्टा, मजत वर्ष-स्वाप्तम्प्र-दिवय बजरूरपुरी(?)त-वर्षात्य बाई । इन राम्सी वा इनके बहरवर्षे की बनेसा हुए भी विशेष वर्षे नहीं है।

# प्रथम संस्करण में लेखक का निवेदन

होई भी भाग के बात के लिए उस माध्य का क्याकरात और को र प्रधान सानत है। प्राष्ट्रत काया के प्राणीत स्थाकरात स्वेत के लिए उस माध्य का स्थाकरात स्वेत के प्राण्य का प्राण्य का सिद्ध के प्रमुख्य का प्राण्य का प्राण्य का प्रधान का प्रधान का प्राण्य का प्राण्य का प्रधान का

इसी बारने में भी राजेन्द्र सरिक्षा का अभिभागराजेन्त्र नामक कीर का प्रवम भाग प्रकारित हुआ भीर भश्री दी वर्ष हुए इतका स्मित्तम भाग भी बाहर हो बना है। बड़ी बड़ी मात जिल्हों में यह कोप समाप्त हुमा है। इस संपूर्ण कीप का मूक्य २६ ) रूपये हैं को परिचम और अन्य-परिमाण में अधिक नहीं कहे ना सकते । यदिए इस कोप की विस्तृत आसोवना करने की न तो महा वन्छ है न कारश्यकता ही तथानि यह नहे दिना नहीं रहा का सकता कि इसकी तथ्यारी में इसके कर्या और उसके सहकारियों की शक्यन योर परिचय करना पक्षा है बीर प्रकाशन में बैन रहेतामार संग को मारी जन-मया। परन्तु क्षेत्र के शाय कहना पहला है कि इसमें कर्ता की करतता की संवेता निपन्नता ही योषक निनी है और प्रकारक के बनका बरस्थय ही विशेष हथा है। संवनता न शिनने का कारण भी स्तर है। इस प्रत्य को बोड़े भीर से देवने पर यह सहज हो। मालूम होता है कि इसके कर्ता को न तो प्राक्षत आयाओं का पर्यास लान का धीर न प्राकृत शब्द-कोप के निर्मास की सतनो प्रवत दश्का जितनो जैन-वर्रान-साझ सीर सर्ब-साझ के जिएस में साने पारिकारकाव्यापन की कत । इसी बन ने घरने परिभय को योग्य दिशा में ने जानेशांसी विवेत-वृद्धि का भी बाय कर दिया है । यही कारण है कि इस कीय का क्रियांता केवल प्रवहतार से भी कम प्राष्ट्रण केत पुस्तकों के हो जिनमें प्रार्थमायकों के क्ष्मीविषयक संबंधि के वहताता है, सामार पर दिया क्या है और प्राष्ट्रत की ही दवर बक्य सालामों के तथा निमित्र नियमों के सनेक बैन तथा जैनेनर प्राची में एक का भी जानीय नहीं किया बमा है। इनसे बढ़ कोय स्मारक न होकर प्राष्ट्रत माया का एकदेशीय कोय हुमा है। इनके सिवा प्राष्ट्रत तथा संस्कृत सन्तों के निस्तुत वंशों को भीर कही-कहीं हो यांगे-बड़े संपूर्ण प्रन्त को ही भवतरण के का में उत्पुत करने के बारण बृह-सब्या में बहुत बड़ा होने पर भी राष्य-धंच्या में कन ही नहीं, बहिक बाबार-भूत प्रेची में बाय हुए कई क्यूएक राम्बों की छोड़ देते से बीट विरोधार्व-होत बतिरीर्च सामाधिक राध्यों को मरतों से बास्तरिक राष्ट्र-संक्या में यह कोच पाँत-पून बी है। इतना ही नहीं इन कोच में धाररां पुस्तकों की असाववानी नी थीर प्रेष्ठ की तो पर्यक्त पर्रादेश हैं ही प्राष्ट्रत मात्रा के प्रकार से संकल रखनेकली जुनों की भी कभी नहीं है। और सबसे बढ़कर क्षेत्र दब बोर में यह है कि मा बरपाय अन सारकायवताचा अप्रक, रानाक्यवताचिक वारि केवम संदूरत के बीए क्षेत्र प्रविद्वास वैवे

र कीने विदयं राज्य की ब्यावना में प्रतिमाहत करनायक प्रतीक संसहत प्रत्य की साथि से सेकर सन्त तक अरूपूर्व किया गया है। इस क्षेत्र की ब्योक-संबद्धा करीय पांच हमार है।

२ सद= मार्गमारि।

<sup>।</sup> केत प्रानित्वनीय प्रानुस्थन्तमा प्रानित्यनसम्पनितव प्रान्तन्त्रीयनितिष्य प्रावनिति। प

# प्रथम संस्करण में लेखक का निवेदन

कोई यो मापा के बात के सिए उस स्वया का काकराए और को। प्रथान सावत है। माहत मापा के माचीन व्याकरण सनेक हैं,

फितमें जंब का प्राह्मत्वस्थ्य परस्थि का प्राह्मतप्रस्था, हैमाचार्य का निखाईम (स्थम प्रथाय) माकैण्डय का प्राह्मत्वस्थित और

स्माध्य की पह्मापाचित्रका पुक्ष है। और सर्वाचीन माहत ब्याकरणों की सेवा प्रका होने पर यो करने कमेंग्री के प्रशिक्ष माहतरिक्रण ही। पिरास का प्राह्मत्वसम्बद्ध संबंद है को प्रतिक्षत्व और तुननारम है। परनु प्राह्मत-केय कि विषय में मह बात नहीं है।

प्राह्मत के प्राचीन करों में प्रयाद प्रथम हेकत हो ही कोच उसम्बद्ध हुँ —पिश्य प्रयाद कर पाइत्रक्ष प्रधानमात्वा भीर हेमा परप्रश्नित के कोचे में प्रयाद पर्यक्ष है कोच उसम्बद्ध हुँ —पिश्य प्रयाद प्रहम्मत व्याकर के प्रश्नित के प्राहम के कि स्था में मह बात नहीं है।

परते विषय प्रया कोई भी प्राहत का कोच न होनेने प्राहत के हरएक प्रधानी को परने प्रमास में बहुत प्रमुखिना होती थी जुर मुन्ते भी

परते प्रयत-प्रचा के प्रयुक्तिमन-का में इप प्रमाव का बहु प्रमुख हुया करना था। इससे प्राय में केश प्रवस्त एस पहले पुष्पाच प्रातस्वरणीय प्रवस्त प्रावस्त विश्वाद विश्वाद केश वार के विश्व प्रमास प्रात करना का का कि विश्व किया किया प्रमास था।

इसे घरते में भी राजेन्द्र सुरिक्षा का अभिधानराजेन्द्र नागक कोप का प्रथम मान प्रकाशित हुमा घोर सभी दो वर्ष हर इनका सम्बन भाग भी बाहर हो गमा है। बड़ी बड़ी माठ किलों में मह कीप समाप्त हुमा है। इस संपूर्ण कीप का मूल्य २६ ) कार्य हैं बी परियम और प्रस्थ-गरिमास में संकित नहीं कहे जा सकते । यद्यपि इस कीय की किस्तून आसीवना करने की न सी यहां करते है न धावश्यकता हो तबापि यह बड़े बिना नहीं छा जा सकता कि इसकी धायारी में इसके कर्ता और उसके महकारियों की संवयंत्र धोर वरिक्रम करना पढ़ा है भीर प्रकाशन में बैन रनेतान्वर संग को भागी जन-मन । परना बंध के साथ कहना पढ़ता है कि इसमें कर्ता की क्रवाता की क्षेत्रा निष्युनता ही प्रविक मिनी है भीर प्रकारक के बनका सरस्यय ही विशेष हमा है। सफ्तता न मिन्तर्ने का कारण भी स्वय है। इस प्रम्य को बोड़े मीर से देखने पर यह सहय ही मानून होता है कि इसके नर्ता की ल तो प्राप्तत भाषाओं का प्रवित सात वा कीर म प्राप्तन शब्द-कीय के निर्माण की उठनी प्रवस इच्छा जिठनी मैन बहुत-शाब बीर तुर्व शाख के जियम में पाने पाणिकामप्रकारण की यत । इसी युन में बारने परिधम को मोध्य दिशा में से आनेवालो त्रिवेड-वृद्धि का भी द्वास कर दिया है । यही कारण है कि इस कोए का विर्माण केवल पणडत्तर से भी कम प्राइत मैन पुस्तकों के ही जिनमें समीमायधी के दर्शनविषयक होगों को जहलता है आबार पर किया क्या है और प्राष्ट्रत की ही इतर मुक्त शासाओं के तथा विभिन्न विषयों के ब्रेनेड मैन तथा मैनेनर धन्तों में एक का भी जायीन नहीं किया गमा है। इससे यह कोव स्थारक न होकर प्राइत माथा का एकदेशीय कोच हुमा है। इपक शिक्षा श्राष्ट्रत शर्मा संस्कृत श्रामों के विश्वत धंशों को भीर कहीं-कही हो धोरे-को संपूर्ण पन्त को ही धवतरात के का में अरुपूत करने के कारत पूछ-सक्ता में बहुत बढ़ा होने वर भी राध्य-संस्था में कन ही नहीं अहर बाकार-मून पंत्रों में धाए हुए कई उपबुक्त शस्त्रों को धोड़ देते से धीर विरोधार्व-हीत बातिशीर्य सामाधिक रान्यों की मध्यों से बारविक सन्द-संबता में यह कोप प्रतिपूत भी है। इतना हो नहीं इन कोच में झापरी पुस्तकों की महाववानी की भीर प्रेष नी दो पर्छस्म महस्तियाँ हैं ही प्राष्ट्रत मापा के प्रज्ञान से संजन्त रखनेवाली मुनों नी भी जानी नहीं है। और सबने बहकर दोप इस बीप में यह है कि पांचरपाय अने अन्यायवाका अपन , रस्ताकराबदारिया बारि नेवल संस्ट्रत के बीट जीन इतिहास बैने

१ मेमें चित्र राज्य की स्थानता में प्रतिमादानक नामक ग्रायेक चंतकत प्रत्य को साथि से मेकर सन्त तक क्षूतृत किया स्था है। इस संच की ब्योक-चंदना करीव बीच हुआर है।

२ यद≭धर्मधारि।

१ वैग प्रतिष्वनीत प्रस्तुस्वन्यम् प्रातिष्य-सम्बन्धियः प्रमुक्त-तेलनिष्यं प्रावर्थः(?)इस्नर-वर-वरेक प्रतिस्त्र(?) वैद-एक्एा, प्रवब-स्वरंग्वरपाणः दिवयं प्रमुक्तुवीः(?)श्वनप्रतियं प्रप्रिः। इत राष्ट्रीं तः इतके प्रवयसे तो प्रदेशा दूर्यं त्री विकेश प्रये तृति है।

दूसरी मुक्त बस्टिनाई धर्म-स्वय के बारे में थी। मेरी धार्यिक संबक्ता ऐसी नहीं थी कि इस महान् संय की तस्वारी के निय पुरुवादि भारत्यक सावनों के भीत शहासक मनुष्यों के बेतन-सर्प के भितित्क प्रकारन का भार भी बहुत कर सहूँ। धीर मुक्त में किसी से भाविक शहायता देना में पसन्य नहीं करता ना। इससे इस विकार को दूर करने के लिए महिम शहक बनाने की मोजना की या विसमें उन प्रविम प्राह्मों का हर पत्रीस सामे में इस संपूर्ण प्रस्त की एक कांगी देने की स्पत्रस्था थी। इसमें मेरी उन्त कठिनाई सम्पूर्ण हो नहीं हिन्तु बहुत-पूछ कम हो गई। इस मोबना नो इतने हुर तक सकन बनान का स्रविक भीम कमकत्ता न भेन क्षेतास्वर-सीसंग के सवस्त्य नेता भीनान सेठ नरीक्तमस्त्र जेठासाह को है निवहीं पुरु से ही सको संस्थानता ना भार वरन पर सेते हुए पुत्ते हर तथा से हम हार्य में नहातता की है. सिक्के थिए में उनका विरस्तवत हैं। इसी तथा अहमनावाद निवासी भवेंच भीदूर करायनात्रसाह प्रेमचन्त् सोटी बी. ए एन्एन् वो का भी में बहुत ही उसहत हूँ कि बिन्होंने की मुद्रित पुन्तकों में यी हुई प्राहत राज्य-मूचियों पर मे प्रतित किया हुया एक बड़ा राज्-संबह मुखे किया या कतना ही महा बस्कि मनय समय पर प्राकृत की धनेक हस्त-मस्तित तथा मुदित पुन्तकों का जोवाक कर दिया वा सीर तक सीकता में प्राहक-सक्ता वहां देने का हादिर प्रथल किया था। प्रात स्मरतीय पुरवार्य पुनित्य मध्यमीषिजयाओं महारात्र पुर्य नैकानार्य भी पज्यसमाहन मृदिया त्र पु महारक यो अनुपारियमृदिती तथा स्वतन्त् कनारक विद्वर्य भीनुष्ठ अस्विकसमाद्ञा याजपत्री का भी में हृष्य न जरकार मानता हूँ कि निकत्ती प्रेरणा नै परियम काहका की कृति हारा मुक्ते पुत्र काथ में ध्यायता नियों है। उन महानुसारों को वित्रक द्वार नाम हती क्ष्य में सम्यन की हुई सरियन-सहरू-सूची में प्रकाशित पिए तर हैं धनेशानिक सम्यन्तर है कि दिश्कित समार्थीक धारणांधिक संस्था में उस पुत्रक की कांत्रियों करीर कर मारा यह कार्य सरस नर हिया है। यह पर मेरे मित्र भीपूत सेठ गिरधरखास जिल्लासक ग्रीर धीमान बाबू काउचवुक्ता सिधी के नाम विशेष उन्सेबनीय हैं। इन दोनों महारामों ने प्रथमी धपनी राक्ति के अनुसार यथेंट संस्था में इस कोच की कांत्रियां करीरने के धारितिक मुर्फ इस नार्य के सिये समय समय पर विना मुद ऋए। देन की भी इसा की भी । यह बहुते में कोई धलांकि नहीं है कि सरि बन्त सब महानुमावों की यह सहायता मुक्ते प्राप्त न हुई होती तो इस नीय ना प्रकारान मेरे लिए मुस्लिम ही नहीं प्रसंप्रव मा।

यहां इस बात का भी बल्लेख करना समित जान पहला है कि बान से करीन दंग वर्ष पहले मेरे महाप्यापक पद्धेय प्रोडेसर सरसीघर पनर्सी एम. ए. महागय ने बीर मैंने जिनकर एक प्रस्ताव किया? पत्रति का प्राप्तत बीमरा कोप देवार करने के निए फलस्ता पिरविषयालय में स्वस्थित किया का परन्तु जन समय वह मनिभित्र कान के लिए स्विधित कर दिया थया था । इसक कई वर्ष बाद बब मेरे दम प्राहत-हिन्दी क्रोप नर प्रथम आग प्रकारित ह्रया तब उस देखकर क्रुद्धहत्ता-विश्ववित्तासम् के क्रागुंबार स्वर्गीय यांतरेवत वास्मित काशुनाय सुकर्जी राजे संतुष्ट हुए कि उन्होंने तुरंत ही विश्वविद्यालय की तरफ में हम वार्ती के तरवाववान में इसी तरह के प्रमाण-पुन: युरु प्राष्टत-धिक्षमरा कीत वैष्यार और प्रकारित करने का व ववस प्रस्ताव ही पास करवाया विका असकी कार्य क्य में परिशास करने के मिए अभुक स्परस्या मी करायी है। इसके तिए लच्छो जितन धन्यबाद दिये जार्य कम हैं। यहाँ पर में कस्पन्नता-विद्यविद्यालय को मी प्रशंसा किए विना नहीं यह सकता कि जिसके हाय मुक्ते हम कार्य में समग्र पुन्तक मादि की मनेक सुविधाएँ निसी हैं. जिससे यह नार्य मरेबान्डर सीम्बा है पूर्ण हो सना है । इत कोय के ज्योहपात में सम्बन्ध रखनवासे धनक ऐनिहासिक वन्ति प्रश्नों को सुनम्मने में घठ प भोरेनर मुस्सीधर बनर्सी एम, ए. वे सबने नोमतो समय का बिना संदोव भीन देवर मध्ये जो सहायता की है जनद निए में जनदा साल: करे से बाबार मानता है।

इस नीय के बुद्रए-कार्य के बारम्य से लेकर प्राव क्षेत्र होने तक समय सबय पर बैने बेसे जो आदिरिक इस्त-सिवित और बहित पुरवर्षे या संस्करण सुन्ते प्रान्त होते जाने ये वैसे वेसे उनका भी क्षेत्र कायोग इस कीए में किया बाता या। यही कारण है कि तब तक के प्रमुद्धित मान के राज्य उनके देकरेंसों के साथ साथ प्रस्तुत कोत में ही यथास्वान शामिल कर दिए जाते ने सीर मुश्तित संस के समर्ते का एक पत्तन संपष्ट तत्यार किया नाता वा वी परिशिष्ट के क्य में इसी इन में बत्यन प्रकाशित किया नाता है। ऐसा करने हुए सुतीय माय के सुपने तक किन वितिरिक्त पुस्तकों का काबीय किया गया का उनकी एक बसय सुकी भी तृतीव भाग में दी वर्द थी। वनके बाद के मिनिरिक्त पुस्तकों की सनव मुक्ते इसमें न देकर प्रथम की दोनीं (द्वितीय और तुरीय भाव में प्रकारित) नृषियों की जो एक सावारण मुनी यहां दो बाती है वसीमें एन पुस्तकों का भी बर्लानुकन से यसास्थान समावेश किया बया है जिससे पाठकों को भ्रमन श्रेन्ट रेडरेंस-मुविया देखने की तक्षीक मही ।

बक्त वरिधिष्ट में वेबल बन्हीं राष्ट्रों को स्वान दिया क्या है को पूर्व-संबद्ध में न आने क बारण एकदम नये हैं या झाने वर औ सिप या वर्ष में पूर्वांच्य राम्य की ब्लेका विद्योग्या एकते हैं। कैमन रेकरेंब की विद्याना को सेकर किसी राम्य को निर्दिश्य में पुनरावृत्ति नहीं की वर्ष है।

१ व्यक्तिन्याहर मुक्ते वा संग्र डिग्रीय संदर्शन में मही त्याचा या है—संग्रास्त । २. परिग्रिष्ट वा संपूर्ण संग्र दश दिनोय संदर्शन में स्वास्थान ग्रमारेश वर दिया यग है—संग्रास्त ।

के इस मानुसिक पुत्र एकी एकों के धंत्रक बीर पुत्र राजी राज्यें पर हो जोगी किया हो है । है बीर हुए आइन्ड सामी की इसमें बूर भिनारत की बहे है कि हो इस कीद दी मानारिएका है। एक्स नष्ट हो। यह है। वे बीर सम्ब प्रमेक सकत्म दोनों के कारण सामारि प्राचानी के नित एम लेश ना उनकेश निकास भागत पीर सर्वकर है, विहानों के जिल्ह मी करना है। करेशकर है।

एन ताबू महात के शिवन को और रिचारों के कैन तथा पैनेतर साहित्य के म्लेट क्यों से संक्रित साबरवक स्वकारतों से बुक गुद्ध एवं मामसिक कीच वा निकारत समार करता है. पहा । इस समान की शूर्ति के लिये कीने सामने कर विचार को कार्यक्रम में परिस्कृत करने वा इन बेक्स दिना भीत तथानुमार सीम हो मानन की गुंव कर विचारता निस्कृत कम मानुत कोच के का में चीच्छा बच्चों के कोचेर परिस्कृत के सामने मानिक मानिक की मानिक की मानिक की मानिक की मानिक की मानिक मा

अन्तुत कार की तत्याचे में जो परेड कमिनाचां मुन्ते केनशी पड़ी हैं जनमें सकेशकार प्राप्तत के शुक्ष पुस्तकों के नियन में बी। श्राह का दिशाल शाहित-स्प्रार विविध-विषयक पंत-राजों के पूर्व होने पर भी माजवक वह बसेट क्या में प्रकाशिव ही शहीं हुआ है । मीर इस्ट-निनित्र पुरुष्टर को बहुबा प्रजान सेवारों के हाज से लिबी बारोंके कारण प्राया प्रसुख ही। हुया करती हैं, परस्त सामकन को प्राहत की कुन्तर प्रशासित हुई है के भी स्पृताकिक परिमाण में बागडियों से काली कहीं हैं। सबनत पूरीर की बीर इस देश की कुछ पुस्तक देशी बतम पर्यात से बती हुई है कि जिनमें ध्युदियां बहुत ही बम हैं, और वो कुछ रह भी वह है वे उनमें टिप्स्शी में लिए हुए सम्ब वित्यों के वदम प्रदात । का पूर्व । वाटम्क्टा में नुमार्थ का करनी है। वरना दुर्गाय से ऐने संस्करती की संत्या कहत है। सक्त नवस्य हैं। सक्तूक कह कई बीद की बात है हि भारतीय मीर साम नर हमारे मैन विकान माचीन कुछारी के संतीयन में मांवक इस्तिनिक्त पुस्तकों का कामीन करते की मीर करके विजनिमन बारों ही रिमाणी के बाहार म उद्गुत करने ही तक्सीफ ही नहीं उठाते । इतका नतीजा यह होता है कि प्रेतांबक ही दृक्ति में की पाठ राज बाहुम होता है नहीं एक किर बाहे नह बारत में बाहुद ही क्यों न हो। पाठकों को देवते की विकास है। प्रकार के दूरर परित पनों को दो दर दुर्वक है ही परणु केरों के परित्रकर सीर पति पाणीन सावय-क्षणों को भी वही सबस्था है। अर्थ क्यों के पहि मुंद्रिय प्रता पर के के किया प्रता किया है है है है कि के प्रतान के किया किया है वार वर प्रसार के, विनने प्रविवास मजानी बसोवनों से समाजित होनेके कारण चून ही प्रमुख को में | किन्तु मनी क्या ही वर्ष हुए हनारी आगमाह्य सर्गित न पण्या के एक्तित करके भी जी मायमी के बन्त बरवाये हूं वे अभव व्यवह तमाई वामह वाहि वाहा सरीद की तमाल में नुमार होने पर भी कुदता के नियम में बहुका पूर्वोच्ड संस्थरका की पूनरफाँच हो है। क्सोंकि न किसी में प्रावशी-पुरत्कों के पाठरचर के न पुन्य क्षा कर जा पूर्व कर कि है है है कि है जो है जो है जो है जो कर कर कि है जो है जो है जो है जो है जो है ज हा वरिवार विश्व करा है, न वृत्र चीर धेवा के ब्राइन राज्यों की वैवर्धि की चीर कात दिया गया है, चीर न टी प्रवय संस्करक की सावारण सर्वदेश नुकारने को बन्नोवित क्षेत्रिक हो को नई है। क्या ही जब्दा हो। यदि सोआगमीव्यसमिति के कार्व-कर्तासों का स्मान वत तस्य ही। मार कारण हो और वे जाइत के विरोध भीर परिभागी विज्ञानों से संपादिन करा कर समान्त (प्रवास्तिन और अप्रकारित) आनत-सन्त्रों का एक राह (f. it. 1) घेटारण प्रत्योक्त करें जिनकी सनिवार्त सावस्वरता है।

दन वाद हाउ लिगा और श्वील आहा-क्य अल अनु होंने के कारण वास्त्रकानुता एकविक हाउ-विविद्य पूर्वा में वादा करें कि वाद कर कि वाद क

१ देशे प्राप्तः, सर्वारागारस्य वर्गारकस्य वर्गितः गुलदुस्य, ध्वनद्यविद्यु, वरम्यमनवर्गातस्य सरम्बस्यिदु, सरम्बन्धवर्गातस्यः, बद्दः, वर्षान्यसम्बद्धाः, सर्वेतनवरसस्य प्रदृति सन्ते हे निर्दातः।

र, देवो बन्यर करून रिष्ट हुए एक प्रेयरीक्शक व्यवसायों में स्थल पुणिवादिक वोगार्दी के वर्तन में बराबीटा ओ, स्पूले का व्यवसाय

दमरी मुख्य बक्तिनाई अर्थ-अर्थ के बारे में थी। मेरी आविक बनस्ना ऐसी नहीं थी कि इस महान् बंब की सम्मारी के सिए पूरवर्षाद प्रास्तवक शासनों के तीर शहायक मनुष्यों के बेहतनार्थ के प्रतिरिक्त प्रकारत का शास थी बहुत कर करें। और दूसने मिलते पुरवर्षाद प्रास्तवक शासनों के तीर शहायक मनुष्यों के बेहतनार्थ के प्रतिरिक्त प्रकारत का शास थी बहुत कर करें। और दूसने मिलते के प्राचिक शहायता केना में पहाय महीं करणा था। इससे इस कठिनाई को बूर करने के शिए प्रतिप्त शहरू बनाने की सोजना की गा जिसमें जन अदिम प्रावृक्षों को हर पत्रीस कार्य में इस संपूर्ण प्रम्म को एक कांपी देने भी स्वतस्था थी। इससे मेरी उक्त कठिनाई सम्पूर्ण सी नहीं किन्तु बहुत-हुछ कम हो गई। इस मोजना तो इतने दूर तक सफल बनाले का ग्रविक स्प म कनकत्ता के सैन क्षेतास्वर-मीसंब के मध्यप्य मेता सीमान सेठ नरी चमभाइ जेटाभाइ को है जिल्होंने गुरू से ही इसकी संरक्षकता का भार मचने पर सेटे हुए पुन्ने हर तरह से इस कार्य में महायता की है. जिसके लिए में उनका कर-इतक हैं। इसो तरह अहमदावाद-निवासी यदीय थीपून फरायखाउमाइ प्रेमचन्द्र मोनी बी. ए एस्एम् वो का भी में बहुत ही करहत हैं कि किल्लि कई मुद्रित पुस्तरों में वी हुई प्राहृत शन्त-सुविमों पर में प्रतित किया हमा एक बड़ा रास्ट-संग्रह भूने दिया था। इतना ही नहीं बस्कि समय समय पर प्राहत की सनेक हस्त-मसित तका मुद्रित पुस्तको का जोगाह कर दिया या भीर उक्त योजना में प्राहरू-सक्ता बढ़ा देने का हार्टिक प्रयत्न किया था। प्राप्त स्मरणीय पुरुषयांव प्रस्तये भूतिराज मोआमीविजयकी महाराज पुग्य वैकानार्य भी यजयमोहन सृरिका ने यू. महारक मीजिनचारप्रमृरिक्षी तथा स्वतन सम्मादक विद्ववर्ष सीयुन् अस्विक प्रसाद्जी बाजपयी का भी में हुवय न अपकार मानवा हूँ कि विवती प्रेरणा से स्विम धाहकों की वृद्धि हारा मुख इस काथ में सहायता मिनी है। एन महानुनाकों को जिनके रूम नाम इस्रो प्रत्य में प्रत्यन को हुई प्रविध-प्राहरू-मूची में प्रकारिय किय गय हैं। धनेकार्नेक कामकाव है कि जिल्होन मनाशक्ति बारपाविक संख्या में इस पुग्तक की कॉनियों बरीद कर मेरा यह कार्य सरस कर विया है। यह पर मेरे भित्र भीपूत् सेठ गिरधरस्थल श्रिकमलाक और भीमान् शत्र झालजन्ता सिंधी के माम विशेश क्लोबनीय हैं। इन दोनों महारायों ने प्रपत्ती अपनी शक्ति के अनुभार मध्ये संस्था में इस कोच की क्ष्मियां अधिदाने के शतिरिक्त मुक्ते इस कार्य के लिये समय समय पर दिना सुद ऋगु देन दी भी इस दी थी। यह दहने में कोई अल्प्रेक नहीं है कि यदि उक्त सब महानुभावों की यह सहामेशा सुने प्राप्त न हुई होती तो इस बीप का प्रकारन मेरे जिए गरिक्स ही नहीं प्रसंत्रव था।

चक विकित् में केमल वन्हीं स्वयों को स्वाल दिया बना है जो पूर्व-संबद्ध में न साने के कारण प्रकरन नमें हैं ना माने पर भी जिल या माने में पूर्वापत राज्य की मनेता किरेयता रखते हैं। केमल रेकरेंस की किरोयता को लेकर कियी राज्य को विधिराह में पूनपहरित नहीं की पर्दे हैं।

१ "पहिम-बाह्य मुनी" ना पंत दिवीय संस्थरत में नहीं छाता बया है-संपादक ।

<sup>3. &#</sup>x27;परिविद्ध' का क्षेत्रुण संग्र का दिनीय संस्करण में मनास्थान समावेश कर दिया गया है-विवादक।

प समन्त्र भागार्थे कथ्य रूप से क्यबहुत गई। होती इसी कारण य सूत भागा (dead languages) कहकाती हैं। पृष्ठ आदि सब मात्रार्थे आये भागा के बारतांत हैं और इन्हीं प्राचान कार्य मात्राओं में से कहपक क्रमरा रूपान्तरिक ब्राप्तनिक समन्त्र कार्य भागार्थे करान दुई हैं।

प प्रार्थन आय भागाँ कीन पुग में दिस रूप मं परिवृतित होकर कमश्र व्यापुनिक रूप्य मापाओं में परिवृत्त मग्र मीधन विराण नीप दिया जाता है।

#### प्राचीन मारतीय आर्य मापाओं का परिणति क्रम

मर ब्रॉज प्रियमेंन न बपना निर्माश्य हों बाँठ शिया (Linguistic survey of India) नामक पुलक में वर्षीय समरन आप भागाओं क परिणाम का जा अम दिलाया है उसके ब्युतार विदिक्त मांगा रूफ साहिस्य-माणाओं है प्रार्थल ह। श्रमा समय अनक बिहानों क मन में दिलायार श्रेष होता क्षे (2000 B C) और हो या बोर भी रूक महममूल क मन में दिलायर पूर्व बाद्ध सी वर्ष (1200 B C.) है। यह बेर-माणा क्रमा सहार परिणालिक होनी हुई बाहण्य उपनिषद् स्थार क सिराक के निरक्ष की माणा में सीर बाद में पाणिनिनस्ति

क स्मारण नुमा निविध्यत होत्र स्रोकित संस्ट्रत में परिणव हुई है। पाणित स्नाहि क पर्यमुति के रूप मंदगारी को भाग करने के बारण यह संस्ट्रत पर्यमंदी। मुख्य हुए से 'संस्कृद्ध' राष्ट्र का प्रयोग इसी भागा भी में दिया जाता है। यह संस्ट्रत माणा पिहक माणा स स्वयम होते से उसके साव प्रतिष्ठ सम्बन्ध राजने से बेह कि स्वय में भी संस्ट्रत नाया स्वयम समय से अपुष्ठ होते हमा गया है। पाणिति के तम संस्ट्रत माणा कोई तम सी हुवा है। यह परिपति होते में—अब माणा को स्वीकित संस्ट्रत के रूप में परिणव होते में—अब के र पर्य सत्त है। पाणित वा समय गोतवादुकर के मन में जिल्लाक यूव सप्तम रावाब्दी कीर बोधसिक के मत्र में राव्य सत्त है। पाणित वा समय गोतवादुकर के मन में जिल्लाक यूव सप्तम रावाब्दी कीर बोधसिक के मत्र में राव्य सत्त है।

वहाँ पर हम बार का उन्नेया करना आवश्यक है कि कों होंनैकि और सर विवस्तेन के मण्डब के अनुसार आवें । कहा इस विवस्तिय समय में मारावण में आप या । परसे आवों के पर इस न वहाँ आहर सम्बद्धा में कार्य नवा में स्वाप्त कर हमें वार्य में कार्य नवा में स्वाप्त कर हमें वार्य में कार्य नवा में स्वाप्त कर हम वार्य के प्रति में प्रति में प्रवेश कर हमन वहने कीर कार्य मारावण आपों के मण्यरण की पार्य आर समा कर उनक काल की अपन कांचार में दिनों और मण्यरण को हो अपन मारावण करना पार्य है कि हान करना से पार्य में स्वाप्त के स्वाप्त करना पार्य है कि हान करना से साम करने करने पार्य में स्वाप्त करना पार्य है कि हान करने करने पार्य में साम करने करने मारावण करने करने करने करने करने करने करने होती है तथा सम्वदेश की आधुनिक दिनी आग है आपों होता है करने सम्बद्ध कीर आधुनिक दिनी आग है करने होता करने करने साम करने साम करने करने साम करने करने साम करने साम करने करने साम करने करने साम करने करने साम करने साम करने करने साम करने साम

है आर्थ मोगों ने भारत बात स्वात में स्वाय में भाष्ट्रीयत रिशानों में गहुए बड़ अर है। बोर्स स्वायोगीया को बोर्स वर्षीय हो, कोर्स पेनल को बोर्स है हैं होती हो को दी एंगा एंग्रिया को मोर्स माम प्रायत के प्रायत है। बोर्स के स्वीय कर के स्वायत के प्रायत के प्र

एक वेद मापा प्राप्ति होने पर भी बह वेदिक युग में जन-सावारण की कच्य भाषा न थी, ऋषिन्छोंनी की साहित्य-मापा थी। उस समय जन-सावारण में वेदिक भाषा के अनुरूप अनेक प्रादेशिक भाषायें (dialosts) कच्य रूप से प्रचल्किय थी। इन प्रादेशिक भाषायों में से एक ने परिमार्जित होकर वेदिक सादित्य में स्मान पाया है। उत्तर बेदिक युग से प्राह्म-क्यायों का प्रचप पूर्व काल में आप दुप प्रवम रह के जिस आपों के मार्थों के मार्थों के प्रदेश के चारों वरने अपने प्रदेशों में कालकोरों का प्रचप स्वतर (वित्त-पूर्व के किया पाया है स्वतर्भ की से के किया की स्वतर्भ कर में अपने अपने प्रदेशों में किया मापानों में दूपरे दक के आपों को बात्सालिक साहित्य में कोई निवर्शन न रहने से बनके प्राप्तान स्वतर्भ किया मापानों के साहत्य सामार्थ के प्रवास कालकालिक साहित्य में कोई निवर्शन न रहने से बनके प्राप्तान स्वतर्भ के स्वतर्भ मापानों का बात्सालिक साहित्य में कोई निवर्शन न रहने से बनके प्राप्तान स्वतर्भ की साहत्य सामार्थ के साहत्य के सामार्थ के साहत्य के साह

विदेक गुम में को प्रदेशिक प्राष्ट्रत भागाएँ कथ्य रूप से प्रचिक्त पी, जनमें परवित-का में अनेक परिवर्तन हुए दिनमें का का लावि रखों का शर्मों के लानिम व्यान्कारों का, संयुक्त व्यान्मार्थ के का स्थानवर सुक्य हैं। इन परिवर्तनों से ये कथ्य मागार्थ प्रकुष परिमाण में रूपान्वरित हुई। इस तरह दिवास स्वर प्रकुष - प्रमाण मागार्थ में इस्पान्व हुई। इस तरह दिवास स्वर प्रकुष - प्रमाण मागार्थ माग

नहीं, बहिक मुद्रदेव ने बपना पपदेख संस्कृत भाषा में न क्लिकर कथ्य प्राकृत भाषा में क्लिकों के लिए बपने शिष्यों के लाइस दिया था। इस उपर प्राकृत भाषामं का क्रमतः साहित की मापानों में परिणत होने का सूत्रपाद हुमा, जिसके एक्लिकर परिष्या मापा की जी हो प्रान्त हुमा, जिसके एक्लिकर परिष्या मापा की जी हो प्रान्त हुमा, जिसके एक्लिकर परिष्या मापा की जी हो प्रान्त मुस्तकों की अन्य भाषाभी और पूर्व मापा में प्रान्त हुमा, जिसके मापानी भाषा प्राप्त हुमें। पाक्री मापा के उपरित्त काम भाषा के सम्बन्ध में पाद भाषा के उपरित्त काम काम के सम्बन्ध में पाद मापानों के अपनित्र मापानों में स्वत्य में पाद मापानों में स्वत्य प्राप्त काम काम काम के सम्बन्ध मापानों में स्वत्य प्राप्त मापानों में स्वत्य मापानों के स्वत्य मापानों की स्वत्य प्राप्त मापानों के स्वत्य मापानों की स्वत्य मापानों के स्वत्य मापानों की स्वत्य प्राप्त मापानों की स्वत्य स्वत्य स्वत्य मापानों की स्वत्य स्व

सर मियसैन ने यह सिद्धान्य किया है कि ब्राप्तिक भारतीय बार्य भाषाओं की करवित हितीय रूपर की प्राह्मन भाषाओं से, त्यासकर प्रस्के होय भाग में मथकित विविध बपर्यक्ष भाषाओं से हुई है और ब्राप्तिक भाषाओं को 'इतीय प्रतर की प्राह्मन (Tottiary Präkrita)' कह कर निर्देश किया है। इन भाषाओं की करवित वा सामानिक कारतीय वार्य का समय जिस्सीय द्वारा हो हा समय जिस्सीय द्वारा हो। इनका साधारण क्रमण यह है कि इनमें क्षिकांश भाषाओं की ग्रहति विवाधिक सहस्र न होकर विभक्तियों के नेपक स्वराय स्थानों का स्वराहर हुआ है। इससे ये पिरलप्तरशास भाषाएँ (Analytical Languages) करी बाती हैं।

जिस मारेशिक अपर्जरा से जिस आयुनिक मारतीय कार्य माया को प्रत्यत्ति हुई है उसस्य विषर्ण भाग 'अपर्जरा' शीर्षक में विषय जायता। सपति मेरी शायुक्तमा दिग्ये गरी है तबानि नहीं एकमान काराजन की सर्वाचिक काराज और इस्तिय राष्ट्र-कारा के बेतम हैने हैं नारता बड़ी बचे के तिए निरोध उपयुक्त सकती गरें हैं।

क्षत के बारों से नीतर क्षात्र के कर में आहत मानाओं के विशिवनीयमंत्र केन एवं बेनेतर प्राचीन तेजों के (किनकी दूस बंक्य हाई भी में भी अवारत है) व व्यविद्याल यात्र पाँच के, संदर्भ महित्यनों के विश्व करते के सभी बात्रस्थक प्रकारणों से बीर कंपूले मानाओं के विर्तुत है ता हुएने मार्थ में मार्थ प्रावचनात्रा राजने ता भी पूर्व मानुस्थनस्थार-पुत्त बुदिय का मुझे हुई हो बातकों कुरारत के रिप्त हितानों से बात्र मार्थ्य नरणा हुना यह सामा राजा है कि के ऐसे मुनों के निकल में पुत्ते वहने करने वाहित किताल में तहांकार अंदोलन ना अने साम होना हो। भी विद्यान मेरे अमानामार्थ में मार्थायिक स्वति से मुझे का हो। में माना (वन्हतात वाहित)

महि मेरी इस पृति है। आहम कार्युत्त के सम्मात में बोही की बहुमता पहुँचते हो में भाने इस हो से-काल-मानो परिपत्त की सदस कमाने था।

> व्यवस्ता ता १११८ }

इरगोविन्द दास टि सेठ

# प्रथम संस्करण का उपोद्घात

## मारतवर्ष की अधाचीन और प्राचीन मापाएँ और उनका परम्पर मम्बन्ध

मापातस्य के श्रातमार मारहपथ श्रे श्रापुनिक क्ष्य्य मापार्गे इन पाँच मागों में विभक्त की जा सकती इ. —(१) आर्थ (Aryan) (२) प्राविष् (Dravidian) (३) मुण्डा (Munda) (४) मम्-समेर (Mon-khiner) और (४) विश्वत श्रोता (Tibeto-Chinese).

मारत को बर्तमान भाषाओं में मधाठी धँगास काहिया, विद्यारी, दिन्सी, राजध्यानी, राजधानी, राजधानी, राजधानी, सिन्धी क्षीर काहमीरी भाषा आर्थ भाषा से इराज हुइ हैं। पारसा तथा बंगेओ अमेनी बादि बानक बाधुनिक युरापीय मायाकों की दल्योंन भी होती आय भाषा से हैं। मायानात साहरय को देखकर मायानत्तर प्रावामां का यह अनुसान हैं कि इस समय विश्विद्य भीर जुन्दुरायती भारतीय वार्थ-भाषा माया समस्त वावियों भीर एक मुरापीय भाषा भाषी सबक्क बादियों एक ही बार्य-वेश से उराज हुइ हैं।

तस्या, तामिक भीर मक्यावम प्रसृति मापाँ दापिड़ मापा के भरताँत हैं। कोव तथा सौंवार्त्म मापा मुण्या मापा के भरताँत हैं। कोव तथा सौंवार्त्म मापा के भरताँत हैं। का समय स्थान साम का भीर भोटानी तथा नागा मापा दिक्वत-भीना भाषा का निवृत्ति है। इन समय मापार्थ के करी किसी भाषों मापार्थ है। अपिय बनाय भाषार्थ के कही किसी भाषों मापार्थ है। अपिय बनाय भाषार्थ के की विश्व एवं स्थान करी है। अपिय साम से भाषार्थ मापार्थ के की विश्व एवं स्थान करी प्रस्ति का साम से स्थान करी है। इन भाषार्थ के साम स्थान करी के साम वह सम्मन्य नहीं का साम हिन्दी भाषि हार्य भाषार्थों के साथ वह सम्मन्य नहीं का साम हिन्दी भाषि हार्य भाषार्थों का जो पेरा गत एक्स कपक्रम होता है।

ये सब करण भागारें भाजकार जिस रूप में प्रपालन हैं, पूर्वेक्षण में उसी रूप में न थी, क्योंकि कोई भी करण माप कमें एक रूप में नहीं खती। अग्य बतुओं से तरह इसना रूप भी सदेश करणा है। उहना है—ज्य, बाक कीर करिता के साथ के पांच के प्रपालन के में से भागा का प्रपालन के माप के प्रपालन के माप के प्रपाल कर प्रपालन के सिंद के सिंद

समय य समस्य आपार्ये कथ्य क्ष्य से क्यबहर नहीं होती इसी कारण य मृत भाषा (dood languages) कहस्मती हैं। कट वेरिक आदि सब आपार्य कार्य आपार क चन्तरित हैं और इन्हीं प्राचान कार्य आपार्मों में से क्रीएड क्रमरा व्याग्तरित होकर आसुनिक समस्य बार्य आपार्ये व्याम हुई हैं।

ये प्राप्तन आर्थ भागारें कीन पुग में किस रूप में परिवृत्तित होकर कमशः चायुनिक फुण्य भागार्थी में परिणव कई इतका संदित विवरण तीचे दिया काला है।

## प्राचीन भारतीय आर्य मापाओं का परिणति कम

सर बॉर्च मियसैन ने सपनी निर्मालक वर्ष योज शिका (Lingulatio survey of India) नामक पुरास में माराक्यींव समाना जार्य माराक्षी क परिणान का जा कम दिखाना है स्तक चनुनार पेदिक माना एक साहित्य-मायाकी में सकैताबील है। इसका समय जनक विद्वानों क गत में जिलावाद 3 वर्ष स हमार वर्ष (3 7 0 B C) कीर तो किर-प्यान मेर सीवेशक संदर्ज परिणालक कीर के प्रतिकृतिक कीर्या है महत्त्व प्रतिकृतिक की स्ति कीर कीर कीर कीर कीर कीर कीर कीर्य में पाणितिनस्वति

बंदरव क स्वाहरण-द्वारा नियमिका होकर स्रोहिक संस्कृत में परिया हुई है। पाजिनि साहि क पर अपूरि के नियम-क्य संस्कृत में परिया हुई है। पाजिनि साहि क पर अपूरि के नियम-क्य संस्कृत में परिया हुई है। पाजिनि साहि क पर अपूरि के नियम-क्य स्थान होने से उसके साथ पनिष्ठ सत्याप होने से क्या का है। यह संस्कृत आया के क्ये में भी 'संस्कृत' शाम बाक के समय के अपूर्ण होने स्था गया है। पाजिनि के बाद संस्कृत आया का क्ये हैं परिस्कृत शाम का क्या है। यह परिस्कृत होने से—आया का क्ये हैं परिस्कृत साथ का स्थान होने से—आया के क्या हों। यह परिस्कृत होने से—अप्राय के स्थान स्थान स्थान होने से—आया के क्या है। या परिस्कृत के साथ से जिल्लास्त्र पूर्व सप्ता राजास्थी सोर को सिर्ह्म के साथ से जिल्लास्त्र पूर्व राजास्थी हो।

यहाँ पर हव बात का उस्केज करता काजरमक है कि बाँ होंगींछ और सर मियर्सन के मजस्य के जनसार आयें हातों के दा रख सिम्म्म्यम समय में भारवारों में भार या । पहले मानों क एक दक न यहाँ आहर सम्पन्तर में सपन वर्गानेकेश की स्थापना की थी। इसके कर भी वर्गों क वह मानों क पुत्तरे रखन ने अगर मिकार में दिखा और स्थापन कि के केर बीर वैक्षिक तावता आयों के माय्येश की वारों भार भाग कर उनके स्थान के अपन मिकार में किया और सम्बन्ध का की अपना वाध-स्थान वादम किया। क्या बिहारों के यह मत्याय इसक्षिर करता पड़ा है कि सम्पन्तर के चारों पार्ची में स्थापना माया कि पहिल्ला महाप्याप्त कि का स्थापन की और उन्हों की महोदों की चार्चीन कार्यों करन भागाओं में पराया जो निकार में की जारी है जबा सम्पन्तर की प्रशान कि हिन्दी माया [ पाद्यारय दिन्दीं ] के साथ उन सब आनतों की भागाओं में को भर पाया जाता है क्या निष्टरता और अब काम्य कोई बार विज्ञान असम्बन्ध है। सम्पन्तरामां न्य सुन्तरे रख के आयों का उस समय का जो साहिस्य और जो सम्पन्तरा

एक बद-भाषा प्राचीन होने पर भी वह वैदिक मुत में अन-साधारण की कथ्य भाषा न थी, ऋषि-स्रोगों की साहित्य-मापा थी। उस समय जन-साधारण में बैदिक मापा के अनुरूप अनेक प्रावेशिक भाषाएँ (di decta) कथ्य रूप से प्रवक्ति थीं । इन प्रावृशिक भाषाओं में से एक ने परिमार्जित होकर पैदिक साहित्य में स्थान पाया है । ऊपर पैदिक बग से पूर्व काछ में आप हुए प्रथम वह के जिस आयों के सम्पर्वेश के पारों धरफ के प्रवेशों में उपनवेशों प्रस्तृत-मानामी का प्रयम का अस्तेश किया गया है उन्होंने बैदिक युग अधवा उसके पूर्व बाढ़ में अपने अपने प्रदेशों की अध्य स्तर (श्वस्त-पूर्व भाषाओं में दसरे दह के आयों की बेद-रचना ही तरह, किसी साहित्य की रचना नहीं की थी। २ देखिल इससे वन प्रावेशिक आर्य भागाओं का वात्कालिक साहित्य में कोइ निवर्शन न रहने से उनके 9440) प्राचीन रूपों का संपूर्ण क्षेप हो गया है। बैदिक कारू की भीर इसके पूर्व की उन समस्त कच्य भाषाओं को सर प्रियर्सन ने प्रायमिक प्राकृत (Primary Prakrit ) नाम दिया है। यही प्राकृत मापा-समृह का प्रथम स्तर (Pi st stage) है । इसका समय जिल्ल-पूर्व २००० से जिल्ल-पूर्व ६०० तक का निर्दिष्ट किया गया है । प्रथम स्तर की ये समस्त प्राकृत मापाएँ स्वर और व्यवस्थान आहि के उच्चारण में तथा विभक्तियों के प्रयोग में वैविक आया के अनुकर बी । इससे ये मापाएँ विमक्ति-बहुछ (synthetic) कही जाती है ।

बिहेक बुग में जो प्रावेशिक प्राकृत मागार्थे क्रव्य रूप से प्रथावित थी, वनमें प्रश्वित क्षमें अनेक परिवर्तन हुप बिनमें का स लाहि स्वरों का शान्यों के लिनम क्ष्यव्यनों का, संयुक्त क्ष्यव्यनों का तथा विभक्ति और यक्षन-समृह का क्षेप्य या स्व्यान्तर मुक्य हैं। इन परिवर्तनों से ये कृष्य मागार्थ प्रजुर परिमाण में रूपान्तिश्च हुई। इस तरह द्वितीय स्वर प्राकृत व्यवस्थे का दिलीय स्वर (व्यव्य-वृद्ध) की प्राकृत मागार्थों की उत्पर्षि हुई। द्वितीय स्वर की ये मागार्थ जैन और बौक्ष स्वर (व्यव्य-वृद्ध) के मनार के समय से अर्थान् किस्तल-पूर्व पर क्षान्ति से प्रकृति साहित प्राकृत मागार्थी से वे शिक्तान्त्र से से प्रकृति से स्वर्ध से सामार्थे से से प्रकृति स्वर्ध सामार्थे

मही, बल्कि मुद्धदेष ने अपना पंपदेश संस्त्य भाषा में ने हिलाकर कथ्य प्राक्षण भाषा में क्षित्रने के लिए अपने शित्यों को आदेश दिया था। इस वरह प्राक्षण पायामी प्राक्षण हमा, जिसके अपने भाषाओं में परिणत होने का पूचपात हुआ, जिसके अपने प्राप्त परिणत परिणत होने का पूचपात हुआ, जिसके अपने प्राप्त परिणत परिणत मान की से के क्षेत्र भाषाओं और पूर्व प्राप्त में प्राप्त है अपने भाषाओं और पूर्व प्राप्त में प्राप्त के क्षा के प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त के क्षा के प्राप्त में प्राप्त के सम्याप में पार्ट्यार दिवानों का जो मतमेत्र है वसका विचार हुआ आप जर करें। क्षिताव्य से २१० वर्ष पहले वसत्य प्राप्त में प्राप्त मान में प्राप्त में प्राप्

सा प्रियर्सन न यह सिद्धान्त हिथा है कि लापुनिक भारतीय आर्थ भागाओं की लच्चि द्विरीय स्तर की आहुन सायाओं से, लासकर लच्चे रोग भाग में प्रचटिक विश्वस अपभंत सायाओं से हुई है और लापुनिक भागाओं को ततीय प्राप्त स्वपाने का तृतीय कार का साहकिक लासीय वार्य सायाओं की जातीय की लासीय द्वाम राजाओं है। इनका सायाग्य लड़का यह है कि इनमें अधिशंत स्वपाने की लासीय द्वाम राजाओं की प्रकृति विभक्ति नदुस न होक्स विभक्तियों के बेपक स्वपन्न सायों का स्वपन्न स्

जिस महर्शिक अपभौग से जिस आधुनिक भारतीय आर्थ माथा की करांचि हुए है इसम विवरण आरा "अपभौग्र" शीर्षक में दिया जायगा ! बा करनेम किया ह बही मी भूग राज्य का अब द्वासाया हा हूं। य सब जुआ या प्राहरितक सावर्षे निकरितक करों के विश्वर्ष आप अगी की हा कथ्य मावर्ष भी। इन मायाओं का पंजाब और मायारा की कथ्य माज करने अन्य अगी में प्रीमाश्यक पाय मिर्ट्या क्या में प्रीमा अगु में भूग भी था। दिस जिस और में उन मायाओं का पंजाब के राज्य क के बारत भाषा के पाय भेद या कथ्य में जिन विश्वरीयक्ष नामी न और बालुओं न प्राहरित में साव क्या है है है है महत्य करती वा इस्त ग्राहर।

प्रकृत रेपाइएगों ने उन समस्य देखा गाड़ी में अनक नाम और धानुओं को संस्कृत मानों के और धानु है है है। यहां कारण है कि आधार्य हमक्य ने कर देशि नामाय के बाद कर के कि सी माने कि सामाय है कि आधार्य हमक्य ने कर देशि नामाय में काम देशी नामों का ही सेना हिना है और देगी धानुओं का अपने आहत क्याइस में संस्कृत कारों के धानु में का अपने आहत क्याइस में संस्कृत कारों के धानु में का अपने माने माने कारण में कारण के सामाय हम प्रकृत के सामाय और धानुओं के आदश्च कर में निष्यान करने पर भी तहा करी कर प्रकृत के साम और धानुओं के आदश्च कर में निष्यान करने पर भी तहा करी कर प्रकृत के सामाय और धानुओं के आदश्च कर में निष्यान करने पर भी तहा करी कर प्रकृत के सामाय करने पर भी तहा करी कर प्रकृत कर सामाय करने पर भी तहा करी है।

गाँ भीई पामार मानात्रका ना यह मन ह कि उक्त द्वारी शाब्द और बाह सिकानिया देशों की इर्तन कर कि पांच समय भागाने ने सिंग गए हैं। यहाँ पर यह दर्दा जा महना है कि यदि साधुनित अनाये भागाने में रूप रहे राशों भी देशी-साधुने में पर पर पर करा जा यह अनुमान करना करांग नहीं है। किन्तु कपण वह सम्मीन वर्दे के देशी शहन भी भागाने में मान करना करांग नहीं है। देशी शहन भी राष्ट्र भी राष्ट्र मार्थ समाने माने के प्राचित करना के देशी शहन होता है। इस अनाये भागाने में देश नहीं के स्वाच माना में देश नहीं के स्वाच माना में से मान देश होता है। इस अनाये भागाने में देश नहीं के देश शहन करना माना में से देश समान करना करना करना करना माना में से देश समान समान करना जा सकता है। हो, जा समान स्वाच सामान से देश समान स्वच सामान से सामान है। से सामान सामान से सामान से सामान से सामा

हों. बाजरन (Cible ) अस्ति क मन में बहुद और खीडिक संद्रत में भी अनक राज्य हारिश्चेय सामग्रें मा नृदेन हुए हैं। बह बान भी शीहाय ही है बशींड हारिश्चेय माना या जिस साहित्य में ये सम शान्य पात जाने है बा बहुद मोनून क माहित श शाक्षन सरी है। इसम बेहिक हारिह्य में या स्वय शान्य हारिश्चेय भागा सा ग्रहा हुँ है इस अनुसान की आधा आ अंधी की माना साहित्य में या समा शान्य किए गाए हैं बह अनुसान की आधा आ अध्यो की माना साहित्य में या समा स्वाह का है बह अनुसान है।

दिन कोईकि देवी भागाओं ना च नाव दशी शब्द ब्राइटर ताहिए में मूटिय हुए हैं वे वृत्तींक प्रवन हर है वर्ष भागत भागाओं के प्रभागत और वनती नामनामिक हैं। दिस्त-पूर्व पद शताबार के बाने वे से देतीयागार्व कर्यालन भी द्वास स दश्य शब्द अवाधीन नहीं, दिन्तु बदने ही प्राणीन हैं क्रिकेति वैदिक शब्द।

दिनीय गत की प्राहत पाताओं की अरविन—विस्त्र का मीविक संस्कृत से मही, विन्तु

'तत्' राष्ट्र का सन्त्रम्थ संस्कृत से छ्यास्त्र इस मत का अनुसरण किया है'। क्वीपण प्राकृत-स्यातरणों में प्राकृत राष्ट्र की स्युत्तित इस तरह की गई हैं —

'महति संस्कृतं तम समें तत सामते मा भाहतम्' (हमनन प्राम का ) ।
'महति संस्कृतं तम ममें प्राप्तकृत्यते' (माम्वयसेस्स) ।
प्रहृति संस्कृतं तम ममें प्राप्तकृत्यते' (माम्वयसेस्स) ।
'महति संस्कृतं तम ममें पात माहती मता' (पर्गापामितमा) ।
'महत्यत्यत् पुत्रसीम संस्कृतं योगि' (महत्वतंत्रस्म) ।
'महत्यत्यत् पुत्रसीम संस्कृतं योगि' (महत्वतंत्रस्म) ।

इन ब्युत्पत्तियों वा तात्त्व यह है कि माइन शब्द 'प्रकृति शब्द से बना है, 'प्रकृति' का अर्थ है संस्कृत मापा, संस्कृत मापा से को बस्यन हुई है यह है भावत मापा।

प्राकृत वैवादरणों की प्राकृत शरूर की यह क्यावया अप्रामाणिक और अवशायक ही नहीं है, माया-वरन से कार्याव मी है। अप्रामाणिक स्विधिय वहीं जा सकती हैं कि प्रकृत शरूर का मुख्य अपे संस्कृत भाग कमी नहीं होता—संस्कृत के किसी कोच में प्राकृत शरूर का यह अप वरवस्प नहीं हैं जीर गीण या ज्यावणिक वर्ष वरवस्प नहीं किया जाता अववस्य मुख्य क्ये में साथ गरूर के यह अप वरवस्प नहीं हैं जीर गीण या ज्यावणिक वर्ष वरवस्प नहीं किया जाता अववस्य मुख्य क्ये में साथ नहीं वर्ष कर साथ में स्थाव अपया जाता मायाण तन में दिसी तरह का बाय भी मही हैं। इसने रच्ट क्युप्तिक स्थाव में प्रवृत्त कर में स्थाव अपया जाता मायाण साथ में सहीं तरह का बाय भी मही हैं। इसने रच्ट क्युप्तिक स्थाव में सहस्य कारों के अपया प्रवृत्ती साथ अपया प्रवृत्ती साथ कार्याव मायाण कर साथ में स्थाव की मायाण कर कर मायाण कार्याव के साथ प्रवृत्ती के साथ मायाण कर साथ

१ 'कहतेः संस्कृतासमार्थं प्राप्तयनं (बाग्यधानंशास्त्रीशा २ २)६ संस्कृतकरायाः प्रकृतिस्तानसम् प्राप्तुत्रमं (क्रम्पारस्य शे से सेमकन्त्र वर्षवागीरमस्य सेका १ ३६)।

२ "महत्विभित्रितिस्त्रो । पीरामात्याहितोषु 50नान्यावस्थायोः । प्रायापु पूर्ववरायो प' (स्रोरापेश्वेवह ००१-०) । १ स्वास्थ्यात्यः पुरुषोत्रो पन्यपूर्ववतानि थ ।

चण्याद्वानि प्रश्चयः बीचलां भेलयोजी च । (प्रविधानीवन्तामणि ३ १४४)।

### द्विवीय स्वर की शास्त्र मापाओं का श्विहास

प्रसहत क्षेप में द्वितीय स्तर की साहित्यक प्राकृत भाषाओं के राष्ट्रों को ही स्थान दिया गया है। इससे इन आवाओं की करात्ति और परिपति के सम्बन्ध में यहाँ पर कुछ बिस्तार से विवेचन करमा आवश्यक है ।

माधारणक क्रोगों की यही बारजा है कि संस्कृत भाषा से ही द्वितीय स्तर की समस्त प्राकृत भाषाएँ और खालुमिक सारतीय भाषाएँ नराम हुई हैं। बई प्राक्टन-वैयाकरणों ने भी व्यप्ते प्राकृत-व्याकरणों में इसी सद का समर्थन किया है। परना यह गठ वहाँ तक सरव है इसका विचार करने के पहले इन भाषाओं के भेदों को जानने की खत्यत है।

शहर ना बंस द-वाफेल आहर वैवाध्यमां ने आहर आपाओं के राष्य संस्कृत राष्ट्रों के साहरूब और पार्वकृत के धानसर इन वीन भागों में विभक्त किय हैं -(१) वस्तम (२) वद्भव और (३) वेदस या वेशी।

- (१) जो शब्द संस्कृत और प्राष्ट्रय में बिख्कुछ एक रूप हैं बने से 'चल्ला पा 'संस्कृतसम' बढ़ते हैं वैसे--सम्बंधि मानम इन्ह्या देश, बत्तम अवा एरंड धीकुर, बिकुर, बान परा पहार, वित्त वन का काहार, बहुए, वितन कनार, विश्विद, वन वन्त बीद वरियत पत्न वह धार मरण रथ बन बादि सुबद, हदि बच्छन्ति हरन्ति प्रसृति ।
- (२) वो शब्द संस्कृत से वर्ण-क्रोप, वर्णांगम धवना वर्ण-परिवर्तन के द्वारा करनम हुए हैं वे 'कडून' अवना 'संस्थातम' ब्रह्मते हैं, वैसे--पर=पाप धार्व=पारिय, छ=च्छु हैमाँ ≈हिस, क्रम=क्रमा क्रम्स =क्रम वर्षर= क्षान्त्र, पर = क्या वर्ते = क्या वर्त = व्यक्त क्षीय = क्षेत्र, परा = वर्गक व्याप = ग्राम् क्रीय = वर्ष = ग्राम्, निक्री = निक्रम इष्ट = निष्ट वार्मिक = वस्मित्र परवार् = पन्ना रस्त्री = पंत वदर = वीर, सार्व = मारिया मेव = मेह, सर्वव = प्रशा केत = सेस रेंच = देश हरत = दिसस क्लीत = इंग्ड नेसरि = रिसर, प्रकारि = पुन्तर, स्कारीत् = सकासी, संविध्यति = होसिर हरपावि ।
- (4) जिल राष्ट्रों का संस्तृत के साथ क्ष्म भी सादरव नहीं है—कोई भी सम्बन्ध नहीं है, बनको बेहर्य का दिशी? बोस्स जाता है। यहा--याव (देख), माकायिक (पर्याप) इतन (हस्ती) ईप (क्रेक्टक), ज्यावित (प्रचन्न) क्रस्य (ठरवान) एतमिल (बताल्य, बुरम) योक्त (बनिनक्क) बेरोटू (कुनुद) बुद्धि (बुरा) मनसातव (बिराड) वह (सूर), चन्क्टर (कार्तिक) संतुर्द (कार्रिकचू), बच (पुरा) करून (शीम), टेका (बहुत) तथ (शाबा) देतर (शिक्षम रूमी) शिक्षिपरिम (बुटिय) शोनसी (बला), बांगिस (मिस्सूर) वार्डि (तुक्क), वरण (तृष्क) विश्वेत (निवेद) गीक्रमा (करोटेका) पुटा (केर-क्या), किह (तुव) श्वेष (तुकर) महा (वकास्तार) गीत (बाजा) क्षेत्र (इत्हूट) निक्तह (बपूह) धनपद (बीज) हुए (बिन्हूब) च्या (दार), बुगह (निनक्यि) क्षित्र (स्ट्राफ्ट) देखह, निमन्दार (परपति) कुल्बर (मरपति) चीन्पत्र (कति) महिराण्ड्रपद (गृहारि) मसूरि ।

उपमेल विभाग प्राकृत के साथ संस्कृत के साहत्व और पामेक्स के ऊपर निर्भर करता है। इसके सिना संस्कृत और ब्राह्त के प्राचीन मन्वजारों ने प्राहत भाषाओं का बीर एक विमाग किया है की प्राहत सावाओं के कराविन्यानों से संबक्

प्राप्त के प्रार्थीन मन्त्रारों न माइत सामाश का कार पर प्रमाण क्या के आहत सामाश के करा प्रत्याना से करा किया है। यह भोगोबिक विभाग (Grographical Obselfication) क्या का सकत है। नरह-अग्रेत प्रत्यामी ना प्रश्नेत करे तोते माठव-राज्य में सात सामाओं को बा मागणी अवस्थिता माच्या स्ट्रेसीय कर्ममागभी बाह भ्रीना और साहित्याला से माम हैं, चयह के प्राकृत-स्वाकृत्य में को पैताबिक और

मारापिता ये साम मिक्के हैं, इण्डी ने शब्सावर्ष में अं महाराष्ट्राक्या, शीरपेनी गौबी कीर करी च नाम दिए हैं आचार्य देमचन्द्र आदि ने मातथी शीरसेनी येताची और चूसिसरितायिक क्यू कर जिन चार्मी का व्यिरेश

१ "वानम्बरन्तिना प्राच्या सुरनेम्यर्वनावती ।

बाहीचा वाजिएात्या च सत्त वायाः वदीविताः ॥ (वाकसास १ ४८)।

पैकावित्वां प्रत्योत्तेती' (प्रत्यक्तप्रशः) ।

३ "नार्गावरामा रनयेलीती" (बाहतनात्त्व ३ ३३) ।

४ महाराष्ट्राययो मार्चा ब्रह्म ब्राह्म दिन् । भाषक नात्र स्थानं हेनुसन्तारि समास्त् ॥ शीरोधी व नीडी व बारी वस्ता व ताहती।

वर्गीय प्रदानित्येषं व्यवद्वारेषु बांत्रनित् ॥" (शास्त्रादर्श १ १४) ।

किया है और आकैण्डेय न अपने प्राकृतसकैश्व में प्राकृतकियुक्त के कविषय इसों के उद्भुत कर महायाणी, आपनी -रीरिसेनी, अर्थमागयी, बाइक्रिके, मागयी, प्राच्या और हाविक्रालय इन माठ मायामों के, खह दिमायाओं में प्राविक्र और लोक्ड इन हो दिमायामी के, स्वाद दिमायाओं में अध्यक्ष इन हो दिमायामी के, स्वाद दिमायामों के आहमादशीय राण्ड्य, पाण्ड्य, पाण्डमा , गीड, मागम प्रावक्ष, विद्याल, त्राहिणारा, शीरिसेन कैट्य और प्रावक्ष, वस दियाय मायाओं के और सवाहें म अपने मों में बायह, अट, देवने, सादे, आहम्य पाण्ड्याल, टाइ सास्य केट्य, गीड, पृष्ट, हेन पाण्ड्य, कीण्डल, सिद्ध कालिक्ष, प्रायय कार्णट काल्ड प्राविक्ष, गीजीर, आर्थार और प्रस्यदेशाय इन तेइस लपन सों के जिस नार्मी हा कल्लेल किया है ये उस, भिम्मिन दश से ही अंक्षण दलने हैं जहाँ वहाँ वर्ष दिस्पन भाग दिसायामी क्रियायामी हैं। वर्ष माया की साथायामी क्रियायामी हैं। व्यवस्था करी हैं। स्वाय दिसों हैं यह दिसाय दिसों के दिसायामी कीर प्राविद्यालया हैं। यह दिसाय है यह दिसाय कार करी की स्वाय कीर प्रसाद अपने कार की साथायामी कीर प्रसाद से प्रसाद है। वह साथायामी कीर प्रसाद से प्रसाद कार आहम हम कर कर से कहा है।

पूर्व में प्राष्ट्रत भागाओं के राव्हां के जा बात प्रभा दिखाय हैं उनमें प्रथम प्रभा के वासन राव्ह सीस्टर से ही सब देशों के प्राष्ट्रत में उन्हों के प्राष्ट्रतों में जिने गय हैं। दूसरे प्रभा के सदूनन राव्ह सीस्टर से उत्पन्न होने पर भी प्राप्टर वेदावरणों के यह के कारक समें निमानीमा देशों में मिमानीमा पर की प्राप्त दूस हैं और दासरे प्रभार के देशय शाहर तथन चाहि कारों वैदिस भागा शिकिक सीस्टर से उत्पन्न नहीं हुए हैं, किस्तु निमानीमा देशों में प्रपत्नित भागाओं से प्रश्ति हुए हैं। प्राष्ट्रत वैदायरों का यही यह है।

### वेदय सम्द

वहते प्राइत भाषाओं हा यो भीगाविक विभाग बताया गया है, ये दुरीय प्रहार के देशीशब्द हती भीगोविक विभाग से उत्पन्त हुए हैं। यहिक भार ओकि संस्कृत भाषा पंचाव भीर मन्वदेश में प्रवृक्षित विद्युक्त पूत कार्क की प्राइत भाषा से उत्पन्त हुद है। पंचाव और मन्वदेश के पाहर के अन्य प्रवृत्तों में बत समय बार्य कोगों की यो पादेशिक प्राइत भाषार्थ प्रवृत्तिक भी वन्हीं से य देशाशब्द गृहीत हुए हैं। यही

दारण है कि विदेक और संस्कृत साहित्य में देशीशन्दों क अनुरूप कोई राज्य (प्रतिशब्द) नहीं पाया जाता है !

प्राचीन चार में भिमानिस प्रादेशिक प्राष्ट्रत भागाएँ ह्यात थी, इस बात का प्रभाग क्यांस के महामारत, अरत क भाग्यशास श्रीर वास्त्यायन के कामपुत्र आदि प्राचीन संस्कृत प्रम्यों में बीर जैनों के ब्राजायनेक्या, विश्वकृष्ट्य, श्रीरपादि कमूत्र तथा राजपद्गीय आदि प्राचीन प्राकृत कर्यों में भी भिस्ता है। इन प्रन्यों में 'नानामाया' इंग्रभाया या 'देशीमाया' जान का प्रयोग प्रावेशिक प्राकृत के वर्ष में है। किया गया है। चंड ने अपने प्राकृत क्याकरण में जहाँ देशीप्रसिद्ध प्राकृत

```
१ व स्तीक पैतानी बीर 'मरभेश' के प्रकरण में पिए गए हैं।
```

२ शुरकेनोक्करना बापा शीरनेनौति नीयते ।

मनबोग्पप्रभागं तो मानबी संबद्धते ।

रिसाबदेयविषरं पैरावीदिसयं बनेत् ॥" (पर्मापावित्रका कुछ २) ।

६ जानावर्षमिष्ठण्यमा नानाभाषाव भारतः। मुखना वृद्धभाषामु बहान्तोप्रयोग्यपीषया (महामारतः राज्यपर्वं ४६ १ ६) । भारत कर्म्यं बहरसावि वेषमायाविकस्तानः।

<sup>&</sup>quot;सबका च्यन्वतः नार्या देशसाया प्रयोग्द्रनिः" (शालकास १७ २४-४६) ।

<sup>&</sup>quot;नायाचं संस्टोतेन नायाचं देशसायया । क्वां सोप्प्रीपु कवर्यक्रोक्षे बहुवदो भरेत्" (कानसूत १ ४ १ ) ।

<sup>&</sup>quot;कंड गे के मेहे कुमारे. बहारमितिहणवारक्साभासाविकारय... होत्याँ "तम्ब ग्रं चंत्राप् वयरोव देवदता नाम चांगुवा परिवनद सम्बद्ध ......अहुरस्मदस्सामासाविकारयाँ (बाजयर्वनकापून पत्र ३८) ६२)।

<sup>&#</sup>x27;ताव ए बालियमामे कावरक्या लाम ब्रिया होत्या ...अहारसन्सीवानाविधारमा" (विपाक्य व पत्र २१ २२) ।

वर त बराराको सारा..... अट्टारसदस भासाविकार्य" (वीत्तर्यक्र मृत्र, रेख १ १) । "वर ते वे बराराकाने सारा...... अट्टारसपिट्यमिलमार्यभासाविकार्य" (वस्त्रकीयमूत्र वस १४०) ।

४ "निर्दे महिने बेग विमारत माहि -- बेरहिनोहि ... , हैरहिनमें .... देशीयविक तक्षेत्र हुनित क स्कृतिमाँ (ग्राहतनमारा कुछ १-२)।

हा बस्तेल किया है बहाँ भी नशी राज्य का कार्च हैशीमाणा हो है। ये सब देशी था प्रावेशिक माणाएँ निकर्नमन प्रदेशों के निवासी आर्थ क्षेणों की ही कप्य माणाएँ थीं। इन माणामें का पंचाब और माण्यदेश की कप्य माणा के साब अनेक कोरों में बंध साहाय था देसे किसी किसी और में भद भी था। जिस जिस और माणाओं का पंचाब और माण्यदेश की प्राहुठ माणा के साब भद या करमें से जिन मिन्न-किस नामों ने और भातुओं ने प्राहुठसाहित्य में स्थान याथा है ये ही हैं मालूठ के करी वा देश राज्य।

प्राहन-देवाकाओं ने ना समस्त देश्य राष्ट्रों में अनेक गाम और पातुओं के संस्था नामों के और पातुओं के स्वान में आदेश-द्वारा सिद्ध करके बद्धन-दिमाग में अन्ताने किए हैं। यदी कारण है कि व्यानार्थ है समस्त ने अपनी देशीनामसाला में केशक देशी नामों का ही संस्कृत पातुओं के कादेश-स्था में संस्कृत पातुओं के कादेश-स्था में करने प्राहत-पातुओं के बादेश-स्था में करने प्राहत-पातुओं में ही के हैं। या सब माम और पातु संस्कृत के ग्राम और पातुओं के बादेश-स्था में निष्यम्त करने पर भी बद्धन नहीं कई बादेश-स्था में निष्यम्त करने पर भी बद्धन नहीं कई बादेश-स्था में निष्यम्त करने पर भी बद्धन नहीं कई बादेश-स्था में निष्यम्त करने पर भी बद्धन नहीं कई बादेश-स्था में निष्यम्त करने पर भी बद्धन नहीं कई बादेश-स्था में निष्यम्त करने पर भी बद्धन नहीं कर बादेश स्था सामों स्थान के साम हम में बाद्धन नहीं कर बादेश स्थान करने पर भी बद्धन निष्यम करने पर भी बद्धन निष्य करने पर भी बद्धन निष्य करने पर भी बद्धन निष्य करने पर भी बद्धन निष्यम करने पर भी बद्धन निष्य करने पर भी बद्धन निष्यम करने पर भी बद्धन निष्यम करने पर भी बद्धन निष्य करने पर भी बद्धन निष्यम करने पर भी बद्धन निष्य करने पर भी बद्धन निष्य

कोई कोई पामाल्य भाषावरूवत का यह मत है कि चक देशी राष्ट्र कीर पातु मिक्स मिक्स देशों की हार्विक प्रुण्या वार्ष्ट्र कार्य भाषाओं में इस पर है। वहाँ पर यह कहा वा सकता है कि परि कार्युत्तिक करायों भाषाओं में इस देशी राष्ट्र कीर विद्यालयों की प्रयोग एक्सक हो को वह अज्ञान कर सामाल में हैं। किन्तु करकर यह प्रमाणित हो कि कि परि हो कि परि कार्योग एक्सक हो को वो पह अज्ञान कर सामाल हो के कि पर हो कि पर हो है पर इस प्राप्त के सामाल कर हो कि पर हो है पर हो है पर है के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त कर भाषाओं में है प्रमाण हो के स्वाप्त कर प्रमाण हो के स्वाप्त कर कर भारत मायाओं से हो के देश यह अनुमान कर भारत हो कि हो है पर साम और पातु कार्य का अनुमान कर प्रमाण हो में कि स्वाप्त कर हो है के स्वाप्त कर हो है है के से है से साम के साम

वॉ बाहब्येस (Cakineti) प्रकृति क अन में बिहक और क्षीकिक संस्कृत में भी कतक शब्द ब्राविकीय भागामें स गृहीत हुए हैं। यह बात भी संवित्त्य ही हैं, बसोंकि ब्राविकीय भागा के जिस साहित्य में य सब शब्द पाये जाते हैं वह बहिक संस्कृत क साहित स नाकीन नहीं हैं। इससे वैकिक साहित्य में य सब शब्द ब्राविकीय भागा से सृहीत हुए हैं' समान की असेशा "जाये क्षेगों की भागा से ही क्षत्रमों की भागा में ये सब शब्द किया गए हैं' यह करनान ही विस्तुत कीक सहस पहला है।

बिन प्रादेशिक देशी-आधाजों से ये सब देशी शाष्ट्र प्राहक-साहित्य में गूडीव हुए हैं वे पूर्वीक प्रथम स्टर थी तत्रव आहुत माणाओं क जन्मोठ और उनकी समसामिक हैं। किस्त-पूर्व यह राठाव्यी के पहसे ये सब देशीमागार्थ अवस्ति वी इससे व देश्य राज्य कर्याचीन नहीं किन्नु उतर ही प्राचीन हैं जितने कि वैश्विक राज्य।

दिवीय स्तर की प्राष्ट्रत मापाओं की उत्पत्ति—श्रिक या जीकिक संस्कृत से नहीं, किन्तु भयम स्वर की प्राकृतों से

मारत के वेपारप्रभाग मारत राष्ट्र के स्मूतांत में मध्ति क्षत्र का लगे संस्कृत करते हुए मास्त भाषाओं की संस्कृत की कर संस्कृत सामानत है। संस्कृत का का असंसर साखों के टीजाशरों में भी तदस और तरसम राखों में सिस्त

र देवो हेवला-कारत-साहरता के तिरोध बार के रिष्ण १२८ १३४ १३६ १३ (४१ १४४ वरीरह मूल बीर लड्डा बार के व व भ र. १ ११ १२ वर्षात सुर्व

१, नने फारेश्योत्र संदश क्षी क्षणांक्रवीकारेटीताः (है आ ४ १) क्षणीत् वाय विक्रानी ने नजर पज्यर, क्यांन ब्रह्मी बाहुर्ये सा या हेटी में दिया है, हो वी दस्ते तरहर मानु के वारेठन्त है ही ये बही बहार हैं।

'तुन' शब्द का सम्बन्ध संस्कृत से खगाउर इस मत का अनुसरण किया है । क्रियय प्राकृत-स्थाउरणों में प्राकृत शब्द की क्याराचि इस तरह भी गई है

'प्रकृति' संस्कृतं तत्र भवं तत सामर्तवा शाहरतम्' (दिमवस्त्र प्रा स्था )। 'प्रकृति: संस्कृत तम भनं प्राहतपुष्पते' (प्राकृतसर्वस्थ) । 'प्रकृति' संस्कृत तम समामाय प्राप्तते स्पृतम्' (प्राप्तवनिद्यमः) । 'प्रइतेः संस्कृतायास्तु विकृतिः प्राइती मता' (वर्ष्ट्रापापत्रिका) । 'प्राकृतस्य त् सर्वमेव संस्कृतं योति" (प्राकृतसंबीवती) ।

इन व्यास्त्रियों का ताल्पमें भइ इं कि प्राक्तत राज्य प्रकृति शब्द से बना है, 'प्रकृति' का अर्थ है संस्कृत मापा, संस्कृत मापा से जा उत्पन्त हुई है यह है प्राप्तुत भाषा ।

प्राक्त वैमा रणों की प्राक्त राज्य की यह क्याक्या अप्रामाणिक और अक्यापक ही तहीं हूं, मापा-तर्य से असंगत मी है। अप्रामाणिक इसलिए कही जा सकती हैं कि प्रकृति शब्द का मुख्य अभे संस्कृत भाषा कभी नहीं हाता-संस्कृत क किसी कोप में प्राकृत शब्द का यह अर्थ उपलब्ध नहीं है और गीण या स्मूक्तणिक अर्थ तक्तक नहीं किया जाता अवतक मुख्य अर्थ में बाब न हा । यहाँ प्रकृति राज्य के मुख्य अर्थ स्यभाव अमया विन सामारण हान में किसी तरह का बाध भी नहीं हो । इसमें उक्त ब्युरपत्ति क स्थान में 'प्रहरण स्वमावेन विश्व प्राहतप' सथवा 'प्रहरीतो सावारलकानानिव प्राहतप' यही ब्युरपत्ति संगठ और प्रामाणिक हो सङ्गी है। लम्पापक कहन का कारण यह है कि प्राप्टन क पूर्वीक तान प्रकारों में सरसम और बद्धम शब्दों की ही प्रवृति उन्होंन संस्कृत मानी है बीसर प्रकार के ब्रय शब्दों की मही, अथय वृत्य का भी पाकुत कहा है। इससे दृश्य प्राकृत में यह ब्युस्पत्ति असू नहीं होता। प्राकृत की संस्यृत से उत्पत्ति माया-तस्त्र क सिद्धान्त से भी संगठि नहीं राजी, क्योंकि केदिक संस्कृत और खीकिक संस्कृत ये दोनों हो माहिल की माजिठ मापाएँ हैं। इन दोनों भाषाओं का व्यवहार शिक्षा की अवभा रहता है। अशिक्षित कहा और बालक क्रेंग किसी काढ़ में साहित्य की भाषा का भ तो स्वयं रूपवद्दार फर सकत हैं और न समक ही पात हैं। इसिंखए समस्य इसों में सर्पता ही अशिक्षित सागों के ठववहार के खिल पर रूप्य भावा बाल् रहती है जो साहित्य की मापा से स्वतन्त्र-अलग होता है। शिक्षित स्वती को भी श्रीरिशित खेगों के साय बातचीत क प्रसंग में इस कच्च भाषा का ही क्यवदार करना पहना है। यदिक समय में भी ऐसी कृष्य भाषा प्रचलित भी । और जिस समय छोडिङ संस्कृत भाषा प्रचलित हुइ उस समय भी साचारण छोगों की स्वतन्त्र क्रव्य भाषा विद्यमान थी यह नाटक मादि में संस्कृत मापा के साथ प्रावृत मापी पात्रों के उन्होत्र से प्रमाणित होता है।

पाणिनि न संस्कृत भाषा को जो क्षीकिक भाषा कही है और पतकतिक ने इसके जा सिट-भाषा का नाम दिया है. उसस्य मनवा यह नहीं है कि वस समय प्राहत भाषा थी ही नहीं, परमु उसका अमें यह है कि वस समय के शिक्षित छोगों के आपस के पार्तीव्यप में, बतमान बाज के परिवत कोगों में संस्कृत की तरह भीर भिमारेशीय खोगों के साथ के व्यवहार Lingua Franca पी मास्त्रिक संस्कृत मापा व्यवद्वत होती थी । किन्तु बास्त्रक, स्त्रियों और अशिश्वित स्रोग स्वपनी मात भावा में बातपीत करते ये जा संस्कृत भिन्न सायारण कृष्य भावा थी। सायारण कृष्य भावा किसी हुत में किसी कार में साहित्य की भाग से गृहीत नहीं होती, बनिक साहित्य भागा है। जन-सामारण की कम्प भागा से उत्पन्न होती है। इससिए 'संस्कृत से प्राचन मारा की दर्शांच हुई है' इसकी अपेक्षा 'क्या वो बेदिक संस्कृत बीर क्या सीकिक संस्कृत दोनों ही उस समय की प्रावत मापाओं से कराम दूर हैं। यही सिद्धान्त किरोप युक्तिसंगत है। आजक्त क मापा वस्वकों में इसी विद्वान्त का अधिक आदर रामा जाता है। यह सिद्धान्त पारपारय विद्वानों का कोई मृतन आयि हार नहीं हैं आरतकों के

१ भारते संस्थासम्बद्ध (बाम्ममसंकारोका २ २) संस्थावकामा प्रातिकासमान् प्रातिक (बाम्मसर्गः की प्रेयकन **वर्षनायीरा-इत दोशा १ ३३)** ।

२ 'बहर्तिवीनिर्धालनो' । शेरामाध्यादिनिषेतु इत्तमाम्यस्त्रमावयो । मध्यान् पुनिवास्यं व' (भनेवार्वसंसद्ध स्वर्ध-क) ।

१ 'स्थान्यवास' बृहुस्त्रीका राज्युर्वस्वाति च ।

चरमाङ्गाति प्रहेतवः वीचरा बेलुमोर्जर व ॥ (प्रतिवातिकतात्रतिः ३ ६४६) ।

<sup>&#</sup>x27;यत् कार्य'—मनतकाच की एक महिता प्रश्ति । स्वापा (स वि व वेशक की सैका)।

प कोई कोई बायुनिक दिशन बायन करना की बन्तित बैदिक बेदान से सामडे हैं देवी 'मानी-प्रकार्य' का प्रस्तक इन देश देह

हो प्राचीन मानावरकारों में भी यह सब प्रवृद्धित था यह निम्नोह्म्य कविषय प्राचीन मन्त्रों के अपकरणों से स्पष्ट प्रवीत होता है। स्प्रदन्तुन कव्यासङ्कार के एक 'रक्षेक की व्यादया में जिसन की ग्याद्यनी राजाव्यों के जीन-विद्वान समिसाधु त विकार है कि---

"साहदेते । वरवानप्रमानां व्यावस्थानां व्यावस्थानां का प्रकार वर्षा वरवन्त्रमायाः प्रवृत्ति तम वर्ष तैव वा प्रस्तवत् । 'व्यावे व्यवस्थानं व्यावस्थानं व्यावस्थानं कृति वर्षा वर्षाम् वर्षा वर्षाम् वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वर्यः वर्षः वर्

इस क्याचना का तारपर्य यह है कि—'महारी रुख वा सर्व है बीजों का व्यावस्त्र धारि के संस्कारों से पहिला स्वाधिक परम-क्यारा करते करता बरवा नहीं है प्रश्नित । क्या 'मक इस्त पर से महत कर बना है, महत इस्त का सं है 'पहंचे किया नहां । धाद संपन्तकों में स्वाद्ध प्रीत क्या एते हैं की एक स्वाद्ध अप हो । यह पर्यावस्त्रों का स्वाद महत्त्व में स्वाद अप महत्त्व का स्वाद का स्वाद का स्वाद का स्वाद की स्वाद महत्त्व का स्वाद का स्वाद का स्वाद का स्वाद का स्वाद की स्वाद का स्वाद की स्वाद का स्वाद की सहस्त का स्वाद की सहस्त का स्वाद की स्

सङ्गीवनस्वादुःवेदेनं को क्लिन्न शंखावित पाचि याष्टिः (श्रीवरस्वादिनिका १ १०) । यक्षत्रसस्यानुस्वा वैती वाषद्रपरसाहे ।" (हमत्रमत्वाधानुशासन् १४ १) ।

बच्छ पयों में मनाया महाव्यव सिक्यमेन दिवाबर और श्राचार होमचन्त्र चैसे समये विद्वामों का विमयेत्र की वाणी को 'कावृत्रिम' और सन्दर्भ भागा को 'वृत्रिम' ब्यूने का भी यहार यही है 'कि प्रयूत व्यमसावारक की मात्रभागा होने के कारण बावृत्रिम सामाविक है और संस्कृत मागा स्थावस्थ के संस्कार-स्थावसावशीस्त्र से पूर्ण होने के हेत कविस है।

१ "प्राकृतवीस्कृतमानविध्ययमानाम श्रीरदेनी च ।

क्होऽत्र वृत्तिवेदो केराविशेषावरम् रा: ।।" (काम्यासंकार २ १२) ।

२ बायाची पहान्येम, निष्ठण बात हरिहात है धीर विशान नौकह पूर्व (अत्तरक) थै। तीकृत प्राण में था। यह बहुत काल ये तुत हो-पात है। वचारी इवके विचयों का वंधित वार्तन सम्बादाकृत्य में है।

"ब्युक्तारि पूर्वीक्ष संस्कृतनि पूराक्ष्यत् ॥११४॥

त्रज्ञादिरुमशाम्यापेन तान्द्रशिकानाति कालतः । श्रद्धनिक्यरताङ्गर्वस्य गुवर्गस्यापिमाधिया ॥११४॥

नावक्रीयुव्युवादिनानमुब्द्वान सः । प्राकृतो वामिक्तालीवं (प्रवासकारिक इ. १०-११)।

"प्रपृष्ठ रिद्विगार्य काविनल्यास्थितंत्रीयर्थं तं । गीनास्थायपर्ध्व गामपपुर्धं सिखनरीष्ट्रं ॥"

(यापारित्यस्य में व्यवस्य आणीन व्यवस्य। प्रमुख्यानं सम्बद्धिः अस्य हरः ॥
"वावकीमन्त्रम्यांस्यं तुस्य पारित्यानिकास्याम् । प्रमुख्यानं सम्बद्धिः सम्बद्धाः । स्वतः ।।

(स्पर्वकातिक देका पर १ में हरिकाद्दि हात चीर कल्यानुतावन की देका हु १ में वापाने हेमका ब्रात क्यूक्ट क्या ह्या मार्गन स्पेक्त) ।

प्रभाविकारिय-व्यवस्थानि यह एवं व्यवस्थानि व्यवस्थानि देखारि क्यांत्रि व्यवस्थानि विवष्ट (वास्तानुस्तानिका)। वास्यार्थं होत्य को प्रकृतिमां एक की इत तम् व्यवस्थाने हे त्यांत्र होता है कि क्यान वास्य में मान्य-व्यवस्थानिका के व्यवस्थाने हैं कि व्यवस्थानिका के व्यवस्था

केसल जैन विद्वानों में है। यह सत प्रपादित न था सिरत की आठवी स्वाक्षी क जैनतर महाकवि वाक्पविराज न भी। अपने 'गावक्षहों' नामक सहाधावय में इसी मत को इन स्पष्ट शक्तों में व्यक्त किया है —

ं समसामी इस बावा विश्वति पत्ती म खेंति वामाभी।

च्छि समुद्र शिव स्टिंति सायरामी विष शकार ॥१९॥"

क्ष्यांन् इसी प्रावृत्त माणा में सब भाषार्थ प्रवेश करती हैं सीर इस प्रावृत्त माणा से ही सब भाषार्थ निर्णत हो है बन (मा कर) समुद्र में ही प्रवेश करता है सीर समुद्र से ही (बाल का से) बाहर होता है। बाकाति के इस पदा का मर्गे यही है कि प्रावृत्त माणा की करांति सम्प किसी भाषा स मही हुई है, बन्ति संस्कृत साथि सब भाषार्थ प्रावृत्त से ही क्लाम हुई हैं।

क्षित्व की नवन प्रमाण्यी के जैनेतर कांद्र राजवीस्तर ने भी अपने 'बाल्यामायण' में नीचे का ख्लेक लियकर गड़ी मठ प्रकर किया है —

"यद् योति किन **पंस्कृतस्य नृदर्शा विद्वा**षु यत्मोदते यत्र योदनपादतारिण कटुर्यापाकराणां रहे ।

यसं पूर्णपर्व पर्व रविषयेम्बद् प्राकृतं सङ्गबरुतांस्वाद्रांक्नानिकाङ्गि पर्य नुस्ती हर्व्यतिमेपश्चम् ॥" (४८ ४१)।

जैन और जैनतर विद्वारों के एक वचनों से यह एवह है कि प्राचीन कार क आरतीय आपातत्त्वहों में भी यह सब प्रवक्त रूप से प्रचक्रित या कि प्रावृत की ठराकि संस्कृत साथा से मही है ।

प्राष्ट्रत मापा छीकिक संस्कृत से जराज नहीं हुई है इसका और मी एक प्रमाण हैं। यह यह कि प्राष्ट्रत के जनेक छन्न और प्रत्यारों का छीकिक संस्कृत की अपना वेदिक मापा के साथ अधिक मेज देखते में बाता है। प्राष्ट्रत भाग साधार पूर्व से छीकिक संस्कृत से उराज होने पर यह कभी संभग नहीं हो सकता। विदिक्त साहित में भी प्राष्ट्रत के अपना कर कोर प्रत्या के भागि विद्यान हैं। इससे यह अनुमान करना किसी वच्छ असेराज नहीं है कि विदिक्त सीर प्रावृत्त में दोनों ही एक प्राचीन प्राप्त मापा से उराज हुई है और वही इस साहर्म का कारण है। विदिक्त मापा और प्रावृत्त के साहर्म के क्षिपय वदाहरण हम नीचे वहुत करते हैं ताकि वक्त व्यवन भी संस्थता में कोई संवृह्त नहीं हो सकता।

## वैदिक माथा और प्राकृत में सारहम

- १ प्राकृत में जनेक आह. संस्कृत ऋकार के स्थान में ककार होता है, जैसे—पून्द व्युन्द क्षतु = वत्र प्रथिकी ≠ पुर्वा वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग पाय आते हैं जैसे—हत = कुठ (क्षांकेद १ ४६ ४)।
- २. प्राष्ट्र में संयुक्त वर्णवास कर स्थानों में एक ज्यानन का क्रोप होकर पूर्व के हरर स्थर का दोधे होता है जैसे—युक्त (व्यान—दोधान, स्थर्ण=कास। विदेक मापा में भी वैसा होता है, यथा—दुर्धम = वृक्त (क्रावेक ४ १, ८), दुर्जाण वृणाश (श्रुल्लाक् प्राविधानर ४ १)।
- १ संस्कृत क्याजनात्व क्षण्यों के अस्य क्याजन का प्राकृत में सर्वत्र क्षेप होता है, जैसे—तात्त् =ताय यशसा व् असा वैदिक साहित्य में भी इस निषम का सभाव नहीं है प्रमा—पद्मात् ≈पमा (प्रवर्गिक्ता १ ४११) तवात् व्यवस्था (क्षेतियोग्पेक्ता २, ११४) नीचात् =भीचा (क्षेतियमधिता १ २ १४)।
- ४ प्राष्ट्र में संयुक्त कीर य का स्रोप कोता के लीसे—प्रगत्म ≃पाणमा, रुधामा ≃धामा वैदिक साहित्य मैं सी यह पासा आता है यसा—अमगहस ⇒ छन्यगहम (वैतिष्ठेवस्थिता ४ ६ ११) क्याच = त्रिच ( हजलकास्त्रात् १ १ व ११)।
- ५. प्राष्ट्र में संयुक्त वर्ण का पूर्व स्थर हुन्य होता है पया—पात्र व्यत्र, रात्रि = रक्ति साय्य = माम्क हरवादि सेतिक सापा में भी ऐसे प्रभोग हैं, जैसे—रोव्सीपा = रोव्सिमा (क्षापेद १ वद १) अमात्र = अमत्र (क्षापेद १ ६६ ४)।
- ६ प्राष्ट्र में संस्कृत व का क्रमेक जगद व होता है जैसे—एण्ड ≃डण्ड, इंस ≃बंस, दोव्स = डोक्स, देवेच प्राहित्य में भी पैसे प्रयोग दुर्कम मही है जैसे—पूर्वम ≃वृडम (वावक्षेत्रवीहता १ १०) प्राप्तास ≃पुरोवास (कृत्य-त्युजारिकास्य १ ४४)।

रं सक्ता इर्द मान्रो निकृत्वीतरच निर्वन्ति नाच । भागन्ति सपुत्रमेन निर्वन्ति सामग्रदेन कवानि ॥६९॥

हो प्राचीन मापादरणकों में भी बह सब प्रचटित था यह निस्नोद्भुत कविपन प्राचीन मध्यों के अकारणों से स्पष्ट मतीतः होता है। हरत-मृत कारपासहार के एक इस्तेक की स्पारमा में जिस्त की न्यादमी रातास्त्री के जैन-विद्वान समितान ने दिसा है कि -

"बाहरोति । सपस्तवस्त्रकानुनी स्वातकात्राविधिएमाहिएक्स्वारः बहुवी अपन-स्थातारः प्रष्ट्रति। तत्र वर्षे सेव वा प्राकृतयः। 'सारि बबराहे किई देनाहाँ बहारावहा बाहाँ। शकारिववनात् वा प्रातः पूर्वं कृते प्रतकृतं वाल-महिवालि-पुत्रीयं सम्बन्धावानियमवन्तं वयनप्रक्तते। क्रेश्निक क्रमानिक स्वकृत तरे व क्रमानिक ताला स्वास्त्र कारणा स्वासिक विदेश तर् संस्थाय करियोगा में स्वास कारणा प्राप्तवासी शिंहरं तका संस्थातीन । पारित्याविध्यात रहोतितरकारकोन संस्करहास संस्करमुध्यते ।"

इस क्यास्त्रा ना तारामें यह है कि-'प्रवृति क्रम्य का धर्म है सोमी का व्याकरण मानि के संस्कारों से पीत स्वाकानिक बचन-ब्याचार, करने पराम प्रथम नहीं है मन्द्रत । प्रयम प्रिक हर्य थर हे बाहुत राज्य नना है, प्राप्त इस्तें का धर्म है 'पहले किया क्या' । बारह क्षेत्र-करों में त्यारह क्षेत्र क्ष्म करने निए वए हैं और का त्यारह क्षत्र-कर्म में भाग भाग-काम में-क्ष्म में क्षत्रमानकी क्ष्मी वह है जो: बातक, महिला सारि को सुनीय---धहण-नम्म हैं भीर को शक्त काराओं का मूल है। वह प्रवेगायनी माना ही प्रकृत है। वही प्रकृत केच-पुक कर की करह बढ़के एक करनाना होने पर भी देश-मेद के सीए संस्कार करने से निस्तात को प्राप्त करता हुया संस्कृत साहित सवान्तर निमेरों में चरिएत हुमा है सर्वात पर्यमानकी अहत है संस्कृत भीर सामान्य प्राप्तत मानायों की तरपत्ति हुई है। इही बारेश है युस करवरार (स्तर) वे प्राकृत का पहले भीर संस्कृत साहि बाद में निवेश किया है। पारित्रवादि स्थाकरकों में बतास हर नियमी के सन्पार संस्थार नहीं के काण्या संस्कृत कहनाती है है

ध्यक्षित्रत्यादावेर्जनं वर्ते क्लिन्त बाबादिव पावि नापितै (शाविशन्दानिशिका १ १०)। "सङ्ख्यानमञ्जूता केरी वात्रमुगस्त्रहे । (हेमनत्रकाम्यानुशासव, प्रह १) ।

वक्त पर्यों में मनशः महाश्वर्ष सिद्धसंस दिवाकर और भाषाय द्वेसचन्द्र बैसे समर्च विद्वानों का जिसदेव की वाणी को 'बाकृतिम' श्रीर संस्कृत भाषा को 'कृतिम' कहमें का भी रहत्य यही है, कि प्रकट खत-साधारण की मातुमाणा होने के बारण अबुजिम-स्वामायिक है और संस्कृत मापा ब्याकरण के संस्थार-रूप कनकरीपम से पूर्व होने के हेत कविम है।

१ "ब्रानुत्रचेश्वरमामवरियायमायास शीरदेनी स ।

कोऽन परिनेशे देखरिकेशकास्त्रां श' (काव्यानंकार २ १२)।

२ बारहवों ब्राह्म-चंब, बितका नाम इष्टिवाद है सीर बिसमें चौबद पूर्व (प्रकरत) थे संस्कृत कामा में बा। यह बहुत काम से हुए होंने क्या है। स्वारं इंडडे विक्यों का चंदिस बहोन सबकाशासूत्र में है।

<sup>&</sup>quot;कारकारि पुत्रोति संस्थानि वृद्यामस्य ॥११४॥ ब्रहानिरामनाभागि सम्युष्टिमानि नावतः । यनुष्टेशवराञ्चर्यस्य सुवर्गस्मानिनानिरा ॥११२॥

वालधीपुरमूर्वादनसमुप्रसाम व । प्राकृतां तप्रीवहाकारीद् (प्रवानकवरितः पु १ व-११) । "दुस्त विद्विशार्य नामिन स्वासियंगीत्र्यं छ । वीकामशाक्यालं शामसमुद्रनं किरावरेष्ट्रं ।।"

<sup>(</sup>धावारविकार में क्वूबुद जाबीन क्वा) । "बातस्मेनन्बनुकांणां नृका पारित्रशक्तिकान् । सनुबद्दानं तरबन्ने सिद्धान्य बक्कत हुत. ॥" (स्तरिकारिक शिला पर १ वें हरिवादिरि हारा भीर काम्प्रमुखातन की शैका इ १ में मानार्थ हैमनल हारा उन्हर िया हमा शाबीन रतीक)।

४ "क्रार्विकारिय-वर्धान्तुर्वान क्षय एव स्त्राप्तृति नार्याक्यावर्थि फेल्लानि प्रसानियकि निवक्कः (कान्यानुवाधन्त्रीका) । सामार्वः हैकपत्र भी 'सहदिव' हरन भी इन त्यह न्यास्था से प्रतीत होता है कि उनका संपन्ने प्रसहत-स्थलकार में प्राहत की सहति संस्कृत

बर्ता विकास-निवास के तरब से गरी वरना वाने बाइन-व्यवस्था भी स्वया-निवी के प्रसास में हैं, स्वोति बारी कार्ताण बाहन-स्वाक्त्यां वी तथ्य देवचन-बाहत-सामाल में भी काहत पर से ही प्रमात-विद्या की बदलि समाध्या की पूर्व है भीर रत पहेल में प्रपृति—हुन के स्थान में बंस्टत को स्थाय यानवार्ष हो बाता है। यवना ज्या सी सनाजव नहीं है कि स्वावस्ट रथता के बदन बनता बड़ी निदान्त प्रा ही वो बाद में बस्त पना हो। बीर इस चौकतित सिवान्त ना कामानुस्तन में ब्रीटिन पण्य विश्व हो। बाम्यपुरासक को एक्स स्थावरत के बाद स्वकृते की है यह काम्यपुरस्थन की 'शम्यपुरस्थितसर्वीय नाक्यो बाबो विदेविता" (इस न) इब बांक के ही फिल है।

केयक जैन विद्वानी में ही यह मत प्रचब्धित न या खिलत की बातकी क्षताब्दी के जैनतर महाकृषि पाक्पविराज ने भी अपने 'गडकबही' नामक महाकाव्य में इसी मत को इन स्पष्ट राजों में व्यक्त किया है —

ं सम्लामो इमें बाया निर्वति एतो व गाँति वामामी ।

एंति समुद्दं चित्र रोंति सायरामा चित्र वताई ॥१३॥"

क्षत्रीम् इसी प्राइत प्रापा में सब मापार्य प्रवेश करती हैं तीर इस प्राइत प्राचा से ही सब मापार्य निर्मेत हुई हैं जब (पा कर) समुद्र में ही प्रवेश करता है तीर समुद्र से ही (बाला का से) बाहर होता है। बाकाति के इस प्रमा ना मर्भे यही है कि प्राइत मापा की बलांति प्रमा किसी भाषा से नहीं हुई है, बॉक्ट संसहत शांवि सब भाषार्य प्राइत से ही उत्पात हुई हैं।

क्षिस्त की नवम शताब्दी के जैतेतर कवि राजदोक्षर ने भी छपन 'बासरामायन' में नीचे का रखेक खिलकर यही मत

प्रकट किया है 🕳

"मन् मोनि किस संस्कृतस्य मुहरा मिल्लाम् य मोन्नते यत्र कोत्रप्यावतारिक्षि कटुर्भापाञ्चयाणां रस"।

मर्च पूर्णपर पर रविपवेत्वत् प्राइतं सक्ष्मतांस्मादाक्तकिवास्ति परम नुप्रती हर्द्धिनमेपववद् ॥" (४=, ४६) ।

चैन और जैनेसर विद्वानों के उक्त वचनों से यह १९ए है कि प्राचीन काल के भारतीय भाषावरूकों में भी यह सब प्रवृक्त रूप से प्रचक्तिय मा कि प्रावृत की उत्तक्ति संस्कृत भाषा से नहीं है !

प्राइत मापा ख्रीकिक संस्कृत से एत्यम नहीं हुइ इ इसका और भी पक प्रमाण है। वह यह कि प्राइत के अनेक हान्य और प्रस्था का ख्रीकिक संस्कृत की अपना विदेव माण के साथ अधिक मेख वेदाने में ब्याता है। प्राइत भाग साक्षाह प से ख्रीकिक संस्कृत से उपनम होने पर यह कभी संभय नहीं हो सकता। विदिक्त साहित्य में भी प्राइत के खरुर बनेक राज्य भीर प्रस्था के प्रयोग विद्याना है। इससे यह अनुमान करना किसी तयह असंगत नहीं है कि विदिक्त सीर प्राइत में वेदान के प्रयोग विद्यान करना किसी तयह असंगत नहीं है कि विदिक्त सीर प्राइत में वोदी है। सकता है। यह प्राचन करना है। से सहस्या का कारण है। विदिक्त मापा और प्राइत के साहर्य के कित्य प्राइत्य हम नीचे चढ़त करने हैं ताकि क्षक क्यन की सत्यता में योह संवेद नहीं है। सकता।

## वैदिक्त मापा और प्राकृत में साहस्य

- प्राकृत में अनेक काह संस्कृत खकार के स्थान में उकार होता है, जैसे—इन्त = बुन्त, क्ष्मु = वड, पृथियी =
   पृष्टिंग वैदिक साहित्य में भी एसे प्रयाग पाये जाते हैं, जैसे—इत = इत ( क्ष्मेव १ ४६ ४ )।
- ३. शास्त्र में संयुक्त वर्णवाली कई स्थानों में एक क्यझन का क्रोप होकर पूर्व क हुएय स्वर का होर्थ होता है जैसे—तुस्त्रेम = वृत्त्व विमान = वीसान, स्वर्श = फास, पेहिक सापा में भी वैसा होता है, स्था—तुस्त्रेम = वृत्त्वस (श्वाचेक प १, व) तुर्णाय - दूणाय (पुलवाद प्राविध्यक्ष व ४१)।
- रै संस्कृत रूपजनान्त क्षार्नों के अनस्य रूपआन का प्राकृत में सर्पत्र क्षेप होता है, जैसे—सापन् ≃ताप प्रशस = असः पैकिक साहित्य में भी इस नियम का अभाप नहीं है, प्रया—प्रशास्≃पक्षा ( ध्रवसंस्थित १ ४ ११) क्यान् ≃त्रवा ( वैतिकेश्वित २ १ १४) मीचान् ≃तोषा (वैतिकेश्वित १ २ १४)।
- ४ प्राक्त में संयुक्त र कीर य का छोप होता है, मैसे—प्राक्तभ ≃पास्म दयासा = सामा; वैदिक साहित्य में भी यह पाया काता है, पदा---म प्राप्तम ≈ स-पाप्तभ (तैतिपैपविद्वा ४ १.६१), इ-एस ⇒ प्रिय (कडाप्यक्र्यस्थ १९३३)।
- ५. प्राकृत में संयुक्त वर्ष का पूर्व स्वर हरव होता है, यका -- पात्र -- पत्र, रात्र -- रित्त, साम्य -- सम्ब्र इरवादि पैदिक माण में भी ऐसे प्रयोग हैं, जैसे--चेद्सीब्रा -- रेदिस्ता (ऋषेद ! ६० !) अमात्र -- अमत्र (ऋषेद ! ६० !) अमात्र -- अमत्र (ऋषेद ! ६० !)
- ६ प्राकृत में संस्कृत व वा लानक आगर व होता है जैसे—वृष्ट = वण्ड, वंस > वंस वोत्य = वात्य; ऐदिक साहित्य में भी ऐसे प्रवोग दुर्वम नहीं है, जैसे—दुर्वम = वृद्धम (वावक्तेत्विता १ ११ ) पुरत्यास = पुरोबास (कृत्व-वृद्धमास प्रभः)।

सच्छा दर्य माची विद्यम्तीकरच निर्वन्ति बाम । सामृति संगुद्रमेड निर्वन्ति सागरादेव कसानि ॥६३॥

क. प्राकृत में व काह द्वादा है, क्या-व्यक्तिः व्यक्तिः, व्यान - बाद वेद-माधा में मा ऐसा पाया जाता है, बैस-मृतिसंधाव = प्रविसंहाव ( योजवादास २ ४ )।

८ प्राकृत में अनेक राष्ट्रों में संयुक्त अवस्तों के बाव में स्वर का मागम होता है, जैसे-क्रिप्ट = किस्ट्रा स्व = प्रव तत्ती = तजुनी वैविक साधित्य में भी ऐसे प्रवाम विरक्त अही है वया -सहस्त्र = सहाह्मण स्वर्गात्र मा / विकित्तवर्षास्ता ४ २ ६)। तस्तः = संस्थानवः = सूवः ( वैक्तिरीयपारएयकः ७ २२, १ ६ ९ ७ ) ।

्राप्तिक सामा में भी प्रथम के प्रथम के प्रथम के प्रथम में ये हैं। है जीन—वेशे बिणा सी इस्मादि, है प्राकृत में कामरान्त पुष्टिक क्षम के प्रथम के प्रथम में ये हैं। है जीन—वेशे बिणा सी इस्मादि, बैद्दिक सामा में भी प्रथम के प्रथम में में मूर्ति-वहीं से देखा माता है। यहा—सीवसरों जनायत (बानेन्सहिता है। १९

५), सो जिलू (भागेरसम्बाह्य १६६१ १०-१)।

१० विश्वीया विमक्ति के बहुबबन में प्राकृत में वेब आ दे मधरान्य शब्दों के रूप देवेग्रे गंभीरेग्रि, लेहिंदि कारि होते हैं, वैदिक माहित्य में भी इसीके अनुकर है होमि गम्मीनीमा, क्येप्टेमि आहि क्य मिक्ते हैं। ११ प्राकृत की तरह केदिक भाषा में भी बतुनों के स्वान में पड़ी त्वभक्ति होती है।

१९. शाक्त में प्रस्तां के प्रकारत में देवा वच्छा किया आदि रूप होते हैं। विक साहित्य में भी इसी वरा ६ वना मीचा यहा प्रश्वि वयस्य होते है ।

११ प्राकृत में द्विषयन के स्थान में बहुबचन ही होता है देदिक माना में भी इस तरह के अनेकों प्रयोग मोबुद हैं सवा-- स्मूरवस्मी के स्वास में 'इन्ह्रावदमा' 'मित्रावस्मी का बन्ध 'मित्रावस्मा' 'मी सुरवी रविवासी विविष्ण्याविधनी के व्यक्ष 'वा सुरमा स्वीवमा विविध्धा अधिना' 'मरी है' के स्वत में 'चरा है' साहि ।

इस तहर मनेक पुष्टि और प्रमाणों से यह साबित होता है कि प्राकृत की करान्ति वैदिक भवना सीकिक संस्था से नहीं किन्तु वैदिक संस्कृत की बराणि जिस मयमे स्वर की मावेशिक माइन्ड मावा से पूर्व में कही गई है बसीसे हुई है। इससे वहाँ पर इस बात का बसेस करना भावरबात है कि संस्कृत के अने के आंखे आरिकों ने और प्राकृत के प्राय: समस्त प्राच्या से क्यूबर यही समस्ता चाहिए।

## दिवीय स्वर की प्राह्त मानाओं का उत्पत्ति कम और उनके प्रभान सेद

बह एपयु क कम के अनुसार वैदिक तथा खोकिए संस्तृत और समस्त मासूत भागाओं का मुख पक ही है और वैदिक तथा स्टेकिट संस्तृत हिसीय लट्की सभी भाकत मागाओं से मास्तेत हैं तब बह बसते की कोई मास्त्रकता नहीं है कि दिवीय सार की प्राकृत भागाओं के इस्पत्तिकार का निर्णय एकमात्र वसी साहरत के वारतस्व पर निर्मेर करवा है जो उत्तर संस्कृत और प्राकृत बद्धार ग्रन्तों में पाया जावा है। जिस प्राकृत भाषा के बद्धार राज्यों का वेदिक और सीकिक परिकार के साथ विकास अधिक साहरण होगा वह बननी ही आबीत और विसक्षे तक्षव कर्जी का बमय संस्कृत के साथ जितना अभिक्र भेर होता बद रतनी ही अनीचीन मानी जा सकती है. क्वोंकि अधिक मेव के फरफा होने में समय भी व्यक्ति स्मता है वह मिविश्व है।

विदीय रार की किन प्राकृत आधार्जी ने साहित्य में अवना शिकाकेची में स्वान पाता है बनके सकते की वैदिक क्षार सार्कित संस्कृत के साथ उपमुख्य प्रकृति से जुकता करते पर, जो भेद पार्कक्ष हे लगे में बाते हैं बनके अनुसार क्षित सरदार की मारत सायाओं के तिम्लोक प्रयान भेद ( प्रमूर ) कोते हैं, जो कम से का तीन सुकद बरूक विमानों में बॉट या तरा हैं—(१) प्रवस युग—जिला-पूर्व चार सी ये से सर किस्ता के बाद पड़ सी वर्ष तक (400 B C, to 100 Å. D. ), (२) सम्प्रपुग दिल के बाद पड़ सी से पॉच सी वर्ष तक (100 Å C, to 500 Å D ); (३) होए पुग-जिल्लीव पाँप सी से एक इकार वप तक ( 500 A. D. to 1000 A D )।

१ <sup>ल</sup>चनुष्यवे बहुर्स सम्बद्धि<sup>म</sup> ( पारिक्रिक्साफ्टल २, ३-६२ )।

## प्रयम ग्रुग ( स्त्रिस्त-पूर्व ४०० से स्त्रिस्त क बाद १०० )

(क) श्रीनयान घोडों के त्रिप्टिक, महाचंश और आवक-प्रशृति प्रम्यों की पाईंग मापा !

(स) पैरानी भीर चुलिकपैरापी।

- (ग) खेन अंग-प्रन्थों की अर्थमागधी भाषा
- ( घ ) अंग-मन्य सिम्न ग्राचीन सुत्रों की झौर पदम चरिश्र झा द प्राचीन प्रन्तों की सीन महाराष्ट्री भाषा ।

(क) बारोक-शिक्ततेलों की एवं परवित-काछ के प्राचीन शिक्ततेलों की मापा।

(च) अख्योप के नाटकों की भाषा।

## मध्ययुग (स्त्रिस्तीय १०० से ५००)

(क) त्रिनेन्द्रम् से प्रकारित मास-पित कह जाते नाटकों की और बाह के बाल्सास-प्रसृति क नाटकों की शौरसनी, मानवीं और महत्त्वपूर्व मायार्थ ।

(स) सेतुबन्ध गायासप्तराती आदि बाज्यों की महाराप्ट्री भाषा !

 (ग) प्राकृत क्याकरणों में किनके छन्नण और उदाहरण पाये बाते हैं में महाराष्ट्री, शौरसेनी मागभी पैशाभी, चुछिन्नपैशाभी मागाएँ।

(प) दिगम्बर जैन प्रस्कों की शीरसेनी बीर पर्वात-बाछ के इवेताम्बर प्रन्थों की जैन महाराष्ट्री मापा।

(क) चंड के क्याकरण में निविष्ट और विक्रमोध्या में प्रयुक्त लगभ रा भाषा।

## शेष ग्रुग ( स्त्रिस्तीय ५०० से १००० वर्ष )

मिन-मिन प्रदेशों की परवर्ती कार की अपन्न स मापाएँ ।

अब इन सीन युगों में विसक्त प्रायेक भाषा का कक्षण और विद्येष विषरण, बक्त क्रम के अनुसार (१) पाछि, (२) पैसापी (३) वृष्टिक्रपैसापी (४) कर्षमागर्वी, (५) जैन महाराष्ट्री, (६) अहोकद्विष, (७) शीरसेनी, (८) मागधी, (६) महाराष्ट्री, (१०) कपप्रांत इन शीर्षकों में क्रमशा दिया जाता है।

## (१) पाछि

हीनयान बीटों के पर्म-मनों की मापा को पाकि कहत है। कई विद्वारों का अनुमान है कि पाकि शब्द 'सक्तिक' पर से बना हैं। 'पक्ति' शब्द का अर्थ हैं 'श्रेणी'। प्राचीन बीट लेखक अपने प्राच में पर्म-द्राख की बचन-पक्ति को बद्धुत करने समय इसी पाढि शब्द का प्रयोग करते थे, इससे बाद का ममय में पीट धर्म शाकों की भाषा का ही नाम पाकि हुआ। सम्य विद्वारों का सब है कि पाकि शब्द पक्ति' पर से नहीं, परस्तु 'पाकि' पर से हुआ।

निरंग भीर बुलिंग है। पिछे राज्य असल में संस्कृत मही परस्तु माजून है यहपि अन्य अने के माजून राज्यों की तरह यह भी पीछे से संस्कृत में जिया गया है। पिछे राज्य जीतें के आक्षीन अंग-अन्यों में भी पापा जाता है। पिछे राज्य जीतें के आपा —माज्य भाषा होता है। 'पहिंग पापे माज्य —माज्य भाषा होता है। 'पहिंग पर से पीलें होने के करना जितनी बनेता साथ्य है। प्रकि पर से पीलें होने के करना जितनी बनेता साथ्य है। प्रकि पर से पीलें होने के करना जितनी बनेता साथ्य है। प्रकि पर से पीलें होने उनता ही सहज्य-के पर है। इसमें हमें पिछामा मन ही अधिक मंगन मालूम होता है। 'पालें के बनने पापे भी इससे वसस्य यह नाम दूजा है पर बात मही है। बातक महेरा विशाग के प्रामों की तरह गहरों के भी जन-माशरण की यह भाषा थी। परस्तु संस्कृत के अनन्य अक

१ 'पर कि = वंकि प्रदेशक पुत्र १)।

२ "हेपुर्स्त वन्विरलीनु मानियं गानि कथार्थ (प्रशिपानप्रधीरका ११६) ।

६ देवो, रिपारम् त (५२ ६८ ६८) ।

बाहाजों की हा ओर से इस मापा की तरफ अपनी खामाबिक पूर्णा को व्यक्त करन के किए इसका यह नाम दिवा जाना आतमा जा का भार रा देश नाम के बारण पीछे से बीदा विद्वानों का भी मागभी की बगह इस राष्ट्र का प्रयोग करना आकर्ष-वतक नहीं जान पहेंचा ।

एक माइट मापा-समृद्द में पाक्षि भाषा के साथ वैदिक संस्कृत का विष्क्र साहत्व देशा जाता है। इसी कारण से वितीय स्तर की प्राकृत मापाओं में पाकि भाषा संत्रिक्षा प्राक्ति माक्स पढ़ती है।

पासि सापा के करपत्ति-स्थान के बारे में विद्वानों का सब-भंद हैं। बीद क्रेग इसी सापा क्रे सागधी कहते हैं भीर बनक मन से न्य भाषा का उत्पत्तिक्यान मगत देश है। परतु इस माया का मार्गामी प्राकृत के बाव कोई सारहक मही है। वॉ कोमी (1hr Konw ) और सर मियसैन ने इस मादा का पैशाची माया के साव सारहस

बलकर पैशाबी मापा जिस देश में प्रवक्षित की वसी देश को इसका संपक्तित्यान कराया है. क्यित-स्थात व्यापि विद्याची भाषा के पत्पत्ति-स्थान के विषय में इस दोनों विद्यानों का सर्वेस्थ नहीं है। क्यें कोजी क मध में पैशाची भाषा का उत्पत्ति-स्वान विस्वाचन का विक्रम भवेश है और सर प्रियसैन का मह यह है कि 'इसका उत्पत्ति-स्वान भारतवर्ष का उत्पत्त-पश्चिम ग्रान्त है। वहाँ उत्पन्न होने के पाद संभव है कि डॉडका-प्रदेश-पर्यम्य इसका विस्तार हुआ हो धीर वहाँ इससे पानी भाषा की कराति हुई हो।' परस्तु पानि मापा अधीक के राजरात-प्रदेश-रियत गिरनार के शिक्षक्षेत्र के अनुसूर होने के कारण यह मगभ में नहीं किन्तु 'मारतवर्ष के पश्चिम प्राप्त में हराक प्रदेशनरमें वागरनार के राक्षक्षात के अनुकर कार्य के कारण जब नेगाय ने नहीं जार कर के पंचास प्राप्त में स्वयंक्र हुई है और वहाँ से सिंहज़ देश में से सांह गई हैं। यहीं मत बिग्रेप संगत नतीत होता है, क्वोंकि निन्सीफ बदाहरकों से पाकिमापा का गिरतार-शिक्षाकेस के साथ साहरूप और पूर्व-प्राप्त-रिवट पीक्षि (संबंगिर) शिक्षाकेस के साथ पार्यक्रम देन्य काता है —

संस्कृत	पास्री	गिरना <b>र्यक्रम</b> ा	<b>वीकिशिक्ष</b>
THE:	र्धातनी रम्पो	<del>ক্টা</del>	व्यक्ति
श्यव	<b>4</b> 5	<del>प्र</del> वे	42

इस विषय में डॉ मुलाविकुमार बटर्जी का बदला ह कि "बुद्धदेव" के समस्त वपवेश मांगणी भाषासे बाद के समय हम विषय में का सुमायकुमार पटका को नकता है। किया है। किसान में मार्ग के प्राप्त के साथ में मार्ग्यहर (Don) के बीरियोग जाकन में अनुसारित हुए थे और वे दें किसान में मार्ग को बी वर्ष से पारि-मारा के नाम स मंक्ति हुए हैं। किन्तु सब वा यह है कि पाकि भागा का ग्रीरसेनों कीर मार्गों की बयसा पैयाकी के साथ ही अधिक साहरप इ जो निम्बाक बराइरजों से स्पप्न जामा आवा है।

भा (बंद ) •च ( रागी ) •च ( रागी ) •त ( राग )	% (चोन) ग्र (मग) च (चची) ज (रनग) त (नग) र (नर)	क (बोर) ग (गन) च (तथी) ज (प्तत) त (गत) र र	(बोध) (एख) (बरें) (एसर) द(पर) र(कर)	(बोध ) (कुथ ) (क्ये ) (नमर) द (फर ) छ (कर )	
१ "सीहायतं दुवहँ च प्र व बोतार्थ डिम्नैनहर्ये			,		
ર, The Origin a	nd D		Y.	oL. I. page 67	
६ इस उत्तरहरूतों में प्रयम ने बाद ब्रावेट में समी		۵		में परिवर्तन होता है थी	र मन्द

के बाद सार्धि में प्रकी • रार बलों के मध्यवर्गी सर्वेहक माधी

संस्कृत	पास्टि	<b>ਪੈ</b> ਗ <b>ੀ</b>	सीरसेनी	मागधी
श (वरा)	स ( इस )	स ( थस )	स ( वस )	इ।(वरा)
ष (मेष)	स ( भैस )	स (मेस)	स (मेस)	श (मेरा)
स (बारत)	स (धारस)	स (साप्य)	स (सारत)	शु (रामर)
न (वदन)	न (वयन)	न (वचन)	ণ ( ৰঘণ্ড)	व (भग्नस् )
इं(पह्रं)	इट (पट्ट)	ξ(*ξ)	इ. (पृष्ट)	स्ट (पस्ट )
र्थ (गर्प)	स्य (भ्रम्	स्य (चत्प)	रय (ग्रन्न)	स्त (घस्त)
स् ( 🕶 )	ओ (श्वचो)	ओ (दनमे)	ओ ( <b>स्त्र्वा</b> )	२ (मृत्त्वे )

पाछि मापा की हरुपित का समय ज़िस्त के पूर्व पष्ट शातान्दी कहा जाता है, किन्द्र यह काछ बुदाइय की सम सामयिक क्रम्य मागनी माया का हो सकता है। पाछ करन माया नहीं, परमु बीह्र भर्म-साहित्य क्लिकि-समय की भाषा है। संभवत यह मापा जिल्ला के पूर्व चतुर्व या पश्चम हाताव्ही में परिचम भारत में च्यम हुइ थी। इस पासि-मापा से आभूनिक सिंहती मापा की उत्पत्ति हुई है।

प्राकृत राष्ट्र से साबारणक पाकिनिम अग्य मापाएँ ही समन्त जाती हैं। इससे, चीर पाकि आपा के अनु स्क्वन्य कोप होन से अस्तुव कोप में पाछि मापा के झस्त्रों को स्थान नहीं दिया गया है। इसछिप पाछि भाषा की विशेष आसोचना करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है।

## (२) पैझाची

गुणाक्य ने वृहरम्या पेशाची माना में लिखी थी जो लुत हो गई है। इस समय पेशाची माना के उदाहरण प्राक्तप्रकारा चापार्थ हेमचन्द्र का प्राकृतव्याकरण, पडमापाचन्द्रिका, प्राकृत-सर्वस्य और संक्षिप्तसार निर्द्धान भावि प्रकृत-स्वाकरणों में भावार्य देगपण्य के कुनारपाछ-वरित तथा करणानुसासन में, मोइसज पराजय नामक नाटक में और दो-एक पदमापालोजों में मिन्दी हैं।

भरत के नान्यशास्त्र में पैशाचा नाम का उन्होन्य देखते में नहीं बाता है, परमु इसके परवर्ती हैरूट, केशव मिन आदि संस्कृत के आउंकारिकों ने इसका रहतेल किया है। पारमर ने इस मापा को "मुद्रमापित के नाम से भाभिदित की है।

<sup>प</sup>पाग्मट तथा <sup>द</sup>केशविभिन्न सम्म से भूत और पिशाच-प्रमृति पात्रों के क्रिप और <sup>के</sup>पङ्गापा-विश्विकासर ने राभ्रस. पिसान और नीन पात्रों के छिए इसका दिनियोग बनसाया है। विवियोग

१ वृद्धिय में प्रवसा के एक वचन का प्रस्तवा

२ माचार्य उद्योजन की हुवलय-माना में वएडी के काप्याक्तों में बाल के इपविद्धि में पनत्वव के बराजनक में, मुबन्तु की बासपरका में बीर बन्धान्य प्राहत-संस्कृत धर्मों में इतका उत्तेत्र पाया जाता है। धेनेत्रकृत बृक्कपाम-वरो और सोमदेवमू प्रणीत नमासरित्यापर देती बृहत्कवा का संस्कृत मनुदाद है। इस बृहत्कपा के ही निवनिष्ठ संसी के सावार पर वासा सीहर्य मनमूठि बादि संस्कृत के महानवियों की कारण्यसे सामानती माचतीमाधव-प्रमृति स्त्रोह संस्कृत संबों की रचना की यह है।

<sup>1 9</sup>x 228; 215 :

४ नाम्यानीनार व १२।

र. सिंहर्त प्राप्त नेव पैराची मापनी तथा (अलब्हार रोकर, पुत्र १)। ६ 'संस्कृतं प्राप्टतं सम्यापभ स्रो सूचम्पतितन्' (बारमधन्नद्वार २ १) ।

७ 'यह मुनिक्यते विभिन्त तहसीतिकसिति धमुतन' (नाध्मदासङ्कार २ ६) ।

८ 'पैराची तु रिराचाराः बाहु" (यतद्वारशेखर, १५ १)।

रक्षःशिशावशीवेषु पैराविद्विष्यं मनेत् ।।३१॥ (पर्माता-विद्वारा कृत १) ।

जाड़ाजों को ही ओर से इस मापा की टाफ क्यानी स्थामांकि पूजा<sup>3</sup> को क्याल करने के छिए इसका यह नाम दिया जाना और क्याक प्रसिद्ध हो ज्यान के कारण पीछ से बीद्ध विद्वानों का भी मागयी की जगह इस राज्य का प्रयोग करना साह्य के कनक नहीं जान पहला !

क्क आकृत आपा-समृद् में पासि मापा के मान विश्व संस्कृत का अधिक साहस्य देखा जाता है। इसी कारण से द्वितीन कार की आकृत भाषाओं में पासि भाषा सर्विसा प्राचीन माख्य पनवी है।

पांकि भाग के उत्पित-स्पान के बारे में विद्वानों का मठ-मेद हैं। बौद क्षेत इसी भाग की मागभी कहते हैं और इनके मत से नम भाग का उत्पत्ति-स्वान सगय देश है। परन्तु इस भाग का मागभी प्राकृत के साथ कोई साहदय नहीं है। बॉ कोनी (Dr Konw) और सर प्रियसैन ने इस भागा का पैशाणी भागा के साथ साहदय

हेरबड़, पेशाची आया किस रहा में अवस्थित भी बसी देश के इसका टराफिरपान कराया है. क्यफिरपान अधिप पेराकी आया के क्यफिरपान के विशय में इन दोनों विद्वानों का सरीक्य नहीं है। डॉ कोनो

इ. सत में पैताओं साया का उरुणिन्ह्यान विल्यायक का वृश्यित प्रवेश है और यर नियमित का मत यह ह कि इसका इरुणिन-अगन भारतकों का उदुर-विस्त्र मानत है, वहाँ बरुम होन के बाद संभव है कि इंडिंग महेग नर्यक हम्म किस्ता हुआ है और बहु इस हो पूर्ण आप का बरुणित हुई हो। ' परसू पाठि आपा क्योंक के प्राव्याय प्रवेग-निवत गिरना के निक्सिल के कानुकर होन के बारण यह समय में नहीं, किन्तु भारतकों के पश्चिम मान्य में उरुपत हुई है और वहाँ से सिहस हेश में से बाई गई है' यही मत किरोप संगत प्रतीत होता है, क्योंकि निम्मेष्ट उदाहरों से पाठिमाण का गिरनार-शिक्सिक के साथ साइश्य और पूर्व-प्रान्त-विस्त्र पीठि (संहरिटि) शिक्सकेस के साथ पार्वक्य नेता बाता है-

संस्कृत	पार्की	गिरनारिक्षाः	<b>पी</b> श्चिशस
ঘর-	धीवनी, दमी	चली	विने
₹रुप्	₽đ	कर्त	क्ये

हा दिगम में हो मुनीविक्तमार चटर्जी का कहता है कि "जुड़ोद्दा" के समस्त रुपदेश मागभी भाषासे बाद के समय में मानदर्श (Doah) की जीरनेनी प्रावृत में भट्टादिव हुए ये और वे ही किस्तन्त्र्य प्रायः दा सी वर्ष से शिक्तमाय के माम स प्रतिम्ह हुए हैं। किन्नु सब तो यह है कि पछि आया का गीरिनी चीर मागबी की घरेका पैठाची के साब ही कविक सारश है जा निमाण रुपद्मांजों से स्टूप कामा कांग है।

संस्कृत	पाछि	पैचाची	श्रीरसनी	भागपी
es (খাছ) en (নৰ) en (বৰ) en (বৰী) en (মনা) en (ছন) t (নে	क (थोक)	क (सेक)	(बीस)	(कोम)
	ग(क्त)	ग (नव)	(एका)	(छ्य)
	च(त्रची)	च (तये)	(वर्ष)	०(ठर्र)
	श्रा(स्वत)	च (स्तर)	(फर)	(सम्ब)
	त्रा(क्त)	व (क्तर)	यं(कर)	द (क्य)
	र (क्रा)	र (दर)	रं(कर)	स (क्य)

१ "सोवायतं दुवर्षं च शहतं स्तेत्वस्थायतम् ।

न बोजम्मं डिक्नेनरबो नयाँउ वर् क्षित्रम् (स्टब्युयास पूर्वबद्ध १०)।

<sup>3.</sup> The Origin and Development of the Bengales Language Vol. I page 57

हे पर कामूरणों में बचन बढ़ पतार दिया बचा है दिनका कर क्या पता के श्री के दिए पर पत्र में में परिवर्तन होता है और बचर के बाद बारेट में बची पतारक्ता रूप राज्य के लिए दिया बचा है।

<sup>•</sup> १२९ वर्ती के मध्यवर्ती शहरूक कर्ती ।

संस्कृत	पाछि	पैशापी	शीरसेनी	मागधी
रा (बरा)	स्ट (गप्त)	स ( बस )	स ( वस )	द्मा(वरा)
ष (मेष)	स (भेष)	स (मेस)	स (मस)	श (मेरा)
स (धारव)	म (सारस)	म (साप्य)	स (सारस)	श्च (रातर)
स (वयन)	न (वयम)	न (वचन)	ল ( শমন্ত)	ग (वयःग)
इं(पृष्ट)	इ (पट्ट)	हू ( प्टू )	ट्ट (पट्ट)	स्ट ( पस्ट )
र्थ (धर्व)	रेप (इस्प )	स्य (द्यान)	स्य (धन्द्र)	स्त्र (घरत)
सु (इयः)	ओ (भवो)	ओ (समे)	ओ (स्म्बो)	ए (दुस्ते)

पासि मापा की करपीत का समय जिस्त के पूर्व पार राजाकी कहा जाता है, किन्तु वह काल बुदाइव की सम सामयिक करण मागाची मापा का हो सकता है। पालि करण मापा नहीं, परस्तु बीदा पर्मे-साहिस्य की मापा है। संमयत यह मापा जिस्त के पूर्व चतुर्य या पक्षम राजाकी में परिचम भारत में करमण हह थी।

इस पासि-भाषा से आधुनिक सिंइसी मापा की पत्पत्ति हुई है।

प्राकृत राज्य से सावारणत पाकि-भिन्न अन्य भागायें ही समन्त जाता हैं। इससे, कीर पाकि भागा के अनक स्वतन्त्र कोष हाने से अस्तुत काम में बाकि भागा के शब्दों को स्वान नहीं दिया गया है। इसकिए पाकि भागा की विशेष आसीपना करन की मार्ग आवारपंकना नहीं है।

## (२) पैश्वाची

गुणाका ने "बूहरक्या पैशाची भाषा में लिगी थी जो लुप्त हो गह है। इस समय पेशाची भाषा के उदाहरण शाहतप्रकार, काचार्य हैमचन्द्र का ब्राह्मक्याकाण, पहमापावन्द्रिका, प्राह्मत्रवसंस और सीक्षेप्रसार चादि प्राह्मत-क्याकरणों में भाषार्य हैमचन्द्र के इमारपाल चरित तथा के क्यानुग्रासन में, मोहराज

पराजय नामक नाटक में और दो-एक पर्मापाखोत्रों में मिलते हैं।

भरत के नारपाल में पैताचा नाम का करनेल देखते में नहीं चाता है। परमु इसके परवर्ती केहर, कैशव निम व्यक्ति संस्कृत के कार्यमारिकों ने इसमा उरनेला किया है। बाग्मट ने इस मापा को "मूनमापिठ" के नाम से कामिहित की है।

वागुसट वर्षा करावसित्र ने कम से सून बीर पिशाच-श्रमुखि पार्शों के छिए और ैपड्सापा-विद्रिकासर ने पित्रवीय पश्चस, पिशाच जीर नीच पात्रों के छिए इसका विनियोग क्लख्या हैं।

१ पुलिय में प्रमा के एक वथन वा प्रस्मय ।

र, भाषायें वर्षोतन की पूक्तवन्याका में इसके के काम्यारों में बाण के हुएंबरित में पकामय के क्षाकरक में, मुदन्तु को बाधनरक्षा में भीर सम्याप्य माहत-संकृत देवों में इसका उत्तरेश पामा माता है। धेनेश्वकृत बृहत्कवारामधे और सोसरेशक्ट्र मधीत बवासियागर क्षेत्र हुएकवा का संस्कृत पद्भार है। इन बृहत्कमा के ही मिन्न-निम संशों के साकार पर बाल धीक्ष्रे मक्ष्रुति मारि संस्कृत के महाविध्यों की कारक्षरी सतावती मात्रजीमावर प्रमुख स्तेत्र संकृत वंदी की रचना की मही है।

र छ सरह सा।

४ काम्यालंबार २ १२।

४. 'तीवृतं प्राकृतं भीव पैदावी मानवी तवा' (मनकूत रोचर, पुत्र १) ।

चिन्द्रचे प्राहर्त हस्यापभ्र शोः भूवमापितन् (बारबद्धनङ्कार २, १) ।

यह भूनिश्यते विशिषत् तद्वीतिकसिनि वनुत्रम् (बामगतनद्वार २, ३) ।

८ पेराची तु रिसाचाया प्राष्ट्रः (मनद्वारदेसद, इत १)।

रतः निशासनीतेषु पैसारीहितमं सरेत् ।।११।। (वर्मावासनिक्रमः पृत्र १) ।

यह आपानशिक्षाकार पिरापनीयों भी आपा को ही पैशानी नहत हैं और पिराननीयों के निर्देश के किए मीने कार्यापनाम के रहोकों को बहुन्दा करते हैं —

नाएकने नयनञ्जीनस्वतैपातनुत्तनाः । मुक्तेयाचीनवात्तारहैनकनीनगास्त्रमा । एते पिरामिक्याः स्पूर्ण

साईण्डेय ने अपन प्राह्यसर्वेल में प्राह्मचन्द्रिक क

विश्वविदेशीयप्रकृषि च पाठनामं नीड-मानवस् । बाजरं शक्तिसार्थं च नीरसेर्गं च नैक्यम् ॥ सावरं वावित्रं चैव स्वस्था पितानवाः ।

बरर्गण ने शीरसेंनी प्राइट को ही पैशापी माण का मूस नहा है । माईप्लेड ने पैशाणी माण को कैसर शीरसेंग और वाध्यास इन ठीन मही में विभक्त कर संस्कृत और शीरसेगी कमत को कैक्स-देशाणी का और कैक्स गीराओं के शीरसेन पैशाणी का मूल नवसान है। पाध्यास देशाणी के मूस का करोंने निर्मेश हो नहीं दिया है किन्तु करोंने इसके जो केट (किन्) भीर मीहन [ कैनरए ) ये हो बहादरण निये हैं इससे माद्यम होता है कि इस सम्बन्ध

वा वर (राम) मार्च नाव (जाया) ने वा व्यावस्था वर्ष व इससे माह्य हाता हूं कि इस याच्याक राष्ट्रिय पैसाली वा वेकस्थानाणी से रावा और कार से क्यास्य के क्रांतिरिक व्यावस कोई मेर लाहि हैं सुरार्थ शीरमेन-पैसाली की साद पाण्याक-पैसाली की महाति भी इतके साद से कैक्क-पौसाली की हो करती हैं। यहाँ वर यह बहना कावस्थक है कि साइंग्लेव ने सीरसेन पैसाली के को सहाय दिय हैं बन पर से सीरसेन-पैसाली का

ह बर्गनान नहुए और बन्याहुनारि ने बाबयान के प्रदेश ना नाम बारणा पात्रकर हरेश वा नाम नेपन, स्वकासिक्यान के बर्गनान बानमानवाराने प्रदेश जा नाम कहीं। परिष्ण खादा ने विस्त प्राप्त का बान बस, बर्गरा के स्वराधि-स्थान के निप्ताहरों देश वा नाम हुपान करेगन काहून सीर देशप्रवाधि नहेश ना स्थान सम्माद दिवानन के निम्मनार्धी पार्टिम प्रदेश विदेश वा सम्माद के बीर सीराण नहाराण्य के पार्टन सामन वा नाम बन्धीन है।

र "प्रश्रुति" शीरनेथी" (प्राष्ट्रवत्रनारा १ र)।

क "काम का "ताम को करेदी" "ववारेकोशीताम् व "इलांग्यु व कारारा" "काम क्याँ "स्वामेक्ट है हस्य का "-"सत्वको: रा कार्य स्वाद" कर कोरो (१४) व. (बाहरतार्यात कुत १५५) ;

शीरसेती साथा के साथ कोई भी संबाद प्रतीव नहीं होता, क्योंकि कैठप-पैताशी के साथ झीरसेन-पैताशी के जो सेव् क्योंने करदाय हूँ वे माराची माथा के ही अनुक्योंहै न कि शोरसेनों के । इससे इन हो शोरसेन-पैताशी न क्यू कर मागप पिताशी करना ही संतव जान पढ़ता है।

पासूत वैसाकरलों के मत से पैरानी मापा का मूल शौरसेनी अथवा संस्कृत मापा है, किन्तु इस पहले यह मस्त्रीति विश्वा चुके हैं कि कोई भी प्राहेशिक कान्य मापा संस्कृत अथवा अन्य माहेशिक मापा से उर्यम नहीं है, परसु वह वही करून अववा प्राह्म पाइन मापा से उर्यम कही है, परसु वह वही करून अववा प्राह्म प्राह्म मापा से उर्यम हुई है जो वैदिक पुग में क्य प्रदेश में प्रचित्त थी। इस लिए पैशाणी मापा का भी मूल संस्कृत था शीरसेनी नहीं, किन्तु वह प्राह्मत मापा ही हो जो वैदिक पुग में भारतक्षे के एकार-पश्चिम प्रान्त की प्राह्म कान्य सामा हो।

प्रथम गुग की पैक्षाची भाषा का कोई निवर्षन साहित्य में नहीं मिलता है। गुणाका की बृहत्कमा संमयत इसी

प्रवस गुग की पैशाचा भाषा में रची गई भी; किन्तु वह आवध्य उपक्रक नहीं है। इस समय हम सपद। ज्याकरण, नाटक और भ्रवण में पैशाची भाषा के वो निवर्शन पाते हैं वह मध्ययुग की पैशाची मापा क्राहें। मक्त्रयग की यह पैशाची मापा किस्त को दिवींच राजाकों से पौंचीी राजाकी पर्यन्त

अचितित वी।

पैशाबी माना का शीरसेनी भागा के साथ जिस-जिस क्षेत्र में ने ते हैं यह सामान्य क्स से नीचे दिया जाता है। इसके सिंचा जग्य सभी अंशों में यह शीरसेनी के ही समान है। इससे इसके बाकी के काशण शीरसेनी बच्च के प्रकार से जाने जा सकते हैं।

### प्ण-भेद

- २. य और न के स्थान में न होता है, तैसे-शुक्र श्रुत कमक = कनक ।
- १ त और व की काह त होता है। जैसे-समबती = समवती। खत = सव। सबन = सवन। वेव=तेव ।
- ४ तमार वर्मे वरवाता है। यदा-सीव-सीव कुन्न व कुव।
- १ ६ के जगर ६ और इ होता है। जैसे- इटुम्बर, इटुम्बर, इनुम्बर ।
- 4 महाराष्ट्री के अवस्य में व्यस्पुक-व्यक्तन-पिलर्टन के १ से १३,१४ और १६ व्यक्ताले को नियम ब्लाह्मए गए हैं वे गीरसेनी भाषा में लागू होते हैं, किन्तु मैदानी में नहीं, यहा खेक व्यक्त व्यक्त काला साला, सट न सट सट न सट, गरूब न गरूब, प्रतिमास पितमास कराइन व्यक्त व
- पाटरा सावि श्रम् का द परिजत होता है कि में। मवा —पादश = याविस सदश = सविस !

### माम-विभक्ति - साम-विभक्ति

१ अकारान्त शब्द की पद्ममी का एकवचन माता और मृत्यू होता है। जैसे—बिनादो, जिनातु ।

### धास्पात

- र शौरसेनी के वि भीर दे मस्याने की जगह कि मोर वे होता है, यथा-गरुझति गरुझनं, रमति, रमते।
- भविष्य-कास में स्ति के बन्से प्रम हाता है। जैसे—महिष्यति = हुबेटव ।
- भाव और क्में में देव तबा इब के स्थान में इन्द्र होता है; यथा—पत्र्यते = पठिच्यते | इसिक्मते |

### क्रमन्त

१ ला प्रत्यस के स्थान में कही तुर और कही लून और उन् कोते हैं। सवा पठिला = पठित्त; गला = गल्कून सप्ता = नत्कूम, नह्णून; उप्त्वा = तत्कृत तह्णून ।

## (३) प्रक्षिकापैद्याची

चित्रप्रदेशाची माता के सन्दर्भ आचार्य हैमबन्द्र ने अपन माह्य-स्माकरण में और पेडित सन्दर्भकर में सपनी वड आवाचित्रका में दिए हैं। श्राचार्य इंगचन्द्र के ब्रुमारपास्त्रपति और काम्यानुशासन में इस माप्त क तिबारें में पाये बाते हैं । इसके अतिरिक्त हम्मीरसहस्तत सामक साटक में और शा-एक बोर्ट-बोर्ट निरर्शन यह मापास्तीजों में भी इसके इक्ष नमून एकन में बात हैं।

प्राकृतकाल प्राकृतप्रकारा, संश्वितसार और प्राकृतसर्थस्य कीया प्राकृत क्याकरको में और संस्कृत के कार्यकर प्रन्ती में बदिवारियांकी का कोई संस्थेय नहीं है। अब व बावार्य हेमबन्द ने और पे क्ष्म्मीघर ने बशिकारियांकी के को स्वयं विच है के ब.स. बररुचि, समरीहबर भीर मार्कण्डेम प्रसृति वैसाकरणों ने पैशाची मापा के सक्षणों में ही अन्तर्गत किए है।

इससे यह रपष्ट बाना साता है कि बळ वेबाध्यवनात वृद्धिजापैशाची को पैशाची मापा के बन्तमू व डी मान्ते ये स्वतन्त्र मापा के क्य में नहीं। आवार्य हेमचन्त्र भी अपने अभिधानिवित्तामणि नामक पैनाची में इस्ता संस्तृत क्षेप प्रन्य के पाता पर् संस्त्रातिका (साहत ११६६) इस यचन की पंस्तृतन्मकन-मायशै-तीरोती-वेतान्वनमंद्रमस्त्रा, यह व्याच्या करते हुए पृतिकार्यग्राची का कावता करवेल नहीं करते । इससे सासून धनार्थक

पहला है कि म भी चुलि संपेशाची को पैशाची काही एक अब मानत हैं। इसारा भी चही शत है। इसारे बही पर हम विरय में पैशाची मारा के कानतरोक विवरण से इस कांचिक लिखन की ब्यायरक्का नहीं रहती। सिर्फ लाखावें हेमकह ने और बन्ही का परा अनुसरण कर ५० ध्वसीयर न इस मापा के जो प्रश्चण दिए हैं वे मीचे कवश्चल किए जाते हैं। इनके सिवा सभी भेशों में नस भाग का पंशानी से कोई पार्वकर नहीं है ।

- १ को के वृक्षीय और चतुर्व क्रमर्थ के स्थान में क्रमण प्रवस और वितीय होता है। समा-मगर = नकर, क्याग्र = वक्टा, राजा = राजा निर्मर ≈निक्कर रहाग = दटाक, हका = ठका महत = मदन समुर = समुर बासक - पासक, भगवती = परवाती ।
- २. र के स्थान में वैश्वतिषक स होता है। प्रया—स्त्र ≃सुह, रहा।

## (ध) मर्पमताची

सामान महाशेर अपना वर्मीपहेश कर्पमामधी माण में हेते हैं ! इसी वपहेरा के अनुसार उनके समसामित है गुजबर का सुबसेष्ममा न कर्पमामधी माण में ही सावाराह मसूति सुन्धमनों की रचना की थीं ! ये मन्त्र इस समय किसे कही गर व परनु तिल्व परम्पा से कब्द-बाट हुए। संग्रेष्ट होते से ! हिगम्बर कैती के मद से व समस्त प्रत्य किसे हा गय है, परना रनेवान्तर जैन शिम्लार्स के इस सन्तत्त्व सं शहमत नहीं है। इसेवान्त्ररों के सत के प्राचीन की लगे की क्ष वह अपन्न प्रतासकार का प्रतासकार के बाद ९८ अजात जिल्लाक्य ४४४ में वस्त्री (वर्तमान क्या, करता सर्वमान्त्री वाठियाबाड्) में भारविद्यापिय श्रमाश्रमण ने वर्तमाम श्रास्तर में खिपिबत किए। वस शतय दिखे बात पर भी इन मन्त्रों की मापा प्राचान है। इसरा पड़ कारण यह है कि जैसे माहकों में कप्छ-पाठ-वारा बहु-रातानी-जान पर भा इन माना का नाम भागा है। उन समित के साम किया है। जा साम का का का का किया है। वह समित के साम की की साम वर्षमा हैही भी रक्षा की थी। वेस ही। जन समितों ने भी लगानी शिया-वराज्या से सुक्ष-माठ हारा करीन एक हमार वर्ष वर् नाया है, बहुँ तह कि सात्रा मा असर के भी अगुद्ध मा क्रिफेंट क्षण्यारम करने में होत मात्रा गया है। विस पर मी धुट राज है। यह जब र पान का मार्किया मा अवस्था कर किया कर कर कर का का साम का का अपने कर अभी की आपा का सुक्त निर्मान करने का दुन बात का खीतार करना ही पहुंगा कि आकान अहापीर के समय की कार्य

१ सन्य वैदावरातों के तन वे बद्र निक्स राज्य के पार्टि के प्रकारों में बाधू नहीं होता है (है। प्रा. ४ १२७)।

२ "अन्तरं च रो संदर्भादीए धानाए नामनाएनप्र" (अमनासाङ्ग गुत्र पन ६ ) । े हुए हो हमरी वहार महारहि बुलियान रहाते जिल्हारहुहार " अवसन्यार बाहार बाहार बाहार हाणा 'सा दि प सं व्यवनानमा त्राना ठीन क्ष्मीन व्याध्यम्प्राधिकानं घराको बन्नमात् परिछानैलं परिछम्पः" (सौरामधिक नून) ।

व 'धार्च मानह साँदा, नूनं संबंति कतहरा तिका (धारश्यवनिर्मित) ।

भागभी भाषा के इन प्रन्यों में, लक्षातभाव से ही क्यों न हो भाषा-विषयक परिवर्तन अवस्य हुआ है। यह परिवर्तन होना बारंसन भी नहीं है, क्योंकि ये स्व-प्रथ्य पेतों की तरह राज्य-प्रधान नहीं, किन्तु अर्थ-प्रधान हैं। इतना ही नहीं बस्कि ये भन्द जन-साधारण के बोध के किये ही इस समय की कृष्य भाषा में रचे गये थे और कृष्य भाषा में समय गुजरने के माय-माय अवस्य होनेबाछे परिवर्तन का प्रमाय कण्ड-पाठ के रूप में स्थित इन सूत्रों की भाषा पर पहना अन्तत उस बस समय के बोंगों को समन्त्रने के रहेश्य से भी, आव्यर्कर नहीं है। इसके सिवा, माधा-परिवर्धन का यह भी एक मुक्य कारण माना जा सकता है कि भगवान महाबार के निर्याण से करीब दो सी वर्ष के बाद (जिस्त-पूर्व २१०) बन्द्रग्राप्त के रामस्य काल म मगज देश में बारह वर्षों का सुदीर्ष अकास पढ़ने पर सामु होगों को निवाह के किए समुद्र-तीर-वर्ती प्रदेश (र्शाइल देश) में आता पदार्था इस समय दे सूत्र प्रमां का परिशोकन न कर सकते के कारण उन्हें मूठ से गय थे। इससे अकार के बाद पार्टीस्पुत्र में संघने एकत्रित होकर जिस-किस साचुका जिस-जिस सङ्ग्राप्य का जो-जो कॉश हिसा-जिस आकार में याद या गया था इस-इस से इस-इस अक्ष-माना के उत्तरक्ष और को इस-इस स्पूर्ण प्राप्त कर ग्याध, अक्ष-मग्यों का संकतन किया । इस घटना से जैसे अक्षमन्यों की माया के परिवर्णन का कारण समक्ष में था सकता है, वैसे इन मन्यों की धर्ममागधी भाषा में मगभ के पार-पर्ती प्रवर्शों की भाषाओं की तुबना में दूरवर्ती महाराष्ट्रप्रदेश की मापा का जो अधिक सान्य देखा जाता है उसके कारण का भी पना चलना है। जब ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात सिद्ध है कि इंसिण प्रदेश में प्राचीन काछ में जैन धर्म का अच्छी तरह प्रचार और प्रभाय हुआ बा तब यह अनुमान करना अयुक्त नहीं है कि एक वीर्पकादिक अध्यक्त के समय साधु खोग समुद्र-वार-पर्वी इस दक्षिण देश में ही गए थे और वहाँ उन्होंने उपदेश-द्वारा केन धर्म का प्रचार किया या । यह कहन की कोह आदश्यकता नहीं है कि एक साधओं हो विक्षण प्रवेश में एस समय जो भाग प्रचित्व थी बसका अच्छी तरह ज्ञान हो गया था, क्योंकि उसके विना उपवेश हारा धर्म-प्रकार का कार्य ने कर ही नहीं सकते थे। इससे यह असंभव नहीं है कि छन साधुओं की इस नय-परिचित मापा का प्रभाव उनके कुम्छ-स्वित सुत्रों की भाषा पर भी पद्मा था। इसी प्रभाव को जेकर बनमें से कईएक साधु-स्रोग पाटलिएव के एक सीयन में रपस्पित हुए ये जिससे अहाँ के पुनः संकलन में उस प्रमाव ने न्यूनाधिक मंत्रा में स्थान पाया वा।

रक घटना से रुपैब बाद सी वर्षों के बाद बस्मी (सीराष्ट्र) और मधुरा में जीन प्रस्मों को लिए बाद करने के लिए मुनि-समेबन किए गए थे, क्योंकि इन सूत्र मध्यों का और वस समय तक बाद की जैन प्राप्त रचे गए ये उनका भी कमशा विस्तरण हो बच्च वा और यदि वही बच्चा इक अधिक समय तक बाद प्रती तो समग्र जैन शास्त्रों के स्नेप हो बाने का बर वा जा बास्त्रय में सस्य था। संभाव कर सम्मय कर जैन साधुओं का आरतवर्ष के अनेक प्रदेशों में विस्तार हो जुक्च की हा ना माम भी कीर इन समस्य मोदों से स्वाधिक संस्था में आकर साधु खेगों ने इन संभवनों में योग-बान किया था। मिक्र मिक्र मिक्र प्रदेशों से आगत इन मुनियों से जो मन्य अपया प्रश्व के क्षेप्र विस्त क्य में प्राप्त हुखा उसी क्य में वह सिप्त-बाद किया गया। बक्त मुनियों के मिक्र-मिक्र प्रदेशों में सिर-बाद तक विस्तर्त के कारण वन प्रदेशों का निक्र-मिक्स भाषामों का,

वकारणों का और विभिन्न प्राष्ट्रम माराजों के स्थाकरणों का कुछ-न-कुछ करुष्टिय प्रमान करके क्यर-दिशय वर्ग-मानों की भागा पर भी पहना करिनायें का। यही कारण है कि क्षा-मानों में, यह ही आहमान के किस मिक लेगों में और नहीं नहीं को एक ही उंदा-मान के एक ही बाहम में पारस्य के एक ही भाग में के प्रमान के एक ही बाहम में पारस्य के प्रमान के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्रमुख के प्र

बहाँ पर प्रसंत-क्या इस बात का बहेल करना विषय प्रतिक हाता है कि समावांग मूत्र में निर्दिष्ट कंग-मन्य-सम्बन्धी विषय और परितान का बहैमान कहा-मन्यों में वही-कहीं जो बाना-बहुत कमरा विसंवाद और हास पामा बाता है और अहमन्यों में ही बाद के विपाद मन्यों का और बाद की फिनाओं का को बाह ले हारियांचर हाता है बसस्य समावान भी हातकों कर सम्मेक्ष्मों की करमात्रों से अच्छी तक सिक्ष बाता है।

ैसरवादाङ्क सूत्र क्याज्याप्रक्रांति सूत्र कीपरातिक सूत्र कीर प्रकारचा सूत्र में तथा सरयार्ग्य प्राचीत जैत प्रस्यों में जिस भारा को सबेमाराकी नाम दिया गया है, स्वानाङ्कासूत्र बीर खतुषात्रारसूत्र में जिस भारा को 'ऋषिमात्रिता' क्या वस्त्रास्यों दौर सार्थ (क्यायें के भारा में कीर सार्थ में कारा में कारा की है क्या स्वतृत्य पत्र हो भारा है स्वतंत्र स्वतंत्र में स्वतंत्र स्वतं कीर मार्थ ये तंत्रों एक ही भारा के निक्रनियम नाम है, जिसमें प्रस्था प्रस्तंत्र के स्वतंत्र से स्वतंत्र

भीर आपे ये तीनी एक ही आपा के निमर्नसम्भ नाम है, बिनमें पहच्च इसके इत्पाचि-स्वात से और बाद्ये के दो बस आपा को सर-प्रकास साहित्य में काम देनेबास्में से सम्बन्ध रकते हैं। जैन सूत्री की आप्य यही कार्य सामकी, च्यपिमापिता वा आपे हैं। काचार्य होमकबू में अपने प्राहन-स्वाहनय में आवे प्राहन के को स्वयुव और तबाहरण

१ सम्बाद्यक्र सूत्र यत्र १ ६ से १२१।

र, "सदरा राफ्ता वेष रहा भटितीयो चाहिन्छ।

६ देवो, देवचळ-बाहतम्यावरशा का सूत्र १ ६०

अवस्था कारका चैत्र मस्तिरंगी होति क्षेत्रिका सा ।

बरमंत्रनाम्न निरस्ते नवस्य इस्मिमसित्।॥<sup>११</sup> (स्वातासुनूत ४००-नव २६४ )।

त्तरंत्रतीम विश्वेद वक्तवा इसिमासिमा ()<sup>त</sup> ( स्नुवोद्याप्तूब, पत्र १६१ ) ।

```
१. 'चहा पसन्त्राय वस्त्रप वाह्यस्त्रेण' ( सान्त्यप्रकृति सूत्र १ १—नव ११)।
१ केवे लगान्त्र तृत पत्र ११ में संत्रुत विकासन्त्रमः।
४ केवे छूत्र १६ में दिवा हुवा सम्त्रायहृत्यूत्र सीर सीरमानिकृत का पत्रः।
श्रेता छूत्र १६ में दिवा हुवा सम्त्रायहृत्यूत्र सीर सीरमानिकृत का पत्रः।
श्रेता छ कीं। वर्गत कर्मास्त्रा का प्रतिक्रमान्त्रों निकासित्र । ( सान्त्यप्रकृति मृत्र प्रमुक्त ११)।
भें क ते स्वतारिका ) नावारिका के छूत्र सम्त्रायहाय मान्त्रर प्रसुक्ति ( महाप्त्रमानृत्र १—नव १२)।
मद्यतिक्रमानिका केवं केवार्थ काद्यमान्त्र प्रदूष्ण कार्यस्त्रमान्त्र ( निकास्त्रमान्त्र । ।
"सार्विकास कार्यस्त्रमानिका काद्यमान्त्र । ( सान्त्यप्रकृत्य केवं कार्यस्त्रमान्त्र । ।
"कर्मतिकामी वस्त्रमान्त्र विराणिकारे।
सर्वत्र वर्षण वार्तिमानिका स्त्रित्रपति । ( सान्त्यक्राय्यम्यकार क्षत्र के )।
```

"वार्वेद्रपतार्वपुरूषं च विश्वित प्राप्तते विद्राः" (विश्वपत्रवर्षशामित कारा साम्यस्योतीका १ ६६ वें समूच विश्वा हुव्या सर्वात ) ।

बताय हैं जनसे तथा पत एवं सौ दृष्टि मानप्याय (है प्रा ४ २००) इस सूत्र की क्वाक्या में ओ येपार नेपायणमञ्जानह बाह्यानियर इनद सूती " दर्ज्यानिता बार्पस्य पर्वमायकमायानियतलमान्तामि बृहेस्तर्वाच प्रायोजनेत विकासार, न कत्यमायलक्ष्यस्य यह कह्कर तसी के अनस्या को ब्हाबिक्सिक सूत्र से त्यूत 'क्वरे सायक्ष्यह, से तारिक्ष निर्मास्य यह बदाहरण दिया है तससे कुछ बात निर्मायन सिद्ध होती हैं।

हों के क्यों ने प्राचीन जैन पूर्वों की मापा को प्राचीन महाराष्ट्री कहकर 'जैन महाराष्ट्री नाम दिया है।" हों दिराक ने क्यने सुप्रसिद्ध माइन न्याकरण में हों लेकांबी की इस बात का सममाण खंडन किया है और यह सिद्ध किया है कि आप ली एक सोनाम है ने पर स्वाप्त के हम से प्राचीन जैन पूर्वों की न्याय और प्रच दोनों की माया परम्यरागत मत के अनुसार अर्थनामाभी हैं। परवर्ती कात के जैन माइन मन्यों की माया अरुपांत्र में अर्थमामभी की और अधिकांत्र में महाराष्ट्री की विग्रेपताओं से युक्त होने के करण 'जैन महाराष्ट्री' कही जा सकती हुँ, परन्तु प्राचीन जैन सूर्वों की माया के, तो श्रीरसीनी आदि भायाओं की अपेका महाराष्ट्री से अधिक साम्य रक्तती दुह मी, अपनी उन अनेक आसियतों से परिपूण है जो महाराष्ट्र आदि किसी प्राचीन नहीं होता हैं, यह (जैन महाराष्ट्र) माम नहीं हिया जा सकता हैं।

पंडित वेचरतास अपने गुजरावी प्राइत-ज्यारक्ष्य की प्रास्तावना में जैन मुत्रों की अर्थमागमी भाग को प्राइत (महाराष्ट्री) सिद्ध करने की विषय्ध पेदा करते हुए वो केकोबी से भी वो करम आगे वह गय हैं, क्योंकि वो जेकोबी सव इस भाग को प्राचीन सहाराष्ट्री —सहिर्द्ध निक्क सहाराष्ट्री से ग्रुपत महाराष्ट्री त्या विद्व वेचरतास, प्राइत मागाओं के हतिहास वानने की विनक भी परवाह न रसकर, अर्थावन महाराष्ट्री से इस प्राचीन सर्वमनमों महाराष्ट्री थे अर्थमागमों को अभिन्न सिद्ध करने को यो हैं। पंडित वेचराहास ने अपने सिद्धाय के साम्योन से स्रा

निष्ठ है बुद्धें मेश की हैं ये अपिकांश में भारत संस्कारों से बराम होन के कारण क्य महत्त्व न रखती हुई मी कुराहुक-अनक अवस्य हैं। वन दक्षीकों का सार्यश पह है—(१) अर्धमाराधी में महाराष्ट्री से मात्र वो बार क्यों के ही पिरोपता। (२) आबाय हमकल्प का इस माण के जिए स्वतन्त्र व्याकरण या शीरतेनी आदि की तरह अल्या अल्या सूत्र म वन्यकर प्राकृत (महाराष्ट्री) या आपे प्राकृत में ही इसको अस्तरीत करता (३) इसमें मागधी मापा की करियम विहोपताओं का समाव; (४) निशीक्ष्मिकार के अर्पनाराधी के होनों में एक भी ब्यह्मय की इसमें अर्सनार्था; (१) प्राचीन जैन मान्यों में इस भाषा का भाकृत अब्द से निर्वेश; (६) नान्य-शास्त्र में और प्राकृत-स्याकरणों में निर्दिश अर्पनाराधी के साम प्रस्तुत कर्पनाराधी की सरमाराता।

१ मायकी मापा में सकारान्त पुरितय शब्द के प्रवस के एकवचन में 'ए' होता है।

इतका सर्व यह है कि आचीन भावामों से न्युक्त कुर सर्वभावनी आवा में नियत हैं ' इत्यानि क्वन-डाय आर्य वाचा हो की
सर्वभावनी प्राचा नही है नह प्रामः मानवी भावा के हमी एक एकारवाने दिवान को सेकर, न कि बाने कहे जानेवाले भावती
आया के सन्य बलाए के विवान को सेकर।

ह बड़ी बचन के धायार पर जो, हांनींस का चएन-इन भाहतसराय के शर्रहेक्सन ( १८ रंब ११ ) में यह निक्रता कि हेमचल के मन में भोरवर्ष बार्ड आहत का एक नाय है, अय-पूर्व है, क्वींकि यहां पर भीरवर्ष सब सुन का ही क्लिक्ट है, भाषा का नहीं।

४ धानरमञ्जून के पारिहानिकम्प्रकृत ( है. बा. पू. फं. पत्र ६२८ ) में व्यू छपूर्ण बाबा इस राव्यू है. — 'पुन्नावरर्षपुर्व नेराफर'र सर्ववर्यनिक्य । पोराश्ययमान्युवाहरिक्य हुन्ह पूर्त । ग'

X Kalpa Sutra Sacred Books of the Bast Vol. XII

<sup>4</sup> Grammatik der Präkrit-Sprachen 16 17

वेदे पाचार्य हेमचल ने मतने बाहर-व्यावरण में बहाराष्ट्री भागा के मने में बाहर राज्य का अरोग किया है नेते पीवत केनराश
 ने की मान्य-व्यावरण में जो केवल हेनावारों के ही बाहर-व्यावरण के मानार पर रचा करा है वर्षन ठाईहीतक
महाराष्ट्री के मने में ही बाहर राज्य का स्ववहार किया है।

'वीरहेनी व बीधे व बाधे वाल्या व दाहरी । बादि प्राक्त्यनिकेवं व्यवहारेषु बंतिविस् ।!' (१. ६४) ।

हन कुछ बड़ों में यहां बात करी है। इससे भी यह स्मष्ट है कि माइठ राक्य मुक्ता माहेरितर क्रोक-माण का ही वक्त है और इससे मायास्त्रत सभी माहेरितर करन आयामी के कार्य में इससे मायास्त्रत सभी माहेरितर करन आयामी के कार्य में इससे का ना है। इससे के इसन तक के सभी मानेश सेनी में इसी कार्य में माइठ राक्य का कार्य है। इस देही में भी माहास्त्री भागा में माइठ सम्ब के माहेरितर करते हुए इसी वात का समर्थन क्या है। इसके के महास्त्राच्यों के स्वास्त्र माहेर्त सम्ब के माहेरितर करते हुए इसी वात का समर्थन क्या है। इसके के महास्त्र माहेरितर कार्य है। इसके के कार्य माहेरितर के साम हो मानेश है सम्ब में माहेरितर कार्य है। इसके के कार्य माहेरितर कार्य माहेरितर के कार्य माहेरितर कार्य म

र 'मार्ट प्रकृतं बहुई समिति । तमीन नवस्त्वानं स्तीनेत्यानः । आर्थे हिस्सी विकास विकारपाली' हि प्रार हो । १. केने, हेमनेत्रसाहतः सात्ररस्त के र ४६० १ १६० १ ४६० १ ११० १ १९० १ २२०० १ २५४८ २ १७० २ ११०२ ६ १८ १९ १९ १९ २ १७४० ३ १६१० और ४ १०० वर्गों की साह्यतः

३ 'क्टरारा बचा कलेबोनां बराधीयों 'प्रमुख' रूप समुद्र नामारी पुष्प के प्रभूतेव्यारातं 'स्वत्य कृत्ये नी व्यावस्य वर्ष बराध्येती के (इ. १६ छ.)। वेदावस्य बराधियाः समयाते ता प्रश्नाप्त कर्यातं प्रमुख समयातं क्षात्रं प्रमुख महान्य प्रमुख प्रभूतिना स्वाचाचीय पण प्रस्त्यते प्रमुख समयातं ता प्रश्नाप्त कर्यातं वर्षात्रे के स्वतं वर्षात् का स्वतं वर्षात्रे के स्वतं वर्षात् सम्बद्धाः स्वतं वर्षात्रे के स्वतं वर्षात्रे क्षात्रे के स्वतं वर्षात्रे क्षात्रे के स्वतं वर्षात्रे क्षात्रे के स्वतं वर्षात्रे क्षात्रे क्षात्रे के स्वतं वर्षात्रे क्षात्रे के स्वतं वर्षात्रे क्षात्रे क्षात्रे के स्वतं वर्षात्रे क्षात्र क्षात्रे क्षात्र क्षा

४ 'महाराष्ट्राममा भागो प्रकृष्टे प्राकृते विदुः' (काम्बावर्त १ ३४) ।

"सम्बद्धा पादवा थेव बुद्धा मण्डियो माहिया । सरमॅडसम्ब पिक्वते पसला इधित्रासिता ॥"

बैसे वीद्यपूत्रों की मागभी (पाकि) से नात्र्य शास्त्र मा प्राष्ट्रत-स्वाक्रणों में निदिस मागभी मित्र है वैसे जैन सूत्रों की अर्थमागभी से नात्र्य-साम की पा प्राष्ट्रत स्वाक्रणों की अर्थमागभी भी अपना है। इससे बीद्यपूत्रों की मागभी माट्य-शास या प्राष्ट्रत-स्वाक्रणों की मागभी से नेत्र न रहते के कारण वैसे महायद्भी न की बाहर मागभी कही जाती है बैसे कैन सूत्रों की अर्थमागभी माथा भी मान्य शास्त्र या प्राष्ट्रत-स्वाक्रणों की अर्थमागभी से समान न होने भी बजह से ही महायद्भी न कही बाहर कर्यमागभी ही कही जा सकती है।

१ 'पस्तो सक्तम-वंबों पाडम-बंबोर्ड होद सुब्रमार्टे' (कर्नुरमध्यर्ट शक्त १) ।

२, 'तूरकेम्परि प्राकृतवारीव तवा प्राकृतमेवापम रा' (काव्यावाकूर-टिम्पस २, १२) ।

१ वर्षमामेव प्रार्वयातायाँ —(काम्यारहेनीका १ ११), 'वाहरीरकोत्र देशनानोपस्तिकाः सर्व एव भावाः प्राष्ट्रवर्धमीण्यक इति पुष्टिकां (काम्यारहेनीका १ ११)।

सरव-रिवत को बाते नाट्य थाका में दिन साठ आपाकों का बल्लेल है सनमें एक कार्यमागती भी है। इसी मान्यराख में ताटकों के नीकर, याजपुत्र कीर कोंग्रेड र पात्रों के क्षिप इस आपा का प्रयोग निर्दिष्ट किया गया है। इससे मान्यराख में इन पात्रों की जो आपा है वह काश्मागाधी कही जाती है। परन्तु नान्हों की कार्यमागती और परस्पर समानाशी के बापचा हतना लिक्त भह है कि यह पक हुवारे से काश्मित कभी तराज्ञान कांग्रेसनाथी नहीं कही जा सकती। मार्ककेष्ट में बापचा हतना लिक्त भार मार्ग्य आपा के क्षत्रम बतावर तथी किन्तुन के प्रवेशकारी परस्पत कार्य में बार्यमागती मारा का यह सकत कहा है— तीरहेला बहुत्यादिवनसर्वनावर्षण किन्तुन के प्रवेशकार कार्य स्थापन के निकट-वर्ती होने के बारण सागनी ही कार्यमागती है। इस स्थाप के

है कि है अर्थात जीरोजी साथा के निक्रम्यो होने क कारण साथा है। स्वित्त के स्वार्थ कर स्वर्ण कर स्वर्ण कर स्वर्ण कर स्वर्ण कर स्वर्ण कर साथा है। इससे क्षा कर साथा कर साथा कर साथा कर साथ कर साथ

जस इम पहते वह चुके हैं, जेत मुत्रों की अपैमानकी में इतर मापाओं की अपेका महाराष्ट्री के अक्क क्षिक हैं। किन्तु यह याद रक्ता पाहिए कि में कसन महाराष्ट्री से कीन अपैमानकी में नहीं आते हैं। इसम करण यह है कि जिन भुनों की अपैमानकी माण साहिएक महाराष्ट्री माण से अपिक मार्थन हैं और भुनों की अपैमानकी माण साहिएक महाराष्ट्री माण से अपिक मार्थन हैं कीर इससे यह (अपैमानकी महाराष्ट्र) का मुख कही या सकती हैं। वे हॉनिक में जीन अपैमानकी स्थापन्ट के महें कि प्रेत मार्थन कर के हर के बहुक स्थापन की से अपीक मार्थन म

प्राचित है सीरसभी मायाओं का मूळ माना है। ब्याचार्य हेमचन्द्र म क्याने माहरू-ब्याक्टण में महाराष्ट्री सम तोर स आवांशीन महाराष्ट्री-साहरूत से सामान्य नाम से एक माया के क्षका दिए हैं और सनके कासूरण सामान्य तीर स आवांशीन महाराष्ट्री-साहरूत से कर्पुण किम है। परन्तु नहीं बामेगागांधी का माथीन जस सन्तों से क्याइएण किम है बहुई इसका आदे माहरू का विदाय नाम दिया है। इससे प्रतीत होता है कि ब्याचार्थ हैमचन्द्र से सी एक हो साथी के प्राचीन कर का आदे माहरू कीर व्याचीन रूप को महाराष्ट्री मानते हुप वार्ष माहरू के महाराष्ट्री का सक सीकार किया है।

सहसीब काममानाभी में मानकी माना के सकत करिकांत में पाये बाते हैं इससे मानाभी से ही कार्बमानकी माना की क्यांत हुई है बार जैन सूत्रों की माना में मानाभी के स्वरूप अधिक न सिक्त से यह कार्यमानकी कहकारी योग्य नहीं कर जो भ्राम्य संस्तार कर्य क्षेत्रों के सम में जमा हुआ है, वसका मुख है कार्यमानाभी शाब्द की सामारी सामा के अभीक

१ "मारम्परितां प्राप्पा तुरोत्सर्वेतानदी । बाह्रीरा राजिएस्ता च स्प्त बादा प्रशैक्तिया" (१७ ४०)।

र जिल्ला राजुनारा पंक्रिया चार्वचारची" (मरस्येन राज्यका निर्यम्बानचैप त्रीक्यात् १७ ६ )। बारोदा ने साने व्याप्तर में रह विकार में नारा का नाम केर को कार काल किया है नह इस तस्य है—"एक्सी-में क्रियोग्नासिर्यनार्थी देशी रहा का सामान्य का त्या है।

३ आरवस्थान (इन्ड १३)।

४ संधितवार (क्षुत्र रे≐)।

<sup>.</sup> को जान-परिच नह बाते 'बाररतां तीर 'स्वन्त्रमानां में बमतः के छना की की बाता तीर सूक्त के 'पूच्यक्तिक' में केट तीर पत्नी करणात्व में भारत

<sup>(</sup> It thus seems to me very eleve that the Prakrit of Chands is the ARSHA or ancient (Pornas) form of the Ardhausgadh Mahhrashtri and Saurasen;" (Introduction to Prakrita Lakshana of Chanda, Page XXX.

में महण करना, अर्थात 'कर्य मागभ्या' यह ब्युस्पत्ति कर 'जिसका सर्घात्र मागवी मापा यह सर्पमागधी' ऐसा करना । वस्तुतः वर्षमागर्भे राज्य की न वह व्युत्पत्ति ही सत्य है और न वह वर्ष ही। वर्षमागर्भी राज्य

प्रवेशायनी एम्ब की की नास्त्रविक व्यूत्वचि है 'अधमनधस्त्रेयम्' भीर इसके अनुसार इसका मर्थ है 'मनध देश के अर्घाश की जो भाषा यह कार्यमागयों । यही बाव जिस्त की सावती श्रवाब्दी के मन्यकार भीजिनदासगणि र्सगत-भूरमत्ति महत्तर ने निशायनुर्णि नामक प्रस्य में 'पोराएगडमानहमासानियमं हरर मुतं" इस एस्लेख के 'अर्धमागम' दास्त्र की स्थासवा के प्रसङ्घ में इन स्पष्ट शान्त्रों में कहा है - "प्रवहतविधवशासानिवद चत्रमावह" चामान् मगाम देश के मार्थ

प्रदेश की भाषा में निक्द होने के कारण प्राचीन सब 'अर्थमागय' कहा जाता है !

परम्तु अर्घमानाची का मूछ उत्पत्ति स्थान पश्चिम भगव अयवा मगव और शुरसेन का मध्यवर्जी प्रवेश (अयोभ्या ) होने पर भी जैन वर्षभागधी में मागधा और शीरसेनी भाग के विशेष छम्रण दसने में नहीं बाते ! महायादी के साथ ही इसका अधिक साहरम नजर आता है। यहाँ पर प्रश्न होता है कि इस साहरम का काण क्या है? सर मियसैन न अपने प्राह्म मापाओं के मीगोक्षिक विवरण में यह रिवर किया है कि जैन अर्घमागमी मध्यदेश प्रेन प्रचैपादकी का ( द्वरसेत ) और समय के मध्यवर्ती कुछ ( अयोग्या ) की भाषा थी एमें आधुतिक पूर्वीय हिन्दी उससे सर्वात स्वात भीर वसमा हुई है। किन्तु इस देवत हैं कि अर्थमागरी के बसुणों क साब मानची, शीरसेनी और प्रसद्धाः 'मद्याराणी' के आयनिक पूर्वीय क्रिन्त का कोइ सम्बाध नहीं है, परन्तु महाराष्ट्री प्राकृत और आयुनिक मराठी भाषा के शांच सारस्य का नारख साथ वसका साक्ष्य अधिक है। इसका कारण क्या ? किसीन अभीतक यह दीक्छीक नहीं बताया है। यह सम्मव है, जैसा इस पानिष्ठपुत्र के सम्मछन क प्रसाग में रूपर कह भाग हैं, बस्तुगत के राजायकान में

( किस्त-पूर्व ३१० ) बारह बर्गों के जराज के समय जैन सुनि-र्सप पाटकीपुत्र से दक्षिण की भार गया था । इस समय वहाँ के प्राप्तन के प्रसाय से अंग प्रन्यों की भागा का जुड़-कुछ परिवर्तन हुआ था। यही महाराष्ट्री प्राप्तन का आये प्राक्त क साय साहरम का कारण हो सकता है।

सर आर. कि भाण्डारकर जन अर्थमागनी का कर्यांत-समय ज़िलीय द्वितीय क्रवांची मानते हैं। इनके सद में कोड़ भी साहित्यक प्राकृत भाषा जिल्दा की प्रवस या दितीय शतान्त्री से पहले की नहीं है ! शायद इसी मत का अनुसरक कर हो मनीविद्यमार पटांची न अपना Origin and Development of Bengalee Language नामक पुस्तक से ( Introduction rage 18 ) समस्त नाटफीय प्राकृत भाषाओं का और जैन अधीमागरी का करानि

तत्पति-समय काल किस्तीय वृत्तीय शताच्या रिवर किया है। परसु त्रिवेग्द्रम् से प्रकाशित मास-रिवत को काते नाटकों का निमाण-समय अन्वव जिल्ल की दूसरी शताब्दी के बाद का म होन से और अध्योप-कृत बीद-धर्म-विवयक माटकों के जो कविषय अंश को स्युक्त न प्रस्तित किए हैं बनका समय क्रिस्त की प्रथम बाताव्या निश्चित होन से यह प्रमाणित होता है कि बस समय भी नाटकीय प्राकृत मात्राण प्रवक्ति थी । और हॉ स्पूडमें ने यह स्वीदार किया है कि अध्यपोप के माटकों में जैन अर्थमागर्धा भाषा क निद्दर्शन है। इससे जैन अर्थमागर्धी की प्राक्षीनता का यह भी एक वियाल प्रमाण है। इसके अविरिक्त, डॉ जग्नेकी जैन सूत्रों की भाषा कीर मनुष के शिटाहेकों (क्रिस्टीय सन् ८३ से १५६) की भागा से यह अनुमान करते हैं कि कन अंग-मन्त्रों की अर्थमांगधी का काल किल-पूर्व अनुर्ध शताब्दी का ग्रेप भाग

अयवा सिल-पूर्व वृत्तीय राताच्यी का प्रथम भाग इ। इस डॉ जिमेवी के इस अनुमान को ठीक समस्ते हैं जा पारसियुव के वस सम्मासन से संगति राजना ह जिसका दक्क हम पूर्व कर खुक हैं।

संस्टत के साथ महाराष्ट्री के जा प्रधान-प्रधान भए हैं, बनकी संक्षित सूची महाराष्ट्री के प्रकृत्य में हा जायगा। यहाँ पर महाराष्ट्री से अर्थमागर्थी की वो मुक्त-मुख्य किरोपताएँ हैं करही मंश्वित मुक्षा ही जाती है। एससे अर्थ मागर्थी क समागों क साम महाराष्ट्रा क समागों की तुसना करन पर यह बाच्छा तरह शात ही सहना है कि महाराष्ट्री की अपना अपेमागयी की बेदिक और सीकित संस्कृत से अधिक निकटता है जो अर्थ भागमी की माचीनता का एक भेड़ प्रमान कहा जा सकता है।

बण-भेट

१ दो खरों के मध्यमर्ती असंयुक्त क के स्वान में प्राय: सर्वत्र व भीर भन्नक स्वक्तों में व और व होता है जैसे---ग---जन्म = पत्मा बारर = बारर, मानाग्र = प्रापाना जनार = पनारा बानक = सारवा रिश्जेक = विवसवा निरोधक = ग्रियेक्च सोक म सीवा चारति = पाया ।

- स-माणवण = प्राप्तस्य (कार्यभाग-नाम ११०) बामारिक = सामारिक (स. १२२) विषुष्तिय = विषुष्तिय (स. १२२) विषेष च बहित (स. १११) सम्ब्रेनिक - बार्बरिक (स. १११) नेपरिक = सेपरिक (स. ११०) नेपरिक = विरामिक (स. ११०) वर्षीय = बहुति (स. ११०) नेपरिक = मेर्पर्स्त (स. १११), सीरोयक = बीरोयक (स. १४०) मारवान = माराति (स. १४०) नेपरिक = बीरोयक (स. १४०) मारवान = माराति (स. १४०) केर्युनिक = क्षेत्र नित (स. १११) सम्ब्रामिक = बारिक (स. ११९), सर्विक = ब्राह्मिक (स. ११९) स्वाप्ति (स. ११९) स्वाप्ति (स. ११९) स्वाप्ति (स. ११९) स्वाप्ति । स. नामिक = क्षार्य लीज = मोराविद्यं ।
- २. दी श्रेसी के बीच का कर्तमुख्य प्रायः कायम रहता है। क्वीन्यही इसका ए और व होता है। जैसे--पास्ता-यापन वास्त्रत = पास्त्रत वानुवारिक = प्रमुचारिय, व्यापीत्व्य = धार्यत्रस्य बावर = बावर, व्यापित् = प्रापि, भक्ति = पार्थ वार्षत्र = पाठत (त्र १९७): वारर = वापर ।
- व पार प्रश्निक क्षारंत (द्वा १६०) स्थार वसरा में त और य कमय ही दोता है। व के श्वाहरण, जैसे—तायव ज शायत (द्वा १९०) वशक् - वर्षा (ता १६ १४.) अवश्व = वावत्त्व (द्वा ४११) क्यांक्ट्र = वसाते [विचा १ १ ) वावता = वामसा करवार = क्यांक तो व = क्षेत्र सामार्थ = सामार्थ = वावत्त्व (त्वर्ष) में हैं— मोतिय न मोति (द्वा २ ६ १) वज्र = वतिर (द्वा १३०) पूचा - वृत्वा (द्वा १३०) स्वेश - क्यांत्व (द्वा ४६०) सामार्थ = स्वयंत्र (विचा ४ १८) समार्थ = व्याव स्वामस्था = क्यांत्रस्था करवार ।
- - 4. नरों के बीच में विवाद व बार वे और त हो अधिक्रोमा में देखा जाता है च्छी-क्री म भी होता है, जैसे— इ—प्रदेशः = पविशे (पाला) भेद म नेव, प्रतास्ति = फ्लाविंगे (पुरा २ क), वहत = वदपाल क्रविंग = क्रांति व ववस म वयस .
    - वेदिन्दी वेदिद्वि (स॰ --पर क्या वर्ष १६१ ४६ ४६) इत्यापि । व--वर- वरा- पर - पर क्या क्या - क्या को - नती प्रावाद - प्रमादा काविक - वरित्र सम्बद्ध = स्टान्त क्यांवर = वर्षा (स्व --वर क्या - ११० १४६ १६३ १६० ४६ ४६१ ४६०, ४६१) स्वेद - वरि विश्वविक - विश्वति (क्या यह ४) इत्याप्ति ।

प—व्यक्तिकारतं च पहिन्द्रसम् क्रम्पदं च वक्त्यसं समेरहः ।

- वी स्वरों के सभ्य में स्वित व के स्वान में प्राय सर्वत्र व ही होता है, यवा—यन्त्र= वारय, इंतरात्र = धंवरति धंनताः = धंनताः, धंतत्रतः = धंतितः क्वाति = व्यति = धन्तुति = धन्तुत्रतः = धन्यत्रवरत्य वन्त्रवः = व्यति = धन्तिः = ध
- स्वरों के सम्भवती व प्राप कावम ख्वा है, बनठ स्वानों में इस प्र द देखा जाता है। बैसे—

व---वावश्र = वावर विद्य = विद्य = विद्य = विद्य = द्वीच्य = द्वी

- य-स्वर्म् = विद्या धामास्कित कामित कामित आवित्वस्थित व व्याप्त व्यविद्यात काम्यक म्हार्म स्वर्ध महार्थ स्वर्ध महार्थ स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वय्य स्वर्य स्वय्य स्वय्यय स्वय्यय स्वय्यय स्वय्यय स्वय्यय स्वयः
- ८ दो लग्ने कबीच कव के स्थान में व ठ, धीर बहाता है। बधा~

व---वास्त्र -- वास्त्र वीरत = वास्त्र स्वति = स्वति, स्तुविकित्र = स्तुवीति (सूत्र १ १ ११) इस्पावि ।

च--वरिवार =वरिकाल वर्षि =वर्षि (ठा वच अन्तरः ११० १६१) इस्पादि ।

य—प्राप्तर्ग = परिष्ठुत प्रस्तिका = परिष्ठुता (छ ६४६) स्त्रीतः । ९. महापार्श्व में सर-सम्बन्धी समेनुस्त क क क त यह यह इस स्मान्त्रनों का प्राप्त समेत्र क्षेत्र होता है और प्रकृत्यनगर साहि प्रकृत-स्मान्त्रजी के अनुसार इस हुत्य स्वयनमी के स्थान में अपन क्षेत्र को सही होता । प्रकृत्यन प्रमानस्वारतों की स्मृतमन्त्रती आदि मार्ट्स की महाराष्ट्री मार्ग में भी शक क्षाम्त्र की स्वरीक देखने में माना है। चापार्थ इमचन्त्र प्र प्राष्ट्रत-स्वानरण के भनुसार उक्त सुद्धा स्वस्त्रानों के हानी साप अवर्ष (व वा दा) हान पर सुप्त क्यान्त्रत क ग्यान में 'यू' हाता है। 'गाउहपहा' में यह यू' अधिक मात्रा में (उक्त क्यान्त्रतों क पूर्व में अवर्गनमन्त्र स्वर रहत पर भा। पाया जाता है । परन्तु जैन अर्थमागर्थी में, असा हम ऊपर दूरर चुक है, प्राय कि क्यम्यता क त्यान में अन्य भन्य क्यम्यत होत हैं और करी कही ता बहुं। क्यम्यत कायम रहता है। हो कही करी हार हयहत्वती क श्वान में अग्य स्पान्तन हान या पही स्पान्तन रहने क बहुछ महाराष्ट्री की करह छाप भा हरता जाना है। हिन्तु यह छाप यहाँ पर ही इंग्ल में बाता है जहाँ रेक्ट स्वान्जनी के बाद के वा सा से किस कोई स्वर होता है अस-लोका =शीमी सेवित = रोहत भीवित् = मोड मानुर = मानुर = मानुर = मारित = मानुर = मा प्राएम यगेरह

- शस्त्र क आह मं, मध्य मं और संयाग में सर्पत्र ए की तरह न भी दोता है। अस नधे = नई आत्रुव = नापरूर्त t٠ कारनाप = बारनात अन्त म घनत प्रतित = बनिया प्रता म पना, क्योग्य म बन्नवन विज्ञ = विन्तु, सर्वेश्न म सम्बन्ध शरपादि ।
- एर या पूक्ष या या पार राजा में मान दावा है। यथा-मानेर = बानेर तामेर = तामेर शिवनेत = तिलानेत प्रमेर = एवामेन \*\* पूर्ववेद = पुष्पाचेत्र श्रायादि । दार्च स्वर क बाद क क्रिव वा क स्थान में हि वा श्रीर इ वा झाता है। जैस-एप्रमह क्रिवा = इंटबह हि वा इंटवह क
- बा इम्यादि । ŧŧ
  - यथा भीर मारन् शब्द या न पा छोप और व दानों ही दूरर जात हैं। जैसे-प्रवास्तात = प्रदृश्याय यथाजात = प्रहृशात ययानामक = बहार्गान्य् यावरक्यां = मात्रवहा जावजीर = जावजीर ।

### वर्गागम

गद्य में भी अनद राखों में समाम प उत्तर शब्द क पहन न आगम दीता है। यथा- निर्वन्तमी बहु गारव दीहुंगारव रागांनारक बोलवा: आमाध्यमध्यारं धवरान्तामगुरकोत चहुत्त्वमगुरा आदि । महाराष्ट्रां क यस में वादपूर्ति के लिए ही बटी बटी व आगम देग्य जाता है, गय में नहीं।

### राष्ट्र-भर

- अन्यागणी में वसे प्रशुर शब्द हैं जिसका प्रयोग महाराष्ट्री में प्राय' उपनव्य नहीं होता; यथा—धननीयव धननीर बागा अगुरीति, आवशाप, माववेतन आछात्राग्रू पारीकाम नगरूद्र केमहात्त्व दुण्ड, वर्षायमिल पाउरूको पूर्वायिल शोष्य महनिवहानिया यस दिवस हत्नाहि ।
- एस सम्बों की संस्था भी बहुत कही है जिनक रूप अर्थमांगयी और मरासाम्या में भिन्न भिन्न प्रधार के दान है। उनक बुद्ध बदाहरण में प दिए जान है ---

ากเพาะกำ

3441444	महाराष्ट्रा	अपमागपा	महाराष्ट्री
चर्वसम्ब	धारम्बर	हच (उप्प)	र•व
تدريع	बराई चरा	ते <sup>श्</sup> रच्या	विद्रमा
وع هـمان	<b>बयागरानु</b>	दुरातनंत	बारलंब
	वर्षाः, श्रापीः	হাৰ	रुष
fra	शिदा	fa <sup>e</sup> s₹	(C-4
बीत देश	नीत्व	<b>नि</b> ष	िएस
वेश् <sup>र</sup> वर	<b>रिप्र</b> ियर	राह्यम्ब	
۲	द्धि	रम्पेरम	रम् गाय
विदेश	<b>बर्</b> च	रूप (सर)	<b>रगा</b> च्य
दर	et e-e	Zi) ( Lee )	an St fit
क'रा	Mary .	71. ( 1 )	
إسدام إشرنت (414)	£-12	25et	र्याचान
(قسع) سني، إ	Crem	ु~ सन्दर्शनार)	पुरुषे सन्दर्भन
(عجد) فقت	FTE	<del></del>	ساده در ا

क्षर्यमागपी	म <b>श</b> ायष्ट्री	<b>वर्ष</b> माग <b>र्</b> ग	महाराष्ट्री
मिनल्यू, मेण्ड	विशि <b>ण्य</b>	सीमारा पुतारा	षधास
बर्ग्	शापा	गुम्प्य	বিনিশ্ব
बाह्या (ज्यान्द्रः)	न्तरहास	मुहाम सुहाम	<b>⊕CE</b>
सहैरम	स्युव्य	<b>प</b> र्वाह	सुदि

भीर, द्रालम बाल देल बावज्येता बताय पड़तेय इत्ताल केवलीत पड़वाम महमान एकड्डि बावह तेवह अपहें सहबंद सहजार, बलावि पहाजार, बलावि वहातार, वेवाती, समग्रेट, बाहबर प्रसृति संक्या-राब्हों के रूप अपीमामधी में मिलते हैं। महाराज्य में येमे मही।

### नाम-विमक्ति

- १ अर्थमार्ग्या में पुंक्षित सम्रायः राष्ट्र के प्रथमा के प्रक्षणन में प्राय सर्वत्र ए और स्विचित्र को होता है, किन्द्र महाराज्यों में को हो होता है।
- मज्रमी ज्ञा एक बचन स्थि होता है जब महाराष्ट्री में मिन ।
- ३ चतुर्ची छ एक बचन में मार या मारे होता है। तेसे --देशए, वश्काव बनसाय, महूनए, पश्चिवते प्रमुचाने, सबनाने (स्र पत्र १९०) इत्यादि सहायाच्छी में यह नहीं है।
- ध्र अतं क सार्थों के तुरं भा के ए वजन में लाहोता है। यजा-अल्डा, बचला कारमा, बोमला बमला पम्बुका महाराष्ट्री में इतक स्थान में क्रमशा मठेल बचल बोमल बोमल बचला ।
- स इनके रक्षाने से क्रमारा मठेंछा पर्यक्त करूर वर्षके वस्तुत्व । ५. कम और पान राष्ट्र के तुराया के एक बचन में पाक्षि को टाट्स कम्मुला कीर बम्मुका होया है, सब कि सहाराष्ट्री में कम्मल भीर सम्मेल !
- वर्षमांगयी में तर शस्त्र के पहायी के बहुबबन में देखी क्य भी देखा जाता है।
- पुत्रत स्टर की पड़ी का परवचन संस्तृत की तरह तर और यस्तद की पड़ी का बहुबबन सामाई अर्थमागी में पाना आज है जो महाराष्ट्री में सही है।

### भाक्यात-विमक्ति

र सर्पमानना में मुरुश्रव क बहुबबन में हेंदू प्रस्तव है। जैसे -दुन्तिंदू, संबदेदू, सावाहितु इत्यादि । महास्मृत्री में यह मधीन क्षण हो नया है।

### यात रूप

र पर्यमागा में मिनास्वर हुग्य हुनि होत्वरों, इस समये हेस्स हुन्स, स्वारेष्य सार्थ हुस्सर, विशिष्य कियार, स्तामे निगरी निग्देश परिवेशमांत नायशे चैन्द्रा चहुन्दिहीत बाहु रुपूर्ति प्रमुख समिती में पातु की प्रकृति, प्रस्व अपया य होनों जिस समय में याचे जाने हैं, सहाराष्ट्री में ये सिम्न सिम्न सम्बर के बैटो जाने हैं।

### थात्-मरपद

- १ अर्थमांगर्यों में त्या मन्यम क त्य धनक वरद के होत हैं --
  - (क) रहा जैस-न्दर्द्ध नप्दर्द्ध प्रस्तुद्ध प्रसादि ।
- (17) दना दनाः रमानं और दत्तालं यथा—बद्द्या दिस्ट्रैंगः, वाहिनाः, वरेताः, वाहिनानं वरेतालं झ्यादि ।
  - (ग) रक वृषा- दुर्शस्तु बावितु, बरिनु प्रसृति ।
  - (प) वा लेमे--विका एका, मोबा, भोबा, बेबा परीरह !
  - (र) दराः वया-परिवर्धताः दुर्गहवा आदि ।
  - (च) इनट अतिरिक्त रिकासक निकृत नीवव तीवाद संशुक्तीत तार्जु, नाव ता दिस्ता इत्वादि प्रयासी में 'ररा' के रूप मिल्ल मिल्ल तरह के पाप जात है।
- २. दूर प्रत्यत क स्थान में रूपर या रूपरे मात इत्यन में स्थान हैं। जैसे -शरिष्ठ, प्रीव्वास, बंबुनिक्स, बरबानिक्षेत्र (निम ११) निर्देश्यर स्थार ।
- के श्वाराप्त पानु के व प्रत्य के स्थान में व दोता है। असे इन नव समित्व वानव पंतु विनव निवद प्रमृति ।

वदिस

१ वर प्रस्थय का क्षाय रूप होता है। यका-प्रशिद्धवराष्ट्र, प्रश्ववराष्ट्र, बहुवराष्ट्र क्रववराष्ट्र इत्यादि ।

२. बातको पार्वनंतो सोबी, हुवियं भवरते। पूर्याचम प्रवस्ता भोतंती चीवितोः नोरंत्रच आदि प्रयोगों में महुद् बीर सम्य तदिह प्रत्योगे के बीते रूप बीन प्रार्थमागाची म वस्त्रे जात हैं, महाराष्ट्री में ये मिम तद्ध के हात है।

महाराष्ट्री से जैन कर्पमागधी में इनके कांतरफ कीर मां अनक पृक्ष मेव हैं, जिनका उस्तम्य विस्तार-मय से यहाँ नहीं क्यि क्या गया है।

## (५) जैन महाराष्ट्री

जीन सूक्ष्मम्बों के लिया इवेतान्यर जीनों के रचे हुए अन्य पन्यों की प्राष्ट्रव भागा को 'जैन महाराष्ट्रा' नाम दिया माननिवरंत बीर गया है। इस भाषा में वीर्षेटर और प्राधीन मुनियों के चरित्र, क्यारें, दरीन, तर्क क्यो उप, मुगोस,

साहित्व स्वृति चादि विषयी का विशास साहित्य विद्यमान है ।

प्राह्नत के प्राचीन वैवादराजों ने 'केन महाराष्ट्री' यह जान देवर किसी निम्न माना वा परवेस नहीं किया है। किन्तु बायुनिक पामास्य विद्वानों ने व्यावस्य, बान्य बीर नाटक-मन्त्रों में महाराष्ट्री का जो रूप देखां जाता है उससे देनेतान्वर कीनों के मार्चों की माना में बुख बुख पार्थवय दश वर इसका 'सन महाराष्ट्री' नाम दिया है। इस भाषा में प्राह्मत-क्याकरणों में बताये हुए महाराष्ट्री माना के स्म्राण किरोप रूप से मीजूद होन पर भी जैन व्यर्थमागयी का बहुत-कुछ प्रभाव दस्म जाता है।

र्जन महाराष्ट्री के कविषय प्रस्य भाषीन है। यह द्वितीय स्तर का प्रथम थुंग के प्राकृतों में स्थान पा सकती हैं। ययमा प्रस्य नियुक्तियों, परमक्तिम, रूपरेशमाला प्रश्वेत मन्य प्रयम युग की जैन महाराष्ट्री क रहाहरण हैं। दूरकृत्य भाष्य, स्वद्वारम्क-भाष्य, विरोगसद्यक भाष्य निर्शावकृति सर्मसंमद्द्यों, समग्रहरूवकृत मञ्जी प्रभा मान्य पुग और प्रयन्ता में प्रवेत होने पर भी शतके भाषा प्रथम पुग की जैन महाराष्ट्री के समान हैं। दशम राजाकी

अर्थमागर्थी के जो उसम्प पहले बताने गए हैं दनमें से अनक इस भाषा में भी पाये जाते हैं। ऐस लक्षणों में. rson वक्त ये हैं .--

क प्रस्थान में भनेक स्पन्नों में व ]

२. सूत्र इयञ्जनों के स्थान में पू ।

३ राष्ट्रके आदि भीर मध्य में भी ए की बरहर।

४ मण और मारत के स्थान में कमरा' वहा और बाद की दरह वहा और बाद भी !

५ समाम में उत्तर पद के पूर्व में 'म्' का आगम।

६ पार माम वैतिन्यन, बहुमएए। साहि मुहुम नुमिछ कादि राष्ट्रों का भी पत्त मेल बेहकार आदि की तरह श्यार ।

वृतीया के प्रक्षमन में कही कही हा प्रत्यव ।

... धारतार, दुन्दर प्रश्नृति धातु-स्य । ह तोचा, विचा वरित् अपूर्वि स्वा प्रस्पय के स्त्य ।

का बावर संदूर सभूति त-प्रत्ययान्त रूप।

## (६) खबोद-निपि

सम्राट अशोद ने भारतक्षे के सिम-भिन्न स्वार्तों में अपने भर्म के उपदेशों को शिक्षाओं में खब्धाये थे। ये सब विखारेज इस समय में अवस्ति शिक्ष-भिक्त आहरिएक मात्राओं में रवित हैं । सापा-साम्य की अप्रि से ये सब शिक्षातेलाय प्रवासक इस बान भागों में विभक्त किये जा सबते हैं —

(१) पंजाब के शिक्राहेल । इनकी मापा संस्कृत के अनुकृष है । इनमें र का खोप नहीं देखा बाता ।

(२) वर्ष भारत के शिक्सकेल । इनकी भाग का मागुषी के साथ साहरूप देखने में आहा है । इनमें र के स्थान में सर्वत्र स है।

 (३) परिचम भारत के शिक्सतेल । ये इन्डियना की बस मापा में है जिसका पाछि के साथ अधिक समय है। इन दोनों प्रकार के शिशक्षेत्रों के कुछ बदाहरव नांचे दिए जाने हैं जिन पर से इनका भंद अच्छी तरह समस्य में

भा सक्ताहै। क्यर्विगार (पंचन) पीडि (मीश) संस्कृत गिरनार (इच्छत) देवलदिवस Bapaille and **Land**france देव लेकिएस 700 समी वाकित रानी स्त्रो TEI. **उच**ि -रुपवा मुख्य रुवया समुचा न्त्रसिव नरित, कारित वानि, गविद, स्वा at Re

इन शिष्पक्षेत्रों श्र समय किल्ड-५वें २५० वर्ष का है।

इम शिक्कोलों की मापा की करांचि मगवान महाबीर की एवं सन्मवता हुद्धवेष की बपवेक्ष-माया से ही हुई है।

## (७) सोरधेनी

संस्कृत-नाट में में ब्राइटर नर्याग्र सामान्य इस से सीरसेनी भाग में दिसा गया है। बरवपोप के नाट में में पक बरह की सीरसेनी के बहाइरण पाये बाते हैं, जो पाछ और कशोक्षकिए की भाषा के अनुरूप और निवर्शन पिश्वते कार के भारकों में प्रयुक्त सीरसेनी की अपेका प्राचीन है। मास के कारियास के बीर इनके बार के अधिक नाटकों में सीएसेनी के निवर्शन देखे जाते हैं।

वररुचि हेमचन्त्र कमहीस्वर, अस्तीयर और मार्कण्डेय माहि के प्राइत-स्पाकरणों में सीरसेनी मापा के उत्सव भीर चनाहरण पाये व्यते हैं।

रच्डी, स्ट्रट भीर बाग्सट आहि संस्कृत के असंग्रित्झें ने भी इस मापा का बस्सेल किया है।

भरत के बाट्यालास में सीरसेनी मांचा का बस्त्रेस हैं चन्होंने सहक में नायिका और सक्कियों के किए इस मांचा का प्रयोग क्याचा है। भरत ने विष्यक की साथा प्राथ्ना थही हैं परस्तु मार्कण्डेय के व्याकरण में प्राच्या मांचा के की कुछल दिने राज हैं

धान्या भागा होरहेशों के बनसे और नाटकों में मुमुक्त विद्यात की आधा पर से यह मालूम होता है कि सीरसनी से इस माधा (पाच्या) का कर विशेष भव नहीं है। इससे इसने मा प्रस्तुत क्रांप में बसका बादमा तस्मेल म करके เกรร์ธ सीरसेनी में ही बानामांब किया है।

तिगम्बर जैनों के प्रवचनसार, इक्ससंबद प्रसृति मन्च भी एक तरह की सीरसेनी सावा में ही रचित है। बद भाग १वतान्वरों की अर्थमागयी जीर माकृत-स्यादरजों में चित्रिष्ट सीरसेमी के सिमण से बती बुई है । इस केन क्षेत्रमेनी भाग के 'जैन सीरसेनी नाम दिया गया है। धैन सीरसनी मध्यपुग की जैन महाराष्ट्री की अपेक्षा विन शरुमागमी से सचिक निक्रता रखती है सीर मम्बयुग की बेम महाराष्ट्री से प्रामीन है।

४ "प्राच्या रिप्तकायेना (बाटकान्त १ ११)।

ह हाम ही में वा निवृत्त्वस्था बहुर कर में पाने एक बन्दायों तेन में पानेक बनाव और बुव्वियों से यह किया है कि पाने ह तम हुन वा अपनायक ब्रुप्ता न का प्रकृतका का न पान प्रशास बार प्रकार व यह सक तथा के रिकार्नेजों के बार दे प्रीव्य शिलार्क्य काला प्रशास के बसे राष्ट्र के बसार संपत्ति के कुराने हुए हैं। 2. dee Dr. A. B. Keith a Sanskri Drams, Page 87 १ "वाविरामां वर्षान्यं व सरकेमाविधेष्वी" (बारवशास १ ११) ।

सौरसेनी सापा की शराचि मुस्सेन देश अर्थात् मधुरा प्रदेश से हुइ है।

परस्थि ने बपने क्याकरण में संस्कृत को ही सीरसेनी भाग को मकृति जमान मुख कहा है । किन्तु यह हम पहले हो ममाणित कर चुक है कि किमी प्राकृत का पा का उत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुतर्ग, सारसेना प्राकृत का मूल भी प्रकृत को किक संस्कृत नहीं है। सीरसेना और संस्कृत ये नोनों ही यैदिक युग में प्रचिक्त सूरसेन अववा ममयेद की कप्य प्राकृत माणा से ही घरमत हुई हैं। संस्कृत माणा पीणित प्रमृति के व्याकरण ह्यारा निवनित्रत होने क कारण परिवर्त-होन युत भाग में परिवर्ण हुर । बैंदिक उत्त का सारसेना ने प्राकृत-करण द्वारा निवनित्रत ने होने के कारण सरिवर्त-होन युत पा माणा में परिवर्ण हुरा से सिक्त आप का आदार बारण किया । यहने समय की यह मोरसेनी भाग की माणा किया । यहने समय की यह मोरसेनी भी बाद में प्राकृत-व्याकरणों के द्वारा कारने जाने के प्रस्त स्वरूप हो सर परिवर्त-काम्य होक्स

मृत-भाषा में परिणव हुई है। अरुवान के मारकों में जिस सीरसेनी भाषा के छन्नहरण मिलन है यह अशोक्रीक्षिप की सम-सामिषक कहा जा समय सकती है। सास क नारकों की मीरसेनी का कीर जैन सीरसेनी का समय सम्मवत जिस्त का प्रथम

वन्य या द्वितीय राजाकी माखन होता है। महाराज्ये भाषा के साव सीरसेनी भाषा का जिस जिस और में भर है यह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा कराज महाराज्ये भाषा के जो रुक्षण वनक प्रकरण में दिया जायेंगे वनमें महाराज्ये के साथ सीरसेनी का कराज के महाराज्ये भाषा के जो रुक्षण वाद होता है कि जनेक स्वयों में महाराज्ये की वपेशा सीरसेनी का संस्कृत के साथ पाकरण कम और साहरण कपिक है।

### वर्ज-भेद

- १ स्वर-वर्णों के सम्बवर्षी असंयुक्त व और व के स्वान में व होता हं। यथा −रवत = रवद, क्या ⇒ वदा ।
- २ स्पर्धे के बीच असंगुष्ठ व का इ ओर व दानों हात हैं। जैसे –नाव ≈ खाव खाइ।
- ३ देके स्थान में स्य और व होता है। यथा—पार्य = मस्य संवः सूर्य = सुरव सुव ।

### नाम-विमस्ति

- पद्मनी क ण्ड्यपन में से और दु य दो ही प्रत्य दाने हैं और इनके योग में पूर्व के अक्षर का दोर्च होता है। सवा—
   दिनाद = विकास, विवाद
  - आस्पात
- १ क्षि और हे मस्वयों के स्थान में दि और दे होता हैं, जैसे—हवदि, हवदे, त्यदि, त्यदे । २ सविष्यरस्रक के प्रस्यय के पूर्व में स्थि स्टाता हैं। यथा—हविस्तित, करिस्तित ।

### व्या-क्षासस्याद, कारास्थाद ।

### सारे

अन्य मनार 🕸 बाद र और ए होने पर ए का यैक्टियक आगम होता है। यदा—पुरुष स्वयः – दूरो छिनै। पुरुषिनी। एवन एक्ट् - एवं छेरै, एपोर्च ।

### रुक्स

॰ त्वा प्रत्यय के स्थान में ६५ दूख भीर चा होते हैं। यथा—प्रिट्य ≕पडिम, परिदुख पडिचा।

र समस्तानुम के "वितियमस्या (निर्म य) मेरी सीयकर्थ विश्वमोत्तीर । महत्त्व मृत्येत्वा वास्ता भेती य मान्द्र[रिहरू]" (वन ११)। रम वाठ वर मिन्द्र युक्तिमस्त्री बोठमर्थ निम्नुष् सीमीरेष्ट म्युट मृत्येनेष्ट्र वात्ता मही(रिक्ति)नु मान्द्र[रिहरू] मान्द्र[रिहरू] एवं स्वाद्य वर्षके वृत्ति प्राप्त मेरी मृत्येत देश की राज्यमंत्री वात्ता महत्त्व स्वाद की सहित्र प्रदेश मेरी मृत्येत नहां है। विविचनपूर्त में मन्द्र प्रवचनप्ति वात्तामान के वन महत्त्वानुम के तत्त्व नाद की स्विचनप्ति में मन्द्र प्रवचनपत्ति महत्त्व म

२ प्राष्ट्रतप्रकाश (१२, २)।

## (६) मञ्जोद-तिपि

सम्राट् अशोड ने भारतवर्ष के भिन्नभिन्न स्थानों में अपने धर्म के उपवेशों को शिक्षणों में सुदबावे थे। ये सब प्रस्तित बस समय में भवकित सिम्भमिन्न प्रतिशिक्त मापामों में रचित हैं। माधा-साम्य की हृद्धि से ये सब शिक्समेनप्र भानत इन तीन मानों में विभक्त किये का सकते हैं —

(१) पंजाब के शिलतेल । इनकी मापा संस्कृत के मनुरूप है। इनमें र का क्रोप मही बेला जाता।

(२) पूर्व भारत क शिष्पजल । इनसे भाषा च भागची के मान साहरव देशने में बाता है। इनमें र के स्वान में सर्वत व है।

संदर्भ व । १) परिषम मात्र के शिक्कतेल । य उपविभाग की वस मापा में है विसक्त पासि के साम क्षरिक साम्य है। इन कीनी प्रकार के शिकालेलों के इन्ह प्याहरण नाये विच जाते हैं जिन पर से इनका भए कम्ब्री वरह समग्र में

संसक्त	कपर्वतिगरे (पंचान)	घौछि (दश्य)	गिरनार (दुबरस्त)
रेशनाजियस्य	देवावधियस	देगार्थीक्वस	वेग लेशिक्स
CZ.	रही	समिने	क्यो, स्रो
बुवा-	_	<b>मुब</b> नि	रण्य
शुच्चा	मुख्य	<b>पुरु</b> षा	पुनुसा
मास्ति	र्गास्त, ग्रास्ति	बानि, तनि क्या	धारित

इत शिक्षानेलों द्रा समय जिल्ल-५ वे २५० वर्ष द्रा है।

इन शिखानेकों की मापा की बररिंच मगवान महाबीर की एएँ सन्भवता पुद्धदेव की उपदेश-मापा से ही हुई है।

#### (७) मीरमेती

मंस्टर-नाट में में माइन नवांत सामान्य रूप से शीरसेनी माना में किया गया है। मरवांत्र के नाट में में एक निर्दाय निर्दाय के शिरसेनी के उदाराज पाये बाते हैं, जो पाकि और अशोकियों की माना के अनुरूप और निर्दाय पित्र ने साम के जाट में में मुख्य मीरसेनी की अधेसा माशीम है। मास के आविद्यास के जीर हनके बाद के अधिक मारकों में सीएमी के निर्दार्शन के कार्य हैं।

, आवर मारका में सारकार के तरश्यन एक बात हूं। - दारुचि हेमवन्द्र क्रमदीरवर, स्म्सीवर जीर मार्कण्डेय आदि के आहत स्याहरणों में सीरसेनी मापा के समुज और

स्ताहरण पाने बाते हैं।

था सङ्ग

दण्डी, स्ट्रट भीर बाग्मट मादि संस्ट्र के अनेकारिकों ने भी इस माया का उन्नेस किया है।

भारत के नाज्यशास में सीरिसेनी माया का वन्त्रेज़ हैं बन्धूनि नाटक में नायिका और सिक्रियों के क्षिप इस माय विश्वित का प्रयोग कामा है।

भरत ने हिनुस्त की मान प्राच्या कही हैं परस्तु माईग्डेय के क्वाइस्त में प्राच्या माना के जो इस्तम हिने गये हैं प्राच्या माना तीरकेश है उनसे और नाटने में प्रमुख विद्युष्ट की भागा पर से बह माख्य होता है कि सीरसनी से इस भाग समर्थन समर्थन सीरसनी में हैं। सम्प्रमार्थ किया है।

दिगमर देनों के त्रवननात, इत्यमीय प्रमुखि मन्य मी एक ठाइ को सीरसेनी माया में ही एशित है। यह भाष केत क्षेत्रकों कि सभ्यागनों भीर क्राइन्यायनों में निर्माष्ट सीरसेनी के सिमय से बनी हुई है। इस माग का 'बन सीरसर्न' जम दिश गया है। जैन सीरसेना मम्बद्धा की जैन महाराज्यें की क्षेत्र जैन जठनागर्भ में सर्विक निज्ञा रस्त्री है और सम्बद्धा सीजीन नहाराज्ये से प्राचीन है।

र द्वार से में वो निवृत्त्यान महेल्या ने बारों एक दूसराई केंद्र में बनेक बनाए और कुंकियों से यह सिक्स किया है कि सरीर्थ के कियारोजों के मान के मंदिक कियारोज मासर आसीड़ के वहीं समूत्र के बनाय संप्रति के कुंक्सी हुए हैं। 2. Note Dr. A. B. Estiths & Sanskri Drama, Pann 87

१ "मानिकानी बनीयों व बूर्रकेमाविधीवरी" (बारवराज १० ११)।

४ "प्राच्य शिवकारीया (बाह्स्साम १ दर्)।

सीरसेनी भाषा की स्त्वाचा सरसेन देश अर्थात् मधुष प्रदेश से हुइ हैं।

बरहिष ने अपने ज्याकरण में सेस्कृत को ही धीरसेनी मापा की प्रकृति अपान, मूल कहा है । किन्तु यह हम पहले ही प्रमाणिन कर चुक है कि किसी प्राफ्तन मापा का प्रयक्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुदर्ग, सारसेना प्राफ्तन का मूल भी प्रकृत से नहीं है। सीरसेना और संस्कृत ये होनों ही पैदिक युग में प्रचिक्त स्रसेन अपना मम्बद्ध की करण प्राफ्तन मापा से ही दरमा हुई हैं। संस्कृत भागा पाणिति प्रसृत्ति के व्याकरण हारा नियन्तित होने के कारण परिवर्गनहीन युव भागा में परिल दुर। वैदिक स्रक्त का सोरसेना ने प्राफ्तन-अपाकरण हारा नियन्तित न हान के कारण कमारा परिवर्गत होने हैं। संस्कृत भीरसेनी मापा का आझर भारण किया। पिज्ञने समय का यह मोरसेनी मापा की आझर भारण किया। पिज्ञने समय की यह मोरसेनी मापा की अस्ति स्वर्ग में स्वर्ग में परिवर्गन कुत के कारण सम्बन्ध की वर्ष परिवर्गन होन्स समय का स्वर्ग में परिवर्गन की वर्ष परिवर्गन-शून्य होकर युव-आया में परिजृत हुई है।

क्षत्रवाप के नाटकों में जिस सीरसेनी मापा के बनाहरण मिलने हूँ यह अशोदिकेप की समन्यामधिक कही जा मक्त्री है। भास के नाज्कों की सीरसेनी का और जीन सीरसेनी का समय सन्मवज किसा का प्रयम पा दिनीय ग्रवाकी मादम होता है।

महाराष्ट्री माया के साथ सीरसेनी माया का जिस-जिस औरा में भेर है यह नीजे दिया जाता है। इसके सिवा महाराष्ट्री माया के लो इस्त्रण उसक प्रकरण में दिय जायेंगे उनमें महाराष्ट्री के साथ सीरसेनी का केंद्र मन नहीं है। इन भेदों पर यह कात होता है कि मनक स्थकों में महाराष्ट्री की अपेका सीरसेनी

#### वर्ण-भव

- १ स्थर-वर्जो क सम्यवर्ती असंयुक्त त भीर व के स्थान में व होता हुं। थया —रज्य = रसर, क्ता = पता।
- २ स्वरों के बीच असंयुक्त प का इ ओर प दानों दात हैं। जैसे -नाव = छाव छाइ।

श्रा संस्कृत के साथ पाधक्य कम और साहरय अधिक हैं।

२ र्वकेस्थान में स्य और व दोता है, यदा—मार्य≈धस्य मकः तूर्य=सुस्य सुका।

## नाम-चिमक्ति

१ पद्मती क एक्श्रपन में से और दुव दो दी मरयव हाते हैं भीर इनके योग में पूर्व क अखर का दोषे होता है। यमा— क्लाद न विजास, विजाद ।

#### भास्पात

- १ कि और दे प्रस्वयों क स्वान में दि श्रीर दे होता है। सेसे-इसदि, हसदे, रमदि, रमदे।
- भविष्यत्कास के प्रत्यम के पूर्व में एक स्माठा है। यथा—इतिस्तिह, कविस्तिह ।

#### मध्य

१ अस्य सकार के बाद द कीर ए दोने पर ए का भैकक्षिक आगम दोता है। यका—पुक्त दश्य = इसे लिमे कुळसिया एक्स् एक्स् = एवं छेरे एक्सेचे ।

#### र रस्य

१ द्या मात्रय के स्वान में इप दूश और ता दोने हैं। यथा —पठिन्दा =पठिम, परिनूश पठिता ।

## (८) मागधी

मागर्वी मान्नत के सर्वे प्राचीन निवरंत अशोक-सामान्य के बचर और पूर्व मागों के आससी, मिरट, क्रीरिवा ( Lauriya ), सहस्राम, बर्चर ( Barabar ), समागढ़, चौसि सीर जीगढ़ ( Jangadha ) प्रसृति स्थानों के अशोक क्षिन्तकेलों में पाये जाते हैं। इसके बाद नाटकीय माकर्तों में मागभी मागा के ब्याहरण देखे जाने हैं। बारकीय मागभी के सबै-प्राचीन ममूने अध्योग के बाटकों के खण्डव मंत्रों में मिस्रते हैं। भास के ਜਿਵਨੀਜ कटकों में, काविवास के माटकों में और सुच्छकटिक चादि साटकों में मांगधी मांचा के ब्याहरण विद्यमान हैं।

बरकृषि के प्राकृतप्रकाल, बण्ड के प्राकृतप्रकृष, हेमथानु के चित्रहेमचन्त्र (ब्रह्म चम्पाय), क्रमदीचर के संदित-सार, इक्सीवर की परभापावित्रका और मार्केण्डेन के प्राकृतसर्वरन आदि माय' समस्त प्राकृत-स्थाकरणों में भागनी माण्य

के अच्च और स्वाहरण दिए गए हैं।

भरत के भाटकाग्रज में मागभी भाषा का कोल है और उन्होंने माटक में शका के अन्तपुर में श्रानेवाले, सुरंग कोइनेदाले क्यार, सम्पासक वगैरह पात्रों के किए और विपत्ति में अपन के सिए मी इस माया का प्रवेश करने की क्या है। परम्तु मार्डण्डेय द्वारा अपने प्राकृतसर्वेश में डद्दत किये हुए कोइस के "रारातम्बुद्धपराक्षेत्रवा मलवी प्राष्ट्र इस वचन से मात्म होता है कि मरत के कहे हुए एक पात्रों के अविरिक्त मिल्ल, अपवक किनियोच आदि अप क्रीम मी इस मापा का स्पन्धार करते थे। स्त्रट, बात्मट, हेमचन्त्र व्यदि आईचारिकों में भी अपने अपने

क्षक्रम् मन्द्री में इस भाग का उद्वेल किया है। सगम देश ही सागमी भागा का रुखिल-स्थान है। सगम देश की सीमा के बाहर भी ककार के शिक्सक्रेजों में की इसके निवर्गन पाये जाते हैं बसका कारण यह है कि मागणी मापा बस समय राज-भाषा होने के कारण मंगय के बाहर मी इसना प्रचार हुआ था। सन्भक्त राज-माथा होने के कारण ही माटकों में सकत ही राजा के क्ष्यचि-स्वन अन्तपुर के छोगों के किए इस भागा का व्यवहार करने का नियम हुआ था। प्राचीन मिझ और

खुरफ मी मगय के ही निवासी होने से सनमय है जाटकों में इनकी मापा भी मानवी ही निर्दिष्ट की गई है।

बरहाँच न अपने प्राष्ट्रत स्वाकरण में मागभी की प्रष्ट्रति—मूख होने का सन्मान सीरसेनी को दिवा ह । इसीका कतुसरम दर माद्रश्यम न भी सीरसेनी से ही मागभी की सिद्धि कही हैं ! दिन्तु मागकी और सीरसेसी आव मादेशिक भाषाओं का भंद अशोक के शिक्षतेलों में भी दला जाता है। इससे यह सिदा है कि ये सन प्रावृशिक संद प्राचीन श्रीर समसामयिक हैं, एक प्रदेश की भारा से वृसरे प्रदेश में करवम नहीं हुए हैं। असे सीरसंग्री सम्पर्श में प्रवक्ति वैदिक पुंग की कृत्य भाग से करान हुई है पैसे मागभी में भी वस कृत्य भाग से सम्बन्धमा क्या ह को विषयाक में मगत बुद्ध में अवस्थित थी।

क्योकिशासनेकों के और अध्योप के शाटकों की मांगनी भाषा प्रकम यंग की मांगधी भाषा के निर्दर्शन है। मास के और परवर्ती कार के लग्न नाटकों की और माकट म्याकरणों की सागची सच्च-यग की मागची

KAT मापा क स्वाहरण है।

सावारी वाष्ट्रांकी तीर शावरी ये तीन भागार्थ समाधी के ही प्रकारभेषु—क्रपानर हैं। घरत ने शावरी भाग क स्वकृत कर शक बादि सीर वसी प्रकृति के क्षम्य क्रोगों के क्षिए कहा है कि तु आक्रेंग्वेच ने राजा के सात्रे की मापा शाकरी बनावाई है । भरत पुत्रस आदि बादिनों की व्यवहार-मापा को बाज्यानी सीर संतारकार. व्याप-

१ मानवी द बरेग्प्रक्रावन्त पुरनिवासिनाम्" (वाटबराख १७ १ )।

<sup>&</sup>lt;sup>ध</sup>न्तरहाधनकायीमा गुरुवराराच्यभिक्काम् । स्मक्ते नास्कानां स्थानात्मरातानु मावदी ॥ (दालगास १७ १६) ।

र, "प्रकृतिः चीरतेनी" (प्राकृतमनासः ११ २)।

अस्मानको सीरतेमीक" (ब्राह्मण्डमबँहर कुछ १ १)।

४ "रावधारी सराधेनां वाल्वकावनं यो नवाः । राक्तरवाया योष्यन्वा" (शास्त्रकातः १७-५६) ।

४. <sup>ब</sup>क्कारापेनं द्वाकारी सकारण

<sup>&#</sup>x27;राजोऽन्द्रामाता स्वातस्त्रीधर्मस्वमः ।

अरव्यक्ताविमानी राजार इति वृष्ट्रयोग' स्पार्ट इत्युष्टेर" (अञ्चलवर्गस्य क्षा १ १) ।

कारों धारि भागों . स्टब्स्ट और पटन-जीवी छोगों भी भागा को शाकरी ब्यूते हैं । इन तीनों मापाओं के जो छन्नग और व्यवस्थ है जाइल मार्केट के माहन-क्याटल में जीर नाट में के तक पायों की मापा में पाये जाते हैं उनमें जोर इत्तर प्राह्म-क्याटलमें की सामारी मापा के छन्न जीर एता हरणों में तथा नाटकों के मामची-मापा-मापी पानों की मापा में हता हम मेद और इतन भाविक साम्य है कि तक तीन मापाओं को मापानी से जाएगी मापा में का मापानी से जाएगी मापा में हता हम मेद और इतन भाविक साम्य है कि तक तीन मापाओं को मापानी से जाएगी है जिस्से पायों की साम मेरे की साम मेरे की साम मापानी के साम की साम मापानी से जाएगी है कि हमने प्रस्तुत काप में इन सापाओं का मापानी में ही सामार्थी किया है।

मुख्युक्टिक के पात्र माधुर लीर दो ब्युक्सरों की भागा को डक्की नाम दिया गया है। यह भी मागभी माथा का ही एक स्थान्तर प्रतीत होता है। माईण्डेय न 'डकी' को ही 'डाकी' नाम से निर्देश किया है, यह उनके महाँ पर उद्भुत किये हुए एक रहोत से हात होता हैं। माईण्डेय न पदान्त में उ दुतीया के एक्स्पन में ए. पद्मानी के बहुयक्त में हुए बहा वा गई। बहा वा गई। साथा कि से साथा के उससा दिए हैं उनपर से इसमें अध्यक्ष ता को दियाप साम्य नजर आता है। इस से दिए माईण्डेय ने यहाँ पर जो यह कहा है कि 'इरिक्ष'त्र इस माथा को अपक्र स मानता है?

मागबी भाषा का सीरसेनी के साथ जो प्रधान भेद है बहु तीचे दिया जाता है। इसके सिदा जग्य अंसों में मागबी सब्दा भाषा सावारणव: सीरसेनी के ही अनुहर है।

#### वर्ण-मेव

- र के स्थान में सर्पेत्र व इतेश हैं। यथा—नर व्यात कर = कता
- २. क. व और स के स्थान में ताकका रा होता है। यथा शोभन न तोहरा पूरप = पृतिशा सारत = रावशा
- ३ संयुक्त व सीर स के स्थान में दूनस सद्भर होता है। यथा-पुष्क न गुक्क कर = करत स्वतंत = स्वतंति = सुक्सित = सुक्सित ।
- ४ ह और 8 हे स्वान में स्ट होता है। यथा—गह≔ पस्ट गुष्टु व दुस्ट ।
- थ स्व और व की काइ स्व होता है, जैसे व्यक्तित = व्यक्तित सार्व = रास्त ।
- ६ व सञ्जीर यक्के बहुते य होता हैं; यजा—शताति = सालवि दुर्जन = दुष्मसा भग्न = मस्य माग्र = मस्य स्मृति = साति = सप = सग
- अम् तम तम झ ब्लीर व के स्थान में का होता है। समा—सन्य = सका पूर्ण ⇒पुरुष प्रवा = परवा। सम्बक्ति = सम्बक्ति ।
- ८ अनादि च के स्वान में व होता है। यथा-पन्छ = पथ पिकार = पिकार :
- ८. इन्ताद् वाक् स्थान संव द्वाता है। पंथा—वच्या व्यव शास्त्रस्थ ∺ायवस ९. इस्की बनाइ स्व द्वीता है"; जैसे —रफ्रांस =वस्करा यव =यस्व ।

#### नाम-विसक्ति

- १ अज्ञासन्त दुक्ति-राज्य के प्रथमा के एरुपपन में ए होता है। यथा-जिन = विसे पुस्य = पुतिसे।
- अञ्चरान्त ग्रन्द के पछी का पढ़वनन स्त कीर माइ दोता है। यसा—विनस्स = मिणस्स विकास ।
- ३ अकारान्त शब्द के पछ के बहुबबन में भाग और माई ये दोनों होते हैं। भीसे-विनाताद = विसास मिलाई ।
  - ८ अस्मन् शब्द के एकवचन और बहुबबन का रूप हमे हाता है।

१ "बाएडासी पुदसारिषु । अवारकरण्याधानी कानुसन्तीपनीविनाम् । मीज्या शबरमाया सू" (नालकाळ १७ ११ ४) ।

२ "प्रवृत्यते नाटगारी श्रतातिस्यवद्वारितिः ।

वर्णियुम्बिर्निवेदेश तथातुरुद्धमनिवन्" (प्राष्ट्रतवर्षस्य ६८ ११ )।

वे "हरिक्त्रहित्वमा भाषामपञ्च श इतीकाति" (प्राष्ट्रतम पुत्र ११ ) ।

४ मार्ल-एकेम यह नियब वेशीराक मानते हैं 'राख को वा मनेद" (प्राह्मतस पुत १ १)।

थ. हेमबन प्राष्ट्रत-स्पाकरण के सनुवार 'श' की कबड़ विद्वानुकीय 'र्यक' होता है' देवी है। प्रा. ४ २१६ ।

## (९) महाराष्ट्री

माहर बार्च और तीवि की यापा महाराष्ट्री नहीं जाती हैं। संतुष्टन, राधामण्यराती, राडबब्दों, हुमारपाड़बंदि प्रसृष्टि मन्त्रों में इस भाषा के निरुक्ते गये बाते हैं। गांचा (गीति-साहित्य) में महाराष्ट्री भावत ने इतनी प्रसिद्ध प्राप्त भे बी कि बाद के तहकों में रच में सीरवेती योधनावाल पात्रों के लिए संगीत वा रच में महाराष्ट्री भाग निरुद्धों है को स्वादाह करने का रिवाल सा बन गया था। वर्षा कारण है कि कांसरास से लेकर वसके बाद के

सभी नाटकों में पदा में माय महाराष्ट्रां भाषा का ही व्यवहार देता जाता है।

स्था अवशान पर निर्माण के बार में पहाराष्ट्री इस नाम का वन्तेल और इसके विदेश प्रश्नण न देकर भी आर्थ-माइक अंदिन माइक प्रमाण में माइक प्रमाण में किया के साम का कर साम के साम के साम के साम के साम के सा

संख्य के ब्रक्कंसर-तारतों में भी सिक्ष-भिक्त प्राष्ट्रण माध्यकों ना वस्त्रेस पिखता है। भएत के साहप-शास्त्र में 'वाश्विणास्या' मापा का निर्देश है किन्तु इसके विशेष ब्रब्धण नहीं दिए नाप है। संस्थता वह महायदी माध्य है। हो सब्दी है, क्वोंकि माद से सहायदी का ब्रह्म सर्वेश्वर की बेचन में महाराष्ट्री और बांब्र्जारना का मिक्स मिक्स भाषा के इस में के बेचन में और साहदातदेश के बहुन सर्वेश्वर के बेचन में महाराष्ट्री और बांब्र्जारना का मिक्स मिक्स भाषा के इस में वस्त्रेक्क किना गया है। एवंडी के काम्यावरों के

'बहाराम्द्रमानां क्रवां प्रकृत्यं प्राकृतं विद्यु' । स्रोवरः सुविक्रमानां सुनुकन्तांत सन्तरम् ॥'' (१ वे४) ।

इस स्ताह में महायप्दी मापा का भीर वसकी वस्त्रदा का स्वयं वसकी है। वृत्वी के समय में महायप्दी माठव का इतना करने हुआ वा कि इसके परवर्षी कोक मन्त्रकारों ने देवक इस महायप्दी के ही वार्व में वस माठव राज्य की प्रवोग किया है जो सामान्यत वर्ष मादेशिक भाषाओं का वात्रक है। स्त्रत का वात्रवाहीकार, वास्त्रवाहीकार, पाइसक्यी-प्रमाणक हैमवाह का माठव-स्वाहरण महित मन्त्रों में महायप्दी के ही अर्थ में माठव राज्य स्वयंहत हुआ है। अर्थमर स्वरंहनिय वाह्यक्रव्यक्तिनमाना और देशीनामात्रका हुन केयनमानों में मी बहायप्दी के स्वरहण्य हैं।

वों होतीन के सब में महायादी माना महायाद देशा में करण नहीं हुई है। वे मानत है कि महायादी का वर्ष विशास याद की माना है और यमपुतान कमा मानदेश महावि हसी विशास याद के कमानत हैं, इसीने प्रहायादी इस्तीयक्षण अपन महत्त्र की गई है। किन्दु वर्षों ने इस भागा को महायाद हैया की ही भागा कही है। वर मिनदीन के मन में महायादी माइज से दी बाजुनिक संयक्ष भागा करण हुई है। इससे महायादी माइज का करायि-कान महायाद हैया ही है जब कमानदेश की वा सकती है।

आचार्य हेमचन्द्र ने जपने व्यावस्त में महाराष्ट्र को ही माहरा' शास दिया है और इसकी सहर्ति संस्कृत कही है। महर्त्त इसी गय चण्ड क्सीमद्र मार्केश्वेय चाहि वेचावरणों से ध्यावर करा से समी प्राकृत मानकों का सूर्व (महर्क्त) संस्कृत कामा है। कियु हम यह खाड़े ही बच्ची गया समित्र कर बार है कि कोई मी प्राकृत भाष्य संस्कृत से बस्त नहीं हुई है। बरिक वेविक काम में सिक्त-सिक्त प्रदेशों में प्रविक्त सार्वी के क्रम सार्वीम

१ "रेनं व्यापन्धीक्त्" (शाहराज्यस्य १२, ६२) ।

२ "महाराष्ट्री त्याकरी दीरहेक्संताकर्ता । बह्वीकी नावती प्राप्तरही ता शक्तिकारम्ब ।।" (प्रा. च. इस्त २) । ३. केर्त प्रकटकर्तन एक २ ग्रीर १ ४ ।

से ही सभी आहत भाषाओं के क्यपि हुई है, सुरगें महाराष्ट्री भाषा को क्यपि आपीन कड़ के महाराष्ट्र-निवासी आर्थों की कव्य भाषा से हुई है।

कीत समय आयों ने महाराज्य में सर्व-समम तनास किया या इस बात का निर्णय करना कठित है, परमु आरोक के पहले प्राकृत भाग महाराज्य देश में प्रकलिय भी इस विषय में किसीजा मत मेद मही हैं। एस समय महाराज्य देश में प्रकलिय भी इस विषय में किसीजा मत मेद मही हैं। एस समय महाराज्य देश में प्रकलिय शाहत से कमा कार्याय निर्मा मत्रीय निर्मा मत्रीय महाराज्यों माया करना हुए हैं। प्राह्मप्रकार का कर्या परित परि वर्ष हैं पिकार कार्यायन से अमिम क्यांकि हो जा यह स्थीकर करना होगा मि महाराज्यों ने लाखन किस्त नुवें हो सी वर्ष के पढ़ले ही साहित में स्थान पाना या। विकास महाराज्यों माया के द्वार करने में महाराज्यों के से पहले करने से यह विकास नहीं है जा कि यह भाग पत्रीय है। वर्षाय का क्यांकर संस्थान विकास के साहराज्य माया है। महाराज्य माया है। जन अपेमागनी और जैन महाराज्यों में महाराज्य प्राहत के प्रसाद का बस माया पढ़े करने किया है। महाराज्य माया में रचित वा सब माहराज्य है से सहाराज्य माया है। अपने महाराज्य माया में स्वाहत के साहराज्य करने करने किस के साहराज्य के स्वाहत के साहराज्य करने साहराज्य के साहराज्य के साहराज्य के स्वाहत करने स्वाहत करने से सहराज्य के साहराज्य के साहराज्य के साहराज्य के साहराज्य करने साहराज्य में साहराज्य के साहराज्य करने साहराज्य के साहराज

मरत ने नाज्यशास में ध्यावनी और बाह् धीकी भाग का वन्नेत्र कर नाज्यों में पूर्व पात्रों के किए आवश्वी का प्राची तीर बाहिया ने अपने माहजसर्वेद में 'आपनी स्वाची तीर बाहिया के किए बाह धीकी का प्रयोग करा है। माईप्रेंब्य ने अपने माहजसर्वेद में 'आपनी स्वाची' है स्वामाहायप्ति।तीरोसेगोसु संक्ष्मान हों स्वामाहायप्ति।तीरोसेगोसु संक्ष्मान हों सामाहायपत्ति।तीरोसेगोसु संक्ष्मान हों सामाहायपत्ति।तीरोसेगोसु संक्ष्मान हों है। माइप्रेंब्य के हान्य संविध्य क्ष्मान ने की है। माइप्रेंब्य ने व्यावनी का सामाहायपत्ति। के साम सामादा (आवनी का सामाहायपत्ति) के साम सामादा (आवनी का सामाहायपत्ति) सामाहायपत्ति के साम क्ष्मायपत्ति का सामाहायपत्ति के साम क्ष्मायपत्ति का सामाहायपत्ति के साम क्ष्मायपत्ति का सामाहायपत्ति के साम क्षमायपत्ति का सामाहायपत्ति के सामाहायपत्ति का सामाहायपत्ति के सामाहायपत्ति का सामाहायपत्ति का सामाहायपत्ति के सामाहायपत्ति का सामाहायपत्ति के सामाहायपत्ति के सामाहायपत्ति का सामाहायपत्ति का सामाहायपत्ति के सामाहायपत्ति के सामाहायपत्ति का सामाहायपत्ति का सामाहायपत्ति के सामाहायपत्ति के सामाहायपत्ति का सामाहायपत्ति का सामाहायपत्ति का सामाहायपत्ति के सामाहायपत्ति का स

संस्कृत माया के साथ महाराष्ट्री मापा के में मेर नीचे दिए जाते हैं को महाराष्ट्री और संस्कृत के साथ अन्य प्राकृत संज्ञा मापाओं के साहरण और पार्यक्त की सुकता के लिए भी अधिक वर्षमुख हैं !

#### स्वर

- १ अनेक बाह्य सिम्न स्वरों के स्थान में सिन्त-सिन्न स्वर होते हैं। जैसे गृहि = बारिट देव = हिंद हर = हीर, कांव = पूरिं अन्य = हैरजा पदा = पोम्म प्रवा = वह स्वा = वह, स्वान = मील सास्य = सुरहा बासार = उन्तर साहा = वेरज, बाहों = पोनी दित = स्वर पोम्म = वह सिहा = वैद्वा दिवकन = इत्यल शिव्य = वेरज महत्त्व = पोह्म स्वर्ण हैरेत = इत्यल क्ष्मित = विकास = वेरज महत्त्व = विकास = विकास
- २. महाराष्ट्री में मा मा था न य स्तर समभा सुष्य हो गय है।
- ३ मा के स्थान में भिम्नसिम स्वर एवं रि होता है। यथा—इण = तल मृतुक= माजक, इला = किश मातृ = माज माक वृत्तल= कृतित मृता वृत्ता शृता मोता कृत = विर. वेंट वोट मृतृ = वर रिज मृत्रि = विति म्या = विष्य । इल = वरिष्य ।
- प्र स के स्थान में इति होता है। जैसे-न्यत = दिलित नत्त = दिलिएए।

जैन अर्धमागंबी और चैन महाराष्ट्री में प्राचीन महाराष्ट्री मापा का साहरय रक्षित है।

A. ऐ का प्रयोग भी प्रायं महाराष्ट्री में नहीं हैं। उसके स्वान में सामान्यत ए और रिशावत पर होता है, प्या-केत = केत देवरण - एक्फ पेय - केन, किया - केहन केया - केस्ल केया केतात = केवात काताता केट ने केन करण ऐतार्व = प्राविध केया - वर्षण । इ. बी अ ब्यवहार भी प्राय महाराष्ट्र में नहीं है। बसके त्वान में सामान्यवः वो और विशेष स्वामों में व वा वड हाना है। यथा---वीनुरो = कोपुरे, बीवन = बोम्बल | बीमारक = बुवारिम | पीसोमी = पुत्रोमी। कीरव = कवरव | बीव = पड़र नीच = संस्त्र ।

#### बसंवतः स्पक्षन

- १ स्वरों के सम्पनतीं व सूच व त व स स, व इस क्यम बनों का प्राव स्रोप होता है। जैसे क्षमश —कोक कोम त्व= राष्ट्र राणी = को रजत = रमस सरी। आहे. यहा = बमा नियोग = विद्रोध बावएन = साम्यल ।
- २. इन्हों के बीच के बाध वार और बाके स्थान में इ दाना है। यहा फमहा —हाला × सका आपके = बाहद नल = कडा. साम = साह, समा = स्वता ।
  - स्त्रों क वीच के टका ड होता है। यथा-बर=धर बर=बर।
- ४ स्वरी के बीच के ब का ब होता है। बैसे-मठ = मब फरीर पब्द ।
- प्. स्यों के बीच के व का ल प्राया होता है। यदा मस्य = वस्त तवाब = तताब ।
- सरों के बीच के ह का अनेक स्थल में व दाता € पवा-विधानस = पविद्वाल प्रयुक्ति = पहारे व्यासत = वानड. वताका = वहाया ।
- व के त्यान में सर्वेत्र लहोता है। यदा—कार =कारम वका = वसल नर − एए, वसे ≈ एस्ट बन्य = वस्स देग = वस्स्व ।
- हो स्वों के सम्पर्धी व का कही-कही न और नहीं ही बोप होता है: यथा-समा = समा का क्या न क्षत्रसार, रिप = रिज, काँच = क्षत्र ।
- स्वतं दे क्षेत्र दे व दे स्थान में दही नहीं म कहीं नहीं ह और नहीं नहीं ये दोनों होते हैं। यहां-रेड = रेस, रिज = विशा मुनाइक - मुताइल कारत o तका स्थात रोकाविका = सेमासियाः सेहाविया ।
- क्वरों के सध्यवर्ती व का व होता है। जेसे-पनाव मनाव, तकत = स्वम । 1
- आदि कंद का व दाता है। यथा वम वसम वसक = वस वार्त बाद। \*\*
- १२. इतुम्त के बनोव और व प्रस्पय के व का कहाता हु। वस-करखोव ≠करशक पैय = वैका।
- man une eine eine eine un glat glat glat glat glate glate aglen utare a game : 11
- श और व का सर्वेत्र स होता है। यथा-- स्व विभाव वीसाम पूका पृत्ति, सूरव साम श्रेष : सेस : 12
- सन्द जगद ह ना व होता है पंसा-नाह = वाव विद = विव तंतर = वंतर । \* 2
- वहीं गडी रु. व भीर स का य होता है। बसं-शल व यान व्ह = बद्ध, गुवा = स्था। 15
- १७. आ इ राष्ट्री में स्तर सदिन स्पञ्जन का क्षेप होता है। यथा—चन्नत = चडन भावत = भाव बानावत = सतास हवन हिम वारागन = पारक्ष भारत = वा वनोरत = तेस स्थार = वेस वरर - वोस वरत = केव व्यक्तिकार = कराहेर, वनुरंत = भोरहः, नपुष = नीहः ।

#### संबद्ध स्वयस्त

- १ व के स्थान में प्राय व मोर कहीं-कहीं के ओर कहाना है। बेसे यय सकत नकत = वस्त्रक वर्षक = वस्त्रक वर्षक = वस्त्रक क्षील भील।
- २) त रा इ.सीर मा क रपान में करी-करी कमशा च स.व और क होता है। यथा-वाला = एवा द्वानी = एकी रिकार करियं पुरस्ता संपुरस्ता ।
- के हुन्य १२९ क परवर्ती व्य, च, ता कीर व्य के स्थान में स होता है। जैसे—पद्म ≈पक्त, पश्चात् =पक्चा करवाह सक्तार धन्तर्व = प्रश्वयः ।

१ संदर के पार्टि सार का बहाराज्यों में 'ऐ' होचा है। इतके दिवा कियों कियों के बत में 'ऐ' तथा 'घी' का जो बबोब होया है- वैते—वैदर≖वैधर गीरम∞गीरम (हे शा १ १)।

२, वरतीय के ब्राह्त-स्वाकरहा के भी एए बर्डवर्ष (२ ४२) तुब के ब्रह्मचार बर्डवर्ष भी का नहीं होता है। केनुबन्स बीर करी-रावकती में इसी तरह सारोंक्य 'ए' बामा बाता है। हेक्चल साहि कई प्राकृत वैवाकराती के बात से साहि के वी वर रिक्तप्त के 'छ' होता है वधा-नदी = छई नई, सर = छए, तर । वडतरही में छकार का वैदल्पक प्रवान देवा बाछा है।

- प्टर्मकीर्मस्य अवशेषा है¦समा—मध≖मझ वस्य≃ज्ञकार्य≕क्य।
- थ व्य और सका म दोवा है। यथा-न्यान = माण साम = तम्म, पुत्र = तुम्म सस = तम्म।
- ६ तं का शय' ह हाता है, जैसे--मर्तकी एट्रई, केनर्त वेवह ।
- ७ एक स्थान में ठ होता है। यथा- पुटि = पुटि पुट = पृट काउ = क्ट क्ट = ब्ट ।
- ८. भ्न म्त्र ए होता है; यथा—निम्न = एिएए प्रयुम्न = पण्डुएए ।
- ह अना ए भीर व होता है वैसे-नान = छाए वाए प्रजा = पएए। परता।
- १० स्त काव होता है। जैसे इन्त = इन्स स्तोत्र = पोत्त स्तोत्र = पोत्र । ११ - इन कीर क्य काव होता है। यया — पृत्रमल ≃ कुंग्स कीवनली = कप्पिली ।
- १२ व्याचीर सरस्य कहोता है। यया—पूरा ≈ पूरक समस्त = पंदरा ।
- र-८ क्षेत्र शार सर का कहाता है। यया—पुश्य क्ष्युष्क राग्या विश्वता १३ शुक्रात्र होता है, यथा—तिह्या⇔ जिल्ला विश्वत = विस्तव ।
- १८ स्म भीर रम का म होता है। जीसे—जम्मर्= बस्म सरमय = मम्भह पुरम ≈ पुरम किम = किम ।
- १५ व मा स्म और हा का रुत् होता है, समा-कारगीर = काहार, श्रीमा = निव्ह, विस्तव = निव्हय बाहाए = निव्हण ।
- १६ स. क्या क इ. सु भीर क्या के स्थान में एह दोता है। यथा---प्रम=पण्ड, क्या = वण्ड स्नान = ग्राण नांड = वण्डि, पूर्णाह = पूज्यह शीरण = तिग्रह।
- १७ ह का रह होता है यथा—प्रदाद = परहाय वहार = कन्हार।

संप्रता = सरवत् वधात् = पवका रहः सह मुख = तृद ।

- १८. संचीत में पूर्ववर्ती के व ८ क त क व च त स्त्रीत संकान्तर होता है, जैसे-पुल = कुत पूरव = हत, पर्यव = सम्प्र सरण = पार, वरान = प्रमान मुदर = मुक्त मुक्त मुक्त मिनन = सिक्त = सिद्ध = सिद्ध र, स्त्रीतत = सिन्ध ।
- १९ मंदोग में प्रवर्ती मान और वाद्योप होता है। यमा—स्वर = मर, कल = वाय स्वार = वाह । तः मंदान में पूर्ववर्ती आर परवर्ती सभी ताव सीर रामा काप होता है। यमा—स्वर = वहा विकास विकास करू = वहा
- ता = नद सहै = पर चा = चा = । २१ संयुक्त भक्षती ए स्थान में जो की भादेश रूपर पदा हूँ उसस्य भीर संयुक्त स्थान के शोप होन नर जो जा स्वस्तन वास्त्र रहता है उसस्य पदि यह राश्द के आदें में नहां जो द्विस्य होता है, जैसे — सहसा = तुवा मण = मण भुक्त = हुक वना = दक्षा | प्रस्तु यह आदेश भपया राण व्यक्त पदि वर्ग का द्वितीय स्थान पत्न भाग स्वास्त्र हो तो द्वित्य न होकर उसके पूर्व में भादश स्वयता राण व्यक्त के धानत्तर पूप व्यक्त या चाराम होना है यथा—

#### विश्लपम

१ ई रो वं के मध्य में भीर संवोग में परवर्ती स के वूर्व में स्वर का सागम होस्ट संयुक्त क्याजनों का विश्लवम क्रिया जाता है। यथा-- धरेंत = मध्द भष्टि, मध्द बारते = सर्वाल, हुने = हरिल क्षित्र ।

#### स्परयय

१ अनक राष्ट्री में ब्यक्त के स्थान का कारथय होता है; यथा—नरेगू = क्षणे चानान = पाछार मगछर = सद्दू हरितार - हरिकार, बहुट = हुन्थ ननार = एकान हुन्न उन्न - इन्द्र - इन्द्र = सरह ।

#### প্রসিক

- १ अमान में को की हाय शर के खान में हाप भीर क्षार्य के स्थान में हरत होता है; यथा—सन्तर्वेश=सन्तर्वेश वीतरर=बाहर, बहुबाहर व बीवापुण नरीलेंद्र व सारोत ।
- २. शार पर रहन पर १वे श्वर का क्षेप होता है। जस-नितरेश = विकतिय ।
- संयुक्त स्पष्टन वा पूर्व । सर हरर होना है। जैसे—बास्य वसस पुरीय = पुराव, कृते = कृत्व निर्माण करेल करोतर कोक्य क्र विशिष्य, शीतीपत = छोत्रमत ।

#### सम्ब-निरम

१ अपूर्व ( कामन वा क्षेत्र दान पर चर्याष्ट्र रह हुन् ) स्वर का पूर्व स्वर का साथ प्रायः सन्धि मदी दानी दा गया— विरायर व विशायर सम्मेवर व स्थानिकः।

- २. यक पह में स्वरों की सम्य सही होती हैं। जैसे—पाव = पान, वि =वक, ववर = सबर ।
- ३ ६ ई. चीर क की चासवान स्वर पर छाने पर, साम्भ नहीं होशी है। सवा-वामीव सवसती बहुवंचे ।
- ४ ए चीर मी की पश्वर्ती स्वर के साथ समिव नहीं होती है। यमा—कने पावंबो, यलकियाने एतिया ।
- शासपात के त्यर की सन्धि नहीं होता है। जैसे—होर छ ।

#### क्रमानिक विकास

- १ असराज्य पुंसिम राज्य के परम्बन में सो दोता है। जैमे—निवा = निही क्या = वक्यो ।
- 2. पदानी के एउड़बन में को वो बाहि बीर तोन होता है और तो-भिन्न अन्य प्रस्वों के प्रसंत में अग्रद आ व्यासर होता है। जैसे—विवाद =विकासी, विसायो विसाय विसाय विसाय
  - प्रकारी के पहलबन का प्रत्यव तो थी न और वि होता है। एवं तो से अन्य प्रत्यव में पर्व के ब का मा होता है पि क प्रसा में द भी होता है। यथा - विख्ती विखान, विख्ति विख्ति विख्ति
- प्रशास के एक्टब्यन के प्रश्वय के स्थान में दिया और बहुवबन के प्रश्यय के स्थान में दिया और धुंदी इन स्वतन्त्र राष्ट्री का भी प्रयोग होता है. यथा--विवास = क्लि दिती। निषेम्य = निला दिली, क्लि दिली, विका होती विले हेती।
- ५. वही के गरवजन का प्रत्यव स्व होता है। यथा--विख्य प्रवित्त संस्त ।
- अस्तान शब्द के प्रथमा के एकदकत के रूप मिन योग योग है सह और सहते होता है ।
- थ. अस्तर शहर के प्रथमा के बहुबबन के रूप चन्द्र, चन्द्रों, मी वर्ष आहे से होता है ।
- ८ अस्मेन रास्त्र के पड़ी का बहुबबन से हो, मरम, पन्ह, पन्हें प्रमुद्दे प्रमुद्दे प्रमुख प्रमुख क्यान और गरमाल होता है।
- ९. सप्तान सन्द के पत्नी का पहचवन वह द ते दुनई दुह, दुई, दुक, दुन दुनो, दुनाह, दि, हे, ह, यू, नूनक दुनह, दुनके क्या बंध क्या और क्या होता है।

#### किन्न-स्वायक

- र मिनान में वा शब्द केवळ पुंक्ति है जनमें से वईप्रक महराप्ता में सोकिंग और नपुंसक किंग भी है, यथा-प्रस्क व and auer gent - gen gent' bei - bei beifig !
- अनंद जगर सास्मि के स्थान में पुष्टिम दोता है, यहा--शव्य = प्राची, प्रावृद् = पाक्तो, वियुता = विश्वृत्ता ।
- संस्था के धनेक क्रीवर्जिंग राब्दों का प्रयोग महाराष्ट्री में पुंक्तिन भीर क्रीकिंग में भी होता है। यदा-करा न बके तम्ब = बानो, वर्ति = बान्ही कुठम् = विद्वी | शीर्वेद = शीरिया ।

- १ ति और वै मरवर्षों के तका साथ होता है, जैसे—हमित ≖हमर, हल्या रखते ≕रमद रमयः।
- २ परामेपर आर आमतपर का विमाग नहीं है, महाराष्ट्री में सभी पात बमयपत्री की वरह हैं।
- भत्यात के सन्तन भगतन और परास पिमान स बाकर एक ही तरह के इस होते हैं और मृतकार में आक्सान की जगह व-प्रयमान्त करून का ही प्रयोग अधिक होता है।
- ४ अजिप्यन्त्रास इ भी संरहत की बरद अस्तन और अविष्यन पूरी को विमास सूती है।
- श्रीवादरताय के प्रत्यपी के पहार है होता है यथा-हिल्लीत = हतिहर, करिप्ति, = करिक्त ;
- बनेतान बाढ़ के, मिक्कररात के और विधिनस्मि और आगार्थ के प्रश्वनों के स्थान में कर और क्या होता है, अया--दर्शन द्विप्यति द्वेत् द्वतः = द्वेत्रव द्वेत्रवा ।
- . आव भीर कर्म में रंग और रम प्रत्य होने हैं, बना-इस्ते = हवीपर, हरिका ।

#### प्रकार

- शोकायभैक तुन्तरसय क स्थान में दर दोता है, यथा—च्यु = श्रीनर, नवनतीव = सुविद ।
- द. शान्त्रपत क स्थान में नुष् च कुछ नुमारा और या झांचा है जीसे--पांतरश पांतक परिवास परिवास परिवास परिवास तरितर
- १ तर प्रस्यय क स्थाम में स और करा झांना है। यथा---रेशर देशस, देशतत ।

#### (१०) अपम्रंश

महर्षि प्रवज्ञित ने अपने महाभाष्य में क्रिया है कि "गूर्वजेप्तरुक्त वर्णोयीय रुखा । एकैक्स है रायस्य बहुवोज्ञास सा रुखा—मीरिलस रुख्य कार्य पेयों पेशा गोरोजित्व एवंबनायरोज्ञस साण असान् अपराय युद्ध और राष्ट्र (युद्ध योदे हैं, स्वीति एक एक ख्रम्द पे बहुव अपन्नेश हैं जैसे 'शी' दूस साम्य के गामी, गोणी, गोग गोगोजित्व इस्ताह के अपने में हैं। 'पनम से रुख्य का स्वाहरण में असित साम्य के अपने में ही क्ष्य कर है और अपरायम् का अपने भी 'संस्कृत जानाय और विशेष मर्च साम्य एक से असित साम्य हैं यह स्पष्ट हैं। उक्त वराहरणों में 'गामी' और 'गोणी' ये दो सम्ब माहित आहत-वैयाकरणों ने भी ये दो सम्य अपने अपने आकृत-वाकरणों में असुम मुद्रा पित दिये हैं। इच्छी ने अपने सहस्वाहरों में पढ़ि साहत और अपन्न श का अत्मानका निर्देश करत हुए बाक्य में क्याहत आमीर-स्पृति की माना के अपना मा वहीं हैं और बाद में यह क्रिसा है कि 'गाका में संस्कृत मित्र सभी भाषार्थ अपन्न स्व हो गह हैं"। यहाँ पर इच्छी न शास अपन वा प्रयोग महाभाष्य-प्रमृति क्यावरण के अर्थ में ही किया हूं। परअक्तिमधि मंग्कृत-येपाकरणों के मह में संस्कृत-मित्र सभी माहत सामार्थ अपन श के अपने पर हैं, वह अपर के उनके के सरे पर हैं। एस्तु माहत-येपाकरणों के मह में से सम्य भाषा भाषा माहत सामार्थ अपन श के अपनार हैं, वह अपन के तक के से पर हैं। परन प्रताह है के 'शाहतेन पर सम्ब है कि पर्वजित के समय में सिस अपन श कर्य हम 'संस्कृत-क्यावरण असित हैं। हो सामा्य अर्थ से मुत्रोग होता या वसने आग से समर प्रताह करा हम स्व 'संस्कृत-क्यावरण असित हैं। हाई मी प्राकृत') इस सामान्य अर्थ से मुत्रोग होता या वसने आग से सहर समर 'प्रावह कर स्व से से दूर इस विशेष भर्म के अर्थ भरण किया है। इसने भी यहाँ पर सम्ब हा हा हा कर इस प्रियेप अर्थ में ही क्यवहार किया है।

अपन्न श मापा के निर्दान विकानियों. वर्षान्त्रया लादि नाटक-प्रत्यों में, इरिकानुपाल पन्नवरित (स्वयंमुदेवकृत)
विकान विकानियां व

हाँ, हॉर्नेलि के सब में जिस बद्ध आर्थ होंगों की कथ्य आपाएँ अनार्थ होगों के मुख स उहारित हान के कारण हांछ थी। समय क्षेत्र होन के कारण कर पायी भी वह पैराची आपा है और यह कोई भी प्राइशिक आपा कहीं है, वस वक्ष कार्यों हो के क्ष्य आपाएँ आर्थ के आदिन-निजाती अनार्य होगों की मिन सिप्त आपाओं के प्रभाव के जिन रूपालों के प्राप्त हुई यो वे हा सिप्त मिन मिन आपालों के प्राप्त हुई और ये महापाड़ी की व्यवसा अधिक प्राचीन हैं हों होंनेकि क "स सब का सर प्रियसैन-प्रमुवि आपुनिक आपालस्था क्षीकर तहीं करते हैं। सर प्रवस्त मार्थ माहित्य और स्थावरण में नियन्त्रित होकर जन-साभारण में अपवस्ति हान क बरण जिन नृतन कथ्य आपाओं की उत्पत्ति हुई था वे ही अपन हा हैं। ये अपन्न स-साथार्थ रिस्तीय पद्धान करतालों के बहुत कार वृत्त के साथार्थ में कि प्रयक्त होते भी क्षीकि चयड के प्राप्त-स्थायरण में और कार्यक्रित होते की विद्यान करतालों के पहले के हिन्दी होते की समस्त मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्य मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्य मार्थ

१ बीरोप्तियामे नाथीयो<sup>स</sup> "गोर्च नियान" (जावा २ ४ ४)। "एनरगरीमो" (निया १ २ वत्र २६)।

<sup>&</sup>quot;दोलीर्स संख्या (स्ववहारमूच च ४)।

र. "गोर्शरी" (प्रारक्त्याच २ १६) : ३ "केज़ारम" (१ झा २ १७४) :

४ "बाम्रेपरिल्टः बाब्देव्यरम् श ग्रीत स्तृताः ।

राष दु चंन्युवारायराभ्र शतयोगितम्" (१ १६)।

कार्य क्रय्य भाषार्गे हैं । इनका बराचिन्समय जिला की मतवी या इसकी शताबरी है । सुतर्ग, अपन्न वा भाषार्गे किता की मन्नम शताब्दी के पूर्व से क्षेत्रर नक्की या दशकी शताब्दी पर्यन्त साहित्य की मापाओं के रूप में प्रचटित की । इन अपन्न स तकार अध्यक्त के द्वार के करण पत्र पा पर प्रधान का अध्यक्त का गामाला के दूर में अवस्था का है। स्थान के भागाओं की महति वे विभिन्न माहरू-मायाँ हैं, को भारत के विभिन्न भदेशों में इन बयन्न शों की दूरति है पूर्वसाव में वक्तिम भी ।

ब्रायक्रीस के बहुत भेद हैं प्राकृतपन्त्रिका में इसके ये सताईस भेद क्वाये गए हैं ।

"बावरो बाटनेवर्मानुपनायरमानरी । वार्वरत्वपरमपञ्चाबटावराजनकेकमा ।। ग्रीडोब्हेबराम्यसम्बद्धान्त्रस्य सर्वेड्याः । कार्तिकच्यान्यसम्बद्धान्त्रसम्बद्धानिडनीर्नेयः ॥ सामीरी मध्यदेशीयः सुक्षमोदम्याधिकाः । सन्तविक्टक्तम् स्य वेदालादिममेक्तः ।।

मार्कण्येय ने बपने प्राष्ट्रयसभ्य में प्राष्ट्रवनन्त्रिक से सताईस अपभेशों के जो सक्षण और स्वाइरण पदापृत किए हैं। वे इनने अपनीत और अस्तर हैं कि सुर मार्कडेंग ने भी इनसे सुक्त कह कर नगण्य क्वाये हैं और इनका प्रमानुसूचन क्रमापनिर्देश न कर पण समस्य अपन्नेशों का नागर आवड और वपनागर इन ठीन प्रधान मेहों में ही अन्त्यमीय मान्य हैं। परन्तु यह बात मानते योग्य मही है, क्योंकि जब यह सिद्ध है कि जिन भाषाओं का परपत्ति-स्थान भिन्न-मिल प्रदेश है भीर विनम्न प्रकृति सी सिम्न-सिम्न प्रदेश की सिम-सिम्न प्राकृत सापार्थ हैं तब ये अपन्नेस सापार्थ सी सिम्न-सिम्न ही हो सच्छी है और बन सब का समावेश एक दूसरे में नहीं किया जा सकता। वालव में बात यह है कि वे समी क्षपद्भित्र मिम क्षान पर भी साहित्व में निक्क न होने के कारण धन सब के मित्रसेन ही वसक्ष्म नहीं हो सकते हैं। न्सीस प्राइत्य द्रिकाकार न उनके राग्र शक्य ही कर पाये हैं और म तो उदाहरण ही अधिक है सके हैं। यही करण है कि वारिक माहर में निर्मा के मुस्स करकर दात्र दिये हैं। बिल कपानीय मानामें के माहिस्य सिल्य होने से निवर्कन पार्व माहर्कदेव ने भी इन मेदों के सूस्स करकर दात्र दिये हैं। बिल कपानीय मानामें के माहिस्य सिल्य होने से निवर्कन पार्व बाते हैं वसके करूप और क्याइरण मानामें हैमलाई ने केवक अपानीय के सामान्य नाम से और माहर्कवय ने क्यानीय के नाव ह नाम कर वे विये हैं। आवार्य हेमचरह ने 'अपान वा' इस सामान्य नाम से और मार्डण्डेय ने मानग्रपन्नेयां इस वान त्यार जाता है। सिनोय ताम से जो क्रमण कीर दशहरण दिने हैं वे राजस्त्रांना मगन रा या राजपूताना वचा गुजराव प्रदेश के क्रमजरा घं हो संक्रम राजे हैं। माणकायमंत्रा के नाग से सिन्धपदेश के मगनेस के क्रमण और वहाहरण साकेण्येय ने क्रमने स्थानस्थ के दिये हैं आर चपनागर अपनेश का काई क्षरण न देकर चेवल नागर और जावह के मिलल को 'चपनागर अपनेश' कहा है । इसके सिना सीरसेनी-अपन्नेश के निवसन सम्बदेश के अपन्नेश में पाये जाते हैं। अस्य अस्य प्रदेशों के अवना महाराष्ट्री अर्थमागर्थी मागर्थी और पैशार्थी भाषाओं के जो अवश्रमा में उनका कीई साहित्य वपक्रम त होने से केई निर्दर्भन भी नहीं पाने आने हैं।

विमानिका अपन्य सामा का कराकि स्थान भी भारतकों का मिन्न मिन्न प्रवेश है। इतट ने और बाग्सट ने क्यान अपने शक्तानर-प्रत्य में यह बात संचेप में अपन स्पष्ट अप में इस तरह बड़ी है --क्यांच-लल

"क्खोरन मरिजेशी देशनिरोपादपत्र'तः (कल्पालकार २ १२)।

े भवत लच्च वन्तुन कारिक्य प्राप्तकर्ण (बागस्त्रास्त्रा २ १)। विस्त की परूपम राजाव्या के पूर्व से क्षेत्रर दराम स्थाव्यी पर्यस्य भारत के लिक्स-शिक्ष प्रदेश में कस्य भाषाओं के प्राचीनक बारों बच्च इस्त में प्रचित्तत जिस जिस अपभाष साधा से मिल-मिल प्रदेश की जो जो आयतिक वार्य कम्म भागायों के ब्रहीत भागा (Modern Vernacular) बराझ हाई है समझ क्षिपण की है --

मामेदोवान्तर्मावः (शा स कुछ १२१)।

१ वेजीवसाहित्यग्रीरक्त-पवित्रमः १६१७ ।

२ "क्षान्तं रशरामानागारोपनानगरिरयोक्षनारहोतम् । तुन्तुना नाननी । नामेनद्वताः नाम्नानी । व्यवस्था नेदर्भे । वंशेषनान्त अस्ते । देशरोपारमध्या चौदी । वर्गन्ता देवेदी । सनाताका नीदी । ददारबहवा कीकारी । तकारिकी व दारका । प्रका<sup>रम</sup> र्वेहती । विकास नागियी । प्राच्या वर्देशीयमायाच्या । म(म)श्रुविक्यूनाकारोधी वर्त्तविक्यंत्रात कारतीय । सम्परेशीय स्ति कारण व रोजिंगे । चकावाद पूर्वीचारकास्त्र प्राप्त । सा(क)हाई व्यवस्था (स्वाप्ता । रेक कार्यन सरिक्षा । चलातामा नेपालिकी।परोपाला कारणी।धेना रेक्स्प्राप्तिकेताः।

भावचे शावरबीयनावरस्वेति वे नय । यश्रव तम वरे मुक्तनेक्वलम् चक्क नता<sup>ल</sup> (त्रा स पुत्र १)। भवन्येवायसम्बद्धाः

सहाराज्ने-भपर्धरा से मराठी और कोंक्यी मापा।

मागधी अपन्नेश की पूर्व शासा से वंगव्य उद्दिया और आसामी भाषा ।

मागभी अपन्नेरा की विदारी शाला से मैथिकी, मगदी भीर भोजपुरिया !

अर्घमामधी अपन्नेश से पूर्वीय हिन्दी मापाएँ अर्थात् अवधी, बमेसी और खत्तीसगड़ी ।

सीरसेनी-अपन्नेश से मुन्तेस कन्नीनी, जनभाग चाँगरू हिन्दी या धर् ये पाझार हिन्दी मापाएँ जात अपन्नेश से राजस्थानी सामग्री मेबाडा अपपरी, मारपाडी तथा गुजराती मापा।

पाछि से सिंहकी और मास्त्रीयन ।

शकी अवना हाका से सहण्ही या पश्चिमीय पत्नानी ।

टार्क-अपन्न श (सीरसेनी के प्रमाय युक्त) से पूर्वीय पंजाबी ।

मापद अपर्भश से सिन्धी मापा।

पैराभी-अपन्नरा से धारमीरी मापा।

सम्बद्धाः

विश्व, सिम्ह ।

मागर अपभ्र स के प्रधान खसुण ये 🕻 一

#### वर्ण-परिवर्धन

श्री भिम्म-भिम्म स्वरों के स्वान में भिम्म भिम्म स्वर होते हैं। यसा—इव्य = कव काव ववन = केल बीए बाहु = बाहु, बाहु: वाहु: प्रत = प्रति निर्दाध पुर्दिक कुल = कल विल कुल सुक्त = मुक्ति पुक्त केला = मिन्न कोह केह।

२. स्वरी ए मध्यवर्षी असंतुष्ठ क, व ए, व थ ओर क के स्वान में प्राय क्रमरा म च व व कओर म द्वीता है स्वा— विच्येत्कर = विश्वीकृत्य सुद्ध = सुद्ध कवित = क्षित, साव = सुवन ।

र अनादि भीर असंयुक्त म के स्वान में धेठल्पिक सानुनासिक न होता है। यया —कमत = कर्षण कमण भगर = भर्षर, ससर।

४ संयोग में परवर्ती र का विकल्प से बोप होता है। यथा—प्रिय = पिय प्रियः पन्त = चन्द्र वन्त्र ।

रे. यही-कही संयोग के परवर्ती व का विक्रम्य से र हाता है। जैसे-स्मात = बाग बाग ब्याकरण = बागरण बानरण । है सहायान्द्री में बहाँ कु होता है वहाँ अनुभाव में स्माभीर महारोगों होता हैं। युवा-- बील = पित्म गिरुक क्रोक्ट

#### नाम-विमस्टि

- १ विभक्ति के मर्सन में हुन्य स्वर का दीन और दार्थ का हुन्य प्राय होता है। पया—स्वापन = सामन वहुगा व्यवस्व इष्टि = विदिः पूरी = वृत्ति ।
- साभारण माने त्रिमक्ति का जा परवाही वान पा दिव जात है। किंग में में और शब्द भद में अतेक विशाव प्रस्तव भी हैं को पिलार-मय से यहाँ नहीं दिव गय हैं।

PERSONAL PROPERTY.

		49444		45444
	त्रपमा	च, हो		
	क्रिचीमा	-		•
	तुतीया	₹		হি
	चनुर्या	पु. हो, स्तु		ŧ •
	पउचमी	£ 5		7
	ष्ष्री	युः हो स्यु		દે
	चतमी	र दि		Tr.
			भाषपात विमक्ति	•
		एकवपन		यरुष्यन
7	t <b>1</b>	ŧ		*
	₹ 🖫	£ξ		ì
	1 5.	₹. प		t fe
				•

- सन्यम पुरुष के एक्श्रचन में आकार्य में इ. व और प् होते हैं यथा---दुव = नार, कर, करे।
- सविष्यात्मास में प्रत्यम के पूर्व में स आराम होता है। समा-मन्मित = होतह ।
- कम-प्रस्तय के स्वान में इएकर एकतं और क्षा होता है। वश-क्रीम = क्षिएकर करेका ।
- ला के स्वान में इ. इस इति पान पूर्ण, पूर्णमा पूर्ण प्रतिस होते हैं। मशा-इत्ला = करि, सरिव करिन करिन करिन करेप्पित करेपि करेपिस ।
- तुम-सर्वत की बारह एवं वस वसई वस्ता एमि एमिए एपि, एपिए होते हैं। यदा-न्यु म = करेर करण करणहं कर
- छहि, क्षेम्प क्षेमियु क्षेत्र क्षेत्रयु । शीखराजेब दुनस्थय के स्थान में मत्त्रप होता है जैसे—क्यू = क्ष्म्स मार्गपद = पारत्या ।

#### वकित

ल और ता के स्थान में पाछ होता है। यदा—केरब ≈ केप्परा स्थलन = बक्रपण ।

इस पहल यह कह आये हैं कि वैदिक और क्षीकिक संस्कृत के रावहों के साथ तुल्ला करने पर जिस पाकृत भाग में वर्ण-क्षेप प्रश्नति परिवर्तन वितना अनिक प्रतीत हो। वह क्तनी हो परवर्ती काछ में उत्पन्न मानी जानी चाहिए । इस मिक्स के अनसार, हम देकते हैं कि महाराष्ट्री प्राप्तत में स्वस्थानों का क्षेप सर्वापेक्षा थपिक है, इससे वह एक्प में भा विक अस्यास्त्र प्राष्ट्रत-मापाओं के पीके कराज हुई है। ऐसा अनुगान किया जादा है। परम्त अपन्न रा जै भारती में बटन

वारते में राज वारत निमम का क्यार देखते में आता है, व्योषि मिमनिक मदेशों की अपना रा माणारे वार्षि महराण्ड्रीके बाद ही करता हुई हैं बवापि महाराष्ट्री में को क्यानकन्यर्यकोय देखा जाता है, अपना रा में बसकी कोखा अधिक नहीं बरिक क्या ही वर्ण-क्रोप पाया जाता है और क स्वर तथा संबुक्त रक्षर भी विद्यमान है। इस पर से यह अनुमान क्रमा असंस्त नहीं है कि बर्ज-सोप की सांत ने महाराष्ट्री प्राकृत में अपनी चरम सीमा को पहुँच कर इसको (महाराष्ट्री को) असि हीत-गाँस पिण्ड की तरह स्वर-बहुछ बाकार में परिणव कर दिया। अपन्न हा में बसोकी प्रतिक्रिया हारू हुई और प्राचीन स्वर पर्व स्वरूपतों को फिर स्थान देकर साथा को सिक्त शावरों से गठित करने की चंडा हुई। इस चेदा का ही यह एक है कि

विक्रते समय में संक्रव-माया का प्रभाव फिर प्रविक्रिय होकर कामुनिक कार्य करूप मायार कराम हुई है।

#### शक्त पर संक्रत का प्रमाव

जैन सीर बीर्डा ने संस्कृत मापा का परिवास कर इस समय की कृष्य भागा में वर्मीपहेस की क्षिपियदा करने की प्रचा मंचित की वी। इससे को दा नमां साहित्व मागामों का जन्म हुआ वा वे जैन सूत्रों की वार्यमागंची और बौद्य-सर्मे प्रमा को पाढि भाषा है। परमु में का साहित्व-मायाएँ और धम्यान्य समस्त प्रमुक्त-मायाएँ सेसूक के प्रभाव को कर्कपन नहीं कर सभी हैं। इस बात का एक प्रमाण तो यह है कि इन समस्त प्राष्ट्रत-माणाओं में संस्कृत-माणा के अनुक राज्य व्यविकार इस में नृष्टीत हुन हैं। ये राज्य तरसम को आते हैं। यथि इन वरसम राज्यों ने प्रकम स्तर थी प्राइत सायाजी से ही संकार में स्थात और रहाल पाया था. तो. भी नह स्थीकार करना है। होगा कि ने सन राज्य परवर्षी काल की प्राकृत मापाओं में जो अपरिचरित हुए में स्थवहृत होते ये वह संतहत-साहित्य का ही प्रमान का।

इसके अविरिक्त संस्कृत के ही प्रभाव से बौदों में एक मिस्र भाषा कराम हुई थी। महायान-बौद्धों के महावेषुम्य सुत्र नामक करिएय सूत्र प्रश्न है। ब्रिक्टिशिक्ट, सहसे पुण्डरिक वांत्रप्रीपसूत्र प्रश्नति हरक अपनारित हैं। इस संबों के सामा में अधिकार तहत हो संस्कृत के हैं ही अनेत्र भाषत बढ़ारी के बागे भी संस्कृत की विभागि स्थान

कर बनामें भी संस्कृत के अनुरूप किये गय है। वास्त्रास्य विद्वानों ने इस माया को धार्था वान कर प्रतास ना राष्ट्रा के कार्य कर कि इसका वह भावों साम अस्मार है, क्योंकि वह संस्कृतनिस्तित माहर दिया है। करते वहाँ पर यह करता आवरपक है कि इसका वह भावों साम अस्मार है, क्योंकि वह संस्कृतनिस्तित माहर का प्रतास एक प्रयों के केनल प्रयोशों में ही गई। वॉक्ट स्थापन में भी देखा जाता है। इससे इस मंत्रों की भावा को सार् म क्षकर शक्तर-मिम-संस्कृत' या 'संस्कृत-सिन-प्राकृत' अवद्य संबूप में सिम-माप्य (दिक्ससा विविद्य हैं।

हों बनेफ चीर हों राजान काछ मित्र का मद है कि संस्कृत मापा, कमरा परिवर्तित होती हुई प्रकृत गांचा भाषी क कप में कीर बार के पांकि-माण के आमर में परिपाद हुई है। इस तरह माना मापा संस्कृत कीर पाक्षि की सम्पन्ती ोने के कारण इन दोनों के (संस्कृत भीर पालि के) छन्नुणों से काम्हान्त है।' यह सिद्धान्त सर्वेधा भ्रान्त है, क्योंकि स यह पहते ही अन्दी तरह प्रमाणित कर जुके हैं कि संस्कृत भाषा कमरा परिवर्तत होकर पाछि-भाषा में परिणत नहीं हुई है किन्तु पाछि-भाषा देविक-युन की एक प्राहारण्ड भाषा से ही क्यम हुई है। और, ग्रामा माया पाछि-भाषा के सहसे प्रमालत न भी, क्योंकि गाया भाषा के समस्त प्रमाण को सम्माण किस्त-पूर्व दो सी वर्षों के किर सिन्त की का तताकों पर्यन का है, इससे ग्रामा-भाषा बहुत तो पाछि-भाषा की सम्माणक ने किसी है न कि पाछि भाषा की प्रमाणक स्वान के सह माया संस्कृत के प्रमाण को काया स्वान स्वान कही दिया गया है।

गाया-मापा का धोड़ा नम्ना सस्विधित्तर से यहाँ बबुव किया जाता है --

"सार्ध्य क्रियर शरकप्रतिमं कटाकुतमा विश्व विश्व चुति। विरित्रपत्ति चुतिवर्ष करतायु क्षे यक विश्व नमे ॥ १॥ "वरकपत्तिका होन कामहता. प्रतिविद्य दश विरित्रोप यथा। इतिसारसमा कटाकुत्यसम्बद्ध वस्पन्तमा विशित्यक्षेत्रै ॥ १॥" (द्वारु २ ४ २ ६ )॥

नुद्धदेव और इसके सारवी की व्यापस में बातवीत —

"एरो दि हेन पुत्यो करमानिमुद्रा धीर्शिनय सुदुः विद्यो कमनीर्योता । वानुक्तेन परिपुद्ध सनावमुद्राः, कार्यासम्बं स्पतिब कनेन सार ॥ कुक्तनं एए स्थानस्य हि त्यं सन्धादि स्पन्ति सर्वेत्रस्य हमे क्षत्रस्य । गौति मन्द्राद्धि कपनं यक्षुद्रोत्तर् मुल्या त्याव्यीत्व स्वीतः वर्षित्वास्यः ॥ तिस्य वेत्र कुक्तवानं पर्यक्रमं सर्वे वास्य वर योजन पर्यमति । प्रमुद्धादि मात्रुपित्वान्त्यक्षाद्विचेते वर्षा प्रमुखं नहि स्वस्यविचेता । विक्त सार्वे महुक्तक्षत्रस्य दुविसँद् योजनेन सन्दर्श वर्षा न सन्दे । सार्वेद्यास्य एपं पुत्राहं स्वेद्योः कि सह श्रीवर्णविचेत्रस्य स्वस्त ।।"

### संस्कृत पर प्राकृत का प्रभाव

पहले जो यह कहा वा चुटा है कि वेदिक कात के सम्पदेश-प्रचाित प्राष्ट्रत से ही वैदिक अस्कृत करास हुआ है जोए साहिए कीर क्याकरण के द्वारा क्रमरा माजित और निपनित होकर क्रम में सीविक संस्कृत में परिणत हुआ है, एवं प्राष्ट्रत के अन्तांत समस्त कास क्रम संस्कृत से ता, प्रदीव स्वतं प्रचान के अन्तांत समस्त कर प्रचान कराई भी साईक से साहिए में आपे हि तीय स्वतं के माजित के स्वार्त के अपने के स्वतं के प्रचान से दी क्रमरा परिवर्षित होकर प्रमान कर के माजित से दी क्रमरा परिवर्षित होकर परवर्षी कात के भावत से दी क्रमरा परिवर्षित होकर परवर्षी कात के भावत में स्वतं पाये हैं और संस्कृत क्याकरण्यारा नियन्तित होने से वे हाक्ष्य संस्कृत में अपने परवर्षी कात के भावत के भावत के स्वतं के स्वतं के स्वतं के स्वतं कर से स्वतं के सावतं कर से सावतं से सावतं से सावतं परवर्षी के सावतं क्यान के सावतं कर से सावतं स

भाव इस बगाइ इस यह वजाना वाहत हैं कि प्राहरत से स ध्यस वेदिक और छीकिक संस्कृत भाषायें कराज हो हुई हैं पहिल्ल संस्कृत ने यह होकर साहिरय-भाषा में परिणत होन पर भी ध्यमी बर्गा-पुति के किय प्राहर से ही अनक दावरों का संसद किया है। व्यापेद कादि में प्रमुख बंध (बक्ष) वहू (बजू), संह (वेप) पुराण (बुरावव) वितर (वातनी) अध्यक्ष (क्षेत्र) मार्चित राप्त कीर छीक्ति संस्कृत में प्रविद्ध तिवत (वातनी) आधुल (ब्रावेशिक) सुर (पुर), में सुर (बेप) अध्यक्ष (क्षेत्र) अध्यक्ष (क्षेत्र) स्वाप्त (वापप), सद्ध (पुर), में सुर (बेप) सुराह (क्षेत्र) सुराह (विष्य) मार्च्य (ब्रात), क्षेत्र कर ) स्थाल (वापप), सद्ध (ब्रावेश) वादिर (क्षेत्र) होस्त (ब्रावेश) साम्य (ब्रावेश) किता (क्षेत्र) होस्त (ब्रावेश) साम्य (ब्रावेश) वादिर (क्षेत्र) होस्त (ब्रावेश) साम्य (ब्रावेश) वादिर (क्षेत्र) (क्षेत्र) होस्त (ब्रावेश) साम्य (ब्रावेश) वादा (क्षेत्र), सिंक किता (क्षेत्र) (क्षेत्र) (क्षेत्र) साम्य संस्था (क्षेत्र)

न्ते ही क्रिक्ट रूप में गृहित हुए हैं क्षेर मारिप ( मार्च ) अहिप्तसि ( हास्कंत्र ), मृति ( हवीम ) निवृत्यन ( निवर्ण ), -कुन्स ( कुन्द ) प्रसृति अहत के ही मुख राज्य माजित कर सकृत में किए गए हैं ।

## प्राकृत-मापाओं का उत्कर्प

कोइ भी करन भागा को न हो, यह सर्वेश ही पारक्तन-शीन हांगी है। बाहिस्य और क्याक्स करान्य निवास के बादन भी जकनकर गति-शीन और क्यारिवर्तिय करते हैं। उसका एक यह रोग है कि साहिस्य की भागा कमरा करन माना से सिक्त हो गती है जी करना-सामारण में क्यान्वित्र स्व-भागा में परिल्त होती है। साहिस्य की हरकों माना के साम की करन भागा से हि। साहिस्य की हरकों है। इस उस्त्र प्रकास कर माना से परिल्त होती है। साहिस्य की हरकों है। इस उस्त्र प्रकास करने माना की हि बीच्ह भी होती है। इस उस्त्र प्रकास हुइ थी और वह सामाय के स्वित्र में सामाय की साहित्र में सामाय प्रकास हुइ थी और वह सामायों में साहित्र में सामाय प्रमाय ना। ये सा मानुक-मानार्य भी सामाय प्रकास जान-सामायण में तुर्वाश हो जाने पर संस्कृत की उस्त्र सुर मानार्य में साहित्य में सामाय की साहित्य में सामाय सामायों के सामाय मानार्य माना

इरकोई भाषा का सर्पे प्रवान करेरन होता है अर्थ-प्रकाश । इसकिए जिस मापा के द्वारा जितने स्पष्ट कप से और जितने अस्य प्रयास से अर्थ-प्रकाश किया जान वह चवनी ही उत्तहत्व मापा मानी जावी है। इस हो श्वारकों के बाब होकर ही मापा का निरस्तर परिवर्तन सामित होता है और भिन्न-मिन्न काड में मिन्न-मिन्न कप्य मापाओं से समा-तयी कार है। मार्चिय मार्चाओं की कार्योंक होती हैं। वैदिक संस्कृत कारक लूग है। इर क्षेत्रिक संस्कृत की कर्गिक तक हा कारणें से ही हुई सी। वैदिक रास्त्र-समृद्द कामचीका होने पर वसके अन्तवरमक प्रकृति और प्रस्तयों को बाद देकर को सहज ही समस्य म भा सके वसी प्रकृति और प्रस्वते का संगद कर वेदिक भागा से छैकिक संस्कृत की स्वयन्ति तर्कशी। र्शन जिल्ला के महित्र-स्वय कार्यक्र के स्वापक्षित होक्त का दुलकोष्य हो चठे तक वस समय की क्या माणारे से संक्रम माणा के महित्र-स्वय कार्यक्र कोर केमक महित-स्वयों का संग्रह कर संक्रत के स्वापस्य की क्या माणारे से हो स्वापक्षिक, सुनावारण-पाव्य महुर कीर केमक महित-स्वयों का संग्रह कर संक्रत के स्वापस्यक दुवींचे क्यांबारण्य क्टोर और करेरा प्रकृति-मरवय-सीध-समासों का वर्जन कर सर्वमागंत्री पाल और क्रम्यांन्य प्राकृत-भाषायें साहित्य-माराजों के रूप में स्पनदृत होने खती। यह इन सब मूनन साहित्य मापाओं में संस्कृत की अपेक्षा वार्ष-प्रमध भी भविक शक्ति, भरूप आवास से भीर सुल से उच्चारण-वाग्यता प्रमृति गुण न होते तो ये बर्म सी संस्कृत जैसी समृत भागा को सावित्य के सिंहामन से वसून करने में समये न होती। कालकम से ये सब माकत-साहित्स-भागाएँ भी का म्यास्त्रण होरा नियन्तित हो इर अप्रचक्षित और जन-साधारण में दुर्वीय हो चन्नी तब उस समय प्रचक्ति प्रावेशिक अपन स मापाओं ने इनके हटाकर साहित्व मापामी का त्वान अपने अभिकार में किया । यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि साहित्व की माहन मानाओं की अपेक्षा इस अपभ्र छ-मानाओं में कह कीन-सा गुज वा जिससे ये खपने पहले की प्राकृत-साहित मापाओं को परान्त कर उनके स्वान की अपने अधिकार में कर सबी ? इसना बचर यह है कि कोई भी गुण चरम शीमा में पहुँच बाने पर फिर वह गुण ही नहीं रहने पाता वह शेष में परिवत हो बाता हूं। संस्कृत की अपेशा महस्त-मायाओं में पहुंच आत पर तथर बार गुण हा नहा रहन थांगा जह बाव न जाराव हा जावा है। चाकर के अवधा आक्रयाना का यह प्रश्ने का कि हमने संस्कृत के कर्रम और क्ष्मेय का स्वान में सब क्षेमक यह प्रश्ने का कि इनमें संस्कृत के कर्रम और क्ष्मेयलायीय कार्यमुक्त कीर संयुक्त करने के ल्यान में सब क्षेमक और सुनोबारपीय वर्ण ब्वबहर बाते ये। किस्तु इस गुण की भी सीमा है महाराष्ट्री प्रकृत में यह गुण सीमा का स्वविक्रम आर सुन्याध्याय क्या वस्तु व हात्य । 1942 हुन पुत्र का मानामा के नाव्यक्त स्थान में सर्वा वामा नाव्यक्त स्थान क इर गया बहुतिक कि संकुत के सत्ते क्षण कर्मक क्या कि स्थान होते के बहुके अविकास क्यान्य हुन, क्योंकि क्षेत्र वीच सम्बद्ध गठित होते समे । इससे इत संबंधि के बन्याया सुन्त-सामा होते के बहुके अविकास क्यान्य हुन, क्योंकि क्षेत्र वीच में व्यवकानमारी सं व्यवहित मा होका केवल स्थानसम्बद्धा व व्यवहार कराय क्याकर होता है। इस तरह प्राकृत-मारा - महाराष्ट्री-माहत में बाहर अथ इस करन करना में हपतीत हुई तक्से ही इसका पतन मनिवार्य हो करा। इसकी प्रतिक्रियी

सहस्य अपन्न रा-मापानों में नृतन न्यास्त्रन याँ बैठा कर सुखोच्यारण-मोग्यता करने की पेटा हुई। इसका फल यह दुवा कि मादिशक अपन्न रा मापार्थ साहरूब की मापार्थ के हर ने उन्नीत हुई। नापुनिक मादिशक आरं-भाषार्थ मी माहरू मापार्थों के उस होय का पूर्ण संदोधन करने के लिए नृतन संस्तृत राष्ट्रों के महण कर अपन्न सी है स्थान को अपने लिकार में कर ले नित्त माहर्श संदेश का मापार्थों में पूर-की माहर्श सी का अपने मापार्थों में प्रकार मापार्थों के रूप में परिणव हुइ। आधुनिक नार्थ-मापार्थों में पूर-की माहर्श सी ति अपने साहर्श सी माहर्श की सीमाल कर स्वाप के सुणों हा रह सुनर भी अपना करने यह है कि रहीन के सुणों हा रह सुनर भी साहर्श की सीमाल कर स्वाप के सुणों हा रह सुनर भी साहर्श की सीमाल कर स्वाप के सुणों हा रह सुनर भी साहर्श की की साहर्श की साहर्त की साहर्श की सा

संस्कृत की अपद्या माक्य-भाषाओं में जो उत्कथ--गुण कपर बताये हैं वे अनेक प्राचीन प्रस्थकारों न पहले ही प्रवृत्तित किये हैं। उनके प्रस्थों से प्राकृत के उत्कर्ष के संवरण में इन्द्र बचन यहाँ पर उत्पृत्त किए आते हैं —

ैन्द्रसिद्धं पाउप-कर्ण पहित्रं सीक्रें च थे स दार्शति ।

कामस्य वतः-वर्ति कुर्णिवि वे कङ् स्य वन्त्रवि ? ।। (इस्त की प्रामासक्ष्त्रती १ २) ।

अर्थात् वो क्षेप समुतोपम प्राष्ट्रत राज्य को न दो पढ़ना कानते हैं और न सुनना जानते हैं अवच<sup>न</sup>क्सर-तरप की आक्षेपना करते हैं उनको शरम कर्यों नहीं आंदी ?

ैचन्मित्मह सावर्गी पमय-महाबाए सन्त्रम-भयाती।

सक्तय-संबद्धाक्तकरिक्षणेख प्रयमस्ति पद्दावी ॥" (बाद्यविद्यान का नवधवद्दी ६४) ।

संस्कृत राज्यों का क्ष्मपण्य प्राकृत का खाबा से हो रूपक होता है, संस्कृत माया के उत्कृष्ट संस्कृत में भी प्राकृत का प्रमान बचक होता है।

. स्वनपत्न-वेसर्गं वंत्रिवेस-विस्तरायौ वंत-रिजीसो ।

धविरसमिएमो बाहुवस-र्वनमिह सुवर पदयमित ।। (गउडवहो ७२) ।

स्रांत कं प्रारम्भ से सेकर बाजरार प्रचुर परिमाण में नृतन नृतन कार्यों का दर्जन और सुन्दर रचनावाद्यी प्रवस्य संपत्ति कहीं भी है तो वह केवस प्रारूप में ही ।

<sup>अ</sup>हरिय-विसेसी विमसावधी य मञ्जावधी य भन्धीरा ।

हर् बदि-हृत्तो पैतो-पुर्वे य हिमयस्य निष्कृत्तः ।।' (धरवनहो ७४) ।

प्राह्नत-काच्य पढ़ने के समय इंदर के भीवर और बाहर एक ऐसा अम्ल-पूर्व होंगे होता है कि जिससे दोनों औं लें एक ही साथ विकसित और मुद्रित होती हैं।

ैपस्तो सन्दर्भ-वंदी पाउम दशीनि होइ सुडमारी।

पुरिय-महिनार्थं बैतियमिहंतरं वैतियमिमार्थं ।।' (रावशेवर की कर्प्रकारी सबू १)।

संस्कृत मापा कर्करा और प्राक्त मापा पुरुमार है। पुरुष और महिसा में जितना अन्तर है, इन दो भाषाओं में भी सतना है। प्रमेश हैं!

१ समूर्त प्राप्तते कार्य्य पठितु भोतु च ये न जानन्ति । नामस्यतस्यविकतो कुर्वन्ति ते नचे न करवन्ते ? ।।

२ कम्प्रोप्तति नावएय प्राष्ट्रतन्त्रायमा संस्कृतपद्यनाम् । सस्कृतसंस्थानेकपेशेन प्राष्ट्रतस्यापि प्रमान ॥

६ नवासार्यवर्धने संभिनेशसिक्तिय बन्धर्यमः । स्विश्वनित्रसाधुक्तवन्त्रसिद्धं केवलं प्राष्ट्रते ।। ४ इस्टिकेशे विकासको पुरुतीकारनवाक्कीः । यह वहित्रबोध्नसम् बन्धः हृदसस्य विरस्तर्धातः ।।

५, पदवा संस्कृतवानाः प्राकृतवानान् प्रवृति सुनुमारः । पुरयनश्चित्रवोधीनविद्यान्तरं सावस्त्रयोः ॥

चिट सम्बा विस्ता प्रकृतिसञ्जयः प्राकृतिगरः । सम्बोधाप्र सः स्टार्कनं मृतकस्मा । (धन्योक्षरं का मानसमायस्य १ ११) ।

संस्कृत मापा सुनने थोग्य है, प्रकृत भाषा लागर-पहुर है अपभ्रं स मापा संस्थ है और पैशाची-भाषा की रचना

रस-पर्भ है।

सस्तम-समास्तरं बेस न वार्गति मेर-कृतिना । समास्त्रीत कृत-वार्ग रेसेन पानपं रहम ॥

हुइस्थ-वेकि-प्रदियं नुसरिक-धनोहि विषयं एमाँ । पायत-कर्षे त्रोप करस त हिन्सं स्वातंत्र (१) (महेरवरस्टि का परवर्षीमाहास्त्र) ।

हामास्य मनुष्य संस्कृत-सम्बद्ध के सभ को समन्द्र नहीं पार्त हैं। इस छए यह मन्य सस श्रक्त माणा में रचा बाता है को सब क्षेत्रों की सक्क्ष्मीय्य है।

गृहार्णक दशी-शब्दों से रहित और सुक्रिक पदौँ में रवा हुआ सुन्दर आकृत अवस किसके हृदय को सुन्धी नहीं करता है

प्रसम्ब सन्त्रम्भक्तं सरक्यभक्तं च निन्निमं वेशः । वेस-इरं व पन्तितं सरक्ष्यस्त्रहरूसं कृशः ॥'

(वज्यानाय (?) से स्पन्न राजास्थ्यमे को प्रस्ता क्षा ७६ में स्वयूत् )।

संस्कृत सम्बन्ध को कोको भीर जिसने संस्कृत कावत से रचना की बसास भी नाम सब को क्योंकि वह (संस्कृत) बक्रो इस वॉस के पर की तक्क बहु बहु माधान करना है—मिटिस्टु समता है ।

> ै नाइम-जन्मस्मि रही वो बादर छह व होन यसिर्हाह । सम्बद्ध य बासिय-बीम्बस्य विक्त व बण्यामो ॥

सबिए जहरूबरण पुनर्य-पछ-पछट्टे छ-तियारे। एठे पाइन-कम्मे को स्वाद स्वयं पहिन्देशः (जनपञ्चत का बळावान, ब्राह्म)

महरूर-भाग की कविता में और विदाय के बचनों में जो रस जाता है बससे बासी और शांतक बस की तरह, हरि नहीं होती है---मन बमी उन्हा नहीं है---शरक्या निरुद्ध बनी ही रहता है।

क्षत्र मुन्यर, मधुर, श्रद्धार-रस-पूर्व जार पुत्रतियों को त्रिय पैसा प्राष्ट्रत खन्त सीमूद है तब संस्कृत पहने की कीन काता है?

<sup>र वंद्रवनात्मास्यर्थं केन व बार्नाल वनदृष्टमः । वर्षेद्रवनीः गुबसीयं वैतेवं प्रवर्ते पीरवयः ।।
प्राम्पेदर्वपरितं गुनस्त्रवर्सीनंत्मेश्वरं स्थ्यः । आहतास्यं नोते क्याः न वृष्यं गुबसीतः ? ।।
र. वाय्यवां पंतावनात्मं वंत्तृवन्नात्मं व शिन्ति केन । वंद्रमृत्यातः वर्षेत्रतं वात्तावदृष्टं कर्मीतः ।।
वे आहतास्य पत्रे यो वास्त्रे तथा वा वेद्रवर्षेत्रते । वार्त्तरतः व वाक्षित्रकेत्रस्य वृत्ति व व्यवस्यः ।।
वितेत बहुगायर्थे दृष्टित्वसद्वाने वार्त्रभारे । वर्षित आहतास्ये कः स्वताने संस्तृतं वित्तृत् ? ।।</sup> 

## इस कोप में स्वीकृत पद्धति

- १ प्रथम काले टाएगों में कम से प्राष्ट्रत राज्य, उसके बार साथे टाएगों में उस प्राष्ट्रत राज्य के लिक्ष पारि का सैनियल निर्पेत स्वयं क्यात काले कोल (क्षांत्र में काले टाएगों में प्राप्त स्वयं काले काला साथे प्राप्त में प्रथम में प्राप्त में प्रयोग प्रयोग में प्रयोग में प्रयोग प्रयोग में प्रयोग में प्रयोग प्रयोग में प्रयोग प्रयोग में प्रयोग प्रयोग में प्रयोग में प्रयोग प्रयोग में प्रयोग में प्रयोग में प्रयोग में प्रयोग में प्रयोग प्रयोग में प्रयो
- श्रुक्तों का कम नामरी वर्ण-मासा के अनुसार इस तरक् रक्षा भया है य, भा इ. ई. ए ऊ ए, ऐ, यो भी भी क का गयारि। इस तरक्ष प्रमुख्यार के स्थान की गएना संस्कृत-कोरों की तरक्ष पर-सबस्धं अनुस्थिक स्थानक के स्थान में न कर मितन स्वर के बाद और प्रयम स्थानन के यूनें में ही करने का कारत्य यह है कि संस्कृत की तरक्ष प्रस्तुत में स्थानकरण की हाँह से भी प्रमुख्यार के स्थान में अनुस्थिक कर होना कहीं भी मनिवार्य नहीं है और प्राथान हस्त-मिबिल पुस्तकों में प्राथा सर्वत प्रमुख्यार का ही प्रयोव प्रमा कता है।
  - प्राह्मत स्थ्य का प्रयोग विरोत का से वार्ष (वर्षनावयो) मोर महाराष्ट्री मामा के सर्व में मोर सामान्य कम से मार्थ से लेकर प्रयम सामान्य कर के सार्थ में किया बाता है। प्रसृत्त कोय के 'प्राहट-कर-महाराई' नाम में प्राहट-कार सामान्य सार्थ में ही बृहीत है। इससे महार मार्ग में प्राहट-कार सामान्य सार्थ में ही बृहीत है। इससे महार मार्ग मार्ग में किया मार्ग मार्ग मार्ग मार्ग में कि स्थ्यों का संघ्य किया मार्ग है। परन्तु प्राण्येकता भीर सार्धिक स्था मार्ग मार्ग मार्ग में पर्म मार्ग मार्ग मार्ग में कि स्था मार्ग में किया मार्ग है का स्थान केना है। इससे हुत केनों के स्थान महार क्षेत्र मार्ग मार्ग के स्थान हिया मार्ग है भीर मार्ग मार्ग मार्ग मार्ग मार्ग में सार्थ मार्ग में सार्थ मार्ग में सार्थ मार्ग मार्ग में सार्थ मार्ग मार्ग में सार्थ मार्ग मार्ग में सार्थ मार्ग मार
    - (क) आपें और महाराष्ट्री से सीरक्षेत्री पाकि भाषाओं के किन सक्तों में सामान्य (सर्व-सावारण) मेव है उनको इस कोच में स्थान केट पुण्यातिकारा सम्प के कलेकर को मिछेन बढ़ाना सर्वालय स्थित नहीं समझ क्या है कि बढ़ सामान्य भेद महत्त्व-भाषाओं के सावारण सम्मानी से भी समझ नहीं भी यह स्थीत्मान में भी उस क्या मान के लक्षण प्रस्कृत में दिवा दिया क्या है निस्ते यह सहत्र ही क्यान में या सक्ता है।
    - (ब) आर्य और महाचाड़ी में सी परशर अनेनातीय मेर है। तिय पर मी यहाँ उनका मेर-निर्देश न करने का एक कारण तो यह है कि दर बोनों में दरार भाषाओं से बयेशान्य समाज्या प्रसिक्त है। हुएसा प्रहरि की अपेशा प्रकारों में ही विशेष मेर हैं को मानवत्त्व से समाज्य रखता है, कोच से नहीं कीचश कैन प्रकारों ने महाच्यानी में मी धार्च प्रक्रत के कर्यों का मोनवत्त्व कर में अधिक स्ववहार कर कल्की महाच्यानी का कर है दिना हैं।
  - प्रशासक में वधुवित्तवा नियम बुद हो भाष्यशीयत है। प्रशास-प्रथम के पुरुष वामाक्तवत्ती और प्रशासनियम प्राप्ति में इस नियम कर एक्सम प्रथम है बवाई कार्य केन महाएन्ट्री क्या राजवाही-मानुन कमी में इस नियम का हुद से क्यास आरा देश साथा है, यहाँ तक कि एक हो रूप में वहीं तो बचुनित है भीर कहीं नियम मानुन क्या की मानुन कि के मानुन के कि मानुन कि मानुन के प्रथम में प्रथम की प्रशासन के प्रथम के प्रथम के प्रथम के प्रमुख्य के प्रशासन के प्रथम क

१ केवो ब्राइक्सम्बर्ध, सूत्र ४ १४-१७ हेमंबस्य-बाइक-स्थावरस्य तूत्र १ २६ और ब्राइक्समेस्य सूत्र ४ २६ प्रार्थि ।

२ प्राष्ट्रवर्षस्य (छ र १) मारि में इससे पतिरिक्त और भी प्राच्या जाकारि मारि स्रनेक कामेर बताए वए हैं, विनक्ष समावेश यहाँ क्षेत्रियोग मारि इन्हीं पुत्रम नेत्रों में बचात्मान दिया तथा है।

६, इन सक्तिय गामों का विवरत संकेत-सबी में बेकिए ।

४ इस्ते हे डॉ. निरुष् व्यक्ति पायाल विद्वालों ने वार्त-किन दैन प्राहट-वंगों को माना को दिन प्रहाराज्यों नाम दिया है। देखों को विरुण का प्राह्मण्याकरण और डॉ. टेनेटोरी को क्लोगमाना नो प्रस्तानना।

१ देगक्य प्राकृत-स्थाकरात का सूत्र १ १८ ।

पुरताको दुनियाके विष् सावरस्पतानुवन नहीं नहीं देठरिक्षाते उत्तर के स्रोके स्वान में 'स्रोक्ष' स्रोक्ष कर में किस्स कराहें।

क्या कथा । मार्च कंकों से क्यूनियाने पर्यक्षी राष्ट्र विशा प्रयोग की बहुत ही पाना काता है जैसे पार्य (मार्ग) के स्वान में मार्ट प्रदेश (बार्टन) की काल मार्टीक सार्थित हैं। उसमें की भी एउ कीव में बहुता पुनरमूटिन करके तम्बन्तित उसमों की ही रिपेय कम वे करूप किया क्या है।

- 4 संपुक्त कर्मों को करने विकार क्यान में सन्तर न देवर कुल (पूर्व प्रात्मामें) उपन के भीतर ही बतर प्रक्रमाने उपन प्रकाराधि वस वे साथे दल्यों में दिया कर है सीर स्वर्क पूर्व (उपने विकार) में विवार साथे हैं। ऐते उपर ना विवार प्रतिकार सी बाते साथों में विवार है कर दिए साथे हैं। दिया कर दिया में विवार परानी में दावर में विवार परानी में दावर में विवार में विवार साथे में दावर में विवार में विवार में विवार में विवार परानी में दावर में विवार में व
  - (क) इस संयुक्त शकों में कहा दिखो ---- से बितर तम्य को देवारी को तथा कथा है नहीं करा श्रेम्प के प्रश्नी पूक्त रूपने के श्रीप्तर केवना माहित क कि प्राप्त प्रथम के सम्प्रद ।
- ए एक (क) या या ( एक्) अर बर, तथन (कर) अन तम (एम) अर्थन पुनन भीर सर्वत्र-यावारण अल्पनाते स्थाने में
   अल्बी को क्षेत्रक केनल पूच कन्य हो यहाँ तिए यर हैं। वच्नु कहाँ ऐसे आवर्षों में वच धारि की विशेषण है वहाँ आवर-पिट कन्य की तिए पर हैं।

बालुमों के तब कर बादे मार्गों में भीर इस्तों के क्य काबे टाइवों में बातु के बीतर किए पर हैं।

- (क) बाद त्या कर्म-क्टीर करों का निर्देश की बाद के मीतर कर्म-- से ही किया क्या है।
- (a) वृत इन्टर के रूप तथा सन्ध प्रकार तथा इन्टर के विकित रूप सहुवा स्थार स्थार करने शिक्त स्थार है किए पर है।
   किन संस्करणों के रूप-संबद किया बना है उसमें पति हुई संगरण की वा जेत भी मुनों को सुबार कर शुद्ध रुक्त ही बहाँ पिए पर
- द्रा बन रहकरणा स्टूजनसम्बद्धान्त्रा स्वास्त्र कमा पद्मा हुए स्थानल का बाद्धान राष्ट्रास का युवार कर पूर्व उक्तर हा नहीं हुए। हैं। पहनते के कार्यों चालाध्या पूर्णी की कोकर रिश्त कुमानी कार परिवर्ष के केलकि हुने में जहाँ के रही उन्हरण में मिनी नए हैं भीर कुमानी मार्च की लूर्जि कीम में '?' (ठक्काचित्र) के बान नेपाना से नई हिं बैसे केली स्थानमा बनमा सार्व राज्य
- (व) वह किया फिला वंशों ने या एक ही प्रेश के जिला किया स्थानों में या तंत्रकारों में एक हो शाम के समेज सीराय वर्ष पामें वर हैं और विश्वेत पूछ का का लिएस वरणा किया बाग पास है वहां पर देशे बावताने तब राज्य हुत लोग कें प्यास्तान शिद्र वर है और दुलगा के बिस् हिंते प्रत्येत राज्य के अन्य बाव में वेबो--- लिख कर हरार कर जी सुरुम्य वया है कैसे देशों 'सुवजाखीयकास पोचकाल मिन्नकारी प्रदेश, प्रस्ते हैं। संस्तालि संस्तालि आर्थि सम्बाधि संस्तालि ।
- र पर दी पंच के एक का तिला किल सरकराते के सकता किल किल होता के बाई-को के सकी गुद्ध रूप्य इस कोच में स्वासकात किर का है केहे—परिक्कुसिस (अक्टरीमुल ११—नव ११६) और परिक्कुसिस (अन ११ टॉ-चन ११५) जिल्लिक्ट हा ही गा, की पुष्पकाल रं २ १ १२) और जिल्लिक्टिका (या स. का मुक्काल रं २ ६ १९) परिचरिक्कप (या स का करल्याकरण रं ६—नव ११) और परिकारिक परिकारणकार का मरल्याकरण रं १) सामकाह (वनवायोक-सूच पत्न ११९) और सामिश्च के मरल्याकरणकार हार को मुक्ति
- १६ एंक्स को तप्र मानत में भी कम ते कम तत्त्र के बादि के मां तथा भा के दिएस में ब्यूप कान्येत है। एक को दाना बादी वकारामें, पांचा बाता है तो कही वकारामें। को मानतिया में मानि क्या है। इससे देने राज्यों को दौर्मी-दानाों में ब किए जो मां मां भी पांचा कान वहां है की एक स्वाप में माह त्या है जो दार पांचा है। इससे दिए मानतिया पांचा है मी तथा मानतिया को राज्यों के परितास मानतिया पांचा है। वहां को मानतिया का तरितास मानतिया का प्रतास के राज्यों के परितास को प्रतास करता है अपने के प्रतास करता है। वहां को पांचा करता है अपने का प्रतास करता है की पांचा करता है अपने का प्रतास करता है अपने का प्रतास करता है की पांचा करता है। वहां का प्रतास करता है अपने का प्रतास करता है की पांचा करता है। वहां का प्रतास करता है की पांचा करता है की पांचा करता है। वहां का प्रतास करता है की पांचा करता है। वहां का प्रतास करता है की पांचा करता है। वहां का प्रतास के पांचा के पांचा करता है। वहां का प्रतास करता है की पांचा करता है। वहां का प्रतास का प्रतास करता है। वहां का प्रतास के प्रतास करता है। वहां का प्रतास करता है। वहां का प्रतास के प्रतास करता है। वहां का प्या के प्रतास करता है। वहां का प्या का प्रतास करता है। वहां का प्या का प्रतास करता है। वहां का प्या का प्रतास करता है। वहां का प्या का प्रतास करता है। वहां का प्रतास का प्रतास करता है। वहां का प्रतास का प्रतास करता है। वहां का प्रतास
  - १३. विकारिकोण्य बीवात रुप्त प्रसूच रुप्त है ही श्रीकव रखते हैं, संस्कृत-सरिकाम से सार्थ ।
    - (4) चड़ी समेजेद में किल साथि पर वी तेर है नहीं पद पर्य के दुर्व में ही लिए किस साथ वहां सुनन्त राज्य के किस कर्मा है। यहाँ पैका लिस राज्य नहीं किस है वहां राज्ये दुर्व के सर्थ मा तानी के समल ही किय साथ समस्या नाहिए।

१ देवीमायमस्य ६ ११ मा टीका ।

- (ब) प्राइत में लिए-विधि बुद ही जिन्निम्त है। प्राइत दैमादरणों ने भी दुख पति संक्षित गरम् भेजादक सूत्रों के बाय दस बात का स्पष्ट उक्तेख किया है। प्राचीन चंदों में एक ही राज्य का निस्तित लिय में भोव बहां तक हमें दिहियोचर हुया है, एस-उस लिय का निर्देश दस कोच में उस राज्य के पास कर दिया गया है। बहां लिय में विशेष विकास स्वाप्त पाद पर है वहां उस बंध का सरहरात मी वे दिया गया है।
- (ग) वहां वीजिय का किरोप रूप पाया गया है वहाँ उस धर्म के बाद 'बी— निर्देश करके रेकरेंस के साव दिया समा है।
- (स) प्राष्ट्रत में स्पेक दोनों में सम्यम के बाद विश्वकि का प्रयोग पाया जाता है। इससे ऐसे क्वारों में सम्यम-सुवक 'स' के बाद प्राया जिय बोवक राज्य भी दिया गता है। कैसे कर्ज़ों के बाद 'सा की ' = (सम्यम तवा क्रीतिक)।
- 🔫 🐧 फेरन राजों के संस्कृत प्रतिशम्य के स्वान में केवल केवा का संक्षिप्त कम 'व्' ही काबे टाइपों में क्षेप्त में विया गया है।

  - (ब) जो बातु तक्कर होने पर भी प्रश्वत-स्वाकरणों में उसको घर्य बातु का बारेण बतकाया नवा है उस बातु के स्थाकरण-वर्षायय बाविंग संस्था कर के बाद वास्तविक सम्बन्ध क्या भी दिक्ताया यथा है यदा पेयद्ध के [ इस्तु , प्र + इस्ट्री ] प्रावि ।
  - (त) प्राचीन क्ष्मों में जो राज्य देश कर से माना मसा है परन्तु कास्तव में जो देश्य न हाकर तिञ्चल हो प्रतीत होता है, ऐसे रान्सों ना संस्टान्यिक्टाल शिया नया है सीर प्राचीन माल्यता बतताने के लिए संस्कृत प्रतिराज्य के पूर्व में 'बें' शिया एसा है।
  - (व) को रुपय कारतव में देख हो है, परणु प्राचीन क्यास्थाकारों ने उसको उद्भव बततारों हुए उसके को परिमाणित—दिस-द्वान कर बनाये हुए एंडरठ—कर रुपने तैयों में किर हैं, परणु को एंडरठ-केरवों में नहीं पाने कार्य हैं, ऐते इंड्यून्यविक्मों को यहाँ स्थान न देवे हुए केनव 'हे' हो दिया बया है।
  - को राज्य देश्य क्य से संदिग्य है प्रतके प्रतिकाम के पूर्व में 'क्' भी दिया है।
- १४ प्राच्छेन न्यान्यानार्ये के दिने हुए सरक्षत प्राचित्रण्य से मो को प्रावित स्थानतालाका संस्कृत प्रवितास है नहीं यहाँ पर विया पता है. केरो 'प्रकृष्टिय' के प्राचीन प्रविक्षण्य स्त्यायित के करने 'स्नानित'।
- १४, मनेरु मर्पवाले उन्हों के प्रशेष प्रार्थ १२, ६ माथि संबों के बाद करता दिये पने हैं मोर प्रार्थक प्रार्थ के एक मा मनेक रेकाँस वस सर्प के बाद कार्य करेंट में दिने हैं।
  - (७) बातु के निमानिय ब्यवाने एकरेंगों में बोन्यों प्रणे पाने बने हैं वे छत्र १ २ व के दोकों से बेकर क्रमशा बातु के खावसात तथा क्रमण के रूप दिने पोर्ट हैं पीर उत्त-प्रष्ट करवाड़े एकरेंग्र का उसलेब उत्ती कर के बाद बालेन में कर दिया प्रणा है।
  - (ब्र) निख राम का मर्थ सालार में वानान्य ना स्थापक है किन्तु प्राचीन प्रेसी में उसका प्रयोग प्रकारत-ना विरोध सा ग्रेकोर्ड्ड मर्थ में हुए है ऐसे राम का सामान्य मां स्थापक प्रमें हुई हुई कोर में दिया पता है, यचा—वृत्तिकार्ण का प्रकारत-ना होता विराध से योग प्रामुख्य पर्य विरोध घन प्रशेष एक निकार का प्रमाण प्रामुख्य पर्य विरोध घन प्रशेष पर न देकर द्वान-प्रमाण में प्रशेष प्रमाण प्रमाण प्रामुख्य प्रामुख्य प्रमाण के किए भी ग्री निकार प्रमाण प्रमाण है।
- र ६ राज्य-का निय वर्ष की क्रियेयता या मुनावित की होटे से बहा महतरात केने की मानस्वकता प्रतीत हुई है बहा पर बह, पर्वांत संख में, राष्ट्र के बाद और रेक्टिंस के पूर्व में किया बता है।
  - (क) प्रपत्तरण के बाद कोछ में जह भारेक रेटरेंगों का उन्तेब है नहीं पर केन्द्र सर्वत्र कम रेटरेंस का हो सरदरण से संबन्ध है.
     रोग का नहीं।
- एक पह हो येव के मिन स्पेन संस्करणों का जनमीय हम कीम में किया गया है रेटरेंट में बाबाएएडा संस्करण निरोत का कन्मेंब न करके मैनत येव का ही उसनेब किया प्या है। इससे ऐने रेडरेंनशाने हाम की तह संस्करणों का या संस्करण निरोत का तथकता नाहिए।

रे. देनवना-शाहत-व्यवस्या सूत्र १ ३३ छै ३**४** ।

- (क) बहाँ पर संस्कारण-विशेष के अल्लेख को बास मानरक्तरा प्रतीत हुई है बहाँ पर रेकरेंस की स्वेतन मुन्नी में विधे हुए संस्कार के १ २ मानि क्षेत्र रेकरेख के पूर्व में विधे हैं, बैसे पैसस और पेससेस कर्मों के रेकरेंस 'माना' के पूर्व में २ का संख माएमोबर-सामित के संस्कारण ना मीर १ का संख प्री रवनी माहि के संस्कारण का बोचक है।
- १व वहाँ वहाँ प्रमुख के किसी रुक्त के क्या को पार्च की करका संयुक्त रुक्त थादि की यमलदा वा विरोधका के लिये प्रमुख के के एक्त रुक्त के देश के प्रमुख यात्र पढ़ा है वहाँ पर रेडरेंस के बाद लेखों— से यह रुक्त को देखों की सुवना की वह है।

पक निवर्ती है महिरिक्त किन निवर्ती का स्मृत्यस्य इस क्षेत्र में किया करा है वे मातुर्विक मूदन पर्दात के संस्था सार्वि सैसी के रेसनेपानों से परिचय मीर सुरम होने के कास्तर कालों की बकाय की सकते ।

# पाइत्र्य-सद्द-महग्गावो ।

## ( प्राकृत-शन्द-महार्याव )

भीषान परोसासकी भीषन्यकी गोसेध्य बयपुर शारों की मोर से मेंड ॥

णासिम-दोस-समृद्दं, मासिअणेगंतवाय-संशिमत्यं। पासिक सोआलोज, वंदामि जिर्ण महावीर ॥ १॥

नि≋ित्तम-साउ-पर्यं, अइसइअं सपल-वाणि-परिणमिरं । बार्य अवाय-रहिमं पणमामि जिलिंद इवार्ण ॥ २ ॥

पाइश्र-मासामद्रश्रं अपक्षोद्रम स्तरम सत्यमद्रवित्रतं। सह-महण्यय-जाम, रपमि कोसं स-यण्य-कर्म ॥ ३ ॥

ऋ

्पूँ अर्थे १ प्राइट्य वर्ण-माला वा प्रवस मपर (दे १ १ प्रामा) । २ क्या इया (ने११)।

(देशो भाग (भारू भी २, प्रज्य ११३ १४ हुमा)।

र चित्री देनों त्यः 'चेरी घं (प्राक्त ७६) । न" स [अर] निष-निधित सर्वीर्मे छे प्रक-

रल के धनुमार, रिसी एक की अस्तानेवासा मन्यय-१ निपेत्र प्रतिपेतः 'धर्मसण्' (मूर ७ २४) 'सम्प्रतिमेद्दं मधीऽनारी (विसे १२६२)। २ विरोध बस्टाल ध्वस्म (गावा १ १)। १ मदमयता सनुविकान अयालः (प्रकार् १) । ४ धन्यतः, योदा-पन बच्छ (गाउ) 'स्वन' (सम ४ )। "र मनार भाँरचमानना 'मधुरा' (नउ०)। ६ भंग निक्रमा 'समागृहम' (तृति)। ७ मास्य नुम्पताः यवस्त्रुदेशतु (सम ११) । < सप्रशानना दुखानः 'चप्राद्र' (चाद २६)।

र सपुरत योद्याः यत्र (दृह १)। 'अर्षु (फ] १ नुर्वे मूरक (मे ७ ४**१**) । २ र्थात, यागः। ३ जनूर, श्रोर (११४३)। ४

न,पानी वस (गे११)। ५ शिचर, टॉव<sup>ो</sup> (से १४३)। ६ मस्त्रक सिर (से ११०)। "अर वि[ञ्जी यपभ जात (ग १७१)। क्षअभेदानि [दे] स्मेह-फिह्न सूचा (दे १ **१३**) 1

अअर रेको अवर (नि १६४) । अअर देखो आयर (वि १६१)। अद्भ अथि । ११ समान्या भीर भागंकण

मयका मुक्त धन्त्रम (हेन २ १ स्वयन '

अइ. घ [अति | यह बम्पय नाम धीर बानू के | पूर्व में समना है धौर शीचे के धर्मों में से दिसी एक नो नृषित करता है-- १ मतिराय मति रेक बहरूह महरुति 'बहर्षितत' (मा १४ रमा ना२१४)। २ उत्कर्ष सङ्ख्य बन्देग (कप्प) । १ पूजा प्रशंका सहजाय । (स.४)। ४ मडिक्सए चलपन 'यह टामो (रह४४४२)। ५ क्रार द्वीबा ब"मेर्च" महत्तवाया" (और स्थाया ११) । ६ तिन्दा चर्णात्रय (१११)।

अइ.प.[अति] सामर्थ-पूपक सम्यक भार

बहुद (सूच १२३१)।

अद्यक[भा+द]यायमन करना मा मिरना 'घरेति नारामा' (स १ व १)। अबृद्ध की [अदिवि] पुनर्यमुनलन का सर्वि हाता देव (मूळ १)।

श्रद्भ सक [अति+इ] १ जन्मभन करना । २ नमन करना। ३ प्रवेश करना। बर्ग अर्दन (धे६ २६ कप्प)। संक्र आह्व (तूप १ ७ २८)।

অহুড্টু বি [অৱিছুল্ক] মণিবল সাধ (পুম १ ६ १ १२)।

आ .च सक [अति + अक्टा ] १ द्यप्तिक करता स्वातारभ करता । २ उल्लंघन वरता । ३ मन दूर जाता (मे १३ ० ६६)। भाषिम नि [ सत्यद्भित ] १ मार्गानन स्यानारम रिया हुमा (ने १३ व) । १ बर्ज्य पित पतिकास्त (ने १६ ८) । ३ दूर नमा ष्ट्या (मे १३ ८६)। अर्द्ध देखी अर्थच (ने १३ c) ।

अर्डिज रेगो अर्डविम (न १३ भारत्य न विम्यद्वानी १ सम्मदन (ने १३

३ )। २ मारचेल नीचार (संवर्ध)। अर्शन देनी अर्द्ध = यनि + 🗉 ।

आहम न [ने] निरिनट नराई, महाह ना

निस्म भाव (दे१ १)।

क्यान खुने पर मा स्पन्त-मार्वकारी

ध्यभ्य मेन्त्राता शास्त्रीतः सरवातो की नर्याध

ना असंपन करनेदाना

(काता १ २)। २ उत्तरावान नूर्व वा सनर

िरा में भाग (बन)।

(mg १) t

'जो दलकेतरालमायरमें में पहि जया काने।

क्नोनुस्नुतमा, मध्यरिखानं विवासाहि

₹

श्रद्भवाद्व्य नि [अविपाविक] विद्यानकोगामा (सूम २१ १७)। अञ्चास पू [कारिपार्य] मधवान मरनाव के समकातिक ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्वकर देव (तितव)। अक्पास सक [अवि+क्स्] महिरूप द्भना भूव केवता । महरायद (गूम १ १ ¥ 4)1 धाइत्यमे च [धार्वप्रम] पूर्वन्त्रभात वही सकेर (मुर ७ ७६)। क्षश्चमात्र वि [कवित्रमापा] १ वृतन होता हुआ भोजन करनेवाला। २ श दीन बार से स्विक सामन (सिंह ६४७)। अर्प्यसंग पूं [अविमसङ्ख्यो १ मविपरिचय (पद्यारे)। २ ठव-एएक में प्रसिद्ध मिनि-व्याप्ति-तामक शोप (स १६६ उपर ४८)। धाः पर्मीरा वि [सर्विप्रसङ्ख्यि] प्रवित्रवंग वापपाना (मञ्च १)। काइटपहाय न [कार्तिप्रभाउ] नहीं सबेर (पा भाइबस वि [अदिवस] १ वनिह राचि-शासी (बीप) । २ मू प्रतिराय वस विशेष सामध्ये । १ वहा धीला (हे ४ ११४) । ४ पूंपक राजा जो मराबल ऋपमदेव के पूर्वीय चतुर्व सब में निवास विवासक का (धाकू)। इ मरत कम्बर्जीका एक पौच (ठा व)। ६ भरत क्षेत्र में धामामी औदीभी में हानवाता पांचना नामुदेन (सम ४) १ ७ एक्स का एक योद्धा (पत्रम १६ २०)। अइमदाकी [अविभन्ना] मनवान महावीर के प्रमान नामक ग्यारहर्वे समावर की नाता (पाच् )। अद्रमुद्द (अतिमृति) एक जैन मृति, अा पंत्रम बामुदेव के पूर्व-काम में सुद से (पडम २ १७६)। अद्रमृमि की [अतिभूमि] १ परम प्रकर्त। २ वहुत अभीत (वेश ४२) । १ पृहस्यों के घर वा वह भाग जहाँ शाबुधों का प्रदेश

गोबएसम्बो मुर्गी (बस ५ १ २४)। अरमट्टिया सा [अदिमृत्तिका] कीवनती मद्री (भीव १)। अप्रमत्त ) वि [स्रविमात्र] बहुत परिमाण अदमाय हे समिक (उन हा रही। अइमुक ो पूं [अविमुक्त, क] १ स्वनाम ब्यात एक प्रन्तक्ष (स्त्री पत्म में महम्प - मुक्ति पनेवाया) वैन सूनि को चार्मुत्य वीसासपुर के राजा विजय का पूत्र असुस या और जिसने बहुत छाटी ही असुभय) उम्र में क्यबान् महाबीर के पास शौद्धामी भी (भन्त)। २ वंस नाएक छोटामाई (माद)। ३ बुध-बिधीय (परम ४२ ८)। ४ मापनी नता (पाम स ३१)। इ.स. सन्दर्शकृतका नामक भ्रम-प्रत्य का एक मध्यपन (घन्त)।(हे १ २६ १७० पि २४६)। भाइय वि [अदिग] परिवान्त 'वन्तो प्राप-मिन तुमे रहवर्ष बद्द सान क्रिश्चिक हि २२४)। २ करनेकासा कारणाइमें (पीप)। काइय वि [कार्तिग] प्राप्त (यव ११४)। आह्म विदिमिती १ प्रिय प्रीतिशान । २ दया-यात्र दया करते योगम (मे १, ६१)। भाइयब देशो आहगच्छा भाइयण न [धारपदन] बहुत साना धारिक मोजन करना (वद २)। **अइ**यय वि [अतिगत] नवा कृता (ख 3 3)1 अद्भग्रसक [मदि÷चर्] t अन्तरन करना। २ वधंका दूषित करना। वक्र अद्भवतंत्र (नुषा ४१४) । अद्रमाधक [अति+या] बला पुत्रस्ता (ब्रुव २)। भइमाकी [क्रजिका] क्करी छापी (ता २६७) । अद्रमानी [द्यिता] की पत्नी (५ १

संप्रवेश करता (ठा ४) । भाइयाय वि [अवियाध] गया हुना पुत्रस इमा (स्तर )। अध्यार प्रे भिविचार रिज्नेवन परिक्रमण (मिक्)। २ पृष्ठीत बत्त या नियम में दूपल श्रगाना (मा ६)। अद्भर म [अभिर] मलौ शौम (सभ्न ६७)। अपूर न | अजिर | भोगन चौक (पाम)। अहर पूँ दि ] बायुष्ट गोवका राज-नियुक्त मुख्यमा (दे१ १६)। आहर न दि अतर दियो अवर **-** प्रदर (मुका 🛊 ) । अइर वि [दे] यतियदित (निष्ट १६ X44) 1 अइरजुमइ की (दे) नदेशह दुलहिन (दे १ अइरस पुं [अविदान] मीमन विकि ज्याविप की मिनती से को दिन समित होता है वह (ST 4) t मारत्त्व वि[अदिरक्त] रंगाचा सन्तः। २ विशेष एमी। क्षेत्रससिसा, क्षेत्रसाकी ("कम्बस्थिशा कम्बस्म] मेद वक्त के पोक्क बन में स्थित एक दिल्या विस्पर विनक्ती का बन्मामिनेक किया आधा है (ठा२ ३)। कार्य म [अचिरान् ] सीम, अल्क (ने e ex) i अद्भा ) भी [अविष्यु] प्रविच वज्वती और सोलहर ठीपकर देव की माता (सम भारतणी १x पटम २ ४२)। अइराणा भी [पे] १ स्त्राणी। २ सोमान्य के भिए न्द्राणी-वन करनेवानी औ (दे१ १ )। दाइरावम वृष्टिरामन] इन्द्र का हाबो(पाम)। भ\*राषय पूं [एरावत] स्त्र ना शबी(मनि)। अद्रयहां भी [अविरामा] दिजनी वासा (६३ इ.स.ची । अर्थार न [अदिरि] बन या पुक्ता का सदि क्षमणुक्षरनतस्यावनाच्या (पर्)। अप्ररिप पूँ [ब] क्वावत्व वातवीतः नद्रानी अद्योग न [अतियान] १ यमन पुत्रता : । (\$ 6 2 2) 1

धाइरिक्त पि [छातिरिक्त] १ वदा हमा सर शिष्ट (प्रज्ञम ११= ११६) । २ मनिक जनाचा (स.२.१)- 'पद्ममाणा' रिचयुणनिनमी' (बार्ब ६६) । सिज्ञासणिय वि शिष्या-सनिक समी-बीड़ी राज्या बीर धापन रहते-काना (प्राप्त) (धाव) । क्षप्रवादि भिविक्षी १ पुत्रप पुत्रीन

(प्रमान ११३)। २ पुष्पक-त्राधीय देत क्टिन (मण्ड १) । बादर इय दि [अति रहित ] प्रतिरेष-पुन्त, प्रति-দ্ৰণ (যায় খন আ,। अध्रम व [अतिरेफ] १ मानिश्य अविनया,

'नाइ'नेपदश्यामजायमें (लावा १ ६)। २ प्रतिसम् (बीच ३) । अन्यज्ञास जिक्सिया निसी रोज (पा आहरा है १६६ वडन हर, ४- बनर ४६) । अ\*र्य रेनी अहरग (सावा १ १)।

**ब्राइव स** [अनीव] बिटिश्य धप्यन किन प्रत्य महीन विद्राप्त सम्बद्धीय सम्यामक्तुम्स ।

ना ने नार्व गुरुख ! बराह्यचे करेबाम् ॥ (महा)। अन्यक्रम र अधिवर्त्तनी क्लंबन प्रक्रि-

इमलु (धावा)। अध्यत्त नक भिदि + इत् विश्वनत् नग्नः। धन्यसः (वाषः) ।

अध्यक्तिप वि [अतिव्रतिक] १ विश्वना कम्मीयन किया पया हो बद्धाः २ प्रवति कृष्य । १ प्रस्थवन करनेवाला (पात्रा) ।

अन्यय सक (अति + दुत् ) उल्लंबन करनाः मंड अद्वाद्या (मूम २ २ ६४)। भक्षपमः [ब्रवि+ग्रञ्ज] १ उप्लब्स करता। २ मॅथूमा भाता। ३ प्रदेश करता। 🕆 धारवंति (भाद्रः ) । वद्या कियलवस्त्रो अध्यर्थन वर्ष मुमिन्ते प्रशिक्तात् परिवृद्धाः (गमार १ क्य)।

अन्यय सर्व [अदि + पत् ] बन्तेवस वरता। २ नम्बन्ध गण्या । ३ प्रदेश गर्या । ४ सक मरना । व गिरवाना 'धाररे रश-सील-सब-नच्या बंबामनिन धन्त्रवर्ति (प्राप्त १ ६)-भीवत्वा नगरं धन्ववंति (पहर ११)। पर 'वर वा ठाउँरवन-विग्णानिम् ठाउँर । अवस्य सक [शवि + शा] मात परना ।

वा अध्वयमानि निवारित (सामा १ )- । अद्भवर्षन (रप्प)। प्रधा, अन्यापमाज (মাৰা হে ৬)। भक्तपद्दतक (अति + यद्द| बहुव करने में

समर्वे होता। सन्बद्ध (तुम १२३४)। भइपाइ वि [अविपारिया ] र हिसक (सप १ ३)। विनत्तर (विम १३७)। अध्यक्षक वि जितिपातवित् । भारतेशना (म ६ २)। भइवान्य वि [अविपातिक] कर केरो (मुख २१)।

अध्यापत्त् रेडा अन्दाहत्त् (रा ३)। अहवायमाय देशे छ प्यय = अति + पन्। आधाय प्रशिविषात्र] १ द्वित साहि साप (मोज ४६)। २ विनास- पारणा चाएल् (रामा १ १)। अध्याय पूँ [अदिवान] १ एव्यंबन। २ मर्स बर पवन, शुक्रान (का वह सी) । मददाइ: सक [ळाति÷ नाइयु] वीताला, पुत्रारता 'सो मात्राहेर दुलि दिने' (बर्सकि **₹**₹) 1

भाइविरिय वि [अवितीर्थ] १ वनिष्ठ महा-पराक्षी। २ ट्रंड्स्क्ट्रुक्त का का एक समा (पडम १, १)। १ लगावर्त नगर का एक रामा (परम ३७ ३) । अइविसास वि [अविविशास] १ बहुत बहा विस्त्री ग्रंश २ की समप्रवासक पर्वत के चीत्रस चरक की एक समये (श्रीक)। अवस्स [अप] वि [ईटरा] ऐगः, इत तस्र TI (TYY 1) I अन्सद्दि [अनिश्चिष्] सन्तिय काना

महसङ्ग पि [मदिशायित] कार वेदी (राप)। भइसंबण केहें अइसंबाम: किनाग्तरि-धंकर्तन नारकर्व (दंशा ७ २१)। अइसेपात्र [अविसंपात] आहे, वंचला भिनयाग्यस्पेतार्थं सामयपुर्ती य प्रवत्ता व

विरिष्ट, मानवैकारक (नुपा २१७) ।

(पंचा )। भारतक्या की [ब्राटिया स्या] प्रतेषस्य त्रेरामा वदावा (निनी) ।

बह 'पारनप अइसर्पदा' (परन र

अञ्चय प्रशिक्षियायी र येहना, इनका (इमा १ ४)। २ महिमा प्रमाच 'कमग्र⊦ न्मपो (बहा)। १ बहुत धन्यन्त (नूर १२ दर)। ४ चमच्चार (एर १ ३)। सरिय वि िस्ते दुर्श, दुरा घरा हवा (राम)। कश्मरिय न (ग्रियर) बनव नंपति ग्रीरव (\$ t txt) i भइमाइ वि [ प्रतिशाबिन] १ थेह (बम **१**टी) । २ दूसर को मोत क्लोबला।

अन्मापन मितिशायनी उद्धारम सन्दर्भ (नेस्य १११)। अन्सार प्रजितिसारी संबद्दणी राय, बडर की स्वाकि किरोग (महस्र ११)। मन्मस पुञितिद्यायी र महिमा, प्रमाप वाष्पारिमक सामर्ग्य (सम १६) । २ वका हुबा, मनस्टि (टा ४ २) । १ प्रतिस

भी. जी (मुता ११४) ।

वाना (विसे ४६२)। भ=संसि वि [अदिग्रिपन्] १ प्रभावग्रानी महिमर्धन्ततः। २ भगूदः (राष) । अइमसि वि[अदिदायित्] १ महिमानितः। २ समुख कात साहि के संदिश्य स सम्पत्न (明한 YP 리) 1 मन्सेमिय वि [मितिग्रपित] अपर को

(पीष ६ ) । मइससिय दि [मदिशपित] बात जाय ट्रमा (वव १)। जद्रदर पू [अतिसर] हर, सर्वात सर्याधः विकास को साकतो १ (प्रकार २३)। अवद्यास की [प] विजनी, परता (वे हैं, ₹v) ı

अबद्धि पू [अनिविष्] बिगके माने की टिवि नियत न हो बहु पाष्ट्रब, याची मिनुक काई (पान)। सविमाग वृ ["संपिभाग] मार् को मोजन स्थार का निरोध सम (वर्म १)। अर्द्द क [ग्रन] काना, कान करना। स<sup>म्</sup>र (१ ४ १६२, द्वमा); मर्गात (बजब) । अरक्तरं[⊿र्शन]१ मूत्रकाम (त्वदः)। ९पि को बीच प्रसाहर, पुत्रसाहका और स बारेया विका (गीर) । ३ सनिकान (गब

िरदा सहाडी सरीर की उसा करनेनाता

(त्या १२७ १क) । सम, सब दंिसमी

शरीर में कवतादिका विशेषन (बीप: वा

tat)। "राग प्रतिकारियानी स्थलीक का

क्षंत्रार पूर्वि । स्वामका मस्य (वे १ वे)। श्रकान्य की जिल्लानती । महानिष्ठ क्षेत्र के राम नामक विजय की राजवानी (ठा २)। पेद की पश्चिम किसा में बहती हुई सीतीया म हालकी की विकास किया में बर्तमान एक बलस्कार पर्वेत (ठा ३ २)। अधिकान विजिन्नास्तनः (वे १११)।

ब्रोकिश वि ब्रिक्टिन विकेत निरातनाला (बीप) । अक्रिक्स दू [के] तथ तर्जन तमकेमा (छाना

1 () 1 बंद्वरम पुं[अस्कुरक] नामलक सूटी

हास (वं t) । ब्रोक्कर प्रे [सक्कुर] प्रदेश कुनमें (शीध)। अकुरिय नि [अबुक्रित] भेकुर-पुक्त, जिसमें सकुर करनत हुए हो वह (धना) ।

व्यक्तस प्रशिवक्तश्चा १ श्रोकशी सोदेका एक हणियार, जिससे हानी कराने जाते हैं, भेडुकेल वहा लायो बन्ध संपश्चितहरूमें (बत्त २२)। २ प्रद्व-मिलेप (ठा२ ३)। ३ तीताकाएक पूत्र भूस (प्रस्प १७ १६)। ४ तिपन्तरा करनेवाला, कानू में रखनेवाला (क्टब) १ १ एक देव-निमान (राज) १ ५ पून. पुर-वन्तन का एक दोख (पद २)।

अञ्चल पुन [अवञ्चल] १ एक वेद-वियल (रेवेन १४) । २ वं बहुताकार वृद्धी (सन १७)।

श्रेष्ट्रसद्भ न वि अकुशित विदुत्त के महार बाली चीज (दे १ ६० छ ६ ६६)। व्यक्तमप पू [अवकुश्यक] देवो व्यक्तम । २ र्धमानीका एक प्रथमच्या विसर्ध वह केन

पूजा के बारते वृक्ष के पत्थानों को काटता है (धीप) । बंकुसा की [बाह्युशा] पीखर्ने तीर्पनर की धनन्तनाव सकान् की शासन-देनी (पथ २-)।

संदुरिय विशिवपृक्षिती बंदर की रुख मुका कृमा (ते १४ रेश)। **जंदु**सी भी [अडदुरी] देशे अंदुसा

(बंदि t )। अंकृर केवो व्यंकुर 'ता दूरा विरक्षतिता र्मिनेपूरे विसेदेड (बुक्सन ६१ टी) ।

अकिलाय न दि | बोहा सादि को मारते का वादुक कोड़ा भौषी (में ४)।

**श्रदिक्ति प्**षि विशेष-मूल (दे१ ७)। आंक्रोक पुश्चिक्चीठी युक्त विशेष (दे१२ )। आंगव प्रिक्∏ी १ इस नाम का प्रवदेश, विसको मानवल विद्यार कहते हैं (सुर २ ६७) । २ रामका एक मुक्ट (पढम १६,६७) । ६ न, भाषाचेन सुत्र साथि बाय्तु जैन मावम-बंब (विया २ १)। ४ नेबॉन वेद के रिकादि क्षः स्रेम (सामू)। १ नारता हेनु (पन १)।

६ बान्सा जीन (सकि)। ७ पून, राधेर (प्राप्त ६४)। य राधैर के मस्तक प्राप्ति भववव (कम्म १ १४)। १ स मित्रताका साम न्त्रस्य सम्बोदन (राम) । १ दासमानिकार में प्रमुक्त किया बाता सम्मय (ठा ४)। ई.पी. वित्राह्म समामका एक पृहत्व विसने मप्तान पारश्नाम के पात की द्वा की भी

(निर) । इसि पुरिंपी चेपा नगरी का

एक ऋषि (मापू)। विविध्या सी

["वृत्तिका] धन-धनो का परिश्तिष्ट (परिवा)।

**"व्यक्तिय वि ["क्रिय्नाइ"]** जिसका संव काटामना हो यह (सुमार २ ६३)। आय वि <sup>\*</sup>आती वया शतका (उप ९४×)। द्वेको य≠ द(ठा)। पविदू न ["प्रविद्ध] १ वारह केन संस्थानो में छे कोई मी एक (कम्म १६)। २ इंक-प्रवोकावल (ठा२ t)। बाहिर न

> (भार्ष)। २ भंग-वैद्यो से फिस वैत भारती का कात (ठा२)। संगम ["क्रि] १ वॉन-कच्च (एन)। २ इर एक मदस्य (वड्)। संदिर न ["मन्दिर] अल्यानमधे का एक देव-मृद (मन ११)। सद सदय पुर्मिर्द सर्वे कर्ने १ रुपीर भी चंगी करनेशाला नौसर।

िवासा र यंग-रंबों के पतिरिक्त केन प्राचन

२ वि राधैर को मकनेवासा चंगी करनेवासा (पुनारे व मका समारे रो) । यार्थ [य] १ नानी नामक निदानरस्य का पुत्र (पक्रम ११ १६ ३७)। २ स.

वालुध्व वेष्ट्रोटा (परमृह १४)। स.वि [°वा] १ छरैर में जलका २ दूपु**र** 

नक्रा (ठर१६४ टी) । वाक्टे ["का] करणा पुत्री (पाध)। रक्का रक्काम वि

राजा (उस ७६६)। ध्रोग देत का राजा कर्ड (सामार १६ वेसी १ ४)। सिंस वेबो इसि। स्द्रापि स्टिटी देशो स= द (क्या ४१२ परुष ४१ ६२)। रुदा# िरुक्षा पुत्री सबनी (तुरा १५ )। विका की किया र सरीर के स्कूरल का दुना-राम फल बत्त्वानेवासी विद्या (उत्त ≈)। २ वर्ग नाम काएक कैन प्रव (उत्त ≂)। विकार \$ "विपार] देखो पूर्वोच वर्ष (स्व ११) *।* संभूय वि "संभूत" एउल, बना (का ६४०)। हारच पू शिलको स्थर है यनवर्गे के निभेप आप-यान (प्रति ६१)।

ीवाण न िवानी पुरुरेन्द्रिय पुरुर-निर्ध (निसी)। भौग पुंकिङ्गी भगवान् बाहिनाव के एक पुर का नाम (वी १४)।२ न क्यावार कार्यः रिनो का सम्मास (इंदोब १०)। अप देखीं च (वर्गीत १२६) : इर वि विश्वरी पद वंधीं का जानकार (विचार ४७३)।

र्थंग विभिन्न है रहतेर का विकार (स )। २ राग्रेर-बंबेबी सारीरिक (तुम % २)। ६ न सपीर के स्कुरहा मादि विनार्धे के चुनानुम पत्न को क्लबलेवाला श्रव विभिन्न शाच (सम ४१) ।

क्षेग वि चिक्का स्वार क्लोहर (क्ष्री)! बर्गाइवा को [काञ्चविका] एक नवर्र तीर्न विकेष (सम्बद्धः)।

भौगीभाव ५ [अङ्काङ्गीसाव] <sup>सरेद-सन</sup> यमिकता 'यंदेनीमानेश परिस्तृप्<del>य स्वादित</del>' क्रिएकम्भे (सुपा२१)।

भौगण न [सङ्गम] सोक्ट, बीज (5<sup>९ ६</sup> **∞**() i

भगवा को [सहना] को, बीख (दुर ६

कंगविका देखी सङ्गद्वसा (वी) ।

क्षेत्रबद्धण न [के] रोब, बीमारी (के दे X4) I

**₹**१) (

क्षांब क्षेत्र न दि । शरीर को मौक्ना (दे १ र्धगुरवस्त्र मि मिप्रदी मेप्रसीय (६१ 43) 1 क्रीगार प्रक्रिक्टारी १ वनता हुमा कोयना (हेर २७)। २ वैन सामुद्रों के लिए जिला का एक दोष (बाचा)। सङ्ग पूं ["सर्देक] एक समस्य कैन-प्राचार्य (उर २४४) । वर्ड सी विता | चुनुमार मगर के राजा बुन्धुमार की एक कत्या का नाम (बम्म ८ ही) : अगारम ) पू जिल्लासकी १-२ उपर रखो अंगारम ( (गॅ२६१) । ३ मॅक्न-प्रह (प्रत्ह १ १)। ४ पहला महायह (ठा२)। १ राजस-वेश का एक राजा (पटम ¥ 242)1 क्षीगारिय नि [काङ्गारित] कोनमे की तरह क्सा हुमा, निक्ज़ (ताट भाषा)। श्रीमास देखो अगार, 'निवर्तमाननिर्म' (पिट cox) 1 संगादम रेवी श्रीगरम (धन)। अर्गाक्षियन दि] ईच का टुकका (देर 3=) 1 संगासिय रेको अगारिय (पापा) । अमेंगिपुं अिक्रिया १ प्रास्ती बीव (गरा द) । २ वि तरीरवाला । ३ चंत-प्रन्तों का बागा (कप्प) । अंगिरस न [अङ्गिरस] एक बीच भी गोतम मोन की शाबा है (ठा 🗣)। अंतिरस वि आक्रिया र अविरस-यात्र में धन्यम् (ठा ७)। २ पृथ्कं तसन (पडम ४ E4) 1 ब्रांगीक्क ) विभिन्नीकृत स्वीहर्द (ठा ४ **अं**गीक्य र मुगा १२६)। र्खगीकर ) सक किल्ली+कु स्वीकार अंगोक्क्य ) करना । बंग्रेकरेड (महा नार) । मंबेक्सी (व १ ६) एक अंग्रिकरेकण (विमे २६४२)। क्षेतुक्र पुं [इक्युव] १ वृत्त-विशेष। २ ग. देशुद वृद्धाका फल (दे १ ८६)। अंगुहुदु [अक्गुष्ठ] यंद्रअ (अ १ ) पसिष पुरिदेनों १ एक विद्या। २ प्रश्नम्याकरण मून का एक सुप्त सम्बदन (घर)। अंगुट्टी की वि शिरका प्रवट्टन्टन, पुंबट (दे १ ६ छ २६४)।

र्धगुरमय वि [अङ्गाद्धव] र्वदान वचा (\$7 25Y) I भगुम धक पुरस् दिल करना पुरा करना। श्रेपुमद्र (हे ४ ६८) । र्धगुमिय वि [पृरित] पूर्ण किया हथा (क्मा)। अंगुरि, धे भी [सञ्गुहित की] चैक्पी (वा २७७) । अंगुस्तन [अङ्गुख] यत्र के बाठ सध्यक्षण के वरावर का ऐक नाप मा<del>ल वि</del>रोध (भय व पाइचिय वि ["पूर्याक्तवक] को से सेकर नव धंद्रम तक का परिमाण बाला (मीम १)। भंगुष्टि भौ [अष्गुद्धि] उपनी (हुमा ।) । कोम पू किया प्राप्त-त्राण शस्ताना (एम)। प्यतेष्ठण न िस्फोटनी इंपसी फोइना कड़ाका करना (तंद) । र्शग छम ग [अ**ब्**सुद्धीयक] संपुठी धंगुब्रिकाक (१ १, १ कम पि २१२)। र्मगु रेखन अंगु क्रियो की दि] प्रियंत्र भूक-विशेष (क ₹ ₹२) ≀ भंगुकी की [अङ्गकी] रेको अंगुहित (कृष्य) । पुन [अङ्गुस्मीयक] श्रद्धी अंगक्षीय (मूर १ ६४) पायबक्रि **चं**गुक्षीयम एख समिप । समिपयो **ांगुधीय**य धैमलीयधो शीए (पडम १४ अगुडेज इ ५ सुर १ १६२ पि २५२ अगुक्रेयप पत्रम ४६, ६५)। बागुसेयग वेको अंगुलयय (गुच २ २१)। न [सङ्गापाङ्ग] १ रागेर के संगोर्धग भवपव (पएए) २३)। २ तव वर्गेष्य रारीए के छो?-छो? सवसव 'नहकेसम मुर्च प्रवीमोद्धा सन्द्र भंगोर्वपासि (न्छ ३) । जाम न नियमनी सरीर के प्रकास के निर्माख में कारख-मूत कर्म-किरोप (कम्म १ 44. Az) 1 अंगोद्ध की [प] शिर को धोड़कर बाकी राधिर का स्नान (सर पूरक्)।

भौषो भ अज्ञी भय-मूचक सम्मय (प्रति १६, प्रयोदि ४)। अर्थस्य [कृप्] १ कोचना। २ जोतना वासकरनाः ६ रेकाकरनाः ४ करानाः धंबद (६ ४ १८७) । एक अधेदता (मान) । क्षेत्र सक[अब्ज्] पूजना पूजा करता। धेवए (स्वि)। अर्थ सक [शक्रा] जाना । संवति (पंपा १६ २६) भाहुगद्द पुत्रस्थिम म 'सोबीए पारमंबद' (बृह ४)। अंबल पू [अध्यक्ष] कपड़े का रोप भाग र्जीचि प्रै [अख्रिच] गमन वित (मन ११) : ल विप्रसिक्षि विश्वमान वाना (मग १५)। अंथिय विशिक्षित] १ प्रक सहित (गुर ४ ६७)। र पूजिल (मुपा २१८)। १ प्ररास्त भगविष (प्रापु १८) । ४ न. एक प्रकार का कुष्प (ठा४ ४: शीव ३) । ५ एक बार का भग (मग १४)। संचित् भिक्कि १ धमनाममन धाना-भाना (भग ११)। १ अवा-नीवा होता (ठा १) । अंचियरिभिय न [अक्रिक्रिकित] एक पछ का नाटच ( राय १३)। भौजिया भी [अक्तिकः] शकर्पेण (सर २)। संद्र सक [इ.ए.] १ की क्या 'संद्राति कस्यु-देवं मगस्त्रमाम ठिमं धेर्त (विश्व ७१४)। २ सक सम्बाहोता। वड ऑड्स्साण (विसे ७१५) । प्रमी. श्रेष्ठाचेद (ग्राया १ १) । अंद्रण न [कर्पेश] श्रीचाव (पत्ह २, ४)। अंक्रिय वि [दे] बाइन्ट, बींबा हुमा (दे t (v) i क्षेत्र एक [सब्ज्] भावता । इ. अधियक्य (4 XXX) I क्षेत्रण पुं[क्रास्ट्रजन] t इत्या पूर्वल-क्रिकेष (मुक्त २) । २ देव-विरोध (सिरि ६६७) । अंभग पू [अञ्चन] १ पर्वत-विरोध (दा १)। २ एक लोकपान देव (ठा ४) । १ पर्वठ-विशेषका एक शिक्षर, जो विग्रहस्ती कहा काटा है (ठा२ ३ ८) । ४ क्या-किरोप स्मान)। ४ न, एक क्षांति का रहन (लावा १ १)। ६ देवविमान-विशेष (सम ३४)।

**७ कावल कवल (प्रामू** हे∤। कवि<del>वा</del>र

र्धा अपर सिमा 🕳 त

सद्ध प्रै पुरु हाल का संपूट (महा)। करण न करण विनय-विशेष नमन (दे)। यसमहित्र विषयही १ नगत, हाव

भोकना (भग १४ १) : २ संमोय-किरोव (सम) । स्त्रस नि (दे) ऋतु, सरह (दे १ १४) ।

अंक्रिय वि [अफ़िल] स्रोता हुमा श्रेतन-पूक किमाइमा(स.४)।

र्जनुषि (ऋजु) १ सस्य शङ्करित 'अंजूबस्स वहा उच्चे विकारों तह गुलेह में (सूम १ १११४)। २ स्वम में तलार संसमी 'प्रहोनि नाइनलइ संबू' (काना)।

१ स्तरुव्यकः (सुमः १)। श्रीसम्बद्धाः । अञ्चलकाः । अस्ति । अस् नी प्रकम रिप्पा (सम १४२)। অ'মুংপী[অংজা] १ एक सार्वेबाहकी

कन्या(विगार १)। २ विपालपूर्वका एक सम्बन्त (निगा १ १)। ३ एक इन्सासी (ठाव)। ४ 'क्रातावर्गकवा' सूत्र का एक बन्धका (सामा २)।

व्यंडिपून [व्यस्थि] ह्यौ इसम् (पर्) 'महिममहरास पंतस्य मत्रोग्क्सप् मएठी न

भन्नीमवि (बार ६)। न भिरह की १ क्षेत्र (क्ष्या धंडध भौमें) । २ सङ्कोत (महानि ४) ।

भीडरा । ६ 'हात्ममानना' सूत्र का वृतीय ৰম্মৰৰ (জামাং १)। इन्ह वि [\*इस्त] को मएडे से बनामा गमा हो। जैसला माइला एवे पाह प्रस्वकारे कारें (मूख १ ६)। बंध र् ( "कम्ब] मन्दिर के क्रिकर पर स्वामाता क्यूबकार योगा (नडर)। वाजियम पुं**ि**वाजिन **बड**़े घरडो का स्थाराचे (विपा

₹ ₹): वि [अण्डक] र सएडे से पैदा व्यंद्रग 🕽 होनेवाले अंगुः पत्तीः मक्तनी वमैद्यह् (ठा६, १३ २ वेराम ना नावा। ६ रेरामी वस्त्र (बत्त २**१)। ४ रुए का** दस्त

(तूम २,२)।

शंहर

t (#) : **अंडाउन नि [अन्डज]** मएडे से फैराडोने-याला (पडम १ २ १७)। शंदर्श जरुडी र स्वस्य स्वयव (देध

ta)। २ प्रान्तमान (से ६ १०)। १ कीमा हद (बी ३३)। ४ निकट, बजवीक (विपार १)। ५ मन, विमास (विसे ६४६४ भी Y=)। ६ निर्ह्म निवय (ठा६)। ७ प्रकेश, स्थान 'ध्र्मंतर्गतमवसमद्द' (अस ६ २)। व राग भीर इ.पः श्रीक्ष सीर्वि मक्लिमाओं (बाबा)। १ रोव बीमारी (विसे १४६४)। १ वि इनिहर्वीको इछि-भूत तमतेनाली चीज समुख्य, नीरत वस्तू (पराइ.२,४)। ११ मनोहर, गुलर (से १ रेंद्र)। १२ ग्रीम श्रुप्त गुम्ब (कृप्य)। कर वि <sup>कि</sup>री उसी जन्म में मुक्ति पानेशता

(सूर १११)। इन्द्र्याचि इन्द्र्यानका (परा१९)। असस दं [अस्त ] १ मृत्कृतना २ प्रतयकाल (से ४, १२) । किरियास्त्री "किया" मुक्ति संहार ग् मन्दरला(ठाँ४ t) । इच्छन [इस्म] पुत्र कुल (कम्म) । सक्ष वि विकृत् विशो नस्म में पुष्कि पानेभालता (छा ४९१)। गढरसा स्त्री किएशा विन धपनावाँ ने

मह्या ग्रेग-प्रेम (ग्रहार)। बर वि [ चर] फिला में श्रीरस पदानों की ही बोन करनेवाला (परहरू १)। अर्थत कि [अल्स्य] ग्रन्तिम ग्रन्तका (मर्ह १५)। क्लरिया स्त्री ["स्त्ररिका] १

काइमी निविका एक क्षेत्र (पर्व्या १)। ९ क्ता-विरोध (कप्प) ।

र्मत न [कान्त्र] धौत (सुपा १≉२, वा X 4 X ) |

क्षेत स [अन्तर] सम्पर्भ बीव में (दे र १४)। करन "पुरी देवो अतिकर (नार) । करण चारण [\*करण] वन

**इ**स्य 'कव्यारसप्तस्त्रसंतकरणेख' (उन ६ टीनाट)।समय वि[सित] मम्बनर्ध गैपनला(दे १ ६)। द्वाली [भा] १ विरोज्ञानः । २ नासः (साम् )। "द्वाजन ["बान] प्रकृतक होना ठिरोहित हो<sup>न्द्र</sup>

धीय-विरोध (६क)। पुरुष प्रे विश्वका एक वादि का एन (ठा१)। २ पवट-विरोध नाएक किवार (ठा )। प्यक्राकी ["ममा] चीचा नरक-पूचिनी एक)। रिट्र प्री पिछी श्वासिक्षेत्र (प्रस ६ ट) । सस्यगाची ["शास्त्रज्ञ] १ केन-पृतिकी प्रतिहा । २ मेपन भनानं की सनाई (सुध १ १)। सद्धाव िसिद्धी मान्य में श्रेमन-निरोप ननान र घडुरम होने की राखिकाला (निर्मी) । सम्बरी की "सन्बरी | एक सर्वाः की इनुमान की माता (प्राप्त १४, १२)। **मंजप**इसिजा ही [दे] <del>दुत-विटेव स्</del>माम **उमाल का देव (दे १ ३७)** । भैमपर्रे 🕸 [वे] वाही-विरोध (पर्स्तुर) । अंत्रणईस न [के] क्यो अंत्रणकृतिमा Rt 101 भंजपग रेखो श्रीतम । र्भवता भौ [भौतना] १ स्तूमान की माठा (परमा १ ६)। २ स्वनाम-स्मात भीनी नरन-पृथिवी (ठा२ ४)। १ एक पूण्करिशी

(वं v)। तजब रू ["तनब] ह्यूमान्

(पडन ४० २ )। सुन्दरी की ["सन्दरी]

र्वज्ञयाभा स्त्री [मञ्जनाभा] चौची नरक-

भौजीतमा स्थी [दे] रेको श्रीजनहरितमा

भंडाणीस्था [अञ्चली]कनसकामावार

श्रंबडि, क्षी <del>पुंत्री</del> [श्रञ्जलि] र दाव का

सपूर (इ.१.११) । एक ना दोनों सन्द्रित

हाबो को समाठ पर स्थाना, एकेण का बोहि

या मउ**विएर्षि १ वेर्षि नि**रश्लवी**स्टेरि** संबती

मएन्डिं (निष्क्ष)। १ वर-बंपुट, नमस्वार

क्तुमान् की माठा (पडम १ १)।

इचिनी (इक) ।

(8 9 9)

नान (मूस १ ४० ।

सुरमा बनदा है ऐसा एक पावित हत्य (बी

४)। ६ योचको साजना (गुरु १ ६)। १

तैव मादि ते राधेर की मासित करता (राज) ।

११ सेप (स ४.≈२)। १२ चनल्या प्रविकी

के बार-कारण का बरावों अंश-विशेष (ठा १)।

"केसिया की ["वंशिका] वनस्परि-विशेष

(पएड १० एव)। बोग र् विगेगी

क्या-विशेष (क्य)। दीव प्रिशेषी

(स्य १३६ टी)। द्वाणी स्वी विमानी विश्वमे बदरम हो सके ऐसी किया (सूप २ २)। द्वाभुज वि चिम्ती गट दिगत 'नरेसि वा विगतेसि वा मंत्रवामुनेसि का एगद्रा' (माक्)। प्याञ्ज पूर्विषायी धन्तर्माच समावेश (इ.२,०७)। साम ट्रे िमाव समावेश (विने)। सुदूत्त न िमहती दूध कम मुहत्तं सूप मुहुत्तं (पौ १४)। रद्वास्त्री "या ] १ विरोधान । २ मारा बृह्दी मह्यन्तरहा (मा ११)। रका स्त्री विका निष्य-काल बीच का समय (पाषा)। रूप पू ["आ मम] माना भीत (हे १ १४)। रहिए, ऐदिव (शौ) ति [\*शहत ] १ व्यवहित चंत्रयस-पुक (माचा)। र प्रस महस्य (सम १६ उप १६६ टी। यांग १२ )। "वि द पू ["बेदि] गंदा और यसूना के बीच का देश (कुमा)। और वि [ कास्त] सुन्दर, मनोहर (मे रै **38)**1 संत्रां वि [आयान्] धाता हुमा (ने ६, 4£) ! अंतञ्ज वि [अन्तरा] पार-गामी पार-प्राप्त (स € १=) 1 क्षंत्रभ वि [भन्तव] १ यनिनासी राधत। २ जिसनी सीमा न हो बहु (स ६,१८)। श्रांतज ) वि [अन्तक] १ मनोहर, मुन्दर अर्थन }(से है है€)। २ धन्तर्यंत समाबिष्ट (गूम १ १६)। १ पर्यंना प्रांन्त मान 'से एवं परिभाषीत सन्तर ते समाहिए'

(नुष १६)। ४ सम मृणु (मे १ ६ इन ता **११६** टी)- 'नमायमे वंश्वति चन्तगस्म' (सूच 1 (0 9 अंतर वि अभित्यी १ पार-पामी । २

कुण्यम का गठिलाई ने शोहा का नके 'विकास बन्तर्य मोर्च निरवेन्द्रो परिवर्ष । (मुष १ र)।

र्जनगय थेगे। भेत माय (वर १)। अंद्रण न [शन्सम] बन्यन, निवन्त्रण (प्रमी

খনত্রাত্ম নি [সন্তর্মান] বিধানন-দর্মা(নিচ **t** ):

हांतहभाव देशों अंत साथ (घरफ १४२) । अंतर न जिन्दरी १ मध्य भीवछ 'गामंतरे पनिद्रों सो (उन ६ टी)। २ मेद, विरोप फरक (प्राप्त १६०) । १ यनसर, समय (खामा १ २)। ४ मनवान (व १)। ४ सदकारा सन्तरान (भग ७ =)। ६ विवर, चिद्र (पाप) । ७ रजोहरख । = पात्र । ६ पू बाबाद, करन । १ सूत के कपड़े पहुनने का धाचार, सीत करा (कपा)। कृष्य पू िकम्प] बैन साचु का एक ब्रान्मिक प्रशस्त बावरण (वंद्र) कंद एं किन्दी कव की एक बाति बनस्पति-बिरोप (पएए१)। करण न ["इरज] यात्मा का शुभ भ्रष्य-षमाय-विश्वप (पंच)। शाह म िग्रही १ घर ना भीत्रधी भाग। २ दो वरो के बीच नामंतर (बृह ६)। वर्दस्थी जिल्ही क्षोग नदी (ठा६)। शीय प्रं विशेषी १ द्वीप-विरोप (की २३)। २ सदस्य समूत्र के बीब का द्वीप (परुख १)। सन्तु पू [ राष्ट्र] मौतरी राष्ट्र, काम-कोबादि (पुरा a7) (

अंतर धक [अस्तरम्] स्वयमान करना बीच में बलना । यंतर्राह, यंतरीम (बिक्र १३६)।

र्जंडर वि [आन्डर] १ घम्मन्डर, भीतरी 'धय-नगुरागृपि भंतरो ध्यान्तो' (धन्द्र २ ) । २ मानसिक (उनर ७१)। अंतरंग वि [अस्तरङ्क] भीवरी (विशे

२ २७)। अंतर जी स्त्री [आस्तर आ] नगरी-निरोप (विसे

अंतरपद्धास्त्री [अस्तरपद्धा] मूल स्थान से हाई गम्यून नी दूरी पर स्थित गव (पन्छ )।

अंतरमृद्रुच केनो अंत मुहुच (र्पच २,१३)। अंतरा म जिन्तरा र मध्य में बीच में (का ६१४)।२ वहने वृक् में (करप)।

में रपद्म न [ मास्तरायिक ] १ कर्म-विरोध वो दान मादि करने में सिम्रकटता है (ह्य २)। २ बिप्र न्यायन (काद्व २१)।

अंतराईय न [मन्द्रपर्याय] करर केते (नुस 1 () ?

अंतरापह पू [अन्तरापथ] सस्ता का श्रीनमा माम (मुच १ १६)।

अंतराय पून, भिग्तराय देतो अंतराइय (ठार ४३ छ २ ३)।

अंतराज व् [अन्तराज] मंतर, बीच का भाग (ममि ८२)।

अंतरायम पुन [अन्तरापण] दुकान हरू (चार १)।

अंतरावास पू [अन्तरवर्ष, अन्तरावास] वर्ष कास (कप्प)।

**अंद रक्ता प्रेन अिम्दरिको पन्दरा**ल प्राकारा (भगरे १ स्वप्त ७)। जाय वि [ अति] जमीन के क्यर रही हुई प्रान्तार, मंब मादि बस्तु (माबा २ ६)। पासमाह पुणिभनायी चानकेश में सकाना के पत्त का एक जैन-तीब और बहाँ की भगवात भीपप्रचंताय की मूर्ति (ठी)।

अंतरिकस्म वि [सान्तरिक्त] १ माजारा-संबंधी बाराहाका (की ५)। २ प्रष्टी के परस्पर युद्ध भीर मेद का फल बदसहोबाला रान्त्र (सम ४१)।

अंतरिकान [अन्तरीय] १ वस्त्र कपहा। २ सम्याका नीवसा वस्त्रः 'संवरित्रं साम णियंसणं भड़वा धंतरित्रं नाम सेकाए **इं**टिक्न पोर्त (निष्कृ १४)।

अंवरिक्त न [वि] करवती वटीनून (वे १ 9X ) i

अंदर्शिक्या स्त्री [बस्तरीया] कैतीय बेरावारिक गम्छ की एक शाला (कारा)।

अंतरित । वि [मन्तरित] स्पादित चंतर मानों (मुर वे १४वं के १ खंशरिय । २७ ) i

अविरियास्थी [दे] समाप्ति संत (अरे २)। अंतरिया स्त्री [अन्तरिका] द्यारा पन्तर, बीड़ा स्परवान (राय)।

अंतरीय न [अन्धरीप] होर 'सरराविश्व-राने जिल्लामरा पासि चंत्ररीयं व' (वर्गीव ₹¥₹) I

अंतरण प [अन्तरण] क्या निराय (उन्न ŧ) ı

भूरमा बनता है ऐना एक पावित इच्य (बी ४)। र माथनो भोजना (नूस १ र)। १ 🛉 वैत बादि से रावैद की मानिस करना (यज) । ११ केर (म १८२) । १२ च्लाप्रधा प्रतिकी के बार-रागवना बताब धेरा-विदेश (द्या १)। किमिया की [किसामी बननात-किरेप (भग्ग १० एव)। द्यान व विवासी क्या-विटेप क्या)। बीज प्रशिक्षी धीर-विधेय ("व")। पुख्य पू ["पुछक] एक नाति हा एन (रा.१.)। २ पवत-विरोध नाएक रिकार (अन्द्र)। स्वयाकी िंगमा वीर्या नरक-पृत्तिश्री एक)। रिट्ट पुरिष्टी स्टबर्नकरेय सम ३ ८) । सम्बन्धाः विस्तरते १ फेन-पूर्विका प्रतिहा । र प्रेयेन नवान की समाई (मूच १ १)। सिद्ध वि [सिद्ध] धव में चंत्रत-विरेत समानर पहाय होता नी राखिताना (निर्मा) । सन्दर्ध औ ["सुन्दर्ध] एक सक्षे की रहनाम् शीमाता (प्रतम ११, १२) ।

भेजपर्गसभाकी [दे] दुर्ग-विशेष स्वाम व्यात रा पेर (६१ ३७) । **भं**जपद से 📳 नमी-निरोप (पालारे) । भौजनस्य वृद्धिः देशे अध्ययमस्या ftt to i

में अपना रेगी अंजन १

भैजना भी [भैजना] १ न्दूमान **नी** मता (पडमार ६)। स्वनाय-स्वाद चीवा नग्य-पृथिती (ग । १ १ म पुण्यरिक्षी (वं ४)। तमय पू विनय हिन्सन (पन ४३ ८)। सुन्द्र्य का [सुन्द्र्यः] रद्मान् की माता (रहम १६, १ )। भैवनामा न्ही [अजनामा] चौची नरह

प्रविद्या (न्क, । भैजित्रप्रासी [द] देवी अजिल्लामिका (t t 23) i

अभिन्यान्त्री [अञ्चनी] रजरका मानार राव (तृष १ ४) अंडिनि, सी कुनी [अक्रीन] १ हाव का

नंहुर (हं १ ३४) । एक मा दानो संदूषित हाका को सामान पर स्थला। समेगा का दीहि वा वा रिर्म्ड इन्बेंड् नियानवंभिनेड् संबती मार्ग्नातं (नित्र) । ३ वर-र्गपूट समस्वार

क्य किन्य प्रशास (प्राप्तू ११ स्वन्त ६१)। उद्दर्भ [पुर] द्वाद ना संपूर (महा) । करण न किरण नितय-विशेष, नमन (दे) । परगोद् पू ["प्रमाद] १ नवन, हाच बोइना (सप १४ ३)। र संग्रीय-क्रिक (धन)। अंबस वि (दे) ऋतु सन्त (दे १ १४) ।

अंजिय वि [अधित] स्रोता हमा, संजत-पूक विमाद्या ( स ६ 👍 )। में तुनि ऋतु देशरण सङ्गीन 'संबुद्धमा

बहा दल्बे, विरागी दह मुखेह में (मूम १ धि ११४ ⊏)। २ संसम∓ तपट संयमी: 'प्रदेशित नात्वलक्ष संबू' (बाबा)। १ सरु, स्थलः (मृषः १ १) । भेदमास्य जिल्ला यसन्तराय नौ प्रनम सिप्या (सम ११२)।

मैंब्रिश [सञ्] १ एक गर्भगद्रशी कम्पा (विशार र )। २ विशासमूद का एक सम्मान (निरा १ १)। ३ एक इन्द्राएी (ठाद)। ४ चातावर्गनमां सूत्र ना एक धम्मप्त (ए।या २) ।

मंडि पुत्र [अस्थि] हते इतक (यह)ः 'महिम्महरम्य प्रवस्त सबीरमनाए सन्द्री न मस्नीमरि (मार ६)।

अंद्रम

मंदय

। न[सरह क] १ ईमा (क्या मीत) २ धरनीय (महानि ४)। भंडरा । ६ फीलाउमेनचा सूचे का तृतीय मध्यमन (न्यामा ११)। सह दि ["इन] को सम्देश बनाया मता हा 'बैक्गुर माण्गा वमे, बाह् मन्द्रका अर्थ (गुम १ १)। बंध वृं [बन्ध] मन्तिर के रिकार पर ग्या जाता सगद्रशाह मोता (पडा)। वाजियस पू ["वासि जक] मानीं ना स्थानार्ष (निपा t 1) i

वि[अण्डच] १ सण्डमे देख भंदग ो होतेवाने अनु पत्नी, सौर, मध्यी वर्षेष्ट् (डा १ १) व)। २ रेठम का काया। ३ रहामी करन (उत्त २१)। ८ रूग ना नस्त्र (कुष २, २)।

अंडय पूं[के अरडक] मक्की मध्क (के 2 24): व्यक्तियाचि विषयाची व्यक्ति प्रेमी

बला (पडब १२ १७)। और पूक्तिन्द्री १ स्वक्ष्य स्वयंत्र (से **८** रद)। २ प्रस्तामान (से €, १)। १ सीमा, इद (मी ६६) । ४ निकट कारीक (निपार १)। ६ भग विनात (विसे १८६४ भौ ४६)। ६ तिर्शय कियम (ठा३)। ७ प्रदेश, स्वान 'एगेडमेडमबद्दमद्र' (यव ३ २)। व सम बीर इ.स. 'सर्मिं सीर्मिं मनिष्यमाली (दाका)। १ रोव ग्रैमारी (पिप १४१४)। १ वि विश्ववी को प्रति-रूप भवतेवाली चीज असून्दर, श्रीरत वस्तू (पण्ड् २ ४)। ११ मनोहर, गुन्दर (ने ६-रेड) । १२ तीच शुर तुच्छ (क्य) । कर ति किसी बडी जन्म में बुद्धि पतेणका (तूप १ ११)। करण वि किरण निलक (पणार ६)। ब्यक्त पंक्रियती १ मुख्यारा २ प्रत्ययक्ता (गेर, १२)। किरियास्त्री किया द्वान, संतर का मन क्ला(श्रप्त १) । इन्द्रक[इन्ह्र]

[ चर] मित्रा में श्रीएत नदानों नी ही की करनावा (पण्य २, १)। र्भेद वि [अस्य] सन्तिन, सन्त ना (सग १५)। सनस्यास्त्री [सारिस] १ मध्यै निविद्याएक केद (प्रग्ला१)। २ क्सा-क्रिय (कथा) । र्भंद्र न [सन्त्र] श्रोत (मुता १६२, व XeX ) :

धुर दुन (राम) । शह वि दिन् ही मी

बन्स में हुकि पानेकाचा (ता ४६१)

गष्ट्या स्त्री [क्ट्या वित संपन्नी ?

माठवा मेप-मंत्र (ग्राम १)। बर वि

र्थत म [भन्तर्] मज्ब में, बोव वें (१६ १४) । उरने पुरिक्त अनिकर (नार)। बरण करण करण करता नद इरन 'रफ्शास्त्रप्रसंहरूरहेल' (का ६ क्षांनार) । साय हि [शत] सम्बर्जे भीवशास (६१६)। इस स्थी भिर्मी रै तिरोबात । २ नाल (साबु) । "क्रानिव

[भान] महत्व होता, तिरोहित हैंग्य

अंवष्माय देवो अंव भाय (धम्म १४२) ।

र्जंदर न जिन्दर र मध्य भीवरः 'नामंदरे

(उप १६६ टी)। द्वायी स्मी विमानी जिसमें मदस्य हो सके ऐसी किया (सूच २,२)। द्वाभूज नि चिंामृती नट्ट, बिगत 'नद्रेति वा बिगतेति वा संवदामुतेति नाप्पट्टर (मा≒)। प्याञ्जर् िपाती मन्तर्माव समावेश (११२००)। साम पु ["भाष] मनावेरा (विमे)। **भुद्र**क्त न िंसहर्वे दुखकम युक्त स्मृत सुकृत्ते (जी १४)। रद्धास्त्री विशा १ विधेवान। २ नारा 'तृत्वी सहसन्तरका' (या ११)। रद्वा स्त्री विद्या मध्य कास बीच का समय (माना)। रप्प पू विश्वासमम् मारमा जान (इ.१.१४)। रहिया, हिहिद (शी) नि "हिंदी १ व्यवहित चंत्रसन-प्रकः (भाषा)। २ ग्रनः भकृत्य (ग्रनः १६ः उप १९६ टी मिन १२)। । येद पूं [\*सेदि] र्वेगा और यमुना के बीच का देश (कूमा) । अर्थेव वि [\*कान्त] मुन्दर, मनाहर (मे १ ११) । YE) 1

अंतम कि [आयाम्] माता हुमा (में १ ४१)। अंतम कि [अग्तम] पार-मामी पार-माम (में १ १८)। अंतम कि [अग्तम] र मांकारणी सम्प्रा-इनियमी पीमा न हो बहु (में १,१८)। अंतम के कि [अग्तम] रि मांकार, मुन्यर अंतम कि [अग्तम] रे मांकार, मुन्यर अंतम कि १ रे रे)। र पर्यन्त प्राप्त अंतम कि एक परिमाणि स्माप्त है समिद्धि (मूम रे)। र पान मुन्यु (में १९) वार्मिय (मूम रे)। र पान मुन्यु (में १९) वार्मिय

१७)।
अंद्रश दि [अन्तग] १ पार-पानी । २
प्रत्यक जा कटिनाई से छोता जा गरे'विकास प्रत्यक मोर्स निर्देश्यो पत्रिकार्
(तृष १६)।
अंद्रशम केंद्र माम (वय १)।

अंतिय न [यन्मत] बन्तन तियन्त्रस्य (प्रयो २४) । अंतियाण नि[अन्त्रयोत] निर्मयान-वर्त्ता(निष्ठ ४) ।

पनिद्रों सों (बर ६ टी)। २ मेद, विशेष फरक (प्रामु १६८) । ६ धवसर, समय (ए।या १२)। ४ व्यवदान (व/१)। १ मदकारा धन्तरास (भग ७ ८) । ६ विदर ब्रिट (पाम)। ७ रजोहरए। ६ पाच। १ पू माचार, करन । १ सूत के कपड़े पहतने का माबार, सीत करूर (कप्प)। इस्प दू िकरप] वैन साधु का एक प्रारिमक प्रशास्त भाषरण (पंडू) हेर पु किन्दी धन्द शी एक जाति बनम्पति-बिरोप (पएछ१)। करण न ["करण] मान्ना का ग्रुम सम्ब बनाय-विरोध (५४)। ।गह न ["गृह] १ वर काभौतरी माग। २ दो वरों के बीच कामीतर (कृत् ३)। आर्द्रिकी [°नवी] दारी नवी (ठाइ)। वीय पू [ैद्रीप] १ क्रीप-विशेष (की २३) । २ सवस) समूद्र के बीच का द्वीप (पएए) १)। सन्तु पू िराष्ट्री मीतरी राष्ट्र, काम-क्रांबादि (सूपा 42) t अंतर मक [अम्तरय्] स्थापान करना बीच में बत्तना । संतर्धेह, संतरेमि (विक १३१)।

मानमिक (बंदर वरे)। संतरंग दि [अग्तरङ्ग] धैतर्थे (दिने २ २०)। अंतरंश [आग्तरङ्गी]नवधै-दिये (दिने २३ १)।

अंतर नि [भान्तर] १ मन्यन्तर, भीतरी संस-

समुक्कांपि संवरो सपाम्हों (सन्द २ )। २

शंतरपद्धा स्त्री [अलारपद्धा] पून स्वान स सर्वे गण्या त्री दूरी पर चित्र न स (पत्र ) । अंतरसङ्ख्य पत्रो अंत सुदूष (पेष २१३) । अंतरस प [अलारा] स्त्र म पंदा से ते से ११४) । २ पहले पूर्व में (इस्स) । अंतरस्य म [ आलासिक] र वर्गनिकरेज से बात सार्वि साले में जिल इस्सा है (हा

२) । २ विद्यं, स्वातः (वर्षः, २१) । भीतराध्यं न [मन्तरापीय] करर देनी (मुग ११) । र्वतरापद्दं पुं [अन्तरापद्दां सत्ता का बीवता भाग (गुज १११)। अंगराय पुंत. [अन्तराय] देवो अंगराद्दय (ठा २ ४ म २३)।

(ठा २ भ २ ३)। श्रीतराख पुं [अन्तराख] प्रेतर, श्रीच का माग (प्रिय ८२)। श्रीतराखम पुन [अन्तरापत्र] दुकान हार (प्राव १)।

अन्तरावास ई [अन्तरावर्ष, ध्यन्तरावास]
वर्षा-काम (कप्प)।
क्रंत रुक्त धुन [अन्तरिष्ण] सन्तराव पाकमा (मग १० १ स्वरूप ७)। जाय वि [बार] वर्षान के क्यर एमें हुई माना मंच पार्ष स्वरू (पाचा २ १)। वामणाह धु [पाक्ष्माम] वानकेश में सक्ष्मा के वाय का एक किन्दीच बीर बहुरे की मानाज भीरावर्षणाव की मूर्व (ती)। क्षेतरिक्तम कि आन्तरिष्ण] १ साहारा-संवरिक्तम कि आन्तरिष्ण] १ साहारा-संवरिक्तम कि आन्तरिष्ण] १ साहारा-

परणर पूढ भीर भेद का एक बठवानेवाला राज (मन ४६)। अंतरिका म [अन्तरीय] १ वस्त कपहा। २ राम्या का शीवना सरकाः भेतरिका साम पिपमार्थ परचा भेतिकां नाम सेकाण रेड्डिकां पोर्स (निष्कृ ११)। कंतरिका म [वि] करमारी करीगूम (दे १ ६१)।

अंतरिजिया स्त्री [अन्तरिया] वैशीय वैरमानिक मण्ड ती एक राग्या (त्रण)। अंतरित। नि [अन्तरित] स्वरहित धंतर कांतरिय। त्रा (तुर वे १४वे से १

र्जनिरेया स्त्री [ब्रि] संगतिः संज (अ' २)। अंतरिया स्त्री [अस्तरिका] सोना सन्तर, भोडा स्वरमात (राय)। अंतराय न [अस्त्ररीप] डींग भाष्यरिवृद्धेत

यने विश्वपनार्थे साथि संवरीये व' (वर्गाव १४३)। अंतरण म [अन्तरण] विद्या विशाय (वर्ष १)।

4

नध (छ २, ३)। बीसंस पू [ विमन्स]

क्राविक विद्यास (हेर ६) । सहान

िशास्त्री १ भीतरी राज्य नान (टा ४)।

२ क्पर महमा (बी१) । साह्य स्त्री

िशास्त्री बरका भौतरी भाग कोलालमें

क्षेत्रोक्षिर वि [आम्बोसित्] मुसनैनासा (तुरा

ţ٥ अंतरेण स [अन्तरण] बीच में मध्य में (स 1 (070 अंशिक्स देनी अंशिक्स (समा १ १ नार ७) । अंति धनो पवि (मे ६ ६६)। अंतिस वि [अस्तिस] चरम केप फला (छ 1) 1 अंतिय न [अस्तिक] १ समीप निकट (उत्त १) । २ मानल चैना चर् मिल्यू निनाएमा याजारकेव श्रीनमां (याचा १ ०)। १योगम चरम (मूप२०)। जीनीहरी स्वी कि दे दे है है । अंत्रभारि वि भिन्तमारिम् । वीव में जले-बाला, बीवर (हे १ ६) । अभितर व [अम्बपुर] १ रामस्मित्री का निरायगृह । २ रानी नर्गपुतारो नि वेनि बंक्जुर्भ स्तिवरी वयी तबुजन्तु (महा)। वर्तिकरिया । स्थी [आन्धापुरिकी रो ] अतित्ररिया ∤ मण्डपुर म प्यनगरी स्त्री अभिज्ञी फिशा(बार्डी मुसा९३ **३) । २ दोनो का नामपात्र लेने से बदरो** र्वातन बनानेगानी एक विद्या (धर ६) । अतिही स्त्री हि । सम्म सेव । २ कर, पेड । ३. वज्रोत सर्व (दे १. ४४) । अंश्यामि वि [अन्श्यासिन् ] रिज्य (१०७)। र्भीतवर देला अनुबर (बन १)। भेता च जिल्हा वीच भीतर नार्वती

नाला (उप ६ शे न्र १ ०८)। स्त्रीया

न्धी विश्वविद्या ननर व राजेशानी नेरवा

(अर्थ १३) । तद्ववास्था विशिक्ता

ररणा के पिर मानने जाता 'तस्यार

रिकृति क्षेत्रीताचल तरहकार्य (तूर १४,

१६१) । तय वि [यत] मध्यती

नवारित्र (दर ६ ६ हो) । जिल्लामधी री ["नियमना] दैन माध्यिम को पर्कते

रात्रपात्र (दृर ६)। इट्ट्यान

[ १९२] (१४-१० (१९)) मानार

गः पत्र र्ष [ सध्यावमानिक] वनितर

पान्यभर (राप)। सुदुल न[सुदुर्स]

**पत्र मूल्ते, ८ विश्व स समा**र

धंदोलानाहिती बहिया ग्रेप्टेड (ज्वा पि १४१)। हस वि विभुक्त भीवर, भीवहर्स बण्डाः पानलुल्ले परे हिल्लावती (पा 191) | श्रंताहरत वि वि विष्योद्य भौवा सुंह काला (दे**१ २१)**। अंत्रही (थर) स्त्री अस्त्री यात यांत्रो (ह Y YYX) I अंदर्व चिन्द्री १ चन्द्रमा चाद पृत्र इलो रासारलपडिमलं विभीरिमुह्मंद ( ना १)। २ रपूर (मे ८,४७)। राज व् (सग) चन्नचन्त्र मण्डि (से १, ४०)। अदिग्रामी कन्दरा द्वा (स र 1 ( 08 अंदर पुंचित्रस्थी पुत्र विशेष (दे ७ 80) I अंदाप द (ती) देनी अंदाबड़ (हे ४ 2 ()1 े सी अन्द्री श्रनता वंगीर अंदपा (ग्रीगंस १३)। अंदेडर (शी) रेलो अनेडर (हे ४ २६१) । अंशेक्ष सम्बन्धाः ] १ द्वरता भूतता। २ वंचना क्रिया। ६ वंदिष्य होता संदोलइ दोराम्, व मान्त्री नग्योनि विश्वयत्त्री (न २२१)। वर जीतसेन अंशार्वित अंश समाज (ने ११ १ २१ तुर १११८) । र्मशस्य मरू [ अन्त्रसय ] बंपाना द्विना । पर अंशास्त्र (पुर १ ६७) । भेशसम् १ [भारतस ह ] रितेला (राव)। अंशासन न [मान्तासन] १ दिवरना भूतना (तुरं र २२)। २ जिलोता। ३ मार्ग-विरोत्त (मूप १ ११) । र्भशनय रेगो जीरातम (नूर १ १७१) । र्अशिकिति [आग्रास्थित ] जिससेताम, बंगतेता (च २१३)।

wx ) 1 अंशोकप केरो अंशोधमा । द्यांच कि जिल्ला १ शतका, नेतु-हीन (विपा ११)। २ भक्षल बलर्पीत एर त (**शह ७ ७**)। र्धवा मुद्दा दमन्पद्धा "बंटरस्य न ("क्रक्टबीय विश्वपूर्ण के रटक पर करते के मास्तिक धनिकारित यमन करता (बाचा)। तम न "नमस्यो निवित्र धन्द-पार (युध १ १) । पुर न [\*पुर] ननर क्रिरेय (ब्रह्म ४) । क्षेत्र पुरिसायी पोचवी शरक का चीना भरतेन्त्रच एक गरक-स्वान (वेकेन्द्र ११)। औष प्रविकारी इत नाम का एक केर (पडम ६८ ६७ )। अंध वि [धान्त्र] पान्त्र देश का प्लेकाना (पण्डरं १)। ठॉथंसुर् दि∏े पूप क्रूमेस (दे ११०)≀ अंधकार देवी अंधवार (चंद ४ । अर्थमा पुंदि | बुक्त वेड (सग १८, ४) ! व पद पूर्व विद्विह्य स्कूल ग्राप्ति (प्रव १०४)। अने गरेको अर्घ (स्तर ४)। विक्र पुं ["यक्कि] नूरम द्यानि (भग १०, ४)। र्वाण्ड् पूँ ("बुष्णि) बदुवंश का एक राज्य भो तपुरदिजयादि के शिवा वा (बीट २)। ) पुंक्षिणकी र संवा ने<del>प</del> अधिया शिव (पएइ १ २)। २ वानर वर्तनाएक राज दूसार (पत्रम ६ १ ६) । र्थभपार पुन [अस्थव्यर] क्षेत्रेरः बंदरार (क्ष्य स ४२१)। वक्ता प [पम] इप्पाप्त (मुक्ष १६)। अधियारण म [भग्यकार] सन्देश (भीत)। अंधवारिय नि [अन्धवारित] वेपरार माप्त (ने १ १४ र ४३)। अभरज } रि बिग्धी संबद्ध नैक्शि

અંત્રક્ર ∮ (માં કર્યો ફુર, t⊍ર) ≀

भेषप्रिति स्मा जिम्बायती विच बनाने

अंबार र् [अन्बद्धार] संबेश (मोच १११

बार्गी एक रिया (गुरा ४२)।

₹5 )1

जंपार सक [अन्यश्चरय्] क्लकार-पुक करना। कर्न 'मेहन्स्ल मूरे ग्रेवारिका न कि मूक्तु (दूप देवा)। लंबारिय वि [अन्बदारित] संवकार वाता (सुपा ६४ सुर ३ २३ )। अधाव सक [ अध्य ] संवा करना । संवा बेद (प्रिक्र प्र४)। अधिज वि [अधित ] यन्त बना हुमा (सम्मत **121)** 1 संघित्रा स्त्री [अधिका] चट-विरोप (दे २, श्रीवेद्या स्त्री [आम्पद्य] बतुरिन्द्रय बंतु शी एक पाति (उत ३६ १४०)। कं। घट्टन वि [अन्ध] धन्या जन्मान्य (परह २ १)। अधित्य देवो अधितगः (गिर १७२)। अंधीकित (शौ) वि जिल्मीकृत वेव किया इ्या (स्वय ४१) । अंधु पू बिन्धु]पूप भूषा (प्रामाः दे ११×)। धंपक्षम देना अधिक्छम (पिएड) । अप पूंबिस्य] बंपन (से ४, ६२) । अंद पू [अम्ब] एक बात के परमावामिक देव वा नरक के बोर्वों की बुल देते हैं (सम २०)। ञंदर्∏ञास्र] १ सामना पेट। २ न याम याम-कन (हे १ ८४)। गहुवास्त्री दि याम नी याठी प्रठगै (निक्रू १३)। वासगन दि ] १ जान का देखा (निद १६)। २ माम नी द्यान (माना २७२)। बगरु न [दे] भाग का दुवड़ा (निष् ११) बाइम न [दें] माम का छोटा टुक्का (पाता २०२)। पैसियास्त्री [पेशिका] याम वासम्बारक इस (निमू १६)। भिक्त न [रे] यामना हुनजा (निष् ११)। सात्मा न[र] पाम नी दाम (निन् १४)। सास्त्रम न िग्रास्त्रना नैस्प-निरेष (चय) । र्भवन [अस्ट] १तक मट्टा(वेश)। २ सट्टा रत । ३ सट्टी पीत्र (दिन) । ४ दि निष्टर बबन बोमनगाना (बुद्ध १) । र्मनि [आस्तु १ बही बल्दुः २ सह तै नैन्दुत बीज (वं १)। **थंद** रि. (अस्ते) नान रक्तालीसना (न 1 17)1

अंक्रादेनो अव≍माम (मणू) <sup>\*</sup>हियास्त्री िस्यि पान की एउना (पंग्)। अंबट पू विमन्त्रमा १ केश-विशेष (परम १८, ६५)। २ जिसका विता ब्रह्मण धीर माठा वरमहो बहु (मूम १ ६)। अंबड प्रे [अध्यत्त] र एक परिवासक वा महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर मील जायगा (ग्रीप) । २ मनवार महावीर का एक भावक को बागमी बौबीनी में २२ वा दीर्घकर होगा (ઠા ₹) ા क्षंत्रष्ठ वि दि] कठिन (वे ११६)। अंदधाइ स्त्री जिम्बाधात्र ] बाई माठा (मुपा २६८) । भंबमसी स्त्री [व] कठिन भीर क्षानी कतिक ( \$ 2 3 2 ) 1 अंबय रखो अंद (मूपा ३३४)। अंबर पूर्व [अस्बर] एक देव-विमान (देवेन्द्र \$ YY ) 1 अंबर न अिम्बरी १ प्राकाश (पापः भग २ २)। २ वस्त्र क्पड़ा (पाप्रक्र निदूर)। (दस्रय पू ["तिस्रक] पष्ट-विशेष (मान) । यभ न विस्त्रीसम्बद्धनस्य (कप्प)। अंबरस पूर [अम्बरस] बाकारा, परन (भग २ २—रत्र ७३६)। अधिरेस प्र जिम्बरीय र मही आह (मत ३ ६) । २ नोप्तक (भीत)। ३ पूँगासक-जीवों को कुछ दनेवास एक प्रकार के परमा-भामिक देव (पव १०)। अवरिसि पुं अम्बद्धपि ] १ क्रपर का तीसरा मर्पे रेखो (मन २०)। २ उत्रविनी नग्री का निवासी एक काञ्चल (धाव)। अंबरीस क्ले अंबरिम । अवरीमि देवां अंविधिस । अंदर्सामभा } रेजो अंदममी । अंबर्हुंड रवी [अम्मद्रुण्डी] एक देवी (महानि २) 1 अंबा स्था[अम्बा] १ माता मा(स्यप्न २२४)। २ भगतान् नैमिताय की शासनदेती (संति १ ) । ३ बप्यो-त्रिटेप (पग्ल १) । अंबाह वह [ ग्रस्ट् ] चरहना नेप करता 'बनधींत घरणवीत चैनामेति ति बुर्त नार्ति' (न्ति<u>र</u> ४)।

अबाह सक [सिरस्+कृ] क्यालंग देता तिरस्कार करनाः 'तयो इस्कारिय अवाधिमा मणिया मं (महा)। अंबाहर रेपुं [आस्त्रानक] १ मामना का अशाह्य (पएए १) पडम ४२ ६)। २ न, प्रायमा का प्रम (धनु ६)। अंबाडिय वि [विरस्दृत] १ विरस्तृत (महा)। २ चरालम्ब (स ४१२)। खंबिजा स्वी [अम्बद्धा] १ प्रपदान् नेमिनाय की शासनदेशी (धी १)। २ पांचके वासुदेव नीमाता (पठम २ १६४)। समय पू ["समय] गिरतार पक्त पर ना एक तीर्थ स्पान (ती ४)। क्षींबर न [आम्र] धान का कन (दे १ १५) । अविভ पू आम्स्री १ बहा रन (नम ४१)। २ वि चटाई वाली चीव चट्टी वस्तु(ग्रोप १४) । १ नामकर्म-विशेष (कम्म १४१) । अविक्रिया स्त्री [अम्छिका] १ इमनी का पह (ता १ ११ टी)। २ इमसी का फल (मार )। र्थयुन[अम्बु]पती वप (पाय)। अंद न ["ख] रुमन पर्म (म्यू ४४: पूमा) । णाइ पूं [नाथ] समुद्र (दर ६)। ह्ह न ["सह] कमप (पाप) । वह पूं ["बह्र] मैव बारिस (बडड)। बाह् पूर्वियाही मैच बारिस (बउड)। अंदुपिसाअ र् दि ] राष्ट्र (पा = ४)। अनुमु पू दि ] पापर अन्य निरुप हिनक पयु-विशेष शरम (दे १ ११)। अविट्रिक्षा १ स्त्री [दे] एक प्रकार का पूर्वा अवद्ध मुस्टिन्यून (दे १ ७) अवसि पू [दे] हार-छरर बरवाने वा ताना (R ? ) i अंबोच्या स्त्री [दे] चूनों को विक्लेपली स्त्री (दे१ ह मार)। र्मम पूं [ अस्मस् ] पानी जन (मा १२)। असु (भर) वृं [अन्मम्] पन्तर पाराण (पर्)। अमोर्[अस्मस्]पत्री बरः श्रन ["ज] समा (देश है)। इगास्की िंदर्भी दमनिया परिमयी (म ११)।

निर्दि [निधि] महु (या (२)।

स्द्र र दिह्य कमन पर्मा कुमेमोक्सर जननिक्षितो, विव्यविमाणस्यक्षक्रासिक्षिते (अप ६ टी) । व्यमोदि प्रक्रिममोदि] समुद्र (कुद्र २७१)। कौस पूर्विस र भाग प्रवयम और दक्तरा (पार्थ) । २ मेच, विकास (विशे) । ३. पर्वाय मर्गक्रुए (विने)। र्ञस पुंबिशी विषयान कर्मे सन्तानीक्त कर्म 'भंस इति संतकरमा भक्ष ( (करम ६ ह)। दर वि विरो भागीबार (छन् १३ २२)। र्थस }पुञ्जिस]कल्च क्वा(ग्राया क्रोसक्का}र र तेषु)। र्थिस केते अस ≈ शस् । र्खसिरणी [काकि] १ कोल, कोला(उस पू ६८)। २ वार, नोक (ठा ८)। व्यक्तिवास्ती [वर्षिका] मान, विस्ता (बृह वंसिया स्वी [अर्रिका] १ वनाधीर का रोन (भग १६,३)। २ नास्त्रिकाका एक रोग (निष् १)। १ कुनसी प्रोहा (निष् १)। भंस र् [भंदा] किरण (तक्षम १) । मास्ति र्दं ["माडिन्] दूर्न सूरव (प्रशतः १)। र्जस् देवो अंसुव = प्रंतुक (४व ६ ४ ) । मंसुव [बंद्य] किरण । सन वंद कि मिन**ो ।** किरहासना। २ दू सूर्य (प्रतक्षेद्र)। व्यंत न [बस्] बाँचु, वेष-अतः। संतः वंतः वि [ सन् ] सन्दर्शना (प्रस्कृश्य) । भंस १ म [अभ] योगू नेत्र-सत्त (हे १ असिय रिशेष्ट्रमा)। अमेसुय न [अरिह्यक] १ वस्त कपहा (से १, २)। २ वाधिक वस्त्र (इह २)। ३ पोठाक वेश (कप्प) । असारम केनो धरसोरम (पि ७४ ११२, 3 8)1 भेड् पुरु [ओड्स्] का भड़तं व वाहियो नो निरह्मा छैल जनस्यक्षेत् (वर्गीर (3Y)

अदि पुं [अंह] पत पंच (रणू)।

मान्ड केटो सार्यह (व्य ६६४)।

1)1

अस्त्राति [अस्ति] प्रणेत्कतः सन्तर्(ठा

**अन्द्रेशवक्रिम वि [दे] १ स्तेह रहित ।** त्रिसने रासी न भी हो वह (दे १ ६)। अक्पण विकिक्तस्पती १ क्पणीतः। २ प्रीपनखंका दकपून (से १४७)। अकेपिय वि [अकस्पित] १ कस्परक्रित २ ई मन्त्राम् महाबीर का बाठको क्लाबर (सन ११)। म क्रज केवो अक्ष्य≖ यक्क्ष्य (चव )। मरुप्य ) विजिङ्की १ कर्णसी<del>स</del> । भारता । २ व प्रस्तातमस्यात एक श्रेष हींप भीर प्रसर्गे **प्र**नेताला (ठा ४ २) । भक्रप ५ [सक्त्य] मनोग्य धानार रास्त्रोक विकि-गर्माचा से बाहर का प्राप्तरस (क्प्प) t का करण वि [का करण्य] सनावरणीय, शास्त्र निर्वित महार-मस्त्र भारि महास वस्तु - (वद १)। अकृष्यिव पूँ [अकृष्टिपक] निसको शास्त्र का पूर-पूर्ण बान न हो ऐसा दैल साबु (वव १)। ककिएम देवी अकृत्य - शक्या (इस १) । वस्म वि [ब्रह्म ] १ व्यक्ति। २ विवि एक साव (कुमा)। सक्तम ) त[सद्मीत् क] १इमी भक्तमसा∫ कासमाव (द्वार)।२.**व** मुक सिक्र जीव (प्राचा)। ३ इन्द्रियादि कर्मे चीहा (देशा मनि ववैदा) (वी २४)। भूमग भूमग वि [ मूमक] सक्तां मूनि में उत्पन्न होने पाता (जीव १)। भूमि भूमी स्पी [मूमि भूमी] विव मूमि में करा दुधी से ही यातस्वक बस्तुओं की प्राप्ति होते से इपि वमैयह कमें करते की बादरवत्ता नहीं है वह, भीय-मूमि (हा ३ ४)। भूमिय वि ["मूमिज] धवर्ग-मूमि से क्पन (ठा३१)। अवस्या म [अवस्थात् ] भवलक निका-रण (पुरा १६६)। सक्य वि[अक्टर] नहीं किया हुम्य (दुमा) । सुद्द वि ["सुला] बगळित मधिकित (प्रा ६)। स्थापि ["घर] ग्रहण्डल (नाट)। जरून वि [अरूत्य] १—२ करने के धनीरन या मरात्व । ३ व. मनुषित नाम । स्मरि

वि किरिम् । सक्तर को करनेतला (परम = ७१)। **मस्य्य** (मा) स्पर **वेदो** (बाट) । अकरण न [सक्स्य] १ नहीं करमा (क्त) र मेंद्रत 'कह सेवंति सकरतं पंक्यक्री वाक्रिय इंति' (वद ३)। सञ्जय विकिन्नयिको १ तारी कि चेत से पीदार पुषुकालग (भगद २)। अभिन पृष्टिसम् । १ पतिच्या (तुव ९, ६)। २ वि इच्छाचीत निकास (गुपा२ १) । जिल्लास स्त्री ["निजैंस] कर्म-नारा की वानिच्छा से बुतुसा बादि कहीं भी ध्वान करना (ठा४४) । **∤ [असम≰]** उत्तर **≒**को। भक्तमग ै । सर्वासनीय **र**णका करने व्य रामय कै भनोष्य (परवृद्द १ स्त्रामा ११)। लकासिय वि [अञ्चासिक] नियत (विश लकास दि[अच्छव] १ शरीरपीहत । २५ मुक्तारमा (ठा२ ६)। अकार **ट्रंकिफार] 'स' स्टार**, प्रथम स्वर मर्ग (मिरे ४५१)। अकारत पुं [अकारक] १ सबीव भीतन की मनिच्यास्य रोन (स्रामा ११६)। २ नि मकर्षा (सूचर १) । बाइ वि ["बादिन] मारमा को निम्मिन माननेनामा (तुम र मकासि य 💽 तिनेव-गुपक प्रमान प्रतार/ मकासि समाएं (दे १ )। अर्किषण विकित्रज्ञान] १ सा<u>र</u>ुपुरि मिद्धक (पद्धाइ २,३१)। २ वरीव निर्वत परित्र (पाम) । मन्द्रित [अष्टर] नहीं बोती हुई बनीन मिकिन्द्राय- (पदम १३ १४)। अफिटु नि [अक्रिप्ट] १ न्थेरापील, गमा-चीत भे**ण्या**मि तुलस **वर्**त चैयामे करवयस्य दिवाहेनु ! महाप्रदेश विशिक्तव रामेख सन्दिशमधेश" (परम XX X2)1

τ) ι

खबिरिय वि [अफिय] १ बानसी निस्त्रम ।

२ वस्तुस व्यापार से रहित (ठा ७)। ३

परलोक-विपयक किया को नहीं मलनेवामा

नास्तिक (एदि) । ।य वि ["रसम्] चान्पा

को निष्टिम माननेवाना, संबंध (मूर्घ रै

**अकिरिया स्त्री [अफ़िया ] १ किया** का

समाव (सम २१ २)। २ द्वष्ट क्रिया क्रायव भ्यापार (स्न ३ ३) । ३ नास्तिकता (ठा द) । ी बाद्व वि विविद्या परनोक-विषयक किया को सही माननेवासा शास्त्रिक (ठा४४)। अक्रीरिय देनी अक्रिरिय, 'जे केड मोगम्म बन्देरियामा चन्नेख दुहा बुवमारियन्ति (नूच 1 ( ) : अदुर्या स्त्री [अदुविका] वेत्रो अफुय । कार्डुआसम वि [अङ्गताभय] विसकी किसी सुरुद्ध समय न हो वह, निर्मय (भाषा)। आईउ वि [अकुण्ठ] पाने काय में निरूख (ग्दह) ६ अकुय वि [अकुच] कियत स्पर (निष् १)। स्वी अक्टबरा (रूप) । अस्त्रेष्य विशिष्ठोच्यी रम्य मुक्तर (पण्ड अस्य प्रवृद्धि सपराच मुनाक् (पङ्र)। अश्चेस देनो शक्कम ≠ मक्कर। काक्षेसार्थव वि [सक्षेशायमान] विक्नवा हुमा, 'दिक्तिरखदरण्योहियमकोमार्यदासम दमीरविभव्यामें (भीप)। अकार् [अर्क] १ सूर्व सूरम (सुर १ २२३) । २ सारुका पेड़ (प्रासु १६८) । ३ मुक्तुं, शेलाः 'वेस बनुप्रसरिते विदिमी चमलुद्रसंजीयो' (चयल १४)। सदल का एक सूम<sup>र</sup> (पद्म ११२)। "तूख न ["तूख] साव को र्ट्स (पम्ण t) । तिस पु ["तेसस्] विद्यावर वेश का एक धावा (पढम १,४६)। बोदीया स्त्री ["बान्दिका] वज्री-विरोप (क्एस १)। अकद् [दे] दूत संदेत-हारक (११६)। "आकारेको सक्द (गा**१३ मे** १४)। अध्यक्ष दि [सङ्ख] नहीं किया ग्या। पुरुष

वि [\*पूर्व] जो पहले कमी न किया गया ही

Aren v \ .

अर्खंड रेखी अस्ड (मार १३)। अर्थात वि [आकारत] १ वसवाप् के हाय इसका हुना(सामा १८)। २ वेटाहुमा ग्रन्त (भाषा) । ३ परान्त मश्रमूत (मूम १ १४)। ४ एक जातिका निजीव मायु (ठा ४, ६)। ५ म, ब्राह्मल उप्पंचन ( मय १ a))। दुक्तप्रवि [दुन्त्र]दुन्तसंस्का ष्ट्रमा(शूच११४)। अक्तं वि दि] वहा हुमा प्रदुष (दे १ ६)। अवन वि [अञ्चरत] प्रतिष्ट, प्रविश्वरित, मन्तिमन्त (मूम १ १ ४ **१**) । सर्बाद सक (आ + ऋग्यू ] रोना विकास (प्रामा) । बक्त अवस्थित (नुपा १७४) । श्रद्धद् (धप) देनी अक्तम = मा÷क्रम् ! व्यव्हेंबुह्न संक्र अव्यक्तिकण (संग)। **ভারবেপু (সাক্ষর) থবণ বিদা**ব বিয়া-कर रोगा ( पुर २ ११४ )। आ बोद वि वि । भाग करनेवाला, रखक (दे १ १४) । सद्देशकणय वि [आकृम्युक्त] स्तानकता (भूमा) । अक्टोदिय न [आफ्रन्टिन] विनात रोवन (से ४ ६४ पक्ष्म ११ ४)। अक्स सक मा + फम् ] १ बाहमण करना दवाताः २ परास्त्र करताः बद्धः व्यवसर्गतः (पि ४०१)। संद्रः श्रव्यक्तिचा (पर्याः ११)। अक्तम पूं [आक्रम] १ रवला चढ़ाईकरता। २ परामव (मान) । अक्सण न [आक्सम्य] १—२ अपर देवी (दे १४ ६६)। ३ परावन (विते १ ४१)। ४ वि बाक्सरा करनेवाला (से १ १)। **बाद्यमिल देखी लखेत** = मानान्त (काम १७२ मुक्त १२७)। **अञ्चलाखा स्त्री वि** है क्तान्त्रार, वनरवाती । २ इस्पत्त-सीस्त्री (दे१ ४०)। अकारी दि] नीए (दे १६)। अकास्त्री (अका) ब्रह्मी दूरी (इप १)। कहासी स्त्री [अहासी] बस्तर-अधीय एक शेवी (बीर)। खद्भिज दि [अक्टव] खरीको के धयोग्य (ठा

असिट्र वि [अक्रिप्ट] १ वनग्र-विता (भीव ३) । २ वाबारहित (मग ३ २) । अक्टिट्र वि [अक्टर] मविनिवित (मप १२)। डाइड के कि [अ*फि*स] क्रियार्टीश (विशे २२ ६)। आकट्ट वि [दे] सम्यासित समिष्ठित (वे t 2 ( S S अक्टुस एक गिम् ) पाना । प्रकृतक (ह ¥ 143) ( अक्टूबर विशिव्यक्त निष्यक मामाधीहर (इस्ट ३)। अक्टूर पुं [अकूर] बीडव्या के बाबा का ग्राम (रविम ४६) । अनकूर नि [अनुर] भूरतार्यहर बनानु (पन 316) I भवकंडा वेदा अविदा ! अवदेख्य वि [ एडाकिम् ] प्रकेता, एकाकी (বদ) ৷ शक्तीक पूर्विकाग नकरा (१११२)। सक्तेहण न [आकाहन] इस्ट्रा करना संबह करना (विशं)। अक्टोस न [अक्ट्रोरा] जिस दाम के व्यक्ति नज दीक में घटकी भागद या पर्वेतीय नदी अधि का छपत्रव हो वह 'बेर्स चसम्बन्नं वा इंडमिएड सहोतमदौर्म । बाबल्हिम्म घडोसं धव्यीवने सावए वर्छे (12 1) अस्तेस सक [ सा+सूत्र् ] मारौरा करना । मक्र अव्यक्तित (पुर १२ ४ )। बन्द्रोस र् [आन्द्रोरा ] क्टू वचन राह भर्खेना (सम 😮 ) । अकासम वि [आफोश्चर्क] बाहोरा करने गता (उत्त २)। अकोमजा स्थ्रे [आकाशना] श्रीमतान निर्मे-र्त्यना (सामा १ १६)। अक्रोसिम वि [ आक्रोशित ] क्टू दननों से विस्ति भर्मना सी नई हो बद्द (गुर ६ २१४)।

अक्टोड् वि [अक्टोघ] १ मल-कौबी (वे २)।

ठक्सार् [अस्] १ बीव मामा(ठा १)। २ शक्त का एक पत्र (ने १४ ६४) । ३

२ झोनरहित (बत २)।



निया हुमा (से ४ ११)।

काप्रदेश (निष् १)।

(मिरि ३१६) ।

क्रिस्टर्जत देखी अवस्था = मा + स्था ।

क्रिक्स कि सिशिक्स निवास के मैकि

।किस्तत्ति कि [आदिति] ध्याकुम । २

जिम पर टीका की गई हो बद्दा ३ माइट.

वींकाहुमा (सुर ३११४)। ४ सामर्थ्य से

प्रक्रियत्त न [अच्चेत्र] मर्मादित सेथ के बाहर

प्रक्रियामक [आा+चिप्] १ माक्षप

करना टीका करना बोपारीय करना । २

रोत्तना । ३ गॅगाना । ४ म्बादुल करना । ४

फॅक्ना। ६ स्वीकार करना 'मन्बिकड पूरि

मगार (अवर ४१)। हेइ अविस्थित

(निर १ १); 'तसी न जुत्तमिह कालम

अविकृषिते' (स २ १ पि १७७) । कर्में,

'सक्तिपद समे काली' (स २३) प्रामा)।

अक्सिय मह सामितिय विभाग करना। मिनवंदि (सिरि =३१)। अक्टित्स्वय न [आयुपत्र] म्याकुनका भव राष्ट्र (पराहर १)। अवस्थीय विकिधीय**े १ हास-पृत्य** सक-र्यात प्रमूर (कप्प) । २ परिपूर्ण, संपूर्ण (दुमा) । सहायसिय वि [ महानसिक] दिसका निम्तीक बजीए महानमी रान्डि प्राप्त हुई हा बह (यलह २ १) सहायसा स्त्री ["सहानसा] यह पर्युत माणिक राजि जिमन बोड़ा भी भिदाघ दूमर मैक्टों कोगों नो वानत्-कृति खिसाने पर मी तक्क कम न

अवस्तुध वि [अञ्जत] यत्रीण दुरि-शूम्य 'मश्तुपायारवरिना' (पडि) । अवस्तृतिक वि [अद्यण्डित] संपूर्ण, प्रकार बुनिरहित 'मन्त्रुनियो पन्त्रुहियो दिवरेनोवि सवानपुरुवज्ञा' (मृपा१११) । अष्युण्य वि [अञ्चला] यो टूटा हुना न हो नविच्छिम (बृद्ध १) ।

हो जबत्र भितास सालेवाला स्वयं वर्गन

माय (पर २७ )। महास्य वि [महास्य]

जिनमें बोडी जगह में भी बहुत सीवों का

ममावेश हो तके ऐसी धारान मारिमच शक्ति

से पुनः (गम्बद्धः २)।

अक्सूइ वि [असूद्र] १ मेग्रेर, मनुष्त (बन १)। २ बवास, करुए (वंचान)। व उदार (पंचा ७)। ४ मूक्स बुद्धिवासा (वर्गे२)। अक्लूद्र श [असीट्रय] सूत्रताका मनाव (छप १११)। खबस्तुपुरी स्त्री [असुपुरी] ननरी-निरोप (एमा२)। अवस्तुक्रममाप्र वि (अञ्च, यमान) जो धोय को प्राप्त न होता हो (धन पू ६२)। अवस्युभिय देशो अवस्युद्धिय (एवि ४६)।

सम्मृद्धिम वि [अध्नुमित] क्षोमर्पहत ग्रञ्जन (सर्ग)। अक्सूम सि [अञ्जूम] मन्दून परिपूर्ण भामश्रदत्याद्वरशं संपार्यतेशा सम्बग्धनूर्णं (ठा ७२६ दौ) । अक्**लज देनो अक्ला** ⇒ मा + स्या । अक्लेक प्रजिन्हेपी सीमता बन्धी (मूना **१२५**) 1 अवसेव ( [आचेप] १ प्रारुपंत कोष कर नाना (पलहर १)। २ सामध्यं धर्यकी संगति के सिए अनुन्त अर्थ को बतवाना (सप १२) । १ भार्यका पूर्वपञ्च (सग २१ अर्म्बंडिय वि [अश्वण्डत] नहीं टूटा हुमा मिने १४१६) । ४ उपति 'दक्षेण क्लक्क्षेत्रे

धक्रेयम पूं [आध्यक] १ जीवकर नाने बाला प्राकर्षक । २ समर्थक पद धर्बसेगति के लिए धनुष्ट धर्व को बक्तानेवासा राज्य (उन १११)। ३ शामिष्यकारक (उनर १०८)। अक्लेबगी स्त्री [आइ/पत्रा] योतायों के मन को भाकर्पेश करनेवाली कथा (धीप) । अस्त्रेषि वि आसेषिम् । यावर्षेण करते-वाला की वकर मानेवाला (प्रमहृ १ ६)। अस्ताह सरु [ कृप् ] स्वान में समकार को खायना बाहर करना। झल्लोहरू (हे४ १८०)। अश्योद्ध नद्र [ भा + स्पोटय ] बोहा वा एक बार भटनता। याचौडिजा। वह अस्पोर्टन (रम ४) ।

बङ्ग्सीगी मने प्यत्ती' (जनर ४०)।

अक्स'ह र्षु[असाट] १ सबसर वा देह । २ न सत्तरोर बुधावा फल (पारत १७: मातु)। रै सबहुन को सी जानी मुरास साहि की जैन (गर रहा) ।

खक्तोड पुं [आस्फोट] प्रतिसेखन की क्या विशेष (पव ३)। अक्लोडिय कि फिटी लीवा हुआ। बाहर निकला हुमा (श्राष्ट्रम) (कुमा) १ अवस्त्रोम सम्बद्धाः विकास क्षेत्र का समाव अक्लोइ ∫ (ग्रायार ६)। २ महुबंश के सर्वा सन्बर्ज्याच्याका एक पूत्र वाभगवान् मेनि

नाय के पास दीला लेकर राष्ट्र अस पर मोक्ष मया वा (चंत १ ७) । ३ त. 'मन्तक्रहराा' मूत्र काएक सध्यमन (सैंच १७)। ४ वि शीमरहित भवश स्पर (पगृह २ १ हमा)। अवन्बोह्जिज वि [अक्रोमणोय] वा युक्त म दिया का सके (त्या ११४)। अक्लाहिणी स्वी [अक्षीहिकी] एक वर्ध सेना जिसमें २१६७ हासी २१६७ रज ६१६१ काड़े भीर १ ८३४ परस इति हैं (पदम ६६ ७३१)। अम्पेष्ट वि [अक्षण्ड ] परिपूर्ण, सएउरहित (पीप) । मतंद्रस र् [आलण्डक] स्त्र (परम ४६

परिपूर्ण (वंचा १०)। अरुपेय वि दि ]स्वस्य निर्मेना भाषा सार्थ । बारिति । हरिति पुरी शक्यपत्ने बनातु दर्वि (सूपा ७४)। भन्यच्य वि [असाय] यो वाले यावक न हो (स्वादा ११६)। अन्यस न अञ्चात्र राजिय-धर्म के विकट बुतुम 'यंपर विकायनियो, धहर मनतं करेड को इमो' (वस्म द टी) :

अम्पम देवो अवस्थम (बूमा) । अलारय पु 👣 ग्रुप्य-विरोग एक प्रकार का दान (शिष्ट १६७)। अर्थाउप रहा अस्त्रहिय = मलनिव (दुमा)।

अस्पारिम वि भिग्नाची कार्र के बंधोग्य यमध्यः 'बूपोर् थार्थनि यपारिमे सानित' (कुमा) ।

वन्तु स्विके निर्दीय ग्रीर को वेन गापु तीम न्यारनावार्य में रवने हैं (मा १)। ४ निर्मा को पुरी कोत (विश्व १४%)। ४ बीमर का पाना (वाग्य १३)। ६ विश्वीवर कोतु का कुछ ती का एक मान (अप्यु स्व)। १३१७ (ध्यु १)। १ न इनिय (तिर्फ १३)। वास्त्र मान (विश्वीवर १४)। १४ न इनिय (तिर्फ १३)। वस्त्र मान विश्वीवर प्रवास १६)। पाइय न द्वारीयों (शासा १६)। ४६)। पाइय न विश्ववर निर्माण १९३०। १६)। पाइय न विश्ववर प्रदेश को पाएगों प्राप्तार करियालेश प्रदेश को

चन्द्रनक समुद्र में होतेबाता एक हीत्रिय

बत्त म [पात्र] पूत्रा का पात्र थी तोषां । गर्द्वमाराव्यक्षी पर विदे स्वतान्यक्षी (मृत्रा देवर) । बाव्य म [बत्त्वय] म्हण की नामा (१२ ६९) । पात्र मूं [पात्र] मैद्यांचर कर के प्रकल्प कैन्स कृति (शित १३ ) । बुत्तानाक्षा स्था [पाद्रमा (शित १) । बुत्तानाक्षा स्था [पाद्रमा व्या क्या क्या । सहस्र (मा) । सहस्र की सहस्रा व्या क्या । सहस्र

रश्ची मास्रा करमना (परम ६६ ६१)।

हवा स्त्री [क्या] खान ही मना (रे)।

(नता)।
अस्पार्थिय पता अस्पार्थियां (आहर्ष )।
अस्पार्थियां पता अस्पार्थियां (आहर्ष )।
अस्पार्थियां विस्तरण्डी १ नेतृष्युं । २
अस्पार्थियः १ विस्तरण्डी पत्री पुत्रसी ( कुर्म १ व्याप्तरण्डी स्तर्याः १ विस्तरण्डी १ तृष्युं ।
अस्पार्थियः १ विस्तरण्डी १ तृष्युं ।
अस्पार्थियः १ विस्तरण्डी १ तृष्युं ।
अस्पार्थियः १ विष्तरण्डी १ तृष्युं ।
अस्पार्थियः १ १३। २ वर्षास्त्रियः
निर्मार्थं (वर्षः १ )।
अस्पार्थियः १ वर्षास्त्रियः ।
अस्पार्थियः १ वर्षास्त्रियः ।
अस्पार्थियः ।

 स्रक्तरणिया को [क] क्रिप्तेज सैक्कत (पास)। लक्कस कि [सङ्गम] १ सत्तपर्व (गुन्त-१७)। १ स्पुष्त प्रमुख्य (ता १ को। जक्कस कि [अस्ति तो १ कार्यप्रित क्षा कृष्य (क्रुप्त २ केश)। २ स्वतिकत संपूर्ण (क्रुप्त १ १११)। १ ते व स्वत्यप्त वाकस

२ शाम संस्था काम (देश १६)।

(पूरा १२६)।

पार नि [भार] निर्मेर पापरण्यासा (तर १)।

अवस्य नि [अक्षय] रे स्व ना प्रवास (दर १)।

श्रवस्य नि [अक्षय] रे स्व ना प्रवास (दर १)।

रिमेर्स का (तर १)।

निर्मेर कुर [मिलिये] एक प्रवार की स्वास्था (यह २४१)। उद्या हिं।

[युनीया] विशास कुरू नृतीया (यहने)।

अक्लार प्रकाश अक्षरी १ फतर, वर्ष (मूपा

६३३)। र जान चेतना नामरद ग्रल्य

सीवेंच सामार तो य वेक्सातामां (स्मिं १८६१)। ६ कि धाँनमार, निम्म (स्मिं १८५१)। दि कु [म्म्म] निम्म (धाँम १८११)। पुद्धिया स्मी [पुद्धिका] स्मिन सिदेश (नव १६)। समासा व [मामासा] १ दमार्थी का स्मृद्ध 1. मुक्तमान का एक भेर (काम १ ७)। अक्तमाय वि [म्मे] १ स्मार्थीन हुए। २ त. समार्थित हुनी १ स्मार्थीन हुन्य १६)। अक्तमायिक वि [मिं] १ स्मिन्द्रा विरुद्ध १ स्मार्थीक वि [मिं] १ स्मार्थीक वि १ स्थारीक स्मार्थीक वि [मार्थीका] १ स्थारीका विस्तास (हुना)। २ का निगान हो बद्ध विस्तास (हुना)। २ का निगान हो बद्ध

सारित (सार)।
अस्तरमाया १६ जि. किंग (दे १ ६६)।
अस्तरमाया १६ जि. कंगमी वरून जीतना।
वर्ष अस्तित (व्या को ६)। वर्ष अस्तित (यूर १६ १६६३)। इर अस्तित अस्ति अस्ति १६६४)। इर अस्ति अस्ति अस्ति १६६४)। वर्ष १८३)। दे अस्ति (वर्ष न्त रशर )। अनुसाद मि [ आस्पादिम् ] कह्नेनतः, उत्तरेणक 'प्रवासनवाद' (छुना १ १४) मिता १ १)। अनुसाद म [आस्पादिक] स्थितः, स्थित

वापक एक (भिने)।
श्रमकाइय नि [श्रमित है । साथ प्रमाद
श्रमकाइय नि [श्रमित है । साथ प्रमाद
ग्रमका पर्य ने प्रमित्रमक्तारका पर्योग्रामप्रपत्ना के विकित सम्बाद्यग्रीएए स्मार्ग्
प्रमावेगरीए (गर्म्म १ )
श्रमकाइया स्मी [श्राक्यां मान १ )।
श्रमकाइया नि [श्रम्या मान १ )।
श्रमकाइया नि [श्रम्या मान १ )।
श्रमकाइया नि [श्रम्या मान १ )।
श्रमकाइया ई [श्राक्यां में पर

अक्सात वि [आक्षमात कर्तका (प्रेप ११) अक्सात (प्रेप ११) अक्सात वि [आक्षमाक में क्यो भी एक जाति (प्र्म ११) अक्सात वि ११ [आक्षमात वि ११] अक्सात वि ११ [आक्षमात वि ११] अक्सात वि ११ वि

अक्काय न [अस्ताद] हाये की जारहे के निर्मा जना बड़ा वहा (जाय) अस्ताया को [आस्ताया] एक ब्राहर (जाय) अस्ताया को [आस्ताया] एक ब्रहार में देन दीमा महत्त्वया कुई कहारे में देन दीमा महत्त्वया कुई कहारे में देन दीमा महत्त्वया के देन के दे के देन क

भरासम्बद्धाः (मार्थ्याः) प्राप्तास्य र प्र (मार्थः)। अक्तिम्बरः न [सरपम्परः] प्राणकः कोरः (रिपारः १)। धक्तिज्ञातंत्र देशो अक्ता = मा + स्या । अविकास वि [आदिस] सब सरह से प्रेरित (मिरि ३१६) १ अक्रियत्त वि [आसिप्त] १ म्याहुम । २ जिस पर टीका की गई हो वह । १ माइट, व्यक्ति ह्या (मुर ३११४)। ४ सामर्थ्य से लिया हुम्म (से ४ ११)। खिक्तच न [असेत्र] मर्मादित क्षेत्र ने बाहर

का प्रदेश (निष्कृ १)। अविकार सक िया + शिप् ] १ मालेप करना टीका करना दीपारीप करना । २ शोकना। ३ गेंबाना। ४ व्याकुत वरना। ४ फॅक्ता । ६ स्वीकार करता, धानकवह पूरि सगार (स्वर ४१)। हेड्ड अविस्विधिः (निर ११)। 'ठमी न मूत्तमिह कालम्

क्रक्सिम्बर्ध (स १ श प्र १७७)। कर्म. 'बक्तिज्याद य में काणी' (सं २३ प्रामा)। अविस्तय नक जिल्लाभिष् ] पाक्षेश करना। मक्तिवंदि (सिरि =३१)। अक्टियम् व शिक्षेपमी स्मानुसता वद-राहर (परह १ ६)।

शक्तीत्र वि [अञ्चीत] १ हास-सूम्य धर्म-र्यात पन्न (कप)। २ परिपूर्ण, संपूर्ण (कृपा) । महाणसिय वि विदानसिकी जिनकी निम्नोक ध्रेतील महानसी शकि प्राप्त हुई हो बहु (पट्डू २१) सहाणसी स्त्री [स**्**तिसा] वह घ**र्**मुत आनिक शक्ति जिसने भोड़ा भी निकास दूसरे सेव में सोसी को माबक्-पृति खिलाने पर मी तबतक कम न हो। अन्तरक मिनाम समितासा स्वयं स्थे स नाव (पत्र २०)। महास्त्र वि "महास्य] जिल्ले थोड़ी जपहुर्ने भी बहुत सीवा का मर्मावरा हो सके ऐसी बत्दुन मानिक शक्ति से प्रक (नग्झ २)।

अवस्तुम वि[सद्यत] क्लीरत दुरि-पूर्य 'भ्रन्तुपानारपरिता' (पडि) । अस्युद्धिभ वि [अलिविश्व] संपूर्ण धारान्द्र

तुरिरहित "मस्त्रुहिमी पस्त्रुहिमी धिनानीति त्रवानदुरदम्यो (मुपा११६) ।

असमुण्य वि [असुण्य] बी टून हुण न हो अविध्यम (बहु १)।

शक्सूद वि [अञ्चद्र] १ मेग्रेर, पनुण्य (क्ल १)। २ वमानु, कक्स (तंबार)। १ उदार (पंचा ७)। ४ सूतम बुद्धिवामा (वर्ग २)।

शक्तहर [असीट्रप] सुरताका प्रभाव (उप १११)। **छक्स्युप्**री न्त्री [अस्पुरी] अपरी-विशेष (एमा२)। अवज्ञवभगाय वि [अध्य प्रमान] वो स्रोम

को प्राप्त न होता हो (सरधु६२)। अक्स्मिय देशी अक्स्मुद्धिय (एवि ४६) । अक्सुइस वि [अधुभित] नोमर्पहत धसुम्ब (श्रप्त) । अवस्तुय मि [अञ्जूष] पश्चृत, परिपूर्ण 'भायगुदलाहुरग्रं संपार्वतेस सम्ममस्पूर्ण

(उप ७२० टी) । अक्सअ देवी अक्सा = मा + स्या । अक्स्प्रेव पू [अ+देप] धीम्बा बन्धी (मुना १२६) ।

क्षमसेव पुक्ति सेपी १ भाक्यंस कीव कर लामा (परहर १९)। २ सामर्थ्य सर्पकी संबंधि के लिए प्युक्त पर्व को बदलाना (सर १ २)। १ मार्चना पूर्वपञ्च (अन २ १ विशे १४६६) । ४ जन्तिः 'दहवेछ फसक्केव

सदप्पर्तनो भने पवत्रो' (सन्दर ४a) । अक्लोबग प्रशिचपकी १ बॉबकर नाने-बासा धाकर्षक । २ समर्थक पद, धर्पसंबत्ति के मिए पनुष्क पर्य को अनुनानेशासा राज्य (बा १११)। १ सामिष्यकारक (सन्द १०६)। बाक्दोबजी स्त्री [आचोपणा] बीतायों के मत को बाकर्पेण करनेवासी कवा (बीप) । अक्सवि वि [आसेपिम्] बाक्यंण करने-

बामा, श्रीवकर मानवाला (पराह १ व) । धारताह सक [ कुप्] म्यान से दनकार नी बीयना बाह्र करना । धल्लोहरू (हेट १८७) । अ≉लोड सक[मा+स्फोटम्] पांदा सा

एक बार मध्यना। सन्तीतिका। बक्र अस्सोद्धन (रम ४) ।

अस्तर ह पूँ[अभीर] १ मनसर का प्रदान न, सक्योर कृत का कर (परण १७ नए)। वै सबदुन की बी चलते मुक्ती धादि की बेट (वद १ टी)।

अक्सोड र्षु [आस्फोट] प्रतिसेखन की क्रिया-विशेष (पद २)। अक्सोडिय वि [६४] बीवा हुमा बाहर

निकसा हुमा (बार्व) (कुमा) ।

अवस्त्रोम } पुं [अकाभ] १ बाम का जनलोइ ∫ (एायार ह)। २ यदुवंश के राजा सन्बरुष्टिए का एक पुत्र जो भगवान् नेमि नाय के पास क्षेत्रा लेकर शत्रु क्य पर मोख यया वा (यंत १ ७)। ३ न. 'यन्तक्रारा' मुक्का एक मध्ययन (भव १७)। ४ वि क्षीमरहित सचल स्चिर (परह २ ४३ हुना)। अक्लोइणिज्ञ वि [अक्षोभणोय] वो शुरूप न किया कासके (स्पा ११४)।

अक्लाहिणी ली [अस्टेहिजी] एक वड़ी सेना जिसमें २१८७ हाकी २१८७ रण ६४६१ जोड़े और १ १६४ विस्त होते 🕻 (परम ११, ७ ११)।

अन्बंद वि [अक्रण्ड] पीपूर्ण, चरव्यद्वि (मीप) । असम्बद्ध र्षु [आसम्बद्ध] इन्द्र (पटम ४६

44) I असंदिय वि [अस्तिवेडत] नहीं द्वरा हथा

परिपूर्ण (पंचा १०)। अरुपिण वि [ व् ] स्वच्छ निर्मेतः शायव ताई। वार्रित हर्नित पूरी सबलाई रूपल्

ववि (सूपा ७४)। सराज्ञ वि [असाय] को चले नायक नही

(स्त्रामा ११६)। अस्तर न [असात्र] शक्तिमन्त्रं के विस्त्र. पुतुम 'संपद् विकायनियो,

भहर यससं करेड कोइ इमी'

(थम्य दटी)।

अन्यम देना अक्त्यम (दुवा) । असरप पू [क] ग्रुप-किरोप एक प्रशार का षाम (निष्ट १६७) ।

(दुमा) ।

अमृत्तित्र दश्रो अक्ष्महिय = यन्त्रपित (कुमा) ।

भरतदिम वि [भरतद्य] वाने के प्रयोग्ध यमाय 'बूगहे यार्शत सन्ताहमे गार्शत'

असाय-जगीय

न विस्नी बीटा वनान (पास) । करिस विकित्व र सर्व सकत परिपूर्ण (कुमा) । २ बान वर्णक द्वर्ती से पूर्वा 'व्यक्तिने धरिक्वे धर्मण्यवारी' (तुम १ ७) न **असुद्ध वि [वे] पन्**द (पनि) । अस्टिम नि [सहस्रित] प्रकृ परिपृशे

15

(<del>द</del>्रमा) । अन्दिक देशो शक्तुडिख (गुमा) । भक्तरण्य वि [स्रक्षेत्रा] भनुतनः प्रतिपुत्र (पूम ११)।

असाह देवी अक्सोड+प्रास्त्रोट (पर २ ા ( ક્રિ भकोहा भी [भद्रामा] विचा-विरोप (प्रम v (40): व्यस पू [क्षरा] १ दुख पेड़ा। २ पकत पहाड (से १४१)) 'जबापमञ्जलहर्वाडेब' (क्रप्प)। भगद्रसमे [भगति] त्नीच वनि नरक या पर्यु-वौति मंचलम (ठा२२)। ३ निक्पाम (यमु ११)।

अर ठिंम न [अप्ररिषम] १ क<del>रनी क्य</del> नेता ( बहरे) । २ फन की फॉक टुक्क़ा (निह 24) ( बर्गाहरोह नि [दे] बीक्लोब्सच क्लानी वे कमत्त बना हुमा (दे १ ४ )। बर्गक्यम वि [बाक्यक्यक] गरी कुम्लाने-दाना (नुस २ ३)। कार्यक्षि [अग्रस्य] १ करपीहतः २ दृश्यी निर्देश्य वैत सामु 'पार्च करम' सनुस्त्रमाक्षे एम माई पर्यंदे विद्यादिए (प्राचा) । धर्मपण पू [असम्बस] इप नाम सी सरी सी

एक वानि निम्मति वंदवंत्रोतु दुने वासः। धर्मवर्षे (दब २) । क्षगद्य दे दि अवट] कृप दनाय (पुर ११ ध पर)। तड नि वटी इनास ना रिनाय (विदे)। इत्त पूं [\*दृश्च] इस वाम ना एक राज्युमार (घरा) । वृद्दुर पू ["बर्दुर] दुए ना मेहरू सत्पन्न बहु बहुत्व को बराना वर बंधह बाहर न गमा हो (खाना १ <) । अगड पू [अवट] दूप ने नाम प्रमुखें के सम नीते के लिए जो नध बनामा जाता है सह

(बदर १)।

करामि पूँ [क्रमि] मान (जी ६)। काम पू िकायी समित के और (सम ७१)। सह पुं [मुला] देन देवता (पापू)। सगजिञ्ज वि [अगजित] सवपण्रित सप माणित (ना र ४) पत्रम ११७ १४)। भगविस्रत वि [अगण्डमान] जो मूलने में न भवाही क्रिकी समृति न नी बादी हो।

भगिकारमंत्री गामे विका' (प्रामू ६६) । १५ जिनस्ति की रदसनाम अगरिषय का एक ऋषि । २ क्य-विशेष (देवं १६६:धनु)। १ एक तास महासी महामही में १४ वो महामह (ठा २, ६)। ध्यम्बर वि [ध्यनण्य] १ विश्वची विक्ती न हो सके वह (सर ७२८ टी)। अगस नि [भवण्ये] नहीं मुनने बातक शायव्य (मनि) 1 भगम 🙎 [अन्तम] १ दुस वेद 'दुनाव नामना क्लबा का (१ म) मना निष्मा तक' (इसनि १३१)। २ विस्वावर, नक्षेत्र असने

वाना (महानि ४)। **मगम न [मगम] मारास,** गगन (बन २ ₹)ı अस्तमिय वि [जगिमक] वह शहर विसर्वे एक सबूठ पाठ न हो का जिसमें पाना वर्षेण पद्य हो "नाहार संपंतिन चनु कातिमनुर्व" (मिने ४४६)। जगन्म विकासम्य] १ वले के धर्मन्त्र । २ स्त्री बौक्ते के समोत्य मसिनी पर स्त्री मादि (मीक सुर १२ १२)। सामि दि [ गामिन् ] पर ली को बोक्नेनावा, पार

भगम न [भगद्] मीपन स्वाई (पुण YY ) [ मगव र् [के] बेला सनव (दे १६) : भगर दुन [अगरु] मुक्तिम न ह-निरोप (पर्वा अगरक नि [बागरक] दुनिवक स्पष्टः 'प्रन-रताय यसम्बद्धार 'मानाए नासेइ (गीन) १ **जगर केनी ज**गर (**इ**मा) ।

कारिक (परह १२)।

(भउड़) । व्यारुख्यु वि [अगुरुख्यु] को भाग्रे भी व हो भीरहचकाभी न हो बहा बसे मानात.

परमासु वर्गेस् (विशे) । जाम व "सम्मन्" कर्म-विरोग जिससे जीवों का शरीर न मारी न हत्तका होता है (काम १४०)। सगळवत्त पू [अगडवृत्त ] एक चीवन-पूत्र (महा)। अगस्य बेको सगर (धीप) । अगर्य पुरि] काराधिक एक ऐने संज्ञास के लोग भी माने भी बोपड़ी में ही बाले-पीने का काम करते हैं (दे १ ३१)।

बरगहिस नि [अमहिच] जो पुरानि से पानिष्ट न हो संगानन (दग १६७ टी)। राय प्रीराजी एक राजा जो वस्टव में पासल न होने पर भी पालबनाजा के साकता है बनावटी पावल बनाबा(धी२१)। भगाइ वि [अन्यथ] समाहम्बुट स्ट्रा 'मगावपरारोपु वि माविकागा' (गुम ११३)। अग्रामिय नि [अम्रामिक] ग्रामरवित 'धना-मिनाए सम्बीए (धीप)। थनार पुं[अकार] भ शहर (विदेशक्र)।

अगार व [अगार] १ पृष्ट, चर (सम १७)। ९ प्रसम्ब गृही संसाध (स्त १)। स्म रि [स्प] पृष्टी (राषा)। धस्म 🕏 िमम ] नृष्टि-वर्ग न्यावक-वर्ग (सीप) । अगारगः वि[सङ्गरङ] यनर्था (सूमित ३)। भगारि वि [ अगारिम् ] कृहस्त, गृही (सूत्र ₹ €) 1 ध्यगारी स्त्री [द्यगारिणी] बृहस्त्व स्त्री (बर ¥) I भाषस्य देशो समास्य (स. २)। भगाइ नि [अगाम] पहरा नगौर (गाम)। व्यगिषि केवो व्यम्मि (क्षेत्रि १२)। अभिसा स्मै [अग्सामि] ग्र.बच्चा, वलक् (दा १, १)।

अतिस्थ की [के] सनका शियरकार (के रे-₹७)∣ अन्त्रिय नि [अस्तीत ] सास्त्री ना पूर्य सर्ल विसरो न हो वैसा (पैन साबु) (का ११ ध) ।

धर्मीयस्य ति [धर्मीतार्थे] क्यर देनो ( वन | अगुम्मद्र रि दि] पुत बात नो प्रवास्ति श्लेशना (दे १४१)। अगुत्र रंगी अरण (वि २६४)। अगुण दि [अगुण] १ गुएर्गन निर्देश (एउइ)।२ वृं शत दूत्रत् (स्म १)। अगुणामी हेरी एगुगामी (पर २४) । **অনুসি নি [অনুদিন] দুড-ৰজিল বিদু ড** (128) 1 अगुरु १ वि [अगुरु] १ दश नहीं मी. अगुरंभ रे पोटी सर्व र पून. मुगन्य नाउ विदेश अपूर-बटका 'पूरेण वि बगुरको सिंदू बंबलेक' (बन्द काम २११)। १ देनो अगु*रुख*हु (नम ११ មឦកកក្តីទៀត () ំ अगुम देवो अगुरः नविक्तिमानुपूर्वन्यार् (निषु २)। लगान [अप्रय] प्रतर्ग (उत्त २ १५)। ज्ञमा **(त.दि) १** पिरायः । २ वर्णन (त्रीप झाग्राम [अम्र] १ यमे दामल अस्परदा भग (कृमा) । २ पूक्षमंग प्रते का भाग (निष् १)। १ परिमाछ 'घरवं नि वा गरि मान् विकारणहाँ (बाजूर)। ४वि प्रपान, भेह (नुसार४८) । ३ प्रथम परता (मार t)। बर्माय र् [निस्म्य] मेन्द्र का पर नाव (ने १४)। गामित वि ["गमिक] बद्दानी बारे बातेगास (म १४०)। ज रेगो व (दे ६ ४६) । जन्म [जन्मन] रेलो य (इस ०२ टी)। जाय ["जात] रेतो प (याचा) । जीहा न्यो [जिहा] बाब का बन्न-बाग । ताप, जी वि [पाः] बाद्य कृतिया राज्य (राज्य राज्य)। नाहम र् ['तापम] ऋतिनिधर का रूप (तुक रे)। वन[पिर्य]पूर्वर्ष (तित्र राः। "पिंड में "पिण्डी एक ब्रहार का कियान (बन्त) विवासि रि [दिसस्ति ] सरी द्राप्त वरनेशाम (यात १) बीच रि ["ब ऋ] समर्थ के ब चर्र ही प्रस्त्र ही क्या है या शिमी व्यक्ति ने वहा दर

मान ही काएल होता है। जैसे भाग कोरटक मादि वनस्पति (बरागु १० ठा ४१) । माण पूं भिषा पुरुष, श्रेष्ठ शिरोमित्। (दर ७२० टो) । महिसी स्त्री [महिपी] पर छनी(नुपा४६)। यदि ["ज्राँदेमापै बन्धम होते बाना । २ प्रै बक्राए । ३ वहा माई। ४ मी बड़ो मेरन (तार)। शाय पुं[ैसोक] युन्हिस्पान निद्धि-रोम (बा १२)। इस्य दुं [दिस्त] र शाचमा धप माताः ! (उदा) । २ हाच रू पायमध्यतः सगरा (म ४ १) । ३ घेन्सि (प्राप्त) । अग्गन [अम] १ प्रमृत बहु। २ उपराद (बारानि २८१)। भाषान [ माप] पनिहा-मध्य वा गीत (बैंच पर्व रू)। मादिसा देयो महिसी (उन्न १६ १)। भगा वि [अध्य] १ यह उनव (से ८ ४४)। २ प्रपान, मुख्य (उन १४)। अमामा च [अप्रतम्] मामने, धारे (नुमा)। भगोप रि [अग्रन्थ] १ पन्छितः २ पू वैन माधु (धौरा) । अगगरमेव 🛊 [दे] राष्ट्रपृति का बदमन (दे १ २०) । भगाठ न [भगेछ] १ तिवाद बन्द नान नी नवडी यासर (दस ४२)। २ 🛊 एक अहा-पर (गु× + )। वासव वृं ["वाराक] विमर्ने मनान दिया जाता है बद्द श्यान (माचा २१%)। यासाय 🛊 ["ब्रामार्] करो जगर दिया जाता है बढ़ बर (राय) । अमान रि [ वृ ] मीता भौता एकपता' (रिप) । अमाद्य स्मी [अगवा] धण्य हुस्सा(नाष)। अगाठिअ रि [अर न्ति] जो बाग्त में बार विद्या गया शे बर (ब्रुट ६ १ ) र अमारम र् [र] नदे ना पूर (रे १ २१)। अगाद र्ष [आयद] मण्डार समितिरेस (श्य रे रे रे प रेरा) । भगादन न [मगदन] १ ध्यन्त (नुर १२ ४६) । ३ मार्थ नेता (व ११ ए०) । मगाइन व (१ भयान) बनाए, बरण (3 1 12 4 11 15) भगार्गापारथे [दे] सेन्टरेन्टर स्टेस्स

के बाद दिए बाह्य राज संस्कृत दौर क्षत्र है

उरत्रदय में भवाया बाता रामन विमयो गुज चती भागा में "सम्पदली' करी हैं (गुग अन्मद्भि [आमहिन्] माण्टी हरी (मूप ₹ ₹**₹**) : अगगद्धित्र दि दि दि तिर्मित विधिवत । २ स्वीरत बबून विवाहमा (यह)। अग्गापा वि [अप्रगी] मुख्य प्रवान नायरः 'दिन्तप्रदेयारनियो संग्याणी सपरभगिय मध्यम्यं (बुर ६ १३८) । | अग्गारण न [बद्गारण] धमन बान्ति (धार क्षमाइ वि [अगाघ] बत्तप वजीठ मीय र्वाहणुम्य मापार्टा (गुर ४) । अग्गाहार पुं [अमापार] प्राप्न-रिटेन का नाम (मुत्ता १४१)। भमाहार पू [दे भगदार] उद जीविका (युग२१३)। भगि 🛊 [भग्नि] तरराज्ञाम-विदेव एक मार-स्थान (देशेन २३) । सेन चेन वि [ सन् ] मन्तिराता (प्राप्त १५) । हुन रेगो होत्त (उन २४,१६ मूल २४,१६) । अग्रि पूर्व [अग्रि] र याप वृद्ध (प्रापू २२) 'रम पूछ कावि मसी' (क्रि.६१)। २ इतिशा नराव वा अविद्यापत देश (डा २ १) । १ सोरान्तिक देव-विरेप (बारब) । आरिमा न्या ["सारिया] मान्त-वर्ग होन (ग्पृ) । उसी है [पुत्र] रेम्पन धन है त्व तैर्वेश्य का त्राम (सम १११)। वृद्यार र्षु ["बुमार] भारतांत्र देश की एक यस ला वर्ष (पग्र १) । क्य बु विश्व ] पूर्व और र्याग क बीच की लिए (सूर्ग te): जम र् [ यमम ] रा-तिन (ध्र) । आयर्ष [ध्रात] साम्य सम भीर का कुरीय कीयाँ बार्टी प्राप्ता राम का बाब (दप्र) । दूरि[थि] दण वें साहक (१४४३१)। हास १ डिमी का लिन (रि.१. १४६)। येमचीरनी (११४४-०) बाय की वर्षित की रोकतकारी एक शिर्म (चन्न १११)। ५ग.1 [रेन] १ चारान् रावश्य के नवश्योग रावत्र (१४) दे रच ईर्पनर देव (निष्)। १ इद्यक्तु

स्वामी का एक छिन्म (रूम) । दास प्रै िशानी सातवें बानुरेव के शिता का नाम (बाप र १६२)। देव वं दिव देन-क्रिय (दीव)। मृद् पुं [मृति] र मा-बानु महानीर का विनीय मणकर (कर्म)। २ भववान महाबीर का पूर्वीय प्रश्नास ब्रह्मान-जम्म का नाम (माचु) । साम्यत्र दृं["सात्रव] धनिस्तूमार देशों का उत्तर-विद्या का इन्द्र (ठा २,६) । माठी स्त्री ["मासी] एक स्त्राणी (दीप) । देस दु[विश्व] रेटन नाम का एक प्रतिक स्थित (संदि) । ३ म. शक नीव (राप) । वस प चिरमन् र चनुर्वती तिवि (त्रे) । दिस्स का बाइसर <u>मुद्</u>रते (वेर १) । बेसायम पू विश्यायनी १ समिनेक ऋषि का पीत (ग्रीकास २२६)। २ बाजिकेश-गोल में उत्पन्न (क्ला)। १ गोहा-श्रद्ध शाहक दिश्यर (का १४) । ४ दिन वा बाहमती मुद्रनी (बम ४१) । सम्बार प्री ["संस्कार] निधि-पूत्रक जनाता, बाह बेता : (बारम)। सन्प्रमास्ति [मप्रमा] क बात् बानुपुरम् की दीहा समय की पातकी का शान (तन) । सम्म पूर्िशर्मेन ो एक प्रनिक्र साम्बी बाह्यान (पांचा)। "सिंह प्र ["शिस्र] १ नानर बालुरेर था विना (नम ११२)। २ छीन्। मार देश का क्यिए क्तियारक (ठा२३)। भिद्र प्र ["सिंह] एक केन कुनि (का ८ ६): "सिंहा बारव दे ["क्षिमाचार व ] बांग-रिटम व निर्वाद्यया नमन करने की राक्ति काला नाप (पर ६ ) । सीद् रू ["सिंद] नाग ६ वन्द्र देश के तिनाबा शाम (इस र)। सम्ब 🖠 चित्र] ऐस्सा शंत्र के तीनरे बीर वा<sup>र</sup>गरे तीर्थर (तिच नम १८६)। होता न [ दात्र] र बाग्यापान, होन (विने १६४ )। ६ नुं क्ताप्र (पान ११ १) । दालपाइ ति [ दाप्रवादिन ] होत ने ही गार्न की प्राप्ति बालनेरानाः (तृष १ ७)। ६। तिय रि ["दाश्रिक] होन बरनेताना (नुग ० )।

पाइअसदमहण्यको श्रीगाल दे [दे] इससीप एक बाविका सुर नीट (देर रेव) । व वि मन्द (देर रेव) । व्यक्तिमाय पुँ दि । स्त्रमेल पुत्र कीट-विवेध (पइ)। अमित्र हि [आग्नेस] १ प्रीत-सम्बन्ध । २ दू सोकान्तिक देवों तो एक वादि (शामा १)। ६ व. नोत्र-विक्तेय यो गीतम बीव की शाका है (का ७)। अस्तिबाभ न [ आग्तयाम ] देव-विमान विरोद (सम १४)। अस्मित्रका वि अप्राद्यों सेने के भयोग्य (पडम 48 XX) 1 अस्मिम कि अभिम] १ प्रवम पहला (क्प्पू)। श्चेष्ठ प्रवास मुख्य (सुरा १)। अस्ति।यय वृं [आस्तेयक] इत नाने का एक राज्युन (क्ष्म ६६७)। अगितक देनो अगितक = भग्तिम (गुभ २ )। अस्मिक्षिय देनो अगिगम (वेचन २)। अस्मित प्रेमिको एक महाध्य (ठा२ 1) ( खरिग्रह हैं [अ मम] प्रधन्तीं (निरि ४ १)। अमाप देनी अगाय (हर ६४ )। अन्नरीक्यन दिनो वर काएक भाग (पत्रव 24 4Y) I अस्युबद्धानि दिशे अस्ति निवन (पर्)। इत्तर स (अमे ] मन्दे, पहुने (पिक) । सम रि विन् प्रिने का प्रत्ये का (धारम)। सार्ति ["सर] मनुषा पुलिका, नायक (भा२)। अगोई सी [भाग्तर्या] परिनद्दोल चीएल दूर्व रिखा (बेस रेक) i ज्ञागाणिय न [अमायशीय] रूपरापूर्व बार हर्वे जैन्द्रतम का दूचरा महाम् मान (सम**२६)**: आरहारी श्रेनी आरहाई (यान) । श्चामात्राय रेगो अमामिय (गुरि) ।

क्षारार्ग "पाम्तव] वर्ष न (नीगा) सम्बन्धी

स्रोगाध-भग्नाइस्बमान योत्र की बन्ध मोत्र की स्त्रका है (इन ७)। ४ शांत-कोसा दक्षियु-पूर्व विसा (वर्षि) । अस्मोदय न [अमोद्क] समुध्य देना क वृद्धि और इति (बम ७६) । क्षरद प्रक [शुक्र] विश्वकता शोकता चन कना। भग्वद्र (हू ४ १)। अरघ सर्वाक्षा प्राप्ती नुकता। संक्रांत्राचे कण (सम्मरा १४२)। ब्राच सके जिल्ही योग्य होता, सायक होना 'कर्न ए सम्बद्ध' (रामा १ व)। भग्य सक् जिम् ] १ दक्की धीमत ते वेचना । २ झादर करना सम्मान करना পৰিত্ত দুটা মাতিৰ বুন্সচি ভিট্ৰি! इस्स् न्यरम्मि । र्वतम्त्रं सी साहरू, परित्रं प्रश्विससए कर्ष (गुपा ११)। वड आधायमाज (ए।वा t () : कारम पूर्विमी १ एक देव विमान (देवेन्त्र १:२)।२ बुबा (एव १)। अरव पूं अर्थी १ मझनी की एक पाति (जीन ३)। २ पूना-सामग्री (ताबा १ १६)। ३ पूना में नतादि देना (कूमा)। ४ मूस्य मोन, नौमन (निचूर)। वस्त न [पात्र] पूत्रा का पाव (पाजह)। अग्य दि [अर्थ्य] १ दूना में दिया काता बनारि इध्य (रुप्)। २ कीमती बहुमूस्य (इत्य) । अरपन सक [पूर्] पूर्वत करना पूरा करना। माधरह (हे ४ ६८) । अन्यविव नि [पूर्य] १ मध हुमा संपूर्ण। र पूर्व दिवायका (पूर्वा १ ६ दुमा)। सरपंषय रि [अर्थित] पूजित तपुर नम्मानित (मे ११ १६ वडड)।

अल्पानक[भा+मा]न्दनाः नक्

बागामन भागायमात्र (ना १६१ गावा

१)। नगर भग्याद्ञमाय (पएए १)।

अन्याइ वि [आधायन्] नुवनेतारा 'नव-

बराउदारानित । बारियदाने । स्ट्रमु इस्ट्रि

भागाश-अवस्य करपाद्र वि [आधात्] मूंबनेवाला । स्री | रा (गा वद६)। कारवाक सक [पूर्] पूर्व करना पूरा करता । मानावद (हे ४ १५९) । अरमाह १५ दि । इन-विशेष मेंगामाग क्राधाहरा | विवश सटबीस (वे १ व पएस १)। अरमाण वि [दे] दुस संतुष् (दे १ १८)। क्षरभाय वि [आम्रात] सूंबा हुवा (पाम)। अग्रायमाण को सम्म = अर्थ । क्षम्यायमाण देनी खम्भा । अगिषय वि [राजित] विरातित सोमित (कुमा)। अरियय वि [अर्थित] १ वहुमूस्य कीमठी 'ग्रन्थियं नाम बहुमोस्सं (मिषु २) । २ पूजित (दे१ १०७ से २ २)। अन्यादय न [अवोदक] पूत्रा का बस (धीम ११८) । क्षय न [अय] १ पाप कुकर्म (कूमा)। २ वि शोषनीय शोक वा हेतु 'धर्व बम्हणुमार्व' (प्रयोद)। क्षमो देशो अही (माट)। अवस्त ग्रेन [सबसस् ] १ ग्रीब के शिवाय

बाकी इतिहमी कीर मन (कम्म ११)। २ ग्रांख को चोड़ गर्थी इन्तिय और मन से होने-वाला सामान्य कान (वे १६)। १ वि धीवा भन्तीन (कम्म ४) । देशया न [ब्रह्मेस] बाँख को खोड़ काठी बन्तियां और मनसे होने-बासा सामान्य बान (सन १६)। वृंसाजाबरया न [वर्रानावरण] सवसूर्यर्तन को रोक्ने-बाला कर्म (ठा १)। फ्रांस पू [स्पर्क] बंबकार, बंबेस (सामा १ १४) । अवस्तुस वि [अवाध्यय] यो मौब दे देवा म बासके (परह १ १)। अवस्तुत्स वि [अवशुख्य] निस्को देवने

का मन न चम्हता हो (हह १)। अचर वि अचर ] पूजिम्मावि रिवर पदार्थ

स्वापर (वंस) । अवश्व वि [अवश्व १ नियम स्वर (पाचा)। २ पुं बहुवंश के समा धनवसृत्यिः के एक पूत्र का नाम (श्रेत ६) । एक वक्षदेन का नाम (पचर १)। ४ पक्त, पहाइ (नजड

पाइजसदमहण्यमे १२)। ५ एक राजा, जिसने रामक्कर के हों गाई के शाब बैन दीशा शी मी (परम नध्४)। पुरन [पुर] बद्ध-द्वीप के पास का एक नगर (कव्य)। व्यान [शिस्मन्] इस्तप्रहेतिका को बध काख से ग्रुएने पर बो संक्रम सम्बद्धा बहु, श्रान्तिम संक्रमा (६४०) । भाग पू [भातृ] सनवात महादीर का नवनी मरापर (क्या)। काचक्ष पं [अचक्ष] स्क्रवी स्व पुरप (विचार 807) I शक्तन दि<sub>दि</sub> १ वर। २ वरका सिम्नता भागः। ६ वि कहा हुमा। ४ निप्तुर, निश्मः। इ. शीरस मूचा (दे१ इ.३) | अपकास्मी [अपका] प्रतिमा २ एक स्त्राणी (गाया २)। धार्चित वि (धार्चिन्त ) निक्रित विन्तारहित। अचित वि (अधिस्य) धनिवंत्रतीय जिसकी विन्ता भी न हो सके नह भरपुत (सहम १)।

अभिविधिका) विशिविश्वनीयी असर क्राचिंदणीञ्ज देशों (धनि २ १ महा)। क्षचित्र वि क्रिकिन्तित् । पार्कस्मक मसंभाषित (महा)। अभित्त वि [अभित्त] बीव-रहित क्लेतनः 'विश्वमंदित' वा एवं धर्म मनिय्ने विश्वीका'

(वस ४) ।

अभियंत १ वि वि] १ मन्दि, मन्नीतिकर अधियत्त 🕽 (मूर्य रे २) प्रणा २,६)। २ न मत्रीवि इ.प (मोच २६१)। शमिरञ्जनइ वेदो सहरजुवह (रे १ १८ ही)। का विशे वेको अपूरा (परम १७ १७)। अविरामा स्त्री [अविरामा] विक्सी विकृत (पद्धम ४२ १२)। अधिरेण देवो अहरण (प्राक्)।

सचेयव वि [अचेत्रम] चैतन्यधीत निर्मीव (फ्यहर २)। अचेल न [अचेल] १ वस्त्री का समाव । २

घरग-मूस्मक करत । १ और। वस्म (सम ४)। ४ वि वस्त्र-रहित सम**। १ की** खे बस्थ बाला। ६ शस्य बस्य बाला। ७ बुध्यित वक्त बाला सेवार 'तह बोब-बुध-कुरिवयनेते-

दिवि मएएए भनेतोति' (निते २६१)। परिसाद, परीसाद् वृ [ वरिषद, वरीयाद ]

बद्ध के बागाब से सबका जीतों, करूप या कृत्यित बस होने से उसे भरीन भाव से सहन करता (सम ४ भव ६ ६) । अभेक्षरा ) वि [अभेक्षक] १ वक्र-पहित अचेक्सय } नम्र । २ पटा-ह्टा वश्र वाला। ३ मितित वज्ञानासा। ४ धरुप वज्ञानासा। ४ तिर्दोप बस बाला: ६ सनियत स्प से बस बा उपभोन करनेवासा (ठा ६ ६)\* 'परिमुद्धनिएल-कुन्धियधोगानिय-मत्तमोयभौपेष्ट्रि'। मुणयो मुख्यारहिया चंद्रेष्ट्रि धवेशया हुंति

(विसे २५६६)। स्वयं स्व अर्थे देशना सत्प्रदक्ता। सम्बद्ध (सीप)। सब (दे १ ११ टी)। कवकु अविक्रीत (सूपा ७०)। क्राध्याणिका (एमा ११)। अब रूं [अर्च्य] १ तर (कात-मान) का एक

मेद (कम्प) । २ वि पूज्ब, पूजनीय (हे है १७७) । अर्थात म (अरमञ्जू विकासिका के प्रकार श्रंग मीय के मुक्त शामनः 'शक्नेवाएं च भीक्सो मरा। (पंचा १)।

**अर्बत वि [अस्यन्त] इर से ज्यारा प्रत्यविक** बहुठ (पुर १ २२)। यावर नि ["स्मावर] मनादि-काल से स्वावद-वाति में यहा हुआ (पाषम)। दुसमा की "दुष्पमा देशो दुस्समदुस्समा (परम १ ७२)। अवंतिम वि [आस्परितक] १ मण्यत मिक मिठिनियतः। २ किसका माराकशी म हो नह, शाक्त (सूम २,६)। अवस्य वि [अव्यक्त] पूजक (वैस्व १२)।

शबमास वि शिरपर्गेश्चे निरंदुरा, धनिवंतित (मेह्द ५७)। **शब**ण म [क्षचेंन] पूचा सम्मान (पुर १ ११ मत्त १२ छी)।

अषणा **स्पै [अर्थ**ना] पूजा (प्रभू ४७) । अविजया को [अर्थितिका] सकेंद्र, पूत्रा (स्वय

क्षवत्त वि[अत्यक्त] नहीं बोड़ा हुमा पर िल पुरुष्ठ (चप पुरुष) अवस्य वि [अस्यर्थ ] १ मतिशावित बहुत

धारगंधी देनो जारोई (मार्ग)।

(मणु २१४) ।

धरगेवीव देवी भगोत्रिय (तृष्टि) ।

ब्यम्गव नि [अग्रग्नेव] प्रतिन (बीरा) सम्बन्धी

अस्तय वि [आम्नेय] १ मन्नि-सम्बनी

धीन ना (प्रस्म १२ १२६) विने १६६ )।

२ व. सम्बन्धिय (तुर व, ४१) । ३ एक

नि [ दाप्रवादिल ] दोन वे ही स्वयं शी

प्राप्ति नाननेताना (नूम १७)। दोस्थिन

रि ["होतिक] होम नालेशना (नुरा ७ )।

सरिगञ दु[अग्निक] १ बमधीन नामक एक

नाम (माकू)। र अन्यक्र रीय, विसने को

पुष्य काय वह पुरुष्त ही इतन ही बाता है

(पितारे १ क्टिंग्र ४ व)।

अरवासक [भा+ प्रा] नूबना। वह

बन्धांभव अन्धावमाण (वा १६४, लन्ध

१)। कम्द्र भग्याद्श्वमाण (पट्छ २)।

अग्याइ वि [आप्रायित्] शूंबतेवला, 'टर-

मरपडक्रवाहरित ! बारिववाये ! सङ्गु हर्न्द्र

भग्यासम् वि [मामाव] नूंबा हुया (ब

(FDI 988) :

अन्धर्जनाय को धन्मा।

E+) 1

काम्पाइर वि [आभात्] मूचनवानी । सी रो (गा वद्दे)। सम्बाद सक [पूर्] पूर्वि करना पूरा करना । सम्बाहद (हे ४ १९८) । क्षरमाञ्च १ पू 👣 बूल-विशेष अनामार्ग बान्धाइस ) विवता सटबीस (३१० पएए १)। क्षाम्याज वि [दे] युत्त संतुष्ट (दे १ १०)। धरधाय वि [साद्यात] मुंबा हुमा (पाम) । अग्यायमाण केत्रो अग्य = अर्थे\_। क्षमधायमान रेको अग्या । व्यक्तिय वि [सक्रित] विराजित शोमित (हुमा) । श्रामिय नि मिर्चित । बहुसूस्य कीमती 'धरिवर्ज नाम बहुमोर्स्स (निष् २) । २ पूजित (दे१ ७ से २ २)। अग्बोद्य न [सर्घेद्रिक] पूत्राका यस (प्रपि ₹ ₹¤) 1 अभ न [अघ] १ पाप कुकर्म (दुमा)। २ वि शोषनीय, शोक वा हेतुः सर्व वस्हरामार्व (प्रमी ८)। **अभो भेडो महो** (गट) । अवस्यु पून [अवश्रम् ] १ माँच के विवास वाकी इतियो और मन (कम्म ११)। २ मांच को बोड़ वानी इन्द्रिय भीर मन से होने वाला सामान्य ज्ञात (वं १६) । ६ वि भीवा भव्यति (कम्म ४)। इसिय न विश्वेती

भ का सक (पराहु र १)। अवस्तुत्स वि [अवसुट्या] विसरी केले का मन न वाहरा हो (इह १)। कावर वि [अवर] पुविच्यावि स्थिर परावे, स्वार (र्थत)।

काबाज वि [अपबाज] १ तिबास स्विद्द (पाषा)। २ थूँ बहुबँग के राजा सम्बद्धित्व के एक पुत्र का नाग (संत व)। एक बलावेद का नाग (सव २ १)। ४ पक्त, प्लाक (सवड

१२)। ५ एक राजा, जिसने रामचन्द्र के हों? माई के साथ वैन रीक्षा भी भी (प्रचम ≈४,४)। पुर म ['पुर] च्छा-तीप के पास काएक नगर (कप्प)। प्यान [फिसम्] हस्तप्रहेतिका की बंध तास से प्राप्तने पर की संस्था शत्य हा बहु, मन्तिम संस्था (हक)। साय प्रशिक्षा की मनवाद महाबीर का नवनी क्लाबर (क्म्म) । सम्बद्ध पुं (अपस्त) ध्रवनी रत्र पुरप (निवार ४७२) । सप्तान दिरे १ थरः २ थरका शिक्सना भाग। १ वि कहा हुमा । ४ निस्तुर, निर्देग। प्रनीरस मूक्त (दे१ ५३) [ अचलास्त्री [अचला] पृथिषीः २ एक इन्द्राणी (सामा २)। অবিব নি [প্ৰবিদ্যা নিধিন্য বিদ্যানীয়ে। क्षचित वि [अधिनस्य] मनिवंबनीय जिसकी विन्दाभी नहीं सके वह सत्तुद (नहुस ६)। धविर्वाणक ) वि [अधि-सनीय] ज्यार काचित्रणीका रेका (प्रमित् १ महा)। क्षचितिय वि [अधिन्तित] मानस्मिक मसंभाषित (सङ्गा)। शक्ति व [अक्ति] बीव-रहित प्रवेतन वित्तमवित्तं वा होन सर्व समिल्नं निरहेका' (इस ४)। क्षविर्मत ) वि दि ! मनिट क्योरिकर अचिमत्त } (सूमें रें २, फ्एइ २ ३)। २ म्, भप्रीति ॥ प (भोष २६१)। **अभिरमुबद्द केवो अद्दरजुबद्द (दे १ १८ टी)**। अविरा वेको अध्या (परम १७ १७)। धविरामा स्वी भिविरामा विक्ती विवृत् (पत्तम ४२ १२)। अचिरेण देवो अहरेण (प्राप्त)। अचेवण वि अचेतनी चेतन्वरहित निर्मीष (पल्हर २)। स्योक्षन [अयोक्ष] १ वस्त्रों का समाव। २ महरा-मुस्यक बस्त्र । १ भोडा बस्त्र (सम ४) । ४ वि यस्य-पहिताशत । १ वीर्यं नरन गांवा। ९ यस्य भस्त भारता। ७ कृरिसत वस वाला मैद्या 'तह बोब-बुल-बुलियबेडे-विति मर्ल्य भवेनोर्चि (विशे २६ १)।

वरिसाह, वरीसाह वृ विरिवाह, वरीयाही

35 बस्न के धनाव से घपना चीर्ल घरन मा कुरिसत बस्न होने से छसे मधीन मान से सहन करना(सम४ मन= =)। अनेलग) वि[अन्देलक] १ वद्म-पहित अचेताय ∫नमाँ २ फटा-स्टायम पाना। ३ मसित् वज्ञ वासा। ४ मन्य वज्ञ वाता। ४ निर्देश क्या बाला ६ मनियत रुप से क्या का उपमोग करनेवासा (ठा 4 %) 'परिपुद्धजिएए। कुन्धियकोगानिय-यत्तमोयभोवेहिं । मुख्यो मुन्दारहिया संविद्दि घनेसमा हुंति' (विसे २०११)। अव सर्क[क्षर्ये] पूत्रता सत्कार करता। धक्नेइ (ग्रीप)। शव (दे १ ३१ टी)। हवहा ভাষিতার (মুগাঙ্গ)। দু **এছ**লিজা (ए।या ११)। अव ५ (अर्थ्य) १ तर (कात-मान) का एक भेद (कप्प)। २ वि पूज्य, पूचनीय (हे १ (ees) **अर्च**ग न [अस्प**ह**] विनासिता के प्रमान भ्रेम भीम के मुक्स सावन 'मञ्जीवारा) क भोक्यो मार्ग (पंचा १)।

प्रेम भाग के प्रक्रम सावन 'प्रक्नेकारी के प्रोमाने मारा' ('वा १)। कार्यंत कि जिस्मानी इस से ज्वासा प्राप्तिक कर्यंत कि जिस्मानी इस से ज्वासा प्राप्तिक कर्यंत (प्राप्त १२२)। सावस कि किंसायरी स्माप्तिकल से स्वाप्त साविक क्षिप्त हों। विद्यापति के प्राप्त कर अर्थे। स्माप्तिक कि कि जिस्सानिक है। प्राप्त कर्यों कर्यों कर सिक्का मारा कर्यों के से इस प्राप्त कर्या कर्या कर्यं के से इस प्राप्त (प्राप्त १९)। स्माप्त कि अपन्त (क्षेप १९)।

अवगर वि [अस्पर्गेस ] निरंत्र्य, प्रतिसंविद

अवजन [अर्थन] पूजा सम्मान (सुर ३

अवजा की [सर्वना] पूजा (वयु १७)।

धवणिया वर्षे [अर्थनिया] प्रचंत, पूत्रा (राय

श्रवत्त वि[भरयक्त] व्यक्तिकोका कृता स्तर-

अबस्य वि [सस्यर्थ ] १ वरिसर्वक वहरा

(मोइद्र वर्ष्ण)।

१६ एत १२ थे)।

रिव्यक्त (अप पूर्क)।

(पण्ड् ११)। २ गीमीर भव वस्ता (एस)। ६ विवि ज्यारा स्वयंत (सुर १७) । अधन्तुय वि [सस्यद्भव] वहा धावर्य-अन्तर

(प्रानु ४२)। भवय पू [अत्वय] १ विपरीत भावरत (हा ६)। विकास मस्त्र (उप)।

अवय रि विर्वेक पूर्वक 'महत्ववातं व मिरंतराज्यं महार्थि रस्बाएनक्एंकि (पिने

७ हो)। अवर ) न (आव्यवे विस्तय वसन्धार अवस्थि { (विक्र १४) मेंगो १७ रंगा सकि **अवरीम**े नेह्)।

अयद्ग वि [अरवसम] श्रीत ग्रीव (बणू) । भवा की [भर्वा] पूजा सन्तार (मन्नः)। अवाधी (अर्था) १ शरीर, देह (नुस ११३ रक्षार ११११ - २,२६ हार पत्र ११)। २ नेस्वा विच-वृत्ति (सूध ११३१७ १ १४,१×) । ३ ऐपर्ग (ठा ३ १-प४ ११७) । व्यवासम्बर्धः [अस्परान] पद्य का वास्त्रवा रिल, हास्त्री विकि (सुझ १ १४)।

जबासप्रया हो [अत्यासनवा] मूच बैठना, हैर तक वा बार्रवार केला (ठा है) । भवासणया को [करपञ्चनता] नृत बाता (छा€)।

क्षासञ्ज १ न [अस्पासक] भवि तमीप भदासम् ) नूरंनप्रदेव (स्त ११ च्या)। भवासाइय ) वि [अस्पारातित] पामा-अवामादिय | निवं हैरान दिया गया (अ १ अस्य १ २)।

अधामाय सक [अस्या + शानय्] अपमान करना हैएन करना। बहुः, श्रवासापमान (छ १)। हेर अवासाइचए (सम ६,२)। भवादिज } वि [मस्पादित] १ महत्त्रोति क्षव हिंद् 🕽 बहा भग। २ सूठा, भनत्व (स्वप्न ४०)। वे ऐसा बज्ञमी कार्य जिसमें प्राप्त-र्ह्मात की सम्भावता हो (धनि ६७)।

अधिती [अर्थिस् ] १ नाग्ति तेन (मन २ ६) । २ समित्र वीज्याना (क्एल १) । वे रिरण (सर)। ४ सीम की मिन्ना (बस ६)। र.न. सोनाम्तिकदेशों का एक विनात (मम १४)। शास्त्रितु [ सास्त्रित् ] १ नुवं पीन (तूम १९) । २ हि. किएली ने बंधीका (राय)। १ त. मोबान्तिक देवी

काएक विमान (सम १४)। साब्धी 🕸 | िमाछमे] १ चन्द्र धीर नूने भी दूरीन बाध महिपौक्तनाम (ठा४१)। २ ऋतासूचे के दिवीय सुवस्कन्त्र के एक सम्मानन का नाम (एवन २) । ३ शक्तेत्र की तृतीय सममितियी

भी धनवानी कानाम (छ ४२)। सास्त्रिकी की ["साक्षिनी] कत्र भीर सूर्य की एक सद महिपीकानाम (मग १ ४ ६क)। अविभ वि [अर्थित] १ पुक्ति सक्तत (ना

११)। २ म. विमान-विशेष (बीव ६ पत्र १३७) । मिक्त देवो अवित्त (पोष २२) तुर १२

२७)। भवीकर सक [अर्थी+इट] १ प्रतीसा करना । २ <del>जु</del>तामद करना । **समीकरेद** । वक्र अवीकरंत (निष्कृष्ट) । मधीकरण न [अर्थीकरण] १ प्रशंसाः २ बुरवमद,

**'पचीकरहो रह**रो, इसकार्य वं समासको दुविह् । चेतमधेतं च स्वरू पवस्थायो<del>गवसंस्थेतं । (शिष्</del> १) । अवुध पुं[अब्युव] १ विष्यु (सब्दु≭) ।

२ बायहवा देवलोड (तम १) । १ ग्वायहवी भीर नाम्हणां देवलोककास्त्र (अ.२३)। ४ सम्प्रुत-वेषसोकमाती वेष 'ते वेष धारतु ण्डम मोहिएनालेख पलाँवि' (विते ६६६) । नाइ पुं ["ताथ] वार्यवा देवलीक का स्त्र (र्मान) । वह पु ["पति] स्त्र-नितेप (तुपा ११) । बहिंसगन [ीवर्तसङ] विमान-विकोध का नाम (सम ४१)। सामा र् ["स्वर्ग] बारहवा देवलोक (मर्दि) :

अबुध पुन [अबमुन] एक क्रेन-विमान (देशेन्स ११४) ।

सक्या को [सक्युना] कर्ज धीर सनस्वें धीर्वकर भी शासनदेशी (वंशिट १)। अबुद्दंदं पुं[अच्युतस्त्र] स्वाध्दवां धीर बार इवा देवलोक का स्वामी इन्द्र-विशेष (प्रक्रम tto w) : सब्बाह वि [अरपुरक्त] फ्रक्त का

(पांचम) ।

अव्या वि [आयुव] अपर देशो (पर ₹₹¥) 1

धरनुव नि [धरपुव] सून अंग, निटेन उच्च (हर १=६ टी)। सब्द्रिय वि [अस्युरियत] प्रकार्य करते हो वैस्पार (भूम १ १४) । मम्बद्धि [सरमुख्य] मून एरम (छ ६, R) ( अवृत्तम दि [अस्युत्तम] सिंहसेह (कृष्)। अबुद्य न [अस्युद्क] १ वर्ध वर्षा (योव १)। ९ प्रमुख पानी (जीव १)। भारतुवार वि [सरबुवार] प्रस्कत स्वर (स.६.)।

अवसुमय वि [अस्युमत] बहुत छवा (क्य)। अष्युष्मक वि [अस्युद्धते] प्रतिप्रका (मनि)। अच्चुवबार पुं [अरमुपद्मर] महल् अफार (या ११४) ।

अच्चुक्यार वृं [अस्युपचार] विशेष छेव⊢ पुष्पा (बा ११४) । भक्तुस्थाय वि [अस्युद्वात] प्रतकत वका हुमा (बहु १)।

**अच्यु**सिण वि [शरमुच्या] सवित्र वरम (ध्याचा २ १ ७)। ध्ययमे एक [छाति +इ] १ यतिकाल होना

इनका: २ धन *ज*ल्बंक्त करता। यन्नेद (उत्तरके कर सूचर १४ व)। अक्षेत्रक [अस्ता + इ] स्याद करनाना । मण्येशी (तुम १२३७) ।

लच्चेकर न [आश्चर्य] साचर्य विस्मय (विकार्य) । भव्य पर [ भास् ] मेळा : प्रभार (हे

१ २१४)। यक्त अवस्थित श्रवस्थाय (तुर ७१३, समार १)। इस्कारिक **पत्रम अच्छेयस्य (ति १७ पुर १२** २२४) । भव्दातक [बा+बिद्] र काटना

क्षेत्रा। २ वीचना। सच्चे (प्रापा ११९ १)। तंह अच्छिलु (सानक २२४) अच्छेलु (Fir 11 ) 1 अच्छाति [अच्छा] १ सम्बद्धाः निर्मेश

(इमा)।२ पूरव्यटिक एन (वस २७१)। वे प्रभाव बार्व देश-विरोध (प्रव २७१) ।

वड, फन्छिएमीसियमेलं खारिव पूर्व पुरवानव

षण्डा । एएए छेखपाएं धहोतिस पद-

```
व्यच्छ पुं [भाक] रीस, मान् (मएह १
                                        व्यच्छरम प् आसारको राम्या पर विद्याने
  ₹) 1
                                         का क्य-विरोध (ग्रामा १ १)।
च्यच्छ वि [आच्छ] सम्बेदेश में उपस
                                        अच्छरमा ) भी [अप्सरस् ] १ इन्द्र शी
                                        भन्द्रत । पटरानी (ठा १) । २ आता-
  (पएए ११)।
क्षण्ड (अञ्द्र) मेदपर्यंत (पुन १)।
                                         वर्गनवाका एक शब्ययन (सामा २)।
  २ न. तीन बार भीटा द्वमा स्वच्छ पानी
                                         वे देशी (पठम २ ४१)। ४ क्यवती की
  (पश्चि)।
                                         (पराहर ४)।
अच्छान दि ! सब्बन्त विरोग । २ सीम,
                                        भच्छराध्ये [दे अप्सरा] दृश्की दुश्की
  वक्दी (दे १ ४१)।
                                         कामानाव (सूध २२ ५४)।
"অভয়ে ৰি [অফি.] মাৰা বৰ (বুনা)।
                                       अध्यस्राणिशाय पुं [दे] १ चुरकी । २ चुरकी
ैंअच्छ पूं [कम्ब्स्] १ समिक प्रशीवाला
                                         बजाने में जितना समय सगता है वह, शरदस्त |
 प्रदेश । र भतार्थीका समूह । ६ मूछ वास
                                         धमय (पर्ग् १६)।
  (BE YO) 1
                                        भन्द्धरिम
अच्छरिख न आसर्पे विस्मय चम-
"अप्यक्ष पृष्टिक्ष] दूश पेक् (से १४७) ।
                                                  लगर (हे १ ४ व प्रमी ४२)।
                                        अष्यतीञ
सम्बद्धम पुँ[सङ्क] १ वहेश का दुल ।
                                       अच्युक्त म [अच्युक्त] निर्दोक्ता धनपराव
  २ न. स्वण्ड यस (से १, ४७)।
                                         (देर १) :
अरुक्कार न [आद्यर्थ] विस्थय चमन्द्रार
                                       अच्छवि वि [अच्छवि] वैत-दर्शन में
  (कुमा) ।
                                         विश्वको स्ताराक कहते हैं वह बीवनन्तुन्द्र
अरबंद वि [अरुद्धन्द] को स्वाकीन स हो
                                         षोधी (मय २४, ६)।
  पराधीन 'सम्बद्धा ने स सुनिति स से नाइति
                                       बन्द्रविकर प् [अस्पिका] एक प्रकार
  तुच्य (रस २)।
                                         का मानधिक विकय (ठा व)।
सन्दर्भ रेवो अत्यक्क (वतर) ।
                                       अच्छद्स्छ वृ [च्छ्यमस्त्र] रोह मान्
लच्छण न [कासन] १ कैला (स्राया १
                                        (पाम) ।
  १) । २ पामको वनैरह मुख्यसन (सीम ७८)।
                                       अच्छा भी [अच्छा] परस देश की राज-
  पर न [*गृह] कियाम स्वान (श्रीव व):
                                        वानी (पव २७१)।
अरुब्द्रग्रम [दे] १ देवा ग्रुमणा (बहुव) :
                                        अच्छा की [कद्या] पर्व समिमान (से १
  २ देखना धनकोकन (नव १) । ३ महिमा,
                                        X#) (
  ववा (इस ८)।
                                       भप्यसम् वि [आबद्यादिम्] स्वतेवाता,
अच्छिपितर न [अच्छिनिकुर] शच्छिन-
                                        म्पञ्चारक (स १४१) ।
 कुर्यन को चीराओं सत्त्व से प्रश्नने पर को
                                       अच्छायण न [अल्ब्ह्यावन] १ इसना (दे
 र्षक्यानस्य हो नइ (ठा२ १)।
                                        ४३) । २ वझ, क्यका (धाचा) ।
अच्छानिवरंग न [अच्छानिकुराङ्ग] संस्था-
                                       अच्छायणा स्वै[साच्छादना] हरूना प्रान्धाः
 विरोध निवन को भीराती बाख से पुस्तने
                                        क्तिकरमा (वव ३)।
 पर जो संक्या सम्ब हो वह (ठा २,१)।
                                       अच्छायंत वि [अच्छातान्त] तीक्स वार
व्यव्यक्षण्य वि [अरुक्का] धग्रुषः प्रकट (रह
                                        बार (पाप) ।
                                      अध्यक्षि [अकि] सौत नेत्र (हे१ ३३
जब्दमहर्षु [श्रहमङ्] रोह, श्रम् (दे १
                                        4X) I
  १७३ परम् १ १)।
                                         चमडण न["मसन] भाव का मसना (बृह
अव्यक्तमञ्जूष [दे] यहा देव-विरोध (दे १
  10) |
                                       णिमीछिय न [निमीछित] १ मोब को मुँदना
अच्छरका देवो अच्छरा (पड्)।
```

```
मार्थार्थ (भीव १)। यत्त न ["पत्र] साक्ष
                                         का प्रकार प्राप्ती (सप १४ ८)। वैद्या पू
                                         िंचेघकी एक चतुर्धित्रय जन्तु, शुद्र जीव
                                         निरुप (उत्त ३६)। राहम पु िरोहकी
                                         एक चतुरिन्तिय बन्तु, सुद्र कीट-विशेष (उत्त
                                         १९)। स्सः वि ["सम्] १ प्रवासता
                                         प्राणी। २ चनुर्धिन्य बन्तु (उत्त ३६) । सस्र
                                         पुर्विसङ्घी मध्य कामेन कीह (तिबुक्त)।
                                       अस्टिहंद सक [आ + किंदू] १ कोहा क्रेर
                                        करना २ एक बार सेद करना। ३ बबातकार
                                        से सीन बेना। यह अस्मिद्माण (सग
                                        ¤ ₹)।
                                       अर्थिखद पूं [अक्षीन्द्र] गोतालक के एक
                                        विकचर (शिष्य) का नाम (मग ११)।
                                       अस्मिद्यान [आक्छेद्न] १ एक बार
                                        भेरना(निद्रः ३)। २ इदीवना। ३ योहा
                                        धेर करना, बोडा काटना (सर १४)।
                                       अध्यक्ष वि [वे] घरपुट, नहीं कुमा हुमा
                                        (वव १)।
                                      अध्यक्षपरुष्य वि [वे] अभीतिकरः २ तू
                                        वैश पोशाक (दे १ ४१)।
                                      शब्दिकानि [क्षाच्छेच] १ जनकासीको
                                       इसरे से सीन मिया वाय (पिंड)। २ पू
                                       भैन साबु के लिए मिशाका एक बोप
                                      अभिक्षद्रवाचि [अच्छेदा] वो सोहान वा
                                       सके (ठा १२)।
                                     अध्यक्ति की [अध्यक्ति] १ नाग का
                                       धमाव किस्पता। २ वि नात-रक्षित (विमे)।
                                       णय पू [ नय] निरंगता-बाब, बस्तु को
                                       नित्य माननेवाबा पक्ष (पष) ।
                                     मरिकाद वि [क्षरिकाद ] १ किस-पहित
                                      मिबिड गाइ (बं २)। २ निर्दोष (मन २ ६)।
                                     म<sub>्</sub>चित्रण्य ∤ति [आचित्रका] १ वनस्कार
                                     मरिक्षम ∫से क्षेताहमां र क्षेत्र हमा
                                      वोका ह्या (पत्म)।
                                     अधिकण्ण १ वि [अधिकस ] १ नहीं तीहा
                                     अध्यक्त ) हुमा स्ववन्त्री किया हमा (ठा
मीचना। २ झाँच मिचने में जो धनस बये
                                      १)। २ सम्मर्थाहतः सन्तर-राहितः (सन्तर)।
```

खद्ध वि [बार्य] १ उत्तम बेंध (श४२)। श्रवीर )देखो स्वद्वस्य ≍मनीर्सं (वव १ त्रजीरय 🕽 छामा १ १३) । २ पुनि साम् (अभ्य) । ३ सरमकार्यं करने-प्रजीरण देवाँ छाइम = ग्रामीर्थ (पिंड २७ बाला (बब १) । ४ पुत्रमः मान्य (विपा १ १) । ६ पूँ. मातामङ् (निसी) । ६ फिरामङ् पव १३१)। লজীয় বু[নাজ য] লখলে দিৰীৰ পঢ় (लामा १ ८)। ७ एक ऋषि का नाम परार्ष (नव २) । इत्रय पुं िक्समी दर्गा (एवि)। ८ म. गोत-विशेष (स्रोदे)। १ वैन स्तिकाय प्राप्ति प्रजीव पदार्थ (मन ७ १ )। साबू साम्बी भीर उनकी शासामी के पूर्व में अञ्चल पुंचि दल-विशेष सम्बद्ध, सरीना यह राम्द प्रायः संपत्ता है, पेरी संद्र्यतहर ( t 2 20) 1 अक्रपंत्रमा अक्रपोमिसा (क्रप्प) । उत्त खजुञ न [अयुत] एठ इजार, 'रोनिया सहस्सा र्पुत्रित्र रिपवि मर्दा(नाट)। २ मामिक का पूत्र (तार) । घास पूं विषेषी मणवात् रहार्च वंच बजुमाणि इमर्स्ट (महा)। अञ्चलक्षत्रकार पुष्टिम्युगरूपण] सतीना (**१** पार्थनाय का एक गरावर (ठा⊏) । सैगुर् िसङ्ग रे एक प्रोचीन वैतानाम (साथ २२)। ( Y ) मिस्स वि ["निम] पूज्य मान्य (यमि अञ्चयन्त्राक्षी दि] इमसीका पेड़ (वे १३)। समुद्द पूर्विसमुद्री एक प्रसिद्ध 8 Ye) 1 अजुक्त वि [अयुक्त] समोग्य प्रमुचित बैनाचार्य (साबै २२)। (विशे)। स्तरि वि [किस्सिन्] धयोग्य नार्ये अञ्जय [अर्थ] भाग (पुर २ १६७)। करनेवासा (मुपा ६ ४) । च वि चिन प्रमुशका प्राथकम का अजुत्तीय वि[अयुक्तिक] प्रक्ति-रूप सन्धान्य (रंमा)। सामि वामानस्य (रूप)। (नर १२ १४)। प्यभिद्व म ["प्रमृति] मात्र वे ने कर अजूब देवी अडम पेष सबूबारिए हवाले सत (दस्त) । कोदीमी पादवस्याख्य (तुव १ १)। अच्च दू [व] १ जिनेन देन । २ वृद्ध देन (दे अन्तेल वि[ल क्य] को बीतान बासके ₹ **१**}। 'सो मजद्रप्यसम्बद्धाः समेपा बेल्क्क्रस्या अञ्चन (आष्ट्री मी दृत (पाप)। (मद्या) । शक्त देवो रि=ग्रः स्रक्षोगपु[भयोग] मन वचन और कामा क्रआर्थम [अर्घ] मान (गा≭द) । के सब स्थापारों का विश्वर्मे समाव होता है कार्जात पि [आयस् ] पागामी । स्त्रसः प् बह मबाद्धार योग रेनेसी-करण (बीप)। **िंदाङ**ो मनिष्य काच (पाम)। अजोग वि [अयोग्य] प्रयोग्य कायक नहीं अअहिलो म [अध्याः] मानस्म (हर द बद्ध (नीचु ११) । 8 + x) 1 अञ्चापि पू [अयोगिन्] १ फ्लॅन्ट्र यान को भज्ञशस्त्रित्र वि [भयस्यक्षिक] वायक्त का प्राप्त कोमी । २ मुन्त द्वारमा (ठा २,१ कम्म (बसुर्भः)। x x0 2 ) 1 शक्रम देवी अकाय = पर्वर 'प्रवरतस्मेत अकासक बिस्ते देश करना स्थापन रिवर्ष (सुरा १३) । ररनाकमाना। सबद (दे४ १ व) । संक्र अञ्चग देशो अञ्चय = पार्वक (निर १ १) : ष्टिय (पिम)। अञ्जय स्क [अर्थ] स्वार्थन करना । संक्र अञ्ज वि [अर्थे] १ वरम । २ स्वामी मानिक अञ्जिपिका (पूर्वर १२२३)। (दे १ X) 1 अञ्चल १ [अर्जन] प्रतान, पेश करना अञ्चलक १ (भा १२) सत्त १८) 'रजे केरिस-अका दि [आर्थे] १ निर्दोद । २ सार्थ-मोद में बन्पम (एवि ४१)। १ सिट-जनोबित धारमाई मेर्च करेमुवार्य तत्रक्रगाले' (ठा ७ टी) । बम्माई कर्पेड् रार्व' (जल १६ ६२) । सहस्र अक्रम पु[अर्थेमन्] १ पूर्व (पि पु [रापुर] एक बैन बानार्व (रूप ४४ ) । २६१) । २ देव-विरोध (म ७) । १ वत्तरा

शास्त्रानी नक्षत्र का बाविद्यापक देव (ठा २ १) : ४ व. उत्तरा-कास्प्रनी नक्षत्र (ठा २ अळ्य पु[मार्येक] १ मादमह, भांका वाप (पत्रभ ५ २) । २ पितामह पिता का पिता(सग**१ ३३) 'जं**पूरा भव्य-प्रवय वर्णमञ्ज्ञाकामा वार्ष परमञ्ज्ञा कर्मर वर्षं तुप्रिधासिमामी लु' (मूर १२२) । भक्रम वि[भजेक] १ ज्यार्गन करनेवासा पैदा करनेवामा (मुपा १२४) । २ पु कुल मिरोय (पन्पा १) । अध्यय पुंदि] १ मूरमनामक तृल । २ प्रदेक नामक वृष्ण (दे १ १४) । ३ वृष्ण भास (निष् ११) । अञ्चल पुं[आर्येक] म्बेल्सों की एक जाति (क्एए १)। अञ्चय न [आर्जेष] सरनदा निकारदा (नव २१)। मञ्जब (पर) देनो अरुवा≍ मार्थः संद्र पू **सिएक** विश्वयंश्वेश (मॉन)। अव्यवसा 🕊 [आर्जव] ऋषुता सरवता (पनिसः) । अकावि वि [ सार्जविम् ] सका निकापट (पाचा)। अञ्बदिय म [आर्जन] सरसता (सूम १ ४ २ २३)। मळा भी भार्यों] १ सामी (पञ्चार)। २ मीरी पार्वती (वे १ १)। ३ मार्चा सन्द (वं२)। ४ सम्बाद महिलाभावकी प्रथम किया (सम ११२) । ५ माम्बा पुरुषा और (पि १ ६ १४३ १४३)। ६ एक कसा (मीप) । मळाची [आदा] भारेत, हुटुम (हे २ =3) ı अञ्जास वि [अञ्जात] सनुत्यमः "मजायस्यि-बरस्सवि एम सहावो ति बुत्पन्नं आए' (बर्मसं अखाप तक [आ + क्रापय् ] बाजा करता. हरूम फरमाना। हः आज्ञाबेवस्य (गुम 9 8)1 अञ्चित वि [अर्थित] इस्तित पैस *विस* ह्मचा (या १४) ।

व्यक्तिकाको कि।सिंकाी श्मान्या पुरुष की। २ ताम्बी स्मासिनी सिम ६३३ जि भ⊀को। ६ माता की माता (दस् ७) । ∡ फ्तादी मता (स २३३)। अकित्रीक्षांक दि**ो दरास्याहमा** (वेद र हो। व्यक्तिजय रेवी अज्ञयम (१५ ११४)। सक्तीय देशों जजीय 'सम्मादम्मा पुरस्य नव करतो ५व वृति धन्धेवा (तव १)। भज्ञ (मा) म (अय] मान (दे ४ ३४३ मी मि जञ्जम (रो) केरो शक्त = पार्य (गर) । प्रमाभा (र्ध) देवो सता - पार्मी (पि 1 1) धारहण पं शिक्षेत्री १ तीपच पाएडव (सावा १ १६)। २ वृक्ष-विक्टेप (स्ताना १ ८ भीत)। ३ नोट्सनक के एक दिस्कर (दिस्स) ना नाम (मन १४)। ४ न. स्नेट गुनर्श एकेर स्रोताः 'सम्बन्द्रसम्बद्धस्त्रसम्बद्ध (द्रीप) । ५ तरा-विवेच (पएक १) । ६ प्रचुन इस ना पन (शामा १ १)। भग्नुषर ) जिल्लीनको १-६ उसर केने । कारकत्रम ) ७ एक माती का नाम (याँत १ व)। भाग्य स्मे आर्थी सस इस (हे १ ४७)। मजींग रेची अजींग = मनीप (रंच १)। भक्नोगि देवो सबोगि (देव १)। अञ्चोस्ड न वि निनस्पति-निम्नेत (परस्त १)। अञ्चलका नि विषयस्य । यनिहाता (कप्पू) । शरमा पुरि | यह (पूर्व समुख्य) (दे १ X ) 1 भवमास वैद्यो भवमाप्य (सूच १२२२)। करमस्य नि दि भागत, माना ह्या दि १ अपन्यस्य ) व जिम्मारमी १ व्यस्मा ने बाह्य अवसम्बद्ध । संबंधी आस्म-विवयकः (उत्त १ बाचा)। २ मन में नन संबंधी मनौ⊣विदयक (करा ६) तुन १ १६ ४)। ६ सत क्तिः 'मरमानातकार्ड (स्वति १ २१) । ४ ग्राम-म्बान 'सरम्प्य-रम् मुनमाहि-सप्पा, नुतरबं व

विमाण इ.म. त. विल्लू (स्य १ ११)। इ.चू

यारमा (ग्रीव ४४३)। स्रोग पूर्विया

बोक्फिटेय, बिल नी एकावता (तुम १ १६

Þν

४) । दोस दं विषयी मान्यारिमक दोय--भोव मान माना ग्रीर नोन (सुध १ ६)। विचित्र नि "शस्त्रियको चित्र-केनक सन ये ही सरका होनेवाला होना किया पार्टि (मुष २ २.१६)। विसोडि की विशिवासि भारम-शक्ति (दीव ७४१)। संवद्र वि सिंकत | मनो-निष्की मन को कार में स्वाने-नाता (भाषा) । सङ्ग की "अति । सम्मात्म शास, भारम-विद्या सोध-शास (पराह २ १)। सिंद की शिकि मन की शुक्ति (माल् १)। सोदिना शिक्षि मग-गुबि (मापू व्यक्तियय वि शिष्माध्यातिमञ्जी भारम-वियवक भारमा वामन से संबंद रखनेवाला (विपा १ रमगर १)। बारमप्रजीज देवो अरमस्थिय (पर १२१) । अवस्थित विकाध्यासिको १ सम्बन्ध का बान्तार (प्रकार २) । २ सम्यानम् सम्बद्धी (समनि १४)। अवस्य वि [वे] प्राटिवेरियक पदोसी (वे १ अवस्थ्यम पुन [अध्ययन] १ ठम्ब, नाय (वंद १) । २ पद्रमा सम्यास (विश्वे) । ३ क्षत्व का एक और (विना १ १)। शरमञ्जलि वि [ अध्ययनित् ] पदने शता मम्मापी (विसे १४६६)। अवसम्बाद सक [ अधि + आप् ] पहाना ग्रीबागा ।। प्रस्कावितिः (विसे ११६६) । अञ्चलस एक [अध्यव + सो] विचार करता भिवत करना। सङ्क अस्मानसमेव (नुपा RER) I बरस्वसण ) न [अध्यवसान] विकास **बरम्ब**साण | दिवार, बाठा-गरिहान ची कुमरेलो क्रीलयं मुस्लिकुंक्त । स्वमूक्त्रकास-स-छिति । कि इसकार्व कायह ?' (तुपा १९५) प्रतस्थ के विचार प्रो≀ धरमनसार पु [धम्बदसाय] विचार, प्राप्त-र्पारहाम मानसिक संकल्प (मानाः कस्म ४ **₹**₹)1 अवस्त्रवसिय वि [अध्यवसित] वि<del>वि</del>त (वर्मसंभर)।

भागमञ्जासिय वि [सम्मयसिय] १ विनका विन्तन किया क्या हो वह (बीरा) । १ व. विस्ता विचार (प्रश्)। अरमनसिय न विशेषेश प्रमा ग्रेष्ट (देश ¥ ) i कारमधीय दि कि देश हवा हवा हुए हि है, अम्प्रस्स एक [भा + क्यू ] बाबोत रख्य, मनिराय देशा । सम्बन्धा हि १ ११)। **अव**स्तरा । विज्ञास्त्रज्ञीवित पर मास्रेत अवस्थित । हिमा एमा हो बह (दे १ १६)। अञ्चाहित वि शिक्षाधिकी ध्रवत प्रतित-विव (महा)। अस्य की दि । पस्ती कृतयः। १ प्रस्तः की । १ नवीडा, ब्लामिन । ४ प्रती की । १ म्प्र(की) विश्वहाता दव नवा ६४)। अत्रम्ब ) सक् किथि + इी सम्मन रस्य, सरमाम ) पहना (सरमामिः (मृद्ध १ ११)। हेड प्रम्यक्तं (मृज २ १३)। अबस्यञ्ज तक [अध्वापम् ]पदाचा वर्मः मध्यास्त्र (स्व २ (३)। अञ्चादसम्बद्ध नि [सम्पोतस्य] पहले बोर्ग्य, 'सूर्य में श्रीनम्सइ कि सरम्बद्धस्थ पनइ' (इस E Y 1)1 कात्रमञ्ज्य प् [अक्साम**े १** पळत, सम्बक्त (बाट) । २ वस्य का एक बोठ (बिसे १११५) भाग)। अञ्ग्यस्**र र्' [अ**च्यास्त्र**] १ व**ल-विशेर । २ कुत्रों के उत्पर बढ़नेवाली बस्बी वा शाबा ववैष्यः (प्रएतः १) । **भ**रमधरोष पू [भन्मारोप] भारोप स्त्वार (बर्नेसं ११२: १११)। जरम्बरोबय व [बम्बारोप**य**] १ पा**रम्**ड कपर वडावा। २ पूचना प्रश्न करना (निर्दे **₹₹₹**₩ ) ı अस्म्बरोह र्ष [अस्यारोह] देवो अस्मास्ट (तुम २३ ७ १८, ११)। अवस्थान केवी सनस्थान = सम्बद्धन् । बन्द्रान वैद्य (तुमा २ १६) । वक्त आस्मावकोत (हास्य tty) i कारमानग केवो कारमधनग(रहनि ११८) ।

होता थासक्ति करना। मन्म्येयनम्ब (पि

क्षात्रहोबवण्य ) वि [अम्मुपपद्म] यत्र्यंत

धाउमीववस बिसार विपार र णाया र

७७) । मनिमन्त्रोजनमिहिङ् (ग्रीप) ।

2 4 ) t

(चन) ।

**अ**स्मार्थण न [अध्यायन]पठन (सिरि २०) ।

ठारमञ्ज्ञाचामा **को** [अण्यापना] पद्माना (सम्म

कारमान्य वि [ अध्यापक ] पहानेवासा

सामग्रनस पर [अम्या+वस्] एला

बास करना । वहः अत्रमध्यसीतः (उवा) ।

क्षत्रमञ्ज्ञ पू [अध्यक्ति] १ बनर बैठना। १

अत्रम्बसमा भी जिल्लासना । सहन करना

भारम्बसिभ वि [अध्यासित] १ पासित

व्यविद्वित । २ स्वापित निवेशित (नार) ।

द्यामाह्य वि [अध्याहत] १ उत्तेवित 'शीव-

केलं पुरिहर्गवरियाभेकेणं हन्यी घरमाहर्या

रिप्तक दुव (बगु सूर १ २६)।

निषास-स्थान (गुपा २०) ।

वर्त्तं संगरेष्टं (पहा) । कारुद्रीय वि [अझीय] १ महय मबूट । २ न सम्भवन (विसे ११८) । अम्भूयवद्य रेवी अस्पोधवद्य (पि ७७ ब्यम्भुवयण्य देशो अस्मोत्रवण्य (विपा १ {} i **कारमुजनाय देवो ध्यरमधेयदाय(उर द २**०१)। बार्मुसिम वि [अन्युपित] धामित (पिट अज्ञासिर वि [सहापिर] चित्र-पहित (पोव **484)** 1 बाउम्रेड वि [अध्येतु]पढ्नेवाता (विष्ठे {\*EX} ! भारतेक्टी भी वि | रोहने पर भी क्लिका रोहन हो सके ऐसी मैमा (वे १ ७)। अस्मेमणा श्री [अध्येषमा] धनिक प्रार्वना विशेष शावना (प्रक)। अञ्चयपपूरक] १ साह है **बारमोपरय**्र तिएँ प्रविक्र रेक्षोई करना । २ साधु के लिए बढ़ाकर भी हुई रक्षोई (धीन पद ६०)। भग्मेडिमा धी [वे] वस-स्वन के प्रापृ-पछ में की बाती मोतियों की रचना (दे १ 11 11 अवस्त्रेवगमिय वि [आक्युपगमिक] स्वेज्हा वे स्पेष्टच (पर्छ १४) ।

२ मल्प, पि ७७)। अवस्त्रेववास पुं [अस्मुपपाद] भव्यन्त भार क्ति, स्झीनता (परह २ ४)। अस्त्रायणा **रही अ**वस्त्रायणाः 'परमो पराधव मलो बिहिला सम्बालम्बनलानुसनोः (संबोध २४) । खट ) सक [अद्] भ्रमण करना कुमना। खहू । बडर (पद् हे १ १९४) परिषट्टर (8 x 28 ) 1 बाट्ट सक [ क्टब् ] काव करना । घट्टर (हे ४ ११६३ पटः गुरुष् क्षद्र धक [शुप] पूचना शूपक होता। बहुति (मे ५ ६१) । यक आहुत (से १, 1 (80 सह वि [आर्व] १ पीड़िय दुर्वित (विपा ११) । र म्यान-विशेष--- शह-सँयौग सनिह-विवोग, रोम-निवृत्ति और धविष्य के निए विन्ताकरना(ठा४ १)। "व्यवसि ["क्रू] पीड़ित की पीड़ा का भाननेवासा (पड़्)। चारू वि चित्रतीयत प्राप्त (ए।मा १ १० मन **१**३ २)। **ब्यह पूर्व [ब्यह] र ब्रु**तान इति (मा १४) । २ महत्त के उसर का बर, करारी (हुमा) । ६ बाकारा (भाव) २ ४)। भट्ट वि क्षि] १ इत्य दुर्णमः २ वदा, महान्। १ तिक्रम वेरारम । ४ घातसी सुरत्त । ३ वृं शुक्त तोदा। ५ शब्द धानात्र। ७ त. सुक्ष। < भूठ, यशकीखि (दे१ ४)। भट्टकृषि वि]यमाह्या स्त(दे ११)। अट्टूड्सस र् [अट्टूड्सम] रेको अट्ट्सस (उन) । छङ्ग न [अङ्ग्न] १ व्यामान क्यरत (धीप) । २ पूँ इस नाम का एक प्रसिक्त मद्भा (उन्त

४) । साला की शासा व्यापनशासा

अङ्ग्य न [अटन] परिश्रमण (वर्ष ३) ।

भट्टपा की [भावर्षना] शतृत्ति (प्रज ११)।

करायत-ग्रामा (भीप कम्प)।

बाट्टमट्ट वि 📳 निरर्षक व्यर्व, निकम्मा (सुकार द)। शहरह पूँ कि १ धासवान कियारी (ह २ १७४) । २ मशूम संकल-विकल्प पाप-संबद्ध ग्रम्पवस्थित विचारः 'क्रम्यविद्वये मन्त्रा वस्त महत्र बहुवाई क्र्ट्रमट्टाई ह तं वितियं च न सहर, संवित्त्रह य पानकम्माई (उम्) १ खट्टम पू [खट्टक] १ हाट, दूकान (चा १२) । २ पात्र के सिद्ध को बन्द करने में स्पयूक्त शम्<del>य विशेष (पृष्</del> १) । अट्टयक्कज़ी सी वि] कमर पर हाय रसकर श्वका रहता (पाम) । अष्ट्रहास पुं [अष्ट्रहास] बहुव ईसना बिल-किना कर हैंस्ता (पि २७१)। महाजग रे पुन [शहासक] महत हा उपरि महोस्य }ें ग्रेग स्टोरी (सर्ग १९७ पटम ₹ €) 1 महि मा [आर्ति] पीड़ा पुष्प (पाना)। अट्टिय नि [आर्वित] शोकादि से पीहित 'यहा बहियमिता अह बीमा दुम्ससागरमुकेंति' अट्टिय नि [अर्दित] मानुत्त स्पष्ट 'प्रदृषुत् द्वियमित्ता (भीप) १ बहु पूं [अर्थ] एंयम (सूच १ २,२ ११) : अह दुन [कार्य] १ वस्तु, पदार्व (उवा २; शरू() 'महर्रसी' (पूप १ १४) 'धहार' हैं ऊर्फ परिएगई (भग २१)। २ विषय इंडियहाँ (ठा ६) । ३ राज्य का व्यक्तियेव बाच्य (सूम १६)। ४ मतसब तात्पर्य (विपा र १३ भा**स १८)। ३ तरन** परमार्क 'तुबसे ल मो भाषहरा भिरतर्ग भट्ट न गाए।ह सम्बद्ध नेए' (उत्त १२ ११) 'इसो चुएस बुहमह इरमें (तूम ११ १) । ६ प्रमोजन हेतु (इ.२.२३)। ण धनिमाप इच्छा 'घट्टो धने [ मानेजि, हंवा मद्रों (शाया ११६ उत्त ३)। द छोरेस, सब्स (मूच १ २ १) । ६ घन पैसा(मारे४) माचा)। रे फप साध

भद्रपुराणि सिम्बेन्स लिप्ट्राणि स्वकार्

(उत्त १)। ११ मीज मुक्ति (उत्त १)। इद

पुं[कर]। १ मेत्री। र निमित्त शास का

विशन् (स ४ १) । जाय वि ["शातार्थ]

१२)। सहाजिमिच र मिहानिमिची

अद्रेस वि [मद्रासः] मट-वोख (सूम २.१

भद्रदिद्रि की [अप्रदक्षि] नीन की पाठ श्रीमां

के के हैं — मित्रा तारा बना दौधा न्विया

भट्टव म [अप्रक] बाठ ना सपृह् (रव १) ।

जहां भी [भएा] रे पुटि 'चर्तां बदावि बोन'

भट्टा भ्ये [बास्वा] भदा विधान (गूप २ १)।

अराबी [अर्थ] निप्तास्ते 'तस्यायमधी

रिच्यो सवस्थियो बीसरस्त्रप्रा' (तुर १ **१**:

स ६ ९)। दंड पु विण्डो सर्म के लिए

बहाइम वि [अधविंग्र] प्रस्तिवा (शिव) ।

महाइस देशीन [अदाविशादि] इस्ता-

महाईस र विशेष सर्वात (विकाशिकार)।

अहाय व [अस्वात] १ वर्षान्व स्वान (ठा ६)

विवे वध्ये । १ दूरितत स्थान वेस्या का

पुरामा वनेष्ट् (बार) । ६ धरोन्य परम्यावती

भी नई हिचा(धा ६ २)।

करेर (वे १३ छ १व२)। र प्रतीमर बीव

कान्छ। त्रमा भीर पछ (सिरि ६२३)।

मनन्तर-उन्ह सर्थ (कप्प) ।

(पंचय २)।

शह--बहुत्व

बहारसम् वि [बदावरा] १ स्वयंत्री

(पदम १०१०) । ए यू समातार माठ लिये

अट्टारसिय नि [अप्टाइशिक] मञ्जूष गर्न

महारक् } रेबो शहार (पद् । पिन)। भट्टायक्

भट्टाब्रञ्स } बीन [ अद्यापक्काञ्चल् ] संस्थाः भट्टाब्रज्ज } विकेद प्रवास सीर मारु, १४

अट्टायम वि [अष्टापद्मारा] ध्वत्रकर्मा (१३-

ब्रह्माचय दू [ब्राध्यपद] १ स्वनाम-क्वान वर्षेत

विशेष वैतास (पण्ड १ ४) । २ गः वर्ष

भावि को चुमा (स्टाइ १ ४) । १ वृत्र अलाई.

जित पर भूमा केता भावा है गर (नगर !

४)। ४ नुबर्ख योगा (बस्र ८)। सेम् र

["बीस्र] १ मेस्-गर्बत । २ स्वतान स्थात प<sup>र्वत</sup>

विशेष बड़ी सनवान प्रशासकेत निर्माण <sup>वाने</sup>

के 'प्रमित्र तुर्ग समितिको, बाद व विरा<sup>त्रका</sup>

सरमं पद्यो । वे महारवनेना धीवामना पिर

का अन्यवात (शा**ना १ १**) ।

की क्रम का (देव ४)।

(पि २६१ एन ७४)।

मंद्र १६)।

इनल (क्ल )।

नि [ विशन् ] पठनीय (दुरा ६१) पि ४४३) । इस वि विद्यामी मञ्जूद १० (मंति १) । बसचरसय वि विद्योचर रात् ] एक सी मठायहर्ता (पत्न ११८ १२ )। दह नि निरशन महायह १ नी संस्था (निव)। पार्गसिय वि "प्रदेशिक विश्व यह मर कारा (ठा १)। प्रया और पिता विक बत धन-विरोग (पिम) पाइरिअ विशिव रिकी बाठ प्रदूर धंबेची (पुर १४, २१०)। भाष्या सी "भागिरा) वस्त बन्तु नासी बाबतीम पना ना एक दरिवस्त (सरा)। सन मितिया नवातार तीन स्थिति कारान (पुर ४ ११)। मंगक पुन विश्वका रशिनर सारि साठ नामीरक बन्तु (राय) । सभक्त र्न ("समक विता नन्त्र गार तीन र्शिय का उत्तान (नावा ११) । समिचिय रि विमक्तिकी हेना क्लैसका (दिला क t)। मी में [मी] विकितिक परनी (रिग १ १)। सुचि दू िम्ति क्लोरेर धिर (प्र १)। यात्र वि [ चल्यासिन् ] भागनीन (वीं)। बस ति [पद्याशन्] वंशानिकी महात्व, १ (राज १ १२)।

वरिम वारिम रि [वारिक] पाक करें

खद्रावय म [कार्यपत्र] पृत्तम (स्त १४) ।

भद्रावय न [धर्भेपर] पर्कशास संपत्ति-राज

(सुमार १ प्रणाहर ४)। सद्वादीस लोत [सराविशावि] स्टार्वेव २० (BARS ARS) 1 अष्टाबीसङ् की [अष्टाबिशति] तंक्वा-विशेष स्क्रम्य २८। शिक्र वि विभी स्कार्यन प्रकार का (वि ४६१) । अट्टावीसइम वि [अद्यविदा] १ मठाईनवी (पत्रम २० १४१)। २ न केयह दिनों के नगतार उत्तास (शामा ११)। बहु।सद्वि सी [अष्टापष्टि] संस्पानीकेप स्ट-सङ ६८ (चिम्) । भट्टासि ) भी [भटाशीति] सन्यानिस्य श्रद्वासीर् ) बडासी २० (विमः सम ७९)। बहासीय वि [अद्यशीत] मठावीवौ (परम EC YY) 1 सहाह न [अष्टाह] बाठ दिन (ग्रामा १ व)। अट्टाद्या सौ [सटाद्दिस] १ मठ दिनों काएक उत्सव (वैचा≃)। २ उत्सव (लाया ₹ <) 1 अद्रि वि अधिन् । प्राची यरम्यासा अपि-भाषी (भाषा) । कार्ट्र पुं[अस्यि] १ इत्ता हाइ 'ययं पट्टी' (पूप २.१ १६)। २ फन की प्रद्वी (रम X.2 #3) 1 अद्रिो•धन [अस्यि क] **१३३० इन** श्रद्धिता - (बुन्ताः परह १ वे) । व जिसमें अद्भिय विश्व ज्ञान हुए हों पैमा सपरि परव फन (इह १) । ६ वृं कापालिक भट्टी विज्ञा पुण्यिपिका' (इह १ वव २)। मिंबाको [सिङ्गा] हुई के भौतर कारण (म ६४) । सरकत (["सरजस्क] क्या-तिक (वव ७) । सेव्य न [विवा] १ वन्त मीत की शाधाक्य एक गोत। २ 🐒 इन मोत रा प्रवर्षकपुरव धीर इनही सन्तान (ग.७)। अट्टिय रि [अर्थिक] १ मरह, याचक प्राची (पूर्व १ २, ६)। २ धर्मका कारण सर्व सम्बन्धी : व भीम वा हेतु बीस वा वाग्यु-मूत 'पनमा नामाभावि विजने महिये सूबे' (बत १)।

सदिय वि [सर्विक] १ पर्वका कारण पर्व-सम्बन्धी। २ मीन का कारण (उत्त १)। **অটুিয় বি [অমিব] মদি**শদির সাহিত (उत्त १)। अद्भिय वि अस्यित । भव्यवस्यित मनि-र्मोनत (पण्ड १ ३)। २ चंद्रस व्यास (छ २ २४)। अदिय वि आस्यिकी हुश-सम्बन्धी हार का 'महिन रखं मुख्या' (मत १४९)। अद्भिय वि [आस्थित] न्यत एत हुमा (व १ ३४)। अद्भिष् पृष्टिस**क्षी १ ब्**स-विदेश । २ स. प्रम-विरोध प्रस्थिक बूल का फल (दम क ₹ ७३)। आंद्रस्ख्य पु [अस्यि] कम नौ गुद्री (लिंड अदुरुत्तर वि [अष्टोत्तर] यठ से मन्दिक (बीप)। समन विक्री एक सी सीर मळ (कान)। सय वि शिववसी एक भौ भळवाँ (परुष १८४)। अड ) वेका अडू = बहुन (पिन पि ४४२) अंड रेप्ट में ग्रह समें रवें¥)। अड सक [अर्] भ्रमण करना किरना 'घ"ित संगारे' (पराह ११)। यक श्राहमाण (ग्रामा १ १४)। अद्वर्ष [अवर] १ दूप इनाय (पाम)। २ भूप के पास पशुक्तों के पानी पीने के लिए वो वर्त दिया बाता है बहु (हु १ ६७१)। अक्टरेको तक्ष≐तट (गा ११७- से १ 22) I अबद् ) ही अद्धि, यी भवानक जेल्ल अबर्द्धी मन (गुरा १०१ नाट)। भाइडिंगिस्य न दि] विपरीत मेपून (दे १ Y7) I अहल्यम सक (दें) संभातना राज्य करना । रचे 'मरकम्मिन्नेति सर्गरमादि क्ले' (दे १ अद्दरम्मित्र वि [वि] संभाना हुमा प्रतिष्ठ (\* t vt) i

महरू न [पटट] भग्टांव को कीएती

नाय ने प्रशान पर जो शंक्या नग्य हो वह

(स ३ ४)।

काइब्रेग न [काटटाइन] संस्थानियोग 'तुनिय' या 'महानुदिन' को भीराधी अभाव से पूराने पर को संख्या सक्य हो वह (ठा ३ ४)। शहण न [अटन] भ्रमल पूमना (ठा ६)। अवणी को दिशार्ग रास्ता ११ १६) । अञ्चयक्ष्य न दि नाइन-विशेष (नीव) । भडयणा ) की [वे] दूसटा व्यक्तिशारिसी अख्या की (देरे १८ पाप, मा २ ४ ६६२, बजा ८६) । **सहया**ल न हि प्रशंसा हायेफ (पएल २) । ) क्षेत्र मप्टमत्यारिंशम् नेष्ठ-अख्याधीम । तलीम ४८ की शंक्या (श्रीव ३। सम ७ )। सय न दिखी एक सौ और ब्रह्मासीन १४८ (कम्म २ २६)। शहबद्दण न दि रिक्सना स्कन्छ समना 'त्रस्थावि परिन्संता सहवहणं काउमाद्या' (मूपा ६४%) । छाडवि ) की [अटबि, बी] भवकर बंगर श्रद्धती∫ मह्रुपॅमन (प्रष्ट्र रॅं१ महा)। श्रहसद्गि औ [बाष्टपष्टि] बठसठ (पि ४४२) । स वि विसी भड़फरवी (परम ६० ५१)। अहाह पृष्टि बसाकार, बदरस्ती (दे \$ \$5) I মারিকভার জিতিভা বুক সারি কা বলী (पएल १)। भहिस्सा हो [सहिहा] एन्द-क्रिय (पिग) । थबादिया भी [अटोसिस] १ एक सत्र पुत्री जो पुत्रराज भी पुत्री भीर गर्रमण्य की वंहिन थी। २ मूपिना, पूरी (बृह १)। अहोबिय वि [धटोपित] मध हुमा (पण्ड् t 1 1 अहि दि] यो माने माता हो बीच में बावक होता ही बहा 'सी कोहाइमी धड़ी भावतियों (इस १४२ टी) । अहुक्त एक [भिष्] कॅक्ता निस्ता। बहुमाद (हे ४ १४३) वह )। अक्रुक्तियम नि [क्षित ] चॅना हुया (दुना) । अङ्ग्यन [अङ्गत] १ वर्गवस्य । २ दाप क्लकः 'नजमुरगनएए)मङ्ग्युद्धविमात्राख्यीत एमपेच' (नुर २ १)। अद्भिम नि दि ] भारोतित (बब १ ही) । अद्विपा की [अद्विका] महाँ भी (ज्यानिसीप

(विते १११७)।

न्दंद १२६ महा)। कहर वि[भाडय] १ संस्थ वेजन-शासी बनी (पाम उपा)। २ पुनः सहित (पैका १२)। ३ पूर्ण, परिपूर्णः विदुलमदि दुरावर्वे (प्राप्त ७१)। भइतजनस्मी भी हि देगी बहुयनकमी (दे१ ४४)।

श्रहतृत्त नि [बारब्य]गुरु नियाहृपा प्रापन (A 23 5) 1 भट्डान्झ ) वि भिर्भतृतीय वर्ष (सम भाईताऱ्य } १ हें। दूर १ ४४ मीव सिंख 82 871 अदिवय विकिटी वीका हमा (से ४ ७२)। बार्ट्स विभिन्नमुखी माहे तीन, भार् द्वारं नवारं (पि ४६ ) । भाइबळा न [आडपर्य] वनीरन योगंताई (# t ) i

अहरूजा की [आस्थमा] योमंत से रिया ह्या बलार (दा १) । सद्दारमध् [भर्षीरह] केर सर्वभयों के बहुन्ते का एक कप्न (योग ३१४)। अद (पर) रेनी अट्ट = घटन (नि १७ १ ४) Mr. m) भहारम (पा) और [मञ्जूपिप्रति] हंश्या-विधेत मद्राप्ति १ (ति ४४८)। भदारमग रेतो अद्वारमग (विव ४ २)। अदारसम् रेगी अदारसम् (भव रें श्लाबा

1 1 1 1

2 15 46) 1

सल म भि अन्दिनो म (हरहर म ११ ६४)। थण वर् अस्] १सभाव रखा। १थाता। १ बातना। ४ ननभासा। प्रशुद्ध (दिने trrt) : भन प्रित्र} १ सम साराव । २ ववन र्ग्य (रिने १४४) । १ वराय क्रेम सार्र् मार्गर रहा । स्थि ११ ३) । ४ नानी, बाव्या बर्देशसा (तेष्ट्र) । प्र.ब. बार (बाल् १ १) । ६ वर्षे (यांचा) । ए वि कृत्वित बरम (जिले २०६७ दी) । भन ţ [भन] रेपो धर्मशामुर्विष (राज र

खन दं [अलस्] राष्ट्र, शादी (वस २)। क्षण **देवो** अण्ज=धन्य 'धराक्षिममावि विमार्ग (वे ११ १६/२)। अन्य न श्रिष्मी र करना ऋख (हे र र४१)। २ इमें (क्यारे)। भारम वि [भारक] करत्वाद, ऋगी (शासा १ १)। यह वि

िंदश्री उत्तमली संस्थार (पर्याहर २)। भेजन दि "भड़ा है देखीया (पर्द १ व)। "धम रेलो गम (ते ६ ६६)। अज देवी कनः 'मएलं पहिलामलं रमंदरस' (ना ४४) 'प्रत्यालगरंग शिय कि (काप्र ६१) 'दानक्ताल' (पण्ड ६२) । अप देवी सम (न ६ ६१)। अगअर**६ देतो** भणवरम (नार) । अजदार वि [अनिविधर] विश्मे बङ्ग्रहर

दूतरा न हो वर्गीतमः 'मन्द्ररापी' पलद्वरमोभवारस्यामो (पीप)। अपद्वृद्धि भी अनिविदृष्टि भवृद्धि भा का समार 'बुव्भित्त्वरमरबुम्मर्परईद्मश्रद्भी चलुड् द्वीय (डेबीव २)। अवर्द्ध कि जिनीति देति-प्रेत धनमन् इत कार है छीव 'घराई'पदा' (मौप) । भर्णगर् [भनक्ष] १ काम विषयान्तिय रमधेन्या (या १६: धार ६) । २ शामरेर मन्त्रम् (ग्रा२३३ वटकः बच्यू)। ३००६ स्टब्स **बुबार, यो मारुन्युर के राजा जीदारि का बुब** बा (नव्य २) । ४ त. विशव-पेतन के बस्त र्मयो के मानिरिक्त स्तन, पूर्ति कुछ भारि संद (स. २, २) । ५ वनावी विष भावि (छ ५ २) । ६ वाटर बीय-प्रन्तों ने बित्र वैत ताब

(शिषे वर ) । ७ वि राग्रीर-ग्रील ग्रेवनीत कुण 'चह्द बहु ए महोगो कह रह हिस्सीत वागुवा बाला' (नडर) 'परिवरके पहरे बर्चको रमागरनी इन्हें कर्तनी' (नव ४६)। परिश्री थी ["गृहियी] यी शाम<sup>9</sup>र को तथी (मूना ६६)। बहिसदियी हो वितिविद्या बनवरित होति है रियह देश बरनेशनी की (ग्रंदर)। पविद्वत [प्रिरिक्त] कार्य धंककर्षों है। जिन्न येन यन्त (दिन १२०)। नाम पूर्विमानी काम के कला (बा थर )। बरम 🛊 ["बान] एत्रयंत्री रा

एक पुत्र, सब (पडम १७ १)। सर पूं ["शर] काम 🛊 कास (मा १ )। सेपार्थ [सेना] शास्त्र की एक रिस्ता वीला (ग्रामा १ ६ १६) ।

अर्जंद पुं [अतन्द] बान् धवर्ष्टरही वान के चीतान तीर्वकर-देव विमत्तमस्ति च किछे (पाँड) १ २ विष्यु इच्छ (पडम ६, १२२) । ३ शेष तात (वे **१,**६१) । ४ वितर्ने सक्त बीब हों ऐसी बनशांति कन्द-मूल वमैदा (मोन ४१) । इ. त. केवळ-आत (लाग १ ) । १ মাক্ষয়ে (সৰু २ २)। চৰি ৰাজ-সনিত, शास्त (तुम ११४० पहडू १३)। वित सीन बर्गार्रामत बर्गस्य से भी बही मन्ति (विसे)। ६ प्रमृत, बहुत विलेग (प्रापृ २६। हा ४१)। काइय वि["क्रियिक]काल जीववानी वर्ग-स्पृति चन्द-बूस धादि (वर्गर)। वाप 🕻 ["क्रय] कर-पूत ग्राहि यतन बोहरानी वनन्यति (पर्णः १) । जुचो प [दूरवस् ] धननाबार (शिप्प) । जीव पूर्विते देको स्प्रहर (प्रस्तु t)। जीविन पि

िबीविक] केते काइय (मग व १)। बाय न [\*द्वान] \$न्तन-तान (स्त २) । याणि वि [काशिन्] केवब-वानी सर्वत्र (तूप र 4) । वृत्ति वि ["वृश्चिम्] वर्षेत्र (पडम ४ १ ३)। पासि वि [विशिन्] ऐरान हेर के बीखर्वे विक-देव (तिन्व)। विश्विसया व्य ["मिभिका] सत्त्रिम माना का एक भेरा विकेशनगढाय है। सिंध अलेक बनन्ति वे मिनी हु" यक्तकाय को भी सक्तकार गहुना (परल ११) । सीसय न ["मिणड] केरी । मस्सिया(स १)। **रद्रुं [\*रव]** निगा धना बरारव के बड़े बाई का नाम (नहम २ १ १) । विजय पु [ विज्ञव] नागोत के २ व के धीर ऐटरन शेत्र के बोतन भागी वार्क करकाशास (नव १६४)। योरिव<sup>ि</sup> ["यीय] १ यक्त बत्तराता । १९ <sup>एर्ड</sup> ने उत्तरक्ती नृति का नाम (परंग १४ १६ )। ३ एक ऋदि, जो शार्चरीय के लिया में (मार्च t) । ४ मरत्रात्र के एक सारी डीर्पेटर वा नान (नी २१)। संसारिय रि ["संसारिक] प्लम्त राज दह मेबार म कार-मरत् पान-शास(प्रार्थ)। सम⊈["सन]रेशीय

कुमार (सम १४)। २ एक मन्त्रास्य सुनि (प्रेत १)। अभनद पूँ[अनन्त्रजित्] पालुकल के पौर-

हर्षे जिल-तेत्र (पडम १ १४८)। स्राप्तदा। १ १को आणंत (अ १,६)। २ न स्राप्तदा १ कम्मिसीरा (पीम ११)। १ पृ ऐरवात क्षेत्र के एक जिनतेत्र (पाम १११)।

अर्जनर न [अनन्तक] वन कपहा (पन २)। अर्जनर वि[अनन्तर] १ व्यवकान-रहित सम्बन्ध बहित 'मर्गुतर' पर्व बहता' (गुग्या १ ५)।

बह्ति 'मण्डिर' पर्व वहता' (लाया १ म)। २ तुंबर्तमान समय (ठा१)। ३ शिव बाद मॅंबीसे (विसा१ १)।

कार्णनरिद्य नि [असम्बद्धित] १ मध्यवद्धित व्यवपाल-रिद्य (पाचा) । २ मबीन समित भेतन (निष्रू ७) ।

भजनसा च [ अनन्तशस्] मन्त्र गर (र ४१)।

अर्णताणुक्षीय दु [अनत्तानुत्रिश्वमा] बक्त बाल तक स्वाप्ता को संवार में प्रमण कराने-बाचे क्यानों की कार की ब्रिक्सो में प्रमण कोशक्षे स्वित्तर्वेष्टकांक मान मामा सीरसीक (मन १६)।

अर्णस वि [अर्तरा] सक्एर (पर्मर्स । १)। अर्णका पूँ [वे] १ एक स्तेष्य देशः एक स्तेष्य पाठि (पण्ड ११)।

अगरम्य पू वि । १ रोप एसमा, कोव (कुमा १६१६) ६१ मिन)। २ समा (घ १७६)। अमस्तर्गर न [अनस्त्र] युन्नमन ना एक घर — नार्य के बिना ग्रेपके के श्रीक्ता पुरनी बराना, गिर हिनाना प्राप्ति स्टैन। ये दूसरेका प्रमित्राय जनना (ग्रीर)।

अध्यतार रि [अनतार] १ किसने पर-वार प्यान दिया हो नह, त्राष्ट्र पति (किता १ १: मग १० १)। २ पर-प्रीट्ट सियुड भौगर्नेया (हा १)। १ तुं मरकोन के सारी पावचे टीपीरर ना पुरू पूर्वमीय नाय (गम १४४)।

श्चिष व [भूत] 'युश्वकानं मूत्रवाद्यक्ष्य-यत (तूप २ श) । अवगार वि[स्त्रयशार] १ करवा वालेगाना। १ दुर्ग रिप्य, माग्र (ब्ल. १) ।

क्षणगार वि [अनाकार] प्राकृति-पूम्य प्राकार चीका चेवसंभव्यवहारामावमी मारणगारं च (विसे ६२) :

(१वस ६२) : अजगारि दुं [अनगारिस्] साबु यति मुनि (सम ६७) :

धणगारिय वि [आनगारिक] साधु-संबन्धी सुनि वा (विसे २६७६)।

अग्रास कु [अध्यक्ष] दुनिश यकाम (द्वर्ष)।

श्राप्तिम्य वि [अन्तर्ग] १ को नवान हो कर्त्रों से साम्ब्युद्धित । २ पु करन्द्रप्त की एक वाडि यो वज्र वेटा है (तंदु)।

क्षताच्या रेको अनय (कृष्ट १)। अजन्य हि [ब्रह्माका] ब्रस्ट-नासक कर्म-गरफ (रह)। अजन्य ) कि [अनर्य] १ यमुस्य कृष्ट्राय अजन्यय ) पंचित्र (सात्र ४) 'रहतार्थ सत्ताच्या (रित पंचन्यास्ट्लार्ट (स्ट १९७ टी एट )। २ महान्, हुन। १ उत्तम

भेष्ठ 'वं मगर्वतं धरगृहं नियमणीए प्रस्तुग्यम-सीए, सदार्थीन' (विते ६१) ७१) । अध्यय वि[अनय] गुज निर्मन स्वच्य (पंचव

४)। समयद्भ देशो करिस = इत्। सल्ब्यः (हे ४१८७)।

समाण्यस्थार वि [दे] धविदान नहीं छेदा हुया (देश ४०)।

अप्रक्र वि [अस्यान्य] प्रवंश्य को न्याय पुरु क्यो (पण्डु १ १) । अध्यक्र वि [अनार्य] पार्य-वित्र पुरु, वराव

पापी (पण्ड् र १: यांत्र १२६) । अञ्चल्लाव (मर) अपरथ्यो । त्रंड पूं [राण्ड] क्लार्य देश (महि ११२ २) ।

काणास्त्रकाराय थे [अनस्यक्ताय] सम्यक्त काल, प्रति सामान्य हाल (स्ति ५२)। अलारमाय थे [अनस्याय] १ सम्यक्त का समार । २ विश्वय सम्यक्त निर्देश है बहुवान (न्या)।

सम्प्रहार [अनावे] सार्व-साम से परिव 'सएहा किंच पक्तर' (उत्त १०, १)। समृद्ध पू [नावर्ध] १ बुक्सल, सूर्यम (उत्सा १ १। दर १ दी)। २ प्रयोजन का समृद् (भाव ६) । ६ वि निकारण कृषा निष्क्रस (निकृष्ट पण्डह २ १) ।

अपाइत वि [अनचे] विभाव-रहित सवत्र (अ ३ व)।

खागणम वि [अनन्य] १ ब्रांतम धर्मणुठ (मिन्न १)। २ मोक्रमार्ग 'सक्लणु बरमाणे वे ए खरले ए बरामणे वे ए खरले ए बरामणे १ देन १

दा। अनत्त हि [अनात्त] प्रपृष्ठित प्रस्थीहत (क्ष २१)।

अज्ञ वि [अनार्च] परीडिठ 'दम्बाबदमाईनु' भत्तमण्डे गवेसण् द्वण्ड' (वव t) ।

भजत्त कि [च्छ्याच] ऋख से पीक्षित (झ व ४)।

श्रमत्त वि[श्रमात्र] दृषकर, गुल्ल-महाकः 'ऐरेस्पार्ल भी । कि भता पोग्क्स स्त्युता वा' (भव १४ १) । श्रमत्त न [कृ] निर्मास्य देवोषिक्य हस्य

समत्त न [व] निर्माप्य वेदोनिका हम्य (वे १ १)। समामा केते सम्मार्ट (च

अमस्य देवो भगहु (रहम ६२, ४: मा २७) वर्ग)।

भागभंव गरु [ भविष्ठम् ] १ मार्गं रहवा हुमा।२ मस्त्र होता हुमा भागभंते दिनस्वरे नो भवर गरुम्मिहीर माहारं (पदम १४

- वा चयर चतास्यहार झाहार (पद्धम १४ १६४)। भणका देवो अध्यापत्र (मुद्दा १५६ तुर १ भ-पदम १ १३)।

क प्रवत्त ह हरू। कामप्रक्रिय केनो जामप्रविभय (मन १ २)। कामप्र वि [कामप्रो] घाँए करने के स्योग्य या मरास्य (इर १)। क्षवप्य वि [क्षतस्य] प्रविक बाुद्ध (ग्रीम)। क्रजाय वु [अनस्मन्] निव से विव मात्मा से परे (परम ६७ २२)। उस वि [ 🗗 १ तिबाँच मूर्च। २ पानन मूनाविष्ट पराचीन (निचु १)। बस्ता वि [वश] परकत पराकीत (पत्रम ३७ २२) । धाजाच्य पू [दे] बद्द तनवार (दे १ १२)। क्षणप्तिय विकिन्यिते १ नहीं दिना हुथा। ९ साबारख सामल्य महिरोपित (ठा १ ) ! जय पु [ तय] शामान्य-शादी पद्म (निर्धे)। अवस्मितर वि [अन्तस्वस्वर] शेवरी तत्व को छो। बालनेवाला खुरूब-धर्मात्रा परस्का-तरा सु प्रम्हे मदलुरकन बुर्ततस्य (पनि ₹१} । क्षणभिमाद्दत [अनिभिन्नह] 'सर्वे देवा क्त्याः इत्यादि स्प मिम्यान्त्र का एक मेर (मा ६) । अजभिग्गहिय न [अनभिमहिक] स्मर देखो (ठा२१)। ब्यणभिग्गद्दिव वि [अनिभगृद्दीत ] १ क्या पर्-रूप्प (था ६) । २ बस्कीहरू (क्व २≤)। बर्णामञ्ज ) वि [बर्जामहा] धवान, निवान भजमित्र 🕽 (मर्नि १७४ कुन १६०)। अर्जीवस्था वि [जनमिसाय] स्थेत्रंत w) ( धर्णामम वि [भनिमिप] १ विवित्त, विवा

व्यविध्यातिक वि (ज्यानिष्णृतिव) १ क्या 
इस्तृत्वा (वा १) २ व्यव्याति (व्य २४)। 
व्यविष्ण्य ) वि व्यव्यानिष्णुत्ते व्यवत् (विवीक्ष 
व्यविष्ण्य ) वि व्यव्यानिष्णुत्ते व्यवत् (विवीक्ष 
व्यविष्ण्य ) वि व्यवत्ति (व्यव्यानिष्णुत्ते विवाक्ष 
त्रीत् को वक्ष ते ते न बहु जा वर्ष (वृष्ण्य 
क्ष)। 
व्यवत्वाति वि (व्यविष्णुत्ते )। २ विवेक्त्यीय 
वरत-विवत् (वृष्णुत्ते १२४)। २ विवेक्त्यीय 
वरत-विवत् (वृष्णुत्ते १२४)। 
व्यवत्व (वृण्ण्यात् १२४)। 
वर्ण्ण्यात् विवत्य । वर्ष्णित, क्ष्माम् (व्य २क्त 
तः १)। 
वर्ण्ण्यात् विवत्य । वर्ष्णित, क्ष्माम् (व्य २क्त 
तः १)। 
वर्ण्ण्यात् वे व्यवत्य । वर्ण्ण्यात् वा व्यव्य 
वर्ण्ण्याः । विवत्य । वर्ण्ण्याः वर्ण्ण्याः । वर्ष्ण्याः । वर्ष्णाः । वर्षाः । वर्ष्णाः । वर्षाः । वर्ष्णाः । वर्षाः । वर्षः ।

अजराय नि [अराजक] एव-सून्य निसर्ने श्रमान हो यह (सह १)। खजराइ पुंदि] सिर में पहनी बाठी रंग-विरंबी बड़ी (दे १ २४)। अव्यक्तिक वि वि अवकारा-रहित पुरस्तर-रहित (दे१२)। २ सीचे और प्रावि मोरस मोज्य (निषु १६) । अवरिद्वा वि (सन्द्रेरी प्रयोग्य नानायक **बाजरूर**ी (कार्या १ रे) । अ**ज्रह्म [ अनस्य** ] असमर्व (भाषा २ 2, 2 0) 1 अग्रस्त र्षु [धनस्तु १ घरिन, घाम (कुमा) १ २ वि सरमर्वे । १ समोग्व 'सराक्री अग<del>व</del>-सोति व होति सबोगो व एक्ट्रा' (निवृ ११)। अञ्चल कि [ऋष्यक्ते] १ करवर्षाः । पू दिक्छ रा स्वमीतर्ग सुन्तं (चर) । अञ्चलक्ष्य वि [अन्यकृत] विश्वका प्रयकार न किया क्या हो नह (हन)। जजनगरु वि (सरमण्डात) ग्ताति-परित 'स्ट्रस्य मध्यवस्तास्य निवर्गकट्टस्य वेतृस्य एरे क्रमासनीसामे एम पामुच्चि दुवर' (ठा २ अयव्य वि [अनपाय] एन्हन-पहित निवैश (दुपा २१६)। अम्बद्ध न [अनवध् ] १ पन का सन्दर र्क्स समाव (सूम ११) । २ वि निर्देश, निर्माप (पर्)। भजवन्त्र वि [अवकार्य] उत्तर देशो (पिने)। भजबदुष्प वि [अनवस्त्राच्य] १ विस्को किरमें दीका न से जा एके देशा पुरु अन्तराव वरनेवाता (बहु ४) । २ व. प्रव प्रामधिका वा एक मेर (स १ ४)। अभवद्विय वि [अनवस्थित] १ प्रध्यवस्थित यानवीमत (बानु १६७ तुर ४ ७६)। २ चंत्रत सरिवर भरावश्चिम च चित्त' (तुर १६.१३)। १ पल्य-विदेश भाग-विदेश

(FF Y P1) 1

कार रेश

अनवन्तिय र् [अजपनिष्क, अध्यविष्क]

बलम्बंतर देशों नी एक बादि (पछ् १ ४)

धाजवरथ नि [धानधस्त्र] सम्बद्धिया यनि-यमित घडमेक्स (दे १ १६८)। अवक्रवा की [अनवस्वा] १ परस्य ग समाव (क्य) । २ एक तर्क-बोप (विते)। १ प्रस्यकरमा 'माससी मानद माना, परन माना पिना म पुत्ती थ । स्रह्मस्या चंत्रादे कम्मवद्या सम्बद्धीयान्तुं (पिने १ ७)। काराक्ट्रमा वि [क्] १ दनन्त क्यांपित विस्तीम (सब १ १)। २ महिनाती (दुव 2. K) ≀ अववद् वि [अन्त्रस्] निराप निरीप हुन (प्राच्छ ५१)। अम्बद्धिय देवो अनुब्धिमय (धीम) । अञ्चलकारा देखो व्यापन्यस्या (सम १२६) वर्ख १ ३ प्राप)। भवनवमाय 🕶 [अनपनदत्] १४५-दार नहीं करता हुया। २ शतकारी (वर अपन्यस्य वि [अनुबारत ] १ तकः विस्तर-श्रविचित्रता२ न सदा≰नेशा (दा२वः) £) 1 अवस्पारस (मा) वि [धनन्याहरा] <sup>सन्त</sup> बाएए पहितीन (दुमा)। अजबसर वि [कतन्त्रसर] ग्राक्तिक प्रकि न्तित (पत्रर) । শমবাহ্ৰি (অহাম) বাৰা-বহিচ দিৰ্দ (मुना ६६व)। व्यवस्थितिय वि [अनुपश्चित्र] क्षेत्रिय निसदी परगढन हो । भवने क्लिय विकास के विकास किया है है केता । मा । २ धरिकारित नहीं सोवा ।या । कारि वि ["कारिन्" ताइतिक । कारिया को ["कारिता] तहत कर्ने (का ७६० वी)। भवसम्बन्धः विकास विकास स्थापः विकास स्थापः विकास बात (दन ११६) । अवस्थित है [अनक्षित] क्योपित करनार्धी (मारम)। अञ्चर् वि (अन्य) निर्देश प्रवित्र (बीर) ग २७२। से ६ १)। अवस्थिति प्रसन्त वर्ति-पौत 🕫 रूप (दे१ १३: नुस ६ १३: लए)।

छलइ न [ अनमस् ] भूमि पृषिकी (से ६ क्राज्यहरप्रमय वि दि प्रतर्ट विद्यमान (दे १ YE) 1 अध्यक्षयम्य वि [वे] विपसन्त मन्त्रित (पइ)। खणहा की [अभूना] इस समय (प्राप्ट ८ )। अजहारय वं दि । बहा बता जिसका मध्य-नीचा हो वह बसीन (दे१ देव)। अवस्थित विश्वहत्यी हरय-चीत निष्टर निर्देव (प्रत्य मा ४१)। अवश्चिम दि [अनिधिगत] १ नहीं जाना ह्मा। २ प्रे वह साबु जिसको शाकी ना ज्ञान न हा, घयोतार्व (भव १)। अव्हिष्ण देखी अम्मिष्ण (प्राप) । अविद्यास वि (अनम्प्रास) धर्माहरू शहन मही करनेवाना (उव)। लगहिङ) न [भगहिङ] पुनरात देश की लगहित प्राचीन राजनाती को धानकत 'पाटन' नाम से प्रसिद्ध है (सी २६ भूमा)। बाह्य म [पाटक] रेखी अमहिक (ग्र.१) मृश्यि १ घटक)। समाद्रीण वि जिनभीन । स्रक्त सनायत्त (मैय १६१) । कालहुस्छिप वि वि] विश्वका फल प्राप्त न इया हो वह (मन्मत्त १४३) । क्षणाइ वि [अनादि] मादि-रहित निरम (सम १२४) । जिह्न निह्न वि निपनी द्याचन्त्र-बर्बित शास्त्रत (स्व भस्म ६१ बाव ४)। संत बंद विस्मित्री मनादि कृत्व से प्रवृत्त (प्रवृत्त ११८ १२: महि)। अजाइक्ष वि[अनादेय] र बनुपारेय प्रहण वरते के प्रतीरव । २ नाम-कर्म का एक मेद. जिलके उदय से जीव का बचन मुद्ध होने पर भी बाद्य नहीं समभ्य बाता है (हम्म १ २७): अजाइय वि [अनादिक] धारि-धीर्व निष (मम १२१)। अगाइम वि [अद्यातिक] स्वयत-पहित भरेता (मय १ 🔭)। अमाद्द नि जिजादीत । पापै पापित (मय 1 (1 )

ध्यमाद्यः प्रमायात् । संसार, दुनिया (मन ११)। भगाइय वि अिताइती विश्वका मादर न किया बया हो वह (कर द६३ टी)। खणाइस्ट वि जिल्लाबिस्टी १ बक्सपित निर्मेश (पएइ २१)। लगाइक रही अगाइम (ज १ ११ टी पि समात्र १९ [अनायुक्त] १ वित-रेक (सूप थ्यपाउप रे १ १)। २ मुक्तभा सिङ (ब खगाउस विकिताकर जिल्लाहरू और (मूप १२ २ श्रामा १ व)। अजाउन विभिनासक रागाय-राग वे स्यास बसाबबान (बीर)। लभाष्ट्र**व रे**स्रो खगाइट्रा (सम. १३१) । भजागम र् [अनागत] १ मन्यि काल 'मरागयमपरसंता पञ्चप्यभगदेसमा । ते पच्छा परितर्गति भोगे बार्डाम भोग्यणे (सुध १९४)। २ वि स्रविष्य में होनेशना (सूम १२)। द्वा की [ीद्वा] मनिष्य काम (नव ४२)। बगागस्थि वि [बनर्गस्थित] नही चेता हुया (चन्न)। अजागन्तिय वि [अनाव्यक्षित ] १ नहीं जाना हमा मनक्षित (शामा १६)। २ सर्गरिमित 'मणामनिमानिषद्यंडरोम' स'एक्ष विज्ञाह' (चना) । अजागार वि [अनाकार] १ प्राकार-रक्तिः, धाकृषि-सून्य (छ। १)। २ विरोपता-सङ्गित (कम्म ४१२)। ६ न वर्शन सामान्य द्यान (सम ६६)। अनाजीय वि [अनानीय] १ बानीविना रिदेश । २ सामीनिका भी इच्छा नहीं रजन-वासा । ३ निःस्युद्ध, निरीष्ठ (वस ३) । धणाजीवि वि [अनाबीविन्] करर देखो 'मिनाई भ्रणानीनी' (पढि निष्कु १)। भयाड प्रं [दे] बार, उस्तरित (दे १ १०) । अजादिय वि [अनाद्य] १ विसका धावर व विया मता हो वह विरस्कृत (माव १) : २ वृ

अम्बुरीय का प्रविद्वासक एक देश (ठा २,६)।

र की अमुद्रीत के समिष्ठायक देव की राज-वानी (बीव ३)। अगणपामिय रि अनानगामिकी १ पेथे नहीं वानेवाला (ठा ६,१)। २ न सर्वाप-सान का एक भेद (सदि) । लपादि रेखी समाह (म ६८३)। अणाविय ) इंडी अवाह्य (इक पराह १ १ अध्यादीय ∫ ठा३१)। अणाद्ञ देवो अगाइच्च (फ्लू १ ६)। अग्राभिसद्धन जिलाभिष्या भिष्यात्वका एक मद (पंच प्रें २)। अगमाग र् [अनामोग] र बनुत्योग के स्थानी यसाववानी (याव ४)। २ व मिन्याल विशेष (कम्म ४ ११) । अमामिय वि [अनाभिक] १ नाम-र्यहर । १ पुंचनान्य पैन (तंद्र)। ६ वी क्लिहोपनी के करर की धेएमी। अगाय वि अद्वादी नहीं बाना हवा बगरि चित्र (परम २४ १७)। अमाय पूँ [ब्यनाक] मर्त्यमोकः यनुष्य-सोक (T t t): अनाय प्रविज्ञासमम् विश्वसम्बद्धाः धारमा से परे (सम १)। अणायम वि [अनाय**क] नायन-रहित** (परम 1 ( 0 3 अमायग वि∫अज्ञात ठी स्वत्रत-रहित प्रकेसा (निष् र)। क्रणायम वि [अक्षायक] स्रजात, तिवीव (निष् ११) i अज्ञायदाय ) न [अनायदान] १ वेरमा प्राहि भणाययण रे नोचे बोगों का बर (इस १,१)। ॰ जर्री सकत पुर्व्योंका संसर्व न होता हो बह स्वात (पर्याः २ ४) । ३ पतित साभूमों का स्थान (मान ६) । ४ पत्र नर्भुसक वर्षे छा 🕏 चंत्रवंशासा स्थान (श्रीम ७६३) । अभाषच वि [अनायची परावीन (वडम 3E, 34) I अगायर पू [अनादर] य-बहुमान सामान (पाघ)। मनायरत न [सनायरम] प्रनाबार, बराब भाषरण् ।

्रस	पाइअसदसङ्ख्यको	
		अञ् <b>ायरणया— अधिकप</b>
अभ्यायरणया की [अनावरण] उसर देव (सम ७१)। अभ्यायरिय देनो अन्त्रञ्ज ≂सनार्व (१स्ट्रह १	बैन मुनि (बत्त २)।	(पर्याहर १)।
रैन्परुप रेश्व )।	ननाबार ३ [अनाबार] एक वन के उरवात	विविद्यानिस्य] मधर, धरनायी (सर
भणायार रेको अजागार = धनाभार (विधे) रुजायार पुं [अनाचार] १ सक्त-निधि	विवादि } वि[बनाधि, क] मान्तिक	२४३ प्रासू ११)। भावणाच्ये ["मावया] प्रोसारिक परावी वी प्रक्रियता का चिन्तन
माचरण (न १००)। २ नृहीत विसमी क बात-बुम कर उस्तीयन करना बत-सब	1 44x)1	3
(बर १)।	म्याहिहि ई [अनामृष्टि] एक धन्तक्र पूर्ति (भन्त १)।	अभिटुवि[अनिष्ट] क्योतिकर, हेम्म (उन)।
अपारिय देवो अष्यक्र ≠धनार्व (उन)। सपारिस वि [अनार्य] नो सरिन्द्रशीन व	अभिष्ण देवो अनिर्मण (विकार २१)।	अणिहिय वि [अनिदित ] मसपूर्ण (वर्ष) । अभिज देशो अणि रण (वाट) ।
रो बहु (पठम ११ म.)। भाषारिस वि [अस्पादश] दूनरे के कैसा	वरिनत । २ ई संसार (भव १३३)।	व्यणिदाक्यै [के व्यनिका] र विनास्त्रत किमे की पर्दे विसा (ध्य १६ ४) । २ वित
(418) i	अभितंत्रिय वि [अनिकुत्रियते] टेझा नहीं फिना हुमा सम्म (नउद्य)।	की निरमता। श्रहानका सभाव (मद १२)। अधिमा पूंकी [अधिमन्] माठ सिक्सी
भणासच्च वि [धनास्त्रिपत्त] प्रनुषः, प्रकृतित न्यूरी दुनामा हृषा (उना) ।	जिमाँत धारिकेंगा देवो भारमत्त है	में एक सिन्दि, स्त्याल कोटा का वाले ही
भजास्थ्य पुं [कासप्रक] मौन, नही बोलना (पाप) ।	क्षविर्वेत्तय १ १७ हुमा)।	र्शीक (परुम ७ १३६)। अधिमिस न [अनिमिष] फन-विरोप (स्त
लगाय दर [मा + सायय्] संगताना सला- वेति (सिरि १४१) ।	व्यक्तिएय वि [अनियत] श्रीतमीत, स्त्रति- वदा 'श्रीवसे शिक्षे श्रीतपुरवत्ताचे सम्प्रकृते भिन्तु श्रुप्तविक्ता' (सूत्र १७२)।	र १७१)। स्विमिस १व [स्विमिय मेव] १तिमेव स्विमेस १ कुम (गुर १ १७१)। २ र्
भगावरण वि [अनायरण] १ मारच्छ-राहित। २ म. केनल-बान (तम्म ४१)।	अभिविद्य वि [अनिम्बित] १ विकास सम्म	मतन, मक्ती (रह १, १) । ३ देन देखा (रह १: मा १६) : सम्म दु [सदन] देर
भगाविम वि [आनायित] भगवाया हुमा (तिरि ६१ ७१)।	न वो नई हो बहु, उत्तम (बर्म १) : २ वुं नियर देव नी एक बार्ड (रयुष्ड १)।	देवता (विसे ६४०६) । अणिय न [अनीक] सैन्द, नत्कर (क्प्प) ।
भाषाबिद्धि है भी [अनापृद्धि वर्षा वा समान	व्यक्तिय कि [क्षानिन्तिय] १ देखिक-पीता। २ द्री मूळ वीचा १ क्षेत्रकाती (अ.१.)।	भःभयन भिन्ततीसस्थास्ठ (ठार)।
भगाविस विभिनाविद्यो १ निर्मेत स्टब्स	विक्रियालयम्, को इंडिजों हे बाना न का	व्यक्तिय न [के] बार, यग्न-याव (स्वत् २,२)। व्यक्तिय विक्रिय] यस्विर, यनिव्य (तर)।
क्रणासंसि वि[अनाइसिम्] धनिक विस्वर	रामी (कुर १२४ स १६ क्लि १ हरू)।	अणियह दु [अनिवर्ध] १ मोस प्रक्रि (प्राचा १ ६१) । २ एक महाबह (ठा २, ३) ।
धनासण देखो अजसज (तुम १३,११०) ।		<sup>द्या</sup> पियद्विति जिनिवर्तित । १ विक्त करी
अजासय र् [अनाश क] सन्तरन बीजव- चक्क 'चारस्य कील्पन मणानव्यं' (तूम १	अभिक्ष वि [अनेक] एक संक्षाता (नर४३)। व्याद वि [बादिन] सम्मितनसे (अ. ८)।	हेनेकला, पीछे नहीं सीटनेकला (धीर) । २ न कुक-प्यान का एक नेव (ठा ४१) । १ ई
७ ११)।	र्जाण कांग्री भी [अनीकिनी] ऐसी हैना किसरे	एक महत्त्वह (चंद २ )। ४ धापामी बल्पिसी

অপি হসী भी [अनीकिनी] ऐनी हैना जिसकें

२१ कहानी २१वकरण ६१६१ मोड़े सीर

अविकित्तन वि [अमिजिस] नहीं कोहा

हमा, मारियक महिक्सिंग चिलितियाँ थ

वरीर मोर्स्स संबंधित वरता धनाम्यं बादेवाने

अभिगतः ) देशोः अत्रशिम (जीतः ३ तत

१ १११ कारे ही (परम १६ ६)।

रिस्परं (बताः धीरं) ।

अभिगगम है १७)।

काम में होनेवासे एक छीवीकर देन वा बाव

अभिवट्टि नि [अनिवृत्ति] १ निवृत्ति-र्वहर

ध्यतुति-वर्षित (रजे २, २) । २ नवर्ष ५०-

स्वतंत्र (रमं १)। करण व [\*इरव]

मान्या ना रिगुद्ध परिशास-विशेष (बाबा)।

बादर न [बादर] १ नरवां दुश-स्वानक। र

नरवें द्रशास्त्रलाह में प्रवृत्त बीब (यान ४) ।

अगिवय देनो अयगिय (जीव ६) ।

(सम १९४)।

(平天 ₹ १)।

भवासव रि[अनाभव] १ धापव-रहित । २

भन्मतिष [अर्नभन] व्या (गुम १

समाद (र [समाय] २ टाए-फीन (निष्

१)। १ रसाम-निन, बर्धनत-परिता । रेन

🛫 मायव का समाव संबर । ३ व्हिला, बमा

अणु पूं वि] बात-विरोध वानतकी एक जाति

अणु भी [तुतु] शरीर, 'नुप्रणू' (गा २६१)।

अध्यक्ष विक्रिही स्वात मूर्व (सा १०४

बान्य-विशेष (वे १ ५२) वा १८) ।

'भवम्माण्य (विता १ १)।

अणुभ देशो अणु = मए। (पाम)।

(R 2 X) (

14X) 1

अजियम वि[अनियत] र मन्यवस्थित धनि-

व्यक्रियय — अणुङ्ग्य

१४ मा १६१)।

स्वतिया को दि । बार, भदनाय पुत्रराती में

'मर्गी' 'संवारिएयाइ पहमा' (बर्मीन १७)। अभिरिष्ट वि [वे] परतन्त्र पराचीतः। (काप्र अजिरिज वि [अनुज] ऋए-वित उक्कए पनुर्गी (पनि ४१ चार ६६) ।

व्यक्तिक्क्क वि [अनिरुक्क] १ प्रप्रतिहर नहीं येम हुमा। (नूम ११२)। २ एक मल-इर मृति (धन्त ६) ।

अधिस्त पुं[असनिस्त] १ वागु, पथन (हुमा)। २ एक मधीत तीर्वकर का शाम (किला)। ३ पन्नस-वंशीय एक धना (पटन ६ २६४)। अणिष्टा को [अनिव्य] बाईसर्वे वीर्वेक्टर की एक रिल्पा (पत्र १)।

अभिज्ञित वि] प्रमात सबेरा (दे१११)। मणिस न [अनिश] निरन्तर, सदा हमेशा (मा २६२ प्रामू २१)। भणिसङ्घ १ वि [अनिस्षः] १ प्रतिश्वतः। अजिसिंह } २ बसेमत सन्तुत्रातः ३ ऐसी भिना जिसके मानिक क्लक हों सीर जो सब की

मनुमति से सी न गई हो साचुनी मिस्रा का एक दोप (पिक भीप)। भजिसाह वि [ऑनशीम] शास-विशेष बो प्रकाश में पड़ा या पड़ाया काम (धादम) । व्यक्तिसम्बद्ध वि [ अनिमीकृत ] विसं पर

किमी बाम स्थक्ति का प्रविकार नहीं सबै धानारस्य (वर्ष २) । अभिस्सा औ [अनिमा] बनामकि, बाग्रकि का सभाव (ठव)। अभितिभय वि [अनिभित] १ धनातक यापिकर्राह्य (सूच १ १६) । २ प्रतिकत

र्यादन, न्याबटर्यादन (स्म १) । ३ सनाधिन विनी के साहास्य की बच्छा न रखनेवाला (उत्त ११)। ४ त. शान-विरोध समग्रह-जान ना एक नेट, को सिय या पुस्तक के जिला ही रोग है (स ६)। मिन्द्रिक [अनीह] १ वीर, सहिल्लु (तूपः)

अणिह वि [अस्तिह] स्तेह्रपहित (मूप १ व २ ३ )। अभिद्वि दि] १ सहरातुस्य । २ त मुख ग्रेंड (दे १ ११) । अणिह्य वि [अनिहत वहत वहीं मारा

१२२) । २ क्ष्मियट, स्टल (सूप १८) ।

३ निर्मम नि:स्तृह (बाबा) ।

अध्युत्र पूर्वि १ माहति मात्रार। २ पूंची हुमा। रिष्ठ पू िरिप्र] एक मन्तहर् मुनि अणुभ वि [अनुग] यनुवरण करनेवामा (मन्त्र ३)। अणीइस वि [अनीहरा] इस माफिक महा विमञ्जल (स.३.७)। लणीय न [अनीक] छेना भरकर (प्रोप)। अजीयस पूँ अिनीमसी एक फ्लाइर दुनि ना नाम (घन्तः ३)। खणीस वि [अनीश] बस्तर्वे (बनि ६)। अपीसकड रेको अपिस्तकड (वर्ग २) ।

अणीहा रम वि अनिहारिमी पुत्र भावि में होतेशाला मरस-विशेष (मग १६ ८)। क्षणु ध [अनु] यह मध्यय नाम मीर पानु के तान संगठा है भीर नीने के मर्पों में से किसी ्क को नवनाता **है** १ समीत नवधीक 'मजुङ्गेदस' (गउद)। २ सम्, खाटा' 'मजु माम (उत्त १)। १ व्या परिपाटीः फ्लापुर (इह १) । ६ में भौतारु 'घणुवत्त' (महा) । ५ सक्य करना "क्यु जिएं घरारि संदीयं इत्बीहि' (दूमा)ः 'चल् बार' संबद्ध ममौत्तिए तृह प्रसिम्मि सन्दर्शिया' (बत्रा)। ६ मोग्य

ज्ञीनतः 'म्रस्युकृति' (सूम १ ४ १)। ७ मीन्सा 'बल्**दिल' (कुमा)। व बीच का मार्ग 'म**ल् दियो' (पि ४१६)। १ मनुदूस हिवक्छ **भागू वस्म'(सूम १२१)। १ प्रतिनिवि** 'मएएपयू' (निषु २)। ११ पीछे, बाद 'मणु सम्राणु (गाउड)। १२ बहुत सन्यनः 'म्राणुर्वक' (या ६२) । १६ मदरकरना सङ्गयताकरनाः भारतपरिकारि (ठा३४)। १४ निरर्वेक मी इसका प्रयोग होता है, देशो 'प्रगुद्धम' 'प्रगु-चरिम'। छ<u>णु</u>वि[अञ्] १ कोइा,मन्प (पल्ह २३)। र क्रीन (बाक्षा)। १ दूपरमाए (सम्म

इसविख (रम्म १ १८)।

अजुभत्तम् वि जिनुवर्तक मनुदूर्भधावरण करनेवासा सनुसरण करनवासा (विश 8¥ 7) I १११) । अणुअक्तन दि] प्रमात सुबद्ध (दे १११)। अञ्चलाकी दि] वाठी (६१ १२)। बासा (ताः)। (सामा ११)। अणुइअ र् दि] याग्य-विटेश बना (र १ २१) । भणुरूञ देशो अणुद्धिय । १३३)। सय वि [मित्र] उत्तम कुच भेठा र्वस (कप्प) । "विरद्ध सी "वरति देखी ।

२ नहीं निराष्ट्रमा बन्दिक "मराइण्लास्ता मण्डग्णाचा निब्धनस्थनंदुरता (सीत) ।

अग्रुअ कि अनुद्धी १ पीछे स उत्तर। २ पू स्रोटा भाई। १ औं स्रोटी बहिन (धर्मि ¤२ पडम २८,१ )।

अणुऔद सक [अ दु÷ कृपू] पीसे श्रीवता। सङ्ग संपूर्णभिवि (भिन)। छ। पुत्रीय सक् छिन् + कम्प दिवाकरना। इ अण्डांपणिक्स (शस्य १४४)। बजुर्जपा की [अनुकम्पा] स्मा कस्पा (स

4 २४ सा १६६)। अणुत्रीपि वि [अनुकस्पिम्] वयाष्ट्र, कदणा करमेवासा (प्रभि १७३) ।

अणुअस्ति देनो अणुवस्ति (पूष्क २१)। अणुकर वि [अनुपर] १ वहायताकारी खर चर (पन्नर)। २ सेवक शीवर (प्रामा)। खणुश्चर वि [अनुवर] बनुमरण-धर्मा (इस्य

अणुआर दु [अनुद्धार] बनुष्र्यण (नाट) । अञ्चलारि वि [अनुकारियः] बनुकरण करन-अणुजास पुं [अनुकास] प्रमाद, विकास

अगुर्ण्य दि [अनुद्रीर्थ] र ध्यात यस हुया।

अगुर्अपेक वि [धानुक्रम्पत ] दिस पर पनु

अञुक्द्द सक् [सनु+ रुप्] १ वीवना।

क्रमा की यह हो वह (नाट)।

१ ३ २)।

15

ह्मा (मीन) ।

(er K54):

अपुर्वम देवो अपुचिष्म ।

श्रमुक्त्य देवो श्रमुक्त्यि।

अणुक्ष्म वि [अनुद्गीर्थ] बाह्य नहीं निवका |

अनुबन्ध वि [अनुकृष्ठ] वप्रतिरूत प्युर्त

१ १) भावरिकपुरपार्य सन्तरे कन्तरियो

महाभागी (गण-दी)। दाग न [दाम]

वरताने प्रशिवों को सप्रसाहि देख परन

भैगारतो गर्बाल न बर्देश बहिनिये

(पर्वे ६) ।

अणुकुछ देशी अणुउस्क (हे २ २१७)।

धवित्तरपुर्वसरात्यं वं (सुपा २३४)।

अपुरुक्षण न [शतुरुक्षम] धनुरूष करता,

प्रतन्त करनार ते कहा । तम्मरूमे बिहुमुखी

बपुकृष्ठि वि [अनुकृष्ठित्] मनुष्म-गरम

अणुर्गपा में [अनुकरपा] करहा दवा (व

अणुगंपिय रि [श्रनुकम्पित] रिक पर

खणुगच्या देशो अधुनाम = सनु + वम । मग-

नन्दर वर अधुगच्छंत अधुगच्छमात्र

बरला की यह हो बहु (न ४०१)।

( tc) 1

क्रमुक्सार (विक १२६) ।

अगुउम मक [ अनुकूछय ] मनुकूष करना। र कर्तरण करना । वष्ट अणु उद्दरमाण 'যুহ্ববিদ্দৌনাডুকুনিত্যা দাড়িনা' (ধৰীদ ৭)। र्मात चलुक्तकर्म (१५ ५३०)। अणुक्रबृद्धेमाण (विगर १ रहिंग)। बणुकर्द्ध वि [बन्बाक्यस्त] प्रावित पर् अण्जोस (जिनुयोग) स्थास्य धेका अनुसदिह की [अनुकृष्टि] धनुवर्तन मनु-तुत्र का बिस्तार से धर्व-प्रक्रियादन (धीन २)। हित (गाना) । सरग (पेष ४)। २ दुन्दा प्रस (पनि ४४)। अगुक्केट वि [अनुकान्त] भाषरित, विद्वित भणु स्विष्ट्रव वि [अनुरृष्ट] प्रतुक्त प्रमुक्त लपुभाइय वि [अनुयोजित] प्रवर्तित प्रवृत धनुष्टित 'एक विशे धानुस्तरे माइसेर्ड मान (छ १व३)। परावाह्नया (तृषि) । ममा (माना)। बयुद्धीत देशो अञ्जोञ (विते ६)। अणुक्रप्य पू [अनुकाय] १ क्षेत्रपूर्वी है मार्च **अञ्चल** धक [जानु+कम्] इथ देव**ह**ता। अणुओग र् [अनुयोग] सम्बन्ध (प्र १७)। का मनुक्रास्त् । २ वि महापुरवीका अनुकरहा भनि बशुक्रमिस्सामि (बीवत १)। क्युओरि दुं [अमुयोगिन्] सूत्रो का व्या-करनेवाला 'सारावरराष्ट्रकारां कुनामरिकास अञुक्कम सक [असु+क्रम्] मविक्रमण क्याता मानार्थ, परामोनी होनात् रन रोस्य-वस्किति दुस्यः, भनुवन्त्रः प्रश्वारी वस्तु-करता। यह अलुक्कर्मद (ग्रूप १ १, १ शासमी वर होद' (रंगव ४)। भव्यं ते नियासाहि (येचका) । अणुत्रोगित्र वि[बनुयोगितः] सैकित पुनि-अपुरुम र् [अनुष्मा] परिपर्ग वन (महा) । अणुक्का **रेको अणुक्र**म (महाः वर १९)। सो म [शस्] अन के दरिप्रदी से रिप्प (एरि) । अ**भुक्कमण न** [असुक्रमण] वसन वनि (पी२८)। अणुब्रोयण न [अनुयोजन] संवचन बोहना (सूम १ ४,२ २१)। मञ्जूबर एक [बातु + क्ष] ध्युकरण करता (दिने ११ ६)। **जणुक्कुर्भ दि [श्तुकुषित] बोहा संपू**रित नक्ब कला । ब्युक्ते (६ ४११) । अञु≛प तक[अनु+कम्यू] १ दस दरना। (पव ६२)। अणुकरण व [अनुकरण] नकत (वव ६)। २ व्यक्ति करना। ३ दित करना। यह अयु-भणुक्त्रोस है [अनुक्रोस] स्या कस्स अणुस्य वर्ष [अनु + क्श्रम् ] ध्युतार करना **धं**र्यन (शत) । **४ अणु**ईपवित्र अणु-(ਬਾਖ ਖ)। पीचे शेवना । कपणीभ (मनि १४) रक्छ १५)। अणुक्कोस पुं[अनुस्कर्य] १ उलक्का जजुद्धाय व [धनुष्टाम] यतुषत्र (पूप १ क्राणुद्रभ वि जिलुक्तस्य विश्ववस्य के नीम्ब पराव। २ वि ३ अव्यवस्थित (सर ( R ? ? ? ) 1 अणुक्रर र्षु [अनुद्धर] स्त्रुक्रस्य भरत बाजुर्प १वि [अनुस्म्य 🖷 🛚 १ ब्यामु जणुक्तिसत्ति (अनुसिद्धार्) इन्यान निर्म (क्यू)। अर्जुडपर ) रच्छ । १ मन, चौकमान् (स्व हुमा, 'बिट्ट' पशुक्तितमूह एती मानी दुन अणुमारे वि [अनुसारित्] प्युक्तस करने-१२)- दियागुर'ष्एम बेरेलं इच्छिनवेर्निसा' महत्त्व (ना १२६)। बारा किवारमणुरारित्या महरकेट्ख (बहर)। (गण) । व द्विषय, भावतमुरंपय, स्तपनेने अणुग रि [अनुग] सनुबर, तीकर (१४ नो नयमुर'पए (श ४ ४) । भणुक्य भौ [अनुकृति] प्रुकृत्स नरमः दुन्यावरियाणं नाउरमञ्जूषेश य तवीविद्वारोनु क्षणुद्रेपण न जिनुस्म्पन् रेथ्या हुस (दव भणुग रि [अनुग] वनुहरता-नडी (नन्द ३) । ९ जीवः, वेशः 'मारमगर्शसगरम् म कर्पान्ड नरेड (वंबू) । ₹ **₹**() I (1.4) অপুকিদ্ৰ দি [अनुहीर्थ] আন বত হুদা **अपुगतिका रे**रो अनुगम = मनु + नव् । अञ्चर्धना भी [अनुस्त्रमा] स्वतः देनो (द्यानः

(परम ६१ ७)।

रनामा (दर्भ ६३ ७३)।

अणुटियन न [अनुदावन] वर्तन, प्रतेना,

अभुद्भवित [अनुदूषित] १ क्षेत्रे देना

हुमा । १ इर्जा रिवा हुमा (निच् द)।

अणुधिति रेगो अणुद्धिः (वंदक्त) ।

(तारा तूम १ १४)। इतहः अञ्चलक्ष्यार्थंत (एताम १ २)। इत अञ्चलक्ष्या (रूप)। अञ्चलक्ष्या (रूप)। अञ्चलक्ष्या रहे के अञ्चलक्ष्या (रूप ४ ८)। अञ्चलक्ष्या (रूप ४ ८)। अञ्चलक्ष्या (रूप)।

अणुगस्य मक [अनु+गर्जे] प्रतिस्ति करना प्रतिराज्य करना। वङ्ग अणुगङ्गे माण (णामा १ १८)।

अणुमान सक [ अनु + गम् ] १ पनुसरण करना पीके-पीके बनना। २ बानना सन मना। १ स्थावना करना सूत्र के सर्वो का स्थावना करना। कर्म स्थावनाम् (विदे ११३)। वनक अणुमान्मेत, अणुमन्ममाण (ज्य ६ ते गुमा ७०१२ ०)। चीक अणुमन्म (त्य १ १४)। क अणुमेतन्ब (तृर ७ १७६ पर्युण १)।

खणुगम पूं जितुगम १ धनुषण धनुष्टम (१२६१) २ बानना, हैस्-देस धनाना। निरुष्य करना (छ १) ६ तून की ध्यावधा नृष्ट के पर्व चा राज्येक्टण (वन १) । ४ सम्बद्ध एक की बचा में दूबर की विध्यानना (विध्य २६)। ६ ध्यावधा टीक्स (विधे १६ २७)। स्कुतनार हेण विक्र तथी व स्यूगन-राधेन बाजुनमा । 'स्युत्योग्डुक्स्मो वा व्ये पुरावसण्यम्पुरार्थ (विशे १६१)।

अणुगमण न [अनुगमन] स्मर देखो ।

अणुगमिञ वि [अनुगर्व] मनुष्व (कुप्र ४३)।

अणुगमिर वि [अनुगन्तु] धनुषरण करने बाला (दे ६ १२७)।

अधुनाय वि[अनुसत] १ स्मृष्टत विश्वका स्पृष्टस्य विसा पता हो वह (परह १ ४)। २ ताठ जाना हुमा (विशे)। १ स्मृष्टत को पूर्व से करावर चना सामा हो (परह १

६) । ४ प्रतिशास (विशे ११६) । अणुगर केवो अणुहर । प्रणुमरेद (स ६६४) । वह अणुगरित (स १३) ।

अपुगरण देवो अपुजरण (दुप्र १०१) ।

अनुगवेस सक [असु+गवेष्] बोजना गोवना तत्तास करना । समुपनेसद (कत्त) । नष्ट अधुगवेसेमाज (सन व १)। इर अधुगवेसियस्त्र (नम्र)।

अपुनाइ केबी अपुन्नाइ = धनु + धह् (नार)। अपुनाइक केबी अपुन्नाइक (१ ८/२६)। अपुनाम वृं [अपुनाम] १ छोरा चर्च (जल १)। र उरपुर, रहर के पास का गर्च । २)। १ विविध्य चर्च वे इसरा स्वेच

२)। १ निवक्षित सौव से दूसरा सौव 'गामायुषामं दुश्यमारो' (विपा १ १ सौदा स्राचा)।

भाषा)।
व्यापामि १ वि जिलुगामिन्, सिक् अव्युगामिन १ रेमुनएए करनेशमा शैक्ष-पीये जनेशका (थीर)। २ निर्देग हेरु, गुरु कारए (ठा १ थे)। १ सर्वाभान का एक मेर (कम्म १ ८)। ४ मनुषद, क्षेत्रक (सूम

१२,३)। अणुगारि वि [अनुकारिम् ] स्मृकरण करनेवाता नकानवी (महाग वर्षे ध स

६६)। मणुगिइ मी [मनुकृति] प्रतुकरण तस्त्र (मा १)।

अणुगिण्ड् देवो अणुगाइ = सनु + प्रहा वहः अणुगिण्ड्माण, अणुगिण्ड्माण (तिर १ १० णावा १ १६)।

अणुगिकः वि [अनुगुकः] स्थ्यन्त सासकः, नोकुर (सूम १७)।

अणुगिद्धि की [बनुगृद्धि] धःशासकि (वत १२)।

अपुगित सर्व [झनु + गृ] भगत करना। संग्र अपुगितिस्ता (पाना १ ७)। सप्यवित्रीय विश्वितास्त्रीत्री रिकास्त्री

अपुनिक्षेत्र वि [अनुगृहीत] विस पर सेह रवानो की गई हो वह (स १४ १६व)। अपुनिस वि [अनुनीत] र गीसे कहा हुसा

स्पृतितः । १ पूर्वं ग्रन्तकार के मात्र के समृद्रसः | विसा हुमा प्रत्य स्थानमान मात्रि (बत्त १३) । १ विमका बान किया ममा हो वहः वीचिन विच्या । ४ नः मानाः सैत्। 'चक्रासे 'मस्य-

निमामुक्तीर' (पदम १६, १४८) । अधुमुज वि [अनुमुख] १ पतुमून द्वित बीग्य (माट) । २ तुम्य सारा कुणवाना बारा पर्तकारस्यो, विद्वो

मस्मेद्र देशि वस्त्रदो ।

निच्छाएइ नियंत्रं तुसार

बरिमो सणुपुणिष' (चटड) । अणुगुरु वि [अनुगुरु] एर-परमय के सनु-सार जिस विपय का स्पवहार होता हो बह (बह रे)।

वणुगुरू दि [बातुष्कृष] धनुदृत्त (स १७८)। अणुगेरक दि [अतुमाष्कृ] धनुदृत्त् हे योग्य इतानात्र (ताप)। अणुगेष्कृ हेत्रो अणुगाह्न धनु+ प्रहृ।

मणुनेसर्तृ (ति ११२)। अधुगाद सक [ अनु + मह् ] इमा करता वेदरवानी करता। ह अधुगाद्दद्वक, अधु गमदिद्वक (शी) (गाट)। अधुगाद्द्वक (शी) (गाट)।

(कप्पू)। २ जाकार (भीग)। व नि जिस पर समुग्रह किया जास बहु (कब १)। अधुगाह दूं [अनवमह] वैत साधुमों को एने के निए शाक-निधिद्ध स्वान

प्रत के निए शाक-निर्मित स्वान 'एों मोनरे को क्एमोशियार्थ को कद डुग्मेंनिय बन्ध मानो।

डुरमेर्नेत म बन्ध गायो । मयखन मोशेहिम् अस्य कृगसे स उन्हों स्वमयुग्नहो तु' (बृह १) । आग्रमाहित्र ) वि (बन्द्रान्ते )

अणुमाहिक है कि अलुगृहीत निस पर अणुमाहीक क्षेत्र की कर, बामारी अणुमाहीक (महा पुना १२२, स १०)। कणुमाहीक हिन्दु होतिला रे स्वाप्त प्राप्त चित्र का एक में स्व (क १ ४)। २ वि. महा-प्राप्तिक का पात्र (क १ ४)।

अणुग्माइय वि [अनुदाविक] १ मनुदाविक नामक महा-प्रायमित का वान (अ ४. ३) । २ न प्रन्तीय-विदेश विषये प्रमुद्दाविक प्रायमित ना वर्णन है (परह २ १) ।

अणुरधाय वि [अनुदात ] १ वर्षात-रहित। २ न निरोध पूत्र का बहु भाव, विनमें सनु इक्षतिक प्रात्मित का विकार है। 'जन्मयन-गुर्काय सार्थक्य जिविहमों निर्माई पूर्

अणुग्याय म [अनुद्याद] गुस्प्रायक्तिः (धर १)।

(भाव व)।

अणुरपायण न [अणोद्धातन] क्मों का नारा (प्राचा)।

```
34
अगुग्यास सर [ अमु + मासय् ] बोतना
                                         बणुपीइ
अनुपीति } देवी बणुपित।
 भीवन रचना चित्रणे वा पाली वा तारमें वा
```

भारतं का शासूनकारेज का सम्पूनाएक काँ (निनी ७)। वर अणुग्पासीत (निष् ७)। अजुबय वृ [अञुबय] पैनानर इस्कृ करना (का प्रश्न)।

अध्युषर गद [अमु+ चर्] १ मेना नाना। २ वीधे-वीधे वाना अनुसरत करना । ३ चन्द्रान ररता । भगुषद् (मारा १) । यग-

भरति (स १३)। वर्ग बल्पस्मिकः (विने नेर अजुबरिना (चर १४)।

१११४)। वर अधुक्तत (कुछ ११४) अज़बर को अज़ुबर (रत २ )।

अञ्चला वि [अनुबरक] हैना करनेकाना (पर ६६) ।

अञ्चलस्य रि [अनुबरित] मनुद्रित विद्रित विका हुया (क्या) । अनुवित्तर अनु+च्यो मध्त, एक क्षम हे इसरे क्षम म भला। नेष्ट अणुनि अप (परा)।

श्रण्**थित तर [ शतु + थिन्त्**] विवासाः बार बरना, नोचना। यर्गावन (नंबा १६)। बद्द अणुर्वितमात्र (लापा ११) । बंद्द क्षणुचीर अणुचीति अणुचीर (वाचा नुम 1 ( 1 11 (7 %)) अगुवितय व [अनुविस्तत] नोव-दिवार,

पर्यंतीयन (धार ४)। अगुर्विश से [अमुदिन्ता]उपर रयो (बार अगुषिष्ट्र नर [अमु+स्था] १ धनुहान १रना । २ ररना । ब्रग्राविट्टर । (नरा) । अल्बिन्न रि [अगुबील] १ धर्नुहरु पाय-

रित शिन्ति भौतितित्वया बनवा विरिद्या बाग व वर्गानरको (बीच २४६) १२ श्राप (## t) 1

वित्रा हुवा "बावपेश्वयम्बिरामा स्वरका नागा बहाइयाँ (याना) । १ निगानित अमृत्रिक्या वि [ अनुवीर्देषन् ] विकर घरकार दिया हो बर् (घरका) । भनुभिन्न देनी भनुष्पित्रत्र (कृत १६३)

रक्त कर पुरु कर)।

अरुविकिन्दी अर्थानहीं सीचा। ोक्कस्य वि [राष्ट्रविक] गोपी और मस्विर रुम्या नाता (कप) । अञ्चल्द वि अनुस्सहमान । एखाइ नहीं ग्मता ह्या (परम १८ १८)।

ज्यानिक स् वि-[अनुदिक्स] नहीं क्षेत्रा हुमा, वयस्य (यक्तर २३८) । अणुनिक्कानि अनुस्थिती १ वर्षे-प्रीतन विनीत । २ सम्बैत समुद्र । ३ सम्ब मे रूपन सर्वीय 'पहिस्कृत तहर तुने नरिष्ठभद्र' प्रथान विवर्गप् । बहुबनयम्मुन्धिते पुत्रेक्य परिवत्तह

गरिष (गउप) । अणु•च्द्राति (अनुतिरसी) धन्तक नदी भोग ह्या (ग ४२६) । भणुत पुंशितुम] छोटा भारित १ )। अजुल नि [अनाजस्क] रेजरील, पोसा अजुजल व [अनुयात्र] यात्रा में 'मएएया धानमत्तं (मानधो वेष्ट्यः युन्तियं पूर्वं (महा)। अणुञ्ज वि [अनुष] स्ट्रेस बस्य (वर्ष १)।

अञ्जन्ता की [अनुयादा] निर्वय नि मरस् (fit se): भणुश सक [भनु+या] कनुमरण करना पीचे पत्रता। सम्बन्धः (विने ७१६)। अणु बाइ वि [ अनुपायिम् ] धनुनरस करने-कता (नृपा ४ ३) । अणुबाइ हो [अनुवानि] धनुवरण (वर्ष-वि ४१) ।

अधुद्राप्त न (अनुयान) १ पीध-शिवे परना। २ नदोग्मर-रिकेर स्ववाता (बृद्ध १)। স্তুমাত বছ [হারু + হা] নুর্বদি ইনা मम्मति रता। धनुबन्धः (उर)। मुद्रः मिचप (स२१) । (तूप १ १) ।

म्प्रजातिका (ति ११७)। हेर अणुत्रा अणुबादन र [अनुबान] बसुदित सम्बद्धि भणुभागासम् न [भनुहायन]धनुननि नेना 'मानप्रातातर्गार्गार्यास्तात्राहार्या' (र्वन १, १३)।

थलुकाचिव शि[अनुतान] नग्दर सन्दर

अनुवार । [अनुवार] । सर्वर सन्दर

(Tit 4 4) 1

(31 (10 4):

RE RY) I

(प्रभ्रह)।

98) L

इतास (कप) ।

'भगन रीएवरचे विकास' (राप)।

क्ष्णुत्मा तह [अनु + ध्या] विन्तर वस्या व्यान करना । संद्र अलुग्नम्बद्धा (मारक) । अणुग्नाय न [अनुष्याम] विनान, रिवार (मात्रन) १

सर्युक्त को अनुष्या। गुजयुक्ता<sup>र ठ</sup> (रना) । २ मालक नावबात (यर्)।

अजुम्बिका रें [दे] १ प्रयत प्रयमन्त्रीत ! अनुमिर्शित रि [अगुक्षवित] सील हैले काना (काद्रा १ २)। अणुद्र रि [अनुरवं] नरी व्याद्या न्विन (योग्धः)। अणुट्टा वर [अनु+स्या] ( मनुहान वरना

राजीक दिशास बान्या १ बान्या 🖫 अर्थी-

अणुरकुष रि (अस्कुरू] यस्त वह र<sup>न्</sup>री

भणुञ्जा को [अनुका] मनुमति बम्मति (परम अणुच्या केले अजीक्या (पासा २ १६ १)। अणुक्तिय वि [अमुर्कित] वस-दित, निर्वत

न्यान (सम १ ३ १)। अजुतेतृ वि [अनुत्रयेष्ठ] १ वर्गे के नवरीक का (बानम) । २ छोटा चडरता (वडप २२ अध्योग देश अध्यक्षील (हा १)। श्युंच हि [अनुर्व] जगह-परित प्रमुणरी

(मृत १३७ सकास १४३)। समान िश्वी प्राप्तव मौकरी (पि ११७)। बजुर्देश कर [ अनु + मुख् ] प्रभ करता। कर्म बरसङ्ख्लो (वर्गसे २९३)। बणुकुचि सो [अनुयुक्ति] मेरमपुक्ति, र्जनन

अणुबीद सङ [अनु+बीव्] प्राथव गरता। मर्ग्यापिति (वत १८ १४) । अपूर्वीवि वि अनुवीविम् ] र गावितः तौकर देवका 'पर्याए विम सहाजीविकाली'

अजुग्यास-संपुर्हा अशुकाय वि [अनुवात] १ पीचे ने करवा २ सहरा, तुस्य 'वसमाल्यार' (मृष्ट १२)। शगुट्राइ वि [अनुष्टायिन] धनुष्टान अप्ते-

बासा (ग्रामा) ।

अणुट्टाम न [अनुद्धान] १ इति । २ शकोक्ष विवान (पाषा)। काजुट्टाण न [अनुस्वान] क्रिया का धमाव अणुट्टापम न [अनुष्टापन] भनुष्टान कराना (क्स)। अगुट्टिय नि [अनुद्धित] निनि से संपारित विश्वित किया हुया (पर् मुद ४ १६६)। अपुट्टिय वि [अनुस्थित ] १ वैठा 🛍 । २ मामसी प्रमादी (धाना)। अणुद्धियञ्च केनो अणुद्धा । अभुद्रुम न [ अतुष्प ] एक प्रस्थित संव 'पक्षाकरमण्डलाच् चल्ट् द्वाराणं हवीत वम सहस्या (पुता ११६) । अगुद्धेश रेको अगुद्धा खणुत्र देवा खणुजी। सणुस्य (भवि)। अणुर्णंद देखे अमुग्री। अञ्जय पुं [अनुनय] विनय प्रार्थना (महा ममि ११९)। वणुणाइ वि [अनुनादिन्] प्रतिमानि करने नाना 'पब्बियम्हस्स प्रमुखारखा' (कप्र) । अणुजाय पूँ [अनुन्यव्] प्रविष्टिनि, प्रविराहर (विसे ३४ ४)। अणुष्पाय वि [अगुद्धात] धनुमत धनुमोदित (44): बणुजास पुन [अनुनास] धमुनामिङ को नाकसंबोना बाता है बहुधन्नरः। २ वि सानुस्वार, बनुस्वार-पुक्त (ठा ७): ऋागस्मर वसुलार्थव (अरीव ३ टी)। अञ्जासिक पू [अनुनासिक] देनी उत्तरका पद्भग भर्ग (वजा ६)। अणुप्री सक [अनु + नी] १ धनुनय करना दिनव करना प्राचैना करना। २ समस्त्राना दिनामा केरा साल्यना केरा । यह अणुर्जन 'पूर्विद्दिनं वं कममोग्युर्णवं' (उत्त १४' चरि)ः अञ्चल (गार २)। दनर अञ्चलक्रीत भणुषिज्ञमात्र अणुगीभमाण (पुरा १६७ से २ १६. ति **५६६)** ।

किया गया ही वह (दे द, ४४)। अपुर्णेद रेको अपुर्मा । अणुष्णय वि [अनुझत] र नीवा नम्र (वस १ १)। २ मर्बेरहित निर्याममानी 'प्रवि भिष्मु धर्म्पल्य विग्रीए' (गूम १ १६)। छणुरुमय संक्रिस्तु+ क्रापय् ी १ सनु मित देना । २ धाका देना हुकूम देना । कम. धरुक्त्याचित्रह (उदा) । वह अणुक्यावेमाण (ठा ६)। इ. अणुण्याचयवद (घाव ६०% टी)। सङ्क अणुण्यवित्ता, अणुण्यविय (मानमा सामा २२६)। भणुण्यवणयाः १ भी [अनुहापना] १ मनु अणुण्यवगाः ) मति सम्मति । २ भाजा फामाइश (सम ४४ धोव १०४ टी)। अणुण्ययमी भी [अनुद्वापनी] प्रमुपि-प्रका-शक्यापा चनुमति भेन वा वावय (ठा ४३)। अणुज्या बी [अनुद्वा] १ मनु मंति मनुमोदन (सूप २२)। १ धाका। कष्प पू [\*कस्प] भैन सामुद्रों के निए वझ-पात्रादि नेते के विषय में शतकीय विद्यान ( वसा)। अञ्चलका 🛍 [अनुद्वा] १ पटन-विपयक पुर-पाजा-विरेप (पन् १) । २ मूत्र के धर्व का मप्ययन (वव १)। अणुण्याय वि [अनुद्वात] १ निपरी प्रका की गई हो वह । २ अनुमत सनुमोरित (ठा 4 8) I ब्यणुष्ट्र वि [अनुष्य] ठेघ, यो धरम नहीं है मह् (रि ६१२)। अणुतड पू [अञ्चतट] भेद, पदावों ना एक माठि का पुनकरका बैस संतत कोई को हबौड़े से पौटने में स्ट्रूमिन (चिनगारी) पूनक होते हैं (ठा ५)। अणुनक्षिया भी [अमुतनिका] १ कार देशी (पएल ११)। २ वनाव बह मादि का जेब (मास ७)। ब्यणुक्यम् बन् [ अनुभक्षम् ] धनुरान करना पस्ताना । प्रगृताप (प १८४) । अगुनप्पि वि [अनुवापिम] प्रवाचल करते-मत्मा (बन) । व्यपुताव सक [बनु+तापय्] तपाना । पंक अणुनाविचा (मूम २ ४ १ ) । अणुद्धि जिल्लामें। रेपले-बार में शतपर

अणुनावय वि [अनुतायक] प्रयाचाप कराने वाचा(सूम २ ७ ⊏)। अणुताबि देनो अणुतिष्प (सर ७२० टी)। छणुत्त वि [अनुक्ति] धकवित (∜व ४)। अञ्चलंत देवो अधुपत्त । अणुस्तरप वि[अनुस्त्रस्य] १ परिपूर्ण राधर। २ पूर्ण राग्रेस्नाका 'होद्र मणुक्तप्यो सो मनि मनद्रियपहिष्युएछो' (वन २)। अणुत्तर कि [अनुत्तर] १ सर्वश्र ह मर्वोत्तम (छा १)। २ एक सर्वोत्तम देवनाक का नाम (क्यू)। ३ छोठा 'मणूखरो मामा' (पत्रम १४)। ग्या की [भूमपा] एक पुनियो वही मुक्त भीवी का निकास है (मूम १६)। गाणि वि विश्वानिन् केवसवानी (मुम १२,३)। (यं भाण न विभानी एक सर्वोत्कर देवलोक (भग ६ ६)। दिशाइय वि विपातिक विश्वतर देवनोक में उलाम (मन्) । विशाहयत्रसा भी व िरपानिकद्शा ] नवनी जैन सेन-संप (पन्) । अणुरवाण रेखो अणुट्राण (स ६४१) । अणुस्पारय वि [अनुस्साइ] इत्तेरमाह निराश (प्रमा) । अणुइच पू [बनुदाच] नीव में बोना जाने-मध्यास्थर (बृष्ट् १)। अणुद्य पू [अनुद्य] १ उदय का धनात । २ <del>कर्म-</del>फन के मनुषय का सभाव (कस्म २ **11 (x (x)**) अणुद्वि न दि] प्रमात मुक्त् (दे १ १८)। अणुद्धिक वि [अनुदितः] जिमका ३ दय ग हुमा हो (मन) । अणुद्धिस न [भनुद्वस] प्रतिदेन हमेरा (मार)। अणु देश्मंत वि [अनुदायमान] उत्त्य में न षाता हुमा (मग)। अणुद्यन [अनुदिन] प्रति<sup>त</sup>न दमेशा (इमा)। अणुद्धिण्य ) वि [अनुदिव] १ तस्य को

त्मी (का १ २ ६), 'जिस्सा = बीर्ल जा १ ४ ६दी । प्रीत्रण १ व [सनुदीतिक] १ निक्की प्रीदेश । वतीरणा द्वर प्रदेश्य में हो । रिकारी करीरणा परित्य में तही (का

१ %))
जुद्धिय दि [अञ्जदित] जरम को समात
स्थलित क्रियुद्धित वे स्थात समुद्धि व उत्र
सर्वे (कर १ ९ डी)।
लुक्सित क्रियुद्धित विश्वित क्रियुद्धित व है

(तूर १ ११४)।
अनुदिव न [च] प्रमान प्राप्त नाम ( यह् )।
प्रमुदिसा है की [ अनुदिक ] सिर्टेक अनुदिसी है रहान नाम व्यक्ति सिर्टेक (चिने २३ टी नि ६८, ४१३, चम्म)।

अपुरिद्व हि [अनुदिश्व] दिवता बहेच व हिमायवाहा वह (पट्ट २,१) । अपुद्व हि [अनुव्ये] देश वहीं कीना (दुमा)। अपुद्वय हि [अनुद्वय] वटन का निस्सी

(बर १६० दी)। मणुदरि पूं [ मनुदरित ] एक दूर चनु, पूर्व (रम)।

मणुद्धिय रि. भितुष्पृती है अपना उद्धार न विभागमा हो बहु १२ बाहर नहीं निवास हुए, जि. कुणह आसमाने समादिव देख नमाहुमूर्त (या. ८.)।

अगुर्धुव रि [अनुर्भृत] बगरियक नही क्रीग हुमा (नात)।

कार्युरम्म हूँ [अनुसरी] गुरूब-वर्ग (तिहे)। अनुस्यम हूँ [अनुसरी] बहुएन-निनार वर्ग 'प्लान्यको बुलिना परेच्यां (बूध १२१) बार्सि हिं[ बारिन ] हिन इर पर्य वा स्ट्राको जैनकारी (बूध १ २३)।

अगुविमान रि (अञ्चयामिक) नर्न के दनु नृत्त नर्मोनिक 'छर्च नु सल्पानिके छन्ने (सन्तर)। अञ्चयात नक (अञ्च + धात्र ) नीचे होला।

सर अगुपार्थन (के र २१)।

भगुनायम नर [अनुपायन] रीचे रीहता (दुग १ 1)।

अनुपादिर वि [अनुपादितः] गाँधे शैहरे-बाना (उप ४२ टी)।

व्यपुनाइ वि [अनुस्पिति ] प्रतिपानि करने-वत्ता (क्या) । स्रणसम्बद्धि विस्ताहार्थी प्रतुपत विद्यकी

अणुनाय वि [अनुवाद] यनुमत निवकी समुमति वी यहँ हो वह 'साहबडी मीडनयं सममानार तर वाह' (बाप ४४०)।

अणुनास देनी अणुनास (वीर १ टी)। अणुनास देनी अणुज्यास (वीर १ टी)।

धणुसद् देवो अणुज्यत्र। यह अञ्चसदेमाय (टा ६, ६) । इ. अणुसदेयस्य (दस्) । वृद्ध अणुसदेचा (दण) ।

कपुन्नका रेसी मणुष्यक्या (योव १६ कपुन्नका रेसी मणुष्यक्या (योव १६ वस)।

अणुमावर्मा देवो अणुज्यवर्गा (अ.४.१) । अणुमा देवो अणुज्या (मृतः ४.१३) अगु

रहरे)। अणुमाय देशो अणुज्जाय (ग्रीव रेः महा)।

अनुपंत्र पु [अनुपत्र] १ नगीत का मार्ग (क्य)। २ माप के समीत सस्ता के पाम (कृष्ट २)।

अनुपत्त वि [अनुपात] पात मिना हुया (मूर ४ १११)। अगुपस्त वि [अनुपस] पात (नुप ४ १)।

समुप्तरह रि [सनुप्रकृत] समुद्रत प्रमुक्त (महा)।

अणुपयान न [असुप्रदात] रात ना वरता प्रतिप्रहण (नेवीव ६४) :

अगुपरिषद् तक [अनुपरि + अद् ] प्रका वरिक्रमण वरदा । मेड अगुपरिषड्डियायोः चित्र ले भी मीरिडय, पद्म तहराय-द्वर सम्मास्थितिनार्थं हरनार्गान्यस्य (श्वर १ ०) । इ. अगुपरिषड्डिमडय (शासा १ ६) । ६) । इ. अगुपरिषड्डिमडय (शासा १ ६) ।

अञ्चारियह कर [अनुपरि + हृत ] किला वित्ये प्रमा 'प्रमाणमें बाट्ट प्रमूपिय-हु"। (पाप)। का अञ्चारियहमान्न पाप।। की अञ्चारियहिका (बीन)। अञ्चारियहम क [अञ्चारियहोत्सा (बीन)। (पुष १ र १)।

अगुपरिषष्ट्य न [अनुपरिषतन] परिस्तेन दिग्ना (मण १ १)।

क्रजुपरिषट् देवो अणुपरिषट् = क्ष्रपरि + इर । क्ष्र अणुपरिषद्वमान (पि २०६) । अणुपरिषादि की कै [क्ष्रपुपरिषादि, टी]

हरे)। स्पेरम (स. ६४: वक्त ४ ६६ ३५ १६)

अपुपरिद्वारि हि [ अपुपरिद्वारित ] 'परि-हार्च' को मदद करतेवला व्यापी कृति की चेत्र-पुम्पा करतेवला (ठा १ ४)। अन्यपरिद्वारि वि [अनुपरिद्वारित् ] उप

रेखी (ठा १ ४)। अञ्चलका कि [अनुप्रपद्म] प्राप्त (सूम २ १ २१)।

अनुपनायक्त वि [अनुमनावनितः] पाने-बाता, पाठक सराम्यान (ठा १ २) । अनुपनाय केती अनुपनवाम = मनुप +

वाचन्। अध्यपिकट्टमि [असुमविष्ट] वीजेसे प्रविद्ध (स्थाना ११ वण्य)।

अञ्चयविस कह [अञ्चय + विश् ] १ गीवे वे प्रवेश करना । २ प्रवेश करना जीवर जाना। अञ्चयविद्य (क्या)। वह अञ्चय विसंग (निद्य २)। संह अञ्चयविद्यिण

्रहरूर) । अञ्चरवेस दु [अनुमवेश] प्रवेदर, भी<sup>तुर</sup> वाता । (विद्व ७) ।

अणुपस्त सङ [अनु+दरा] स्पतीका करता, विवेचना करता । सङ्कः अणुपस्सिक (तृष १ २ २)।

अणुपस्सि वि [ अनुद्शिन् ] वर्गनीवर विवेचक (पाचा)।

अणुतास कर स्थित + पाअस् । १ स्वरंत वरता । २ राज्य करता । १ स्त्रीता करता राख्य करता । १ स्त्रीता करता राख्य करता । अनुतास (सहर) न क्षा केता अणुतासेस्य (सहर) न क्षा का अणुतासेस्य अणुतासेस्य (सहर) । तह अणुतासेस्य अणुतासेस्य (सहर) । तह अणुतासेस्य अणुतासेस्य (सहर) । तह अणुतासेस्य (सहर) कर्णुतासिक्य (

कपुरासन न [अनुपासन] राज गाँउ पानन (वंदय)।

मणुपासमा रेगी अणुराहमा (रिवे ११९० ही) । (बसच् २) ।

सिदार्श (सम्म)।

(ছুল বুৰ)।

अणुपास्थिय नि [अनुपास्थित] चीत्रतः प्रति

अणुपास देवो अणुपस्स । वह अणुपासमाण

अणुपिद्व म [अनुपूछ] पनुष्म 'प्रणुपिद्व

अपूर्वत न [अनुपुद्ध] मून तह यन्त-पर्वना

'भ्रण्यूक्तमावडंतावि भाषमा तस्य असवा हृति'

अभुविद्वा देखी अभुविद्वा (इस्य ११) ।

अभुपुरुष वि [अनुपूर्वि]स्पवार, शावुक्षिक (अ.४.४)। क्रिमेश क्यारा (पाप)। सो [शस्] भनुष्म से (माना) । अणुपुरुष म [आनुपुरुर्य] क्रम परिपाटी बंदु ≇म (राम) । अणुपुरुवी 🛍 [आनुपूर्वी] उत्पर देवो (पार्य) । अणुपेक्का ही [अनुप्रेक्षा] मार्का किन्तन विचार (पत्रम १४ ७७)। अणुपेद्दल म [बानुप्रेह्मल] क्रमर देखो (उप १४२ वै) । लपुरोहा को [जमुप्रेका] उसर देनो (पि 424) i खणुपेदि वि [अनुदेखिए] कितन-कर्या (भूम ११७)। अभुष्पइस वि [अनुप्रकीर्ण] एक इसरे ध मिना हुमा, मिनित (क्प्प) । स्र<u>भुष्पणी सक [सनुप्र+जी]</u> १ प्रणय करना। २ प्रसद्ध करना। वह अञ्चल्पर्यात (उप पृ?∈)। अभुष्यगैद [अजग्रमन्य] धन्तोवी धस्य वरि मञ्जूषाला (ठा १)। बजुष्पर्यंत वि [बनुप्रमन्ध] अपर देशो (ठा १)। अणुष्पण्य वि [अनुस्पन्न] प्रविधनान (नीषु अपुष्पत्त क्यो अगुपत्त (क्य) । मणुष्पदा एक [मनुप्र+दा] रात केन फिर किर देना । मणुप्परेष (इस) । 🛊 अणुप्प दावस्य (१२४) । देशः अणुप्पदार्थं (स्वा) । अणुष्यदाज भ [अनुप्रदान] का किर-फिर चान चैता (मान ६)।

खणुप्पम् पू [अनुप्रम्] स्वामी के स्वानतक प्रतिनिधि (निधु २)। खणुष्पया देशो अणुष्पदाः। प्रणुष्पदः (कस)। हेरू अनुस्पयार्ट (स्मा) । धपुष्पवाज देशो अणुष्पदाज (भाषा) । व्यकुष्पवत्त वरु [ अनुप्र + दृत् ] मनुषरत करना । हेक्क. अणुष्पवत्तप (विसे २२ ७)। अणुष्पवाद्तु ) वि [अनुप्रयाविशतु ] अणुष्पवापत्तु । अन्यापक पाठक पद्दानेवाता (हा १ रा पण्य १)। अणुष्पद्मात् पुं [अनुप्रवाद] कवन (मूम २ 6 51) I ख्युत्पवाय सङ [ अनुप्र+वाषय् ] पहाना । वक्त अजुष्पवाएमाण (व १)। अगुष्पवास न [अनुप्रवाद] नवना पूर्व बार हवें जैन श्रंप-पत्व का एक श्रंप्र-विशेष (ठा १)। अणुष्पबिह वेबो अणुपविह (क्स) । अवाप्यविचि स्व [अनुप्रवृत्ति] प्रनुप्रवेश धनुसम (विसे २१६)। खणुप्पविस केही बाणुपविस । प्रगुपविसर (इवा) । संकृ अणुष्पवेसेचा (निष् १) । अणुष्यवेस स्था अणुपवेस (नार) । अजुप्पवेसणन [अनुप्रवेशन] वेको अणुद-बेस (गर) । अजुप्पसार (ही) सक [ अनुम + सारम् ] प्रश्रव करना । बर्गुप्पमादेवि (माट) । अगुष्पसूच वि [ अनुप्रसूत ] क्लन्न कैत क्षिमा धर्मा (भाषा) । अणुप्पाइ वि [अनुपादिम्] पुक, संबद्ध संबन्धी (निष् १)। अणुष्पिय वि [अनुतिय] अनुवृत्त रह (तूम 2 w) I अजुप्पेंत वि [अनुस्पयन्] दूर करता हटाका हुया जिम्म सविश्वएशक्षियवत्तरोग् है पारवं वलक्षिति । र्च विश्वमस्युप्येंचो गव्यास्य विद्या सनी होई' (पत्रक) । मणुष्पेष्य रेत्रो अञ्ज्ञेदर 'छड् पुलिन' किंगकर्यन बाह्य

बेए ने समन्त्रीच ।

धराजिन्द्र' (६४) ।

एपिह कि करम व कुलिमोत्ति बीधा

अपुष्पेसिय वि [अनुप्रेपित] पीचे से भेजा हुमा (नाट)। अशुष्पेद्द सङ [अनुप्र + ईन्ह् ] विन्तन करना विभारता धरपुर्व्याति (पि १२१)। इ. छाणु-प्पेद्धियस्य (वसू १)। अधुष्पेदा की [अनुप्रेक्ता] विन्तन भावना विवार, स्वाम्याय विरोध (वस २१) । अणुष्पन्नस पुं (अनुस्पर्न) **पन**्नान प्रधान 'कोङ्स्सेव बस्पुप्प्यसो नर्भ सन्नयरामवि' (इम्. ६)। अणुपुरसिय वि [अनुप्रोध्यित ] वॉबा हवा साफ क्या हुमा (स ३४४)। अणुर्वभ सक [अनु + व घ ] १ मनुसरण करता । २ संबन्ध मनामे रखना । मधुबंबति (उत्तर ७१)। बहुः, अणुर्वर्धत (वेणी १८३)। क्षक अणुर्वधीसमाणः अणुर्वधिवसमाण (माट)। हेड अगुर्वभिद्धं (शी) (मा ६)। भणुर्धम पुं[मनुबाघ] १ सततपन निरुद्ध फ्रा विश्वदेश कमान (ठाइ। स्वर १२६)। २ संबन्ध (स १३० मटड)। ३ कर्मों का संबन्ध (पंचा ११)। ४ कमी का विपाद परिशास (जनर ४० वंबा १०)। १ स्तेष्ठ प्रेम (स २७१) 'नयणाण पड्ड वर्ज धहवा बजस्म बहुतं किपि । ममुश्तिमनलेनि विद्वे भणुर्वने बाखि कुरवीति (सुर ४२)। ६ शास के बारम्भ में कहते नामक यनिकारी विषय प्रयोजन और संबाध (भाव १)। ७ निर्वत्व भाग्रह (स ४१८)। अणुबंधम वि [अनुबन्ध ह] धनुबन्ध हरते वामा (सप्ट)। अणुर्वभवन [सनुबन्धन] यपुरूस कवन (उत्त २१ ४४. मुझ २९ ४४)। भणुर्वपणा सौ [अनुव धना] अनुमन्त्रान विस्मृत धर्मे का सत्वान (पंचा १२,४६)। अणुर्वचि वि [अनुर्वन्धन्] अनु<sup>र्वन्यवा</sup>ना घनुबन्द करनेदाना (वर्ष २) <del>च १२७)</del> । अध्यक्षिम न दि ] हिका-रोप हिचरी (वे 8 AX) 1 अणुबंबेड वि [अनुबन्धिन] विन्धेर-पहित समुतनबाला समितवर (का २३३)।

₽o	पाइजसद्महण्यदो	अणुशम्स
अणुदासः ) वि[अनुदद्ध] १ वैवा हुआ क्रमायाः । देवद्व (वे ११ ६ )। १ वस्त	अणुमायन वि [अनुभावक] शेवक तुवज (पावन)।	किस्सी मसूनर्रित (माउ १४)। भीर म <del>सू</del> - मसिहर (पि १२२)।
यमिन्सिप्र 'प्रमुख्यतिम्पनेय परोप्परं नेयरां	अणुमास एक [बानु+भाष् ] १ धनुवार	अधुमर सक [क्सु+सृ] इन से गला पेके-
उदीरेति' (परुद्व ११) । वे स्माप्त (सामा १वे) । ४ प्रतिकद्ध (स्नामा १२) । १		नीके मरना, 'इय करंपरमण्डे व्यक्तस्य वह स्तरो नाव' (शिंड २७४)।

(स १०४ विसे २११२)।

बात का कहना (भार)।

(का र व निसे २४२ टी)।

बाद करनेवाला (विसे १२१७)।

नप्र अजुर्म् जमाण (सं ११)।

ही पवा हो बह (लावा १ १)।

1411):

(भार)।

अपुमासर्वत रेवो अपुमास।

करना 'मरहमलाह दुस्थवर्ष' (माचु ६) वद

१)। बह अणुमासबैव अणुभासमात्र

भणमासव व मिनुसायजी सन्तार, एक

भणुमासवा 🛍 [अनुभाषणा] इसर देशो

अणुभासय दि [अनुभाय ह] प्रदृशहरू प्रदू

अपुर्भुद सक [अनु+सृद् ] मोय करनाः

भणुमूद को [भनुमृति] ध्युक्त (विते

२७)। १ पीछे देवा ह्या (सिरि ४४४)। अणुबह रेको अणुबह । अल्डमह रि [अमुद्भार] धनुत्रत बनुस्वश (उन्हर)। बणुरम्य वि [अनुद्भृत] काक्ट कालय (नाट) । अणुभज देती अणुभव = धनुमव (नार)। अपूभव सक [ अनु + मू ] १ अनुस्य करता, वातन्य समयनाः १ वर्गेद्यस्यो बीयनाः।

धार्मत बहुत चलुक्डनिरंतरवेक्सानु (पर्ह

मणुपद् रि [अनुबद्ध] १ प्रनुबत (पंचा ६

१ १)। ६ वर्षप्र (क्तर ६२)।

धणु मण

धनपाति (रि४७१)। वह अधुभवेत । (११४०१)। संद अणुमिश्र लणुमविचा (नाटः पर्याः १ १)। हेरू- अणुमहिएं (क्य १०) । अगुसद प्रेजिन्समी १ झान बोब क्लिय (पैचार) । २ कर्म-कल का और (विदे) । ज्ञापुमधन न [अनुभवन] अनर रेजो (यान भागि र ६ ) ( भण्मिति वि [अनुमविम्]म्यूमर वरनेवला

(प्रिमे १६६५)

अणुभस्य वि [अनुमस्य] प्रामप्त मध्य (बंदीय ४४) । भगुमार ([अनुभारः] १ वमात्र मानास्य (भूप १ ११)। र तनिः, नामव्यं (परुत २)। ६ वर्जी वा शियारी — रूप (सूध १६१)। ४ वजीवास वर्जन कर उत्तक इस्ते की शक्ति चाप स्त्री मगाव्यनी (सम्ब १२ दी भा ११)। वेच दे [वर्ग] वर्ग-पूर्वती में कन बराम करने की शक्ति का बनना (हा \* 3)1 अणुमाय । पुमिनुभावी ( ४ कार केते अणुमार 🕽 (अलू ११ टा ११ मज्ज्ञ सापा

नेट्रसानी (अ १११) ।

सन ६)। ५ वनीयतं द्वारं वी नुबद्ध वेला, मेरा मींग्रना बढ़ाना ववेदर (नार) । ६ ह्या कणुमंदक्य देनी अणुमण्य (विते १६६ )। लणुमस्य व विशेषीचे पूर्व विवित्वती भनामाधेनेव पतिवाइ (नुर४१४२ वहा)। (ति ४ **१**)। मिक्रण (नत) ।

गामि वि [गामिन] वीधेवीधे वानवावा अणुमञ्ज सङ [ अतु+मरञ्ज] विवार करता। वेद अलुम अचा (बीदस १६६)। अणुमण्य १ एक [अनु+सन्] सनुप्रति । मजुसस रिना, सनुमोदन र स्था। यसु बत्ते सम्बद्धः (विभर्षः महा)। स्ट भण्मण्यमाय (दार ३१)। तंद्र अय धानुमित्र ) वि [अनुमत] सनुमीरित्र धानुमय ) नामत (जा वृ २६१)।

अणुभर घट [अनु+सृ] १ वन्त्रा। १ सदी

हैना, पनि कें अपने में कर बाना 'जी केंग

অপূপুৰ বি তিনুসূত] নাত নিবিত (মহা)। पुक्त मि [ पूर्व] पहले ही विशवा प्रमुख भणुभूस तक [ अनु + सूप ] वृष्टि करता थौनिय करना । प्रसानुमेवि (शौ) (नाट) । अणुमक्की [अनुमति] मनुमोतन सम्मति

(मै ७३)। (क्स) । (चढ६)।

अणुदेश को [अनुसर्वादा] नर्वात 🕫 ध्युमोद्द दि [अनुमोदित] बनुमत धेमड. प्रतिनित्र (माउर, निर्दे) । अणुमाय सद [अनु + सुद्] धनुनति केन वर्शना करता। प्रशुमोबद (स्व)। धनुमीएमी अणुमोसरा वि [अनुमाद क] धनुगोदन वरवे-दाना (विशे)। अधुमोयण न [अनुमोदन] भनुमति अम्पति मधेश (उच पंदा १)। अधुम्युक्त रिश्चितुम्युक्त] मही सोरा इ<sup>स्स</sup> (क्**ल**ड १ ४)। अणुम्सुद्द वि [अनुम्सूल] धर्मदुर विदुर

"रिङ् चयुस्य मणुम्नुदो निहुर्यन ति' (नरा)।

अञ्चन है [अञ्चक] भाग्य-विदेश (राव १९६)।

अणुर्वेषा देलो अलुद्धेषा (नदरः स २१४) ।

बाणुमङ्चर वि [अनुमङ्चर] प्रवास स সচিদিখি (নিছ ३)। बार्गमान व भिन्नमानी १ मध्यव ज्ञान हेत् के बारा सजात वस्तु का निर्फंट (मा १४%) ਕ ਪ ਪ)। क्षणुप्राण प [अनुमान] १ पश्चिमक्शन (सूब ११३,२) । २ बनुसार (संदु २७) । अणुमाण सङ [ ङतु + सानम् ] मनुपान इस्ता । श्रेष्ट अणुगाणहत्ता (दन १) । अणुमाय वि [अगुपात्र] बहुत बोहा केह परिमालका (बढ ६ २)। भणुसास सक [अनु+सास्त्] शोक्ति

ख्युमरण न [अमुमरण] ज्यर केही (गरह)।

होना चमकना। संह अणुमादिसी (परि)। अणुमिज इक [अनु+सा] पटकत है

जानता । क्रमें ब्रश्नमिखिकद् (वर्नबं १२१६), भलुमीबप् (क्सनि ४३)।

अणुमेश रि [अनुमेव] मनुपल के वे<sup>रव</sup>

अणुयस रेको अणुपत्त = पनु + इत् । अणु-धत्तः (भनि) । बद्ध अगुयर्चत अणुयत्त भाग (पंचमा विमे १४६१)। संक अणु-यत्तिङ्ग (यउह)। अणुयत्त देशे अणुपत्त = प्रतृत (भवि)। अणुयचणा ध्ये [अनुपर्वता] १ शीमार की सेवा-गुभूरा गरना (बृह १)। २ मनुसरण् । ३ बनुरूम बदन (बीब १)। अणुपश्चिय वि [अनुपृत्त] सनुरूप किया ह्या प्रमादित (मुगा १६ )। ध्रणुवरिय वि [अञ्चलरिष्ठ] धार्वरिष्ठ यनु छिन (ग्रामा १ १) । अणुपा रेगो अणुज्या (मूम २-१) । अणुवाय रेपो अणुनाष (स १०३)। अणुपास र् [अनुदारा] निरोप निदान (ভাষা **१ १**) চ अपुरंगा भी हिं] कही (हह १)। अगुरी। वि [ अनुरद्भित् ] प्युच्न्यानर्ता (नु≅ १ <)। धणुरेगिय वि[अनुरक्षितः] रंगा हुवा (मरि)। अपुरंत सर [अनु+रक्षव्] धरुएकी वरता शीखितवस्ता। वर अधुरैकार्यत (ना")। चंद्रः अगुरिज्ञभ (ना") । धणुरंजपन [अनुरक्तन] एव धार्माक (बिसे २१७७)। अणुर्शकण्दय १ वि [अनुरक्षित्र] प्युरकः अगु(जिय े रिया हुमा मनुरायी बनाया हुमा (ने ३ वहा)। अगुरकारि [अनुरक्त] यनुराम-प्राप्त प्रेप प्राप्त (मार) । अगुराज पर [अनु+रस्त्र ] पनुरक्त हाता अभी होता 'मगुरबंदि यांगेर् पुरुद्धि चरील पूरा शिरमंदि' (महा) । अपुरन रेगो अगुरद (रावा १ १६)। अणुर्धभव वि [अनुरसित] बीतावा हवा बार् (गावा १ ६)। ब्लुयद ] रि [अनुस्रतिम् ] व्युस्त श्रापात श्रेमी (त १३ । नहा मुर १३ १२ )। भगुराग र् [अनुराग] वन क्रीड (कुर ४ ₹8€} [

अणुरागय वि [अन्यागत] १ पीमे भाग हुया। २ ठीक-ठीक बाया हुमा। १ स. स्वान्त (भा२१)। अणुराधि रेको अणुराइ (भहा)। अणुराय देवी अणुराग (प्रामु १११)। अणुराहा सी [अनुराधा] मदात्र-विशेष (सम अगुरुष तर [अनु+स्प्] १ पनुरोब कुरता। २ स्वीकार करता। ३ माताका पासन करता। अधावता करता। असर धपीत हाता। समै बलुदेशिकद (हे ४ २४० प्रामा) । अणुक्षत्र १ [अनुरूप] १ योग्य उपित अणुक्रव (से १ १६) । २ ध्युप्त (सूज ११२) । १ महरा दुस्य (लावा १ १९) । ४ त. समानदा मोग्यना (मम्म)। अजुरोद्द व [अनुरोध] १ प्रार्थना 'ता ममा-गुरोहेण एल घरे निषमा बानंतमी (महा)। २ कारिएय दरिएका (पाम)। अणुराहि नि [ अनुरोधिम् ] यतुरोप करने-वासा (म १२१)। अणुसमा वि [अनुसमी पीघे नगा ह्या (यः १४१ मुद १ २२१ मुद्ध ७) । अणुरुद्ध रि [अनुस्त्रच] १ पीछे से निमा हुमा। २ किर में मिला हुमा (नार)। धणुद्राय ( अनुस्यप ) चिर-चिर चीनना (e 13) अणुखिप धर [अनु+ दिप्] १ पोतना मेर करताः २ टिर ने पोठनाः। संहः अणु-द्विपत्ता (रि ४६२) । हेर अणुर्हियित्तप (रि १७८)। अणुद्धिपण न [अमुखपन]सेप पोवना (पान्द्र अणुल्चि रि [अनुस्ति] नित पोता ह्या (क्य)। मर्जुटर् वर [ भनु + स्टिट्र् ] १ पारना । रे इता। वर अगुधिदंत (तम १३१): 'दक्कावपमान्तिही' (बढम ११ १२)। मनुरुपान [अनुसंपन] १ सेर कोवना

(राप्त १४)। र दिर में पौल्या (१एछ २)।

अनुर्खावन वि [अनुर्ख्यवन] तित बोडा हुक्त

कम्मण्येस्मिती (राम ६२ ४६)।

अणुद्धोम सद [अनुस्रोमयू] १ वन से रतना । २ धनुरूत करना । संद्रः अणुखोम इचा (ठा६)। अणुस्रोम न [अनुस्रोम] १ यावम यगारमः 'कर्त्य पुहारणुसीमेगा तह् य पिन्सीमधी मरे बन्द (सूर रेंद ४८)। अपूर्तिम वि [अनुस्तेम] सीवा, प्रतृक्त (# 2) 1 अणुद्धम रेखो अणुद्धम (नुग १६ १३ )। अणुद्रण वि [अनुस्वण] पर्दर्श पर्दर (शह ३)। अणुदय दू [अनुस्क] एक होन्द्रिय शुरू अन्द्र (पत्त १६)। अणुद्धाय पू [अनुद्धाप] रायव ४ पन 💎 र्जक (ठा १)। क्षणुष पू [द] बनानार, जबरच्छी (दे १ अणुपद्दह वि [अनुपदिष्ट] १ य-वित य-व्याञ्चल । २ जो पूर्व-गरम्परा स न माया ही 'मगुबद्द नाम वं खो धायरिकारंक्छावं (नीचू ११)। अणुपप्रच वि [अनुपपुक्त] धनावपान (दिवे) । अणुवपम पू [अनुप रश] १ ध्योग्य स्रोप्त (पेवा १२)। २ जगस्य वा समान । ३ स्पमात्र (द्य २, १) । अणुप्रभाग रि [अनुप्रयोग] १ कार्याय-रिन १ २ चरपीय का संभाग समाप्रमानता (प्रापु)। अणुपंक रि [अनुपक] पत्रंत कर बर्त रेड़ा 'बार चेंगारवा रानि तिम क्यूप्रंड परि यमार्थं स् करेडि (बान ६२)। अगुर्वदण न [अनुषम्दम] प्रति-नमन प्रांत মতাৰ (বাৰ্য ११)। अणुबद्ध रेजो अणुर्वक्र (ति ७४) t अणुपतस्य रि [अनुपारस्य] नान-र्यत्तः सनि भँपनीय (कुर १) । अगुपनगढ रि [अगुपन्तृत] गंप्सर-राज (पार) (निचूर)। अपूरव तक [अतु+प्रजू] स्तुतान

बरता वैधेनीये माता। सन्तव-(हे ४

अपुरविश्र रि[अनुप्रजित्र] परुग्प (दुमा)।

1 (0 5

t vt) i

क्षणुबङ्ग केवी अधुवत्त= क्यु÷ इद। इ अगुबद्धणीक्ष (नाट) । अणुवदि केवी अणुवसि = अनुवर्तान् (विशे 2884)1

खणुलाक्ष पक [लनु+पन्] पनिष्र होन्छ । संगुनहरू (क्यर **७१**) ।

अपुषरिक मि [बानुपरित] पाँचे निरा हुआ (इम्मीर १)। जगुवस सब [जनु+वृत् ] १ प्लुसका क्रताः २ देवा-पूज्यसाक्रताः ३ सनुदूत बरदाना । ४ व्याकरता साहि के पूर्व सूत्र के पद का सन्धन के किए तीचे के सुदर्ने

नना। प्रजूबतः (स४२) । यह व्यक्ततः সম্বৰ্ষৰ সম্বৰ্ষমান (মাম বিট ११६ : तह) । इ. झणुबङ्गणीओ छाणु-बचणीय अञ्चलियम्ब (नाट स्प १ ३१ A)ı अधुक्त वि [अनुक्कृत] मनुषक (विश

2)1 **अपुक्त कि [अनुकृत**] १ म्द्रका मनुष्ठ । २ **प्रमुख दिया हुया । ३ प्रमुख (मद २)** । भपुषका वि [शतुत्रर्थक] महुव जाति

क्लोबाला, क्या क्लोबाला (इव) । (तूम १२२ वर)।

अपुनत्तम वि [बर्जुवर्तक] मनुस्यक्र-कर्या अनुवरतम् न [**अनुवर्त्त**म] १ सनुवरह (४ २३६) । २ प्लुर्न प्रवृत्ति (वा २६१) । ३ पूर्व मून के बर का प्रस्तव के लिए जीने के शून में बाला (फिने ३१६ )।

(क्ठड)। व्युविति वि [अनुवर्तिम् ] अगर देवो (वर्गवि १२ मोहर २)।

खजुबस वि [अनुपम] स्थमा-रहित, देशोह यवितीय (मा २७)। अश्वमा की [अनुपमा] एक प्रकार का करव इप्प (बीद ३) : मणुवसिय वि [असुपसित] देवो भणुवस

(सुवा ६)। जजुद्ध देखो अणुज्यस (परम २ ९१)। अणुषय सक [बातु + वद् ] स्ट्रवाद करना कडे हुए पर्व को किर से कहना । बहु आणु-बयमाज (घाषा) । अधुकारम वि अनुपारती १ यसका सनि-वहीं (अ. २.१)। २ किवि निरुत्तर स्वेशा (रक्ल २१)।

अधुक्कवि स्व [अभुक्कविय] १ प्रधान

मप्राप्ति। २ प्रमान-सत्तः 'दुनिहा प्रशुपनदीव' (विशे १६ २)। व्युवस्थ्यमाण वि [व्युपस्थ्यमान] वो क्लाव्य न होता हो, जो जान्ती में न स्थाता हो (कानि १)। व्यक्तनंत्रम वि विश्वप्रयोगको कादेव-धीत. मनिपा(परा १२)।

ब्युक्संत वि [ब्युपरास्त] बळळ, दुनित (en (e) : अपुनसम र् [अनुपराम] अक्त का स्वत

(पाना) ।

भगुवसु वि [अनुबसु] रमशमा प्रीतिवला

(माना) ।

स्वन (का १६ ६)। पान (इस पू १४)।

रता (वर्ष २) ।

अध्यायय वि [अनुवायक] नहाेनलक व्यक्तिपर पोस्प्रहो स्वीर् एत स्नातुः नानमी धरितमी (गुपा ६१६)। वपुरास रेको अनुपास । १५८ अनुराहेर (स २३) । सं⊈- लायम्ब क्रिकल (स १ २) । **अपुरास्त्र न [अ**भुपासन] रक्क परिपक्त

हाना, उद्घ धर्मको क्हनेनामा (सूध १ १२३ यस १४ टी । ।

अणुकाइ वि [अनुवाकित्] पढ्नेवला सम्यासीः 'संदूषकीसंबरियो समुवार्त सन्बर् दसर्थ (बच १४ टी)। वपुष्परकारि [बनुपादेव] बहुए करने के प्रकोरकः (घालम) ।

अञ्चाद रेवी अञ्चाय = अनुवार (विवे 1200) I अणुवादि रेको अणुवादः अनुगतिन् (रव ₹4 E) i

अध्यान र् [अनुपात] १ बनुवरल (१९१७ १७)। २ इन्स्व स्थाप (मग १२ ४)। ३ मानमत (पैका ७) । अञ्चास पुं [अनुसात] १ धनुपूत पर्ग (८५)। २ वि सनुकृत पत्रव वाना प्रकेत—

अधुवाय वि[असुपाय] साम-सीत निर बाजुबाय पुं [अनुबाद] अनुबादक कड बार को फिर से कहना(क्या दे १ १११)। अणुवायज न [बामुशातन] सनतारत प्रता

अणुपाटणा ध्ये [अनुपाछना] १ कपर रेपो (वंद्र) 12 कृष्य पं िकस्य विश्वनारा के नायक नी धनम्मान् मृत्यु हा जान पर नेए को रना के निष् शाकीय विकास (पंचमा)। अणुपानम नि [अनुपानक] १ रनक परि पारकार पूर्णाशायक के एक बन्द्र का नाम (मग २४२)। अगुपान गर [ अनु + पासण् ] व्यवस्या बरमा । भगवानेकामि (माबा) । अगुवास पूँ [अनुवास] एक म्बान में दमुक नानतक रहनर दिन नहीं बाल करता (पंचमा)। अगुवासण न [असुवासन] १ कपर देगी। २ यन्त्र-कारा देन मादि की मतान ने पर में बहाता (छाया १ १३)। अगुवासणा ध्री [जनुवासना] कार रेगो (पंचमा लापा १ १३) कप्प प्रे किल्पी बनुषाम के निए शास्त्रीय स्पत्रस्या (र्गवजा)। अणुपासग रि [अनुपासक] १ मेरा नही बरनेराता। २ पू जैनेतर गृहस्य (निवु क)। अणुवासर न [अनुपासर] प्रतिदित, हुम्छा (पुर १ २४१)। अणुपिति स्मी (अनुवृत्ति) १ प्रतुत्त बर्नेन (गुमा)। २ धनुसारत (उर ८३३ ı (13 अगुविद्व रि [अनुविद्व] संदव नुहा ह्या | (मे ११ ११)। अगुविस नक [अनु+विग्] प्रदेश बरता । मणुबिमॅति (सिल्ता ७७) । अगुपिदाम न [अनुविधान] १ व्यूनरण । २ बनुषगत्र (स्थि २ ७) । अगुबाद स्त्री [अनुबीबि] धनुष्यता अवा रापीई मा बानि बाल्जी । गिराइ ने बुझे (तूप १ ४ १ १६)। अगुर्वेष ) म [अनुर्विधिन्स] विकार अनुषी कर,पर्यनोचनाकर(रिश्टेश अनुपीति भाषा दव ७)। रेगो अनु-अपुरीतिय सिन्। अपुर इन् १ रणे अपुरीद (शूच १ १२ अनुसीय दिश्य १)। मगुर् पर [अनु+४८] ब्यूकीना वरसः प्रतेना वरना । मार्गुनेह (बाब) ।

अणुब्रहेस् रि [अनुब्दित्] धतुनीयतः करते बाना (टा ७)। अण्यद एक जिल्ल + बेद्यू किनुमर करना। बर्. अणुपद्यंत (नूम १ १ १)। अणुबच ) वृ [अनुबेध] १ प्रतुगम पन्नव अणुबद्ध रिह्मान्य (पर्मेस ७१२ ७१४)। २ समियण (भिर १६)। अणुबयण न [अनुबेदन] पत्रभोग धनुसर [F ¥ 1) 1 अजु -- प्र [अनुबेख] निरन्तर, सत्र (गर्म)। अणुवर्क्षपर वे [अनुवस्त्रयर] नाव-रूमार देवीं का एक इस्त्र (मम १३)। अणुबंद देनो अणुष्यद् । वरः अणुबद्धमाण (तूप १ १)। अणुध्यहय पि [अनुग्रजित] पकुत (म अणुब्दात्र सक [अनु+ प्रजृ] १ प्रशुक्तरण " करता । २ सामते जाना । मागुम्पजे (सूम १ \* ( \* ) : अणुक्यप न [अणुप्रत] घेटाका सभुमी वे महादतो की घोला समूचत जैन मुरम्य के पातन व नियम (रा १,१)। अणुक्षय न [अनुसन् ] उत्तर देनो (डा ६, अगुस्यय र् [अगुद्धन] धारक-धर्म (र्थना अगुरुपयम व [अनुस्रजन] ध्युपयन (वर्षीः अनुस्यवय रि [अनुश्रवक] प्रतुपरन् काने बाला, प्रिमन्त्रमन्तुस्थवा (गावा १ ३)। अणुष्यया स्थे [अनुप्रवा] पविश्वा स्था अनुवरम रि [अनुवरा] धरीन, बावन १०४ न्म्ने सरागया अत्रमन्नमगुष्यमा (नुम १ 1 1) 1 अपुरवान रि [अनुनान] १ प्रकल गुरा हुमा (डा २११ डी) - २ ज्लाब विश्ला पंचारा विविधासम्बद्ध दिविष क्षेत्रान् व्यक्तें (भीप प्रदर्श । अपुष्यिमा रि [अनुद्वित्र] वर्नन्त्र के र्णेज (म्लारंद सार्दर्)।

अजुब्जियाम न [अनुविपात्र] निराह है मतुनार, 'एवं तिरिक्षे मगावासुरेनु चउरंडराँने तपलियानं (शुप्र १ १ २)। अणुक्योदय रयो अणुयोद (मीर) भणमंस्म सर्ग अनुमं + ऋम् ] प्रनुषरण करना । बलुमंश्मीत (उत्त १३ २४) । अणुर्मंग र् [अनुपद्ग] १ प्रश्नेप प्रस्तान (प्रामू ३६ मॉब)। २ मैमर्थ मोजबङ 'मजनर्जि पूरा एमा धार्मन मेरी हुउन्ति दुरग्-दोमा (महि २० २०)। अगुसंगिम नि [अनुनद्गिक] प्रापहिक (प्रवि ११)। अगुमेचर मर [अमुमे + चर् ] १ परि भ्रमण करता । २ पीधे करता । यागूनकरह (याचा नूप ११)। अणुसंज रका अणुसञ्चा मणुगंत्रीत (१४ अणुसंघ मर [अनुसं + घा] १ गोजना बुंबना चनायं भरता। २ विचार शरता। १ पूर्वार का मिनान करना । अञ्चयनिर्म (रि.प्र.)। नेष्ट अणुमेधियि (मी)। अणुसंपण ) न [अनुसंपान] गापला अणुमधाण मोज (संरोप ४४) । २ पूर्यां-पर की मंद्रीत (पर्में के वे वे)। अणुर्मधण ) न [अनुर्मधान] १ गोज अणुमधान ∫ ग्रीव । २ विकार, विकास भनागृर्धभारतः मुमारता गरिना हुति' (मार्)। ३ पूर्वतिर वा मितल (पैदा ₹**२)** ı अगुमेबिझ न 💽 व्यक्तिपद्य 🖘 निगन्तर रिक्ती (दे १ प्रह) ।

अनुसभर नद्र [अनु + स्यू] य~ वस्ता ।

अपुसंस्यम व [अनुसरन्ती १ कैंग्रे मे

अनुमंगर पर [अनुमं + मृ] प्यत राजा,

भ्रमगु रतना 'जो स्मापी दिनची स

अपूर्णमर कर [अनुमं + स्पृ] स्वरत

बरम्, यार करता । समुर्थपरम् (याचा) ।

मनुमात्र पर [अनु + मंत्र् ] १ पर्वान

नाम, पूर्व भार से नारामार न सनूराईत

थानता । २ धरुमर वरता (धावा) ।

विशिष्टों का मगुबंबर्द्ध (धाका) ।

ब्यानंसरइ (स्वर्ति ४ ११) ।

अणुसारि वि [अनुमारिम्] मनुबच्छ करने

रेता, उपनेय नेता। २ मात्रा करता। ३ रिस्ता

करता, समा देशा । परप्तत्वर्धित (थि १७२) ।

मा अनुसार्सत (पि ११७)। इनक

अजुसासिजोद (दुना २७३) । हः अजुसा

बाला (स्वद्या स १ १ साथ २१)। अणुसास ४० [धरु+शास्] १ शीच भगसञ्ज्ञपा — सपूर्य

श्चनसम्बद्धाः स्त्री [अनुसम्बद्धाः] धनुष्टररा यन्तर्दन (दद १)। संगुसदू वि [अमुशिष्ट] निसकी रिना से बदे हो बहु स्टिथित (मूर ११ २६)। अणुमद्विति [भनुशिष्टि] र रिन्छ सीच कादेश (धा ३ ३)। २ स्तुति रतावा 'क्रापुमद्रीय पुर ति एत्हां (दव १) । ३ माजा प्रदुता सम्बद्धि 'रण्टामो प्रसूचिट्ट प्रकार देर में भग रें (न्दर ६ २ ६) । धाणुसमय न [झनुसमय] प्रक्रिक्ट (का 1 (\$ 58 अणुमय वृ [अनुराय] १ शरवातान चेर मि २, १६) । २ वर्षे ध्यमिमान (पण्)।

दरमा। २ प्रीति करना। ६ परिचय दरना।

धानुसम्बन्धि (स)। भूता धानुमन्द्रित्त्वा (स्प

42

अनुमर कर बिनु + सुरे श्रेष्ठ करत मनुबंधन करता। अनुनुष्द (न्छ)। बङ् अगुमर्(त (नहा) । इ. संगुमरिकम्प (स X () 1 भगुमर भर [अनु+स्मृ] बाद करता क्लिन करना। का अध्यसर्ग (प्राप्त हरू ) इ अणुमरियस्य (पात्रम) । र पनुस्तन (तिन ११३) ।

अनुसरम व अनुसरमी १ मेद्ध करना । अणुमरण र अनुस्मरजी मनुष्टित यह बरना (बेबा १) स २३१)। अगुमरि रेगा अभुमारि 'चलावत परिलये मनो ननीइ परमणाणनचे ( संबोध ४) । अञ्चमरिकार [अनुरमर्थ] बार करनेराना (पिने ६२)। भगुमरिष्य ) वि [भगुमद्दरा] १ वनल भगुमिरम ) तृत्य (गान १४ ७ )। १ याम मानक (न ११ ११४) बढन ४ बर्भुनार र् [अनुग्रार] १ वर्ग-विदेश विन्धे। २ वि व्यूनानिक वर्ग (विने ६ १)।

भगुभार पुं [भनुभार] धनुसराः धनुसर्वत

(राह भार)। र मारित कुलारेक किया

राष्ट्राची बारानुसार्य नुवारणा नार्थ (कार्ब

tre) :

सणिज्ञ (रूमा) । क्षेत्र अणुशासिर्ह (पि t (Jeg भगुसासन र सिन्शासनी १ सीच प्र देश (सूम १ १३) । २ बाबा, हुडून (सूम १२६)। दक्षितासमा(पंपाद)। ४ पनुष्टमा स्मा: 'प्रजुद्देव कि वा स्कृतकर्एकि या एगद्वा (पंचयू) । अणुसासणा हो [अनुशासना] अपर देवो (लाया १ १३)। मणुसासिय वि [अनुरासिव] किश्विव (उत्त t fr tot) : अणुसिविदार वि [बनुशिविष् ]सीवनेशाया 'ने ने वरेडि ने ने बंदित पह बह तुमं नियम्बेसि । तं तं प्रवृत्तिक्वरीय, शही दिव्ही स्व तंपहर'। (41 104) बजुसिट्ट देनो बजुसट्ट (नूप १ ३ ३)। अजुसिद्धि देवो अणुसद्धि (प्रीव १७३ सह tiert ( ) i भणुसिज रि [अनुस्त्र] परत मही बहु ध्या (रम्प १ ४६)। अणुमीस तक [अनु+क्रीक्यू] नामन रका रवस रक्षा अञ्चरीखर् (बस्)। धणुमृति रि [दे] अनुग्म (दे १ २४)। अणुनुमर सर [अनु + स्मृ] दार ररना। मननुमद्ध (बर्वीर १६)। प्रवी-धानुमुमराहेड (वर्वरि ११)। अणुमुय बङ [ अनु + स्वप् ] तेले वा प्रकृ

बणा बरना । कनुषद (तेतु १३) ।

स्ट (दे १ १६)

(तुष २,३)।

अणुम्मा की दि। गीय ही प्रवा व संत्राती

मधुमूच रि [बनुस्तृत] वर्तुस्त्र दिश हुवा

मणुन्दत रि [अनुन्दद] बार्व की एव

'सूबय तहाःसम्बन्धना श्वापा सम्बन्धना एव। पुरिका क्यक्तिया, वसीत सामेतनगरेतु । महिना क्यवितीना वर्डीत सामेक्समरेस् ॥ (दव १)। क्ष्युरोडि की [अनुभेषि] १ धीनी शानः २ त. साइन्सर (पि ६६३३ ४)। धणुसोय 🖞 [अनुस्रोतस्] १ मद्गर प्रवाह (ठा४४)। एवं समयून फिए-धोयगुडी सीली पश्चितीयो भाषमी मुनिविकारी (रत्य २)। १ न प्रवाह के सनुसाद, 'बनुदोसपट्टिए बहुनशम्मि पश्चिमचञ्चन स्टब्स् । पहिलोयमेन बरपा, बायन्त्री होतागाँवर्ष । (श्यव २) । अणुसीय एक [असु + सुच् ] धोषका. निना करना सक्तोध करना । नक्क नपु-सीयमाण (दुरा १३३) । अणुस्सर् देवो अणुसर - यत् +स्य । संग्र धपुस्सरिचा (सूम १ ७ १६)। अधुस्तरदेशो अधुसर≃स्तु+सः।ग% भपुस्सर्व (स १४ )। वजुस्सरण न [बनुसारण] कितन कर्णा यार करना (उन्न स ११५) । ष्यपुरसार र् [बनुस्वार] १ क्ष्मुस्वार, क्रियीः २ वि सभून्यारवाला धक्कर, सनुस्वार के साव क्लिका उचारल हो वह (श्रीद विते ४ १)। मणुःसुर है [अनुःसुरू] क्लाइस-पीर (तुम १ ६) । अणुरसुय रि [असुभूत] १ बाबद्रीत (रत रं)। २ तुसाह्मा(नूस १ २ ३) । ३ त-भारत-सादि पूरारा-शतक (तुस १३४)। अणुहर वक [बालु+क्क] बनुकरल करना नरन रुजा। ब्लूबुर्स्स् (स्ट ४७७) । अणुइरिय वि [अनुद्वत] जिल्हा अनुहरू क्या यदा हो वह अनुक्रा 'मनर्रितं पीर तुने चरित्रं नियसस कुन्तुरियस । मञ्ज्ञानस्त्रात्रो, विद्वस्त्रीयनगर्वनितर्व (वहा) ।

मणुर्व सर [ अनु + भू ] सनुदा काना।

मणुहरद (रि४७१)। बर्र अजुहबसाण

(दिर t tot) । इ. अनुद्धियम्य अनु-

इयर्जीय (वतन १७ १४) मुपा ४८१)। चंड-क्रजुद्देक्य अणुद्दिरं (प्रकः पंता २)। अज़ुद्दवण न [सनुसदन] धनुसद (स २०७)। अप्रदृष्टिय वि अनुसन् विश्वका सनुसर किया पदा हो वह (सुपा है) । वणुहारि वि [अनुहारिम्] मनुकरण करने बाका नदानकी (कुमा)। कणुद्दाय देखी अणुमाय (ग ४ ३) ६१६) । ध्यपुद्धियासण न [अन्त्राप्यासन] धेर्य से श्रहन करना (वं २)। अणुदू मक [अनु + भू] धनुभव करना । बह अणुहुत (प्रतम १ ६ १६२)। अणुहुँ न सक [अनु + मुझ् ] मोन करना मोएना । घल्डहंबद्र (मनि) । अजुङ्क देशो अजुङ्क (वा ६५१) । अप्रदेश विभिन्नभृती १ विसका बनुभव कियामधाही वह (दूमा)। २ न सनूमव (d y 30)1 अणुहासक [अनु+मृ] प्रनुपत करना। समृक्षीत (पि ४७१)। बहु- अणुक्षीत (पटम १ ६, १७) : कमक् अणुहोद्दर्भत अणु-होइजंद, अणुहोइजमाण अणुहोइअमाण (पर्)। इ. अणुहोदस्य (रो) (पपि ( \$ \$ F अणुकप्प देवी अणुक्रप्प 'एतो कोन्ध्र मणु-कप्पे' (पंचमा) । अणुण वि अिमृती कम नहीं द्रविक (रमा)। अण्य १ रू [अनूप] पविक वनवासा देश अर्जुभे जिल-बहुबे स्वान (विश्व १७ ३) वदं ४)। अणेश्र वि [अनेक] देखो अणेक (दुवा पवि अजेक्समः वि [दे] बद्धन करत (दे १ \* ) i अणेका ) वि [अनेक] एक वे शविक बहुत अधेग } (बीमें प्राप्त रेश)। करण न िक्राण वर्षाय, अर्थ, यवस्या (सम्म १ १)। राह्य वि ['राजिक] धनेक एडों में होने-बाला धनेक रात संबन्धे (क्रबनादि) (क्स)। सोम [शस्] फ्लेक नार (41 ty) I

अधेरांत पू [अने झन्त] धनिषय नियम का स्थान (विसे)। वास प्रे वादी स्थातार, बैनों का मुक्स विज्ञानत सन्त-मसन्त मादि धनेक विश्व पर्मी का भी एक वस्तु में सापक्ष स्वीकार 'बए विक्षा नोयम्पनि वनहारी सम्बद्धान निम्मण्यः। वस्म भूक्ष्णेबपुरुशो नमो घलेवंडवायस्म (सम्म १६६)। अणेगांतिय वि [अनै अग्वितः] ऐकान्तिक नहीं भनिभित्त भनियमित (सम १ १)। क्षणेगापाद वि [ अनक्ष्मादिन् ] प्रापी को सर्वेवा धरुय-धरुग माननेवाला धक्रियावार मध का सनुवासी (ठा द)। अणेच्छेत वि [अनिच**ध्**नृ] नहीं चाहता हमा (स्प ७६८ हो)। स्रणेज वि [सनेज] तिसम तिष्टम्प (धारु)। अणेट्य वि [अक्स्य] चानने के धयोग्य, बातने के सरास्य (महा) । अजेडिस वि (अनी**टरा नि**तुम प्रशासका 'बे बम्में मुद्रमन्त्राति पश्चिपुएएमऐनिसं' (मूम १ ११) : क्रणेवंभूय वि [अनेवस्भृत] विश्वक्रण विवित्र 'मस्टेबम्पी' वेपते वेपति' (मन 2 X) ( अजेस देवो अण्णेस । गर् अणेसँव (नाट) । व्यणेसण न [अन्यपण] बांज तनारा (महा) । अणेसमा हो [अनपणा] पुपला का समाव (क्या) । मणेसपिजा वि [भनेपपाय] यक्सनीय वैन साबुधों के सिए बपास (मिसा-बादि) (छ ६,१ समा १ १)। कण)वया की [कर्युतुका] जिसको ऋतु-वर्ग मधाता हो यह की (ठा ६,२)। भणोर्वेद वि [अनवकान्द] विश्वका परामव म किया गया हो वह, श्रीवत 'परवाहींह घएोदंवा (मीप)। समीताह देवी अणुनाह = मनवह जान-रनी संबद्दी मंग्रीन्यहीं (बृह १)।

अणाग्यसिय वि [अनवयर्पित] वहीं विशा

ह्या ममार्जित (चन)।

कग का वि [अनवधा निशीप सुद्ध (णामा 1 (2 5 छाणोज्ज्ञमा क्ये [अनवद्याक्ता] भगवान् महा शीर की पूची का नाम (माचू)। बजाक्षा स्त्री [अनवधा ] उत्तर देखी (क्या) । व्यक्तोणश्राम [अनयनत] नहीं भुक्त ह्रणा 件 ( 1) ( भणोत्तरप रेको अणुत्तरप (पर ६४) । अणोम विभिनवमी क्षेत्र-पहित परिपूर्ण (पाचा) । रुजामाण न [अनपमान] धनक्षर का धनाव सकारः एवं सन्यमश्रीमा विवदा पश्चरिकस्या भ्रायोगार्य । मोहतियिच्या य क्या. विरियामारो य प्रणुविस्लो (मीव २४६) । मजारपार वि 💽 १ प्रहुर, प्रमुख (मानम) । २ घरादि-धनन्त (पंचा ११ वी ४४)। १ व्यति विस्तीर्ण (पराह १ ६) र भणोर्मामञ्जल [अनुद्वान] प्रशुक्त ग्रेता (दुमा) । अणोक्स न [वे] प्रमात प्रातकान (वे १ भणोवणिदिया स्मी [अनीपनिधिकी] यानु पूर्वीका एक मेर कम-किरोप (प्रस्)। अणायणिहिया वर्ष [अनुपनिहिता] अपर वेको (पि एक)। मणोद्ध विश्विनाई] र गुप्क सूचा हुया (ना १४१)। सम नि ["सनस्क] धकरूए निप्दुर, निश्म (काम वर्ष) । अणायद्ग्या वि [अनवद्ग्य] सनन्त (सूच १ १२, ६) । अजोषम वि [अनुपम] स्त्या-पीहर पदि वीय (पत्रम ७६ २६ सुर ३ १६ )। अवायमिय वि [अनुप्रतित] अपर देखी (पतम २, ६३)। बागोपसंका की [अनुपसंदव] धक्रत सन्य ज्ञान का समाव (सूध २ ११)। अजाबहिय वि [अनुपश्चिक] १ परिवह चहित संतोपी : २ सरन सक्पडी (माना) । अजोबाइयम १ वि [अनुपानस्क] बुता अजीबाहणव रे रहित को बता न पहिता हो (भीप पि ७७)।

अणोसिय वि [अनुपित] १ त्रिसने वास न किया हो । २ धन्यवस्थित 'प्राकृतिकरत्ते व करेद खबा (वर्ग ३३ सुम्र १ १४)। ज्ञणोद्दर विशिवामिन्तर] पार वाने के निए धनमर्थ 'मुलिएत ह एवं प्लेश्ब प्रणो-हंडराएए नो य बीई तरिवर्ण (धाया)। अजोइहुम वि [अन्यमङ्क] निरंदूश स्व म्बर्ग्स (समा ११६)। व्यपोदीय वि जिनवहीमी हीनवा-सहैत (ft {2 }) भण्ण सक [सुज्] भोजन करना द्वाना। म्प्छइ (बड् )। क्षण्य स [काम्ब] दूसरा पर (प्रामु १३१) । बरियय वि [विशिष्ट, पृथिक] सन्य क्री का सनुसामी (सम ६) । स्रोहण न िंभइप्य**े १ नान के समय होनेवा**ना एक प्रतारका सुकाविकारः १ वृंगालेकालाः, यात्पनिक वनेया (निच् १७) । चस्मिय वि "भामिकी निम वर्गवाना (भोव १६)। सम्जन (अस्त्री १ नाव चलतः साविधान्त (गूम १ ४२) । २ मध्य पदावें (उत्तर )। ी मकल भोजन (सूच १२)। इ**स्टा**व गिस्मय वि मिस्मयको वासी क्रम को वानेराला (प्रीय भव १६ ६) । विद्वि प्रभी विभिन्ने पाक-कवा (मीप)। अज्य न [अर्थास्] पनी वन (उत्त ३)। भण्य दि [दे] १ मारोशित । २ वर्षिक्त ( TF ) i मण्य देशों कम्प=नर्छ (वा ११४ क्ष्यू)। अञ्जल र्थ (के) र क्वान तरहा : २ वृत्ते बन। ६ देनर (हे १ ११)। जञ्चाइअ वि [वि] र दु∺ (देर रह)। २ सव दिल्ली वें तुत, सर्वार्थ-तृत (वड्)। वण्त्रओ स [अस्वतस् ] दूसरे ते दूनपै दरह (स्त १) । रेबो असमी। बण्यक्य वि [अस्योग्य] क्रत्य, यात्रन में (41): क्षण्याचा वि [क्षम्यास्व] चीर चीर, चसन-मण्डएकाई वर्गेना र्वेदारवर्हम्य जिल्लक्स्मित् ।

मएराति बीएडियमा, वराष्ट्रास्टार्थाईव कुनाई (वटा) । अञ्चल स**्थित्वत्र] इ**सरे में क्रिय स्थल र्मे (मा ६११)। अञ्जल्ति को [दे] सदहा क्यमान, निरमर (दे १ १७) अञ्चल्ती देवी बज्जजी (वा १६१) । बाष्णस्य देवो काण्यत्त (विदा १ ३)। अञ्चल्य वि [अन्यस्व] इसरे (स्वात) में षाक्षा (स ११)। अण्यस्य वि **शिन्दर्भी** नवार्षस्या नाम त्वापुरा बाबा डिबमएएउचे उपल्यापिर नेतर्च (विशे) । **म**ध्यमण्**य देवो स**ञ्चाल्य = सन्तोत्य 'प्रएस मर्जमगुरवर्ग (छामा १ २)। अञ्जसस्य विदि] पुनस्क किर से बहा हमा (दे१ २८)। व्यव्यय केवी व्यवस्य (वर्गर्स ११२)। भण्णायर विकित्यतर] दो में ने नोई एड (क्य) । व्यव्यया व [कम्पदा] शोई समय में (हर भण्यव १ क्षिणैंदी १ स्पूरः। २ संसार भरतवसि महोबीस एवे ठिएछे दुवत्तरे (क्तार)। भण्यव न [ भायवत् ] एव सोकोत्तर बहर्रा का काम (व\* ७)। भज्याह न [भन्नह्] प्रतिहिन, हुमेरा (धर्म क्षण्यम् देशो भन्यत्त ( यम् )। भण्यक्ष ) प सिन्यक्षा क्रिय प्रकार से. मञ्जूषा ) विच्छेन चेति है स्वया ( दर्) मदा)। "साव पुं ["साव] वैपरील्प, बतटा-पन (बृह ४)। भज्जहि को जन्मत ( वह् )। जन्मा की [आहा] यात्रा, मारेठ (ज. २६) यमि ६३३ मुद्रा १७)। बज्जाहरू है [बन्ताहिए] बारिए, दिस्की म्बदेश दिना नया हो नहः 'सन्युरुप भावानारे मोग्गरपालिला वन्त्रेशं प्रएकारहे प्रवाले (पंत २)।

₹**२**) ı \$2) t इति नी नाटाना भान (दी ३६)। इस र्व [पुत्र] रूक विकास बैन दुनि (सी १६)।

अञ्जाहरू वि [अन्याविष्ट] १ व्यात (क १४ १) । २ पछनीन, परनश (स्प १० अञ्जाहस (देव) वि [अन्बाह्य] हतरे है **ब**सा (पि २४३)। अञ्जाजन भिद्यानी १ स्त्राल धनलतारी मुक्ता(देर ७)। २ मिम्पद्रकान, भूस करत (धन व २)। ३ वि. बाल-पॉक्ट, मुचै (मन १ १)। अज्यापान दि । समा विवाह समा में दश को शक्तावरको को बात दिया बाताहै मह (दे१ ७)। थण्याणि कि जिङ्कानिस् देशत औहर मुर्के (समार्थ)। २ मिष्या-कानी (र्देव १)। १ पश्चन को ही शेककर मानीवास, मजान-वसरी (सूम १ १२)। क्जाणिय वि [बाहानिक] १ प्रकारती, यज्ञानबाद का यनुपायी (बाव ६) वन १ १)। २ मुच्ची सज्जानी (सुस्र १ १)। व्यण्याय वि [ब्रह्मात] यविक्रित नहीं बाता हमा (पर्या २१)। भण्यास प्रै [सरमास] स्वास का संसन (पा मण्याय विदि∏े मादै शीचा(से ४ ट)। अण्याव विक्रियाच्यो स्थाप संभव न्यान विकास भी विश्वकीए प्रएकामगानी व से समे होद सर्जकरते' (सम १ १३)। भण्याच्य (ती) क्यर केवो (मा २ )। भण्णारिषञ्ज वि [सम्यादक] दूधरे के केन्न (प्रामा)। भज्जारिस वि [सम्बादरा] दूबरे के बैसा (fi tyt) i भाज्यासय वि 📵 विस्तृत विकास धूमा (पर्)। अञ्जिमाण 🜬 छण्णे । अञ्जिस वि [अञ्चित्त] पुत्र, तर्वत (कृत र राज्यस्)। मन्जियाकी दिंदी केवो श्रप्नजी (देश अञ्चिया हो [अझिरा] एक विकास कैन

अभण्याकी [वि] १ देवर की की।२ पवि नी विद्वा कर्त्र । १ क्रुग्न पिता की विद्वित वि t xt) 1 काण्य ) वि [क्षक् ] सवान, निर्दोध सूर्य भण्जुंझ } (पर् गारदर)। अञ्जूष्म वि [अन्योग्य] परम्पर, धापस में (मरह) । क्षण्यूण वि [अस्यून] परिपूर्ण (टा प्र २२४)। अपग्रं सक [अनु 🕂 इ] धनुसरण करना । सम्बोद (बिसे २१.२१)। सम्बोति (पि ४११)। क्या संज्ञास्त्राण (धन्नीस्मान) (निपा 2 2) 1 खळोस सङ [अतु+इप्] १ वीजना **पू**रता तक्तीरात करता । २ चाहता बोद्यमा । ३ प्रार्थना करना । स्वयन्तेमद्र (पि १६३)। यह अप्लेसंब, अप्लेसञ्च, अञ्जासमाण (महा काव)। अञ्जासण म [अन्यपत्र] बोज हमारा, त्रह्मीमान (इस ६ दी)। घळोसणान्ये [अम्बेपणा] १ सोन वर् भीवात (प्राप्त)। २ प्रार्थना (माचा)। ६ गृहस्य मे दी बाती निधानामङ्ग् (रा ६ ४)। अण्णेसय वि [अम्बेपक] परेपक (पर 1 (50 क्षणोमि वि [अ वेषिम्] चौत्र रक्षेत्रासा (माना) । अज्यासिय वि [अन्त्रेपित] विनशे धहरी नान की मई ही बह 'म्म्गणेसिया सम्बन्नो मूच्ये न वहिचि दिहाँ (महा)। भारतीयम देखी अञ्जूष्य 'मर्ग्रोर्ग्समगु-बद्धे शिष्यप्रयो मिलयविसर्व तू (वैवा ६ म्बज १२)। अण्योसरिभ वि वि प्रतिशन उन्नीपत ( R 2 78) 1 अलद् सम् [सुत्र्] १ काटा क्रोबन गरना। २ नापन करन्त्र । ३ ध्रह्म करना । सम्प्रह (दे ४ ११ : चर्) । मगुरुद (बीर) । मरान्य् (दुवा) । बन्द न [अद्न] दिवस,दिन भूक्तारस्ट्र रानदमयीमं (दश)।

अण्ह्या 🦙 🕻 (आभव) कम-मन्य के नाएए अण्डय र्विमार्थ (पएड ११६ चीप)। अण्डाकी विष्णा त्या प्यास (पा १३)। १ १२) । अव्याज्य कि कि जान्त भूमा हवा (दे १ २१) । अविद्या वि अविकित् । ध्रविन्तित मान-स्मिक 'मद्यविक्यमन एरिस' वस्रायमई पत्ता' (महा)। २ ठीव-ठीक नाही देखा हुचा बर रिस्तिति (वय व)। १ विवि महस्तिमे विष्ठरियो रायहर्त्या (महा)। अविदि दसो अइदि । असुद्ध त्रि [असुट ] धीटा विनारा 'असुव बादो सी चेव सन्गे (बहर)। अवज्यास वि [अवुष्त्राक] कृष्णा-पीत अक्साहिको (पराम = ११३)। निप्त्यह (पन्तु १४) । अवत्त न [अवस्य] मराय भठ बैरव्यावधी (पएडर १)। (उप ६ ६)। अवस्य वि [सन्नरन] नहीं वस हथा निर्मीक रीय (मिन)। अतस्य वि [अवध्य] यमन्य, मूठा (धाषा)। अतर देखी असर (पब १ कम्म ४) मिन)। भी प्राप्ति चलाति (कम्म २ २६)। अवस पूर [अवयस ] १ वर्गमर्ग का समाव (क्त २६) । २ वि वय-पहित (इइ.४) । (मुर १ १४३; जुमा) । अतब र् [अस्तब] ध-प्रशंका निन्त (बूमा)। भवसी बेदी भयसा (पएए १)। अवह वि अवयी धरुष, धनास्त्रविक २ ३)। ३ पूंकानी पूनि (शह १)। मुठा (गुम ११२: माचा)। अतह वि [अवया] उम माफिक मही 'बामो बिय शामन उच्छाहेति परयाग किसीमो । दाना प्रव तामी बिय मतह-रिजेमप्रेल समर्वेति दिवयाई (यउ६) । अवार वि [अनार] ठरने को मरुस्य (रहामा ₹ ₹ ₹¥) I अवारिम वि [अवारिम] क्रपर देनी (नुष ₹ ₹ **२**) ı (उत्त १२)। व्यतिहरू वक [अति + पुर् ] १ चूब हूटना ट्रा मान्छ। २ सव बन्दर से बुक्त होता। पुन का बन्पारक (भग १४ ६)। धतिउदृ६ (सूच १ १४, ४) । अविष्टु मक [अवि + बृन्] १ पार्नवन 4श हि ब्रेश)। करना। २ व्यान्त होना। "निस्ट्रह (नूस १ 12, € 4) 1 अविबहु नि [अविष्ठुचे] १ प्रतिकान । २

बनुगत ब्याप्त भंसी पुहाए बसखेतिबहें यविज्ञासको बञ्चद मुत्तपान्स्रो (सूम १ ६, खतिस्य न जितीधी १ तीर्थ (चनुनिय संप) का समाय तीर्वेशी सनुष्ति । २ वह नात विनर्भे तीर्थं नी प्रकृति न हाई हो या उसका मनाम पहाही (पएछ १)। सिद्ध मि िसिद्ध ] घतीर्च कास में भी मुक्त हमा हो वह व्यक्तिपश्चिता य मन्नेदी' (नव १६)। अर्तागाह वि [अतिगाह] १ पति-तिविर । २ किथि भागीत बहुत 'सतीगाई सीमी अतुष्ठ वि [अतुष्ठ] यनुपम भगागारण अद्वस्थिय वि [अद्वस्थित] यासापारण अदि अन्त देवो अध्य = मालन् (पुर १,१७४° सम १७ एकि)। स्थम पु स्थिम] स्वस्य লবাৰ জিবা গীয়ের বুৰির ইয়ের अस वि [आस] १ गृहीत निया हुमा (छाया १ १)। २ स्वीकृत, मंद्रर किया हुमा (ठा अस विशासी १ शनादि-प्रल-संसम् यूली। २ राग-इ.प.वनितः वीतरायः। ३ प्रायक्तिः 'नालमारोलि यसाजि बेल घसो उसी भने। धपदोपपतियों का वे कहा वियोदियें (वन १)। ४ मोल मुन्दि (सूम ११)। र एक स्ट हिटकर (भग १४ ६)। ६ प्राप्त मिमा हुवा (वव १ ) 'वतप्पत्रएएनेस्मे' अस्य वि[आत्र] दुन्ध का नाग्न करनेताना अस्य [अत्र] यहां इस स्थान में (नाट) । भप वि [ भषन् ] पूरव जाननीय (यनि मत्तम देशो सवय = सदय (ब्राह्न २१) । अच्चम्म रि [आत्मक्रमेम्] १ जिस्ते वर्म

बल्बन हो वह। २ पूँधाबाकर्मकीय (विष ex) i काराद्व कि [कास्त्रार्थ] १ कारपीय स्वयीय (नर्म २) । २ पुंस्वार्व आह्र नामनियत्तस्य धक्य समस्यस्यं (बच ८)। अत्तर्दूय नि [आस्मार्थिक] १ मालीन ।२ को अपने तिए किया गया हो। 'जनका चीमल माइलार्ग बक्तद्वि विश्वमहेरपर्व

(बत्त १२)। ) देखो अप्य = भारमन् (मृ**न्स** असम अत्तजम । २१६)। करक वि [आस्तीय] निश्री स्वतीय (नाट पि ४ १)।

अचगश्र 🤰 (शौ) वि [आस्त्रीय] स्वडीय धाराजक रे प्रेरता, विश्वका (वि २७७ माट)। अर्चाणिज्ञिय वि [आरमीय] स्वकीय (ठा ₹ t) t

भर्त्तजीभ (शी) क्ष्यर देवी (सन्त र७)। भत्तमाण केवो आवत्त = या + बृत् । शत्तव र् (शास्तव) पून नरना। या ची िया दियी, सहसी (दिसा ( १) । अराज्य दि [अराज्य] बाले शानक, प्रस्थ (লা**শ)** ৷

ध्यक्ताओं [के] रमाता, मी (देर ३१ भार ७)। २ तातू (दे१ ४१ मा ६६७-हेवा ६) । ३ कुरा। ४ क्यौ (६१ ५१) । सत्ता देशो बत्ता (प्रति १)।

श्रत्ताण देखो अत्त≂ श्रात्तम्। (पि ४१)। असाम नि [अदाम] १ राक्त-पहित, स्तर-ব্যিত (বড়ে १ १)। १ বু কনী বং দাঠী रतरर पर्श्तराता बुद्धाप्रिर। ६ की-द्वी काहे प्रतर बुगाविये रामेरला गारी (शह १)। श्राचित्र[अञ्जी इत मान का एक ऋषि (बहर)। श्रांत की [श्रांति] पीड़ा दुख (दूथा दूरा

१ १) । इर रि ["इर] पीश-पाशर दुःख पानकापरनेशमा (धनि १ ३)। अस्टिहरी की [बे] दूर्वा मनावार बहुवाने-बान्ने भी (वर्)। अतीहर वह [भारती+कृ] मन्ने यपीन

वरना, वरा वरना । सलीकरेड; वर्ड असी হু(র (রিমু ४)।

असीकरण न [कारमी ३३ण] मरन क्या बागा (निवृ ४) ।

धत्तकरिस १ र्ष [आरमोरकर्ष] प्रमिमान बातुबोस निर्व 'ठम्हा प्रतुव्धरिको वने-सन्ते बद्धनरोर्स (सूध १ १३ सम ७१)। धत्तकोसिय वि [भारमोतकर्पिक] वीका

प्रधिमानी (धीप)। श्राचेष पुं€ियात्रेये । यदि ऋषि का पूत (भि १ व ३)। २ एक वैन भूनि (निधे

२७६)। भक्तो प [भवस्] १ इसमे इव देतु से (यबा)। २ महासे (प्रामा)।

**धरम वेको धाटु≈धर्थ (भु**मा **छ**म ७२०८) वयप दी भी १। प्रांतु १५ गतंत्र)" भरोह मले नहिए विश्वानी' (योग ७)' 'मानवही प्रकारोप (विशेष १६६ १२४६)। क्रोपि की ["बोनि] बनोगार्यन का ज्याब, शाम शाम प्रदेशका पर्वनीति (ठा ३३)। ज्या पूरियो रुम्ब को क्षेत्र धर्व को ही मुक्य बस्तु माननेवाला पञ्च (बस्तु)। सस्यान शिक्षी धर्व राज पंपति-राज (शादा १ रे)। बद्दु[पिति] र क्ती।२ दुबेर (बब ७) । बाय पू विद्यु १ प्रकार्तन : २ चोप-निकास । १ छुए-नावक रूपन । ४ बोध-नावरु सम्ब (विसे)। बि वि [ विस् ] वर्षे ना बानरार (पिंड १ व्यः) । "सिक्स वि िसिद्धी १ प्रमुख धनवाला (अ.७)। २ र्पु पैरवत क्षेत्र के एक गावी जिनदेव (दिस्व)। । क्रियन ["(क्रीक] वन के लिए सहत्य बोलना (परहार २) । स्थोदाण न ['स्थेयन] पदार्थ का शामान्य क्रान (ग्राप् १)। स्टोयण म [स्टोकन] नवर्गना **ਰਿਪੈਜ਼**ਦ

'स्टबालीक्ल-करना इयरकईलं ममंति **बढी**ग्ये। मलक्षेत्र निरासम्बद्धि द्वित्रं करकार्युः। (नदर) ।

अल्ब पुँ [अल्ज] १ वहां मूर्य धरत होता है बद्ध पर्वेद (से ११))। समैब पर्वेद (धन ६१) । ३ दि, धवियमल (स्त्रया १ १९)। "गिरि दु ["गिरि] धरवास्त (सुर ३ २४का पत्रम १६ ४४)। सेख्र दू ['शेस] कावायम (नूर १ १२१)। । वास र्षु ["वक्ष] घन्त्रनिर (बळ्) ।

बारम म [बाक्ष] हवियार, बायुव (पटम न वे १४ ६१)।

बरब धक [बार्वेय्] गांपना पाचना करना, प्रार्थना करना विश्वति करना । चलस्य (Fig Y) 1

श्रस्य सन्न स्वा] बैठना । मत्वर (धारा ४१) । दाला) केवो अस्त = धत्र (इप्प पि २८%) भरतं ( १६१)। अलंडिक वि [अस्मिण्डिक] राषुपाँ के पूर्व

के लिए समोप्त स्थान, शुरू बनुओं है म्यात स्यान (ब्रोब १३)।

**धारचंत वड़ िसर्स्त यत्** ] घस्त **होता हुम्म** (वजा २२)।

अत्विविधिया वी [अर्थिकिया] कर्ड का स्थातार, पशार्च के श्रोतेशको क्या (वर्षेष 448) 1 करवाक न [वे] १ यकाएड सकरमारा, वे-समय (क्या १६ ३ से ११ २४ मा १ / भवि) "याज्यस्य विकास तिहाल विभागा प्रविभ वामा (शा १८६)। २ वि सक्षिम (क्का ६) । ३ किर्दि सनवरा इनेता (क्टर) । अस्थरण मि वि<sub>वि</sub> १ शक्क वर्ती वीच का 'चम्ब् मल्यने वा मोद्युतेनुं कर्त पहुं (मोर्व १४)। २ घषाच चंत्रीरः। १ तः सम्बद्धः धायाम । ४ स्वान, जपह (दे १ ५४) ।

**भरपण न [अर्थेन] प्राचैना धावना (स्न** ७२८ थी) । जल्बजिकर पुन [अर्थनिपुर] देवी अन्य जिडर (घल ६१)।

अरबविक(ग पुन [बाधनिपुराङ्ग] देवो **अष्ट**भित्ररंग (प्रज् ११) ।

भरवरिय वि [सर्वार्थिक् ] वन वी दन्याँ-वला (ब्य १३१)।

अत्यम यक [कारतम् + इ] यस्त होना *चार*न होता। परचनइ (पि ११)। श्रष्ट परचर्ने (पडम ४९, ११) ।

अस्पराय न [अस्तमयन] वस्त होना बारन होता (प्रोपं ५ ७- के दंद हुए, वा २०४)। मरबताविय रि [अभ्यमापित] यस्त *वर* बाबा ह्या (सम्मत्त १६१) । अरबनिय दि [अस्तमित्र] । यस्त 💵

इव गया धहरय इमा (घोष ६ ७ महा: सुपा १११)। २ इति, इतिन्त्राप्त (ठा ४ ३)। अत्ययारिका भी दि । सती वयस्या (दे १ **१६**) 1 शस्यर सक [सा+स्तू] विद्याना राप्या करना पद्मारना। घत्परह (३४) । संह अस्वरिक्तम (महा)। ब्यस्यरण न [सास्तरण] १ विद्यौता सम्या (ने १४ ५)। २ विद्याना सन्या करना (विके २३२२)। बास्यस्य वि [आस्तरक] १ बाच्यारन र रने-बाला (राम) । २ प्रै निर्द्धल के ऊपर का वस्र (भव ११ ११ वप्य)। बात्यस्य वि [अस्तरजरक] निर्मेत सुद्ध (भग 11 11) 1 अत्यवण देवो अत्यमण (मनि) । अस्मसिद्ध पू [अर्थसिद्ध] पण का करानी दिनसे कामी दिनि (सुम १ (४)। करूबा देवो छट्टा = प्राप्ता । बरवा १ सक [बास्ताय्] बस्त होना, अत्यात्र } दूब माना धरस्य होना । अलाह, मत्वाद (परम ७३ ३१) । मन्तादीत (से ७ २६)। बङ्क अस्यार्ज्य (ते 🕶 ६६) । अत्याश वि [अस्तमित] पस्त हुमा, हुवा हुमाः 'तावचित्र विवसमये म्हनायो विगयकि-रहासनामी (पनम १ ६६) से ६,१२)। अस्यात्रमा की दि ] योद्यी-मएक्प (स १६) । अत्थान न [आस्थान] एक एक-स्थान (मुर१ ८)। करवाणिय वि [ अस्यानिम् ] वैर-स्वान में समा ह्या 'धन्त्रारितयसम्प्रहि' (सदि) । अत्याजी की [आरवानी] समान्यान (दुमा)। अस्यागीम वि [कास्थानीय] सम्बन्धकी (रूप ७४) । शरयाम वि [अस्थामन्] व<del>तः रहि</del>तः निर्वत (गामा ११)। अस्वार पुं [दे] सहाकता साहास्य (दे १ ६ रहम् । अस्थारिय पू [वे] नीकर, कर्मवारी (बव ६)। क्तधावगाइ केंद्रो अत्युगाइ (पर्ल ६) । अरवादित औ [अर्वोपत्ति] बनुक्त धर्व को धटकत से समस्त्रा एक ब्रकार का सनुपाल-

बानः वैश्व 'संवक्त पुर है और विन में नहीं बाता है इस नास्य से दिवन रात में बाता हैं ऐसा बनुक धर्म का बात (का ११८)। अत्याह वि [अस्ताच] १ प्रयाह याह-रहित गैमीर (गाया १ १४)। २ मासिका के अपर का भागभी जिसमें दूव सके दतना महरा जनातम (इह¥)। ३ वृं बतीत भौधीशी में भारत में स्मुल्यभ इस नाम के एक तीर्पकर देव (पथ ६) । **कारपाह वि [वे] देवो अत्याप (वे १ १४**) मिनि)। अस्थि कि अधिन् दियालक मणनेवाला (सूर १ र )। २ मनी वनवाता (पैचा)। ३ मालिक स्वामी (विसे)। ४ गर**ब्**, वाहने-वासा 'यलचो बलन्बियाएं कामन्यीलं व सम्बद्धानकरो । सरमापनगर्धयमहेक जिल्लेसियो बम्मो ॥ (महा)। अरिय न [अस्य] इत्र इट्टी (महा)। धरिय प्र [अस्ति] १ सरव-मूचक, भग्यम है, 'प्रत्येक्स्मा भूंडा मनिता बगायध्ये बस्तुगारिमें पम्बद्धा' (धीप) 'घटिन ए प्रति ! विभासाई' (बीब ३) । २ प्रदेश, सनयवा 'बलारि सरिव-कम्पं (ठा ४ ४) । अवत्तक्व वि विभय क्तक्यी सप्तमञ्जी का पांचनी मञ्ज स्वकीय इच्य मादि भी मोता से विद्यमान और एक ही साथ कहते को भग्रस्य पदार्थः 'सम्मावे साहते वेतो बेनो स समग्रहा अन्त : वं यन्प्रमदान्तं च होइ दक्ति विम्नप्रदमा (सम्म १६)। काय पू ["काय] प्रदेशों का-सरकता का **चपुत् (सम १)। प्रत्यवत्त्वय पि** ["मान्स्यबद्धरूप] सप्तमञ्जी का कातनी मञ्ज स्वनीय प्रथ्यादि नी सरना से विश्वमान, परनीय बन्मादि की अनेद्धा से धविद्यमान धीर एक ही समय में दोनों बनों से बहने की मतस्य पदार्थ 'सरमाबाक्तमाने देनों देमों प्र समयहा बस्य । तं धरिपशान्यवत्तरस्यं च वविश्रं विक्रायवताः (सम्म ४)। चन ["तन] क्य विद्यमनदा, ह्यानी

(बूर २ १४२)। साभी वितासच हवाडी (सर ६ ३७४)। दिनय पू विदेश नय | ब्रम्बार्षिक स्य (विमे ११७) । नारिय वि निश्चि धामद्री का धीनरा मह---प्रकार, स्वहम्यादि की प्रपेता से विद्यमान भीर परकीय प्रस्पादि की संदेश स सक्तिय मान बस्तुः धह देसो सन्माने देसोसन्मानपनने निधमो। तं दनिममरिकनरिम म भाएसनिसेसिमं बम्हा (सम्म ३७)। नरिवय्पथाय न ["नास्तिप्रधाद] नाध्हर्वे मैन बाह्न-बान्त का एक भाग, भीवा पूर्व (सम ₹६) ι व्यरिवज्ञ म [आस्तिक्य] भारितकता बाग्मा-परलोक मारि पर विभ्रास (मा ; पुण्ड tt ) i करियय रेखो अरिय = ग्रॉबन् (महा' ग्रीप) । अधिय वि [अर्थिक] बनी यण्यात् (ह २ 22E) 1 अस्थिय न [अस्थिक] १ हर्श इत्ह । २ तू बुधा-विरोध । ३ म बहु बीजवाना फल विरोध (पएस १)। अत्यय वि [आस्तिक] कामा परतोक मादि की ह्यांनी पर सदा रक्षनेवाणा (वर्गर)। अरिवर केको खबिर (पंचा १२)। अरभीकर सक [सर्भी + कृ] प्राचेना करना माचना करता । यन्बीकरेड (तिनु ४) । बहु-अस्थीकरंत (निषु ४)। अरबीकरण न [बार्यीकरण] प्राचेना माचना (निषु४)। वरधुनक [आ+स्ट] विद्याना राज्या करना । क्में. धन्तुष्यद्र करहाः आसुद्धांत (तिन २१२१) । अरयुत्र वि [आस्तृत] विद्यामा हुवा (गामः विमे १३२१)। अरधुगाइ र्षु [अथायमइ] इन्त्रिय सीर मन बाच होनेरामा शान-विदेश निर्वितन्तर बान (मम ११ छार १)। अरमुमाइण न [अयायमइण] कर का निवय (मग ११ ११)।

अरधुद नि दि ने नु स्रोटा (दे १ १)।

अल्परिय वि कि आस्ट्रती विकास हमा

शरधुवद्र न [दे] महातक स्मित कृत्र का

**छत्मेद्य (र हि**) बारस्मिक वर्षिन्द्रत (रे

अपनेक्षिय नि दि भारत्य बीमा हमा

करनोमय वि जिलोमकी 'ठर्ड' वे' धारी

जरबोबसम्ब देवा छल्युग्ग्ब (१एछ १४)।

श्रदक्त दि] १ मक्तद्र कलक्द्र क्रक

स्माद् (पड्)। २ वि वत्तरनेवाला छैन्छे-

सवस्यत्र 🟌 [अवर्षय] चीचा वेर-राज

व्यक्ति विशिक्षरी १ वंदन वजन

(इमा)। १ मनिया निनयर (धूमा)। ३

धरक रिप्रीक्त (भीव)। ४ निर्देश (क्य २)।

५ मजबूटी से तही बैठा हमा तही जमा हवा

(बम्यान)ः प्रतिधस दुम्बर्याइयस्य बत्तराः वे

द्धा विरोज्ञात्वे (जैवा ११)। बास न

नामम् । नाम-कर्म का एक मेर (सम ६७)।

अक् कर [सद्] धाला, बीवन करना ।

मर्गसंत्र पू [वे] चोद गड्ड (११ रध

मर्रेसिंग से [मर्रेरिक] एक बकार हो

भ१क्टुवि [अटड] १ मही देवा ह्या। २

ब्यदस्यु वि [ब्यदस्य] सनिपृष्ठ बदुतन

मंत्रु नि [बाटरव] १ वही देवनेवाला,

निर्श्वक शब्दों के प्रकोग से समूर्यित (सूत्र)

बरह्यासम्बद्धे को कात्मुगग्रह् (सम ११)। **अ**त्वोम्म**्ण रेता अत्युग्मा**्ण (भर ११

(स २६८) वे १ ११६) ।

क्षत्र (देश २३) ।

12 xe) 1

1 (55

(मदा)।

(105 t) t

नाना (कुमा) ।

(रूप सामा १ १)।

मक्त, मस्य (प्रा)।

पद्)।

भर्तसम के भर्तसम (रंजन) ।

मीठी चीव (पर्श्त १७) :

यस्बैंड (तूम १ १ ३)।

(तुपरे २,३)।

मचर-विशेष (सम २ ६)। इमार प्र

भरत नि [अर्च] मरी विवाहमा (पर्छ १ ३)। दार कि [ दार] चोर (पाचा)। हारि वि विशिवा ने चेर (तम १ ४.१)। |वाज न विदान | वोरी (सन १ ) । बाजवेरमञ न शिवानविस्मत्र निर्ण है

तिभृति वृतीय इव (पण्ड २ ३)।

धारम केरी भारणम (सिरि ६१ )।

मार्क्ड रेवो बाह्य (स २. ३)।

भदिण्य देशो अवस (a t) ।

१)। २ महिलक (मीव ३ २)।

**अविस्स स्था धाइस्स (सम ६** 

(परका)। २ इससे (तुम १ २,३)।

भरिम स्वो अवस्य (सम १)।

223) i

1 (5 1

w) i

बाद (सामा १ १)।

**१ १८ माचा**)।

मदोक्ति । (इस्ते) :

निएकमा (सूब २ २) ।

अरोडि ) ति [अरोडिन] स्वर, तिबब

लाइ विकारी देवीता भीता हुथा, सक-

र्टन (द्वेना)। २ द्वौ दन क्याना एक है

धमाव (पाघ)।

धर्म्भ वि [धर्म्भ] प्रतरा बहुत (वं १)। धारन वि [अर्व] निरंप, निर्दूर (विषु २)।

अविच वि सिट्सी १ वर्ष-छित नम्र (बुद्र सुपा

X0) 1

**७१) । २ वर्ष संवरसर, संबद् (तुर १३** 

श्रद पंजिसी मानार (भग र स्मार्ट्स (क्ये) १ परिकास । २ वर्छन (प्रीव

जइ सक∫ञड्डी मारण फैटला (वद t.)। वि भेक्-रहित बदा वर्षेग्ड (गाउ) । श्रम्बरन (सूम २, ६) । (तुर १ १५: महा) । अरंक्य रेश बहु रा शिक् र ी। अइम रेलो अइम्म (तृब १ १४)। (पेबा १)।

अदर् तक [का + द्रह्] क्यातवा पाने-वैन

**अर्दि**य वि [स्टब्सिट] एका हुया, स्वास्ति

देगि बंद्र, सददेत्ता (का) ।

(विदार ६)।

वरैदहरो सून गरम करना। सहदेव मह

खडाअन (अद्वेत) १ मेरका संबद्धाः ९ व्यविद्वि और [अकृति] मगीराई, गीरज का भइड्ड रि (भार्डीय) श्वाह हुमार-धमानी। अहीज वि [अहीत] बीनता-धीताः सन् २ इस ताम का 'सुक्कृताङ्ग' सूच ना एक १ विद्र] इस्टिनपुर का एक एका (कावा जरंसण व [जर्रोत] १ वर्रन मा निषेष सदुष [दे] १ शालनाई-शृदक सम्बद्ध सह नहीं देखना (सूर ७ २४)। र वि. परीव विश्वण वर्शन न हो। 'एक्क्नप्रचिव हार्विध सदुष [दे] रक्षका ना(सूप १,४ मरुक सन्दर्शसा इतिहाँ (सूता ६१७)≀३ र रेश क्य ६, १२। स्तरू २, १४)। र न्यी केन्द्रेनाता, मन्त्रा । ४ 'बोएसी' वा मन्त्र भविकारान्तर का नुक्क (तुस १ ४ २ लिया बल्ता (यन्द्र १) पद १ ७)। ीमून, ीह्य विभिन्नी को सहस्व हुमा **ए** अदुत्तरं य [दे] मान्त्वर्गमूदक प्रत्यद, धव काइम १ कि हि । बाह्य बाह्य (दे र अद्भ न [अद्भ त] मन्द्रीय, बीरे-बीरे (जा ७१) वेमज न [बन्यन] शेर्व अत्व के अदब दि [ब्युट्रव] भना ह्या (याद ६)। ब्बर्डेंच न [ब्बर्डिय] यस्त्रु, बल्हु ना यसले अनुव }म [द] या घवता सीरः ¶त्रेज बार्डमा ) पार्लमुबार, धने धरुन बावरे (बस

["इमार] एक राजक्रमार धीर वार में कैन मुनिः बार्कुमाचे रहणहारी मं (प्रीः)। मुस्था औ ["मुस्ता] कन्द-निरोग नागर मोबा (स.२.) । सिख्यान ["सिख्ड] १ हरा बायला। २ पीत्र-इट वी वडी (वर्ग २)। १ रूस इच की क्ली (पर ४)। सिंह पु िरिष्ट ] कमल कौया (भारम)।

**ब्यह पूजियह**ी १ मेच वर्ष बारिस (**३** ८

हाद्या की [जाद्रा] १ नजन-विरोप (सन २)। १ इक्ल-विरोप (सिन)। हाद्या श्रुं [कें] १ धानते वर्षण (११ १४ नद्या १३)। पश्चिम श्रुं [अम] विद्या-विरोध विस्ते वर्षण में वेददा ना मान मन होता है (तार )। विद्या की [किया] विश्वित्या का एक जनार, निक्कों कीमार नो स्थील में प्रतिविधित्य क्याने से बहु नीरोप

होता है (वन प्र)। सन्दर्भ वि [के] माधरी वासा भाजनी से पवित्र (बृह १)।

स्त्रहार [के] केको काहाज (सम १२६)। काहि पुं[अद्वि] प्रसाम पर्नेत (गठा)। स्त्रहिट्ट नि [काह्य] १ नहीं केवा हुसा (पुर १ १७२)। २ कर्तन का सनियम (सम्म

६६)। काह्य वि [व्यक्तिंत] यात्र किया ह्या सियाया हमा (विक २६)। छाहिस वि [कार्यित] पीटा हमा पीड़ित (वज १)।

स्तिस्स वि [सहदय] देवने के धयोग्य या धरावय (पुर ६, १२ पुरा ८४. धा २७)। कादिस्संत ) वह. [आहरयमान] नहीं स्रदिस्समाण | दिवास हुया (मुना १४४

काहरसमाण ) स्वास्त्र हुमा (सुपा १२४ ४१७)। अहीण वि [काहीण] क्षोप को संगत

ब्रमुम्म निर्मीक (पर्स २ १) । सङ्गीण केवी करीण (योज १३७) ।

कार्युमाम नि [दे] पूर्व, गत क्या (वर्)। बारेस नि जिस्स्य | केवने के सराव्य (स

१७)। अहेसीकारिणी की [अहदयीकारिणी] भारत कालेसकी विद्या (संद्या ४१४)।

वननेवाको विचा (तुपा ४१४) । काहेस्सीकरण वि [बाहरपीकरण] १ धारप करना । २ धारण करनेवाली विचा किंदुण विकासिकस्य बहेस्सीकरणसंवती वार्षि (तुपा

४६६)। कारोदि वि [कारोदिन्] श्रेष्ट्-परित ह प व्यक्ति (वर्त वे)।

कद्भ पूर्त [कर्ष] १ लावा (पुत्रा) । २ बएड इरेड (रि ४ २) । बरिस पु [कर्ष] परि-नाए-विरोज, फन का बळनी साम (प्रकृ)।

**'इत्ह**ल, इत्हल पुं [**'इत्हल, इत्हल**] एक प्रकार का बाल्य का परिमाण (राव)। क्स्तेल न "लेजी एक बहोरान में कहा के साम मीन प्राप्त करनेवाचा नशक (चंद १) न्यहाकी जिल्ला एक प्रकार का पूरा (बहु १)। घडन पुं [पटक] धाना परिमालनाता भड़ा खोटा पड़ा (जना)। चंद् र्र चिन्द्री १ मामा चन्द्र (गा १७१)। २ मल-हरत गता पक्क कर बाहर करना (एव ७२ व टी)। १ न एक हलियार (उप पू १११) । ४ धर्ष पत्र के शाकारवाले सोपान (एगवा ११)। १ एक वया का बारा एसी तुह तिक्येश धीर्च विद्यामि सद चॅकेल' (पुर = १७) । **चड**वाछ स िवक्रवास्त्री वर्ति-विशेष (ठा ७) । जब्हि र्षु ( अधिन् ) प्रवर्ती एना से सर्व विमृति वाना राजा वामुकेन (कम्म १ १२)। च्छट्र बहु वि [ पष्ठ] सने पांच (वि ४३ सम १ )। इस वि शिष्टमी धाते साथ (ठा श)। जाराय न ["मारा**य**ी चौवा संहतन शरीर के हाड़ों भी रचना-क्रिय (बीव १) । पारीक्षर पू ["नारीचर] रिज महादेव (रुप्प) । तक्य वि वितीय काई (प्रम ४८ ६३)। तरस वि शियो वृशा साहे गएइ (मग)। तैयम वि जिप क्यारा] साहे बावन (सम १६४)। द्वा वि ["र्घ] चीचामाम पौषा (शह ६) । नयम कि "निवसी सन्ने माठ (१२ ४३)। माराय देवी जाराय (कम्म १ ६०)। पंचम वि [प्याम] साहे बार (सम १ २)। पश्चिमं कि ["पर्यक्र] मालन-विशेष (ठा ४, १)। पहर प्र**िमहर**ी क्यौतिय शास्त्र प्रसिद्ध एक क्योग (क्ए १=)। "बब्बर पु ["बर्बर] केट-विरोप (पदम २७ १)। मानदा की स्थी िमाराभी प्राचीन चैन समित्य की प्राकृत भाषा किसमें भाषकी भाषा के भी कोई क नियम का समूचरण किया गया है। भी प्रस्तु-मद्रमायहभाषानियमं हवह युर्ते (हे ४ २०७-पि १६ सम ६ फस्म २३४)। सास दे मासी पदा पनएड दिन (दे १)। मासिय नि मासिकी पारित्र पक्क सम्बन्धी(महा)। येषु रेखी चंद्र (का ७१ व दी)। रिक्रिय नि (रिक्यिक) राज्य का याता क्रिसीदार, धर्मे राज्य का मातिक (विया १ ६)। रत्त पूरियत्री मध्य रात्रिका समय निशीष (ना २३१)। "वैयाखी स्त्री ["वैटाछी ] विद्या-विशेष (मूम २, २)। संद्रांसिया स्थी ["संद्रादियका] एक राज-कन्या का नाग (मान ४)। सम म ["सम] एक **युत्त अध्य-विश्रे**ष (ठा ७)। हार प्रविदार र नवस्य हार (यस मीत)। २ इस नाम का एक द्वीप। ३ समूत्र विरेप (बीव १) । हारमह ["रारमह्र] सर्वेहार-क्रीप का समिद्धाता वेश (श्रीव वे)। हारमहासद पु [हारमहासद्र] पूर्वोक ही धर्न (बीन १) । द्वारमद्वाबर प्रे द्वार सहावर] प्रवेहार सपुत्र का एक प्रविद्वायक देव (भीव ३) । हारवर पू विहारवर ी १ क्रीप-विदेश । २ सम्प्र-विदेश । ३ उनका स्थितायक देन (बीच ६)। हार्यरमह व िहारवरमञ्जी मर्गहारवर हीप का एक मण्डिता के (बीव १)। हारवरमङ्गापर पु ["द्वारवरमद्वावर] प्रमेहारवर समुद्र का एक प्रक्तिता देव (बीव ६)। दारोसास व िरायवसासी १ हीप-विशेष । २ समूर विरोप (बीव ६) । हारोमासभइ पू िहारा प्रभासमञ्जी प्रवेहारावभास नामक हीय का एक प्रविष्ठाता देव (बीव ३)। दारोभास महाभद् ५ [हारावभासमहाभद्र] पूर्वीक शियर (क्षेत्र १)। शासेमासमहावर पू ( दारावभासमदावर ) पर्वद्वारावभास मामक समुद्रकाएक मणिहाता देव (श्रीक्ष ३)। हारोगासनर १ शिरायमासनरी रेखी पूर्वोक्त धर्व (शीव १) । इस्य प्रीकिकी एक प्रकार का परिमाण साहक का भावा भाग (ठा३१)।

खद् ई खिल्मी गाउँ, एस्ता (महा बाचा)। अर्देत ई चि १ पर्यंत घत गाग (११ १८: हे ६, १२ पाम): 'चित्रतीयस्पूर्यतो (बिक ११)। २ द्वंत कतियः, कर्मक (१११ १२)। अदस्त्रमा म चि १ प्रतीका करंगा एह

अञ्चलकाण न [वें] १ प्रतीका करना राह वेद्यना (दे१ वे४)। २ वरीका करना (दे १ वे४)। मार्ग-स्वल (वद ४)।

अञ्चित्रअन्दि]१ संश्रक्ता इताय ॑ करना बरेव करना (दे १ ३४)। অত্তৰিকাস বি (অম্তিক) বিশ্ব দাত पाला (मदानि ३)। सदर्जपा ) को दि अर्थबङ्खा एक प्रकार अद्भवेशी का चता मोचक नामक चता. विशेष्ट्रवराती में भीवदी कहते हैं (देह 11 ? XI & (14) | भववा ध्ये दि भवावा] दिन धवना एति काएक साव (सच १ टी)। अञ्चपेडा भी [अर्थपेटा] समुद्र के वर्ष माद क माकरवानी पहलेकि में निवादन (चत 1 (88 # अब्र 🛊 [अध्वर] क्षत्र वाय (पाछ)। काद्धर वि [दे] प्रच्वम ग्रहः 'तम्हा एकस्स विदियमदर्गद्वेचो वेद पित्रकामि तसौ राजा विभिद्वितमो (सम्मत्त १६१)। **अञ**्चित्रारन[के] १ मएकन कृपाः भा ⊈ण मजनियार (वे१ ४३) । २ मॅक्स कोटा मंत्रत (दे १ ४३)। मद्राजी **दिक्ष**दा] १ कान समय कल, (घरः नद४२)। २ चकित (सप ११ ११)। १ सम्मि शक्ति-विरोप (विसे)। ४ ब. तरबतः बस्तूतः । इ सावात् प्रत्यव (ऍप)।६ दिवतः ७ दानि (सत्त १ टी)। राम पू ["सम्म] सूर्य पादि सी क्या (परि भगता) से स्पन्त होनेवाना समय भूरकिरिया-विन्द्रि वीरोक्कविक्तितान् निरवेसको । सदा-नानो भागाई (निगे)। क्रिय दं किंद् त्तमम का एक कोटा परिमाशः की मानलिका परिभित्त कला (पैक)। प्रकारकाण न [<sup>\*</sup>प्रस्वाक्यान] धमुक बमव के तिए कोई क्षेत्र वा निवस करना (धाकु६)। सीसय न ["मिजक] एक बनार नौ करम-मूपा कापा (झ. १.)। मीसियाची [\*मिमिता] केवी पूर्वीक मर्थ (पर्छ ११) । समय प्र ["समय] **दर्श-नूरन** कात (प्रस्त ४)। मदाज र् [लभ्बन्] नार्व, सस्ता (खास्य १ १४ वर १ २१७)। सीसव व शिर्पकी नार्वका सन्त सध्यो साहिता सन्त सह (वर ४: वृद् १) ।

ञढ्याणिय वि [आधितक] पविक मुसाफिर (TE Y) अद्वासिय वि [अन्यासित] १ मविहित, मामित (नर ७ २१४ वन २६४ टी) । २ पास्द (स ६३ )। अद्भि देवो इहिटा 'बएला बहिरंबरमा ते विमानीमीत माराने सोए। स गुर्देति समस्मास्त्रं, प्रकास प्रमें न पे**ल्ब**िट (गा**७ ४)**। अदिइ की [अध्वि] वीरव का धराव मबीरन (पन्नम ११ ३६)। अद्यक्तम विजिल्लीकित वोहानक ह्या (ft (tx) अद्भुग्याड वि [अर्थोद्याट] यावा नुवा 'स्कोग्नाहा क्लाना' (पढम ६० १ ७)। भद्भुटु वि [अधवतुर्थ] समे तीन (बय र शामिले ६६३) : अवसूच वि [अर्थोक] बोहा कहा हुमा (वव १)। भव्युव वि [अग्नुर] १ वेचन शस्त्रिर, विलयर (स १६८ वंबा १६) प्रतम २६, १)।२ यनिका(याचा)। चढ्चेजद्व वि[सर्थायं] १ द्विता-पृत्र को हुन्देवाला चरित्रतः। २ विकि मावानगवा के त 'मदेपह्युविधा स्टोपहरुवक्स्मास्त्रिकेता। पनपत्रभावसमितना सबेसबिवस्य पर्वति निहरूपा' (से ६ ६६) । मबोर ) देवो अव्होरुग (६१ ४४) मीप वद्योस्म (१४६)। अ**दोन**मिय नि [अद्वीपस्य अद्वीपमिक] नाव का बढ़ परिवाल को काया से दमकावा बालके, बक्योपन धारि ज्यानानाम (धार, नप थ[अपस्] नीचे (याचा, वि १६ )। क्य (सी) स [अव] सर कार (रुप्पू)।

अद्याज दृं [धम्बम्] मार्ग एसता 'हवह व्यमई (तौ) [क्षमकिस्] १ हो । २ मीर स्वामं नरस्त पदार्थं (स्व द, १३)। नया । ३ वरूर, धनस्य (कृप्यू) । सीसय न विशिषकी बाहै पर संपूर्ण सार्व अर्थं प्रशिवस्] शोवे (शिवप्रः)। के नोजधार काने के लिए एक वही वह अभट्ट वि [अमृष्टे] य-दौठ (हुमा) । अवर्ण वि अधन निर्देश परीव 'रमइ विह्वी विधेसं विद्रमेर्स बीमवित्वसे HET I मन्त्रह सरीरमञ्जो रोई कीए विन कर्ना॥ (पच्छा सस्) ध्यमणि वि शियनिम् ] वस-र‡रा निर्वत (मा १४)। अवण्य वि [क्षवस्य] सक्वतः, निन्तः (पद्यः t ( ) i व्यथम देवो व्यक्त (क्त १) । अभगण्य } वि [सममर्ज] करवदार, देनतर अथमझ 🕽 (वर्गीव १४६ १३१)। अवस्म दं [अवसे] १ पल-कार्य विभिन्न करें, मनीति 'सबस्मेल केव बिक्ति कप्पेमाले विद र्फ (खाबा ११व)। २ एक स्वतन्त्र सीर सीक-स्थापी समीव वस्तु, भो भीव वनैष्क् को स्विति करने में सहावता पहुँचाती है (हम २, नव ×)। ३ वि वर्ग-रिह्य पानी (विदा ( १)। **\*इ**डर्¶ \*इस्] पानिह (खासा १ १८)। क्का ३ वि कियाति] प्रक्रिय पानी (विपा १ १)। वस्ताइ वि [ क्यांगित] पार का क्यादेश केनेनाचा (सम ३ ७)। रिषकाय र् ["रिटकार"] अवस्म का [स्य पर्व केवी (मसु)। वृद्धि वि [ वृद्धि] पापी पाणिष्ठ (क्य ७२ दी)। अवस्मिह वि[अवसिंध] १ वर्गनो नहीं करनेवाचा (नव १२ २)। २ महा-पानी <sup>पापित</sup> (स्नाग ११)। अवस्मिट्ट वि [अवर्मेष्ट] सवर्ग-प्रिय नतः-विद (इस १२ २)। अवस्मिट्ट नि [अवसीर] नास्त्रि का पारा (सर १२ २)। जमन्मिय देशो अहम्मिय (ठा ४ १)। अवर केनी अहर (बनाः सुपा १६ ) । भक्ता (शी) देवी कहता (कृप्यू) । अया की [अवस] सवो-दिहा, नीवबी दिशा (घ६)। व्यपि केनो अदि = पनि ।

```
अधिह देशो अद्भिष्ट (गुपा ११६)।
                                                                              वर्त्वतीर श्रुतमस्ये चेत्र कार्न करेस्प्रसि (भ्रम
                                       (पडम ११४ २६)।
क्षभिकरण देवी महिगरण (पन्त १ २) :
                                      अनिपट्टि देशो अणिपट्टि (सम २६) कम्म
                                                                              1 (X)
क्षचित वि [अधिक] विरोध ज्यादा
                                                                            समाण रही अण्याण = महान (रूपा सुर
                                       रामत धरेटी)।
 (48 1) 1
                                                                              १ १शः बहा जबर १शः काम ४ ६
                                      अनियय रेवी अणियय (यौष २)।
अधिगम को अधिगम (वर्ष २) विन २२)।
                                      अनिरुद्ध देनो अणिरुद्ध (वंत १४)।
                                                                              1 (11
अधिगर्ण देखे अहिगरण (निष् १)।
                                      अ निसंदेलो अभिक्त (हे १ २०० दुमा)।
                                                                            अक्षाणि धेलो अञ्जाणि (उर मुपा १८८)।
श्रीधारणिया देनो श्रीहरारणिया (पण्ल
                                      अनिसदू देनो अणिसदू (अ ३ ४)।
                                                                            अझाणिय रचा अण्माणिय (पत्रम ४
                                      अनिहारिम । इनो अन हारिम (मय हा
  ₹१) (
                                                                              २०)।
अधिगार रनो अहिगार (मुमनि १६)।
                                      अनीहारिम (२४)।
                                                                            अभाग देतो पटमा बीर इसच अण्याच
                                      अनु (धर) रेली भण्महा (पुमा) ।
                                                                             (मृर ६, २ मृग २४६) नुर २ १३ २
अधिएत ) (बन) वि [अभीन] मायत
अधिम रेपेटार (ति हों। हे में ४२७)। '
                                      अनुकृष्ठ रेगो अणुरुष्ठ (मुरा ४०४)।
                                                                             सम्म ६६: मुता २१६: मुर २ १११ सुता
 अधिमासग् पु [अधिमासः] भिभः माम
                                      अञ्चलह देखे अमृगाह (यन ४१)।
                                                                              १८) भारता जंब निर्देशी सन्त्र महस्रो
                                      अन्यिद्रिय रेज अगुद्रिय (म १५) ।
  (निष् ३)।
                                                                             त्तवन्यमञ्जामी ? (का ७१ = धी)।
 श्रीपरोविश्र नि श्रिषिपापित पार्यतिन,
                                      अनुज्ञय रेनो अणु।सूप (पि १७) ।
                                                                            अमारिम देवो अध्यारिम (हे १ १४२
  'मुनाचिरोवियो गो' (वर्मेव १६७)।
                                      अनुहुष रेत्रो अणुहुष=पनु+भू। बा
 अधीगार रेपो अहिगार (मूर्पान १०)।
                                        अनुहर्भत (रमा) ।
                                                                            अझाटुस वि 👣 पर्यस्कृत (मृत्र २,१७) ।
                                      क्षम बेनो अपम (मुपा ३६ प्रामु ४३ पण्ड
 अधीय रेनी अदीय (उत्त २ २२)।
                                                                            अग्नि नि [अन्वर्णय] परशीय भाना वा
 अधीम वि (अधीरा) नावक मणिति
                                        २१ टा ३ २
                                                        शक्तक)।
                                                                             धनिका (नप २ २ ६)।
                                       भग्नद्वय देखो अण्यद्वय (परि) ।
   (गुम्मा २३)।
                                                                            अभिज्ञमाण रेगो अधिगज्ञमाण (जाक र
                                      अनुजो रेवा अण्यज्ञाः हुत्त विति विमुखी
 अधूव रेनो अबूधूय (जावा १ १ परम
                                                                              15) 1
                                        इसरे करफ (गर १ ११६)।
   tt st) i
                                                                            अग्निय देशो अण्गिय ।
                                       अझको देलो अण्यका (दुमा) ।
  अभो व्या अदा व्यवस् (पि १४)।
                                                                            अभियस्य र् [अभिन्नस्त] एक विस्तात
 अर्नीत भी (अनिन्दे) प्रमहत बहुएतः प्र
                                       अग्रस्थ ) रेगी अग्रात्य (याचा स १४ :
                                                                              र्भन मृति (उप)।
                                       धनस्थ } १मा) ।
   मीगर मनंदि' (पनि ६७)।
                                                                            अभिया क्यो अधिमया (संग १६)।
                                       असदो रेगो अण्यती (दमा) ।
  अनुस देशो अगश्म (दुमा)।
                                       सम्मम केरी अञ्चलका (लावा १ १)।
                                                                            अन्तरस स्त्रे [अन्यास्त्रि] सारियन्त्रियद
  अनय रेगो अप्यय (दुरा २०१)।
                                                                             एक बातकूर (मोह ३७ सम्बत्त १४६) ।
                                       अझझ रेपो अणगण्य (महा: गुमा) ।
  क्षत्रक्ष बेगो अजब (हे १ ३२४ कुमा)।
                                       अभय वे [अम्बर्फ] एक की सत्ता में ही इसरे
                                                                            अम्बुन हेलो अञ्जूष्य (हे । १४६
  अन्यसय दरो अगागय (मन) ।
                                                                            अम्बुमन 🕽 🖘 ) ।
                                        की रियमानका जैसे मरिन की इयानी में ही
  अनागार देना अगागार (भग)।
                                        पून भी सत्ता नियमित सम्बन्ध (६५ ४१६)
                                                                            अग्नूत रि [अम्यूत] घन्द्रेष (पर्नीर ११६) ।
  अनाव रेकी अज्ञाय (मुरा४० रि १०)।
                                        स ६५१)।
  अनासंक (पूरे) वि [स्रमारम्भ] पान-पंत्य
                                                                            अभेम रची अणास । बहु अम्नरामाण
                                       संसपर रेगी अंश्यापर (नृत १३)।
    (इपा)।
                                                                              (रा ५ ही) ।
                                       असया देनी अन्यया (बहा) ।
  अनाईफ (पूरे) रि [अनासम्म] परितर
                                                                            अन्तसम देशा अण्णासण (तूर १
                                       समय रेवी अण्मा (नुता ८१: १२६) ।
    दरानु (नुमा) ।
                                                                              <del>हत्)</del> ।
                                       अमह रेपो अलगह (पुर १ १११ हुमा) ।
  अनिर्मिग रेगी अमिराम (धम १७)।
                                                                            सम्बर्गा देवो अन्त्रभग (हा १ ४) ।
                                       असदा देनी अण्यदा (रहम १
   अनिहाया } रेनो अणिदा (प्रन्त १४)।
                                        महा पूर १ १४६ जानू छैं)।
                                                                            असमय रि [अम्बेपरः] गोपर श्रोप राने-
                                       अप्रदि रेगी अध्वदि (रुवा)।
                                                                             बारा (स १३१)।
   अतिमित्ती भौ [अनिमित्ता] निर्मिक्टेन
                                       असी १री कि माता, बनरी (न्यू ७ १६
                                                                            भाग्तीम १ देलो अच्छाति (दि ४१६)
    (fit x(x 0))
                                                                            व्यन्तिमप्∫ धाषा)।
                                         1 (35
   श्रानिर्यामय रि [अनियमित] १ धन्तर ।
                                       बामाइट्र रि [अन्यादिष्ट] बामान 'नूब से
                                                                            असीम रेची अणाजन (हुना, नरा) ।
    न्दितः र प्रवेशत द्वित्ते का निर्देशती
                                        माउनी बाज म ! वर्ष वर्षेत्रं सकादी सकारी
                                                                            अपक्षी व [अप्] पत्री का (शाव
```

करनेवाला' 'गमी य नत्यं धनियमियप्या'

संतो दागई मानाएं वितंत्ररारिगयमधेरे दार्

MINE-MA

42

(४१९)।
अपाद्वाय केवो अप्पाद्वाण (माना, ठा ४
६)।
अपाद्वाय केवो अप्पाद्वाण (माना, ठा ४
६)।
अपाद्वाद्विय कुं [अमतिदित] १ नरम-स्वान
विरोग (केवन २६)। केवो आपपदिव्य ।
अपाद्विय केवो अपपदिव्य (ठा ४ १)।
अपपद्धा कि [अमदेव] १ तिर्गत, सम्बन्ध राजा (मान २ ५)। २५ कावम स्वान

र्ण्य (घर २ १) । २ दु बराव स्वातं (वेषा थ) ।

श्रेता कुं भाराइतं १ नेन ना प्रान्त पाय ।

२ तिवकः । व ति हीन यंग वाता (गार) ।

श्रूर्विकः नि चिं चन्तुः विद्यान (पर्) ।

श्रूर्विकः निष्योग्यतः १ रच्युर्विन्दितं (इह १) । २ व्हं (चन्त्र ३) ।

श्रूर्विकः दु विष्यकः ३ ।

श्रूपविकः वि विष्यागाः १ निर्मेतः । २ त.

श्रूपविकः विशोगाः विष्यागाः १ निर्मेतः । २ त.

श्रूपवकः वृ विष्यवन् वृ व्यवन् वृ विश्ववः (श्रूपवकः १) ।

श्रूपवकः वृ विष्यवन् वृ व्यवन् वृ विश्ववः (श्रूपवकः १) ।

हराय के का समस्य 'परक्षितिकेशारित स्वतारित' (शि १६०)। त्राप्यस्य पुं क्रियस्था मिराशास्य (पर्यष्ट् १ १)। स्राप्यस्य स्वित्रस्यक्ष्ये १ समागरे। २ स्योग्य (लहु ११)। स्वप्यप्रदा मिं स्वयस्था रेस-सेश्वस्य (गर्ज

ठोपच्छा व [कायच्या] र सम्बुटकर (यज्ज २ ७२)। २ त. तही प्रयोगका गोस्त भेनेल प्राप्त्रपासेकरील गेड्रम् वर्षेड् (तुरा ३३)। कार्याच्छाम ति [कार्याक्षम] ब्रान्त्य (लॉन्ट

नाया जर २५४ थे)।

करणकरण ) मि [क्यपमीत] र अनस्तेत्र,
अरफकरण ो सम्प्रते (बड्ड)। २ वस्तित्र (प्राप्तापति पहुंच करते वी शक्ति हे चोहत् (द्व. १. १ वर्ष ४)। नाम म [मासम्] मार्य-तर्व का एक नेट (जत ६७)। अरक्षपत्तिया नि (क्यपचैतिता) र नाय-

नाय-कर्ष का एक वेश (जन ६०)। अपआपस्थित रि [अपर्यंवस्थि] र नारा-रिहा (क्षम्य ६९)। २ क्षम्य-स्मृत्य (हा १)। अपर्यविषक्षर हि [वे] वहन्त्रित वृत्ये (हे १ ४९)।

लपिकणा । में [लप्रसिद्धा र महिका-जपिकणा । प्रीकृत निवय-प्रदेश (पार्चा)। २ रामनेय प्रदेश निवय है व्यक्त र ३ १)। १ प्रमाणी राष्ट्रमा एकंकर स्मृ-हान करेलेला गिकाम 'कम्बेनु वा वस्य-माइ प्रेट, एवं प्रस्तीय करविषया। (पूप ११)।

नाह पुर, पर 2000 करावकाह (दूव १९)। अपिकियोगास वि [अपितपुद्गास] देखि मिन्ने (मिद्र १)। अपिकियो वि [अपितिक्यो १ प्रतिकन्न-पित्र वेतेक 'प्याविक्यो सन्तो म्न' (न्यू १ १)। र सासीय-प्रीत (नर १ ४)। अपिकिया वे को अप्यविक्यों (तर १ १ थे) अपिकिया वे को अप्यविक्यों (तर १ १ थे) अपिकिया वि [अपितसंग्री स्थान रिजेय साहि विश्वके नामू में न हों (तर ४ १) अपित्र साहि विश्वके नामू में न हों (तर ४

(क्य वह के)।
अपित्रहरूप देशी अप्यतिकृत्य (श्रामा है
हहे)।
अपित्रहरूप दिल्ला है
आपन्नाच्यार मि (अप्यतिकार) हमान्य-पहिल अपन्नाच्यार हि (अप्रतिकार) हमान्य-पहिल अपनुष्पाच्या है कि (अप्रतिकार) हम् वर्ष-अप्यत्यास निम्न व्यतिकार (हि हहेश)।
अप्याह मि (अप्यतिकार) में वर्ष-अप्याह मि (अप्याह) मार्ग के व्यत्याद (हुर

४ २४ )। अपक्त केवी अप्पन्त (वृद्ध शास्त्र सामुस १ १७)। अभिक्रियेत वृद्ध [अभविषम् ] विश्वास मृद्धी करता हुमा (ता ६७०- वि ४००)।

क्षपत्तिव देवो क्षप्यचित्र (स्त १६ ३) र्वत ७)। क्षपत्त्व केशे समय्त्व (इत ७) र्पता ७)। क्षपभासिय केशे व्यवभात्तिय – सम्बद्धित (वन १)।

धापमत्त वेषीः धारमात्त (धाषा) । कापमाण न [बापमाण] १ पूछः यादास (मा १९) । ९ नि व्यापा धावक (क्टा १४) । बापमाण नि [बापमाष] १ प्रमाक्तीस । २ ग्रुंप्रमास का समाव चाक्यामी (क्छ्यू १ १) । अपन्य वि [अपन्य] १ पाँच पहित, कुस हम्बू, मूर्ति वर्षेष्य पैर पहित कानु (छाता १ व)। २ ग्रुंसुकारणा 'मान्सस्य पूर्व महिला' (साला)।

त्र पुत्रकाला करण के कार (कार है) के पूज के एक के पहिल्ला के कार (कार है किये) । कार को अबद (कार है) । द के रोजिंक कार्य में अबद अवस्था कार्याय (किये दर्श है) । कार के या कार्य कार्य के प्रिक्त अवस्था के प्रथा है। अवस्था के कार्य के प्रथा है। अवस्था के कार्य के क

अपरच्या म [अपरायाः] वातम्य पर्णयः
(पर्या १ व )।

अपरिविधा की [अपरामितः] कम-विमेन
(पर्या १ व)।

अपरिविधा की [अपरामितः] द स-विमेन
(पर्या १ व)।

अपरिविधा की [अपरामितः] र स-विमेन

वात्र का कार्या प्रतिकान्तुका (स्था १४५)।

३ पर्याप-विक्ति के देवी वी एक व्यक्ति (स्था १४५)।

३ पर्याप-विक्ति के देवी वी एक व्यक्ति (स्था १४५)।

३ पर्याप-विक्ति के देवी वी एक व्यक्ति (स्था १४५)।

३ पर्याप-विक्ति के देवी वी एक व्यक्ति (स्था १४५)।

३ पर्याप-विक्ति के देवी वी एक व्यक्ति (स्था १४५)

३ पर्याप-विक्ति के प्रति (स्था १४५)।

३ पर्याप-विक्ति का एक विक्ति (स्था १४५)।

३ पर्याप-विक्ति का विक्ति (स्था १४)।

एक यदणी का नाम (श्र ४ )। १ एक रिवान्त्रमाधे केशे ता अध्यक्ति एवंद पर रिवान्त्रमाधे केशे अध्यक्ति (क्या दक रूक्कीओं (से २)। अध्यक्तिय केशे अध्यक्ति (क्या दक १६) १ शहर १३ स

की माता (इस ११२)। १ झंपारक बहु की

धपराजिया की [अपराजिया] १ प्रस्ताव महित्रात की दीवा-शिक्षिका (विचार १२९)। २ पता की दश्मी एउ (तुज १ १४)। अपरिगाद कि [जपरिगद] १ जम-बाल मारि परिवाद के पीहर (यहाद २ ३)।२

मनता-रहित निर्मम 'धपरिग्यहा चलार'मा जिल्लु तार्ग परिवर्ष (सूप १ १ ४)। क्रपरिश्राह्य भी [अपरिश्रहा] वेरया (वव क्षपरिगादिका भी [अपरिगृहीता] १ केरना, करया वमैरह अभिवाहिका ह्या (पडि) । २ परि-होनाकी विषया (धर्म २)। ३ घर बासी । ४ पनकारी । १ दब-मृत्रिका, देवसा को मेंन की हुई कम्पा (भाषु १)। क्षपरिच्छण्या ) वि [क्षपरिच्छमा ] १ मही अपरिच्छम ) वका हुमा मनावृत (वव ३) । २ परिवार रहित (वब १)। क्षपरिणय वि [अपरिष्यत ] १ स्थान्तर को मञाप्त (छ २१)। २ चैन साचुकी निम्ना का एक दोप। (प्राप्ता)। अपरिच वि अपरीती सराधिनत, सनन्त (प्रएए १०)। अपरिसेस नि [अपरिश्लेप] सर्व सकत निज्लेष (पएइ १ २ पटम ३ १४)। अपरिहारिय वि अपरिहारिक ? शेवीं का परिदार नहीं करनेनाता। (भाना)। २ प् वैनेटर पर्शन का सन्त्यायी गृहस्य (निषु २)। अपक्रमा पु [अपक्रों] मोल मुख्यि (मुर व १ ६ सत्त ११)। अपविद्वान [अपविद्वा १ प्रेरित (र 🕶 ११)। २ म. ग्रस्थन्दन का एक दोप प्रद को बन्दन करके पुरन्त ही मान जाना (ग्रुमा२६)। ध्यपद्व वि जिप्रमी निस्तेन (दे १ १६४)। ब्यपहरू देवो अबहुत्य (ग्रीव) । अपदारि वि [अपदारित्] प्रपद्ध्या करने-नाता (स २१७)। अपिद्यि नि [अपद्भव] कीना हुमा (पठन ₩E ₹) 1 कापह विकिममी १ क्सपर्या २ सन-र्यक्त प्रमाप (पश्चम १ १ ११)। क्रपाद्म्य वि [क्रपाद्रित] पात्र-पहित भावत-वस्तिकः 'तो कम्पद् निरमंदीए प्रशाहतम् शोतप (क्स) । व्यपादक वि [अपाद्वत] नहीं देश हुया नक-रम्हित नमं (का थ्र, १) ।

खपाबाण न [खपाबान] कारक-विशेष विसर्ने पद्मनी विमन्धिः नगती 🕻 (विसे 2 ( ( w 3 5 F अप्राणान [अपान] १ पान का समा**व** । (उर ६४६) । २ पानी बैसा ठवा पेप बस्त-विद्येष । (भग १६) । ३ पूंत सपान कायू । ४ प्रदा(मूपा६२)। ३.वि ज<del>ल-</del>वजित निर्देस (चरवास) अङ्केश मतेश मराराएएगी (4 2) 1 अपायायगम 🖠 [अपायापगम] विनश्य का एक प्रतिराम (संबंध २) । अपार वि अपार पार-रहित मनन्त (मुपा अपारमगा पूं 🔌 विमाम विमानित (दे १ अपाद वि अपाप रे पाप-रक्षित (सूच १ १ ६) । २ स पूएव (उव) । अपाया की [अपापा] नगपै-विशेष बहा भववान् महाबीर का निर्वाण हुया था यह मध्यकत 'पानापूर्व' नाम से प्रसिद्ध है भीर विद्वार से बाठ माईन पर 🖁 (राज) । अधिट्र वि दि] पुनश्क, फिरवे कहा ह्रमा (पद्)। अभिय वि [अभिय] यनिः (शेव १) । अपिद् म [अप्रमन्] ध-नित्र (दुमा) । अपूगर्वभग ) वि [अपूनर्वन्यक] किर से व्ययुगर्वभय । यक्ता धर्मनम्ब नीही करते धाता दीव मान से पान को नहीं करते वाला (र्वचा ६ अस २१.६३ १५१)। मपुणस्मव पुं [अपुनर्मेंब] १ फिर से नहीं होता। २ वि जिससे फिर कम्प न हो बहु मुक्ति-मद (पर्राहर, ४)। ब्युजब्धाव वि [अपुनसाय] किर है नहीं क्षोनेवामा (पैच १) । व्यपुणसब देवी अपुणस्मव (हुना) । भवुणसमम दे [भवुमसमम] १ दक माभा। द्वीक मोश्र (रनह १)। भपुत्ररावचग ) दू [भपुतरावसक] १ भुगरावचय } छिर नहीं बूधन वाचा बूच माला। २ मोज पूर्वि (पि ३८६) सीतः **का १ १)** इ

अपुणराषचि ५ [ अपुनरावर्षिम् ] मुख बात्मा (पि ३४३)। अपुणराविचि वृ [अपुनराष्ट्रचि] मास मुक्ति (पश्चि)। खपुणरुच वि [अपुनरुक्त] किर से मध्यित पुनरकि-रोप से रहित 'चपुणस्तेष्हिं महा-वित्तेहि संबुलाई (स्त्य)। अपुष्पागम रेपो अपु गरागम (वि १४१) । अपुणागमण न [अपुनरागमन] १ फिर से मही माना। २ किर में मनुस्पित 'मनुस्पा-ममणाम व से जिमिर छम्मूलिये रविखाँ (गरुड) । अधुण्य न [अधुण्य] १ यार । २ नि पूर्य-रहित कम-मसाब इत-माग्य (दिया १ ७) । अपुष्ण वि अिपूर्णी सबूध सारिपूर्ण (भिपा १ ७)। अपुष्य वि [दे] श्राह्मन्त (पर्) । अपुत्तः } वि [अपुत्र, क] १ पुल-र्याहतः अपुष्तिय ) (सपी ४१२ (१४४)। र स्वजने-रहित निर्मेग निःस्पृत् (प्राचा)। ब्रपुत्र रेको छपुण्य (स्थाना १ १३)। अपुग न [ अर्पुम् ] म्यूसक (ग्रीन २२१)। अपुद्ध देवो अप्पुद्ध (देश) । अपुरुष वि [अ हुर्व] १ तूतन, नवीन । २ भर्मुत माध्येद्धरकः। ३ वसाधारस मिक्रितीय (हि. ४.२० छन ६ टी)। इत्राज् न [करम] १ मारमा का एक ममूतपूर्व द्युम परिग्राम (पाचा) । २ माठवाँ द्रुगु स्पातक (पण २२४ कम्म १ १)। अपूर १ पूर्व [अपूर्व] एक मध्य परार्व पूरा अपूर्व र पूरी (बीते पर्वत ३६ ६१ १३४ 4 (1) 1 अपेक्स सङ [अप+दश्] बरेता करता, पर रेनता। इङ अपंक्तिसर्दु (सी) (नष्ट) । व्ययम् रि [अपेस्व] १ वेत्रमे के *पराच्य*ा २ देखने के सर्वाच्य (बर) । व्यप्य वि [व्यप्य] पीने के सबीरक <sup>नाम</sup> श्वादि (हुमा) । अप्रय वि [अपेत] तथा इ<sup>मार न</sup>ट <sup>कारेर</sup> पन्द्र (इट् १)। अपहर्य वि [अपकर्ष] जीवर करने बाह्य

(mm +) 1

श्राप्यविक्रम वि जिल्मिक्कि नेही ऋदि बाला बाला बैसलबाता (सूपा ४३ ) । ब्राप्पण न [झर्पण] १ मेंट, च्यहार, धन (भा २७) । २ प्रवान क्य से प्रतिपादन (निसे 2543)1 क्रप्पण देखी क्राप्प = बात्पन् (धाचा उत्त १ महाक्षेप ४२२)। अध्यक्ष वि जिल्लीयी सकीय निवका नो स्त्यणा परामा पुरुषो कहमानि होति सुदार्ख' (सद्धि १ ४)। कारपवाय वि शिक्षासीय स्वकीय निकी (पडम १ १६) सूचा २७१ है २ ११६)। अध्यक्षाच स्थिमम र स्थम, बाप निज कुद (पद्)। धारपणिका ) वि आसीय विकास क्षप्पणिकिय र सीम (ठा १ मानम)। खंप्यजो म [स्वयम्] बार कुर, निज विमर्देटि प्रायमी बेब कमचसरा हि २ ₹ €) 1 **अय्यक्त देवो अब्बास = बा + बम् । बप्पएगाइ** (মাক্ত ভৰ)। श्राप्तपञ्जूष देखो अप्यजा**णु**स = मानस करपद्ध (प्राप्त १०)। ध्यप्यतिक्रम नि विश्वपतिक्रिती विश्वतिक्रित यसेमानित (स १३)। अप्यस पुन (अपात्र) १ प्रयोग्य नासायकः नुपान 'भएडेनि इ क्याचा पर्याख नेव विस्तृति (सुर १ ४४, वा १४७) । २ दि माबार-पहित भाषा-शून्य (सुर १३ ४५)। अप्पत्त वि [अपत्र] १ पता से पहित (ऋ) (सुर १ ४३)। २ पांच से पहित्र (पदी) (सम १ १४)। अध्यक्त वि अधारी भक्तन भनवास (सर १६४थ ग्रेप =६)। स्तरि वि [कारिन्] बल्तु का जिला स्पर्ध किमे ही (हुर है) आज प्रत्यस करनेवाला 'मञ्चलकारि ए। प्रत (मिर्च) । भव्यत्ति की [लमाप्ति] नहीं पाना (तुर ४ र१३)। कप्पश्चिम पुन [मप्रस्थय] प्रविधान (स

६६७ चुना ११२)।

अञ्चलिय न [अप्रीति] १ क्प्रीति प्रेम का यसाम (ठा ४ १)। २ कीम प्रस्ता (सम १ १ २)। ३ मानसिक पौड़ा (बाचा)। ४ ध्यकार (नि**द** १) । अप्पत्तिय वि [अपात्रिक] पान-पहिल, धाबार-वर्षित (मम १६ ३)। ध्यव्यक्तियण न मिप्रस्ययन विशिक्ष धमदा (स्य ११२) । स्रप्त्य रि शिप्राप्ये । प्रार्वना करने के धयोग्य। २ मही चाहन सायक (मुपा ११६)। क्षप्परवणः न किप्रार्थनी १ मगद्भाः। २ मिल्मा मनाइ (उत्त १२)। अप्यत्विय वि जिमार्थित । धमाणित । २ धनिक्यपित धनोष्टित (व ६) । पत्थय परिवय वि "प्रार्वक, "विंक" मरलावी मीत को चार्मिकारा 'कीस से एस सम्मन्तिय-पत्वय् बूरंडपंडनम्बाले' (भव ३ २ सामा १ ६ वि व्हे)। खरपरधुय वि [कामस्तुत] प्रचेव के मनुपयुक्त, विषयान्तर (शुपा १ १) । अञ्चर वि अप्रदिश्ची जिसपर इय न हो बहु, प्रीतिकर (मोन ७४४)। धारपतुरसमाण वह [सप्रह्लिपता ] ह प नहीं करता हमा (बंद १२)। श्राप्य वि श्रिप्राप्य । प्राप्त करते के श्राप्तक (विसे २६८७)। खप्पमाय न [अप्रसात] १ वरी सवेर । २ ৰি সভাত-বৃত্তিত ভাতি-ভবিতা মাৰ দুৱা ध्यमाप् वयसे (भूर ११ ११ )। क्षाप्पमु वि [अप्रमु] १ वसमर्थ (सव) । २ तु मानिक से निम्न गीकर वनैरह (वर्ग ३)। भप्पमित्रय वि विप्रमार्थित । साक्ष्म किया ह्रमा (स्वा)। अध्यक्षक वि [अध्यक्त] प्रभाद-रहित साव बान, उपयोगनाबा (पश्का २,६ क्षे १ २६१ समि १=३)। संख्य पूर्व रिसंबती १ प्रमाद-रहित पुनि । २ न. वातना दुश-स्वानक (सर ६ ६)। ब्रप्पमाण **रेको अ**पमाज (बृह १ पराह २,६): 'मार्गमिता निरायमार्ग, श्रेपति विका त्वमन्यमार्ग् ।

पहरित नार्ग च्छ विधि दार्थ सम्बंधि वेसि कममप्पमार्थ (सद २ )। अप्पसाय प जिल्लाहा प्रमाद का समाव (निष्ट १)। कारमस्य वि [काप्रमेय] १ विश्वका माप न हो सके, धनन्त (परम ७४, २३) । २ विसका ज्ञान न हो सके (धर्म १)। ३ प्रमाण से विसका निवय न किया भा सके वह (नरहा ( Y ) अप्पय रेकी लप्प (उन वि ४ १)। अप्परिचत्त वि [अपरित्यक्त] नश्री बोहा हमा धररिपुक्त (मुपा ११ )। अप्परिवर्धिय वि [अपरिपतित] बक्ट. विद्यमान (बा ६)। अप्यक्षक नि [अप्रसन्दर्क] महान्, बहा (स t (t) : भएपछीण वि अप्रजीनी पर्पवक्र सङ्ग-विविद्य (सुधार १४)। मध्यक्षीयमाण एक [अप्रक्षीयमान] धासक्ति नहीं करता हथा (माना) । मध्यविच वि [अप्रवृत्तः]प्रवृति-रहित (र्थवा 2x) | ब्यप्पविचि की [अप्रपृच्चि] प्रवृत्ति का समाव (वर्ग १)। ब्यप्पसंत्र वि [अप्रशान्त] प्रधान्त कृपित (पंचार)। भप्पसंसिक्ज वि [सपर्यसनीय] प्रशंसा के प्रयोग्य (संदू) । भारपस्यम् वि [अप्रसङ्खा १ सहने के धरा-क्य । २ सहप करते के धरोतय (क्व ७) । अप्यसण्य वि [अप्रसन्न] हवासीन (नाट) । अप्यसस्य वि [बप्रशस्त] प्रचार, प्रमुख्य, चराव (ठावे वे मगः मा४)। पुरिका (नुष १ ४ १)। (स्थान) (उर १७ )। ₹ **३)** ĭ

बीबला साक्षत्र (समार का ४,३)।

अव्यक्तिक वि [बागविद्वित] १ मार्गत-

त्पोरिसिय ) वि [अपीरिपक] पूर्ण वे नपारिसीय ) ज्याचा परिमाश गला, धनान (लामा १ ३८ १४)। त्रपोरिसीय नि [कपीरुपेय] पुरव हे नहीं कतामा कृत्य निरंप (ठा १ ) । अधोइ सक् [अध्य+उद् ] नियम करना, निवयं क्य ते बानना । घपोत्रुए (विधे 251) | अयोद्दर् [अयोद्द] १ भिषय-क्रल (विसे ६१६)। २ पूजामान मिलता (धीव ३)। द्याप देखी असु अधारा "र्यानंत्रतिमित्तं प्रधासत राज्यसम्बद्धस्य स्थमद्भ वगरहतेति वेर्ति (सामा १ १) । भाग वि अस्य र नेवा स्टोक (तुन २६ स्त्रज्ञ ६७)। २ समाव (शोव ६ मय १४ १)। श्राप्य पूर्विभारमम् । दमालमा जीन चेतन (खानार,र)। २ निजल्म गण्या धनाकी बम्मक्टर्य बरिताएँ (ग्रामा १ ४)। ३ देवः, रुपिर (उत्त ६)। अस्त्रज्ञान

٠,

स्वतप (व्यक्त)। पाइ वि [ पातिम् ] यान-इत्या करनेवाता (का ११७ टी)। ग्रंद रि विद्वार सिंगे स्त्रभावी (हर ३६ टी): उद्योगि [फि] र घरमण (इ. २.)। २ स्वाचीत (शिक्रूर)। जोइ दू [ स्पोतिस् ] श्रातस्परन क्रिकेट्स दूरिया क्यब्बेड कि छिड़ियाँ (विम)। "प्यापि ["हा] घारम-कामी (पर्)ः इसंदिधियो लडक स्था-बीन (पाम पडन ६७ २२)। बहु पू विभी पाल-इत्या, मानात (तूर २ १८६ ४, १९७) । बाइ वि विवित्ती बारमा के बांतरिक दूतरे पदाचें को नहीं भागनेरासा (गुर्वि) । भाष्य 🕻 著 दिशा नाग (दे १ ६)। अप्य तक [अर्थ्] मांत कला, केंट बरना। धन्पेद (हे १ ६३) । धणधद (नार)। तंद्र अप्पिश्न (नुपा २४ )। र अध्येषम्म (नुस १६६) ११६) ।

क्रपञ्चास देनी क्रप्यग्रास (ग्रह) ।

बनवानः ( वर् )।

अप्तश्रास बङ [ किय् ] मानिद्वन करना।

सद्धा २ धरापैरी शरीर-विश्व (माना २ १६ १२)। देखो अपद्रद्भि । अध्यतक्षिय वि (अपवयीपाँच) नहीं पकी हुदैफन-रुमहरी (स १)। अव्यञ्जोत्रम वि [अप्रयोजक] यन्यस्क, म-नियासक (हेतु) (वर्में **१**२२३) । अप्यमरि वि [भारमस्मरि] घरेमपेट्स स्वामी (च्या १०)। अध्यक्ष्य वि [अग्रजम्य] विकल स्विर (51 **t** ) i अप्पकेर वि (आरंशीय) स्वकीय निजी (ज्ञामा) । अध्यक्ष वि[अपक] नहीं पक्त हुमा कथा (मुपा ४१६) । अप्यम देवो खप्प (ग्राव ४३ ग्राचा) । **अप्यनास र्रु [अप्रकारा]** प्रकार का यमान क्षकार (निष् १)। अप्पर्याचा की दिने परिवरण कीय का (R t Re) : अप्पनापुत्र है [आसाइ] प्रत्या का वानकार (शक्त १×) । अप्यजाशुक्ष नि [अस्पक्क] यहः नुर्वे (प्राप्त अप्परमः दि [दे] धारम-वशः स्वाबीतः (दे t (x) : अप्पविजार वि [अमितिशार] स्वाब-राहित क्ताम-राहेड (बा ४३)। भप्पविष्ट्य वि [लमविक्रम्थक] प्रविशव रुष्य अविशासि-पीरव (राम) । भप्पविक्रम्य वि [खप्रतिवर्मम्] एस्कार र्पेहर परिकार-क्षित्र भुएएएसारे व सन्म विषम्मे' (परह २, ६) । अप्यदिवक्षतं वि [स्वयतिमान्त] रोप हे सनिवृत्तः, बत-नियम में बये हुए दूवली की क्लिने शुद्धि न गी हो बद् (बीप) ।

अपर्यवस्तुद्रुक वि (अप्रतिकृष्ट) अनितारिक

नहीं रोक्स हमा (धार ४) ।

अप्यक्तिका वि [अप्रतिका ] म्युन्द मसमान (संबि)। झप्पडियम् } देनो झपडियम् (शाम)। अप्पडिस सप्यक्तियं दु [सप्रतिकाय] १ प्रक्रिक का समावी २ वि प्रतिकत्व-पश्चित (दुव अप्यक्तिक्य देनी अपडिवड (ज्या १६ नि २१=)। काप्पविद्युद्ध वि [कप्रतिदुद्ध] १ वन्त्रान्द । २ कोमल सुकुमार (प्रमि १६१)। अप्यक्रिम वि अप्रतिस् वसायस्य प्र पम (इप ७६८ टी) सुपा ११)। अप्पश्चिम्ब नि (अप्रतिमप्) उपर रेगो (स्प ७२ थै)। बारपश्चित्रद्व वि अप्रतिसम्ब स्पाप्त (खम्पा १ १)। भप्पडिसेस्स नि [अप्रतिसेश्य] प्रयागारण मनो-बसबाना (धीप) । अप्यक्तिकृतः न [अप्रतिक्रेकन] प्राप्**रि**-सए। धननतीकन, नहीं देखना (माद ६) । भप्पत्रितेष्मा हो [अप्रतिक्षका] उसर केवी (क्यो) । अप्यविद्वादिय नि [समितिहासित] प्र-पर्ये रित्त चलवनोक्ति नहीं देना हुया (उना)। धापविद्योम वि (अप्रतिश्लोम) सनुपूत्र (भा **१६७ स**मि २४)। भप्पविवरिय पू [अप्रतिष्टत] प्रदीय कल (शहर)। अप्परिवाह वि [अप्रतिपातिम्] १ वितका नारान हो ऐंद्रा, क्रिय (बुर १४ २६) । र धनविज्ञान का एक मेद जो वेदल जान की निना जरपन्न किये नहीं बाता (विदे) । कप्पविद्रम नि [अप्रतिद्रस्त] अनुगान, महितान (ते ११ १२)। थर विदय रि [बाइतिहत] १ किसी है गरी दका हुमा (परह १ ४)। २ प्रवादिका संवादितः 'सप्पविद्ववसातको' (लाया ११६) ।

३ वित्तेत्राव-पहित 'सन्परिद्ववरतास्परंतरावरे'

भप्पद्रीवद्ध देवी अपहिच्छा निभ्यमनिर्ध

नाय निवक्तपैर्धि क्रमधैवडा' (संवा ६ )।

(अप १ १)।

अप्पहित्य नि [अस्पर्दिक] नोही ऋदि बाला चरन वैभनवासा (नुपा ४३ )। कारपात्र म [अर्पेण] १ मेंट बपहार दान (मा २७) । २ प्रवान रूप से प्रतिपादम (विस \$45E) 1 ब्राय्युव्य केको व्ययप = ब्रास्मम् (बाकाः उत्त श महा है ४ ४२२)।

भप्पप वि (आस्मीय) सकीय, निकका 'नो मनसा पराया गुरुएते कदमाबि हॉरिंट सुदार्ख (सहिर ४)।

अध्यक्षय वि बिरारमीय स्वकीय निशी (पञ्च १ १६) मुपा २७१) हे २,११६)। अध्यक्षाच (स्वयम् ) स्वयं चल निक कुर (पर)।

कारपणिक ) वि [धारपीय] स्वकीय, ब्राप्पणिकिय रे सीम (ठा १ मानम)। क्षप्पणो च [स्वयम् ] पात कुर, निज "विमर्गति मध्यणी वन कमलसरा" (ह २ २ ६) ।

अटपच्य देवो अक्सम = दा + क्रम् । द्रव्यव्याद (प्रतह ७३)।

अध्यण्युत देवो अध्यजा**गु**ञ = बालव *सम्पद्ध (मास्तु* १८)≀

अञ्चरक्रिय नि [अप्रतीकृत] धनित्राहित यसंग्रावित (स १३)।

अध्यक्त पूर्व जियाची १ प्रयोगन नासासक कुपाकः 'मएयोनि ह धन्यता पर्रार्टेख नेम विसहति (सूर ३ ४% वा १४७)। २ वि धाबार-परित धावन-तृत्य (गुर १३ ४१) । अप्पत्त विक्रिपत्र दिश्वाचे रहित (क्रुब्र)

(नूर ३ ४३)। २ पोक्ट से सहित्र (पदी) (सूप १ १४)। खरपत्त वि [समात] प्लम्ब चनवास (पुर १९४७ धोष =६)। स्मरि वि विभारित्

बस्पू का विना स्पर्श दिन्ने ही (दूर से) जान क्रपम करतेवाचा 'क्रणतक्रीर सम्बर्ध' (विते) ।

अप्यत्ति की [अप्राप्ति] नहीं पाना (नूर ४ २११) । भप्यत्तिय पुन [अवस्यय] धनियान (स

६६७ गुपा ४१२)।

अध्यक्तिय न जिमीति । स्थीति प्रेम का थबाव (ठा४ १)। २ कोम ग्रुस्ता (सूप १ १ २)। ३ मानसिक पीड़ा (भाषा)। ४ बएकार (निन्हु १) ।

श्रापत्तिय वि [अपात्रिक] पात्र-पहित मानार-वर्षित (मप १६ ६)। भव्यत्तियण न [अप्रस्ययन ] ग्रनिपास समजा (स **११**२) ।

अप्यत्य वि [अप्राध्ये] १ प्रापंता करते के समीग्य। २ नहीं चाइनं सायक (मुपा १३६)। क्षप्रवण ग [अप्रार्थन] ३ भ्रयाद्याः २

धनिक्छा समाह (स्त १२)। बारपरिवय वि [अप्रार्थित] १ वयाचित । २ मनभिनपित सर्वाद्यित (व १) । पत्त्वय परिवय नि शिर्मक, पिकी मरणार्ची मौत को बाहनेवानाः कीस एाँ एस समानिय-

पन्त्रप दूरंतपंत्रसम्बर्धे (भग ६ ९ खामा १ १ मि ७१)। अध्यत्त्रुय वि [अपस्तुत] प्रचंग के प्रमुख्य,

विषयान्तर (मुपा १ १) ।

अप्यक्षद्व विशिव्यद्विष्टी विसपर इयन हो बह, प्रीतिकर (बीब ७४४)।

अप्पदस्समाण शह विश्वविष्यत् । इ.प. नहीं करता हुया (मंत १२)। भप्पच्य वि अभाष्यी प्राप्त करते के भरतय (विसं २६८७) ।

व्यव्यक्षाय न [क्षप्रभाव] १ वनी स्वेर । २ দি সভাবা-বাহিত ভালিত-দৰিত 'দৰ পুড় भयमाप् गम्ले (मुर ११ ११ )।

ध्यप्यमुदि [अप्रमु] १ फलमचै (मन)। २ ्र मालिक से फिस नौकर वगेरह (वर्स ६)। भप्पमित्रय वि [अप्रमाजित] राज न्हीं

किया ह्या (उना)। अप्यमत्त वि [धप्रमत्ति] प्रवत-पीत साव-भाग जायोगमाता (पर्व २,४, हे १ २३१ माम १०४)। संजय पूजी [संवत] १ प्रमाद-रहित मुनि । २ न. शातना पुरा-स्वानक (मर १३)।

अध्यमाण **रेको अ**पमाज (बृह १ पर्रह २ १): 'बहरपिता विखयमधार्च, दर्वति दिन्हें वनस्यमार्थः (

पर्वति गरणे वह विति वाणे, सम्बंधि वेसि कयमन्यमार्ग (सत्त २ )।

भएपमाय प्रै [अप्रसाद] प्रमाद का सभाव (निष् १) ।

अप्पमेय वि [अप्रमेय] १ जिल्हा माप न हो सके धनन्त (पठम ७४, २३) । २ विसका क्रान न हो सके (वर्ष १)। ३ प्रमाण स निसका निध्य न किया जा सके वह (परह 1 (\* 1

कप्पम बेको कप्प (उका पि ४ १)। भप्परिचत्त वि अपरित्यकी नहीं सोहा हुषा बगरिप्रकः (मूपा ११)। अप्परिषक्षिय वि [अपरिपष्टित] यन्द्र,

विद्यमान (था ६)। अप्परहुम वि (अप्रसम्ब) महान्, बना (से

अप्पत्नीण वि [अप्रजीन] वर्षका, सङ्ग-विविष्पुम ११४)। व्यव्यक्रीयमाण का [अप्रक्षीयमान] वासक्ति

नहीं करता हुआ (ग्राका) । अप्पविच वि [अप्रकृत्त]प्रवृत्ति-रहिन (पंचा

अप्पविचि की [अप्रपृत्ति] प्रवृत्ति शा क्याव (वर्गे १) । क्राप्यमंत्रं वि[क्रप्रशान्त] क्रवान्त दुवित

(पंचार)। भप्पमंसणिज हि [अप्रशंसनीय] प्रशंस

के सवीग्य (तंद्र) । अप्यस्त्रम् वि [अप्रसङ्घा] १ सहने के भरा-थ्य । २ सहत करते के समीत्य (वन ७)। अप्पसच्य वि [अप्रसन्न] प्रवासीन (नाट) ।

अप्पसस्य वि [अप्रशस्त] सवार, समुचर, बराव (ठा वे वे मनः मा ४)। भप्पसत्तिय वि [अस्पसत्त्रिक] प्रत्य प्रत्य वाला 'मुसनस्वाविसम'मा कीरीट संप्यतिसा

पुरिसा' (नूच १ ४ १)। ष्यपमारिय वि [अप्रसारिक] निर्वन विजन (स्वान) (चर १७)।

खप्पद्रवेत वह [अप्रभवत् ] समर्थे नहीं होता हुमा नहीं पहुंच सरता हुमा (स **4** X) i

अर्प्याद्य वि [बाप्रचित्त] १ वनिस्तृत । २ मप्रसिद्ध (मुना १२४) ।

<b>X</b> C	पाइमसरमङ्ख्यानो	ध्यत्पाञ्जय्य – अफ्ड
१८ अस्पात्राचित्र की [क] अन्तरहा, बीक्युक्त (कि)। अस्पात्रक विश्वमायुक्त विश्वमायुक्त केता श्राप्त कि कि अस्पायुक्त केता अस्पात्रक विश्वमायुक्त केता कर्म श्राप्त (क व व वन्त १० व )। अस्पात्रक विश्वमायुक्त केता श्राप्त (का व व वन्त व्यो प्रकृत केत्र श्राप्त (का व व वन्त व्यो प्रकृत केत्र श्राप्त वेत्रो अस्प कामान्त्र (कह १०) स्वाप्त वेत्रो अस्प कामान्त्र (कह १०) स्वाप्त वेत्रो अस्प कामान्त्र (कह १०) (कन ४)। अस्पात्र वेत्र वेत्रकेतिन (कर १२, सा	अध्यिदि निहय [अन्यद्विक] सन्य संपत्ति शता (मन पदम २ ७४)।	करपार्थाय - बर्फस्स् करपार्थ्य कह [सा + स्फास्ट्र] र सास्केन क्र करण हान से प्राप्तात करणा ? ताम्मा, रीवणा ! र तक ठोरणा ! क्यस्टर्स (दाएं) ! क्रक्त्य (क्यर् र र र र स्मान्य क्रिक्त्य (क्यर् र र र स्मान्य क्रिक्त्य (क्यर् र र र स्मान्य र ताक्ष्म सामान्य (चा १४४०) से २, २२० गुणा क्यं) । वरप्तास्थ्रिय र [सास्यास्त्रित] र हान से तास्त्रिय स्मान्य (से १११) । र इसि मान तत्त्र (चर्म) । भएपूर कह [सा + क्रम्म] र सामान्य इस्प्रेस प्रीमार्यक्यों हमुनस्यों (से १
४ र)। व्यापाय हि [ब्रागहत] र वक्र-पीत नेन (ग्यह २,१)। र गुना हुया वक्र नी निया हुग (नूम १ ८,१)। ब्राप्तिय हि [ब्रापिन] हिंसा हुया (नुग १६९)।	बमर्व निर्धेते सामयमण्डिमकमस्य (निर्धे)। व्यप्तिय नि [बमिय] १ याष्ट्र, समीतिकर (मा १ ४, दिला १ १)। २ ग मन का कुरी । १ दिल भी ग्रेगा, "यह शास्ति व कुरी से वार्षेत्र प्रस्ता होति (मूम १ ४ १ १४)।	प्राप्तृतिक वेषो श्राप्तृतिय (वं २: स्त १)। प्राप्तृत्वन मि कि कास्यन्ते प्राप्तन्य बचात हुमा (हे ४ २१ )। स्राप्तृत्वन मि (स्रपुर्ते) मनुष्ते, मनुष्ते (स्वरं)। स्राप्तृत्वन ) नि (के स्वपुर्वे) पूर्वं, वर्ष
अप्पाह वह दिने निहा ] घेटेंग देश बदर रहेनमा। यनाहर (वह है ४ १)। यनाहर (वा देश)। वेड- बरणाहरद्व, अप्पाहिति (गिरण्ण) वही)। अप्पाह एक [आ + आप्] चेक्सल बरमा। प्लास्ट (आ क)।	(पिते)। मण्डु वि (अरवृष्ट) न्यों छूवा हुआ वर्ष पुण्ड वि प्रस्तुष्ट । न्यों छूवा हुआ वर्ष पुण्ड वि पर्युद्ध सारा सोवितालस्स हेति पर्युक्त (तस्स ०१)।	अप्युक्त हेक्स (व र र र हिर र र व वाम) 'महाग पुरुकोएल स्टुब्स स्वताली (तिर र र)। अप्युक्त केकी अप्युक्त (त्वम)। अप्युक्त केकी अप्युक्त (त्वम)। अप्युक्त सक्त (त्वम)। अप्युक्त सक्त (त्वम)। अप्युक्त सक्त (त्वम)।
क्षापाइ नक [अभि + आपयू ] पड़ाना मीमाना। वने पणाइका (मेरे ४४)। बर्क्सप्पाइन (मेरे ४२)। हेक्क अप्या		सन करणा, इस्त वे ताल डोक्सा। २ तासन करना। सहा करफोर्डत (शासा १ स सुर १३ १=२)।

E4 (# 244) 1 क्रापारकी की [रे] नरेत नवाचार (विष 11 11 अप्याद्द्यतः व श्रियापास्यी वृष्यता रा मन्तर नीगना (रेवा १ जान ११) । भाषादिय वि [मंदिष्ट] बाँख रिवा ह्या

अग्यादिव रि [अध्यापित] १ वार्टन

विधित्र (१ ११ १ १४ ११) । २ म

**र्शंच** कारेत 'मारादिवनराउ' (का ४६२

(4.4) 1

ð١

अप्पुष्ण रिष्ट् मापूर्ण पूर्ण (यह)। अप्युक्त रि [आरमीय] धारमा में करता | अप्याद्या व [आरफोटन] धारफारव (हेर १६३) बर पुना) । अध्यक्ष रेनो अपुच्छः 'क्युच्चो स्टिबंबो कीरियमीर चन्छ सह सर्वते (मुता ६११) । भप्येयस्य देनो भाग नदर्ग्। भाषोति ही [भगगविता] रथे पन

भप्पाह रि [दे] गेल-गीन, नदर (हरू ६) ।

भरकतिम रि [आस्पादिन] प्रसनारित

कुनहर्ष (बा २१) ।

धएव (रिके ११ २ हो)।

(परश) । अप्यक्षिय ) वि [बास्पोदित] १ वास्म भप्येरेसिय किंग बाहुत । र म. महत्म-नन धावात (पह्रहृशुः कृप्य) । । अप्लोबा की [क्] क्तराक्षितिकेव (यक < **₽**} i कप्तोय वि [दे] दुर्गादि है ज्यान न्दर,

अफड नि [अफल] नियन निर्देश (ह

निविद्य (ब्रज १४) ।

1)1

अपग्रम पु [के] भूमि-स्फोट, बनस्पति-विशेष (पर्श्राप्त)। क्षपत्रस वि [अस्पर्शे] १ स्पर्श-पहित्र (मन)। २ बासव स्पर्धनासा (सूम १ ४,१)। अफासुय वि [अप्रासुक] १ समित समीव (मन १,६)। २ सम्राह्म (मिन्ना) (ठा ३१)। अपुर वि [अरपुट] सत्पष्ट, प्रस्पक (पुर ६, १ श २१६१ मा २१६१ उप ७२व टी)। अपुर्वित्र वि [असुटित] स्वरिक्त गर्वी ट्टय हुमा (हुमा) । ब्रफुस वि [अस्पूर्य] त्यर्गं करने के ब्रमोग्य (मग)। बसुसिय वि [अझान्त] प्रम-प्रीत (कुमा)। अपुरस रेको अपुरस (ठा १ २) । धर्मम ग [सब्रह्म] मैतुन, की-सङ्ग (परह १४)। बारि वि ["बारिन] कान्वर्यं नहीं पालनेवाला (पि ४ १, १११)। अवद्भिष १ [अवद्भिष्क] 'कर्मों का मारमा हे सर्ग ही होता है, न कि सीर-मीर की तुरु ऐस्प ऐसा माननेवाला एक निक्रव--र्वनामासः। २ न उत्तकामतः (ठा७ विसे)। डाबस वि [डाबस ] बन रहित निर्वेस (परम Y = { { \*\*) | स्रवस्त्र की [अवस्त्र] की महिला कराता (पाम) । खबस पू [झबरा] बडवाला (से १ १)। अवदिष्टु न दि अवदिस्थ] मैक्टन धी-सङ्ग (सूब११)। अवदिस्मण नि [अवदिर्मनस्क] वान्छ वर्ग-दलर (याणा) । छवदिहेस ) वि [अवदितेश्य] किन्दी अवद्वितस ) विच-वृति बाहर न बुगता हो संबद्ध (सन परहर १ ४)। टाबाधा केंद्रो टाबाह्य (बीन १)। अवाह् पु [सवाह] देश-विशेष (इक) । अवाहाच्ये [अवाया] १ वाच का सम्बद (स्रोव १२ मा, क्य १४ ६)। १ व्यवकान, सम्बर (बम १६)। ६ बाध-प्रीहत समय (म्म)। अवादिर म [अवदिस् ] बहर नहीं भौतर (दुमा) ।

शवाहिरय वि [अवाह्य] भीतरी पाम्यन्तर (44 1): अवाहिरिय वि [अवाहिरिक] निसके किसे के बाहर वसति न हो ऐसामीव या राहर (43 t) I ध्यबीय देखो अवीय (कप्प) । ध्ययुक्तम् च [अञ्चर्या] नहीं नाम कर, किसिय तनकाइ महुत्रक मार्च (सूध १ १३ २ )। ध्ययुद्ध वि अिलुधी १ धनान, मूर्च। (दस २)।२ भविषेकी (सूप ११)। अधुद्धिय ) वि [अर्जुद्धिक] बुद्धि-र्राहत पूर्व अबुद्धीय 🕽 (स्रामा १ १७) सूच १ २ १३ परमाद ७४)। अबुद्द वि[अबुध] १ धनान । (सूध १ र राजीर)। र मूच्ये, वेचन्फ (पराहर t) 1 अबोह नि [अबोध] १ बोब-रहित सवान। २ प्रधान का समाव (सर्व १)। सवीहि पुंची [अवीचि] १ बान का समाव (सूम २६)। २ वैन वर्ने की भ्रमाप्ति। ३ कुटि-विरोप का प्रमाव (मग १ १)। ४ मिच्या-बान 'ध्योद्धि परिमालामि बीहि स्वसंप-कार्मि (माम ४)। १ नि वीनि-रहित (मग)। अमोदिय न जिमोधिक | जनर रेको (रश ५३ सम्बर्ध र २)। अयु की. व [बाप्"] पानी वत (शा २३)। कर्मिय केही कर्मम (मुपा ११)। अर्जनप्राप्त १ न [अन्नद्वाप्त ] सङ्गल्य का क्षास्त्रक्षण रे बर्माव (नार प्रेमी ७३)। बाव्यीय देवो क्षवीय (वेदम ७३४) । अब्बुद्रसिरी की वि इच्छा से भी सविक फर्न भी प्राप्ति (दे१ ४२)। अब्दुष र् [अर्थुद] पर्वत-विरोध को पात क्य धार्नु नाम से प्रसिद्ध है (राज)। अस्युम व [सर्बेद] जना हुमा कुछ ग्रीर योग्डित (संदू ७) । ब्राङ्भ न [अभ्र] १ यालातः। (राह्य पाध)। २ मेव, बादन (ठा ४ ४ पाम)। अस्म तक [आ + मिड्] नेश्न करना। सम्मे (स्थवा १,१२३)।

खब्यांग सक [अभि + अञ् ] तैन पावि से मर्थन करना मानिश करना । प्रवर्भपर, सन्तेषेड् (महा)। संहः अर्क्सीगर्ड, अर्क्स गत्ता, अर्मिगत्ता (अ १ २६४)। हेडू- अब्मगित्तप (क्स)। खब्मंग र् [अम्बङ्ग] हैन-मर्देन मार्निस (निष् १)। अब्बंगस्य न [अज्यक्तन] ज्यर देखी (सामा ११ सम्बद्धाः)। अवसंगिपक्षय ) नि अध्यक्त हैतादि से अबसीगय । भविषे मासिस दिया हुमा (धोव ≂२ कम्प)। अवसंवर न [सम्यन्वर] १ भीवर, में (बा ६२६)। २ वि भौतरका भीतरी (सम महा)। १ समीप का नवरीक का (सम्बन्धी) (छ ८)। ठाणिका वि[स्थानीय] शबदीक के सम्बन्धी कौदुम्बिक सीम (विपा १ ३)। सव पूँ [सपस्] विनय वेगा-बुत्य प्राथमित स्थान्याय च्यान भीर कायी-रशर्गे रूप बन्तरंग तथ (छ ६)। परिसा की [ परिपद्] मित्र धादि समान जनों की समा (चप)। "सदि सी ["स्रविध] धवनि कान का एक मेद (विसे)। संयुक्त औ की शिम्बुका किया की एक क्या, यदि विशेष (का क)। "सगबुद्धिया औ विश्वक-टोर्किका] कामोध्यर्ग का एक बोप (पन १)। **अब्भंतर वि [अम्यन्तर] भीतरी भीतर** का(वै ७ ठार १ पएसा ३३)। अर्घ्मीस वि [मर्प्रीशन् ] १ प्रष्ट गर्ही होने बामा (नार) । २ मन्द्र (कूमा) । धरमक्तद्वा देवी धरमक्ता अस्मनन्त्रण न [वे] प्रकीति प्रप्यशः(वे ₹ ₹₹)1 बारमक्का एक [अध्या + क्या] भूता बोप सनाना बोवाचेप करता। घटमतनाइ (मन ४३ ७) । इ. अद्माक्ताइटा (धावा) । बस्भक्ताज न [सम्यास्यान] पूठा वर्षि-मोप मसम्बद्धीवारीए (पर्याह १२)। अब्सट्ट देशे सब्सत्त्वय 'ब्(१घ)स्म्द्रपरि भार्ये (पिंड २८१)। अस्मव च [दे] पीचे बाहर (दे ११५) :

ब्रह्मणुजाज सर [ब्राप्यतु + हा , सनुपति

२. १७)।

(पि **११४)**। स्वसम्पुरुवा [सम्पनुद्वा] सनुपठि सम्मित (एम)। स्टब्स्युक्ताय वि [अध्यनुद्वार] धनुभव समह (स ६, १)। श्रदमणुद्धा देवो अदमणुज्जा। ब्रह्मणुद्यय देशो लब्मणुण्जाय (शमा र १ क्य सुर १ वट)।

भा सम्मति का। सम्मतुत्राखिस्पवि (शौ)

**ब्रह्मण्या न [अभ्यर्ण] १ तिरुट, नक्रीट**ा २ वि समीपन्य (पठम १ व १ व)। पुर ल [\*पुर] सवर-विशेष (पत्रम १ १)। अस्थात वि अभ्यक्ती १ हैनादि से मस्ति मानिस्द किया ह्या। २ सिक, सीवा ह्याः विदेश-विदेश कामलम्हिकेमाची पत्ती वासा-रक्षों (बर २. ७ ) । ब्यास्थरम् कि विश्वमास्त्री पश्चित सिर्धिका (मुपा ६७) । आर्थ्यस्य एक [अभि + अथ्यु ] १ छ=कार करना। २ प्रार्थनाकन्ताः समझ्बस्यः (पि

४७ )। संक्र अस्मात्मद्रश व्यवमात्मित्र (तार) । इ. अडमत्वणीव (यपि ७.) । श्रद्भारवण न [सम्पर्धन] १ सल्हार। २ प्रार्थना (क्प्पु: क्षेत्र ३ ४)। व्यक्तरवया ) स्त्री विश्ववेता रे प्रतर, अस्मस्यिवा ) तत्वार (ते ४ ४ )। २ प्रार्थना विश्वति (वैचा ११ गुर १ १६)। 'न सहद पान्यत्वरितं यनद न्यास्परि पिट्टिमंबाद । रदृष्ट्य भागुरमुह कासीई को प भौबेद (समा १२)। अस्मरिक्य वि [द्यारक्षित] १ सा**ः**ठ

स्वान । २ प्राव्या (सूर १ २१) । **सरभन्न देवो अस्मव्य (पान्न)** । करभपद्रस्त हैं | उत्सन्न विशेष सोडव सप्रक सवरक (क्या ३६ ७१)। मन्मपिसाम र् [दे नद्रपिशाच] गहु (दे 2 ¥4) 1 सब्सय र् [नर्संड] वालक बचा (शाव) । बदभय पुँ [बाह्मङ] स्वरत (वी ४)। सक्तरहित है [सहवर्षित] स्टार-ब्राप्त

नीरनग्रामी (बह १)।

स्मानकार व अध्यवकार भोनन बाना (विके २२१)। ध्यस्थवालया स्त्री हि । समक का पूर्व (एस १६ ७१)। सहमन्त्र केहे अभवतः भ्रमनार्श विका र्शतक्ता राज्या भन्दा (पर्ध ४) । ज्ञास पर जिस्सि + अस्त । धीवना, क्रमाप रस्ता। यह खब्मस्ति (स ६ ६)। इट अब्भसियक्**व** (सर १४ ६)। भारभसाव न [अध्यसन] यम्यात (रहनि - अक्ससिय वि [अस्पस्त] सीका ह्या (पुर t ta : 4 (2): धक्त इर पूर्वि पत्रक (पंच व व )।

श्रदमहिष वि [अस्यपित्र] विशेष, श्यादा (सम २: तर १ १७ )। शक्तामच्या वि मिन्सा + गर्मी संदुष याना सामने याना । यम्बायन्द्र (पर् ) । श्रदभाइनस्य रेको जनसङ्ख्या। सम्बद्धसभद् पक्तप्रक्षेत्रा (प्रापा) । ब्बच्यासम् दु [ब्राप्रयागम] १ संपुद्धावनह । २ समीप स्विति (निवृ २)। अध्यागिसेय ) वि अध्यास्त है। अस-सम्मागय **) स**स्त । २ द्वी पाननुक पाष्ट्र पति वि (सूप १२,३ सूपा ३)। सम्मावतः ) वि दि प्रत्यका नाम्य पाना क्षक्यायस्य हे हुनाँ (दे १ **११**) । भवमास र् [बदबास] गुलकार (परा ७४) নির ৭২২)। बद्भास न बिश्मासी १ क्तिट, नवदैत (सं ६,६ पास)। २ विस्मीपवर्ती पार्ल रिक्ट (पाम)। ३.९, रिज्या पहाई, सीला। ४ शमृति (यमः १६१)। ३ शस्य (अ Y Y)। ६ धावृत्ति से उन्पन्न संस्कार (वर्ग २)। ७ महित का सकेत-विशेष (काम ४ w ; = 1}-

बक्सास <del>एक</del> [कसि + अस्] सम्बास करता, घाषत कलका, 'वं सम्बद्ध की हो पूर्व व दोर्च व एव जम्बम्मि । भारताद, पनन से विस्ता क्य (इह १)।

क्रमास-जोरस्य (वर्म १) वर्षि) । ब्रह्माह्य वि (अप्रवाहत) धानत-मात (महा) । क्रकिसरा केहो अध्योग= समि<del>।</del> येग् । प्रमो-र्घाण्मपावेद (पि २६४) । खर्दिम्म देखो अस्मीम् = प्रभावः (शावाः १ 26) t खब्मिग्रज देवो अदर्भगण (क्य) । खब्मिगिय रेखो अब्मीगिय (रूप)। बहिंमतर देना अध्येतर (इल ए ७ पण्ड ३ श सामा १ १३)। अप्रिमतरभाव [अ≭्यन्तरतम् ] १ फैनर से। २ मीतर में (भावम)। व्यक्तितरिय वि आध्यक्तरिकी भीतर का सन्तरंत (तम ६०) कम्मा सामा १ () I **बर्दिमतस्दि प्रध्यम्बरोधिन** नागे-त्सर्यकाणक क्षेत्र बोनो पैर के ब्रीहर्जे को निलाकर भीर पुलिओं को बाहर फैवाकर किया पाता ध्यान-विशेष (वेण्य ४०७)। **अ**विभट्ट वि [दे] सकत सामने साकर मिहा

हमाः इत्वी इलील सर्ने प्रक्रिक्टो रहवरे सहर्था (पठन ६ १≈२ १≈ २७)। अस्मिक एक [सं+गम्] संबंधि करवा मिलना। सम्मिक्द (कुमा हे ४ १६४)। मन्मिक्यु (सुपा ११२)। व्यवस्थित कि [संगत] चेक्त कुछ (पास्ट ₹ t w ) i व्यक्तिमिकिम वि [व] सार, सववृत्त (दे ! खबिसण्य वि [कासिका] मेदरहित (वर्न २)। जन्मुमञ देवी अवसुदय (वे १४, १४, स कें)। बन्धुक्त एवं [श्रीम + इक् ] नीवर करना । वक्क स्वरंसुकर्सन (वक्या ४६) । बस्पुनसम्ब व [ब्रास्युद्धान] विवयं करता विद्वार (स १७६)। भव्युक्तजीवा को [अभ्युक्तजीवा] ग्रीकर, अस्युविकाय वि [कार्युक्तित] सिक् (स ) 48 ) 1 -अब्स्ताम पू [भाज्याहम] स्थम चेमरि (सुमे १ १४)। अस्तुमाव दि [बाम्युद्रस] १ कात । २ उपच (गाया १ १) । ६ ळेवा किया हुमा क्काबा हुमा (मीव) । ४ नारी तरफ फैसा इच्छ (चेर १८)। क्रास्मुरगय वि [छाझोदुगत] क्रेंबा उद्यत (मप (२ १)। अध्यक्षम पू [अभ्युक्य] समुख्य (मास 8X) 1 बाब्युक्षय वि[अभ्युचर्त] १ ज्यतः ज्यम बुक्त (शामा १ x) । २ वैमार (शामा १ १ मुता २२२)। ३ वुं एकाकी विद्वार (बम्म १२ टी)। ४ विनवस्पिक पुनि (पेवव ¥) 1 अस्पृष्ट् पत्र अस्पृष्ट् + स्था र पारर करने के लिए कहा होना। २ प्रयन्त करना। ६ रीयाची करना । धरमुट्ठेंड (महा) । वह अस्मुद्रमाण (स ४१६) । श्रेष्ठः अस्मुद्धिना (भग)। हेइ-अस्मृद्धित्तम् (ठा २ १)। **इ अध्युद्धेयम्य** (स.द) ।

कास्तुहम न [कास्तुस्थान] धारत के तिए बात होना (ते १ ११)। अस्सुहा केनी कास्तुहम (सम ११ मूपा अस्तुहाण केनी कास्तुहम (सम ११ मूपा अस्तुहित्य कि [कास्तुस्थित] १ सम्पन

करने के लिए को बाझ हुवा हो (ए।या १

स्)। २ उत्पत्त वैकाठ फास्मृहिल्लु मेहेर्सु

(एस्म १ १ पति)। अस्मुद्देशु [अस्मुस्मादः] प्राप्तुलान करने-बाता (ठा ४ १)। अस्मुण्यय वि [अस्मुक्ततः] १ उसतः संबा (एएइ १ ४)।

(परह १ ४)। सन्तुष्ययंत्रकः [कारमुक्तयत्] १ जेवा करणा हुया। २ वरीवित करणा हुया। विपति करणि श्रवतिभाषकाणान्त्रीय (ज

कता हुया। २ वरीनिय कता हुया शिएनि वसिंध रीवर्गासमञ्जूपत्रधेत्रेत् (स १६४)। अस्मुच कह [स्ता] स्तान करना। सम्बुचर (ह १ १४)। वह अस्मुचर्त्व (हुना)। होगा । २ क्टेनिक होगा । मम्मुक्क (है ४ ११२) । सम्मुक्क (क्टमा) । प्रयोग्यम्भुक्ति (है ४, १९) । अम्मुक्कि वि [प्रयोम] १ प्रकारिक । २ उन्होंनिक (हे १४, १०) ।

बारमुखा है (त १२ १८)। बेर जिस्सु विषया (कास)। बारमुदय हूँ [बारमुदय] र जबति स्वय (यदी २३) भारमुद्रयुग्धसुद्धयं नद्दस्यं नदस्यं सुद्धाद्वं (जा ४६० दो)। बारमुद्धाद्वं (का ४६० दो)।

बाकुदर्शाम (वर्षि)। बस्धुद्धरणम् (कास्मुदरण्) १ स्वार (व स्था)। १ सि स्वार-कारण् (है १९१४)। बास्सुस्य वेको कास्मुण्यय (गाला १ १)। अस्मुस्यव वि (बास्मुद्धर्) बस्बुद्धर् विशेष स्वार (वर्षि)। अस्मुस्य स्वार्मुद्धर् १ सावर्ष-कारण् (यक्

सुपा १९)। १ वं साहित्य शास प्रसिद्ध

रहों में से एक

विस्त्यकरो प्रपृष्को प्रयुक्तको य वो रहते होतः। हरियमिधाक्ताची सम्बद्धया प्रप्तुतः। अद्भुक्ताच्या सम्बद्धया । प्रद्युतः। व्यद्भुक्ताच्या सम्बद्धया । प्रद्युतः। प्रद्युतः। प्रद्युतः।

अस्तुकारक्काचित्र (पि.१६६) । अस्तुकारक्काविक्र वि [अस्तुपतासित] स्वीकार कराया हुवा 'ठाई ठीई कुमारीह श्रेषी मर्ज पाएता अस्तुवरक्यावियो विगयमधी वितेर (शाक दृष्ट् )।

अस्तुवास पुं [बस्युपास] १ त्वीकार, मक्षेत्रर (वत १४४: त १७ )। २ तर्व शास्त्रतीवत विदानन-विशेष (वह १ सूप १ १२)। सस्तुवासमा की [बस्युपासता] त्वीकार, मक्षीकार (वर ४ ९)। ६ १४)। व समीप में तया हुया (सामा)। अस्प्रेम्बरण कि [अस्प्रेमपत्री प्रदूष्ट्यात स्मृत्यीत (तार पि १६६ २७६)। अस्प्रेमपत्रि की [अस्प्रेमपत्रि] धनुमह, अस्प्रेमपत्रि की [अस्प्रेमपत्रि] धनुमह, अस्प्रेम वक्ष [अस्प्रेमपत्रि] धनुमह, अस्प्रेमपत्रि (यादा १६६) पत्र २ १।।

अब्सुबराय वि [अप्रयुक्तात] १ स्वाहत (सुर

अस्मो देशो अस्मो (पड)।
अस्मोक्षिय विश्वित्यासिक वींशा
हुमा (पुड १११)।
अस्मोक्ष विश्वित्यास्त्री सीक वींशा
हुमा (पुड १११)।
अस्मोक्ष विश्वित्यास्त्री सीकत के समीव (सिंद ११)।
अस्मोच (पा) वेशो आसोग (जिहे)।
अस्मोचपासिक विश्वित्यासिक विश्वित विष्य विष

लाकुत्त वेशो अस्भुत्त पासूत १ (यह)।
स्मागा है जिसान है स्वतिहल स्कृतित (विते)। २ दश ताय का एक चौर (वित्त ११)।
समात्त वि जिसाक है शांकि सही करने क्षार (हुना)। २ सा मोजन का समात्त (वन थ)।
"है हुँ हैं [मेर्] जनवाद (साक्त वित्त मुंता ११)। हिंस वि [मिर्मक] क्योंकि वित्त को लिए हिंस है। हिंस वित्त वित्त वित्त को असात्त किया है। सह दा प्रसाद में स्वत् (प्रसाद है। सह दा प्रसाद में स्वत् (प्रसाद है। इस का प्रसाद (मुख (प्रसाद)। १ की सात्त में प्रसाद (मुख १ स)। १ कि सम्बन्धित (न्वार्ष (प्रसाद)।

र ६) हि सम्पर्धात निर्मेख (पाण)।
४ ई राज मेरिक का एक विकास कु करी
भागी विशेष स्वराम् महामेर के पास की
नो सी (स्वृ १ कामा १ १) । कुमार ई
[कुमार] को सम्बर्धक पर्ध (सिंह)।
व्या हि [ब्य] म्यन्वितासक कीशित-वात्र
(सिंह)। वाण निवानों वीरित-वात्र
(सिंह)। वाण निवानों वीरित-वात्र
(सिंह)। वाण निवानों कीशित-वात्र
(सुंख १ कम्म दू १४ तो ४ । सार्थ
स्वा १ का।। स्वा सुंब १ विवानों कीशित का
वाव (सुंब १ क्ष)। वा निवानों कीशित का

<b>(</b> 2	पाइभसर्मर्ण्यको	मभयं≢र —श्रमिगम
हर समय (द्वार देव)। सात तु [मेल] एक एका का कर (रहा)। सात तु [मेल] एक एका का कर (रहा)। सात देव हरा	सातने प्रशासकारणयां (श्रीय)। २ वर्षणे पीर, स्वत्यादः भिन्नों (स्वत्य ४२)। ३ स्वान्तारः भिन्नों (स्वत्य ४२)। ३ स्वतान्तारः भिन्नों (स्वत्य ४२)। ३ स्वतान्तारः भिन्नों (स्वत्य ४२)। ३ स्वतान्तारः भिन्नों (यावा)। १ स्वत्यतः प्रशासकारः (स्वतः प्रशासकारः पित्यतः प्रशासकारः (स्वतः प्रशासकारः (स्वतः प्रशासकारः (स्वतः प्रशासकारः इति स्वति स्वतः प्रशासकारः इति स्वति स्वतः इति १९ स्वतः १२ स्वतः प्रशासकारः इति स्वति स्वतः स्वतः १९ स्वतः १९ स्वतः १९ स्वतः स्व	अभिमान हे को अदमीमा (नष्ट रंग)। अभिमान हे को अदमीमा (नष्ट रंग)। अभिमान एक [अभि नयाम् ] क्या रात्म, न्याना । योनरंकेशा (माना)। का स्मिक्त का [अभिमान का प्रितान । का स्मिक्त का [अभिमान का प्रितान । रात्म की है [अभिमान का प्रितान । रात्म का है [अभिमान का प्रितान । रात्म का है अभिमान का प्रितान । रात्म । विभाव का है विभाव । रात्म । विभाव का है विभाव । रात्म । विभाव का है विभाव । रात्म । विभाव है विभाव । रात्म । रात्म । विभाव । रात्म ।
रे बाक्तियां करन वयत (या रेड, है) अ. स. [ब्राह्म] तिमतिरीत यसी में है निरी इच वी वज़्त्रोसारा बायक-ह बेंबुक	। है (इन् १) १ अभिभावत व [अभियाजन] वैद्यो अभि	अभिगम पू [अभिगम] १ बाहि स्टीनार (र्राल्ड)। २ बाहर, बलार (का २ प्र)। ३ (दरका) उनका बीख (छावा १ १)।

·४ ब्राम्, निवास (पद १४१)। १ सम्स-क्च का एक मेद (ठा२,१)।६ प्रवेश (B = 11)1 अभिगमण म [अभिगमन] ब्यर केवी (स्वप्न १६ । सम्मार १२) । अभिगमि वि [अमिर्गमन्] १ मादर करते नामा । २ बपदेशक । ३ तिबय-कारक। ४ प्रवेश करने वाला १ स्वीकार करने बास्ता प्राप्त करने वाना (पर्एए १४) । अधिमाय वि [अभिमत] १ प्राप्त । २ सत्त्व । १ उपविष्ट । ४ प्रविष्ट (इ.इ.१) । इ झात मिचित (खाया १ १)। अभिगद्दिय न [अभिमद्भिक] मिष्पाल क्रिपेय (कम्म ४ ११)। स्रमितिस्मः सक [अभि + सृष् ] यदि क्षोन करना मासक होना। वह- मनि-निजनति (सूम १ २)। अभिनिष्ह् ) सक [अभि + मह् ] प्रहण अभिगिन्द्र करता, स्वीकारता। यनि-गिग्ह्इ (क्प्प) । संह- अभिगिनिङ्चा असिगित्रमः (पि ४०२ ठा२ १)। काभिगाइ पूं [अभिप्रह] १ प्रविका नियम। (ग्रीव ६)। २ वैन साधुर्यों का भाषार विशेष (बहु १) । ३ प्रश्यादमान (नियम विशोध) का एक सेद (बाद ६)। ४ वदा- <sub>।</sub> बहुह्ठ (ठा२,१)। ३. एक प्रकारका शारीरिक विनय (वव १)। अभिगाहणी की [अभिग्रहणी] मापा का एक भेद, बसरम-मृपा बचन (संदीव २१) । स्थिमाद्रिय वि [अभिप्रदिक] यनियह मासा(ठा२ १।पव ६)। अभिगादिय वि [अभिगृहोत] १ विसके दियम में मनियह किया क्या हो वह (कप्प पव ६)। २ न, सनकाएए निवास (पएए। ११)। क्रमियह सक [क्रमि + यह] देप से जाना : कवकु अभिषद्विकामाण (राय)। अभिषाय पुं [अभिषात] प्रहार, मार-गैट, दिसा (पराह १ १; इस ४)। श्रासिचीय है [अभिचनद्र] १ यहुनेश के মনামন্দৰ্শিত কা एक पुत्र वितने वैतः।

द्योशासीची (संत ३)। २ इस नाम का एक दुसकर पूरप (पटम १ ५३)। १ मुक्ट-विशेष । (सम ११) । अभिज्ञण देखी अभिज्ञण (स्वप्न २६) । श्रमिजस न [ श्रमियशस्] इस नाम का एक बैन साधुमों का कुत्त (एक बाजार्य की संविति) (कप्प) । समिकाइ सौ [अभिकार्ति] हुनौनता बानवानी (उत्त ११)। अभिसाण सक [अभि+इत] वाननाः। कः अभिजाणमाग (धाका)। अभिजान पुं[अभिजात] पत्त का न्याख्वी दिस (सुमार १४)। छभिज्ञाय वि[अभिजात] १ फराय 'यमि-बासपुरुषो' (उत्त १४) । २ क्रुसीन (एव) । कामिनुंब एक [अभि + युज् ] १ मन्त-स्त्रादिसे करा करना। २ कोई कार्यमें संयाता । ६ प्राप्तिकत करना । ४ समस्य कराना यात्र विचाना। चंद्र- स्वमिमुंबिय, सभिज्ञीवयाणं, समिज्ञीवचा (मन २ इसुद्र इसकामा १४)। अमिनुच वि [अभियुक्त] १ वट-नियम में जिसने कृपस्य न समाया को वह (सामा १ १४)। २ जानकार, परिवत (एपि)। क्टूरमन से विराह्म्या (वेणी १२)। अभिक्रमध की अभिक्या]कोच कोनुपता ब्रासिक (सम ७१ प्रमृह १ ५)। अभिविस्तय वि [अभिव्यत] प्रसित्तपित विश्वत (पएए २८)। धिमिट्रिस दि [सभीए] प्रक्रिपित (वस

> वित प्रशंकित (मान २)। अमिह्हुय देवो अमिद्दुय (मूप १ २, ज्ञानजनवं अभिणक्ष्वतं }े स्त्रो अभिणी द्धमिणंद् सक [स्रथि + नम्यू ] १ प्रसंगा करता, स्तुति करता। २ वासीर्वाद देना। ६ प्रीति करना । ४ सूरी मनाना । १ पाइना इच्छा करता। ६ बहुमान करता, भारर करता।

अभिटत्य वि [अभिप्दुत] वरिष्ठ स्ता-

**१६**४) ।

माभिएरेर (स १६३)। कर- सभिएरेरे (भीप कामा १ १ पतम ६, १३)। क्षकः अभियविकामाण (ठा १) खाया १ १)। अभिजंदिय वि [अभिनन्दित] विस्का समिनत्वन किया गया हो वह (सुपा ६१ )। छ भिष्युष न [अभिनन्दन] १ प्रक्रित्यन । २ दू वर्डमान सवस्पिछीकास के चतुर्प विनदेव (सम४३)। ३ सोकोचर भावणमास। (सूच १)। अभिणय पूं [अभिनय] सारीएक नेप्टा के द्वारा धूदय का मान प्रकारित करना नाट्य क्रिया (स्र ४ ४)। स्रमिणव वि[श्रमिनव] दूतम्, गया (बीव **1**): अभिणिक्सन वि [अभिनिष्कातः] दीश्चित, प्रवनित (स २७८)। व्यभिजितिण्यः सक [असिनि + मह\_] रोकमा, धटकामा । संह- अभिणिनियमः (रि देवर ४८१)। लमिजिवारिया की अभिनिवारिया भिज्ञा के निए श्रवि-विशेष (वव ४) । इमिणिपवा की [अभिनिप्रका] मनग-धतम रही हुई प्रवा (वव १)। अभिणियुरमः सक [अभिनि + सुध्] वानना इन्द्रिय मादि शास निवित्त क्ये से बान करना । धविशिकुम्म्स् (विसे **०१)** । अभिजिबोह् र्रु [अभिनिवाध] क्षान-विदेव मित-कान (सम्म ८६)। श्रमिषियरूष न [श्रमिनिवर्शन] पीधे सीटना वापस वाना (मावा) । मभिजिषिद्र वि [अभिनिषिष्ठ] १ धीव क्य से निविष्ट । २ घाषडी (सत्त १४) । अभिणियस पुं[समिनिवेश] पायह, हठ (ए।पा १ १२)। अभिणिवेसि वि [ अभिनिवेशिन् ] क्य पद्गी (परम्द ११७) । श्रमिजिनेह् र्षु [अभिनिषेष] बन्या मतना (पाषम) । समिजिस्सागड वि [दे समिनिस्पोहत] मित्र परिवि वाला वृक्तभूत्र (वर वरीरह) (वद १,६)।

श्रमिण्याज न [अभिकान] निरानी विक

TE # ( \$ 1 YY ) 1

(माना)।

व्यमिषिक्षद् सक [अनिर्+कृत्] १ श्रंपादित करना निभाव करना। २ घटनम करना। संह—अभिविञ्चकिता (कर ¥, Y) 1 क्रिमिणिब्बट वि [क्रिमिनिकृत्ते] १ निरुद्धाः उद्भानं 'छ्ड्ड प्रतत्ताम् देईह् तेर्वेह प्रतिवेद प्राप्तियेप्श मिपसेपूर्या यदि-संबादा अभिशिष्टा यमिर्श्वटवा यमिर्श्वटवा प्रमि<del>तिवर्</del>गता धनुपुन्नेस महामुसी' (माचा)। अभिजिल्लाह वि [अभिनिर्वता] १ पुरु मीत-बाह (सूच १२१)। २ शान्य मद्भित (भाषा) । १ पाप सं निवृत्त (सूध t ? () 1 भभिषिस्या श्री [अभिनिपद्या] कैन ताबुधों के रहते ना स्वाल-विशेष (वन १)। भ्रमिजिसद् देवो अभिजिसिद् (गुरुव १)। क्रिमिणिसिङ् वि [अधिनिसङ्] बक्कर निकला हुमा (बीव ६)। समिजिसेदिया 🖈 [सभिनैपेदिकी] 🖛 सामुमी के स्वाम्धान रफ्ते का स्वात-किरोध (वव १)। श्रमिजिस्सव यक [ब्रमिनिर्+स्त्र] निरस्ता । प्रविधिस्तर्गेत (एम ७४) । अभिषो एक [अभि + नी] प्रक्रिय करता नाटच करना। यह अर्थमणश्रीय (गै

**৬২)। ক্বমু জনিসমুক্তরি** 

अभिक्षम न [अभिनूस] नावा, कपट (सूध

क्रिक्य वि [अभिक्य] पलकार, निरूश

श्रमिक्त विकिसिसी र प्युटित सर्व-

२ मेराद्वित यहबानूत (वृह् ६) ।

धारित मचरित्रय (उना; पंचा ११)।

अभिक्तपृथ र् दि बाली पृत्ति सीनी

428) I

१ २, १)।

(इस्स ) ।

(द्या

अभिजिब्बट्ट एक [अभिनि+कृत्]

रोक्ता प्रतिपेत करनाः से मेहाती समि-

लिक्टरेक्स कीई चमातों चमार्जन तीमें

व फेरबंच दोर्सच मोहंच एक्संच बस्सं

च मारंच शर्मच क्रिप्टिंच दुल्बंचे

(भा १४) I अभिज्याय वि अभिकाती वाना हमा विक्ति (पाना) । भ्राभित्म सङ [अभि + तर्जे ] शिखकार करना धाकन करना। का अधितव्योशाय (शास्य १ १०)। अभिवत्त दि [अभिवस] १ वपायः ह्रणा करन किया हुमा(सूम १४१२७)। अभित्रव स्कृ अभि + त्प् ] १ तपला। २ पौड़ा करना 'चलारि सम्बक्तियो समार यिता वेदि कुरकम्मा फिटबिटि वार्त (सूच १ १,१ १६) । कनदः अभितप्पमाण 'ते तत्व चिट्ठीर्तिमक्यमागा मन्द्रा व और तुनभौतिनद्यां (सुष १ ६, १ १३)। अभिवाद सक [अभि + वापयू] १ वपाना बरम करना । २ पीडिट करना । ब्राह्मितावर्योत (दूस १३,१२१२२)। मनिताव पुं[भमिताय] १ बाह्। २ वीहा (सप १ ६ १ २ ६) ı भभितास स्ट [समि + प्रासम् ] वास क्षवान्य भयभौत करता। का अभिकासे माप (शाया १ १८)। भगित्भुतक[भगि+स्तु]ल्लाक्ष करना स्ताम करता वरोन करता। ध्रमिकुछीर पिष्पुरामि (पि ४१४ विसे १ १४)। वह समित्युक्मात्र (इप्प) । क्ल्इ-भभित्युब्बमाज (स्वतः १)। मभित्युव वि [अभिष्युत] स्तृत स्तापित (संबा) । अभिधु देवी अभित्यु । बहु, अभिधुर्जंत (कानार र) । क्यक अभियुक्तमाण (क्य. स्र १)। धमिद्रगादि जिभित्रगी १ इकोलाइड स्यान । २ व्यक्तिविषम स्वान (सूच १ ६ १ ₹**७**) ۱ र्जामदो (धौ) म [अभिकः] चार्च मोर है (समा ४२)।

अभिद्व दर्ज अभि + ह् ] गैश करन

बु:ब स्थवाना हैरान करना 'नुबंधि बाबाद्धि व्यविद्वं शुप्त' (भाषा २ १६ २)। अभिद्रविय वि अभिद्र ती उत्पुत है एक किमा इस्मा (सुर १२ ६७)। श्रमिद्द्य केलो व्यभिद्विय (छामा १ श्चा १६)। समियाइ दि [ समियायिम् ] राज्य, क्द्रनेवासा (विसे ६४७२)। श्रमिद्यार सक [श्रमि + द्यारम् ] १ दिन्तनः करता । २ स्पष्ट करता । धनिकारए (स्स ४, २ २४: उत्त २ २१); धनिवारयामी (तूप २,६ १६): मङ्ग असिधारकत (उत्तरि ₽)ı समियारक न [समियारक] वारसा विनात (बृह ३)। समियेक १५ [श्रीमधेय] वर्ग गान्य अभिषेत } पदाचे (विशे रिटी)। अभिनंद रेको अभियंद् । यह अभिनंद भाज (क्य)। क्यक् अभिनंदिकमाण (म्हा)। श्रमिनंदण देखो स्वसिणंदण (क्य)। लिसतीह की [अभिनंदि] यालक दुरी 'पानेट स नॅबिसेनामभिनेदि' (स्रवि ३७) । समिनिककत के भागिककात (भागा)। श्रमिनिकशस्य प्रक्ष [श्रमिनिर्+कृम्] कैसा (संन्यास) देना सेवा देने की रूक करता, भूदवास से बाहर विकासता। वह-अभिनिक्तमंत (पि ३१७)। अमिनिरिष्**द केवा अ**भिजिशिष्द (प्रापा) । समिनिषुरमः देवो अग्निषित्रसः । धरिनि-**पुरुष्य (विशे १८)** । धर्मिमिवर् वेदो स्रमिनिवर् । तकः अमि-निवर्ष्ट्रचार्च (पि ४०३) । थमिनिवि≦ ≒को स्रमिणिविद्व (वन)। व्यमिनिवेस **ए**ड [श्रमिनि + वेश्रम्] ' रेस्वापन करना । २ करना । समिनितेतप (**र**म १,३)।

व्यभिनिवेशिय न [ब्रामिनिवेशिक] निप्पा-

ल का एक प्रकार समय बस्तु का बात होते

पर थे को नहीं मानने का दुराधद् (ना ६)

क्ष्मव ४ ६१)।

धभिणिब्बर्-अमिनिवेसिब

धरिमिनस्यर् केलो अभिजिस्बर् (इप्प धावा) । अभिनिव्यट्ट सक [ अभिनि + युत् ] एक्क होता। वह अमिनिव्यष्ट्रमाण (सूम २ 1 (t) 1 अभिनिक्षट् सक [अभिनिर्+यून्] बीबमा । संक्र 'कोसायो वर्षि कमिनिस्व द्विचा (सूम २ १ १९)। अभिनिव्यागद वि [अभिनिव्यो**क्**ट] विभिन्न द्वार वाला (सकान) । (वव १ टी) । धमिनिध्वट्र वि [अभिनिर्विष्ट] धंबात दशम (कम्प)। समिनिस्तुह देवो अभिणिस्युह (पि २१६)। अभिनिसद वि [अभिनि सट] विसका स्तन्त प्रदेश बाहर निकल सामा हो बहु (मग १४, पत्र ६६१)। सभिनिस्सव देखो अभिजिस्सव धिम-क्रिस्सर्वति (सम ७३)। अभिनिस्सव वह [अभिनि + सू] टावना भद्रना । समिनिस्सन्द (सन्) । क्रांसिक्त रेको क्रांसिप्श (प्राप्त)। अभिकाण देवो कमिण्याण (भोप ४३८ सुर ७११)। अभिनाय देखो अभिज्याय (क्य) । समिपद्याणिय वि [अभिषयोषित] प्रस्या चेपित क्यर चला हुचा (कुमा)। व्यभिष्युद्र वि [व्यमिष्रवृष्ट] वट्या हुमा (साचारं १११)। क्सिपाइय वि [क्सिमिपायिक] प्रक्रियम सम्बन्धी मन करिनद (पणु) । अभिष्पाय 🙎 [अभिप्राय] प्राप्टय मन परिस्ताम (बाबा स १४) गुपा २५२)। अभियोग वि [अभियेत] छ, प्रीमनत (स 3₹)। अमिनम् सक [अमि + मू] परामक करना परास्त करना । समिनवह (महा)। संह. असिम्बिय, असिभूव (मन ६, ३३) परहर २)। लभिभव पूं [अमिभव] पराभव परावय शिएकार (भाषा देश १७)। कमिभवण न [अमिमवन] उपर केनी (gar yee) 1

अभिमास एक [अभि + भाप् ] समापरा करनाः विभिन्नासे (पि १६६)। अभिमृद्द् श्री [अभिभृति] परामव अभिमव (x 1 ) ! अभिभूव वि [अभिभूत] परामृत परावित (बादासुर ४ ७३)। श्रमिमंजुदेशो अभिमण्यु (१४ ३ ४)। अभिमेव सरु [ अभि + मन्त्रम् ] मंत्रित करना मन्त्र से संस्थारना। संकृत्साम संविक्तण खसिमंविय (निष् १ यावन)। अभिमंतिय वि [अभिमन्त्रित] मल से संस्कारित (मर १६ ६२) । र्जासमझ सक [छासि + सम् ] १ मनि मान करना। २ सम्मद करना। समिनमङ् (विशे २११ २१३)। अभिमय वि अभिमत इस प्रिमेष (पूप अभिमाण पुं [अभिमान] धीममान गर्व (मिच्र १)। अभिमार पुं [अभिमार] वृश करेप (राष)। अभिमुद्द विकिभिमुल | १ ६ मुक्त सामने रिक्त । २ किनि छामने (मन)। क्रमिमुद्दिय वि [क्रमिमुदिति] चंपुच किया इष्या (सुमनि १४६)। समियासम् १ अभ्यासम् संपुत्त वागमन (सूम १ १ ६ २)। अभियादम वि अध्यापमी संमुख माप्त (सूम १४२ २६)। खिमराइकी [अभिरति] १ एवं चेमोग। २ प्रीति मनुराग (विशे ३२२३)। काभिरम चक [स्रभि + सम्] १ और ग करना सेनोग करना। २ प्रीति करना। १ वस्तीन होना भासकि करना। मनिरमह (महा)। वह अभिरमंत, अभिरममाण (सुपा१२ सामा१२४)। स्रमिरमिय वि सिभिरमित । यहरू दिया इया 'मानिरमिनकुमुपनखर्च' प्रसिमंडमं पत्ती-बार (मूपा १४)। अभिर्मामय नि [अभिरमित्त] संप्रक, भेरा-विर्तानमं परकमत्तं (वर्गीव १२८)। श्रमिर्शमें । वि[श्रमिरत] १ व्युरक (गुना श्रमिरम रिप्र)। २क्ष्मीन वलए पह

त्वनियमसेवमाभिरमा (परम १७ ११ स **१**२२) । अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोक्र्र (शाया १ १३ स्वप्न ४३)। श्रमिराम स्क [ अमि + रामय् ] तपरका से कार्य में सवाला। प्रमियामगीत (दस ६, ¥ () 1 शमिरुइय वि [अभिरुचित] पर्यंद मन का स्रमिमत (ग्रामा १ १ दना मुपा १४४ मद्वा)। श्रमिरुय एक [श्रमि + रुच्] पर्धर पकृमा क्वना । अभिस्मक् (महा) । अभिस्त्रीसि वि [अभिरुपिम् ] गुन्दर रूप बाला मनोहर (बाबा २,४३ १)। अभिरुद् एक [अभि + रुद् ] १ रोकना। २ क्रमर चड्डना माधेहना । चंड्र-'बलारि साहिए मासे बहुबे पाल्याद्या सामम्म । प्रविदरम कार्य निश्रारिस् मास्त्रिमा ए। तत्व हिसिमु (माना) । लमिरोहिय वि [अभिरोधित] वार्ष योर से निरुद्ध रोका हुमा (ए। वा १ १)। सभिरोहिय नि [अभिरोहित] उपर देवो 'परबद्धरावामिरोडिया' ('परबद्धराबैनापरसे स्यनुपरिकामिधैहिता संबद्ध कुर्त्वनिधेवावा सादवांटी) (सामा १६)। स्थितंत्र सक [अभि + स्टम् ] उस्तं **पन करना । पक्क अभिर्क्ष्यमाण (**ग्रामा t (1 1 अभिद्याप वि अभिद्याप्य क्वन-योग्य निध्वनीय (मान् १)। अभिद्रस एक [सभि + स्प्] वाहता शान्सना । बहितसङ् (स्व) । विभिद्धाय ) प्रै [अभिक्षप ] १ स्ट् धिमिस्सप ∫ भें किं(ब्र ३ १ मास २७)। २ संभाषण (खाया १ ८ विख)। अभिसास पूं [अभिसाप] इच्छा च्या (सामा १ ८) प्रमी ६१)। अभिद्यास ) वि [अभिकापित] बाहते अभिलासिण 🕽 बलॉ इच्छुड (वनु, स ६४४) पदम ३१ १२४)।

अभिग्रामुग – अभिसिच

व्यभिकासूरा नि [अभिकापुरु] व्यक्तियी (स ११७ थे) । समिस्रोयण न सिमिस्रोइनी वहाँ वहे छ कर दूर नी भीज देनी जाय बद्ध स्वात (पद्दर्भ)। अभिन्नेमण न [अभिन्नेचन] उत्तर देखो (पशुप्र ४)। अभिवंद एक [अभि + वस्दू] नमस्कार करना, प्रसाम करना नक अभिवंदित (पठम २३ ३) इट चे शाहलो ते असि वेटियव्या (पोय १४) अभिवेदियक (विके २६४६) । अभिवंद्णा **स्ट**िश्रमिदन्द्ना दिलाग नम-स्टार (वेदय ६३१) । भभिनंदय विभिन्नच्की प्रणाम करते बाला (घोप)। अभिवद्द पक [अभि + दूभ् ] ददना बडा होता एकत होता। धनिबद्धामी भूडा र्माप्तरिक्षमा (क्य) । नक्र-अभिवद्य हेमाथ (# w) I म भियदिह देवो सभिवृदिह (१७)। श्रमिषदिङ देवो अद्विदिङ (मुन १ १२ दी) । ध्यभिषद्विद्य वि [अभिवृद्धित ] १ वडाया हुमा । २ समिक माम । ६ समिक मासनाता वर्ष (सम १६ चन्द ११) । द्यभिषद्ते सक [असि + वर्षय ] वहाला । समिर्देखि (गुन ६) । नाः अभिवद्दशाम (स्व ६)। संक्रांक (भेषद्यं ता (सूक ६)। অনিৰ্বুলি (জনিৰ্যুক্ত) থাৰিগুঁৱ श्रमिवत्ति भी अभिव्यक्ति प्रादुर्भंद (इस २४)। स्यभिवय सक [क्षिमि + व्यक्त] सामन कानाः वद्याक्षसिवर्यतः (ए। वारः )। धभिवाइय वि [अभिवादित] प्रख्त नम सक्रव (मुता ६१)। अभिवात प्रक्रियाती १ प्रापने का प्यतः। २ प्रतिपृतः (बरमया क्या) प्यव (माचा)। अभिवाद ) सक अभि + वादव प्रशान श्रीभवावं करमं नमस्तार करना । सनि-

बाएड (महा)। ध्यमिवासमै (विशे १ ६४)। क अभिवायमाय (प्राचा) । इ. श्रमि थायणिका (मुपा १६)। व्यभिवाय 🖬 अभिमात (प्राचा) । अभिवासण न [अभिवादन] प्रणाम नम-स्कार (माचा रसक्)। अभिकाहरण न [अभिज्याहरण] इपद्रट. पुकार (पैका २)। श्रमित्राहार पूं [किभिक्याहार] प्रधीचर, सवाल-बवाब (विने ३३१६)। भमिविद्धि पूंची भिमिविधि मर्बादा स्वाप्ति (५वा १६: विमे ४७४)। समिवुद्धि की [अमिवृद्धि] वृद्धि, वर्षा (पर । अमिसमण्यागय धभिषुद्द देवो धभिषद्द । एक असि-बुद्दिचा (सुन १)। भभिवृद्धिः वी [अभिवृद्धि] १ वृद्धिः, बढ़ाव । २ उत्तरभाइपद नखत्र का समिशाता थेन (वंध)। अमियुद्द देनो अभिवद्द । एक अभि-बुद्दचा (धून ६)। अ(मधेरणा सौ [धानिषेदना] धन्तन वीहा (सूम १ ६, १ १६)। अभिव्यस्य प [अभिव्यसन] रेको अभि विचि (एम १११)। स्रभिक्याहार देवो स्रमिशाहार (विने **1483)** 1 भमिसंस्थान [स्राभिसहरून] संदर्भ करून (संबोध ४१)। मसिस्द्रकौ [अभिशृष्ट] संतम सकेह (तूप १६११४) । श्रमिसंकि वि [अभिशक्तिय] १ व्हेन् रहे-बल्ताः २ और, बरनेदल्ला 'तश्कृमारा-मिसंदी मरहा प**मुद**ि (बाद्य हाता व्यक्तिसम्प र् [अधिष्यहः] प्राप्तिकः (स्र थमिसंबाय वि [समिसंबात] <del>सन्</del>व (पाचा) । धर्मिसंपुण एक [समिसं+स्तु] स्तृति करता, वर्शन करता। वक्- अभिसंध्यमाण (रामा १)।

अभिसंधारण म [श्रीमसंधारण] क्यां-मोचन विचारना (पाचा)। असिसंघि पूर्वी [अभिसंघि] प्राप्त पवि-भाग (ठव २११ टी)। भभिसंधिय वि[भभिसंहित] नृहोत ज्याच (पाचा)। अभिसम्प विशिमसम्ब 🕶 🕬 🗷 भूँत (पाचा)। अमिसंबद्ध वि अमिसंबद्धी बल-प्राप्त, बीव-प्राप्त (प्राचा) । अभिसंपुद्ध दि [अभिसंपुद्ध] दहा हुमा क्सत महस्या की प्राप्त (प्राप्ता) । वि [अभिसमन्दागत] भमिसभमागव १ मण्डी तका वासी हुमा मुनिरर्जीत (प्रथ ५,४) । २ व्यवस्थित (मूम २,१)। १ प्राप्त सम्ब (भग १४) का छ रणसा ( द)। अभिसमागम सक [अभिसमा + गम्.] रै तामने वाला। २ प्राप्त करता। ३ तिर्खेय करना ठीक-ठीक बानना। येड अभिसमा सम्म (बाबाः इस १)। श्रमिसमागम र् [अभिसमागम] १ संदुन वमन । ६ प्राप्ति । ६ फिल्लुंग (ठा ६ ४) । लभिमम एक [अभिसमा+इ] देनो अभि समागम = प्रीमामा + वन । प्रीमत्तमेद (ठा १४)। धंइ अभिसमेच (पाचा)। अभिसरसङ [अभि+स्] प्रिय के शस बारा। वह अभिसरंत (मेह्र ११)। अभिसर्व न [अभिसर्व] १ तामने नामा, <del>र्यपुच</del>यमन (क्छार ११) ँ२ प्रिव के प्रस् जाना (जुना)। अभिसद्युं [अभिषय] १ मद्य मादिका सर्वः २ सद्यमन स्थति से मिनित **ची**त्र (पन ६)। व्यक्तिसारिक्षा देवी व्यक्तिसारिक्षा (ग 508) I अभिसिच एक [थमि + सिच्] पविनेक करता। प्रविभित्रति (क्य) । क्वड लिम सिबमाण (क्य) । प्रयोत्त 🎁 अभिसिना ৰিবাধ (বি হখন)। मभिसित्त वि [भिमिषित्तः] विसका मधि-

वेक किया यया हो वह (बावम) ।

समिसेल ) पूँ जिमिपेकी १ यन पानार्य अभिसेग । बादियर पर बास्क करना (धंबा महा) १ २ स्नान-महोत्मव 'विणानिसेमे' (सूपा ६)। ३ स्तान (धीना स १२)। ४ बड़ो पर धर्मिनेक किया जाता है वह स्वाम (सप)। १ शक-शोणित का संयोग कि वालु भत्तताए देखि देखि इसीहि ममिनेएए मनि संभूमा (बाचा १ ६ १) । ६ वि याचार्ये मादि पद के योग्य (इस व)। अ ममिविक (निद्युष्ट्र)। अभिसेगा भी अभिषेश्वी १ साजी संन्या-सिनी (निच् ११)। २ साम्बर्गे की सुव्या प्रवित्ति (वर्षे ३ निवृ १)। स्मित्रेका के अभिश्रम्या देश अमि णिसळा (वव १) । २ मिन्न स्थान (विसे 4841)1 समिसेवण न [अभिपेवण] पूजा सेवा मिक्त (पडम १४ ४६)। अभिमेवि वि अभिपेबिम् । ऐवा-कर्ता (गूप 3 4 88)1 अभिस्तंग पू [अभिष्यक्ग] भाषकि (विशे 7859)1 ऑसइटटु म [अमिङ्क य] बनात्कार करके जबरमस्ती करके (माना, पि १७७)। र्धाभद्रव वि [सभिद्रव] १ सामने नामा ह्मा (पंचा १६)। २ कैन साबुमों की मिला कारक दोप (ठा३ ४)। क्षमिइण सक [क्षमि + इन्] मारता, हिसा कला (पि ४११)। मझ समिहणमाज (**थ** दि)। समिहणज न [असिहनन] पनिवाद, हिसा (भव <, ७) । समिद्य दि [अभिद्व] मारा दुमा, पाइत (पश्चि)। श्रमिद्दा की [समिया] नाम पाक्स (स्एा)। समिदाय व [समियान] १ नाम सास्या (कुमा)। २ वाचक राज्य (नव १)। ३ कवन चरित्र (विदे)। अभिद्राण न [अभियान] १ उचारण (नुसपि १६०)। २ नयन विक्र (वर्मरी ११११) । ३ कोरायत्व (वेद्ध्य ७४) । ध्यमिद्यि वि [ध्यमिदित] वनित उक्त (माना)।

अभिद्वेल नि [अभिनेष] नाच्य पदार्प क्रमणस्म व जिमनुष्य र मनुष्य मिन्न देव मादि (लंदि)। २ मर्चसक (निद् १)। (विसे ५४१)। छन्नीक ) की जिमिजिस ] १ गलत असत्त न भिसत्री भावन, गात्र (सघ १६)। अभोजि । विशेष (सम द १६)। २ पू एक क्षमम विभिन्नमा १ ममता-रहित निस्पृह राजकुमार (मग १६ ६)। ६ राजा भेलिक (पर्याप्ट १ मुपा ५ )। २ वै सामामी का एक पत्र विसने बैन दीका भी दी (यन्)। काल में होने वासे एक जिन्हेंब का नाम सभार वि अभीरी १ निवर, निर्मेश (सम १६६)। ६ यूग्म रूप से होने वाते (बाका)। १ की सम्यम दाम नी ९४ मुच्छेना मनुष्यों की एक जाति (जंड)। दिन के (डा ७)। २ श्रमा मूहर्वका नाम (चंद १)। साधि शमंत्रका देलो अभित्रमा (परह १ ३)। िस्वी नि स्थाह, ममदा-रहित (वेचर ४)। बामोद्ध वि अमोध्यी मोजन के प्रयोग्य अमय वि [अमय] विकार-एक्कि (सामा ११६)। घर न िगृही मिला 'समधी य होइ बीबो कारणविद्धा के सिए प्रयोग्य वर, भोबी सादि भीच वाति जहेब मागास । काचर (बहु १)। समये च इामनिचं मिम्मयव तेतृमहाँचे अस सक बिस् रिकाला। २ धानाज (विवे) । करनाः ३ वासाः। ४ पीवनाः ५ वक असस्य न [अस्तुत] १ समृत मुदा (प्रास् रोभी होता 'धन यकाईन् (विसे १४३३) ६६)। २ सीर समूत्र का पानी (राव)। इ भाग रोगे मां (विसे १४१४)। समह (विसे पुँ मोत्र पुष्टि (सम्म १६७ प्रामा)। ४ \$ ¥ X X 3 ) | वि नहीं मध हुन्य भौतित समग्री है तस अमरग र् भिमार्गे १ हुमार्ग वर्ष्य रास्ता विमुद्यामि (पराम ११ ८२)। इत् पृ िक्त (उन) । २ मिच्यात्व क्याय द्यादि द्वेय पदार्थ चन्त्र चन्त्रमा (सर ७६० टी)। किरण पू 'धनग्रं परियाणामि मर्ग् कार्यप्रजामि' िक्सिया पन्न (गुपा १७७)। इतंह व (भाव ४) । ३ कुमत कुदर्शन (वंस) । [\*कुण्ड] चन्द्र चौद्र (भा२७)। घोस प् बसरपाय प्रै [असामात] १ इच्य का स िंधोप] एक सजाका नाम (संबा) । फस हुएए । २ माधिनवारए धन्म भोषणा (पंचा न "फिडी ममुतोपम पद्रत (खाया १ १)। E) 1 मध्य- मय विशिधयी प्रमृत-पूर्व (क्या) समञ्जू [क्रमास्य] मन्त्री प्रवाम (चीप पुर पुर ३ १२१: २३३)। सक्द पु "सयुक्ता Y ( Y) पन्त (मे ६८) । महारि यस्टरी औ थमव र् [अमर्स्य] के केता (हुमा) । [ वस्प्टरि, री] प्रमुक्तता बङ्गी-विशेष समारमः वि [असम्य] १ मध्य रहित सक्तरः प्राची : बहिस, यस्की ती विहित्र, (ठा ३ २) । ३ परमारा (मन २ ५) । स्क्रा] बहा-विरोध ह्यूबी (बार पर अध्ययम अभिना १ ज्ञान निर्द्यम (ठा ६ ४)। बास र् [वर्ष] गुवा-वृष्टि (पावा)। ४)। २ मन्त मनसान (विसे १४१६)। केवो असिय = भगूत। खमण ) विकिमनस्के १ वजीतिकरः क्षमय पूँ दि] १ चनः चन्त्रमा (३ ११४)। भमणक्स विक्रिय (स्व ३ व) । ३ मनपहित २ ब्रमुर, बैल्प (पड्र)। (बाद ४० शूब २ ४ २)। भमयपडिम पु 💽 असूनपटिती अन्त्रमा, क्षमणाम वि [क्षमनभाष] प्रतिष्टु, समनोहर चौद (दूप २१) । (सम १४६) पिना १ १)। अमयभिगाम 🖞 दि असृतिर्माम र अमजाम वि [अमनोम] इनर देखी (मप चन्द्र चन्द्रमा (१११४)। विपार १)। धमणाम वि [अपनाम] पैमा-नरक दुःसो समर वि [आमर] रिष्य देश-सम्बन्धी 'समरा लावक (सूम २१)। माक्हभेवा (पठम ६१ ४१)।

मुरा १४) । १ वै मनशन् प्रशामके के एक

क्रिया (पातम स १६५) ।

मसुद्द वि [बासोथिन] नहीं क्रीक्लेनावा

मसुग वेको अनुस्र ≈समुद्र (द्वारा)।

(₹₹)।

तीर्थंकर देव का नाम (सम ११६)। भूम

श्चार-समुग

ल मिल न [दे] अन का कता हुमा वह (श्रा १)। २ दुमेष मेड् (बोच १६८)। अमिक रिदि आमिकी समित्र केरा में दनाह्मा(भाषा२ १११)। समिस्य की [असिद्धा] १ वीसर्वे किलोप कौ प्रवस रिप्र्या (तम ११२) । २ पाई। कोदी मैंस (शहर)। अमिक्सण } वि[बस्त्यन] १ म्बाव अमिक्सव } र्राह्व तात्राह्य(पुर६१४४ मन ११११)। २ पुंकुरहरूक दूता । १ त कुष्टक बुस का पुष्प (दे १ ६७)। **भ**मु त [ **भर्**स्] वर्षः स्ट्रकः (ति ४१२) । अमुझ स [अमुक्त] यह, कोई, प्रमका-हमना (घोष १२ मा मुगा ११४)। अमुझ देवो अम**अ = ममुट** (ब्रासू ११) वा ₹**9**\$) | अमुझ केवी असय = समय (काप्र ७७७)। असुअनि [अस्सृत]स्यक्तार्मेलकी प्राया ह्या (पन ३६)।

পুৰ কাৰান (ঘৰ)। श्रमस्य की शिमस्यों राजकी एक सद महिपी स्प्रनाम स्त्राली-विशेष (ठा ८)। ब्यमबस्सा केनो अमावस्ता (तंबा ११ २ )। ध्यमा । विकिमाधिम् किन्द्रपट, सरम अस्ताइत् ∫ (शाची सः १ में इ. ४७)। धमाभाग देवी धमग्माय (ज्या) । अभाग रि [अमान] र गर्ने छी्त नम (कप्प)। २ धर्षस्य 'ठाणुट्रास्त्रिकोद्दरवना-समारोधिष्टपूर्वे (उर ६ दी)। व्यमाय दि [अभात] सहो तनाथा ह्या, 'मुसाहुबरगस्य मखे धमाबा' (मत्त ३४) । धामाय वि [अमाय] विष्क्षार, सरव (क्रम) । श्रमायि देवो अमाइ (भ्रम) । व्यमारि 🕸 [अमारि] हिचा-निवारण भीविट दान (गुपा ११२) । शास पु ["बाप] थर्किसाभी कोलका (मुताक १)। पहाइ दु ["पटर] हिंदा-लियेद का बिएडम 'धमा प्तिञ्जून मोसनेदं (स्वलु १)। व्यमायसा ) 🛍 [अमापारमा] हिपि समावस्सा विशेष धमावस (वप्न सूपा समावस्सा २२६ शासा १ १ वर्ष व्यमिञ्ज वि [क्षमेय] माप करते के लिए धरान्य **पर्यस्य** (रूप्प)। थमिम्स न [स्रमेष्य] १ स्रगुपि वस्तु भईर मममिक्सस्स दुरहिनंदस्स (दा ७२ थी)। २ विद्वा (तुसा १११) । थ्यमित्त पुन [थमित्र] रिपु, दुश्मन (स्र Y Y & Z. (w) | भनिव केवी अभय = यमुत (ब्रासू १ गा रुविते; मावस सिन) । **इंड** न **[कु**ळड] तकर किलेप का नाम (सुपा रं⊎ )। ग्राह च्ये <sup>वि</sup>गति] एक व्यव्य कानाम (चिंप)। माणि दुंिशानिन् देशत क्षेत्र के एक

ध्यमर पुॅिश्समर्] १ केन देवता (पाम) । २ गुक्त बारमा (बार) । ३ जनवान् ऋपमधेव का एक पुत्र (राज) । 😗 मनन्त्रवीर्वे नामक समर्थे भी [अमरी] देश (हुमा) । भावी जिनकेन के पूर्वजन्य का नाम (वी ब्यमधेस व [अमरेश] इन्द्र (वहप ३१)। २१)। १ वि मराजरीहरू 'पार्वेट महिन्मेर्ड जनस्व वि [असस्य] १ निर्मंत स्वत्रक्ष (स्व भीवा समयमर अस्तु (पणि)। क्रेस भी िंक्ट्रा दक्तमगरी का नाम (उमा६४६ टो)। केट पुंकित् एक प्रजुमार (बंस) । गिरि पूं "गिरि] मेब पर्वंड (पठम **११ ३७)। संद्रृत "गेद्र**]स्तर्ग(उस ७२वटी)। वस्यान ["वस्यून] १ हरि चन्दत बृज्ञ । २ एक प्रकार का मुपन्तित काह (पाम)। तक्षुं विशी करमञ्ज (सुपा ४४)। द्त्रं पूर्वित्ती एक शेक्षि-पुत्र ना नाम (नम्म) । नाह् र्रु ["नाथ] इन्ह्र (पस्म १ १ ७१)। पुर न [पुर] स्वर्ग (पन्नम २ १४)। पुरी की [पुरा]स्वरंपुरी यन रणती (चापुरूष)। पस पुरिन्नी नानर-श्रीप का एक राजा (परम ६ ६६)। बद्दु [पिति] इन्द्र (पठम ११७) मुर १ १)। शद्व भी [बच्च] देशी (महा)। सामि पू स्थामिम रिका (क्लि १४६६ दी)। संजाप [स्तेन] १ एक राजाना भाम (देश)। २ एक राज दुमार का नाम (शासा t ) । । छात्र नि [ीस्रय] स्वर्ग 'चविद्धशनचनवाए' (उन ७२×द्याः शुपा ३६) । विश्व क्ये ["विती] **१ देव-नवरी स्वर्ग-पूरी** (पाम) । २ मर्ट्य बोकनी एक नजरी राजा भौसेन की राजवानी (स्प १ ६ हो)। भगरंगजा की [बनग्रह्मना] क्रेरी (मा २७) । भगरिंद पूर्विभारेण्ड्री देवीं ना सना इन्द्र (মৰি)। क्रमारिस पुं[अप्रापे] १ मध्येष्ट्रपूरना (३) २ १ ४) । २ कसाबहू (उत्त १४) । ३ असेव पुस्ता (पश्चा६ १ पान्न)। अमरिसय न [अमर्थन] १—३ उपर केलो । ४ वि सम्रहिष्युः क्लेबी (महाह १४) ।

१ सम्बद्धाः सम्प्रशीतः (सनः ११३) ।

(दम १६६)।

अमरिसव वि [अमसूच] ज्यमी ज्योची

क्रमुगस्य वि [अमुत्र] प्रशुक्त स्वान में (सुपा ¶ २) ı ध्यमुण कि [आक्र] धवल पूर्व (**१६**१)। अमुणिय वि [अञ्चात] मविदित (पुर ४ ₹)1 अमुजिय वि [अञ्चान] मुर्चे, प्रवान (पण्ड् १ २)। अमुत्त वि [अमुक्त] प्रपट्मिक (हा १)। अमुत्त नि [अमृत्ते] स्परीहत निपकार (मुर १४ १६)। धमुद्रसा रेत [समुद्रम् ] १ मदीनियम अमुयरग | निष्याकान विशेष बेस चेनतामी के पुरुषपरिहत राधेर को देखकर बोब का शाधिर पूर्वाम से निर्मित नहीं है ऐसा निर्जेय (ठा ७)। अमुल वि[असूच] सवा सव्य 'प्रमुख वरे' (पूज १ १ १२)। अमुसाक्षे [अमृग] यत्पथचन (पूप १ १)। याद्र वि [धाविम्] सध्यवाधी (कुमा) । अमुद्द् वि [अमुक्त] विवत्तर (वव ६)। अमुद्दि वि [अमुक्तरिम्] धवाचान भित मापी (अव १)। खराष्ट्र के (डास्ट्र) समूच विचन्नए (खाया **१ है)। আমণ ["রান]** ভরে-রাণ (मायम)। (देट्टि स्मी [ दृष्टि ] १ सम्बन्धर्मन (पन ६)। २ समिनसित दुवि (उत्त २)। १ वि भविषक्ति इष्टि बाला सम्बन्धि (मण्ड १)। स्रमुस वि [समृप] संस्वारी (हुमा) । ब्रमञ्ज रेडी व्यक्तिज्ञ (मन ११ ११) । **समेरमः देवो अ**सिक्मः (मङ्गा) । अमारुक वि [अमुरुय] निसकी कौनत न हो क्षके बहु, बहुमुस्य (गतव गुपा ११६) । अमासकि न [पे अमुराछि] परनावि निरी क्या ना एक प्रकार (बीन २६६)। अमोसा देवो अमुसा (दुवा) । शमीइ दि [अमीघ] १ वनस्य, सकत (मुपा वर १७१) । र पुं भूवे के प्रत्य धीर प्रस्त के समय किएकों के विकार से होने बाबी रेका विशेष (भग १,६)। एक यक्त का नाव (विपारे४)। इस्ति वि<sup>‡</sup>

["वर्शिम्] १ ठीफ-ठीफ वेक्नेपासा (स्व ६)। २ व उदान-विशेष । ६ पूँ सप्त-विशेष (विपार १)। प्रहारि वि [ विष्रहारिन्] सबूक प्रहार करनेवासा निशानवाज (महा)। यह पूरियो इस भाग का एक प्रविक (महा)। असाह पु [असोह] १ मोह का भनाव सत्य धह (विदे)। २ दक्क पर्वेत का एक शिकार (ठा =)। १ वि मोहरहित निर्मोह (मुपा u4) ( क्सोह पुॅिस्सोघ े १ भूपं-विस्त्र के नीचे क्यी-क्यी केंस्ती स्थाप मादि वर्णुवासी रखा (बालु १२१) : २ तुन, एक देवदिमान (क्षेत्रक्ष १४४) । क्रमोद्दल प [असोद्दन] १ मोहका समाव (बन १)। २ वि शुष्ट नहीं करनेनासा (भप)। अमोद्दा की [अमोधा] १ एक बर्ध्वक्र विसके नाम से यह अम्बूडीन कहताता है (भीव १)। २ एक पुष्करिएरी (बीब)। स्रम्म देखी भीव = प्राप्त (उर १ १)। अम्मएव पुं \[आश्रव] एक केन धानामें (पण २७६ मा६ १)। अम्मगा क्यो अम्भग (उगः)। सम्मच्या वि दि । सर्वेषद्धः ( पदः ) । अस्मत्र देवी अंबद्ध (ग्रीप) । \* \*5\*) I व्यम्मणुअवियन [दे] बनुतमन बनुमरण (g 6 A5)1 अम्मवाई देवो अंदवाई (विश १ ६) । अस्मया की जिस्ता १ माता कारी (बदा)। २ पोचर्वे कामुदेव की माताका नाम (सम ११२)। खन्महे (शी) प. हर्प-पुषक चन्नव हि ४ RCY) I भारमां की [दे अस्त्रा] भाता मी (दे १ श)। । पश, पेष पियर, वीश्रृत [पितृ] मी-बार माता-रिता (वव ६) कृपः मुर इत्हे हा है शामुर है,बह ७ १७ )। पेइय वि [पेश्वह] मः वात-संबन्धी (जप ₹ ७)।

धनमाइआ की दि प्रमुप्तरण करने वासी **धौ** प<del>ौद्ये-</del>पीछे जानेकासी की (दे १२२)। अन्मो म ि ? ै श मार्चा-पुषक धम्यम (देर २ ० स्थण २६)। २ माता का संबोदन हे मी (उदा कूमा)। क्षम्मोगद्रया भी दि] स्पृत-गमन स्वागत करन के सिए सामन जाना 'रामा सबमेव मम्मोनस्याप् निगमो' (मुझ २ १६)। अम्मोम वि [अमप्य] मन्नम्य समा के मबोग्म (सुपा ४८७) । अम्हर्स [अस्मत्]हम निव चुर (हे २ ११ १४२)। कर, धोर, धाम वि िश्य] मस्मदीय हुमारा (हे २ दशः मुपा 884) I अम्बन्त वि दि प्रमुट प्रमानित ( पश् )। अमहार १ (४५) वि [अस्मदाय] हमारा सम्होरय ∫ (पर् कुमी)। धन्हारिष्य वि [अन्साटक] हमारे वैद्या (प्रामा)। धन्हारिस वि [अस्मादश] हमारे वैशा ( हे १ १४२ पर)। अन्द्रबय नि [अस्माक] धरमधैय हमाध (क्रमा है २ १४)। भन्दी म [बाही] अध्ययं-पूजक सम्मय अस्मडी (मर) की [क्षम्बा] माता म (हे | अस पूर्विमा] १ पहाद पर्वतः २ स्रीप सप । ३ सूर्य सूरव (भा २३) । अय दू [अज] १ छाच वकरा (दिया १ ४)। २ पूर्वमञ्जाद सप्तान का समिद्यायक देव (ठा २,६)।६ मक्तादेश । ४ किएता । ५ राम चन्द्र। ६ वहााः ६ कामरेव (मा २३) । ≈ महाप्रद्व-निरोप (ठा १)। १ बीबोरराइफ शब्दि से पहित कल्य (पत्रव ११ २४)। करक र्रे ["करक] एक महाप्रद्र का नाम (ञर ३)। शास पुं["पाञ्ज] मामीर (भा ₹₹) ( अस्य पुं [अप] १ गमन मोते (विमे २७६६ मा १६)। २ साम प्राप्ति । ६ धनुमद (क्सि)। ४ व पूर्ण्य (ठा १)। ५ मारम्, नद्योव (भा ५३)।

स्रव व [श्रह] १ दुःच। २ पात्र (या २३)।

अकार पू [अजगर] धननर, मोटा संप

क्षयह पुंदि अपटी पूप प्रमा (दे१ १०)।

व्ययण म [अडन] मत्रत होना निएन्टर

अयवान [अयन] १ मनन । २ प्राप्ति साम

(बिसे ६)। ६ कान निर्ह्म (विने ८६)।

(पर्या १ १ परम ६३ १४)।

होना (विमे १४७०)।

का भावनविदेय (बिया १ ६) । बहुय पु [काहक] तोई ना दुरुस तीई ना योता: वोड्र सम्बोद्रमा व्य बहु" (७वा) । गासम **४ शिव्यक**ी सोहे ना नोता (भा १९)। इटवी की देशी ने नेदेशी नवसी माकर दून जिल्ल रास करी भारि हिसामा बहा **है**(दे२ ७)। पायन ["पाञ्ज] नोहेना भारत । सद्यमा को ["ब्रष्टाता] नोह की सत्तर (का २११ की) । अवनक[अय्] १ श्यन शला जला। २ प्राप्त करना । ६ जानना । बङ्क अवसाण (तम ६६)। धर-छ सक [इटप्] १ नीचना। २ जोसना वाग करनाः ३ नेना करनाः सर्वेद्यद् (है Y (co) 1 अमेद्विर रि | कर्षित् ] क्यंलकीम जीवने-बाना (दुमा) । अर्थेड र् अमराण्डी १ अनुचिन समय (महा)। २ धरमान्, हदान् (पदन १ १६४) में ४४ पड़")। ३ हिनि यनसस्ति धर्जरन (शम)।

अर्थन वर [आयन् ] याज हुया प्रवेश

अर्थानत्र वि [अयम्बन] बनाररलीय (बन

अर्थापर रि अक्रम्पन् नही बोतनेगाना

बण्ना हमा (माध्य)।

मौनी (पि १६६ १६६)।

स्टिन का निरामी (इस) ।

बराजनव करतेराना (बाबा) ।

**4 44)**1

रिप्य (भग 2)1

4 )1

छप न [अयस्] नोहानोह (भोव ६२)।

भागर पुं [भारूर] १ सीर्दे की कान

(निषु ५) । २ तीई का शास्त्राना (श ६)।

इंट करांत पू [कास्त] नोइ-पुम्बक

(धारम)। "कविस्त ५ (दं कविस्त)

नराइ (बीप) । इंडी श्री [डुण्डी] सीहे

४ बृह् मन्दिर, 'वीप्रेयायरी' (स ४३%) । १ वि मातक प्राप्त करनेवाका (विशे ८६)। ६ ९०० वर्षका सावा मात्, जिसमें सूर्य इद्धिल में उत्तर में या उत्तर से इदिल में भाग 🕽 (छा२ ४) 'एडे भ्रमणे दिश्का और रमणीमी होति दीवामो । विद्यापतो घरमो इत्व दुवे व्यव बद्धति' (मा द४६)। ध्यण व [अदन] १ भक्तकाः २ ग्रुपक मीमन (स १३ ३ उर ८ ७)। अयथु वि [अक् ] धवल, पूर्व (पुर ३ 144) 1 अवशु नि [अवतु] स्तून बोटा मक्षत् (ਚਹ)। थयतींबज रि [बे] पुर, काबित (दे १ भगर वि [भवर] बुद्धारमाधीत चगधनर बार्ग (पति वर)। अयर पूर्व [अंतर] १ सायद, समूत्र (ई २ )। १ नमम का मान-विरोध सावरोपम (संगरर २४१ मराप्रा)। वृक्ति करने के घरात्व (बृह् १) । ४ धनमधै धरान्ड (तिब् १) । प्रत्नात वीवार (इह १) । अर्थपुन 🐧 [अर्थपुन] बीरतास्य का एक अवरामर रि [अजरामर] १ करा चौर मरण में ग्रित (सर ६)। हे न. बुनि जीत अर्दम र् [धारः] स्तंत नोष । सुद्द रू (परम 4 (१७)<sub>1</sub> [सुरा] १ दन मान वा तक द्वीरा । २ द्वीर-क्षयख्य देनी अवश्च≖ सवन (शाम नद्राः बरहर र में १ पत्र १४ लग अर्थमीय रि [इर्सिय] स्तुक वार्वका क्षा समार्थ)। अवसा देना अवसः (नाज १२ क्षप्रदरप ने [अयहरकी पर नहारत (गुज अवग देगी अजम (यउक प्रानु २६

१६६३ वा र⊎्) ।

अवसि वि जियसस्विम् ] धवनी यरो-चील कीर्ति सुन्य (पन्ड) । ब्रयसि ] की [भवमा] बान्व-विरोप प्रतती ब्रयसी ] वीसी (क्या ठा ७ राग्या १ १)। भया भी [काशा] १ वकरी। २ माया, यशिया। १ मझ्ये कुरुष्य (हे ६ ६२) यह्)। किवाणिजार्द् िकृपाणीय<sup>‡</sup> व्याप-विशेषा वैधे बकरी के क्षेत्र पर अनवारी क्रुपे पक्टी है एस माफिक धनवारा निती नामें का होना (माचा): पास पू ["पास्त्र] मानीर, बकरी वरानेवामा (स २६ )। विम पु विज्ञो वक्षे का बाहा (अस १८,३)। अयागर रेगे अय जागर (ठा ४)। अयाण न [अद्यान] बान ना समाद (सह 44) ( अयाज वि श्रिद्ध अञ्चानी भवात भवाती मुर्खे (मोन ७४- पडम २२ - ६३) ना १७% रेष ७३)। अयागम नि [अञ्चायक] उसर देवो (नावा मिंग)। स्यार्गत केवो स्थापित (बीप ११)। अयाणमाण रेषी अज्ञाजमाण (तत्र १८)। अयाणिय देवो अञ्चालिय (उप ७२० दी)। अबाधुय देनो अज्ञाजुय (बुर १ ११४ भुग 141)1 अवार पुंजिरारी चं शहर (विमे ४७४) । अयाह पं[अञ्चल] धर्माण्य समय समुचित नाल (नजभ २२ १)। अवासि वृं [रे] पुरिन, मेवान्यदा रिश्व (रे **१ (१)** ( अवस्थिय रि [अक्सब्रिक] यात्रियत यकागकीत्पमः पश्च वहत्व प्यस्त हत्वतके पयानिया विश्व् (रंमा)। अस्य देशो अङ्ग = समि (दे २,२१७)। अधुजरवर हो हि । प्रविद-दुवति नगैरा, दुमस्मि ( पष्ट् )। अबोमय भेगा अओ-मय (बंद १६) । अय्याशन (सौ) 🛊 [आर्योदर्न] भारत रिन्दुन्वान (दुवा) ।

अय्युज (वा) रेनी श्रञ्जन (द्दे ४ ११२) ।

अर्द्र[धर] १ पूर्व पहिने के बीचरा

रख । २ वटाएट्स जिनदेव और सलगी

चक्रवर्ती राजा 'मुमिले घर' महर्रिह पासद वरणणी भरो समहा (मान २) सम ४३ छत १८)। ३ समय का एक परिमाण कासवड का बारहवाँ हिस्सा। (दी २१)। अर **र**िं€री १ किरख । मा १४३ से १ १७)।२ इस्त इत्य (ते१ २८)। १ शुक्त चूंगी (से १ २८)। शरक्**या (अर्रात**] मर्ग मता (माना २ 23 2) 1 अरह की [अरवि] १ वेबेनी । (मग कावा उत्तर)। समान समेम्] पर्रत का हुनुष् क्यींकरेय (ठा १) । परिसद्द, परीसद्द प्र [परिपद परायह] मर्चत को ग्रहन करना (पंच ८) । सोइणिका न साइ नीय । पर्यंत का स्ताहक कर्म-क्रिप (कम्म १)। रद्रकी (रिति] मुख-पुच्च (ठा१)। िक्सर्ग देखो सुर्रग (से ३ २१)। आरंबर प्र मिरझरी नदा बन पर (ठा \* \*) t <sup>\*</sup>अरक्टादेवी परक्स (छ १ ४४)। अरफ्सरी की [अराक्री] नगरी-क्रिय (भाक) । अस्य देवो कर (पराह २ ४ मन ३ १)। अर्रावम्हय वि [अर्राष्ट्रित] निरन्त ग्सवद **'मर्स्टरमम्बर्गितावा' (सूम १ ५ १)**। आरब्र् पू [अरद्व] क्रम्भिरेय (बर १ ६१ दो) । व्यरण न (अरण) दिशा (स्व)। अर्चाज र् [अर्गाज] १ क्य-विशेष । २ ४म बुख की शक्ती जिसको विसने पर अपि बस्पी पैदा होटी है (प्राप्ता ग्रामा १ १८)। श्चर्यण पूंची वि] १ सन्ता मार्ग। २ पण्डि कतारा (पड्)। खरणिया श्री [अरणिश्र] वनस्पति-विदेप (घाचा)। अरणेट्स ५ वि धरणेटको एकरों के हुक्यों से मिनी हुई स्तेद मिट्टी (वी व)। अरण्य वि [आरण्य] जेवल में शक्ते वाला (सुमार १११६)। -टररण्य न [कारण्य] वन, बंदल (६१ ६६)। वश्चिमान [पन्तसः] देवविभान

मिरोप (सम १६)। साण पू ["भन्] बंगनी कुता (गुमा) । अरण्यप वि [आरण्यक] बंगनी बंगन-बासी (यमि ५२)। भएत वि [अरक] एन-पी्ल, नीएव (माना)। अरम रेको अरण्य (कपा एक) । अरधाग पूं दि ] एक मनार्थ देश भरव देश (पन २७४)। अरमंदिया की [अरमन्दिका] परमण्दा कार्यं में बत्तरपट्टा (उदा) । अर्य देवो अर (सत्त १ ८)। खर्च वि [भरजस ] १ रजेपुल-र्यहर (परम ६ १४६)। २ एक महायह का नाम (ठा २, १)। ३ वि वृपीरहित निर्मेत (कप्त)। ४ म्, पांचर्ने देव चोक का एक प्रतर (ठा ६) । १ रजोपुस का समाव 'सरो व सर्ग पत्तो पत्तो गहमणुत्तरं' (इत १०) । धर्य वि धरव ] पनामक निःस्पृह् (धावा)। **अत्य पूर्व [ अरजस् ] एक वेववि**मान (स्मेन्द्र १४१) । अरया भी [अरजा] कुमुर नामक विजय भी राजपानी (बं ४)। ध्वरयणि पूँ [मररिन] परिमाण मिरोप, चुनी धंद्रशीवाला हाथ (ठा ४ ४) । खरर न जिस्से १ प्रकार दक्ताः इसी की [कुरी] नवरी-विरोप (बम्म १ टी)। अररि पुन [अररि] किमाइ, हार (प्रामा) । अस्ड न दि र भोधे श्रीर-विशेष। २ मरान्द्र, मण्डाक (वे १ ५६) । भरस्यमा भी दि ] भी गीट-विशेष (दे १ ₹() 1 अरलु रेको अरब् (परम ४२ a) । कारविंद् न [बारविम्यू] कमन पद्म (प्राप्त ₹ ¥) I बारविंदर वि वि] वीर्व. सम्बा (दे १ ४४) । भरस १ [जरम] स्वर्धीत भीरस (गावा १ ६)। बारस पू [ अर्रास् ] न्यावि-विशेष ववासीर (मा२२)।

व्यरस न [अरस] दन-विरोध निविद्वति दर (संबोध १८)। अरह वि [ अहम् ] १ पूजा के मोग्य, पूज्य (पद् हेर,१११) । २ पू जिनका वीर्धर (सम्म ६७)। "मिश्व दे ["मित्र] एक व्यक्ताचे का नाम (कन्छ २)। असः देको अस्ति ≃ महं। मरहा (प्राह २६)। अराहि । अराहस | १ प्रकट । २ जिससे पूष मो न दिशा हो । ६ पूंतिनदेव सर्वज (হা**४ १ १)**। अरह वि [अरथ] परियहरहित (भप)। अर्धतक [अर्थन] १ पूना के बोग्य पुरुष (यह द्वेर १११ भग = ५)। २ पूँ जिल मगवान, शीर्वकरदेव (बाका ठा \* v) i अर्ध्त वि [अर्धान्तर् ] १ सर्वेत्र सव कुछ वामनेवासा। २ पुँ विन मयदाम् (मव २ १)। अर्थात कि [अरथान्त] किस्सूह निर्मम। २ 🖠 जिनदेव (सत्)। अरहत पट [अरह्मत् ] १ सभी स्वमाप को नहीं छोड़नेनाला। २ पूर्विनेश्वर देव (मय)। अरहरू पू [अरमरू] घरहर, खुद, पानी का चरका पानी निकासने का शन्त्र विश्वेष (गा ४९ प्रामु ११)। भिममो कल्लमगांत धर हरूविन्द्र जनमन्ते (बीवा १) । अरहट्टिय वि [अरपहिक] चयहट वजले नाना (भूप ६३)। अरहणा को [अईंपा] १ पूजा । २ मेरक्ता (मक्तरू २८)। अरहण्यम पुं [अरहमक] एक ध्यापारी का नाम (सामा १ ६)। करहरू पूर् [आईस] एक बेन मुनि का नाम (मुख २ ६)। भराइ पुं [अरावि] च्यु, दुरमन (हुमा) । अराइ की [अराजि] दिन दिवस (हुमा)। अस्ति वि [अस्तिम्] सप्तिस्य बीवस्य (पर्वम ११७ ४१)। सरि देशों सरं (तुर ; १२ थे)। भरि पु [मरि] दुरमत रिपु (पडम ७३,११)। क्षण्यमा पु [ पद्दर्श ] चः मान्तरिक

राषु — काम क्रोब कीस मोह, सद भारतस्रौ (सुध ११४)। दसल वि[\*दसन] १ एपु निना राज । २ पू इश्वाल वंश के एक राजा का

नाम (पडम १ ७)। ३ एक वैन मुनि जो भन वाल भवितलाव के पूर्यक्रम के हुक वे (प्रक्रम २ ७)। व्मणी की विमनी विद्या विदेव (पटम ७ १४१) । विद्वंसी की [विश्वं [सनी] रिप का नात करनंबाली एक किया

(पटम ७ १४ )। ६तास र्रु [सत्रास] रावसम्बर्गे उत्पन्न समूत्र सम्बर्भ राजा (फ्टम ४ २६४)। इति कि ["इत्त्वु] १ रिपु-विकारकः । २ पुँ विकरेन (बादम) । व्यरिक्रस्थि पुंची [दे] ब्याह, हेर (दे १ २४) ।

करिक्य पुं [करिक्कय] १ भनवान् ऋवमनेत काएक पुत्र। २ भ. ननर-विरेव (पद्मार्थ १ ८ इक पुर १ १ १) ।

धरिष्ट र् [अधिष्ठ] १ इक-विरेव (पर्यप्त १) । २ पन छात्रें सी पैकर का एक कछ बर (सम ११२)। १ पून एक देवनिमान (देवेन्द्र १११) । ४ म. बोल-विरोप को मार्कस्य गीज की शल्बा है (ठा ७)। ३ एक की एक बादि (क्ता १४ ४° गुमा १)। १ फ<del>त-विधे</del>प फैस (फ्राइट कत ३४ ४)। ७ मिट्ट-मूचक अप्पाद (धानु)। श्रीमे "तैमि पू िनीसि] वर्तमान काम के वाईसर्वे विश्लेष

(सगरेक और ३० क्या पक्षि)। भरिष्ठा 🛍 [स्रिरिष्टा] क्ष्म्ब शासक विषय भी राजवाली (ठा२ व)। भरित्र न [भरित्र] पतनार, कब्हर, नाम औ पीक्षे का बाढ़ विश्वते नाव शा<del>हिनै वादै दुमानी</del> वानी है (वर्गीव १३२)। व्यक्तियो म [व्यक्तियो] पलपुरक सन्यय

(**१** २ २१७)।

मरिस रेवो घरस (सामा १ १९)। अरिसम्बर्<sub> ।</sub> वि [ अर्दोस्तत् ] कासीर भरितिस्य । येपनाना (शब्द दिया । ७)। भरिष्ट् वि [भार्षः] १ योग्य वायन्त्रः (नुपा २६६ ब्राज) । २ द्वी विनयेन (यीप) । करिंद्र तक [शर्बर्ट] १ कोप्य द्वीता। २ पूजा के भोग्य होता। ३ पूजा करता। प्रसिद्ध (महा)। घरिष्टेति (मन)।

भविद् देवो असद्-महेर (दे२ १११ः | पर्)ः दच दिण्य दुदिच] वैन मुनि-विशेष का नाम (कप्प) ।

व्यक्तिया देनी अवस्था (प्राह २८)। अस्ति व देशो अस्त्रेत = मर्बत् (हे २ १११)

पर्: समार १)। चेद्यन विस्यी १ विन-मन्दिर (उवा ग्रापु)। सासण न [शासन] १ वैन सामग-प्रमा । २ विन-म्ब्रज्ञाः (पर्सा२ ४) । अक्देको तक्(से २ ११, १, ६५)। बरु ति [ धरुज् ] रोक्-रिह (हंदु ४६) ।

वन देशो घरूष (१९ ४६) । अस्सान [दे अस्क] इसा वाना'श्रस्त्र' म्प इलर (बर १)।

अस्तुद् वि [अस्तुद्] १ म<del>र्ग वेद</del>रु । २ मर्ग-स्पर्तीः 'इत तक्ष्णुस्नावाकारोहि विकि मरसावि (सम्मद्य १३)। बरम पृश्चिसमा १ मूर्ग पूरव (से व

६)। २ सूर्यका सारवी । ६ दोमारान सन्याकी काली (तेद ७)। ४ द्वीप-विशेष । १ समुद्र-विकेष 'क्युण होद सदलो परएगे दीनो तथी उच्छी (शीव)। ६ एक य<del>हरैन</del>ताका नाम (ठा२ ६:पत्र )। ७ क्यांक्ठी-पश्च का ध्रविद्वांता केन (हार ३ पन ६१)। ४ केन-विशेष (संक्रि)। १. एक एए, सल्ती। (मुख्य)। रै न⊾ विमाल-विशोग (सम र¥)। ११ वि एक सम्ब (वडड)। कृत स "मरु देवनियान-विरोध (छपा)। [कीस] व [कीस्र] केविमान-विशेष (क्या) । रमा की [ग**ड़ा**] महासकर

केश की एक नदी (ती२४)। शक्त ["गम] देवदिमात-विकेष (ज्ञा) । *वस्तू*य र [भाव ] एक देरतियाल का नाम (•गोँ)। प्यम <sup>\*</sup>प्यकृत [\*शम] स्त

नामकाएक देवदियान (इना)। सद र्षुं ["भन्न] एक देवता का नाम (मुख १६)। मृष न [\*मृत] एक केन्निगत (च्ना)।

महासर प्रमिद्यामत केन निरोप (दुन ११)। सद्यावर ई [मद्यावर] १ क्षीक नितेन । २ क्मूड-विशेष (१४) । वर्डिसन न ["क्तंसक] एक क्लिमान (क्ला)।

बर वृं [बर] रे बीस-विशेष । २ समूत विदेव (मुख ११)। बरोमास ई ["बरावमास] १ शीप-विशेष । २ सपुर विरेष (मुक्र ११)। सिद्र न ["शिष्ठ]

एक देवनिमान (क्या)। सिन ["स] देवविमा<del>त वि</del>धेप (उदा) । अस्य न [दे] कमम प्रतम (दे१ ८)। अरुग पुन [अरुज] १ एक दव-विमान । (स्थेतः १६१)। एम दु ["प्रम] १ भ्युवेतत्वर नामक नामध्य का एक धानास पर्वतः। २ इस्त पर्वतः का निकासी देवः।

(क्ष ४२ पत्र २२६) । सि पुं[ीस] इप्ल पुरुषम-विशेष (गुज २ )। अरुपिम पुँचै [अरुणिमन्] नामी रकता 'पारिएपद्वनाद्मशिमरमशीमें' (मुना १व) । अरुजिय नि [अरुजित] एक भाव (यन्त्र)। भरमुचरवर्डिसग न [भरमोत्तरावर्तसक] इस नाम का एक देनविमान (सम १४)। भरुयोव् र्रु [भरुगोर्] समुत्र-विकेप (मुज

(1) अस्त्रोदय पु [अस्पोदक] समुद्र-विशेष (वन) : अरुगोववाच पुं [अरुगापपात] प्रन्य-विशेष गामा (संदि)। अस्य वि[अस्य ] वतः नावः (सूधः १

1 1): सदय नि [स**रम्**] निरोधी रोगर्रहत (सम १। व्यक्ति २१)। अस्ट्र देवो सरह=µर्युत् (दे २१११ पर् (चीर)।

बस्द्र वि[अस्त्र] १ कमसीतः । १ ई हुक धारुमा(पत्र २७३ नद**१**)। ६ जिल-वेन (पस्य १, १२२)।

वस्त्र देवो अस्ति = सर््। यद्यपि (सर्व रे∀)। **वड- अस्त्**माण (क्क्)। भरुद्ध वि [**भर्**] पोग्य (कत्तर वर)।

भर्म्त केवो भरम्त = वर्मत (दे२ १११) पक्)।

भस्दत पि [क्योदत् ] १ महीं क्ला हमा कम मही तेता हमा (यथ ११)। भारत नि [बाहरा] क्नाचील समूक्ती (HEH #5. 44)1

हालवि वि [बाहरपिज] आर केंद्रों (ठा व इ सावा पएए १)। अर स [अरे] १-२ संमापण सीर एंडि-क्ष्मह का सुक्त सम्मय (६ २२ १ वर् )। अर स [बारे] इन समों का मुक्त सम्मय— १ साकेग १ विस्ताव सावको । १ विद्यान ठठा (विशि वेट ४०)। करोज यक [बार्+कस्] जन्मान पाना, विकास का विस्ता करेंद्र १ २ २। दूर्मा)। करोज अर्थ [अराजक] रोन-विरोग सम की सर्वि (चा २२)।

७)।
अधोग दि अरोग चेतर्पात (आ देत है)। या की विद्या आयोग में प्रकार है।।
अपोग दि अरोगर्ग भीपण पेन-सीहा।
आयोग दि अरोग्य जो पायोग्य, देवस्की (सहा)।
अयोगा देवा पायोग्य, देवस्की (सहा)।
अयोगा देवा पायोग्य अरोग्य १११२ ।।
अरोग्य १११२।।
अरोग्य १११२।।
अरोग्य १११२।

क्षरोइ वि [ कार्याचिन् ] घटीच वाला धीव

रहित 'घरोप माचे कहिए जिलाको' (बीय

स्तेष्य बार्ति (पण्ड १ १) । सम्बन्धः न [स्टब्स्] १ विष्ण्यः क पुष्णदः का स्वयं स्थापः 'सासमाव विष्णुद्धाराते गुरुदेगः स्तरीत्रों तह्यं मंत्रस्य । स्तिह सिर्व विष्णुद्धारते । स्त्रोह सम्बन्धाः सम्बन्धारा सम्बन्धारा

सन्धे सन्बस्म मय-वर्ण्यं (प्रापृ१९)। २ स्तादेशी वा एक सिद्दासन (रागा २)। ६ वि समर्थ (माषा)। पद्दन [पद्द]

विष्णु की पूँच केंग्रे साकारवाला एक राज (विचार ६)। उन्ने केंग्रेत तक (चा कर, ते १ कर)। उन्ने कार्युमा १ वर्षात पूर्वी करमा स्पंत कर्मा १ वर्षात पूर्वी करमा विकास विकास १ वर्षा १ वर्षा १ वर्षात पूर्वी उपलब्ध स्वास्त्र स्वास्त्र पूर्वा (पूर्वी १ २)।

अर्डेंडर सक [बार्ड + क्य] भूपित करना विस्वतिक करता। सर्तकरीति (पि ११)। बङ्क अर्जमर्दत (माम १४३)। संक्र अर्ज करिक्र (पि १०१)। प्रयो-, कर्म सलंकरा-बीयउ (स ६४)। अलंकरण न [असङ्करण] १ मानूपण धर्न कार (रक्षण ७४ मित्र)। २ वि शोमा कारक 'मजनस्मानोग्रस्य धर्मकर्राण गुबोर्घाण' (R# (Y) 1 असंहरिय वि [असंहत] मुखेमित विमृतित क्षि नगरमस्वरियं जन्ममङ्ग्तं वर्ग महापुरिय। (नुपा ५६४ मुर ४ ११६)। कार्यकार पू [असङ्कार] १ राज्य-विशेष साक्षिपसाच (सिरि ११३ सिक्डा२)। २ पून एक देवविमान (देवेन्द्र १३४)। अध्यार पूं [असंधार] १ भूपण पहना (ग्रीप' राम)। र भूपा, श्रोमा (ठा ४ ४)। सद्दा की "समा] मूपा-गृह, श्रृङ्गार-वर (EF) 1 अर्थकारिय पू [अर्थकारिक] नापित नाई, हवाम (ए।याँ १ ११) । कम्म न [कर्मम्] हवायतः श्रीर कर्म (ए। सा १

का स्थान (एएसा रे रेरे)।
आवश्चित्र कि क्रिकेटन रे रिकृतिय गुरीतित (कण सद्या)। र न संतीत का एक
पुष्ठ (जीव रे)।
आवश्चित्र रेशो कार्यकर। सर्नपुष्ठति (एएए
१२)।
अवश्चित्र रेशो कार्यकर। सर्नपुष्ठति (एएए
१२)।
के स्वोग्य (गुरुरे ४१)। र उन्तर्यन

१६) । सहा की [समा] हवायत बनाने

करत के सरात्य (जर १६७ टी)। शर्स्सपिय ] वि [क्सकड्वारीय] उत्तर केयो श्रस्सपियोय ] (महा भूगा ६ १ वि १६१ नाट)। अस्तेय वृ [वि] दुष्टुट, दुर्गा (६ १ १३)।

स्रसंपुता की [अस्तन्तुपा] र एक रिक्तुपारी देशों का नाम। (दा =)। २ पुरुत-विरोध । (पाय)। कारोधि की [अस्तम] स्प्राप्ति (सीच २६) मा)। सरक्षक की [सरक्षक] नवरी-विरोध पहले

२ १)। देखो खख्या। शख्यम्य श्रृ [अख्या] १ दत माम का एक चया त्रिसने मामम्म महागीर के पाच वीचा सेकर मुक्ति पाई भी (भीट १०)। २ म. संवत्तास्या मुन के एक सम्मयन का माम । (भीट १०)।

प्रतिवासुरेव की राजवाती (पदम २

ध्वतारस्ता मुन के एक सम्प्रया का गांव । (धंत रू.)। काउकल कि [अव्हरूप] तरप में न प्रा पके ऐमा (मुर १ ११६) महा)। अञ्चलकामाण कि [अव्हरूमाण] को पहि काता न वा चरता हो प्रम (उप रू.११)। अञ्चलकामा कि [अव्हर्सिय] १ सज्जात सर्गापिक। (धं ११ ४४)। २ न पहचाना

असंक्रिया वि [अससिय] १ मजाउ सार्वियम । वि १३ ४४)। २ न पहचाना हुमा । (तुर ४१) । २ न पहचाना स्वया रेलो अस्य = मनक (म्या)। अस्या म वि] कर्तक रेला योग का मूरा साराम (दे ११)। अस्याम (दे ११)। अस्याम वि हिस्स विस्तुरी नगर-विरोध (तुमा)। अस्याम वि शिक्त विस्तुरी नगर-विरोध १ १।। साराम वि शिक्त विस्तुरी असर रेको (सा

अस्ट्रपरस्ट्र न [क्] वार्ष का परिवर्तन (दे १ ४२)। अस्तव वृं [अस्तव्यं] धानता कियाँ हान-पर को सात करने के नित्य जो रंग सवाती हैं वह (धनु १)। अस्तवाय वृं [अस्तव्यक] १ करर देवों। (पुत्र ४)। २ कि सावता में रंगा हुया (युत्र)। अस्त्रचीय देवों स्वस्त्रोय (वे ६ ४६)।

शब्धांत्रुख दि [क] मानती गुला (र १ ४९)। श्रातांत्रु दि [ब्राटमानु] १ समर्थ। २ निरोक्क निमास्त्र (ता ४ २)। श्रातास्त्र पुंचि दुर्गाल केन (र १ १४)। श्रातास्त्र पुंचि ] कमत केन (र १ १४)।

मदि)।

राषु-- काम कोच सीम मोज सद बारखर्ज 🛭 (गूम ११४)। दमण वि["इमन] १ ल्रि बिना राष्ट्र। २ वृं इस्बाहु वस के एन राजा ना नाम (पटम १ ७)। ३ एक बैन मुनि यो भग बाल भरितनाय के पूर्यभ के एक वे (प्रतम २ ७) । इसमी 🛍 ["इसनी] विद्या विटेव (परम ७ (४१)। विद्वर्मी औ [विद्रर [सनी] पुना नात रपनेव सी एक विद्या (परुम ७ १४)। स्वास र् [संद्रास] राम्रसः समें उत्पन्न सद्भानात्र राजा (पटम ४,२६४)। इति वि विहम्तु १ रिपु-विनासक। २ पूँ विनदेव (बावन)। श्चरित्रस्ति पूंची [दे] म्यात्र, शेर (दे १ २४) । श्रारियय पू [श्रारिक्षय] १ भगवान् ऋपन्तेत नाएक पून । २ म. नगर-किटेव (पटन ४ tereregen, ta)ı मरिट्र पुं [अध्यः] १ क्य-विदेव (पण्णः १) । २ पनएकं सीर्पकरका एक गराकर (दम ११२)। ३ पुन-एक देवविमान (देवन्द्र १६३) । ४ म. नीत-विरोध को माएण्य ग्रेव । नी राज्या है (ठा ७) । १ राज नी एक बार्डि (बत १४ ४ मुपा १)। ६ फन-विदेप पैठा (पएए १७) उत्त १४ ४) । ७ मन्टि-नुषक कपाछ (याचू)। विसि निम वू [निसि] वर्तमान काल के कामिने जिन्हों**व** (सम १७ मैत १ क्या पति)। अरिद्वाची [अरिद्वा] रच्च नामक विजय री धक्तमधी(श्र २ ३)। भरित्त न [मरित्र] फारार, कहर, नाद सी पीके का बाद, जिससे त्यव बाहिने-वाये दुमानी बार्गा है (बमेंदि १६२)। भरिक्ति व [मरिक्ति] पास्तुरङ प्रम्यय (हि. २, २१७) । व्यरिस देवो भरस (छावा १ ११)। भरिसस्य ) वि [कार्यसन् ] बनागीर व्यक्तिस्य । चेननावा (तमः निरा १ ०)। मरिह दि [काई] १ कोप्य, तायक (मुपा २६८, प्राप्त)। २ ड्रुं जिललेड (सीप)। मध्दि एक [बार्ट्] १ सोप्य होता। २ पूना के बोग्व होता। ३ पूजा करना। प्रस्तिक (या) । यधिकि (यन) ।

अधिद्देनी अध्यद्भाग् (हे२ १११) पर्)। इत्त "दिण्तर्द्र ["इत्त] दैन मुनि-विधेष का नाम (कप्प)। भिष्टि, प्रोची अध्या (प्राप्ट २०)। अस्ति हरो अस्त्रंत = भ्यंत (ह २ १११) पर् छावा १ १)। पद्य न [\*सस्य] रै विन-मन्दिर (उना भाषु)। सामण न [शासन]१ वन यागम-यन्य । २ दिव-मञा। (पएइ(२ ४)। मरु रेनो तरु (मे २, ११ १, ८५)। अर नि [धरम् ] चेन-ची्त (४९ ४६)। अर देवी अरुष (स्तु ४६) । अस्म न [दे अस्क] इस बाद धनी सहय हुलाई (बृह ३) : अरंतुद्द वि [अरुगुद्] १ मर्थवेदद । २ मर्म-एस्टी 'च तरंगुरवासारागोहि विधि यम्सावि' (सम्मत्तः १६८) । भरगर्ष[अरम] १ मूग मूरत (मे ३ ६) । र मूर्वं का मारवी । ३. संप्यासन सम्बादी नानी (से ⊏ ७)। ४ क्षीप-विशेष । र समुत्र-विशेष 'देवूल होर मन्लो, पस्लो दीवो उसी उस्हीं (दीव)। ६ एक दह-देवताना नाम (ठा**२,३** पत ७)। ७ एकावडी-पश्त का व्यव्हाता देव (ठा२ ३) पत्र ६६)। द देव-विदेष (एपि)। १ एक रंग समी। (बार्र)। १ न. विमान-विशेष (सम १४)। ११ वि रक्त सन्न (गतर)। कृत न [ বিদ্যা देवविमाल-विरोध (दवा) : िं की न**िं की ड**ी देवविमान-विरोध (क्या)। स्या की [शहा] महाराज्य केत नी एक नदी (तीर )। गयान [\*गव] वेववियान-विशेष (तवा) । वस्त्य र्गिक्क है एक देवविमान का काम (क्या)। प्यम प्याहत[अस] स्थ नाम का एक देवनिमान (तवा)। सद् पुं ["मत्र] एक देवता का नाम (मुझ १६)। भूष व [भूव] एक देवविसाल (द्वरा)। महामह दू [ महामत ] देन निरेत (गुन । ११)। महावर दृष्टिमहावर] १ हीए-क्तिव । २ बपुत्र-विशेष (इक) । बहिस्सय

बर पृंषिर] १ ग्रीन्थिये । २ समूर विरेप (तुत्र ११)। वरोमास **र्** [वरावभास] १ दीर-विरोध । २ तुरु विदेश (पुत्र १६)। सिट्टन [शिष्ठ] एक देवविमान (उस)। सिन [मि] देवविमान-विशेष (उवा) । अस्य न [दे] कमक पहल (दे१ ८) । अस्त्रापुत [अरुग] १ एक देव-दिमातः। (सेन्द्र १३१)। प्यम र् [प्रम] १ सनुषेत्रकर मानक मानग्रक का एक साराय-पर्वतः २ उम् पर्वतः कानिससी देवः। (हा४ २ पत्र २२६) । सिर्वृ[मि] इप्प पुरस्त-विधेष (गुज्र २)। वस्यिम पुत्री [अस्तिमन] शारी रकता, 'पारिएपस्त्रार्घाणमरमाणीय' (नुपा ४०) । अरुणिय वि [अरुभिन] एक, सान (बार)। भर्गुचरपहिमग न [भरणाचयवर्तमङ] इस नाम ना एक देवविमाल (सम. १४)। भरुमार् दूं [भरगार्] सनुत्र-विरोध (मुक 1 (35 **अ**रुवाइय पू [अन्याइक] स्पूर्र-विशेष (ম্ব) : भरमाबदाय हुँ [अरुमापपात] प्रवन्तिरेय का माम (स्प्रीक्)। अस्य वि [अस्य्] क्ला वाद (यूषा र 1 (F F अस्य वि [जन्मू] निरोगी, रोपर्रीहर (चन १३ मित्र २१) । अन्ह देनो अरह=µर्देष (हे २१११ पहः (मीर)। अस्ड वि[सन्ड] १ जलामीतः । २ द्रं द्रुक थालमा(प्रव २७१ मद ११)। **१** जिल-देव (प्रस्म १, १२)। मरुद्देशो असिद्≖र्ष्ट्। बरद्धि (सर्व १४)। वाः अस्त्रमाम (पर्)। भरद्भ हि जिही गोग्य (स्तर बर)। भरहर्त देवो अरहत = वर्षेत्र (हे २ १११ पक्)। अस्त्रत कि [अधोदन्] । नहां सना हुमा वन्त्र नहीं वैद्या हुमा (मंग ११)। भरव वि [शहप] साधीत सपूर्क न [मिर्तसक] एक देवनिताल (क्या)। (प्रमम ७४, २६)।

सम्बद्धि वि सिक्पिम् जिसर देखी (छ ९ व ध्याचा पर्सा १)। हारे म [झरे] १~२ संभाषण भौर एति-क्रमडकासूचक क्रम्पय (हे२२ १) पड)। सर् स (अर्) इत प्रयों का मूचक प्रस्य--

१ ब्राह्मेप । २ विस्मय बारवर्षे । १ परिकास बद्धा (पंक्षि १८ ४७)। भरोअ वह [ रत्+स्य ] स्प्नास पाना विकसित होना। घरोमाई (हे ४ २ २) कुमा)। सरोमज र् [अरोचक] रोम विरोप पत्र की

धर्म (भा २२)। खरोइ वि [ खरोचिन् ] धर्मच वाता स्वि रहित 'घरोइ घरने निहा निनानो' (यीम

w) 1 क्षरोग वि [कारोग] रायर्पक्त (मा १० १)। यां की [ता] मारोग्य, नीरोक्ता (उप ७२८ टी)।

बारोगि मि [बारोगिन्] मीचेग चेग-पीहर । या की ["ता ] घारोग्य, हंदुरस्ती (महा)। अरोगा ) देखो प्राचेय = घारोग्य (घाषा २ अरोप र्रार, २)। भरोस वि [अरोप] १ प्रस्ता-पीतः । २-१ वै एक स्पेत्रक देश और उसमें सहनेत्रानी

म्लेक्स वाति (पएह १ १)। अस्त विस्ति १ विल्क्षके पुल्लाका सम

'शतमेन विष्णुपाएं पुर्मेन महीरा ठाइ य मंदरसा ।

विद्वि-वियं विपुणार्थ

स्कं स्वास्य मस-भएउं (ब्रासु ११)। २ धनावेशी का एक धिवन्तन (ग्रामा २)। ३ वि समर्थ (साचा)। पट्टन पिट्टी

क्रिक्त की पुंच वैसे भारतरशासा एक राज (विपार ६)। **ैं बाल केशो तक (या ७**४ से १ ७०)।

**ब्रह्मच क्रिन्ड**म् ] १ पर्याप्त पूर्णे 'फलमा-लंदं कलातीए (सुर १३ २१)। २ प्रतिवेध निवारका बद्ध (इप २ ७)। असंब (अस्त्र] मनकार, मूपा (सूमति

२ २)।

**शसंकर** सक [अर्छ+कृ] मूपित करना विराजित करना। धर्मकरेति (पि ६ ६)। वह अर्थकरत (मान १४३)। संक्र अर्थ करिक्र (पि १८१)। प्रवी., कर्म क्रमंकरा

बीयर (स ६४)। **अर्लंकरण न [असक्टरण] १ मानूपण धर्न** कार (रयस्य ७४ मित्र)। २ वि शोमा कारक 'सक्त्रसमोधस्य धर्मकरीत् सुतोप्रीत्।' (विकरिप)।

असंस्रिय वि [असंस्त] मुख्येमित विमृपितः 'कि नगरमभौकरियं बम्ममङ्केषं तए महापुरिस। (सुना ५८४ सुर ४ ११८)।

शर्वाधार पू [अस्**टा**र] १ श<del>ास-विशे</del>प साक्रियनाक (सिरि ३३) सिनका २)। २ पूर्त एक देवविमान (देवेन्द्र १६५)।

अधकार पू [अधिकार] १ भूपख महना (भीप राय)। २ भूपा छोमा (ठा ४ ४)। सहा को ["समा] मूपा-गृह, श्राङ्गार-वर

(**इ**क) । कार्यकारिय पू [कार्यकारिक] नागित नाहि हकाम (एगमा १ ११)। कम्मा न [कर्मम्]हवायत सीर कर्म (ए।या १ १६)। सहा की सिमा हवामत बनाने

कास्वाम (खामा ११३)। अरुक्तिम वि [अर्जकृत] १ विमृतित गुरो-मित (कप्प मद्या)। २ न संगीतकाएक द्वरा(चीव ३)। असंकुण देवो असंकर । धर्मकुर्णति (रमण

X3); अद्भेष वि विख्यक्ष्यी १ अस्तेवन करने

के अमोग्य (सुर १ ४१)। २ उस्तीका करन के परस्य (स्य ११७ टी)। सबंधणिय ) वि [सब्बन्धिय] अपर केवी

असंघणीय (महा सुना ६ १ वि १६) 4P): ब्बर्सपर्पु [के] कुक्कुट, मुर्गा (के १ १६)। बर्धन्सा स्म [बर्धन्तुपा] १ एक रिस्तुमारी

देशी का गाम । (द्रा व) । २ ग्रुटम-विरोध । (पाम)। वर्सम की [अक्षाम] मजिस (भीव २३)

**भाग्रक्त की [भाग्रक्त]** मगरी-विरोध पहले <sup>†</sup>

प्रतिकास्प्रदेव की राजवानी (परम २ २१)। देवो अस्या।

शास्त्रकार्ष् [अञ्चल] १ इस नाम का एक राजा जिसने मगवान् महाबीर के पास बीका मेकर मुक्ति गाई भी (धैत १८)। २ न श्रेतपञ्चता' सुभ के एक सम्मयन का नाम । (भेतुर=)।

**अस्तरत कि [अदस्य] कस्**य में न मासके ऐसा (गुर १ १३६ महा)। अञ्चलमाय वि [अञ्चल्यमाण] चो पहि चाना न जा धकता हो ग्रुप्त (उप ४१३ टी)। **असम्बन्ध्य वि अस्तिहाती १ प्रकार** सर्याचित्रता(से १३ ४४)। २ न पक्ष्माना इष्या(प्र४′१४)।

अध्य देशो अख्य = प्रसद (महा) । **अध्या वेको अलगा (धंद १) ।** 

अख्यमान वि]कर्नकदेना दोपका मुठा मारोप (दे १ ११)। शक्षभपुर न [अचकपुर] शगर-विशेष

(दुमा) । **अक्टब वि [अक्टब] निर्मेन बेरा**रम (पराह ₹ **₹**) i

भक्रकिर वि [अल्लाला] उत्पर देशों (पा र । ४४मः ६६१ महा) ।

अस्ट्रपरस्क न दि पार्थ का परिवर्तन (दे१ ४८)। भस्त पूर्विस्को सहत, सिर्ध हार-

पैर को नान करने के निए औ रंग नवाती हैं पह (धनु १)।

अञ्चलय पूं (अञ्चलको १ जन**ः देवो** । (सुपा४ ६)। २ वि यालकासे रैपाह्या (मनु) ≀

थडधीय रेकी कसभाय (वे ६ ४६) : **अन्यांजुस वि वि । धलसी सुरत (देर** 84)1

जलर्मधुषि [आसमस्तु] १ सम्ब**ा**२ निपेषक निवासका (ठा४२)।

बाह्यमञ्जू [ब्] दुर्शन्त बेत (वे १ २४) । शस्त्रमस्त्रस**्**ष् [के] उत्पत्त केत (के १ २६)।

व्यक्रय न [व] निद्वय प्रवास (दे ११६ मवि)।

भाउन — सहस

(विपार ६)। २ केश, हैंकराने असा। (पाम स ६६)। अड़वा की [अज्ञात] हुनेर की नवरी (साथ लाया १ ४)। देशो अस्पन्न । अखब वि अखब मानी नहीं बोपनवाना (नूप२६)। अञ्चयतमह पू वि] भूगं बेन ( पत्र )। व्यक्तम वि [ब्रह्म] र भलनी पुन्त (प्रान् ७)। २ मन्द्र भीमा (पाम)। ३ पूँ भूक्र कीर किरोप मुन्ताब, वर्षाश्चनु में सप शरीचा काम रंग का भो सम्बायन्त्र इटाम होता है बाइ (जी ११) पुण्य २६१) । असम विदि] रमपुरमानावनाला चर भाग वक्तमंत्रले (पाध)। २ दुनुस्म रंव छे रंगाह्या। ६ व. मोम (दे१ ५२) । अग्रम रेको कन्नस (से १ ६३११ ४ ) ना 1 (375 अष्टमग रे पूँ [अञ्चलक] १ विमृष्टिया चैन असमय 🕽 (हर्षा)। २ ध्यष्टु, नुजने (बाबा)। । असमाइश्र वि [बस्सायित] विगते बल्ली नी तयह मानरान तिया हो। मन्द (ना १४२)। अस्माय बर्ज [ अस्ताय् ] बानते होतः मारमी नी तरह नाम करना। सन्तापद

अस्य पुलिस्की १ विच्युनाकोटा।

43

(रि ११)। यह असमार्थन अल्लसाय-माण (गेर४ र का दू देश पन्दर)। अन्यसी देवो अवसी (याचा यहा हे २, 22) ı क्षमा मे जिल्ली १०व नामनी एवं देवी (डा६)। २ इक ज्लाखी का नाम (सामा २)। वहिमा न ["बर्वसक] धनारेशी नामन्त्र (गुप्पा )। "अना देना कुमा (स ६६३)। अन्यत्र व [अलबु] कृती पत्र तीरी कृत्य (यीग प्राप्त १३१)।

भषा ६ १ साँ [ भराषु ] दुम्बी-नता अस्त्रपु 🕽 (दुर्में वर्)ो अध्यय व [अञ्चल] १ उभूतः जनता ह्या बाह (दे ११ क मोग २१मा)। १ महार, कीयता (हे ३ ३४) । व्ययक्ता थै [अस्प्रदुषीया] कैलार्नक्टेक

(बार १७)।

अस्मय रेखो अस्मर (वे १)। अस्मव देशे अस्मक (रि १४१ २ १)। क्ष**राह** र्द्र [अस्त्रस] मुक्सान नैरमामः 'वव हरमाणाण पूजो हाड मुलझो कमानलहो षा" (सुपा ४४६) । अस्त्रहि देशो साम्रे (जन ७२४ टी हे २ १०६) रामा १ १ गा १२७)। अस्ति पुंजिकि जनर (कुमा)। इस न [कुम] प्रमरीका सपूर (दे४ <sup>६</sup>६९)। पिरुष न [\*विरुत] भ्रमर ना प्रभारव (पाम)। असि पुंची [अदि ] पुणिक राधि (विचार ₹ **६**) i श्रातिश्रक्ती की दि<sub>.</sub> १ कस्तूरी । २ व्यात्र, शेर (वे १ ६६) । अधिआ भी [दे] सती (दे १ १६)। व्यक्तिआर न दिं गूर्न (दे१ २३)। अधिकर न [अधिकार] १ वहा कुम्म (ठा ४ २)। २ द्वापत-विशेष (दे१ ३७)। भक्तिज्ञरञ पू [अस्तिज्ञरक] १ वहा (स्वा)। रॅक्ने का दूरा रय-पाव (पाम) । अस्ति न [असिन्द्र] पात-विशेष एक प्रशास नाजनपात्र (योज 😽 ६)। अब्रिद्ध पूर्व [अव्यिक्त के है होर का प्रतीप्त (न ४०६)। २ भर के बाहर के दरवाजे ना भीकः। ६ बद्धरः नास्त्र मापः (बृहरः राज)ः अस्तिर्म पूर्व [शासिन्दक] वाल्य रकते वा पात्र-विकेश (बाल् १११) । मतिज दृद्धि वृधिक विच्या (दे १ ११)। अद्विणी भी [अद्विती] प्रवर्ध (दूस) ।

अखित्तन [अरित्र] मीराचेननं का उत्स चणु(बाचा२ ३१)। अख्य न [असिक] क्यान (पाप)। असिप न [असीफ] १ नुपाराष, बनुस्य बचन (पाम) । २ वि चूटा सी-११ भ्रतिम-पोरपानार --- (पाप) । ३ क्लिपन निरर्वह (परा t २) । बाइ नि ["बादिन] मुना-बारी (परम ११ २०) नहा) । अदिस्स तक [फ्यम् ] बद्दना बोजनाः धनिहर (निन) । श्रक्तिस्टर् म [वे] १ एत्य विदेश ना मान।

२ वि सवरोजक नियमस्टिन (निय)।

व्यक्तिस्या की [अक्तिस्या] इस नाम का एक क्षम (पिन)। असीग ) देवो अखिम = मतीक (पुर Y **छान्नेय }** १२३ सुपा ३ अमहा) । धकीवह को [अस्विभ् ] भ्रमणै (कुमा)। अधीसभ की पूँ कि शक्त नुस नामका देश (दे १ २७)। अञ्जूषिका वि [अरुश्चिन्] कोमस (मन ₹₹ ¥) I अक्षेसि वि[अक्षेदियम्] १ नैरयाणीतः। र पूर्विमुक्त भारमा (स्व ६ ४)। असोग पू [अस्त्रेक] श्रीव-पुरत साहि रहित स्पन्नारा (स्द)। अख्येणिय नि [सस्रविति ह] चुल्एरीहरा नगण-कृष भव प्रकोधियं छित्रं क्षेत्र क्रेड्रेड (महा)। अध्येय देशो अध्येग (सन १)। असोम 🐧 [अस्त्रेस] १ दोन ना समान र्धतोष । २ वि सोपर्दात र्धतीयी (भनः अस्रोत वि[अस्रोस] माम्पट निर्ताव (इत १ शि<**१**)। असह देवो असाम (दण) । यस्ड न [दे] बिन, विवस (दे १ १)।

भरसद 🖈 [भार्त्रकी] स्ता-विशेष पार्टक-नवा (पएए १७) । भस्त्रम देनो अरुप्रय = मार्डक (धर्म २) । अस्टर्थ सक [ दन् + द्विप् ] द्वेषा क्षेत्रा। म्ब्रापर (दे ४ १४४)। *भरू-*दरवन [प्] र जनातां ग्रीतार्पका। ६ केइर भूपण-किरोग (दे १ १४)। भस्अस्पिम वि [इरिक्स] जेवा पेंका हुमा

अस्य पर [नम्] नम्ता तीचे मुक्ता।

भस्य देवी सह (हे १ × )।

योगानति (वे ६ ४६)।

(१मा)। अस्थय न [भाइ क] यारी धराक (शी १)। तिय न ["प्रिक] मारी इस्ती भीर कहर (बी १)। व्यस्क्रय वि [वे] शीर्यंतन ज्ञान (६ १ ११)।

भस्डय दुं[शस्क्रक] इत नाम ना एक विकास केन दुनि चीर प्रमासार, वस्यीतन- १६ २३६)।

(मनि)।

X१) 1

सूरि का स्रवाध्याय-धवस्था का नाम (गुर

धारकरक पुंदि] ममूर, मोर (दे १ १३)।

अञ्चिषिय [अप] रेखो आस्तर = मानपित

क्षलिसः ) देशो अल्ब्सी। धक्तिर (पर्)।

अवस्थित ∫ महिमद (दे १४८ हे ४४४)।

वक् करिस्टर्जन (मे १२,७१ पतम १२

बारिसञ सक [ इप + सूप ] समीप में

अल्लाकी वि] माठा माँ (वे १ ४) ।

बाता। महितपद (३४१३१)। नद्व अस्टि र्लंत (मूना) । प्रमी, मिक्कमावेद (पि ४०२ ≭द्र)। सस्जिल दि [बार्ज़ित] गीमा किया हुमा (m vv ): अस्टियायज्ञ न [आक्षायन] मानीन करना **चिन्न परना** निकात (भम द ₹)। खरिबस्य पू **वि**ने ममरा (पर्)। **शक्यित सक [अर्थेग्] गर्गण करना।** बक्तिका (हे ४ ३८, मर्वि वि १८६ ४८६)। छरूकी }सद्र[भा+स्थी]१ माना। २ खरुक्तीओ प्रवेश करताः १ जोड्नाः ४ धायय करना । १ प्रानियन करना । १ प्रक संपत्त होना। महरीमा (हे ४ १४)। भूका मझौरी (प्रामा) हेक्क- व्यस्कीर्य (शृह ६)। अस्क्रीत विकिती १ मध्यि । १ भामतः। १ प्रविष्टः। ४ सैयतः। १ योजितः। ६ पोड़ा सीन (हे ४ १४)। ७ मासित (कप्प)। ८ त्रज्ञीन तत्पर (वव १)। **श**रहोस दि [झसेट्य] नेरवार्धात (कम्म ¥ X ) I अस्स्रोग रेको अस्रोग (हम्प १९) । अस्हाद पुं [आइ स्मद] क्रुग्री प्रमोद, मानन्द (प्राप्र)। काष भ [काप] इत सबी का सुबक सम्मय----१ विपरीतता जन्यासन 'धवक्य, प्रबंध्य' । २ बापसी पीक्षेत्रक धनदमद्दं ६ ब्रह्मपूर करामपत 'धवमप्त, घवसङ् । ४ म्यूनता कमी 'धवद्द'। १ एड्रियान, वियोग 'घव-कार्षाः ६ काक्रूरपनः, "मनद्रमर्षाः ।

क्षय म [अय] निम्नतिवित मर्वो का सूचक सम्पत-१ निमता 'मगस्एए'। २ पीक्षेत्र, 'धनचुन्नी' । व विरस्कार, धनावरः 'धन क्लंब । ४ आरख्मी बुध्यक्ति मनपुर्श । ५ गमन । ६ सनुभन (धन)। ७ हानि द्वासा 'सबद्दास्'। द समाव 'सवलद्वि'। १ मर्यादा (बिने दर)। १ निर्श्वक भी भूगका प्रयोग होता है 'घवपृष्टु, मदग्रा'। अवस्थ [सर्यू] १ रक्षण करना "वर्षेतु मुणिस्रो य पयकमतं (रमण १)। २ वाना गमन करना। १ इच्छा करना। ४ वानना। ३ प्रकेश करना। ६ सुनना। ७ मीपना याचना । = करमा, बनाना । १ चाहना । १ प्राप्त करना। ११ मानिकृतः १२ मारना, हिसा करता। १३ वसाता। १४ घक प्रीति करता । १५ दूस होता । १६ प्रकाशमा । १७ वहना। धव (मा२३ विमे २ २ )। अव पुं [अय] धन्य, मानाम (या २३) । कावशक्त सक [ दर्ग ] देखना । सवसक्तद (हे४ १८१३ दूमा)। क्षां अभिन्ताम न दि | निवाधित मुख मुहासा हुमा हुँह (दे १४)। मबमब्द्ध न [दे] नया-बस्र (दे १२६)। अवभक्त पर [इ.स.चू] यासन्द पाता सुरा होता। सनसन्दर (हे ४ १२२)। अवअब्द एक [इ.स.दम् ] दुरा करता । मनपन्छइ (हे ४ १२२)। **अवशिक्षम [दे] देवो अवमिक्सम (दे** 2 × )1 व्यवज्ञक्यिक्ष वि [ह्यादित] १ ह्रष्ट माइनाव प्राप्त । २ जुरा किया हुमा इतित (५५मा) । अवध्यम् सरु [ दश् ] देवना । सन्दरमञ्ज (पद्ग)। सबस्पापित्र वि [वे] यर्धनटित, यर्धपुष्ट (दे ₹ ¥₹) i अवअध्य पुंदि ] स्वस्त हुन्त (दे १२६)। अवभक्त वि [अपदृक्त] स्वतित (दे १ ₹=) ı अवञास सक [रञ्] देवनाः प्रश्मासक

(द्रिप १=१३क्टमा) ।

व्यवद्व वि [ब्रायदिम् ] प्रदर्ज्य प्रविधाः मध्यत (बृह १)। अवद्र्यम वि [अवतीया] १ स्तरा हुमा नीचे मामा ह्या। २ जन्मा हुमा (कप्पूर परम ७१ २८)। भवद्य (रो) वि [अवचित] एकत्रित दक्ट्रा कियाहुमा (मनि ११७)। अवद्भव (शौ) वि अपकृत्ती १ विसका प्रदित किया गया श्री वह । २ न सपकार, सहित (पाद ४)। काश्यक्त केको अध्यक्षणा (सुर १ १२२)। अभवत्रकासक [शयकुरू यु] नीचे ममना। संक्र-अयडिव्य (प्राचा २ १ ७)। अवडब्स <del>शक</del> [अप + डब्स् ] परिस्थान करता। श्रोइ देना। संह अध्यविम्हळण (बह २) । अवटरम देखी अववद् । भवतका) **देवो अवओक**ग (ग्रामा १ २४ अधरहय र मनु)। अवर्डेठण न [अवराण्डन] १ इन्सा। २ मुँह दक्ते का बस, दूँबट (बाद ७ )। ध्ययञ्ज वि [अयगृह्र] चानिनित 'संमाबह्र मनऊदो राववारिहरोस्न विव्युसापविभिन्नो' (\$ 7 4 E X84) I **अव**असण १ [अपवसन] रापवर्गा विरोप (वैचा ११)। स्वक्रसण न [ब्ययकोपण] उसर देखी (पवा ₹₹) ι अवउद्ध्यन [अवगृह्न] सामिद्रन (या ३३४ ४४९ बना ७४)। व्यवपद्ध पू [व्यवपद्भ] शाविका-हस्त पात्र विशेष (स्तवा १ १ टी – पत्र ४६) । भवएस पुं [अपदेश] बहाना सन (पाप)। अवभोडग न [अयकाटक] पते को मधेड़ना इकाटिया की गीचे ने बाला (विधा १ २)। र्वभग न [ बन्धन] र हान ग्रीर सिर को इन्ड बाप से बोबना (पर्राप्त १२)। २ वि रल्डी से बना भीर हाब को मोहकर पुष्ट माय के साथ जिसको बांचा चाय बहु (विपा १ **२) 1** व्यर्थन पुं[ब्यपाङ्क] नेव का प्रान्त भाग (तुर 1 tax tt 4t) 1

पौक्सालाव'---(पाप) । १ क्लिप्स्ल किर्चन्न

(मग्रह १२)। बाइ वि विद्यविन् ] मुस-

अध्यक्ष तत्र [क्यव्] नहतः, बीसराः।

अस्तित्वद् न दि । सन्द न्तिरेय का नाम :

२ विषयपौरक नियमप्रीहर्ष (शिष्)।

वाती (पद्यम ११ २७; ऋहा) ।

गरिक्काइ (पिय) ।

**अस्म**य न[भाद क] माद्ये धररक (शे ८) ।

भस्ख्य नि दि] परिषित बात (दे ११२)।

भस्<del>चन दु[धास्त्रक] इ</del>स नाम का एक

विस्तात केन मुनि और इन्क्डार, क्यूबोरान-

(पी **१**)।

तिय व [किक] भाग्रे इल्से मौर क्यूर

अधा⊼ } यो [ सस्त्रम् ] गुम्नी-नश

क्षांच्याय न [अस्रात] १ क्ल्युक, क्लांचा ह्या

अध्यक्त्री भी [मळाबुवीता] वीद्या-विदेव

वाह (दे ११ क मीप २१मा)। २ मञ्जाद,

अस्मपू 🕽 (दुर्माः पर्)ो

गीयता (ते १, १४)।

(प्रकृ ६७)।

सूरि का सपाच्याय-सबस्या का गाम (सूर

१६ २३१)। शास्त्रक वृद्धि मपूर, मोर (६ १ १६)। अस्अविय [अप] रेखी आञ्च ≈ पामपित (संद)। कारुखा की [के] माठा माँ (वे १ %)। श्चास्ति । देशो अल्बी । यक्षीद (प४) । कारिक्टल ) महिन्द (वे १ १५ वे ४ १४)। बद्ध श्रक्तिक्रजीय (ते १२ ७१ पदम १२ X1) I व्यक्तिस्त्र एक दिप + सूप ] समीप में जाताः। महिनदः (हे ४१३३)। वहः छाल्छि **अंत** (कूमा) । प्रयो प्रक्रियावेद (पि ४८२ ४५१) । करिका पि [आद्वित] पीमा किया प्रमा (स ४४ )। अफ़्डियाच्या न [बाखायन] प्राचीन करना **पिन्ट करना** मिमान (मग **६ १**)। अविकास पुदि चिम्प (पर्)। **अस्टिम** एक [अर्पेय़] धर्मल करना। म्मिन्नम् (हे ४ वट मर्नि प १८६'४४५)। **भारती }सक[ध्या+स्त्री]श्याना।** २ कारकीका रे प्रवेश करना। व कोइना। ४ द्यापय करना । १ द्यासियम करना । ६ द्यक संगत होना । महासिद्ध (हे ४ १४) । मुक्त प्रज़ीसी (प्रामा) हेन्द्र अस्त्वीर्ट (बृह ६)। ब्यल्डीय वि [बाडीन] १ धारिष्ट । २ मानतः। १ प्रविष्टा ४ संगतः। इ. बोजितः। ६ भोड़ा सीत (हे ४ १४)। ७ प्रापित (क्या)। ८ स्थानि स्टबर (वव १)। भारतेस वि [सन्देश्य] धेरवार्यश्व (कम्म \* \* )1 भक्तोग रेवो अधोग (स्प ११)। करहाद पुं [आह् सद ] पुरी प्रमोद यानन (**সম**) ৷ अव म जिए ] इत धर्मी का गुचक सम्बद— १ विपरीच्या उच्छान 'सबस्य, सर्वद्वय' । २ बापसी पीक्सेका भवदमई । ३ हुरापन बराब्धन धनपाम सनसङ् । ४ जूनता कमीः 'पनवड' । ५ चहिताल, विमीक 'प्रव बार्स्स । ६ बाइएसनः भारतमस्त्रं ।

पाइअसदसहण्यमे अव म अवि निम्नसिक्षित मधी का सुबक मन्यय-१ निम्त्रता 'मबद्रएए'। २ पीक्षेत्रक 'प्रापन्ती' । १ विरम्हार, पनावरः 'पन गल्य'। ४ वरावी बुराई/ चवदुर्ला। ३ गमन । ६ मनुमन (राज)। ७ हानि सुप्ताः सनकूल्र'। ⊏ समान 'प्रनमदि । १ मर्यादा (विने ८२)। १ निर्लंड भी इसका प्रयोग होता है 'धनपृद्ध, धनपद्धा'। अवसर [अध्] १ रक्षण करना "पर्नेतु मुखिलो य पक्कमर्स (एवल १)। २ नाना गमन करना। १ इच्छा करना। ४ बामना। ५ प्रवेश करना। ६ सुनना। ७ ममना याचना। व करना वनाना। ६ चाइमा। ६ प्राप्त करनाः ११ मासिङ्गनः। १२ मारना र्दिसाकरना। १६ वनान्तः। १४ सक प्रीति करता। १५ तुम होता। १६ प्रकाशना। १७ बक्ता। प्रव (भा२६ विशे २ ६ )। अव र्षु [अव] शब्द, भावात्र (भा २६)। अपभवन्त सक [ इरा ] रेवना । प्रवास्त्रह (दे४ १८१ प्रमा)। अवभक्तिसम्भ न [दे] निवापित मुखः मुँदावा हुमा गुह (दे १४)। अयञच्छ न [वे] नमा-वस (वे १२६)। क्षयञ्च्य मक [इ.स.ट्] शलन्द पाना चुरा होता । सबधन्यद्र (हे ४ १२२) । **अवस्थान एक [इ.सादम्] कुत करना ।** सनमन्दर (हे ४ १२२)। अवअधिक्रथ [वे] केबो सब्बाविस्त्रक (वे 1 Y ) 1 अवअध्यक्षम वि [इ.स्रदित] १ अप्ट. माइनाव प्राप्त । २ कुरा किया ह्या इर्यित (इमा) । **अवश्रम १७ [ दश** ] देवता । प्रवानमञ् (पद्र)। अवअणिक वि [दे] बर्चनिटर, बर्चपुक्त (दे 1 (Y4)1

बाबक्षणा पू [बे] क्यत पुत्रत (दे १२६)।

अवभास सक [ इ.स. ] देवना । सबसासद

(दे ४ १५१३ हुना) ।

अवस्त वि [अपवृत्त] स्वक्षित (ते १

अवद् वि [ अव्रतिन् ] क्रठपून्य, व्यविध्त धर्मयत (बृह् १)। सन्दर्भण्य वि शिवदीर्णी १ स्ट्रास्ट्रमा नीचे धामा हुधा। २ बरमा हुमा (कप्पू पत्रम ७१, अवश्य (शी) वि [अवन्तित] एकतित सक्ट्रा क्या हुवा (धरि ११७)। ध्यबद्द (शौ) वि [अपकृत] १ निसका महित किया पया हो बड़ा २ न सपकार, सहित (चार ४)। अवद्भादेवो अवद्याण (भुर १ १२२)। अयष्टक एक [अवकुरुक्] नीचे नमना। संकृत्रवङ्ख्यिय (माचा२ १७)। व्यवश्वमः सम् [अप + दवमः ] परियाम करना। स्रोद देना। संक्रु क्षप्रदिशस्त्रिय ( ( ( ) अवहत्रभ देखो अववह । क्षवत्रहरा) देवो अयमोहरा (लामा १ २) क्षवत्रद्वय ∫ मनु)। **ब्यबर्टरण न [ब्यबगुण्डन] १ व्यन्ता।** २ पुंड दशने का नक्द, पूँपट (बाद ७ )। द्यवञ्ख वि [अवगृह] धालियत 'संन्यवह धवज्ञ्यो खबनाखिरोम्य विम्बुनापशिप्रद्रो' (\$ 2, 4 E YE4) 1 अबऊसप्प न [अपवसन] दपधर्वा विरोप (वंदा १६)। अवजसन न [अपजोपण] उत्पर केश (पना धमठञ्जूण न [अवगृह्रुन] चालिङ्गन (मा इद्दर ११९) बसा ७४) । बायपङ पू [अवयज् ] शापिका-इस्त पात्र-विरोप (ग्रामा १ १ टी~ पद ४३)। ब्बर्स प्रं [अपदेश] बहाना प्रश्न (पाप)। अपभोडम न [अय संटक] गते को मधेवना इन्काटिकाको मीचे से आणा (विपा १२)। बंघण न ["बन्धन] र हाव श्रीर श्रिर को प्रद्राभाव से वीवना (पराहृ १२)। २ वि रत्सी से गना भीर हान को मोहकर कुछ मात के साम जिसकी बांधा भाग वह (विपा १ ١ (۶ अर्थगर्द्र[अयाङ्ग]नेन का प्रान्त क्या दुर १ १२४ ११ (१)।

৬६	पा <b>इ</b> अस <b>इमङ्</b> ष्णवो	<b>धर्व</b> ग— <b>धवके</b> र
क्षणंगपुंचि   कटाल (दे ११४)। क्षणंगु   कि   दे क्षणंगुरु   वहीं करा	ध्यवस्रीस पुं [अपकर्ष] स्पन्तं हास इसि (सम व )।	र्षष्ठ अवद्यमङ्चा, अवद्यन्त (क्या वर १)।
अवन्तु (न [क् अन्यकृत] का का अवनुष्य हुन्ना, कुला (बीक पराह २ ४)। अवनुष्य सह कि बोसना। सर्वकृतिस्ता	सम्बद्धातिय नि [अपक्षतियो ममिन (स्टड)।	अवस्थाएक [अव + कृम्] वाना । स्वद मद्द (मन) । संकृ अवस्थिता (वर) ।
(सत्ता२ २ २ ४)। अर्थनिक वि[अवस्थित] सर्वे प्रकास	व्यवक्रस एक [अय + कृप् ] त्यान करता ।   संक्र- व्यवक्रसिता (चर १४)।	अवस्थाय न [अफ्डमण] १ वाहर निकास (ठा ६,२) । २ पत्रावन मार्गना 'निस्ममण
मुख (नज्यारे)। व्यवस्थित विश्वितिकाली भर्ती बनाहमा	अवकारि वि [अपकारिम्] यक्ति करते वाला (पठम ६, ६)।	मबस्कमरी निस्तरणे प्रवासके च एग्हा (वव १ ) । ३ पीचे इटमा (ग्रावा १ १) ।
(दरना १ )। कार्चम्म वि [श्रवसम्म] संस्त्र समूक्र (मुपा	अपक्रिण्ण वि [झवकीणे] परित्रक (दे १ १६)।	अवश्वसम्यन [अयक्रमय]स्वतरखंख रमनकमशं(पन १ ३३)।
१२४)। "पदास न ["प्रवाह] न्वारहर्वा पूर्व केन प्रन्याग्य-विशेष (सम २६)। व्यवेनर वि [ध्यान्तर] सीदरी बीच का	अवकिण्यतः ) पुं [अपक्रीणैक] नरक्याः अवकिण्यतः ) नामक एक केन महर्षि का पूर्व	व्यवस्य पुं[श्वयक्तय] धाहा माटि (इह १)। व्यवस्य वि [क्षपहरून] निसका महित किना
(पात्रम)। अर्थति पुं [अवन्ति] अमनान् ग्रादिनाच ना	नाम (भहा)। सन्दिक्ति की [अपकीर्ति] प्रापत (११	क्या हो नहं(चंड)। अवक्करसः पुं[केृ] बाद, सब (दे १ ४९
एक पुत्र (दी १४)। अवदि १ की [अवस्ति स्ता] १ मन्सव देतः।	् ६)। अवस्तित् सौ [अपद्मित्ति] वपनाद, सहित (प्राक्त १२)।	पाप)। अवकारिस १५ [अयक्ये] हारि, अयक्य
अपनी रिमातन देश से राजनाती को भाजस्त राजपूराताम उर्जन नाम से प्रसिद्ध	अवधिरण न [स्ववस्प] कोइना त्यान,	अवकास ई (तिसे १७१६) मग १२ १)। अवकास ई [अवकर्ष] उत्तर देवी (वन १२,
है (महा मुगा १८६ धालन)। रांगा की ["गङ्गा] धारीजिक मत्र में प्रसिद्ध कुल- विशेष (मन २४ १)। बढहण पूं ["बर्धन]	अवकीरिम वि वि अवकीर्ये] विर्यात	४)।   अथकास पुं[अप्रश्नरा] सन्त्रकार, संत्रिय   (सन् १२ ४)।
इस नाम का एक राजा (मार ४) । सुकु- सास पुं [सुकुमास] एक मेडि-पुत्र को	भवसीरियस्य वि [अवस्त्रियस्य] स्याज्य कोइने नायक (पर्राह १ १)।	व्यवसेस पुं [सम्बोश] मान सङ्गार (सम ७१)।
धार्यमुद्द्रितः धाचाय के पास श्रीका सेकर देत-सोठ के सौनतीग्रस्य विधान में जन्म	नीवा करता (तिबू १७) ।	अन्तरका सक [हरा] देखना। स्वन्त्वर (पद्)। सदनवर (सिंग)। सङ्कः अन्त
हुमा है (निष्क) । समा दुं ["मिज] एक राजा (माक) । अमेदिस वि [असम्य] नलन करने के	स्पष्टि (दर २, ४)।	कर्तात (कुमा) । अवकरतंत्र पुं[अवस्त्रन्त] १ मिश्रीवर, बालगी,
सर्पाप्त प्रसाम के सर्पाप्त (रमपूर)। अपरंत्र मक [अम + कार्य] १ चाहना।	भवश्चेत्रक रेको भवजीवग (परहरे १)। भवक्षेत्र वि [अथक्यन्त] १ पीचे हटा हुमा,	नैत्य का पहला। २ नवर का खिनीत्य हाय नेटन नेय (हे २ ४) स ४१२)। अवस्तार वृं [अवस्कर] पूर्यंप विहा (ताज
२ केननाः घरत्वा (सर्ग)ः नद्गः अव केन्द्रमात्र (खादा १ १)ः	नुपत्त बौद्या हुम्या (मुपा २६२ क्या १९४ े ही महा) । २ मिहरू जनम्य (ठा ६) ।	२१)। अवस्थारण न [अपद्मारण] १ निर्मेस्टर्ग
अवर्धन देनी अवर्षनः चूमरोपि छाचरासे बनेता नाउपमानांतो (महा)।	ग्याधार्वा गरनेलाकनरक-स्थान विशेष	क्टोर क्वन । २ सङ्जुभूषि कासमाव (क्छा १२)।
अपकृष्य तह [अप+कश्यम् ] नज्ञतः करना नान नेता। सदरार्वेति (दूस १ ३ ३ ३)।	भववंदि स्पे [अपक्रमन्ति] १ स्थातरणः। २ निर्मेगन (खासा १)।	ध्यवस्त्रेत पूर्विश्वयाच्या विकास सामा (विधा १९)।
क्षत्रसम्बद्धियहरू । १ वितरा सानाः तिमानमा हो नद्र (बर)। २ सानार	(धाषा)।	अनवन्द्रेमणान [अवस्थेयल] १ वासः, सन्तः   चन । २ स्थित-विशेश नीचे बानाः। (सन्तनः   चिने ४६२)ः
करित (तुता ६४१)। भारतस्य कर्षः [अप + १६] स्रोता करता		स्वत्तर एक [पू] १ क्रिय करता। १ तिर स्कार करताः सम्बोद्ध (स्विते)। बद्ध-अर्थ-
मारुरीत (तूम १४१२३)।	क्ष्म)। वह अवद्यसमाण (क्सि ११)।	कर्रत (मिर)।

क्षप्रा पून दि स्वकी वस में होने वाली बतस्पति-विदेश (सम २ % १०)। अवस्त की किएगिटी १ करूव गीर । २ बोधनीय स्थान (मपा १४६) । क्षवरोड न [क्षवराण्ड] १ सुवर्ण । २ पानी काफेन (सुम १६)। अवस्तिक्य देशो अवसम = वनगम् । क्षवसम्बद्ध सक जिल्लाम समूर्ति वालना। धावसम्बद्ध (सजा) । धावसम्बद्धे (स. ११२) । अवगदक सक सिप + गम् ] दूर होता, क्रिक्टल जाना । प्रचगन्त्रक (महा)। अवस्ता ) सक [कार+समय ] सनावर अवगण्य करना विस्तारना। वेक अप गर्णत (बा २७)। संह अवगण्णिय (शास १ १)। अवगणना की जिल्लाणना प्रवक्त प्रनादर (R 2 70) 1 खबराणिय ) वि [अवगणित] प्रवात अवगण्णिय । विरक्षत (के बीम १)। अध्यात वि कि विस्तीर्थ, विशास (व १ 4 ) ( स्वतास बंदो अवराज । स्वत्यह (मरि)। संक अवगन्निवि (मवि)। अकराकिय देवो सक्ताणिगय (मुपा ४२१) म्बि)। अवगम ५ [अपगम] १ माधरण (पुपा ३ २)।२ विनास (स ११३ विसे ११०२)। अध्यास सक [अव + गम्] १ जानना । २ निर्ह्म करना । एंड्र- अवगसिन्तु (सार्व ६३) । १६ अवर्गतस्य (स १२६) । अवस्मार् अवस्मा १ ज्ञान । २ निर्ह्णेय निवस (विसे १६)। क्रमगमण न [अक्गमन] उत्पर देवी (स ६० विशेश्य ४१)। काबरासिज ) वि [काबराव] १ बाव विदिव भवगय 🕽 (सूर्ये २१ a) । २ निवित्र सर मारित (दे ३ २३ स १४)। अवगय वि [अपगव] दुवरा हुमा विनष्ट (खाना १ १ वस १ १६)। 'अबगर सक [अप + कृ] यतकार करना महित करना । सदगरेह (त ६३६) ।

अकारिम हेको अवकरिम विते (११८३) । अध्यास विविधासन्त (पश्)। खबराह कि थियाना ने वीमार (ठा२ v)। खबराइण न जिल्लाइणी निषय प्रत्यारस (पन २७३)। खबगात देखी जीगात (ठा १ मग स १७२)। अवगाद वि [अवगादित ] प्रशाहन करने वाना (विसे २०२२)। अवगार व [अपन्धर] भवकार, महित-करल (सर २ ४३)। क्षवतास्य वि विषयप्रतिको अपकार-कारक (# 4¢ ) 1 अवगारि वि [अप अरिम्] उपर वेको (स 40 ) 1 अवगास पुं अवकारा र फूरसद (महा)। २ बगह, स्थान (बाबम) । ६ प्रवस्थान बाद स्पिति (ठा ४ ३)। अवगाद एक जिन्द + गाद ] भवगाइत करना । धनगद्धक (सर्ग) । अवगा**इ पूँ** [अद्मगा**इ] १ धव**गाइन । २ भवजारा (उत्त २a)। अवगाहण म अवगाहन । भवनाइन जिल्ला-बगवागुल्यं मार्यतम्यं तए तन्त्रं (सुपा १६६) । अबगाइणा देशो ओगाइणा (ठा ४ ६ विने २ ५६)। अवगिषण न [दे अववेषन] पूनहरण (स 1 (13 2 अवगित्रम् देशो जोगित्रम् । संक्र. अव गिरिक्स (क्य)। अवगीय वि शिवगीती निनिद्ध (उप प **t=t)** ( अवग्रीठण देखो अवर्डठण (दे १ ६)। अवगुठिय वि [अवगुण्डित] पाण्यारित (महा)। व्यस्य दे जियस्यो द्वाल केय हि ४ 1 (x3 f अवर्गुण सक [अय+र्गुणय] **चो**लका ज्यान्य करताः वयप्रदेशा (धाषा २ २ २ ४)। संबद्धरांति (मग १४)। अवगृह वि [अवगृह ] १ बालिक्ट (६ २ १६=)। २ व्यात (खाया १ ८)। अवगृद्धन [वे] व्यनीक प्रयस्य (दे१२)।

अवगृहण न [अयगृहन] भ्रामिनन (सर १४ २२ : पत्रम ७४ २४) । शतराहाविक कि जिसराहिती मारनपित (8 522) 1 भवता वि शिव्यक्ती १ मरपूर १ ९ प समीतार्चे काम्रानमित्र सार्च (उप ४७४) । अवगाह देशो सगाह (पर १)। खबमाहण न [अवप्रहण] **रेखो** हमा**ह** (विभे 25 )1 अवच देको अवय ⇒धवच (मग)। अध्यद्भय वि अिपचियकी स्पर्पशास ह्यासवाता (मावा) । अवचय प्रजिपचयी हास धनकर्ष (भग ११ ११: स २५२)। व्यवस्य पं भिवस्यो स्ट्टा करना (हमा) । सम्बद्धाः न (अवस्थान) अपर देखोः हि १ **44)**1 अविचित्रक स्थिप + विद्यारित होता कम माना । सम्बन्धिक (भग) । सम्बन्धिति (भय २४. २)। अविष ) सर [अव+चि | इक्टा करता अविषय । (क्रम मादिको बस्त से होड कर)। सर्वाचरण्डः (नार)। स्वीतः सर्वाचितिस्सं (पि १६१)। क्षेत्र अविष्णेतं (शौ) (पि 4 3) 1 , अविचय वि [अयुचित] क्षेत्र ह्यासप्राप्त (मिसे ८६७)। शक्षिय वि [अयश्वित] इक्द्रा किया हुवा (पाम) । अवस्थिपय वि [अवस्थित] सोदा हवा भूग-भूर किया हुया (महा) । सब्बुद्ध पू [अवजुद्ध] दृत्हे का पीयना माग (प्रिक्रमा ३४)। भवजूस देनो ओऊस (एगमा १ १६ पत्र २१६) । अवस्य नि [अवाच्य] १ बीतने के प्रयोग्य । २ बोलने के घरात्त्व (वर्गर्स ६६०) । भवद न [कपस्य] चेतान बचा (कप्पः मान १ प्रातुब्द)। व वि [ यम् ] संतान-वामा (तूपा १६) । भवित्र देवो अवबीय (पूर्यात २ ५)।

व्यवश्रीय-अवज्ञम

संबन्धे (ठा १)।

**अवश्ङ्खण्य म [दे] ओ**व से कहा बाटा मार्मिक क्वन (वे १ ३१)। अवरक्षेप पूजियरकेष निभाग संस् (स R R) 1

अवद्यं वि [अपच्छान्दरक] सन्द के सतरा वे चीत क्योदोय-दुष्ट (गिय) । अवज्ञस प्रियमशास् । यपमेठि (स्म द १८७) । ब्रवज्ञाण स्ट [अप-] र प्रपताप करना

'बालस्स मंदर्भ धीर्व व कड बरवाराई इसो (सुप १ ४ १ २६)। **अवकाय प्रशिपकार्यो शिताकी स्पेका** हीन वैभववाता पूत्र (ठा ४ १)। अविकास हुं [अपिकार व] दूसरी नरक-क्विमी का माठमा गरोन्सन--- गरक-स्थल पितेप (रवेन्द्र ६) । অৰ্মীণ দি [জামুমীৰ] খীৰ্মীত দুৱ

मनेतन (तडड) । भवजुब नि [भवजुत] प्रवापूत, निश (वव w) : स्वच्छान [भक्का] १ गा। (परश्रु २,४)। २ विनिक्तीय (ग्रूप ११२)। व्यवदास एक [गम्] जाता वयत करना। धनमधर (१४ १६२) । यह शनकारांत (रुमा)।

ध्यवज्ञाची [अवद्या] प्रतासर (स.६.४) । अवगम् दि [अवध्यो मारते के प्रयोग्य (गुप्तवा १ १६)। सबस्य तक [ इस ] देवता (तीप्र ३६)। अवग्रमस्त विदेशिक्टी नगर। २ वि पछिन (दे१ ३६)। भवासाची शिवस्पा र धनोच्या नजरी (इक)। २ विदेह वर्ष की एक नवरी (ठा २ ६)। जराम्यण न [अपध्यात] दुरा चिन्छर, दुर्म्यान (नुपा १४१, का ४१६ सन १) सिने १ १६)।

अवस्थाप ) दून [अपन्यान] दुर्ज्यान 'वड-

अवस्थान मन्द्री मनगरानी (मावक

२ १३ वेचा १ २१ वंदीव ४१)।

भवनमाम (प्रप) देवी सम्बन्धमा (वे १ ६७)। व्ययदृ सम्ब [अप + मृत् ] मुनाना फिएनाः भक्ट परट्ट वि बाहरते क्एएहारे रुक्परि वत्तपुरुष् विकासप्तं प्रजेडिम वेद विरि स्त्रिपेनिकितं पित्र विकास कारण्यतः (स 111) I अवट्ट पर [अप+पृत्] पैके इटना । धर हुइ (प्रकृ ७२) । लबहुत भी [आयचां] सबमार्ग से बहुर की बग्रह (का १११)। अवर्म पुं [अवष्टम्म] व्यवस्था सामय (पत्रम ११, २ स १११)। बायदूरंस वुं [अवग्रम्भ] हवता विमात (यमीन

विषय। २ मनबातः दिस्सक्त (साथा १ १४)।

भवदूभ देशो अवर्जम । कर्न, प्रश्टुबर्मित (स WY() 1 अवद्र्यमण ) न [अवसम्भन] प्रवसम्बन् भवट्टहेण । सहार्ष (स ७४१ दी। ७४१) । अवदूद्ध वि [अवद्यवय] रोका हुमा (इस्य ₹७)1 सपट्टर वि [अवष्टरम] १ घवनम्बर । १ मानान्त 'मनहुद्धा महर्मनसाय्त' (स १८४)। भवद्रव एक [अव + स्तम्भ] प्रस्वस्थत करना सङ्ग्राप केना। संइट स्वयू विश्व (दिक भावद्वाप्य न [अवस्थात] १ प्रवस्थिति धनस्या । २ व्यवस्या (बृह १) । अवद्भिभ वि [अवस्थित] १ धवन्यान करके स्कित (मूम १६११) । २ कर्म कला मिरोम प्रथम समय में वित्तरी कर्म-प्रकृतिकों का बत्य ही दिवीय भादि समयों में बी उरानी ही

प्रकृतियों का को नन्त्र हो नह (पंत्र ४,१२)। अवष्टिम वि [अवस्थित] १ स्वर खुनेवाता (मग)। २ निस्त साम्त (स ३ ६)। ३ को बढ़ता-बटता न हो (बीच १)। सर्वाद्व स्थै [सर्वास्थिति] सरस्यान (ठा १, ४ विदे ७१६) : अवटेम तक [धव+स्तम्म्]ग्रक्तम्बर कला। र्सन

मञ्जूनकृति । **अवर्ठमिरूप क्युई बाहेशरि मुक्ति** पाणा" (भण्या ४५) । अवर्टम पुँ [दे] तामुख पान (दे १ ३०) r भवड पुं [सबद] कुम भुंगा (परार)। अवडः } पृष्टि १ कूप कुमा। २ माराज अवडभ } वर्मचा (११ ४३)।

भवडभ र् [वे] १ वदा वा<del>त पूर</del>व का पूरता, प्रश्-पुरुष (दे १२)। खबडें पू [कवटें के प्रतिक्र क्यारिक क्यारिक क्यारिक क्वावबेक्स निविष्यसम्मी साम (महा)। ब्स्यडक्किल वि वि] कृप बादि में पिरकर मण हुया, विसने बाल्य-इरवा नी हो। वह (दे \$ x0)1 भवडाइ एक [सत्+कृष्ठ] अभेस्तरके स्का करना । स्वडाहेमि (दे १ ४७)। भवडाइचित विदेती १ उपे स्वर से फैल (दे१ ४७)। र वि च्यक्ट (वर्)।

भविकिम विश्विम परिभान्त (दे१ २१)। व्यवद्व र्षु [व्यवद्व] इतारिका वंटी या नांटी क्छ्रमणि (पत्न)। भवदुम १ [दे] पर्कत अनुकत (दे १ १६)। व्यवद्वविका कि [दे] कूप ग्रावि में निस क्या ( वद् )। भवद्वा भी दि] इन्मदिका पट्टी पर्दन का क्रेंचा दिस्सा (सग १६, एव ६७१) । धवद्द वि [अपार्य] १ धावा (गुरव १ )। २ बाबा दिन 'प्रवर्ड पणनबाद' (पंडिः सन १व ६)। ६ साचे छे कम (स्य ७ १ नव ४१)। क्लोचन [\*ऐत्र] १ लडक-फिटेप (चंद १)। २ इक्टर्नेनिकेप (ठा६)। भवज हुं[के] १ पानी का प्रवद्धा २ वर जनम न [अन्तन] १ क्तन । २ ब्लुबन

रा फ्लइन (दे १ ११)। (राहित विसे १)। अवजन देवो समयमण (पिंड ४७३) । अवजद्ध वि [धवनद्व] १ संबद्ध, भोड़ा हुमा (दुर २ ७)। २ माच्यामित (मन)। भववम सङ् [ अब + नम् ] नीचे नमना । **यह भार**मसीव (एव) ।

**अवणिय वि [अवनत] धवनत (शुपा** ४२१)। खयणसिय वि अवनसित् । नीवे विश्वा हुमा नमामा इद्या (सूर २ ४१) । अवगय वि अवनदी नमा हुमा (रस १)। अवज्ञय व जिपनय र असन्य इटाना (अ द)। २ कि**दा** (स्व१४) विदेश **१** धी)। अप्रणयण न [अपनयन] हटाना पूर करना (भूपा ११ स ४८३ रूप ४१६)। अवजाम पू [अवनाम] अन्येनमन अंग भागाः 'तुलाए ग्रामावखामन्त' (धर्मर्स १४२)। अविष की जिनिते पूरिकी मुनि (उन 1 (13 388 स्प्रतित देखों अवणी = घप + भी। अवणित प्रे जिबनीन्त्री समा, मूत्र (भवि)। अव्वित्व देवो अवजीय' 'तं हुन्तुमु, विदर्शन बसलमबलियनीनेसबोसमधं (विषे १६८)। क्षवणी रेकी कार्याण (मुग ११)। सर पू विश्वर रे समा मूमिनति (भीते)। अवर्णी सक [अप + नी] दूर करना कुटाना। प्रवर्तेष, प्रवर्तिम (महा)। यह अवर्तिन, क्षवर्णेत (निषु १ मूर २ ८)। *श*्रम्क अवणक्रीत (सर १४१ टी) । 😮 अवणेअ (g to) 1 अवणीय वि अपनीत दूर दिया हुमा (मुक्त १४) । अवर्णायदयपान [अपनीतपचन] किया-थवन (ग्राचा२ ४११)। अवर्णें इनो अवर्णा = प्रप + नी। श्रमणीय पू (अपनाद्) मानवन (टाना (विभे ६व२)। अवजीयज न [अपनीवन] पपनयन, दूध कर्मा (स ६२१) । कारण्य वि [अवर्थ] १ वर्णयहित, क्यणीत (भग)। २ पूंतिन्दा (पंत्रव ४)। ३ धावनिर्ध (योष १८४ मा)। व वि वित्री विश्वक दिसि सबस्त्रवं बाते महामोई प्रचलह (सम ११)। वाय पूँ [वाव] निका (३ २६)। अवज्यान [के] यक्ता निरायर (के र अवण्या की [जबज्ञा] निचन्त, तिसकार (मीप)।

असम्बद्धाः तुं [अपश्चय] धपनाप (पङ् )। क्षयण्ड्यण न [अपङ्कथन] अपशाय (भाषा) । अयण्डाण न अवस्तानी माइन पादि से स्तान ऋरता (गाया १ ११ जिपा १ १)। **अवत्य देखो जबर्यस = बब्देस (दुमा)**। अवर्तस पुं अवर्तसी येरपर्वेत (मृज्ञ १)। व्यवर्तासय वि [अवर्तिसत ] विमूपित (कुमा)। अवनद्र वि अयन्त्री उनुस्त सिना हुना (सुष १ ६, २)। अवतद्धि देखा अवयद्धि = प्रवतिष्ट (मूप ₹ ७)। अवशारण न [अवशारण] १ उतारमा । २ योजना करना (विसे ६४ )। भयतासण न [अवतासन] बराना (पन ७६ ; अपविरय न [अन्तोर्य] हुलित पट बराब फिनारा (मूपा १३)। अवस्य वि [व्यवस्थक] र सस्पष्ट (विने)। र कम उमर बासा (बृह रै)। वै मसंस्कृत (गन्स १)। ४ र्वु केको कावग्ग (निकृत)। खबत्त वि [अवाद] प्वनरहित (मण्ड १) । अवच वि [अवास] प्राप्त सम्बा अवन्त न [अवन्न] सामन-विरोध (निष्कृ १) : क्षवत्त्वय वि [दे] विसंस्तुय भव्यवस्थित (दे 1 (4 F ध्यक्तक्य वि [अवक्तकपी १ ववन से बहुने के सरास्य सनिर्वचनीय । २ सप्तर्मकी का चतुर्व भंग 'मरबेतरमूर्णाइ म नियर्णाइ बोव्हि समयमाईहि । वस्त्रविदेशास्त्रं स्वामञ्जलकं पहरं (सम्म 44) i अमस्तिम न [अन्यस्तिक] १ एक वैनामस भव शिक्षपप्रपासिक एक सव। २ वि इस मत का चनुमामी (ठा ७)। अवस्थीतर न [अवस्थान्तर] पूरी बता जिल्ल श्रास्ता (तुर ३ २ १) । भावत्थन वि [अपार्थक] र निरवक व्यर्थ। २ यदानद मर्नना (पूत्र वनैयह) (विधे)। अवस्यद्ध वि [अवष्टवय] सवक्रमन-प्रातः विसको सहारा मिला हो वह (खाया १ १०)

खबर**बरा भी [वे]** पार-प्रहार, सात मारना (R 1 22): अबस्या की अवस्था] क्या धवस्थित (ठा ⊏ कुमा)। क्षत्रसाण न [क्षत्रस्थान] **प्रव**स्थिति (ठा ४ शः स ६२७ महा मुर १ २)। अवस्थान सक [ अब + स्थापय ] १ स्निर करता शहरामा । २ व्यवस्थित वरना । हेन्द्र, ध्यमस्यानिर्द्धाः समस्यानद्धद्धं (सी) (वि १७३; मान)। भवत्माविद ( ग्री ) वि चित्रस्थापित 🛚 घर स्पर्त किया हमा (नाट)। खबरियय वेबी अवद्विय (महा) स २७४) । अवरिषय नि [अवस्तृत] फैलाया हुमा प्रसारित (ए।मा १ ८)। अबरमु न [अवरह्यु] र समान ससरव (भवि: धारम) । २ वि निर्देश, निष्टन (पर्देश ध्वतर्थम देशो अवर्थमः। संक्र. प्रश्निम (बेह्म ४८१) । अवद्ग्य देवो अवयम्य (सूप २ २ १) ४ अवव्यान कि किपव्या १ निकार सार र्राह्य ।२ रुवा अस्तर (ठा४४) । अवदहण न [अवदहन] बन्यन गरम सोहे के क्सेट भारि से नमें (फ्रेड़े भारि) पर दागना (एत्या १ ४)। अषदाय न [अबदान] युद्ध कर्म (ठी १५)। अवदाय वि [अपदान] १ पवित्र निर्मेक्तः रिएमरूरप्रवादं भर्तं दे<u>दित् वस्त</u>ुणा सम्भ' (मुक्त ४११)। २ स्पेत संदेव (प्रकृष्ट १ ४ पाष)। अवदार न [अपदार] १ सीटी विदरी। २ प्रम इत्तर (इत १११)। व्यवदास सक [अव + व्यस् ] सोतता । यरणनेर (पीप)। चंह- अन्यासत्ता (पीप)। सदर्शक्षिय वि [अवद्धित] विकसित, विज मिला अवदालियर्जुवधीयनवर्षी (प्रीपा पएड् १ ४ उपा) इ अविदेशा को [अपविद्यु] प्रान्त दिशा ध्यस्त्यय वि [अपार्वेक] निर्देक (विदे १११

(स ५२६)।

धपदेस देवी अयपस (धनि ७६)।

धवा हो वह.

16)1

चीए सिन्दर्गरागमित्राई

विविधिवद्यानमाई रोपंतिव

बरपूर्वि (स ७१२) ।

(स २८४)।

(वर्षक्)।

(मतह) 1

(स १६७) ।

पूर (कल)।

अवदार ) देखी अवदार (खामा १ २० | संबद्धाः । प्राक् । श्रवशाहणा औ देशो श्रवशहण (निपा र अववृत्स न वि] अनुवन माहि वर ना सामान्य स्थलकार्ण दुवराठी में विश्वरी 'एव पिता रहते हैं (दे १ १)। सबर्दस पूं [सबर्मस] विनाश (स ४ ४)। क्षत्रपंसि वि अपन्यसिम् । विनासकारक (**তর ४ ৬**) i क्षमधार सक िश्व + मारम् ] निभव करता । इ. कावधारियक्व (वंबा १) । **अवभारण न [अवभारण]** निक्य निर्द्य (पा६)। अवसारणा 🛍 [अवसारणा] रीकंत्रस वह याद रक्तने की शक्ति (सम्मतः ११)। अवधारिय वि [अवधारित] विधित तिर्जीत (वस्) । रावधारिकस्य देनो अवधार । **शवजाय एक [ अ**प + मान् ] पीचे शैदना । भवनत्वद् (सर्ग)। वक्क श्रावदार्थत (त 212)1 अवधिकाकी [दे] कारोहिता केमक (मण्ड

1 (1) अवधीरिय वि [अवधीरित] तिष्टत धप-मानित (बृद्ध १ ४)। भवपुण ) एक [अव + भू ] १ परियास अवर्षेण ∫क्रता २ घरत्रे केरता। छेह-अयप्रणिज भवप्रणिज (मान २३२ वेखी 11 )1 अप्रथम कि [अवबृत्त] १ यवश्रत तिरहरूत (मीम १ व मा टी) । २ विक्रित (माव ४) । अवनिद्दव पू जिपनिद्रको दनानर, जिला शासमार (तुर ६ = १)।

श्रदम देवो अदण्य = यस्तुं (प्रद् दनः धीन ३३१)। श्चवनादेशो अवण्या(योव १≍२ नामूर १६ १३१: नुस १७२) । अपर्यमुख ) तक हि | बोलुना । यहर्यदुन्ते अपर्गुर ( भूम १ २, २ ११) । सक-पंदुरे (शन १, १ १)। श्चपका क्षे [अवपाच्या] तालिता वनी

अवभास यक शिव + भास र वनस्त्रा प्रशास्त्रित होता । भवभास 🕯 [अवभास] बदार (तुन ६) : अवसास र् [अवसास] अन (वर्तेसे | **१३३३**) | भवभागव रि [अवगासम] क्वा<del>रा कर्ता</del> द्योध दस (एला ११ दी--पर ४१)। (**र**द१४)।

निसि सिक्तरावपुद्राई । वर्षणवरिवार (समा ३)। सम्प्रसिय नि दि ] ध्यप्ति ध्युक (वे १ अवपर एक अिव + परय दिखें करता। अवपेक्त संक्रियम +<sup>2</sup>क्ष ी स्वतोत्कन करता । प्रवर्षसम्बद्ध (एतः १, १३) । धवप्पञ्चागः पु [सप्पप्रयोग] स्वटा प्रयोग विका भौपवियों का मिनस (बह १)। सदण्याः पं जिनस्पारी विस्तारः फैलाना 'ठा विभिन्तिणा घटोपुरिधिवाचन्द्रारपाएक्' अवर्षेष र् [अयद्याय] बन्द बन्दर (गउड) । अववद्भ वि [अववद्भ ] वैद्या हुमा निवन्त्रित অবৰাণ ৰি সিম্বাদী ক্লাডীৱ व्यवसुरुम् सक [कार + मुच् ] १ वानना । २ सम्बन्ध 'जल्ब संसुरमध्यो एवं पेक्स्बं नाबनुरुग्दर्भ (उत्तः १ १३)। बङ्ग- अन् तुम्ममाय (६ १) । धंकः श्रवतम्बेद्धय भववाद र् [भववाय] १ ज्ञान बीच (सूपा १७)। २ विकास (वडड)। ३ वासरहा (वर्ष २)। ४ स्मरण याद (ग्राका)। अवशेष्य वि [अवशेषक] यवगैव-सारक 'म्बिक्सम्सावकेष्य मेहमद्वातिमिरपसरमर अववोदि ५ [अववाभि] १ ज्ञान । २ निश्चय निर्ण्य (पाचूर विमे ११६४)। (पराहर ४, ग्रीप)। भवमाजन न [भपमानन] विवसार, मान

मान (त १)।

अवसासय वि (अवसासको प्रकार (विशे ११७) २ अवसासि वि [ अवसासिन् ] वेधेपनाद. प्रकाशने वाला (वजब)। श्रवसासिय वि जिवसासिती प्रवास्ति अवसासिय वि जिपमापित । पाष्ट प्रविक्तन्त्र (वव १)। ब्रह्म देही श्रोम (पाना) भवमगा र् [अपमार्ग ] कुमार्ब, कराव चस्ता (इमा) । अवसम्म पु [अपामार्ग] <del>दूस-विदे</del>य विवहा भटनीय (दे १ ८)। अवसञ्ज् पुं [अपसूरम्] बदात मृत्यू, विद्या मीत भएए (दे६ ३ दूसा)। अवसद्यासक जिद+सूत्र | पॉकस मारता, साद करना । संक्र अवस्त्रिकारण (T 144) I जनमञ्जासक [अव + सन्] तिसनार करना । यवभवराति (स्वर १२ ) । अवसङ् पूर् [अवसर्व] महीतः विकास (१स) अवगङ्ग वि [अवगर्वेक] गर्दन करने नाता (शामा १ १६)। भवसम्बन्धः विव+सम् विकासता नियवर करना। अवमधद् (महा)। बहु-ब्यवसमीत (सूप १३४) ईह व्यवसीत ऊप्प (महा) । अवगन्निय) वि [अवस्त] प्रवज्ञात अव-अवसय ) धीरात (नूर १६ १२७ महाः अवमाण **१ (अ**पमान) विस्तार (कुर १ 24X) I अवसाय पूर [अवसान] १ सवझा, तिर∽ स्कार । ३ परिमाल (दा ४१) । जबमाज एक [अब + मानम्] प्रवस्तुना करना। सवसास्त्र (अवि)। धनमाणम् ५ [धनमानम्] चनाररः, धनज्ञाः वाला (मिन ११)।

१ ६६ सुसुर ०)।

पागलपन (माचा)।

(कडर) ।

स्मार रोग बाना (बाना) ।

बहु, बणित (बहु १)।

६ प्रतिकृष (मग १ र)।

धवर्षसमिति (पि १४२, ४१ )।

१९ भव १ २)।

१वव मा)।

t) (

बर् अवयक्तंत अवयक्तमाण (रामा

अवयक्त सर्व [ अव + ईक् ] १ देवना ।

२ पीचे से देवना । नक्ष- व्यवस्थात (मोम

व्यवयवन्त्र्य की [क्षपेका] प्रदेश (लाग १

क्षययमान हिं] धन्त संस्तान (क्य १

(पत्म) ।

अविभिच्यु देवो अवसच्यु (प्राक्) ।

क्षत्रमाणि वि [अवमानिम्] पत्रज्ञा करते

अवमाणिय वि [अपमानित] तिरसहत (वे

अवमाणिय वि [अयमानित] १ मनजात

माणियदोद्धला' (भग ११ ११) ।

सनाशत (पुर २, १७१)। २ सपूरित 'धव

श्रषमार पु [अपस्मार] मर्गकर रोव विशेष

अपसारिय वि अपस्मारित, रिकी पर

क्षवसङ् वि [अपमध्] वेष-पहित (वटड) ।

ध्यत्रय न [अस्म्र] कमल पद्म (पएख १)।

(कास) ।

अवस्थात् सक [अव + राम् ] वानना । प्रव **अवसायणा की [अवसानता] धवमन्द्रमा** यण्याः (स ११३)। संक्रः अन्ययन्त्रियः (स २१)। **ठावयच्छ एक [ हरा ] देशना । प्रवयम्बद** (ह y १८१)। शहः **अव**यम्**ड**त (कुमा)। अवयस्टिय वि [इप्ट] देवा हुमा (जाना १ अपयन्तिस्य वि दि प्रशासित 'प्रकारनव रापिमुणियमनयिक्यमसगरमञ्जा म (स **११६)** 1 अवयत्रमः सक [ दृश् ] देवना । घरपरमध् (११ १८१)। संक्र, स्वयंत्रिकजय (हुमा)। अवयद्भिनी [अवस्ति] तनुकरण पतना करना (माचा) । श्रवमास्य पू [अयमास्त] नीचे चनता पनन अवयद्वि वि [अवस्थायिम्] प्रवस्थिति करने बाता स्विर खुने बामा (धावा) । अवयद्भि की [कावकृष्टि] बारूपेंस (बाना)। कावसिय वि दि विशवो वाद हो सवा हो अवयद्धि वि वि पूर्व में पक्का हुना (R 1 84) 1 सम्मुक्त वि [सम्भुक्त] परिस्वक (वि १६६)। खमयण म जिल्लानी मुख्यित बचन पूर्वित मापा (ठा ६) । अवय रेको अपय = मनर (सूध १ ८ ११)। अवयर सर्क [अव + तृ] १ नीचे स्तराता ! २ जन्म प्रह्मा करना। सदयदा (हे १ क्षथय वि [क्षयंथ] १ नीवा क्रमुव (उत्त ३)।२ वयम इति सभेष्ठ (सूस ११)। परिटं (प्रामु)। अवर्थस पू [अवर्तस] १ शियेनूपस विधेय (कुमाः वा१७३)। २ कानका सामुगरा **अवर्यस एक [ अवर्शसय् ]** मूपित करमा । किय' (पुता ४२१) । बाबयक्क एक (स्तप + ईक्ष्र ] प्रवेदा करना च्छ केवामा । सम्बन्धका (शाया १ **६**) ।

१७२)। वह अवसरंत, श्रवसरमाण (पठम ६२ ६३ सूपा १८१)। संक्र अभव-अवयरिअ पू दि] विवोद, विद्या (देश अवयरिक वि [अपकृत] १ विसका स्तकार किया क्या हो वह । २ त. सपकार, सहित-करण 'की हैं के तुझ गमणे तुझ सवस्त्रिमें मूप व्यवपरिवाद [अवदीर्थ ] १ मन्मा ह्या । रेनीचे फारा हुमा (मुर ६ १८३)। अवयव पूँ [अवयव] १ ग्रेस विज्ञाव । २ धनुमात-ध्रयोग का बाक्यांत (वसनि १ 🛊 १ २४४) । अवयति वि [क्षत्रमदिम्] धनसन् नाना (ठा १ विशेष्टरू )। अ**चयाड रेसो ओगाड (**साट **बरड)** ।

(**दे१ २४)** ।

अवनाय पू [अवसाय] प्रपतन क्षेप (स्प १ ११ ही) । अवयाय वि [अवदात] निर्मेन (सिरि १ २७)। **अबयार पुंक्षिपकार] महित-करण (स** ४३७: दुमा प्रामु ६)। क्षप्रयार पूं[अववार] १ व्यक्ताः। २ देशा-न्तर-पारण जन्म-प्रकृषाः। ६ मनुष्य त्य में देवता का प्रकारित होनार 'मन । एवं तुमें देवावयारी निम मागईए (स ४१६) मनि) । ४ संबंधि योजना (विसे १ **८)। १ प्रवेश** (विसे १ ४६)। अषयार पू [अवतार] समादेश (पर वर्)। अवसार पूं दि ] मात्र-पूर्शिमा का एक जन्मव विसर्ने इस सं बदनम साबि किया जाता है (दे१ १२)। भवपारण न [अवतारण] उतारना (सिर t (x) 1 अवसारय वेको क्षवगारम (५ ६१ ) : बायपारि वि [अपकारिन्] धपकार करते बामा (स १७६) विदे ७१) । अवयास्त्रिय वि [अधवास्त्रित] बसायगान किया हुमा (स ४२)। अवयास एक [िस्प्] शास्त्रिम करना । धनमासद (हे ४ १६ )। कनक्र. अय पासिकामाण (भौप) । संहः धावयासिय (रापा १ २)। अवयास धक (अय + द्यारा | प्रवट कला । संह अवयासेळण (तंद्र) । **अवगास रेवी अयगास (गरंड डुमा)** : **अवयास 🖞 ऋिप**] मानियन (मोत २४४ मार् अवयासण न [इसेपम] धार्तिका (बृह् १) । अवयासायिय वि [इस्रवित] बानियन कराया हमा (शिपा १ ४)। भवगासिय वि [निग्रह] पानिपित (द्वारा पाष) । व्यवसारितपी को [पे] नाया-रन्तु, नाक में बानी वादी दोर (दे १ ४६)। अवर वि (अपर) क्य, दूसरा सन्दित (धा अवयाण न दि] बीवने की डीपी समान २७ महा)। हाय ["था] सन्पन्न (पेका <) 1

11

अप्दर स[अपुर] १ विद्या कलामादेश (महा)। २ पिछने कल साबैत में यहा हुया पाचारम (सम १३) महा) । ३ पश्चिम किता में लिट 'प्रस्कारिट (स ६४६) । इंग्र को ["सङ्घा] १ नातकी-खंड के मध्यतेत्र की एक स्वयानी । ९ इस नाम 🗣 आस्तर्यने क्या सुरका एड घम्यक (खादा ११६) । ण्डू र्दुिक्की १ दिन का धन्तिम प्रहर (SI ४ २) । २ दिन का प्रतिध मान '(माबु १) का २६६३ प्रासू १४)। **शादि**ण पू ["इ(द्विष] १ नैस्टब कोश । २ वि नैऋस भौतार्में न्वित (पैवार)। दाहियाओं [<sup>\*</sup>द्क्षिया] पश्चिम भीर दक्षिछ दिशा के बीच की दिला, नेपातकोए। (बब ७)। फाणु **सौ [पार्टिजी एकी स्मीशा शिव्यना मान** (रव र)। सम्पूर्वित्र] देशे अवस्तः सपरधन (धाना) । विदेह र िल्बहेह महाविधे नामक वर्ष का पश्चिम बाप (ठा २ १ पति)। "विदेशकृत न ["विदेशकृति] पर्वत-विरोध का शिकार-विश्वेष (क ४) । देखी अपर 1 भवर सं [अवर] उत्तर देवो (महा: हामा १ १६। वर्ष का पंचा २)। व्यवरंतुद् दि [अपराक् मुख्य] १ संपूच । **२ तपर (शि २६६)**।

स्वतः प्रकृति स्वतः (तरह र क)।
स्वतः प्रकृति । स्वतः स्वतः प्रकृति । स्वतः स्

क्षपरच १६ क्रियरक्त १ तरक काल (धर | १ २ ) १ र नायत नामुक (धुत २६७)। क्षपराम १ १ १९ रचनार, अनुभार (१ अपराम १ १ १२, नाय)। स्वप्रद्वितना रेको जदर-वादिका (चर १ १)। स्वप्रद्वितना रेको जदर-वादिका (चर समरक म जिपयन्नी १ धरावन इन्यु (दर

२. १२१) । २ वि जिनने माराव दिया हो

**बाह्, प्रपद्यनी**' 'समके दारण मर्म घंतेरुपींच धवरद्वे (तिपा१ ४ स २०)। ३ विता-रिक्त, नट किया हवा (शावा १ १)। बन्धिया वि [बप्धियक] १ प्रश्रपती बीपी। २ पं मुना-स्टोर । ३ छपरि-वंश (शिक (Y) I सपरिक्रिय ) पृत्ती [अपराधिक] र सर्प-अवरिक्रिय ) वेता २ क्ष्मती स्रोटा फोड़ा (मोव १३१ चिंड)। अवरा जी [अपरा] विधेवर्ग की एक नवरी (ब्र ३)। श्वरा की अपरा ] पश्चिम रिता (पव १ ६)। क्षवराइया देवो अपराइया (पटम २४ १ र्व¥ाग्रद रो)। क्षणगङ्गस केको अण्याङ्गस (वह ३ है Y \*{**!**) | द्यवराजिय वेदो अपराइय (इक) । धपराजिया देवो अपराइवा (इन) । अवसद् ५ [अपस्य ] । सपस्य हुनाह (मान १) । २ मनिष्ट, इर्फ्स, 'धवराहेन क्रुग्रेस् व निमित्तमेर्त पदे होई (बालु १२३)। क्षपराह् पूं [दे] कटी कमर (दे १ २०)। अवराहिय न [अपराधित] १ अपराव पुनकः चंपद वसी महस्तं कस्तवि धवसवियं बार्ष (पठन १४ २५ ह ३२ )। २ छप-कार, यनिष्ट सक्कित पिरि परिया बंधि प्रकार, पुषु शक्तर मोर्वेति । तीनि महस्तुम सङ्ग्रहाई धनस्त्रिहरून कर्रति (हे ४ १४३)। अवस्पादिक वि [अपस्पाधित ] सनस्पत्री (प्राकृ अवसद्भाव कि [अपसमिम् सा दिक्ता दुस्त । २ पश्चिम किया की तरक ग्रुह किया इया (ग्राद ४) ।

क्षत्रपञ्जल है [अवसमित्रुक] र पता बुका । वर्षिण दिया को तरह ग्रुंह हिमा इसा (बार ४)। अवस्थि व [क्यारे] क्रार (रे १.६ मात्र)। अवस्थि है [है] अस्तराधीन सन्त्रमा (रे १ २)। अवस्थिक हैं [अप्तिगाविक] वृद्धे सपूर (रे ११)। अवस्थिक हैं [अप्तिगाविक] वृद्धे सपूर (रे ११)।

१ १६, बर्) ।

क्षवरिक वि [सपरि] स्तरीय वस, वादर (ह २, १६६ कुना यसक पाम)। **अवस्ति विश्विपरीय** विश्वास्य, पश्चिम विशा र्सनभी 'तो हा तुम्ने प्रवासन प्रत्यं पण्डे ज्बाह्र (स्टाया १ १)। **अवश्विद्वत**पुराधान दि । १ मधीत सम्रा **२ ग्रहरा, कुठा ३ शन (३१ ६**)। अवर्रंड पर वि] मासिक्त करमा। स्वरंबद (वे १ ११) सुर ६, १०२) भवि) ।कर्म, धर-वीरेक्स (दे १ ११) । श्रंष्ट्र- यववंत्रिकस्य (देर रर च ४२१)। अवश्बन्धः । म 👣 द्यालिङ्गन (मनि पान्धः अवरक्षिञ∫ देरें रेंर्)। क्षत्रकर पूं [अपरोत्तर] १ बारम्य कीरा । २ वि वादच्य को सुर्गे स्वित (सम) । अवरुचरा ध्ये [अपरोत्तरा] पानम निगर पहिचम और बत्तर के बीच भी दिता (वर ٧ĺ١ व्यवस्त्र वि [क्षवस्त्र] विश हुमा (विशे २६७१) १

भवरूपर केले सबरोज्यर (कुमा राम) न अवस्त् यक [अव + स्तु ] नीवे प्रताना । यवरक्षेत्रि (मै १४) : **ध्यत्व देवो अपुरुत (प्रक्र ८१)** । भत्ररोप्पर ) वि [परस्पर] भागत में (है Y अन्योवर 🕽 ४ है। मन्त्र नुपा २२। तुर ३ **७६ पड्**)। व्यवसेद्दु [अवसेघ] १ धन्तपुर, बनान-काना (पुना ६३) । २ झन्त-पुर में रहनेवानी **क्टै** (विदार ४)। ३ तनरको सैम्ब से नेरना (निचु म)। ४ संजीय (विसे ११६१)। र प्रतिकल 'वहं सम्बन्धितावरोहोति' (निसे १७२९)। जुबद्र सौ ["युवित] सन्तपुर की की (पि १००)। अवसेद 🕯 [अवसेद ] क्यनेताला (तृष्ट मारि) (दर्ज) ।

नेता, बायन नेता। १ सटक्या। धनलंबर (९न)। घरतीवर (नदा)। नद्गः अवस्थिन साज (तम्म १८)। कनद्गः अवस्थित्रांत (ति १९७)। तद्गः अवस्थितरास्य अवस्थ विव (धान १, साचा २ १ ६)। हेद्रः

अवरोह पूँ [के] नि:, कमर (के १ २०)।

जबसंद तक [अय + सम्बू] १ तहार

अपसंधित्तम् (रमा 🖜)। 🕫 भवसंबर्णिय अवस्थित्रस्य (मे १ २६)। ∤र्1 [अवसम्ब, क] १ सगय अबस्रिया विभागय (बा १६) । ३ वि तट क्रेशना (बीर: बर ४) । ३ सहाय सेनेवामा (पद = )। श्चयतेषय न [अपसम्बन] १ सटनता । २ बाधय ग्रहास (छ ४,२ सय)। अवसंवित्रया की [अवसम्बनना] बनवर द्यान (एदि १७४)। अवस्ति वि [अवस्तिम ] पानम्बन ब स्तेताला (गडर विधे २१२८)। अवसरिय रि [अवस्थिति १ मररा हुमा। १ मर्धायत (छाया १ १)। अवसंदिर रमी अवसंदि (गा १६७) । ध्ययसपराग न [अपस्रध्नण] तराव सद्राण बुरी घारत (मनि) । अवसम्म वि [अपनान] १ पाइद । २ मग हमा सेनप्त (महा)। अपग्रस रि [अपनिपन] बार्न दिगया हुमा (व २१२)। श्वबद्ध वि [अपसम्द्र] मनान्त से प्राप्त (स र) । स्वमद्भि हो [अवस्थित] धप्रति (भग) । अवलय म कि] पर, नगन (दे १ २३)। ध्यवस्य सम् [अप+ धप्] १ मन्य कोतना। २ संप को दिसता। क्या अयम्बिर्गन (गुरा १६२) । श्र. अवस्य जिञ्ज (दुस ११३)। अवधाव दूं [अपनाप] धारुर (निदूर) । अयस्तिम न [त्र] यस्य, भूर (दे१ २२)। अवस्थित र् [अप्रतिस्व] बीप वा पूर्णतो ने स्थान स्थान-सिरोप (डा २ ४) । अविरुद्धभ रि [र] पदात्र धनानारित (मे १ अपन्तितः रि [अपस्टित] स्थान (गूप १ (v) #5 अपन्सि (शियक्ति) । क्रियः २ व्याप धानमें हर्षातियों बर्जाका वाली यक्ष नाहै। एरे नियोर बबद, बारानं नुरुषो निर्मि (वर) ।

ध्यमुझ देला अवझय (बादा २३१६)। अयल् आ की दि ] कीम पुन्सा (दे १३६)। अयुमुत्त वि [अयुनुप] नोप-प्राप्त (नार)। अवनाञ ) पुं [अबनाय] १ धहेकार, गर्ने । अयनाव ) २ केर सेपन (पामः महा नार)। ६ घरका चनावर (मउर)। अवहोद्द (अयहोट्टी भटनी (बजा १ ४)। अवसेहणियां हो [अयसम्बनिद्य] १ बास भा दिनका (ठा४२) । २ पूर्ति मादि भाइने ना एक कानरण (निष् १)। अपनिर्दे ) ध्यै [अयल्तिम, सा] १ बीम अप्रवसदिया । का दिलका (कम्म १२)। २ सेस विरोग (पत्र ४)। ३ चारम के माना केलाय पकाया हुमा कूप (पमा ३२)। शयन्त्रेञ नक [अय+स्राक्] केपना या नारन रुजा। यह अवद्योजीत अवस्थेप माण (रवण १६) गावा १ १) संब अप खाइक्रण (काम) । इ. अयन्त्रेयणीय (मुता अवस्थान ) दू [बाउस्थेक] बाउसोबन वर्णन अवद्योव ) (दर्ग ६८६ ही मुना ६) त २७६ मबद्दा) । अवनोयण न [अबस्यक्त] १ दर्शन रियो बन (बडह) । २ स्थान-निरोध 'नूंगै सर सोक्तुं **चर' (**पउम ६ ४)। १ रिन्तर-निधेप (ਈ ४)। अयत्ययणी धी [अवस्त्रवसी] देरी-विशेष (मम्मतः १६)। अवस्थाय र् [अपन्योप] स्थितना सोन वरना (ग्रन्ह१२)। भपटापनी धी [अपन्यपनी] विदानीकेव (पडम ७ १११)। अवलोह् रि [अपन्यह] तोल्पीटा (नरर) । अपदयन हिं अनदह नौरा धेरत रा दाररगु-रिटेप (याचा २ १ १) । अवहाय १५ वि अपछाप] धरायरका अबहायय विशेषा (६१ १८)। अवय न [अयय] संस्ता-विटेन 'धरराष्ट्र' को । भीएनी नाम में पुगुने पर की संस्था नत्य हो बद्द (इ. २ ४)।

भवध्य व [अववाष्ट्र] संस्त-रिक्टन 'बरर'

नाप हो पह (स १, ४) ।

भो चौछती नाम ते <u>ए</u>न्त्रते वर को संस्था

अपवद्य वि [ अपवत्यस्य ] लवार्यहेव (मरह) । अववद्यादी [अवपाक्या] कविका धौरा तवा (मग ११ ११)। अवयग्ग वृ [अपदर्ग ] मोश मुन्दि (धारम) । **अवयद्ग्य न [अपवर्तन] १ मामरल** । २ कर्मपरमालुची की दोपै रिपति को दोड़ी करना (वंच १)। अवबट्टणा क्षी [अपधतना] उत्तर रेगो (वंच अवश्त वि [अपवृत्त] १ पास सीटा हुमा। २ बरायुन (दे १ ११२)। अववरक पूं [अपवरक] शेठिंग धोग पर (मुत्रा≂१)। अवयह सक [अप+यह ] माहर कॅकना दूर हुदाना। वर्गम य उग्नद् (पंचा १६ १)। अपवादअ वि [आपयाटिक] सामार-मंबेपी (घण्ड १ व)। अषयाइय नि [ अपबादिक ] धारानाता (पर) । अववाय र् [अपवाद] र विदेश नियम धा बार (उन प्दर्)। २ विद्या प्राणु-सार (पर्राट्ट २२) । ३ धनुसा संमिति (निचू १) । ४ निषय निर्मेय बाती हातिस (निष्कृ १)। अपयास सर [ अप+पान ] पानारा रेता बार देना। बारमाग (बार)। अथवाह मक जिय + गाइ ] धरगान्त वरना । स्थयप्रद् (प्राप्त) । अविद्व व अविषय भेटा पर के एक भकु का नाम (भग ८ १)। अवर्याह वृं [अवर्ष ह] निभाइन दकता (दढा) । अपरीक्षण न [अवपादन] कार रेगी (दउर) । अपस रि [अयरा] र भागपन नरापीन (तूप १ १ १) । २ ग्राम स्वापीत (त t (f f अवस रि [अरहा] यहाम महिला (वर्षत अवर्शं व [अरापम्] यराप करर निरंपन (१ ४ ४६७)।

भावसङ्ख्या म [अपराकुत ] धनिट-पूचक तिनित्त कराव राष्ट्रन (मीव वर वा या २६१ सपा ३६३)। धवसंकि नि [अपराक्किम् ] प्रापरण क्ती(सम १ १२ ४)। धदनकालक शिव + ध्व≔द्] पीखे इट जला। सरप्रतेचा (सामा)। स्वसद्भव र [अवजाकण] घपसरङ पीडे इटना (पेचा १३)। भवसांक वि जिन्मिरिक्त् ] गीधे हुओ मना (माना)। अवसण्याति विकेत्रसम्बद्धाः हारा काशसम्बद्ध विकास भी विकास किया विकास बहा पंकरवानसङ्ख्यों (उत्त १६ ६ ) । अवसद द शिवराया र मदब रूप (पुर १६ २४)। २ बास्त्र वयन (हि १ १७२)। ६ मररीति धपक्य (कृमा) ।

कदसच्य प्रक [ अद + सुप् ] गैन्ने इटाना। २ निवृत्त होन्छ । १ उन्तरना । धवराप्पि (पि १७६)। धनसञ्जन [अपसर्पण] पनस्रक पन वर्तन (प्रस्म ११ 😼 )। खबसिष्य कि [अपसर्पिन] १ प्रेचे इ×ी-पत्ताः १ निकृतः द्वोनेनालां (तुमः १ २ ₹) į व्यवसरिवयं वि [व्यवसर्वित] १ व्यवस्त २ लिह्स । ३ मनतीर्लं (वर्ति) । **अवस**िपणी **रेवो माध**िपणी (पन १ २) मधि)। भवसमिन्ना (है) केत्री संबस्तमी (है १

बाबसय वि [अपग्रह] भीच प्रवम (ठा ४ ¥) 1 श्रवसर यक [अप+स] १ पीधे हटना । २ लिलुस होना। सवसर६ (६१ १७२)। मनसरिवस्थ (का १४१ थै)। खबसर धक बिथ+ स्] माम्य करता। संक्र-भोडयहर जनसरिता (कर १)। मनसर र्⊈िश्वसर ] १ कान समय (पान)। २ बस्तल मोना (प्रस्तु ३७

10)1

(नदा)।

पाइअसदमहण्यदो **ब्रावसरअ देवो ओसरण (१५ ६२)** । श्रवसरण न [अपसरण] १ पीचे हटना। २ निवृत्ति (ग्रेडड)। भवसरिय वि [भावसरिक] सामिषक सम योपपुटः (सस्) । धात्रसरीर प जिपरारीरी रोग भाषिः 'सन्मानसंगैच्हियो' (इर ५१७ टी)। क्षवसयम वि विषयस्ववद्यी पराधीन पर तन (गाया १ १६)। भवसक्य न [अपसब्य] नाम पार्ल (स्वि 225) I व्यवसम्बद्धान [अप्रसम्बद्धी रहीर का रवितामाय (उत्पद्र )। अवसङ् र्ष भिष्यसङ्गी वर्ष्यम्बर (क्ल **1**(1) ञजसहन दि] १ फलदः २ वियम (दे 1 xc) i भवसाइज वि विश्वसादिती प्रसन्न नहीं क्यिस इम्रा (से १ ६३) । भवसाज न [अवसान] १ कटा १ कट मान (गाउ पि १६६)। व्यवसाय पुं (अवस्थाय दिन वर्षे (धडह) । व्यवसारिक वि [अवसारित] न रेना ह्या भनिस्ताच्य ( से १)। भवसारिक वि [ भपसारित ] १ माइट कीचा क्षया (छेर् रे)। २ दूर किया ह्या हराना ह्या (मुपा २६२)। अवसाक्त्र न [अवस्तावम] १ कवी (इड १)। २ भारत भवैषा ना पानी (तर्फ भवसावणिया 🛍 िभवस्वापनिद्या

नुसलेवासी विद्या (वर्गीव १२४)। भवसिम वि [अपस्त] गैक्के हटा हुया (धे १३ ६३) । व्यवसिम्ब नि [अवसित] १ धमस्त परि पूर्ण। २ वाट वाना हमा (विसे २४)। भवसिक थन [जव+सद्] हारुद्र परास्ति होताः 'एक्कोबि नावनिकद्' (विशे RYKY) I जबसित्त वि [**धव**सित्तः] सौना हुन्न (रंत्रा ₹₹) i

क्षप्रसिद् (श्री) वि [अवसित् ] समान्त पूर्व (समि १६३ प्रति १ ६)। अवसिर्वतः वं अपसिद्धान्ते । १पत महात (विमे २४३० ह)। भवसीय बर्ज जिन + मह | क्लेड पन्य किल होना । बहु- अवसीयंत (परम ३६ (185 शबसुध्य सक [उद् + मा] गुकरा रूक होता। सनस्पद्ध (पत्र)। अवसेश व [अवसेक] विवन, दिवनत (ममि २१) । अवसेअ वि [अवसेय] वानने मोग्य (विने २६७१)। अवसें (का) केही जयसे (ह ८ ४२७)। अवसेन रेबो अवसी 'प्रत्येत पुॅक्किन (पबम १२२१)। अवसेस इं जिबसोप ] १ वर्षस्ट बारो (मुगा ७७)। २ नि सब सर्वे (जा २११ दी) १ अवसेसिय वि[अवसंदित] १ समस्त किया इस्से पार पहुँचामा हमा (से ४ ४**०**)। २ वाकी का स्वतिरह (सर)। अवसेद्द सक [सम्] काशाः। धनछेद्दः (हे ४ १५२) । मर्शक्ति (कुमा) । अवसेह का निद्या मायना पनायन करना। सबसेहद (है ४ १७४ पूमा)।

> भवसोग् वि [अपद्योक] १ होक-पहितः। २ देन-विरोप (शेव)। अवसोप वि [अपनाण] **बोटा** बात (क्टर) । अवसोबची भी [अवस्वापनी] क्रिया (पुग अवस्स वि [ठाउठ्य] **अवस्यै** किस्तु (सामम

> भवसोइया हो अवस्वापिका किया (क्या

₹ €) i

कार्व (दे) ।

धान ४) । इस्स न [ इर्मन् ] धाररमङ क्या(धानु १)। करणिक वि किरणीय] मदस्य करते सायक कर्म पामितक पादि। किरिया की [किया] भागस्यक प्रकृत (माचुर)। किया नि चूरमी मानस्वत अवस्तं च [ अपरमम् ] बकर, निरवद (नि 322) 1 अवस्मिरिपणी क्लो अवसिरिपणी (संबोध ٧٤) ا अवस्साञ देखी अवसाय (विक्र)। अपस्मिय वि [अवाभित] माभित, मवनन्त्र (धनु ६)। अयह एक रिष्] निर्माण करना बनाना। सपहर (हे ४ १४)। अन्नहृत्त [ उसय ] दोनों पुल्त (हे २ **१३**८) । अवह वि अवह न बहुता हुमा जो बायु नहीं श्रंद फोस्पिलीन धवही इमाद वामी एमो म सिकिपको (नर्मेन १४१)। श्रमहृद्ध की [अपहृति] विनास (विसे २ 24)1 कायहरू वि दि भागिमानी गनित (द १ २१)। अषदट्ट देलो अयहर = धर+ ह्र। अपहर पि अपहरु ने निया गया धीना हमा (मुगा २१६) मरह १ ३)। अयह्ड वि [अवहृत] ठपर देवी (प्राक्त)। अबह्द्ष म [ब्] मूनव (वे १ ३२)। अयहण्या १ दि । हनम बोबन ब्युक्त ( t t 24) i अपहरम र् अपहरती मारते के तिए या निकास बाहर करने के लिए अवा किया हुधा हाव भवद्ववेण हुमी कुमरी (महा)। श्वद्वस्य सक [अपद्स्तयः] १ हाव को क्रवाकरता। २ स्थानकरता, ध्रोड देता। मश्हरपेद (मद्रा) । एंद्र ध्यपद्दरियक्तव अवहत्यं ऊण (पि १८६ महा)। अबद्ध्यस सी वि] नाठ मारना पार-प्रनार (दे१ २२)। अबहरियम वि अपहरितन । परित्यक, हर दिया हुमा (महा काम १२४ गा ११६) कुत ११३३ एपि) । अबद्धय वि अिपहती क्ष्यु नारा-प्राप्त (से ₹¥ ₹c) I अबद्ध वि [अघातक] परितक (धीप ו ( אַט

क्षाबहर सक शिम् वाना । सबहरह (ह ४ **१६**२) । अवहर सक [नञ्] भाग जाना पतायन करना । धरहरह (हे ४ १७८ कुमा) । अबहर सक [अप + हू ] १ छीन सेना अप हुराष्ट्र करना। २ भागाकार करना भाग दना। धवहरा (महा) मबहरेका (उना)। कबर् अवहरिल्लंड, अवहीरमाग (पुर १ १४२ मप २५, ४ छान्या १ १०)। संक अवहरिकण, अवहट्ट (महा भावा भग)। क्षपहर सङ [अप + हूर] परित्याग करना। संहर अयहदृ (मूघर ४ १ १७)। अवहर वि [अपहर] बगहान्द धीन भेने-बासा (मा ११६)। अवश्रुरण म [अपहरण] छीन जेना (कुमा: सुपा २४)। अवद्वरिद्ध वि [गत] यवा हमा (कुमा) । अवहरिक्ष वि अपद्वती द्वीप निया हुमा (मुर १ १४१: हुम्मा रे) १ अवद्वसंसद भिन अप+इस्]त्र्यः करना विद्यासकरना उपहासकरना। प्रश हसद् (सामा १ १८)। अवहसिय वि अप , अवहसित विरम्हत दनद्रसित (ए।मा १ ८ पुर १२ ६७)। अपदार सरु वि वालेख करता । मनहाधीम (दे१ ४० टी)। बावहारिज वि दि जिल्हा जिल पर मार्गरा किया गया हो बहु (दे १ ४७)। अवद्याण न [कायधान] १ क्यांच कायोन (पुर १ ७१: कुमा)। २ ज्ञान आलना (वमे दर} । अवद्यास हुं [वे] विद्या वियोग (वे १ ३६)। अवद्याय म [अपद्याय] धोड कर, त्याथ कर (भग१)। अपदार एक [अप + घारप] निराय करना निषय करना। कर्म- सब्हारिकड् (त १६६) । हा अवदार्ड (यात १६) : अबद्वार (घर) देखी अबद्दर = धर + हु। धवहारद (नवि)। बंह अपहारिय (मनि)। अवदार पु [अपहार] १ बाहरण (पहरू १ ) अवहिम वि [अपहित] सारवान कालवारा ३ मुना२०६)। २ दूर करता परिस्तान <sup>३</sup>

(फामा १ १)। १ बोरी (मुत्रा ४४६)। ४ बाहर करना निकायना (निष् ७) । ३ आया-कार (मय २१ ४)। ६ शक्त विनास (स्र ७ १२१)। अयद्वार पू [अव बार] निषय किर्यंगः। व वि विन् नियम पासा (ठा १)। अपदार प्रविचयार्थी मूच राशि वरिएक प्रसिद्ध राशिविशेष (सुज १ । टी)। अपद्वारण न [अवधार म] निवय निर्णय (स ११ १४ स १६६)। अषदारय वि [अपदारक] धीमनवाता धाः **इ**रण करनेशमा (मूर ११ १२)। अवहारि वि [अपहारिन्] प्राहारक धीनने-माना(सुपाद ६)। र अवद्वारिय वि अवधारित निधित (त १७६ पडम २३ १ सुपा ६३१)। अपदाय सक [मृ.प्] दया करता हुपा करना । सनहानइ (यह है ४ १५१)। भवहावम् (हुमा) । अपदाविज वि अयभाविती गमन के लिए प्ररिष्ठ (मिरि प्रमुप) । अबहास हूं [अयभास] प्रकारा देव (एउड मप्र)। अपहासिणी की [अपहासिनी] नावारम्ब 'मोतम्बे जोत्तपाग्यहम्म प्रवहातिणी पुदा' (गा ६६४) । भवहासिय वि [भवमासित] प्रकारित (प्रा १४२)। अवद् रेको आदि (पुग ६६: १७८ विसे ८२३ ७३७) । अविद्वि वि वि शिव धाममानी पवित (पट्)। अविद्रित दि] मैपुन संमाप (सूम १ १ ध्यबद्धिय वि [अपहत] ग्रीन नियाह्या (पडम २ ६६ नुर ११ वरा मुरा ४१३)। अपदिय वि अपदिती परित (चंद्र)। अवद्यि वि [अवधूत] तियमित (विते ११११)। अवद्यि न [अयपुत] परवारल (वर १) । (बाया महा ग्रामा १ २) बडम १

दिस नि [दिसान] वादी धनवाँ को भवद्रदिय रि [रे] गीरे भी तरफ मोहा ह्या पात में रचना (अप)। वातनेत्रता (स्रदाद ४६) । "पित्रव न धरमोरित (बत्त १२) । "विषव विश्वय] प्याप-विरोग (ठा४२)। म विक्रम ति [अविद्रम्थ] नियन (वंदा १ अवदरि ) की अियदस्त्री बावलना दिए भपाय १ [अवाव] संतद रहित निवयात्त्रक ₹**₹**) | अवद्रश्चे हैसारें (स्वेष्ट दश्केटी और अविकरण न [अधिकरण] गृहीत बरनुधों नो नुगा २११ वटा)। सार्तारहेव मति सात का एक बेद (हा ४ यकान्त्राम न रखना (इह ३)। धवहसम रि [अवहसक] तिरम्बार (कुरा भारतीर)। अविक्स देनो अवस्य । प्रवित्तवहः (बहुः) । भवाय रि [भन्छान] यन्त्रान, म्नानर्गीत हैइन् अविकिताई (स.६.४) : इन् अवि भवद्दमण रि [भगदमन] बाधा वस्ते बला ताना भगपनप्रनंदियां (ग १ २)। क्स्पणिक (शिने १७१६)। (तुव २ ६ ११)। अपायात्र व [अपादान] बारत-सिर्व स्वा-अविस्तरम् वि [अपेश्वक] क्षेत्रा वस्तै वाना

बानाधेतरातु (स विश् ११)।

(fti tutt) i

अवराज ﴿ [प] रिष्टु विदोन ( वर )।

क्षविकस्त्रज्ञ म [अवस्प्य] प्रवद्योक्त, निधे-द्यसु (मर्दि)। अविकलान विषयाणी यरेका, परनाह (विदे १७१६) । श्रविकता देवो अवेक्ता (कूमा)। क्षविक्रिय कि जिपेक्ति दे परेक्ति । २ न. बरोजा परवह, 'नाविक्सियं समार्' (मा १४)। अविविद्धान वि [अवेद्धित ] धवनोदित (पुरा ७२) । खबिगद्दय वि [अविकृतिक] पूत्र पादि विकार बनक बन्नुमी का ध्यामी (मूम २ २) । आवगृहिय वि [अविकृतित] बनामोनित (वय १)। अविगाप स्वौ अधियस्य (मुर ४ १०१) । अधिगण्या वि [अविक्रस्पक] १ विकला र्राहेत । २ म. करपना-रहित प्रध्यक्ष कान (वर्मसं ७४)। अविगतः वि [अभिकतः] धकारः, पूर्णं (उर २८३) ≀ अविगियक वि विविधिकित्स्यी विश्वका इमाब न ही मके ऐसा समाध्य व्याचित्र 'तापपूर' दरनार्श वह बहुबादीया विक्रियो पड़ी। दोसालमञ्जनालं, तह प्रविनिन्दो मुमारोगी (धा १२) । अविगीय पू [अविगीत] यगीवार्च, शाकों के रहस्य भा धनम्बित साबु (वव ६)। अविरमङ्क वि [अविमङ्क] १ राग्रेर-पहित । २ पुत्र-पद्भितः कमाह-पनितः (मुपा २३४)। क सरक सीचा (मयो । स्माइ की गिविती सर्कि गाँव (मन १४ ६)। खबिच्छ वि [अबीपस्य] बोप्सार्यहत स्याप्ति रहित (पर्)। अविज्ञालय वि [कविद्यायक] यनजान यहाँ (तूष १ १ १)। खबिजा वि जिनीजी बोनगरिक ने पहित (पडम ११ २३)। कविजय पुंबिनियों दिन्य का प्रधान (द्व 7 3) 1

अविश्वयवह रे पुँ दि । बार, संपत्ति (दे १ **अधिरत्त विजितिहरू विरामपरित (**गुना खिमयबर (१६)। 2 (4) 1 क्रिविणयवद्द की दि ] धतती कुलटा (वे १ अविरय वि [अधिरत] १ विरामधीत १६) । मविन्दिय (ग. १११)। २ पात्र निवृत्ति से **अविधिद् वि [अपि नेत्र]** निवानिक्केप्रहित **एडित (ठा२१)। ३ चतुर्भ द्वाशासक** (सा ६६)। वासार्जाव (कम्म ४६३)। ४ दिवि सदा श्रविष्णाः की "म पेका" अनुप्रयोग, क्याम का इनेरा (पाप) । सम्मविद्वि भी विसम्प यमार्ग(सूप १ १ १)। ग्रष्टि] चतुर्वे गुल्स्वानक (कम्म २२)। अविरस वि अविरस्ते विविद्य मन (शाया জৰিবছ ৰি জিৰিৱনী লগে লখা(দল 1 (1 1 स्प)। अविरहि वि अधिरहिम् विरहरहित अविन ) य [अविद, दा] विपाद-मुबद (द्रमा)। छ भिवा <sup>∮</sup> धम्पप (पि २२,स्कप्त १८)। अविराम पि अधियम । शियमरहिबा छ विभि पृत्री अभिविभी १ विस्त्र विकि। २ क्रिकि निरुत्तर, हमेरा (पाच)। २ विविका समाव (बृहुवै साबुरै)। अपिराय वि [अधिसान] यम्म (इसा)। अविकाण विकिशिकानी १ मनातः। २ अविराहित कि [अविराधित] बक्तरिक सजात भपरिचित (परम १ २११)। घाराधित (भव १३)। समियहरू वि [अविद्रम्य] मन्द्रिए (मुपा । समिदिय वि [अवीर्य] वीर्वपहरू (मग)। रदर)। लक्षिक्र पूर्वि १ पद्मा २ कि कठिन (दे अवियत्त न [अप्रीतिक] १ प्रीति का समाव t xx) 1 (छा १) । २ वि मन्नीतिकारक (परह , अधिसंबिय वि [अधिसम्बद] विकास 1 (1 1 र्यदेश सीम (क्य)। कवियत्त वि [अव्यक्त] प्रस्तुट, प्रसाटः अविद्य की सिविस्त नेपी मेडी (पाप)। 'बबियत्तं देनलं बलागार' (सम्म ६५)। अविषेत पू [अविषेक] १ विषेक का ग्रामान। अधियाप वि [अविकरप] १ मेर्साइत २ वि विवेकरहितः यंत्र वि [ बन् ] 'बैबएपकायस्म उ पुरिक्षो पुरिक्षो कि निक-धविवती (पद्म ११३ १९)। मविक्यों (सम्म ३१)। २ क्रिकि नि:संहाय, अविसीय वि [बाविसीय] पूर्वापर विदेव चेरमचिक 'चित्रमननिव्यय' इस पृरितं म रहित संगत संबद (मीत)। भौ सरिएक समिक्य" (सम्म ३१)। ं व्यक्तिसंबाद वि [अधिसंबादिम्] विसंवार पीइत प्रमाण मृत संस्य (कुमा सुर १ अवियाउरी औ वि अविज्ञनयित्री क्रिया १७=) । 🕶 (खामा १२)। अभिसम वि [अभियम] सहरा, तुस्य (कुमा)। समियाजय देवी अविज्ञाजय (वाचा) । अविसाद वि [अविपादिन] विपादरहित अभिरद की [अविरिते] १ विराम का सम्बक (फ्लूट्र १)। मनिवृत्ति । २ पाप वर्गसे समिवृत्ति (सम अविसस वि [अविशेष] तुम्य, सपान (ठा पर्धार,र)। १ विद्या (कम्म ४)। ४ २ श का व्यक्त । धक्य, मैद्रुन (ठा६)। १ विरुद्धि-परिस्ताम भविसेसिय वि [अविशेषित] (छ १)। का भवाव (मूम २२)। ६ वि. विरक्तिरहित (माट)। बाय पूं विवादी १ धनिर्राट की व्यक्तिस न विश्विमी मोहसीर स्थिर (क्व चर्चा२ मेबुन-चर्च(ठा६)। अविरह्म दि [अविरिक्ति विर्मत के चीत अविस्साम वि [अधिमाम] १ विमानधीत पापतिवृत्ति से वर्जित, पार कर्न में प्रवृत्त (मण्ड ११)। २ लियः निरम्बर, सम्र (जा (मय रम्)। ७२ ≈ थी) ।

अञ्चल ) विशिष्टपक्ती १ वस्तर, यस्त्रर अञ्चलय ) क्य ७६८ दी बुर ४ २१×१ मा

२७)।२ छोटी उपरका कासक वदा

(निषु १८)। १ समीतार्च, शाझ-एक्सान-

निज (धाद्य) (धर्म २) ग्राचा)। ४ र्र

सन्देख भव का प्रवर्तक एक बैनामास सुनि

(ठा ७)। १ व. साक्य मत में प्रस्थित प्रकृति

(भावम) । सय न भित्रो एक वैकासत

अञ्बद्धक्य वि [अवक्तक्य] १ धववनीय। २ पूँकर्मनम्ब विशेष वन बीच शर्मना वर्म-

बन्दर्यहेत होकर फिर वो कर्मेंबल करे वह

अञ्बक्तिय केवी स्ववक्तिय (ग्रीप विशे

सव्यक्तिचारि वि [सम्पक्तिपारित्] ऐम-

अञ्चय न [अञ्चय ] 'न' बादि निपार (केरन

सम्बद्ध प्रिवृत्ती १ क्षत का सभाव (मा

१८ सम १३२)। २ वि अवर्धात (निसे

अ**ब्यय वि [सब्यय**] १ यस्त्य, स**ब्**र (सुग

**१२१) । २ नित्य शास्त्रत (मन २, १)** ।

बब्बदिसय वि [बब्दबसिद ] १ वनिधित

भव्यसम्बद्धाः विश्ववस्ताः । स्वरूप-पर्वतः ।

संदिल्च।२ बराराइमी (ठा३।४)।

(उत्त १४)।

मत (विशे)।

(पद ६, १२)।

निक(पैचार १७)।

षावम)।

4=1) I

२१४२)।

```
स्वविद्व वि [स्वविभव] देख (नउद)।
अधिद्वा 🛍 [सविधवा] निस्का परि
 भौषित हो वह की सक्ता (लाया ११)।
अविद्वा देवो अविद्या (यमि २२४) ।
```

धाविहरू पू (हे) शतक वदा (हह १)।

अविद्वाद वि [अविद्याट] प्रविदर (दव ७)। क्षविद्याविञ्ज नि दि दे रे कीन यदैन । २ न मीन (दे१ ५६)। अविद्यापित्र वि [अविभावित] क्लालीवित (गस्य) ।

धाविद्वि रेको धाविधि (वस १)। **धविद्रिज वि [दे]** मत्त कमत्त (प**र**)। **अविद्या**त कहा अविद्यान् निर्मी मारता हुया, द्विसा नहीं करता हुया 'वजेनिति परिशक्षी संपत्तीय् विसूचर्य वेसा। शनिष्टितोषि न मुचह, निनिद्वमाबोरित ना उस्स

(भोष ६)। खविद्विस वि [अविद्विस] ग्राह्सक (पाचा)। सविद्विता 🖈 [भविद्विता] विद्वा (सूप १३ २, १) । धविद्वीर वि [सप्रतीक] प्रतीका नहीं करते

वाला (दुमा) । भविदेखयान [छानिहेटक] यावर करनेमाला (सस. १)। भवी केवो समि (ध्या २ १)। **अवीद्य प्र[अविविक्य]** सत्तन हो कर (मग १ २)।

अवीद्य [अविधित्य] विचार न रर (यव **१** २)। अमाय वि [अद्विक्षाय] र प्रशासायय प्रमुख (दुमा) । २ एकाकी बस्हाय (विपा १२) । अबुक्ष स्क [दि+इप्य] विक्रीत करता, प्रार्थना नरता । महुच्छ (६४६) । नद्गः **अनुद्धाः (पूपा)** ।

अबुद्ध नि [अबुद्ध] तरए जनान (दुमा) । अनुमाद देशो अधिगाद (ठा १, १)। अबुद्द देवो अयुद्द (उछ) । अपु**द् वेको अवोद** (द्यादा ११)।

श्रद स्ट [अद + इ] कानना । समेमि (दिने (###) I अब यक [अप+इ] हुर होना इटका : यकेह (ब २)। मोरेड् (बुद्रा १६१)।

अवेक्स एक (अ<del>यः। ईन्द्र</del>ी प्रवरोक्त करना। प्रवेत्त्वाहि (स ११७) सेहः अवेक्सिकण (स दश्ध) । अवेक्सा 📽 [अपेडा] शोबा, परणाह (पुर

पाइअसइसइष्णको

**अवेदन्य स्त्र [अप + ईफ़] प**रेता करना ।

मदेशकाई (महा)।

1 er # \$83) 1 अमेक्स वि [अपेक्षित् ] धरेला करतेवासा (गरा) । अवेक्सिय वि [अपेक्ति ] क्रिएटी योगा हर्द हो वह (प्रभि २१६)। भवेषित्सय वि [ अवेशित ] धवनौरित (पथि १६१)। अभेग वि [अपेत] सीत वर्जित (निध

२२१३)। सह नि [सृषि] संपन्धीत निरीई (उर ७२८ दी) । भनेत ) वि[भनेद क] १ पुरुपनेशाहि मनेयग वि वे प्रदेत (पर्छ १)। २ मुक, मोमा-प्राप्त (ठा२ १)। भवेसि देवो अवेसि (३१ ६ पत्र्य)। अवेद् देवो अवेदन्तः = प्रर + देखः । प्रवेत्रः (सुम १)। अयोअड कि [अब्बाह्य] मध्यक मलट (बाग्र ७१)। अवोधिक्षण देवी सब्दोधिक्षण (बापा) । भवाषिक्रति देवो क्रम्योषिक्रति (ठा ४,

۱ (**۱** 

अवोद्द शक [अप + उद् ] १ दिवार करना। २ फिर्डेंग करना । धनोब्रेप (बादम) 1 अवोद्दु[अपोद्द] र विकल्पद्यान तर्क विक्षेप । २ ध्यागं वर्दनं (क्षय १६७) । ६ निर्देश निरूप (स्ट्रेरि)। **अम्ब**हमाव 🛊 [अम्पवीभाष] म्यक्रस्ट मधिक एक समात (मणु)। क्षरुशंग नि [अस्पङ्क] स्वतः स्वर्षः (दर

भक्कान [भक्यक्र] १ पूर्व देग पूछ **धरीर । २ पि धविकत सन्दून संदूर्त**। 'पनि रियपभंदरोगितस्वसरा (वर्गनि १७

व्यवस्थित र [अध्यादिस] १ विकेश

धीव । २ धलीन एकाइ (इस २)।

२ पूर्वभौकोत्तर सैति से १२ व किन (व ۱ (۵ **अव्यक्**ति [स्रक्ष्यथे ] १ व्यक्तमीहर । २ न. निरमत स्थान (ठा ४ १८ ग्रीप)।

अध्यक्ति वि [अध्यक्ति] १ सरीतित (पंचा १)। २ निरस्य (ग्रह १)। भय्या की जिर्चाकी पर से किस 'सी

इच्चाए छी पार्छए' (सूच २ १ ६)।

६ (पद्)।

अस्मा की [दे अन्ता] भारता **वन्ती** (दे र भन्नाइद्ध वि [जन्माविद्य] १ धनिपर्गस्य सविपरीतः। २ शंभूवका एक कुछ सन्नर्धे की काट-पुनड का बागल (बृह् १) पन्छ २)। कारमागक में [अञ्चाकत] सम्प्रक सम्प्रद (याका सत्त र दी)। अञ्चान कि [आज्यान] केका सिनक (स्रोक ४००)। अञ्चावाह कि [अञ्चावान] रे हरक-परित कार्य-स्तित (स्राक र)। २ न रोम का

क्षत्रवास्त्र हि (अन्यायात्त्र) है हर्य-पहत स्थान-वित्र (धार १) । २ त येस का स्थान (भाग १०१) । २ तुव (धारम) । ४ तोध्य-स्थात, प्रीक (भाग १ १) । २ युं तोध्य-स्थात, प्रीक (भाग १ ०) । काव्यायाह कुंत्र (अक्षायात्र) एक देशीयमान (देरेत १४४) । जन्माया हि (अव्यायुत्त) १ वो स्थानगर में तथासा गया हा स्थापार-रहित । २ एक

प्रकार का कान्यु (वृह् १)। काठवायम वि [अरुमापमा] स्रोक्तर, नारा को सप्राप्त (मन १ ७)। स्रक्तावार वि [अरुमापार] स्थापार-वित्त

(छ १ )। सम्बाह्य वि [अञ्चाह्य] १ ल्वान-नित्रत (छ ४४ मुगा न्य)। २ ब्युक्त प्रापत पीत (दिशे)। शुरुपावरत्त न विवा परस्य] तिसमें पूर्वापर वा विदोष या सर्वर्यत न हो ऐसा (वचन) (पान)।

त इ. ५०। (२०१) । सहवाहार पुं [अस्पाहार] न बोनना मीन (पाम)। शस्याहिय वि [सस्याहत] न दुवास

हुमा (जीव १ मापा) । स्रक्षिमस्य वि [स्रविस्त] विस्ति-एहिल (पट्टि

ब्राडिमस्य वि [क्रांविस्त] विसीत-रहित (सिट्ट द)। अक्यान नीवे के सर्वों में संप्रकरण कस्तु

अक्या जान कथान गण अक्या क्या सार् तिशी एक सर्वेता सुपक सम्मय— १ सुपता । २ दुन्ता । ३ सम्मया । ४ सम्मया १ विभाग । सात्रका ० सार्वा । स्था १ विभाग । विभाग ११ पत्रासा

तह्मि न नेमा इनित कुर्णा । सन्दो निधि च्हर्स मुर्गित कुता मराज्यस्थि॥।

धानो पुरहार्वापणं दश्यो धारबाङ् एण्डलं बीधं। द्याची धार्वाप्य पुने नवरं बाद छा न बूधिहरा' (हे २ २ ४)। अस्बोगङ्क वि [अस्याङ्ख] १ स्वीपर्धीयत

(बृह २)। २ फेलाब-पहित (दशा १)। १ नहीं बोटा हुमा। ४ मन्पुट, मन्पट । १ न एक प्रकार का बास्तु (बृह १)।

अस्योषिद्धण्या नि सिन्धुप्तिस्सा, अध्यय विद्वसा १ पान्तर-पीरु सदद निष्पेत नाम (वन ७)। २ निष्पः। १ प्रम्पाइत

नात्व (पण क)। र ।गमा र सम्माह्य (गडर)। अञ्जीविद्यप्ति सौ [ब्रञ्मुन्दिन्ति, स्रव्यय विद्युत्ति] र सत्तव्य प्रवाह सौष में विश्वेद

स्थ्याक प्रशास प्रवाह वीच में विच्छेर का प्रमाव परंपरा में वर्षवर चता याना (प्रावम)। नय पूँ निया बरतू को किसी म किसी का में स्थायी माननेवाला प्रसा हस्याविक नय (मा ७ ३)।

हम्यादक नय (मण ७ ३) । अक्कोरिक्सम देखो अक्योरिक्सण्य (धीप

६२२ सः ४६) । अञ्चीय**ड देवा अञ्चागड** (मग १ ४ मास ७१) ।

७१)। सस एक [धरा्] स्थाप्त करना। ससक् समए (पट)।

अस मक [अस्] होता। मस्सि द्वाहा इमोहनस्ति वि रहुँ (स्व ११)। मीति (प्राप)। मनि (ह ६ १८ १४० १४०)।

मुक्तः सानि भानी (मन उका)।
अस सक [अञ्च] मोनन करता जाना।
धनदः 'मध्यमलामानूरं नाउद्द सोमोदि जल्लाही'
(सार्वे १ ६ मित्रे)। कहः असीत् (स्रीव)।
इ. असियक्त (मृत्रा ४३०)।

स्रसं का [अमन्] धरिषमान सस्तुः दूरमो ए विकस्ति ने स उपान्त्रः वर्षः व (तूप १ १ १६)। असद्द की [अस्ति] १ उत्तरः क्षाहृपा इस्त ततः २ कास मान्ते का एक परिवारः। १

ता । २ बान्य माले का एक परिमाण । इ उपने माता हुमा मान्य (माणु लामा १७)। असङ्की [व असरक] मानक महित्रमानता 'पड़ने करेंण राज्य

श्रमका पछिमञ्ज्य पारेष । धमर्थेय मुश्लिहवारी सुत्रह य नयस्थिनानोपो (उदा) ।

असड् । प्र[असङ्ग्र] सनेकबार, बार्र असर्ड । बार (प्रति सावा उर ८३३ टी)। असर्ड । बार (प्रति सावा उर ८३३ टी)। असर्ड वर्ष [असरी] रेडुनटा व्यक्तिएगी [पुंपोप] यत के लिए शमी नर्नुसक्य म पत्रुचों का पासन 'समिशीस' व विज्ञा' (या २२)। पोसलया की [पोपणा] देखों सनल्योक्त सर्म (पिंश)।

श्चसडम पुन [अराधुन] प्रमापुन (पंपाण)। असंक वि [अराषु] १ तद्मा-पहित यर्थे दिल्य। २ तिहर, निर्मय (पाणा मुर २ २१)। असंक्रम वि [अप्रमण्यो गानस्माणिक

असंब्र्छ नि [अश्टन्नुख] शृह्वना-र्पहत सनिमन्ति (कुमा)!

असंकि वि [अशङ्किन] संदेहन केल नामा (सूप ११२)।

भर्मिकिकिट्ट वि [असकिय] १ संस्थेय-पहिता २ विग्रुख निर्दोप (श्रीप पर्वह २ १)। असंस्र वि [असंस्वृ] संस्था-पहित परिमाण

रहित्र (सूना १६६ भी २७-४)। अस्तिस्य म [ब्रासंस्य] शास्य मत वे भिन्न दर्शन (मृता १६९)।

ध्यसंसद्ध कीन [य] कनह प्रमाना 'जात्व य समग्रीप्रमानेबार्ड गण्यान्य नेव जार्याव्यं (गण्या ६ ११) : की बी (यव १ ६) । ध्यसंसद्ध न [य] कमह, फ्रगाना (नियु १) । कार्सस्यक्षिय वि [य] कमह करने वासा,

मन्दरकोर (बहु १)। असंस्त्रय देवो असंस्य – प्रसंक्य (सं ८१)। असंस्त्रय वि [असंस्कृत] १ संस्कार-हीतः।

२ संबात करते के प्राप्तय (राज) ! असंक्षित्रज्ञ कि [असंस्थ्यय] गिनती या परि सत्तग्र करते के प्राप्तय (नव ११) !

भाग करा के प्रशास (तर १२)। भर्सित्रज्ञय देनी असंग्रज्ञय (मणु)। भागतेष्ठ्य देवी असंग्रिज्ञ (भग)।

असंस्टाः वि [असंस्येय] वसंस्थातवा । साम वृं ["भाग] वर्षस्थातवा हिल्ला (वीरा महो ।

अर्सन्बद्धय पुन [अर्सन्वयक] मगुनानिरोप (पणु)।

असी वि[असक्क] १ निन्तन्न सनानक (पराण २)। २ पूँ शतमा (भाषा)। ३ मुख्यवित। ४ न मोळ मुख्य (पैचन ३)

तमङ्की [असती] १ दुनः व्यक्तिकारियो | यौत)। की (तुता ६)। २ कानी (मन =,१)। योस | असंगय न [के] वस्र कपहा (रे १ ९४)।

बमगार } पुं[बमङ्ग्रह] १ क्रावह (क्र असगार } १७२ मुग ११४)। २ घीर-

असम्माह । निर्देश विशेष पापह (प्रति)।

असवन [असत्य] १ मूठ ववन (प्रापृ

१११)। २ विभूद्य (पण्ड् १२)। मोस

न ["सूप] फूर से मिना हुमा स्थ्य (इ.२२)।

असंगद्दिय वि [असंगृहीत] १ जिनका संबद्द न फिनाममा हो वह । २ घनाधित (ठा ८) । कर्मगद्दिय वि [अध्यद्दिक] १ संबद्दन करते । बाला। २ पूर्विस्य सदकाएक सेद (विमे)। असंगिम ग्रेंदि] १ यद बौदा। २ वि यतनिकत चद्रम (दे १ ११)। असंघयण वि [अस्हनत] संहतन सं रहित । ৭ বর সংখ্য পাতাৰ মাহি স্বাদিক তীল चंत्रमर्सी से पहित (निच् )। असंबय न [असआला] निः "ता भनासकि (Prg t): असंज्ञम नि [बसंयम] १ हिंमा पूर बारि मारच मनुहान (सूच १ १६)। २ हिसा मादि पाप-नामौ से मनिवृत्ति (वर्ग ३)। ३ यज्ञान (माचा)। ४ प्रथमाबि (वव १)। अस्त्रेय पि [अस्वित] १ हिंसा साहि पाप नापों के सनिकृत (सूच ११)। २ दिना मादि करने दला (का ६,६) । ३ ट्रंसाडु मिन्न पृत्रस्य (दाया) । असंबद्ध (असंबद्ध) १ ऐलतः वर्षके एक जिनकेन का नाम (ग्रम ११३)। असंबोगि वि [असयोगिम्] १ संबोग फीतः। २ पुं प्रकाशीय प्रकारमा (स 3 () 1 असंग नहः [ असम् ] १ परिवासन (नव **११) । २ मू**ठ घनल्य (पसृष्ट् २) । ३ मर्नुदर, सवाद (पराह २ २)। भस्त देनो अस = पश्। असंन वि [अञ्चारत] व्यक्तवित **हुद** (पर्ह २ २)। धर्मन वि [असस्य] नत्व-एर्ट वन-कृष (पगहर ३)। असंश्रह वि असंस्तृत] धरनः वसवर्ष (भाषा दृहर् )। असंपरंत का [ इ. असंन्तरत्] १ समर्थ न होता हुया। २ सीवन वरता हुया (४४ ¥) । ३ तृत न होता हुमा (ग्रीच १ २) । अस्थरण न दि असंखरण] १ निर्माह ना यवाद (बहुर) । २ दर्याप्त साम हा सक्ष्टद (पंचर )। १ यसमधना यरण्ड सबस्वा (पर्मातिषु १)।

असंभरंत (वन ४° योव १८१) । असंघिम वि[अस्थिम] मंदान ग्रीन्त बद्धारः (TE X) 1 असंमीत र्षु [असंभाग्त] प्रवस नरक का घठवाँ नरकेन्द्रक --नरक-स्वान किरोप (क्षेत्रेम्र असंगठन नि [असंगास्य] (तमडी संगदना न हो सके ऐसा (या १२)। भर्समावणीय वि [मर्समावनीय] क्रवर देखी (मद्रा) । **असंख्**रम वि [असंख्रम] प्रतिर्वत्रतीय असम्बेष र् [अससाइ] १ काकार । २ वह स्वान किसमें की गाँका कमनायमन न हो भौड़रीहर स्वान (प्राचा)। असंबर पूर्[असंबर] सामव संबर का भनाव (बर्र)। असेवरीय वि [असेवृत] १ धनाच्छारित । ९ नहीं **ए**का हुया (दुमा) । असंबुद्ध वि [असंबुद्ध] क्लंबर पाप-कर्म से मनिवृत्त (गूम ११६)। मसंसद्भ दि [असंस्थित] पर्वदिष्ट (मूप २, २)। असंसट्ट वि [असंस्य] १ दूगरे से न पिना हुमा (बह २) । २ क्ने-पहित्र (बीन) । ३ क्यै-पिल<sup>क</sup>पछावाएक नेद पव १६)। भर्ससत्त वि [असंसक्त] १ व्यमितित (उत्त २)। २ मनासक्त (सस उक्त १)। असंसय वि [असंद्वय] १ संग्रद ची्र (बह t)।२ क्रिकिति तिचिद्यानवी (समि ११)। व्यसंसार दूं [ससंसार] संसार का सम्बद मोद्य (बीव १)। ममीम वि [अस्त सिन् ] व्यक्तिवर (रूपा) । असक्ष वि[अशक्य] विस्तो न नर तके वह (मुपा ६११)। असद्य दि [अशक्त] यममर्थ (हुमा) । अस**च्छप वि [असरहत्र] संस्तार-रहित** (पराह अस**बय नि [अ**सस्कृत] बगार-ची्न (पग्र्

₹ २):

असद्याज्ञ वि[भगक्रनीय]स्मास्य(दूषः)।

बाइ वि ["बादिन्] पूठ बोनने वाला (सम पठम ११ ६४)। मास न ["सूप] न सम्ब सौर न भूठ ऐसा ववन (शावा) । ामामा 🐗 ["ामुपा] रेखो यनन्तरोध वर्ष (पंचा)। समापि ["संघ] १ सम्भ-प्रतिज्ञ । २ ध्रमण्य धरिध्याय बाता (स्थ्रह फ्यार २)। } वक्र [असमत् ] सन न असम्बमाण ∫ करवा हुँचा (बाचा वेच १४)। वसम्माद्य वि [अस्त्राध्वायिक] फन-पठन का प्रतिकत्वक कारामु (पव २६८)। असम्भाव है [अस्वाच्याय] मनम्बाय, बह कल जिसमें पठन-पाठन का निरोध किया गया दे(नम्ब ३३)। असहर नि [भ्रमद] महाएर्डि (दुमा)। असड वि[अराठ] सरन निष्कपर (पुग ११ )। करण वि ["करण] विकास भाव री पतुरात करने वामा (बह ६)। असण न [अरान] १ मोजन वाला (निष् ११)। २ को कामा काम वह काम पदार्व (98 Y) ! असण र्षु [असन] १ बीवच नामक दूप (प्रस्त १ लागा १ १) ग्रीमा पामा दुमा)। २ च. क्षेप्रस क्षेत्रमा (विमे २७११)। असिय पुर्वा[असिन] १ एक प्ररार की विज्ञती (सुक्र २) । २ ई एक सरक-स्वान (रेकेन्द्र २६)। भसनि पूडी [अन्ति] १ वज्र (पन्न)। २ धारमा में विद्धा यमिक्स (फास १)। १ वज्ञ का समि (वी ६)। ४ समि (स ६६२)। <sup>प्रमा</sup>र्विशेष (न १ १)। एक्ट्रपूर्["प्रभ] खबल के मामा का नाम (से १२ ६१)। सइ दूर्[निष] १ वह बर्श जिसमें सौने विस्ते हैं। २ सर्विमयंकर वर्षा प्रद**्ने**व (बग ७६)। चिन गूं [चिन] रिवावर्षे नाएन रामा(पटम ६ ११७)।

सम्पाकी सिशानी] एक स्त्राणी (अ.४ श्रमण को [अशना] विक्वा नीम परका-रामणी कम्मारा मोहरा तह बयाया बंगे व (मूच २ ४३)। कासण्य वि कासकी चंद्रायहित अनेतन (सम्बद्ध)। व्यस्तिमा कि [असंक्रिम्] १ <del>पेत्रिनिया</del> मनोज्ञान से पहिंद (वीव) (ठा२२)। २ सम्यक्टि निम कैतिर (मग १ ९)। सुय न भिन्दी बैनेतर शास (छवि)। कासन्त वि शिशान्त्र विस्तर व २४४ १ १७४)। बसत्त वि (असके विभागक (धार्या) । असस न असर्य] प्रमान मसता (एवि)। असचि की [अशक्ति] सामर्म्य का क्रमार । मत वि [ सन् ] धमन ब ध्यक्त (परम 42, 92) 1 असत्य वि [अस्मन्य] मर्जपुरस्त बीमार (मर ३ १२७)। **अ**सरथ न [अहाका] १ शक्त-नित्र । २ संसम निर्दोप बनुप्तान (बाना) । असइ पू [अशब्द] १ मधील पाया (यन्द्र १) । २ त्रि शन्तर्राहत (दृह् १) । धसद्धान [अमद्व] पदार्थातः । श्री. द्वी (स्त द १९४)। अमझि रेबी असंग्या (पण वी ४३)। असम्बद्ध वि अध्यापको १ मिमिपित । २ निर्दोप पनित्र (पण्डार १)। द्यसबस वि [असम्य] प्रसिद्ध, जंगली (स ५६)। भासि वि[मापित्] पसम्ब-भाषी (मूर १ २१)। क्सम्बन्धाय पू [असद्भाष] १ ययार्पेश का समाव मूठ (शिष्ट) । २ वि समान्य समयाचे (बत्त ६ धीप)। असरभावि वि असङ्ख्यित पूरा प्रक्रम (मक्का)। असदभूय वि [असद्भूत] यसय (मा)। असम विक्रिसमी १ मनमान प्रमाधारण (मूर ६ २४)-। २ एक दौत पाच साहि एकाई संस्था बाका विश्वम । सर् पू ["शर] भागदेव (पढड) ।

असमबाइ न जिसमदायिम् निर्मादक भीर । वैरोपिक मत प्रसिद्ध कारण-विरोप (विस २ ६६) । असमजस वि [असमञ्जस] १ प्रम्पवस्यित गैरम्मावकी (माका मुर २ १३१ मुपा ६२६ उप १ )। २ किथि सम्प्रस्थित रूप सं (शाम)। असमिक्सिय वि [असमीक्षित] पना-नोचित प्रविचारित (परह १ २)। स्परि वि (कारिम्) साहसिक। कारिया की [ कारिता] सञ्जद कर्म (स्त ७६८ टी) । असरासय वि दि निर्मय निष्ट्रर श्वरम वाना(दे१ ४)। अससीस वि अवशिष्ठी वसम्य भाषा (मीह असप पू [असू] प्रारा विक्वासको किय ठियो क्ष कार्ल (स ११७)। असवज्य वि [असवजे] प्रस्तान प्रशासारण (सस्स्)। असवार प्रे अध्यवारी पुरुवनार (नर्नीन ×{) ( असइ वि [असइ] १ सर्साह्य्यु (हुमा मुपा ६२) । र ममुमर्व (शव १) । १ क्षेत्र करते बत्सा (बाघ) । व्यसङ्ग वि [असङ्ग] वर्त्राह्न्यु क्षोपी (पाम)। अम**रा**य वि [अस**रा**य] १ सहायरीहत (मा)। २ एताडी (बृह ४)। असिहज्ञ वि [असाहाय्य] १ गृहायना-र्णहर्ष । २ सहायदाका सनिक्कुक (इका) । असदीय वि [अस्वाधीन] पच्छन परावीत (दस ८)। असङ्घ वि [ससङ्] १ दशहरूपु (स्व)। २ मनमध मरान्द्र (धोष १६ मा) । ३ बीमार स्तात (तिचु १)। ४ सुदुमार, कौमस (ठा३३)। असह्य देवो जमहित्र (भग) । बसागारिय वि [झसागारिक] गृहस्त्री के भावासमन से राज्य स्यान (वव ३)। समारमृद् र् [अपाइमृति] एक केत पुति (Fix Yoy) I

असाह्य न [असाहक] दूल-विशेष (पर्क १ पत्र वृद्धी। श्रमायम[असात] रुच पीहा (गल्ह १ १) 'रागंबा यह बीवा बुस्सहसीयस्मि गाइमणरताः। वं नइति समार्थ कतो ते हंदि नरएवि (सर = ७६)। "बेयणिक्र न ["बेदनीय] दुःत ना कारण-मृतकर्म (स २ ४)। खसार ) वि अिमार, की निस्मार, सर बसारव रे पहर्च (महा हुमा)। असाराक्ये विकासी-बूध केमाका पेड़ (R t t2) i भसाछिप पुंभी [दे] धप की एक जाति (पूमर व २४)। **असासय वि [अशास्त्र] ध**निध्य विनयर (ए।पा १, १ मा २४७)। असाइण न [असाधन] मसिद्ध (मूर ४ २४व) । बसाहारण वि [असाधारण] प्रपुष्प प्रपुष्प (मग्रदस)। असि पुं [असि] १ बक्य तनकार (पाम) । २ इप नाम नी नरकपात देवों की एक जाति (मग ६ ६)। ६ की बनाएस भी एक हरी का भाम (धी १८) । होड न [कुण्ड] मधुरा का एक टीर्थ-स्थान (टी ७)। याय दे िमात विनवार का बाब (पठम १६ २१)। पन्मपाय न ["नमपात्र] तसवार नी म्मान कोश (मग १ १)। धारा धी [भारा] वनवारशी बार (उत्त १)। मेणु भेणुआ भौ भिनु पन्तरा ग्रिप (गडर पाम)। पत्त न पित्र रित्रवार (विपार ६)। २ तमबार के वैसा तीक्स पत्र (मग १ ९)। ३ तथबार की पत्ररी (जीज भ पूँ नरकपास देनों की एक जाति (सम २६) । पुचना की विश्विमी दर्श (स प ११४)। सुद्धि श्री मिश्री तत्त्वार भी पूठ (पाप) । स्यण न रिक्की चक्रवती रामा भी एक उत्तम धनकार (ठा ७) । लाङ्ट भी ["यष्टि] बह्मनदा दनकार (दिया १ ३) । यत्र म ["बन] धन्यासार पन वाने कुर्जों का अंगर (पएट् ११)। यन केशो

स्को भाग (उन)।

(पक्रि)।

[पत्त] (से १ १२)। इर नि [धर]

तपनार-पारम मोजा (मे ११८) । दारा

असिन न अशानी भौतन वाता धाय-

पित्रं परिदूर्विजनार्ग् भ्रह्म्य, पूरा बर्विसा द्वा

असित्व न [र्थासक्य] पाय नवे हुए हान

अभिद्धावि [असिद्ध] १ यक्तियम् । २ तर्वे

असिय वि अधिती हुन्त, बावित (पायः

राज प्रसिद्ध कुट ईन् (विसे २०२४)।

या वर्तन का कपड़े छे छना हुमा बोदन

भवहाय दर्ग (भाषा २१ ३१) ।

असिङ् (पप) देशो असीङ (सगु)।

मुग्ग २१२)। अधिय वि [स्रसित] १ इप्ल स्पेतर्धाल (पाम)। २ मधुव (विदे)। ३ मध्य, ध मन्त्रित (सूम १२१)। "निया एरे बरह-मर्च्यति, प्रसिक्त एने प्रत्यक्रविते (धाचा) । क्त प्रीक्षित्री स्टब्स्बरिय (सन्त) : असियन कि वाद वांटी (दे१ १४)। भसियम्ब देवो अस = घरा । असिम्नसा 🗱 [अन्द्रापा] नवन-विशेष (मम ११)। भसिसोग ( अरखाङ] प्रशित प्रवस (सम १२)। भसिय नं [अशिष] १ विनास । २ वसुब । १ देवताति इत बताद (योग ७) । ४ मारी रोन (वन ४)। अमित्रिण 🖞 [लखप्त] के केता (प्रामा)। मासम्बद्धाः असिन (बन ७) प्राप्त)। अभिमुद्द 🕊 [अशिका] रिजुर्वील 🕏 (प्रकार)। असिङ् वि [अशिज़] रिजारीहर (वर ४)। अमीइ वो [अर्गाति] संरवा-विशेष कसी (मम )। म नि **विम**िन्न नौ (पउम 98) I अधीश्य वि [अर्शाविक] धन्दी वर्ष व प्रम बल्ला (तंदु १७) । अर्थाम वि [अर्थामन्] विल्योग असीनंत দ্বিচন্দের্য (দ্বা চংখ শ্রী)।

असीस्त [अशोख] १ दुःग्रीप धनता बारी (पल्ड १२)। २ न धनश्चार धळ्ड्चर्यः संरक्षित् ] १ बळ्डचारी (भीव ७७३)। २ समेदन (मूच १ क)। असु 🛊 व [असु] १ प्राष्ट्र (स ३०३) : २ म चित्र। १ तार (प्रस्न कुर ११)। असु रेखो असि (प्राप्त)। असुइ दि [अशुधि] १ प्रादित परस्क मस्ति (धीन वद ६) । २ श समेध्य शिष्ठा (ठा १३ प्राप्तु १६१)। অধুয় বি [অশুবি] রাজমহতা-চর্চ (খব v () i असुर्क्य वि अिशुचीद्भती पर्यात विवा ष्ट्रपा (एव ७२८ टी) । असुग र् [असुक] रेको असु = दमु (रू र् ₹७७) ı असुरर्मन विकिटरपमान] नहीं विकास हमा धर्मीर व बनुज्यन्ते । भूबेतएल र्णत (पत्रम १ ३ २१)। खम्णि वि[अशोद्] न मुक्तेकारा, चित्र यापेपिरि परितित्तकोवरी धनुशि मूलम् मञ्बस्त (पद्मा ३२)। असुद्ध वि [अशुद्ध] १ प्रस्ववद्धः महित्। २ न. मेना, प्रदुषि । (पसः इष पुं विश्वा-मक] मेपी मेहनर (मृत १६ १८६)। सस्म देवो अनुद् = दगुव (सम ६७ भ्य)। अस्य दि [अभव] न सुनाह्या (ठा४ ४)। (वस्मिम ग["निभिन्न] शाक्र-पत्रस के विना ही हानवाली बुद्धि—सान (एवि)। पुरुष वि["पूथ] प्यत्ते कसी नहीं पूता ह्या ( मद्गा, सामा ११: पत्रम ६१,१४)। असूय नि असून दुश्चीत (क्य २)। अमुर पू [अमुर] १ देन्द, दानव (पाय)। २ देवबारि-विशेष भक्तानि भीर भ्यन्तर देवों शो वार्ति (पगद्दि ४) । १ <del>राप-स्व</del>ा-

असु€न[अनुम] १ धर्मका धनिट(मुर ८ १६६)।२ पापसर्ग (टा४ ४)।६ वि एरा भनुत्रर (भीत १३ हुमा)। णाम व ["नामन्] क्रमूप कर देनेवारा वर्म-विशेष (सम ६७)। मसु∢ न [भसुन्य] दुल (ठा३३)। असृत्र धक [असृय् ] प्रमुषा करना। प्रमू-पहि (मै ७)। असूया स्प [असूचा] १ सूचना ना प्रभाव । र दूस<sup>ह</sup> के दोर्थों को न वह वर घपना ही रीय नहना (निष् १)। असूया 🛍 [असूया] धनुया 🛮 धनदिव्युता (₹स) ; अमृरिय वि [अमृष] १ सूर्वेटील यन्त-रारमय स्वान । २ वृं नरक स्वान (सूम १ X () : असेम्ब केवो असिय (प्राप्त) । असेव्य वि [असंबव ] ऐवा के प्रयोग्य (43<u>-</u>) I मसेस वि[अराप] नित्रोप नर्व(प्राप)। धमोत्र ) र् [अग्रोड] १ देव-विरोव (एव थमोग 🕽 १)। २ पुनः एक देवनिमान (रेनेन्द्र १४२) । १ राम भारि इन्हों का एक घामाध्य विमान (देवेन्द्र २६६)। वहिंसय पूर्व [विवर्तसक] सीवर्ग देवसीक का एक वियान (सद १६)। मसोग र् [अझोक] र पुप्रसिक क्रप्र-किशेप (भीत)। २ महत्त्वहरीकोच (ठा २ ६)। हरा रेंग (राग)। ४ मनदान् मस्तिनाव ना चैच-इब (सम ११२) । १ देव-विदेश (बीव ३)। ६ क. <del>दीर्व विदेश</del>ेष (दी १.)। ण यज्ञ-विरोप (विदार ६)। द वि शोक र्थरतः। **वंद**्रृष्टियम् । रस्यामीलस नापुत्र सना नोशिष्ठ (शास्त्र)। २ एक 

अक्षोगा को [अशोद्य] र इस नाम की एक | क्रमाणी (हा ४१)। र मणनाम् भी शीनम नाय को शासनक्षी (पन २७) । ३ एक अवरी का माम (परम २ १=६)। कसोभण वि [अश्लोमन] धनुन्दर, सराव (पत्रम हर, रेह)। असीय रेबी अमीग (मन महा रंमा) । अमोय पू [ अञ्चयुक् ] पाधित मान (सम 24)1 असोय वि असीची १ शीवर्णात (महा)। २ त शीच का प्रसाव प्रमुक्ति । यात्र वि विदिम् विशीष ना ही माननेवाला (धोष ३१८)। असोयगया भी [अशोधनता] शोधना समाव (पश्चि)। असोबा देखो असोगा (ठा२ ३ संवि असोहिय वि [अपक] नवा (उग)। असोहि की जिशोधि र मगुद्धि । २ विच-यना (सोव ७८६)। ठाण न ["स्थान] १ पाप-कर्म । २ ध्रश्नुद्धि स्वान । ३ दुवन का स्मर्ग । ४ धनायतन (मोष ७६३)। श्चम्स न [शास्य] मुख मुँह (मा १८६)। अस्स वि [अस्य] १ प्रष्यचीतः निर्मतः । २ २ निर्फेय साबु मुनि (भाषा) । अस्स पू [अरब] १ बोहा (उर ७६८ टी) । २ इ.जि.चेनी नक्षत्र का समित्रायक देव (हा २ ६)। ६ ऋषि-विशेष (मंध)। ऋण्य पु[\*क्षा] १ एक मन्त्रशीप । २ इस मन्त-द्वींप का भिक्ससी (खेंकि)। कञ्ची की [ कर्जी ] क्तस्पित-विशेष (पएए १)। करण न ृक्रण ] वहाँ वोझ रखने में माता हो यह स्थान प्रस्तवत (प्राचा २. १ १८)। स्तीम प् भीम] पहचे प्रति-वान्युदव का नाम (समे १३)। तर पुत्री ["तर] बन्द (पएछ १) । सुद् पू ["सुल] १-२ इस नाम का एक सन्तर्शीय और ससके , निवासी (एपि, परएए १)। "सङ् प्\_"मेघ] मक्त-विशेष विभर्मे मस्य माख जला है (क्ला)। सेज पू ["सेन] १ एक प्रशिक्त राजा मनवान पारचैनाव का पिता (प्रव **११)। २ एक महाध्य**कानाम (चन्द २ )। े

त्यर वं शिवरी विधायर वेट के एक राजाकानाम (पडम १ ४२)। अस्त गिल्ली र ममु भौगुः २ ४ विर, बुन (प्राष्ट्र २६)। असंस्थ वि असंनयी संस्था-एदित (उप अस्तिगिळ वि चि नामक (पद् )। असंपर्यण वि असंहतनिम् चंद्रतन रवित दिनी प्रशास के सारी कि बन्त स रहित (मन)। अम्संनम रेखी असंज्ञम (उन)। अस्तंत्रय वि [अस्ययत् ] १ पुर की माक्रा-मुनार जननेनाचा धस्त्रक्षंत्री (था ३१)। अस्तंत्रय क्लो खसंजय (उन) । अस्तिम प्रशिक्षम्यम् । मधन्यस्य (मुपा 482) 1 अस्तव देवो अस्व "मुरिए) इषत वयस मस्त्रच" (डम १४६ टी) । अस्सणिय देवी असणिय (विन ११६)। अस्तरम र् [अध्यस्य] क्य-विरोध पीपच (माट) । अस्सस्य वि जिल्यस्य रेपी बीमार (मुर ३ १६१(मान ६६) ( अस्स्रिक्षेत्रे अस्रिय (पुर १४६६ कम ४ २३ १)। अस्सम ⊈ [आक्रम] १ स्त्रल वगहा २ ऋषियों का स्वान (मिंग ६६३ स्वप्न २५)। मस्समित्र वि [अमसित] यमरीहत सन म्यासी (मग)। **अस्सपार देतो असपार (सम्मत १४२)** । अस्तम मक शा+इवस ] मापासन केना । श्रेष्ठ- कारससिद्धं (ती) (पनि १२)। अस्साइय वि [आस्वादित] क्लिका ग्रास्नादन निया मदा ही वह (दे) । अस्सापमात्र **देशो अ**स्साय = प्रात्नादम् । अस्माद् सक [ आ + साद्य्]प्रान्तकरमा। घस्त्रादेति घरसाथेस्सामो (मग ११)। अस्साव सरु [ जा + स्वादय ] धारपारन करना । अस्सादण देवी अस्सायण (पुत्र १ १६) । अस्सादिय वि (आसादिवी) प्रान्त किया क्षमा (मन १५)।

98 अस्साय देशी अस्माद = मा + सहस्य । अस्माय देशो अस्साद् = मा + स्वादप् । बहु अस्सापमाण (मन १० १) । इ. अस्सा-यणिज (लामा १ १२)। अस्माय देखो असाय (कम्म २७ भग)। अस्मायण व आह्यायनी १ वय ऋषि व्य संतान (वं ७)। २ सपिनी नजन का योज (इक) । अस्सावि वि [आस्ताविम्] चळा हुमा टप रता हुमा, सन्धित्र 'बहा भस्मानिलि नार जारमंत्री बुक्हर्ए (नूम १ १२)। अरमास सङ [आ+धासय] बाबादन रता दिवासा देना । यस्सासमदि (शी) (पि ४६)। ग्रम्भासि (उत्तर ४ ३ वि ४५१)। अन्सासम र् [आइयामन] एक महापह (सब २)। मस्सि की [अभि] १ कोए। वर भावि का कीमा (ठा६) । २ तमकार बादिका बाद भाग—गर (छन ५ ११)। अरिस पूँ [काश्विम्] धविनी तन्नव का गवि ष्टायक देव (ठा २, २)। अस्सिणी भी [अधिनी] इस शाम का एक नकान (सम ८)। अस्तिय वि [आभित] मामय-प्राप्त विराग-मेयमस्मिम्रो (वमु ठा ७ श्वा १८)। अस्म पून शिभी घीस, 'घरम' (वंशि १७)। अस्सु (शी) न [अम्] संसू (समि **१**० म्बप्त ६१)। अरम्% वि [अशुक्रत] विसकी दूरी वा प्रीस माफ की गई हो कह (बर १९७ टी)। बरसूद (शौ) देखो असुय = बबुत (प्रमि १र्दे १) । अस्मुय वि [अस्मृत] याद वही किया हवा अरसेसा केको असिनसा (सम १७ विसे 14 5) : सरसोइ की [आश्चयुक्ता] माधित मान नी पूर्णिमा (भंद १ )। सस्माई थी [आश्यमुत्री] पाधिन मान की भगावन (मुळ १ ६ धै) वेको आसोया । भरसोर्धदा को [अन्योरकान्ता] संगीत-राज प्रसिद्ध सम्मास प्राप्त की पांककी मुक्क्स

(क्ष ७)।

ध्यसीमा की [अशोका] १ इस नाम की एक इन्द्राणी (ठा ४ १) । र मंबबात भी शीतम नाव की शासनांकी (पव २७) । ६ एक मत्ती का नाम (पराप २ ર≂દ) ા असोमण वि [अशोमन] ममुन्दर, सराव (पत्रम ६६ १६)। खसीय रेखी समीग (मग' महा' रेमा)। क्षसीय प्रविधावयुक् ] धाष्ट्रिम मास (सम २९)। असीय वि अशीची १ तीचर्यहरू (महा)। २ न शीचनाधमान बगुनिया। बाइ नि िवादिन् । धरीच को ही माननेवाला (धीन ११०)। अक्षेपगया 🛍 अिशोचनता शोकना समान (पश्चि)। असोबादेशो असोगा (ठा२ ३ **e**} ( असोहिय वि (अपकी क्वा (उवा) । असोदि भी [अशोधि] १ मगुदि । २ विय-बना (भोव ७८८)। ठाण न [ रेबान] १ पाप-कर्मे । २ बस्तुद्धि स्वान । ३ बुर्बन का संसर्गे । ४ बनायतन (मीव ७६३)। अस्स म [आस्प] गुक्द गुक्द (मा ९०६) । अस्स वि [सस्य] १ प्रध्यचित निर्वत । २ २ निर्देख सामुमुनि (प्रामा) । क्षाम व विश्व र बोका (धर ७६० दी) । २ श्रद्भिनी नक्षत्र का समिहासक देव (ठा २ ६)। ६ ऋषि-विरोप (व ७)। इप्पा पूक्षिणे] र एक धन्तार्वेषः। २ इस सन्त-र्द्धीय का निवासी (एर्डिंग)। कम्पनी की [ कर्मी ] क्लस्पति-विशेष (पएश १) । करण न [ करण ] वहां बीहा स्वाने में बाता हो यह स्वात बातवस (बाका २, १ १४)। स्मीय पुषिमा पहले प्रति बामुदेव का नाम (सम १९३)। सर पुंकी िंदर] बचा (पएछ १) । सुर् पृ [स्क] १२ इस नाम का एक बन्दर्शन और ससके तिवादी (श्रीर, पर्या १)। मह प [ मेप] मक-किरोप जिसमें धरव मारा वाला है (कल)। सेपार् [सेम] १एक प्रसिद्ध राका प्रथमान पारचैनाथ ना पिता (पत **११)। २ एक महत्त्राह का नाम (चार २**)। *ो* 

**ब्यर प्रीवर** विद्याबर वंश के एक राबा का नाम (पठम १, ४२)। बस्स न जिल्ली १ क्यु बीचू। २ दक्षिर, चन (प्राक्त २६)। अस्संख नि [असंन्य] संस्था-पहित (उप 1 (05 छारक्षशिक्ष वि दि । धामक (पव् )। अस्संघयणि वि असंहत्तिभू । धंइतत र्याद्रत किसी प्रस्पर के शारीरिक कन्त्र से र्चहत्त (मग)। अस्तं जम देशो असंज्ञम (उर )। अस्तेषय वि [अस्तपत] १ द्रक्की महा-मुखार चमनेवाला घरवण्यंची (या ३१)। अस्त्रक्रय क्लो असंख्य (उन) । अस्तदम पुं [अधन्दम] प्रश्ननाक (गुरा 44X) I अस्तव देशो असव 'मृष्णि) हवट वयल-मस्सर्व (उप १४१ टी)। बास्सणिय केनो असणिय (विसे ११६) । अस्तरम ५ [अच्चरव] कुत-किरोप पीपल (गाट) । अस्मरव वि [अखस्य] रोगी बीमार (पूर १ १६१: माल ६६)। अस्समि देशो असरिंग (सुर १४ ६६ कम्म ४ स हो। सस्सम् पुं[सामम] १ स्वान वनक्। २ ऋषियों का स्थान (र्घान ६६) स्थप्त २५) । अस्समिल वि [अधिति] धमरीहर मन म्यासी (बग)। अस्तवार देवो असवार (सम्मत्त १४२)। बस्सस मङ [ भा + श्वस् ] मामासन लेता । हेड- कास्ससित् (ती) (पनि १२)। भरसाइय वि [भारवादित] क्लिका भारतादन किया यवा हो वह (वे)। अस्साएमात्र रेबी अस्साय = प्रास्तारम् । भरसाद पर [ आ + सादम् ] प्रान्त करना। भस्सार्देकि भस्सारेस्सामो (मग ११)। भस्साद एक [सा + स्वादम्] मास्वादन करता । अस्सावण देवो अस्सायण (नृज्ञ १ - १६) । । भस्साविय वि भासावित्रे प्राप्त क्रिया हुमा (अप १४)।

अस्माय देखी अस्साद = बा + सहयू । अस्साय देखी अस्साद = मा + स्वादय । वर्ष अस्सापमाय (भग १ 🐧 । 🛊 अस्सा यणिका (ए।सा ११२)। अस्साय देवो असाय (कम्म २ ७: भग)। अस्सायण पू [आइषायन] १ वय ऋषि व संदान (बं ७)। २ समिनी नक्षत्र का गीत (इक)ो अस्साधि वि जिल्लाचित्र करता हवा दव क्ठा हुया सम्बद्धः 'बड्डा प्रस्ताविस्ति नाव' जारमंत्री पुरुष्ठए' (सुम १ १२)। अस्सास एक [आ+भासम्] प्राप्तापन देना, दिखासा देना । भस्सामग्रदि (शी) (पि ४६)। मस्सासि (उत्त २४ । पि ४६१)। अस्सामण र् [आइवासन] एक महापह (स्व२)। सस्स को [अभि] र कोए। पर मावि का कोना (ठा६) । २ तसवार मादिका सम माग-नार (एव पृ ११)। अस्सि पुं [अधिमा] पश्चिमी मधन का वर्षि ष्टायक देव (ठा२२)। अस्सिणी की [किथिनी] इस गम का एक नकन (सम प) । अस्तिय वि [आमित] यायय-प्राप्त 'विराग मेगमस्सियों (वसु ठा ७ सेवा १८)। अस्स प्रा [अभू] मीयू, 'मस्यू' (शीत १७) । बस्सु (शौ) न [अम्] मोसू (प्राप्ति १९ स्वयादश)। अस्रुक्ति विश्वयुक्ती विश्वयो पूर्णीया परेस माफ की गई हो वह (सर १६७ टी)। करस्त (शी) देवो असूय = भपूत (मनि (41) i भस्त्य वि [अस्युत] याद वहीं किया हवा **अस्सेमा देवो असिनेसा (सम १७ विसे** 48 E) I अस्सोई की [आन्ध्रपूर्ता] पाषित गांच की पुलिया (चंद १)। व्यत्सोई की [आचपुत्री] भाषित माध की मनावस (गुज्र १ ६ दी) देवो आसोया । अस्सोकंदा स्मे [अन्योरकान्दा] संगीत-स्वस प्रतिक सम्बम् प्राप की पावकी मुन्होंना (অ ७)।

अर्शर र् [अर्रशर] यनिमान ना (भूप

११(समा र)।

अर्शिर वि[अर्बारिन] प्रमिमली गर्निष्ट (पवड) 1 आई जिस न [आई निंश] एठ-दिन सर्वेश (पिय) । **अहरूम देवो अहेरूम (स्ट ११०)** : मद्रण दि [असत] निर्मन वनपीरत (विसे २=१२) । बाह्रज्यिस न [आहर्निश] एठ-विन निस्टर (सट) १ धाइता म [ अभस्तान् ] गीने (मन)। भाइम नि [अयम्य] यप्रसम्य इत्तराप्त (नुर ₹ ₹₩)1 भद्दमिस रेवो अद्दुष्णिस (नुपा ४६२) । अहम वि अधमी धवन नीच (दुमा)। अहमीत वि अहमिन्तवा प्रिमानी प्रविष्ट (हार)। अइमइमिका । 🛡 [अइमइमिका मि अहमहमिगया दनधे पत्ने ही बाई ऐसी अहमहमिगा नेटा, मनुस्तरहा (गा मुना देश १३२३ १४०) । भइमिंद् पू [ब्राइमिम्द्र] १ बत्तम-मेरीन पूर्ण स्थाबीन देवबादि विशेष देवेबक धीर यनुत्तर विमान के निवासी देव (इक)। २ भाने को इस्त्र हममन्त्र काला विद्युप्त 'संपद्द पूरा सवाको नरिव ! सर्विव म्यामिना (ग्र t ( t ( t ) i **बाह्म्स केलो धायस्य (मूख ११ २**: सम्ब नद ६ सूर २ ४०० मूपा २३ वः बानु १३६)। अहम्म दि [अधर्म्य] धर्मेणून वर्मेर्गहत र्मरम्यावदी (समु) । **भद्**रमाणि वि [अह्म्मानितः] वरितानी (भारम) । भाइनिम वि [अभीमन्] वर्ग छील, पती (दुना १७२) । अद्दिमह देवी अधिक्मेह (भव १ (श्रव)। **अर्**ग्मिय दि [अपार्मिक] बदर्स पाति (विकार १)। अदय रि [अदत] १ प्लुच्य प्रव्यान्यिप (इ.स.च. १४१)। २ सम्बद्ध सम्बन्धित (नुष २ २) । १ जो इनग्रे शरक तिया गमा हो (चेर १६) । ४ नया, नूउन (का () :

आहर वि दि बिराफ, प्रसमर्थ (दे१ १७)। भइर र् [अभर] १ होठ, योह (श्रीर)। र निनीचे का नीचना (परहुद १)। १ नीच धवम (पएह १ २) । ४**१**मध कन्य (प्रामा)। गाइ और "गिति । धर्मोनति दुर्गेति नीच नवि 'प्रहरनई निविकम्माई' (पिक)। महरिय दि [अधरित] तिसहत (दुपा 80) I **बाहरी भी [बायरी] नेपए-शिना, जिस** पर मसाचा वरोराइ पीसा जाता है बाइ पत्थर, सिमक्ट (दवा) । स्पेट्र वृष्टि से स्वी निनमें पीमा चाता है वह फ्लबर, सोड़ा (उवा)। आइरीस्य वि [अभरीकृत] विस्तृत पर मशित (गुपा ४)। भाइरीम्य वि [अपरीमृत] तिरहत 'क्परेश बरतीय, नरस्यक्रमिम मङ्ग्यह देवि ! ध्यारीनुबनतेषं वयंति तुङ्ग्वलक्ष्माप् (भूपा १६)। महरह र्न [सभरोप्त] नीने का होठ (पएह १ ३ है १ बका पहे)। अहरेम केला अहिरेस । महरेनद (हे ४ 24 ) i **बहरे**मिल वि [पूरित] पूरा क्षिता हुमा (रुमा) । बाइस वि [अपन्यः] नियम निर्देश (बानू ११६५ रंग) । अहर्सद् न [धमासन्द] दौष राज दर दमय (पद्य ७)। अहर्ति देनो अहासंदि (पर ७ )। अहम केरी सहया (है १ ९७)। महबद् (धर) देनी भहवा (नुमा) । अद्देज १ ष [अथवा] १ वाज्यानंवार में भहेवा प्रिपृत्व दिया बाता सम्बद्ध (प्रमृ नूम २ २)। २ मा सबका (बृह ६) निद् रः पंचा ३ हे १ ६७)। भइन्द रेगे समस्य (वा ११)। सहस्थत र [अधर्मम् ] शीना वेर-राष्ट्र भइम्बाधी [दे] धक्ती दुनदा*धी* (दे १ tc) i अदद य [ अद्द ] दन धरी ना भूपक

यस्य—१ सामन्त्रण । २ केट । ३ यावर्ष । २ दुःचः । ४ सावित्रयः प्रवर्षे (६ २, २१७ आ १४ कप्युः सा १४६)।

आहा स [समा] वैसे मास्त्रिक सनुसार (ह १२४१)। द्वांस्य वि [च्छस्य] १ स्वक्ट्रन्दी स्वरी (ठर वर्ष टी)। २ न मरवी के सनुसार (वद २)। आय दि ["वाव] १ मा प्रावरस्य-पहित (दे१ १४४)। २ न जम्म के सनुमार । व जैन साबुधों में बीखा कास के परिमाण के सनुसार किया जाता बन्दन नगरनार (बर्ग २)। ग्रुपुरूनी की [\*तुपूर्वी] वचात्रम प्रमुख्य (खावा १ १) पक्त १ ६)। दद्य न ["तरन] तरन के बनुसार (सद२ १)। तद्यान ["तप्य] मत्य-मत्य (सम १६)। पश्चित्रव वि "प्रसिक्ष" । रजवित योग्य (यौप)। २ क्रिकि सवासीग्य (विमा ११)। पवत्त वि [ सपुत्त] १ पूर्व की तर्या ही प्रकृत सरि वन्ति (साया १)। २ म द्यारमाका । परिग्राम-विशेष (स ४७)। प्रविचित्रस्य न "प्रकृत्ति इरण] धारमा का परिएाम-विशेष (कम्म )। बायर वि विश्वदरी निम्नार, सार-एड्डि (खाया १ १)। मृय वि ["भूत] वारिवक वस्तविक (ठा १ १)। राइनिय रायणियन [राह्मिक] यमा ज्ये<sub>स</sub> बडे के कम सं (खाया १ १ माचा)। "रिय न [ऋजु] गरमता के धनुसार (माचा) । रिद्दर्ग हिं मिनोचित (हा २ १) । २ वि उचित योग्य (वर्ग १) । राय न ["रीत] १ रौति के मनुसार । २ स्वभान के साफिक (नगर, २)। संदर्ध [सन्दर् वात का एक परिमाल पानी से भी बाहुसा हाब जिल्लो समय में मूच जाब अदला समय (कप्प) । यगास न ["बग्रारा] मननारा के सनुभार (तुम २ ६) । बच नि ["परय] पुत्र-स्पानीय (भन ३ ७) : संश्रष्ट वि िर्मस्तृत रेशवन के योग्य (भाषा)। संवि भाग नूं ["संविभाग] नापु को बान देना (ठम) । सम न मिन्य वालावित्रता गनाई (पाना) । सन्ति न िक्ति शन्दि के मनुगार (पंतूर)ः सुत्तन ["सुत्र] यानम के यनुकार (सम ७३)। सुद्द न

िसुक्ष) इन्ह्यानुसार (एगमा १ १ सम्)। सुद्धम नि िसून्स) सारमुक्ष (शग १ १)। देवो अञ्च । अञ्चातमार (गायक) (गायका २ ७ १ १ २)।

अहार्स्य दि [यदालम्य] यदानुत्रात (काप) इच्छानुसार (एमस) (साचा २ ७ १ २)। अहारति तु [ययाळन्दिम्] 'यसानन्य' सतु हान करने बासा मुनि (पक ७ )।

सहासंद्राह वि [वे] तिकस्य नियत (निवृ

अहासक वि [श्रहास्य] हास्य-प्रीतः (मुगा ६१)। अहाह म [अहाह] देको अहह (हे र

२१७)।
आहि देखी अभि (गवड पाम पैका ४)।
आहि म [अभि] इन समें का गुका सम्मय—
१ पाषिका सिरोपता 'सहितप' महिनाप'।
२ मक्किए, समा महिनाप'।
२ प्रकित अस्ति सहितप'।

'पहिल्ला' । ४ कंबा कर ६ सिह्त' ।

श्री हुई किहि । १ वर्ष वर्ष एत्य १ । माद् ११ १६ ११ १) । २ तेय माग (दिय) ।

स्कार की ["कद्मा ] मन्दे-नित्य (ज्ञाया ।
१ १६ तो ७) । सह पुंत ["मुतक] सौत का पुर्व (ज्ञाया ११) । बहुई ["पिट्र") होता तथा (परह ६) । विक्रिय पुं
१ विक्रा तथा (परह ६) । विक्रिय पुं
["दिक्षिक वर्ष (दुमा) ।

महिस्रक न [दे] कोच पुस्सा (दे १ १६ पर)। स्रह्मास न [स्रमिजात] दुवीनता पान

आहमाम म [आमजात] दुर्शनता पान रामी (स १४)।

श्रहिआइ सौ [अभिजाति] दुसीनता (पर्)। अदिआर पृं[क] नोक-पाता बोदन-निर्दाह

अहिक्स नि [ब्रि] म्यान प्रश्वित (गठण)। अहिक्स नि [अभियुक्त] १ विज्ञान, परिस्ता। २ उपत्र वर्षोती (गाम)। १ शत्रु ने निर्ध हुमा (बेणी १२ ि)।

अहिकर नक [आस + पूरय्] पूल करना स्वात करना । नर्प महिक्दरकॅि (बढा) । अहिकल मक [बहु] स्वाना करन करना। ग्रहिऊतइ (हे४ २ ८ यड कुमा)।

क्षण । अद्विधीय पुं [असियोग] १ संबन्ध (गरह) । २ बोवापेनण (स २२६) । केहो अभिआअ (भक्ति) ।

(भाषि)।
श्राहित पूं [आहोम्द्र] र छन्ने का राजा
त्रीय नाम (बन्द्र रे)। र स्पेष्ट सर्ग (कुन्ता)।
सुर न ["दुर] बामुष्टिननार। सुरामाह पूँ
["दुरनाम्यो विषयु धन्युत (बन्द्र २६)।
आहंसना वि [आहिंसक] हिंदा न करने
कामा (बीक्ष ७४७)।

अहिंसण ग [आईसन] पहिंछा (बर्ग र)। अहिंसय देवी अहिंसग (क्छू र र)। अहिंसा की [अहिंसा] दूधरे को किसी प्रकार से दुख न रेगा (निषु र धर्म ३ सुध्य र

११)। अर्हिसिय वि[अर्हिसित] मनारित धनी किंद्र (सुम १ १ ४)।

सहित्य रेती अभिकंग वह अहिदंशंत (र्वत ४)।

अहिद्धीक्षर पि [अभिक्सीकृत] प्रशिवाणी प्रस्कुर (संग) । अहिद्धील रचो अद्विद्धीक्षर (संग १ १२

अहिकालि एको अहिकालिए (सूम १ १२ २२)। अहिकास वि[अभिकृत] विस्का सरिदार

स्तता हो यह, प्रस्तुत (विसे १४८)। स्रिक्टरण देवों अदिगरण (वित्र ४)। अदिकरण देवों स्रिगरणी (ठा ८)। आद्वार देवों अदिगार (क्त १४ १७)। स्रिक्टरणी देवों स्रिगारि (रंग)।

अदिविच म [अधिकृत्य] माँचनार कर, चरेरव कर (याचू १)।

बाहिक्काम न [बे] कालंग, जनहना (वे १ १४) ।

अ हक्तियत्त नि [अधिक्षिप्त] १ विष्णुतः। २ निनितः। ६ स्वानितः। ४ परिस्यतः। ६ सिप्तः(वारः)।

अहिक्स्त्य एक [अधि + क्षियू] १ विरम्बार करना । २ कॅरना । १ किन्ता । ४ स्पानि वरना । २ छोड़ देना । महिन्स बर (का) । प्रतिस्तराहि (न २२६) । बहु अहिक्स्तर्थन (परम ११, ४४) ।

```
धारसोरक देवी कारसस्य (पि ७४८ १५२
 1 () 1
धरसोयम्ब व [अमोत्तरुप] मुनने के भयोग्य
 (मुर १४ २)।
```

w

श्रद्ध प [श्रम] इन क्लों का मूचक क्रम्यमं---१ धन बार्च (स्वयः ४३ व ६१३ दुमा)।

२ प्रकाशीरु विकार सीसंभइ होत बंबर्ग वस्त

सम्बद्धासम्बद्धी।

परिवसपालले सुपुरिसाल वे होद ते होन्ह ।। (प्रामु १)।

६ मैक्न (दुमा) । ४ प्रश्ना३ **६ मुक्**या ६ प्रतिवयन उत्तर (बहुई)। ७ मिटोप (ठा )। बचार्वता पास्तविकता (विम १२७१)। **१ पूर्वपक्ष (विसे १७८९) । १०-११ वास**स

की शोमा वकाने के तिए और पाद-पृति में भी इसका प्रयोग होता है (सूम १ ७ पैका **११**) । द्धार् न [क्षारून्] दिनसंदिन (या १४° नाम) ।

ब्यद्र म [अथस्] नीचे (नुर १ ३)। स्रोग व विशेष विज्ञान-बीच (नुपा ४ )। रेव वि [देस] गीचे छ। हुमा निम्न-स्थित

(पक्य १२६३)। **आह प** [ शत्स् ] यह यह (शस्प) ।

क्षद्र विदेश हैं। आहर जियी गा (पाप)।

लाइ देली बाहा (हे १२४२ दूमा) । इदम दमसो थ [कम] व्य के म्यूनार, स्यूच्य से (मीव ६ मार सं ६)। कल्याय सामा न [क्यात] निर्देश शरित परिपृष्टी बंदन (स ४.२ भन २६) हुमा)। क्यायसंजय वि [क्यावसयव] परिपूर्ण संबग वाला (मर २४, ७) । वहाँद देशो शहार्शन (ई t)। त्य वि [स्य] श्रेत-डीक का स्या प्रवास्थित (ठा १)। देव वि [भी]

वान्तरिक (ठा १ १)। प्याहाण ध ["समान] प्रवात के दिखाव से (मद १**४)** । भद्दः प [अनिकृत्] स्वीरारनुषदः यम्पर--हाँ मन्द्रा (तरः प्रयो १) । भक्षर वृं [भर्र गर] धीमगान, वर्ग (तूच

१ शास्त्र रो।

(मबड) 1 आहे जिस न [भाइनिंश] एउ-दिन सर्वेश (पिन्)।

**अब्ब**न्म देवी अब्बेड्न्म (सिंड १९५) । आहुण वि [अधन] निर्धन वनस्थित (विसे २८१२)। अह्यिस न [मह्निश] एत-देन निरुत्तर (नार) ।

काइत्ता म [ कामस्त्रान् ] नीचे (मग) । छाइम नि [अधन्य] मञ्ज्ञास्य हत्तवाय (सुर २ ६७)। **अहामिस रेबो बाह्यियास (गुपा ४५**२) । अहम वि [अथम ] धवन नीच (कुमा) । श्रहमंति वि जिह्मस्तिन् विमानी वर्षिष्ट

(ਕ १)। अद्मद्मिया । 🛍 [बद्मद्मिका] मैं अहमहमिगया | इंडरे पूर्व हो बाऊ ऐसी अहमहमिगा । नेहा क्युन्बर्का (शा पुषा ६४ १६२३ १४०)। भएसिंद पुं [**भए**मिन्द्र] १ उद्यम-भेजीय पूर्ण स्वापील देववादि विशेष स्विधक ग्रीर यतुत्तर विभाग के निवासी देश (इक)। २ मफो को इन्द्र समझने बाला गर्बिष्ट संपद

पूरा धनाको नांच्य । समेति स्वानिका (सूर १ १२१)। ध्यक्तम केको अधनम (दूध ११२) मनः नव ६) नुर २ ४४ मुना २१८ प्रानु १३६)। ब्रह्मस नि [ब्रायम्यी] धर्ममूतः वर्षेणीहत रेरम्यानमा (एए) । शहस्माणि वि[अहस्मानित] पविनली

(माक्स) । आइस्मि वि [अधिमम्] वर्गे सीत, पारी (बुपा१७२)। भाष्ट्रिस टुबेबो धामस्मिट्र (सन १० २) (स्व)।

अवस्थित वि [अधार्मिक] धवनी पानी (विचार १)। भाइप रिजिद्दा १ समूद्य सम्बद्धित (ठाम पत्र ११)। २ यज्ञत सविधित (सूम २, २)। १ मो पूनपै शरक निया क्या हो (चैद ११)। ४ भया, बूतन (धन ८ () :

अहर नि हि] सतक, प्रसमर्थ (दे १ १७)। आहर पू [अधर] १ होठ, बोह (एपि)। १ विनीचे दा नीचना(पण्हर ३)।३ मौच प्रवस (परहुर २)। ४ दूसरा धन्य (प्रामा)। सङ्घ वै [गति] प्रयोवति पुर्गेति नीच पर्वत 'पहरका निति कम्मार्थ (चिड)। अइरिय वि [अपरित] तिराक्त (पुना

नस्रोत्य-अहा

ro) I अवहरी की कियरी देवल-किमा किस पर मदाता वरेषह पीमा बाता है वह पत्वय सिनक्ट (समा)। "चोट्ट पु [स प्र] वितसे पीसा बाता है वह परवद, बोड़ा (स्वा)। बाइरीक्य वि [बाधरीकृत] विरश्रव ध<sup>क</sup>-पश्चित (भूपा ४) । अङ्रीमूग वि [अघरीमूद] विस्तृत 'स्वरेख बरंडीय, भररक्छमिन महत्वई देवि I म्बर्पेत्रुयमधेर्धं वर्षति सुद्ध स्वरूपम्प्यूर् (सुपा ६१)। अइस्ट पुन [अघरोष्ट] ग्रेने का होठ (पर्स १ ३ है १ व४ वह)। अहरेस केवी अहिरेस । यहरेमह (हे Y 145)1

व्यक्रेमिश वि [पूरित] पूरा विवाहण (<del>द</del>मा) । **ভাহত বি জিদত্ত বিজেল বিংকি (মানু** रेस्ट रंघ)। बाहर्सन् न [संबात्सन्द] पाँच एत ना समय (पक्क)।

**अहर्काद देवो अहार्कावे (पन ७ )**। अहब केवी सहवा (हे १ ६७)। बद्दर् (भप) देवो बहुवा (दुमा) : ध्यद्वम ) म जिथवा र वाक्यानंबार में कर्या प्रमुख किया काता सम्पन (परा सुम २ २)। २ शाधनगा(बृद्ध १ः निद् रायचा संहर ६७)। आहम्य केवो असक्य (पा ६१)। महत्त्वत र् [ सथर्वेस् ] चीवा वेदनाम (पीप) 1 अहम्याद्ये [दे] सक्ती कुतरासी (दे १ રવોા

स६६ थ[अद्द]क सर्वे राष्ट्रक

सम्यय—१ सामन्त्रसः । २ लेदः । ६ सामर्थः । **४ इ.स.। ५ माविश्य प्रवर्ष (ह**. २ १७ मा १४४ कण्युः गा ११६)। अहा च [यमा] पैसे माफिक मनुसार (ह १ २४४)। सन्द वि ['वसन्द] १ स्वक्युन्धी स्वेधी (इस व ११ टी)। २ न- मरजी क क्ष्मुनार (वद ६)। ज्ञाय वि [\*आत] १ नप्त प्रावरण-रहित (हे १ १४%) । २ न जन्म के सनुगार । ३ वैन साकुर्वोर्मे कीआ काम के परिमाण के सनुसार किया जाता *बन्दन*—नमस्तार (वर्ग२) । शुपुक-ीकी िनुपूर्वी वदाकम धनुसम (सामा १ १) पंजन १ ६) : तथ न ["तस्त्र] तरन के धनुनार (सम २,१)। तव न ["तप्य] मन्य-गत्य (गम १६)। पश्चिरूच वि ["प्रतिरूप] १ अवित योग्य (पीप)। २ ब्रिक्टियकामीरम् (विपार् १) । पत्रक्ति वि [ ब्रक्ति | १ पूर्व की तरह ही प्रदृत कारि वनित (लामा १ ६)। २ न माध्माका परिलाम-विरोप (म ४७)। पविचिक्रस्य न ["प्रयुक्तिस्रण] धारमा का परिएाम ( विरोत (रम्म ६)। बायर वि विवाहरी निस्नार, सार-रहित (गुप्पा १ १)। सय<sup>ा</sup> वि ("भूत) तारिक बारतविक (छा १ १)। राइतिय रायजियन [रामिक] स्या क्येष्ठ बडे के कम स (एसमा १ १ व्याचा)। रिय न [ऋजु] गरनता के बतुपार (यावा)। सिंह् न [ैह] स्थावित (टा२ १)। २ प्रिटिंश के वीस्य (बर्म १)। रीय <sup>!</sup> न [रीत] १ रीति के अनुसार । २ स्वभार माकिक (मय १,२)। स्त्रंत्र्र [\*सन्त्] कार का एक परिमाख पानी से भीका हुआ राय वितने समय में भूच जान बदना समय (रण) । बगास न ["बस्राता] धवराश के म्प्रुमार (भूष २, ३) । इन्हारि (\*फ्य) पुत्र-स्थानीय (मव १ ७)। संयह रि [ संस्तृत] रायन के योग्य (माचा) । संकि-भाग पू [सिविभाग] मापूजी राज देता (घरा) । सञ्चल [सन्द] बास्त्रदिरता सवाई (मावा) । सन्ति न [ॅग्रसिड] शन्द के मनुसार (र्थमू ४) । सुक्त न ["सूत्र] बानम के बनुनार (सम ७०)। सुद्द न

["सुका] सम्बानुसार (खामा १ १ मप)। सुहुस वि ["सुह्स] सारमूत (मग ३१)। वेद्यो अहा। श्रद्वासंद वि [ययासम्द] ययानुवाद (कान) इच्छानुमार (समय) (माचा२ ७ १ २)। अहाइदि पू [पथाव्यन्तिम्] 'पपामन्न' प्रतु ष्ठान करने वाता मुनि (पव ७ )। सहासंदाह वि [वे] तिफाम निक्स (निष् अहासछ नि [अहास्य] हान्य-एहित (गुपा 48)1 शहाह व [अहाह] वेको महह (हे २ व्यक्ति देखो अभि (गउड पाम पंचव ४)। अहि स अधि दम सबी का मुबक धम्यय---१ माबिस्य विरोगता 'महिगंब महिमास' । २ प्रविकार, सक्ताः 'प्रक्षिगय' । ३ ऐपर्ये व्यक्ट्रिए । ४ कॅचा, क्यर, महिट्टा । अहि दूं [अहि] १ सर्वे सौप (पएए १) प्रामू १९ १६: १ ४)। २ शेव नाम (पिस)। **ब्द्रका भी ("ब्द्रदा )** नवधै-विशेष (णावा १ १६ ती ७)। सष्ट पूर्विभृतकी सौप कानुदा(फामा १.१)। श्रद्भ [पिति] शेष नाम (मण्डु ६)। बिंडिइज वै दिश्चिक सर्व के मूत्र से बन्दम होत बायी वृध्यक्र वाति (क्रमा) । अदिअ⊛ न दि] औष पुल्ला (दे१ ६६ पद्भाग অহিমাস দ [সমিত্রাব] দুর্নীবরা আন-शानी (या १०)। व्यद्विभाइ श्री [अभिज्ञादि] दुमीनवा (यइ)। आह्आर पुं [ब्] सोध-पात्रा भीवन-निर्वाह अद्वित्त वि [वि] स्थाप्त स्ववित्त (गरुः)। अद्विच रि[अ भयुक्त] १ विज्ञान्, परिवत्तः। २ जयत वदीमी (राम)। १ राष्ट्र में मिरा हमा (केन्द्री १२६ ि)। अहिकर नव [अव्य + पूरव्] पूर्ण करना व्याप्त करना । कमें चरिक्रीरजेनि (मढह) । भदिक्छ पर [दह] रताना दहन

करना। ग्रहिज्सद (हे४ २ ८ पडः) भूमा)। अहिओय वं [अभियोग] र पंबन्य (यटा)। २ बोपारोग्स (स २२६) । रेपो अभिजोध (मपि)। अहिंद पूं [अहीन्द्र] १ सर्पों का राजा शेष माग (बण्डु १)। २ थीप्र सर्प (कूमा)। बुर न विप्र] कामुकि-नगर। युरणाह व् िपुरनाथ निय्ल सन्द्रत (सन्दु २६)। अहिंसग वि [अहिंसक] दिंसाम करने बासा (धोष ७४०)। अद्विसण न [अद्विसन] प्रविसा (वर्ष १)। अहिंसय भारे अहिंसग (पएह २ १)। भहिंसा भी जिहिसा दूसरे को किसी प्रकार से कुचान देता (निकुशः वर्म ३ सुम १ ₹**१**) i श्राहिंसिय वि शिदिंसिडी धनारित धरी-हित (मूप १ १ ४)। अहिष्या देवो अभिष्या वह अहिप्यादेव (वंचन ४)। श्रुहिक्यितः वि [अभिकाकिन्] प्रीयनापी इन्ध्रद्भ (सए)। थहिंकन्ति एतो अहिमंत्रिय (मूम ११२ अद्देख्य वि [अधिकृत] विसमा सविकार बमता हो बहु, प्रस्तृत (निसे १४८)। अहिकरण रको अहिगरण (निष् ४)। अहिएरणी रंगो अहिगरणी (ठा ८)। भाइनार देवो अहिगार (पत्त १४ १७)। धाहिपारि धैनी भहिगारि (रंगा) । शहिक्षिय य [अधिकृत्य] प्रविकार कर, स्रोरय धर (माषु १)। भहिकस्यम न [दे] उग्राचीम जनहना (दे १ भ इक्ष्मित्त विभि घश्चित्र है विरन्ताः २ निन्दितः ३ स्मापितः ४ परिष्यकः । १ िस (नार)। अदिक्यित गर [अभि+क्षिप्] १ **डिस्मार करना। २ फॅबना। १ निन्दना**। ४ म्बारित वरना । ३ छीत देना । श्रृहिरिय

ब" (उन) । महिस्थिशहि (स. ६२६) । बर्

अद्भिग्यचेन (परम ६५, ८४) ।

सहित्सक वृ ( अधियोप ! तियक्ता । । स्वारात वृंग (अधिकाल) १ प्रुव मना । स्वित्ता वर विकास । । स्वारात । १ प्रेरण्डा (नार) । । स्वयंत्र वापानमं ते विकास वर्ष अदिवित्तंत तर अदिवित्तंत तर अदिवित्तंत तर अदिवित्तंत (व.स.) । २ प्रायंत्र वापानमं ते विकास वर्ष अदिवित्तंत (व.स.) । स्वयंत्र वापानमं ते विकास वर्ष अदिवित्तंत (व.स.) । स्वयंत्र वापानमं ते विकास वर्ष अदिवित्तंत (व.स.) । स्वयंत्र वापानमं ते विकास वर्ष वर्ष अदिवित्तंत (व.स.) । स्वयंत्र वापानमं ते व्यवंत्र (व.स.) । स्वयंत्र (व.स.) । स्वयंत्र वापानमं ते व्यवंत्र (व.स.) । स्वयंत्र (व.स.
1 month and contrast conference of the state of the sta

अक्रिटाण न सिथियानी १ वैठना (निक् र)। २ बाबयण (सुधरे २३)। ३ मालिक बनमा (बाजा)। ४ स्वान, माध्यम (स.४६६)। शहिद्वायम वि [अधिष्ठायक] सम्पन्न समि पति (क्षप्र २११)। सहिद्राष्ण न [अधिष्ठापन] जार पत्रव (निक्र ३)। **अहिट्रिय वि [अधिष्ठित] १ मध्यासित** (छाया १ १४)। २ मधीन किया हमा (स्वाया १ १४) । ३ माजन्त भाषित (ठा પ્રે, વ)ા अद्विताण न [अभिद्वान] स्थान-प्रदेश (पर 232) 1 अद्विष्य वि दि अभिवृत्त पीवित पीत्रुप वीन्त्रि पद्धे च (पाप) । ब्राह्मिणंत देखी अभियातः। यकः अहिर्णतः माण (परम ११ १२ ) कवड अहिणी विक्रमाण अहिर्णदीक्षमाण (माट वि 244) t सक्रिपोदण देशो अभिगंदण (पुरुष २ ३ ३ कहिणीहे वि [छमिनन्दिन् ] मानन्द मानने वाला (स ६७७) । खडिजंडिय **रेको स**मिणंडिय (परम क १२३ स १४) । अद्विणय केवो अभिजय (कप्पू: सए) । अद्विणव पुंकिसिनवी १ सेपुनन्य काम्य का कर्ताराजाप्रवरक्षेत्र (से ११)। २ वि मूटन नवा(खावार र सूपा३३)। लहिणबंसाण देवी अहिणी। अहिणवेमाण रेजो सहिन् । कहिजाज देवो अहिज्जाज (मनि)। खडिविबोड पे अिमिनिबोधी जन-विशेष मतिबान (पर्ए २१)। अद्विणिवस सक [ अभिनि + वस् ] वसना, खना । वह अदिभित्रसमाण (गुरा २३१)। सहिविद्धि नि (अभिनिविद्ध**े** पायह-प्रत (स २७३)। सहिविदेश प्रिमिमिवेश] पायह, हुठ (स वदका मनि ६६)। अविजियेसि नि [अभिनियेशिन्] पाण्यी । (ft y x) t

अहिंगी की अहि । नागन (बका ११४)। सहिणी देवो अभिणा वह अहिणयमाण (सर १ १६)। भक्तिजील कि शिभिनीकी हुए हुए रंप बासा (मउद्र)। अहिण सक अभि + नी स्तति कला प्रशंसना। यक अदिज्यमाण (सर ३ ७७)। सक्रिय्य वि शिमिक्षी भेदरहित सपुरामृत (मा २६६६ ३६ )। अहिष्णाग न [अभिद्यान] चित्र, निराती (धर्मि १३)। अहिल्या वि [अभिक्र] नियुष्ण ज्ञाता (हे १ 24) 1 अहितत्त वि [अमित्रहा | तापित चंतापित (स्तु २)। खडिका देखो अहिटा = प्रवि + प्र । अधिवायम वि [अभिवायक] की बाता दाता (मुना १४)। अविदेवया की [अधिदेवता] प्रविष्ठाता देव (सपा६ कम्पु)। अहिदय पर [अभि + द्र] हैरान करना। व्यक्तिवर्गित (स १८३) । स्वीत व्यक्तिस्वर (स ११५) । अहिद्दुय वि [अभित्रृत] हैरान किया हुमा (U X (Y) 1 अहिमान एक [अभि + धाव् ] शैक्सा, सामने बीड़ कर बाना। नक्क लाहियाचेत (से १६ २६)। अहिनाण ) देवो अहिण्याण (मा १६ सूपा आ क्रिमाण (२६) । भहिनिषेस देवो छहिजियेस (छ १२४) । व्यक्तिवास सक मिद्दा प्रदेश करता । यहिन्दुमद (दे४ २ १ पद्)। श्रद्धि पण्युमंति (रुमा) । काहिपवजुज सरु [आ + राम् ] बाना। बहि पणुपद (हे ४ १६३)। खहिपचनुद्रभ नि बागत प्रापात (क्या) । बहिपच्चाञ न विविधनुसमन, बनुसस्स ( t t, ye) 1 अहिएड सक [अभि + पन्] सामने बाता। बहिपडींत (पद १ ६)।

देशना । २ समान रूप से देखना । स्रिक्षपासूर (सम १ २ ३ १२)। अहिच्याय देखो अभिच्याय (महा कप्पू)। अहिय्येय रेको अभिय्येय (छ। १ ३१ टी ਚ १४)। अहिभव देशो अभिमव (मन्ड) । कहिमंज व जिमिमन्य वर्गन के एक पुत्र कानस (कुमा)। अद्विमंत्रण वि [अभिमन्त्रण] मनित कला मन्त्र से संस्कारता (मनि)। बाह्रिमंतिक वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से संस्कृत (महा) । अहिमस्त देखो अहिमंजु (कुमा पर्)। अहिमण् शहिमन अहिमय वि अिमिमती सेवत छ्य (स खडिस**यर प्रक्रियकर**ी सुर्वे एवि (पास) । महिमर प्रक्रिमिमरी धनाविके नीम से बुसरे की माली का साइस करने बाला (सुर ११८) । २ मनाविचातक (विसे १७६४) । अक्रिमाण प्रक्रियमानी पर्व महेदार (प्राप्त १७३ सम्)। अदिमाणि वि [अभिमानिम्] प्रभिगानी गमित (स ४३१) । महिमार पे विभिमारी प्रथ-विरोध 'एन भक्रिमाण्यारमं भागी (उत्तरि १)। अदिमास ) पूर्विभीमास, की मधिक व्यक्तिमास्य । मास (मान १ निष् १)। भहिसुद्द वि [अभिसुख़] चंतुक, सामने एत हमा (वे १ ४४ परम व १९७ गुज्ज)। बहिमहिह्य ) वि अभिमुखीमती समने अहिमुद्रीहरू । मार्ग हमा (परम १२ १ ४ YX, \$) | अद्विय नि अभिका १ न्याचा निशेष (धीन) वी २७३ स्वप्त ४)। २ क्रिके बहुत पत्पन्त (पक्त) । अदिय वि अदिशो बदिएकर, शतु, दुरपन (महार मुपा ६६)। कहिय वि जिबीत पिठेत सम्बद्धा परिव-सुद्री पहित्रक्रिक एण्डाविद्वारपत्रिमं सी' (सूर अदिपास एक [ अधि + दश ] र अविक Y (XY) I

69	पाइअसइमङ्ख्या	व्यक्तिस्-अदिहा
हिंदे  अहिम्मव कु [ अधिकृप] र जिल्लार ।  २ स्वारत । व मेरण (नार) ।  श्रीहानव के अधिकिय व के अहिनिक्स के अहिनिक्स व के अहिनेक्स	सिहारण पुंत [सिक्टार्य] र प्रज नहार (जर द १६०)। र धर्मयम पार-मार्थ र धर्मित (जर ६९०)। र धर्मयम पार-मार्थ र धर्मित (जर ६९०)। र धर्मय पार-मार्थ र धर्मित (जर १९)। र पार वरक किया (छारा र १)। र धर्मय (विशे पर)। व हर्स द महार (इर १)। व हर्मय पार-हर्मय पार्ट्य भोक्षिण प पद हे हर्मयक्ष पुण्य प्रज र हर्मय प्रज हर्मय (इर १)। व हर्मय का प्रज र हर्मय हर्मय (इर १)। व हर्मय का प्रज र हर्मय हर्मय (इर १)। व हर्मय पार-वरक कर्ष्य पुण्य र १ र १। व हर्मय हर्मय (इर १)। विश्व प्रज र १ भीक्ष्य प्रच र १)। विश्व प्रच र १। विश्व प्रच र वि	व्यक्ति — आहुत्ता व्यक्ति — आहुत्ता व्यक्ति विकाल कर्या क्रिकाल क्रकाल क्रिकाल क्रिकाल क्रिकाल क्रिकाल क्रिकाल क्रिकाल क्रिकाल क्रक

(सर १ ११)।

रेसना । २ समान स्म से रेखना । घडिपासप्

अहिट्राज-अहिय अहिद्वाण म [अधिष्ठान] १ बैठना (निद् श)। २ ब्राध्यस्ण (सूबरे २३)। ३ मासिक बतना (माचा)। ४ स्वान मामय (स४६६)। सहिद्वायम वि [अधिष्ठायक] प्रम्यक्त अवि पति (कुम २१६)। सिंद्रावय न [अधिप्रापन] उसर एक्स (Preg 1) 1 **अहिदिय नि [अधिष्ठित] र मध्या**सित (खाया १ १४)। २ भवीन किया ह्या (खाया १ १४)। १ मामान्त मानिष्ट (हा **६** २)। सहिताण न [समिश्चान] सपान-प्रदेश (पर रदश) । बहिद्वय वि दि अभिद्रत पिनित पहिद्वर्य पीकियं पद्धं च (पाम) । श्रद्धिणंद देखो अभियांद । वह अदियांद माज (परुम ११ १२ ) कवड़ा आहिजी-विज्ञमाण भहिजवीभमाण (नाट) पि X44) I व्यक्तिर्णतव्य देखो अभिनंदव्य (पटम २ ६ ) भवि)। अद्विपदि वि [अभिनन्दिन् ] शानन मानने बाला (स ६७७)। श्रद्विणविय केवी अभिजंविय (पत्र्य ८ १२६ स १४)। अद्विजय देवो अभिजय (कप्पु; चरा) । लक्षिणम् प्रक्रियन्त्री १ सेनुबन्द काव्य का कर्ताराजाप्रवरकेन (से ११)। द्वित कुरुन नवा (सामा ११ सुपा ३३)। अहिमबेमाण रेखो अहिमी। महिजनेमाज देनो अहिजु। अहिजाज देवो अहिज्जाज (मधि)। अद्वित्रवोद्य पू [अभिनियोध] ज्ञान-विरोव मित्रज्ञान (पश्र्य २१)। अद्विणिवस एक [ अभिनि + वस् ] बसना ख्वा। वह अद्विणिवसमात्र (पुता २३१)। भद्रिणिविष्ठ वि [समिनिविष्ठ] माध्य-प्रस्त (स २७३)। अदिविभेग र् [अमिनिवेश] पाच्य, इठ (स ६२३) यमि ६६)। अद्विपयेसि व [अभिनिवेदितम्] पाच्छी (RY X):

22

अदिणीख वि [अभिनीख] इस इस रंग स ३४)। मासा (गतक)। अधिणुसक [स्रिमि + तु । स्तुति करना प्रशंसना। वक्क अविभावेमाण (सर ३ ७७)। सहिज्य वि सिमिम नैवर्णित भएवरमूत (पा २६% ६०)। अहिज्याय न [अभिज्ञान] चित्र, निराती (धनि १६)। संसङ्घा (महा) । अद्विष्णु वि [अभिक्षा निपूष्ण काता (हे १ थहिमम्तु । X4) : खड़िमण्यु बहित्त में [अभिवस] वापित चेतापित **अधि**मन्तु । (इस २)। अहिचा रेखो अहिटा = मर्थ + इ ! लिख्तियम वि [अभिदायक] की बासा राता (सूपा १४)। महिदेवमा भी [अभिदेवना] मनिष्ठाता देव (सपा ६ ३ कप्प) । अहिदय एक [अभि + द्र] हैरात करना । प्रतिदर्गीत (म १११)। मनि प्रविद्विस्सद (# 124) I व्यक्तियुव के [अभित्रत] हैचन किया हुमा (司 共2分) 1 अद्रिपात एक [अभि + घाव् ] बीवृता, सामने दौड़ कर जाना। नहः अद्विधार्यत सि १३ २६)। अहिनाम ) देवो अहिण्याम (मा १६) सुपा व्यद्तिमाण ∫ २५)। भहिनिवेस देवो अहिणिवस (स १२४)। थहिएक्अ सक मिद्दी प्रहण करता। महिर्देशका (इ.४.२ ६) तक्षी प्रमुशंवि (क्या)। YX 4)1 श्राहिपरचुअ एक [बा + गम् ] दाना । द्राहि-पणुप्रद (हे ४ १६३)। भहिपण्डुइअ वि [आगत] प्रायात (हुमा) । मस्यन्त (मक्षा) । अहिपण्युद्धा न [वे] बनुतमत, बनुसरस्स ( t t xt): (महाः, सुपा ६६)। अदिपद सक [ समि + पस् ] सामने बाता। महिपद्रति (पद १ ६)। अदिपास सक [अभि + इस ] १ स्रविक

अहिमी श्री [अहि] नागिन (नवा ११४)। अद्विणी देवी अभिणा वह अद्विणवसाण (सुमार २,३ १२)। भहिष्याय देशो अभिष्याय (महाः कृष्यु) । सहिप्पेय देशो अभियोग (छा १ ६१ टी कहिमव केती अमिमव (परा)। व्यक्तिसंज्ञु पुंकिसिमन्यु पर्वत के एक पूत कानाम (कुमा)। अद्विमंत्रण वि [अभिमन्त्रण] मन्त्रित करता मन्त्र से संस्कारना (मनि)। अहिमीतिल वि [अभिमन्त्रिय] मण छे रेको अहिसंजु (दुमा पर्)। क्षक्षिमय पि [क्षिमिमत] संगठ छ्छ (स खडिमयर प्रशिक्षिकरी सर्व र्राव (पाम) । भड़िमर प्रे [कासिमर] प्रशाद के मोध छे बूसरे को मारने का साहस करने वाला (सूर १ १८)। २ गमाविवातक (मिसे १७६४)। भदिमाण पं भिमिनाची पर्व ग्रास्कार (प्रासू १७ सग्र)। अहिमाणि वि [अमिमानिन्] प्रमिमानी गरिष्ठ (स ४३१)। भहिमार पूँ [अभिमार] दुल-विशेष 'एवं महिमारवादमं मन्त्री (एतमि ३)। अहिमास १९ [अधिमास, क] श्रविक अद्दिमासग ∫ मार्च (मन १ निक्रू र )। धाइमुद्द वि [अभिमुख] संपुत्र सामने खा हुमा (से १ ४४" पडम ८ १३७ महाई) । अदिमुद्दिष्ट ) वि अभिमुखीमही सामने अहिसहीक्षा । भागां हुमा (पत्रम १२ १ ४ छहिय वि [अधिक] १ ज्याचा विरोप (मीपा वी २७) स्थल ४)। २ किनि वहत अहिय वि [अहित] पहितकर, राष्ट्र, बुरमन खद्दिय वि [क्षपीत] पठित सम्बरत पहिन-मुमो पविश्वक्रिय एक्क्सक्तिहारपश्चिमं श्वी (सूर Y (XY) I

सिंद्या की [अभिका] अनवान थोर्लयनाव की प्रका किया (कर ११३)। अदिवाद देवो अदिवाद (यह )। अदिवाद देवो अदिवाद (कर १ ) अदिवाद को अदिवाद (वह १ १ ) अदिवाद को अदिवाद (दे १ १ )। अदिवाद को अदिवाद (दे १ १ )। अदिवाद को अदिवाद (दे १ १ )। अदिवाद कर कर कर के की की की अनवा। यह वाद के अदिवाद (यह यह)। को वाद की अनवा। यह वाद की की की की की अववाद की की की की की की की की वाद यह)। को यह वाद की की की वादिया अदिवादम वाद १ १ ४ आदि

स्वित्तासियस्य (का २४६)। व्यक्षिमासः वित्तास्य स्वित्तस्य (प्रदः)। व्यक्षिमासत्र न [अस्यासन व्यक्षिसद्वन] वहत्त काला (का २६६ व १६२)। स्रोहिमास्य न [व्यक्तिस्यान] स्वित्तः सेतन्य वरीत्तं (वा १)।

धाता) हेइ- अहियासित्तप (पाता) । इ-

क्षारित (क्षार्यासित समियोड] सहत क्ष्मि ह्या (याचा)। स्रदिर द्रृ [सामीर] च्हेर, चेवस्य (वा ५११)। स्रदिरम देनो जीससा। वड- स्रदिसांद (स्ट्र १२४)।

विशेष करा। सहिएति (ती) (तर)। हेड समिरमिद्रं (तो) (तर)। इतिहरमे वि [समिरम्य] नुष्टर, मनोहर (विशे)।

(शक्त)। अदियमित्र वि [अभियमित्र] मानव्य की बाता (क्या)।

अहिराय पूं [अधिराज ] १ एका (हरू १)। । २ लाभी चींद (छछ)। अहिराय न [अधिराज्य] एज्य, प्रकुल (लंडु ७)।

आहिरिभ स्वा आहिर्दाम (नित ६३१)।
अहिरीज रि जिहाँ जी नितंत्र वेदारा (ह २, १ ४)।
आहिरीज रि चिं जिस्तेत्र भीता (व १, २०)।
अहिरीज रि चिं जिस्तेत्र भीता (व १, २०)।
सहिरीजात विच्चित अहारिस, आहीसतस् ।
१ समगेहर, मन तो प्रांतरूष । २ समझ कारण 'जबारे समझरे सांतरात जिलिका समरी परिस्त व वे स्वित के स्वारीचारणां

कारन 'एक्यरे सप्तम्'र समिन्नाव निरित्त मारो परिकाद भे व द्विये जे व स्मीद्रयोगारता' (माचा १ ६,२)। भदिरूप वि[भमिरूप] र तुन्दर, भनौरर (बर्कि२११)। २ बनुस्य यौग्दर्शक ६८)। व्यक्षिम सक्षि विषय करना प्रतिकरना। पक्षितेमङ (हि.४.१६६)। वहिरोद्दम नि [दे] पूर्ण ( पर्)। ल इिरोइज न [स्रिभिरोइज] कार शहना मारोक्त (मा ४) ! अहिरोहि वि[अभिरोहिन्] अपर वहने नाना (ग्रीम १७)। अहिराहिणी भी [अभिरोहिणी] निचौछी सीदी (दे द, २६)। महिल वि[मस्तितः] एकतः सव (नजाः रमा)।

অমির্কাল , তহ [ শাস্কা ] বাহনা আমি কাহিবলৈ ) নাম কলো। আহিবলৈ, আহি আহিবেদনা কাহা (হি \* ११-৫) 'আহিব-কানী মুখাটি আ ফোনার্য বিদ্যানিত্তীয়িত-মার্য (বি \* ২০)। আহিবেদনা বি [ সিমিন্তম্বা যুদুখান ই বাল্টা বাহন (খারা)। আহিবেদ আছে মিনি + কর্ ] ভাষাবাল্

८४)। श्रीहसम गङ [असि + स्यू ] समित्राय करता, बहुता। प्रहिमनद (न्या)। बढ श्रीहस्रति (नाट) श्रीहस्रति पिट्टा ४१४)।

करना करना। रक्ष्ट्र महिस्रप्यमान (स

लहिससिर नि [स्रीमस्मिपन] सीमापी स्कुल (१९१)। सहित्यण न [सीमसान] पुत्र ना स्थन स्थिप (पासा ११७)। अहिस्तय दे [अभिस्तप] राज्य, मानाव (ठा २ ६) : अहिस्तस दे [अभिस्तप] रण्या नाम्स नाद (स्टार)।

क्षदिक्तिसि [क्षिसस्यिपन्] चाहनेताना (भार)। क्षदिक्षम निष्] १ त्यामनः २ क्षेत्र कुत्ता (११ ०७)। महिस्सिः १७ क्षित्रे चित्रन्] १ तिला करताः २ तिकताः व्यक्तिसेक्षित्र (द्वा

अहिसायण न [अभिन्नेकन] उँचा स्वयः (चरु २ ४)।
अहिसास हि [अभिन्नेने वास च चच (चरु)।
अहिसास हि [अभिन्नेने वास च चच (चरु)।
अहिसाहिआ की [अभिन्नोभिका] नेनुता कुरता (वै ६ ४७)।
अहिसा नि [दे] कत्तरह, क्ली (दे १ १)।
अहिसा की [अहिस्सा] एक नती स्वै (चरु १ ४)।

जिहित आधिप् र अगरे पुत्तिया (का घरत की) : र माणित कामी (पडा) । व पडा जूर "दुहाईका बेहरप हर्नार्ड (पीय क) । स्मृद्दिक ति जिमियां जिल्ला क्यों (लावा र । स्वतः पुर ६ ६०) । स्मृद्दिक की स्मृद्दिक भावत्य (व

६४१)।
महित्रमु केशे अहित्रमु (वर् )।
अहित्रमु केशे अहित्रमु (वर् )।
अहित्रमु केशे अहित्रमु (वर् )।
वर् एवं किशोर मञ्जूष्ठणे भीचेए अहि वर्ष 'एवं किशोर मञ्जूष्ठणे भीचेए अहि

अहिनड एक [ अभि + पन् ] यहा। नद्भ-आहिनडाँव (राज)। अहिनडाँ केचो असिनडाँ धाँहनहथ्यो (रुप)। अहिनडाँ को [असिन्द्रीय] बता प्रेष्ट-

भदिनार्वेड | जी [अभिनृद्धि] बत्तर प्रोष्ठ-भदिनद्धि | पद्म नवन ना प्रविद्याय देनता (पुनः १ १२, नं ७—पनः ४२४)।

अहिपहिडन नि [अभिन्धित] नदाना हुमा (त २४७)। **अदिवण्ण् वि [दे]** पीसा और नाम रंग वाला (दे१ ३६)। अतिष्णु } रेको अहिमंजु (पर् कुमा। अहिक्स अह्बिक्षी की [ब्राह्वस्ती] नाय-बन्नी (सिरि 40) t अदिवस सक [अभि+धस्] निकास करना पहना। वक्त अद्वियसंत (स २ ८)। शक्षिकाइय वि [श्रीभवादित] प्रभिनन्दित (स ३१४)। बहिवायण देशो अभिवायण (मीर्प)। शहिवाछ वि [अभिपास] पातक रखक (भृषि)। अद्विशस पू [अधिवास] बासना संस्कार (देश = ७)। सहिवासण न [सभिवासन] संस्कारावान (पंचा ८)। अदिवासि वि [अधिवासिन्] निवासी (बेह्य ६८७)। भक्तिपासिल पि जिपिवासित ] प्रजाना हुमा सम्यार किया हुमा (दस्त ३१ दी)। काहिबिण्या की दि देश स्व-सायव्या की उप पली (दे १ ए४)। व्यक्तिसंद्राभी [अभिशृह्या] प्रम स्थित (पदम ४२ २१)। अद्विशंद्र की [अमिश्रह्म] मन बर (पूप १ १२ १७)। भहिसंज्ञमण न [भिसिसंयमन] नियन्त्रण (गढर) । व्यक्तियारण न [अभिसंधारण] विज्ञाव (वंबा६ ३१)। भहिसीच पूरी [भमिसीच] प्रीफाव माराय (पराह १ २ स ४६३)। बाहिसीय पु वि वार्तवार (व १ ६२)। अदिसद्यम पुन [अभिष्याकण] समुख यमन (पव २)। अद्सिर सक [अभि + स्] १ प्रदेश करता। २ प्रपत्ने दमित-प्रिय के पास वाना । प्रयो-, नमें समियारीप्रदि (शी) (नाट)। हेनू- अभि सारिदुं (शौ) (नार) । **छाह्यरण न [मांभसरण]** बिव के संगीप थमन (स १११)।

भहिसरिज वि[अभिस्त] १ प्रिय के समीप पतः । २ प्रक्टि (मानमः) । बहिसका न अविसहनी सक्त करना (র ६)। शहिसाञ रेखो अख्य = या + कम् । यहि सामद (प्राकृ ७३)। थहिसाम वि [श्रमिशाम] कता ह्य्य बर्ख बाला (दराउँ)। अदिसाय विदि] पूर्ण पूरा (दे १२)। अद्सारण न [ अभिसारण ] १ धानधन (से १ ६२)। २ पित के निए संकेत स्थान पर भागा (गउड)। अद्विसारिअ वि [अभिसारित] पानीत (से १ १३) । **बाह्**सारिका की [अभिसारिका] गायक को भिसने के लिए धेंनेत स्वान पर जानेवाली 🕸 (कुमा) । व्यक्तिस्थान [दे] १ प्रतिष्ट यह की पार्टका से क्षेत्र करता—रोता (वे १ वे )। २ वि मनिष्ट बहु से भयभीत (पङ्)। अहिसिय देवो अमिसिय । प्रक्रियद (महा) । एंड्र अदिसिचिक्य (स ११६)। अहिस्तिचय न [सभियेचन] धर्मियेक (सम १२४) । भाइसिच केंद्रो अभिसिच (महा) मुर व 22E) 1 बहिसेम देवो अभिसेम (नूपा ६७- नाट)। सहिसोइ वि [अधिसोड] छन् दिना हुमा (उप १४७ टी)। अहिस्सँग पू [अभिष्यङ्ग] चाउक्ति (पार)। अहिह्य वि [अभिङ्व] १ प्रापात-प्राप्त (से १, ७०)। २ मारित न्यापादित (मे १४ 19)1 आहिहर सक [असि + इह] १ तेना। २ क्छना । १ घर शोमना, विश्ववता । ४ प्रविमाय होता समना 'बीबामरणा धन बएलमंडला परिश्राति रमखीयो । मुएएएमो व दुमुमफर्वतर्राम सहवारवस्तीयौ ।

धह वि इतिहास्यर्थिका

मनीवंडमंडलानीलं ।

फ्लमसुद्धसपरिए।मानसंबि यदिवरव चुवारए (मठक) । अदिहर न दि । देनदूत पुराना देवमन्दिर। २ वस्पीक (दे १ १७)। अद्विद्य सक [अभि + भू] परामव करता भीतना। प्रहिह्वेति (स ११५) कर्मे प्रहिह गीर्वित (स ६६८) : बहिद्दाज न वि अभिधानी नर्शन प्रशंस (देश २१)। अहिहाज देवो अभिहास (ध १९१: नउड" सूर १ २४ पाम)। अहितु देवो अहिद्य । स्वक् अहितुसमाण (मिन ६७)। भहिङ्क वि [अभिभृत] परापृत परास्त ( t tx=) : स्मद्दीसक [क्षयि + इ.] पदला। कर्मे स्मद्दी मइ (विशे ६१६६)। खद्दी भी [अद्दी] नामित सर्पिएी (भीव २)। **अहीकरण न [कांबिकरण] क्सइ फारहा** (বি**प** १)। आहीगार देखो अहिगार, सिपेपु अहीपारो स्वगच्यास**री**रमुक्डेसु' (मानानि २५४) । भारी ज कि किमीन | भाषत भाषत (पर्क 2 Y) 1 काहीण वि [का-हीन] चम्पून, पूर्व (विपा १ १ अला)। बाहीय देशो कहिय = प्रविक (पन ११४) । **छाहीय वि [बाधीस] प**ठित सम्यस्त प्रैया महीया रा अनेति वार्ल (उत्त ११<sub>न</sub>१२ णाबा १ १४ सं ७८)। अहोरग वि [अहोरक] वन्तुरहित (फ्रमाहि) (मी १२)। बादीर वि [अभीरु] निवर, निर्मेंद्र (भवि)। महीखास रेवो भहिछासः 'रेहम्म बहिनासे' (dg yt) i महीसर पू [अभीश्यर] परमेश्वर (प्रामा) । अहुआसेय वि [अहुवादीय] प्रीप्त के प्रयोग्य (पउड्ड)। भद्रणा भ भिञ्जना सभी इस समय साव वस (ठा३ ३ मार) ।

सङ्गणि (प) देनो अटुणा (प्राप्त १२७)।

अहुक्षत्र रि [अमार्जक] यशरक (तुमा) ।

449 य विवासिनावित्रों (सन १६१० क्ष्मच साथ ही प्रमाण माना बादा हो ऐसा મરાક છું [ અદેલ્લ] માં વરકૃતિન (દેતા) ક वाद (तम्म १४ )। 1 ( \$ 5 सर्वे। क [अगवत] व होता हमा भद्देउय रि [अहेसुक] दुर्वावत मिलारण **ગરો વ[ગરો] છ** 184111 (पडम ६६ ४)। १ विस्मव, मार्क्य । २ वेद केता स्म देनो असील न महीन (१मा)। बहेब्स्स पुत [अब वर्मम्] १ बबोत्ति में न्त्रस्य संबोधनः। ४ किन्नं। १८३ सर्व । [लगुर] यो न इसाहो पुट्य री बाते बासा कर्म । २ मिज्ञा का बाबाकर्म षमुम्प, श्रेप (हे १, २१८ एक शि पूर्व को का देव बीत हुआ हो (इना)। बीप (शिंह ६६)। वाज व विदान । शब्द तक त सदेश[न्पस्]की (वाना)। क्या २३ कम)। प्रतिक्रम, इस्क्र **धहेसभिज्ञ वि [यत्रैवत्रीय] पंस्कारर्यक्र** व [क्श्रेय] शासारचे जिला का एक दीन िपुरुपिया वर्त, व्यक्तत (r कोरा 'महस्रिजाई स्वाई वाएका' (प्राचा)। , सरी। सर्ड कि को तरीर का कैकता २०६)। निहार 🛊 जिला धहेसर पू [अहरीन्सर] पूर्व सूरव (महा)। १९ का (धूक्त र ४ १) । वर रि [गर] धार्व्यवस्थ ध्यूतन (घर्वा । **अहो देखों अ∉ = श्व**स् (सम **११** ठा२ २ रत करेथे एने बारे तर्ने वर्गेष्य का ६ १ मत साथा १ १ पत्न १ २ ० १। अहो य [अहो ] **दे**न्छ**र**ल (स्वर्)। तारम र् गारके मिगाप पाय ३)। tt) i शहर (दर्भ र) । दिसा स्मे [ विकृ] करण न िकरणी कमह, महणका (निष् आहो पूर [अहन] कि कि र रेक दिस्तारकारेर ओग पुलिस्ही १०)। गर्भा [ गाउ] १ मरक या विशेष णिस, निस निसं ( निर्म) ए र न्यू भेका पर रोर वाय में विवासी क्ति वित-एत विषय मोनि । ९ वदमति (पठम ६ ४६) । गामि #थे बारेशना बातु (वस्त १)। २ मान पदमातार्ग (सूद १ ६,३ वर्ध वि [ गामिन्] पूर्वीते में चानेवाला (सम वनु परेर्द्धावार)। विषय वि [विक्रस] **ध्यो**विशित *व (सि भा)। है* ११श बा ११) । तरण न विरंत्री क्लह क्षिपदिस्य स्थान गुप्त स्थान, तींस ['यत्र] । सिन की क्षीनींबर मध्यका (तिकृष्ट)। सुकृति [सुका] भाग्ने मार्गाचे मार्गित्रो महिवाछए पनिए पाठ पहर (ठा २ ४): 👫 (द्राप्त)। सचमा स्वे ["सप्तानी] कावनी मबोपुक्ष सबनत पुत्त समित (सुर २, ११८) पुष्ठ न कामिना र*सीर्व दिन स*ं १ ११४। पुना १४२)। क्रोशय वि क क्रीजब नरकबृति (सम ४१ सामा १ २ बार रूप स सम (वे धे) (१ (१)। रेको आही = मपस्। [क्रीकिक] पातास सोक से संस्थ रहरे **#**[ श्र‡ देखो श्रह = घद (भग १ ६)। वासा(सम १४२)। हि वि ["श्रवकि] भट्टेंड पं [महेन] १ बाप हेनु का नियेशी रे नीचे बनों का धर्यवज्ञान वाला (राम)। 14 रेगम्ब (प्र ६ १)। ९वि शारणप्रित २ पृंद्धी मीचे दबाका सर्वादशक, सद-ाप्य इत्यर १ र)। बार दूं [बार] विकास का एक मेश (ठा २, २)। बारमारः शिवमें वह-नेतु को छोड़कर अही य अहिती दिवस में भही य रामी इम विरिपाद्शसद्दमहण्याने व्ययपदण्ड<del>संस्थलो</del> राम पहनो दर्श्यो समतो । ऋा कारे[क्य] १ रहा चैनता सा क्रिया 'बाइ' बरहर्गानुरं रहार्' (राग)ः हिर शासि श्रामे । स्यत्वर्त (राज्ञ)। इत दश्री का कुकत्र ( पमर-१ व पर्दंग क्षेत्रा भाव क्षे देत द्वारामा । हुर्र (एक विने राम)। हे स्ट्रिके कारेपिकॅसेसेसे (तार विके क्ट के क्ट्राइट केरोड्समी (बेटा ९ स्थिकनः, जिरेगा धाकेर (by san) 1 x spend ries. ११) । ७स्स्यः स्यादर्)। र

पा**रभसरमर्**णमश

आ स्र [ला] मोचे सवः (सम १४ १६)। आ प [आस्] इत वर्षों का सूबक घम्पय-१ केर (सा ६२६) । २ दुःसा १ दुस्या होष (इप्पू)। का सक [या] बाना। 'सम्बो ए। मामि सेर्च (पा =२१)। आम वि दि] १ मध्येत बहुत । २ की व सम्बाः ३ विषम् कठिनः। ४ न. सोह सोहा। इ.सुसम् सूपत (दे१ ७३)। आज वि [बागत] यामा ह्या 'परबंदि धामरोसां (से १२ १८: दुमा)। भाजम वि [बागत] याग ह्या (ने ३ ४ १२ र≈मा३ रे)। आअय वि [आयत] सम्बा विस्तीर्ण (व **११ ११)** 'मरगयसूर्वेनिश्चं व मोध्यमं नियद् याययग्यीनो । मोरो पाउसमाधे त्रणस्यवस्य उपमित् (या ३६४) । आश्रेष्ठ एक [ कृप् ] १ श्रीवता। २ बोतता नास करना । ३ रेका करना । मार्मका (पर ) । ब्राधंतक्व देवो सागम = मा + वम् । **शार्धतुम देवो भागंतुय** (स्वप्न २ ममि १२१)। आर्जिपक्ष देवो भारतीय (से १ ११)। आर्जब वि [आताम्र] योदा मान (से ६,६१) मुर १ ११)। "आअंब द कायम्य] इंस परित-विशेष (से દ ૧૧) ા बामस्य एक [बा+पद्] व्हना बोलमा उन्हेत करना । सामल्यादि (मर) । कर्म, धाप्रस्थीर्घाद (सी) (नाट)। मुद्रः धाप-स्बद (ग्री) (नाट)। आअवस् देनो आगवस् । शसन्दद् ( पर् )। श्रंक लाशकिक्रल बालकिक्रज (नाटा पि इंदर इंदर)। आअबु सरु [दे] परवरा होकर चनना। पापाद (दे १ ६१)। काश्च सक [बया + पू ] स्वापूत होता काम में सकता। मामदूद ( सन्तः पद् )। मामदूद (k( v ¤ t) i आअक्रिम वि दि परवरावनित बूमरे की प्रेरखा से बना हुया (वे १ ६०)।

आश्रद्धित वि [हयापृत] कार्य में समा हुमा खाञ्चण्याय देखो आयम्मण (मा ६५१)। बाश्रचि रेबो आयइ (भिग)। साञ्चद देखो आगय (प्राष्ट्र १२ चेटि ९) । साजम **रेको आ**गम (मणुष मिन रेन४ मा ४७६ स्वप्न ४८। मुद्रायके)। आ असम देखो आ गमम (ने ६२ मुद्रा १००)। आ भर सक [आ 🕂 ह] भारर करना सकार करना। सामरद (पर्)। आजरन दि] र ज्यूबत प्रवत । २ दूर्व (दे१ ७४)। आअइ र दि रे रोब, बीमारी (दे १ ७४, पाम)। २ वि चौचन चपत (वे १०१)। देशी ब्यायद्वया । आमस्टि ) भी दि] मानी चढामों से निविध व्यामस्की रिश्रेश (देर ६१)। आक्रम्ब सक [बेप्] कीन्। सामन्तर (पड्)। माजामि रेवी भागामि (धर्म ८१)। आभास देखो आर्यंस ( पर् )। बाञासवञ [दे] रेवी मायासवस ( पर् )। आइ। एक [छा+ दा] प्रहुख करना थेना। मास्यूका (सूच १ ७ २६)। मास्यति (मय)। कमे. बाइयद (कस)। संइट आइल्या भागहत्ता, भाइतु (पाना गुप १ १२ पि १७७)। प्रयो धाइयावेंति (नूस २,१)। इ आइयस्य (ऋष)। आदर्ृ[आदि] १ प्रयम पहचा (मूर २ १६२) । २ वरिष्ठ, प्रयुक्ति (जी ६) । ६ समीप पासः। ४ प्रकार, मेदः। ३ धानवत्रः 🤚 भैतः। ६ प्रवासः मुख्यः 'इयमार्थलेति निश्चीहः ! सिहरताइयो रिमा तुरम (रूमा सूम t ११)। ७ जनति (सम्म ११)। व संसार, इनमा(सूम १७)। गर वि<sup>क्रि</sup>करी १ ब्रादिप्रवर्तक (सम १)। २ पूँ भववान् ऋषमरेव (पत्रम २० ३९)। शुक्र पू िशुक्र] खड्मानी प्रस्त (पान ४)। प्याह पुंिनाधी म्मानान् ऋपमरेन (मानम)। तिरवयर पू ["र्तार्थे स्र.] मनवात् ऋपमवेष (गुवि) । . देव पू ["देव] भगवान् ऋप्रमदेव (पूर ६

१६२)। सर्दुमि]प्रवस माग्र पहला (पान प्र): मूख न ["मूख] मुख्य कारण / (प्राचा) "माक्ल पू [मोइन] संसार से भूरकारा, मोरा । २ शीव ही मुक्त होन वासी मानमा 'इन्नोमी ने ए सेनेति माइमास्ता हिते वर्णा (सूप १७)। राग पूँ [राम] भनवान् ऋषमधेन (ठा ६)। वसह पू िवराह् ] इञ्ज् नायवण (वे ७ २)। आह दि [भारिम्] यानेवाला (पंचा १० 12) I लाइ की आिंदी संदाम नहाई (संदा)। आइजीविय केही मर्वाविय (मग १२ ६)। छाई य [दें] नास्य वी शोमा के लिए प्रदुक्त किया वाने वाला घष्य (मग १ २)। ो भी 💽 १ वनता निरोप आईस मा कर्ण-निराणिका देवी (पर **लाइंस**िया -आहेसिणिया र ७३ टी-पन १८२३ हर १)। २ डोमिनी चौडासी (बृह १)। कार्युग म 👣 बाध-बिरोध (पराम ६ ८७ 24 4) 1 कार्युच देवो आर्येच । धार्युचर (देवा) । भाई च देशो छाइस = मा + इन्द्र। माईचइ (प्राक्त ७३)। धार्श्यवार प्रै [आदिरयघार] एपियार (कुप्र आई(वेय वि [आदित्यिक] पारित्य-संवन्धी (सूमनि = हो)। आईड देवो आर्जहा यादंबद (ह ४ १८७)। बाइक्स सरु [ आ + पड् ] बहना पर-देश देना भीमनाः मादनबद् (उना) । बद्ध आइक्ट्रमाण (एम्स ११२) । देश आइ क्सिच्यत्तप् (द्वा)। धाइम्छन वि [भास्यायक] क्र्नेशका बच्चा(मग्रह२४)। आइक्छण न [आक्यान] क्यन, सन्देश (TE 1) 1 आइस्टिलप वि [आक्यात] एक पारिट (स १२)। आइक्सिया की [आस्पायिक] १ वार्ता कहली (लागा १ १)। २ एक प्रकार का मैनी विधा वितने चाएगानिनी मूत-काल धार्दि की परोल बाउँ रुहती है (ठा १)। आइरग पि [भाविम] उडिन विज (पाप)।

काइस वि (अफुरुज] धविकवित (कुमा) । क्षरुपंत वह [असपन्] न होता हमा (भूमा)। हाहुल देशो अहीम = महीन (रूमा) । श्चातक कि शिक्षानी जो न इत्या हो पुरुद हि [ पूर्व ] जो पहने कमी न हुमा हो (हुमा)। श्रद्ध विभस् ] गाँचे (बाचा)। अस्म न [कर्मन] शांभारमं निता का एक रोप (चित्र)। काय वृष्टिकाय] शिरुका गीवला प्रिया (तुन्न १ ४ १)। "चर वि विश्वर] । (माचा)। तारगर् ["तारङ] विवाद मिटेन (पएए १) । दिसा ध्यै [ दिस् नीरे की क्रिय (माचा) । त्यान पू [क्यक] पानाप-नो⊈(ठार र)। याय दृ [भान] नीच बहुतेशाचा कार्यू (पग्यत १) । २ महान बारू, पर्दन (पावन)। "विधक्र वि ["पिक्रन] भिन्यादिर्राहत स्थान चुत्ता स्वात 'तीम चना बर्माक्ट्रे प्रहेशिया धहिपानए सनिए (पाना)। सत्तमा औ ("सप्तर्मा] सात्रनी या भन्तिम भरतकृति (सम ४१ ए। बार १६, १६) । देनी अहा = मपम् । अह रेपो अह = धर (भग १ ६)। अद्वेत पूँषिद्वी १ सत्य देव का विदेशी रिशामाम (स्र १)। २ वि कारणस्त्रित निष्य (सूम १ १ १) । बाय पूं [बाइ] यानवराद, जिनुमें दर्ग-देन को द्योबहर

बाद (सम्म १४)। महेरय र [अहेतुक] हेनुपरित निकारत (पठम ६३ ४)। आरोफन्स पून क्षिय कर्मन् । धवोपति में ने अले बालाकर्षे । २ मिक्रावा यावाकर्षे धीम (सिंह १५) । व्यक्षिक वि [यथैरतीय] संस्थारर्यहरू कीरा 'पोइसिएकाई क्वाई वाएका' (प्रत्या)। बाइसर पू [भइराच्या] नूपै मूरव (महा)। दिन पारि में राले बारे भर्ग बगैरह बन्तु ! स्नाहों केनो सह = मनम् (सम १६ डा २ २) **१ १ मन ए। बार्टर पउन १२ वरा** भाव ३)। परण न किरमी नतह, भगवा (निवृ t)। गद्रकी ["गत] रशरक या धिर्मेस मीनि । २ धपनति (पत्रम ४६)। गामि वि गामिम् द्रशीत में बानेसला (धन ११६:मा १६)। तरम न तरम करता करता. क्यका (निद्रार )ः मुद्राति "मुस्री धनोयुम बरनत युन समित (नुर २ १४६ १६६: मुता २४२)। स्रोह्य वि [क्षीकिक] पातात सौक से **संश्या रख**ते-बाता (सम १४२)। "हि वि "अवधि] रे नीचे दर्जा का प्रविकात वाला (राय)। २ पूंजी नीचे दनाका परविज्ञात सद विज्ञात नाएक भेद (ठा२,२)। शहीरजं न दि वितर्धेय बन्न, भारत (दे १ अहो य [अहिन] दिवन में 'महो व रागी।

बाह्रो च[श्रह्म] इत प्रचौका सूचक मध्यव--१ विस्मव सामर्थे। २ वैद, शोकः। ३ माम-न्मणु संदोधनः । ४ वित्रकै । ५ प्रसंसा । ६ ग्रमुना होप (हे २, २१७ भ्रापा *परा*र)। "दाज न ["बान]) प्राचर्न-कारक वान (व्य राक्ल)। पुरिसिगा, पुरिसिना की िंपुरुषित्रा पर्व पविमान (**ध** १२३) २०६)। "विद्वार पू ["विद्वार] धेयम ना धान्धवैजनक पतुष्ठान (प्राचा) । बाही स [अहो] दीनता मुच्छ धन्यन (पणु 1 (33 **अहा** देन [अहम्] दिन, दिनस (रिक्) ? णिस, निस निसि न [ निस] एउ मौर बिन दिन-राज 'शिएए छेर हमार्च महोग्सिने पचनाशास्त्र (मूच १ १, १ बर १) भीती महोशिमिल उ (विदेवका)। रेख प्र [ राज] र रिन और शकि परिनित कान बाठ प्रकर (ठा २ ४)- विविद्य महोरता पूछ न कामिना क्वितिए (परम ४३ ६१) । २ भारप्रहरका समय (को २)। राइया को [राजिक] ब्यानवनल सनुहान-विरोध (वंचा क बाव शतस २१)। धार्मीवेव

न ["राजिन्द्रवा] विवसन (भगः धीन)।

२६ मा ७३१)।

य सिवामितासिको (पडन ११ १२८: परा

इप निरिपादभमदमहण्यने अवारादमहर्गनसर्हो राम पहनी तरेंचे बनदो ।

श्रा

आर्जु[भा] १ प्राप्त कर्तुनासाका द्वितीय रसन्वर्ण (प्रका)। इत मदौ ना गुपर बद्धान-१ स मधीत मीना भान नुर (राज्ञः स्ति **३४)।३ मनिरिवि** व्यति 'पापूर्वागर प्रतिरूपेशयौ (बुबा ſť <)। ४ थोगात बनाता

पार्गातरवर(पूरं वरल्ड (वडड) 'प्राचंद' (सं ६ ३६ जिल १२३४)। श्रमणनाम्, । बार्वे पेर चगरंडरमा विकासनुबन्ध । चरपेरिनेपियनाँज (यज्ञः तिषे अर् । । ६ मर्विक्ता दिरेगा 'बाधेल' (जूम ११)। धन्तरम् बार पटः । िम्मप.

याथर्प (छा १)। ६१ क्यासम्बर्ध योग में मर्वेरिम्युति सीर विशयेंक 'सार्टर' 'पानगर्दा' (पर् पुना)। ११ बास्य ती शोभाके निर्भी इतका प्रदीत होता है (ए।या १२)। १२ पासूचिम प्रदुक्त शिवा बाता सम्भयः । वर् २ १ ७६) ।

**?? ??**)

का भ जाि नोवे धवः (एव वर, वर्)। था च [आस्] इन वर्षों का सुषक प्रध्यय-१ और (बा ६२६) । २ दुश्वा १ द्वासा क्रोव (कप्पू) । आ सङ [या] वाना। 'सम्बो ख बामि छेर्च (गा =२१)। आ अर्थि (दे] १ सर्थत वहुत । २ धीर्व सम्बा। १ दियम कठिता ४ न सोहरू नोक्का । अ. मुख्य मूचन (वे १ ७३) । आध वि [आगत] भाग हुन्ना 'पत्वीत मापरीसा (से १२ ६८) कुमा)। धाश्रज वि जागरा श्री श्री ४ १२ रव मा ३ १)। आअग्र वि [आयत] बन्ना विस्तीर्थ (हे

मोरी पाउसमासे तरान्यसम् स्थापनि (मा ११४)। ञाश्रद्धसक किप् दिवीवता। र मोतता वास करता। ३ रेखा करना। यात्रीबद (पट्ट)। आर्थतक्य केवो भागम=भा + भन् । आक्षेत्रच देखो आसंतुम (स्वन्त २ मनि १२१) ।

'मरवयन्त्रीवेद व मोतिर्द पिषद् शायमन्त्रीको ।

आर्थिम केले आर्थिय (से १ ११)। आर्थन नि [सावास] चौड़ा मल (से १,३१ नुर १ ११ )। "आर्थव प्र [कायुम्ब] इंस पति-विरोध (स e, 48) i

आजस्त *यह [मा* + **पम्**] कहना बोलना जनका करना । साथस्यापि (मन) । कर्म, बायक्बीर्घार (शी) (नाट)। मुक्त बाध-क्षिप (शी) (पार) ।

शामक्ष देनी सागव्य । यायकार ( पर् )। संक्र साञ्चिक्य आमध्यिक्रण (नार fi Kati Kay) i

खाळ**बु बट [वे]** परवरा होकर चनना। पाधार (रे १ ६६)। आ**ञ्च पर [स्पा + पू ]** स्वापूत होना काम में सकता। मामदूद (स्तुष्ट पर्)। मामदूद ( \* x = 1) 1

माअद्विम वि [वे] परवसवस्तित बूसरे की प्रेच्छा से बना हुया (दे १ ६८)।

काकतिक वि [क्यापुत] कार्य में सगा हुवा (कुमा) ।

आञ्चल्याण देवी आयञ्चल (गा ६६९)। ध्यामचि देवी आयह (पिन)। आ अव देखो आ राम (प्राक्त १२ सील ६)।

धामन देशो आगम (मणु ७ यनि १०४० गा ४७६ स्वप्न ४८ मुद्दा ५६)। आजमवदेवो आगमग (ने ३ २ मुद्रा

खाझर सक जिल + **द**ी बादर करना, सुरदार

करना। प्राप्तरह (पर्)। ब्राझरन विरे रिज्यूबन प्रवन । २ पूर्व (દેર ૭૪) ા

आ अद्धं पुरि रिरोग, भौमारी (देश धर पाम)। २ वि वीवत अप्त (वे १७४)। श्वी आयहमा ।

आमरिक ) की वि माध्र सवामों से लिविड धामस्मी प्रदेश (दे १ ५१) । आअन्त्र सक [देपू] कोपन्। सासम्बद

(पर्)। मात्रामि रेवो आगामि (पवि ८१)। आशास देखो आर्यस ( पत्र )।

मामासवन [वे] रेको भाषासवस्र (पर्)। आई एक भि + दा बहुछ करना हैता। माइएका (गुप १ ७ २१)। माइपति (स्व)। कमें बाहबर (क्त)। संद्रः आइसूज आयहचा, आहच् (प्राचा वृद्ध १ रेश पि ४७७) । बनो, साइमानेति (सूध २१) । |

इ. आइयब्द (क्स)। आदर्ृ[आदि] १ प्रकम पहला (सुर २ १६२) । २ वरैयह प्रतृति (बी द) : ६ समीर पासः। ४ प्रकार, मेदः। १ सक्यकः <sup>(</sup> भेर । ६ प्रवान पुस्त 'इम मार्चरेति निर्नाह । सिक्ष्यास्यो दिमा तुरुम् (क्रुमा सूच १ १४)। ७ स्टरवि (सम्म १४)। ५ संसार् दुलमा (मूच र ७)। गर वि [\*sर] र मादि प्रकृतिक (सम १)। २ पूँ भववान् ऋगमीन (पत्रम २० ३६)। शुप्प पु िशुप्र सङ्ग्राची प्रस (माच ४)। साङ् पु ("शाच यातम् अपनेते (गातम)। विस्वयर पू

"देव प्र ["दय] नवरात् ऋगमदेव (पुर ०

१६२)। सर्विमी प्रयम बाब प्राता (मान १)। मुखन मुखी मुक्य कारण -(माचा) साक्छ पू [मोक् ] चंसार से कुन्दारा मोधा। २ शीव ही मुक्त होने वली धारमा 'इत्योधो व स सेवंति धाइमोक्सा हिदै जला' (सुब १७)। राय प्रीिराजी भगवाम् अध्यमवेव (छ ६) । सराहः प्र विता**ह**] कृष्ण नारायण (से ७ २)। खाइ वि खादिन् । सनेनाता (वेवा १८ 18)1 ब्याइकी जिल्ली संग्राम सहाई (सेवा)। आइजंदिय देवो अवंदिय (यन १२,६) । बाई म दि । पारम की शोभा के सिए प्रदूष्ट

किया जाने बाला सम्यय (भग ३ २)। | बी [बे] १ देवता-विशेष |कर्ण-पिशाविका देवी (पत्र भाईसमा **भाइंस**िया काइकिणिया । २ ७३ टी-पत्र १ वरः बृह १)। २ कीमिनी चौडाकी (बृह १)। जाईग न चि ] वाच-विशेष (पत्रम ६ ६७

1 (2 2) आईष रेडी आर्यच । पाईचइ (हवा) । । आईप रेतो अक्तम = मा + कम् । भारतह (রভ ভার)। आईचनार पु [बादिस्पदार] चीवार (दुन

४११) । आर्थिय वि [आविस्थिक] पाविस्य-संवन्धी (सूमनि ८ टी)।

आईम्र देको मार्जस्य। शाईस्टर (१४१००)। वास्त्रत सरु [ भा + चन्द्र ] क्ला, स-बेश केता कोसनाः माइसकाइ (छना) । नहः ब्राइक्कमात्र (क्षमा ११२)। हेरू ब्राइ क्रियाचप (क्या) ।

बाइक्सम वि [आक्यायक] अस्तेशवा भक्त (मगुद्ध २ ४)।

आइस्त्रण म [आक्षप्रत] कवन, वादेव (424 €) t व्याहित्यप वि [भाषपाठ] बक्त प्रापिट

(स १२)। भावकित्रया स्प (आस्त्रायिक्षा १ वाटी क्यूली (लाया १ १)। २ एक प्रकार की मैनी विचा निवने काएशकिनी मूत-कास धारि

[\*वीचें हर] भक्तान् ऋतमरेव (तुरि) ( की परीस बार्डे कहती है (डा ६) । आइम्प वि [भाविध] बीध्य विज (पाप)। शहुद्ध नि [अपुरन्छ] धरिरमित (दुमा) । अर्बंद कर अभवन ] न होता ह्या (दुना)। क्षहुप्प देखो अर्द्धाण = घरीन (दुना) । श्चरूप रि [असून] यो न हवा हो पुरुष रि [ पूक] को पहने नजी न हुया हो (हुमा)। छद्व **च** [अपस् ] श्रीव (बाबा) । अस्म न [क्रमेन] बार्यांचर्म भिक्षा का एक बीप (भिंड)। स्वय वृं [काय] शरोर ना नीवना हिन्मा(भूष १ ४ १)। यर वि [\*वर] बिर प्रारिम छने बारे तर्ग बगेयह बन् (माना)। तारगर् ("तार्≭] रियान तिरोप (पण्या १) । दिसा धी [ दि ∓ ] नारको सिम्रः भाषाः स्टबर्यु सिं≅ी पतात-भोक(दा२२) । बाय ⊈ ["पात] नीन बहनेराता बाहु (पाग्य १) । २ धंरान बारु पर्रव (मात्रव) (वेशकारि ["पिक] भिन्यारियोज्य स्थान गुपा स्थान 'वेनि मार्ग बाहिये बहेरिया बहिवानए सीर्ग (भाषा) । सत्तमा हो [सप्तमी] बाउरी या यन्तिय बराजूनि (सम ४१ छामा १ १६-१६) । देनी अहा = घान् । अ६ रेगो अ६ = घर (भा १ ६) । अहर पूं [अहत] १ तय हेरू का विधेषी १)। २६ शस्त्रपति रेगाचन (ठा तिपः(नुष १ १ १) । बाद ई विदि

देवन राज्ञ ही प्रमारण माता वाटा ही ऐसा बार (सम्म १४)। अहाय वि [अहतुक] हेनुवर्गित किल्हारण (दबस ६३ ४)। भदेकमा पुत्र श्चित दर्मम् ] १ परोपटि में में जाते वाना कर्म। २ मिडा का बाबाक्रमें रोप (सिंह १५)। बहसणिझ वि विभैत्रशीयी संस्ताररहित कोय 'परेनलिजार रचा' जाएमा' (पाना)। भइसर र्ष [भहरी घर] तूर्व गुरु (महा) । अहारेनो अड = ग्रंपन् (सम ६६ ठा२ २ ३ १ भद लाला १ १ पडम १ २,वश मान ३)। करम र [ करण] शतह, काहा (निश १)। गइस्ये गिती १ नरक वा निर्वेष मौति। ध्मदर्शत(पत्रम≭ ४६)। नामि ति ['गामिन्] दुर्वति में बलेशना (तम ११६ मा ६६)। तरत्र न विदन्न क्यह मया (तद्र १)। सद्दि विस्ता यबोदुन धरतर पुत्र समित (गुर २, ११वा १ ११६: मुत्त १४२)। "स्रोहम वि [सिडिइ] पातान लोड में संसम्प स्थाने-बारा (नम १४२)। हि रि विश्वपिते १ नीचे दशी का संदक्षित वाला (राव)। २ पुंछी कीचे दर्जा वा पाविज्ञान धव

य विवासिकातिको (पत्रम ११;१२०) पर्छ २,१)।

२ ()।
आहे। युक्तिहों इर घरों का तूबक प्रस्तय —
१ विकास सामयी १२ केंग्र ग्रोक १ के साम 
क्रमण संवोधन । ४ विकास । का ग्राक्त । १ प्राप्त । १ स्वया । प्राप्त । १ स्वया । प्राप्त । १ व्या । प्राप्त । १ व्या । प्राप्त । प्रमुप्त । प्राप्त । प्राप्त । प्रमुप्त । प्राप्त । प्रमुप्त । प्राप्त । प्राप्त

आहो प [आहो] दोनता-भूषक सम्पप (पतु 1 (35 थही पुत्र [अहम्] दिन, दिवस (निष्)। चिस निस निसिन निसा चन मौर दिन दिन-राज "शिरूप छेरदवार्य प्योरिय पदमालाल्डॅ (सूम १ ६,१३ था ६) भीतो महोनिर्मित्स उं(सिक्टे व्येश)। रच प्र [° ga] १ दिन भीर स्तवि परिनित कार बाठ प्रदूर (ठा २,४)- निर्मिश बद्दोरना पुरा न ध्यमिया क्वीत्र (परम ४० ६१)। २ चारप्रदूरकासमय (बो.२): राइस्म स्रो [रात्रिकी] ध्यानप्रवान धनुहान विधेप (पंचारल मान ४ सम २१)। साई विव न वितिष्टिको रिक्सत (मध-धीर)। बाहोरणं न [पे] एतरीब वन, चावर (दे र २६ मा ७३१)।

अहा य [अहनि] रिश्न में बहा व शयो । इय निरिपादभमदमहण्यत्रे अवाधदनदृषंत्रको राज पदनी वर्रको मनतो ।

विज्ञात का एक बेद (स्र १ १)।

## - श्रा

आर्थ [आ] १ जार क्योगात वा स्थित सर कर्ष (स्था) । इस वर्षों वा यूपर कथ्य — १ स वर्षेस वीमा प्रित वृश् (दार वि ४००) । १ व्याप्तिक वर्ष व्यक्तिय वीमार्थ (दूस वि ८) । ४ वीसार सम्मा

काममाप्त, जिल्लान है-हेनू की काहरर

वाजी स्वस्त (तूर पान) वार्च व (ते दे देश कि देशदेश) य नवना वार्च पेद प्यान्देशका क्षित्र कार्या वार्च पेद प्यान्देशका क्षित्र कार्या वार्ची क्षित्र क्षित्र कार्या क्षित्र कार्या वार्ची कार्य कार्य कार्य कार्य येदिका किरोगा प्रमान कार्य देशे। व्यवस्ता कार्यका कार्य

यावर्षे (इ. १)। इ.१ जिलाहरू के सैय में सर्वेतिस्तृति सीर शिर्मंक 'धारर' 'मारुद्देर्थ (यह पूत्रा)। ११ बाद थी रीय के निर्देश प्रकार बद्देन होता है (एना १३)। १२ शासूष्टि में सुरूत जिला बारा समस्य (गरू १ ४६)। आईनीइ-न्याउट्टारण

का समिशाया देव (जीव है)। यदीसा समर [यरापसा समर] देवो समन्त्रदेक सर्व (जीव है)। प्राहेनीह की [आदिनीति] समका पहली राजनीति (गुणा ४६२)।

प्रकाश (पुता २२५) । आइम दि ज्यातील ] रे विरोध बात । २ इंग्रास्त्राच्य संग्रा से बुग्नेवामा (सामा) । आईल पुत्र [आभील ] पान का युक्ता (पत्र)।

आहंस कह [आ(+ दीप] चनकता। वह-आहंसाम (मामि)। आहंसाई [ झादाचार] मनतान ऋपमेत (शिर दररे)। अहा की [ते] र तानी बस (दे र दरे)। २ स्तु मान का एक लक्ष्य नेत हिल्ला है। क्ष्म का को एक लक्ष्य नेत हैं। क्षम का के पुँक्षियों जन का चौप (जर ५८% एएए रे)। आहंस काह्य पूँ [कार्यक] कक्ष का जीव (मर्प्य कार्य रहा प्र प्राप्त रहा रे)। जीव पुँक्षियों बक्ष

[पहुना] र वन-प्रदूर। २ एक्टप्या प्रविश्वी का तृतीय कार्ड (धन कर)। आड स [व] पवन पा 'धाउ तमोहेद अं सक्टउनेपेण कोद समामुखी सात सबस वेद सक्टउतीर्थ (ध देश्य)। काड १० [मासुष्] र पाह, धीरन-

का भीव (सूप १ ११)। बहुक वि

क्षाउ ) म [ आयुर्ध ) र साहु जीरान आक्र अ काल (हुया परात रहे) र र नार, या (सार रहे) । द साहु के मराज्युत कर्ने-पुरार (ता व) । दसाव दुं [ द्वाय] मराज मीड (विचा र र ) । वस्तेस न [ क्षाय] साहुत्याल कोरन (याचा) । विकास [ विचा ] विचन्छाल, विकित्साचा राज्य (विचा र छ) । साईय एक [ सा ने कुळायू ] संद्वाल करात, परेग्या । संद आरोबिंग्डि (या)

(परि) ।

भाउंचणा हो [आकुञ्जना] करर देनो (धर्म ६): भाउंचित्र वि [आकुश्चित्र] १ संप्रुचित । २

अडोबज वि [आइस्बार्ड] र सहावता र टडाकर बाएड दिना हुम्म (से ६ रैं)। बार्डिस वि [आइस्बिम्स] र संदुवनेरामा। २ तिवस (सर्ड)। सार्डेट देवो जाउट्ट = मन्दर्मन्। मार्डेटवेनी

(⊊8) ≀

भार्डट देशो साउद्ध = मन्तर्पम्। पाउटावेनि (एस्मा १ १): साउट मरु [आ + कुरु यू] संकोषना प्रमा सङ्ग आउटाविकु (यर १)। भार्डटण न [आकुश्टन] पावर्गन (यस)

भवा चकु आहा-चनु रात्र ४,1 १७ १६)। आहंद्रण न [माकुमन] धेमेच पात्र धेरे (हे १ १७७)। आहंबाद्विय वि [वे] पाप्पावित ह्वाया इया पामी पावि हवायाँ छे च्याप (गयो।

आडम हेको आह = सारूप (पूरा ११६) साउम १ भर १ १। साउम १ भर १ १। सपुद्रा तेना कर आउन्छेड, साउन्हमाम (छे १: २१ ४०)। चेह आउन्छिन्छन, साउन्डिम्ब (महा मुग ११)। साउन्डम्ग ग [आमन्द्रन] माला सपुता (ग ४० १)। आउन्डम्म म्हें शिमन्द्रन्स) महन (पंचा

आंडच्छा जी [बायुच्छा] पात्रा (कुप्र १२४)। आंडच्छिय दि [बायुष्ट] जिससी सात्रासी गई हो यह (ते १२,६४)। आंडच देवो आंसोज ⊐सातोस (हे १

१२, २६) ।

१४६)। आडळ् टूं [आदर्क] १ संदूष करना। २ सून क्रिया (पर्ण १६)। आडळ् वि [आसर्थ] मस्युक्त करने सोर्थ

(पात्रम्)। आडलः वि [आयात्रम्] बौक्ते योग्यः सम्बन्धः करने योग्यं (विमे ७८ १२१६)।

जाउज्जिय पि [भागाधि ह] बाय बजानेवात्त (मुपा १११)। भारतिया वि [आवर्षित] चंत्रुव हिमा इसा (वरुस १६) । आरतिया की [आवर्षिक] किया स्मापार

खाइज्रिय दि [आयोगिक] स्वयोगकामा

साववान (मय २ ४)।

(धावम)। करम न [करण] नुम व्यापार विशेष (परण १९)।

आउद्भीकरण न [आवर्षीकरण] पुन स्थागार-विदेश (पर्यक्ष वेदे)। आउद्देशक [आ+धून् ] १ करणा। २ मूलामा । वे स्वरस्या करणा। ४ सक संपुत्त होना स्थार होना। १ निवृत्त होना।

मुक्तामा । १ व्यवस्या करता। ४ महर संपुक्त होता श्रम्भ होता। १ निष्कृत होता। ६ वस्ता किरता। साल्कृत, साल्कृति (स्व ७ १ तिषु श्र) वक्क आकर्ट्स (स्त २२)। संक्र आक्ट्रिक्स (स्त्र)। हेक आकट्टिस्स (क्प्प)। प्रयो साल्कृतिम (स्त्रास १ १ ठी)।

आहरू सह [आ + इट्रट्र] बेसन करणा विद्या करणा। याज्यापी (यापा)। आहरू वि[आह्न्य] रे निवृत्त योजे किय हुमा (अर १९०) 'करकर बात्ट्री' जक् विस्तृत तरुपीर तहेव' (बृह्र १)। र प्रामित

प्रतामा हुमा (वर १)। ६ कैक-लोक क्यस्तिन (माणा)। ४ हुत मिहित (एम)। माउटुर्पु [आकुटु] केश द्विमा (सुप १ १)। साउटु ो नि [आहुत] मार-मुळ (निंक्ष लाउटुक ∫ १११० पर ११२)।

साउट्टन न [आकुट्टन] हिंसा (सूप र रे)। साउट्टम न [आवर्षन] र धाएवन केश मधि (वर र रे)। २ ध्यव्युव होना, तगर होगा (सुप र रे)। २ ध्यव्युव होना, तगर (पावा)। ४ प्याना अमछ। २ विद्वित (प्राय रे रे)। १ करना किशा इति (प्राय रे

भारट्रया की [आवर्तनता] धरायतात (शिर): भारट्रणा की [आवर्तना] कार देती (तिह

भाडपुरा की [आवर्षना] कार देनो (निद्व २)। आउद्दानम न [आपर्षन] धमिनुष करता चनर करता (पाषा २)। क्षाइत्य एक [का + प्रा] गूँक्ता। यास्त्रक् यास्त्रवाद ( पर् )। हेक आदृत्यित्रं (हुना)। काद्रवा प्र [वे] वदाचित्र, वोदेवार (परस्त १७—एत ४ १)।

ब्यादवर्षु [आदित्य] १ मूर्व पुरत परि (सम १६)। २ लोकारितक देव-विकेस (खाना १ च)। १ त केवविमान-निरेता ४ पू विक्रियाची केन (पर)। इ.सि. माच प्रकम (बुक्त २ )। ६ मूर्व संक्रमी धाइचे छ माचे' (सम १९) । गङ्ग दु [ गति] खबस वंश के एक सभा का नाम (प्रथम ३ २६१)। अस पू [ बरास् ] मध्य पश्चिमीं का एक पूत्र विश्वते इस्ताङ्ग रंग री ग्राचारम सूर्वे बेरा की उत्पत्ति हुई वी (प्रथम १ ३) सुर २ १३४)। पसन [प्रस] इसनाम का द्कनपर (५७न ६ दर)। पीड न [पीठ] भगवान् ऋवभन्ते का एक स्मृतिविद---पाक-थीठ (बादम) । रदक्त पूं[रक्क] इस नाम रा सञ्चाका एक राजपुत्र (प्रस्म ४,१६६) । रम पु[स्वस्] कानर शका एक

नियासर राजा (उस २६०)।
साइक केले साएक (न्ह ११)।
साइक केले साएक (न्ह ११)।
साइक स्त्रों साएक (न्ह ११)।
साइक साल फेले साइजीहरूसाल] सार स्वा बतार श्रीवामा बाता (स्वाप)। साइक साल फेले स्वाब - स्त + ह। सा॰ द्व सि [साइय] १ टक कर्मस्ट (इर १ ११)। २ विचित्रत (स्त १ १ १)। साइट्र सि [साइय] प्रमित्त कारित (न्छ)। साइट्र सि [साइय] प्रमित्त (त्र छ)। साइट्र से [साइय] प्रमास केलिंड

आइरिड्य नि [कारमहिक] बारपीय खेंड-बंपन (मन १ - १)। आइरिड्य नि [बाइड] बंप्प हमा (इस्मीर १७)। आइण्य नेवी बाइन = (१) (तंदु २)।

ভাছতৰ জ্বী আছেল (বীৰ দৰ্ভ ট্ট ই ইছ')। আছে বি [আৰীয়] বীয়া সংগঠিত কৰ কিব (তামা ই ই)।

नित (एम्प ११)। स्थाप्त नि [आयत्त] धनीय, नतीपूत 'तुरमः निपे सा पछत स्वत्ता' (नीना १)।

আহলু দি [আবাব] গ্রহ কটা বালা | (১৮৬)।

आइन्ष्ण देवो आइ = सा+दाः आइस्व न [आतिच्य] प्रतिविक्तकार(प्रतः

रहा। भाइदिक्**धं [भाइ**छि] घलार (प्राप्तं स्वप्त २)।

भाइक् वि[व्यक्ति] १ प्रेरिट (से ४१)। २ स्टूह, दुमाहुमा (से ६३१)। १ प्यक्ता हुमा परिदेश (मान्ट १०)।

क्षा पार्व्य (भाकरण) आह्य वि [आहिन्छ] स्थाप्त (खामार र)।

भाइम कि [भाक्षीय] १ स्थात प्रसाहमा (पुर १ ४६, ३ ७१) । २ ट्रंबक दापक कस्पनुरा (स्र १) ।

আহন বি [ আপীলুঁ ] মাৰ্চিত বিহিত্ত (মাৰা, শীল পুঠ)। এই বা আহন বি [আহীলুঁ] বাইন্দ বিলা 'আহ-বাৰ' বিষয়েং তীল্ পুন্দুবি বিলাশীৰ (মুনা হঠা)।

आ प्रसः दृष्टि] वात्यस्य दुसीन कोड़ा (पद्द १४)। आ प्रथण न [वे] १ साटा (वा १६६३ वे

र ७) २ गर जो शोमा के सिंध की जूना मार्टि में एक्सी दी बातो है वह । ६ जासन के पाटा का दूब । ४ गर वा प्रवृक्त—भूपाउ (वे रू ७) ।

काइम (बन) नि [कायात ] बागा हुना (मनि)।

क्याइवर्षि [क्याधित] स्विधित एक्योक्कतः स्थ्यातः स्थानीयोः। स्वति द्वास्यतः (कथ्यसीय)।

व्यान्य नि [शाहत] प्रावस्त्राप्त (क्या)। आह्रवज न [धावान] बहुत स्थावान (क्सूह १९)।

आइपण्याकी [आइनि] प्रकृत उपायन (छ.२.१)। आइरिप वेची आधरिय = यानार्थ (११

७१)। आह्य नि [आदिश्व] मसिन, क्नुव सस्त्रभ्य (न्यह १३)।

आह्न } वि [आदिस] प्रथम प्रकृत आह्निया ई (सम १०१ सम) श्वाहित्यम्द्र किनु नेतामुं (पर्या १०० विये २६९४) । आह्वाहित्र दृं [आदिवाहिक] केन्द्रिक सो मुक्त सो कुछरे सम्पर्मे से सही के निम्म किन्नुका है।

'बाहे बमास्त्रवंडा बरिगमूहा बाह्याहिया दर दूरिसा ।

सहसंबेद्दित सर्ग धन्तुया ! तमगद्दशनिकत्यरकंतार (सन्द्र दरे) । आह्वाद्दिया पू [आतियादिक] मार्नेस्तर्भ

(बामुकेरियी वन १४)। आइस सन [ आ + दिशा ] पारेत करता. हुन करता करमाना। बास्तव् (२४०१)।

লক্ষ আহুনার (বুং १६ १६)। আহুনতাৰ [বি] অধ্যন্ত বাঁদেও (६ १ ৬१)। আহুনার বি [আহ্বান] १ মাডিইন বুড়ু

गरीब (तुम्प १ १) र न. बूजिंग किया (तुम १ १)। काईम्प ट्वी व्यक्तिमान् मस्य कुनीन मेस (ए।सा १ १७)।

आहंज र जिलाकित की र वसने क्ष्मक का आहंजा है झा वक्त (शाला रेर पाणा)। र पूर्व में क्ष्मिल स्टेश स्थान (शाला रेर सर्दु मित्री प्राचित्र की परिष्ठला केद (बीच क)। सहासद्दु मिहास्त्री केवो पूर्वक वर्ष (बीच क)। सहास्दु मिहास्द्री धारिक बीर सामिक्टर नामक

बहुद का महिताता देव (बीन है)। वर्ड हैं [वर] १ शिवनिरोध । २ बहुदनिरोग । के महिता गीर पत्रिकार बहुद का प्रीकृत्य के (बीच है)। बरमार र्ष्ट [वरमा] मानिकारधीर का प्रीकृत्या के (बीन है)। बरमारामर र्ष्ट [बरमहामार ] वेशो मन्दर बस्च वर्ष (बीन है)। बरोमास र्ड

[बराबमास] र होन क्रिकेट २ वर्षे विकेत (बीज ६) । क्रांमासमद प्र [बराबमासमद्र] उच्च होन का अध्यास

े देर (बील ३)। वरोभासमहागद प्र [वरावभासमहामह् क्रिको पूर्वेज वर्षे (पद)।

अहिवमात्र (महानि)।

(बीच क) । वर्धमासमहावर पुँ विषय मासमहावर] प्रित्तवरणसङ्घ नामक सञ्चय क प्रविकाल के (बीच क) । वर्धमासकर [ वर्धमासकर] देवो सन्तर्धक सर्व (बीच के ) । आईनीई की [आदिनीति] समका पहलो एसनीति (पुन ४६२) । आईय देवो आई = म्यादि (बी ७- काल) । स्वाद्य कि [आतिति] रे किन्द्र-बात । र मंसरस्यक संसार में मूननेवाना (बाना) । आईक पूँच [आवित्ता] पान का इक्ना

आरोस्सर् है कि (दायपी प्रस्तान कामसे का (शिरि १११)।

र स्वाना का पण नातननेव (अ २ १)।

र स्वाना का पण नातननेव (अ २ १)।

साम काम है स्विची जान का कोव ही स्विधिकी जान का प्रेष का है।

प्राप्त १५ ५००० ११। स्वाइय जाइय ही स्विधिकी जान का प्रेष (पर्युष १) प्रस्त १५ १३)। जीव ही स्विधी जान का जीव (प्राप्त १११)। बहुक सि

आह्य यक [ का + दीप् ] बनकता । नक्न-

भाउ म [वे] सदना या 'भाउ पसीदेह में सक्र≾तवेमेरा कोड समाम्युसी साउ सवर्व वेद सक्रउतीति' (स वेप्')।

का तृतीय क्ष्मएड (सम ८८)।

काड ) न [आयुर्ष] र सातु कीरक आक्रम ) कान (प्रता राज्य १९) । र कार कर्म (ता १९) । र साहु के कारण्युत कर्म-पुराव्य (ता व) । काम द्री [काम] मरज मुख्य (सावा) । कस्म प्रता है [काम] साद्भानक, सेकर (सावा) । विकास की [किया ] क्य क्या है किया की [क्या ] क्य क्या द्री विश्व की साम (स्पार ७)। आईव स्क [ सा + कुछ्य ] चेप्रतिक करणा कीरना। संह आईबिक्स (सा)

(भवि)।

कार्जन म [आकुक्रान] एंग्रेन पानसकेर (कृत)। धार्जनपा की [आकुक्रान] उत्तर देवो (वर्ष १)। अर्जनम नि[आकुक्रान] र एंक्रुनित।२ एक कर बारण किया हुमा (व ६ १७)। आर्डिम नि आकुक्रान् र एंक्रुन्येनाना।

छ्य कर बारण किया हुया (ये ६ १०)।
छाडीक्ष कि [आकुक्तियार] रै संहुक्तरेवाला।
र निकस (गठक)।
आर्टर वेको आड्डर = सन्वर्डेय्। मार्टरावेसि
(णाया १ १)।
आर्टर पक [आ + कुरून] संकोचना
प्रयोग, येक आर्टराविष्ण (पण १)।
आर्टरण न [आडुम्टन] मार्वर्गन (वेका
१७ ११)।
सार्टरण न [आडुम्टन] संगर्भन (येका
१६ ११००)।

आउंबाखिय वि दि] धान्तावित हुवामा

हुमा पानी मादि हवादार्थ से स्वाप्त (पाप) ।

आवस ) देवो आड = धारूप (पूपा १११ आदम ) भार १ १। आउद्य एक [आ + प्रच्यु] प्रामा सेता पत्रुवारेता। वह आउद्युक्त आउद्युक्तमा (से १२ २१: ४०)। संह आउद्युक्तमा आउद्युक्त प्रामुग ११)। आउद्युक्त म [आपद्युत] प्रामा पत्रुमा (सा ४० १)। आउद्युक्त में [आपद्युत] प्रामा पत्रुमा

१२, १६)। भाजकहा की [आपूरका] मात्रा (दुप १२४)। आजन्किय दि [आपूर] निगडी मात्रा की गई हो बहु (वे १२, ६४)।

आडळ देखे आश्रीळ स्थाबीच (६१ ११६)। आडळार्डु [आवर्ष] १ संदुव करना । २

शुन्न क्ष्मा (पएल १६) । भारत्न वि [अ(वस्मी सम्पुत्त करने बोल्य

(प्राथम)। आडज वि [आयोज्य] बोडने बोस्य सम्बन्ध करते योग्य (विसे ७४ ६२६६)।

आउज्जिय नि [भातासि है] बाय बजानेवाना (पूरा १६६) । भाडित्रय वि [झायोगिक] उपयोगकाला स्रावकात (सप २ १)।

व्या डिका र िशाविके दे | चेतुन किया हुया (वर्षण १६)। भा डिकाबा की [आवधिक] किया व्याचार (बादम)। करम म िकरण] सुम व्याचार

विरोप (व्यास १६)।

काडाज्याकरण न [आवर्शीकरण] युव ब्यासार-विरोप (वयस १६)। आउट्ट वक [आ+चुन् ] र करना। र मुसाना। १ व्यास्त करना। प्रभान वेषुक होना व्यास होना। १ निवृत्त होना।

हिंसा करना । सान्हामी (शाका) ।
साजह वि [आहार्य] १ तिहत यीके विध्व हुमा (वा ६९०) 'क्याकर नाजहे जह विद्यति तम्बीत नोहर्ष (हरू के) । २ सामित कुमास हुमा (वा १०) १ टीक-तोज व्यास्ति (धाका) । ४ इन्ड मिहित (धन)। साजह वुं [आहरू] येला हिंसा (धूम १ १)।

क्षांबह् । वि [आहत] बारर-पुतः (निष् बाबहिक्षः) ११९: वर ११२)। बाबहृत्र व [आकृह्न] दिवा (वृषः १ १)।

, आबर्ट्स न [आयर्थन] १ आप्यन हैता भीक (तर १ १)। २ धीमश्र होना, तप्यर होना (सूप १ १)। ३ धीमश्र हुन्ता, तप्यर (धार्था)। ४ मूगना भन्य। १ १ श्रुवि (सूप १ १)। १ करना क्रिया हारी (घर)।

भावकृत्रया की [भावसैनना] मासकान (एपि)। आउद्ग्या को [भावसैना] कार केने (निद्

आउट्टमा का [आवत्तता] कार क्या (शब्द २) । आउट्टावम न (आयर्चन) प्रक्रिय करता

आउद्दादम न [आपर्तेन] योग्युन करना तलर करना (मात्रा २)। आ बहिसी [आकृहि] १ दिया मारना (पाचा एव) । २ निबंदशा (पल १८) । साइट्टिकी [आवृत्ति] देवो आउट्टल = भामतीन (यन ११)२ १

सुम १ १३ भाषा)। १. बार-बार दरना पुतः पूतः क्रिया आउट्टि वि [आइट्टिन] १ पालेनाता

हिसक चार्च नाएए सान्ही (सूप)। २ कार्ज्यकृति [दे] साबे दीन "एने पूछ एवमा-हेनु ता बार्डीट्ट चंदा बार्डीट्ट मूरा सम्बक्तीर्य

धोबसीत (नुज ११)। भारतुम वि [आहुटन्य] दूरकर वैजने योग्म (का शिक्ते में महार) (इस्ति व १७)। भाइट्रिय देशो आहट्ट = भाइत (रहा)। भाउद्विय पू [बाङ्गद्विक] शएव-विशेष (भत

(सूज १२)।

सदार्थ-दास्क (दसा)।

₹•)( भाउद्विय वि [भाउद्वित] दिल विद्यारित । (नुष)। बाइट्टिया की [आकुट्टिका] पाथ में बाकर नरमा (रचा १६,१)। आबद यन [अल-बोदप्] यंदन्य नजा

आइट्ट वि [आहुष्ट] चंत्रूप (नित्रु १) । वोदना । करपु. भादविकामा म (पन १, ४) । मारह तर [भा+दुर्] १ दुरता पीरता । र बाहन रूरना, समान करना। अस्त्रीह

(वं र)। वयद्व मात्रक्षिज्ञमाण (स्पष्ट ४)। भाइक्र कर [लिस ] निवतः, 'इति बद्द रामर्व दारोद बंद आवश्चिता (वं ६---यव २ )। भार्रहर दि [साङ्कित] च⊃त. दावित (ब्रे १-- पर २२२)। कार्यह सब [ सम्ज ] सकत कारू हुत्यः ।

भावत्व वि [आस्मोरय] बात्म-इत (वव ४) १ भारत नि [भातुर] १ रोनी बीमार (रांबि) । २ ज्लारिक्त । १ दृष्टिन, गौबिक (प्रासू २०) 42) 1 आ उरन दि] १ नक्तरै पूदा २ वि बहुत ।

आ उत्त विविश्वासुप्ती १ वैतिष (ठा ३ १)।

इमा मुखिया (दे १ १६)।

२ इंग्रह (सद)।

३ गरम (दे १ ६४, ७६)। आहरिय वि आहरित दिवा पीकित (पापा)। आबक्ष वि [आकुन] १ व्याप्त (मीप)।

ग्यात (प्रान)। १ व्यापुत दु\*चित्। ४ र्राजीर्स (स्वय ७३)। १ तू. समूह (विसे व्यादतः सक् [माङ्गुलय्] १ व्याप्त करन्त्र । २ व्यव करता । ३ दुआरी करना । ४ ग्रेकीर्या रुला। र प्रदुर करनाः स्वरू-आह

क्षिज्ञत भावसीञ्चमान (महा पि १६६)।

आउतिकी [आतुष्ठि] दुप्र-विदेप (दे १ १)।

आवर्टिञ वि [आकृतिक] पानुस रिया ह्या (मा २४, परम १३ १ ६। उप पू १२)। थाटधीकर एक [श्रा**ड्**डी+कृ] रेखो आउ**छ**= मानुतम्। माननीकरेति (सप) । **क्व**क् भाउसीकिञमाण (नाट)। आउस्रामुभ दि [आकुसीमृत] वदकाया हमा (तुर २१)। लाउद्वय न [द] बहाद चनले ना नामुमय

बारस्स (मिरि ४२४)। भाउस मद्र [आ + दस्] छना दाप्र करता। का आवर्सन (तम १)। बारम स्क [बा + कुन् ] स्टब्स्ट करन द्धार रहा, जिल्ला इंचन ईचना । सामान

आइस १ वि [अयुध्यत् ] विषयु चैर्वाषु आइसेत १ (सर २३) धावा)। था इसमा हो [साम्बेशना] प्रक्रिय विकं र्सीन (स्ताया १ १० मन ११)। सारस्स **२वी जा**रस = मा + कृष् । पार+ स्पति (क्षाया १ १८)। आउत्स पु [ब्राक्त्रेश] दुर्ववन धतम्य वक्त

(सूब १ ३ ३ १८)। ब्बाइस्सिय वि ब्रियदयको १ वरूरो । १ किनि भक्तर, मनस्य (पर्ग्त १६)। करण न किरणी १ मन वचन और कासास शुभ व्यापार । १ मोद्य के तिए प्रवृत्ति (दस्क भावद् न [आयुष] १ तक, हविवार (कुम) :

२ विद्यावर वैश के एक श्रामा का नाम (परम **६४४)। घर न ["गृह] तक**ताचा(री)। परसाझ की ["गृहशाधा] रेबो प्रश्ना उक्त वर्ष (वं)। घरिय वि ["गृहिड] मापुषराचा का घष्पत-प्रवान कर्मपारी

आधीर विजिल्लाम्बिन् | योजा, राजगाय (विदे)। आऊड यह दि ] दूर में परा करता। शाम् क्द (दे १ ६६)। भाक्त दिय व दि ] बत-गण बूए में गाँ कर्के प्रतिका(दे १ ६८)।

(व) । "सार न ["सार] शकपुर (वीप)।

आकर दक[आा+पुरस्] घरतः, र्र्डि कला, मरदूर कला । माहरेद (शर) । इन

भाउरपंत भाकस्मात्र (परंप) १ ३-११ म १२,२**०) । करह आ**क्ररिजनार (नि ११०)। तर भारतीये (दर) (दर्ग)। भारतिय वि [भारति] स्पर्मा स्टर बाण्स पुंक्षिदेशी १ योक्सा। २ प्रकार रीति (संदि १८४)। ३ वि नीचे नेको (पिंड 23 ) / आएस देवो आवस (भग १४ २)। आयस ) दे जिवरा दिलकेश सिन्ना। खायसम् । र स्वज्ञ **बर्**स (महा) । ३ विवसा सम्मति (समा १७)। ४ घतिषि महमाम (सघर १ ६६)। ५ प्रकार, मेरू जीवे एर मेरी | कालाएसेएर कि सपन्स मगदन' (मन ६ ४ कीव २ विदे४ ६)। ६ निवेंस (निद्र)। ७ प्रमाण बाद न बहुप्पसन्ते ता मीसे एस इत्य काएसो (पित्र २१) । ८ इच्छा कमि- , सापा देशो आपसि । १ स्टब्स स्वाहरू 'बाबाइसमाएडी भवरतो 🜠 प्रश्नतप्राणें' (मानानि २६७)। १ सून प्रत्य शास (विसे ४ १)। ११ जनवार, मारोस भाएसी उपमारी' (विशे १४ वन)। १२ शिष्ट-सम्मत वहसूचनाहरूए। ए

न बाहिकएऐर्डि बुक्यइएऐर्डि । बाएसे सो उ मने

प्रकृषि वर्षतपीयस्यो' (वत २ ८) । आपसण न [आदेशन] उत्तर केवो (महा)। आयसण न [आदेशन आवेशन] सीदा वर्षेत्व का कारवाना जिल्लामा (पाचा २ २२१ वरित)।

व्यापित कि [कावेशिय] १ पारेत करने-वासा । २ प्रमिताची इन्दुक (प्राचा)।

क्षापसिय वि [स्प्रविद्ध] विस्को ग्रावा शै गर्दे हो वह (मधि)।

द्याप्रसिम कि [आवेशिक] १ धारेण संत्रणी। २ किवाइ सावि के जिमन में बचे हुए वे बास-सवार्थ जिमको समस्त्री में बोट केन का संक्रम किया गया हो (विड २२१)।

आजा म हिं] स्पना मा 'हेत विनयंति कि ताव मुनियुको सामो हैरनाम मानो मानेबरमाने मानो स्थापने पेपति (म १४४)। आजोग हैं [आयोग] रे मान, नग्न (सीग)। र सम्पायक पूर के लिए करना केशा (मान)। र पार्ट्याक पूर के लिए करना केशा (मान)।

आओग द्रं [भायोग] धर्नेताव सर्वेतार्यन का वाकन (सूच २, ७ २)।

खाओगा पू [आयोग्य] परिकर, सर्वाम (प्रीप)। आओळ पुंत सिमोरेयो नाच नाना (महा आक्रोद्ध वि [आयोज्य] संबन्ध-योग्य जोवने माग्य (विसे २३)। आओड सर्विश + कोटयू | प्रकेश कराना वसेवना। यामोजावेंति (विपा १६)। आमोडण न [आहोसन] मनपूर करना (स E. 1) 1 सामोडिश वि दि ] ताब्त माय हुमा (स E 4) i काओध प्रकृत्या + सूध् ] तक्ता। भाषी बेडि (बेसिए १११)। आ औस सर्विश + कञ्च कोशायी मानेश करता, साप देना। मामोसह (निर १ १) पाघोनेक्सि भाषोनिम (उपा) । क्यक भाषोसेस्यमाग (इंत २२)।

आओस पुँचि प्रशयसमय सम्यान्ताम । (पोच ११ ग्रा)। आओसणी श्री आकाशना निर्मलेगा।

विध्यकार (निर १ १)। आओहण न [आयोधन] प्रव सझाई (का ६४ म टी सुर १ २२ )। आंत वि [अन्त्य] सन्त ना (पंचा १० ६९)।

भाक्त्र एक [ भा + काइक् ] बाह्या रणका । धाकविहि (स्ति) । आक्त्रा की [लाकाहका] बाह्य रणका

प्रमिनाया (विसे तर्द्) । आकृषि वि [आकृष्टिक्न्] प्रमिनायी क्युक (पाचा) ।

वेन्दुक (धावा)। आकृष पक [आ + कल्यू] ऐता विस्तारधाः धार्वदानि (पि ६४)।

आर्क्षिय न [आफ़न्दित] र माझ्न्यन चेवत। २ दि. विगने साझ्य्यत किया हो वह (दे ७ ९७)।

आर्थप सक् [आ + कम्प्] १ बोहा स्पेता। २ क्यर होगाः १ सायवन करनाः संह आर्थपहचा आर्थपहचु (चन्न)।

काक्षप पुं[आरुम्प] १ कोहा करंपना। २ भारतकर (नव)। ३ तप्पराद मावर्गन (पत्र)।

आईपण म [आरुम्पत] उत्तर वेशो (परा या)। आईपिय नि [आइम्पित] ईयद चिनत स्मित (लग ४२८ दी)। आइपिय नि [आइम्पित] धार्मानत प्रचम हिमा हुमा (रिय १३६)। आइस्बर में [आइपी चीनान। निरुद्धित

आकत्य पुं आप्त्ये चीनान । निर्दाद् को िलेक्टिय बीन्तान (स्व ११) । आक्त्युग न [आक्त्येज] चीनान (निष्क्) । आक्र्युग न [जाक्येज] चीनान (निष्क्) । आक्रयेख्य विष्कृति विक्रमा द्वारा 'पूर्वा' व नक्य क्षेत्र निर्माणक्या

ता वरितु मण्यस्म । पश्चिमससोपवरिएमचरित्रकृष्टिया स्थ्रीत । (धर्मीव १९३) । आकण्यन न [आहर्णेन] भवता (मट) ।

ब्याक्रिकाय वि [ब्याक्रित] सुत सुता हुमा (प्राचा)। आक्रिके बेबी साव्हिह (सीम्र १)। आक्रिकेय वि [ब्याक्रिक] यकस्मान होत

आकरित्य हि [आकरितक] यक्तमान् होन बाला विना ही कारण होनेताना 'कन्मिन मिलामाव के मानाक्रीकृत होति (पिने ६४११)। आकर वृं [साकर] १ बान। २ सपूह

(हुमा)। शास्त्र वेषौ आगसः। मामसिस्मानो (प्राचा २ ३ ११४) हेन्द्रः आक्रसिचारं (माचा २ ३ ११४)।

माकार देवो आगार (दुनाः द १६)। भाक्रस देवो जागास (मग)।

क्याकासिय वि [वे] पर्याप्त नाफी (पर्)। आकिष्ठकी [आकृति] स्ववण शाकार (ह १२१)।

आकिश्यन [आकिश्यन्य] निरहरण निर्मारप्रहण: भाकिश्य च वेमे च च वम्मो (नव २३)।

आर्किपणयां भी [आफिक्सनता] अपर देवो (सम १२)।

व्यक्तिपनिय | केबो आर्कियम (पाष्ट्रा मुगा आर्कियम | १ व)। भारिष्ट्रिकी [आकृष्टि ] पार्चेण (पर्मे वि ११)। ब्याबिटि केरो काकित (रमा)। अर्द्धप तक [आ + कुद्धाय् ] संकोष करता । सार्वकः, संक कार्क्डविवि (परा) (सर्वि)। कार्युचण न [भाकुक्यन] धंकाच धंयन (सम्ब १९६) विते २४१२)। आविषय वि शिष्ठकारी संकृषित स्व पनर्व मानुर्वियाची चमलीमी पछरिया विमला (सर४ २६व)। আভুতুৰ[আক্তু] १ ঘাৰীয়। २ वि विष पर माशेश किया गमा हो यह (दे ३ ६२)। ৰাছ্য र আরন্ত (ৰুপ)। आकृय न [आकृत] १ धीमूत क्राउत (का ७२ टी)। २ मनियास (विशे **१२**०)। बादवस्थि पि बादेवस्थि । सर्पपूर्व (प्राचा)। आक्रोडण व [आक्रोटन] पूट कर बुरेड़ना (पर्या १ वे)। भार्मम देवो अद्योस ≍शकोरा (वंद ४ 2 ₹ ) 1 आक्रोसाय धक [आक्रोशाय ] विकरित होनाः वहः भाकोसार्यत (परह १ ४)। कार्मन् (मा) वैद्यो आईन् । प्रास्तवर्शन (पि **≼**) ι कार्लीच (संप) सक [आ + कृत्] रीधे की बना । सेक- कार्स्सविधि । मिक्र) । कालंडस र् [भारत्यस] स्त्र (मुपा ४७)। मणुद्द न [ बनुष् ] श्वाबनुष् (बप १८९ टी)। भूइ १ ["भृति] कर-शत् महाशीर के मुक्य किया बौतन-स्वामी (पत्तम ११ १२)। आगद् और [आगति] ध्ययमन (भाषाः विशे 2884) i आगद् केही आविद (मद्दा) । आगीतका देशो आगाम = धा + वस । कार्गतगार ) न [भागन्त्रगार] वर्गताला भागतार र मुच्योकरबाना (योग गाना) । भागंतु नि [भागन्यु] यमेनाना (तूप)। आगन्त केवी आगम = धा + एम । कार्गतुग ) दि [जागर**ुक] १ शतेना**वा । शर्मातुम । २ मोतिष (संप्रकार चाम २४) पुत्र ६६६ धीव २१६)। ३ इतिम प्रस्ता-<del>-</del>^- (- -: ₹ )ı

आर्गतूज देती आगस = घा + वम् । आर्माप एक [आ + इस्पय्] रणना हिनाना । वर् आर्गपर्वत (स १११ ४४१)। शारांपिय रेगो आशंपिय (गरम १४ ४१) । आरगच्छ स्ट्रा (आ + सम्] भाषा मास-मन करना। यागण्डा (महा) । महि द्यागविज्ञम्स (रि. १२६)। वर भागवर्धेत आगच्छमाज (राम दर)। हेरू- आग-विश्वचय (पि १७६)। भागत रेगो भागय (गुर २ २४८)। ब्यागची धौ दि] रूप तुना (६१ ६३) । शागम स∓ [अग + गप् ] १ माना सावशन क्एता। २ वानना। भनि भाग्रियस्यं (पि ५२९ ५६) । बद्धः क्षागममाण (धावा) । धेर भागेनूण आगमेचा भागम्म (पि इदर इदरा चीर) । इ. आगंतरव (स्पा १९) । डेक आगीर्त (रास) । क्षागम पूँ (आगम) १ समावस (वेच १४५)। २ ज्ञान जानकारी: 'बीइप्रविकाठरणार्ग पानने क्षं (सुद्धार ११)। आराम व आियमी १ झागमन (से १४ **७१) । २ राज्ञ सिदान्द (वी ४) । इस**स्र वि किरास्त्री सिकार्को ना बाननार (स्त्र)। क्व वि 📆 ताको का भागव्यर (प्राक्त)। णीइ की निति । कायमीच विवि (वर्ग २)। ज्युनि दि शक्तीका वानकार (पार)। परति वि परापना विकाल के मनीन (र्यथन)। वस्तिय वि विशिकी सिकालो ना धन्द्या जालकार (थन क्वहार पूं ["इन प्रहार] विदान्त नुमोदित न्यवहार (४व) । थागम सब [आ + गम्] प्राप्त करना । संहर-मानमिता (सूप्र २ ७ १६)। धागमध्य न [भागमन] धानमन (धा ४)। बागमि वि [बागमिन्] वाने वाना बामापी (मिसे १११४)। भागमिस वि [सागमित] विकित कर 'करन सम्मतो स्मयमियो' (सुच १ १)। थागसिय दि [चागमिक] १ <del>राज्ञ-सं</del>वली राज्य-प्रक्रियाचित (क्ष्मर १११) । २ काम्बोल्ड बस्तु को ही नाक्लीकाता (सम्म १४२) ।

मागमिर वि (आगन्द) मलेबाला भारमन करनेवासा (सर्ग)ः आगमिस्स वि ज्ञागमिष्यम् । र पात्रमी, होनेबाला (पद्रम ११० ६३) । २ यानेबला (सम १६६)। भागमिरमा 🛍 [आगमिष्यम्ती] र्माप्य-नान 'धार्यप्रकार्ताम्म प्राप्तिस्मार्' (पर 1 ) t आगमस ) देनो आगमिरस (ध्व १६) आगमसि । धीन)। आराज्य देशो भागम = धा + धम् । भागव वि [आगर्त ] १ भाग हवा (प्रामु १)। २ इन्द्रप्र (छाया १ ७)। आसर देनो साहर = घाकर (घानाः स्थ वरेरे दी) । आगरि वि आइरिन विश्वत का मानिक सान का काम करनेदाना (प्रसृह १२) । धार्मारस र् [आक्र्ये] र शहर अधन (विसे २७८ । सम १८७) । २ धौँवान (विने है १ १७०) । ३ ब्राइ**ए कर को**न देना (याचु)। ४ प्राप्ति (भव २४, ७)। भागरिस सङ्घा आ + कृष विशेषना। यह-षामरिसंत (वर्मेसं ३७२)। आर्यास्य विशिक्षकी १ बोवनेशमाः। २ इ धरस्कान्त बीह-पुरुषक (धारम)। भागरिसण न [आऋपंप] श्रीवान (सम्मत २११)। मागरिसणी 🛍 [आरुपैजी] विदानियोग (पूर ११ = १) I आगरिसिय वि [आइस्ट] बोना हुम्य (पुग १६६: महा) । भागध सक [धा+कश्य] १ वान<sup>ता ३</sup> २ समाना । ३ पङ्काला १४ सेमानना करना । थायनेद (उप)। बायनेति (दर्ग १ १)। चंद्र 'हरिय बोर्धामा भागस्राक्तजण' (महा)। भागह वि [आरक्षत] कान बीमार (द्या ?)। भागस धक [का + कृप् ] बोचना । मार्च भाहि (भाषा २३११४)। ४४. छान सिर्ड (मिने २२२)। भागह स्वो भागाह । तंत्र- भागहरूता (स ₹ ₹ ₹?) i

भागवित्र वि [ब्ययुवीत] संपूर्वत (विवे

₹ ¥ Y) I

ाइबाइ वि [ ।विधाविन् ] विद्या सारि क्षागाड नि [सागाड] १ प्रवस दुःसाध्य के बल से बाकारा में गमन करनेवाला (बीप)। 'कबूबोसहंब बायाहरोजिएों। रोगसमबन्द्र' (उप प्राप्त (भीप)। (पीग) ।

७२ द टी)- 'नो कपड़ निग्नेवास वा निग्ने-बीख वा बदामंत्रस्य मीए घाइइतए, नदान मामाहि रोगाविकेदि (१४)। २ घरकार, वास कारस् (पंचमा)। ३ घरमन्त याह (निच्)। जीग 🕻 "बीग | मोग-विशेष पछि-बोप (ग्रोव १४५)। पण्य न ["प्रक्र] राज

धावन 'धामऋषरूर्णमु व भाविषण्या' (वव) । सूय न ["भूत] धागम-विशेष (निष्)। आगामि वि[भागामिन्] यनेवाना (मुपा t) 1

आगारसङ [बा + कराय्] दुसला बाश्चान क्ला। संक्रु आगारेकण (प्राव)। ब्यागार न [ब्यागार] १ वर, गृह (शावा १ १ महा)।२ वि पृहस्य पृही (ठा)ः स्य वि दिव ] पृही (वि ३ ६)।

आगार प्रशिक्षा असर रे धपकार (स ७२० द्यापि)। २ ५ वित चेष्टा-विरोप (सुर ११ १६२)। ६ माइटि ४५ (सुपा ११४)। बागारिय वि [आगारिक] गृहस्य-संबन्धी (पिसे)।

ब्यागारिय वि ब्याकारित देशकृतः ६ क्रसारिक परिस्मक (मान)। ब्यागास पुंभागास । र समल प्रदेश में धहना। १ सम भाव से धहना (माका) ≀ ३

सरीरणा-विशेष (पण) । आगास पून [आकारा] मलाठ, मन्तरल (चवा) । समा की ["समा] विद्यानिकोच

जिसके बल से बाकार में गमन कर सकता है (पदम ७ १४४)। सामि वि विधासिन्। धाकार में धमन करने वासा पक्षि-प्रमृति (प्राचा) । स्रोधणी औ ("योगिनी] पति विकेष 'मानासबीप्रणीप निमुमी सहोवि बाम-पार्शाम्म (भूपा १०१)। "रिमकाय प् िस्तिकाय] याकारा-प्रदेशों का संपूर, बबएर बादास-हम्म (पर्स १)। विगासन [वे] भवरित बाकार का पान (भावम) ।

फस्टि, फाडिय र् ['स्कटिक] निर्मेत

स्तरिक-छन (ध्यः भीप)। फाखिया ध्य

[ प्रांतिका रेक मीठा रेक्स (पर्एए १७) ।

आगासिय वि [आद्यशित] पत्नात को व्यागासिय वि [आकर्षित] चौंचा हुमा व्यागासिया को [आखशिकी] प्राकार में ममन इस्ते की सब्धि-शक्ति (सूमित १६६)।

आयाह् सक [अव+गाह् ] धनकहन करना, स्नान करना । आगाहद्वता (रस ४, t (11 1 आगिइ 🛍 [भाइति] माझर, स्य मूर्ति (सर २ २६) निपा १ १)। व्यागिद्रि की [बाकुरि] मान्यंस (गुपा धारी देलो जारिङ क्रिएए।पश्चिम्पादी विद्यान् सामाद्यं न व ताल्' (विदे २७ ७)।

आर्थ रेको आयम् । 'मूत्रकृतान' सूत्र के प्रवस भुतत्कम्ब का बसवी सम्प्रमन (सूच ११)। सार्थस एक [सा + पूप् ] क्वंख करना आर्पस सर्व ि आ + पूप् विस्था चोहा विश्वना। मार्वसिक (माचा२,२,१४)। आर्थस.वि आपर्ये वस के सात्र विसकर भो पिनाचासके बहु (पिंड १, २)। भार्षसण न [आधर्षण] एक बार का करेंग्र आध्यण न [दे] नव-स्वान (ए।या १ ६—

पण १६७)।

(ft vv) 1

बागु १ बाङ्गी धनिनाय सम्बद्ध (बारू) ।

भाषव सक [आ + क्या] १ क्यूना उत्तरेश दैना। २ प्रद्याकरना। सामकेद (ठा)। क्षक याविक्य (स्प) । मुका यार्व (सूद्रा पि ८८)। वह- साधवेशाज (पि ४४)। हेड आपविचय (पि ८८)। आध्यका की [आक्यान] कवन रहिः (छामा १ र)। आयपद्रत् वि [आययायक] क्यक वका उपदेशक (ठा ४ ४)।

आयविय वि [शास्त्रात] बनः, कहा हुपा

आपनिय नि दि] गृहीत स्नीइत (प्रसू आयवेत्तम वि [आस्यापयितृक] उपरेष्टा दक्स (माना)। आयस सक [आ + घस्] थोड़ा विस्ता।

धापसावेश (निष्)। आघा एक [आ+स्या] कहना। (माना)। काषा एक [आ + ब्रा] धूँबना। वह आघा यंत (स्प ११७ टी)। क्याचाय वि [आस्यात] कवित तक (माना)। काधाय वि व्यास्याती १ उक्त कवित (सुधार १३ २)। २ म. एक्टि, कमन (सुध ₹ ₹ ₹ **१**):

बाबाय दु[साबात] १ एक गरक-स्वान (देवेना२६)। २ विनास (उक्त ४ ३२ सूब ५, १२) । ध्यषाय पूँ [आघात] १ वघ। २ वोट, प्रहार (कुमा एग्या १ १)। आषार्यतः रेको आषा = मा + मा । छ। भाष केवी आभव । मामलेइ (पि ०० 2 3)1 आपुट्ट वि [आपुट] पोपित जाहिर किया हुभा (प्रति)। सामुन्स अरु [सा+भूगै] दोसना,

हिलना नौपना चमना।

भाष्मिय वि [भाष्मित] होसा हुवा क्मिन्त असितः 'प्राकुम्मियनवस्युकुपी' (पराम **१ ३२ ५७ १६)** ≀ आघोस एक [आ+घोषयू] केपला करना वित्रोस निन्यामा। यामोनेह (स.१.)। आघोसण र क्रियम प्रमे विकास पोपला (महा)। आपक्त सक [मा+ चक्क] कहना। वक् आवक्संत (रि२५ वे नार)। भाषिक्यर (ग्रो) वि [आसपात] उत्त, कवित (प्रिप्ति २ )। आ वरिय वि [अपचरित] र मनुष्रित विदित्तः

२ म- धाषरण (प्रामु १११) । आ जाम सक [आ + जामयु] चाटना बाना पीना। बरु प्राचार्गत (हुद १६) । भाषार देवो आयार = पादार (दुमा) । भागारश्र देवो भागरिय = मानार्व (शास) । श्चाचिकतः सक्तां स्थान् विकास इ आभिक्क्षणीय (स.४.)। आचिकित्रम वि आक्यात विवत अक (8 1 (8) श्चाचिकां विशिचिति । प्रत्युर क्षिया हुमा (पदम १७ १२ )। साथप्रकृत (आर्थक्य) १ वज्र का प्रभाव (क्ष्प) । २ वि मानार निरोप 'धानेतदो वस्मी' (पैचा)। आब्बेइज व [आब्बेदन] १ नात। २ वि नरक (क्या) । शाजरब देवो जागम + मा = नम । माजरबह (प्रकृ ७४)। काशाइ देशो आयाइ (ठा स १७)। आ जिस्तो आ इ = यानि (दुमा दे१ ४६)। धार्जरण पू [भाजीरण] स्त्रनामस्याय एक का सनि 'साकीररहो व पीधी' (संवा ६७)। आर्थातः )पुंधाबीची १ मानीविका आजीवग जिल्ला म बगाया भाषी-बभेगं तु धबुरजमान्त्रो पूछो पूछो पिप्परिया-समें हि' (सद्यो । २ दैन सङ्घ के लिए विद्या का एक दोय-मुद्दर्भ की मानी पाति कुछ मादिकी समलाता क्वलाकर अनसे निधा प्रत्या करना (ठा १ ४) । १ बोहालाक मत का धनुवानी साबु (पर) । ४ धन का समूह (<u>द्रष</u>) : भाजीयगर् [आवीवक] १ धन का गर्वे (सूप) । २ सन्त भीव (शीव ३ टी) । देशो आफीवयः। आजीवण न [आजीवन] १ पानीविका जीरत-निर्माहनः ज्यायः। २ वैतः सामुके

निए भिन्ना का एक दोप (कह)। भार्जाक्या की [भाजीवना] उसर ध्यो (बंगः यीतः) । आश्रीवय देवो जार्जीलगः वाजीववस्त्रिकेलं भवरामीविज्ञानि दूसनो वैजेरीए समूहस्यस्यहस्ता नर्वतीतमस्त्रापा (जीव ३)। आर्जाविय नि (आश्रीविक) बोरालक के भत ना भनुवायी (पएल २ ३ दर्गा) । भाजनिया थी [माजीवितः] १ तिबौह (मार)। २ जैन नाभू के निर्मादना एक

धाराच वि [आयुक्त] प्रमाधै (निष्)। आ जाम प्रकृत्या + यूप विक्या । हेक **बाग्**रिमहर (ही) (क्ली १२४) । माञ्जूद न [आयुव] इक्तियार (मै २४) । भाजोज्ञ केवो आयोक्त (विते १**१** ३)। कार्डवर प्रे [धाइम्बर] १ मानेन जन्मी क्किन (पाम)। २ माच की मानाम (ठा)। **। पक्र-विशेष (शाक्)**। ४ त क्छ का मन्दिर आर्थंबर पूं [आडम्बर] शत्त्व विश्वेत पटह (परा (२८)। भाडंबारङ्ग वि शिक्षाहरवरवत् । माहस्वरी

आडविय वि [दे] १ पुरित्य पुर-पुर किया ≱मा(पक)। आडविय वि [आटविक] बंगल में चर्नेवाला वंगनी (स १२१)। थाइद सरु [आ + दृद् ] भारों धोर से क्लाला । साम्बद्ध (पि २२२) २२३) । साम-#ति (पि ६२२। २२६) । भारह एक [जा + भा] स्थापन भरना निमुक्त करता । माज्यूद । चंद्र- व्यावद्वत्ता (भीप)। भावाद्य भी दि ] पनत्कार, वयरराखी (रे \$ \$¥) I व्याहासेवीय **ई [आहासेवीक]** विद्व क्रिकेव (भरुद्ध १ १)। भाडि 🛍 [झाटि] १ पक्षि-विशेष। २ मण्ड विधेष (दे ब, २४) । भाडियचित्र वं वि] शिविका-नाहरू पूर्य

(?) (E 140 1xt) i आ इधाङ एक दि । भिष करमा, मिनास्त्र । मार्गुपला६ (दे१ ६६)। आइआ कि देवि निमना मिसानट (दे १ माद्रीय वेद्रो आहोत = प्राटीन (तुना २६२)।

भाडोस्पि वि दि दे दे रोका ह्या (लाग 1 (23 9 माडोध नक [मा + टापव्] १ मार्थर करना। २ पत्रक द्वारा भूताना। साडोबेड् (मन) । संद्राभागामस्य (भन) । । माद्राद र् [माटाप] पारम्बर (स्वा हल)।

आहोबिअ वि हिंदी प्रायेशित इस्सा विग इया (दे१ ७)। आहोबिअ वि [आदोपिक] मारोपवाता, स्कारित (पर्ह १ ३)। भारत मा धार मी बनस्रविन्तियेप (पर्व 1 (5

आहरा पुंत बादको १ बार प्रस्व (धर) ना एक परिभारत । २ चार श्रेर परिमित चीन (धीम भूपा १७)। आहरा वि है | बाह्मना 'एल्डिएमिन विजय-बम्मनरबर्ग्या प्राहती सन्धिनित्तदशामी सूर वैभो साम नरवर (न १४ )। साहरत वि (आ(रम्ब) रहन किया हमा प्रापन (भीव स्वरः हेर ११८)। बाह रेक ) विश्वारक्यों प्रारंग किया हुया बाडिश ) (मेम्स २३ बेह्म १४८)। भारप देशो आहत्।

आहय रेको भारत्य (महारुख ११)। आडव छक् । भा⊹रस ] मारंग करना युक्त करता। श्राप्तवह (हे ४ ११४) वस्स २२)। कमें, सारापार, सारापीयह (है Y 22Y) | आ का तक [बा+ ह] ध्रवर करना मानना । धाहाइ (ठवा) । यहः आहामाय आहायमाथ (१४ १ धावा)। क्या. आक्रमाण (बाचा) । आहा की [आद्र] संमान (पन २—नाना ११६: सेनीय १६)। भाक्तिम वि [ भाइत ] सन्दर्ग सम्मानित (\$ 1 tys) :

भाडिम नि [रे] १ ६७, घनौरु । २ वसनीर माननीय। ३ स्थामतः उत्पद्धः। ४ नाइ বিশিষ (दे १ ७४)। भाग एक द्विगी जलना किंगन पाछ ह एमं (वे र्वे वे)। बाराणि (वे र्वे र्वे भामिमें पाइपकृत्व प्रदेश सोई व वे स मार्गीवे (गा२)। मार्श्वे (समि ११७)। भाज सक [भा+जी] ताना सानक मध्या मंधला। मालाइ (पि १७० वर्षि)।

बर-आणमाणे (रामा ! १६)। हर-आणि वि(सप) (मवि)। आण र्षु [मान] १ श्यानोच्युतन दान । र रगम के पुरुषन (पएछ)।

चेत्र (स्त) ।

२ न्स माम को एक पुष्किरणी (राज)।

दीचा नेनेवाला एक रावा (पठम ८३ 🔻 )।

लाण धको साम = यान (वाद म)। आर्णेष्ठ रेको आर्अस् । प्रापंचर (पर )। आणंत देखो आणा । आणंतरिय न [आनन्तर्य] १ मन्त्रिकोर स्यवदान का समाव (ठा ४ ३) । २ सनुबन परिपाटि 'मार्ग्यादियंति वा मागुपरिवाधिति वा प्रशास्त्रभेति वा एगद्वा (पाद्र)। आरोद्मक [आ + तन्दू] भासव पामा पुरा होना । आर्थेर सक [ आ + नन्द्य ] गुरा करना । मासंदेति (ग्री) (शार)। 📡 मार्णदिभम्ब (समग्र १)। काण्य पुंधि। तस्य दि सहो सन्य का सोन इति ग्रुट्ट (पुकारे १६)। २ एक देव विमान (वेदेन्द्र १३१)। आणंद पुं [भानन्द] १ इर्प पुरम (हुमा)। २ मनवाम् श्रीतसनाव के भूक्य-रिज्य (सम १५२)। १ पोतनपुर नगर का एक राजा, को पनवान प्रशिवताव का मातानह या (पठम १ १२)। ४ मानी ६८व वसरेव (सम ११४ । ५ नायकुमार-वातीय वेवीं के स्वामी बरुगेन्द्र के एक रच-छम्प का समिपति रत (डा ४, १) । ६ मुहुर्त-विशेष (सम ४१)। ७ जनवान् ऋषमदेवका एकपुत्र (सन्)। द भगवान महाबीर के एक साबु शिष्य का शाम (कप्प) । १ मनवान् महावीर के वस मुख्य प्रशासकों (थानक-शिल्म) में पहचा (स्वा) । १ वेस-विशेष (की धीव) । ११ राजा येशिएक के एक पीत का नाम (निर २ १)। १२ 'ब्रामक्स्ता' सूत्र का एक बम्पमन (जरा) । ११ भणूतरीस्पादिक इसा सूत्र का द्वातवी सम्पदन (मग)। १४ 'निरमानती' सूत्र का एक सम्भवन (जिर २ १)। १५ थ- देश-विशेष (प्रज्ञम १६)। पुर न ['पुर] नगर-विरोध (बृह्)। रक्षिकाय पू ["रहित्त ] स्वतामस्यात एक बैन साप्त (भय)। व्याणंद्रण म [भानन्द्रत] १ दुखी हुई (पुपा ४४ )।२ वि सूरा करतेवासा बातन्त इसक (स १११ रमरा १ रख)। आजन्तवड ) पुंचि] पक्ष्मी बार की एव आजंदबस } स्वता का एक बन्न (बा ४२७

देश ७२ पर्)।

पहनेवासा (सर्वि)। भागक्या सक [परि+इक्ष] प**ी**का करना । इक् अ(णस्टेरी (धीष ६६) । आजन्द्र देवो आउंद्र । मासन्दर (यह )। आणट्र वि [भानष्ट] सर्वेदा नट (उदा १० १ मुक्त १८ ४)। भाणग म [भानन] गुन मुँह (दुमा)। आण्यन [आनयन] सामा (महा)। आणत्त वि आद्यानी पारिष्ट, विसक्ते हुतून दिया गया हो वह (सामा १ क भूर ४ t ) i आपन्ति की आज्ञाति । पाका हुरूम (पनि दर्)। बार नि <sup>क</sup>ररी माद्याकारक नीकर (से ११ ६४)। "किंकर पि [ (क्ष्क्रूर] नौकर (पराष्ट्र)। इर वि विदरी माश्रा बाह्यक संदेश-बाह्य (यमि ८१)। आयचिया हो [आइसिया] कार देवी (एकाः विषय)। भागरय न [सानप्ये ] पलनंता (सम धाजप (धरों) देवी आगव = धा + क्राम् । म्प्राप्तपमित (पि ४)। आमपाम देवी आमापाम (नव ६)। आवष्य विकिञ्चादवी सामा करने योग्य (सूच १ ४ २ १**४**)। आणम सक (बा:+अम्) रशनः सेना। माणपीत (भप)। आजनमी केवी भागभगः (मास १०° पि बदा २४६)। आजय पून [आनत] १ देशलोकनिरोप (सम ११)। २ पू उस देवतीय-नामी देव (उस्र) । भागप पुन [मानव] एक देवदिमान (देवेन्द्र ११५) ।

आजयण न [आनयन] सामा यानमा (था मैक की पश्चिम दिशा में न्वित स्वक्र पर्वत (Y' # (WE) 1 पर पुलेशाबी एक विस्तुमारी (ठा ८)। आ जब सक [आ + क्रप्यू] सका≪ना फरमाना । ब्राएकड्, ब्राएकेस (पडम ३३ ब्राणिद्य वि [ब्रानिन्दित ] १ इपॅप्रास्त **१८) । वह- आणवेमाम** (पि (धीर)। २ समयन्त्र के साई मरत के साथ १११)। इ. आ मचयम्म (महा) । आण र देशो आणाम - या + नायन् । आणंदिर वि आनन्दिन् । पाननी पुर आणश्ण व आिक्षपती भाजा माकेट फर माइरा (स्वा प्रामा)। आणश्यान (आनायन) मैनदाना (पुपा 1 (₽#1 आगवणिय वि [आद्यापनिक] प्राक्ष फर मानेवासा (राय २६) । आजयियाची मिल्लापनिश्च आनाय निस्धी रेची दीनों आमदमा (धार १)। आणवगी 🛍 [आज्ञापना] १ ज्या-विरोध हुनुम करना। २ हुकुम करने से होतवाला कर्मबन्ध (नव ११)। मागवणी **थ्रा [जानायना] १ क्या-विरो**य र्मेयवाना । २ मेंपवाने से ह्रोनेवाला कर्म-बन्द (नव १)। आणा क्ये [काक्का] कारेत हुदूम (कोन १)। २ छादेश 'एमा बास्ता निग्व'विका' (माना) । ३ निर्देश 'डरनामी णिहेती माला विस्पर्मी स होति एनद्वा' (वव) । ४ सामन सिकान्त (विसे वहश्र सुनि)। ५ सूत्र की म्यास्या (धीप) । इसर दू ["इहबर] मात्रा करमानेशसा मानिक (विपा १ १)। जाग र् ["योग] १ बाजा का सम्बन्ध (पैचा)। २ शास के सनुवार क्षति 'पार्व विसाइनुसर्व बार्कानीमी म मंत्रवनी (पंचन) । रुद्द हो। **ैरुचि]** सम्पद्य-विरोप (इत) । २ वि धाममों पर धका रखनेत्राचा (वंश)। अ वि ि दन् ने पाका माननेशाला ( चा)। वस्त न पित्रो साकास्त्र, हकूमनामा (से १ १८)। वत्रहार है [क्यबहार] व्यक्तर मिटेन (पंचा)। विजय न विवय विज्ञ व वर्षम्यान-विशेष जिसमें बाह्य--सामन के द्वालों का चिन्तन किया जाता 🧣 (पीप)। <sup>।</sup> साणाइ पुंदि] रुकुनि पत्ती (दे १ ६४) ।

आणाइना वि [ आद्धावन ] पात्रा मानने-बाला (पेवा)।

आप्याइय दि [आनायित] मेंनाया हुमा (इया २ २१)।

दुसार २१)। सराजायाज दु [स्तानमाया] १ स्वातोण्यस्ताय (प्रापु १४)। २ स्वानोल्यस्ताय-गिरियत समय (स्पूर्)। यज्ञति हि [पर्याप्ति] समय (स्पूर्ण)। यज्ञति हि [पर्याप्ति] समाजायाया की स्वानमाया स्वार स्था

'प्राह्मतानुषी' (प्रव २५ १)। कामापाणुय पूं [कातप्राणक] स्वाधी-

च्छ्नास-परिपित नान (नप्प)। आणाम पुंधानाम] रनाध मन्त रनाम (मर)।

भाणामिय वि [आनामित] रे चेदा नमामा हुमा (गण्ड रे ४)। २ संवीत किया हुमा (गरम रे ३७)।

काणास्त व्र [आस्त्रम] र वन्त्रमः। र दृष्णैः
व्यंभने भी रम्बू—वीर्षे । वृष्णे पर दृष्णे
वीचा जाता व्र वृद्धं रमस्य, भीता (हे २,
रेण्ण प्रामा)। वर्ष्यसः स्वेस व्यं [स्तरस्य] जहां राभी व वा वाता है वह रतन (हे २ ११०)।

साजाव थ्यो साजव = धा + रूप्य । धाला-वेद (स १२६)। वच्द आणाविश्वेत । (तृता १२६)। दू आजावस्य (धाला)। आगाय थक [आ + ताययु] संस्थात। धालावद् (धीर)। संद आणाविय (सट)।

काणाव (बार) सन्द [कार + मी] कला । भागानव (बाह्र १२)।

आपादण न [आनायम] दूनरे हे नैनदाना 'न यमास्परल पदमा दीया बालावलेल बर्नाद्द (संदीप ७)।

आणावण न [काद्यापन ] चाता हुदूब (बर्)। आजाबिय रि [आहापिन] विसरी हुदूब

रिया यया ही बट परनाता हमा (गुपा १२१)। स्नामाविय वि [आनायित] वैत्वास हमा (गुपा १ १)।

काणि देवो आणा । इ. आणियडव (रक्स १)। संइ. आणिय (गट)।

र)। सहस् क्यालय (नाट)। आणिज दि [ब्यानीय] नाया द्वया (दे र र र)।

(१)। आणिक नि [के] देशों नम क्षेत्र (वे १ वर्ष)। आणिक नि [के] देशा नक (वे १ वर्ष)। आणिक नि [के] तिर्थन मेनुस (वे १ वर्ष)। आणी वर्ष [का + मी] नामा। कर्म आणीक (वि १४००)। क्षा 'आभीप एटीन, शोमन पर्यम्न स्पर्धीय (क्षा २१६)।

संक्र अग्राणीय (विसे ११६)। क्यक्र-आणिटाँत (तुमा १८६)। आणीय वि (आमीत) नामा कृषा (हे १

ार कला)। आधुक्रम [के] रद्वच ग्रॅंड्र (केर ६२) पर)।२ शकाद, महति (केर ६)।

आणुकार्गिक वि [आनुयोगिक] माल्या-वर्षा (शरि ११)। आणुरंपिय वि [आनुवस्पिक] स्थानु, ह्यानु (शर्म)।

(श्व)। आणुगासि वि [अनुग्यमिन] शेव श्वो (विते ७११)।

आलुनासिय वि [आनुनासिक] १ स्मुस्एत करनेवामा पीक्षेनीचे जानवासा (मन)। २ व. धवविज्ञान वा एक चेत (सावम)। आणुनुक्रा ) न [आमुनुष्य] १ सीविल आणुनुक्ता ) मनुक्या (तेवा १ ११)। २

स्तुर्वात (वर्षते ११६६)। लाषुपरिमव वि [आतुर्धमिक] सार वर्म-वाणो वो श्री मस्तुर, प्रविचेन्सम्ब (वाणा)। सालुपालु देवो आत्यापालु (वन्म २, ४)। सालुपुरुष व [आतुपुरुषे] बतुब्स गरिपाती (तिर ११)।

आगुपुरकी को [कातुपूर्वी] कम परिराटी (सर्यु)। जाम नामन [नामन्] नाम नर्मना एक नेव (तम ६७)।

आणुन्धमित्र रि [आगुरोमिक] क्युनीय क्युन्य मनोहर (रण ७ १६)। आणुरिचि को (अनुपूचि) धरुमरस्य (सं

६१) । आद्गा कृत [अनूप] नवनप्रदेश (पर्नेश ६२१)।

सामून पुंचि सम्ब होन (११ ९४)। इन्नामे एक [आ + नी] कामा ने पाना। आणेषु (महा)। इ. साणेयस्य (नुग १६६)। सुरू साणेकण (महा)। सामो कर होना बाना। साणेश (महर)।

बागे लह [बा] बातना। आपंद्र (मदर)ः लागेत्राद केवे लागा-ईसर (बार)। आत केवे आपं क स्वत्यत् (खार)। आतंक केवे आपंत्र - मत्वाम (खाररी)। श्वातंक केवे आदंत्र - मत्वाम (खाररी)। श्वातंक केवे आदर्ग (द्वार : २०६)। श्वातं केवे अत्य - सत्यमः 'मत्वविदं च्व द्वेरण कमार' (बुध र २ २, ६)। आतं केवे अस्त - मात्र (खार ११)

भार्यम ) केबो जार्थस (बार ४ प्रति जार्यसमा ) कं सूर्य १ ४)। भार्य (ग्री) केबो काल = ध्रास्त्र (इस्स ६)। जार्य केबो काल = ध्रास्त्र (सूर्य १ ६ ११)।

आचा वि स्थारपीय (स्वकीय (मजु २१)।

त ११)। श्राव्यत्र १ [वे] मानुन स्माप्त्र्व वर्ग श्राव्यत्र १ कृषा कृषा (वर प्र २२१) हे १ ४२२)। भावपाल वि [श्राव्यान] बहुङ करणा हुना

आदयानाम [आददान] बहुत करणाहुक (धुरेदे)। भावर देखो आयर ≔धा+ इः सन्दर्भ (हे

भाव (१६) आपर स्थान ११ मार्थ (१ ४ वर्ष)। आवृत्ति वेदो आयस (हुना वे २,१ ०)। आवृत्ति विश्वावात् वहुस करनेवादा

(विधे ११६०)।
भाषाण वेणी जावाण (ठा ४ १): 'पम्मसघरतेण बंबुप्पति तुमं' (तस्म ११,६ : ववा)।
आदाण व [जार्युवण] जवला हुम गर्य विवाहमा (जन टीन प्रति) (ववा)।
भाषाणिय म [जार्याणी जाम नक्स (गुण

< १)।
आहापीय केंग्रे आया वित्र (नवा)।
आहाप केंग्रे आया = या + दा।
आहि केंग्रे आह = याहि (क्या युव १३)।
आहि केंग्रे आह् = याहि (क्या युव १३)।
आहि केंग्रे आह् = याहि (क्या युव १३)।
आहि को आहि आहिस्सा] बद्दश करने की
क्या (याहे)।
आहि को आया (कर)।

भारिट्र देशो भारत्र (श्रीत १ ६)। भारित देनो भारत (रमा १६ )। भावित्तु वि [ आदावः ] प्रहण करनेवासा (র ⊌)। आविय सरु [मा + वा] प्रहण करमा। घाषियद (छवा) । प्रयो, बावियावैधि (सूध 2. 1) 1 আবিত ১ देखो ब्याइक (पि १६१)। साविद्या है कादी को [भादी] इस नाम की एक महानदी (**চা** খ খ)। आवीण वि [आदीन] १ मर्लव बीन, बहुव गरीव (सूर्घ १ ५)। २ न दूपित निजा। मोइ वि ["मोबिम्] इपित मिला को सेने-बामा आरी जमोदींब करेडि पार्व (सूम १ t ) i आदीणिय वि [आदीनिक] मध्यक्त शैन संबन्धी 'धारीस्त्रियं दुव्हरियं पुरस्ता' (सूध 2 X) 1 आद्र (शी) रंबो अद्र (वि ६ )। भावत्व देवी आपट्टा (परहर ४)। आदेस देवो जोएस=प्रादेश (कुमा वद २ ६)। आहेस पू [आइश] व्यवदेत, व्यवहार (सूध १ α ६)। देशो आएस = मध्या (सूम २१ १६)। आधरिस सक [आ + घर्पेय् ] परान्त करमा विरस्तारना । घावरिसद् (बावम) । आधा देखो आहा (भिंड) । शाधार वेको आहार = वापार (परह २,४)। आयोरण पू [आयारण] हम्दिपक महावत हाबीबाल (बर्गीन १३६) । आनव देशो आणय (घट्ट) । आनामिय वेको आणामिय (पण्ड १ ४)। आपण केवी आवण (मनि १८०)। आपण्य देशो शायण्य (यमि ६१)। आपस्ति औ [आपस्ति] प्राप्ति (संबोध ६६: पव १४१)। खापाइय वि श्रापादित**े १ मिसकी मा**रति की गर्दे हो वह। २ करगायिक जनित (विशे \$388) I आपायण न [आपाइन] संपादन (भावक वर पंचार ११)। आपीड पुं [आपीड] शिरोनुपरा (मा २८)।

आपीण देखों आपीय (वउड) । आपुच्छ सक [आ + प्रच्छ्\_] साहा देता सम्मति नेना । मातुष्यद्व (महा) । नक्त आपुरस्य (पि ११७)। इ. आपुरुष्ट्यपाय (खामा १ १)। शंक्र- आपुष्यित्ता आपु रिक्साणं आपध्कितण आपश्चित्रं. ध्यापुरिश्चाय (पि १८२ १८३) कथ ठा x () 1 अपुरुद्धाप न आप्ररुद्धनी माद्या सनुपति (छावा १ १)। आपुट्ट नि [आपुष्ट] निसकी मात्रा या सम्मति सी गरिको बढ़ (मूर १ ५१)। भापुण्य वि [आपूर्ण] पूर्व घरपूर (वे १ आपुर पुंजिपुरी पुरनेपाला 'मक्यानप पूरं सर्वि (कप्प)। कापूर देखो आउत्तर। कर्म, बापूरिजद (महा)। वह आपूरमाण, आपूरेमाण (मग राय)। आपेड आपे**ड**ं-देशो झापीड (पि १२२, महा)। धापेड आप्याप न [द] पिटु भाटा (पड्)। भाषतम् [जास्पर्श] गल्य स्पर्श (हे १ ४४)। भाफर पूँ वि च जूमा (दे १६३)। आफाल एक [कारफालय ] धारफालन करना बाबाद करना। संद्र- आफासिसा आफाब्रिकण (पि १६२) १६६) । व्याफासम् देवो ब्यप्साद्धम् (वा १४१)। भाफुण्य वि [वे] प्राक्रम्त (प्रजु १६२)। आफोबिश न [बास्पाटित] हाव पहाइना (मगहर १६)। आर्थम एक [ भा + दरम् ] सदबूत वीवता। नक आनेचेत (देर v) । सक आर्थ-মিজস (বি খ=६)। आर्चभ पू [भावन्भ] संबन्ध संयोग (गउड)। भाषद्वि [आबद्ध] वैवाहुमा (स ६५)। आवादा की [आवाघा] १ घरा वाबा (रणमारे ४)। २ मन्तर (सम १४)। ३ मानसिक पीड़ा (बृह) । आमें हर र्षु [आमहुर] १ प्रह-विरोप (हा २ ३) । २ न विमान-विरोध (सम ≖)।

पर्मकर न [ प्रभक्कर ] विमान-विशेष (सम जासक्ताण देवो अन्सकताण (छवा) । आसह वि [आसापित] १ कवित एक (स्पा १४१) । २ संमापित (सर २,२४०) । आभरण न [आभरण] मन्द्रम, मामूपए (P & 1) i भामवद दिशासवय दोने मोग्य संप्राम्य (यव सुपा ३ ७)। भाभा की [आभा] प्रमा कान्ति देव (कुमा मीप)। भागानि वि [आमानि] भोका भोनी भिष्मेगार्ग जम्ममस्यार्**ष मामानी महैक' (बसु**' गामा ११८)। आमार प्रशासार नेम, भार (मुपा २३६)। आ सास सक [आ + साप्] ऋदना संग्र थयः करता । यामासद (हे ४ ४४७) । भागास दू [आभाम] १ वो वास्त्रविक में बहुत होकर छसके समान कारता हो। २ बिपरीत 'करणामासेडिं' (कूमा)। माभासिय प्रशासायिकी १ इन नाम का एक म्सेन्ड देश । २ उसमें रहतेशाली म्सेन्छ चार्ति (पर्वह १ १) । ३ एक धन्त्र≨पि । ४ अपूर्वे रहतेशाचा, 'कहि श्रुं मेरी ! बामा सियमणुबार्गं बामासियदीवे नामं बीवे' (बीव ₹ ठा४२)। व्यामासिय देवो आभट्ट (निर)। लाभिओद्वय देखी सामिजीगिव (महा)। आभिमोग पुं [आभियोग्य] १ किंर स्पानीय देन-विशेष (ठा ४ ४) । २ नौकर, किंकर (राय): ३ किंकरता नौकरी (बस € २)। आधिओगा को [आभियोग्या] वामियोगिक मायमा (बस १६ २६६)। आभिजोगि वि [ आभियोगिन् ] किंकर स्मानीय देव (रस १)। आभिजोगिय वि[ज्ञाभियोगिक] १ मल बादि से बादीविका चलानैकला (परास २ )। २ लीकर स्वाचीन वेष-विरोप (गाना १ α)। ६ वधीकरण पूनरेका वस में क्फो का मन्त्रादि-तमी (५वा: महा)।

भामिओगिय वि [आभियोगिन] व्यक्षेत्रका व्यक्षि से संस्था (यात्र)।

व्यामिआंग वेषौ सामिआंग (क्यूत १)। सामिगाहिल वि[सामिप्रहिक] १ परिसह-संबनी (वेषा ४)। २ व. विस्माल विदेश (५९ ४)।

सामिनगहिय नि [सामिमहिक] १ प्रतिका से संबन्ध प्रमोता। २ प्रतिका का निर्वाह करनेताला (मान)। ३ न मिम्मान्य-किरोर (आ ६) न सामिणहिर वे [आमिनस्वित] मानस

माध (चंद)। आमिह् } वि [वे] प्रकृत "म्यमिट्टं पर आमित्रियं मण्ड" (पत्रम ४४२ ६१६२ वजा ४२)।

ध्यामिणिकोहिय धेको आभिणिकोहिय (वर्गसे २६)। ध्यामिणिकोहिय ग[आमिनिकोचिक] समित भीर मन से होनेशका प्रत्यक्रकानिकोस

(सम ११)। आसिप्पाइस वि[स्युसिमायिक] पश्चित्रक-वाना (ससु १४५)।

व्यामिसक वि [आमिपंत्रम] १ श्रास्ट्रेक के बोल्म (तिर १ १) । २ मुक्स, प्रवास, प्रश्निक केल्लं हरिवस्त्रणं परिवर्णमुं (स्रीत) ।

क्क शामार पूर्व [सामीर] एक यूद्र वाठि भामार पूर्व [सामीर] एक यूद्र वाठि भामीरिय | मगर, वोवाला (तूच श मासूर

६२)।
आगुज पि [आगुज क्यम (तिर १ १)।
जामविष पि केतां आगित् (द्या दू पर)।
आगोत्र प्र [आगोतिज केता हुया (प्या)।
आगोत्र प्र [आगोतिज केता हुया (प्या)।
आगोत्र प्र [जागोता] १ विशोकन केता
(वर १४०)। १ तरीय वर्षात (दुर १, २११)।
१ केता (देव १)। ५ करते करता (वर्षा)।
१ विशास (द्यार १)। ७ तता वाका
(स्त १६, ६) ठा ४)। केतां आगोय =
आगोर।

आभोगण न [आमोगन] उत्तर खो (लुँके)। आभा ग नि [ आमोगिन् ] परिपूर्ण, 'बह् वनको निजायो वामो बहविह्वायोपी' (सुरा २७६)। गी की [\*नी] सालसिक फिरहेंब | उरला कपनेदासी विद्या-दियेप (बृह्) (

आभाय सङ [आ + मगन् ] १ खेला। १ बाना। १ बात करा। धामेएर (उत्तर एत्त)। गड- धामोएमाण (क्य)। सङ्ग आमोन्सा आमोपरुण आमोइम (स्व

रः महाः पेचन)। आसोय प्रं[आसोग] १ वर्षं की फरणा (व ११)। २ देखो आसोग (दाद सहा बुर १ ६२)।

आम व [शाम] सनुमति प्रनारक प्रस्य— हाँ (गा ४१%) सुर २ २४४३ स ४४६)। आम व [ भवन् ] सन् (ब्रह्न द१)। आम व [ श्राम] १ सेव वीहा (हे १ ४४)।

२ वि सास्त्र रुवा (सा २ ) । इ.समुद्ध, स्पवित्र (सावा) : बर पुं [क्यर] सत्रीर्ध वे उत्तर पुकार (सा ११) । आमङ वि [ अस्मवित्र ] रोजी (कर १) ।

आमइ वि [ आमयिष् ] ऐती (वव १)। आर्म म [आम् ] १ स्वीदार-मुचक प्रकार-मूर्व (युव २ १६)। २ मिटिएम प्रकल (वर्षेर्स १४१)। आर्मेड न [वि] बनावटी प्रस्का का एक

हित्य सारुक (उरपूर हैप कर १४४ थे)। आमंडण न [क] जाएड पान (हे १ ६०)। आमंड एक [आ + मन्त्रम्] १ साहुल करता, स्वेशन करा। १ सोन्नकर करता। क्र आमंडिसाण (पाना)। मेड आमंडिया (क्या) सामंडिया (स्व १)

कामंत्रम न [आसम्बन्ध] माह्यात, संबोदन (वद)। वस्यम न [चवम] संबोदन-विमण्डि (विमे १४४०)। कार्मावर्षी को [आसम्बन्धी] १ वंदोवन नी माना माह्यात दी परवा (वस १)। २ प्राप्ती संवोदन-विकास (वस १)। २ प्राप्ती

व्यामीतिय नि [आमिन्दित] वैनोर्थित (चिना ११)। भासगं केवी ध्याम (जामा ११)।

कामपाय वृद्धिमा पात्र हिंद्याः मित्रास्त्र (विमारे १६०२ १)। मामञ्ज एष [मा + स्तृ] एक बार साक्ष बच्चाः साम्प्रदेश (वाषा)। यह काममञ्जेत (मित्र)। प्रमो सामग्रहार्वेद (मित्र)। नामद् पुं [आमर्थ] संबर्ध बाबात (हुमा)। नामय पुं [आमय] ऐन दर्श (त १६६ स्वन्त ६ )। करणी सौ ["करणी] विद्या

क्रियेप (सूच २, २)। भामय वि [मामत] संमत मनुमत (विके १९६)।

रवर)। जानसव दुं [आमराज] एक प्रक्रिक राजा (डी ७)। आमरिस दुं [आमय] रुप्से (जिसे ११ ९)।

आगस्त पूर्व [आगस्तक] पामता का वन (सम्मत्त ११६)। आगस्त्र क्षी [आगस्तक] पामता रा पेड़ (दे)।

सामस्वरूपा सौ [सामस्वरूपा] नवरी-विरोध (सामा २ १)। सामस्या पुं [सामरक] १ वार्स स्रोप सेर से

मारता। १ विभाव-मूत का एक प्राप्तवत (क्ष १)। आसक्ता) पुर [आसक्क] १ प्राप्तवा ना कासक्ता) पुर [आसक्क] १ प्राप्तवा ना कासक्ता) पुर (ठा ४)। २ प्राप्तवा ना कर

प्रत्येवामा यामस्यो निव करतमे वेदियो मन्त्रमा (वपुः कुमा)। आसक्ष्य न [वि] द्वपुर-पृष्ठ, द्वपुर रक्ते का

स्वत (रे १ ६७)। आमसिल वि [आमस्त्रत] १ बीम विकता। १ स्त्रसित (से १२, ४३)।

आसिष्ठ एक [भा+सुक्] भोजना। आसिष्ठः (मनि)।

भामिस न [क्यासिय] नैनेख (पैता ६,२६) इस ४२३: छी १३) । अथमिस न [अयामिय] १ सॉस (ए।सा १

आसित न [आसिय] र मीस (एउटा र ४)। र नि मनोहर, तुम्बर (ते ६ ६१)। वै मासिक ना नारण ध्यानिस्थं सम्बद्धनिकता निहरित्तामी निरामिधा (उत्त १४)। ४ स्वार, क्यारि मोल्य नस्तु (देवा ६)।

भार्त्तं यक [का+सुष्] १ क्षेत्रण। २ ज्याला। १ प्यूला। यक्तः शार्त्त्वेत (पाट १)।

आ मुक्क नि [का मुक्क] १ लाक (या १३८) यन्त्र)। २ क्याय हुमा (शक्त ६०)। ३ वरि विक (वैकी १११ टो)।

आमुटु---आर्यदम आसुद्रुप्ति [आसुष्ट] १ सूत्र । २ उत्तरा श्या हमा (मीम)। आमुखसङ [आ+मुच्] छोइना व्यापना। द्यानुबद्ध (यउद्ध) । आधुम एक [ भा + स्श्र्] चौहा था एक बार लर्थं गरना । बर आमुस्ति, आमुस मान (ठा १) भाषा मग म ३)। भामदमा ग्री [आग्नदना] त्रिगर्यस्य करना रुपटा करना (पएह १ ३)। आमल हूं (दें) सह, बदा (दे १ ६२)। । वृं [आपाद] दूनों की माता. पा आमेमग - पुरुद पर पायर नी जाती है आमसम् । क्रियेनूबरा (हे १ १ १, ति १२२:मग १ ३३)। आसह देलो आमेल = धारीड़ (उरा २ ६)। आमहित्र वि [आपीडित] बार्ववित रिथे-भूपण मे शिभूषित (ने १ २१)। आमाभ पर आ + मुद्दी गुरा होना । संह आमागृदि (पर) (नवि) । भामा वर्ष (देशामार) हर्ग गुरी (देश ₹¥) I जामाज र् [आमोर्] गुगम यन्धी गन्य (न 1 (17 )

आमाञ 🕯 [आमार] बाप विदेश (सम ४६)। आसाअक्ष रि [आसाद्य] १ मुक्य बन्ध्य क्रोतेराचाः २ धानल-जनर (गट ४)। आमामञ्ज वि [आमादद] नुषण्य देनेराना (9 t Y ) 1 भामाङ्ग रि [भामोदिन] हर, इपिट (मरि)। आमास्त्र पु [आमास्त] बील बुनि पूर्ण दाराध (नूप १ १ ४ १६) । आमास्या भी [जामाच] र एकारा । २ वरियान (तुम रे १ वि ४६) ।

आयाद र् [वे] दर नर नदूर(रे१ ६२)। आमादग न [आमाटक] १ बाट-विटेच (यात्र) । २ पूनों ने बानों वा एव प्रशार वा बन्पन (इस्तिन १) । आमाद्यम न [भामाटन] योग में रहा (नार 1 (1 1 सामेरिक रि [आमटिन] मीन (बार £ ) 1

पाइअसदमहण्यवो आमीद ) रेनो आमोअ (स्पन १२, गुर १ आसीय प्रश्नान)। भामाय पूँ [आमोक] क्रार्यपुत्र क्रार काबर, दूदे का पूर्व (घाषा२७३)। आमोरअ रि दि रिशेक्त बन्ध जानकार भामाम वं आमर्श वी सर्ग पूना संद-रिपणुमामोमी' (पर्टर २ १ दी निषे ७८१)। आमास र्ॄ [आमाप] भोर (इत्त ६ २०)। आमामग रि [आमापर] १ बीए, बोरी करनगमा (छार २)। २ चोर्धेकी एक माति (बर २६)। आमामाद् र् [आमर्शीपधि] सम्पि-विरोप बिमके प्रभार में रास्त मात्र से ही सब रोम नट होते हैं (पएड २ १३ मीत)। आय र्प भागी १ साम, प्राप्ति, पापदा (भग् )। २ बनश्रति-नियम (पग्टा १) । ३ बार्ग हेन् (बिमे १२२६ २६७१)। ४ घष्यवर पठन (विमे ६६८)। ३ गमन (रिये २७१२) । आप र् [आय] घप्यम राष्ट्रांश-निरोप (प्रापृ ₹**१ )** । आय वि आजि । धन-पंत्राणी । २ वस्रे के बार से सन्दर्भ (बद्धारि) (दाबा) । आय वि [आगत] बाबा ह्या (राप्त)। आय रि शाची पृशेत 'वापनरिती करेद रामग्री (संबा १६)। भाष 🛊 [भागस् ] १ पछ । २ घरराप पुराद्व (या २३) । आय पुंधी [आग्मम्] १ घारमा भीव (नम १)। २ तित्र गर्य 'घटालप्टरमयाई स्वला' न्द्राय मानाए एवंतर्मन धरदार्भितं (भा ३ २) । १ रावेद, के (ग्रामा १ 🗷) । ४ ज्ञान यादि माला के नगु (माना) । जुना वि ["गुप्त] नंपन विजेडिया भागाना विदे रिया (गूप) । जारंग वि ["वर्गमन] हुपुषु प्यानी (नूप) । द्विति शिथित । नुपूर् 'र' में बिल्डु यांबड्डी' (तूब) । तन वि िनम्बी स्थापीत, सरस्य (स्टब) । नाम ब [ तरप] परन परार्थ जन्मीर सामन्तप (पाना) । पामान रि विमान नि है हैन हाय का करियाण कारा (क्य) । व्यक्तय स

[दियाद] बारहवें मैन सङ्गधन्य का एक मान, सातार्थं पूप (सम २६)। भाव पू भाषी १ माम-स्रम्य । २ निज्ञ मनिज्ञाय (भग) । १ विषयामन्ति 'तिराहमधी सम्बद्ध धायनार्थं (नूध)। य पूंजि पुत्र सहरा (मिषि)। रक्ताति [रैस] महत्सार (ए।या १ =)। य वि [ वन् ] शानादि मारमपुर्णी ने संपन्न (धाना)। हम्म वि िंघी मान्साको भयोगित में ने जानेतानाः। २ देनो आहा क्रम्म (सिंह) । आय देवो आवन क्रियावर्यालयो बा पुरिसी सो हो" बरिनगयपाऊ" (भूगा ४३३) । आयइ ध्यै [आर्थान] मस्यि शत (नुर ४ **232**) i आयद्रवाग न [आयदिजनक] ताथवी विदेष (पर २७१)। आयहत्ता रेवी आह = या + रा । आर्थे हर्षु [आरङ्क] १ दुन्छ । २ वीहा (धाना)। रे दु साध्य रोग धारु-पानी रोग (पौर) । आर्थिक नि [आनङ्किम] रोगी रोगपुन्त (ठा १ १ टी--पत्र १४२)। मा गुस्र न [आत्माद्गुतः] परिपाल ना एक मेद 'जार्ग रूपा मार्गुमा वैसि में होर मार्गाह है हु। र्भ मिल्यमिक्तवैन्तरमिल्यमान् पूल् इसे सू । (बिन १० क्षे)। भार्येष गर [धा+नप्रय] सीका पिरतना । पार्यबद्ध धार्यवामि (उस्त) । आर्वयमिया । भिष्ठानिया कुम्बरार वा पाव-विशेष जिला कर पाप करान क नमय मिट्रीशाला पानी रनता है (सन १३)। आर्थपर्या थी [आ । द्वर्गः] स्तर रेता (स्त ्र आर्थन रि [जाशाम्त्र] तिगरे वाष्ट्रत रिवा रो बर (राजा १ १ म १ ) ।

आर्थन रेगो आया = बा + बा ।

यस्त्रा २ मध्ये (टा ४ २) ।

बर्ग्नराता (हा ४ २) ।

मार्थाम वि[आग्मनम] बाल्याका विश्र

आर्थाम रि [आस्मानम्] १ दन

भावंदम रि [आभदम] १ कथा क राज

रखनेतामा यन भीर इन्तियों का निवह करने-माला। २ सध मादिको संक्त सहो को सिकानेपाला (ठा ४२)। भागेप प्रे आक्रम्यो १ कोपना हिलता। २ भैंपानेशामा (पराम ६६, १०)। आर्थिय वि [आफ्रस्पित] केंपावा हुमा (स 424) 1 क्यार्थय सद विष्] कौपनः, दिसनाः यार्थवर (हे ४ १४७)। ) दि [आताम] **बो**ड़ा सल आर्थिकर 🕽 (बोर्जेनुर १ रे१ नुसा ६ 344) I साथवित म [आचाम्अ] त्यो-वितेष पावित (शाया १)। बद्दसाज न विभेगानी तमस्यौनिरोव (प्रेत १२: महा)। भार्यविक्रिय नि [आपान्सिक] प्राप्तितनाः राइटी(ठा¥ परहर १)। बार्यमर ) वि बाल्मस्मरि सावी प्रकेत-भागंभरि ∫ पेट्ट (छ ४ ३) । आर्थद सक [आ + कम्प्] इतिका दिलना (प्रामा)। व्यापंस १५[बादर्श] १ वर्गेल (परह १ ४४ मार्मसग<sup>5</sup> सूच १४) । २ वैष श्रादि के गने का मूपश-विकेश (प्रशा)। सह प्रशिक्षी १ एक धन्तर्शीप । २ छसके निकासी मनुष्य (ठा ¥ ₹) I आयक्त देवी आइक्त । प्रायक्ताहि (भग)। क्षयम वि [आयक] केवी आय=धात्र (भाषा) । आयब्धः धक चिप्]क्षका हिल्ला। भागम्बर (१४४ १४१ पर्)। सर्व आसण्यंत (हुमा) । आयर् एक [आ + वर्षम् ] १ फिल्ला **पू**माना । २ स्वालना । वक्क आधाईत (ते १, ४६ ५ (६) । इनक आमहित्यमाण (सामा १ ६)। भायरुजन [झलर्चेत] फिराना (बुवा १६)। आवर्टक [का+कुप्] बॉक्ना। बावस्वर (महा)। क्वड आमविहानंद (से १, २४)। श्रेष्ट जाबव्हिटकाज (महा)। भाषत्त्रम न [भाषपंथा] यत्वर्यस बांचार (दुवा १२, वरा वा ११ )।

धायबिह भी [धारुष्टि] कार थेवी (वहर **4** 4 32)1 भावहिद्ध पूँ दि] विस्तार (वे १ ६४)। भावव्हित्व दि [बाइस्र] योचा हुमा (कलः क्ष्यु)। भाषण्य सक [आ + कर्णयु ] पुनना धवल करता । धावल्लेह (बा १६१)। यह **साम**कांत (से १ ६१: ता ४६४ ६४३) । संकृ आयण्गितव (उस) । कायण्यम न [आधर्मेन] धरण (महा) । धायणितय वि [आर्क्सतेत] मुना हुमा (क्या) । आयर्वत कह [आइइम्] बहुए करता हुमा (मूप २१)। बायतः रि [आयत्त] प्रवीतः स्ववतः (गा 1 (3#F कायस देवो आयज्य । यह आवर्सन (पुर १ २४७)। कायमञ्जेषो भायण्यम् (पूर १ २१)। व्यापम सङ्ख्या + भम् ] धापनन करना कुक्का करता। देक आयमिकाय (क्रम्)। नक आयममाज (ठा १)। भायमत्र न [अथवसन] नुद्धिशीप (या १२ गा १३ । तिहु ३३ स २ ६३ २१२)। आयमिल वैचो आगमिश्र (हू १ १७०)। भागमियी भी जियमिनी विचा-विशेष (एप २ २)। भागम वि शायत र सम्बा विस्ट्रत (उदा पज्य २११)। २ पूर्मोक्ष (सूच १२)। आसमधक जिला+दद्वी प्रकार करना। धावए, धामपंति (क्स १, २ ३१) उत्त ३ ⊌)। **बहु, माववमार**ह (पिंड १ ७) । भायमण र [आयतन] १ प्रज्योकरण (मूध १ ६,१६) । २ जनवाद कारश (सूम १ **१२, १**)। धाययज्ञ म [बायदन] १ वट, पृष् (बब्द) : २ माध्यः, स्वान (माचा) । ३ देव-गविदर (भावत)। ४ वालिक बनो दा एकत्र द्वोले ৰাংশক 'नत्व तक्षानिका बाने खेतरंता बहुस्तूया । वरितामारसंपर्का मावको व विवाद ह (क्म्म) । १ **४मी-४**न्द का कायत (ग्रादा) ।

धार्यप – सावद ६ निर्हेप निषय (नुध १ ६)। ७ निर्हेन स्कान (सार्च १ ६)। शायर सक [आ + चर्] यावरता करता। यापरः (गहा उप)। पह. आयरंत खायरमान (मन)। इ. शायरियस्त्र (स.१)। खायर दु [बाकर] १ कानि यान । २ समुद्र (पानः पण्)। क्षायर रेको आयार = घानार (रुफ ११६)। भाषर प्रशिवदरी १ सत्हाद, समान (मजद) । २ परिश्रद्द सर्घतीय (पएइ १ ६) । ६ क्यान संभात (क्या)। आवर्रग दूं [आयरक्ष] इस नाम ना एक मतेमा राजा (परम २७ ६)। आयरण म [आवरण] प्रवृत्ति धनुतन (परि) आयरण न [भादरण] माहर (अप १९,४)। आयर मा भी आपर्या । परंपर का रिवान (बेह्ब २१)। व्यायरणा श्री [सावरणा] धावरण प्रकुरन (बहु १४३) सर १४४) । अयरिय वि [भाषरित] १ धनुश्चित विक्रित इट (प्रवा) । २ ग शास-समात पाल-प्रवण 'प्रसरेल समाहर्ल' वं शत्कद्द नेलाइ **स्वा**पन्ने । न निरारितमञ्जेष्ठि व बहुमसुमयमेनमायरित (इस द१३) । भावरिय 🛊 [भाषार्य] १ क्छ का सम्ब मुख्यिम (मानम) । २ ठपमेरक दुर, रिजिक (बगरेरे)। ३ धर्चपङ्गलेरला (अर्ग □ ) | भागरिस केवी आयंस (११११)। कायस्थ प्रश्न [स्टब् ] १ व्याप्त होना । १ नरकता केसकताठ बॉवि झोएड्डाइ, परि मोक्क दिनीव आयरुस्हर् (मनि)। आवस्त्रमा जो [वे] वेचैनी 'ममलप्रसीतृ' रिनेंगी सक्ता मामकार्य पत्ता (पत्रम स १ १) विको पर्ययक्तारोहि मर्क्त धान्समी

पदी (पुर १६ ११) 👣 छल पिछन

यन्य नमकाव्याचे पत्तको । व्योग प्रस्करि

आयक्किय वि [वे] ग्राह्मन्त भ्याप्त (सर्

भायव पूँ [बातपवत् ] महोरात का २४वाँ

णियेवेमि (कप्पू)। देवो साक्षक्तः।

र ६१ की मुचि)।

मुक्त (पुचर १६)।

धायब--आयास आयम् वि [आवप] १ उचीवः प्रकारा (या | ४१)। श्वाप वान (बत्त)। १ म मुद्र्य-ैं-विशेष (सम ११)। णाम, नाम न िनासम् । नामकभैका एक मद (सम ६७)। शायवत्त न [आसपत्र] सन माता (ए।या १ १) । भायवत्त पू [भायायत्ते] मास्त्र दिइस्तान (इक)। कायवादी [आतपा] १ मूर्यं नी एक प्रय महिपी--पटरानी । १ इस नाम वा 'साशा वर्गकर्मा सूत्र का एक सध्यमन (शासा २ १)। भायम विभायम् | सोइना सोहनिर्वित (मटड लिचू १)। आयसी को [आयसी] सोहे का कीए (पर्ह | t (t) 1 काया देखी आय = वाप्मन्। स्रायां सक [आ + या] प्राना भाषमन करता। बार्याः (कुरा १७)। बायाः(ति । भावा भु (रूप) । रह आर्यतः । आया मर [मा + वा] प्रहण करना स्वीकार रफा। आयाच्च (बत्त ६)। इ. आया पिज्ञ (टा६)। संह स्रायाय, सादाय आयाय (नम क्य महा)। आयाइ भी [आजाति] १ उत्पत्ति बन्म (हा १)।२ वाठि प्रकार। १ सावार, सावरण (धाषा)। ट्राण न["स्यात] १ धनार, वन्त् । २ भाषासङ्घल्लामुद्र क् एक सम्मयन कानाम (ठा १)। ब्यायाद् की [भाषाति] १ काल्मन । २ सन्पत्ति वर्भसे बाहर निरमता (ठा २ ३)। ३ धायति सरिष्य काल (क्ता) । शायाग रेगो आया = मा + सा। आयाण र्नन [भादान] १ वहरा स्थानार (माचा)।२ इन्द्रिय (भग ४, ४)। ३ जिनका बहुत हिया बाय बहु बाघ बस्तु (ठा ४ नूब १,७)। ४ बारण हेर्नु छति मे दर मधाना वैद्धि नीर पार्य (मूध १ १): दिवा दुरुरायार्गं बट्टानार्गं ममान्हति (पर्वप ६४ ४४)। ६ घाडि प्रयम (धरा)। आपाय न [भादात] १ संयम चरित्र (नूप १ १२, २२) । १ ति मारेव, उतादेव (नूब

१ १४ १७ तेद्र २)। पयन पिंदी प्रन्यकाप्रयम सन्द (मणु १४)। आयापान शियानी १ माम्मन । २ मान का एक भागरण-विशेष (धडा)। भायाम सक [ आ + यमय्] सम्बा करना । क्षकः आञामिञ्चत (से १ क्) । संक् भाषामत्ता भाषामेत्वार्ग(मप पि५८३)। आयाम नक आ + यम् ] शीव करता सूद्धि करना । मायागद्द (पत्र १ ६ टी) । आयाम मक दि। देना दान करता । द्वाया मेर (मप ११)। संद्र-आवामेशा (मग ११)। आवाम पू [आयाम] नमाई, रेप्पे (सम २) गरुइ)। आयान पृदि विम जोर (वे १ ६४)। आयाम न आयाम्खे ह्या-त्रिशेय मार्वविसः 'माहिनियुर्वे उ तमे सम्मास परिमियं तु मायामं (मानानि २७२ ३७३)। मादाम ) १ [आचाम] परमारण चारस आयामग रे पार्रि का पानी (मीक १५६) उत्त आयामणयां की [आयामनता] सम्बाह आयामि वि [आयामिन्] नम्मा (दरह)। भाषामुद्दी को [आयामुला] इस नाम नी एक नगर्ध (म ४३१)। आयाय देवा आया - मा 🕂 हा । । भाषाय वि [आयान ] भाषा हुमा (पदम १४) १६ ८१६६ दुम्मा १६)। आयार सक [आ + पारयू] दुनाना चाहान बरना । माधारदि (शी) (माट) । चंद्र आजा रिज आयारऊ म (नाट) स ६००)। आयार दू [आश्चर] १ धार्रात १७ (लावा १ १)। १ धन्तित स्लाख (राम) । भायार दू [भारार] 'म' घर्षर (दुत्र १२)। आयार १ [आबार] १ यावरण क्यूजन (ठा २,३ थावा) । २ थान-वतन रोन-मात (परम १६ ६)। १ शास्त्र केन सहस्रकों से पहला धन्य बावारशस्त्रपुत्ते' (ठा ६ )। ४ निरूष्ण रिष्य (मण १ १)। करप्रयाणी भौ [ासपत्री] क्या था एक मेर (रा.४)। भंडरा भंतय न िभाण्डकी शताहिका कार रहा—मायन (गुला १ १ १६) ।

आयारिमय न [आचारिमक] विवाह के समय दिया जाता एक प्रकार का दान (स 1 (00 आयारिय वि [आकारित] १ माहत बुनाया हुमा (पक्ष्म ६१ २१)। २ म माञ्चान-वयन ब्राहोप-अवन (से १३ ८ व्यक्ति २ ५)। आयादसर [आ + तापय्] मूय के तात में राधेर को बोड़ा काला। २ शीत बाका सावि को सहन करना । वह आयार्थन पटन १ ६१) आमाविन (नल) आयार्वेन (पडम २६ २१) आयायेमान (महा मग)। हेर आयापचए (१म) । धेर आय'विय (घाषा) । आयाय पु [आताप] बनुरनुमार बाडीय देव विरोध (मग १३ ६)। आवाय पू [आराप] प्राप्तर-मापरमें (पंच १ 1 (47) आयावन वि [क्षातापक] शीत पादि को सहन करनेवासा (मूध २ २) । आयावय न [आनापत] एक कर वा बोड़ा बादम बादि को सहत करना (लाबा १ १६)। मूमि हो ["भूमि] शोरादि बहन करने का स्थान (भव ६ ३)। आयापणया रूपी [आवापना] कार रही क्षायापणा ) (ठा ३ १)। आयात्रय नि [मानापक] सीत पानि नी सहन गरनगासा (पल्ह २ १)। आयामस ) पुँचि तनेर ना तहना भागामस्त्र । नानातर (वे १ ७ पाम)। आयापि नि [ मानापिन् ] दनौ मानापव (ठा ४)। आपास नर [ जा + यासयू ] तरपन्द देता निश्न करना । मामामंति (नि ४६ ) । सं आधामिश (मा ४१)। आयाम र् [आयाम] १ तस्त्रीय, परिवन सेर (यवर) । २ परिष्ठ, सक्तवीय (पा<sup>™</sup> १ श)। छ.व मे [ एट.व ] तिति-तिदेव (4 C.b) आवाम रेतो आपेम ( गर ) । आयाम रेगा आगाम (१३४ ६६ 🕜 🐒 १ cx)। लायन [स्तरह]सर विधेर (वर्षि) ।

श्रामासङ्क्षित्र वि [बायासयित्] क्वनीक मारमा । २ रोता । वह आरबंद (व्य १२८ आरंभइता आरंभिम (नः?)। देनेवासा (ग्रवि १६)। द्ये)। संकृष्ठारिकेज (मक्)। आरंग र शारम्भी १ गुरुपत प्रारम थायामवस्र न [बाह्यरावस] नवतानाः आरक्रिम न [वे] १ विज्ञाय व्यवन । दि. (देर ६)।२ वीथ-द्विसा वद (भाष)। बर के उसर की कुती खड़ (कूप्र ४५२)। ३ वीक्प्राली (पस्**ह १ १**) । ४ पा<del>प-क</del>र्म वित्रपुक्त (दे१ ७३)। ब्यायास्तरस्य म [दे] प्रासादका फ्राट भाग (दे (मामा)। य वि [ैंद्र] पाप-कार्यं से फरना आरण र् [आरण] १ केवनोक-विरोप (प्रदु: १ ७२) । (माना)। विजय पु (धिनय) मार्य ना सम ३१, इन्ह)। २ उस देवसोक का विकासी भायासख्य भ [वे] पत्रिवृह नीव (वे १ समाव । (वेज ६ दि | (पनसिन् ] सारम देवा 'तं चेव बाएत्चवुय बोहीनाऐश पार्वति' धे विख्त (भाषा)। (श्रंप २२१ विसे ६६६)। भावासिञ्ज वि [आवासित] परिणान्त विश आरण पुन [आरण] एक देननिमान (स्पेन्द्र आरंमग}्रदृ[धारम्भक] १ अ्तर **व**र्ज (सार्द)। भारमय∫ (हुँचे २,६) । र दि शूक करले-₹**₹**₹) | आयात्रस्य दि [आस्मञ्ज] १ बाटपविनासङ । कारण न [द] १ सदर, होठ । २ फनर (रै वाला (विसे ६२० कर दू३)। ३ क्रिएक २ न बाक्तकर्में दोष (पिंड ६१)। पाप-कर्म करनेवाना (बाबा) । ₹ ७६)। आ यादिय न [आद्विय] दक्षिश पर्लंदे भारपात ५ [आरमारु] भागी शापूरामा आरमि वि [आरम्भिन्] १ गुरू करनेवाला भ्रमल करना (अना)। प्रशाहित्य वि (₹ **१७**) ı ( करह ) । २ पल-कार्य करतेशाला (स्थ प्रदक्तिण ] दक्षिण पर्न्य से घमण **क**र श्चारणा**छ** न [दे] श्रमत पद्म (दे १ ६७)। 444) ( दक्षिए पार्थमें स्वित होनेवाना (विपा १ आरण्य वि [आरण्य] बंक्ती बंक्त-निश्मी बारमिञ दु [दे] मलानार, मानी (दे १ १)। प्याहिणा की "प्रवृद्धिणा" दक्षिण (t = xe)1 पार्थं से परिकामसः प्रकविका (ठा १)। खारंभिश्र वि [श्रारव्य] पार**व्य शुरू** दिवा धारण्यम् ) वि (धारण्यक् ) १ वंबती, वंगन भायु देवो भाड = पातुष् । येत वि विन्तु धारण्यय निर्मासी बंगल में सरब (का इया (मनि)। विरागुष्क दीवै सागुवाना (पराह १ ४) । २२१३ सा )। २ न शास-निरोध कानियक्-भारंभिभ वेदो खारंभ = भा + रम् । आरर्पुझारी १ छह-मोर यह चल्म (सूघ विशेव (पठम ११ १)। आरंभिया नौ [भारन्मिकी] र दिया हे १२ रेवा १६२वा १ ६)। २ सनुब्ध सम्भन्य रवानेशासी किया। २ व्रिसक किया आरण्जिय वि [आरण्यिक] **धंन**त में बसने-बोर (तूप १६२) । ३ तुकीती तोहे है होनेदाला कर्म-वन्द(छ २१ भव १७)। वाना (तापस भावि) (सुम २ २)। की बीत (दूप ४३४)। ४ त क्हस्कात आरक्स न [आरह्य] कोतनल का प्रोक्स भारत विभारती १ वोहारक (द्यापा)। (दूस १२,१ म)। कोवनानी मारजनवां (तुब १ १)। २ भएन्त धनुरकः (अदह २ ४) । आर पुँजारी १ येक्स-प्रदू (परम १७ श्रारक्तव विशासक्तुी १ स्त्रम् करनेवाला भारतिय व [भारात्रिक] भारती (सुर १ भूर १: २२४)।२ मौदानरकका, (दे ११) । २ वृं कोतवान नगरका १६ कुमा) । एक नरनावात (ठा ६) । ३ वि धर्यात्तरन रसक (पाम) । भारद्व वि [आरथ्य] प्राप्त श्रुक किया पूर्व रा (नुष १६) । भारकसम् वि[भारक्षक] १ छश्च करने-हुपा (कास) । आरभ नि क्रिस्के क्ली करनेवाला (पा वाला नाता (कृप्यः सूपा १११) : १ तू भारद्वि वि] १ वहा ह्या। २ छन्छ the tr) : सर्विमों का एक वेरा। ६ वि अस्त करा में अलुक। १ वर में भावा (मा (दे १ ७१)। भारभो ष [भारतस्] १पूर्वं पाने ভবর (ঠা ६)। आस्मास देवो आरणाख = बारमान (पाप) ! पर्शा (नुप t म ६४६)। २ बमीप में আংকিল দি [আংকিল্] ংলঃ গলে (আ भारताक्ष प्र[दे] कमत प्रमा(पर्)। पात में (बा १११)। १ तुक कर के, माध्म ३१ मीम २६)। भारमिव देवी भारक्षियम (तुम २, २, कर के (विने पर प्र)। भारिक्यमः) वि [भार्यक्षक] १ स्वर ₹१) । भारिक्स वर्ज बाता । २ वूं बीतवान (निवृ भारओं प [ भारतस ] तीचे हे (लंदि २४६ भारत देवो आरव । १ १६ सुरा ६३६। महा € १९७ १६१)। 4) 1 भारतम गाँचे वेदो । आरदर वि [द] १ वनेतत्रतः । १ सन्द सारम्बर कि सा + एथ | भारत्वत र एता। व्यारम वेदो आरंभ ≃ वा + रन्। बारमद म्यात (दे१ ७)। धारमञ्जद (बार्ट ६ ) । (हें ४ १४१ कार १ )। वह आहमत, भारमं चरु [आ. + स्म्] १ गुरु करना। बारम्म वि [आराध्य] पूग्य, बावनीय (प्रज्यु भारमगात्र (झ ७) ≀ संह आरदम (विने र प्रमाकरमा। मार्थमः (हे ४ १५४)। \*t): 1(220

आराहि की [आराहि] चोत्कार, विहाद? आरभड न [आरभट] १ नूरम का एक मेद (ठा४ ४)।२ इस नाम का एक मुद्रुत 'सुरुवेद य द्यारमधी सोमिली वंबधंदुको हाइ (परिस) । आरमङ न [आरमट] एक तरह की माट्न विवि (राव १४)। मसोस न ["मसोस] मास्वविधि-विरोग (राय १४) । आरमहा भी [आरमटा] प्रवितेषना-विरोप (धोष १६२ मा)। धारभिय न [आरमित] नाट्यविधि-विरेग (राम)। कारय वि [आरत] १ छन्छ । २ घपन्त (सूच १ १६)। भारय वि [आऽरत] उपका सर्वेवा निवृत्त (मृषर्भर ११११ १९)। आरव वं आरम् राज्य, धानाम ध्वति (ਚਹਾ)। आरम् र् [आरम] इस नाम ना एक प्रसिद्ध म्बेन्द्र-देश (परह १ १)। आरव ) वि आरवी परव देश में उराध आर्पा पर्व केत ना निवामी । स्मी भी (सामा ११)। आरविंद् वि [आरविन्द् ] कमत-सम्बन्धी (मत्तक)। आरम सक [आ + रस्] विक्राना पून मारता। वहः भारसंद (दत्त ११)। इङ आर्रसर्ड (काप) । आरसिय न [आरसित] १ विक्रमुट यून । २ विद्यामा ह्या (विपार २)। आरस्पिय पू [भावकी] वर्षेण (श्वाननी) । ब्रास्ट देवो आरम । ब्रास्ट्ड (पर्)। संह भारहिअ (प**मि १**)। ) वि [आईत] सईन् का जिल भारा विय । देव सम्बन्धी 'पार्याविद्धि' (दस ३४ ४∵पद२—म¤गर्७)। आरा स्मे [आरा] सोक्षेत्री सनाई, पेते से बासी बादी सोड की बीची (पराह १ १ स ६८)। आराब आरान्] १ वर्गक पहते (रे १ ६३) । २ पूर्वेच्याग (विशे १७४) । आराग्रस्थ कि दि दे दे पूरी व स्थीप्रवाद 

(सवार, १६)। आराबी की हिं] देवी आरंबिश (६१ पर)। आराम पू [आराम] बगीबा उपवन (भीप-ग्रामा १ १) । आराम पून [आराम] बगीचा स्थवन 'घारा माणी (भावा२१२)। आरामिश्र पू [आरामिक] मानी (हुमा) । आराम् पूं [आराय] राज्य मानाम (स ९७७) यउड) । आ सह सह आ + समय ] १ सेवा<sup>†</sup> करना, मक्ति करना। २ ठीक-ठीक पासन श्रुकता। ब्रायहरू, बायहरू (महा भग)। बङ्ग आराईत (प्रस्तु ७ )। संकृ आरा-दिया आयदेवा, आयदिकण (कप्प मग महा)। हेइ आराहि इं(महा)। आराह् वि [आराज्य] पारावन-वोग्य (प्रारा 1 (55 आराह्य वि [आराधक] १ वारावन करने-वल्ता। १ मोधानासायक (सम. १,१)। आराइण न [आराधन] १ धेवना (बारा ११)। २ धनरान (एज)। व्यासद्याभी [आराधना] १ सेवा मन्द्रिः। २ परिपादन (सामा १ १२) पदा ७)। ६ मोला-मार्गके धनुकृत वर्त्तन (पश्चि)। ४ विस्तका सारावन किया जाय वह (धारा आराष्ट्रमा भी [आरायना] मानरवक माम पिक मारि पट्-कर्म (मणु ६१)। बायहणी की [बायधनी] मापा ना एक प्रकार (दस ७)। भाराहिय वि [भाराधि**ठ] १ ग्रेविट** परि पानित (तम 🗢 )। १ धनुक्य मोग्म (स **६२३**)। आरिट्टवि [दे] यात एत प्रकार हुआ ( पइ. ) आरिय न आमारा धारमन (चय १ १)। आरिय देखी अञ्चल्यामः। (भद पह मुता १२०० पत्रम १४ ३ ३ मृत व १३)। आरिय वि आरियों सेवित 'पारियो धाव-रिमो सेवितो वा एयद्वति' (धावू)।

आरिय वि [आसरित] पाइत ब्राम हमा 'मारिमो भागारिमा ना एयद्रा' (मान)। आरिया थ्वां अञ्जा = भागौ (प्रारु) । आरिहा विदि ये समाह उत्पन्न पहले जो उत्पन्न हवा क्षी (दे १ ६३)। आरिम वि [आर्थ] श्रवि-सम्बन्धी (ब्रुमा) । अधिद्व देशों आरहित (दम १ १ दी)। आरुमा देखी आरोग्ग = बार्एंग्य 'बार्ग्य-बोहिनामं समाहिवरपुत्तमं दिन् (पडि) । आस्ट्र विभास्टी हुउ स्ट्र (प्राप ५३ 2×1) | भारण्य (भप) सक जित्र + फिल्प् ] मानिहन करना । भारत्एइ (प्राक्त ११८) । आरुभ वेको भारुद्ध=का+खा। का आरुममाग (रुस) । बारुवणा वेसी आरोवणा (विस २६२८)। ष्पारुम सक [ आ + रुप् ] जीव करता धेव करता। चेह आरुस्स (सुप १ १)। आरुसिय वि [आरुष्ट] कुढ दूपित (खाया १ २)। भारद्व सक**िया + रुद**्वी ठलर भइना ऊपर बैठना। आस्हुइ (यह महा)। धारहद (मप)। वह भारहंत, आस्हमाण (मे ११ मा १६)। एक आरुहिऊण, मारुद्भि (महा नाट)। हेड आरुहिर्ड (महा)। भारह वि [आरह] इसम ज्यूत वात 'यामारङ्क मिद्र माम वसामि नवर्षद्विषं रा भारतिम । लामरिमार्ख पहलो हरेनि पा होमि सा होमि' (गा ७ ६)। मारुहण न [भारोहण] ऊपर बैठना (खावा १२ सा६३ मुपा २ ६४ विपा१,७ भउड)। आरहण न [आराहण] बाधेपल कपर चढ़ाना (पन ११६, राव १ ६)। भारुद्विय वि आिरापिटी १ स्वपिट । ९ क्रपर बैठाया हुमा (से ८ १३)। आरुद्धिय ) वि [आरुद्ध] १ कपर वदा ह्या आह्या ∫(मद्यो)।२ इति विद्वितः 'दीए पुरवी पण्डणा भारतिया दुवक्या यव हानि'

(पडम = १११)।

आरम म [आरेण] १ नमीप पास (अप ३१६ टी) । २ सर्वाह, पर्से (विधे १०१७) । ३ प्रारम्भ कर (विने २२८४)। आराम सर [ दन् + सम् ] दिनमित होना ख्लाम पाना । **धारोब**द (१ ८२)। खाराभणा देवो आरावणा (ठा ४ १ विसे २१२७)। आग्रेडम (के) रेपो भारहल (पर्)। आरोग्य स्ट [व] लाना वाजन करना बार्यका । बारेन्स्र (६१ ६६) । आरोग्ग न [आरोग्य] हजामन हा (बेबीब भारामा न [आरोम्य] १ नारेवता राव का समान (टाप व पत)। १ वि रोव-र्थात नीरान (कप) । ३ वृं एक ब्राह्मणी- ( नामक नानान (उत्रः १४)। भारोग्परित्र वि दि] रक्त रैल हमा ( **47** ) i मार्शागांत्र वि [वि] बुक्त थाय ह्या (वे 1 (11 } भारोद्धाति [व] १ प्रदुष्ठ वदा हुमा। २ , न्द्रायतः घरभें द्वाया हृद्याः (धः )। म्बारोय व [भारोग्य] १ थम पुरुष । ६ <sup>]</sup> भीगोरता चारीयागेव प्रमुखा (बाधा २ 2X 1) ( आसाम नर पुरुष ोत्रव रस्ता त्रहा बन्ना धारोत्ता (हे ४ १ ५ पट) । आर्थाष्ट्रभ रि पिक्रिती एक्तिक स्वत्र रिया (या (दुना)। आराय रूप [धा + रोपय ] १ उपर वदाना ब्रवर दिल्ला २ स्मानन वरना। थारीरेट (हे ४ ४७)। मेर आरोबना भाराविशे धाराविष्ठण (फा

मग)।

ध्याः पण व [धारापण] क्रार पक्रमा (पुत

भग रहा भा (भारता) र उत्तर बहाता।

६ अप्टॅंब (संस् १) । ६ प्रास्ताता

३ ६)। नजरजन(६१ १७४)

कारेक्स वि दि । युक्तित संदुष्ति ।

२ भ्रान्त । ३ मुक्त (दे१ ७७) । ४ रोमा

क्रिवत, पुनवित (दे १ ७०: पाय) ।

ब्याक्या ना एक प्रनार । ४ प्रश्त प्यनुयोग (विशे २६२७ २६२८)। आरोबिय वि आरोपित र वहामा ह्रमा। २ श्रेरपापित (यहाः पाम) । आरोस पू [आरोप] १ म्लेक्ट देश-विशेष । रे कि बन केत का निवली (परह रे हा ≇स) । बारोसिय वि [झारोपित] शोपित बर विकासमा (से ६ दशः मीतः दे १ ७ )। भारोद्द सक [भा+स्द्र] क्रपर **पर**ना बैठना । घारेखंड (रूम) । भारोह सक [ भा + रोह्यू ] ज्यर चढ़ाना ! क्ष आरोहद्वयका (बन १) । आराह पू [आरोह] १ समार, हायी पीड़ा धारि पर पहनेशामा (से १६ ४४)। र कॅपाई (बृह्र) । ६ सम्बाई (बम. १. ६) । आधेइ दे कि स्तत, बन वृत्री (दे १ वारोह्य वि [आरोह्ड] १ स्वार होनेवासा । २ हस्तिपन' पीमकान हापीका रक्षक (भीप)। भागकि कि [बारोकिम] उपर केले (बर्डा)। आरोदिय विकित्त किरार देश हमा क्रार चड़ा हवा (सर्वि)। सास न दि ] बनवें न पूपा (सिरि वर )। भाग्न विशेष देशा प्रस्तुः १ विकोमप मुद्ग (देर ७३) : ३ घायत (रंग) : आम न [आस] नर्मनारीत रोपारीतम् (स ४६६) 'त दिल वस्त्रपि बूप्रधार्ग (वस्त २)। आम रेगो पास (ग्र.११) हे २६ १ X 4 X4) 1 ज्ञान देगो जात (१४ ४६ ४६)। आज देती नामः 'भगरित्तमे रामेनि हरियान वींच्यार (ने ६ १६)। भागवान विज्ञासनित विज्ञानक स्वाधित वीष्य स्वान भ रता हुया (हण) । ज्ञासद्वेत्र वि [भारतीयक्ष] शृथि भाषवराता भारतय रि [भारतित] रत्ना हुमा (मारा 2 (x s) आस्यारिक रि. [आस्ट्रारिक] र धनेतर हाम्प्रहालाः २ वर्णपात-संकारीः । ६ धारी

कार के धोरय 'बार्सकारिन मंद्र उनसेर् (बीव ३)। आर्टकिम कि [के] पष्ट किया हुमा (दे क् **4**=) : आ अंद न आ अस्थी बनय का परिमाल-विरोध पानी से भीजा हुया हान जिसने गम्म में मुख जाब जड़त से शेकर पाँच महोराव तक का काला (विशे)। खासंबित वि (बाहरियक) उन्मूष्ट समय का उल्लंबन न कर कार्य करनेत्रामा (विशे)। भासेष दक (आ + सम्यु) सामय करना सद्दारा सेना। श्रंष्ट आस्ट्रेबिय (सार ११)। आसंव पू [आसम्ब] याभय याबार (सुरा 49X) I आसंब न [बे] मूमि-धन बनस्पति-विशेष जो वर्षा में होता है (वे १ ६४)। आसंबन न [आसम्बत] १ धायम धाबार, विश्वना धवसम्बन हिमा जान वह (शामा रै १)। २ काव्या 📆 प्रयोजन (धानमा म्प्रभा)। आर्लबगा धौ [आसम्बना] उपर देवो (वि \$86) I भारति नि [आक्षम्बन] धनसम्बन गरी नाता भाषयी (पड़ड)। भारतीय न [आयम्भिक] १ नवर-विधेव (टा १)। ए भगरती सूत्र के स्वाद्ध में शहर रा बारहवाँ बहेरा (मन ११ १२)। आर्थभिया ध्यै (आर्थ्यम्भरा ) नगरी-रिटेव (भग ११ १२)। आखब पुं [द्व] पायन पूचा (भत्त १९१)। भारतम्य सङ्घ् ] १ वानना । ९ विक से पहिचानता। शामिलामी (गढड)। भाग्निकाय र [आसचिव] १ हात परि चित्र। २ चित्र से जाना हुसी (नजर)। आध्यम रि [भासप्र] तम हथा बंपुक्त (रे X 11) 1 भागता रिभाग्यपित् । बेबारित बाबारित (याच देव ४२) मुता व या६)।

आमत्तव रेगो असत्त (वज्ञः च १४६)।

भाग्रथ नूं [वे] बहुद बोर (दे १ ६४)।

नामञ्जावि (आमस्य) १ मेल्य । १ मेनुका ।

६ गाउ, रामा द्वा । ४ नास दूबा (नार) ।

कास्रप्य वि [आस्त्रप्य] वहने के योग्य निर्वेचनीय 'सवसवस्त्रिमञ्ज्यासप्यमेन मर्गर्ग' (सह्बा⊏)। आ जस सक [आ + कस्] प्राप्त करना। मामभिक्य (बंबर ११)। आउपण न आसमनी विनासन (यमस बद२) । लास्मिया की आखिभक्त नमरी-निरोप (समा समा ११ रि)। थाक्रय पून [झास्रय] गृह, बद, स्वान (महा गा १३६)। आस्य पुन [ आस्य ] **गौदर्श**न-प्रसिद विकान-विरोध (वर्ग ६१४, ६१६ ६१७)। आसपान हिं] शास-पृष्ठ शम्या-पृष्ठ (वे १ 44 = Z=) 1 आसय सक [ आ + सप् ] १ कहता, बात-भीत करना। २ मोड़ाया एक बार कहना। बहु- आसर्पत (मा ११ व, धनि १८) साद वमाण (द्य ४)। आस्त्रविकण (महा) धासविय (ग्रट)। बासपण न [बासपन] संसपण नातनीय बार्त्ताशाप (बाम ११६ चर १२८ टी मा १६३ वे १ प्रश्. स ६६)। आख्यास न भिद्धतासी कियारी चौदमा (पाम)। आसम वि [आसम] बातरी पुस्त (भग १२२)। चन [स्व] भानत मुस्ती (मा२३)। आर्म्सस्य वि [आर्क्सिट] पानसी मन्द (ऋत १२,२)। आरुपुय देवो आरुसिय 'सावि सामतीला | भातगुवा बुढिना (सम्मत्त १६) । भास्त्रस्य पूर्व (आजस्य) मुख्ये 'मामस्त्रो रागुरागुमी' (बना १६२) । आग्रस्स न [आग्रस्य] बानव मुन्दी (दुवा: सूपा २११)। आग्रस्सि वि [आग्रस्यम्] मालवी पुस्त (यभार, १)। मान्यअ देवो आस्पष् (गा ४२८, ६१६८ मै आस्राण देवो आणास्त्र (वास से १, १७

महा)।

आख्रापिय वि श्रिक्षानित नियन्तित मन बुद्धै से बाँमा हुमा 'दहमूपदंशसारिएयकमना-करियो निनो समस्मीहो' (मुना ४)। आस्म र् आजापी १ संभापण बातबीत (बा ६)। २ भ्रस्य मापरा (ठा ६)। ३ प्रवम भापए (ठा ४)। ४ एक बार की उक्ति (मग ६, ४)। आसायक देवो अन्सावन (मुज ८) । आसावग र् [आसपक] पैरा पैरापाक, परिच्छेर प्रत्यका प्रशासिक्षेप (ठा२ २)। द्यास्त्रवयन (आस्त्रपन) वीपनेका रम्यू धादि सावन, बन्बन-विरोध । यंश्र प्रीय नी बन्ब-बिरोप (भग ŧ)ı धात्मपण न [आसापन] मानाप संभापस (बजा (२४)। भारतयम्। भी [आस्त्रपनः] नाचनिरोप (नवा आसस प्रे [दे] ब्राधक विषय (दे १ ६१)। आत्महि देवो असाहि (पर्)। आखि पू अखि भगर, मनय माँच (पाँ)। आबि रेको आसी (एव पाय)। व्यास्त्रिंग एक [आ + क्रिक्<u>स</u>] बालिकान करना मेंटना गर्पे संगता। आस्त्रिगड (महा) । संष्क- आस्त्रिगिकल (महा) । हेक-ब्बार्सियिड (महा) । आर्डिंग प्रशिक्षित्री बाय-विरोप (यय) । आस्मि वि [आक्षिक्य] १ प्रातिङ्गत करने मोग्ब । २ पु भाष-विशेष (बीव ३) । मार्छिगत न [आसिक्कन] प्रासिक्त मेंट (कम्यू)। वट्टिकी वृत्ति । गाम या क्योल का प्राचान---विक्या शरीर-प्रमाश प्रश्वात (सप ११ ११)। आर्किंगणिया जो [आक्रिकृतिका] देवो आर्क्षिगणवट्टि (जीव ३) । भार्किंगिमी भी [भारिज़िनी] अनु धारि के मौने रसने का विक्रिया (पत्र ८४) । आर्किंगिय वि [आसिक्टि] पाचित्र, जिसका मालियन दिया यथा हो गई (काल) । आर्थित प्रक्रियासिन्दी नार्दके क्लाने के चौरहें का एक हिस्सा (प्रति १११, ग्रांक आर्तिप प्रकृशा+क्षिप् ो पोतना सेर करता। आखिपइ (उप)। हेक् आसिं-

पित्तप (क्स)। कु आर्खिपेता प्रयो **आखिपार्वत (निष्**रे)। आस्ट्रियम म [आज़पण] १ सेप करना निसे पन (रमण रेर)। २ जिसका लेप होता है बह बीब (तिबू १२)। आक्रिमा देखो आपश्चित्रा (वंब ४, १४१) । आखित्त म आखित्र विश्वास वसाने का न्यप्र-निरोप (बाचा २ ६ १ १)। आकित वि [आदित] चर्रान्टर चरक हुमा निपाहमा (वित्र २**१४**) । आखित्त वि [आइ.स.] १ वारों बोर हे बसा हमा 'बढ़ बाबिले मेड कोइ पमूर्त गरंत मोहळा (नव १३) शासा १११४) । २ न प्राय नगरी भाग से असता 'कोड्रिमपरे बसेंडे बासिस्टिन्स वि न डरम्स्ड (बन ४) । आधिक वि [बादिसप्ट] मानियत (भव १६, ₹ सुर ३ २२२) ( आसिद्ध वि [आसीद] बचा हुमा भारतारित (से ६ १६)। आखिसंदग पू दि आखिसन्दकी नान्य मिरोप (ठा ४, १ मन ६ ७)। अञ्जितिर्य पु [दे आक्रिसिन्दक] कार वेस्रो (ठार ३)। आखिर्धक[सून्] सर्वकलाधुना। मानिहर (१४ १८२)। शह- आख्टित (नार) । भाजिद्द सक [आ + क्रिया ] १ पित्रास करना स्थापन करना। २ वित्र करना वितरमा वा वित्र बनामा । वह आसिङ्माम (4x (4x ); आस्मिद्देश वि [आखिक्तित] विवित (पूर t =0) | आसासर [धा + सी] १ तीत होना यासक होता। २ मालियत भारता। ३ तिरास करना । वह आसीयमाय (गउड) । आसी की जिल्ला १ ४कि, घेली। २ सकी वयस्या (इ.१ = ३) : ३ वनस्पति विशेष (खामा १ **१**) । अध्यक्षकि [भाव्यक] र यावकः व्यवसारा सबुताबहुत्तररिमनात्रीहनोत्रातिमार्गः (पटि) :

२ न मातन-विरोध (वद १)।

আ জীত বুল আ জীতী বীকাৰা মুক্ত ব্যৱ

साधीण वि [आजीस] १ मीन, मस्तक,

एसर (प्रत्य १२१)। २ मानिन्ति माण्डि

क्रांचीयम दि [बादीपक] वनानेनाता मान

आरक्षीश्चन दिही समीप कामन पास का बर

शास्त्रीवय देशों आसीमग (पराइ १ ६) ।

आ स्मीक्य न स्थितिपनी बाग कवाना (दे

कारतीविय दि विश्वीपित् । याग से क्लामा

का प्राप्तन-विरोध (वव १)।

मूलपानेवाला (स्त्रामा १ २)।

१ ७१ विचार १)।

( t 2 4x) 1

साखीयमाण केते आधी = या + शी ।

हुमा (वि २४४)। आलू पून आलू । क्ल-क्लिय प्रान् (का 9)1 आलुइ की [आलुकी] करी-विरोद (पन १)। आलंक स्कृषिङ् विकृति वनसा बाहकेना । माल्यह(डे४२ ३ वड)। भारतंत्र तक स्पूर्ासर्गकरश्च 🚁 । मालुबाइ (१४१२)। **जाशंकन न (स्पर्शन) स्मर्थ कुछ (१३४)** । बाल्लिम विस्पृष्टी स्टूट, चूना ह्या (ध १२१। पाम्र)। आ लुलिक विदिन्धी बनाह्या (पुर ६ २ १)। आह्रपं सक [स्पूर्] सूना। मानुबद (প্লক্ষ ৬४)। भाल्प तक [आ + द्वान्यू] (स्टा करवा। यानुपद् (याचा) । आलूप वि [बालुम्य] बन्धारक, इरल क्यो-वाला द्वीन नैनेवला (मावा)। भाञ्चग रेको भाजु (पर्य १) । आसूगानी [रे] वर्गसोटा बढ़ा (का **( )** मालुपार वि [दे] निरर्वक ध्वर्व निष्यपोयन, ता र्शनको नमाप सम्रह कि बालुभारबण्डि-पर्दि (नुस १४१)। शमस्य । रि [भान्नस्य] विवित 'र्रात मामंदित्यम रे परिवट्टेंच सन्तर्व धानेत्वदिखय-

राला वित्वसी (श्रृप्तरासे २ ४४) गा ६४१३ गढड ) । आनेट ई क्को मासिसिम । भासेटड्रम 🦠 कालीव पू [आहोप] विशेषन सेप 'मानेव-निमित्तं च वैनीयो वसवानंदियवाद्यामी वर्षेत चंदर्ग (मात) । आहोबजन [झाझंपन] १ लेर विभेनन। २ जिसका केन किया बाला है वह वस्तु, 'बे मिनक चींत बाहेबस्यायं पश्चिमाक्केता' (निकृ ( P) भारतिसय वि भारतिपित् । शासिका ऋषवा ह्मा (नेहन १७६) । काक्षद् पुंजिस्ति (भाषप)। भारेदिश वि भारतिका विविद्य (स्था) । बास्रेथ सर्व [धा + संकृ] रेक्ना रिमोक्टन करना । वह आक्रांबीय आलो हेत आद्धोपमाण (पा १४६ स्प द ४३) भाषा) । क्वकु आध्योद्यांत (से १ २४) । संक आखोपकण आ**बो**डचा (काल का e) i बासोध एक अग + स्रोची १ देशका। २ दुरू को धपना प्रमध्य रह देना । ३ विचार करना । ४ मानोचना करना । ध्वनीएइ (मग)। वह आस्मेक्षन (पवि)। संह जाय्येपचा, बास्रो-इय (भरः वि १०२)। किमाओक्चप (अ२१)। इ. बाधे प्रवेद आसोपश्यक्ष (ज्ञाद २) दीव 1 (734 थास्त्रेस र् [भासक] १ तेर प्रकात (स र १२)। र विमोत्त प्रक्रिक्य केल्स (योप १) । १**९**प्नी का समान-काद, सम मुन्तान (बीम १६१) । ४ नवम्बावि वकास-म्बान (बाका) । ३ वस्त्, इंतार (बाक्)। ६ जान (पएइ १ ४) । आधोजग} नि [आकोचरु] स्पनीपना बास्रोजय ) रहनेवाना (या 💥

धास्त्रेभन न [आस्त्रेचम] ग्रेने स्वा (म्ब २.१ मस २४)। आक्रोमणा स्मे [भासोचना] **१ रेक**ा वक्ताना । २ प्रायमित के निए प्रपने केले को पुर को बतादेता। ३ दिवार कर<sub>थ</sub> (का१७ राबा४२ छ ६ १)। आसंहम वि [आसोचित] हर, निरीकित (B & &X) 1 आओइस वि (आओपित) प्रदरित **इर ४**१ धताया द्वाबा (पदि) । धाओडभ देवो भाषांञ - या + बोप्। वाखंड्य वि [शासोदयित] वेदने वाला ≋हा(सप १६)। आवाइक्ष नि [ आसोक्षत् ] प्रकार-\$% (नमा १६) । वासेक्ट देशे आसोस - धा + शैन । शास्त्रेग देशो जास्त्रेश≔यानीच (धीर १११)। सबर न ["नगर] नगर-विकेष (परम ६८, १७)। आध्येष 🐚 आस्त्रम≠या+ बोष्। पर, भाग्नेपत (पूपा १ ७)। एक आ**यो**-भिक्रम (स ११७)। माक्षेत्रम क्या आखोजन (४५ १११) । भाजोड का जिए+स्मेडम् ] विकाला मक्त करना। संख्र आसोडिवि (प्रा) (करा) । आस्मेडिक ति [आस्मेडित] म<del>ण</del>ि आसोजिय रे दिलीय हुमा 'मालोगिय ४ नमधै (परुम १३ १२६) छप (४२ टी)। भाओपण न [बास्नेबन] पश्च (वत १६, ¥) I शासोव सक् [बा + स्रोपय् ] भा**न्हा**रिश कला। क्ल आसोविजसाम (इ १४२)। आधोर को सासोम=शर्मका भी यत्वलाने नेत्रण्डे मोक्टे विवाधमधी (रंग्रा)। शाखोबिय वि [बास्पेपित] ग्रान्सारित

आयण्य विकायम् । भगति-युक्तः २

शत (गा४६७)। सत्ता श्री विसत्या]

आयण्य वि [आपम्र] व्यक्षित (मूम १ १

गरियो मर्भवती की (धरिव १२४)।

क्याम । ४ कायोग-विशेष । १ व्यापार-विशेष

(विते ६ ६१)।

यातकोत जीतन-पर्यन्त (मात)। बद्धा की िक्या जीतन-पथन्त 'चएला धावपनस् पुरुषनासं न सूर्याः (उर ६८१)। करिय वि विश्विक वावजीविक जीवन-गर्यन्त चलग्रामा (ठा६ सा ४२)। आप पुमापी १ प्राप्ति साम (पएह २ १)। २ अप का समूह। यहुस न ["बहुछ] देशी आउ-बहुछ (कन)। आप गर (आ + या) बाना बागमन करनाः 'बलबनिरालित निब्ने बाबद निहानुहै वाल' (मूपा ६४७) । बागइ (नार) । बार्वेड (मेन 127) I भाषभास एक [ **३**५ + गृह**्र**] मानितन नरता । बारमामद (प्राच ७४) । आबा ही आपद्ये धारति शिया, संश्र (सम १७) मृता १२१ मृत ४ २१४, मानू 2 (22) 1 खार्चग वृद्धि स्मामार्ग कुत विश्वप नय्त्रीरा आवंद्र वि [आपाण्ड] बोड़ा सहेत्र फीना (मा २११)। आर्थद्वर नि [आपाण्ड्रर] उत्तर हैयो (न । 98)1 आर्यत देगो जार्बत "धार्वती के पार्वती लोगीस धमलाय माह्लाय (धाचा १४२६ १ % R 1 Y ft 120)1 क्षायस्माम न [आयन्तान] यथ पर चडन शी क्सा (व्यक्)। भावचेज्ञ वि [अपस्यीय] माग्य-माश्रीय (417) भाषन रेगो आआज (हे १ १४६) । आक्न धर [अ + पद] प्राप्त हाना नाष्ट् होता । यात्रवद् (रम) । हः आप्रज्ञियस्य (पर्गार)। भारत्र पर भा+वर्ती र स्थूप पत्ता। २ अग्रम करता 'स्रोजीत राजा राजु बहुर्गीर वर्त बनरद्धीत्व (न ११) । र्भावच्य सर्व [भा÷पर्] प्राप्त दरता। द्यातको (न्य १२ १ १) । द्याराने (नूच १ १९११ १) ब्यास्तु(ग्या६)। भाषत्र । विशिषत्र को मेगुनान भाषत्रः। (विश्वेद)।

15

आयञ्जिय वि [आयर्जित] १ प्रमप्त किया 1 (3) 5 हमा। २ मभिपूर निमाहमा (महासूर ६ आयत्त सर्क आ + युन् ] याना 'नारतः ११ मुगा २१२)। करण म ["करण] नागरहर पूर्णी भने ठेल सपूर्णयापिति (नेर्य म्यास-निधेय ( मान )। 144)1 आयक्रिय रेगा भारक्रिय = बातौदिक आवत्त बरु [आ + युत् ] १ परिभगरा करता । २ वदमता । ३ चटाशार प्रता । ४ (इमा)। सक पठित पाठ को बाद करता। ६ बुमाना। भाषञ्जाकरण न [भाषञ्जीकरण] उत्योग विशेष या व्यागर-विशेष का करना उचीर भारता (मृतः ४१)। यह असमाण, आवसमाय (हे १ २०१ हुमा)। रहातिका में वर्ष-क्रोप रच व्यासार (बीप आयश व [आवसी] १ चनागर परिप्रमण निमेद्द)। (स्वप्न ९१) । २ मृहत्त-विशेष (सम ११) । आवट्ट यम [आ + पूर्य ] १ वर की तरह पूपना, फिरना । २ तिमीत होना । ३ तर- महाविद्ध क्षेत्रस्य एक जित्रय (प्रदेश) का नम (ठा २, १)। ४ एक नुरनाना पर्-शोपण करना मुसाना। अधीइना, इन्सी विशेष (पएड १ १) । ३ यह लोक्सम बा करना। भारहर (हे ४ ४१६ मूच १ ४, नाम (ठा ४१)। ६ पथतविधेत (ठा १)। २)। बर आयट्टमाम (छे १ ८)। ७ मिलुका एक सलला(ध्रव)। ८ दाम आबट्ट देनो आवत्त (प्राथा मुना १४) मूच विशेष (बारम) । १ शाधीरक बेटा-विशेष **१ ३**) i नार्वक व्यापार-विधेव 'बुनावनावते विद्वि आयट्टणा हो [आवर्षमा] मावर्डन (प्राप्ट रम्भे' (सम २१) । कुद्र न विंद्रनी पर्वत-3 t) i आपट्टिआ धी दि] र नवोश इनक्ति। २ विदेश का रिकार विदेश (क्य)। | योत वह ियमान]र्यात्रण की वरक कहातार पूक्त परदन्त्र औ (दे १ ७४)। आयह देगी आयत्त = मानर्त (राध ६ ) । बला (भग ११ ११)। भायत्त पुन [आवर्त्त] १ एक वस्तु ना महाज आपड सर [ आ + पन् ] १ बाना, बायनन करना । २ या सदना । वह आयडेत (प्रापू (मिरि ६८३)। २ न नगतार २४ दिनों ना द्वाराम (संबोप ४८) । भाषत्त न [भानपत्र] एतः क्रजा(नाष)। आवद्यम न [आपतन] १ मिरता (न ६ আবস্তাল [आवर्षन] बरारार प्रमण (१ ४२) । २ मा सपना (स १८४) । आपगपीद् धी [आपगपीधि] १ हरू-वार्व १ १ )। पिं िया ही ["पारिसा] बीरिका शामार । २ रप्यां-विदेश तक तरह वा मुख्या विदेश (स्व) । (धवर )। आवस्य र् [आवर्धक] लो आवस । १ आप दश रि [आपनित] १ तिरा ह्या वि नगरार प्रमण बन्नेतारा(है र र र)। (महा) । २ पाम में माबा हुया (मे १४ १)। आपत्ता की जिल्ला गर्मकी में आयडिज वि दि । संग्त संद्य (देश एक विषय (प्रांश) का नाम (इक) । ०० पाम) । २ नार, मजरूत (दे १ ००) । आवृत्ति को [आवृत्ति है बेन्द्र वर्षेत्, 'तुस्र आपम 🕻 [आपम] १ हर - दूबान (त्यव रिवोल्यारणी' (रिवे १६६४) । ३ मापरा १ १ परा) । २ वप्सर(द्राप्ता) । बष्ट । वे ब्रामीन (स्ति ६१) । अपनिष र् [आपणिक] बैरनर, ध्यति भाषति धा [आर्यन] प्रति (धर्मन (रप)। 1 (16.7

६४१ व्या )।

श्राक्रीह पून [आरक्षीड] मोद्धा का पुरु समय का प्राप्तन-विरोध (वन १)। आधीण वि [बालीन] १ मीन धासक, हरार (पराम १२१)। र वानिपित मास्थित (क्प्प) । आसीयग दि [आदीपक] बनानंबासा, माग मुसपानेशसः (लामा १ २) । आसीयमाण देवो आसी = मा + सी । आरखीक्ष प दि] समीप कामस पाछ का दर आसीवग रेको आसीयग (पदह १ ३) । भासीक्षण न [भार[पन] बाद सगान्त्र (दे १ वर विचार १)। काद्गीविव वि [आदीपित] याच सं असावा हमा (पि २४४)। आलु दुन [आलु] नव-विरोप समू (सा R )1 भातुर् सौ [आनुर्जा] यही-विरेद (पव 🐮 )। शालुक्ष पत्र [१६८] भत्ताना राहरेना। यामुखद (द्वे ४ २ ८ वर्)। आर्जुन नकस्यित् । सर्वेक्टन क्या मानुबाद (द्वेष १२)। भार्तुनाम न [स्परान] सर्ग कृत (नजर) । भार्तुन्त्रमं दि [१५४] एइट, कुमा हुवा (दे १२१ः नाम) । आलुंग्यिम वि [द्राय] बता हुसा (पुर १ २ ६)। आर्थुष सर [शृष्टा] छूना। सानुबद्

(प्राष्ट्र ७४)। भार्नुप नक [ भा + **सु**रम् ] इयह करना। याचुंतह (भाषा) । आर्भुप नि [आलुम्य] बद्धारन इच्छ नरहे-वाना द्वीत नेनेवाना (वाना)। **आलुग रेबो भालु (**गर्छ १) । आलुगाध्ये [र] पर्शकोश बहा (का 1 ( )3 आगुराराँव [रे] निर्दंत धर्च निव्ययोजन 'ता रॅनिको जनगर्द समह हि मानुपारलीज-

, বি [সানাম্য] বিবিদ 'বদি

आनंशिय है चरिष्ट्रेड नाम प्रानेत्वारिए र

पंजे (निस १४३)।

भागगर

आसटर्डु } देशे आसिष्टिम । आसेन्दुर्अ आसम् र [आहेप] वितेषत सेप धारीक-त्रिमित्तं व देनीयो वसमामंश्रियवाहायी वर्धति चक्डे (महा) । ब्यालवण न [आलोपन] १ लेर विलेपन। २ जिसका केर किया जाता है वह वस्तु, 'वे भिन्तु र्शत माभेदछवार्य पश्चिमाहेता' (निद् 17)1 भाग्नसिय वि भाइतपित । गानवन करावा हुमा (बद्दम ३७६)। आहोद्द र्षु [आहोत्स] चित्र (बावम) । भासक्ति विकासित विकासित (महा)। आलोब सक [का+स्रोक्] केवत वितोकत करता । बङ्ग- आस्त्रोशंत आस्त्रो-ईत आसोणमाण (मा १४६ सर दू ४१ धावा) : नक्द-आसीदंत (से १ २१) । संइ. आलोण्डल **आस**श्चा (का<del>त</del> स्र **t**) ( थास्त्रेञ नक [था + छोच् ] १ रेकाल । २५४ को मन्त्रा मनस्य वह देता। ३ विचार रप्ताः ४ मानोचना करनाः मानोहर (भग)। वह आसोशंत (परि)। संह जाळोणचा आस्रो-इम (वन, रि १०२)। के आध्येश्चय (ठा२१)। इन्याबी एयस्य आस्त्रेएउयस्य (सः६२ दोवा **485)** I भासोम १ [बाध्यक] १ तेत्र प्रकाश (भ २ १२)। २ निनोत्त सन्धी तरह देखना (मोप १) । १ प्रमीका समात-भाव सम भू-वार (योग १११) । ४ वनकादि प्रकास-स्वान (मावा) । ४ वयन्, संसार (माव) । ६ ज्ञान (पर्याद १४)। भाग्येत्रम ) वि [आश्चयक] ग्रानीवम भासामय ∫ करतराँमा (या ४ <sup>-</sup> कुन्द्र ६११) आहोभन न [माधोदन] दिनोहन, दर्सन, निर्धेवरा (भोप १६ मा) प्तकारीयलकरका इमस्वरीतं समिति वृतीयो। ল বৰ বিঅমে বৃতি চিৰৰ কাল্যে (नहर) ।

आस्प्रेमन ग (आस्प्रेचम) गीवे देवो (फ्स २,१ मसू२४)। बाओअजा को [आओवता] १ रेक्ट, वतवाना । २ प्रायबित के सिए ध्यने केयें नो पुर को नता देता। ३ विभार करम (धन १७२ मा ४२ ; स ६ १)। बाब्देश्य नि [भाग्नेषित] हरू, निरीक्ष (8 4 EY) 1 खाळोड्ज वि [आसोपित] प्रदर्शित हर ही क्तामा हवा (पत्रि)। बाह्येइम देवी द्यास्त्रेख - या + वोष् । आस्पेइलु वि [आस्पेक्सितृ] केवते वासा प्रष्टा (सम १६)। बास्पेश्क वि [ शास्पेत्रवत् ] त्रकार-पुष (यजा१६) : आसोदात केरो आसोख **–** मा + दोन् । धाळोग देशो आस्त्रोअ=मानोक (मोव १११)। नवर न निगरी नवर किरेप (पत्रम ६८ ३७)। आसोप देवो आसभ्य≃मा + नोष्ः गर-भाक्षेत्रेचेत (सूपा३७)। संक्र आस्त्रे बिक्रम (स ११७)। वाद्येषण क्षेत्र धाखेमण (स्व ११९)। आसोड एक [सा+सोडम्] हितोरम भक्त करता। शंक आस्त्रेडिपि (प्रम) (स्य)। आसाहिय । नि आसोहिती मन्ति आस्पेडिय र्रे दिलीच हुमा 'माशोशिया व नमरी (पतम १६ १२६३ छप १४२ टी)। आस्रोयत्र म [भास्रोकत] नवतः (४६ १६ आसाव एक [ भा + स्रोपय् ] मान्दर्गर**ा** करनाः रक्तः भासीविज्यमाण (व १८२)। आसंब देती आस्त्रेश महाबोक 'मेंटै बाबालींने बेसम्बे मोयसे विवायनसे (रंडा)। भाखोदिय दि [आसोपित] पाष्प्रारेत बराह्मा (समार १)। आप दि [सावन् ] दितना । धार्वति (पि **११६**) i अभिय [बादन्] का तर अब नया बद वि विस्थी देशों बहिय (विशे

र२६३३ मार)। बद्धा [क्श्रम,]

भाष---आवश्वि यात्रकीय वीदन-पर्यन्त (माव)। कहा की िक्या] श्रीवन-पथन्त 'वर्**णा मावनहा**ए पुरुष्ट्रभवारं न सुचिति (टर ६०१)। कदिय वि "कृषिको धावकोविक जीवन-गर्यन्त च्यानामा (ठा६ का १२)। आय पंजापी श्राप्ति नाम (पर्वहर १)। २ अस कासपूर्ध बहुछ न["बहुछ] देवो भाउ-बहुछ (दस) । आव एक [आ÷या] धाना यापमन करना: 'बलबियरालवि निर्मं पावद निशम्हं ताल' (सुरा ६४०) । धानइ (नार) । धानति (संग ११२) । आष्ट्रास सक [ उप + गृह्रू ] मानिका करता । बारमामद् (प्राक् ७४) । आवड् की [आपत्] प्राप्ति विपन्, संकट (सम १७) मुपा ६२१ सुर ४ २१४, प्रामु **र, १३६)** । क्षाचेंग वे वि विभागार्थ, कुत विद्यय सरमीरा आवंद् वि [आपाण्डू] बोहा सहेद फीका (मा २६१)। आर्यंदुर वि [आपाण्डुर] कार देशो (ने व WY) 1 आर्थत केंद्रो कार्यत "मार्थती के यार्थती सौर्पसि समलाय माइलाय'(धावा१ ४२ ३ १ इ. ६ ११ ४१ वि १३७)। व्यायम्गण न [आयस्मन] यथ पर नदन नी कता (भवि)। आयबेळ वि अपरवीयी मारव-वानीय (क्य) । आयज्ञ देको आमाज्ञ (हु१ १४६) । आवज्ञ धरु अि + पद् । प्राप्त होना साबु होता । पाषका (रम) । श्र भावज्ञियम् (पराहुक ४)। आवळ सम् [धा+वर्ज] १ संपुत मप्ता। २ मसम्बर्गा मन्त्रवि गुणा धनु मनुष्ति वर्णं धमनद्भरत्यं (म ११) । आयञ्जसक आजा+पद्दी प्राप्त दरमा। बारको (उत्त ६२, १ ६) । बारस्य (नूध ११५१६२) भारत्रम् (मृगः २१) । आयञ्ज ) विभावज की प्रोत्पृत्यातक आष्ट्राय (तिर्वे ४१०)।

आषञ्ज्ञण न [आयर्जन] १ प्रमुख गरना। २ प्रसन्न करना (झाचू)। ३ उत्तयोग, इयात । ४ उरवीय-विशेष । ५ व्यापार-विशेष (विश्व ६ ६१)। आंद्रियं दिश्चित्रिती १ प्रयम दिया हवा। २ धनिमुल किया हुवा (महा मुर ६ ११ मुता २१२)। इटल न किटल व्यातार-विधेष ( मान् )। धावद्भिय देखी आर्डाइम्य = भरोदिक (हमा) । आपजीकरण न [आपजीकरण] उपनाग विशेष या व्यापार-विशेष का करना उदीर खुलिका में कर्म-प्रकेष रम व्यापार (धीप मिले ६ ६ )। आषट्ट सक् ि आ + पून् | १ वक्षी तप्र यमना, फिरना। २ विसीन द्वीमा। ३ सक-श्रीपरा करना मुलाना। ४ पीइना इ.ची करता। मानदृष (हे ४ ४१६ सूम १ ६, २)। बद्ध आषट्टमाण (से ६, ८)। आवट्ट स्त्रो आयत्त (प्राचा मुपा १४) मुघ 1 (1 3 आपट्टणा भी [आयर्थना] पावर्टन (प्राक्ट आवट्टिभा की दि] १ नवोड़ा दुनहिन । २ परतन्त्र की (दे १ ७४)। मायह रेको आक्त = भावतं (एय ६)। आपड सक [ आ + पन् ] १ माना भागमन करना । २ मा लयना । बद्ध- आयर्डत (प्राप् ₹ **६**) i भाषद्य न [आपदन] १ विला (न ६ ४२) । २ मा समना (स ३८४) । आवणवीहि की आपणवीचि । १ हर-मार्ग बाजार । २ रम्या-विरोध एक तरह वा पुरुक्ता (राष १)। आर्पाडभ वि [आपवित] १ विराह्मा (महा)। २ पास में धावा हुसा (छे १४ ६)। আৰ্ত্তিস বি [चे] १ বলচ এবত (३ १ पाम)। २ नार, मजबूत (दे१ ७०)। भावण र् [भाषत ] १ हार हुमान (ए।वा १ १ महा)। २ वाजार(प्रामा)। आवणिय पू [आपणिक] सीरागर, व्यासारी (प्रम)।

आवण्य वि [आपम्न] १ मापति-पूद्धः। २ प्राप्त (गा ४६७)। सत्ता भी विस्या री र्याभणी यमेंबती की (प्रमि १२४)। आवण्य वि [आपम् ] प्रापित (गूप १ १ 1 (11 1 आयत्त संक [आ + दृत् ] प्राना, 'नावत्तद नामन्बद पुलो मने देख बपुखरादिति' (बेन्म 398) I आयत्त यक [आ + दूस् ] १ परिव्रयण करता । २ वदलना । ३ चनावार मृतना । ४ सक पठित पाठ को बाद करना। पूमाना। भावतद (मृक्तः ११) । वहः असमाणः आवत्तमाण (हे १ २+१ दुमा) । आपस पू [आवर्ष] १ बनामर परिभ्रमण (स्वप्न १६) । २ मृहर्त-विशेष (सम ४१) १ महाविधेत क्षेत्रस्य एक विजय (प्रदेश) का नाम (ठा२,३)। ४ एक श्रुरवाला पर्यु-विशेष (पर्या ११)। ५ एक सोक्पाल का नाम (ठा ४ १) । ६ पर्वेडविरोप (ठा १) । मणि का एक नशस्य (राय)। दक्षाम विशेष (भावम) । १ शाधीरिक वेटा-विशेष कायिक ध्यारार-विरोध 'दुवानसावते विदि थम्म (सम २१)। कृद्ध न [र्क्ट्रि] पर्यंत निरोप का रिकार किरोप (इस)। । यद कह [ीयमान] ब्राह्म की तरक बहाकार बूमने-मात्ता (भग ११ ११)। मापत्त पुन [भावती] १ एक ठरह का बहात (मिरि १६६)। २ न नगातार २ १ दिनी का उपवास (संबोध १८)। आयस्य न [आदपत्र] यत्र ब्रःता(पाष)। आयचण न [आयर्चन] बगरार प्रमण (ह र. १)। पेदिया स्व विशिक्षा विश्वा विशेष (राम) । आवत्तय पू [आवरुफ] देवी आयत्त । १ वि अमानार भ्रमण करनेवाला (हे २ ३ )। आवत्ता क्षी [आवर्षा] महाविदेह-शेव के एक विजय (प्रदेश) का नाम (इक्)। आपत्ति को [आपत्ति] १ दौप प्रमेद, 'तस्य निमोत्त्राक्ती' (सिमे १६३४) । २ मानरा बष्ट । ३ क्यांति (विने ६१) । आपरित द्री [आपत्ति] अप्रीत (वर्षेत्री 403) I

आविद् भी [आहित] यापण्ड (विधि १)। आविद्य देवी आविष्य (पडण १४ १ छासा १२ स २४१ उदर १६)।

कावय पुं [आवर्त्ती] देवो आवत्तः 'किर्दि-कम्मं वारतावर्ष' (तव २१)।

आयय थेको आवडा वड आवर्षन आयय माण (पत्न ११ १३) छाता ११ ८)। सावया की [आयगा] नरी (पाम स

६१२)। आवया की [आपतृ] मात्रक दिन्त् दुःच (राम वस ४२)

'त प्राणीत पुष्पनेष्ठं, न य नीड' नेय सोय-मण्डवार्यं ।

नम भारिमारमामी पुरिना

महिलारण धोलता (पुर २, १०६)। आवर सक [आ + वृ] सामजावन करना, कोमना। वर्ग आवरिज्यह (का ८, ६६)। कमा आवरिज्यसाय (पर ११)। संह आवरिता (ठा)।

भाषासमा [आपरण] १ घाण्यास्य करते बत्ता बच्नेत्राता विदेशित वस्तेवाता (सम चर्मः हावा १ )। २ वास्यु-विद्या (स

 १)।
 भावरणिकाति आवरणीय] १ भावता वर्णवा २ वरनेताता सम्बद्धारन वरनेवाना

(प्रीप) । स्वाचित्र

आवरिय रि [बावुन] बाच्यारिन जिसे-द्वि 'मार्गरेषी नम्मद्वि' (निषु १) । बावरिमात्र म [आर्थण] दिन्त्रता, निषत

(त्र १) । आपरिसण न [भावर्येष] मुनंच वसको कृति (पण २१) ।

भागरतया का दि] नरिका, संच परोजने नापात-रिरोप (दे १ ७१)।

नापातनसम्बद्धाः (६१ ७१)। भावतन्त्रत्व (भानस्त्रत्व) नोहना (तसहर

ा। आवांक ग्रे [मादिंड] १ पतिन थेणी (महा) ।२ दुं एक तिर्वाची का नाम (पत्रम १, ११)। आर्वानमा भै [भावस्थित] १ चींक, थेली

आर्रातमा भी [आवस्तिरा] १ वीट, येली (एव) १२ व्या वीटराडी (नुवा १ ) । ६ वनस्थित एक मूचन वादनीयाल (वर ६, ७)। पबिट्ठ वि "प्रविष्ट] येली छे व्यवस्थित (यग)। बाहिर वि [बाह्य] विप्रविद्धे, येलि-बह नहीं प्हाडूमा (यव)। आवस्तिय वि [आवस्तित] वेलित (पूपवि २)।

आवर्धा की [भाषधा] १ वीक, मेही (ताम)।२ सवस्त की एक कन्ता का नाम (पदम १,११)।

(१६० ८,१९)। आवस तक [आ + थम्] रहता कस करना मास्त्रेज (तूस १ १२)। वक्ट भावर आवस्त्रीत वि (तूस १ १)।

काषसङ् पुं [ऋत्वसः ब] १ वर, धापय स्वान (मूग्र १४)। २ मठ धैन्याधिकों नास्वान (परक्षा है २ १०)।

आपसदिव ई [आवस्ति व ] र तृहस्य वृद्धी (तृष्य २ ३) १ र क्षेत्राक्षे (तृष्य २ ७) । स्थानस्य (व [स्थानस्य ] र स्थानस्य विकासस्य । स्थानस्य । त्रम्य । र न साम्प्रकादि वर्षा सामस्य । तृष्य । त्रम्य स्थानस्य । त्रम्य (द्यानस्य । तृष्य । त्रम्य विकास्य । त्रम्य

रतक पूत्र नी मास्या (विने १) : भावस्मय पूत्र [आपामय] १—३ आर फेरो : ४ माबार, मायव (विने ८७४) : भावस्मिया की [आवश्यकी] सामावारी-

निरोत केत साधुका प्रदान-किया (उत्त २६)।

भागद् एक [भा + बह् ] बाएक करना बहुत करना 'पैरोरि निर्मित्संची बहुको नुदस्स पेनसाबहुर' (उन) 'छो हुमछ' वरना धारहेका' (पृ १ ७)।

आनह वि [आनह] पारण करनेवाना (पारा)।

। आचा बक्र [आ + पा] १ पीता । २ औग में नाता उपसीप नरता । देश चेतं १ पद्मीम सावेदं, नेपंते मस्त्री वर्षे (१५२२, )।

भाषात्रया जी [भाषायिश] प्रवान होम 'पत्नुवाए परमावादवार्' (४ ७२७)। भाषाग ई [भाषाक] मावा, विट्टी के बाव

राने नास्पान (डा ६४ विने २४६ दी)।

माबाह ई[भाषान] बीरो ही एक बार्टि फैले

कानेश देखें बनएएं स्टार्डकार्यः वाते व्यक्ते बावाम शामी विकास परिवर्ति (व १)। आधाजन न [आधाजक] इकान विकास कारास्पार्ट (स ११)। आवास प्रेन [आधात] बाचायन बासनन

भावाय **के**ले जाशन (भा २१) । भावाय पुं [आपात] १ प्राप्तम, गुन्मत

कावाय थ्रु (आपाव ) र प्रारम्भ, ग्रुप्यतः (पास से ११ वर) : २ प्रवस सेमत (क्र ४१) । ३ टलाल तुर्रह (सा २६) । ४ पटन, गिरुश (सा २६) । ४ सन्वस्त सेमीन (छ्वा वस्त्र)।

आवास पुँक्षितापुँ स्थान सिट्टी के पान पकाले का स्थान । स्थानवाल । स्थान फॅक्सा। स्टानुसी किस्सा। स्वोगा नान

्या२६)। आदायम न [आपादन] तस्पादन (वर्मस ११८)।

शासाल देनो आलशास (वर्मीक १६११२)। आसास }न [चे] अवाके शिक्ट ना प्रदेश आसासय }(६२,७)। आसाम देवो आसाम = सामाप । कहा की

श्रीवाव क्या आवाव = द्यावात । कही क्य [क्या] प्लोई सन्वन्तीक्या विकद्य-विशेष (ठा४२)।

आवास पूं [आवास] र नाय-वान (द्या ध पाय)। र निवास प्रस्तान प्रका (पर्ह र भोत)। र पिंड-सूह, नीर (वन र र)। भ पाय दे ( नुगा १२६६) कर द रहे।। पत्रव दे [पक्षेत] पूर्ण ना पर्वत (इक)।

आवास ) देनो आवस्तय = प्रावरस्क (वि आवास्त्र ) ६४४ प्रीय ६६ १ दिने ४१ )। आवास्त्रिया ची [आवास्तिका] भारत-स्वान (म १२२)।

माधासय म [माधासक] १ पावस्यक वर्षा । २ जिल्ल्यक्तीस्य धर्मानुतान (हे १ ४६। विमे १४) । १ तू पीत-मृत, नीह (वर ११) । ४ व सकारायस्यक समक। १ साम्बादक (विन संप्रते) ।

भाषासि वि [भाषासिन् ] युनेगना पर्वतनिपातासी (३४) । भाषासिस्य वि [भाषासिक्य ] अध्यक्ति

भावासिय वि [ आपासिन ] बनिरेरित वहार बाता हुमा (नुता ४१६ नुर १ १)। आवाह सरू [आ + वाह्यू ] १ सनिय्य के सिए देव मा देवापिष्ठित चीज को बुकाना । २ इताना । संहरू आवाहिति (मप) (मिन)। आवाह रू [आवाध] पीड़ा वावा (विपा र आवाइ पुं [बावाइ] १ तव-परिखीता वपु को भरके भर साना (पर्याहर ४)। २ विवाह के पूर्व किया चाता पान देने का एक सरसब (बीव ३) : आवाहण न शियाहन प्राह्मन (विसे १६५६)। काषाहिय वि आवाहित**े १ दु**नाया हुमा बाहर (भवि) । २ मदद के किए बुनाया हुया देव या देवाविद्वित वस्तु 'एवं च मराठेराँ मानाहियारं सत्नारं (पुर = ४२)। क्याचित [चे] १ प्रसक-पीड़ाः २ कि निष्य शास्त्रतः १ दृष्टु, देखा हुमा (दे १ ७१) । काचि व [चापि] समुख्य-बोतक मध्यम (क्य)। काबि स िवाबिस ने प्रकटन-पुषक सम्पर (मुर १४ २११)। ब्राविश्र सक [भा + पा] पौता वहा दुमन्स कुल्हेम् समरो व्यक्तिवद् रही (वस १ २)। धाविभ वि [भारत] प्रान्धवित (धे ६. **६**२)। ब्याविक प्रं दि] १ इन्ह्रकोष सुद्र कीट क्रिकेटा। २ वि मनित, माम्रोक्टि (वे १ ७६) । १ प्रोत (१ १ ७६) पाम्रा पङ्ग) । खाबिल वि [आविष ] प्रविष-वेद्योत्पन (राय) । ब्याविकारमा की वि १ नवीबा पुत्रहित। २ परहत्वा पराचीन क्ये (वे १ ७७)। आर्विच सक [का+क्यथ्] १ विवता । २ प्रकृतनाः ३ मन्त्र से संबीत करनाः। द्यावित (सन्द्र ३०) । द्यावितामो (पि Yat): 'पार्मन वा सुवएएएसुर्च वा मावि के प्रिणियेक वा (बाकार १६ २)। कर्म. गाविज्यस्य (स्व) । आर्थियण न [आब्यचन] १ पहनतः १ २ मन्त्र से भाविष्ट करना, मन्त्र से भवीत करना (प्रहर २ माक १०)।

आधिकम्म (न [आधिकर्मम्] प्रकटकर्म, प्रकटरूप से किया हुया काम (माना २, ११ X) I ध्याविस्म वि (आविस्न) एकिस्न उदासीन (Be cq (1 21 2 4 41)) साविट्र वि [साविष्ट] १ प्राक्त स्थाप्त (सम **११। स्पारदण्)। २ प्रतिष्ट (सूम १ ३)।** ३ सभिद्धित सामित (ठा १० मास ३१)। आविटू वि [साविष्ट] मृत यादि के उपप्रव से प्रक (सम्मत्त १७३)। आविद्व वि [आविद्व] परिक्ति पहना हुमा (क्प्प)। काबिद्ध वि दि] क्रिप्त प्रेरिय (वे १ ६६)। आविष्माव वृ [आविर्माव] १ जलिए। १ प्रादुर्मात धरिन्यकि 'मानिन्मानविरोमान मेचपरिशामिकक्षभेगाय (विसे)। आविक्सूय वि[आविर्भृत] १ फ्लप्र । २ प्राह्मम् तं (क्या) । ३ मिनियकः (सुर १४ २११)। काबिल वि [आबिस्ट] १ मनिन यसम्बद्ध (सम ११) । र मानुन स्थान्त (सूम १ ११)। बाविश्विक्ष वि [दे] दुपित कुरा (पर्)। बाविल्लीपेश वि आश्चिक्चित्री प्रामनिपत ( R 2 WY) 1 क्यविस सरु [आ+विश्] प्रवेश करता बुसना । बाबिसेइ (सम्मच १ ६) । आविस प्रकृ ि भा + बिश्च 🏿 १ प्रेवड होना पुष्ठ होना । २ सक् छपमीन करना छेवना 'परवारमाविक्तामिति' (विशे १२५१)-'नं जे धमर्य बीबो, भाविसई बेस बेस मानेस। स्रो तम्म तम्म समय, मुहानुहं बंबए रम्भ (ডৰ) आविद्व प्रक[आदिर्+भू] १ प्रकट होता । २ सन्पन्न होता । प्रातिहनद (स ४०) । व्यविद्वय रेखो आधियमूय (स ७१८) । आ वी देशो आ दि ⇒ ग्राविष् 'कादी ना जद गायस्ते (उत्तर १७ मुचार १७)। कम्म देशो ब्याबिकम्म (धाचा २, १४, ४)।

(Pi 2 % 3 2) i

भावीइ वि [आवीचि] निरुत्तर, मनिष्यप

'पन्मयमिक्ष्मानी' समित्रकोए सर्व म सूर्वेत । मणसमय मरमाणे जीयति बस्यो कहं मणह? (सूपा ६६१)। भरण न मिरण निराम शिरोप (भन १३ ब्राचीकम्म न [आविष्कर्मन्] १ प्रयत्ति । २ व्यक्तिमाचिः (ठा १ कम्प)। आ पीड सक [आ. + पीड ] १ पीड़ना। २ बबागा । माबीबद् (सरा) । आषीण न [आपीम] स्तन बन (मउड) : लायीक देवो आमेळ = मापीड (स १११) । लावी**ड के**ही लावीड । संह. लावीडियाण (धाचा २१ = १)। आयीज्ञण न [क्यापीडन] समूह, निषय (मउड)। **आबुअ र्रु [आबुक] नाटक की भाषा में** पिता बस (नाट)। क्षायुष्ण वि [क्षापूर्ण] पूर्व, मरपूर (दे २ ₹ **२)** । शाबुच पूँ दिं । मिनी-परि (मिम र=१)। आयुद्वि [आवृत] दकाहुमा (प्रतह≍ १२) । आबुदि भी [आबुदि ] माबरण (प्रक = ₹₹) ι बायूर देशो आपूर≖मा+पूरव्। वह आव्रेंस (परम ७६ ८)। क्वक आव्रेरिक माण (स ६व२)। धा**नु**रण न [आपूरण] पूर्त्ति (स ४३६) । श्रावृरिय रेको मार्जारम (पचम १४ १२) स ७७)। आ थञ एक [आ + बेद्यू] १ विनिध करना निवेदन करना। २ वतसाना। आद एक (मका)। आपेअ 🖞 [आपेग] १४८ दुव (छ १ **११ ७२)** i आबंडे देखो आवा । आयंक्तिम वि [भावेष्टित] श्रीतत है। हुमा (मा २=)। आपेड हे केना भागन हिंद, ५३४, आंबेद्रय ∫ पूता)। आ भोअ वि [आ पीठ] १ पीठ । २ शोवित आपेड वृ [आयप्र] + भनतः अन्तर्भाताः

नरता (ने ५ ००)।

आयेडण न [आवेष्टन] स्पर देशो (बस्ट नि ३ ४)। आवेदिय वि [आवेष्टित] १ वार्षे प्रोर हे बेफित (मग १६ ६ चप पू ६२७)। २ एक बार बेम्सि (ठा)। आवेषण न आवेषनी निभेदन मनी-धार का प्रकारत-करात (गतका दे ७ ४७) । आ वेदाम वि [दे] **१ वि**रोप सामकः । २ प्रकृत, वहा हुसा ( पर् )। जाबंस एक [आ + बंशम्] भूतानिष्ट क्ला। हरू आवसिकण (स १४)। कामस पूं[आवेश्व] १ बर्मिनिवेद्य । २ भोरा । ३ भूटपहा ४ प्रवेद्य (नाट) । काबेसण न [आवेशन] कृष्यवृह 'घावेसछ सम्मपनायु परिहमसानामु एक्या वासी (घाचा)। भाम रेबो अस्स = मक्र (प्राप्त २६)। भास शक [कास्] कैला। क्य- भवर्ग आसमापा व पालमुवाद दिसद (दस ४)। रित्र मासिचय जासइचय, भासइच् (पि १७ कम इस ६, १४)। कास प्रकारको १ सम मोदा (छाता १ १७)। २ देव-वितेष समिनी नन्नव का सनि-हाबक देन (मं)। ३ भ्रष्टिनी नशन (चंत्र २)। ४ मन चित्त (पएए) २)। क्लग्र कम्र 🖠 **िक्रणे ) १ एक मन्तर्शी**प । २ कक्षणा निवासी (ठा ४<sup>२</sup>)। गीव दू विशेष] एक प्रसिक राजा पहला प्रतिवामुदेव (पदम ६, १६६)। तर द [ैंतर] चचर (मार )। त्याम 4 [स्थापन्] प्रोन्हाचार्ये का अन्यात पुत्र (कुमा) । द्वास मूं ["ध्वश्च] विद्वादर वस ना एक राजा (रवम ६, ४९)। अस्म 🕻 बिर्मी देशी पूर्वोक्त सर्वे (प्रस ४,८२) । भर वि ["भर] धर्मी को नाएस करनेवाना (बीत) । "पुर न ["पुर] ननर-विरोध (६६)। पुरा पुराको "पुरा नगरी-विरोध (वस टा ९,६)। मिनाया सी [मिक्सिन] भनुष्टित्रम बीय-विशेष (मोच १६७)। सद्दा सदय १ भिर्दकी सप ना नरेन क्लोताला (ए।या १ १७)। "मिस 🖠 िंसिया एक वैश्वानात वार्यनिक को बहानियेर के किन नीतिकन ना क्रिय का और विश्वने

सामुज्येदिक पंज जनावा था (ठा ७) । सुद् दे["सुका] १ एक भन्तरीय । २ एसका निवासी (ठा४२)। सेद्द् र्ीमेथ] यड-विशेष (पत्रम ११ ४२)। **रह दे ैरण**े चोड़ा-नाड़ी (सादा १ १) । बार पूँ [<sup>\*</sup>बार] <del>बुड़-सवाद, बुड़ बढ़</del>ेमा (सुना २१४) । **बाह** भिया की [वाइनिका] नोड़े की सवारी बोड़े पर धवार होकर फिरना (विपा १ ६)। सेंघ दूरिसेनी १ मध्याल पार्चनाय के पिता(च्रन्न)। २ प वर्षे व≉वर्तीका पिता (सम ११२)। रिह् पू ["रोह] दुव-सवाद भूग-पहेंगा (से १२ १६)। आस पूंची आशा मोजन 'सामासाए पाय रायापं (भूम २ १)। द्यास पूँ [आस] क्षेपण पॅक्ना (विभे २७११) । क्षास न [कास्य] धुव मुँ इ (यामा १ व)। आसइ वि आमियमी माभव-विता 'बेमा सद्द्वी वाना सादेनी सामगैनिन्द (वर्गेनि exe) 1 धार्यकतक [आ + शब्द्] १ प्रेया करना धरम करना। २ मक मनभेत होना। धार्षकड् (स १ ) । यह आसीर्द्धन आसी-कमान (नाट मल्द १)। व्यासंद्र्य क्ये [भारतका] राष्ट्रा भव नहम धेत्रव (तुर १ १११ महास्मात)। भार्तक वि भाराक्रिम् । मनदाकले भारता(बा२ ६)। आर्सिक्य रि [बाराङ्कित] र संस्थित सरा-मिन । २ चैमाबिन (मङ्गा)। भार्सकित् वि [बाराहितः] कर्यका करने बला बहुमी (कुर १४ १७३ वा २ ६)। क्सासंग पुंचि वाध-गृह राज्या-मृह (दे १ व्यसिंग दें [भासङ्ग] १ याविक वीक्ष्यंतः र चंदन्य । (यहरू) । ३ रोद (प्राचा) । बासेगिवि [बासदिन्] १ यादचः। २ धंकनी संतीपी (बडर)। हो. थी (गढर)। बासंप एक [सं+ भाषण्] १ नंबादना करता। २ घष्पवद्याम करता। ३ दिवर करता निवन करना । आसंबद् (ने ११,६)। पर आसंपेत (हे १३ ६२)।

आर्सप पूंचि र भका, विस्वास (पुपा ४१६ वह )। २ सम्मनसम् परिज्ञाम (से ११६)। ६ धारीस ४७६१ चल्ल (मन्द्र) । आसंभाकी दिरिक्का बास्या (देश ६६)। र माधकि (मै २)। भार्थिक वि [दे] १ प्रवृत्तितः । २ सर बारित (से १ ६६)। १ इन्नादित (दूमाः स १६७)। आसंक्रिय विकासकी पीचे तया ह्या (पुर व व छत्तर ११)। मार्सद्य न [आसम्बक्त] शासन-विशेष (बाचाः महा)। भास्त्य पुन [आसन्दरू] बाहत-विरोप संब (**प्र** १ १) । भासंदाण न [भासन्दान] प्रदर्ममन धन रोब रकावर (क्उड) । वासंदिका 🛍 [वासन्दिका] चोटा मच (सूम १ ४ २ १४ मा ६६७)। बासंदी 🖚 [झासन्दी] बाएन-विरेद, मध (सूम १ का बस ६ ६४)। भार्सभी भी [अभागन्त्री] वनस्परिनंबसेप (मुना १२४)। भासंबर वि [आशास्त्रर] १ विवस्थर, सन (प्राप्ता)। २ वैत का एक मुक्य वेद । व **ज्यका धनुमायी (सै** २)। भारतस्य रि [बर्सरायित] एतम-पौर्व (मुम २ २ १६)। जासंस्य न [आइंसन] रच्या धरिनाय (मास ११)। भार्ससाध्ये [भार्शसा] प्रक्रिया रुष्ट (माना) । आसंसि वि [आर्थोसिम्] विकारी रच्या क्लोकमा (श्रामा)। आसंसित्र वि [बारांसित] महिनकित (वा \*4) : भासक्तपर्वृ [ब्रे] प्रशस्त रक्षि-विशेष स्पैत्र (t : 40) t भ्यसम् देवो जास = चर्च (छादा १ १२)। आसगस्त्रिम वि वि प्रात्मन 'ग्रावर्गनयी तिमकम्मर्गराहरू((४ ४ ४)। मासगन्त्रिम वि [दे] बात 'एवं वितयन्त्रिक निवर्णेय कवियो कम्मर्सवाची भावपतिमें

बोवियोवं (स ६७६) ।

धासक म [धासाच] प्राप्त करके (विसे . ) ! आसड पूं [आसड] विक्रम की वेय्हरी राजासी का स्वनाम-क्यात एक जैन प्रस्वकार (विवे 1 (1889 आसण न [आसन] १ विश्वपर बैठा नाता डेवड चौकी मादि (मान ४)। २ स्पान, बक्द (इत ११)। ३ राज्या (भाषा)। ४ बैठमा चन्देशन (ठा ६)। आसजिय वि [आसनिव] प्राप्तन पर वैठाया इया (स २६२) । आसण्जन आसमी १ समीप पासः २ वि समीपस्य (गतः) । देखो आसमः। आसच्च वि (आसच्चे) बीन उत्पर (पहा प्रामुब्ध)। आसत्त वि [आमक्त] १ मीचे नवा ह्या (राम १४)। २ पूँ नर्नुसकका एक भेट बीर्मेपात होने पर भी की का धार्मियन कर उसके करहादि संगों में बदकर सोनेवासा नपुंचक (पन १ १)। आसचि भी (आसचि ) मनिष्य वाहीनता कासस्य पुं [अश्वरय] प्रेपन का पेड़ (परम X4 68) 1 आसस्य वि [आन्यस्त] १ माघस्यन-प्राप्त स्वस्य । २ विमान्त (शामा ११ सम १६२ यउम ७ १व रे ७ २८)। आसम देवो भाराज्य (दुमा; परः) । पश्चि वि वित्तिन् निम्मेक में श्लोकाला (सूपा 4×1) ( आसम र् [आध्रम] तापव पादि का निवास स्यान दीर्थ-स्यान (पर्स्ड १ ३ मीप)। २ 🚌-चर्च पार्टस्ट्य, बातप्रस्य चीर मेश्य (चंत्र्यास) वे बार प्रकार की धवरवा (पंचा १ )। आसमपय न [आधमपय] तत्त्वों के ग्रायम से उपस्थित स्थान (स्ता १ १७)। आसमि वि [आर्मिम्] पापम में एले-वाला ऋषि मुनि वमैछ् (पंचव १)। आसय पर [ भास् ] देवता । प्रास्तरीत (बीप ३)। आसय सक [आ+भी] १ माध्य करता

प्रवसम्बन् करना । २ प्रष्टण करना । भासमञ् (इप्प) । बहुः, स्नासर्यंत (विसे १२२) । बासय प जिल्हा बानेवाचा (पाना)। आसय पू [आभय] धाषार, धनवम्बन (सर ७११ मूर १६ ६६)। आसय व [आशय] १ मन वित्त इदय (मुर १६, ६६, पाम)। २ म्यीमप्राय (सूम १ ब्रासच न वि निषद, समीप (वे १ ६४)। व्यासरिक वि वि विषुद्ध-मानत सामने मामा ह्या (वे १ ६२)। आसम्बद्ध [ भा + स्त ] भीरे-भीरे करना टपक्रमा । बद्ध- सासाममाज (माना) । आसव सक [आ + स्र\_] माना भासविद बेल कम्में परिसामेक्याती स विवसीमी भावा सबो' (हब्य २१) । आसम् पू [आभव] मुझ्य ब्रिज्ञ, देखो 'सया सर्घ (मग १ ६)। आसन् पूर्विसन् । मच राज् (उप ७२८ री)। आसप पूं [आभय] १ कर्मों का प्रदेश-द्राप, विससे कर्मकल्य होता है वह हिंसा सादि (ठा २,१)।२ विभीता, प्रस्थवनको सुनने वला (बच १) । सक्कि वि सिक्तिया हिसादि में प्रासक (प्राचा)। आसमय न वि । मास-गृष्क, राज्या-बर (वे १ मासपादिया वो [अथवादिका] मध-मेग (धर्मेवि ४)। आसाम सर्व [ आ + सादय्] सर्व बरना भूता। मामाप्त्रा। सहः, आसायमाज (पात्रा २ १ २ १)। आसस प्रकृ [ आ + द्यस् ] बाबायन नेना विभाग नेता। मानसर, मानसम् (पि ८८ 458) I भाससत्र न [आशसन] विनास, दिसा (पएइ १३)। भाससा 🕏 [मार्शसा] प्रतिवादा 'बेर्नि हु परिमार्ण संबुद्ध मानवा हाई (विसे २६११)। मामसिय वि [भाषास्त] पाषासन-प्राप्त (म आसा की [आशा] १ भारत उम्मीद (चीप) से १ २६ सुर ३ १७७)। २ विद्या (इस

६४८ टी) । १ एतर स्वक पर बस्नेवाती एक दिस्कुमारी देवी-विशेष (छा ८)। धासाज एक भा + स्वाद् ी स्वाद सेना चवना बाना। भारतायेति (मन)। वह भासाभर्जत, आसार्पत, भारायमाण (माट से १ ४३ छामा १ १)। आसाज सक िया + सादय विशास करता। बक् ब्यामार्थस (से ३ ४%)। आसाअस्ट जा+शास्य मिक्सकरना क्शमान करना। मासाएवा (महानि १)। बहु आकार्यंत, आसापमाण (बा 👣 ठा ¥) I आसाभ व आम्बाद । १ स्वाद, रस (वा ११६ से ६ ६० सर **७६**० टी) । २ तृप्ति (से १२६)। आसाथ पु [आऽस्त्रात्] स्वाद का वितकुत ममाव (तंतु ४२)। बासाञ देवी बासय न बायम (तंबू ४३) । ध्वासाम पूर्विमासाङ्की प्राप्ति (से ६ ६०)। कामाइज वि [भारावित] १ ववदाव विरक्तत (पुण्ठ ४६४)। २ न घतता विर स्कार (विवे ६२)। आसाइअ वि [भास्पावित] पता हमा बीका बामा हुमा (से १ ४६)। भासाइअ वि [आसादित] प्राप्त शब्द (हेका ३ म(४)। बासाड र् [भाषाड] १ धामाइ मास (सम ६५)।२ एक निवन वो धव्यक्तिक मत्रका जलारक मा (ठा ७)। सूद्र पुँ ["सृति] एक प्रसिद्ध बैन मुनि (कुम्मा २६)। मासाडा की [आपाडा] मनन-विशेष (ठा आमार्फी भी [आयार्फ] दापाइ मान की पृश्चिमा (मृत्र)। आमाडी भी [बागड ] र प्रापाद मास की पुणिमा । २ घापाइ मास की धमादस (मुख व्यासाद्चु वि [आस्पाद्यित्] धास्तादत नरनेवाना (ठा ७)। थासामर पुं [मारामर] चतन् नापुरेन बीर बलकेर के पूर्वमधीय वर्गपुर का नाम (सम (\$\$\$) t

आसायण न [आस्वाइन] स्वाद नेता चवना (पत्तन २२ २७) सामा १ ६ मुपा १ ७)। धासामण न [आसावन] १ नीमे देखी (विके ६६) । २ सन्त्वातुकन्ति कपास का नेदन (विसे)। बासायया 🛍 [बाशावना] विपर्वेत वर्तन क्तमान, दिस्कार (१६)। आसार एक 🛘 भा + सारय् बिदुस्स्य करना बीएन को क्षेत्र करना। संद्वर बासायेक्स (चिरि ७६४)। व्यासार पू [आसार] ममीन प्या नीया की क्षेत्र करना (दूप १३१) । आसार पुंबि।सार] देन से वानी ना बरसना (वे १ २ जुला ६ ६)। आसारिय वि शासारित है है विया हुआ, 'मासारिया कुमारेख शीला' (कुप्र १३१) । बासांख्यि पुंची [बाराखिक] र वर्षे री एक वार्ति (परहर १) । २ और निरूपा मिलेप (पडम १२ ६४: ६२ ६)। भासावद्धी की [आशापद्धी] एक वयरी (ती 2X)1 जासाबि वि [ बास्नाबिस् ] भरतेनामा प्रिकार (सूचार ११)। वासास सङ [वा + शास् ] यादा करना प्रामीय रक्षमा । प्राधामाँव (वेद्यो १ ) । भासास पर [भा + भासन्] प्रात्तासन का उल्लान रना। याससह (बचा १६)। नक्र भासासव आमासित (**से ११ ०७** मा १२)। बासास र् [बाद्यास] र मात्यासन सान्त्रना (क्षोत १) कुमा १) इस १६२)। २ किमाम (अ ४ ६) । ६ हीप-विरोप (माना) । भासासञ्ज 🛊 [भाषासक] क्याम-स्थान प्रत्य का प्रेश सर्वे परिच्छेत प्रध्यान (हे ३ ४६) । २ वि साधान निवासा 'नार्ज दाशासर्व सुमित्तुव्य' (पुष्प १)।

भासासम् र् [भारतस्क] नीवक-नामक रूप

षासासय न [बाधासन] १ सन्त्रता,

बिनाता (पुर र, ११ । १२ १४ का इ

१७)। र बहीं के देल-विशेष (कार ६)।

₹₹) (

(tîn) ı

भासासण रू [बाचासन] १ एक महत्वह [ (नुकर २)। २ वि याद्यामन-वाता (कुम tt ) i आसासिभ नि [भाषासित] नितनो मापा-सन दिया थया शो बहु (से ११ १९६) सुद ४ २८)। आसि सक [आ + भि] बाधव करना। र्षेट्ट मासिञ्ज (पारा ६६)। धासि देतो अस = बस् : आसि वि [आशिम्] क्लेक्सा धीवक (सहि १६)। आसिम वि शिष्टिकी यस का रिवन 'दुहुवियको साधेदमेद र्यमानिकं विर्ति' (वय ४)। आसिअ वि [आफ़ित] विनाया हुमा मोबित आसिअ वि [भाषित] भाषत-प्राप्त (कप पुर व १७ से ६ ६% विसे ७११)। भासिभ नि [आसिव] १ जानिष्ट, बैठा हुमा (सें प ६६)। २ पदाह्मा ल्वित (परुम 42 44) I मासिल रेवी आसिच (ग्रामा १ १ कपा पीप)। भासिभभ वि [दे] बोहे का चौह-निवित (दे १६७) मूत्र क पूर्णी तू गा २०१)। भासिमा ही [भासिका] बैठना जावेरन (से व ६६) । भासिमा देवो भासी = माहिन् ( वर् )। भासिम सक [का+सिम्] सीवनाः कर्म मासिक्नीत (वेदय १११) । व्यक्तिय वि [माशिन्] बलैवला बोक्स में बासिक्स्तं (पदम २६ ३७)। भासिष 🖠 [काष्मित] पारितन मतः (शाय) । भासिक नि [भासिक] १ नौड़ा क्रिक (स्प ८, ६६)। २ क्रिकः धीचा हुमा (भावम)। ६ पुंतपुंदक राएक मेद (पूफ्त १२)। भासिचिया वर्ष [वे] बाद-विशेष विद्या-हाई माधितियांनी भीचा वर्ज कार्वेति (सूज ₹७)। भासियाग्रय वैद्यो भासीगाय (सूच १ १४

बासिख र् [आसिस] एक महर्षि (कूप र 1 7 1): भासिस्ट्रित [आरिस्ट्रि] मानिवित (नाट)। बासिडिस एक [ मा + रिसप् ] मानियन क्ष्मा। १३- भाग्नेदपुत्रं भाग्नेदपु (१ २ १६४)। धासिसा रेजो आसी = धारित् (नहाः पनि (11) i आसी रेबो अस् = मस्। भासी की [भारी] बादा (विने)। विस र्पु (वय देशकृतिसासंप, "दासी स≡ि कुरुविमानीविश्वा पूर्णयाच्या (बीच १ दी) प्राप्तु १२ )। ३ पर्वत-विशेष का एक किया (ठा२ ३) । ३ तिबह् सौर सनुबह करने में सबर्भ, सब्धि किरोय को प्राप्त (सप ८, १)। भासी भी [ भारिए] बासीबीर (दुर र १६८)। वदणान ["स्पन] सस्टीर्वार (नुपा ४१)। बाय दुं विश्व प्राप्तिकंट (बुर १३ ४३) सुपा १७४) । ब्यासीण वि [आसीन] बैठा ह्या 'प्रमिष्टण घाळीला <del>तमी</del> (बनु)। भासीयम दु हि दरनी कपड़ा सैनेवाना (दे १ ६१)। षाधीसा वेबो भासी = प्राक्टिय् ( वर् )। आसू पूर्व [अध्] धांतू (सन्नि १७)। भास । य [भारा] सोच तूरत मन्त्र (तार्व भारो रे हा स्वर नान)। बार रे किरी १ विसा, मारना। २ मरने का कारल निकु चिन्न वनैद्य (माभ)। ३ शील वपस्चितः भावुकारे गरछे अन्तिकास्य व वीविधातार् (घाग६)। पञ्चावि ["सङ्की १४६०≠-कुद्धि । २ विष्य-जाना केनक-बानी (ग्रूप रै U (Y) भासुर वि [असूर] मनुर-संकली (अ.४ **४ पाउ ११)**। ब्यासुरच न [ब्यासुरस्व]क्षेत्रियन दुस्सा (वस < 4X) | वासुरिय र् [बासुरिक] १ बनुर, बहुर वर्ग से ब्ल्पस (राज)। २ जि समुर-संजना (पूर्व २ १ २७)।

भा<u>स</u>रीय नि [ शसरीय ] समुर-चंदाची

v ( ) 1

2 () 1

ર દ) ા

₹ E ₹X) 1

'चानुरायं विसे शासा रण्यीत बरमातमे (उतः ।

आसुरत्त वि [आशुरुष्त] १ क्षेत्र हुद्ध । २

आमुरत्त वि [आमुरुक्त] पवि दुवित (खाव

आमुरुच रि [आगुरुय] पवि-पुरिव (रिपा

आमृणि व [आशुनिम] १ वनिष्ठ वताने-

बानी नुसुद्धः २ रहायकश्चिमा (मूघ १ ६)।

आमृगा ही [भाजूना] म्यापा प्ररामा (भूम

पवि दुरिव (गाया १ १)।

आमृषिय दि [आशुनित] बोहा स्टूप रिया हमा (पन्ह १३)। "रामृष न [द] बीरवाबिटरः मनीटी (रिड x x) i आमअवय वि [आसचनह] विश्वते रेपने मै मन को तूमि न होती हो बहु (दे १ ७२)। आस्ययत् भा+संयुरिकेवनाः २ पातना । ३ धाषरमा । घानवर् (यहा ६७) । आगपयन[आगपन] १ परियतन संरक्षण (मुरा ४६८) । २ मावरण (४ २०१) । ३ मपुन, रतियेथोन (समग्रू १ पर १७ )। आसपग्या , में [आसपना] १ वरियान आसपमा } (नूप १ १४) । २ सिर्धित बाबरन्तु (पर)। १ बस्याम् (पाषु)। ४ सिला ना एक भद्र (यमं १)। आमया भी [आसवा] कार रेगो (नुग 2 ) 1 आमित्र रि (आसिवित्र) १ वितालित । २ मध्यतः (माना) । ३ मानरित महितः (# ttel: धामात्र वृ [ प्रधुर् ] याधित मात्र (स्वयु ११)। भागाभ र [आग्रोड] मरोप दूव संबन्ध (433) ( मासादवाको जिल्लामेविशा चेल्प विदेश धामीरामधीन बान बुलिने बुन्देश मैंने (नुता १६७) : ञासाइ को [आधदुर्जा] सन्दरहुन्या

(हर)।

भासोकः } श्री [आश्रमुखा] १ मारितमः आसीया | माम श्री पूर्णिमा । २ वादिनः। माम भी समाप्तम (मूज १ ७६)। आमोर्पता की [आरोगिराग्वा] मध्यन प्राम की एक पूर्व्यं स (ठा ७)। आमोत्य र् [अश्वाय] पीरन का वेड़ (पएए १ का २३६)। भाद यह [ मृम् ] रहता । मूरा—माईनू, धाह (रप्त) । आ ६ मर [पार ए ] पाइना रण्या करना। मार्ग् ( हे ४ ११२ पर्) । यह आहंत (रमा) । आर्ट्ड देगो आर्यंड्ड (हम्मीर ११) । आर्ट्न देनो आह्य । आदम म दि । १ मन्यमा । २ जिल्लाम् (बर १) । मात्र हुं ["भाष] शाहावित्तता (पर १ ७ ही)। आहच न [ब्] १ मप्पर्यं, बहुत चित्रस्य (वे १ ६२)। २ म शीम जन्दा (बादा)। देवसचित्रभी (भग६१)। ४ छर न्दित होकर (याचा)। १ ध्यान्या कर (नृष २१)। ६ स्मिक वर (धावा)। ७ छीन दर (दमा)। आद्दा धी [आद्द्या] मगर, वापात (भा आहरू न [यु] रेगो मानद्यु= रे (पा ७३ आहर्द श्रो [व] प्रोतिस पर्हेचिय स्त्री बत त्रिमु न विस्ट्रया सर्व बाह्युहुदुहुताहि र्व (१३ ७१)। भाइरद्व देनी आहर = मा + हु । भाइट (भाइन) १ धीन नियाह्या । २ शिवे रिवाहमा (गुरा ६४३) । ३ रामने नारा ह्या उपयन्ति (ग १८)। आश्व न दि ] शेलार, नूरत शब ( वर )। आह्न नर [भा+ ६न] प्रपन्त करन बारना। बाह्णावि (ति ४६६)। संप्र भाइनिज भाइनिजा आइविना (नि रहर रबर १ र)। टि आइले (fr আহন হৰ [সা+বে] জাবাঃ হা भाट [१६] निष (धर १ ११)। आह्यान महिनने परच (स १६६)।

भाइणाविय वि [अत्पातित] मार्व १ परा ह्या (म ४२७)। आहत्तद्वाय न [यायातभय] १ वराजीयर पत्र पान्तरिकता । २ तथ्य-मार्ग--- सम्यकात मारि। १ 'सुप्रकाह्न' सूत्र का तैय्दरी मध्ययन (तृष १ १३ हि १३४)। आहम्म नर आ + इन्म् दाना यापमन भारता । बाहम्मा (हे ४ १६२) । आद्रम्बिअ रि अिथार्थि ही प्यर्मे-मेवपी (दम = ११)। आर्शमय रि [अपार्मिक] मपर्मी पानी (नम ११)। आ इय रि [आ इन] यापान बान प्ररित (बन्म)। आहय वि [ माद्दर] १ याह्य, गोबा शुपा । २ धीना हमा (बर २११ टी)। आहर सर (आ + ह्र] १ दौनना भीव सना। २ कोरीकरना। ३ गाना भोजन वरना। मारद (रि १७३)। इन्ह आहरिण्डमाग (ग ३)। मेर आहल्द (गि२०१)। देर भागरित्तम (नंद्र) । आहर मर [आ + हा] माता। याचिह (मूच १ ४ २ ४) मान्देमी (मूच २ २ आहरण के [अहरग] १ उक्तरण रहान (मीव १३६ ता २६३ १११)। २ माहार, हुताना (गुरा ११७)। ३ यम्म्य स्टैनार। ४ स्वास्थापन (याचा) । ५ धानपन नाना (गुघ२२)। आदरम पुन (आभरम) मुग्छ बर्गनारः <sup>4</sup>रह धारगणा बर्र (धा १२ वर्णु) । आहरणाधी दिविष्टं नार वा नरनर रक्द (धीव २)। भारतिगयति [भावतिति तिगम्त मन्यत भागितिमी हुमी सेमील तिमित्रमी (ध रम) १ भारद (पर) मर [आ + चस् ] हिनन्छ, बाना 'नरमा दर्शती सामिद श्रेनद थील (म्ब) । माइदा भी [माइस्था] विदायर चन्न की एवं बन्दा (रहप १३ ।३)। आद्व यद [भा + द्व] दुनाता । यद्वत्

(बर्मनि व) । एंडर, साहवित्रं, आहरिकण (वर्गीव ६० सम्मत्त २१७)। बाह्य पूँ [भाह्य] युव नहाई (शामा सुपा २८० पास ४१)। श्राह्मण ) न [ब्राह्मान] १ दुवाना । श्राह्मक्या र ननकारना (मा १२) गुपा **१** पळन ६१ ६ ; ख ६४)। साहविभ रही आहुछ = प्राप्टुट (ही Y)। आहम्म वि [आसास्य] सडील धेनारि (पेका ११ के उपव १ ४)। आह्म्बर्धा हो [आह्मनी] प्रचा-विशेष (सप २ २)। बाह्य एक [भा+क्या] कहना। कर्म माद्विकः (पि १४१) माद्विकति (कः।)। भाषा नक आि + भाी स्थलन कला। कर्मधाहिकार (सुम २ ३) । द्वेड आ देखें (सूष १ १) । संक्र-आदाम (उट १) । भादाकी भाभा किन्ति तेन (क्यू)। वाहा की भाषा रियानम प्राचार (विड)। र धापु के निमित्त साहार के लिए मन प्रशिवान (सिंड) । क्रद्ध वि विकृत देशाना-कर्प-दीव से इन्ह (स १००)। इसमान िक्रोन र साच के लिए बाहार पकाना। २ साबु के भिमित्त प्रकाश हमा औवन जो कैन साक्ष्मों के नियं नियिद्ध है (क्या २ ६ हा । ४)। बस्मिय वि विभिन्न देखो पूर्वोक्त धर्न (सन्) । स्राद्वाण न [स्राधान] १ स्वलन । २ स्वल्, मानमः 'सम्बद्धणाद्वार्खं' (बाद ४) स्वर २६)। भाहाण ∤न [भास्पान ≰] र पछि बाह्यस्य विकर्णः २ किन्स्न्ते व्हानत बोक्सेटि (सुर २ १६) इस ३२० टी)। आदातदिय विशिवातध्यी स्थ्य वस्त-विक (सूप २ १/२७) । वेबो आइत्तद्दीव । आहार एक जा + हारप्] बाना मोलन करना भ्रष्टाग करना। महारह, महारेति (मर) । नक काहारेमाण (कप्प) । मक भाहारिक्जस्समाण (भन) । हेन- माहा-

यस्य (ठा३)। बाहार र् [बाहार] १ कुछन केरन (स्कन ६ । प्राप्तु १ ४) । २ व्याना मध्यक्त (पव) । ६ न केबो आरगरग (पटन १ २ ३)।

पाइअसरमहण्डमा पार्क्त की विर्योति प्रकणकार नी बस भीर रह के का म बरतने भी रुक्ति (मन ४)। पोसह दं विषेपभी वट विशेष विसमें माहार ना सर्वना वा माशिक त्याप क्या काता है (माप ६)। सण्या भी िसंज्ञा पद्धार करने की इच्छा (स्र ४)। काहार दे [आधार] १ मामन मनिररण (सूपा १२ व संवा १ ६)। २ बाकास (भव २ २)। १ धनपारण याद रतना (पुण्ड 125) I भाषारग ग मिहार े १ रुपैर फिरेश विसको चौक्द-पूर्वी केश्लक्षानी के पास चाने कै बिए वनाता है (टा२ २)। २ विकोषन करनेवासा (ठा २ २) । १ माहारक-शरीर बामा (विसे १७१)। ४ श्राहारक रुधैर कराब करने का बिसे सामर्घ्य हो वह (कृष्य)। जुगल न विमान महारक शरीर भीर उद्य≄ भौगेपा*ञ्च (कम* २ १ २४)। आस न ["नामम] प्राहारक राधेर का हेनु मूत कर्मे (कम्म १ ६६)। दगन विकित देशा अग्रास (काग १ व व १७)। भाहारण वि [भाषारण] १ वाद्या करने-भाना। २ भागार-मृत (छे १ ४)। भादारण वि [आदारण] पाक्लंक (से ६, X ) i माद्दारय रेको आदारग (ठा १ मन्द्र पर्न्स र≈ं ठा ६, १ वर्ग १ ३७)। जाशासक्रिया को [बाबासक्रिक्ता] क्वा-ब्देह क्देहलुक्य (क्स्)। भाहारि वि [बाहारिम्] प्रकार-इर्ता (घर्ष्ट १११)। आहारिम वि शिहारी १ बले बोग्य। २ थन के साव बाम्स जा सके ऐसा प्रोपन कुर्य विदेव (शिव ६२)। जाहारिम वि [जाहार्ये] प्राहार के योग्य, बले बारक (निष्कृ ११)। आ द्वारिय दि [बादारित] १ दिएने मञ्जूर किमा हो यह 'एस्स कंडपेक्स रहको त रिचय भाहारेचय (क्य)। इ. ब्राहारे फड़ीब पा**श्राक्षेक्ड मह**ारिक्स समाग्रास्त (द्याना १ ११)। २ म्मील कुछ (मन)। बाह्यका 🕏 [बाभावना] धपरिमण्ना म्सन्त व्यवस्था (स्वतः)।

( R R R R R P) 1 १२ टो) 1 बान्यानी (मे १ ११)। आहिआई औ [आभिकाती] हुबीनता (क २८१)। आहिंडिव (महा स १६३)। आहिंडय परिमागण करनेवाना (बीव ११४। ११८ भीत)। ર દઇ)ા लाहिकाइ ध्यो धाहिकाइ (महा)। आहिकाई देवो आहिआई (गा २४)। बाहितुंडिय पूं [आहितुन्डिक] गार्यस् स्पर्रिया संपेत्र (सूत १११)। चरितं चं (बीव १ दी)। माहिद्य नि [वे] १ ध्वा क्लाक्या। १ वनित वनाइमा ( यह )। साहिएस व [आधिपस्य] मुक्तियस्य वेरून (इस १ वर दी)। भादिय वि [साहित] १ स्थापित निवेरिय (स Y)। २ सम्पूर्ण दिलकर (सूच) । ३ विरम्ब

141): आहारिक वि [आधारित] रौहा हमा (सिरि ७६२)। आहाबिर वि [आधाबितः] बौक्रेसमा

आहायणा धौ [आभावना] <del>खे</del>रप (पिंड

(धए)। आहास देवी बाभाम = मा + भाष्। चंह-धाहासिवि (मप) (भवि)। भाइरह स [भाइरह] प्राथर्व-दोलक सम्बद

आहि पूंडी आधि ननकी पीड़ा (कस्य भादिभाद जी [आसिकादि] हुनीन्ता

साहिंद्र सक क्या + द्विण्ड**े १** समन करना भाना। २ परिपम करना। ३ मूनमा परिभ्रमण करना । वहः आहिंद्रेत आहिं देमाण (स्प २६४ टी) शामा ११) । संप्र आहिंदग ) वि [आहिण्डक] चत्रनेनावा,

धाहिक न [धाधिक्य] धक्किता (विदे

आ दिल्य दि [दे] १ प्रतित यतः २ प्रतित कुछ (दे१ ७६) जीव ३ टी)। ३ सनुब मनकाना ह्या विशे ७६। से १३ वर्ग पाप) पाहिलां स्रिपाचां व गाउनां गैस-

₹ **१**) ।

भिमित्त (पास)। स्मि पुं[ीसिन] धरिन-होबीय बाह्यस (पतम ११, १)। खाहिय वि जिहित र स्वाप्त 'पविरेखा विद्यो एस असीयरनाहिला' (हुप ४९)। २ অধির ভংগাইর। १ মধির মন্তিরি-মাত্র (सूच १२२२)। ४ सर्वेचा हितकारी (मूम १२२-२७)। व्यक्तिय वि [भासपात] कहा ह्या प्रति पाकित उक्त (पएए) १३ मुझ ११) । साहियार पुं [अधि-धर] विकार, सता हक (पदम १४ ८)। आह्रिमत्त देवो आह्रिपत्त (काम)। आहिसारिम वि [बिमिसारित] नायक-बुद्धि संबद्दीत पविश्वक्ति से स्वीष्टत (से १३ १७)। खादीर पुंजािदीर र देश-विशेष (कृप्प)। २ शह कावि विशेष संशीर (मूम ११)। ३ इस नाम ना एक राजा (पदम १८ ६४)। की री-महीरिन (मुपा १६)। श्राहुत्तरु आि + हवे दुत्ताना । कृषाहु -पिज (बीप) । आह आ + ही बान करना त्यान करना। **इ आहुजिज्ञ (सामा १ १)।** आहुम आहु धक्ता या (नट)। बाहु पूँ वि देक उल्सू (देश ६१)। साहुदेवो आह्=वव । बाहर वि आहोत् । बाता स्यापी (यापा काहुइ की [आहुति] १ इवन होम (मरुड)। २ होन का पदार्थ वित (स १७)। भा**दुंदुर** १५ दि] बासक बचा (दे र आहंद्रह 🤇 ६६)। आहर न वि १ सीस्कार, मुख्य समय का शब्द। २ पछित विक्रम, वेचना (दे१ ७४)। धाह्रुड भक् दि ] गिरमा । घाहुबह (दे १ 4E) 1 माहुडिअ दि दि निपतित गिय हुमा (दे \$ 46)1 आहणसरुधा∔ मुक्रियाता दिलाता। श्रवक्त आहुणिक्यमाण (खावा १ १)। लाहुजिय वि लाभुनिक र भावकत का मधीन । २ पुंग्रह-विरोप (ठा२,६)। आहुक्त न दि अभिमुखी सम्प्रक सामने 'कुमरावि पद्दाविद्यो इयाहर्स' (महाः मर्वि) । आहुअ वि [आहुत] बुनाया हुमा (पाध) । आहुअ र् [आहुक] चिराय-विरोध (६६) । बाहुम दि [आमृत] चलप्र वात भारूपी से कम्मो (वसू)। काइंड रेको काहा = भा + था। आह्य । पुन [कारोट क] तिकार, **छाहेदग**} मृगमा (मुपा ११७० स १७) आहेडय<sup>)</sup> रे)। बाहेडिय वि [आलेटिक] मृगया-सम्बन्धी 'बाह्रेडियमस्योग्र' (सम्मत्त २२१)।

बच्च के प्रवेश होते पर जो जिमाने का कराब किया बाता है वह (बाबा २ १ ४)। आहेय कि [आभेय] १ स्वय्य । २ प्रापित (विसे १२४)। भाहेर देखो साहीर (विते १४१४)। आहेवब न [आमिपस्य] नेतृत्व मुखियापन (सम ८६)। आइयण न [आक्तेपज] १ सकोप । २ कॉम ज्यम करना (परह १ २) ौ आहोअ देवो आभोग (धे १ ४८) ६ ६ यायदः पढड)। आहोअ क्लो आमोय=मा+मोबप्। संक लाहोइकण (स ११)। आहोइअ कि [आमोगित] शत, रट (स Y=X) 1 भाइरेड्ज वि [आभोगिक] एपनेग ही विसका प्रयोजन हो वह, उपयोग-प्रवान (इप) । आहोड सरु विदय विदय करना विका आहोबद (हे ४ २७) **।** आहोरण [आधोरण ] इस्टियन महानत (पापाः स ३६६)। आहोहि ) वि [आयोगधिक] यववि आहोहिय र्रे ज्ञानी का एक मेथ, नियत क्षेत्र तो मनविज्ञान से देवतेनासा (भगः सम

रम पाइअसङ्मह्ण्याचे आवारास्महर्थकान्त्री विदयो तर्रमी समतो ।

आहेण न विशेषिकात करके बर

## 중

इ पुंडि । १ प्राहत वर्णमाला का तृतीय स्वर वर्ण (सामा) । २-३ वाल्याल द्वार सीर पाइ-पूर्त में प्रपुक्त किया बाता सम्यव (कम्म है २ ११% पड्डे) इ रेको इइ (क्सा) ।

इ छक [इ] १ बाता बनन करता। २ बातना। एइ. ऐति (दुना)। बहुः ऐत (दुना)। छेट इवा (मावा)। हेट्ट इचप, एतार (कप्ट कस)। इसह्य देवो इसरहा (साइ ६७)। इइ. म. [इति ] इत सभी का नुषक सम्पक्ष-१ तमासि (धाषा) । २ सबीव इर (सिंग) ६ मान परिमास (पक करे)। ४ निवर[नि २ १२) । १ हेतु, कास्त्र (स्व १२) क्षेत्र (स्व १२) इस सम्बंद सम्पन्न (एक १२) क्षेत्र (से

**44**)1

₹₹ कृत्रते स [ इत्तस् ] १ इत्तते, इस काएए (पि १७४) । २ इस तरङ (सुपा ११४) । १ इस (नोक) में (विमे २६८२)। इओक म [इतमा] प्रसंतत्त्वर-मूचक धम्पय (मा२६)। इंसिजिया की है। इक्किनिक्रों निन्दा महाँ (सूच१२)। इंकियी की दि इक्किनी] स्मर देखों (पूर्व **१** २) । इंगार हे केन्ने अंगार (ति १ २; वी ६) इंगास र्रमा र [स्प्रीत ] बीयता पादि ज्ञान करने का धीर बेक्ने का म्बापार (पीत्र)। सगक्रिया वर्षे विशक-टिक्स । भौगोठी, भाव रचने का बतन (मन)। इंगारबाद पुन [अज्ञारवाद] पाया, सिट्टी के भाव पद्माने कास्वान (सावार, ११)। इंगास दि [आहार] प्रहार-पंतर्या (यस X) i श्वेगासम देवो अंगारम (छ २, ३) । इंगासम् देवी इंगासग (मुन्त्र २ ) । इंगाधी तो चि देन का दुक्का नंबेचे (दे १ ७१ः पाष) । इंगासी की [आहारी] वेको इंगास प्रम्म (मा २२)। र्थिभान [रक्कित] इकारा संदेत समिन्नाय के सनुत्प वेशु (पाय) । उस ज्या ज्या प्रमुदि [क] इतारे से समक्तियाना (काअ है २ ६: शि२७६)। सर्**ज त**िसरम्] मध्स विरोप (पंचा) । र्णिममाणुज रेखे इगिभव्य (प्राक्त १) । इंगिया ही [इद्विनी] मरहा-विशेष अनदान क्रिया-निरोध (सम ३३) । इंगुअ न [इजू र] रंदुचे दुव ना कत (दुमा: पत्रम ४१ है)। न्मुई , यो [इजूबी] ब्रान्विधेय इसके इंगुनी | रम तैसमय होते हैं, इसरा इसरा नान प्रया-विदेशिया भी है, स्वीकि इसके दैन के व्रत्य बहुत शीम मन्द्रे होते हैं (माना समि

इंपिज नि [वे] स्वत, गुंबा हुया (दे १ व.)।

(जर रेगो किम्बर (ने

इंद केडी ए = धा+इ ।

बूंद् दू [दुन्दू] १ देवदाओं का चवा वेनसन (ठा२)। २ मेर प्रवान नामका 'सर्रिक' (धतक) चेनिय (कप्प)। १ परमेश्वर, ईश्वर (ठा ४)। ४ बीव मातनाः दिशे जीनो सन्ते वस्त्रिमीयपरमेखरत्तराधी' (विके २११६)। १ ऐक्केशासी (बावन)। ९ विद्यावर्षे का प्रसिद्ध राजा (पद्ध १२ ७ व) । ७ ध्रमी-काव का एक श्रविष्ठामक देव (ठा ४,१)। य क्यो<u>डालसम का</u> क्षविहासक केन (ठा २, १)। १ असीसर्वे धीर्वकर के एक स्वनाम क्याठ गणकर (सन ११२)। १ ससमी तिमि (कप्प) । ११ मेच वर्ष कि वदा सम्बद्धा पुरिचारको सङ्ग भने इंदो (दसनि १ ४)। १२ न देननिमान-विशेष (धम ६७)। इ.ट्रे[बिस्] १ इस नाम का रासाद बेहाका एक राजा एक विकेश (पठम **४, २६२) । २ धन्यत्र के एक प्रकारा**म (से १२ ५=)। स्त्रोब देनी गोच (पि १६)। स्वाह्य पूर्विमानिक शैक्षिय बीब-बिरोध (पएए १) । श्रीष्ट पुं विद्या दरनाजा का एक सनवन (धीप)। क्रांस पू [कुम्भ] १ वहा क्लरा (राप) । २ **ज्या**त-विकेष (धामा १.४)। केंड पूँकिती इन्द्र-भव इन्द्र-वर्ष्टि (परह १ ४ २ ४)। करिस केवो कीस (क्षीत ति २ ६): गाइय केवो असइय (तत २६)। गाइ प्र िमह् इन्त्रलेश, किमी के शरीर में इन्ह्र का भवितान जो पानसभा का कारण होता. है 'देवसहादवा खेरपादादवा' (अप १ गोष गोषग गाषम पुं["गोप] वर्ष अञ्जूमे होनेशना रक्त वर्णका श्रुप्त बन्तु-विशेष जिनको प्रजसती में 'बोर्ड्स याव' करते हैं (उत्र १ र मूर २, वका बी १७ पि १६)। नग्रह वृं [माह] बह सिरोप (शोत ३)। स्म **र्द्र** [ौस्ति] १ विराज्या नश्चन का सन्दित्तवक देव (यहा)। र बहाबहु-विरोद (ठा २ ३)। मीच पु [मीय] प्रहान्द्रियक देश क्येप (ठा १ १) । बसा ध्ये [ वद्मस ] नाम्किन नगर के ब्रह्मराज भी एक गली (बर्च १६) । आहा न [चास्त] नाम-कर्मधन क्या (स ४९४)। बाह्य जासिश रि जाहिल, क] पापारी, बाबीपर (छ ४ कुम १ १)।

श्रुहण्य पुं [धुविक] स्वनाय-स्नात स्वनत् र्मराकाएक राजा (प्रस्म ६, ६)। वस्तव पुष्पिका विशेषका (शिरश्रे)। वस्त्या हो विश्वज्ञा देश हारा मरायत को दिबाई हुई धपनी दिव्य सङ्गृति के जनवत में राजा मरात से पस बज्जनि के समान माइनी की भी हुई स्वापना और उसके उन्हास में किया थया अस्थव (धादु २ ) । जास्त्र पूर्व ["नीख] भीतम नीसमस्ति एल-पि**रो**प (क्डब पि १६ )। तस्तु (विस्] बृत विशेष विस्के नीचे मनवात् समनताव को केवत बान सुनाथा (पत्रभार २६)। स न [त्व] १ स्वर्गका शामिपत्व अधारा सताबारशः वर्मेः २ राजस्य । ३ प्रायत्य (गुपा२४३)। इन्तर्पु विन्ती इस नाम काएक प्रसिद्ध राजा (हर ६३६)। २ एक चैन मुनि (विधा२ ७)। विष्य पूर्विका स्तनाम-क्वातः एक वैन ग्रामार्थं (कप्प)। यणुन [ बतुप्] १श<del>ण्य</del>नु सूर्वकी किएए मेचो पर पहले से भावमरा में भो बनुध का भाकार शेख पहला है बहु। र विद्यापर वैद्य के एक राजा का मान (पडम **०१**६)। नीस रेची जीस (परम १ १९२)। पाडिक्या की बिरियत ने कार्तिक (पुनरती माधिन) माध के क्रव्यापन्न की प्यक्ती विकि (ठा४)। पुर न विदर्ी १ स्त्र का नवर् धमरावती (क्य पू १२६)। २ नगर-विशेष, यजा इन्हरत की राजवानी (जर १९६)। पुरम म [\*पुर∓] वैनीव नेरावाटिक पए। के चीने कुस का नाम (कप्प)। प्पम पुष्मिम] राज्य वेश के एक राजा का नाम और नद्भाका राजा का (पटम १ २६१)। भूद्र र्पु ["भृति] ततरान सङ्खीर ना प्र<del>नम-- पुर</del>व *रिप्ट*म मौत्रमण्यामी (सम रधः ११२)। सङ् पु ["सङ्] १ इन्ह्र की धारावना के बिए किया बाता एक प्रत्यूव । २ माधिन पूर्णिमा (धा४२) । सार्स्स 🛍 [ सासी] रावा भारित्र की पानी (बजन ६, १)। सुद्धामिसित्त ५ ["मुद्धामिपितः] पप्त मी बार्चमी विकि सप्तभी (चंद्र १)। में इ.पू. [मिष] रुवम नत में स्तान एक चना (काम ४ २६१)। वर्ष विकी १ दैनो इन्द्र(दार्व)। १ तस्क्र विशेषः। ३

१ १७ )। २ एक राज-पानी (पडम ६

382)1

शीप-विशेष । ४ न. विमान विशेष (६क) । इंदाजी की [इन्द्राणी] १ इन्द्र की पली (सुर यास रेको जान्स (महा)। रह पूं ["रय] विधावर वंश के एक राजा का नाम (परम ६ ४४)। सम्बु [सिज] स्त्र (नित्र)। इंदासनि पुं [इन्द्रारानि] एक नरक-स्थान सद्भी विधि स्त्र-भव (गावा १ १)। लहाकी किंद्रा रामा विवसमात की पानी (पठम र ११)। बद्धा स्वी [ वद्मा] सन्द-विरोध का नाम विसके एक पाद में न्या एड धन्नर होते हैं (निय) । बम् : की ["नम्] बद्धाराज की एक पत्नी (राज)। याथ पू [ यात] एक माए विक राजा (मिरि)। वारण पुं [बारण] इन्त्र ना शाबी पैरावड (दुमा) । सम्म पुर्विशर्मन्] स्वनाम-क्यात एक ब्राह्मसु (बावम) । स्नाम णिय पू [\*सामानिक] इन्द्र के गमान ऋदि बाला रेव (महा)। सिरी की विशे राजा बक्का की एक पत्नी (सक्) । सुकार् ['सुन] इतः ना नहका, बक्त (४ १ ११)। से गाझी [सना] १ इन्द्र शामैन्य । २ एक महानदी (ठा ४ ३)। 👣 ल्यो घणु (६१ १०७)। । इह न शियुधी इन्यान (लामा १ १)। हहस्यम र् [श्युमप्रम] वानयीपका एक यजा (प्रस्त ६ ६६)। रमभ पुं ["मय] चना स्ट्रायुक्तम का पुत्र बानस्त्रीप का एक राजा (परम ६ ६७)। इंदे पुर [इस्ट्र] एक वेदनिमान (वेदेस्ट १४१)। इदि वि एम्प्र] १ इन्द्र-संबन्धी (छाया १ १)। २ व चैसहत्वका एक प्राचीन स्थाक्तरहा (धादम)। इंदगाइ पुंचि] धाप में संतरन एक्नेशमे कीर-विकेश (वे १ =१) s इंदिग्गिपूर्वि] वर्गेहिस (देशे क्र)। इंदिंगियुमेन [दे] वर्ष हिम (दे१ दे)। र्दरबृद्धसम् पू [ने] रहा ना स्थापन (दे १ इंदम६ विदेी १ दूमारी में इन्लाभा २ ह बुमारका बीदन (दे १ दर)। इंदमहरामुभ ई [द दन्त्रमहत्त्रमुङ] कुता भाग (दे१ **८२, पाम)**। र्षदा भी [इन्ना] र एक महामधै (ठा ४, ३)। २ वरणन्त्र की एक बद्र-महिची (लाया २)।

इंदा धी [गिर्जा] पूर्वनिका (हा १ ) ।

(रेनेन्द्र २६)। इंदिंदिर पूं [इन्दिन्दिर] भगर, मनत भौत (पामः दे१ ७१)। इंदिय पुन [इन्द्रिय] १ मान्मा का बिङ्कान के सावन-मूत इन्द्रिय—भोन बसू, प्रत्य जिह्ना त्वक भीर मन 'तं तारिमं नो पमसेंति वैविमा (वसकृशः सं स्टब्स्) । २ और र राधेर क सवयव 'को किन्निये इत्यीक्त इतियाई मणोइयाँ मणारमारं पालोइया निम्मादवा मन्द्र (उत्त १६)। अनाय दू िपाय दिन्त्रयो शास होनेदाता वस्तु का निवसात्मक ज्ञान-विशेष (पएए १४)। आगाइमा भी [पपप्रहणा] इन्द्रिमों इारा सनाम होनवाता मान-विदेश (पएस) १४)। बय पुं["सय] १ इन्त्रिया | इंद्र देशो इंद्र = इन्द्र (पि २६०)। का निषद् इन्द्रिया को करा में रखना 'यदि इंदिएई चर्छ नहें न कुछेहि की यह सवारे। ता बम्मर्स्थीद्व रहू" बहुप्रस्वं इंतियजयम्मि (गॅरि४)। २ वरो-विरोग (पव २७)। ह्वाम न [म्यान] शन्यों का ज्यासन कारण मेंसे थीरेन्द्रिय का मातारा बहु का देव क्षैरह (नुम ११)। (णम्बच गासी ["निर्वचना] इन्द्रियों के माकार की निप्तति (पर्या १५)। भाग न ["हान] इन्द्रिय-इाए क्ष्यप्र हान शनक सात (बक्ष १)। त्य पु [वर्ष] इन्त्रिक से काकने मोग्य कम्यू क्य-रम-मन्त्र वपेष्ट् (अ.६) । यज्ञात्त भी ["पयासि] रान्ति-विरोध जिसके हाथ बीप बादुसी के टम में बरने हुये प्राहार को एन्ट्रियों के लड़ में परिएक बच्का है (पएश १)। यिजय दू [ (यज्ञय] रेको अय (पंचा १८)। विसय र्षे [ (येपय] देवो स्य (सन् ५)। इंदिय न [इन्यि] तिन पूरप-विक (यमेंस € t) i इंदियास देखों इंद् जास (मुगा ११०) मार)। इंदियास 🏻 देखा इंद वासिः 'तुर मोज्यान-वेशियांतः । भिष्यं निर्दिशं ने सम्दर्शियानेण' (दुगा २४२)। वह एम इंदिसाली ईडन बाल्नम्हराई संगई' (पुता २४३)।

इंदियादीम देवो इंद-जालिक 'न मगमि घई खबरो भरपूर्णन ! इदियानीयो (मूपा २४३)। इंदिर पूं [ इन्दिर ] प्रमद, ममत भीरा 'मंबारमूहरिक्सर (विक २६)। इंदिय की [इन्दिय] मदमी (ग्रम्मक २२६)।

इदं वर न [इन्दीघर] कमस पदम (पटम १ 10) I इंदु पूं इस्दु क्रिक् क्ल्रमा (पाप्र) । इंदुक्तस्वविसय न [इस्ट्रोक्तस्ववंसक] देव विमान-विशेष (सम १७)। इंदुर पुंची [सादुर] पहा मूपक (नार)। इंदोकंत न [इन्दुकान्त] विमात-विरोप (सम 1 (01 इंदोय देवी इंद-गोप (पाफ दे १ ७६)। इंदोवस पूँ [दे] स्त्रगोप कौर-विशेष (दे १

इंघ न [चिह्न] तिशानी, चिह्न (हे १ १७७ २ ४ ३ दूमा)। इंभण न [इ.भन] १ ईवन जलावन सकड़ी वर्गरह बाह्य-वस्तु (हुमा)। २ प्रकृतियोग (पदम ७१ ६४)। ६ वशीपन बत्तेबन (उत्त १४)। ४ पनास पुमान तूल वमेरह जिसमे

"शास्त्र] वह पर, विसर्वे क्लावन रहते वाते हैं (तिबू १६)। इंभिय वि [इन्धित] प्रशितित प्रम्वनित (इह इ.स.म. [म्] प्रवेश में उंदर इसमण्याय प्रवेमण्

क्य पहाने बात हैं (निष्टू १४)। साला बी

(विश्व १४६१)। इक्ष देखी एकः (कुमा) मुता १४७- १४ ३ पाम प्रापृ १ । कमः नुर १ । २१२ मा १ रॅ२१ सम्य २ माधः पत्न ११ ₹**२)** ( इकड पुं[इकड] दुल-भिक्षेत्र (पर्लू २, ६)

duth f) ! न्दर विषिद्य दिन देश पूर्णका बना हुना (याबा २, २ ३ १४)।

नक्य रि [दे] चोट, चुरलेशना (दे१ ८ ) 'बारूनवासू<sup>भे</sup>मुं स्दवामी परामग्रीरणायो र 1 बाम्सरियाद तीर्ष (म ७६) :

114 बुक्तार केलो एक्सरह (कम्म ६ ६६) । इक्टिक रि पिकैक) प्रमेक (वी ११ प्राप्त ११का पुर ६, ४२) । इक्किन क्षेत्र (एकजत्तारिंशन् ) एकजानीध ४१ (बाग ६ ६६) । इक्कुस न [दे] रीजोरात कमत (दे १ इक्त सक [ ईस् ] रेवन्य । इस्वद (वन) । इस्प्रा(सूचर २ १ ११)। इकार अ वि [इ.स. ६] रेक्टरेनाला (वा ११७)। इस्त्रम न [इंच्य] बस्तोस्न प्रेपल (प्रम ₹ ₹ ¥) 1 इन्साड देवा इस्सागु (निष्ट ६४)। इक्ताम वि विद्वाकी दश्वाकु नामक प्रक्रिय राविवर्णरा में बररब (किस्व)। इकामा ) प्रक्रिकाको १ एक प्रसिद्ध शक्ति इन्ह्यान् राजवंश, मनवान् खवमरेव का वंशा २ क्या वंश में उत्पन्न (वव १ ३३) कम्पा भौरा मति ११)। १ कोतन देश (खावा १) । सूभि की "भूमि विकोध्याननरी (पाप १)। इस्मुद्र[इस्र] । स्य अव (६२ ४४ रि ११७) । २ बान्य-विशेष, 'बर्गट्रिका' नाम गायल्थ (पा १ )। गंडिया स्प्रेगिण्डकी योधी देव का दुस्का (प्राक्त)। घर क [गृह] सर्वान-विदेय (विने)। ब)यग न हिंदी देश का पूजा (ग्राजा) । **का**दशान ["दं] १ (स नी शालाका एक माद (पाणा)। २ रूप का क्षेत्र (निकृत)। पैसिया की विशिष्ठा वर्\*ए (निष् १६) : "मिचि की कि देश का दुवका (तिकृ १६)। शेरम न [ मरक] नएरेएँ नरे हुए कल के प्रस्के (पांचा)। संदूरशे ["पग्नि] देव को नाठी रपुनगर (भाष)। बाह पू (बाट) रेव का धन 'मुक्ति मि सम्बद्धवाली वस्त्रीती रुद्रगहरूमाम्गं (धार १) । साक्रा न [र्व] १ रंग को सम्बो हाला (प्रापा)। २ रेल थी बाहर भी सान (निष् १६)। देखो प्रवर्ष्ट । इस क्लो पद्ध (शम्ब १ **० ३३ नुस** ४ ३४ या १४ तर रि४८राया ४४ तन ex) i

इगयास्त्रज्ञीत [एस्थलार्रिशत् ]एस्थलीय ४१ (कस्प व ४६)। इगवीसइम वि [एकविंश] एककीसवी (पव Y4)1 इगुवास वि [ एकवत्वारिंशम् ] संस्था-क्रिकेप ४१—क्रामीस सौर एक (मय<sup>-</sup>पि YYX) I इगुणवीस वि [एक्ट्रेनविंध] क्य्रीसर्वी (पर 44)1 र्शुणीस } 🖈 [एक्रोनविंशवि] नहीस (पर शोबीस ∫ १०० कम ६ ११) । शासिह भी [पद्मेनपरि] काळ (इम्म ६ 41) ( इस्स वि [दे] भीत इस इस्स (दे१ ७६)। इन्म देशो एक (शर) । इर्रियम वि वि पिल्ला तिराक्ता (देश इवा रेको इ स्ट । इबाइ दुन [इरपादि] नवैदह, प्रपृष्ठि (भी ६)। इसेवं प [इरवेदम् ] इस प्रकार, इस माधिक (सूम १ १)। इच्छ एक [इप्] इच्छा रच्ना भारता । रन्तर (उरा महा)। स्टूर रूप्यंत रूप्य माण (बता १ ४ चा ४)। इथ्य एक [ जाप् + स = ईप्स् ] प्राप्त करते को बाहता । इ. इतिक्रमञ्च (वर १) । इच्छकार देवो इच्छा-स्टार (पति)। इच्हदार हुं [इच्छा ग्रर] 'इन्या' रूप (वंदा 17 Y) 1 इच्छा स्त्री [इच्छा] यथ की न्याच्हरी संत्रि 'वर्षेति-कार्यावया य म(१६) व्या व' (सुक {x} | इन्ह्यास्त्री [इच्छा] प्रभित्तरा काह बाज्या (ज्या प्रातु ४×)। नार र्दू ["झर] स्वशेष इन्छ मम्तिष (परि)। होर रि [ न्तुन्त्] रणका के बनुरूत (यार १)। गुब्धम वि ["मुझोम] रच्या के ध्युरूम (पएए ११)। णुमोनिक कि [ैमुसोनिक] एच्छा के प्युक्त (माना) । पत्रिय वि विप्रणीत्। रुक्तुमार क्यि ह्या (पाचा) । परिमान न [परिमाण] परिवाद बस्तुपी 🕸 विवय नी इच्छाना परिमालः नाना, जानक का पांचरां क्य (बा १)। शुब्द्धा स्मे ["मुच्छा ] (८ ६) ।

शायाचिक, प्रवच इन्सा (परह्र १ १)। "स्रोम र्षु क्रियो प्रका बीप (ठा६)। स्रोमिय वि क्षिमिकी महालोगी (स ६)। ध्रीस र्पु "क्रोस्त्र] १ महान् वीम । २ पि शहा-सोनी (शृह ६)। इच्छा स्वी दिस्सा देशे की इच्छा (पार)। इत्थित्य [इप्र] इट्र धरिमाध्य शामिका (दुर ¥ (\$\$) इक्सिय नि [ईप्सित] प्राप्त करने नी अपहा हुमा मन्त्रिपेत (मनः सुपा ६२४) । इच्छित है [इच्छित] निस्की इच्छा की गर्द हो वह (धव)। इक्सिट्र नि [यपितः] इच्या करनेनाना (**इ**मा) । इच्छू देशो इक्स् (कुमाः प्राप्त ११) । इच्छु रि [इच्छु] बलिसावी (रा ४४ ) । इक संक [बा + इ] याना यायमा करना ! बहु- इस्तेत 'विद्यासम्म को उदाराई चोहयो कुपाई गर्छ। दिन्नं सो सिधिनग्राति वक्ति पश्चित् पश्चित्रम् । (₹₹ ₹ ¥) i इक्ट पुन [इस्पा] यह यादा पिनक्टूर बीस-इमिंग (वस १२, ६)। इत्रा स्त्री [इस्था] १ याद, पूजा। १ शहरणी का सम्माचैन (महास्य १)। इ.ज्या स्त्री [प्र] माता अननी (प्राप्त) । इजिसिय वि [इस्पेपिक] पूजा का श्रीपनानी (मा ९ ३३)। इम्स धर्क [ इम्प् ] स्वकता (हे २, २ ) । बर इम्ममाण (एव)। शहरा प्रं [के] नेवर, प्र शेव (पित्रति था 446 444) I इट्टगा स्वी [इप्टका] तीव वेचो (क्**रह** २ % रिक)। बहुगा स्वी [ब्] न्याय विशेष शेव (पिंड 1 ( Fox 1314 1314 इट्टबाय केटी इट्टा-बाय (सम्बद्ध १९७) । बहुत स्थी [ब्रप्टबर] एँड (बजर 🛊 १ ६४) र याय नाम ई [ पाक] ईटी ना नकना २ बहुर पर हिंदनाई जाती हैं वह स्वान

इहाछ न [इहाछ] इंट का दुक्स (रस ४,

2 EX): इट्ट वि [इप्ट] १ समिनपित मिस्रोत वाफ्रिश्द (विपाद १३ सुपा ३७ )। २ पुष्रित सक्त (मौप) । १ बागमोक, सिबान्त से महिरक (तर बदर) । इट्ट न [इप्ट] १ स्वाम्युगयत स्व-भिज्ञान्त (मर्मेस ११९)। २ न स्पी-विशेष निर्दि कृति-तप (सम्बोध ५८)। ३ वापक्रिया (म \*(¥) 1 इष्ट्रिकी [इष्टि] ! इच्छ मनिनापा, बाह (नुपा २४६)। २ याय-विरोध (प्रसि २२७)। "इट्रिक्षी [इप्टि]सीचार बॉबना (गा ₹=) s इडा भी [इडा] राधेर के बाएँ भाग में स्वित नादी (दूमा)। न्युर न चि नामी (योग ४७६)। इक्रुरग) म [वे] रसोई बक्ने का बढ़ा पाव इक्षेरव ∫ (सम रे४)। इकुरिया की [दे] मिश्राय-विशेष एक प्रकार शी मिठाई (मुपा ४८३) । **४ इंड कि [ऋदू |** ऋदि-सम्पन्न (संप)। इंडिड की शिक्कि र मैमन ऐंदर्ग सम्पत्ति (मूर ६ १७)। २ मध्य शक्टि, सामर्स्य (इस ६)। ६ पन्दी (टा३४)। सारव न ["गीरव] सम्पत्ति मा परनो मानि प्राप्त होन पर समिमान सीर प्राप्त न होनेपर उसकी नानसा (सम २ ठा ३ ४)। पश्च पि विप्राप्त] चरित्रामी (पएख ११: मपा ३६) । स, संव वि [मन्] ऋदिवासा (निद्राधी। इहिडासिय वि [वि] साथक-विदेश मौतन की एक व्यक्ति (सग १ ६६ हो)। इर्ण इपामो } स [यतत्] यह (दे१ ७६) । इष्त्र देवो दिवग (से ४ ३१)। इच्या देनी किएम (से व. ७१) ! इक्ट्रम [बिह्न] विक्र निराम (मे १ १२) चर्)। ँइव्हा स्पे [तृष्या] तृष्या प्यात स्पृहा (गाइ.३)।

इर्लिइ स [इदानीम्] इस समय इस वर्क (दे१, ७६ पत्रम)। इतरेतपस्य वृं [इतरतपश्य] वर्गमञ् प्रसिद्ध एक दौष परशार एक दूसरे की मनेबा (धर्मर्स ११६८)। इति देनो इद (रि १४)। इतस पुं ["इतस] न्पूर्वदृत्तान्त प्रदीतकान की घेरनाओं का विद-रस पुरुष्त (रूप) । २ पुरास्त्रसम् (मग) । इत्तप्रदेशो इ.सकः। इत्तर वि[इत्तर] १ मन्त्र योहा (म्रणू)। २ बल-कालिक बोड़े समय के लिए को किया भारता हो वह (ठा६) । ६ मोड़े समय तक च्हनेवासा (या १६)। परिग्य**श** ह्यै ["परिमात] योड़े समय के लिए रक्ती हुई नेरवा रकेन रकात मादि (भान ६)। परिगहिया भी [ परिगृहीता ] रेको परिगादा (भाग ६)। इसरिय वि [इस्परिक] कार देखो (निव २ मानाः प्रदार्गना ()। इत्तरिय देवी इयर (मुम २ २)। इन्तरी भी दिलारी | भोड़े कास के लिए रसी हुई बेरवा मारि (पंचा १)। इत्तहे (पप) म [अत्र] महा पर (हुमा) । इत्तादेथ [इतानाम्] इत समय इस बक्त संपुत्रा (राष) । इति देखा न्द्र(दुमा)। इतिय वि [ इयम् भनावम् ] इतना (ह २ ११६ कुमा प्राप्तु १६६ एड् ) । इत्तिरिय वि [इत्वरिक] सल्पकासिक को भोड़े समय के लिए किया बाता हो (स ४६. विसे १२६१)। इचिछ देवी इचिय (हे २, ११६) । इस्तो देशा इआ (या १७) । इत्ताअ देवो इशाअ (या १४) । इत्ताप्पं [द] वहां म नेकर, दरप्रपृति (पाय) । इरम म [अत्र ] गर् इत्तर्भ (क्या कुमा) प्रानु १४१)। इत्येष [इत्यम्] इन तरह इस प्रकार (पएल २)। भ नि [र्श्य]नियत्र चाहार बाला नियमित (जीव १)।

इत्थंग वि[इत्यंस्थ] इम तया एहा हुमा (44 8 A A) 1 इत्यस्य प्रे [इत्यर्थ] वह प्रमें (भग)। इस्यस्य व स्टियभी स्नी-दिवय (वि १९२) । इत्पर्य देशो इत्य (या १२)। इटिय कीन किरी मिहिसा नारी 'इल्पीरिए वा पुरिसाणि वा (भाषा २ ११ क)। इतिय ) भी जिन्नी बनाना भीरत महिमा इतेथी । (मूर्पें २ दे ३ २ १३)। कल्य की किस्ता की के पूरा की को सीखने योग्य वसा (वे २)। बहा औ ["क्या] ओ-विषयक बार्तामाप (ठा ४)। वर्षुसग द्वेत ["नर्पु सक] एक प्रशासका नपुंसक (निष् १)। णाम न "नामम् कर्म-विशेष जिसके उदय से भीरन नी प्रास्ति होती है (ए।या १ ८)। परिमह् पू [परिपद्द] बहावर्थ (मगद =)। क्षेप्पज्ञह् वि[िषेप्रज्ञह्] १ की का परिस्थाय करनेवाला। २ पूँ मुनि सापु (धत ८)। श्रेष, येय पू श्रिवी १ भी को पुरुष सम की इच्छा । २ कर्म-विशेष निसके इत्य से भी को पुस्त क साम भोष करने की इच्छा होती है (भए, पएए २३)। इत्येण पि [कीम] क्रिसे का समूह की-अनः 'तजसि कि न महंती शिलायो नारिसियोजा' (उप ७२० दी)। इदाणि रुवो इयाणि (बाना)। इराणि (शी) देखी इवाणि (प्राक्त वर्ष)। हराणी } रेखो हराणि (सीत ११) । इदियस (शी) न [इतियुक्त ] इतिहास (मोड्र १२८)। . इतुर न दिं] माथ रननंकाएक तरहका पात्र (मेल १३१)। इक्दंड प्रें [के] भींस मधुकर (दे १ ७१)। इक्रिंगपुम न [व्] नुदिन दिन (वर् )। इद्धि देवी इहिड (यह)। इच (ठी) बना हेड् (हूं ४ २६०)। इस्म वृं [इस्य] वर्ता साम्म (पाय)। इस्म र् दि दि दिएक स्थापारी (१ ७१)। इस पूँडिमी हाची हानी (वे श दूमा)। इभपास र् [इभपास] महात्र (कम्मत (4X9) 1 इम व [इरम] यर (६३ ७२)।

इमरिस नि [एताइरा] ऐना इस्ट कैसा (बल) १ इय रेको इस (महा)। इस आयो इह (यह है १ ११ औष) : इव म बि रिनेश फैठ(मानम)। इय वि दिन देशत समाहमा (समाह ६)। २ प्राप्तः 'कार्यानमी वस्तीसी वसीस चंद्रच किएचंदों (सार्च ७१३ विमे) । ३ सात काना हुमा (माका) । इयिन्द्रिय [इदानीम्] हाल में इस समय, मधुना(छ। १)। इयर वि [इतर] १ सन्य दूसरा (वी ४६ प्रातुरे )। २ दीन जन्म (बाका र 4 4): इयरहाय [न्छरपा] सन्दर्भा नही तो सन्द प्रकार से (कम्म १ ६ )। इयरयर रि [इनरेतर] धन्योग्य परस्पर (स्व)। इमाणि ) म ितानीम् ] तल में इस इयापि । उमय (सन पि १४४)। इर देलो किछ (इ.९.१६६) नार) । इस्मेंब्रि ब्रेडिया के (देश दर्)। इसम इं दिंग हानी (दे १ इरावनी (शी)की [ इरावती ] नशे-निशेष (ग्वर)। इरि देवो गिरि "निमग्रीशक्तरिक्र्र" (सहन ₹ **२७**)। द्वरिण न [ऋण] करका ऋख (काद ६६)। इरियन दिं] नगर मुत्रली (देश ७६ नदर) । इरिय सक [ईर] जाला परि करना। इरि यामि (पत्त १ २६ नून १८ २६)। इरिया भी [दे] दुधै दुरिया (दे १ इरिया भी [ईया] गमन गति चतना (भाषा)। बद्दं पिधा १ नार्वे वे वाना (मौप १४)। २ जाने दा मार्व रास्ता (मन ११ १) । १ नेपन शरीर के हुने-वारी स्थित (नूध २ २) सहिय न [ पथिक] है इस सर्वेर की केल में हानताना नर्मक्रप नर्मे-शिक्षप (नूम २ २ वन )। बहिया स्त्री [पधिक्री] बवाव-र्गरत केरन कारिक रिया, क्रिया-किटैन

(पिंड ठा२)। समिद्रस्त्री ["सिमिति] निवेक से चलना इसरे जीव को किसी प्रकार की हानि न हो ऐसा उपनीक पूर्वक भवना(ठाद)। समिय नि भिनित] विवेश-पूर्वक क्लानेवाला (विपा २ १)। इस प्रकार कारण थी का वस्तक्य स्वनाम-स्मात एक गृहपति—गृहस्व (साम्य र)। २ न. इबादेशी के तिहासन का नाम (ए।यार)। सिरीस्त्री ["भा] इस नामक पुरस्य भी स्त्री (सामा २)। (फ्रेंच म केवो (स्संत (मे ३ ४०)। "स्मम्बी[इस्स] १ प्रविको मूर्गि(से**२** ११)। २ वरहोन्त्र की एक सथ-महिपी (सामा २)। ३ इस नामक नृहस्य की पूरी (छाना २)। ४ रचक पर्वतपर स्कृतेकली एक स्ति<u>र</u>ुमारी (रा )। **१ राजा** जनक की माता (पटम २१ ३३) । ६ इतावर्षेन नदर में स्कित एक देवता (बावन) । कृत न [\*कृट] दतादेवी के निवास-मृत एक शिकर (ठा४)। पुचर् ["पुत्र] स्तारेना के प्रचार से उत्पास एक सेवि-पून विसने मिली परमोदित होतर करना फेट सीका और यन्त मंताव करते-करते ही तुम्ब भानता से नै रत्तवान प्रान्त कर मुक्ति पाई (मानू)। पङ् र् ["पति] एकापस्य मोत्र का सादि पुरुष (रावि)। वहसय म ["वर्तसक] इसारेश का प्राधाद (सावा २)। इंडाइपुत्त देवो इग्र्य-पुत्तः 'क्यो इलाइपुत्तो विमान्युको ध बाह्युकी' (विक्र)। इसिया स्वी [इस्टिस] सुद्र बौव-किलेव वीनी भीर वादन म उराम होनेदामा शीट विशेष (की १७) । इसी स्त्री [इसी] सरक्षिकोप एक बावि की बनदार भी तस्दृका श्वितार (क्या १ व)। प्रतृं [के] १ प्रतीकृत, क्लस्ती। २ सनित्र रोती। ३ दि राग्रि, मग्रीदा ४ नोमन नुरु। इ.नामा इच्छा वर्णदामा ( t t ) उह्युप्टिर हुं [रे] व्याप्ट हैर (वंड) । इडिपुँ [इ] रशादुत स्वापः। रनिहा १ छना (रे१ ४१) : इहिय नि [∢] प्रानिक, रुभै नकुरवानियाश्र

भ दुक्तासचेकियमक्रियामस्वरक्तर्**र**् 21) ( इस्छिमा स्त्री [इस्छिम] बुत्र बीन-विशेष धव में प्रत्यम होनेवाला कीट-विशेष (बी 14)1 इल्बीर न [के] १ श्री<del>सन विशेष । २ द्याता</del> । १ राजाना पृत्नकार (हे १ वह)। इव म दियों इत सर्वों का दौरक सम्बय— १ ७पमा । २ साहस्य तुसना । ३ फटमेरा (दे २ १८२ सख)। इसम दि दि विस्त्रीर्ण (पर्)। इसपा देवो एसमा (रमा) । इसायी स्त्री (ऐशामी) स्वान कोए पूर्व भीर उत्तर के बीच की दिला (माट)। इसि पुं [ऋषि] १ मुनि साबु, बानी महान्या (चत्त १२, सर्वि १४)। २ ऋषिनादि-निकास का बतिए दिसाका इन्द्र इन्द्र-विशेष (ठा २ ६) । गुत्त पुं[िगुप्त] १ स्नताम-स्थात एक **बै**त मुनि (क्रम्प)। २ म**ं**वन सुनियों का एक हुव (क्य)। गुक्तियन [गुप्तीय] कैन मुक्तियों काएक दुत्त (क्रप्प)। इससाई िंदासी १ इस नाम का एक छेठ, जि<del>स्</del>ती र्वन दीक्षा भी भी । २ 'समुक्तरोक्काहरमा' सूत का एक बच्चमन (मनु २)। इस दिश्य र्ष दिया एक बैन मृति (कप्प)। पासिक र्ष [ पाछित] ऐरतत क्षेत्र के पांचर्वे तीर्वकर का नाम (सम १४३)। शक्तिका स्वी [पाकिया] वैत पुनियों नी एक शासा (रूप)। सद्युक्त पुमित्रपुत्र] एक कैन मानक (बन ११ १२)। मासिय न [ माफिन ] १ ब्रेक्टम्बॉ के ब्रतिरिक्त कैन मानामों के बनाए हुए प्रतासम्बन मार्थि कास्त्र (धारक) । २ 'प्रस्तम्याकस्तु' नूब का वृतीय भम्पदन (ठा १) । बाइ बाइब बादिय ई [बादिम्] ब्यक्तर्से की एक बाहि (बीप पर्दर र)। बास प [पास] र विकिति स्थानती ना उत्तर सिक्षाना स्त्र (ध्र २, १) । २ पायर वापुरेव का वूर्वजरीय नाम (तन ११३) । 'बास्टिन पु ['पासिन] श्वनिराधित्वकरो के एक इन्द्र वा नाव (देव)। इसिज दूं [इसिन] मनार्व देत निरोप (लाबा t () i

क्षेत्र में बन्दम (गुप्ता ११ इक)।

इमिया थी [इ.प.स.] समाई, शतासा (मुम 7 () 1 इस इ दियाँ करण (पाप) । इस्स वि णिप्यन् देशीया कात 'दुर्त संपर्धापस (विके)। २ होने गमा भागी। 'गंबरद इय मिन्स' (रिगे १ ६) । इससर देगा इससर (घटा पि ६०) दा२ १)। इस्मरिय देगी इसरिय (पटन १, २० : ग्रम १३; प्रापु ७१)। न्स्सा हो [इन्या] द्रीर प्रमुवा (उन १४ 28) 1 द्वेतं (इ.) प्राप्त पर्णनाता का करूपे पर्ण न्त्रा विशेष (प्रावा)। क्णु) ।

इतियाय वि दिसिनकी इधिकनायक बनायें । इस्सास प् निप्यासी १ पनुर बाईक राध सन । २ बाल-नेपक चीरंदान (प्रारु) । इह वृं [इम] हापी हस्ती (शब्द)। इह स [इदानाम्] इस समय प्रपुता(प्राह इटच दिही यहे इस जगर (बाबा स्टब्स २२)। वारलोहन वि विदेशपारखीरिक हम और परलेक ये सम्बन्ध रखनेकामा (स १५१)। मधिय ति ग्रिटमयिकी इस बग्म संबन्धी (मग)। लोख, स्टान पू िंद्ये के वर्तमान जन्म मनुष्य-नोक (ठा ६ प्रानु ७१: ११३)। स्त्रव स्त्रन्य विणित् त्येक्टि इस जन्म-संबन्धे बर्समान-जन्म ।। इय निरिपाइअसहमहण्याचे इयायस्यहर्धरम्या लाम दन्यो दर्गी समसी॥

संबन्धी (कम्प मुपाध व पएड १ १ ग Yet): इद्वायतारनोहयनुगई सम्बाई तल रिप्रार (म १६६)। इत्ज } कार रंगो (पड पतम २१ ७)। न्द्रई म [इदान म्] हात संप्रति दम समय (गोम) । इह्य } दगो इह = एन (पीत या १४) । इहरहा ) रेनो इयर हा (सा ८६ : भत २६ द्वेति दिन रार)। इन्स् स्यो नहुई = न्दानीय (यउ३) । इहामिव रेलो इहामिय (वि ४४)। इहिंच न्हिं बरा (रमा) ।

흕

इक्षत्र [एतम् ] यद् (ति ४२६ At) 1 न्त्र व [र्गत] रम ठठ 'र्यव परोवित्र(त्र' (ftit 124) I र्देष्ठ बूंद्रो [र्टित] मान्य क्रीप्ट को नुकमान बाबानेशना हुए। मारि प्राप्तिनम्स्य (बीर) । न्त्रत रि [इटरा] तैना, इन छछ का इमके मनान (मणा स १३) । देखिद् थर [भा] दून होता । धीनाम (भार 24): इष्ट देनी बीड व बील 'दुईबार्गीलबईस्मारि ₹ (m 1 ) 1 देश को [दश] मुर्ति (राप ८६०)। हैव रि हिप्ती पर्यो कॉक्स्फी 'क्लार हे देव (नरंपमें गें) (तुप १ १ ८)। र्म रेगो ए प (व हैं। रेपो हैंइ (बय ६०)।

इदिस देखो इइस (म १४ धनि १८२ इर मक [इर्] १ प्रेरमा करता। २ वर्ता। ३ व्यन गरना। ४ धरना। ईट्र (विने १ 1 ) 🖫 ठिल्लामणङ्कराजापर्युक्तम पुगतरनिवातियाय दिहीत इतियवर्षे (पान्द २ १)। पूर इरिङ् (ग्री) (यत्रि १)। इरिय रि [इरित] बेट्ट (रिन ११४४) । ईरिया देवी इरिया (सम १ 1 ब्रोप ७४ मुर १ ४)। ईरिम देवी इहम (कुबा राज ११)। इस व [दे] गूँब गोत्ता बल्क (६३ (8)

ईस गर [इप्] रंत्री बरता, इव करता। र्रनद्रशि (गा२४ ) । इस १ [इंग] रेनी इसर = रेपर (इस राज र<sup>ू</sup> ५८)। २ स. रेचर प्रदुश (राग २) । इम रेनो ईसि (ब्यू) ।

इसअर् [न] येक नरिए की एक जाति (\$ \$ my): इसस्य न [इप्तस्त्रसाम्त्र] पर्देर, कल निया (धीर परा १ ६) विकासमास पुगरा देवायायाममा शिख' (पदन ६० ४ रि ११७)। इसर १ [न] मन्दर राजदेश (११ चर)। इमर पू [इरार] १ गरेक्टर ब्रम् (हे १ बर) । २ मगान्त्र शिर (पत्रद १ ६, १२)। ३ स्थामी पाँउ (पूमा) । ४ मायर पूर्विश (रिस १ १) । ६ देख्यां वा वद बाराय बेजबर दर्तों का घाराय किटेग (तम ७३)। ६ वर प्रकार बंत्रस्य (१४ २) । ७ माल मनी (मृत ४६६) । व रेप्पीनन्ती वज्री (नीर १)। १ पुरस्य र । १ - वण्डीन र गामनान्यवाः ११ मन्द्री (यण )। १२

शा विभेत अनुशा निकास का द्राप्त (दा व

३) । १३ बाइल-विटेव (११ ४) । १४ तक

राश बा बाब । १३ व्य देत हुनि (सम्पद

। १)। १६ वन विदेव (१व २७)।

ईसर वे [ईम्पर] मणिया मन्दि पाठ प्रवार 🛊 हैच्य है सम्प्र (ब्यू २२)। ईसरिय न चिरवदे ] बधव प्रमुख देवरान (¶34 £, \$4) i ईसा की [इया] १ सोरपतों की बदमहि-विके को एक पहुँचा (छ १ २) । २ निया-बेल की एक परितर (बीव दे) । दे हर का तक ब्रह्म (दे २ ११)। इसा ही दियों रिया होड़ (परह)। धैस न विव निव दस्ता (क्यू) । हेसाइय वि हिप्यायिती जिनही हैंप्सी हुई ही बह (नुग ६१)। ईसाम व [इरान] १ देवनोस-विधेर दुवस देशलोक (सम २)। २ दूसरे देशरीक ना देख (स २ ६)। ६ उत्तर मीर पूर्व के बीच शी क्ति स्तिन्नीए (मुत्त १)। ४ <u>महर्</u>न रिटेप (नम ११)। १ दूमरे देखीक के निवानी के (इन के )। ६ प्र**प्ट** स्थानी (विते)। बहिसम न विवर्गसकी विवार विदेश का नाम (सम २६)।

ईसाय दें [इशान] बहैायत का ग्यायकी पुरुते (तुम १० ११) s रसामा **वा** जिहाती कात-रोण (अ इसात्रीस्थि जियाची १ ईहा<del>र क</del>ोख । २ विधानियोग (पतम ७ १४१)। इसाल वि [इर्प्याल] र्रेप्यांतु, ध्वहिप्यु, होवी (मक्रा या ६३४ प्राप्त)। स्त्री विद्री (परम ११ ४१)। ईसास देनो इस्सास 'ईग्राम्हारा' (निर पि 1111 ईसिम (ईपन् ) १ नोइ। मल (५एए ६६)। २ प्रविदी-विदेश गिद्धि-शेष मुक्त-भीन (तम २२) । पश्मार नि विभाग्मारी बौहा प्रस्तर (र्पका १०)। प्रमास स्त्री [ प्रागुमारा ] प्रविकी-विदेव मिदि-क्षेत्र (प्रवसम २२)। इंसिम न [इप्पिन] १ दिन्हें इ.प. (च **३१)। २ फि. जिलार ईप्यों की वर्द हो** भग्न (दे २ १६)। ईसिअन दिी १ मौन के लिए परनापत्र

पूर, भीतों नी एक वर्ध की नक्षी। रेडि बरोइत बत किया हुमा (दे १ व४)। इसि ) देवो इसि (म्यूट कुर र श स्ट ईसी दि**११)**। R un [ fie fa\_] tamit विभारता । केंग्रा करता। ईहर (वि १६१) । यह देहत देहमान (बरा दुव दब क्रिके २१ व) संक भाविकाणों वि क्षत्र मध्युस्तं (पद वर, विते ११०)। इड्ड न [ईड्न] नीचे देशो (यापु १)। ERI AT [ERI] ? PERIL, ARING PER (लागा १ १ मुपा ६७२)। २ वेट, इत्य (बीब १)। १ मित-सात वा एक वेद फिरा १ रुट स र)। ४ इच्या (स ६१२)। मिन, भिय र मिगा १ इक मेहिया (छाप १ १ मग ११ ११)। २ नाम नाए मेद (राप)। इंडा को [इंखा] यहतीका, हिलेकन (पीर)। इंदिन नि [इंदिन] चेटिन (सूप १ १ १)। २ विवस्ति विवस्ति, देशनिवर्यक्त (नि 5X#)1

## श्य विरिधाइभसङ्ग्रहण्यवे इमायरहर्संक्स्तुः शाम बद्धवा तर्गा समक्षाः

उ

त्र व [त] देव वर्षो वा चीतत्र चयात—हे क्षुक्य मीर (स्त्रो) । देव स्त्रास्त्र क्षित्र हो ११ ४ (यात्म) । वित्र क्षुत्र क्षुत्र क्षित्र हो ११ ४ वित्रेण चात्र । देव इत्रोग । देव ब्राह्मि के तिर ये देवता वर्षो होता है (वह) । व वेगों वर्षा प्रयोग्ने (ब्रुट्ट १ दे )। व वित्र क्षित्र क्षार होता है (वहरू )। व वित्र क्षित्र क्षार होता है वहरू व्यवस्था है क्ष्मि कर्षो चावत्र (व्यवस्था ) देवित क्षेत्र कर्षा चावत्र (व्यवस्था ) देवित चीत्र कर्षा चावत्र (व्यवस्था ) स्ववस्था

विधेन क्योदिन (जनुष्यादिवेद्दर्ग)।
इस म [नै दिनोनन नचे देनो (दे १ वर्ड दी है २ व ११)। इस म [न्तु] एत मर्चे का दुव्द मम्मा-१ दिवत स्वता १ दिवा दिवा (द्वा)। १ तरम, इच्या १ ४ तुम्बन १ वर्ड वर्षि स्वत् (व्या) १ तुम्बन १ वर्ड वर्षि स्वत् (व्या) १ तुम्बन १ वर्षि (व्या)। इस म [नी सन् नत्य (व्या)। इस म होत्र स्व (व्या) देन्द्र वर्षि (व्या)।

["सिन्धु] स्वूद, शहर (fi ६४ 11

क्रम कि [ चत्रम्य] उत्तर, बत्तर विशा में स्वित । सहिद्दर पु ["महिचर] विमायन पर्वेत (मरह)। च अञ्चल विवृद्ध पिली अल (या १३ से £ 44)1 समाम देवो उत्य (से १ 👯)। कमञन [कद्र] पे॰ उत्तर (से १ ८८)। क अञ्जीव दि दे ऋजू सरस सीवा (दे १ **44)** सभावद (शी) देशी उपगम (माट) । प्रज्ञासम् वि [ हपकार हो जानार करने वासा (गाप्त्र)। समभार वि [सपदारिम्] जगर वेको (विक 32)1 समाइब्स वि [सप्त्रीक्य] बायव करने मीग्य सेवा करने योग्य (से ६ ६) । चअठाइ सक [सप+गृह्र\_] धार्तिपन क्रा । संक्, उझकाईकप (पि १८६)। चअपस देखो स्वप्स (वा १ १)। **ठ≾ँचण स [तद्घन**न} १ ऊँचा फॅक्ता । २ इक्तेका पार्वकारक पात्र (दे ४११)। राजंबिय (शी) वि विद्यालयो १ लेंबा कठाया हमा खेंचा फेंका हुमा (नाट) । स्त्रांत पू [स्त्रमत] हरीकत कृतान्त समावार (पाम प्रामा)। समस्ति (शौ) वि [स्पकृत] विमयर उपकार किया गया हो वह (पि ६४)। सम्बन्ध विदेशपुरुष समे क्या हमा (4 1 4 b) t सभाग देशो स्वाग्य (मा ६४४)। कर्माचल वि [वे] परका निवृत्त (वे १ t =) 1 रुअप्रीति वि [क्पभीविम्] मानित (मिथ १८६) । सञ्ज्ञामाभ वेको ववश्माय (नाट)। समरी की दिंगीनी की कंपिनकारी नाडी 'कपट्टी स्वयो नीवी (पाप)। रअद्भिभ देखो स्वद्भिष (प्राप)। बभ्रणिश्र } रेको सबसीय (पाह ६) । उभयी अ रअण्यास देखो वचण्यास (नाट)। बभर्यत बेढी सम्बट्ट = उत् + बृद्र । ₹=

सञ्जरमाण बेलो उबद्धाण (नार) । च अस्विध देवी उवद्भिय (से ११ ७६)। उभविद्व केती उपद्व (नार) । एअ**भुत्त वेको पत्मृत्त** (रंगः) । चल्रभोग देखी उद्यभोग (नाट)। रुअमिळांत वह [उपमीयमान] विस्की तुलता की बाली हो वह (काम ८६६)। सभर न डिव्रों के (क्रमा)। चलरिं) देशों डबरि (ग ६४ से व सञ्जरि ( ७१)। समरी की वि शाहिती देवी-विशेष (दे १ उअराम् देवो एपर्डम् । उपरम्मह (शौ) (मार)। डमरोस } देवो स्वरोह (प्रापः नाट) । उसस्य देवो उवस्य (नाट) । रुमविट्रज न [भीपविष्ठः] भारत (प्राङ् t ) ı डअविय वि [दे] सन्दर्भ पहरा में लिख मत्तं उपनियं चन पुरमारो (बृह १)। पञसप्य देखो उपसप्य । उद्यम्य (दक्ति ११)। उमसम १ देवो चवसम=रूप÷राम् । रुअसम्म े जमसमह, स्वसम्मह (प्राह्म ११) क आहम [दे] येको पश्चिम (दे १ १० रञह्स देवो सबह्स । उम्म्ब्स (प्राष्ट्र १४)। बसहार देखो समहार (नाट) । उमहारी की वि बोगमी बोहनेवाची की ( 1 1 5) कमदि पुं [त्रवृक्षि] १ समुद्र गायर (वटड)। २ स्वनाम-क्यात एक विद्यावर राजकुमार (पतम १ १६६) । ६ शास परिमाण साय-रोप्तम (मुर २ ११६)। ४ स्वताम स्याद एक पैन मूनि (पटम २ ११७)। देखी बद्दिः छमहि देवो स्वहि = उपनि (पच १)। उमहुर्व्धन रेको प्रपर्भुख । समहोज देवो उत्माग (प्रवी ३ ३ नाट) । उभाम रेबो न्याय (नाट) । उआअन देवी उदायज (नाम ४१)। उभार रेको उरास (गुगा ६ ४३ हजू)। क्यार देखी क्रमपार (पर्गतक)।

एआईम देवो एवाईम = उपा 🕂 सम् । 🕏 १बार्टमणिख (गट)। हभाउम रेखी हवार्सम = उपलम्म (ग्र 3 1)1 धआदम देशी धआर्थम = उना+ सन्। ख्यामभेमि (वि ८२)। षञास्त्रिको दि] पर्वतंत्र शिरोनूपरा (दे १ प्रथास वि चिदास दिने देनो (पिन)। उआस रेखो उवास = इमा + मामु । करहू. रुद्यासिकमास (हास्य १४ )। उआसीण वि [उदासीन] १ ज्यासी दिल भीर । २ मध्यस्य कन्स्व (स १४१ माट) । उआहरण देखी उन्नहरूप (मन १)। उइ.सक [उप ±इ] समीप आना। एएट क्एउ (पि ४६३) । तक्ष्मक बिद् + क्री धरित **हो**ना । उस्ह (रमा)। वह उद्यंत (रमा)। **बड्ड देवो उड** 'घल्गेवि हुंतु बड्डमी सरिसा पर ते (रमा)। राय पू ["राज] परन्त ऋत् (रमा)। पश्चम वि [हदित] १ उत्तम प्राप्त उत्पत (सुपा१२७)। २ उत्तः कमित (विमे २३३ वर्षः) । परकम पूं [पराक्रम ] एपाक-वैश के एक राजा का नाम (परान 🗶, ६)। टइश्र वि [उवित] योग्य सामक (से द 1 (# 2 उर्देवण न [द] बत्तरीय मझ, पारर (दे १ १ ६३ दुन्सा) । अर्थ र् [ वपन्त्र ] एन्द्र का घोटा भार, विच्ला का नामन सनतार, को प्रसिति के गर्भ सहसा मा(देहर ३)। उद्गृद्ध [अप**हृष्ट**] हीन संदूषित 'बार्साच मन्त्रवम्मस्यकृते वेसे (गुप्ता १ c)। सङ्गण्य देवो उद्गिण्य (ठा १, विने १ ३)। उद्गण्य वि डिवीच्यो उत्तर विद्या-सम्बन्धी क्तर दिशा में उत्तम (पादम)। उन्**स रे**खो आन्त्रम्य (सम्मत्त ७७) । उद्देश देनो उद्द = उर् + द । बद्भव्य देखो हदीम (राय) । नईर देतो उदीरा 'उट्टि मनीई' (या

२७) । यह अङ्ग्लं (पुष्क १३) । संह

उद्रश्का (नूम १ ६) ।

बहरण रेको उदीरम (ठा ८ पुण्ड १८१)। बहरणया ) देवी छत्रीरणा (विमे १११६) **मईरणा ∫ टी कम्मन ११८ विसे २१६२)।** उद्गरिय देनो उदीरिय (पुण्ड ११६) । चड पि चित्री १ ऋतु दो मास का काल विशेष वसना मादि छ' प्रवार का कल (बीरा यन्त ७) 'उड्रा' 'उड्रा' (क्य) । २ इधे-कृपून रजो दर्शन, स्त्री-वर्ग (ठा ४ )। बद्ध पूं ["बद्ध] श्रीत भीर उप्याकाल बर्धी-कार क बरिटिन्छ बाठ मास का समय (ब्रोज ६ २६३ ३४६)। साम ग्री िमाम रिधावल मान (वद १८८)। २ तीम विकाला मान्य (ग्रम) । य वि विज्ञी मनुर्मे छन्ता समापर उत्तम होनेदाना (क्टइ २ ३ स्थाना ११) अन्यद्रकर प्रवाद्वराज्यसम्मामपूर्वेरणविद्यामु । पनिद् रज्यसम्भा समेति बार्रिगुदिनवसहाँ (खामा 11) ैमेनि पूरती [संघि] ऋतुका स्वीचनक श्चन वा धन्त समय (धाना) । स्वित्वहर र्षु ["संबरसर] वर्ष-विश्वेष (हा १) । रेनो **१३ =** एउ । कर्तवर केली जंबर = बहुम्बर (दुमा है है २७ पर्)। **च्छत्रहिय न [ऋतुबद्ध]** मामनश्र, एक मान तक एक स्थान में साबुका निवाला-बुजान (माचार, २०)। चक्रास्य ) पूर्व [ सङ्ख्या ] रहत्रत, कृत्व क्रइस ∫ (कुमाँ पर्; इ र १०१) उपदुर् हि फिला पिरेप (पर्म १४६)। उज्ञास्तिज है हि सम्बद्ध, संप्रक (पर )। इंस दिहे इन घनी का मूचक सम्बद—१ था किन्ता २ विस्पर । ६ क्षेत्र । ४ বিক্রন হ মুখৰ (লাস চই)। चेंघषक [नि+क्रा] नीवसेना । चेच्द्रः (K ( 12) i र्जबहुआ स्मे [ह] बहुमारा (६१११) । र्वेड पुन [बस्ड] भिष्ठा (भूम १ (4) t इंद्र 🕻 [इथ्यू] थिता, मादुवरी (इन ६७७)

योष ४२४) ।

तस्य पूर्वि वस्य ब्रानेया काम करन नला फिली द्वारी जो करहा द्वारण है, धीट बनाता है वह (दे १ ६८ पाम)। र्धन तक [सिन्] सोवना धीइक्या। चॅनिका (सन)। मनि—रीनिका (पुरा **235**) i र्देश सक [सूत्र] प्रयोग करता कीहता 'बाहमदि चेत्रीन तह किर्दि (क्रम a टी) । र्दज्ञासम्य न [उज्जासन] मात्र-विदेश को वरिष्ठ-गोन की एक शाका है (ठा ७)। उंजिल वि सिक्त सिक, भीइका हुमा (नुपा १३१)। तंत्र ) वि [वि] १ पधीर, यहा (वे १ संबंध ) दश सुना १४ उस १४० दी दी र्वेडव र : मा १६)। २ दू तिएन भाषाई मेंग्रज्ञम मञ्जालाई विराहण्या' (मीप २४% क्य)। १ चनते समय प्रव में निरुद्ध का से मग बाय उद्यक्त गहरा की बढ़ कर्यम (धीक ३३ मा)। ४ शपीर का एक ब.स. सांस रिटा 'दियग्रेटर्' (दिश १ १)। सहग ) न कि स्थिति, स्वल बस्द (दस र्मुम ∫ ४ र १,१ अ) : र्वेडक न दि १ माच मचान उचालनः २ निकट, समूह (दे १ १२१)। र्गहियां स्थै [क्] मुक्त-विदेश (राज)। स्त्री क्वितिगर गैतकार बस्तू, 'स्त्रव र्ग एक बरमञ्जूष के पुट्टे परिवादने विद्रूट बीपेट्टरे निष्मणे निष्पण निजमुद्रियमाधे मञ्चीप्रीट्य पप्रवित्र (खावा १ ६)। उदर १ पूर्ण [इस्दुर] मूपन भूग (वज् डंबुर क्लिय हैं रिजा के १ र के)। बंदुन दि] मुद्र मुंह (यमु २१) । इन्ह न दि । पूर्व में बूरम पारि ना नव्ह बाबाब करना (क्यु २१)। र्वदुरम दुं[ंब्] बामा दिख (दे २ १ १) । र्देदुरु पूर्णा [त्राहुरु] बूगक ब्रह्म (सम २, वंत पू विस्ता बुध-विदेश 'निवयवंशवंदर' (पर १ ३१ थि)। चंबर पू [त्रदुम्बर] १ बक्र-विश्वय पूतर का पेड़ (नरेख १)। २ तः दूनर नाकन (माप्र)। ३ देश्नी बार क ग्रीचे की सकड़ी (९१६)। इष 🖞 [द्वा] १ यह- ।

विदेश (विना १७)। २ एक सार्वेगाहका पुत्र (विचार ७)। पंचय, पत्रमान ["पञ्चक] बढ़ पीरत धून८ प्यव और बाकोहरवरी इन पांच बुतों के प्रम (मृग ४६ मन १ ३३)। प्रफान प्रिप्ती इतर का फून (यग ६, ३३)। उंबर दि [दे] बहुत प्रदुर (दे १ १)। एंबरकप्प न वि] नदीन सम्प्रस्य सपूर्व क्षप्रति (दे १ ११६)। उंबरय प्रदि कुत रोव ना एक मेव (शिरि (45 t र्षणाकी वि}यन्त्रम (देर ≂६)। र्दशीकी [द]पका द्वमा मेट्टॅ (२.१५) मुस ४७३)। बंबे मरिया स्वी दि । बृत-विदेव (पन्पा १)। र्वस सक [दे] पूर्ति करना, पूरा करना (धन)। उक्टिट देवी प्रक्रिट (पिन)। बकुरहिया [वं] देवो उककुछिया (निर t () ; बच्च वि [हत्क] १ जमुक जमारिकत (मुर व १३)। एक विद्यापर राजा का नाम (पडम १२)। उच्छ वि [इक्ट] नवित्त (सिंग)। उच्च व वि}ेपाद-पत्तन पानपर विरक्र नमस्कार नरना (वे १ वद्)। ब्बाज वि [वे] प्रका कैस ह्या (पर्) । उद्देशम १० [के] १ सूझे प्रतेश करना उद्यापना रे कुर्यम् र (गुला १ २)। २ कॅचा करना बराना (नूस १,२) : ३ भाई निवारता (निवृध्)। ४ वृद्ध, व्याप्त (बसार)। १ मूर्वपूरल को इनलंकाने पूर्व ना, ममीप्रस्य विषयाण पुरुष के बार में भीती बेर के मिर निरमेट रहत (बीत)। हीन प्रै विंपी अंचा बंदबाना प्रशेष (धन्त) । क्षमञ्ज्ञान दि देशो नक्षमण (स्व)। दक्केट सक [दन्+क्स्ट्र] **ब**ल्ला करता, उत्पुक होता । उत्तरदिह (वै ७३) । नर उपकंठत (में ६३) । इर अपकेठिई (सी) (पनि १४७) । बक्कंटा को [बरकप्ठा] कनुवता भीलुस्य (Et 425 1 ) i

दमक्रिय | वि [सस्क्रियेठस] उल्लुक (या सम्बद्धिर | १४२ सुर १ मध्यपनम ११ प्रवर्षञ्ज्य ) ११८३ परमा १ )। स्वर्म्ड वि [प्रकारिकत] सूत्र सहा हुमा बिरोप क्रिया (पिंड १७१) । चक्कंडय सक [डरकण्टय ] पुसकित करना विवसेनि भूवसंभावणाए स्वतंदर्यति संगार (गुरुष) । जबन हय वि [हत्कण्टक] पुनवित रोमाप्रिवत (बरुड) । सक्क आ की दि इस रितन्त (रे १ ६२) । सक्कंडिश कि वि] १ बारोपित। २ सरिन्त स्वरूपेत वि (स्टब्सान्त) क्रेया गया हुया (भाष)। चन्ति । की [दे] देवो चन्त्रंता (दे र सम्बद्धी (यथ)। सक्कृत् वि [दे] विप्रतस्य ठमा हुमा मध्यित (पड़)। सक्कद्ध वि जिल्हामुख्य अंदुरिया (यवर) । सम्बद्धी | जी [वे] कूपतुमा (वे १ ८७)। **एक्ट्रंप प्रक** [सत्+कम्प्] कौपना हिनना । बदर्भप तुं [बरकस्प] कम्म वसन (सरा मा ७१४ )। स्वकृषिय वि [संस्कृष्यित] १ वस्वन किया हुमा (राज) । २ न कम्पे हिंबत 'गोसस्वर'पिषपुतदर्शि अग्रोति छविने वरुषा । सम्बारिसीहि विट्ठे, पिसम्म ग्रापावि बीसरिमी (सा १६१)। क्षकापिय वि वि वि विश्वतित स्पेन किया ष्ट्रमा (क्ष्म)। दक्कंश्यान दि अवस्थ्यन ने गठ पर काठ के हाते से चर नी करा बीक्ना वरका संस्कार विदेश (बृह १) । चक्कं विय वि वि अवकृत्मिती करु से बीवा ह्या (राम)।

एक्फ्रच्या की [उत्कृष्ट्या] सन्द-विदेप (पिंग) 1 सक्किष्युका को [औपकक्षिकी] कैन साध्ययों को पहनने का बद्ध-विशेष (सोप ६७७) । हक्क अञ्च वि [दे] धनवस्थित चम्चन (पह्)। रुक्कद्रि औ [अपकृष्टि] प्रपत्नमें हानि (वय १)। धक्कद्विस्था विस्कृष्टि छक्तर्पं भवता उद्गद्विशिष्णारकतकत्त्रेण' (सुरव १९---पन २७०)। देखो समिक्स्ट्रि। चक्क विकिन्द्रद्वी रेतीय प्रकार प्रचार (गृष्टि, मञ्जा) । २ विद्याल विस्तीर्ग् (क्रम सुर १ १ १)। ३ प्रमत (उनाम्युर १ १७२)। एक्टर रेको हुक्टर (ज्य ६४६)। रुक्कडिय वि दि | तोड़ा हुमा, स्ट्रिक्स (पाम)। त्तक्षिय रेतो स्वकुत्य (क्य)। डक्कब्रह एक डिल् + केंग्र प**ी** संख्य करता बद्दला । उद्देश्वए (कम्म ४, १० टी ) । वक्कब्दम पू [अपकर्षक] १ जोर की एक-कार्ति भो धर से वन सादि ने बाते 🕻। २ जो कोर्से को बुसाकर कोरी कराते हैं । ३ चोर की पीठ ठोकने वासे चोर के सदावक (पर्याः १ वि)। चक्कविद्यावि [तरक्रिति] १ तलानित छठामा 🛊 मा । २ एक स्वान से छठाकर धन्यत्र स्थापित (सिंह ३६१) : बक्कण्य वि [डल्कर्ण] सुनने के निए उन्सूर (t & 24) : उनकत्त सरु [उन् + कृत्] बाटना कराला । वष्ट चवककत्त (सूपा २१६) । एक्कच वि [स्टुच्च] कटा हुमा, व्हिन (विपार ३)। बक्कताण न [बरफर्चन] काट शासना छेतन (पुरुष १०४) । दनकत्तिय वदो धनकत्तः = उन्द्रतः (गरुम १९, २४) I वनकस्थण न [बरकस्थन] छवाइना (परह t () ( बनकरप र्षु [इल्डस्प] शासन-निष्टिक माचरण बक्कच्छ वि [बरम्ब्या] स्टूट, स्पट्ट (पिप)। (पंचमा)।

सक्कताह र्षु [दे] सत्तम बरव की एक वाठि (सम्मत्त २१६)। डक्कम सरु सिस्-†-ऋम्] १ अर्थे पाना। २ इतटे अम से स्थाना । नहुः उत्तरहर्मत (बाबम)। एक धक्कमिकण (विधे 1411) I रक्टम पूं[रक्टम] धनगद्भम विपरीद क्रम (विसे २७१)। चक्कमणान (चक्कमणा) अर्थाणमन । २ बाहर बाना (समु १७२)। रुक्कमितः वि [उपकास्तः] १ प्रापःका । २ कीए। 'प्रकारमितिना वा दुहे, प्रह्रवा उद्दिमिते मर्वतीए । एनस्य गढी स सामती विदुर्गं ता सर्राण सम्बद्धा (सुमार २ ६ १)। सक्कर सक [सन्+कृ] चोदनाः कतकः धक्करिंग्जमाण (बारम)। डक्कर पुंचिरहरी १ समुद्र संपाद 'सन्द्र-स्तकरसम्बद्धे (मुना ११०)। २ कर-रहित राज-देम सूक्त्र से सिंहत (लासा ११)। धनकरह देवी सकक्षर = जलार, 'कस्सावि पत्तरीयं महिक्स क्यो स उपरुरहों (सिरि च्हर)। सक्तरकष्टु दि] १ सनूचि गरिः। २ वर्श मैना इन्द्रा निया चाता है वह स्थान (बा २७ सुपा ३११)। **डक्करिअ वि दि रे क्लिटीएँ बायद ।** २ मारोपित । ३ लिएइत (वर्)। पक्रांरम वि शिक्षीर्णी बोस्ति शोध हुमा टेंडुनकरियम्ब निक्तनिहित्तनीयणा (महा)। रमकारव (थी) वि [**उस्कृत**] जैवा किया हुमा (स्थप ११) । धक्कारमा की [श्लारिका] कैने एउए वर्ष बीज से सबका विजना सत्तग होता है पर वरह मनव होना भेर-विशेष (मन १, ४)। चककारस सक [बत्+45प] १ पीवना । २ वर्षे करना वहाई करना । वह उक्करिसंद (B 44 E) 1 उक्तरिस देवो एक्क्स्स = उक्त (उक् विसे १७११)।

उक्कुल प्रक [उन् + कुब्ज् ] जैवा होकर नीवा हाना । संक्र उबकु क्रिय (बाबा) । उद्यक्तिय न [उत्कृतिक] यसकः रूप (नीच्)। उस्कुट्र न [उरदूष्ट] बनम्पति ना बूटा हुमा पूर्ण (भाषा निषु १ ४)। उक्कुटु वि [उत्पष्ट] जेंचे स्वर मे माकूष्ट (\$ t xo) उक्युकुरा १ वि [उस्युक्क] मासन विरोध उस्कुड्य मिरचा-विशेष (मम ७ ६ घोण १५६ मा खाबा १ १)। स्री उत्पुद्धाः (छ १ १)। सिणिय वि शिसनिकी उन्दूर्व-मामन से स्थित (हा ४, १)। उक्टुइयक [प्रम् + सृद् ] दूवना उद्यक्ता। उल्हूद (उत्त २७ १)। उरबुक्ता रेगो उरबुक्डिया (धी ११)। उद्यक्तक प्रदेशी उद्यक्तिकी (ग्रेम ११)। उब्बुल्ड पंदि । यशि देर (दे १११)। उरकुर्दिगा। भी दि पूरा मुझ सलने उक्कुरिया भी नेपह (जेर १११ टी निपा उक्दुरूनी । ११ छोषा १२ देर tt ) i उक्कुम सक [ गन् ] भागा, यमन करना । ब्राइन (१४ १६२)। पुष्पुरम् वि जिल्हा उत्तम थेह (बुमा)। उपयुद्धय म [उत्कृतित] सम्बद्ध नहा-प्वति (दसन १ १)। पुरुष हि जिल्लु हो । सन्मार्ग से घट कर्दवालाः २ जिनारे ते बाहर काः ३ न बोरी (परह र ३)। प्रस्पाद कर [उन् + पूज ]सम्बद्ध माराज क्रम्य किन्तानाः। का उरकृषमाम (रिपा १ तिर १ १)। अस्पर पू [अस्पर] १ मपूर परिव, देर (कुमा महा) । २ वरण विधेत कर्नो नी स्मियारि को बढ़ाना (विते २५१४)। ३ क्रिम गरमद के बीज की ठाउँ की मनप रिया बया ही बढ़ (रात)। जनकर पुंचि काराय में (६१ ६६)।

प्रकट्यापिय वि [इ] बोनाया ह्या

नुष्तवाया हुयाः 'यदन्ता कावेशिया' बीज्य

बाई, निक्रिया" धनातयो जात रिट्ट

मोत्तियाबाना" (महा) । उद्योद्भिय वि [वि] मनपैय-पहित किया हुया थेरा उठावा हुमा (स ६३१)। उद्दोद्द न दिं] सत्र-पुत्त में दलस्य प्रस्य, राजा मादि को दिया जाता उपहार (वन 1 (13 9 प्रकाशासी दि]पूस च्यापत (दे१ ६२ पएहर ३ विया १ १)। उड़ाड़िय दि दि] पून लेकर काव करते-बला कुमचार (खाया ११ धीन)। उद्गोही भी दि] प्रतिराम्य प्रतिम्मनि (वे 1 (13 5 उद्याद वि [उरशेष] प्रश्नर, ब्रस्ट (मणु) । **उक् क्रोयम देनो उन् धोयम (मनि)** । उक्सेमा औ [प्रशोषा] १ पूस रियन्त । २ मुखेको ठमने में प्रकृत पूर्व पृथ्य का समीपस्य विकास पूरप के मन स योड़ी देर के निए प्राप्त नार्य नो स्वयित नरना (सम्)। उम्हास पुंदि] भाग भूग गरमो (द १ उक्कावण न [उज्जोपन] स्हीपन, उत्तेतन 'मयणुररोवल' (मनि)। उक्स विभ वि [उस्स पित] मार्यत कुछ विया हुमा (उप १ ७८)। उस्सास नव [उन्+ अस्त्र ] १ रोता, विप्ताताः २ विरम्शारं करताः। बङ्ग उपग्रसंद (एव) । **प्रका**स वि [उरक्षे] क्यूट, प्रवान, मुख (पंचा१२)। उक्सम ५ [उत्हरें] १ प्रत्ये व्यक्तिस 'बररोनप्रश्नम् धंतपुररा विव विवंति' (जी १८ मीर) । १ गर्र मनिमान (मूम १ २ २ २१ सम ७१ हा ४ ४ — पत्र २७४)। प्रस्थम वि [प्रतृष्ट] क्ष्यपु, व्यवक्ष मे व्यविक 'मुरनेरद्रयान्त किई उद्योग्ता सामग्रात्ति विनोधं (मी १६) बोवविनं च मरास्या ब्रोत्मनवैरमानीती (बी १२) 'तथी विंपर त्तीयो परिवर्णनाः तं जहा-- तारोता मरिनदा बहरगा (टा १० वर)। उपराम पुं [उत्प्रास] १ पूरर, पश्चितिहेच

(पएड११)। २ वि कोर से विष्याने बला (स्त्र)। ल्क्स्प्रेसगत [इस्स्रेशन] १ क्ल्प्ता २ निर्मर्थन विस्तार. 'बदोसण्डळण्डाहणायो धवमालुहीमलाघी व । मुणिली मुणियरस्या वद्रपश्चरित्र विस्तृति (उर)। उक्क्षमा भी [उरग्रेशा] शेखनामक एक प्रसिद्ध बेरया (वर्ष वि ६७)। उक्कोसिअ रि [इरकोशित] मर्सित विरम्हत बुनकास हुमा (बर पू ७८)। उरक्रांसिअ वि उरक्रिये देखां उक्कास = क्ष्यूप्ट (क्ष्य: मज ३७) । धमस्त्रेमित्र पू [प्रस्त्रीशिक] १ पौत्र-विरोप का प्रवर्तक एवं श्रापि । २ तः मोक-सिरोप 'पेरस्य एां प्रज्यवहरदेशस्य क्रामीनिवरीतस्य (季年) ( उपकासिम वि [हे] पुरस्तव भागे किया हुमा (पड्)। उनकोमिया थी [उत्कृष्टि] उत्तर्थ बाधिस्य उनसम्बद्धाः उनसम्बद्धाः (विमे 250) ( उस्पानम [उस्] सीचना (नूपार २ ११)। उपन्य जिल्ली १ संबन्य (राजः)। २ जैन साम्प्रिया के पहुंक्ते के बग्न-पिरोप का एक पंग (सा १)। रुरस्य देनो उच्छ = ४:३न् (पाप) । प्रकारम वि [उस्प्रचित्र] स्वात, मरा ह्या (年 11) 1 उपगंड नव [उन् + गण्डयू ] शोहना द्वाहा नरना । नहः उपस्येद्धेव (नार) । उनर्रह पू 📳 १ संपात समूर । २ स्पपूट, रियमोम्नव प्रदेश (दे १ १२६) । उपग्रंहण न [डलप्टन] चनर्तन, रिच्येरन (दिकरद) । उस्य इम वि [उत्सर्वित] चाँगरत, दिन (1 x v1) i इस्रविकारि [६] याजान स्वासाम्ब (वे १ ११२)।

धक्तंत् पुं [अवस्त्रम्य] र वेध वालना। २ भ्रम ने शक्तुचीय को मारणा (पद्ध र २)। वक्तांम पुं [उत्तरम] भवतम्य स्वाध (संता)। सक्तमंभिय वेदो उत्तरीस्य (मरि)।

तक्तंभिय देवो उर्ख्याभय (परि)। सक्तंभिय १ [बीचिन्सिक] स्वतस्य तहारा (एव)।

क्ष्मनवस्त्रा य [न] पुन पुन नारेनार 'क्ष्मनस्त्रा वा पुनी पुनीत ना पुनी पुरोति ना एन्हां (वन १)। बहत्तन धक [नत् + सान] स्वाप्ता कच्चेक करता नारुषा। स्वस्त्रामार्थित (पणा १

१)। एंड उस्त्राजिक्या (शेष् १)। स्त्री, एक्स्यस्मिति (पि ४४)। र तकः प्रकल्पसीत (कृष २४)। इ. उस्त्रासिम्बस्स (चे १. २६)। इस्त्राण रूप विशेषात्रा, दुस्त नरेष्यु चे सोडि मारि का विस्ताना इर करणा वि

१ रेरप्र)। तक्तमण नि [क्] सन्दर्भर्तं, कृष्टित ( पर् )। बक्तमण न [क्त्सनन] क्यूनन स्रपाटन

(नरह १ १)। छक्त्रमण्यान [वि] बॉहना निस्तुपीकरछ (वे १ ११२ टी।

(का राष्ट्रया उदम्मणित्र ग [क] चरिक्स, निस्तुनीहरू (केर राष्ट्र)।

(वर ११२)। द्वस्ताच केते जनसम्बर्गिट १९६ | १९६)।

क्वासम् केदो उपकार मध्य + क्य । उपराय वि [उस्साव] १ ज्यान ह्या क्युपित (साव्य १ को है १ ६० वस् । महा)। १ जुनाहुबर, क्युक्टिय

'एलन्यर्गमा वत्तो, नुवाहविज्ञाहरी वर्षि मास्छे। बालामधान्या हिहा श्वनारा वेखनि दुवारे'

(पुना ४)। इनमस्त हे जेते बळसास (दे १ १ हम इनसास्त्रा है १ १ १२)। इसरास्त्रिय वि. बि. बस्तावित क्रमूनिय बन्मास्त्रिय (वे. ६ ११)।

उत्तरमंत्रिया । ठी [व] वाली पाव-विदेश इत्तरमंत्रिया । ठी है के अं चल्वलिया बाली वा वायुश्चितियों वा माहावस्त्रियां (तियु १)।

उपन्ताभी क्रिक्ता] स्वाची प्रावननिर्धेत (सावा २ १ १)। उपन्याद्वर (वी) वि जिस्सावित] अपूर्व

(कार १७)। इस्सान केती प्रमसन (दे १ ६७ वा १७३)।

२७३)। धक्तास्य एक [ चत्+स्रतः सास्य्] कवाङ्गा स्कृतन करता। एक- वक्तस्य-कवार्गा स्कृतन करता। एक- वक्तस्य-

इचा (रमा)। विकास देवो उपकास = एवं + चन्। व्यक्ति यामि (व्यक्ति)। संकृ व्यक्तिविधि (मप) (व्यक्ति)।

सिम्बरण वि [वि] १ सप्तरीयुँ, श्वास पूर्वता २ सावस कुटा १ पार्ट में तिर्मित एक तरक से बीबा (दे ११)। सिम्बर्ग हिं [बिह्मिस] १ केंबा हुना। सिम्बर्ग है र जैना हमाग हुना (पार)। १ केंबा किया ज्या (स्तरा १ १)। ४

क्युसित चलाटित (श्व) । १ वहर

तिकामा हुमा (चल्ह २ १)। ६ व्यक्ति (पित)। ७ त. वेच-किटेन (चल का ४ ४)। चरम नि [चरक] पान पान वे बाहर किनाने हुए मोनन को ही घहरा करने का किनाने हुए मोनन को ही घहरा करने का किनानवामा (बाहु) (चल्ह १, १)।

विकारण देवी उस्तित्र = वत् + विज् । विकास वि [बिच्चित] सिक, बीचा हुन्छ "वस्पोरिकवनामसरीरे" (नूम २, २ ११, वजा ।

विकित्स एक [वे] क्वाइना । प्रपा. हेक्र 'विकित्सा। वेड मामणी वृत्ती' (वी ४) । विकित्स एक [ एप + किप्] स्वापन करणा, मुक्त्स स सक्ता के नाम क्रीक्ट विक्सामों (य १९२) ।

विस्ताय सक [वन् + विष्यु ] १ फॅक्सा। १ फॅमा १९ म्हा। १ व्हरसा। १ प्रदेश १९७१। १ द्वरसा। १ प्रदेश (तुक १६)। वह 'प्यारे विस्तवेदी न सर्वक छहुना तुक्तेस्था (हृह १)। द्वर विस्तवेदी हो विस्तव्य (हृह १)। द्वर १ १, १)। वर्षा विस्तव्य विस्तव्य

प्पनाण (वे६. ११, परहार ४).

उन्दिष्पंत (के २ १३)।

ात्रस्थान । [उद्युवन] ( उन्ना हु। इत्या ११ वि. दु करणेसाता (कुमा)। इत्या हो वि. दु करणेसाता (कुमा)। इत्या (इत् १)। इत्या (इत् १)। इत्याहित केशे विकास (दुर २ वि.)। इत्याहित केशे विकास (दुर २ वि.)। इत्याहित केशे विकास (दुर २ वि.)।

१ १९६)। उपसुंब धव [तुंब] वीतना दुवना करता। उपसुंब (४ ११६)। उपसुंबिक्स नि [तुंबिल] १ वर्गस्य विका निक (दुवार वे ४ २१ वृत्ता १६१)। २ व्यव विका दुवार, वर्ष विका दुवार परिचलका इस्टिंग, उन्होंबिर्ग

सालियास्य गार्थः। दुइ बोर्ग्यं हो खुशा पुणो पुणो दुव्हंबं क्षेत्वर्गं (दुनः १३)ः। सम्बद्धान्य नि िते बरकृत्य ने मारा हुन्यः,

'रहणुं दुष्येतुम्ब्रुतिमधेनक्षियं विज्ञान्तेती' (बा ७११) । एमस्तुकम प्रकृष्टि बन् + हुम् ] प्रमाहीता। कम्ब्रुम्मद्र (प्रकृष्ट) ।

वस्त्रुपुर्विभावि [वे] विश्वतः योजाह्या (वे१४)। वस्तुर्वेप वक [वे] बुजनामा। संब्रः वस्तुर सीपन (साचा २१६२)।

एक कुदिल नि [एरहुस्म] हुल्य को स-प्रान्त (वे थ १६)। वक्तीन ट्रे [एरहुप] १ वलाइन छन्नान (पीर)। १ क्रेंचा करता (बढा)। १ वी स्टाना वाप वहा 'इसके हिस्सी प्राप्त-

वस्त्रेव पुँ [यसप्पेप] वर्गस्थाल भूमिया (ज्यानिया १२३ ४)। वस्त्रेवमा वि [एरब्रोपक] १ ईवा (ज्येन वासा १९९ एक माहित्रा थेवा स्पर्य-विदेश (परह १,१)।

भरपुनिर्' (निंद १७ )।

ावस्य (सद्ध ए. ४)। यक्तीबस्य न [तस्द्रीसस्य] १ सॅकना (पतन १० ४) । २ क्षण्युनन स्वसादन (नूम १ १)। उक्लेपिअ वि [स्ट्रिपित] बताया हुमा (धूप) (मृषि) । उक्नेबोडिज वि [स्टब्सेटिस] १ उद्याप सहाया हुमा (पाम)। २ विद्रम स्वताहा हुमा (देर १ %, १११)। उस ग्रंद [उन्+सम्] प्रतित होना। सगद् (नार)। छत (प्रद) वि [उद्गत] स्वित (पिप)। उगाहिक वि वि] उक्तिप्त पेंका हुमा (पर्)। उगुगपम कीन [एक्सेनपद्मारान् ] जनप चाम ४१ (मुख्य १ ६ दी)। उगुणकामा स्त्री [एकोनविंशवि] उप्तीय १६ (मुल्य १ ६ धि)। सगुणुत्तर न [पन्धनसप्तवि] उन्हत्तर, ६९ 'रुपुणुत्तराई (गुरुव १ ६ दी)। डगुनड६ स्त्री [एक्प्रेननपति] नवासी ८६ (इम्म६३)। उगुमीइ स्वी [एक्टेनाजीति] ज्ञासी ७१ क्रम् ६३)। उसायर [उर्+सम्] बरित होता। क्षणे (चिंग)। शह समृद्धि "दव ! पसम्ब गुक्रन्ताराचं बुद्धविषट्टलूग्यंतमिष्ठ-(१वि) चन्दु-मारिगा' (धर्मा ४)। चुरम् सङ [उद् + घाटम् ] कोमना । सन्मद (8 × 44)1 उसावि [ब्रम] १ तेव तीक प्रवर (पत्रम द्र**१ ४)। २ दू शक्ति की एक का**ति जिसको मगनान् साविदेव नै सारलक-पद पर नियुक्त की भी (बाद १)। यह स्थी [ यत्री ] ज्योति -शान्त-प्रस्ति नन्दा-विधि नो सन (३ ७)। "सिरि दुं ["भीक] राज्ञम वंश का एक राजा स्वनाम-व्यात एक हरेश (पडम १ २६४)। सेण 🕻 ["सेन] महुरा नगरी ना एक पहुनराध्य राजा (खाया १ १६ भीव)। हरराद्ध सक [ उन् + मन्यू ] बोसना याँड कोसना । संक्रु क्रमंडिडए (हम्मीर १७) । सर्गाच वि [प्रदूरमण] मन्दर नुवस्पित (पउद्य) । सर्गाया । धन [सद् + गम] परम सर्गाम | दोना । चन्त्रमहि (शी) (नाट) ।

स्तमम् (वका १६)। सम्मम (काल)। बद्द उग्गमंत, उग्गममाय (गुपा १८ **क्एए १)** । समाम प्रे [सर्गम] १ स्टाति स्ट्रम 'तन्तुरममो पमूर्व पमत्रो एमार्व होति एयट्टा' (राज)। २ उदयः 'मूक्पलेर' (मुर १ २५)। ३ उत्पति म सम्बन्ध रखनेवासा एक भिन्ना-कीय (धीव ६४, ६३ मास्त्र t ) 1 उग्नमण न [उद्गमन] उख (सिरि ४२० मुज्य १)। रुगामिय वि [उद्गमित] स्पानित (निष् सरगय वि [उद्गत] सरग्र बाउ (भाव **१) । २ प्रतित, सरम-प्राप्त (मुर १ २४७)** । ६ व्यवस्यित (राज) । छाराह सर [रचय् ] रचना बनाना, निर्माण करना। करना। सग्तहर (है ४ ६४) । एसाइ सक [ ज्यू + प्रद् ] प्रहण करना। छरगहर (भग) । सहः उस्महित्ता (भग) । उग्गह पुं [अवमह] इन्द्रिय द्वारा होनवाना सामान्य ज्ञान-विरोध (विमे) । २ प्रवसारस तिरचय (उन्ह)। १ प्राप्ति साम (माचू)। ४ पत्र माजन (पंचा ३)। ३ शाब्दियोँ ना एक छानच्छा (योव ६६६ ६७६)। इ मोनिशार (बृह १) । ७ प्रहुण करन योग्य बस्तु (मर्स्याः १ १) । द मामय, मात्रास स्मान बसरि (पाचा)- 'पाहापडिका उत्पाई घोमिन्हिता (ए। या ११)। १ वह वस्तु. विकार काला प्रमुख हो क्वीन चीव (बृह १) १ देव मा ग्रुप में वित्तती दूरी पर पहने का शास्त्रीय विमान है उड़नी बनहू, मयोश्चि मू-माम, पुरुषि नी कारों तरफ की राधेर-प्रमाण जमीन 'घलुकाण्ड् में मित्र न्यई'(पडि)। यंत्र ग्रेंतगत ["(सन्द क] बेन साम्बियों ना एक पुरान्धादक बस्त बाबिया सँगेरा 'खाइंतोरयहुगुंदी' (बह १)। पट्ट पट्टग हुन [पट्ट क] वेखो पूर्वीक सर्व 'ना कणाइ निर्मावाली , उपाइएकिमें का उपपद्भदूनों का कारिक्कण का परितरिक्तए का (बृह के)।

सरग्रह पुं [अवग्रह] परेसने क सिए स्टाया हुपाभोदन (सूप २ २ ७३)। सरगहण न [अवगहण] इतिय हाय होने बाला सामान्य द्वामा 'मन्यार्थ रूपहर्ख धनग्वह" (विते १७१) । सगाहिल कि [रचित] १ किमित किहित (कुमा)। उग्गद्भि वि [अवगृहोत] १ सामान्य रूप संज्ञातः। २ परोसने के मिए चठाया हुमा (ठा१)। ६ मृहीतः ४ मानीतः । ६ मुकार्ने प्रश्नित "तिषिद्वे सम्बद्धिय पर्यक्ते -- व व त्रिक्त्रहरू, वं च साह्रदर, वं च मासदिम पश्चिपति (गव२ ८)। चमाद्विञ वि दि] निपूर्ण-गृहोत मध्यी वरह सिमाह्या (दे१ १४)। सन्नासक[सद्भागी] १ अविस्वर से गान करना। २ वस्तुन करना। ३ इसोमा करना, जन्माइ माद हसह. बसंबुद्धो सय करेद कंदर्य । गिक्तिण्यमितगो वि स धोसनी देश मेरहश् वा (चन) । वक्त- स्थापीय (स्र ८ १८१) । क्या डर्ग्गायमाण (पठम २ ४१)। उम्मातः वि [उत्यादः] १ मिन याहः प्रवस (उन ६व६ दी मूपा १४)। २ स्वरम, वन्द्रस्त (बृह् १) । धग्गामिय वि [उद्गिभित] क्यर एकमा हुमा ठेंचा किया हमा (सुबा १ १४)। रुगार्यंत थेवी रुग्गा । उग्गार १५ [प्रद्गार] १ वयन सकि है उग्गाम रिमुँला वे छ वहीत खिन्डला परकुगुरगारे (यज्ञ)। २ शब्द, मादाज व्यति "विषयपद्यक्तियाणो लक्षुदुहिबहुन मनिजनारी 'महितारियसमुन्यारमंस्या पविरवाहोसी' (गडड) । १ डकार । ४ वमन मोबाई (नाट-इस) 'निग्रक्षालात्त्र रम्बन्धवणपूर्वारेलं दिव केन्द्रमावेलाँ (स १११ निष् १)। र पत्र का छोज प्रवाद, 'कायानी चिद्योती' (शाय)। ६ रोजन्य पपुराना 'रामंबो सन्मानी' (पाप)। हम्माल पूँ हि बहाड पत की निकराय (पद १८)।

122

सना (वद १)। लतार सक्दिर+ प्रदीषण कलाः 'भाग्रतकार' रमकर, प्रक्र'ता संस्रा।' सत्ताहर (उस)। संद 'उम्माहत्ता बेरोन समार्ग प्रगान महानीरे तागेन बनलन्दार (क्या) ।

समाह सर भित्र + गाह ने मनगरन बारता 'ठामाहेति नत्याविद्यामी विविध्दा-मंदियाची (न १७)। करमाह सक [बद्र+स्ट्रिय र ध्यावा शरना। २ ऊर्जि से चनना । तस्यक्षद्र । (प्राप्तः ७२) । क्रमाह वं देनो प्रमध्हा (चित्र) । सम्माहण व जिल्लाहणी तकता के हुई

चीज की बॉम (नरा ३७ )। समग्रहिक्सा औ जिस्माहिकारी उत्तर देनी 'बकान्यानवारा पागरिन नयो छ्या मोरि । अन्तर्शासकार्यं (मना ६६२) । सगाइणी की जिहमाइणी अपर देखी

(K E) 1 समाहा की [उद्गाधा] हत्त-रिवेप (निव)। बमाहिक वि वि उद्याहित । शहीत तिया हुन्छ। २ जीतांत्र वेताहुगा। १ प्रार्टित (दे १ (१७)। ४ अवस्ति और त बनाया हमा (ताब न २१६)। वमादिम रि (अवगादिम) तनी हुई वन् ।

(तरहरू ३३)। उनिगण्म ∤रि [र्ज्योक] १ वन दक्ति प्रमाप्त । (व्यव) । २ वन्त उन्नीर्ण (लावा १ १) । १ उराया हमा उत्तर रिया हमा

'र्ज्ञाननवायम्बन्ते प्रस्तोत्त्र नरवर्धीर शिग्यद्वी। विो॰ घरो बहु। मान बाहा

रा परिहाँ (ब्रा १६ १४७) 'निश्य | निर्माशारीयह रत्तरप्रतिहास्य हे तुन पापी ।

र्रोपलनामान (१९) रेना वर्गनरतमंदी (तुद्ध 1 ) । र्शामार् रेगो र्रामान्य । ब्रांनग्य (बुरा १२१) ।

रह प्रिंगर्श (रूप) ।

सरिगरण म जिद्दगरण र दान्ति वनन क्या ५ चतिः क्वत

'मार्गासिकोवि ध्रथमाराजेषसा

क्षेपरमात करेंति। सहस्वस्वितरागः वे साह

इच्छिम्ब मंत्रीय (उप) । एरिग्रह सङ्ग चिद्र 🕂 ग्] १ नहता, बीलना । २ ब्रहार करता। ३ ज्यादी करता समय करना । ४ बस्रना । वह 'स्थिताल्यिसंत बमर्ए (शामा १ व)। संकः समितिस्ता

(क्स) चिमानेशा (तिक्र १)। बरिगासिय देवो स्रीगण्य (पाय) ।

क्रमीय वि उदमीती रेज्य स्वर से नामा हमा (दे ११६६)। २ न संनीत गीत नान (8 2 42) 1 रमगीयमाण देखी रुग्गा ।

बसीर देने उतिहर । नक 'बर्ग बसीरंडी इतिबद्दलं हवासमोवालं (इपा १६ )। रुगीरिक रेजी दरिगरम 'रुपीरिकी ममी-वरि, अमुबाहाक्षेत्रतरसङ्ख्यानी (सूपा१४८)। उग्गीव रि विद्यानी उत्करिक क्रम् (इ.स.) । किय रि क्रियो स्टब्स्ट्रिय विया ह्या (का १ ३१ ही)।

उग्गुल्किया स्त्रे दि दिन-रस ना उस्तना मानेष्ठेक (देश रेरे)। उम्माथ नद [उद् + ग्रोपप् ] १ बौजना । २ प्रपट करत्य । १ पितृत्व करता। बङ्ग रणी का पुरिस का मुक्तिनंते एवं मह शिगर्गतन का भाव मुरिस्तन्तन का पानवारो पामान हरगासमाण काबोबेह (बय १६ ६)।

इग्गोपमा न्ये [इद्गोपना] १ छोत्र परेषगा:

'दन्तम गरेनाग्रा सम्बद्धाः व समीवता य बोद्धमा । एत इ तकागुर नामा

एवद्विमा होति (दिन्न ७३) । र रेभी उप्तम अध्यम अधीरण अध्यक्त **४ द**र्बर्ट्याणि एकालि (निष्ठ ४)। उग्गोविय रि (प्रदुर्गापिन) विमारित भाना 'क'नोरियमिति धालमणे नन्नति' (तप ₹**६.६**) i

रराय देवो संय । सम्बद्ध (पत्र )। सरमंडि ) को कि वश्तेस रिप्रे-प्रमण (रे रुग्पटी रि राधड सक डिद्र + भाटयू ] डोलना (बाना) ६

सर्पद्र पद जिद्द + पदी कुलना। कामद्रद्र (चिटि १ ४)। उपमाँद (वर्ग R wel i

उत्पक्तिभ नि चिट्रचाटिती चुना अभा (वर्षे fr ww) i दरभडिज दि बढ पाटित । चना क्या । २ धिन न्यू दियाहमा (ते ११ १६०)। सरबर वि रिजगुड़ी गहरणांगे जिली पत्थार चौड़ कर संस्वास निया हो वह. सःभः

'बंदोच्न शासपन्त्री परिवार्ड पर वर बनावरसे । तह रूपरिश्वर्धनर्गन्ती विनय धन्त्रमं सहर्ष (खाबा ११ टी)। रुग्धव देशो अग्धव । जन्मद (हे ४ १६१ कि स्व)।

सम्बाम वंदिशि समुद्र संबात (देर रेर्दा म का प्रदा सक्का है है, देश)। २ स्वपृट विद्यमील्यत प्रदेश (दे १ १२६) । रूपाम १ (उरुपान) १ भारक कारम 'क्लापी बारंगी' (पाप)। २ प्रतिकत क्षेत्रर तका। ३ तक्करण मार-शत (ठा ३)। भ बरोगका मामका (तिसे १३४०)। द हाम (स १, २)। ६ न प्रस्परिशक शिरोप। निरीप नृत का एक बीग्र विकर्ते क्छा प्रान्धित्वत का कर्णन है 'दरशासमालाकार्य

हर्गासम् न अवपर्यन्ते वर्गेल (एम ६७)।

हरपात्र सक [उद्+भागव्] शितार करना। प्राचाएर (बत्त २६ ६)। उग्याहम रि उद्याविसी १ तब, होगः। १ न. सङ्ग प्राथित्व (ठा १)। उग्पाइय नि [प्रकातिन] १ विकासित (हा रै)। २ न सबुब्रापरिचत्त (ठा ६)। उग्माइय वि [इक्मानित] तकु ज्ञावरिकत

मायेवल विविद्वती निवीर्त तुं (माब ६)।

धारा (वर १) । उग्पाइय न [प्रदूषाविक्र] सबु आसीरवर्त (१न)।

उम्बाद एक [ एक् + बाटय् ] १ कोलन्छ। २ प्रकट करना । १ बाहर करना । सम्बान्द (१४ ३६)। जनावप् (महा)। संष्ट सम्माहिकण (महा)। इ सम्माहिशस्य (था १६)। करक उग्याबिर्मंत (से १ 12) ı

सरवाह पुंडियुपाटी प्रस्ट, प्रशास किंदु कभी बहुवाँह सम्बाहा निययकम्माएँ (सिरि **435)**1

सम्बाह देशो सम्बाह = सर् + पाद्य । हेर्र 'ते जिलहरम्स कार केलाकि को सीक्टक समारेलें (सिरि ३२८)।

रुग्याद वि पिक्याटी १ कुना धुमा धमान्यप्रदित (पर्वम ३१ १ ७)। २ थोड्रा बन्द किया द्वारा 'उत्कादकवा"रतकादगुरू (बाद ४) । ३ व्यक्त प्रका । ४ परिपूर्ण, चन्युकः एचंडर्सम्म सम्मादमारिसीसूयगो बसी पत्ती' (मुपा १७)।

सरपाइण म [उद्घाटन] १ बोनना (पाव ४)। २ बाहर करना, बाहर निकासना (उर पू ११७)।

सम्पाद्धना की [उद्भाटना] उत्पर देशा (मान ४)।

रुग्याहिश्च वि [उद्याटित] १ तुना हुमा। २ प्रवरित प्रकास्तिन (से २ १७)।

उम्बायज न [उद्घातन] १ मारा, निनारा (प्राचा)। २ पुत्रय-स्थान क्लम बन्धः। ३ मरोबर में जाने का मार्ग (गापा २ ३)।

सन्यार पुं [उद्यार] सिचन विकास विशिवरहिरम्बार निवश्यि वर्णणब्हें 

उरिषह । वि [प्रदूष्य] संष्ठ, 'नामरमूर प्रमुद्ध | किरोद्वारिषट्टवायार्थवर्ष (सष्ट्रम ४ ₹ € E ) I

उग्युट्ट वि [उद्युष्ट ] वर्धपत उद्योगित (मुर १ १४: सन्त)- 'समरवहुन्बुहुबयवदास्त्र' (मदा)।

बायुद्ध वि दि ] बजोध्यतः युवः ब्रुपेश्व विनारिक्त (दे १ ११)' 'बरपानिएनेछीनुह भलनग्दरपूरुमहिरमा अलपमुचा ( ने ११ ₹ ×) ı

उन्भूस सक [सूज् ] साज करता, मार्गन करता। कषुत्रह (हे ४१५)। सम्भूस सरु [ सद् + भूप ] रेक्ट सम्मोस ।

संब्र सम्बुसिअ (बाट)। प्राथिक वि सिष्टी मार्वित साठ किया

हमा (हमा) ।

रुग्पोस मक [ उद + घोषयू ] घोषणा करना विद्रोस पिन्हाना जाहिर करना। उन्होसंह (विपा १ १) । वह उन्होसेमाज (विषा १ १) गुना १ १)। कम्ह उग्बोसिक्समाम (बिगा १ २)।

उग्योस र् [छद्याय] गीवे देशो (स्वप्न २१) 1

प्रयोसना भी [प्रदूषीपमा]कृषी प्रियता विकास पिटना कर पाहिस करना (निपा ₹ **१**)।

उग्पोसिय वि [मार्जित] साठ किया हथा 'सम्बोनियमुनियमतं व धार्यसमेडलवसं' (पराह २, ६) ।

उग्मोसिय वि [डद्भोपित] जाबिर क्या हुमा वोषित (मनि)।

उभूग वि [वे] पूर्ण, भरपूर (पक्र)। एक्यि वि [उक्ति] योग्य सावह सनुस्य

(कुमा महा)। प्यापि कि विशेषी (उर ७६ व टी)।

उच्च न दि ] नामि-सन (६१ व६)। उच ) विजिया में, उच्चीसी १ ठॅमा

उक्त (कुमा)। २ छत्तम छक्क्षेट्र (इ. २ १९४: मूप १ १)। रहाई हि [ खुल्लम् ] स्वेद, संच्याचारी (पराप्त १२)। जागरी रेखो नागरी (कप)। त्तम [स्य] र ठैवाई (सम १२) वी २०)। २ क्तमता(स ८१)। चभवग चम

यय पु [ स्वभूतः] त्रिसमे समय और नेतन का इतरार कर सवासमय नियंत काम नियान।यनहंनीकर (एक छा४ १)। चरिया की [ चिरिका ] मिरि-विशेष

(सम ११)। स्थमणम म [स्थापनक] सम्बन्धेताबार बस्तु-विशेष 'मएएएम्स ए मणुपारस्य मीबाए धयमेवारचे तबन्बलाधनी होत्या, से बहानामए करमगीका इता दृष्टिया-

गीना दरा उचन्वराएए दर्गा (क्नू)। बन्बिआ

की विविध्यों देवा-शिवा करता वैधे-तैसे रखनाः 'कह तीप तुद ए। एएमं वह सा

मासंदिमास बह्मासी। काउन्स उच्चवनियं तृह

र्यसणनेहमा परिमा

(मा ६६७)। थाय 🕯 विषय] प्रशेषा स्मामा (उत्र ७२० टी)। देशो स्था।

उदाल वि जियमिती एककोइत इस्ट्रा किया हुआ (कास)।

उर्व हम दि दि | केंदा पहाया हमा (हम्मीर

उद्देवय पू [उदन्दरा] रन्त-धेम, ६० में होनेवामा रोव-विशेष (राज) ।

उर्वपिञ वि दि] १ रीवें सम्मा पायत (दे १ ११६)। २ माजन्त दबामा हुमा राँचा हुमा 'सीस उन्बंधिय' (तंबू) ।

ल्बक्किम विदिश्वे बिख्या अवैवा ऐंदा हवा ( \* 2 2 4) 1

उदत्त वि [उर्यक्त] पतित स्पक्त (पाम) । उवस्परस्त न दि दिशोगी तरक का स्वृत भाग । २ धनियमित भ्रमण बच्चपनितत विवर्त्त (दे १ १३१)। १ दोनों तरफ से क्रेंबा-रीबा रखा (पाम) ।

उद्यस्य दि [दे] इत मजदूर (दे १ १७) उद्यद्भि वि दि पूर्वित कुराया हमा (पद्)।

उवस्प कि हि] भाषक कार कैस हमा (दे ₹ **१** ) i

**टयय सम** [उन्+श्यम्] भाग देता धोड़ देशा । इ. उद्यमित्रज्ञ (परम ६१

उद्यय पूं [उदय] रेसपूर पश्चि प्यागी थवर्षे निमानी (तुपा ३४ कम्प) । २ ऊर्जना देर करना (समास १)। १ नीनी धी कै कटी-बच्च की नाड़ी (पाय)। बंध र् [बन्ध] बन्ध-विदेश क्रमस्कार रणगर चीओं की बोबना(काद १)।

न्द्रय दूँ सिरम्प**े स्त**ट्टा करना एउकी करना(दे२ ३६)।

तबर स्कृतिन्+पर्ी १ पर दाना **प्रतीर्गे होता । २ नहता बोलना । ३ सक** नुपर्व क्षेत्रा प्राप्त सकता । ४ बाहर निक-कता। टचरा (तुकः ४६) भूमधिल स विक्रविया" पानाई जान दिई निनियानि-र पाँड वेडियमतासूर्य मागुमेखि । वितियं का राज्यपूर्णि उच्छिम नामार्थ च भए बर्ग्सन्त्रमामने निराद्धी संपर्व ता न पोरियम्मादगरीति विविध प्रशिव (महा) । 'श्रीर उन्न रेन्यरिक्यीय संबद्धानियुक्तो वर्षा हैयू । परिवाहा विभार्कान्य बहुद राधशहियो बाही (या ३००)। ण्डरण न [त्र**क्र**ण] क्षत्र च्यारणः 'सिड नमश्रं बोहि वय-उच्चएग्राइ बाइरग्रं (गुपा 42+) I उदारिय नि [उदारित] १ वनीर्ण पार-प्रातः टीए इन्डियपुरुषरियाए परिमाञ्चल भर्ग जीवियसको जि. बुश्चिक्रण पुत्र माहिनामं पत्रोप्यो (महा) । १ उपस्ति पनित जन (विषय १)। उद्युक्त न (उद्युक्त) रूमश्रत उत्पीदन (वाव) । उच्छिय नि [उच्छित] वरित एत (ब्रवि)। उद्यक्ति दि] १ सप्पातित सान्द्र। २ विद्यप्ति वित्र (पर्)। उब्ह्नमर [उन्+ चस्] १ बजा पानाः २ गमीः में दाताः उच्दिय रि [उपस्तित] र का क्या हमा। २ गर्थाः भ धामा ह्याः शिलामर<sup>ण</sup> दुत्तर्ग**ुम** उच्च हिए पूलमारियोहस्त । कुरार रेटानी वंशे रिक्तिया बीट्टी है (बुर रे कर)। प्रदाय [उद्देश] १ ईशा भी केप दुइ र्गिगा उपा रिप्रेग भीवगवला । उत्र गौधों की शार्ने (बदा) । १ दल्ब बेठ (हा र ह)। ताच ताय व िताय] १ दनव धीर भट्ट-वंश २ वर्जे सिरेच निवर प्रवार ने बीर उत्तन नती-बारे कृत में रुपप्र हैपा है (हा २ ४- प्रापा) । बय

न विता १ महत्वत (बत्त १)।२ वि महाबतवारी (उस ११)। ब्बाम दि हिं] १ शास्त यका हुमा (भोव **११**क) । २ व मामिक्त परिसम्म (सुपा 117): स्वाह्य वि दि उभ्याजिती इत्यापित ब्ह्रमा हुमाः 'तबाइमा नेगर्घ' (च २ ६)। रुवाग पुं [तवाग] शिमावन पर्वतः। य वि िंद्यो हिमाचन में अलब 'उवावयदारा-सदूर्गहर्म (रप्प)। उदाउँ दि दि] शिपुत्त विशास (वे १ प्रवाह सक [इ] १ धैनना निवाला । २ मक संबर्धीस करता दिश्वीर होना हि १ 244 E) 1 उबाइय न [उबाटम] १ एक स्वान से दूसरे स्थान में इस्स से बाना इत-स्थान से घा करता २ मन्द्र-विशेष जिसके प्रमान से वरन् धाने स्वान से पहायी वा मजती है: 'बभारतार्यभग्रामीप्रसाद सन्वति मह करनवे व' (मुत्ता १६६) । उचाहमी भी [उबाटनी] शिया-विधेष विमके द्वारा बस्तु घरने स्वान से बढ़ाबी वानकडी है (नुर १३ १)। उद्याहिर वि [ व ] १ रोक्नवारा निरास्त क्लगना । २ मध्नेन क्लगना, दिनगीरः किंद्रज्ञार्वेतीय सम दूर्गतीय किंद्र भीमारः। वशाविषेए वेम्बेनि टीए प्रशिपं न रिम्हरिबी (£ 2 121) 1 उपार नर [ इत्+ भारय ] १ बीउना रुवारत करना । २ मनोन्नय करना कानामा पाना । इक्षारे (स्ताः । वर् प्रदार्यन (य १ ७) । उदारमात्र (रणः लावा १ रे)। इ. उदारयध्य (उस) । उदार पूँ [उदार] १ दवारण । २ मिन्ना, मनोलाने (सन १ वरा नुसा ६११)। उदार वि दि सिन र स्वयः (दे १ ६०)। उदारय न [उदारय] नचन 'दनि इन्न-नेवासन्वारणकार् (मीर)।

tty)ı

चवारेश वि [उदचारित] १ व्यवि उतः। २ प्रचाना वया श्रमा (राज)। प्रवास सक [तन्÷ वास्त्रम्] १ ऽँवा केंक्ना । २ इर करना । **वैष्ट** 'तवास्थार निर्द्वालिय भरूरा भास्त्रत्मी बतर्रन् (मापा) । ददासद्वय वि (जदास्त्रीयत् ) दूर करनाला ध्याकी बाबा: 'या जारधेमा स्थानहर्व वं बालेजा रचसदर्व (द्वाचा) । छवासिय रि डिवासिड**े स्टा**या **१पा, डेवा** किया हमा इरवारित 'दवानियम्ब पार इरियासमियस्य संस्मद्राएँ (मीम ७४४) दम्मि ४३)। ब्रवाय यक विद्यम् ] क्रेंबा करना स्टाना। संब- सदायक्षा श्रीव पार ज्याकरता सन्दर्भ समेत समितिरोधन (पर्या १७)। उवापत्र वि [इवावय] १ द्वेवा और वैदा (कामा १ १३ वर्क ३४) । २ उत्तर मीर सदम (मध् ११) । ३ धतुरस मीर प्रतिरूत (मग १ १)। ४ ससम्बद्धाः सन्य बस्यित (छाया १ १६)। १ विदिध जाता-विव 'क्याप्रवाहि सेप्रवाहि तबस्ती भिन्द बानर्र (बत ६)।६ बताहरू विकेश वत्रव 'वप् एतं तस्य बालोशस्त बम्ग्याबानमम् उचा नपृद्धि सीलच्चम पूर्ण देरम छ प करता छ नोम होरवानेहि बरपर्श मानेमालस्त्र' (इस उच्चाबिय नि [उचित] अँचा विदा हुया (बग्बा १३२) र वर्षिषष्टु सक [उन् + स्थाः] सरा होना । यविद्व (राम)। उचिडिय वि [दे] मर्वाचा-प्रीत्व, तिनीस्त्र 'क्रीबरियं पुत्रसमार्व' (राघ) । उधिम सङ [उन्+िध] द्वन वरेत्द्र वरे वीर वर एकविन करता, इस्ट्रा करता। श्रॉब-ण (१४२४१)। का उविधान (व्याः)। इंबिय व न [प्रदयन] धरववन, रक्तीकरण (गुग ४६६)। र्वाचीयवृति [त्रचित्र] रतद्वा विका हुना मर्शाव (पार्ष) । उदारिम रि [दे] न्होन ज्ञान (दे ह उचितिर रि [उबतू] दून कोछ का पूर्ण बाचा (इवा) ।

रुविय देखी एजिस 'तस मुझोज्जियपस त्तरोस संतीसमस्पत्ता (बर १९६ दी)। उदिवस्त्रय न [वि] क्तुपित यस मैसा वात्री (पाम)। उच्चुंच वि [दे] रूक गॉवह मॉमनानी (दे १ ११)। श्वरूपुरा वि [वेर] सनवस्थित ( पष )। सरपुर धक [ उग्+**पुर्**] भसारण करता हटना। वक् उब्द्रंत (यहर ७३६)। जन्युष्य सक [पद्] बहना माच्य होना क्यारं बैठना । उन्द्वापा (१४ २५१) । रम्मुरिपअ वि वि मटित] मारह अपर चका हमा (दे ११)। स्टबुरम [दे] राष्ट्रियः, पूठा (पर )। ज्वसुखंड अअन [बे] हुनूहर संसीम शीम जाना (दे १ १२१)। उच्छाद्र वि [दे] १ व्हिल, बिस । २ प्रवि रद मान्द्र। ३ भीत क्या हमा (३१ १२७)। धरपृष्ट र् डिल्प्ड किरान का नीचे कर कता हुया भूगारित नम्बारा (पत ४४६) । स्वयपूर वि [दे] गागानिम नष्ट्रविच (राज) । उरपुर पू सिष्युक्ते १ निशान का गीने नव्यता हुमा ग्राङ्गारित वर्षायः (स्य ४४६ श)। २ बीवा-निर-पैर उत्तर और मिर शाच कर-चाहा किया हुया (विपा १ ६)। उवं क्यो उविभा जन्मे (ह ४ २४१)। हरू उद्येषं (मा १४६)। उच्य वि [ उच्चेतस् ] विन्तनुर मनवाता (पाम)। खच्च ब्राहर न दिंदी र उत्पर मूमि । २ अवनत-स्थानीय वैश (वे १ १६६)। उद्यक्त वि [दि] प्रदेश, स्पक्त (वे १ १७)। उबाह पू [ध] शोपण 'बंशगुबोरकाचे बंश देहस्य राही (बण् प्राप्त)। उद्योदय पू [उद्यादय] बस्तर्जी का एक देव इत प्रामाय (उत्त १३ १६)। उद्योत रूपि १ लेंद, स्ट्रगर २ मीनो स्वी के वटी-बाग्र की बाही (दे १ १६१)। प्रकार् (उदान) के बुद्ध (है २ १७)। उन्दर्भ [द] १ घाँद का मानरण (३१

स्वम् (परह्यं २१)। उच्छम पुं [उत्सय] क्षण उत्सव (हे २ २२) । "उपञ्च वि प्रिच्छक प्रतन्त्रका (पा ६ )। उब्ह्यूम वि [सब्ह्यूत्व मान्हादित 'पालेबरुक्तद्ववरूद्वसी' (काम) । उन्दरेशक वि [उपबद्धक] १ ग्रह्मना-परिव धनरोब-वर्जित बन्बन-गुम्प । २ ध्यत निर्द कुछ (परः) । उच्छल्लेखिय वि डिप्याङ्गस्थिती प्रवरोप धीरत किया हमा सुना दिया हमा उन्हों-श्रनिवरणाणं सोकार्यं निपि परणार्खं (गठइ)। उन्छोग पू [डासक्क] मध्य मामः 'मरहरूद्वन-परिन्यक्रमियंकनीयक्षाननाष्ट्रिणी पमुबद्धणी' (पढड से १ २)। २ कीक मीद, कीय (पाघ) 'डम्प्सं शिविशेत्ता' (प्रावम) । १ प्रुप्त देश (धीप) । डच्छोंगेझ वि [उत्सद्भित] कोच क्रेनी या योर में सिया हमा (जा ६४८ टी)। उच्छोरिक वि दि । भागे किया हवा, चाने । रखाह्मा (दे ११७)। उष्यांच देशा उत्पंच (हे १ १६ दी) । उच्छंट पू [व] महर हे भी हुई भोरी (दे र ११ पाम्र)। षच्यह्र्यू [य] चार, टाङ्क (वे १ १ १)। उच्छडिम वि दि ] पूर्वा हुई बीज कोरी कामल (दे १११)। ैउच्याण न [प्रच्छन] प्रश्न पृक्षना (ना ጂ ) ፣ उन्द्रक्य देवा स्वयंत्र (ई.१.११४) । उच्छत न [अपच्छच] १ सप्ते रोप नो इक्ष्में का स्पर्क प्रयन्त, गुजराती में 'छोक्सी भोडों। २ मुपानार सूठ रूपन (पर्यं ₹ **२)**। उप्याप वि [असम] दिल विहेरत स्ट्र (दुमा मुता १८४) र उच्छाप्य सक [ कम् + सर्पय ] काउ करना प्रमाबित बरता। जनसमाइ (मृता ६१६)। बहः उच्छप्पतः (तुशः २६६) । उन्दरपण न [सस्मर्पण] स्त्रति धानुस्य (नुस २७१)।

प्रच्युप्पणा भी [उरसर्पणा] अगर देशा जिल्पावयस्याम्य उच्चायसस्य कार्ये विवि हामी' (मूला २ ६ ६४८)। उच्छक्त सक [उत्+शल्] र उपलग क्रीया जाता। २ कून्या। ३ प्रमुखा फैसता। बङ्ग उच्छुईत (कम गतर)। उब्द्रसम्म [उच्छसन] उद्धनमा (वे १ ररेद ६ ११४)। उच्छक्तिअ वि [उच्छक्तिन] बदमा हुमा, उदैवा मना हुमा (गा ११७ ६२४ गतक)। २ प्रयुक्त फिलाहुमा 'तातास करोपो। रुमध्सियो ग्रामितं पित यमं गासीमचैत्रणुक लस्य (मुना ३०१)। उन्छंज़िर वि [ उपद्रुष्ठिष्ट् ] चन्त्रतेशना (मर्गेष १४ मूत्र ३७३)। प्रच्याच न्यो उच्छान। उन्समह (पि १२७) 'बण्यन्ति समुद्दा' (है ४ १२६) । उच्छक्क वि [उच्छक्क] सम्मनेवामा (मवि)। उच्छक्षमा हो वि चावर्रामा, धाप्रेरणा नपारपङ्गार्थभर्*यमार्थन्त्रभवरभरसम्बद्धन्य*पुत करागमन्द्रन्तुन्द्रम्पणाद्वि विमला बारमव अहि पनेसिया (पराह १ ३)। उच्छित्र रेखा उच्छलिम (परि) । ज्यादिया वि 🔁 विवसी द्धार क्यी वर्षे हा वह 'तरणी जन्द्रक्रिया य देशीह (दे t ({{t}}): **एक्छ्ड केटी उक्छाल (हुमा)। २ श**ाक (मिवि)। एक्स्सविक न [दे] राज्या विसीना (दे १ ₹ **₹**) 1 उच्या मङ [ उम् + सह् ] उदम रहता । ] ना उपस् (रग १ ६ ६)। उच्छद्द यक [डम्+सह्] जनादिन होना । बद्ध छब्छ्युईत (मी) । उच्छ इय वि [ उस्सदित ] प्रश्माइ-पूक (मण्)। उच्छाइभ वि [अयच्छादित] धान्याति इका हुमा (पडम ६१ ४२ तुर ३ ७१)। उ झाडिल (पर) दि [अवर्डादेव] दरा हुमा (मिर्च)। उच्याम रेगो उच्छ = उगम् (प्रामा)। वर्जाप र्षु [उच्छाप] 🖝 🛪 🖘 गर्भ (हा

११७) २७३, प्राप्तु १९४)।

२ दिलित पापव (दे१ १२४)।

हरिष्क्रस देवो संविद्धत्म (क्य) ।

११)। २ वि धननीर्शे (वह)।

देख पेछने का सोचा (दे ६ ४१)।

उपलूर् वि] गस्त बाद (वे १ ५)।

**सम्बद्धाः भद्र वेश्वो सक्तिसद** ।

क्रकिक्स चिकि (चिकिस) उँका हुमा (वे ४

उष्यक्त देवो उद्विय (१ २, १३) वर्ष) ।

क्षिक्त वि [हस्सिक ] श्रीवा द्वा विक

\* \* # #) 1

(চাম্)া

६१ पाप)।

(R t (P1) t

₹**₹**) (

२ धारन्त,

¥**⊏₹)** I

इक्नेबासा (स १२१)।

न्द्रेर, म्यानृति (राज)।

पणु(भूतमा ३)।

स्रवितत (दूरा १०)।

उच्हाम रेवो कसास (मै ६ ) ।

१२६ १६६) ।

१६ दो)।

827) I

चब्द्राय तक [अव + द्राद्रय्] पान्छरत

क्ष्मायण वि [अवच्छादन] प्राच्यावक

परकायण नि [कन्यादन] नातक (ध

उच्छामणमा । धी [उच्छारना] १ क्लोर,

चन्द्रामणा । विनागः (भन १४)। २ ध्याव

चनद्वार देखो उत्पार≈मा+कम् (द्वे ४

**एव्हास एक [ उत् + शास्त्र] बका**तना

केंचा फेंक्सा। वक्ष **राध्यासिय (पू**रमा ४):

एक्स्स्य न [एक्स्स्यत] क्सनना क्ल-

उपद्राप्तित्र वि [उपद्राप्ति] ऐसा हमा

करना श्रदमा । संक्र- सच्छाइऊम (बहर

चन्द्राह् पू (ज साह्] १ ज्यमह (का २१)। २ इड ज्याम स्वरप्रमण (तुन २)। ३ क्टरंडा फरनुवता (नंद २ ) । ४ पराक्रम बता इसामध्ये सच्छि (माद्र दे १ ११४-२ ४4- प34 ? ११८) I बन्दाह र् [दे] कुत का कीय (दे १,८२)। उच्छार्ण व [बस्सार्न] बरोजन, प्रोतकार्त (का ५१७ टी)। उण्डाहिय नि [फ्रसाबिट] प्रोप्साहित वरीमित (निड)। उत्पाद धक [उन् + विद्] अनुधन करता उपाहना। तह उच्छिद्दिश (मुन्द ४४)। प्रचिद्धदान न [दे] जनार मेना, करता नेना नूर परमेना (निष्ट ३१७)। उन्हिपा रि [अवस्थितस्पर्क] चोर्चे को ' भाग-पान नवैरह भी शहायात्र श्लेपाना (पराह t 1): क्षिपंत्र न [प्रदेशक] १ कार देवता । र व्यक्त निरानना (नवह १ १)।

चन्द्राष्ट्र एक [तन्+साद्य] जसक हिसाला, इसोनित करता । उच्छाह्य (सूपा

2 4X) 1 चनक्क्यारण न [दि] देखका खेत (दे १ 1(0)1 चचद्वार वि कि संबंध बका हमा (दे १ 111): | सबद्धीक्रम नि कि र बाल बनेया से माहतः। २ मगहतं ऋता हुना (१ १ 222) 1 ष्टब्हुत देवी षच्छुम (पुर a ११)। ")मूय वि ["मूत] को क्लिएडन हुया हो (नुर ₹ ₹₹₹) 1 प्रवर्ष्णु वि [दे] इत व्यमनानी (दे १ 1(53 प्रव्यक्तकम वि [इत्युष्म] १ करिया, सोहा हुया, 'बब्बुहर्स महिया च निवृत्तियाँ (पादा)।

क्ष्यक्ष्यकर्षः 🛊 📳 १ सनुवादः । २ वेदः, ऋषे **सच्छिय वि ['इस्किन]** उसत जैना (स**म**)। (दे १ १३१)। बच्चिहरण वि वि] तथ्वर, बुठा (पह.)। चण्डूत्र वि [व] चास्त्र क्षार वैस्र हुण निष्युरुखन दि] शिक्स निपर (रेश (पक्) । चन्द्र देशो इक्ख़ (पाप भा ६४१ पि १७७ बध्यक्क वि [बविस्म] १ लक्क, बन्धिय योव ७०१/ वे १ ११७)। जीव न विजी (कामा १ १ चर्च)। २ मूर्पित पुरस्म ह्मा (राज) । १ विकासित बाहर विकास ह्या (भीप) । उपद्वास वि [प्रस्मुक] उप्परित्य (हे २ क्षण्यक्ष वि विरक्षक रे अन्त विकोर अन्तर्क चयैरवरा मानो बीबो सरीरमानं वि' (यन उच्छूम म [बे] इस्ते इस्ते की हुई बोसे (दे fg 44)1 त्रक्षुर केनो कस्क्र्रस्थ हु हु (हु ४ ११६ हि)। बच्यकुर देशो उब्दर (१५)। रुक्तेम र् [उच्छेप] १ नाश, क्यूनन प्रमुक्तिमीमारि ग्राह्मकविमाण्डमपूर्व (सम्म १०)। १ व्यवस्त्रीतः स्थानृतिः 'स्न्योगी पुत्तत्वार्थं नवन्धेऽति वृत्तं भ्रमति'(नीषु १)। बच्छेत्रण भ [उच्छेद्छ] विशय, बन्नुसम वितेष्र एस बनायो एकस्मूच्येक्ट संदर्भ (युवा १६२)। तरकेरमक [कन्+कि] र उँचा होता कन्तर होना । १ समित्र होना, मरिस्क होता। का उच्छर्डन (क्राप्र १६४) । त्र छेव पूं[बत्द्य] १ ऊँचा नरता क्याना। २ कॅक्ना (श्वा२ ४)। बच्छेन हुं [बल्क्षंप] प्रबंप (सब ४) ।

'च्ह्रस्यवि संयुक्तुरसा ভৰিন্তত্ব বি [ডবিন্নস্ত] সুমা তম্পির (**সু**মা भौरत्व माक्ट्य वि ब्रह्मतिका । क्षिपशेक्षि परिकृषिया च**ित्रह** नि [च**न्त्रि**ह्य] चरिष्ट, सवस्य (बब ভৰিত্ৰণৰ ৰি [বন্ধিবনা] বন্ধিন কণ্মনিব (बीब २२ मा)। चच्छच वि [दे] र बल्लिम ⊈शाह्मा।

प्रवेगमेहि मसिया धुवेनुनर्मरा (वेर २)। संबद्धकः वि [दे] १ विशिष्ठ । " पठित **इब्यूम एक [अप+दिप्] यामे**ट करता याती देता । सन्धुमाई (क्य ११) । इक्ट्रमण न [हत्हेपण] जॅना फॅक्ना (१४

७६ हो।। क्षकदूर नि [वे] प्रतिगत्त्वर, रूमायी (वे १ 2 )1 ध्यकुरम्प प दि । इस का चेत । २ 🚧

उल्बा(के १११७) ।

जन्मद्रकण न [उत्होपग] कार देशो (स ६ 34)1 चरद्रपण व दि] एत पी (६१ ११६)।

उन्प्रत र् [कर्मेंच] इनाई (११११)। उन्होहिय वि [उन्होदिव] सुवय हुमा,

मुन्द्र दिया हुन्ना 'सन्दोडिय-देवो सो रना अगिया य शह [ स्प्रांबिममू (मूर १ १ १)। 'पामहिबगुरिमारि तमाणपुरुद्वीहेवा व मै

बन्न (पुर २ ६६)। उद्योभित [उन्छोम] १ शौमा-पश्चि। २ व स्थित्वा पुगरी (स्वर)।

प्रश्चानः मह [प्रम्+मृष्टय्] स्मूनन बरना उपाइना । वा उदशेखन (स्त्र) । बन्दार सर [३५+धास्य] प्रधानन बरना योना। यह उच्छालंत (तिषू १०)। प्रमा बर उन्द्रोसम्बर्ग (निष् १६)।

उन्हारुण व (उरशासन) प्रमुख कम ने प्रभावन, 'उन्होत्तां च करा च व निग्ने यरियानिया (गुप १ ६ धीन)। उन्ह्राखना श्री [ उत्हासना ] प्रपापन

(''' ¥) I ज्यद्वारम धी [८] प्रमुत दव 'नहरेवरम'छ म बया प्रम्यानियाम् स्ट्रमा (धर) । च्यांत्व विज्ञान्य है । क्रियान कानेशाया ( गूम २ २ १ )।

इम् रेक्त जात् (बाबा क्या) ( उन्नम्भ देशो द्वानुम्म (न्यर)। ज्ञा रंगा प्राय = मात्रम् (रण) । ज्ञान[उर्जी र तेन प्रदत्ता २ वर

(¶ ♥₹) 1 इज्रमना । भी [उज्यना त्यनि] राज्ञारणी र नगरी-विदेश मानव देश की प्राचीन राजपाय भागरत भी यह चित्रतेत भाम स प्रतिच है (भार १ रि १०६)। उप्रांगय न [न] बताबाद, नवरण्याः। र कि देवें लग्ना (दे १ १११) ।

उद्मगरम ५ (उद्मागरक) १ अन्तरन स्मि का बक्दर tarrets a ses. भाव न र्रता (स्पूर्ण नर्रा)।

नाहरकपुर्व क्रम र्श्य देश हो? गाँच

(बग्दा ६८) ।

मनाव (दे १ ११७ वज्या ०४)। उज्ञागुष्ट नि [दे] साग्य, निर्मन (रे रे

ব্যাহ্র দি বি বিষয়ে বৰ্ণা-চাৰে (বি £ &4);

'जीक्ट्लर्पमधेलयव सत्रवरपूर्वसदृवित्रविशामा

भेजन्त्रदास्त्रविका ध्रमायो ता सन्तरवनीयो (गढ४)। पञ्जणिस विदिशेषक देशा(देश १११)।

उद्धम पर जिल्ल + यम् विषय बरना प्रयम्भ करना। उत्रथमन (यस्म १४)। अञ्ज्ञमह (३३) । बहु उद्यमित, उद्यम माण (पए३ १ ६): 'ए' बरेद दुश्नमीमा क्रजममालावि संजनत्वेम् (सूच १ ११)।

४ उज्यमिअस्य उज्यमयस्य (१९१४) व्यानुसारवधा २२४)। हेन उल्लोसर्ड बज्ञम पू [बराम] बरोब, प्रयन्त (स्त्र) षी ६ । प्रापु १११)।

उज्जमम (भा) न [उद्यापन] उद्यापन दन रामानि-गार्व (मरि) । रक्रमि रि ( ग्रामिम ] उर्गेषी (रूप ४१६)। उज्जावित (सा) वि दिशापनी समापित

(प्रमः) (भविः) । उद्धार पर [प्रम्≒क्रम्] कोर ग र्जमा भेगा। प्राज्ञम्दा (प्राप्ट ६४)। उझर ि [उधर] उधार्थ उपूर प्रवण रीन (पाम पात्र १६१ सा ४४६)।

मरण न ["मर"] मरण-विदेव (धाना) । उद्मर्थत 🛊 [उद्मयम्न] भिरतार बन्द 🗝 बन्त्रवंतरानं परिवारं को परेद विश्वतारं (डी रिवे te) 'ता "प्रवर्धतनसम्ब निष्यु शन्ति जिल्लि (मृत्ति १ १७१) प्रज्ञर वि [द] १ मध्य-तत क्षेत्रर का । रे बुं बिर्वेगा धव (तेरू ४१) । प्रज्ञास वर [ प्रट् + स्वत् ] । अन्या ।

९ प्रशासिक होना चमकताः चर्णाः (विक्र रेरेर)। यह उच्च वेन (मॉर)। उद्यक्त रि [उगाउ] १ स्थित सन्द (बर ७ ६ दुन्तः) । ३ देः इ चवरीता

(बन्द द्वारा)।

प्रभ्र मार न [उल्लागर] बादणा निवा का | उल्लाह नि [ हे ] रेगा उल्लाह (है २

1081)1 रज्ञसम् नि [उज्ञयस्ति] चनवीमा देशस्य मान जानुरुवसरागर्यवर्ष करवा पर्वर्ध यन्वेत्वंवर्म मिहि (बप्प) । उद्यक्तित्र र् [उत्तरस्तित्र] होम्सी नरन-मृषि

वा शादा मरनेन्द्रक-भाव-स्थान विशेष (रोग्र ८)। उद्यक्तिम विकासित र लीम प्रका रित (पउम ११८ ८८ मार)। २ कॅबी ण्यातामी से मुक्त (और ३)। ६ न उद्दारन

(यर)। **उ**ञ्चस्त्र रि [४] सेश-गॉरंग पंग्रेनातासा मनिक भूँग बहुरियटटेना उपप्रस्ता भगमाहियाँ (नूस १ १) । २ वत्रान बनिह (हे २ १७४)। उद्यस्य न [भीग्रवस्य] "ग्रयमञा (गा १ (३१५

रज्ञस्य भ्री [दे] बताचार, प्रवासती (8 7 20)1 उक्तम सक [ उद् + सम् ] प्रयान करना । यर भुद्धि उध्ययमार्थ वंबर कर्रात रित्तर्व समल् (उक्)। उध्रयम रेपा उधारण (द्वीर) ।

उद्धार गर [उद्द+दा] प्रस्ता करता । ना उज्जद्भा(उन २० ७)। रजाभर 🔰 [उजागर] नागरा दिश उज्ञागर । का धमान (गा ४८३ करता ७६)। उप्पांडम रि वि] "ता रिया ह्या (मरि) १ उद्यास न [उपान] उपान बंगीना प्रपतन

(यमु भूमा) । असा को ["वात्रा] नेह्ने ८७ (१७३१ । १) । भारत्र सामा (४ [पालक, पाल] बरोबा का रणह आही (बुरा ६ का ६ प्र) ३ उद्यागित रि (औदानिष्टी न्यननंतर्यः बरीचा का (तर १४ १) । राजानिम रि हि] निम्देर्त देशा रिया <u>रत (रे १ १११) ।</u>

उज्ञानिज्ञा । के [भीषानिषा] को उप्पाधिसा रे भेर देशका कर्च क्रम प्रशासिक कर्रा (निष् द क १४१) । एकाणी स्त्री [औरवानी] बोडी नौठ (सुमा ४०३) । रुजायण न [उद्यायन] योत-विरोप (मुज्ब र हो)। चट्यास एक [ धत्+ञ्वासम्] जनमत करना विशेष निर्मेत करना। संक प्रस्ता-सियं (यावक ६७६)। त्तकास्त्र एक विद्+ ज्यासम् ] १ स्वाना करना। २ बनानाः। चंक् उच्चान्डिम चळासिचा (इस १८ प्राना) । एञाउप न [बग्न्यास्त] वनला (स्य १)। रुआक्षम न (रक्षमाञ्चन) प्रस्तन करना (सिरि ६०)। रकासम्ब वि (सम्बद्धः) भाग पुस्तको गमा(सुम १ ७ ३)। रजासिक वि [सम्मासित] क्लामा ह्या मुसमामा ह्या (पुर १ ११७)। ख्माक्य न डिद्यापन ] देव ना समस्ति-भागे (प्राप्तः) । कामाविय वि वि कितिस्त (स्तु)। चन्त्रित देशो उज्जाद (तासा १ १६); 'जैन्नविक्तिविद्दे निका नाग् निश्चेदिमा वस्य । र्ध वस्मवनक्रवहि, ग्राप्ट्रनेमि नर्ममामि (पश्चि)। एज्जीरिक रि [द] निर्वरिक्त, ध्रमानिक विसम्बन्धः (दे १ दे १२२) । एक्कीक्प न [एक्कीवन] १ पूनर्वीकन विशास 'सम्मन्यको एसे कुनवस्तुरजीवसे भाषा (पुपा १ ४)। २ ज्योपन (४०७)। चर्ग्याविय दि <u>चित्रश्री</u>वित् पुरुवीतित विचासा हुमा (सूपा २७ )। वन्तु नि [ऋतु] सरन निप्तप्तः, सीवा (मीय पापा)। इन्ह्र विक्रिया १ निष्माट तससी (सामा कर)। कह वि[इन्स्] माम्ध-धीत भाषरणकाना (भाषा)। बढ़ कहृषि ["बढ़] सफ किन्तु मुर्ज राहार्थ को भद्दी सममनेवाला (पेका १६, क्य १६)। सङ्ग्री ["मवि] रे मन पर्वत आन ना एक धेव, कामान्य मनीजान सामान्य ऐति हे बूसरी के मनीजाय

को जानना। २ वि एक मनो अधनवासा (क्या २ १ः धौन)। "वासिया वर्षे िशासिका मधी-विकेष विश्वके किनारे क्लवान् महाबीर की केवल-कात उत्पन्त हुमा च (क्ष्पास ४३२) । सूत्र दूं ["स्त्र] वर्तमान वस्तु की ही भावनेवाला वय-विद्येप (ठा ७)। सुय पूर् [मृत] रेको पूर्वीक मर्चः 'पन्कुलमापाम्। उन्पुतुमो शमिनही मुखेबजो (ब्रष्)। इस्य पु [दिस्व] बाहिना हान (औन १११) । डब्ज़ुर्दृ[ब्द्रुज़्र] संक्षा (सूमा ११६७) । सम्बन्ध कि (श्राप्तक) जार केवी (भाषा हुमा । या ११६३ ३१२)। सम्बद्धाः अपि जिल्लामस्ति सरम किया ∎मा(से १३३२)। स्कलूग **केवो सम्बद्धम** (भि ५७) । धरबुक्त वि [रियुक्त] स्वमी प्रवासरील (पुर ४ ११) प्राम्म)। धक्त्र(रेभ वि वि] १ और मट। २ तुम्क सुबा (दे १ ११६)। स्टब्र्ड वि [इड्ड्यूड] बाच्छ किया हमा (ग्रेबोच २३)। चक्रताग र् [चक्रयनक] भारक-विदेश एक ज्यासक का नाम (ब्राप् ४)। सम्बंधी देशो समाहर्णः (महाः क्षा १११) : ख्योभ एक [च्यू+धोदम्] प्रकार करमा, वद्योत करमा । बम्बोएइ (सद्या)। यह चलावेत चलोइंत दलायमाण चलो पमाण (स्ता १ १) मुना ४ मध्यसमा२४२ व्यवि ३)। बक्तोज ए [उद्योग] प्रस्त व्यम (प्रस **३ १२६ सूच्छ १९ दूल्कर** २**१**)। डम्बोअ ⊈ डिब्योव र प्रकार व्यक्ता। गर वि ["दर] प्रकाशक 'सोवस्य उच्छो-मगरे, शम्मिक्ट भगरे जिल्हें (विशा पायर है १ १७७) । २ उर्चोत का कारत-मृत कर्म-विरोध (सम ६ नम्म १) । त्वान [विका] क्तन-विकेष (पडम१२, १२ )। धळोळग वि [उद्योदक] प्रकारक 'सन्त नव्यक्रोक्स्सं (छोरे) । **टकोश**ण न (उ**ष्**योतन) १ प्रकारन पर मासन्।२ वि प्रकात करनेवाका (उप

७२ व टी)। १ पूर्वपरिवाभ एक प्रक्रिय कैनाचार्व (इ.७ शार्थ ६२)। उद्योजन कि [उद्योवक] १ प्रराप्तका २ प्रभावक बसरि करनेवाला (उर ८ १२) । रजोर्डद स्वी रजोअ = व्य + योजगा क्टबोइब वि [उद्योतित] प्रकारित (धन ११६ भूपा २ १)। स्त्रोपमाण देवी उद्योध = **ल् + यो**ज्य्। बक्नोमिक्षास्त्री [के] एरिन एसी (के 22X) ( उद्योव देवा उद्योध = उद् + दौतव् । वर उज्जोबंत बस्रोपर्यंत, इस्तावेंत उज्जान बेसाण (पत्रम २१ १६/ छ २ ७ ६३१ ठा व)। बळ्डोवण म [च्छुयोतन] प्रशासन (ध 44t) i बज्जोविय केनो बज्जोइय (कप्पः शामा १ १। पर्द्व १ ४। पदम १६ सम्ह)। रुक्त एक [ डक्क् ] स्थाय करना कोई देशा । जनमञ्ज (मङ्गा) । क्यकु व्यक्तिस्थामाण (इप २११ टी)। संद्र चक्रिक्टल चक्रिक्टल विश्वकरण (समि ६३५ १४६ राज) । हेक् रहिम्हचए (सामा १ द) । इ. इहिम्ह यस्य (स्प ११७ दी) । चनकर्षु [चन्नक, सब्दूष्य] अपल्याय पाठक (विशे १११४)। बबस्का ) वि चित्रस्त्र है आस करनेवाला-बरमार्ग रे कोजनेवला (सूच १ १, उस १०८ डक्रमूज न [डक्रमून] परिस्थान (उप १७८) पुप्र कायळम १ कं ग्रीप)। बरुप्रमया ) हमी डिरुप्तना | परिवास (जा नम्मला (१९६ मान ४)। **परम्ह**िम वि [वे] विज्ञीत वेचा द्वमा । २ फिल्डेक्ट, शीचा किया हुआ ( बढ़ )। चब्सक्रमणान [के] पत्तावत ऋषना(के १ 1 (1 3 चत्रमञ्ज्ञाण वि [दे] पनामित स्त्रवाहमा (पद्मीः सम्बद्ध र्ष [निर्मर] पर्वत है विलेशका वन प्रश्रह, पहाड़ कर करना (द्याना र यज्ञाया ६३६)। वज्जीस्मी ["पर्या] ज्वक-पात **कव-प्रपात** (शिक्क्ष्म) ।

चत्रमारिश वि चि देशी नवर से देशा हुया। २ विक्रिप्त । ६ जिल फेंक्स हमा। ४ परि ध्यक, उम्मित (दे १ १११)। सत्रसम्ब विद्याप्रवस वनिष्ठ (पर्)। उत्रमस्टिम वि दि देशिया परेका हुया। २ विभिन्न (पड)। न्त्रमञ्ज्ञ पूर्वि । अचन स्वोग, प्रमन (रे ₹ EX) ! चामनिज वि दि ] एक्ट्र, उत्तम (पर्)। <sup>4</sup>उत्रस्त रूपा अप्रतम्त (स्त प् ३७४)। उपन्यय पू [ उपाच्याय ] विचान्त्राता दुव हिहार पान्क (महासुर १ ६ )। रामासि वि [उद्गासिम्] वमक्तेवाना, देशीय्यमान 'चंक्ज़्यमधसिह्न्वा' (गमा) । उतिमहिन्दाम म दि ] १ वदनीय नोक्सपदाद । २ पि निष्नीय । १ कवनीय (१ ३ ११) । उतिमूच वि [उक्सित] १ परिचक, विपुक्त (दूमा) । २ मित्र (भाव ४) । ३ न परित्याम (बल्)। स पूँ [क] एक शार्वनाहका पुत्र (विया १२)। उक्तिसम्बर्गि दे रिशुव्यः सूचा द्वारा २ प्रिनीइत नीचा किया हुमा (पड्)। उतिकास स्थी [उतिकता] एक सार्ववाह पत्नी (ए।मा १ ७)। उद्गर्दनी [प्रष्टु] क्ट, करम (विपा १ ६ हेर १४ उंग)।स्थी उड्डी (एक)। उद्गार पुं [अपदार] माट, तीर्व बसाराय का वर, 'ब्रह् है तुरद्भारे बहुमहमयरे सुमत्वनमत्तवारे ।

सीमायी विश्व समस्त्रसम् दूनारम्या (पत्रम १ व. १)। उद्गिता देलो उद्गिया (वर्मर्स ७०)।

उद्विय ) वि [ओप्रिक] क्रेंट सम्बन्धे । क्रेंट उद्विषय ) के रोमों का बना हुमा (छ ४, ६ सीय ७ १) । १ पू सूर्य शीकर (कुमा) । ४ पदा पर (उदा)। उद्भिया की [उद्यान] पहा बद, कुम्म (विपा १६ उन)। समय पुंधिमणी धारी तिक-मत का साबु, भी को पड़े में बैठ कर

त्तास्या करता है (बीग)। उट्ट यह [बन् + स्था] ब्रह्मा, खड़ा होना ।

उद्गर (ह ४१७ महा) । उट्टेंग (पि १ १) । **बड़** अट्टेंच (गा १८२ मुपा २११) उर्द्रिच (स्र ८ ४३ १३ ४३)। संक्ष्य उद्गाय उद्गित उद्विचा उद्देशा (सब माना पि १८२) । हेक् प्रद्वितं (उप प्र २१८) । रुद्ध वि [गरम] स्टियत चटा हुमा (मीव ७ उदा)। बद्धसम्प [ै]पनरा] उठ-वेठ (हे४ ४२३)। स्टूर् [ओष्ट] थोठ सपर (सम १२% सुपा द्ररुक्)। उट्ट दूं [इप्टु] जसकर जेतु-किशेप (सूध १ 5 EX) 1 उट्टप देखो उद्घास (मर्गीव १३)। उट्टॅभ सक [अय+स्त्रम्] १ मालम्बन देना सहाय देना । २ बाक्रमण करना क्म बहुम्बर (हे ४ १९१) । सेट 'उट्ट मिया एनमा कार्य (माचा १ १ क ₹₹) 1 उद्भवण म [रस्योपन] उत्पापन अँचा करना च्छाना (धोव २१४ दे१ ८२)। पट्टियम वि [इ'वापिन] उत्पाटित उठाया हुमा बड़ा किया हुमा 'सा सरिएयं उद्गविया मराइ किमागमगुकारत् पुराहे' (मूर ६, **₹६**) i उट्टा देलो उट्ट = उन् + स्वा (प्रामा) । उद्वाभी [ग्रह्मा] उत्पान, काल 'उद्वाए बद्रेड (शामा ११ मीप)। उट्टाइ वि [उत्याह्न] उठनेवाना (माचा) । उद्राह्म नि [उत्पित] १ वो वैगार हुमा हो प्रकृण (पत्रम १२, १६)। २ इन्यम जन्तित (म ३७१) । उट्राइभ देनो उट्टाविभ (पदा) । उद्घाप न विस्थान ] १ वटान केंचा होना (उप) 'मधमनिनेहि बडागु स बोध्यक्त पर्कारमं महिरङहुम्एँ (से १६ १७)। २

चक्रव चन्पति (ग्राया ११४) । ३ मारस्म प्रारम्भ (मन ११) । ४ उद्यस्त, बहुर निश नता (एवि)। सुय न ["मृत] साम-विरोध (र्शीर) । बद्वाय देशो उट्ट = उन् + स्था । बहुाय वर [उन्+स्यापय ] बळाना । उद्वादेष (बहा) ।

उट्टाबण देसो उट्टयण (क्स) । उद्घावण दको उपद्भावण 'पन्त्रावणविश्विद्धाः नग्रं च बजाविहि निरम्भेसँ (उन)। **उहावणा रेको उपट्टावणा (मत २१)** । उट्टाविञ नि [उत्थापित] र छ्ठामा हुमा लहा किया हुमा (नार) । २ जन्मावितः 'तुमए उट्टाविधा क्यो एम' (उप ६४० टी)। उद्गितं उद्गित }-देखो उहु≃ उत्+स्वा। **उहित्ता** उद्गित उद्दिय वि [उदियत] उप्पत अहा हुमा (मुर १ ११)। २ चलात चद्भूत (परह १ 'विक्रीसिया कावि उद्दिया एसा' (गुरा १४१)। १ उदित उदय-प्राटा 'बहिपम्मि मूरे (ब्लु)। ज्वत उच्च (ब्राम)। इ.स.च्यासिक बाहर निरुष्ता हुन्ना (ग्रोच ६६) चित्र (भीषः द्रमा)। उट्टीभ (मर) देखो उद्विय (पिन)।

उद्गर वि [न्त्यान्] क्लोबाना (स्रक्त) । चट्टिसिय नि उद्घुपित । पुनन्ति रोमा उद्दुस ) मक [अव+धीयू ] पूकता। न्दुद्धः चिद्दुमति उटटुमाहः (पि १२ ) प्रदेशक (मा १४)। संक उट् दुक्कसा (मग १६)। उठिम (मा) देवो उट्टिम (पिग—पत्र **ξαξ**) ί ेंडड पून [कुरु] पट, बुस्म 'पडियक्तानर्णुपुँचै सावर्ण्डडे धर्णगप्यकुँमे । पूरितसमीसमपरिए कीस मर्गती करो बहुमि' (बा२६) ैडह पूँ [कृद] समूह, राध्यः 'सम्मी कहा धंडउड भतार जो बिहिनई (सम ६१) ।

उड देनो पुड (उना महा सहर ना ६६ मुर २ १३। प्रामु १६)। उदं हु र् [उटहू] एक ऋषि वारत-विदेश (निद्र १२)। त्रहेंप वि [व्] तित तिया हुया (वर )।

उड्डम | चूँ [उटम] ऋषि-माधम पर्न उड्डम | शाना पत्ती ने बनाहमा घर (मनि उड़न | १११३ प्रति चप्रः समि १७ स

१ )- 'बरबो सावतनेह्" (पाप)

(वद्)।

( t t ec) :

चना विदा व राम्रो य, इलामि महस्रमिसी।

तेल वे खब्दी इक्दों नार्य सरस्कों मर्व

ष्यस**्त ि**श्रम] उद्गुनामक विमान के

पूर्व सरफ रिवल एक देव-दिगान (देवेला

१६)। संस्मृत्त सम्यो व्यक्तिमान

के बीचल तरफ का एक देन विमान (अमेन्द्र

१३०)। योवत्त पूर्व [ अपर्व] व्यक्तिमान

के प्रियम तरह का एक देव-विमान (देवेल

१६)। सिंदू पूर्व [सुप्र] ज्वानिमान ≱

उत्तर तरछ का एक देन विमान (देनेना 1 (#45 खद्र गिच्दी र नवान (पाम)। २ विमान क्टिंग (संग्रह)। प क्यू पि ह क्ता क्त्रमा (बीय बुर १६ २४१) । २ व्यवस्थानीका (देश १२२)। ३ एक की

संस्मा (सुर १६.२४८) । यह तू ["पवि] चन्द्र (सम ६ पर्या १४)। इस प्र विरोद्य (धर)। सब्देवो सद (ठा२ ४४ मोद १२६ म्ह)। वड बरिजिया ही [चयुम्बरीया] केन सुनियो की एक शास्त्र (क्या)। बब्रुडिम न [के] रे निराहिता औ हा होते। में वि तिम्हि बूख (देश १९७)। बब्रस्थ ) पून [उद्देशक] उनुबन कृतन वद्युद्ध (शिव १९१ माह ७)। अकृर्विकृरि देश-विशेष करकत और,

निवासी श्रहिया; 'सगजवश-बज्बर-गाय पुर्व शोहन्याम--- (पद्या १ १) । **बहुरि [रे] पूँ**या याति **को बो**क्तेत्राला बन्द (दे १ १)।

थोडू नामो से प्रसिद्ध देश दिस्तको बादकत

बरीबा बहते हैं (स २०६)। २ इस देश ना

डक्कण 4 कि ] १ वेश सक्। २ कि दी वैं, नम्बा (दे १ १२६) ।

रबुंस रेको अर्थ (क्य १६ १६व)। तकुस दृद्धि चन्मत चटकीय चिक्स (६ (fig १) I t (\$\$ )

सब्बद्धण पुदि विरोध सङ्घ (दे १ ११)। तद्यदिक्ष विदिधितात क्रेंन इसा छक्का×्र (हो ] इन्द्रम क्लाम टक्कम (दे१ एक्टिम वि दि ] सनिष्ट थोना द्वमा ( वर् )। ı(ts उड्डाण न [उड्डयन] ठड़ान, ४इना भीरोदि कांक्रिय में कि जिन्दी संग्रह, सरह, मान नास्य-निधेष प्रदूष क्लिंद, ह्रंत तस्मीम ध्यारी (पुर न 1(1) छद पूं (छड्र] एक केन-विमान (क्षेत्र १६१)।

बक्राअन्तु दिहें देशकिक्ट, मधिम्मीना २ कुरर परित-विशोध । १ किहा पूरीय । Y मनोरव व्यक्तिवा । १ वि गविष्ठ, प्रामिगानी ( **t** t t t t t c) | सङ्गामर वि (तङ्गामर) सङ्गद, प्रवत (कृष 188)1 बहुमर वि [बहुमर] १ मन भीति । २ पावन्यस्ताना दीपटारवाचा (पाप) ।

[मा (क्यू)। स्तुव बक [बद्+क्षायम्] अवना। व्यानह (ऋषे)। सह त्र्यानंत (हि ४ \$\$**?**}; चकुरब वि [एकुरमक] उड़ानेशामा (विष ४७१)। छ**द्वाब**ण न छिद्वायने | १ द्वाना मत्त्रक-नायमुद्धाराखेख बमक्तुवर्ण किमिम' (कुमा) ।

२ प्राक्ष्वंद्यः 'हिन्दगृत्वर्' (गाया १ १४)।

**उड्डा**मरिक वि [ड**ड्डा**मरित] मय-बीत विका

ड्याविभ वि [द्यायित] उदासाहमा (फ्र निय)। बङ्काविर वि [बङ्कायि:] ब्लालेशला (श्वा **(13** उद्वास दृं (दे) डंडाप परिवाप (दे १ ६१)। **ब्हाइ** प्रे जिहाह े १ मनकूर बाह, बसा भा(उपर म)। १ मानिस्य फ़िका उप-मल (ग्रीम २२१)।

दक्कि वि[औड़] परीसा केत ना नियासी ं चिक्कित [दे] चीमात क्रेकाहुसा(पर्)। उद्भिन्न देशो स्त्रो = रूत्+सी। विद्विमा**दरण** न [वे] कृषी पर रत**्वे** हुए कृत को पदि की को विक्रियों से सैने हुए अस

बाना 'बुरिधनबनुष्यदुष्यं बेत्तुस पार्यक्रनीहि

क्यक्तं । वं क्षीनमञ्जूरतं

'र्नुसुर्ग यत्रोहीय शुरिकाराज्ञाक्त्रेन संगुता। पाराञ्जलिमगेञ्चति विविवादस्यपुरिमान्दर्शे (155 \$ \$ चक्रिय वि चित्रीन विकासमा चस्त्रीय-

परिचलुक्त परे' (बर्मीव १३१)। विद्विष्यं वि विशेष्ट्रिया ऐका ह्या (गाय)। स्त्री धक [सर्+डी] स्था। वहेर, साँहरि (पि ४७४) । बङ्ग सङ्ग्रियत सङ्ग्रेत (रे ६ ६४ ज्य १ ३१ दी)। संहर सङ्गेतल, स्क्रोबि (पि १०६ समि)। बड्डा औ [क्षीड़ी] निरि-निशेष जरत केर की लिपि (विशे ४६४ ही। **रुद्वीय विक्रि**ति हुन द्वार (सागर

१ पाम्य सुपा ४१४) । चर्*बुक्ष पू 👔 क*्यार, ज्यूपाट अभारपूर्व उड्डूप्यं बायक्तिसक्तेर्सं (परि)। बर् दुश्य ] द [त] क्वी चन्द्रव (केस 1 848. Adm) 1 उड़ोब चङ्डधाडिय पू [चङ्डुबाटिक] भन्नार मञ्ज्ञानीर के एक प्रश्न का नाम (कृप्प)। देखी बद्धाइञ् । च्यू बृद्धिम क्यो स्वृद्धिम (दे १ १३०)।

सङ्कोस केवो सङ्ग्रह्म (राष) । च**र्ड** न कि**र्थों १** अगर, क्रेश (मशु) । १ नमन इनदी 'सर्वातिरोही दुह" (बहु १) । १ वि उत्तम सुक्त भाइताए नी पहत्रतार परिकारित (सन ६ ६) स्थानम)। ४ वना रएगमनानः 'खायुज्य उत्वरहो काळावन्ये हु अद्या<sup>\*</sup> (शान ६) । १ त्यार का कारितन (ठवा) । "इंड्रूयग दे ["इम्ब्रूयङ्] तार्गी रा एक सम्प्रदाय को गानि के उत्पर भाव में ही पुत्रचाने हैं (यद ११ ६)। काय ई िकासी राधेर का उपध्यित का (एक)। कार दे [कार] कल नावश रे पर्व

क्सर वाले वाहा (सूचा YALE) । आहमि वि ["गामिन्] अपर वानेवादा (शम १६३)। **पर वि िंधर** डिपर भननेनाचा यामारा में उद्देशका (गुप्राहि) (प्राचा)। दिसा की [ "दिशा ] करने किया (स्था) वाच ६)। रैणु 🛊 [रेखु] बरिमाल-सिक्टेस धाठ

नाएड् वकमाशा धर्मात् समीत प्रतम्ब-

पॅदॅ(लूप १ ६,२ ७) । सम्र कि["सम]

क्क्रणक्क्षणिका (इक)। "छोग "कोप प्र िस्रोक्ती स्वर्ग वेब-मोक (ठा ४, ६ मप)। "वाय पूं ["वाद] उँचा गया हुमा वायु बायु-विरोप (जीव १)। तहतं त्यर देशोः 'तहदंबाण बहोतिरे माण-कोद्रोबगए (भग १ १ महा बा ३३)। उद्दर्कन [दें] माम का उम्रत भू-भाग (मूम ₹ **२)** ≀ उद्देख े पूर्वि यहास विकास (दे १ सहस्रह रेश्रा **उद्**शवित वि [क्रिकित] क्रेंबा किया हुमा (गवा १४६)। सद्दा की [ऊर्चा] दर्म-दिशा (अ ६)। चडिट दि देशो उद्धि (मुझ १८)। र्चाइड देवी सुद्दित ( पर् ) ! स्वित रेखो इदि (पर्)। डब्रिय देशो उद्धरिम - उर्वृत (गंग)। एक्टिया की [व] र पात्र-विशेष (स १७३)। २ कम्बन वरीख् बोइने ना बझ (स ४८६)। कर्ण देको पुण = पुतर (पिक्र ८२)। ज्ञान [ऋष्य]ऋष्य करना(प≉)। ) देवो पुण (प्रामाः प्रामू ६१ कुमा डणा है १ ६१)। धणाइ चणपन्न भीत [ पद्मीनपद्मारात् ] जनवार ४१ (धेनेन्द्र १६) । एजाइ वृं [उणादि] व्याकरण का एक प्रकरण (क्या २, २)। हणाइ दे हि प्रिय पवि नामक 'उछाइ-साम्बोद्धाः प्रियापे (संध्रि ४७) । बचा केवी पूर्ण (गउम नि १४२, हे १ ६६)। उपग्रम [ऊर्ज] भेड़ या अवसी के रीम रोधी। देवी उम्र। बप्पास र्रे विश्वप सी उल मेड के रोग (निचू १)। णाम व िनाम निरुपो गीट-विरोम (राज)। उक्त देखी पुरुष = पूर्ण (३ ८, ६१) ६६)। बज्जम बक [बद् + नद् ] पुरारम बाह्यन परना । पर्यामद (प्रष्ट ७४) । क्रणाई की [उर्झात] क्यति सम्पूरण (वा Y14) 1 उरुगदुज्ञमाग देखो उपमा । एक्प्रम यक [सदू+मम्] द्रवा होता

चंक्र मुज्यभिय (भाषा २ १ १)। रुष्णम् विद्वि समुप्ततः अवैवा (वे १ ८०)। ত সম্বাদি ভিনার । ইজনর কবা (মনি १)। २ युक्तवानु, पुली (क्यावा ११)। ६ धर्मिमानी (मूच १ १६)। ४ म. धर्मि-मान सर्वे (भग १० ५)। रुप्पय पूं [असय] मीति का सभाव (मव **१२. ४)।** उण्णाक्षी [ऊर्णा] अन भइ के धम (पात्रम)। (पपाछिया भी विपीक्षिका बीटी बन्दु-विशेष (दे ६,४८)। रुणाअक वि उज्ञायकी १ उप्तरिकारक। २ पून चन्द्रशास प्रसिद्ध मध्य-प्रश्न चतुष्कत भी संज्ञा (पिन)। रण्याम पुं [डबाक] धाम-विशेष (धावम) । उण्जाम प्रीडमामी १ उन्नति अवाह (स ५, १९) । २ सर्वे मनिकान । १ पर्ने का कारण-भूत कर्म (भूम १२ ६)। रुण्याम सक [ रुदू: + समयू ] क्रेंबा करना (TY X4) 1 उप्यामिय वि जिससिती अँवा किया श्वया (या १६ २१६ से ६, ७१)। रुष्णास सक [ सङ् + नमय ] देवा करना। प्रत्यासइ (प्राष्ट्र ७१)। रुण्जास्थिष [दे] १ इता पुर्वतः। २ चर्णामत अँचा क्या हुमा (दे१ १३३)। <sup>†</sup> र्शिणाओं वि [स्क्रीत] वितनित विवासित (मे १३ ७७)। रुण्यिञ्ज वि [और्थिक] उस का बना हुसा (ठा६ ३३ घोष ७ १, ≈१ मा)। वण्यिद्द वि [उभिन्न] १ विवृतित सम्बन्धित (मडा)। २ निज्ञा-र्यहत्त (मान वर्)। उज्यो वक [उद्+ती] १ अँवा वे वाना।, २ कहना। मंत्रि अएलोई (विशे १४८४)। क्षकः, रण्यक्षमाण (च्या) । उण्णुइन दुं [वे] १ हुँबार। २ मानात नी दरफ पूँड किए हुए दूत्ते की भावान (दे १ १९९)। ३ वि मर्वित 'एवं भणियो संतो ' काणुरधी तो नदेह तन्तेतु' (वव २ १ )। कुछ दे किएको १ बाह्य करमी (ए।बा उन्नत होता। वह बण्यमंत (ति १६१)। १ १)। २ विषयम सब्र (दुमा)।

दणह्रवा न [दणात] नत्म करना (निक २४ )। उण्डिजा की [में] इसर, विवशे (दे 1 (22 \$ धन्दीस पुन [डच्चाप] पनकी सुदुट (ह २ ७१)। उण्होत्यभंद पु [दे] प्रमर, मनय मौरा(क 1 tq ) 1 **५%**होला भी [दे] बीट-बिरोप (पावम) । स्वाहो ध [उताहो] धपश, या (वि =१)। उत्तवि उक्ती श्वित मिहित (सुर १ ७६ स ३७६) दश्च वि [यस् ] १ बीमा हुवा । २ हिस्सारित क्यादित देवतत क्य सोए नमन्तिति मावरे (भूम ११३)। उस प् बि बनस्पति-विरोप (राज)। टच वि [सुप्ति] एखिट (सूम ११३)। उत्त देतो पुत्त (नाद४: गुर ७ १३८)। ভলহুম } হি ডিভজিল } (হল দি না∙ , ब्लुइस ∫ १११ मन ) ह उत्तम देवो परर्थम = दम्। प्रचमद (ह ४ १३३)। सत्तंप देवी उर्त्तम् । सर्तपर् (प्राष्ट्र 🗸 ) । उत्तेत देवा बुर्चत (पर्: निक १६)। उत्तेषिअ वि दि धिम्न छक्तिन (देश १ २)। दर्सम तर [सम् + स्तम्म्] १ येवना। २ प्रवत्तम्बन देना सद्वारा देना। वर्ग फ्लॅमिनबर्, फ्लॉमिनमेंति (नि ६ **०**) । वर्त्तमण न [उत्तरभन] १ धन्येष : २ धवसम्बन्धः (उत्र पू २२१) । उत्तमय वि[उत्तम्मक] १ चेक्ताता। २ प्रवत्तम्बन देनेदासा सहायक (४४ प्र ₹₹ ); वर्चस पू [अवकस] हिरो-पूरण पर्यंत (मरहा दे २ ५७)। इसंस पू [दसंस] कर्लुएक वनपुन वर्ण-मुक्छ (पःम) । उत्तइय वि [व] प्रचित्र व्यवस् धीतित (रतनि । ११)। **एलय वि. [५] गवित (तद्वि १६ टी)।** देनो उत्तृज ।

वस्त्रम विजिल्ली तुस्त्रको समीन क्रितित्रमूमिमलेया उत्तर्वस्थनाई क्रमंद्र' (पर्या १ १)। **उच्युक्ष** रि [श्चनुक] प्रक्रिमानी गर्निह (पाम) । चक्क कि [इक्तर] प्रति-तम नहुत यस्त (नग १७) । ज्लात नि [दे] सःमानित, मान्द (पट) । <del>एक्टब वि [उरहात] मन भौत वाप-प्राप्त</del> (पणहरुषे पाप)। उत्तद्भ रेजो पत्तरह्न (निय) । उत्तर्भ वि दि ] १ वॉवेड धरिवाकी ( दे १ १६१ पाप) । यविक दुएनाना (वे १६१)। प्रकृत्य वि [उक्क] वेद्यायकान (धन) । **उत्तम ([प्रचम] एक दिन का अपना**श (मंत्रीय १४) । बक्तम वि [उक्तम] १ योह प्रशस्त्र मुक्तर (इप्पाप्तानु ६) । २ प्रवान कृष्य (पेवा ४) । १ परम बन्द्रष्टा उत्तमरद्वपर्त (सम + ६)। । ४ मध्य घन्तिम (सन्त्र)। ३ पू मेद-पर्वेत (इक)। ६ संगम श्वास (वसा १)। ध रानम भेत का एक राजा स्वतान-बदाद एक वरिष्ठ (प्रमा २, २६४) । टू पूँ ["क्रों] १ भेत्र वस्तु। २ मीज (बत्तः) । १ मीख मान 'जीता दिया परमहुस्मि' (पढम २, ≈₹)। ४ मत<del>तन नव्हा (यो</del>मण)। एम रि [°र्म] सेनग्रर (ना") । उत्तम रि [उत्तमम्] ब्रमल-पी्ट निरिश्चमा अनुरता चन्हा दे उत्तना होति (भागति ४१ वर्ग)।

उत्तर्मग र [इसमाङ्क्र] मस्तर निर (स्त ス : 資刊/ / /

उत्तमा की [क्ल्या] १ 'गावाबम्मक्र्र' का एक ब्राप्यधन (साम्ब्र २,१) । २ इन्हानी (धापा २ १ डा ४ १)।

उत्तमाओं [उत्तमा] पद्मनी प्रदन राजि (नुग्न १ १४)।

उत्तरम यक [उन्+तम्] चिल होता. उदिग्म होना। उत्तरम् (ग. २. १) । बङ् बस्तर्मनः उस्तम्मसात्र (नाट)। संद वर्षामम (गः) ।

बत्तमित्र वि [वत्तास्त] विस्त, स्तिक्षर (दे१ १२,पाम)। दक्तरसक्[छन्+य्] १ बद्धारतिकनना। ६ सक पार करना। उत्तरिक्सामी (स

११)। भर उत्तरंद वेन्द्रकि प्रशिक्षियन्त्रा परिधा

इतिमस्य पिट्रपेटरियं । नूर्य दुवस्त्रुत्दुत्तर्रकाण्य विश्व सम्बद्धां (या ६८६).

'उत्तरताज म भर्ग लेक्कारी जिलाए मरिज मारको (महा)। सह. इसरियु (वि १५७)। क्षेत्र कसरियाय (वि ४७ )। कत्तरसङ्ख्या + तुी स्वरता नीवे मन्ता। बहुः इत्तरमाण 'उत्तरमाखस्न तो विमा कापी (बूस १४ )। उत्तर वि [उत्तर] १ मेह, प्रशस्त (पडम ११ व व )। २ प्रवास कृत्य (सूम १ ३) । ३ क्वर-विरा मॅं एन हुन्स (अ.१)। ४ क्यरि-वर्ती उपस्तिन (उत्त २)। ५ मनिक मतिरिक्तः 'घट्टलर— (धीप सुघ १ २)ः६ बंधान्तर, मेर शावा 'बसरपन्द' (कान t)। ७ का पा बनाहमा पत्र, कम्बन वरैदा (कम)। ६ म. प्रवतः प्रमुत्तर (वन

री। इ.ब्रीक (मय १३ ४)। १ द

ऐरक्छ क्षेत्र के कार्यमच मानी जिल्हेन का

नान (सन १६४)। ११ वर्षा करा (क्या)।

१२ एक केन धुनि मार्न-पहालिए के प्रवस

रिष्ट्य (क्या) । कंब्य व किसाकी

बक्दर-बिरोप (बिया १ २)। बस्पान

िकरण | उत्तरनार, संब्वार,विरोध-प्रणाबान 'बॉडियरिस्टियरी ধুনযুত্যন্ত ঘৰনন্তেতাওঁ।

रवरमध्ये गैयः, वर यन्त्र-प्र्यून-प्रिग्तं (मान १) ।

हुरा 🛍 िंदुर निमान समान शेव-विरोध 'बरारपुराएं से भेते । शूपार नेरिनार धानार बारपादीबारे पण्याने (जीप ६)। 🐠 1 (कुरु) १ वर्ष विशेष अतरक्रमाण बन्ध्यार्थे (पि देर : तर भ परहरे ४- पत्रम १६,१ ) । २ देर-विरोध (मे २)। शुरुकृष्ट ५ ["कुरुकृट] १ माध्यांत पर्यंत का एक विकार (दा रे)। १ देव-विकेष (बं ४) । कोबि को <sup>(\*</sup>कोटि ) पंगीतराय-प्रसिद्ध मान्यार-वान की एक मूर्व्यका (ठा )। गंबारा की गाम्बारा देवो पुर्वोत्तः धर्मः (छ. ७) । सुलाः पु. ["सुला] श्राबाद्रापु सन्नम्तर प्रुषु (बन ७ ३)। थानात्म स्त्रे ["शामारा] नगरी-विधेप (धावस) । जुल<sup>ि</sup>चुड) बुर-नश्चन का एक बीप, पुर को बन्कर कर नई माधान से 'मटन-एस वैद्यमि भइना(सर्ग२)। चुकिया स्मै ["जुम्मिन्ध्र] देखी मनग्तर नन्द्र सर्वे (बृह ३) धुना २४) । इद्धान [ीर्घ] पिछला माना का उच्चर्च (में ४)। दिसा की [दिश्] क्तर किता (ग्रूर २ २२०) । द्वान [ीर्य] पिक्रमा चावा मान (पिंग)। पगइ पर्यक्रि की ("महाठी कर्मी के धवान्तर नेव (उत्त ११: एम १६)। प्रवृतिवसिद्ध प्र (°पा आरप] पानम क्रीस (पि)। पट्ट 🖠 [पह] निक्रीना के जगर का बक्र (घोष १४६ मा)। 'पारणग ४ ['पारमङ] द्रप्रवासारि इत की समर्थित पाराग्र (कला)। पुरस्थितम पुरस्थिम र् पीरस्थ ] इंशान कोल जतर और पूर्व के बीच ही विद्या(राज्या १ १३ भन वि.६.२)। बोद्भवया औ ["मीछपदा] क्लच भारपध नवर (गुन ४)। फरगुणी को ["फारगुना] वरुर-प्रज्ञानी नतम (कृष्युः पि ६६)। बिंदरसङ् पू ["बिंद्रस्सङ ] १ एक प्रश्चित मैत नाषु (कप)। २ इच्छर विश्वस्त्रह नामक स्वविद् से निकासा हुया एक कछ। भगनार्थ महानीर का जितीय गरा-साबु-संप्रकाम (बप्प ठा ६)। मञ्जूषा की [भाइपदा] माप-पिरेप (छ १) । संदा ही ["ममा] मध्यम द्याम की एक सूक्द्रीना (टाक)। मदुरा 🕸 ["मधुरा] नवरा विशेष (देन) । बाप पू [बाद] उत्तरकार (बावा)। ।विद्या वित्रक्षित रि [विक्रिय] स्थामः रिष-क्रिय वीक्रिय वतावधी वैक्रिय (रम्म १ रण) । सास्म ध्ये [शास्त्र] रे की टा-पृष्ट् । २ गीधे में बनाशा द्वासा घर । ३ बार्त-बृद् हापी पोड़ा साहि बक्ति वा स्पात्र वरेता (निष्कृष्ट) । श्राह्मः साह्य वि [सामक] विद्या मन्त्र गीयह का

वत्तरओ--वसास सावन करनेवासे का सङ्घायक (पुपा १४१ स १६६)। रेको एत्तरा । टचरओ प्र [उचरता] उत्तर रिया नी चरक (घ ६ मग)। **क्तरान [बक्तरहा] १ ररनाने का** उपर का काष्ठ (कुमा)। २ वि कास कवन (मुद्दा २६८) । बत्तरकुरु पृंज [गत्तरकुरु] १ दनभूमि. स्वर्ग (स्वयन ६)। २ इसी भगवान् नमिनाव नी बीक्राविषिता (विषाद १२६)। इन्तरण न दिन्तरणी १ श्तरना पार करना (ठा ४० स ३१४)। २ झबक्रस्य नीव याना (दा १)। रुत्तरप्रवरंदियां की [दे] उद्गर बहान कीती (दे १ १६२) । सत्तरविद्रक्षियं वि (इत्तरविक्रियिक) उत्तर बैक्रियामक सम्बन्ध संस्थान (र्गण २.२.)। **एक्ट्र**म के**ले** एक्ट्रान्संग (पर ६०) । इत्तरा की विक्रयों र क्लर दिला(कार )। २ मध्यम प्राम नी एक मूर्व्याना (ठा ७)। ६ एक फिरान्द्रमाधि वनी (ठाव)। ४ सियम्बर-मत प्रवर्तक बाजामें शिवपृति नी स्वनाम क्याद्य धरिनी (विदे) । १ प्रक्रिकाना नपरी की एक बानी का नाम (ती) । जैंदा क्ये [तन्ता] एक शिल्ह्यारी केनी (राज)। पह पू ["पव] च्छापेक्शा-रिका केंग्र, उक्त-रीय देश (सायू २)। फरगुणी देखी उत्तर पन्तृषी (सप > १६)। शहमवा केवी बत्तर-भद्रमया (सम ७ इक)। यम न िश्रायी उत्तरायण सूर्यंका प्रतर किया में गनन मात्र से केवर कः मधीना (सम ६६)। यया की ["यता] पान्धार-प्राप्त की एक मुच्चेत्य (ठा ७) । यह देखो पह (महा वन १४२ थै) । संग दूं [संग] प्रतयेव बच्च का शरीर में स्थास-विशेष उत्तरसद्ध (क्या भा भीप)। "समा की ["समा] मध्मम चान को एक पुष्ट्रेंग (ठा ७)। साह्या की ["पाड़ा] नशक-विशेष (सम १ वस)। हत्तन । मिमुक्ती १ बत्तर की तरक। र कि जलर दिया की सरक मुँह किया हुआ

(पोच ६६ मान ४)।

रचरिय (उसे प्राप्त है १ २४०) 'जरविश उद्यस्ति' (मुपा १४६) दचरिय वि रिचीणे १ एवस हमा, नीवे मामा हुमा (सुर ६ १३१)। २ पार पहिंचा हुमा (महा) । उत्तरिय वि जितिहरू, शीतराही देवा एकर (ठा १०० विशे १२४१)। मचरि**द्ध वि [अीचराइ]** एतर किया या कात में उलाम या स्वित उत्तर-सम्बन्धी उन्नप्रेम 'मह उत्तिपक्षिम्ममे' (पुपा ४२, सम १ ३ भग)। उत्तरील देवो "त्तरिय = एतरीम (हुमा है १ ९४०० महा)। उत्तरीकरण न [श्तरीकरण] उत्तर बनाना विशेष शुद्ध करना 'तस्य उत्तरीकरहोशी' (परि)। हत्तरोह पू [बत्तरीष्ठ] र उसरका क्षेत्र (पि १९७)। २ शमप् मूँख (राज)। **उत्तक्षक प्रं वि**वे किय चंद्रर (दे र 22E): उत्तव नि [उत्तरम्] निलने कहा हो बह (पि ५६८)। उत्तस पर [ उन् + सस् ] ! कार पाना पीवित होना। ए करना भवन्त्रेत होना। बहु-व्यस्त (मूर १ प्रद १ प्रद )। **प्रच**ित्तम् वि [सन्त्रम्त] १ सम्मीव । २ पीड़िय (शुर १ २४६)। ष्टवाड वर [ उन् + वाडम्] १ शहना वादन करना । २ वाच बनाना । क्यूक 'रक्तारिकांतामं स्तरियार्थ नुष्टमार्ग, (राम) । रुवाइज न [उदाइन] १ ठाइना करना (दुमा)। २ वाद्य वनाना (राज)। उत्ताग वि [उत्तान] १ वन्द्रच कर्म्यन् (पेवा १०)। २ विश्व (विदार ६) ठा ४ ४) । ३ विस्टारिका "वटाव्यवायक्षेत्रकः-रिएश्वा पायाधीया बरिसालिश्वा' (ग्रीप) । ४ वनिरूष धरूकन 'क्लाग्रामदेन बाहर बम्म (बम्प ८) । साइय नि "शायिन्] वित्त घोनेवला (क्स) । वक्ताप्रम 2 कर्द केवी (बन्छ वा ११ द्याच्या (पत्री)

<del>दत्तरिळ }न [ वत्तरीय ] चार८ दुण्हा</del> उत्ताणपत्तय नि [दे] एएएर-छन्मन्त्री (पती बमैद्धा) (देश १२)। रक्तानिज दि जिलानिन दि विक किमा हमा(से ६, वर मा ४१)। २ विस सोनेवासा (बसा) । उत्तार सक जिल्लान तारयू ] नीचे उता-रमा। वह एकारेमाण (ठा १)। क्तार सक [ उस + वारयू ] १ पार पहुँ भागा। २ बाहर निकासना। ३ दूर करना 'च्छो पहिए जिलो सभी एए बद को उत्ता-रिंता तो ई मरिक्य (धुरा ११७ काल)। क्वार्य (क्वार) र क्वार करना 'पणुशीपो एंसाचे पश्चिमो वस्स उताचे' (रसं २)- सारवत्ताराहं (उत्तर ६२)। २ वरित्याम (विसे १ ४२)। ३ उत्तारनेवाना पार करलेगाना 'अवस्यसहस्यदुसहै, बादबरामराप्रमामचेतारे । बिखबपणुम्मि प्रणावर ! चएमदि मा काहिति प्रमार्थ (असु१६४) : उत्तार पुं [रे] मानाय-स्पान, बुकराठी में 'बनाये' (सिरि ७ )। कत्तारण न [उत्तारण] १ धतारमा २ दूर करता । १ बाहर निकासगढ । ४ पार करनाट 'ता धरमदि मोहमहास्मृतिसहेगा कुरंदि तुद्ध बाद । वायुवारयोहेर हम्हा वर्त पूरामु भागा (सुपा ११७ विमे १ ४)। <del>वचारव वि [इलारक] वार क्वार्यवासा</del> (# 4x0) I क्लारिम नि [क्लारित] १ पार पहुँचावा हुमा। २ दूर किया हुमा। ३ मध्र र निकास हुमा विकृषि प्रवास्त्रिये मुमिषित्रयाये (मक्षा) । डलाड वि [एसाड] १ महान, बढ़ा 'क्ताल বালবাত্য পথিয়েটি বিক্লামতাতে (মুগা १ २)। २ वतायता सीमकाधीः परमान

बद्यामी क्याहिनेहियनेहर्ज फिएहुंची' (सूत्रा

६२) । १ स्थल (हे ११ १) । ४ बेन्स

enter flexes and are one about formalist w

पनाहि उद्यास (स. ४) भीम दुमगुजियक स्युत्तात च नमतो मुहोयन्चे (शीव ३)। बत्तास न [दे] सनावार स्तन सन्वर-रहित

कत्तास्त्र मृद्रु समावार करण सन्तर-पाइव सन्दर्भ की प्रामान (वे १ ११)। कत्तास्त्र केती वर्ताकण ।

क्तावल न [व] स्वापन सीववा । २ वि सीवकारी माकुम 'इन्स्तावनिर्मित्वासिक विकासकर्यासकर्यासकर्ये (सुर १ १)।

षत्तास सक [तत् + त्रासय्] १ सम्मेत करना करना। २ पीक्ना हैरान करना। चत्तामेद (थी) (नाट)। इ उत्तामणिळ

(हेरू)। बन्धास हुं [बस्त्रास] १ मास स्व। हैराजी (कपू)।

एकासङ्घु हि [करवासमित् ] १ सम्बीह करोबाला । २ हैरान करोबाला (याता)। करावाला ) हि [करवासनक] १ सम्बन्ध एकामणा ] ज्वेन-नाव । २ हैरान करो-बाला (पठन २२ हैश एग्या १ व)।

डलांसिय नि [हालांसिय] १ हैएन निया हमा। २ भममीत किया हुमा (मुर १ २४०) मार ४)।

उत्ताहित है [दे] बीझाय केंग्रहण (दे ११९)।

वित्त को [उक्क] वचन माणी (चा १४ कुना २३। व्यू)।
पत्तित वृं चिकिह्न] १ वर्षमालार कीट-विशेष
(चर्म २१ किट्ट ११) १ वर्षीयोत्ता वा मिना कीविक्तकुषसम्प्रीताक्षमार्थवात्त्वाविक माणे (वार्षि)। १ कोशियो को वन्तात (वार्षा १)। ४ कुछ के प्रवच्या गर सिना वक्कविद् (वार्षा)। १ कामार्थिनविद्या गर्ववक्षात् पुत्रवार्षे में विकास मी श्रेष्ट वार्षेक्षमा, पुत्रवार्षे में विकास मी श्रेष्ट वार्षेक्षमा,

गोर्जुहरिस्तु ना। प्रस्थिम वहा निभ्नं

विधिनयत्त्रोकृतां (स्म. ११)। ६ न. प्रिप्त विनयः, एक्स. (निष्कृरे स्थाना २ ३ १ ११)। "स्मेर्यान ["स्थयन] नीट रिशेष वा पृद्-सिम (कृष्ण)।

वर्षिगपमग द्वेत [प्रचिद्गपतक] शेल्लिक कर, वीरियों का दिव (राव १, १ ११)।

डिन्ह्रियक [ त्रत्+स्मा] १ उठाना । २ व्यक्ति होना । सङ्कः 'व्यक्टिट्टन्टे दिशायरे' (उन्त

११ २४)। दक्षिण वि [हक्तज] तृश्य-कृषः "संसदार्जात्त्रपरिवर दक्षोट्टंतस्तितवार्गार्देः।

कुरिनिहिमोहिनेपर्ह रतका प्रकार प्रकार करमेरीई' (या १४)।

ভতিতিম দি ভিত্যুতি। বুল-নইছ দিনা
ভূমা 'মন্মনারকিলত ঘণ্টানা' (বা ११४)।
ভতিত্য দি ভিত্তাতা । বাহুং নিবলা ভূমা 'মন্মিন্দার বলানাম' (লয়াই দিবলৈ ভূমা 'মন্মিন্দার বলানাম' (লয়াই দিবলৈ স্থান

'विरिष्ण तकारणी' (बहु में पहुँ रहन मह-पारर गरिक्यो कहाविद्ध तिम विरुद्ध के मह-पारर गरिक्यो कहाविद्ध तिम विरुद्ध ते मह-पार गरिक्यो कहाविद्ध तिम विरुद्ध य जार-पारत (व १३२) 'विद्याला छुदू पण गरिक्यो (महा)। हे को कम ह्या हो 'वंबरद विरामि बहुनायराष्ट्रित-वर्णवेच्योक्षालें (प्रका)। प्र पहिल 'वोह्स (प्रका)। ह मिन्दा ह्या विश्लो क्यांच्यालय (प्रका)। ह मिन्दा ह्या विश्लो क्यांच्यालय

किया है बहु "यहाजुक्तिएकए" (ता १११)।

६ सम्बन्धिक परिवस्त (एम)।

विश्वय है हिम्मदियों ! स्त्रेष क्याप हुया

'प्रवस्त्रकों देश व्याप व्यवस्त्रकों है स्त्रेष क्याप हुया

'प्रवस्त्रकों देश व्याप व्यवस्त्रकों से देश (वहा)।

विश्वय देश विश्वयों हुन्य प्रवस्त्रकों देश (वहा)।
विश्वय देश विश्वयों हुन्य प्रवस्त्रकों देश ।
विश्वय देश वस्त्रकों देश हुन्य स्त्रकों देश ।

विक्रमंग देखो वस्त्रमंग (महा पि १ १) । विक्रम देखो वस्त्राच्या (काम १४६) कुमा) । कत्तिरिविषि ) की [व] भावन वसैयह का विश्वका | व्यंता हेर, मानता की क्यों। पुत्रकारों में निक्रमें 'कारेशव' बहुते हैं (वे

४१ः निष् १)।

१ १२२)- 'प्रोवेद विद्याने मोलपार सारेषि विद्यान (का २० टी)। वर्णुंग वि [वर्णुक्क] डेबा, कन्न्द्र (यहा; वर्णुः वडक)।

ठचुंड वि [यचुण्ड] स्पूष अप्येनुद (बरा)। उचुमारि [दे] धर्ममुक, हम धरिमाली

(देश दशः पता)।

बतुष्टिपद वि [वे] स्मिन्ब विक्रमा (विगा १२)।

चत्त्व संक [बत्+तुद् शेदा करना, हैरान करना। नद्र चतुद्धत (विचा १७)। चतुर्विद्ध को [दे] वर्ष समिमल। २ वि पाँक्त समिनानी (वै १ १९)।

उत्तुव कि [क] क्ष्य केवा क्ष्मा ( यह )। उत्तुविभ कि [के] अववानित किना नर (के १ १ १ १११)।

२६४)। इट्स न [इक्स] १ स्टोज-विरोध । २ मोक-विरोक्त (मिछे)। इट्स म [इट्स] उटराल करिवर्ड (सुर्थ) ११६ एउटा)। इट्स (टी) कियो इट्स च्या + स्वा। उपलेक्ष

(प्राक्ट १४)। इत्यन्य वि[अवस्तृत] १ व्याख (वे ४ १)। २ प्रमारित फैनामा हुमा। १

साम्बासिक सम्बद्धामठवनमुस्यक्ष्मः (१ त्य-द्वे महासर्थं स्थावेद्दं (स्थायः १ १ पि १ १)। स्वर्थनिक केते उत्तरिक्यः = स्वर्थनिक (१

११)। कर्ल्यम सक [कड्+समय्] डॉका करण सन्तर करणा। स्टब्स्ट (१४१६)।

वरंधयः सम् [कन् +स्तम्स्] १ वद्रानाः । २ यस्त्रम्मन् वेताः १ रोजनाः (नद्रकः वे १,६) । जरुनेदः (दा ७२४) ।

उत्पंत्र तक [इत्+श्चिप्] ईवा कॅक्स। जनका (हे के १४४)। संकृतसमिम

(दुना)। सर्वेष कर्राक्यीकेक्स । उत्संबद्धी

टरबंघ सङ्घित्र ] रोजनाः जल्पेनः (६ ४१३)।

रुखुमण म [अवस्तामन] पनिष्ट की शान्ति

के सिए किया जाता एक प्रकार का कौनुक

उद्गण्य]कल पानी: मिनि साहिए दुने

बाने सीमोर मयोज्या निवस्ति (माना

भग १ ६)। उल्लाबोस्स वि[िर्ट]

पानी ने मीला। (औष ४०६ पि १६१)।

धु-चु भाषात्र भरता । (बृष्ट १) ।

'चन्द्रशुरवरियमहत्त्रवाह

(पटक)।

सत्त्रंच पू [सत्त्रमम] कर्ष-प्रसरण क्रेपा

उत्पंपण न [उत्तम्भन] उत्तर देश (नउड)।

उत्पंषि वि [धर्त्रेपिन्] बँवा परेका

उत्यंश्रिक्ष व [स्मामित] केंबा किया हुया

ज्लांधिक कि [स्तु ] रोक्स हुमा (कुमा) ।

रखिल हि [उत्तरिमत] उत्पापित, बठाया

उन्नत किया हुमा (कुमा) ।

ह्या(मे ४.६)। उर्धाम वि [उत्तम्मिम्] १ पापात-प्राप्त धवसम्बन करनेवाला 'वारिक्जा असन्दिशिव एरमहा की वि र परिवर्तन (दे १ ६३)। कलोपोर्चित्रमत्तकृतसेमो । २ फार्चन (गाउ) । न हु सम्बद्धमानिध्यिम इत्यक्षित्र वि [उपञ्चलित] उपनाइपा नुहानुहो कम्म-परिग्रामी ॥' 'रावस्मित्रं उच्छतिमें (पाम)। (प्रामू १२७)। उत्पाइ वि [प्ररमायिम् ] उठनेवाना (१ ८ उरबंभिभ वि [उत्तम्भिन] १ पक्तम्बर । श्याह्मा स्तम्भितः चिक्रीणच्यात्रच्यः उत्पान्य वि [उत्पापित] उठावा ह्या नियाएके मुक्तमु मुखनु मह बचर्ड (ना 'पूब्युन्बाइयनरवर'न बंशाहिबं ठवड महर्ए' १२४) । १ क्लान-पुक्त किया हुवा (स (मुपा ११२)। 28x) 1 उत्याण न [उत्यान] १ श्रीय, वस पराध्य उत्स्थिर देशो उत्तीस (बण्या ११२)। (बिसे २= २१) । २ एरमान उत्तत्ति प्रधाप पुंधि धंनई उपनई (दे १ 'बद्धावारी धमञ्ज्यो न नियन्तद्व धोसहेद्धि क्यहि । तम्म ती चार्ण निर्धीयतम्ब हिएसीडि' ज्याप्यात्र रची बहुयम (दुम ११७)। ज्ह्यय देशो उत्पद्ध्य (कप्प) 'निक'ति गरथामिय (प्रा) वि [अरथापित] खडावा हलान्यवरूपियामु नुवानि मार्थना (उप हुमा (मनि)। ७२० हो) । बत्पार एक [ भा + ऋम् ] बाज्यन करता इस्बर सर [आ + फर्म] बाज्यल थवाना । उत्पारद (हि ४ १६ ३ वर्)। करना । संद उत्परिष (पप) (मीके) । बस्थार हैयो उच्छाद् = ध्रमाद् (ह २ ४८ च्यार सक [अय + स्तू] १ म्यन्यास्त करता, हरता । २ पराम्य करता । यह स्थारत यद्)। द्रत्यारिय वि [आह्मन्त] प्रात्तन्त रवाया न्त्यस्मान (पएइ १ १ एन)। हुमा 'जनारिपर्मंतरंगरित्रवरगो' (दुमा मुख अस्यर ) सक [अन् + स्तृ] धारदास्य अस्यत् ) करना (?) । अस्यर्क, अस्तन्तक् 274 ) I इत्थिय देवो इद्विय (१४ १६ वि ६ )। (রারু ৬২)। बरियय देखो उत्पद्दश (वंचाब ) । प्रत्यरिज रि [बाह्यस्त ] बागस्त दशया "इरियय वि ["वाधिक] महानुवादी वर्तना-हमा 'उपस्मिशिनमाई मल'ते' (राम नुपायी (धराँ जीर ६) । परि) । चरवरिय वि [वे] १ मिला, निर्वेत (च "इरियय दि ["यूबिक] यूप प्रदिष्ट A+f)1 प्रीचय--- (बरा: पीव ६) ।

मस्प्रीसहा पश्चिम (सुपा २ )। २ उत्पित उठा हुमा (वे ७ १२)। उत्यक्त न [न्त्यव] १ ईनी पून एपि उप्रदरकपुत्र (भग ७ ६ ही)। २ चन्मार्ग कृपम (से ≍ १)। इस्पछित्र न [ने] १ घर, गृहा २ वि इन्युल-यत ऊर्जनायगहुद्धा(दे१ १ ७ सरह)। उत्पद्धसः [उन्+शलः] उस्रतना बुबना। उत्पन्नद् (पद्र)। टरयद्वपरयद्वा स्री [व्] वानों पारनों से परिवर्तन धक्त-पूपन (वे १ १२२)।

गचाम न [ गर्चाम ] गोत्र-निरोप (চাড) ঃ उद्दय देखी भोददय (प्रस्)। उद्दश्न्छ वि 🛭 उद्यान 🗍 उदयवान, बलांडि शील 'विरिध्ययवेतमुध यत्रुव्तमुध नवर्ष व्यवस्तो (मुत्त ६२२)। सर्फ पूँ [उद्दूष्ट्र] यम का पात्र विशेष जिसमे यस क्रीवा विद्वार जाता है (से २)। उद्घ सरु [पद्+अद्ययु] ≾वा पाना (दुमा)। पर्यमण प [दश्कान] १ अन्यार्केशनाः र वि क्रेंबा फॅडनेबासा (मणु) । उर्दे चिर वि [उद्भारि] देवा कानवासा (कुमा)। उर्देव पू [उदन्व] हरीकत, समाचार, बृतान्वः थियमञ्च्य कन्यर्त बीधीर्रहो व्य शहयस्य उपियों (से ४ ११ स ६ भप)। उदंप प्रे [उद्दार] इच्लासक पूत्र बन्य (सन रव राम प्रापिवर्धन) (मुपा४४)। उद्ग पूर [34.5] जल पानाः 'बतारि उत्तम पएएएसा' (ठा ४० जी ४)। २ बनस्पति-विरोप (दम ॥ ११) । ३ जसाराय (मन १ म)। ४ पूँस्वनाम-स्यात एक पैन साथु । १ सानमें मात्री जिनदेव (नूस २ ७)। शस्म 🛊 [सर्मे] शास्त यम (मग२ १)। शाणि धी दिलाति] १ जन रगने का पाव-विशेष, उंद्या करने के निए गरन नोद्दा जिसमें बाता जाना है यह (भग १६ १)। ६ थी घरवट्ट में नगाया भाग है बद् धोग बहा (इस ७) । यासाम

न [पीद्गस] बादन मेप (टा १ १)।

मच्छ पू विमाय दिन्द्र-बन्त का साम्ह

ब्दात-विदेश (वर्ग ६ ६) । सास दुसी

[ मास] ज्ल का कार बढ़ता तरंग चन्द्र-रिया, बेना (दा १ वीप १)। यस्य क्री (जामा १ रम) । 'किहा को 'शिराखा' देशा (ठा १)। सीमा वे 'शिमाण' वर्गद स्थिए। (दश)। वर्गद्व तीए व्यं सा वोज्यसम्बर्ग (जुर १ १२२)। २ स्त्र करूट जबर (ठा ४ २ समा १ १ रहत १)। १ प्रमान प्रकर कराजारिकालो महेती' (चत ११)। वर्गद्व वे हिद्दामी एक गरूर-चार (व्यं ११)।

विस्ति शति पानी मणी का मराक

२७)।
उद्य कि [उद्याल] उदार, प्रश्नपण (सेवीक १)।
उदाय कि [उद्याल] स्वर-विशेष को केवन स्वर हे बीला साह बहु स्वर (विशे स्वर)। कद्मा की [उदन्या] एवा, त्रपण विभावा (स्वर १३ में)

(कार १९ टी। तद्य केबो तद्या (छामारे समारेश का ७२० टी। मातू ७२ पदल १)। तद्य पुंतिहम] बाम (तुम २ ६,२४)।

वहब दूं विदय] १ प्रमुख्य छनति 'श्रो एपनिहरि करने धानरह, दो कि नेक्टच-दुमारस्य क्यमें इन्बह रूँ (महा)। २ ज्यांत (स्रित)। ३ निपान कर्ने-परिद्यामा

'बहुमा**राज्यस्थान्यास्या**राज्यस्य

परमधीनकार्यम् । छम्मनाम्मो उदयी रुक्तुद्विमी एरुक्ति नयार्थ (ज्या) । ४ प्रादुर्भीन एर्द्यम भाग्नीवर्य वेदयहा इत निष्या भागा गुर्छ (यहा)ः 'ज्यसमिति स्वनार्द्धीन

बद्ध रक्तरा विवस्ताहो । दिशीपु सावर्रतुनि

पुष्किया कुछ वाद्वीहरा ( (तहा ११) । १ तहा ११) । १ तहा ११) । १ तहा ११) । १ तहा ११ में दीनों विनक्त का पुर्व-सोध नाम (हम ११४) । ५ तनाम-स्वाद एक प्रतकुतार (दका ११ ११) । वार्क्ष पुष्ट प्रतकुतार (दका ११ ११) । वार्क्ष पुष्ट प्रतकुतार (दका ११ ११) ।

सन्भंत केवी उदि। सन्भंत पुँ [स्वयन] १ राजा सिक्यन का

प्रशिक्ष नेत्री (द्वाप १४६)। तह्यका पूं [क्षत्यन] १ एव एककुमार, कीग्रासी नत्तरी के एवा स्टामीक स्पूत्र (तिपा १ १)। २ एक विस्तात के पाणा (क्ष्म)। १ न क्सति कस्व। १ कि क्सत क्षेत्रेनका प्रवर्गमार (ठा ४ १)।

डब्र म [डब्र] १ फेर, बठर (मूम १ ०)। २ फेर की बीमायी 'नववरवराष्ट्रपाधावको स्रोवराणि' (नहुम १४)। ठब्र मेरि कि [डब्र स्मारि] स्मानी स्रोतकोट्ट

(पि ३७१)। वदरि कि [उदरिन्] फेन्की वीमाधेकाला (परहुर १)।

स्वरियं वि [स्वरिक] अत्तर देखी (क्या १ ७)। सद्वाह वि [स्वयाह] १ पानी बहन करने-

ध्यसाह व [बर्गाहरू] र साम्य बहुत करन-सामा, वच-माहरू । २ पृं क्षीटा प्रत्रह्म (सग १ ६)। छन्सी [वे] [स्वस्थित ?] एक ध्यहि थूं [कहाथि] र समुख्य सागर (कुमा)।

र सरकारि केशे में एक जाति कदिकुतार (स्प्यू १ ४)। कुमार है कुमार केशे के एक बाति (स्प्यू १)। केशो कस्ति । च्याद है विद्यासियों १ एक केश एका स्वाराणा कोरिएक का कुल निषकी एक प्रत शे केश चाहु करूद वर्गक्कर से साथ स सीर को समित्र में ठीएए सिक्सेन होता

(कार्शती)। ए पृष्याकृत्रिककाण्ट्र-

इस्तो (भन १६, १)। तदाइण देवी चदाश्यव (कुक्त २६)। तदाख देवी वद्मा (खिर १७४ टी)। तदाश्या द्वी [तदायन] सिन्दु-देश का एक

रामा निस्ते प्रकाल सहावीर के पास बीजा की भी (ठा क) सब १ ६)।

| चदार केवी तरास्त्र (कर पूर्व व)। | कदासि वि [चदासिन्] चदात उदाबीन।

व त [स्थ] पीवाधील (राजा च ४१६)। चत्रासीण वि [च्हासील] १ सम्बन्ध चटल (परह १ २)। १ उनेला करोबाला (ठा ६)। তবাহ্য বি [ৰবাহ্যত] কৰিত হচ্চাতিত (খাৰ)।

्याहर कर जिहा + हा र भड़का। र रष्टमच केगा। ज्याहर्षण (गिर ४४): 'क्क्से प्रार्थ नित्र कसाहर्षणा' (खत ४३)। पुत्र-१, ज्याह (सामान क्या ४४ वे) ज्याह (युप ११२ ४): नक्क ध्याहरण (युप १ ११३)।

गम्म । २ छुन्त (तृय १ २२ विशे) ।
ठवादिय वि [बदाहुत] १ श्रीता प्रति
गरिया । २ छुन्तिय (याचा घाया १०) ।
ठवादिय वि [क्] योक्षा जेंद्रा गया (वर्) ।
ठवाहु क्षी त्यादुर ।
ठवाहु क्षी त्यादुर ।
ठवाहु क्षी व्यादुर ।

करम होना। (विचे (२२६) बीव व)। वह उदर्यंत (का प्रस्म वर, १८, कुरा १८व)। करक बहिजांत (विचे १६)। विविकास वि [बदीचित] ध्यतोक्ति (वै १९४)।

चिष्णम वि [सदीच्य] अत्तर-विता में अरपङ (धानम)।

विष्णां वि [बरीणी ] १ विरा कार-मात विष्मां (छा प्रे प्रे प्रे वि वर्षी विष्मी विष्मां (छा प्रे । १ कतेपुत्र (क्मी (प्राय ११) में वत्या प्रश्ना विष्यों कर्जु कीर्य महीं (छा १ व्या २०)। ४ वक्क क्ला प्रायुक्तिवासम्बद्धां की की कि कीरण में प्रायुक्तिवासम्बद्धां की की

विद्यं नि [बदित] १ वसित कस्पत (सन १९)। १ वस्त (स्र ४)। १ वस, करित (विते ११७६)।

वरीण वि [स्वरीकील] १ प्रतर हैरता है संग्रन प्रवर्तनाला बत्तर स्थित में करावें (पानाम्पर्शरा)। पाईणा की [मानीना]

रैंगल-कोस (पन ६ र)। व्योजां की [स्वीकीन्छ] क्टर दिसा (ब्र र र)। उनीर सक [ उद् + इरय् ] १प्रेरला कला। | २ वस्ता प्रतिसन्त करनाः ३ औः वर्षः प्रदय-प्राप्त न हो उत्तकी प्रयन्त विरोध स प्रमोतपुत करना । बदोरद, बदारेवि (मय वीन घट)। भूषा उद्योगिं उद्योगि (मन)। मीर उनेरिम्मीत (मन)। बर उर्दे रेंत (ठा०) 'नुमनज'मूरीरेंती' (ठा ६४)। कार उदीरिज्ञमाण (पट्ट ११)। है। उद रचए (रम)। खदीरम नेनो क्लीरम (गंब ४ ४<sup>)</sup> । च्चीरसान [उदीरण] १ वयन प्रतिसदन। २ प्रेरुणुः । ३ कात-प्राप्तंत होने पर भी प्रयत्न-विदेश में शिया आजा वर्ष-पान वा समूभर (बस्म २ १६)। अवारणया १ तो [त्रदीएमा] उत्तर हेगी उदीरणा 🤰 (बच्च २ १३ १) 'त्र बच्छे गोरद्विय उन्त दिक्रा बदीरग्रा एमा" (बम्मर \$¥\$ \$64) I उदारय नि [उदारक] १ वयन प्रतिसन्छ । र प्रदेश प्रदेश । एक्सेका विश्वविद्यान्य राज्य (५ए१ १ ४) । १ क्वीरहा कलगता नात प्राप्त व होन पर भी प्रपान सिटेय से नमें कत वा क्षतुमन करनेवाना (कम्पर १४१) । उनारित रागे उनारिय (यय ४४)। ज्जीरिय वि [इद्।रित] रे प्रस्ति 'बावियार्ग पाँद्रपत्नी सामियानी उद्योखियानी बेरिये महा मर्गात (स्पर नीय १)। २ वनित प्रॉट-पारित और बामे उदेखि (याबा)। ६ व्हेनच कृतः 'मसुरुगमा फरमा रह्हित्या' (बाबा) । ४ गमय-बात न होने पर मी प्रयान-रिकेष में नीच बर जिसके पात का बनुधर दिया जाय बहु (वर्ष) (परना २३ मय)। क्टुरेनो उट (प्रानः यमि १० वि १०)। पर्द्वर देशा प्रेंबर (बम) । उदुरद गर [ रद्ग + रद्ग ] कार पश्या । स्ट्रान्स (वि ११**६)** । ब्रदूरम् देवा प्रक्रास्य (ति ६६) । बद्ग पुन [न] द्विरेनियम (वंदा ८ १ Et) i बर्जिय हि [द] धरना श्रेना नमा हुया ( 47 ) 1

उद्ति [दे] १ जन-मानूर। २ करूर वैर क क्पे का दूबत् (दे १ १२३) । ३ मण्स्य विरोध । ४ उसके वर्षे वा बनाहुमा वर्ध : (धाषः)। ज्द्र विभागी कीना मात्र (पर)। प्रदूध वि (उद्यव) स्थम-युक्त (प्राप्त २१)। उद्ग्रह ) वि [उद्ग्रह] १ प्रवर्ग अउट उद्देश र (र्मा मन्द्र)। २ ई शप में दरहरो केचा स्थापर चपनपाने तापमी वी एक भाति (भीता निष् १)। ब्रदेतुर वि [ब्रह्मनुर] १ विख्या र व बाहर भाषा हो बहु। २ ई.बा (पत्रः) । उद्दर्भ पूँ [उद्दरम्] सन्द का एक भेर (रिंग)। उद्दर्स प्रे [उद्दरी] मधुमधिका मनुख थादि छोटा बार (बप्द)। **उदहुद पूं [उद्दरघ] रात्रप्रमा नरक-प्रविधी** बाल्य नरवासन (छ ६)। समितम पू "मप्यम रानत्रमा पूर्विश ना एक नरनानाम (ठा ६) । । यस पू िपस देवो पूर्वेन्द्र धर्ष (टा ६)। (तिसह रू ["(प्रशिष्ट] रेगो पूर्वेष्ठ वर्षे (ग ६)। प्रदर्ग दि ऊप्दररो मुक्ति मुसन (इन्दर)। उदम पुन देनो इक्षम = उदम (प्राप्ट २१)। प्रदक्षिति [द] १ न्यतः स्याहा हुवा (दे १ १)। २ स्यून्ति रिशमित पृथिती परियो च सनियं जारियाँ (नाय) । ডহ(মে বি [ডবু+ হয়] মবির তরের घनियाती (गर्निश) । बद्दवा न [बदयन] शिसरह (परक) । ग्रंप नक [बद् देश + द्र ] । बराय करता पीड़ा करता। २ मारेना दिनाग्छ करका रिमाक्त्रमा 'दाराज्ञा नेक**ि**रारा वर्गी सप्रया वयाद तनि द्वालकाई मबस्तेरों मंबरे जागिया समबसीमा सन्दार मोरेडो नहबड उहबड्ला छ नश्मीका विकामीको प्रदेश पर्वद्रभा धनि दुवानताहे नवलाई कोवाद्यरंत राज्यते हिराह्य वर्षे १६ व वर्षे अवस्थ परिचन २ मा मरामधानुं समाधिकानुं सदि इस नाइ बेन्यराह चुंत्रवान्द्री (रहरई (एका) ।

भवि तत्वहिर (मग १४)। बनहा उर विज्ञमाण (मूम २ १)। इ. उद्वयस्य (मुघ२३)। द्यस्य प्रतिद्वयय उपन्यी १ उपन्य। २ विनास, हिमा धारमी उहतमी (धा ७)। े उद्देशक वि [उदुकोत्, उपहात] १ प्याप्य कन्त्रवाता। २ हिमर विदासर भिहेता धेना मना भूरिना बहबाता रिल्टोरिता यर इं वरिस्मामि ति मत्रमार्ग (माना)। जन्मवन जिहुदूष र ज्यन्या है गानव हरततः बहुत्रसुद्धः बास्तु मात्रायश्यितियाँ (निक्कीर)। २ निकास स्मित् (सं ६०) पाना)। उद्देश न[अपदायम] मृतु ना छोर हर सब प्रकार का दुल्य 'उद्दवर्ग पूरा कालुसु मन्त्रापरित्रक्रियं वीण (शिक्ष्मा २६। हिट t (ø3 उद्देशमा १ धी [बद्द्रयमा, उपन्यमा] बद्दमणा अंदर्दन्ते (भय पन्द्र ११) । उदयादम देगो उट् ह्याद्य अमलस्य गौ भगनमा बराबीरम्ब राज गला हुएवा त ---गोगम गर्छ उत्तरविस्थालम् इरेन्स्ने बारग्रक्ते बद्दबर्गाउदश्चम)-को विस्तरादि (ग्म)-मणे वामहिद्दा-(म)-गण वालवस्त्री नोव्डिक्ट (स.६)। उद्योग रि [उद्देश उपहरा] १ पारिक 'मंशाह्या नौर्याट्रमा परिवाशिया हिनानिया बहरिया ठागामी ठागुँ भंगामियाँ (पटि) । २ रिनासितः नाप्रस्त विभीति नियत्रिपुत्रसम् विर्तियं दी ना गर्रावा प्रतियो (गुत्त उद्दल देगी उद्दद्भ (पाचा) । उदा गर [उद् + दा] बताता, तिसील बरमा। उदार (मा)। उटा यर [अय + द्वा] नत्या । उत्तर्द बरायात (भा) । नह उदाहला (भीव रेडार ऋष)। बहाइमा में [बहुबाय' अपनार्था] करार बरनेशनी भी ठाएशा हराइया बोइ बंदमी गीती शान्या (या र रेट का री) । उदार्व देवा उदाय न हुन्। प्रहार्ता देवी प्रहा = यव + हा ।

केला (ठा १)। सीम प्रं <sup>[\*</sup>सीमम्] नर्बत-निरोप (६क) । बताग वि जिन्हा १ स्पर, मनोक्षण 'तती बर्द तीए बर्न तह बोलल पुरार्म (पुर १ १२१) । २ पर उत्पट, प्रवार (अ.४ २) छाबार १ सत्त ६)। ६ प्रवान मुक्क 'करन्वचारितको महेरी' (क्य. १३) । उद्दुद्ध पू [सद्ग्या] एक नरक-स्नान (देवेन्द्र **40)** I उत्त नि [इड्रांस] उदार, भट्टपए (संनोन 1)1 उदत्त नि उदात्ती स्वर-स्टिप को क्ष्म स्वर से बोला जाव बहुस्वर (विसः ४२)। बदमाध्ये [उद्ग्या] तूम तरत निमास (सर ११ दी। उद्य देवो उद्ग (ए)मा १ ः सम ११३ का भरेव टी प्रानु भरे पएए १)। छद्व द्रं डिद्य } नाम (पूथ २ ६ २४) । उद्य र् [ उदय ] १ सम्पूरत स्नार्ति भी एवंबिटीए बजर्म सामग्रह, ब्रो कि संस्वता-दुमारम्य **प्रदर्भ ६ नद**्द १ (कुरा) । २ जराति (विने) । ३ रिपाक कर्म-परिशास 'पर्मारसम्बद्धास्त्र परमधीनतीमणादेखे । मध्यक्रमी उद्यो रक्तरियो एक्कि नयार्ड (का)। ४ मार्ड्जीर उद्यमः भाइज्बोन्य बंदवहा इव निपन्न नामा मुख' (सहा) 'टरपरिमारि सन्दमनुर्वि परः स्टाएलं विवतनाही । विशिष् भागीन्य तुस्तविषय स्तूल संप्युतिगा । (प्रमु १२)।

देश है (ब्रेस ४४)।

(छादार १६)। "सिद्धानी **"**शिल्हा]

उद्यंत देवो हवि । [ब्र्स्नि] हति पानी भएने का मराक उद्यम प्रैं डिद्यन रिचा विद्यम का प्रसिद्ध मंत्री (इप्र १४६)। हरबण प्रहिद्दनी १ एवं राषकुमार, कीरकामी नगरी के राजा रासानीक का पत (विपार ४)। २ एक विक्यात कैन सवा (क्या) । १ नं उन्नति उदय। ४ वि उन्नत होनेवाला प्रवर्षशान (ठा १, ६) । स्तर पश्चित्र दिद, वठर (सूध १ व)। २ वेट की बीमाध्यः 'क्लबरबर्छकुमासासती स्रोवरासि (सहस्र १६)। बद्दंमरि वि [उद्दरमारि] स्तली प्रकेतच्छ (Pr toe) i सद्दि नि [स्वृदिन्] में भी नीमारीवाला (पराहर १)। सब्दिय वि जिब्दिक अपर देखों (विपा १ •) 1 चदवाइ वि [ उदवाइ ] १ पानी नइन करने-माता चन-नाइक। २ ई कोटा प्रमञ् (धन १६): बदसी दि [ तवश्चित्र ? ] तक चत्रि पुंडियमि १ तपुर ताबर (कुमा)। २ भवनगरि देवो की एक कार्ति अवविकृतार (क्छार ४)। इत्मार प्रेडिक्मारी देवी भी एक बार्वि (पएए १)। केवी कमाहि । बदाइ दें [बदायिक] १ एक देन राजा महाराजा शोधिक साधूक जिल्ला दुक् ने फैन साबु बनकर वर्मे ज्यून से मारा वा भीर जो परिष्य में डीसरा जिनलेन होता (ठांधे तो)। २ पूंधवानू लिक का क्टू-इस्की (का १६, १)। बबाइज बेबी उदायज (बुलक २३)। उदाश देनी उदल (श्रीद १७४ टी)। उदायज 🖠 विश्वमी सिन्ध-देशका एक चत्रा जिल्ले धववान् महाबीर के पात बीचा भी भी (ठाट बद ६ ६)। र मन्द्रश्रेत्र में बाबी मात्र विनदेश (नम उदार वैको बराम (का द १ )। ११९) । ६ भरतन्त्र म होनेपारी उदासि वि [इदासिन्] प्रचान प्रचारीत । वीनरे जिन्हेर का पूर्व-वरीय काम व न [रेस] घीरातीन्व (रंतछ स ४६१)। (सन ११४)। **७ स्वताम-स्या**ज एक राजपुत्रार (राज २१ १६)। व्यक्त उदासीय रि [उदासीय] र मध्यत्र राज्य र्भू [ निमम ] पश्च-शिटेन बड़ी तुनै ग्रीस्त (पण्ड १२)। १ उपेदा गरमगा (डा ۱ (۱

धवाहर में विवाहती कवित राष्ट्रिक (धन)। दशहर दर्भ दिशा÷क्षी १ अक्टा २ शहास्त बेला । चवाक्रोति (पि १४१)- 'मार्च' मुखं नेव स्वव्यव्यक्तियां (सत्त ४३) । भूका, क्दा**म** (भाषाम्बद १४ ६) क्दाह (सूच १ १२ ४)। बहुर, सबाहर्रत (सूध १ ₹₹, ₹) | डबाइरण म डिवाइरफा र कवन प्र8∹ पाइत । २ इष्टान्त (सूम १ १२ विसे)। उदाहिस वि रिदाहरों १ वर्षक प्रति-पास्ति । २ इष्टन्तित (दानाः साधा १ ४)। च्याद्विय वि वि] चरिकत क्रेंका दया (वर् )। बदाह देवो ददाहर । धशाहुम [उठाइते] भनना ना(स्वा)। **च्वाह केवो बदाहर**। ख्दाहो देवो उदाह = क्तुहो (स्वप्त ७ )। **छदिशक [तक्+ इ] १ क्लात होना।** २ क्तन होना। (निते १२६६ चौथ १)। वह चत्र्यद (मनः पत्रम वरु इट सूत्रा १६)। क्याह- दक्षित्रांत (विशे ४३ ) र चहिक्तिम वि चितीचित्री सवद्योक्ति (दे 1 (77) 1 विदेश्य वि [क्रवाच्य] क्वर-विद्या में बरप (भावम) । विद्ग्ला हे कि विदीर्थ है बदित अवस्थात रुक्ति (कार) पदो कि इको विस्की उरिप्री (सत्त १२) । २ फ्लोल्पूच (कर्न) (पएत ११: घन)। ३ तत्त्व "बहा अवस्ति। नराकोवि बादीं (सत्त ५ शा २७)। ४ उत्कट, प्रथम 'आपुचरोपपादपाई मेरे ! देश कि प्रविएए नोहा वनशंतनोहा खैलमोहा है (सद ६ ४)। श्रदिय वि [अदित] १ वरिल कर्यत (वन ३६)। २ इक्टर (ठा४)। ६ वट, वर्गर (विके ११७६)। उदीण वि[ददीकील] १ क्टर दिशा है संदर्भ रक्तनेदाता प्रधार दिशा में प्रशास (याचाः नि १६६)। पाईणा की ["मार्यामाँ] য়িল-কান্ত (মন খ, १)। क्यीजा स्मै [उदीकीना] कतर दिशा (स

t () :

उदीर सर [ उद् +इरम् ] ! प्रस्णाकरनाः २ वहना प्रविचादन भरता। ३ जो कर्म प्रदय-प्राप्त न हा उसरी प्रयान-विशेष म कुनोन्युत करना। उद्दीरह, उद्दीरेंति (भव वीन ७६)। मुता उद्योरिष्ट्रं उद्योरिष्ट् (मग)। भार उदीरम्मंति (भग)। वह उर्न रेन (ठा ७): 'नुमनप्रपूरीरेती' (उर ६४)। कार उदीरिज्ञमाण (पण्ण १९)। द्वि उदारसाय (भग)। अभीरत नेवी जनीरम (वंब ४ १)। च्चीरय न [उदीरण] १ तपन प्रविगदन। २ प्रेरहा। १ काक-प्राप्त न होत पर भी प्रयक्त-विरोध में किया जाता कर्म-फर का सनुभा (कम २ १३)। चर्तारणया ) धौ [उदीरणा] करर दया उदारणा ∫ (बम्बें २१६ १) 'श्री बरागु-गुरंद्रिय बस्त दिक्रा बद्यीएए। एमा (सम्मर \$¥\$ \$\$\$) I उदार्य नि [इदारक] १ क्यक प्रतिनादक। २ ब्रेरक,ब्रावन एकमार विमयविगन्धरवर्ष (पण्ट १४) । ३ उग्रेरणा करनेपाना कान प्राप्त न होते पर भी प्रवन्त विदेश से कर्म पत्त का मनुभव करनेवाला (कम्मव १११)। उनारित् देगी प्रदीरिय (राय ७४)। उर्रारिय र [इर्रारित] १ प्रस्ति 'बारियाएं पट्टियानी सामियानी बरीरियानी बेरिने नहा মর্যরি (মন বীৰ १)। २ ববির ছবি पादित भीर मध्य प्रधीरिए (माना)। ६ जीवन इन 'समह्दाया प्रामा उद्देरिया' (मारा)। ४ नगर-प्राप्त न होने पर भी प्रयान-विधेष गंबीच कर जिनके पण का धनुषर विथा जान बहु (वर्म) (पान २३ बनुषेगी प्रद्र (प्राप्त यदि १८ हि १७) । सर्वर देशा प्रदर (बन) । उद्गद नर [ उद् + ग्द्र ] कार बहता । सुप्रह (रि ११c) । हरूमव रेपा उज्लाब (ति ६६) ( बद्दग पूर्व [४] इविशेरिततः (र्वश्वः १ री) । बद्-िय रि दि] धरना श्रीमानमा ह्या ( बर् ) ।

उद्दुत्त देवा उऊद्द (बाचा वि ६६)। उद्द न दि] १ जन-मानुष । २ कपुर, धेन के । वंश्वेता पूजा (दे १ १२३)। ३ मन्स्य विरोध । ४ इसके वर्षना वता ह्या वस्र (माना)। उद्देशिकोट्टी योगाधार (पर)। उद्दल कि उदानी स्वम-पुक्त (मारू २१)। उद्दंड ) वि [उदण्ड] १ प्रवर्ग स्वत । उद्दंडग ∫े(दूमा गडद)। २ पू हाय में इत्तर को ईंबा स्थलर चननेताले तारखें नी एक पाति (भीपानिष् १)। न्द्रंतर विजिद्दन्तरी १ जिसमा वत बाहर याया हा बहु। २ ई.चा (गउ॰) । र्रास पू [उद्दर्भ] याद का एक मन (रिन)। उद्देस र् [४द्देश] मधुमक्षिता, मणुण धारि छोटा बीर (कप्प)। **उह्दद र् [उहरध] रानप्रमा नरक-पृथिये** का एक नरकाशन (ठा६)। सब्सिस पू िमध्यम राज्यमा पृथिती वा एक नरकाताग (ठा ६) । यस पुं ["वर्ष] वेदो पूर्वोक चर्ष (टा ६)। । प्रसिद्ध पू ["परिष्ट] रेगो पुर्वीन्द्र धर्ष (टा ६)। उद्दर न [रे ऊष्पहर] मुक्ति नुसार उद्गापुत देशो उज्जम = उपम (प्राप्त २१)। उद्दिश्च वि दि दिश्यत स्वाहा हुवा (दे१ १ )। २ स्ट्रुन्ड सिर्गनंत प्रशिष्टी पश्चिमं च द्विमं प्रश्रिमं (पाप) । उद्शिक्ष वि [उद् + हम् ] गरित बदन यभिमान्त्रे (गरि) । उद्दरम न [बद्दरन] रिकारण (बढह)। उद्देशक [उद्गुउप+ ह्र] १ क्लार करना गीडा करना। २ मारना क्रिन्छ वस्तातिमावस्ता सार्धमारेवरी महत वर्गमा यत्रमा क्या तानि दुवापनाने नवसीर्यं संदर्धं बार्धिया च मवसीयो संपार योग्ने बहुबह उहुबहुला छ नालीवा विकामीको वहंबई वहंबहता तानि दुवानगर्द नवनीत्रं बोनवर्त्व तन्त्रवं िरम्प्यद्रोदित्ताचे वर्त भावद प्रशिवक्षाः ६ भा बहानयार्थं नवलोबलान्त्रं स्टि बस-नार पारवाणा श्रुपनाग्री विहरू (उदा) ।

मनि उर्देहिर (भग १४)। क्या उद विज्ञमाण (बुध २ १)। इ- उद्वयस्य (मूच२३)। छद्यअ पूं [उद्दुरभ उपद्रथ] १ अपदर। २ दिनारा हिमाः बारीमो उद्दमो (या ७)। उ**र्वडलु ६ [**उद्भान्, उपहान] १ जान्य कन्तराताः २ हिसकं जिनाताः विहेता धेना भत्ता शुपिना उन्दरता रिचुपिता बरुट वरिम्मामि ति मध्रमाने (बापा)। ~प्यान [उद्यास प्पट्रमार] र पदक हरतत 'बर्बणपुण जाणमु मात्रावरियन्त्रिये (पिक भीप)। २ जिनास जिना (में बड़े धावा) १ उद्देषम् न[अपनायम] भूग्रु का छोड़तर सब प्रतार का दुखा 'उद्गारी पूरा आरापु बाररायरियमिय पार्र (शिक्सा २१; शिर 1 (03 षद्यगया १ ध्ये [उद्दुषमा, उपन्यमा] उद्देशी (मग पगह ११)। उद्देशाहम रेगो बहु हुमाइय - ननगरन गौ भगवधा महावीरस्य शुप क्या श्रामा त ---गोराग गाउँ उत्तरहालिम्भाग्या उर्देशको बारगुक्तं सर्वादित-(इम्र)-क्ट्रो जिल्ह्यादि (इम)-एउ नामहिङ्गत-(म)-एउ मागुनका गोव्याग्रं (स.१)। ब्रह्मिन्न वि [ब्रह्मित व्यव्नत] १ सीहितः संगाचा संबद्धिः परिवारिका स्तितिका उद्भिया द्वागायो द्वारी संशामियाँ (ब्राह्म) । २ रिवाधितः नाइन्छ विभिन्नते नियनिहुनुबन्ध विर्त्तियं सी सा सर्पाना प्रशिक्तें (गुरा Y () 1 उद्दल् देगा उद्दरन्तु (मादा) । उदा नेच [उद् + दा] बताता निर्वाण बरमा । उदार (भा) । उदा यर [अक्÷द्रा] नरताः इहाई, बरायति (भव) । सह उदाइसा (भीर रेडा १ भाग)। वराहमा की [वद्याता, वयरार्ता] सरहर करनेराची ध्ये वाच्या बहाइया कोइ चेत्रयो पर्दिशे होत्त्वा (बाद १० मा दी) । बहाइ र देना ब्रहाय = मृद्। उदाइणा देवी उदा = यर + हा ।

बहाय को [के] बुस्स, बुस्सी विस्तर स्मोर्ड पत्रार्ग वाठी है (वे १ वर्ण)। बहाय रि [सनदात] नृत 'उद्दारी घोष्टमीन्स नेप्तार बंबामि' (तुब १ वे)।

नेशमार्थ नेशामि (पुज्ज १ ६)। एडामा वि [उद्दाम] १ स्वेद, स्वच्छ्य (पाय)। २ प्रचएड प्रचय जा ध्यापनम् इद्दार्म्मस्टिप्पारेल काला ते नहर (सुपा २१४)। ३ धम्मनस्टिन (है १ ४७०)।

वहाम पुंचि । समक समृह । र स्मृह निवर्गामक प्ररेश (वे १ १२६) । वहामिय वि [उदामिक] स्टम्का हुमा प्रयोग्यक 'कृष्य स्ट हुमा गासीक सर्व्यक्रस्ट सम्मन्द्रीके क्योनियमक्ये सह-

सिसपि (विशा १ २)।
वहाय सक [शुम् ] तीमध्य होता,
सब्दा बादून देता। वह 'व्यवत्येषु पद्मुक-स्मापिमवर्षु मेनु वहायेव एक्टर्स्योव समापिमवर्षु मेनु वहायेव एक्ट्र्स्योव समाप्तमारम्परिकार्ष्यु (व्युमा १ १)।

उद्यान्य (जान १ १ में)। बद्दार देयो प्रराख = त्याप 'वेमि न कस्त्ववि वंप' बद्दार व्यवस्थार्थ (नजना १९)।

दर)।
इद्धान हि दि है दूद से दम्मादित रहाहुत । र बम्माद क्यूनित (यह)।
तहास तह (आ - विद्व है जो बना हाब
से प्रीम नेमा । जहासन (है ४ हेरगर्मा)। मेड- उहासर्थ (में ४००)।
उहास है (अद्यान)। है दम्मादित सम्मादित है

उद्दान पू [अवद्याम] र क्या सदस्यन पीप वर्गाम्बर्गन सम्प्राप्तिक बनुष्परहरूकार्मन्त्रः (क्य क्षाता १ १) २ इन्दर्गनेक्षेत्र (श्री १) ३ पार्वाप्ती साम का प्रका साम-पाग्य विदेश (व २)। इन्द्रांक्षिय वि [आण्डिम] धीमा हुग्रह

तीत्र सिवा स्वा (वास कुता छात् हुम, सीत्र सिवा स्वा (वास कुता छात् हुस) 'से सारक्षर्यात हु तेदि बर्च्यन्य' (कुत ११)। बद्दावयाया श्री [उपग्रावमा] बग्रत हैच्यी

वहाबणना की [उपहाबणा] उत्तर हैएकी (रात)। वहार पुंडिहाद] १ जनर कहा। २ जन (सार्)।

उदाहरा नि (उदाहक) भाग सरालवासा

र्वाहरू। भौ [दे बाह्छ] निम्मिक्टेन भगाष्ट्रमा (मीन)। त्रीहरू वि[दर्गम] मन्त्रीत्व (हृद्दर्ग)। व्यक्ति कर्न [न्यू +िस्स्] प्राचा करना। कर्म प्रतिनित्नीत (स्त्य १)।

उदिस तर रिट्+ दिश े १ भाग

निर्देश-पूर्वक बस्तुका नित्यसम् करना । २

देखना। १ संदरप करना । ४ झध्य करना ।

र संधेवार करता। ६ सम्मित केता। क स्वारत करता। करेरा केता। विश्वाद (वन २, ७) : कार्च 'यह साम्ब्रमणा एक-सरदा रहणु नेव दिल्डेणु कीर्रमणी (नगा)। बनकः बहिसिस्तात (शाव्या)। संद 'मदो साम्ब्रमणा सहिसिक्ता वर्षा तुम्मणी (महा बना सहिसिक्ता वर्षा तुम्मणी (महा बना सहिसिक्ता वर्षा तुम्मणी संद्रमणी सहिस्सा दुमारदावर्षम साम्बर्ग प्रियाद (महा) अहिस्सा (सामा प्रियाद (महा) अहिस्सा (सामा

कत )। एडिसिम रेवो डिस्ट्र (माना २)। र्वाहिस म दि [वें] क्योहिल विस्तित (रे ११२)

सिचप (बर १ भ्रः द्वर १)। प्रयो

चरिसाबिचय परिसाबचय (बृह् १)

वहीरणा देशो प्रश्नीरणा 'अस्थीरणावरणाले विवादता त्राव संस्था (तंत्र र र )। वहीरणा व प्रश्नीया १ वरीयतः। र वि वरीयतः (तंत्र र र र र )। वरीयाणा विवादता विवादता विवादता । वरीयरणा विवादता विवादता ।

नुकर्णाई' (रेक) ।

यमशो (पुर ६ मन)। वद्युय वि [धर्मत] पत्तामित (परम ६-५)। वद्युष वि [उप्रृत] देशन विद्या हुण (द १११)।

उद्दीविभ वि (उद्दोपित) प्रधीपत प्रन्यासित

(गम): 'बीदाए परिवर्षित वसी स्वयंविको

उद्देश के उद्दिस क्यूरेस्ट (मनि) ! कदेस पू विदेशी १ पठा विभवक पुर्वाका (मासु १)। २ नाम का चन्कारण (सिर्दि ११)। ६ शायन सूक-प्रदान सूत्री के मूल पाठ का बाध्यापन (पर १)। **एटे**स पे जिस्का १ माम-निर्देश पूर्वक वस्त निकास (विसे) । २ विद्या स्वयंक्त अवेसी पाडयस्य शरिव'। ३ व्यवदेशः व्यवहार (धावा) । ४ सस्य । १ समिश्राय महद्य (विदे)। व प्रत्य का एक घोटा (मन १ १)। ७ प्रदेश स्वक 'सुकाति मुहिसमस्प बाबाब्यसम्ब्रियः प्रमदद्वदेशः (वे ६,१६) १२)। व दुरुपतिबादुर-वचन (विसे)। १ वन्ह स्पान (क्यू) । इद्स दि [भीइरा] देशो धइसिय " पीक्**रेकि** (सिंह २६ )।

वेत पहुडी (वेत्रमा कहा २ १)। १ वेत्रमध्य गोपका (तार १)। ठर्समाराक डुडिशक्तकाकी मृतदूर के सम्प्रात का सन्द (स्ति २ १)। स्रम्रात की [सर्शना] इसर की (वेत्रमा)।

दोग साथु के निए भोजन-निर्मास । २ वि

उद्सम्प न जिद्देशानी १ पाठन वादना

यम्बारका 'बहिस्सरा बामण्डि पाठउम

ज्यु विश्वेश कार्या हुएया (केंग्रन) (क्यूं) 'क्यूंचेंग्रं यु कार्य व्यक्त क्षित्रक क्षेत्र कीर्ष (क्या १७ का द्यंत्र)। बर्दिय रि [ब्रीदेशिक] १ क्यूंटर-जन्मकी क्यूंच्य के क्ष्या हुएए। १ तिक्यूंचा क्षित्रकार्य कार्याय परिच क्यूंचीया में रियोच्यों के मोनन की क्यांच्य के समन्तर की हुए में साथ प्रथम निकास करते तिक्युंची की की कार्याय निकास करते हुए में

स्टेड-स्ट्राय छडेइ प्र[ल्डेह] मध्यान महावीर वा एक मल--- सामु समुदाय (ठा १ कम्म)। जरेहरूया भी [क्रेड्सिस] वनस्पति-विरोप (ভৰ)। एट्डिया ) थी [द] बपरेहिका, शेमक सरेही ) भीतिय जन्द्र विशेष (जी १६ स ४३४ मीच १२३) 'जबदेशीय स्पेरी' (2 2 23)1 उद्दोद्दग वि [उद्दूरोडक] मातक हिंगक (पण्ड्र १ ३)। उद्ध देवो उद्देव (से १ ११ पि २१ महा इर ११ ठा १ र)। **ल्द्रभ वि उद्धित** है र स्मल (मै ४ १३ पाम) । २ मनित मीमगती (मन ११ <sup>।</sup> १)। ३ धन्तस्ति (छामा १ १)। ४ चतिप्रवसः 'उउत्तत्वमंत्रकार- (परह १ १)। **बद्धा देवो उद्धा**रिअ = **बर्बुटा** 'पाबन्सेए **ध्वेज्य व** राष्ट्रपापमारणा छ स्ट्रारो (वव 2 )1 उद्धान [में] शान ह्या (पर्)। सद्धत देवो प्रदा । उद्धम सरु [जन्∔भूष ] १ मारता। २ धालेश करना माली देना । चढरिङ्ग (भग १२)। उद्धंसिंदि (छाषा १ १६) । बढस राष्ट्र [ बक् + ध्यस ] विकास करता। संष्ट्र बद्धसिङ्ग (स ११८८)। **७३.सण न [उद्भूषण] १ माहोरा, निर्मेश्वेत** । २ वयं द्विमा (एक) । उद्भागा भी [एड्रपमा] अगर देशो (मोच १८ मा) 'सम्भावपादि सर्वदरणादि सर्वदेवीत (एप्पा १ १६)। बद्धांसय नि [चद्वापत] धारुष्ट, जिस्तर बाहोरा तिया नया ही बहु (निमू ४)। सञ्ज्ञास्य वि [दे] विसंवादित सप्रमाणित (**दे १ ११**४) 1 तद्भविभा वि दि] शन्तित विदार (दे t (355 5 रुद्धपिष्ठाम वि [य्] विभिन्न प्रतिभिन्न (र **₹ ₹₹₹)** 1 **उद्गर् टु रे**ली उद्गर । दद्ववीर [द्रद्भृत] का कर रवा ह्या (धर्म ३) ।

उद्याप वि दि ] उद्युष्ठ स्विनीत (पङ्)। उद्धर्य दि दि विप्रजन्म विष्यत (दे र 24)1 उद्धवंद्वय म [और्थ्यदेश्चर] यान-संस्कार बारि अन्येटि क्या (स १ ६)। उद्भम सक [उद्+ इन्] १ श्रंब वर्षस्य कुनिना बादु भरता। २ क्रेंबा प्टेंबना उदाना । १९६, उद्धमांताणं संकाणं सिपाणं संविदाएं करमूहीएं (राय)- 'पामानसङ्ख्य बायबस्त्रेयमभितः उद्धम्यमा प्रवप्तयस्य वर्षाः व (रवरागरनागर) (परह १ ३३ बीप) । मद्भर सक [पद्+**४**] १ ६३ **३**ए को तिशासना ७५८ बठाना । २ बम्यूसन फरना। ६ पूर करना। ४ खीवना। ५ धीर्श्व मन्दिर वर्षेख का परिकार-धंस्कार करना। ६ किमी पंच मा लेख के अंश-विशेष की दूसरी : पुरतक या सेख में धविकस नक्त करता। मनि च्यरिम्मद् (स १६६) । वहुः प्रत्यर पन्यामे पार्थ जिल्हामंदिराइ पूर्वती, जिल्हाई उद्धरंश (मुपा २२४) ३ 'बवद बरमुद्धारंतो मदलीमारियमुहरगवसरोता । लिवर्धेहरा करेरा व वंबपुनिला महाबुध्यो ।' (नरह) । पंष्ट उद्धरित उद्धरिकण उद्धरिता. बद्धरितु उद्भटुटु (वंबा १६ प्रारू), 'तं सम समासे जिला उद्धरिका अनुसमा' (उत्त २३ वंदा १६); 'बाहु क्षत्रदृष्टु कल्क मगुम्बर (सूभ १ ८), 'तम पाणे स्वह्ह पार पीरग्ना' (बाबा २ ३ १ ४)। उद्धर (भप) क्यो उद्धर (भवि) । **"दरण न [उद्धरन] १ ज्यर उद्यना। २** र्षेत हुए को निकासना (यउड)- 'दीगुक्रागुटिय मर्गन परस्त (सिने १३४)। ३ उम्मूनन । ४ घपतवन (सूब्र १ ४-१)। उद्भरणवि[द] बन्दिट बुठा (दे१ ११६) ।

उद्धरिम नि [बद्धुन] १ उत्पादित श्रीयतः

'इस्युल' उच्छडं व्यक्तित-उमाहिक्याई स्ट्रारिस'

(पाष)।२ विन्धे प्रत्य सा केल के चैरा

नरम कर देताः

(वा ११) 'बेख छद्रस्थि। प्रिका चामासस्मा महापरिएणामी' (मानम) । ३ माइन्ड पीना हुमा। प्रतिप्कासित काहर निरामा हुमा 'टकरियमुष्यसम्म -- (वंशा १६)। १ जीएँ बस्तुका परिकार करनाः 'विद्यानीहर' म स्कृतियाँ (विके १३६) । उद्धरिस वि [वे] प्रतित विनासित (पर् )। उठा पू [दे] दोनों वरक की मत्रवृत्ति (पङ् )। उद्भव दूं [उद्भय] क्रवो शीहप्य का वावा मित्र भीर मक्त (बनिम ४६)। ण्ड्रयञ्ज वि [दि] उज्जिप्त वेंदा हुमा (दे र **!** (1) ! उद्धविभ वि वि अधित पूजित (दे र 1 (0 } न्द्रा ) सक [उद्+धाय्] १ दौड़ना उद्धाप्र }देन से जानाः २ ऊदि जानाः उदा६ (पि १६१) । वह उर्द्रत, उद्घार्थत, उद्यायमाण (क्य ने १ ६१ १३ ६१) भीत)। श्रद्धाञ सक किम्मीयु किमा होता। यह उद्धांभमाण (चे ११ ६१)। प्रद्वाञ्च वि (उन्द्वाब) ब्रह्मावितः क्रांबा गमा हुमा विष्एएकक्ष्य बहुर्च ख्वामणियवगरर मिगमसिक्ट (वे ८, ३८)। बद्धान पुरिही १ विषमीतत प्रदेश । २ समूह। ६ विवस हमा मान्त (दे १ 824)1 नदा"भ वि [नदायित] १ पेमा <u>स्</u>या विस्तीर्ल, प्रसन (से ३ ५२)। २ ऊर्जिंग बीहा हुमा (स २, २२)। उद्धार पू [उद्धार] १ भाग रताल (कुमा) । २ ऋणु देना उपार देना (कुछ ३६० धा १४)। १ मञ्हरण (मणु) । ४ वणगह (धन) । इ. पारणा पडे हुए पाठ का नहीं भूगमा: 'पात्रस्तेशा उनेच च ब बद्धवावतारता उद्यापे (स्तर)। प्रिजायम न [ पञ्चापम ] समय का एक परिमाण (मगु) । समय र् ["समय] समय-रिया विदेश को दूसर पुस्तक सा सेख में सर्विकन (पंग) । सामग्रम न ["मामग्र म] समय का एक कीचें करिमाए (बान)। 'एमो कीर्यायको संग्रेच्या बालला-देव । उद्धरप वि [उद्घारक] ब्हारनाग्य (श्वत चॅकिती पदस्मी, रहामी मुय-तमुहामा' | ₹)।

रुदाव देनो छदा । उद्दूषम न [उद्घापन] नीचे देखों (पा १)। रदावना चौ [उदावना] १ प्रवर प्रवृति । २ दूर-धमन दूर राज में जाता (वर्ग १) । १ नार्यं भी रदेश दिन्द्र (यव १)। उद्धि स्त्री पद्धि (पर्)। पृष्टि की वि । पानी का एक प्रवयन पुत्रपती 'र्रम' (श्व १ टी हा १ २ धी-पत्र ( ## 5 उक्तिम देवी उद्धरिअ≂ धर्वत (मा ४ धीत रायः बर १३ धीपः वच २६)। क्कीसुर वि [उच्चीसुर्य] प्रीह क्षेत्रा रिया ह्या (भर ४) । उक्चंपक्रिय नि वि दि द्वाराग्रहमा (उरा)। प्रकृषेणिय देशे इसय (म्ल)। बद्धुस डस्प्री पूछ रला पूर्य क्ला। ब्युमर (हे ४ १११)। "प्रुपा मर [उद् + भा] र मानाव करना । २ जोर से बमनी को चनाना। उज्याद उज् नामः (पर्प्रामा)। उद्भूमान्य रि [उद्दूष्मापित] रंश क्रिया क्या निर्माति (ने १ ८)। उद्भुमाय रि चि १ परिपूर्ण भागा स्ट्र माया (इमा) 'परिवासपुद्धमार्थ व्यक्तिरेहमं भ भागु बाङएटी (एडिर्र)। २ कमतः 'नपरंतरनुब्धापमूटतनहृषर' (स. ६.११) । उद्ग्रंप रि [रम्भूत] १ वनन ने बना ह्या (मे ७ १४)। २ प्रयुत्त केता **इ**षाः 'वे**नु**ब् वाजिराम' (ब्रोप) । ६ प्रतस्थित 'बाउन्यूक-रित्रिक्षेत्रपेशी (और १)। अ बार्क्ट अवत (मम ११३)। १ ध्यक प्राट (इप)। उर्पुर वि[उर्पुर] १ ईना उन स्पूर बस्त' (नाम)। २ अवना प्रान (गुर ६ ६६ t7 t t): इर्तिट्यामात्र } क्या उर्द्रत उर्पुमिय रि [ उर्पुयित ] १ रोनाच प्रयोजनीती, इतिहास निर्मात बिल्पनाली म (दर) । २ रि रोनाचित्र दुनन्दि (है १ १११, ६, १ ) अपूनियरीयरको वोबनर्षानीन बंदुस्पननो (सूर २ १ १) 'अर्पुनियहेनावर' (स्ट्रा ।

समय देखी उपगय (सुना ४७६) दम ४१ **धर्म एक [बर्+मृ] १ कॅपाता** चलाना । २ चामर वयैष्ट्र बीजना पैचा करना । करक प्रदूषकर्वत सद्युक्तमान (पदम २, ४ । क्यो)। उद्भाषिय देवी तद्भुम (स्ल)। उद्भद्र (शी) देशो उद्भय (बार ११)। डर्म्स सक [डर्+म्स्थ्] १ व्याप्त करता। २ वृत्ति वनना। उद्भुक्तेक् (ह ¥ 38) ! उद्घष्टण न डिद्युश्चनी पृक्षिको यह दर संयहना 'बारमसागसमुद्रमुरुप्रवसिक्रिरंगोए । ए। समन्दर एवनावादियाद पर्वृत्रकारीयाः। (पा४ व)। उद्मुखिय वि [उद्भुक्ति | १ वृत्ति से मरेट हुवा। र ब्यास्त "निविरोत्युक्तिमनवर्ष" (**क्**मा) । दद्रमुप्यिमा औ [उद्गृपःसञ्जी भूत देता निवि ह विरासतध्वपूरीसमीशेहि गुरहनारीहै। क्ष्यरिवरिम शिविता उज्जालिये प्र**पन्**ति ।' (Ht fx fax) I सद्यूमिश कि [त्रुयूपित] जिसकी क्रुप क्ति पया हो बह (विक ११६)। चद्राम प्रं [उद्धर्ष] इस्तात ≉वा होना (स्ट्रिट्र): चंचं छ महमाजीए चितिका र्त सन्ते रोपुढोसं क्लोर मह सम्मो' (नूरा 4Y) 1 उद्राव किया किया केइ या बक्ती के रीम। सब रि[सव] उन का बना हुना 'नोवानियाण विवे नण्यापद प्रारम्हियाहार'। टनमयग्रसमितमण्डीम्युप्रयम्खद्यभावं त (पुत्र ४३३) । रम (पर) वि विषयत्री स्थितःशस्त्र निम ( दंद )। उद्गाह देना उच्याई (नात नुपा २३७ प्रानु २ सार्व1४)। रमञ्जनाय देनो दर्मा । उन्नइप दि [उन्नीत] अँदा निया ह्या (प्रत्य ₹ ₹ ₹**\***) 1 दर्भद्र कर [दर् + सम्द्र] यक्तिन्त करता ।

(<del>1</del>97) (

कृष्य) । हमादेको हण्या। सय वि सिय] इन का बना हुमा (मुपा ६४१) । उन्नाबिय न [उन्नाटित] हर्य-चोक्र मानाव (म १७६) । उद्यास प्रे जिल्लाम् । १ व्यक्तिमान, पर्ने (सम<sup>ं</sup> ७१)। दशासिओ वि [तशसिंद] अवा किया ह्या (पाधा महा सं ३७७)। रमास्त्रित है है। देवो रण्यास्त्रितः 'सा-नियं स्थामियं (पाप)। उझाइ दें डिझाइ कि बाई (पाप)। सक्रिज देनो टिण्यज=सीलिक (योग z) ( ट क्रेक्स समाजिति + मान् विदादना उन्ह्र सन करना। यथि उमिक्तिस्तामा (तुम २ १ ६)। इ. उझिक्लोबक्द (मृष १ 1 (\* ) उत्सरसम्बन्धः न [उत्सिष्कमण] रोजा दोह कर किर यूहस्य झाना, साधुपन चोडकर किर गृहस्य बनना (इस १३ टी ६१६)। उद्गी देवी उच्मी। कवड वसद्राज्यसाय (इप्प)। 'हम्हास (मा) यूं [उप्लग्नस) वीप्प क्यू उपन्तर न [उपस्कर] वर वा क्षावरण (\$0 \$ \$): डर्पेट न [डपास्त] १ पिञ्चनामा पीछे वा भाग। २ वि समीपस्य (ग १६६)। उपरिं} ध्यो क्वरि (विषे १ २१ वद्)। उपरिक्त देनो उनरिक्त ( बर् )। उपमञ्जमाज रेको उद्याय = हर + शहर् । उपमाप देनो उद्यसम्य । इनम्य ( वर् )। । सेक् उपस्थिय (बार) । इपानहित पूंडी [उपानतृ] दूरा भाग क्टि बेक्ट्रेसल्डिए ब्रह्मसम्बर्ध (मुन ६६२)" 'वह वे निज्ञाणीत्यातीन गरिएमी (दुस ३६९)। कार दिवयवानस्वद्रभेदि इस्रेन्द्रियमाणे राय देशे आव्य = वर्षद् । उत्तेद् (ति १ ४) t ( 146) :

एरपद्रम वि [जपविद] क्रवासमा हुमा उदा हुया 'देवि म मागाने उत्मार्ग (स्वा' सूर ३ ६६)। २ उसत अर्था (माना)। । ভর্মুর জন্ম (उत्त २)। ४ न उत्पदन, उड़ना (धीप) । रुप्पद्रभ नि [उत्पाटिय] एन्यापित चठामा ह्या। वृत्रिक्षणहयमुणानं बद्ठूण निर्धं व सिक्रिसबसम् छमिएँ (से १ 🐧 )। रुरपङ्गारम् } देशो उपयय = स्त् + पत् । सरपङ्ग इच्यय पुं [उत्पात] १ उपतन अने जाना छर्पक वि [वि] १ वह सन्यतः । २ ट्रंपक् नुद्रता स्टूपन । २ बलासि "धनद्रिए चले नीचड़ करिरे। व स्पति (देर १३)। र्मदपडिबाडणमाई मं (बिसे २०७)। नियम ४ समृह, राशि वि १ १३ पाचा भउड पुँ निपाती १ क मानीमा होना स ४१७)। 'सरपनसूर्जुमसामस्तरं यनेनेहिः हीरस् नामा । रप्रंग पू 👣 समूह, यशि पुरुनुह्योसनसृद्रिकां वर्शनवरेगः वरिवानि ॥ 'राजपस्मन' निसर्गा, पश्चिम माज्यस्थतरभिक्कि कपायनिवर्ग कुर्जुतिया बहुई देव्यति वृद्यसम्बद्धः । (मूर १३, १८७)। २ नाटच-विधि का एक नामस्य नीहरूपंदरान्यं प्रकार (जीव ३)। हत्यमस्तं व ॥ (गा ५६६) । रूप्यण म (इस्पतन) क्रेंबा बाता, उद्गयन **स्टब्स्ड इन्+पद्] स्पन्न होना।** (ठा१ से ६ २४)। सम्बद्धि (इप) । वहः, इप्पर्जातः रूपञ छप्याय न [इत्य्यवन] वन को बाँवना माण (वे द इ.स.) सम्म १६४० मन विसे शिला (से ४, ६ )। 1127) रुपयणी की [स्तपवनी] विद्या-विदेश (सूच स्टप्ड सक [सन्+पन्] बहना अँवा २ २,२७)। बाना कुश्ना (प्रामा)। कप्परिं (मप) वेको उवरि (हे ४ ३३४ बप्पड पूँ [प्रत्पट] शीन्त्रिय अन्तु-विशेष सुत्र पिम)। बीट-विधेय (राज) । रुपरिमाबि, बी भी डिस्परिपाटि टी एव्यक्रिस देशो एव्यन्स (स्ट)। फ्लटा क्रम विपर्यास विपर्यंग 'क्रप्यरिवाकी बप्पण सक [बन् + पू ] बान्य नगैयह को बहुनो बारुम्मासा सबे सहुना (यच्छ १) । सुप धारि से साठ-पूजरा करता। वर्म, 'सानी रुप्पराप्पर म [रुपमु परि] क्या-स्मर (स

बीही बना य सुब्बंतु मनिर्जेतु स्मिण्डियत् र्व (पण्डर २)। हच्यज्ञज्ञ न [प्रस्पवन] मूप धारि के वास्त्र वपैया को साफ-मुक्य करना (वे १ १ ३)। हरपञ्ज वि (बरपञ्ज) बराज संगात उद्युत (मक् नाट)। क्रप्पश्च वि वि] १ पवितः। २ विरक्त (**पद्**)+ बरपन्ति वि [बस्पन्ति] क्लांति प्रतुपनि

क्यांच्या श्री [बीस्पचिकी] दृष्टि विशेष

विमा शाकाम्यासावि के ही होनेवासी दुखि

स्वामाविक मंति (ठा ४ ४ खाया १ १)। सरपद्म देखो नयपण्य (जना सुर २, १६ )। इत्त्य सक् [उत्+पन्] प्रकृत कृदना। क्रमवह (महा) । वह- धरपर्यंत, उपप्रयमाण (इस १४५ टी सामा १ ११)। संक उप्प-इन्हा (दीप) । इ. सरपद्भवन (से ६ ७८)। हेब्र उपपद्रतं (पूर ६ २२२)। उपय देशो सप्पव। वह सप्पर्शत (से १,

रुप्पन्न विराखी १ कमन पद्म (शाया १,

१ मन)। २ विमान-विशेष्ट (सम ६०)।

१ संस्था-विशेष 'छमक्य' को चौरासी सत्त्व

ये दुस्तने पर को संक्या सम्ब हो बह (ठा २.

४) । ४ पुगन्ति अन्य-विशेषः 'परमुखनवैतिप्'

(भै ३)। १ पु परिवासक-विशेष (मास्

१) । ६ प्रीप-विशेष । ७ समुद्र विशेष (पर्श

१४)। बेंटग दू विस्तक पानीविक

रुप्पर्धंग न [स्त्यसङ्क] संस्था-निशेष, 'क्रुव'

मत का एक साबु-समाव (ग्रीप)।

एक प्रध्यमन (स्त्रामा २ १)। १ स्वनाम क्यात एक स्थानिका (भग १२ १)। ४ एक पुर्व्हारणी (बीव ३)। रुपछिणी भी जिरपविज्ञी क्यांतिनी कमन

का गाछ या पीचा (पएछ १)। उप्पक्त वि दि] सम्यासित मास्क (पर्)। उपपय सक उत् + दस्र दितौपना पार करता दिरता। २ ळ वा जाता एइता। वह उप्पर्वत उप्पयमाण (से ४६१ ८८६) । उप्पयक्ष्य वि [प्रक्राव्यक्तित] विसने शैला कोड़ वी हो वह शाबुहोकर फिर बृहस्य वताह्मपा(स ४८३)। रुप्पद्द पूँ [इस्पथा] कमार्थ कुमार्थ 'पंचाठ क्याहं नीर्त (तिवृश्धे ४ २६ हेना २१६)। आई वि वियायिम् उसरे रास्ते भागेशाला विपय-गामी (ठा ४ ३) । (विसे २०११)।

रुपापंत

बप्पायत्तप् र

ध्या की देशों रूप्याय = व्याद (ठा १---पन १९ टा ५, ३--पन १४६)। रुप्पाइ वि [ घरपादिम् ] ज्लाम होनेनासा धप्पाइता देवो सप्पाय = उत् + पादम् : रुप्पाइत्त वि [सरपाइयित्] बलावक जलम करनेकासा (ठा ७) । खप्पाइय न [भौरपाविक] मूर्चन साहि जलावों का सुचक शास (सूच १ १२ १)। षण्पाइय वि [स्त्यादित] स्थम क्या ह्या 'जप्पाइयर्धनिव्ययस्य को उद्दर्शत' (राय) । **धप्पाइय वि [शीरपातिक] १ भरवामाविक** इर्यममः 'जन्माइयरब्बर्य' व वीकर्मते'। २ झाक-स्मिक प्रकरमात् होनेवाद्याः 'छमाद्रमा वाही' (राज)। ६ न धनिष्ट-सूचक माकस्मिक उपप्रव क्लाक भी मी नाविवपुरिता धक्रमवारा सपु-न्या होत् । दीसद क्यात्स्वर्णं व भीममुप्पादर्गं बेर्स (पुर १३ १०६)।

देवो कप्पाय = व्य + पारम्।

की चौरासी साम्र सं गुणने पर की संक्या शब्द हो बहु (ठा२ ४)। उपाद्ध भी [दलका] १ एक इन्हारणी काम नामक पिराक्षेत्र की एक बाप-महिपी (ठा ४१)। २ इस साम का बादावसकर्याका

कष्पाड एक कित्+पाटय्] रे अगर स्थाना। २ प्रकारण कमूनत करणा। रूपा केट् (स्पष्ट्रेरी शाहरेश काल)। इन्हरूपा कष्पाव्यं (मृत्रा २४६)। संह उप्पाडिय (नाट)।

क्याड कर जिन् + पाइस् ] बरास करना। एक उप्पाक्तिस्य (विसे ६३२ दी)। उप्पाक पूं [क्रमाठ] उन्ह्रम्म उरक्तमा 'नमग्रीमारी' (चर १४६ दी १८६ दी)। उप्पाक्तमारी' (चर १४६ दी १८६ दी)।

पटना । २ स्मृबन क्यानन (स २६६ एक)। बण्यादिय हि [उत्सानित] १ उत्पर उठाना हुया (यामा प्रकः)। २ उत्पृतित (पाक)। उप्पादिय हि [उत्सादित] उत्पद्ध हिया हुया

'क्याविकसम्प्राप्तालं चारमसीसाल देखि नमा' (कान १६)। उप्पादक वि[उत्पादक] क्याप्त कर्ता (प्रकी

प्रभाव विध्यम् व्याप्त स्था (अवा प्रभाव क्षेत्र क्ष्मा व्याप्त व्याप्त क्ष्मा व्याप्त व्याप

र ४)। करक उपपारीक्षमाण (शी) (म्प्र)। उपपाय हुंग [उत्पाय] र उरावत क्रक-नमतः भ तर्ग केपुम्पण विश्ववित नहंस्युम्मस् (मुता १८)। र मारस्किक क्षात्र भ्रम् रूप व पायर प्रमुक्तिक क्षात्र प्रकाशिक कर्मा यह स्वति र करावे जानामित्र (म्प्र)। र सम्बन्धिक क्षात्र व प्रकाशिक प्रमुक्तिक क्षात्रक व्यव स्वतिक्षक प्रमुक्तिक क्षात्रक विश्ववित्रक

भाग ताहूँ पराण ते जातार्थ उत्तावित्तं (यह) । व धामांश्यक उत्तव का प्रतिशासक याव्य मिनिया-गाव-निक्षेत्रं (ता १ सम १७ पद्ध १५) मिनाय वु मिनाया चित्रमा योग व्यवस्था (क १९१) उत्पात वु बिरुपाद विकास मान्यक्षं (बुता १ पुत्रा) । पत्रम्य वु विकेत पुत्र मान्य विकास मान्यक्षं मान्यक्षं विकास स्वाप्ति के विकास मान्यक्षं (यह) विकास स्वाप्ति के विकास मान्यक्षं (यह) विकास स्वाप्ति के

ृष्षे प्रवस्पूर्व बन्धरु-विशेष बारह्वे वैत सङ्ग-बन्ध का एक माग (वस २६)। वरपायम वि जिल्लाहको १ बलाग करा-

यावा : १ पू. श्रीराम बन्दु-विदेश कीर विदेश (वच म) । उप्पायम न [जरपाइन] र बसायन, उपावेन (अ १ भ) । र वि सरायक उपावेक (यस्म १ भ) ।

ष ४)। कप्पायणमा १ व्ये [क्रपादन्तः] र जगर्थन प्रपायणा | क्रपाद करणः। बैन शाहुकी क्रिता ना एक वैप (योव ७४६ व्य १ ४) विस्त रो। कप्पायम वि [स्थादक] उत्तप्त-क्रमी (गुम

२ २६): उप्पास्त एक [ध्यू] बहुता बेलता। क्या सद् (द्वे ४ २)। उपालकु (बूता)। उपाव एक [उत् + एक्सब्यू] १ संबाता वैद्यता। २ जुस्ता उद्याता। ज्यादेद (द्वे

२, १ ६) । इन्ह टारियसमाय (ज्या) । टप्पास सक [ दरद + अस् ] हैसी करता। ज्यानिक (जुब १ १६) । टप्पाहज ग [चे] ज्वन्डा क्लुक्टा (ताय)। टिप्प सक [ टार्यम् ] केता। उरित्त (क्ल्प)। टप्पि स [चर्यम् ] केता क्षित सं प्री। भोद विध्य केता शरिवति है योजना। हर्मिय शैक

ध्युद्ध स्पीते प्रस्तुपकार पृक्षीप' (बीक भे सामा १ ६ झ ६ ४ और)। अध्यिमक्षिमा सौ वि] इस्व का सम्य जात, कपोल्पेय (११११)।

एप्पिककात् हि] र तुष्य संप्रोप। २ एक कृती। ३ प्रवर्गीति प्रपत्त (३ र १६४)। एप्पिकक वि [सरिपक्किक] प्रति-सन्द्रम व्यपुत्त (पय)।

विध्यस्य कर्ष्य (विश्वयस्य ) सङ्ग्रम को त्राद्य सावरण करना। कर विध्यसम्माण (क्या)। विध्यस्य [वे] क्यो विध्यस्य ध्यक्षित्व

स्रीयन्त्रं व साक्तां रोबागीत्यं व' 'जेब' हुय-इत्यान्त्रम्यातां व कमनो कुछेनल' (बीत १) 'रुष्ये यह उत्तर प्रवस्तुतो पहाविधी साम-स्रीयन्त्रों 'रनक्तमोनीति सामरियन्त्रं (एउम द १७३३ १२, दक्ष), घेन्निन्द्रगंतराधि ( प्रत ११६)। हरिया वेको उपाज । वह अभिष्ठित (कुन ११)। धरियस्य वि चि । इस्त औत (दे १ १२६ हे १ ११। स्थान पुरुक १४९) गता। कि सम्मानिहा चार्यविद्वा स्कृतिस्या (तुर १२ ११)। दृशित, कुन । विद्युर सामुख (दे १ १२८, पात)। धरियस्य वि चि स्टास्युरूत (सेत ) (प्रव

पात)।
एक एक हिंदी इसल-पुत्ता (कैड) (प्रव ७० टी)।
ठिप्पस एक हिंदिन्सा है। पात्रवारन रुप्पा। दे किर किर स्वाद हेना। वक्र, द्रिप्पर्यंत (प्रधु र वे—जन ४४) एक)। डिप्पस कि जिसिंदी प्रान्त हिंदा हुमा हिंदि र देश)। डिप्पसमा व डिप्पानी डिप्परिट स्वास केश (प्रज)।

ाध्यक्षात्र व्याव करवाव क्षिप्रकात है ज्ञायन | बेनना (श्व ४२२) क्षिप्रकात देवो करवाव । जीवनावेद । नह क्षिप्रकात में क्षित्र करवे (श्व ६०) उप्लीब ट्रं दि करवीच | क्ष्मह, एति (१) १७०० व १) करविकात [उपलिबन] १ क्षम कर बोनना । र स्थात्र (६ ६७) ।

वीबना। २ उठवाला चिएले वा छावं उपीवावेजना (माना २ ३ १ ११)। उपीवावेजना (१२४)। वपीठ दे दि] १ धंबाठ चहुरू (११ १२६ पुरा २१) पुर २ ११६ वणना २ पुण्ड ४३। बम्म १२२१) कुमामणे वहं

सम्बं मानुसीको विखायएं (महा)। २ स्पपुट विपानेक्त प्रदेश (६ १ १२६)। वस्पीस्थ्य न [ स्त्रीहत ] सीझा क्याव (स १७ )। स्पीस्थ्य वि [स्त्रीहित] कस कर व वा

डप्पीक्षिम नि [उत्पीक्षित] कस कर व वा हमा 'कम्पीकिस्मियपट्टविश्वास्त्रकृष्ण' (नराई १ वे। निपा १ २)। चल्पुक्ष वि [स्त्युति] सन्तवित कृत हुन्य (हे इ प्रत प्रकार है है)। रुर्जुसिझ देखो उच्युसिझ (वे ६ व१)। स्ट्युणिञ वि [स्ट्यूष] भूग म साध-मुक्छ किया हुमा (पाम) । स्ट्युण्य वि [स्ट्युण] पूर्ण व्याप्त (स उपाद्धाः व [न्युसंकत] रोमाध्यत (स २५१)। उप्पसित्र वि [इस्प्रोहिन्स्त ] मुख प्रान्धित (से ६ दश यहर)। प्रदूर पुं[ उत्रूर ] र प्राप्तर्य (पणार ६) । २ प्रक्रप्ट-प्रवाह (ग्रीप) । चरपक्ता (का) देशो छविकता। उपस्य (चिय) । उप्यक्त सक [उद्य+इस् ] संमानना करना करपना करना। स्थापना (स १४७) । उप्पेश्वीम (स १४६) । उप्पक्ता की [उठ्येका] १ वर्गकार विशेष २ विश्वर्थणा समावता (वा ३३१)। रूप्पविकास वि [स्प्रोदित] संगावित विक्रमियां (दे १ १ १)। उप्पेय न वि भम्पन, रीमादि की माशिशः 'पुरन' व मंतरद्ठा छन्पेमं वह ऋरेद्र विद्यार्ग' (सम ६)। उप्पक्ष सक [ स्त् + नमय् ] अँवा करना उन्तव करता। उप्पेक्स (हू ४ १६)। उपलिम वि [उसमिव] बैंबा क्या हुमा, चन्नत किया हुमा (दुमा)। उप्पद्ध पू [रक्षमन] विशाहरणा (परम व ₹₩₹} ≀ स्प्यम पुं जिल्पयों नास, भ्रम कर (से १ क्यांहरू वि 🚰 उद्दर, पारम्बरशासा (दे १ ११६) पाम च ४४१)। <sup>\*</sup>सप्क देशो पुष्प (मा ६३१)। चण्फण एक [डत् + फ्रम् ] ख्रौटमा प्रम में बाग्य मादि का बिनारा दूर काला। क्ष्मराति मुद्दाः सम्बद्धिम् स्वीतं क्रम्य-ख्रिसंदि (प्राचार, १ ६ ४)। करफंदोस वि दि वि प्रसिद्ध (देश **१**२)।

उप्कृत्म सक सित् + स्पूत्र ] सिवना विक क्रप्याल पुदि विकास दुर्गेन (देश १३) क्ता। श्रेक्ट उल्झुमिकण (स्वा)। ( पाम) । चरफेयउरफेपिय हिनि [ स् ] होन-पुन्त डरफास सह [ उम् + पान्य् ] १ स्टाना । प्रवस बचन से, 'उन्हेगुडन्फेंजुर्य सीहराय' २ उच्चाइना । उपकाते इ (हे २ १७४) । एवं वयासी' (विषा १ १ — पत्र १)। उपग्रस सक [क्य] नहुना, बीलना । चप्फेस प्रवि] १ त्राच मन (वे १ १४)। उप्झसेद (हूर १७४)। २ मुक्ट पगड़ी शिरोबेष्टम 'पंच रामकबुहा धप्फास वि [कवक] सहनेवाना सुवक फ्र्एचा वं बहा-कार्य वर्ष उप्हेसं (# 4xx)1 रुप्प्रानिका वि [क्रियेत] १ वर्षित । २ मृषित (पाप, छप ७२८ टी स ४७०)। **रु**ष्टिक धर [बम्+स्फिद्] कृष्ठित 1 (1 8 होता यसमर्व होना। उप्टिका उप्टेन्स 'एमाइबिगन्यऐडि बाधिज्यमाणो बन्धि-(ब्हे)-११)। बद्द परमु' (महा) । ष्टिफड सक [ उन् + स्फिद् ] मेहूक की त्तरह कुरना सहना। स्रप्तिहर (सत्त २७ १) । यह- एप्पिस्टिट (पन २) । हिप्पञ्चण न [उत्स्फेटन] हुरिछत होना (स ६६८) । बिप्प्रक्रिय वि [इस्स्किटिस] १ कुएउत । २ वाहर निकता हुमा 'कश्वद सक्टुबक-E \$46) 1 चिवनिष्पिपुद्विद्वविमगौचियाक्ष्मो (सूर १३ २१३) । डएर्ड्-किमा श्री दि] योषिन, रपहा बोने-बाबी (वे १ ११४)। रुप्दृंदिक वि [व] मास्तुत विद्यास हुमा (दे १ १११) । षण्डुण्य वि [वं] मापूर्ण मरा हमा म्यान्त (वे १ ६२ मूर १ २६६) ६ २१**१)** । रुपुरुष वि [दे] सहर, पुरुष इता (पर १६८ दो)। **रुपुरक्क वि [उत्सुदक्क] विकशित (पायः से** 4 **24**) 1 बर्जुन्द्रिया भी [उर्जुन्द्रिय] मौहा विरोध पाँच पर बैठ कर बारबार अंचा-मीचा हाना

'उप्पृतियाद बेन्दर

मा वहराभारमदर्द,

मा एर् बार्धिह होठ परिज्ञा ।

पुरितायंको विशिविमिनिहर

(पा ११६)।

**चवाह्**खाउ वासविषणी (ठा ५ १—पत्र ३ ३ औप माचार ३ २ २)। उप्प्रसम्म म वि] इराना भवोग्पादन (मुख **टप्प्रोअ पुं[दे] स्त्**गम श्रदय (**दे** १ उद्युम सक [सुज्] मार्जन करना शुद्धि करना साफ करना। उनुसङ्ग ( पङ्ग)। सक्टोच सक [उद्द+सन्ध्] १ कौसी नगाना फंधी सवाकर मरना। २ वेष्टन फरना । वक्र 'बननिक्षितडम्म विद्वा उच्यं भंती चहुप्पार्ख (पुता १६ )। संक्र उरवं भिम रुष्यंभिक्रम (माटः पि २७ उच्चंभण न [उद्वन्धन] फ्रीसे सपाना उस्तम्बन (पर्या २ ४) । उब्बाम वि (उल्बाम) उल्हर (पि २१६) । वस्त्रद्ध वि [उद्वद्ध] १ जिसने फौसी सगाई हो बहु पर्वेशी सगकर मराह्मा। २ वेष्ठिकः 'सुर्धनस्थापनस्यक्षे (सुर = १७)। ३ रिव्यक के साथ रासों से बैंभा हुया शिक्षक के पायत्त (ठा ६)। किया विकार तिस्वार्वेतस्य देश्या विस्वा। पद्मियमिर्माव सिवक्रमिम र्व चिरकास तु सम्बद्धी (बृह)। वर्षिवयनि वि. १ किल प्रक्रियन । १ सूच्य १ करन्त । ४ मक्ट वेप शासा । ५ भीतः इस हुमा । ६ उर्ज (दे १ १९७) वज्ञा ६२)। बर्ध्विवञ्च वि दि ने नुप्त जबराना (दे १११ टी) । व्यक्तिंवस्त न दि क्षेत्रपायन मीसा पानी (देर १११)। वर्दिनविर वि [वि] विल्ल प्रक्रिय (कप्पू)।

156 उद्यक्त सक दिद् + बुक् विभाग वहना। एम्सन (हे ४ २)। च्छ्युकः न [दे] १ प्रमनित प्रनारे। २ क्षेत्रट। ३ जनाप्तार (दे १ १२)। स्वजुद्ध धक [ उद् + बद् ] हेला । उद्युष्ट र दू [पद्मड] शिला। "नियुष्ट उत्पृद्ध निरमुद्दण न [तिमुद्ध ग] धमकम करना (पराइ १ व उत्त १२८ हो)। स्वतुष्क वि विद्वान्ति विभाग वीर्णं (ना 10 8 R ) ( उद्युद्धण न [उद्युद्धन] क्रमण्यन (बप्पू)। टरपुद्द पर [ उन् + श्रुभ ] संयुक्त होता। प्रसाम (प्राप्त ७३)। उप्परिव दि । स्थापक क्यारा। २ वूँ संबंद नमूर्। ३ स्ब्युट, विधमीन्वत प्रदेश (देश १२६)। उरमानक [अर्थ्य ] ब्रेंबा करना बड़ा वरना। उस्पेड (वर्गा ६४) क्योह (महा) । हरभ रेगो प्रकृत (हेर दर मुर २ ६

पर्)। वर्भव पुं [उद्भाष्ट] १ क्लाट मॉह बरम्या निर्मेश हुंदा, बच विद्युपत 'सरर्वात वहं प्राएसि

देशनाय वर्षिति वे हेरि । दिस्रोरण बन्धेरी र्गायामि शारगुनद्वाको । (ठा ६ टी) । २ व वार्ता बृत्ति प्रवेद 'कार्यक्रयण-(भवि)। ब्रध्भंत रि दि गान कीमार (दे १ ११ नव्यंत रि [उद्भाग्त] १ बार्चस म्यार्चस

निन्म (दे १ १४३)<sup>-</sup> 'धरनंद" वा संबद्ध प्रदेश ग्रामीविधा वरियमम् । धन्यस्यविज्ञासम्बद्धियमा परिचनायाँ (बा १६६) 'जावनस्त्रप्रतमा-राना बादे' ( नुर १४ १९६) । र बुच्छित (म.१..) । ३ फ्रान्तिर्देश मीनत्ता वर्तित (x 3 \$ £ x) : करभंत पूं [प्रदूष्मान्त] प्रवत नरत-नृतिशे ना चौरा करदेनक--एक मरक-रवान

(ttr: 1) 1

पारञ्जसद्दमहण्ययो हरूप्रस्ता वि वि वि वृष्टित स्थाप्ता विसि चेत्रमानशिक्षार् (दे १ ११ नार)। रक्मिक्र ही दि | मोत्रव-समूह (चाव)। उक्स कि [उद्गाद] १ प्रवत प्रवएक 'अस्म-परतापक विरत्नकप्पतायाद अक्षायते' ( गुगा 🔏 ); 'डब्ब-क्स्लोनभीसणायने' (एमि ४)। २ मर्थकर, विकरमा (मप ७ ६) । १ स्टब्स धार्डवरी (वाध) 'पहरोसी पहरीमी पहरूसी दुम्प्लेब्रि धंवामी । घड्ठमारी य बेनो पंचीय नस्येति बहुसेति। (बस्म)। बरुमम र् [बद्भाम] १ छोन २ परिभयस (नार) । तक्मव सक [तद् + मृ] प्रत्ना होता। ज्यानद् (पि Yoki नाट)। नद्व सक्यान्त (पूरा १७१: ६१६) ।

दस्मय प्रक [ ऊर्घ्यंय ] ग्रॅबा करता खड़ा करता । बरुमय पुं [सबूमय] उत्पत्ति बादुर्वान (निसे रणवा १२)। करमविय वि [ऊध्यित] जैवा विधाह्या (बाग्र १३ वज्या १४)। प्रमाम नि [व] सन्त ठंबा (वे १ १३)। रुम्भाम एक [ सङ् + भ्रामय् ] भूतान्व ।

सम्मामेइ (चम १२१)। चरभाम वे [चदुन्नाम] १ औरप्रमण (ठा ४)। २ वि परिभयता करनामता (वर उम्मामन्द्रा ही [उद्ग्रह्मामिनी] स्मीरही

हुमदा थी (बर ४१ हह १)। वस्थामय र् [उद्भामक] बार, क्लांव (पिक्ष ४२)।

बरमासग र् [बद्धामङ] १ पारवरिक वर्ष्यानम्पर (बीय ६ मा) । व बायु-विशेष जो पूछ वर्षेद्ध को अगर से उदता है (औ ) । ६ वि परिश्रमण करनेताना (का १) । उपमामिया हे ही [बुदुशामिता] दुनव उद्मामिया थी सीरिकी (पर ६ इर 2 38Y) उदमान्त्रम न [६] १ गुर साहि में नाव-नुवस करमा बनारन । २ रिक्यूरी कड़ि कीय (दे, १११)।

बब्भाविक नि वि सुप्रधानि से शास निमा हुया उल्लं 'प्रस्कृषिये उन्पृक्षिये' (पाय) प्रकाश सक [रम्] श्रीहा करना, चेनता। क्रमाबद्ध (१४१६८ यर्) । बहु बस्मा वंद (दूमा)।

रुक्सायणया २ व्ये (सदुभावना ] १ प्रय-एकसावणा । बना दौरेन उद्योज परम्ख अञ्चलकाया (ठा १०---यव ११४)। **१** राजेचा विदर्भक्षः 'सरस्थावस्थावसाम्।र्य (ए। वा १ १२ — यव १७४)। १ प्रकारन प्रकटीकरस (संदि)। बङमाबिज न रिमण नुस्त भीता संगीत (4 2 220):

चक्मास चक [क्ट्र+मासय्] प्रश रित करना। वह सब्यासत सब्भा<del>श</del>ेंत (पदम २ ६६ ३ १४५)। चवमासिय नि विद्यासित । प्रनारिक (\$ **का २** ≈ २)

भरणात्मी श्रीवृर्ति विद्यमिन बाजिबहेड् देवेर्ष्ट्र : रतेष्ठिय वतेष्ठिय

क्ष्मिन उद्यासियं नक्स् ध (मुपा ७७) । उदभामुझ नि [द] शोसाहीन (दे t tt ) i

सबभासँत रेगो सब्भास इविम बक्रो उविभय = वश्वित् (धावा) १ विभविष वि [वर्भवृति] चौर पराम हुमा (वज्ञः) । विभिन्ना भी टिबुभेशा नित्री एक

चष्ट्र वा शास्त्र (नित्र ६२४)। उक्सिंद तक [बद् + शिव्] १ क्रवा रूपम पदाक्ता। २ दिक्सिट क्लतः। ३ मेंद्र रित करना। ४ क्षेत्रमा। कर्म, प्रतिगर्वति। वद अस्मित्मात्र (यावा २ ७)। क्या 'व्यानमर्गनम्बर्गकेभवतमान्यकपुत्रव पुरियम्प्रियं (मुक्त ६३६ ६७ अन् १६ ६) टा दिस्मित्य द्विमित्रि (पंचा 👫

ft XOY) 1 बस्मिग देवो बहिमय = बहिमर (राष्ट्र रे ¥) ı

सक्तिहण ४ [उद्भेदन] सग कर घत्रम होना भाषात कर पीछे हटका 'बेर्स विय कुठिया.

च्ह्युक्तिकसमूहको महिहरेषु । हैन देव शिसिन्दर

पविशेष्टितिये कृषियों ।।

(यबर) । सक्तिएग ) वि [सब्भिन्न] १ मेड्रिक श्राचिमक (भोव ११६) जीवनने पाणियं, पित्र (पुर ७ ११४)। २ उद्माटिक कोमा हमा। देन जैन साहुमों के लिए मिया का एक दोष मिट्टी वनैष्य से लिप्त पात्र को चोलकर उसमें से ध नाती मिला 'दयसाद गोबटलं उतिमंदिय व तमुन्मिन्पर्यं (पंचा १६ ठा३ ४)। ४ वि ऊँ वाङ्क्या अदश ह्या। 'हरिमदमुस्मित्रयेमेवा' (महा) । उक्तिमय वि [डव्सिक्] पूर्णी को फाइकर उभनेवाको बनम्पति (पयह १ ४) । चक्रियम् विकिध्यित् । अचा क्या इया

**=** ) | उक्रिमम न [उद्दिमद्] १ नवस-विरोध सपुत्र के रिनारे पर बार बनके संसर्व से होने-बास्तानोन (याकार, १६६)। २ पून चौबधिद, रामभ मावि प्राणी (धौबीव २ धर्मसं ७२: सुध १ ६ ८)।

खड़ा किया हुमा (सुपा ८१ महा भग्ना

सबभीक्ष्य वि[ऊर्व्योद्धर] क्रेबा क्रिया ह्मा 'उम्मीक्मनाह्युमी' (इप ११७ टी) । उच्मुअ पर [ रद् + भू ] बलप्र होना । **च्यानुपर**(१४६)। बरम्भाग वि दि र जनता हुमा मनिन से तन्त्र को दून वर्षेष्ट्र स्वतन्त्रता है वह (दे ११ शाच वर)। च्यमुम्म वि [व्] वव सम्बर (वे१ १ २)।

परमुत्त सर [उत्+ दिप्] देवा पॅनना। ज्युत्तर (**१** ४ १४४) । हरभुत्तिम वि [हरिद्वप्त] सँवा केंद्रा ह्या (कुमा)।

च्ह्युचिम नि [दं] म्हौपित प्रधीपित (पाद्य) । सब्सूक्ष वि [न्दूस्त] १ अन्तव (सूर ६ २६६) । २ बाक्तुक कारत (विधे १४७६)।

एकमृत्रजा सौ [और् मृतिकी] मीहम्प वासु देव की एक मेरी जो किमी सायन्तुक प्रयो-भग के उपस्थित होने पर बनाई बाती वी (विशे १४७६) । डब्सेअ पू [स्व्भेव] उर्पम उलांत उस्हा धंतर्गिरियदंशीमाणिस्वविषदं स्पुत्मीयं (मठड)-'प्रिश्चनकोम्बर्ग स्मीयमुख्यः स्पत्तमस्पद्वरः चवा (पर ११ ११६)।

हरभाग्रम वि [बद्भेदिम] स्वयं करात्र होते बाना उब्मेहर्ग पूरा सर्वरह बहा सामुह् सोर्ग् (निषु ११)। चस पूंडिभी उमय, दोनों (पंच ६ १०)।

टमआ म [टमयनम्] दिवा दोनें उछा से दोनीं भीर में (स्व भीप)। एभव्यायण वेको सामज्ञायण (सुन्द्र १

क्रमय वि डिमय] पूगक दो दोनों (ठा४ ४) । देव म ित्र ] दोनों पनइ (नुपा

६४०)। छम पुष्ठिके वादीर पर भन्म (पंचा ११)। दाघ विषा शोनों तरफ से किया (सम्म ३०)। समस्य सर विरूप हिम्मा, बुर्सना ।

उमन्दर (हे ४ ११)। बङ्क समस्क्रीय (दुमा) । डमच्छ सक [अस्या + गम् ] सामने बाला ।

रुमण्यद् (पड)। दमा भी [दमा] याचै, पार्वती (पाप्र)। २ द्वितीय बामुदेव की माता (सम १५२)। ६

दव-गरिएका-विशेष (माष्ट्र)। ४ श्री-विशेष (दुमा)। साइ [रिषावि] स्वनाम बन्ध एक प्राचीन वैनाचार्य भीर विकास भन्नकार (बार्ष १)। डमाजन [दे] प्रवेश (प्राचा२ १ १)।

समार देखी कुमार (प्रकृ २१)। रमीस वि [वस्मिश्र] मिभित 'पविवसिर पनिष्यीवसकरखबुक्षणुभीक्षणुक्तस्य (कुमा)।

उमुग सक [ वर् + मुप्] कोइना । वहः दमुर्यत (रह १ ११) i बम्मक्ष्म वि [दं] १ मूद, सूर्व (१ १ १ २) ।

२ जनत (ना ४१४ भगवा ४२)। बन्सरुक् वि [तन्सयुक्त] प्रयासानी

(बरु)।

क्रमांड पुंदि] १ इठ । वि उपवृत्त (दे १ 12Y) I

त्रमंथिय दि दि] राम बसा हुमा (परवा ۱ (۲۶ सम्माग वि जिम्मा रिपामी के असर मामा

हुधादी एँ (एक)। २ न कम्मन वेरता थन के उस्पर धाना (भाषा)। जस्थ भी **िश्रास्त्र**ी संधी-विधीय विश्वर्थे परवर वर्गेश्वर भी हैर समते हैं (वे १)।

हम्मग्र पू (सम्मार्ग) १ दूरव स्मय सत्ता विषयीत मार्ग(मूर १ २४३ सूपाट ४)। २ विद्य, एता (भाषा) १ यकार्य करना (पाचा)।

बस्ममाया को [डस्मार्गया] खित्र निवर (पाषा) । चम्मच्छान [दे] १ अभेव प्रस्ता (दे१

१२४। से ११ १९ २ )। २ वि सर्यवद्धाः ३ प्रकासन्तर से कमित (दे १ १२४)। सम्मन्द्रम् वि [स्थाप्तः होपी (से ११ १४)। २ ज्या (गा १९७३ ६७१)। धनमञ्ज्ञविद्य विदि] ज्यूम (वे १ ११६)।

**स्मिक्किल विदि १ चपित च्ट्र** २ **पारुत म्यारुत (वे १ १३७**)। सम्मद्भाग [सम्मद्भान] तरण

"प्यमञ्जयाकी ["निमञ्जिका] उम्ह्रम करना पानी में कैंबा-गीवा होता (हा \* Y)1 उम्मज्ञग वि [दम्मळाढ्] १ जनका करते बासा योजा बगाने बाबा। २ जन्मकन सं ही स्नान करनेवाने वापसी की एक वावि

(बीद, मग ११ र)। सम्मङ्गा की [दे] १ वताकार, वदस्तरती

(दे १ ६७)। २ निपेम भस्तीकार (क्य ७२४ थै) ।

रममण वि [रुगानस् ] अस्त्रीएठत पातुक (डप पुर∈)।

क्रमक्त पुंदि । क्यूप क्या-क्रिकेप । ३ एरहर क्षत्र-विरोध (वे १ वर) ।

रुम्मत्त वि [प्रमात्त] १ उद्धाः वभार-पूत्र (बृह् १)। २ पालम भूताबिष्ट (शिंड ६८)। बढा की ["वड़ा] मधै-विशेष (ठा २, ६)। त्रमत्त्रम न [वे] बतुरे का फल "जम्मत्तव-

त र )। ३ प्रकाशिका ४ वीह्यका

धरिमस क्या [ त्रक् + सिप् ] कुला,

अस्मिसिय वि शिविमिपिती १ विवरित

प्रकृत्स (इ.स. १४ १) । २ न्, विकास

उन्मीख्य देखी वन्मिक्सा (दुमा: गडव) ।

उन्मीसमा 🗗 [उन्मीसन्य] प्रधर 🖛 ित

विरक्ता । पर परिमर्शव (विक १४)

बन्मिस्स देनौ उन्मास (पर ६७) ।

'पैज सम्मिन्सवस्ति श्राप्त समुविधाये'

४)। इ.स. विकास (बल्)।

क्रमेच (बीच ६)।

(सव)।

क्रमत होता। यह स्वमायत (का १ ६ 的 त्तरमाय पूंकि माद् रेवित विभ्रम पावस-यमं (टाइ महा) । ३ कामापीतवा विषय में यापनार्माक (उत्त १६) । ६ शनिहान (fri): रश्मास देश आमाप (नाप)। दम्माद्भिय व [उत्मासित] दुरोजिन (व्यव) । प्रमाद र् [प्रमाथ] रिनास, 'निनेशिशवादि (पानमोता) वरेति मरियणम्याद्वयै (मद्रा) । रुग्माद्य रि (रुग्माथक) रिनाराका प्रदो बम्बाह्बर्स रित्रपार्ट (बहुछ महि)।

(पाद १)। रश पर्) । ११४)। १ कर्ण दब वि ६ वर)। ष्टिए रेजा (मुत्त १६) ।

चम्मुह वि [दे] इत ग्रीमगती (देर रुमुह वि [स्मुल ] १ संपुर्ध (राष्ट्र दरमुद्ध वि [हरमुद्ध] विशेष मुद्ध घरमध कुष । 'शिमृद्या सी ['विस्थिता] ऐन क्रम्मुस रि [उद्युख] क्रमूबन क्रनेशनाः

उन्मुख पर [ ४५ + मूमयू ] बयाइना

नुष ने क्याइ केंक्सा। प्रश्नुने (नहां) !

निनातक (पा ६ १)।

बह सम्मूळी सम्मूखपैत (वे १ ४) व १६६)। संक्र सम्मृतिकण (महा)। हम्मूल्य न [बस्यूखन] सपारन, बल्हनन (चि २७०)। धम्मूछजा की [रागृदना] स्मर देशो (भएइ 1 1)1 रुम्म् छिम वि [उम्मू छिन] उत्पारित मून से उन्हाका हुमा (या ४७६:सुर ३ २४६)। क्सोंठ [वे] देखी क्सिंगठ (परम ब्ह २8३ छ ३३२) ≀ क्रमेस पू [उन्मच] छमीनन विकास (भग ₹₹ ¥) 1 हम्मोयणी 🛍 [हम्मोचना] विद्यानिशेष (बुर १३ ८१)। दम्हर्नुकी जिल्लाम् १ संदाप परनी करहता 'संचेच्छम्हाप् भीवद् समावि' (उप **५१७** टी शामा १. १ भूमा)। २ जाल, <sup>†</sup> माञ्च (से २ वेर- हेर ७४)। धम्हद्भा ) वि (अप्सायिव) शंक्य वरम हम्हेबिय ) किमा हुमा (स प्रे १ पटम २ १६ वट४)। स्मा**म पर**िकप्ताय्] १ मल होना । २ माण निराबना । वह स्टब्स्डॉट दम्ह्राभमाण (देश १ वि४६८)। हम्द्रास्त कि [अस्मवस् ] १ गणः परिवन्तः। २ बाप्य-पूक्त (एउड) । रमहाविक्ष न 💽 नुष्य, संभोग (दे १ ११७) । बयम्बय वि [दे] देवो डविटा = परिकॉनडः 'व्यक्तिमकीमपुकुन्तपहुपविच्छरछे' (स्राया १ **१---गम १३**) । ष्ट्रमङ् वेको एउमङ् = उत्+कृद् । अवद्वेतिः भूका उपहिंदु (का)। संयद्ध केनो उम्बद्ध = बद्दत । चयत्त पर [ अप + इत् ] क्ला । स्य । (छ १ म्हा) होत 🔪 चयर वि [बदार] मेह चचनः चेना मर्गत विमलीयरलंकिनुदार (पटम १ वय)। चमरिया की [अपवरिका] चौटा कमध (सम्मत्त ११६)।

**पाइजसदमहण्यवो** तयाङ्य म [तपयाचित] मनौतौ (गुपा ध १७४)। ह्याय वि [हपयाव] सम्बद (धन)। उपारम न [अवतारम] निद्यानर, स्तारा हर्वनान, दुवराठी में 'उनारख़ (दुप ६२)। डयाह केलो सदाह (सुर १२ ४६) काम: विदे १६१ )। उपपक्तिम वि [दे] इक्ट्रा किया हुधा (पड)। उप्पञ्ज नि [रे] सम्मासित, साम्ब् ( पन्)। उरपुन डिस्म् ] मनःस्थल व्यव्यो (हृह १२)। झ, गपुत्री [ग]सर्गसीप (काप्र १७१) । 'उरवर्षिरवमणसम्बर्धः तनतरमञ्ज्ञमोधनोधी मनरमियमरस्यि वसरक्रियमभ शासमी य सो समलो। (मर्जू)। दव पूर्विपस्] दय-विकोग (ठा ४)। रैस न शिरत्री सक्त-किरोप जिसके केंबने से राषु मर्पों से वैद्धित होता है (पक्स ७१ ६६)। परिसप्प पुनी पिरिसर्प के से चननेवाना प्राणी (संपन्ति) (को २ )। सुचिया वर्ष ["सृत्रिका] मोठियाँ नी हार (सम्)। उर न वि] धारम्भ, प्राप्तम (दे१ ८६)। हर्रहरेण म वि] राषात् (निग १ १)। हरस वि वि विद्या विवासित (वे १ e ); टरस्थ वि [हरस्थ] १ द्वाती में स्थित । २ कारी में पहतने का सामुपए। (कावा २ 11 1): सरत्वय ग [ब्रे] वर्ग वकार कवच (पाप)। वरबम पंत्री [चरझ] मेप मेड़ (शाना १ रापण्ड्र १ र}। ररविमञ वि [औरभिक] सेर परनेताला (सूम २, २ २)। सर्ववस्त्र । वि [सरकीय] १ केन-गणको। डरक्मिय ∫२ इत्तराध्यवन सूत्र का एक सम्मदन 'ठचो समुद्धियमेथे सर्कामन्दर्शि प्रस्थल (उत्तकि सक्)। धरव पु [बरक] बनस्पति विश्वेष (राज)। सरि द [व] क्यु क्करा (वे १ वव)। रविषय देवो समिश्र म (दें) (एव १६ थि)। । एएक देवो कराल (कम्म १ सम्प दे २२)।

छरविय कि कि दे र बारोपित । २ विध्वत किल (पर्)। एएसिज पूं [एएसिज] स्तर, बन (बर्गीव **६६**)ı उरस्स वि [उरस्य] १ छन्तान वण्या (ठा १)। २ द्वाविक क्षाप्यन्तरः 'उरस्यवन धमरूराहरू— (धम)। **रुरास्त्र कि डिकार** र प्रमन (राम) : २ प्रवास सुद्धा (मुण्य १)। १ मुन्दर, सह (सूग १ ६)। ४ मक्पूर (चन्द २)। ४ विशास विस्तीर्ण (ठा १)। ६ म शरीर विशेष मनुष्य भीर तिर्वेश्यु (पश्च पत्नी) इन बोर्नो का शरीर (बानु)। टपल नि [चदार] स्मूल मोळ (सूम १ १ ¥ ₹) i एराछ नि [दे] मयकर, मीव्म (मुन्न १) : उराजिम न जिल्लारिको उपर-विजेप (सर्दा)। उरिआ का जिल्हिका (सिप-विशेष (सम ३१)। परितियन [दे परिस-त्रिक] तीम सर नामा हार (भीप)। उरिस वैश्वो पुरिस (गा २८२)। डरु वि [प्रस्] विशास विस्तीर्ए (पाम)। उद्युख पुँ वि] १ मपूप पूमा । २ कियनी (4 £ \$\$A) 1 च्याह चसमिद्धः वि [दे] प्रेरिक (यस् देशः १ ०)। उस्सोज्ञ करोस्त्र प्रे [करोस्त्र] स्तन कर (पन ६२) । चरोश्द्रत [चरोस्द्र] १ स्तन, वन । २ वैल साव्यामें का ज्यकरण-विशेष (बीव ३१७ मा)। वस्रदेशो कुछ (से १ ए६) वर ११६ सुर ₹४१ महा)। छक्तम } थ्रैन [सस्यन] श्रृश-विशेष (ग्रुपा सम्बद्ध } २०१ प्राप्त)। एकमी की [कसपी] दूरा-विदेव 'कामी बीध्यं (याद्य) १ दक्षित्र वि [दे] पर्यदुषित नगरनामा एक्सर र्ष्ट (वे १ ==)। कक्रिक न दिं] क्रेंबा ब्रुगा (दे१ ८८)। "बर्क,ण केवो कुकीण (ग्र २५३)।

₹wo	पाइश्रसद्महण्यमी	चतुर्वविम-न्दरव्यक
समुर्तिक प्रश्नि प्रकृतित विधेषत (१ १११२) समुक्षोसिक (१ कि) चेमानिकत कुम्मित (पर्)। समुक्षितिक (१ कि) क्यार वेको (११ १११) समुजंब (१ कि) क्यार व्यक्त सुर्वा (१	उद्धानाय न [चद्रपत] यरंग समर्थेश (वे ११ ११) । गर्ने दे [बद्धान्त] करकमाय बारक (निष्क ११)। गर्ने पण वित्त + बस्या ] स्वयंक्त करता बारिकमण्ड करता। स्वयंक्ति (ति ४११)। वेहर गर्नेशियाय (स्व	~
१ १ ७) । उहुत पुँ [उद्युक्त] १ ज्युक्त नेपकः । २ हेर- विदेश (पतन १ व. १६) । उहुत पुँ [उद्युक्त] उच्च, पृत्र नेपकः (वर्तार्थः १९१ १२६६) । उहुती की [जीह्य की विद्यानिकेटन (विदे २१४) । उहुतती कि [जीह्य की विद्यानिकेटन (विदे रूप हों हिंदी केले को हुत्या (विद्युक्त केले केलेह्या (विद्युक्त कि विद्युक्त कि व	(কাৰ ব.): ভাইনৰ ব.):	च्छिक्के वि [रे] शिषेत होता (११ १४)। चह्न चक्र [ छन् + छन् ] १ स्थूना। २ चह्ना क्रम्बर हरता खराब राज्य सेनात वि तार्च ना क्रमार्थ (सह)। वह चहुनेत चहनेसान्य (स्वत १४ व मुग्देश करना चहुनेसान्य (स्वत १४ व मुग्देश करना चहुने स्वत हिन्दू - क्रम्बर वि हिन्दू ने क्रम्बर वि हम्मा विद्यान । १६० वहार १ स्वता व्यवस्था (सह ११)।
हित । २ साम्म (११ ११ ८)  छत्य की उद्दर्भः यह नह विद्यानियोधे जुन्नार्थ हरर संचर्ष (विद्वे १ पुर १ १९ प्रस्त १७ २४)।  बहुद्देश पू दि विद्वा कीमा (११ १९)। बहुद्देशका वि हि   यहन द्वित्यदेश (यह ११०)। बहुद्दुक्तम वि हि   यहिन्दुक्त द्वित्यदेश (यह )। बहुद्दुक्तम हि हि   यहिन्दुक्त द्वित्यदेश (यह )। बहुद्दुक्तम हि हि   यहिन्दुक्त द्वित्यदेश (यह )। बहुद्दुक्तम हि हि   यहिन्दुक्त द्वित्यदेश (यह )।	ह्मा (नाम)। वार्षभाग विद्वास्त्रान् ज्यस्त्राम् उदेशी बाग व्यस्त्राम् विद्वास्त्रान् ज्यस्त्रम् उदेशी बाग व्यस्त्राम् विद्वास्त्रान् द्रश्र)। वार्ष्णभागि विद्यास्त्र (स. १९४)। वार्ष्णभागि विद्यास्त्र (स. १९४)। वार्ष्णभागि विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्रम् । सम्बद्धः (स्त्राम् १३)। वार्ष्णभागि विद्यास्त्र विद्यास्त्रम् विद्यास्त्रम् (१५ वर्षः)। वार्ष्णभागि विद्यास्त्र विद्यास्त्रम् विद्यास्त्रम्	जारी न कुण्यह मह यह सएवस्यहणायात्र मण्ड (मूर्ग १९)। उद्योग्य मिं किसीया है शरित उच्छ। २ न उद्योग्य में किसीया है शरित उच्छ। २ न रोह पण्या में प्राप्त मार्ग्य श्री एड्सीर मिं [उद्योग्य] १ श्राम पार्थ । २ स्थानी मार्ग्य (गा. १७२ पुरा ५२१)। उद्यस पण्या हित्त मार्ग्य (गर्थ)। यह सम्बर्गी मार्ग्य (गर्थ)। यह सम्बर्गी सार्थ स्था। उद्यस्त प्राप्त सम्बर्गा।

परिदेश मद्भी सन्दात्र ते महादार्शन । स्ततद्विय-

रूबोबर्गीवन *चेठा*एर्डि पालेडि (धर्मीक

सङ्घ्य वि विस्थाय] ज्वस्य (पंचा २) ।

मोप देश से २, )।

ना बनका दोरिया (क्या)।

(Fix KRY) 1

स्टल न [भाईकिरण] वैसा करना (उस

बहुज न [दे] बाद्य वस्तु-विधेय धोबामन

रुष्टिणिया वर्षे [भाईबिजिसा] वन पॉप्ले

वड़दिय वि [वे] भारतस्य विस्तर वीहा

नाष्ट्र यथा हो वहः 'मह धीमा करणतीय

**व्हार्**क्षक्तच्**व्हा**निवर्यम्म' (नुर २, २) ।

1981

च्छसिभ वि [च्छसित] १ विकसित । ९

बद्धसिञ्ज वि [के कास्त्रसिव] पुनकित

डक्कथ नि [दे] नात मारना पार-महार

वस्थ्यव रि[छक्ताप] १ वस्र धवन। २ कवत

बस्थस्य रुक् [त्रन् + तमन्] १ क्रीचा

करता। २ ज्यार चेंक्ना। बह्नाता (है ४

१६) । सह. बस्थाहोमाण ( संद ६१ )।

वस्थायः तक [इन् + समस्यु] तास्त

करना, बंबाना । वह कस्म्याक्षेत्राण (राव) ।

इपिट (पर्≀ निद्≀)।

(**85**) i

रीमाठियत (दे र ११६) ।

(तम्म १४६ विसे २६ क)।

बस्यात देवी बऊस्रस्ट (हुना) ।

बल-विरोग (क्या)।

त्तवेता (महा)ः

बिट्रिए (शुग्र ४ €)।

वल्लु र् [उद्दल्त] मध्यम म्बन्ति (र्ययः)।

प्रमुद्द देवो चलका (हू १ १७१ महा)।

चक्र दि [आंद्र] धीना साथै (कुना दें)

c2) । स्थळ प्रियक्त केन बुनियाँका

सह सक [आर्रेष्] १ वेता करना याहे करना। १ वक मार्व होता। अनेद (हे १

२)। वक्र उद्धेत रुद्धित (नर्वत्र)। तेक्र

ecs त [दे] श्रह परना 'डो नं अलो

चस्ट्यक पून [चस्टाट] चन्द-विरोप (पिप)। चस्छासिश्र वि [चझमित] २ अँवा किया हमा उत्तर फॅका हुमा (दुमा है ४ 423 ) I बल्लासिय वि विस्वासित विवित्त (राज)। चल्क्यव सक [यत् + छपः , टापय्] १ वहना बोतना। २ वक्तार करता। ३ कुपत्राना । ४ वस्त्रकार कराना । वह-प्रस्थावंत, उस्लायेंत (न ११ १०) गा 214 4218 2 121) I चल्लाय दू [चल्लाप] १ शब्द धाराम (म १ ६)। २ छत्तर, जनाव (धोव १६ मा गा ११४)। १ वजवार विश्वत वसन । ४ प्रक्रि, क्यन (परम ७ १व) । १ संमापरण 'नक्लॉह् को न दीसर बेल समालं न होति उत्सादा। रियमार्ग∛ व दुए बलेइ से माजुर्स विरक्ते भ (महा)। उस्ताबिश्र नि जिल्ल्यपित्र । उनः, निपत्र । २ न. एकि., वयन (गा १८६)। उस्छाबिर नि [उस्छिपित्] १ बोलनेवाला भायक (हेर ११६ मुना १२१)। बल्यसम् वि [बल्सासक] १ विरुणित होने-बासा । २ यासम्बद्धनक (था २७) । चस्यासण न [चल्छासन] प्रियान (सिरि 238) I उल्हासि १ मि [उल्डामिन्] उत्तर देशी जस्सिति । (१ण्ये तहम १) प्रान् ६१) । उस्टाह नक [उन् + श्रापय्] नम करना हीन करना। का उस्टाइप्रेट (उत्तर et) : वस्त्रिअ वि [यू] कार्मात्त स्तानत (यर्)। उल्पन्नि विश्वाद्वती येता विवाद्या (पदा है र १६)। उस्सिम रि [दे] रे बीच हुमा, वाहा हुमा (उत्त १६ ६४) । २ क्यानस्य क्रमाह्ना रिया हुमा (श्रम्मस १२)। उस्डिप नम् [ उद् + रिप ] यत्नी बरता। रेर 'उस्सिपिजय व समयो इपानीहर मबुद्दर (रूप्टर )। बर्लिसीयय वि [वि] ब्रिंडिंग शाली विचा वस्तुटिम रि [वे] संबुध्य दुवस्थानुवस् EUI

'तह नाहिदहो पुम्नलपण्डेल सावप्रवारिका भरिमी। नहु निष्टुइ यह उस्मिविमोवि पियनयक्तक्तिहें (मुपा ३३)। एल्सिक न दि] दूरपेटित प्रयव पेटा (पद्र)। उल्लिमण वि [उल्लिइन्न ने स्परश्रक (पर उह्लिपण न [ उपसेपन ] अपनेप (पिड 1X ) ( उस्स्थिया सी [वे] रामानेय का निराता 'विवेयमा निवरीयममंत्रक्षणस्कोनरिविद्धक्षिया' (ह १६२)। उस्टिर वि [भा३] गीमा (बग्बा ११२) । उल्सिद्ध सक [ उद्द + स्मिद्द ] १ बारमा। २ याना मगल करना 'उनक्रमिडरिह्मपुरये हम रोरपर्यम्म एस्निह्इ' (दे १ cc)। एस्टिट् एक [ **इद् +** स्टिन् ] १ रेख

करता २ सिपाना । १ विथता । डस्टिक्ण न [उस्सेखन] १ म्प्लें (नुपा ४=) । २ विनेधनः 'बहुमाद नहुस्तिहर्खे' (≹ ₹ ७)ı र्वहिद्यि वि [अहिरियत] १ प्रमु विमा हमा (लावा १२)। २ विक्ता हमा, व्यक्तित (पाम) । १ ऐका दिया हुमा (मुना <sup>1 १६७</sup>) । १६६ प्रामु ७)। उद्भीक्षी [दे] १ कृत्यु (दे१ ८७)। १ र्यंत ना मेल 'बस्ली रंतेलु बुग्गंबा' (महा) । उरबीण वि [उपसीन] प्रच्यन युक्त (माचा २२ ६ ११)। उम्लुश कि चि १ प्रसान याने क्या हुमा। २ रक रैवा हुमा ( बर् )। उस्तुअ रि [दे उहत] धवय-प्राप्त (प्राप्त उल्लुझ रि [डस्स्न] र जदूनित । २ व. क्रमुमन (शाह**७**)। उस्तुं पत्र रि [इस्तुद्भित] ज्ञाहा हवा बर्भूतिक 'ब्रुहीरि ब्रुहेग्रिसमारा उस्मूबिया' (नुपायः) प्रदोध्य)।

स्याष्ट्रमा (दे ११)।

सस्तुर वि [उस्सुण्ठ] स्थ्मठ, स्वत (गुपा प्रध्यानुद ६ २१४)। डल्तुंड यह [वि+रेचय्] मरना टपनना बाहर निकसना । उल्यु डा (द्वे ४ २६) । प्रयो वह जल्लंबार्यत (दुमा) । कल्लाक वि दि द्वित द्वारमा (देर **2**3) 1 उल्लुख सम [तुद् ] सोन्ता। उल्लुसन (हेर ११६ पर्)। चस्लुक्तिञ्ज नि [तुकित] मोळि तोहर हुमा (ब्रुमा) । डस्सुग } श्री [उस्लुका] १ नरी निरेप उल्लुगा (विवे २४२६) । ६ उल्लुका नहीं के फिनारे का अवेश (निशे २४२३)। तीर म [कार] उस्तुका नदी के विनारे बना हुमा एक नदर (जिन २४२४) भव २६ ३)। पाँव भी किर से उत्पत्ति (उत्त १८१)। उल्लुह्भः [उत्+लुट्] भटहाता व्यंस पाना। यह 'तहिव य सा रामिनिधी उल्मुद्रैदी न दाइया दादि (उन)। **पस्लुट्ट** रि [दे] निष्या धनस्य भूठा (दे १ **≤ξ**) ι उस्लुस्ब र्द्र [दे] घोटा ग्रद्ध (हे १ १ ४) । उल्लुसिम वि [उल्लुसिन] चनित (ग उस्लुय देशी उद्धव = दर्+ नू । उप्पृतः चेत्र उन्तुविक्रण (प्राप्त ६१) s उल्लुद् सक [निम्+स्] शिरता । उन्यु--(E Y 7XE) 1 उस्लुटुंडिम वि [ब] उपना शिपान (पर)।

उल्लाबसाय म दि] पुनस्त्वान, को हुए हाय उस्टाद दि [दे] र मान्द (देर र पर्)। २ मा दृश्कि (२ १ १ उम्लुद सक [आ+रह्] बहुता। भनुदर् (प्राप्त ७१) । उस्लूर सक [तुइ] १ क्षोइना। २ नाध गला। उम्बूरु (हे ४-११६) दुमा)। उम्सर्प न [नाटन] धेन्त शएवन (ना 1 (225 उल्ल्ब्स्स वि[तुदिन] बिराधित 'दन्युरिय पद्मिनन्येनु (तानि १ : पाछ)। डाए दि [वे] स्थापूना उपलाब ननरछं हरियं बावं' (धोष ४४१ ही)।

प्रकार केता बनारण (धीन)।
प्रकार सक [ उप + कप ] प्राप्त होना,
नारण नवपुरक्तांति (प्रव १ ४)।
व भीनाम वि हो | रेसीनीहरा । २ वरितेविना । इसीन्त्र क्यापित (वे १ १६)।
प्रभार केती चयमार (वर्मने ६ २ वे)।
प्रभार केती चयमार (प्रमान १२)।
व्यक्ति १ भी [उपहृति] त्यानार (वे ४
प्रवृत्ति १ भी स्प्रमान (वे ४
प्रवृत्ति १ विष्रमुक्ति । जमान विरोध प्रवास वाह्य स्वास्ति (वे ४)।

उपपुरुष्ठ पूर्व [वपकुरुष्ठ] दूत नशन के पास ना नशन (पुरुष १ ४)। इपक्षमा की [उपकोशा] पुरु पश्चिका कोक्षा देशा की छोटी वहित (कुल ४४)। ज्वकोला की [उपकोशा] एक प्रसिद्ध देशा

(जा)

उनहाँ कि [उपफास्त ] र ग्रमीय में मानीय।

उनहाँ कि [उपफास्त ] र ग्रमीय में मानीय।

उपहाम नक [उप + क्रम् ] र ग्रुक कला

प्राच्म कला। र प्राप्त कला। र बातका

प्राप्त कला। र प्राप्त कला।

यनुवनम्प' (किने २२१) 'वा तुम्मे वाव

प्राप्त कला। 'विने प्राप्ती मानुव

क्यानम्प' (किने २२१) 'वा तुम्मे वाव

प्राप्त मानुव

क्यानि कि (महा) 'वेलीपकामें

ग्रम्मानि कि (महा) 'वेलीपकामें

ग्रमीयार्थि कलाई उनवहिम्प्रांति

ग्रेत वार्योक्यमं' (क्यू)। कह उनवहिम्प्रांति

ग्रेत वार्योक्यमं' (क्यू)। कह उनवहिम्प्रांति

(मिने ६२६०)।
ज्यासम् १ (उपारम्म) १ साएम्, प्राप्पनः १
२ प्रापित का मत्रणः चित्रणा स्वस्तपुर्वास्त्रणे
सम्मे ताच नरेन्द्रस्तस्त्रम् (ग्रापः १
३ १४)। १ नमी के यून ना सपुरनः
रिप्पारं १ मत्राः १)। ५ स्त्री सीसीर्णार्ड ना नारणुन्त्र यीन ना प्राप्तरिप्पारं १ मत्राः १)। १ स्तर्गानः
१ एत्र स्राम्म त्याप् स्वरूपने सीर्णानः स्वर्मम् (याव ११) स्त्राः १)। १ सूर्यम्यः
भाषां स्वार ११ स्तरः १)। १ सूर्यम्यः
सार्वास्त्र संसाना जन्मस्तिस्त्रस्त्रणे
इस्तरमो देण तीरम्म वर्षा ना स्वरूपने

बस्यु(रा४ २ सः २०४०)। व सम हवियार, 'सम्माहारच्येत उपक्रमेणं च परिएार्स (बम २)। १ ज्याचार (स २ १)। १ ज्ञान निरुवयः ११ बनुवर्त्तन, बनुकूस प्रवृत्ति (विशे ६२६ ६६ )। १२ संस्कार, परिकर्म 'खेलोबस्कमे' (मणु)। स्यक्तम पूं [स्पन्नम ] यनुष्टि कर्मों को स्त्रम में साना (स्पति ४०) । उबक्रमण न [सपक्रमण] उपर देखो (प्रणू चबर ४६ फिन ६११ ६१७ ६२१)। उदद्यसिय वि शिपक्रसिकी उप≉मधे सम्बन्ध रखनवासा (ठा २ ४ सम १४% पएस ११)। चवद्यास देखी स्वक्तम = बग 🕂 अन् । कर्म चयकामिण्यद् (विमे २ ६९)। रवद्यम सक जिप + क्रम ] रीपैदान में मोमने योग्य कर्मी को बका समय में ही भोगना । कर्मे, सनकामिण्यद्र (धर्मेस Eva) i दयद्यामण न [उपक्रमण] उपक्रम कराना (सावक ११७)। उपदामण देवी उबक्सण (विसे २ १)। उवकेस 🛊 [उपक्लश] १ वामा । २ शोह (एव)। **चयकताड** सक [उप + स्कृ] १ पराना रमीई करना। १ पाक को मसाले से संस्कृतिक करना । उपनक्षेत्र, उपनक्षिति (पि १११) । संक्र उदक्षमदत्ता (द्याचा) । प्रमो, सरक्ताशकेंद्र, उरक्ताशकिति (पि १११) रप्प) । संब्रः स्वत्रहायचा (पि ११६) । उपक्रमाड ) वि छिपन्कृती १ प्रवास चनकाडिय हिमा । २ महाना बगछ है संस्तार-पुत्रः प्रकासा हुचा (तिषु कः वि ६ ६ ४४२ उत्त १२, ११)। १ पून एमो है, पाक कियामदाणयाण्य वह प्राप्त उप क्यारे न कायम्बाँ (उन ११६ टी ठा४ २ खासार ६ मोच ४४ मा)। स्मिवि [भा] पक्षते परभी का कर्या एइ जाता है वह पूर्व बर्गेरह सम्म-विरोध 'बबल्पातार्थ राम पहा चलपादीलं उदस्त्रविद्यालं ने स निरमंति वे बंशपुवामं उत्रत्यदियानं भगगुद्

(निदुर्द)।

**उवस्ता**र पू [तपस्कर] **! संस्कार । २ जिस**से संस्थार किया जाय वह (ठा ४ २)। प्रवक्तमा पू [उपस्क्रत] भर का उपकरण सावन (मूपनि १)। **अवस्तारण न** [उपरक्षरण] क्रपर देखी। सास्य भी [ शास्त्र ] रमोई-बर, पाम-पुद्ध (निष्कृ १)। धवक्ता सक [उपा 🕂 स्या] कहता। कर्मः जनकाहरू वैति (सुम्र २४ १) भग १६ ३--- नव ७६२)। उयसम्या भी विपासमा] सानाम (मर्मेस ७२७)। **एवक्साइन् वि [उपस्यापशिन्] प्रतिद्धि** करानेवासाः 'घताएं उपस्ताइता मदद' (मूष२२२६)। उपस्ताइया श्री जिपासमाधिका । दगक्या भवात्वर क्या (सम ११६)। उपस्माण न [उपासमान] ज्यास्थान भवा (पत्रम वेवे १४१)। उपविन्त्रस्य वि [संपक्षिप्त] प्रास्त्रव कुरु किया हमा (मुद्रा ९३) । उपक्लिय सक [ उप+क्षिप् ] १ स्मापन करता । २ प्रमान करता । ३ प्रारम्भ करता । ज्वन्द्रिय (पि ११६)। उपकर्ताण वि [उपहीण] समन्त्राप्त (वर्गीव उवस्त्वअ पू [उपस्य] १ प्रयन्त स्थीय। र बनाय 'ए म्हामि वस्ति साहिए जो विशे उवस्तीमी (मा ६९)। सबस्तव पू [दे उपस्प] बाबोलाटन युएवन (तंदु १७) । स्पर्ग वि [उपरा] १ चनुवरण क्रेन्नेसा (छा २४३) धीप)। २ तमीप में वालेवासा (विशे २५६५)। ववगव्यः सरु [ ४प + गम् ] १ समीप में मानाः २ प्राप्तं करनाः ३ वारनाः ४ स्वीकार करना । उत्रयन्द्र (उव" स २३७)। धरमण्डीत (रि १०२) । वृष्ट् स्वग्रानिह कप (म ४४) । बबगणिय वि [उपगणित] विता हुमा वैकात परिवर्णित (त ४६१)।

उपगण्पिय वि [उपहरिपत्त] विर्यादत (म

631)

एयगम् देखो प्रथमसङ्ख्या मह स्वयमम (बिमे ११११) । हेरू उपरोर्त (निष् ११) । ल्बगय दि विकात १ शत प्रापा हुमा (मे १ १६० मा ६२१)। २ बात वाता हुद्धा(सम्बद्धाः प्रदूषः द्वावे १४४)। १ पूत्र, सर्ट्ड (राय)। ४ मान्त (यय)। ५ प्रवर्ष-प्राप्त (सम्म १)। ६ स्वीकृत, 'धरम्यायद्वपूर्णा, सन्तेष्टी वि धवन्या विक्ति (उपर १५) । ७ भन्तम् व सन्दर्गनः 'वं च महासम्पर्ग, पारित म तेमाणि प्रेमनुतालि ।

चरएप रकालुबीमो ति नामिकचे चरम्यान्डि (विशे १२६१)। धपगय वि [अपन्नत] क्लिस स्वरंगर दिया यमाही बहु (न २१)। उचगर कर [उप+कृ] दिल गरना। उस योगि (म २ ६)।

चचनरण न [उपद्रश्य] र भावन सामग्री नामा वन्तु (सोव ६६६) । २ वास धन्त्रिय-बिरेन (बिने ११४) । उपगरिय न [उपकृत] सपनार (कुन्न ४२) । उच्यास गर [उप + इस ] हजीप द्याला पान माना । स्ट्रा उपगासिका (नुस १ ४) । बद 'उपगर्मनं मॅनिना परिनोमादि बाबुद्धि। भोगबीने निवारे बहाबीट पहुच्चई (सव १)। उपमा भर [उप + मै] बर्लन बरना, स्पाचा

गरना गणपानगरना। गया उनगाइका मान उपिज्यमान उपयोगमान (धर मन ८ १३ स ६३) । चपगार रेगो उपयार=उत्तार (गुर २

41) उपगारम रि [ उपशासक ] जाकार करने-बन्ध (म १२१) । उपगारि रि [उपशारिम] कार रेखी (मुर

4 1(2);

उपगारिया भी [उपवारिया] शामाद मादि की पीर्रिया (सब बर्) । चर्चगत्र व [प्रपृत] १ कालार । १ रि

विसार एपनार निमा भवा हो वह (स 11 ( 377 **बब्**गिळ्माण देवी उपगा।

क्षपरिण्ड सक [उप+म**ड**़] १ उरकार करुद्धा२ पूर्विकरुताः १ प्रहरू करना। धविष्णाहरू (पि ११२)। उपगीय वि जिपगीय र बिल्ड स्मान्ति । २ त संबीत गीत गान वादमपुत्रगीय नद्रमधि मुपं विद्ठं चिद्रपुत्तिकर्रं (सार्थ 8 E) I

उपगीयमाण देखो उपगा। बबगृद्ध वि [प्रपंगृक] १ मानिह्नित (पा १११ स ४२०)। २ न पानियन (स्टन)। उपग्रह स≢ सिप+शुद्र ी १ व्यक्तियन करना। ९ पुत्र पैतिसे रमणु करना। ६ रचना भरमा जनामा । कनक उपगृहि व्यमाण (छामा १ १) मीप)।

प्रकार्द्धणान (प्रकारका) १ मानियन । २

प्रकारन-रहाल । १ रजना, निर्माण 'ध्यरह-

ए एट्टिएरिंह बानबरवत्रहरोड़ि व (तेर्)। उद्यगृहिय वि उपगृहाँ धार्तिनित (धारम) । उपगृक्षिय न [इपगृक्षित] नाइ मार्मिकन (पन १६१)। उवसान [इपाय] १ यद के समीप । २ मापाइ मार्च 'एमी विव नानी पुलरेन यर्ख चरामस्मि (दद १) । अपग्याद र्ष [अपग्रद ] १ वृष्टि, गौराल (जिने <sup>|</sup> रेबर )। २ जारार (जा रहण ही। स ११४) । १ बरुए जलाश्त (धीप २१६ ना)। ४ प्राप्ति कावरण सावन (ग्रीप उषमाद् दू [उपमद्] नानीय-सम्बन्ध (वर्षस 111) 1

उषग्गद्गः रि [उपमा**द्**क] कारतर-शास्त्र (रुनक २३)। इबर्माद्रञ न [उपगृदीत] जातार ( तर् **t**):

उषमादिभ रि [उपगृद्धित] १ जासारित (परान् २३) । २ महितनादि पेट्रा चरट निर्देश कारपरिएरि प्रवनश्चेति (तर्) । १ प्रशाहत (न १९६) । ४ शाहरिका (राम) । उपगादिअ रेगी आवगादिल (नेपर) :

रबनेवासा (स १२)। उपाधास व [हपोदात] सम्बन्धासम का वर्ष्ट्रम्य, भूमिका (विषे ११२)। क्ष्मायम वि [स्प्रमातक] दिनातक (वर्ष र्ष ११२)। धनपाइ वि [बपपातिम्] प्रपनात करो-बासा (बास ५७) विसे २ ६)।

उत्तरगाहि वि [स्पमाहिम्] सम्बन्धी समान

सबमाइम वि चिपमाविकी १ बपवात-कारक (विदेश है)। २ दिसा दे सम्बन रक्षनेवाचा 'मुग्रीवयाद्य्' (बीप)। सम्बद्धाय प्रविप्याती १ विरायना, स्वतंत्र (धोष ७८०)। २ धनुबता (ठा४)। ६ विनास (नम्म १ ६४) । ४ सप्टान (तंदु)। × दूबरे का अनुप्र-विन्तन (मास ४३) ≀ नाम व [ नामम् ] कर्म-विकेष विवर्षे धरव हे जीव अपने ही राग्तर के पत्रनीक नोरपंत रसीमी मादि भववरों से क्लेप पादा है नह नमें (सम ६७)। सबयावण न विषयातनी अपर रेपो (निमे २२६)। एक्षय तु विषययाँ १ विष (तर ६ ६) ! २ समूह (पित्र २ झोच ४ ७) । व सपैर (चार १) । ४ इन्डिय-पर्याप्त (पएए ११)। बचययण मं विषयवन दिश्विक्षः। २ परिनेषण पुट्टि(सम्) ।

उवचर सक [ उप + चर् ] १ देवा करना। २ ननीप में बुमना-फिल्ला। ६ साधी परना। ४ मनीय में खाना। ४ इन्दर्य करना । प्रथमस्य, धनमस्य, धनमस्यो जनवरीति (कृत् १ वि वेशक्षा अवदेश माचा)। डबकर सक् [डम+चर\_]ध्यतद्वार करता। पवनरीत (शिक्षा ६)। प्रवास कि [प्रवास ] । देश के विर ने इनरे के महित करने का शीना देगते-

भारा (तुस रु. २ २०)। र वृंबानून पर(भाषा२३ १ ४)। डक्चरिय मि [इएचरित] शनित (वर्तने 4×4) 1

व्यथरिय वि [उपचरित] t कानित नेरित बहुनातित्र (स.च.)। २ व उपवाध नेपा (र्थना ६) ।

करना । उद्यक्तिऐमि (६ ४४६) ।

**च्या समिक्तात (मग) ।** 

(पि ४६२)।

स्विष सक विष+ वि] १ इन्हा करना।

२ पुष्ट करता । स्विषित्स स्विषित्स स्व

क्रिएंति। मुका उनक्षितिमु । यदि उनकि-

शिस्ति (ठा२ ४० जग)। कर्मे उविव-

उपितृ सक [इप + स्या] उपस्थित होना,

वयविणिय देवी उवस्थिय (वर्गीव १ ६)।

**च्यपिय वि [ चपचित ] १ प्रष्ट,** पीन

(पराह १ ४ कप्प)। २ स्थापित निवेशित

सुनीर साना। छवनिट्ठे छवनिट्ठेन्या

(कप्प पद्मरा २)। ६ उन्नति (ग्रीप)। ४ म्पाप्त (धरण) १ १ दृढ वटा हुआ (साचा) । शबब्दा हो (उपस्पन्न) पर्नेट के पास की नीची चनीन (दी ११)। चयण्डं दिव (शौ) वि [धपच्छिन्दित ] धम्मांक्त (धनि १७३)। उपर्जगान वि वि] दीर्थ लम्बा (दे १ 224) 1 खबबा मक (एप + अन्) क्लब होना। सक्त्रायद (विमे ३ २९)। चयजाइ स्प [उपबादि] सन्द-विधेय (भिन्न)। चथजाइय देखो उपमाइय (याद १६) पूरा 11x) उत्रज्ञान वि [उपज्ञाव] स्त्रप्र (भुपा ६ )। उपजीय सक [ उप + खीव्] धामम मेना। धवजीवह (महा) । चयनीक्य वि [उपजीलक] काथित (मूपा 2 (2 ) ; चनकीति वि [उपकीषिम्] १ पामन वेने-वाला 'न करेड नेय पुरुष्ट निक्रम्मा क्रिय-मुक्जीनी' (क्य )। २ ज्यकारक (विसे २व र)। च्यजोद्द वि [उपम्पोदिप्क] १ मानि के समीप में चानेवाला । २ पाल-स्वात में रिकट कि इत्य बाद्या ध्यवीद्याचा धरमध्यमा वा सह संक्रियों (उत्त १२, १८)। चवळ धक [चन्+पद्] उराध होना। स्वरवृति (सूध १ १ १, १६)। चयञ्जल न [चपार्जन ] देश करना कमाना (Tt = tvr )

रुवरमन्य ) र् [उपाध्याय] १ धम्यापक चवबस्थ्य ∫ पेंडार्मेंबास (पर्जम ३१, १ पड )। २ सुत्राप्यापक चैन प्रतिको दी जाती एक पदवी (विसे)। चपश्मित्य वि दि । माद्यरित पुनाया पुना (चर)। स्थमाय रेखी स्वामाय (सिर्ट ७७)। सबद्रण देखी सम्पद्रण (सन्) उवदृष्या देखो उठश्रदृष्या (सम्। विसे २४१४ ਰੀ)। सबद्व कि स्थिएस्य ] एक स्वान में सबत सब स्पित (बब ४) । काछ प् "काछ । याने की बेला सम्मायम समय (वय ४)। द्धवट्टम प्रे [द्धपष्टम्म] १ द्धवस्थान (मन) । २ फ्लूफम्पा करहा (ठा २)। समहत्त्व वि विपस्तारम**े १ उपस्थित करने** योग्य । २ वर्त-बीका के याग्य 'निमत्त किन्ने छेहै व सब्दृत्या य भाष्ट्रिया' (बह ६)। रबहुद सक [सप + स्थापय्] पूर्व्ड से संस्थापित करना । जनहर्यति (मुद्ध २ १ २७)। चयद्व सक डिप + स्थापय है १ उपस्कित करना । ३ क्यों का मारोपण करना दीखा देना । उबद्रवेद, उबद्रवेह (महाः एवा) । हेक उपद्ववेत्तप (बह ४)। रबद्भवणा की चिपस्थापना र चारित्र निरोप एक प्रकार की भैत दीखा (वर्ग २)। २ किन्स में बढ़ की स्वापनाः विबद्धवस्मु बहुक्छा" (पंचमा) । **धबदूवणीय वि [ धपरभापनीय ] देखो** हपटूप्प (छ ६) । चवड्डा सक [बप + स्था] प्रपत्त्वत होता । **प्**नद्वाप्**का (मन)** । चबद्वाण ग [उपस्थान] १ वेटना उपवेदन (णावा १ १)। २ अत-स्वापन (महानि ७)। १ एक ही स्वान में विशेष कल एक खुना (वव ४) । दोस पू ["दोप] नित्यवात थीप (श्व ४): साक्षा की [शास्त्र] मास्त्रान-मर्ग्यन समा-स्वान (ग्रामा १ १)

निर ११)।

सबदाण न चिपस्थान मिन्द्रान, बाबार (संप १ १ % १४)। चपट्टामा 🛍 [एपस्वाना] क्सिमें 🖣न सांध्र मोग एक बार ठकर कर फिर भी शाब-निपिद-धननि के पहले ही मानर ठहरे वह स्वात (वव ४) । उबद्राय देवी सबहुत। उबहुतिहि (पि प्रदेद)। हेर चयहावित्तप्, धवट्टावेत्तप् (हा) । स्वद्वारणा <del>देशो</del> स्वद्वयणा (शृह ३) । उषट्टिय वि [उपस्थित] १ प्राप्त असमार मुबद्धियाँ (कत्त १२) २ समीप-स्थित (याव १)। ३ ठिम्पाट, उचत (धर्मे ३)। ४ षाधिक निम्मचमुबङ्गियो' (बाव सूध १ २) (४ मुमुस्, प्रधारमा लेने को ठैम्याछ 'उदद्विमं पश्चिमं संजय सुतदस्यियं । बुरकम्म बम्माभी भरिष्क, महामोद्ध पहुन्दर्श (सम ५१)। **टबठायणा केटो टथटूव ता (पैका१७३**)। चवडडिच् वि [सपव्डिच्] क्लानैशासा 'धर्माणकाएएं कावमुक्टीका मक्द' (सूच २ २)। उपिक्रम वि [वे] धवनत नमा हुमा (पड्र)। चवजगर न [चपनगर] चपपूर, शाखा-नगर (मीप) । डबजब सक [डप+नर्जैय] सकता साम भराता । समझ समाप्रीकासाय (मीप) । एकपञ्ज वि [बपनक् ] वटित (उत्तर ११)। दवणमधक [दप + नम्] १ ध्यत्यित करनावारवना।२ प्राप्तकरना। उत्र ग्रमद (महा) । महः चवणमीत (इत १३८ टी सूम १२)। द्यर्णामय वि [इपनमित ] हपस्यापित (चस्र)। चमजय वि [चपनव] अपस्वित (से १ ६६)। चवलय पुं [चपनय] १ ज्यसंहाद, इट्रान्त के सर्वे को प्रकार में कोइना हैनुका पक्ष में चपर्यहार (पन ६६ सोच ४४ मा)। २ ल्युति स्तामा (निमे १४ ३८ी पन १४ )। ६ संदान्तर नय (राज)। ४ संदर्भार-विशेष

क्ष्यनमन (स.२७२)।

चयज्ञय वृ [ उपनय ] स्त्रोपशीत संस्तादः एपहार, में (एम १२७)। द्याप्रमण न [दपनयन] १ छाईहार (वर १)। २ च्यस्मापन (पिकंप्रवर्)। द्यवस्य र जिपनयनी उपगढ-संस्कार यज्ञ-पूत्र वार्यत संस्कार (पर्यह १ २)। सविका देवी सवलीय (से ४ ११)। द्याविक्सित है (उपनिद्यिप्त) व्यवस्थानित (माना२)। स्विक्तिकेष पुरियनिक्यो वरोहर, रता के बिए इसरे के पास रका बन (बद ४)। चयाजगाम व जिपनिगैसी १ हार, बरबाबा सि १२ ६८) । २ छत्रवन वसीवा (वडह) । चव्जिगाय वि विपतिर्गती समीप में निकता हम्प (पीप)। रविभिञ्जेत देशी बचनी । रुपणिमंत सक [स्पनि + सन्त्रस्] निम न्त्रस्य देता । यति समित्रियविद्विति (सीप)। र्चंड- उपधिमंतिकण (स. १.)। च्याप्रिमंदण न विपनिमन्द्रणी विभन्तरा (वर ८६)। व्यक्तिवाद वं डिपनिपादी सम्बन्ध (वर्गरी YZ )I चवित्रविद्व वि [४पनिविष्ठ] समीप-स्वित एवजिसआ की [ हपनिपन् ] नेवान कर, वेदान्त-सूच्य सूच-विन्हा (शन्तुः ) । **दर्शगदा** की [इपनिया] मार्केट मार्केटा ((पस)। एयणिकि वृद्धी [प्रपनिधि ] र स्मीत म मानीत वरीहर(ठा ०)। २ विरवना निर्मोश (<del>40</del>) i नुमृजिहि पुंत्री (उपनिधि) करस्यापन समा-नत्र (मगु ६२) । दबर्णिद्ध मि [बीपमिषिक] १ उपनिब-सम्मर्गा। धाँकी [शी] बनरिसेव (कह २)। ददानि(य रि [इवर्नि(त] १ समीर म स्वारितः। २ सामग्र-निवतः (तुमः २, २)। म र्र दि तियम विधेर को पारल करते-बाना बिग्न (नुम २, २) ।

चवणी सरु डिप + ना दिसमीप में नाता उपस्थित करना । २ वर्षेण करना । ६ इक्टा करता। धवर्णेति (उदा) उदग्रीमो । भवि प्रस्तेतिक (पि. ४३१) ४०४ १२१)। क्यक स्विधार्थन (से ११ १६)। संक धि मिल्हुलो ब्रव्योचा फ्लेमें (सूच २ 1 () ) सम्बोध न स्पिनीन उपन्यन (ध्रेष २१७)। वयज म विवनी प्रशंता-नवन (भाषा २,४११)। छवेणीय वि [उपनीत] १ समीप में सामा हमा (पत्थः महा) । २ प्रक्रिय ७१होनिय (भीप) । १ सम्बद्धक अस्तृत्व (विसे ६६६ टी, भर्द) । ४ प्रशस्त स्ताबित (बाबा २)। वरय पूंिचरको ध्रमिषक विदेष को बारल करनेवाना साब (धीप) : डवण्यस्य वि [ हपम्यस्त ] स्थयस्त प्रम बीकितः पुनिवालीय उक्त्यात्वं विविश्वं पारा-कोमर्गा । तुत्रमार्ज विविधिकः (दत् १ 1658 च्चण्यास प्रे चिपन्यासी १ वाक्योपक्रम प्रस्तादना (अ.४)। २ श्टान्ड-विशेष (इस १)। ६ रचना (समि ६४)। ४ छन प्रदीप (बयी २२)। धववस न [सपवस] इस्त-तम नी भारों सीर रा पारबंधाय (निष् १) । चनवान पु [चपवाप] सन्वाप वीहा (नुम एक्तानिय वि उपतायिती १ गीवित । २ क्क विया हुमा वस्त्र विभाइमा (सुर १ २९६ पण्)। पनच नि [चपाच] मुद्दोत (परन १८, ४८) gt tr tt ) i वक्तवड वि [उपस्तृत] कार उपर मान्द्रा रित (भर)। वदस्थाम देवी उवट्टाम (रवति ४ ११)। उपस्थाणा देशो स्पट्टामा (पि १४१)। बपरिषय रेवो बबद्विय (तम १७)। दवस्य तक (दय + स्तु) स्तुति करना रतावा करना । चनप्पुत्ति (पि ४१४) । बरत्पुर्वीर (ग्री) (बत्तर २२)।

चवः स सङ्घाष्ट्रप + दरौष विकास बतसाना । प्रवर्षतङ् (कृष्यः महा) । प्रवर्रतिर्म (बिपा १ १) । सूबि उबर्वेगिस्साबि (महा) । बहु- सबर्वसेमाण (हवा) । क्वह ध्यदंसिकभाण (शाया १, १३)। रह-चवर्रसिय (पाचा २)। रुपर्मा पूँ [उपर्याः] १ रोप-विदेश सर्गी सुजार । २ धनबेड, मान्या (मार ६)। एक्ट्रंसण न (एक्ट्रोन) विश्ववाना (वह)। कृष्ठ पूं किटी नीमार्गत नामक पर्वत ना एक विकार (का २ ६)। एवर्डसिय दि प्रिपर्दाशनी दिननामा हुए (सपा १११)। चवर्षसिर वि [ चपद्रित् ] दिवसभेषता चन्त्रं सन्तु वि [उपदर्शयित् ] विवासनेतामा (ft 11 ) i रुपद्द पुंडिपद्रवी अवस व्योदा (महा)। रुपदा औ [सपदा] मेंह, रुपहार (रेम)। द्वा औ दिवक्तायिक्री पानी केरेली? 'पाउनबार्ड च ब्ह्रालेबबार्ड च बाह्रिएपेनस-कारि ठवेति (शामा १ ७)। क्ष्मदाव्य न शिवदानी बेंट, नवराना (पनि) क्यदिस सक जिप + दिश ने जनस्त देना। प्रविश्वद् (रूप) । **स्वरीय न दिने हो प्रस्तर शब्द हो**प (दे रै बक्देसग नि [उपब्राङ] ध्यास्त्राता (मीन)। चवर्मसभक्ता देखी बचयमण्या (विवे १६. 14): चपर्सि वि विपदेशिम् । इत्रोसक (बार बबदेही 🗱 [स्पर्वेदिका] युप्त बन्दु-विशेष योगङ (दे १ १६) । टनर्य तर [४प+४<u>]</u>] प्रशास करना उत्तम नवाना । प्रवि, ज्यवद्यविस्ताः (नहां) । **च्यह्य रेनो प्रया**व (ठा १)। चबद्दमा न [उपदूषमा] प्रवाद करता जा सर्वे नरता (वर्षे ३) । च बद्दिय वि (उपकृतः] वीदितः सन्भीत क्या हुमा (बार ४ विके ♦६)।

**धवत् तुःअ--**उवयारण त्तवर्दुअ नि [उपत्रुत] हैरान किया हैमा (भत्त १ ६)। रुवभाष वृ [स्पमातु] निरुष्ट मानु (संबोध **44)** 1 सवधारणया भी [सपधारणा] धनप्रस्कान (संदि १७४)। सवधारणया भी [उपधारणा] बारणा बारस करना (ठा ८) । श्ववारिय वि [स्प्यारित] वारण किया हमा (मध)। चवर्तद् पु [उपसम्द] स्वनाम-स्मात एक सैन मुनि (कष्प)। सवर्तद् सक [यप + सन्दू]समिमन्दन करना। क्षक्र. एवनेविद्यमाण (क्य)। एवनगर देवो उवनगर (पुत्त २ १३)। चत्रतयर देवो चयणसर (सुपा ६४१)। उपनिक्ञित्त देवो प्रवणिक्तित्त (क्स) । हवतिकतेष सक [ सपनि + भोपम् ] १ वरोहर रक्षमा । २ स्थापन करमा । 🗫 उद-निक्छवियक्य (क्षः) । स्वित्ताम रेखो स्विजनाय (लापा १ १)। स्वितिबंधण न [उपनिवाधन] १ पंत्रसः। २ वि संसम्बन्धि (विसे १६३६)। स्वतिमंत देवी ववणिमंत । ध्वतिमंतिः, श्वक्रिमंदिमि (क्स स्वा) । **एवनिषद्ध** वि [स्पनिषिष्ट] समीपरिकट (सव २७)। क्यनिद्धिय वि [अीपनिधिक] देवी उपणि-हिय (पएइ २१)। स्वमत्य वि [स्पन्यस्त]स्वापित (स ३१ )। चयनास पू [त्रपन्यास] लिवेबन (बस्ति १ दर)। उदारपदाय ) न [बपमदान] नीविनियोप एक्टमयाण ) दान-नीति समिनत भर्म ना दाम (विपार ३ छामा १ १)। बबरपुर वि [स्पय्तुत] अपूत भग से व्यास (एम)। हवर्मुत सरु [ उप+सुज् ] उपमीन करना, भाग में साना। वनभूनश् (पड्)। वहः स्वार्जित (स्पष्ट १०)। स्वष्ट सम्बद्ध अर्थ क्पमुख्यंत (वे ११ पुर ८१६१)।

रवर्गुज्ञण न [सपमोजन] रूपमोप (मुपा ₹**६)** । उषभुत्त वि [४५भुक्त] १ विसका उपमोप किया हो बद्ध (बन १) । २ मिक्टर (उप प्र **१२४)** । डवभोअ ) पूँ [डपसोग] १ भोजनातिरिक डवभोग ) भीग जिसका फिर फिर मोग किया षाय रेसे-वक्र-गृहादिः 'दबमीगो च पुर्शा पुर्शो उबदुज्ञा मक्लबलयाई (उत्त ३३ समि ३१)। २ जिसका एक बार भोग किया वास बहु, बरान पान वयेरहु (भग ७ २ पडि)। चयमोग पुं[उपभोग] १ एक बार भोग मानेबन । २ प्रन्तुरंग भीत (धावक २०४) । ३ भारण करता (ठा ४ ३ टी--पत्र ३३८)। उन्भोगा ) दि [उपभोग्य] उपभोग-योग्य एवभोद्य ∫ (सर्वे द्वार १) । डपमा भी [उपमा] र साहरव हरान्य (प्रणु **स्वाप्तसूरे**२)। २ सला (ठारे)। ≹ वाच-पदार्थ-विशेष (जीव ३) । ४ प्रशास्ता करए पुत्र का एक तुस धान्ययन (ठा १)। ४ प्रसद्धार-विशेष (विशे ११६ टी)। ६ प्रमाण-विदेय स्माम-प्रमाण (विते 🗫 )। ध्यमाग न [उपमान] १ इप्रान्त साहत्य। २ जिस पदार्थ से उपना की जाम बहु (दसनि १)। प्रमाण-विशेष (तुम ११२)। उदमाख्रिय हि [ उपमास्टित ] हिमूपित, पुरोगिता 'भगवामयपश्चितः कुवनयमान्नोवमानियपुर्दं च। क्यासमयपूर्यत्वकतं विसद्धतं पासप् पुरुषो (सुपा ३४) । स्वमिय वि [इपमित्र] १ जिसको प्रपमा की

(पुरा वेश)।

धवसिय वि [वपसित] र नियक्त प्रपास दी

गई हो वह । २ नियक्ती उपसा दी वई हो
बह (याप्य)। ३ न क्या, कारत्य (विधे
६८१)।

ववसेल वि [प्रप्तेय] क्या के सीम्य (वै
वह)

ववस ई [वि] हावी को पत्रकृते का पत्रस्य
(याय)।

ववस वै वि] सामी को पत्रकृते का पत्रस्य
विश्व वेशों सोहय। वहु कुम्मेंस (क्या)।

दवपर एक [उद + कृ] इसकार करना दिए ।

रुवय (भाग) देशो सन्तय (भाषि)।

करता । वनगोर (स्या) । इ. वनगरियव्य (पुणा १९४) । धनयर घक विष + पर् ] १ मारोप करता । २ मिंक करता । १ क्यनता करता ४ विकि-रक्षा करता । धनक व्ययरिकार्य (मुगा १७) । वनगरण न विषकरण] सामन सामग्री भाग करोकपार्य एक इ. एकि वि साम्रिय सुगर्

(काम २१ गवड)। २ उनकार (सत्त ४१

दो)।
उत्तमिति विष्णाद्य] १ उपहरा। १ उप
कार (नवा १)।
क्वामिति विष्णादि] मायेपित (निये
२०१)।
व्ययस्म को [चम्पासिक] माथे (जर द

समया सक [उप + या] समीत में बाता। जनवाद (सुम १ ४ १ २०)। जनवीत (मिंदे १४)। जनवीत जिल्लाम् स्वादित है प्राप्तिक सम्ब-स्वादा २ न मनौदी किसी समा के पूर्व होने पर निशी देखा की किसे सारक्षा समानी का मामधिक स्वाद्य (सार्य १ १)। स्वयंग्य न [संप्यान] समीत में मान शुम्र

१२)। द्ययार पुं[दपस्तर] मनादै दिव (उनः गरकः समा १०)।

नवार क्षा रहा।

प्रचार है जिपचारी र पूजा वेशा धारह,
मक्षि (ध ३२ प्रति ४)। २ विश्वतका
कुमूमा (२वा ६)। ६ तप्रास्त्रा ताक्यतिक विशेष सम्प्रारंगा को तेषु समस्यको हो।
विशेष सम्प्रारंगा को तेषु समस्यक्षा ही।
स्वाहार, मिश्रव होणोजस्याकुमते (विगा १ २)। ६ कस्यता 'चस्यारसी विशस्य विशिष्ट मन्त्री हिस्सी निर्म (विशे)। ६ साक्ष्य (साक्ष्य)।
स्वाह्म हिस्सी निर्म (विशे)। ६ साक्ष्य स्वाह्म (विश्व विश्व विश्व क्ष्यास्त्र)।

उत्तरारण न [स्पन्नारण] धम्मन्तारा जानार करना 'स्वयारणपारणामु निराधो पर्वति धन्तो' (पर्वतु २,३)। ४श सूना ११ मन है २ १६३: सम २२

१ इति किमिम्सी अगर की

वासा (वस्त व दी) ( दववारि वि [ दपकारित् ] प्यकारक (त २ व्यासिक २३ विने ७१)। क्वबारिम वि [भीपचारिक] स्वचार हे र्धवन्य रक्षभेगासा (उनर १४) । स्वयासियु (बपवाखि) १ एक मन्तक्ष्य पुनि वो बसूबेन का प्रव का और जिसने भनवान योतीयनाथजी के पाठ होता चेकर राजुक्य पर मुक्ति पार्दंभी (भौत १४) । २ समा धोरिक का इस बाम का एक पूत्र किसने मयवान् महाबीर के पाध बीचा बेकर अनुसार विमान में केन-पति प्राद्य की की (क्यू १)। बबरह की [सपरवि] किराम निवृत्ति (विसे **२१७ ३३६४** ३ सम् ४४) । त्वरंब एक [तप+रक्ष] प्रस्त करता। वर्ष जनस्वर्ष (शी) (पुता १०)। बबरग केवा ब्रोजरय 'क्यरकान्द्रिए क्छक-बंबचेत् विकासान्त्रं सारकेस्ट्रिएस विद्र त पुम्बर्गर्राज्यवेद्भियः (स्वा) । प्रवरच वि [क्ष्यरक] १ महरक राव कुछ 'कुमख्यकेनुबरता' (धुपा २३६) । र राह से

वबरम क्ल विप+रम् ने निवृत्त होता विद्या क्षेत्राः, 'मी उत्तरमम् एकामी धमुक्रम्म-नवान्त्रसी' (महा) । एकरम दूं [कपरम] १ लिक्सि विधन (उप १ ६३) । २ नात (विधे ६२) । वशरम वि विपरत रि विस्ता निवृत्त (माना मुना १ क)। २ मृत (स १ ४)। **चवरमं देवी एवरगः 'स्वरमम्मा वार्' विद्वित्त**ण विधि पूरामुर्राठी विदुष् (महा)। रशरह (बर) देको अव्यक्तिय [वे] (पिय) । डबराग । पृष्टिपराग । पूर्वे मा बन्द्र शा उत्तराय । बहुत स्मृत्यहरा (शस्त्र १ र मे ६,३६ स्बर्धाः)।

उबस्य र् [उपस्त्र] हिन, 'तमोबसर्व सर

वनरि व [क्यरि] समर, अर्ज्य (क्य) । मासा

भी [भाषा] इरके थोलने के मनन्तर ही

निरोध बीलमा (परि) । स सरा सम

क्रिमी महिवसमें एक्स बूंबे (माबा)।

बसिय (पाम) । ३ म्लान (ब ४७३) ।

वरक (भूमा २६६)। टबरि उमर देवी (दूमा)। चव रेतम देनो उपरि-म (बमॉन १४१)। दवहम सक [दप+रुप्] १ सटकाव करता। २ पड्डम बाबना। १ प्रतिकत्व करता रोकता। कर्म स्वरूपमद् स्वरंगिण्यह, ( Y 2 Y4) 1 चवरद पूँ [बपस्त्र] तरक के बीवों को धुन्त क्रेनेवाचे परमावार्मिक देवों की एक माठि 'बहोनवह कान म, महाकाते ति नावरे' (सम २ )ः 'मंबंदि धनमंपाता अञ्चाहित যায়ে কংলংলো। কবাঁরি ক্লান্তীট্রি চৰবরা पावकम्भरमा " (सूम १ १)। उवस्का वि [चपरुक्क] १ र्यक्त । २ प्रविस्त, धवरङ 'पाधरवपगुह्नोरोनग्डवस्त्रभन्तस्त्रार्स् (सार्व १८८ ज्य दू ६ वर्)। धवरोह एक [चप+रोमयू] सङ्ग्रन शननाः इ- अवरोड्डणीय (तुब १ ४ )। चवरोइ इ विषयोगी १ सहका नावा (बिस १४१६) स ६१६): 'नुमोसचेहचीहच्' (भाव ४) । २ मटकाद प्रतिकल्य (बृहु १ स ११)। व वेस वन्त्र मादि का सेन्य हास बेह्ना 'क्वरोड्समा शेख स्पाध्यो पुरमस्तव पानाये" (बृह ६) । ४ मिर्वन्य यासङ (E XX ) ! बबरोहिम नि [चपरोपित] निस्ती प्रारोप ---निर्मेल किया पता हो वह (द्वार १६६) Y () Y दनग्रीहे नि [दपरोधिन्] उपरोप करने शला (यात्र ४) । वबस्र पुं [वयस् ] १ शक्या पत्नर (प्राप्तू १७१) । २ टॉकी वनैया को संसक्त करते बाता पावाल-बिरोप (बन्ल १) । क्षप्रम्मम पु (कपसम्बन) बाँदन (सिंदर) वाताएक प्रशास का दीपक (यनु)। दबर्धम तक (क्य + क्रम) १ प्राप्त करन्त । २ भागमा । २ क्याप्तादेशा । कर्न,

ववपारय- तवस्र हु क्लानंत्रिण्यद् (पि १४१)। वह- स्वतं मेमाण /हाका र र ≠)। क्षत्रक्षेत्र पूं [चपक्षम्भ] १ नाच प्राप्ति (नुश ६) । २ ज्ञान (स ६३१) । ३ च्लाइन्छ 'एर्न क्क्ष्मतंत्रे (उप ६४= धै)। प्रवर्तेस देवी। स्वाईस ≈ उपलस्म 'उनर्त-क्यम्य नियानकै नाहियनाई वि वसमें (बस्मिर घर)। एक्फ्रेसच न [क्पसम्भन] प्राप्ति (स्वि 28 11 स्वर्कमणा को [१पछन्मना] स्व**रा**ष्ट 'बएसं सत्यवाहं वहाहि सेरमखाहि स स्टलानि य पत्रतंपाहाहि म सेलमाद्या य रटमासा व इवलंबेमाछा य बर्ग्सस एक्सर्ट रिवेडॅविं (खामा १ १व)। दवस्थल सङ्ख्या (दप + स्टब्स्य) जलमा पर्वत्यानना । अवसम्बन्दे (सद्धा) । वैष्ट-स्वसन्देशका (महा) । 🖫 समस्यानसम्ब (**छन प्र ⊎**)। त्रवस्त्रक्ष पूँ (वपक्रक् ) बल वन्द्र मान्<sup>वा</sup> वितारं प्रत्वतक्षं स्वतारं क्क्क्क्स्ट्रा<sup>म्म</sup> (इप १२६)। रुप**क्रम्**सण न [बयद्यमुख] १ प्रदेशा (मुपा ११) । २ सम्यार्वनोषक सर्वित (**41 4** ) i वषसक्तिम वि [नपस्तित] १ परिणाना हुमा परिचित्र (शा १२)। त्रवस्तरम् वि [चपक्रमत] बर्माक्का स<sup>ावा</sup> 'परमिशिपत्तेवकायनसमिक्तिकर्ताकर्त (क्ष्णा

स्वस्तः वि [तपस्त्रम्] १ प्राप्तः १ विज्ञातः

'बह बच्च' पुत्रमञ्ज बह क्या माविधी

जनकोश्च (क्या सामा १ १३ १४)। १

बराबक्य जिबको अवज्ञाना दिश दश हो गए

**चवक्रीद्व क्षे** (उपस्रविध्) १ प्राप्ति साधः)

त्तवर्धात्म देवो धवस्त्राः 'अत्तरतबुद्धिमस्त ने

मस्बपुरवद्वियं वा तुर्ग मनिवस्त 🖫

वबस्त्रपुत्र वि [बयक्क्यू] स्रहण वरतेवाराः।

(दप ७२⊏ टी)।

प बाल (विसे २ १)।

माननेपाता (विशे ६१) ।

) क्या दि] वक्या

समस्य सक [सप + स्टस्] भीदा करना

एक्टडमान [के] मुक्त मेहत (के १

रुपस्द देवी प्रक्तम = रूप + सम्। र्गङ

उपस्यमगा । (देश रेर )।

(PI XE ) 1

चवस्था चा

**११७)** 1

(खाबा१ ६)।

रुपस्रहिय (स १२) रुपस्रहिसम (स 48 ) I **ध्यक्षासक [उप+ब्स] १ वर्**ख करना। २ मामय करना । हेड्ड. स्टब्सार्ट (वद १) । सब्द्रिके केवी सब्द्रि । सनतिहरूमा (माचा २ १ १ २)। **टब्**किंप एक [धप+स्टिप] शीपना पोतना । मर्थि ज्यन्तिपिद्विद्य (पि १४४)। चवक्किंप एक [ धप + सिप् ] पुरवत करता: 'बचारां को छ सीसारां बीहरर क्वलिपए' (क्च्च १ १६)। रुवक्कित वि [रुपक्किम] भीता हुमा पोता हमा (साया ११)। बब्धीय देवी स्वस्त्रीय । बब्रुक्क वि [वे] समय्य मजा-पूर्व (वे १ ₹ b) i दबहोब प्रदिपक्षेपी १ क्षेपना । २ कर्न-बल्ब (मीप) । १ श्रेरतेप (माचा) । ४ बारटेप (तुम १ १ २)। बवलेबण न [बपलेपन] क्रपर देशो (क्रम ११ ६, लिइ १ घीम) । रुक्केबिय वि [रुफ्केपिठ] नीपा हुमा, पोता हुमा (कम्प) । हबस्रोम एक [हप+स्रोमस्] नातव देना, लोग दिखाना । एक एक्स्प्रेमेऊण (मक्त) । बबस्रोहिब वि [बपस्रोभित] जितको सालव की यहँ हो बहु (क्य ७२८ ही)। स्वस्थित सक [स्प+स्मी] १ ख्ना स्वित

**स्ववसम्य न (स्पबसन) स्पनास (सुपा** करता। २ धायम करता। स्वतितयह (पि स्वस्था देवो सम्द्रीम=३प+सम्। वर्षः १६६ ४७४) 'तथी धैनयामेव बासावार्स 1 (35) सवस्त्रमंत (पि ४३७) । संझः सबस्यम क क्रिक्टियाँ (माना २, ३ १ १ २)। चववाइय वि [कीपपादिक, कीपपादिक] ववस्क्रीय दि [चपक्रीन] १ स्थित । २ कक्रम १ उत्पन्न होनेवाला 'ग्राटन में मामा स्व प्रकारन-स्थितः 'काङ्गोला मेट्रायमम् विराग बाहर, मरिय में प्रापा जनगहर (प्राचा)। वेंदि (माचार)। २ देवसम या बारक स्म से उत्पन्न होनेबासा विकास करमा । कम्कू समस्प्रदेश (महा)। स्ववद् पूं स्थिपति । भार (वर्गीव १२८)। प्रमो वक् सबस्यस्थितामाण (एएमा ११)। स्ववद्य सक [सप + पद्] १ स्टब्स्य होना । २ धेगव झाना मुक्त होना । सबबद भनि स्ववन्त्रिहरू (भगः महा)। वक्-स्वयस्त्र **रुपद्धक्तिय न [रुपद्धक्रिय] क्रीश-वि**रोप माण (ठा४) । संद्रः । धवप्रक्रिका (मग १७६) । केइ- एवयक्विट (सूम २१) । चबवक्रण न चिपवक्रती स्मान 'भएनंत्रसो वयम्बर्णामङ् नामङ् सम्बर्धगनामामौ (सुपा vet) i धववज्ञमाण देशो सवदास = छप∤शादम । चनवरमः नि [चर्यनाद्य] सन् भाविका नक्सम — मधान सेनापति स्त्रीय (इस १,२ ४)। **उवक्रमः वि जिएवाद्य**े प्रवासः व्यक्ति का प्रवान बादि को बैठने योग्य (क्स १, २,१)। टववट्ट सक [ टप + इत् ] च्यूत होना, मरना एक मति से पूचरी मित्र में जाना। उनकट्ट (घर)। वक्क धववट्टमाण (घर)। एक्वण न [सपदान] वनीचा (स्रामा १ १ बरुष)। टबवण्य वि [टपपझ] १ उत्तम, 'उववर्गो मासुधिम्म बोनिम्म (उत्त १)। २ स्रवत पुरु (पैचा ६ उपर ४७)ः ६ प्रेरिकः 'जनवर्गको पानकम्मुला' (उत्त ११) । ४ स. क्षिति कल्प (मन १४१)। रुवदत्ति की [स्पपत्ति] १ उत्पत्ति कम (ठा ३)। २ युक्ति न्यास (पजन २ ११७) स्वर ४१)। १ विषय । ४ संसव "विस्तृति बाधेमङ ति था चनव ति ति वा एयद्वां (मापूर)। संबद्ध वि [ बपपच् ] उत्पन्न होनेशाना, 'बेबसोकेन बेबताए जनवतारो मनति' (मीप' छ। ≼)। दनकम देवो उजवप्रभ (मगःदार शःत रेरेचा रहर) । बववयण न [धपपतन] देवी बवबाय = उपपात, 'जनवन्त्रं उनवाची' (वज्जा) ।

(पर्याद १४)। टबबाय सक [टप + पाइयू] संपादन करना सिद्ध करना। उपवायए (उत्त १ ४३ वस ६ ३३)। स्वकाय 🖠 [उप + वाद्य्] काच क्याना । करक सपन्यामाण सनवज्ञमाण (स्पर राम)। रुपवाय पूँ [स्पपात] १ देव या गारक बीव की छराति—कम्म (कम्म)। २ सेवा भारत 'धारागेवनायनयणनिहेसे निद्गति' (भव ३३)। १ विनय । ४ माजाः "उपवासी शिहेसी माणा विख्यो य होति एपट्टा (वस ४)। ५ प्रावुर्भाव (वर्ग्य १६)। ६ जनसेपादन, संप्राप्ति (निष्कृष) । इत्य पु विद्रस्यी साम्बाचार किरोप पारर्वस्वी के साम रह कर संविग्न-विहार की संप्राप्ति (पेषमा)। य वि **" स** वेद या नास्त्र गति में उलाना भीव (भागा)। **धववास पुन [धपवास] प्रावास प्रनाहार,** विम-रात मोजनावि का बमाव (उवार महा) । उवधासि वि [एपवासिम्] विस्ते उपवास किया हो वह (पदम ६६, ६१; सूपा ४७८) । उववासिय वि [डपदासिड] चपवाद दिया हमा (कवि)। **एक्विभ देवो एक्बीभ 'धर्मान कुम्म**को क (? व) विघो (धर्मीक **द)** । चवविट्ट वि [तपविष्ठ] वैठा हुमा निष्क्छ (पादम)। स्पनिष्णिगाय नि [स्पनिनिर्मेत] स्वतः निर्मेत (भीव १) : दबबिस पद [ हप + विञ् ] दैउना । धव विसद् (मदा) । संब्रः सम्बद्धिक (स्रि **१**व) । व्यक्तिसण न [सप्येशन] बैठना (दुनक्र)। चववीस म [क्यवीत] १ सक्यून क्रोड

<b>₹</b> ⊏>	पा <b>न्</b> अस <b>इमइ</b> ण्ययो	त्वबीडत्वसाम 
(शाया ११६ मनड) । २ वि सहित पुळ 'गुण्डंपनोवनीयो' (विधे १४११) । स्वयाक स [स्पपीक] अपार्वन 'विधिको क्वीड सामिनसेल गार्ड पीडियो' (रंगा) ।	पीत (तुम १ ६ वर्ष ६)। २ नट मयनव 'करवंतरब' करेंबुं (एव)। ६ वृं एरनव क्षेत्र के स्वताम-बन्ध एक वीलैक्टरनेव (वन ७)। मोद्द्र वृं [मोद्द] नमायूका इल-स्वानक	छत्रसञ्ज्ञ न [सपसर्वेत] १ व्यवन्त, नेज (विते २१६२)। १ छत्रत्य (विते १ १)। छत्रसन्त नि [डपसन्तः] विकेष मार्जनवास (छत्तः १ )।
हबबूद्धक हिए + बृंद् ] र प्रष्ट बरणा। २ प्रदेश कला ठारोज कला। सहर बत्बबूदेकण (बर्गत १)। इ ठवेबूद्देयका (ब्सति १)। बत्बबूद्ध न [बस्बृदण] र बृद्धि, पीरण	(एम ६)। बनसीत की [उपशास्ति] उरस्य (याना)। धनसंसारस नि [उपसंघारित] धंकस्थित (नित्र १)। उनसंस्थल [उरसं + पद्] १ समीप में भागा। २ स्थीकार करना। ६ मान करना।	वत्तसह वृ [वपराष्य] दृद्ध-प्रमय का राष्य (तृहु)। वत्तसह तृंग [चपद्मवह] १ प्रम्बय राष्ट्रः। २ समीप का राष्ट्रः (तृहूँ हूँ)। वत्तसप्य एक [बप + सूप्] समीव बाता। सृङ्ग मद्यारिपकार (सहा स १९१)।
(पर्यह २ १)। २ प्रतंशा रसावा (त्या २)। वचतुह्य की [यपपृदा] अगर देवोः जवहृद्द विरोक्त वचकारमामचे मुट्ट (परि)। वजनुद्दविचा वि [चन्युद्दविचा शुट्टि-कर्षा (तिष्क्ष )। की युट्टिन्केग राजा नेतिह्य के मोजन-समय में उत्सोव में सानेतामा सुन्	जनसंपम्बद (घ १९१)। वह जनसंपद्धतः (वन १)। चैह उनसंपद्धिता स्वसंप द्धाः साजं (कपा उना)। हृदः उनसंपद्धितं (वह १)। स्वसंपण्य वि [स्वपसंपम्य] १ प्राप्ता । २	हवसिष्य वि [चयसिष्य] ह्योप में बाने- बाला (विषे)। ठबकिष्यय वि [इपसिष्ठ] पात क्या हुपा (पाप)। दवसम पूं [उप + रामः] १ कोष-पाँठ
(निष् ६)। उबदृद्धि नि [उपपृद्धित] र बुद्धि को प्राप्त कुछ (वे रेश)। र प्रतिष्ठित (उन द ६८१)। बबदृद्धिर कि [उपपृद्धित् ] र पोपक पृष्टि बारक। र प्रतिक (इछ)।	क्सीपन्त (वर्त के)। त्रवसंपवा की [कपसंपव्] र ज्ञान वरैपद् की माप्ति के लिए पूचरे प्रवर्धि के पाछ बाग्य (वर्म के)। र मध्य युव माप्ति की छत्ता वा स्वीवार करना (ठा के के)। व नाम, माप्ति (क्ल. २६)।	होना। २ राज्य होना ठंडा होना। ३ व्य होता। जबतमह (कप्प कस्त महा)। ४ त्रवसमियक्य (क्प्प)। प्रयो, ज्यवनेह (विमे १२ ४), जबसमावेह (वि ४४२)। इ. तर्व समाविष्यक्य (क्प्प)।
छबबेय वि बियेत] दूध, सहित (सामा १ १ सीन बगू, मुश्री १४ विने १११)। स्वसंक्रमा सक [स्वसंन १४ कम्] स्वीय स्थाना। कर स्वसंक्रमत (क्षण ५,९१)। स्वतंत्रक सक त्यसंक्रमी (क्षण) क्रामा। क्षण उत्संत्रक्षिणमाण (सामा	चनसंद्रा सक विपर्ध + ह्या १ हटाना दूर करना । २ घरेसक, समेग्याः 'ता वस्तंद्रार इमे कोव' (क्रुप २००) । सक् 'वसस्द्रिरित कोनेलेकमार्थ मधी जाव (क्योंक १०) । बक्संद्रिरित कि [स्पर्सहत्त्र] समेग्र हुया	वशसम ( विश्वराम) १ क्षेत्र का सनत समा (तावा)। २ इतिस्थानिक (वर्षे १)। १ ज्यानी दिवस (नव १)। ४ हुईर्षे विदेश (सन ११)। सम्म न [सम्पनस्त] सम्पन्तनिकेष (मन)। सनसम्मा की (स्थारामा) पारियक मन्तन
२,१४२)। जनांता त्री हिपासंत्या विभागत्त्व प्रार्थ- ज्ञान (सुद्ध ११२)। जनांता त्राच [ज्यासं + मह् ] ज्यनार नरमाः । नर्व जनगादिकर् (व १९१)। जनांत्रा स्वर्णनांदिकर (व १९१)।	'बंबोण व जवसंहरिता माता' (यहा)। जबसंहार दें [बपसंहार] सेकोबन समेट (बच रे)। जबसंहार दें [बपसंहार] र समाप्ति। २ जबसं (बा १६)। बबसमा दें [बपसा) र जबम बाबा (का	दिरोग विश्वते कर्म-गुरुवय काव-अधीरणार्थि के सामेश्व बतार्थ बाव वह (वेच) । बन्दसिति वि [बचवासित्त ] ज्यातम्बत्वा (विदे दवे दो) । बन्दसित्म श्व [क्षीपरासिक] कर्मों का बन्द कर्म (क्यु ११३) ।
प्रासंपर्धम् (तिक)। उपसंप रच केतो वश्यसंहरित (योते)। जनसंपिय रि जिपसंदित जिपसा कर्णहार स्था नवा हो वह प्रधानत (तिके रे ११)। उसस्य कर्णहार्थम् (तिके रे ११)। उसस्य कर्णहार्थम् स्थानिक स्थान	है)। २ सम्मय-विरोध जो बातु के पूर्व में बोने बाने ते उन बातु के सर्व वी विरोधता करता है (परह २ १)। दशसमा ति [बें] मन्य, पानती (दे १ ११)।	वस्तिम वि [च्यामित] कारामधात (वसि)। बस्तिम वि [बीपशमिक] र कारम वे बेनेनाना। र कारम वे प्रस्त स्वरेगता (तुरा १४क)।
इ.स.स्टिक है (इपसीरियत) १ धर्माच में स्वित । १ उत्तरिवत (प्रण) । क्वसीत हि (इपसास्त्र) १ कोवादि विकार	वयसमाध्र वि [वयसगिव] हैरान किया हुपा (स्विरि ११४०) । वयसक्ष वर्षा [वय + सूज्] धापन करना। वस्त्रीज्ञ्य (सावा २, व.१) ।	रुपसाम वह [ एव + शमम्] १ राज्य करता । १ प्रीत करता । इवरामेश् (मर्प) । वक्र ववसासेमाज (एक) । इ. रुपसामि वस्य (क्रम) । संज्ञ, उबसामक्ष्मु (रेव) ।

सबसाम र् [उपशम] उपशान्ति (प्रिरि २३४) । ज्यसाम देखी उयसम (विने १६ ६)। श्वमासग नि [उपरासक] १ कोमादि की उपग्रान्त करनेवाला (विसे ४२१ बाव ४)। २ उपरामसे संबन्ध रखनेवालाः 'उपमामम मैदिगयस्त होइ उपसामयं तु सम्मर्खे (पिछे २७३१) । टबसासण न [उपसमन] स्परान्त उपराम (स ४६९) । ह्यसामणया भ्ये [स्पशमना] उपराम (स्र उपसामय देवो उपसामग (सम २६ विमे 78 8)1 उत्रमामिय वि [भीपशमिक] १ उपराम संबन्धाः २ प्रमाय-विशेषः 'माहायममस-हाका मध्यो उपसामिक्रो भाग (विने १४ १४)। १ म सम्बान्य-विशेष (विने १२१)। वबसामिय वि [पपरामित्र] शन्त विवा हमा (वद १)। उपसाद् सङ [स्प + फ्रम् ] क्हना । स्र साहद् (सस्)। उदमाह्य वि [उपसाधन] विव्यादर (मए)। उपमादिय वि [डपसाधित] विवार विवा ष्ट्रमा (पाठम १४ व सरा)। उदिसम् वि [उपिक्क] विक, दिन्दा हुपा (रमा) । उपमित्यभ सर [उपरक्षकप्] बर्लन करना प्रयोग वरना। हु स्वयसिन्याभद्रवृद्ध (शी) (प्रशास्त्र)। उपमुक्त र उपमुत्र ] शोबा हुमा (वे १६. उपसुद्ध वि [४५शुद्ध] निर्शेष (पूर्व १ ६)। उपमृत्य रि [उपमृथित] मंगूबित (ग्ल)। हवसर वि दिं चित्र मार्च (दे १ १ ४)। प्रथमेपन न प्रियमधनी नेता परिचय (पर ! हवसेबय मि [इपसेपक] बेरा बरनेराना मक (मर्दि)। 'उदमाध बर [उप + शुम् ] शोबना रिया-बना । यह प्रवसाममान प्रयमोभमात्र (भन; एग्या १ १)।

एवसोमिय वि उपरोभिती मुठाभित विरामित (भीप)। खबसोहा की [न्पशामा] श्रोमा विभूपा (現( 年 1 Y Y ) I उपसादिय वि [उपरोधित] निर्मेन किया हुमा शुक्र किया हुमा (एगमा १ १)। रवसोहिय देशो न्यमांभिय (गुपा ५ मिन सार्थ ६६) । ष्टवस्त्रमा देखो उद्यसम्म (१स) । एवस्मय पूं ∫उपामय] केन साक्रुपों के निरास करने का स्थान (सम १८८० क्रोक १७ भा सम् ६४६ थी)। उपरसा ही [उरामा] हेप (बन १)। उवस्सिय वि [उपालित] १ हेपी (वन १)। २ बद्रीहरू । ३ समीप में स्थित । ४ म. हेप (स्व)। **डबस्सुटि की [उपश्रति] प्रस्त-धम को जा**नत के लिए ज्योदियी की कहा जाता प्रकम काश्य (इस्प १६)। ज्यह स [इसय] दोनों पूगन (बूमा है ? १३८) । उबद्द्र म [पे] 'रफो मर्थ को बनलानगासा म्रम्पय (पश्)। उपहर्ट तक [ समा + रभ् ] शुरू करना मारम्भ गरना । उत्तरहरू (यह )। सबहर वि डिपहर्त र संग्रीतित जास्था विव (स्वत्र)। २ मोजन-स्थान में मर्पित भावन (ठा ३ ३)। उबद्ध सक [डप + इस ] १ विनास शरना । २ भाषात पर्वेषाना । उपहुत्त (एन) । नर्भ उपहुम्मद् (पद्)। बद्दः उपहुर्णतः (एक)। अपहलाम न [उपहलत] १ मानातः । २ रिनाय (झ १)। उत्रद्रथ मह [समा + रूप्] १ रचना बनाना। २ उसे जिल करना। उपहांचा (है ¥ {X): उनद्रियय वि [समारचित] १ बनाया हुमा। २ वर्त्ततित (दूमा)। उबद्रम हैनो उबद्याः उबद्य वि [इपहन] १ विनासित (पान ११४) । २ द्रप्तित (बृह १) । ं उपद्रसम् [उप+इट] र पूजा करना।

२ कास्थित करना। १ वर्षेण करना। सर हरद (हे ४ २१६) । मूरा चनहरिनु (ठा £) 1 **टबह्स पर [सप + हुस् ] उपहास गर**ना ईंगी करना । 🐒 चन्नद्रसणिज्ञ (ग ३) । उपहासिध वि [छपहासिय] १ जिसका उप हास रिया गया हा वह (पि १६६)। २ न उपहाम (तंद्र) । उत्तरा सी जिपधारिमाया अपट (धर्म ३)। उपहाण न [उपयान] र तकिया अमीसा (दे १ १४ ) मूर १२ २ घ मूल ४) । २ क्षाचर्या (सूच १ १ २, २१) । १ ज्यापि 'सच्चित प्रतिहरमणे उपहाणप्रमा कमिन्नए कार्स' (उर ७२ मधि)। उपदार पू [उपहार] १ भेंट उत्तर (प्रवि ४)। २ विस्तार, फनाय' पहासपुरमाव हारेड्डि सम्प्रमी चन बीपर्यंतें (कुल) । रमहारणया देखो उपचारणपा (राज) । उवहारिज वि [डपचारित] प्रवसारित निधित (सुम २ ०)। उपहारका ) को दि ] बक्तगरी की (बा बयहारी ) ७३१ दे ११ व)। हयहारून्छ वि [ ज्यहारवन् ] छाहारवाता (धिख २)। उपहास पूं [उपहास] हैंगी टट्टा फिलो (≹२२**१**)। उपहास वि डिवहास्यी हैंगी के बारका 'सुसमत्यो वि ह जा पण्यप्रश्चिम धेपपे निमेते । क्षो सस्मि ! द्वार मोर, सर्मप जनद्वामयं सङ्ग्रं (मूर १ २६२)। उपहामिणञ्ज वि [उपहमनीय] इसवासान (पउम१६२)। उवदि पुँ [सक्षि] सपुर कायर (से ६,४) ४२ मिति)। उपद्विपुँऔ [उपाधि] १ माया करट (धावा)। २ वर्ग (सूध १ २)। १ उप करण भाषता - निविद्या सबद्दी पएग्डाना (हा ६३ घोष २)।

प्रपद्धि सक् दिन्द् देन्त वरता

पूनता: 'बिल्प'ने बर्गाटर' (प्रेग्रेप ४१) ।

स्वाद्यादित्तरं (इया) ।

तत्त्रविष —तवास

9=3

विवरनेवास (छाया १ २)। सबरेक सक विप + भजे विभयेग कर्जा. बार्व में भागा । उन्हेंबह (शि १ ७) । स्वक् प्रवहस्तीत (शि १४६)।

स्वहत्त देखो स्वमृत्त (पायः से १ ४६)। एकाइक्स सक डिपावि + कस्मी जन्नीभन करमा। संक स्वाहकस्य (माना २. 4 2)1

सबारण सरु विपाति + नी प्रवारता। संह. स्वाद्रणिचा (पावा २ २, २ ७)। दबाइज सक डिप + माच ] मतीली करता किसी काम के पता होनी पर किसी केवता की क्रिपेय भारतका करने का मलसिक र्धनस्य वरना । हेक्क 'विति स्त्रं यह देवास्तु-श्यिता। दारने वा दारित वा प्रवामि दार्ख धर्त तुर्को चार्वच सर्वच भावेच प्रकट-वरिर्देश म प्रमुचन्द्रेस्सामि चि कर्दु ग्रीमादन 'दबादणित्तर्थ' (विषा १ ७) ।

स्वाद्रज धक जिया + दाी १ दक्ष करना। २ प्रकेश करना। हेक्- च्याद्रणिचय (ठा भो। प्रयो ते हैर्य कत मन निद्यालयाः रएको संवालं वश्चालं वदिष्टलं मनिवद्दार्ग सम्भवाण भिरतपर्यकार्य महनस्य धनिन मराह्वाए एपमदठ खबाइजाबिचए' (सामा t (23) 1 रुवाङ्गाप सक [अदि + ऋम् ] १ उस्लंबर

करना। २ गुजारना पनार करना। द्वार शामेद । यह उवाद्गावेत । 🎀 स्वादया बेचए (क्स) इवाइपाविचए (क्य) 'से पार्शीस का बाला सविवेद्यांन का बहिया ই শু উনিবিত্ন ইয়াত্ৰ কলছ নিৰ্পৰ্যন্ত বা निग्यंबील का वरिकास विकासियार क्यूल परिनिमक्त्यानो हे क्याइ है स्वर्तित रान्देव कार्यानेस्य । वे बसु निव्हेदे वा निरमेनी या सं धर्मीण संस्थेत बनाइलावेड्स प्रवान्त्रवेते वा बाहरबङ्ग है बहुदी बीहरू बमली मानग्रह नहमासियं परिहादको

बबाइयाबिय वि बितिहरून रे उस्नंपित । २ इकास हमा पसार किया हमा किताया हक्ता 'तो कपाड निज्येषात वा निज्योत वा यसर्गका ४ प्रकास पौरकीय पश्चिमाहेला पश्चिमं वोदिसि स्वाद्भवदेत्तर । से य ग्रजन (**इस**) ।

ज्याद्यादिए दिवा ते नो प्रत्यमा संवेरना बबाइस देवी बबयाइय (सावा १ २) गुप १ । मद्वा) । बताई की बिसावकी योगकी नामक क्या की प्रक्रिपश्चमत एक विद्या (विसे २४%४)। धवाएका ) वि विपादेशी बन्ना, शहरा करने स्वापय (बीग्य विसे स १४८)। **ब्यागच्छ** ) सङ [ द्या + गम् ] समीप में वचारम । साना । वनानन्त्रक्त (सरा क्रम्य)। पवि जवलिमस्टिरि (शादा २ ६ १ २) संक्र. बनागनिकस्ता (भनः कथा)। हेंक-वक्षाराधिकस्तर (क्रम्य) ।

(स्वर) १ **ब्बा**गमण न डिपागमनो १ समीप में मायमन। २ स्थल स्थिति (मायानि 121) 1 डवागव वि डिपागती १ सतीय में बाबा हमा (बाबा २,३ १२)। २ प्रस्त प्रविवर्धि बीबी प्रवेशमुहानको सरान्त-मली' (स्त्र)। चनाडिय वि [करपाटित ] स्वाहा हवा (दिपा ₹ **६**) i

**ब्बा**गम ५ डिपागमी समीप मे भावनन

क्वाजवा ) नौ [ उपानह् ] देवा (वर): च्यालहा । क्यमुकारिकामी च्याणहाची पर्तु ध्विवामी' (तुपा ६१ सप १ ४ २, १)। वदादा कर [वपा + दा] प्रदेश करना । कमें. स्वाद्येनीत (क्व) । क्वंट. स्वादाय

ववादिएचा (भन)। इनक् इदादीयमाण (माचा १)। दबाबाज न [इपादान] १ प्रहुए स्वीकार । २ नार्वरून मे परिग्रंत होनेवाना काराय । ९ वितका बहुता किया काम वह प्राक्त

स्वादिय वि रिपम्पा प्राप्त (एन)। स्वाय व दियायी १ हेट, सक्त (स्ट ६२) : २ हागन्या 'जनामी सोबाबमीय ब विवयनेश में (बान १)। १ प्रतीकार (व Y 1) I उवाय क्ष विप + बाच निगीती करता १ क्क स्थायमाप्य (सामा १ २) (७)।

उदायजन डिपायनी मेंद्र ज्यक्तर, नक्-चना (उप २४४८ सपा २२४-४१ 433 ) 1 धवायकाव केवी स्थाइकाव । स्थायकानेरः वह सवायणार्वेत । देह सवायजावेत्रर (क्स) समायमाकिनाएं (क्य) ।

स्वायाण देवो समाताचा (सम्बर्धश स्तर) विते २१७१)। डवाबाय वि छिपाबाती धनीय में बागा इया (निर १ १)। डवाहर वि चिपाहर । धारव (च १११)। चवार्डम सङ [दया+अम्] स्तरूवा का । प्रवासम्बद्ध (क्ष्म) । बहु- त्रवार्श्वमीय (परम १६ ४१)। श्रेष्ट क्यार्थ/भत्ता (दह Y) । इ. वयाक्रेमणिक (मल ११६) । रवार्धम १ [उपासम्म] आह्ना (शावा १

१ भा ४)।

दिना नया हो बहुः 'ठनावाडो य सो दिनो र्थमणी (निष् १३ मास १६७)। व्यासद्दर्क (देपा÷सम्) क्रमाहरू रेगा । मूर्व चरावक्रिस (प्राप) । हबाबच 🖫 जियाङ्को बहु घरन भी केले से भम-मुक्त हमा ही (बार ७)।

क्वास्त्र वि [तपासक्य] विश्वते काह्ना

**ब्यावि**ष (धौ) वि [इपाइचित्] सर्वुष परन से बुद्ध (चान w )। ज्वास क्व [दप+आस] प्रपारण करता देवा करता 'तुस्तुसमान्ती प्रवासेन्य पुष्पर्यं पुरुषतिकार्वं (सूछ १ ६)। पर

च्यासमाज (घ ६)। रवास पुं[अवद्यारा] शाली बळ् प्राराष्ट (ল १, ४० व) मन)।

श्रयासन वि विभासकी १ सेवा गरनेवाला। २ पूं कैत मा कुढ दर्शन का धनुमामी मृहस्य (बर्मसं १ १३)। ष्टवासम् वि [एपासक] १ ज्यासना करने-बासा शेवक । २ पूँ भावक वैत पृहस्य (इत २)। दसाकी [दशा] साउनी कैन चेन प्रत्य (सम १)। पश्चिमा भी िंप्रतिसा । भावकों को करने थोग्य नियम मिरोप (बच २)। प्रवासका न [उपासन] ज्यानना सेवा (स १४३ में ८६)। चयासणा 🖎 [वपासना] १ सौर-धर्म हवामत कीएड सम्बद्धाः २ सेवा शुम्पाः दिवामणा मंसुक्रममानया, पुरुषयादिने वा कास्त्वा पम्बुबाग्स्या' (प्रावम) । उदासय रेका उदासग (सम ११६)। मनासय पु (उपाधय) केन मुनिया का निवास-स्थान (बंध १४२ टी)। बबासिय वि [उपामित] सेवित (परम ६० ¥7)1 डवाहण सक [उपा + इम्] विनाश करना मारना । वह जवाहणीत (परहर २)। च्याह्मा देशो उद्याणहा (धनु छामा १ ₹**₹**} 1 त्वर्षाद् पूंची [ बपापि ] १ वर्ष-वित विशेषण (पाचा)। १ सामीप्य, सनिवि (भग १ १) । ३ धरवामाविक वर्गः 'मुद्रोवि पनिदमणी चराहितमधी बरे॰ धप्ततं (बस्म 12 E) 1 उदि सरु [उप + इ] १ समीप मान्य । २ सीरारक्ता। ३ माख करता। प्रतित (मप)। बक्त दिविद (रि४६६ प्रामा)। विश्र देवो अधिम व्यक्ति व (त २ १)। स्विभ वि [वपत] पुनः सदिव (प्रवि) । प्रविम म वि] दीम, पत्थी (देश वर्श) । २ वि परिवर्तित चेल्याचि 'छालाबालिक एवरवएकिमनमरिएनि अनुधिवस्त्रिमिन्नेत-रिरह्वपृथिति दूर्विनिद्वनदूर्विद्वरम्त्वयाविद बीरवन्द्" (गामा १ १)। बर्दिर पू [च्पन्ड] इप्ल (हुना) । बजा औ ["यहा] त्वाद् मन्ति के बारवाला

दक एन्द्र (स्वि)।

क्षित् पुन [क्रपेन्द्र] एक देव-विमान (देवेन्द्र **१**४१) । **मदिक्स सक [ उप + ईक् ] उपेका करना** धनादर करना। वद्ग- एक्किन्समाण (इ **१६)** 1 प्रविक्ता की [प्रपेक्षा] स्पेत्रा मनावर (कल)। उविक्सिय है [४५क्कित] विरम्हत बनाहत (बुपा ३६६)। धविक्रतेम पू [उद्विद्येप] हजामत मुल्बन (रुद्ध)। उविषमा वि [उद्विप्त] प्रिन्त उद्रेगश्रास्त (स्वा) । त्रवीद धक [तद् + विय्] छदेन करना बिन्न होना । स्वीवद (नार) । हवे देशो उथि । अनेक अर्थेति (ग्रीम) । शकुः उर्वेत (महा) । श्रष्ट क्येच (मूच १ १४) । सबस्य देवी उविकताः स्वेत्वाहः (मूपा ११४)। इ. उवक्सियवस्य (स. १)। उविक्सिज रेखो उविक्सिय (चा ४२)। उनेब रेको स्म । उत्तेय वि विषेत्री १ नमीप-गतः। २ पूरः समित (संस्था ६)। उनेय वि [डपेय] प्रशय-माध्य (राज) । प्रवेस्स यक [प्र + स्] फैसना प्रनारित होना। चोस्सइ (हे ४ ७७) । प्रदेस यक [च्लप+विज्ञ] बैठना। बहु वबसमाग (सिंद १८३)। उनाइ तक [उप + ईश्रु] जोना करना विप्स्तार फरना उद्योगैन गरना। क्लेहर (यम्य ११) । बद्ध उबेह्दा उबेह्माण (स ४६, ठा ६) । इ. उमेदियम्य (दल) । उबद्दर्क[उरप्र+ईक्त्] १ मलना सन कता। २ निवय करना। ३ वन्पना करना। उनेहादि । यह समहमाणा 'उनहमाली क्रम् बेह्मार्च दूबा, बरेहादि वनिवार' (धाषा) । र्गेष्ठ उदेश्य (याचा)। बबेदण न [बपेसम] क्षेत्रा, बरामीनज (तंबीय १ (रित २३)। । वर्षेक्षा की [तपदा] विस्तकार, मधार, क्य

सीनता (सम १२)। कर वि "कर जिले-सक उदासीन (था २८)। उवेदाकी [उस्प्रेयुः] १ कल समक्र । २ कस्पना । ३ धवषाच्या निषय (धौप) । दबद्दिय वि [उपेद्वित] बनात तिरमात (स १२६ मुपा १३४)। उक्व देवो पुक्व (या ४१४)। **उब्बंत वि [उद्वान्त] १ वयन विया ह्या**। र निष्मन्त निर्मेत (मभि २ ६)। उब्बद्ध सक [ चक् + थम् ] १ बाहर निका-लना २ वसम करना । हक्क उरूपविदर्ध (सूपा 1 (385 **स्थ्यक }ि [उद्दान्ध] १ वाहर निदाता** सम्बक्तिय र्रहमाँ (पर १)। २ वमन किया 5HI 'पंतीसामयपार्ण कार्ड सम्बन्धिये हवानेखा। वं गरिक्रमुं विरहे, कर्ने किया मोहमूरेगा' ( मुपा ४३३)। प्रस्तामा देवो श्रीयमा । संह उद्यामिष (मदि)। उक्दर् अम [उद्+ पृत्, वर्त्तयू] १ भारता-फिरमा । २ मरमा एक गाँव से बुसरी मित में जन्म लेता। ३ पिट्रिका धाक्ति के शरीर के मन को दूर करता। ४ कर्म-पर मार्ग्मों की सबू स्विति की हराकर सम्बी म्बिति करना । १ पार ५ नो चपाना-पिराना । ६ उत्पन्न होना उदिन होना। सम्बद्ध (मन)। बद्धः, उक्बर्ट्तं, उक्प्रह्मान्नं, उक्रत्तंत (भगनाटः उत्तर १ ३ बहुर्)। संग उद्दृष्ट्या, बह्ददु, प्रस्वृत्य (श्रीत १) तिगारी भाषा २, ७ स २ १)। देश उद्यद्भित्तप् (क्य)। वस्पट्ट रेनी उच्यद्विय = उर्वृत्त (भग) : सम्बद्दि [के] १ भीराव राम-रान्त्र। २ यनिव (दे१ १२६)। उब्बद्भान [उद्गतन] १ गरीर पर के सन वर्षे यह को दूर वरता। २ शरीर को निर्वत बरनेशना इम्य--नुगन्धि बरनु (उदा, गुप्ध १ १९) । १ दूनरे बन्द में जाना बरुछ । ४ बलवेका परिवर्तन (बार ४)। १ वर्ने-पर

मान्त्रमाँ की स्थ्य स्विति को दीवें करना

(44) 1

फिला हुमा (मुपा १४२) । ३ दूर किया हुमा (गा १ ६)। डब्याइ् पूर्वि] वर्गतस (६१ ८७)। सरुवाद् पुं [स्त्राद् ] विवाह (मै २१)। एक्बाइ मक [उद् + माधय्] विशेष प्रशार सं पीड़ित करना । कन्क उच्चाहि ख्यमाज (भाषा खाया १२)। सक्याहिक वि [वि] सक्तिम फका ह्रमा (R 2 2 4) 1 পুৰুষায়ত দ্বি বি কৰ্মবা কামতেন (भविष्ये १११६)। २ विदेण सप्रीतिकर (वे १ १३६)। रुज्यादुलिय वि [वे] उत्पुक एरनपिट्य (मवि)। एक्पिआइश वि [सब्देवित] उत्पीवित (स १३ २६)। चित्रकान दि}प्रमापित प्रकाप (पड)। उक्कियमा वि [ इद्विपन ] १ किल । २ भीत वयहाया हुमा (हे२ ७६)। सम्बन्धि वि [बद्देगशीख] उद्रेयकरने वासा (बाका ३८) । स्किपद्ध देखो स्किप्य । सम्बद्ध (प्राप्त ६८) सम्बर्भात (वे वर)। संद्र उन्निक्रिक्रण (पर्मीव ११६)। चब्चिड विदि (१ वदित भीतः । २ क्लान्त क्षेरा-पुष्ट (पष्ट ) । **ब**ठियडिम नि [दे] १ श्रीवक प्रमाण बामा । २ मर्बादा-पहिंच निर्तरन (दे १ १६४) बात पन २६७-३५६ पदा)। **चक्क्पिण्य देशे उक्किया (श २१६)** । डिम्पद्ध नि [डिट्रिद्ध] १ ऊर्जना गया हुया खण्यत (पणदूर ४)। २ वस्मीर बद्धार (सम ४४ र खामा १ १)। १ विक 'वीलय सर्हि वरिएक्ते विवक्ते (संपा ८७) । रुम्पिद्ध वि [रुद्धिद्ध] विस्त्री अनुस् का माप किया गया हो बहु (पन १६०)। डियम वेडो डिवियम (हे २, ७१ सुर ४ २४ )। उब्दिय पद [ एड् + बिज् ] ध्द्रेग करना बदानीत होता जिल्ला होता 'को उध्विए उब भरवर | मरहास्त धवस्य मंत्रको (म १२१)। **वद्यः चरित्रयमात्र (स १३६)** ।

एठिवयणिका वि [सङ्क्रोजनीय] बहेक्श्रव (पदम १६ ३१: मूपा ११७)। ष्ठविरेयग न [इद्विरेचन] बानी करना 'एवं च मरितम्बरेयलं कुर्णतस्य' (कास) । उठिपल्छ सक [उद्+वेद्र] १ वलना क पना। २ सक बेह्न करना। यक उठिय हर्द्धत, चक्तिप्र**क्ष**माण (सूपा ६६<sup>,</sup> उप यु ७७)। र्जाञ्चास्य स्वामि + स्वी फेनना पमस्ता। प्रविश्वसम्बद्ध (मन्दि)। विकास सक चित्र + वेल् ी १ वर्षकाना इवर-उवर अलगाः 'सम्बद्धाः संपत्तीए देशो शासन्तवस्युव्य' (धर्मीव ११९)। धिक्यस्य नि [चर्मस] बाबन बरम (सूरा 4x) ı उक्तिका वि [ स्ट्रोडिया ] **वन**नवासा द्विमनेवासा (सुपा < a)। हस्विष धरु [धरू + विज्] उद्वेष कला विक्रम द्दोना । सम्बिसद (पड्) । रुक्तिपुरुष ) देशो स्टिवय । सम्बन्ध्य, रुखे स्क्येश ∫ स६ (प्रक्रा६८) । उठिवञ्जनि [पे] १ क्या कोम-पुक्त (पङ्)। २ उन्दमः वेष वाद्या (पाष) । रुव्यक्तिक् सम [स्त्+क्ययू] १ अवा देंक्या । २ अँवा बाता बहुता श्रे बहुाशाः मप् केश पुरिसे छन्। छन्तिहरू (पि १२६)। बक् 'मखसाबि धन्त्रिहेताई मखेगाई मास-सवाइं पार्वेति' (स्तावा १ १ € टी-पन २३१)। कः चकित्रहमाण (मग १३)। संक्र संक्रियद्विता (नि १२६)। नब्जिह पूँ विद्विह ने स्वताम-स्यान एक बाबीविक मंत्र का उपासक (मन ६, १)। रुष्यी पुंषिती पृथिती (से २ ६)। स प्रीधीयन (इमा)। स्क्वीड रेको स्क्यूड (कुमा हे १ १२ )। बक्बीड विविधित्यात को शहसा (देश বদৰীৰ বি [ৰহিছা] ৰবিহেবা 'বলে চনুদৰ ष्टमीदस्म मनागुस्म (नि १२६)। रुअपीक्ष एक [स्पन्न भी स्पृ] वीहा पर्देचाना नार-पोर करता । वह छक्ष्यीक्ष माण (चत्र)।

उक्त्रोक्स वि [अपग्रीहरू] भ्रान्यहित करनेवासा शिष्य को प्रायदिकत सेने में शरम को दूर करन का उपदेश देनेवासा (युक्) (भग २५ ७ इट४१)। **सब्दुरममाण देवो सम्बद्ध ।**् उम्युष्ण ) वि दि । १ छी। व । २ उतिहरू । षष्युम ∫ १ सूर्च (११११ १२१) । ४ छद्रर छलाख (वे १ १२३ मुर ३ २ ४)। करवृद्ध मि [उद्क्यदा] १ भारण मिया हुमा पहुना हुमा (कुमा) । २ ळॅंबा मिया हुमा, उत्पर भारण किया हुया (से ६, १४ %, ११)। १ परिराधित क्षत-निवाह (सूपा 825) I रुक्षेभणार्भ वि [उद्गुषञ्जनीय] ध्येग-धारक धम्बेग र् [डब्बन] १ रोक दिसमीरी (ठा ३ ३)। २ व्यासूमता (मग ६,६)। चर्चेड स⊁ उत्+ येष्ट दिशाधना। २ पुषक् करता करवत-मुक्त करता। छन्नेहरू (पड्) उम्बेडिक (श्राचार १२,२)। डस्पेडण प डिद्बेप्टन दिवलाया २ वि धन्धन-धीत किया हुमा (राज) । पञ्चेतिय नि [उद्बेशित] १ बन्दन रहित किया हुमा। २ परवेहित (१४४)। धम्बेचास ग [दे] स्विभिन्नप्र विज्ञाना तिरन्तर रोपन (दे १ १ १)। उच्नेय देशो उच्नेग (हमाः महा) । त्रवेशन वि [सद्येजक] उद्देव-कारक (रवल ¥ ) 1 धरमेयणग १ कि [उद्देशनक] प्रोत-वनक सम्बद्धमार्थ ∫ (बार्जे परेद्व १ ँ१) । बरुवेयणय पुन [सन्द्रजनक] एक मरह-स्वान (वेशनार २०)। एम्पेल प∓ [प्र+स्] पैसना। उल्लेक्ट (पड्)। उम्बंस वि [प्रत्यस] सम्ब्रातित (से २ ); उम्बेलिश वि [उद्बेखिन] फैमा हुमा, प्रचार (माता १४२)। बरुपस्य देवी उस्तेह । बर्गमा (हे ४ २२६) । वर्षे बन्नेक्षित्रबद्ध (बुमा) ।

बर्वेल्ड सर्व [स्ट्रू+वस्त् ] १ स्थार

जाना। २ त्याच करना । सेवा सहता श्रीवा

ग्रज्यसिम वि [बन्नुसित] ज्यर वेदो (ग

**एक्सी हो [बर्वेशी] १ एक प्रमार (एक)** ।

२ राज्या को एक स्वनाम-क्यात क्ली (पठन

१६४ बुर २-११६) बुग ४४१) ।

(भूपा १८६ ४ १)।

WY #) 1

<del>रक्ष्यु प - रम्मासिव</del>

कामी (महा) । १. प्रमाया हुआ किरावा हुमा (प्राप) । रुक्ता कि [अपवृत्त ] स्तय प्रमाप्त विपरीत स्मित (छ १ ५१)।

उद्यक्तज्ञ न [द्रयुवर्षन्] १ पार्लं का परित र्शन (कार≖क निद्≪ा)। र औंचा रहना क्रम्बं-अर्थन (मोन १२ मा) । सम्बन्धिय नि [उद्वर्षिति ] १ परिगतित, महा-कार भूमा हुमा (स वर) 'ममिय' व वलुडक्स्

सम्बद्ध सम्बद्ध (बद्ध + बद्ध ) १ मारण करता। २ उठाना। उन्तहः (नहा)। का क्ष्मतियमे व सम्भवपुरुष्'(पुर १२ १६९)। चठवह्त, चट्टबहुसाथ (वि ३६७ वे ६ ६)। चन्नद्ध रेको सम्बद्ध (महा)। क्षक चम्ब्यम्माण (शामा ११) । उठकास क्षक [सद्दा+कमा] अत्री करना कम्बद्दल न [सन्दर्धन] १ भारता । २ जस्ता-नीका निकास देता । नक्क सम्मानीत (से ४, पन् । (बरकः नाट) । E 4T TYE) I कस्पद्दल न [दे] महान् यादेश (दे १११) । डम्यमित्र वि (हड्डास्त) स्मरी किया हमा शक्या की वि] भर्मताप (देर वर्थ) ≀ वमन विकास स्था (पत्र्य) । कस्था }सक [तकू+का] १ तकमा बब्बर सक [उद्+ शृ] केन यहता वक चन्नाम र क्रमा होता । समाद स्थापर बानाः 'तुम्हायाः 'वॅताया बमुक्तरेड बेन्बाह (पह हे ४० २४ )। सक्करण तमानरेलां (जय २११ टी) । अक्र-धन्यास विविद्याती शुम्क सुवा (वतः) । चङ्गरीत (भार) । करवाम ) वि दि विकास परियाना (दे १ करुताहरू है है है है है । क्व ४ पाम का बळवर बुंबि ] वर्गसल (वेश ८७)। क्टब्बरिस वि दि र प्रविक्त, बना हवा ७१० सुना ४१६) । बनसिष्ट (दे १ १३ २) पित्रा या १७४० सूपा सम्बद्धाः न [दे] १ नीतः । २ इपनम् वयौगाः ११ १९२४ मोच ११ जा)। २ मनीरित (R \* 244) ( समयीक्षा १ तिरिचतः । ४ ययश्चितः । ४ स कम्माञ्चास म [के] १ विपरीय पुरतः २ वाप मरमी (वे १ १६२)। ६ विर मर्टि-मंबतिय-एडित मैश्रुन (वे १ १११) । कारतः प्रवाश्चितः 'परकमाहरक्षाविश्या निरमा-बञ्चात वि चि १ विस्तीर्थ विशास । ९ इनुहास है बहुम्बरिया (बूपा १९०)। पुण्यस्थि (दे १ १२६) । धम्बरिज न [छपवरिका] कोठपे कोटा सम्बाज देशो सम्बाध = स्थात (प्रज १६६)। बर (बुर १४ १७४) । कम्माय केवो जवाय = उतान (सूम १ ४ बम्बस्य सक [सद् + क्ला] १ उपसेतम 2 0)1 करना । १ पीचे भीटना । हेव्र शहरवक्तिय बरुदार (प्रप) वक विद्-। वर्षेत् ]काव करण (44) 1 बोन देता । कर्म, ज्लारीसह (हि.४.४३०) । चन्नक सक चित्र ने बसया विज्ञानन करना। रुव्यास्त्र वक [कुम्] क्यूना बोमाना। क्तनए। वहा जननगरा (वैच १,१६१)। क्यांसह (वर )। रुक्करूप न [स्तूपन] १ शरीर ना उपनेपन-षम्भास धक [चक्-भासन्] १ 🕸 क्रिकेय (खामा १ १३ १३) । २ मानिका, परमा ३ केलीकला करना १ वनाई धम्मञ्जन (इह ३ धीप) । करता। चम्बाचा (त्राट सिंग)। क्षम्बद्धमा की विद्वसन्ती र उन्दूरता २ दम्बासिय हि (दशुसित) १ स्थार रिसने नारर्व को भूनाया ही बाह (बाउ ६) । प्रवत्तन-दोग्य कर्य-प्रदृति (पंच ६,३४) । फिला बुधा (पडय २७ ११) । २ केट-महर

२७६) । सम्बद्धि वि (उद्युक्त) कियी विरि धे बहर निक्सा हुए। मृतः चाउन्हर्स स्टब द्विमा समार्गा (परह १ १)। सम्पर्दिय वि [सब्दर्शकात] १ विसने किसी भी अभ्य ते राधेर पर ना तैव वधेषह का मैल दूर किया हो वह 'तथा तत्वद्विधी' नेव धनर्गांगधी कन्नद्वियो जन्द्रबसरूपेहि पम्बिमी (महा)। २ प्रकाशित किसी प्रश रे ऋह निया हमा (विक्र)। बन्दबुद्ध वि [सबुद्धः] वृद्धि-शाम (बावम)। क्षमण नि [अमण] प्रकार प्रमुख (तप पू ७ वजावमा ११ टी)।

को सल्स करता (विव ६ १)।

धपवर्तना (विसे २११४) ।

होता है (विसे २७१३ दी)।

स्टब्ट्रज म [अपवर्त्तन] देशो स्टब्ट्रजा =

तक्वदूजा की [बद्वर्थना] र मरस्य रागेर

के बीच का निर्माता (ठा२ ६) । २ पार्ट

ना परिनर्तन (भान ४)। ३ जीन का एक

प्रमत्न विक्षमं कर्म-परमातृष्टी की बब्रु स्मिति

बीर्ज होती है, पच्छ निरोप (तर ६६ ६६)।

रुक्यद्रव्या की [अपस्त्तीना] भीन का एक

ডম্মাটুফ বি [হতুম্তিত] ভাত দিবা হুমা

प्रमानिक 'क्येक्स वावि उम्बद्धिए' (पिड

इयल विसदे कर्मों नी बीचें रिवरि का सास

एक्वच देवो उक्दड़ ≂ ज्य + बृद् । क्रम्पत्तद (पि २ १)। यह उन्धर्तत बन्धत्तमाण (वेर ४२) त २१ (२७) । क्या **४३५ चिळामाण (कावा १३)। तेष्क. ४३५-**शिवि (धवि) । रस्वत्त देशो नस्वह (वे) । कश्वच सक [क्यू+ वर्तेष्] १ कहा नरता। २ अलेटा करता। स्टन्टॉर्ड (पर १) तंक्र डब्बिया (रत ५, १ ६३)। रम्पत्त वि [बदुवत्ती बना करतेशाला (दन ७१) । उक्कत वि [बब्दुक्त] १ ज्यान निय (वे **४,६२)। २ लक्षमित (१,४ ४३४)। ६** 

किया हुमा (मुपा १४२) । १ दूर किया इया (मा १६)। सक्याह् पूं [दे] वर्गताप (दे १ ८७)। रुक्याङ् पूं [उद्गाङ्] विवाह (मै २१)। स्टबाइ एक [उद् + बाधम्] विरोप प्रशार से पीरित करना। कवड़ उक्यादि द्यमाणं (बाचा सामा १२)। रुष्याहिञ नि [वे] चटित्रत, फॅका हुमा (4 1 1) বহুবাহুত ৰ [বু] ং কৰুৰবা ভবেত্য (मिक्टि ११६६) । २ कि इस्स मप्रीतिकर (दे १ १६६)। उज्याद्वसिय वि [वे] प्रस्कु उन्वरिक्त (मनि)। स्टिनधाइस वि [उन्नेदित] प्रशीवित (स १६ २६)। एक्सिकान [वि]-प्रमणित प्रमाप (पष्ट)। र्छाठ्यसावि [डद्विस्त] १ विला। २ भीत ववद्ग्याह्मा (ह२ ७१)। **स्टिव्**मित् वि [स्ट्रेगशीख] उद्रेव करने बाबा (बाका १५)। हठिवद्म देशो एठिवस । एन्निस् (प्राष्ट्र ६ a) द्यमिक्ति (वै ८१)। संक्र चन्दिकारण (वर्मीव १११)। **एक्टिइ वि [दे] १ वक्टिय मीत** । २ क्यान्त क्लेक्स्प्रक्र (पड) । **एडिवक्रि**स वि [दे] १ प्रशिक प्रमाण नामा । २ मर्बादा-प्रश्तित निर्मन्त्र (दे ११६४: बाद पत्र १९७-१4९ पद्य)। विध्यप्य देशो दक्षिमा (पि २१६)। चक्किक विचिद्धि र अँवा मधा ह्या खिंच्यून (पर्याहर ४)। २ गम्भीर महत्त (सम ४४ खावा १ १)। ३ विज्ञ 'की सम-सर्म्य भरिएक्स कम्बद्धों (संपा ८०)। सम्बद्ध वि विद्विद्धी विस्ती क्रेबाई का माप किमा गया हो वह (पव ११८) । त्रक्षित्रम देखो तक्षियमा (देश ७१ पुर ४ २४≅)। वस्पिय सक [सब् + विज्] स्क्रेम करना, क्दाधीन होना फिल्म होना 'को हक्षिएउक नरबर ! मरणस्त भवत्स यंतन्त्रे' (म १२१)। बक्तः सक्रियमाञ (स १६६) ।

स्रवियणिज्ञ वि [त्रद्वेजनीय] स्रोप-प्रव (पठम १६ ६९ सुपा १६७)। प्रक्रियसम्बन्धः विद्विरेचन वासी करना 'एवं च भरिजन्मिरवर्ग पुरुषंतस्य' (काम) । उठितस्त सक [ छद् + वंड ] १ वमना करंपना। २ सक बेप्टनकरना । वह अधिय क्छंत, रुव्यिद्धमाण (सुपा ६८ उप d #4) I एडियल्स मरु [प्र+स्] फैनना पसरना। जियसमा (मनि)। स्टिबल्स सरु [ प्रदू + सस् ] १ तहरूमाना इसर-बनर चमना 'टन्निस्नइ सम्ग्रीप् देशो द्यासन्तवस्युन्त' (पर्मेवि ११९)। हिन्द्रस्य वि [हर्द्रस्य ] च चम चपन (मुपा 3Y) 1 उब्बिद्धिर वि [ सङ्केटिया ] चमनेवासा हिनमेशना (सुपा ==)। **टटियम ध**रु [ सर् + विज् ] उक्षेप करना बिल होता। सम्बन्ध (पड)। रुक्तियुक्त ) देखो रुक्तिया । रुम्मिन्सर, उन्हे चम्बअ ∫ बद(प्रकाद≉)। उक्तिक्य वि वि । इन्द्र कोव-मूक्त (पर )। २ प्रद्रमट वेष वासा (पाम) । पश्चिद्द एक [सम्+स्यम्] १ ऊँचा र्छेकना । २ ईंबा बाना चन्ता 'से बहारण मए केइ पुरिसे छन् उदिवाहइ (पि १२६)। नक 'मएसानि सन्तिहंदाई सरोगाई मास-चयाई पार्चित (ए।या १ १०टी—पत्र २३१)। वक् चिवद्याण (भग१०)। संह सम्बद्धिया (पि १२६)। चन्चिद् पू [चिद्विद् ] स्थनाम-स्मात एक भाजीविक मत का उपासक (सम ८, १)। रुष्यी प्रक्रिकी प्रक्रिकी (से २ ३)। स पुष्पि रामा (प्रमा)। चक्यीब देखी सञ्जूत (कुमा, हे १ १२ )। रुव्यक्ति वि चि उत्त्वात बोदा हुया (दे १ t ) i रुवीड वि [रहिद्व] एटिन्ट 'सम ज्युम्स कमीदस्स कमागुस्त्रं (शि १२६) । रुक्षीस दक [अव+पीड्यू] गौड़ा पहुँचाना मार-गिर करता । वक्क- छव्यीसेन माण (धन)।

तन्त्रीस्य वि [अपन्नी**डक**] म्ट्या-पहित करनेवासा शिष्य को प्रामरिक्त सेने में शास की दूर करन का उपवेश वेनेवाला (पुरु) (मग २४, ७ इ. ४१)। सरुषुरमञ्ज्ञाण देखो उच्यह । \_ उच्युष्ण } कि [दे] १ इदिग्र । २ उलिक। सब्बुम } १ शून्य (दे १ १२१) । ४ स्टब्र्ट, बलाए (दे१ १२३ सुर ३ २ ४)। उष्युद्ध वि [उद्ब्यूड] १ वारस किया हुमा पहनाहमा (कुमा) । २ केंचा विधा हुमा, उत्पर भारत किया हुआ। (से १, १४ ६, ११)। ६ परिस्तीत इत-विवाह (सुना 4X4) I उद्देशणाम वि [उद्देशनीय] रहेन-हारह (मार्ग)। डब्येग पू [प्रदूषेग] १ शोक दिसमोधे (ठा ६६)। २ स्यामुक्ता (मग ६६)। बब्बड एक [उदू+ बेष्ट्] १ कौनता। २ पुत्रक करना अन्यत-मुक्त करना। छन्नेडड् (यह) सम्बेडिव (माचा२, ३,२२)। चक्येडण न [डद्बंधन] **१ वन्यन** । २ वि बन्दन-रक्षित किया हमा (राज) । उब्बेडिअ नि [उद्बेष्टित] १ क्लन-रहित कियाह्या। २ परवेटित (१४४६)। ততথকাত গ হি থিৰিভিয়ন বিলোপা, तिरन्तर पैतन (दे १ १ १)। उठभय रेको टडबेग (ब्रमाः महा) । रुव्देयम वि [स्ट्र्येसक] रहेप-कारक (प्रस् ¥ ) [ दुरुवेयणम् ) वि [स्ट्रोजनक] छोप-जनक धम्बयणय र्र (बाउँ परेह १ १)। डब्वेयणय पुन [उद्देखन इ] एक मरक-स्वान (विवेद्ध २०)। सम्बद्धाः [प्र+स्] श्रेष्टनाः उच्लेसः (पद्र)। बब्बेस वि [उत्बंस] बन्धवित (से २ उन्नेकिम वि [उद्वेसिन] फेना हुए। प्रस्त (माब १४२)। बरुवस्त्र केवी सम्बद्धः बम्बेहाइ (हे ४ २२९) । कर्मं सम्बेसिनग्रह (दुमा) । वस्थेस्य सक [चद्+थेस्स् ]१ स्टब्स भागा। २ त्याय करना । स्रीमा पहना स्त्रीमा

₹⊏₹	पाइअसदमहण्यदो	<b>रम्बेट - र</b> समा
पाना। प्रमुख फैतना, पमरना। बङ्	उसम पुष्मि पूर्यमें १ स्वताम	'क्युक्रयाधी निवमा, जीवादरमं विद्योहदत्तार्ग ।
राम्बेस्ट्य (पि १ ण)।	क्यात प्रक्या विनदेन (समा४६ कृप्य) । २	सेसस्य बहुनाये वी मूर्त ती बन्तू होई
एक्सस्थ वि [उद्येख] १ सम्मतित स्वता	बेत सङ्क्र (बीच ३)।३ बेट्टन-पट्ट (पव	(को १)। इत्रर, गार, चार १ ["कार]
ह्या 'क्रमेसना समितनियी' (पत्रम ८, ७२) ।	२१६) । ४ देव-विरोध (ठा ८) । ६ ब्राह्मण	१ पर्वत-विशेष (सम ६६ ठा २, ३ एव) ।
२ प्रमुत केला हुमा (पाम) । ३ चिद्रमः	विशेष (उत्त १)। इंड पू किण्ड] १ बेत	२ इत नाम का एक राजा। देसनाम-क्यात
'इरिसदमुध्ये सनुस्थाए' (स. १. १)।	नामसा। २ एल विशेष (बीव ३)। हुई	एक पुरोसित (छत्त १४)। ४ वि कास
टब्बस्डिय वि [प्रद्वेस्थित] १ वस्ति	दुं [*बूट] पर्वत-निरोप (का ब) । जाराय	वन्तनेतासा (राज) । १ स्वनाम-स्मात एक
(बा६ ४) । २ बलालि (शहरे) । १	न ["नाराय] संहतत-विशेष शरीर-कन-	मयर (बच्च १४)।
मधारित (स ११५)।	विशेष (पत्र)। दस्त पूं [दिन्तु] वाष्ट्रण	बसुञ्ज दुं [वे] बोध पूपण (दे १ वर)।
स्वतिकार वि [स्त्वेडिसर्] सत्तर नाने-	दुएड दाम का एक्नेसका एक दाइएए	डसुञ्जन [इपुक्र] १ नाश के माकार का
भागा दुमा)।	विश्वके घर मनकान् मङ्गादीर प्रकारे वे	एक मामुपरा । २ वितक (पिक ४२४)।
बरम्म देनो उद्देश । उत्तेवह (पर )।	(कप्प)। पुर न [*पुर] नवर-विशेष (निया	रसुत्र वि [इत्सुक] <del>स्तर</del> िक्त (दुग
प्रकृति हैती प्रकृति (तुमा गुर ४ हेर	२,२)। पुरी को [पुरी] एक धनवानी	<b>२२</b> ४)।
\$\$ \$\$\tag{\$\psi\$}	(छ ८) । सम्पर्व सिन] मन्त्राल ऋपम-	समुयाञ्चन [बे] उरूबस (राज)।
प्रध्येषम वि [प्रदूषेश्रक] बर्देग कारक	देव के प्रवस परुचर (पापूर)।	छन् <b>स</b> न दृंदि] परिसा राष्ट्र-सैन्य का नास
'च्या चिर्प्येगे चत्रप्रसारं सरम्भारं वरता ।	इसर (वै) दुंबी [चग्र] क्रैंग (ति २६६)।	करने के बिए उत्तर से मान्स्पृतित वर्त-विशेष
वंदा वीरूलमोना नीसा स्वेदना दुरुलाँ	उसस्क्रिम वि दि ] येमाप्रिवत पूर्वारत	( <b>ছর १</b> )।
(वर)।	(पर्)।	बस्स दु [दे] हिम भोतः चलहरूपुर प्रभु-
प्रकोषणय रि [न्द्रवेदन हे] ज्युरेक्वन ह	उसक् केरो एसभ (हे १ १११। १११।	स्ट्रेप, (सर ४)।
(पण्य ४१)।	१४१ पद् दुमाः सम १४२ पदम ४	एस्संब्रहिम वि [इस्सब्द्रिक] क्लिट, परि
उद्ययम देशे उद्येषम् (व. २६२)।	<b>11</b> ) i	स्मकः (सावा२)।
च्हासर है [उड्डेन्यर] न्य नामका एक	उसद्भाम दं [इपमसेन] दीपहरनिरोप।	रसंसम्बर्भ वि [उच्छाहुस्का] एनातुत
राम (दूमा)।	२ विनदेन की एक द्यारकी प्रतिमा (प्रव	निरंदुश (वि २१६)।
उष्पद्ध पुष्टियुवध ] १ क्रेंबार (सम १ ४)। २ करपर (ठा १)। १ वसीन का घरण्य	रर) ।	एस्संग र्षु [इरसङ्ग] क्षेत्र कोला या गोध
(छ १)।	उसाम [चपस्] प्रमात-काच (मउद्र) ।	(बाट)।
उम्प्रेड्सियाधी [उद्वेपविद्य] वनस्पति	इसिम रि [इस्म] पत्म इन्द्र (इस्प का ३	उस्तपट्ट वि [उत्संबह्] शरीर-सर्व वे परिव
विरेत्र (पर्य १)।	१)। १ पून यन्य स्तर्ग (उत्त १)। १ पत्नी	(क्र १११)।
समङ्ग रि [दे] ईशा (सव)।	दाप (उत्त २) ।	डस्सक्ष मक [ इन् + व्यवस् ] १ क्लस्टित
वसङ्गर [२] इसर (४४)। वसङ्गरी असर ≠ दे (१३ २)।	दमिय नि [इस्सृत] स्वाप्त छता हुया (सम	होता। २ गीघे हटना। १ सम. स्वतिन
	११७) ।	करना । तेंक्र हस्सकद्वा । प्रयो, सस्मद्रा
उमग र्र [ उन्ननम् ] बह्-भिरोप  गुङ्ग मार्गत (पाप) ।	वसिय नि [उपित] यह हमा निवन्तित (ह	वस्ता(स ६)।
	<b>ब, ६६ जल १२</b> )।	उरसञ्चतः [ इन् + प्युप्यू ] प्रशीप्त करता उत्तेषिक करता । श्रेष्ठ त्रस्थियः (ग्रापा
पसणगण ई [व] बरबर (दे १ ११०)।	र्डीसर <b>दे</b> नो उसीर = इसीर (सूच १ ४	2 5 ≥ 3)1 20122 ±4311 48 4441#74 (#141
ममन वि [प्रमन्त्र] प्रार वैवा हुमा (लाव	२, )।	उस्सक्षण न [प्रत्याष्ट्य] निशी नार्यं नो
( t))	उसीर न [त्रशीर] नुष्यि दृश-तिरोत यत	इंद तमय के मिरे स्वलित करना (बर्म १)।
प्रमाप्त पूँ [प्रश्ममा] मार्ग्याजनीरदेव की युद्ध प्राप्त (वें ६१)।		न्रस <b>क्षण न [करव्यव्यक्तत] अभा</b> रत (वंबा
	उमीरन दि] नगपरण्य क्या (१ १	₹₹ <b>१</b> )।
हमरिक्षा देनो इस्मप्तिया (बी.४ । सिंह २३ ह) ।		उस्सव्हिष वि [इस्टब्स्टिक्त] क्विक बात के
राम्य देव [बुग्रम] एक देव-शियान (द्यान	वसुई[स]र वास शर (नूप १ ४,	बार दिया हुया (शिंद २६ )।
क्षण हैन स्थितको ६० रचनम्पतः (दरस	t) । र नगुणसर धर रा बाल-स्थानीय	दस्सात् व विकासी ३ लाम (सार १)।

धेव-शरिवाल

१)। र बनुग्रकार धंत ना बाल-स्थानीय कासरम र जिस्सी र स्थान (बार १)।

२ नानाम्ब शिव (वय ७०१)।

प्रमान हुँव [वृषमा] एक देव-प्रियान (देरेन्द्र रेप )।

**इ**स्सरिंग वि [इस्सर्गिम् ] <del>इस्मर्गे पा</del>मान्य तियम-का जानकार (पन ६४)। बरसञ्जा वि [शबसक] निमानः चिबेने उस्तव्या' (पग्ह १ ४) । उस्सण्य म [दे] प्रायः प्रावेश (राष) । दस्सण्ड्साण्ड्सा की [दस्यक्यरहर्क्यमा परिमोश-फिरोप कर्ज-रेश का ६४ वाँ हिस्सा (इक्)। सस्सम्भ देवी रुस्सण्ण = दे (मूम २ २ ६% dg २७)। माब पुं ["मात्र] बाहुस्पमाव (बर्मेसं ७६६)। सस्सक्त वि [सरसक्त] नित्र वर्ग में धासाधी साबु (द्वमा १२)। बस्सच्यण न [बस्सर्पन] १ बमति योपग्र । २ वि. प्रशत करनेवाला बढ़ानेवाचा 'संबरप द-पन्तस्यप्यणाई वयणाई वैपए वा सो' (सुपा ५६)। बस्सव्यणा की [बस्स५णा] कारि प्रमानना (उप १२६)। हरसप्ययां की [हरसपैणा] विष्यत करना प्रतिबंद करता (सम्मच १६६)। हस्सरिपणी क्ये [प्रस्सर्पिणी] सप्रत काल विदेप का कीटाकोरि-सामरोम-परिमित कास-विशेष जिसमें सब पदावों की क्रमश स्त्राति होती है (सम ७२) ठा १ ६) पटन २ **६**व)। बरसम र् [एक्ट्रम] १ ज्यति एक्टा (विसे १४१)। २ प्रविद्या (पर्या २,१)। १ तरीर (स्व)। एस्सयण न [उच्छूमण] यमियान नर्ने (सुमार र)। सस्सरमञ्जूति (स्तु द्रिया पूरवामा। उत्प्रवह (स्वप्न ६)। हस्सव सक [यन्+मि] १ ठॅवा करना। २ बहा करना । उत्तनेहा संक्र उत्स्विचा (कृप)। प्रयो संह. उत्सविय (धाना २ १) । बस्सव पुं [स्रस्य] उत्पव (प्राप्त १९४)। एस्सब्यया की [क्यूब्यवना] जैना देर करता इकट्ठा करता (मंग)। इस्सस बरु [ दत् + यस् ] १ वण्युगय

सह (भग) । स्वह सस्ससिकामाग (अ ₹)ı रुसस्य वि [उच्छवसित] १ उच्छ्नस मान । २ स्क्रसित (स्त २)। **टस्साकी [उस्ता] वैगा गौ (दे १ ८६)**। यस्सा दि देवो आसा (ठा४४)। बारज र्ष "चारण] बोस के धवसम्बन से मृति करमें का सामर्थ्यनामा मुनि (पन ६०)। उस्सार धक [ उत् + सारय् ] १ दूर करना हटानाः। २ सहुत दिन में पाठनीय ग्रन्थको एक ही फिन में पढ़ाना। बहु सस्सारिंद (बह १) । संक उस्सारिचा (महा) । क उस्सारइव्ध्व (तौ) (स्वप्त २ )। रुस्सार पू [उत्सार] मनेक दिन में पढ़ाने मोरम प्रत्य का एक ही दिल में सम्मापन । **६**८५ वृं **िका**पी पाउन-संबन्धी साचार निरोप (बह १)। इस्सारम वि [चरसारफ] दूर करनेवल्ला । २ अटमार-करन के मोग्म (बृह् १)। उस्मारण न [शरमारण] १ पूर्वकरण । २ स्तकदिना में पदान सोग्स प्रत्य का एक ही दिन में मध्यापन 'मध्याद उस्साच्छी कार्ड' (इड् १) । उम्शरिय नि [डरसारित] **बू**रीकृत **ब्**टाया हुमा (संवा ४७)। परसास पुं [उच्छ पास] १ उन्होंस अना चास (प्रमुद्ध १) । २ प्रवस दास (साव २) । नाम न ["नामम्] उत्तर्धः बेतुक कर्म-निरोप , (सम ६७)। **इस्सासय वि [इच्छ्यासक] इसीस ने**ने-वामा (विसं२७१४)। उस्साइ के उच्छाइ (तूमनि ६२)। वर्सियस वि [वच्छक्का] संग्रे सेन्द्रा-नार्थ गिरक्रुश (उप १४१ थे)। हरिसंधिय वि दि] याद्यतः सुँवा क्रुया (स २६ )। वर्सिण सक [तत्+सिच्] १ सिवता धेक करता। २ क्रमर सिवना। ३ माक्षेप करना। अञ्चलीकरना भूदर्शका नार्व वस्तिका (माना २, ३,१११)। अस्ति चित (निष्कृ १०)। वह उस्तिचमाण सेना, श्रास सेना । २ श्रक्तसित होना । कस्स-(प्राचार १६)।

स्रस्तिंचण न [ब्रस्तेचन] १ सिक्टन । २ कृपादि से जस वयरह को बाहर को खींचना (भाषा) । ३ सियन के उपक्राप्त (भाषा २)। इस्सिन्गा हो [इत्सेचना] हेने इस्सिन्ग (उस १ १)। इस्सिक देवो उत्सव । संद्र दस्सिकया (दस ६,१ ६६)। च रेसक एक [ सुष् ] बोइना व्यागकरना। र्श्वसादद (हे ४ ११)। उस्सि# सक [ उन्+ हिस्प् ] अँवा पॅकना। स्रीसदा (हे ४ १४४)। उस्तिष्टिश्च वि [मुक्त] मुक्त परिवयक (क्रमा) । इस्सिक्स वि [उलिस्स] १ अवि केंका हुचा। २ उत्पर रक्षा हुचा (स. १.)। **बस्सिम वि [शस्यिम] विकासन्तको प्राप्त** धवित्त किया हुमा (स्त ५,२,२१)। स्टिम्य वि [स्टिक्स ] स्वाद केंदा दिया हुमा (कुम) । उपस्यय वि [सस्व] १ म्यात । २ व्यंत्र किया हुमा (कम्प)। हस्सिय वि [उत्स्त] प्रह्नाये (उत्त २१ 4E) 1 सस्तीस न [उच्**डी**पें] तकिया (सुपा ४३७-**शामा १ १ मोव २३२**)। उत्सुआप सर्व [उत्सुक्यू] उत्करिका करना रुत्पुक करना। सस्पुषानेद (स्तर P() 1 तस्सुंक } वि [प्रच्छुका] शुक्क-परित कर डस्मुँचा∫ रहितें (कर्ष्ये: राज्या ११)। उस्मुख वि [इरसुक] ब्रुक्टित । उरमुखः ) न [औरसुष्य] अलुक्ता (भावक वरमुगः) ११० पर्मेचे ११९ ११७)। उत्सुकाय वि [ उत्सुक्यू ] जन्द्रक करना क्किक्टिक क्ला। **एक** उत्सुदावहता (चन)। बस्सुग वि [त्रसुक] अकिएउत (परम ७६, २ । पश्दु२ 📢 )। परमुक्त वि [बरसुप्र] सूत्र-विस्त्र निकान्त बिगरीत (बब १) जा १४६ दी)।

बस्सुव देशो उस्सूग (का ४, ४' ग्रीप) ।

बस्सुय न [अस्मिक्य] धक्करत, धनुकता ।

कर दा २२ )। **म्ह्सअ दुं [उत्सक] १ सिवन । २ उमति ।** ३ वर्षे (बाद ४४) । मस्माइम वि (बसर्विदम) धाम है मिथित याची बाटा-बोबा भर (रूप टा ६,६)। ऊर्दकी ब्राइट क्यामाना का यह स्वर . वर्ण (हे १ १ प्राना)। क्रथ हि | तिस्तनिक्ति धर्मक | धम्मय—१ वर्शनिन्तः 'अधिनाज'। २ मारोर प्रन्तुत भारत के क्रियोठ सर्व शी

101):

प्रामा) ।

दिरतेन् (बार) ।

III )I

इर पि विंदरी जनग्रहा-अनक (खावा

न्तरम्य वि [त्रव्यून] नुवाह्या क्रमाह्या

दरम्र न [इस्प्र] सन्त्या, शामा 'पदामो

नियनको बस्तूर बहुए अर्छ (सूर ७ १३

(उप १६४) वज्य स २ ३)।

इस्संद्र पु [इस्सेथ] १ अँभाई (विचा १ १)। १ क्रिकट, टॉब (जीप १) । १ बसर्वि मस्यु-दम 'पद्रणीता बस्त्रेहा' (व १११) । क्त्सेद्रगुस्त न [क्रसेधाक्रगुस्त] एक प्रकार ना परिमाण (विते १४ टी) । च≰स [क्रम] दोनों, पूग्म युक्त (पद्)। द£ट्रथक (अप+ पट्टीनट होना। **अध्यद** (सम्मत्त १६२) । ब्रह्म दुर्दे केको सब्बर्ट = उर्+ बृत्। उद्भ स [डमय] कोन्ड्रे युग्म (कुमा भवि)। ।। इस विरिपाइअसङ्गङ्ख्याने स्थातकार्यकारी याम पंचमी वर्रनो समलो ।।

त्त्रद्र म [तपगृह] छोटा वट बामय-विदेश (पएड १ १)। श्चदस एक [तप + इ्स्] प्रप्तुस करता। व्हरह (प्राप्त १४)। हद्वार पुं [नद्वार] मध्य विशेष (सन्य)। वहिंद्यल पू दि] पतुरिनिय बन्तु-निरोप (44 de 646) 1 रुद्धिमसिजा हो दि] ज्यर वेयो (रुप १६ tyt) i सहु (धप) देखो आहो = महो (सए)। बहुर वि वि] बनाइ मुझ धनोमुझ (नता)।

क

बारोश से बंगे बरक्ता के कि वर प्रशिप्त । १ विग्मय सारवर्ग के बढ कुणियाध्यये । ४ नूचना '⊊ वेल ख रिल्याचे (हे २ १६६ पद )। अअट्ट वि [अपश्रम] बूजि से क्ट (बाय) । क्या दी हिं] दूरा दे (६१ १६८) । अभास 🛊 [तपपास] मोतनामार (६ १ प्रशिव रि 👣 मन्द्रन (बहु ) । उपमान रेनो जनमाप (हे १ १७१ उड देलो कुड (ने १२ ७ वा इ०३) । ठर रि[उद्र] करन दिया हुणा भारतः रिया हुया 'कारण' सम्बूग्रामीलनेनू नूल' प्रदेशिक विकास किया विकास विकास विकास

उद्धा की जिल्हा निवाहिता की (पाप) । ऊडिअस वि दि] १ मन्त भाज्यक्रियः। ९ न मान्द्रारन प्रावरत (पाम) । ऊष्प वि [ऊन] चून, (प्रेन (प्रश्न ११ ११६)। बीमइम वि विराधितमी ज्ली-सर्ग (पत्रम ११, ८ )। अपन [भाज] ऋल क्रजा (नाः)। ऊपहिश्र वि दि | धानमित हर्वित (वे १ १४१ पर्)। अणिमा भी [पूर्णिमा]पूर्णिमा तभी तीए वेष अधिमार् भरिक्या भीतन बहुणाई परिषयी परनउन (महा) । उर्जाय वि [इस्तिन] यम विमा [मा (न अग्निय र् [अजिक] चेवक-रिधेष (बरवस्मा यप १६) । उप्पार्यस्था भी [जनोदरिता] वन पादार नरना चर-विटेप (तप २४, ७ े नर २.)।

उतानीम ) सौ न [ एग्रोन क्लारिंशन ]

क्रमान है बतवानीम ११ (नुस १ है

गा १९ देशेल १६४)।

उजीन गण न दि ] ब्रॉबल क भूमक (वर्ग २)। उर्जनिमिय कि कि । ब्रोफेक्ट कितने स्तरन के बाद रारीर पोंछा हो वह (स ७६)। कमित्तिभान 📳 दोनों पारमों में भाषाव करना (दे १ (४२)। ऊर्दि की शक्षम यौगार तंग तपूर (\$ t tyt) i ठर वैद्यो तूर (मे द ६४)। कर देवो पूर (वेड ६५) गा ४२। २६१)। करण पूँ किरणी मैच नेह (रामा निषे)। करणी और दिने मेन भेड़ (दे १ १४ )। ऊरजीञ नि [श्रीरणिक] मेडी चरानेराता (मात्र १४४)। करय रि [पूरक]पूर्ति वयनेरामा (वरि)। उरम वि [औरस] पुत्र-विशेष स्त्र-पुत्र

(# ₹ )i करिसंक्रिम हि [दे] स्त्र छेरा हुवा (रह्)। करी म किसी १ वंदीकार । १ स्थितर । **क्य वि["हुँग] यंगीरत सीरत** (ज करेंद्र दी)। उन्दर्भ [ऊरु] बहुत वर्ष (ग्रामा ११) कर**ु पू** [बे] पतिन्मम (वे १ १व )।

माखि पुं ["माखिन] भूमें (हुमा)।

ऊस्च रेगो उसच्च (रूपा धारम)।

**ै**ऊस देतो पूरा (गा १०१) ।

बाला एक धामुपरा (बीन) ।

वयध्दः) (पद् ) ।

(पड़)।

#1 Y) !

१ ६)।

22Y)1

(\$ \$ \$ ¥\$) 1

संह जमसिव (क्रीर) ।

एए (नम्य १४- बक्त ७३)।

एक्सांक्त (बीवम १ ४) ।

त्रयो सबुगयार्ड (बिन १२ c) ।

उत्तरह (ह ४ ० २) बहा बुमा) ।

१ १४ ३ पत्र )।

उत्सर वि [बे] पीत पुष्ट (बे १ १४ )। कुषा)। बाळ न ["साख] बाँवतर सटक्ने-उमसिज वि [उद्घरित] एक्सित पार्मु व जमसिक्ष वि वि धमाध्यित पुसरिका करत्रम् वि [करवृष्ट] चेपा-प्रमाण (गहुए (दे १ १४१ पाम) । कसव बेगो उस्सव = समान (माप्त ११)। **ऊरुइअम कि [ऊरुदूयम] कार देखें** ऊस्य देशो अस्मय = उन्+चि । उत्सदेह (वि६४: १३१)। ग्रेष्ट्र असविय (क्या करमेच वि [करमात्र] स्वर देवी (पर् ) । ऊसविध वि [दे] १ व्हमान्त (११ १४३)। २ क्रेंबा किया हमा (दे १ १४३) लामा कस र् [इस्र] किला (हे १ ४१)। १ ४ पाप्र)। ६ उद्योग्ड वसित (पद्)। कसविय वि [उच्छिन्द ] कर्ष्न-स्पन (रूप्प) । कस र् [ऊच] धार-पूषि की मिट्टी (पएण र उत्सस सरु [प्रतू + श्पस् ] १ उसीस भना अँचा सीच सना । २ निकसित होना । कसञान वि] उपकान उमीसा समिया (ह ३ पुमरित होता। बन्सर (पि ६४) ३१५) । बर असर्सन, अससमाग (बा ७४) उदसद्वी (इरसुष्ट्री १ परिवास्त्र । २ व भए ४३ वि ४१६)। रुप्पर्वन मचावि वा ध्वामः 'नो रुप्प असई ऊससण न [उच्छवमन] एडॉच । अद्वि<sup>ा</sup> पद्रीका र्दणाहा चचारं वा (प्राचा२ २ भी ["स्टिंबर] स्वामोज्य्वाम श्री शक्ति ! कसद दि दि प्रस्कित र उप यह (शम १ ४४) **ऊसस्मिन [उच्छुब्मित] १ अना**त (धाचा२ ४ २, ६) जीव ६)। २ ताना (वडि) । २ वि छ=कसितः। ३ पूत्रकितः 'मई महराति वा कलाई असरोति वा रानियं (स ⊏ इ)। र्चानए तिवा (माना२ ४ २ ३)। कमिर वि [ज्ब्सूवसित्] उपान केने-कसण न वि रिविश्मप्त (वे १ १९१)। बाला (हे २ १४४)। <u>कसण्द्रसण्द्रिया क्रेग्र हरसण्द्रसण्द्रिया (पर</u> ऊसार्जंड रि [दे] येर होने पर दिवित (**t** t tvt) i कसाइञ वि [व] t विजित्त । २ उन्तित (वे उत्सरय पूर्वि र पन्माई। २ वि प्रापुन t (141) i कसार मक [ उन् + मारय् ] कुर करना रवाक्ता । संद्र उत्भारिष (चर) (महि) । क्रमरमङ [दन् + स्] १ विमन्त्रा । १ दूर होता। ३ सक स्यामना। अक्षरद (विवि) कमार 🕽 👣 वर्त-विशेष (दे १ १४ ) । असार पु [बरसार] परित्यान (जीर) । उत्मार पूं [आसार] पंत्र वानी वृद्धि (हे र क्रमर न [क्रपर] धार-नूमि विश्व बीज ७६ पर्)। नहीं वैश होता है। फ्रमस्यवर्तनवदर्द्रसम्बना ऊमारि नि [आसारिन्] नेन ने बरानैवास (दुना) । क्रमरण न [नरसरत्र] पार्धेदल: 'वानुवर्क्त कसारित्र हि [प्रसारित] दूर क्रिया हुमा (महा; भवि)। कसय र् [उग्छय] १ वलेव अवाह। २ अमास र् [उन्ज्याम] १ उनांव अना रशन (याचू ४)। २ यस्त (हरू १)। उत्सल घर [प्रम् + सम्] कनतित होता । माम न ["नामन्] वर्ज स्टिप (नाम १

XX) 1

कसासय वि [डच्छ्वासक] उर्शन नेने-बासा (प्रिप्ते २७१४)। ऊश्चासिञ वि [रम्ब्ह्रवासित] बापा-पहित क्यि ह्या (दे १२ १२)। कसाइ र्षु [चरमाइ] उत्पाद, उद्याद (मा क्सि सक [उन् + भि] बँगा करना उपत करमा। संह कसिया (उत्तर १४)। असिक सरु [ उन् + प्याक् ] बँबा करता। चंद्र कलिक्किन (मग १ वर्टी)। ऊसिक्सिम वि [दे] प्रदीत शोमायमान (पाम) । ऊसित्त वि [\*सिसक] १ वर्षित । २ स्वतः। १ वहा हुमा । ४ घठियापित (हे १ ११४) । अभित्त वि [अवसिक्त] उपनिष्ठ (पाप) । उत्सिय देशो प्रस्सिय = उण्डित (बीप कप्प चए)। असीम | म [डच्डीपें ≰] चर्पाता इसीमग | निकास / निर्माना (ए।वा १ ७) पाना कसीसम । मुपा ११ (२ )। कसुन वि [इरसुक] उत्करित (मा ४४६ कुमा)। रुमुक्ष वि [उब्ह्युक] बहा हे रुक उद्गाउ हुमा हो बह (हे १ ११४)। उसुन्त्र विजिल्लाकियाँ बलक किया हमा (वा ३१२) । अर्मुभ **मरु [उन् + सम् ] उ**न्मसित होता । ळनूमा(१,४२२)। उन्सिम नि [प्रवसित] उज्जाग-प्राप्त (कुमा)। कर्मुभिअन वि] १ रोशन-निशेष गता **६**८ जाय ऐसा रदन (दे १ १४२) सह ) अमुक्तित्र नि [दे] बिहुक, परित्रक्त (**दे** र १४२) । ऊसुग देषो उत्पुत्र≈दनुष्ट (दन ११७ टी) । उत्मुग व [दे] मत्त्र माव (भाषा २ **१** = 4): **कसुन्मिम वि दि] उनौमा वा निराना** क्षिमा हुमा (यह )। उत्पुर न [४] नामून नान (१ २, १७४) । उसुरमुमित्र [दे] रेगो उमुभित्र (रे।

१४२) ।

उद्ध —-ए⊯ उज्ला को (उज्ला) कर्ष विचार-विज्ञ (मारम) । संबद्ध-विरोध (राज) । ४ मोध-मंत्रा मध्यक

दिवारमा । उत्पद्ध (विगे ३१) उद्धेनि (तुर ११ १ बरे)। मेर अधिअव (कार १२)। उद्भार कियम दिन (दिना १२)। Bur d [ Bur ] ? freit, febr-alle (राज)। २ वरे दिवरे (मघर ४)। ३

उट सद जिल्ला १ वर्गकरणा । २

760

अक्री न जिल्लाको संस्या-विरोध (एक) । उत्तर विकि वास्पित (दे १ १४ )। ठक्रसिय वि उपह्रमित्री विश्वत उपहास विया नगा हो बह (दे १ १४ )।

बात (दिने ६२२ ४२३)।

उज्यापीक व जिल्हापीको सोच-विचार, मन व होनेवासा कर्ड-विकर्ड (इम ६१) । अधिक कि जिहिता बनमान में बाद कि है Y3)1 य वृ चि । स्वर-वर्त किरोप (है १ १। प्रामा)।

## ।। इच विरिवादश्रसहमहण्यत्रे उद्याधामाः वंदसको घटा वर्रनो समतो ।।

ण वैणि स्वर क्ल-विदेश (दे ११ प्राप्ता)। य साथि में दिन संबोदा नुवन संख्य-१ बायन्त्रस्य मध्योपनः 'ए एडि शरहत्ती मन्द्र' (पत्रम १७४) । २ वास्त्रापेतार. बास्य-धोमा ने करागुम ए' (ग्रम्प) । १ रमरुष । ४ मधुवा देव्या । ३ झनुरच्या क्ता। ६ म्यान (इ.२. २१७) मीर पा \$ (1) ए नर भा+डी धाना सायमन करता। ध्य (बरम

पर्(क्री)। भीर प्रिन्(क्स)। बहुः et ac et ec ) da (रूप ११) एवंड (रिश्वर) एक्साब (सर ६८ दी) । ग रेमा ग्रीत्रभ (३॥) । D देशी एवं (उदा) । ध्य रि [प्त] भाषा हुमा आदा (सम्बद्ध ttt) णभन मितन् कित्(वर्गदेश स्टर)। हिंस नि विद्यो लेख इनके मैना (१६)। उन्हारि [क्य] तेना, इन प्रवारका (गावा ११ मण)। प्रभारेगी एग (गरा गर न्यन्त ६ tt)। आदि [ाब्दि] दोना (पनि १६ प्रति ६४) ।रहित व ि।इरान् रेप्पाप्द की संकत करा और न्य (तिरुद्ध)। सदस वि [दिन] satifie (Med) t

ग्ध केरो ग्य = स्व (दुमा)। एम ) देखो एकी एवं दि निरोध दिल्ली ण्डी (से 1 पर बरा रियो पर्धन रेपो यहाँन (वेली १०) । प्रभाइस (का) नं इ. पिक्रविंगति व पत्तीन (पिन) । ण्यारिण्छ वि [गवाद्य] वैना इसके वैना (भ्रामा)। पद्भामाण देगी गय व एवं। पद्मव वि[पजिन] निषद (राज्य ४)। एइस रेग प्रम (नग १ १७)। पद्म वि पिताहरा हैना (सिं २३४१)। ण्डांत (या) च [म्बमबी १ इनो तरह। ९ मही (करि)। पडण रेपो प्रमुख (सिंग)। र्मन रेगो द्र=इः र्णन देशा ए = चा + इ : एक देगी पद तथा थ्या (वर् तम ६६ बन्ध है है। हैपर देवा हहह बाद ह ६ परत ११४ ४ जुता १६६। क्या बर कर ११९)। इजाय विहातिक नत्र में कोई बल (हेर १६१)। फु (था) रि ['€] व्हाची (ति १६१)। र्मिय रि [ रिम् ] ल्लानी स्रोता (हा • २< टी) । । यउद्दर्भ ["नपति] संस्था-तिटेन त्नारवे (नम् ६१ ति ४६१)।

पक्तम देवी अडण = एकोन (मृज्य ११)। यक्त केयो यक्त तका थग (हि.स. ११ **त्**रा रेप्रशासम् ६६३ दशः प्रस्ता दरे देशः मब्द क्यों मारे⇔ गुपा४ दर्श मा४रे। पि इदेश, नाट गावा १ १: गा ६१ म नाल नुर १ २४२। मय सब १८:परम २१ ६३: ४००)। बच रेखो समप् (यशः नुर १ व )। सणिव विधिष्ठ निक्री एक ही बार भोजन करनेवाना (कर् १ १)। सत्तरिक्षी विसादि विसा भिष्टेच भ१ एक्ट्रकर (सम ८२)। सरग, सरय विस्तिष्ठं सर्गी एवं स्तान एक सरीवा (उसा क्षत (६० प्रस्तु २ ६)। "सिय[शस] एक शए 'शराबहुमा उरमी दन्द्रालियी एकामि बमार्ल (बप) ग्ण्यति वधी वनाधी जीवे वाहेद अन्त<u>न</u>् इम्बि (गुर ११२)- चरवान गौनवसीर या देग्बॉर्ड विद्यालाई (हे ४ ४२४)। मिष[त्र] एक (शिनी तर) में रेकामि व मुलियो निधि लियो बीधी परानदी (दुना)। सि सिर्ज म सिष[ छम्] एक बार (शि ४२।)। ।इ.रि. [विस्तृ] यहेना (बवी २३)। ाइ दे [ शहर दरमान-स्थात यह मागर विक (पूरा) (स्ति १ १)। । प्राप्त नि ["तबत] ११ वॉ (पतम ११ १)। त्रसम वि ["व्या] न्याख्या (विता १ र ज्यापुर ११ २४)। रह विव ["त्राम्] त्याख्, वरा सीर एक ( पम )। [सीइ की ["शिवि] संस्थानियोप, एकासी (सम ६०)। सीइविद् वि [रागीविधिय] एरासी तरह का (पएए। ११७)। सीय वि [िहरीत] एकासीवी दश्वी (पदम यह १६)। चिरसय हि चित्रशततम् एक सीएक बाँ१ १ वर्ग (पउम १ १ ७६)। े चर पू [ै दिर] सहोहर भाई, संगा माई (परम ६ ६ ४६१६)। यस स्ये <sup>[\*</sup>ोदरा] सनी बहिन (पडम **८ १** ६)। एक नि [एकक] घरेता (हेवा ३१)। एक वि वि ] स्टेह-गर, प्रेम-तपर (दे १ (xx) प्रदार (पर) दि [ एक्सकिम् ] एकानी ग्रवसा (सवि)। एक्ट्रंग न [दे] कन्दन, सुगन्दि करह विशेष ( t t ( t x x ) 1 ण्यक्तंत पूरिकान्त्री १ सर्वेगाः २ तत्व प्रमेय । ६ जल्द, संबर्थ । ४ धंसाबारराजा विशेष (से ४२६)। १ निजैन निराना (सा १२)। देखे एर्गता युक्तकक वि [एकेक] इर एक प्रश्लेक (नाट)। एक्क्क्म [दे] वेद्यो एक्क्क्स्स (से प्र प्रकासित्य न [प्रकासक्य] तरी-निरोप (पद २७१)। युक्कारा देखी एस-स्य = एक-क (दुन ७१) । पक्कपरित पूँ [के] देवर, पति का छोटा मार्थ (वे १ १४६)। एक्टलंड पूं दि] कवक कमा कहतेवाला (वे 8 8XX) 1 एक्टमुद्द वि दि ] १ वर्ग-प्रीति निवर्गी । २ दिख निर्धन । ३ प्रिय इष्ट (दे १ १४६)। पक्षमधानि पिक्केडी प्रत्येक हर एक (देश १ वर् द्वता)। एक्टइ वि [दे] प्रवतः वतवान् (यव्)। एकडपुर्वित न वि विच्य-निन्दु-वृद्धि सन्य विमुवानी वार्रिस (दे १ १४७) ।

एकसर्रिजंब [व्] १४ वित्र तुरुव । २ संप्रति, भावकत (हे २ २१३ पत्र )। एकसिरिभा प दि शोप, पवरी (प्राक्त **⊏₹)** 1 एकसाहित वि [दें] एक स्थान में रहने-थासा (वे १ १४६)। एकसिंवस्री की [वे] शास्मनो-पुर्णों स मूतन प्रस्तवासी (वे १ १४६)। एक्सस देशो एग सेस (मन १४७)। एकह रेको पग (प्राप्त ३३) । एकार देशो एकारइ (शम्म ६ ११)। एकार प [अयस्त्रार] नोहार (हे १ १६६ पक्की की [एका] एक (क्षी) (मिचूर)। एककृण देखो अउग (पि ४४१)। एककास वि वि ] परस्तर, मन्योग्य (वे १ १४५) 'मुह्हा एक्टेक्कमं यतेन्द्रता' (पथम \$4 (X) I पक्षेत्र है देशों पर्य (प्राप्त १६)। एस स [एक] १ एक प्रवम-सक्सा (बलु)। २ एकाकी सकेका (ठा४ १)। १ सर्वितीय (दुमा)। ४ मसहाय निःस्रहाय (विपा १ २)। १ सन्द, दूसरा 'एवमेन वर्षीत मोसा' (पण्डर २)। ६ समान संस्य तुस्य (उपा)। इस देखी एम 'सरपेयहमार्ग नरहवार्छ एवं पशिष्ठीवर्ग ठिई पम्नला' (सम २ हाक सीप)। इत्य वि["क] स्थेमा एकाको (सन) । ओ स विस्ते । एक चरक (क्रम्म) । क्लारिय वि [च्छिरक] एक धरारवाचा (नाम) (प्रस्तु)। स्त्रीची भी ["स्प्रत्य] एक स्कल्पवाता (कृत वगैरह) (बीव र) : "सुर वि ["सुर] एक बुरवाना (मी वर्षेण्यः पत्रु) (परएए १)। स वि िंक] प्रशासी योगा (मा १४)। सा वि["म] वसीन वलर (मुर १ ६)। वस्तु वि [वसुष्क] एक धौजनला एकाव काना (पएइ २ १)। वालास वि िचलारिंश} एक्यानीमनी (रहम ४१ थर)। बर दि ["बर] एकानी विकास-वाता (धावा)। वरिया सी ["वर्या] एकाची विद्रुप्ता (धाचा)। चारि वि

["बारिम्] भक्रेब-बिहारी (सूम १ १३) । "बुडर् ("बुड] विद्यापर पेश काएक समा(पटम ४ ४४)। स्क्रास वि िंच्छ्रम**े १ पूर्ण प्रमुखनामा धकरा**क 'एयण्डल' ससागर' मुनिक्तस बमुहे' (पराह २ ४)।२ महितीय (काप्र१८६)। जडिं वि <sup>वि</sup>ज्ञिटिन् ] मङ्गामङ् विरोप (ठा २ ३) । आय वि ["आत] मोसा निस्तहाय" 'खग्मविमास व एवडाए' (पगहुर ५) । ट्र वि [ १६४ ] ६कट्टा एक जिंत (मग १४ ६ उप इ. १४१)। ह नि [र्श्वी एक धर्मवाता पर्याय-राज्य (भीत १ मा) । दू ट्रंब [ब] एक स्पान में मिलिया नक्षेत्र एगेहरू (पडम ४७ ४४)। ट्रिस कि ["सिंक] एक ही धर्मवाला समामार्थक पर्याय-शब्द (ठा १)। "हिय वि िस्थिक विसके फन में एक ही बीज होता है ऐसा माम वर्षेयहरू वेद (पएछ १) । जासा की ["नासा] एक दिन्कुमारो देवी-विशेष (भाद १)। त्तम ["त्र] एक ही स्वान में 'एपले ठिमो (स.४७)। "स्थादेको ट्र (सम्म १ ३३ निषु १)। नामा देखी यासा (ठा =)। पए म विदे । एक ही साम प्रापन (पि १७१)। पक्त्य वि ["पक्] १ मधक्य (एव) । २ ऐकान्तिक मिक्क (सुमे १ १२)। प्रमास कीन [ पद्मारान् ] एकावन, प्रवास और एक । पन्नासदम वि ["पञ्चारात्तम] एव्यवनवा **११ वॉ (पद्म ११ २८)। पाइक्स वि** िपादिकी एक पाँच ऊँचा रखनवासा (बाहापमार्मे) (अन्तः)। यासग्राह [ पाइयेक] एक ही पारने की भूगि स सम्बन्ध रखनशासा (प्रातापना में) (पर्ह २,१)। पासिय वि ["पारिमें क्र] देखा पूर्वोक मर्ग (क्य)। अत्तन भिक्ती क्त-विरोप एकासन (पंचा १२)। शुद्ध वि भूव] १ एकी भूत मिला हुमा (ठा १)। २ समान (छ.१)। सण्डिम निस्तु एकाप्रवित्त तल्यान (तुर २, २३६)। मैग वि विक्र] प्रधेक इर एक (सम ६७)। य नि [क] एकापी, बहेना (रद १)। य ति [ग] यरेना मानेशसा (बत १)। यर वि विर] श में से की

भ्रीएक (धर्)। याघ[दा]एक समद में (प्राप्त नव २४)। राइय वि [राजिक] एक-एकि-एम्बन्धी एक एउ में हीनेवाका (सम २१ पुर १ ६) । सम न ["सत्र] एक राप (ठा ६,२)। इ. वि [एक] एकानी स्रकेता (ठाका सुर ४ ४४)। "विद्व दि ["विद्य] एक प्रकार का (नव ६)। "बिहारि वि ["बिहारिम्] एक्स-विहारी प्रकेशा विचयनेवाला (बृह १) । बीस**इ**म वि विश्वतिम दुनशीतवा (पटम २१ <!)। पीसा की [विराठि] एक्तीय (पि ४८१)। सद्गृषि [पष्ट]एक्छजा ६१ मा (प्रस्म ६१ ७४)। सद्धि भी पिष्टि एइस्टर (सम **७**३)। सत्तर वि िंशप्तती एनइतरमी **भा**षा (परमा १ )। समद्रय नि "सामयिको एकः धमय में होनेवल्डा (भग २४ १)। सरिया क्ये "सरिक्यो एकावली हार-किछेन (व १) । साम्रिय नि [शाटिक] एक नक बाता एयसप्रीवनमूत्तरासेनं करेंद्र (रूप रणमा १ १)। सिर्धम [वा] एक समय में (पर्)। सेख पूर्विख पर्वत-विरोध (ठा २,६)। सेककुक पूर्व [<sup>\*</sup>रीसकृट] एवरीच पर्वेट का रिकार-विशेष (बंध) । सेस र दिश्यो स्थानस्य-प्रसिक्त सकास-विरोध (सन्दु)। हा स िंधा]एक प्रशास्त्रा(ठारे)। ∦त्ताच [\*सङ्ग्] एक बार (प्रामा) । । विश्वस वि["किन्]धनेना(क्स मोव २ ४८)। ।दस पि व [ादशम्] ग्वा**ण्**। ावसूचरसम वि ["विशोचरराक्तम] एक औरमाञ्चर्व १११ वी (पत्रम १११ २४)। भोग पुंधिमा एरक-रूकन (निषुर) । ।मोस वि ["मर्श] र अल्पु-क्लाणा काण्य दोष वस्त्र की सब्स में शहूस बर दोनो संबतो की हाब से बतीट कर ब्द्राना (घोष २६७)। विय नि [धित] एक संबद्ध (क्य)। (रस केको ।व्स (पि ४३३) । (रसी **वर्ष** विद्योति विकि विदेव प्रशासकी (बया पठम 📲 🦭) । ।वण्य धीन [पद्धारात्] एक।वन (शि १९६) । विक्ति, स्त्री और विक्रि

छी विक्य प्रकार नी मिशायों से समित हार (बीप) । विस्नपविसत्ति न शिवसीप्रवि-भक्ति नारक-विकेष ( एव ) । "वाइ पू विविद्या एक ही काल्या वनैष्ह पदार्व को माननेवासा दर्शन, वेदान्त-दर्शन (ठा इ)। विस कीन विश्वाित चैक्या विशेष एक्कीस (परम २ 💌) । सिम न िश्चन ।सन् व्य-विशेष एकारान (वर्गे २)। इद् पुन ["इद्) एक दिन (प्राचा २, ६ १)। सम्बद्धि [गहस्य] एक ही प्रहार धे नष्ट हो जानेजाना (सप ७ **と)। ।हित्र वि ["हिक्क] १ एक वित** का करना। २ पूंच्चर-विशेष एकान्तर ज्यर (सप ९७)। हिए वि ["विक] एक से ज्यादा (वंच)। देखों एक एक भीर एक। प्शंत वेबी पर्वात (ठा ३ सूच १ १३ मीव श्रद्धार्थका श्रः १ )। विद्वित की [\*हिटि] १ कैनेतर कर्तन। २ वि कैनेतर क्रीन को माननेवाना (सूम २,६) । ६ वर्षे निधित सम्पन्तन निरुपत्त स्टब-मदा (सूम १ १३)। वृक्षमा भी ["दुष्यमा] धवर्षापणी-कान नास्क्रमां भीर अस्परिसी-कान का पहला बास काल किरोप (सूब १ व)। पंक्रिय पु ["पण्डित] बाबु, संपत (भव) । आस पूर्विष्यास्त्री १ वैनेदारक्तनं को माननेवाला। २ मर्स्यत कीन (सन)। बाइ नि विदिन् ] वैनेदर कर्रन का सनुमानी (राज)। बाव पुं ["बाव] बैनेवर क्तन (पुपा ६१८)। सुसमा भी [ सुपमा ] कात-विरोध भवस्पिछी कल का प्रथम और बासपिछी। नान ना चळवाँ माध (लॉदि)। एगेविय वि [पेरान्विक] १ मनस्यक्षकी (निमं)। २ स्रक्रितीय "एएसियं कम्मनाक्रि मोसइ' (प्र १६९) । १ क्लेटर कर्रन (सम्म 23 ) I

प्यांतिय न [पेकान्तिक] विन्याप का एक सेर - सप्तु नी सर्पन तरिएक साथि एक ही रहे हैं केवार (संतीर १२)। प्याहि केवी प्रमान्यहि (केव्ह १३६: मुख्य १२)। प्याहिका की [के] नीता वहात (प्राह्म १ १४)।

प्राठ्यण न [प्रकरभाम] एक प्रकार का स्थ (पद २७१) १ पर्गिदिय नि [एकेन्द्रिय] एक दनिक्याताः नेवन स्पर्शेन्द्रववाना (वीव) (ठा७)। प्गीभृत वि [पश्चीभृत] मिला हुमा एक्दा॰ प्राप्त (सुपान६) । पगुण देशो अन्तमः। वचास्न वि विला-रिंश] जनवानीसमां (पदम १६-११४) । वत्ताबीस कीन विस्तारिकत् । एनवासीक (सम ६६)। चत्ताबीसदम वि विस्ता रिंशाचम उनवामीसवा (सम ६)। जडाई ध्ये "नवित्रो मगाधी (चि ४०४) । बीर्स कीत [दिशत्] उन्तीस २१। तीसइम वि "श्रिश्चम | उन्तीदवी २१ वी (पर्स्म १६ ४६) । नउइ देवो व्यवद्व (सम.६४)। नउम वि ["नवत] नवाग्रीमा (परम ६ ४३)। यम प्रमास क्षेत्र विकासन् ] **चनकास (सम ७**३ मय)। प्रजास वि ["पद्माञ्ज] चनपवासर्वा (पदम ४६, ४ )। प्रमासद्वयं वि पिश्चाद्यात्वयः । जनस्याः धर्वा (धम ११)। बीस ब्रीन विद्विती जनीस (सम १६ पि ४४४) शासा १ १८) : शिसक् की ("विद्यसि ] जमीस (सर्ग १)। वीसइम बीसईम वीसम वि [बिरादिवम] जनसर्वा (लामा १ १ परम १६, ४१६ ति ४४६)। सङ्गी [पार] सनस्टरी प्रश्ची (पटम प्रश्चर)। मचर वि [सप्तव] क्रावतरहा (पार्व **५६.५)**। एती (सीत्र **को** [पेड़ीति] क्तासी (सम 🖙 पि ४४४ ४४६) । "सीव वि ["र्द्धीत] उचासीना ७३ वा (पद्म ८, १४) । रेको अवयः। प्युरुष ( [प्रकोरक) १ इस नाम का प्रश फर्व्याप । २ वि उपका निवासी (ठा४ २)। पग्ग (प्रत्) देखो एग (दिय) । एक पू [एक] बागु, पवन (शाचा)।

एकजया की [एकना] कम शोपना (नुपर्धि

पळ वेको एव≔एड्। वक्, एळासाण

एज्ञज व [आयन] बायनन (वर १)।

144) i

(चम १=)।

प्रजीत देखो प = सा+इ।

एक्रमाण देखें ए = मा + इ। एड मक [ एड ] छाड्ना स्वाम करना । एकेइ (मय)। कषडू. पश्चिमान (एस्पा ११६) । संद्र एक्टिसा (मग) । इट धदेवड्य (सामा १ १)। एक्ट कर [एक्ट्य] इटाना दूर करना। एक्ष, तंत्र एडेसा (राम १८)। एडक्, पूरिककी मेर मंद्र (उप प्रस्थ)। पद्यया और पिडश्ची भड़ी (पट)। पण द पिज | इच्छ मुग इच्छि (क्यु)। णाहि को निक्षि कल्प (कप्प) । प्लंड दे [एणाक् ] चन्त्र चन्द्रमा (कप्पू)। पणिञ्ज वि िणय हिरिए-संबन्ध हरिए का (मास वर्गपद) (राज)। यशिकाय प्रिणेयकी स्वताम-स्यात एक राजा जिसने मानान् महानीर के पास बीना शीमी (ठा प)। पणिस प्रिणिमी गुप्र-मिरेन (उप १ ११ tt) ı युजी की [गणी] इरिली (पाम परुद्ध र ४)। यार पू [ चार] हरियों को चरानेवाला. चनका पीपण करनेशामा (पण्ह १ १)। एणुवासिक पूँ वि भेर मेहक (दे१ १४७)। प्रेजेज के प्रेपिज (निपा १ ६)। पण्डे ) म दिवानीम ने म्यूना संशीत एण्डि (म्याहि २ १६४)। यताय देवी एत्तिक = एतावत, एतावे नर तोघो (बीवस १००)। एक्ज वि [इयस् एवावन् ] न्वना (पप्रि १६ सम्बद्ध )। यत्तप देनी इ = इ । एसहि (पन) च [ इतस् ] परा हे (हुमा) । एत्तह रहा इत्तहे (दूमा)। पचाहे देवी इचाह (हे २ १६४) हुमा)। एचित्र ) वि [इपन् एतावम् ] शता पविख्र (१६२ १२७)। सच मच वि ["मात्र] पतना ही (हे १ ८१)। पितक (सी) देवो पश्चिम = एतानत् (शाह **22)** 1 पच्छ (मप) कार वेनो (हे ४ ४ पत्त्र स [दे] भनुना इसतमय (प्राप्तः ।)। पत्ती देवा इस्रा (महा)। ٩¥

एचील व दिवारा से सेकर (दे १ १४४)। प्रस्थ स [कात्र] यहां यहां पर (उवा यजका चाद १ ३)। प्रयी वेको इत्थी (बन १ ३१ टी)। पं भु (भप) रक्षी प्रथ (हुमा) । प्रदेषद्भ प्रदेषये तालय मानामं (सा ८११ थी। प्रिक्तिसञ्ज (शी) नि प्रिक्तिसिक् । इति शास-संबन्धी (प्राप) । एइइ वेका पश्चिक्ष (हे २ १५७ कुमा काप्र ७७)। एमं (ब्रन) व [न्य] इस तरह ऐसा (यह सिंग)। यमक् (पन) ध [यथमव] श्री तयह ऐसा ही (पद्वका६)। एमाइ १ वि [एवमादि] इत्यावि वर्षेष्ठ एमाइय (मुर = २१ जर)। प्साण विदि | प्रदेश करता हुया (दे १ (44) एमिणिमा की दि] बहुकी जिलके शरीर को, किसी देश के रिवास के सनुमार, युद्ध के थाने से माप कर उस वाने को फैंक दिया बाता है (वे १ १४४)। पमा ) म पियमयी इसी सरह, इसी एसेच । प्रकार वा मेंग कि करीएका एनेप ए वस्तो छाइ' (काप्र २१) ह १ ₹ 9 १ ) 1 एम्य (पर) ध [ एवम् ] इत ठ०४, इस प्रकार (१४ ४१०)। यस्बद् (धप) च [एकमच] इसी तरह, इस प्रकार (है ४ ४२ )। एम्यहिं (प्रप) म [ श्यानीम् ] इत धमय मभुग (१४४२)। एय मक [एउट्ड] १ कीका हिपताः २ चपना । एवइ (कपा) । वहः स्पर्धतः (हा ७) । ममी , ववह पद्ममाण (राव) । एय पूर्विजी विशेषमा (मग २१ ४)। एर्यन देखो एक्टन (पटम १४ १०)। प्रमण न [मजन] रम्प क्षित्र, 'तिनेक्र्यं मार्च (मार ४) । ण्यणा≢धे [मञ्जला] १ इच्या १ पति चपन (भूम २, २ भग १७ १)।

प्यापि रेसो इयाणि (रेमा)। एयार्यंत वि [ एतायम् ] इतना (भाषा)। एरंड पू [एरण्ड] १ इप्र-विशेष रेंड़ मंडी एरएडका पेड़ (ठा४४ छामा ११)। २ तुण-विशेष (परण १) । मिजिया 🛍 िमञ्जिक्षी एरएइ-मध्य (मय ७१)। परंड वि पिरण्डी प्रशाब-बूश-संबन्धी (पद्मादि) (दे१ १२)। यरंडन्य ) १ [दे] पायन हुता 'एरंट्य परंडय ) मार्ख एरंडन्यमाखेति हुन्द-यितः (शृहरी)। परण्यस्य न [प्रण्यवतः] १ क्षेत्र-विशेष (सम १२)। २ कि उत्त क्षेत्र में ख्तिकामा (ब्रा२)। परवह 🛍 पिरावनी, धाजरवती निध-निरोप (सनः रुस) । एरवय न गिरवड़ी १ क्षेत्र-विशेष (सम. १२. ठा२ ६)।२ पूर्णत-विशेष (ठा१)। प्रथम वि [ प्रयत ] ऐरनत क्षेत्र का (सुक्र १३)। परयय वि [पेरवत] ऐरवत शेवका छने-नाता (प्रसु)। कृष्ठ न ["कृ⊳्] पर्यंत विरोप का शिकर-विरोप (ठा १) पराणा 🛍 दि 🚶 रन्त्राणी प्रद्रका स्वन करलंशनी क्यें (दे १ १४७) । एरावई की लिरावटी निके-विशेष (ठा ४, २ वि४६१)। एरामण पूं िगरायण । १ इन्द्र का हानी जो कि इन्द्र के इस्ति-गैन्य का समिपति देव है (छ ६,१ प्रयो ७८) । बाह्यम धु [वाह्स] इप्रकारन (का २३ थै)। परावय पं पिरावती १ हर-स्थित (एक)। २ इद विरोप ना समिताता देव (शीव ६)। ३ दन्द-राज्यक्रित पञ्चमा प्रन्तार में साहि के हरद भीर भशाक दा प्रद्रशासीं ना र्यक्ति (पित्र) । ४ ततुत्र श्रून । ६ गरम सीर सम्बा इत्त्र-बतुष । ६ इछवती नदी का समीतवर्ती देश । ७ इन्द्र का द्वाबी (दे १ ર ) ા एरिम वि [ईटरा] इन उपद्र का ऐसा (माबाः दुमा शानु २१)। एरिमिझ (मन) उत्तर रेलो (पिन)।

एक वि दि देश पुरुष निर्श (दे १ १४४)। ) प्र[एक, एख] १ मुर्गेकी एक ग्रम्मा ∫ जाति (विषा १ ४)। २ मेग मेड् मग रि मिकी (मुप २२)। मध र मूक जेड़ की तरह धक्यक बोदनैयासा 'बच्च्समूचमस्मलुप्रसिवरबल्ड्यंपले दोसां (चा १२ इस ४३ बाव ४ निचु ११)। प्रसाच्छ न [प्रक्रश्रं कु] स्तराम स्मात नवर क्षिप (का २११ टी)। एक प्रदेश के बो क उन्हों प्रदेश है। एळ विखि दि रेवनाम्य दनी। २ ई इसम. दैन (दे१ १४ पट्)। पता भी पिसा र स्नामनी का पेड़ (से ७ ६२)। २ इलाक्बी-कन (तृर १३ ३६)। रस पं रिसी न्नामकी का रस (पध्ड 2 X)1 म्ब्यलुग पूर [एक्यलुक] यान् की एक वारि कन्द-विशेष (दश् ६) । प्रधानवान [प्रधापत्य] माएन्य नीत का शक साचा-पोत्र (ठा ७)। प्रधापन वि ऐत्यापरम् । एकानश्व-धोन का (सिर ४१)। एन्यवना की [प्रस्मपत्या] पत्र नी डीसपी रात (चंद १ १४)। प्रसिक्त कि इंट्स रेमा (इंट ७ २२)। मुख्य वृ[ग्रीसङ्क] बाम्य-क्रियेच (पर्छ १)। प्रतिया औ [र्णाङ्का एकिस] १ए० वन शीमृदीः २ मेन्या (**१**३ १२)। प्रतिम देना गरिम (शुप १ ६ १)। धन्तु पृष्टिन् हो बुद्ध-बिरोप (इस १ ६१ दी)। प्रजुत (पृत्र [प्रजुक्त] देश्यी द्वार के शीचे प्रजुप }को संस्थे (जीत के सामा ने)। सह दि [द] धरिक निर्देत (दे १ १७४)। क्य य [तत्र] रत वनीका मुक्क बस्पदः—१ यबबारल निवय (ठा १ १ प्रान् १६)। २ सारस्य नृष्यम् । १ वार-निरोय । ४ निवद्धः। १ परिवा । ६ घना मोहा (ह २ २१७) । गम देनो वर्ष (हु १ २६ पत्रम १४, २४)। ग्दर्राः [इयन् मनावन्] रतना।

मुत्ता प [ इराम् ] इतके बार (रूप)।

विवे ४४४)। एवं च [ एक्स् ] इस तया, इस ग्रीत से इस प्रकार (सूच १ १ हे १ २१) । मूझ वं भित्रो १ मुगति के मनुसार उस किया से विकिए पर्वे को ही शब्द का प्रसिनेय मानले वामा पत्त (ठा ७)। २ वि इस ६ एड का पर्व-प्रकार (का बच्छ)। विष पिड विषिधी स्टब्स स्वार का *वि*ष्ट ३२६ एकेहास र् [एवंहास] इञ्चित (पटा (₹ ₹) | एवड (पर) वि [इयम्] इतना (है ४ ४ ः दूस∟ मृति)। प्लमाइ 🖦 पमाइ (परह १ ३)। प्तमं**य**} देशो ज्मेष (दृश् २७१ः छवा)। प्रजी केवी पर्व (पर्यमि ७२) स्वयन १)। प्रकारेको एव = एव (सर्मि १३ स्वप्न ४)। पर्स्माह् (द्या) च [ इदानीम् ] इम समय मञ्जा (प४)। एक्शरु पूँ [इशरु] रक्षी (कुमा) । एस सक्दिश्री श्रूच्छा करना। २ कोबना । १ प्ररास्तित करना । एस६ (पित्र **41**): एस सक् िका+इप्]करना, 'तनहा विख्यमंदिनाँ (उत्त १ भः गुद्ध १ ७)। एस सक ब्रिग+इप रिकोनना रुद मिना की पीय करना । २ निर्देश निवा का बहुस्त करना। एसंति (पाचा २ ६ २)। व≰. एसमाण (बाचा २, १, १)। संह र्णसत्ता एसिया (दन १ धावा)। हेट पसिचए (बाका २,२ १)। एस वि एएये । साबी पदार्व, होनेवरनी कन्दु(मान द)। २ वृधिमध्य कार (इसनि १) भारपंत संगद बच् बद्ध शीरक किह ब एक्सिम (विमे ४२२)।

यसग वि पिपकी सलेपक क्षेपक (याचा)। एसद्भान चित्रवर्धी वेसन प्रकृत संपत्ति (ठा ७) : यसजन प्रिजी १ सम्बद्ध कोनः। २ प∎रा (उत्त २)। एसजा हो [ ५५ जा ] १ क्लेक्स प्रेक्स कोष (माचा) । २ प्राप्ति सामः विस्तरम् फियावीठे (सूच १ ११) । ३ प्रार्वेश (सूच १२)। ४ निर्देश साहार की चीन करना (ठा ६)। १ निर्दोप निवा (माचार)। ६ इच्छा समिताय (पिट १)। **७ विशा**नी च्याख (स १४)। समिद्र श्री निमिति निर्देश कियाका बहुछ करना (छ। **१**)। समिय वि सिमित्री निर्मेष भिनारी शहू करतेवाता (उच ६ घप) । यसणिक वि [प्यजीय] बहुल-नेप्य (साम पसि वि [प्रिकि] क्लोपक क्लोप करनेका स (पाचा)। एसिय वि [एपिक] रेकोज करनेकाण, धवेपक । २ ई. स्याव । ३ पालकिङ-विदेश (मूर्प ११)। ४ मनुष्यों की एक नीच वार्ति (धावा २,१२)। एसिय वि [दियत] गवैपित धन्वेपित (भव ७१)। रेनिसँग विद्या (साम्र)। एसिम वि [एपित] फिजा-बर्बा की विजि वे प्राप्त (तृष २१ १६)। प्रसारिय क्वी प्रसञ्च (हर) । पद धक [ पथ ] बढ़ता कात होता। एहर (पर्)। प्रवा कवद्भ-भीसीत बुहुम् र इति (स्ट १)। पद (भप) वि [ ईहक् ] ऐसा, इतक वैपा (पङ्ग्मिति)। रइत्तरि (भार) 🕰 [प्रफसप्तरित] संस्त्रा विरोध ७१ (विय) । ण्या की [ एयस् ] सामन रत्यन (बत्त १९, AR AN I ण्डिश वि [पंडिक] इस कम्म संबन्धी (बीव ₹**२)** ।

पछ--एडिझ

एस देवो इसा भग्न की ए इस्तइ वर्ण

ऐ

ऐस [क्रांय] इस समी का सूचक सम्मस्म । प्रश्ता ४ ध्युष्य, प्रीति । इ.सनुसमः पै १ संस्थानम् । २ सामकरण् संबोचन । ३

श्च किरियाद्व्यसङ्ग्रहण्यके येवायद्वर्धनम्यो
 व्यद्भी वरेगी वनती ॥

## च्यो

को दूं [को]स्वर वर्ण-विध्य (हे १ १ प्रामा)। क्तो देनो अवचमप (हे १ १७२० प्राप्त कुमान्यह)। आ देवी अव (हे १ १७२ प्राप्त हुमा षष्)। ओ केवो उप (१११७२ पुमा)। क्षो केवो तथ = चत (हे १ १७३) दुमा)। आ स [ओ] इन सर्वो ना सुवक सम्मय-१ विदर्भ । २ प्रकीत विस्मय (प्राइ ७६) । श्रो स [सो] इत सर्वे का सुबक सम्मय-१ मूचना 'मी माविष्यमदित्तन्ते' । २ परवा चार बनुवारा 'बो न मए द्वामा धविबाए' (हेर, २ व वह् दूमान्प्रका)। व संबोधन, प्रामन्त्ररा (नाट--वैत १४) । ४ पारपूर्वि में प्रमुक्त किया बाता सन्दर्भ (पंचा १ विशेष २ २४)। छोझ प दि] बार्टा क्या कहानी (दे १ 8×8) 1 ओअज वि [सपगत] यत्त्वा 'माममामव-(वि १६६)। को अंक पूर्वि निवत पर्वता (देश १२४)। कोश्रद्धक [का + क्रियू] १ क्लाल्यार से द्यीन सेना । २ नारा करना । मीधंद्र (हे ४ १२३ पर्)। ओअंदणा भी [भाष्यंदना] १ नातः। २ नवरवत्ती कीनना (दुमा) ।

ओअस्त्र स्क [ इप्त ] देवना । योगन्यद (हे ४ १०१: पड़)। बोधमा एक [ वि + आप्] व्याप्त करना। मोमग्यह (हे ४ १४१) । ओअगिगल वि विशासी विस्तृत पैसा हुमा (कुमा) । आअग्निम विदे । ममिनुत परिमृतः २ न केश क्येप्य को एकवित करना (दे १ १७२) । भार्आपम ) वि [वे] बात पूँचाह्या ओ मधिम ∫ (देरें रॅंदर पर्)। ओक्रप्य वि [अयनसं] नमा हुवा, नीचे की तरक मुका हुआ (से ११ ११व)। को अन्त वि[अपद्युत्त] की वाकिया हुया, | **एवटा किया हुया। ग्रीमचे कुममुद्धे बनतव-**। कलियानि कि ठाइ ? (गा ६३४)। ओञचभ वि [अपवर्श्तितस्य] १ प्रवर्तन-मोन्य । २ ध्यायले योग्य आहेकी शासका 'कुमूमस्मि व पव्यक्तप् भगरोसरुप्रस्मि' (# # F) I ओअम्मअ वि [वे] प्रतिपृत परानृत (पड़)। शाभरतक [अव+तु] १ वैना-प्रदेश करमा। २ नीचे स्वरना। सोवरद (हे ४ वर) । वक्र कोयरंत (प्रोच १६१ तूर १४ २१)। हेड भीयरिउ (प्रतः)। इ कोवरिषम्य (पुर १ १११)।

ओअरण न [४पकरण] सावत, सामग्री (पा बोभरण न [बपतरण] उत्तरतः, तीचे याता (पउड)। लोमस्य पू [अपवरक] क्यारा कोठरी (गुपा 8 (X) I ओञरिज वि जिनतीर्ण | एतत्त हुमा (शम)। ओअरिवा वि विदिशको पेट-मध पेटू. ब्हर भागे भाष की किन्ता करनेवाला (बोक ११व मा)। ओअरिया 🛍 [अपपरिद्या] होडरी घोटा क्मरा (सुपा ४१६) । श्रीक्षद्ध देवी ओबहू = यप + पून् । योमन्त्रद (সছে ৩ )। ओबद्धा धक [ब्रय+चल्] चनना। मोमञ्जूति (पि १६७ ४८६) । वङ्ग आञ र्श्व (नि ११७ ४८०)। आञ्च र् दि र भगभार, **ब**राव मानरस महित माचरण (पर्वस १२१)। २ कम्प नोपमा (पड रे १ १६६)। ३ गीमों ना वाड़ा। ४ वि पर्यस्त प्रक्रिप्त । ६ नम्बमान घटनवा हुमा (वे १ १६४) । ६ जिसरी र्याचे निमीमित होती ही वहा 'मुन्दिरपैतो-मझा मन्द्रता शिममनविद्वरेषि पर्वता (स \$\$ ¥\$)1 को असूज वि विशेषिक्षक प्रतास्ति (पर्)। कोअव सक [साधम्] सावना कत में

करमा, बीवनाः 'सन्द्राहि ए। मी देशास

लिएनई समित्रमायरविदिनेश्चर्य समित्रमार्गाण-क्ट्रमिश म मोमरेडि (व ३) । संक ओअवंता (वं १)। क्षोभवज न साधनी निजय कर करता स्वायत करना (वं ३ — यव २४ व)। भोभाज दे दि । र प्रामाधीस गाँव का स्तामी । २ माशा चादेश । ३ इस्ती वर्गरङ को पक्कते का वर्त । ४ वि सपहत बीता ब्रमा (दे १ १६६) । धांजाभव प्रिवे चल्त-समय (दे १ १६२)। भोभार एक जिप+शार्य] शास्त्रा. 'न है स्टर्न हरनेया मोमारेसि' (मै ४१)। भाजार प्रक्रिपद्मरी ग्रीतर, क्रांति सति (**45**41) i कोभार पं विश्वतारी १ धनवारण (ठा १) नडड) । २ धवतार, देदान्तर-बारल (पट) । १ अपित कमा 'धन्नेतमछोबारी बत्ब चराचेकाहोर्सं (स १६१) । ४ प्रदेश (विषे १ ४ )। भोभार रेखो चवयार (वर् )। मोभारण न [अवदारण] उतास्त्रा सरतास्त्र करता (वे **४ ४** )। भोजारिज वि [स्ववदारित] प्रतास हमा (चे ११ १६ व्य ११० दी)। भोभाख पृ[क] द्योग प्रमाह(दे १ १६१)। भोजासास **हि] १ वर्**म सरोप । २ पींक, मेली (दे १ १६४)। मोभायस र् हि] बत्ताका पुत्रह का सूर्य-वार (दे १ १६१)। भोजास देवी अनगास (हे १ १७२ दुना र ) भन्दाध्विष्ण मृंदर ! धौमालो क्ल पानार्षं (काश १ ३ । भोजास देखो उदबास (हर १७३) प्राप्त)। भोआदिअ वि [अयग्र्यादित] विद्या भरताहन जिल्हा गया हो नह (से १ ४ ₹ )ı भाइपि <del>एक</del> [मा+सुष्] १ बोद् केत

स्पाक्ताचेंक केना। २ उद्योग १ रख्य केना

'ती व्यक्तिकार सब बोइंबइ नंदुर्य सरीसको

(पत्रवास्थ १६) तहेव संबद्धति परिवा-

बीए मीर्वद सि' (बाक ३)।

निया । स्थिए महास्त्रीय प्रशस्त्रियस्त

ऑक्टम विशिवनीची उत्तराहमा (शब्द गा ६३) । श्रान्त }न [दे] परिवाल, सक्क (दे १ भोडचल । ११४)। आंद्रकृषि दि] प्रांटक (वेश ११८)। भोजेठण गॅंडिंगगण्डनी धी के सुंह पर का बस्त्र ग्रैंबर (स्रसि १६०)। ओउडिय नि दि] पुरस्कृत साथे किस हथा (qr) i भोऊछ र शिषकृछी सन्दर्श हुआ बस्त्रा धन प्रात्मन (पाप) 'मरम्यननवामोतियो-ऊर्म (पडम २०१) । देशो आचल । भाष भाम] प्रणव मुल्य मन्त्रद्वार (पेडि)। भों बार पंश्विकारी 'घो' बदार (सत्त २४ स्रोगज एक (क्यम ) धम्मछ धाराज करता । बोफ्सइ (प्राष्ट्र ७३)। भौष केवो बीय । स्रोतिह (हि ४ १२ टि) । मॉडउ र दि] केत-पुण्ड, केत-पुरा विमास्त (दे १ १६ ) । भोंदर स्वा एंदर (पद )। ऑबाट एक दिशायम् । इक्ना मान्द्रास्टि करता। ग्रीनलाइ (हे ४ २१) । ऑवास सक्दिताक्य ] १ दुवाना । २ व्याप्त करता । प्रोबलक (**१** ४ ४१) । ऑवासिम वि∫द्यादित] इक्सहमा (दुमा)। भौवास्त्रिम वि [प्रमवित] १ स्वाया ह्या । २ व्याप्त (इस्मा) । खोकंन्य रेबो स्टब्स्य (शावा २२३ र टी) । ओक्षिक्षमा केनो सङ्ग्रीक्षक्षमा (१व ६२) । मोस्तर वि [अपकृष्ट] १ बीवा ह्या । २ नः स्पारपंछ श्रीवान (दत्त ११)। व्योक्तहरा देवी स्वहत्स्य (प्रश्नु १ व) । भोकरग दु [भवकरक] विद्या (मन ६)। मोकस एक [श्रद+कृप्] १ नियन होना पर जाता। २ सीचता। ३ सह नामा । वद्यः ओक्समाण (दय) । থাৰদ্ধ ৰি [অৰকাদ্ধ] নিয়েক প্ৰতিষ্ঠ

**प्रसाद**धिकमाना विद्यंति (प्रोप) ।

ओक इंदी देशों उक्कोदी (दे १ १७४) :

ओक्टनो सौ दि दिया चूँ (दे १ ११६) । कोक्किश न वि । र नास वसन धरस्वान । २ वसन छन्दी (हेर १११)। ध्योकत्रचंसर शिय+कप ] वींवनाः कर्म 'जह पर गोल्बंपिका, तह तह हैन पविराहमाकोरा । समर्थ । तर्पनगर्ध इसलियो बासमे तम्ब (गर ११ ६१)। व्यक्तिंह सह विद+मण्डम विदेशाः माणा। इ शाक्सिक्यक्य (से १ २१)। भावन्यविञ विदिधासन्त(दे १ ११२)। आक्संद देवी अवक्लांब (मूर १ २१) पत्रम ३७ २१)। अक्तुछ देवी इकत्रक्ष (रूमा प्राप्त) । भाकतस्त्री [व] रेगा सम्बद्धी (दे १ १७४) । धोक्समाण (शी) वि भिविष्यत् ने मुक्स में डोनेलाना सावी (प्रकृ १६)। धोकिकण्या कि वि] १ प्रक्रिए । २ सर्थित स्थित (क्या के १ १व )। २ क्ल बरा हुमा। १ पार्श्व में किस्ति (tttt): भोक्नियत्त वि[अवक्किप्त] ग्रेंका हमा (वस)ः थोलीय देशो आक्रतीय । कोगम देवो अवगम । इ. ओगमिव्स्व (शी) (मा ४६)। क्षोगय वि [क्यगत] प्राप्त (सुम १ ६, 2, 2)1 व्योगर देवो अस्मार (लिम)। कोगस्तिअ वि विकासित विद्याहम विश्वका हुमा (गा २ १)। कोगसण न [व्यवक्सन] हास (राज)। भोगहिस वि [सवगृहीत] स्नातः भूरीत (ठा ३)। भोगाड वि[अधगाड] १ धापित धविद्वित (ठर २,२)। २ व्याप्त (सावा १ १६)। वै निमन्त (ठा४) । ४ वंत्रीर, व्हरा (पक्रम ٦ د د د د د د د د د ۱ ا धोगास दु [सनसरा] क्यह स्वात (ति राष्ट्री)। भोगास पुं[अथसारा] मार्गचस्ता (पुच 'परवाद्यः अज्ञास्त्रता सम्बद्धाः 9 31)1 ओगाह वक [अब + गाह\_] पांच से क्लन्य।

महः जोगाइत (सह ४७४)।

क्षोगाइ एक [अप+गाइ\_] चारणहर | करना। सोगाइद (पर्)। यह ओगा-हुन (प्राप २)। सह ओगाहरूचा, कोगादिका (रग रुभग र ४)। भोगाह्य न [अवगाह्न] सवगहन (भए)। कोगाइणा की [अपगाइना] १ घाषार मृत बारास-क्षेत्र (ठा१)। २ ठरीर (मग६ a) । १ शरीर परिमाण (का ४१) । ४ धवन्यान धवस्यिति (विय) । जाम न [नामम्] वर्षे-कियेप (मग ६ ६)। वास पृं िनाम] धरमाहनात्मक परिणाम (मय ६ ८)। भोगादिम वि [अवगादिस ] पवनान (वंचर १) । आगित्रमः ) सक [अव + मह ] र पायय आगिण्हः ) सेना । २ मनुजा-पूर्वत्र बहुए करनाः ३ जाननाः ४ उद्देशं करनाः। इ. सच्य कर बहुता। द्यापिएहर (मग रप्प)। संह आगिविक्य अभिग्रहण्या ओगिण्डिचा, ओगिण्डिचार्ण (बाबा लावा १ ११ क्स' बरा) । इ. सायत्तस्य (হল নি ২০ )। आगिष्ट्य न [अपप्रद्य] मानान्य ज्ञान बिरोप परवह (एपि)। ओगिन्द्रमधा श्री [अपमद्गता] ? उपर देगा (रांति)। २ मनो-विषयीकरण मन स पानना (छ ५)। भोगिष्ट देनो आगिष्ट । नष्ट शागि-रिन्सा (दिर १ १)। आर्गुडिय रि [अवगुण्डिन] रिन्त (रह १) । ओगुट्टिको भिषदृष्टि भारतं स्परार्थ नुष्यता (गम १६ ११) । ओगृदिय पि [अपगृद्धित ] पानिवित (खावा १ ६)। ओगार १ [जागर] पान्य विरोप होहि विदेव (विम) । आसाद देती उसाद (तस्य ०३: उर: बन्ध 17 7 7 8 6 ) 1 क्षोग्गद्द नद्द [ प्रति + इप्] पाण वरता । धोगरण (प्राप्त ७३) । आगाद्य रैगो धार्मिन्द्य । पट्टम पून ["पट्टक] रेन गाध्यस्त्री के पतन का एक दुक्करद्वार पण पर्वत्या, संयोग (बल्क) ।

ओम्महिय वि [अयगृहीत] १ यग्रह्नात | से जाना हमा भवग्रह का विषय । २ सनुत्रा से मृगित । १ वड वैंवा हुमा (उता)। ४ बेन के निए उद्यापा हुमा (मीप) । भोग्गद्दिय वि [अधमद्दिक] धनुता न गुरोत संबद्धवाला (सीर)। ओगगारण न [उद्गारण] बद्धर (बार ७) । आगगाल पुँ दिं] दास प्रगाह (वेश १५१) । ओग्गास सर [रोमम्बाय्] पद्माना चत्राई हुई यस्तु का पूनः चत्राना । धारमाचड ( Y Y Y ) I भोगगाहिर वि [रोमन्यायित] पर्रापनपान चवाई हुई बस्तूना पूनः चवानराता (गुमा)। भ)ग्गा**६ दे**लो अग्गा**इ** = उत्+ब्राह्य्। धीरगाहद (प्राष्ट्र ७२) । ओग्गित्र वि [दे] यमिनून परानून (दे १ **₹**₹**द**} 1 थोम्मीअ पू [दे] हिम बर्ड (दे १ १४१) । आग्प देवा उरघंड । मेरूपर (प्राष्ट्र ७१) । कोर्ग्यासय ४ [अवपर्वित ] प्रमानित मारु-मुच्च दिया हुमा (राष) । मोप 🕻 [ओप] १ नपुर संपात (लाबा १ १) १ संगार, 'एन बाचे तरिम्बंति सपुरे बरणस्थिते (मुख १ ३)। ३ द्वरिक्येर ध्यतिनिद्यन्तवा (परहर् १)। ४ मामान्य मापारए । सण्या औ िसंज्ञा सामान्य मत (परए ७)। । इस वृं [ । इस ] मामान्य विक्या (भग २१ १)। देखो आद् न भीष । व्यापट्टित (ग्री) रि [भवपट्टिन] यादव (प्रयी २७)। आपसरपृक्षि । पर का जनवसह। १ फनर्प संदर्श पुत्रशात (१११०) नुर २ ११)। भाषमिय देशो आग्यमिय । भाषाययथ न [अपायनन] १ नकास ने पुना नाता ग्यात । २ तता वें नजी जाते वा नावाराप्र सन्ता (बाबर ११२)। भाषत्तम् देशे आगिन्ह । भाषार १ कि भाषार] पान्य साने हो । भाष्ट्राहिय देनी उन्हाहिय

१६७ बड़ी बोट्री-मिट्टी का पात्र-निशेष (मण् ओदिदा(री) श्री [औचिता] उपितता मी(परव (रंभा)। ओ चूंब सक [अय+ घुम्य] पृम्यन करना । सङ्क आधुविकण (भवि) । ओ खुद्ध न [रे] कुलाका एक मान (रे १ आचक ) रेगो आऊल (रिपार् २ मूर ओपूँछग 🕽 १ ४ )। २ मुत्र ने इटाहुँग शिविम-दीना (बल्ल) शेबूमगनियाया (नै ---पन २४६) । ओयय देनो अयथय (महा) । आविया ध्री [अवचायिस ] तो इ पर (कुर्नों को) इतद्रा करनगणी (गा ७६७) । ओ योदर न [वे] उपर भूनि । २ जयन के राम (दे १ १६६)। भो द्धभ १ वि [भवस्तृत] १ पाण्डान्ति। ओच्छार्य ) २ निस्त्र रोगो हुमा (गण्ह १ ४ यउन म १६४)। ओप्छन्ति नि [दे] १ मात्त । २ मानित पौष्टि (पर्) । भाष्यका वि विश्वयद्भी बाग्यास्ति दवा हुया 'लिक्बीउमी बनीमा मैं बदलगी सारमधेर्षं (मम ११२) । देवी आस्द्रश्न । आण्ड्स न दि] रत्त-पारन दादन (द १ ११२)। ओन्द्रम रेगो शान्द्रका (म ११२ मीत)। २ घरट्य याजन्त (माना) । आण्दर (शी) मरु [अय + स्तू] १ विद्युत्ता, फैनानाः २ माध्यादितं पण्ना द्येपनाः बाष्ट्रधर्माद (नार —उन्नम १ ५) । आरद्यविष ) वि [अवच्छातित] पारदा-आण्डाह्य । दिन हेना हुया - गुन्दनवार-सरतम्बर्शनगण्डधाध्यादयः मुख्यं नेपार गिरिकडमरायकुम" (गावा १ १---गब २४ २ व शीमहास १४)। अ बद्धानिय भीव रेती। आन्द्राय मरु [अय + द्रान्य् ] बान्द्राना बरना । मंद्र आगद्धाःथि (मर्दि) । आन्द्रायण वि [अयन्याद्य] हास्त्रा, शिपान (स ११७)।

बोध्यम-नोखान

पसत्ताहि वा समुत्तद्यो।

एसइ माश्रुपिको सो। (FIT YEX) 1 कोविकास न [के] केश-विकटण (वे १ tr ); कोविद्यापन वि (शवकिद्या) माणक्षारिक

'प्रोक्सक्रियो परेश न वर्षि

मबमाशिको परेख प नो

'पत्तेक्ष य कुन्देक्ष व धोन्छित्ररापविश्विर्हा' (बीव १)। ओ**रश्**द सक (आ + क्रम् }र साक्र्यक करना । २ यसन करना । योष्क्रीशीत (ते १६ १९)। कमें मोल्कुस्त्र (छ १ **XX)**1 कोबद्धप्य वि [बाङ्गान्त] १ वनमा हुमा । ए क्ल्सीका 'कोन्क्रुरहाबुग्नमपहा' (वे ११

44) EX 24) 1 ओच्छोबज गर्दि बर की बत के प्रान्त कार से पिरता पानी। 'राक्षेद्र पुरार्ध मरकप्रा मोन्मोममं परिन्तिती। र्ममृद्ध पहिष्यप्रीक्ती योक्रि

कर्मतं छ सस्बेद' (वा ६२१) कोजिन्द्र यक [आ] तुप्त क्षेत्रा । मीनिन्द्र (STEF EX) I क्रोक्सर वि [दे] भीक करलेक ( पड्)। बोक्क देवो प्रज्ञत (रे) । क्षोळाल्क वि चित्री बनवान, प्रक्रव (वे १

tax) (

11111

कोच्याअ १ (वे) वस्ति पर्भापन (वे १ (XY) 1 क्रोरम् रें दि शिवा सरक्त्य, चेत्रा नहीं **वह (दे१ १४४)** । भोग्मत देशों भोग्मा = दर + प्या । ब्यायसम्बद्धाः व दि । शताबद, कम वाला (दे 1 (1 1) क्षांत्रकर पू [निर्मार] करना पर्वत हे निवत्तवा जन प्रदाह (ना ६४ है १ ६ १ चपाः पदा)।

बाञ्चरिम हिं] केवी बम्मारिम (वे १

( t t txu) 1 ओक्स्य एक [अप + ध्या] बाएव विन्तुन कला। क्यक ओम्म्स्ट (नवि)। ओरम्स केरो अउद्यस्य (स्प यू १७४) । ब्योजसम्बद्ध देशो उत्तरसम्बद्ध (कुमा) प्रारू) । ओक्साय नि [दे] ब्हरे की प्रेरण कर श्राच के लिया हुआ (दे १ १४६)। धोरमञ्जूता देशो स्वत्रमञ्जय (इप ११७ टी)।

कोट पुंधिश्ची बोठ, धवर (पटम १ **५४ स्वप्त १ ४ क्रु**मा)। बोद्रिय न (औष्टिक) क्यू-बावाची स्ट कें बालते से बाता हुमा (इस्स स ६०६)। ओडब्ड दि [दे] क्युक्त धवी (देश (25) t भोक्क पुरियोज दिशासम्बद्धार वि चर्चन देश का किराती क्षत्रिया (विंग) ।

ओड्डिश वि [ओड्डीय] उत्तम-क्रीय (पिंग)। भोड्डण न [वे] मोइन, ज्यापैत नावर (देरे १११)। औदिसमा 📽 👣 दोवनी (प २११) १ कोडण व दि विश्वयुक्त (प्रक्र ३८) । क्योण केवो काम = कन (रंघा)। ओजंद पर [ धद + तन्तु ] प्रक्रिन्दन करता। समझ आर्थोदद्यामाण (क्या)। क्षोजस सक विव + सम दिले क्यता। वक् ओपस्ति (ते १ ४४) । श्रंक ओप मिळ भोजमिक्क (बाना २) निष् १)। व्योणम नि [अपनत] १ नमा हमा (धुर २, ४६)। २ न नगरकार, प्रशास (सम. २१)। कोणक यक [अय + सम्ब् ] तत्कार, फैराननामु धेर्न योग्रस्थाई (प्रीर्प) । ओजबिय नि (अवनमित) नगता प्रधा

मनतत किया हुया (१८ ६३६)। भोज्यस एक (अन् + समय ] सेने नमाना सन्ततं करता । ब्रोस्तानिक् (मृच्य ११ ) । र्सप्र- बोजामिचा (निष्)। कोणामणी की [क्षत्रनामनी] एक विद्या, निवके प्रयान से कुछ क्षेत्रक स्वर्थ प्रताहि की के लिए संबंधत होते हैं (उप द्व १६६, विष् १)।

ध्योणांचिय क्रियाँ (वे १, ३६, १ ८ ४ ना **ર શાળાં** ()ા खोणिश्रच सक [अपनि + कृत् ] गैधे इटक, वारिक सन्ता । वह बोजिअसेट (से र ७)। कोणिकत्त वि [सपनिष्ठ ] पौषे ह्या हुम्प, भाषित यामा ह्रमा (से १८ १०)। बोणिमिङ वि (अविमिमिक्टि) पुरित पूर्व

क्षा (ते ३ वर १३ वर)। भोजियह देखों भोनियह (पि ११६)। ब्याजियस्य दं दि। समीक, चीठियाँ का कुत हुमा मिट्टी का बेर (वे १ १६१)। कोणीनी की हिं| मीनी कटिनाम (दे १ 14 ) 1 कोप्पुत्रम पि कि प्रियम्ब, परामुख (दे र 22×)1 ओ जिलाह न [औक्षित्रच] निवाक मधक 'घोरिछाई शेलारचे' (शाप्त वर्ष, वे t tt#) 1

कोष्णिय नि [बीर्फिड] का के बना हुए। उली-निर्मित (कस)। क्षोणेख कि [इयनेय] क्षत्रिमें क्षत्र कर बना इच्छा फूल ब्याबि, बाबि से बच्छा मीम का पुलचाः भार्यद्वमातिकम् मोरारो (? चे) र्ज पौतिनं च रंगे चं (स्तुनि २ १ )। बोत्तसम्बद्धभाव विकासिक (दे १ ११६) । ओचान रेबी रचाय (विश्व २**०**)। भोरब एक [स्वर्] क्लना । मोरबर (ब्राइ 42) / भारतभा नि जियस्त्ती र प्रेमा इमा प्रकर (के २ ६)। २ धालकावित पिक्ति 'सर्न तको पत्कर भगते (धावस) है १ १६१३ d an Jas)! भारपाम वि वि प्रवच्य विष (दे १ 121) ( ओरवाज को धोरवाज्य (पा १९८) है

es a seet) ! आत्यर क्षो ओक्क्रर । ग्रील्फ्र (नि ३ <sup>६३</sup> नाट) । धारपर पू [के] जसक (के १ १× )। **ओरबरवान [अवस्तरक] विद्यीना** (पटन Af ax) !

कोरवरिक वि [अवस्तृत] १ विद्याया हुमा । २ ब्याप्त (से ७ ४७)। कोत्वरिश्व वि वि र माज्ञान्त । २ वी मात्रमण करता हो बह (दे १ १६१)। ओत्पस्छ देशो उत्परस = स्त् + स्तु । प्रीत्य-লহ (রাছ ৬৭)। ओत्वस्वपत्यस्य देवो उदयन्त्रपत्यस्य (र १ ११२) ओस्याद्विय नि [अनस्तृत] विद्यामा द्वमा (मिरि)। ओस्यार मक [ अय + स्वारय ] बाञ्चादिव करता । कर्म घोत्वारिग्गीत (स ६६८) । धारका देवा ओरहम (घरम १३६) : कोन्द्रय पूत [औन्यिक] १ उदय कर्म-विपाक (मम ७ १४ विने २१७४)। २ वि उदय निरम्भ (विमे २१७४ मूम १ १६)। ६ वूं, कर्मोत्रय स्था भावः 'कम्मीत्रयसद्वादो सभ्यो प्रमुद्दी मुद्दा व घोषण्या (निमे १४१४) । ४ वि उत्तव होनै पर होनेवाना (निमे 2808) I आद्य न [औदास्य] उराज्ञता चेट्टा (मारू) । জাবতাৰ সিবাৰী ক্ৰাজা (দাৰ)। आदण म जिदिनी भाउ धेवा हमा चादन (परहर र मोच ७१४ चाहर)। आदरिय वि [जीदरिक] पर मण पेट मरने के दिए ही जो साबु हुया हो बहु (निबु १)। आंदाइण न [अवदहन] इस किए हुए सोध क नाम वर्गेष्ठ् हे बाक्स (राज) । भोदारिय न [भीदायै] ज्याका (प्राक्त) । आह वि (आहे ] गीना (प्राप्ट २)। आरंपिम दि दि । भारतः । २ न्य (\$ 2 202) भोद्धंस सक [भव+व्यंस् ] १ मिराना । २ हटाना। ३ इसन्य । रुबद्द 'परवास्ति

मगीक्षेता भर्एवलिएम् भागाञ्चसिञ्ज माणा विदर्शित (भीत)। ओयाव सक [ अब + धाप् ] पीधे शहना । धौषावद् (महा)। भोषुण देख अत्रमुख । दर्भ संशुच्चति (ति १६६)। एइ आधुणिश (पि १६१)। ओपूम वि [अवपूत] बन्दित (नार)।

ओपूसरिल वि [अवपूसरित] पूसर रेप बासा, हसका पीसा रंगवासा (से १ २१)। ह्योनहिय वि [अवनटित] घवमणित विर स्कृतः चंद्रमोनवियमरखन् (सम्मत्त २१४)। ओनियर वि [अवनिष्ट्य] देश आणि क्षत्त = पपन्तित (कप्)। ओपस्स वि वि पत्रवीतं, वृत्तिक 'क्टे र्छ से तेत्रविपूर्ण मीलूयन बाद वर्षि की धोहर्यत तत्विव य से भारा भौतका' (सामा : t (tx) 1

ओप्प कि कि चित्र भीत विका हुमा (पह )।

कोष्य सक विषय विषय करना । बीत्पेश | (Tr t 44) 1 ब्बोप्पा हो हिं] शाल बादि पर मिल बगैख का पर्यंत करना (वे १ १४८)। ओप्पाइय वि [औरपाविक] स्पाव-सम्बन्धी (पीप) । आप्पिक वि अपित । समित (ह १ ६६)। ओ प्रिम्म विद्] शास्त्र पर विसाहसा "खिषमठ"ोप्पिमपमण्ड (दे १ १४८)। ओप्पीस प्रदिखितह बल्बा (पास)। आप्पुंसिस ) देशा उपपुरिस (गडह पि सोप्पुरिस ) ४६६)। भोषद्व वि[अवबद्ध] १ वैवा हुमा। २ मनभप्त (वव १)। ओ युक्त सरु [अव + तुभू] जानना। वह ओयुक्समाग (धावा) । ओस्मालम देशो उद्यालाण (दे १ १ ६)। भोमगा दि [अवभग्न] मन नट (से १

मक्त्रीति (धन)। भोगाम बरु [अय + शास्] प्रताना भमक्ता। वक् आसासमाण (मग ११ १)। प्रयो. घोमापे (मय) घोमार्गति घोमा चेंति (मुझ १६) ४ भोमासमाण (नुम १ १४)। भामास सर [अव + माप् ] यावना करना मायना (कराई भाभासिज्ञमाण (निष् २)। भोमास 🕻 [अवभाम] १ प्रकार (बार)।

व्यामापणा क्षी [अपश्राजना] सोह-निन्छ

44 2 71)1

२ महामद्द-विकेश (ठा२ ६) ।

उद्योतन (मगम म): २ मानिमान । ३ प्राप्ति (सम १ १२)। आसामण न [अयसायज] याचना प्राचैना (वव ८)। धामासिय वि [अयमापित] १ याचित प्रावित (वव ६)। २ न. याचना प्राचैना ओमुगा वि [अवसुग्न] वक वांका (रामा १ द--पत्र १६१)। ओशंक्रिय वि [अयमुक्त ] सुदाया हमा चीरत किया हुमा 'तेएवि किन्द्रअएसको पित सई-बीओडिबी नियद्गरकुकी (महा) । आम वि मिन्सी बतार, निन्तार (भावा २ १.२ १)। क्योम विधिवसी १ कम सूत हीत (बाचा)। २ सबु छोटा (मोव २२६ भन)। ३ न दर्मिश घराम (भीप १३ मा)। कोड़ वि विदेशी बनोवर, विसने कम धावा हा बहु (ठा ४) । चेरुग, चरुप वि चित्रफी बीए बीर मनिन वस घारए करनंबाला (एस १२ ग्रापा)। एस प्र [रात्र] १ दिन-सम, ज्योतिय की पिनती के सनुभार जिस दिनि का सब होता है बड़ (ठा ६)। २ महोरान रात-दिन (मोच २८१)। क्योमइङ विजिदमस्ति मिन मैसा (मे २ २४)। ओमंग दि देशो ओमरय (पाप) । ओर्मिबर वि दि प्रशेष्ट्रच दिया हुया नमाया हुमा (लावा ११)। आर्मीयय वि [अवमस्तिक] रीविशन से म्ब्ति **गोवे मन्त्रक धार क्रेंच पैर रक्षकर** स्पित (संदि १२६ थे)। भोमंस वि [हे] प्रस्त प्रस्त (यह)। भोमञ्चण न [भयमञ्जन] स्नान-हिया (उर

ओसासण न [अपसासन] १ प्रकारन

६४८ दी) I ओमज्ञायण पू [अवसञ्जायन] ऋषि विरोप (में थः इक् )। आमञ्जिम वि [अप्रमार्थित] विनदी सार्थ करामा गया हो वह न्यस्ति (स ५६७) । आमहृति [अवसूर] मूर, युवा हुवा (ध

६, २१) ।

ओवटण न शिपवर्त्तनी पीचेहरता. वारित ओ सीस कि खिवसिक्षी १ निमित्त । २ धोसस्य वि वि । ततः धरोमवः (पाप)। मोट्या (सप् ५६ )। कामस्यय है। देता आमंत्रिय (पोद समीयस्य । ३ ह. सामीच्यः समीयतस श्रीबद्धाद स्टब्स सिप+क्षपी विशास 3 2) 1 'सविरंति सन्वसारयो हवड आयहित्यंत (पत्म ७१ २६)। क्रोमक न निमालयी निर्मालय देवेल्क्स देवन्त्रियो कावमशिवयोगीमे । ध्योयक्रियमा ) क्ये दि । धोडनी मोहने ∎न्य (यह रें। न उनेद्र कादमार्थ का बक्र बलर, दुपट्टा (पुंच स्थासक विविधित्री मृतः विशेष विषा ह्या ओयसरी पात्रमायकेल नियरण ।' (ax ) : (मोच ७७२)। २. ३ )। क्षोत्रक देवी ओक्स (पतम ६६ १६)। आमाण दे जिपमानी भागत विस्कार ओमुक वि अवमुक्ती परिवक्त (सम्मत भोयस वि अवस्त्री प्रकृत प्रवेश्व (उस २६)। txe) : आसाज म जियमानी १ जिल्ले क्षेत्र वर्षेट्ड (पन्ना)। ब्रोममा देवो उम्ममा (पि १ ४: २३४)। ओयसंसद सिप + यर्तेयी स्तयना ना मार किया जाता है बहु, इस्त स्ट्ड ओमप्तिस स वि [अवमुद्धित ] महानुद्धा बरैरक मान (ठा२ ४)। २ जिसका माप नो प्राप्त (पडम ७ ११६)। साको करने के निय नमाना । वैक विया बाता है नह शतादि (मता)। क्षांयक्तियाणं (क्षाचा २१ ० १)। ओमद्भग वि शिवसर्घेडी बदोसूब धोल क्षोगक्त व शिपवर्तनी विस्वाता हराना भोमाज्य न भियमानन अप<sup>क</sup>ी धानान दना वर्षणयमे प्रति (सम १ ४)। (Fix 221) विसनार (व ६६७) । सा<u>म</u>स सक [अव+सक] पहनताः ओसबिय वि बि ] परिकर्मित (पर्यक्ष १ ४ धोसाय वि जिवसिती परिपित मान हमा धोनवर (कप)। वह स्रोम्यत (कप)। र्षद्र ओमुद्रचा (क्य) । (मन्द्र ६)। ओवा औ [भाजस ] शक्ति, समर्थ्य (सम आमोय 1 शिमोकी प्रायस्त <del>प्राप्</del>रस्त धामास देवा भोमञ्ज=निर्मास्य (हे १ ६०) १ १ -पन १७ )। (क्स ११ ११)। भमा दरवा ६)। बोया ही बोबस र प्रकार (सुरूप ६)। ओमायर विशिवमोदरी भूव की भ्रपेता आमाध्यक दिप + मारू <u>ी १ स्टेम्ल</u>ा, २ माठा दा शब्दशोखित (तैव् १)। भून भोजन अप्लेशना (क्यु है)। शोभित होता। २ सम् देशा करता प्रथमा। व्यायाद्रम देनी सदयाद्रय (मुपा ६२५) दे आमार्यास न [अवमोदरिक] १ त्यन र्शक आमासिथि (प्रति) । क्यक 'महरावि ¥ 13) | मोजका दाकिशेय (भाषा) । २ इसिय मित्रासम्बद्धियनवरमीसर्ग्यमर्गिरः।ओमा-आयाय वि [उपयाद] क्यावत समीर प्रांचा मनान (मोन )। सिद्धत्त्वमा स्थिमा निवादिको हाई हमा (शाका १ रः निर १ १) । आमोर्वारवा भी भिनमावृरिवा रिशा (क्षा १ वर्ष दी)। भोगार सक जिल्लास्य ] नीचे काल सुन मोबन क्य तप (ठा६)। रमा । संक्र क्योबारिया (इस १, १ ६६)। भागासित्र रेगे सामव - तिमस्य (बार अभ्याय वृश्चिमात् रिम्मच्या (स्वीव २१)। क्षोबार वे [अववार] पाट, तीर्ष (वेश्व 14)1 भाय न भिज्ञस र दिपन सक्या कैने 28 ) [ आमाजिम रि [उपमाखिन] १ शोक्ति । एर बीन पोच बादि (शिक्र ६२६)। २ आयारग रि [अस्तार**क**] १ उताक्षेत्राचा। २ पुत्रित सर्वित (मरि)। बागर स्थित बाजी उनांति के समय और २ प्रदुति करनेवाला (सम. १. १)। भागातिआ ध्ये [भपनातिरा] विमहा वा प्रवय का घागर नेता है बहु (मूर्धीन १७१)। भाषारण देनी स्थारण (रूप १)। क्रमा है नाता (मा १६४)। भागाभद्रताय [ओक्रमित्या] १ वत रिका भाग नि [ आउस्] बुर् बर (बन १)। भागाम ५ भियमञ्जी नार्ग (न ६, ६०) । दर। २ चमत्कार दिया कर। ३ विद्या सारि आय वि [आक] १ एवं सनहास (नुस १ आभिण सम् [अव + मा] मारता नात ना सामध्ये दिया कर (वो दोता दी भाग ४२१)। र मध्यत्र च्यान स्थानीतः ब्रुक्ताः । वार्तः, सोमिनिगण्याः (सावः) । वह) (स ४) । (इत् १) । १ ई वियन स्थित (क्य २६ १) । आसिपान न दि प्राप्तर निवाह की एक आर वि दि । बाद, गुन्दर (दे १ १४८)। भाष व[ओजस्] १ दर (ग्राचा) । २ रीति वर के निये मानू की बीर में किया रे समोप (बस्त सब पू साल्या नीस-प्रकाश तेक (चंद दे)। ३ उपाति-स्थातः हभाग्योद्धानर (वंदा २३) । दव दक्ष सा ६)। न मारन पूर्यना का सपूर् (क्एए संय धामय वि अर्थमत् । विविद्य विवित आरंपिम नि [के] १ माजन्त । २ नर (१ ६२)। ४ मार्नद ऋतु-वर्ष (हा ६३)। (गुम्द ६) t tot) i आर्थिस रि [भोकस्थित] १ दरशन्। आसी उपक[अप + सीस ] दुवित होता क्यरंपित्र रि [र] पत्रता रिया हमा दिना बन्द होता बद्द आमीसँत (१३१) । र देरणी (नव ११२ थीत)। ह्मा (पाच) ।

ओरचिवि दि]श्वर्षिष्ठ समिमानी।२ क्सूम्म से एक । व विशासिक काटा हमा (दे१ १६२३ पाम)। सोरद देवो अवरद = पपराद (प्राप्ट X )। क्षोरम यह [ टप + स्प् ] निवृत्त होना । क्रोरम (सूत्र १२११)। ओरही की वि] सम्बा सीर महुर सानान (दे१ १६४० पाम)। स्रोरम एक [अव+व्] श्रेष रहरना। क्षोरसइ (हे ४ ⊏१)। ओरस वि [इपरस] स्वे पुक मनुसमी (छ १)। ओरस रि [औरस] १ स्वोन्पाधित पुत्र स्व-पूत्र (ठा१)। २ ग्रीरस्य हृदयोत्सम्ब (बीप १)। कोरसिम वि [सवतीर्य] उत्तर हुमा (कुमा) । **बोरस्स वि [औरस्य] हरवोत्पल पाम्य** न्तरिक (प्राच) । सारास्क देवी उपस्य = स्वार (ठा ४° १ बीव १)। भ्रोसस देवो एएस (दे) (चंद १) । भारास न स्त्रीदार] नीच देखी (विने ६३१)। ब्रोसस्य न [भौदारिक] १ शपर विशेष मन्त्य धीर परुषों का शरीर (धीन)। २ <sup>(</sup> वि शोधायमान शोधा बासा (पाध) । ३ धीर्वारक राधिर बाना (विसे ३७१) । जास न ["नामन्] भीवारिक शरीर का <u>देतपूत</u>ी क्ष्में (क्ष्म्म) । ध्यारास्थित कि [के] र व्याप्त । २ कालिय पिट्रोची(रोचनियमिशे (गुच १ १६) । क्योरास्त्रिय वि दि रे पोका हुमा 'मूहि करमन् वैदि पुरम् भोरातिर पुरसमन् (भार)। २ पेक्समा हमा प्रशास्ति चर्चाती बहुत्रवेद धौरानियों (भी )। ओराब्धे केवा ओरकी (गुर ११ ८६)। खोरिकिय न जिबरिक्किन मिद्रा की प्रावान 'नत्वइ महितोपिनय शाबद हुरहुरू नेतन्द सित्तमें (पउम १४ ४१)। ओरिख 🕻 [दे] सम्बानान दोने बात (दे 1 (222) 1

कोरी [बे] समीप (प्राक्या कोप. पत्र—<१ मा १६)। कोरज न वि श्रीबा-विशेष (दे १ १६६) । ओर्रभिय नि [एपस्क्र] प्रावृत्त पाण्यादित (ना ११४) धास्त्रम्य वि [अवन्त्रित] चैमा हुमा (गा ११६) । भोरुद्ध वि [अवरुद्ध] एका हुमा कर किया ह्या(मा८)। ओरुम एक [ अव + रह् ] उतरना । बहु-बोरभमाग (क्ष)। ओरम्भा यक [यद्+मा] मुक्ता मुख वाना । धोसमाइ (है ४ ११) । ओरह रेला ओरुम । वड ओरहमाण (संवा६३ कम)। ओर्ड्रम म [अवरोहन] नीने प्रवरता (परुम २६ १६ विमे १२ ८)। क्षोस्क्रण न [अवधेह्य] नीचे बतारना धवतारस (पव १११) । ओरोध देवो ओरोड = धनरोन (निपा १ ६) : आरोह रेबो ओरुम। वह स्रोराह्माण (क्साध्य १)। ओरोह् दू [अपरोघ] र मनःपूर, बनानवाना (भीप)। ३ घन्तपूर की क्ये (सूर १ १४३)। ३ तनर के दरनाजा का धवल्तर द्वार (छाता १ १ धीप) । ४ संवात, समृह (राम) । को छन्दुदि 🕻 १ स्पेन पक्षी यात्र पद्यी। २ बननाम निवन (दे१ १६)। कोक्क भी की दि] स्वीता दुलक्ति (दे १ आसद्भ वि वि अवस्मित । १ शरीर में सटाहमा, परिकृत (वे १ १६२) पाछ)। र भगक्षा (ने ११६२)। <sup>|</sup> ओ छद्रणीक्षे **दि**] प्रियाकी (दे१ १६)। ओस्ट स्म [उत्+स्ट्रु] क्रमाः सीलंडेंति (साता ११—पत्र ६१) । सोरंग देवां अवस्ति - सर्<del>। त</del>स्त् । संङ भार्धनिकण (महा) । भोलंब पू [सबसम्ब] ग्रेंबे सटकता (सीरा स्थम ७३)।

कोलेबण न [अयलम्बन] सङ्गण माम्मः वीव पुं विषेषी स्रह्मतान्त्र धीपक (चन)। ओर्टबिय वि (अवसम्बद्ध) व्यप्तित विप्तका सद्वारा निया यया हो वह (निष्कृ १)। २ सर्दशया हुमा (मीप) । शासंबिय वि [उद्घंबित] चरकामा हुमा (सूप २,२ मौप)। ओछम पू [सपासम्भ] उनाहना भयोनंभ-णिमिलं पदमस्य सामग्रम्भणस्य वयमद्दे पएएचे चि बेमि' (एस्य ११)। बासक्तिक वि [उपस्रित] पहिचाता हमा (पडम १३ ४२ सूपा २६४)। भोजना (भा) वैश्वा भोखनिम (सिन् १२४)। ओ क्रम्म क्रंक [अद+ हम् ] १ नी **ये** सगना। २ धेवा करना । बोचग्रॅंति (पि ४००) । हेरु ओसरिंगर्ड (मुपा २३४) महा) । प्रमौन संक्रु को खग्गा विवि (सए) । ओसमा वि [अधस्त्रण] १ म्बान बीमार । २ दुर्वन निर्वम (छामा १ १ — पन २० श्री विपार २)। ओसग्र वि [अवस्तरन] पीचे चरा हुमा धनुसम्म (महा) । भासमा [दें] देशे ओलुमा(दे १ १६४)। आंस्रगा की [दे] रोवा गरिङ, बाकरी 'करेउ देशो पशार्य मम झौलग्दाए' (स ६ ११): 'पोबन्धाय बेसचि बॉपर्ड निन्मधी चुवो (धम्म ८ टी)। आंसरिंग वि [ अवस्थानित् ] चंबा करत वाना । इधै- जी (रंभा) । कोलस्मिक्ष वि [अवस्त्रम्] धेवित (वरना 43) ( ओक्समञ्जूष्टि देन वाज पश्ची (वे १ १६ स २१३)। भोक्षि देवो भोठी मधानी (हे १ ८६) । ओस्ट्रिम 🛊 [अस्मिन्द्रक] नाक्षर के बरनार्थ काप्रकोष्ठ (भा२३४)। ओस्पि सक [वे] बोपना। कपक्र 'आस्पिप [विक्रप्प] साण वित्रहा तहेव वास कवाडम्मिविमाधियव्या (पित्र ११४)। आखिप धरु [अय+छिपू] कीपना सेप सपाना । शह आखिपमाण (राज) ।

कोक्किमा और [के] उनवेहिका, वीमक (वे <u>|</u>

१ ११६: गुउर) । क्रोसिंगसमाण देवो आस्टिह् । ओक्रिक वि [अपवित्र कपवित्र] कीमा हुमा, इतलेप (पण्ड १ ३ जन पामा दे १ १२व ग्रीप)। क्षोक्षिची क्षे [के] खब्ग सावि ना एक दोग ( t t txe) 1 ओ क्रिप्पन दिं ] हम्म ईसी (देर ₹**₹₹)** 1 धोलिप्पंती सी वि पदव मादि का एक शेष (देश १२६)। आंक्षिक सक किय + किट्] पास्तासन करता । करक स्रोस्तिगम्माण (रूप) । श्रांसी सद [अब + क्षी] १ मानमन करता। २ नीचे बानाः ६ पीछे घानाः 'मीयं प नाया घोमिति (निवे २ ६४)। आसी भी [आसी] पींड, भेरी (रुमा)। ओसी भी वि दून-परिपाम दुनाचार (R t ty ) i आलुं भी औ दि] बलवा की एक प्रकार की बीहा (दे १ १६६) । भोलंड एक [पि + रेचम् ] करना रपक्ता माहर निज्ञानय । घोलुंडर (हे ४ २६)। मालुडिर वि [पिरेचयितः] ऋणेनासा (कृता) । आलुंप दू [अपन्नोप] बदतना, महेन करना (नउद) । आलूपभ र् [दे] वालिश-हस्त तवा ना हावा (द १ १६३) । कोलुग्ग पि [अवदुग्ज] १ रोजी वीमार (काम)। २ मन्त नष्ट (पर्यह ११)ः . 'पुत्रस पुरास निम्मेता धोकुमा सीनुत्स नरीर्घ (तिर १ १)। भालुम्य थि दि रिनेयक नीररा २ तिनोत्र तिर्मेत वस-होत (दे१ १६४)। ३ निरद्धान निरोज (नुर १ १ १ १ १ PEY; # YEE X Y) 1 वीदित (दग्या «६) । आहर्ष्ट्र वि. दि. वि. वर्तकटमान धर्मकर । २ निया, धनाच (दे १ १६४)।

ओ लेह्ह वि दि] १ यन्यासकः । २ दुम्सा पर । १ प्रमुख (दे १ १७२) । को द्योक्ष देवी व्यवद्योभ । वह को स्रोमंत्र, कोस्रोपमाण (मा श्रः खामा ११६११) । ओस्रोट्ट एक [अप + लूट्] पीचे नौज्या। नक् ओक्षोक्साण (राज)। आखोयजन [अयखोक्त] १ देलना। २ इष्टि नबर (उप प्र १२७) । ओक्कोपण न [लयको इस] नशस "विद्वा क्लमा तेल घोलीनसम्बद्ध (मु**ब २ १**)। कोस्रोयणाची जिन्ह्योकना। १ **केव**ना। २ मदेपला चोज (वद ४)। को द्वर्षदि । १ पितः स्वामी। ४ वर्षः प्रतिनिधि पुरूप धामपुरुव-विद्येप (पिप)। ओ क्रदेशों वक्क≕ सक्ष (क्रे. १ ≭२) काम १७२) । ओड़ देशों चल्ल = घाद्र व्। धोल्लीइ (पि १११)। मक ओर्खा (से १३ ६६)। क्लाइ ओडिजांड (घ १२१) ओहरूण र्रू [अवसन्त] एक नरक-स्वान (विनेद्धारु)। ओहण न [भाईपण] गौना करना मिनाना (Pr 111) ओहर्पा को [दे] माजिला, इलायकी शाल-भीनी मादि मसामा से संस्ट्रव श्रीव (वे १ txx) : ओक्करण न [बे]स्नाप जोना (बे१ १६६)। क्षोहरिक्ष विदि] दुत कोवाहमा(दे १६३: सुपा ११२)। ब्याह्मविष् (ही) नीचे केची (पि १११ मुख्य t 2) 1 भाक्रिय वि[मादित] शद किया हुसा (पारी ३ स्ट्रा)। भोक्की भी [दें] पनक नाई, प्रतराती में 'জন' (বিহম १७३)। ओस्ट्य तक [वि + ध्वापव्] दुम्पना । टेडा करना । सबक्र आक्ट्रपिंग्जैत (स १६२) । इ. मोल्ड्बयस्य (च १६२) । आंलुमगाबिव वि [के] १ वीजार । २ तिस्य | ओस्क्विम वि [के] केवी उसक्विय (नूर 1 (345) आय न [वे] हाची नमेद्द वो ब्रायने के सिए रिया हुमा गर्त (हे १ १४१)।

क्षोबञ्जल न [अवपत्तन] नीचे निरता, सम पात (से ६ ७७ १३ २२)। भोवप्रणी सी [अवपाविती] विद्यानितेष जिसके प्रशास से स्वयं नीचे धाता है वा इसरे को नीचे बतारता है (तुम २ २) । ओवह्य वि [अवपतित] १ सनतीर्छ, नीवे धाबाह्म (से ६ २८ धीप) । २ मा पड़ा हुमा, भाक्टाहुमा (से ६, २६) । ३ ग. पक्तन (मीप)। ध्यापह्य पूंडी हि] तीन इन्द्रियशाना एक बुद्ध जन्तु भे कि ते देवेदिया ? देवेदिया प्रणी-मनिद्दा पर्यक्ता वं बद्दा --धीनस्या चेर्दि खीवा हरिनसोडा (भीव १)। कोबद्भ व क्रियमधिको स्थित परिपृष्ट (राम) । ओबगारिय वि [भीपद्मरिक] उपरार रखे माना (यय १३ ६)। कोषगारिय वि [औपद्मरिक] उपनार है विभिन्न वा स्थानायांक (देशेन्द्र ३ ६)। ओ बग्ग छ० [अप + कम्]र व्यत्य करना। २ डक्ना माल्ह्यस्न करना। मीनगम्द्र, बोनगाङ (ते ४ २४, ३ ११) । भोवमा एक [ ६५ + वस्सू आ + ६स्सू रेमाञ्चला करनाः २ पदामान करनाः। भौनानः (मणि) । एकः ओवन्गिवि (वर्षि) । भाषमाहिय वि (बीपप्रहिक् ) वैन संपूर्वी केएक प्रवार का उपकरण को नारस निरीय से बोड़े समय के बिर्फ निया जाता है (पन ६)। नोबमाभ वि दि एपवस्मित् र प्रविद्व रेमामान्त (केंद्र ३ पाम न्दर १३) ¥3) 1 ओवधाइय दि [औपमादिक] करनाउ करने माना पीड़ा बरान्त राजेदासा 'नूर्व वा भर वा विद्धं न सविज्ञीवनाइवें (दन व) ! भाषच का चिप्+ ग्रज नास मना, 'सुद्राग मोजब नाबहर' (नदि) । ओवट् यक [अप+ धृत्] १ गोबे इटन्य। २ कम होता, इटाय-बान्त होता। वह-मोबद्दत (स्त ७११) । आवर् र (अपवर्षे) १ लाव शानि। र ध्यमलार (स्मि र ६१)।

नोचटुणा 🛍 [अपषर्चना] मामाकार, माग-

भोवद्रिश्चन [दे] बाटु, क्रुसामद (दे १

मोबहु वि [अवदृष्ट] वरसा हुमा जिस्ले

ओवटू दूषि अधवर्षी १ वृष्टि, वारित

ब्रिकी ही बह (ते ६ १४)।

२१६) ।

**(६२)** 1

इरए (राव) ।

२ मेव-बस का सिचन (दे १ ११२)। ओवट्टिइस नि [बौपस्यितिफ] पपस्विति के योग्य मौकर (प्रवी ११)। कोवड सक [अव + पत्] गिरना श्रीवे पहला। वक्ष-क्रीवर्डत (से १३ २८)। क्षोबहणः न [क्स्वपतन] १ भवपातः । २ म्प्रमान्यात (से २ १२)। श्रीयद्वत वि [स्पार्थ] सावे के करीन। ोमोयरिया भी [श्वमोदरिका] नाएड क्वल का ही बाहार करना उप-क्विये (भगw t) 1 ओवबिड नि व्यवस्थि हास (निष् २ )। कोवहरा की दि | भोड़नी का एक भाग (दे हे १५१)। छोदण न (उपवन) दशीचा साराम (कुमा)। बावजिद्यिषु [औपनिदित औपनिभिक्त] जिलाबर विशेष समीपस्य किया की सेनेवासा साद्ध(द्यः भीप)। कोबणिकिया भी [औपनिविन्ती] मनुपूर्वी विशेष प्रमुक्तम-विशेष (प्रीप)। कोवत्त स्कृतिप+वर्त्तयी १ प्रदय करता। २ फिसना चुमाना। ६ फॅकना। संद ओवर्तिय (स्त X)। इ ओवर्त्तेशस्त्र (Bt ₹ )ı ओवत्त वि [अपवृत्तः] डिस्टबाहुमा (है: 4 48) 1 कोवत्तिय वि [अपवर्तित] १ दूमाना हमा। २ लिप्त (खाया १ १—पत्र ४०)। बोपत्वाणिय वि [बोपस्थानिक] समा का नार्वे करनेपाना नीकर । की या (भग ११ **११)** :

म्मपूनाए। बोबर्न च महनाए। (बीबस १४२)। ओवॅमिय वि [औपमिक] स्थमा-सम्बन्धी (भए)। ओवर्मिय ) न [औपन्य] १ उपमा (ठा ८) क्रोबस्स क्रिए)। २ छपमान प्रमाण (सूम र १)। क्षोषय सक किया + पन् ] १ नीवे स्टरना। २ छ। पड्ना । मझ-स्रोयवंत श्रोयममाण क्ष्यास ३७ ३ पि ३१३३ साबार ११)। ओवयण न दि अवपदनी प्रोह्मणक चुनना(समार १—पत्र ३२)। ओययण न [अयपतन] धरतरण नीचे उतरमा (भग १ २ - पत्र १७७)। ओबवाइयय वि [औपयाचित्रक] मनौती से प्राप्त किया हमा मनौदी से मिला हमा (ठा १)। ओवयारिय वि [धीपनारिक] ज्यनार संबन्धी (पंचा ६३ पूप्फ ४ ६) । कोवर पूर्विकिट, स्पृह् (दे १ १४७)। स्रोपवादय वि स्रीपपाठिकी १ विस्की बलाति होती हो बह (वंच १)। १ प्र संसाधी प्रस्ती (बाषा) । १ देव या सारक-बीव (वस ४)। ४ न देव वासारक भीव का सरीर (पंच १)। १ वैन भागम-बन्च विशेष भीप पाधिक मूत्र (बीप) । ओवपाइय वि औिपपाविकी एक बन्म से दूसरे जन्म में जानेवाता (सूध १ ११)। भाषसमिग्य नि [भीपस्तिक] १ स्तर्वर्ग से संबन्ध रक्षनेवालाः, जनप्रय-समर्थ रोदादि । २ शब्द-विशेष प्र परा मादि सम्यम रूप शम्ब (पण्)। ओबसमिश्र पुन [भीपशमिक] १ रूपरम । २ वि इत्यतम से बत्यतः। ३ इत्यतम होते पर होनेवाचा (विसे २१७४)। ओवसेरन[द] र करन मुपन्ति काह-विधेय । २ वि रित-योग्य (वे १ १७६) । भोवस्सय देवा उपस्पय 'बद्रिका घोवस्सय **क्षण्यं केणाइरल्बद्धां (पव ८१)** । भोबद्द एक [अय+ बढ्] १ वह बला बह् चवता। २ हृबता। क्वइः ओबुडसम्प्रण (क्स) ।

कोषशारिक वि जीपशारिक 77575 संबन्धी (विक ७६)। क्षोबक्रिय वि [क्षीपिकिक] भागा से प्रस विचलेवासा (छाया १२)। ओबाअअ पूर्वि] बापातप जन-समूहकी गरमा ( पड )। भोषाइय देनो भोववाइय (राज) । ओवाइय रेको उथवाइय (सुना ११६) । ओबाइय वि [भावपातिक] सेवा करनेवासा (स १)। ओबाइज न [अवपाटन] विवारण नाग्र (ठा२ ४)। ओवाडिय वि अवपाटित | विवास्ति (प्रीप)। ओवाय सक [ सप + याच ] मतौठी करना। बह कोवार्यंत ओबाइयमाण (सुर १३ २ र शाया १ म--पद १६४)। आयाय ⊈ अथपात र सेवा मक्टि(ठा ३ २ भीत)। २ वर्षानक्षा (परहरू १)। ३ मीचे गिरमा (पराह १ ४) । श्रोवाय वि [श्रीपाय] उपाय-जन्म उपाय सक्तवी (उत्त १२८)। ओवार सक [स्रप+भार**य्] बान्धार**न करना दक्ता। एक ओबारिज (प्रि 311)1 आंपारि न दि] बाज्य मरने का एक प्रकार का सम्बाकोठा मोनाम (ग्राक)। कोपारिक वि [वे] केर किया हुआ रागिः इत (स ४८७ ४८)। ओवारिस वि [अपवारित] पान्छावित बनाह्या (मे ६१)। बोबास मङ [धव + कार्य] रोमना विधवना । भोवासः (प्राप) । मोबास पक [अद+दारा] पर**ग**रा पाना चपह मिनना । बोबानद (प्राप्तः हुमा ७ २३ प्राकृ ६६)। ओवास 🛊 [अवकारा] धवकाश साती अगह (पल्म प्राप्त से १ ६४)। भावास दूँ विषयासी ज्यवाच भोवनामाद (पक्षम ४२, ¤१)। ओवासंतर पुन [अवस्थानदर] बाहारा

क्सन (सप २ २-- पत्र ७७६)

बाडी है (सन ७२ डा १)।

आसम कः [बप+शमय्] काराज्ञ

गरना । परि चौत्तनेदिति (रिष्ट ६२६) ।

मरनाद, संद (दे १ १६४) ।

स्वप्त १६) ।

भास€न [श्रीपम] दगई, मेदन (मी<sup>13</sup>

बरना। ६ प्रदेशनुबद्धा प्रतिनिष्ठ करमा।

धीषका (रि.१.२.११४) । गाः आसकी

कोसबमात्र (१ ४, ७१ व ६४) । और

मोसदि ही की जिपेकी १ कनम्पति (पराख १)। २ नमरी-बिरोम (राज)। महि इर प्रमिद्धिर ] पर्वत-विदेश (मण्ड 28)1 क्षोसहित्र वि [आवसिषक] बन्दार्य-वागावि इत को करनेवामा (मा ३४६)। ओसाधी दि ! ग्रेस निराक्त (मी ४, बराचा विस २५७६)। २ दिम वरत (दे १ 25 ( ) 1 ओसाभ पृंदि । प्रहार की पीका (दे १ **१**१२) 1 आमाञ्ज (अवस्थाय) हिम घोड (मे ११ 27 4 4 4 21)1 आमार्थन वि दि । वैगरि वाता हमा ; श्रावसी । २ बैडवा । ३ बेदना-पुक्त (दे १ १७ 🕽 । ओसाम्रज वि दि । र महीराल वमीन का मापिक। २ भाषीतान (पद्)। ओमागन [अपसान] १ मन्त (टा४)। २ ममीपना मामीप्य (मूम १४)। भामात्र व भिषसानी दुर के मनीय स्वान युर्कपास निकास (पूर्व १ १४ ४)। आमाजिहाम वि [दे] विवि-पूर्वक पतुष्टित ( 1 251): ओमाय १ शिवश्यायी धील निरान्यन (बायम २१) । न्यासायण न [अवसादन] परिहारन, नारा (विस) । कोसार मक [ अप + सारम् ] हर हरता । धोसारेहि (त ४ ८)। अर्मे धौसारिज्यंत (स ४१) । सङ्काभोसारिष (त्रक्षि)। कोसार प्र[दे] केनाट, गोनाड़ा (दे १ tre) i भामार र्व [अपमार] व्यवस्य (व १३ १४) । श्रोसार रेपो कमार = श्लार (परि)। कोसार र्षु [भगमार] स्थव वकार (म १२, 1(3% छोसारिअ वि [अपमारित] पुर विवा हुमा, धाप्तीत (मा ६६३ वडम २३ ८)। कोसारिभ वि [ अपसारित ] पदनविदन, सटकाया हुपा (धीर) ।

ब्रोसाम (धर) देत्रो ओवास = **पर**कार (पनि)। कोसिअ विदिशिधवत वत-पीति (दे १११)। २ बपुर्वं धमानारस (पङ्)। आसिम वि डिपित र वसाइमा एहा ह्या(सूप १ १४ ४)। २ व्यवस्थित (सुपर ४१२)। क्योर्मिअंत पद्म िअवसे दम् | पीका पाता ह्या (क्रेरेरे समय ११)। ओसिंपिज कि कि कित गूँपा हुया (दे र १६२ पाम)। आसिनित् वि [ अपसेचिति ] यासेक कलोकला (मूख २ २)। आसिक्तिअन्ति १ वर्ति-स्यावात । २ । घर्यत-निर्मित (दे, १ १७३)। बोमित्त वि [अप्रमित्त] भौनावा हुपा मिछ (स्थाप २१११)। भोसिच वि दि जिपस्टिच (दे १ १६८)। भासिय वि अभिनित्री १ पर्यंदिशतः । २ उपरान्त (मुप्त १ १६) । २ भीत परामृत (विस)। कोसिरण न दि ] ब्युस्तर्गन परिस्थान (पड) । योसाध वि [वि] प्रवी-पुत्र प्रवत्त (वे १ ११८)। आसीर देनो उमीर (पर्या २, ६)। भासीस यक [अप+यून्] १ पोध इटना । २ पूर्णना किरना । संक्र आसा-सिङ्ग (देश १६२)। व्यामीस वि[अप+वृत्त] प्रावृत्त (दे १ ११२)। आसुञ वि [हरसुक] धलएकत (प्राप्र) । भार्मुन्तित्र वि दि । प्रत्रेवित वस्तित (रे 242) 1 असुम एक [अव+पातप्] १ पिए देना। २ नर करता। कर्ने झीलुक्लेखि (स ७ ९१)। यह आस्यह (से ४ १४)। कार ओसुस्भव (ति १६१)। आसुक्त दक [विद्य] दीएए करता देव क्लाः। मीमुलाइ (द्वेष १४) । आसुक्क वि [अवशुद्ध] मूना हुवा (परम 23 WE 2, 2Y) 1 आसुक्त घक [अव+शुप्] सूनता।, **गा-** मोमुक्तांड (११ ११) ।

क्रोसुद्ध वि दि ी १ विनिपतित (देश ११७)। २ विनाशित (मे १३ २२)। श्रोमक्मेंन स्त्रो मोमु म । श्रोसूय न [श्रीरमुक्य] रूपुरुवा एप्सएख (चीप पि १२७ ए)। ओसायजा , ही [अवस्थापना ] विद्या कोमोबणिया विश्वप विसक्षे प्रमाद में दूसर ओसोबया को गढ़ निप्राचीन किया था सक्त 🕏 (मूपा २२ णाना १ १६ क्ष्म)। कोम्मक पू [अवप्ययः] कासर्गेण पीछे हृटना (पद २)। भोस्मक्रम देवो जोसक्रम (रिंग २०१)। भोम्मा 👣 रहा आसा (१न) । ओस्साइ पू जिल्ह्यार है नाग विनाग (स्रुष्ठ) । आह देशों क्यों घ (पण्डुरे ४ ना ११८) निषु १६, घोष २ घम्म १ टी) । १ सूत राज-सम्बन्धी बास्य (विने ११७)। आहमक जिष+ स्] तीच बढला। मोक्षर (हे ४ ८१)। आह् पूर [आध] १ ब्रस्तर्ग मामान्य निवमः (एडि १२)। २ सामान्य साधारण (बर १)। १ प्रवाह (राम ४० दी)। ४ सलिम प्रवेश । इ. बासव-बार(बाबा २.१६.१.)। ६ संबार (मूम १ ६ ६)। श्वात [\*मा]शाझ-विशेष (ग्रंदि १२)। आहंक प्रशिक्ष हिंगी (दे १ १४६)। आइंग्रहिया की दि] युत्र बन्तु-विशेष चनुरिन्त्रिय भीष-विशेष (त्रीव १)। ओइंतर वि [ओवतर] संसारपार करने-वासः (मृति) (धावा)। आदेस र् दि] १ वन्ता २ जिसार चन्दन विद्या भारत है वह शिवा, चन्द्रीय मा होरता (दे १ १६८)। आहरू यह [अप + घट्ट्] १ कम हाता हास पाना। २ पीछे इटना। ३ सक इयना निवृत्त करना। बीइट्रइ (हे ४ ४११)। बह-आहर्द्व (सेव ६ : मून २११) । भाइद्वर्ष हिंदी र प्रवद्गाटन । २ नीवी

करिन्तकः १ वि भारतः पीछे हटा हमा

(दे १ १६६३ मरि)।

<del>иш</del>) і

स ४४८) ।

(रदम् १ १)।

(सद १)।

(दव १) ।

ओ द्वार पंदि । कण्यतः । र मधे प्रदेशक

थोहर ) वि शिपपरको निवारक हराने-ओहसिय दि [अवत्यस्तित] विसा हमा स्रोहद्वय नामा नियेवट (दिया १ २ शाया १ १६३ १८) । साइटिअ वि दि दे दनरे के दसकर हात से परीत (दे १ १४१) । खोडट वंदिरेडास उसी (देश १४३)। लाइट पि जिल्ह्या दिया हमा (प्रस 10 1) कोडड विकिप**ड**ती नीचे सामा हमा (इस इट कम्पित (दे १ १७३) :

2. 2 58) ओडडणी की दि यर्गना (दे १ १६ )। मोहत्त वि वि पनना (दे १ ११६)। कोहरियभ वि अपहस्तित । परिव्यक, हर रियाह्या (मै ३३)। 1 (5 5

आहप वि विपद्दती उपवात-मात (सामा आह्य वि सिवहती विनासित (सीप) । भोहर नक अप+इटी सफरूए करना। नर्म योष्टिपामि (नि १५)। ओ इर मरु जिला + इटी टेबा दोना कड़ होता। २ सक उत्तटा करताः ३ किराताः चैत्र-बाहरिय (ग्राचा २ १ ७)।

आहर न [प्रपग्रह] संभा यह नीम्यी (पराह | साहरण व सिपहरणी स्थ ने बाता. मनहार (का १७१)। आहरण न [इ] १ विनासन दिना। २ यर्थमत सर्वे की सम्भावना (वे १ १७४)। ६ मण इविकार (न १६१ ६३७)। Y रियामद (पद)। आंदरित्र वि[दे अपद्वत} र उदरहमा

(म १३ १)। २ नीचे गिरामा हमा हि १ १७)। ३ उतास हमा उतासित (धीव ६)। ४ मानीत 'मोहरियमरून मार नहीं (पाप्र)। आहरिम दि [ इ ] १ यावत जूना हुया । र पं करत पिनने वी रिला, बगौदा (है

भारम देनो उउत्पन्न (हे १ १०१। हुना) ।

कारम तक [अर+रस्यु] पिपना। करि

1 (111 )

योगितरी (दुरा १३६) ।

(बीव ६) आहाडिय वि [अवपारित] १ विद्व कर विवाहमाः 'वहरामस्ववाडोहाडिवामी' (व १--पत्र ७१) । २ स्वतित (मान ५) । मोदाण न (उपयान) स्वन्त दक्ता (दद ४) । ओहाण न [अवयान] उत्तरीय स्पात (धावा)। ओहाण न [सनमावन] सरहमल गीधे इन्ना (निद्यू १६)। आहाम एक [तुस्रय] तीवना पुसना करना। मोजामइ (हे४ २६)। का भारामेन (रूपा) । भोद्दामिय दि [नुस्तिन] तीला हुमा (पाम मुना २६६) । आंद्रामिक रि [द] १ मनिपृत (पट्)। २ विस्तुत (च ३१३: योग ६ ) । ३ वन्द तिया ह्या, स्वक्ति 'बह बीरावंदरवा थानेन माहाभिया तत्त्वा (पत्रम ४१ ६) । कोहार तक [अव+पारय\_] तिरूप

नरता। संह आदारिम (यांव १६४)। ∣

'श्रीम बत्तोक्रतिवर्गक्रमको' (सूर २ १**०६** के बीच की शुरूत बनात, हीए। व संश विमान (दे १ १६७) । ४ वसन्दर्यन सोहसी की वि विषेष समूह (सग ३९४)। विशेष (प्रश्न १ ६)। कोडम एक छिप + इस दिशहाभ करता। ओद्वार पंजित्यारी निक्यः। अस्ति योजसङ (नार) । क्यम आहसिर्जाट (स विता निवयनासा (इ. ४३) । १६ १) । इ. आहमगिक्स (स.स.) । ओहारक्त वि अवसार्यात क्रिया करो-भोदसिञ्जन दि ] १ वस्त्र क्यदा। २ वि वासा (संब) । जोहारक्त वि [सपदारवित्त] इसरे पर कोहसिअ वि विपहसित । त्रिमका क्याहास मिय्यामियोय सनानेवाला (राज)। किना नमा को बहु (गर्द देश १७३ ओहारण न [अवचारण] निवम निवय (**x** ₹) i ओडाडम नि दि ] प्रदो-प्रव (१ ११०)। भोद्दारणी की जिल्लारणी निवसस्पद भोडारज वि [अवभाषित] वरिव से भ्रट भाषा सीहार्यांस सन्तियकार्यास व सह न मामित्र सवा स दुवो' (इस व ३)। ओहाडण न [सदमाटन] प्रावस्त्रित-विशेष ओहारियां की [अवशारिया] करर रेखी (भास १४)। ओहाइण न [अपयानन] हरना विवान मोदानद (दे ४१६ । वद्)। ओहाहणां भी हि अवपारती १ रिवानी (दे १९१)। २ एक प्रसार की मोदनी वय हो। नो बोड़ देता (दव ६)। (निक्र ४८६)।

ओहाव सक जिला + कम् ] माजनस्य करना। भोदाय सक किया + भाव ी गीखे कला। क ओडार्क ओडार्केट (बीच १२६) ओहावस न [अवधावत] १ क्यूनर्यह पनायन (दव १)। २ दीका से जाएना धीका ओहारण न [अवसारन] धामान धपरीति ओहायणा भौ [अपहापना] सार्व संदुर्ग (नय २१)। भोदावया 🛍 [स्रपमावमा] हिरस्तर, मनावर (का १९६ ही च ४१)। ओहावता भी [भाकानियों साम्पर (माव)। आहाविभ वि [अपमावित] १ किस्सूट (गुपा२२४)। २ म्बान स्वाति-प्रात (वर मोहाविश्र वि [अवपावित] प्रतस्थित धर धा (रतपु १ २)। भारास पुं[अवहास, तपहास] (वी

इस्स (प्राप्तः मैं ४३) ।

विधिष्ट विका (मार ४)।

भोदासम्म न [अवसायज] बादना मार.

ओहासिय वि [अवभाषित] दावित (पंचा 23 2 )1

ओहि पूंडी [अवधि] १ मर्यांश सीमा हर (या १७२६)। २ इस्पि-पदार्वका सर्वी न्द्रिय बान-पिरोध (उपा महा)। विषय-पू "जिल**े** समिजानमाना साहु (पराह र হু)। আনুদ ["রান] ঘৰখিলান (বৰ १)। जाजाबरण न ["झानावरण] सविष शान का प्रतिकासक कर्म (कम्म १)। इसिण न ["द्शन] त्यी बस्तु का मतीन्त्रिय सामान्य ज्ञान (सम १६)। इसिगायरण म विदर्शना धरण । सनविदर्शन ना सानारक नर्म (ठा र)। नाप देनो गाण (शक्)। भरण न ["मरण] मरण-विरोप (भव १३ ७)। ओडिश वि [अवदीर्ण] उत्तय हुवा (हुमा)। बोहिज वि [जीधिक] घोलिक समाय क्ष संज्ञा (मल् १६८३२)।

कोडिप्य विभिप्तिका रोक्स हमा में कार्या हुमा (में १३ २४)। कोडित्स म दि] १ विपाव क्षेत्र । २ रमन बेगा वे वि विकारित (दे १ १६८)। कोहिर देवो ओद्वीर । पीदिरद ( पङ ) । ओहिर देखो ओहर ≔यप + हु। कर्म पोहि रिप्रामि (पि ६०)। ओहीअंत वि [अवहीयमान] क्रमत कम होता हमा (से १२ ४२)। आनेशिय वि अविद्यानी १ गाँधे रहा हुमा (समि ६६)। २ धारक प्रवस्त ह्या (स १२ १७)। को हीर सक [नि+त्रा] सौ बाता निहा नेता हि ४ १२) । वह ओहीरमाण (लामा १ रें विपार्शकरण)। ओ हीर सक [सदू] विश्व होना। वह ओडीरंतं च सीचंत्रं (पाप) । ओहीरिज वि जिन्नभीरित विस्तृत परि मृत (मापा २ १)।

को द्वीरिश वि दि र ज्योत । २ वयस्त्र बिय (दे १ १६६)। कोहुअ विदि] प्रसिपूत परमूत (दे१ १५८) । क्षोद्वंज देशो सबहुंज । मोहुंबर (मनि)। कोहुड वि दि] विकत निप्तत (दे १ ११७) । ओहुप्पत वि [आऋम्यमा ग] विस्पर बाह-मण किया चाता हो यह (से १ १ व )। ओहर पि दि रे सक्तत सका मुख (गउड)। २ विश्र केर-प्राप्त । ३ वस्त ध्वस्त (दे १ ११७)। ओ हुद्ध वि [दे] १ विश्व । १ मनततः नी वे मुकाह्या (मनि)। ओहणग ग [अवभूनन] १ कम्प । २ **एल हुन । १ सपूर्व करण से फिस प्रस्थि का** भेव करता (माना १ ६, १)। बोह्य वि [अवपूर्व] व्याहित (बृह् १)।

।। इस विरिपाद्मअसङ्गद्भग्ये भोभाराइस्ट्रंबनलो एवमो वर्गी समतो। तस्यमधीय् च मर्यवद्दायोवि समत्तौ ॥

क

व्यवसायर, विषया बचारत-स्वाम वस्त है (प्राप प्रमा) । २ आद्या (वे ४ २६) । व विष्टुए पाप का स्वीतार, 'तकि कई मे वार्ष (मावम)। ४ व पानी जस (स ६११)। र मुख (नुर १६ ५१)। वेको अ सका स्क्र देखी किम् (बढड महा) । कअर्थत देवो स्थ-त = इत्रवत् (प्राप्त ६१) । कड़ विविविति कितना चर्चित वहरित भोमारेड (वद)। अनि किन्निक्री कईएका 'मोएमि जाव तुरुबं, शिवरं कहरून् रियदेलुं (पत्रम ६४ २७)। अस्त नि [पय] वितिया, वरिष्क (हे १ २४) । इस [पिन्] वर्ष्ट्स (परग्र३) । स्व<sub>रि</sub> िंच कितनार्वकी कीत बंद्य का? (किके)

कृ पूंकि देशका वर्ण-सल्याका प्रवस

११७)। बह्य सय बाह् वि ["पय] कईएक (पडम ६१ १६ दश पदः कुमा है १२१)। ।यम अवधि निर्देशक (कान महा)। "विद्वावि "विश्वा विद्वारी प्रकार का (मन)। **कड् विकित्** दे विक्रम, प्रदेशका २

पुरस्कान् (सूच २, १ ६ )। कदम किचित् ] कही दिशी जबार्जे। (बस्य २ १४) । कहम [कदा]क्व किस समय? 'एकाई क्या भरेको क्यामार कहा सु सम्बद्धा । (पा = १)।

कर पू [क्रिप] सन्दर, बानर (बाघ)। | कहम वि [क्रिपिक] कर्णस्थेवला, शहक दीव पू दिविष] ग्रीप-विशेष बानर-ग्रीप (परम १६१६)। द्वय वय द्व ["व्यक्त] /

१ नानर-श्रीप के एक राजा का नाम (पडम ६ = ६)। २ मर्जुन(हे२ १)। इस्टिज न ["इसित] १ स्वण्द प्राकार में प्रचानक बीवती का वर्षेत् । २ बातर के समात विक्रय पुँह का हैंसना (मन ३ ६)। कद्र केवो कवि = वनि (सडर सुर १ २७)। बार (बार) पू विश्वी केंद्र कवि (शिव)। मा 🛍 दिव ] नशित्व कविपन (वड् ) । "सम्बद्ध ["सम्बद्ध । स्वतः । १ विष्ठ । १ 'गडरवहाँ' नामक प्राष्ट्रत काम्य के कर्ता वास्पविदान-नामक कतिः 'धासि कद्दानईको बप्पदराची कि पराइसको (संबद्ध ७६७)।

किएंटी करपी होट, विदिलंदी व वासियों

(क्य १४, १४)।

क्टब व वि । १ क्टैप गोर्डिय का पूर्व (वे ₹, ७) । क्षत्रखन [क्रीस] वान्त्रक सव का प्रवर्तक प्रन्य भौनोपनिषद् परैष्ट् । २ विस्रिक्ति का उपासकः। ३ तानिक भव की चान्नेवालाः।

नाटा 🕻 १ १६२)।

¥ तारिचक मत का यनुवासी। **३ देवता**-'विद्य सिण्येतमङ्ग्रस् **ध्यप्रधानम्बद्धाः ।** गमखे जिन्ह नेनर्खंड

বুখাবি বুছ কৰভাবদৌ ( पडह)। क्टस्म रेवो कडरम् (४४) । करसङ्घेत किया क्या करहती (वीचर प्रतक्र रे)। कामस न [कीरास] प्रथनता रक्षता क्षोरिमाधि (के १ १६२ प्राप्त)। क्छब् न [दें] निरुप, स्वाइमेरा (दे २ ४)।

कीमा पान्ति । ३ पम्पाके मुख्यो वी मह्या।

महारेन शिष (रूपा) । रेखो कंद्रमसः । कद्वासा की व्हिन्नसा शा कि-विकेष क्टबर् पूर्व [क्ट्रिय] १ वेल के क्षेत्रे का नी पक स्ववानी (बाद ३)। कुण्यहार सहेब अपन नरीख राज-निहा नगस्त्रवद्भात पू [वे] सम्बद्धार वारी वैता १ पर्वेद का सक्षभाग टोच (हे १ २२१) : वि२ २४ । ४ रिजनल मुक्त क विवासी [वे] बसल विशेष पीकवान 'क्रमियमनपुरर्तवीतवतासर्वसरस्याधिरापेम् । भीतपानी (ए।या १ १ टी-पत्र ४३) । षहेमु रम्बमाला धर्मती धोदेशिकसस्हा। फदम (पर) वि किएस) हैता (दुना) : (शामा १ १७)। देवो क्टुड् । कन्या (सर्व केनी कड़भा (नुसा ११६) । क उद्दारी [क्कुम्] १ क्लिय (हुमा) । २

২০=

क्रुअंक

कदशंस्याः ∫ १९) ।

१३ कुमा)।

बर्दर् र् [ब्रधीम्ब्र] थेह कवि (बरुव)।

नेव'च कींब, स्वाब्ध (वा ४३२)।

कदबब्ध देशों कद्वजब (तंद्र ११) ।

करम नि कितमी बहुत में से कीन सा ? (है

**कद्दबहा (प्र**श) म [कदा] क्या किस समय ?

कद्रवाइ स [द्रवाचित्] किती समय में

क्षद्रर र्द्र [क्षद्रर] कुम निर्देश भी कदरसम्ब

बिद्धा दह बगकोडी बविद्यामरिव' (भा १६) ।

नद्ररच न [करव] कमन दुमुद (है १ १६२)।

कारम र्न किरव ] नुपूर, 'न रखो' (समि ५)।

कहरविजी की [केरविजी]कुर्युक्ती क्लस्टिकी

**कड्मास ग्रंकिं**स्प्रसः **रा} १ स्वताय-क्यात** 

वर्वेत विशेष (पान्यः पदम ६ १६ हुना)।

२ मेद पर्वत (लिक् १३) । ३ देव-विकेप

एक नाल-राज (बीन ६) । स्यप् विद्या

क्र्रियय केनी क्रूपय (१३न २ ११)।

क्दर देवी क्यर = क्दर (सिंड ४६६)।

रानी (पडम ११, २१)।

१ Y= च ११६)।

(मण)।

(दुप्र ४१६) ।

(THI) :

) पूँचि निकर, समूह (वे २

क्रपल्ड विकित्त किया ∦मा (पुर्व २ १४)। कभोष [दुवा] नहीं है ? (बाका कर ध्यस २६)। हत्त क्षिति [वे] क्रिय वरक 'क्योक्स पंतर्थ ?' (महा) । इध्योद्य 🛊 कित् क्लाम र्ने क्यो ववामी ?' (खामा १ १४)।

क्रभोज्ह वि [क्द्रक्या] थोड़ा दरम (वर्गीव

**११**२) ।

क्रमोस्र देशो क्योद्ध (१ ६ ४६) । कंप [क्यू] उरक वय (तंतु १९)। कंद्र स [प] फिससे, फंद्र यह सिल्बिट ए वदसल्लस् (विकर् २)। कीं क्रे पे किल्की १ पश्चिमित्रेय (प्रकार १ भागतुभ)। २ एक प्रकार का सन**पू**र्व भीरतीम्य भोदा (स्प ४६४) । १ दल विरोत 'इंडफ्रह्यस्वत्यस्य (ठा १ ११ यै)। पत्तन विश्व वाल-विकेष, पर्व

प्रकार का बारा को उन्हों है (वेशी १ ९)। सोइ पुरु क्रिक्टी एक बकार का बोदा (उप प्रदर्भ मूपा २ ७)। वस देवी पच (नाट)। कंकर प्रक्रिकेटी ब्राप्त-किरोप, नावक्ता-नामक प्रोपनि (का १ ११ टी)। क्षेत्रक पूं [क्षत्रहरू] वर्ष, कलका 'रामो वारो छर्गकरे रिट्टी रेंसी (पदम ४४ २१) बीरा) । कंपन्यक्ष रि [कहुटित]कनवराना वर्मित

(पणार क्र) :

्रं [का**इट**क] दुर्मेंच माप क्षेत्रवस 🦙 क्षेत्रमा है करा की एक बाति जो कर्मी परता ही नहीं भेरुत्यों विव मासी, सिर्कि म ज्वेद कम्स ववदार्थ (वव १) । इंद्रम म [क्ट्रम] हान ना मामरख-विशेष बँगम (भारदः गा६१)। कंकम पू [वे] बनुधिन्तर बन्नु की एक

वार्ति (क्त ३६ १४७)।

कंक्णी की किक्कणी हान का मामरए-विशेष 'समनेव मंचगीए बलीए तं कंकगी वर्ता (नुप्र १८३) ।

कंटति पुं [कक्कति] पाम विदेश (एव)। कंदरिका दुंबी [कादुनीय] मान्यन वंद में

एटान्स (राज) ।

कंक्य तुं [कक्का] १ नापवता-नामक योपवि । २ सर्वे की पुरू वासि । ६ पुँकी कवा, केश वैवास्ते का जनकरण (मूच १ ४) । इंक्सास वं (इक्सास) क्योंट, सीप की एक कावि (पाम)।

क्रेंक्सी भी वि क्रिकी नेश सैवाली का

रुपम्प्स (दी ११) ।

कंग्रह न [क्ट्राह] पन्ना भीर मांच रहित परिवन्तप्रकार 'विकासियाए' (मा १६)-'सङ्ग तरकरककंकलक्षेत्र वे भीवयुगवाये' (बद्राप देनु १३)।

कंत्रदंस पुं [कक्कापरा] वनस्पति-विशेष (पएस ११)।

क्षीक्ष्मं देवो क्षिक्षि (मुपा ११६) हुमा) । क्ट्रम केवी कंकम – दे (गुज १६, १४०) । इटिकि पू [इक्क्षि] महोक पूस (मे ६

विक्र २८)। बक्ति प्रं [वे बक्केंडि] बर्गांट बुल (वे २

दराया ४ ४ मुपा १४ ३ ६१२, कुमा) । क्कोड व [दे कर्कोट] १ वनपाति विदेश क्करेश एक प्रकार नी सब्जी जो कर्या में की होन्दी है (देव का पाम)। २ वृ एक नायराज । व सांप की एक बाति (हे १ २६ वह्)।

वंद्रीस पूं [बद्दीस] १ वद्दीम गीतन-बीती के बृद्ध का एक मेंद्र। २ तः बस बृद्ध का पनः 'सकप्पूरेतार'कोलं तंबोलं (एप १ ३१ दी)। देनी भृष्टीसः।

क्षंत्र सक [काक्स् ] चाहना बोहना। कबाइ (हे ४ ११२ पर्)।

क्रंत्रण न [काइस्मण] धीने देशो (वर्ष २)। कंत्रा की किन्दुमा] १ बाह, प्रनिनाप (सूप १ १४)।२ ब्राम्रक्ति युद्धि (मद)।३ यन्य वर्ग की बाहु समक्षा उमर्ने धार्माक क्य सम्पन्तन का एक मतिकार (पति)। माइणिज्ञ न [मोइनीय] कर्म-विशेष

(भग)। कॅम्ब कि [काविक्सम् ] काव्नेवामा (पाना

मजब मूर १३ २४३)।

**ब्हें क्षित्र कि [कोक्टिशन] १ मनिवरित । २** क्षांत्र मुक्तः बाद्यवासा (स्वाः भय) । कॅलिर कि [काक्सिय] कामोबाना यान-

सापी (वा ६६) सुपा ६६७)। कराणी की [इ] बस्बी-बिटेप नांतनी

(पाय १)।

क्रम क्षीन किल्ला १ वान्य-विशेष, क्रीगत या करेता (व क व घ १) । २ वस्सी-विधेय (पएए। १)।

क्रमुखिया भी दि फक्लकिका विन-मन्दिर भी एक बड़ी भागातना जिल-मन्दिर में या उपके नजरीक सबुधा मुझे मीति का करना (वर्गे२)।

कंपन दूर [काक्सम] १ एक वेस-विमान (बेबन १६१)। २ वि सोते का, सुवर्श का चन्त्रं बंड' (नका १६८)। प्रद्रत मिस्र] १ एल-विशेष । २ वि एल-विशेष का बना हुमा (देवेन्द्र २६६) । पायच पू ["पाइप] बृध-विशेष (स ६७६) ।

भंजगर्विणम्बर्ती १ द्वानियेष । २ स्व नाम-क्यात एक भेही (उप ७२= टी)। व न मुक्तुं, मोना (कप)। हर न जिंदरो कॉलग देश का एक मुख्य नगर (बाक्र)। कुत्र न किंग्री र सीमनस-नामक बन्नस्कार पर्वतकाएक रिकार (ठा०)। २ वेक-विमान-विक्रेप (सम. १९)। १ इच्छ प्रवैद्य का एक रिकार (ठा०)। केंद्रशाह की [\*केतकी] नठा-निरोप (कुमा)। \*तिस्रय

न [रिटक्क] इस नाम का विद्यावर्श का एक नगर (रक) । स्वयद्ध न [स्वयद्ध]स्थ

नाम क्यात एक नमर (रैस) । विख्यामा न [ब्रह्मनक] चौराधी ठीवों में एक दीर्थ का सम्बद्धी (सुता १८१)।

नाम (राम) । सेठ र् रीडि मेस्-पर्वत (रुप्यू)।

कंचजग पूं [काञ्चनफ] १ पर्वत-विधेप (सम ७)। २ काद्यनक पर्नेत का निवासी देव (बीव ३)।

कंपणा को किञ्चना रे स्वताम क्यात एक की (परुद्ध १४)। कंपणार र्षु [कक्कनार] पुश-विधेव (पटम

१३ घट कुमा)। क्षेत्रणिया को [काञ्चानिका] छाल माना

(धीप)।

क्षंचा (पै) देखो कण्मा (प्राप्त) ।

र्फंपि ) ही [फाफ्रि क्री] १ स्वताम-क्राप्ट क्रमी र्रेष केंग्र (क्रुमा) । २ कटी-देखता कमर का माभूपख (पाम) । १ स्कनाम-स्पात एक नवर (नुपा४ ६)।

र्काकी की दि ] मुसल के मुँह में रक्की जाती सोडे नी एक बनवाकार चीन सामा या शाम (₹ **₹ १)** ı

कंपीरम न [हे] पूज्य विदेश (बळा १ ४)। र्चनीरय न [काक्कीरत] मुख्य-विशेष (नजा

**१** ≒) | कंतु ] पूं [कस्तुक] र श्री का स्तत्त्वन्त्रा कंतुम | क वह बोली (पदम १, ११ पाय)। २ सर्प-स्वक सांप की स्वकी केंच्सी (विते २५१७)। ६ वर्ग कवक (स्प १ ६६)। ४ दुब्र-विधेय (हेर २४, ६) । इ. बक्र कपहाः 'तो प्रतिमञ्ज्य सत्रमा (सत्रमं) योद्रंबद क्षुवं क्षांत्रवारं (परम ६४ ११)।

भंजुद्र पुंक्तिम् रिमन्पुरका प्रती हार, बनयसी (लावा १ १) पत्न द १६ मुर २, १०६)। २ स्तंप (विमे २११७)। १ सन चर । ४ चराइ चना । १ पुधार, संबद्धन में होनेबाका एक प्रकार का सम बोल्हरी । ६ वि. जिसने बनव बारण किया क्षां सक्ष (है ४ २६६)।

केंसुइस वि [क्ष्मुकिन] च प्रश्नाता (दुना विपाद २)।

कंपुरुष्ट पूँ [कक्क्किय] पन्तपूर राप्रती श्वार (मग ११ ११)। कंतुइलांव वि [कल्कास्यमान] कालुक की वया भाषरण करता 'धेर्मचलंबुद्राजीत- इटोस ∫ रेर ७)।

२१२०)। **ध्यु**ति देनो देनुद्(एए)। इंचुलियाची [क्ल्रसिक] इंदनी पोसी (क्पू)। कंद्रक्ष औ दि हार, रएकपरल (स्वीर)। क्षीबाज न [नासिक] नाबिक (मुर ३ १३३) क्यो । बंद केनो बंदग (दिंग २ ) । कंग्रजेन रि फिए ग्रायमानी १ नएटक जैमा नएक नी शप्द भाषणा (स ६,२४)। २ पुननित होता (धन् ६)। कंग्रंथ रि [कंग्टेकिन] रे शएकनला (म १६२)। २ रोमाधित पुनक्षित (रूमा क्रम्प्रजेन रेनी क्रम्प्रेन (गा ६७)। कंटन्स पूंकिप्टकिसी १ एक बहा का वत्सः। २ दि कर्त्नो संस्थाः (नृष् १ १)।

tंपुग देवो क्युअ (मोद ९०६ विने |

210

क्टन्द्र देनो बॅटन्झ (प्रवृद्ध १ रूमा)। बंदर्शि वि दि । गएर-बीत (वे २, १७)। चंद्रशिद्ध देनो क्रम्युम (६२ ७१)। करेग 🐧 🛊 (काल्फ) १ मान प्रस्क केंग्य र्रिस इ. १. १) १ रोमाद्य, पुरक (गा ६७)। ६ शहु दुश्मन (सामा १ १) १४ द्वांबद की ग्रंस (बब ६) । ३ रूप (रिपार ) । ६ इन्होरतहरू वस्तु (उन १)। ७ व्योतिस-शास-प्रमिद्ध एक दुवीय (मल ११)। वांदिया सी दि पटक-रापा(माचा२ १ ४)। प्रदेशनी ध्ये [ब्] बननादि तिरोप क्ला पारिता मर्करेया (दे २, ४)। ग्रंटिय नि विभिन्न १ वर्ग्टकवाना,

राग्य-पुट। २ बूप्य-सिरेग (का १ ३१ 1 (13 बंज्या हो [पव्टिया] बन्धार्कक्रीय (बृह् t पाद्र t) । की की [रे] सारण्ड करिया, पर्वत के नबदीय की मूजि 'रयाची रन्द्रा एतु स्त्रमन्द्र सुरित्य भूमिन स्टूरा । र्वयेषो निरुत्ति व पर्यन्तरमहत्तामीया

**च्छ (वि] १ सुदर, सूपर।** २ मर्नारा धीमा (दे २, ११)। क्छ दं (\*कण्डे दिवना घोत्रे (कुमा) । २ समीप पास । १ मझन 'कंट काकाईग्री शिवदर्गादीमा (दे २ १a)। दरसन्ध्रिय वि विरस्मिक्षिती परपद (पाप) । अरव म [ मुख्य | धामरण फिरेप (णावा ११)। मुरबी भी मिरवा यहे का एक भागरन (बीप) । मुद्दी की बिनुत्रा] मसे का एक पाकृषण (धत्र) । सुच न ["सूत्र] १ मुक्त-बन्ध-विशेष । २ पते का एक सामुप्रल (पीत) । क्टेंबिक्यार स्टब्से उपल्या २ धरत मुक्स (निष् १३)। क्री की कि दिन है बहुत बन एक के साथत में बैबी हर्दे गाँठ। २ वले में सटकडी हाई सम्बो नाडी-कृष्टि (दे १ ६८)। कर्र्याणार प्रदिशेषक विकर (देश २४)। कंठमञ्जून दिहे १ ठठ ऐ मृत-तिविकाः २ मान-पत्त्र, बाह्रन (दे२२)। कंटमास पूरी [कण्डमास ] रोम-विशेष ( ( X X X ) I क्रिय प्रिष्ठ हो स्वताम-साठ एउ पीर नायक (महा)। क्टाईटि च दिप्टाईप्टि गनेनते में मान्य कर (ए। या १ २ -- शत ८०)। बंद्रास्त वि किल्लाम् । बहा बनावामा (वर्गीद १ १)।

कॅटिभ १ [दे] परापती प्रविदार (दे २ 82) I र्चे किमा भी [र्कण्डा] यो दाएड धामुक्ल (ना ७१)। कॅरीरअ देवी वंदीरव (किएड १७)। कॅगरव दें [कप्छीरव] डिह, साहस (प्रदी ₹₹) ( कंड सरु [कुण्यू] र बीटि मनैस्ट का दितरा यस्य करता। २ औषता। ३ भूजगता। वह ६३१त (बीद ४६) वा १६१) धर्में (एका १ ०)। **चंद्रत**[पाण्ट] १ मेटर का मसंस्थातना

धाप 'इंडरिट एरव मन्तद संप्रतभागी वर्ध-बेरबी (पर २६ टी)। कंड पून (क्यण्ड) १ वरण काळी। २ निन्दित समुदाय : ३ पानी अस्त । इ पर्वे । **५ इप्र कास्क्रम्य । ६ इप्त शीसाधाः** ७ दूल का बहु एक माद, बहुरे थे ताबाएँ तिरमती हैं। ८ प्रत्य ना एक मारा दे तुल्ला,स्तवकार धरन थोड़ा। ११ प्रेट, पितृ और केशता के यह का एक हिस्सा। १२ रोड प्रत्रभाग की सम्बीहर्मी। १६ क्रामदा १४ त्याचा प्रतीसाः ११ एउटा মৰক্ৰনতা। १६ एकान्त, নিৰ্মন। १७ বৃত্ত मिलेष । १८ निर्जन पूज्जी (हि. १. १) । १६ घरतर, प्रन्तार (या ६१६)। २ समूह (ए।दा १ व)। २१ वाल शर (सर ६६६)। २ र देव-विमान-विशेष (राज)। २६ मर्बंत वर्षेषा ना एक भान (सम ६३) । २४ घएक दुक्स, मनपन (भार १)। ब्यादिय पू शिक्षारिक] १ इन्ड शामका एक द्वान । २ एक पान-नायक (बन ७) । देखो क्ट्रांग, क्ट्रंडयं । र्फंड दृद्धि १ केन्,कीन । २ कि दुर्बन । व विषय विपति-यस्त (दे २, ११) । कंडरूप देवो कंटरूप (वा ११ ) । चेहरू अंत देवी क्राप्त्र अंत (या ६० म) ! केंडग न [फुण्डफ़] १ संस्थातीत संबग-स्थात-

सञ्चलम (पित्र १८३१)। २ विकास पर्वेत सादि का एक माग (सुम १६१)। र्दश्य पूर्व (पाण्डफ] देशो क्टल समाह (बाना बानम) । २५ ईक्म-पेरिए-निरोप (बृहर्)। २६ इस नाम ना एक प्राप (पाद १) : देवो क्षेत्रय : भडेल व फिण्डनी बीडिं व्येख को नाम करमा सुप पुकारण (या २ )। कंडपंटवा की [रे] मननिका परशा (रे १ २१)। चंडय पूर (काण्डक) क्यो चंड = शहर तथा इंडग। २७ इश-विशेष राष्टरीं का बैरव बुधा 'तुमसी मुवाल घड रश्यकार्ण व र्परमी (ठा )। १० तारीज करहा सर्मा वरमंति बंदवाई पद्यक्तिरिति धतवाई (बुर १६ ६२)। कंडरीय र् [कण्डरीक] नरापय राजा ना

एक पूत्र पुरुवधिक ना कोटा माई, विधने

चन)।

बयों तक बैती दीका का पासन कर चन्त में

<del>एसका त्यान कर दिया वा (ग्रामा १ ११</del>

क्टंडरीय वि (क्एडरीक) १ वरोमन च-

कंति की [कान्ति] १ तेन प्रकाश (सूर २,

२३६) । २ शोमा सीन्दर्य (पाप) । ३ इस

नाम की रावछ की एक पन्नी (पराम ७४

११)। ४ महिला (पर्यु २,१)। १ इच्छा।

सन्दर । २ बजबान (सुधनि १४७) १५३)। ) की किन्दरिका क्रिय करण कंडलिया } (शि १११ है र १व हुमा)। कंडबा की [क्यांका] बाद्य-विदेश (राम) । कंडार सक [धत्+कृ] पुरुवा, क्रीत-स्रक्र कर ठीक करना । संक्र 'रपूर्ण बुने बहु प्रधानकरणी जनमिन देहिए। स्मन्शानोन्न स्वतासुद्रक्ता । वर्षे भोद पढमं भूमधीलमंग कंडारिकण पमन्द्र पूछा दुईमी' (कप्पू)। क्षावेस्की सी काण्डवकी वनस्पति-विरोध (पएण १)। क्रिक वि [क्शिक्त] साफ-मुमरा किया हुसा (दे ६ ६६४)। कंडियायण न [क्विडक्रयन] वैराती (बिहार) का एक चैरम (मग १६)। क्षेत्रित प्रे काण्डिस्य र कार्यक्रिय-नोत्र ना प्रवर्तक ऋषि-विशेष । २ पूँची कारिकम गीन अलमा ६ न धोष-विरोप को मारकमा गोभ की एक शास्त्र है (ठा ७-पत्र इंट.)। |यण र्थ ("यस) स्वनाम-स्वाद ऋषि-विरोप (चंद १) । कंबू रेको कंबू (एव) । क्टंब केवो कंदु (सूत्र १ ६)। क्ष्मुका सक [ क्ष्म्यसूय् ] श्वतवाना । कष्ट्रकर (हे १ १२१ चन) केंद्रुवर (पि ४६२)। वक्त चंड्रवंत (वा ४९ ) चंड्रवसाण (प्रासु २६)। कंडुक पुं[कान्दविक] इतवाई, मिठाई वेचने-बाला 'रावा विशेष अभी ब्रेड्डबस्य कर वंतरमखर्यपत्ती (' (मानम) । कंबल ार्ष [करहुक] वेंश (रे व ४१, कंदग । चर)। कंबुस्तुय वि [धाव्यक्ते] नास की तस्त्र सीवा (स ११७) गा ११२)। क्र्युयरा नि [क्रव्यूयक] कुनानेनाला (धीप)। कंड्रमण न [कुण्ड्यन] र बुननी बाज पामा रोक्-विशेष । २ सूबक्ताः पामाग्रीह

यस्य बहा क्षेत्रुपर्छ दुक्कमेन मुक्तस्य (स ) ११५ उप २६४ टी ग्राम् )। कंब्रुयय वेको कंब्रुयगः 'सर्वहुनपृद्धि' (प्रश् २. १---पत्र १ )। कंडर पूं किएड्स स्थाम क्यात एक राजा जिसने रामचना के माई भग्न के साच बैनी बीका की भी (परम ६४, ४)। क्षंड्र की [क्रप्यू ] १ मुजनाहर मुजनाना (शामा १ १)। २ शेम-विशेष पामा बाव (सामा १ १३)। कंद्रइ औ [५०द्वति] अपर देखो (गा ११२) सुर २ २१)। कंबइअ न [कण्ड्यित] सुनवाना (सुम १ इ ३ मा १८१)। कंडूय येतो कंडूका = करपूर्व् । कंडूयद (महा) । **पट फंड्**यमाप्त (महा) । कंडूयग वि [क्रम्बूयक] सुनवानेवाता (ठा **६ १)** । कंद्रमण रेको कंद्रमण (उप २१७ सुपा १७६ २२७)। कंब्र्यय देशो कब्र्यग (महा)। कंश्वर प्रं विदे विकास बहुता (दे २ १)। कंड्रुक वि [कप्युक्त] बाववासा क्यानुपूक (इस्त)। क्ट्रंच किन्दी स्वयन्त, बेरना। २ कारना चरके से सूदा बनाना 'सल्ला कंटीरि क्याडों (सूच १ ६,१)। मंताबि (विक्रमा 32) I कंद वि कास्त्री १ मनोक्षर, सुन्दर (कुमा) । २ धामिलपित काञ्चित (काया ११)। ६ पुंपति स्वामी (पत्य)। ४ केन विशेष (पुज ११)। १.स. काल्विप्रमा (भाषा२ ११)। क्यं वि [क्यन्त] मठ प्रकरा हुमा (प्राप)। कंटाओ (कान्टा) १ और नारी (सुर ६ १४ सुपा १७३)। २ एवस्त की एक पत्नी का नाम (पडम ७४ ११)। १ एक योग-

रहि (सब)।

पायस (कप्यू) ।

६ मध्य की एक कला (राज विकार ७)। पुरी भी पुरी नगरी-विशेष (श)। म. 😅 वि 🖁 सन् ] कान्वि पूर्क (भावना गर्नड मुपा क १०६) । कींवि की किसरिव र परिवर्तन केरफार। र गमन मधि (गट—विक्र € )। च्हु पुँ वि] काम कामके (वे २ १)। ो पूँ कि सकी शब की एक वाति ~(ठा४ ३३ बता२३) 'नहासे कंत्रम े कंबोयायां माइन्ने कंबय सिमा (च्य ११)। कीया की किन्या] कवती प्रवती पूराने वक ये बना ह्या श्रोहना (हे १ १८७) । कंबार प्रे किन्यारी कुब किरोन (उप २२ et) ( र्षपारिया ) श्री [कम्बारिका, री] इस क्यारी । विशेष (उस र वर्ष थे) । यज न चिन्ती समीप का एक बंगत वहां शक्तीसुकुमार-नामक कैन मुनि में चन रान बत किया ना (भाक)। कंपेर दु [कन्पेर] दूश-विशेष (राज) । कन्परी भी [कन्पेरी] क्लटकनव क्श-विधेप (कर १२)। क्षंत्र प्रक (क्षुम्यू) काँदना रोना । बंदद (पि २३१)। भूका कविषु (पि ११६)। बहु कंदंव (गा १८४) कन्द्रमाण (ए।या t (1) 1 क्दं विदि । १ इदं मजबूत । २ स्त क्नवा १ न स्वरण *वान्यास*न, (दे २, 21): कंद हैं [कर्य, कन्दित] स्वन्तर देवों की एक वावि (ठा३ ३—यह =१)। कर दूं [फल्द] र इचेबार भीर विमा रेशे की कैदार प [कान्दार] १ सरहाय अंकल वड्; बनीकस्ट, सूरत शकरकम्ब, विभागीएक्ट, धील गांबर, सङ्गुत नगैरह (बी १)। २ (पत्न) । २ इ.छ. दूषिकः ६ विकस्मा ४ मूल मङ् (पड़ा) । ३ छन्द विरोग (पिंग) । फेवार पुन [बान्तार] बत-छताबि-रवित क्षेत्र पं [स्क्रम्य] शास्त्रकेय, प्रधानन (कुमा मध्रम, चेताये (सम्पत्त १११)। द्वेर प्रयह)≀

क्द्राच्य थूं [क्रम्युय] १ शामदेव धर्नम (पाप)।

वामोहीएक हास्पादि 'चंदमे हुद्धस्'

(प्रीप्तः स्तामा ११)। १ देव विदेस (पव

३) १ ४ काम संबक्ती क्यामा ३ कि काम

कदरप वि विगन्तरी नान्तर्पन्तवनी (पव

क्दं रेप वि [कर्म्यापन्] नामोद्दीपक, नन्तर्ग

द्मेश्रिया पूँ [पान्युर्पिक] १ मजाक वरने

बाला भागूड बनच्छ (भीप: भग)। २ काएड

प्राव देशों की एक जाति (पण्डू २ २)। ६

हान्य वर्षेख् सार्व धर्मे ले प्रात्रीविका

चत्रतेशाचा (प्राहा २) । ४ वि वास

चैतर न [कम्पर] १ रत्य, विवर (छावा १

**बं**दरा ) धी [बन्दरा] पहा, प्रस्न (वे ४

चंत्रक पुंक्तिस्ता १ वर्षः, प्रधेह (सूत

र्श्यसमा पुँ [कन्द्रसक] एक नुरवाता जानवर

क्षंत्रविभ १ वि [क्ष्युद्धित] श्रेष्ट्रीय (रूपा

प्रदेशी थी [कर्या] १ नता विरोप (तुरा

४)। २ नडाविद्यं (सुपार १)।

प्रदेश व दि ] बतात (दे २ ४) ।

३) । ३ द्वरा, एक्स (उरा प्रापू ७३) ।

मुन्द, कामी(बह १)।

बा उद्येषक (बब () ।

भंगची (बुद्ध १)।

चंद्री १ रोज)।

विदेव (पनगु १) ।

wiffin | friet):

**53)**1

क्षेत्र कृष्टे [क्रम्यु] एक प्रकार का नरदान, जिसमें सार्व्य वर्षे एई प्रकारता जाता है है ज (निगर ३ मूच १ ३)।

कंदुआ पुंकिन्द्रकी १ मेंद(पाम स्वप्त १ मै ६१) । २ बन्ध्यकि-स्थिप (पर्या १) ।

कंदुइस पुं [कान्दविक] इनवार्ट मिर्स्स वेचनेवासा (दे२ ४१ ६६६)। क्ट्रेंब देशो क्ट्रेस (पूप २ ६ १६)। बंदुग रेखो बंदुअ (राम) । कंदुकुन [पे] केतो करोह (पासः वर्मा ६, कतुष्वय पूर्व [ब्रे] कार्य-विदेश (मुख ३३

बंदुय देनी बंदुइज (दुन ६८)। कंशहय वैको कंदुल्झ (मुपा १ १)। चैदोड़ न वि] नीत रमन (दे२ ६ प्राप्तः यह् ना६२२ उत्तर ११७३ वर्षु भवि)। र्छप देवी स्रीय = स्तन्त (नाट नग्या ६६)। क्ष्मरा भी [कश्या] श्रीना, नररन (पामा मूर ४ १६६ क्या १)। में भार पूर्विहें किया बीवा का पीछरा भाव (सप्दूदह)।

क्य सक [कम्पू] नराता दिलता। क्या (दे १ )। यद्भ कॅपेन कॅपमान (महा रण) । रवड़ क्येंप्रेजी (ते ६ ३० १३ १६)। मर्ग वह कंपाबित (बुग १६३)। क्षंप पूं [कम्प] बलीवें चरत दिलत (कुमा धाउ)। क्षपद्य वृद्धि पविषय प्रवास्ति (दे २ ७)

क्षेत्र कि [कस्र] १ कसुक कामी । २ मुक्य मनौद्धर (पि २१४)। क्षंत्र देखी क्षंत्रा । फोबर पुँचि निजान (देर १६)। बंबस पुर [बारवात] १ कामरी अनी करहा (धाचाः सम्)। २ पुरवनाय-कातः एक वनीवर (राज)। १ गी के गरी का चमझ सारमा, यनजंबन महर (विपा १ २)। कंबाओं किया विशे तस्त्री विशे तक्राप्यां निमुद्धि रंबनायुह्न बहाँ (नुपा 1 (232 कृषि ) और [कृतिक स्त्री] १ वर्गी कृती । कहारी । २ तीला-वर्ट, बही, सीन

२ न पंजाब केत का एक ननर(छाई

कप ६४० छो)। पुरन पुरिरोनस

क्तिय (प्रम व १४६) उत्ता)।

से द्वाय में रुती बादी सकड़ी (इन पू २३७)। कॅबियाको [कश्विका] पुस्तक का पुरा क्तिवर्ष का बावररा पृष्ठ (राय १६)। चंतुर् [कम्बु] श्*राह्य* (पण्डर ४) । १४म नामकाएक द्वीप (पटम ४०१ १२) । है पर्वत-विशेष (पटम ४४, ६२) । ४ म. एवं देव-विमान (सम २२)। स्त्रीवान [मीव] एक देश-विमान (सम ५२)। क्षेत्रेय दू [क्रम्बोळ] केत-किरोप (परम २०

### c ) t क्षेत्राय वि [काम्बोज] कम्बोज देश में प्रशप्त (च = )। चॅभार⊈व [फ्ट्मीर] इत नाम गाएक प्रमिद्ध फैत (हे२, ६ वा पर्)। जन्म न [जमन्] पुत्र केशर (पुना)। देनी

पंस पुंबिसी १ राजा जबनेन ना एक पुर थीइप्लामा मानूच (पर्याप्त ४) । २ महा बर-स्टिप (ठा २, ६—यव 🛊 ) । ३ वांगा ण्कप्रकार की मानु(शाका १ ७—पत्र ११) । जास दू [नास] बह-निरो (दुन २ ३ इक) । बज्जा वृ [बर्जी] महनियेत (हा १.१—१४७)। राज्याम प्रशिकाम प्रशिक्त (हा १ १)।

र पाम प्रश्निश्च १ श्रीपुर, प्रदेइ, 'र रि(रर्डन'रनीत्रणको' (उन ७२ हो) । फंपण न [फम्पस] १ नश्र हिनन (भनि)। कम्हार । मंदर्भी की [पन्दर्क ] बन्द-रिशेष (बन्त ३६ र रोज-सिरेग। बाइस वि ["बार्तिक] फैमूर (मा) कार देनो (वर् )। (1) कम्य बागु नामक धेनशाना (धनु ६)। व्येषि दि [व्यन्यम] नास्त्राप्तः (क्णू) । क्टीरय वृं [कान्द्रश्विक] हनगर, मिन्नई विषय वि [क्रिन्यत] नारा हुना (कुना) : बेबनेराना (जा १११ धी)। व्हेपिर नि [व्हिम्पनू] नाननामा (गा ६११ बॅरिर पू [मञ्चन कल्लिनात्र] बांस्त मा २७)। नावर के दिनाम का एक (छ के र---गत नुस ११ क्षेत्रिक हैं। किस्पारम् ] कारनेवाता सरियछ 42) I निवनरियम परमपटि वीद्यानामपूर र्षंद्रगत् [क्षन्द्रित] र बलाम्स्टार केतें की (स्टा ६ टी) १ गम माति (दार्ड १ ४' धीर) । २ म. रोदन कंपनि है [कारियाय] रे सहुबेदीय राजा नदारण १ ["संदारण] १०७ विगु काम्प (बन २) । धन्तरकृत्य के एक पुत्र का नाम (धन्त ३)। (रिय)।

क्रेंद्र न [क्रेंद्रय] १ चानु विशेष कीता । २ वाय-तिरोक्ष । ३ परिमाण विशेष । ४ कम धीने का पॉन प्याचा (१ १ २६,७) । तास न [गानु जाय-विशेष (वीच ३) । त्याचे, पाई की पानी | बांस का नना हुमा वाव-विशेष (कण ठा १)। पाय न [पानु विशेष का हुमा पात्र (व्य ६)। क्षेत्रापु विशे क्याप्ट्र पर प्रकार की निगरि, ता कर्यस्य क्याप्ट्र पर प्रकार की निगरि, ता क्यस्य क्याप्ट्र पर प्रकार की निगरि, ता क्यस्य क्याप्ट्र पर प्रकार की निगरि, ता क्यस्य क्याप्ट्र प्रकार की प्रवाद, तिस्त्रीयन गोने अच्छिम प्याची (४ १८०)। क्यसारी की [तृ] सीवित्र पुष्ट चानु की एक वाति (वी १८)।

१२: मुता १)। इदंसाझा की [इदंसतास्त्र, कांस्यनास्त्र] नाव ना एक प्रकार ना निर्मेष ताव (ग्रीर)। कंसालिया की [शंस्यतासिका] एक प्रकार का नाव (पुरा २४२)।

क्रीसम्भ पुं [क्रीस्थक] र वसंघ वैताये वास्त-कार (हु १ ७ )। २ वाय विशेष (गुरा २४२)। क्रीसम्भ की [क्रीसम्भ] र ताल (शाया र १६)। २ वास-विशेष (साचा २)।

कामां पूर्वी [वे] मर्गस्मात 'घसस विकासित कवाएमी से' (मूच १ १ २ ११)। कुपुरा } रेको कवाइ = वपुर (वि १ १)

पक्कम ∫ हर, १७४)। सनुद्ध देनो कउद्द = क्युड (ठा ६,१ छाया १ (७ विग १२)। १ इप्लिंग का एक

राजा (पडम २२ ११)। क**कु**दा देवी कडहा (बर्)।

क्षा पूंचिक है। उद्योगनेक्य, तरीर पर बा में सुरू बचने के लिए नाममा बाज रूप (सुम रेट निष्ठुर)। २ न पाप (प्रम रेट थे)। रे माना, करटे (सप करे)। गरुग न [गुरुक] माना वयट (सप्पुर्ट्ट —पर देश)।

यक्ष पुन [क्सा] १ वन्तन स्वादे बर्दन स्था (दम ६, ६४)। २ प्रमुद्धि ऐस स्वादे में निया वाला स्वादनातन। १ मोस स्वादे हें

बार्यन (पत्र २—गावा १११)। कुरुवाकी [करुका] माता करट (पत्र २)। कक्क दुं [कर्क] १ पक्रमणी का एक देव-कृत प्रसाद (उत्त १३ १३)। २ प्रस्थि-किरोप

आधार (उत्तार ११) । स्वर्भ प्रश्चित १९) । कक्षेत्र पुंक्ति स्वा प्रकृषिग्रासक देव विशेष (ठा २ ३) ।

कक्क प्रमुक्तिक स्रा प्रशासन्त्रमक वर्ष गराम (ठार २)। कक्क क्षेत्र क्षेत्रकिन्द्री वर ना दुश (पाप)। कक्क क्षेत्रकृती कर्मपरित (विचार १९)। कक्क क्षेत्रकृती क्षेत्रम्य प्रभीर

क्कड न [ककेंग्र] ग्यमनपु-क्रिय हुसीर (यादा)। २ कम्मी एक विशेष (यन ४)। ३ हुस्य ना एक प्रकार का नामु (मग १ ३)। क्कडक्य पुंकिकेंग्रा] कम्मी बीध

(करा)।

कक्षतिया । श्री [कक्षेटिका, टी] करा।
कक्षतिया । श्री [कक्षेटिका, टी] करा।
कक्षती । (बीरा) काराय (वर ११)।
कक्षत्या स्त्री [क्ष्रतना] १ पार । २ मावा
(वरह १ २)।

(परहर र)। कब्कन पूँ [दे] पुत्र क्लाते समय पर्ने प्रमु-एस भी एक प्रथमना प्रतु रस को विकार किरोप (रिज २०३)।

कक्षर पुँ [ककर] १ कंकर, पत्कर (विधा १ १ सब्ब पुरा १ ७ सालू १६०) । १ वि वित्रेल, पाप (धाषु ४) । १ ककर साताब काला (उत्त ७) । कक्षराच्या क्षा [कक्करणता] १ शेरोत्सावन शेर्णक्षाक्रवाचित्र प्रकार (ठा १ १—पश् १४०) ।

फक्कराइय म [कर्कमानित] १ नर्कर की ठायः धार्मातः । २ बोपोबारणः बोप-प्रकरन (प्राव ४)। कक्कस वि [कक्करा] १ नरोट, परत (पाय

क्रस्त वि [क्ष्या] १ करोट, यस्य (यास पूरा १८ सारा १४ पत्रम ११ ६१)। २ प्रगट करा । १ तीज प्रयाद (शिला १ १) ४ स्रीत्य हार्गि वास्त (यस १ १६)। १ क्ष्या होते स्वात । ६ क्ष्या-क्षा कर वण्डा हुमा क्ष्या (यास १ ४ १) १ स्थास | १ ४ वि] समोदन करन (१

क्ष्रमा ) पृष्टि क्योरन करान (के कक्षमार ) २ ४)। क्ष्रमंत्र पृष्टिकमानी सर्वाद क्रमरिएते काल में उराम्न एक कानाम क्यात कुनकर पुण्य (राम)।

स्कालुआ स्त्री [कर्मन्स] १ कृप्पास्य बही, कोंड्स का पाछ, 'क्यानुमा गोधमीन सर्वेट' (कृप्य ४१)। क्रिकेटक वृश्चि हे कलाए गिर्पयन्न प्रकारती संक्षेत्रक (२ ११)। प्रक्रिय (क्रिकेट) सर्वेटन स्त्रीवाला

में फाडेको (६२ र)।
पिछ टुं क्लिक्स जिल्ला में होनेवाना
पार्टारपुर कर एक (ती)।
क्लिक्स में क्लिक्स जो मोर्स (मूब १११)।
क्लाम पुर क्लिक्स जो एक बारि (क्ला दनम ६०४)।
क्लाम पुर क्लिक्स जो एक बारि (क्ला दनम ६०४)।

क्ष्यकारक प्रमुक्तकारक । साध्य-वर्धय का एक बादि (मुक्क २ २) । क्ष्मकार न [कर्कोट] साक विधेद कहरीन क्ष्मोग (पत्र) । केनो क्षमकोश्वय । क्ष्मकोश (भी [कर्कोगकी] करोध का बुद्ध क्षम्मीस का साथ (साध्य रे—पन ११) ।

पस्कोबय न [क्कोटक] देवी ध्वनकोब । २ ई ध्वनेनस्पर-मानेक एक माग-दान । ३ ज्याका पानाय पर्वत (पान १ ६ व्हन्) । स्कानोब ई किट्ठीम्ब] १ ब्रा-परिचेद गीतक भीती के इस का एक मेन (गवडा स ७१) । २ स. कम-नियेद को पुर्वाची होता है (पद्म २ १) वेदी के होता । कमकावी ही [कट्ठाक] बुध-विरोध (बुध

क्कस वेंची क्रम्य = कस (उस कम भूर १ यद पत्रम ४४ १ पि देश्वा ४२ )। धक्सम वि [क्शाम] १ कसा-प्राप्त । २ दू बस्त वा देश (तह देश)।

7/2)1

कमन्त्रक देवों कमस्ति (सम ४१ ठा १ १) भग्नाम स्व) । कमन्त्रक वि दि] पीत, पूछ (वे २ ११ कप्पः

स्यक्त स्वि)। कक्स स्वि)। कक्स इंगी की [दे] सकी स्वीती (देर

करण्डामा हिंदु उक्का सहस्राहर ११)। करूप्त हिंदु देशा करूदम् (यह)।

करुता केवी करुदा = क्या (गर्म एक्सा १ = गुर ११ २२१)। कन्याक पुंचिती र म्यानार्थे किरिक्स

नटत्रीय। २ वियोग दूव की मनाई (हे २, १४)।

कम्पायस हुं [ द ] तिनाठ, दूब का दिसाद, पूच की मनाई (वे २ २२)।

इन्सुस र्व [इन्सुझ] पुस्प-विशेष (पएस १--पथ ३२)। म्बस्युद्ध प्रिप्युद्ध स्वनाम स्थात एक भारद-पूनि (लाया १ १६)। कराष्ट्र रेजो कराष्ट्र (प्रामू ७२) । कच्छोटी की [य] कारीटी नंगोडी (रमा-टि)। यस्त्र कि कि गर्भे १ को दिया जाय वह। २ करते सीम्य । १ जो निया का सक (है २ २४)। १ % प्रशेषन स्ट्रेस 'न म माहेड सहरवें (प्रामु २७ वप्यू) । इ वाएव हेनू (बब र) । ६ काम काज धमह परिचितित्रवह, सर्रितरं हुण्यप्ता दिवएण । वरिएम६ सम्बद्ध क्यिय रण्यारंभी निव्यिक्तेण (TCY (4)) आण वि दिंही वार्वका भागनेवाला (उप eve) : मेण वृं भिन | धतीत उत्मर्पणी शास में इत्यन्त स्वताम स्थात एक कुलकर पुग्य (यम ११ )। क्ञां (शौ) ही [क्रम्यसः] क्रम्या कुमारी <sup>1</sup> (মাছ ২৩) ৷ कञ्चउह पू दि ] धन्यं (वे २, १७)। बद्धमाप वि[क्रियमाण] वा विया बाक्षा हा बहु 'बजबे ब कन्त्रमाएं ब झाल्मिस्सं भाषानर्ग (तुमार ८) । खळाउन [कळाल**] १ का**वल मगी। २ क्रम्म नुस्म (नुमा)। "प्यमा स्रो [ प्रभा] गुक्राना-नामक जम्मू-बूध की उत्तर । दिया म स्वित एक पूप्तरिएते (बीब ३) । यञ्चलका वि [यञ्चलित] १ राजस्ताना । २ स्थाम कृष्यपु (काम) । षप्रार्थमा ध्व [क्ष्मस्यद्वा] कारतन्तुः कीर के उत्तर एगा जाता पात्र जिसमें बाजा इन्द्रा होता है। नवरीटी (यंत सामा १ 1-44 () 1 क्षत्रमा अ[क्षत्रसा] दानाम शेल्क

क्रविंगी (रर) ।

षञ्चराय वर [मुर्] हुग्या हुत्ता

बाचेते मन्ता। पर्वे वे तासर् उद्ये

इक्तियेण बासबद्द, उपस्वदि वा खावा करन सार्थ (पाचा २ ३ १ ११)। यह-फ्छन्नवसाग (भाषा २ ३ १ ११)। क्ष्म्रासिस रेको फानस्टाम सि २ १६ गउड) । द±चय १र्द्र[दे] १ विहासमा। २ <del>त</del>ुण क्ष्म्यय विषय का समूह मूका करवार (दे २, ११ ध्या १७१३ १६३ स २६४४ दे६ ५६) मल्)। कृष्टिय वि [कृप्यिक] नार्याची प्रयोजनायी । (क्ष ३)। बद्धावन पू [कार्योपन] घडावी महापही में तक प्रहुवा नाम (ठा २, १-- पत्र ७८)। कामाल न [दे] मैतान एक प्रकार की थास को अथासमी में सबती है (देन ४)। करि (मप) म [करर] इत मर्वो ना धोतर सम्पद-- १ माधर्य विश्मम 'कटरि यगुंतद मुद्रक्षद्रेज मस् विश्वन मार्थ (है ४ ३५ )। २ प्रशंसा, रहाना चटरि यानु मुरिसानु रटरि मुह्हमस प्यन्तिमा (श्रम ११ के) । मनार (यप) न [ न ] पुधे दुरिशा (है ४ **333**() 1 फट्टमरु [कुग्] काला देशना कट्टर (मरि)। संह कहि, सहिष कहिम (रमा मिश विष)। फट्टी [पृच्छ] बाटा हुमा दिम (उन कट्ट म [क्ष्य] १ इस्म । २ वि वष्टकारक नप्रशिद्ध (पिम)। कट्ट पून कि ] वहीं में रामा हुया थी का महा साथ रिरोप (निष्ट ६३७) । फट्टर न [बे] याग्य बंग दूबड़ा से बता विस्तयपट्टी इ.बा. विकास स्ट्रीट बार्ट (धनु)। षष्ट्रराय न [व] दुध रुप्र-विरोध (स १४६)। पहारा में [वे] पुरिता हुए (दे २ ४) । पट्टिम रि [वर्षित] बात हुमा देखि (रिया) । यटदु रि [यन् ] वर्षो, क्लाराचा (यर ) । बद्दु व [बुद्धा] बरहे (लावा १ ६ बन मए)।

क्ट्रोरग र् रि कटोच प्याना पार-निशेष तथी पासेहि कराज्या कट्टीरमा मेंडुधा मिणाया य ठविज्यति (निवृ १)। यद्भन [क्ष्ट] १ दुन्छ पीड़ा व्यमा (दुमा) । २ परा ३ वि कष्ट-रायक पीड़ा-कारक (६२ १४ ८)। इतन [मृद्ध] नङ-यस काठ की बनो हुई बास्क्रीगरी (मुर २ \$= **१**) | फ्टुन [काप्त] काठ लककी (कुमा मुता **६५४)।२ पूँ राजगृह नगर का निरामी** त्क हरनाम-स्यात येही । (भारम) । शुरुमैन म ["कमान्त] प्रकृषी का कारवाना (धावा २ र)। करण न [ करण] स्वामन-नामक मृहस्य के एक छेत का नाम (कप्प)। कार र्षु [ शर] बाठ-वर्मे सं बीरिया चनानगमा (प्रमु)। कोसंब पू ["कोसम्ब] पून की शासा के मीचे मुक्ता हमा मय-माग (सन्)। न्याय पू [ रहाद] कीर-विकेष पूछ (क्ष v)। देखें न [देखें] यह की शांत (राज) । पाण्यां भी पादुश्ची काठका पूरा प्रमुख (पर्यु ४)। पुरुष्टिया दी ["पुचिसिक्रा] बठावनी (पण्)। "पैज्ञा सी पिया र मूंग की छ का काय। २ एत गतनी हुई, तल्हन की सब (उका)। सह न मिम् प्रशासनस्य (क्या)। मून न [मूस] दिश्य पत्य विश्ववादी रकड़ा समान हाता है ऐसा बना मूँग सावि मप्र (इष्ट् १) । हार पूर्व [\*हार] प्रीन्त्रिय मन्-विरोप छत्र बीट विरोप (शीव १)। दारय पू ["दारझ] बळ्य, बब्द्दात (पुता ६८३) । क्ट्र नि क्ट्रियाँ निर्मित वामा हमा भीर रुक्ट्र परहोत्मा रंपणे य मौतो थं (बीव 111)

बहुय व [क्या ] धावपेल गोबार

पट्टरार दू [फास्ट्रार] बटा्स तक्कारा

महाभौ [माहा] १ किया (नग र≖) । २

हर, नीमा 'ब स्टम्म बरा परा बहुा' (बा

१६) । ३ कात का एक परिवास बहाएर

निया (तेंद्र) । ४ त्रक्यें (गुज्ञ १) ।

पाउगाइम (दुव १ ४) ।

(43E) I

महिम दृंदि] चारानी प्रतीहार (देव (X) कट्टिश दि [काष्टित] कार से संस्कृत सीव वर्षेष्ट (बाबा २ २)। क्ट्रिय देखी क्ट्रिम (नार-मानती ११)। पट्टम नि [काध्य] रेनो कट्टिय-नाष्ट्रित (बाबार २,१६)। बहास रेवो बहू = 🖅 (निर १२) । कद्रावि दियोण दुर्वन । २ तृत विनष्ट कड र् किट ] १ बारा-पान गान (छापा १ १ दद ६४)। २ तूल पासः। ६ चराईः बास्त्ररापु-निरेप (ठा ४ ४ वव २७१)। ४ सबदी मीट टेनि च पूर्व लगानिट्टु बद्धाराण्डरतिकार्ण्यं (बमु) । १. वंश कोन (दिला १ ६ टा ४ ४)। ६ दूछ विरेप (टा ४ Y)। ७ दिना हुमा वाह (याचा १ २ १) । गद्धन्त म ["गस्य] क्ता (रहेप (बीप वे २) । तह न विटी १ बटक वा एक बागः २ गम्ब दर्भ (स्तापा १ १) । पुराना हो [पुराना] ध्यक्तिय विदेश (तिमे २२ (६) । कड़ रिहिन है शिया हुआ। बनाया हुम्य, र्श्वन (सन पर्स्त १ ८ शिया १ १) क्य मुत्त १६) १ बुन युन विकेश रखपुत (टा १ १) १ चार की चंग्या (मूच १ र)। प्रान [\*युग] गप्य-प्रय जप्रति काशनक याधिया १३ क्यों का मापून होता है (टा∀ ३) र् [युग्ग] तब शांश-रिरेय चार में भाग देत पर जिल्ला पूछ भी क्षेत्र ल वया रोजी ਚੀਰ(ਕ ਟ ੈ) ज्ञासस्य जुग्म 🖠 [ युग्मशृतगुम्म] चितिन्दिते (अन १४ t) । जुन्मश्रीन्त्राय [युग्मपञ्चाज] र्याट सिंच (बर ६८ ६)। जन्मनभाग 4 [दुग्य काऋ] चिंछ विदेश (बन ३४ पुग्मशावरञ्जाम 🖠 🕻 पुग्मञ्जापर वृत्यी लिसिक (स्पार १) आणि रि विगाम र प्राध्य (लियु १) । ३ लेल्पे लें) (धाव १३४ मा)। ३ का धेः(तन् १)। बाइ व [बाहिन] ८ हको दे र स सन्दर्श हो की बनाई

हुई माननेशासा जयत्वात् त्वारी (नुम १ ११) "इ. दूं ["दिं] देशो जोगि (मर लावा १ १--पत्र ७४)। रेखो क्य = ₹7 L कडअह वृद्धि वीवारिक प्रवीहार (दे २. फब्बज्रही सी [व] १एठ, बना (दे २ १३)। फडइअ दे [बं] स्वपित बडर (दे २ २२)। कब्रद्रभ विकिटकित | बनव दी उठा स्पित (से १२ ४१)। कबद्रम पूर्वि] वीधारिक प्रतीहार (वे २ कडंगर न [वडहर]तुत, दिनरा, भूसा (गुपा 198) I फर्बत न [वें] बूसी वन्द विरुगः। २ प्रुप्तस न इतिर न [चे] पूर्यता सूर्यं साहि उत्तररहा (दे२ १३)। वर्षनरिज रि [दे] चरित विचरित विना रिड(दे२२)। मब्देय पूर् [कडम्म] नाच विरोग (पिने ७० ਹੈ)। क्षत्रंश पूंजी [क्षत्रमा] नाय-निरोप (राय पर्दभुम न दि ] १ कुम्मग्रीर-नावक पाव रिरोतः। यक्षेत्रा मन्द्रभाग (दे २ २) । कडक देनो फरग (नाग---राला १)। प्रवरहा स्थे [पश्चवता] मनुस्ता हतः रिशेष बहुबहु माराज (व २३७ हि ३३ मार-मान्ती १६)। पड़ इंडिप्स रि [बडवॉडत] विक्ते वह-बड़ माराज विद्या हा बह जीएँ (तुर १ १६१)। बटर्राहर रि [बदरदायियू] बहुनह भाराव करनेशना (संगु) । कट क्यान [सह वत] बहरह धारात्र (Pr( \$ \$ \$ \$ \$) 1 ब हरमा हुँ बिटाली बदार शिक्षीबिटाब भार पुत्र इटि, मांस का नदेश (क्षाम नूर t vt 50 t): वहवरा नव [बराध्य ] वशास वस्ता ।

बदला" (मर्दि) । महः बहेदरादि (सर्दि) ।

क्द्रप्राय न [क्टाक्ष्ण] नवद करना (भवि)। कडिक्तिल नि [कटा केव] १ निवार नटाध किया पया हो यह (रंग्रा)। २ व वटाश (मनि)। क्आरग देन किटकी १ नदा बसय हायका द्याभुक्श-निरोप (छाया ११)। २ वर्गनदा, परदा 'प्राप्तस सन्दरमसं होती करदरेस है क्षमी। शिमुवपुरम्माएलं (जा १६१ धी)। ६ पर्वतका मूल भागः। ४ पर्वतका सम्य भागः। ५ पर्वतः भी सम मूमि । ६ पर्वतः ना एक भाव 'निरित्र'दरकद्मविसमदुग्मेन्' (पच ८२. पर्या १ श लामा १ ४ १०)। ७ स्थिए सेन्प्रचाने वास्त्रात (बाहर)। ८ पू. देश-विदेश (द्याया १ १---पत्र ११)। देखी कबरुहु हो [दे] रहीं पमनी शेर्र (रे रे **ه)** ۱ फक्कण न [कदन] १ मार बलना, दिना करना ! (बुमा) । २ नारा करना । ३ नईत । ४ पार : १ युद्ध । ६ विद्युनता बार्चनता (E t Rt ) 1 कबण न[क्टन] १ मर नौ इतः। २ वर पर छत कातना (नक्त १)। कडल न किन्नी पदाई भारि है पर त गेररार, जगाई मादि है भर के नार्थ भारी नातिका काठा बाल्याहरू (बाका ११) १ १ थै पर १११)। कण्यास्त्री [करना] घर का घरवर विदेश भवर्ण। स्था फिर्न्सी केन्रसा 'नुरविश्विक श्चित्रवरं सदबाङ । विस्मृत्युद्धीवे (दुरा 582) I करवस्य रशे [रे] साहे का एक बकार का इतियार, भी एक बारवाना और बड़ होना **१(देव ११)**। वडर्त्ताराज रि [ब्रि] हैतो कईश्रीराज (व्या)। कदर्रिभावि दि । दिल्ल बारा हुन्स। १ प (त्रिका (चेट)। बहरप नु[इ बटप्र] र प्रदूर निरुप बनात (६२ १६ वट् । शहर गुना ६१ मीर कि हर)। २ बन्त वा दत मन

(दे २ १३)।

२१ २)।

क्टमड पुन [दे] उद्देष (सँदि ४०)।

क्षाय न [क्टक] क्रव मादि नी यटि (माना

क्ष्मय देवो प्रवास (पुर १ १६३ पामः बउड सहा मुता१६२, देथ १३)। ६ सरकर, सैल्प (ठा १)। १ पूँ काग्री केश काएक राजा (महा) । । यद स्को [।यतीः] राजा कटक भी एक कन्या (महा)। क्षप्रदाद पूँ [क्षप्रकृत] नण-नव धाराव 'करमह करपवहारायक मा(? य) मार्जवदुम मृत्तु' (परन १४ ४४) । कह्यदिय वि वि वि परावित कियम हुमा बुगाया हुमा 'स बुग्मह न महिम विद्वि में पविद्वत गिरिवर (सुपा १७६)। यज्ञसम्बद्धाः स्थी [वि] वेद्य स्थाना व स की सताई (विशा १ ६)। कडसार न [कटसार] युनि का एक स्प करण पाटन 'न दि मंद्र विणा रिद्धी (१ वि)। सदि दूधी (१ पि) कलको च कबसार (विचार १२८)। क्रहमी की हि] श्परान, मनान (दे २ ६) । क्बाहु पुँ [कटभू] बुल विरोध (बुद्ध १) । कहा की वि] कही, सिकड़ी जीबीर की सबी विवहक्षाहरूकार्ण कहनसभी निमृश्यिमी वत्तो' (गुपा ४१४) । क्टार न [दे] नारिनेस बरियर (दे २,१)। कहार पू [कहार] १ वर्छ-विशेष शामहा वर्णभूषारंगः। २ वि विभन्न वर्णकानः भूषारंगका मटमैका रंगका (पामारवण ७७ पुत १३: ६२)। च्छाक्री की दि कराडियों नोहे के गुँउ दर बाक्ने का एक उपक्या (यन ६) । कबाह पूं [कटाइ] १ नहार, लोह का पाद, सोई भी वड़ी बड़ानी (सनु ६ मान---मुब्स १) । २ इस विदेय (पण्न ११ ७१) । क्षेत्रेर नी हुई, सरीर ना एक साम्बर्ग (पएए १)। कडाइपस्ट्रस्थित न वि देशे पास्ती का धपप्रचेन पारवीं को बुमाना-दिस्ता कि ए. २१) । महिस्से [कारि] १ तमर, नदी (निपा १ २ सनु६)। २ कृषादि का मध्य भाग

(बंद)। तक्षत ["तट] र क्टीन्डर। २ मध्य माम (राय) । पहुम न ["पट्टक] बोती बस्ब-विशेष (बृत्४)। पचन िष्यी १ सर्वीद कृत की पक्षी। २ प्रतिश कमर (प्रनु≭)। यस न ["दस ] क्टी-प्रदेश (महि)। इ.न टिया देवी ऋदिह (रे) का दूसरा धर्म। बट्टी की ["पट्टी] क्यर का पट्टा क्मर-पट्टा (सुपा ३३१)। बत्य म [बस्त्र] चीती नमर में पहलते का नपना (दे २,१७) । सुत्त न ["सुत्र] कमर का बामुपण मेखना (सम १०१ क्ष्यू): इत्य प्रहिस्ती क्मर पर एका हुमा शय (दे २ १७)। कृष्टि वि [कृटिस्] नशर्षतता (यह १४४)। क्षत्रिम वि किटित र कट-वटाईसे भाष्क्रावित (क्या)। २ कट से संस्कृत (धावा२२१)। एक इसरे में शिक्ता कृषाः 'वएका"यवशिष्काए' (यौप) । कडिअ वि[दे] प्रीणित भूगी किया ह्या ( पा )। र्म्बदर्सम पुंदि] १ कमर पर रखाहुबा हाम (पाय- वं २ १७) । २ इसर में फिया ह्या यागड (दे, २ १७)। क्षिण पुन [व] तुण विदेश (गुम २ २ ७)। कॉडच रका कास्रच (ए।या १ १थी— पत्र ६)। क्बिसम्बन्ध [दे] शधर केएक मान में होताला हुए विदेश । (बुह १) । फबिद्ध वि [दे] १ दित्र-प्रीत निरिद्य (देन प्रेंन प्राः)। २ त, कटी-करक कमर में पहतन का बस्क बोडी क्षेत्रह (६२ ६२ शका यह मुपा १६२) कमू मिंच विशे २६ )। ६ वन अग्रेस घटनीः र्सकारमस्कृष्टिस्म संजोवनियोगमीयत्तरगृष्टे । दुपरपणद्वाण तुर्ण सत्याहो शाह ! बन्पद्यो ।" (पत्रम २ ४२० वश्वर वे २ ५२)।४ वि पहन, निविद्य सान्त्र, "मिन्निमिक्सायइनदिस" (उत्र ११ थी के २ १२) पह)। ४ यारार्गद, याधीम। ६ वृ बीबारिक प्रतीक्षर। ण विरुक्त तुरु बुरुमन (देर इ.२३ यह)। ८ कटाइ सीहे वा बदा पाच (योप १२)। १ जानच्या-विदेश (दम ६) ।

ব্ধ कडी देशो कडि (मुरा २२६)। क्षु १ पूँकिद्वकी १ नद्वया तिक,रस क्षुक्र । विशेष (ठा१) । २ वि तीता तिक रम-काला (से १ ६१ कुमा)। १ मनिष्ट (परहुर १)। ४ दास्या मर्वेकर (परहू १ १)। १ परय निष्टुर (नाट-राजा ६६)। ६ की कलम्पति-विधेष हुन्ती (हे २, (XX) 1 क्ष्मुश्र(शी) स[कृत्वा] करके (क्षे २ २७२)। यहबास्त्र पूँ [ युं ] परया परट (दे २, १७)। २ सोधी महसी (वे २ ५७ पाय)। फब्रुद्य वि [कटुफिट] १ कड़मा दिया हुम्स । २ दुप्ति (गर्ड) । क्कून्या की [पटुकी] बस्ती-क्रिये कुन्ती (पएए १)। पुंची [दे]रेको कडरुङ्खा कडम्छ्य , 'भूवकदुक्त्रसद्द्या' (पुरा ११ पाम्छ निर १ १ वस्त्र)। **प्रकृ**ष्ट्रय कबुयायिय वि [वृ] १ प्रदृत जिस पर प्रशार विया भया द्वा वह (दर पू ६६) । २ व्यक्ति पीडिक 'सा म (भोरजाडी) डुमारपहारक-<u>र</u>ुवाचिया मान्या परम्पुहा कमा (महा)। ३ हरामा हुमा परामूत । ४ मारी विप**र्** में फ्रेंमा हुया (म्यवि)। च्हूइर (ग्री) वि [बदुकृत] बदुक दिया हुमा (शरः)। कडेबर न [क्स्नंबर] शरीर, देह (एवं हे Y 352) I कब्दाधक [कुप्] १ कॉपना। २ वान करता। १ रेका करता। ४ पढ़ना। १ क्ष्मारण करता। करण्ड (है ४ १८५) : बह बहुईन कहुदुमाग (गा ६८०) महा)। रवष्ट पर्वहरुव्यंत स्टिड्डव्यमाण (ने ६ २६) ६ व६ परहरू १)। संद परिदर्भ करूर परिदन्त परिदर (महा) नक्टेन ननीक्टार (पंचन) पहिंदुई (नि १७०)। इ. सहद्वयस्य (मुक्त २३६)। कद्द पूं [का ] श्रीचान ध्यानपैछ (उत्त ₹€) 1 स्ट्रिंग म [क्यंघ] १ क्षीबात बारचेल

(इव प्र २७७)। क्रमहरूपा क्ये [क्र्यमता] भावर्गत (उप य २७७) बाह्याचिय वि विधिती धीवनाया ह्या, बाहर क्लिक्सवास हसा (भ्रवि)। कविकास कि कि ने बाहर स्थित हमा गहराती में 'कार्क्स' 'तो शसीडि प्रशाद न क्षत्रियो क्षत्रिक्य वर्षि (सिर ६ १)। महिदय विकित है। यत्तर, बीवाहमा (पर्णा १ ६)। २ पठित बच्चारित (स 1 (5 \$ करदोक्तर न क्यांपरुर्व विवासन (उत्त ११)।

(सपा २६२) । २ वि बोवनेवला, प्रतस्तिक ।

क्ट एक [क्यू] र शाय करना। २ स्वामना । १ दमाना वरम करना । स्टब्स (के ४ २२)। 🖛 भद्रमाण (पि २२१)। करक 'राया बंपद एमं स्थित रे रे बर्बचिक्क्षेत्र' (स्पा १२ ) क्वीअमाण (वि २२१)। क्टक्टक्टॅर वि क्टिक्टावमानी कर-कर धानान करता (पद्म २१ १ )। कहण न [कवत] बान करना 'चनकुछेडी पावद बंकराक्यसाई भीवदा' (इप्र २२६) ।

बढिअन हिंदि इसी (श्वर ६२४)। व्यक्रिम विकिथिती १ ज्याचाइमा। २ क्ष परम दिया हमा। 'कहिमी क्यू निवरती सहरदुवी एवं नाएइ (सा २७ वोच १४७) भूपा ४१६)। कृतिमा क्षे दि दे कही मोचन-विशेष (व २ ६७)।

क्रियि , वि [फ्रिटेन] १ व्यक्टिन कर्नांग्र, क्टिंग्रा किटोर, परच (पस्त १३ पाप)। २ न इता-मिलोप (प्राचार ३ ३)।३ पर्खं, पत्ता (पण इ.२.३)। क्कीर विकिशोरी १ कॉल्ज परंग किन्द्रर । २ पू. इत नाम का एक छचा (पटम ६२

२३)। कुण एक [क्वत्र] रूप्त करना पारात करना। नराइ (हे ४ २३१)। मझ-कार्यंत

(नुर १ २१ वण्या ६६)।

(R . 388) i कळा वं किया रेक्ट ये हेत: 'पण करामदि परिकक्षित्रं न सक्तक (शार्थं ७६)। विकीर्सं धाना (जुमा) । ३ वनस्पति-विशेष (परवा १) । ४ वं एक म्लेक्स बेरा (राज) । १ प्रश्न-विशेष बहाविज्ञासक वैद-विशेष (ठार. १--पत्र ७७)। ६ तएका भीदन (इस १९)। ७ इतिक (माना २, १)। व विद: "निकास करान्य" (पाप)। इस विवित्ती किन्द्रवासा (पाप) । किंद्रगी र्ष किएक की योगल की यनी हरें एक सक्य करन: 'कराबंदर्ग बहुतार्ग किट श्रेयह सबसे (एक १२)। पपश्चिमा की प्पक्कि भीवन विशेष विशेष (माटा) की बनाई हुई एक बाद्य वस्त (बादा २१)। सक्कार्य मिश्रा केरोपक मदका प्रवर्तक एक व्यपि (राज)। विक्रि औ विधि किया औष (सूत २६४)। वियाधना पं विवासको देखो अध्यत-विमाजग (सुरूव २ ) इक्) । सीताणय र्ष सिवानक देशों क्याग-सेवायम (क्ल)। सर्द्रीकी केश्रीक मठक

कुल दे किया रुक्त मानान (इस दूर ३)। क्याइकंड वृं [क्लिकेंद्र] इस नाम का एक राजा (र्स)। बी (बी)। निशेष (प्यस १—पश् १२)। (देश २१ वद् पाप)।

प्रवर्तन ऋषि (विशे २१६४)। । यक्या वि

िक्सिपः विन्तुवाकाः) (पत्रः) ।

क्ष्माद्भुर न [क्ष्मद्भिपुर ] नगर-विशेष को महाराज बन्त है भाई इनक की राजवानी क्ष्णद्वर पुं[क्ष्मिक्षर]करोट, बनस्तीट क्ष्मश्रह पूँ [दे] युक्त कोता सूच्या, पूचा कर्म्याची [दें] सता कल्बी (देर २४) पडः स ४१६ पाप)। कर्यगर न [कनक्कर] पादरह का एक प्रकार का हमियार (विचा १ ६)। कुणकृष ट्री [कुणकृण] करह-करह मानाव (मानम)।

**६६५**णमा — समा कणक्रणकण यह विवेक्षण-कण यसाव करता । कराकराकरतेति (परंप २६ ६६)। वह क्याक्रमकर्मत (परम १६ व६)। क्षणकारा १ [कनकनक] प्रदर्शकीय, बद्राविज्ञासक देव विशेष (ठा २ ६)। क्यक्त्रशिक्ष वि किमक्रीगरी क्ल-क्ल बादाबदासा (क्या) । कारतास न हिं। एकान-विशेष (सटि १ सै)। क्यार विकास की महलेशन पादा हमा (क्पडा) (धाचा२ १११)। पक्र वि िंफ्ट्री सोने का पट्टामाला (प्राचार, ६

1 11 1 कारा देखी कम (रूम) । कलग हिं। देवी कलय = (दे) (१एड १ क्यारा वे बिनाकी र प्रश्न विशेष ब्रहाविहासक वैव किलेव (ठा २ व⊸पत्र ७७)।२ रेबा-सक्रित रसोति -पिएड वो साकारा दे विस्ता है (मीव ३१ मा भी ६)। ६ विन्दु: ४ शनाका समाई (राज) । ५ पूर्वर होप का मनिपति देव (सूच्च ११)। ६ विल इक्ष देस का देइ (क्लरि. ३)। ७ व पुरुष्टें साना (सं६४० थो ३)। इति वि **ैं**कान्त**े १ कन्द्र को तप**ह काक्ता (भाषा २, ४, १) ।२ वृ देव-विशेष (शैव)। इन्दर्ग दिल्ली १ पर्वत-विशेष का एक रिवार (वं ४) । २ प्. स्वर्ध मय शिवारवाली वश्य (वीव १) । केंद्र *व*िकेती इस नाम काएक सभा (स्नाबा १ १४)। गिरि पू ["गारि] १ मेद पर्वतः। २ त्वर्छः प्रदुर पर्वेट (मीप) । बस्स्य पु विश्व क्री इस नाम राएक राजा (गेचा x) । पुर व िपर विषय विशेष (विषा २ ६)। ध्यम पुँषिमी वेश-विशेष (तुम्र ११)। प्रामा स्यो "प्रमा] १ देवी विकेच । २ आता-वर्मपूर्वका एक स्रक्ष्मका (स्त्रावार १)। पुर्विद्यम न [पुष्पित] विसमे सोने के चून नपाए कर हो ऐसा करन (तिकृष )। शास्त्र स्त्री [माठ्य] र एक निवासर को दुनी (क्त १)।२ एक स्वनाम क्यात सामी (दुर १२ ६७)। सह् पू ["रवा] इस मान काएक राजा (ठा ७३१)। स्वया स्त्री [\*क्टा] बमरेन्द्र के सीम मामक सोकपास देव की एक बयमहियी (ठा ४ १—पत्र २ ४)। वियाणगार् [\*विदानक] धह विरोप बहाधिप्रामक देव-विरोप (ठा २ १ पत्र ७७)। संवायगा पू ["संवानक] ब्रह-विरोप प्रश्नापिष्ठामक देव-विरोप (ठा २ ३—-एत ७७) । "विक्रिस्त्री ("विक्रि] १ सुवर्णका एक मानुषण सुवर्णकी मिर्गार्वी से बना मानुपस्त (प्रत २७)। २ क्ष-विदेश एक प्रकार नी क्षरनर्मा (प्रीप)। ६ तू. द्वीप-विरुप। ४ समुद्र-विरोप (बीव ६)। विजयिभिक्ति स्त्री ["वसप्रविभक्ति] नाम्ब का एक प्रकार (राम) । विख्यिक् र्पु ["विश्वमंत्र] कनकावसि द्वीप का एक यश्चिमक देव (शेव १)। विश्वमदागद र्पु विश्विमद्याभद्र] कनकावनिवरनामक समुद्र का एक अधिहासक देव (बीव १)। विक्रिमहाबर पू ["विक्रिमहाबर] क्लका-विश्वद नामक समुद्र का एक समिन्नाता देव (कोव १) । (विख्यर दू ["विख्यर] १ इस नाम का एक द्वीप । २ इस नाम का एक समुद्र । कनकावनिवर समुद्र का श्रविद्वाता वेब-विशेष (जीव ६) । विशिधरभद्द पू [श्विस्वरभद्ग] कनकारतिवर होप का एक मध्यिति केन (बीव ३)। विश्वित्रसङ्ग्रामङ् व् िविश्वियरमहासङ्ग्रीकनकावलिवर नामक श्रीप का एक मक्तिहारा देव (बीव ६)। विश्वराभास पुं ["पिश्वरावमास] १ इस नाम का एक द्वीप । २ इस नाम का एक संदूर (बीव ३) । (बलियरोमासभइ दू । [विद्वित्रस्यमासभद्र] क्रकार्वाधनस्य चास क्षीप का एक मिन्द्राता देव (जीव ६) । विक्रियासमहाभइ पु विक्रिया-बमाममहाभद्गी कानाविकरावमास हीप का एक मनिष्ठाता देव (बीव ३) । व्यक्ति-परोभागमधावर व िविध्यरायभास सहावर] कननावनिवयनभास-समूत्र का एक मविष्ठाता देव (चीव ३) । विक्रियसमास बर पू ["पांक्यरावमासबर] कनकातीन-वरावमान-समुद्रका एक मिन्नाता देव (बीव १) सर्क्य स्मी ["विकी] केवो विकिन्न

पाइमसद्दमहण्यको कृप्पद = कनक । क्यागसचरि की [कनउसप्तति]एक प्राणीम कैनेतर शास (मण १६) । क्रमगा स्त्री [कनका] १ मीम-मामक राख शेलाकी एक श्रष्टमिष्टी (ठा४ २—पत्र ७७) । २ चमरेन्द्र के सोम-ग्रामक सीकपास की एक प्रय-महिपी (ठा ४ २) । ३ 'साया-बम्मकद्वा मुक्त का एक बन्धमन (खाका र १)। ४ शुत्र मन्तु-विद्येप की एक वाति चनुरिन्त्रिय जीव विशेष (बीव १)। इज्रगुत्तम पु [कनकोत्तम] इस माम का एक देव (दीव)। कणय दं दिंदि शुक्तों को सकट्टा करता धनवयः । २ वास्य शक्त धारियोध्यनसम्बद्धी-मर--- (पचन ६ ६६ पर्या १ दे र १६ पाम)। क्रजय पुन [कनक] एक वेश विमान (देवेन्द्र \$XX): क्रणय देशों क्रमग ⇒क्लक (योव ३१ मा) प्रासु १६६ ६१ २२० चर पाम महाः कुमा)। ० पूर्यमां यनक के एक भादे का नाम (पत्रम २०१३)। १ एक्सा का इस नाम का सुमन् (पडम १६ १२)। १ बतुरा क्य-निरोप (से ९ ४०) । ११ बूस निरोप (पएछ १--पत्र ११) । १६ म. क्र-व-विशेष (पिंग)। पञ्जस पू विशेष्ठी 🖦 क्याग-गिरि (मुपा ४६)। सय वि [मय] सुवर्णका बनाइमा (सुपा २)। ामन ["ाम] विद्यावर का एक नगर (११क) । "स्त्रीस्थी "स्त्री वर का एक भाग (खामा ११--पत्र १२)। प्रसी स्वी [ीवसी] देवो कृणगायसी । ३ एक राज पल्मी (पडम 💌 😭 । क्रजयंदी स्था वि वृत्त-विरोध पानधी पानस (4 4, t=): कणविमाणय पुं [कणविदानक] कगराविवाजन (पुरुष २ )। क्रमवी स्था कि निम्पा (बचा १ व) । कमधीर पू किरवीर र इल-विशेष क्रमर (देर २४३ मुग्न १४१)।२ न क्छेर कापून (परहरूर)।

पहला और बूसरा सर्व (पर २७१) । देशो | कृणि पूरेची [दे] स्कुरण स्पूर्वित 'करणी फुरखें (वाम) । क्रिणि आर वेको क्रिणि आर (कुमा प्राप्त है) ₹ **(१**) ( कणि बारिअ कि [के] १ काती मौक से जो केबा यया हो बहार न,कानी नजर छे देखना (वे २ २४) । क्रिंग स्त्री [क्रिंग स] क्लेक ऐंदी के बिए पानी से मिनाबा हुमा माटा (वे १ ३७)। क्रिणिक्क वि किणिक्की मस्य-विशेष (बीव क्रणिक्ता वैको कणिक्षा (या १४)। कणिट्रवि किनिष्ठी १ छोटा सबु (पडम १४ १२ हे२ १७२)। २ तिरष्ट वयन्य (रमा) । कर्मणयान [कम्पित] १ बा<del>र्ड-स्</del>नर । २ माबाब व्यक्ति (माब ४)। क्रियम ) देशी क्रियाल (क्रम्म) । २ कणिया । किन्ता चारस का दुसदा (भाषा २१ =)। कुछ स वैको फण-कुंदरा (स ४८७)। कथिया स्त्री [कथिता] शीएा-निरोप (बीब कणिर वि [कणित्] यावाज करनेवाला (स्प दु१ ६ पाम)। क्रिजिइ न [क्रिनिस्य] नशन-क्रिपेय का धोन (**इक**) । क्रिपहिका स्थै [क्रिनिष्टिका] बोटी पंपूर्ती (संगतिका सन्या १ तका १७५३) । क्वित्रस न [क्वियश] सस्य-शोर्षक बान्य का मध-माव (वे २,६)। क्रिकेस न [वे] किशाद, सस्य-शुरू सस्य ना रीक्स सब माग (दे२ ६३ महि)। क्योञ ) वि किनीयस् ] केटा, नपू. कपीव्यस 🕽 'दस्य माया क्रणीसंथी पहु गाम' (वधु, वेणी १७१ क्रम्प शंत १४)। क्षणीणियां स्त्री [क्तीनिका] १ बांच की व्ययः । २ मोटी शंक्ती (राज) । कमीर देखी कमेर (चंड)। क्छुय न [क्छुक] स्त्रम् वसैद्ध ना सत्त्रक (मत्वा२१व)।

कण्या देखे क्रिया = नरिएका (क्स)।

क्यविद्या—श्रद

क्यर केनो कवित्रभार (हु १ १६ : पि २१८)। क्योठ १ श्री क्रियेणु इस्तिये हमिनी

क्लोडि्डमा स्मा [मृ] ग्रन्स, पूर्णमी (दे २

२२

**२१)** 1

क्रमेंक्या है (है रे ११६ कूमा छाता १ १—यत्र ६४)। क्रमोवझ न [वे] परन किया हुमा बन देव बरीस किया १६)।

वरैष्यः (वे २ १६)। काम्म पुँ [कन्या] राति-विशेषः कन्या-धाति भूगों व कम्यामिन बहुषः उत्रो' (पदम १७ व१)। \_\_\_\_

बरे)। करण पुंक्तियाँ इस नामका एक परिदायक ब्रांग क्लिय (पोच द्याप २६२)। करण पुंक्तियों रे कॉर्ट मान प्रदाश (सुक

११)। २ एक म्सेच्छ-बाति (मृच्छ १४२)। कण्णापुन कियी १ कान भवता मोत्र 'कब्स्खार्क' (निस्थ प्रामु२) **१ प्रा**मु देश काइस नाम का एक राजा वृत्तिक्रिर का बड़ा भादै (शामा १ १६) । ६ काना बल्द् के छोर नाएक ग्रंश (धन सूत्र ३१ **१**१)। "तर करम "पूरी कान का भागपण (प्राप्त केला ४३) । शह स्त्री ["रावि] मेठ-सम्बन्धे एक शरी (भो १ )। जयसिंह्द्व पू ["जयसिंह्द्व] प्रवराठ केल का वास्त्रवी शताब्दी शाएक मरास्त्री राग (ठी)। दव पूर्वियो विकासी वैद्यंची रावान्दी का शीचण-बेशीन एक चना (नी)। दार प्रेष्टिशरी नाविक निश्रमिक (छामा १)। बाउरण वृष्टिमाबरणा] १ इचनाम काएक सन्तर्जीय । २ उन्ह सन्त

स्व का बर्ग्यक काला पाए करकता कार्या (की) पत्र पूर्व [बियु] विकासी केयूबी काल्यी का कीएए-बेशीन एक एका (ला) । याद पुँ [यादी नामिक निर्माण (लाव १ )। वादरण पूँ [मावरण] १ स्व ना मनाणी (लएए १)। वादरण बेबी पाररण (स्क)। पीक मुँ विद्वा कर्म का एक मन्या का मार्चिण (द्वा १) पूर केवा कर (लावा १)। रवा स्था [व्या] नकेनिकेश (व्याप १ ११)। वादिया दर्श [ब्यायमा १ को कर्मा स्व में पहला करना एक सकार का सामुख्य (किरा) केयूबीचाय (पीन)। समझसी स्व

संबाह्म (खाला १)। सोहण न

िशाधनी कार का मैस निकासने का एक क्लकरण (तिब्रू ४)। द्वार पुं िभार] वेली मार (सन्दू २४' स १२७)। देखो कम । कण्यामार देखो कणियभार (प्राप्त १)। फळ्याच्या वृ [बास्यकुरुप्र] १ वेत-वितेष क्षेप्राव गुद्धा और समुता नहीं के बीच का देश:२ त उस देश का प्रवान सगर, जिसकी भावस्य 'नगीन' कहते हैं (धी कर्यू)। कर्णाबास न दि नानका धामुक्या--कुर्युष्टन वरीराह (वे २ २६)। क्रणाता देशो कुसता (वान ४) । क्राजन्त्रुरी की [वे] वृह-नोवा किरवनी (दे २ १६)। कप्पत्रहर्य (वर्ष) वेद्यो कण्य (हे ४ ४३२) ¥\$\$) 1 कण्यस (बप) वि [कर्याट] १ देश-विरुप क्लांटक। २ वि चर्च का ना निवासी

(सिंग)।
स्वयाक्ष्मिया कृत [क्योंकोचन] देवी करिया
स्वया (यून १ (६)।
क्याब्र (यून १ (६)।
क्याब्र (यून १ (६))
स्वया (यून १ (६))।
क्याब्र (यून [क्योंको क्यार देवी (यून १
१६ टी)।
क्याब्र (वि [क्यांको स्वया चारन (व्या
स्वया। २ ग कामी नगर वे देवा
स्वया। २ ग कामी नगर वे देवा
स्वया। १ ग कामी नगर वे देवा
स्वया की [क्यां]। १ ग्योसिय-शाव-प्रविक्ष
प्रक प्रवि। २ गन्मा कृषी पूनारी (व्या
प्रक प्रवि। २ गन्मा कृषी पूनारी (व्या
प्रक प्रवि। २ गन्मा नगरी प्रवादी ह्या।
स्वया की [क्यां]। व्याव मिले व्यावस्था (व्यि)। व्याव मिले व्यावस्था (व्याव)।
स्वया कर्माणा (व्याव)।

कण्याज्ञास व [व] कान का धावूनल— पुरस्क सीत्य (वे २ २६)। कण्याद्मयम न [व] कान का धावूनल— पुरस्क करीत्य (वे २,२६)। कण्याद वृं [कणान्त्र] र केतन्तरेय, को धावकम कर्जारक नाम ये प्रविद्ध है। १

फुठ (पएइ १ १)।

(कम्मू)। कम्प्रसस्य पृक्ति पर्यंत्त सन्त-माग (दे २ १४)। कम्प्रमुप्तिमा एक नरक-स्थान (देवेल

24)1 क्षण्जिला को [कर्णिका] १ पय-वरर, रमत का बीज-कोप (वे ६ १४)। २ कील भक्त (भए) ठा द)। ३ शानि वनैयह के धीन कामूच-मूच तूप-मूच (ठा )। क्रिंगमार पुंदिजिनार १ पुत्र विदेव क्लेर का गांध (रूमा) है २ १५, प्राप्त)। २ ग्रीशानककाएक मध्य (मप १४ १)। ३ त कनेर स्प्रकुत (खासा १ ६)। फण्मिद्धायण म [फर्जिद्धायन] मध्य-निरोप काएक पीत्र (इंक) । कण्यारह देनो कर्मारह । कप्रमुप्पन्न न [कर्जीत्पञ्च] कार का बारूपण-मिशेष (इप्पू)। क्वजेर देखो क्वजित्रभार (हे १ १६८) । कण्त्रोच्छक्रिमा हो दि] इसरे के का

प्रमाप सुक्तेवासी की (देश २२)।

कणोहित्व ) धी हिं। श्ली को वहने श कणोहित्वा । इस्कृतिशेष भोरत्ती (वै १ र हो)। प्रश्नेत्वच्छा हिं। क्लो क्लोच्छृतिया (वे २, २१)। कणोहित्व केले क्लाप्ट्यस्य (स्ट)। कणोहित्व केले क्लाप्ट्यस्य (स्ट)। कणोहित्व केले क्लाप्ट्यस्य (स्ट)। कणोहित्व (वे र स्ट)। कणोहित्यस्य । श्ली (क्लोच्यून्स्य स्थाप्टर्स क्लाप्टर्स स्थाप्टर्स (वे र स्ट)। कणोहित्यस्य । श्ली (वे र स्ट)।

(वे २, २५)।

करक् पूर्व [कृटमा] कम्ब-स्थिम (वट १६
१२)।

करुद्व पूर्व [कृटमा] १ सीक्रमण मात्रा वेवकी
पीर रिता वर्ष्युक्त साम्या कर्या मात्रा वेवकी
(सामा १६)। २ पांच्यों मात्राहेब सीर वस्त्रेय के पूर्व क्षम के कुक कर नाम (वस ११६)। १ देशालकारिक वत को मात्रियोंस क्रतेवाता एक जनसक (मुपा १६२)। ४ विक्रम की तूरीय राजाकी का एक प्रशिव वैताकार्य, दिगावर वैत सत के प्रवर्शक शिवमृति मुनि के ग्रुक्ष (विने २११६)। १ नामा वर्ण (बाबा)। १ इस नाम वा एक परिवासक द्वारस (धीरा)। ४वि स्याम-कर्ण काला रंगशाना (कुमा)। आराङ र् १४)। क्रिन्तु [क्रिक्] बनस्यति-विशेष शन्द-विशेष (पच्चा १---पत्र १६)। काणिम यार प्र [ किर्मि नर] काली क्लेर का गाध (जीव १) । कुमार पु [कुमार] राजा स्रोतिक का एक पुत्र (तिर १४)। गोमा स्त्री ["गासिम्] काचा ग्रापानः 'करज्योमी जहा विका, बंटर्ग वा विविश्वयं (वव ६)। याम न िनामन् वर्ग-विरोध नियके उदय से भीव का शरीर नाना होता है (एक)। पक्षित्रय वि ["पाक्षिक] १ क्र दर्म क्लाबासा (सूम २,२)। २ वहत काम तुब शरार में भ्रमण करतवाना (बीब) (ठा १ १) । बंधुमाय पू [ देश्युमीय] इस विशेष स्वाम पूरा गासा हुपहरिमा (जीव २)। भूस भाग<sup>त</sup> ["भूम] काली बसीन (धारम विते १८८८)। सः साहर्श्य ["शक्तिकी] रेवारी रेवा (मरा ६ ठा ८)। २ त्व एकाणी शिलन्द की एक स्रष्ट-महिपी (ठा ८ भीत्र ४)। १ काता धर्मेश्या' मूत्र का एक धरम्यत-परिच्छेर (एतवा २ १)। एर्सि वृ [ श्रापि] एव नाम का एक ऋषि जिसका जन्म शंकावती नगरी ने हुवा था (डी) । दीस जिस्स वि िसहय] इच्छ-नेह्याबासा (भ्रम) । सिसा लस्सा ग्या ("लिश्या) यीव का व्यक्ति लिक्क बन:--गरिगाम जयन्य-कृति (प्रय स्य ११ ठा १ १) । पर्डिसय व्हेंसय व [\*|वर्तमक] एक देव-नियान (राक लावा २ १) । यदि यहान्त्री विद्यादी नहीं रिधेप भागरमनी सता (पारत १)। सप्पर्वे मिये रेगना सप (जीव १)। २ सह (नुत्र २)। देलो कहा।

कण्ड्इ स [ लुर्राक्षत् ] क्ली ने (सूस १ २६६)। देशा कण्डुद्रः

कम्महास्त्री [कृत्या] १ एक ब्ह्याणी निया नेन्द्र की एक प्रद्र-महिपी (ठा ८--पत्र ४२१)। २ एक बन्तरून स्त्रा (बंद २१) । १ हीएकी पाएकों की स्त्री (राष)। ४ रामा थे लिक की एक राजी (तिर १ ४)। ५ वहा देश भौ एक नदी (साम्म)। कण्दुइ स कि।यन् ] कविन, नहीं भी , (सूप ११)। २ म्ब्रू से ? (उत्तर)। क्छहुइ बसो कण्हुइ (पूप २, २ २१)। क्तवार वं [है] क्तार, हुड़ा (चे २ ११)। कास देशों फर् = कवि (पि ४६६ मग)। यसु दली कड = कर्रु (कस) । क्षत सक [कृष्] कारना धेरना, क्षतरमा । कताहि (पण्डु १ १) । बहु- कर्त्तत (म्रोप Y44)1 कत्त तक दिन्दी कातना चरवे से मूठ बनाना । बर्भ प्रसत् (निष्ट १०४) । कत्त वि [क्रुप] विभिन्न (सींत 🗸 ) । कत्तन दिहे कत्तर, स्पी(पर)। कत्तम न [कर्तन] कादना (सिंह ६ २)। कत्तरण न [क्.चैन] १ नतरना राज्ना (सम १२१ का प्रत्)। २ वि कान्तेवासा, क्टरनेशना (गुर १ ७२)। फक्तगमास्थ [कसनना] सबन कनसर्द (पुर १ ७२)। कत्तर पुँ दि] श्वार, पूढ़ा 'इतो य विषयुम्पक्तरबहुनारिविद्यमिहिः, वस्र किसी विएट्टा (मुपा २ ७)। फचरिभ वि [इच प्रचित्र] क्या हुमा रास ह्या जून (नूपा १४६)। #चरी स्वी [कर्चरा] रवस्त्री वेंबी (राप) । फत्तर्भारिक व [बात्तव वे] तुत-पिरोव (नव १४३ प्रति १६)। कत्तर दि [क्लंब्य] १ वरने बान्य (स १७२)। २ त. कार्य कार काम (था ६)। कता ली [दे] बन्दिया-यूत्र में कार्रला, कोरी (दे २ १)। स्ति स्य जिल्ली पर्मे बनदा (स.४३६ पड़ा गावा १ c)। पति वि[प्र] कलगाम निर्देश हा वितिर्धार्य (वर्षेत १४१)।

कृत्तिक्रथ पू [कृत्तिकेय] महारेव का एक पुत्र प्रधानन (र ३ १)। कृत्तिगारणे [कार्तिक] कार्तिक मास की पूर्णिमा (पत्रम ८६ ३ इक) । द्वतिस वि [कृदियम] कृतिम बनावधी (मुरा =३ व २)। फ्रिय पू (धाच ३) १ कार्तिक मास (सम ६५)। २ इ.स. माम का एक भी छी (निर. १ १)। १ मरत शेव क एक भावी लीचेंबर के पूर्वभवकानाम (सप ११४)। दक्षिया न्त्री [कृष्टिया] नगर-विधेर (सम ११ इइ.)। कृष्तिया स्त्री [कर्षि श्र] शतरती केंबी (मुना २१ )। क्विया स्त्री [क्विकिटी] १ शांतक मार्च नी पूर्णिमा (सम ६६) । २ नालिक माम नी यमावास्या (वंद १)। मस्तियांतय वि वि इतिम शिक्षाकः फिति मनियाद्वि उमहिप्पहालाहि (मूधनि, १ ४): फलुवि [कर्यु] करनेवाता 'कता पुनाय पुप्तराष्ट्रण (भा ६) । कत्ताम [कुतः] कहाँ से किपने १ (प्रस् पुमा)। समानि स्वितिहास उत्पन्न ? (विस १ १६)। कर्य सक [प य्] स्तापा करता प्रशंतका। करपद्र (हिंद १८७) । फरम म [हुत ] वहाँ से ? ( पक्र )। करव म [फं फुत्र] नहाँ ? (पर् दूमा प्राप्त १२६)। इ.स. [ "चिन् ] पहा किसी वयह (बाबानम हे २ १७४)। करप पि [कप्प] १ नहते याग्य, कवतीय । २ न काच्यका एक मन्(ठा४ ४ --- प्रक २व ) । ६ बतस्यति-विशेष (एक) । बरर्थत देशी बद्ध = बन्ध् । पर्यमागः भी [प्रत्रमाना] पानी में होने बानी बनस्पति-विद्येत (पएए १--पन 1 (v#

बस्यूरिया ) ऋ [क्स्नूरा] मृक्यर अस्ति

परमुरा रेगे नामि में होतराती नुगीरन

क्य दि [दे] रे वाल बुता ? जेल दुईन

बस्यु (पुरा १४३) म २३१, बच्च)।

(पर्)।

७३) । ६ मपिशान स्थान (बृद् १) । १

यम नन्द का एक मन्धी (राज)। ११ हि ।

कप्यान [कल्पन] देख, बाला (दुवा

23e) 1

(TTI)

बङ्गरय रेना व(श्यक्रार (दुमा) ।

फुष्पणाची [कल्पना] १ एकता निर्माण । २ प्रतमण निन्मण (निष् १)। । करपना विवस्य (विधे १६६२) । क्ष्पणी भी [कस्पनी] क्वरती केंची (पएड्र १ १ विचार ४३ स ३३१)। कृपर पृं[कृपर] कपर, क्यान सिर नी कोपही (बृह ४; मान)। देखो फुटपर = क्रप्परिक वि [वे] बारित भीख हुया (६ २ २ वका ३४ मनि)। क्ष्यास भू [कार्पास] १ क्पल र्रा २ ত্তৰ (বিশু ३)। इत्यामस्य व [कार्यासास्य] श्रोत्य बीव विशेष धुत्र बन्धु-विशेष (जीव १)। कृत्यां मध्य वि [कापानिक] १ करास बेचनवासा (प्रस्त १४१)। २ न. पैननर शास-विशेष (घणु ३६ छदि)। क्ष्प्यसिव रि [कार्यासक] क्यात का बना हमा मुद्ध वर्गेष्ट् (धए)। कृष्यासी की [क्यांसी] वर्ष का पाछ (राज)। कृत्यभाक्षांयभ न किस्पाकस्यो एक पेन शाम्र (एदि २२)। इद्रियम वि किस्पित र चेवत निर्मित (धीर)। २ स्पापित समीप में स्वाहुमा मि सम्त् पुमारे हैं सन्ते मेर्स सहिए सन निर्म करेड (निर ११)। ३ कराना निमित्त विकरितत (दमनि १) । ४ व्यवस्थित (ग्राचा मूब १२)। १ दिल काण हुवा (क्या 2 x) : कार्रिय रि [कास्पिक] १ प्रमुख्य धनिपिद (बार १६)। २ मोग्म उचित्र (गण्छ १ वत्र =) । १ पूँ गीठामें, जानी नाचु कि वा

धकियाती (बन १) । कृष्पिया की [पश्चिमा] केन प्रत्य-विकेष यक उराह्न-करण ( जे र निर)। कप्पूर पू [क्रार] बपूर, मुक्तिक इच्य-विकेश (मन्द्र ६ गुर २ ६ गुगा २६६)। कप्योदग र् [क्रमोपक] १ कम्यूच । २ देव-विरोध बाट्ट इर मीक रात्री इन (काग्यु **२१)** । करपायाणा र् [कस्पपाय] कार रेवा

(7ुπ ∊ )।

कृत्योवयस्तिमा का [क्रम्योपपस्तिका] रेव सोक-विशेष में बराति (भा)। क्टफल न [क्ट्फल ] इस नाम की एक बनम्पति कायप्रम (हि.२ ७७)। काफाड देशी क्याड = स्पाट (गउड) । कृष्पाड [व] देतो कसाड (पाप)। कुफ पूं [कफ] कुछ शरीर स्वित बानु विशेष कमाद पै कि दिस प्रकारिक र । क्दंच (शी) केन्रो कमंच (प्राष्ट्र ८४)। क्टबर्टी की वि दोटी सबकी (पिक रेगरे)। ) पून कियन १ सराय नगर. क्रमाद्वर र पूरियंत स्वरं (भग पएह १ २)। २ प्रमानिरोग पहाविष्ठायक देव-विरोग (द्वार ३---पण ७८)। ३ वि कुनवर का भिवासी (उस ६)। कृतवर रेसी कृतवुर (प्राष्ट्र ७) । कृष्णाहमयय पू दि किशा पर वर्गान बारने ना काम करलवाला मजबूर ठा ४ १---पत्र २ ६)। कस्पुर ) वि [कर्षुर] १ ववरा वितक कुरुपुरम र बरा बिडला (शबा मण्ड ६)।२ पू ग्रह-विशेष ग्रहाविशायक देव-विदेष (ठा२ ३ राज)। कम्युरिक्ष वि [क्युरित] यतः वर्णवाता वितक्षा दिया हुआ दिहर्शतक्रमुरिय जम्मणिष् (मुपा १४) मिलमयताराजुबीर खित्रस्थपद्दाकिस्यानस्त्रात्मं (कूम्मा ६ परम ८२ ११)। कम (मप) देखो कफ (बह्)। कमसन [वे]कपान बप्पर (यनु १ वरा)। क्रम सक् [क्रम्] १ वनता, पवि उद्यक्ता । २ मञ्जीवन करना। ६ मक किनना

यमस्य । ४ होना 'मगुसोबि विस्तरियमी न नतमेइ अभीन सुब्दन्य (दिने २४६) 'न एत्व उरार्वतर नम्प' (स.२.६) । वह कर्मन (च २ ६)। इ. कमायञ्च (बील)। यम सक [यम्] काहता वा पता। बन्धाः कम्मसाम (६२ ६१)। 🖫 क्रमणीय (मुता १४ २६२)- पत्म (मावा १ १४ धी---पत्र ६ ८) । क्म मर [कम्] १ मंगत होना युन्ह होना

२२३ यन्ता। २ समिक छन्ता। समह (तिह २३१ पद ६१)। कस दुं[झम्] १ पाद, पा, पौद (मुर १ ८) । २ परम्परा 'नियष्ट्रनकमानवामी पिक्सा विज्वामी मनम दिलामी (मुर १ २८)। ६ धनुकम परिराधी (यहर) । ४ मर्याहा मीमा(छा४)। र स्याय फैसला प्रदि धारियंकमं स्त्र नरिस्पृति' (स्वयन २१)। ६ नियम (दृष्ट् १)। प्रम पूं [क्रम] थम यसबट, व्हान्ति (ह **०१६ कुमा**)। इमेडलु पून [इमण्डलु] चैन्यामियों का एक मिट्टी या काळ का पात्र (तिर ३१ पएइ १ ४ वर १४ व टी)। इसीय पूर्व [क्रवरंथ] देह मन्तरहीत राग्रेर

(इ.१.२३१ प्राप्त हुमा)। कमतापृद्धि १ व्ही की कलशी। २ पिठर, स्पान्ती । ३ वनदेव । ४ मुल मुँह (₹२ ११)। कमड । प् किमठ की र तापम-विशेष, क्सद्वरा विमन्त्रो भगवान पार्वनाव ने बाद में कमदय भाता या भीर जो मरकर देख हुया या (गुमि २२) । २ दूर्म कच्छर (पाम) । ३ वंश बोस । ४ शन्तकी कुप (हे १ १६६)। ५ त मैस सम् (तिबृष्)। ६ माम्बिया का एक पात्र (निषू १० सीम १६ भा)। ७ मान्त्रियों को पङ्गत का एक वस्त्र (मीन ६७१ वृह ६)। कमण न [कमण] १ पॉट वाल । २ प्रकृति (याचू ४)। प्रमणियां हो [झमणिस] हपानन, पूता (पृह ६) ।

कमणिव वि [कमय यम् ] पूराराता, पूरा पत्रना हुया (बृद्ध ६) । कमणा श्री [कमण] बृता, क्षततत् (बृद् १) । क्मणा की दि] निःचेरिए छोड़ी (हे २ ८)। फ्मजाय वि [क्मनीय] मुक्द, मनाहर (मुपा १४ २६२)।

कमळ प् [दे] १ फिट, स्थानी । २ पदा, दोन (दे२ १४)। १ ग्रुन पूर (देश ५४ पर )। ४ हिन्तु मृत 'रुव य दनो कमतो समस्मारितीत संबंधी पनई (मुर

[ मिम] ब्रह्म विकास (पाधा के ७ ६२) ।

बास महापर भी शंक्या (जो २)। कमस्य स्त्री वि हरिली मूपी (पाम) । कमधारवी [कमस्य] १ सरमी (पाम पूपा २७५)। २ शक्यांकी एक प्रजी (पठम ७४ १) । ३ वला नामक निरादिता की एक सब-महिची इच्छाएति विरोध (ठा४१)। ४ 'ब्राशावर्गकर्मा' धूत्र का एक सब्स्वन (सुमार)। ५ सन्द-विशेष (पिंग)। अर गे विश्वकी बनाव्य बनी (से १२६)। क्मिकियी औ [क्मिसिनो] परिणी क्मिस रानाम् (पाम)। कमानुबमय प् [कमकोद्भव]च्छा (वि ४२)। कसव ) सक स्थिप देशेना को भाना। कसवस रे कमक्त (चेंग्रे)। कमक्स (हे ४ १४६ कुमा)। क्ससो य [क्सइ ] क्म से एक-एक करके (97 1 17E): क्रमिञ्ज वि [दे] उपक्षणितः पास माना हुमा (R R 1) | क्रमिय विक्रिक्त हिल्ली छ नेवित (बत २ ४)। कसंख्या ) पूंची [क्रमस्त्र वे च्छु उँट (पन्छ क्सास्त्र पुंचर १ ११ टी रुप ११) । सी गी (कार ११ टी)। कम्प्र कर [कृ] इत्रागत करना धीर-कर्म करता। नम्मन (हे ४ ७२) वर्)। वहः कम्मीत (दुमा)। क्रम्म एक [मूज [भोजन करता। कम्मद (यह)। कस्मेद्र (हे ४ ११)। क्रम रेखो कम = क्रब् कस्म पुन [कसस्] १ जीव काराधास्त्र किया केता दश्यन्त सूरम पुरूत (हा ४ भाकम्म ११)। २ काम किया क**र**शी व्यापार (ठा १३ माचा): 'कम्मा ग्राह्मकता' (पि १७२) । ६ भौ लिया वास बहा ४ भ्याक्यन्त्रप्रसिद्ध कारम-क्रियेष (विशे २ १६, १४२)। ५ वह स्वान बहायर पूता मगैरइ पद्माया जाता है (पराइ २ ४ ∽ पत्र १९६)। ६ पूर्व-कृति माग्य- फम्बता दुम्मया नेवं (सूम १३ १ ध्रामा( पर्)। ७ कार्येख राधैर । व नार्येख-राधेर नामकर्मे, कर्म-जिलेश (कम्म २ २१)। इन्हरीय ["कर] मीनर, भानर (बाचा)। देवो । गारु।

करण न किरणी कर्म-विचयक क्यान, बीत-परात्रम-विशेष (घर ६१)। बार वि [ कार] नीकर (परुप १७ ७)। किविश्स वि [ किश्विप] कर्म-मार्गल, स्थव काम करनेवाला (उत्त १)। कर्नीय तु [रेक्स्य] रमेन्द्रस्तीका पिरा (क्स्य १)। गर देखों कर (प्रका)। गार पू िशार] १ कार्यगर, किसी (राज्य १ **१)। रेक्टे क**र। जोगपु["कोग] शास्त्रोचः भनुहान (कम्म)। द्वाया न िस्थान | कारकाना (बाका)। हिंद की िरिवाति १ कर्म-प्रदानमें का धनस्थान-समय (मन ६ ६)। २ कि संसारी कीव (बग १४ ६) । "पिसेग प् "नियेड] कर्म-पूर्वार्ते की एवना-विरोध (प्रय ६ ४)। बारम १ विशास अवकरल-प्रतिक एक धमास (चागू) । वरिसाहणा 🖷 ["परि शाटना] कर्ने पूर्वमाँ का जीव-प्रांखों से पुननकरण (मूच १ १)। पुरिस 🕻 ["पुरुप] कर्म-प्रवास पुरच-१ का**ऐ**क्ट रिक्सी (सूक्ष १ ४१)। २ महारम्ब क्ली-माने नामुदेव नगैरङ्ग राजा साम (ठा 🎙 १---पन ११६)। व्यवाय न "प्रवाद] बैन बन्दारा-विशेष ब्याइबी पूर्व (सम २६)। र्वभ पूर्व ["वन्य] कर्म-पुरुष्मी का प्रस्मा कें नक्ता कर्मों से धान्माका कल्पन (धार ९)। सूनगणि ["सूनिक] कर्मभूनि<sup>स</sup> डलन (पग्छ १)। भूमि हो ["भूमि] कर्म-प्रवान मूमि भरत क्षेत्र धरीरह (वी २३)। मूमिग धा भूसग (क्एल २३)। मूमिय । भूमिजे कर्म-नूमि के स्टब्ल (हा व १--पत्र ११४)। मास र्षुं ["मास] मारहा मास (बो १) । शासग पूं ["मायक] मल विशेष पांच धुप्रवा पांच रसी(प्रणु)। स. दि [ैंब] १ कर्यं वे **प्रतान होनेत्राताः १ कर्य-पुरुवतो का वस्य** इमा गरीर-विशेष कार्मेश करीर (अ ? १३६८,१)। साझी ["बा] सम्बत्त है चटान्य होनेवाली कुद्धि, बस्तवव (एवि)। "सस्सा क्यं ["सेरमा] क्ये दाख होनेनावा कीव का परिस्ताम (भव १४ १)। बग्गामा भी ["बरोगा] कर्म कर में नरिएत होनेराना पुरुतन-समूद (पंच) । "वाइ वि ["वादिन] माग्य नो ही सब हुछ मानतेवाला (राज)। विदाग पू विदाक] १ कर्म परिएम कर्म-फन । २ कर्म दिनाक का प्रतिनादक ग्रस्य (कम्म ११)। संवयद्दर पुं [ समस्तर] सौकित वर्ष (गुरुव १ )। | कस्माय सक [ एप + मुख् ] उत्तमोग करना । साता भी ["शास्त्र] १ फारवाना । २ कुरमकार का बद्धवि बनाने का स्थान (बह २)। "सिद्ध पू "सिद्ध] नारीवट, शिली (बायम)। अभिष ["क्षीम] र कारीगर। २ कारोपिंग का कोई भी काम बतनाकर भिन्नादि प्राप्त कप्लेकाला साबु (ठा ३ t) । [बाज न [ब्बान] जिससे मारी पाप हो ऐसा व्यापार (मन = १)। । यरिय पु [ैं। भी कमें हे भागें निर्दोप स्थापार करने-बाह्य (पएए) १)। न्याद देवी <sup>व</sup>नाइ (माचा) । कुम्म विकिमीजी १ कर्म-सम्बद्धी कर्म अस्य कर्म-निर्मित कर्म-सम । २ न कर्म पूर्वनों का ही क्या हुआ एक अध्यक्त सूक्त रुपिर को मनान्तर में भी बादना के साव

शिष्यता है (स्वरंकमा४)। २ क्यें-। विशेष पार्मश्-शरीर का हेनु-मूत कर्म (काम २ २१)। **१ कार्मल-शरीर का** व्यासार (कम्म ३ १३ कम्म ४) । क्रमाइय न [क्रमंचित, क्रमंज] उत्तर रेजो

(पदम १२ १६)।

कर्मात पूंदि कर्मान्त्री १ कर्म-करन का कारण (धावा। सूच २, २) । २ कर्म-स्वान नगरकाला (दे२ ११)।

क्रमांत वि [ दुर्थन् ] १ हवामत करता हुमा। २ इकाम नापित (दुमा)। साद्धा की "शासा] वहाँ पर उस्तरा--वान बनाने ना चुरा मारि समामा जाता हो वह स्मान (तिल्द्रा≒)।

कम्मकर देखी कम्म-कर (प्राष्ट्र २६)। क्ष्म्सन प [क्रमेंक, कामक कार्मण] देवी कम्स ≔ कार्मेण (ठार २३ पर्ण २१ (क्य)। कम्मण न [कार्मण] १ कर्म-मक शरीर (इ २२)। २ भीपन मन्द्रभावि के द्वारा मोहन वसीकरण क्ष्माटन ग्राहि कर्मे (इस १६४ धी स १ व)। गारि वि [कारिन्]

कामण करनेवाला (सुर १ ६८) । खोय पू [ योग] कार्मेख-प्रयोग (ए।या १ १४)। क्रमण म [मोजन] भौतन (कुमा)। कुम्ममाण देशो कम = कम् । कम्मय देखी कम्मग (मगः पंच) । कम्मवन (हे ४ १११ पर्)। कम्मचण न [इपभोग] स्थाप काम में साना (क्रमा) ।

क्रमसंबिकिन्सर्वे १ मनिन । २ न पार (पाम हर ७६ प्रामा)।

क्रमा भी [क्रमेन्] विमा न्यापार (ठा ४ २--पत्र २१)।

कम्मार प्रविकर्मार ] १ सोहार, सोहकार (विस ११६०)। २ प्राम-विशेष (धाषु १)। क्रमार | वि [कर्मेशर, क] १ तीवर, क्रमारत वाकर (स १३७ सोव ४ ६४ कम्मार्य हो)। र कारीगर, रिल्मी (बीव रे)। कम्मारिया की [कर्मकारिका] की-नीकर, बाबी (मुपा ६६ )। कम्मि ] वि [कर्मिम् ] कर्ने करनेवाला

क्रिमाञ्ज र बार्गातीर 'एक्किम्प्एए उप पामरेख के दूस पाउदारीयो। मोराज बोल्सपन्दर्शन स्वराससी मुक्ता।

(स ६६४)। २ पाप कर्में करनेवाला (सूध १७६)। कम्मिया था [कर्मिस कार्मिका] १ प्रम्यास से जन्मन होनेवासी कृति (ए।या १ १)। २ बन्नीए क्में विशेष बनशिट कर्म (भव)। कम्ब्रुख न [क्ट्म्स्ड] पए (राज) ।

कमहाम [करमात्] क्यों किय कारख से १ (घीप)। कमहार केनो कैसार (हे २, ४)। सन

["ज] केमर, बुकुम (कुमा) । कम्बिकार् दि] माली माचापार (देर a)। कम्ब्रीर केवो के सार (मुत्रा २४२) वि १३ ३ 4 ( R) 1

क्य र् [क्य]क्स, बात (हे१ १०० कुमा)।

क्य वृं [क्रम] बरीरना (गुना १४४)। क्य देवो कड अड्ड (बावह दुमा प्रामु १४)। बण्य उम्र वि [ पुण्य] पूर्वकाली माप्यामी (स ६०७ सुपा ६ ६)। 45 रेको ग (पएह १२)। कळावि ["काय] कृतार्च सफल-मनोरम (सामा १ c)। करण वि [करण] धम्याची श्रवाम्याच (बृद्धः परव्दः ३)। कियः वि [\*इत्यं] इतार्थं मध्न मनोरव (सुपा २७)। गवि िकी १ धानी बलाति में पूछरे की प्रफेश करनेवामा प्रयान-वाग्य (विशे देव३० स ६१३)। पूं बास विशेष ग्रुनाम 'भगगमत्ते वायतमत्त्रीवा कयगमत्त्रीवा' (निवृध्)। ६ न मुक्छं सोना (राज)। स्प कि [ैंझ] उपनार न माननवासा इत्तम्म (पुर २ ४४) मुप्त १८६)। काधुक्र वि [कायक] **क्ष्रतक** उपकार को माननेवाचा (पि ११६)। प्या वि कि जाकार की माननेवासा, किए हुए छाकार की कदर करनेवाला (कम २६)। ज्युपाकी [कारा] इत्यक्ता प्रमालमनी निहोध मानमा (उप पू वर्)। त्य दि [ ये ] इतहत्व भरितार्थं शरुक-मनोरव (प्रामू २३)। नासि वि िना शिम् <del>। स्त</del>प्न (ग्रीव १६६)। स, स्तु देखो ज्यु, 'में किलिमनहिरामा विवेयनम-मिंदर कमल्लपुर्ल (गुपा १ १ महाउर् स **११ मा२०)। पंजस्तिन [शक्ति**] इवास्त्रति समस्कार के सिए जिसने हान र्जेषा किया हो वह (बाव)। पृक्षिकद्व औ ["प्रतिकृति] १ प्रकृपकार (पेवा १६)। २ वितय-विशेष (वच १)। पश्चिमक्रमा **क्य [प्रतिकृतिता] १ प्रणुपकार (छाया** १२)। २ वितयका एक मेद (ठा७)। विक्रम्म वि [ विक्रिक्रमेन् ] विसने देवतानी पूजाकी है बहु (मग २ ६० लावा १ १६-- पत्र २१० तंद्र) । संग्रह्म हो। ["मझस्य] ६५ नाम की एक नवरी (संबा)। मास, मास्य वि [मास, क] र विसर माला बनाई हो बहु । २ पू कुल-विरोध कनेर ना गास, 'प्रेकोस्पविस्तरम्मद्रक्रममात्रतमात-सामग्रह (उप १३१८ी) । १ दमिका-नामक पुरा का बाविद्वामक देव (का २ व)। क्ष्मलय वि ["सञ्चण] विश्वने भपने राधीर चित्र को सफल किया हो बहु (मगह ३३ णाया १ t)। द वि [ यन् ] विसने किया हो वह (विते १५१६)। वणमास-

४७२ सुर १३ १)।

क्यत्विय नि किइभित हैएन किया ह्या.

पिय पूं [कनसास्त्रिय] इस नाम का एक |

क्या (विया २, १)। बम्म पू [वर्मन्]

नुप-निश्च भगवान् विभवनान का निवा

(सव १६१) । भीरिय पुं ["भीर्य] कार्ड-

कर्यं स [कुत्रम् ] सक्त वम (उवर १४४)।

क्रयात्वा क्ये [कृतकुचा] साक्स्ती नगरी के

कमत पूर्वितास्त ] १ मन मृत्यु मरका

(नुपा १९६) मुर २ १)। २ शास्त्र निदाना

'मएत्ति कर्म है वे' कर्मतियां व सार्धीहर्य

(शार्व ११७ पुता ११६)। १ एनछ का

इथ नाम एक गुमर (पटम १६ ३१)।

का नाम (प्रज्ञम ६४ ६२)। वस्या व

["बन्त] राम का एक केशापित (परुम

क्यंय केलो क्संय (हेर १३८) वर्)।

पर्यंत्र देख्ये इन्हेंद (पर्छ १ है १२२२)।

कर्यंत्र पुंक्तिस्म निमृह, भाषारा पित

नान जीवज्ञान म रक्षण क्यांति (श्रेतीक

कर्यविव वि [क्युन्यित] समञ्जत विमृत्यित

सह पू ["सुख] रामकत्र के एक सेनापति (

बीजैं के पितावा पान (सूप १)।

सपीप की एक नगरी (मन)।

**₹**¥ ₹ ) i

(इप्प)।

₩**-**₩ कपरयामा की [कर्मना] उत्तर देनों (स | कयाई ) य [कदायित् ] र फिसी समय कथी (उना बम्) 'धह धप्रमा ভবার क्यादै (मुपा ६ ६, पि ७३)। कपाई २ वितर्व-योतक यव्यव 'स्ट्रॅमिक्यार्रात (यन ११)। क्रयाम न [ऋयाजारु] वेचने योग्य नलु. करियाना (का पूरेर )। क्रमाणमा पूनः देखो कमान्यः देव नियदा-इराए क्याएपे कि न निक्तेह (सिर्टि X##) I क्र्यार पृष्टि] कतवार, कूमा वीता (१.३, ११:वर्षि) : क्रमावि देवो कमाइ,≔क्ष्मापि (प्रासू १३१) । क्वोग पू [क्रमोग] नट-विरोग, बहुकरिया (TT Y) 1 कर सक [कृ] करना बनाना। कथा (है ४ २३४) । मुक्तः काती, नाही कश्हीय करिपुर कर्रेषु बलावि बकावी (हे ४ १६२) हुमा क्य क्या)। अवि नाहित्, कही करिस्का, करियेहर, कार्य, कार्यित (दे १ श) वि १३४ कुमा) । कमें, कमा, करोड़, करिवाई (मर्ग है ४ २४ )। वह करंत करिंत करेंत, करेमाण (पि १ श काश ७२, धे २,१% सुर २ २४ । छना)। इनक् कळामाण किरंत कीरमाण (ति १४७ दूवा क २७२। रमण ६१)। शहर करिता करि चार्ज करिवृज कार्य, काळज काळजं, कट् टु, करिंम, किया कियाचे (रूप क १ पड्र दुमा मन्द्र समि ४१३ नुस १ १ १ मीत) । हेक् काई करेल्चय (कुना मन < १)। इ. इर्राय<u>ञ</u>्च इरशैल वरि सम्ब करंभका कायका (स्त t पर्) स २१: प्राप्तु १४८ दुमा) । प्रको करावे ६ क्यनेई (पि १६६: ११२)।

कर प्रे [कर] एक महाच्याः (तुत्र २)।

फर⊈[कर] १इन्द, इन्त (दुर १४४

प्राप्त १ थ । २ महसूत भूकी (उरध्य

टी पुर १ ३४)। ३ किळा बंदु (डा

**७६** टीः दुमा) । हानी की तुँह (दुना) ।

४ करका रिमा-वृष्टि, बोला 'करव्यवासी'-

मानिकाली (पत्रम १६, ११)। गाइ ई

[भिद्र] १ दाव छे बहुए। करना: 'बहुद्र

वीदित (बुगा २२७) महा) । क्यस वि [कृत्स] बराव यल (वर्नवि 1 (385 क्ष्यम विकित्मी बहुत में से कीत? (स **x** 3)1 क्यर विकितर] यो में से कीत? (हे %, X ) I क्यर पू [कार] ४ वृत्त-विशेष करीर, करील (स २१६)। २ म. करीरका फल (पमा १४)। क्ष्यस वृष्टिन्छ] १ नवसी-कृत वेचा ना भावा। २ म. क्वली फन केला (हे १ (4 ty) 1 क्रमस्र न [दें] प्रतिप्त्रमर, पानी मरने का बड़ा वक्स ऋंकर, मटका (वे २ ४)। इपछि सीसी [क्युकि सी] नेताना ग्राच (शहा, हे १ २२ )। समागम 🖞 [समागम] इस धन ना एक गर्न (मायम)। इर न [ गुइ] कदनी-स्तम्य धे क्तामा हुमा कर (महाउ सुर ६, १४३ ११६)। क्ष्मद्भव देखो क्रम अहल (पृथा २ १) । क्यबरंदू [वे] १ क्तकार, दूशा मैता (लामा १ १) मुना १८० वक अह २६४ भत्त ६। पामा सरा पुण्य ३१ निष् ७)। २ विद्या(भाग १)। क्यवरिकता को विकायसीतिकहा दुरा साथ करनेवाती वासी (साबा १ ७— पन ११७)। क्यवाद पुं [कुक्ताकु] हुदूर, दुवदा पूर्वा (भउड) ।

क्यवाम पुं [क्रम्बाक] प्रस्तुट, प्रकार पुर्व

क्वसम्प व [क्द्राम] खराव मोलन (विक

कमसेहर दुं [दे] दुवदा, मुर्वा 'कमनेहराण

क्याब [क्या] कर निष्य सनव ? (ठा क

क्याइ व [क्यापि] नमी भी दिसी क्रमव

नुम्मद्द बाह्यामी ध्वति गोधीम्म (नजा ७२)।

(पाप) ।

**135**) i

४ प्राप्तु १६१) ।

बी (उगा)।

कर्यतुम देशो कर्रातुम (१प्प) । क्या वि [बृतक] प्रथम नन्य (वर्षेष्ठ १६६ ¥ (¥) 1 क्यग वि [इसम्ब] वरीकोशका (वव १ टी)। क्रमग प्रैक्तको १ बुक्त-विशेष निर्मती। २ ग केवड-क्ट तिभैती-फब पाकाशारी 'बह क्यक्रवंगणाई चत्रहरीयो विशेष्टिति' (विमे १६६ है।) क्यज वि [क्दर्य] रंजुस इपल (एक)। क्यक्रियुक्तियर्शिक्त्री इस नाम का एक क्य देवता (गुपा १४२) । क्ष्मण न [क्ष्मन] हिंदा मार अलगा (है १ २१७)। कपरण यह [ कर्यांच् ] देला कला वीहा क्रमा। क्षेत्रमें (क्षम व दी)। कन्द्र-क्यरियञ्चंद (स ०) । कथरवण न [क्यूबेंत] हैरानी हैरान करता, पीइन (कुरा रे अमन) ।

करम्ब्युनियो बन्मिहो (पा १४४)। २ पाणि-ध्यस्य राजी (स्पर)। यपुरिसी नस (गाप्र १७२)। सह पुन ["करस्त्र] १ लख (हे१ ६४) । २ वृं तूप-विद्येष (पत्रम ७७ ६६)। स्त्रपत्र न [\*स्त्रपत्र] कता-रिरोप इस्त-शामन (कम्म)। येन्ण न ["बन्दन] बन्दन का एक बाप एक प्रकार का शुस्क समस्तर बन्दम करना (बृह १) । करमही } की [व] स्पूत वस मोटा बपड़ा क्रअरी है (दे र १६)। करभाकी [करका] वरवा घोता रिला-बृह्य (प्रज्यु १४)। करपूर्व की दिं] शुष्क-कृत सूचा पेड़ (र २ १७)। करंक वुं (के करक्ट्र) १ निया-पान (के २ ५५ यस्र) । २ घरोष-मूल (दे२ ४४) । क(क पून [करकू] १ इही हाडा 'करंडच-धमीसणे मसाग्रमिन (मुपा १७१)। २ द्यरिव-गत्रद, हाइ-गत्रर (उप ७२८ टी)। ६ पानदान, पान बगैप्ट एखन की छोटी पेटी। 'तंबोलकरंबारिखीयो' (बच्यू) । ४ हर्दियाँ का देर (मुर १ २ ६) । करंब सर [सम्ब्यु] शोहना फोड़ना दुवड़ा करता। करंगद (हे ४ १ ६) । करंज वे [करफ] बुद्ध विदेव वरिका (पण्छ शबर रिश मा १२१)। दरंज तुं दि] शुष्त-त्वक मूखो त्वचा(दे २ ८)। कर्रविभ वि [भग्न] तोहा हुया (हुमा)। क्रंड पून [करण्ड] पंद्यवार हही (तंदु 12)1 ्रं [इरण्ड क] १ करण्ड कर्द्रहरू } क्रिम्बा पेरिका (परह १ ३३ करंडय ) बाह्य स्वरूप)। करींडपा थी [करण्डम] योग रिम्प (ग्रामा १ ७ चुरा ४२०)। क(डी सी किरण्डी रेडिया परिता(या १४)। र दुवी पात-तिरेत्र (उन १६६)। क्रदूय व [रे] पीठ के पात गी हही (पएर १ ४—दर ७४)। ब्द्रीत देगो ब्द्र 🛚 🕏 ।

हुमा एक बाध इम्म दम्मीशन (पाम दे २ १४ मुपा १३३)। कर्रावय वि [करम्बन] स्पान सवित (सुपा ६४ मन्द्र)। ≰रफ्टर् [फरफण्ट] एत माम का एक परिवासक तापम-विशेष (धौष)। करकंडु तु[फरकण्डु] एक वैन महर्षि (महा, परि) । करक्षिय वि [अक्टीयन] करनत सादि से फाड़ा हुमा (मण् १४४)। क्टकड विदिक्त कर्फर] १ विल पस्य (उवा) । करकड़ी की वि करनटा] विवश नित्यनीय बद्ध-विरोध का प्राचीन काल में बच्च पुरन को पहनाबा कालाया (विपार २—पव इरक्य पुं[फ़क्क्य] करान कर्यत बारा (पएए १ १)। करकर वे किरकर | कर-कर' बाबाब (खाया १ १)। स्ड पुन [शुण्ठ] चूल-विरोप (पएड१--पत्र ४)। करकरिंग दू [करकरिक] पद्द-विशेष पहाचि हासक देव-विशेष (ठा २, ३---पत्र ७८)। करम देखी कारम = नारक (एवि २ )। करगर्चु [करक] १ करका बोसा (भा २ ३ योष १४१ थी १)। २ पानी की कलशी बलपात्र (बनुद्र साहद् मुपा १६१ १९४) । देशा करम = करक । करगय रेको करकय (स ६६६)। क्रागह देवो क्र-गह (सम्मत्त १७१)। करपायस पूँ दि] किमाट, दूव की मनाई (R 2 22): करच्छोडिया की दि वानी वान (मूग २ ₹**₹**) ι बरहृ दूँ [दें] यादिन यम नो बालैरासा बाह्मण (मृग्य २ ७)। करद्वपूक्रिस्टी १ नाग भौषा (दर १ १४) । २ हायी वा यगड-स्वस (सूपा १३६ नाय)। १ नाय-तिरोप (विक = ४)। ४ बुमुम्बन्ताः १ वरीर-कृतः ६ विरक्तिः, सरः । ७ वालंडी नास्तिक । व बाद-विरोप कर्रव तु [करम्य] ध्री और शत वा बना (दे २, ११ हो)।

करह दूदि] १ म्याप्र, शेर । २ वि वनस वितर्वय (दे २ ११)। करहा की दिने नर्गा—१ एक प्रकार का करक बुजा: २ पश्चि विरोध जटका ३ जमर, मींछ । ४ बाध-विरोध (वे २ ५६) । करिंड वूं [करिंटम] इत्ये इत्वी (पुर २ ६शः पुषा १ १३६)। करही की [दे करटी] बाच-विकेष 'म्हुसर्प करबीएँ (बंद)। क्राइयभक्त न दि] थाइ-विशेष (पिंड) । करण न किरणी १ इतिहम (मुर ४ २३६ (कुमा)। २ बासन पद्मासन वनीयह (दुमा) । ३ व्यक्तिरुए। बायम (कुमा)। ४ इति क्रिया विमान (ठा३ ४० मुर ४ २४३)। ५ कारक-विशेष सावस्तम (ठा ३ १ बिसे १६६६)। ६ स्थाबि ज्यबरए (घोष ६६६) । ७ न्यायासय स्याय-स्वतः (कर प्र ११७) । द बीर्य-स्कृष्ण (ठा ६ १---पत्र १ ६)। १ वयोति -शास-प्रमिद्ध वव-वालवादि करण (सुर २ १६४)। १ निमित्त प्रयो वन (बाबू १)। ११ वैतः कैरनाना (मबि)। १२ वि जो किया जाय बहु (घोष २ भा ६) । १६ करनेशाला (कुमा) । हिस्स पू "धिपति । अस का सम्बद्ध (स्रवि)। सास्य 🛍 ["शासा] न्याबानय (दर्ग 🥞 इतरि पत्र १ व २)। करणया ध्री [करणना] १ घनुष्ठान विया । २ धैयमञ्जूतन (छादा १ १—पत्र १)। फरणसारा धी [करणशास्त्र] न्याव-मन्दिर (रम ११ टी)। करणि भी [वे] मिया वर्षे (पणु १३७) । करणियी हैं] १ रा मानार (दे२ ७ मुता १ × ४०४। नाम)। २ साहरव नमा नता(म्रलू)। १ भनुस्रतः नसस करना (गडर) । ४ स्थीरार, संगीसार (दर प्र tct) i पर्राभिज्ञ देशो कर = इः। करिनम नि [दे] समान, सहरा: 'मयस्त्रज्ञमन डोग्डीरकप्रीडानेडां बदामबोरेगी निरंहरेगी

च इन्द्रवनेता (छ ११२) 'बंबूबर र्रातानीता \_

बरागाग्येल बहरेल (ब्र\_११२) ।

करणीओ देशों कर ⊭ हा।

क्यावस व क्यावसी स्वतान स्वात एक राचा (ती ३७)। क्रीका इरास्ट वि [इरास्ट] १ उन्तर सैवा (यह इरिसार्ग { चरिवण १)। २ इन्तरित जिसका वैत सम्बाधीर

बाहर निरुपा हो बहु (गल्ड) । १ मयानक मर्थकर (कप्प) । ४ प्राकृतेवाला । १ विकक्षित (से १ ४१)। ६ व्यविद्य (से ११६६)। विकास साम का विदेद-देश का सवा (कर्म १)। करास्ट एक [क्यास्य] १ प्याना क्रिय करना । २ विकस्ति करना । करानेद्र सि t (1Y 1

२ व्यवद्वित दिवा ह्या धन्तरस्ववाना दशाया per (ते ११ ६२)। ३ वर्षकर बनाया त्रमा (क्रम्म) । फरसी स्त्री विकासन चौत तुक्क करने का क्छ (दे२ १२)। करायण न [कारण] करवाना धनवाना, निर्मापन (तुपा ३३२ वस्म ४ दी) । क्यविय नि [क्यरित] क्यम हमा (ब ११४३ मद्भा) । करि पूँ किरिन् हावी हस्ती (पास प्राप्त

मयर पू मिन्द्र] वत-इस्ती (पाध)।

करिक्ष पू [करिक] एक महत्त्वह (मुन २ )।

विसे केंग्बाते हैं (दे २ १)। २ वर्गवा, वरकारी-विशेषः 'बालुपूरिसार्बुट्टूप्पसार्व भियकरिमानंशाई (विसे २१३)। १ संबुद कन्दन (दनु)। ४ ई. करीन हुन्न करीन (पर्)। १ वि वैद्यांकर के समान 'काका है जैन क्युब्रिज वि क्युब्रिज है बन्द्रील बन्धा किर्द्यापन्यमानाम्यवस्त्रपुरस्तितः (महर)। धीर ब्रिशिक्त व समाना (धे १२ १)। करिस वेदो कहा = इत्। करिसंह (है Y १वक) । यक करिसंत (तुर १ २१ ) ! र्धंक करिंसत्ता (स १०१)। करिस द किये है सक्ते स बीचार। २ विवेचन, रेबा-करण । ३ मान विरोध, पद का बीचाहिस्सा(वो १)। करिस देवो ऋरीस (हे १ १ १) पाम)। करिसम वि किये के देशी करनेवाना, इसी थव (उत्त ३ सावस) दरिसण न [दर्पेण] १ श्रीनान साम्बं<del>स</del> । २ चापना चेती करना । ६ इपि, चेनी १६६) । बरणद्राच न चिरणस्वानी (पछार १)। हावी की व वरे का बोर--रक्षू, रम्बा (पाय) करिसन 🖦 करसग (पुण २ १६ 📆 नाइ १ निजी १ ऐएक्स इन्द्रका ર જ્જા)ા इत्यो । २ कत्तम इस्ती (मूपा १ ६) । वीघण करिसावण पूर्व [कार्यापण] हिस्का-विशेष न ["बन्बम] हानी पक्यने ना पर्छ (पाय)। (विधे १ ६ मणु)।

रेको कर = इ ।

करिमरी वि देवो करमरी (पा १४ ११)।

करिखन दिंदि शंबाद्य वास का को स

रेतीची मुनि में स्थान होनेवाचा क्त-वितेप

करिसिद् (दी) वि किर्पित है पानाना।

२ पासाक्ष्मा बेटी फिला ह्या (हेका १९१)।

11 करवंती की विडे प्रीवका देता का राख ( R R ( e ) 1 करपर धक िक्सकराम् ] 'कर-कर' मानाव करता । वह करमर्रत (पठम १४ ११) । फरस्ट १ फिरस्टी चन्द्र (शिंग) । करिक ) की किरसिंद की १ पराका। करकी र शरियां की एक मादि । र शबी काएक मामरख (दे१ १२ ∤कूमा)। दृरव पून हि करको बल-पात्रः पातिकरवात गीर पावर पश्चिमी (सपा २१४ ६३१)। करबंबी की [बरमन्ती] मठा-विशेष एक बात का पेड़ (दे द ३१)। करवित्रभा की किरपानिका नित-पान-विकेद (मा १९)। करवास र् [करवास] बर्ग दनगर (राघा नुपा६) । करविया की वि करकिसी पान पान-विरोप (सुपा ४४४) । इरबीर पूँ [करबीर] चूब विशेष, क्लेर का वास (गरा) । करसी दि देवो कहसी (ह २ १७४)। क्सार् पूं [क्ट्रम] १ और, चट्ट (तक्षम १६ ४४० वासः कृता<sub>स्त</sub>तुपा ४२७) । १ तुर्वेदी इन्द-विधेव (बढर ६६व) ।

(पहल १--पत्र ६२)।

१४। एक वा ४२७ पाय)।

करमरी स्वी वि बिक-बन स्त्री वाँदी (वे क

करम केलो करता (क्स ७२ थै परना १

कमार स्वा ७)। ३ प्रका-विशेष (प्रवह १

पात्र-विशेष (ग्रस् के ७ १४ पाम) । २

स्वितिका पानदान (लादा १ १ टी-पव

४३)। ३ मिट्टी का एक तरह का पात्र

(बीप)। ४ कपान मिला-पात्र (खाया १

करिसिय दि [कृत्रित] दुर्वत दिया हुथा

(मूच १ ३)। करीर वे [करीर] इय-विशय करीर, करीत (उप ७२६ टी) मा १६१ प्रामु ६२)। करीस र् [कराय] यसले के मिए मुजाया हुमा गोषर, भंबा गोडठा (हे १ १ १)। करण देती कलुण (तक्त १६) गुपा २१६) 'तरमञ् उपारमार्थ दक्षिप्रणे नरण्यं न द्मानुबद्धं (गठड)। स्क्रणा औ (क्रह्मा) दया दूमरे के दुःस की दूर करने की इच्छा (गठव कुमा)। करुमाद्रय वि [कम्पायित] जिम्पर कम्णा की गई हो बहु (गडड)। क्षत्रुणि वि: [क्षत्रणित्] करेला करनासा दवाद्व (सए) । कर सन [ ध्वरप् ] नराना । करेर (प्राप्क ١ ( ۴ करेअम्य } स्ती कर = हः। करकुर् [दे] इकनाम निर्माद, सर्ट (र २, १)। करेणु ५ [करणु] १ इस्ती इत्यो । २ वनेर शा बास, 'एमी करेलू' (हे २ ११६)। ६ दी हम्जिने इविधी (है २, ११६) गाया १ १ पुर = १६१) । इत्ताकी ["इत्ता] स्मारत सकातीं की एक की (उत १३)। मेणा की [सेना] रेगी पूर्वीक धर्म (उत्त १३)। करेणुआ को [करेणु] शस्त्रको इविनी (पाध महा)। करेमाण } रेवो कर = १ । करेअव्य करेपादिय रि (करपाधित) राजकर मे पीड़ित, महसून में देखन (धीर)। क्टोड र् [रे] १ मारिनेत मारियम । २ नार नीमा । ३ दूरम, देत (दे २, १४) । फरोहरा पुँ [दे] पार-विशेष बटोस (निबू 1) ( करोडि मी [करोटि] निर की हुई (तुन २ २१)। वरोडिय दू [कराटिक] वासांतर विदुत-विधेव (सामा १ व—वन १५)।

८)। १ परीक्षा का एक बगकरण (दे, २ R#) 1 करोबी की दिहे एक प्रकार की कींधे सुप्र यम् विशय (दे२ ६)। करोबीको चित्रिस्य शर (१४ १२)। क्रप्त सक [क्रब्रयू] १ सक्याकरना।२ भावात्र करेता । १ जानता । ४ पहिचानता । इ. संबन्ध करना । कसइ (हे ४ २३६) पक्ष)। कसमेति (विसे २ २१)। मनि क्सरम्म (पि १३३) । क्में कतिकए (विस २ २१) । थक्त कस्त्रयंत (गुप्त ४) । काक् प्रशिक्तत (मुना १४)। संह प्रशिक्त क्तिज (महा) वनि १८२)। इ. कस्रीमञ्ज, फ्छबीध (मूपा ६२२) वि ११)। क्स विद्धि १ मधुर, मनोहर (पाप)। २ **पुंचम्बद्ध मदुर शब्द (एम्पा १ १६)** । ३ भोताहरू बसरम (चंद ११)। ४ वर्षम शीबह, शोदो (भत्त १३ )। १ पाग्य-विशेष धोल चना मटर (ठा ४, ६)। फॉर्जीस्त्री [\*कप्ठी] कोविका कोमन (१२,३ क्या) । संज्ञुष्ठ वि सिक्क्य ने स्वय से मधुर (पाछ) । यंठ पू [ किएठ] बोफिस कोवन (कुमा) । यंठी बन्नो कप्टी (मुर ४ ४०)। इस पूं **दि**स] एक पनी, सक्तंत (क्या गरह) । क्लंड वृष्ट्रियपूर्वे १ दाग, दोप (प्रापृ ६४)। २ साम्यन, विष्ठ (पूमा यउद्र)। क्रमंक वर [क्रांहुय् ] क्रांतित करता। नर्नर६(मरि)। इ. कर्छक्रियम्ब (गुरा ४४० X= () 1 पर्छक्र दू (के) १ बॉड पेरा (**१**२ ६)। २ वॉन वॉ वनाईहुई बाइ (छामा १ १) । क्षंत्रय न [क्ष्प्रद्यन] बमस्य करता (पर <)। क्ष्मंद्रम रि [क्ष्मर्द्रस्त प्रमानन प्रमूप (बीर पंपा) ।

पसंस्त्रीभागि वि [क्लाइलीमागिन्] रुप म्याद्रसः (सूम २,२ ६१) ८३) । प्रक्रिक्षीभाव वै [क्छक्क्सभाव] १ द्वाय से ब्यारमता । २ संसार-परिधमता (भाषा २१६१२)। क्लांक्यकें की बिरे पृति बाद करें बादि है परिच्छन्न स्पान-परिषि (रे २, २४) । क्संक्रिय वि [क्संक्रित] क्संक्रित दानी (ह Y Y1=)1 । फर्खेक्ट दि [फर्डिट्रम्] दर्नेस्थाता यागी (बान' पि ५६६)। फर्लंडर न [कस्प्रन्तर] स्थान सूर (कुप्र 824) I कर्जन ए किसन्ती १ कुरन कुणना रंग पात्र (इवा)। २ जाठि से माथ एक प्रकार कै मनुष्य (ठा ६--- यत्र ३१०)। फर्डन प् [सन्दम्ब] १ दूरा-निरोप नीप करम का गांख (है रे रे २२२) मा ३७-क्यू)। कीर म कियोरी शक्रकिशेप (बिपा १ ६---पत्र ६६)। बारिया धी िंपीरिस्र देश-विधेय जिनका बढ मान मित वीरण होता है (भीव है) । यालुवा की विमुद्ध र बदम्ब के पूर्ण के मारार बातो पूर्वा । २ शरक की नदीः 'कर्मकशा-मुवाए बर्रायमो घर्णतसो' (शत १६) । कर्ममु धी दि] बम्बी-विशेष नामिता (दे कर्लपुत्र म [पदम्यक्र] बरम्ब-बून बा पुत्र 'पायत्वर नंदुर्थ दिन ममुस्यानवरामपूर्व' (क्य)। फर्लवुभा [दे] देनो कर्त्रमु (राग्स १) नुष ४)। कर्लेषुभाकी [क्लग्युक्त] १ कराव पूरा कं नवान सीम-सोरकः। २ एक वंद वा नात नदी पर मध्यान् भहातीर को कालहरूनी ने नदायाचा (राज)। कर्रपुष्य की [करम्युरा] जन में होनेसता बनस्यति की एक पाति (नूम २ ३ १x)। बर्मयुग वृ [ पत्रवक्ष ] राज्यकृत (गुज कप्तक्य र्ष [क्ष्मक्य] । कोता<sub>रण क्य</sub>

बनरर (बा १४)। २ स्वयः द्वार राष्ट्र

इक्करुख प्रक[क्**छ**∙इत्स्यय्] क्वक्क् यानाम करता। यह कस्प्रस्ति कस्प्रस्तित क्यक्टेंग क्रक्क्समाण (फ्राइ १ १ १ धीप)।

₹\$0

इस्त्रहर्केण र [फस्फकित] शेलएय करना 

इस्टब्रिक्स वि [इस्टब्स्टिन] कनक्ष राज्य से पुत्र (सिरि ६६४)।

कुसकल केवो कडकला – क्याल (रा.७. २)। **कळलुङ्कि पुंकिरलुङ्कि] १ सनिय निरोप** । २ इस गाम का एक सभिम-वंश (पिंग)।

क्छन केवो करमा त्रीपूर्ति वस्तरेषु हासु मुहर्शकर्पो (घण्डु २)।

क्सप्रान [कस्ता] १ छन्। माराजः। २ संस्थान गिमडी (विदे २ २ )। ६ बाय्प्ड करना (मुदा २१)। ४ वानना (दुरा ११)।

१ प्राप्ति, ब्यूल 'पूर्त ना स्थवननात्त्रस्त्रं रम्शामस्पूषस्य (पा १६)।

कक्कमा की [करूना] १ हरि करण 'पूर्व है **६६**प-दर्ग (स्ट्रहरूकतरात स्तिस्त कुलंबा (१णू)। २ वायत करता, शयाना 'मरमस्यो

सिरिबोर्डनकमस्त्रा' (कृत्यू)। बर्खाणक्ष देशो ५३ = वनप्।

कळत्त न (कळ्य) की मार्था (प्रामु 👀)। कस्त्रभाग केवा कम्म्याय (धीप) ।

क्छम र्की [कस्म] १ हामीका क्या (शापा १ १)। २ बच्चा, नासक 'बबमायु यरमधेमरनमर्ग्डा**नहा**ल्यूस्तुर्में (हे १ ७)। कसभित्रा स्त्री [कसभिक्य] हावी का स्त्री

वचा (फामा १ १--- पत्र ६६)। कस्मार् दिक्समी १ चोद तत्वर (१२ १ पाम माचा)। २ एक बकार का बद्धम

नावस (छवा प्री-२, पान)। क्षत्रसङ्घ दे किन्नसङ्घी १ केट ना सब (हा १

६) । २ वि दुर्गन्य दुर्गन्यसम् (कः ०१६) कद्ममञ्ज्ञ पून [दे] १ मरन-वेचन (श्रंश ४०) ।

२ वंपन वरवच्छट इत्याः चनुषेत् धट्टीती र्वाजिबनिवासपूर्वसर्गः । स्वर्वेष विकित भन्न वजनवर्ष वागुद्द द्विमयीमा (मन ६६)। नक्षय रेगो म्यक्स (हे १ ६७) ।

कसर्पदिषि दि] १ प्रसिद्ध विक्यात ≀ २ स्त्री क्या विरोध पाडवे पाडव (६२ ६८)। क्खमळाळ म [वे] मोध-नेप होठ पर नगामा

बाता लेप-विशेष (मवि)। कल पद्ध देवो कलात्स (हे २ २२ । पामः

गा १३१)। क्छपन्ति वि क्रिकस्थावित् वनन्ति राहे-

मला (क्य ६६) । क्ष्प्रस्ताओं की [क्जरुहाओं] इस नाम ना

इस्य (पिंग)।

फल्ल न [कल्ला] १ नीवे और शोखित का समुदाय 'पादण्यति सर्वता मुक्ततवर्श्ववसीनर्ग कवर्स (पउम ११ a)ः विश्वकत्त्वसँय-सोणिय- (पत्रम ११, १६)। २ वर्म-नेटन नर्म । १ नर्म ने धननद रूप रेत-निकार (स्टा) । ४ कॉरो कीचड़ कर्रम (दाउ) ।

किया हुया" 'प्रयुक्तेम् एक्यहिमानियने सर्वी बातकमतियद्वारा' (पडड)। क्सविक पु [क्खविष्टु] पक्षि विरोध वटक मौरिया पत्ती मौरैवा (पाम पतः)। क्लम् स्त्री दि तुम्बीयात्र (देश, १२)

क्कस्मिय वि [फलसिव] क्वीमेर कीववाला

पद्)। करूम पू [कस्क] १ शतरा, वका (क्वा शाना १<sup>°</sup>१)। २ स्त्राचक **स**न्ध का एक थेर, क्षम-विशेष (पिंग) ।

कस्प्रस पूर्त [कसरा] १ एक देव विमान । (वेनेना (४) । २ वादा-विरोप (राम ४ क्यासियास्थी क्याशिका र क्षेत्रका

(मजु)। २ वत्य विकेष (बाष्ट्र १)। क्छा पुं [क्छा ] क्लेश, मनश (का चीप)। क्स्बर् केवी क्रजम (क्ट प्रज्ञम ७४ २ )। क्रफ्रद्रव [दे] उत्तवार की स्थान (देश ४,

पाय) । क्छद् सर्थ [क्छद्राय्] मनदा केला नक्षरं करना । यह केंद्रदेश करमहमाज (बक्त रून ४) मुता ११) रहेश १४६)। क्षम्बद्धान [क्रम्यहम] समझ करना (क्स) । करवाह्य वि [कस्त्रायित] नवहनता भ्व्यक्रकोर (पाध) । क्छहि रि [कर्ज्यहम्] स्थलाकोर (६३, KY) I कब्दोय न [कसपीत] र तुन्छं क्षेत्र (सए)। २ वस्ति रजत (बजक परहार ४)

कसद्दाध्य देखी करहा ≔ नवहान् । करदार्गर

(री) (नार) । बहुः स्टब्रहार्मेत (ना ६) ।

<del>4349 - 44</del>1

पाच) । कल्यास्त्री [बक्ता] १ वंत काव माना (ब्रनु४)।२ समय का शुक्तम कृष (विदे २ २८)। ३ चनामा का बोबाइव दिस्या (प्रामु ६६) । ४ कवा विद्या विद्यान (कप

राम प्राप्तु ११२)। पुरुष कोग्म वका के मुक्त बहुत्तर भीर स्त्री-योग्य कता के हुका भीसठ नेव हैं: 'बलत्तरी कवा' (म्स्ट्र); 'बानचरिकशापंडियानि पुरिसा' (प्रामु १२१)-'बरहिक्सापवित्रा (सामा १ १)। पुरुर क्षमा वे 🆫 — १ मिपि ज्ञान । २ संक्रमस्ति । ६ चित्र कता। ४ गाटवकता। ४ गात, शासा ६ वाध वजाना। ७ स्वर मत (पर्व ऋवव वनैष्य स्वर्ते का बात)। पुरुष्टर का (मुर्गेव मुरबादि विशेष बाख का बान) । १ समग्रक (पैनोत के ताव का बात)। १ बृत क्ला। ११ वनवाद (बीनों के साथ प्राथान संचाप करने की विवि)। १२ पासे का क्षेत्र। १६ म्पष्टापद (चीपाट क्षतने की रीवि)। १४

शीव पवित्य । १३ ६क-मृत्तिका (पुनवरण विद्या)। १६ पाक कता । १७ पा<del>त वि</del>वि (बलपान के कुरा-दोप का ज्ञान) । १८ वस्त्र विवि (वस्त्र की समावट की चीवि)। १६ विदेपन-विदि। २ शयन-विदि। २१ सार्य (बन्द निरोप) बनाने भी रोति । २२ प्रदेनिका (विनोष क सिए पहेलिका-पूढाराम पद्य) ह २३ मायक्किम (अन्य निरोप)। २४ वाला (क्रम्ब विरोध) । २५ वीर्षः (क्रम्ब-विरोध) । १६ स्तीक (स्तुप्दुप् क्षम्) । २७ विषय् पुष्कि (बांदी के भानुपर्या की स्वास्थान बोबनः) । २४ मुक्तुं-पुष्टि । २**१ पूर्व-पुष्टि** 

(मुक्किय पहार्थ बनाने की धीत)। १ मामरहाविधि (प्रानुवर्णीकी वयानट)। ६१ तस्सी परिकर्ण (त्थी को कुचर बनाने

बन्द (टा३ ४३ मनु ४)।

क्ट्याव पूं [क्टाप] १ सपूर जल्मा (हे १ बी रीति)। १२ स्त्री-मताए (स्त्रै के गुमानुम | २३१)। २ मनूर-रिश्व (मुता४८)। ३ चिन्हों का परिज्ञान)। १६ पुरुष सप्तछ । १४ शरीय तूण विमर्ने बाण रक्त बले हैं (दे श्रास-सञ्चल । ११ मन-सञ्चल । १६ मो २ १४) । ४ क्एठ का म्यानूपण (मीप) । सगरा । १७ दुस्तुर-सगरा । १८ धन सञ्जल । ११ इएड सञ्जल । ४ समि सञ्जल। फळावगन किछापकी । बार स्तीर्वे धी एक बास्पता। २ द्वीबा का एक मानरण ४१ विख-नतम् (सन-परीमा) । ४२ काक्रील-सगल (सन विशेष की परीका)। (परहरु ३३)। ४३ बास्युविधा (गृह बनाने धौर एवानं वी क्छायय न [क्छायक] बार पद्मी को एक । रीति) । ४४ स्क्रमादारमान (मैग्य परि बाहदता (सम्पद्य १८७)। माण्) । ४२ वगर-मान । ४६ चार (वह-बार **ब**रहायि पूंडी [फटायिन्] मयूर, मोर (सा ' का परिज्ञान)। ४७ प्रतिकार (यहीं क वड-७२= धे)। ममन बगरह वा झात धववा रीमप्रजीवार कृष्टि प् [कृष्टि] एड मरस्मागत (रेवेन्द्र २६)। ज्ञात) । ४६ ध्यूह (सैन्य रचना) । ४६ प्रतिस्पृह क्छि व किछि १ बसइ मगहा (इमा (प्रतिकृतिक क्ष्मुत्)। इ. चक्र ब्यूह्। दर्श गरा प्रामु ६४) । २ मुम-विशेष असि पुर (बप स्पृष्ट् । १५ शहर स्पृष्ट् । १३ पुर्व (मझ-पुर्व )। दरेके)। वैपर्नेत किरोप (ती १४)। ४ १४ निरूषः ११ युक्तनिरूष (वन्यारि प्रवम भेद (निदू ११)। १ एक धोला -राष्ट्र से पुढ़ि। १६ इटि युद्ध । १७ भूटि (मूम १२२ भग ta ४)। ६ दुः पुरुष युद्ध । ५ म मार्ट्सुक्का ५ र सर्वायुद्ध । ६ "हुद्दो वसी" (पाम)। आग आग दी द्वनुसारव ( नियान्द्र-मूचक रास्त्र )। ६१ कोश्र] भूष्म-शक्षा विशेष (मग १० ४) स्मान्द्रपात (पार्म रिप्या शास्त्र)। ६२ ठा ४ ३) । स्नायद≋तुम्स र् [ओज यनुबंद । ६३ हिरोरम पाछ (बांदी बनाने की कृतपुरम्] पूरम-धारी क्रिशेष ( मन १४ चीति)। ६४ मुक्ल-पाष्ट। ६४ सूत्रश्रीहा t)। आयर्थक्षमीय ै ["आमक्त्योज] (लड़ ही सूत को बनक प्रकार कर दिगाला)। पुग्म-राशि विशेष (मध १४ १) । आजन ६६ बन्द श्रीहा । ६७ मारिता धैल (घड-भाय र्दु [ आजन्योज] पुग्य राजि विशय पिरोप)। ६० पत्र-न्योय (धनार पत्रा में (मप ६४ t)। आदवामरमुख्य वृ धपुर पत्र वा धेरन, हुन्त-नापर)। ६१ [ आमद्वापरयुग्म ] गुग्म-चरि-विराय कट-क्येप (गानी वर्ष्युक्रम ने धेर करत (मप १४१) । युद्धेन क्लिक्को तीचे का जान) । ७ सनीप (मधे हु<sup>क</sup> पानू को विशेष (ती १६) । जुगन [युग] शन विर समन बनाता)। ७१ तिशीव (बात् युप (नी २१)। मारण रणपण)। ७२ छन्त-स्त (छन्त क्छि वृ [४] राष्ट्र दुरमन (दे २ २)। इलल) (भैरटीसन ६९)। तुरर् बिस वि [बसित] १ पुत्र, सहित (पर्रह िंगुर**े बनाबार्व विदाप्यास्त क्रिक्** रै २)।२ मात नृगैतः।**३ अ**ततः निरित (नुता १४)। यरिय र् ["वार्य] रेनो (देर इ.६ पाष)। पूर्वोक्त वर्षे (गापा ११)। बहु की [ यर्ता] १ वजारानी क्यो । २ एक पतित्रता कृतित्र ऐसी कृत = व प्रम्। की (कर ७३६ परि)। सपण्य व[सप्य] क्बिंभ व [र]१ नाम स्वीता नेतन। २ संस्थानिकीय (दा १ ) । रियरित नर्व-पुत्र (१२ ५६)। क्लाइआ के [क्लाक्सिय] प्रशेष शेषी में [ दिस्ति भी दि ] गया नदेशी (१२ १६)। क्रिंग धा (पेनिया) बरित्रतित पूर सेशर मागिरण सर का हरतास्य (राघ) । बस्यय पूं [काद] मोनाय मुख्तीरार (पार् बली (पाच वा १४४)। बस्मि ् [बिलाह] १ दर सिरोप मह देश १२ लाय) १ =)। क्याप र् [क्याप] कान विरेत्र गोत करा, जरीमा में चीराण की और में सबसे के कुराने

प्रामु ६ )। २ कमिंग देश का राजा (निय)। क्छिंग दे [क्छिक्क] मनवान वाविनाम काएक पुत्र (धी १४)। क्रक्रिय देता क्रिस्तिय (गा ७३ )। किस र [किस् के नगर्भ (निष् १०)। क्षत्रित्र न दि] योग्रीसक्दा (रेर ११)। फस्टिंग पूर्व [फिलिन्द] १ वोम कापाप विरोप 'कॉनवे। वंशकापर्ये' (गण्डा २) । २ मूची सबकी (भग = १)। कृतिचान [कृतिय] गनर पर पहना नाता गक प्रकार का वर्ग मय काव (गामा ह १ यौर)। फब्रिम न 👣 कमत पप (१२१)। कुलिमस रेवो कुषमस = रमक्प (तंद ४१)। क्रिक्किल कि [क्रिकिन] पहन मना कुमेंच (पाम)। कुलुण वि [कुरुम] १ दीन, दया नतक इपान्पात्र (हे १ २४४ मानु १२६ तुर २ २२६)। २ प्रे साहित्य शास्त्रप्रमिद्ध नारवॉ मॅ एक रम (बर्ग्)। कलुमा रेखे करणा (चर्च)। क्ष्मुस वि [फ्ल्प] १ मनित सस्वक्ष 'वनिश्रपुर्व (शिवादे दे पाप्र)। २ व पार क्षोप मैल (स १३२ पाम)। %नुमिश्र वि [क्लुपित] पात-बस्त मनित (से १ १ मडह)। क्ष्मुमीइय वि [क्ष्मुपीकृष] अपित विमा ह्या (उत्र) । क्लर १ दि ] १ वकार अस्विन्यप्रवर । २ विक्राम भवलक (दे२ ४३)। फलपर न [फलनर] रायर, देर (धार ४४ रिव)। कलसुष न [फलसुफ] लगुनिधेर (नूच क्खाबाइ थी [द] पात्र-निरोप (बाका २ १ फाउन [कस्य] १ नत समा हुमाया मान्यमा तित्र (पाम रहापा १ १) हे ह ६०)। र राध्य माराजः १ संस्ता गितनी (रिने १४४२)। ४ माराम निर्याखाः राज विकासमें (विसे १४३१) । १ प्रमान नर १ (पत्रन १८ ६७ भाष ३ मा

नुबद् (मणु)। ६ रि निधेत थेए धीन

(ठा ६ १) रेट ११) । व नि स्त्र कार (रेट ११) ।

कस्तवचे ई [कल्पवर्च] क्लेश, महागाँग क्ल-गत (सन्त ६ : गट) ।

कसमास पुक्तिवयास्त्री कमवाद शरान । वेजनेत्रामा (माद १२) । कस्त्रिक्तिय वि हि | १ विमित सामित । २

कक्क्षित्र वि हि रे ग्रीमेश स्पर्धित । रे विस्तारित फैनास हुमा (के २ ९०) । इन्हा को हि । नय सक (के २ १) । कहा इंक्षि के स्वास्थ्य है रे श्रीमा ने बहा इंक्षि है र येच (विमा रे के श्रीमा रे (क) । र प्रक्रिम्मात येन मुक्क (ज्या)

ग्राप) । इद्धाल न [बस्पाल] मुन्ही (निर्धि १७१) । इद्धाल पुन [बस्पाल] १ मुक्त मंतर रोसः 'पुन्नाक्तरिकाम पीनोमान प्रमानस्मारा'

गोध्व (विसे ३४४ )। ३ विवाह शान

(बस्)। ४ जिन जनतन् का पूर्व सव से

भारत काम दीवा देवत बात तथा मीस

(उप ६

महार प्रान्तु १४६) । २ निर्माए

सारित वन प्रस्तुत्वर 'सं महस्यस्तारा । स्त्रीति जिल्लास्त क्षेत्रित स्त्रिकेस्य (स्त्रा ) । १. सपुर्वित केस्त्र (स्त्रा) ६ कुटनीरिय (महस्य १) । कत्र सिरोग (स्त्रा) । केस-रिरोग । ६ सम्र (सिरोग 'स्त्रास्त्राक्षेत्र सम्मान्त्रकर अंकरो साम राजा जिल्ला सम्मान्त्रकर अंकरो साम राजा जिल्ला

गुल-वारक (शीव ३ उत्त १)। कडाय न [कुलक] लार-निरोध (छ)। "बारि दि ["वारित] सुवावह, गंगल-कारक (शाया १ १९)।

शुम-वर्म (बाका)। ११ वि हित-वारक

কল্লাল বি [ক্ষমালিক] বৰুনান্ত-নাত্ত । (ব্যাঃ)। কল্লালান্ত (ক্ষমালা) ই বৰুনাত কটে-।

कत्राणास्य [करपाता] र रक्ताणुक्छ-यानीकी (गाड) । २ दो वर्षेती महिला (उत्तर १ १) ।

नदास ई [कस्मपास] नमात वाक वेवने वाचा (याना वाच ६)।

नद्भिय [नस्पे]नत दिन नस दो (ना १९)।

करुकुत हुं [करुकुरू] शीन्त्रिय जीव-विरोध कीट की एक पांधि (बीव वे) )

कल्लुम वृं [करलुक] शैनिय वन्तु की एक वासि (पएए १--पन ४४)। करलुरिया वि] देवो श्रृष्टरिया (एन)।

कल्लुरिया [ये] देवी क्षक्किरिया (एन)। कल्लेक्य पूर्व [ये] कनेवा प्राट्टार (श्रीय ४९४ टी)।

क्स्प्रेडम पूँ [दे] बममीय केंन स क् (धारा २ ४ १)।

क्कोडिया [वे] देवो कस्वोडी (११८) । क्कोड र्डु [क्कोड] तरंग अप्त (गीप

प्राप्तु १२०)। कारोस वि कि कडील] शत्रु, बुस्पन (व

६८) क्योसियी की [क्योकियों] नदी (ब्यू)। कम्हार न [क्यू सार] बन्दे रनन (वर्स

्रा के २ ज्यो । कसिंद् केवी कर्ति (ना ८ २) । कस्दोब पूँ किंो नास्तर, नव्या (के २, १) ।

करहोती की [वे] मरश्वरी बाँधना (वे २ ६)। क्रम पत्र [कु] भारतम करता दश्य करता। सम्बद्ध (हे ४ २६६)।

क्यह (ह ४ २६६) । क्यह्य वि [क्विचित] क्लापाला वॉम्स (पटम ७ ७१ घीछ) । क्रमें देवों कसीय (मदह १ व महा गड़्ब) ।

कताग वृं [क्यां] 'क' से 'ड' तक के पांच मतर (वर्गति १४)। क्वचित्र देवों कवडूब (विटि १३११)। कवचित्रा वेदों कवडूब (विटि १३११)। कवचित्रा वेदों [क्वचचित्र] वनाचित्रा

नकोष्ठ (राज) । कश्टूका वि [कर्यार्थत] पीड़ित हैरान क्रिया हुमा (हे १ १२४) ।

कतंत्र न [कपर] माना क्षयः शास्त्र (पासः गुर ४ १११) । कवित्र देवो कपद्वित ची मागुद नवदिवस्ती

सन्त्रति ते पुण्यते एवं' (मुदा ४४४) । ऋषह् दूं [ऋपरें] वसी नीसी वर्धानता (हे ११ मी १४) ।

कर्माकृ पुंक्तिमर्तिम् हे सद्धाविके (सूपा ११२) । २ महातेव क्ति (बुमा) ।

कमक्किया की [कपविषय] कीही वर्षाटक (सुपा १० १४३):

कमज वि [ किस्] बीत ? (परम ७२ *वा* कुमा) ।

कत्य कृत [कत्य] धर्म चक्कर (विवार २. पटम २४ ११: पाम)।

कृत्य ४ [दे] बनलाति-विशेष गूर्विण्यर (दे २ ३)।

कमरी जो [कपरी] केट-पास, वीमाज (क्रमा) वैस्ति १८३)।

क्वत सक [क्यत्य ] बयाय इत्य करता। क्यतेद (एउट)। कर्म क्यतिकाद (पटन)। क्यक क्यतिकाँठ (गुना ७)। यह क्य-सिक्ताय (वरन)।

क्षण्य है [क्षण्य] काल दाय (पर ४) भीत)। क्षण्याम स्थापनी स्थल अन्यत्र (सर्व

कमलान न [कमछान] ब्रह्म प्रकार (बार १७ : मुपा ४७४) : कमछिल कि [कमछिन] द्वित प्रतिय

कवास्त्रज्ञ वर १ क्षत्र स्वत् १ रास्त भारत (पत्रक तुर २, १४६: युवा १०१ ११६)। कवस्त्रिआ की [वे] साम का एक जकरत

(धाप प)। क्लाक्ट पूँ चिं] सीहे का कड़ाह (सुग रे फ ११४)।

कमांकः) को [के] पान-निकेत पुर वर्षेष्यः कमाक्किः पानने का मास्त्रमः कहारः, क्यार्थः 'कमार्केतः य मिन्नो कमारिकारः कमाक्रिमुण्यं (संचा १२ । किया १ को।

क्यास } पुंत [क्याट] किवाद, सिनाहे क्याक | (पटक घीरा या ६२ )। क्यास म [क्यास] र कोपड़ी शिर में स्ट्री

'करवत्तिसंववत्तरे' (गुण ११२)। २ वरं वर्षर, विस्तानात्र (सावात्र हे १ २३१)। क्यास ग्रं[व] एक जनगरका बृताः सर्ववहां

्देर ४)। कवि केटो इक = कसि (तुर १ २४६)। कवि पूर्विवे १ व्यक्तिः करोगला (तुर

रेरे नुपाददर प्राप्तु देह)ः २ दुर्णः बहुवितेन (तुपाददर)। तान [त्र] कत्तिना समिल (तुर१४२)। वेली कर्षः कवि। कृषिश्र न [कृषिक] सगाम (पाम पुग 284)1 कृषिञ्चल देवी कृषिज्ञल (पाना २)। कविष्ठरुष्टु ) देखो कहरूपञ्च (पराह २ % क्षिगण्ड्य रेमा १४ वे १ २१ जीव ३)। क्षिष्ट्र क्लो क्यूस्य (वएए। ८ व व ४१)। कविक्र न दि ] यर का विद्यासीयन (वे २ १)। क्विरय रेनो कुन्स्य (उप १ ३१ टी)। र्कावयरङ्क देवो सङ्ग्रस्थ्यु (स २१६) । कृषितः पूर्वि कान कृता (६२६ पाम)। कविछ पुं [कविछ] र वर्ण-विशेष मूख र्रम तामका वर्णे (सवा २)।२ ९ - विशेष (पर्या १ ४)। १ सावर मत का प्रवर्तक मुक्तिविदेय (बाबम: भीप) । ४ एक बाह्मण महर्षि (उस =)। ५ इस नामना एक बानु देव (छावा १ १६)। ६ छहुना पुरूप क्रिकेट (सूक्ष २)। ७ वि भूत रंगका मन्मीनारंगभा (पटम ६० छ ७१२)। [ भी [ ]] एर बाह्मग्री ना नाम (धाष्ट्र) । कविस्टडाश औ दि कपियडाला सूर धन्-निरोप जिल्हो गुजराती में 'खडमारही'

पर्ते हैं (मी १०)।

कविताम देवा यन्त्रास 'तपुनि हरेज पनि सानमधीमरिसंनिमा कूडा (उद)। पविलिश रि [क्यिकिन] करित रंगराता

विया हुवा भूरे र्यं ने रंपित (पत्रः)। क्विस्तुय न [दे] पात्र-विदेव नदादी (बृह X) 1

क्रियस वृं [क्रियर] १ वर्ग-विरोग, पाना-पीना रंग बारामा, इप्या-पीत-मिर्मयत बार्नु । २ वि वर्गिश वर्णवाता (पाम यक्का) ।

क्षिम न दि] शाल्माय मरिख (दे २)। वरिमाधी दि] धर्वबद्धाः एव प्रकारका

पूर्ण (दे२ ४)। र्ध्यमायण पुन [बिश्शायम] मच-विरोध 57 का बाक (पास १७---पत्र २१२)।

विमीमम ) र्नुविविशीर्यको प्राचार ममिसीसय । का कर-माग (मेर जारा १ १ सम्)। कविद्सिय र्व [क्पिर्शसन] पानात ने

शक्तमात् होनेदासी सर्वेकर गादान करती ज्वाला (पण् १२)।

क्षरताय देशो कपिरताय (स य-पुत्र \*{\*) 1

क्योड देखा क्योय (पिंड २१७) ।

इसाय वृं (इपोत्त) १ व्युत्तर,पासवत परवा (गढड दिया १ ७) । २ स्मेच्छ-देश-विशेष (पतम २७ ७) । २ म मूप्पागन कोहका (मग १२)। क्ष्याख वुं [कपाछ] माम मएड (मुर ६

27 TY 18%) 1 क्योराण (मा) ति [यदुग्ण] बीना गरम

(प्राष्ट्र १) । क्ट्यन [काच्य] १ नविद्या प्रवित्य (ठा४ ४ प्राप्त १)। २ प्रे पह क्रियेप शुक्र (मुर ३ १३)। ३ वि वर्णनीय स्लामनीय (हे २ ७१)। इस वि [यम्] पाम्यदासा 

क्टब न क्टिंग् नोस (मुर ३ ६३)। क्ष्म्यपूर् (दि] बालक वया (गम्स ३१६)। कुरुवृद्ध देखी करुपद्ध (मनि)।

फरुया स्में मिरुया सिया (सूत्र 😍 पत्र १०१ मूत्र मा १४८ घष्या १ गा १)। कश्वाद पू दि देशिए हम्त दाहिना हाव (47 2 ) :

फरगाहिम वि [व] कॉवर छळलेवाला, वर्हमी स मान डोनेवासा (बुध १२१)। क्षम्याय वृ [मृज्यान] १ चन्नन निराप (पत्रमण १ देन्, ११ त २१६)। २ वि वच्या मान यालेवाला (पडम २२,

३३) । ३ माम बानेनाचा (बाम) । क्रयास न [इ] १ वर्षे-वान, वार्यातय । २ मृद् बर (दे २, ६२)।

कस नद्र[क्यू] १ छर मास्ता। २ वस्ता पिनमा । ३ मनिन शरना । वसीते (पएए ११)। नवह कसिद्धमान (नुत ६१६)। कस १ [क्या] वर्ष-वर्ष्ट, बार्क (क्या १ ३ लामा १ २ स २८७)।

धम पू [क्य] १ वर्गीय क्य-वियाः 'ठार ब्देन्स्मेरि मुखं पात्रह मुख्यपुर्या (नुपा १८६) । २ क्लीटी वा पन्बर (बाब) । ३ वि त्विक, बार बानवेशाना द्वार नारने-

बाना (ठा ४ १)। ४ हुन सेसार, फार षगत् (सत्त ४)। इ.स. कर्म कर्मभूहरा 'कम्म' कर्स मतो वा कर्स' (विते १२२०)। पट्ट बहु पूर् [पट्ट] कमीटी का पण्पर (धरामा ६२६ मूर २ २४)। महि पूँधी िदि सामी एक जावि (पएए १)। कसइ की दि पन विशेष पराप्यवाध यमस्यति का कन (दे २ ६)। फसट (वे) रेजो कट्ट-कप्ट (हे ४ वे१ त माम)। कमट्ट पू दि । बतार, बूड़ा (मोप ११७) । कसण पुष्टिणी १ वर्ण विदेष । २ जि कुरुष वर्णवाला, काला श्याम (हे २, ७५: ११ हुमा)। पक्रम १ विका इच्छ पश वरी परावास (पाप)। सार प्र िंसार देशकारिया २ हरिए की एक बानि (सर--मृष्य ३) । कसण वि [कृत्सन] सवत सव सम्पूर (है १ ७५)। असणसिक्ष पू दि । असका पामुरेव का

बहामाई (दे २ २३)। फमजिञ्ज रि [इज्जित] काना रिया हुया (पाम)।

क्समीर देखो करहीर (यस्म १० ६१)। फमरपुं[के] मपन केल (के २ ४ सा ७६६): 'नण सीनमरम्बद्धणे तेरि ह सीवंति का (? क) सस्म्य' (पुण्ड ६६) । कमर पूर्व दि कसर] रोप-निरोध क्या

निरोम: 'न पहुल (? क) सर्वामपूषा शर्यताल एक्स द्वापारित्यकर्तु (अ. २—५५ १६५) । यमरक र्न [दे यमराह] १ वर्गल-७--राते ममय को साह होता है बढ़ 'खकद न

च वसरतरेहिं (हे ४ ४२३ कुमा) । १ कुर्मन कुल की कसी 'वे विदिश्यिक्य है क्षेत्र पन्नम ते रथैररपरमा। समीत रस्तु। भगवित्रिया" वाली वालेन्द्रियाँ (बाह्य ४६)। यमध्य न [दे] बाल यारः। २ विस्तीक

यत्त्र । ६ प्रदुर, स्यात (दे २, १३) । ४ बाद धीमा रहिरहत्वामीविमधिहरम्याची नगर्यवर्धर्व (स.४१७ हे र १६)। १ वर्षेष्ठ परा 'बुरोधवनसरवकुगान्त्रन

परसन्धनत्रनम्माची (बद्रह्र) ।

क्रम्सच पुं क्रिइसप है । वंश-विशेष कस्धव कसा भी [क्झा, कसा] चर्म-मीट, चारूक कीहा (क्या १ ६ क्या १४४)। इसा देशो कामा ( पर )। कुमाइ वि (कुपाबिन्) १ क्याय रंदशसा । २ क्रीव-जान-गाया-नीमवाला (पएश १८ धावा)। कसाइम वि [क्यायित] क्यर देखी (मा ४८२) या इ.स. याचा)। कसाय सक [कशाम्] वादन करना थाला । भूवा वसास्त्वा (माचा)। कसाय पुक्रियाय है होन मान मामा बीर सोच (विसं १२२१। ई ६)। २ एस-विरोध वर्षमा (ठा १)। १ वर्छ-विरोध साल-पीता र्थं (उसा २२)। ४ नवान कादाः। १ वि वर्षेत्रास्त्रात्रानाः। ६ कयाय रंग्लाला। ७ सुमन्दी सुरुपुरार (हे २ 24 )1 कसार विशेषो संसार (यव)। कृति वि [कृष्यम्] मारनेवासा, विनासक 'बतारि एर कमिछी कसावा सिवैदि मुलाई पूर्वापरस (गुज १ १)। कसिम न [करिश्य] प्रतीर, बाहुक 'धंबें। मए महत्त्रपीए कशियी माहती (प्रयी १ )। कसिमा की उत्तर देशों (मुर १३ १७ )। कसिमा भी [पे] क्व-विशेष प्रस्पवराये नाय# बनस्यति का कन (रे २, ६)। कसिट (पे) देको कह = इप्ट ( पर् )। कसिंग केवो कसण ≈ इच्छा इस्सन (हे ९, **७१ कुमा पाध-वे४ १**२)। धमुमीरा 🐿 [कर्मार] एक क्वर शासीब केश (प्राक्त २ ६६)। करोस । पूर [कक्षार, 4] वर्षाय करू क्ष्रसम्य मिरोप (बक्क प्रस्तु १) । कसेदग (न (क्यांस्क) वचने होनेराबी नत-स्पर्विती एक बार्वि (तूम २३ १) शाला 3)1 ₹ ₹ कसोवि को [दे] काय-विशेष 'मश्राहि रतोषि मीचा कर्ने सर्वेति (शुक्र १ ए०)।

श्रास है कि नहां कर्षण कारी (हे र. २)।

कस्सम न [ने] प्राचात काहार, ग्रेट (वे २,

23) I

बंगलीको (विक ६१) । २ ऋषि विरोध (यवि २६)। क्द्र सक [क्रम् ] रहता बोतता । वहर (१४२)। कर्य नत्यहः नहिमदः हि १ १वण ४ २४१)। शह. कहंत कहित, क्रद्वेमाण (रमण ७२, नुर ११ १४८)। राजः ब्रह्मेरा बहिटांत, महिटामात्र (स्त्रा मुर १ ४४' वा १६८ मुर १४ १४) । संद्र कदिई, कदिकान (पहा कात)। इ. सद्गिका, प्रहिमध्य कहेपस्य, **ब्रह्**णीय (मूच १ १ १) मूर ४ १६२३ मुता हर ६ पएइ २ ४ मुद्र १२ १७ )। ब्रह् सक [क्रम्] श्राच करना उनस्थना । कहर (पर् ) । कह पूर्विको रफ, शरीरस्य राजुनिरोय बनयम (कुमा) । क्द्रद्विको क्द्रुर्ट (दे १ २८४ दुमा पद्)। बद्धवि देवो कह उद्यंपि (दरुड सर ४२० दी)। वि केदी कर्मापि (प्राप्त ११४) 171) ) इक्का च [कश्वा] निक्यें मीर यापद यर्थे को बत्रवालेशाला घन्यव (से ७ १४)। क्यां म [क्श्वम्] १ केट, किस तया १ (स्वप्न ४३ कुना)। २ क्यों किस किए? (देर २८, पड महा) । नहींप स िक्यमपि दिसी तथा (पा tve) । केहा की किया । एक हैंप को उत्का भरतेनली कना निकना (बाबा)। भि भी म [भिन्] भिनी उपद्व किटी प्रकार-ते(मा १२) अन् १६ थी)। "पि स ["अपि] रिश्री **तया** (परात) । न्द्रस्य पु [स्ट्रस्य] प्रमोदन्तवस्य सुरी। कारोर (ठा३ १---वन ११६) कम्म) । क्यूब्द पर [क्यूब्यूप्] कुछै का छोर मचाना । यहः. बद्धानिति (पराह १ २) । भार (छ २१) सम १ सव १७) २ शी<del>व</del>-क्या (स ६४१) । व मूच, वैशाय (योग व्यव्यक्त र्ष [क्ष्यक्त] पूरी का शेर रहेश ज्य व २७८) । (**44**) ( क्ट्रेंट्ट पूँ [क्वंक्या] बातबीत (शाबा २, न्मरेरी नी [धाउनी] इस्ताम के एन नगरी विद्वार नी एक नमरी (श्रोबा ७६)। ₹ प्र २) । चदगवि [क्षमक] १ क्ष्मोदाना (सहि नाइणी भौ [के] gear साथ रती (के र

२३) । २ र्पंत्रमान्तर (इप १ ६१ हो) ।

1 (19

कद्मण न किथनो क्यन अस्ति (धर्म १)। बद्दाना की [क्याना] करर देती (वेत रा सर ४६ ३ ३६४)। क्क्षप देखी शहरा वि १ १४६)। करस देन कि ) वर्गर, बचार (भेठ १२) । कहा जो [क्या] बना नार्चा हरीनठ (दुर २ २ ४ । दूमास्यम ०३)। कहालग) न [क्यानक] १ क्या कर्ल फहाणको (का रशः वर्ष इ ११६)। र प्रचेत प्रस्तान 'क्यं से नामं कासिसिति बहारणुमीरसमस्यं (स. १३३ ×××)। १ प्रमोदन कार्य बङ्गारायविभेग्रेस ममासमी पश्चित्रावर्ष्ट (स १८६)। वहाय सक [क्श्रम्] कहमाना दुनवला। पहलेद (महा)। क्ष्माध्य ५ [कार्यापण] विकानविरेष (हे % ष्ट दश क्या)। पहाविक्र वि [क्यित] बहताय हुमा (मुग 42 YZW) ( कवि ) ध [क्व कुत्र] कहा किवास्तर कवित्रा } में (क्वा क्वा नाट कुमा क्दिं 🕽 उप)ः कवित्तु नि [कवयित्तु] क्व्तनावा भागभ (सम १६)। कृष्टिय दि [कृषित] कपित एक (उन गाट)। कहिया औ [कथिक] क्या नहती (का १ ११ दो) । क्यू (प्रत) स किता कहा से १ (बड़ )। क्यदेश वि दि ] तल्ला भवान (वे २ १९)। कर्तु के कि करित् (ठा४ २)। ष्प्रभृष्णी १ औ [भारुपिओ] न्यर्थभी 🗦 दुश्नी (शक्त १ 🔾 काइज वि [काबिक] शारीरिक शरीर सॅब्स्बी (बा १४) प्रापा) । भारमा ) को [काबिकी] १ शरीर-वर्ग क्षत्रमा ∫ की किया शरीर है किईत मान

प्रद की [काफी] कीए की माद्य (विमा १ 🗎 3)1 धार की कियपीती नेरवा विशेष भागना ना एक प्रकार ना परिस्ताम (मन; साचा)। "समा भी ["तेर्या] धाम-परिणाम-विरेप (समाठा ३ १)। केस्स वि [केदय] नारोत भेरवाचाना (पान्स १७ भग)। "लेस्सा देखी "सिमा (पग्छ १७) । कार्त देखी कर = हा। शार्थवर पूर् [सारादुस्वर]शीचे रणी (राज)। कार्डकरी की कार्येद्रम्करी जीवधि विशेष fraududurerduftfift- (ar ! !! क्षेत्र पएछ १) । कारकाम वि [कर्त्तु काम] करने को काहते दाना (सोव १ ७)। काउड्डायम न [कायोड्डायन] स्वान्त दूर स्थित कुछरे के समीर का याकारण करना (छाया १ १४)। भाउदर वृद्धिकोदरी सौपनी एक वाति (परदार १)। कारमध्य वि [ कल्युमनम् ] करने की काह बाना (बच उप प्रथ से )। कार्रस र् [कापुरुप] १ कपद बादमी मीच पुरुष । २ शतर, बररोक पुरुष (पडव स्र ६ १ मृता १६२)। बारहर्ष् दिवित बहुस (दे२ १)। ब्यासमा } र्रू [ब्ययास्सम] र रुपैर पर ह्यक्तसमा 🤰 के ममन्त्र हारवाय (उत्त २६)। २ कपिक-क्रियां का स्थाप । ३ व्यान के निए शरीर की निरक्तता (परि)। काऊ केरो पाउ (ठा १ कमा ४ १६) । कारणी देशो कर ० हा। काआदर रेपो काण्दर (स्वज ६०) । बामाडी थे [नासली] करनीरेंग, पन सर्वे विरोध (प्राप्त १)। बाओवग पू [कायोपग] संकाध मात्रा (युष२६)। बाओसगा देखी बाउसमा (मरि)। काऊ पूर्विका १ कीमा, कायम (यद्ग ६) । २ बर्-विधेष प्रशासितायक वैर विधेप (हा

२ २ — पत्र ७६) । औपानी ["क्रह्नों]

बनम्पति-विशेष वक्षतेशी बूबबी (सन् १)। देखो दाग काय ≈ का । कार्चद्रगर्थ [काक्ट्रमुक्त] एक पैन महर्षि (कव्य) । कार्रदिय प [कार्यन्तिक] एक वैन महर्षि कार्क्रविया की विश्वनिव्या देन मुनियाँ **नी एक शाका (रूप) ।** काकृती देवो काइंदी (गामा १ ६.टा 2 ()1 काक्रिक देशों कार्याण (विपा १ २)। काकृति देवो कागनि (ग१ - पर ४०१)। यागदेनो काक (देरे ११, प्रापुर )। °तासमंजीपगनाय ५ विस्टर्सजीयकन्या य | काकताचीयन्याय (उत्र १४२ टी)। वालिक रार्धक न विज्ञायी देव कीए का ब्रव्हतित बादमन घीर वाप-फन का चरम्यान् गिरमा होता है ऐसा मनितरित संभव यहस्मान्तिसी कार्येना होना (याचा दे १ ११)। यस्र न [रियस्त्र] देश-विशेष (१२२७)। पाठ दूं["पाल] दूष किटेप (छन) । पिंडी स्त्री पिंगडीं } बद-पिरुड (माचा २ १६) । देखो काय = कार १ द्यार्गशी देनो प्राप्तशी (पन् २)। कार्यण स्त्री दि र राज्य, 'ब्राग्नोनिविराणे पूर्ती मेनी नाय" नार्पीएँ (विशे **६६**२)। २ मोत का खोटा टुक्का (मीप)। कागमी देखी कानिमी (भा २७ टा ७)। कागण स्त्री किकियी निवा प्रजाना एक बार (थया १११)। भ्यगत ५ फिरुको शेशम्य स्वयं प्रदेश (भ्यू)। कागति । स्त्री किसी स्त्री १ दूस बागरा रे पेश-वित स्वर-विधेन (गुपा यह उर प्र ६५) । २ देरी-विटेप मध्यान यमिन्द्रन्दन की शासन-देशी (पद २७)। ब्यगित्री स्थे [पाकित्री] १ गौड़ी वर्णस्वा (बरण वे बर मा २०६१)। २ बीच नीही के भूत्य वा एक शिला (बर १४१)। १ एल विरोध (नव २७ उस १८६ ही)। कारी की [बाड़ी] र नीय की नास (सा र विदानिकेन (रिन २४३३) ।

बाबोर्णद पु [बाबोनन्द] इस नाम की एक म्लेक्स बार्जि मिक्स कायोगीया विक्लामा महिष्यम्मि वे मूर्यं (पठम ३४ ४१)। काठिएम न किठिम्यी श्रवितता (पर्ममें 28 2Y) I कड न किया नाहा (मुसक ११)। काण वि [काण] कामा एकाव (मुपा ६४३)। फाण वि दि देशच्छित्र वाना (ग्राचार t a)।२ चुस्रवाहमा। यदपर् [फिय] कुछाँ हुई बीज को खरीदता (मुता १४३ 188)1 कागर्कित ) की दि देशी नवर से बेपना क्यमिष्ठया कराय (दे २ २४) मनि) 'काणुन्धियामी य बहा विजी तहा करहें (घाषम) । काणगम (कानन) १ वन वर्गम (पाम)। बबीचा "पदन (धनु धीप)। कागत्यम पुरिशिष्ट बस-पृष्टि, गुर-पुर बरसना (दे २ २१)। कामद्वी की 🚰 पिहास (वे २, २०)। फाणिका की दिं] वहाँ ईट (बृह ३)। क्मणिट्टा भी [पाणेश्वा] सोहे की ईट (मद ४)। प्राणिमार रेतो कणितमार (सेति १७)। क्मणिय न [क्मण्य] स्टेंडका रोग 'नाशिये मिम्मिमं चेव कुरिएमं नुश्विमं सर्ग (बाबा)। मागत्म पू [बानीन] दूबाएँ बच्चा न उलाह पुत्र (मृति)। कार्यव देशो कार्यव (पएड् १ १)। कार्यक्ति केनो कार्यवर्ध (प्रमि १८८) । धारुसय वि [ करूपत्र ] धारमा की दूर्वित वरतवासा । की श्रापा (मग ६ ५--पत्र कापुरिस रेका स्वत्ररिस (याया १ १)। काम पुं[काम] रोग, बीमारो (दर्गन २ १६)। एवं देखी कामबूब (इस ४११)। ग्म न ["ध्र] बायंशिन तत्र (संशोध ६०)। बद्दम र् [ दिस्स] महारेर शिव (बजा ६०)। रूप देशो कामसभ (धर्मीव ११)। काम तक [पामयु] काङ्का कान्यस्थाः। कामें (रि४८१)। कामेंनि (नडर)। वर् कार्मेश कामजनाण (या २४१ धनि 21)1

वियाशाला (मण)। हिंद स्त्री [मियनि] मर कर किर अजी शरीर में जनाम होकर एना (हा २ ३) । विवेद र्थ निरामी रुर्धर-स्वातार का परिस्तान (याक ४)। तिगिन्द्राधी (विकित्सा) र एएर चेत्रको प्रतिक्रिया। २ उत्तका प्रतिसद्द शास्त्र (रिवा १ =) । सपत्य नि ["भवस्य] माता के उदर में स्थित (भग)। येम्हर्य [यून्त्य] प्राप्तिरोप (राज)। समिल वि ि समित | छरीर की निर्नेत प्रकृति करने-बरता (मन) । समि सी ["र्सामति] रुपेर দী বিবীৰ স্বৃতি (আ. ৭)। याय पू [का है] र नीमा नामन (का ह २१ देशों १४० मा २६)। २ वनमारि [450 4141 JEST (400 1-44 \$5)1 रेनी पा इ. पाप । याय वू [वाय] बांच श्रीका (महा माना)। काय 4 [र] र नाबर, बहंगी बोन बीन के पि तराहेनुया एक बरनु एसर्व दीती सीर भिष्टर नश्याये भागे हैं (ग्हापा १ व ध-प्य ११२)। श्राहिय पु [ वाहिक] शीरर न बार होतेशना (शाया १ क ही) । देगी पात्र । याय पृक्ति । नरव केया सिरामा । २ ामल निवादार्थं की प्राथा की जाय बह 3511 वार्यपुत्तः र्नू [ इ ] वासिन्द्रुपः वचन्तरो बिरण (१२ २१) । नाधदी । [र] परिहान प्रधान (६ २ **२)**। कार्यश देनी सार्देश (स.६) । वार्षपुत्र र्ष [ र ] शिवाहर कर-ती विधेष (दे २ दर्) । वार्षेष । प्रेन्सिंग्य की र इनक्ले बार्यदेश । (रचे पंच) । र दम्बर्नेहरेन । ३ वसरक्षा सत्र)। ४ रि बल्यब्बल शास्त्रको । वार्ववरूपरगो प्रवस्तु रस्राबूगयान पूर्ण वं (ग्रन्थ २९६) । बार्यवर न [बा न्यर] बदर्नरटेर गह बा दण बार्ववराग्या (साथ १ ३ १३०)।

नार्वहर्ता की [कार्यकर्ता] तक हुगा का जाव

(42 55) 1

धार्यवरी की [सादन्यरी] १ मरिए वान (बाघ पान रेरा १) । २ घरती-विरेप (स १११) । कायक न दिसायकी हरा रंगकी रुई ने बनाह्याच्य (माचा२ ३, १)। याया व [पायस्व] जाति-विशेष नामम जाति नायस्य नाम ने प्रसिद्ध कालि मेरान शिवने वा वाम वर्तनाली मनुष्य-वाधि (मुन करा मन्द्र ११७) । कायपिण्यदा ) स्मी दि । वीतिसा कायन कायपिणना । पिता (देश देश गर)। पाधर वि पानरी धपीर रण्तेक (लापा १ १ मासू १८)। कायर मि [रे] मिप स्टेशनान (६० ४६)। षायरिय वि [बातर] १ इस्से व नवस्त, मनीर भोराजी शरकार शामिराधानि धनसमारियार्थ (प्राप्तु ११)। २ १ गोशालक का एक अन्त (सव ८ १)। शावरिया ध्री [कानरिका] माना कार (मूप१२१)। कायम प्रेडिंशिकार कीया हिरु प्रव पाम)। र पि प्रिय भौजनाव (११२ 26)1 कावित देगा ध्यमीत (नार-मृक्त ६२) । नावर्षमः [बायपम्भय] प्रदुनिक्षेत्र प्रहा विष्टाबक देश-विदेश (एज) । कायक्य देनी प्रर≂क्ष । वाबद वि विवद देशनीरेश में बना ह्या (बाव) । (बावा वें ४, १ ७) । बाया की [बाया] शर्तार, के (प्रापू ११२) र चारतक [कारय्] बरतानाः, बनरानाः। बार्ट, बारेंट (वि ४७२ मुता ११३) । मुरा बारेखा (रि ११०)। बह बार्यन (पुर १६ १ ) कारमाम (१ न) । कार बारिजेन (दुस ६०)। संद्र वारिक्रम (रि ४४४)। १ कारमस्य (र्वजा ६)। कार वि [के] केंद्र बहुता, श्रीशा (दे र २६) । बार क्रैक देनो पास ≠बास (व ६११: सामा ११) व बार में [बार] रे किए ही व्यापार (बा रे) ग्रेमर समुद्रिः रबंदका सस्य म्हल (बर ३) ।

कार रि विदारी करनेताता (पत्रम १७ ७)। बार्र रह रि दि विस्त गडिन (दे २, १ )। बार्ड । वृ (कारण्ड, क)प्रतिनिधिप रेस कारंडम नारेडप्रवास्त्राधारमाधितं (मीत प्रारह्य थीक म ६ १ गामा १ १ वण्ड १ १ किम ४१) । स्थारम वि विस्तरको १ करनताना (वास चर ४६ च्यापुरश्यो। र करानगणा (भा ६ मिन)। ३ न कर्ताकम परैछ श्याकरण प्रसद्ध बारक विते १३ ते। ४ कारण हेनू' 'कारणे ति वा कारणे ति बा माहारणे कि बा नमहा (बारू १)। १ उदाहुरण इ.गन्ड (बांघ ११ भा) । ६ इन सम्पारत विकेष शास्त्रानुसार मुख हिना 'ने जह मालियं तुमल ते वह बरलाब्य बारवा होत (बस्य १४) । कारण म [कारण] t रेनु निर्मिन (जिमे २ १० स्वज १७) । २ प्रयोजन (माचा) । १ महत्राह (१५३) । बारणिज वि विपरिशेषी प्रवीक्तीय (व 97E) 1 वार्राणय वि [वार्राणक] १ प्रवेशन ने रिया नाता (उसर १ c)। २ सारण मे ब्रहुन (बर २) । ३ वे स्वाय-क्षत्री स्वायायीक (नुस ११)। कारय देगी कारत (बा १६ विते १४२ )। पारव नक [बारप्] कराना बनाना । बार रेट (बर) । बर्ग बार्रायन (बुल ६३२ पुष्ट ६७) । वह बार्रियस (रूप) । पारपण न विशय विकास वसराय (धव)। बारपण पु [बारपरा] देश-विटेश (बर्दर) । धारणाह्य रि [बारशियत] रेगो कर पादिय (पीर) । वार्शवय रि [बारित] बच्चा हुमा (बुर १ बारद रि बिरस्में बरव नम्बन्धे (एइट)। बारा की [बारा] वेश्याचा (१ व ६ : राय)। बार क्षेत्र ["बार] कैरलाता क्षेत्र

(नुस ११२ नार्थ १२)। बर न ["गुद्द]

बैरमना (पन्तु ६३)। संदिर व सिन्हरी

बारा प्रे [र] नेता नेता (१ १ २६),

बैन्यम अस्त्रहा (बार्ग) ।

```
श्चिम वि [स्विमन] पनि
                                        न ["प्रभः] देशनिमान-विशेष (जीव ६)।
कास दृष्टियम] १ इच्छा कामना समिकापा
                                                                              द्मामिश्र विषिद्मिती <sup>-</sup>
                                         कास प्रस्ति पह-विशेष प्रश्चित्राता
 (बच १४) माना प्राप्त ६६)। २ सुन्दर राज्य, स्प
                                        देव-विदेव (सूत्र २ )। महायत्र न
                                                                               (मना २५६)।
 वनैरहतियम (सव ७७ ठा४४)। देवियस
                                        "महामन वनारत के समीप का एक
                                                                              कामिल कि किसि
 का समिनाय (कुमा) । ४ मदन कन्दर्ग (कुमा)
                                        बैल्प (मगर्थ)। राजार्थ कियी वैश-
                                                                               विषय-सम्बन्धी (भन
 प्रासु १)। ५ इन्द्रिय-प्रीति (वर्षे १)। ६
                                        किरीय को बासान में है (तिक)। होस्स
                                                                               बिरोप (वी २८)।
 मैचून (पर्या २)। ७ द्वन-विरोप (पिम)।
  क्री न ["शान्त] देव-विमान-विरोध (बीव
                                        "होत्रम" वेच-विमात-विरोध (शीव १)।
                                                                               इंसित जन्म ि
                                         बज्जन ["वर्ण] एक देव-विमान (बीव
                                                                               इच्छा पर्श पर
  ३)। इस ग किसी सान्तर रेव-सोक
                                        ६)। सस्य व [शास्त्र] चीत-शास्त्र (वर्षे
                                                                               इन्द्रक इन्द्रार
  के इन्द्र का एक बाबा-विमान (ठा १ — पत्र
  ४३७)। शाम वि[स्त्रम] विषवकी
                                        २)। समप्रकाति "समनोज्ञी कामा
                                                                              फार्मिया की [
                                        सकः, कामान्व (धार्चा)। "सिंगार न
  चाइवासा (पल्हा२)। स्त्रमि वि
                                                                               मनामिमा"
                                        िश्ह्यार देव-निमान निरेप (जीव ६)।
                                                                              मानिग्रह है
  िंद्र्यसिन् ] विवशक्तियी (प्रापा) । कुड
  न किट विव विमान-विरोध (बीव ३)।
                                         सिए न शिए एक देव विमात-विशेष
                                                                               3 481
                                        (क्षीव ६) । बहुन [*(वर्स] देव-विमात-
                                                                              म्ब्रिकि 🕶
   सम दि भिन्नी १ स्वेचकाचारी स्वेरी
                                                                               सुरमे-
                                        विशेष (बोन १) । विसाइत्त भी ियशा
  (बीव ३) । २ न देशो कम (बीव ३) ।
                                        यिवा दोनी का एक वर्ष्य ना ऐरनर्ग जिस्कें
                                                                              क्रांमिर्
   गामि की "गामी निवा-विशेष (परम
                                        बोबी पपनी इच्छा क धनुसार सर्व पदावी
                                                                               ÚĐ.

    १६४)। गुणाल [गुग] १ मैक्स

                                        का ब्यार्ने बित्त में समावेश करता है (स्व)।
                                                                              ष्य प्र
  (पर्ड १ ४)। २ राज्य-प्रमुख निपय (जत
  tv)। बहर्षु ["पट] ईस्टि वीय हो
                                         ार्ससा को ि" सा विषयानिकात (ठा
                                                                               ¥
                                        Y Y) 1
                                                                              प्रा
  कैनेबासादिस्य दशकः (भा १४)। अन्तरन
                                       कार्मम [कामम्] इत मबीका सुबक
  िंबस्डी स्वात-पीठ, विस्तर बैठकर स्तात
                                        अध्यय---१ प्रवकारन (सुध २ १)। २
  किया बाता है कह पट्टा विद्यालयोगी दु
                                                                              ₩1
                                        धनुगति सम्मति (निषु १६)। ६ सम्बुपसम
  कामबर्ष' (निष् १६)। जुग पू ["सुरा]
                                                                              Œ ſ
                                        स्नीकार (सूच २ ६) । ४ मठित्रय, धनिसन
  पफ्रि-विदेश (बीव ६) । उस्तय न जिल्हा
                                         (R 2. 28 €) 1
   केननिमात-विरोध (बीन ३) उस्ह्या वर्षे
                                                                              Ę
                                       कार्मगत [काराहर] कर्लाका बसेवक
   [क्या] इस माम की एक वेरमा (विपा
   १२)। द्विति [क्षिम्] विषयाधिनावी
                                         स्तान वमैख् (श्रूप २, २)।
                                        कार्मदुदा को [कास्तुया] कामकेनु, इत्यित
   (छाबारर) । बिह्नाय प्रीक्टिंडीर कैन
                                         बल्यु को कीवाली दिक्य की (पठम
   साबुधों का एक करू। (ठा६—१४ ४११)।
                                         १४) ।
   २ त. चैन पुनियों का एक दूस (राज)।
                                        कार्मप र् [कासान्ध] विषयानुर, शीव रामी
    अपर न "नगर | विद्यावरी का एक नदर
                                                                                ŧ,
                                         (बासू १७६)।
   (इक) । बाइणी की ["वाकिनी] सन्दर्ध
                                                                                ₹.
   पश्च को केनेवाली विद्या-विदेश (पश्चम क
                                        कामकिसोर पुंदि] पर्दव, नवा (१२,
                                                                                (मा
    १३१)। दुद्दा की दिया कापकेत (मा
                                                                              काम 🚮
                                        कामग वि [कामक] १ प्रविधयागीय, वास्क-
    १६)। देश दव है दिवी र मन
                                                                                द्रमा)।
    बन्दर्ग (नाट स्थल ११)। २ एक कैत
                                          कीय (पदार t) । २ वाइनेवला इच्छुक
                                                                                पेरा-विरोष ,
    मानक का शाम (बना)। विशु 🛍 [चेतु]
                                          (सूम १२२)।
                                                                                र्ने खुनेवासा
    रेंचित कन केनेवाली वी (बाब)। पाछ
                                        कामज न [कामम] पाइ धनिवासः 'पराइ-
                                                                                राधेरको वरा
    र्षु ["पास्त्र] १ वेद-विक्तेप (श्रीव) । २ वनकेन
                                          रिक्कामध्येष्ठं बीवा नरमस्मि कर्चाति (महा) ।
                                                                                ची[गुमि]स
    हनपुष (गम)। (पेपासय वि ["पिपासक]
                                        कामव देवो कामग (स्ता) ।
                                                                                বিবিদিক্তা (কন)
    विपयाविकामी (मन)। पुर न पुर] इत
                                        कासि वि [कासिन्] विषयप्रीमनानी (ग्राचा,
                                                                                ["पोग] रुपैर व्याप
     नान का एक विदायर ननर (इ.स.)। ध्यस |
                                         नस्र)।
                                                                                (भन) । जोगि नि ["यः
```

समय र् [ समय] समय, बन्ह (मुझ ×)। समा स्थी ["समा] समय विरोध ध्यान्त्रका समय (को २)। सार पू [\*सार] मृग की एक वार्त नापा मृग 'एको वि वालगारो छ देह मेर्नु प्रयाहिएक नते (गा २१)। सोअरिय पुँ निमित रिकी स्वनाम क्यात एक वर्षाई (पाक)। । तर । तर विकास [गुर] नुपन्धि द्रव्य-निरोप का **बू**र क काम में कापा जाता है (लामा ११ क्य भीप गड)। ।यस सिन "यम सोरे की एक वाति (ह १ २६१: भूमा प्राप्त ने ८ ४६)। (मयमिवपुत्त र् [ाम्पविशिषपुत्र] स्व भाम का एक जैन मुनि जो मगदान् पारबैनाय बी परम्परा में थे (मद)। मासंबर पू [बासझर] १ बेरा-विशय (विश्व)। २ वर्बत विश्वय (घात्रम) । देको क्यस्तिहर । श्रास्त्रप्तर सक [दे] १ निर्मेर्ग्नेना बरना एटरारमा । २ निर्मातित करना बाहर निराम देना' 'तो ठेएँ महिएमा मना रिए! पुक्त बारकपरिया पुत्रो की का रामेला भागुइ तमिमून यन कीर्रतीए इस न होइ ता बाठ रणी। कि कबद सण्दीए पूत प्रिजनाग विक्रण विषयम । वयस्मि (मुपा 366 X )1 यामक्यार पुत्र विध्यक्षरी १ मापालन बन-दिया २ वि मय-दिनित कानान श्रुविलाय यम्पिय रै निरही प्यमुस्सिय (n 3c) : वाटनपरित्र रि दि । उनातव निर्दे र्थित । २ निर्मेषिक कहिन न विस्पद दुनरा बरहार्युक्तरार बंदमे, ननो बानस्य रिवास्ति (दुरा १४६) 'ता रिज्ञा नानेत्रं नातन्तरियो (मूरा ४८८) । वासमार्थाभ वि [पारामरिक] सेत न धार जाननेराला, घटिनिता स्थे नृश्यानु नाभी या त्या शास्त्रात्मित (श्रेण) ।

å) t

याउप रि [द] पूर्व रुप (१२,३)।

वार्क्ति। श्री [स्मलिकी] संशानिसीय बन्त बासपहुन [दे कालग्रमः] पनुत (६२ समय पहले पुत्ररी हुई कीज का भी जिसके २८)। कास्त्रमिय पुं[कास्त्रेशिक] एक बरवा म्बरण शासके पह (विसाध ८)। क्यल्जिन किल्लाची हुद्य का बुढ़ मान দুৰ (ৱা ৬)। भारत स्री [प्रास्त] १ स्थान-वर्णवाला । २ विशेष (तंद्र) । तिरम्बार गरनेवाची (हुमा) । ३ एक यासिम पुंची [कान्सिमम्]श्यापता कप्लाता इन्द्राची बमोन्द्र शी एक पररानी (ठा ४, रामीयन (मुर १ ४४ मा १२)। १)। ४ बेरदा-विधव (द्यो ७)। मास्टिय पू [कास्तिय] इन नाम का एक मर्च पालाइसमयन[पालानिकमक] वर-रिक्य, (मुना १८१) । रिन ६ पूर्वीपै वर भाहार-'कान (मेंबोप १ )। कालिय विकितिष्टि देश में स्थान पाराक्षेत्र (माउउपमा) काना नीत काप-संबंगी । २ धनिरिवत सम्पर्शन्यतः थानम∓ (दम ६ ८)। 'हरवाण्या इस बामा बालिया वे घलायया' कानि पूं [काष्टिम्] विहार का एक पर्वत (उत्त १ कर १६)। १ वह शास्त्र जिसरी (धी १३)। यमुक्र नगव में हा पढ़ते भी शाकीय चाता श्चासिअन्रि पुँ [पासिस्पृरि] एक प्रसिद्ध है (टार १--पत्र ४१) । दाय दू प्राचीन जैन बाबार्य (विवार ६२६)। [<sup>\*</sup>द्वीप] श्रीप-विराव (ग्राया १ १७—गत बाखिआ भौ [दे] १ राग्रैर, देह । २ बाता २२६)। पुचायु ["पुत्रा] एक वैन मूनि न्तर। ३ मंत्र वारिश (दे २ १८)। ४ मेप भी मगरान् पार्तनाच की परम्परा में से थे समूह बादन (पाध)। (मग)। सण्यि वि ["संक्रिक्] कार्यिकी कासिया ही [कासिया] १ देशी विदेव **धंतारता (दिन ६ १) । स्य न विश्वत**ी (पुपारं < २) । २ एक प्रशार का नूटानी वह शास्त्र भी धमुद्र समय में द्वापदा जा परन (इन ७२ = दी सामा १ ६)। मक (एवि) । शुक्रोग पू [ीनुपान] कासिंग र् [कालक्क] १ देश विदेश पता देना पूर्वोक्त धर्पे (भग)। कानियन्त्रमाँ (मा १२) । २ वि वन्तिह पाठी भी [पाना] १ विद्यानेगीनीवराप दश में उत्तम (पत्रम ६६, १६ । (वंडि १) । २ चमरत्रको एर पटरानी काब्या थे [पानिद्री]श्लीनिश्च रसूत्र (ठा ४, १ साया २,१)। १ बनगानि बा वाद्य (पग्पत्र १) । विशेष कारजङ्गा (बदु ४) । ४ श्वामश्ले स्प्रतिगी की [सास्त्रिति] तिया क्रिय (मूब यामी की 'मामा दायह महुर', शामी माय" तार' २२२७)। य राष्ट्रं पं (टा ७)। १ राजा चेलिक की यास्त्रिया न 💽 वर्षास्यः, स्वाम वनात ना एक एसी (सिर १ १)। ६ भीषी र्यन र्फ (द २ २१)। रामन-दरी (वंदि ६) । ७ पावती वारी बाजिया भी दि आरशो (दे २ २१)। (पाष) । ८ इस नाम का एक देश (शिंग) । बार्लियर पू [काब्रिक्सर] १ फेलियान चातुत्र न [चारण्य] स्या नरग्नाः यद्विया (रिम) । २ पर्वत-विदेश (उन १६) । ३ न स्मै ["वृत्ति] मीत मन कर मानैतित वनन निर्देश (पाय ४० १) । ४ दीर्थ-बरना (स्ति १ १)। स्पान-विदेश (ठी ७) । यार्श्वाच देवा वाह्यीय (बूब १ १ पानिरी औ [पान्टियी] १ सपूना बडे 1 (1 (रुष) । २ एक इन्द्राणी श≽ प्रदानक पारमा १ दूं [बास्ट ] १ प्रनिद्ध देनाबार्य यानुर्माय देनी पार्शनिय (मूच १३२६)। मान्य }ें (द्वींटर से रेप्र )। र फसर, परपानी (प्रस्ता १ २ १११)। वानुपर्वृद्धियार की एक बन्ध कर्ना कातितर्2 [रि]र छथेर, छार मेत्र भींच (चत्र)। देनो काउ (बसा बर १ ६ (सम्मन २१६) । बाउभिय व [शनुष्य] रहाता मानता बर्गमा देश १६)। । बाज्यि देगो पानिय = वर्णनक (धत्र)। | (#E3)|

पाइअसङ्गङ्गारी						
_			-	_	_	-
श्चविक्षिय	वि	कापि	संदेय]	ŧ.	ÍΨ	ηFr-

संबन्धी । २ स कपित-भूति के बृत्तान्तवाला

एक बन्धरा 'उत्तराज्यवन' सूत्र का घाठनी

क्रविसायण देवो कविसायण (बीव ३)।

काबुरिस देखो कापुरिस (स ३७१) ।

काबी की वि शिलवर्णनानी इस रंग की

काबेश न [काबेय] कानस्पन, कारकता

कावोय वि वि] क्षेत्र वहत करनेवाला

कास देखो कदद ≐ इत्। नासद (पड्)।

कास यक [कास्] १ वहरता रोव विशेष

संबद्धन मानाम करना। २ काशना वासी

नो भ्रानाय करना। ३ खोखार करना। ४

क्कीरु काना । शह- कार्सत कासमाण (शख

१ ३—पत्र १४) मात्रा)। संद्र कासिता

कास र् [कारा स] १ रोन विधेय, बाँसी

(लामा १ १३)। २ तुरा-विधेय काल काम-

बूसुमेन मन्ते सुनिष्डलं अम्म-जीवियं नियमं

(पन ७२४ टी)ः 'कामुकुमुगंद विद्वर्स' (धान

१)। १ उसका पुत्र को स्थेब चौर शोकस-

मान होता है, 'ता तरन नियद वृत्ति अखहर

हरहासकारार्धकार्ध' (सूपा ४२०- हुमा) । ४

बह्न विशेष बह-देव-विशेष (ठा १ ६) । ५

रस (ठा७) । ६ संतर वनद्(मदवा) ।

कास वेको करेस - कास्य ( है १ २३) वद )।

वासें इस वि [कासक्य] प्रमाशी संदार में

कासग केवो कामय 'केट रोइटि गीनाई

कासण ५ [कासन] बोबाएना बाट्कार

व्यसमदग र् [बासमर्दक] बनलांच-विकेद

कासय १९ कियेक] क्योनल किवाल (के

पुण्य-विकेष (पएश १—पन १२)।

मासव (१ वकः प्राथ)।

अवा भीनदि शत्त्ववा' (निचू १)।

बम्बक्त (सम ६४)।

चीज (दे२ २६)।

(पण्डु १२) ।

(क्यु ४६)।

(कीय ६)।

t		
_	_	

तह गुनाई कर्नतो शशुस्त्रामो हमी बन्हाः (मुपा ६६१)। कासय वृं [करभप] १ इस नामका एक ऋषि (प्रामा) । २ इतिहासी एक अर्थत ।

बाधुस्म-बासि

२ एक बात की सक्ती। ४ दन प्रवापति का भागाता। ३ वि दाक पीनेशना (दे ?

४३ापड्)। क्यसवन क्यिश्यपी १ इट शाम का एक मोत्र (ठा ण सादा १ १:कप)। २५

च—पन ६६ ३ <del>वत्त ७- कप्प-सूब</del> १६)। ¥ वृतापित हवास (मप ११ मावन)। **५ इस नाम का एक वृहस्य (शंद १)। ५** न इस नाम का एक 'श्रीतयक्सा' तून ना सम्मक्त (श्रेष १०) ।

भवनान् ऋपमध्य का एक पूर्व उस्प । व नि

कारयप योज में स्ट्रपंत कारवप-नोकीय (अ

श्चसबनाहिया श्री [हारयपनाविष्ट] श्री-पर्खीकन (बाका २१ व. ६ क्छ ३२ २१) । कासविज्ञया की [कारवपीया] केन मुनियों दी एक शाका (कप्प)।

नासबी सी [काश्यपी] १ प्रविनी चरित्री (कुमा) । २ करवकप-वोषीया क्ये (कम्प) । रइ.की [रिठि] अपनान सुमितिनाय सी

कासा की [क़रा] दुवेंन की (दे १ १९४) यइ:)। कासाइया रे औं [कायायी] रवास्टरंग वे कासाई े रंबे हुँदै सादी बाल सबी (नण)

प्रथम रिज्या (सम १६९)।

कासाय वि [कापाय] क्याय-रंग वे रंग

हुमा बक्रावि (बज्रह) ।

- कासार न [कासार] १ तकाव क्रीटा करोवर

  - (चुपा १६६) । २ पकाब-किरोच कैंगार
  - (घरेर)। ३ पूंसमुद्र भरना(नक्क)।
  - ¥ प्रदेश स्थान (एकड)। भूमि 🕏
  - [मिमि] निरम्ब सदेत (नव्यः)।
- कासार न [के] बानु-विशेष सीसपनन (के
  - २ २७)।
- म्बसि 🙎 [काईंग्रे] १ क<del>ेत-विदे</del>त काली

  - विका 'काश्चिति चरहको।' (शुपा ११; वट
- - रे)। २ काली देश का राजा (दुसा)।
- १४४)।२ वि बॉस्स मतवा मनुवासी 'नइ वा दुखाद प्रस्ताई, कासनी परिस्तृदाई विक्रिक्त ।

पायक (पाना)।

(मोच २३४)।

- /-Per \ 1

- कापिछ न [बापिछ] १ हांक्स-वर्तन (सम्म

240

देश (दे२ ११)।

५, १३ रमा) ।

(पएइ १ १)।

स्थित 🕻 (सम ६७)।

घलुस्स न [कालुप्य] वकुपपन (मा २)।

इत्तेज्ञान [वे] तापिच्छ, स्माम तमाल का

काक्षेय न [काक्षेय] १ कली भी का सरस्य।

२ सुन्धिन इच्य विराप कलकारन (स ७३)।

१ हृदय का मास-करांड कमेजा (सूच रै

काक्षेत्रि व [कास्त्रेद्रि समुप्र-विशेष

कालोवाद पू [ काब्येवायिम ] इम नाम का

द्मास्रोय र् [द्माजीद] सपुर विशेष जो

बातनी-बहर डीप की बाधे तरक विर कर

काव १ पूंदि] १ कॉश्ट कॉसी बीक

ब्यवह केले निए तराकृतमा एक बल्य

इसमें दोनो भीर सिनहर बटकमे वाते हैं

(कीन १३ पडम ७१ १.२)। कोडिय पू

[\*कोटिक] नावर से मार कोलेवाला

काशंद्धि ) श्री वि] कांबर (दुप्र १२१)

कावडिश पूर्वि विविक कौनर से मार

कावम प्रकारको एक महापह बहाति

कार्वाक्रम वि दि विश्वत्रक्त सप्रहिप्युः (वे

कार्यास्त्र वि [कार्यास्त्र] क<del>ारा प्र</del>मेष का

कावास्त्रिश पु [कापास्त्रिक] वाम-माधी सवीर

सम्मदाय का मनुष्य (तुना १७४ ११७ वे

नावाधिका ) सी [नापाविष्यी] नापानिक-स्मराधिका ) स्वयन्ती सी (ना ४ य)।

बर्धाबह न [बर्धापछ] देर-दिमान विरोध (सम

(धत्।)। देखो काय = (दे)।

काबोडि । १४४ कर ४ १ छ।।

द्योतवाचा (पडम ७३ ३२)।

हाबक केन-विशेष (राम) ।

माहार (मनः चंद ११)।

१ दश प्रवी ११६)।

२७ व्यव २ २३)।

૨૨)ા

पुरु वार्तिनक निद्वान् (भय ७ १)।

काओद देखो काखोप (जीव १)।

इ इस कारी नवरी बनारस शहर (कुमा) । पुर न विद्रियों कार्या नगरी वनारस सहर (पान ६१६७)। राय पूर्विसा कारी। रेश का स्वा(उत्तर्¤)। वर्⊈ वि] काशी देश का राजा (पउन १ ४११)। बद्दण र् [ वर्धन] इस नाम का एक राजा जिसने मगदान महादीर के पास दीता . सी वी (ठा द---पत्र ४३)। कासिअ न [दे] १ मुक्स वज्ञ वाधिक क्पद्याः २ सुनेत्रं वसः (दे२ ४६)। च्यसिज न व्यसित दोक शुर (राम)। कासिज्य न दि ] कातस्वस-नामक देश (दे २, २७)। कासिक वि [कासिक] कांधी रोपवाना (निपा २१)। १ ७—पत्र ७२)। कासी की [कारी] कारी बनारस (एएया १ क) । राय पूँ [राम] काली का राम (६५०)। सर्विधीकाशीना यज (रिव)। सर्पू [कार] कारो का पना (चिय)। काइ एक किथ्य ] कहना। काइपी (भूम 2 23 3)1 नाहर केवी भादार (रस ४ १ टी)। काइस वि दि १ मुद्दुकोमतः। २ टम्, बूर्त (दे २, ६c) I काइस वि [कादर] कारा, बरपोक, सवीर (हे १ २१४ २१४)। काइस पूर [काइस] १ वाच-किरोप (तुर ६ १६ बीप एवि)। २ सम्पन्त धादान (पराह २ २)। काइसा की [काइसा] बाय-विशेष महा-दक्ता (विक ८७) । बाह्यिया की [बाह्यिस] वाभूपण-विशेष (पण २७१) । काइसी भी [व] वस्ती पुत्रती (दे २,२६)। बाइसी भी दि ! वर्ष करने का कारपादि : २ तवा विकार पूरी या पूढ़ी ववैष्ट् पद्मधी बाती है (दे २, ११) । काहार प्रेविकिहार, एक आदि को पानी

काहाबण पु [कापापण] सिक्ता-विशेष (हे २ ७१: पण्डर २ पड्(प्राप्त)। काहिय दि किसिकी क्या-कार, बार्टा करते बत्सा (बह १)। काहिक पूर्वि गोपाम प्याना, जी सा (दे२ ६०)। काहिद्विआ की वि तवा विसार पूरी मावि पकायी बाठी है (पाम) । काहीक्ष रेखी का हुय (गम्ब ६ ६)। काद्वानकाम न किस्टियनिकानी प्रचारकार नौ चारा से दिया चाडा वान (ठा १)। काहे व किया किया किस समय ? हि २. ६६. इति २४३ मात्र) । काइण और दिहें ग्रेका साथ रखी (दे र कि देशों किं (हे १ २ एक)। कि सक कि दिस्सा बनाना 'इक्टियं कराते' (विसे ६३) । कनक्र किञ्चत (सर १ 4 2 28 2E) I किल देशों कम = इत (काल १२% प्रामु १३ मन ४ में १४८ वका ४)। किम रेको किम = इस (पर्)। किर्जत वि [कियत् ] कितना (राण)। क्रिजंद वेबो कर्यंत (प्रथ १६) । किञाहिमा ही [कुकाटिका] नवा का उपव माम (पाघ)। किइ की [कृति] इति किया, विवान (पह प्राप्तान्त्र)। कस्स न किर्मन् । र बन्दन प्रशासन (सम २१) । २ कार्य-करण (भ्रम १४३)। ३ वियामणा (व्यव मा १२)। किंस किस्] कीन क्या क्यें, निज्वा प्रश्न परिराम प्रस्तिक भीर शहरम की वतनानेवाना राज्य (द्वे १ २१ ३ ३६-७१ दुमा विपार १ निदू +३)- कि बुरमंति मखीमो बाउ सक्रमोर्ड जिपेति' (प्रामु ४)। स्थाप [पुना] तक किए, किर क्या? (प्राप्त)। किंकत्तव्यया देवो किंकायकाया (बाका २, ર, ૧) ા किकम्म १ [किकमेन्] इस नाम का एक ! काहार पुन दि] कांनर, नहींचे (नुक्र १ १)। गृहस्य (पंत) ।

किंदर पुंकिट्सरी नौकर चाकर, बास (ग्रुपा ६ : २२३)। सच्च दृष्टिस्यी १ पर मेश्वर परमारमा। २ प्रच्युत विष्णु (प्रच ર) ા किंद्रिकी की किंद्रिकी दावी नीकसमा किंकाइअ रको केकाइम (बस् २१२)। किन्नयण्डया की [किक्चिक्यवा] स्या करलाहे यह जानना। मृद्ध वि [मृद्ध] किस्तंत्र्य-विमुद्द हदानदा भीनदा वह मनुष्य विशे यह म सुम्ह पढ़े कि क्या किया जाम (महा)। किंकार पूर्व किञ्चारी भ्रम्मक शब्द-विशेष (सिरि १४१)। किंकिअ विदिीसकेट, चेंत (दे२ ११)। किंक्षियाह नि किंक्स्यवही हदाबदा वह मनुष्य जिसे यह न सुन्द पड़े कि क्या क्या जाय (मा ७)। किंकियमा को [किंकियिका] सुर वॉएका, करवनी (सूपा ११६)। किंकिणी भी किंद्विणी अगर देवी (मुपा ११४ भूमा) । किंकिछि रेखो कंकिछि (विचार ४६१)। किंगिरिक प किकिसेटि सह शट-विशेष. मीनिय जीन नी एक बाढि (राज)। किंप व किल्ला समुबद-चोतक प्रध्यय, धीर भी वृषयंभी (भूर १४ ४१)। किंपण न [किञ्चन] १ हम्प-इरण चोरी (विते १४२१)। र म. कुम. क्रिविन् (वय ₹) ι किंपण न [किञ्चन] इच्य परनु (उत्त ३२, = सुद ३२, द)। किषहिय वि [किश्चित्रिक] पूछ प्यारा (नुपा ४३ )। किंप म [कि किन्तु] मन्य देवत् योहा (भी १३ सम्बद्ध ४७)। किंपियमच वि [किञ्चियात्र] स्वन्य बहुत बोड़ा, यदिवादा (तुपा १४२) । किंभूण वि [किक्सियून] पुछत्तम पूर्ण-प्राय (भीप)। किंशक इं [किअस्क ] पूज-रेण पराप (खाना ११)।

बरते और बोली वगैष्ठ बोने का नाम करती

२४०	पाइअसद्सद्यम्	श्रहुस्स—शसि	
वालुम्स व [बालुच्य] क्लुगरन (मा २)। वाल्य व [वे] टालिक, स्यान टमान का पेड़ (दे २ ९१)।		तह मूनाई कर्मतो बल्हुसहानो हमो बम्हाः (बुगा ६२१)।	
नास्य न [कास्य] १ कली वेरी ना मार्खा २ मुर्चन्व ब्रम्म विशय नामनवन (स ७३):	धप्परल (सम ६४) । काविसायण देवो कविसायण (बीव ६) ।	कास्त्रपार्यु किरसम् । १ १म बाम वा एक व्यपि (प्रामा) । २ इस्तिष्ठ की एक वर्षात्र । २ एक बात की मध्यत्री । ४ वस प्रवस्ति	
१ इस्य का मोस-सर्व विभेश (सूम १ ४, १: रोगो) : कान्येट देवी कास्त्रेय (बीच १) :	कार्ष को [दे] नीमवर्छंदानी हरा रंग की चीन (दे २ २६)। कानुरिस देनों कायुरिस (स ३७१)।	का बागला । १ वि बाक पीनेशना (है ? ४३: बद्)। कासब न [कारयप] १ इस नाम का एक	
कालोप्रियं [कास्मेप्रियों समुद्र विशेष (मण्ड १ ४)। काल्यप्राद्र पुंक्तियोग्रायिम्] इस साम का	कावेज न [कापेय ] बालस्पन, बाजसता (प्रकार २२)।	योज (का ) स्वास्थ्य   १३६ सम्बद्ध । २ वृ भववाल् ऋषमतेन का एक पूर्व प्रस्य । ३ वि. कारमण कोन में स्वास कारमण स्वेतीक (का	

택사 510 (7 CIT एक राग्रीनक विद्वान् (सथ 🕫 १ ) । (44) t कास्रोप र स्थितायी समुद्रविशेष को बावनी-मरह डीए को चार्च तरह पिर कर स्पित है (सम ६७)। काम रेपंदि श्वीतर, बईमी बीम कावड | बोलके लिए तराबृतुमा एक बस्तु इसमें दौती और भित्रुर सटकाये जाते हैं (बीन १ परम ७१, १२)। कोडिय प् (वीव १)। ["कोटिफ] गांवर से बार दोनंबाबा कास पूं[कारा स] र पेन विशेष, कॉसी

(मए) । देनो काय = (वे) । नार्यकृ हे की विही शायर (द्वाप्त १२१) मानोडि । २४४ वर्ग ४ १ द्यो । वावडिम पृंदि] वेवविक कौबर से स्ट्रार बीनेवाला (वडम ७१, १२) । कावध र् [कावध्य] एक महाग्रह, बहुर्यक्ष हारफ रेन निरेप (राज) । कार्यस्त्र हि [के] बनान, सम्राच्या (ह २ २<)। काव छन वि [वावस्थिक] क्यत-ब्रतेप रूप मध्यार (सन वेन १०१)।

वापासित्र र् [वापानिक] वाव-वार्य सवीर . मध्यस्य वा मनुष्य (तुरा १७४३ ३१७ १ t 18: #ft 18x) : पार्वाक्रमा ३ की (कापालिकी) क्लारिक-नारास्थ्या । क्यांनी की (नांच व)। काबिद्ध न [कापिछ] देर-विमात-विशेष (सुप २० प्रस २ २१)। कारिय न [कापिस] १ नाक्य-कार्गन (नाज

१४३)। २ ति सोक्य जनका सनुसादी

(चैप)।

स्रवाय थि <u>|</u>दे| नौनर **रा**इन करनेदाला कास देवो कड्ड ⊏ इप् । क्लाइ (पर्)। कास बङ [कास्] १ वहरना रोक-विशेष से कराव प्राचाण करना । २ वमसना, कॉसी नो पातान अपना। ६ जोबार करना। ४ क्षोक बाना । वह कार्सत कासमाण (पराह रै के—पत्र ४४३ माका) । तंक्र कासिका

दुर्जुमंद सभी सुनियमं वस्त-वीदिवं नियमं (जर ७२८ टी)ः 'कामुदुसुसंग विद्वली' (दारा १८)। १ उसका भूम को परेन घीर शोसाय-मान होता है 'ता तरन निमद्द नृति संबद्धर इप्हालकासर्वकात् (भूग ४२० कुमा)। ४ वर्षिकेष वर्ष्टिन-विकेष (ठा २,६) । १ रतं (ठा ७) । १ संतार, बक्दं (भाषा) । थास देवी कंस = शास्य ( दृ १ २३) वर् )। वासंद्रस वि [कास हुए] प्रमारी संसार कें पासक (प्राचा) । कासम देवो कासय 'चेल चेडरि बीजाई केल बीविट वासवा' (तिच् १)। कासण न [नासन] क्रोत्वारता बाट्डार (बीव २३६)। वासमहरा र् [बासमवैत्र] वनशाति-विदेव **इन्छ-वि**रोप (पर्ला १—पत्र ३१)। कासव ) ई [कर्में हे इंगीवन विद्यान हि कासक है र क्षा नाम):

निर्वा नुषाद नामाई,

कामको करिएएकाई विश्वतिक ।

(शामा १११)। २ कुण-विदेय कास काय-

प रिश्नवान का एक र इस्टिंड की एक कारि। मधनी। ४ दल प्रवस्ति थ विवास पीले बाला (दे**र** ग्पे ! इस स्त्रमान्य एक ग्रस्य १.११ इ.च्य)। २ 🖠 काएक दुर्वद्वस्य । ३ फि. कारमप भीतर्मे छरपद्म कारमप-मोबीव (ठा रु—पत्र ३३ । <del>सत्त ७</del>० कप्पः सुग्न १६) । ४ पूर्वापित हवाम (मग ६,१ भावन)। ४. इस नाम का एक गृहस्य (बोत १०)। ६ न इस नाम का एक 'श्रेतवहदर्श' सुर का यम्पयन (धैत १०)। ष्प्रमयनासिया हा [कार्यपनाशिका] धी-पर्णीयन (भाषा २ १ व ६ वर्ग ३,३, Rt) 1 कासविज्ञाया औ [काश्यपीया] केन पुनिर्धी की एक शाका (क्य)।

नासकी की किन्नरवर्षी १ पूर्विकी वरिग्री (दुमा) । २ नरमक्य-गोतीया श्री (नप्प) । रइ.की रिति मनवान पुमितनाव गी प्रथम रिष्मा (सम १६०)। कासा की [कुरता] बुगेन भी (है १ १२० कासाइया हे की [कायाबी] क्वार-रंत ने वासाई रिया हुई साही सान साही (वास कासाय वि [ब्रायाय] क्वाय-र्यंत्र हे रेख इया क्लारि (परह) । नासार न [कासार] १ तनाव बोटा वधेरर

(भूपा १६६) । २ पक्ताम-विशेष श्रीकार (स १ १) । ३ द्री समूह, बल्बा(बड्ड) । ४ प्रदेश स्वान (गडक) । "भूमि <del>वी</del> ["मुमि] तिराव गरेरा (परा)। कासार न [वे] बानु-विशेष बीसप्रक (वे १ २७)। कासि पूर्व [काफी] १ केट-विचेष वासी निता 'राविति अलुवधी' (तुरा २६) वर्ष रे)। २ नासी देशना सना (दूना)।

किट्र-किश्तमा छनुर्ने मित वाता 🕽 उस तरह मिना 🖫 मा (ডর)। किट्ट वि [किए] कोश-पूक (मग ३ २) भीव १)। किह वि [इ.स.] बोटा हुमा रूस-विदारित (पुर ११ १६; सव ६ २)। २ न देव विमान विशेष: 'जे बंबा सिरिवच्ये सिरिवाम वंद्र सस्तं किंद्र (? हं) चावोएएए**यं** कर एए।बॉडसर्व विमार्ध देवताए ज्यवस्र्णा (सम १६)। किद्विस्ती [कृदि] १ कर्पल ।२ वीवाय शास्त्रयेख । ३ देवविमान-विशेष (मम ८)। कृष न [कूट] देवविमान विशेष (सम श) । घोस न [घाप] विमान विशेष (सम १) । जुन्त न ["युक्त] विमान-विशेष (तम १) । बस्त्य न ["ध्वाता] विमान विशेष (सम १) । प्यस न [ प्रस ] दवविमान ब्रिरोप (सब १)। वण्य न [वर्ण] विमान-विरोप (बन १)। "सिंगन ["श्टङ्ग] विमान-विशेष (सम १)। "सिष्ठ न ["शिष्ट] एक देव विमान (सम ६)। किट्टियावच न [इस्स्थावचे ] देवनिमान-विरोप (सम ६)। विद उत्तरविसग न [क्ष्युक्तपन्तसन] इस नाम एक देन-विमान देन-मनन (सम E) i फिडरा वि [कीडक] कीड़ा करनेवाला (सूच १४१२दी)। किकि व किरी मुक्द, सुमर (हे १ २४१ यह)। किविकिविया स्पी [किटिकिटिका] पूर्वी 👔 की सामान (ग्राया १ १—पन ७४)। क्षिक्रम १ क्षिटिम] रोप विशेष एक प्रकार नासूत्र कोड (बहुम १४८ मन ७ ६)। कि वियासी वि] विक्रिंगी कीण कार (स X 4 4 ) 1 किंदू सक [स्टीव्] चेलना श्रीवा करना। मह क्रिन्नेंस (शि १६७) । फ़िबुकर वि [क्रीडाकर] बीहा-कारक (धीप)। कियास्थी किल्ली र कीवा चेन (निया

216) I

फिजो स [किसिति] क्यॉ क्सिलिए? (र किङ्काविया स्त्री [क्रीडिका] क्रीड्स-धात्री बालक को खेल-पूर्व करानदासी वाई (गुप्पा २ दृश् क्षेत्र २१६३ पाद्य-गा६७ महा)। किएम वि क्रिकें] १ उस्कीए, कुस हुमा १ १६—पत्र २११) । 'जबसकिएएक नद्रपडियन्व' (सुपा ५७१)। कि कि कि कि दे र समीय के लिए जिसको एकान्त स्मान में नामा बाम नइ (वन ३)। २ क्षिस, फॅकाह्या (ठा १)। किञ्चा वृ किञ्चा १ फमनामा बुल-विशेष २ स्वविष्, कृत्र (बहु १) । बिससे बाक बनता है (गडब बाबा)। २ किबिल न [किठिन] संस्थासियों का एक न सुराबीय किएव-कुल के बीज जिसका पात्र, जो बाँस स्त्र कता हुया होता है (सम बार बनता है (बस २) । सूरा की [हैसुरा] 9 8)1 हिएइ-बाब के फल से बनी हुई मंदिए कियासक कियों वरीयना। विराह (हि.४ (मस्य) । १२)। बद्धा 'से कियां किसावेमाओं इस किल्ला कि दि ] द्योममान राजमान (दे २ बायमारों (सूच २ १)। किर्णात (सूपा ६६६) । संह. किर्णिचा (पि ५८२) । प्रमो किछ्णो भ [किंतम्] प्रस्तार्यंक भश्यय किए।वेड (वि १११)। किंग प् किया १ वर्षण-विद्यः वर्षण की (क्या) । किएनर देखी किंतर (वं १ एवः इक)। निद्यानी (यउड) । २ मसि-प्रेनि । ३ सूचा किल्लाध [कथम] स्वीं स्वीं कर, कैने ? मभा ६६)। वान (सूपा ३ किएछा सका किएए। पत्ता (विपार किनइय विदिशोतित विद्यपत (पडम १—पम १ ६)। 47 E) 1 किञ्जूध [किंतु] इत धर्मका सुचक किंगण न क्रियण] दीवना वारीद, व्य सम्मय-१ प्रस्त । २ वितर्भ । १ साहरय । (अपद्भार्थः)। ४ स्वात, स्वस । ३ विकरण (उच्छ स्वप्न हिणा देखो किण्गा (प्राप्तः ह ३ ५१) किणि वि [कृषिम् ] सरीदनेवासा (सम्बोद **34)** 1 व्हि**ल्ह देशा कुल्ह** (बाद्य: ग्रावार १३ बर ६ १८ पएस १७)। किजिकिण बक किजिकिणय किए-कि आह्न दि दि वारीक कपड़ा। २ सहेद किए बाबाय करना । वह किणिकिणित कपड़ा (दे२ ११)। (मीप) । किल्ह्स पुंदि] वर्षकाल में बड़ा बादि में किणिय वि [इद्रीत] नीता हुमा करीवा होनेवानी एक तरह की काई (भीवस ६६)। ह्या (मुना ४१४) । क्रिणिय पू [क्रिणिक] १ मनुष्य की एक किण्हा देशी कण्हा (ठा ४, ६---पत्र ६४१ वाति, वो बाबा बनाठी ग्रीए बबाती है कम्म **४ १३)** । कितव पू [कितव] चूतकर, बूधारी (६ (वर १) । २ एसी बनाने का राम करने-वादी मनुष्य बाठि किशिया उदरहाओं **Υ ≒)** Ι वर्तिवि (५५)। किय देशों किया (बंधि १)। किप्पिय न [किप्पित] बाच-विशेष (एव)। किन्त वेसी किंदू - वीर्त्तयू। मणि किनाइस्सी (पडि)। एंड किचइत्ताय (पच ११६)। किंपिया की किंपिशा केट कीश कुतरी: कित्रण न [कीर्चन] १ स्तामा स्तुति 'तन 'घलेवि धई महिक्डनिद्यम य विख्तान संदि किताई' (बनि ४० ते ११ पुप्पन्तिकिएयपीकिसा । १ ५६) । २ वर्णन प्रतिपादन । ६ वजन, र्मातस्य रकम्पडी व्यक्तवित्यका क्यूनि ब्रिसींड (स १० )। प्रचित्र (निसे १४ ) नवडः भूमा) । १ ७) । २ वास्पावस्त्रा (ठा १<del>० --</del>पत्र किंपिस धक शामियू विशेष करता, देव किचमा की [कीर्वना] कीर्वन, वर्तन ৰক্ষা। কিভিন্তৰ (দিন)। प्रशंसा (शहस ७४६) ।

२४२	पाइअसद्सहण्यको	क्रियक्त - किर्शुकर
किंत्रकल पुंदि किथीय-इस निष्स का येह (देर ११)।	किनाड वि [वे] स्वतित थिया हुमा पुता हुमा (२, ६१)।	पाठरण पुं "प्रावरण]महारेव, तिन (दुमा)ः दर पुं "धर] महायेव तिन (वर्)।
किंगदं(शी)। घ किंमित्रम् किमेतन्   सरकारे (यहः दुमा)।	किंसक्स वि [किंसव्य] सदार, निसार (पण्डु२ ४)।	विंद्रिक्षरं स [किनक्षितम्] किन्ते यगर सक, कथ सक ? (उन १२व स)।
व्हित स [किन्तु ] परनु सेकिन (पुर ४   ३७)।	क्रियमंदी की [किंवदस्ती] वनसूति वनस्त (हम्मीर ३६)।	किष्ण्यस्य [इत्यास्य वष्ट्यास्य (स.स. १)। २ वि वष्ट्यसम्य वष्ट्यस्य (हेर्
हिंसुरम देशो हिंसुरम (एन) । हिंदिय न किन्तु । नर्तुत वा सम्बन्धमा	किसारु पुं [किशारु] सत्य-पूक सत्य का तीक्सा बाद भाग (वे २.६)।	१२०)। १ मिनि दुव से प्रस्ति है (तुर द १४०)।
२ ज्लोतिय में इट साम से पहना जीना महादी सीर दमनो स्थान किरियटसपट्टिय	क्रिसुरम न [क्रिस्तुम] क्योतिपन्तस्य एक क्रिस्ट करणा (विमे १११ ) :	किञ्ज वि [क्रिय] करीको योग्य, 'सर्विज विज्ञासेव वा' (इस ७)।
हुरम्मि (नुपा ३१) ।	किसुल पुं [किशुक्त] १ पक्षात का पेड़ टेयू शक (मुर ३ ४१) । २ त. पत्तात का पुण	किञ्चित देवों कि ≔क्का किञ्चक वि [कुन ] किया वसा निमय
किंदुज पूं [कम्दुक] वन्दुक गर (मरि)। किंपर पूं [वे] कोटी सक्ष्मी (वे २, वर)।	(हृ १ २६४ ६)। विभिन्नि तृ [द] नर्गतंप (१२ ६२)।	(पिंग)। किंद्र सक [कीर्चम्] १ स्ताना गण्य-
किंतर पूं [किसर] १ व्यन्तर देवों की एक ज्यति (प्रतद १ ४)। २ सरवान वर्मनाव	विश्वा की [विश्वीयक्षणा] ननपे-विशेष (शे १४ ११)।	स्तुति करता। २ वर्णेय करता। ३ राज्यः जैलना। सिट्टा, किट्टेड (बरवा स्तु)। यहः
भी के शासनदेन का नाम (सात प्र)	किर्मिक्षीय पु. [किस्फिनिक्षी र पर्यंत-पिरोप (प्रस्त ६ ४४)। र इस मान माएक राजा	किट्टमाण (पै. २०६) । चेक्- किट्टरचा किट्टिचा (चच २६) कप्प) । हेक्- किट्टिचर
1, t)   Y (5 EX (51 )	(पडल ६ १६४८ १ २)। पुर न िपुर]नगरिमरोग (पडल ६ ४६)।	(क्त)। किटुस्पीन[किट्ट] १ वतुकामन मैन
विमार के क्एंड निवार कर	किंच पि [कृत्य] १ नरने बीन्य कर्तमा फरन (गुना ४६१) कुमा)। २ नरकीय	(क्य ४६२)।२ र्चनविशेष (तर ६८४)। ३ तेल, धी वरीष्ट्रका सेवास्त्री प्री
(बीव है)। किसी की [किसी] विश्वर के वी की (बसा)।	पूजनीयः न पिट्टमी न पूरमी जेव किञ्चाल निद्वमी (जल ३)। ३ पू गृहस्य (मूख १	(पमा ६६) । किठुण देखो किसाण (बृह ६) ।
(हुमा)। किंतु म [किंतु] पूर्वपन साचेन सार्वम का नुबक सम्बद (दव १)।	१ ४)।४ न शास्त्रीक घनुसन क्रिया, इस्टि(सामा२ २,२ सूप १ १४):	किट्टि स्त्री [किट्टि] १ सस्योकरकानिकेप विभागनिकेस अञ्चलकोदीय सञ्जलकोन्द्र
क्षिपय वि वि क्षेत्र	कियंव हैं [क्रयमान] र वित्र किया जाता काटा जाता । २ वीकित किया जाता नताया	छविभवर्ष किट्टी (र्पच १२) भावन)। किट्टिय वि [कीर्वित] १ वर्षित, बर्गनित
कियात वे [कियान] ब्राह किय नहरत रिजया दिवासमूच्यकर्त के (तुक १६२ चीत) । २ तः प्रश्नस पत्र जो केल्वे म चीर स्वार में नुत्रस, परमु वाले	नाता (राज)। कियम न [व] प्रजानन, बोना 'ब्राग्सन्देवस्स	(तूम २ ६) । २ व्यक्तिसचित्र,व्यक्ति (तूम २ २ ठा७)।
जो स्पन्न में बार में प्राप्त का जारा करना है। किरायक्रमीक्या दिनवाँ (गुर १२-१३-) ।	क्ष्यद्रवस्थलं क्रियानं च पोतालं (सीव १६ —पत्र ७२)।	किष्ट्रिया स्थ्री [ब्रीटिका] वनसारि-विधेव (पंग्ला १० सम ७ २)।
हिनि स [किसीय] कुछ की (प्राप्त ६ )। हिन्दिस मूं [किसीय] १ स्मन्त देखें	किकारनी [कृत्या] १ नाप्ता नर्नत (का प्रदेश १)। २ जिया नाम नर्ने। ६ वन	मिट्टिस म [फिट्टिस] १ वनी वरनी तिर मारिनाधिन पन्ति पूर्ण (मामु)ः १ ९०
शान्तर वादि (कार १४)। १ एक इन्द्र, (स्थर-निराद ने बनार दिया ना इन्द्र (हा	वनेष्ट्वी पूर्विका एक मेद। ४ आदूत्तरी आदूर ३ रोप-विरोध सहामारी का रोक	मरारं कानूत नूता (म्राकुः ध्यवन)। किट्टिस न [किहिस] १ कन बारिका करें
२ १)। १ निरोधन वनीन्द्र वी रचनेना नायविकति देश (इ.स.१ — एव ११)।	(दृर १२०)। कियारेको कर≃कु।	ववा हुपा ग्रेस । २ उत्तरे श्रा हुपा नूसा । १ जन जेंद्र के बास धारि भी निनार ग
कर पं[कार] मीत की तब बार्जियो रिपूर्यक करड दिस्सा बहा होता है	किवि स्त्री [कृति] १ तुन वर्षेष्ट्र का वसका ।	तुना (बान ६४) । किहा देनो फिट्ट मिट्ट । विहासय नि [किह्मेशन] बानन में निर्मा
(क्रेर १) ।	हित्राक्तपत्र (है २ १२० ६० पह्)।	हमा, एकाकार, केन्ने मुक्तली आरिका विदे

फिरणिष्ठ वि [ किरणयम् ] फिरणवासा देवस्वी (सुर २ २४२)। किराड रे पूं [किरात] १ प्रमार्थ केन विकेश किताय (पर १४८)। २ मीम एक बंगसी स्पा १४१ है पाति (पूर २ र७ १ म १ १८६)। किरात (शी) रेको किराय (प्राक्त वर्ष) । किरि देखों किर = किम (सिरि = १२ = १४)। किरि प किरि । माधु की धावान जलक किरिकि करणइ विधिक्त करणइ विधिक्त रिच्छारो सही (पडम १४ ४१)। क्टिरि वू [क्टिरि] मुकर, सूमर (वजह) । किरिआण देवी क्याण जम्मीवरगदिवपूर्ण विरिमाणी' (बुसक २१)। किरिइरिया ) स्त्री दि । क्लॉपक्लिका, किरिकिरिशा र कार्न से इसरे कार गई हर्दे बात यर । २ क्ट्राइन क्ल्रीक (देश 48) I फिरिकिरिया स्बी दि । बाद-विशेष बाँस धार्षि की नम्बा-सक्त्री से बना ह्या एक प्रकारका बाजा (यावा २ ११ १)। दिरिश्तज रेजो किश्तज (नाट-नाम १७)। किरियासी किया १ क्या ४ किया पार, प्रवस्त (सूम २ १३ ध्रा ३ ३)। २ शास्त्रोक्त सनुप्रान, वर्मानुद्रान (सूध २ ४) पव १४१)। ३ सावध व्यापार (मग १७ १)। ४ द्वाण न िस्यानी कर्मबन्त का कारण (सूच २, २ माद ४)। यर वि ["पर] सनुहात-पुरात (पर्)। **बा**द्र नि ["बादिम्] १ धास्तिक कीवारि का प्रस्तिक माननेवाला (ठा ४ ४) । २ वैनन क्रिया से ही मौच होता है ऐसा नाननेपाला (सम १ १)। विसास न ["वराष्ट्र] एक वैन बन्दारा तेयहर्ग पूर्व-बन्द (सम २६)। फिरीह व [किरीट] नुष्ट, शिरी-पूपश (दाय) । क्रिरीकि में किरीटिन मार्जन मध्यम पाएका (वेली १६२)। किरीत वि किति विना हुमा, चरेना हुमा (प्राप्त)।

प्रतृतें बताप्र मनेन्य वर्धत (राज)।

किरोज्य न [किरोलक] फन-निरोप फिरो-विशा बाबीका फल (सर ६ १)। किस देवी किर = किस (हे २ १८६ यटा कुमा)। क्सित वि क्रिान्ते विल्ल, मान्त (पर्) । किळंडान किसिक्त वास का एक पात्र विसर्ने पैया वर्षेया को जाना विमाया वाता है (उपा) । क्रिसंच न क्रिसिस्त्र] तूल-विशेष (धर्मीव १३१ १३६)। किन्नकिन पर [किन्नकिनाय] जिल किस धानाज करना हुँसना किसक्सिक् न्य सहरिस मिखन गोर्किनि एरिनेएए' (नप्पू)। क्षित्रकेराह्य न [क्षित्रकिरायित] निम क्षित्रं व्यति इपं-व्यति (धाषम्) । फिल्मणी स्त्री दि रिष्या, यसी (दे २ ६१)। विसम्म पर [क्रम्] क्लम्ब होना, चिप्न क्षोता । क्रिसम्मद् (क्रप्पू) । विद्यम्मति (बजा ६२)। बङ्ग फिसम्मीत (पि १६६)। किस्मचक्क न किरिहाचकी इस नाम ना एक सन्द-भूख (पिय) । किस्प्रश्च पु [किस्पट] तुव ना विकार-विशेष मलाई (दे२ २२)। किसाम एक किसाय दिनान्त करता चित्र करना ग्वानि उत्पन्न करना। किनामेळ (पि १६६) । मक्त किसामेंत (भग १ ६) । कवक किसामीअमाज (मा ४१)। किन्द्रम पुक्तिमी चेद्र, परिवन ग्लाकि **व**मित्रको ने किसामी (पश्चि विसे २४ ४)। किसामणया स्वी क्रिमना विका करना सरान करना (भग ३ ३)। किस्यमणा स्थी क्रियना विषय क्लेश (महानि ४)। क्रिज्ञामिल देनो क्रिसंड (प्रमु १३१) । किस्समित्र विकिमित्री किय रिया हमा हेरान फिला हमा शीहरा 'वएहाफिनामि धाँगो (पडम १ ३ २२: मूर १ ४ व)। किस्तिप न [वे] घोटी सरग्री सक्योश दक्का देनेहरनोटलयं फिल्पियमित्ती स्विन-रिली (भन्न १ र नाम दे २, ११)। किर्दिशिम न दि जिसर देखी (मा व )। दिरीय व [विरीय] र एक म्लेक्य केत । २ । किकित देवी किसेत (बार--मुख्य ११) वि 235) I

कि खिकिंग मा रम् रमण गरना श्रीका करना । किलिकियह (हे ४ १६८) । किस्टिकियम न रित रमण भीड़ा संगोम (दमा) । किसिक्स पर दिलक्सिया । शिम-शित मानान करना । वक्त किस्टिक्सित (उप १ ३१ टी)। क्रिनिक्रिक न क्रिकिकिन्ति इस नाम का एक विदायरनगर (इक)। किटिकिसिकित रेखो किसकिछ । यह विक्रिकिसिकिसिकांत (परम ३३ c) । किसिगिस्थित [किशिकिस्थित] 'किन-किन' मानाम करना प्रपं-धोतक व्यक्ति-विरोप (स ३७ ३८४)। किसिद्ध वि क्रिक्ट र बनेश-पूक (उन्न ३२)। २ कठिन विषय । ३ वसेश-वनक (प्राप्त हे २१६: उदा)। किसिज्य देवी किसिज (स्वय = १)। किकिन्त वि [क्लुस] बरियत प्रवित (प्राप्तः पद् क्षेत्र १४३)। विद्विति स्त्री किलासि रचना कस्पना (पि ११)। कि किम कि [फिला] यात्र यीमा (हि ह १४**१,** २ १ ६) । किसिम्म देखी किस्तम्म । किसिम्मद (पि १७०)। बद्ध-सिक्षिम्मंत (से १ व ११ कि कि मिन वि दि विता एक (देश ₹**₹**) i किस्तित्र देखो कीय (बंद २० मै ४३) ( किसिस यह [क्रि] अर पाना यह जाना, बुन्ती होगा। वह किस्टिमीन (परम २१ ६⊏)।

किसिस रेपी किसस "मिन्द्रसम्बद्धमीयाल किविसर्गातनम्म इट्टागु (सूपा ६४)। किसिमाञ वि किसेशित । भागांतित क्लेश-प्राप्त (स १४६)। विश्वस्य देशे क्रिसिम् = क्लिस् । विश्वन्यक्र (महार दर)। वह किसिस्सीत (नाट---माल ६१)।

विश्विरिसञ्ज वि [कि.ए] वनेरा-प्राप्त वनेरा-

मुक्त (कर प्र ११६)।

कित्तव वि [कोरोंक] कोर्तनका (पन २१६ टी)।

कित्तवोरिम देवो कत्तवीरिअ (ठा ८)। कित्ता वेवो किया = इत्या (श्रक्त ४)।

क्षणा क्षणा क्षणा क्षणा (प्रक्रण) । स्थित ब्राह्मिंड १ वत क्षणि मुक्सिंड (सीरा प्राह्म ४६ ४४ - द) । २ एक विधा-केरी (पञ्च ४ १४४) । ३ वेदारिन्यू क्ष सिंद्याची वेदी (दा २, १ —पद ४९) । ४ केन्न्रतिगा-क्षियं (खाया १ १ टी-—पद ४६) । १ रक्ताचा प्रतेशा (५व १) ६ मीत्राक्त पर्वंड का प्रकृति (वं४) । ७ दीवार्ष विभाग्ने के पुरुष्ट विवार्ष पाय

ु रख नाम का पण कर हुना नजक पास पोष्ट्र कर्मक में विशा को में (द्वार २ २ १)। कर वि [कर] १ नक्तर-क्वारित्सप्टक (द्यामा १ १)। २ १ प्रमान प्राचित्स के एक हुन का नाम (प्रज)। चंद १ चित्रज्ञ] दून-विरोध (बाम)। पर्मा १ चित्रों इस नाम का एक पासं (देवे)। २ एक केन पुन्ति हुन्तरे क्लोक के पुन्त (क्या २ २ १)। पुन्ति १ विद्यों वैरोजिसमान पुन्ता मामुकेस

एक को (जत १३)। व वि [ त] कीर्त कर नगरकर (ग्रीत)। किसि स्थे [कृति] वर्गे वनका कूछा मनकुत कर्मकरीय (काम १३ व्य ६४)

भौ ख (ठा १)। स वि [सन्] की हि-

<u>इत्</u>ड। स**ई क्**रैं [मिनी] १ एक कैन

सामी (पान)। २ ब्यूक्त कनवर्तिकी

वण्या ४४)। विश्विम वि [कृतिसम ] वनावटी वनसी (तुमा २४ ६१६)।

(दुन रक १११)। विभीय पि [क्षीपिय] १ नक, क्रीक्य किरिप्यपित्रमिद्दियाँ (पति)। २ प्रसंक्यि स्तारिय (क्ष. २ ४)। ३ निक्शित व्रक्ति-गरिय (क्ष.)।

किष्यिय रि [किसम् ] मिल्ला (एउड) । किस्म वि[किस्म] साथ जीला (१४ १२६) । किस्मू फेडो कस्मू (नप) । किसाइ वि [बे] स्वतील निच हुमा (बड) ।

किविक्स न [किविक्य] १ पार पताक (स्वदू १ २)। २ मीस 'निम्मर्य क से बीवनाडेस किव्याय' (स १६६)। १ प्र बाह्यम-स्वातीय के नामि (सम १२ १)। ४ कि मतिल। १ स्वया जीव (स्त १)।

६ वापी दुए (सर्मे १)। ७ क्यूंर, विशवस्य (तंद्र)। क्रिकिस्तिस्त दुं [क्रिस्तिविक] १ वापस्त्रस्त स्थापीत देन-बाणि (स. १ ४--पच १९२)। २ केशन नेपाणी साथु (मन)। १ वि स्थाप नीच (तुम १ १)। ४ पान-जन्न को मोनवेससा बरिस रोष्ट्र वनेस्यू

(खाया १ १)। १ भार-नेश करनेशबा (भीप)। विशेषियसिया स्था [कैस्बियिकी] १ मानना-विशेष वर्ने-पुत्र वर्षेख्य की शिव्या करने की मास्स्य (वर्षे १)। २ केनल वेद-वार्ध साम्

की दृति (घन)। किम (घप) य [कम्पम्] क्वॉं वैसे ? (है:

४४१)। किमण देनो किश्रण (ग्राचा)।

किसस्स पु [किस्प्य] नुक्तिकेय विवर्धे इस को धीना में हुएवा का धीर शार नक्ते है वो सक्तर प्रकाश (किस् १)। किसी पु [किसि] र कुत्र कीन कीट्निकेय (स्प्यू १ १)। २ केट में पुनकी में धीर कार्योर में उत्तरण होनेकना कम्युनिकेय

(बी १४) । वे श्रीनिय कीट-विरोध (पराह १ १---पत्र २३) । य न [ बा] इस्ति-रुत्तु शे करण्य वरुर, 'कोचेव-रुत्तुनाहै वे हिस्सिने दु पहुक्त्वर्ष (वंच्या) । रात राय चू [ राग] किर्यमेची का रंग (कस्म १ २ ; वै १ वर) भराह २ ४) । रासि चू

["राशि] नगश्यक्षि निरोत (प्रवृत १— पत्र १९)। विभिन्नरावसम्म [वै] देशो विभिन्नरावसम्म (पर्):

विभीत्रकाष व [विभीतकार] इक्स्पुतार त्रत (त्रसा १ व--पत्र ११ )। विभीता वि [कृतिमत्] इतिनुष

निक्षित्रहरूरीकानेतु' (स्टब् २ ४)। किमिराव वि [वि] नमा से रख (वे २, ३०)।

क्रिमिहरवसाज न [ वे ] क्रीशेवनस्थ, रेक्सी वक्ष (वे २, ११)। किस्म च [क्रिस] इन संबंधित सुबक सम्बन्ध-

क्ष्मुच [क्ष्मु] शासनाकापुरक्षण्याः १ प्रस्ताः ५ विष्कृतेः वे कियाः ४ निरेषः (हु२ २१७ दिस्)ः किसस्य स्मृतिकस्तो इत सर्वो वानुवक्षः

किसून व [किसून] इर वर्ग ना नृष्ण प्रवास—र प्ररुपः १ देशकर १ देशकर ४ प्रीठाव (हे २, ११०), 'व्यारणस्माईने दि पूर्वर ठीडू विद्युप केविंदु' (चिंव १ ११)। किस्माय न [दे किस्मान] नहुस वाल (एन)।

(ध्या) । किस्मीर हि किसीर ] १ कर्नुर, क्रमय (मध) । २ वृ एक्षक-विशेष स्थिने मीमछन ने माछ ना (वर्षी ११७) । ३ वेठ-विशेष ज्ञाना किस्मीरवर्षि (रेख) ।

किय केबो कीय (पिंड ६ ६)। कियंत्र कि [कियत्] किटना (बस्तर २९८)।

क्रियाम नेवी क्यरंग (प्रीम)। क्रियाम्य देवी क्रम्यम् (श्री ७२० टी)। क्रिया देवी क्रिटियाः 'हर्ग गर्छा फिनाईपीं (हे २ १ ४): 'परप्रयुद्धारी स्त्री पर्णा निरुक्षी क्रियामरो नेवरं (श्रप १६४) निर्णे

११८९ टी कम्मू)। किसाबिया स्त्री [दे]कालक्ष्ट्री कानक्ष्यं असर्थे भाग (वग १)। किसाम् केबो कर ⊐क्षः।

कियायन न [क्रमाणक] किराना नन्त-मसाला मारि केलने योग्य शीर्त (पुर १९) किर प्र[क] सुकर, सुमर (६९, ६ : वर्ष)। किर म [किस्स] एक मनी का सुकर मन्यन-१ सीमाला। २ मिननमा। १ सि

निरिचत कार्या। ४ वार्त-विश्वय सर्व। १ सर्वत : ६ सबीक, सरस्य। ७ छेल्प विश्व (६२ १ द६, वहा वा १२६० प्रत्यु १७० वत १)। पावपूर्ति में भी दबका प्रयोग होता है (कस्प ४ ७६)।

किर सक [क] १ क्षेत्रमाः २ ततास्यः फैनलाः ३ क्षितेरमाः सङ्घ किर्देत (से ४ १ वर्ड १४ ५७) ।

किरण प्रत [किरक] किरल परिम प्रमा (तुपा १११) श्वका प्रता २)।

किरोहर न किरोहर किन-विशेष किरो-किछिकिय महस्मि एमण करना हो द्वा फिरियक्त नि किरणपम् ] निरखनाना करना । विधिष्टिपद् (हे ४ १६८) । विशासक्षी नाफन (उर ६ ४)। तेवस्वी (मर २, २४२)। फिलिबिजिल न रिती रमण कीका संमोन क्रिराह ) प्रक्रियत | १ मनार्व देश निदेश किछ रेको किर = निस (हेर १८६) यदा किताय ) (पर १४०) । २ मील एक अपनी दुमा)। (क्या)। दिस्तित वि क्षिपन्ती विगव, मान्त (वह ) । वाति (नूर २ २७:१८: मुता३६१ हे बिसिकित पर विस्वित्रसम् । विन-विन किसंजन क्रिक्किओं बांस का एक पाप याबान करता । वह दिलिक्सित (छा १ १८३) । विश्वमें मैया वगेष्ठ को खाना खिसामा जाता किरात (शै) रेको किराय (प्राष्ट ८६)। १ ३१ टी) । है (उदा) । किब्बिकेबि न [किसिकेबि] इस नाम ना दिरि देनो दिर=तिस (सिरि व्यव क्ये४)। किरि पूँ किरि] मामू की माकाज 'करमइ किर्देज न [स्टिक्सि] दुन्तु-विशय (वर्मीव एक विचायरतमर (इक)। विधित करपद विधित कन्पद दिशित ११४ ११६)। किटिकिलिकेट रंगे किसफिट । क्र क्टिक्ट मरु [क्टिक्टियाय] कि रिच्याएँ सहाँ (पउम १४ ४१)। किव्यिकिमिकिलंत (पदम ११ ८)। किल पादान करना हैंगना 'निमरिनद किसिगिलियन [विश्विविसित] 'विसर्-विम' किरि नू [किरि] मुक्ट, मूपर (गउर) । व्य सहरिसं मणिएं नीकिनिणिरिवेण' (नण्र)। किरिआण देशो क्यांग 'जम्मेतरविधाुम्न माराम करना हर्प-योत्तर व्यक्ति-विशय (स क्रिकेस्यइय म क्रिकेस्यायती क्रिय रिरियाएँ। (रुवक २१) । To Tet): फिस प्यति इपं-प्यति (मारम) । दिस्टिट रि [क्रिप्ट] १ क्नेस-पूक (उत्त १२)। किरिक्रिया ) स्त्री [वे] १ क्लॉरकॉलका फिरिफिरिका ) एक बाव में कुमरे बान मई किसणी स्थी दि रिप्या, यूनी (दे २ ६१)। २ वटिन विषय । ३ वनेश-जनक (प्राप्त हे विश्वम्य प्रक[क्रम्] स्थान्त होता विश्व हर्दे बात या । २ धुनूत्व कीनुक (दे २, २,१६ इन)। होता । विसम्मद् (कृप्प) । विसम्मस् (बजा बिक्रिणा रेको फ्रिक्सि (सप्त ६१)। **(1)** ६२)। बद्र फिल्प्स्मंत (पि १३६)। দ্বিভিন্ন দি [ৰন্তুম] দলির ব্যবির (মাস क्रिरिक्रिरेया स्त्री वि वे वाच-विकेय बांस कियाच्यान किरिद्याचकी न्यानाय ना सादि की कम्बा-सकड़ी से बना हमा एक पर्देश १४२)। एक एन्ट--- बत्त (विष्) । किलित्ति स्थी [क्लुमि] स्थम कप्पना प्रकार वा वाजा (मावा २ १११)। फिसाइ पू [किसाट] दूव ना विनार-विशेष किरिशाम देशी किसाम (गाट-मास ६७)। (रि ११)। मनाई (वेर २२)। किब्सिम विक्रिया यात्र योगा हि १ किरियासी किया १ क्या इति ध्या किसाम सक किमम् विनान्त करना निप्न trx 2, t 1) 1 पार, प्रयान (मूच २ १) टा ३ ३)। २ बरमा बनानि उत्पन्न करना। कियासब विकिम्म केरी किञ्जम । विधिम्बह (वि शास्त्रोक्त चतुनान, धर्मानुहान (मूच २ ४ (पि १३६) । बर्ट फिलामेंन (मन ४, ६) । १७३)। यह सिजिम्मन (मे १, ८ ११ पद १४१)। ३ सारच व्यागार (भग १७ वदर किसामीभगाण (मा ४६)। **7** } : १)।४ हाज न [रिधान] कर्मकम का किसाम पुझिमी धेः परिधम ग्लानिः विखिमिना रि [रे] वरित नक्क (१० **बारण (मध्य २ २ बाव ४)। वर वि** 'यमिन्डिमी में किसामी' (पढि विस २८ ४)। ₹**₹**) i िपर मनहात-पूरान (पर )। बाइ वि किस्रामणयास्यै क्रि.सन्। निर्मनरतः किस्तिय देनो कीव (वद २; में ४३)। वित्रम् । १ मास्तिक भौवादि वा मस्तित्व बद्धमा बदना (भग ६ ३)। किसिस यह [हिन्] सेर पता का मान्तवाना (ठा ४ ४) । २ वेदन विया से किन्द्रामणास्त्री क्रियनाी करण करेत भाना दुर्मा होता। वह किन्तिमंत (गान ही नोध होता है ऐसा नाननेशासा (सप (बर्गान ४) । १६)। पिमास न विशासी एक ₹ ₹e); क्रियमिज रही हिसंद (पण् १३१) । वैन प्रम्बोश, तेकारी पूर्व-प्रम्ब (सन २६)। विजिम रधोकियम विमान मू-क्रियमित्र कि सिनित्र निय तिया हता क्षिष इ [क्षित] दूतर, किये पूत्रण रिनियम्तिन्दिम हरू । (मय tr) । रेखन विया हुमा नीहिक 'वएक्राविनामि (काम)। हिन्दिमञ्ज वि[क्निग्रित]हरू हो-र्धदी (परम १ व २२ पुर १ ४०)। विरीदि पूँ [विरीटिन] घटून बच्चम बाल्डव किल्पन [र] योग नर्गा सर्गा न मान (व १४६)। (रेगी ११२)। दुवडा देवंडरमेट्छर् विविधिवर्तिः स्थि हिन्त्रिम **रे**वो ब्रिन्सि व किन्। तिनिन्द विधीन वि [कीत] क्षेत्रा हुमा, संवेश हुमा रिली (बन १ रा शका देश ११)। (न्या का)। वर विकेता (नर-ा विश्विम न [व] स्तर देलो (ग्र व )। (प्राप्त)। विभिन्न केनी विश्वन (नाट-मृत्य २२) नि विश्विमात्र नि [हिन्] कन्द्रन कह मच ११)। बिरीय र् [विरीय] १ एक म्लेक्ट देश । र ' एत्वे बनाप्र क्लेक्ट वर्डा (राज)।

\$3 (#1 111);

बनम् (पत्रम २२ ७१)।

(48) aps x 21)

किया देखों बिद्वा (में ६१)।

१६-- तम २ )।

निर्वे (या) रेगो वह (दुमा) ।

दवानु (पडम १२ ४७) ।

१६ : हि १ १२० नाता)।

(TT# 17 2 E0 2 )1

बह (दे दे दे )।

निर्मासय दि [इस्टीत] दुःची दिया हुमा

किन प्रक्रियों १ इस नामना एक ऋषि

इपाचार्य (हे १ १२व) "बाइमयसमरने

रेनेचे चिट्टर बोर्ल अवदर्ह सबसी बीब

(१ सदिन निर्म) माउन्हानं (हामा १

किनम वि [इपण] १ गरीन रंक दीन

(नप ११ व मन्द्र १७)।२ शक्ति

निर्धेत (प्रस्ट १ २) । ३ क्यूम कराता

(दे २ ३१) । ४ नतीय नायर (नूम २ १)।

१२)। दम्स रिपमी इपाश्रास,

कियाम पून [इपाम] बहन तनशर (नुम

क्रिवालु वि [कृपालु] स्वातु, स्वा वरनेशाला

विविद्य न विशेष सारितान सम साठ करने

नान्यल । रेति चनिरल में जीहमाही

किया स्थी [कृपा] बमा मेहरवाली (है है

(R t trt): णामिभित्र सोजन विशेष (दे१ १२८ दे

किसय व्ये किसयी विवर्ग पावन-वास t = ): । फिसक देवी फिसलप (हे १ २६१ दुमा)। किससङ्ग हि [किसलयिव] संकृतित सर्व भे**ष्ट्र**रवाला (सुर १ ११) ।

किससप पुन [किससव] १ बूदन संकुर (मा२)। २ कोमन पत्ता(की र)

'सम्बोधि विसमयो बन्नु रूपमामाशो धर्म्नदेशी भिष्मी' (पर्व १)। मास्म भी "मास्मी धन्द-विरोप (समि ११) । किसा देनो कासा (हे १ १२७) । किसाल प्रंकिसाल रिमान वी, माग।

कीटा केटो किट्टा (नूर १ ११६) धना)। २ पुरर्भवितेष विवक्त क्या । वे तीन की भीडाविया देखो किङ्गाविया (राज)। **भौम**या (**१११ १२ व**० पष्ट् ) । कांडिया औ [कींटिका] रिगीरिता चीडी किसि की [कृषि] लेती जान (विसे १६११ (IT ! ! !!) 1 मुर १३ ३ प्राप्ती । क्रिसिम वि [कृशित] दुवैनतान्त्रात, क्राताः

कीडी की [कीटी] कार देवी (का १४० में ₹ **₹ ₹)** i দুক (ৰাধ ৰহাধ )। किसिम है [कृपिन] १ विनतिन रेवा कीण सक [सी] सरीदना, नोन वैना। मीराष्ट्र, मीराप् (पद्) । श्रीषः, मीरिएसर्व तिया हुमा। २ औता हुमा इट। ३ कीचा (fr \$221 \$28) i

इमा (दे१ १२≈)। पीमास पुंदिशनाशी सम वन (पाम नुग 'नाम परस्य कर्म मार्चित रिवीतना वृद्धि १६९)। गिह [गूह] मुनु मीन (का ttt et) i (पा १६)।

किमीबस पुं [हपीपस] वर्षक रिवान किसोर 🖠 [किरोर] बाल्यावस्था के बाद वी कीरिस (री) देनों कीरिस (मार ३) । धरम्बाराचा बानक 'सीर्ट्रारबीरीमर दुरायी कीय रिकिंति] १ गरीस हमा नोच निवा नियमें (न्य १४१)। हुमा (बन वेटः बर्स्स वे, ई नुपा वेश्वर) ।

विविद्या की दि । दिशाद बार्स बार २ वर का सिंद्रना बांधन (दे, २ ६ )। विविश्व रेची क्रियम (हे १ ४६ १२८) वा १६६ नुरवे ४४ आनु दश बाह्य १ १)। दि दिशानि पूँ [इपीटवानि] यानि किसारी की [किशोरी] दुनाये व्यक्तिहरू पुरनी (गाना १ १) । किस्स केनो किमिस व क्षित्। संद्र किम्स

(मामत ११६)। शिय नव किरायू] हानित बरका पर्तादत रामा । सिग्स् (कुंब १२१ १४) । श्यिष [इस] १ दुर्वन निर्देन (प्रतर ११६) । र पामा (११ ११४ हा ४ २)। सिंदी साम र रहे।

इता (नूब १ १ २)। किट् देशो वर्ड (पाचा नुवा भाव १ ३)

२ जैन साधुकों के निए जिल्लाका एक बीव

42**4**) i

পারি (তর १)।

कुछ (नरह) ।

मुपा 🗫 🕽 ।

tt=):

कीं दें [कीट] १ नी हा सुप्र वन्तु (स्त्र)।

२ वीट-विशेष चतुरिविषय जन्तु की एक

भीडद्र वि भीटयत् | कीदावाना नीतक

कीडण न [कीडन] चेत क्षेत्र (दुर १

कीडन पू [कीटक] देवो कीड = बीट (नाट

कीवन न [कीटक] भी हे के छन्तु है जनस

होनेवता नक नक-विरोप (प्रपु) ।

(डा३४) । ३ त क्य, खरीर (स्त ३ पुष १ ६)। कद सदक्ष [कुन] १ बूल्प देशर निवाहका (इद १) । १ बार्ड के निष्धान ने बीता हमा, बैन बादु के रिर क्तिनानोत्तनुष्ठ बल्तु (ति १३ )।

क्रिकीय-कीव

१६-- यम २ १)।

द्ये-पत्र ६)।

२१ उट १ १४)।

कीयग र् [कीचक] विचट देश के चना का

साला जिसको भीम ने मारा था (उप १४व

हो) 'मबर्ग हुएं बिराइनयर, दन्द ए तुर्ग

क्रि (? की) वर्ग घाउम्प्रवसमयने (गावा १

क्रीया की [क्रीका] मयन तारा 'मरकतम

सारकसित्तनकछकीमचसिकम्न' (खामा १ १

कीर पुंचि कारी कुक बोबा मुन्सा (वे २

कोर १ कीर] १ देश-विशेष कारमीर देश।

२ वि इतरमीर देश संबन्धी। ३ वि कारभीर

देश में उत्पद्ध (विशे ४६४ है)। कारव कीरमाण } देखो कर = ह । कीरक पू [कीरक] देश-विरोध (पडम १० 44) I बीरिस रेखो केरिस (वा ३०४ मा ४)। अदेशी की [कीरी] सिपि-पिरेप भीर देश की क्षिति (विते ४६४ ही)। -दीख सक शिद्ध | शीदा रुप्ती, बेसना। नीसइ (प्राप्त)। बहु- कीलंव कीसमाण (शूर ११२१ वि २४)। संक कीसेचा क्ष्मीसिकल (मुर १ ११७ वि २४ )। **ब्दी** अक्षि कि दिने स्तीक पत्र कोहा(के २ 31) 1 🛍 🗷 रेशो स्त्रीस (पाप) । क्की छ पुन [दे की छ] क्ठ पता (सूम १ ६, 1 (3 5 कीक्षम न [कीलन] कील से बन्दन, बीबे में शिवन्त्रण "फरिपाणिशीवण**ुन्धं विम्ह**रियं पुरुविक्कीए (मोस् २ )। क्षीस्त्र न [माइन] क्षेत्र केत (पीप)। बाइ की विश्वती वितर को बेत-पूर रक्षनेवानी बाई (खामा १ १)। कीसगाञ्च न [क्षीडनक] विसीना (यमि २४२)। कीसणिया ) भी [के] रच्या गणी (के २ कीकणी ) ३०)। ब्दीसा की [दें] १ नव-वयु दुनहित (दे २, कीस्य की [कीस्प] मुख्य समय में रिया बाता भूबय-ठाइन विशेष (दे २ ६४)।

कीस्म की किरोड़ा देन कीवन (पुपा १८०) म्र १ ११७)। बास पूं ["बास] कीका करने का स्वान (इक) । कीसास न [कीसास] सीवर जून एक (स्प ८६ पाम)। कीव्यक्तिम वि [बीगालिन] रविर-पुन्ह, नुनवस्ता (मटड) । कस्यवग न [फीडन] क्व करामा (साया १ २)। कीस्राव्याय न [स्तीइनक] वित्तीना (निर कस्टिल ग [कीडिव] क्रीण रमण कीइन ! (सम १६३ स २४१)। की सिम वि [की बित] ब्रॉटा लैका हुमा "तिहियन गीतियम्य" (मद्राप्त मुपा २६४)। कीक्रियास्त्री [कीक्षिका] १ क्षाय पृष्टा, मूटी (कम्म १ ६१)। २ शरीर संहतन-विरोध राधीर का एक प्रकार का बीधा । विसमें हरिया केवल मुद्दी से बेंबी हुई हों ऐसा राग्रेर-बन्धन (सम १४१) नम्म १ ११)। कीव पूं [क्रीय] १ नर्नुसक (इह ४)। २ वि कावर, घकीर (मूर २ १४ ग्रामा १ १)। कीव पू [ब्रं कीच] पवि-विरोध (परह १ १—पन ८)। कीस वि किटियाँ कैमा विस शख्या (भगः पएसः १४)। कीस वि [फेस्य] कीत स्वताववाता कैसे स्वनावका (मन)। कास म [कम्मान् ] क्यों किस से क्रिस नारख से ? (उस है १, ६८)। कीस रेको क्रिसिस्स । कीसीत (कत ११ ११, वे ३३) । बहु की संतु (वे ८३) । कुम [कु] १ सन्य थोड़ा। २ निधिक, निवा रिटा। ६ कृत्रितः, तिन्दितः (६) २ २१७; से १ २६ सम्म १)। ४ विरोध ज्यास (साम १ १४)। उरिस पू विद्या बराव माश्मी दुर्वेन (मे १२ ३६)। बर वि विषये कराव चल-चसन्त्राला, सरावार रहित (याचा)। "इंड 🛊 ["दण्ड] पारा-क्रिय जिसका प्रान्त माप कार्य का होता है ऐया रम्यू-पाड (परह १ ३)। बंबिम वि ["ब्धिम] दएड देनर छीना हुपा प्रस्य

(बिया १ ६)। श्वेस्य म ["वीर्थ] १ बनाराम में उत्तरने का खराब मार्ग (प्रामु १)। २ दूपित क्रॉन (नूप १११)। ६ । देरिय कि "सीर्चिम् द्रियत मध का यनुमानी (कुमा)। दंखिम देखी इंडिम (एगया १ १--पत्र ३७)। ईसम न ["दर्शन] पुष्ट मठ पूपित वर्ग (पएए २)। डमणि वि विद्योनियाँ १ दुप्र दाराँविक। २ दूपित मत का सनुबायी (धा ६) । "दिहि स्त्री ["दृष्टि] १ हुरिश्चत क्याँन (श्च २०)। २ दूपित मत का धनुमामी (वर्ग २)। (व्ट्रिय वि ["दृष्टिक] पुष्ट दशन का धनु यायी मिय्यान्ती (पत्तम ६ ४४) । प्यत्र-यण न ["प्रवचन] १ दूपित शाम्त्र । २ वि दूषित सिकान्त को माननेवासा (मणु)। प्पाववणिय वि "प्रावचनिकी १ द्रपित सिजान्त का सनुसरस करनवाला (सूध १ २ २) । २ दूपित सामम-संव वी (सनुप्रान) (मण्) । सत्तन "भक्ती चयद मोदन (परुष २ १६६)। मार्ट्र मार्ट्री कुष्पित मार (मूघ २, २)। २ घरमन्त मार, मृत-भाग करनेवाना तावन (शाया १ १४)। रंडा स्थे "रण्डा" रोड़ विवस (मा १६)। स्व त्यन कियी १ चराव ब्स (उस १६२ टी पएड १४)। २ मामा विरोप (सग १२ ३)। "खिंग व "सिक्का] र दुर्लिक भेष (३६)। २ दू और वस्पद् सुप्र चन्तु (विते १७१४)। ३ वि नुरीनितः दूषित वर्गे का घतुषायी (धालम)। विदेशी पुंखिकिन्दी १ तीट वर्गेषा सत्र कल्प (मोर ४४८)। २ वि कृतीविक सतस्य वर्गे का सनुपारी (परहर २) । वस म ["पद् सराव राज्य सो सीहर पूर्वतो कश्यणस्थार विविष्टक्षाई । को मॅनिकण हुनमं समार्थ सुंदर देद' (यज्ञा६)। "बियप्य पू ["विकस्य] दूरिएत विचार (गुग ४४)। बुरिस केवी उरिम (प्रज्ञ

६४, ४४) । संसरत पुं [संसर्त] कराव चोद्दर दुर्नेन-चंत्रदि (पर्मे ३) । सरद पुन

िंशास्त्र] दुष्टित शास्त्र धनात-प्रणीत विकाला 'ईपरमयाह्मा सब्हे दुमन्दा' (निद्

इंडभी भी वि इत्या] धोरी पणका ! (घानम) । कुंडमोअ पुन [कुण्डमोद] हायी के पर की बाहरिकाना मिट्टीका एक वर्षाका पात्र (दस ६ ६१)। कुंडल पून [कुण्डल] १ एक देव-विमान (रेबेन्द्र १४१)। २ तप-विशेष 'पुरिमङ्क' या निविद्वतिक द्वा (संबोध १७)। कुंडल पूर्व क्रिक्डको १ कार्यका माभूपण (भग भीत)। २ पू विवर्ग देश के एक राजाका नाम (पडम ३ ७७)। १ हीत-विरोप । ४ समूत्र-विरोप । १ देव विरोप (जीन १)। ६ पर्वत-विरोप (छा१)। ७ गोत मारार (मुपा ६२) । सद् व ["भद्र] कुएडल डीप का एक समिष्टासक देव (भीत ३)। संख्याचि ["सण्डित] १ दुण्डम से विमृष्टित । २ विद्यम देश का इस नाम का एक राजा (पतम १ ७४)। महासह र्षु [सहासन] देव विराप (शीप १)। महायर प ["महावर] दुग्रस्पर समुद्र ना प्रविष्ठाता देव (सुन्त्र १६)। पर पू िंबर र शीप विशेष । २ समुद्र-विश्वया ६ देव तिरोप (बीब ६)। ४ पर्वेत-विरोप (हा ६ ४)। यरभद् पू [ बरभद्र ] कुगदसंदर श्रीप का एक मनिहासक देव (जीत ३)। वरमहाभद्द वृ विषरमहा भन्न] पुरुवत्तर श्रीप ना एक मधिहाता देत (बीत ६) । यधेमास पू ["यख भास १ होव-निरोप । २ सपूर विरोप (बीर ३)। वरामासमद र विषय भामभन्नी कुण्डसनयक्याम होप का यपि हाता देर (और ६)। वराभासमहाभद र् ["वरावमासमहाभद्र] छेने पूर्वोद्य पर्व (जीर १)। वरीभासमहापर वृ [ यरावभासमहायर ] कुण्डलरस्टरमार ममुद्र का स्वित्तायक देव-विरोध (बीव ६) । बराभासवर व [बराबभासवर] समुद्र तिरोत का ध्यपिपति देव विरोध (बीच ३)। इंडसा में [इण्डसा] निस्तर्वनियत नपरै रिरोप (स २ ६) ।

इंडिस वि [ बुण्डलिन् ] गण्डनाना

(भान ३३)।

12

कुंब कित्र वि [कुण्डलिय] वर्तुम गोम माकारवाता (मुपा १२ कम्पू) । कुंबलिया वि [कुण्ड'लरा] दन्दविरोप (निग) । कुंबस्यद् पू [कुण्बस्तोद] इस मामका एक सपुर (गुरुव ११)। कुंडाम पुं [कुण्डाक] संतिवेश विशेष प्राम विशेष (भावन)। मुंबि देनो भुषी (महा)। कुंद्धिअ पूर्विद्याम वा समिपति गौद का मुखिया (वे २ ३७)। कुंक्रिअपसम न [द] बक्क्सण निट, बक्क्सण की नोक्षी कक्कास की <del>रो</del>का (देर,४५)। कुर्वेदिया ) श्री द्विष्यका | मीचे देखो <sup>|</sup> क्रीबया 🕽 (रमा यनुरु मग लाया २ ४) । कुंडियान [पुण्डित] विदर्भ दश का एक नगर (कुप्र ४६)। कुंबी भी [कुण्डा] १ वृत्रा, पात्र-विशेष विभिन्नहोमुनीए ठनिया शुन्नी च वेद्वारि पून्ना' (गुपा २६१) । २ कमग्रत सन्यासी ना जल-पान (महा)। हुन नेपो हुन्छ (मुग्त ४२२) । पुरुष न [दे] र कुम्सी भूप्हा। २ छोटा बरता (दे २ ६६)। होन पुं[रो] शुक्र ठीठा मुग्ता (रे २,२१)। द्वेत प्रक्रिया १ हवियार-विशेष भावा (पगहर १ योग)। २ शम ६ एक मुमट का नाम (पदम १६ १**४)** । पुंतल पुं [कुन्तम] १ केश वाल (सुर १ रे नुसा ६१ २ )। २ देश विशेष (मुपा ११ वर ४०४)। दार द्र [ दार ] पम्मिक्त संयत देश, बांचे हुए बात (पाछ)। बुनम पू [वे] सातवाहन नृप-विशेष (दे ₹ (1) 1 इतिलाधी [फुन्तस्त] इस नाम की एक पनी (चैन)। कुनसार्थ [इ] क्येंिना परोक्षने ना एक सम्बद्धाः (१२,३)। इतिसी सी [बुम्बर्सा] चून्तम देश की ध्रूने बारी द्ये (बप्यू) ह इति व [पुन्तादुनि] वर्षे वी नहाँ (मिरि १ ३२)।

कुनाक्षी दिं] संबर्ध बौर (दे२ ६४)। कुर्ताकी [कुस्ता] पाएश्वों भी माताभा नाम (चर ६४८)। "विहार पु ["विहार] गासिक-अगर का एक कैन मस्टिर, जिसका **कीर्णोकार कुन्तीओं ने किया या (ती** २८)। कुंतीपोट्टय वि दि ] बनुष्कोल बार कोनवाला भीकोर (दे २ ४३)। ई युर्दु [कुन्यु] १ एक जिन बन इस धन सर्पिकी काल में स्टब्स्स सत्तरहर्भी तीर्पेक्टर धीर छन्दौ चक्रवर्धी राजा (सम ४३; पिंड)। २ हरिवंश का एक राजा (पदम २२ ६६)। १ पमरेन्द्र की हस्त्रि-सना का समिपति देव-विशेष (ठा १ १-- पत्र १ २)। ४ एक धुर चन्द्र कीन्द्रिय दल्तुकी एक पावि (उत्त १६ भी १७)। इदि पूँ [इन्द ] १ पूप्पन्या निशय (ब २)। २ न पूप-विद्येष कुलाका पूज (सुर२ ७६ सामा ११)। ६ निया पर्शेकाएक नगर(इत)। ४ पून इस्ट बिशेप (शिग) । कुद्रय वि दि] इन्ठ दुर्बस (दे२ ३७)। इदास्त्री [इन्दा] एक इन्द्राली मानिम्य इंड की पटरानी (इक)। पुरिर न दि] पिम्बी-फल बुन्द्ररन बा फत ( R 7 18) 1 कुंदुम्ब पु [पुरदुकः] बनशकि-निशेष (पएए) १—पत्र ४१) । इंदुरक र् [बुरदुरुह] बुगरिम पदार्व-तिरीप (लाया १ १--- भव ४१: सम १३७)। हुंदुल्लुम पूँ [ब्रे] पनि-बिटेप उनुब उन्मू इंबर पुं [इ] योध मदानी (दे २ १२)। पुरंपय पून [कृपक] तम बवटर स्थाने का पात-रिकेष (रक्त ११) । ष्ट्रपस 🚰 [पुट्मल पुट्मस] १ एन नाम ना एक नरता २ बुरुस ननी नरिता (हेर २६ द्वमा पर्)। मुंबर [दें] रेगो मुंबर (पाय)। द्यं म पू [पूरुभ] १ १ माठ घरनी और एक नी पाइक की नार (प्रापु १८१। तंदु २१) । ४ व्योतित-प्रवित्र एक रागि (विचार १ ६)। १ एक धमा (यन ४६)।

😎 म. पू. [कुम्म] १ स्तन्तम प्रसिक्त एक राजा यनवाल् महिद्याप का पिता (सम. १६१) पडव २ ४६)। २ स्वनाय-क्वाउ वैन महर्षि पठारक्षरें शीचेंचर के प्रथम शिष्म (सन ११२)। १ दूब्बलर्खं का एक पुत्र (धे १२) ६१) । ४ एक विचायर नुमट का नाम (पज्रम १ १६)। १ परमावासिक वेदो की एक भारत (सप २१)। ६ कमत वहा (महा द्वामा) । ७ हाची वा क्याव-स्वच (दुमा) । व बाल्प मापने का एक परिमास (बरा)। १ तरने का उपकरख (तिषु १)। १ नमाट, माम-सम्ब (पद २)। ११ अञ्च १ कियाँ सदश के दोरे मार्ड का नाम (१x ११) । ब्यारप्र क्रिया कृम्बार, पढ़ा बादि मिट्टी का बच्चन बनाने-शामा (देर व)। देर न पुरी नयर विशेष (वेश)। गार देखो आए (महा) s ैमा न रिप्रो म<del>नव रेत प्रतिश्च एक</del> परिनास (सामा १ व-पन १२६) । सेवा द् िंसेनो असिर्मिणी क्ष**ब के प्र**वन **दीर्वकर** के प्रवय दिल्लाका नाम (दिल्ला)। कुंभेड न [कुप्साण्ड] छन-विदेय कोईंडा कुम्हरा (कप्पु) । कुमार दूं [कुम्भकार] दुम्हार, बढ़ा गारि मिन्नीका बध्दन बनानेवाला (हे १ )। । भाग पू [ पाक] दुम्हार राज्यत पकामी कास्मान (ठा )। कुमि प [कुम्मिन] १ इस्ती कृती (वस)। २ लाइक-विशेष एक प्रकार का पंड पुरुष (पुण्क १२७)। कुंभिय केरी कुंभिय (एव १)। चुमिणी स्पे (दे] यम का नर्ड (दे २ ३)। वृभिय वि [कुस्मिक] दुस्त-परिमास्त्रवाला (छा४ २)। इभिक्ष प्रदि इभिम्म हो १ और, लेन (दे ९ ६२, विक १६) । २ शियुन दुवेन कॅमिझ वि [दे] धोवने कोन्द (११ ६१) : डुंभी स्प्री [डुन्भी] १ पाव-विदेश बड़े के मानारताला धीटा वेहर (नन १४४) । व

दुंच, पहा (वं ६) । याग दू ["पाऊ] १

क्रोभी में पक्ता(पर्सार ४)। २ नरक की एक प्रकार भी बातना (सुख १ १ १)। कुभी स्थे [कुष्पाण्डी] कोईड़ा का वास. 'चलियो कुथीएक बंतुरामु' (नडड) । क्रोमी ली हिं केश-रचना केरा-संबंध (दे र **क्रं**सीस र् [क्रुम्सीस] बनवर प्राशा-विशेष म≢ मंबर (वाद ६४)। कुंभुक्भव पू [कुम्मोव्भव] श्राव-विशेष गमस्य ऋषि (क्यू)। कुकस्मि वि [कुक्सिन्] बयव वर्षे वरते-वासा (सूच १ ७ १८)। **अक्ट**ब्स स्मी दि] नशेका दुचक्किन (दे२ **इन्ह**स **हि देवो कुन्दु**स (रह १ १३४)। इनुदाइन न [चुनुदायित] चनते समन का राम-विशेष (तंदू)। कुक्स पु [कुक्स] करीपारित करे की धान (पराह ११)। हुसक देवो क्रोक्ड । हुनकर (पि ११७) ¥ 4) I 'इसक १' [रे] इता ५५५७ 'इस्तेरी कुरकाहि सं कुरकारि (मुख्य १६)। कुक्कपय न दि पामरश-विशेष 'घर धर्मीय मनेवारं कुम्बपर्य में प्रक्रमाहि (तुम १४२ ७)। वेबो कुत्रकुश्चन। इन्द्री त्वी [वे] दुनी दुन्द्रथे (दुन्द्र १६) : कुरकुम वि [कुरकुष] भार की तथ राधिर के समयमी की कुनेहा करनेपाला (बर्म २, पन ६)। **इन्ह**म व [कोइन्स्य] दुवेश कागोरपावक र्धन निकार (पश्चम ११ ६४३ माचा)। कुनकुम वि किक्रम । धाम्पल कर्णवासा (इच २१)। इस्टुआ स्वी [इवड्रवा] प्रवस्कर, धरल रत-रत कर पूना ध्यना (दृह ६)। इन्द्रसमि [कार्ड्सक] पढ़ की उत्त दुवेहा करतेवासा, नाम-वेहा करतवासा (स्त धीप)। इन्द्रश्य व [बीकुच्य ] वाय-दूर्वश भीगाउँ व बमलाइनाए सविवास्तराजीना व्यक्ति । क्ष्मुद्रमें (गुरा ६ ६। पक्ति) ।

हुरकुष्ट हुं [कुर्कुट] बतुरिनियम बन्तु की एक बावि (उत्त १६ १४०)। कुमकुद्र दू [कुमकुर] १ कुमकुर दुर्गा (श १वरा बचा)। २ वक्ताति-विकेष (वस ११) । ६ विश्वा द्वारा विस्ता वाता इस्त-प्रयोग-विरोप (वव १) । मैसय न ["मीस-**क**े १ सूर्ण का मांत । २ बीअपूरक वनस्तिः का पुदा (भग १३)। कुनकुक वि [दे] मत ज्यात (दे २, ३७)। कुरकुरय न [कुरकुटक] थेवो कुरस्वय (शुप १ ४ २ ७ टी)। क्रम्क्रदिया) स्पे [क्रम्क्रुटिस्य टॉ] इक्डबी } इन्ह्ये मुर्ग (साग t स विदार्ष)। कुनकुढी हो [कुनकुनी] नामा कपर (निव ₹१७)। कुनकुद्दसर न [कुनकुनेरवर] वीर्थ-पिरोप (0) (4) ( कुमकुर पुड़िमकुर] मृता स्वान (पस्य १४ व सुपा १७७)। क्षुनक्षरत हुँ वि] निषद सन्हर (रे २, १३)। <del>पुत्रकुरा दे हि | भाग ग्राप्ति का विशास</del> मुबा (देश रेक्ट स्व १ १४)। कुमकुद् पू [कुमकुभ] पति-विशेष (वस्म)। कुमकुदाइल न दि दे पनते तमय अधार का राज्य-विशेष (तंतु १६)। कुक्तिल कि ब्रुक्ति केनो कुम्बिल (रे ८ ३४८ धीर लाज ६१८ वर ३३)। कुविस्त्रीमरि वेचो पु विस्त्रीमरि (वर्मीव १४१)। इन्हेयम रेबो इच्छेमग (सीव ६)। कुमाइ र् [कुमाइ] १ क्शक्ट, हर (१९ ≈११ टी) । २ जक्ष चलु किरोपः पृथ्याहे-बाहारवजेतुरीचुनी' (युवा ६२६) । कुचपुक्तिची स्तव वन (कृमा)। कुबोक्त न [कुबोबा] नतई (बर्मस ११७४)। इव ई [कुर्य] केंग्रे बात संवालें वा की नरण (बस्त २२ ६ )। कुम व [कूचे] १ शाही-पूँच (पाप परि २१२) । २ कुछ-विद्येष (पदाइ २ व) हैयी असम् । कुरचंपरा को [कुर्चभरा] सही-मू व. वारत क्लोबली (बीन १ मा)।

कुच्छिय वि [कुरिसत] बराव निन्ति

फिल (देर, २४)। २ किल विवर (पाम)।

गहित (पंचा 🕶 मवि)।

(देश १६१ पड़)।

क्रिकेट 'पेरत्य ए) धर्मानवनुहस्त कुन्हमपु त्तस्य (कप्प) । कुरुष देशो कुरुष = गृह्य । कुबद्धत पूर्व [कुत्सक] बनस्पति विशेष (सूध २ २)। कुच्छ्जिञ रेसी कुच्छ = बुध्स् 'यमसि कु**क्**षणि सामार्थ पनवस्त्रित्रं हि' (पा २७)। कुच्छा भी ड्रिप्सा निम्त क्या बुद्धसा (मोब ४४४) उप १२ दी)। कुरिक् पूंकी [कुश्चि] १ जस्त, पेन (है १ ६५ डवा सङ्घो । २ घटताशीस बोग्रव का मान (बे २) । "किमि पू ["कृमि ] उदर में प्रतान होनेपाना क्षेत्रा श्रीन्त्रय बन्दु-विशेष (पएए १)। मार पू ["धार] १ वहान का नाम करनेवासा नीकरः 'कुल्बिवारकप्र बारम्बनवर्षवत्ताखावावाखियवा (खादा १ a — पद १६६)। २ एक प्रकार का बहाज का व्यापारी (खाया १ १६)। पूर् पू "पूर] उदर-पूर्ति (नव ४) । "भेषणा औ विश्वता] धरर का रोक-विशेष (श्रीव ३)। सुद्ध पुन [ शुक्क] रोम-विरोप (ए।या १ १वं विपार १)। कुच्छिमरि नि [कुक्षिम्मरि] परेक्यु के स्वामी 'हा तियवरित्तक्रूटिंग (? निर्द्र) मरिए ( (र्रम्म) । कुरियमई भी वि कुनिसती गाँवणी धापप्र-परना (दे १ ४१) पद् )। कृष्टियमिका (मा) केत्रो पुरिद्यमई (प्राष्ट्र t (9 1

हुद्या वि [कीर्चेट] शर-नामक गाछ ना बना

हुमा है केनो पुरव (बाबा २ २ ३

ह्या । कास)। १ कृषी दुरा-निर्मित

तुलिका जिससे दौबास में चुना नवाया जाता

हुमा (माना२२,३१४)।

है (उप द १४३) कुमा)।

t) t

1 (F

इस्त पुंक्तियी यूज पेड़ (जै २)। कृत्विय वि [कृष्टिक] वादी-पूचवासा (बह कुजय पू [कुजय] नुपारी चूपाकोर (मुम १ २ २)। कुच्छ धक [कुरस् ] मिनाक्टमा विद्यालय। कुट्य विक्रियत]१ कुम्म कुम्बा नामन मृ अच्छ मुच्क्वणिका (भा २७३ पछ्ड १ (सूपा २ कप्पू)। २ पून, पूरम-विशेष (पङ्)। कुद्धय पु [चुन्जक] १ क्स-विशेष शतपविद्य कुबद्ध हुं [कुदस] १ ऋषि-विदेय । २ गोत्र-(पद्धप्रभू च कुमा)। २ न. उस कुश का पुष्प 'बंबेर्ड पुरूपसमूर्य' (हे १ १८१)। कुत्रमः सक मियु क्रीय करना ग्रस्सा इरला। दुश्मा (द्विभ २१७ पर्)। चुद्र सक [चुद्र्] १ कूटना पीटना ठाइन करता। २ राज्या केरता। १ यस करता। ४ जपालस्य रेता। मवि कुटुइस्सं (पि १२८)। बक्र. कुट्टित (सुर ११ १)। कमक कुट्टि कांत कुद्धिकामाण (भुगा ३४ ) प्राप्त ६६ राव)। संदूर-कुन्द्रिय (मय १४ क)। कुट र्ष किलो यका दुस्स (सूथ २ ७)। कुट पूर वि र कोट, विशाह दिस्मीत क्या-बाई कुर हुनरि भवा ठविनवीति (सुना ५ १)। २ नपर, रहर (पुर १५ ८१)। बास्त्र प पांची कोतवान नपर-रताक (सुर १४ कुकूण म [कुटून] १ केल पूर्णन मेरन (घोष) । २ कूटना साइन्स (३६ ४ ४३ ८) । हुन्या की [कुट्ना] राधितक प्रेका (नूम t (13) i कुटुणा की [कुटुनी] १ कुमन एक प्रकार नी मोटी सदनी जिस्से चानत याति सद मू<sup>रे</sup> जाते 🕻 (दहt)। २ दूर्ता दूरणी वहिनी (रमा)। कुट्रयरी की वि] चंदी पानंती (दे २ ६४)। कुट्टा की वि ] गीधे पानंती (रे २, ३१)। इताय दें दि अमें शर, मोबी (दे २ ६७)।

कुट्टिंग देशों कुट्ट = कुट्ट ।

चुर्दितिया देवो कोईतिया (धन)।

पुर्दिव [दे] देवी क्रोहिंप (पाप)।

पुर्वद्वणीकी [पुरद्विनी] दूटनी दुवी (कप्पू रमा)। कुबिक्क म दि । पृति का विवय बाह का कुट्टिम रेखो कोट्टिम ≃कुट्टिम (भग ८ ८ राम चीव ३)। कुरुक्तेश्रव प्रकित्तेश्वयकी तसवार, अन्य कुढ़िय वि क्रिट्रिश्च र कुरा कुरा ताहित (भुपार्थं उत्त ११)। २ विद्रत देवित (बह १)। बुद्ध पून किछी र पंतारी के यहाँ वेकी पाती एक वस्तु, बूठ (विसे २६६) परह २ ४)। २ धोम-विशेष कोड़ (वब ६)। कुट्ट पूर्विद्रोष्ट्री र स्वर, फेट भाहा विसे बुद्धमर्य मंत्रमूनविधारमा । वेजा इत्तरित मंतिह्रि (पडि)।२ कौळा कुपूल मध्य भएनेका बड़ा माजन (परह २ १)। बुद्धि वि **ैंबुद्धि** एक बार बानने पर नहीं मूलने-बामा (पएड् २,१)। देखों कोट्ट कोट्टगः। कुटू वि [मृष्ट] १ शपित समियात । २ न. शान मिसाप-शन्य 'बहु कुट्ट केहि पेण्डला धामपा इत्वं (मुपा २४)। कुट्रस पुन [क्रोप्तक] सून्य पर (रहा ५ १ २ ३ ⊏२)। कुट्टा औ किया दिस्सी विवा (बहु १)। कुट्टिनि [कुन्दिन्] क्रुप्त रोनवासा (गुपा 288 204)1 कुड पुंक्ति देश कत्तरा (देश १४ या २२६ विसे १४४१)। २ पवतः व हायी वर्षे रहका बन्तन-स्वान (स्तामा १ १—पत्र ६३) । ४ दूस पेड़ा 'ठट्टवियशिहंडमंडियह बगों (पुπ ६६२) । इंठ र् [किं0ठ] पाम-विरोप पड़ा के वैमा पात (दे २ २)। दोदियो भी ["दादिनी] पका भर दूव केरेवाली (गा १३७)। कुर्वग पुन किन्छ र कुम्ब निरुष्ण भता वर्गेष्ट्र में दशा हुमास्वात (गा ६८ ३ हेवा १. ५)। २ वन व्यंतन(इन २२ टी)। व वर्ता की काली वर्षा की करी हुई सुद्र (दह १) । ४ नहुर, कोटर (एव) । १ वंश-यहन (ए।सा१ = दुमा)। हर्वग पुर कि इन्ह्ये सरान्य सरा में बसा हुमा बर (दे२ वैका महापाम पर्)।

कुर्वया की [कुन्द्रा] मतानिष्टेप (पाम १३

1(50

ttt: ex ) :

( Y RE (1) 1

₹¥₹) i

कुबाबय न [वे] प्रभुक्तन, पीचे जाना (विने

कुर्किय नि [दे] दूब, सूर्व देवमन्द्र भूतीत

नैक्पर बुखी पूची बुविन्दुरिसोच्न (तुर ३

हुर्दिव दि [दे] विषक्षेत्रल नी पोरी हो

कुष चढ़ [ह] इस्तर बतना। दुस्तर

इंडर, इंड (बर, नहा दुना ६२ )।

नरे हो बह (नुब २, २१)।

कुतुभ दुन [कुतुप] १ केन वनैष्य परमे ना

चमके का पात्र (के. १, १२)। केलो कुन्नम !

इच्चन [इंड्रन्ड] क्ष्म स्थाप (विप

क्रचार वि [कुनार] प्रयोग्य वारक (वन्य

इस्टिय पूंची [दे] एक तरह का मीन-

नगुरित्रिय पन्तु-निरोप भग्नीम दृशिय

विष्यू (मा १७) पद्म ४१)।

इन्त ई [व] कुता इन्कुर (रंग)।

१ १--पत्र ११)।

₹ ₹ )ι

14 r 424 11, 1) 1

भुद्वीर न [वे] बाद का किय (दे २ २४)।

मेर (पर्ता १७४ २६२ छ)।

वर्ष (परा महा मातू १६७) ।

६ गो।

कुन्धा पूँ वि] सरावृह, सराधो से हशा हुआ

कुन्ब न [श्रुटुन्ब] परिवत, परिवाद, स्वयत-

कुर्युवय पुं [कुम्हुस्थक] १ वनशाकिनीसीम

पश्चिमी (बहुता १—पत्र ४)। २ क्य-

विरोग 'पर्बद्वाहरात' व व देशी व दुइ'वर

हुन्ती की दिं] हुन्ती दुन्दुरी (रैमा)। कुरव स [कुत्र] कहा विस स्पन में ? (क्तर१४)। कुरूय सक [कोमयू] सङ्गता "तो काळ हरेग्या नो सतिन हुत्पिग्या (पन १४६ दो) बुच्छे (१ स्वे) ज्या (प्रस्पृ १९१)। मवि वृत्तिक (? रिव) हिर्द (पिंड २६६)। कृ. कुत्रय (दसनि १ २४) । हुत्य देखी नद्र। कृत्यवि कृत्वमु (या ५१६)। कुथण स्रीत [कोयन] सहना सह जाना (दव ४)।

भुरुभर ग[दे] १ विज्ञान (१२१६)। २ कोल्ट. कृतको पक्त पह्नर (मुपा२४६)। ६ सर्व वमैरक् का विस (उप ६४७ टी)। बुरयछ रेखी कोत्यल, 'कृष्य (१ ल) सस मारणस्मरो (वर्गीव २७)। चुरश्चंब तुं [चुरतुम्ब] बाच विशेष (राम) । पुरर्गुभरी को [कुस्सुम्बरी] बनस्पति-विदेप श्रमियां (प्रमुख १---पत्र ६१ । कुरश्रुह पून [कीस्तुभ] मणि-विशेष को विष्णु की काती पर रहती है (हेका २४७)।

**पुरशुद्धरय न [दे] नीवी नास इनारवन्य** (\* 2 3=) 1 कुत्रो देवो छुञ्जो (है १ देश) । कुद्दविदि] प्रमुख मदुर (दे२ ३४)। कुरण दे [द] समझ समा (दे २, ६८)। पुरुष ई [कोड्स] माम्य-मिरोप कोसी, कोदव (सम्य १२)। कुदाळ पु [कुदाछ] १ भूमि बोरने का सावन कृताद, कृतारी (तुपा ४२६) । २ क्स-विरोप (वे २)। कुनू वि [स्तु] बूपित क्रोप-पुक्त (महा)।

कुपचि (पै) स [कचित्] शिसी वन्द में (प्रकार २३)। कुरुप सक [कुपू] कोप करना दूससा

करता। कृष्णद् (ज्या महा)। यह कुरपंत (मूपा १६७) । इ. कुप्पिवडव (स ११)। कुष्प सक [ भाष् ] बोलना बद्दना । बूप्पद (मिक्)। कुरप न [कुरप] नुवर्श भीर चली को छोड़

कर प्रत्य पातु भीर मिट्टी वर्गे एक के बन हुए

पृद्व-उपकरण 'काइगर्द जनवरचे कृष्यं (बह १; पश्चि) ।

कुष्पद्व पुंदि] १ पृहाचार, वर का रिवान। २ समृदाचार, सदाचार (दे २ ६६)। कुरुपर्ति हिं] मुख्य के समय किया जाता हरव-ठाइन-विरोप । २ समुदाबार, सराबार । ३ नर्ने, हॉसी ठट्ठा (दे२ ६४)। कुरपर पूंकिपर] १ क्सोण हान का मध्य भाव । २ वानु दुरनाः ३ रदका श्रवस्य-विरोध (व १)।

कुरपर तुं [कर्पर] देशो करपर। भीत की परत, मीठ का चौर्ण-शिर्ख पर 'एवाघो पाडनार्वहरूपारा जुरुएमितियों (यउड)। पुरुषद्व देखो कुपस (वि २७७)।

कुरपास पु [कूपाँस ] करहर कायमी वनानी मुख्यों (हेर घर कम्यूपाय)। क्किंप्यावि [कु.पत् ] १ दुपित कुदा। २ न क्रोब प्रस्ता 'नूप्तियं नाम नूजिमस्' (माचू ४)। हुर्यपस देको हुल्पाम (हे १ ७२ दे २

कुबर पूं[मृतर] भगतान् मस्तिनाम का शासनाविद्यावक यख (पन २६)। कुत्रेर पुं[कुत्रर] समदान् पृत्युनाम के प्रयम यावक का नाम (विकार ३७८)।

हुवेर पूं[कुवेर] १ पूर्वेट, स्थ-राज मनेश (पाद्य, गउड)। २ भगवाम् मन्त्रिनाध का शासनामिहाता यस विशेष (सवि ८)। १ काद्यनपुर के एक राजाका नाम (परुम ७ ४६)। ४ इस नामका एक मेडी (उप ७२८ टी)। ५ एक वित मुनि (कप्प)। ।दसापुं[।दशु] **स्तर दिशा** (पुर २ = १)। नयरी भी निगरी कुषेर की चवमानी मनदा (पाष)। कुवेश की [कुवेश] कैन साबुनास की एक

खया (इप्प) । कुम्बद्द वि [बे] कुबड़ा कुम्म बागन (या कुकबर प्रक्रिकरी वैभमल के एक पुत्र का

साम (येव ६)।

कुभक्ष पू [कुभावक] देव-विरोध की जाति | कुमुख पू [कुमुद] १ दल नाम का एक (ठा२,६—पत्रदर)।

कुर्मदिव् पु [कुमाण्डेन्द्र ] इन्द्र-विरोप कूमाराइ देवीं का स्वामी (ठा २, ३)। कुमर शबो कुमार (हे १ ६७ मुपा २४६;

६५६ कृमा)।

क्रमरी देशो कुमारी (रुग्यू, पाय) । कुमार पूं [कुमार] १ प्रथम-वस का वानक पांच वर्ष तक का सब्का (ठा १ १२)। २ धूनरान राज्याई पुरुष (पराह १ ५)। १ भपवान् वासुपूर्यका शासना विष्ठाता यश (संति ७)। ४ मोहकार, लोहार: "ववेडमृद्विमार्दीह् कृमार्दीह् धर्म (वतः (उतः २३) । ४ क्यक्तिकेय स्कन्द (पाष) । ६ शुक्र पक्षी १७ भूकसमार। द सिन्द्र नदा १ बृज-विशेष बरग्र-बुभ (हें १ ६७) : १ मविवाहित ब्रह्मवादी (सम ५ )। उत्पास र्टु[माम] घाम-विशेष (वाचा २ ६)। पंदिः प्रं ["नन्दिम्] इस काम का एक क्षोतार (बादम) । धम्म पु ["धर्म] एक बैन साम्र (रूप)। बास्त र्पु ["पास्तु] विक्रम की वास्तुवी राजाची का गुबरात का एक सुप्रसिद्ध वैस दावा (दे १ ११६ टी)। कुमार पूँ दिं निवार का महीना मारिकन

मास (ठा २ १)। इस्मास को [इस्मास] इस साम काएक धॅनिनेश तमो भगरं कृमाराए धॅनिनेसे मधी (धानम)। कुमारिय प्रं किमारिक क्यार्थ, चौक्रिक

(TE ?) : प्रमारिया की [कुमारिका] देवी कुम री (PT \$X ) 1

कुमारी भी [कुमारी] १ प्रयम १व की सङ्की २ मदिनाहित कन्या (हे ३ ३२)। ३ ननस्पति-विशेष भोडुमाचै (पन ४) । ४ नवमस्तिका । १ नश्-विरोप । ६ वस्यू-द्वीत

का एक मानः। ७ पनस्पति-निरोप धप रानिता। ८ मीता। १ मही द्वापी। १ बनमा करनी की सदाः ११ पन्तिकोप (११३२)।

कुमारी की [दे कुमारी] नौधे पार्वेश (दे **२ ३३**)।

बानर (मे १ १४)। २ महाविधेह-वर्षका

कुगुम-कुरमाङ

एक विजय-पूक्त मूमि ब्रवेप-विशेष (ठा २ ६—पन व ) । ६ त. चला-निकासी कम्ब (सामार १--पत्र १६ से १२६)। ४ र्धक्यानिरोप कृतुराङ्ग को कीरासी साम्र स पुरुते पर को सँक्या सम्ब हो वह (को २)। १ किसर विकेष (ठा क)। ६ वि पूर्णी में धानन्य पानेवाला । 💌 श्राप्तव प्रीविकाला (वे १ २६)। देवो क्रमुद्र। इस्टा प्रे [इस्ट] रेन-विरोध (शिरि ६९७)। चंद पूँ ["बन्द्र] प्राचार्य सिक्शन दिवाकर को मुनि सबस्याका काम (सस्मत्त १४१) । इसुर्मंग न [इसुदाङ्ग] संस्थानिरेप 'महतकार की कीएसी साम से पुराने पर भो संस्था सम्ब हो वह (बो २) : इस्माभी इस्मदा १ स्व नाम की एक पुरुषरिएरी (में ४) । २ एक नवरी (बीव) । इसुइपी थी [इसुविनी] १ चल-विकासी क्यम का देव (कुमा) रीम्न)। २ इस नाम भी एक राजी (कप १ ६१ टी)। इसुर देवो इसुछ (६६) । देत-दिमाल-दिरील (सम ६६ ६४) । शुस्सान ("शुरुस) दक-विमात-विकेष (सम ३३)। पुर न ["पुर] नवर-विरोप (१४)। प्यभा की जिसा इस नाम को एक दुष्करिशी (बें ४)। वाज व ["बन] सबुख नगरी के समीप का एक चन्नन (ती २१) । ।गर र् िमरो क्रूप्र-थएड कुमुको से यस हुआ। वन (पहाह १ ४)। हु-मुद्दंग देशो हु-मुर्छम (६५) । कुमुद्ग न [कुमुद्र] दूरा-विरोप (सूच २ २)। इसुकी भी [दे] इस्ती भूहा (दे २ ६१)। इस्म 🕻 [इसे] क्ल्बर क्लुमा (पाप) । म्गाम पुँ भिगमी भवत के के एक श्रांत नानाम (सव १६)। कुम्मय दि [दे] म्लाव कुट्य दुम्बूलावा इया (१२,४) कुम्मार दुं [कुर्मार] नगर देश के एक श्रोप वानाम (माना २ १६,६)। बुन्यास र् [कुस्माप] १ मन-विशेष चण (बीप ३५१ पर्स ८ ५)। २ वोहा भीता हुधा बूँ न वर्षे एइ भाग्य (परहा रू. १—पत (4x) 1

२१४

२ नारव की माठा का नाम (पठन ११ १२)। प्रचार प्रिजी को शाव क्रवा इस नामका एक पुरुष जिसने मुक्ति पाई की र्फ्ट पूर्व [कुदमम] केत-विरोध (हे २ ७४)। कुम्बंड देवो कोइंड (प्राप्त २२)। कुन्हें बी देवों को बुंबी (प्राष्ट्र २२)। इत्य द्रं इत्रची र स्तन बन । २ वि तिबिक्क (नन ७) । ३ प्रस्थिर (निष्टू १) । कुपमा भी दि] बस्ती-विरोध (पएए) १---पन ६६) । इप्रशं⊈(इप्रक्रा] र मूग की एक कांक्रि (वं २)। २ कोई मीमून इस्टिए (पएह १ १ परक) । भी सी (पाछ) । राम्ही भी [भाषी] इरिट के नेव विधे नेववाबी औ मुक्तवती की (बाह्य २)। कुरंटय पुँ [कुरप्टक] कुछ-विरोप पिक्वासा (उप १ ३१ धी)। इरक्टर देवो इस्टुकः। वह इसकुराईत (रमः)। कुरम पु [कुरक] वनस्परि-विशेष (पर्यक्ष १—पत्र ६६) : इट्ट्रंस न [इट्ट्रंसक] यूव्य विशेष (रज्जा **१ ()** ( इत्रर पु [इत्रर] पुरस्नकी जलनेश (पर्वा ११ का १२६)। इस्सी क्ये [के] पत्तु वातकर (के के ४ )। इदरीकी [इदरी] १ दूरर पनीकी माना। २ प्राचा बन्द का एक मेद (सिंद)। ६ मेदी मेडी (रेख)। इरस्य पु [इरस्य] १ केर वाल 'दूरस दुरलीहि वनियो तमलक्तधामती बद्धरिवडी' (पुषा २४ पाम)। २ पकि-विरोप (भीव १)। कुरस्त्रीकी [कुरस्त्री] १ केटी वी वकस्त्रद (तुपा १ २४)। १ कुरम-पश्चिती 'कुरमिल्य गईक्से मनदं (पदन १७ ७१)। ं हरनय पु [कुरवज] कुत्र-विरोध कटसरैबा (पा६) मा ४ । विक्र २६ च ४१४) दुम्छ ا (چېکا क्याची क्या वर्ष-विदेश सकते मुक्ति

\$प्रिरेण न[दे] यहा बंगब सर्वकर प्रदर्श (बीव ४४०)। इक्ट ट्रंब [इक्ट] १ मार्गक्<del>रिति</del>य मो रुत्तर मारत में है (यामा १ वः कृता)। २ मनवान् प्रादिनाव का इस नाम का एक पुत्र (वाँ १४) । ३ सम्बर्ग-भूमि निरोप (छ ६)। ४ इत नाम का एक मेरा (भनि)। ६ पूँकी कर वंश में उत्तरप्त करवेशीय (स ६)। अय अरी देवो नीचे चय चिरी (पा)। लाच "क्सोचन ["सेत्र] । विक्री के पास का एक मैदान जहां कीएर भीर पाएडवी भी बढ़ाई हुई भी। १ नद देश भी राजवाती इस्तिनापुर गवर (वनि तौ १६)। चंद् पूं ["चन्द्र] इत सम का एक राजा (कम्मः काक्य)। चर वि चिर् कुर देश का पहनेवाला । की वरा बरी (है १, ११) । जंगल न जिल्ला मृर-मृमि देश-विरोप (मनि ती ७) । याह र्षु भिन्न बिद्धावन (ना ४४३) वडक)। वचं दृदिची इस माग झाल्क थेंडी भीर वैन महर्षि (चत २० संद्रा) । सई की ["मर्वा] ब्यूबत चन्नर्वी की परराजी (सम ११२)। राय द्वं [राज] कुद रेत क यवा (ठा ७) । यह पूं विती कुर वैठ नाराचा(इत्र ७२ टी)। इस्स्क्रमा को क्रिस्क्रचा पान का प्रशासन (मोच ११) । **इरहर** पर [इस्कुराथ ] 'कूर-कूर' वाराव करना चुनकुताना बड़बड़ाना । चुदरराप्रमि (पि ११)। वह इस्ट्याशंत (रुप्)। क्रुक्रिश्च [क] राजराजक सीलुला (के 9 ¥9)1 करुगुर वेबो कुरकुरु । नुब्दुरेति (स. १.) । क्रिविक पू [बे] र कुसीर, वक्त-वनु-विशेष । २ न- प्रहण ज्यावान (१२ ४१) । bult क्रस्वित । कुरुव वि [वे] धनिष्ट, ब्रप्तिय (वे २ ११)। क्रिरेड वि [वे] १ निर्देग निष्टुर (१ २ ६१ मनि) । २ निपूछ चतुर (देरु ६६ मनि)।

करुन न [दे] रामाना सादूबरे नावन

STREET IN ALL ALAS

(চন) ঃ

इस्य व [दे.पुन्तक]माया कपट (सम ७१)। कुरुया की [दे कुरुका] शरीर-प्रजालन, स्साम (वय १)। कुरुर् बनो कुरर (कुमा) । कुरुस पुचि] र कृष्टिक नेशा टेका बास (वे २ ६३ भकि)। र कि निर्देश । वे निपुत्र चनुर (वे २ ६३) । कुरुष गर्भ [कु] धारात्र करना कीएका बोलना । कूदबहि (पवि) । हुन्द्विअ न [दुन] बादस का राम्य, कीए की सावास (मवि)। कुरुव रेखां कुरु (पडम ११८ ८३ मधि) । कुरुवा देवो कुरवय (युगा ४७) । कुर्सित पूं [कुरुविन्द] १ मधि-विशेष एत 🗍 की एक बादि (सब्द) । २ दूसा विशेष (पएए १ पएइ १ ४—पत्र ७६)। १ कूटिसिक-मानक रीव एक प्रकार का जैमा रोप 'एग्रीकुरविवयत्तवदृत्युपुन्वववे' (ग्रीप)। [बच पुंत [ [बच्चे] मुप्याः विशेष (क्या) । कुर्रिया भी [दुर्खनम्बा] इस नाम नी एक वरिष्मुशायो (पद्म १४, ३४)। कुर्विक [दे] देवो कुरुचित्र (गम)। क्कुड़ पुन [कुछ] र नुख नेश नाति (मासू १७) । २ पैतुक वंश (उत्त १) । १ परिवाद क्ट्रम्ब (क्य ६ ७७) । ४ समातीन समूह (पण्ड् १३)। इ. दोत्र (कृपा ८ ठा४१)। ६ एक ग्राचार्य की संतरित (कम्प)। ७ वरः। नुद् (कम सूम १ ४१)। व साविक्य बामीव्य (माबा)। १ व्योतिय-राज्य-मधिक स्थल-संबा (सुन १ इन) चुनो कूने (६ १ ३६) । सम्बद्ध [पूर्व] पूर्वव पुर्व-पूरुष (वतः) । कम पूँ [किस] कलाबार, बंश-मरम्पण का रिवास (सहि रूँ()। इद्र केवो शीचे गर (छ र )। कोडि की [कोटि] बादि विशेष (पव १४१ ठार्टर) । दमक्तो कम (स्ट्रिइ) । सर् पूं [कर]कृत की स्पापना करनेवाका पूर्व के प्रारम्भ में शीवि वमैरह की व्यावस्था करनेवाचा महापुरप (सम १२६) बसा ४) । नेह म ["नेह् ] पितृ-पृह (६४७)। [ यर न ["गृह] तिइन्त्र (मीप) । ज वि [\*a] कुसीन कानशनी कुछ में उत्पन्न

(इ. १.) । আয় वि ["आत] ছুৰীন স্থান-शती कुस का (सुपा ११का पाम)। अनुव वि ["युट] कुमीन (पद ९४)। आस न िनामम्] कुल के बनुसार किया बाता नाम (मस्) । सेतु १ विन्तु क्रान्सवान क्स-वैद्यति (यय ६) । । विस्तरा पून ["तिस्रक] कृत में में (मन ११ ११)। स्य दि [रिय] कुसीन चानदानी देश का (खाया १ ४) । त्यर पु ["स्यबिर] भेड साध्र (वंद्र) । "दिगयर पुं ["दिनकर] कुल में ओड (रूप)। दीव पू दिगप<sup>ी</sup> कुस प्रकारक कुल में भेड़ (कप)। ऐस र्ष ["देख] योत-धनता (काल) । देघमा की [क्या] बोक-देवता (मुपा ४६७)। "देवी की ["देवी] नोव-देवी (सूपा ६ २)। बस्म वृ ["धर्म] कुसाबार (छ १०)। प्रकृष वृं िपर्वत पूर्वत-विशेष (सम ६६ बुपा ४६)। पुत्त पू ["पुत्र] वंश-स्त्रक पुत्र (क्त १) । शक्तिया की ["बाजिका] कुलोन कन्या (सुर १ ४३) इति व १) । भूसण व "भूपज] १ वंश को दिपने या चमकाने माला। २ वृं एक केवली घषताय (पत्रम १६ १२२)। सय पु ["सइ] कुम का धनिगान (हा १)। संयद्दरिया सहस्त-रिया की निक्षतिका कुल में प्रमान क्षी कुट्रस्य की मुक्तिया (सुपा ७६ मानम)। य देवते स (सूपा ११६)। राग दू िरोगी पून स्थापक रोग (व २)। वह पू िपात वालमों ना मुखिया प्रचान चेन्याची (सुपारक जगकर)। बंस दुं [बंग] कुतक वर्षत, वैशः (सर १११)। वैस दु ["संरथ] कुन में उत्पन्न वैश में धेशव (यग १, ३३) । बहिसय पूं [ीवर्दसक] कुत मुपरा कुत-रीपक (कम्प)। बहु की [ बच् ] दूतीन की दुताङ्गना (मार्थ १) पि ६८७)। "संपूर्ण वि ["संपन्न] पूनीन. चातवानी मूल का (धीप)। समय पू ["समव] नुसत्नार (सूध १ ११)। सेक पूं [श्रीज] कुल-पर्वत (मुपा ६ च ११६)। सेंडण 🖈 [शैंसजा] कृत ( सरिवा भूतो नीमवरमणुक्तर्य (नुपा ६ )।

वि ["प्रीम] धपने पूल की बढ़ाई बतला कर बाबीयका प्राप्त करनेवासा (ठा ११)। (य त ["।य] पक्षों का बर, नीड़ (पाम)। त्यार प्र "ब्बार] कुसाबार बंश-परम्परा हे बसाबाता रिवान (वव १)। विरियं पू [ [बें] तितू-पन्न की पपेला से पार्य (ठा व !)। एउप वि [<sup>\*</sup>रस्प्य] पृहस्कों के भर भीका मामनवासा (सूम २ ६) । कुर्त कर है [कुळकूर] इस माम का एक राजा (पडम ८२ २६)। कुर्द्धाप पू [कुरुमय] इस नाम का एक धनाये कुछकुळ देवो कुरकुर । कृतकुत्तर (गवि) । कुसक्त पूं [कुळशु] १ एक म्बेच्छ देश । क्रस्राच पूंकिसर्घी एक मनामें केट (पर २७४) । कुछका की [कुछना] स्पमिकारिक्षी की पुरवती (मुपा १६४)। कुछस्य पूंची [कुछस्य] यम-विरोप कूमची (ठा १ ६ गाया १ १)। भी स्वा(भा १=)। कुसफेसग र् [दे] बून-कर्सक बूच का बाग कुक की मापकीर्ति (वे २ ४२ भवि)। कुछ प वैको कुडम (तंदु २० मणु १३१)। कुछ्यन [कुछ ठ] तीन साचार से ज्यास परस्पर सहेका पद्य (प्रमुख ७६) । कुप्रस्त पुं क्रिक्क हो १ पश्चि-विशेष (प्रश्न १ t)। र गुजा पत्ती (जता tv)। ३ कूरर पशी (मूप १ ११)। ४ मार्बाट, विकास बहा कुनकुराभस्य शिक्यं कुनलधी धर्य (**₹**₩ ¥) | कुक्षक्रय पून वि] कुल्सा गैड्य (पर १८)। कुछव रेको कुछन (को २)। कुम्पस्तक की विशेषकी मृत्या (देश १६)। कुळाशस र् [इस्समस] रूपार्थत (पि न १)। कुरमण रेको कुमाछ (चत्र) । परंत से निवत्ती हुई नवी कुनैयनवाचि | द्वास्त्रसः दूं [कुत्यसः] कुम्बनाए, कुम्हार (पाधा पद्ध)।

२११ **इ**र न ["गृह] पितृगृह, पिताकावर (गा १२१ सुपा १६४ स. १.१)। जाय देश । २ इसमें प्हनेदासी वादि (सुम २ २)। २ उन्तर्मे राष्ट्रनेत्राली वादि (पराइ १ १) इक)। कुळार प्रेडिक्टारी १ मानौर, विनाद ।

इस्टिगास पु [इस्टाश्वार] पुन में नवक

वननेवाना, दूरावारी (क्ष. ४ १--पव

२ बाक्काल कियं (सम २ ६)।

कुमंजी भी कि मंजी रुझ-विकेश एक बकार

का हमियार (पर्रहृ १ ३---पत्र ४४)।

१८१)। दुसिम न [दुःस्कि] चेत में कस कारने का धोटा बाह-बिरोप (बास ४८) । क्रिकि ) पुष्टिकिकी १ व्योक्तिकताल क्रक्रिय में प्रस्तित एक हुमाय (गरा १८)। २ ल. एक प्रकार का हुम (पर्राहुर १)। इप्रजियन विक्रमार भीत भित्ति (क्रम १ २, १) । २ मिट्टी की बनाई इर्ड भीत (बुद २ः कस्र) । कुलिया 🛍 [कुसिसा] भीत नुम्म (दृष्ट् २)। इस्टिर प्रक्रिक्ति मेप व्यवस्था वाचा प्रक्रि में क्यू में राशि (पडम १७ १ द)। कुखिन्यम पू (कुटियन) परिवानक का एक मेर, तातम-विरोप वर में ही सकर को बादि का विजय करतेवाला (भीप) । कुछिस ५० (दुछिस) यज्ञ एक का मुक्त धामुन (पाध जर ६२ दी)। निजान पू िनितात् रावस्य का बस बाम का एक मुख्य (परम १६ २१) । सहस्त [सम्य] एक ब्रकार भी तपरवर्धा (पदम २२ ५४)। कुर्भाकोस व किटीकोशी पविन्तिरूप (पर्वा ११—पत्र )। हुर्याय वि[हुआर्थन] प्रत्य दुत्त मे अस्त्रत (प्राप्तु ७१)। **क्**रकीर पू [क्रुस र] कन्तु-विशेष (पाधा थे व ¥\$) I हुर्लुच धक दिश्क्ष्म स्त्री क्लाला। २ स्तान करन्त्र । संक्र "मालद्रशुमार्थ सुन्-चिक्रण ना बारित शिक्षुधी शिमिरो (बा (434)1 कुलुक्टिय वि [वे] बना ह्या विद्यवसीय बुभूतिकासम्बद्धी (महि)। हुम्भेश्रम् र् हिसापद्वकी वे पार नवप---श्रवितित, रहिता, यहाँ भीर श्रपुरावा (मुझरे ३)। चुन ≴[रे] १ ग्रीस नएक। २ वि मद्री

मर्गमराकः। १ विषय-पुच्छ, जिसकी पुँछ कट वर्षे हो वह (दे २ ६१)। कुछ पूर्व कि चूताः प्रमध्यी में चूली (गुच = १३)। कुछ प्रक किया | कुरना । वहा 'मार्व्यक्त सारा वर्षः नुस्कृतसारपाइनककुर्द्धवद्यानेवधे खामूह' (परम ११ ७१)। क्षवार न क्रिक्यपुर निवर-विशेष (संपा)। कुक्क विदेश क्रिती भूतहा (वे २६३)। २ इद्देश पान पुरुषा(वे २ ६३ पान)। कुद्धरिक पूँ वि] नाश्वनिक इसनाई, मिठाई वनानवासा (वे २,४१)। कुक्करिया जी [ वं ] इतवार की बुकान (पारम) । कुद्धा को किल्या र पत नी नली संरियी (ह्रमार्धे २ ७६)। २ मधी क्रमिन मधी (क्य)। कुछारा पू किल्याकी धॅनिवेश-विशेष मध्य केश का एक ग्रन (कप)। कुद्धी देवो कुद्धा (वर्गनि ११२) । कुरुक्तिया की [कुरुक्तिका] बदिना बड़ी (मुघ (४२)। कुरूल्सी की दि काय विशेष प्रवस्ती --'कुलेर' (पद ४)। क्षरकारिम कि विको क्षत्रारिम (महा) । कुरुद् दे दि । ज्यापन विवाद (१२ १४)। इत्याय न दि तर् पछि सक्ती आसी कुबस्य न [कुबख्य] र गीबोटाल इस रंग काकमक (शाध) । २ चल्र-विकासी कमक (मा२७)। १ कम्म पप (ना४)। कुमधी की हि ] कुथ-निरोप (नुम २४१)। कुमिन पु [कुर्रवस्य] बन्तुवाय नपहा कुलते-नामा (पूर्णा १) । नदी की विक्री वस्ती-विदेव (वए**छ १---**वन ६६) । कुचियनि [कुपित] हुक दिलको प्रस्ता ह्यादी बहु(पणहुर र नूर २ ३) हैना **७६ शानु६**४)। कुषिय देशो कुरप = गूप्प (नरह १ १० हुना ४ ६)। साध्य और [शास्त्र] विद्योग मादि पृद्दोरकरस रकते नी नुद्रिया, वर का बह जाग किवमें गृहोतपराठ रक्ती आते हैं

(पद्यार ४---पत्र ११३)।

क बेर देवी कबर (मजा)। कुरूब एक (क, कुर्य) करना बनाना। नुष्पद (मग)। भुका कम्मिरवा(पि ११७)। वह कुरुमंत कुरुमाण (भोष १६ वा) साम t t)ı कुस पुन किरा] दूरा-बिरोप वर्ग बाम, कास (विपार ६) निवृर्)। २ पृंशत-रवी राम के एक पूत्र का नाम (पठम १ २)। स्त भिन्नी वर्तका मबन्सल को बस्यन्त वीक्स होता है (क्त ७)। गानगर न ("ग्रममारे नगर-विशेष विद्वार का एक नगर, राजगृह, को माननम 'रावमिर' नाम से प्रसिद्ध के (पत्रम २ १×)। गगपर व [ प्रमुर] देखी पूर्वीक सर्व (सुर १ व्हे)। इ.प्. विची मार्च देश किलेव (सच १४ टो)। हु पू ियो पार्च देश-विरोप, विस्ती राजवानी सीमें पूर थी (इक)। चन िंग्र, [क] बास्तरल-विशेष एक प्रकार का विद्यौता (छाया १ १---पत्र १६) । त्य**स**-पुर न ["स्थायपुर] नगर-विशेष (पत्रम २१ **७१)। महिया की [मृश्यिका] बान के** साम कृदी बाती मिझे (तिषु ta)। बर ई [ बर] डीए-विशेष (**पणु—**टी) । इस दिक्षियों को का क्या इस (साम २ २ ₹ ty)ı कुमण न विशेषीयन, भार करना (९८) कुस यन [व] योरस (फिबर २)। कु वित्रम वि [व] दोस्त के बना हुमा बसमा मादि भाष पून् (१ स) शिवंदि (पिंड २२वै)। कुसस्र वि [कुराय] १ तिपुतः चपुर, वस्, मक्ति (माना) सामा १२) ।२ न पुच विच (राम)। १ पुरुष (पंचा ६)। इसस से [इरास्त्र] ननरी-सिरेप निषेत्रः

मदोष्मा (दावम)।

इनिवार (रे 🕳 १) ।

इन्सार वेदो कृतार (स. ६.)।

इस्तीकी [इसी] तोई शास्त्र ह्या एक

कुसीसम् दु [कुशीसम्] धमिनयकर्ता नर (ক্সু) ১ कुर्मुम कुरु [कुर्सुस्म] १ कुत्र-विशेष कनुम वरें (ठा⊏—पंद ४ ३)। २ त हुनुस का पूष्प निस्नारंग बनताह (मं२)। ३ रंग-विरोप (भा १२)। इस्भित्र वि [इसुन्भित] हुनुम्म रंगरामा (मा १२)। बुर्सुभिस्न पू [द] पिरून दुर्बन पुरसकोर ( R R R) I कुर्सुभी की [कुसुर्मा] कुन्न-विशेष हुमुन कापेड़ (पाम)। क्सुम चर्च [ इसुमय् ] पून पाना । इन्न-मीर (सबीय ४७) । **बु**सुस न [बुसुस] १ पूज पून (पाम प्रानू ६४)। २ ५ इ.स. नाम का भगवान् पषप्रम का श्रासनाविद्वासक पना (सेति ७)। फिउ पू [\*केत्] मरुलगर शीर का समिद्धापक देव (दीर)। बाय, बाब प्रविपापी बामरेव मक्एनज (गुरा ४१, ११ महा)। उम्हय पू क्रिया बलाव शत् (५) ना)। वयर ग ["नगर] नगर-पिरोप पाटितिपूत्र धात्रक्त जी 'पटना' नाम से प्रमिक्ष है (बादम) । दिंत पू दिन्तों एक क्षेत्रदूर देश का नाम इस धारक्तियी कान । के नवरें जिनदेर भी मुरिनिनाम (परम १ ६)। दाम न ["दामन्] कृती की माना (वरा) । मणु न भित्रप | शामदेन (हमा) । "पुर न ["पुर]देखा झार व्यवर (का ४०६)। बाज प्रशिवाणी कामरेव (पुर ६ १६२) पाप)। रम १ [रमम्] मररन्र (राप)। "रह दूं विद्यु देशो देत (परम २ १)। क्षया श्री [सता] धन्द-रिशेष (धन्दि १३)। संभव र् सिमय नपुनाय, शैवनाम (बलू) । सर पू ["शर] रामरेव (बुर ६ १६) । "अर्द् विकरी इन नामना टक एक (सिंग) । । उद्द प्री विभी नाम बामदेर (म 20व) । विद् ग्री ["पर्ना] इस नाम की एक नगरी (पत्रम ४, १६) । ीसप र् [ीसप] विकास वर्धन, कुरा रेत् (राज १ १: भीर) ।

44

पा**इमसङ्गङ्ण्यवो** कुसुमसंभव र् [कुसुमसम्मव] वैराज मान ना सोनोत्तर शाम (सूरव १ १६)। कुसमाछ वि [कुसमयम् ] कूनवासा (स ६१७) । कुम्माल पुँ [द] चोट, स्तेन (६२ १)। कुममारिश्र नि दि रून्य-मनस्क आन्त-चित्त (दे२ ४२)। कुसुमिश्र वि [कुसुमिन] पूणित पूण युक्त, विका हुवा (ए।या १ १) परम ३३ \$X=) 1 हुनुमिस्छ वि [हुनुमवन् ] उसर देखो (सुपा २२३)। बुस्र [वे] देवो मस्र (दे २ १४४ हि)। कुपुछ पुं [कुशूछ] कोह, यन रखने के निए मिट्रीका बना एक प्रकार का वेड़ा पात्र (पाम)। कुरमुभित्र वृ [कुस्वयन] दुष्ट स्वयन (संबोध कुद्ध यक [कुथ्] सद वाता दुर्यनी होता। बुद्द (मनि हे ४ ६६४)। । इन्द्र पू [कुद्र] इस वेर पादा दुहा महीमहा बच्छा (श्यनि १)। कुइ देवी यह (बाध ७ म)।

हुईड पू [क्प्माण्ड] मन्तर देवीं की एक पाठि (द्यीप) । कुर्बंड न [कूप्माण्ड] १ कुम्ब्स, फेंश नोईस (कम्म ६, ८६) । पुरंडिया सी [पूरमापडी] कोहेंद्रा ना याद (यम) 1 कुष्प ह } बेग्रो शुह्य (वर्गीव १३% कुत्र द)। इरग १ (इ.६६) नन्द-विरोध 'नारिखीह य पीह स पुद्रमा स छहेन व' (उत्त १६ हुन्द वि [रे] पूच्य पूच्या (दे २ १६)। पुरुष र् [चुरुम] १ वर्षों ना एक प्रवार, बूगी बो एक बांव 'से कि से हुइछा ? दूरए घन्नेनिवहा पएलता' (पण्ड १-पत्र १३)। २ बनस्पति-बिरोप । १ मूमि-स्पोर (पारा) १--पत्र १ : सावा) । ४ देश-विदेश । १ इसमें च्युनेशनी जाति (पण्यू १ १—१७ !

fa ft) i

कुरुष्प वि [क्टोधन] कोबी, क्षोप करनवासा (पर्ता १ ४—पन १ )। कुहणी को दि] पूर्पर, हाय का मध्य-माग (मुपा ४१२) । कुह्य पून [कुह्क] १ शापु-विशेष शैक्ते हुए धरब के चदर-प्रवेश के समीप करान्त होताएक प्रकार का नामू: "महायश्चिम-इमकृष्ट् (मन्द्र २)। २ इत्यासादि कीत्र 'समोतुए धनदृहुए बमाई (दस १, १)। कुद्दर न क्रिक्टी १ पर्वत का बन्तरात (एगमा १ १---पत्र ६६)ः गेर्द्रन वित्तपरियो खिन्बर**दृहरं व स**प्तितमुख्यविमें (गा (५०)। २ स्टिप्ट विम जियर (प्रस्तुर ४०) पासूर) । ३ पुंव देश-विरोप (पउन १८ कुराब ई [कुठार] दुस्हार करना (बिया १ ६ पटन ११ २४ स २१४)। इंडाबी भी [इठाएँ] दुस्हादी, दुढार (उप 1 (87? दुदायला की [बुद्रसा] १ माल्बर्य-जनक बम्म-स्थित, रम्भ-बर्धा। २ शोगों से प्रथ्य इर्मित करत के लिए किया इसा काट-भेव (बीत)। कुदिअ नि [रे] सिप्त गौताहूचा (देश ३४) । कुद्दिअ वि [पुचित] १ नोही दुर्गेन्यगाना (छाबार १२---पत्र १०६)। २ सहा हुमा (वर ५६७ ही )। ३ जिल्हा (खावा १ १)। पृद्यनि [पृतिक] शक्त छहा हुया (पगद्द २ १) । कुहियी भी दि दि पूर्वर, हाव का मध्य

१६ वर ) । श्रद्भवय पु [ब्रुप्तर]क्टरिय (उत्त १६ E=) 1 इर्ड र्र [र] योगगी-विदेश पुरेश्व एक मनार ना हरें ना माद (१२ ११)। ) प्रशिद्ध की १ अमन्तर

इंड्डम 🌖 प्राप्तानेशमा मात्र तालाहि जातः

भागा १ रप्या महत्त्रा (६२ ६२)।

इदिल पूँकी [इन्द्रमन् ] कोयत वशी (गिष)।

कुटु स्थे [कुटु] कोशिल पद्मी को धाराज

क्युण देवी श्रहण≈कुण (उत्त १६

(पिम्)।

क्रदेवग—हूम

सम्मकाने (कत्त १ ४३)। १ सामालक वक्रीकि-विशेष केंद्र न विस्हयह सर्व प्राक्ष-द्दुक्देक्प्हियं (पर ७३ टी बृह १)। क्क देवरा पूर्व [दे] सत्रमा (पंचा ४, ६ )। कुदेवना से [कुदेटका] करनितेन भिएशसु (पण ४)। कुञ वेको कुन = कूप (वंड इस्मीर १)। कुभगत [कुभन] । सम्बद्धाशम्य । २ वि ऐसी भाषाच करनेवाला (ठा ६ ६)। कृभजना को [कुजनता] पूचन, यम्बन रुच्च (छ ३ ३)। क्रमा मी [क्षिका] दूर्व कोटा कूप (चंड)। कृदयन [कृषित] यन्त्रक मानाम (बहा पुर ६ ४०)।

क्र्या की [क्विका] रिवाह सादि का यम्बक यानाव (निव १४६ टी) । कृषिमा स्मै [कृषिका] वाही-हुँच का बाल कृषिया की [कृषिका] इतुर, पुत्तकुता पत्थी क कुतरा (विसे १४६७)।

कृत पक [कृत्] सम्बद्ध रूम करता। मूनर्वे (पार ११) । वह- कूर्यंत (मै २६) । क्षिम व [क्षित] शक्त प्रमान (कुमा) मै २६)। क्ड सक [क्टप्] १ क्टा ट्याना। २ सन्यवाकरमा। दूवे (मलु १ थी)। कृष पुंदि कृत] पात फॉसी बात (दे ९, ४३। एक बत र, सूच १ र २)। कूब पुन [कूट] १ मन्त्रम, कन-पुन्त, फूटा

(धेवीय ६१) ।

'इंड्युलरूडमहेड' (पडि) । २ **आ**न्दि-काक बस्तु (क्रम 😻 ६) । ६ माया, क्रपट, स्वब दना वीप्रा (नुपा ६२७) । ४ नरक (बस र) । १ पोइा-जनक स्वान, दुःखोररास्क जनह(तूप १ ४.२ इत ६)।६ फिचर दीव (ठा४ २० रंग्ड) । ७ वर्गत का कस्त मान (वे २)। च पाराख्यम कन्त्र-विदेश नाप्ने काएक प्रकार का सम्ब (दन १६) । र **ब**पूर चरित (निर ११)। नारिकि

["नारिन] बोजेवान श्वन्तोर(नुपा६२७)।

गगद पू ["माद] बीले के बीदी की

र्देडलेसला(स्ति १२)। और सम्बद्धाः

का बात, प्रमेरी (बत ११) । हुस्स बी <u>"तस्म] भूओ नाथ बनावटी नाथ (स्वा</u> t)। पास न ["पाञ्च] एक प्रकार की मक्कती पत्रकृते का काल (विधा १ व)। प्पम्रोग 🖫 ["प्रमोग] प्रच्यव पाप (माद थ)। क्रिड् दृृक्तिक] र काली क्रेक पूर्वरे के इस्ताहार-तुषय समार बना कर बोबी बाबी करता । २ बूचरे के नाम से फूडी फिट्री वमैष्ट् विक्रमा (प्रतिः तवा) । बाह्रि प्र [वाहिन] वैब, बलीवर्ष (यात १) : सम्बन्ध र [सास्त्व] मूळी पनावी (वेचा १)। सक्ति व ["सामिन्] पूळे पानी क्षेत्रका (सा १४)। सक्तिकाल ग<sup>ि</sup>सा ६न्व] सुठी क्वाही (पुपा १७१) । सामछि की ["शास्त्रसित्ते १ इस विशेष के बाह्यर का एक स्वात, वहाँ वस्त्र-वातीय देवीं का निवास है (सम १३। ठा२ ३)। २ नरक रिका श्रम-निशेष (कत २ )। गगर न ["मगर] १ विकार के भाकारताला कर (ठा४ २)। २ पर्वत पर बना ह्या पर (भाषा२ ३ ३)। ३ पर्वंत में कुताहुमा वर (निदृ१२) । ४ वि्सा-स्वान (ठा४२) । मारसास्त्र को [गारशास्त्र] वर्कन नावा बर, बडम्पन करने के निए बनावा क्षमा बर (विदा १३) । हिंच न ["हिस्स] पादारा-मध्य क्रम की तर्वड् मारतः कुचन बल्बना (स्थ ११)। कूबन [कूट] १ पाट वाल व'स व्यंत (पूछ १ ६.२ १व राव ११४)। २ नगतार २७ दिन का क्षत्रवास (संबोध १४)। कृतग देवी कूत (माधम) । कूम पत्र [कूमम्] बंदुवित होना संदीच पना (पदश) १

कृष्णिक्ष वि [कृष्णित] सकोव-प्राप्त संबोधित (बढर) । क्जिम वि [दे] स्वर् निकतित बोहा विसा हुमा (दे र, ४४)। कृष्णिम पुंक्षिक] सना सेलिक शापुत (पीप) ।

क्तिय वि [क्ष्मेणन] नहाह्या (दुप्र १६ )।

**नइ- कुर्यंत कुबसाज (बोब २१ वा) वि**रा t =) : कूम पुं [कूप] १ कूप कुँमा (पत्रह) । २ वी <del>तेन परीच्हरखने का</del> पात्र कुतुप (ख्रासा t १—-पन ≭वः भीप) । बृक्दुर पू [बर्दुर] र कृप का मेड्क । २ वह मनुष्यं थो बरना मर चीक् बाहर नक्या हो धनस्त्र (का १४६ थे । क्षेत्रे कुन् । कूर वि[क्ट्र] र निर्देश, निरुक्त ईंस्तर (फ्लाइ १ ३)। २ कर्मकर, रीज (द्यामा १ तूम १७)। ३ पुँचवस्य काश्यनात काएक तुत्रद्ध (पत्रम १६ २६)। कूर पुन [कूर] बनस्पति-विशेष (सूम २ व ₹**६**) ⊥ कुर न [कूर] यस्त धोरन (वे २,४०)। गहुम गह हुम हु [गहुक] एक के म्यावि (मावाः माव व) । कूर व [ईवन्] बोहा बला(१२,१२८

दर्)। कूरपित्रव न [वे] चोजन-निवेच चाय-पिरेन (भाषम) । कूरि नि [क्रूरिम्] १ निर्देशे कर विकास। २ निर्देग परिवारनाचा (पर्याः १ ३)। कूछ न [दे] सैन्य का विकता धान (वे ६ ४वा के देश दश) I कुछ न [कुछ] तट, किलाच (प्रस्म शामा १ १६) । भसरा दे स्मातक रूक प्रकार

का नागमन को किमारे पर खड़ा हो बानान कर मोक्न करता 🖁 (बीप) । बाउपा बास्त्र पुरिहासको एक देन गुनि (ग्रन्ट <del>पूजर्</del>यसाची [कुछकुया] नदी तीर नो दोक्नेनाची नदी (वेली १२ )। कृष पूर्व [वे] १ पुराई भीत की बीन वें जला (दे २, ६२) प्रमा) । २ चुराई चीज को दुरानेवाना धीनी हुई बीज नो नहाई नगैरह कर बारव केलाला 'छए छ छ। वीवदी देवी पडमछामं एवं ववाधी - एवं बद्ध देवा अंदुरीने धीने भारते नाने नारक-धीर रावरीय वर्षा साम बलुरेवे सम न्यिमकाक्ष्य परिवर्ततः तं बद्द तं वे करहे

मासार्श मने कूने ही हज्जमायन्त्रह, छए स्र महेरेना अंतुमें बदसि तस्य धालाधाना मनमगुणिहेरे बिहिस्सामि (सामा १ १६-पन २१६) 'दोवईर दूबन्याहा' (उन 84 8 8 4 44) 1 कृत ) पृंक्तिप, को र कुप कृषा कृषण } गर्ता (प्रास ४४) । व गर्त (प्राप्त ४३) । २ म्यर्-पात कृतिय ) कृतुपं दुष्पा (बका ७२ रप प्र ४१२)। ६ वहाजका मध्यस्तम्य जङ्गिरपत्त ब बाबाता है (धीप छाया १ व) । तुस्म की [तुला] कूप्तुना, रेंद्रवा (दे १ ६६, ८७)। संदुक्त र्थु [सण्डूक] १ कूप का मेक्ट । २ महाज्ञ मनुष्य को सपना कर स्टोड बाइर न जाता हा (निचू १)। कृत्य दू [भूपक] केतो कृत = कृप (रवण ६२) । स्वनाम-प्रसिद्ध एक वैन मूर्ति (मैत

ह)।
कुत्रा (क कृत्रा र जहात का एक प्रस्तर
कृत्रा (क कृत्रा र जहात का एक प्रस्तर
कृत्रा का प्रक्र माग 'चंक्रिएएसक्ट्रहरूप'
(एग्या १ ८—पत्र १२०)।२ रस या
साही करेग्द्र का एक सम्बन्ध पुरुत्रा (वे
१२, ४४)।
कृत्यक (वे) वकतन्त्रक (२ २ ४३)।

कृषिय न [कृष्टित] सम्पक्त रान्द्र, 'तह नहीं कृणह से मुस्कद्वीय उत्पूर्ध जल' (मृग २ व)।

कृतिय पू [कृतियक] इस नाम ना एक सैनि-केरा—क्षेत्र (प्रावम) ।

कृतिय वि [क] नोपन्यावर्षक प्रथर हुई बीज भी कोज कर यन मानेशना (स्राया ११ —पत्र २१६)।२ चोर नी काज करनेशना (स्राया ११)।

कृतिया की [कृतिया] १ घोटा कृप (वर ७२ टी) १२ घोटा लोहमात कृषी(यात)। कृषी की [कृषी] कार देवी एतच्यो समय-कृतीयों (वर ७२० टी)।

कुमार पु [ब] नर्जाकार, वर्षे कैसा स्थान बहुरा नुकारणसंद्ययों (दे २ ४४

क्टंड प [क्प्माण्ड] स्पष्टर देशें वी एक व्यक्ति (पण्ड रे ४)। प्रस्क [की] वीतता सरीरता। वेड, देस

(पर्)।

सन्दर्भ व साध्ये मिछवे' (पर्ता १ सत्त ६७ टी)। कअइ की फिलकी] वृत्त-विरोप, कवड़ा वा कुच (कुमार ६ = २४)।

कंअग ) पू कितक १ वृक्ष-विशेष, केवहा

| कंड्राय } की गाड, वितरी (गदर)। २ | ज वितरीनुष्य वेवका का क्रम (गदर)। ६ | वित्त निमान (ठा १)। | कप्रारी की [कितको] १ वेवका का गाड या तीवा। २ कवड़ा संक्रम (ग्रंथ ६४)।

कासक देवो फेनल (यमि २६)। केअन देवो कड्रशन म देतवा 'ज' नेमदेश 'पिमाँ' (या कप्रश)।

क्रमाकी [ते] रज्जु, रत्नी (देवे ४४ कर १६ १)। क्रमार पुविदार] १ श्रेष केत (पुर २ ७०)। २ सालवाल वदाये (दास) सा ६१)।

क्ष्मारबाय पू [के] बूल-विशेष क्सास वा पंतु (२ ४४)। क्ष्मारिमा की [केत्रारिका] बाहबायी बमीन कीवर मृति (बच्च)।

कड दें कि तु र क्या प्रवास (मुसा १२१)। २ घर-निरेग (पुत्र २ : गडर)। १ चित्र निराम (पीर)। ४ दूर-नूद कर्र मा मूर्ता (गडर)। न्यात चित्र निवर्तार से ही स्थित मार्थ पे हो करवा हो ऐसा सेन-निरेग (पार ६)। सह की [सेन]

हिमरिज्र भीर विद्युत्तेज्ञ की सप-महिती का नाम क्याणी-विशेष (सन १ ४ छावा १)। माळ न [नाम्स] वैतास्य पर्यंत पर सिप्त कर नाम का एक विशावर-नगर (क्ष)। केउ थूँ वृँ वृण्य, नरिष्ठ (१२४४)। केउ थुँन [केतु] एक देवविमान (वेनेज्ञ ११४)। केउमा थुँ कितुक] पातास-कस्य-विशेष केउमा थुँ कितुक] पातास-कस्य-विशेष केउमा थुँ कितुक] पातास-कस्य-विशेष

केकर हुँग कियूर] १ हाय ना सामृष्ण विषेष मञ्जर महत्त्वन (पाप पा। १,१३)। २ दु प्रतिष्ण समुद्र का पाताल-कत्तरा (पव २०२)। केकरपुच दू वि] मान तमा मेंस ना बचा (सीत ४०)। केकब दू कियूय] बीतेण समुद्र का एक

पाताय-करार (इक)। केंद्राय यक [केंद्राय] 'कें-कें प्राचार करता। वह पैन्द्रर तथी बहावि केंद्रावंदी

महीपांचर्यं (परम ४४ ४४) । केंसुल देखों किसुल (कुमा) । केंकड़ की [केंक्सी] १ राजा स्टारत मी एक राजी केंकम देश के राजा मी कम्या (पडम

पना कम्म राज्य प्रकार माना (पान २२ १ वा छा पुरेष)। र साउद बानुदेव की माता (यम ११२)। व स्थर-विरोह के विभीयण-मादेव की माता (यावम)। केट्य पुष्टिकम् । १ स्था-विरोत सह स्था प्राचीन बाह्यिक प्रदेश के स्थिए की सीर

तवा विश्व देश की धीमा पर स्थित है। २ इस देश का प्रतेतला (पतह १ १)। ३ वेजस देश का प्रता (पतन २२ १ ४)। धाकसिया की [केंद्रसिका] प्रदश् की माता का नाम (पतम ७ १४)।

कना की [केंग्र] सदूर-वाली: रव वूं [रित] बदूर की बातान सदूर-कन्न (लावा १ १—पत्र २१): कम्प्रदेश किंग्रायित] नदूर का कन्द्र (बूता

श्चार्यन पुरुष्यायन पुनर्य व । शहर (ह वर्ष) । क्लिट रेग्ने क्लिट (क्लिट कर १००)

पाचाई रेग्वे काउई (परम ७६ २६)। काइय रेग्वे काउय (पर २७४)।

कद्यसाओं किंद्रसी] सारा हो माता (पहन १ १ ११४)।

२६०	पाइमसइमइण्ज्यो	केकाइय—केवडिज
ककाइय देनो कमाइय (खाया १ ६—यम ११) । ध्याई देनो केटाई (पडम १ ६४) २ १४४) । ध्याइय देनो केटाइय (धन) । देट्य वि क्रिय] देनो नीन (दा १) । व्य ३ वृष्टिच्यी १ १ न नाम का एक व्यव ३ मेरियानी १ राम (पडम १, १४६) । २ देव-विकेश (ह १ २४ ) द्वार) तेरे दु ियु चीइच्छ नायमण् (प्राप) । केता देनो केरियाम (इस्म १३१) । कत्तिम १ हि [स्वय ] विन्ना १ (ह २, कतिम १ हि [स्वय ] विन्ना १ (ह २,	केरी की [ककरी] कुब-विरोध करेर वा बाक जिनेक्योरेकीर— (उन र र रहे दी)। केस्स देवों कराज - करत (हे र रहे)। केस्स देवों कराज - करत (हे र रहे)। केस्स दक्ष [समार्थन्त] चागरका करात, चाय कर ठीक करता। केसाबर (हे ४ रहे)। केस्स दक्ष [स्कास] एक्स कुम्य दुव्य विरोध (बुद्ध २)। केस्स द्वं [केस्स] एक्स कुम्य दुव्य विरोध (बुद्ध २)। केस्स द्वं [केस्स] र स्वतान-तरिज्ञ वर्षत विरोध (वे र कोश तत्र कुमा)। र हस्य नाम ना एक नाम चाम (स्वर)। र स्व नाम- चन काम सामस-वर्षत (अ ४ २)। र सिद्धी	क्षणहर वि [कियत् ] निजयः ? (बय १४० मिछे ६५६ थे)। क्षणहर् दुं [कैनचें] चीवर, मक्षणीयाद, मकुमा (वाल स ११६४ है २, १)। केणहर् (वार) केलो केपियल (१४४ वा कुमा)। केपास वि कियस) १ याजेला स्वस्त्व (स २, १३ चीत)। २ साजुल्ल स्वद्वित सीवीवर (वार)। ४ साजुल स्वद्वित सीवीवर्ग (वार)। १ वा, साल-किया सावीव्य (विशेष १)। १ वा, साल-किया सावीव्य (विशेष १)। १ वा, साल-किया सावीव्य (विशेष १)। १ वा, साल-क्षिय सावीव्य (विशेष १०१)। क्षण वि क्षणुर्वी वा वार्ष सावीव्य (विशेष १०१)। क्षण वि क्षणुर्वी वा सावीव्य (विशेष १०१)।
प्रको।  करमु (यर) म क्रियो नहां रिय वयह? (हे प्रदे रें।  करद रेंगो केशिम (हे र देर प्राप्त)।  करद रेंगो केशिम (हे र देर प्राप्त)।  क्रिया १ (यर) रेको कर्द (यर हे प्रभ र देका प्रिक्त रें रें।  क्रिया न क्रिया दे पह सर। २ विक्र निकासी (यर प्र)।  र वंगिय का हाया (ठा प्र२—पन रहे)।  वंगिय वंगिय का हाया (ठा प्र२—पन रहे)।  वंगिय वंगिय का हाया (ठा प्रयाप्त वंगिया)।  वंगिय वंगिय का हाया (ठा प्रयाप्त वंगिया)।  वंगिय वंगिय का हाया (ठा प्रयाप्त वंगिया)।  वंगिय वंगिय का वंगिया।  क्रिया वंगिय वंगिया।  क्रिया वंगिय वंगिया।  क्रिया वंगिया।  क्रिय वंगिय वंगिया।  क्रिय वंगिया।  क्रिय वंगिय वंगिया।  क्रिय वंगिय व	का एक तप्रकृता पार (तिर १ १)। केवी क्यूब्या । केवि क्षेत्र क्यूबिट (क्यूबिट १ ६८) पूज १६ १८)। केवि श्री क्यूबिट क्यूबिट (क्यूबिट १ ६८)। केवि श्री क्यूबिट क्यूबिट १ क्यूबिट क	र ४)। जाज न [ कान] वर्षेष्ठ का चेत्रुष्ठ का रहा र १)। जाजि नामि व्यक्ति का रहा र १)। जाजि नामि विक्रियों का रहा र १ केन्द्र का नाम के रह प्रमुंत के स्वतेष्ठ क्यांप्रियों का नाम के रह प्रमुंत के स्वतेष्ठ क्यांप्रियों का नामि के रह प्रमुंत के स्वतेष्ठ क्यांप्रियों का नामि के रह प्रमुंत के स्वतेष्ठ क्यांप्रियों का नामि के स्वतंष्ठ क्यांप्रियों का विक्रियों वा विक्रियों वा विक्रियों वा विक्रियों वा विक्रियों का विक्रियों के विक्रियों का विक्रियों का विक्रियों के विक्रियों
प्रपाद हिन्दिस्त गिर्म केल (उन ६६.११)। घर }ि कि विशेषम् विश्वम विश्वम घरस } केल्यो पीत (स्क्य ११) है थे ११८१ केश प्राप्त प्री? है थे १९८१ केश प्राप्त प्री?)। परत न किया है दुइद महेर नवल (सार, मुग ४६)। १ देवर वन्य (ह १ १२)। वरिष्य विश्वम्य विश्व विश्वम विश्वम वाहे (ह १ १ राज्य नान)। वरिष्य विश्वम्य केला विश्वम्य नाहे	होसन्द क्षियान्यर (क्यू)। विसाय न [स्विमान] निवासन्यर (क्यू)। ने स्विमान] निवासन्यरम (क्यू)। ने स्विमानी हिंदिन होन्य राम्या (क्यू)। स्विमानी (स्विमानी कार राम्य (क्यू)। स्विमानी हिंदिन होन्या, स्विमारियों स्विमानी हिंदिन हेन्या, स्विमारियों स्विमानी हिंदिन हेन्या, स्विमारियों स्विमानी हिंदिन हेन्या, स्विमारियों स्विमानी हिंदिन हेन्या, स्विमारियां स्विमानी हिंदिन हेन्या, स्विमारियां स्विमारियां हिंदिन	र स्वयंद्र । १ वृ विकारेस प्रीवेशर (का १ ११)। वेशक्तिम विकारिका १ केम्बलमानाम्य (१९९)। २ सीप्पुल, केमुले । प्राणास्य केमीर्थ प्राण्यं (विस्ते १६०१)। १ केम्बलमा वे कंप्या प्रकेशका (वे १७)। १ केम्बलमा वे कंप्या प्रकेशका (वे १७)। १ केम्बलमानिकाणी (ठा ४ १)। ४ न. केम्बलमानिकाणी

इषस्त्रं की [केवर्क] ज्योतिय विद्यानीय्येष (इल्प १२६ १२६)।

हेस पूँ विद्या केट बान (बप ७६० दी प्रयो २६)। पुर न [\*पुर] धनाम पर रिवत एक विद्यायर-नगर (इक)। स्प्रेश र्षु [स्थाप] केशों का उत्पूतन (मग पराह २ ४)। वाणिज्य न ["बाणिज्य] केरा वाले जीवों का व्यापार (मग व १)। इस्य इत्थय हुं ['इस्त क] केरापार समा-र्चावत करा संबत बास (कम्पः पाम)। केस देवी केरिस। भी सी (मण् १६१)।

केंस रेको किलेस (क्य ७६८ धी पम २१) । केसर 4 कियाचर] उत्तम कवि भेड़ कवि

(उप ७२= यै)। कसर पुन किसर] एक दैवविमान (रेवेन्द्र

१४२) । क्टसर पुन [केसर] १ पूज्य-रेणु परान किसक | (से १ १ ३ वे ६ १३)। २ सिंह की छह के अध्याका वाल केसचा(से १ ४ सुपा २१६) । १ पू बहुल बुध (स्प्यु गाउडा | पाय)। ४ न इस नाम का एक ज्यान व्यक्तिय्व नगर वा एक उत्तवन (उत्त १७)। ५ एन विरोप (राम)। ६ मूक्फ् सोता। ७ छन्द-विरोध (हे १ १४६)। सपुत्र बिरोप (यतः १११२)।

केमरा ब्री [केसरा] १ सिह ववैरह क स्कन्त पर के बार्ने नी सदा कैमरा व सीहाएँ (प्राचु ११ मउक प्रामा)।

क्रमरि पू [क्रसरिन् ] १ विद्र वयस्यत कादीरन (उप ४१८ दी से ८ ४ परह १ ४)। २ हद-विशेष शीलवन्त पर्वत पर स्थित एक हर (सम १ ४) । ३ तूप-विरोध भरत-क्षेत्र के चनूचे प्रति वासूरेव (सम १२४) । इह पूं दिहा मह-विधेत (ठा २ ६)।

केसरिमा मी किमरिम्मी सक करने ना क्पने वा दुवड़ा (मर्गानिसे २४१२ टी)। प्रमारिक्ष वि [केमरवन् ] वनरवाना (गडर) १

कर्मा हो किमरी देशो क्यारिश किर

इक्ट्रीडियस समुर्यंद्र सपनि सम्बेस सहस्माप् (स्त्रसार ५—पत्र १ ५)।

कसवर् फिरामी १ धर्व-कार्न्स धना (सम)। २ धीकृप्ण वामुरेव नारायण (ग्राड)।

केसि नि [क्रेंशिम्] नतेरापुक निनष्ट (निधे

4848) I केसि पुंकिशा १ एक कैन मुनि सम्बन्ध पहर्मनाम के शिष्य (सम भन)। २ अपुर विशेष घरन कं रूप की बारण करनवाना

एक देख जिसको भीइच्छा ने माख या (मुद्रा२६२)।

फेसि वूं [कशिन] देवो केसव (परम ७५, ર ) ા

फस्सिअ वि किश्चिक्र] केरावाला बाव-युक्त । इसी इसा(मूघ१४२)। केसी की किसी] सावर्षे बामुदेव की माता

(पडम २ १८४)। "केसी की ["केशी] फेरावाबी की 'विदर्शन

केमी' (एवा) । केसुम रेको हिंसुम (१:१ २६ वर)। केंद्र (पप) पि [ फीटरा ] केंद्रा, फिल तरह

का? (मवि पड्ः दुमा)। केहिं(घर) स मिए, वास्ते (हे४ ४२६)। कैंभव न (केंतव) काट, बाम (हे १ १) ता

**१२४)** 1 कोन रेवो कोड़ (रे २, ४१ टी)।

कांभ देश काव (वडड) । कोअंड देवो कार्युड (पाप)।

भोआस यक [वि+कस्] विकसना बिनना। क्रोमासद (हे ४ १६%)।

क्षेत्रासिय वि [विद्यसित] विद्यप्तित प्रदेश खिताहुमा (दुमा वं २)।

कोइस वृ [काकिस ] १ कोवन । एक (पर्स् १ ४० बर २६ स्त्रण ६१) । २ दश्यका एक मेद (सिंग)। च्छाय पू [च्छार] बनापति विदेश वसकाटक (पर्या १४---

पत्र १२७)। क्षेत्रम की [क्रिक्सि] क्षीनीयत रिती

'कोइना वेबमे नर" (घलु: पाम) ।

कोइस्थ की [के] कायता कात के बदार (के 1 (3Y F

कोडआ की [दें] गोध्य की धरिन करीपारिन (दे२ ४८) पाछ)।

कोडरा ) म [कीतुक] १ हुनुहम अपूर्व वस्तु कोडरा ) देखने का बीमनाय (मुर २, २२९)। २ सारचर्य विस्मय (वव १) । ६ उत्सव (राय)। ४ उत्पुक्ता उत्तरहा (पैत्रव १)। १ इट्रि-रोपादि से एसा के सिए किया जाता कामन का तिसक रक्षा-बन्बनादि प्रयोग (राम) भीत विपाद १३ पएड १ २ वर्ग ६)। ६ सीभाग्य धादि के सिष् किया जाता स्तपन

विस्मापन, बूर होम वर्गे एह कर्म (वव १ साया १ १४)। कोउण्ड वि [कटुप्ल] बोहा नरम (वर्मीव

223) I क्रोबद्ध ) देवो कुउत्तर्स (हे १ क्ये बहेस है रूप र र र्रा क्षेत्र प्राप्त ।

कोउद्दि वि [कुन्द्छिन्] कुनूल्या कौनुकी **नृतृहत्त-**प्रिय (कृमा) ।

कोऊब्स कोऊब्स } रेको कुऊब्ख (कुमा; वि. ६१) । कोंकन पू [काङ्कण] देश-विरोध (स ४१२) ।

कोंक्यम दू [कोक्स्य इ.] १ धनार्य देश-विशेष (इक) । २ वि उस देश में स्कृतेवाला (पर्ह् १ १ विशे १४१२)।

कोंच र् क्रिक्र र ११ मान का एक धनायें देश (पर्याः १ १) । २ पति-विशेष (ठा ७) । वे डीय-विरोध (ठी ४३)। ४ इस माम का एक प्रमुर (दुना)। इ. वि. क्रीच देश का निवासी (वळा १ १)। "रिवार्ड "रिवार्ड कार्तिरेय, स्कन्र (कुमा) । बर पू ["बर] इत नाम का एक होंग (संस्कृ-दी) शीरग पुन विशासको एक सकार का अहात (पुर t)। देवो छुन्।

कॅथिगा हो [कुछिया] दारी पूजी (का ₹•):

कोषिय वि [बुद्धित] भारतित संरुपित पएह१४)।

कोटसय न [क्] १ ज्योतिय-सम्बन्धा मूचना । २ शहुनादि निभित्त-सम्बन्धी सूचनाः 'पर्वपरे वॉंग्सवस्म (बोप २२१ मा)। बॅरि रेगा बुंठ (हे १ ११६ ति)।

कोंड रेगो कुड (६१ ६२)।

٦) t

कोंड र्रू [कीण्ड गीड] केरा-विरोम (६क) ।

क्रोंडल केले कुंडल (एड)। मित्ता दू

मित्रको एक स्थलार देश का नाम (बृह

कोंडसम र् [कुण्डस रू] पश्चि विरेष (धीम) । कींडक्षित्रों की [दे] १ रतापर जन्तु-विशेष साही रवानिद् । २ कीहा नीट (२ २ ४ )। क्रोंडिश र् दि] बाम-निवासी सीजों में कूट नरातर सभ से नौथ ना मानिक वन बैठने-बाता (दे २, ४॥) । कोंडियपुर न [कीण्डिनपुर] नगर विशेष (राम ११)। कोंडिया देवो चुंडिया (परहर १)। कॅंडिण्य रेगो काडिस (रात) । कोंड केवो इंड (है १ ११६)। कोंतुम्लु पूं कि] उनुर अस्य, पश्चि-विशेष ( R R YE) 1 कॉन देशी इस्त (क्याहर रनुर २ २०)। कॉनस रेचे <u>इ</u>तस=रूक्त (प्राप्त ६ differ v) i कॉर्नादेलो कुठी (खादा १ १६—-पत 224) i कौंभी रेपो कुभी (प्राइ ६)। कारु दुविसे हैं] १ प्रक्रमान्द एसी (१ व ४३) । २ वृक्त मेदिया (इक्) । बार्वनिय पूर्व [रे] बन्दु-क्रिकेट, सोमझै नोगरिया (गण्ह १ १) । स्मे या (लावा १ १—पत्र ६१)। बादणह देनी बादणप (संबोध ४७) । वास्त्रापत [वासमद] १ रक दू<del>वर</del>।२ नाम नमन (बग्ल १ स्वयंत्र ७२)। काद्यमिय [दे] देनो काद्यसिय (पएह 1 Y-47 84) I कानुरम् देवी बुक्तुरअ (हा ६—गत्र १७१)। क्षाचें नक [क्या+इ:] दुत्तत्व साहान बरता कोसर (हेर कर बहु)। बहु क्षावन (कुना) । नष्ट काविर्दि (बरि) । प्रयोक्त मोल्यास्य (स्टिप्) व प'बाग 🖠 [बाबाग] रत नाम का एक बर्गेर बर्द्ध (यम् १)। व वांगय [वे] रेनो को आसिल (३ क 2)(

कोकिय वि [क्याइत] प्राहृत कुनावा हुया (मिषि)। कोक्कुर्य देवो क्वकुर्म (क्स. ग्रीप) । कोल्डम देवो लासुदम वहः कोलुदममाज (पि ११६)। कोकप्पन विं] सनीक-दित क्रुटी सनाई. रिश्वानदी दिस (दे २, ४६)। कोबिय पुंची [दे] रैसन नगा रिप्ल (वद 1) i कोच्या न [कीरस] १ गोव-विदेव । २ तुनी. कीत्म नोत्र में फर्पम (ठा ४—पत्र १६)। कोष्या वि [कीस] १ दुवि तम्बनी उत्तर से सम्प्रत्व स्वतेत्राताः। २ व जराज्येतः 'निक्षियामारकानेक्कारन (? च्य) हरनी' (सामा १ १--पन ६४)। कोण्यस्मास पू [वे कुत्सभाय] काक कीया, वाक्या न माणी सक्ताहरूको ध्यावि उम्ब रोज्बवाससं (उर)। कोच्छञय देशो कुच्छअय (दृ १ १६१) दुना पर्)। % আৰু উন্না কুজা (কুল)। कोळप्प न [दे] को-सूत्य (दे२ ४६)। क्षांज्ञम केवी कुज्ञम (लामा १ व—पव tax): कोकारिज वि [दे] बायूरित पूर्ण विवा हुआ, भय ह्या (वड )। कांग्मरिम वि [व्] ऊपर केवा (दे २, X ) i कोटर देनो कोन्स (केइस १११)। कोटिय पुंचि ] मी (नितीन १४६४ मा )। कोर्द्रभ दुन [के] हान ने प्रायुध बत कोर्द्र की वनवरमानी (पाप) । देखी कोट्टु स । कोटीवरिस थ [कोटीवर्ष] ताट टैठ की प्राचीत धारवाना (विचार ४१)। कोट्ट देला इट्ट ≈ इट । वक्ट फेट्डिक्साल (धारन)। थेइ धाहिय (और १)। पाष्ट्रन [प] १ नवट, सदर (दे२ ४१)। २ बोट, दिसा दुर्ग (छावा १ -- पत ११४। यस ३ : ब्रह १: ब्रुस ११४)। बास 1 [\*वाल] कोण्यान नवर-वतक (Tit YES) :

क्रीर-सेट्ट कोहंतिया औ [क्रुहमस्विक] तित गरैवर को बूरने का ज्यकरण (शास्त्र १ ५—१४ ttu) t कोट्टकिरिया थी [कोट्टकिया] क्षेत्र स्टिन, पुर्गो भारि रक्त स्पनाती देशी (भणु २१)। कोट्टम देवो क्षरूम (ज्य १७१ पर्या १ १)। कोट्टर देखों कोडर (महा हे ४ ४२१- स 249 H) ( क्षेट्टवीर पुं[क्षेट्टवीर] इत व्यम नाएक मुनि माचार्म रिज्यमुवि का एक रिप्ट (विदे २१११) । को हाओं [के] १ नी ग्री पानंती (३ ६ **११—१ १७४)। २ यक्ट, पर्वन (का** 221) 1 काष्ट्राम पू [कोद्दाक] १ वर्गीक नवर (याचार १२)। २ स. हरे फर्तों नो गुवाने का स्वात-विशेष (बृह १)। कोहिन प्रं दि] प्रोशी नौका पहान (वे 2 xv)1 कोहिस पूर्त [कुहिस] १ रालस्य पूर्ति (द्याना १२)। २ फरक-अंच अमीत, वैशी हर्षे अभीत (अर्दे) । ३ मूमि-स्म (बूर्दे, )। ४ एक या मनेक बनावासावर (वर ४) । १ मध्यक्षी मही । ६ सम्बर्ग चनारका वेड (हेर ११६) भाव) । कोट्टिम वि [कृत्रिम] बनावरी बताय मा महुराती (पत्रम १६ ११)। काहित ) ई [कीहिक] पुन्दर, पुनरी पुनरा, कोहिस ) पोडी (राजः विदा १ ६--पत्र ६६ 44) 1 कोही यी कि] १ कोई, कोइन : १ तिस स्यतना (दे २ ६४)। क्ष्यदुद्धम पुन [द] हाव हे गावत बार 'कोटड में करहर वीए' (वे २, ४०)। क्षटटुम सक [रम्] बीहा बरवा, स्तर करता। गोर्ड नर (१४ १६)। कार्टुपाणी थी [कार्टुपाणी] वैत पुनि-म्ख नी एक शा<del>वा</del> (नणे) । कार्ड देनो इट्ट = इत (मप १६ ६, स्तारा t tw) :

होह दूं [कोष्ठ] १ कारखा, समयारित सर्प का कालान्द्रर में स्वरण-योग्य समस्यान

(श्रीर १७६)। २ मुक्त्यी इध्य-विरोध (राय १४)। कोट्ट | रेनी इन्द्र = कोड (ग्रामा १ १) ठा फोट्टम | १ १) बाम) । १ मानम-विरोध क्रोहूरा | कानाम-विरोध (क्रीप २ १) । ४ बपारक शेठपै (रस ६, १ जा ४८६) । १ पैत्य-विशेष (ए।या २ १) । मार न "गार] बाग्य मरते वा बर (ग्रीप रप्प)। २ माएकपाद, मंडार (ए।या १ १)। कोट्रार पुन [कोट्रासार] मलकामार, भंडार (पन्नम २ 🐧)। र्धार् वि [दुष्टिम्] दृष्ट येगी (बाचा)। कोट्टिया की [कोछिका] याटा ग्रेष्ठ गपु बुशन (उस) । क्ट्रु रू [झाप्] ग्रका विवार (पर्) । कोई है रेनो कोर्यह (स २४६) । चोइंडिय रेने कोईडिय (क्य) । कोईपन दिने नार्यकाम नाम (दे ४, २)। मोहप चि रेगो कोहिम (पाप) । कोइर न [बारर] बहुद, बुल का बोक भाग विवर (यो १६२) । धाइम पू [धाटर] परित-रिधेय (चाम) । वीहा सहि भी विद्यासहि । संस्थानिका क्रोड़ को क्षेत्र में पुत्रने पर जो संक्या स्राय हो बहु (मम १ %) बप्पा दव)। योहान प्रशिष्टास्त्री १ योजनिय्देव का प्रवर्तन पूरव । २ म. नीप्रश्रीप्रदेश (भाग) । माहिको [बारि] १ पनुर का यव कार (थप ११३) । २ मेर, बरार (निंद १११) । बाहि भी किटि दे बंदना विदेश विदेश (जाना १ = नूर १ ६७-४६)। २ सम्बद्धाः संगी नीह (ने १२ २६ पंच)। ६ मेरा विज्ञान, मान 'मीपस्तनी पानी नीए बात्रपनीटिविद्यीवि (पर १६ टा १)। शाहि देली पाहा-बाहि (नुमा १६६) । यद्ध हि विद्वी क्रोट संस्थापता (क्र १) । मृत्म की [ भूमि] दर देन होते (हो ८३) । मिता की [रहाय] एक देन होंच (काल ४०

११)। सो स [ झस् ] करोड़ी यनेक क्तेड़ (मूपा ४२) । देवी फोडी । कोडिस न दि । योग मिही का पाव सपु ' सत्तव महोत्त (१२४०)। १५ तियुन दुवंग चुलनकोर ( पर् )। काडिम पू किटिक] १ एक पैन कुति । (बच्च)। २ एक जैत-मुनि-वस (कच्च ठा €)। कोडिम वि [कोटिय] संध्येवित (अमंस कोडिएस) न [कीडिस्प] १ इस नाम का क्षेडिस र एक नगर (स्र ६४० दी)। २ वास्ति मोत्र की शाया का एक वीत्र (कप्त)। १ पुक्रीतिन्य गोत्र काप्रवर्शक पूरव । ४ वि बौहिन्य-दोत्रीय (ठा ७---पत्र ६१०) कष्प)। १ पुरुक मृति, को शिरमृति का रिज्य या (विसे २४१२)। ६ महाबिर सूरिकारिट्य एक वैक सूनि (कम्प)। ७ योजम स्थामी के पात दीशा मेनेत्राते वाँच सी सारमी पा गुरु (उर १४२ टी) । योडिमा मा [कीण्डम्या] कीह्य-मोनीय 🗱 (रप्प) । काबिस पु कि पियुन पुर्वन कुपनकोर (देश, पर्)। कारिद्ध देशों शाहिक (एउ)। कोहित र् [फीटिन्य] इस नाम का एक ऋषि चाउत्तरभूति (बर १४ धानु)। स्प्रेटिस्य व [क्रीटिस्यक] वालस्य प्रणीत नौतिन्सम् (धर् )। क्षेक्सिमिद्दिय न [पाटिसदित] प्रत्यास्थान विकेश पर्ने दिन अपरान नरके कुछरे दिन भी "प्रशास को भी जाती प्रतिका (का ४)। कादी देशा काटि (उन का 1 राजी ३७)। करण न करण ने विज्ञान स्मित्रन (स्टि ५ ३) । जार व िनार] दम नाम का नोस्ट देश का एक नेपर (शी १६) । मानमा की [मानमा] कलार यात को एक बूब्युँता (द्धा क्रम्म्य १९३)। वरिम न [ वप] नाट देश की सम्मानी मार रहेत (इर पर १०४)। अतिमिता भी [ बीराहा ] देन बुनिनाम को एक

शासा (क्य)। सर् प्रे [ श्वर] रखेड़ पति शोदीश (ग्रुपा १)। कोडीस न [कोडान] १ इन सम का एक यात जो कीला मोत भी एक शाबा रूप है। २ कि इस दोष में उत्पन्त (छ ७--पत्र 9E ) 1 को दूंक म [दे] कार्यकात (दे २,२)। कोईसि देनो मुद्ध वि (ठा १ १—पत्र १२४) । क्षोईशिय पू [कीटुस्थिक] १ बुटुस्य का स्वामी परिवार का स्वामी परिवार का मुक्तिया (मध्)। २ प्राय-प्रयान कौक का भावमी (पर्याप्त १ ४ — पत्र १४)। १ ति पुरम्ब में बराज पुरम्ब छ सम्बन्ध रखन-वाना बुटम्ब-सम्बद्धी (सहाः भीव १) । काइमा १ किद्यही धन्त-विशेष शीरी की एक जाति (धन)। कोड़ विंदिनो ब्राइटिन वह सद्भर ९४२ है ४ ४२२३ छावा १ १६---तत्र २२४ उप देश्य मिक्। पत्रहुम देलो काटटुम (रूमा) । मोहुमिश न [र्ग] रहि-शहा-विरोप (बुमा)। कोब्रिय वि [दे] पुरुष्ती कीर्यं विनोर शीम जरास्टित (उप ७६० है।)। नाइड ] पू [कुछि] योग-निरीय कृत्र-रोन कार्ड | निर्देश गोवा १ १३ मा २ )। साक्रिकि [कुछिम्] बूब-धेन ने वस्त बूब रीपी (माना)। फोडिर भि [बुसिर ] बुड-रेगो बुह कोडिय केंबन्त (बएइ २ १ रिपा १ ७)। माग रि दि] १ काला स्याप कर्त्वामा (१२ ४८)। २५ सङ्घ, सबदी पछि (दे २, ४१, निष्कृशे पाप)। १ बीला बर्गेष्ट बनाने भी सकती बीएए-बाइन-दगुड (बीर १) इ काम । पुन [काम] क्षेत्र क्षण कर का कोगम । एक काम (गार देश प्रशासना) । रणाय र् विदेशयो रातम शिकार (राय) । र्धामायम् 🐧 विश्वतायम् । मनात् सन्ति ताप के प्रवत्ने धावक का नाम (दिवार क्षेत्रामग् र् [क्षमान्यः] बत्त्वर बन्धितरेन

(TT 1 7"T)

से से हैं होते को शहर हैं को है होते हैं होते है होते हैं ही होते हैं होते है होते हैं होते हैं होते हैं होते हैं होते हैं होते हैं होते है होते हैं होते ह	₹¥	पाइअसहमह्ष्यती	क्रेणाडी—क्रेस
	क्रेणार्क की [क] बेकी बोठ (हर १)। देविका ] र्यु हिनिज है एका मेरिक का देविका ] यू यूव-दिक्य (पंज हावा १ १ १ महा कर)। क्रेणु की यू यू यू-दिक्य (पंज हावा १ १ १ महा कर)। क्रेणु की [क] हिना प्र प्रशीक का व्याप कर हिन्दु की यू यू व्याप की यू यू व्याप की यू यू व्याप की यू यू व्याप की यू	स्थेय है किये हुए नाम का एक एका निका की वार पिका की की (बाब पर ४)। केटा हुन केटा हुन केटा (निर ४२) केटा हुन के	स्थाय कि स्थियन किया के के किया (याचा २ ६ १ १) क्ये क्येयमा । कीयसमा १ इं दिने के से हुए को सेयसमा १ इं दिने के से हुए कम्म (दा १) । कोरों इं दिने क्येय हुण विस्तिकेत (यह १ १-वन व) । कोरों इं दिने क्येय विस्तिकेत (यह १ १-वन व) । कोरों इं दिने क्येय के सेयसमा (विद्या १) विस्तिक (यह १) विद्या क्येय क्येय (यह १) । कोरों इं दिने के सेयसमा (यह १) । कोरों इं दिने के स्था (यह १) विद्या विद्या क्येय (यह १) । कोरों इं दिने की क्येय (यह १४) । कोरों इं दिने की क्येय (यह १४) । कोरों इं दिने की की की की की सेयसमा (यह १४) । कोरों इं दिने की की की की सेयसमा (यह १४) । कोरों इं दिने की की की की सेयसमा १४) । कोरों इं दिने की की की सेयसमा १४ । कोरों इं दिने की की की सेयसमा १४ । कोरों इं दिने की की की सेयसमा १४ । कोरों इं दिने की की की सेयसमा १४ । कोरों इं दिने हैं है की कीरों विकास ११ । कोरों इं दिने इं दूर रहा विद्या ११ । कोरों इं दिने हैं है की सी में की की सेयसमा १४ । कोरों इं दिने हैं है है की कीरों विकास ११ । कोरों इं दिने हैं है है है की की सेयसमा १४ । कोरों इं दिने हैं है है है की सी इं दिने हैं है
र कन ६१)। प्रमान["पा≼] तनर		. •	रंभन ६,१)। प्रमान [*पाक] नवर

विद्येष वहाँ सीऋषमदेव समबान का मंदिर है, यह नवर बलिए में है (ती ४३) । पास d ["पास्त] देव विरोध वरणेन्द्र का शोकपात (ठा १ १--पत्र १ ७) । सुणय सुणह क्की ["शुलक] १ वड़ा सूकर, सूमर की एक बारि जैस्ती नराह (ग्रापा २ १ श)। २ विकासै पूर्वा (पर्ख ११)। को विद्या (पएछ ११)। । शास पुन िवास] कछ, सक्की (सम ३१)। कों ज कि की जो र राजि का जासक सानिक मत का सनुवायी । २ तानिक मत स संबन्ध रखनेवाताः 'कोनो बम्मी कस्स छो भाइ रम्मो (क्यू)। ६ न दर-प्रज-संबन्धी (सग ६,१)। जुल्म स [ चूर्ण] बेरका पूर्वं बेर का सत् (दम १,१)। ट्रियन [किथक] बेर नी प्रक्रिया या गुठवी (मग ६१)। कोक्षंत्र पू वि दे रिकट, स्वासी (दे २, ४७) पाम)। २ गृह, वर (वे २ ४७)। कोलंद वं क्रिसम्बी दूश की राज्य का नामा : ह्मा बच्च मान (बनु ६)। कोसिंगित्री हो [कोसी, कारुकी] नोत बाठीय की (बाबू ४)। कोलपरिय दि [कीक्रमृद्धिक] पुरुप् श्रंबली विकृष्ट-रंबली विकृष्ट से संबन्ध रत्ननेपाला (बचा) । कोलझा ही दि] यहच रहते ना एक ठाए ना मर्त्त (भाषा २, १, ७)। ब्रोहर देवो कोटर (गा १६३ म)। कोसन न क्रिकृत क्योतिय-राज में प्रसिद्ध एक कर्रा (सिमे १९४०)। कोशास वि [कीशास] १ कुम्मकार-संयन्ती । २ व मिट्टी का पाप (बना)। क्रोसाहित र् [कीसासिक] मिट्टी का पाव वेषनेशसा (शह २)। कासाह वृ [कोबाम] सांप की एक पाति (पराह १)। कोस्प्रदल पूँ दि ] पत्री नी घाषात्र पत्री शास्त्र (देर, ६)। कोसाहस र [कोबाहस] तुनुन फोलुन रीता हत्ता बहुत पूर बानेशना प्रनेक प्रशार ł¥

केम १ का का बस्कटरस्य (६२,६ एक १) । कोसाइक्रिय वि [कोटाइक्रिक] कोनाइस-बाश्चा शोरफुलबाला (पठम ११७ १६)। कोकिन प्रे कि एक सबस सनुष्य बाति (सुख २ १६)। को छित्र प् दि] होसी वन्तुवाय, बुसाइर क्यका बुनजवाना (वे.२. ५४८ छोबि, पव २८ उप पूर१)। २ भास का की इस, सकड़ा (दे२,२४: पामा भा २:म्सव ४ वृह १)। क्रोक्कित प क्रिजमुक सुका (वे २,४१)। क्रोडिस न [क्रीसीस्य] बुनौनदा बानवानी (वर्गरि १४६)। कोक्रीक्य वि [कोबीइत] स्वीक्त प्रवीहत (गुड्ड) । काक्षीण म क्रिकीनो १ कियरेवी सोफ-मर्खा यत-मृति (मा १७) । २ वि वरा-परंपराका बुसक्स से बाबात । १ सतम बुस में उत्पन्न । ४ तान्त्रिक मत का सनुवायी (नाट---महाबी 233) I कोछीरन दि] सन्दर्गका एक प्रवाद, । कुद्धीत्व कामीररत्तलमधेमं (दे २ ४५)। क्षेल्ल्य न [कार्ज्य]श्या धक्तम्या क्रमण (निचूरर) । पढिया विदिया की भिविका प्रमुख्या की प्रविका (निक् { t ( \$ \$ कोलंक रूपि की के योग और उत्पर कार्र के मानार का चान्य दादि भरते का कोठा (धाचा २१ ७१)। कोत्तय पू [कीसेयक] स्वान कृता (सम्मत १६ वर्मीव १२)। कोस पून [वे] कोयला नभी हुई नक्सी का दुक्ता (निष् १)। कोत्तरन [कोझकर] नगर-विशेष (गिंक X40) 1 क्रोडपाग न [क्रोडपाक] रजिए देश ना एक नगर, नहां भी कापनदेव का मन्दिर है (छी 7Z) i कोतर र् [व] फिट, स्पानी पानी परिवा ( **₹ Y**9) : कांहा देनो कुछा (कुमा) । कोहाग रेजी कुहाग (प्रेंज) ।

कोहापर न कोहापुर | चीत्रण केए का एक नदर, महातस्मी का स्पान (वी क्४)। कोद्यमुर पू [कोद्यासुर] इस नाम ना एक दैत्व (दी ३४) । कोस्लग [दे] देवो कोस्तुल (वद १ दृष्ट् कोल्ह्याङ्ख न [दे] फन-विधेय विस्थी-फन ( 2 12) 1 क्रोक्टल पंदिरी १ भूगाम क्रियार (देर ६शापाम पतम ७ १७/१ १ ४२)। २ कोल्ड चरची अन्त से स्थानिकानने का कत (दे२ ६४, महा)। कोव सक [कोपय्] १ कृषित करना । २ कृपित करना । नोबेद (गुमनि १२१) कोबद्दरम् (कुप्र ६४)। कोष दृष्टियों कोण पुस्सा (विपार ६, प्रामु१७३)। कोवण विकियन | क्षेत्री कोव-पुन्त (पापः सुपा १ वधः सम १४७ः स्वय्न दर्)। कोबास पू क्रिपैक] मनार्व देश-विशेष (पव २७४)। कोचासिञ केंद्री कोक्पसिय (पाप)। कोवि वि [कोपिम्] शेवी कोव-पुनः (गुपा २०१३मार )। कोबिज वि [कोबिद] निरूण निवान, धरित (माना मुपा १३ ११२)। कोषिम वि [कोपित] १ कुछ निया हुया। २ पूषित दोप-पुक्त किया हुमा 'बन्दो किर बाहो बामखेति निव कोबिम बक्ता (उप)। फोविमा की दि गुगाती सिमारित (दे ₹ YE) 1 कोवित्रार पु [कोविदार] बुद्ध-विरोप (विक कारिणा को [कोपिनी] क्षेत्र पुरु हो (मा **१**२) । फोराज (मा) नि [कटुण्य] बोहा नत्म (प्राप्तः १२)। कोस पुदि] र दुनुष्य रंग के रंगाहण रकाबस्था २ समुद्र जनपि सागर (दे २

**(2)** 1

कोस पू शिक्षा नीन मार्ग नी तम्बाई का

परिवास को मीत (क्या भी ३२)।

२६)। २

ना रार्थ भीधा राज्य एक यसी कौसविसएडि पक्काएमी' (म ६२४)। ७ ग्रविवात-राज्ञ, राज्यार्व-तितपत्र प्रत्व वैसा प्रस्तुत पुम्तक। ६ पून, पानपान चयक (पाछ)। य न नगर विशेष 'चीर्स'नाम नवर (स १३६)। याण न [पान] धीर्गंव शाव (या ४४०)। हिम पू िधिप विवासको भेशके (मुपा ७३)। भारत ए भिशास प्रतन्त-विशेष (परवार-पत्र ६१)। संक्रिया की "गण्डका] **ब**ह्व-विशेष एक प्रकार की तनवार (स्वत) । कार्मविया और [क्षीद्यान्यास ] केनपुरि-गए की एक रहेका (कप्प)

कोस प्रिया, प्रे १ वनना पर्गर

(लामा १ १३१: पटन ६ २४)। २

तत्रवार की स्थान (सूच १ ८) । ३ कूर्मनः

'बनबबोसम' (धुमा) । ४ दुस्ब

क्सी (मज्ज्ञ)। १ मेल बृतानार चा मुद्द

मेरियल रक्नेनरिम्बियनबरंडरंडकरपसर्यः (सुपा

२७३ गउड) । ६ विज्य-मेद, दस नीहे

(वर्ष ३)। कासहद्वरिमा हो [दे] क्एडी पार्रेडी यौधे रिय-पत्थी (देश ६१)। भागपन दि काराकी नदृशसा स्रीय पान पान (देर ४० पाम)। कासस न [कीरास] दुरन्ता निरूप्ता भानुरी (पुना) । कामाय न दि शिमी नारा, इमारतन (दे

कोसंबी ध्ये [कीशाम्बी] बला देत की दुक्य-

कासम मुं किश्च के तलुकों का एक वर्षे

मय काकरात वपहें नी एक प्रचार नी बेली

नवरी (ठारु शियार ६)।

2 46)1 कास ३ (१ (कोसय क) १ केट-सिर्धर भारतस्य र (पूजाः नहा) । २ एक वैन नहरि, नुर्यामन मृति (प्रस्त २२ ४४) । वै नीन र देश का एका। ४ वि कीशन देश व बन्दर (इा ६ २)। ६ पर न दिरी मयोष्या नवधे (याह १) । क्षांसम्ब की [कोमन्त] १ नवपै स्थित

क्रोसक्रिप्र वि क्रिशक्षिकी १ कोल्म केरा र्में प्रतास्य कोतान केत-सम्बन्धी (अस २ ६) । २ मयोग्या में उराल ध्रयोग्या-संदर्भा (**খ** ম)। कोसिक्तिम न कि कौशक्तिको प्रापृत भेंट, उपहार (वे २, १२) सत् नुपा--- अस्तावना X) I फोसकिमा की [दे कीराकिस] स्पर देवी (दे २ १२: मुपा-प्रस्तावना १)।

कोसड न [कीशस्य] निरूपता बनुसाई

(कुमा सुपा १६४ सुर १ व )।

फोस∎न [दे] प्रादृत, मॅट उल्लाहर 'त पुरनएकोक्टनं नरवद्या मान्यमं कुमारस्त (महा)। ब्रेसक्या 📽 [ब्रीशस्य] निपूर्णना बनुपाई 'वर् मञ्चनीहकोसल्तका व श्रीश्राच्यय स्मार्थि (पुरा ६ ३)। कोसद्धा की [कौरास्था] रातर्यन राम की माता (सर पू १७४)। क्रोसक्रिज ग कि क्रीशक्तिको नेट, स्पक्षर (दे २ १३ महाः दुपा ४१६। १२७: सक्)। कोसा 🗗 [क्रोशा] इस नाम की एक प्रशिव बैरमा, जिनके यहाँ वेन महाचि चीत्रक्रक सुनि ने निविकार भाव से बानुर्माप (बीमापा) किया का (विवे ६६)। कोसिय विकिया वोहा करम (शह--पेर्गी)। कासियन [कींशक] १ स्कृत्य का गोत्र क्रिपेप (ग्रमि ४१ टा ६१) । २ वीनचें

न्यत्रकामीत् (चंद्र १) । १ वं बनूत पुर, रूपु (राम नार्थ १६)। ४ साप रिशेष पएक्साशिक-मामक हाँगु-विश्व सर्व विनरी क्यान भीमगरीर ने प्रवेदित रिवामा (बारन)। १ कुन-विशेष। ६ হয়। চৰুৱা। হৰাতাদের অবাৰধী ध्योति सनुसर्व। १ दन नावशास्त्र भाईमान र [भावस्थात] होवपुत दिन्त यमा। ११ इन भाव दा इक सनुरः १२ तमें को करदुरशाला करेक कामदिक। १६ नार्ड न [कूप्साण्ड] १ कुष्माग्**डी**-कर र्धान्यनार, मन्त्रा । १८ देवारन (दे १

१६६)। १९ इस कम का एक काल (म्बि)। १६ वृंबी, कीरिक दोन में करान, कौशिक-मोनीय (ठा ७—पव ११ )। १४ ब्री. द्रोसिई (मा १६)। द्मेसिया की [द्मेशिका] १ मास्तर्वनी एक नहीं (क्स) । २ इस नाम की एक विदा-थर-राज-रून्या (पटम ७ १४)। १ वर्गी का बूता 'कोसियमामामुसियविधेक्ये निवन-वत्यो में (स २२६)। देवी कोसी। क्रोमियार पू [क्रोशिकार] १ कीट-विरोध रेशम का कीड़ा (पर्णा १ व) । २ व रेत्तमी वद्य (ठा ४, ६) । क्रोसी की [क्रोशी] र रिपनी कीमी क्री (पन्ना)। २ क्लबार की क्लाब (तूम २ १ 1 (25 क्येसी क्ये [क्येशी] क्यो क्येसिया (स ५ ३—पत्र १६१)। २ वोसावार एक वस्तु 'क्रंचराकोसीपस्ट्रिवेदार्ख' (धीप) । कोर्स्भ वि [कीसुम्म] कुर्दुश्चम्बन्धी (र्देश) (सिरि १ ६७)। क्षेप्सम वि [कीसुम] पुन सम्मनी पूर्ण रा बन्त हुमा 'कोनुमा बार्ला' (पडड) । क्रोसम्ह रेखी कर्मम (श्रीम ४)।

क्रोस-क्रोइंड

भूम्मम ∤न [कीशम ] १ रेशमी <sup>सम</sup> कोसेळा रेतमा क्यमा (६२ १३) वम ११३: पर्स १ ४)। २ इसर का वरा हुमा वस (बीव ३)। काइ पूँ [काभ] इस्ता कोन (मोप २ <sup>भा</sup> कार १)। संख्या विशिष्ट वि আহিচ(রাম্ম্)। कोइ पूँ [कोथ] सङ्गा, शीर्शना (वप १ ९)। कोइ पु दि कोश्र] कोनबी केना (पिनै २१व )। क्यह वि [क्षायवन् ] होप-पूत्र, कोप-तरिष्ट भोहाए नाएडाए नावाए चीचाए "बामाय-राए (पशि)। क हैंग के हूं [क्षेस हुक ] पश्चि-क्स्रेय (बीग)।

भौहा (रि ७६) हा १२७)। २ म

(माड ११)।

देव-दिसार-वैदेश (शि रर)। व है व्यन्तर क्षेत्रीय केर-वार्शि-विशेष (यह ११४)। कोईसी की [क्रू-साण्डी] कोईसे का गांव (हे १ १२५ के २ दे थे)। कोइण वि [क्रोसन] रे नोनी प्रसाकोर (सा १७ वस्त १२ ७)। रे पू क्ष्म माम का रामण का प्रक पुम्प्ट (परम १६ १२)। कोइसि की कुरुवाह (१ १७१)। कोइसि मा [क्रमुशिकन] मुद्दानी व कुद्दान मेसे। की आ (गांध्यक) कोइसि मो की स्वाप्त केरिया का माक माक संवेशि परवर्ष निस्तार ।

बकुर देवाँ कृर = कुर । (वा २६) ।
"हैर देवाँ किर (हे २ ६१) ।
बर्राह देवाँ देव (गठा ) ।
"बर्राह देवाँ द्वांत (गठा ) ।
"बर्राह देवाँ द्वांत (गठा ) ।
"बर्राह देवाँ द्वांत (ग्राह १०) ।
"किर्तात देवाँ द्वांत (ग्राह १०) ।
"किर्तात देवाँ द्वांत (ग्राह १ ) ।
बसु देवां द्वांत (क्या प्राह १ ) ।
बसु देवां द्वांत (क्या प्राह १ ) ।
बस्तु देवां देवेंत (ग्राह १ ) ।
बस्तु देवां देवेंत (ग्राह १ ) ।
बस्तु देवां देवेंत देवेंत (ग्राह १ वेंते ।

।। इच चिरिपाइअसङ्ग्रहण्यवे क्यातस्यहर्षण्यती । इक्षमी वर्षमे स्मती ।।

ख

२ सम रोमवाबा, शय-रोपी (मुपा २३३

सर्वृ [स] १ व्यंत्रन-वर्ण किरोप प्रस्ता स्वान क्यूठ है (प्रामा, प्राप)। २ न. भाकारा, समान 'गानित से मेहा' (है १ १८७ हुमा: के ६ १२१) । इ दक्षिय (विशे १४४१) । तार्गाती र पकी बन (पाय दे र ५)। २ समुध्य की एक जाति को विद्या के बन से प्रात्मात में गमन करती है विश्वादर त्रीक (भाग १६)। देशो साय ≔ थव। गहभी गिति] १ मानप्रा-गति। २ क्रमै-विशेष को साबस्य-यदिका कारम्य 🕻 (काम २३ वर ११)। गामिणी औ विग्रमिनी विद्या-विशेष जिसके प्रभाव से माकाश में गमन किया भा सकता है (पराम 💌 १४१)। पुष्पः न ["पुष्प] मानात-नुमुध मर्सकावित थस्तु (दुमा)। सम १ वक [सन् ] वंपति-पुतः करना । सार रे बयद बरवे (शह ७३)।

स्तर वि [कृथिम्] १ सम्बाबा, नारावाचा ।

XUE) खड़म दि [क्षपित] गामित कन्द्रमत् (बीप) मनि)। काइ अर्जि [काचित] १ व्याप्त प्रटिखः। २ मरिवत विभूपित (ई १ १६६) ग्रीप स 22×) 1 लडअ वि [काबित] १ बाबा इया, चुक्क, प्रत्य (नापाच २ १ प्रमापु ४**१)** । २ माक्षान्तः 'तह यहाँति च नदाना । बहरी वैद्ये मणुरधी कमाक्याई न मुलेद' (स ११४)। १ न, मोबन मसरा आह्मपुरु व पीएख व न य एसी ताइसी हवद धन्मा (पद्य ६२ स्वाभ भ--पत्र २७६)। काइक विदियत विभागात सीक्ष किमि कामकाक्ष्मधेशे (तुर १६ १८१)। कड़म पूँ विं] हैवाक स्वमाव (ठा ४ ४---पथ २७६)।

लाइअ 🤰 [कायिक] १ सम विभाग े ज्यूनन से कि से बस्त ? बस्त सारग *घट्ट्यां कम्मपवदीर्यं बद्द*एएं' (द्याप्) । २ वि सम से उत्पद्ध स्वय-संक्रमी सम्रो संबन्ध रक्षनिवाला । ६ कर्म-नाग्र से उत्पन्नः 'कम्मनक्रमध्यानो सदयो' (विसे १४१४) कम्म ११४, व १९, ४ २२ सम्य २३; ब्रीप)। लाइच न [चूँव] बेटों का समूह, बनेक लेट (पि ६१) । कद्या की [कदिका] बत्य-विशेष रेका ह्या धीहि--बान सावाः विह्वसमायससहयाः नियोएँ (सरि) । सदर प्रे [सदिर] इप्र-विशेष कर का गाम (याचा कृमा)। साइर वि स्मिन्दिर विवर-कुत-एकवी (हे १ ६का सुना १४१)। सर्व [दे] देवो सद्ध (अ४४—पत १७६ टो) ।

(च २)।

सौर्यव रामव (शा ४४a)। हिंदा पू [ ।थिप ] खबलकी मेडारी (मूपा ७३) । कोसंव पू कियास किम-मूब-विरोध (पएछ १--पत्र ६१)। गिक्रिया भी [गण्डका] बह्त-विशेष एक प्रकार की क्तवार (धन)। कोसंक्या को क्रिक्सम्बद्धा केल्लुस-क्स की एक खबा (कम)। कोसंबी की किरास्थी वास के की पुरव-

मनपै (ठा १ ३ विपा १ ५)।

'कमककोरान्द' (कुमा) । ४

कमी (पटड)। १ पील बुतानारः चित्रमुद्र

मेजिक्करकोननिक्षिकासरेशकंक्करनसर्वे (सुना

२७ एउड) । ६ विष्य-मेद, तप्त सोहे

ना रार्थ वर्गेष्ठ राज 'एल धार्ड

क्रोसिसएडि पच्चाएमी (म ३२४)। ७

धरियान-राख राज्यार्थ-निस्पय प्रत्य, वैशा

प्रस्तुत पुस्तकः । 🗷 पुन, पानपान चपक

(पाछ)। द न. नगर विरोधा 'चीर्य नाम

नवर (स १३३)। पाण न [पान]

कोसग पुंबिशेशको सामुग्रीका एक वर्ग मन उपकरशा चमड़े की एक प्रकार की बैसी (वर्षे ६)। श्रीसङ्दरिभा को [दे] कएके पार्वती गीरी विष्यमधी (देव ६४)। क्रोसय न [दे क्रोराक] नदु रुएव क्रोटा

पान पात्र (वे २ ४०) पाय) । कोसस्य न [कीराख] कुशरता नियुक्ता, चनुरी (दुमा) ।

कोमस न [के] नीवी भारत द्वारक्त (के R 1 )1 क्षेसम १५ [कोसक क] १ केन्सिकेन क्रोससम्ग र (कुमाः नाहा)। २ एक देन महर्षि मुनोनस दुनि (पत्रन २२ ४४) । ३ कोसल देश का राजा। ४ विकोशका देश में स्टला (स. २)। १. पुर न ["पुर] स्थीप्य नगरी (माक १)। कासका 🕸 [कोसब्स] १ भगरी-सिरोप

X) I कोसकिया की [दे कीशकिया] अपर 🖦 (१२ १२) भूगा—मस्तानका ५) । कोसङ्क न [कीसस्य] निरूशवा कत्याः (क्रुमान्युपारधः सुर १ ⊂ )। कोस**इ** न वि] प्राकृत, मेंट उपहारा 'त पुरवराकोकानं नरवहता सम्पर्ध कुमारस्य (महा)।

कांसहमा की [कीरास्य] तिपुलवा, बतुराई।

'क्यु मरुम्भीदकोसस्बना य श्रीशृक्तिय

में जरून कोस्त देश-सम्बन्धी (सप १

) । २ प्रयोग्या में जन्मन, प्रयोग्या-संशन्त्री

कोसिकिय न विकीय किया प्राप्त मेंद्र

काहार (वे २, १२, छाए गुगा—प्रस्तावना

इसार्थि (मुता ६ ६)। कोसद्धा की [कीराश्या] राशायि राम की माता (चन पू १७४) । क्षोसक्रिञ न [दे कीश्रक्षिक] मेंट काहार (के २ १२) महात्र सूपा ४१का ६२७) मख)। क्रोसा 🗗 [क्रोसा] इत बाग ही एक प्रतिक्र **वैरमा, जिसके बहाँ कैन महार्थ की**रकुलसह बुनि ने निविकार भाष से चातुमाँस (चीमासा) कियाना (पिने ६६)। कोसिज वि [कोच्य] बोझ गरम (नाट---गेड़ी)। कोसियन [कीशिक] १ मनुष्यका योध विशेष (पवि ४१ ठा ६१)। २ मोसवें

नकाम कायोज (चंद १) : ३ पूंतकुक मुक रूचु (पान्नः सार्वे १६) । ४ सपि विरोप, वर्डमोरिक-नामक राष्ट्र-विप हर्षे निसरी सम्बाद सीमहाबीर ने प्रयोक्ति रियाचा (द्यावम) । ३ शुक्र-विदेश । ६ इन्द्र । ७ ल्युस । ४ कोताप्त्रवः खनात्त्री ६ प्रीति पनुष्यः। १ इन नामना एक यमा। ११ इस नाम का एक ब्रनुर। १२ वर्षे को पक्रमुनेपाला संपेश कास्त्रीकः। १३

व्यक्तिचार, मण्या । १४ र्ग्युपारस्य (दे १

(प्रवि) । १६ तूंबी कीरिक गीव में करन्त, कौतिक-योधीय (ठा ७—पत्र ३१ )। १७ की कोसिई (मा १६)। कोसिया की [कोशिका] १ माध्यवर्ष की एक नहीं (करा) । २ इस नाम की एक निया-बर-राज-कन्या (पठम ७ १४)। १ वसी का बूताः 'कोबियमाबायुधियधिष्ठे विपक वद्यतो व (स २२३): देवो कोसी। श्रोसियार दें [क्रोशिकार] र कीटनिटेन रेशम का कीका (मराद्वार ३)। २ व.

दोस-बोहर

रेरामी पण (ठर ४, ३)। कोसी की किशी है रिपनी, कीमी की (पाछ)। २ तलबार नी स्थान (गुप्र २ १ 1 (75 कोसी को कोबी दिया (ग ५ ३--- पत्र १११)। २ योबाकार एक वर्तु 'केक्सुकोसीपनिद्वतासु' (भीप) । कोसुंभ वि [क्रीसुस्म] क्रुनंत्र सम्बन्ध (रेंव) (विदि १ १७)।

कोसुम वि [कौसुम] कुत सम्बन्ध कुत ना बना हुमाः 'कोनुमा बाखा' (मडड) । कोसुम्ह देखो कुर्तुभ (वीस ४) । कोसेस १० [कोरोग] १ रेटरी नक कोसेळा रेकमी क्यका (६२ ६६) वन १४३ पर्या १ ४)। २ छसर का बना हुमावक (वीव ३)। कोइ पुँक्तिय] प्रस्ता क्षेत्र (मोव २ क

श ४ रे)। मुंड वि [मुण्ड] डोव-चीत (धार, १)। कोइ र् [क्रोब] सङ्गा श्रीलंग (सन १ ६)। कोइपु दिकोध] कोबनी वैसा (मिने વર )ા क्रीहाए माराएए मावाए सोकाए" "बालान-

कोइ वि [क्रोमबन् ] होप-पुट, कीप-विटि खादं (वींग)। कोइराक पु [कोशक्रक] पश्चि-विशेष (धीप)। को(माण र [कायम्यान] स्रेक्ट्रफ रिन्टर (बाउ ११) ।

कोईड न [कुप्पांगड] १ कुप्पांस्की-कर. रोपीस (रि ७६) हा १२७)। र ५ देव-विमान-विरोप (शि १६)। वे युं प्याप्तर क्षेत्रीय केन्द्रवादि-विरोध (पत्र ११४)। क्षोर्द्रश की [कूप्ताप्त्री] कोर्डे का माम (हे १ १२४- ६ २ १ थे)। वोह्या कि [क्षोप्ता] १ कीपी प्रस्ताकोर (सम १७ पत्रम १४ ७)। २ पू रण माम का रावरण वा एक गुम्म (पत्रम १६ १२)। कोर्द्राक्ष केवी कुन्नद्रत्व (हे १ १७६)। कोर्द्राक्ष की कुन्नद्रत्विम् ] प्रश्नानी प्रमुख प्रेमी।की आ (मा ७६॥)। कोर्द्राक्ष में की आ (मा ७६॥)। कोर्द्राक्ष में की इप्ताप्तिकम् ] कोर्रेडा का

'जह संवेशि परवर्ष नियमवर्ष

मरमाहित मोचूर्ण ।

तह मएए। कोहसिए, मन्ने

करति कृतिहारि (गा ७६०)।
कोहसी देवों कोहसी (ह २ ४३। वे २ ४)।
कोहसी की कोहसी (ह २ ४३। वे २ ४ १)।
कोहसी की [वि] सांपन तथा पणन-पात्र
विदेश (वे २ ४६)।
कोहसी की कोही (पण)।
कोहि [वि] मिमिमिन् [कोबी कोबी-स्पाप का कोहिस] प्रस्तावोर (कम्म ४,१४ वह २)।
कीहस ] देवों कउरय (ह १ १ वंग)।
किसम देवों कउरय (ह १ वंग)।
किसम देवों कउरय (ह १ वंग)।

"समूर देशो मूर = मूर। ( वा २६)। होर देशो जिर (हू २, ११)। करीब देशो सींह (गउड़)। करीब देशो सींह (गउड़)। करीब देशो सींह (व ३१)। कराम देशो सार (शापू १७)। कराम देशो सार (शापू १७)। कराम देशो स्वास्त्रम्म (शाप्त)। "विस्त्रेसा देशो स्विसा (गुण २१)। कराम देशो सुच (गुण ११)। करीब देशो सेंह (गुण ११२)। करीब देशो सेंह (गुण ११२)। करीब देशो सेंह (गुण ११)। करीब देशो सेंह (गुण ११)।

इस सिरिपाइअसङ्मङ्क्यावे क्यायस्यइस्टब्स्याः
 इसमा तर्रमा सम्बो ।।

ख

२ शय रोमबासा शय-रोपी (मुपा २३३

204) |

स्तर्कृति १ व्यंत्रन-वर्णमिनेय रक्षमा स्थान नग्ठ है (प्रामा, प्राप) । २ न. बाकारा स्पनः 'पक्ते से मेहां (है १ १०७ कुमाः के ६ १२१)। वे इत्तिय (विधे वे४४३)। गर्वामी १ पक्षी आरग (पामा दे २ x )। र मनुष्य दी एक जाति को विद्या के बन से धानाश में धमन करती है, विद्यावर सोक (धारा ११)। देखी न्यय = खन। गद्दशी ["गति] १ सल्यास-गति । २ कर्म- ∣ त्रिरोप जो मान्मरा-पविका कारण 🖁 (कम्म २,६ नद ११)। गामिणी औ [गामिनी] विद्या-विरोध जिसके प्रमाद से माकारा में यमन किया वा सकता है (पडम ७ १४३)। पुष्फ न ["पुष्प] बालारा-कृतुम धर्मश्रावित बस्य (दुमा) । इत्रमः ) सक् [लय् ] संपत्ति-द्रुष्ठ करन्त्रः। स्तर ∫ थयर, सरद (ब्राइ ७३) ।

इत्युवि चिनिम् देशस्याचा नाश्यालाः।

लहम वि [श्रुपित] नातित चन्यूनित (धीप) मवि)। स्त्रद्रलावि [स्त्रभिति ] १ व्याप्त, वस्ति । २ मरिक्त विमूचित (हे १ १६३ धीप स ११४) । काज दि [कादित] १ बाया ह्या चुक, द्रस्त (पापः सः २४ कपद्र ४१)। २ मानन्त 'छड् य होति रू क्सामा । खड्मी वीहि मणुस्स्रो कव्यकव्यक्ष न मुहोद्द (स ११४)। ३ म मीवन मदाल 'चद्रम्लाव पीएरा व न य एसी ताइमी हुवद स्त्याँ (पद्य ६२) ठा ४ ४—पद २७६) । लड्ड वि[श्रयित] शय-प्राप्त श्रीरक किमि कामकदमदेशे' (पुर १६ १६१)। लड्भ र् [दे] हेनाक स्त्रमान (ठा ४ ४--पत्र २७६)।

ार्प चित्रपिकी १ सप, विनास साध ्रे सम्बन्ध से कि ते बहुए ? बहुए महराई कम्मपबदीएं बन्पएं (प्रापु)। २ नि सम से रूपल सब-र्धककी क्षम से **एंक्न्च रखनेवासा । ३ कर्म-नारा से ब**रनारा 'नम्मक्वमकहाबी खड्मी' (विसे १४१४) कम्म १ १६ ६ १६, ४ २२ सम्य २३) सीप)। स्वक्रत र [चीत्र] चेत्रों का समूह, धनेक बेत (पि ६१)। कर्या भी [सदिका] बाध-विरोध रेक हमा ग्रीड्-भान सावा वहिषयपायसम्बद्धा नियोएं' (म्बि)। लइर पुं [सदिर] बुझ-विशेष, बैर का माध (माचे कुमा)। स्तर वि [स्यादिर] वहिर-बुध-संबन्धी हि १ ६० सुपा १४१)। स्तर्व [दे] देवो लाइअ (ठा४४—-पत्र १७६ थे)।

तुरिमंतुरमं भा खंच मुंच मुद्दसर्गं (मुपा

256 साउद्ध वृं [सापुट] स्वनाम-प्रसिद्ध एक वैना-चार्व (पारम पान्न)।

बरुष (हे ४ १९३) दुमा) 'बरुरेंडि विश्ववहार्त (स. १) । सार वि [व्] क्तुवित 'दरश्विदरशिव्दु-मध्यक्षत्रसं (से १ ४४ स १४ )। कार न [कीर] चीर-इमें, इवामत (हुआ \$54) I लार पूर्व लियुरी केर परिदाका विकास रस नार (नृह र निष्कृ १६)। अधिकाय

राउर मक [श्रुम्] १ धुव्य होना बर धे

शिक्षन होता। २ सक कनुदिश करना।

सारिभ वि [धुम्ब] बहुदित (पान ह्यू 1)1 लहरिय नि [बीरित] पुरिस्त सुद्धित केत र्याद्वा किया हुमा (से १ ४३) । सहरिम नि [स्पुरित] चरित्त, चित्रकारा हुमा (निवृध) । लडरीक्य वि (लपुरीकृत) बॉद व्येष्य की द्याद्व विकास किया हुआ

न [किटिन ह] सल्लॉना एक प्रसार का

पान (मिमे १४६१)।

चनुदीचमोय चिद्रीकमोय चररीक्यों व महिशामी। कम्मेदि एन जीवो वाक्रणवि मुग्नदी केल' (दव) । सकोषसम १ [चयोपश्रम] दुव महर हा

वितास भीर नुभ ना ध्वनः (स्त)। सबोबसभिय वि [समोपशमिक] १ सबै पराम से उत्पन्न श्रावीपराम-संबन्धी (बन १४२। ठा२ १ मन) । २ दूव, सबोस्टप (मग विने २१७६)।

संतर पु 🗣 क्लाय-कृत (वी १३) । र्गुगुर पे न्याहारी सना सेनार, निक्न की बार्खनी स्तान्धे ना शीपन देश का एक मुप्रति, विश्वके दुवरात के राजा विश्वराज में मारा ना (ती ४)। नद्व दे गिक्टी क्यर विरोद, धीराष्ट्र का एक नवट, जो मात्र नन 'बुनावड' के नाम ने प्रतिब है (दी र)। स्थ सक् [दूप्] १ लीचता। २ क्यार्ने

करना। चौचर (स्वीत): 'ठा नव्यः गुरिक-

18c) 1 क्षेत्रिय वि [कुष्ट] १ बीवा हुवा (स १७४)। २ वह में किया हुया (सदि) । संब पत्र [ सञ्जू ] बंबहा होना (रुप्) । स्रंत्र वि [साझ] बंगड़ा वंद्र क्या (मुपा २७६) । संब न [स.स.] याही में लोहे के डीवे के पाछ थांदा वाता सरा बादि का बोच कपड़ा---भो के पाति से मीनाना हमा **रा**का है, वि रकाः 'संग्रमगुरमसुनिधा' (उत्त १४४)। र्श्वत्रपद् [सञ्जन] राहु शा इच्छ दुर्गव विरोग (पुरुव २ )। स्तेत्रज र सिक्षन र प्रिमिनियरेय सम्बर्धन

पत्र्य)।२ कम्बन काजब, मधी (अ.४२)। १ सभी के पहिए के भीतर का काचा की व (मक्ष (७—पत्र १२५) : संबर पुदि] पूचा हुवा पेड़ (१२,६८)। स्रोता चौ [सद्भा] बन्द-विरोद (दिन)। संविभ नि सिक्तिनी को संबद्ध क्या हो पैतृत्व (क्म्पू) । स्तंद्र अक [स्तर्थकम्] तीर्ता दृक्त्र करता, विच्नेर करता। चंत्रह (है ४ १६७) । करह

संडिव्यंत (से १३ १९ मुपा १३४)। देख

(दे २,७ )। २ इत विशेष 'तावनव्यक्त-

वसमुख्यरजीरदुन्दर्शनारे (स.२१६)।

संबज रू हि] १ वर्डम कीवड़ (दे २ ६६)

संक्रिक्तर (उस)। इ० संक्रियस्य (उस ६२४ थे)। संड पू [सपड] एक गरक-स्वल (देशेन २६)। करन न ["स्रस्य] बीध कामप्रन्य (कम्बच ४)। श्रंड (या) देनो लगा 'मुद्दीप् बंदद वसद वर्ग्स (प्रति)।

संड पुन [सण्ड] टुब्बा धरा, दिस्ता (देर १७: दुमा) । २ चीनो मिस्दे (दर ) । **६ पूर्ण का एक किस्**ना 'सन्बंग— (बस)। यञ्चम पु ["बटक] मिनुस्थ वर्णनात्र (द्यापा १ १६)। प्यन्तया भी किया हा वैद्याल पूर्वत की एक इस्य (हा १.१)। सय पू िसही

विच्छेर-विदेश पछर्च का एक हाया का

टुक्डा-टुक्डा खएड-खर्ड (रि १११)। ाभेय रेको भय (छ १) । र्लंडन दि र पुरुद, किर, मलका १ दान का बराज्य, मच-पाब (दे २ ६०)। संबर्ध के दि यसी प्रवटा (६ २ ६०)। संडग पुन [सण्डड] चीना दिस्सा (भ 2×3) 1 संद्रान [सप्टब] शिक्स-विशेष (द्रार इक्)। र्संडण न [माण्डम] १ विच्छेद, ग्रम्बन गाउ (लावा १ व)। २ करहर, बाल मनैख्य

इवस्कारत पटने हुए बड़े भी तथा दुनवृक्षण (घर ६,४)। सञ्चय पूर्व ["सञ्चक] क्या-

पात्र (हाया १ १६)। सी व शिस्

सरह-संग्रहर

कम्में (तुपा (४) : ३ वि अस्त करनेवाला, न्मरुक (सुमा ४३२)। लंडण को [लग्डमा] विच्लेर, विगरत (क्यू, निषु १) । संबपहृ र्ष [सञ्बपहृ] १ च्लबर, बुपारी (विपार ३)। २ दूर्त, ४ व । ३ सम्पान है व्यवद्वार करनेवाचा (विद्या १ ६) । संडरक्त र् [सण्डरच] १ राध्रगारीक कोतनान (छात्रा १ १ फ्लाइ १ ३। ग्रीप)। २ कुन्द्रपाल चुंबी बच्च करनेवाचा (छाना रै १३ विसे २३ ६ ३ छीप)। लेडव न [त्याच्छव] इन्द्र का बन-विटेन

विस्की मर्जुन वे बसाबा वा (नाट-वेसी

संडा को [माण्ड] मिल्ली, बीगी, रुकर, बॉन

tty):

क्तिका धन्य करताः 'चंडलस्कराई विक

(प्रेच ६७६) : र्लंडर औ [लयहा] इस बाय औ एक विचायर क्रमा (नहा) । नंदातंदि य [ सम्बद्धम् ] दुव्या-दुम्म अएक्करूप (एमा सामा ११)। श्रीकर वि किनी दुवना-दुवस किसा हमा (पुर **24 48)** i नंदामणि इंच्या न [श्रुण्डामणि अञ्चन]

इन नाय ना एड विद्यावर-नवर (इव)। र्वडावत न [लण्डावर्त्त] इस नाम ना एक विचावरनपर (इक)।

'लंबाइंड वि [संव्यक्तव्य] दुरुव्-दुरुवा मिन्ना **पू**चा (पुपा ६०१) । संडिय प् [सण्डिक] छात्र, विवासी (चीप) । संद्रिय वि [सण्डत] क्रिन विक्रिन (हे १ १६ महा)। रुंबिस प् वि] १ मागव माट, विख-पाठक। २ वि सनिवार्य निवारत करने को सराव्य (दे२ **७**८)। -अंडिया भी [अण्डिका] बएव टुक्का (भ्रमि ६२)। संविद्या की [द] नाप-विशेष बीस मन की नाप (सं २४)। लंबी को वि ? भगवार, खोटा प्रम कार (स्था १ १६--पत्र २६६)। २ विसे का विक्र (सावा १ २--पत ७१) । थ्लंडु (प्रप) देवो साग्य । प्रवस्ती में चांडु नहरें हैं (प्राप्त १२१)। लंबक न दि । बाहु-क्सब, हाब का बाहुतल विरोध बाबुर्वेद (शुक्य १०१) । -व्यंड्रुय रेको संडग (१४ १४१) । स्रोत वे वि देशी पिता बाग (पिंड ४६२ वृक्त 2 2 Ki a) त्रीत देखी स्ता। स्रोत वि [भारत] समा-धीय कमा-पुक (सर ३३ की रूप भाषी। संतब्ध वि धिन्दस्यी समा-योग्य माठ करने सायक (विश्व देवा घोंदे)। रुद्धिकी [काश्वि] खमा होन का प्रमान (कम: नहाः प्राप्त ४८) । त्रंति देवी द्या। र्मातिया ) स्पै (रे) माता वननी (पिड } ve | vet) | नरेर पू [स्थम्] १ काविकेच, महाचेत का एक पुत्र (हे २, ४, प्राप्त खाला १ १--- पत्र १६)। २ राम का स्कन्दशाम वा एक सुधा (परम ६७ ११)। "इमार पु िक्सार] एक पैन मुनि (तव)। राह्य पूर्व [मह] १ स्कृतपुर्व क्याप्रव स्वय्यादेश (थ २) । २ व्यर-विदेव (मान १ ६)। सक्ष प्रे िसही स्वन्द्रका उत्तव (छाया १ १)। सिधी

की [की] एक जोर-सेनापि की मार्था का नाम (विपार १)। **श्**दिरा ) दू [स्क्रन्युक] १-२ अपर वेशी । १ संद्य ∫ एक केन धुनि (उचा भग भंडा सुना ४ ६)। ४ एक परिकासक निसने भगनान् महाबीर के पास पीछे से चैन दीजा सी पी (क्रुप्ट ८४)। स्वेदरुद्द न [स्टम्ब्स्ट्र] शास-विशेष (बर्मेस १ (४१ ५ संविच पू (स्क्रिन्डिक) एक प्रश्यात पैनानार्व विस्ते मपुरा में बेशायमों को सिपि-बद्ध किया (पच्छ १) । र्खंघ र्षु [स्क्रम्ब] मिति मीत बीबार (माबा २१७१)। संबर्ध[स्टब्स] १ पुरस-प्रथम पुरसीका पिएड (कम्म ४ ६६)। न समूह, निकर (विसे १)। इ.सन्याकॉ श्राप्ता। ४ पेड़ का यह बड़ी से राखा निकटती है (कुमा) । १ सन्द विशेष (पिंब) । करणी सी िकरणी ] सामियों को पहलों का स्थकरण मिटेव (भीम १७७)। संत्रवि [सन्∏ स्थम्बयासा (स्त्राया १ १)। श्रीय प्र विधा स्टब्स ही जिल्ला की व होता है ऐसा करली वयैष्ट्रका बाध्र (ठा४,३)। सावि पू ["श्रासिम्] स्कतर देवों को एक पादि (धन)। संबंधित हैं [दें स्क्रमाधित] स्कूत कहीं की माव (दे२ ७ पाम)। संबमंस पुंचि हाव, पुत्रा, बाहु (दे २, संपमसी की [दें] स्कन्त-पाँठ हार (पत्र )। लाभव केवो लांच (सिंव)। संवयद्विको वि स्टम्बयप्ति इल प्रवा ( T w 1) 1 संघर पूंडी [कम्पर] ग्रीवा गना परश्न (सए)। सर्वे रा(महा)। संबद्धि हो [दे स्कन्यपष्टि] सम्बन्धिः हाव भुजा (धह्)। संघपार रेजी स्पन्नापार (महा)। र्यपामार रेजो संवादार (प्राप्त ३ )। स्वार प्रवार विश्वार विश्वार विश्वार tc 44)1

संघार देखी लंबाबार (पडम १६, २० महा विवे २४४१)। संबाद्ध वि [ स्क्रन्यवन् ] स्वन्यवाद्या (सुपा १२१) । संबाबार प्रसिद्धन्याबारी धावनी सैन्य का पदाव शिविर (शामा १ म स ६ १ महा)। संधि वि [स्क्रीन्यम्] स्कन्यवासा (धीप)। संधित देवो संधि (स ६१७)। संबी की देवों सब (मीप)। लौबीबार पृष्टि बहुत बरम पानी की बास (दे२ ७२)। स्रोप सक सिन् सिन्दा, विहन्ता, बांपद (मावि)। स्तंपणाय न दिने वस, कपदाः वहसेर्यासम मसमाज्ञकाराज्यविक्राज्यपरी (सुपा ११)। क्षोम पूँ [स्तस्मा] चन्त्र चन्त्र (हे १ १८७ २ ४० ६। मनः मद्रा)। संम सक [स्क्रम् ] सुम्ब होना, विश्वतित होना । चीमेवा चीमाएवा (ठा ६, १---पन 727)1 संमितित्य न [स्तम्मतीर्थे] एक वैन तीर्व पुनरात का प्राचीन 'बीमला' मौन (कुछ संमक्षित्र वि स्विम्सि से वे बोबा ह्या (B & ak) ) र्श्तमाइच न [स्तम्मादिस्य] ग्रन्र केत का एक प्राचीन नगर, को भागकत चिमल नाम से प्रसिक्ष है (ती २३)। संमाध्य न [स्तम्माख्यान] बम्मे से शंबना (पद्याद १ व)। कारलारा पुन [दे] सूची रोडी (वर्ष १)। सनगर्दे (साह्या) १ पत्र विशेष, वैदा (४४ १४० पराह १ १)। २ पून, दनवार, वसि (दे १ ६४ ड ४६१) । पैणुनाकी [चेतु] पूर्व चाडू (रंड)। पुराका ["पुरा] निषेद्र-वर्ष भी स्त्रताम प्रसिद्ध नवरी (अ २, १) । पुरी भी [ पुरी] पूर्वी छ ही धर्वे (६६) । रामार्याम न [सङ्गासहित] वत्रधर नो वदार्द (सिरि १ ३३)।



र र=)।

सणित (बावा)। क्वाइ स्वन्नमान (पि १४)। ज्या पू क्षिण काल विदेश बहुद पीवा तम्म (ठा २ ४ है २ २ मतक प्राप्त ११४)। ज्याह वि चिंगिमा करण्यात एक्वाला (पूम १ ११)। मीगुर वि [ माक्कर] प्रण-विकासर, लिएक (परम क १ १, वा ४२६ विवे ११४)। या की [वा] जीत राज (उन्हर्णक क्षेत्रमान ) वाल क्षायाम् । व्या व्याप्त (परम १६ १६)। वह स्वम्न व्याप्त (वा १६४)। वह स्वम व्याप्त (वा १६४)। वह स्वम व्याप्त (वा १६४)।

न्यवण न [स्वतन] सोरना (परुम ८६ ६ उप ६ २२१)। उदमय पेत्रो त्वम = कण्ण (याषण रुवा)। त्यमय पि [त्वन इ] सोरनेवामा (वे १ ८१)। उदमाबिय वि [त्यानित्र] मुख्य हुमा (मुख

४१४ महा)। सामि को [स्पनि] बान, पाकर (पुना ६१)। सामि को स्थान प्राप्त । सामि । कामपुणा विशिक्त (पुरार वर्तस २२०)।

अशिक्ष न [स्वित्त्र] चोरने का प्रस्त करते (१४)।
अशिक्ष विश्वित्र है। प्राण्डेन्द्रस्य स्थापनंत्रस्य स्यापनंत्रस्य स्थापनंत्रस्य स्थापनंत्रस्य स्थापनंत्रस्य स्थापनंत्रस्य स्थापनंत्रस्य स्थापनंत्रस्य स्थापनंत्रस्य स्थापनंत्रस्य स्यापनंत्रस्य स्यापनंत्रस्य स्थापनंत्रस्य स्थापनंत्रस्य स्थापनंत्रस्य स्यापनंत्रस्य स्यापनंत्रस्य स्यापनंत्रस्य स्यापनंत्रस्य स्थापनंत्रस्य स्यापनंत्यस्य स्यापनंत्रस्य स्यापनंत्रस्य स्यापनंत्रस्य

बहुवामी (घष्ठ)। स्वतिष वि [स्वतित ] सून हृषा (तुत १४६)। स्वती हेची स्वति (चाप)।

राणुमा की [व] वन वा दुःस मानांवक पीड़ा (दे२ ६व)। राज्य न [द] नात सीस हमा (दे२ ६६)

मुद्र इत्या है) । महत्र का है [सम्य] बोक्ते योग्य (दे २ हैरे)।

साज्यु देशो साग्यु (वे २, १६१ पर्)।
साज्युम ध्रुं हिं स्थायुइ । क्षीसक बाँगे
कूँद्र (२, १६ मा १४ ४२२ म)।
सत्त न [क्षु] १ कात कोश हुमा (वे २
६१ नाय्)। २ छन्न ने तीवा हुमा (वीव वे १)। १ स्था कोर्य कनने के तिय् वीवात में क्या हुमा छेर (उन द्वारिश छन्ना १ १६)। ४ कार, गांवर (उन दश्क द्वी)। स्थाय पुरितनह | सेक नावाद कोर्य

िज्ञानों विंच सवाना (शाया १ १०)।
नेह पूर्वियों करोय के समान रखवाना
येव (या क ६)।
स्वत पूर्वियों निर्मेश मनुष्य-मानि-विरोध (युवा १६० उत्त १२)।
स्वत विंक्षित्रत्र १ श्रीक्य-वेवन्यी शर्विय का। २ न शर्वियत्य प्रतियत्त 'यहह यवर्ष करेड कोड हमो' (वस्म स्टी-नार)।
स्वत्त युद्धि १ वेड बोटनेवाना। २

क्लोबामा (खाया १ १८)। <sup>\*</sup>खमाम न |

एह (स्त १२ ६)।
त्रिक्त पुंदि] एक स्तेषक्र-वादि (मृष्ट्य ११२)।
व्यक्ति पुंक्ति [सन्तिन् ] नीचे देखो 'कत्तील स्तेष्टे पह वंत्रकर्क (मृष्ट १ ६ २२)। त्यक्तिम पुंक्ति [सन्तिन] मृत्य वी एक वाति वात्री राज्य (स्व पुन्ना है २ १८४, आयु ६)। कुक्तमान पुंक्तिकाना

सेंब सपाकर भोरी करनेवासा । ३ प्रष्ट-विशेष

आपूर्य ) इंडिस्पास वृद्धिकार्यामा स्वाप्त कर्मा कर्मा हृद्या चा (यद १ १६)। बृंद्धपुर व [बुरुबपुर] पूर्वोच्च ही सर्थ (याचा २, १२.४)। विज्ञा की [विद्या] यक्-रिक्स (यूच २ १)। प्रतिकारी । स्वी क्षित्रियासी विक्रम कर्मार

रासियों ) ध्ये [क्षप्रियाणी] स्रोत्त्य बावि राखियाथी ) सौ भी (रिय कप्प)। राह न [बू] प्रभूत नाम (पंचा १० २१)। राह वि[बू] १ कुन्द, जीवत (दे २ ६०)

नुसा ६१ । का प्र २६६ छए असि)। २ प्रदुद नृष्ट पत्ते नरहुत्तास्ते सद विद्यानेय मुद्रस्तिर (तार्च ११४) ६० ६० पर २, इर ४)। ६ स्थित नक्स (योच १ ७ ठा १ ४)। ४ घ. शोध, जन्दी (याचा २ १ १)। दाशिक्ष वि ["दाशिक्ष] प्रमुख क्षित्र-पंपन (योच ०१)। त्राप्त [तु] रेको स्थल्य (पाय)। सम्माण रेको स्थल्य स्वत् । सम्माण [तु] रेको सल्लुस (पाय)।

स्तपुमा की [दे] एक प्रकार ना कृता (इंद )। स्वप्पर पुं कियेर] र मनुष्य-आर्धि-विशेष पत्रे तमि स्माएतेषु पत्रमं को बाम्पाएते बत्र (रंगा)। र मिना-नाम काम (पुन ४१३)। वे बापनी काम (दे र १८६)। ४ वर वनैयह काहुक्या (तक्रम २ १६६)। स्वप्पर हिं वि] का कबा निद्धत स्वप्पर (वे वे वे नाम)। सम सक [हम्म] र समा करमा गाठ करमा। र सहन करमा। बन्म (जनर ८वे महा)। वर्ग बनिन्नस ( प्रवि)। इन्सिमसम्बद्ध (सुपा ४ ७ उप ४२० टी)

संकः स्थापहणा, न्यमावित्ता (विधः कला) इत् स्थापित्रकर (क्या)। इत्या वि [क्ष्म] रे उचित योग्य 'स्थितो साहारी न क्या पत्रसा वि पत्पेर्थ' (पव १४ पाप)। २ समर्थ शिक्षमान् (वे १ १७ वर ११ पूरा है)।

पुर ४ १६७)। प्रयो खमावद (मनि)।

रुप्तमा पुँचिमक क्ष्मपक] त्यस्यो वैत पाबू (वय द वेदेश स्रोप १४ । मृत ४४)। स्वमागत [क्षमुग] त्यस्वर्ध वेदा, तैता स्वादिता (शिद वेदेश)।

न्त्रमण न [झपण क्षमण] १ पपतात (हरू १ निष्क २ )। २ वृ त्तरसी बैन साप्त (ठा १०—पत्र ११४)। रामय वैधी न्यमा (धोष १९४) वर ४०६।

रसम्बद्धाः न्यस्य (साथ १९४) स्य ४०६। मद्य ४)। समान्ये [क्षमा] १ प्रविती कृषिः जिल्हा सनामस्य (तुरा १४८)। २ कोव का

लकामध्य (पूरा ६४८)। २ कोव कर प्रमान साहित (ई. १, १८)। बहु बु [पित] एजा दुर पूर्वत (वर्ष १६)। समज [ असम] साधु क्रिय प्राप्त (बरि)। इत् पूर्व (पर्यः। २ बाबू मृति (मुता ६२८)। बीद १)। सह दु [सेघ] बहे उस दी

वर्षा (भव ७६)।

स्रमि-सम

श्रामित हूं [राहितम] पशु-चिटेर पेंदा (पुमा) । श्रामाध्य 🛊 📵 प्रतिष्ठ स्पर का कृषिया रार्गा ही [रार्ज़ा] स्थित् वर्षे से वयधे

2,

विदेव (अ र १) । रागुद्र विदिशिष्ट प्राय पूर्त-महरु (बीच ३६ मा) । २ वर्षेरीच कान्तिर क्रप (धाप १६ वा) । १ तिन्तु। ४ सा मगट (ब्रु १) ।

राव नर रियप देशाल नरता परित नग्ना। २ नमार वॅथना। सम⊊ (दे४ (L) 1 श्रविभ्रदेशो शर्भ्य=सवित् (दुना)। ३

विक्रीत (बच्च) । राबद 1 [दे] क्या स्था सन् (१३ \$£): गक्तम ﴿ [वे] ध्याप्त, रेर (वे २ ६१)। गन्न 🕯 [गन्न] कुनियोत् (म २३६) । राज्ञ रि [राग्य] १ साने बोग्य बन्दु (सप्ट्र

१ १)। १ न याप्र विदेश (महि)। राम्म रि[ग्राप्य] जिल्ला धप तिया वा मध्यम् (यर्)। रदार्थन रेची रहा ।

रागाम देगा राह्य = बाय (मन ११)। राजमान रेगो या राज्य रेगा राज्य व गाव (१३व ६६ १६) । सञ्जाहित] १ शर्मनहाह्या । ३ कारण विवश रास्त्र क्या हो वह

र्माजर (पा) वि[सायमान] को सन्त न्यः हो यह (बाउ) । शाह का [ रहते ] पूरती नाम (एन) : राष्ट्र( १ [सहर] १ वर्ष का के (हुक एन १८। १२ में बहुर का बन (कार ४१ र मुतार )। मान्धं 🖍 [मार्थं ] स्तूर शास्त्र (११४

TTT ! erana f [4] ere (c + 41) i रागांत्र व (रागांत्र) वीर्वाले कान्यु

Cit ( mail 4)

राहुंगन [दे] छाषा भावत ना सदाव (दे २ ६ द∤)। रबहुँस न रिक्ट्याङ्ग रे शिव ना एक धारुप (रुमा) । २ वालाई ना पामा मा पाग्री । ३ प्रायमिकारमञ्ज्ञ प्रिया मायने का एक पात्र । ४ तान्त्रिक दुरा**-वि**टेवः 'इस्बद्धिये कवानी म बुबार बुग्ते धार्मिश बहुये।

ना तुह विद्देशात्रम काला कावानिली बादा"

(वज्ञास्त्र)। गर्कगढ र् [गर्पाक्क] रत्वका नामक इविशे का एक नक्तरतातल किल काळ्या रबराज्यमार पुरशैए स्ट्रूपराईमहारी बरए र्गनियोगमाळ चेत्र मारगी प्रवस्थीर्ति (त गर्ग भी [गर्बा] साट, वर्गप बारगाई (दुरा ११०) हे १ १११)। सह दं मिल

वीनारी की प्रक्तता है जो शाद ते स्टन

सकता हो बद (बद १)। गहिम । दि गहिक विशेष नीतिर र्गीट्ट के पेता (बार के नूप २ २० दे 3 .)1 गड 🛊 🔄 एक म्लेन्द्र-शति (बुच्च १५९)। । राहत [वे] कुण काम (वे२ ६० वृमा)। गरहरू वि 👣 संदुष्टित संदोब-प्राप्त (वे ₹, ♥₹)। गर्रत व [पहरू] ए येव देर दे दे प

चेय--रिटार बस्य स्थानस्य स्थीतित दर निष्दा (व दि [ किन् ] दर्जी यंत्री का बातकार (रि २५६)। सरक्षय पूर्व सिम्प्स्ति विभाग देशा व्यक्ति दे हारा नुषना निष्ठी परीय्त् की साधान रिवरकत्तरकारणे नरवयी नितृत्यिते हती (413 x 54) i

गहर र र [गरधर] इत्तर क्षेत्र (नर tt tta fart ): गरिक्शि भे दि विदर्भ सेव हार गरबं (बन् बत देन कर)। मह बन देवो महबन (वर्दी रू६)।

(नोहर्दा)। श्वहरदार देखो छड्डस्टर (बम्मच १४६)। सहस्रह दू [सहस्रह] देवो स्वहसर्

(**इ**ह) ; स्बद्धराइग दि हि | दोग बीरसम्ब (यर)। राष्ट्रशक्ति वं दि ] एक म्लेक्ट वार्ति (कृत्य 11(525 राह्याधी [दें] देश नी (स.६३६ म)। गहरू र् [स्ट्राप्ट] सारस गाँध गाँ माराज खळलार (सुरा १ २)।

राहद्दी भी दि] बनु-विदेश विच्छै, गिही (दे २,७२)। ल दिश्र वैद्यो स्वद्भिष्ठ (सा ६६२ घ)। राहित्र देवो लाजित्र (वा १६२ प)। स्तरिक र् दि रात स्वाही ना नाम (वर्षी) 1(0X राहिआ भी [सटिका] बहें, नहरों से निसने नी सही या शहिमा (नण्डे) । सही औ [यरी] आर देखी (प्राप्त) ।

राइमा व्यक्ति मीतित मोधी (१२,५०)। राह्य वर [आविस्+भू] प्राट (नि. क्या होता । खर्डीत (बना ४६) । राकुछ ) पूंडी [से] बूंड निर पर वंपनी रप्रदेश जे का प्राप्त (बर १)। राष्ट्र नद्र [सुद्र] सर्व दरता। गर्दर (है ४ **१२६)** । स्य कृति [र] १ समय सही-ईय (१६ राष्ट्रग (६६) पाथ) । र वहा अरल (<sup>तिह</sup>

२६७१ टी)। ६ वर्त के भ्रानारताना (परा)। राष्ट्राक्षे (दे) १ सानि सारर (दे १६६)। २ पर्वत वा गान वर्षत वा वर्ग (रे र ६१)। ३ वर्तन्तुः बहा (नुर २,१ ३) न १६२ मुत्ता १४: मा १६: नहा जत २: वंबा ७)! र्गाप्त्र रि [मृदिन] जिनता मध्य दिन यदा हो बढ़ (१आ) । गरह तथा की [वे] होतर, धानान 'यर हुपा मे पाल में (उन १ १a)।

गङ्गातपर्व [व] नग्न वर्त वरस (व १८६) र राग एक [राम] बोरख। वर्छ (रह) । वर्त ताबद तांकुश्च (१४ १४४)। बासनेबाए (पुर १ १)। 🗗

लञ्जू देशो स्वाणु (दे २, ११) पर्)।

मुँदा (६२६ = गा६४०४२२ च)।

स्रचन[दे] १ बात बोदा हुमा (१ २

६६ पाम)। २ राष्ट्र से वाड़ा हुमा (योष

१४)। ३ सँच भोरी करत के सिए दीवास

में किया हुमा घेद (उन दूर १६६) लाया १

१८)। ४ वार, नोबर (३४ ११७ टी)।

सामा पूं [स्थनक] सेंच नवाकर कोरी | करनेवामा (सहया ११८)। स्पराय म

न्यजेत (धाना)। सन्द-न्यसमाग (पि XY ) 1 -स्त्रण पू [क्षण] कत विशेष बहुत बीहा समय (ठा२ ४ है २ २ ३ गटक प्रामु १६४)। बाद्रवि [योगिम्] शणमात्र फ्लेक्स (मुचर ११)। मेगुर वि [ सङ्गर] शख-विन्तवर, खखिक (पटम ब १ रॅगा ४२३ विवे ११४)। याकी िंदा] यति यत (उप ७६० टी। -समस्यम ) मक (समस्यमाम् ] 'उल स्वमसमस्य विष्यं भागात्र रक्तो । नष्ट-कर्णाति (पदम ३६ १३)। वह स्यग क्त्यर्गन (स ६८४) । स्त्रमण वि [स्तनक] कोलोबाका (ए।या t ta) i स्माणपान स्थितन विदेशा (पटम ८६ ६) उप पू २२१)। न्यगय देवी साग ≃ घण (धावा छवा)। रप्रगय वि [स्वतः है] सोस्तेवासा (वे १ ८४)। रप्रगाबिय वि [न्यानित] वृत्रामा हुया (नृपा ४१४ महा)। राणि स्री [रानि]बान बास्र (गुपा ११ )। त्राणिकः ) देलो स्थणिय = श्राणिक 'महाइया काणिम ) नामपुष्ठा चित्रका (भू ११२ धर्मसं १२०)। म्बविस न [गानिय] बोक्षे का प्रत्य, बली ( X X ) 1

उपिय वि किपिकी १ क्षण-विशस्त्रयः धातु-भेदुर (रिमे १६७२)। २ वि कुरहान-बाना बाय भेषा है एक्ति भी तुम्हे विव सम्दे प्रशिपा इय हुतू नीहरियो' (बस्म < टी)। याह वि विश्वित्य । एवं पदार्थ को धए-विनरपर काननेवाचा बौद्धमत का धनुपायी (राव) । म्यभिष नि [म्यनित] प्रस हुया (तुम 4X4) I ररण। रेवी स्थित (शब) । राणुमाध्ये [दे] यव वा दुग्र मानसिक पीड़ा (व २, ९४)। गाण्य न दि । तात योन ह्या (दे २ ६६)

गरण वि [गस्व] योग्ने योग्व (१२ १६)।

बुर ६ वर १)।

["स्वनन] सेंथ समाना (खाबा १ १८)। । मेद् पू मिय] करीप के समान रसवासा मेव (भग ७६)। सत्त पु [श्रृष] समिम मनुष्य-वाति-विशेष (पुषा १६७) एत १२)। राचि [झाथ] १ धनिय-संकली स्रविध का। २ त. खतियस्य शतियस्य 'महत्र मचर्च करेड कोड इसो (कम ८ टी) नाट)। स्रचय पू दि] **१ वे**ठ कोदनेशस्ता। २ सेंग समास्य भोरी करनेवाला । १ प्रह्-विद्यय राह (मन १२ ६)। राचि प् दि] एक मोध्य-वादि (मृबद 122)1 स्वति पृक्षी [झतिन्] नीवे देखो 'वतीए सेट्रे वह बंतवको (गुस्र १ ६ २२)। गासिक ५ मी [क्षत्रिय] मनुष्य भी एक जाति सभी राज्यम् (पिम भूमा⊳ है २ १६३ प्रापुद ) । दुविस्समेम पुं[भुल्बमाम] नवर विशेष जहां भीमहाबीर देव का कम हमाना(भग ६ ६६)। ह्रांडपुर न [कुण्डपुर] दूरीक ही सर्व (साना २ tx v) । "पिक्रा की ["विद्या] वनु-विद्या (नूम २,२)। स्रतियाः ) भी [स्रियियोत्री] समिव वाति सन्तियागी ) वी स्रो (सिम कम्म) । ररहत [वे] प्रमूत नाम (पंचा १७ २१)। सद्ध वि [वे] १ द्वाप, महिल (देश ५७ दुत ६१ : बाद ११२ हरा करा स्री)। २ प्रदुष्ट बहुत भाद मादुलाक्ने तरः रिला नेव मुहत्त्वरि (वार्व ११४ १० ६० पार इद्दर)। ३ स्टिप्टन बहा

(मोव ३ ७ ठा ३,४)। ४ म शीम, अस्ती(धादा२ १ १)। द्वाणिअ वि "दानिक] समृद ऋदि-संपन्न (मोम **८६)**। सम [दे] रेबो त्मण्य (पाप) । सम्माण देखो दाग= वन् । स्तन्तुञ [यू] देवो स्वण्याम (पाप) । समुसा की [दे] एक प्रकार ना कृता (बुहुक्)। श्राप्पर प् [कर्पर] १ मनुष्य-काति-विशेष पत्ते वस्पि वयर्एसेमु पदते भे कमराहो बर्म (रैमा)। २ मिज्ञा-पाच काल (पुण ४११) । ३ कोपड़ी क्यांस (हे १ १८१) । ४ मंग्वनैयह का दुकड़ा (पदम २ १६६) । सप्पर) वि दि] स्थ क्सा तिपुर क्षप्पुर ( ( दे र हें हैं. शाव ) । स्तम पक [क्षम्] १ धमा करना मरक करना। २ सहन करना। असम्ब (बदर ८३ महा)। कर्मे खमिनजद (शीर)। हा म्यम्मियकव (गुपा । ७) उप ७२० दी। मुर ४ १९७)। प्रमी खनावह (भृति)। चंड- लमावइता, श्रमाधिता (पडि-काप) । हः स्त्रमाविषस्य (क्य्य) । लास विकिसी १ वर्षित योग्य 'समिती माहारो न समी मणसा वि पत्नेड (पच ४४·पाम)। २ समर्थं शक्तिमान् (**१**१ १७ उप ६१ ; बुवा १)। त्यसम् र्षु [क्रमक क्षपक] तपली पैन ताबु (त्र प्र ११२ मीव १४ वय ४४)। स्वमण न [स्पण] वतरवर्ष वेता वैता

मारि तर (निंह ११९)। न्यमण न [झपण क्षमण] १ प्रानास (हर १ निद्र २)। २ वृक्ताली मैन साप्र (स १०--पत्र ११४)। रामय देखा रामग (बोच १६४) वर ४४६। मद्य ४)। यमा की [क्षमा] १ इतिरी पूर्वि 'क्ष्मुइ सनामार्थ (नुस ६४)। २ क्रोप ना थकार सान्ति (हे १, १८)। बङ्ग वृ [पिन] एका, कुर मूर्गत (कमें १६)। समय ५ [असम] चापू, ऋषि दुनि (वर्ष)। दर व [ पर] १ वर्षत पराह । २ नापु. बुनि (गुरा ३२६)।

२५२

राज्या १४४ मुर १३ ११) । जार स्त्री पू [ क्यार ] तिक्तिवादापै साधुमा 43) 1 राय प् [हाय] १ सव, प्रसद, विवास (बद ११ ११)। २ रोय-विशेष राज-कामा (नट्टप १४)। कारि नि [कारिन् ] नहरा-कारक (मुगा ६११)। काल गास्त्र पु ["नास्ड] प्रतय-काल (पर्यव 🕻 ४३७७)। ैग्गिर्‡ [ै।प्रि] प्रलप-कात की शाग (से १२ वर)। नामि र् विद्यानिम् विवन मानी परिपूर्ण शानवामा सर्वत्र (निसे १९०) । समय वृं ["समय] बलय-राजा (नहम २)। रायं ३८ नि [श्रयं ३८] भाग-नारभ (पढन ७ 11 44 4Y 375 47) 1 राधनकर रि [क्षुयान्तकर] नाग्र-तारक (रहम १७)। रायर पूंछी [रायर] १ मानता में कतके-

वाना वजी (बी.२.)। १ विद्यावर, जिला

बन के माशक में भनतेशना बदुव्य (बुर

विदावरों का राजा (स्पा १०४)। क्रवर देवी सदार - विदेश (क्रवा १२) पूरा **188**) 1 स्मार्थ्य वि साहिएको बहिए-सम्मन्ती । श्री विज्ञ (पुज २ ६)। इतकास्त्र कि विशेषाल बीसका बन (चिति)। इतर सक [ चुर्] १ फरना, टपलना। २ नप्ट होता । बरद (विसे ४३३) । क्षर विकिर्देशिष्ट्रर क्ला पक्स नठोर (सर २ ६) वे २ ७०-पाय)। २ पैकी भर्देक, पका (पराहर १३ पटन १६ ४४)। ३ पूंच्च-विरोध (पिंग)। ४ म. दिल का हेत (भोष Y ६) । कंट म िक्पर] बहुस अनैस्क्रभी ताबा (ठा३ ४)। अंड न िकाण्ड**े रालप्रमा प्रमित्री का प्रकम कार्**ड-बंत-विरोव (बीव ६) । कम्म न विसीन् ] विसर्ने धनेक बीवों की डानि डोटी हो ऐसा भाग किन्द्रर भेदा (गुपा १ १) । कस्मिज वि विभिन् । रिष्युर कर्न करनेवाला । २ पूँ कोलवान वाएवपातिक (बीच २१व)। "किरण पु "किरण] सूर्व भूरत (पंता स्छ)। दूसणार् दियम दिसमाना एक विद्यानर राजा भी राजश का बहुनोई वा (पस्प १ १७)। तहर प्रे निकरी स्वापर चन्तु, हिस्क प्राप्ती सुना १६६ ४७४)। । नस्सम द्र ["निःस्वन] इस नाम का राभरा ना एक यूनट (परम १६, १)। सह इं सिका १ मनार्व बेश-विशेष । २ धनार्व बेश-विशेष कानिवासी (पर्णा १ ४) । सुद्दीकी शुरार यीप)। २ नर्युक्त दासी (सव ६)। यर वि ["तर] । विशेष कटोर (कुपा ६६) । र पुँदत नाम का एक वैन वच्छा (छत्र) । सभयन विशेषकी दिस नादैन (बीन ४६) । सानिभा जी [क्यांकिता] निवि-विशेष (सम १४)। स्सर 🗓 [स्पर] परमाधानिक देशों को एक चार्षि (दम २१)।

सर वि हिसर विकथर, घरनायी (निने YXO) I सर्देट क्य [सर्पटम ] १ क्लाएम, विके रतंना करना । २ धेप करना । बर्ट्टर् (हुक ¥4) I कर्रट वि [सरप्ट] १ बुरवालेवाना, विर-स्कारक । २ अपनित करतेनाचा । ३ मतूर्व परार्थ (ठा ४ १ सुद्ध ४६)। सरंटण न [सरफन] १ निर्थरर्थन परन नावछ (वव १)। २ प्रेरखा (बोव ४ क)। करंडण की [सरप्टना] स्मर देवी (वीप ৬২) ৷ सर्देश नि [सर्राप्टत] निर्मेत्वर (इम **4**(<) ( सहरंसुमा की [ब्रे] बनस्पति-विशेष (संबोध कारब दृष्ट्रि] हानी की पीठ पर विकरण वाता मस्त्रस्य (पथ =४)। सरक एक [कियू] सेका योज्या क्षेत्र सरकिथि (मुग ४१४)। करड 🛊 [करट] एक चक्क प्रकृष-गाँउ 'बह नेए ६ चरडेश किश्वित हुर्हिम वस्त्र<sup>क</sup> **णिवस्य' (नु**पा **१९**२) । ल रहिज कि दि] १ क्या स्था। १ मन्द ऋ (दे२ ७३)। लर्डिश नि स्थित किला के नेप निया कर्य हो बहु, पोटा हुया (बोन १७३ दी) । सरण न दि ज्ञान वरेखा तो करका <sup>वर्</sup> शानी (ठा४ ९)। सरफरस र् [सरपरुर] एक गरक स्वर्ग (देवेल्ड २७)। रास्य द्व' [स्तरक] मन्त्रान् महाबीर के दान में से बीना (बांस कीब) विकासनेवाना एक वेदा (बेहन ११)। सारव पु [के] १ कर्मकर, नीकर (धीर्व ४३)।२ स्टब्स (मन १३ ६)। साहर यह [सासाराय ] 'बर-बर' वारान र रता। वह नपद्धरंत (वज्रः)। रारहिम पुँ दि] पीत्र पीता दुवका दुव (દેવ ખરો દ रत्य श्री [त्यरा] अन्तु-विशेष नैतता नी वर्ष प्रम से पद्मेनाता चन्-निरीप (मीव २) ।

लिरिआ की हि | नीकरानी वासी (धोव

मवि)।

४६≡)।

स्तरिमुख पुं वि स्वरिशुक्त करव-विरोध (मा२)। खरुदी की [सरोप्टी] एक प्राचीन विधि वो दाक्षिमें से बार्षे को सिखी वाठी वी। गांवार निषि । रेखो, सरोड्डिजा (परुश १) । लस्य विद्यित्व क्रिकेट विद्याप्त क्रिकेट विषम धीर ऊँचा (वे २ ७८)। सरोड़िका भी [सरोड़िका] विपि-किरोप (सम ११) : लक्ष प्रक [स्त्रस्त ] १ पहना पिएना। २ मूलना । ३ रक्ता । खलइ (ब्राम) । वड्ड. कार्तत, रुक्समाण (से २,२० मा १४५ सुपा ६४१)। सद्भ प्रक [ स्टब्स् ] प्रयस्त करना हटना । बसाद्वि (उत्त १२, ७)। स्त्रज्ञ च - [स्त्रज्ञ] पाद पूर्वि में प्रपूक्त होटा ग्रब्दम (प्रकट ८१) । क्रास्ट वि [कास्त्र] १ दुवैन, श्रवस मनुष्य (सुर १ १६)। २ म, बान साफ करने का स्वान (विचार कं भार४) । पूकि विद् व्यक्तिहान या वित्तयान को शास्त्र करनेवाला (कूमाः पद्प्रामा)। साध्यक्ष वि [वे] रिक, बासी (वे २, ७१)। त्रक्षासम्बद्धाः प्रकृतिसम्बद्धाः विश्वनिकारः धाराभ करता । धननवतेष् (पि ११८) । द्याद्यग्रहिक वि [वे] यत रूपत (वे २ हालण न [स्टब्स्न] १ वीचे देखी (पाचा से द इक्ष्मा ४१६ वस्या २६)। संख्या की [स्तवना] रे गिर बाना, निस्तन (दे २ ६४) । २ विध्वता, अंबन (ग्रीव ७८८) । १ यटकास्त रकास्ट, 'हाव्य पुत्रो ए बनए करेन वह भस्य वस्त्रास्त्रं (इप 338 CT) 1 क्रसम्बद्धमा वि वि ] चुन्त क्रोम-प्राप्त (मवि)। कडम्र १५ [लङ्कर] १६ के प्रस्माकी राष्ट्रक मानान 'बहुमारानाविकार दिछ-विविधानीय क्वाह्यसहों (पूर ३ ११ २ \*X) i

साठा शक [बे] बराव करना गुरुशन करना स्तरिक वि दि] प्रक, मधित (१२ ६७) 'तारावि समो समाइ य' (पटम १७६६)। ह्मकिय कि [स्विधित] रेक्त हुमा। २ पिराह्मा, पवित (है २ ७७ पाम)। ३ न्, बयराव प्रताहः। ४ मून (से १ १)। व्यक्ति (वे ४१)। स्रक्षिण पून [स्रस्थित] १ लगाम (पाम)। २ कायोरमर्गं का एक बोप (पव ६)। स्रक्रिया औ [स्रिक्सिया] तित वर्षे व्ह का तैन चहित पूर्ण बमी बरी (धुपा ४१४)। सहियार एक [सामी+क] १ विस्तार करना बुरकारना । २ ठमना । ३ स्पन्नव । करना । कसियाची कतियाचेति (मुपा २३७ स ४६८)। क्रस्थियार पूँ [क्रस्टिक:र] विरस्कार, निर्मेश्वना (पउम ३६ ११६)। क्रस्मिरण न [क्रश्चेकरण] विस्त्रकार (परुम **३८,** व४) । क्रछिपारणा औ [सन्द्रीकरणा] कन्त्रना क्याई (स २८)। क्रियारिम वि [क्रिकेश्व] १ विरक्षत (परम ६१, २)। २ विद्यात रुगा हुमा (स २व)। स्रस्पि वि [स्त्रस्थित्] स्थवन करनेवाता (वस ६०: छए)। सामी की कि साफी | किस-विविद्यात किस भगैष्ट्रका स्पेष्ट्रपहित पूर्ण, क्ली (दे२ ६६) सुपा ४१२, ४१६)। सबीकम देवो स्रस्थियारिम (वस ४४)। क्रिकेट देशो हाकियार = बती + ह । बती करेड (स २७) । कर्म, खतीकरीवड, बती किन्द्र (स २०० एए)। सर्वेण न [सर्व्यान] देवो सक्विण (सुपा ७७ स १७४)। २ नदीका किनास 'बतीखमहुर्य बखमार्ख' (निपा १ १---

पम-११)।

Y (8) I

लहु प्र [सङ्घ] विशेष-पूचक सम्बद्ध (बसनि

ललु प [सतु] इन धर्षो ना पूचक प्रस्थय--

१ भववारण निरुप्त (भी ७)। २ पूनः,

२५३ शोमा के लिए भी इसका प्रयोग होता है (प्राथा निषु १): लिख न [संत्र] यहाँ पर बकरी भीव मिले बढ़ क्षेत्र (वन म)। कार्जुक पूँ हिं] १ यजी वैस मनिनीत वैस (ठा४ ३—पत्र २४८)। २ मनिनीत रिप्स, क्रिया (उत्त २७)। लर्लुक्टिच पुंदि दिशासी वैस सबन्धी। २ म, उत्तराप्यसन सूत्र का इस नाम का एक ग्रम्ययन (उत्त ७)। म्बङ्गा देवा राज्य (पर ६२)। स्तलुय न [स्तलुक] प्रस्थः पाँव का मणि-वस्य (विपा १६)। इत्रह्न (वे) १ नाइका विद्राः २ विशास (१२ ७०)। १ वि कासी रिकः, जाया बल्लक्योता परिकोधियर्नस्योगिया वरिवर्ष (समधरद ही बे १ वद)। स्तक नि दि निम्न-मध्य विसका सम्य गाम नीवाहावह (वे १ ३व)। लक्ष्म विदिश्वित, संकोष-पूक्तः। २ प्रहृष्टु हुर्पपुक्त (६२ ७९ यन्ड)। लाङ्गा ) पूर्व दि ी १ पत्र पत्ता। २ पत्र लाङ्गा ) पुट पत्तीका बना सुगा पुक्कामा क्षेता (सूम १ २,२,१६ टी विक २१ बह १)। लढन ) पुन दि ] १ पात का रक्षण स्रत्य 🕽 केरोबॉसॉ बमझा एक प्रकार का बुता(वर्गे ३)। २ मैबा(इन १ ३१ टी)। स्तद्धाकी [दे] वर्ग वसका बाख (दे २ ६६ पाम) । सम्बद्ध देवो सर्द्धाङ (तिवूर )। क्रक्रिय भी [दे] धीरत (दे२ ७ )। कडिएड (पर) देशे सहीड (हे ४ १८१)। लाडी की [य] किरना वह वसदा विसमें नेश पैदा न होता हो (पानम)। लाहीब पूँ [सरबाट] विश्वके सिर पर बाल न हो गैवा चैंदला (हेर ७४ कुमा)। लस्ब्द्र र्पुं [सरस्ट्र] फल-विरोप (पर्ण १--पत्र १६) । काच सक [कापय्] १ नात भरता। २ बलना, प्रकेष करना । ६ इस्तंबन करना । बनेद (क्य) बनमेरि (मग १० ७)। कर्मे क्टिर (बाना) । ३ पारपूर्वि और नास्य नी । विविधित (भन)। वहः लवेसाम (ग्राया

(मन १६, सम्म १६ मीत)। लाव वं विके १ वाम इन्त वार्या हाव । २ सांब रामन (दे २ ७०)। न्दवा रि [अपके] १ नारा करनेवला स्रय करनेशाना। २ दूँ दास्त्री वैत-पुनि (स्त्र कार क) । १ वि धपक भेति में मास्त्र (कम्म ४)। सडिक्ये [शेणि] वपत क्रम क्रमों के नारा की परिपादी (का श ११: उपर ११४)। रावदिश्र वि दि । स्ववित स्वतनश्रात (t 2 mt): र्युद्ध । न शियत रिखय नास (बीत)। ह्यबणप् 🕽 २ डेल्बर, प्रक्रेप (कम्पप् 🖦)। ६ वं कैन-पृति (विशे २३६६) मुद्रा ७०)। रायात्र देनो सामण 'विद्वित परकश्चवाडे सी' (बर्में २३) । राजना की क्षिपना निम्मयन, राजनशब्दर (मलु२३)। ग्रवर्षे [दे] लग्ब अवा(६२६)। स्वत्रय देखो राज्या (सम २६ भारा १३ माना)। राष्ट्रिज वि वि दूपित, कुछ (वे २ ७२) । रत्यक् पू [स्वयंत्र] भल्य-विरोप (विधा र द--पत्र वर्ष थी) । ग्रवासी क्षिपाँ यति यतः अस्तर िज्ञ ही पात्रस्पाय दिय (ठा ४ ४) । राविभ रि [अपित] १ रिनारित ना रिया हुमा (नूर ४ ३ अ आप) । २ वहेबित (स्म 23x) : राज्य 🕻 🤻 १ नाम कर बाबा हान । २ रामम बचा (वे २ ७७)। रप्रस्य वि [रप्रये] बायब, तुस्य बाटा (बाध)। राध्य वि [राप्र] ततुः नोहाः 'प्रजन्मगन्नो क्यो पनि (विरिध्य)। राष्ट्रर देनी प्रवपुर (विक ५४) गरस्त्रम व [व] इंग्रियम (वे २,६)। राग यर [र] निनरना पिर पहना । बस्त (रिय) १

टक प्राप्ति मुल्य (परम ६ १६) । २ पुन्नी

१ १८)। इहि समहत्ता स्वित् समेता

बस देश में रक्त्रेताला मनुष्य (पराह १--पन १४३ इन) । स्ततस्य प् [सरहसः] पोस्ठाका सना, प्रतिद चय (वं १६) । सासफास पन दि । धालना सिस्तना विर पडना। का सामाफसेमाण (सुर २१६)। स्रसंप्रति वि वि स्मानुक प्रवीर । 📳 वि "भव" व्यक्त दश हमा (दे V ¥39) i लसर केवो कमर=वे कसर (वे २ स X= ) | सासिल केहो स्टब्स = वास्ति (हे १. ११६)। स्पत्तिञ्जन [कृत्तित ] रोप-विरोप काँगी (Tt tet) : लसिका वि दि किन्स हमा (तुपा २०१)। स्तुपुद्धि रोव-किरोप पामा पुरस्की में 'ছর' (एए)। लह र्नुत लिखे योकास बनत (भग र २-- पत्र ४४१)। सद्धीचोल (स.१.)। म्बद्ध्यर देवी कायर (भीम' विपार है)। समह्मरी की [सावरी] १ प्रक्रिकी माना पक्षी । २ विद्यालये विद्यावर की की (ठा 1 () ( ) तक [ट्यायू] चाना भीवन करवा साभ ) भन्न ए करना । बाद, बाबद, बाड (द्वेष २२)। वर्षि (गुपा ३०) महा)। विश्व वाधिक (हे ४ २२ )। दर्भ क्षत्रक (पर)। यह स्तर स्थानीत स्थायमाण (अन्द १४' पडम १२ ७१, विया १ १): 'बंदा निबंदा द्वा में मर्रांद पूर्वानि दे संदि पियति सर्व । (वर्ष १४) । क्यकः राज्ञतः राज्यमाण (रक्षम २२ ४६) चा २४ : पबन १७ । ११ वर ४)। हेइ स्पर्दे (Fr 202): न्याम (र [प्रवात] प्रविद्य (रमुत (क्य १९१) ६२३ तर २७ है २ १) किसीय पि [\*क्षीचंक] पश्ल्यो, गीतिमान् (पत्रम ७ Y) अस रि [वरास्] नहीं धर्व राम पूंच-[राम] १ चनावं का-फिल-(पउम १, ): शिक्षणा ६ दशर में शिवत इव नाम का ग्याम रि (ग्यारित) पुत्र, ब्रांबर नाडीक एल--- (बा ६६ का बाँव) ।

ल्याक्ष विल्लावी १ लूख हमा। २ व. कुट ह्या क्वाराय, 'बायोवनाड' (क्य )। ३ ठमर में विस्तारकाती और बीचे में चंडकित ऐसी परिका। ४ ऊपर और नीचे समल स्न से बुधे इदें परिवा (बीप) । १ बादे, परिवा लाइ क्ये लावि विदेश परिवा (तुपा २६४)। लाइ को क्यांति प्रशिव कीर्त (दुरा १२१३ ठा ३ ४) । काइ दि विकास (गीप)। साइम देवी साइअ = बादिक (विसे ४६) २१७६: तत्त ६७ हो) । साइअ वि सितिती बाग्र इम. इप मलिस (प्रापंतिर ११)। लाइआ को विलातिस्री बादै परिवा (दे २, ७३ पास सूपा १२१ मन १, ७, पराहर ११)। क्याई स दि ] १—-२ बल्चनी टोला मीर पूर्व राज्य के मार्च का सुचन सम्बद (वर % ४० जीव)। स्पाइम केवो स्वाइक = सामिक (बूपा १११)। लाइम न [सादिम] प्रदर्शका क्या यौत्र वरिष्य बांच कीच (सम ११) का ४% धीप)। साइर वि [न्यविर] नविर-दृष्ट-सम्बन्धे बैर का, करवर (हे १ ६७) । लाउप न (लायक) बायनसम् (बुबर्युन या १७१ देनदिस कथाना १.५% है)। लाओवसम ) १ चो लाओवसमिय (५७ ग स्वभोदसमिम । १११: ६४ सम्ब १६)। वाभावसमिग 🖛 गाजीयसमित्र (धार्य ६व मम्बन्त्वो १)। स्वाबद्ध वि [दे] प्रतिकासितः प्रतिविभिन्त याहरूह पूँ [साहरूह] भीनी नरम-प्रियो भा एक नरवायल (ठा ६) । खार्डाहम्म की [के] एक प्रकार का जानगढ गिन्द्रपे किली (पंछा १, १) क्षत्र इ. १. ४ विते ३ ४ टी)। रगान 🖠 [ स् 🖟 एक मनेन्द्रशांति (कुन्प ₹**₹?**)|

ग्याय न [ग्यद्न] भोजन ऋतुष्ट चालेप

कव---सम

म पाछेल म तक् नहिमो मंद्रसी मदमलाए (मा ६६२: परम १४ १६६)। स्थान [स्थान] स्थन एक्टि (यन)। स्तापि की [स्तानि] बान भाकर (दे २, ६६ कुमा सुपा १४८)। स्थाणिक वि [सानित] कुरवामा हुमा (ह **1, 10**)1 स्त्राणी देशो स्थाणि (पाप)। काणु १ पृं[स्थाणु]स्थाणु दूरा वृत्र सवत काणुंग १ (पर्या २ ६ हे २ ७ कस)। स्तावि देशो साइ = स्पाति (सँवि १) । स्थास सक [झासस्] बनाना मान्य्र म'वना। कामेइ (भग)। कर्म कामिकड, कामीमइ (१३१४६)। यह स्वानचा (४०)। स्थान वि [क्षाम] १ इस दुवंग 'बामर्प बुक्जोर्स (पर १८६ टी पाम)। २ धीख क्सक (दे ६, ४६) । ह्यास्य न [अस्य] बनाना (भावक १६४)। खासजा की [क्षमणा] सनापना माण्डे माराना सामा-माचना (मुपा ११४ विके 48)1 त्वामिय वि [समित] १ जिल्के पास समा मानी वर्ष हो वह, समामा हुआ (विसे २३ वट क्षेत्र १४२)। २ यहन किया ह्या। १ विसम्बद्ध विकास विस्था हुया 'तिरिएए धवीरता पूरा न बानिया में कर्यटरा (पडम ya 48; # 3 8xx) 1 इसाय पूंक्तिया पोचकी नरक-मूमि का एक नरम-स्वान (देवेन्द्र ११) । स्तायर देखी साक्षर (वर्ष ६) । रहार पूं [झार] १ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ३) २ मुजपरिसर्पं नी एक पार्टि (मूच २ ६ २४) । ४ वेट, बुरमनी (मुकार ६) । "बाइ पून ["दाइ] सार पकल की मही (बाचार १२)। तंतर्यतिवन्त्री बार्न्डर नाएक भेर वात्रीकरण (ठा ८---पत्र ४२ )। सार प्रे क्षितर है सारण मरन्य संवयन (हा ब) । २ भन्म धाक (खाया १ (३) । १ बाट, साट, सरल-विधेव (वृष १ ७)। ४ सवता भीत (हरू ४) । १ जातवर-निरोप

७ वि क्यू या करपण स्वादवाला क्यू पीज (पर्स्स १७ -- पप ४३)। द बारी भीज नमधीन स्वादवानी वस्तु (मग ७ ६ सूम १ )। तडसी [\*त्रपुपी] क्टू वपुषी वनस्य ति-विदेष (पएए। १७)। तिस्तुन [सिस्तु धारे से संस्कृत तैन (पर्रहर ४)। मेह पू मिया दार रखनाने पानी की वर्षी (सप ७ ६)। विक्तिय वि विशिक्षिक वार-पाद में विमाया हुया। २ सार-पात का भावार भूत (मौप) । यत्तिय वि [ यूनिक] सार में क्रमा इया बार से सीमा हुमा (मीप दसा ६)। वानी भी विवापों विवार से मणे हुई वाली वृद्धा (पर्यकृ ११)। सारंफिडी की दि गोषा गोड़, बन्दु-विरोध (दे२ १)। सारवृत्तण वि [सारवृषण] बरवृषण स बारपुष्यु-सम्बन्धी (पदम ४३ १३)। स्तारयन विष्मुद्भय कनी (दे२ ७३)। सारायण पू [झारायण] र ऋषि-विशेष । २ मार्डस्पनीय के रहकामूत एक गीन (ठा **•**) ( कारि भी [सारी] एक प्रकार भी नाप १४ धेर को तील (वा व १२) । कार्रिभरी भी किरिम्भरी वारी-परिमेठ वस्तु विसमें घर सके ऐता पाव मर दूव हैने-वली (या = १२)। सारिकः न [वे] फन-विशेष सुद्वारा (सिरि 2221) I कारिय वि [भारित] १ मावित मराया हुमा(वद ६)। २ पानी में विमा हूमा (मिनि) । मारी देवो न्यारि (या = १२ जो १)। सारमणिय पूं [झास्मणिक] १ म्नेन्ध रेश-विशेष । २ पतमें खुनेवाली म्लेक्स कावि (मन १२२)। सारोदा भी [चारोदा] नदी-विरोप (चन)। साम्र सक [ भास्य ] बोना प्रवास्ता पानी थे ताक नरना। इ.स्टास्टिंग्ड (स. १२६)। रगास और दिंगे नाना मोधी, गंदवी निक्तने का मार्ग (टा२,६) ध्री स्वाद्धा (दुवा) । रग्रस्य न [भारतन] प्रधानन पद्माप्ता (गुपा (बाल १)। ६ प्रतिका समी (तूप १४२)। ₹**२**=) 1

लाकिम वि झिलिती पीत पाया हुपा (ती ११)। श्रायक न [स्यापन] प्रक्रियन (पैचा १ w) 1 शरायणा की स्थिपना प्रसिद्धि प्रक्रमन 'मनकार्ए कावरणविहार्य वा' (विशे)। शायियं ३ वि [न्यायमान] निसको विनाया बाता हो बद्द 'कार्यालमसाई बावियेते' (विपार् २—पत्र २४)। कावियन वि स्मिदित ही विसरी किमाया यमा हो वह 'कार्गाखनंसकावियमा' (भीप) । स्तार्थेत कि [संयापयम्] प्रस्पाति करता हुमा प्रसिद्धि करता हुमा (उप वश्वेटी)। स्तास पक [ध्यस् ] चौरता बाँसी बाता । चासर् (संदू १६) । न्यास प्रक्रिमा रोक्शियेय वांसी भी बीमारी सींची (विपा**१ १**) सूपा४ ४ क्य)। स्त्रांसि वि [कासिम्] बांसी का ऐगवाला (सुपा ५७६) । कासिम न [कासिव] श्रांधी श्रांसना (हे १ t=t)1 न्नासिञ पू [न्नासिक] १ म्सेन्य देश विशेष । २ क्समें रहनेवासी म्लेक्स जाति (परह १ रे—पत्र १४० दकसूपर १.,१)। सियक [कि] धीख होता । कर्न, 'किन्कर मनपंतरी' (स ६०४)। श्रीमंति वीयरे (कम्म ६ ६६) टी) । हिन्दू भी [सिति] द्वीपनी बच (पडम २ १८६ म ४१६)। गोयर प्रंिगाचरी मनुष्य मानुष भारमी (पडम १३ ४३)। पश्कृत [ प्रतिष्ठ] नवर-विशेष (म ६) । **पदाह्रय न ["प्रतिद्वित | १ इत नाम का** एक नगर (बप ३२ थी स ७)। १ स्वत्यूह नाम का नयर, ओ साजकत विहार में "राज पिर नाम से प्रनिक्त है (वी १)। सार र्द्र [सार] इत नाम का एक दुर्ज (परम **= ₹)** | रिकेन पर [मिद्धय] निवि प्रारात र स्ता । बिचेर। यह निर्मियंत (गृच २ ११)। सिरमंत्रिया स्री [सिद्धिणस] धुर परिस्ता

(एग)।

४) । २ त बारहवी पुरा-स्यानक (सम २६)। "राग दि ["राग] १ मोतराय राम-पहित । २ तु जिनस्य तीश्कर देव (यक्त १)। स्त्रीयमाण नि [चीयमाण] विसन्त क्षय होता नाता हो वह (पा १८६ टी)। अमीर न [चीर] वेता दी दिन का उपवास (संबोध १८)। बिंबिर पु विश्वीर] दत्र-विरोप (हुप ७६)। विकिस भी। िक्रणकीस] देवी-विरोध (दुम ७६) । यर पु ["बर] रे समुद्र-विरोध । २ प्रीप-विरोध (सूज्ज १६)। क्पीर म [र्झर] १ दुग्व दूव (हे२ १७ प्रस्मुर३; १६०)। २ पानी वन (इ.२ १७)। ३ पूंधीरवर समुद्र का सनिद्वायक देव (जीव ३)। ४ समुद्र विदेश कीर मनुद्र (परम ६६ १०)। कर्मक पू ["करम्य] इस नाम वा एक श्राह्मणु-ब्राह्मयाम (पटम २१ १)। नामासं से निम्नसम्। वनन्यति विश्वेष श्रीरविदायी (पएस १) । जस प् [ जस] शीर-सपूर सपूर-विशेष (धेव)। जसनिष्टि पूं "जद्मनिधि वही पूर्वोच धर्व (मूपा २११) । दुम इम पू िंद्रभी दूसवाला पेड़ जिसमें इब निकसता है ऐने बूज की जाति (बोप १४६ निक् १)। धाइ की धात्री दूव पित्रलेशली सार्द (खामा १ १)। यूर पू [\*पूर] उदमता हुमा हुम (यग्ला १७)। दरन पु ["म्म] धीरवर हीप का एक सर्विष्ठाता देव (बीर १)। मिद्य दे ["मेघ] दूव ममान स्वादराने पानी वी वर्ष (तिन्ध) । वह की विवी प्रमुख हुन केनेवाली (बृह ३)। बर पृ [बर] द्वीर-स्थिप (जीव श) । यारिन ["वारि] धीर धनुर ना वत (परम ६६ tc) । हर पू ["गृह, धर] धौर-मागर (कम्बा २४)। सम्ब पु ["मिन] निय-रिशेष निमक्ते प्रवाद में बचन दूप की तरु मधुर मादून हो। २ ऐसी मन्दियाता जीव (परह २ १ धीर)। र्ग्यारद्वय नि [क्षीरकित] संज्ञात-सीट, जिनमें दूव बणाला हुया हो बहु उप गुगानी पत्तिया पत्तिया गरिमवा प्रमुखा सागानम्या

कीरा (१ र) इसा बद्धकर्ना (सावा १ ७)। सीरिवि [इहीरिन्] १ दूववासा। २ पू जिसमें दूध निरमता है ऐस बूल की वार्डि (कार १९ टी) ( सीरिक्जमाण वि [सीर्ययाण] विसका बोइन किया अला हो यह (घाषा २, ₹ ¥) 1 सीरिजी की [झारिजा] र दूबवानी (माचा २ १ ४) । २ **इ**ल-विरोप (पर्ण १---पत्र ३१) । स्त्रीरी की [क्षरयो] कीर, प्रकाल-विशेष (सुपा ६३६ पाम) । न्धाराञ्च पू [क्यारोन] मनुद्र-विरोप सीर सागर (६ २, १०२ गा ११७ गडा स्त १६ थे स ६४४)। सीयेआ की कियेशी एवं नाम की एक। नदी (इक ठा२ ३)। सीरोद रेको साराम (ठा ७)। सीयदक्तु [ चत्यदक] श्रीर सावर क्रीराह्य (लाया १ ८ मीप)। ह्यारादा देखो सीरोआ (ठा १ ४—४व t ( 1 ) 1 स्रोत )पू [कोल, क] बीमा पुट. क्वीस्म क्रिये (स १ ६ मूम ११६) कींचर<sup>1</sup>१ १८१ दुमा)। सम्म दू ["मारा] मार्च-विरोध कहा पूनी ज्यादा ध्यून में जूटि के निशान बनाये गये हों (मूख 1 (11 1 रास्त्रपण न [फीडन] क्षेत्र कराना श्रीहा नराना। बाइ की [बात्री] क्न-पूच करानशामी दाई (खावा १ १---पत्र १७)। स्पोक्षिया देनो कीक्षित्रा (बोबस ४०)। र्ग किया हो [केकिस] दोशे मूँ ही (पारन)। सीव दू" [चीप] मद-प्रान्त मनोत्पत्त मन्त (**दे** ≂ ६६) । सुम [ससु] स्त्रभवीं शासूचक बम्बय—१ निरंपन बाबारण । २ वितरे विचार। १ संग्रम स्ट्रिया ४ संबा बना। १ विस्मय द्यापर्य (हेर १६८ पर्गगर १४२।४ शास्त्र राह्मा १ कृत)। म् रेपोस्या (सन्दर्भ दूसा १६ : शामा १ १३)।

श्रुद्ध की [श्रुति] १ धींक। २ धींक का निरात (ए।पा १ १६ मग ६१)। सुद्रय वि दि | १ विविद्यम । २ विव्यात रास्त 'चुन्या विया' (दुप्र १४)। सुंखुणय पुं [रे] नाकशा दिश (के २ ७६) पत्रम्) १ र्व्यन्तुर्जाकी दि रम्या, मुहला (६२७६)। न्येगोद्द (दि) सम्बन्ध एक उत्तम आदि (सम्मत्त २१६)। स्वन् पुरि] चूँट, बुटी। सोडय वि [साटक] १ लूटि को मोहनेवाला उससे छुन्कर भाग जानेनाचा । २ पूँ इस नाम कर एक हापी (नार---मुच्छ ८४)। खंडय वि [वे] स्वभित स्वपना-प्राप्त (दे ર હશ્)ા स्तंद (धौ) सक [अद्भी १ जाना। २ पीसना ्रकृतना। लुद्धरि (प्राकृ १६) । स्रोद घड [श्रुष्] दुव समना। तुर्दर (प्राकृ ६६) । र्मपा की वि वृष्टिको रोकने के सिए बनाया भाता एक तुरुमय उपकरण (६ २ ७३)। सीमण वि [झोमण] धोम उपजानवासा (पएह १ १--पत्र २३)। मुज्ञपक[परि⊬ अस् ] १ ऍकन्छ । २ नियन करना । पुजर (प्राप्त ७२) । सुक्तः } वि [कुम्म] १ दुवसः। २ वामन सुज्जय रे (हे रे रेन्स्र या ११४)। १ सह टेड़ा (मीप)। ४ एक पार्थ ने हीन (पक ११)। ६ व. संस्थात-विरोध राग्रेट वा वामन बाकार (ठा ६ सम १ वर् सीप)। भी मुजा (ए।वार १)। मुक्तिय वि [कृष्टिजन्] दूबहा (धावा)। मुट्ट सक [सुद् ] १ तीवना सन्दित करना दुक्झ करना। २ सकः भूगना सीख होना । १ टूटना पुटिय होना । गुरुह (बाट---माहित्य २२६ हे ४ ११६) : नुद्रति (41) ( मुट्टी दि द्विति, गरिस्त दिय हि २ ভতুনীয়)। न्द्रह केते मुत्र = तुष्ट । तुरद (हे ४-११६) । मुरेति (में व ४ ) । वह *भारेगीमामा*पदा

धान्त वि वि निमान इसा स्था (दे २.७४°

साबा ११ वा २७६/६२४ संबा मन्ड) ।

मुर दु[सुर] बाश्वर के पीव दा लख (दुर

श्रुर पुं[अूर] क्युष्ट व्यक्तिय (शाकार क

सस्तुष वा प्रस्तुष कृष (विशा १ ६) ।

क्रूरप्प क्री [क्रुरप्र] एक ४ व्हास च्हान

सरप्य पृक्तिस्प्री १ वात काटने का सक-

एक प्रकार का बारा (वैछी ११७) ।

किरोय, मुरना (सम १६४) । २ रार-किरोय,

सुरसाम **र्थ [सुरशान] १ फेर-फिरो**य

(लिंग)। २ सुरहान केट दा राजा (लिंग)।

लुरि वि [सुरिम्] नुरवाता वानवर (बाव

सारु पुंक्ति प्राहर<del>ण विशेष बाह्य विशेष</del>

सुरुवक्सुबी हो [दें] प्रलय-कीम (दे २,

सुरूप्त केलो सुरूप्प (पछन १६, १६) ह

सुद्ध क [दे] वह गांद बहा धानुमों के दिया

मुस रेवो सुम्म । सुबद (शह १६) ।

कम मिनती हो नाकिया में इत घटी व

मुलुइ पू [दे] कुछ, पैर की बाठ परेबी (पे

सुख्युद्धां की दि । प्रसम्बोप (वर )।

सरासाम रेजी सुरक्षाम (पिन) ।

भूमार प्रयी १ ७)। यच व पित्री

१ २४८) वधक प्रामु १७१)।

(सिरि १८१) ।

1) (

ter);

(qc ta taa) 1

भिनवा हो (बन १)।

२ ७१, पाधः)।

सुद्धिभ पैको सुद्धिभ (पिन)।

४४)। संक्रस्तकिजय (त ११३)। लुडक रेसी लुड्क = (रे) । पुरुष्ट (पर्नेष ब्रुडाइएल दि देवो सुद्धिक (पा १२६)।

सर्वतिकामोत्तियाँ (पठम १६ ११२: स

300

হুটিস দি [কাণিয়ত] দুগত ভাগ্ৰত निम्बिल (हेर दशायक)।

**ब्रह्म स**र्व [सप+क्रमय्] इटाना पूर करना । सङ्ग्रह (प्राक्त 🗸 ) । साइक पर वि र गीवे कारना। २ स्वसित

होता। १ सम्बन्धे तस्य दुस्ता। ४ दुस्सा से मीन पहनाः नुहाद (हे ४ ३११)। षद्ग-सद्गर्जन (कुमा) । सद्विष्टभ नि दि । रास्त्र की उत्तर प्रसा

इमा चटकाइमा (उप १११)। २ रोप सुर प्रस्ता से मील बारदा करनेवाबा । बी. आ (ग २२६ म)। मुद्र ∤ पि दि स्त्र स्वकी रन% भूतिगा कार्य (देरे ७४ कर्या दस दे प्राचार २ ६ छत्त १)। र नीच प्रवय कुर (कुल्ब ४४१) । १ ई कोटा संसु, संबु किम (तुप १ ६ २)। ४ पून, बंक्तीय-

विशेष एक प्रकार की बंदुओं (बीप चप 3 4)1 स्तुप्तकाथ दिहे । स्तुप्तकार । २ फिर किर (निष्य २ )। लाइय केवी लाइ (है २ १७४० पर्कण सम ६६, एएमा १ १)। सुद्वाग } वेबो सुद्वग (बीप परश १६) सुद्वार्था समार्थकम्म)। "जिबंद न

भिर्मेग्व] क्लास्थ्यन सूत्र का कठनी घषका (क्त ६)। सुद्धियन दिहे पुरत मेपून संगोन (देश 1 (XB शुक्रिमा की दिक्षत्रिका रिकोटी न≔ी (दार ६ माना २,२,३)। २ जन्द नशीनुसा ह्या कीटा बनाव (वं १ वर्ष) २ ४)। मुणुक्तमुबिका की विशेक्षण नाम गाविका

मुप्ति [धुण्य] १ नर्तिय (भा४४३

निपूर्)। २ पूर्णित (वे २, ४१)। ३ मान

( R R WE) 1

**"सुताब [ इ**न्चस् ] बार, बस्न (क्का चर १४ ६१)। सुद्द वि [सुद्र] तुम्ब, नीव दुष्ट, घवन (पर्रह् र शकाको। (का ११४)।

सुर न चित्रेज ने दुक्ता गुल्कता गीवता र्खुहिमा 🕏 [धुद्रिमा] कल्वार प्राम 🖈 एक मुच्चीना (ठा ७ — यम ३१३)। सुद्ध वि [सुरुघ] सोम-प्रान्त ववदाया ह्या (समा १२१)। सुमा की [सूम्] भूव (वर्तते १ ६२)। कृषिय विश्विष्यती कुनतुर, मूका (सूप 2 4 2) [

सूभ देवो सुम्म = सुरुष (पि १६ )। सुम रेको सुच्य = (रे) (पाय)। क्रुप्प सक [प्रसुप्] बनाना । कुप्पद्र (प्राव्ध 4x) ı स्रुप्य चक [ सस्यु ] हुनता, निमान होता । कुमद (हे ४ १ १)। यह- सुरसंत (पावत-कुमा। बीच २३ से १३ ६७)। हेफू. कप्तियाः (तंदा) । सुप्पियासा भी [सुरिपपासा] मूच बीर प्यास (मि ६१) ।

सुरुभ पत्र [सुम्] १ तोम राता युक्ति होता । २ नीचे हुवता । बहुर, झुटर्मत (ठा **७ —रन** ३०३) । **सु**ब्सण न (चांभण) सीम, वदशक्ट (स्व)। सूभ सक [ शुभ् ] वरता, वदवाना । सुनद (एक्छ १)। इन्स्मुसियक्व (पराह २,३)। **शु**भिय वि [शुभित ] १ बोक्युष्ट, ववदावा हुधा (पर्यहर १)। २ तः स्रोम, काहाहर

कुस्मिय वि [चे] नॉम्त नमाया हुमा (लामा

(प्रा**ष्ट्र ६३)**।

१ १—सम्बद्ध)।

(योष) । ३ क्यह समझा (बृह् ३) ।

सुष्ठ न [रे] कुटी कुटीर (हे २, ७४) : मुख } कि [शुक्र क] र कोटा, नप्र-क्षुस्म धक [श्रुम्] पूज बक्ता। जुल्लह

श्रीक्षण क्रिक (प्रस्कार)। २ ट्रा ग्रीनिय भीव-विरोध (भीव १)। मुख्य नेवी सुद्रुग (दूप २७१) । सुक्रम (घर) देवो सुद्ध (पिर)। सुक्य नि [शुक्रम] र बहु धून क्षेत (चरि)। १ इत्य<del>र्कविदे</del>य एक प्रकार की कौकी (एएमा १ १ -- पत्र २६४)। सुद्धासम पुटि विज्ञाली बहान का वर्षवाधी-विशेष (शिरि १०६)। सुविरी की [व] संवेत (दे २ ० )।

होते हैं ऐसा इन्न (स्तामा १ १--पत्र ६१)।

सबय पूर्वि देख-विशेष, करविक-पूर्ण

खुक्त्रय म [वे] पत्ते का पूड़का दोला (वक

सुद्द देशो खुम। इ. सुद्दियम्ब (पुण ११६)। सुद्दा श्री [सुज्] पुत्र १ट्टमा (गदाः

िंपरिपद्द, परीपद्दी भूकाकी वेदना की

शान्ति से सदन करना (उन्त २३ पैका १)।

स्वदिक वि श्लिभित् रे कोक-प्राप्त (सं र

४६, सूपा २४१)। २ ब्रोम संवास (योव

वरिसद्द, परीसद् र्ष्ट

ब्देटीना चास (दे२ ७६)।

प्रासु १७३)।

w) 1

सम्बद्धाः सुम । कुन्द ( पर् ) ।

न्नूण न [धूय] कुल्यान, हानि (गुर ४ ११६(महा)। २ क्यराव हुनाइ (महा)। ३ म्युनता कमी (सूपा ७० ४३)। लेश सक लिएम विक करता, सेर जपजाना । बोएइ (विसे १४७२ महा)। नेज वृश्चित्र । श्रेष्ट खोग शोक (का ७२८ टी)। २ तकतीत्र, परिमम (स ६१६)। ६ संयम विच्छि (क्स १६) । ४ वकावट मान्ति (माना)। पत्र स वि [का] निपुत्त कृतम चतुर, बानकार (इस १ ६ धीव ६४७)। होज देवी लेख (पूर्व १ ६ माना)। साध दें [चेप] त्याय, मोबन (से १२, ४०) ह्मेळाण न हिर्दन ] १ क्षेत्र, उद्योग । २ कि चेद उरवानेशाना (बुभा) । क्षेत्रर देवी सापर (कुमार पुर ६ ६)। दिव पु ["धिप] विद्यावर्ध का शका (पडम २०. १७)। ।दिवह प्र िमिपवि निवासरी का राजा (परम २०४४)। द्याभरित पू [से बरेम्ड] बेबरों ना राजा (पत्रम ६, १२)। रेक्करी देनी लक्ष्यरी (दूमा)। श्रामाञ्ज वि [वे] १ निष्मद् मन्द, याननी । २ बनिद्या दैर्मानु (दे २, ७७)। न्तेद्रय वि [से एस] किल किया हुमा(तः (11)

लेक्र रेको लेकर (छ ६ १)। क्षेत्रण की सिदना बेस-पूचक वाणी स्रेद (गाया १ १८)। हेवड सक [कृप्] बेठी करना नाव करना। क्षेत्रइ (सूपा २७६), 'यह समया य दुविवि इसार बेर्डाट फ्लएक्वेब (मुपा २३७)। होड सक जिल्मा होक्या । बेड्स (बेड्स ११७ कुप्र ७१) । सेड १ सिन र क्ली का प्राकारकाला नगर (भीत पएइ १२)। २ नदी भीर पर्वती से बेहित नगर (सूच २ २)। ३ पूँ मूक्या शिकार (मिर्वि) । श्रोहरान [सेटक] फनक इस्त (परहर क्रेड्रथ न फिर्पणी खेतीकरना(सुप्त २३७)। लेड मन लिटन विदेशना पीछे इटामा (उप २२६) । खड्यक न सिन्नको सिसीना (माट---चना ६२)। लेख्य प्रस्थिटकी १ विष आहर (६२) ६) । २ व्यर-विशेष (कुमा) । हेरडय वि [स्फेटक] नाराक, नारा करनेवाबा (दे२ ६ कुमा)। केडय न सिटकी फोटा यान (पाचा पुर २ १६२) । सेबाका वि सिस्को क्षेत्र करनेयमा समासगिर (३प पूरेबद)। केंद्रिज वि दिशे हरू से विशिधित (दे १ 234) 1 सेबिस प्रस्कितिकी शतासका, नधर । २ मनावरमाला (दे २ ६)। सेषु पक [स्यू] शैक्षकरना क्षेत्र करना । बेह्र (है ४ १६४)। बेह्नि (कुमा)। लेड । न लिस्डी १ और इंग्डिय समारा केंद्वेग में मजाक (हिरे १०४ महा पुण १७ । स. १. १) । २ बहाता, छन मन-बेड्रम विदेशमा (तुपा १२६)। संदूष भी [माडा] भीड़ा अन तमाता (धीपः पटम = १७३ सम्बद्ध २)। केंद्रिया की दि ] वारी एका 'मह । परिचाना ! मेंद्रिया (स ४०१)। ं संत र्रंग [चत्र] १ घलारा (विमे २ ८८)। ी

२ कृषि भूमि क्षेत्र (क्षूड् १)। ६ वामीन, मुमि । ४ देश, जीव भगर वर्षेख्य स्थान (क्या पेषुः विसे)। इ. मार्या व्ये (छा १)। करप पूंकिल्पी १ देश का रिवाद (बाह ६)। २ क्षेत्र-संबन्धी मनुद्रान । ३ प्रम्य-विशेष विसमें क्षेत्र-विवयक भाषार का प्रतिसदन हो (५५) । पश्चिमीयम न पिल्यापमी कान का नाप-विशेष (बालू) । ।रिय प्र ीर्वे वार्यं मूमि में उराज्यं मनुष्य (वस्तु १) । देवी दिश्तः = क्षेत्र । लेत्तव पू [च्देत्रक] सङ्घ (मृत्र २ )। देशित वि चित्रिन् । शेववाला क्षेत्र का स्वामी (विसे १४६२)। देश न [दोग] १ हरन कस्पाल हित (पक्स ६६, १७ मा ४११ मत ३६ रमण १) । २ प्राप्त वस्तु का परिपादन (सामार ४)। व विकृतकता-पूक्त हित कर, ज्यातक-राष्ट्रित (ग्रामा १ १ वस ७)। ४ पु भाटविपुत्र के राजा जिल्लानुका एक मनस्य (माचु १) । पुरी की [<sup>\*</sup>पुरी] १ नमरी-विशेष (पदम २ ७)। २ विशेष वर्षं की एक नवरी (ठार, ६)। केर्मकर र् [च्रेमहर] १ दुसकर युव्य-विरोध (पडम १ १२)। २ ऐरबत क्षेत्र के चतुर्थ कुषकर-पुरुष (तम ११३)। १ छह-विशेष प्रहाविद्यासक देव-विरोध (ठा २, ६)।४ स्वनाम-मस्तिक एक कैन मुनि (पटम २१ प्रेषि करवास्त्र-कारक विश्व-कारक (चा २११ टी) । क्षेमंबर पूं [श्रीमन्बर] १ पूनकर पुरक-बिरोप (पठम १,४२) प्रैरवत क्षेत्र का वांचवां कुशकर पुक्त-विरोध (सम ११३) । ३ कि क्षेत्र-बारक स्पत्रव-र्याहर (राज) । केम व र् [क्षेत्रक] स्वनाल-प्रविक्व एक प्रन्त हुद् वैतमुति (चंद्र) । केमराव र् [क्षमराज] चना हुवास्तात का एक पूर्व-पूक्त (ब्रूप्र १)। केमिडिजया भी [भेमिडिया] केम्प्रिन-क्या की एक राज्य (कप्प) । रेंगमा बी [क्षमा] १ विषेत् वर्ष गीएक नगरी (ठा ५ ६) । २ शेनपुरी-नामक नगरी-विशेष

(पंजम २ १)।

स्रोहय न [स्टोटक] कोड़ा, प्रश्नी (हे %

हैसर तु वि] एक स्लेज्झ वाति (मुज्क १४२)। क्षेरि की [दे] १ परिवाटन गावाः 'बएखकीर

٦८

पाव (वर्गीव १) की ।स्रमा (वर्गीव १)। शिख र् [इहायाम्] स्वेप्पा रफ, निष्ठीवन बुबु(सम १ और कम्पापकि)। इससम १ म [केस्टन कु] १ बीहा है। सन्तर्भ के में । २ विक्रीना (माना स

( ( es ) केकोमहि 🗱 [स्राप्तीय म] १ तन्ति-विदेव विश्वे स्तेष्य भौपनि ना नाम की मने (पर्यार, १० वंदि १) । २ वि ऐसी सम्बद्धा (प्रावस पत २७)। क्षेत्र वेचो साळ = केन्। बेक्कर (श २ ६)। वक्र-लेक्समाज (स ४४) । प्रयो सक् लद्धवेऊप (पि २ ६)।

केड रेची लेख = सीप्पन (राम)। संक्षय देनो साम्रज (स २६४) । राहायण ) न स्थितनकी १ केन करना केटावणयाँ वीक्राकराना । २ स. विजीता (का १४२ टी) । पाई की ["पात्री] कैन र पनेवासी बाई (धन)। लाक्टिभ न [वे] इसिट ईसी ठ्या(देश **44**) 1 लस्तुड देशे नस्तुड (चन) ।

रोद व सिपीर केपल करना (का ७३ शी)। र न्याम स्थापना (विशे **११२)।** ३ हंदया-विरोध (कम्म ४ १) व४) । रंजब व [क्रोप] विसम्ब वेचे (च ७७५) । राय पू [राष्] प्रतेन सेच, बनेश न ह बोड नक सेन नका सीतेनु साँतनुमहेनु (?)" (पत्रम १७ ९१)।

रप्रत्य रि [चप+] वॅक्नेशला (य २ २) ।

रावान [ध्रपद्म] प्रेस्स (सामा १९)।

स्थेषिय नि सिर्दिति विकास किया हुया (मनि)। होद्र पुन [दे] कृती एवः 'वरियध्युरंगवर मुस्स्यन्वेहाइनरिस्वप्रहें (तुर ११ १७१)। को अर्पु[सोद] १ स्तु, ब्लाः २ डीप विशेष इसूबर शीप । ३ समुद्र-विशेष इस्तरस समूद्र (स्र्लु १)। स्रोहम नि हिं विश्वदित 'सम्मे संगी कोइमा (सुकार १३)। स्रोप्त्य पृ [भादावक] सपूत्र-क्टिप (सूप १ ६ २ )। स्राधाद देवी सादाद (सुम ११) । स्रोंन्स १ पू [के] बूधी बूध (का २७८ स्रोटिय र स २५३)। को क्लापक [कोल्यू] वानर का बोलना क्लार का मादान करता । खेल्लाइ (पा १७१ म) । स्रोक्सा) की स्थिता वितर की भावान स्रोस्य ∫ (गाँ४६२) । कोन्द्रभ पत्र [चोझुस्य्] प्रत्यन्त भन्द्रीत होना विशेष स्थापुन होना। यह स्रोक् क्समाय (मीप पर्या १३)।

कोळा पून डिनेमार्ग-विष्ठ (संद्रि ४०)। लोड़ देन हिं। चटचयना उनउनाना ठोकना । क्यक्र-स्रोट्टिकांत (बोच ११७ टी) । उंकु स्रोट्टें (घोष ४६७ टी) । स्प्रेडिय [बे] बनावटी सरही (मंबीटिय पर 8×4) 1 खोड़ी की दि | रासी पाकरानी (दे २,७७)। रमेड पुं[स्काट] कोश (प्राक्त १)। क्योड प् दि रिशीमा-विवरित कहा वृद्धाः २ कि वार्मिक वर्मिष्ठ (देर वांत संबद्ध (देश अर्थां)। न्द्रयान नियार (मृ**न्द्र १ ३) । १ प्रदेश** मन्त् "डिपल्पोडे क्यही" (धीन ७६ छ) :

६ प्रस्कोटन प्रमार्थन (भीव १६४)। ७ न यजदूत में का योग्य मुक्त वर्षेद् द्रव्य (वय १) । रतेडपळासि पुँ [दे] स्पून शह नौ सरित (R 9 w ) 1 गोडय दु [स्ताटक] क्य ते पर्म स किन्छ

सन (हे ६ ६) ।

٤) ı स्रोडिय ( [स्रोटिक] निरुप्तर पर्वेट का क्षेत्रपाल देवता (ती २)। स्पोबी की वि] श्वका कक्ष (पद्या १ १--प्रदर्शे। २ काह की एक प्रकार की देते (मडा) । ३ नक्सी सक्बी (३ मान इ. इप्री-पम ४२१)। क्षाणि औ [क्षोपि] इनिनी नरही (क्ल)। वद् र् िपति राजा, मूर्गति (उप ४९० **∄**)ı स्रोणित ५ [क्षोणीम्म्] एम, मूमिपवि (धस) । स्त्रोणा क्यो स्त्रोणि (पुर १२ ११) पुरा २१० रमा)। स्रोद पु [स्रोद] १ पूर्णन विद्यप्त (भन १७६)।२ इनुन्स स्वाकारत(पूर्व १६)। रस वृं [रस] समूर-विकेष (दीव) । "बर चूं ["बर] श्रीप-विदेध (बीव 1) (

स्रोत मृ स्रोत पूर्ण, दुरती (हम्मीर १४)। सोदोअ ) पृं[साबोद] १ समूत्र-निर्वेष सोदोद } विस्तृता पानी स्यु-एत के पुन्न मबुर है (जीन ३३ इक) । र मबुर नाबीतली वारी (बील ६) । ६ स. मबुर पानी, कर्डु रम के समान निर्द्ध वन (पर्यन्त १)। ग्याद न [सीव] मदु, स्वर (वप भ ६)। न्द्रोभ सक [साभय] १ विव्यविक करम. वैर्थ से च्युत करना । १ प्राप्तवर्ग कावाना । रे रंग पैरा करना । श्रीमेद्र (नदा) नर्ज को संत (परम १ ६६, सूपा ४६६) । हैकि सामिचए स्वाभाइत (क्या रि ११६)। ~लाम प्\_[क्रोम] १ विश्वता, संप्रम (वार र)। २ इस नाम का एक सवस्त का दुव्य (पक्ष्म १६ ६२)।

नित गरनाः 'वेबोल्स्बोक्छकर' (१३न ६ दश्**वहा**) : रग्रभिय वि [स्रामित] विवक्तित विग्रा 💵 (परम ११७ ११)। ग्गम }न[चीम] १ नागीक वर्ष ग्रोमग 🕽 क्याँड का बना हुया कह (लाम

लांसण न [क्रोसण] शोध उपबन्ध, दिव

१ १ — पत्र ४३ दी जार १)। २ तत्र कर बता हुना कक्क (तम १२३ मग ११ ११: पएम २ ४)। ३ देशमी कक्क (जर १४६ स २ )। ४ कि सब्दी-संबंधी सन-संबंधी (तार भग ११ ११)। परित्य न भिरानी विधा-विशेष निराधि कक्क में देशला का साह्यान किया, बाला १ (तार )।

स्त्रोमियन [स्त्रीमिक] १ क्यास का बना हुमाबक (छादे दे) । २ छन का बना हुमाबक (कप्प) । स्रोमिय वि [स्रोमिक] १ रेग्रन सम्बन्धी।
२ सम्बन्धस्ती (वह १२७)।
स्रोम जोव (सम १११ इस)।
स्रोम हिन्दु प्रमासिय क्षेत्रस्त, कटीय
स्रोम (उन्न ११३१ स्ति)।
२ वह वा एक देश (११ ६ ३ ४, ३
वह १)। १ नम्ब का मीत्रस्त कीटकर्षन
(सावा २ १ ६ ३ १)।
स्रोम १ १ हो दुरुष।

स्रोसक्य हि [व] क्लून सन्वे धीर बाहर किक हुए शंवनाता (वे २, ७७)। स्रोसिय हि [वे] जीए-प्राय किया हुमा (तिक वेश)। बाहर नेवों स्वोम = सोक्स्। बोहर (परि)। बाहर नोवेंस (से १ ३)। स्रोह देवो सोम = सोम (पर्यह १ ४ डुमा सुरा १६०)। स्रोहण देवो सोमय (सर सुमा १ २)। स्रोहण देवो सोमय (सर)।

॥ इस विरिपाइअसह्महण्यते समायदवहर्षक्मणो एकारहमो तरंगी धमतो ॥

लोह न हिं दिए, यहर 'बोर्स कोलर'

(निक्र १३)।

ग

ता पूँ [न] स्थानमन्वर्ध विशेष सकता स्थान स्वाह है (सामा मार)। माने हैं [गै] र वानेकाला। र प्राप्त होने-बाता वैदि-नारा, काम (सामा मारा)। मान्न विद्यालि हो काम, सबकीय (मिले रूर २)। र माना, सेव (ते १ र ११)। व माना, बचन केलान्य-सानित (कुमा)। प्रकामाण-प्राप्ति माना-प्राप्त (र ११) १)। र के मानुष्य, विद्याल माना सीर पूछ बीच की समस्या वेनाव्यिति (उ. १, १)। उस सु नित्न साना सीर पूछ बीच की समस्या वेनाव्यिति सीर मानु के बीच (कमा १ १३) र ११)

गईद पूँ [गलेग्ड़] १ ऐक्क्स इली इन्ह इत्ती । २ वह इस्ती (गवड कुमा) । पम

मृद कर्म (सम क्ष्र) : व्यवाय वृष्टियशती

१ वित की विमन्त्रता (प्रस्कुरक्)। र

न ["पद्] किरनार पर्वत का एक बस-तीर्व | (वी ६)। गद्रक्षय देशो गय = नत (सूच २ १२)। गड ) पै गोि केंब कुपन सौड (है र गतम (११६) । पुचल पुन [पुचल] १ वैस की पूँच। २ वाग्र-विशेष (कुमा)। गडम पूँ शिवयी दो-तुस्य प्रकृतिवासा भंपनी पर्-विदेप गीव पाप (कुमा) । गडआ की [गो] मैका थी (हे १ १६०) : गडब पंगिष्ठी १ स्वनाम स्थात केरा वैदान कापूर्वी माग (देश २२) सुपा देवक)। २ गीक केल का निवासी (है १ २ २)। १ तीव केत का रावा (तटक दुमा)। यहर् दिस् नास्परियम का बनाया हुआ प्राकृत-मापा का एक काव्य-प्रेय (घउड)। गत्रण वि [गीण] सप्रवान समुक्य (व 1 1) 1 गरणी भी [गीणी] राजि-विकेष शब्द भी एक शक्ति (दे १ ६)।

गवरव वेबी गारम (कुमा है रे १९६)।

गडरिय वि [गीरिकेत] गीरनपुक्त किया हुमा विषका सावर—समान किया क्या हो कह 'कम्बणसार करनात्मार वेशेह केत विकेशि वत्यविकार परनात्मार वेशेह केत ११६ ६६) गडरी की [गीरि] र पार्चेश रिक-समी

(पुरा १ ६)। २ वीर वर्शनाति श्रीः ६ कौर्नवरेष (तुमा)। पुत्त पूर् पुत्र] पार्वेश का पुत्र सन्त्र कारिकेस (गुत्र ४१)। गंश्र देखो सथ=गठ श्रीया बन्नग्रसाई

प्तान्त्र च्या पण ∺ पण स्था परिवरण्य पेप् (र्याः)। रोगर्गमामा शक्तिकरून स

प्रवाश-विशेष (सम a, v) ।

वि ["भइक] १ प्रीय को मेक्नेनाता। १

वं भोर-भिरोप (द्याना १ १०) पदा १

६)। बञ्ज पुं["पर्ण] गुमीन नाम विशेष

(कप्पू)। सहित्य वि ["सहित] १ वक-

कुछ । २ तः अध्यानमान-विशेष क्ल-विशेष

रोठिम न ब्रिन्थिमी १ इल्बन से स्पी इर्द

(वर्षे २ पडि)।

(FI et) 1

AEA) I

क्रियाचन पर्वेत पर काएक महान् हाद वहाँ

धै बंदा निक्वती है (ठा२,३)। सोम

र् [\*सामस्] नेगानको का प्रवाह

रांगांकी की बिरो मीन जुनी (मुग २७०)

रांगा औ गिहा र स्त्राम-प्रविद्य नदी (क्व

हम २७ अस्प)।२ की-विहेच (कुमा)। १

बोह्यतन के मत से कल-गरिमाछ-विरोध

(स्व १६) । ४ वंश नथै भी भविद्वानिका

देशी (बावम)। र मीम्परितामह का माला

वानाम (स्रामा ११६) । इन्ड न [ इक्टब्ड]

द्विमाचन पर्यंत पर स्थित द्वार-विशेष बहा के पंपानिक वर्ती है (ठा ४)। "कुछ न िक्ट्रो दिशायन पर्नेत का एक शिकार (ठा २ ९) दीव पू ["द्वीप] द्वीप-विशेष चद्वां र्येच-वैशीका भवत है (ठा२ ३) । दिनी की दिनी पंता नी मन्द्रियोगका देनी देनी फिरोप (इक) । बच्च पूर्व विची स<del>ावर्त वि</del>धेव (कप्प)। सय न**ि**शक्तो कोश्यवक के सर्वर्से एक प्रशासका काल परिमास (मग ११)। सामार पू िसामार] प्रसिक सीचै निरोप नहीं सेवा समूद्र में मिनती है (पत १)। गैरोक्स पूरिगह्नेची १ एक का कुक कीम्स निवानह (खान्छ १ १६ केखी १ ४)। २ हेकिन सब का प्रवर्तक बाकार्य (बाक् १)। १ एक वैन भूति की मननातुपासके नाम के बंदा के मैं (सन १, ६२)। श्रीक् ) पूर्वि] पद्य इस नाम की एक रक्रिय र मेर्नेच्य नाहि (देर ४)। गॅक्रिय पुं[र] देवी । द्वानी (बीक प्र ४६२।१–६१ सर्वे) । गंजधक[गजा] र शिष्टकार करना। र क्लांबन करना । वे वर्षन करना । ४ परामन करनाः वैनद् (वय १)। क्र पंत्रशीद (foft %=): शंक्र पूर्वि] मल (वे२ ≈१)। र्गज़ दुगिओं चीरन-विकेष एक प्रकार की श्चाच मल्यू (पर्वाह २ १---पण १४०)। "साका को दिस्सी दुख बच्ची कीख इत्यन रहते का स्थल (मिन्द्र ११)।

गंबच न [गञ्जन] १ क्यमन, विस्कार (सुपा ४० )ः बरम्प्रेंत दवा न वेन केनरियो। न नेवर्स बीरपुरिहार्स (बना ४२)। गंबण वि [गञ्जन] वर्षनकर्ता (सिरि १४६)। र्गञ्च की [गक्क] मुख-पूद यय की दुकल इत माय हुआ विनातित (पिप)। ३ वीड़ित ( Y Y E) I भ्र<del>व्य-वित्त</del> पास्त (दे २, ८३) । धेम को इए हाँ का दि २, १ मनि)। र न ईंग्राने के लिए निमा बाता यंग-स्पर्ध इन्द्रणी इन्द्रच्यूट (देश १)। गैठधक [संयु] १ वळच धूवना। २ रचना, बनाना । चंडह (१ ४ १२ । पत् )। गैठ देवो गैज (सन्दर्भय २, ४) वर्ज २)। गॅठि की [गृष्टि] एकबार ब्लाबी हुई नी (प्रान्त 13)1

माना नगैरह (नरह २, ४। चन ८, ६६) । २ ग्रहम-विशेष (फ्ल्फ् १---पत्र १२)। रोठिय वि मिथिन है इंचा हुया करा हुया पिरोवा ह्या (कुमा)। राठिय वि [प्रश्चिक] बाँठवला (तूम ६ **x**) i राठिक पि [ प्रस्थिमत् ] बन्दिपुष, पौर-बाता (राज)। र्गद्ध पूं [दे] १ वन चैनतः। २ दादत्यारीकः कोतवास । १ घोटा मुन (६२, १६)। ४ नापित नाई (देश, दशः घाना २, १ २) । १ व. पुन्त, वधूहा कुनुसरावर्गमुक् इवियं (पहा)। रोड पून [राण्ड] १ नस्त करोल (शन' पुण s)। २ <del>रोप-विरो</del>व पर्डमल्बा 'वा वा करेड् बॉर्व वंडोनरिफोनियापुरनं (कर कर्र-द्याः साचा) । ३ हाची का कुम्मलक्त (पव २१)। ४ दुव, स्तव (वत द)। ३ व्य का भरना इच्च-त्रपृष्ट् (कप इ. ११६)। ५ क्रम्ब-विरोद (चिय)। ७ फ्रोड्स स्कोटक (बरा १)। बर्गाठ, इस्मि (धनि १७ धनि tay)। भेज मेलम र [भारक] भोर-विशेष पानेडमार (प्रवि १७) सर्वि १=४)। ग्राणिया और "ग्राणिका विल् का एक प्रकार की बाप (ग्रह)। "सान्य की िमा**वा** रोम-विशेष विश्वमें बीना पूर्ण माती है (त्रस्) विस्त विस्त्री क्पील-तव (तुर ४ १२ )। होद्वा की शिका क्योक-माती नाम वर बयाई हुई कस्तूपै पनैरह की चटा (तिर १ १४ क्वड) । "व**ण्डा** को ["बच्चसम्ब] योग स्टनों से बुध्व कारी-मानी भी (पत्तः )ः नाणियां 📫 ["पाणिका] बांध का पान-विशेष को बाला विकेद, पलेख्यार (दे २, ४६)। "संय दू थे अभैद्राक्षेता है (सन् 💌 )। बास 🖠 ["भेद] वन्ति का वैदन (वर्तर) । शेखरा िपार्ची नाम पा पारवं-बान (वस्ट)।

वेदिस्त्रवि स्ट्स्प्या, श्रीकानिकाद मध्य २ वर्षक कार्ग 'यंबलप्रक्रियो जम्मी' (वजा

(दे२ ८ १ दे)। गंजिल पूं [गाक्तिक] करप-शत राक्त वेचने नलाकनल (देर, बर टी)। र्गक्रिक्स विर्मिश्चनी १ परान्ति समिन्ता 'चन्यरिनयंत्रियो इन' (उन १०६ मी)। २ र्गीकिक वि क्रिकेट स्वीतन्त्रात, विद्युक्तः २ र्गकुष्टिय वि 👣 रोमान्थित, पुष्पित (बय र्गजोक्ष वि [वे] समादुव म्यादुव (पर्)। र्गबोद्धिश्र वि दि । रोमान्वित निस्के

र्षिठे दुंबी [मन्ति] १ पॉठ बोड़। २ बॉस मारिकी गिष्कु को (इ.१. ६१. ४.१२.)। के चक्कपे बांठ (फान्स १ १) स्रीप)।४ रोव-विदेव (सङ्घा ११)। र राव-क्षेप का मिनिक परिकास-विरोध (चप २६६); 'पॅटिचि पुरुनेयो क्रक्टक्लक्क्ट्रबर्ग्ड व्य । बीधस्य कामविश्वती करूपयहोत्तपरिकामा (Nt ttex) : **चिम ५ ["च्छेर]** नांड डोल्नेनावा चीए- ोडन [राण्ड] दोष नाम (सूम १ ६ १६) । माणिया की [मानिका] पात्र-विशेष (राय १४ ) "विश्वाम पु ["व्यक्ति पात निर्मातिक राज्य प्रसिद्ध एक मीम (संबीव XX) I गंडद्या की [गण्डकिका] नदी-विशेष (भ्राप्तम) । राज्य दू [गण्डक] १ गॅड्रा, जानवर-विरोध (पाध रे ७ १७)। २ अव्योपणा करने-वाला पुरुष टेर शवानेवाला पुरुष (मोब **444)** 1 ग्रीबाफी की दि] मीरिंग उस्ता का टुकड़ा (का 4 ( E) 1 र्मांश केलो गठि ≠पन्ति (प्राप्तः १८)। रोडारा पु [राण्डक] नाई, इजाम (माना **२ १** २ २)। राहि दे (गण्ड) बन्दु-निरोप (एच १) । शींक वि [गणिकन्] १ वर्षमाना का रोग-वाशा (मावा)। २ वर्ड धोपवामा (परह २ १)। र[क्रिया को [गणिकका] १ गेरेचे उन्तर का दुकका (महा) । २ सीनार क्य एक जपकराय (ठा ४ ४) । १ एक धर्व के मनिकारवासी भ्रत्य-पद्धति (सम १२६)। र्गावस रेको गीधक (१क) । राशिखानई देवो गॅभिसानई (इक) । गंडी भी [गण्डी] १ सीनार का एक काकरण (ठा४ ४—पत्र २७१) । २ कमल की भारतमा (एस १९)। विदुस न [विन्दुक] बन्न विशेष (वी वेष)। "पर्य पू ["पर्य] हानी वनेतह बतुष्पद वास्तर (ठा ४ ४)। वीरवय पून [ पुस्तक] पुस्तक-विशेष (हा Y 7) 1 गंडीरी की [वे] क्एंब्से कव का दुक्का (दे२ **=**२)। शंकीय न [राप्पदीय] १ धर्मुन ना बनुप (वेणी ११२)। गंदीय व [ये गाप्तीय] बनुष कार्युक (वे २ वर महापा। गंडीवि पु [गाण्डीविन्] महुन, मन्यम बाएडन (बेछी २५) ।

र्गंडुका न[राण्डु] धीसीता, विप्शाना (महा)। संबुद्ध न [सम्बुत्] दुण-विशेष (दे २. र्गबृख पू [गण्डोछ] इसि-विशेष जो के में वैदा होता है (भी १३)। गंबुबद्दाय न [गण्डोपघान] दाव कातकिया (पव द४)। र्गङ्कपद र् [गण्डूपद] बन्दु-विरोप (राज)। शंकुछ देवी गंकुछ (पर्ग् १ १--पत्र २३)। रोब्र्स दे [राण्डूप] पानी का कुल्ला (पा सुपा ४४६) 'बहुमस्यमंहसपारा (सर १व६ दो)। राज्यस पू शिणकृष प्रशी का कुस्ता (सूधनि शंत केवी गा। गैठक्व } येथी गम = गम्। गतिय न [गन्तृक] दृष्ठ-विरोप (पएस १---पत्र १३)≀ रांती 🕏 गिन्त्री । माग्री शबट (धम्म १२ द्ये गुपा २७७)। रौतुं देखो गम = नम्। र्ग्<u>र</u>प्रचागया श्री [गरवाप्रस्थागता] मिक्रा-चर्या-विशेष चैन पुनियों की मिला का एक प्रकार (द्या ६)। र्गतुकाम वि [गन्तुकाम] जाने की दल्का बला (भा १४) । गंतुमण वि [गन्तुमनस्] उपर वैश्रो (बसु) । र्गतुष्म } देशो राम = वन् । रातार्थ } र्शंध देखो रॉठ-- प्रन्य । र्गवह (पि ११६) । कर्म पंकीकॉर्स (नि १४व) । गंब पुं[भन्ध] १ ठाक, मूत्र पुस्तक (विधे ८१४: १३८६) । २ धन-माम्य परीरङ्ग साहा मिम्माल कोब, मान बादि बाम्यन्तर काबि परिवाह (छार १३ इन्हर् १३ विते २५७३)। ३ वन पैता (स २३६)। ४ स्वयन संबन्धी सोम (फ्छा२ ४) । श्रील प्रंितीती वैत सभू (तूम १६)।

र्गीय नि [धन्यम्] रचनानर्जा (सम्मच 146) 1 गीय देखो गीठि (परहार ६—पत्र ४४) । र्गाधम केवो गेठिम (छावा १ १६)। गॅदिसा भी [गन्दिसा]रेको गॅपिस (१क)। शॅबोणी क्ये वि बोबा-बिरोप जिसमें शंच बंद की बाती है, ग्रीब-मिबीनी (वे २ ८३)। गंदुअ रेको गेंदुअ (पर् ) : रोच दूं[राज्य] १ एवा नासिका से प्रह्रण करने योग्य पदावाँ की कास भहरू (धीप<sub>।</sub> मब है १ १७७)। २ सब सेश (से ६ क्)। के पूर्ण किरोप (पर्रह्व ११)। ४ धानम्बन्तर देवों की एक जाति (इक)। ४ म देव-विमान विशेष (निर १ ४)। ६ वि भन्यपुक्त पदार्थ (सूम १ ६)। उन्हीं की [<sup>\*</sup>कुटी] कनश्रम्यका वर (कडक है १ a)। कासाइया की [कापायिशा] सुप्रान्ध कपाय रंग की शाकी (उना भग ८, **३३)। शुण पुँ शिुण**ि सम्बन्ध **द्रा**ण (स्प)। दूर्यन [ीट्टक] क्ल-क्रम्य स्त पूर्ण (छ ३ १--पत्र ११७) बढ वि िक्य] सम्बद्धां मुगलबद्धां (पंचा २)। जास न ["नासम्] क्य का शुनुभूत कर्म विरोप (पणु)। तिञ्च म [तिक] पुनम्बत क्षेत्र (कम्पू) । इक्य प दिक्यों सुगन्कित बस्तु, सुवासित हव्य (क्य रू)। देवी भी दियी देनी-विरोध सीवर्ग देवलीक की एक देवी (तिर १ ४)। द्वाणि की [भाजि] क्ष्म दृप्ति (खाया १ र-पन रश, भीप)। नाम रेखी जाम (सम ६७)। सम् पू [ सूत्र ] कलारी मृत कस्तुरिया इरिन (नुपा २) । मीत वि [बन्] १ सुतन्त्रित सुक्त-भूटः । २ प्रतिश्व यन्त्रवाला विशेष पन्त्र से पूक (ठा ४, ६--पत्र ६६६) । मादण, मायल पूं ["भारत] १ पर्वत-त्रिकेत एत नाम का एक पहाड़ (सम १ के। परहा २ शंक्ष र.३—नक ६८)। २ दूप पर्यंत-विरोप नाएक रिकार (ठा२ ६ -- पत्र ८)। ६ त नवर-विशय (इक)। बङ् की [बेर्चर] भूगानस्य गामक नहोन्द्र का धापाक स्वान (श्रेव)। बहुय न विश्वर्तकी

सुद्धीचत क्षेप-प्रव्य (विमार ६)। विद्वि की विक्ति पन्य अध्य की बनाई हुई गोबी (स्राया १ १) चीत)। बह 🐒 ["बह] पदमः बासः (कुमाः वा १४२)। बास प्र ["बास] १ गुवनिवत वस्तु का पूट। २ **पू**र्ण भिरोप (गुपा १) । समिद्ध वि ["समृद्ध] १ सुबन्धित सुबन्ध पूर्णः २ न नवर-विशेष (भावम १६०)। साक्षि पं िशास्त्रि पुन-न्वित ब्रीडि, बान (धावम )। इतिम प्र दिस्तिम्]उत्तमइस्ती विसकी स्वते इसरे हाची का जाते हैं (सम १ परि)। हरिया प्र िहरिज कर्ज़रिया दिख (कप्पु)। हारग र्पे [कारक] १ इस नाम का एक स्थेला देश । २ कल्बहारक देश का निवासी (पर्यह १ १--पत्र १४)। र्माचल पू मिन्चरी एक पर्य-जाति (स्त २, ≈)। गैमपिसाय पू वि] पश्चिक पतारी (वे २, **=⊎)** | र्गाध्यम विकी गाँध (माहा) । गोपख्या और [वे] नावित्रम ऋष (वे २ ०५)। शंबदाइ प्रैशिस्थवाइ | पदन (क्यू १० ) । | गोबस्य प्रे गिन्सके | १ वेन-प्रयक्त स्वर्ध-गायक (क्त १ क्य) । १ एक प्रकार की केन नाति मंतर देशों की एक बादि (पराह १ ४ धीरा) । १ वस-विरोग मरलाल् कुलुतान का शासनाविद्यापर सम्र (चीतः )। ४ नू. सूर्य-विशेष (तम ११) । १ तृत्य-बृद्ध कीत्, राव (विपार २)। और न विकारी राज की एक कादि (राम)। **बर व**िशाही संग्रेत-मृद्ध संगीताबाद, संगीत का साम्बास स्वल (वं १)। प्यार, मगर न चिगर] क्लाक निषद, धीवना के समय में बाह्माना में रीवता मिथ्वा-नगर, भी मानी जलात का युवक है (स्तुप्त १६)। प्रद्रन [\*gर] वेको जनर (नक्ट)। किकि की विदेशि सिपि-विरोप (सम १६)। वदाइ व ["विनाह] अस्तव-राहित विनाह, की-पुका को सम्बाके पनुसारे विवाह (क्या)। साम्रा क्ये िराखा नन-राता संबेद-पूर् संबे कानद (वद १)।

राधक्य वि रिप्नवर्धी १ नंबर्व-संबन्धी संबर्व से संबन्ध राजनेत्राला (वं १३ घनि ११६)। २ वं अल्सन्तीत विवाद विवाह-विशेषा 'बंबब्बेस विवाहेश सम्बेच विवाहिया' (अवस्)।। न कीट ग्रन (पाय)। र्गवस्त्रि वि [सन्धवित् ] पानेवाला (वी १) । रोधक्किल हि [गान्यविक] १ पंतर्वनिधा में कुशन (सूपा १६६)। गंघा भी [गन्या] नवरै-विशेष (१४)। र्गमान न [गन्धान] कर-विरोध (निन)। गंबार पु [गम्बार] देत-विरोध कमार (स ३व) । २ पर्वत-विरोध (छ ३१) । ३ स. नपर-विशेष (स ६०)। गंबार १ विकास सिर्म स्टब्स्टिय समित विशेष (ठा ७)। र्गमारी 🕊 [गान्मारी] १ सकी-स्टिब इन्स्ड वासुकेव की एक की (पति धेत १६)। २ विद्यादेगी-विशेष (संदि ६) । ३ वनवार न्यीनाव की कासनदेनी (चंदि १ )। गंपारी की [गाम्बारी] विदान्तिकेव (सूच २ २ २७)। र्गमानद् 🦙 🖟 [राज्शापादिन्] सन्तरम् अविक गंबाबाइ रे एक इस, बेबाक पर्वत (इक ठा र ६—पत्र ६६. ठा४ २—पव २२३)। र्गाचि वि [गरिश्रम्] भवनुष्ठः श्रीवशका (क्य पर्द)। गमिश्र नि [दे] दुर्फन चारत गन्दनाता (दे र्गिभेश प्रशिक्ष 🛊 🕶 अस्य केवलेशाला पहाधी (दे २, ४०) । र्गविज नि [गरिनक] नेन-पुक्त 'पुनन्वनर क्षत्रनिवर्ष (पीर) । साक्षा की जिंगाका राक वरेरा: वन्त्रवाली भीत्र भीः बुकान (वन र्गिके वि [गन्दित] क्वयुक्त क्वयाता (स १७३) या १४१ मा २)। र्गाधिक पू [गन्धिक] वर्ष-विकेश विश्वय-क्षेत्र-विकेष (ठा १ १ इक)। र्गविद्यावर्षे की [गन्धिद्यावती] १ क्षेत्र निचेप विश्ववस्य विशेष (ठा २ १) इक)। २ नवरी-विरोध (इ. ६१)। कुछ न ["कुछ]

१ बन्बमादन पर्वत का एक तिकार (वं ४)। २ बैठाओ पर्वेट का स्थितर-विसेष (छ १)। राधिकी की दिवेद्याना बहि (कार ३१ दी) । रोच्चमा की [राज्याचमा] धरिय, गुय (दे २, 📢)। रविद्धीकी दि] १ धाना, धांहा २ मफ् मक्रिका(देर १)। र्गभोदर १ न [सन्बोदक] नुवन्तित बना श्रीबोद्य ) धुक्क शास्त्रि पानी (मीप विष् ₹ €) 1 शीचोद्धी भी दि] १ इच्छा, समिलाया । २ रजनी रहा (देश ११)। गंदिप रेको गम = गर । गोप्पन् । र्गमीर न [गाम्भीये] १ नम्बेखा। २ धनीयस्य (मूपनि १६) । गंभीर वि [गुम्भीर] १ वस्मीर, बस्ताव. सनुष्य, गहुरा (यीप है ६,४४) हम्म)। २ पून बहुत-स्थान बहुत प्रदेश वाही करि राज्य परिचय हो (विशेष १४ ४ इस् १)। १ द्वाराका एक सूक्त (क्यम १६, ६) । Y अपूर्वरा के राजा अभ्यतकृष्टि का एक पुर (श्रीत ३) । १ न समुद्र के लिन्द्ररे पर न्या इस नाम का एक नवर (तुर १६,६)। योग व "योदा" नगर-विदेश (ए।वा १ १७) : साक्षियी औ "सास्त्रियी अपः विचेद्-वर्षकी एक नवधी (ठा२ ६)। गेमीस की [ग्रन्मीस] १ वंगीस-बुक्या की (दव ६) । २ सावा-स्वन्द का एक जैर (विष) । १ सुद्र बांतु-विरोध क्युरिक्ट वीम मिटेन (नएहा १)। गंभीरिक न [गाम्भीर्य] पम्मीरता क्ष्मीरपन (**₹**₹,₹७)। गंभीरिम पूंची [गाम्मीय] इतर रेची (क्या)। शतक र शियन देशकात अध्वर (क्या व ३४४)। अद्यात ["सम्बन्त] देतत्व पर्नेत परका एक ननर(इंक)। बह्वास नक्स न ["बक्कम] वैताल्य पर्वत पर का पर नगर (सम इक्)।

गराणीय पुन [गरानाङ्ग] अन्य-विरोध (पिप)।

बामा वृहिती १ ऋषि-विशेष । २ मोत्र क्षितेय जो गीवम गोत्र की एक शाका है (#14) नामा पूँ निगी १ एक वेन महर्षि (उत्त २७

१)। २ विकासी वारहरी शतान्ती का एक बोही (कुन्न १४६) ।

शासा पूँ [गाम्बी] पर्ने वोष में अलब ऋषि-विशेष (उत्त २७)।

नासार वि शिक्षाव् १ गाव मानावनला, सन् करपः वका (प्राप्त)। २ मानंद या दुःब से ध्रम्पक्त कवन (हे १ २१६, दूमा)। नागरी की शिगरी विषये कोटा पड़ा (दे

२ दशः कुपा १३६)।

नामित्र देखी गागरा 'दक्तान्वर' केर्न (या व४३३ एक)। - सब्बद्ध सक िस् दिल्ला । २ भारता । १ प्राप्त करता । यच्छा (प्राप्त यव्)। मवि गण्डं (देवे १७१ मध्ये)। बह. गच्छत, गच्छमाण (बुर ३ ६६)

जग**१२ ६)। संदू, गव्यिद्ध**स्र (कूमा)। हेर गन्दित्तए (पि ५६८)। बारक पुत (शब्द) १ सपूर सामी, संवात (स १४०)। १ एक मानार्यंका परिवार (धीयः सं ४०)। १ प्रस्परिवारः 'प्रसारिवारो प्रच्यो तत्य वर्षताम् सिक्य विक्रता (पंचव बमें १)। बास पू [बास] पुर-पून में धाना अध्यासिनार के साथ निजास (बर्म

६) । विदार पू विदार मध्य की सामाचारी मण्डा था याचार (बच १)। सारणा की ["सारजा] क्या का रत्तक (राम)।

शब्दागरियं य बच्दनब्द हे होतर(यीप)। गरिष्ठह वि [ गरक्रवन् ] पण्यक्ता, पन्छ में राजीपाता (इह १)।

गत केयो गय ≔ सव ( पड्≀ प्राच १७१ रक)। सारपु [सार] एक वन पुनि, बराबक-प्रम्य ना कर्ती (ई ४७)। गाज र् [रे] वर या सक्त-किरोप (रे २ ८१ पाछ)। गजन [गय] धन्द पहित वास्य प्रवन्त (हा

राज्य सक [रार्ज ] गरमता गड़महाना चड़-भक्ता। गम्बद्ध (हि. ४ ६०)। बहुः गर्जन्त, गज्जपंत (पुर २, ७३) रक्स ४०)।

राज्यपान [राजीन] १ वर्षेत प्रयानक व्यक्ति, मेच मा सिद्ध का नार । २ नगर-विशेष (उप BEX) 1 गळाणसद्द पुंदि गर्थनशब्द] पग्नुधीर

हावी की मानाव (वे २ ८०)। गञ्चपन्छ ) वि [वे] देश-विशेष में सम्पद गळाळ 🕽 (यझ) (मापा २ ६,१ ४४७)। गळम १ [गर्जम] प्राथमोत्तर विकाका पत्रत (द्यानम)≀

गज्जर दे [के] कन्द-विशेष याबर, मकरा इमका क्राना वर्ग-दाक में निविद्य है। (भा १६ जो र)। गळाळ वि [गर्कक] यमेन करनेवाला (निक्

गञ्जह देवी गञ्जम (पारम) । गळित को गिर्मा गर्नन, हानी भनेयह की

बाबाब (कुमा मुपा वर, छए द ११७) । गर्ख्य अपि [गर्सित] १ विस्ते पर्वत किया हो बहु, स्तुनित (पाप) । २ व. पर्जन भेप वरैक की मोनाव (परह १ १)।

गळिलु । वि [ग्रॉबर्च] पर्वत करनेवाला

गिध्वर । भरमनेवाला (ठा ४ ४--पत्र २, ह. मा ११)। गतिक्राह्मित्र क्रि. १ प्रकृती प्रस्तुकाहर । २ धंय-स्पर्धं से होनेबाला रोमांच पुलक (पश्)।

राजमः वि [मादा] महरा-योग्य (स १४) विसे (७ ७)। गङ्ग्य वृगिष्ट्रनी भएउँड भी गाटक सेना का धविपति (धन)।

गहिया की [बें] गठिया पुरुषी 'धववहिवा' (Fry (x) 1 गड न [शड] १ दिल्ली ले रिना, मोटा पत्थर

(दे २११)। २ वर्त बाई (बूर १६ ४१)। शह (मा) देशो गय = वन (प्राप्त)। गडवड पूर दि ] गर्जन, अवानक ध्वति हाबी वर्षेत्र की मात्रक 'ता गहवई कुर्गुती

समानको नपपर सन्दर्भ प्राचनित्र स्व

सी बच्चो नश्यकं पहुर्व्यती (सुपा २०१ **483) 1** शहयह यह दि । गर्नेन करना अपानक मात्राम करना । मनुः गडमहेत (पुग (433 राज्यको की [वे] बज्र-निर्वेश भइएइ मानाव

मेव-व्यक्ति (दे२ ८४, स्एव)। राष्ट्रबद्ध न [टें] बहुबड्ड गोसमास (मुपा **1441)** 1

गढ़िञ गडुज } देवो गम = गम् ।

गङ्ग न चि । चावन वर्गरह का बोया-वन बाबत मादि का भोवत (वर्ग २)। गङ्ग पूंजी [गर्च] पह्या पह्या (हे २ ३२. प्राप्तः सुपा ११४)। भी राक्सा (हे १ 4X) 1 गङ्ग प्रिं शक्ट, गावी (दी १५)।

गङ्गरिमा ) 🗗 वि] वेडी मेपी ब्लाम गङ्गरिया 🕽 'बहुरिएनेबाह्रेश' धमालुकार्य वर्ण विमार्खनी (बस्म सूच १ ३ ४)। गङ्गरी की दिहें दे द्वागी मना नकरी (दे २ वक्ष)। २ मेडी मेवी (चट्टि ६८)। गब्रह पुंधी [गर्दम] एच्हा गवा बार (हे

२, १७)। बाइपा पु ["वाइन] राव्या दरालन (कुमा) । गङ्किला । की विधे नाही राष्ट्र (मीन ३०६ गर्हा देश है र दश हुता रथेर)। गब्द न वि शम्या विद्योगा (१२ व१)।

गढ वैकी घड ⇒ वट्। यह६ (हे ४ ११२) । गड पूंची वि] गड, पूर्व किया, कोट (वे २, ८१ भूपा २४, १ ४)। वर्षे शक्का (कुमा)। गढिझ वि [पटित] वहा हुमा बटित (कुसा) ।

गविज वि [प्रशित] १ वृषा वृषा निवह 'नेहनिमहमाहियार्ख (इस १.०६ दी) प्रश्न १ ४)।२ र्यंचत द्रम्बित निर्मित (छ।२ १)। ३ बृद मामक, (माना २, २ २) बर्ह १ २) ।

गण सक [गणयू] १ गितना निनदी करना। २ धारर करना । ६ सम्बास करना आवृद्धि करना । ४ पर्यानीयन करता । प्रशुद्ध मन्द्रेड (भूमा महा)। यक्त राजीत राजेंन (वेदा wift x (x) : E nydet (21 111)

२८६	पाइभसइमङ्ख्या	गण—गइस्ति
गल र् [गम] १ स्तुह, स्पुराम, हुन बीक	गणभाइमा भी वि गण-नायिमा पार्वती	गणेतिया} भी वि] १ काल स स्व
(वी १४० कुमा प्रासू ४ ७६, १६१)। २	चदरी मिलपली (देर ≤०)।	गमेची } हमा हार्य का भाइतल किले
नम्ब, समान ग्रामार न्यनहारकाले साहुगी	रायम वेद्यो गुज्य (मीन सुता २ ३)।	(शाला १ १६—पत्र २१३) भीता क्य
कासभूइ (कम्म)।३ सम्द∵न्दाइत प्रसिद्ध	गणसम नि [दे] नोडी-पठ नोठ में नीन (दे	म्मा)। १ मन्भाना (१ १, ८१)।
मात्रा-सनुद्(सिंग) । ४ रिजका सनुवर	२, <b>⊏७</b> )।	गणेसर पूर्णियर] १ वत काकलः।
(पादाः कुमा) । ३ मत्त्वीं का तमुद्धान (दालु) ।	गणामुसद्द [ब्रे] विवाह-वर्णक (दे २, ४६)।	२ सन्द-विशेष (पिप) ।
को म [तस्] धभेक्यः बहुग्रः (सूध	गणाविक्ष वि [गणित] विनदी करमा हुमा	गण्य वि [गण्य] वदानीव, संसीय (वंदोव
र ६) । नायग 🐒 ["नायक] वस्त्रका	(च ६२१)।	t)ı
मुचिया(रामा ११)। नाइ (["नाम]	गणि वि[गणिव] १ क्याकास्वामी कछ	गण्या (मा) की [गणना] सिनडी (बक्र
रे गराका स्वामी करत का पुरिवास (धूपा	क्स भूकिया। की, गजिएमी (सुपा६ २)।	१ २) ।
२ १)।२ यख्वर, विलयेवका प्रवान	२ पु भाषामें पण्यनायक साधु-समुदान का	गचन [गात्र] थेइ, करीर (बीतः नामः दुर
रिप्य (पत्रम १२ १) । ३ द्याचार्यं सूरि	नावक (ठा म)। ३ किन्द्रैय का प्रवान आर्थु-	२ १ १)।
(सार्व २६) । भाव दूं ["माव] विनेष-	रिष्प (प्रमाद ११)। प्रपरिच्योत	गच देवो गङ्ख (बन १६)। बी गचा (दुरा
विशेष (तसक) । सम वृ [ सक्त] १	निरमम सिकान्त (सीर)। पिकाम	₹१४)।
भामन्तरामा (मग ७ €)। २ देनांपदि	[*पिटक] १ वाप्ट मुक्स केन सायम प्रत्य	गचन [दे] १ ईसा, बीमाई सा वास्पाई से
(भाव ३) वप्प)। बद्दु[पति] १ एछ	्रमसण्डी (सम ११६)। २ नियुक्ति	सक्ती-विशेष। १ एक क्वीम (१ १ ११) १
कास्तामी। २ अधित समानन शिक्यूक	भवैषा से दुश्व भैन सालम (सीप)। ३ प	्षेति चलः, सनाङ्गुषा (पत्रः)।
(गा३७२ वज्रः)। ३ जिनकेन का मुक्य सिध्य	कर-विरोध वित-शासन का प्रविद्यासक केंग	गचन वि [कर्मम] काटनेशबा, बेरक (दूर
क्छवर (स्टिव र)। सामियु[स्थामिम्]	(र्वात ४) ३ ४ तिरचम-रमूह, ब्रिडम्स्-बगुह	₹ ₹%, ₹¥) I
मशुकामुक्तिया क्छावर (छप २ टी)।	(संवि)। विकाश्यै विद्याीरसङ्	गर्चाकः ) की [के] १ नवाक्यी नोवस्थूनि गर्चाकी (वे २, वर) : २ नारिका करे
हर 🖫 ["घर] १ जिनकेन का प्रवास दिख्य	निरोप । २ ज्योतिय और क्रिमित राज्य का	गचाडी ∫ (दे२, दे१) । २ नापिका धने
(सम ११६) । २ अनुसम जलावितुरा-समूह	बान (स्टि)।	पानी की (शब् वे २, =२)।
को बारछ करनेवाता बैत साधु, प्राचार्य	गणि पुंक्ष [गणि] सम्मनव, गरिक्केट, प्रकरस्स	गत्व वि [प्रस्त] क्वबित, प्रतः विना 🕬
वनैरकः धेर्णसर्व वरहरू (प्रावस प्रव	(खिर १४३)।	'महम <b>इन्ड</b> नोमनच्या (? त्या)' (परह के
२७६)। इरिद् पु ["घरम्द्र] फलवरी में	गणिस न [गणिस] पिनती से देवी वाली	र—पन् ४४: नाट—कैत १४३)।
भेड प्रवास सरुवर (पक्कम ३ ४३ ३८	क्ल्यु, संक्ला पर जिसका भाव हो वह (का	गत् सक [गर्] शोतना सहना। शक्र-गर्सट
१)। दारि १ [भारिन्] केवो दर (कर	रेण काचार <b>व</b> )।	(ন্যত—শীর ধাহ)।
रशः तथ १)। स्त्रीचप्र विशोधी बना	गणिस व [ग्रविस] १ वराना विनती संस्था।	गदि वेची गइ = वित (रेवेन्द्र १११)।
के नाम से निर्वाह करनेवाचा (ठा ६, १)।	९ मि. संबोग किसमी विकरी की बा सके	गदुम् (री) स [स्त्वा] थलर (ब्रक्ट न) ।
विष्प्रदेश विष्णेदय विष्णेयव है	<b>यह (मणु ११४)</b> ।	गइ्चीगज्ञ⊐ व्यय (शक्ता२१)।
Promised to a mark and a	_ ` ` * '	गहरोस र मिर्फरोग   क्रेस्टीलड के की

ाषण्डसम् [ीवच्छेन्**क] शङ्कपत्र के कार्य की कि**ता न एनेनाला बाबु (बावा २,११ ६ कप्प)। दिवद् र्थु["विषयित] १ फिल दुन पनातन, नवीव (च ४ ६) नहम)। २ विनदेव का ब्रवान-रिध्य (पत्रम २६,४) । गणना पुं[रामक] १ व्योधिकी, बोली क्योतिय-रहक का बानकार, दैकक (स्टाका १ १)। २ मंदारी कारवाचरिक (कामा १ र—पत्र ११) । राणण न [राजस] किसी चंक्सन (वन १)। राजणा की [राजना] फिरडी बंक्य, बंब्यल

(दुर २, १९२० प्राप्तु १ : बूस २ २)।

गणिव दि[गणित] १ भिनाह्मसा। २ त. फिली इंक्स (হাণ্ড वं२)। ३ वैत बाहुमी का एक हुना (कम) । ४ श्रेक बाँखर क्षीतव-कारन (वृक्षि; प्रापु) । दिवसि की [ किपि ] विकिशिये सेक विकि (सन Īt) i गणिव 🖠 [गणिक] व्यक्त-राख का बाता, 'बरिवर्ष बाबाद भविष्या' (प्रशु) । गणियाकी [गणिका] केल्य व्यक्तिका (वा

१२ विपार २)। गणिर नि [गणियत्] निन्दी करनेवामा (वा ₹ 4) ।

गरकोम पू [गर्कोय] साम्यान्तक को भी एक वाधि (सम वधः स्त्रमा १ द)ः गर्कस पूँ [के] बहु-ब्लॉन कर्स-बहु बाराव (देश बस पाका च १११। ४२)। गइस वेबो गइइ - नर्दंघ (याक) । गइसय केवी गहहूम (प्राचा २६% भावम्)। गरमास हुं [गर्नेभास] समापन्यवित ۴ परिवासक (सन्) ।

गरयास्त्रि र् [गर्रमास्त्रि] एक केन पुनि (छै

गर्मित र् [गर्नेभिष्ठ] क्रायम्ति सर्ह

यना (निष् १ । पि २६१। ४ )।

₹१) ।

गरभी की [गर्नभी] १ वर्षी मधी (पि १६१) । १ विवानिधीय (काल) ।

शहर है [प्रदेश] र कदा सवा बार (सम १ ; दे २, ८०) पाधा है १ ९७)। २ इस नाम का एक मॅनियुव (बृह १)।

सारह न [वे] दुनुष चन्द्र-विकासी कमत (वे २ ८९)।

गहरूब दू [गर्दमक] १ सुप्र वन्तु विशेष वो । नोगाना वनेष्य में स्टब्स्त होता है (वी । १७) । २ देवो गहरू (त्रष्ट) ।

राष्ट्री देवो राष्ट्रयी (तार-मुख्य १० तिष् १)। राष्ट्रिक वि चि]गतित वर्तसूख (१२ ०१)। राह्य पु श्रिमी पतिनविधेत, स्वेष निक

(पीप)।
तक्त वि [ताय्य] १ यात्रवीय सार्वाप्तरः
विस्तानपाणी वर्षेती कास न होत समी
पुरानां 'शब्दी प्रणीह कों '(वर्ष)। २ स.
स्यानां किसी 'पुजस्य कुराव कर्षे (पुण।
१९ १)

ग्रहम पू (ग्रम्) र पुनित फेट, जरर (श ४, १) । २ जराति-स्वातः, कम-स्वातः (ठा २ १)। १ अ.ज यन्तजन्त (क्य)। ४ सम्बद्धान्तरः भीतरं का (खासारं प)। रास की किसी वर्जवान करनेवाली क्षिता-क्रिकेष (मूध २ २) । घर म ["गृह्] भीतर वा वर वर का चौतरी माम (सामा १ ६)। अस्ति ["का] सर्मे में ब्रह्मण होनेवाला प्राची मनुष्य वर्ष वर्षेष्ठ (पञ्य १ २ १७)। त्य थि (रियो १ वर्गमें श्रहनेवाला। २ समें से बरान्त हीनेवाला मनुष्य वदेश (हा २, २)। मास वू भिश्लास] कार्तिक थे तेकर मान तक का महीना (वन ७) । य देखो आ (बी २३) । "बहै की ["बता] बॉक्सी की (मुना २७६)। "बक्करेति की ["ब्युलहारित] १ पर्धारूप मॅ जलति (ठा२ ६)। यसकेशिय वि िबयुरुद्धान्तिकी समीशन में जिसकी प्रति होती है वह (सब २, २१) । इर देखो घर (नूर ६ २१: नूपा १४२)। गब्भर न गिक्सर र कोटर, ब्रहाः २ गहन,

विषय स्थान (मान ८० वि ६६२)।

गरमर देशो गहर, 'कमरो' (पाष्ट २४ चंचि १६) ।

शंबसाहाज न [गर्माघान] चंत्कार-विरोध (राव १४६)।

गहिमान्त्र पृं [वे गर्मत्र] बहान का निम्न वेली का नीटर 'कुष्मित्रारकनवारणीयन (१ क्य) संजन्नत्वावास्त्रियणं (सान्य १

() कर) सम्बात्साराज्यायां (साम्य १ ६--पत्र १६६: एक)। गविभावः } वि [गर्मितः] १ विसको नर्मे गविभावः } पैसा हुमा हो बहु गर्मेनुष्ठः (ह

ाक्तम ) पदा हुमा हा बहु गर्मभुष्ठ (हू १ १ व प्राप्त ग्राचा १ ७) १ र प्रक स्ट्रित विक्रियदमीननितित्तम्मस्यमें (कुमा पद्)।

गब्सिक्स देशो गब्सिक्त (ग्रामा १ १७— यत्र २९॥)।

नाम कह [गम्] र काला की करना.
वसना। र काला, समस्ता। र प्राप्त
करना। र काला, समस्ता। र प्राप्त
करना। कुण सीची (हुमा)। कर्म
सम्मार (सिंप )। सेन्द, रोई। सन्दुः
सम्मारण (स रेप )। सेन्द, रोई। सन्दुः
सीचा नस्तु, गितुन्त, गितुन्त (सी)
(हिंप २७२। सिंप्त, गादिस, गादुन्त (सी)
(हेप २७२। सिंप्त, गादिस, गादुन्त (सी)
(हेप १७२)। सेन्द्रा गादिस्त सीच्या
कर्मारण सामित्र । सामित्र सामित्र ।
इ. संद्रवंद गामित्र सामित्र । सम्मीत्र (साम्

गम कह [गमय] १ के बाता । १ करतीत करना पवार करना प्रवारना । वनीत (सक): "कूस । प्रता चा रियदे गमेड्" (कर ५) । कर्ष, बोरुवीत (गवड़) । बहु, मर्माद (बुग २ ९)। तह गमिन्डक (नि) हेड गमित्रक (नि २००):

गाम वृं [ग्रम] १ गमन सति शाल (कर २२ को। २ मनेत (कम १ २८)। ३ धालन को पुस्ते गाठ एक त्यस् का पाठ विनाब तार्गर्स फिग हो (३१ १) निके प्रश्ते का)। ४ स्वास्त्र्य दौरा (हिने ६१३)। २ सीन बोग, तारक (च्यु खीरे)। ९ मार्ग्स प्रांत (छ०)।

गम द्वै[नम] १ प्रकार (वक्ष १) । २ वि. व्ययम (महानि ४)। रामाग हि [गमक] बोबक निरवासक (निशे ११३) !

रामाण न [रामान] पमक गाँउ (भग प्राप्तु १६२)। २ केदन जीत (शॉके)। ३ स्था क्यान, शेन्द्र। ४ पुष्प वनैष्द्र नर नक्षत्र (राज)।

(प्रमा)
गामपा । की [गामन] नगन, निर्म के कोर्यट-गामपा । पन्यपार (ठा ४ दे) पामर्वकर प्रमुख्य प्रमुख्य (छावा ११—पन २१। गामपित्ज देवी गम = नग् ।

गमिषिया की [गमिनिका] १ विश्वितः व्यासमान विष्-क्षांन (राज)। २ तुनारमाः, स्रतिकमस्य कल्लपमिष्यस एक जनामी (उप ७२० टी)।

गमाणी को [गमाना] १ विधानिकोर जिवके प्रभाव के भारतक में यमन किया का सकता है (काया १ १६—यन २१३)। २ खुतार विकोरित क्यों वर्त दिशक्ति को बतास

यमलीमो चएलाहियो' (बुता ६१ )। गमकीम केवी गम कवन । गमय देवी गमग (विते २१७१)।

रामार वि [ वे मान्य ] सविश्व मूर्व (पीत ४७)। समाम विको सम्बन्धाः

गमाव वैको गम = गमव्। यमावद (सछ)। गमिज वि [गमिक] अक्सरवाना (वव १)।

नामकाक (नामका) प्रकारशामा (नगरे)। गमित्र वि [के] १ अपूर्णः २ इतः । ३ -स्वतित्र (पर्)।

गमिय पि [गमित] १ प्रकार हुमा घतिसंत (एउड) । २ तापित बोबित निवेदित (पिते ४४६) ।

गतिव न [गिमिक] शास्त्र विषय बारा पाठवासा शास "संन-गरिवार गरियं सीर सामें च कारास्त्र वेस्स्य (विशे १४१) १

गमिर वि [गन्द] बलेबाबा (हे ६ १४६) । गमिर वि [गन्द] बलेबाबा (हे ६ १४६) ।

गमेप्पियु है बेडो गम = नव् । गमेप्पियु है वेडो गम = नव् । गमेर देखा गमार (सींत ४७) ।

गमेस देवो गरेस । वयेतर (ह ४ १८६) । वयेति (कुमा) ।

साम्म वि [राज्य] १ जानने साम्य । २ और जाना वा सके (अरर १७ मुरा ४२९) । १ इंग्ले मान्य साकरहांग (नुर १२६,

पन्त्र-गरिव

१४, १४४)। ४ वाने मोग्य। ४ मीवनै बोरय-स्वरुती वयैष्ट (म्र. १२ १२)। सन्स व सिन्धी कार 'चवन्त्रवर्म सुविखेतु वर्ल (सूच ४ १३)।

राम्ममाण चेत्रो राम = गम् । गय वि दि ] १ वृश्चित अभित दुमामा वया निर्वीप (वे २, ६६)।

(देश ११ एड): २ मृत मराहुमा गय नि गितुर नदा हुमा (मूपा ६६४)। २ वर्तिकस्त दुवस क्या (दे १ १६) । ३ विद्वात वाना इत्या (मठड) । ४ व्यु. इत (द्रा ७२६ दी) । १ प्रात्क 'वावस्थिति मुद्रप्'(प्रतृद्रकः १७)। ६ लिला यह इपट 'मखगर्ब' (उत्त १) । ७ प्रविष्ट, क्सिने प्रवत्त निया हो (क्ष ४१) । व प्रहृत (सूच १११)। १ व्यवस्थित (ग्रीप)। १ न र्वात, गमन 'उसमी न"दमयमसमूनविदगक-विकासे समावे (बन्, सूपा ३७८ माचा)। पाणाचि (शाम] मृत मस इवा(या २७)। राय नि [राग] एन-पितः, नीत-धन, निर्मेद्ध (इन ७२ दी)। बद्दवा वई की वितिकारियाना स्वा (बीस) परुम २६ ४२)। २ जिल्लामा पति निष्टेत नया द्वी बहुकी प्रोतित मतुना (ना ११२ पउन २६, ६२)। वय वि [ वयस् ]

का भार (पाय) । एक्का अ है िसुर-तिकी संव परम्पण का सनुसामी संव मजानु (उदर ४६) । गय पूर्विका देशको दूजर (मल बीराप्रान् ११४ मुग ३३४)। २ एक चंद्रपुद् केन बुनि, यत गुरुमाना बुनि (बंद ३)। ३ इत नाम ना एक छेठ (कर ७६**०** दी) । १ एवए का एक तुम्द्र (परम ११, २) । इर व पुर निवर-विशेष दुव देश नाप्रधान ननद, इस्तिनापुर (बर १ १४० बदा हत्।। इत्या इन्त दू कियो १ द्वीर-स्थित । २ उनमें प्लेशना (कीन ६ संपर्)। क्यम द्विष्यम द्विष्यम द्विष्यम वधा (स्व)। सव दि "गत] हाची के असर बान्द्र (बीर)। सापव पू विमयदी क्रिक (बार्क)। स्थ वि रिस्र] हानी के बत्तर स्थित (पान च ६)। <sup>8</sup>पुर<sup>ी</sup>

विन्यकी हानी नो पकरनेवाली वार्षि (मुपा ६४२)। मारिणी औ ["मारिणी] बनरुगति-विशेष प्रश्ना विशेष (परास १--पन १९) । सद्द र सिला १ क्लेट क्एपटि रिक-पूत्र (पत्र्य) । २ क्ल-फ्रिकेट (मए ११)। "सम इं सिया प्रमान हाती में हु इस्ती (पुना १=१) । बद्ध पूँ पिति । गर्मा में ह इस्ती (छामा १ १६ वृग २०१)। बर पं बरी प्रवास हाती। बरारि प्र [बसरि] शिक्क तनुस बनसम्ब (परम to ve)। वह की विभू हिनकी इरिक्नी (पाय) । बीडी औ विशेषी रूड वपैरह मझाबड़ो का चार-क्षेत्र-विदेश (हा ६) । समय प्रशिवसन् । हाबी की सुँक (धीत)। सङ्गास प् "सङ्गास" एक प्रक्रिय केन मुनि, ज्यों एक में नुष्टि-यह केन चार्-विशेष (बंत पवि)। हिंद शिरी खिह, पञ्चानन (प्रवि)। स्तेह पू िरोहा र्द्धस्त्रक महावत (पाप) । गय प्राम्ही सेम विमास (मोरा सुपा 18c) 1

विज्ञासार देव (गीप)। गर्यद् पुगिकम्त्री भेहद्वाची (दब्ब)। गबक्ठ पु गिजकण्ठी एक विशेष (एव ६७)। गयकरन पू [गजकर्ण] चनार्थ केत-विरोप (वद २७४)। गयग्गपथ व [गजामपद] स्टब्लेंद्रह का एक दीर्व (मानानि ३३२)। गवण न [गमन] द क्सर (सिर ११६)। मणि पुँ मिणि] सूर्व (दूप ११)। सवण न शियानी भगन, बालाश, बान्यर (है २ १६४ वतक)। सङ्घृतियि एक

गर्यकृष् [ग्रजाष्ट्र] देनों को एक वाति

धरपुमार (रस)। धर वि विद्या प्राकार में वसनेपादा करी विद्यावर वनैस्दू (नुपा २३)। संदस्त प्राप्त सम्बद्धी एक राजा (रंग) । गवगरइ र् [ दे ] मेच बेह, बारन (र ) i गवर्षितु 🖠 [गमनम्दु] विचावर क्य 🕏 एक

स्वानानान (स्वय १, ४१)

• tt):

गरहणा १७ श बीच परह ६ १)। गरहा की [गर्हा] किया पूछा (क्य)। गर्राह्म वि [गर्तित] विक्त प्रस्ति (ह ६६ ह ६६३ स्छ)। (मुना १ । १२०० प्रामु १६४) । गरिम पुंची [गरिमन्] इच्छा पुष्टा गीरर

(देर ३६८ नुपारकार ६) ।

गयमुद्ध पू [गजमुख] वदार्व दे<del>त रिटेप</del> (पद २७४)। गयसाउक्क ) वि दि विरुद्ध, वैरानी (रे गवसाबस्य ( रूप पर )।

गयाची शिद्धी नोहें का या प्रकार क सक्र-विशेष सीते ना संबंदर वा साठी (एन)। इर दं विंघरी शमकेका (बत्त ११)। गया की गिता पुरु देव-विनान (सेन्द 1(113 गया को शिया लिनाम-प्रसिद्ध वदर-निरोध (दप २११)। गर वि [\*इर] करनेवाला कर्या (एस)। गर पूँ गिर् है विच-विशेष एक क्लार है।

बहर (निष् १)। २ क्योतिय-ताक प्रक्रिय बबादि करलों में से एक (विसे ११४०)। गरण देशो करण (रमश ११)। गरक न [गरका] १ विथ, बहर (पाप मंत्र १८)। २ सहस्या १ विश्रम्बक, क्रस्त् भ-तरबाद् ध-मम्मखाद् (धीप)। गरिक्यान्य वि [गरिक्यान्य] निवित्र

रुपमस्त (निष् १)। गरह सक [गर्ह] निक्स करना क्रहा करता । पर्याद्य करन्तु (सब) । बहुः गर्यात (इ.१x): क्वक गर्धक्रियमाण (स्प्रेच १ व)। इंड गरहिता(ध्यव ६ ११)। हेक गरहित्तप (रस कार t)। **४**-नरहाँपञ्च गराहणीय, नरहिषम्ब (गुना १वक्त १७६ प्रमुख्य १)। गण्डल न [स्क्रूंज] किना पूजा (१८१९)। गरहजबा | भी [गर्मजा] तन्त्र क्ला (का

गरिम वि [कृत] विश्व हुमा, विभिन्न (वे गरिद्व रि [गरिष्ठ] श्रीत द्वद, बड़ा वार्षे गरिष्क् देखो गरह । वरिष्ठ्व, परिकृति (मञ्जा पक्रि)। गरिह र्षु [गार्दे] निम्दा मर्हा (प्राप्त) । गरिक्षणया देखो गराक्षणया (सत्त २६ १)। गरिहा भी [गहां] निन्धा, प्रत्या पुप्रना (ब्रोन ७११) स १६ )। गरु देवो गुरु 'गरमरपत्ताए बिविज्रण' (सुपा २१४) । गरूम वि [गुरुक] प्रव. वदा महान् हि रै ्र १, प्राप्त प्रासू ११)। शस्त्र एक [ गुरुधस्यू ] पुरु करना बढ़ा बनाना । बदग्र (पि १२३)

श्वासास सर्पेड् सिरी सारिनेह बाह् सराल हरिक्रि। ब्रह्माएए विश्व एए

बप्पार्ण एवर वन्पंति (क्षेत्र २११)। गरुमा ) यह [गुरुम्प्रस्य] १ वहा गरुमाल ) बनना । बहे की उपह मावरण

करता । पदमाद, गरमायह (हे १ ११४) । गरुइस वि [गुरुइत] बढ़ा किया हुया (वे ्र ३ घठ⊀)। ्रकी [गुर्वा] की **क्**रेश मर्दी गरुगी रे(१११ ७ प्राप्त निष् १)। शहस देवी गरुअ 'जनजेन्यण'यपस्मित्या धियाख्युवस्तरेष् (प्राप)।

गरुड देवो गरुस (बंदि १ स १९६) नियो। क्क्य-विशेष (रित) । त्यं न [क्कि] सक-विरोप सरगास का प्रतिपत्ती सस (पतन १२, १६ ७१ ६६)। द्वय पुष्पिकी विच्छ बानुरेव (परम ६१ १७)। बृह् दू [क्यूब् ] सेना की एक प्रकार को रचना (महापि २४)।

शरुबंक पू [गरुबाइ] १ विष्यु वासुरेव । २ इस्ताङ्क वंश के एक धवा का नाम (पडम 1 \*) I गर्छ 🕻 [गर्ड] एक देन निमान (देनेन्द्र 28x) 1 गरुख पू [गरुब] १ पति-चन पवि-विरोप (पराह्व १ १)। २ मस-किरोप सक्तान् शान्तिनाव का शानन-यस (वृद्धि व)। ३ मदन्दित देवीं की एक बार्ति सुपर्रोहुकार

10

देव (परह १ ४)। ४ मुपर्गंडुमार देवीं का इन्द्र (सूघ १ ६) । किंद दूं किंसु देशो बम्हय (राष) । बम्हय, द्वय पूं [प्यक्ष] १ यरङ्ग्यकी के विजवासी व्यवा (राय)। २ वासुरेन कृत्या । १ देव-जाति-विशेष सुक्लों कुमार देव (द्वावम' समः पि)। "स्वृद् देशा गरुष-पृद् (वं २) सत्य न [शास्त्र] पदहाक, एक विरोध (महा)। सिण न िसन] बाबन-विशेष (चय)। ौसवाय म शिवपात शास-विशेष निसको माव करने से गत्कदेव प्रत्यक्ष होते 🍹 (ठा १)। रेको गरुव । शस्त्री देखो शस्त्र (हुमा) । व्यवस होना समाप्त होना। १ फरना टप

गळ सक [ग्रह्म] १ मध जाना सङ्गाः २ कता, विस्ता। ४ निवसमा नरम होता। % सक मिराना टपकाता: 'जान रत्ती गमह' (महा)। वह निवेश स्त्र-सौर्योह ग्रह्मीतम् मनुदरसं (महापुर ४ ६० मुपा२ ४)। गस्ति (पण्ड् १ ३ प्रातु ७२)। प्रयोक्त क्ट्र-गब्धवेमाज (ए।वा १ १२)। , प्रशिक्षी १ लता, भीवा ४ व्ह गस्त्रभ 🕽 (सूपा १६ पास)। २ वस्त्रिय, बेरी मद्यनी पनवृत्ते का काँटा (उप १०६) विपा १३ च सुर = १४)। गैतित की [गैर्जि] पके की मर्जना (महा)। "गर्छिय न "गर्जिती क्ल-वर्जन (महा)। स्थय वि िधाव | सबे में चगामा हुमा नग्ठ-मास्त (धीप)। गळड् की [गसकी] बनस्पति-विशेष (राज)।

गख्य देशो गसञ (पर्या १ १) । गण्डल वेतो लिए। कालाइ (१४४ १४६)

गळरबण न [श्रेपज] १ बेपल करना, ऍकना।

२ भेष्ण (से ४, ४३ दुना २८) । गरस्पद्धिञ्ज वि [दे] १ तिव चैंका हुमा । २ प्रेरित (दे २, ०७)।

गरस्पद्ध पुं [वे] पनहस्त हाप वे पना वक-इना (लाया १ टः पद्य १ ३--पत्र १३)। गस्त्वविभ [व] देवो गस्त्वविभ (व ६, 435 = 48)1

गस्तवा भी [दे] प्रेरणम 'गहमार्ग विव प्रवर्णीम घावया

न उस्प हुदि सहुयत्सः। गहरक्रोनम्बत्या, वसिवृदार्खं न दाराएँ (इप ७२८ टी) । गद्धत्यिञ वि [चिप्त] १ प्रेरित (पुपा ६६१)। २ कॅझ हुमा (दे२ ४७ हुमा)।

**३ बाह्**र निकासा **हुया** (पाम)। गद्भवस्य पृथि मेरित दिस (पर)। गद्धहरियञ्ज वि [गस्प्रहस्तितः] मता पम्पकर बाइर निकासा हुधा (बळा १३८)। गस्राय देशो गिस्मण (नाट-पेट १४)।

गुक्ति देखो गुक्त = गतः 'मञ्जूष्य मति गिसित्ता' (बस्यू १ ६)। गन्जि ) विगिष्ठि, की दुर्मिनीत दुर्दम गक्तिम ) (माँ १२) गुपा २७६)। गहर पुंगिर्देसी प्रतिगीत पच्छा (प्रतु२७)। बद्दा पु ["बसीवर्दे] दुविनीत बेस (नप्पू)। ास्स पू ["रव] दुर्रव पोड़ा (वत्त १) । गस्किल वि [गस्कित] १ तका हुमा विका हुधा (कम्म) । २ शासित प्रखासित (कुमा) । ३ स्वतित पतित (से १ २) । ४ मट, नात-प्राप्त (सुपा२४३ सरह)।

२ द१)। गर्कित देखी गढ = पत् । गस्चित्र वि [गळीय, गस्य] नवे का (विक 1 (YF4 गस्किर वि [गस्कित्] निरस्तर पित्रनता टप कताः 'बहुसोग्लसिरतक्लेण (था १४)।

गब्दिश कि [के] स्मृत, बाव किया हुमा (के

गलुड देवो गरुड ( चन्द्र १) पर् )। गले हैं १ की [गुक्की] बली विधेष गाओया 🕽 निनीय प्रस्ते (हे १ १९४) की

गळ प्र[गळ] १ काल कपोल (३ ९, ≼१ चरा)। २ हामी *रा कर्ड-*रक्त नुस्लस्क (बर्)। ममृरिया की [ममृरिका] भान का ज्यवान (बीत)।

गद्धक पूर्त [रे] र स्कटिक मरिए (प्राप्त वि 484) I

गहरथ देवो गस्तव । यहरूद ( वर् )।

REC	पाइभसदमहण्यवो	गक्षण्योवगब्
वाहात्माह वृष्ट्रि वसत्त्र नाथ-विशेष (६ २, ६)। वाह्यपुरा तृष्ट्रि नांग बाते हुए कृषित रोर की यर्नेता (यात ६)। वाह्यपुरा तृष्ट्रि नाय-विशेष (तृष्ट्रह)। वाह्यपुरा [सो] पहु जातवर (तृष्ट्रह)। वाह्यपुरा हुन्साही है बताब नातावन करोना (योग पर्यह्र ४)। २ वसाब के	गावेस छक [गावेषय्] प्रीपणा करणा बीजगा तकाग्र करणा गावेस्य (गहा वर्)। कुम वर्षेत्रेष्ट्या (याचा)। वह गावेस्य गावेस्यतं गावेससाल (चारत दुवा ४१) दुर १२ ए छाता १४)। हेक गावे सिचय (क्या)। गावेससङ्घ वि [गावेपयिष्] बोत करनेवाला क्षेत्रक (ठ४)।	सस्या व [सस्य] कास्य विकास (व ११७)। सस्या वि [सस्य] प्रतिक विकरित (दुरा; सुर १, १ : पुरा ४०१)। सङ्ग् कह [सर्य] वृष्टमा, काला। चहेते (सूपति १४)। सङ्ग् कह [सर्य] १ वहल करना वेषा। २ वालाना। चहेर (वाल)। कह सहैत (वा
साइति ना रात्त विदेश (बीच है)। जाल न जितने ? एत-विदेश ना हेर (बीच है एस)। २ जानीवामा वातायन (बीध)। गवन्य युं दिं। सान्यस्यत्त करूमा (एस)। गविद्युत्त निहीं सान्यस्थित करा हुमा (एस बीच है)।	गरेसमारि [गरेपक] कार केवी (उस पू १)। गरेसमार न [गरेपम] बीज सम्प्रेसल (धीया पुर ४ १४१)। गरेसमार की [गरेपमा] देशनाव संजन	२७)। संक्र महाय, महिला गहिला महिया महिले (वि दश्तः बळा वि दल्ताः सुत्र १ ४ ११ १ १, १)। इ महीसस्य, महिलास्य (प्रस्तु ७ १ वर्षः)। सह १ [मह] १ पहला बास्त्रस्, स्वीतार
गयस न [क] बास तुर्छ (वे २, १)। गवस्थिय केवो गवस्थित्रय (परमव ४१ १)। गवस पू [गवय] गो वी बाहरित का जेमसी प्रभूतिरोग तीन बास (परह १ १)।	बना जान (एवि १०४)।  गवेसलया बुधी [गवेयला] १ बीज प्रवेश- गवेसलया बुधी (गित पुना २३६)। २ दुख विश्वा की यावना (योव है)। ३ निजा का पहल (छा है ४)।  गवेसय वैद्यो गवेसमा (प्रवि)।	(निधे देश) सुर १ १२)। १ वृत्ते पत्र वर्षे स्व व्योतिक-रेत (स्वत प्रस्तु १ २)। १ कर्म का कस्य (स्व ४)। ४ वृत्त वर्षे स्व का साक्रमत् कांचेत (क्षमत सुर १ १४)। १ वृद्धि, साक्षमत, तक्षमत्वत (साचा)। १ वर्षेनेत का रक्ष-विशेष (दव १)। त्योम १
गवर १ (वे) वनत्यिः विशेष (यस्त १— यद १४)। गपछ १ [गवछ] १ जनवी यगुनीरदेव बंक्सी सम्प्र (रजन वन ६)। २ न महित्य वा चित्र (पर्या १० चुना १२)। गवा ह्या [गा] वैद्या माव (परन ६ १६)।	गवेसातिय कि [गवेरिया] र दूबरे से बोज बाया दूमा दूबरे द्वारा जोज किया गवा (स २ का भोज ६५२ टी)। २ स्वेशित सम्बे- यित बोजा दूबा (द कर)। गवेरित कि [गवेरिया] बोज करनेवाला, प्रदेशक (दुष्क ४४)।	िक्षामा प्रस्तव संत के एक प्रमाना सम् एक संकेत (रहम ४, २६६)। "गर्किय व "गर्किता क्ष्मों के संस्ता से क्षेत्रेसर्ग समान (सेन ६)। गद्धिय वि "पूर्वेत्र] मुतादि से साक्ष्मत राज्य (हुमा दुर-८ ४४४)। परिश्व व चितित है स्वेत्रेस
गयाण्यां देशो सवायणी (काल २,१ २)। सवायणी की [गवादना] सोवर-मूर्ति (दे २ २)। सवार नि [दे] गैसर, कोडे कम ना निजली (बजा ४)। सवारक्ष क [गवास्त इ.] गै के दिवस में	गर्वसिम्न वि [गर्वेपित] धार्वपित बौजा हुम्म (तुर १४, १२६)। गम्ब वु [गर्व] वात सहंकार, समिमात (का	राज (वन ४)। २ क्योरिटनात का विक्रम (यम ८१)। वृंद्ध तुं [वृण्ड] वरसमार पद्भीक (का १ ७)। साह तुं [ताण] १ पूर्व कुरन (सा २०)। २ वक्त करना (वर ७२८ टी)। सुस्क्रम [हुस्स्म] प्रकासर या-शीक (शेव १)। सिमावर्ग
भागास्त्र न [ग्यानाक] गाक स्वयं में स्तृत करणा (नगर र र)। गानहीं [मृ] सर्वन सिंबत (बर्)। गांबर्ट्र ते [गोंपित] पीता हुमा (गुना रेशर र न प्रवत्न पास)। गांवस न [मृ] यत्त्रम नोटिशी नोटी, हुस	१२ है हहै)। गानिबद्ध दि [गार्किम] क्लिय पांतपालों नर्व बर्गतेकता (है ११२)। गानिबद कि [गार्किम] नर्वेनुक दिकको धाँम- काम काम्य हुमा हो बहु (तथ कुमा २७)। गानिकार कि [गार्किम] महेनाकी धाँममान्नी	म [ग्रहातक] र वाती-क्रम के धारार- वाती प्रतिकि (का ३ ७)। र ब्रह ग्राम पह को बोड़ी (बीच १)। हिंदिच दुं [गांपण] पूर्व पूरव (बा २व)। गर्द पुंस्कि र त्रवंच (बर्बस १६१)। र
वितो (उर र १)। गरपुता की [गरपुरा] वैन्तुवित्रण की एक शाला (वर्ण) गरेवना पुंची [गरवर] १ वेर चेर (शाला	(है २, १२६ हैका ४२)। झी. शे (हेसा ४२)। सस यक मिस्] वास, निवनता कराता	पत्रक बरता (तुम १ क २ ११) वर्गेत करें)। के बहुत्व आत्र (वर्गेत १६६४)। सिम्म न [सिम्म] दिलके बीच के बहुवा समय है। वह क्यार (वस १)। सम व सिम्मी केम समय कर तुम (बहुवि है)

[सम] केंग काम्य ना एक केंद्र (स्तर्नि ६

₹**१)** i

गोनमा [धी [गशस्त्रः] १ नेप मेह (छामा करता। नगर (१४२ ४ ४ वर्)। वर १ १: मेप)। १ नो मोर मेह (स. ७)। गर्सन (चा १९ दी)।

(मुपा २२६)।

ग्रह्म [गृह] घर, मकानः। सहपुं [पिति]

प्राप्त) । बहुपरी की ["परनी] पृष्टिएरी की

गहरकोछ द [वे प्रह्रक्कोस] एइ, पर्

गृहस्य गृष्टी संसाधि (पटम २

विशेष (देश यद पार्म)। राहराइ सर [दे] हर्ष के भर बाला साराज्य पूर्णं होना । नहपहद (मनि) । ग्राह्ण न [प्राह्ण] १ सादान स्वीकार (चे४ ३३ प्रासू १४)। र भावर, सम्मान । ३ द्वान ग्रममीच (से ४ ६६)। ४ राज्य, बाबाल (बाबा२ ३ ३ बाबन)। ४ वि बहुछ करनेनाचा। ६ न इन्द्रिय (विसे १७ ७)। ७ चल्द्र-पूर्व का उपराग-महरू (भग १२ ६)। ८ वि सत्तव, विश्वका बहुरा किया जाय वह (उत्त १२) । १.म. रिका-विशेष (मान) । गहुण न [प्राहुण] प्रहुण कराना, संयोकार करानाः 'को माधि बेमनेरन्तक्षपुक' (कुमा) । राष्ट्रण न [प्राह्म्य] १ मादान का कारख । २ बाह्मपढ "बस्युत्स क्य गहरा वर्गीत" (उत्त **१**२ २२)। सञ्ज्ञान [सङ्ख्य-क्षेत्र (प्राचा ५, ३ ६ १)। विदुमान [विदुर्ग] पर्वत के एक प्रदेश में दिनत कुछ-बद्धी-समुदाय (सूध २,२ =) : गङ्गण विशिष्ट्रन् देविषय पूर्वेच पूर्वेस भारी मराप्रसिक्ते बोस्रीनहरूमिन भीसते इत्व' (भी ४१): 'फबसाय्यक्तियास्था' (मडक)। २ वन, माझी वना कानन (पाद्य) वन)। १ बृत-वहुर, बुस का कोटर (विपा १ ६—पत्र४१)। गह्य व [वे] १ निर्वय-स्थान बस-प्रीहरा प्रदेश (देर, दर बाकार, ३३)। २ सम्बन्ध वरोहर, निरुगे (तुना १४८)। रह्म्यम न [दे] बहना, व्यमुक्त (पुपा ११४)। गद्र्णमा की [मद्र्ण] घर्ष स्थीकर, का-रान (भीप) । राह्णी स्रो [मह्णी] प्रचरम चौड़ (स्पृह् १ ४- धीम) ।

गहणी की [महणी] दुखि केट (पर १०६)। राहणी की दि] अवस्तरती हरस की हुई भी मारी मा बंधी (वे २ =४- हे ६, ४७)। गहत्य पू [गभस्ति] किएस, त्वब् (गम)। गहर पूंदि] कृत्र, बीक-पत्नी (देर वध पाम)। सहर पुन [सहर] १ तिकुंग। २ वन वंगन। ६ ऐम्, क्यर । विधम-स्वान । १ रोवन । ६ पुरुष । ७ घनेक धनवीं का संकटा 'महरो' (प्राक्ट २४)। गहवह पू [गृहपति] इन्छ बेटी करनेवामा (पाप)। राह्यद्वि [दे] १ प्रामीतः नॉनका एहने-माला(दे२ १) । २ पूँचकमा चौद (वे २१ । पास वास १६)। गहिश वि दि विकास मोना हुया देवा कियाद्या (वे २ = ६)। गहिञ्ज वि [गृहीय] १ ज्याच स्वीह्य (मीरा ठा४ ४) । २ पक्का हुमा (परहु १ ३) । ३ बात सम्म≖क विषित (उत्त २० पड्)। गहिज वि [गुद्ध] मासकः व्यक्तीन (माचा) । गहिकाकी [के] १ करम-भीग के लिए निसकी प्रापेना की वाली हो वह ब्री (दे २, = ४६)। २ ४६४ छ करने योग्म सदी (पद्)। गहिर वि [गमीर] बहुरा, यम्धीर, धरताव (दे १ १ १ काप्र १२१, कप्पा गर्जा भौप प्राप्त)। गहिस्स वि [प्रहिस्त] मूतावि है प्राविष्ट पाम्स (धा १४)। गहिस्तिय ) वि [के प्रक्रित ] प्राक्रेस पुरु गहिल । पागम भाना-विच (पडम ११६ ४ ६४ पड्≀मा१२३ इस ४९७ टी। मदि)। गदीभ केने गढ़िय - गूरीत (या १२) एकए **4=)** / गर्दीर देखो गसीर (प्रामु ६) । गोदीरिअन [गाभीयें] सद्याः पम्केरपन (it ₹ t •) ı गई।रिम पूर्वा [गमीरिमम्] खुराई, गन्धी-WI ( Y Y Y 18) 1 गहेशका सदेतं

गहुण (धप) देशो शह = वह । यहाद (पेड्)। गा ) सक् [गे] १ याना, भानापनाः २ गाञ्ज वर्णन करनाः ३ रसाभा करमाः। पाद ग्रामद (१४५)। बद्द गीत गार्जेट, गायमाण (गा १४६ वि ४७१) पटम ६४ २४)। क्यकुः गिर्झ्यत (यटक वा ६४२ सूपा २१ भूर १ ७१)। स्ट्रेड गाइप्रे (मक्का)। गाञ पुगि] वैत वृपन धौड़ (है १ १६८)। गाञन गाित्र रिशिष्ट, चेह (सम ६)। २ शरीर का सबस्य (सीप)। गाम वि [गायक] बानेवासा (कुमा) । गार्थं हु गुं [गयाहु] महादेन रिन (कुमा)। गाअय वि [गायत] यतेशका महेवा (पुपा ११ सस)। गाइअ दि[गीत] १ गागा हुआ किनरेण दो बाइवं गौबं (गुपा १६)। र न मोद पान, गाना (मान ४)। गाइआ सी [गायिका] यानेवासी सी (वा गाइर वि [गाशक] वालेबाबा, गर्वमा (सुपा ₹¥) I गाइ की [गो] वैया भी (दे १ १६० दे ४ १ म मा २०१ सुर ७ ६६)। गाक । न [सब्युत्त] १ कोस क्रीश की गारक राजर बनुष-प्रमास बमीन (पि गारुक पर्द प्रोप दक्ष की १८ विसे वर दी)। १ को कोस क्रोस-पुग्म (धोक ( P गागर पूँ [बें] की को पश्कों का बस-विशेष सर्व्य विषय या बांबराः गुजराती में 'बाबरी' (पण्ड १४)। २ मलक-विश्वेष (पर्ण १)। गागरी दि देशो गायरी (वि ६२)। गागांकि 🖠 [गागांकि] एक वैतमुनि (बत्त t)ı गांगेळ वि [वे] वक्ति नवा हुमा, मानो-दियं (दे २, ८८)। गागळा ध्यै [दे] नशेड़ा, दुसहित (दे २ गाबिल वि [ब्] विश्वर, विश्वक (वे २,व३)।

MCY (YE) I गवन्द्रिय वि दि पान्याप्ति दश हुमा गरेसणयां की गिर्मपणी दिल्लान होगा-बना-तान (श्रीर १०४)। गरेसणया । ध्ये [गरेपणा] १ और धने गपरिवय देगी शनकिह्नय (परमक ४१---गवेसका प्रकारिक नुवा २६६)। २ सूख मिनादी मापना (योज ६)। ६ विद्या गयव पूँगिवय] मो की भाइति का जाँगभी का क(ए (छ ३ ४)। गरमय रेका गवसंग (क्रीन)। गवर १ है। धननाति-विशेष (पणना १---गर्वेसायिय वि [गर्वेदन] १ बूछरे से क्षेत्र नामा हुमा, इत्तरे द्वारा मीज किया यना (ध राजस 🐧 [रामल] १ जगरी पशु-विरोध र अध्योग ६२२ टी)। २ वर्शपत धन्ते-रिष्ठ को बाहुमा (ब १ )।

बेग्पीमिन्य (प्रस्थ ६)। २ न मिन्न गवैसि दि गिवपिन् वीव करनेवलाः, शक्ता की शांधिया याद (वडन 🖈 १६)। नदेपर (पून्क ४४ )। गर्वसिअ रि [गरेपित] धन्नेपित खोजा शबारमा देगो सवायत्री (याचा २१ २) । ह्मा (दुर १४, १२६) । गवापण श्री [गराइना] नोवर-तृति (हे गम्ब र् [गर्प] मान, धार्रार, व्यक्तिमान (यन गपार विदि] वैसर छो ने व का निनाती १शः पर २१६) । गर्भर न [गद्भर] बोहर, पुरा (४ ३६३)। गब्जि नि [गर्निन] धनिमानी पर्वपुक्त (था 12 E **(1)** गस्तिह रि [गर्तिष्ठ] रिध्य बनिमानी नर्त गरतेसमा (दे १ १२ )।

गब्दिय नि [गर्पिन] पर्नेनुक निवरो क्रीन

नान बन्तव हुमा हो बह (गांच गुरा २० )।

गरिकर नि [गर्जिक] पहचारी चक्रियानी

शम गर्क [सम्] चाना, नियाना क्यारा

गर्गत (का ६२ के) ।

बस्सास्त्रः(१ूॅं ४ ४ ४ वर्)। बा

41)1

(दे र ११६१ देश ४८) । धी थी (देश

पानाज (बीच ३)। शक्तिय नि ["गृहित] मुगादि वे भाव्यन्त पापन (दूमा, दूर व १४४) । परियन विति । क्येतिक राज (बर ४)। २ क्योडिय-राज वा परियान (तम ८२)। दंड पूं [दियाह] समझार बह-वंदित (क्य १ ७)। "माह द्रं ["नाव] १ मुद्दै मुरत (मा २०)। २ वस्त, वल्ली (३२ ७२ ६ टी)। सुसद्ध न ["सुमछ] मुक्तारार पर्-रीफ (श्रीप १)। "सिंघादम न [श्रद्धाटक] १ पानी-फन के मार्गर वानी प्रहरिक (सव ३ ७)। २ वर हुण्य यह नी जोड़ी (बीच ३)। "दिव र् ["र्गिय] नूर्येन्द्रन (बार )। गह् दू [प्रह] १ संबंध (बर्मेंबे १६१)। र परद बरना (तुम १ ३ २, ११) वर्नीर ७२)। १ सहस्य अस्त (पर्वेच १६६४)।

"भिन्न न ["भिन्न] जिसके बीच के बढ़ वा

मबन ही बहु मतान (बन १)। सम न

["सम] केंद्र काव्य का दक्त मेर (दर्कन रे

R4) i

गद्र पू मिद्दी १ प्रश्ल बारान, स्नीतार

(विशेष करा मुर १ टर)। र बूर्व बन्द

वरीयः क्योतिकानीय (वज्राज्ञापसः १ १) ।

३ पर्मनाबल्य (बसु४) : ४ मृत्र देवैष्

का बाबमण बांबर (बूमा तुर २, १४४)।

४ मृद्धि, बाइफि, स्क्रीवता (बाक्ष्रे)। 🤻

संबोध का एल-किरोप (क्य २)। "ग्रीम ई

िंद्योश राजन नंद के एक समाना नान,

एक लेक्टा (पटम ४, २६६) । राज्यिय व

['गर्सिव] पहाँ के संबाद के हैरीनती

(48) 4) ( गरा। प्रयूत [गरान्धक] नौ के शिवन म स अवन्य (नगर् १२)। श प्रतीर [क्] मागुत विवेद ( बहु )। र्गोदष्ट्र रिट [गर्यायत] चोका हुमा (नुस म प्रवाद क्या है। र्गायक न [रि] बनन शोरि को बीतो। तुळ fert (se t t) i गरपुर्भा सी [गरपुरा] नैतपुनिन्द्रण की न्द रामा (बना) गरका (भे [गरम] १ भर बेह (एक १ १ देन) । १शों चेरनेह (स र्च) ।

(राम बीव रे)।

X) 1

पत्र १४)।

Q 44)1

शकतत वि] भाष तृत्र (दे२ ८६)।

क्यू-विटेप बीच पाव (पण्ड् १. १) ।

नानिय (प्रांग्यु१० मुता६२)।

शाह वि गाह रेगाह विविद् सम्प्र (पाम सुर १४ ४८)। २ मजबूत इद (सूर ४ २३७) । ३ क्रिकि भारतन्त मिरेतम (क्रम)। गाण न गानी केट नाना(द्वे ४६)। गाण विगियन । गरैवा भीत-क्वीए (वे २ १ व)। गार्जगवित्र पुं [गात्रक्षणिक] क ही मास के भीवर एक साबू-क्छ से इसरे क्छ में वानेवाका साबु (शह १)। गाणीकी [के] नवास्ती नोचर-पूमि (के २ **4**3) | भावा देखो गाहा (मच पिंच) । गाम विशिष्यो मताव-र्णात कम व्याप ( ¥ K, RY) 1 गाम 🕻 [मान] १ सबूह निक्छ "क्वतो

देविक्झमो (सुर २ १६**०) । २ झाल्-समूह,** <del>व्यक्त</del> शिक्स (विशेष २०१६) । ६ वॉक वसरि काम (इन्यास्त्रसार रदायीय)।४ इन्द्रिक-सपूर् (कार मौत) । क्षेत्रग क्रेड्य प्रे[क्ष्टक] १ क्षत्रमनस्य क्य काटा (क्य भीत) । २ दुर्जनों का क्लाबालाल नावी (मापा)। यायग नि विश्वतको नौन का नाग करनेवाला (पश्च १ ६)। "जिद्धमाण न ["निर्धेसन] बॉब का पानी वले का पस्ता नत्वा (क्य) । घम्स पुं विश्वमी रे विपन्तानिकाप, विपय की वास्क्य (ठा १)।२ इतिहर्वेकास्त्रमायः। विषय-प्रवृत्ति (बावा)। ४ मैकुन (तूम १ २, २)। १ शन्द स्थ परीख इतिहाँ स विषय (पर्व १ ४)। ६ वाव का वर्ग बीव नाभर्दभ्य (ठा१) । द्वाप्ति विभी सामा यात्र । २ प्रतर भारतः मारतः का वत्तरप्रकेतः (निष् १२)। मारी की मिसरी बाद मर मं प्रजी हुई गामाच-विकेष (बीव ६) । राम र् िराग पाम-न्यापक बीमारी (ब २)। बद्द पूँ ["पवि] नांव का मुखिया (पाम)। ाजुमाम न ["ाजुमाम] एक पांच हे बुस्टर नाव (मीप)। "मार् प्र "चार विवन (प्राप्तम) ।

न्यमञ्जा १ दृषि] यौग का दृष्टिया (वे २, न्यमञ्जा १ ६) वृह्व २ )।

गार्मीतय व [धासास्तिक] १ बॉथ की बीमा

(माचा)। २ वि नॉवकी सीमा में स्थिनावा (बसा १) । ६ पूं. बैतेहर बार्सनिक-विधेव (सम. २, २)। गामगोइ पूँ वि] यौग का भूषिया (९२ 4E) I ग्यमद्वर्षमामकी योग क्रोटा गर्ल (मा ₹**६**) i गामण न [के गमन] मूमि में नमन चु-चर्पश (भग ११ ११)। गासणह न वि दाम-स्वान दाम-प्रदेश (पद्)। गामणि देखो गामजी (दे २, वटः पद्)। शामणिसुअन्तर् दि योग का मुख्यमा (वे २ व€)। गामजी पूर्वि विविधा मुक्तिया (दे२ वर्ष प्रामा)। गासणी वि बि।सत्री दिभेद्व प्रवास नानक (दे ७ ६ वया शासा ४४६। यह)। २ पू. क्छ-विकेष (दे२ ११२)। गामपिंडोब्स पू कि भीच से धर चरते के भिने बांच का भाषम बेनेबला ग्रीखाएँ (प्राचा)। गाम छेड प्रेडिं इन से वैव का ग्रुविया बन बैठनेवाला नॉव के लोगों में कुर उत्पन्त कर बांच का माविक होलेवाला (दे २, ६.)। गामक्ष्ण न [वें] प्राय-स्वान, वांव का प्रवेश (दे२,६)। १ चौटा प (पाम)। गामाग पूँ [मामा इ] प्राय-विशेष इव गाम का एक सम्बद्ध (भावम) । गामार वि वि मामीज बागांश क्षेट्र वांव का सूचेराचा (रक्त ४) । गामि वि [गामिन्] अलेकला (या १६७) माचा)। वीर्षा (इस्स)। गामिज नि [मामिक] १ वेको गामिछ (१ २ १ )।२ वास कामुलिया (तिवृ२)। १ विश्वसमिनाची (बाचा)। गामिनिमा और [गामिनिमा] पमत करने-

**24)**1

४७)। धी द्वी (दुमा)।

गामेसुम ) देवी गामिस (रूप १७४) गामेश्च ) बिया १ राजिये रेपरेरे)। ग्रामेस र् [प्रामेश] यांत का व्यवस्थिति (है २. १७)। सायाम वि [साबल] यवैया नावक (विरि t): गायरी की [के] वर्षी पपरी करती कीय पहा (दे २ वर्)। गार वि ["बार] कारक कर्ता (मर्वि)। गार पूं 🗣 प्रावन] पत्वर, पत्वाल नद्वा (वय ४)। गार न [धरगार] वृद्द चर, सकान (अ.६)। रियय वृक्त स्थित कुरूब, क्री संवाधा 'वारत्वियवकार्यवर्गं ध्रायासमियो न कविना' (क्रूफ १०१३ छ। ६) । गारय वि [कारक] कर्ता करनेवाता (व (11) t गारवर्षुत्र[गीरव] १ धरिमान पर्दनार। २ ध्रविधाय नाथसाः 'छयो नास्ता परस्ता' (छ ३ ४० वा ३४३ इस व) । ३ म्यून पुरस्य प्रमाय (कुमा) । ४ मस्बर, सम्मान (पद्धाप्र)। गारक्षित कि गिरिक्ति र गीरनानित मञ्ज्यकाची । ९ वर्गका, व्यक्तिमानी । १ वावासानाताः, प्रक्रियापौ (पूच १ ११)। गारविद्ध वि [गीरववत्] उसर देवी नानी भी 'वविधाईपवहुगाविशिधाहि' (प्रति (कम्बर १६): गामिकः | वि[शामीयः] धांत का गामिक्तुकः | निवासी वैतार, (पदम ७७ गामीयः | १ व विसे १ टी वेस गारहरू हि [गाईस्य] मृहत्त-समन्ते पृहत् क्स (पद २३६)। गारि पुंची [अगारिन्] पूरी शंक्षा प्रमूच (क्य ६, ११)।

गार-गारि रामुभ रि [गामुक] बलेरावा (स १७१)। गामेंद्रशा औं [प्रामेथिक] यात भी पहे-वाली और गैंवार की (वडार)। गामेजी की विशेषानी सना वक्ये (वे दे <Y) 1 शासंस देवी गासेका (वर्गीत १९७)। गामेयग वि [प्रामेयङ] यांव वा तिवागी, पॅवार (वृद्ध १) । गामेरेड [के] क्लो गामचेड (वर् )।

स्य पूर्वी [रेख] सूदस्य नृष्टी (निष्ट १) ।

शारिकरिध्य और शिक्षरेष्य ] कुरव-धंदन्धी संसारि-संबन्धे । बी. मा (पंच २६४) । गारुकः ) वि[गारुकः] १ गरुव धेवल्यी । गार्ड र संप के लिए को बताओवाला, सर्वे-विध को दूर फरनेवाला । वे पूँ सर्वे विध को हर करनैकासा मन्त्र (छप १५६ ही) छे १४ १७) । ४ मः शास्त्र विशेष मन्त्र-शास-विरोध सर्पेनिय-नातक मन्त्र का विसमें वर्त्यन हो बहराइन (छ ६)। संत प्रीमन्त्री धर्थ-विच का नाराक मन्त्र (सूपा २१६)। "पिउ वि ("विन् | भावत मन्त्र का भागकार, बारड शास का बानकार (स्प १८६ टी)। आस एक शिक्षय है यहनमा भानमा । २ नाशकारना । ६ सल्लंबन करना मितिक-मगुइएना। मासमा६ (विसे ६४)। बहु गालेमाण (मन १ ६६) । कन्छ गाछि-र्जास (सूपा १७६) प्रयो मानावेद (शामा १ १म)। शास्त्रप्र न [गासन] बानना शवना (पर्ह १ १३ छन प १७१) । गाष्ट्रणा भी [गाउना] १ वालमा प्रानमा । २ गिरवाना । ३ पिश्रतवाना (विपा १ १) । गासवादिया की दि किया गीका बॉगी 'एरबतर्यन्म समावया पालवाहियाए निजा-सम्( (स १११)। नाश्चिकी [गास्ति ] बाली मार्च बनरूद, ससम्ब वचन (गुपा ३७ )। गांक्षिय वि[गाक्षित] १ छाना हुमा। २ सर्विदान्तः ३ विनारितः । ४ जिस, 'गानिय-मिठी निरंकुमो विवरिक्षो राज्यक्ती (मञ्जा)। गासी की [गासी] रेकी गाठि (पर रेथ) । गाव (प्रप) देशो गा । शावद (निव) । बहुर गार्वत (रि २१४)। गाब (धप) देखो गम्ब (धवि) । गांध वि दि ] वट, वया हुमा हुमरा हुम (पर्)। व विवन् १ पत्तर, पायाण

गाशाया 🕽 (पाँग) । २ पहाड़ शिरि (है ३

गावी की [गा] बी,बैया (हे र, १७४) दिया

गाबि (धार) देखो गब्दिय (मनि)।

**₹**\$) 1

१ २ महा)।

रमस प्रेमिस प्राप्त क्वन (मुपा ४६०) । तास प्रासी भोजन (पन ११)। गाह देखो गह = यह । इसे गाहिक्क (प्राप्त)। गाइ सरु मिह्यू देश कराना । गाहेद (मीप)। गाइ ⊎क गिड्\_ी १ पाइला दुइमा। २ पहला धम्पास करना । ३ धनुमन करना । ४ टोह समाना । पाहरि (शी)- (मुन्छ ७२) । क्वक्. गाहिकांत (वका ४) । शाक्ष प्रशिष्य विस्तान-पहित बाह (का ४ ¥) I गाइ पूमिकी १ याह, द्रोभीर, मझ, अस वन्तु-विद्येष, मगर (वे २,⊏६३ शामा १ ४′ भी २) । २ माघ**ड, ह**ठ (विसे २६८६ परम १६, १२) । ३ प्रहरा मारान (निष्क १) । ४ गार्वीङ्क सर्प को पककृतेवाली सनुष्य मावि (बृह्द १) । वर्ष और ["वदी] नवी विशेष (ठा२ १--पव व )। गाइग वि [प्राइक] १ प्रहुष करनेवाता, सैनेवाला (सूपा ११)। २ समक्लोबाला भागनेशासा (सुरा ३४३) । ३ समम्बलेशासा शिक्तर बानार्यं पुत्र (धीप) । ४ क्षापक बोबक । की गाहिगा (घोप) । गाइक वि [माइक] प्राप्ति करनेवाचा 'बाइब समस्यक्तार्थं (स.६०२)। गाइजन [भाइज] १ इह्य करमा । २ पहुछ भारानः 'गाहुण तर्वरियस्या गुरुतं विम काइका होति' (पेकस) । ३ शास विकास्त (वर्ष ४) । ४ वीवव-वर्ग, शिक्रा, जनमेरा (पश्चा २, २) । गाइणया ) भी माइणा क्यर देखो (च्य गाइणा ∫ पुरुरे∀ मार्चे, क्या १}। गाइय देवो गाइग (विते वदेश स ४६व)। गाहा सी [गावा] सम्पवन, धन्त-प्रकरश (पत ३१ १३)। गाहा की [गाभा] १ यन्त-विशेष, शार्वा गीति (ठा १,३) मनि १७) १९)। २ प्रविद्धाः ६ निषयः विसपमात् सम्प्रज्ञाः (मार ४) । ४ 'तुबक्तांग' सूत्र का सोलहको मध्यका (नुष १११)। गाहा की [व] मुरु घट, सकानः भारत पर मित्मिति एनक्का (वच a)। यह कुंबी (

[<sup>\*</sup>पदि] १ पृहस्य सूक्षी संसाधै (ठा ४ र्प्रासुपा २२६)। २ वनी वनाव्य (उत्त १) । ३ भेडारी मात्डानारिक (सम २७) । क्री जी (खाया १, १, इना)। गाहाल पुं [प्राहाल] क्षेट-विशेष भीन्द्रिय बन्तु विरोध (बीव १) । गाहाबई भी मिहावती र नही विधेप। २ हीप-विरोध । ३ हाय-विशेष, बहा से प्राह्मवरी नरी निकनर्ती है (थं ४)। गाहाविय वि [ माहित ] विसको पहल कराया नया हो यह (सर ११ १ थ ३)। गाहिणी की गिर्वाहेनी १ थवने वासी **ब्द्रो** । २ **चन्द-विशेष** (पिन) । गाहिपुर न गाभिपुर निवर-विशेष (वरह)। गाहिय दि [प्राहित] १ निसको पहल करामा गया ही बड़ा। २ फ्रामित सक्सामा ह्या (सूप १२१)। गाहीकम वि [गावीहत] एकवित इक्ट्रा किया ह्या (सूम्पीन १ १६)। शाह की शाहु सन्द-विशेष (पिष)। गाहुसि पूंची वि पाइ, नव, मगर, कूर बत बच्च विशेष (वे २ वर) । गाहु हिया देवो गाहा = बाबा (मुपा २१४)। र्गिठि ग्रिप्टे र प्रकार न्यामी हुई। २ एक बार व्यापी हुई बाय (हु १ २६)। गिंधुक हि देशों गेंदुक (पाप)। गिंधुक [दे] देवा गुँउएड (पाप) । गिम (भ्रम) वैकी गिझ (है ४ ४४२)। गिंह भो गिहा ( वह )। गिर्जन देशों गा। रिक्ति सक [ गूथ ] धासक होना सन्दर देना । पित्रक्द (हे ४ २१७) । गित्रक्ट (खाग १ ८)। शह- गि।मून (चौप)। ह गिविम्ध्यबद (परह २, १)। गिम्म रि [गृहा, भाषा] १ पहल करने योग्य । १ मन्त्रीतरक में किया जा सके यैसा (का १ २)। गिद्धि देवो गिठि 'बारॅवस्ववि बचा विद्वी बिद्विष्य बरवरियाँ (तर ७२० द्वी पाया

π **₹∀** )ι

(पर ३०)।

गिक्रिया की [के] येही चेंद्र चेंद्रने की सकती

RES	पाइअसइसइष्णवो	गिज-विद
क्रिया देशो राग्य = घराष् । विखेति (सहि	बॉक्स केर में बर्जाकात में दिया बाता एक	गिस्त और [गस्मिति] १ गीमापै ऐम । १
ξ <b>υ</b> ) 1	प्रकार का बरसन (शह १)। पाई की	क्षेत्र वनायः (हा म)।
निषद् देखो सद्र⊏ पहः किएह्द (रुप)।	[नदी] पर्नेदीय क्यी (पि १०१)। शास्त्र	गिबाण देवी गिलामा विकास कार्रे
<b>क</b> गिर् <b>श्त गिष्</b> मात्र (ग्रुपा ६१६)	पुं ["नार] प्रसिद्ध पर्वत-विशेष को काठिया-	(ਚ ਅਵਿ)।
शाया ११)। चंद्र-सिन्दितं, सिन्दि	नाइ में धात्रत्व मी पिरतार के नाम से	गिसाय नि [गसान] १ गीमाद, ऐनी (इप
ऊण, मिष्टिइला (नि ४७४ ४०६६ ४८२)।	विक्यात है (श्री १)। दारिश्री और [ैंदा	१ १ ३)। २ प्रशक्त, मध्यर्थ वरा 🕶
हेर गिष्ट्चिए (रूप) । इ. गिष्ट्यस्य	रिपी] विद्या-विधेष (पतम ७ १३६)।	(at t v) : १ क्यासीन इर्व-धी्ठ (सम्म
गिण्ड्यस्थ (मगुः मुता ५१६)।	"नर्द्द वेको "णर्द्द (तुपा ६३४)। परलंदण	₹ १६३ <b>१</b> ₹ ₹ \$)।
गिण्हण देती गद्धण - शहरा (विरि १४०	न ["प्रस्कम्यन] पहाड़ पर वे थिएना (निच	शिक्षाणि की रिक्सिमी न्यामि केंद्र, बरावट
सिष्ट ४४६, हर्षु ४ )।	११)। यहर न [*कटक] पर्वत का शब्द	(& t, t)!
रिष्ट्षा भी [प्रह्म] क्यारान भारान	माय (व्यव)। परमार वै [वागमार]	गिसायय वि [स्थायक] स्तानिनुष्ट, सन
(बस्त ११, ९४)।	पर्यंत-तितम्ब (संबा)। रास दुं ["राज] मेव	(बीस)।
रिण्हायिश नि [महित] बहुए नचवा हुमा	पर्नेत (श्रक)। बर पूं [बर] प्रचान पर्वत	गित्मसि पूर्व [मासिम्] व्यक्तिके
(बर्गीत ११६)। जिल्लाम जिल्ला जिल्लामध्येक नेक (ज्ञान	क्तम पहाड़ (सुपा १७६)। वरिंद् हुं विरोग्नी मेर पश्च (सा २७)। सुआ की	सत्मक्त रोम (बाजा)। और अमि (बाजा)।
विद्यं पूर्व विद्या पित-विदेव क्षेत्रं (शाम: स्वाया १ १६)।	िसवा] पार्वधी गीर्स (प्रव)। सुआ क्य	रिस्टिम वि (गिक्टि) निका ह्या गीएर
सिद्ध सिद्धी मातन कम्पर तोतुप	गिरि दू कि वीव-कोत (दे ६ १४८)।	(तुपा ३ २ १ तुपा ६४)।
(शाहर राधाना रा)।	गिरिंद व [गिरीन्द्र] र भेष्ठ पर्वत । २ मेर	गिकिमचेत्र वि [गिकितवर् ] विक्रो
गिर्वापट्ट न गिर्व स्पष्ट गृभप्रश्ची नरख-	पर्वत । १ हिमाचन (कप्पू) ।	भ्रनाख किया हो वह (पि १६६)।
रिरेप बारमहाया के धनित्राय से बीव धारि	गिरिक्सी देखो गिरि-कण्मी (१४ ४)।	गिरुवेद्रया } औ [द] पृह-नोबा, वितानी
को धपनास्तरीर विकादैना (पद १६)।	रिपेरिकी स्में [दे] पशुर्वों के बांत को बाबने	गिसोई (तुरा ६४ प्रमा १६७)।
गिद्धि औ [गृद्धि] एक देर-विकास (देवेन्द्र	का अपकरण-विशेषः 'वंतनिर्धिः पर्वबद्'	गिस्छिको वि] १ हामी भी गीठ पर नता
(44) 1	(तुपा२१७)।	भारत होता हीवा (शावा १ १—वत्र ४६
गिद्धि औ [गृद्धि] भलित सम्परता सम्मै	गिरिनयर व [गिरमगर] विस्तार वर्षेत	दी भीप)। ए डोसी दी भारमी है कार्र
(तूम १६)।	के नीचे का नगर, भी शायनमा 'बूनानड'	काती एक प्रकार की विविका (तून 🕏 🤻
शिन्द्रका देनो गिण्द्रणा (उत्त १६ २७) ।	के नाम से प्रतिख है (पूज १ ६)।	दवा ६)।
गिद्य दं (भीष्म) ऋतु-विदेव परमी का	गिरिपुद्धिय न [गिरिपुध्यित] ननर-निरोय (भिट ४५१)।	गिस्ताज पु [गोर्घाज] देव गुर, विस्ए
मीमिस (दे ७४ प्राप्त) ।	गिरिस र् [गिरिश] महादेश फिर (पान	(का र६ टी)।
तिया थी वेपो गिका विगरानु (नुस्न २,	रे.६ १९१)। बास ने [बास] वैवाय	रिद्ध म [सूद्ध] बद्ध सवाम (सावाः भा २३
10) i	वर्षेत्र (के ६ ७३) ।	स्त्रज ६४) । स्थ वृक्षी [स्व] गुरस्य पूरी संमारी (शवा ह १) । स्वी. रैसा (राम
ियर नक [मृ] रे बैलना, बन्बारल बरना ।	गिरीस दू [गिरीश] १ दिवानय वर्षेत ।	४६ ६६)। माद्र व [माय] वर ग
र दिलसा नियममा। निर्दर्भ वृ्)।	२ नहारेर द्वित (तिन)।	मानिक (या २) । विद्यान की कि
ि सिर ] नाडी, अपना नार (दे	सिल नव [स] स्थिता विवतना, बग्छ	हिन्] पूरला, पूरी धेनाधै (देत) । "बह
1 (0)	वरनाः चंद्रासिक्किण (शब्द)ः	र्दुनी ["पति] गुरम्ब, गृही बर ना मानिक
विदि वृ [विदि] १ वहान वर्षन (नजर १ २१)। असी की [वटी] वर्षतीय	गिसम न [गरग] निगरल काल (१४४	(स. २, इ.स. ११४)। यस ई
भरी (बडर) क्यार दक्ष्मी सी	YYU) :	[वास] t बर ने श्रितात । २ क्रितीसपर
[*कर्मा] बन्धी-शिटेच नजास्थित (नाय	गिर्छ । यर [गर्भ] १ ग्तान होता, बीनार गिर्माम । होता । २ पिन होता, वर बाता ।	वंतारितः विद्वादं नावं दिव नानेनी वदर दुविनायो नामनं (बाना नुस १ १) । विदृ
१—सरामार)। तृह व [पूर]	१ प्रचलीन होना । निनाह, निनापद, स्ति।	र्द [क्से] क्रियोग माध्यम वकारिया
६ परंत्रका स्थितः ६ पूर्यसम्बद्धाः	र्छन (सा रम सारा)। या गिनावनात्रः।	(दूप रे र र) । सिम दु[ीनम] पर
हरूर (राव ४)। जरत ई [ <sup>*</sup> यहा]	(f f n)	नान दिरीसानन (स १४ ) ।

(इक्ट सब, १ ८)। १ सम्बर्ग-सेना का

हिमहि र् [गृहमेथिम्] मृहस्य (वर्नीव

धिक्की (स७४८)।

क्षित्र वृश्यक्षिति देश का योपपति मुक्ते-बारः 'तह निक्वदिन देख नायनो' (पन वर)। गे≀ह नू [गृह्दिम्] **गृही संसार्थ नृहस्य** (स्रोव १७ मा नव ४३)। सम्म पू भिमा गृहस्य-वर्ग धावर-वर्ग (राज) । ैंसिंग न (<sup>\*</sup>कि.) गृहस्यका वरा(बह १)।। रेहिनी की गिहिनी नृहिली भागी, की (मुपा ८३) या १६)। रेफ़्रीक्ष कि [गृद्धीत] माल उपल, महस्र किया इया (स ४२८)। गिहेलून रेजो गिहेलूय (प्राचा २ २,१ ४)। गिहेल्य व गिहेल्फ देशभी बार के नीचे की सबकी (निष् १३)। गीं भी [गिर्] काली, कापा काक् विस्तुरवसं च ख्रवापत् च मौविसिमर्म जसमं (गउड) । गीआ की गिता कीमद्भगवर्गीता ज्ञानमय उपदेश, धन्द-विशेष (स्थि) । गीइ सी गिवि १ छन्द-विशेष भागी-बूठ दाएक भदा २ दान मीट (टा धः इप ₹₹ 21) ( साइयाची [गानिका] अपर देवी (वीरा रामा १ १)। गीय वि[गान] १ पच-मय वास्य, गैम जी गाया जाय वह (पछह २ १८ वस्तु)। २ विधित प्रतिसारित (खावा १ १)। ३ प्रसिद्ध विक्यात (सैपा) । ४ त. पान, तल धीर बात्रै क प्रमुगार नाता (वे २ धतः १)। १ वंदीव-कमा, वात-बमा वंदीव-राष्ट्र का परिहान (शापा ११)। ६ वृं पीतार्प क्रन्तर्ग थीर मरराद नरेख्ना भानरार धैन नामू विद्वान् येन मुनि (या ७७३)। जम व् ['यराम्] इन्द्र-रिधेन, क्यार्च देशीं का एक रमः(ठार १ रक)। त्य द्रं["ारी] रे निहान देन कुनि (का बरेके दी। नव भा नुपा १२०) । २ धेनीत राज्य (मे १४) । पुर न ["पुर] नयर-विकेश (पान १४, श्रेण ['प्रिक्त । पंत्रेक-मेहा

प्रिपिति देव-विरोप (ठा ७)। ४ वि संवीत प्रिय मल-प्रिय (विपा १ ⊀)। गीवा सी [भावा] कएठ वरवन (पाप) : मुख देशो मुख्य (हे १ २६)। शंक्षाकी दिरेश किन्द्र। २ शकी-मंग्रा सवत शीच (दे२ ११)। गुंस पर [इस्] ईंचना शस्य कला। g az (\$ Y 225) | शुंखक [शुक्ष ] १ पुन-पुन करना भगर कादिका बाकान करना। २ नर्नेना सिंह व्येष्ट् का मानान करनाः 'पुजेति सीहा' (महा)। वह र्गुजैत (शास्त १ १-- ५व र रंगा) । गुप्त व गिन्धि १ पुरुवारव करता बागू (भडम १६ ४६) । २ पर्वेड-विदेश 'पु वयरपन्वर्व ते (पत्रम म १ ३ १४) । र्गुजाकी [गुझा] १ मता-किरोप (पुर २ ६) । २ कम विरोप श्रुवनी (ग्राया १ १) बा ६१ )। ६ संस्ता बाच-विरोध (दावा)। ४ परिखाम-विकेष (ठा ४ १) । **३ बु**ध्यारव पुजन एत-पून मार्चान 'पुजाबनप्रकृत-रोबपूर्व (राव)। ६ बायु-विरोध ग्रुप्नारव करतेवासा बारू (बीव १३ मी ७) पहल, इस न किस्से क्ल-विशेष प्रवर्श (सूर २ ६ मुपा २६१)। गुंबासिया स्थ [गुज़ासिय] येग्रेर तपा टेवी वारी-नावसी या बावडी (प्राचा 2 4 4 2)1 गुजिस्या नौ [गुजिस्स] वह-मारिली धेदी नियायी (शामा ११)। २ मोन<sup>ा</sup> (#) i पुष्परिणी (निष्कृ १२) । १ वक नहीं (पर्ग्रह 11) 1 र्[जाविश्र वि [दासिन] ईमाया ह्या (कुमा 0 Yt) 1 श्रीज्ञित्र न [गुडिन] दुन-पुन धाराज अमर वनैय्द्रका राज्य (कुमा) । शुंखर दि [शुंखित्] एत-पूर बागव करने-माना (उर ८३१ दी। र्शेषुद देवो र्शुबोल प्रमुक्तर (हे ४ २ २)। परिवर्तिमी (नुरा २२) ११६) । ति बानन्त

न्तिक्रिम वि दि पिर्शक्त स्कृत क्या ह्मा(दे२ १२)। गुँदाह सरु वि + लुख़ | विवेशना । यु वी-स्पद् (प्राद्व ७३)। गुंबोह सक [उन्+ इस् ] उप्मास पाना विकसित हाना। युवालनाइ (हे ४ २ २)। गुजानिभ वि [उद्यमित] विकरित विक-सिव (कुमा)। शुंठ धक [ तर् + भूछय् , गुण्ठ् ] पूच नामा करना यूनी के देव का करना यूच रिष्ठ करना। युट्ड (हि ४ २१)। नक्ट गॅटेन (इमा) । र्गुठ पूँदि] सवस धरव दुण वीहा (दे २ **११। स.५५)। २ वि मामावी कपटी** (यथ १)। गुरा भी हिं] भाग वस्त्र घल (बर ३) ३ गुठिज वि [गुण्डिन] १ पूर्वरेत । २ व्यात १ माण्यादित (दे१ **४१)** । मुंठीकी दि शिरंगी की का पत्र-विशेष (दे**२ ६** )। नुंड न [वे] मुल्ता से सन्दम होनेबासा पूरा विशेष (दे २ ६१)। र्गुडण न[गुण्डन] यूनिका सेर यूनका शरीर में सनाना 'रवरेनुपु बलागि स नी सम्में सहितं (शामा १ र---पत्र ७१)। गुडिम वि [गुण्डित] १ बृति-तित पूर्ण मुक्त (पाप)। २ मिस पता हुमा पुण्ला द्वविषणार्थं (विगार २-- पत्र २४)। १ थिय हुमा 'सज्यौ जह पमुपु हिमा' (सूध १२,१) । ४ माण्यतीका प्रापृत (माना) । इ. मेरित (पएड १३)। र्गुमण न [प्रस्थन] पूजना चटना (रयण र्श्व र्ष्ट [सुन्द्र] इपन्विरोप (पाप)। शुरुष्ठन [दे गुन्दछ] १ पानवन्यनि चुक्र की मानाज इर्थ की तुनुसम्प्रतिः 'मत बरकाविणीसंबक्यद्रेश्च (पुर ३ ११६)। वरिलीदि वसहैदि थ क्लमेन्ड इरिन्ड्र बन नार्वे (मुत्त १६७) । २ इपी-धर, मानन-संरोह, चुटो की कृदि 'मर्नरमार्ख्या दन पुरुष "धारणंश्य दनेलं तत्त्र सीतावर्षिः

₹#) I गिण्ड् देखो सह= सह । फिल्ड्ड (कप्प)। वक गि**ण्ड्**य गिण्ड्माण (गुना ६१**८**: खामा ११)। संकृ गिलिइसं, गिलिइ कव्य गिण्डिसा (रि १७४ १८१। १८२)। हैह गिन्दित्तप (क्य)। ह गिण्डियस्य गिण्हेयडम (क्यू: सुपा ४१६) । गिष्युण देवो गह्य - बहुए (शिरि ३४७ पिष्ट भद्र स्टेस्ट्र हो । गिष्ट्याधी मिह्यी उपादन साहात (पच ११ २७) : गिण्हाविञ वि [पाहित] पहण करावा हमा (ममैकि ११६) । गिठ पूँ [गुप्र] पश्चि-निरोध कोब (पह्म

राया १ १६)। गिद्ध विशिद्धी भाषक कम्पर सोकुप (पएड् १२ आपूर)। गिर्द्धापट्ट न [गृद्ध स्त्रष्ट, गृथप्रुष्ट] मच्छ निरोप धात्महत्या के समित्राव से बीच स्टब्स को सपनाशारीर विकादिना (पद १६)। गिद्धि हो [गृद्धि] एक देव-विमान (देवेन्द्र 11Y) I गिद्धिकी [गृद्धि] यात्री गंति सम्पटका साम्बै (तुम १६)। गिन्द्रणा केनी गिष्ट्रणा (बत्त १६ २७) । गिद्ध पू मिया इ.पू-विरोध करमी का मौनिव (दे २ ७४ प्राप्त)।

गिया की की गिक्का विम्हानु (युव २, 10) 1 शिर सक [गु] १ बीलना, बच्चारल नरना । २ विजया नियलना। विदर्भ (वर्ष)। शिरा की [शिर् ] बाडी बाबा, बाक (क्रू t (# ) i गिरि र् [गिरि] १ पराव पर्वन (बदव १ २६)। असी की विद्यी परतीय नदी (नवर)। कुरुगई कुरुनी की िक्सी बली-सिटेव नदा स्टिव (पएछ रे—प्रदेशकार)। बूद व['बूट] रं परंतका रिकार। २ ई समयक्षा ना

नरा(राजव ४) : अक्तर र्\* [\*वक्क]

(# 1 1) i

प्रकार का बरसव (बहु १)। वर्दकी िनदी विश्वीय नदी (विश्वद)। जास र्ष [ नार] प्रसिद्ध पर्वत-विरोध को कार्रिया-वाद में धानत्व मी "विस्तार" के ताम से विकात है (मी १)। वारिणी की विन रिणी विदा-विरोध (पत्म ७ १३१)। नई देवो अई (सुपा ६३१)। पक्संत्रुण न ["शरकन्दन] पहाड पर से पिरना (निच् ११)। यदय न ["कटक] पर्वेद का मध्य धाम (धन्ड)। पदमार पू पारभार] पर्वतः निरुम्ब (संबा)। राव पूर्वि राज मेद पर्नेत (इक)। यर प्रविद्यासमान पर्नेत कतम प्रकार (सुपा १७६)। वरिंव प्रै [\*वरेन्द्र] मेव पश्त (मा २७) । सुमा की िस्ता पार्वेडी गीचै (दिव)। गिरि पुंदि वीव-कोछ (देद १४०)। गिरिंद् पूँ [गिधिन्द्र] १ मोहपर्वतः २ मेड पर्वतः ३ दिवाचन (कथ्र) । गिरिक्सी केवो गिरि-कण्पी (पर ४)। गिरिकी की दि] पशुक्तों के बांद नो बॉबने का ज्यकरात-विशेष 'वंशिवर्षित प्रवेषद' (नुपा२६७)। गिरिनयर न [गिरिमगर] पिरनार नर्गव के नीचे का नगर, भो धानकल 'बूनावड' के नाम से प्रसिद्ध है (क्रम १७६)। गिरिपुद्धिय न [गिरिपुद्भित] ननर-निरोप (विश्व ४६१)। गिरिस र् [गिरिस] चारेण फिर (पाम के ६ १२१)। बास दे [बास] कैतरा पर्वत (से ६ ७१)। गिरीस पू [गिरीश] १ विमातव वर्षतः। र नहारेव शिव (शिव)। स्मित्र वर्ष [ग] किलाना निवतना मजास्य करमा। संक गिरिसकाम (भार) । गिस्रजन[गरव] निपरत बक्का (हे४ YER) I गिक्स ) सक [गरी] १ ग्लान होता बीमार

कॉक्स देश में वर्षाकाल में किया जाता एक गिब्स की [मसानि] १ बीमापै ऐन । १ बेर, बकावंट (ठा व) । गिद्धान देवो गिद्धाताः क्लिश्ह कर्मे (E wtw): गिस्राज वि [ग्यान] १ वीमार, रोनी (दूव १ व व): २ सराख्य, सप्तमर्थ वका ह्या (SI % Y) ! % कशासीन, हुप्य-छिहा (छान्म र रक्षा के २ र ६)। रिख्यणि श्री [रख्यमि] ग्वानि केर, कातर (ठा ६ १) : गिद्धायय वि गिद्धायकी ग्लातिनुष्ठ, दल (बीप) । गिरमसि पंची मासिन् व्यक्ति रितेन मस्मक रोम (धाषा)। की जी (धाषा)। गिक्किम वि [गिक्कित] किरता हमा, चर्कित (दापा ३ २ १ लूपा ६४)। गिकिमनंत वि [निक्तिनन्] विक्री मञ्जूष किया हो यह (पि १६६)। गिस्पोइया) की हिं] प्रह्नोग, विश्ववी गिनोई (नुपा ६४ पुण्ड १६७)। गिल्फि की दि] १ हाची नी नीठ पर नवा वाता होना होना (लावा १ १—पत्र ४६ द्या भीत)। २ डोसी को बास्मी हे ब्झार्ट भारतीयक प्रकार की तिर्विका (सर्व ६ <sup>हर</sup> दमा ६)। गिष्याण पू [गीर्योज] देव नुर, विस्ट (का देश हो) । गिइ न [गृइ] वर, मकान (माचा) वा २६ स्तन ६४) । रथ वंडी स्वि वहल, पूरी बंसारी (बच्छा इ.स.)। इसे, रेबा (बडव ४६ ३३)। नाह्नु [नाम] वर वा मानिक (भा २०)। स्थिति पुंधी [सि जिन् नुद्राय, नृती संवाधे (वंस) । वा पुँची [पिवि] गृहस्थ, गृही भर वा बालिक (का ४, ६ कुता १९४)। बास 🖠 वासी १ वर वें निवास । २ दिवीसान र्वेडप्रीराम "विद्वाबार्च बार्च विद्वा मानेडी वयर गिसान । होता । २ विन्त होता, वह बाता । दुक्तिमी सम्म (श्रमा सुध १ १) । विद् १ बदावीन होना । क्लिड, क्लिबर, क्लिन 🖠 [रेवर्ष] विवीर 🐙 र पनि (सम वतः सावा) । वहः, निस्रायमाञ ] बर (तूप १ ४ १)। वाच क्रिडीयापन,

गिहिकोइना की [गृहकोकिया] पृह्तीना द्विपनमी (स ७१६)। गिहमहि पू [गृहमेथिम्] गृहस्य (धर्मीय २६)। मिह्नद पू [गृह्पति] देश का प्रमिन्ति सूदे बारा 'तह विक्रवर्धिन बेला नामगो' (पन = १)। निहि पू [मृद्दिम्] पृद्दी संदारी पृहस्य (सीव १७ मा नव ४३)। अस्म 🖞 िंधर्मी गृहस्य-वर्ग धावर-वर्ग (राव) । खिंग न [किल्ल] गृहस्यका क्य (बृह १)। गिहिजी की गिहिजी मृहिशी मार्वा, की (मुपा< १ भा १६)। गिहीअ वि [गूहीव] बाच उपात शहरा किया हुमा (स ४२≪)। गिहेलुग रेपो गिहेलुय (प्राचा २ ६,१ ८)। विहेल्य दे विहेल्डी देल्ती हार के नीवे की सक्दी (लिच्न १३)। नी की [गिर्] वाशी भाषा वार् 'बिरमुज्जर्म व सायामर्गं व गीविससियं बस्स (गडह) । गीआ की [गाता] श्रीमद्भववद्श्वेता जलमन उपदेश, बन्द-विशेष (चिंग) । गीइ की [गीति] १ सन्द-विशेष मार्थी-इत काएक भेरा २ थान ग्रीत (ठा ७) उप ₹**₹** £1) ( गीइया की [साविक्स] अपर बच्ची (चीपा काया १ १)। गीय वि[गान] १ पय-सम वास्य केव को नाया नाव नइ (पण्ड १ ४८ छण्)। १ कवित प्रतिनादित (खाया १ १<u>)</u>। ३ प्रसिक्त, विकास (संबा) । ४ म. मान, वास ग्रीर वाने क धनुमार वाना (वे २: वत्त १)। १ संगीत-कता कात-कसा संगीत-धास का। परिकार (खाया ११)। ६ पूं योजार्व प्रन्तवं बीर प्रस्काद नगैरह का बानकार केन मानु विशान वैन मुनि (का ७०६)। जस प् ['बरास्] एल-निषेप क्यार्व देवी का एक स्क (स रे १ रह)। स्ववृ [१४] रे विहास कैन पुनि (उप दरेश दी) बन ४' चुरा १२७) । २ संग्रेत-रम्प (मे १४)।

"पुर न ["पुर] नमर-निरोध (पत्रम ११,

**४९)। राज्य ["रवि]१ संग्रेत-रो**हा

(बीप) । २ पूंतन्दर्गदेशों का एक इन्ह्र (इक मत १ ८)। १ गन्वव-देखाका समिपति देव-विशेष (ठा ७) । ४ वि संगीत प्रिय, गान-प्रिय (विपा १ २)। शीवा भी भीवा] क्यूठ गएदन (पाप)। मुखि देवो मुख्या (दे १ २६)। र्मुद्धाकी दि दि विन्दुः २ वादी-पूँछ । ६ बयम नीच (दे२ ११)। शुंख सक [हम्] ईंसना हास्य करना। ग्रमह (हे ४ १६६) । न्देज सक [नुद्धा] १ प्रत-पुत करना भगर धादिका बावाज करना । २ वर्जना सिंह वर्षे वह का बावाय करना 'पुर्वति सीहा' (महा) । बङ्ग- शुंबंद (खामा १ १--पत ≭रमा)। मुख पूँ मिछा र दुस्याप्य करता बाबू (पडम १३ ४३)। २ पर्नत-विरोधः 'बु बचरपन्नयं र्षे (पदम द १ १४)। र्गुजा स्व [गुक्ता] १ नवा-विशेष (पुर २ ६) । २ फम विरोप पूरिपी (खाया १ १) गा ६१ )। ६ माना नाय-विशेष (प्राचा)। ४ परिएएम-विशेष (ठा ४ १) । १ पुत्रकारव पु बन, पुत-पुत धानावः "पु बाचनक्रद्रह धेनबृढं (ध्य)। ६ नायु-निरोध बुझ्नारन करनेवासा वायु (जीव १) जी ७) फला इस म [\*फम] फ्ल-विरोध पुत्रवी (मूर २ ६३ मुपा २६१)। गुंजाखित्रा भी [गुजाबिय़] गंभीर तथा टेड़ी बापी-बादसी वा बाबड़ी (बाबा ₹ ₹, ₹ १)। गुजाबिया को [गुजाबिक] वक्रसारिकी टेरी कियारी (ए।या १ र)। २ गील पुष्करिक्तौ (निष् १२) । १ वस नदी (पर्राप्त गुंबावित्र वि [दासिन] दैसामा ह्या (कुमा \* Y(); शुंजित्र न [गुडिन] दुन-दुन धाराज भ्रमर वगैरह का शब्द (दुमा)। र्शिक्ट वि [राजिन्द्र] प्रत-प्रत मानाव करने-

बाला (डा १६६६)

र्श्चिव देवी श्रीतास प्रवृत्तर (हे ४ २ २)।

₹3₹ मुजिद्धिम वि [वे] विएमीइत इस्ट्रा किया हुमा (दे२ १२)। गुंजाह सक [वि+सुख्] विवेरता। प्रजो-स्सइ (प्राप्त ७३)। गुरोह पर [ उन् + स्म् ] उल्लास पाना विकसित होता। प्रधान्स ह (है ४ २ २)। र्गुजाक्षित्र वि [उद्यक्तित] विकसित विक-सित (कुमा)। शुंठ सक [स्तू + भूत्रप्, शुण्ठ्] पूत्र नासा करना धूनी के रंग का करना पूस रितकरना। बुटा (हू ४ २१)। यहा र्गुटंत (क्रुमा) । र्गुठ पुँ दि ] प्रथम धरव पुर घोड़ा (वे २ **११:स ४१४)। २ वि मानावी क**पटी (बच ६)। र्गुठा की [बे] मावा बम्ब धर (बब ६)। मुठिम वि [मुज्जित ] १ बुसरित । २ व्याप्त ६ मान्सादित (दे १ ८४)। र्गुठी की दि नीरंग्रे की का नश्न-विशेष ( R E )1 शुंड न [दे] मुस्ता ये छन्पम होनेवाना कुछ विशेष (दे २ ६१)। शुंडण न [गुण्डन] दृति का नेप दूर का राधैर में लगाना 'रमरेलुयु बखाणि म नो सम्में सङ्गीतं (ए।या १ १--पत्र ७१)। र्शिक वि [र्गुण्डत ] १ वृति-नित भूति युक्त (पाप्र)। २ जिस पद्मा दुष्याः पुरुष्य प्रक्रियगतं (दिया १ २ — पत्र २४)। १ पिरा हुमा 'सरसी जह पमुद्र दिवा' (भूम १२,१) (४ माध्यास्ति प्राकृत (माना) ( ४ मेरित (परह १ ६)। र्मुयण न मिन्धनी इविना करना (रपण ta) 1 सुद पु सिन्द्री ब्रुज-विदेव (पाप)। शुंदछ न दि शुन्दछी १ कानव-मान चुक्त की याचान हर्य की तुपुत्तरम्भाः भारत वरकामिणीसंवक्यपुरलं (तुर १ ११६)। 'करिएरेडि कमहेडि य चलुमक' हरिनप्र'रन

कार्ड (मुरा १३७) । २ हर्ग-बर, धाराच-

वरोप, जुरी की इति: 'धर्मस्मारणेख्य रम

पुरुष "प्रालंबपु बनेरा ननद शीनावर्द्धि

परिस्तिमी (मुचा २२) १३६)। (र मालर

र्[द्यक्रम न दि] एक प्रकार की मिठाई, पुत राती में जिसकी 'पुंबरका' कहते हैं (दूस ¥ X)1

र्गुदा) ही [दे] श्विलु २ सवस नीव र्गुपा ( ( र र १ १ ) । र्मुच सक [सम्यू] पटनाः द्वर (बाह

**(1)** शुंक्त सक शिक्का देश । दुक्त (पर्) या गुपन (रुमा) । र्मुफ र् [गुरुफ] १ रचना, दूबना यन्तन

(स र श कि देश रहा रहते)। र्मुफ वृद्धि द्वी द्वीत कार्यनाद, कैस (वे २ 1(3 शुंपण व दिशियन पत्तर पेंकी ना सक्त-ब्रिटेय 'प्र'क्लकेरलप्राध्वति' (गर २, व) ।

शुर्फी की दिहै शताबी दूर बीट विरोध धोतर करनदूष (दे १, ६१)। गुग्तुस र् [गुग्तुल] पुर्वाचन स्थलिकेन, धूनन या पुरपुत्र (तुरा १११) । शुंगान्य ही [गुग्युत्य] कुला का चेह (बी , गुढ हूं [गुड] रे पुर दंड का विवाद साल

1 ) : गुग्गुल् रेगो गुग्गुम (१४१६) । गुरुष ११ [गुरुव] १ इच्छ इच्छर गुबद्धि (रेंबर (र्ल २ स्टब्स ०२)। २ बुतों की एक मार्ड (क्एए १)। १ वर्ती बानपृष्ट्(वे १)। गुरुद्धय रेना गारुद्धय (पीप ६६ ) ।

शुन्द्रिय वि [गुन्द्रित] प्रवाह बाला, प्रवान वृत्त 'निक्य प्रिया' (छय)। ट्रस्टन देश (तिन) १ वि ट्रवरात का श्चिमी। की. री (सर)। राक्षरता 🕏 [गूजरक] ट्रनपन देव (नार्व

मुझ देनो सोझ (नुसा २ १) । गुजर ई गित्रोरी १ चला का एक बाला मुद्धान्त्रभ वि [रे] नेपीत (पर्) । गुन्द १ [गुप्त] एक देर-वर्षित (दन ७ 11) ( नुष्यः १ रि [गुष] १ केलीव, विक्रो

गुम्बल किये (गर्म ११ १ १११)।

La gram tre ffeffiferend

२) । इ.मैचून, संबीत (परहर ४) । इर वि पिरी प्रत कात की प्रश्ट नहीं करने-बाता (१२४१) । इर वि दिरी प्रस्-मेरी प्रव बात को प्रक्रिय करनेवाला (वे २. £1): गुरमञ्जू र्पु [गुद्ध है] देवों की एक जाति गम्मा (त र १)। शद्भ (दे) न्तम्ब कूल-शर्वतः भरम्बुख पुद्र व दस्त कानुई (उदा)। गुटू के बो गोटू (पाम भन १६२)। गुट्टी देनो गोट्टी (बुक ६८)। गुढ मक [गुड्] १ हायी को करच वरैया से समाना। २ नवाई के सिष् स्थ्यार करवा. समाना 'पुराइ गईरे बक्कीकरेड खनकपा

इस्के (मुपा २००)। नवकु 'तुरियमुहिट्यं

वे लिम, पुरुष-चित्र । ४ योति औ-चित्र (वर्म

तका (ते १३ ८७)। गुड सर्कागुड ि निष्टच्या करता। द्वीर (संबोध १४) । शलर (हे १ २ २) बानू १६१) । २ एक प्रकार का अवद (राज) । सस्य म [सार्थ] नगर-विदेव (बाक्) । गुडदासिम वि [दे] लिगीहत १५ट्टा विवा हुष्य (दे२ १२)।

शुद्धाभौ [गुद्धा] १ हावी वा करव । २ यथ का काव (सिंग १ १)। মুটিম বি [মুটিব] বৰ্ষিত বুলিত হত-मंत्राह् (ने १२ ७३ ८७) दिला १ २) । गुढिआ भी [गुटिका] बानी (वा १७७)। गुरीसदिमा भी दि ] पुम्बन (१२ ६१)। गुदुर ईन [र] बीना या क्षेत्रा हेतु, देख बस्युर (निरिष्ठ २ १४४)। गुत्र नक[गुत्रय्] १ जिलता । २ धार्तन

राता, बार करना। दुस्तुद्र (नुकः दक्षः है

४ ४२३) प्रेर (दर) । दर गुजमान

गुन र् [गुत्र] क्याल (बूचीर २ ) । २

रतना वेबना (बाबा १ २, १ ७)।

(रा द १११)।

स्त्रन्तुभार वाएक भैला (गावा दि. दे) । ैर्साड क्षा [ अति] सर्व-नूत्यत्तं सी स्पना

बर्म (ठाँ३)। २ बान, मुख वनैष्ट एक ही साथ रहतेपाला वर्ष (सम्म १ ७ १ ६)। ६ श्राम नितय दान शीर्य संघवार दरेख बोक-प्रक्रिपद्मी पदार्च (हुमार बत्त 😢 मन् ब्राप्ट में १४)। ४ नाय, कार्या 'विश्ववेद्धि पुलाई मन्त्रीति' (हे १ ६४ दुव १ ६)। ६ प्रशस्त्रता प्रयोग (समा १ १)। ६ रम्बू बोरा बाया (वे १ ४)। व्याक्तल प्रसिद्ध यु का और यर्शन स्वर-विकार (सूत्रा १ ३)। व कैन मुहस्य को पासने का बत निरोप पुरान्त (पंपर ६) : ६ रप रह मन्द्र भनेष्ट्र स्थापित वर्गः 'एण-पश्चलक्तमा बलीवि कामी बहास पवस्ती (छाई १ व्या २०)। १ श्रायक्ता अनुव का रोसा (कुमा) । ११ कार्य प्रयोजन (सप २, १)। १२ सप्रवान समुख्य यौद्य (द्वार ६४)। १३ मेर विकास (बान) । १४ उसकार, दिल (पैवा इ.स. विकिस्ती १ नाव-कारक । १ कानार-झारक (वंचा १)। सार प्रशिवार] द्वता बरना सम्बास-वाधि (नव १)। चेर र्षं विक्यो १ एक स्वयुपार (भावन)। २ एक वेन वृति सीर ब्रम्बनार । ३ वेदै-विरोप (सब)। द्वाम व [स्थान] इलॉ वा रतकप-रिरोप मित्यादि वर्षेण वन्ध्य प्रण-स्वातक (रम्म ४० पथ १.)। विश्व र्पु विधिको पुरत को प्रवान बाक्नेसना नत नव-रिरेच (सम्बर् ७)। द्रुट रि [स्योजनी इलस्य (पुर १ रः ११)। यत्र ब्लाभन, स्तुरि [कि] इल ना पानरार (दाहा कर बहा का ४१ *के दुस (२१*)। पुरिवर्ष [पुरण] प्लीपूरन (तूस १ ४) संत ति [यन्.] इटी इल-दुक्त (बाबा ११६)। स्पन्नस-बच्छर व [ रस्तरांपलार] कारवर्ग विदेव (भग)। वंबी कि विन् दिया प्रणी, दुरानुष्ट (या ११) इत वर्थ १)। इतय न [ग्रा] केन मुरूब को शामने बोगय-बाउ रिटेर (वॉर) : "सिक्य न िशिमरी

२ तम् बारका की सा (सुपा ३२७)।

१६ मा ४४)।

तीसपुरहो' (कुमा: प्रामु २६) ।

उनवासीम ११ (राग ११)।

रिनों का उपनास (मेबीब १८) ।

मुप्रमिक हैमाचार्व के प्रगुद ने (दुप्र १६)।

एकु) व्यक्तमु स सबतो' (पिर ६४४) ।

११)। ३ स्व-पर की रक्षा करनेवाला, प्रति पुक्त, मन वगैरङ् की निर्दोप प्रकृतिकाला (उद ६ ४) । ४ एक स्वनाम प्रसिद्ध पैनाचार्य गुत्त देखों गोत्त (पाय मय पादम)। ।यर पूं ["कर] पुत्तों की बात मनेक इस-गुराण्याण न 👣 पितृ-सर्पेश (दे २, १६)। बासा प्रसी (पठम ११,६० प्रामू १३४)। गुसि भी [गुप्त] १ वैदवाना जेन (गुर १ गुष्प देखो एगूज "पुगासट्ट परामचे मुराउदेव ७३ मुपा ६३)। २ क्ठक्स (सुपा ६३)। तु बह इहायक्षे (कम्म २, व ४ १४ ६ मन, वचन धीर कामा की धशुन प्रकृति को रोकना। ४ मन वर्षेष्ट्र भी निर्दोप गुण दि [गुण] पुता समृतः 'वीमगुणी प्रवृत्ति ठा२ १ समय)। गुलावि [र्गुप्र] मन वरीख् की निर्देश प्रवृत्तिवासा गुक्तज न [गुजन] १ पुजनार (पर २३६)। संबद्ध (परहूर ४)। पाउर पूर्विपासः] २ प्रम्य-पायवर्तन मानुति "प्रणण् (? प्रण बन का रज़रु कैरबाना ना यम्मल (मुपा गुजणा की [गुजना] अपर देवी (सम्पन्नी ४९७)। सण पू ["सेन] ऐरवट क्षेत्र में स्पन्न एक जिन्देव (सम ११६)। गुणवासीस क्षेत्र [ एकोनपत्वारिशम् ] शुच्चि भी शिक्षि] मोपन फाल (पु १२)। गुचिकी [दे] स्वलात (६२११ मणि)। गुणवृद्धिक की [गुणकृद्धि] समावार घाठ २ इच्छा समिताया। ३ वयन सावातः। ४ वता बद्धी। १ सिर पर पहनी वाली शुणसण पू [शुणसन] एक कैन भाषार्य को कून की मत्ता(दे२ ११)। गुलिदिय वि [गुप्तेद्विय] इंडिय-निपद्व करने , बाला, धंयतेत्रिय (मग स्हाया १ ४)। गुचिय वि [गीप्रिक] स्वक, रक्षण करने-बास्ताः भवरपुत्तिए सङ्गावेद्दे (कृप्य) । मुचिय वि[गीतिक] शोदी समान योज-बला गौविया (क्रूप ३४४)। गुचियास देवी गुचि-पास (पर्मंत २६)। शुरव वि [प्रधित] प्रमित व बाह्या (स ३ ३ प्राप्त पा ६३ कम्यू)। गुर्भेड पूँ [के] भास-पत्ती पश्चि-किशेष (दे २, १२)। गुद पूँची [गुद] पांद कुस (दे ६ ४८)। हुद्द न [गाह्रह् ] नगर-विरोध (मोह ८८) । गुप्त धक [गुप्] स्थादुन होना । गुप्पद (दे ४ १४ । यह गुर्लन, शुप्पमाण (दुमा ६ १ २० कप मीप)। शुष्प वि [गोप्य] १ छिपले गोप्य । २ व एक स्वाप्त (हा ४१)। गुप्पइ की [गोप्पकी] यी का कर हुने करता

यहरा 'को बतारने बनाई, निम्नुहर दुनाई-

गीरे (यम १२ दी)।

**से१२२४)।** गुष्पय रेखी गी-पय (पुक्त ११)। शुष्फ पुं[सुरुफ] फीसी पैर भी गाँठ (स યાં ફ્રેર ₹ા गुफगुमिझ नि [वे] पुनन्ती सुनन्ध-पुक्त (के र १३)। गुरम देवी गुण्फ (वर्)। गुम सक [गुफ्] दूषना गठना । पुनद (E t 344) 1 गुम सक [भ्रम् ] दूमना पर्यंटन करना भ्रमण करना। दुमद (हे ४ १६१) । गुमगुम े वक [गुमगुमाय्] १ पुम र्गुमर्गुमाओ र प्रम बाबाब करती। २ महुर सम्बद्ध व्यक्ति करता । यह सुमसुमंत्त, शुमगुर्मित, गुमगुमार्यंत (मीप लावा १ १ कप्प पत्नम ३३ ६)। शुसरामात्रय वि शिमरामायिकी विसने 'पुन-पुन' धादाज किया हो वह (ग्रीप) । गुमिन वि [स्रमित] समित पुनाया हुमा (दूमा)। गुमिस्र विदिशी रमुद्र मूल्या २ महत यक्षाः ३ प्रस्वनितः । ४ प्रापूणः भरपूरः (३ २ १ २)। शुमुगुमुगुम वैको शुभगुम । बद्गः, शुमुगुमु शुमंत सुमुसुमुस्मेत (परम २ ४ । 1(5 93 गुस्स धक [सुद् ] मुग्ब द्वीता पवज्ञता म्यादुल होता । ग्रम्म६ (ह ४ २ ७) ) गुम्म पू [गुम्म] परिनार, परिकर 'श्रंपी युम्मसंपरिकृषे (सूच २ २ ५४)। गुम्म पून [गुप्त] १ नता बक्की बन्हणति-बिरोप (शरास १)। २ मादी बुग-धरा (पाय) । १ धेना-विशेष जिसमें २७ हाथी, २७ रव ८१ भीड़ा भीर १३१ व्याचा हों एँमी मेना (पउम १६ १)। ४ दून्य, समूह (धौपः सूच २२) । १ लच्छ का एक हिस्सा बैनमुनि-समात ना एक घंश (धीप)। ह स्थान, बयह (मीम ११३)।

शुष्पंत म [दे] १ रोमनीय, राप्या । २ वि

मोपित राजित (वे २ १ २)। ३ छैनू इ.

पुरव पवदाया हुया, श्याकुल (वे.२.१.२)

शुष्पा की चि विष्ठात विरोप (मवि)। ज्ञाणिय वि [जुणित] वहाबा हुमा पाठित 'तत्व हो सब्द्रण सरनायी धगुन्धेवाश्यायो महरविकायो कुछाविधो (महा)। गुणि वि गिुणिम् द्विष्य प्रश्वासा (स ११७ टी बढर प्रानु २१)। गुणिश्र विशिवित्री १ धूना ह्या जिल्ला पुला किया नया हो नह (मा ६) । २ निवित यार शिया हुमा (चे ११ ११) । १ पठित सरीत (सीप ६२)। ४ जिस पळ की सन्ति नी नई हो मह परावर्तित (यन ३)। गुजिस्त वि [गुणवन् ] गुणी प्रशन्तक (रि १११)। गुण्य देखी गोणा (धणु १४ )। गुल्ह (यप) देवी गिल्ह । प्रसन्द (प्राप्ट (\$\$) I शुक्त न [गात्र] तापुण प्रापुणन (नूच २, · 1)1 गुना वि [गुप्त] युक्त प्रचयम, विद्या ह्या (एगमा १ ४) पुर ७ २१४)। २ र्यवत (बत्र | 16

वर्ति-विशेष, कारीपन से ऊँबा-नीवा नमन (ठा व) । आयव न ["सपव] साधसाद

यच्या यौर इरानन (वर ४)। सकिमस्स्था

गुरुष प्रशिक्षको प्रथा प्रयम् (१३

गुसुगुंब देवो गुस्रगुंब = पर् + सिप् । द्व

शुक्लाइक वि [वे] १ पूर्व मूर्व (१ २,१ १)

ग्रोव १६६: पाम पड्)। २ धपूरित पूर्ण

नहीं कियाकुमा (यव्)। ३ पूरित पूर्य

कियाह्मसा (दे २,१३)। ४ स्वर्तितः।

बिदुद्ध (वे २ १ ३ वर)।

किया हुमा (कुमा ७ ४७)।

रक्षत्र (योग १२३: ७६६) ।

निव (दे२ ६२)।

इपा (शहर)।

गुम्मा 🛍 👣 रच्या, धमिनावा (वे २ € )ı शुर्मा की [शुरुमी] रुतपरी बुद्धा, बटमन 🌪 (उन्ह १६, १६८) तुम १६ (६८)। सुम्बर् एक [सुम्फ् ] द्वीक्ता कक्षाः हमहरू (शी) (स्वय १३)। गुद्धा देखी गुजम (दे २ १२४) । गुरव देतो गुरू भो पुरने सद्धीखे बन्न षाहेद्र पोसनुविष्यो (पठन ६ ११४)। गुरु ) पूं[गुरु] १ तिसक विदा∺सता हुरुअर पदानेवला (वय १; शरा)। २ वर्गोरादेशक वर्गोतार्थ (विशे ६६ )। ६ माता पिना बंगैख पुरुष स्रोप (ठा १)। ४ बहररति अह-निरोप (पदम १७ १ ; पुमा) । १ स्वर विरोध को मात्रात्रामा सा दैननैयः स्नयः किसके बीचे मनुस्कार मा संयुक्त स्पन्न ही पैता धी स्वर-वर्त (पिय)। ६ वि वहा, महान् (छवा है व व )। ७ भारी भोतिन (ठा १ १ भरम्प १)। स क्षपुरु क्तम (कम्म ४ ७२ ७१)। कम्म वि [कर्मन्] कर्ने शा बोक्सला, पासी (नुरा२६४)। इस्तर द्विस्त्री १ नगी-पार्वे रा राजीप्य (पंचा ११)। २ हुस-गरिगर (छ: ९७७)। शङ्की [गाति]

गुम्तिम वि 👣 मूब वे क्वाहा हुमा कन् गुष्क्षांविया श्री [गुहभानिता] बाव-विशेष

इ.संबन्धित दूस से ज्वासितः। ६ विवरित गर्ख देवो गर्ख (लाय ११)। गुरुणी की गुर्बी १ प्रस्तानीन की (तुर शुक्तात देवो गुन्म । प्रानवह (ह ४ २ ७)। ११ २११)। २ वर्गभवेशिका साम्बी (हप गुम्महिम वि मोहिती मोह-कुछ मुन्य ७२= दी) : गुरेड न [गुरेट] इक्त-विरोप (दे १ १४) । गुम्मागुम्मि च पत्नामन श्लेषर (भीप)। गुड•ेको गुड⇔पुत्र (ठा ६, १ ८) शासा गुन्सिक वि सिग्बी १ मोद्रशांत मुद्र १ कामा ११४ भीष)। (दुमा ७ ४७) । २ वृष्टित सबसे वृष्टा गुळ न [व] भुम्बन (दे २ ६१) । गुक्तुंक दक [दर्+धियू] क्रंबा शुस्तिय 🛊 [गीरियक] गोधनाम ननर केन्स । पुषपु कर (हूँ ४ १४४) । संब शुक्रमुंबिकण (बुमा) । गुस्त्रीय देवो गुलुगुंद = वर् + नमन्। द्रसद्ध बार (हे ४ १६) । गुक्रगुष्ट वर [गुक्रगुवान् ] 'उन्हरू' पानान करता, हानी का हुएँ से जिनाइना ना बोलना। **पक्ष-गुब्नाुलंब गुब्नाुलंब (बन १ ६१ टा**) ख्यापटमंद (७१८ १२)। गुस्रमुख्यस्म । न [गुस्रमुख्ययित] हानी भी गुसगुद्धिय रे वर्षना (व ४) मुना १३७) । गुक्क स्क [चाटी कृ] कुछामद करता। कुल नद्र (१ ४ ७३) । नद्र- गुस्स्तंत (कुना) ।

(प्राप्त रहे, तुमार टी)।

गुड़िम वि दि] पवित विलोहित (दे र,

र १। पर्)। २ तुर्नेट,कम्बुकः ऋदुवी

शुक्तिमाकौ [दे] १ दुविका। २ केट

नत्तुल । वे स्तरक पुरुद्धा (दे २ १ व)।

गुक्रिमा की [गुक्रिय] र नेती प्रकेत

(नक्षा काका १ १३ मुना २६१)। १

वर्शक प्रध्य-विरोध नुपन्तित प्रध्य-विरोध

राजुद्य वि दि ] प्रतिमत पुरुषदाचा सता

(भीता द्याचा १ १--पत्र १४) ।

बद्धाराता (धीरः कः) ।

(प**व ४)**≀

पुषियों (पास)।

र् ["सद्याद्याचिक] धुव के भारै (शृह ४)। प्रकार (हे ४ १४४) । गुलुगुम् सर्व [स्तृ+सम्बृ] देश करना प्रसर्व करना। प्रसुद्ध कर (है ४३६)। गुलुगुंब्रिश वि [बन्नमित] डॅबा किय हम, अक्षमित (दे२ १३ कुमा)। गुक्रसम्बर्णिया को [गुक्रसम्बर्णका] एक वर्षः की मिठाई, गोलपापकी । २ प्रकृताना

गुलुगुंक्तिञ्ज वि [वे] बाद के मन्तरित (र 4 64) t गुक्गुङ देवो गुक्गुक । क्रुवुनींत (पनि)। वह गुलुगुसँव (पि ११६)। गुलुगुकाइय } देशो गुलुगुकाइम (दीप गुलुगुलिय ) पण्ड १ ११ व १६१)। राह्य च्या वि । अभित पुत्राना हवा, ( 4 2 2 2 ) 1 गुकुष्म ६ [गुकुष्म] इच्या स्वयम(ग्राम) गुद्धाय वि [ गुरुमवन् ] वता समूहवानी पुस्य-पुक्त (कामा १ १—१४ ४)। गुम वेबो शुद्ध च प्रपृ। प्रवेति (कप १४)। गुनसम् को इससम् भूरिन्युनवसीराज (#ft) 1 गुवाक्रिया विविध्योगोभाक्रिमा (वी १०)। गुविभावि [गुप्त] आहुव धुन्न(सा⊍ ४--पन १६१)। शुविकावि [शुपिक] र ज्यून, स्वयं <sup>कार</sup>न लिमिक् (बुर ६ ६३) कर इ.स. १ मध्य १ ९)। र नुभन्नही वंगन्त (छर ६३ <sup>हो</sup>)। 'इको करह कम्म स्त्रो क्ष्युरस् पुरस्कारिकर् । श्वो संदरह नियो वरमण्डनकप्रशुमितं (रव ४४)। गुविस वि दि] चीनो का बना हुना निसी-

पाका (मिट्ला) (उद ६,१)।

₹**७७)** ।

(पाच)।

१ अलु २७१)।

गुब्बिजी की [गुर्बिजी] पर्वेवती की (पुण

शुद्ध शिक्ष्ण कार्तिक एक विनाजन

ग्रहा की [ग्रहा] प्रका, कक्ट (पाम' का ९

गुहिर है [है] कथीर, वहरा (वामा कप्प)र

गुह वेचो सुमा। प्रदूर (हे १ २व६)।

सुद्ध वि[सूद्ध] पुत्त, प्रव्यक्षत विता हुमा (पर्याहर, ४ वीर)। दंव पू [ प्रस्त] १ एक मन्तर्शिप श्रीप-विशेष । २ शीप-विशेष का निवासी (ठा४२)। ३ एक वैन मूर्ति। ४ 'धनुत्तरीपपाविक क्ता' सूत्र का एक सम्य-यत (पनुर)। ५ मध्द क्षेत्र का एक मानी चहवर्ती सन्ना (सम १६४)। सुद्व पद्ध [शुद्ध] विद्याला प्रस रक्षताः बक्त गहर्त (स.६१)। रोहर न सिधी इ. विद्या(ते<u>ड</u>) । गुह्च न [गुहून] विद्याना (सम ७१)। गृहिय वि [गृहित] क्रिसमा हुमा (स १ ६)। गुण्ड १ (प्रत) देखी गिण्ड । पृथ्ड (क्रमा)। गुन्ह े सेहः गुण्हेप्पिणु (हे ४ ११४)। राध्य वि [रोय] १ गले योग्य, यले वायक सीत (ठा ४ ४ — पत्र २०० वका ४४)। २ न. बीत धानः 'मखहरमेयमुखीए' (पुर व ६६, पा ११४)। रों द्वान दि स्तनों के उसर की क्स-प्रनित (R 2 88)1 गेंद्रुख न [के] कस्तुक चौसी (के २ ६४)। गेंड न दि | देवो गेंठुम (दे २ ६६) । रोंड्ड भी वि श्रीका, केन पम्मत निनोद (૧૧૨ ૧૪) ા गेंद्रम पू [करदुक] वेंद, वैदा चेमने की एक बस्य (हेर ४७) १८२, सुर १ १२१)। गेळावि [वे] मस्ति विवोदित (वे २ ८६)। गेळाळ न दि] पीना का सामरण (देश EY) 1 गेउम्ह वि पाद्य विद्युप्तिय (है १७८)। गडण न [दे] १ फेंक्स, क्षेत्रल । २ दे केस 'तस कीडराक्य सर्थमना मासमाउ नहुँ (सन ६४ व टी)। गेडून दिं} १ पद्ध, कीच कौदी । २ स्व मक-विरोप (वे २,१४)। गेड़ी की दि] मेड़ी मेंद खेलते की सकती (पूमा) ।

गण्ड केवो निण्डा गेरहाइ (हे ४ २ ६ जनः

महा)। भूका पैराहीम (कुमा)। मर्कि

गेरिहस्स६ (महा) । वद्य- रोज्हेत रोज्ह्याज

(मुर १,७४ विया ११)। संकृ गेणिहसा,

गण्डिकण, गण्डिम (मगः पि ४०६ कुमा) । इ. गेज्ड्यस्य (उत्त १) । रोष्ट्रज व प्रिष्टुज] प्राचान, जपाचान सेना (स्प १६६: स १७६)। राज्याच्या की [प्रद्वा] प्रदुए प्राप्तन (उप १२१)। गेण्हाविय वि [माहित] प्रहल कराया हुमा (स १२६: महा)। राण्डिय म दि उट:-सूत्र स्तनाच्यादक-वस ( R 2 EY) I शंद्ध देनो गिह (भीप)। गेरिका) पुन [गैरिक] १ वेद वास रह गेरुम की मिट्टी (च २२१ पि ६ ११८)। २ मांख-विशेष रत्न की एक वाति (पर्या१---पभ २६)। ६ वि वेद रंभ का (क्यू)। ४ पूं विस्एमी साबु, सांस्य-मव का धनुवानी परिवासक (पन १४)। राक्षण्य ) व रिख्यस्य रिम बीमारी स्वानि रोखन (विशे १४) कर ४८६ धीव ७७ २२१)। गेबिका । न प्रिवेशक] १ वीवाका प्रापु-गेबेळा पर्मणने का गहना (बीप सामा रोबेट्यम १२)। २ वैदेसक देवींका वियान (ठा १)। १ पूँकतम भैरही के देवों की एक वार्षि (कप्प) भीप) सन भी ३३० गेथ्य वेद्यो गयेळा (धाना २, १६ १)। रोह पूर्त शिह्यों वर, 'त नहीं न वर्ण न स्वयंत्रों भेदों (वका ६८)। ग्रहतिही पृष्ट, वर, मकात (स्वप्त १६) धरर)। जामाज्य पू [\*आमात्क] पर थमाई सर्वेश समुद के बद में प्युनेवाला बामाता (क्य पु ३६६) । एगार वि ["क्यर] १ वर के शाकारताबा। २ पू करनकुस की एक चारित (सम १७)। ह्या वि वित् | परनामा पृक्षी संसाधी (पक्)। ासम 💃 🖺 भम ] गृहस्थानम (पडव ६१ =4) 1 गेहि वि [गुद्ध] सोचुप मध्यासक (मीव ED ) 1 गोहि भी [गृद्धि] भाषकि गाम्मै वाहम

(ब ११३) पण्ड १ ३)।

रोड़ि कि [रोडिम्] तीचे वेची (खासा १ (Y)) I गेड्रिश कि [गेड्रिक] १ वरवाना पृही। २ पूरे मर्ता, बनी पवि (उत्त २)। गेडिस [गृद्धिक] भरवासक, सोमुप नामकी (पएइ १ ३)। गेक्षिणां भी [गेहिनी] पृक्तिकी भी (पुपा ३४१) क्रमा कप्)। गो पूँ [गो] भूप राजा 'सहमो यो नूपपपुर स्तिसी वि' (बन १)। माहिसक न िमादिएकी नी और मैंस का भूंट या समुद्र 'निष्पुर्व गोमादिसम्' (स ६८१)। वार्द्र[यो] १ यरिम किय्या(भउड)।२ स्वर्गदेव-मूमि (दुपा १४२) । ३ वैश क्सीवर्व। ४ पशु वानवर। १ की गीयाः 'मपरप्पेरिमदिरिमानियमियविष्यमण्डोरिएसो योज्यं (विसे १७१८) प्रसम १ % ५ ३ मुपार७४)। ६ वाखी वान् (सूमारै १३)। ७ भूमिः च महुद्द विमन्त्रणयोगरास् भोमी पूनिकाएाँ (गउड सुपा १४२)। ैमाल रेबी वाल (पूप्त २१६) । इञ्ज वि मित् ] मो-पुक, जिसके पास धनेक मो हो पह(दे२ ६०)। छछ न ["कुक्री १ गीमॉकासमूद्ध (भाव १)। २ मोहायो-बाइट 'सामी मोजसम्बदी' (बाबम) । हिंद्रिय वि <mark>"कु</mark>िक पो-भूतकाबा बोकून का मासिक नोवला (महा)। किरुक्तिय न **िकिट इतक** | पात्र-विशेष जिसमें गी को भागा दिया भागा है (सम ७ ८)। की ड पूँ [किटिट] पतुर्थों की मक्की वकी (की १६)। क्लोर, स्तीरन शिंधीर यैया क्स दूव (सम ६ स्थाया ११) । स्याह पूर्िपद्र विस्कानी पी मीको धीनना (भरह १ ६)। सम्बद्धान मिक्कनी पो-मार्ख (एप्सार १०)। (पेसाच्याकी ["निपद्या] मासन क्रियेप भी भी तरह बैठना(ठा१ १) : "तिस्यन ["वीर्थ] १ गौधों का तालाब मादि में प्रतरने का चस्ता इस्य से नौकी कमीन (श्रीव ६)। २ लवस्य समुद्राननैया की एक वन्ह (ठा१)। त्तास वि ["त्रास] १ गौमों को त्रास देनैवाका । २ पूँ एक नूटब्राह्म का पूर (विदा

१२)। दाम पु[दास] १एक केन-सुनि, सहवाह स्वामी का प्रवस रिक्य : व एक कैनमुनिवस (कमा ठा १)। दोहिया की ["दोहिका] १ गीका देखतार यासन विरोप भी दुइने के समय जिस तथा नैठा बाता है उस तरह का क्यरेशन (ठा ४, १)। दुइ रि [दुइट् ] भी को बोहले-राजा (पर्) । मृद्धिमा 🗗 ["पृक्किन्न] सान-विशेष पीयों की चरा कर सीन्ते का धमद सार्यकाला चैलाव्य बोब्रुलियाँ (रमा)। पर्याध्यम विषय है । यो का चुर हुवे उठमा व्यूक्त 'कहम्मि वस्मि बीवाण भागद नीपन व मनवनहीं (माप ६६)। २ धोतकपरिमित सूमि (सर्ह)। ६ वी का चुर (ठा४४)। सद्दूं [\*सद्र] सेहि विरोप शासिम्ब के पिता का नाम (ठा १ )। मूर्मि की [भूमि] मौको को चरने की जन्द (पात्रम) । स वि [सन् ] नौवाना (विषे १४१=)। सक्त विवासी का रतः (ए।सारः ११--पत्र १७३)। सम व [सव] नोवर, गीका मन मो-विहा (मग ४,२)। मुचियाको [मूक्तिका] १ वीकामून सोमून (सोव६४ सा)। २ गोमुत्र के फाक्मरजाबी गृहर्गक्ति (र्यक्स २)। मुद्दिल न ["मुस्कित] नौ के पुत्र की भाकारवाली कृति (स्तावा १ १ )। सहग पुरिषक] तीन वर्षका क्षेत्र (सूच १ २) । रीयण जीन [रोचन] स्वनाम-बयात पीत-नर्श हष्य-विशेष जोमस्तकरियत मुप्त-पित्त (गुर ११९७)। की या (पंचा ४)। सिर्हाणया की [सिर्हानका] स्पर मूमि (निषु १) । स्रोम 🖠 [क्रोम] १ सी नारोम काल । २ डीमिक कम्यु-विरोध (जीव १)। बह्र पूर्णिति | १ इन्द्र। २ नुर्व । ३ राजा (नुपा १४२) । ४ महादेव । १ बेर (हे १ २३१) । "बद्य पूं["झितिक] वीथों की चर्च का चतुकरत करनेवाला एक प्रचारका उपल्यो (शाला १ ११)। दव केयो पय (राज)। बाह्य दू विवाट] नीमों शा बाहा (दे १ १४१) । स्वहूत देवी बद्दय (धैप) । साख्य की [शास्त्रस]

वीधों का वाड़ा (तिचूब) । इज़ न विसनी पीमॉक्स समूह (नादंश मुर १ ४६)। गोअ देखो गोव ≕गौतम्। इत्गोअणि उद (नाड-मालती १२१) । ग्रेमंट पुदि] १ वी का चरछ । २ स्थल श्रहाट, स्वत में होनेवाला श्रहाट या सिंवाड़ाका के देव (दे२ ८६)। गोअमा ही दि] रच्या ग्रह्म्बा (दे २, ६६)। गोशका की [व] दुव वेक्नेवानी की (दे र ₹5)1 गोअर पृगोिचर अधनत्तम (स्त ४ २ २)। गोमस्त्रिती श्री [ग'पास्त्रिती] गारीसर वो धवसमुभिने हो वर्राव्य कुन्हा स्कृति महरोसा । पुष्टिमयोग्पविद्यौए मन्बर्फाप्युक्त निम्मविद्यो । (वर्गेवि ११)। गोळा की [गोहा] नवी-विशेष भोरावरी नदी 'गोबाक्षकुक्षकुक्षंत्रमाधिका वरिप्रकी देश' (च १७१)। गोभाक्ष [क] नक्षी कनती क्षोटा बढ़ा (दे२ वर)। ग्येत्राञरी की [गांवावरी] नवी-विशेष नेतनधे (वा १११)। गोलाकिया और [के] वर्ष ऋतू में अस्तर होनेनावा बीट-विरोज (दे २ १ व) । गोमावधे ध्यो गोमामरी (हे २ १७४)। गोबर व [गोपुर] नवर सावित्वे का वरवाजा (सम १३७ सुर १ १६)। गोबास्य वि [गोकुक्षिक] गो-वन पर नियुद्ध पुरुष मोजुन्द-रक्षक (हुम ६१) । गोंजी }क्षे[क] संबंध बीर(देश हर)। गोंड देवी कोंड = कीएर (इस) । गोंड न [दे] कास्त कर बंदक (दे २, १४)। गों की क्षी [क्षे] मंत्र गैर (के २ १४)। गोंदस केवी गुंदस (बांग) । र्गोदीजन [दे] म्यूर-पित्त मोर नामित्त (4 2 40) 1 गोंफ (ुगुस्फ] कास्थ्रील फैर की बॉट (TUE (Y) धोकण ) दृंशिकर्यों १ वी वा वात । धोकम ) १ वो पुरताला चुप्पर-विशेष

(परहर १)। १ एक कन्तर्शीव, डीप-विशेष । ¥ मोक्स्प्रै-द्वीप का निवासी समुख (ठा ¥ २) । गोक्किन देवो गो पश्चित्रय (एन १४ )। गोक्खुरम 🖞 [गोश्चरक] एक बौद्धि श्र नाम मोसक (स २१६)। गोषय दे हि प्राचन-सार, क्षेत्रा, चास्क ( R & Eu) 1 गोष्ट्र देवो गुल्ब (से ६,४४० ग्र.११२)। गांच्याभा) पून [गोच्याक] पार सौधा गोष्ट्रमा । साथ कॅरने का बेक्स बरद (क्या फ्यार ४)। गोरकड न दि] पोमर, नो निहा (मुन्द १४)। गोप्यक्षा की [व] मध्यरी और (दे २, १४)। गोच्छिय देखो गुच्छिय (धीन सम्मा १ १)। गोडड रेती गांकप्रड (नार-मृन्द ४१)। गोबक्कोमा की [गोबक्कोना] कुर नीट-विशेष, डीन्बिय बन्तु-विशेष (पएस्ट ११)। गोळा पे हि । शारोरिक दोवराला वैव (सुपा २०१) । २ वलेवाला, पवेदा पानक **पीर्मार्थस्टलाई भीयं नडनहम्मत्त्रोम्बेर्ड्**। विविचयोग्त धक्किस जनसङ्ख्याम् । वर्ष (पडम बर, ११)। रमेट्र पूं [स्पेप्त] योबाइट, धौम्रॉ के खले का स्थल (सहापदस १३४ व्य ४४७)। गोहासाहिक र् [गोछासाहिक] कर्न-क्रुबॉ को जीन प्रदेश से सबद नाम्लेबाला एक बैनामास भाषामें (हर ४)। गोद्रि देवो गोद्री (पारम) । गोट्टिक पुरिगोष्टिक] एक वरश्यों के गोहिका उस्त्य मित्र समान-नमन रोख गोड्डिडन (ए।सा १ १६—पत्र २ ६ क्पिर १ २---पव ३७)। गाईत की [गाईत] १ मएइली समान कर-वार्तीकी समा (बाक्र क्यूनि १ छावा १ १९)। २ पार्चाचाल परावर्ष (कूमा) । गांड पूं [गीड] १ फेल-विशेष (स २०६)। २ वियोगकेल का निवासी (पर्वहर १)। गोड पूँ [वे] बोड़, पाद, पैर (तार—वृष्ण **{**₹5}: गोडा को [शाका] नदी-विरोध, दोरावरी

(पाप १६)।

मोडी की [मीडी] ग्रह की करी हुई मरिए, |
ग्रह का सक (शह रें)।
मोह कि [मीडी रें ग्रह का कता हुमा। रें
माई कि [मीडी रें ग्रह का कता हुमा। रें
माई हिंदी केवी मोड (मुक्स रेरे)।
मोग्रा देंदी केवी मोड (मुक्स रेरे)।
मोग्रा देंदी रें बाली (के रे रें)। रें
केत कुमा, कसीवर्ष (के रे रें के जुमा
है रें रेंकर मुना रेंक्श वीर्या कर है।
ग्रामा रेंदे रेंकर मुना रेंक्श वीर्या रेंदी।
दूसा हिंदी प्रामा करता मीर्यों का
मासिक (मृना रंग्य)। व पूंछी [पीठी]
मीर्यों का मासिक, मी बाला (कुमा रंग्य)।
गोग्रा (शो पूर्व [मो] केव 'मोग्रा मोग्री
(महं कट)।

माण पि [मीग] १ पुर नियन प्रसमुक स्थापं (विचा १ २) सीप) । २ सप्रवान समुख्य (सीप) । नोप्तासका की गित्राहता दिया, गाम (सुप

शोर्णसञ्जा की [सत्राह्मना] मैया, गाम (मुपा ४६१)।

गोणाच ) पूंत वि विध का बीजार रखने गोणाच्य } का बैता (बा दे१ स ४८४) गोणास्य } गोतस्य सर्व वर्ष का यह कछ-पहित संघ की एक बाठि (व्यह १ १) बर पूर दे। गोणा की वि बाब, गेगा यक (पह)।

गाणिकः पुंचि ने समूत्र, यौधी ना समूत्र (वे २ १० पाष) ।

गोणिय दि [वें] वीसों का व्यापाएँ (दन १)। गोणी की विं] याम वेता (योग २६ मा)। गोण्य केतो गोण = वीसा (कप्प स्वाया १ १—पत्र १७)।

भोतिहाजी की [प् गोतिहायजी] कोवत्ता यो को बस्सी (तंदु ६२)।

गोल वुं [गात्र] र वर्षेत पहार (या १४)।
२ न तमा योग्निक प्रात्या (वे १२,
१) । वे कर्मनिकोत निर्मेश प्रधान से
प्राणी कण्य या गील वाधि दा क्वलाता
है (क्व २, ४)। ४ वृंत, बोठ नेत, दुव बार्क पत्र मुश्तान पर्एणा (क्व १)।
केलासिय न [स्लिसिक] गाम-शिवाम दुक है बदरे बुदरे के साम का क्लारित (हे ११ १७)। दिवसा की [दिवसा]

कुल-देशी (भा १४)। "कुस्सिया हो। ["स्पर्शिका] बल्गी-विरोध (पराण १)। पेका संस्कृतिकारी शर्मक पहल के साम है।

गोच पुंत [गोज] १ पूर्वन पूरव के नाम वे प्रसिद्ध मनस्य—चंतिर (एवि ४१ सुन्व १ १६)। २ वि वाणी का स्त्रक (मूप

१ १६)। २ वि वाणीका फाक (मूप १ १६ १)। गोलि वि [गानिम्] धमान गोनवास, इट्टम्बो स्वयन (मुगार १)।

गोलि देवो गुलि (स २४२)। गोलिक दि [गात्रिक] समान गोनवासा स्वतन भाईनंद (मा ७)।

गारधुम देवो गोधुम (स्क) ।

गोत्पूमा देवो गांधूमा (स्क) । गांधुम , पूं [गोस्तूप] १ न्वाएवँ विक-

गासूस ) देव का प्रथम-क्रिस्स (सम १४२ चित्र द)। २ वेतल्यर नागराव का एक सावास-पर्वेत (सम १६)। ६ न. मानुपोलर पर्वेत का एक क्रिक्स (शिव)। ४ कीस्तुम-

राज (सम ११०)। गोधूमा की [गास्त्पा] १ वापी-निरोप संजन पर्वेट पर की एक वापी (सा ११)। २ सामेन्स की एक सममित्री की साजवाणी

(छा ४२) । गोदा की [वे गादा] नदी-विशेष गौदावरी (पड मा १४४) ।

गोप पु [गांघ] १ म्बेन्स देश । १ नोव देश ना निवसी पमुष्प (राज) ।

गोधा की [तोधा] पोड़, हाव के कलतेवाली यंक साप की बाति (पयद्व १ १ छाता १ ८)। गोधा केवी गोणग (खादा १ १६—नव

२ )। गोपुर व्यक्ति गोउर (वत्त ३) व्यक्ति १ वर)। गोप्यहेब्बिया औ [गोमहेब्बिया] यौगों को

वरने की वगह (धाना २१ २)। गोपन्यारणी [दे] मोफन परवर फॅकने का मरल-निरोध (धव)।

गोमहा स्थे हिं। स्था ग्रहस्ता (६२ ६६)। गोमाम ) पुनामाणु शत्कल विवादशेरह गोमाड ) (संट--मुक्त ६२ ) (१ १६१) खाय १ ४ छ २१६) साम्र)। गोमाणसिया स्त्री [गोमानसिका] सम्या कार स्वाननिरोध (बीव १)।

गोमाणसी स्त्री [गामानसी] उत्पर देखी (बीद १)। गोमि ) वि [गोमिम्] त्रिमके पास स्लेक

गामा १ व [गोधिम] विनक्षे पाछ प्रतेक गोमिका | गौ इंग्वह (प्यमु तिब्रू २)। गोमिका देवो गोमिका (एव)। गोमिका [व] देवो गामा (प्रतु ११२)। गोमिका (ग) [गोरिवत] चंगनिक (प्राक्

११)। गोमास्त्री [द]कनस्त्रूस वीन्द्रम चन्तु

निरोप (वी १६) । गोमुद्र पु [गामुला] १ यज्ञ-निरोप प्रपत्तक्ष प्रधानमेत का शासन-स्त्र (वीरि क)। २५ स्ट स्प्यार्थित की स्विध्य । १ गोमुब-कीय का निवासी मनुष्य (ता ४ २) । ४ त. उपस्यत्त (३ २ ६ ८) ।

गोसुदी स्त्री [गोसुरा] नाच-विरोप (प्रणु प्रम)। गोसुदी [गोसुरा] नाच-विरोप (एव ४६

मणु १२८)। गामेख ] पूँ [गामेद] एन भी एक बावि गोमेग्ब ] एड्रूप्ल (कुमा ७ वत्त २)।

गोमेड् पू [गोमेच] १ सक्त विरोध मयवल् नेर्मिनाय का शासन-देव (ई ४)। २ सक्त विरोध विसर्भे यी का वब किया जाता है (पदम ११ ४१)।

गोस्मिम पुर्गिक्सिक] कोठमला नवर एकक (मध्दरित)।

गोम्ही देवो गोमी (सव)। गोम देवो गोस्त (सम ६६ कम्प्य १)।

ीषाइ ति ["बादिन्] सपने दुन को उत्तय माननेवाला बंद्यमिमानी (माषा) ।

गोय न [ वे ] उद्भवर—प्रनर वनैरह का फन (मान ६) । गोय न [गोत्र] मीन, बाफ-संबंध (सूध १

ाक प्राप्ति । पार विकल्पन (सूप १ १४२) । बाय प्र विद्योगित सुबन वचन (पून १ १,२७) । गोयम प्र [गोनम] ऋति-विदेश (गण)।

शायम पु [गानम] ऋगि-विशेष (ठा ७)। २ झोटा मेच (यीप)। ३ न, गोन-विशेष (क्या ठा ७)।

₹० <b>२</b>	पाइअसदमहण्यको	गोक्म-के
हैवस है [तीतम] है सैयम सेस में करण सेतम सेतिय "रेपीयमांते स्वतिया प्रकल्प पहलार सेतम सेतम सेसीय "रेपीयमांते स्वतिया परण्या पहलार सा करण सेतम सेतीय "रेपीयमांते स्वतिया परण्या पहलीर सा करण सा करण परण्या पहलीर सा माना सेता सा करण सा कर	िसा   जर्चव की एक जाति (परएए १)।  गिरि र्ष [गिरि] वर्गव विशेव दिशालम (किस् १)। मिरा र्ष [ज्या] र इरिए की यण जाति। २ म. या रिए के या राज्य केवा । र म. या रिए के या राज्य केवा । र म. या रिए के या राज्य केवा । र म. या राज्य केवा गोर (पर पर १)।  गोरित कि [जी ने वर्ग केवा र पर वर्ग कि हिंदी नो मा पोट, जन्म-कियेव (वे २ वर)।  गोरित कि [जी काल प्रस्त (पर १)) गोरित कि [जीरिय] जीरिय केवा प्रस्त किल नजा ही वह (वे ४ ४)। गोरित कि [जीरिया] जीरिय-तेम्य (स्वीव र १) इस १०००)। गोरित की [जीरिया] जीरिय-तेम्य (स्वीव र १) इस १०००)। गोरित की [जीरिया] जीरिय केवा प्रस्त विद्वा विद	पुरा का निकानमें यामक्कष्ठ (जाता है)। वे निद्धाा करोगा (एक ०)। गोव प्र शिक्ष हिंगों हु क्यानेश्व करवारा (एक ०)। गोव प्र शिक्ष हो हु क्यानेश्व करवारा (एक ०)। गोव प्र शिक्ष हो हु क्यानेश्व करवारा (एक ०)। गोव प्र शिक्ष हो करवारा करवारा एक एक १९)। गोव प्रीव है केवा वार के करवार (एक ० १९)। वी वी (वय ० १९) गोव प्रीव है है केवा वार के करवार (एक ० १९)। वी विकास है है विकास हो है है विकास है। विकास है विकास है विकास है है विकास है। विकास है विकास है विकास है। विकास है विकास है विकास है। विकास है विकास है। विकास है विकास है। विकास

क्वक गोबिळांत (पुपा ११७) पुर ११ १६२: प्राप्त ६४) । ो दू [गोप] योगों का स्तर ग्वासा गोषम गोपल (स्मा ७ दे२ ६८ क्यू) । जिरि वं िगिरि] पर्वत-विशेषा 'मो विभिरिधिकृष्यदियं वरमनियान्यसम्पदारमव रक्षं (पृष्णि १ वर्ष )। गोवहरूप देखो गोवद्भण (प २६१) । आदिणान शियन दिशाला। २ विकास (मा २८: उप ११७ टी)। गोबद्धण र् [गोवर्धन] १ पर्वत-विशेष (पि २१ () । २ ग्राम विद्येष (पडम २ १११)। जीवय वि [रोपक] छिपलेवाता, बौक्नेवाता (संबोध ६४)। मोबर पून [ब] योजर, मोमय बो-विहा (व २, १६ च्या ११७ टी)। मोबर पू [गोवर] १ मनव देश का एक गाँव गीठण-स्वामी को बन्ममूमि (धाक्त)। २ विशिष-विशेष (इत ११७ दि )। नोबस न गिवली १ पोवन मोकून नीसी का समूह 'रिवि मोनवाई' (सुपा ४३३) । २ मेक-विशेष (मुख १)। मोषकायण देवी गोबद्धायण (पुन १) । गोपछिय प्रिक्षिक ग्वासा महीर (युवा ४३३)। मोबद्ध पून [गायम् ] योत्र-विशेष (मुख १ 1(2) नावद्ययम् वि निवस्त्यम् १ पोवव योज में फलकार न. योज विशेष (इक)। गोबापु [गापा] नौधींका पलन करने-बस्ता, ग्वाबा (प्रापा)। गामाय सक [गोपाय्] १ विद्याला । २ रक्क करना । बहुः, शांबायंत (का ११७) । गोबार पू [गापार ] यी पावनेबारा, ग्वास म्फीर (रे २ २०)। गुव्बरी की विश्वतेशी मेरन धपराची मापा-निशेष पुनश्रह के महीरों का गीत (कुमा)। न्येत्राख्य पु [गोपासक] स्मर देखी (पटम 2. 64) 1

गोबाक्षि प्रशिपाधिम् । ग्वासा गोप महीर (सुपा ४३२। ४३३)। शावाजियी सी शिपासिनी वैए-स्य मही-रित ग्वाति (सुपा ४३२)। गावादिस्य प्र[गोपाक्तिक] योष प्रदीर, ग्बासा (सुपा ४३३) । गोवाजिया ध्ये [गोपाखिद्य] नोप-की मोपी म्मप्रीरन (रामा १ १६)। गोवाद्धी की गिपासी बल्दी-विशेष (पएछ 1 (1 गोधिक वि कि अवस्थाक, नहीं बोलनेवाका गोविज वि गोपित र विवास हमा । २ रमित (सुर १ वका निर १ व)। गोविका को [गोपिका] पेतांबना पहीरित (क्याचा ११४)। गोर्बिद पू [गोपेन्द्र] १ स्वनाम-स्पाठ एक मोग-विपमक प्रत्यकार । १ एक कैतमुनि (पंचव खंदि)। गोविंदपुशोविन्द्री स्वप्णु क्रम्सः। २ एक वैन भूमि (ठा १)। भिन्नमुचि और िमियुँकि इस गाम का एक कैन दार्शनिक क्रम्ब (निष्कृ ११) । गाविद्वन वि्नेकञ्चक कोली (वे २ १४)। गोबी की दि बाबा, क्या हुआरी सक्सी ( 2, 24) 1 गोबी की [शापां] मोनायना, ब्यहारिन (सुवा ¥3 %) गोज्यर [के] केवी गोमर (का ५६६) ४६७ द्ये)। गोस दुन [क्] प्रमाद पुरुष, प्रातन्त्रात (के २ १६ छछा बढाइ वब ६ वैचव २ पामः पद्रः क्या ४)। गार्सिय र् [गार्सियत] पोतान प्रहेर (चन)। गासग्ग पुन [बे गोसर्ग] प्रताक्षक प्रमात (वे २, ६६। पाप)।

गांसण्य वि वि भूको, वेषकुष वि २ १७ पड्)। गोसाछ १५ व [गोशाल] १ केत-विशेष गोसादग (पटन १८ ६१)। २५ ध्रमान् महाबीर का एक शिष्य जिसने पीछे घपना याबीविक भव चतावा वा (भग ११)। गोसाविष्ठा की [वे] १ केवा शार्यना (मुल्छ ११)। २ मुखे-अननी (नाट--मुल्ख ): गोसिय वि [वे] प्रमतिक प्रात काम-संबन्धी (एए) । गोसीस न [ग्रंकीपे] चन्दन-विरोपः सुबन्धित कक्क-किरोप (पर्याह १ ४- १) कम्प धुर ४ १४० मण)। गोह पूर्वि] १ योवका मुख्यिया (६२ ८६)। २ मट, सुमा योज्ञा (दे २, वर्ष महा)। १ बाद, उपपति (ज्य इ.२१४) । ४ क्षिपादी पुलिस (स्प पू १६४) । ४ पुरुष बाबमी मनुष्य (मृज्य १७) । गोइ पू [चे] कोतवाल धार्च हुर मनुष्य (मुख १ १) । ९ वि प्रामीख प्राप्य गैंबार या र्मनाक वैद्वाली (सूचार १३)। गोडा केको गोमा (दे२ ७३ मन ८३)। गोदियां की [गोधिका] १ नोना पोद्ध बत जन्तु-विदेष (सुर १ १८६)। २ साप की एक वार्षि (बीव २) । ३ वाद्य-विशेष (घस्) । गोहर म दि पोपम बी-बिहा (वे २ १६)। गोहुम पु [गोषुम] घड-विकेष भेषे (क्य)। १ शिषेरी क्यु-विकेव साप गोइरय ें की वर्ण का बानवर (पत्रम ४%, दश ६१) । माह रेखी गह = पह (गरह)। गाङ्क 🖦 गाङ्क = प्रद्वा (द्वाव ५६) । गाइण रेको गहण = प्रद्वास (कुमा) ।

च पू [च] कर्ड-स्वानीय स्पन्नत वर्छ-विशेष | (प्रापः द्रामा)। पमानंद न [दे] हुदुर, रपैश (पर्)। मा (वप) स. पार-पुरक सीर समर्थक सम्बद (दे४ ४२४० दुमा)। यञ्जोञ ) वृ [युत्तोष] १ सपुर-विशेष प्रश्लोष ) विस्तृत पानी यो के तुल्य स्वाविष्ट है (इक छ ७)। २ मेव विशेष (शिर्व) ३ वि विश्वका पानी भी के समान मचुर ही ऐंद्या भनातमः। भी आंदा(भीव ६ राद)। र्घप तु क्रि] नुद्र मध्यन, वर (दे२ १ ४)। साम्रा 🛍 [शास्त्र] धनत्व-मत्त्रप निक्रुपों का धान्यकरवान (योव ६३६) वद ७ माचा)। धीपस (यप) न [महस्ट] १ मध्यक् नवह (के ४ ४२२)। २ ब्रोड्स, सबराहर (दुमा)। भेवतिकानि वि] वनस्या हुमा (स्वे ६) वर्गवि (६४)। धंपोर वि दि अमरा-तील भरकनेवाला (दे २ १ ६)। ¥.चिव ⊈ [वे] देवी देव निकालनेवासाः कुजराती में 'बांची' (पुर १६ १६ )। बंट पूंची [पण्ट] करदा नांस्व-निर्मित वाच मिरोप (बोच ६ मा)। और टा (६१ १६५: चन) । पंटिय पू पिष्टिक वाग्रात का दूध-देवता क्य क्रियेप (बृह् १) । भटिय <u>प</u> [पाण्डिक] स्वयं वयलेवाला (क्प्प)। पंडिया 🖈 [पण्डिका] १ क्रोटी कड़ी (प्रामा)। २ किकिएी र्युक्त (पुर १ २४व चे २) । ६ श्राक्त्रहा-विशेष (शास्त्र १ १) । भस र्दु [बर्षे] वर्षेष्ठ विशव (खाना १ t—11 (1) i चसय न [घर्षेज] विसन रक्ष (स ४७)। पंसिय वि [पर्यित] क्या ह्या रवहा ह्या (मीन) । वदकुग केवी वे ।

घ पाधर न [दे] बैबर बबर नईस सिमों के पहनने नाएक वड़ा(दे२ १ ७)। घरधर दूँ घिर्घर | १ रूक्-बिरोप (श्रद )। २ वोचना नताः 'पावरततिम' (दे ६ १७)। ६ कोबना धाराज 'स्पमाली नावरेल-ष्ट्रीर्ण (पुर २ ११२) । ४ म. स्वाइस श्री बाल या सेवार वनैधा ना स्त्रह (बढा) ! पद्द स्ट पिट्ट देशसर्वकरता सूता। २ दिखना असना । ३ श्रेचर्य करना । ४ बाह्व करना । बहुद (बुवा ११६) । बहु पहुँव (क्ष ७)। इन्ह पहिज्ञांत (है २ पर वर पिट्टम् ] हिनाता । तंद्र पहिमाय (**収**打 **१ १** ) i षष्ट्र सक [भ्रोस्] भ्रष्ट होता । क्टूब् (पब्) । मह्र् दृ दि ] १ दुनुस्म रंग से रंश हुमा बन्न । २ नदी का बाट । ६ वसू वेश वीस (वे २० 222) ı यह र् [पट्ट] ! तर्कश्चाया-नामर नरक-वृति का एक नरकाबाब (इक) । २ पून अमान (भारक)। ३ तपुद्ध, करवा द्वस्तुह (भुपा२१६)। ४ वि शाका निविद्यः भून नाक्रप्यूची (तुना ११) । पर्माम न दि भन्तीगढ़ी रक्ष-विरोध बुधेबार कीमुस्य बद्ध (हुमा) । पट्टजरि [बहुत] वाताश द्विता देशैनाता (पिंड ६३३)। भट्टज व [भट्टल] १ क्लास्पर्धकरूतः २ बताना, हिमाना (सर Y) । घटुण्या दे [घटुनक] पात्रवदेख को विक्ता क्रों के लिए क्य पर विशा बाता एक प्रकार का परवर (हह १)। पटूजया ∤ की [बहुना] १ व्यक्त शक्त-मङ्गा कर (सीप सं४४)। २ क्लब्, दिवन (मीन १) । १ विचार । ४ **१ ज्या** (शुर्)। ३ क्वर्वेग्रा पीका (भाषा)। ६ सर्ग पूना (पएस १६) । पर्प केटी पर् (महा) । प[इप नि [पट्टित] १ सहत संपर्नपुता

(वे १)।२ ब्रेप्टित मासित (पर्या १ ६) १ १ स्पृष्ट, धुमा हुमा (वं १: राव) । घष्ट्र वि [घूष्ट] र विशा द्वापा (देश रण्यः भीक सम १३७)। पड तक [पट्] १ केश करना। २ करता बतला। धक परिचय करता। Y धेनत द्वीता, विकता । वटर (दे १ १६४) बद्ध यर्डत घटमात्र (दे १ २, तिषु १)। इ. घडियस्त्र (हाता १ १—पत्र ६ )। महत्रक मिटयु र मिलाना बोहन्य-संबुद्ध करना। २ वनामा निर्माल करना। १ संबानन करना । यहेर (१४ ४)। चरि चरिस्तामि (स ६६४) । नक्न-पर्वत (बुपा२४४)। श्रंह महिम (स्त ४१)। घड प्रिटी बहा कुम्म, कलत (है! ११६) । बार वृं विदर् दूरमार, पिरी का बरतन बनलेनाता (इस प्र. ४१६)। चडिया स्त्री "चटिका" नानी परनेतानी शामी पनकारिन (नुपा प्रश.)। बास 🕽 िंदासी नाम्य मानेदाबा नीकट, सम्बद्धा माचा)। दासी स्वौ ["दासी] पानी वर्णे बानी पनिहासै (मूध १ १४)। भड वि [व] ध्रशक्त वनाया ह्या (पर )। मकद्ञ नि [त्] <del>शंदुनित</del> (यर्)। **घड**रा पूँ [घटक] स्रोटा भड़ा (वं २) घणु) <sup>1</sup> फ्टगार **रेको धड**न्हार (वद १) । पडचडरा पू [घटचटक] एक द्विशन्त्रवान संप्रदान (मोहा १)। भडण क्रीत [फटन] १ फटना, प्रचेष (वि १३)। २ सन्तव संबंध (वस्य ४६)। मक्य व पिटनी १ वक्य वा बक्क इन्द्रि निवांख (से ७ ७१) । १ मल, बेटा, परि यम (बनुधः पश्चर २१) । घडणा की [घटना] विकास नेव चंदीय (भूष १११)। भडय रेखी घडग (वे २)। थहा 🕏 चिटा हिन्द्र, बला (स्वर)।

घडाघडी की [दे] योडी, सभा मएक्सी (धर्)।

भडाय सक [ मन्य] १ वनाना । २ वनवाना । ३ स्थूष्ट करना मिनामा । वडायद (१४ ३४) । स्ट भडायिका

(बारम)।
पिंड मि [पटिन] घटनामा (मणु १४४)।
पांड की [पटि] रैको पडिमा - वर्षिका
(प्रापु ११)। संतय, मत्त्यन [मात्रक]
क्षेत्रे के क्षाकार का पान-विशेष (पत्र

कस)। जीत न विसन्ध देंट. रॅक्ट पानी तिकसने का कस (पाप)। पश्चित्र वि पिटेत] र इन निर्मित (पाप)। २ संस्का संबद्ध विष्ट, मिला हुमा (पाप)

स ११४४ मीपा महा)। पश्चित्रपद्मा की [दे] बोडी मएडमी (दे २१४)।

पडिआ भी [पन्धि] रेखीय परा कतारी (ता ४६ पा २०)। २ वर्षी क्रूर्त (जुगारे ०)। ३ समय वर्षानेनाता क्रम्त क्री-यान पर्धी (पाध)। स्टप न [क्रम] पर्ध्यागृह, वर्ष्टा बनाने का स्वान (गृर्फ १७)।

पश्चिमा | क्षी [वे] पेश्वी, मएक्पी (पड् पश्ची | वेद १ द्र)।

पडिया देखो पडिया (सूप १४२ १४)। पडी भी [पटी] देखो पडिया (स २३८ प्राक)।

पदुक्तप पू [पटोरक्रप] भोग का पुत्र (हे ४ २६१)।

प्र २(१) ।
पहुराव दि चिटोत्सव दे कर में रूपाः ।
२ वृं क्रांप्त-पिरोण समस्य सुनि (सर्) ।
स्व न [ वे ] बृहा, शैना स्तृप (पान) ।
स्व न [ वे ] बृहा, शैना स्तृप (पान) ।
स्व वृं [चन] १ सेव नास्य (पुर १३
४४ सानू करें) । १ वृंपीका (१६१) ।
१ मीराव-पिरोण तीन संकी ना पुरान कर्याः ।
वेशे मो का कर साठ होता है (स्त १०—पान
४६६ मित्रे १४४ ) । ४ नाम का शानदिशेय कारायान वहेंद्रा (स्त २ ६) ।
१ वि इइ कोल (सीर) । स्विप्ता

याह प्रवाद, 'बाबा गीई बखा देखि' (क्य

38

(राय)। १ कठिन वरकता-प्रीहर स्त्यान (श्री ७ ठा३ ४) । १ न. देवविमा<del>त-</del> विशेष (सम ६७)। ११ पिएड (सूम १ १ १)। १२ वाच-विरोप (पुण्य १२)। उद्दि रेको घणोदहि (भम)। "णिचिय वि ["निवित] प्रत्यन्त निविद् (भग ७ ६ धीय)। तब म [सपस्] वपरचर्या विरोप (उत्त ३)। इंस पूं ["दन्त] १ इस नाम का एक मन्द्रशीय। २ उत्सदन निवासी मनुष्य (ठा ४ २)। माछन "मास्र विवास पर्वत पर स्वित विद्यावर नगर-विरोप (स्क)। सुद्दंग पू "सुदङ्गी मेव की तरह सम्बीर मानाजनाला नाच विशेष (भीष)। रह पू रिया एक कैन मृति (पटन २ १६) । बाह पूं ["वायु] स्त्यान बायु को नरक-पृथ्वित के नीचे है (उस ३६)। वाय पूंषिता देशो बाउ (भग की ७)। बाह्य पु ["बाह्न] विधावरों के राजा का नाम (पराम १ ७७)। "बिग्रमुञा की "विद्युता देशी-विदेप एक दिन्द्रमाधि देनी का नाम (इक)। समय वृं िसमयी वर्षा-कान वर्षा ऋतू (कुमा घणेत्स र्षेत [घनाङ्गस] परिमाश-विशेष सूची से प्रनाहृमा प्रवर्षपुन (सस्ट्रा १४०)। पणसंगद पु [पनसंगरे] क्योतिप-प्रसिद्ध योग विशेष किसर्ने चन्द्र या भूवै प्रश्न सम्बा नगत के बीच में होकर बाता है वह योग (सुरुव १२--पत्र २३३) : मणधनाइय न [मनमनायिख] रव की क्तवनाहर या पढ़बढ़ाहर धम्मक राज्य-विरोप (पर्याहर १)। भणवादि पुंदि] एक स्वर्गति (वे २ घणसार पू [धनसार] कपूर (पाय्य भवि) । "संबर्ध क्षी ["सब्स्वरी] एक की का नाम (रप्पू)। भणा की [चना] बरलेन्द्र की एक वय-महिती स्त्राखी-क्रिय (खामा २ १--पत्र २११)।

घणा की [भूजा] इका पुरुषा वहाँ (प्रक्र)।

घणिय न [घनित] पर्जना कॉन (गुक्र २)। |

पणोदहि पुं[पनोद्या] पत्थर की ठाए कठिन बस-समुद्द (सन १७)। 'सलय न ['यलय] नतपात्मर कठिन जस-समुद्द (परएए २)।

षण्णापुं [ते] १ सर, बलस् आर्थी। २ वि रक्त रंगाहृषा (३ २, १ ४)। ३ पारंथ मार बातने योग्य (सूत्र इट २—७ पत्र ४१)।

घत्त सक [क्षिप्] १ कॅकना बातता । २ प्रेरएा। चतक (हे ४ १४३)। संह-'र्मकामो घत्तिक्रप्य करनीस्ट्रीं (पटन क २ स १४१)।

पत्त सक [ प्रह् ] प्रहल करना। यदि वित्तर्थे (प्रयो १३)।

मत्त स्क [गवेषम् ] बोबना हुँहमा सनु संवात करना । वतह (हे ४ १व१) । संक पश्चिम (कुमा) ।

घत्त सक यित् ] मल करना, वदोन करना। बत्तह (ठंदु १६)। घत्त वि [घात्य] १ मार बाकने योग्य। २

को मार्चका सके (पि २०१ सूध २ ७ ६ द)।

पत्तम् म [स्वण] पॅक्ना (कुमा)।
पत्ता श्री [पत्ता] प्रक्त विदेश (पित)।
पत्ताजांद्र म [पत्तानव्दी प्रक्रविदेश (पित)।
पत्ति म [ ते ] श्रीम करते (श्राह < १)।
पत्ति म [ हिम्रा] मेरिज (स २ ७)।
पत्तु मि [पासुक] मारोबाला बातक बलाव

(तत १०)। यस्य नि [मस्त] पृशीत पतका हुमा (विड ११९)।

भरम वि [मस्त] १ मनित निगता हुया कवितत (पदम ७१ दर्श पराह् १ १)। २ सामान्य समिनुत (भूगा १४२) महा)।

्रात्माच नागपूच (युना स्टर्गनहा)। समस पुं[सर्म] नास परमी संद्राप कृत (देर ८७ सा४१४)। २ पसीना स्टेक्ट (देर ६२७)।

परमा की [मर्स] पहली नरक-पूरियी (ठाक)। परमाई की [बे] एल-क्टिय (वे २, १ ६)। परमाई की [बे] १ सम्प्रक काम । २ सरक सक्कर, बुह बन्दु-विरोध । ३ प्रायशी काम-दुस्त (वे २ ११२)। ₹o Ç

कामेल (बम २)। (कड्डिया 🗗 िंडि हिन्द्र] मौकासन (पर ४)। गोहास िंगा छ। चा चीर प्रकृती नती हाँ एक प्रशास की मिळाई, मिहान्त-किरोप (तुपा ६६३)। पहुर्वृ[पहु] यो का मैन (इह १)। पुरन पू [ पूर्क] केवर, मिटाप मिरोप (उप १४२ धी) । पूर वै [ ४६] चेवर या कोवर, स्थिल-विशेष (गुपा ११)।

पुसमित्त पूं ["पुष्समित्र] एक भैत दुनि

धार्पेर्यप्रत मुरिका एक रिप्टन (भाषु १) ।

बचन भी की तरह प्रभूर सने देना सक्तिमान् !

पूरप (ब्रायम)। (स्टून [किट्ट] गै

संदर्भ["सण्ड] रूपर का मी भूतमार (बीद ३)। "मिल्छिया की ["इक्षिका] मी शानीट सुर बन्द्र-सिरोप (बा १६)। "मेह पू "मेघ] भी के तुस्य पानी बरमपे बली वर्षा (वं ६) । यर दूं विर] हीर विधेव (इ.स.) : सागर व ["सागर] सम्बद्ध-विकोग (बीब)। धयभ र् [ र ] माएड म.इ. घडना (रा 4 5 X 50X 444 X) 1

घषपूम 🖠 [धूनपुष्य] एक वैन महर्षि (कुलक १२)।

घर पूर्त [गृह] बर, मतान, गृह (हू २ १४४) टार प्रामुख्य)। हुन्हाकी [कुनी] १ वर के बाहर की कोल्पी । २ बीक के भीतर भी कृष्टिमा (भीप ११)। ३ सी शाशरीर (नेप्)। रोडमा अधनतिज्ञा की ["बर्गक्रिया | नृहत्मेचा, खिरक्ती (पिट: भूगा६४) । गोर्स्स की गार्था नेप्र वीषा, क्रिननी (४ १ १ १)। गादिआ नी [रेगांघरा] देशतनी कनुनैरहेन (रे २, १६)। जामादय दूं श्रिमानुद्धी भर-जनादे, ननुर पर म ही हुमेरा प्रतेताला बामता (शाबा १ १६) । स्व र् ["स्य] न्दी र्वताचै भरवाचै (प्रानु १६१)। नाम न जिल्लामम् । प्रमनी नाम, बहनविक नाम (क्रा)। बाहर न [पाटक] हरी हुई

जरीत बला बर (राष)। बार न विद्वार]

वर का करताना (काल १८६) । सन्निय

र्षु ["शकुनि] पानतु वालवर (वन २)। समुदाणिय व [समुदानिक] बाबौदिक मत रा सनुपानो साचु (सीप)। सामि "स्वामिम्] वरकाशांतिक (हर १४४)। मामिणी 🛍 हिंसामिनी पृष्टिणी 🗫 (वि १९)। भूर [शूर] यतीक शूर, मुझ सुर, बर में ही बहादुरी दिखानेदाचा यरंग्य न [गृहाङ्गय] वर का य'यन जीक (पा ४४ )। परकृषी सौ [गृहकृत] सौ-एरेर (तंदु ४ ) । मरग रेको मर (भीर १)। घरमेंट दें हिं] चटक मीरैया एटी (वे २, १ ७३ पाम) । घरपरग र्रु वि] यमा का बामूबल-विशेष (ત્ર ૧) હ परहुर्षु[परहु] बाठा बढी धन्त पीसने का पापाछ सन्त्र (या = सम्)। परहुर्ष [दे] परस्ट धरहर करो का

चरवा (तिषु १) ।

(क्वा) ।

( R R R R) |

थरही की [घरही] शतने तोत (दे १ १)। घरणी देनो घरिणीः 'ते बरवर्रांश वर्रीश वं (७२० के प्राप् ८४)। घरपंत्र पू [रे] भाषते वर्गेख होता (दे र परस 🕻 🖣 गृहवास] वृक्तमन मृहत्वामन (TE 1): परसण रेबी पंसय (स्तु) । परिव वि [गृह्मन् ] परवाना पृश्नव (ब्राह्न **(1)** परिणी की [गृष्णा] परवानी भी भागी मल्पी (बर करद टी में २ व पूर २ दुना) । र्घरम पूं[गूक्त] गृगे श्रेताचे वरवाचे (बा ७३६) । परिद्वा भी [गृदिय] परवानी भी वाली

परिर्म भी [के पृथिती] गुम्ली पन्धे | यरिम 🛊 [यर्ष] क्लंड रगह (ठाया १

(भवि)।

(तुपा २४१)। घस स× [घूपु] t मिसना रनक्ता।२ मार्जन करना सेका करना । असद (महा) पड्) संह- 'मसिकण मचित्रपु मामी पञ्जालियो सप् पञ्चा (तुर ७ १०१)। पस श्रीन कि दि एक्ट हुई बनीन करनानी मुनि (स्तवार, १२)। २ शूपिर भूमि पोली बगीन । इ शार मूमि (इस ६ ३२) । घसण देनो बसल (मृता १४३६ १ १६६)। भस्रजिञ्ज वि 🙀 श्रीबट्ट व्येपित (वड ) । पसणी की [पर्वता] चर-रेका देही शरीर (स ६६७) । पसाक्षे [रे] १ पोली बनीन । १ धूर्नि-ेवा, नशेर (सत्र)। पश्चिम वि [पूछ] विता हुवा, रवहा हुबा (दशा ६)। पसिर वि [प्रसित् ] स्वत्यक्तक बहुत कार्त-नला(योव १३३ मा)। पसी की [व] १ भूवि-राति नगीर। रै नीने प्रवरता बारवरण (राज) । घसी थी [र] बबीन ना क्वाद दान (घाना

₹ t ₹ ₹) i

घरोइला की दि] बृहनोवा जिनकती, सिद् इया (पि १६०)। घरोस न [व] पृष्ट-मोबन-विशेष (दे २ 2 K) 1 घरोडिया र बी दि ]गृहवीविका विवक्ती; घरोधी । प्रवर्णी में 'बरेनी' (फ्एव् १ १ वे २ १ ४)। घळपळ र् [घळपळ] 'क्त वर' धावान व्यक्ति-विरोग (विपा १ ६ )। यह सक [ द्विप् ] पॅक्ना गवना, नामना। भग्नर, स्कृति (भारत है ४ ११४ ४२१)। **पक्क वि [वे]** धतुरकः, प्रेगी (दे २ १ ३) ≀ घड्डय (दुद्धि) द्वीतित्र बीदकी एक घट्टीय है नाति (मुच १६ १६) ज्य 44 (4 ) |

घरिसण न [घर्षेत्र] वर्षश रवह (बल )।

पश्चिम कि [द्विम] केंद्रा ह्या बल्ता हुया पश्चिम कि कि बद्धि विभिन्न किया हुआ, बद्दद्र तुं ठेलुवि बह्मियो तिस्बबायहरवायों चसुसर वि [घस्मर] कते नी मारतनाता बापुर (प्राष्ट्र २८) । धाइ वि [धारिम्] बातक नागक हिमक (दा४३७ विसे १२३व मन)। €म्म न [ दर्मम् ] इयं-विरोधः ज्ञानावरण दर्शना बर्रा मोहनीय भीर भ्रष्टराय में बार कर्म (थेड) । यडक न [अप्तुनक] पूर्वोच्छ बार कमें (प्राप्त)। भाइम नि [भावित] १ मारित निनारित (सामा १ ८ देव)। २ ववाया हुमा औ शिन्द्र-शून्य हुमा हो सामव्यंतितः करणाई चारमार जाना चार केमणा मंत्रा (पुर ४

316) 1 धाय र् [धात] गमन, वति (मूळ १ १)। धाइआ की [पातिका] १ विनहा करनेवानी माय प्रीमाती १ प्रकार, भोट कार (पडम की मारनेवाली की (वे २) । २ मात इच्या । १ मात्र करता (मूर १६ ११ ) । भाइज्ञमाण } देशो पाय = इन् । पाइयक्य बाइयस्य रेखी घाय = यातम्। बाहर वि [ग्रायिम्] मूँबनेशना (गा ८०६)। घाउराम वि हिन्तुकामी मारने नी इच्छा काना (खाया १ १८)। चार्षन रेगो याग = इन् । याह यह [ भ्रोश ] भ्रष्ट होता चुत्र होता।

भाइ र्षु [भाट] १ वित्रता सीहार्थ (इद शापारे २)। २ मस्तक के नीचे का भाव (छापा १ ८--पत्र ११३)। भाइय दि [माटिक] ध्यस्य वित्र (ग्राया १ २ शहर)।

बाइ६ (यह् )।

धादरय पू [ब्र] बर्गारा की एक जाति (?) ध्य तुर् चेत्रमुक्तकारम्बृतियका दुई मए दक्ता । धारस्यम्बर्धा इव धर्मवरण हे बनावीत' (उप ७२ व दी) ।

धाग दे [दे] १ मानी कीस्तू रिय-पीहक-मन्त्र (सिंह)। १ पन वजी धादि में एक बार दामने का परिवाल (पुत्त १४)। भाग र्नेन [माल] नार नार्विका 'दी पाला' (क्रूप रक्ष प्रमुख्य है र ४६)। तिस पूर्व [ "र्रोस् ] गाविका व होने-

बाना रोप-रिधेर नीका (बीप १०४ मा) ।

घाणिदिय व [प्राणित्रिय] वासिका, वाक (उत्तरिष्ट)।

भाय सब [इन्] मारना मार दालना, विनास करना। बद्ध- भागद्व (उद) । बहु भार्मस रिटमें बहुबे' (पउम १ १७) । घार्यत (पडम २४ २१ विते १७६६)। क्यूक, से

क्ले विकारणं बोरसेलावस्था वंबहि बोर सर्वाह स्रोड गिर्ह भाइल्डमार्ण प्रसार (शाया ११०)। बरु चाइयस्य (परम ६६ १४)। भावसङ भारत् निरमाना पुत्ररे हारा मार बासना मिनास करवाना। बहु-धायमाण (मुख २ १)। 👺 धाइयस्य (परम **46.4**8) 1

स्त्या मिनारा, हिंसा (मूप १ १ २)। ४ संबार (सूप 🔻 🖜) भावग वि [भावक] मार शतनेवाला, विना-शक (स २६४ मूना २ ७)। धायण न [इतन] १ इत्या नाट हिमा (नुपा६४६ ४.२८)। २ कि दिखक मार रामनेवासा (स १ ८)।

१६ २१)। २ नतक (सूच १ ४ १)। ३

भायण पु[क्] गायक परेपा (१२ १ ४ हेर १०४ वड )। धायजा स्थे [इतन] मारुप्र दिसा वय (प्रथा ११)। । भायम रेकी भागम (क्षिते १७६६ स २६७)। धायम 🐧 [ धानक ] नरह-स्वान मिरोप (देवेन्द्र २६:३)।

पायायमा की [धाउना] १ मरबाना दुकरे **डाय नारना । २ लूट्याट मनपानाः 'बहुम्या-**मनाबारणादि सानियां (निपा १ ६)। भार मर्थ [भारम्] १ विष का फैनता विष की धन्तर न वेचेन होता। २ सक विष से केवन करना। के किए से मारुता। कर्में 'पारिश्रती व तमी विमेल' (स १०१)। हैत.

पार्चिखरं (प १०१) । ₹ ¤) í धारत १ [र] प्रजूर, वेग्ट, एक प्रकार की \$25\$ (\$ 7 2 c) )

धारण न [धारण] विश्व की असर में होने-वाली वेचेनी (भूपा १२४)। मारिय वि मिरित] को विष वी सबर है वेचैन हुआ हो 'तत्त्रपी मोगो। सम्बद्ध वदवपाया विश्वपारियभोगनुहोईच

४४२) विस्था (१मा) रियन्स नह्या यलकरणकार्यविद्यों ( उपर ६७ )ः विस्पारियों सि वर्त्तरियों सि मीइए किंव हणियो थि (नुपा १२४ ४४०)। भारिया की वि] मिटाम-विशेष धुवराती में

बिमे 'बारी' कहते हैं (मर्बि)। पारा की दि । राजुनिका पश्चि-किरोप (दे २१७ पाछ)। २ द्वन्द विशेष (सिंग)। यास सक[ घूपू] १ पिसना। २ पीझा करना। कर्मे यासद्द (नूम १ १३ १५)। भाम पूर्विमास] इस म्यूपी को लाने का कुछ (दे २ ६% धीप)।

घास पू [पास] १ क्यल कीर (धीप उत्त २)। २ बाहार, मोजन (शाला बीप १३)। थास पू [ घर्ष ] वर्षण रणक भो मे उबक्रि-भी ध्र करख्यमण्लेख बरणपानेल् (मुपा \$ x ) 1 पासंसपा भी [प्रासेपमा] प्राहार निपवद शृद्धि पशुद्धि ना पर्यासीचन (पोच ११८) ।

वर्म क्यिति (प्रापु ४)। संद्र पिसाप (तुमा + ४१)। द्वेष्ट थित्त (मृता२ ६)। इ पित्तक्व (गुर १४ कें)। ियञ्ज [भूत] वी भीव भाग्य (ता २२)। मिस नि हिंदे शर्वित विस्तृत धरवीरित (**दे** २ ₹ द) ≀

घि देवो घ। मनि निन्दिई (विते १ २३) ।

र्षि । र्षु [मीप्म] १ यरमी नौ ऋतु, बीव्य चिस निर्म पितितिस्तान (कोच ३१ माउलार व पि६१)। २ गणी धमिताः (सुमः १ ४ २)। पिटू वि [रे] कुम्म कुषहा (दे २, १ ८)। पिट्ट रि [पूप्र] फिताहुमा, रनहा हुमा (नुता २७ ३ मा ६२६ म)। पार दुं 🚰 प्रांतर, विका, दुर्गे (वे. २, विमाधी [पूना] १ दुष्या कर्षा । २

दमा धनुसम्बा (दे १ १२०) । पिणिक वि [ पूजापन् ] प्रशासना नर रत बस्तेशका (स्थिश्वर्) ।

भुज्य देवो पुम्म । वह भुज्यांत (नाट) ।

भान्त मटका ह्या (देव, ४६)।

[मा(देश ११)।

भुम जिल्ला (पर्याहर ३)।

पुण्जिम वि[पूर्णित] १ द्वमा द्वमा १

पुक्तिस वि [ दे ] गवेपित सम्वेपित क्रोबा

पुत्त व देवी पुत्तम । दुनह (शिय) । बङ्ग

(TT ?):

( F ) (

'पुरुषेति वरवा' (महा)।

मानाव (विशेष १)।

(दुगर १)।

पुरु देवो पुस्म । पुत्तर (है ४ ११७) ।

(पिन)।

ररद)।

(<del>क्र</del>मा) ।

एक वाति (पर्या )।

प्रथमह (हे ४ १२१)।

पुसम स्वा पुसम (हुमा)।

मुखिकि की दि इत्यों की खबान करिनान

पुज्युक्ष यक [पुज्युक्षय्] 'कुन्क्

भुक्तिस वि [भूमिंत] वज्ञकार द्वारा हुना

भुक्त की [व] कीट-विरोध सीविय कलू की

पुसकः सकः [सक्] सकता विकोदना।

पुसक्तिञ वि [मिथित] मधित विकेशित

मानान करता। **नक पुरुषुक्षा**श्रमाण (नि

पिच-वे

म्पा (भवि)। भिचुमण नि [ महीतुमनस् ] बहुछ करने की इच्छाबाना (गुपा २ १)। भित्त्य } वेदो थि। भिष्य

पिच (पप) वि [सिस] पॅका ह्मा कला

पिस एक [ मस् ] क्सना नियतना महत्त्व करणा। विसद् (हे ४२४)। पिसराकौ [दे] मक्की परुष्में का बाल-

विदेष (विषा १ व—यत्र ८३)। थिसिञ वि [मस्त] क्वतित निगना हुमा मसित (कुमा ७ ४६)। ( ? ? e) 1

भुंभुरुव पूं [ते] अल्बर, इन केर समृह 🖫 🖫 🕵 पुरू कार पीने कोन्य पानी मावि (हे ४ ४२६)। भुग्य १ (बर) धुन [पुरियम्य] करिन्नेहर भूगिमञ्जि कलार की बेटा (हि.४.४२३ **क्र**मा) ।

पुरमुख्याज न [दे] क्षेत्र, धनतीयः परिमान (R 2 22 ) i मुग्धुरि पुंदि] मबहुक भेक मेहक (दे २, भुग्युम्सुम वि [वे] निःशंक होकर क्या हुमा (पड्)। पुरमुस्सुसय न [दे] धारोक वचन धारोका-पुष्पं नारती (वे २ १ १)। प्रमुख्युष पत्र [ बुखुषाम् ] 📆

साराज करता कुछ ना उत्तमु का बीलता। वक- पुषुषुषुषुचेत (प्रम १ ४, ११)। पुम्येव (लाबा १ ४--पन १३३)। भुष्ट्य प्रेष्ट्रियक] जिले हुए पात्र को विचले का परवर (विष १६)। पुरुषुणिशः व [वे] प्रदाव की बक्षी किला

दुपुर शक [दुपूर ] अनर केशो नक ( R 8 8 8 ) 1 पुद्र वि [पुछ] थोपित क्रीची मानान से वाहिर किना हुन्न (पड्न ६, ११०- व्यक्ति)। पुरुष पन [गर्ज ] गरनना, पर्वारत क्ला : प्रक्र (हे ४ १११) ।

पुत्र रू [पुत्र] काह-पक्षक और, कुत (हा

ic ti fet tung) i

युमणुमिय वि [मुमणुमित] १ जिस्ते 'दूम पूर्म मानाव किया हो सह। २ त. 'पुन-पूर्म' व्यति 'महुरपंगीरकुमकुमिनवरम**हर्ग** (**नु**रा पुन्म बन्न [पुर्णे ] दूमना बन्नकार किरता। कुम्मद (क्षेत्र ११७ वर्)। क्क. मुन्संव पुरममाण (हेका १३) शामा १ १) । संस् पुस्सिकम (महा) । भुम्मण न [सूर्णन] चन्नकर प्रवश (कुमा)। धुम्माविञ दि [धूर्मित] दुमाया हुवा (दबा **१**२२)। मुस्सिय नि [मूर्जिथ] दुमा हुमा वककी वयः विस हुधा (सुपा १४)। भुम्मिर वि [भूर्षिष्] दुम्लेकाता व्हिरनेकता, चलकार बुमनेबाबा (छर दू ६२) ग्रा १ । भुसमा पुंचि ] एक तत्त्व का परवर, को पान वर्षे पाकी विकास करने के किए क्या पर मिश्र बाता है, नएवं या बरबी (पिंड)।

नुरदुर देवो पुरुषुर। यह नुरदुरंत (धा पुरुष्क धक [रे] द्वरकता दृशकता वरजता। पुरुष्कर 🙎 [पुरुष्कार] तूमर शादि 🕸 मुस्पुर यह [ मुख्युयम् ] प्रत्युवन, पुर पूर' धानाम करना, न्यान नवैष्यु का बोक्या। बुन्द्रपति (नि ११ ) : वक् **बुस्यु**यर्वत

₹ €) :

(क्रमा)। भुसिण न [पुस्क] क्षुत्रम सूत्रीवत ग्रन्थ-विकेष केवर (हे १ १२०)। **इंड्र**म**श्रक** (**ड्र**मा) । (पित्र रमका रक्त्र)। बास्त्य (वर्षः) । निरोप डाम-विशेष (बाद् १) ! मूराको 🔃 १ वंदा, शांव । २ व्यवका, राधेर का प्रकार क्रिकेन 'नहस्त्रस्य वा बूधमी

क्योंति' (देख २, २, ४२) ।

ने केवो ग्य≍ कर्। नेर (वर्)। अनि

मुसिज∎ वि [मुस्यपत्] क्रुंकुमबाबा, मुसिणिम वि [वे] कोषित सम्बद्ध (वे २ पुष्तिम न [वे] इचल क्षेत्रम (वर्)। भुसिरसार न [दे] प्रवस्तान विवाह के दक धर में स्नान के पहले नवामा बाता समूचिर का क्लिम, बनदन (दे २ ११) । पुसुक केवी पुसस्त्र । यह पुसुक्रीत पुसुक्ति <del>भुभुष्ट</del>ण व [सदन] विद्योदन (एँग्ड ६ २)। पूज पुंची [पूक] वक्क काब्द्र पश्चि विकेत (जानार व प्रसार ४, ११)। की सूर (विषा १९)। हिंदू ["ति] काक, कीवा भूषाग र् [पूषाक] स्काम-स्थाद वरिवेत-

केन्द्रं (विगे ११२७)। कर्म वेष्पद्र (हे ४ २१६)। काइ- घेटपंत, घटपमाम (गा रूप समा स ११२)। संद घेऊण, घवकूण घवकूम, बेसुआण, बेसुआण भेतूण भेतूर्ण (नाठ मलती **४१** पि १ वर्षे हे ४ रहे पि छन प्राप्त)। हैक चेत्तं चेत्त्र (१४२१ पटम ११८ र्थो। इस्चेत्रव (हे ४२१ प्राप्त)। चेतर पून हि बेबर, इतपूर, मिटाम-विशेष 'सा मण्ड निपनेतेषि ह नयमेउरमीयण समा-कुल्ह्र (मुपा १६) । चेक्कुम देखा च । चत्तमा वि प्रदीतुमनस् ] प्रदुषकरने की बन्धाबाना (परम १११ १६)। चप्प भ्रष्ट्यंत ८ देवो चे। चरपसाग धवर [दे] देशो घडर (देश र व)। मोट . सकपाि पीना, पान करना। <sup>।</sup> घोडूबर्ड चोट्टइ (द्वे ४१)। वद्याः घोडू र्थत (स २१)। हेक घोट्टिर्ड (कुमा)। चोड क्वो पुन्म । भोडद (से ६, १ )। घोड ो पूंडी घोट की बीका सघ घोता रे इस दि २ १११ पंच प्रश भोडय ∫ ज्या, ध्य २ व) । २ पूँकावी-स्तर्गे ना एक दोष (पत्र १)। स्वन्त्रगर्पु िरचुकी चप्रामः साध्य (उप १६७ दी)। मीव ("र्मान) मक्पीव-नामक प्रतिवासुदेव नुपविरोप (धावम)। सुद्ध न मिस्त्री वैनेतर राजनियोग (मए)।

चोडिय पूर्वि नित्र बसस्य (बुद्ध ६)। भोडी की भिटी र बोडी। र बुक्र-विरोक 'सीवज्ञिकोडिवण्युसक्यरबङ्ग्रहसंकिएरो' (स २१६)।

"घाण म भोग्री नीड़े की नाक (एस)। चोणस पू चोनसी एक प्रकार का सांप

(परुप १६, १४)।

घोगा ह्यै [घोणा] १ नाक नासिका (पाघ)। २ जोने की नाज । १ सूबर का मुख-प्रदेश (से २ १४ मन्ड)। मोर मद्दि िखार में भूर-पूर मानान करमा। नोरंति (या = )। वक्क मोरंत

(स ४२४ चप १ ११ टी)। घोर वि दि । स्माधित विनास्थित । २ पु बीच परित विशेष (दे २, ११२)।

घोर वि धोर ] मर्वकर, मदानक विकट (सुम १ इ १ मुपा १४%। सुर २ २४३। प्रासू

१३६) । २ निर्देय निष्ट्रेर (पाछ) । घोरि पृद्धि सम्भाष्य की एक वार्ति (वे २ १११)।

चोछ देशो पुस्स । मेलाइ (हे ४ ११७)। वक्र भारति (कप्पाना ३७१ कुमा) । घोड सक घोडम् रिमसना, रनदना। २

मिमामा (विसे २ ४४) से ४ ३२)। बोछ न दि दे काने से बाना हमा बड़ी (पमा

11)1 घोळन न [घोळन] वर्षण रतक (विशे 3 YY) 1

घोलमा 🛍 [घोछना] पत्पर शौरह का पानी की रगह से गौसकार होना (स ४७)। भोक्षमक १ म [दे] एक प्रकार का खाय

घोछन्डम । हम्म दशक्ता (पमा ६३) भा २ ३ मुपा४ ६४)। चात्राविज वि [च छित्र] मिथित किया हुया

मिनाया इया (से ४ १२)। पासिअ न [दे] १ रिक्तलन । २ इठ-इठ

बबारकार (दे २, ११२)। भोक्षिम वि [पूर्णित] पुनामा हुया (शन्य) । घोडिम वि [धूर्णित] शक्त सीन 'सब-रनिक्यो परिक्यु धर्मन क्रोनियों (तुक २

1111 योक्षिम विधिक्षती मान के उरह भोला

इमा (सूच २ १ ६३)।

योक्टिम वि [मोक्टि] रणहा हुमा यत्ति (पीप) (

घोडिर वि [घूर्णिष्] जूमनेवाला जब्मकार फिरनेबासा (गा ३३० स ४७० गउड)। घोस सक घोषयु र नोपला करता उनी मानान से पाहिर करना। २ मोजना सैपी मानाज से मध्ययन करना और-और से बीस

कर पहना या च्टना। भोसाइ (हे १ २६

प्रामा)। प्रयो घोसावेषु (भव)। भोस पू भोगी १ ळेची भावाव (स १ ७-कुमा गाँ५४)। २ माशीर-प्रजी महीर्सेका मइसा महोर टोनी (दे१२६) : ६ नेष्ट यौभीं का बाहा (ठा २ ४-पत्र वर्शनाय)। ४ स्त्रतितकुमार वेदों को दक्षिण दिशा का इन्ह (ठा२ १)। ५ प्रदात सादि स्वर विशेष (वन १)। ६ सनुतार (भग ६ १)। ७ न अंब-बिमान बिरोप (सम १२ १७)। सेण पुंसिनी सात्र वास्त्रेयका प्रवेतना का वर्गे-प्रक एक वैन मृति (प्रस्म २ १७६)।

जपनात (संबोध दव) । भोसजन [भोपम] १ ऊँवी धादाव (निद् १)। २ भोपसा विकोध पिटमाकर आहिर करना (राय)।

मोस न [भोष] नगतार प्यापः दिनों स्व

पासणा भी [पोपगा] अपर देखी (स्तावा ११६ मा ४२४)।

थासय न [दे] वर्षण का वर्ष दर्पण रखने

का चनकरए-विशेष (बंद) । भोसाडह की [भोपातकी] सता-विशेष

(पएख १७—पत्र ४१)। मोसाबिका रेको भोसाबर्द (राम ११)।

भोसास् } व्ये [के] शत् ऋतु में होने भोसाक्षी } वार्बी बता-विशेष (के २, १११ पएण १-पन ११)।

थोसावन न [योपन] शेपका डॉडी या कुनी पिटमा कर जाहिर करना (इस २११ दी)। पोसिश वि [पोपित] वर्गहर किना हवा

(दव)।

च

च स [च] पच्चा याः 'चसको विक्योर्' (44 1 YY) 1 च् र् [च] राष्ट्र-सानीय व्यवन-मर्ख-विदेश (प्रापः प्रामा)। भाष चिक्ति प्रवीं में प्रयुक्त किया जाता <del>श्रम्पय---१ भीर, तना (दुमा हे २-२१७)</del> । २ पून फिर (कस्म ४ २६) ६६) प्रासू ३)। ३ यवकारतः नित्वव (वैच १३)। ४ मेव विशेष (निष् १)। १ मिठिएव मावित्रय (भाषा निष् ४)। ६ सन्पति सम्मति (निष् १)। ७ पार-पूर्ति पार-पूर्व्य (निष् ŧ) ı वभाक्षी [त्वक्] चमड़ी त्वचा (वड )। चद्भ वि[शक्ति] को धनवै हुआ हो। सन्द (t t xt): चर्म के चित्र (पटम १ १ १२६)। **पर्म पि** [सक्ति] मुक्त, परिष्मक (कुमा 1 (5Y F नक्ष्म वि [स्याभित] कुल्लामा हुमा, मुक कराबा हुमा (मीन ११६) । वद्ध देवी चय = स्पन्। षश्म को चु। चर्द्य रेडी चर्छ ( वर् )। नहाँ नहरूण } केता नम=तन्। भइजगब्दी चु। भारत रेवी भेड़न (है २ १६ दुना) चर्च पू चित्रो माम-विशेष वैष मास (है १ ११२)। पद्या देवी चु । भइताण } देवो चय - ध्यम्। भइतस्य }

नद्द (रो) वि [चकित] धीत शॅफित (पवि

चंड वि [ चतुर् ] बार, संका-विशेष ४

(छ्वा) नम्म ४ २) मी ११)। आखीस बीत

िचलारिरात् ] भीपाबीस ४४ (१४ ७६,

१६६)। बद्धन ["नाम्ना] पार्चे रिया

(रूना) कट्टी की ["काष्टी] भीरकः, चीनठ

₹₹₹) |

चर्यस्य देवी चु ।

चौक्टा द्वार के चार्चे भीर का काठ द्वार का श्रीमा (निष्कृर) । "ब्होज नि ["कोज] चार कोलबाला भतुरम (शाबा १ १६)। ग न देवी भाउचा⊏ चतुष्क (दंदे) शाह्नी िगति । तरक विर्यंत मनूष्य और देव की मौति (कम्म ४ ६६)। राष्ट्रम वि गितिकी वार्षे वित में अपना करनेवाला (था १) । समजन गिमनी चार्पे क्तिएँ (कम्प) । गुज ग्राज वि गुज् भीतृता(दे१ १७१ यह) । चत्ता भी [ चरवारिंदान् ] <del>एंका विशेष भौवानी स</del> (क्त)। भरजपुं ["बरज] चीपामा चार पैर के अन्तु,प्रयू (इस ७६ डी: मुपा४ ६)। "बृढ र्र ["बृढ] विदायर वंश के एक राजा कानाम (पठम १८ ४१)। हादेशो स्था (हे२ ६६)। हाणविकानि <sup>वि</sup>स्थान-पवित] पार प्रकार का (भव) । जातकृ और ["नवि:] संक्या-विरोध शीयको १४ (पि ४४६)। जडब वि "नवदी चौरा-नवेगा, १४ मी (पदम १४ १ १) । जन्द वेची जडह (सम १७) था ४४)। वज (६प)। 🖦 पन्न (५४)। विस वीस न [ "त्रिरान्] चीतीस १४ (मरा बीप)। वीसइम रेवी चीसइम (प्रज्ञ १४ ६१)। वीसा 🕏 केचे वीस (ब्राक्)। श्वास्त्रीस पि ["चरवारिस] चौद्यानीडवाँ ४४ वो (परम ४४ ६) । चीसहस वि ["जिंस] र भौतीक्षरी ३४ मी (४००)। २ मः, स्रोबङ् स्मि का बनातार प्राप्तास (लामा १ १---पत्र ७२) । स्थापि [ब] १ चीला (ह t twt)। २ पुन, क्यवस्य (बय)। रैर्थचरस र्रुत [अचतुर्य] एक एक बर-वसः (वन) । स्थमत्तनः ["समक्त] एड क्लिका बमनास (मन)। स्वसन्तिय हि ["बमकिंक] जिल्ले एक क्लान्स किया ही यह (प्रयाद १) । "रिक्रमंगळ व ["धीम-हरू ] नद्भार के समामन का <del>पहुर्व दिन</del> विश्वके बाद बामाता भ्लेका भूपने वर बाता है कैसरे (स ६४६ म)। स्थी सी [आ] १ बीची। २ संप्रवात-विश्वकि, पतुर्वी विश्वक (ठा ≈) । ३ दिचि-निरोप (तम १) । वैदि देवो "इंड (एव)। इस वि व "देशव्] बंदमा-विश्वेष जीवह (मह २ मी ४७)। **'**इसपुब्दि पु ['इरापुर्विम्] नौद्ध पूर्व बर्न्स का बालवाला भूति (बीव २)। इसम वि वेको इसम (शामा १ १४)। इसका म ["ब्रह्ममा] चीच्या प्रकार से (नग ४)। दसी की विशी विशिष कपूर्वक (स्वरा ७१)। इति प्र विस्ती ऐयनव रत्रका हाची (कम)। दिस देवी इस (भन)। "इसपुक्ति देशो इसपुक्ति (स्त १४)। इसम १६ [<sup>\*</sup>दश] १ पौक्यो १४ वॉ (पडम १४ ११८) । २ पूर्व बना तार घः दिलीं व्यात्तावास (घर)। दिसी 🌬 हसी (रूप)। "इसुचरसय है [दरोचररावतम] एक ही भीवहर्ग ररे४ वॉ (पबस ११४ ३४) । "इइट वेबी दम (पि १६६: ४४६) । हारी नेवी बसी (बाम)। तरसं दिस्स म विस्] चारों क्लिकों की तरफ, चारी क्लिकों <sup>क</sup> (करम्भाठ ब ४२)। द्वास[भा] चार प्रकार थे (स्व) । "माध्य न ["इनन] मित सुत धनवि सौर मन पर्यंत्र जात (पन महा)। नाजिः वि ["ब्रानिन्] मति ववैषा रेची पन्नाः पण्णादम् वि <sup>वि</sup>पन्नासं ै भीनवर्गप्रधा। २ तः सम्रोतार समीत क्लिका ज्यवास (सामा २—पत्र २३१)। पम प्रमास क्षेत्र ["प्रज्ञासत् ] पीतपः १४ (पत्रम १ १ का सम कर, कम्प)। पन्नासद्भ वि ["पन्नाराचम] बीवनर्ग १४ थी (पडम १४ ४०)। पत्र वेची <sup>8</sup>प्पम (स्तानार च जी २१)। पा<del>र</del>्ज िपास्की तुनीय केन का शहर<del>ात नीत</del> (छव)। पद्या व्यक्तवाक्षी [पदिका] रे कर-विशेष (पित्र)। २ बन्द्र-विशेष गी एक वार्ति (जीव २) । प्याई की ["पारी] देवो पद्मवा (बूपा १६) । प्यान देवो पक्ष (सम ७२)। "प्यय देशी ["पर्] १

भीताबा प्राप्ती पग्नु (जी ११)। २ म च्योतिय-प्रसिद्ध एक स्पिर करण (विसे १११)। प्यत् पु [पय] नीहा चीराहा चीरास्ता (प्रयो १ )। प्युड रि ["पुट] बार पूटवासा बीसर, बीपड़ (दिया १ १) । व्यास वि ["फास] केनो cgs (गामा १ १—पत्र ४३)। स्पा<u>र</u> दि ["बाहु] १ चार हायबासा। २ पू बतुर्धेत भीहप्स (बाट)। ब्सुञ ["सुज] रेतो बाहु (नाट मूच १ ३ १)। मँग र्म ["सह] चार प्रकार, चार तिमाम (ठा v १)। भेगी की ["महा] पार प्रकार, भार निमाम (भग)। साइया औ "भागिसी चीछ पत का एक नार (क्लू)। महिया भी ["मृत्तिका] क्षी के साथ बूधे हुई मिट्टी (निष् १०)। संद स्ता व "सण्डलकी कान मर्डन निराह भगवप (मूपा ६६)। मासिअ देनो पाड म्मामिस (पा ४७)। मुद्द मैमुद्द पु ["मुख**े १ बद्धा विकादा (परम ११** ७२ २× ४०)। २ वि चार गुँहगना भार हारवाला (धीप छए)। बगग दुन विर्मी कार करनुमों का समुदाय (निक् १४)। यण्य वस सीन विद्याशन्त्री भीवन, पनास बीर नार, १४ (प्र. २६५) २७३ सम ७२)। "दार वि ["द्वार] चार करवावेवाला (धृह) (कुमा)। विद्व नि ["विम] चार प्रकार का (४ १२ नव ३)। बीस कीन ["विश्वति] चौबीन, बीस सीर बार २४ (सम ४६ व १ वि ६४)। बीसइ (घर)। ध्री ["विंशवि] बीत धीर , चार, चौदीस (पि ४४६)। बीमदम वि ["पिरावितम] १ श्रीबीसवा (पत्रम २४ ४)। २ म ज्यारह दिलों का समातार उप वास (सव) । क्वारा वेकी बरस (साथा २२)। स्वारपूर्ण विवार] बार बार े नारक्त्र (देरे १७१) दुना)। "क्लिह केवी विद्(अ ४ २)। इतीस देनी पीस (एम ४६) । ज्वीसश्म केवी वीस इम (राम्या ११)। सहिची ["पछि] चीचठ, साठ बीर चार (सम ७१) क्या) : सद्भिम वि ["पाष्ट्रवम] बीच्छवा (परम |

६४ ४०)। \*स्सद्धि केहो सद्धि (कप्पू)। रसात न शास बार रानामों हे पुक पर (सप्त ११) हट्ट, इट्टय क्री [इट्ट, क] भौद्धा बाजार (महा: मा २७) मुगा ४४% हत्तर वि [ मारत] चीहतरवां ७४ वां (पउम ७४ ४३)। इत्तरि की ["सप्तति] बौहत्तर, सत्तर चीर बार (वि २४४) २६४): हाम [मा] पार प्रशासी (ठा ३ १० थी १३) । रेनो को । चत्रक्षत [चसुन्छ] चीठही चार बस्तुवी का समूद्र (सम ४ मुर १४ ७८। मुना १४) 'बएएक्डक्केए' (भा २३)। चडक दि चतुरुठी चौक चीराहर, बहा <sup>[</sup> भार यस्ता मिनता हो वह स्थान भौमुहानी (है । ३२ वड शाया ११ धीर रूपा धलः बहर जीतर मुदर ६३: भग)। र यांकन प्रांक्स (नुर ३ ७२)। भडकर पूं दि] शांतिरेय किर का एक पुत्र (दे ६ ५)। चडकर वि [चतुपस्र ] बार हापदासा पर्भूष (उत्त =) । चर्यक्रमाओं दि प्रमुप्तिकाोधान धोटा चीक (नुर १ ७२)। चडरमाइया की दि] भाप-विशेष (प्रव 9 c) 1 चउड पू [चाड] देश-विशेष (सम्मत्त ६ )। चउद् रेको चउन्दम (संगेव १३)। चउद्द वि [चतुर्वेश्व] शीख्वा (प्राष्ट्र ४) । क्ये हा(प्राक्टर)। चडपंचम वि [चतुष्पद्भा] चार सार्वाच । (तूप १ २, २१)। चडपाडिक्य न चितुष्प्रतिपत् ] भार पक्ष्मामा परिवा तिवियाँ (पव १ ४)। चढणाय पं [चतुष्याद] एक किन का छन-नाम (तवीव १०)। चडप्पन्न वि [चतुप्पन्नः] चौपुनः 'महत-नाव चज्ज्जसमोर्व (सिरि ११७)। चरबोळ धीन [चीबोळ] कच-विशेष (पिंग)। भी स्ता (पिंग)। चक्रमुद्द पु [चतुर्भुक] यो दिन का व्यवस वेता (संवीच १व) । चडर वि [चतुर] १ निपुत्त रज होतिकार |

(पाम केली ६१)। र किकि नियुक्ता है होशियारी से किसी गाया बडर (डा ७)। च उरंग वि [चतुरङ्ग] १ चार प्रेयवाला चार विमानवाला (सैग्य वपैरह) (चए)। २ व चार धेम चार प्रकार (उत्त ३)। चंडरंगय म [चतुरङ्गरु] एक तरह का पुणा (मोह =६)। चंदरीने वि चितुराक्किन् वार विभाववाना (सैम्य वनैरह)। स्त्री जी (मुपा ४११)। पडरंत वि [पतुरन्त] १ बार पवन्तवाता बार सीमापैबाता । २ ई संबार (धीप)। की वा["वा]प्रियो, भएएी (ठा ४ १)। चडरंद न [चतुरस्त] चड्ड, पहिया (चेन्य 484) 1 चड(स वि [चतुरस्र] चतुकोछ चार को एवाचा (भन भाषा दे १२)। चडरंसा औ [चहुरंसा] द्वन विरोध (विष)। चडरम पुँ वि | बीच चनुवच, गाँव का बमा-स्पल (सम १३व टी)। चडरस्स रेखो चडर्स (विसे २७६७) । भटरचिंघ पूदि ] सातवाहर राजा शामि बाह्त (दे ३ ७)। घडराणय वि चितुराननी १ बार ग्रीहवाता। २ पुच्छा विवादा (प्रतक)। पउरासी } सौ[पद्धरतीति]संस्या-विरोव, चउपसीर विपेसी दर (बी प्रश सण उकापदम२ १६ सम् १३ हम्प)। चडरासीइम वि [चतुरशीवितम] चौरा-सीना ८४ वा (पदम ४४ १२) कप्प)। पडरासीय भीन [चतुरशीवि] चौएखे 'बरुएसीयं सु परमहरा सस्य स्थ्यन्ता' (पत्रम Y (X) चवरिंदिय वि [चतुरिन्द्रिय] क्ष्यू विद्वा न्त्रक भीर पशु इत बार इन्त्रियवाला (बन्तु) (क्य ठा १ १० वी १ व)। च वरिमा की [चतुरिमन्] चतुरका चतुर्धाः, पानुनं निपूर्णका (सद्गि १६)। चढरिया ३ की [दे] सन्त-पहरूप महता चंडरी 📑 विवाद-संबंदण पुत्रराठी में 'बोरी'

(रेनाः सुपा ६६२) ।

चडक्चरसय वि [चतुरुचरशक्तम] स्वती

नारवं १ ४ वॉ (पंडम १ ४ ३१)।

"चडवीस दि [चठुदिंश] चीबीएवां (पर Y1) I

वहवीसिमा की [वहुविशिक] समय-मान-विरोप भौबीय वीर्यकर जितने समय में होते 🖁 ज्यंना काल-एक द्रव्यानिकी या एक सव

सर्पियों-काल (महाशि ४)। भाउनेत् । वि [भट्ठारेंन्] बार्त नेता का चटवंस विशास चटुवेंची भीने (वर्गर्स

भडव्यंदर्रश्य संस्रुर्)। चडसद्वित्रा जी [चतु पश्चिम] रसवाती

चीन हीमने का एक तरा, चार पर्य का एक नाप (म्लू १११)।

भडसर नि [व] चौंतर, चार संदा(बड़ी)नावा

(हार बाहि) (तुपा ६१ ; ६१२)। च उद्दरभ पु [च सुर्द्दरत] भी हम्स (मुख १ १)।

चब्दार पु [चतुराहार] बार प्रकार ना माकार, मनन पान, काविम भीर स्वादिमा 'र्वजासम्बद्धित संबद्धित सङ्ग्रहारपरिकारी' (धुपा २७३)।

चभार पून कि पान-विशेष भूगावसकी य मामगरानेनाए सनशीएनु नमोरेनु (स २११)। चमोर ) प्रश्नी चिमोर ] पश्चि-विशेष चमीरा (परहरें १ नुपा १७)।

चओवदह्य नि [चयोपचिकि] हाँड हानिवाना (इप २१४ ही आया)) र्षस्म स्थ [ चडकम् ] बारबार चववा । । २ इवर चवर बूमना। ३ बहुत महकना। ४ देश करता। १ क्लना-विस्ता। का चंदमंत (का १६ की ६६ दी) । हेड. चंक्रमित्रं (स ११६)। इ. चंक्रमियस्थ (Pt 224) i

चंत्रमण न [चक्कमण] १ इतर इतर भ्रमण्डः १ वहुत चवताः १ वारवार चनना । ४ टेवा चतना । १ चनना-विर्*ना ।* (समार ६ स्त्राकार १)। चंत्रसिय वि [चऋसित] १ विक्री चंद्रपण सामाण किमाहो सह। २६ अगर देशो (का करवादी निवृत्)। चंत्रमिर वि [चंक्रमितृ] चंत्रमण क्योतासा

(बरा) ।

र्षक्रम प्रक्र [चंक्रम्य] देशो चंद्रम । वह चंक्रमंत चंक्रममात्र (स.४६३ ६२१ क्त पुरुषा पल्या २ इ. इ. प्राप्ता चंक्रमण देवी चंक्रमण (छावा १ १---पत्र देव)। चौमिस देवो चौरमिश्र (वे ११ ६६)।

चेंशर <u>वं</u> चिकारों च वर्ण चं सवर (A ( ): चौर वि दि चक्क पुन्दर मनीहर, रम्म (देव १) कर प्र १२६ गुप्ता १ ६ वस ६६) चन्म १ टी क्यूग प्राप्ता सत्ताः भवि) ।

र्चन क्रिकि दि । सम्बद्धा क्षेत्र (२५) । भंगवृत्र दू [अज्ञवेद] देमानार्व का गृहस्था वस्थाकानाम (इप्र २)। चॅगवेर पुन [दे] नाठका तक्ता (माना २ ¥ 7 1)1 र्चनवेर पुदि] नाष्ट-पारी नाठना कता ष्ट्रमा बोटा पा<del>व वि</del>रोपा 'पीवए चंबतेरे व' (स्तु⊌)। चौंगम पुत्रों [द चित्रमम्] कुचला सीन्दर्भ शहरा चारफा (भार) । इसे मा (विकेश का प्रदेश पुता १ १२३ 161): चरोरी क्षो [के] टोक्सी वसेली वसिया करायी, दुवा भावि का बन्ध पान-किरोप

(विश्वे ७१ महाइ ११)। र्चय केवी चन्नः। चंत्रः (प्राष्टः ६१) । र्भज पु [चक्क] १ पद्मभग्र गरक-पूर्विमी का एक नरकाबास (इक्त)। २ नः केन विमान-विदोप (इक)। चंचपुर पुन [दे] सामात समिनता 'सुर वत्तराजवपुर्वीद्व वरणियनं सम्बद्धमार्जं (¥ 1) i

चौचप्परन [वे] बस्त्य मूठ सन्तः चैत्र परंगभणिमें (देश ४)। चंत्ररीम र् [चल्लाक] सनद शींस (१ 1 () 1 र्जंजस नि [बद्धस] १ वरत कावत (रणा भाव t) । २ दु सबस्य के एक मुक्टका नाम (पडम १६ ६१)।

र्चवताची [पद्मसा] १ प्रवतसी (१ क्ष विशेष (शिष) ।

( ( RE 28) 1 चैवाकी [बद्धा] १ नरस्ट की बटाई। २ जमरेना की राजवानी स्वयं नगरी-विशेष। रै वास का पुरसा (रीव)। पंचास (वर) ध्वी चंचस (स्छ)।

चंपतिम वि [चन्नकित] काका विश

इमा 'मस्स्माशिकभेष (१ प) स्विधवेतस्य

चंचुकी [चरुचु] वॉव पक्षीका और हि ₹ **२३**) i च चुवियन [दे चटचुरित चटचुवित] हरिन नमन देवी जान (भीप)। चंजुमासक्य वि कि रोगाविक पूर्वनित

(क्या धीप) । चंतुम र् [चम्बुक] १ वनामं **रेश-वि**सेष । २ उत्त देश का निवासी मनुष्य (पद्धार १ १)। र्ष पुर वि [बब्धुर] पाय वंतव (बब्धू) । र्षक्र सक [तक्ट्] कितना। वंदार (वर्)। चंड सक [पिपृ] गीसका। चंडर (वर्)। पंड देवी चंद (इक)। चंड नि [चण्ड] १ प्रवत रूप प्रवर, रीव (कप्प)। २ म्यान्त, क्रावस (क्त १६) भीय)। ६ भवि झोवी झोव-स्वयाची (क्त रार पिक शासार १०)। ४ तेजसी तैविस (का प्र १९१) । प्र तुंदाबस बंग्र के एक शवाका नाम (पद्मम 🗶 २६४)। ६ अभेद कोष (इस्त १)। फिल्म पू [किरण] सूर्व रिक (का प्र १२१)।

कोसिय दूं किशिक्ष एक सर्व किलो मनवाल, सहाबीर को स्टाब्स वा (रूप)। र्यन प्रक्रियों डीय-विरोध (इस.)। पञ्चाल व [प्रचीत] क्यांक्षी है एक प्राचीत राजाका साम (मालम)। सामु र्द [मात्] सूर्व सूरव (दुम्मा १३)। स्द प्र चित्र महिन्द्रीयो एक बैल धारार्थ (मण १७)। वहिंसय दु [गक्तसक] गुर-विशेष (महा) । बाह्र दु ["पास] हु-क्रिकेष (क्ष्णु)ः संख्य पु[°सेन] एक स्याका नाम (कल्पू) । क्रियंन [सिक्ट] कीव-वरा वहा ह्या पूड (उस १) : चंडिष्ट प्र [चण्डोह्य] सूर्य, तूरन रवि (**4**07) i

चंडण देवी चंदणा 'बंदणे बंदणों' (प्राहः

1 (25 चंडमा पुं [चन्त्रमस् ] बन्त्रमा बांद (पिन)। चंडाकी [चण्डा] १ नमसी इस्त्रों की मध्यम परिषद् (ठा ३ २ भग ४ १)। २ भनवान् वामुपुरम की शासनदेवी (संविरे )। चंडातक न [चण्डातक] की का पहनने का बक्र चोसी सहँया (दे १ १३) । चंडार पून [व] मएडार भाएडावार (कुमा)। चंडाछ र् [चण्डास] १ वसंसंकर वार्टि-विशेष रुद्ध भीर बाह्मणी से जन्म (भावा सूब १ ८)। २ कोम (उत्र १३ घणु)। चंडासिय वि [चाण्डासिक] वएडास-संबन्धी चत्राम वादि मं उत्पन्न (बस t) । चंडाकी ह्ये [चण्डाकी] १ चएडाल-जातीय ह्या । २ विद्यानिकरोप (पडम 💌 १४२) । चंदिका वि दि ] इत विज्ञ काटा हुमा (वे 1 (1) चंडिका पूर्व कि चाण्डिक्य] रोप पुस्ता क्रोय रीक्ष्य (१ व २ पड् सम ७१)। चंडिकिश रि [दे चाण्डिवियत] १ रोप बुद्ध, रीप्राकारकामा भनेकर (गाया १ १) पर्याद २ वन ७ वः उत्रा)। चंडिकार्ष् सि्] कोर कोच पुस्सा। २ वि रियुन, धन दुर्गन (६३ २ )। चंडिम पुंधी [चिंडिमम्] चएडता प्रचएडता (नुपा १६)। **चंडिया भी [चण्डिया] देवो चंडी** (स २१२ मार)। चंडिस वि [दे] बील, पुर (दे १ १) । चंडिस र् [चिंडिस ] एजाम नापित (हे हे २ः पाधा गा २११ घ)। र्वर्श श्री [पणशी] १ क्षेप-पूक स्त्री बन रा बीर क्य ब्ये (बा ६ व)। १ पार्वती, पौषे शिर-रात्री (पाप)। ३ वनस्रवि मिटेप (क्वल १)। "देवन वि ["देवह] भागी नामक (गूपनि ६)। चॅद्र र्र [पन्द्र] १ चन्त्र चन्त्रमा चाद (ठा रे वे बागू देश दश बाय)। य बुच-रिक्टेय (का ७२६ थे)। १ धनपत्र राजस्य पन (ते १ १४)। ४ राज के एक गुमर का नाम (पाम १६, १४) । १ सवत का एक मुक्त ।

¥3

पाइअसइमङ्ज्याची पञ्चय पु ["पर्यत] बतस्कार पर्वत-विशेष (पदाम १९२)। ६ राशिः-विशेष (मवि)। (हार १)। पुरन [पुर] वैदान्य पर्वेद ध ब्राह्मस्य वस्तु। ८ कपूर। १ स्वर्ण, सोना। १ पानी बल (हे२ १६४)। पर स्थित एक विचायर-गगर (इक)। पुरी ११ एक वैन दीचार्य (गच्छा४)। १२ एक को ["पुरी] नगरी-विशेष भगवान् चराप्रम श्रीप का नाम श्रीप-विरोध (भीव १)। १३ की कम-भूमि (पदम २ ६४)। एपम रामानेम की पुरुसी का बाव! शमन, मन्द्र का वि ["प्रभी १ चन्द्र के तुल्य पान्ति गना । योला (एडि)। १४ न देवविमान-विशेष २ पूदाठवें जिनदेव का नाम (धर्म २)। ३ (सम ८)। १४ दथक पर्वत का एक शिकार भग्नकान्त भक्ति-विशेष (पएए। १) । ४ एक (श्रीम)। अंत रेफो क्षेत्र (विकार १९६)। वैस मुनि (देस)। १ न देवविमान-विरोध उत्त देवो भुत्त (पुरा ११८)। कस **पू** (सम =)। ६ चन्त्र शासिहासन (ग्रामा २ [\*कान्त्र] १ मरिए-विशेष (**ध ३६** )। २ १)। प्यमाकी [प्रभा] १ चक नी एक न देशविमाश–विरोध (सम ⊏)।३ वि चन्द्र धव-महिपी (ठा४ t) । २ मदिरा-दिरोप की तर्यक्र माञ्चास्क (माथम)। कौता की एक बात का दाक (बीव ३) । ३ इस नाम ["का"ना] १ नयरी विशेष (कर १०६)। की एक राज-कन्मा (उप १ ६१ टी)। ४ २ एक कुसकर-पुरच की पानी (सम १४)। इस नाम की एक शिविका जिसमें बैठकर क्छ न [ कूर] १ देवनिमान-विरोध (सम मनवान् शीठमनाव भीर महावीर-स्वामी बीधा के सिए बाहर निक्से में (पावम)। =)। २ रवक पर्वतका एक शिवर (ठा⊂)। गुन्त पू ["गुप्त] मीर्वेतरा का एक स्वनाम-"पह रेखो प्यभ (क्य सम¥रे)। मागा भी ["मागा] एक नदी (हा ४, ३)। विक्यात राजा (विसे =६२)। चार पु ["बार] बन्द्र भी गति (पंद १)। "बृद, मंडस पुन ["मण्डस] १ चन्द्र का वएवल **पृष्ठ ( पृष**] विद्यापर वैश का एक चन्त्र का…विमात (वं उ∽ मम)। २ चन्द्र का स्वनाम प्रसिद्ध राजा (परम ४, ४४, रंस)। विम्ब (पएह १४) । सम्या पू िमार्गी १ "ब्यहाय पूं["ब्यहाय] धंगदेशका एक भन्द्र वा मएक्स-सर्वि से परिभ्रमण् । २ भन्द्र राजा जिसने मनवान् मक्रिनाय के साथ दीला का मएक्स (मुझ ११)। सणि पू िमिनि शीषी(एगवा१ व)। असाधी ["यशस्] **पण्डमन्त मण्-िक्येप (विक**१२६)। एक दुलगर पुरुष नी फली (तम १३)। माध्य स्पे["माखा] १ चन्द्रानार हार, चन्त्र रमस्य न [स्यजः] देवविमान-विशेष (सम **हार । २ छम्प-विरोप (**विष) । मास्तिया स्रौ c)। णकरना भी ["नरहाा] सक्छ की [मालिक] बही पूर्नेष वर्ष (धीप)। व्यक्तिकानाम (पदम १ १८)। पहर्ष मुदी भी [मुन्यी] १ चन्द्र के समान िनग्री सरस का एक पूजर (परन १६ बाह्यस्य मुलपानी क्षी । २ सीता-पूत्र कुछ **११)। ल**ई। देखो जस्त्या (पत्रम ७ १८)। की पत्नी (प्रस्मा १ ६ १२)। सहिंदू यागर्थ भी ["स्त्रगरी] वैत पुनि-मण नी िरम् निवापर वंश का युष्ट राजा (पडन एक राजा (राज)। दरिसणिया धी ५ १६ ४४)। र्शिस द्र [प्रापि] एक विश्वान स्वी शत्यन शिरोप, अने के पहली वैन प्रत्यकार मुनि (५व ६)। हास न बार के चन्द्र-दर्शन के उरलस्य में किया बाता ["ल"य] देवशिवान-विरोध (धम ४)। सहा धन्तर (स्तर)। दिगम ["दिन] प्रक्रि-की किया र का को रेगा क्या का परादि तिबि (येच ४)। दीव पू ["द्वाप] २ एक राज-राजी (दी १)। दहिंसग न क्षीर-सिदेव (बीव १)। द्वान [स्पे] पाचा [विनंसक] १ चन्द्र के विनान का नाव चन्द्र मट्यी प्रिवंदा चन्द्र (शीव १)। (बंद १८) । २ देवी चंदवहिंसत (इन्न पहिमा भी [ प्रतिमा] वस-विधेव (टा २ १३)। वण्यत[यर्ण] एक देशीमान ६)। प्रशास की [मित्रहित] एक केन (सम क)। वयग वि [ यहत] १ वड प्ताह दन्य (छ २ १--दम १२६)। के तुस्य बाह्यास्त्रक बुद्दशना । २ ई

रासम्बंध का एक राजा, एक संकारति (परम १,२६६) । "विकंप पुन ["विकम्प] चन्द्र का विशम्पनीय (बी १)। विमान म [\* बमान] चन्द्र का विनान (वे ७)। विसासि वि ['विद्यासिन्] चन के तुम्य मनोहर (सब)। "देग पू "मेगी एड विद्यापर-गरेश (महा)। संपष्टार प्र ["सदस्मर] वर्ष-विशेष बाग्र मार्चो से क्तिसम् शंबत्यर (बंद १)। साम्र्याची ['डासं] पट्टातिरा बर्गांध (११५)। मासियां की ["शास्त्रिक] बहानिका (सामा ११)। "सिंग व ["श्वाही के विमान-विरोध (सम. )। सिटू न [शिए] एक देशियान (सम ) । "सिरी की ["भी] दितीय शूनकर पुरुष की माँ का नाम (मा**न्** t) : मिद्दर पू ['शिक्सर] विद्यावर वेश : बा एक राजा (परम १, ४३) । सूरईसा बिजया भूरवासिजया को विरुप्तके निरा] बारक का जम्म होने पर तीसरे दिन रुपरो इरावा जाना कर बीर मूचे ना बर्तन सीर उसके जासरय में किया जाता करतन (मर ११ ११ विसा १२)। मृदि⊈ ['सृरि] रानामधिरपत एक देन योगार्थ (निर्ण) सेज पु ["सन] १ वनसन् धारिनानंका एक पूत्र । २ एक विधावर चत्र-पूनार (भरा) । सेहर १ [शगर] र मूर्य बरोग (ती १)। २ महारेग शिन (ति १६१)। हास दु [हास] वर्ष-विदेश सत्त्रार (ते १४ १२ वड१)। बांद् पू [बान्द्र] नेरापार-विरोध जिनन संविक मान न हा बहु वर्ग (तुम ११) । उड्द त्र [क्श्न] दूस माविक बनता दिनी की एक श्चन (गुज १२) । वरियेश दु ["परिच र] नप्रनार्थय (पल १२ )। प्यदा की [ प्रमा]रेपा चर-व्यभा (विचार १२६ रूप प्रदेश)। त्यशं क्ष [त्रिया] एव नवर्ध (मो ) ( बार् (र बान्द्र) बन्दनांशकी (वेर १२)। बुध व चित्र देश दुश्यि वा वह दुन

(4 PG Y) 1

बोरकार व विशेषार, बोर (रे रे रे) ।

चंदंड पु [चन्द्राङ्क] विद्यावर वंत का एक | स्बनाम-प्रसिद्ध राजा (पडम ४ ४३) । बंदग [बन्द्रक] देवो वंद। "विरमः, 'बेरम व ['बेरब] छवावेच 'चेरबीवरम सर्व, केमलप्तिसं समादगरिकील (संमा १२२, शिषु ११) । चंत्रद्विमा की दि । दुव शिकर, कवा। २ गुल्का, स्तवक (दे १ ६) । चंदल हूं [चम्दत] १ एक देशविमान (क्षेत्र १४१)। २ एल की एक माति (वस १६ )। १ र् इतिहर वीव-विशेष मधाका बीव (उन्न १६ १६ )। चंद्रण पून [चन्द्रन] १ मुद्रम्बत दृत्र-विधेप बन्दन का पेड़ (प्राप्त ६) । २ स. सूर्वान्वत कहा-विरोप चन्दन की सकती (तप ११ ११; दे २, १०२) । १ किमा हुमा जन्म (बुमा) । ४ सम्बन्धिय (नित्र) । ३ एवड पर्वत का एक रिकार (वं)। क्छास प् "क्करा] चन्तर-वर्षित कुम्म, माञ्जवनिक बर (मीप)। यह व [घट] मन्त्र-कारक बड़ा (श्रीप १) । बाह्य की विश्वमी एक शास्त्री की अपवाल महातीर की प्रवम शिल्या (पि)। बद् पु ["पिति] स्वनाम-स्पात एक राजा (स र र री)। चंदणग पून [पन्यतक] १ जार देशो। १ त् डीन्प्रिय बन्दु-विशेष शिशके वनेवर को **क्रै**न साबू सीय स्थापनाचार्य में रमने हैं (पर्ह ११ मी १२)। व्यंश्यादी [चम्पना] प्रवशन् नहावीर की प्रवम शिच्या चन्दनवाला (नम ११२) कप्प)। च्द्विदी [रे] पायनत कृता । "उपय न ["उद≆] दूला पेंशने की जपह (भाषा २ **१ ६ २**) I चंदली इसे [दे] चप्रवर पत्नी राहिली 'बरेर शिव बेशलीजोचें (बर्रा) १ चंदम र् [चग्रमस् ] बन्दमा कोर (मा)। चेहरू देवी चंड-रुद्द (वंदा ११ ११)। चंद्वहाया हो [वे] जित्रना माना रुपैर हरा धीर बाचा नंबा ही ऐसी भी (वे ३ ७)। चंदा हो [बन्द्रा] पत्रतीर मी राश्यासे चंद्रम श्लो चंद्र = चन्न (हे १ १६४)।

(शीर १) ।

(दम ८)। चंदाविशम्हय देखोः चंद्रगनदिशम्ह (वृद्धि)।

चंदाअव र् [चम्त्रातप] क्योत्सा चतिका चन्द्र की प्रमा वांत्री (ते १ २७)। देवी नंदायय १ चंदायण पुं [चन्त्रामत] ऐरत्त देर है प्रथम जिल्लोब (सम १४३)। चंदावणा को [बन्द्रातना] १ वस के तुल धाद्वार क्रमंत्र करनेनाची चन्त्रमुखी। र शास्त्री जिन-प्रतिमा-विशेष (ठा १ १)। चंदास वि [चन्द्रास] १ वतः के दुन्य सम्बद्धाद-जबका २ तु साठना जिनकेर वन्त्र प्रव स्त्रामी (माद २) । १ इस नाम ना एड धन-दुमार (धाम १ ११)। ४ न. एव क्ष्मिमान (सम १४) । चंदायण न [चान्द्रायण] हप-विशेष विनर्वे भारता के मध्ये बढ़ते के समुसार थीवत के कीर प्रयोग बढ़ाने पहते हैं (बंबा ११)। चंदायण व [चन्द्रायण] चन्द्र सः वः व माल पर पश्चिम भीर शतर दिशा में बमन (को ११)। चंदायस केवो चंदाअव। १ सारक्राण-विशेष विद्यान जैदना (पुर ३ ७२)। चंदासमा न [दे] वाझ ना मारत-विरोध (नूष १ ४ २)। चंदावतः न [चन्द्रावर्तः] एक देवविधान

चंत्रिय वि [बारिट्रक] बन्दकः बन्द-संदर्गी (पन १४१)। चंदिमा स्य [चरित्रस] बांकी चन्त्र से प्रमा, क्वोत्स्ना (स द श वा वव) । चंदिश्रोजसाय वि [दं चित्रस्रोतनसिन] चन्त्र-गान्ति से जन्मत बना हुमा (चेर) । चंदियान [दे] वश्रिका काग्रप्रमा भेराज राज बंदाण चरित्तं तत्त्रपाद्य क्रवतिपदी ।

न्त्रुरिमारा विडले सामनं स्वनगोधार्त् ॥ (बा १ )। चंदिम देलो चंदम (ग्रीत रूप्प)। २ एक केन धुनि (धनु २)।

चेरिमा की [चित्रिका] कर नी प्रश वक्ताना नारनी (हे १ र ४)। चेरिमाइय न [पार्टिक] 'बारावर्वरचा' मूत्र का एवं सध्यवन (राज)।

चंदिस 🖠 [बस्दिस] नापित हवाम (गा २११३ दे व २)। चंदुचरपटिंसग न [बस्त्रोत्तरावर्तमक] एक दबविमान (मम 🖘) । बंबरी की [दे] नगरे रिरोप (की ४१)। चंत्रीच हे व दि रुपुर, बार-रिवाडी चंदीक्षय । कमन (देवे ४)। चंदासरण न [चम्नासरण] नौराम्बी नगरी का एक उद्यान (विदार ४—पन ६)। चंदायर १ [चन्द्रादर] एक राज-मुमार (धम्म) । चंत्रावस व [चन्द्रायक] संग्यानी का एक उपकरण (ठा४२)। चंदावता तु [चन्द्रोपयम] चन्न-पर्ण कन्माका प्रहुत राहु-दाना (ठा १ भग 1 () च्र देनो चंद्र (१२ ६ दुमा)। च्चेप सक [दे] चारना रायना श्याना। चार (पाछ २१) । वर्ग परिवर (है ४ 1(2)1 चंदनर [चय्] वर्गरता। बंद (ब्राप्र) । संह चौंपिङण (वक्षा ६४) । चंद तक [आ+स्ट्र्] परना। पार (प्राष्ट्र ७३)। चंद रेगो चंदव (चव १ )। ब्युवरा पून [पान्यक] एक देशीमान (देशेन्द्र १४२) । बोदग देतो दीपक 'मनुस्ट्रान्डे पहिला बीतन माना न वीद्य नीतें (याव १)। ब्दंबडान [रे] प्रहार, माराजः 'नरमत्रका त्रविष्यवर्गावयम्बनिभूर्यीत्रवरम् राज्यस्यत्त्र-पूरीवारीरी (शिक वर्ष)। चौदान[ने] बीता स्थात (सार्थः) चंत्रप नं [चंत्रह] १ क्ल-विटेन बन्ता का देइ (म १६२ मा) । २ देव विदेश (मीप ३) । १ न चमाचा पूप (दूना) । माना क्षी [भाष] १ सप्ट-सिंग (तिर)। १ बामा दे दूपा का हार (पार ३) । राजा को [राज] १ मजस्य नगर मृत्र । २ कार पुरवेदिया (र १४ देव)। दत्र र

न [बन] चम्पक कृष्टी की प्रयानकावासा बन (मग)। चंपयपडिसय पूं [पम्पशपर्वसक] मीवर्ग देवलोक में स्थित एक विमान (राय ११)। चंदाकी [पन्दा] संद देश की राजकारी नपरी-विरोप जिल्लो माजवन भागनपूरी कहते हैं (विपा १. १ कप) पुरी धी ["पुरो] बही मर्थ (परम ८, ११६)। र्चपा ग्री रेगो र्चपय । इसुमन ["इसुम] भागा ना पून (स्त्र)। वर्ण्य नि विभी क्या के कृत के तुस्य रंगवाना भूवर्ण-वर्ण । क्षी पर्ना (धप) (हे ४ ११ )। चंपारण (चा) पूं [पम्पारण्य] १ देश विदेश चंपारन, तिरहृत विमरनरी (विद्वार) वा एक जिला। २ चैतारत का निवासी (विग)। चित्रमाति दि] चौपा हुमा दशसाहुमा र्मोदन (मुत्रा १९७ १९४) । चॅपिअ न [दे] बाउनल बबाब (संदू ४४)। चेंपिकिया सी [यम्पीया] मैन पुनिक्स भी एक शाबा (कप्प) । पंभ र् [र] हम है विद्याल मूमिनेया (दे षश्च्याको [दे]सम् लवा वनदी(रे 1 1) चक्दि देगी चद्द (दूमा)। पग्नेर पूर्ण [पद्मेर] पश्चितिकेत बनोर पनी (नुसा ४२०)। भी हो (स्वल ४१)। चक पू चिक्र र प्रति-रिटेन चक्रसक पॉश (पाम कुमा मग्छ): 'तो इरिन्यूनइयंगी चरी दर दिहुरागरार्थनी (दर ७१८ टी)। २ न माही का पहिया (पल्ट्र १) । ६ समूद् (नुता ११ : भूमा) । ४ वन्न-तिरेप (पत्रम ७२ ३१ पुना) । ५ पनाकार बाबूनण भग्वत का बाबरण-विदेश (बीर)। ६ ब्यूइ-रिटेर गिय की बजादार एकता-विदेश (गाया १ १ घरेत) । ब्रॅसर् [ बाम्न] देर-विदेश स्वयंत्रुरमण नदुः का र्घाषत्राता देर (देर) । जादि 🕻 ["वापिन्] १ पत्र ने सहनेशना योद्धा (इ.स.)। २ बनुरेर तीन बंद कुचिरी का राजा (पार १) । उसय पुंधिया विकास विदान शाीध्यस (वेरे) । पटुर् [भस्]

184 चन्नर्सी सना(सस्)। पामि प्रीपियी १ थक्तरधीं राजा, सम्राद् । २ वापुन्य सर्थे बन्दर्सी राजा (प्रस्त 🛰 ३)। पुरा पुरी की ['पुरी] बिदह वर्ष की एक नगरी (धार १ ६६)। प्पद्व देशो पहु(सण)। यर वं िंबरी मिश्रुष्ट भीलमेवा (बा ६१७)। रयण न [रस्न] धन्न-विरोप चन्नती राजा शापुरुष पापुष (गएह १ ४) । वइ र् विति सम्राट् (रिय)। यह बहु व विनिम् । या या मुमि का धविपति राजा समाद् (सिंग तरण ठा**३** १ः पडि⊤प्राम् १७६)। **४**ट्टिल न ["वर्तन्य] सम्राट्पन सामान्य (नुर ४ ११)। व चि रेग्रो वट्टि (वि २०१)। "विजय पूं "विजय] प्रशास समास समास वीतने योग्य तत्र-विशेष (हा =)। साला की [शासा] बहमरात बद्दा दित पेछ जाता हो तैसिक गृह (यव १) । सुद्द पू ["गुभ मुग्य] देव विशेष मानुवात्तर पर्यंत का मिनिएति देव (दीव)। संजब्रु ["सन] स्वनाव-स्थात एक राजा (देव)। इ.र.च् ["घर] १ **पडन**सी राजा, समाद् (सम १२६ पतम २, ब्हर ४ १६ कल्प)। २ बामुदेर यथैनकी राजा (राज)। षण न [चक्र] एउ देशीयान(देश र १११)। चक्रमाञ्ज देली चक्रवाय (वि ८२) । चर्चग पुं [चम्हाङ्ग]पविनिवरेष (गुना १४) । चक्रमभय न दिं] नारंगी वा धन (६३ पश्चगादय न [दे] कर्मि तरहा बह्नोत (दे £ 4) : पडम १ धर [श्रम् ] दूमता भण्डता

प्रकार भागा करता । बहत (६२

चवमंत्र (त.६१.)।

शिरामा हुमा (हुना) ।

पहर्य रेवी यह (राग्न १) ।

६)। पारामद (हे ४ १६१)। बह

पश्चमित्र रिर्धापत] पुत्रका ह्या.

बहस र [दे] कृतम को का सहस्ताः

२ देवारांच रिनेश का चित्रा (६३

२)। १ वि बनुत रोत्तरार राज्ये (६

पद सह [ चर्च ] चन्द्रन साथि ना विशेषन करमा । चन्द्रेई (वर्मीव १४)।

चाव पुं[चार्च] हेमाचार्य के पिता का नाम (दुध २)।

चाब हुं [चार्चे] समातम्मन चन्दर वगैरह का शरीर में स्वतेष (दे ६, ७६)।

चवर न [चस्वर] बीह्या चीयस्या चीयहा चीक्र (छावा ११) पर्यह १३ पुर १६२ (हे२ १२ हुमा)।

चवरिल पुंदि चल्लरीको भनर, भौरा (पर)। चवरिया की चित्रेरिको १ हस्य-विदेश

चवारथा का [चचारका] र दूरश्नकवय (रशा)। र रेखो चवरी (स १ ७)। चवरी की [चर्चरी] १ गीत-विरोप एक

प्रशार का गान 'निर्वासियक्योपसुद्वित्यः सारापुत्रामे' (पुर १ ४५) ' पारिस्वक्येप स्थानं (पुरा १४) ' रामनेवासी देवी यानेवासी देवी यानेवासी देवी यानेवासी देवी साराप्यक्रिये निरम्बासु निवास्थानु निवास्थानु निवास्थानु निवास्थानु निवास्थानु निवास्थानु निवास्थानु स्थान्येष्ट समास्थान् स्थान्येष्ट समास्थान्येष्ट स्थान्येष्ट स्थान्येष्ट स्थान्येष्ट स्थानं स्यानं स्थानं स्

(प्राव १)। पद्मसा को [में] नाध-विरोध 'प्रहुसमें चय-सार्य, प्रहुबमें चयसावायमार्ख' (राय)।

चवा की [मूं] १ तिथेर पर मुक्किय पहार्थ का तकाता विकेशन (दे ३ १६, पास अ १ सामा १ १ एम)। २ तक-प्रहार,

्हान की ताली (वे दे रेश पह्)। क्वार सक् [ एपा + स्टम्] प्राप्तस्म केता

चचार पर्या चित्रा मध्यम् । ब्राह्मसम्ब इन्हाह्ता देता । बच्चास्य (सङ्)। ———— द्राह्मी ० ——— ०००

चिक रि [रे] १ प्रीएक विज्ञपित चंदुन्वपर्याण्यकार रिवार्ज (१ १ ४); देव्युप्पारन्यविष्यक्ष (५म १ दो); 'वाहू कुण्यत्विष्यक्ष (वन ११) द्वारिया चन्त्रारि पुर्वीय वर्षु का शरीर पर पन्त्रग्रार्थ (१२, ४५), 'विषयो (पर): 'द्रुद्धनर्याण्यक्षप्रीर्थये' (पन्न १० २ व दो) 'निकार्यन्यकारात्री पुर्वेश्य वेद्यविषयों '(इग्र ६१ दो); 'प्रकृतिहरू वेद्यविषयों (पुन्य ११)!

चित्र वि चित्रित विस्तित (वेस्पन्४३)। चच्चुच्य एक [अपेय] वर्गण कला

देना । वण्युपाद (हे ४ ६१)। चन्द्रम् सक [सच् ] हितना काटना। बन्नाद हि ४ ११४)।

वणका (दे ४ ११४)। व्यक्तिका वि [ब्रष्ट] विस्ता हुया (कुमा)। बच्च सक [हुस्] देवता सवनोकत

चळा सक् [हुस्] देखना सम्मोकन करणा।चण्यह्(देवे ४'पक)। चळासी[चर्या]१ धावरख्वारीन।२

चलस समन । ३ परिमाया संकेट (विसे २ ४४)।

२ ४४)। चळियांव [इष्ट] स्वसोक्ति देश हुमा

(सहा)।
बहुझ देवा चन्दुझ (गा १६२)।
बहुझ देवा चन्दुझ (गा १६२)।
बहु देवा है ] बटना क्यतेह करणा कि
य स्वोरीयमें सिने कोर क्ट्रेड (महा)।
बहु देन हिंदी १ मुख बहुझा क्योंबीठ
उपहित्तीयमा बद्हिष्माना न बीचीठ (गुरू
७)।२ई बहुन विद्यापित । सार्क्स की

[िशाजा] चटराला चटलार, धोरे बातको । की पडराला (शह १) । च हु वि [चहिन] चारनेवाबा (कपू) । चरुदु ्र पृं [ दें ] साक्त्सर काड की

बन्दुअ क्याप्ती परीमने का पाय-विरोध पद्दुक (देव १ मा १६२ घो । बाब सक [आ + रुब्रू] बद्दना असर बैठना धायबु होना । बदद (हु ४ २ ६) । संह. पवित्रं बाहित्य (मुना ११४ बुमा)।

सहः पावतं वाहेळात् (पुता ११४ हुना)। पहः पृष्टि] रिवा चोटी (वे १ १)। वहः पृत्रि] र वटल्यर, वटका (व् ४४६ सनि)। २ राज-विरोध (प्रस् ७ ११)।

बढकारि वि [बटरशरिय] 'बट्य' राज्य करनेवाला (पवन मावि) (गढड) ।

बहर देशे बहर (रएए १)।

चहार तु [दे] १ चपूर, मून बत्ता (पदम १ १४, णामा १ १—पत्र ४६)। २ बाहम्बद, बाटेर 'महमा चहमरत्तछेल बायम्बर, हण्ड' (दवनि १)।

चडचड पुं[चडचड] 'चडनड' मानाज (निग १ ६)। नहमहनह पर [ पहनहायू] 'नर' नर' पाताव करता। नामकार्याति (विना १ र)। नहार वे [नटट] क्रांतिनीयोग विजयो के

पहर पृं [चटट] क्रांति-विशेष विजयी के पिरते की प्राचान (मुर २ ११ )। पहरून व [क्रांतिहर्ण] चहना, उत्तर बैठना (पा १४ प्राप्तु १ १ छ। चरेन सीच १ छुट्टि १४२ वनना १४)।

श्ववावण न [भारोहण] श्ववता (चर १२९)। श्रवाधिय वि [भारोहित] श्वमा हुण क्रार स्वाधिक 'रणुबंग उर्चन खुरे श्वाधिया न्युपस्यस्त्राचा (पृष्ठि १ द १ दुर १३ १६ सहा)।

पडायिय कि [वे] प्रेलिट मेना हुमा भागविभित्त देखें महानियं साह्यां द्या सोविं (सुपा १९२)।

चडित्र वि [झाल्ड] चडा ग्रुपा धास्य (पुरा १३७ १४३ १४६ १४ ४४४)। चडित्रार पुंदि] प्राप्तेन, घाडम्बर (वे

पत्नु वृं चिद्रुं है प्रिय क्का प्रिय कार्य। र वती का एक प्राथम । ६ वस्ट, फेट । ४ पुन. प्रिय सेमायण कुशायक (है १ ६० प्राय) । आर हि चिद्रा कुशायक क्यांका कुशायक (प्राप्ट १ १) । आराज कि किराह कुशायक (प्राप्ट १ १) ।

पबुकारि वि [बद्धकारित्] कुरामधै (तिः ४१४)। बदुचरिया की [ब्रे] १ उत्तरबद्दा १

बार-विवार (मोह ७) । बहुयारि देवो पडकारि (निव ४८१) ।

्युनार रका चक्कार (तक ४०१) । चकुळ वि [चटुळ] १ वंदत चरत (रे १ ४१, पठम ४२, १६) । २ इंपनाचा हिनता

हुमा (ते १ ४२) । पहुस्मा वि [वे चटुन्डड़] सगन-सग्र किया हुमा, विदुत्तनचहुनम्मीक्षते (ग्रुमन ७१) । (R R =) 1

n )ı

चबुबाकी दि] रत-दिनक धोने की

मेक्ता में बटकता हुआ एल निर्मित रिजक

चबुद्धातिस्त्रम न [दे] उत्तर भेदी (दे

चक्छियाची [१] यन्त धर्म में भना

कृता काल का पूजा जाय की बांटी (कृति)।

चतु धक [सूद्] मरीन करता सम्बतना।

चक्क (के ४ १२६) । प्रयो चक्कलए

(सपा ३३१)। च भु छक [पिप्] पीठना। च मुद्द (हि ४ **₹=**₹) 1 चड्र सक [मुख्] मोलन करना चानाः 48K (KY 22 ) 1 चतुन [रे] हैस-मात्र विसर्मे सैपक लिया माता के प्रवराती में 'बाइ' (सूपा व रेवा ext): चकुण विशेषानी १ मोचन बाला। २ बाले भी करा, श्राध-सामधी (कुमा) । चत्रावद्धी की [चत्रावद्धी] इस नाम की एक वनरी बड़ों भीचनेस्वर सुनि ने विकासी प्याधानी प्रधे में 'मुरमुंबरी-बरिम' नामक प्राकृत-सम्बर्गामा (प्र. १६ २४६)। चड्डिअ वि [सुद्वि ] मधना ह्रमा विका मर्थन किना गया हो नह (कुमा)। चक्किम नि पिष्टी पीसा ह्या (कुमा) । चड देवी चड = भा + च्रा संक्र चडिकाज (सम्पत्त ११६) । चहण देवी चहज (प्रेमीय २८)। ৰজ }ু[ৰজভ]ৰল ঘলদিটৰ च्याका } (चिष्ठा कुमाइचा व्यवस्थ देश पर)। चलक्या श्री [चलकिका] मसूर, यम-विरोध (森 弋, 飞): चलता केवी चनाश्र (मुना ६६१) सुर ६ १४)। साम दे साम वाम-विदेव बीड़ देश का एक प्राम (राज)। पुर न [ पुर] शवर-विशेष, राजपृष्ठ्-नवर का बस्ती দাস (ঘৰ)। चजनमाम देशो चनग-गम (धर्मेन ६ )। चमोड्रिया 🕸 省 🛚 द्वा । ग्र 'चलेड्री' केलों कोजेडिया (यनु दृहसर पत w4) 1

चत्त पूर्व दिही तक तहुवा मूत बनाने का कन तकती (दे ६ १) वर्गेर) । चत्त वि स्थिक देशे हुआ परिस्पक्त (पर्श्र २ १) कुना १ १६) । २ तुतकी मंदि (प्रस्तव्या ६ १)। चत्तर देतो चचर (पि २६६ माट)। वशा को बत्तासीसा (स्ता)। चत्ता हो [चर्चा] १ राधेर पर मुक्ती वस्तु का विकेश्ला । २ विकार, वर्षी (प्रकार वि)। चत्तास्त्र वि चित्वार्रिशः । भागीसमः (५ठम ¥ (w) 1 चचाक्रीस न चिलारिसत् । १ नजीस 'वत्तानीसं विमासावाससङ्ख्या पर्यक्तो' (इम ६६३ कप्प)। २ वि नातीस वर्ष की चन्नवालीः 'बचाबीकस्य विकास' (तंद)। चत्ताकीसा को चिरवार्रिशत ने नातीय ४ 'तीना चत्रवीसा' (बदशा २)। चरपरिपृद्ध [वे दस्तरि] शत शास्त्र (वे 1 (Y चपेटा की वि चपेटा करावात कमा तमाचा (वह )। चप्प क्का जा+क्रम ] शक्यस्य करना ध्याला । श्रेष्ठ चरिपवि (भ्रवि) । चप्प छक चित्री १ भ्रम्मन करता। २ स्थ्याः १ मर्चना करना। ४ वनन मादि से विसेशन करना । चण्याः (प्राक्त ७३ विकिष्ट)। चप्पद्रमान दि । इद्ध<del>-कन्न निरो</del>ग (पह्न १ ६—यम १३)। चप्परव म [दे] विस्तार, निएव (द्व १)। चण्यसम् वि [वे] १ प्रचल, पूछा (कुमा = **७१)। २ वर्ष्ट्रीमध्यानाची स्मृत कुठ बोलने**-मला (वस् )। चिप्पय वि [आऋक्त] शासन्त भ्याया इमा (चित्र)। चप्पुरिया ) सी चिप्पुटिका चरवे चुली चप्पुँबी 🕽 चंद्रहें के बाद बंद्रली की सबी (शामा १ ६—पत्र ६४, दे ४६) । भएक छ । त वि] रोबर-मिरोग एक तरह चण्टक्रम हैका रिग्रेजुक्त । २ वि. सक्त्य, क्रुट, निष्यामाची (देव २; हेव ६ स कुमाच २३)।

चमक्ष पं चिमत्कारी मिल्पर बारवरे 'संबंदिएसम्बन्धनाक्त्रो' (बस्स ६ द्या एप ७६ व टी)। यर नि किरी निस्तम<del>मध</del> (ক্তা)। चमक } सक [चमस्+क] वित्रेयत चमकर | करता चारकवित्रत करता। नमन्त्रेषु, नमन्त्रेति (विते ४३ ४८) सह-चमकरंत विक १६)। चमधार ⊈ चित्रसम्बर विश्लव विश्लव (सर१ ८ वका २४)। चमक्किन वि [चमस्कृत] विश्लित, मारव-यानित (तुपा १२२)। चमड ) एक [मुज् ] मोचन करना बाता। चमड ) चमडद (तर्) चमडद (हे ४ चमड पन हि र मक्त करना, मक्तना। २ प्रदार करना । ६ क्यर्बन करना पीइन्ड । ४ तिन्दा करता। १ बाक्सल करता। ६ अक्रिय करना किया करना । समझ पार-डिजांद (योव १२० मा वह १)। चमडण ५ [भोसन] धोवन, श्राता (हुना)। भमकल न दि । र मक्षेत्र सवसर्थन (मोन रेलक मा स<sup>्</sup> २३)। २ झा**ल्यस** (स १७६) । ६ कर्जन, पीक्ष्म । ४ म्हार (भोग १८६)। ४ तिल्ला, ल्लूस्स (धोप ७६) । ६ वि जिल्ली कर्लनाकी बार नह (मोन २३७)। 'ममहजा जी हिं] असर देखों (बहु t)। नमडिम वि दि । मॉक्ट विनासिट (वर चभर पूर्विमर] पशु-विशेष विसक्षे बार्जी का भागर या भेंबर बनता है; भराहरस्वमारे मिए रक्ते' (पत्रम १४ १ १) पत्रहर १) । २ पुंपाचने जिल्लोज का प्रदम शिष्य (दम ११२)। १ वक्षिण दिखा के समुख्यारी स स्क (ठा २, १) : चंच दू (चेला) वर रेक्ट का सामास-मर्गत (क्य १३ ६) । चौचा भी [ चन्ना] पमरेत्र भी राजवानी स्वर्ग पुरी-विशेष (सामा २)। "पुर न ["पुर] नियावरी का नवर-विदेव (इक)। चमर पून चिमारी चैनर, नागर, नाव-व्यवन (दे १ ६७) । भारी दारी की

चमरी--परण िंशारिणी ] चामर बीक्ते या क्रोसानेवाची की (पुता १९१ पुर १ १६७)। न्यसरी की [नमरी] नमर-पशु की माना, मुखी माय (से ७ ४८) स ४४१ मीरा महा)। चमस पूर [चमस] चमचा कतवी वर्गी (ग्रीय मद्दा)। चमुद्धार हुं [चमस्त्रर] १ पारवर्ग विस्मवः पेन्द्रावयम्परिक्रप्रवित्तवपुद्रारकारवं (सुर १३ १७)। २ विजनीका प्रकारा विविध विज्युवपुरकारानुंदरं चैवचवदससहो' (सुर 2 22 ) 1 चम्की [चम्] १ सेना सेन्य सरकर (बाबम)। २ केना-विशेष, विसर्वे ७२६ हावी ७२१ रम २१व७ बोड़े घीर १६४% पैक्त हों ऐसा भरकर (पडम १६ ६) ।

चन्म न चिमैन् ] द्याल लाग् पनका चला(हेर ३२ स्तप्त ७३ प्राप्त १७१)। "किंद्र वि ["किंट] चमड़े से सोमा हमा (मग १६ ६)। क्रोस क्रोसय प क्रिय. क} र चमद्रेका बना हुधा मैना२ एक तरह ना चमड़े का चूता (धीप ७२०) साचा २,२ ३ वन ¤)। श्रमिया की [<sup>\*</sup>कारिका] भगड़े की बनी हुई वैसी (मूप २२)। इतंबिय विक्रिकिकी १ नामके ना परिनादनाता । २ सब उराकरण चनके का ही रखनेवाचा (सामा ११६)। त वि [क] चमके का कता हुमा चर्ममय (सुम २ २)। पश्चिम र् [पश्चिम्] वमहें की पांचवाना पत्नी (ठा ४ ४--पत्र २ १)। पट्टपूरियको चनकेका पदा वर्म (विदार ६)। पाय न [दात्र] चमकेकापाद (याचा २ ६,१)। यर पुं["कर] मोची चमार (स २ ६०३१ २ १७)। स्यान न "स्टन न वस्त्रसी का रज-विरोग निवसे गुबह में बामे हुए शासि वयैष्ट्र क्यों दिन एक कर काले मोग्य हो वाते हैं (पव २१२)। स्वत्वा पूं [वृक्तु] बुल-विरोध (बन प ६)।

इत-विरोप (वस प ६)। चम्माहि की [चमैंपष्टि] धमैं-मय यदि, चमैं-वस चमड़ा सधी हुई कही (कप्पू)।

बम्मद्वित्रं सक [ बर्मेयद्येय ] बर्म-पिट्ट की तत्त्व प्रावरण करणा। वह बम्मद्वित्रेतं (इन्यू)। बम्मद्वित्तं वृ [ पर्मोप्तितः] प्रिनिचरेप (मत्त्वः १ १)। बम्माद् वृ [ बम्मद्वार] बमाद् मोबी (विते २१-८८)। बम्माद् वृ [ बम्मद्वारक ] उत्तर देखी (प्राय)।

(प्राप्त)।

प्रसिद्ध कि [प्रसिद्ध] चर्म से बेबा हुमा

बार्नेनिष्ट (किए)।

बार्मेह दे [बर्मेष्ट] प्रहरण-विरोध चर्मा से से

निष्ट पामस्त्रामा मार्च (परह १ १)।

बार्मेहण पूर्वा [बर्मेष्ट ] स्वन्तियेत (प्रम

२१)। की मा (मणु १७१)।

प्रम सक् [स्पन्त] सोहमा स्मान करमा।

वाद (सारा हे ४ ८६)। कर्म चहका।

(स्वर)। वह पर्यंस (सुता वेटट) सहस्म

बहुम बहुम विवा, चहरूमा पहुणा

चहाणां, चहुमु (बुमा सत्त रट) माहा।

प्रमान तत्त १)। क चहुमत्त्व (सुता ११६)

४१ १२१)।

वास सह हिन्दू | सहस्मा सम्मान

६ से दे, दे )।
प्रसादक [च्यु] मरता एक जन्म से दूसरे
क्या में बाता। चयद (मिंग) चर्चीत (मा)। क्षा चयमाण (क्या)। चय में [चय] रे स्थीर से (मिंगा रे रा) क्या)। २ स्पृष्ठ एनि केर (मिंग रे रा) क्या)। २ स्पृष्ठ एनि केर (मिंग रे रार्थ)।

भवद (हे ४ वर्ष) । वह भार्यत (तूम १

४ इदि (पाना) । चय दे [पव] ईटी की रचना-विशेष (विष २)। पद दे [च्यप] च्यक कम्पान्तर-पनन (ठा ८ कम्प)।

चयम न [चयन] १ इस्हा करना (पत २)। २ प्रकृष्ण ज्यासन (ठा २ ४)। चयम न [स्थवन] त्थम प्रतिस्था (सहि ११)। चयण न [क्यसन] १ मण्ण चन्नात्तर-मन (द्वा १-पन ११) । २ पतन निर चाना । कृष्य पुं [कृष्य] १ पतन प्रकार, चारित वर्षण से गिरने का प्रकार । २ ग्रिमिस सामुधी का विहार (गच्च १ पंचमा) । चयण न [क्यबन] कृषि क्ष श स्व (तंतु

परे!)।

पर सक [ चर् ] १ समन करना चनना,
बाना। १ समस्य करना। ३ सेनना। ४
बानमा। चरद (उच महा)। भूका चरित्र
पतडा। मेर्क चरित्र १०३)। वक्ष चरेत
परमाय (उच २ मच वित्र ११)।
संक्ष चरित्र चरित्र (त्राट—मूच्य १
सावत)। केक्ष चरित्र, चारप (योग १४)
करा। १८ परियक्ष (मग १ ३३)। ममे
चारियक्ष (पर्य १५ मन, वित्र । २ वर्ठन
(वंच सावत्र १ समन, वित्र । २ वर्ठन
(वंच सावत्र १ समन, वित्र । २ वर्ठन
(वंच सावत्र १ समन, वित्र । २ वर्ठन

चर वि [चर] चलनेवाना (शाया)।
परती की [चरती] निच दिशा में सम्यान्
नित्रचेत्र वर्षेष्ट्र सानी पुरुष निचयों हों बहु
(वर १)
परगा थुं [चरक] १ देको चर = घर । २
शंगावियों का पुरुष विरोध दुस्तवे दुसते
साने विद्योधनों के एक वांति (स्थर वच्चा
२)। ३ निच्चकों की एक वांति (स्पर्स

चर प् [चर] भंगम प्राणी (इप २४)।

२)। ४ रंग-सफ्ति कन् (एक)। बारवर्ध के [बारवर] 'पर-वर्र प्रधान (१ २१७)। पद्म कुंपिट] कुरेरे थी एक बांति (सम १२ दी पुत्रत २१२) १६६)। बारवा पूर्व [बारवर] रे धीमा बारिक 'सम्म

सागालकरणा पर्तपं सहस्कृतवस्ता (विवोध २२)। २ सामस्य (सुम्रति १२४)। करणान [करण] १ संस्था कारित बस् पिनम (ठा १ १: मोक २: किसे १)। २ करणा मुक्तों का दुरुणाई-सक्कण (दुर २,

वरता प्रमुखाका पूरास्थ्यकार (पुर २, ३)।३ पद्म का वीका हिस्सा (पित)।४ कमन विद्वार (छीट, सूस १ १ २)।३ देवन सन्दर (बीव ३)। ६ पाड, पॉस **चरिम देवो चरम (तूर १ १**३ प्रीरा भक्

चरिष पं चिरको भर-एका बावुत इत

चरिय न [चरित] १ चेष्टित माचरण

४ धैवित माभित (प्याहर ६)।

(धीप-प्रात ८६) । २ जीवनी वीवन-वरित

१६२)। २ वसव मधि विद्वार (सूच ११

४)। ३ मादी (प्रस्ता पत्र ११ वा. १**४**)।

**वरीया संबक्तिमारस जोतिन्** (वेत्र ४२)।

**थरु पै पिरु स्वामी-किरोप पात्र-विरोम** 

पन्ड) । यह जारीत जलमाण (या ११६)

चरीया देखी चरिया - वर्णी 'तरायाती

झ २.४)।

(नुपा १२६)।

चरम-चव

परमाञ्च दे [परमानुभ] <del>इत्तुद, इ</del>से चलगामोइ 🛊 [दे चरणानुम] आर था

पतितिय दि चित्रेन्द्रियो इतिस्नित्रक्ष इस्तै में प्रसमने दिलकी इतियों कता में नहीं

(इम्म २)।

भाग बंबस 'अविरम्भएली' (उप १०६) **यह देवो यह = वस् । यस्वर् (१४** १९६)

**चह्यम न दि | बक्तांतुक क**िश्वक (वर् ) र चिक्क कि कि नाच्छे काव की एक प्रकार

पि से दि म<del>रन रेका</del> (सीत ४७) ।

चक्रिय देवो चक्रिय (दुर २ ११) व्य चव पत्र कियस ने जन्म, बोलना। चवर

(१४२)। कर्षे पविचार (कुमा)। गा

चर्चत (चरि)।

की पति (कपू)।

चिस्ति [चिस्ति] बननेवासा, यसियः मुपा ७६३ २१७३ स ४१) १

चंचवता (पाध) । २ मि चता हुसा, मन्तित (बारम) । ३ प्रमुख (पास सीप) । ४ विनर

वह (बावा२ ४,१)। चक्किय न [चक्कित] १ विकास धर्मेन्द्रै

(पडम ११२ १)।

121 प्रसम्बद्ध रि [प्रसम्बद्ध] भेगव ग्रीवर

चलक्रम न 👣 चटपटाई, चंचवता (परप

चस्त्री समियों को प्रकार का करि बद्ध (पन ६२)। पद्मी से पिस्ती १ समिरों स एक क्तकरका (सीव ६१६ भा) । २ पैर तक का

( 1 v) (बद्र)। चळणिया हो [चळनिका] गेपे रेवो (धोप 494) I चळविया ) को (चळिनम "नी) वैव

चळताकी चिस्ना १ थना प्रति। १ कम्म क्रिका (मन १६, ६)।

कीय (बीव १) मन ७ १) ।

(भूपा२) । ३ चरित्र-ग्रन्थ (सूपा ६३०) । चरिया की [चरिका] १ परिवर्शनका, संन्या-धिनी (धोव र्श्व)। २ किसा धौर नगर के बीच का मार्प (सम १३७ पर्स्त ११)। वरिवाकी विक्री १ बादरल बनुहार 'पुरुक्ररचरिमा पूर्विक्रपर्धा' (पटम १४

(३ ७)। इस्टल न किस्ली वैदन का चरिति पूंडी चिरितिम् दिवमनाना वानु यून सीर छत्तर ग्रुण (सूम ११ धम्म सनि (उप ६६६ वेचन १)।

१९४) । करणाणुभीग 🛊 िकरणानुयोग] संयम के मूल भीर एकर दुखों की स्थासना (विष ११) । इसीस १ डिसीस विक को मसिन करनेवाला साब, रिप्रविताचारी साम् (पद ९)। जय नियी विश्वाको मुक्य माननेवासा मत (भाषा) । सोह पून िमोडी चारित का माबास्त कर्न-विशेष

(कम १)। चरम वि [चरम] १ मन्तिम भन्त का पर्वत्सवर्ती (ठा२ ४० मन व ३३ कम्म ३ १५४ (६: १७)। २ घनन्तर मन में मुक्ति पानेवाला । ३ किशवा विद्यमान कर मन्तिम हो वह (ठा२२)। श्रास्त्र प्र िकास्त्री मरात्तशमन (५वन ४)। अस्त्रहि व विश्ववि प्रतिष्य समुद्र स्वयंत्रुरमस्

सपुत्र (बहुस २)। चरमंत पू (चरमान्त) बन हे सन्तिम सन के प्रान्त-वर्ती (सम ६६) ।

चरय देवी चरग (मीत छाना १ १६)। परिपृथ्ये विरिी १ पत्त्वों को बस्ते की बन्द्र । २ पास, परुभो की बले भी चीव वसः (कुमः १७)। चरिया देवी चरिया = चरिता (चत्र) :

चरित्त म चिरित्री रेचीला भावस्ता। २ व्यवहार (सर्वः) प्रासू ४ )। ३ स्वमाव प्रवृति (दूपा)। भरित्त न [परित्र] जीवन-नवा, बौबनी

नहानी (सम्मत्त १२)। चरित्त म (चारित्र) संबम विर्णत इत मित्रम (स्टर ४° ४ ४० मन) । इस्पूर्व विक्रप ] संबग**त्र**कात ना प्रतिपासक कल (र्थमा) । मोइ र्रुप [मोइ] क्नै-विदेव इंदन का मानारक कर्म (क्य) । सोइक्टिज

[सोइनीय] व्याप्तिंक पर्व (ठा २ )। विरिधं न [विवास्त्र] धक्ति बम, भाषक-वर्ग (प्रकि: भ्रय द्यार पुं[त्यार] संबंध का सनुहान ्रारिय प्र[ाय] भग्रत्य दे मार्व - नि (परस्य १) :

(मीक चरि)।

चस्मिजन देखी चारडणद (इस) । चरक्तेव व दि] नाम बाक्सा (६६६) : च छ सक [पस्] १ भनना सन्न करना। ९ मत- करिया हिमना । चनद (महा

दुर ३ ४ मन) । हेक विश्वदे(वा ४४४) । प्रको संक चरुक्ता (इस ६,१) । भग्न नि चि**ड**ी १ वंतत ग्रीनर (त ४२ ) क्या ६६) । २ 🕺 सक्छ का एक युक्ट (पडन १६ ३६)। अक्रमध नि [बद्धबर्ख] १ बेक्स परिवर, 'अनवनभरीविमोरक्षकराई नक्शाई तक-रीखें (क्य ६) : १ पूंबी में बसी कती. इ.द. भीज का चड्ना तीन वात (निवृ४) :

असम प्रे [बरण] पांच पेट, बाद (धीना है ६ १३) । मास्त्रिया वर्ष [मास्त्रिया]

पैर ना बामुचल-निवेद (राष्ट्र २, १८ होस) । बहुम न [बम्दन] पर पर हिर कुछा कर अलान अलाम-विकेश (प्रदम क २ ६)।

चय--पाउम्मासी चन प्रक [क्यु] मरना जन्मान्तर में वाना। बबद (हे ४ २३०) । संक्र. चविज्ञण (प्रारू) । इन् चिषयम्य (ठा ३ ३) । चव पू [च्यव] मच्छ भीत भनता प्रपुष्ट <वं (उच ३ १४)। चयचव पू [चवचव] 'वव-वव' ग्रावान व्यक्ति-विशेष (बीच २८१ मा) । चवण न [च्यवन] १ मरण कमान्तर-प्राप्ति (सूर २ १३६ ७ ६ ई ४)। २ पतन गिर जाना (बृह १)। **भवस वि [म**पस्त] १ नेवब प्रस्थिर (पुर १२ १३ का प्रासूर ६)। २ काहुल स्था कुम (धीप)। १ पूँ सवस का एक गुमा (परम १६ ३६)। व्यवस्त पू वि] प्रश्न-विशेष बोहा (मा १०)। अवस्य पू [ब्] बाल्य विशेष पुत्रसती में 'बाक्स' (पन १३४) । व्यवस की [चपस्स] विद्युद, विवसी (बीव 1) i चिम वि चिमुत्ती मृत जन्मान्तर-प्राप्त (दुमा२ २६)। चविध वि [क्षयित] एक क्या हुमा (भवि)। चवित्रा की चिविदा ननस्पति किरोप (पर्ए १७--पत्र ४३१)। विद्या है थी [बपेटा] वर्गमा, क्यह चित्रता (दे १ १४६ हुमा)। चमेळा चवेकी की वि] र रिसट कर-संपूट । २ संपूट, arge, from (& q, q) : च्यण न दि ] वचनीय लोकलवार (दे व **1**) i प्रदेता देवी प्रदिश (प्रारू) । चन्य सरु [ वर्ष ] वदाना (श्रीप्त ३४) । भव्य (शी) वेदो सब = वर्ष । समहि (प्राप्त **44**) 1 चान्यविद्धान [दे] बनतित क्लो से पौता ह्याः 'चन्द्रस्या व चुम्नेस नाधिया (भुपा ¥**XX**) ( वस्वज म [वर्षण] धवाना (रे ७ x२)। व्यवदाइ देशो प्रकागि (राज) । चण्यार ) है[बार्याक] गास्तिक ब्रह्सिति चन्त्राग ) का शिष्य नीकायतिक (प्रवी ७वा सम्)।

81

पाइअसदमद्दरणयो पारुषंट ) वि [पतुर्षेष्ट] बार पंटाबला, च्छ्यागि वि [चार्याकिम्] १ चवानेवासा । चारुपंट 🕽 बार्रेबएयमाँ क्षेप्रक (सामा २ दुर्व्यवद्वारी (वन ३) । ११ भग र ३३३ मिर १)। चक्रियत वि [चर्यित] चवाना हुमा (सुर चारुद्धाम न चाहुर्योमी चार महाबर १व १२व)। चस ७५ [चप्] चवता ग्रास्ताव केता। बहुये चारसाबुश्वत (सावार ७ ठा४ नक चर्तद (शी) (रंगा)। देह चसिटुं (री) (रमा)। पाउठ्याय न [पातुजात] शमनीनो तमा चसग रे 🐧 [चयक] १ शक पीने का प्यासा सपत्र इसाम्बी और नावक्रेश्वर (क्य प्र चसय 🕽 (चंद्रः पार्घे)। २ पात-पात्र प्याचा (मूर २ ११ पडम ११३ १)। ३ पक्षि-१६, महा)। चार्रात्वम रेको चार्रात्यम (उत्तर्भ १)। निरेष (दे६ १४६)। चहातिया की वि | बूटकी बुटकी मर बोम-थाउ रेबय पू [चाठुधिक] रोम विशेष शीधे-पुरुए वहाँदियामेत्तपन्छवेरा (कास)। नीये दिन पर होनेवासा क्वर, नीयिमा चहुटू प्रक [दे] विपक्ता विपटना, सपनाः बुसार(भीव ३)। पुनराती में 'चारतू' 'रे मूद तुइ सकन्ये भाउदस्या ही [चतुर्शिका] विवि-विशेष मीताइ चहुद्र बहा चिर्च (धनिम १६)। नपूर्वसी भीवस 'हीसपूर्णपानहसिया' बहुद्ध (ब्रुप्र २४६) । (उमा)। च्यद्वष्ट्रवि [क्] १ निमप्त कीन (देव २ चाडइसी भी [चहुदुर्शा] अपर देवो (भगः बका १०): 'मण-पगरी-पूल दीए पुहार्सवरे-को १)। विस बहुद्रों (स ७२ व टी)। चाउदाइ (धप) ति व [चतुर्दशम्] बहुट्ट १ वि वि] विश्वना द्वारा सरा नीयह, १४ (पिंग) । बहुद्धि ह्या (अमेरि १४१) उप ७२८ चारहिसि वेबो चड हिसि (महा मुना १६४) टी कुप्र २७)। बहोड पूँ दि ] एक मनुष्य जारी (मनि)। चाठप्याय न [चतुष्याद्] चतुर्विच चार प्रकारका (बचार २६, युवार २६)। चाइ वि स्थिमिम् १ त्याप करनेनाता क्रीक्नेवाका । २ वानी वान वेनेवासा, छन्नर चारमास ) पून [भातुर्मास] १ भीमासा (सूर १ २१७) ४ ११६)। ३ नियम, श्वाउम्मास ने बैसे बापाइ से तेकर कार्तिक निरीह, संमभी (भाषा)। तक के चारमहीते (छप पू ३६ र्यका चाइय वि स्याजित देवेदनामा ह्या (वर्गीव चाइम वि शिक्ति को समर्व हवा हो (सहस १६)। (पउम ७ १२१३ सूच १ १४)३ 'सम्बोबा पृक्षि समा वेल्या भ नाइमा सुरिकेश । ताहे ते नेखवाँ (पदम ११व, २४) । चाउमंगी को [चार्येड्री] मुन्दर धंनतली की (प्राक्त २६)। भावेड पू [भागुण्ड] राधत-नंश का एक यमा, एक सञ्चा-पति (पद्य १ २६६)। ₹=) : भावकास्त्र न [महुटकास्त्र] नार वस्त्र भार समय (विसे २१७६)। चारकोण वि [चतुष्कोण] चार कोनलाता,

अनुरस (बीव १)।

१७)। २ मापाइ, ऋतिक भीर फालान मास की शुक्त कर्नुवेशी। 'पवित्र ए चारुमासे' षाप्रमासिक वि [पातुर्मासिक] १ बार मात सम्बन्धी भैमे प्रापाद से चेकर कार्तिक क के चार महीने से सम्बन्ध रखनेवासा (यामार श्रापुर १४ २१=)। २ ल. भाषाङ कार्तिक धीर फाल्पुन मासकी शुक्त चनुर्देशी विधि पर्व-विशेष (बा ४७) ग्राप्ति चारम्मासी 🛍 [चातुर्मोसी] चार मास, चौमाबा बायाड से कार्तिक कार्तिक से फान्द्रन बीर फास्पुन से बावाई तह के बार महीने (पटम ११४, १४)।

स्मासिम् (वर्षे २) धाव)। भाउरंग देवो भाउरंग (पदम २ ७१)। भावरंगि देवो भाउरंगि (मगः शामा १ १—यम ३२)।

भाउम्मासी स्मै [चातुर्मासी] देवो पाठ

बाहराम च्या बटराग (मध्य शामा १ १—-यह ६२)। बाहर्रागाञ्च वि [बहुएक्टीय] १ बाहर्पमाँ है सम्बन्ध रवनेकहा। २ व, 'उत्तराध्यन' सूत्र का एक प्रस्मान (उत्तर ४)।

सुप का एक प्रमान (उत्त ४)।
पावर्षय केवो पकर्षक (स्व १) छा १ १३ ११ ४४)।
पाउरत १ [याद्यस्त ] र पक्तर्या एका ग्राम्स (प्रपृष्ट १४) २ त. करन-पायर कोध (स्व ४)।
पाउरंत १ [याद्यस्त ] स्वत्र-संव

(पित १४ १ ११)।

पाडर्यंत्र मृज्युरस्य प्रक्र परिवा (पेरव (१४४)।

पाडर्यंत्र मृज्युरस्य पर मार परिवा ।

गोर्सारं मृज्युरस्य पार मार परिवा ।

गोर्सारं मृज्युरस्य पार मार परिवा ।

पाडर्यं मिं पोर्डीरि नार मार परिवा ।

पाडर्यं में पोर्डीरि नार मार परिवा ।

प्रक्रियं गोर्सी मो निमाय मार मिर्स्य अपना मार परिवा ।

परिवा हमा हमा पोन्हमा (भीर १)।

पाडर्यं मिं मुँ नारक मार पेर्ट्र मार्डियं ।

पिट्ट' (बस १ २ २२)। भाषक्षद्र[दे] नामन तरहून (देव : माना२११६ क्त व २३१) मोर १४४ नुसा ६३६ स्मल ६ क्ला)। चाब्रह्मान [दे] पूरपका पूबला—क्वनिय पुस्य (निष् १)। चाउवण्य देखी चाउवस (सम्पत्त १६२)। भाउवस १ सि [मातुर्वेण्ये] १ बार बर्छ-चाइब्यण्य विल्लां चार प्रशास्त्रकाः। १ र्वु सा**र्या मानक मीर भाविता** ना तबुधन (टा १, २—१४ १२१); 'चाउन्य र्तुस्त सम्युर्वस्तवं (प्रथम ६ १२)। ३ न. बाह्मण समित करूप सीर शुद्र हैं। चार मनुष्य-वादि (तर १६)। चार्शस्या रेना चाउम्बेज (दी ७) ।

बारकाञ्चन [बातुबँची १ बार बहार

शे रिया—भाव म्यावरण साहित्य सीर

वर्तन्त्रस्य । १ र् पीवे बाह्यस्त्रीया एक ।

(महा)।
पात्रस्मात्र की [चतुरशास्त्र] चार्च तरक
के क्यारात्रों हे पुरु वर (पर ११६ दी)।
चार्यत केतो चात्र = च्या।
चौर्यता की [चामुण्डा] स्तरागन्त्रता केते
(हे १ १०४)। काष्ट्रमा है [कामुण्ड]
महत्त्रता किर (कुमा)।
चार्या केता चात्र = स्वार (पैचन १)।
चार्या केती चात्र = स्वार (पैचन १)।

नार स्वा नाव न त्यार (पत्य ())
नाव नि हि पाराणे करते (दे र न)।
नाव नि हि पाराणे करते (दे र न)।
नाव नुंग (नाव) र प्रियमस्य । र कुमान्य
(दे र २० प्राप्त)। पार नि हिस्सो
कुमान्य (स्व १२)।
नावुस न (नावुक) करते क्यों पुना)।
भाजक वुं (नायस्य) र रामा नम्युम ना स्वमान्यक्रिय नम्यों (प्राप्त १४४)। र एक महुस्य-नाति (स्वेश)।
नायकक्षे की (नायस्यों) निति-विदेश (तिष्ठे ४४४ हो)।

वाणिक केवो चाणक (११००)।

वाण्ट पूँ (वाण्ट्र) साम-विशेष विवक्षे
प्रीष्ट्रपार्व वारा वा (राष्ट्र १ ४ विव)।

वासर पूर्व (वासर) वेर्षय, वाम-व्यवन (हुँ
१ १६)। २ क्वर-विशेष (विव)। या कि
[मा विद्या वामर वीजनेवामा तीकर।
की ती (विदेश)। बायण मा (चित्र)।
वार ती (विदेश)। बायण मा (वित्र)।
वार ति (वार) वामर वीजनेवामा (वारा व १)।
वार ति [चार] वामर वीजनेवामा (वारा व १)।
वासर व्यक्त वाष्ट्रपार्थ वाष्ट्रपार्थ (वारा व १)।
वासर विवासर पुरुष वाष्ट्रपार्थ वीजनेवामा (वारा व १)।
वासर विवासर पुरुष वाष्ट्रपार्थ वीजनेवामा (वारा व १ १)।
वासर वार्ष्ट्रपार्थ वीजनेवामा (वारा व १ १९)।

वक्षा।
बातीबार न [ चातीचर ] पुरुष्ठं, कोना
(वाद-तृषा का प्रकार १) ।
चाहुंबर दें [ चाहुंबरपा में प्रकार के प्रकार दें [ चाहुंबरपा में प्रकार के प्रकार हुए को पुरुष्ठ के प्रकार हुए को प्रकार के प्रकार क

चाय देवो चाव (युवा ११ वे १४ ११) चित्र)। चाम वृं[स्वाय] १ ग्रीम्त्रा, परिण्यत (शत् व)-पेषव १)। २ शत (युव १ ६१)। चायम ) वृं[चातक] परिमन्त्रिय चारक

बायम हे हूँ ब्लाइक प्रिस्तिकोक बायक बायक प्रेस्ती (एटए प्राप्त के ए. १)। बार सक्ष [बारस्] वरणा क्रियला। बारेस (क्षिति १४१)। बार हुं [बार] १ वर्ष कमन 'पावनारेट' (महा का द्व १२६ एस्स्तु १३)। १ प्रमण्य परिप्राप्त (त १६)। १ वर-पुक्त बायुट (विचा १ ६) महामा मिले।। ४ कारमार केर्माना (मिले)। १ केंग्राप्त एसप्टर्सिन प्रशासना)। १ समुद्रान सामस्य (संप्ता

(बीप)। ६ समुद्राण पालपार (पालपी)
४१: महा)। ७ व्योप्तिर-वेच पालपा (स्र २ २)।
चार पुँ चिं १ दुर्म-विरोग पिमल दुर्म चिरीयों का पेत्र (दे ६ र समु चरण १६)। २ तत्वन-वाला (दे ६ २१)। ६ स्थ्या, समिलाल (दे ६ २१ स्र्वं दुर्ण ६११)। ४ त. स्वल-विरोग सेवा-विरोग (पर्यक्ष १६)। बच्च पुँ हिस्स् वेचेन कारे की स्थ्यानुसार साम केवर वर्षणा (पुण १११)। चारा केवी चर=चर्। चारा केवी चर=चर्।

चारत के चार को को चार (दीन छाना र रंग्यह र १। घर १२ टी)। "पार्छ प्रे "पार्छ के कहाना का स्थल (चिता र १ "पार्छ के कहाना का स्थल (चिता र १ "पार्छ के कहाना का स्थल (चिता र मेंद्र न "साम्ब्र] कैसे को किला करते का काव्यछ (चिता र ६)। दिन प्रे "पिया केव्यला का स्थल केनर (यर १ १६०)। चारल प्रे चार हो। चीन-मोरक प्रत्येत्नार, चोर विकेश (३ १९)। चारल प्रे चार हो। स्वास्त्र के बस्त्र वस्त्रे चीर प्रकेश केवल केवा केवल वस्त्रे चीर प्रकेश केवल केवल क्ष्में केवल वस्त्रे चीर प्रकेश केवल केवल केवल वस्त्रे

म्बर (बर ७६ टी) ब्रामा) । ३ एक मैन

বুদি-ৰত (হা ১)।

बारणिका से [चारणिका] मणित-विशेष (बोन २१ टी)। चारमञ्जू [चारमट] शूर दुस्य सद्देश सुनिक (पराहर २१ व सहर)। चारमह दे [चारमट] सु<sup>3</sup>रा (पिंड १७१)। चारत रेको चारग (मुपा २ ४३ स १४)। चारबाय पूँ वि] ग्रीम्म ऋतुका पवन (हे 2. 2)1 चारहड देही चारसड (बम्म १२ टी मनि)। भारहृहा जो [भारमटी] शीमेंबृत्ति शीनक बृति (मुपा ४४१ ४४२ हे ४ १६६)। भारागार न [भारागार] देवबाना जेनकाना (HT 28 24) 1 चारिकी (चारि) भाग पर्यों के बाने की चीज वास सादि (सोव २१८)। भारि वि चिरिन् र प्रवृत्ति करनेवला । (विशे २४३ टी वन बाचा): २ वनने बाला धमन शील (भीप कम्पु)। चारिक वि [चारित] र जिसको वितास क्याहो बद्ध (छे २, २७)। २ विकापित जताया **इया** (पर्छ १७---पत्र ४१७)। चारिअ र्दु[भारिक] १ वर पुरव बामूस (पएइ १ २) पठम २६ ६४)) भोनिस बोरिवर्ति व होइ बसी परवारवामिति' (विधे २३७६)। २ वंशायत का मुख्या पुरुष श्रमुदाव का सप्तमा (स.४.१)। चारित रेवो परित = चारित (धोव ६ मा) क्ष ६७७ ही) । बारित्ति देशो बरित्ति (कुछ १५४)। वारियम्य देशो चर = चर्। चारिया को [चया] १ याचरण इवर उवर गमन, कीविका। २ केटा (उत्त ११ वर् दराज्य वर् । चारी और [चारी] वैको चारि = कारि (स ४ ७ मीप २१८टी)। चारुवि [पार] १ मुचर, शोक्त प्रवर (बंदा भीप)। २ दूँ सीमरे जिनदेव ना प्रवस्तित्व (तम १४२)। ३ न. प्रहृत्सा विरोग राम-विरोव (बोब १३ राम)। भारतम्य दु [चारविनक] १ वेग्ननिरोय । २ वि उमे केट का निवामी (बीक झंट)। की (पश (मीत)।

चारणय पू [चारुनक] उपर देखो (प्रीप)। धी "णिया (मीप खाया १ १)। बार्स्याच्छ पू व [बारुवरिस] बेरा-विरोप (पडम ६८ ६४)। चारसंणा को [ चारसेनी ] सन्दर्शिय (पिय)। चाल सक [चास्रम्] १ वदाना दिलाना कॅपाना। २ विनास करना। चानेइ (स्वः स ४७४ महा)। कर्में, वादिन्यद (स्व)। वक चालंत चालेमाय (मूपा २२४ जीव ३) : कबर चासिज्जमाण (ग्रामा १ १) । हेक पासिचए (उना)। थास्य न चिल्लिनी १ वताला हिसला (रमा)। २ विचार (विसे १ ७)। आसण न आसन् । रोता प्रस्त पूर्वपञ्च (चेदम २७१)। बालया सी बाजना रांका पूर्वपत्त माखेप (भए। इष्ट्रा)। चार्क्षणया भी चारतिका नीचे देनी (उर १६४ थै) । भाजनी की [भाग्रनी] प्राक्ता सानने का पात्र असनी वा असनी (भावन)। चारम्यास पुं वि] सिर का भूपश-विशेष ( **4 =**) ( चालिय वि चिल्लिटी चनावा हुमा दिमाया हुमा' 'पुण्डमाँग् नामियाए शिवसंकेमपदाक्य्' (मक्दा)। पालिर वि [पासविद्] १ परानेवाचा । २ बस्तेवाला 'चरपवलुबाद्ववामिरदवन्यिस

(पदा)।

पाजिर रि [चास्रविद्य] १ जनानेपाता।
२ जनानेपाता।
२ जनानेपाता।
४ जनानेपाता।
पास्रविद्यालिर स्विमित्र पिन्न प्रमेशेष्ट (रजना ७)।

पाक्षी की [ प्रसारिशात ] जानीत ४
(जला)।

पाक्षीस की मा [ चालारिशात ] चालीत ४
(महा रिल) की. सा (ति १)।

पालुक पुढी [चीलुक्य] १ जालूमय कीठ

मैं उपस्य १ पुँ दुस्तरका। सीव्य समा
मुजारान (मुला)।

चाय सक [चर्चे ] चवाता । इ. जावसक्य

पाव र्षु [चाप] बनुष रामु क (स्वप्न ११)।

पापस्र न [पापस्र] पत्नता भेपनता (यमि

(उस १६ ६८)।

२४१)।

चायद्व म [चापस्य] कमर देशो (स १२६)। भाषासी की [चात्रासी] प्राम विशेष इस नाम का एक गाँव (बावम)। प्ताबिय वि [पर्वित] भवामा हुमा (वर्मीव YE (YE) 1 चाबिय वि चियाविती मरवाया हुमा (परह 3 () 1 पावेबी की [पापेटी] विचा-विशेष विधने दूसरे को तमाना मारने पर बीमार मावमी का रोन चमा बाहा है (बब १)। पामेयन्य देशो चाम = चन् । पायोष्णय न [पापोक्तत] विमान-विरोध एक देव-विमान (सम १९)। चास पू चार्यो पश्चि-विरोध स्वर्त्त-वातक पपीड़ा सहनोरना (पग्रह १ १ पग्रा १७-लामा १ १) भीम ८४ मा उर १ १४)। पाम पूं हि । पास इप्र-विद्यारित भूमि रेखा क्टी(देव १)। पाइ एक [ बास्छ् ] १ पाइना, बाह्नता । २ भन्ता करता । १ याचना । चाहक, चाहसि (मनि पिन)। भाहियों भी [चाहिनी] हेमानामें भी माता कानाम (कुप्र २)। चाहिय वि [बाब्बित] १ वाम्पित यमि मफ्ति । २ वर्षेमित । ३ सामित (मनि) । चाडुआ वर्षु [चाहुयान] १ एक प्रस्कि धनिय-वंश बीहात वंश । २ तुंशी बीहान वश में स्टब्स (सूपा ११६)। चि देशो चित्र। इमें चिन्नह, चिम्मह, चिन्नीते ( R Y 2 2 2 4 4 1 ) ; चित्र म [एव] निवन को बतसानदासा मन्यमः 'मलबर्ध वं चिम्न कामिलीश' (हे २ रवश कुमा या रह ४६। ई १)।

' विजय [इव] १—२ कामा धीर क्लेबा

चिअ वि[चित] १ इपट्टा निया हुमा

(मग)। २ म्याप्त (मुपा २४१) । ३ पुट

चिमन [चित] इंटमादि ना <del>देर</del>(सणू

थित्र रेको थिए = वित प्राइ २६)।

ना नुषक धन्यय (प्राप्त)।

मांसन (इस्टर्सी)।

22Y) 1

१—रव १२) ।

चाउम्मासी हो [चातुर्मामी] देशो बाह म्प्रासित्र (वर्षे १: पाव) ।

चारुंगि रेची चडरंगि (मन खाना र

चार्जागद्र व [चहुरहीय] १ कर धेर्ने

वे कम्बन्ध रचनेशाचा । २ न 'उद्ययम्बयन'

बाडरंग रेपो घडरंग (वडन २, ७१) ।

मूत्र का एक घष्यकर (सत्त ४)। चाउर्रत वैनो भडरंत (तम १) हा ६ १) \$ 2 m)1 भाउरत (भातरस्ती १ कम्बर्ती राजा मग्राट् (पण्डू १ ४) २ तः सन्त-नग्रय चौधे (स ७६)। भाउरंश व [मातुरम्त] बरत-शेव बारतवर्ष ( TTU TY TY!) 1 चाउरंत न [चतुरस्त] यह परिया (चेरन (\$XX) I थाउरकः वि [भागुरक्य] चार बार वरिलन । गोग्बीर न ["गोझीर] चार बार परिलुख तिया हुमा धा-दूस वैसे कठियस शीम्रों का दूव दूसरी मौधी को निकास जास किए उनका सन्य गीमों को इन उच्छ कार बार परिगुष्त किया हुता को-पुरव (जीव ६)। भाउक दि [व] भारत वा 'तहेर माज्ये रिण (दन १ २ २२)। बारमप्रदिशीनासम् तम्बन् (११) माना र १ ६ ६ ८ ब्राह्म २३१ मीत १४४ द्वा ६६६ स्वल ६ वन्त)। चात्रहरान (दे} पूरण का पूत्रका—कृतिक पुग्प (निष्कृ १)। पारवणा देनो पाउवप्र (कावत १६२)। चारपस }ि [पातुवर्ण्य] १ वार वर्ण-भाउत्पणमं भागीं भारमगर बाला। १ र्पुधानुसम्बो भागक्र सौर धारिकाका नपुत्रय (दा ४ १---एव ६२१)- 'बाइस्ट गणन्त नमणुर्वकरनी (एउन ६ १२)। वे मा बाग्राण शास्त्रिय मेरप सीर शुद्र है चार मनुष्य-वार्ति (भन १६) । बार्यक्षम रेगा बाउम्बेस (वा ०) । यास्यात्रन [बानुर्वेत] १ बार प्रसार री श्वि —श्वाद स्वाररण सर्टिय बीर वर्ग-राज्य । २ र्यु की रे बाह्यली का एक | व्याप्ति (तुम १ ३ १ वस १) ।

धारम-उपयोग शा भर्गः 'पारकारमोवनसीएल्' (मद्दा)। बाउस्साद्धां भी [पसुदशास्त्र] बार्चे दरक के कमरावर्धे के पूक्त वर (पन १३६ टी)। पार्थ्य देवी पाय = नव । चौंडेहा की [चामुण्डा] स्वनाय-स्पात देवी (११ १७४)। काश्म १ ['कागुक्र] महादेव छिन (कुमा)। चाग देवी चाय = त्याग (वंचन १)। चागि रेखी चाइ (उप पुरुष)। भाइ विदिमामाधी इप्रदी (देवे व) । चाडुपूर [चाटु] १ प्रियमान्य । २ कुरामद (देर ६७ शाप्र)। बारीव विकार] नुरामकै (पर्वा १ २)। चाडुअ न [चाटुक] व्यर देवोः कुना) । चाणक पू चालक्यों १ सना चन्नपुत का स्पनाम-प्रक्रिक मन्द्री (पुरा १४४) । २ एक मनुष्य-जावि (ऋषि) । षाणकी की [बाजक्या] निपि-निधेष (विशे ४६४ हो)। चाणिक देवी चाजक (दाह) । चाण्र पू [चाण्र] मल-विशेष विश्वके भीकृष्य में मारा वा (वरह १ ४३ विव)। चामर पून [चामर] चैतर, शक्त-धतन (हे १ ६७) । २ व्यन्द-विशेष (सिप) । स्त्र हे पि प्राद्विम् निमार बीजनेवासा नीकर। भी. थी (मीर) । आयभ न विकासनी स्माधि वशव का मोत्र (इस) । अस्तव दू [ न्वज | भागर-धुक पताका (प्रीन)। भार वि [भार] चानर बीजनेराला (वस्म 1(≎) ( शामरबद्ध न [शामरप्य] मोत्र विशेत (नुज्ज 1 (2) चामरा की कार रेगो (मीग बनुः भत ६, चानीमर न [चानावर] गुवर्ण, तीना (पाय नुवाककः खापा १४)। पामुक्यव र् [पामुण्डयः हो दुवयः वा एक कीनुस्य वंत का धाना (कुत्र ४) । पास हा रेगी चाँतहा (दिनः दि) । यापं देवी अय = शरा नर नार्यत्, पुनिनए (स १) ।

पाय देवी चान (तुपा १३ ३ ते १४ ११) चाय पुरियाग र घोड़ना, परित्याय (प्रापु ८ पंचव १)। २ दान (तुर १ ६४)। पायग ) पू [पातक] पश्चि-विरोद, वातक च्यापद<sup>्री</sup> पद्यों (छक्तापका वे ६, ३.)। चार एक [चारम ] चरना विसनाः चारेड (वर्गीव १४३)। चार दृष्टियार] १ ब्रोत थमना 'पानकारेल' (म्यूर ज्य दृ १२ ६४ स्थल १३)। ९ भ्रमल परिश्रमश्र (स ११)। १ नर-पुका बाहुर (विपार ३ महा सवि)। ४ काणवाद, कैनवाला (अपि)। १ वेनार, वेनरस (ग्रीप)। ६ मनुद्रान, ग्राथयत (ग्रायानि ४४। महा) । ७ ज्योतिन-क्षेत्र सारास (स ર ૧) ા चार पंदि १ कृत-विशेष पियल पूर्य चिरौंनीका पेड़ (देके २१) संखुपरण १६) । २ सम्बन-स्वान (देवे २१) । वै इच्छा, व्यक्तिस्य (दे ६ ५१ वर्षः) सुपा १११)। ४ म. यहन-विरोध वैदा-विरोध (पएए १६) । बक्रव पू [फ्रिय] वेकी-भावे की इच्छानुसार दान केवर करीएना (मुपा ६११)। चारप केवो वर≕पर्। चारा रे [चारक] रेबो चार (धीपः छाना १ १ परहर के इस क्रम की) । पास पूं ["पास्र] जेलबानावा सध्यस (रिपार ६—पत्र ६६)। पास्त्रम 🖠 [पास्तर] वैद्याना ना सम्बद्धाः जेन्द्र (तर द १९७) । "भंड न ("माण्ड) कैशे को शिया करने माजाक्यल (भिया १ ६)। दिव 🖠 भिषिप दिश्वामा का सम्बन्ध चेतर (इन 2 34m) 1 चारज प्रे चि । प्रीयन्त्रोरक, पाकेरवार, चीर विकेश (के उंदि) । चारम र् [चारम] १ मानात में बबन रही भी शक्ति रखनशाने थेन चुनियों की एक वाति (भीर नुर ३ १४, सन्दि १६) । र बनुध्य-प्राप्ति विशेष शृति अस्तेवानी मार्डि मद्भ (काच्य, टीक्समा)। १ एक <sup>देत</sup>

चिक्क वि दि दिशोक योडासला। २ न श्रुत् ग्रीक (पद्र)। विकाग वि चित्रकाणी विकास रिकास (प्राह १ १। सूपा ११)। २ तिविष वता व वार्थ विकास तए वर्ड (सर १४ २ ६)। ३ वर्तेच दृश्य से स्टले योग्य (पराह १ १)। चिटाकी कि दियोगी भीतः। २ हमस्रै मेव-वृद्धि सूक्ष्म घीटा (रे १, २१)। विकार वे जिल्ह्यरी विस्ताहर, विवाह (इस) । चिकिंग देशो चिक्सम (रुमा)। विकलाभग वि दि । सहिन्यु सहत करते-वाता (पड)। भिक्तात पृद्धिकाँग प्रकृतीय (देव ११: हे १ १४२ पण १ १)। विक्साहय न जिल्हाहरू काठियागाह का एक नगर (दी २)। [बिक्सिक] [दे] देवो चिक्सक (मा ६० भिविष्ठ (१२४ ४४५ ६६४ मीर)। चितिचिताय सर्वा चिक्कचित्राय ] चन-चना करना चमकना। वह-चितिचितायंत (मर २ व६)। विशिक्षम देवो विषयक्त (विवे १ )। विशिव्याण न [विकित्सन] विशिक्ता इसाम (उस १३% टी∤। विशिण्यय देवो विष्टब्स्स (स २७ स्वाया ४--- पत्र १११)। चिमिन्द्रा की चिकिस्सा वन प्रतीकर. इलान (म १७) । संहिया की विशेषता रे चिकिन्मा-शाम वैचक-शास (स १७) । चित्र नि [दे] १ निपये गासिकानाना बैठी हुई नाकनासा (दे ६ ६)। २ व. एमश संमोग चीत (वे १ १ )। चिद्ध वि स्थान्त्र विक्रों को विषय, परित्रक्तीयः 'बरनमार्थ पि निवार्य' (गुपा ४१८)। चिवर वि दि] विपटी गामिकावासा (वे **₹. €**) : विवादेको चय = स्वन् । थिबि पु [विबि] बीकार, विस्ताहर, मर्गंडर बारामा निषीतर--- (निपा १ २---पत्र २३)।

चिचि पूर्वि हुतारान मन्ति (६३१)। चिट स कि सल्ला सविराम (साचा १ ¥ 8 3) i चिट यह स्थि। बैठना स्विति करना। बिहुद (हे रे १६)। मुख्य, बिहिसु(धावा)। बद्धः चिट्रंत चिट्रमाण (कुमाः मय)। सह चिहित, चिहित्रण चिहित्रा. चिद्रिता, चिटिताम (कम है४ १६) राज पि)। हेरू चिटिचप (कप्प)। इ चिट्रजिल, चिद्रियम्ब (एप २६४ टी चिट्ट रेबो चेट्ट । वह चिट्टमाण (पेवा १)। बिटब्स वि रियात् विजेशना, ठहरनेवाला (मप ११११ वसा १)। चिद्रण न स्थान । चना रहता (पर २) । विष्टण न विष्टनी वेहा, प्रकल (क्रि. २२)। चिट्टणा जो स्वान स्विति बैठना घरस्वन (4E \$) ; चिट्ठा देवी चेट्ठा (मुर ४ २४१ प्रामु 121) 1 चिद्रिय वि चिष्टित रे जिसने प्रशासी हो भद्र (पर्राट १. सामा ११)। २ न बेद्धा प्रमल (पर्या २ ४)। निद्धि रियत र भगीनत चा न्या। २ म. धवस्यान, स्विति (चैद २ )। बिबिस पु [बिदिक] पश्चि-विशेष (पर्या t () 1 विण तक [वि] १ इकट्टा करणा २ दुल वनैष्द्र वोइकर इक्ट्रा करना। विश्वह (है ४ २६०)। भूका विक्तियु(भम)। अधि विविश्विद (हे ४ २४३) । कर्म, विदिश्यद । (६४ २४२) । **इंड विजिज्ज विजे**ळण (पह)। चिण देखो अध्य (मा १०)। बिण देवी चित्त (प्राप्त २६)। विधित्र वि [वित] स्कट्टा किया ह्या (भूपा ६२६ भूमा)। चिनोद्री की [वे] इवा हुंबची शान रही

प्रवराती में 'बर्फोड़ी' (दे व १२)।

र निहित इत (क्त १२)।

विष्य वि [बीर्य] १ बावरिक बनुदित

(क्य १६) । २ वंगीहत, चाहत (क्य ३१) ।

जिल्हाम [चिह्न] निशामी मोदन हि २ थउड) । शिल सक [चित्रय ] जित्र बनाना तसवीर क्षीवता । विलेड (महा)। क्षवड थित्तिर्ज्ञत (ध्य व १४१)। चित्तन चित्ती श्मन कलाकण्य प्रदय (ठा४ र प्रावंदर १६६)। २ जात केतना (भाषा)। इ.इडि. मति (मध ४)। ४ चरियान चाराव (चाना) । १ स्थानेत क्यान (क्रम्स)। प्रमुप्ति दिल्ली दिल्ला भानकार (डा प १७६)। निवाह वि िनपादिन । प्रतिपाय के प्रशास बरवले-नेलरा (माचा) । संद वि विद्वी सबीव बस्तु (सम १६, मावा) । चित्त देही पहुत्त = चैत्र (रंग्यः चे २ क्य) । चित्र न चित्रों र वॉन धलोब्य, दहनीर (सुर १ क६) स्वप्त १६१)। २ बाबर्ग विस्मय (ठठ १६) । ३ कास-विशेष (प्रमू **४)। ४ वि विशवस्य विविक्**रशादश्य प्रास ४२)। इ. धानेक प्रकार का विशिव नानाविक (ठा १)। ६ सावत सावर्थ-जनक (विधा १ ६) कम्प)। ७ वसास वितस्त्रत (ए।सा १ **८)। दर्प एक** मीकपास (ठा ४ १--पत्र ११७)। १ पर्वत-विशेष (पर्छ १ १---पत्र ६४) । १ वित्रक कीता स्वाधव विशेष (ग्रामा १ १---पत्र ६३)। ११ लक्षक-विशेष विका नजन 'हत्यो चित्तो य तथा वत बुद्धिकराई भागस्त (सम १७)। उत्त पुरिक्री भरत क्षेत्र के एक मानी जिनहेन (सम ११४)। कथगा को ("कनका | क्री-विरोद, एक विष्णुपारी देवी (ठा ४ १) । कम्स न [कर्मन्] धारेका, व्यति तसगीर (या ६१२)। इर केवी गर (बस्)। इन्ह नि [ क्य] नाना प्रकार की कमाएँ क्याने-शन्या (शत्त ३)। क्टूब दू क्टिटी १ चीतानदी के बक्षर किनारे पर रिक्त एक वसस्कार-भर्वेठ (अ.४)। २ पर्वेठ-विशेष (भठम ६६ ६)। ६ न ननर-विशेष जो बायनम भेराइ में चित्तीई नाम से प्रसिक्त है (एनए। १३) । ४ रिजार-विकेश (स्ट २ 1)। क्याचे प्रिशा <del>क्यारिश</del>्य

विकास वि [चित्रक्रम] विवता रिताव

(पस्ट्र ११) मुपा ११)। २ निविष्ट चना वै

म जुन, चींक (यर्)।

पार्व विकास ते तए कड़ें (गुर १४ २ ६)। ६ दुर्मेख दुः च से सूटने योग्य (पराह १ १)। चिक्स की [दे] १ योड़ी वीव । २ हमकी मेव-बृष्टि, सूबम बॉटा (वे वे २१)। चिचार पूं [चीरघार] चिलाव्ह, विवाह (ছড়) ৷ चिकिंग देखों चिक्स्म (कुमा)। चिकसाध्यत्र वि [दे] सम्बद्ध्यु सहत करते-वासा (धट)। जिस्तात पूर्वि करोग पंत्र कीच (वे वे ११: हे ६ १४२: पएइ १ १) । विक्साह्य न [चिक्साहरू] काठियाबाह का एक नगर (वी २)। चिक्तिक [क्] क्रेन चिक्तक (गा ६७ चित्रक (१२४ ४४४) ६८४ मीर)। विस्ताह (स्तर ४४६) ६६४ मीत)। विस्तिह विशिविगाय पर विकविद्यम् विक-चकाट करना चमकना। वह-विगिषिगार्यत (सूर २ = ६)। चिगिरक्रम रेबो चिश्रच्छम (विने । )। विशिवद्रण न [चिकिस्सन] चिकिया इतान (सम १३१ थी)। चितिच्छ्य देशो चित्रच्छम (स २० खाया १--पत्र १११)। जिगियम् की [विकिस्सा] बना प्रतीकार, इनाम (स १७) । संहिया की िसंहिता विकित्सान्त्रज्ञ वैद्यकन्त्रज्ञ (स १७)। पिवानि [वे] १ विपयी नासिकानला बैठी ह्रदैनाकवाला (वे ३ १)। २ % एमश् स्रोग एवं (दे ६ १)। विवा वि [स्यास्य] बोइने मेन्य, परिहरक्रीयः 'बरकम्मार्थ पि विवाद (सुपा ४३६)। चित्रर वि वि विपटी नासिकानाना (वे 1 (3 9 चित्राचेत्रो भय = त्यन् । विवि पू विवि शैकार, विस्ताहर,

मर्गकर बालाज जिल्लीसर—(विपा १ २--

पद २३)।

चित्रि दृषि हुतासन मनि (वे वे १)। चिट्ट म [दे] प्रत्यन्तः म्रातराम (माचा १ ¥ 7 7)1 चिट्ट प्रक [स्वा] बैठमा स्विति कप्ता। बहुद (हे १ १६)। भूका, बिहुसु(बाबा)। नक चिट्रंस चिट्रेसाय (कुमा मग)। सङ चिट्टिरं, चिट्ठिकण, चिट्ठिण, चिद्वित्ता, चिद्रित्ताण (कम है४ १६ चनः पि)। हेड विद्वित्तप् (ग्रम्म)। इ चिट्रणिजा, चिट्ठिमस्य (चप २६४ टी) भग)। चिद्र केवो चेहु। वह चिद्रमाण (पैदा २)। चिट्रद्वस् वि श्यात् विज्ञेनाता व्हरनेनासा (मय रे१ ११: रहा ३)। चिट्ठण न [स्थान] सदा ख्वा (पन २)। चिट्रण म चिप्रन विदायक्त (क्रिप्र)। चिट्रणा की [स्थान] स्विति कैठता धवस्यान (15 t) t चिहा रेको चेहा (तुर ४ २४४ प्राप् १२४) । चिद्विय वि [चेष्टित] १ किस्ते १ ग्रामी हो मह(फ्यहर १ सामा ११)। २ न चेट्टा, प्रयस्त (पराह्र २ ४)। भाष्ट्रय वि [स्थित] १ वनस्थित च्हा ह्या। २ न. घवस्वान स्विति (वंद २ )। चिकिय पु [चिटिक] पश्चि क्रियेव (पर्याः । १ (१) । चिष्य धक [चि] १ इक्ट्राकरना २ जून वनैधानोइकर इक्ट्राकरना। विख्र (हे ४ २३व)। भूका, विखियु(सप)। प्रवि विशिद्धि (१४ २४१) । कर्ने, विशिज्यह (६४ १४२)। संक्र चिकित्रण चिकेत्रण (पद्)ः। चिया देवी चया (चा १व)। विण देवो विच (प्राक्ट २६)।

विधिम वि [वित] इक्ट्रा किया ह्या

चिष्पोद्री की [दे] प्रवा ईंदवी काव रही

विण्य वि [चीर्ज] १ सावरित सनुहित

(एत १६) । २ संग्रेड्स बाह्य (उत्त ६१) ।

पुषराती में 'चर्गाठी' (दे ६ १२)।

३ विविद्यं इत्य (क्या १३) ।

(सुपा ६२६३ कुमा) ।

चिलहन [चिह्न] निरामी नोबन (हे % ५ वटड)। चिन्त सक [चित्रय्] चित्र बनामा तसवीर बीचना । वितेष् (महा) । कवहः थित्तिळाँउ (सप्राप्त १४१)। चित्त म चित्त र मन सन्तः करण हुरम (ठा४ १ प्रामु ११ १११)। २ जान चेतना(माचा)। ३ दुदि, मति (सन ४)। ४ मस्त्रिय माराम (माचा) । ५ उपयोग स्माल (मरा)। प्यापि विद्वी दिस का बानकार (उन पु १७६)। "नियाइ वि [<sup>\*</sup>मिपादिम्] प्रमित्राय के सनुसार कर<del>तने</del> बल्ला(बाबा)। मेते वि वित् वित् विश्वीय बस्तु (सम ३१, माना)। भित्त देवो पहत्त = देव (रेम्छ वं २ क्न्य)। चित्र न चित्र र अनि सलोक्य सस्तीर (पुर ६६ स्वप्न १३१)। २ शासने विस्सम (उत्त १६) । ६ काह-विशेष (सनु ४)। ४ वि विस्तराख्य विक्तिन (गा६१२) प्राप्तु ४२)। १ धनेक प्रकारका विविच मानाविष (ठा १)। ३ सञ्जूत सामग्री-क्लक (निपा १ ६३ कम्प)। ७ कम्प चितकवर (ए।या १ x)। मधु एक मोजपान (ठा४ १--पत्र १६७)। १ पर्वत-विरोध (मग्रह १ १--पत्र १४) । १ विषक कीता स्थापव विशेष (ग्रामा १ १---पत्र ६१)। ११ मधन-विशेष चित्रा नमत्र 'हत्यो वित्तो य तहा इस दुक्किताई नागास्य (सम १७)। "उत्त प् विमान मरा क्षेत्र के एक मानी विनदेन (सम. ११४)। कपरा। भी ["कलका] क्री-विशेष एक विष्कुमाधी देवी (ठा४१)। कुम्सान [कर्मम् ] मानेका ऋषि छलनीर (या ६१२)। इर केवी गर (मणू)। इद् वि किया नाना प्रकार की क्याएँ कहने-गला (पत्त ३)। "कूड पू ["कुट] १ सीतानधी के अतार किनारे पर स्थित एक वत्तरकार-वर्षेत (व ४)। २ पर्वत-विरोध (पचम ११ १)। १ न क्यर-किरोब जो धावकम मेवाइ में "विलीइ" नाम से प्रसिद्ध 🖁 (रमख ६४) । ४ किवार-विरोध (छ। २. 1)। क्लाप की शिवरा विश्वविदेश (प्रजि २)। सर्पु विदरी विषकाद चित्रेष (सुर १ १ ४३ सप्तवा १ व) । "गुक्ता की "गुप्ता १ देवी-विदेष सोम नायक लोक्पल की एक बाब-महिपी (ठा ४ t) । २ क्सिंग्रारमक परेत पर वसनेवासी एक दिल्लुमारी देवी-विरोप (ठा व) । पकला र्⊈िपक्षी १ केल-देव नामक इन्त्रका एक कोकपास देव-किरोप (ठा४ १)। २ सह बन्तु-विशेष चनुचिन्हिय बीट-विशेष (जीव १)। फस, फस्या फस्रय न किसकी वसकीरशाला दक्टा (महा भग १६) पि १११)। भित्ति भी भित्ति र वित्र नासी भीतः २ की की तस्त्रीर (बतः )। यर केवो गर (लाया १)। रस प्र िरसी भीरत देशनहीं दशकुरों की एक भारत (सम १७ पउम १ १ १२२)। 'स्त्रेबा की ['होसा] अन्य-निरोध (पनि ११)। संभूद्य न [संभूतीय] विव भीर बेमुत नामक नाएशन-विशेष के बृताना शला 'उत्तरायकातुत्र' का एक प्रध्यका (क्त १२)। सभा वी सिमा डिक्कीलाला पृष्ट् (शाक्षा १ व) । साखा की ["शाक्षा] क्तिम्बद्ध (देना ६६२) । विच्याई विज्ञाही पुरा देनेवार्ते सस्य कुरों भी एक वादि (चम १७) )।

कृती की एक नामि (यह १७) ) चित्रमा केमी चित्रक (वर दू ह )। चित्रमा क्रिमे चित्रक (वर दू ह )। चित्रमालुम क्रिमे चित्रक (अल्ड १४) । चित्रमिल क्रिमे चित्रमा (अल्डिस क्रिमे स्था)। चित्रमाल क्रिमेशमा चित्रक चित्रमा (वर्गित हेश)। चित्रमाल क्रिमे चित्रमा चित्रक नाम्युहा (है। ह ११)।

विश्वपत्तय कुं [विश्वपत्रक] क्ल्रोपित्रय चीत मी एक वाति (क्ल. १९ १४१)। विश्वपत्तिचीय वि वि] ततु चीता (छा. ७१)।

वित्तय देवो वित्त = वित्र (प्राय) । वित्तयस्था स्री [वित्रक्षस्या] मन्ती-विरोध (हम्मीर २ )।

चित्रकाति [क] १ मध्यतः विमृत्तिः। २ रमस्त्रीयः सुन्दरं (वेष ४)।

निश्चम वि [निश्चम] १ नितन, क्यर

विक्काय (पास)। २५ वंगमी प्रभृतिकोर इतिष्ठ के साकारकाता दिवृत्त प्रमृतिकेस (बीव १ परहू १ १)। विक्किपुंकी [वित्रक्षिम] संघ की एक

বিবাভ গুলা [বিস্তিদ] ল'ব কী एক আটি (বহুত १): বিবাটিক বি [বিস্তিব বিস্তিব] বিষ

पुक्त किया हुया 'पदम किया विश्वपृद्धे हुड्डी विद्याद्धि विक्तिमार्गे (बा २ ८)। चिक्तवित्रम वि [बि] परिक्रीपित (यह )।

चित्रपीया स्थै [चित्रकीया] वाद्य-विदेव (स्थ ४६)।

चित्ता की [चिता] र गतन-विरोग (गम २)।
२ वेशी विरोग एक विष्युत्तुमारी वेशी (ठा ४ १)। वे शाहित के एक वीकपाल वी की वेशी-विरोग (ठा ४ १—४व २ ४)।

४ बीपपि-विशेष(नुर १ २२३) पएल १)। वि<u>न्ता</u>पिक्षडय ) पूँ [वे] बेन्नी पसु-विशेष विन्तावेक्षस्य ) (प्राचा २ १ १ ३ ४)।

विकासक्षर ) (याका २ १ १ ६ ४)। विकासकी की [विकयदी] सम्परितेय क्रेंट (क्रुंटीकार) कारि वचना 'जनकिंद्रा विका-सहिममुहत्तिम विस्मानहै स्वस्ता न' (स

चित्ति हुँ [चित्रिन्] नित्तरार, चितेस (काम १ २३)। चित्तिस्र वि [चित्रित] चित्र-सूख दिसा

ह्या (यीपा कमा कर १६१ टी दे १ ७१)। चिक्रिया की [चित्रिता] की-चीवा, पास्त्र किरोत की पास्त्र (पण्या ११)।

चित्री केवी चेत्री (गुज १ ७)। चित्री की चित्री केत्र जास की पूर्विता

(१६)। विद्विस ) वि दि निर्धारिक, निर्मारक

चिहाँचिक है (वे वे देश यहा स्वित्ते)। चिक्र केवी चिप्पत (तुपा ४ तरहा चरित्र)। चिप्प सक [वे] दे पूरणा। र बचाना। कर्म विद्य (वित्र)-स्थित्रकृति जे तस्ति केपहित सोसह

"वि (? "क)-रियमाँत ने वरिस्त केल्डिस दोसद वनद्वेता' (वे १, १६ दी) । संकृ विधियता (इह २) ।

विषया के [वे] क्ये हरे कर प्रवासी वैशे (क्ये २, १ कि)। विषया केशे विविद्य (वर्गीय २७)। विषया केशे विषया (क्ये २ १ कि)।

(बहु २)। विकास दुन [के] क्यों हुई कल द्रवासी में चिरियम पूर्व कि निष्यम्भिक कान के समय में सब्दे के सर्वत कर निकास प्रोक्तीत क्या दिया पता हो बहु (पत्र १ ६ धी)। चिरियस पूर्व कि प्राप्त निर्मेश (क्या ६)। चिर्माल कि विस्ता होठ के सेचे वा सर

मक ठोड़ी (बुमा)। चित्रसङ्ग [विधिन] बीच नक्डी, कन-किस पुजराती में भीमद्व (दे ६ १४८)। चित्रसङ्गा स्त्र [चिधिनिम्स] १ क्ये-किस नक्डी का साझ। २ मन्त्र वी एक् बासि (बीच १)।

विकास के विकास (कुरा ६६ १ वास)। विमिन्न १६ [विकिन्] विवास, वैद्याहरू विमिन्न ) का हुया (स्तरू) (जावा ६ ६ विभिन्न ) का हुया (स्तरू) (जावा ६ ६

चिमिल वि [वे] रोम्स सेमाझ्य कृतिक, यात्र (दे व. ११ वव् ) ।

विश्व केवो चहुंश = कीकः ची समस्य नकाः निवासीचारित्र स्वीतां नकाः (समस्य १९६६) चित्रकाः । की [चिता] पूर्वं को कुकिने के चित्रमाः । सिद्द पूर्वं सुद्दे सबस्यां नाः १९ (पहाः १ स्थानस्य ४२। तुसाः ६६॥ स

चित्रच देवी चर्च (श्रन २,१ १ १ न्या निवृद्ध)।

जिसक्त कि [व] र समित्रत सम्बद्ध (स व क)। श्रीतिकट्ट राज-समक्त (वीर)। वै श्रीति कित्ता। ४ स्प्रीति का सम्बद्ध (स वै के—पन १४७)।

चित्रमा देशो पियमा (पटन ६२ २६)। चित्रमा ) देशो चाय = स्माय (स्र ६, १) चित्रमा ) धम १९)।

प्रयोग ) वेश (१)। पिर म [फिर] १ दोर्च काम बहुत महें (क्ला १ पा १४७)। १ सिवान देएँ (वा १४)। १ मि दीर्च काम तक प्रयोगका प्रिकारिकामी क्लाप काम करती (स्था १२)। आराओं मि [अरु] विसास करनेकाला (ग्रा १४)। अधिन मि

वित्रम्य करनेवाला (ग्रा १४)। जिप्तय हि ['सीविज] शीर्व कस्त्र रक्त चीलेवाला (हिं ११७)। जीविज्य हि ['चीविज] सैर्व काल एक क्षीता हुया दुइ (वाय २, १४)। "हुंद्र, "हिंद्रस्य हिंदिस्त कि ['स्विटिक]

समय तक (स्वप्त २६) भी ४१)। दण वि <sup>वि</sup>तनी पूराना बहुत कास का (महा) । चिराचिय वि [चिराचित] चिरकाम से उप-क्ति-इक्टा किया हमा या बढ़ा हमा (पंच K, (50) i चिरडी की दि ने वर्ण-माना मञ्जलकी **'निर्राही' प्रवालंता मोधा सोएड् योरवस्म**-क्रिया' (दे १ ६१) । चिरड्रिक्कि [दे] देखो चिरिड्रिक्कि (पाम)। चिरमास सर्व प्रति + पास्य ] परिपासम करना । निरमासद (प्राक्त ७१) । चिरवा की दि देश-कीपनी (६६ ११)। चिरम्म च [चिरस्य] बहुत कान तक (उत्तर १७६) दूमा) । चिराञ देवो चिर=विरम्।विरामः (स १२१)। जिएवसि (मै६२)। मनि निराहस्त (गा२)। वह चिराक्षमाण (नार---मानवी २७)। विराह्य वि विराहिकी प्राना प्राचीन (शाया १ १ मीप)। चिरा य वि [चिरातीत] पूराना प्राचीन (विपाद १)। विराउ म विरास् ने विर काल से लाने समय से (इम ३६७)। चिराजय (प्रप) वि [चिरन्तन] पूरातन पुरस्म, प्राचीन (व्यक्ति)। चिराइण वि चिरन्तन कियर देखी (बहु ६): थिरात्र मक [ापरय्] १ विसम्ब करता । २ बालम करना। ३ सक विसम्ब कराना चेकरकता विरावद (भवि) । विरावेह (काल) 'ना छ विध्वेदि' (वजन ३ १२१)। विराधिय दि [चिराधित] १ विक्ते विराध्य शियाद्दो बद्दा २ विकास्थित रोजा यकाः ६ व शितमा वेरी 'व्यक्तियो वंशस्य कि धन विरामियं सामि । (शहम १ १,११)।

चिर-चिविष

बीपं कास (भाषा)।

सम्बाधानुष्यवासा दीवं कात तक रहनेवासा

(मन सूच १ र, १)ः 'एयाई कासाई

पुरुषि वाले निरंतरं तरव विरद्धिये (सूध

र ४,२)। एक इंटिया वहकात

चिर सक [चार्य] १ वितस्य करता। २

बात्तस करता । जिस्सिर (शौ) (पि ४६ ) ।

षिरं घ चिरम् ] वीर्वं काल वह धनेक

**१३**) । चिरिक्त की दि**े**१ पानी भरने का वर्ग माजन मराका २ घरः वृद्धिः ३ प्रायः कास सुबद्ध (वे ३ २१)। भिरिचिरा [दे] वेश्री भिरिधिया (दे व **23**) 1 विरिश्वी देखो चिरडी (या १११ म)। चिरिक्कित वि] विध बदी (६३ ४)। चिरिहिटी भी [वे] इका पुगरी नास रती (देव १२)। चित्राज १ [फिरात] १ मनाव केरा-विशेष । २ किरात देश में स्कृतेशकी म्लेक्स-जाति निका पुनिव (हे १ १ थ ३,२१४ पराह १ १) धीर कुमा) । ३ वन सार्ववाह (व्यापारी) का एक दास—नीकर (लामा ११ a)। विश्वाहमा की [कियविका] कियत देश की परनेकासी की किराधिन (ग्रामा १ १)। षिष्टाइ **भी** [किसती] ज्यार वैची (इक)। पुत्त पूं ["पुत्र] एक दासी-पूत्र सौर वैन महर्षि (पश्चि स्त्रामा १ १०)। विखाद देवो विसाय (प्राष्ट्र १२) । चिक्षिचिक्रिमा सौ [दें] बारा वृष्टि (पङ्)। चिखिचिकिय वि दि । भीता या भीता हथा माहित गीला (तंदु १८)। विकिप्तिक। विदि भार भीता (पण्ड विक्रिविक र ३—्तत्र ८३ देव चिडिवीस (२)। चिक्षिण दि देवो चिक्रीण 'चदावसंत्रमाम म चिकिएो सेहरमहामानी (मीम १६५)। विकिमिणी भी वि विश्वतिका, परता विकिमिकिया | मान्यावन-पट (धोव मा) चिहिमिषिया मूष ९,२ ४ ≈ ३ कस विदिर्मास ∫ भीष ७व⊱द )। चिद्धीण न दि] ध्युदि मैना मन-पूत्र 'समिति विभीतो मन्द्रियाची वर्ण्यस्य मोत् (कार ११ टी)। चिद्ध पुँदि ] १ वान बचा सङ्गा (६३ १)।२ वेसा शिष्म (मावम)।

व पूरा विशेष ।

च्छ पूछ विज्ञारतेषु, नदेश पूरा विरक्ष्यका ॥' (पत्रम ६६ १९)। चिक्क विदेशे मुर्गसूप धाव (प्रकार≪)। चिक्राज न दि] देखेध्यमान चमक्या 'मंड खोड्रगुप्पगारएड्डि केहि केहिनि धर्मगतिसय-पत्तनेहरामएहि चिक्रएहि (स्रवि २८) धीर)। चिद्धन दि] केवो चिद्धिय (पर्याः ४ ---पव ७१ टी)। चिह्नड वि] देशो चिह्नछ (वे) (पाचा २, 3 8) 1 चिद्धमाओं [चिद्धमा] एक प्रतीकी प्रजा भैशिक की पत्नी (पहि)। चिह्नय न [रे] प्राच्यु, सराव पाँच (पराह ११८ी--पत्र २६)। चित्रस्य प्रं [चिस्वस्त्र] १ यनार्थे देश विशेष । २ इस देश का निवासी (इक) । चित्रक पूंजी [दे] र मायर पशु-विशेष भौता (फ्यहर रि—पत्र ७ सामा ११ — पत्र १४)। भी किया (पएए ११)। न करिशमा असाराय स्रोटा सनाव साहि (काया १ १--पत्र ६६) । ६ देशीय्यमानः चमक्ता (स्राया १ १६—यव २११)। चिद्धा की वि] चील पति-विरोप राष्ट्रनिका (दे६ ९ स स पान्न)। चिद्धिय नि [दे] १ मोन पासक (शापा १ १)। २ वेबीप्यमान (शामा १ १) ग्रीप (क्रप्प)। पिछिरि पुंचि मतक, मन्दर, शुक्र कन् मिरोप (दे ६ ११) । भिरुद्धर न दि । मुक्त एक प्रकार की भोड़ी नक्की निचले जावन बादि प्रश्न कुरे बाते **₹**(₹ ₹ ₹₹) ı चित्रहम पू [व] चर-मार्ग, परिये की लशीर, गुवराती में 'बीनो' (नुपा २८)। चिषिद्र ) वि [चिषिट] विगय वैठा या पिनिडं 🕽 मैंना हुमा (नाँक) 'विविधनामा' (सि २४ व) पढम १७ ११। गढा )। विविद्या औ [विकिंग] क्ष्य प्रकारिकेन पिन्न तुं [चित्र] १ दून-विदेव (स्तव) । २ चिनित्र वेनो चिनिष्ठ (पुर १६ १८१) ।

'पूर्व कुर्राति देश कंच्छाकुमुमेनु जिल्लवरिकाले।

१पट	पाइमसद्दम्प्यची	Page-54
चिद्वर वृ [चिद्वर] केछ बाल (पामा सुपा	क्टेस्स (कुपा ४०४) । २ हुत कॉट-क्रिय	चुंचुकि है है। १ चुंग्ड बॉब । २ इहर
₹ <b>*</b> ₹)1	भींदुर (दुन्स दे१ २६)।	पसर, एक हार का संपुटन्तर (वे १ २१)।
भी ३ वेदों चेद्रश्र (६ १ १११) छार्च	नीवही भी [दे] सन्धी भाषा राज-विदेश	चुंबुक्किम वि [वे] १ यववर्गाता निर्मा।
वीश (१४) १३)।	(E = (v))	२ त सूच्छा, सावव बस्यस्या (हे १२१)।
वीक्ष न [पिता] दुर्वेको कृतने के विए   जुनी हुई बनहियाना हैठ चीए बेहुस्त न	बीवर न [बीवर] बह, संन्यासिमी या मिश्रुपों	चुंचुकियुर वृं दि ] क्रुक इस्य, पर(रि
धहिमारं स्मर्र वमुक्तिस् (पा १ ४)।	के पहुंक्ते का कपका (नुरूष १×८) ठा	7 (x):
चीई रेबी चेड्ड (तुर ३, ७१) ।	\$, ?) ! 	चुंद्र नि [दे] परिहोसित सूचामा ह्रमा (रै
भीड वि दि] नामा काम नी मसिनाला	पीहाडी थी [दे] चौत्हार, चिस्ताहर, पुकार, हाथी की <i>सर्वे</i> ना था चित्राहरा (गुर रे	₹ <b>१</b> १) ।
(सिरि १६)।	(3€ t	चुंक्किञ्चन कि ] सुवाहमा परियोक्ति
वीय वि [चीन] १ बोटा, सकु चीराविक-	भीड़ी की [दे] पुस्ता का तुख-विशेष (दे ६.)	'चुक्किनसर्ने एवं या मतार इता इता
दर्शकमान्यद्वातं (स्त्राद्या १ ल-पत्र १३३)।	( 4 (3) 1	(बुदा १४६)।
र पूर्णमध्य केट-विटेग बील केट (वस्तू	चुधक [च्यू] १ मध्या बलान्तर में वाना।	चुँउ सक [चि] कृत गरैएए को तोड़ कर
र रास ४४६)। ३ भीत देश का तिवासी	२ विस्ता। मीव चयस्यापि (कप्प)। श्रेष्ट-	रस्ट्रा करना । वहः चुटेत (मृत्रा १११)।
चीती वा चीता (प <b>रह ११)</b> ४ <del>वाला वि</del> रोग,	মহত্য মহতা ৰহস (চল হাজ	चुटिर वि [वे] चुननेवाला (वेद १०६ वे)।
वीदिशा भेर (छाउ)। भीग्रालुर <del>धान</del> िमा	रामन)। इ. भइमध्य (ठा३ ३) ।	चुंडी की [बे] नोड़ा पत्तीनामा धवार्य क्लान
वक्रोफ निर्म (महा)। पहुर्द [पहु	दुव्य पत्र [श्दुस्] मध्या ध्यवता।	रुव (खाया १ १पत्र २१)।
चीन देश में होनीवाता वक्क-किरोप (प्रगृह र	चुमाइ (द्रिरु७७)।	शुपाक्षय [दे] चेता शुप्पाक्षम
<ul><li>४)। पिट्ठ न [पिष्ट] तिन्दुर-विशेष (धय,</li></ul>	ुषुभ दक [स्थज्] त्वान करना, परिवार	'खन स सेन्नामु ठिमो,
प्रश्च t•)।	करणाः प्रमद्व मिथे चर्र (सूम ११२	भवप <del>द्व</del> ीयरो निवासम्प्
बीर्णस र् वृत्वीनौद्य, इ] १ क्रीट-विदेव	ু १२)। পুস ৰি [ৰমুৱ] খেলুৱ মূৱ হত জল	द्रशबस्य वेल्क्स
चीर्णसुर्य विसंके तलुकी ते वस बक्ता है	व स्वरंबन में सबदी स्वंति स्व महा छ	हिमबीत रअस्तुप्रव्यक्तियाँ
(बृह् १)। २ भीत केत का म <del>हावि</del> रोगः	३ १)।२ दिनहः 'चुष्किमश्रुष्टं' (बिन	(सम्बद्धः )।
बीरतेषुसमूरियवस्थिराहर्षः (मुना १४३ झालुः सं २)।	१व)। १ भए, पवित्र (खाया १ ३)।	जुब सक [जुम्म्] प्रत्रत करता। प्रत
चीता की देवो चीका≃चिताः चीपाए	चुद्र की [चमुति] ध्वनन नएछ (छन)।	(\$ x 222)   am. 340 (41 404)
पश्चिम तथी वहीतियो बमली (मुर ६	चुंशरपुरं न [चुङ्कारपुर] एक ननर (सम्मत	१११)। कनक चुनिर्द्धाव (व.१.१२)। वक्र. चुनिनि (सप) (हे४ ४११)। ई
E) 1	14)1	विशेषक्त (सा १४६१)।
भीरन[भीर] कश्चल्य क्लो ना टुक्क्	बुबुज पूर्वि देशर, परवंद, नश्वक का	चुनेज न [चुन्नत] दुन्तन भूम्या दुना (व
(बीप६१का ना १२ बुगा६६१)। कंद्रुस	1 210 (11 (1))	ं ≾ंडाक्सी)। जिल्लाचित्रस्यो देखा केला हसर्
गपट्ट पूं [ैरण्ड्सकपट्ट] केन वासुमाँ का	वृषुभ दृ[नुष्त्वक] श्योत्व केट-विदेश । २ का केट में सहरेवाली अनुम्य वाटि	चुंदिश वि [चुन्दित] १ दुन्ता नियं हुन्य-
यक ज्ञानपत्त रेजीक्ष्यत्त्व का कलत-विश्वेत		क्ट-बालना र सः बालनः बाता हि छ
(निष्यू ४) ।	वुंचुण र् [चुम्चुन] सम्म (वन्ते) वाति	( ta) 1
र्षारग र्रू [चीरफ] गीवे देती (रुचा २)।	रिरोप एक रेख शति (ठा ६पत्र ११ )।	चुनिर नि [कुम्बर] कुमन करोनला
भौरिय र् [भीरिक] १ सरता व को इप	्री <b>क्</b> बियम नि किरी १ क्लित बना २	(सरि)।
श्रीवर्शे श्री पहल्लेगला निदुष्ट । २ वटान्ट्रय		चुमळ र [र] रेक्ट, धरतंत्र विधेनुगर्छ
क्षका पर्कारती एक बाबु-बावि (द्याय	1 72. int [1] 45. 41 x10 x14 1	(R 3 (4))
{ {2~~~~ {2}}};	२ प्लास्त संबोगः ३ इसलीका येवः।	मुक् यह [ भंश ] र प्रमा मृत करता र
र्थारिका भी [यीरिका] नीने देखो (कुर	४ यत-विशेष कृष्टियुव । ६ दूरा, यद्यस	२ अष्ट होना रहित होना, बन्नित होना।
१००)। चौरीकी [चौरी] १ वक-धवट वस व	सुत्र गोरुनिरोप (दे १ ११)। १ चुंचुमाध्यिति [क्] १ यत्तम प्रालयी शोर्य-	रे तक गट करना बराय करना। इसार (दे ४ १७०-वर् ) की क्यांनरसार्ट
दूरका थी देश निवदस्यंत्रता वीचे		पुलह देसे व बारे वे (रिवे २६ ४)।
		The same of the sa

98-30 चुकारि [प्रष्ट] र दका हुमा मूला हुमा विस्तृत 'चुक्करीवेमा' 'बुक्डविखधमिम' (बा ६१८३ ११६)। प्रष्टु विश्वत पहिता 'बंसणुमेत्तपस्त्रणे भूतरा सि सुहास बहुमार्ए' (गा ४६६) बत १६ मुना ८७)। १ धन-बहित बेन्यास (छ १ १)। चुका दे कि ] मुटि मुद्दी (वे वे १४)। मुकार वे [वे] प्रापात राज्य (छ १६ २१)। चुक्कुड पुँ दि] साय, बक्स धन (दे R (4) 1 चुक्स [दे] देहो पोस्स (मुक ४६)। चुच्य । व [चुच्छ] स्तर का सब मान चुँचेंचुय रेका की देने दशी (मण्हर ४ राप)। चुच्य पून [चुच्छ] स्तन का यय मान स्त्रतों की मोनाई, पूर्वा (एव १४)। चुन्छ, वि [तुब्छ] १ सस्य बोहा इतका। २ द्वीत, जबस्य नगस्य (दे १ २ ४ पद्)। चुळान [च] बारवर्ष (६ ३ १४) छद्वि **63)!** भुडण न [दे] प्रिएंटा सन् प्राना(क्षोप 148) I भूडिस्म न [पे] प्रस्तानन ना एक दौप, रश्रोद्वरण को समात की तरह बड़ा रक्षकर बन्दन करना (ग्रुमा २६) । चुहस्र [दे] देवो चुहुर्स (पर २) । चहिती देवो चुहुडी (तंदु ४६)। चुडूप्प न [चे] रे बात ज्यारता (रे ३ ३)। २ मात्र क्षत (वडड)। ३ लगही स्वया (पाम) । शुद्रुप्पाक्षी [द] स्त्रना नमही नाम (दे 3 3)1 पुरुद्धि भी [रे] पाना भनात बनती हुई सबसे बन्द्रक (दे ६ १६) बाधा मुर १६ १५९: स २४२) । चुण तक [चि] तुनन, तुक्ता परिवर्ते का बान्य । बुखद (हे ४ २३ ) 'कामी नियो-हांच चुल्ड (नुक ८१)। चुत्रअर्पु [दे] १ चाग्यात । २ मान अचा । १ एन्ट्र रूप्टा । ४ मधीन भीतन नी

स्प्रीति । १ स्परिकर,सम्बन्ध । ६ वि सस्प बोहा।७ मुक्त स्वक्तः व मध्यक सूँपा ह्या (दे १ २२)। च्यापिश्र वि वि विवर्धित भारण किया ह्मा (दे ६ ११) । चुण्य सक [चूर्णय् ] दूला, हुस्ता-हुस्ता करता। संक चुणियेष (सव)। चुण्य दुव [चूर्ण] १ दुर्ण दूर, कुली बारीक खल्ड (बहु १३ है १ ८४ माना)। २ ब्राटा, पिसान (ब्राचा २,२१) । ३ कूनी रज रेल् (६ ६ १७)। ४ मन्य हम्यकारम बूक्ती (यग ३ ×) । ५ भूता (दे१ ८४) बिशा १ २)। ६ बसीकरणादि के लिए किया बाहा इच्य-मिलान (ग्रामा १ १४)। कोसय न ["कोशक] मध्य-विशेष (पण्ड् चुण्य न चिरोज | पद विकेय, गम्भीरायंक पर महार्वक राज्य (बसनि २) । चुण्यव्य वि वि चुण्यतः पुरत से मध्य बिस प्रकार भूती चेंका प्रया हो बहु (वे व १७ पाम)। जुज्या दुं [जुर्णेक] बृत्त-विशेष (माना २, १ २३)। चुण्या 🗗 [भूजां] सन्द-विशेष वृत्त-विशेष (বিশ্ব)। वं २)। चुण्याओं की दि]कता विज्ञान (देव चुस्त्रिमास्य 👊 [चुस्त्रिमासा] दन्द दिरोप (पिष) । भुण्यासी मी दिं] दासी नौकरानी (दे व चुलुअ पुन [चुलुक] चुन्मू, पसर, एक हाब का संपुटाकार (वे १ १८ मुपा २१६) चुण्यिको [चुर्णि] प्रत्य को शिक्त-विशेष प्रामु १७)। ( বিৰ ) ৷ भुनुब केते पातुब (दे १ 🖘 टी) । चुण्मिश्र वि चिलित रे चुर-बुर किया ह्या (पाम)। २ थूनी से स्पाप्त (दे ६ १७)। भूषितमा की भूषिता वेद-विशेष एक त्रव्य का कुकामान विशे पिशान का धक्यक ममग-पन्य होता है (पहरा ११) । चुण्यिय वि चित्रिकी विश्वत-प्रसिद्ध सर्वा-वरिष्ट भेरा (तुत्रत १ २२--- पत्र १८४, १२—स्य २११)। चुदस देवी चड-इस (पुर ८, ११८) । चुन रेपो चुण्त्र (दुमा काक y) बागू (स २, १)। वाय वृ ["वान] रिवा का १८३ वाद २ पमा ३१)। धोद्य कार्र, चाचा (नि १२१)। "पितृ तू

भुभाष व [चूर्णन] चूर-पूर करना (स्ता 1): चुन्नि देतो चुण्यि (विचार १४२ चंड)। चुक्तिम देशो चुण्मिश (परह २ ४)। जुक्तिमा देशो जुणिगआ (भार ७)। चुप्प वि हिं सलह, स्तिव (दे १ ११)। चुप्पछ पू वि शेनर, प्रश्तंस (दे ३ १६)। चुप्पछिम न दि] सवा रैना हमानपहा (4 4 (0)) चुष्पाख्य पूँ वि] मरोका स्थाप शहायन र्थपना (दे ३ १७)। शुरिम न दिं | साध-विशेष (पन ४)। पुरुष्ट पर [पुरुष्टाय ] स्करिक होना उत्पुक होना । बहु- चुलचुलंत (ना ¥₹() | चुक्रणीकी [चुक्ती] १ इतर सना ही **वर्ष (स्त्रमा १ १६) स्त्र १५० हो)**। २ बहारत भवनर्तीकी माता(महा)। पिय र्ष [पितृ] मगरात् महाबीर ना एक मुख्य इपासक (उदा) । पुजसी हो [बहुरशीति] बौक्सी पन्ती धीर बार, वर (महा जी ४७)ः 'बुलसीए नायपुमाधवाससयस्म्प्रेम् (भन्) । चुलसीइ देखो चुलसी (पाम २

चुलुचुस्र धक [ स्पन्तु ] श्रहनमा करनना भारा जिनता । चुतुपुत्तद्र (हे ४ १२७) । चुलुचुडिम वि [स्पन्तित] १ करता ह्या पुष्प हिमाह्या। २ म स्टुरण शास्त्र (पाम)। चुलुव्प र् [दे] धार, यत्र वक्य (दे ३ (\$) I चुन पूर्वि १ थियु कासका २ दान, भीतर (देव २२)। ३ वि छोटा लक् खामा १ १ वपा १४)।

१३) । साठयाच्ये मिल्दि श्रेक्टीनी मता की बोटी एपली विमादा सीदेशी माँ (क्य २६४ टी) ग्रामा १ १३ विया १ ६)। २ चाची जिला के कोरे बाई वी की (विपा ह **१**—पत्र ४ )। श्रागय स्वयं दूर िंश्वकी मनवान् महाबीर के क्या मुक्य ज्यासकों में से एक (क्वा)। इस**र्व**त वृं

िंपित् विचा भिता का कोटा मार्ड (विपा

330

[हिमनत्] बोटा हिमनात् पर्नत पर्नत किलेच(हार ३ सम १२०६क)। "हिस-र्वतकृतः न िहिमवत्कृती १ सुद्र हिमवान्-पर्यंत का दिलार-विशेष । २ पूँ उसका प्रविपति देन-विरोध (व ४)। दिसक्त-गिरिक्रमार र् ["व्यमकर्गिरिक्रमार] देर-विरोध को सह हिमबस्कृट का सविहासक **k** (**₹ v**) 1 चुड्यान [दे] संदूक (कुन्न २२७) २२ )। नुहुग [दे] देवो चाकु इ (शहर)। चुकि } की [चुकि की ] दुनहा निस्में चुकी } मान रच्कर स्त्रोर्ड की वार्ती है कह

(हेर सकतुर २, १३)। चुकी भी [रे] किला पापास-कश्दर (रे 1 (X) 1 पुरतुष्यस्य पन [दे] सनक्या अस्तमा 'पुल्युन्यमेद वं होद अन्तर्ग रितार्ग कराकरोद । भरिकारं स कुर्मनी तुपुरिसरिकासमंबारं ।' (मूपनि १६ दी) । मुझोडम दु [दे] बड़ा मार्च (दे ३ १७)।

चूंअ पूर्वि कित-शिका कर का सब संस्थ भूमी (देव १)। मुश्र पू [मृ1] १ इत-विरोप धाम ग्राम नामाच्य (गज्य चनानुर ६ ४ )। २ देव-विरोग (बीव १) । वहिस्सान विक्त सक् ]सीवर्षं निमान-निशेष (राष)। वृद्धिसा क्षे ["फ्वंसा] राज्य की एक प्रयासिती, स्वाफी-विरोप (इक बीव १)।

चूमाकी [चूता] तक्षेत्र की एक सद महिरी रकांग्डी-विशेष (१क ठा ४ २)। चुचुम हेर [चूचुक] स्तर का यह आह (NE \$ \$) : चूर इं[र] द्वा. यह नूपछ नवनावती (देव १ ३ ७ १३) १६) पान)।

प्रकृतम (पा) केवी पृष्ठ (है ४ १११) ! भूर सक [भूरप् भूषेय्] करा करता वीहना दुरुक्-दुरुक् करना । चूरीम (पाम **१** टी)। भवि पुरुष्पं (पि १२८)। बहुर, भूरत (गुपा २६१ १६ ) ।

भूर (पप) इंग भिन्ने ] भूर, प्रस्तुरु स्वाह पिर्धिया परिम सिन सम्बुद्दि पुर करेड ( Y 110) भूरण देशो भुसम (कुन २ ६) । च्रित्र वि [चूर्ण चूर्णित] पूर-पूर किया हुमा दुक्त।दुक्ता किया हुमा (महि)। भूरिम पून [के] मिठाई विरोध पूर्वा बहुडू (पद ४ दी)। मुर्किको मुख्यः। समित मिलि

नियावरों का एक नवर (इक)।

मुसम [दे] देखी मृह (गाट)।

चुब्स की [चुका] १ पोटी छिर के बीच की

कैस-रिज्य (पाप)। २ सिकार, टॉका फावि

चकामैक्फूलां (हर ७२ टी) । कम्पूर रिवा। ४ कुन्दुरहिवा। १ रोर भी नेसरा।६ कुंद वर्षे यह का स्थानना ७ विमुक्त यसंबर, र्जिनिक् व रम्पण्या स्थिता मीपना म स्थिता। हुन्द्रक छैड् मोर्सक्त चुनामहित्सम्बुतादी। चूना निमृत्रशृति व विद्राति वद्योति एवद्वाँ (निष् १)। य घषिक मातः। १ धरिक वर्षः १ कृत्व का परिष्ठिष्ट (स्तक्र) । क्रमन [क्रमैन] र्धस्कार-विशेष, पुरुष्टन (धारम) । समि पुंची ["समि] १ किर स्म क्लॉक्स मानुपरा विशेष, मुकुट-एल कियो-मणि (भौरा)

राव) । २ तवीतम सर्वे येहः विवासकृता मरिक्र नदो है' (बस्त १)। चुकिय दृष्टिक] १ सन्तर्व का-किलेन। रेक्त केत नानिनाती (पद्धार १)। ३ बीन संबंध विकेष, पृथिकांन को बीएसी तान्द्र से दुरहरी पर की संख्या सम्ब हो वह (काल २४)। इदै मा(स्वर)। चृष्टिमंग न [चृष्टिश्रङ्ग] संस्था-विरोध

प्रयुक्त को भी एकी साम से कुछने कर को बंदनातम्य हो यह (ठा२ ४० शीर ३)। पश्चिमा देनो प्रस्त (सम ६६) नुर ३ १२) संकितिष् कार ४)। भूव (दन) देखो भूम (मरि)। भृद्द सक [क्षिपु] ऍक्ना शनना प्रेपता। नुहर (पद्)। चे म चित् ] सदि, को प्रदर (क्छ १६)-'एवं प कमी हिल्लं न वेदवेनोहित की नाहो ?' (विशे २४=१)। चे देवी चय - स्पन्। चेह (पाचा)। संइ चेदा (क्या ग्रीप) । ो देशों चिता केह केग्रह केग्र केग्र चेंअ∫(पड)। चेम प्रकृष्टित् ] १ चेतना यसमार होता स्थाब रखना । २ सुध धाना स्मच्छ

करना मार याना। वेदद्(स १३)। १ क्क बानशाः ४ व्युत्तव करताः वैश्रः (म्यथम) । चेश्रदक [चेत्रय] १ उसर देतो । १ क्ता सर्पेश करना निवरत करना। रे करना बनाना 'बो प्रश्तापन चेर्ड (सर ११) । वेराह, वेर्णुच केर्यूच (बाचा)। वह चेते[य]माण (इ.स. र—पत्र १९४४ सम ११)। चेश्र च [एव] चववारत तूचन वस्पर विश्वय वतानेवाला स्टब्स (हे २ १a४)। चेल प [चेतस्] १ देत देलना शान्, बैक्य (विशे १६ वें स्व १६) । १ मन, वित्त मन्तक्ररस (बस १,१) ठा १,२)। चेत्र दृष्टि विदि विश्व-विशेष (स्व सत्त ६० यै)। बद्दु [पिति] नेदि केत का सम 🔁 ६ १५ व चिस्की १ विकायर क्याबा चेहम 🕽 हुँया स्मारक, लूप कबर या कर वर्त-प्ह स्मृति निक्रः 'सहसद्वादेशु वा सहवद्गीनवा' वासब्बवेद्वरनुवा (धावा२ २, ३)। २ व्यक्तार का स्थान, व्यक्तास्थलन (भव-

ज्यास्क मिर १ १ विचार (३२)।

वे निम-मन्दिर, विजन्तमूह, ध**र्म**नन्दिर (अ

¥ २—पत्र ४३ : वैदना वैदा १२३

नेहर प्रभापक)ः पश्चिमं कासी व वेश्प

रमें (पर ७१) । ४ इट देश की दूर्णि

धमीट देवता की प्रतिमा "कल्लाएं मेगर्स केइयं पञ्जूबासामी' (मीपा भग) । १ घई-ट्यतिमा, जिन-देव की मूर्ति (ठा ६ १ जना पएड २, ३ धाव २ पडि)- 'विद्यूणी स्प्याएएं मंद्रीयरवर दीवे समोसच्यां करह, त्तिहि चेद्रमाई चेदह' (मग २ १), जिला विवे मेक्नवेदमैति संपर्मुखी विति (पव ७१)। ६ सद्यात, बनीचा 'मिहिमाए चहर् वच्छे सीम्रच्याप् मणीरमं (उत्त ११) । ७ समा-बुद्ध समा-पृष्ठ के पास का बुद्ध । = बहुतरा-वालावृद्धार देवों कावित-मृतवृद्धार वह बुध बहाँ जिनका को केवल जान उरस्य होता है (ठा = सम १३ ११६) । ११ कुछ देव: 'बाएए हीरमाएम्म बेश्यम्य मछोरम' (उत्तर १)। १२ यक्ष स्वान । १३ मनुष्यों का विभाग-स्थान (यह है २ १७)। संसर्["स्तम्स] स्तूप भूम, (मम ६६: राम मुख्य १८)। पर म िगृह् | विन-मन्टि प्रहेम्पन्दिर (पदम २ | १२ ६४ २१)। जन्माकी विश्वा बिन-प्रदिमा-सम्बन्धी महोत्सव विशेष (वर्षे । १)। सूभ पुं ["स्तृष] किल-मन्दिर क समीप काल्यूप (ठा४ २८ च १)। बुरुप न ["ब्रुक्य] देव-प्रथ्य जिन-यन्तिर-संबंधी स्वादर या वैपन मिस्कत (दव 😢 पद्मना काथ ७ हे ४)। परिवादी की विपरि पाटी] क्रम संजिन मन्दिरीं की गावा (कर्म २)। सद् पूं ["सद् ] पैट्य-सम्बन्धी प्रत्युव (माचा२ १२)। रक्तस्र पूर्विद्वा १ पर्वापनामा दूस जिमके ग्रीके चौत्रस व वाहो ऐसावृत्तः। २ वित-देव का जिसक नीचे देवस बात उत्ताल होता है वह कृत । ६ वंबताओं का किस भूत कुत । ४ वेद-सभा कैपास का कुल (सम १३ ११६ छ ८)। बन्दम व [बन्दन] विजन्प्रतिमा की मन वचन भीरकाया में स्तृति (पत्र १ः संप १ ६)। वंदणाकी ["वस्दना] बही पूर्वोक्त मर्ग (संग १)। शास पू [<sup>\*</sup>वास] जिन-मन्दिर में पठियों वा निजान (र्यम)। इट्र रेफो घर (बीव १० प्रक्रम दर, देश हुमा १३। प्र ६१। उत्तर १६ )। पर्म नि [बेविय] इत निहित 'तन्ब २ |

बनारीहि बनारा बहवाई मर्वति (माना २ १२२) चिद्यं कद्मेगह (बृह२ वस)। बेंच देशो चिंच (प्राप्त)। पेदा देशों प = स्पन्। चट्टबर्ट चिट्ट] प्रदल करना बाक्स्स करना । वहः चट्टमाण (कान) । चेट्ट देशो विद्व≍स्या(दे१ १७४)। चेटूज न [स्वान] स्वित प्रवस्वान (वव ४)। बेट्रण देखो चिट्रण = बेट्रन (उपन ११)। चेट्राक्षी चिष्टा] प्रकल भाषरण (ठा३ र पुर २,१ ६)। बेट्रिय देवो चिट्रिय = बेट्रिट (धीप महा) । चेड पू दि] बाल हुमार, रिम्यू (दे ३ १ णामा १ २ वृद्ध १)। चेड ) पुंचिट की १ बाव नौस्ट चेडग } (बीप कम्म) । २ नुपनियोप चेडग | वशासिना नवरी का एक स्वताम प्रसिद्ध राजा (धाला १३ मग ७ ६ महा)। १ मेला देवता, देव भी एक वक्ष्य काति (मुपा २१७) । चेडिया भी [चेटिया] रासी नीकरानी (भप ६, ३३ कप्पू)। चढी की [चेटी] स्मर देखी (पारम)। चेडी भी [दे] दुमारी नाता तक्ती (पाय)। भक्त न [मेरय] मैन्य-विशेष (यह् ) । चेच पू [चत्र] १ मा<del>स</del> विशेष, वैद मास (सम २१, इं. १ ११२)। २ वैत द्विनी कारक पच्छा (बृहु६) । चेची को [चत्री] १ वैत मास नी पूर्णिमा । २ वैत मास की समावस (पुत्र १ ६)। चित्र देवो चड्ड (सम्)। चरीस ( विदीश्र] वेदि वेश ना राजा (ਚਦ)। चयग वि [चेतक] यता, केवामा (चय ( **e**xy चयप पू [चठन] १ माला भीच प्राणी (ठा ४ ४) । २ ति चे<del>ठ</del>नावामा बानवास्त 'बुवि चम्यो च किमक्व' (विसे १८४१)। भयणा की भिवन्ती क्षत्र केव बैदन्य नुव क्यान (मात ६ गुर ४ २४६)। थ्यप्पा १ न [चैतस्य] इत्तर देखो (विष्ठे चेंबम रिक्ट पुरार श्रुप्त श्रुप्त है। चेयस रेखा चाल = चेतरा :

'ईसाराक्षेण धानिद्हे क्लुनानिमनेयसे। वे धंतरायं नेएड, महामोहं पहुम्बर (सम ११)। चैया देखी चैयपार पत्तेयममाबाधी व रेणू-रोस्सं व समुक्त् चेया (विसे १६१२) । पेख ) न चिक्री पहर, रूपहा (धाजा चेख्य ∫ धार्पे) । इष्णंन ["इर्थे] म्पनन-विशेष एक तरह का पंता(स १४१)। गोछ न "गोछ] दस का गेंद. कनुक (भूष १ ४ २)। इर न [गृह] तम्दु पर-मग्हप राष्ट्री (स १३७)। चेस्रय न [दे] तुसा-पान "विद्वीतूबाए प्रुवरा" युर्वेति सं विश्ववेद्यप् निहिर्यं (वजा १६)। चेस्रिय वेसी चेस्रः 'रमगुर्कवलुकेनियनहमल भरमरिया (पउम ११, २१ भारा)। चेलुंपन [दे] सुमत मूपन (३३१)। नेड ) विकिशो चिद्य (४) (परम १७ चेंद्रज है रेंगे रह स ४५छ बननि १ हम २६८)। नेद्रग १ वि.] वेको चिद्रग (पछ १ भेड्रय 🕽 ४—पत्र ६० सा ३३) । भागमा [एव भीव] १ प्रवतास्यामुकक धम्यय निकारर्शेष राज्य 'यो हुए।इ परन्स बुई पाबद वं चेव सो सर्वात-पुर्यों (प्रायू २६) महा)ः 'भवहारणे चेवसक्को में' (विश १४१४) । २ पास-पुरक सम्यय (पराम ८ 5a) i चव च [इय] माहरक-योतक ब्रध्मय, 'येन्सद गण्डरमध्यं सरमर्थन चन तेएसी (पउम ६ ४० वस्त १९ ३)। चो देखी चड (हे १ १७१) बुमा सम ६ ; मीप मग, खाया १ १ १४: विपा १ १३ सूर १४ ६७)। आस्त्र की पिलारि शन्] वर्ताम मीरवार, ४४ (वन २६ ४)। बहू की [पिष्टि] चौसठ ६४ (कप्प)। बचरि भी [ सप्तवि] सत्तर भीर बार, ७४ (सम ८४) । भोभ सक [भारप्] १ प्रेरणा करना। २ नहत्त्रः। पोएर (उकास १४)। कशहः पाइर्जंत पाइज्रमाम (पूर २१ ) छात्रा १ १६)। चंद्र चाइकण (महा)।

चोमम वि [पादक] प्रेरक, प्ररत-वर्ता, पूर्व

पदी (प्यू)।

११२	वाइमसदमहञ्ज्यो	चोषध-चोमध
कोश्रम न [कोइन] वेरण प्रेरण (मय १८ पण २०)। कोइम हि [कारित] प्रेरित (छ १४। कुम १४ पीत महा)। भोग एक [कोइय] १ प्रत करणा। २ सीक्षा प्रियक्त केशा केश्य, कीयर् (वर्ष)। भोज [को केशा कुक ०१) (मरा)। कोक [को केशा कुक ०१) (मरा)।	योग्पड न चित्रण भी के बसेश स्तिय सङ्क्ष्रीयस्थर योग्धे तियोर कर्डयोग्धार्थ (द्वा ४१) । योग्धारिय ति शि द्वा हमा (यव ४)। योग्धारिय है शि द्वाराष्ट्र मुर्थत सेव सी समुक्त्रार्था (यप १३)। योग्धार हिंदी स्वत्याप्त सरदम (से १)।	चोरिज हि [चीरिज] १ चोर्ट नरलेना (पर ४१)। २ ई चर, जाइस (परह ११)। चारिज हि [चोरिज] द्वयना ह्या (स्थे ४२७)। चारिज की [चीर्य चीरिज्ज] चार्ट सम्बद्ध्या (चार ६। वह हे १ ३८. सुर १७०)। चोरिज न [चीरिज्य] क्रवर देवो (स्स
(साता १ १ जर १४२ टी इन्हरी बन १, १६० एक प्रीत्ती भारताति हि [है] जोबार करोताता तुवला बक्ता (क्रिय ६ १)। बोक्या की [पाझा] परिवादका स्थित प्रमापा की एक वेत्यातिन (तुव्या १)। बोळा न [बी] पावर्च विस्तय (१६ १४) पुरा भ मुता १ ६ वर्ष्ट्र १९६० पहा)।	बोहुन दि कि तिमान सोहबाना प्रेम-बुध प्रेमी (दे के रहे)। बोहर ) न कि त्या स्टब्स (म्छ्यू र- बोहरा ) र — या रहे थे)। दे सात बहेता का संख्या (मित्रू रेट प्राचा र-१ १)। वे त्या सम्बन्धिय (मुक्तु बीत रे एस)। बोहरा सेखा बोह्य स्टाइंडिंग।	चोरी की चिठि जोरी ब्याइएड (या रण)। चोड़ा हि दि है । सामत हुआ (स १ रण)। १ दू पुरा हिस्स किइ (या १९)। १ ८ मण-प्रधानिकीय मंत्रिष्ठा (दर १ ४)। पह दू चिहु कि हुर्ति का ग्रीटनल (बीच १४)। य दू हि हो मणेड ना रंप (स १४)।
बोबर ग बिंदी बोधी बोरनमें पहेंच दिसं मंत्रियं बोज्ये मर्थनोत्तर्गे (क्ट वेर, ६) राज्या र रूट)। बाज्यं विद्यो र प्रका दुष्या। २ सर्व्य प्रदुष्ता। २ कि प्रैश्लानोत्त्य (का ४ ६)।	चोराया को [चीन्या] प्रेरणा (व १६ का १४व दो)। चोराया १ वि. का व्यवस्थित (वणु ११४)। चोबाक्षिय और [चतुमस्यारिशत] चीना- नीय ४५ (कहा १९१)। चारा १ वीरो ककर, इसरे का वब प्राप्त- व्यवस्था ११३ वसर ११३। किंद्र १	चोळ दु [जोड] केठ-सिरुंट, इसिद्र चौर इसिद्ध के दी व का केट सिंद करों। जोक्कत न ही क्वच कर्म (माट)। चोक्कम १ जिल्हा, को बलार-सिरंट चोक्कम १ प्रकार मिहिला चूनकम्म समार्थ चेक्कम मार्थ (भारता नर्या १ २)। चोह्या केवा चाहुक (ती १)।
कोही की हिंगु पोटी किया (वे व १) । कोहू न [बी हुन्छ, इक्स पीर पती ना सनन (पिकर)। पाढ पूँ [बी पिल कुन-पिकेन केन का पेड़ (वे व ११)। कोण्यान [बी १ नक्स, प्रयास (निस्टर)। २ कहानका प्राप्ति सनन्य कर्म (सुस्वर	िकी विद्या में जरान होता कीर (वी रण)। भार्रकार हूं चितिकारों जोर, तत्करा भोर्रकार वे चुनावरते तर्न बन्ने (बुना वेश)। चोराग वि चिराजे र चुरानेकाना । र कुन, बनायों-विकेश (वयुष्ठ र—पन वश)। बाराग व चित्रकारी र कोर्ट चुना (बुरा	भोक्षयभा । मृष्ट्रायनयन् १ स्पीन- भोक्ष्ययप्य । त्या । स्मान्तराय । १ त्या । र — त्य १ )। १ त्या । स्मान्य (भा १ )। १ त्या । स्मान्य (भा १ )। भोक्ष [बे] स्था नाव्य (भा १ )। भोक्ष [बे] स्था नाव्य १ १ । भोक्ष १ वृत हिं। स्थान (भा १ १ ।
२)। चोष्ण १ र्रम [वे] प्रयोग, प्रायम-वहंब चोष्णक्ष १ वस्तुक (देश दाय)। चोद [वे] ठेको चाय (शह्व २ र.—ाव १र)। चोदा ठेको चोलक्ष (शेव ४ स्व)। चादाया को [चादना] प्रेरण, किली प्रमाव स्रार्मी चर्योक वी सीर ठेक्क बहुने सा करते	१११) व मिं भोर, योध करनेवाला (प्रित्ने)। भारती कि [कि] प्रचल मान की इच्छ करूरेती (व १ १६)। भीरता डुं जिस्स है। मान का एक फोग तीन (प्राप्तन)। जीरता कह जिस्स विशेष करना।	धीरा नहु (कर दू केरे)। चाड़ब दृंव [तु किस, कोरा, नोम पर मन पालके तीवह नोलाएं। 'चारता करोला चित्राद केरालाएं। 'चारता करोला चित्राद केरालायं (महा)। चोषचारि की [नदु महाति] बतर धीर चार, ७४ (पंच x १)। चोषसास दृंव [चतुत्रादि] कोराच कर
के लिए होनेवला वनेत (वर्षे देशर )। बाज्यह तक प्रिम् ] तिगव करता वी तेल वरिष्ठ तकता । वेल्प्स्य (हे ४ १११)। वह बाज्यहमात्र (हुम)।	नोपनेर (सक् १) जोपनी ) केने नश्यानी (शि ४३६। जोपनी १) अभी नश्यानी (शि ४३६। चोरिज न [चीर्य] नोपै सम्बर्गत (११९ १ अ.स.१ १; मानू १२ पुता १७६)।	ना रुपन-पूर्व प्रयोग एवा वेरी हिन्सीने साम्रता। एवर हुनी वी-(१ को)नात- नामा हुनेल प्रकारित (व्य ६ १ टी)। चारमह देनो चारमह = प्रज्ञा वीलगर (यह)।

वा स [एव] सबबारए-पुणक सम्मय (हेर विश्व देवो चिश्र = एव (हेर १८४४ | वेश } देवो चेव = एव (स १२१ वी १२)। १८४ मुमा, वह )। कुमा)।

॥ इम सिरिपाइअसङ्महण्णवन्मि चयाग्रहसद्वंबमणी चरहसमो तरेंगो समची ।

亥

ख्युं [ख़] १ तासु-स्थानीय व्यव्यन वर्स । विशेष (प्रापः प्रामा) । २ भाष्ट्यस्त, हरूनाः 'स कि य दोबाए कामछे होद' (प्रावम) ।

स्कृति व [पप्] संक्या-विशेष स भ संक्रियाची जिल्लासरुम्मि (मा ६ नी १२ मत १ =)। उत्तरसय वि वितर शततम् । एक सी धीर घठना (परम १ ६ ४६)। इतमान ["कर्मम् ] वा प्रकार के कर्म को ब्राह्मणों के कर्तम्य 🐌 स्वा— यजन, याजन संध्यक सम्यापन दान सीर प्रतिबद्ध (निष् १३)। स्तायम विश्वयी सः प्रकार के बीच पुवित्री, सन्ति, पानी बाबु वनशांति भीर तम बीव (मा ७-वेका १४) : शुक्त स्तुण कि चिंगुण] क्छना(ठा६ पि२७)। व्यरण⊈ िषरणी प्रमर, भींच (कुमा) । जीव निकाय पू ["जीवनिकाय] देशी साथ (धावा) । ण्यात्र , ण्यावद् ["वादति"] संस्था-विरोप कानवे १६ (सम १८ प्रति १)। चीस भीत ["क्रिंशन्]संस्था विरोप बतीस १९ (कम)। चीसइम वि [विशक्तम] धतीयवा (पराप १६ ४३/१एए ३६) । "इस वि व [पोडरान्] नोक्य सोन्द्र : "इसद्द्र स [पोडशया] सीनइप्रकार का (बन ४)। दिसि न [ १९६३ ] कः विकार्य--पूर्व पवित्र चतर, रक्षिण ऊर्म्म भीर मभीविशा (भग)। द्वाप्र[भा] यः प्रकारका (कम्प १ २)। नवइ ह्याइ झउइ रैकी "गमद् (नम्म १ ४° १२ सम ७ )। सद्भाश्च नि दि तुनुस्य, पतला(१३, २६)।

शाहय वि [<sup>™</sup>आवत] क्यानवेवां ६६ वौ (पउस १६ ६)। प्पण्ण प्पन्न वर्धन पिकारात् विस्पन ३६ (रावः सम ७३)। °प्पन्न वि [°पम्ब्बाइः] अस्यनवी (पक्रम १६ ४a)। बसाय वृं ["साग] चळवी दिस्सा (पि २७)। दमासाको ["भाषा] प्राष्ट्रत, चंस्तृत मामनी सौरवेनी पैराजिका और धपम्रस्य ये 🖦 भाषार्थे (रंम्प्र)। मासिय, म्मासिय वि[पाप-मासिक कमार में होनवला कमार सम्बन्धी (सम २१ भीप) । वरिस वि ["बार्षिक] **ब**ः वर्षे श्रे कन्नवला (सार्व २६)। बीस देखों व्यक्तीस (चिन)। व्यद्दि विषय] कः प्रकारका (क्स नव १)। व्यक्तिस और विशिक्षि ] छन्नोस, बोस सौर सः (सम<sub>र</sub>प्र)। कर्मा-सद्ग वि [विश्वितिया] १ सम्बोधको २६ वॉ (पडम २६, १ ६)। २ श्रमातार बाध्य दिनीं का स्थवात (श्रामा १ १)। ैसट्टि 👊 [ैपप्टि] चंद्या-विशेष साठ मौरमः (कमार १०)। स्सर्वारमी [ सप्ति ] विद्वस्य (कम्म २, १७)। द्वाचेको द्वा(कम्म१५, ८)। **द्धाः देवो छ्**वि = ध्रति (वा १२)। अहम वि [स्परित] मानूत पाण्यास्ति विदेशिय (दे २ १७) पदः)। छन्त्र } वि दि] विराव वतुर, होतिधार व्यक्त } (पिन दे ३ २४३ मा ७२ ३ वजा पाम भूमा)।

क्षाउम पुर [ह्यचाम्] १ कपट, राहरता माना (सम १ पद्)। २ आस्य महला(है २ ११२ पर्)। ३ धानरण मान्यस्य (सम १ ठा २ १)। खडम न [ख्रुमम्] ज्ञानावरसीय धार्वि भार वाती कर्म (चेदम ३४६)। **ब्रह्मस्य वि [ब्रद्मस्य] १ परानंत्र** संपूर्ण बान से वश्यित । २ राय-सहित, सराव (ठा ¥ **१३ ६ ७**}। झब्रुख्य देतो **झल्**म (समा दिसे २६ ८)। **बंदार्ड की** दि | श्रीतकन्तु, बूल-विरोध केनॉथ कनाझ (देव २४) : छटपू [दे] क्रीय पन का धौंटा वन 🕶 ा २ विशीष, जस्यी करनेवाला (दे R 88) 1 इदंद क [सिय्] धीवनाः इदंदपु (बुवा इटेंटण न [सेव्यन] सियन सिवन (पुपा १३६ ड्रमा)। छँटा की [दे] वेको छंट (पाप) । छटिम वि [सिन्छ] सीवा हुमा (भुपा १३८) । संब रेको छाडू = पुन्। संबद (बास ६२) इदेश वि[दे] यन इता(सर्)। इंडिभ वि [मुक्त] परित्यक, क्रोड़ा हुमा (धारा मनि)। **इद्दंशक[ह्यन्द्] १ पा**हना बाश्यका। २ धनुत्रा देना संपति देनाः ६ निमन्द्रस

रेना । करकु

'प्रतेवस्पुरातनावृत्येषः वर्तस्तिवरिष्ट्रेषः गुण्जिसस्याः ।

कामेहि वहविद्याहि व ग्रीविज्योगित नेन्स्रीत' (स्त)। ग्रीक क्षेत्रिआ (वस १)।

क्षेत्र पुंत्र [क्षम्य] १ एक्क गरनी परिमाना (प्राचा पार राज २१ छ जम प्राप्त १११) २ प्रतिकास प्राप्त (प्राप्त मन) १ मण्डा प्रमीनता (उत्त ४ दे १ १९) । प्रार्टि सि [पारिम्] एक्षम्यी स्तरी (जा ६५० दें)। १ इत ति [ तत् ] स्तरी के एक्सम्य न [ ानुष्तेत ] स्तरी के मुद्दार प्राप्त (प्राप्त १४)। एक्सम्य

क्षेत्र पून [क्ष-तूस ] १ स्वश्क्यका स्वैरिता (ज्ञा ४)। २ धीत्वाल इच्छा । ६ साहत पत्रियम (सूच १ २ ३ घाला हे १ ६६)। ४ स्वस्ट-शास (सूचा २८७ सीह)।

वि [ ज़ुवर्त्तक ] मध्यी का प्रमुखरत

कर्णनामा (शाया १ १)।

र कुत कर (बरबा ४) । ज्युप कि [\*हा] कर कर का कालकार (सरब) । करण पूर्व क्षित्रहरू विकास करून (स्टब

१६)। प्रेयण न [ब्रन्दम] निमन्त्रस्य (पिंड ६१ )।

छंदण न [कन्त] वन्तन प्रशास नमस्कार (पुना ४)।

र्णदणा की [क्रम्पना] र निमन्त्रका (वैचा १२)। २ प्रार्थना (बृहर)।

व्यंत की [बन्ता] श्रीष्टाका एक मेद स्थले वा दुवरे के सम्बद्धान-किशेष से तिया हुमा सन्दास (ठा २, २ पेक्स)।

संविध वि [स्वित्] स्तृतात स्तृत्त स्तृत्त (स्रीव है )। २ मिनामित (स्तृत्त हो ) । दे मिनामित (स्तृत्त हो । देवा स्तृत्त हो । स्तृत्त स्तृत्त । स्तृत्त स्तृत्त । स्त

क्रावेकी क्रम् वर्ष (तस्स ४)। क्राव क्रि] पूरीय निष्ठा (तस्कृते ३— वर्ष प्रभाविक रहे। क्रावेकी क्रम्म (वर्ष २०१)।

क्षराज न [स्वमन] रिजान बनना (वर ४)। क्षराज न [दे] जीमय भोजर (स्व ४१० टी पंचा १३। निज् १२)।

द्याणिया की [के] मोईश्र कंबा (धनु १)। द्याक पूंची [द्याक] सान सन वरूप (पर्याह ११: बीग)। की क्षी (के २ क्ष)। पुर न ["पुर] नगर-मिठेप (श्र १)।

दुर प हुनु गरनगण (अ १ )। झुरगु रु पु पहरूक है। दे एक सी चीर चल्सी दिनों का उन्हांस । २ तीन दिनों का उन्हांस

(का २१)। इस्क्रुंदर पुन [व] कक्षुबर, मूने मान्हे

वी एक बाति (चै १६)। खुद्ध सक [राख] सोमना वमकना। बर्ग्यद (१४१)। खुद्धिक वि (राशित) सोमन पलेक्स

(दुमा)। विक्रिया की [दे] कुल-पात्र वर्षेशी (स १९४)।

सहा [दे] देशो छंटा (पर्)। सह वि [पष्ट] १ स्टमी (सम १ ४ हे १ २६४)। २ व नवाटार को विगों का प्राथास

(सुर ४ १)। बन्तामा न [सामा स्थान] बनावार से तिलों का करवाय (संद ६ वन द १४१)। बन्तामा वृ [सामक, स्थान] पेन्ये तिलों का बरावर करवात करतेनाता तरावीं (कर १२२)। भारत न [मन्तु] करावार को विलों का करवाय (सर्व १)। आंत्रपारि [आस्टिक]

(मण्ड १ १)। बहुते की [पश्ची] १ तिति-विष्ठेप (बस १६)। २ विश्वीक निर्देश संकल-विपतिक (स्त्रीति १ १९४)। ३ वसन वै बाद विश्वा बाह्या ब्याज-विरोध (पुणा ४७)।

सपादार दो दिनों का क्यमस्य करनेवाला

कड एक [आ+स्त्र] सास्त्र होता चन्त्रा कर्मा (पड्)। कडम्बर पुँ हिं] सम्बर, सार्तिकेट हि

द २६)। इत्ह्राहा वी [इटच्छटा] सूर्व (तूप) नवेरह से मन्न को माइते समय देशा एक स्वार का सम्बद्ध समान (शासा र क्रम्य ११६)।

द्धा भी [वे] रिचुत रिक्ती (११ २४)। छडा भी [जुरा] १ भगूर परस्पत (दुर ४, २४३: वा १२)। २ मींटा पानी नी हैर (पाप)। द्धाम नि [ब्दावन्] स्टावमा (रम्स

१४ १०)। इविस्थानि [इविटित] नूप भागिते वे वैद्याना अध्यक्ष समा (तैन २१ राज ६७)।

कत्या हुमा (तेंद्र २१ एम ६७)। इन्हें एक [ कार्यम् हुम्प् ] १ वमन करमः। १ कोङ्गमा त्याप करमा। १ वमनम, निषयः। इन्हेंद्र १, १६। ४ ११। महाः वर्षे। कमी क्षत्रिकर (ति २१)। महः कहुव (स्था)। तोङ क्षर्जुरो पुगीन् बीर वह निवस

द्रुप्तमारी (स्थे १४०१) हाक्कित (कर १) इक्किल न [हार्यन मोचन] १ वर्षणाय-विमोचन (कर १७६१ चीक १) १ वर्षण-वानित (स्थि १ त) । करूप वि विभेद्य बोस्तेवना (स्थ ११०)

स्त्रुय वि [सर्वक] कोक्नेनला (द्वय ११०)। २ पू. एक छेठ का नाम (द्वय १८६)। सन्द्रमध्य न [सर्वेन सोधन] र क्रावना

बुक्त करवाचा । २ वसन कराना । १ वि बनन करानेशला । ४ चुसनेवला (हुना) । ब्रह्मयय वि [ब्रह्मेक सीपक] स्वात करने-बला स्वातक (१ २, ६२) ।

ब्रह्मायण देखो झहुबल (पुता ११७)। ब्रह्माबिय वि [स्तिदित मोश्वित] १ वयन कराया ह्या। २ कुहनमा ह्या (सम्बद्ध ब्रह्म १)।

अपितुं की [अपितृ] यसन का रोन (यह दें के १९)। अपित की (अपित्य ने स्थल क्याना की

वाहि की [वार्तिस्] किए, ह्रपश की बानद परव्यक्ति सो निस्त्वद्वीय कि दुनरें (सहा)।

कहिय कि कि कि शुक्त राज्य राज्य कि कि स्वाप्त कि कि कि स्वाप्त कि

इत्य कर [क्षण्] केल करनाः द≪ (शुप २,११७)ः इत्य वंक्षिण्]१ कलम स्व (१.३.१)ः

इत्य पुंक्षिय] १ करून मह (१ ६२)। २ दिशा (शका)। अंद पुंक्षित्र] इत्स **छत्तच्छ**य (पर) र् [सप्तच्छन्] कुन-निरोप

इस्तवभाग दि] वास तूस (पाप)।

**ध्रत्तवज्य देवी द्वातिवज्य** (प्राप्त) ।

क्षत्ता क्यै [क्षत्रा] नमरी-विशेष (प्रावम) ।

खुचार 🖫 [छुत्रश्चर] द्यावा बनानेवाला

समा-विरोप (इह १)।

सतीमा स्रविदन (सरह)।

दुष्पण न [इर्द्रन] द्विसन, हिंसा (भाषा)।

इजिद् पू [क्षणेन्दु] सरद ऋतुकी पूर्णिमा

हुण्ण विक्रिय है रहा,प्रव्यव विराया ह्या

(बहर प्राप)। २ मान्यादित दका हुया

(ना १८)। १ न माया, कपट (मूप १

२ २)। ४ निर्वत विवत खुस्। १ किवि

का क्षत्र (सुपा ३३ ४ ४)।

(सुपा ६ ६)।

युप्त रीति ने प्रच्छप्र इस से 😭 छएए। प्रायरियं तहवा बलासीय बोम्बलमपुरा । तं पहिच (? मंडि) ज्यह इरिष्क् मुक्ट्स् सीलं वयंतिहरू (इन ७२८ दी) । क्रुज्यास्य न [दे पण्यास्टः] विकासिक तिपाई, संन्यस्वितों ना एक प्राकरण (मन बीक साम (१)। स्तत्त न [स्त्र] स्थला प्रत्याप्त (खासा t ध प्रावृ रशे। चारपु चारी काता भारण करनेवासा शैकर (बीव ३)। वहागा श्री [पताका] १ धक-पूरु व्यव । २ धक के अपर की पताका (भीप)। "परमस्य न [\*पद्धाराक] इतमंक्ता नवधे का एक वैत्य (का)। संगपु ["सङ्ग] राज-प्रशः नुप मरण (राज)। द्वार वैको भार (भावम)। ीइन्छच न [ाविन्छ्त्र] १ यन के उत्परका चलता (तम १६७)। २ दू क्बोरिय-राज-प्रसिद्ध गीय-विदेश (स्व १२)। क्रच न क्रित्र] बगलार वैदीत दिनों का छर-मास (संवाद १)। पुन, एक दैवनिमान (देशना १४)। ६ प्रै क्योतिय प्रशिक्त एक योग जिसमें चन्द्र भादि पह चन के साकार ते रहते हैं (पुरव १२--पत २३३)। 45 <sup>1</sup> वि [ यम् ] द्यातानाता (पुच २, १३)। कार वि [कार] आता वनानेवाला फिली (मण् १४६)। ग पून [क] शनस्ति विरोध (पूम २ ३ १६) । क्षच द्रं[छात्र] विदावी सम्मानी (इस द्र २११: १९८ दी) ।

कारीगर (पएए १)। खताइ पूँ छित्राभी दूस विशेष 'खन्बोहरू-चिवएरी सले नियए नियंगुवानाई (सम 1×2) 1 स्रुत्ति वि [छ्त्रिम] सन्युक, स्रातानाना (भास ११)। ह्यचिवण्य पूं [सप्तपर्ज] दुन्न-विशेष एडीमा क्रविवन (हे १ २६१: कुमा)। द्वत्तीय १ विश्वीकी बनस्पति-विशेष कुन्न-विशेष (पएए १--पत्र १६)। क्रचीव पू [क्षत्रोप] क्त-विरोप (बीप बंड)। क्षचोइ १ [छत्रीप] गृध-विशेष (बीक पर्ण १--पत्र ६१ मग)। इदमत्य देवी सुडमत्य (इच्य ४४)। छरथग देवो सञ्जवण (राज)। ख्रसम वि [पर्दरा] चः या का (पूच २ २, २१) । **ब्रद्धी की [वे]** शम्या विधीना (वे ३ २४)। स्रस दि <u>शि</u>ण दिसा-प्रमान दिसा-जनक (सूद्र १ ६ २६) । ब्रुस केलो इएला (कमा कर ६४० दी प्राप् सप्पद्गितः वि [ पद्पदिकावन् ] पूका-पुक्तः बुकावाता (बृह ३)

कुप्पद्रम् की [पट्पदिका] दुका 🗣 (वीव

इस्पती की दि नियम-विशेष जिल्हमें पच

क्षप्पण्म } वि [के पर्मकक] विकास

ह्मप्पणाय । बनुर, बाबाके (६ व २४

इष्पत्तिभाक्षे [दे] १ चपत चयह

निका बाता है (दे ३ २१)।

् तमायाः २ यसती रोडी प्रतशा

पादाः वजा ५०)।

93Y) I

द्रपश्चिमानि सन्बद्ध निव्यत्ते पृत्ति । एत्व को देशो ?। निमपूरियेकि रमिण्या, परपुरिसविवरिजय गामे (गा≍⊏७)। भ्रूप्पम 🐧 रेको सूप्यण्य (बय १) । छप्पय पूं [पट्पइ] १ प्रमद, भौंख (हे १ २६ इ.सीन ३)। २ विद्यास्त्रानदाना। १ मः प्रकार का (विशे २८६१)। ४ न क्षन विशेष (पिष)। क्रव्य } पून [ये] पात्र-विरोग (ग्राचा २ क्रव्या) १ व १ पिड ४६१ २७०)। खरूनय न वि विश्व-पितक की क्षेपेख की स्रातनं का उपकरण-विशेषः "मुद्देशाईमक्कोड एहि चंसलयं च नाऊर्ण । बाधेरव सम्बएएं (सोव ११८)। सुरमामरी औ [पट्आमरी] एक प्रकार की बीखा (खाया १ १<del>७ - य</del>न २२१)। इसम्बद्धम यक [इसम्बद्धमाय्] 'इस-इस' धानान करना, भरम जीज पर दिया जाता पानी की बानान । श्रमक्समङ्(बज्जा ८८) । क्रम देवी क्रमा । स्ट्र्यू [स्ट्र] बुल पह दरका (हुमा) । इससम् प्री दि सम्बद्धः वृक्ष-विसेव सरीना कतिवन (देव २६)। छमा की [श्रमा, क्या] प्रविशी वरिस्ती मृमि (दे २ १८)। इर पूं ["बर] पर्वत, पहाड़ (पट) । देखी स्ट्रमाँ । क्सी की [रासी] कुत विरोध, भीत-यन बुत (E ? REX) | इएम केवो इन्डम (हेर ११२) पहा प्रज्ञम ४ ২, বল)। ध्रम्मद् र्थं पिण्मुका १ स्कर कार्तिकेम (हे १ २६४) । २ भनवान् विमत्तनाय का मन्द्रियक देव (बंदि =)। छ्य म [स्त् ] १ पर्ण, पत्ती पत्र पत्ता (सीप)। २ घानरता धान्यतन (से १ ४७)। क्षयन [स्तु १ वर्णमान (इ.२.१७) । २ पीड़ित, ऋडित (सूच १ २ २)। छ्यद्व [प्] देवी छड्ड (रंग)। खरु पूँ [स्सरू] बर्म-पूटि तनवार का हावा (पर्याः ४) । प्ययाय न [\*प्रवाह]

धर्म-रिज्ञा-धास (व २) ।

ख्रस्त्य रेको स्लब्ध (पि १४८) ।

द्धव देखो द्विष । स्वर्धीम (सूना १७६) ।

क्रवधी क्ये दिने चर्न चमहा (दे दे

इस्त देवो छ = पर (नम्म ६, ६)। द्वसारक द्विस्त्या व्यवसार स्रात्तरदेश्या (स २१६) । संह- ऋसिड इस्डिज् (महा)। इ. इस्डिमस्य (मार्४)। इन्छन [इन्छ] १ कमट माबा(इन)। २ म्याज बहुला (दार्घ प्राप्तु ११४) । ३ मर्च दिवात वयत-विवाद एक देखा का वयत-इस (सूम १ १२) । विषय न [ स्टन] छन वयन-विवाद (सूम १ १२)। हर्लस वि विद्यस्त्रीयद्शील व कोशवाला (ਬ )। छ्वंसिअ वि [पद्मीसः] धः रोखवाना (नूप२११६)। द्धराय व [सुद्धत] प्रशेषल भेंदना (धावानि 1 (114 छस्य न [छस्त] स्मार्ट नम्बमा (नुर ६ t=t)ı छस्या की छिस्ता रेट्याई, कल्बना (भीष ७६%) उप ७७६) । २ सून माया बपर (विदे २१४६)। सुख्रथ वि विषये प: पर्ववाता (विषे **t** () i प्रसमीम सीन [पद्मीति] संस्था-विदेव

यल्पीधीर**यः** ६ (भव) । द्वसमीइ भी ज्यर देनो (नम १२)। छसिअ वि [हासन] र वरिवत विप्रतारित क्ताह्मा (त्रीक्तिंग) । २ शृङ्गार-सम्बद्ध १ पीर ना श्रवस, तस्कर-वंडा (संज) । एडिअ रि [रे] विशय जनार चहुर (है १ ५४: पाष)। धुसिअ न [द्धांस्टर] नान्य-सिटेर (ना ४) ।

र्दाष्ट्रप्र रि [मास्ति] स्ननतन्त्राह (बोप w46) 1 द्यसिया रनो दाखिया 'शैलार्' दनिवन-भोतुरिनं (बहुत)। ह्युम । १ [पहुम्क] वेटेपिक वट प्रर सर्वा - तेर बनार ऋष (रण दा क ह्ममा । विने ११ र) परवाहद्यवाची-बरनामा धनुरति (रिने २३ ४४३३)। द्यतीको [रे] सत्ता, शतन द्यान (रे ३

२४) बी १६ सा ११२ आ ४ १ लावा

1 (11 1

२६) । स्विक्ष जिल्ली १ कान्ति देश (दुना) पाय)। २ धन, ग्रंपर (पग्रह १ १)। नमें, नमड़ी (पास चीन है) । प्रधनसन (पडि) । इ. ध्रीची शरीची (ठा ४ १) ६ मनभूगर-विकेष (मरा) । **च्छा**ञ प् विशेष्ट्री सङ्गता विश्वेत सवस्य कर्तन (पक्रि)। बस्तेयण न विकोतनी धेप-भ्येर (पश्चार १)। त्राण न "त्राण] चमड़ी का साम्ब्राश्त करूप वर्ग (इस २)। द्वविभ विस्तिष्टी द्वया इमा(भार⊎)। क्र बेपका न [क्रबिपर्वन्] मौरारिक राधर (बत्त ६,२४)। द्यवैद्य विद्वितित् रेनान्दिक्ताः २ का निविद्ध (धाषा२ ४ ३ ३)। श्रम्पग वि देशो सम्बय (एव)। कृष्टियम वि दि | पिहित पान्यादित (नउड)। सह (बन) रेको छ + पप् (वि ४४१) । खद्त्तर वि [पट्सप्तत] बिह्नत्तरना ७६ वा (पक्स ७६ २७)। हर्चरि की [पर्मप्ति] फिर्कर, ७६ (पर हाम देवो हाव (प्राप्त १६)। ब्राइभ नि [ब्रादिन] धाच्छस्ति इरा ह्या

(परम ११६ १४० हुमा) । हाइद्व रि [ द्वाधावन् ] दायावाना वान्ति-पुष्क (हे २ १११ पर )। धारत र दि र प्रशेष शेषक 'बोरल्स तह शास्त्रमं व रीवं बुछेन्सहिं (बद ७ है ३ ३५)। २ विसास समान सुरुवा ३ स्त प्रपुष्त (दे ६ ३६) । ४ तुश्य सुरीन कारान् (देश १६ वर् )। खाई रैनो साया (वर ) i क्षाई की [व] नाता देशी देवता (देश **₹६)** ſ द्यात्रमस्य न [ह्याद्मस्य] यणल-प्रशस्य (ति ६ री)।

छात्रमस्यिव रि [हार्मास्यक] देश्यक्रम्

क्लाब हैने के पहले की बाल्या में उत्तव

सर्वेत्रता की पूर्वावस्था है। बंक्य रखनेवाला (सम ११ पर्ल ३६)। द्वाओपग वि [द्वायोपग] १ **ध्रम**्यूड, स्त्रमानाता (क्वार्यर) २ प्रं सेनश्रीय पुरस् भातनीय पुस्प (का ४ ३) । खागळ वि छिन्नाछी १ सब-धंबली (स ६, ६)। २ दूधन वक्छ। ध्यः, सी (रि 31t) i क्षागस्थिय पू [द्वागस्थिक] बादो हे मानीविका करनेवाता समान्यातक (विपा t Y)। द्यायन दि ] १ बल्य वरैछ का मनस्र (१ १ १४)। २ बोसम बोबर(११ १४ मुर १२ १७) स्त्रामा १ ७ मीव १)।१ वक क्यवा (दे ३ ३४) बीट ३)।

द्वाजज न दि ] श्रानना पासनः 'सूमीदेशिं वबद्यालगाई वक्यामी होई व्हासाई (स्ट्रे ਪਵ ਹੈ)। झाणवइ (धन) देखी खण्जनह (सिन) । द्याणी क्ये दिहे । शास्य अपैदानानतन । २ वक्त, कपहा (देश ३४) : ३ केवर, नोबर (दे ६ ३४ वर्ग २) । आहाजी की दिने क्या बोबर का इन्दर (वर्ष क्षाय नि [द्वात] क्लाह्नित नावनसा (वर ₹ ₹ ७) १ द्राय एक [द्वारम] बाच्छारत रस्त्र दरना । सार (हु ४ २१) । बार सार्वेट (पदम **७ १**४) ≀ आय दि [दे झात] १ द्वाबित मुखा (<sup>१</sup> ३ ३६ पाय का ७६ दी धीव २६

देवस्यी (सम ११२)। छापत्र न [द्वार्त] धान्द्रास्त दरना (रिद महासं ११)। द्यायण न [झाइन] १ वर की सन कार<sup>त</sup> (तित १ १)। १ इत्तन सारताः १ वर्षः नपदा (गुक्त ७ १६)। द्यायित्रया । वा [र] देव नगर व्यन्ती

द्यायती । तो तस्ति निर्मा एनी दृष्टिन

म्बर्वार्थील' (या १९ वरा)।

मा) । २ इस दुर्बल (देव ३३: बाघ) ।

हादसि दि [द्रायावत्] शक्तिकाः

कांह् (पाष) । २ कान्ति प्रमा वीप्ति (हे १

२४६ और पाम )। १ शोमा (मौप)। ४ प्रतिविक्त परसार्थ (प्रामू ११४ वत २)। **१ पूप-रहित स्थान धनातम केरा (ठा** २ v) । गई की ["गति] रे द्याया के पतुसार समन । २ इद्यास के समलम्बन स मृति (पर्ग्य १६)। पास र्ष [पारः] दिमानन पर स्वित मगवाम् पारवैनाय की मूर्ति (ठी ४४)। द्यामाओं [वे] १ नीति यश क्यांत । २ भ्रमरी मनरा भौरी (दे १ १४)। छ।याइत्तय वि [छ।यादम् ] कावावासा द्याया-युक्तः। स्री इत्तिआ (हें २ २ ६)। द्याबारा भी [ पद्यस्वारिशन ] दियाभीस वानीस ग्रीर छ ४६ (भव)। क्षायासीम भीत उत्परकेशे (सम ६६) वया)। द्वायात्सम वि [पट्चस्वारिश] दियानीमबी, ४६ वा (पत्म ४६ ११)। छार वि [सार] १ शिवसनेवासा मरनवासा । २ सारा सबस्य-न्यवानाः ३ वृं सबस्य नोश नमकः ४ सकी सकीकारः १ प्रद (कृ २,१ प्राप्र)। ६ मऱ्य पृति (विमे १२१६: म ४४: प्रामू १४२, खावा १ २)। ७ मारतर्यं, यसहिप्याता (जीव ३) । द्वार दे दि] धम्यस्य मानुक (दे १ २६)। ह्यारय देनी ह्यार (या २७)। छारयन[दे] १ रदु-सम्ब क्या नी दशन (६ ६ ६४)। २ प्रदुत्त वसी (दे६ ६४: पाष)। द्वारिय नि [द्वारिक] धार-मम्बन्धी (दम ४, **ર અ**)ા द्याल पूं [द्याग] धन बक्च (हे १ १११) । हाडिया की [हागिता] पना धानी (मुर ७ ३ मस्)। द्यान्ध्रं भी द्विगी क्यर श्यो (प्रामा) । द्वाय पूँ [शात्र] बालक वद्या रिष्णु (दे १ २६६: प्राप्तः, वयः १) । ह्याबम रेगी झायण (रह १)। द्वाबद्रि की [फ्र्पंट] द्यादड, विवाहर, ६६ (तम ७०) विशे २०६१)। धायचीर यी [पदसप्तिति] धिन्तर, प्रतर 83

ग्रीर छ ७६ (परम १२ ८६) सम ८४)। म वि ["सम] छिड्छरवा (मन)। सायिक्य वि [पहायिक्षिक] सः मानिमना-पिनित समयवाला (विसे १६१) । द्वासद्ग वि [पद्पष्ट] विमास्टवां (पडम ६६ ३७)। द्वासीको 👣 द्वाद्य, तम महा(दे ३ २५)। द्वासीइ की [पहरीति] छिपानी मन्ती मीर कः। सनि विमी दिवासीयाँ वर्ष वो (पठम व६ ७४)। द्वाहसार (मप) देवी द्वावसरि (पि २४६)। छाहर्त्तार देखो छायत्तरि (पद २३६) । द्वादा । **व्ये द्विषय**ी १ साह मातप छाहिया | ना प्रमान। २ प्रतिकान परछा **सा**€। ∫ (पड् प्राप<sub>ः</sub> सुर २ २४७: ६ ६१ हे १ २१८। मा ६४)। छ। इसे इसे [दे] गमन, व्याकाशः। समित् मिति ] मूर्य तूरव (देव २६) । क्षित्र देवो छाझ (दे ६ ७२ प्रामा)। क्षिम् न भी दि । भएती दूतता (हेर १७४ मा १ १ ११ पाम भर्मसन-सबुबुक्तिपन ६१ १)। द्विहरमा न दि शेश-विशेष वद्ध-स्पगन की बीहा (देवे वे )। क्षिंद्रय र्द्र दि देशी र वेद, संसेर। २ वार, चपपति । १ स कम-विशेष **श**नादु-कस (**₹ ₹ \$**) 1 दिखोसः भी [रे] फोटा यस-प्रवाह (दे ३ २७ पाम) । सियम [द] १ प्रका पोटी (हे ३ १४ पाय)। २ धत्र छाता। ३ धूप-कन्त्र (३) ₹ **₹**₹) | सिंहिमाकी [व] १ बाइ वा पित्र। २ यानार 'छ सिरियाची निएसासएस्मि' (पन १४८ सन ६)। दिवीकी [दे] बाइ मा दिस (ए।या १ २—गद्र ७६) । सिंद सक [दिश्] धेरण, विकास करना । विरह (प्राप्त गरा)। भीत खेल्प्से (है व tot)। वर्षे पिन्तः (महा)। वर दिवमात्र (एाया १ १) । क्वह छिद्धांत, दिज्ञमान (मा ६) विका १२)। चेष्ट

द्विविज्ञण, द्विवित्ता, द्विवित्तु, द्विविय, छेल्लुण (पि ४०४० भग १४ व पि ४ ६) ठा १ र महा)। इट सिंदियङय (परह २.१) । हेक-छेर्च (मारा) । क्षित्रण म [श्रेदन] खेद वएरन कर्टन (बोप ११४ मा)। (अवायण न [स्टेबन] वटवाना दूसरे हारा धेरन कपना (महानि ७) । द्विदायिय वि [द्वेदित] विदिम्न कराया गया (स २२१) । छिपय पूँ[।छन्पक] क्पड़ा छादने का काम करीवाला (दे१ १८ प्राप्त)। ख्रियान 🗗 युत छीक (देवे ३ (हुमा))। हिक्दि [दे ह्मा] सट दूर्मा श्रम (देश दर् हेर रेवेटा छेश प्रदास **४४४)। परोक्षमाध्य मिरोदिका**ी मनम्पति निरोप (निसे १७१४) । द्विका वि द्विप्रसूत्र | दी-द्वी पानाव न बाह्य पुनिनि नीरम्शिमा दिस्कादिसर फावए दुरियँ (घोष १२४ मा)। सिक्टन वि दि । श्रीक करता हुमा (नुगा - (355) i खिकाकी दि] खिला दीक (स १२२)। छिकारिश्र वि [छीरसरित] धी-छी पातान से महुत सम्बद्ध सातात्र से बुसाया हुना (पोष १२४ मा टी)। श्चिकिय न [बें] सौकना, सीरा करना (स ₹**२४)** । छिकोभग वि [दे] मस्त प्रगरिका (देव २१)। दियादृष्टाकी [द] १ पेर वा मानाजः। २ परिस मास्य का मलना १ ३ मार्टर का दुसरा मोबर-साग्ड (र १ १७)। दिप शिविष्ठ रि [दं] त्तु, पत्तवा इस (देव २५)। छिन्द्रोपण [इ] देनो छिन्नो अग (छ ६—-पत्र १७२)। द्भिगा (ग्री) सक [ सुप् ] छूता । दिग्वदि (बाइटरी)। छिपास्य पू [ द ] रेगो दिस्सेह (राव) । क्षिण्डह केनो द्विप्तई ( यह )। द्विण्यय देना दिख्य ( बहु )।

या क्छा-सुष्क तम्म, सिः वि (सि ४१६) दिन्ति य दि विक्वियित् वि सिः निक तिक् प्रकेष विकास (हि.२, १४४) वर )। क्रिज्ञ के वो जित्र - विद्या है के जिलित (त्री)। दिज्ञ नि दिया है करिक्ट निमा वा छहे। २ क्षेत्री नोम्य (त्रूप २ १)। १ व क्षेत्र, विम्लेक विकासक्य पानींत सेवनहरोद्यिकन मराज्ञक्ताशास्त्र (योग ४६ मा कुळ (कर्म)।

क्रिक्किकार वे क्रिक्किकार किनारश-पूचक

रवर)। विकास कि द्विश्यमाण स्वयं पाता दुवंस होता 'विकासीद्वं प्रशृक्ति' पणक्कामिकि तुर्माम प्रविद्वं (या १४७)। विकास हे क्यो किय

क्षित्रका है क्यो दिवर क्षित्रकामाण है क्यो दिवर दिव्ह न [दिन्न] र क्षित्र विवर (पत्रम २ १९२, मनु ६ कर ६१९६) । २ धनकाल स्पर्वर (पद्धार १) । ३ हुन्छ वीच (क्षा १९)। पाणि यु ["पाणि] एक प्रकार मा कैन बादु (धाषा २ १ ३)। दिक्क दुन [दिन्न] धामाण सनन (का २

२---पत्र कथ्दे)। विष्ठण देवो द्वित्र (शासा १ १वः सूप्त १ व)। द्विष्णा पूंचि] बाद, तस्ति (११ २५)

पद्र)। द्विप्पत्रकोडणात्र[वे] श्रीत्र तृष्ण मस्यो (दे। २१)। द्विप्पत्रकोडणात्र[वे] टेक से क्षित्र (सस्)।

ाहुण्यस्य है ( है) देण के विकल (दास)। हिष्णा की ( है) प्रणोत पुरुवा ( के २०)। दिष्णाव ( है ( है) बार, बार, जरावि विकास वा विषण ( के १ के वह )। हिष्णादिस) | की ( हैं) पत्रवी दुस्य हिष्णादिस) | दुस्स्य है। है ( का) व्यक्तिपतियों। ( हुस्स है। है के)। दिख्णाहस्सा की ( हैं) हुस्ते हैं। हैं ( का)।

हिंदणगांक्यमा और दिने दूसी दूस (साछ) बान (देस देश)। हिंदुल केटो नियस = योज (यौग कर देस टी दूसा थे)। दिस्स दिने दिन्ह स्ट्राह्म हुमा (देस देस

बा १३ मुला ६ ४० पाम)।

का दूरिक स्थे टी)। विक्ति की [किंकि] केंद्र विकास करका (विशे १४४६। साम्य ४)। किंकु कि [क्रेद्र] केटमाला (पर १)। किंकु कें। किंकु (शामा १२) ठाउँ री

क्कित् को किंद्व (शामा १ २) ठा ८, १ पण्य १४ १)।

किरिय १ विक्रितित किंद्र प्राप्त कर कर कर कर कि विक्रित किंद्र विक्रितित किंद्र किंद्

नवर वयेच्ड कुछ भी न हो ऐसा सस्ता (वह

१)। सर्वय वि "सहस्य] वित गाँव मा

शहर के समीप में दूसरा नौद वसैरह न हो

(शिन्त १)। उन्ह ति चिन्नी चाट कर बोने पर धी पेता होनेनाती बनामाठि (बीच १: नयाण १६)। विद्यास ति [बी] हव की बात का बेन धारि (का १६ च)। विद्यासिया ] की [बी] स्वचन प्रिम्तिन्दिय विद्यासिया ] (बीम वि.स. १.)। हेवी

क्रिज्यास्त्रिपाः। द्विष्यान [स्त्रिपाः] कस्त्रीः शीवः । तूरन [तूर्ये] दीषाः । श्वनायाकात्राण्डनामा तुर्वोः (विपारं ३० छाताः १ )।

क्रिय्मन [दे] र जिलाधील (दे १ ३६) कुस ११४) । २ दुल्काबाहर (दे ६, ३६) शक्य) । क्रिप्पेत देशो क्रिय = स्टब्स्

क्किप्पेती की [के] १ वार-विशेष । २ प्रस्क विशेष (वेश १७) । क्किप्पेन्ट्र व [के] १ वोधम स्टब्स् सोवर स्टब्स् । २ विशेषम्, वटिल (के १ ६४) । द्विप्पाळ पूँ [में] सस्यातक वैन, बाने में नव ह्या बैन (दे व २२)। द्विप्पाञ्चल न [में] गुँब, बांहन (दे ६ २२)। द्विप्पादी को [म] १ क्या-पियेन। २ क्या-विशेव : व गिए, तिसान (दे व १७)।

विदेश । विष्णु शिक्षण (वै व वेक)।
हुप्पा (वाप्त) ।
हुप्पा (वाप्त) ।
हिप्पीर न [वे] प्रवान पुणल एक (वै वे यूपा (वाप्त) ।
हिप्पीर न [वे] प्रवान पुणल एक (वै वे हिप्पीदी की [वे] प्रवान की विद्या (निवृद्दे) हिप्पा हुप्पा की हिप्पा विकास कर है ।
हिप्पीय प्रवास कर ।
हिप्पीय प्रवास कर ।
हिप्पीय प्रवास कर ।

विसिधियंत (प्याप २६ ४०)।
विस्ता की [सिरा] नव नाझी रप (ठा २ १ है १ ५६५)। जिरि तुं [वे] प्राप्त की सावाज (परम १४ ४४)। विद्या न [दें] शीक्षर, विषय (दें १ ११) पर्दे )। २ कुसी कुटिया, कोल बार शि मान का क्रियर (दें १ ११)। ४ प्यास ना मेह की मिंह (दें १ ११)। ४ प्यास ना मेह की मिंह (दें १ ११)। ४ प्यास ना

हिंद्वर मृथि प्रस्तम क्षेत्र ततान (६६ १८ पुर ४ २२६)। क्षिक्र मि [ये] सवार, क्षिक्ष कामरे। क्षिक्र को [ये] किया कोठ (६ ६ १०)। क्षिप का [स्तुर] स्तर्ग करा क्षा। क्षार (६ ४ १ २१०)। बाई क्षिये, क्षिमें का (६ ४ १२०)। बाई क्षिये,

(कुमा मा ४४६ व ६६२ वा १६)। बिक्ट [ये] देवो ब्रस्त (ध्रम्म २ ४)। ब्रिक्श न [स्पर्टीन] त्यर्थ कृता (ध्रा ६०० दी ६७०)। विद्या को [ब] त्यस्य वय जीतमा नाम्म विद्याली (बें) त्यस्य वय जीतमा नाम्म व्यक्त १ श्री वित्या १ २—यन वर्ध प्रयक्त १ श्री वित्या १ १)।

२६१)। कनक क्रिप्यंत ख्रिक्सिमान

पर्या रे श निया रे ६)। विद्याविका ) औं [ब] र नीव वनैया में बिद्याविका ) क्यों होने या ग्रेम (बे रे)। ९ पुरुष-रिशेष पराने वनीयाची केंग्री पुरुष

विसके पन्ने विशेष सम्बेधीर कम चौड़े हीं हैमी पूरतक (ठा४ २, पद ८)। क्रिविश्र वि [स्प्रष्ट] १ छूमा हुमा (वे व २७) २ न. स्पर्राधूना(से २ ८)। द्वियिश्रम दि दिव का दुक्ता (रे ३ २७) । छियोज्ञ हिंदियो छिम्योज्ञ (सा६ ४ च्च)। ख्रिरुप्रवि[दे] इतिय बनावरी (४३ द्धिकोञ्च न [दे] १ निमार्थक मुस-विद्युष्टनः सर्वाच-प्रकाशक मुख विकार विशेष । २ विकृ ित्तमुच (दे वे २८)। विद्वहरू [स्पूर्] सर्वं नरना सूना। धिहर (के ४ १०२) । हिहंड न [शिकाण्ड]सपूर की दिखा (ए।या ११—वन ५७ टी)। बिहंडल पूर्वि वही नाबनाह्मा मिटाम बविसर, धुनराती में जिसे 'सिस्टें' वहते हैं (देव २६)। द्वित्रीहर्षु[शिल्पण्डिम] १ मपूर, मौरः २ वि मपूर्णपद्ध को बारण करनेवासा (ग्राया १ १---पत्र १७ टी)। बिहरी भी [बे] रिका भोडी (बह ४)। बिहा भी [स्प्रहा] स्प्रहा समिताव (कुमा के १ १२=) पत्र )। खिदिविभिन्न न [न] द्यंत द्या (रे ३ 1 )ı दिहिल वि [स्पृष्ठ] छ्या हुया (दुर्गा) । श्रीभक्षीत [शुरु] शिक्ता श्रीक (हे t ११२ २ १७) मीच ६४६। वटि)। हो. आ (भा२७)। क्षीअमाज वि [सुपन् ] धौंद करता (धावा २, २, १)। छीज वि [कीण] सप प्राप्त इस, दुवेत (ह र, ३३ गा ब४) । धीर्यत वि [ भूवम् ] योह करता (ती c)। द्वीर न [धीर] का पानी । २ दुग्म दूव (हेर १७) मा १६७) । विरासी की ["पिडाली] वनशाति-शिटेच भूमि-कृष्णाम् । (पएए १--पर १४)।

धीरख पू [शीरख] शब से असनेवाला एक तरह ना तन्तु, सांप की एक वाति (परह ₹ ₹}1 क्षीयोद्धम [द] देवो क्रिक्वोद्ध (स.६.६)। ह्य सक [सुद्] १ पीसनाः २ पीलनाः दर्म द्वार (४४)। क्यक् स्टूट्यमाण (सँग ह्युअ देखो इदीम (प्राप्र)। क्षुञ देवो स्तुष । क्षुपद (प्राप्ट ७३) । स्दर्भ हो हि वसाका सक्ष्येकि (व व व )। हुं हुई की दिं] करिकच्छु केवाय का पेड़ ( 1 1 1 Y) I ह्यंद्वमुसय न [वे] रणप्यक, स्लुक्ता जनस्टा (वे १ ११)। हुद्वि [सा+कम्] साहमख करना।: सुबद्धाः (हे४ १६ ३ पट्)। क्षूंद सक [दे] बहु, प्रमूत (दे १ १)। छूक्कारण न [धिककारण] धिककारमा, निया (शहर) । ह्मच्छा वि [तुच्छ] तुच्छ, पुर इलका (है | १ २ ४)। ह्मच्छ्रमका सम [ह्मग्रह्म+फ़] 'हुन्ह्र' धाराज करता स्वानादि को बुक्तने को धानाज करना । सुब्द्धस्करेति (माना)। म्ब्रमाण रेवो छु । ह्नदू यक हिंदू ] पूटना बन्धन-पुक्त होना। स्ट्रा (मनि) । स्ट्रह (वस्म १ टी) । ह्नदृषि [सुटित] पूटा हुमा, बन्बम-मुक्त (गुरा४ ० मूक वर)। हुदृ नि [दे] छोग सबु (पत्र्य)। सुरूगन [होटन] कुन्काच प्रक्रि (मा धुट्ट विदि दिना। रखित छेदा ह्या (मवि)। ह्नदूध [दे] १ वर्षि, जो (हे ४ १०१) ४२२) । २ शीम, तुरस्त (१ ४ ४ १) । खुरू वि [शुरु] युर गुच्य, इसका सन् (चीर) । द्विष्या स्य [ क्षत्रिता ] मानरल-विदेश

(बन्द २ ६--पत्र १६६ ही)।

ह्मण्य वि ह्मिण्य] १ पूर्णित पूर-पूर किया हुया । २ विद्वत विमाशित । ६ ग्रम्यस्य (हे २ १७ प्राप्त)। हुत्त वि[ह्यूम] सष्ट खूमा ह्या (हेर. १६८३ हुमा) । द्वचि ध्ये दि] धून ध्यीप (सूफ वर)। क्टब्रीरप्रदि<u>ी रेसिंग</u> क्या कालका २ शसी चन्त्रमा (दे ३ ३ ६)। द्वादिया देखी द्वाद्विया (पएइ.२. १---पत्र 1 (389 छुद्ध वेलो सुद्ध (प्राप्त) । सूद्ध वि दि] जिस प्रेरित (सए)। ह्य वि [अर्थ] मूर्वा (प्राकृ २२)। सूब्र पून [झुण्ग] क्लीब नपूर्क (चित्र ४२५)। ह्युम देवो ह्युष्ण 'नंतिस्म पावमह्ला ह्रुना ब्रम्नेस कम्मेस (समा ११)। द्वप्पंत बेको छुप । क्षुबभ प्रक [शुम्] धुम्प होना विवसित होना । सुम्मेति (पि १९) । ह्युष्मस्य दि देशो द्वोध्मस्य (देश ११)। द्भा देवो हुद्। पुनद् धुनेद (महा एमए २)। चंद्र ह्युभिचा (पि ६६)। ह्ममा रेपो छुमा (रसष्ट्र १)। ह्मर सक [ ह्मर् ] र लेप करता, सीपना । २ छेरत करना छेरना। ३ स्थाप्त करना (बा १२) पउम २० २०)। द्धर 🛊 [झुर] रेष्ट्रण नविवका सन्नः। २ पगुका नघ नुरः। ३ दूध-विटेप गायक। ४ वाख गर् हीर (हे ३ १७ प्राप्त)। ५ म दुल-विशेष (पएल १)। परम न [ गृहफ] नामित क पूरा वर्षरह रपन की पैनी (निषु १)। द्धरण न [श्रुरण] भवभेषन (कप्पू)। छुरमङ्कि पुंचि नानित हवाम (६ ३ ६१)। द्वरहरूप पुं [इ शुरहरू ] क्रपित हवाम (T 7 32) i धुरित्रा हो दि ] वृतिका विद्वी (६ ३ ३१)। द्धरिमा ∤ मी [श्रुरिका] सुध बारू (मदाः द्वरिया र् तुम १०११ स १४०)। द्वरिय वि [दुरित] १ व्यातः २ प्रिक (पाम २० २०)।

प्राप्त ६१)।

ह्य है देवी हुन् (तुम १६६)।

च्यलेड (समित १६ दी)।

(स ८६८ विसे १ १)।

क्रुरी की [झूरी] चुरी बाहू (वे २ ४-

सुरहारहाउ देशो पुरसुच्याक। क्रम्यु-

क्रूयं धक [क्रुप्] सार्थं करता धूना।

कर्म क्रमाद, क्रुविश्वद (हे ४ २४६)।

भगक ह्यापीत (तप १११ ७२८ हो) ।

ह्य द वर्गे [क्षिप्] फॅब्बा शतना। सुन्द

(का है ४ १४३)। संक छोतून छोतून

छेम प्रशिष्ट्री र नाग्य विनासः विकास्त्रीयो

क्यो भर' (तुर ४ ११४)। २ क्याड

विमान (से १ ७)। १ ग्रेसन कर्तना

'पीशाओव्य' (स ११३३ ते ७ ४**०**)।४

क्षः वैन प्राक्त-शन्त वे वे हैं--निर्शेषमूत्र

महानिसीयनुत्र दशा-पृतस्त्रन शृहरकस्य

# 1Y1) I

छे चसोवयय न दिने बेट में बार्च (र

केलु वि खिद्री खेलेनाता कालेगाय

छेद देवी क्ष्अ = सेरव्। कर्म **वै**रीमीट (पै

१४६): संक्र छेरिकल, छेरेचा (पि

(R = 19):

1 12) (

(पाचा) ।

५व६ मन)।

१ १७ € २ ४२)। स्वाहम वि [सुधित ] मूचा हुनुसित (पा**प**) । हुइ।ठक्ष वि [धुराकुछ] ज्यार देखो (वा X () i हुइस्तु नि [भूषालु] कपर देवो (उप पू १६ १६ टी)। क्रुविस वि [स्रचित] स्थर देखी (इन उप ७२व दी। बासू १)। फ़ुदिअ नि [दे] विश्व, पीताहुमा (देव ) 1 चुद्रापि [चित्र] किस प्रेरिफ (द्वेर, १२) १२७ कुमा)। च\_इञ्जन [दे] पार्ल्यकः परिवर्तन (दस्)। अभि सक [ब्रेड्स्] १ किन करना। २ दोक्वला जेस्सामाः। कर्ने, छेदस्विध (११ १४१) । चंद्र, क्षेपचा (नहा) । अक्षेत्र [के] रमन्त प्रस्त प्रवेश (६३ ६ पाम सेक ४ कम्म १ ६**१**)। २ देवर, पति का बोटा बाई (दे ६ ६०)। १ एक देश एक माद (से १ ७)। ४ निर्वित्तव और (कम्प ४ ६२)। क्षेत्र कि क्षिक] निपूछ क्युर, इकियार (पाप बानु १७२३ सीयः स्वाया १ १)। विरिय प्रशिवाची किसाबार्य क्लावार्य

(मन **७ १**)।

ह्य इस की [सुभा] १ थमुन पीवून (हे १ २६४। दूमा) । २ वाडी, मकात पोटले का रनेत हम्ब-बिरोब बृता (दे १ ७८ कुमा)। अर पुंदिर चन्द्र चन्द्रमा (पड़)। सूरा करें [ श्रुप ] दुवा पूच दुप्रता (ह

१ भिन विवाद असप क्षित्र हुआ और (से ७ ४ द): ६ कमी सुनदा(वैदार्६): प्राविधित-विशेष (ठा४१)। स्युद्धिः परीवाका एक संग वर्ग-मुद्धि वाक्ते रा एक सक्करण निर्दोग बाक्स ब्यावररण 'सी चेरस सुद्रोति (पंचन ३) । । रिद्र न [ौर्ष] प्रामिक विशेष (ठा १ )। क्षेत्रमः) विष्टिकी छेरन क्रोत्रका छेळाग । काटनेवाला (नाट, विमे ११३) । क्षेत्रण न [क्षेद्रन] १ कएश्न कर्तन क्रिया करण (सम ३६: प्रास १४)। २ समी मुक्ता हात (प्राचा) । ३ तक इतिमार (तुब २ ६) । ४ क्यायक वक्त (हरू १) । इ.सूच्य धवनव (बृह् १) । ६ वस **जीव-विशे**प (कुम २ ३)। **छे**ओ**बहाबण न [छेदो**पस्यापनीय] **दे**न र्थयम विदेव वही दीवा (भव २६ वंबा (15 t क्रेओवट्टावधिव व [छेदोपस्वापमीव] ठपर **देखी** (तक) । क्वर [व] देवो (उंडर्स (ना व १)। केंद्र दि देवी खिंद (दे १ ११)। खेंबाक्षे दि । शिका, क्षेत्री । २ तक माविका बता-विटेद (दे ३ ३१)। र्वेडी की [दे] कोटी नहीं कोटा परता (दे 1 (15 5 धेग देवो इंश्व = क्षेत्र (दे ६ ४०) । कें ज रेको किंद्रज (स्तरि २) सहा)। के का को [केशा] केतन किया (पुत्र १ ४)। द्येष प्रवि] स्तैन, चोर (वस्)।

भेत्र केलो केत्र (ख श का १३७ टी स

११४३ म्मी) ।

व्यवहारतूर, पम्बनस्यकुत (विशे २२११)। सेद देवो झेम=धेर (पडन ४४ ६०) मीप पर १)। क्षेत्रम हि [छेदम] सेरनेवाता (नि २३३)। छ रण वि छित्नी छेरत-कर्ता भी भी (H #\$1) | छेदोबद्रावणिय रहा छेजोबद्वावनिय (म 1 Y) 1 छेप प्र[क] १ स्वासक, चन्दरावि सुशीव वस्तु का विधेपन । २ बोट, बोटी करनेतत्व (t : 10) i क्षेत्प न दि सेप] पुत्र नाजुन पृत्र (व ६२३ क्या १ २३ वटक) । अभ्य दृष्ट्रि करन शाहिका वितेतः, स्वादक (वे ३ ६२)। श्रंड ₁पूंडपै दि] यत अक्षत, बक्रस (रे धेवन र श्रेष्टश्र )। और किय **देख** की (पि २३१) प्रशाह र— पव १४)। छे स्मवस व [केृ] १ अलक्ट इस्ते-स्मन । २ वात औरत । १ बीरकार, व्यक्ति विधेष 'भेनावरापुनिकदाह बलाबीसावरा च चँगा (मानम्) । अमेकियन [दे] सेनिट्टा नाव आदेको का राष्ट्र सम्बद्ध माति-विरोध (प्रस्तु । १) विदेश ()। केकी की [दें] बोड़े फूनवाली माबा (<sup>ह</sup> ₹ **₹**₹) i के क्यान [के] सहामाचे या माचे वनैष देवी हुई बीमारी (बब ४८ सिद्ध १) । <del>डे</del>न्ह∤य [दे सवार्त क्षेदद्वतः]! केवट्ट ) सहनन विरोप " रारीर-रवना विरोद

विश्वर्थे मध्ये-कव बेठन धीर बीबा न होकर

यों की क्षतियाँ कायत में बड़ी हो देखी

शरीर-रचना (सम ४४ १४६ मम, कम्म १ १६): २ कर्न-विशेष जिसके ब्रह्म से पूर्वोक्त संहतन की प्राप्ति होती है वह कर्म (क्रमा १ ११)। देवाडी वि] देवो दिवाडी (पर व निवृ१२ः जीव ३)। छह् पू [बे स्रोद] प्रेच्छ क्षेपण की वस परिलामोलस्ममधानकिस्मामाराधिद्विच्छेर्। (ਚੇਂ ਖ ਹੈ)। स्ड्रकरि (धप) देवो झाहक्तरि (पिंग) । छोअ पूर्वि किनका (सूम २११६)। क्षोप्रध पूर्वि वास नौकर (दे १३)। क्षोदभाकी [4] क्रिनका देव गीएइ की काल (इप ७६० ही)। 'तन्तुवी परिषए कोइम पछामेद (महा)। कोक्सी की दि दोक्ष सक्सी (दुप १६) : कोड़िकी दि | प्रक्रिका बुकाई (पिक X=0)1 -क्रोड एक [क्रोन्य] क्रोइना कला ए पुरा करना । चीत्रम्, चीत्रम् (सर्वि सहा) । चंत्र छोडियि (मुपा २४६)। छोडय वि दि सेटा सबु (परवा १६४)। दोहाबिए वि [क्षोटित] धुन्याया हुमा बन्धन-पुक्त कराया हुन्स (स १२)।

होबि की दि दोश सम्बी सुर (पिंग)। ह्योडिक वि [क्योटित] १ कोड़ा हुमा बन्धन मुक्त किया हुया 'बल्लामी क्लेडियी बंदी (सुपा ६ ४: स ४३१) । २ वहित साइत (पराह १ ४-- पत्र ७४) ! सोबिज देवो फोडिय (धीप)। छोबूज वि वि] ध्येक्टर (दुम ११) : थ।व्य } देशे हुइ। होद्यं क्रोप्य वि [स्पूर्य] राशं-पोरम क्रो नामक (भाषा२१४४)। स्रोक्स पूँ दि पिशुन, सस दुवेंग (व व १३)। रेबी स्रोम। छोडम दि [क्षोप्रय] छोम योग्य, कोमणीय 'हॉर्डि शत्तपरिवर्णिवया य द्यामा (? वमा) चित्रकतासमयसत्यपरिविश्वया (पग्ह १ ६---पत्र ११)। क्रोफमरव वि दि]प्रिय प्रतिष्ट (वे १ ११)। द्योधभाइतीओ दिीर महरण भूते के मनोप्या । २ हेप्पा चप्रीतिकर श्री (इ 1 (28 8 क्षोभ [द] देशो क्षोस्भ (दे ३ ३३ टि) । रे निस्सहाय दीन (पएइ १ २---पत्र ४१)।

पाइअसदमहण्यवो

३ त भागास्यान कर्मक-भारीपस दोपारोप (बहुर बब २) : ४ तः कत्यन-विरोध क्षे क्षमासमस्य भन्दन (दुमा १) । १ मानारा 'कोबेए। बनवर्यतो बंतक्योमे ये देव धो दम्मि (महा)। छोम देवो इन्डम (लाबा १ १ --- पव ११७)। होयर पू दि दिया बदक, क्षेक्स (६५ प्र २१४)। क्रोक्षिअ देवो क्रोडिम = क्रोटिव (पिम) । होत सक विश्व विश्व विश्वना भान बताएता। द्योखद (पड)। कर्मकी द्वीदिनग्रेत् (हे४ REX) I क्षोद्धण न [तास्म] धीलना निस्तुपोकरण हिनका धतारना (ग्रामा १ ७)। द्योद्विय वि [तप्त] विश्वका एका राष्ट्रया तूप रहित किया हुया (स्प १७६)। कोइ पुँदि रिसमूह सूच भत्या। २ विशेष (दे ३ ११)। १ मानल 'तान य शो मार्यनी भ्रोहं वा के क्तरिक्रिम (महा)। कोइ पूं [क्षेप] १ क्षेपल फॅकना निर्वाहर्ट्ड **भ्योद्ध**मनवर्गराहि (मुपा २१**०**) । छोहर [दे] वेको झोयर (मुपा १४२)।

छोडिय वि झोसित शोमनान परशया

हुमा, ब्याकुत किया गमा (उप १६७ टी)।

## इस किरिपाइलसङ्ग्रहण्यवस्मि खुबाराइसइसंक्मगो वंबदस्यो तरेको समतौ ।।

ज

त पुंजि तानुस्थानीय स्थेतन वर्णनिष्टेय (सामा स्वयं)।
या [यन्] यो यो यो देरि (छ १ १ । यो |
य पुजा, या १ ९)।
अत् विजि प्रसार भवतास्थानीय होत्र
सिमेश्य दोशो दश्यों (या व्यवः) भारत्

त्रसकार पुं [जयसर] जीव, मानूरस (शह है)। जजह पह [लर्] लग्न करता दोस्ता करता। वयसर (है ४ रे ७ : यह)। यह जजहँत (है ४ रे ७)। मनी क्षेत्रसरीत (हुमा)। जमअ कि ही पाम धामधारित करा हुवा (यह)।

सद दु [यति] १ छातु निरोत्तेय संस्थानी (बीप मुत्ता ४४४) १ सम्बन्धास में प्रतिक्र विद्यान-कार, नर्विद्या ना विश्वान-स्थान (बम्म १ दी)। सद वि [यिति] निर्मा (बच १)। सद स्व [यदि] निर्मा (बच १०(स्म))।

अब्द स [यदि] यरि, जो धनर (तम ११६

रेष्टर	पा <b>इअसङ्मह</b> ण्ययो	बह्—अप
विचार र)। विच [अपि] को भी	सरग ∤ की [यमुना] भारत की एक	[संदायें] कांच तक पानोबाना बदारूव
(10)	र्वेडल <sup>*</sup> } प्रसिद्ध नदी बहुना(ध्रा १ २ <b>१</b>	(पाचार् ६२)।
खाइ स [संत्र] बहा जिस्र स्थान में (वड़)।	चैंडणा र ४ १७०)।	लंगाच्छेच र् [दे] क्लर, नीक (रे रे
अबद्ध कि [अधिन] कीलनेतामा किनगी	बदणा देवो जैंडजा (बबा १२२ प्राकृ ११)।	A() I
(कूमा) ।	बब्बो स[सव] १ क्योंकि करस्त कि चूँकि	व्यंपामय ) नि [वे] चनल इत-पागी, नेर
बाह्मक्त्र वि [केतक्त्र] जीतने योग्य (प्रति	(भार¤)। र जिससे आहाँ से (प्रासूद-८	अध्यालुक्ष ) से बानेनाना (दे के ४२) पर्)। जोगान कि जिल्लामी कर कार्या कि र के )।
<b>१</b> २) ।	tv )ı	जोपास नि [जङ्गास] हुत-नामी (१८७)। बॉट सक [पन्तृ] १ नत करना, नामुर्ने
अक्षमाध्य [मदा] निस समय, निस व्यक्त	र्वास[सन्] रक्पोंकिकारण कि। २	करना। र वक्कना बोबना (उपय १९१)।
(तम है १ ६१)।	नास्यान्तर का संकल्प नुषक सन्यस (हे १ ९४	जीव व [पन्थ] १ क्या पृक्ति-पूर्वक किला
बङ्ग्बाधी[यहण्डा] (स्वतन्त्रता। २	महाबा६६)। (किंदाय [(केकियम्]	धादि कर्म करते के लिए पदार्व-विरोग निर्मन
स्त्रेच्याचार (एव) । स्त्रपुत्र वि[ब्रीस] १ विल-नेव का भक्त विल-	१ जो कुछ, जो कोई (विष्ठ पएट् १ ३)।	सन्द सादि (दीन १, या ११४) परि मारि
वर्गाः २ जिन स्थ <b>ान्य का जिल्ले</b> न से	२ घर्तमञ्ज समुक्त, तुम्बद्ध, नदर्ग (पंचन ४)। जीकनसुरुम नि दि विस्त सुकृत से यात्र.	कुमा)। २ वसीकरल रक्षा वनैया के लिए
संस्था रक्तनेताला (निसे १ व मन ६ टीः	वोने उपकार है धर्मन होनेवाना (दे व	किया भारता सेव प्रयोज (पर्यहरे २)। १
सुर १४)। इसे पी(पंताक)।	XX) 1	र्श्यमन नियम्बस्य (स्था)। परवार प
अक्ष्य वि अस्तिन् वीतनेताना 'मरापवस-	वर्गम विजिनमी १ वसनेवासा को एक	[प्रस्तर] योख्याका परनर (पर्याः १ ९)।
पहलुकेर्ग (ज्या स्वाया १ १—वन ३१)।	स्थान संबूदरे स्थान में बा सकता हो 👊	"पिक्रम सम्मान ["पीडनकर्मम्] वन धप
बद्दल दि [बदिन्] देगलता। देस-दुन्त,	(ठा६ मनि)।२ इक्क-फिरोद (पिय)।	तित देश भारि पीसने या पेरनेस पेशा
(मरा-पूर्वः 'ज्यस्तरणस्यमसम्बद्धियमे	जैगस्तर्पु[सङ्गस्त] १ देश-विटेच सपास्तरत	(बडि) । पुरिस पुं ["पुरुष] कमनिर्दित पुरुष सम्बन्धे पुरुष को नेता करनेवाचा पुरुष
माहि <sup>*</sup> (ग्रीप) ।	थेत (कुमा सत्त ६७ टी)। २ लिजीन प्रदेश	(भावम)। बाहचुकी की [पाटचुकी]
অনুবাদি [মীল] ংলীকৌনালা বিষ্থী	(इष् १)। १ म मीक, 'क्यमुंत्रविदारिय-	स्यु-ता पकले का क्रमहा (ठा — गर
(इ.स.)। २ व्याप <del>्य विशेष</del> (रेमा)।	मोतिएहि वं बंगर्स रिसारं (रजा ४२)।	४१७)। इर न िगृह् वास-नृहः समी
व्यक्ता देवो स्थ=वि।	विंगाकी [विं] योजर-भूमि पहुन्यों को चरते   की क्वाइ (देश ४)।	काफनासनास्थान (कुमा)।
बद्ध नि [बनिक] बदाबह, दिवसी (छासा	विशिक्ष विशिक्षमिक्षी १ विश्व कस्तुते	र्बंद केवो जा≃गाः
१ ६—-पत्र १३६)।	देशका रक्कोरत्या वंगम-संदर्भी। २ न	चंतप न [धन्त्रम] १ मियन्त्रसः धेन्सनः
चत्र्य वि[यधु] शागकरनेवाला, 'पुरुषे	चेतन चौबों के रोम का बना हमा कपका	काबु। २ रीकनेवाला प्रतियोजन ( <sup>से ४</sup>
वद्या वजाउँ (उत्त २१, ३)।	(क्षाक्षास्य कस्य)।	Yt) i
कायसङ्ग केलो श्रम – कत्।	चेगुछि से [बाहुछि] निव रवारने का बन	वंतिय पूर्वित्वकी सम्बन्ध करोनामा
आदशास [यदि ना] धचना गा(दव १)।	विय-विद्या (ती ४१)।	इस क्राक्ताला (ना ११४)।
सदस (घप) नि [यादरा] वैद्या निश्च तप	वंगुक्षिय है [बाङ्कुक्षिक] पार्चीस्क विवसक	অতিম দি [খনিয়ত্ৰ] কিম্পিত অক্ষ্য (ম)   (বৰুদ হয় १४१)।
भा (गर्)।	का बारकार, स्वद्धारेया (प्रका १ १,१७)	चंतु दे [बन्तु] बीव प्राची (क्त ६) छण्)।
अन्तर [अत्] सन्त⊾सम्बन्ध (ठा४४	र्जगोस और [बाजुस] विप-विवादक द्वार	
44 & 44) i	विष-विषयः, भार्युर्वेद नाएक दिमाग निकर्ये विष की विकित्साका प्रतिसारत है (दिसा	चंतुरान [जस्तुक] बकाराम में होनेवाबा इस्त-विशेष (क्साइ २ ६पन १२३)।
ৰত ([মৃত্] ং কেমন-কনত তৃক তৰা ২ বুলচিত লগিব বঁচ (কৰ)। আইবে গু		र्जतुस वि [आस्तुक] बन्तुक शामक दूर्ण का
ितन्दन ] र बहुदेशीन शहुदेश में करात		
२ पीष्ट्रप्य (ज्य)।	भाव (धावा क्य)। वर वि [ैवर]	अरंप तक [अङ्ग्] बोबना क्यूना। वैपर
कर ई [पशुप्] देश-विशेष बच्चने	र पारवाधि पैर के वनतेशला (ध्यु)। बारण	(मात्र)। सङ्ग- अपित जोपमाण (सङ्ग् <sup>स</sup>
(म्लू)।	ई विशासनी एक प्रकार के कैन होते की	११वा नुर ४ २)। तहः विभिन्नम
भारण र्रं [पशुन] सनाव-प्रतिश्च एक राव (का प्राप्ति)		वंपिकर्ण, संपिय (शास व्या) । देए
(হা ধ্রুণ)।	ंदि(मन २ ⊏ःपव ०७)। संतारिम नि	ं संपिष्ठं (बहुत)। इन् ग्रीपिश्रस्य (वा २४२)।

अंपण-सन्स स्रोपण न जिल्पनी स्रीक क्यन कहना (बा१२ गउड)। जीनण न [वे] १ समीति सपसरा। २ मुख मुँह (देव ११। मनि)। जीपम वि जिल्पकी बोलनेबला भापक (que ? %)! संपाण न [क्रम्यान] १ बाहुन-विशेष भुवा सन, शिक्तिका विशेष (ठा ४ ३) भीर सुपा इह्इ क्य हर्द्र)। २ मृतक्रमान राज-याम (सूपा २१६)। उपिकद्भय वि [दे] विसको केले उसी को । अंधुवह केला अंतवह (संत पहि)। बाह्यनेवाला (वे वे ४४ पाम) अधिय वि जिस्पिती विषित्र बन्त (प्रापू 23 ) : जीपिय देशते जीप। खंपिर वि [बहिपत्] १ बहराक मामार (दे २ ६७) । २ वीलभेवाता, मापक (ह २ १४% मा २७३गा १६२ मुपा ४ २)। जिपिकारमिंगर ) वि चि विमको देखे र्ज्यक्तिरमग्गिर । उसी को नावना करने-बाला (पर् १४४)। जंबमा की जिल्लापती भीकृष्ण शीएक पली (चंत १४: चाचू १)। जवर्षत पू जिल्लाम्य भन् । एक निराधर चना (दूप २५६)। जीवास न दि । अधाव संभान वसमस विगर या सेवार (वे ३ ४२ पाप)। जंबास पुन [जम्बास] १ वर्षम झारो पंड (पाम ठा ३ ३) । २ वराष्ट्र, सर्म-नेप्टन वर्ष (सूस१७)। अवीरिय (घर) न [जन्नीर] नीवृ या नीवृ क्रम-निधेष (सन्छ) । र्खंबु दूं [जम्बु] १ जम्बूच, विवाद 'द्रापु-हृष्टावर्ग्युम्ए (परम १ ४, ४७)। २ एक प्रसिद्ध वैत पूर्ति सुवर्ग-स्वामी के शिष्य ग्रन्तिय नवसी (नप्पः बसुः दिता १ १)। ६ नः यम् इत का कन प्रापुत (या १६)। र्द्धं पूर्व [तम्यु] पानु बृत का पान पानुक के बिनि बहु मन्त्रेनी (संशंध ४३) । लंगु देगी जंगू (क्या हुआ ४४) परम ४३, रशे में १३ वर्)।

पाइअसदमहण्यभो र्जनुझार् हि । १ वेतस बुद्धा वेंद्र । २ पथिम जर्मत रेबी जेमा = गम्भ । र्जभग वि [जुम्भक] १ वैमारै मेनेवाला । विश्वास (वे ३ १२)। र्जंबुका । पूं [सम्मुक] १ सियार, पीरह २ पू व्यक्तर-देशों की एक बाति (कम जबुँग । (प्रामु १७१ वर ७६८ टी परम सुपा ४ )। १ ४, ६४)। २ न वस्त्रकृतकाफन र्जमणंगण | वि दि ] स्वन्यस्य भावो वो र्जमणगण }- मरबी में माने वह बोनने भाग्रम (मुपा २२१)। जीभणय वासा (पद् दे १ ४४)। उद्मेशल पुदि] १ वाशीर वृक्त वेता २ न अभिजी की जिस्मोजी तत्त्र-प्रसिद्ध विद्या मध्यमात्रन सूरानात्र (दे ६ ४१)। विशेष (सूध २ २ पडम 💌 १४४)। खंद्रह वि दि | कप्पतः वावाट, बक्रवाधी जीभय रेको और मा (लाया १ १ मीट मन (पत्म) । ₹¥ α) ι क्षांमळ पुंदि विकासूरत मन्द (देव ४१)। र्खंचुकी जिल्लू र कुछ करोप जामून रुमा की जिल्ला वैमार्ट भूम्मस (विपा का पेड (ए।सा १ १३ कीप)। २ जेंद्र क्षेत्र ŧ ) ( के बाह्मर का एक राजमय शायत परार्थ र्जमाको [जुन्मा] एट देनी का नाम मुदर्शना जिसके कारण यह शीप बंदुद्वीप (सिरि२३)। फहमाता है (जै १)। १ पू प्रमुक्तिक र्जमा १ धक [जुन्म्] वैद्याई सेना। पैत मुनि मुक्में-स्वामी का मुक्य शिष्य (ज खमाल ) जनार, जनाय (है ४ ११७-१)। दीम प दिया भूमप्र विशेष २४ ३ प्राप्त पर्) । यह जैसेंत जैसाओंत यब द्वीप और समुद्रों के बीच का द्वीप जिसमें (बाद४६ से ७ ६१: कम)। यह मारत मादि क्षेत्र वर्त्तमान है (व १ र्द्यभाइञ्जन [अनुस्मित] पॅमाई, जुल्बा ६०) । दीयम नि विभिन्धी समातीय संबन्धी प्रम्युद्रीप में कराम (हा ४ २) ६)। र्जभियन [जुम्भित] १ थँगाई, भूम्मा। २ बीवपण्यस्ति की विशेषप्रक्रमि वैभ पु प्राप-विशेष वहाँ सम्बान, महाबीए को भागम-प्रत्य-विदेश जिसमें बंदुशीय का क्लॉन केनलकाम उत्पन्त हुया वा यह नांव पारस-है (जे १) । पीड पैंड न विंगेठी नाव पहाड़ के पास की ऋजुवासिका नहीं के मुक्तांना-अम्बू का मनिप्रात प्रदेश (वं ४ क्रिगरे पर वा (क्रप्प)। इक)। पुर न पुर नगर-विशेष (इक)। जरुमा पूर्विक्षी १ व्यन्तर देशी की एड मालि पू "मास्त्रिन् ] राषण का एक प्रम वार्ति (परहूर ४ भीप) । २ वनेश कुवेर, चवल का एक मूमर (पराव १६, २२ में यनानिपति (प्राप्त) । ३ एक विद्यावर-पाना १९ वर्) : मिचपुर न ["मेचपुर] विदा को सक्ताका मीक्षेस काई का (पतम = भर-भवर-विशेष (इक) । संह पू िपण्ड १ २) । ४ द्वीप-विशेष । १ सपुर-विशेष बाम-विरोप (पारम)। सामि पू ["स्यामिम्] (चर ११)। ६ मान कृताः भार मामनिय-भुषविक भैन पुनि-विशेष (बादम) । रणया सन्द्रकारणे पषकसमित (योग १६३ अंगुल पू जिल्लुकी सिमाद, धीरह (श्रीप मा)। बहम इं िक्र्यम र केमर मगर ६४मा)। चन्दन कपूर भीर कम्पूरीका समग्राव निवास अंध्रुथय न [साम्युतर] १ नुवर्त, तीना (मर्वि)। २ हीप-विशेष । ३ समूर-विशेष (सम ६४: पडम ६ १२६)। १ दू स्वताम (पैर १)। समह पूं ["मह] बसारेश, प्रसिद्ध एक राजा (परम ४० ६०)। यम्रहत ब्लाइन (जीन १ व र)। जायग %पूस्य पून [जन्मूनक] उदक माजन-विशेष पुं ["नायक] बनों का मन्तिति पुकेर (दय)। (मण्)। दक्त न विश्वासी देखी नीचे जैस पूं [ब] तुप सूता बाग्व बनैदर् का र्वित्तय (पव २६) । दिशा की दिला धिपदा (रे १ ४)। महाँग स्कूतमञ्जूषा की कहिन एक केन सामी

(पडि)। शद्र पं मिद्री मजदीप ना व्यक्तिति वेश-दिशेष (चंद २ )। संबद्धप-विमाचि की "मेण्डसमविमान्ति एक वर्षा नानात्व (रुव)। सद्द्रामिहीयस के लिए निमा बाट्या महोरमव (धावा २ १ २)। महासद् र्रु [सहसन्न्र] क्या हीत ना समिपति देव (चंद १)। सहावर वृं [सहायर] मश समुद्र का धन्द्रिताता केंद्र विश्व (चंद २): सम द्री राजी १ यदी ना राजा नृदेर । २ प्रवान यस (नृपा YER)। ३ एक विद्यावर राजा (पटम द १२४)। वर पूँ(यर] कत+छकुड का मनिपति देव-विशेष (वंद ? )। १९द्र वि िविष्टी सत्त का बावस्थाना, क्याविद्रित (ठा ४ १३वव २)। इदिख्य इहिन्त्य न ["। दिक्रक] १ नभी-नभी निसी दिशा में विज्ञा के समान को प्रवाश होता है वह. भाराश में स्कतर-पूत मन्त्रिशीपन (बप ३ ९ वन ७)। २ सामारा में बीखता धरिन-पुक निराप (भीव १) । विस वृ विवस मरा-इत धावेश करा ना मनुष्य-शरीर मे प्रमेश (ठर १,१)। हिंद्य पू [शिक्षप] १ वैषमका पुत्रेष्ट्रमण स्था। २ एक विद्या बर राजा (पडम ११३) । हिमद्र प्र िधिपति देशो पुर्वोत्त धर्व (शाम प्रक्रम # 224) i जरमाचि भी विश्वसाति विमातिका

जरागांच की [वे बहाराति] कैगानिका क्षेत्रामी कांत्रिक बाँद समाम का पर्वे (वे व ४१)। जरागां भी [यहार] एक मंद्रिक कैन बाम्पी

यो सहित जुलकर नी निहन को (नीह)। जिन्हरी नुं विक्तानुं र यहाँ नी स्वामी स्वा ना चाना (ठा ४१)। र कनान् सरमान्त राजनान्दित्तक केर (नर २६ वीत न)।

ज्ञविराणा भी [यांभणी] र वार-मौतित भी वैदियों को एक बाति (पापम)। र वदरात् भौनेतिवास की प्रयत्न टिप्पा (यत १२२)। ज्ञविराजी भी [यांगाति] रेको बाल्या

जनमुक्तम पुं [यद्योक्तम] का-देवों की एक | मदान्तर वाटि (एएस १) ।

अवस्थित पूँ[यक्षेत्रा] १ मर्तो कास्त्रामी । २ भगवान् समिन्दन का शासन-मक्ष (सीठ ७)।

७)। खरान [मकुन्] के की विक्रिस वन्नि (पर्यक्त रे रे)।

(नपहर १)। आरगर्यु (क्रें] वन्तु श्रीव प्रास्तिः "पूरो कसा परिस्कास मिल्लुं (सुम १७९) ।

पारतकाय । सन्तु (सुधार कर्) । ज्ञार दुन [ज्ञान्तु]प्राची जीव 'पूर्ववजीवे व्हितिकाचे प्रदक्षित्या वर्गे (वस्तु ४, १

६ व) सुस्र १ ७ २ १ ११ ६९) : लगम [जनान्] चन संसार, दुनियाँ (ब २४६ सुर २ १९१) : गुरु दूँ [गुरु] १ वस्त्र में सर्प-सेह पुरुष । २ वस्त्र का पुण्य । ३ विज-देन सीमेनर (सं २१) पंचा

थ)। जीवण वि [जीवन] र वक्त को बीमानेवाला । २ ई जिनकेव (राव)। जाह ई [काम] वस्त का पानक परवेशर, विकक्ष (एपि)। विशास ई [पिता मही र बहुम विवादा। २ विकस्त (एपि)।

प्यास वि [अक्षर] बन्द ने प्राप्त करनेताला जनकारक (प्रम २२ ४७)। प्रकृत विश्वपति जनद में चेष्ठ (प्रम्र)।

आगई की [अगर्ता] १ प्रातार, फिला हुएँ (तम १६ कैय ६१)। १६ वर्षा (यस १)। आगद्यक्तम हुं [अगर्तापक्त] पर्नेत निरुप

(राम ७६) । जगजग पक [चनास्] वनवनः, दीपना । बङ्क कराजानः जगजगतः (वदम ७

यो १४ १२०)। ज्याह नक [थे] १ मंगहना, मानहा वरता बनद्व बरता। २ नवर्षन बरता रीहना। व स्टब्रना कावृत बरता। वह स्वाहेत

। बक्रमा नापून नरना। नहः साहतः (चीर)। ननषः साहिष्यम् (नरमः २ १ स्रोत्र)।

बराइय न [4] ग्रीच केन्द्र (बर) ।

कवर्षत, गीइन चिस्त विश्व वस्माइस्थानस्य वमजववरणायससस्य (ज्य १३ टी) ।

अगाहिक नि [दे] निवानित क्योंनत (१ ६ ४४: धार्म १७) उन) । अगाहिक नि [दे] सङ्ग्या कृमा (वर्षीर

्दर)। जगर पूं[जगर] संत्राह, कमच वर्ग (देवे ∼र):

४१)। जगस्त्र न [वे] १ पद्भवानी मरिष्, परिष का नीचका मार्ग (वे ३ ४१)।२ वेव में मरिष्य का नीचका स्थाप (वे ३ ४१) पास)।

ज्ञगार पुँ[ते] राज मकत्तु (क्द ४)। अगगर पुँ[तकार] 'क' मघर, 'क' कर्त (तिसूर)।

कगार वृं [परक्षर] 'यत्' राज्या 'जनावीद्वाणे ठयरेण निर्देश कीरद् (नित् १) । अगारी की [जगारी] प्रमनिरेत एक प्रशाद का कुप्र सम "स्वतं बीत्यवतनुष्कृतंत्र नारीई' (वंता १) ।

नारक (पनाक्ष)। अन्युक्तम कि [क्रमयुक्तम] वनव्योह जन्म में प्रकान (नक्षक्ष २ ४)।

कारा धक जिल्ला है वाक्ता, तीव से कारी। २ समेद द्वाला साववाल द्वीला। कारी, निय (हे ४ व. यह। ब्रावू ६)। वह जन्मीत (मुना १०१)। प्रती वासावर(रि १९६)।

जग्गणम [जागरण] काल्मा निप्रान्याय (योध १३)३

जागविक रि जिलारियों बनावा हुन्छ और मैं पढावा हुन्स (नुना १११)।

: जागह ई [यद्मह] यो प्राप्त हो को व्हण करने की समझा 'रएका बरमहो बोडिमी' (भारत)।

बग्गावित्र देती जगावित्र (वे १ १९)। जमग्रह देती जमग्रह (दाक)। जगाज दि [जागुर] क्या हुमा स्वयन्त्रिय

्ता ६ २. दुमा नुस ४८६)। जमिर रि [जागरिय] १ पान्नेसनः। ९

241) 1

जब – जय व्यव दृदि] पृथ्य शरद, भावमी (दे ह \* ) 1 जब वि जारा] १ वतम जातवाना पुषीन और प्रसम सून्दर (छावा र रा मा रेरा स्पा ७४) क्ष्य) । २ स्वामाविक घटविस (तंद्) । ३ तमाठीय विकाति मियण से र्राहत शूड (बीव ३)। खबेकण म [जास्याङ्गन] १ थेह धम्बन सुम्बर झर्जेंबन (शासा ११)। १ मॉवत मुज्यान हैस नवैष्यु ने मर्दित चण्डन (क्प्प) । ज्ञचंदण न [व] १ धगर मुक्तिच प्रथः विशेष जो पूर्व काम में बाता है। १ बुंबुम वेसर (देव ४२)। जबंध वि [जास्यम्य] बग्म संचल्या जन्मांच (मुप्त १६६)। अधिकाम ) वि [जास्यन्यित] मुर्म में जनसिय क्रिया के कार्यका (मूच १ 2 3 88 3) 1 जवास र (जास्यय जात्याय) उत्तम वातिका धोदा (पत्रम १४ २६)। क(श्रय (भ्रय) वि [फ़ातीय] समान जाति का (सप्प)। अविर न [यविर] वहां तम वितने समय त्रम् (यय ७) । प्रमञ्जू सक [ सम् ] १ कारम करना निराम बरुता । २ देना दान करना । अब्दाइ (है ४ २१६, ऋषा)। क्षण्ध व [सद्भान् ] शेन-विशेष मध्मा धप रीय (शाह २२)। जन्छन् वि दि रामध्य स्वर (है ३ ४६ क्रत रेवी सपण्यम् । सक् जसमाग (बार--चर ७२)। अनु देशो जड = बहुब् (लावा १ %, चन) बदारि [बध्य] थी जीता का त⊈ बह बौडने को शाय (है र २४)। क्रमर विकिशी की लें स्वयं सोमना बाबर, माने स वा भी बर (सा १ १ मृत ३ **(38)** 1 जदार बन [जजरप् ] मौर्ग भरम क्षेत्रत क्ता । क्षा जद्मरिद्धन, बद्धरिद्धमान (नाट-- रेत १३) नुग १४) । 44

অভিস্ম বি [অসিত] বিহিত হল হুলা जज्जरिय वि [जर्जरिय] बीएँ निया मगा (सिरि ११६)। भौत्रमा किया हुया पूराना (ठा ४ ४ मुर जडिअ नि [दे जटित] नहित पहाड्या R (4X, 478) I गबित सेंसरन (वे वे ४१ महा पाय)। काजिया दुं [क्रांटिशक] एक वैत भावार्य का जहिम पुंची [जहिमम्] बहुता अहुरान, नाम (ती १४)। बाव्य (सूपा १)। अञ्जिम ) म [ चावाजीप ] बीबन-गर्मन्त जहिमाइस्मा ) पू दि जटियादिसकी पह-अद्भीप ∫ जिल्ली मध 'जर्गाव प्रदिवरण अक्टिवाइस्टब<sup>्रे</sup> विशेष प्रदाविहासर देश-विशेष (पिष्ट ६ ६ ६१२)। (ठा२ १ क्ला२)। जह र्प [अर्ते] १ केट-निरोप (मन)। २ उस जदिस्त वि [र्जाटस्त] १ वटावामा वटा-पुर्छ देश का निशासी (है २ ६ )। (उत्तरः कुम्पारः ६४)। २ क्याप्तः, समिकः जद्र नि [इप्ट] पनन किया हुना नान किया 'उज्ञानिमयहरूजालोसिअब्सि अस्टी परेगो ह्रभा (स ११) । वा(सूपा४ १५) । १ प्रे निद्व केसरी। जद्रन[इप्ट] यजन साम यत (उत्त १२ ४ जटामारी लाग्छ (हे १ ११४- सम १४) Y : 3x 1 ) 1 पण १४) । अहि स्री [यप्ति] सस्त्री 'अहिबुद्विमस्त्रपद्धा-जाबसम र् दि जटिसको राष्ट्र, बहु-विशेष रिहे (महाः माप) । (स्वर्)। जब वि [जब] १ धपेतन श्रीव पहित पदार्थ । महित्य ) पि [जिहिसिन] पश्चि भिया व्यक्तिक रे दूषा वटा-पुक्त किया दूषा (तुपा २ मूर्यं धासक्षी विवेद-कृत्य (पाधा प्रासू १२४ २६६)। ७१) । ३ शिशिए, जाड़े से ठंडा होकर बड़ते विक्रि वि [जटिम्] बटायसा बटापारी को बराक (पाध) । (बंद) । संबंधे के जब (पर्)। जगुस्त देशो अदिस्त (तम १६---पत्र ६७ )। जर ) दी [जटा] बन्हेए बास मिले हुए जह वि दि । चरान धरामध (पत १ ७)। बाह्य है माल (ह्याँ २४७) सुग्र २५१)। আৰু দ [আম্বা] बहुता सहरत (৪४ । १२० घर वि चिर] १ नय की पारश करते शाना । २ प्रे बटामाधे तापस संन्यासी द्याः सापै १३ )। (पत्रम १९ ७४)। धारि पू ["बारिस् ] देव देखा जह (पप १ ७ पंचमा)। बेमी पूर्वोक सर्वे (पदम ११ १) । अबु पू [दे] हाची इस्ती (बीप २३४) अहदारि वैयो बह भारि (क्रूप २६६)। ug t): जहादी [द] जाहासीठ (गुर १३) २१४३ जहाड १५ (जरायु) स्पनाम-प्रमिद्ध गृह महाउण) विति-विशेष (वहच ४४ ११) अद वि [श्यक] परित्यक, पुक्तः पवित (हे ४ २४४ धोप १ ): 'जइवि न सम्मन्त्रदे!' जहारि पू [जगदिन] इसर देखो (पड़ा सर्व ७१ टी)। 48 4X)1 खबर ) व [जरर] के करर (देश २४४) जहाल वि [ सटापन् ] जटानुक, पटावारी श्वद्रखी प्राप्ते पश् )। ( \* \* \* \* \* \* ) i जहासुर र् [जटासुर] बनुर-विशेष (वेली अरग डर्म [अनयू] बलक दरना, पैदा tuu) i करना । मरोद्द करोडि (ब्राष्ट्र १४) र 🖘 महा)। बालुमनि (माना)। वर् ऋजैन प्रक्रि वि (प्रतिम्) १ बनाराचा चरापुन्छ । २ वृं बरापारी लाग (बीग बत 👔 ) । जर्णमाण (गुर १३ २१ ह १६। वर)। जहिम वि [जटिय] देवी जहि (हम) क्षण ६ [प्रत] १ मनुष्य माना धारती

तीम व्यक्ति (भीर घाषाः पूजाः प्रानु १३

६४८ सरन १६)। २ विवसी मनुष्य (सुष

१ १२)। ३ समुद्राम वर्गसोक (हुमाः

पैतर ४)।४ दि स्टपास्क उत्पन्न करने-

बानाः केल नुबुरमस्पत्रले (विधे १६ )।

कत्ताकी "यात्रा" जन-समादन जन

र्पपित 'पलवतारहियारा होह बहुत वहील

नवा (देन ४)। हाण न दिसान दिश्व

कारण्यं शक्तिस्त का एक वैदसः। २ नयर विदेय भाभिक (ती २०)। बङ् पूं विति कोसी नामुखिया (बीप)। यस पूँ विज्ञा मकुष्य समूह (परुष ४ १)। बाय वृ वान् १ जन-पृति किंपरची बहुती बहुर (पूरा १)। र स्कूम्बीकी धारास में चर्चा (धीप) । ३ सीक्सपाद, सीक में मिन्हाः 'मखनामस्युवे' (दन १)। स<u>म</u>ङ की [ भृति ] फिनकती । विदाय दू [पनार] नोक में निन्दा (ना ४०४)। जणहर्मी जिनिक्की स्टब्स्स स्टब्स क्रफ्रेक्सी (क्रमा) । चल इड ) प्रजिनमित्री १ वन इ. पिता जयश्चु 🕽 (सर्वे) । २ वि. क्यावक, क्रमा न प्लोबाचा (ठा ४ ४)। জন্ম বু [বু] ভান বা স্বাস পুৰুল বাৰ का मुक्तिया (देव ४२३ वड )। २ विट. माएड भोड़ विदुषक (दे ३ १२) । वर्णसम् [जनक्रम] चलक्रम 'धरशो हैं वि रेका य बैक्छा य क्लोक्सा (उन १ ३१ दी पाम)। चागग देवो जनसं(भवं उरंदु २१६ सुर 2. 28w) i जगणान [ब्रस्त] १ वन्त केत उरस्म करना पैश करना (नुपा १६७) नुर ३ ६ द्र १७)। २ वि क्लास्क वतक (बर ६ इमा सर्वि )- 'चलमस्त्रपावक्स्यला' (बमू) । खगगि १ और [जननि सी] १ मना वासभी दिसमा (पुर १ २४, महा पास)। २ डररन्त करनेवाली की अरपालिका (जूबा)। जगरण र जिनार्यन | धीरप्य विष्यु

(का ६४व थे लिए)।

घटनाइ (नोह ४६) ।

जनपदाद पुं[जनपदाद] उत्तरत बोहोडि

जजमेभअ १ [जनमेजय] स्वताव-प्रक्रिक नुप-विशेष (बाद ११)। जनमञ्जय देवी जणमेश्रम (वर्मीद दर्)। क्रणय दि क्रिमकी १ सत्तादक, स्टाप करनेवालाः विद्विविधं सम्बन्धाः स्टब्स सम्बद्ध भवन्तार्व (शानु ११)। २ वृ विद्या बाप (पाम सुर ६ २३) प्रामु ७७) । ३ देखो जण = वन (नृष १ १)।४ मिक्सि। इस एक राजा राजा वनक, सीता का किया (पत्रम २१ ६६)। ६ ईन व माता-पिता मां बार व किपि कोई साहर, सम्बक्ताई पुर्णित व सन्ध' (सूत्रा ११६; ११८)। तिमक्षा की ["तनगा] एना करक की पूरी राजा रामचन्त्र की परनी सीता, बानसी (हे १ १७) । दुदिश, भूआ [दुदिल] व्यक्ति मर्च (पत्रम २३ ११ ४८, ४)। नर्ण पू ["नन्दन] धनायनक का पूर भागस्त्रच (पद्म ६१, २१)। भेन्यी चौ निम्बनी धीवा सम्मली पाननी (पंजम १४ ४५)। व्यक्तियी 🛍 िनन्दिनी विशेषकं (पडम ४४,१)। नियनणयां और ग्रिपटनमा रिजा चलकको पूर्व सीता (पत्रम ४० ६)। पुर्ची की ["पुत्री] वही वर्ष (रमरा ७०)। सुज पु सिन] यन स्थाना प्र मायव्यक्त (पदम ६४, २०)। सुआ की ["सुवा] बातरी, ग्रीवा (परम १७) १२, धेर ११)। कप्रयंगमः हो [बनसङ्ख्या] बालगी सोटा सवा समझ्य की पत्नी (प्रस्म ¥ ( • ) i अन्तरवर्षु[जनपद] १ फेट, एट दर-लान, बोकलाव (प्रौर) । २ देश-निवासी वन-समृह प्रवा (पण्ड १ ६) भाषा) । जणवन नि [जानपन्] देश में उत्तल, देश ना निवादी (पाना) । जनसार से [जनमति] हिनस्की ध्यमञ्जू, असूरश्य (वर्गीव ११२) । वाणि (धन) स**ृह्य**] तसः माजिक दैमा (trmme) जिम दि [बनित ] क्लादित क्लल किया हुमा (प्राय)।

जनीकी जिली की, नारी मईवृता (काश २—पत्र २६६ पदम १६, ७३)। जणु देवो जायि (है Y YYY) हुमा; वह ): जणकरिया भौ [जनोत्सक्षिपः] सूर्यो का घोटा समूह (मर्) : जलमिम की जिलोिसी तर्प की तप भनुष्यों की भीड़ (भन)। राणेमाण देवो एएण = वनन्। जगर (बा) वि जिनकी १ उरपारक, रेड करनेवासा । २ वूँ, शिवा साम (बारि) । जमेरि (४५) सी जिननी | मता, माँ (सर्व) । जञ्ज दे यिद्यो र सर्वे सद्भव हो (प्राप्त या २२७) । २ देव-पूजा। ६ पास (नीर १)। इ. आ इ.सि. याजिन् स करनेवाला (ग्रीय: निष्: १)। इन्न नि िंडीये १ सब-सम्बन्धी वद्या नाः २ न, 'स्तराप्यका' तुत्र का एक प्रकरत (श्त २४)। ट्राजन स्थितनी १ सत्र रा स्यात । २ नगर-विशेष व्यक्तिक (दी.२.)। मुद्द न िमुन्त निवह का उपाद (उन्त २६)। माड पुं वाट विश्वस्थान (वा २१७)। संद्रप दिल्ली बोह कहा एतम पान (बत्त १२)। जण्य देवो अस – वन्य (वर्मर्स 🖰 )। राष्ट्राय देवो जनस (बाप्र)। अण्यवत्ता और विक्रमात्रा] वर्ण विवाह की बाबा, कर के सामियों का करन (इप ६१४)। कण्यसेषी सौ [पाकसनी] होनचे परम् पत्नी (बेली ३७)। बण्यहर पु दि ] बर-एक्ट पुट-सुप (पङ्)। र्जाण्यय र्षु [पाजिक] शामक यह करनेतत्व (धावम)। अण्यावर्षेय १ त [सक्कोपक्षात] यह मुक् जण्जावतीय प्रतेक (बत्त २, बादन)। मण्यादण पुदि] छत्तत शिक्रप(दे 4 Y4) 1 कम्बर [४] १ बोटीस्थासी। ११ इंप्ल कावे रंत का (दे र ११)। अप्ट<sup>न</sup> की [ब्राहुर्श] तंद्य क्यों सादीरती (भण्यु ६) ।

जाण्ड्यी की दि] भीषी भाग प्रवास्त्रत ( R R Y ) 1 जज्द्वी की [आहुवी] १ धवर पक्रवर्ती की एक पत्नी मकीरप की जननी (पटम १ २१)। २ सङ्गा-नशं साम्रिस्मी (पडम ४१ दश दुमा)। अवहु पुं [ कह<sub>ु</sub>] भळ-पेशीय एक राजा (प्राप्त क्षेट्र ७४)। सुनाकी ["सुवा] गञ्चा-नदी माधीरपी (पाप)। जण्डुआ सी [वे] बालू, पूरना (पाप) । सफ्दुक्सा की [ जह फूम्या ] नेगानकी (इप्र ६६)। जल देशो खम = मन्। मनि वित्रामि (fix t t): कत्त पुं[सङ्ग] क्योप, चयम वेष्टा (धा ₹ 3 €) I जन्ता भी [पात्रा] र बेरान्तर-गमम, बेराटन (ठा ४ १ औष)। २ ममन, मकि 'असरि होद गमले (पंचमा धीप) । ३ देव-पूजा के निमित्ति किया पाता उत्तव-विदेप महादिका रय-वाका च्यादेः भू नार्व पारका विकायनयोगु बक्तायी (नूर १ १०)। ४ तीर्थ-गमन तो बॅ-भ्रमण (वर्ष २)। १ कुम-प्रवृत्ति (मन ર≖. ૧)≀ जचा थी [यात्रा] संयम-निर्दाह (इस **₹1 €**) 1 जिचि श्री [दे] रे विन्ता।२ सेवा मुध्यपा 'प्रवाललाय् वस्वती व कवा व्यान वेलाव' (बारद)। जित्तिम देशो यत्तिम (उगर ४०)। र्जासम वि [ यावन् ] विद्या (प्राप्तु १४६ धारम)। अप्तो देगो अपनो (हूर १६)। जल्य च [यत्र] वर्त जिसमें (१ २ १६१) মাৰু ৩৪) গ अदि देनो अद्= मरि (निष् २) । अदिन्दा देनो अदम्हा (ब्रह १ मा ११) । अदु देती बड-यदु (दुशा हा =) । अदर पून [वे] बरने-रिरोप (बानस २१ ) **1(239** अधारेलो जहां (हा २ १:१ १)।

उपन देवी जल्म (पर्याः २ ४ पटन \$\$ X\$) 1 जन वि जिल्यों १ यन-दित नोक-दितकर (पुधार ५ २)। २ इस्तम्म द्वीतं योग्य (भर्मेश २० )। जामता ) भी वि] बरात गुजराती में जान' जमा । (मुगे बेंदर का बदद ही)। जनसेणी दश्रो जण्मसेणा (पार्व ४) । जम्मु रेको आणु (परम ६८, १ )। जनोवश्य देवा खण्यावर्ष्य (पुत्त २ १९)। जमोवह्य रेको अञ्गायह्य (सामा १ १६--पत्र २१६)। जम्द्रपी देवते जल्द्रवी (ठा १ १)। जप देशो अप≂षप् (पद्)। जपिर वि जिपितु वाप करलवाता ( पर् ) सप्प वेसी जेप । बचाइ ( यह् ) । बचीत (पि २६६)। सप्पर्व जिल्पो १ विक, क्यन । २ धन का उपानम्म का मापण (राज) । कप्प वि चिह्न निमन कराने बोरबा जाण म ["यात] बाहुत-बिरोप शिविका ( \$ 4 277) 1 जप्पभिद्र । प [यस्त्रभृति] का से, बहा से जप्पित ने बेहर (लापा र १ हम)। अप्पिभ वि [अस्पित] १ इन श्रीव (प्राप्त) । २ न. विदि, वयन (प्रमु २) । जम सक [यसय्] १ शाद् में रवना निक्चण करना । २ अमाना स्विर करना । बमेर (ने १ ७)। संद्र जामक्ता (मीर) । जम र्थू [यम] १ प्रशिनादि प'व पराइत सामु ना बड (गामा १ ६० दा २, ३)। २ बॉधरा दिशा का एक लोकपाल देव विधेय वस देखा, जमराज (दस्ह १ १ पापा दे १ १४१)। १ मराजी नरात्र का व्यक्तिरित देव (सूच्य १ )। ४ हिप्तिस्वा नगरी नात्य धवा (बस्त ७ ४६)। द वानम-विदेप (बाबम)। ६ मृत्यू, मीव (बाब ४ महा)। ७ समन, नियन्तम् (बाबम्)। नाइव र् ['काविक] मनुर-रिटेर शरका-वर्णनक देव जो नारशी के बीवों को दुन्छ के हैं (क्ट्र ११)। यास दू ["पाप]

ऐरवत वर्ष के एक मानी जिन-देव (पव ७)। पुरी सौ [पुरी] यम की नगरी मीत का स्थान 'को जनपुरीसमाखे समसाखे एक मुन्तवर् (गुपा ४६२)। "प्यम वृ ["प्रम] यमदेव का उत्पात-पर्वत पकत-विशेष (ठा १)। शहर्ष ["सट] यमग्रव का मुमन (मक्ता)। संदिर न "सम्दिर] समध्य का धर, मुगु-म्बान (महा)। ।सय म [।सय] पुर्वोक्त ही बर्ष (परम ४३ १)। जमगर् प्रमञ्जे १ पणि विशेष । देव विरोप (जीव १) । १ पष्ठ-विरोप (शेव १) सम ११४० इक)। ४ इह-िशेप दह भीत (बीप १ इस्) । बेबो जसम । जर्मनं } म [दे] एक साव एक ही जर्मनसमार्गी समय में पूपपत् (बस्म ११ ही। खाया १ ४ भीता विपा १ १)। जनगियाकी [नमनिका] वैन शादुना संबद्धाः-विशेष (धन) । अमक्षिम पुं [जमक्षि] तलह विरोप इन नामका एक धैन्यानी परशुक्तमका विद्या (पि २६७)। अमद्गिजदा स्म [यमद्गिजटा] गन्य ह्रस्य-विशेष सूमन्यवासा (उत्तनि १) । असय देखी जमग १ मः यत्तंशर-शास्त्र में प्रक्रिय अनुपान-विशेष । ६ छन्द-विशेष (चिन) । अमछ न [यमछ] १ ओहा, पुरम पूर्णन (लावा १ १ हिर १७३१ से ४, १६)। २ नमान थेएि में स्मित नुस्य पेकियाता (राय) । इ.सद्भारी सङ्कारी (भग १४) । ४ समान तुम्य (स्त्य सीप) । उन्नगश्रीजस पु शिर्मुनभक्तको भीष्ठप्त बागुरेव (पगद १४)। यर पंतर पिरीश प्राप-चित्त-शिटेप (निष् १) । २ माठ बीपी शी चंद्या (परस्त १२) । पानि वृ ["पाणि] मुरि मुद्री (मा १६ १)। जमसिय कि [यमित] १ पूर्व राजे न्दित (राय) । २ सम-मेरित इय मे बार्यावत (एतमा ११ घीत)। जममाइय रि [यमसीयित] १ वर्गान सम्बन्धी दवतीर है सम्बन्ध रचनेराता। २ वरवायामिक देव यमुखें की एवं प्रानित (तूष १ ११)।

वर्गांखडी सरी सर्वमधीनएडलीम स्थानेडी

186

वा निमने मनवान महाबीर के पास कीया नी वी पीर दी**चे** छे प्रपता सत्तन पत्न निताबा(द्यासा१ कठा ७)। द्यमायम् व [यसन] १ नियन्त्रसः करना । २ विषम वस्तुको समक्ता (निवृद्)।

जिमिश्र कि [समित] नियन्तित संयमित कारू में किया हुमा (से ११ ४१ मुगा ३)। जमुजा देशा जैंडणा (ति १७६, २११)। जम् की जिस् देशलेख नी एक सप

महियो ना नाथ (इक) । जन्म प्रकृ [हम्] उराम होना। बम्सइ (है Y १३६ वर्)। मह- सम्मीत (कुमा)ः 'बम्मतीए सोपो वह्दतीए य बहुउए विद्या' (तृष ६६) ।

जन्मसङ्ख्या वाता क्लास करता। वम्बद् (पद्र ) । जन्म प्रविक्यान्]कम उत्पति (अ.६) महा प्रामु ६ ) । जन्मण न [जन्मन्] कम उत्पति उत्पाद (दे९ ter ग्रामा १ १ पुर १ ६) । क्रम्माकी [याम्या] विक्रण विशा (इन पू

1 (xef जग्हाम ) हेनी जीमाम । बन्हायह जमहाह 🖁 वस्ट्राहर वमहादाद (शाह जम्हाश ) (v) i अस्य सक् [कि] १ मीठना। २ सक बलक्ट्र-पन में वरतना। जयदः (सहा)। जयनि (स १)। संक्र अञ्चा(छ ६)। जगनक[यज्] १ पूत्राकरता।२ यान

करना। क्या (कत्त २१ ४) । क¥ जभमाय (धनि १२६)। जप बर [यन्] १ यन नलना केटा नलनः २ न्याम करना जायीय करना । जयह (डा) । त्रीः जरम्नामि (वहा) । वह-क्रपंत जयमाण (त १६ : बा १६) बीप fen. Le saf) : E nitaes (21 दुर १ १४)।

११)। नाइ प्रिनावी परमेस्बर, परमा-ल्या (परम दर्ग ११)। पहुर्व [प्रमु] परमेक्ट (सूपा २८: ८१) । व्याद दि ीनन्द**े बन्द को माक्क देनेवाबा** (पराम 1 (5 e) 1 वय वि[यत] १ छेका वितेषिय (मास ११)। २ उपनीव श्वतेवाला स्थाल रवने-वाला (बद्ध १) बाद ४) । १ न व्यवहाँ प्रस् स्वातक (कम्म ४ ४०) । ४ क्यांच रूपयीन बारवातवा (सामा १ १--पत्र ११)ः 'वर्ष वरे वर्ष विरुटे' (इस ४)। बय पूँ [बव] देन शोजनान बोइ (एस) । अस्य पृ[द्यय] १ थन औत शहुका प्राक्त

(प्राप्त ११६ हे १,१)। सम न [ त्रम]

स्वर्ग मर्च्य ग्रीर पातान तीह (गुरा ७६)

(बौरा हुमा) । २ स्वन्तम-प्रसिद्ध एक बह्न-वर्तीयन (धम ११२)। दर न पुरी नगर-विकेष (स ६) । इत्या की किसी विद्या-क्रिकेप (एक्स ७ १३३)। यास दू िभोप ] १ अयम्बर्तः । १ स्थलाम-प्रसिद्ध एक वैने मुनि (इन्त २१) । स्रोद पु िचन्त्र है। विक्रम की बारदवीं राजानी का ु नप्रीय काएक सन्तिम स्था। २ पसस्यकी ट्यामरी का एक वैतावार्स (स्कलु १४)। बचा को ["गात्रा] सबु पर चड़ाई (गुना १४१)। प्रदासा की "पनाका] दिनस नामका(मा११)। पुर देवो तर(वनु)। मंगमा औ ["मङ्गसा] एक एक कुमारी (वंस १) । सन्तरी को स्थिनी] वर-तहमी विजयनी(ते ४ ३१) काम ७४६)। बढ कि [ वर्ग] कम बाध किनमी (प्रम १९ ४६) । बद्धर् पृ [वनम] कुर-विशेष (रहर)। संब वृ ['मन्य] क्रास्ट्र-

पर्वत नाएक कियर (इस ४)। **धैक्षा-सिवि**वा (विवार १२६) । नामक सना राएक मन्दी (मादू४)। संभि द ["सम्ब] वसे प्रवास पर्व ननपै (स.२.१) । ४ श्रीमारक-वानक वह गी (मान ४)। सह वृं ["शब्द] विवय-मूच्छ एक बाध-महियाँ (ठा 😗 t) । ५ वस्तुतीन पानाव (चीत) । सिंह र्र [सिंह] १ के मेर ने पश्चिम दिला ने स्थित स्वक्र वर्षी विद्रव द्वीप का एक धना(स्वर्ड ४४)। २ पर प्रतेवानी एक विवृद्धमारी देती (हा )। रिस्म की कास्त्री राजसभी का दुवसन का ६ नगरान नहातीर को एक खराबिका (जन एक प्रक्रिय सका, जिल्ला कुनस नाम 'सिक १२,२)। अ नपवान नद्वाचीर के बाउने धर्म ना 'नेल नयमिहरेगी सदा मिलक्टल क्लबर की भागा (मात्रम्)।

(प्रणि १ = ७२)। "सिरि को मि] विजयमी वस्थवनी (धारम)। सेम र िसेन] स्वनाम-प्रसिद्ध एक सवा (महा)। विद्**ति विद्यार १ थव को बहन** करनै-वासा विजयी (परम ७ ४) सूध २३४)। २ विद्याबर-नगर-विशेष (इक) । (बहुप्र व विवादपुर दिवादर नगर (इड)। वास न [नास] दिवावरों ना एक स्त्रनाम-स्यात नवर (इक)। जय दें यिवी प्रमुल चेशा कोशिक (साध् t 1) i खम र्डकी जिमा हिक्किक पुरीय, घटनी चीर त्रयोशको छिन (व १) । व्यर्वके से स्थानकाः। "प्यसिद्धः भिञ्चिति] वन से जिस बमन से (व 324) I व्ययंत पुं[क्रयन्त] १ इलाका दुश (राम)। रे एक नावी बतारेब (सन ११४)। ३ एक वैन पुनि को मजरोन पुनि के तुरीय रिप्य **थे (क**म्प) । ४ इस नाम के देव-विमान में प्रतिवाली एक बच्चम हैर-बाहि (सन १६)। र नेंड्डीप को बक्दी के प्रवेत हार ना एक थविष्ठतादेव (ठा४२) । ६ न देव विमान-विदेय (सम १६) । ७ वस्यूरीप री भयती का पश्चिम हार (ठा ४ २)। व स्वर् जर्मती को [बयन्ती] १ पत को नक्सी छा (पुन १ रि४)। २ यनसन् ग्रास्त्रदरी कर्यती भी [अथर्माः] १ वज्री-विरेच, मरणै, वर्षं गळ (पएल १)। २ सतम वनके की माता (बम ११२)। ३ विदेह वर्ष की एक

मा ४७२ म)। स्मात वृश्यिम हुता बैत

186

(बहुरः बनुप्र)। स्त्रेती की निकाी कृती माम (गा ४६२) ग्गु पुँ चिं र बुदा देन । २ की बुदी गाय, जिएला म बरम्बदो पश्चिम (परम ३३ १६)।

जस धक विवस् दिन्दा, वन्त्र होना ।

बर्गद्र विविद्य सुध (देव ४)।

जराग वि [जररक] बीएं पुराना (मनु १)। सर्ठ कि [अरठ] १ कठिक पुरस । २ की एँ पुराना (एगमा १ १—पन ४)। देखी

६ प्रीकः समबूद्ध (से १ ४६)।

द्वीनाः हाबमा (वर्मेंसे ११६६) ।

कावास-विशेष (ठा ६) ।

जर देखो जरा (दुमा धंत १६ वन ७)।

कास वि जरह देवी दरठ (पि १६० से १ देव)।

जरण न जिरणी भीर्णताः साहार का हुनम

खर्य पू [जरक] एकप्रशासामक सरक पुनिकी का एक नरकाशास (ठा ६--पण १९२)। मत्रम् पूँ ["सम्य] नरकावास-विशेष (ठा ६) । विच प् विचे नरनावास-विशेष

(ठा ६) । विसिद्ध व [विपरिष्ट] नर

'तरसद्भित्र ) वि [वे] प्रामील प्राम्य (वे बरस्यिम ) वे ४४)।

बरा की [बरा] दुवाना दुबला (प्राचाः क्या प्रामु १३४) । इत्यार चु [इत्यार] भीइप्य का एक माई (मीत) । सीय पू

["सन्य] धनपृष्ट् नवर का एक धनाः

(नगर)। कीटा कास्त्र की फिल्हा

चवामा मके ऐसी सबीकिक राफि रचने-

जराहिरण (पर) रेको जह-हर्स (प्रन) ।

जरि वि [म्बरिन्] बुबारवाना ज्वर है पौद्धित (पुता २८३) ।

( \* \* ) I क्याणा की चित्रना र प्रयक्त केंग्र कोरिएरा (किच १)। २ प्राणी की रतार्दिशाका

क्यान (निष् १३ से ६७ सीप)।

षा (स्त्रमा १ १६)।

कानो ।

(एन) ।

(धण्डु ७१) ।

परित्यान (इस ४) । १ दायोग किसी कीन

को बच्च नहीं इस तखा मन्ति करते का

जबहरू पूँ [जबहुब] दिन्तु देश का स्वताय-

जया च [यदा] विस समय जिस बन्ट (कप

जया की [जया] १ विद्यानीकीय (परम ७

१४१)। २ चनुर्वे चक्रवर्ती राजा की सद

महिपी (सम १४२) । ३ मनवान् वामुपुत्रव

की स्वताम स्याव मावा (सम १६१)। ४

तिष-विदेय-पूर्णिया, घट्नी सार वयोक्सी

तिनि (गुन १) । १ मणवान् पार्थनाव श्री

शासमदेशी (धी ६) । ६ मीपविनविशेष

जयार पुंबिनार] १ व बनर। २ वका

भेपा विद्वा<del>याची (एक्द्र ६ ४</del>) ।

स्रदि धरतीय राजाः 'बरब बदारमयारं सम्रही

खसिज देवो अद्ग⊐ अधित् (पण्दु१४)।

कर सक [ जु ] बीएँ होना पूराना होना हुड़ा

होता। बरद (है ४ २३४)। कर्न जीस्ट

वरिग्वर (हे ४ २१)। वह भर्तन

प्रसिद्ध एक राजा जो दुर्गीकन का बहुनोई

उपयान कियन र बीत विजय (पुरा २६८ कप्) । २ वि जीवतेशला (कप्त) । उद्ययम वि वि भाक्षे का वक्तर, हय-र्गमाइ

ज्ञयण वि [जयस] बेगबाला बेए-पूछ (रूप्प) :

मतना प्राणी की ख्वा (पएह २ १)।

दान (पग्रह २१)। इसमान[यतन] १ मन प्रयक्त चेप्र क्यम 'सम्पानदस्य-मोग-वरित' (मन्)। २

खबण व यिजनी १ माग पूत्रा। २ प्रमय

ज्ञयम-ज्ञस

(मा २५६ मुपा २८६)।

२ वमकमा । जनह (महा) । वह सर्खंद (उदा, या २६४) । हेइ- जिलाई (महा) ।

प्रयो , वक्क सार्किन (महानि ७)। चळ देखो आह (मा १२ मान ४)। जल म <mark>(बाइप) पर्</mark>वा मनता 'पननेप-वसतेवा (सार्थ ७३३ से १ २४)।

खल वृं [३३छ] देवीन्यमान वमश्रीसा (सूच t = t) |

अस्त म जिल्ली मीर्ग (मका १२)। इतंत पुंत विश्वस्ता एक देवविमात (देवेन्द्र

१४४)। बारि पुंची विश्वरिम् निप्तरि न्द्रिय बन्दु-विशेष (प्रश्च ३६ १४१)। य

वि चित्री पानी में छन्तव (सु६८)। वारिअ र् विशिक्ष चनुरिनिस्य जन्तु भौ एक जाडि (मुख १६ १४१)।

बल म [बल] १ पानी चरक (पूप १ ४, २। जी २)। २ पूँपणकान्त-नामक इन्द्रका एक चोक्पाल (ठा४ १)। इन्द्राप् िकान्त ? मणि-विशेष एक की एक कार्ति

(पएए १ कुम्मा ११)। २ इन्द्र-विरोध स्चीबकुमार-नामक देव-बाति का दक्षिण दिशा

कास्टर (बार, १)। १ क्लकाला इन्द्र का एक बोक्पाल (ठा ४ १)। करण्डास द्रै [\*स्परफास्त्र] हात्र से स्नाहत पानी (पान)।

करि पूंची ["करिन्] पानी का हावी भत-जन्तुं भिग्नेप (महा)। अञ्चल तु [कर्म्य] करम्ब दुध की एक जाति

पानी में की बादी कीका बच-नेति (शाया १२)। केंक्रिकी किल्ली वन-क्षेत्र (हुमा)। पर वेशो सर (कप्प है १

१७७)। बार पु [ बार] पानी में बनना (पाचा २ ६, १) आरंज ट्रं ["बारण] जिसके प्रधार से पानी में सी नूजि की तरह

बारा मुनि (बण्ड २)। चारि दूं [ैं शारिक्] पानी में एहतेवामा अंदू (मी २)।

४६, ६)। २ वि जीखे,पुराना (दे ६ ४६)।

बर दूं [जर] सम्बर्ध दुवार (दुवा) । पर पू [बर] र रावण ना एक मुमा (प्रका

पउम १ ११६)।

₹€) I

नवर्षा प्रतिवासुरेन जिसको सी कृष्या नासुरेन

ने मारा का (सम ११६)। "सिंध द्

["सिम्ब] बही पूर्वोक्त धर्व (पएह १ ४---

पव ७२)। "सिंधु प्\_ ["सिन्धु] वर्षा

पूर्वोक सर्पे (ए। या र्रे १६) पत्र २ १

क्य की [वस] बमुदेव की एक परनी (दूप

उदमारशी विमी । चित्रण दिया (अ. १ ~ 93 XH ) I जमाटि प्रशिवाक्षित्री श्वतान-स्वतं एक राजनुष्पार का सबनान महाबीर ना जामाता था जिसने जनवान महाबीर के पास बीखा भी भी धीर पीजे से बारना मलन पत्न निरामाचा (शासारे ८ ठा७)। खसायम् न विसनी १ नियन्त करना। २ विषय बस्तू को सम करना (निष् र)। लसिआ कि सिमित् निमन्ति संगीति, कार में किया हुमा (ते ११ ४१: मुता ३)। धामुणा केनो जींडणा (वि १७६ २६१)। जस को जिस दिशतिक नो एक पत मदियो का ग्राम (इक) । जन्म धक जिल्ली बराध होता। बम्बद (है ४ १३६ पर्)। बद्ध जम्मीत (हुना)। 'कर्मतीय सोबो अहमेतीय य बान्यय स्थित' (सन्दर्धः क्रम्म सम् (बम्) बाला, भगान करना । कमइ (बद् )। अस्म पूर्व (क्रम्मम्) जल्ब जन्मीत (क्रा∜ः मद्राप्तानु ६ )। क्रमण्य न [जन्मन्] कम क्यांति क्यार (हर रंजर साम्यार राज्यर र ६)। अस्मा की यान्या दिल्ल दिता (का द Laz) i जन्दाभ ) वेरो जैमाम । पन्दापद, जन्दाद विद्याहर, वन्द्रव्हाद (माह अग्हाको 🕽 💔 🗓 प्रयानक [कि] १ जीतना । २ मक क्याप्ट पन अंबरनताः नयइ (महा)। नयंति (स १)। धर अध्वा(स ६)। चय शर [यद्र] १ दूता करना। २ याग बरमा । वयद (उस २१, ४) । यह अञ्चलक (स्वीव ११६)। अय बर थिन् । इन्त परना चेटा करना। २ श्राप्त करना जानीन परमा । जपर (दर) । परि वदग्गानि (नग)। नष्ट प्रयोग प्रथमाण (व १६ । या २६) मीव १९४ एक २४१)। १ जार्थका (उरः नुर १ १४)।

अस न [कार] जना, दुरियों संसार | (प्रामु १३३ से ६,१)। स्तय प ("त्रयाँ स्त्री मर्प्य गीर पातान नोक (पात कर ex) । नाह व िनाय] परमेरबर, परमा ल्मा (परन दर ६४)। यह व मिसी परमेश्वर (नुपा २६) ६३) । । । । । । । । । । [गानन्द] जरत् को सातन्द केनेवाला (पडम ₹१७ E) I अस्य कि विका १ संगत विदेशिय (मात ११) । २ जनमोग रखनेनाता क्यान रकने-बाला (सदा १३ धाव ४) । ३ न कडवी एरा स्वातक (काम ४ ४८) । ४ स्थान - संयोग बाउबानता (सावा १ १--पत्र १३) 'जर्प क्ते कर विद्धे (रह ४) । स्रय वृं कियाँ केंब्र सीम-यनगं की हं (पाम) । अस्य पूंजिसी १ वस बीत रुद्र का प्रधक्त (ब्रीए भूमा) । २ स्वताय-प्रसिद्ध एक पक-क्सीचना(सन १४२)। दर न**ि**प्रती नगर-विशेष (स ६) । बन्मा की विमान विद्यानियोप (पदम ७ १३६)। मांस प्र चित्रपे १ जन व्यक्ति । २ स्वनाम-प्रसिद्ध वंक वैन कृति (कच २४) । चंद प्र िचन्द्री १ निज्ञम की बार्ख्यों रागानी का दधीय का एक सन्तिम सना। २ पमस्ति ह्याली का एक वैनानार्थ (रस्ट ६४)। अन्ता औ ["यात्रा] शहु पर नहारै (गुरा १४१)। पद्माया की ["पनाफा] विजय वा संदा (सा १६) । पुर देवी उर (वनु)। भेगसा थी [भारता] एक पत-दुमाये (र्व १) । सन्त्री सौ किस्सी] वर-सरमें निजयबी(से ४ देश बाम ७४६)। यन दि यन् विश्व प्राप्त विजयी (पटन ११ ४६) । बहर पु [विक्रम] हा-विधेप (रंग १)। संग वृं ['नम्य] पुरस्येक-कामक राजा ना एक नानी (बाला४)। "संचि पं "मिनियी बड़ी पूर्वीक मर्व । (मार ४) । सह र् [ शहर] विजय-नूचक बादान (घोत) । सिंह दू [सिं≰] t विद्रवहीर का एक चत्रा (संख्य ४४) । २ शिक्स की बाद्धनी सताती का पुत्रपत का হুত ছণিত হলে বিশ্বারুপথ লগে 'শিত चर्न वा 'वेल वर्जनहरेते चया महिक्या !

सक्तारेसीन (प्रियः १ । १ सम्बन-क्यात कैलानार्थ क्रियेच (सपा ६६८) स्थिरै क्यांत्रद्रो सूची सर्वमधीनक्वतनित सुप्रतिको (मणि १ ८७२)। सिरिको िंगी विश्वमधी वयवस्मी (धारम)। सेव 1 िसेमी लगाम प्रक्रिक एक एवा (ब्यू)। विद्वि [पद] र यन को बझ करने बाला, विजयी (प्रमण 💗 मुता २३४)। २ विद्यानर-गनर-विशेष (इक) । व्यापर त [ विद्युर] एक विद्यावर-कार (इन)। ापास न िवासी विवासमें ना ए स्वतात-स्वात तवर (द्वक) । खय र् [सत] प्रवन्त केंग्रा कोतिस (स्त ६ ٠ō) ، स्तय पूर्व जिया विकितियोव-पूर्वेश सटके और वरोज्यो विकि (व १)। अस्य देखी अस्या=वदाः। व्यक्तिद्रः ["अभूति] बन हे किस बनन है (ब 1(4) वर्गत पू [जयन्त] १ इन्ह्र का पूर्व (राम)। १ एक मानी बक्देन (सम. ११४)। १ एक बैन पुनि जो पत्रतेन पुनि के पुरीस रिग्र ये (क्या) । ४ इब नाम के देश-दिवात ने पहतेताली एक उत्तम केर-जाठि (क्रम १९)। १ जबूबीर को पनती के परित्र बार का एक समिष्ठाता देव (हा ४२) । ६ व दे<del>न</del> विमान-विशेष (नम १६) ( ॥ वस्तूरीर <sup>ही</sup> वयती हा पश्चिम हार (ठा ४ १)। इ. रवर्ड पर्वत का एक रिजार (#1 V) t वर्षती सी [वयन्ती] १ पद्म की नक्षी एउ (नुज १ १४) । २ मध्यानः चरत्वयः। केश्वा-तिरिया (नियार १२६)। जर्वनी स्रो [जयर्न्ता] र स्त्री-निरेण <sup>हरानी</sup>न वर्षणोठ (पल्ला र) । २ समय वन्देव वी माता (धन १४२) । ३ विदे वर्षे वी हर नवरी (हा २ ६) । ४ संबद्ध-मानव हर् थी इक धव नहिंची (ठा ४ t) । १ वर्ग्<mark>सी</mark>र के केद ने परिमा दिशा में दिवार दवक वर्षेट बर छनेराची एकदिरा<u>र</u>माधै देती (स. )। ६ मगरान् बदारीर की एक प्राप्तिका (वर्ष १२ ९)।७ अयसम् नद्यारीर के बाहरी बल्लारको नाला (मारप)। व सं<sup>प्रदर्भ</sup> (सुपा २ २) । वक्क खर्यंत (नार) । कवक्क. जविकांत (मुर १६ १८६)।

खब दूं [कप] बाफ पुनः पुनः मन्त्रोबारण बार-बार मन ही मन बेबता का नाम-स्मरस (परहर र मुपा १२)।

खन र्षु[यद] र प्रस-विरोध वन ना वी (स्ताया १ १: पर्णा १ ४) । १ परिमाण-विशेष भाठ पुका की नस (ठा द)। जानी की ["नानी] बहु नासी जिसमें भी बीए जाते हीं (माजू १)। सबस्त न [मध्य] १ तप-विशेष (परुम २२ २४)। २ धाउँ मुकाका एक नाप (पव २५)। सबस्य की ["सब्या] इत विशेष प्रतिमा-विशेष (का ४ १) राप र्[सङ] कृप-विशेष (बाहर)। बंसा की विशा ननस्पित-निरोप (पएए १)।

जब पुंजिब] देव और सीम गति (दुमा) ।

उद्यस पूर्व [स्थ] एक देवनिमान (देवेन्द्र १४)। नासपर्विनासकी क्रमाका चंदुक (संदिय⊏ दी)। साम ["शम] मन निरुद्ध परमाध्य भीन्य विशेष जब की श्रीर, बाउर (पव २११)।

जनजन र् [यश्यव] सन्न-विदेष एक तस् का यन भाग्य (ठा १ १)। उद्यापन विदेश की दिका इन की पोटी

( \* \* Y!) I चावज न [चापन] बाप पूनः पुनः मन्त्र का

क्चारण महिया बहुस्य वयुको कलो गंत-क्वस्तिमं (पडम द६,६ ३ स ३)। खब्ध वि जिवन रिवेम से बानेवाता (उप ७६ व हो)। र प्रे वेय, शीव गति (बावम)।

जवण र् विवत १ म्बेन्ड रेश-विशेष (पराम १ = ९४)। २ यत देश में एड्रोबाली मनुष्य-वार्ति (पर्यष्ट् १ १)। ३ मदन देश का रावा (दुमा) ।

जनज न [यापन] निर्नाह, प्रकार (क्ल <) ı सक्या की [यापना] उसर देखी (पण १)।

जपणागिया को [यदनानिस्त्र] किमिक्सेय (धन)।

अवजाकियां की [यवनाकिका] क्रमा का कञ्चक (घारम)।

जविणे माणी [यवनिम्न] परवा (वे ४१ सम्म क्यू)।

क्रवणिक देखी अस = मापम् ।

क्रवणी भी यदनी परदा मान्यादक पट (१२ २६)। २ संकारिक कृती (मनि

१७)। खबजीकी सिवनी देशवन की की। २ यवन की मिपि (सम ३४, विसे ४६४ टी)। क्रमणीअ देशो अस = मापम्।

ज्ञवपश्रमाण पुँ [ब् ] बाव्यस्य का बादु-विशेष प्रासा-बायु (गर्बड) ।

जबय १ पुंदि] वन का मंदूर (दे व जगरम रे ४२) खधकी भी वि] वन नेन 'गर्न्सिट परम-

नोस्स पनच्युरवाहिकदा नवतीए" (पुपा २७६)। जवनारय वि] देवो जनस्य (पंचा a) । जबसान [यदस] १ कुछ वासा "निद्रिष्य थवसमिर्म (अप ७२ **- दो** उत्तरपु ४४)। २

भेद्रीयहम्स (मामा२ ३२)। क्या 🕏 किया 🤾 वस्ती-विशेष वदा-पूष्प का दूसा। २ पुरस्य का पूज व्यवद्वास

पुष्प (च्चमा)। व्यास पू [यदाम] कुत विशेष एक पुष्प-बाबा बुध-विशेष 'पानसि बवासी (बा २३ पएए १)- अवासानुसूमे ६ वा (पएस

t ( e f ) वि [अविन्] १ वेपनला वेय-युक ज्ञाञिज∫ पुपाँ ११२) । २ पु मला नौहा (एन)। खविञ वि [अपित] १ विसका बाप किया

गया हो नह (मन्त्र चारि) (सिरि ३६६)। २ न, सम्बयनः प्रकरस्य आदि इंबोश (तृक २ ११)।

अविय वि [पापित] १ ममितः हुवरा हुना। २ मासिल (कुमा)। असर् [यशस्] १ शींत इक्ट सू

क्यादि (बीपः कुमा) । २ संयम स्याप विषयि (वय १३ वस १० २) । ६ विजय (उत्त १)। ४ अथवान् सनन्तनाव का प्रथम किय (सम ११२)। १ जनवान् पारवंताय का माठवी प्रवास शिल्म (कम्म)। किसी **को कि चिर्च पुरुषादि सुप्रसिद्धि (सूप्र १** रः प्राचू १) । सद्द पू [\*भद्र] स्वनाम-क्यात एक मैन माचार्य (क्रम्यः सार्वे १६) । म मंत वि वित् रे महत्वी इन्हरार कीर्तिवाला (पएड १ ४)। २ प्रविताम-प्रसिद्ध एक श्रुतकर पूरुप (सन १५)। वर्ड की विद्यों दे क्रितीय चक्रमत्ती संगर राजकी माता (सम १३२) २ तृतीयाः घटुमी धीर त्रयोवसी की रात्र (चैंव १)। वस्म पू ["वर्मस्] स्वनाम-क्यात नुप-विरोध (पढड) । बाय पूँ िबाद सिश्चवार करो गान प्रतिशा (उप १८६ टी)। विकास पू "विजय | विक्रम की मञ्जूषा शतान्यों का एक वैन सुप्रसिद्ध बन्बकार न्यामावार्य सीमान् क्टोशिनम जगम्माय (चन)। इर दू ["धर] १ माप्तवर्थं का मूत कालिक मठायहरी वित-देव (पव ८) । २ मारद्ववर्षं के एक भावी जित-येव (पव ४६)। ३ एक राज कुमार (बम्म) । ४ पदा का पाँचवां दिल (ब )। ५ वि दशको भारत करनेवाला यग्रस्थी (नीव १)। देखी जसी ।

जर्ससि पुं [यशस्त्रिम्] मगनान् महानीर के पिताकाएक माम (बाका २ १५) ३

जसद पु [जसद] बादु-बिरोप बस्ता (राव)। जसदेव दू [पशोदय] एक प्रस्तिः नैनावार्य (पद २७६)। असभइ पू [यशोमद्र] १ पस का चतुर्य

विषय (पुरुव १ १४)। २ एक राजवि को बागड देश के राजपूर समर का राजा बा भीर विल्ले बैली बीआँ सी भी मो माचार्य हेमचन्त्र के ग्रुव थे (कुप्र ७ १८)। ६ त् चर्डुवाटिक गए। का एक कुल (कप्प) : असवर् 🗣 [यशोसती] मननान् महानीर

री बौहिनी रानाम (भाषा२ १५८३)। जसस्सि वि [यशस्त्रिम्] बरुस्की कीर्तिमान् (सूप १ ६ च १४३)।

जसहर पूर्व [सद्योघर] एक देव-विमल (देवेन्द्र १४१)।

बसा भी [पराा] करिलपुनि भी माता (ज्व

चारिया हो [ बारिसा वेद बल-विशेष बन्धिन्तम बीर नी एक बाढि (राज)। क्रिन विची यात्री का स्टब्स पारी का क्यास (कुमा) । "शह द िनायी संख शाबर (ठा ७२० दी)। निहि पे विभिन्न सपूर सामर (शउर)। जीवी की निनिधी केनन (६१ ४२)। ससार देतियारी वानी का दिन्द (वाम)। धॅमिमी की किलक्किमी विद्यानिकेष (पर्वत **७** १३१)। दर्व दिने मेन माम (बता २६२ पत्र १०)। दानी बिहा पानी हे बीजाय ह्या वंद्रा (जुना ४६६)। "निहि देखो "पिहि (श्राम १२७)। एप**अ** वं प्रिमा १ इन्द्र-विशेष व्यक्तिकार तामक देव-वार्ति का बत्तर विशा का बन्ह (का २, ६) । २ फलवान्त नामक इन्द्रका रेड लोलपल (ठा४१)। यन दिनी काल वच (पदम १२ ६०: चीर पहल १)। यदेशी है (कार नवह से १ र्थ)। यर प्रशी**िचरी वन** में फले-नाना प्रादादि जन्तु (वीर )। ध्यै री (बीव २) । रङ्ग बूँ िरङ्क ] पनि-विशेष र्देक पती (ना १७ नटर)। रकतान व िंदाश्रस रिवान की नवीत (शण्या र) व रमञ्ज दिस्यी वन-वाहा बत-केनि (लाया १ ११)। रथ व िरयी बनप्रम-नावक इन्द्र का एक नोबपान (द्याप १)। शांस वृ [शांश] मदुर मानर (मुपा रदर का रेक्प दी) । नद देन निहा बाबी में वैश होनेतानी बनस्तति (पण्छ १)। रवर्षे दियो अपनत्नतानक इन्द्रना एक संपत्तम (बन १)। स्ट्रीटर न ["स्प्रीदर] पानी में बनाब होनेराली वस्तु तिरेष (रंग t) । बाबस पूंधी विशयमी बनदीया पदि-दिदेव (तुना) । बास्मि दि [यासिम] १ नाम में रहने तथा। २ 🖠 बनागों की एक नर्मा को बाजी न ही जिवान छने १ (बीर)। बाद् वू [<sup>\*</sup>बाद] १ अप सन्न (बाबु ११ मुता ६)। १ जन्तु तिरेष (राम थ) । "विश्वास के [बुधिक] राजी ना विन्यु चतुरिश्चेय मन्द्रान्टेर (गर्ग १)। बारिय न

िनीयी १ इक्शक बंश का एक स्वतास-क्यात राजा (ठा द) । २ स्टब्स कीट-विस्तेष चनुरिक्टिय जन्त को एक माति (मीव १)। सय व िश्यो कमत पप (छप १ ३१ टी)। साध्यकी दिशस्त्रीक्षा, पन्धे क्षिताने का स्थान प्यांक (का १२)। सुग न िशकी १ शैनास । २ वसकान्य-नामक इल काएक सोक्यास (स्राप्त १)। सेख प शिक्षी सबस के भीतर का पर्वत (हप 100 ft) । इस्थि प दिस्तिन विक-इस्ती पानी का एक बन्द (पाम)। इंद प चिरी स्थेप सम्र (पुर २, १ ४ से १ ११)। २ एक विद्यावर सुनत (पान १२) an)। इर पू ि भरी जब-समूह (गरह)। इर न िंगुइडी समुद्र सावर (से १ ४८)। हरण न हिरली १ पानी की क्वारी (पाछ)। २ इट्ल मिलेप (पिन)। हि.प िकि १ सप्रद्र सागर (महार सुपा २९३)। २ बार की श्रंबन (विषे १४४)। संय द न िसायी धरोवर कताव (तुर १ १)। शसक्य प जिल्लाहरू विवास नामक इन्द्र काएक क्षेत्रपल (ठा४ १—पत्र १६)। इलंबिंड र जिखानांडी तरेए रोने हारी में किया इसा वस (नूर ३ ६१ वप्पू)। जन्म र [क्ष्मसः ] भ्रोति भाव (निष्)। अस्त्रस्थित्र नि [यस्त्रस्थित] 'जन-बन' शम्य में बुक्त (मिरि ६६४)। अस्त्रज्ञास्ति विज्ञास्त्रसमामी देशीप्रमान चमरतः (रुप)। ज्ञस्य पुज्जित्त र भगि वर्ष (बा ६४० टी) । २ देशों की एक व्यक्ति स्रोतिक नुवार-नामक देश-वादि (प्रष्टा ( ४) । ३ वि अपना द्वार ४ वमस्ता, वेरीप्यमान 'परिए चनस्परतसीरकार' (चर ६४ हो। रवनतेरला (नुबर् १४) । ६*न*. पनि नुपन्नता (बस्द्र १ ३)। ७ धनाना मन्त्र करना (शन्द्र २)। "अक्टियू "बरिन् निधानर पंछ ना एक सता (बरव के ४६)। मिस वृं [मिन्न] रातान-स्वात एक प्राचीत गरि (पर्राट) । जन्यक्य न [जासम] नगमा (शब क्या) (रहरू १ १)।

अस्ति अ विकिति रे बता हमा प्रक (सम्र १८१) : २ वन्स्त नान्ति। (पत्तकर २ ४)। काकिर वि चित्रकिय**ी क्ल**का **पुरस्क** (बर्सीव ११, दूप १७१) ! बद्धाः क्रीबिकीक्स् रिन्त अल्या विकेट क्षेत्र वितर व का भीका (पटन १ २४ परह ११)। २ पविनिशतेष (बीव १)। जहामग व [वि] रोव-विरोग (का ६१६२)। जस्त्रीयर न जिल्लोदर] रोक्स्कोद कानार करतम (मण) । जक्षीयरि वि [सक्षीदरित] बबन्दर रेत है বীরির (অম)। बार्याचा देशो चलुना (भी १६)। बक्त दृष्टि बक्ती १ तरीर शामेल, पुढ़ा परीमा (सप १ ४ बीर)। र बारी एक जाति रस्ती पर क्लेन करवेगाना क (पछार ४० सीप खासार १)। १ ुबली विरद-पाठक (शाया t १)। ४ एर मोला देश। १ वस देश में स्ट्रॉनारी मोन्द्र वादि (पद्ध १ १---पत्र १४) । जन्नार पूं[जन्नार] र लगाव-प्रीपन्न र्<sup>द</sup> धनानं देश । २ वजार देश ना रिशानी (TT) 1 ब्रह्मिन [क् ब्रह∓] शरीरकावन (वर्ष tv)ı वकासदिकी [दे बसीपणि] एई वर्ष वी भाग्यातिक राखिः वितके प्रवान ने राहैर के मैस ने रोप का नाग होता है (क्टा <sup>रू</sup> १। विमे ७७६)। अप का [यापम्] । तसन करवानः मेजना। २ स्थापना गरना। वन्द्र (दे<sup>४</sup> ४)। हेर अविश्वम् (तुम १ ६ व) १ ¥ अपश्चिम जनकीय (सामा १३, दे \$ \$YE) 1 जन वह [यापयू] नान-बाग <sup>इरहा</sup> पगार करना । कोनि (गिर ६१६) ।

अप नक [अव्] नार वरता *वार-*गर

नत ही मन देशा का नाम स्मरण करना

पुत्रः पुत्रः सम्प्रोचारण राज्यः। अवदः (रंगा)

'वार्गित करमलेचे बर्गित मीते कहा कुरिकार्यो

सक्तर-- दर

 मध-विशेष (विषा १ २)। आजाव पुँ "आञ्चय] जाति की समानता बतमा कर भिना प्राप्त करनेवाला साबु (ठा १८१)। चिर पूरिविधर] साठ वर्ष की उम्र का मुनि (छा १२)। "नाम म ["नामम्] कर्म-विशेष (सम ६७)। व्यसण्या की [ असमा] जाति के पूर्णों ने बासित महिरा (जीव १): फल्डन "फल्ड १ वृश-विरोप। २ एक-विधेषः जायस्य एक गर्मे मशासा (सुर १३ ३३ घळ)। संत वि [ सन् ] क्रम्म भाविका (माचा२ ४२)। सम र्दिमदी आधिका समिमान (ठा १)। विधिया की ["पत्रिका] र मुपन्तिक कनवाता बुझ-विशेष । २ फत-विशेष एक गर्म मनामा (छए)। सर्पू [ रैमर] १ पूर्वजन्म भी स्मृति । २ ति पूर्वजन्म नास्त्ररण करनेदारा पूर्व-सम्म का हान बापा 'बाइसयाई मन्नै इमाई नयसाई सपतकोयसम (पुर ४ व )। सरण न िरमरत्र] पूर्व कम की स्मृति (बत्त १६)। ैस्सर देखी सर (कप्प दिने १६७१) दर २२ थि)। जाइ स्त्री [जाति] १ न्याय-शास्त्र-प्रक्रिय दूपणामाय-धमय दूमण (धर्मेश्र २६ म ७११)। २ माताना पैछ (निह४३०)। खाइ रेको जाया (पर्)। जाइक्षे [पे] १ मध्य मुख बारु (रे १ ४६) । २ महिए-विशेष (विषा १ २)। जाइ वि [याजिम् ] यद-वर्त (बसनि १ 174)) I जाइ रि [यायिम्] बलगमा (ठा ४ ३)। जाइअ वि [याचित] प्राप्त मांगा हथा (जिने २६ ४ मा १६६)। जाइअ देंगी आय = कार (बरवा १४४) । जार्चिद हित [बार्टनियक] १ रच्या बाइन्दिय र नुपार दर्पन्य (पर्मेश १२) । र रण्यानुनाधे (बर्ममं ६ २)। जाइन्यिय वि चिर्हास्यको सेन्या-सिमिन (विन २१)। आइप्रांत रेची जाय = बाह्य । आध्यतः आर्ध्यमानः हेमी जाय = मान्।

83

ज्ञान्जी स्वी [याकिनी] एक वैन सम्बी जिमनो मुप्तमिख पैन प्रत्यतार भी हरियद मूरि धपनी धर्म-माता सममते ये (उप १ ३१) । आश्यम्बय म [चातम्य] गमन गति (मुख २ १७)। खा≰अ वि [अर्थाय] वादि-सम्बन्धी (भागक ४)। बाडन [बायु] शीरपेया यनत् माहकी नांजी सपसी साच-विशेष (पिट ६२४)। जाउ म [जासु] नवानित् कभी (उनकु ११)। बाउम [बासु] विशेष्ट (दर १४७)। "फण्य पुं [कर्षे] पुत्रीमाद्रपदा नशत ना मीत (**१**क) 1 जाउ की [यातृ] १ देवर-पत्नी दवरानी। २ वि कानेकासा (संक्षिप)। बाउया की [यातृका] देवर-पली पवि के कोटे भाई की धी देवरानी (लामा ११६)। आपर पू[द]कॉस्थक्त कैयकाफन (देव ४३)। जाउछ पू [जातुछ] बल्बी-क्रियेप (पएए) १—पत्र ६२)। जाउद्दाय र्षु [बासुधान] राज्यस (का १ ६१ टीः पाष्यो । चाग प्रिया १ यत्र सम्बद्ध होन हवन (पत्रम १४ ४७ स १७१) । २ देव-पूजा (छामा ११)। **जागर धक [आगृ] भागताः निता-स्थाग** करना । जागरह ( पष ) । वह जागरमाण (विषे १७११) । हेइ- जागरिचम्, जाग-रेचए (बप्प करा) । जागर वि [जागर] १ कान्तेराला पाएता (बाबा क्य बा १५)। १ वूं जायरता निज्ञान्याम (मुद्रा १८७ सप १२ २ सुर \$\$ ED) 1 जागरः चु वि [ जागरित ] जानने गता (पा२१)। जागरिम वि [जागृथ] बाद्य हुद्या निवा-र्णहर प्रमुद्ध (ए।मा १ १२: था २१)। नागरित्र गि [जागरिक] निप्रान्धीरत (भगः, 12 T) 1

जागरिया भी [जागरिका जागया] बायरख निजाध्याय (सामा ११ मीत)। जागरूअ वि [खागरूक] जागराः जामा हमा, आगने के स्वमायवासा (मर्नीव १३५)। जाजावर वि [यायायर] गमनसील जिनमर (सम्मत्त १७४)। काक्षा की [वे] पुरुष सता-प्रजान (दे १ ४१)। साज एक [हा] बातना क्षान प्राप्त करना समभ्या । भारतह (हि ४ ७) । बङ्क आर्थात जामनाण (कव्यः विषा १ १)। संह-রাণিকণ, জালিকা, রাণিদু (বি **१०६** महा मय)। हेक्ट जाणि (पि १७६)। इ. आणियव्य (मगः घतः १२)। जाण पूर्व यानी १ स्मादि बाह्न सवारी (भीपपण्ड्२ ध्रुख्य ₹)। २ मत पाम नौरा बहाब काएँ संसारममस्तारले बंदुर जारा (पुरुठ १७)। १ यमन यदि (यक)। पत्त दत्तम ["पाञ्च] पहात भौका (निमिध सुर १६३१)। साला सी िराखी १ तवेमा यस्यवसः। २ वाइन मनाने का नारधाना (धीरा धावा २२२)। आण न द्वानी झन, बोम समक्र (भग दुमा)। बाग नि [बानन् ] बानदा हुमा 'बार्ड काएए एएडड्री (पूर्व १ ६, १): वाप् पएछेल बालमा' (बाबा)। वाणद्भी [जानधी] सौता चन-पत्नी (पडम १ ६ १८ से ६ ६)। जागर वि [जायक] पानरार, राजी पाननाता (मूम १ १ १ महा मूर १ ६१)। वामगी वैद्यो जामह (परम ११७ १८)। जामगन दि । बराद, पुत्रराती में 'बान'; 'बो वस्त्रापाए समुविधीति जागुएनगुर्द्धी' (स्र ११७ टी)। कामग न [शान] जानता जानराचै सबम, बीम (१४ ७ उप पूर्व सूपा भरेका बुद १ ७१ दवल १४ महा) । जाणगया हजी. उत्तर देवी (दा १११) वागमा } स्मि रश्यक मणु पाष् ।)।

। आजय रेखी आजग (मा महा)।

खाइया को हिएती परिस्वाय (संबोध ११) १

बद्दपुसव ) न दि ] सर्वोश्त भवनोत्तक

कड़णुसुम है की की पहलते का बक्र-विशेष

बद्दक्य ) वि बियम्यी लिइट (देश प्रवय

बद्धम । ग्रेंच (सम असम ठार राजी

महा= केवी सह कहा। (पि ३३)। संब

जहादेको स्तइ = स्ता(हे १ ९७ कुमा)।

अचिति विक्वी स्वोधित योग्य (सर

२ २ १)। लेटन विकेशी आरोजा के

बडाइला बडाव (तम १२ १) पि

1 (YY

ઉદ્દેશ પ્રાથમ 🕩

रका में ६)।

1881

१२०)। २ प्रमान् मानीर की वानी (क्या)। कामि हि [नामिम] मा व्यक्ता साना (स्व १)। किसिनाम न [किसि मामन] कर्म-निरंत विश्वेष त्राम से पुत्रन केसला है (वम ६७)। मर पूं [ चर] १ वस्त्रेण के प्रस्त-तिया आधितार केस (त्र १)। २ व. देशक टेस्कोल का प्रसार (स्क)। इस वस्त्रेण केसिल का प्रसार (स्व १)। २ वस्त्र-तुम निरोत पुरतीन (त्र व)। २ वस्त्र-तुम निरोत पुरतीन (त्र व)। २ वस्त्र-तुम निरोत पुरतीन (त्र व)। २ वस्त्र-तुम निरोत पुरतीन स्वत्रेण वेशो कसी-तुस (तुम १ १४)। असोधा वेशो कसी-तुस (तुम १ १४)।

असो देशो असः। साक्षी दिंगी १

कर समझ नीय की पानी (ना ११२)

145

अस्ताय व क्वां क्यां सुर ( कुक ( क्यां) स्त्रीय की असीमा की प्राथमित क्वां क्यां क्

अइ-स्याय (पलम) । दिय दि दिश्व बाग्तविक सम्ब (सूर १ १६२) सूपा ५७)। स्य रि "बें] नास्त्रीयक सस्य (पंचा १६)। त्यताम वि विनासम् । नाम के धनुसार पुरुवाला सम्बर्ध (या १६)। त्यवाद वि [ भेगावित ] साय-वचा (गुर ty tt) । प्य न [पामास्म्य] शास्त-रिवडा सल्बदा (धत्र) ं रिस्टून [रैंदी प्रवित्तता के धकुमार (गुपा १६१)। बहिय ति विचा बाव बचार्थ (गुरा १२६)। विद्या [ विवि ] निष के समुसाछ 'नह्यानिशिवनुराधी वहदिश्रिष्ठा साहियन्याधी' (न्र. १.२) । संयान विस्ता बंदरा के हम के हमानुनार (शार)। देखी जहां व अस्य न [अपन] क्वर के श्रीकेका काल (मारेक्षा स्वाप्त ११)।

ब्म से (क्स्प्र)। जासय वि निसकी विश्वका नाम न कहा नमा हो धनिर्मिष्ट-नामा नोई (बीव ३) । तचन विषयी सत्त्र बारविक (माबा) । तह न विम्नी छत्यः नन्दनिक (धन)। तद्द न धानावच्यी बारविकाता सरस्वाः जासासि सं विका नहात्त्रहेरी (सूच १ ६)। २ सम्बद्धाङ सूत्र का एक झम्मयन (सूछ १ १३)। पवट्टकरण न [अवृत्तनरण] शाना का परिशाम-विशेष (पाचा) । भूव वि "मृत् सचा नास्तिक (सामा १ १) राइणिया की रिक्सिकता] क्षेत्रता के इस है वक्ष्मव के सनुसार (रह)। रह केवी आह रिह (च ४६३) । वित्त न [वृत्त] वैता ह्या हो वैद्या मनार्च (स २४) । सन्ति कीत ["शक्ति] शक्ति के सनुवार (वंशा 1) I बहाजाय वि हि यथाजात] वक पूर्वः वेरपुष (दे वे अर्र वर्षा र वे) ।

अदि देवी सद=वत्र (हेर १६१) मा

अहिण्छ व [वर्षण्ड] इच्छ के सनुबार

जहिरिकाय न [यथेप्मिन] रच्छानुरूव

महि १६१ मानू १६)।

(दुस १६, स्मि)।

रम्प्यनुनार (र्वत १)।

जहिये देखी ऋहिं (पित १०)।

श्रद्धियामा भी पिष्टच्या नागीः संच्याः सम्बद्धमा (य ४३) विते ११८ ४ 192) ( व्यक्तिक वृ चिभिष्ठिर । परह-एक स क्षेत्र पत्र क्षेत्र पायका (हे १ १ थ) ਸ਼ਜ਼ਾ)। शक्तिमां की दि। विशव पुराकी बन्धी हर्ष जना (दे १ ४९)। जारदिक देवी सहिद्धि (हे ! १६ 1 (4 1 जहत्त न [ययोक्त] क्वतत्त्वसर (परि)। अक्टेल म सिवीय विशे ही (ते र ११) । ब्रोडेच्छ देवो प्रहिच्छ (स ४०२)। अहोइय न [चयोवित] कवित्रमुधार (वर्ष B) 1 अहोइस ) न सियोचिती नेत्यतः के पतः कादोबिय (सार (से व श दूपा ४०१)। आर धक [बस्] अरलस द्वीताः भाषदः (दे ४ १६६) । शक्कः आयोव (दूना) । पेड प्लके जिस्स निनिद्धता पूर्वी-पूर्वी आई च मरिकेचे (बारक)। कासक [या] १ जाताः यकतं करता। ९ प्राप्त करना। ३ जालना। बत्रद् (सूना ६ १)। वित (महा)। वक्र जीत (दुर १ ४४) र ११७) । क्वक- आइज्रमाण (पण १४)। बा सक [या] तकता प्रमणे होताः नि मम पूरव न बाद पत्रवहते 'विदेशियानं वि बागद मनमादवें (शुक्र २ १३)। का देखो जान = मानव् (हे १ २७१) दुवी बुद १६ १३ )। काम देवो काथ = बाग (हास्य १६२)। जाम देवी जा = ना । वासद (त्राह ६६) । बाधर देवो सागर (इसा १०७)।

सामा तो [बार्] देवर भागी देव की लगी,

बाइ ध्ये [कार्ति] १ पुण-विशेष वास्त्री

(रुमा) । सामान्य नेयानिको के नत से एक वर्तन

रिरोप को ब्यानक हो वैदे मनुष्य ना ननुष्य

मो का गोरव (विशे १६ १)। ६ बाह पु<sup>ल</sup>

भोत करा-कार्ति (का ४ का सूम द १६)

दुमा) । ४ क्लांत चल (क्त श वर्षि) । ३

शानियः बाह्यसः वैश्य बाह्य नहीत (बच १) ।

६ पुण्य अवान इस कार्र ना वेड़ (नदल १) ।

रेपएनी (प्राष्ट्र ४३)।

७ मध्-बिटेन (शिंग १ २)। आजाय प्र

["आर्जय] जॉट की समन्त्रा बटता कर

किया प्राप्त वरनेपाया साधु (टा ६ र)।

धर पूरिधियरी छात वर्ष की उप्रका

मुनि (दा १२)। नाम न [नामन] क्य-विश्व (सम ६७)। व्यमण्या ध्ये [ ६म) ] या उ के पूर्णों ने काशि ! मरिस (बीत १)। पाउन [पाउ] १ बृत-विधेय। २ प्रा-तिदेव जायात एक सर्वे वसाता (मुर १६ ३३ हए)। मंत रि[ सम् ] क्ष्य वार्डिशा (दासा २ ४२)। सय र्दु विम≂ी बार्डिका समियात (टा १)। वीभगा की ["प्रिक्रिका दे मुर्गापड कारामा क्युनियोग । २ क्युनियोग एक गर्ने भग्नता (ग्रन्त) । तर पू [ ग्मर ] १ पूर्व काम बी स्पृति । २ ति पूर्व जन्म बारमराप्र कानसास पूर्व राम वा राज बाना बारगरा मने स्वारं नक्तारं नवस्तेवस्त्र (नुर ४ ९ c) । सरण न िंग्यर्भ देश क्या की वर्षा (प्रण १६)। स्मार रेगो सर् (राम दिन १६३१ एन २२ क्षे)। ब्राह्मी [वानि] १ स्वय-कालानिव दुशनामन-धानव दूवल (यमा १६ म ७११) । १ माताबा वंद्य (शिर ४१८) । लाइ रुगे जापा ( रह )। आधि [रे] १ मंत्रत पुष एए (रे १ ४१) । १ मध्य-रियोग तिया १ २) । जाइ वि [ याजिम् ] दरन्त्री (त्ति १ (YU) i जाइ वि [यादिय] अनेरान्य (हा ४ ३) । ज्ञाध्य (र [पापित] प्रदेश कोच ह्या (fit tr e tett) जाइन रंगो जाय ० रण (राजा १४४) । नार्गना ११ [पारन्यर] र १५० जार्शन व दिन्द दरन्त (बर्ड १३) । 2 Econotife (45 4 2) 1 जार्रन्त्य रि[धार्रन्य्र ] सेन्य्र रि बर ('c 11) Bulled Sight Black Conf. गाउँ । जारामात्र हेली जाउँ व सन ٧.

जान्त्री हो [याहिनी] एक देव मान्त्री विमशे मुप्रसिद्ध दैन प्रत्यतार भी हरिस्य मृद्दि बानी पर्य-मात्रा गममने मे (प १ ३१) । आत्यस्यय म [धातस्य] गमन । गीत (मुग २ १७)। ज्ञा ज रि [ क्रातीय ] बार्डि-मध्यत्थी (धासः ४)। काउन [बायु] शीरोबा स्वाद्र माहती बाजी सरमी बाद विश्व (विश्व ६२१)। जाउ व [जागु] नर्गान्य नभा(प्रशृ ११)। वात म [वातु] भिगी बार (दा १४७)। क्या र् कियो देशीसारम नगर ना बीत (tr) i जाड भी [यातृ] १ श्वर-प्राप्ता दवस्था। २ वि अनेशास (सीस ४)। जारवा ी [बादुस] देशर-रात्ये पवि के धीरे मार्द भी की देवसानी (सामा ११६)। बाउर वृद्दि विशिषाल वैष का पत जारा र् [जातुर] रम्ती विदेश (शास्त्र १—□ १२)। जान्द्राग र्नु [यानुषान] एतम (१८३१ री पाप)। बाग रू [याग] १ वर घरतर होत हान (बाम १४ ४० ग १०१) । २ देवन्यस (FTGT ? ?) : नागर चर [जागू] बचना न्जिनाग बन्न । बारस्य (यर ) । बङ्ग जागरमान (लि २०११) देर जागरिकण, जान-उपप् (बन्द बन्) । जागर वि [च्यार] १ जगवराचा जान्य (दाश बाद बा १५)। २८ बालान जि∺ाप (न्या १८३ मा १३३ पुर (\* (\*) जागराण् (र [जार्यास्तु ] कान्याना (\*\*\* 31) | जर्राध्यक्ष [भएत] बचाक कि र्थाः मुद्दशाला रे रह का रहे) । शामस्य रि[जर्मात्व] रेना संस्त (क्र 17 7):

444 ञ्चामरिया की [जार्मरश नागया] व्यानन्त्र निदास्त्रम् (छाना **१ १) मी**र)। द्यागरूप्र वि [द्यागरफ] रूप्या जन्म हमा पान्ते के स्त्रमारणता (पश्चि ११०)। जाञाबर वि [याय।यर] न्यनरीप निवस (सम्मग्न १७४)। 'नार्टा को [वे] रुष्य सत्त⊦प्रशन (देवे ४४)। आयनर लि। पानना रानधारा गरना सममना । बाएए (हे ४ ७) । बद्र जार्गन जाममाण (बना रिसा र र)। ग्रह जागिकण, जाणिता जापिए (पि **१८६: महा मन)। हेइ' जा**ं (नि २३६)। इ. आणियध्य (मा. मा १२)। जाण र्न [यान] १ स्पर्यः चारत गराधे (मीरापाहर श्रष्टाप्टर)। रयात पात्र कीया अद्यान न्याएं संवारणहुट्य रहे बंधुरं काली (दुस्क ६७) । ३ एक्स गी (राव)। पत्त दश्तन [याक्र] नहार भीका (निविध मुर १३३१) । रागा की शासी १ तकेला घरायल । २ वाल बनाने ना नाग्याता (धीरा ध्यया २,२ २) । আমে ব[রাম] রার খীম বহম (মা **प्रमा)**। आग दि [ शासन् ] पात्र होता जल सारा साही (मूच १ × १) 'यानू परग्रेम बगादा (दाबा)। जाय भी [जानवी] भा चान्नी (परत १ ६ १८ १६ ६)। ज्ञापन वि [जायक] मन्त्रार गर्ने भारताचा (स्थ १ १ १) या सर \$ \$x1 जाम्भी हेनी जीन (याच हेर्ड) यापन व [४] स्तार करान्य لإلا كالمسامة بالمالية المسامة الا (शा ११७ हो)। ज्ञान व [हार] बल्ट कल्याने THE MY IEV WITE ST ME Aft at 4 state to Autom 1 62, 244 per 1 (ct. 25) बारका हैरेरा स्था बन या है। क्राप्त र रेको कारान (क्रा क्रा

गग (भीर)।

काणया की जानी जान समग्र, बानकारी

'एपसि प्यार्थ भागानार सबस्यार' (सब)।

आणवय विज्ञानपदी १ क्ट्राम

देश-संकन्धी (मक सामा १ १--पन १)।

जाजाच सक जिल्लाय वे जान कराना

जनामा । जागानह जागानेह (कुमार महा)।

केल जाणावित्र आजावेत्र (पि १११) ।

बाजायम न जिपनी बारत, बोबन (परम

चाणावयस्य (क्य द २२) ।

काम वैको खाप ≃ मावत (धारा ३३) । साय वियाती यतः वसाइया (इस १ के हो। २ प्रस्तु (संदर्ध है)। के **स** कामाइ देशो कामाइ (चित्र ४२४)। यमन यदि (धाका)। जाममाहण न [यामप्रहण] प्रहरिकत स्राय प जिल्ला केल क्रिक्त केल क्रिक्त पहरेशाचे (सक २, ३१) ।

जामाठ १९ [जामाच, 6] नामाठा जामाडय | रामार, बरुमी का पठि (परम दर ४ हे १ १३१ ना ६८६)। सामि की जिस्ति। सामि वितर अस्ति (चन)। वामिक देवो जासिस (वसेंदि १३४) । जामिय ९ सिर्मिकी प्रक्रीक पहुरुगाः पाक पारेशार (छर स्वक्) । कामियी की सिमिनी चिक् एउ (इस ७२व दी) । वामिक रेको जामिग (गुरा १४६) २६६)।

वामेल प् बामयी बानगः मामिनेनः बहिन का पूज (बर्जीक २२)। माव सक पाच । प्राचैता करना सौद्या। वष्ट कार्यत (वरह १ ६) । क्वष्ट जाह व्यंत (पत्रम १ ६०)। आय स**क** सित्यी पीइना सन्त्रका करना । बाएँड (चर) । क्वक जाइझंट (पराहर १)। आय नि आसती १ उपल, को पैदा ह्या हो (कार)। २ तस्मुद्ध संपात (इस थ)। देमेर प्रकार (कार ≯निकृर्द)। ४ ति प्रदुष्ठ (सीत्)। ४ पुंच कड़वा पूच

वाय देशो जाग (छाना १ १)। (मय १, १६। नुरा २७१)। ६ व वण्या सेटाका जार्ग सीए कह नहति जायस् पृत्त-जोमेरा (मृत १६)। **जन्म स**र्गात (शासा १ १)। कम्म न "कर्मनी रै प्रमुठि-कर्म (ए।सार t)। २ संस्कार तिथेर (बमु) । तेय प्रतिवस् विस्त विश्विम १)। निर्दुमा हो [निदुता] नुप्र-चलाओं (शिरारे र)। नि<sup>स</sup>म्म विभिन्नी भागते दुक (दिसार र)। रचन किया १ पुरुष क्षेत्र (सीप)। २ रूप वर्ष (बढर४)। ३ नुम्ली निधिन (सब ६१)। "येष पू [ "बेदस्]

ध्यमि वहि (उत्त १२)।

(पप-भाषा २४) । आयग वि याचकी १ मन्दिनताः २ पं. फिल्क (मारवंसपा४१)। जायग वि चित्रको स्व करानामा (स्व ₹₹. €) ( कारण न पापली शक्ता प्रजेग (श १४ प्रति ६१)। आयण न चित्रती कर्चन, वेहन (महर 1 (8 3 व्ययप्रया ) की विश्वता । यावता प्रार्थक कामणा निक्ता (उप प्रदेश ध्यापा स २६१)। जामणा भी [यातना] कर्मन नीत (पएड १ १) । कायणी की याचनी प्रावंतानी करा

जावय-अध

(ar y t) i कायब पूजी [बादब] बहुबेत में जराना मद्द्राचीम (लामा १ १६) प्रकृत २ १६)। जाया की [याता] निकाह, पुत्राच, वृत्रि । माय वि मात्री विक्ते हे निर्देश हैं सके उतना 'बाहरस विति बीच बामा नार्व न बोर्ग न (पिड ६४६)। अवयानी विद्यासी की सीख (ब.६ मुपा १४६)। काया देखो जन्म (वएइ २,४) सूच १ ७)। काया स्मे जाता | चमरेन्द्र स्मर्त स्त्री री नम गरिएन् (फ्ला हा ३ २)। जाबाइ र बायाजिन विकरती पारक यव कपनेताता (बत्त २४.१) । बार प्रशास कारति सार (ह १ १७०)। र मेरिंग का नाराम विरोध (बीब १)। वारिक्य कि [पादक्ष] क्यर देखा (प्रामा) ध जारिम दि [पाइरा] केना जिल तया ना (E t tv3) i बार रूप्य न [बारहरूप] बोर-रिरोप, बो नार्थिष्ठ भीत की एक शल्सा है (ठा ७)। बास वक (प्रशासन ) जनामा क्रम करना 'वो जीवयज्ञकामात्रामीतु यानेवि शिवोई' (नहा) । नंद्र जामपि (बदा) ।

११ द मपा६ ६)। काजारणा ) सी विद्यापती विद्यानियेष कात्रानणी (इप इ ४२, महा)। जाजाबिय वि ज्ञापिती बनाया विज्ञापित मानूप करायाः निवेदित ( सूपा ६१६ धावम ) । कामि विकासिन् नाता जानकार (दूमा)। আজিল বিলিলেট কৰে হয় বিভিন (97 4 988 w 98) i जाम न जिल्ली र वॉट्ट दुग्ना। २ ऊप धीर अचारा नष्ट धार (तंदुः निरः ह द्याया १ २)। वाश्र । विशिषकी वासनवासा सरवा जाणुल । बातरार (स. १ ४ शामा १ 23) ( जाग च [जान] प्रदोत्ता-नुषक सम्बद माना (यभि १६)। काम परु [सूज्] मार्जन करता, सन्द्रा वरना। जाबद् (माट⊸प्राप्त आम वृं [याम] १ प्रहृद, धीन बण्टाका तमय (गम ४४ नर १ २४२)। २ सम सर्विता साथि याचे बन । १ बस निरोध धार संबत्तान बतीन से नाउधार नाउधे यपित्रवर्णको स्तप्त (प्राचा)। ४ वि वय संबर्धी, क्षमध्यका (दूसाथ ४) । इस् रिमिन्दि महरतात्त (दे र १४१)। २ ४ प्रारंदिर पहेल्वर, शामिक (नुस r)। । तमा भी ["रिश\_] सीतल रिया (गुरा ४ ४)। बह की विनी] र्धीव राज (नइह)।

व्यास न [बास्त्र] १ सबूह, संबाद (नुर ४

१५४: सं४४३)। २ माता का संपूर् दान

निकर (राय)। ३ कारीगरीकाने वित्रों से पुक्र

शुर्वारा, गवारा-विरोध महरोबा (बीप गामा १

१)। ४ मधनी वपैरह पबन्ने का पास पास-

विरोध (पएह १ १)। ४ मध्येनी वर्षे एड पच्चने

की काम पारा-किशेष (परतु १ १ ४)। X पैर

का धानुपण-विशेष क्या (धीप)। फदाग

पू [ करक] १ सम्बद्ध गवाली का समूह ।

२ सम्बद्ध गनाय-समूह से बर्नहरू प्रदेश

(बीव १)। धरत न ["गृहक] सन्दित्र

गवासावासा मकान (राय साया १२)।

र्वजर न ["वजर] मनान (बीर १)।

कास पू [क्याळ] क्वाला बरिन-रिज्या आग

हरत देवी चरत (चीत)।

भी सपट (सुर ३ १ ववः की ६)।

जालंदर न [काव्यन्दर] सन्दित्र मनात्र का मध्यमान (सम १९७)। जार्छपर प्रक्रिक्टियर १ वंबाव का एक स्वनःस-स्यात शहर (मित) । २ व गोत-विरोप (क्य) 1 जार्लघरायण न [आग्रम्घरायण] नोक-विदेव (पाना २, ११)। ज्ञास्त्रम वेकी आस्त्र = बास (नगर् १ १) १) भीपः गाया १ १)। खाइमा प्रक्रिक होरियम और भी एक वार्ति मस्ती (उत्त १६ १६ )। जासपदिया औ [ब] चन्त्रराजा, बहुतीस्वा, यदारी (देश ४६) । आसप रेबो जास = बान (दरह)। जासमधी थी वि] संशद सम्बाद बारा पुत्रपती में 'आम्बर्ग' (तिरि १०१)। जान्य भी [जासा] १ वर्षन भी फिया (दाना नुर २ २४६)। २ नवम चञ्चलीं वी माना (तम १४२)। ६ भगरान् चन्द्रप्रम शी रामने से (चंदि १)। वास्त्र म [दश] विस समय विस् नाम में **'वाना मार्पित पूरा माना वे सदिवापित** केपीत (है १ ६१)। वाध्यत्र 🖠 [बास्यपुप्] डीन्त्रिय पन्द्र-रिटेड मनदी (धन)।

जात्मव एक [स्वास्त्य ] बनाना बाह्र देना । बङ्क खाळापंत (महानि ७) । सास्त्रविञ वि [क्याद्भितं] बमाया हुमा (सपा १८६)। आ क्षि प्रै जिस्कि १ एमा भेरिक ना एक पुत्र, जिसने मगवान् सहावीर के पास वीक्षा सी बौ (मशुर)। २ की हप्या का एक प्रक विसने दीला से कर शतुक्य पर्वेट पर गुटि पाई भी (वंत १४)। बास्त्रिय पू [आस्त्रिक] बान-बौनि नापुरिक बद्देनिया बिडीमार (घटड)। जाकिय वि [स्ताबित] बताया हुमा मुप्र-याया हमा (उव स्प ११७ टी)। जासियां की [कास्त्रिया] र कन्दुक (पराह्र १ १—यन ४४) यद्य) । २ कुल (यन) । बाहुग्गास 🕯 [आखोदुगास] मधनी पन्नो ना सावन-विशेष (समि १=३)। आय देवो जामध्य (धाना २०२० ६ ६)। क्षाम सक यापय् ] १ पनन करनाः प्रका रना। २ वरतन्त्रः। ३ शप्तेर का प्रतिपानन करना । जावद (पाचा) । चावेद (हे ४ ४) बातए (सूम ११६)। जाम म [यायन्] इत भन्नो का सूचक यम्यद—१ परिमाणाः। २ मर्गोदाः। ३ सद-मारण निषय 'बाबबर्य परिमाले मञ्जादा-एक्कारते केह' (विशे १११६) सामा १ )। स्त्रीय की न ["स्त्राव] भीवन पर्यन्त (भाषा)। की या (विष्टे १११= क्रीप)। व्यीविय वि [क्योबिक] यादरजीव-संबन्धी (स ४४१) । रेग्री जार्थ । आय पुं [आप] मन ही मन बार बार बेरता कास्मरण मन्त्र वा उचारण (तूर ६ १७४३ मुचा १७१) । जावद् पु [व] इस-विशेष (पर्छ १--पव आवद्दम वि [ यापन् ] विद्या, जावद्वा बप्रणस्म (तम्ब १४४ वत्त १४)। जावन् धी [जाविषयी] १ कल-विशेष (उत्त ३६ ६६: मुख ३६ ६८) : २ पुन्य बनस्पति की एक वादि (बएए १ —पत्र १४)। बार्य प् [बातिपत्रीक] रूप-विदेष

(क्त १६ १≈)।

399 चार्व देवो साथ (परम र र )। "ताय स [ सावन् ] १ तिएत-विशेष । २ ग्रुणाकार (हा १)। द्धार्थंत देखो जावद्वश्र (मन ११)। जावग देलो जावय = यापक (दसनि १)। कायण न [यापन] १ विद्याना पुत्रारना । २ दूर करमाः हटाना (उर १२ टी)। साबजा हो यापना क्यर देखो (का ७२८ दी) । जावणिङा वि [गापनीय] १ को बीताया बाद पुत्रास्ते योग्य । २ शक्ति-पुक्तः जाव णिकाप् णिकीहिमाप् (पि) । तैत न ितात्री प्रन्य-विशेष (वर्ष २)। जापय वि यापकी १ बीटानेवाता । २ पू तर्प-राझ-प्रसिद्ध काल-सेपक हेनू (ठा ४ 1) I जायय वि [जायक] पौतनेवाला विलाएँ नावपार्ण (पहि) । जावय ए याबक्री ममन्द्रक चनता साव का रेप (यउक सुरा ६६)। आर्थासय वि चार्यसिक् श्रिममसे पुत्रास क्रफेराचा (शह १)। २ वास-वाहरः (ग्रीम २६८) । जाविय वि [यापित] बीताया हुमा (ए।या 1 (\*) 1 जास पू [जाप] पिराय-विशेष (धन)। वासुसम् । पुं [ कपासुमनस् ] । वरा बासुमिण | का कुण पुण्यवान (पन्छ १ जासंगण । लावा १ १)।२ नं बना ना दून (छाया १ १, वप्प)। बाह्म पु [श्राह्य ] पन्तु-विरोध वितरे शरीर में काटे होते हैं सादी या साहित (पराहर र विकेश ४३४)। जाहरथ न [याथान्ये] सरवान शास्त्रविवता (मिरे १२७१)। बाहासंस रेगे जहा-संन्य 'बाहासंपनिपाल नियत्र माहुतायो में (इस १७१)।

आहं म [यदा] जिल तत्र वर्ष (है ३

जि(धर) देगो एष=एर (१४४२ पुना-

६१: बहा: गा १ व) ।

यज्ञा (४)।

et 3 ) i

सर्वेज (परसार) । ४ भीवतः पर्वे सन्वी रा

िंडरका सहीत् केत (सूर ४ वर्ष)। अप

र्प विक्रम् । एक प्रकार के बैन वनिमें का

माचार चारिक-विकेश (हा 1 अपनार रे) ।

क्रिंपय एं क्रिस्पिको एक प्रकार का के

मुनि (मोच ६६१)। फिरिबा की किया

Daras — Caron

विभिया का जिस्सा बस्सा बस्मा सक विकास (सपा १०३) । विगीसा भी किगीया वय ही इच्छा (क्य २७४) । बिरम केवी जिम । जिल्का (निवृ १) ।

किरियञ्जनि विकास स्वाह्या (देव 84) i सिवा जिल्ह्याच्य }ेवेचो जिल्ह्याः

भिट्ट विक्रियेष्ठी १ महान् वृक्तः वहा (सुपा रेक्षे कम्म ४ हर)। २ वीत उत्तम । रेर्ड बका मार्ड पीट्रंब कमिल्ड पि*र्ड* (वर्ग र)। सह पं मिति केन साप विशेष (वी १७)। मुझी को भिकी क्येष्ट मास की प्रस्तिमा (इ.क) । बिद्र पूं क्रियेष्ठी मास-विशेष केठ (एक)। जिद्राको वियेखी १ मनवाद महाबीर की पुत्री । २ मनवान सहावीर की समिती (विशे २६ ७)। ६ नवस-विशेष (व/१)। देखो सेट्रा । बिट्टामी की विज्ञाति को साई की पत्नी निकानी वा चेठानी (सूपा ४**०७**) । बिट्टिणी ध्ये [स्पेशि] केठ मान की समावत (संदूर को)। क्रिया सक [कि] बीवना वस करना। विख्" (हे ४ २४१ मक्स)। कमें विद्या ण्यदः, जिल्लाइ (हे४ २४२) । वक्क जिल्लीन विव्यर्गत (पि ४७३ पटम १११ १७)। रबर जिस्समान (इत ७ २२)। संह बिणिका बिभिक्रण दिणक्रण मुक्तप सेडञात (पि हे¥ २४३ः पड्ः दुसा) ।

२१ पत्रम १६ १६: पुर १४ ७६)।

निक्षेत्र का क्तबाना हमा वर्गान्तान (र्वत १) । घर न िग्रही जिल-मन्दिर(मन ६ व खामा १ १६ — नत्र २१ )। वहर्ष िपन्द्री १ विनरेश यानु देश (शम १ १३ घनि २६)। २ स्वनाम-क्यात वैन बादार्व विरोप (स १२ सक)। अस्ता की विज्ञी भारत देव की पता के अरलक्ष में किया बाड़ा ज्लाव-विरोप रव-बाना (वैचा ७) । जाम न िनासमी कर्न-विशेष विसके प्रकार है भीन तीर्भकर होता है (राम)। इस 🕻 ियाची १ स्वनाम-प्रसिद्ध वैशासार्थ-विकेश (नया २६) साथै ११ )। १ स्थनान-स्थाउ एक पैन धोही (पक्रम २ ११६) । इस्त न दिक्यों विन-मन्दिर-सम्बन्धे कारि बता 'बब्बंडी बिछदम्ब दिल्बर्स्ट नहरू भीनों (चर ४१=३ वंच १)। बास 🕏 िदासी १ स्वनाम-प्रक्रिक एक वैव कारण (पाइ ६) । २ स्वनाम-क्यात एक वैत पुनि मीर कल्पनार, किश्चेष-गुत्र का **पृ**श्चित्रार (तिषु २)। "देव दू ["देव] स्मर्हर देव (पु ७) । २ स्वताम-प्रसिद्ध वैन्द्रवार्म (मार्क)। १ एक वैन स्मायक (ग्राम् ४)। धम्म र् ["बम्सी] जिल्लेत का कारिय वर्गवैत वर्गे (छ प्र. २. हृ ११७)। नाद व िनास निवरेत प्रारंत देव वैक- विविधं कडं (तुर १ १३ : रंगा)। (इपा २१६)। पश्चिमाधी [प्रविमा] क्र किंच किणेयस्य जेयस्य (उत्त क मर्दर केन की मूर्ति (लाबा t रिक्—कर २१ । समा भीत १)- "जिल्लाक्रियार्थक्रलेल जिल पूर्वित] १ राम भारि भक्तरंग वडिद्वर (इसवृष्)। प्रवस्य न प्रिय राष्ट्रमी को बीटनेसका सर्वृत् केर टीकेंटर चन वन मानव विनदेश-महीत साम (सन १३ का ४ १ सम्बर्) । २ दुव देर (विते १६४)। पमस्य नि ["प्रशस्त] इद माराम् (१ १ १) । १ केरण समी वीर्णेशर माधिव जिसदेश-सामित *सारा*ण क

(विचार ४७३) : जिम विकिती र शीता ह्या परामृत यनिस्त (क्या पुर १ ३२) । २ परिचित (विसं १४७२)। प्य वि िस्सम् किते नित्रम धेवमी (मुपा २७६) । भाषाच िमानी एकस्थार का एक एका एक <del>शंका</del>पवि (प्रमा ६ २६६) । सत्तु र्यु [ शञ् ] १ भनवान् समिदनान का पिदा (सम १६)। २ तुप-विशेष (सङ्ग्राहिना १ x)। सेण प् ["मेन] र का भाषाव विरोप । २ मूक्तविरोप । ३ एक महनती राजा । ४ स्वनामस्थात एक दुलकर (राज) । ारि प्रतिरि भगरात् समन्तानमा का तिता (सम १३ 🗇 बिर्धना ध्ये [जीवन्दी] वज्रीनंबरेव (वपूछ जिभन नि [जातकरू] अय-साह (प्रश्

शिर्माएम । वि [जितन्त्रिय] चीचने को

श्चिम्बिम वर्गम स्टमेशना संबद्धी

भिन सर्काणी सेंबना यन्त्र **बे**ना। क

(जियन न [धाम] गूँबनाः पम्बन्धरुण (स

(जियन धी [मात्र] क्यर केटी (धीप

जिटह र्नुन [चे] बरहुक बेर निक्ट्येड्रिया-

(अधिम नि [मान] गुँपा ह्या (पाय) ।

इस्तल (परंद वर्ग २)।

(पडन १४ - ध्रोह ४ २०७)।

क्रिप(।ऋ (रूप) ।

2 () (

200) 1

1 (1)

विशंत (च ६१७)।

22 2XX) 1

बिक्स प्रविची बाल्या, प्रतिशी वैतन (सर

२ ररधे भी ६ प्रायु ११४ १६)।

कोज प कोड़ी संसार, सुनिया (सुर

ভিন্ন ডিবী খীর খব (মৃল্ভু ।)।

गासि वि विश्वादाम् । श्रीत है शोकीवावा

विजेता (मम्मत २१७) । सत्त पु शिक्षी

र्धकरिया का जानकार कुमय राज्यस

पहुर्दु ["प्रमु] जिल-देव महैत् देव (स्य १२ टी) । पाहिद्देर न ["प्रातिहार्य] विम-देव की प्रहेता-पूचक देव-इत मधोक **पुत्र ब्रारि ब्राठ बाह्य विमृतिय**ं व ये हें—१ मराष इस २ मुरन्त्व पुष्तन्तिः ३ विष्य भागि ४ पामर, १ सिहासन, ६ मामगदत ७ दुर्लुभिनाद, वस्त्र (रंस १) । पालिय पूं ["पाकिन] बम्स नगरी का निवासी एक स्रोहि-पुत्र (एगमा १ ३) । स्थवन विमन वित-पूर्ति जित-देव की प्रतिमा (पि पैका ७)। सङ्ग पूं ["सर] स्वताम--प्रसिद्ध एक पैन द्याचार्व दो मुप्रसिद्ध वैन चन्त्रकार धीहरिमद्र सूरि के गुद्र में (मार्थ १८)। सद् पू [सद्र] स्वनाय-प्रसिक वैन धानार्य ग्रीर ग्रन्थकार (मान ४)। भयण न भिमनी महैन मन्दिर (पंचव ४)। सय न [सन] देन दर्शन (पैचा ४) । साया की [<sup>\*</sup>सात्] वित-देव की बननी (सम १५१) । सुदा की ["सुद्रा] दिनदेव जिस तया से अपयोग्सर्प में यहते **हिं** उस तरह राधेर का विश्वास, धासन-विशेष (र्यका के) । यंत्र देखों व्यंत् (पुर ११ मुगा०६)। रक्तिवयपू [राह्यत] स्वनाम-क्यात एक सार्पनाह-पूत्र (छावा १ श्री विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विषय (मुपाब६) । यह की [वाच\_] जिल-देश की कासी (इह १)। वयन क ["क्यन] जिल-देव की माणी (ठर ६)। समयान ["बदन] जिनसेव का मुख (भीप) । बर पू िंबर् । सर्दन् देव (पडम \*१ ४° मनि १) J बरिंद पू विरुक्त पहुँच देव (का ७७१)। वहरू पू ["मञ्जम] स्वनाम-क्यात एक कैन द्यानार्यं और प्रसिद्धं स्वीत-नार (सङ्घप १७) । बसइ पू विपन प्रांत देव (राव)। सरहा भी "मिनियों जिन रेव की प्रस्प (भन १ १) । सामय न िशासनी दैन कर्रन (उत्त १०) सूस्र १ ३ ४)। हंस दू िंद्रेस (एक बैनवानार्थ (र ४७)। इर रेको चर (पदम ११ ६) गुगा १६१

देव का मन्दिर (पैचव ४)।

जिलोइ देखो जिलिइ' 'सन्दे बिलोबा मुर्खेंबब वैदा (पीड की ४८)। जिणक्रीय पु [जिनक्रस्पिम्] पैन पुनि का एक मेच (वेचा १० ६)। जिल्लाम (जयन) जय जीत (सण्)। जिलपद्द पुंक्तिनत्रमी एक देन बाचार्य (ৱাই) ৷ खिणित् पूं [जिनग्र] जिन भगवाम्, मह्त् देव (प्रामु ६२) । गिष्ठन ["गृह्] जिन मन्दिर (सुर ३ ७२) । चौर र्हु [ चन्द्र] जित-स्व (पउम ११ ११)। जिल्लाय नि [जित] पर्यमुक नसीइत (मुपा १२२ रवस २७)। जिजिसर रेडो विजेसर (सम्मत ७६/७७)। जिपिस्सर देशे जिपेसर (पंचा १६)। जिल्लास पूं[जिनात्तम] विन-देव (पवि ¥) I जिणेंद् रेखो जिणिद (नेप्स १)। जिलेस पू [जिनश] विन मध्यान, ध्यान बेग (मुपा २६)। जिणेसर पू [जिनश्वर] १ विन वेद धाईन्। देव (परम २,२६) । २ विक्रम की प्यारहरी शताब्दी क स्थनाम-स्थात एक प्रसिद्ध जैन माचार्व भीर प्रत्यकार (मूर १६ २३३) सार्थे ७६, ग्र ११) । जिल्ला वि [जीली] १ प्रथमा, वर्षर (इ. १ १२ चार ४६ प्रापू ७६) । २ पचा ह्या 'पिएले भौषलमचे' (इ.१.१२)। १ क्य दुरा (कह १) । सङ्घित्र [शेप्तिन्] ९ पुरस्य छेठ । २ घे डिपर से च्यूत (मार जिण्म (धर) देखो जिम्र = नित (पित) । जिण्यासा हो [प्रिज्ञासा] बानने की इच्छा (पंचा १)। खिण्डिम } (मा) देवो खिणिव (स्म)। जिएगारमचा 🕸 [ये] हुनाँ, हुन (पास) (हे \$ X4)1 जिण्डु वि [जिप्पु] १ जिल्हर, बीवतेशना महा)। इरिम पूर्विष्ये एक केन मूर्ति विजयी (प्रामा) । २ पुंच बुन्, सध्यत्र पोडन (रमण १४)। । ययण न [ीयदन] विन-(पउ४) । ३ विम्लु च्येष्ट्रन्तु । ४ मूर्वे स्टिं। ४ इन्द्र चेत्र-मायह (द्वे २, ७१) ।

क्रिल देखो क्रिअ = जित (महा) सुपा ३६४८ 441) 1 जिच्छि ) वि [यापत् ] विदय (है २ जिचिछ । १२६ पर्) जित्तुछ (पर) उसर देखो (हुमा) । क्षिय (मप) म [यमा] असे जिस तरह से (k x x f) 1 जिल्ल देशो किएम (सुपा ६)। जिसासिय वि [जिज्ञामित] बातने के निए इष्ट जानने के लिए चाइत हुमा (शास ७४)। जिमुद्वार पूँ [जीवोद्धार ] पूरले धीर हुटे-कुरे मन्दिर बादि को सुवारता (तुवा व १)। जिक्स पू [जि**ह**] एक नरक-स्थान (स्वेन्द्र रः २६) । दिक्या की -[जिह्या] कीम रसना (पएह २, १ क्य १ व ६ हो)। किरिमेटिय व [जिह्रदेन्द्रिय] रतनेट्रिय णीम (स्र ४२)। जिक्सिया 🛍 [जिहिषका] १ भीम । २ भीम क माकारवाली चीन (व ४)। जिम सक [जिम्, मुज् ] कोमना भोजन करता चानाः जिसइ (हे४ ११ वड्)। जिम (मप) देखो जिम (पड भवि)। जिसण न जिसन भोजन] जीमन मोजन (या १६: विस १६) । जिसज न [जेसन] जिसला, मौब (मर्गीव **₩** } i विज्ञासभावि [विसिव, सुक्त] १ विवरे भोजन किया हुमा हो बहु (पडम १ १२७ पुष्त १६८ महा)। २ जो बाशा यदा हो वह भीता (दे ६, ४६)। जिल्म देवो (जैन = त्रियः) त्रिस्मदः (१४४ २३)। जिन्द पूं [जिहा ] १ मेन-विशेष जिसके बरमने ने प्रायः एक वर्षे तक जनीन में विक-नामन चर्ना है (ठा ४ ४--वन २७ )। २ वि. कुण्यि कप्रयो मालाको (सम ७१) । ३ मन्द, संत्र (अं१)। ४ न- मावा काट (पर १)। जिम्ह न जिम्ही दुरिनश पत्रता माश कार (तम ७१) ।

जिब देवो जीव: 'भागद गई ग्रीगुमी नामना !

जिलों ) (सप) केशो लिए (कुमा पर के

जीक देवो कीय = भीव । भीवद (या १२४

केर र तो । एक उदीक्रीत हिंदे १२

विकारेको क्रीब मणीय (परुष) । १ पानी

क्ला विवद्या तम्पं (वर्षेवि १)।

for ( v 310):

म्ब ११)।

थल (से २. ७)।

जिला देवी सीचा (पर )।

श्रीका वैजो की बिल (है १२४१ प्राप्त) प्र ٦, २६ ) ١ क्रीश न जिलि देशाचार, जिल्ला प्रवास्ति (ब्रीफ राम्८ संग ४३)। २ प्रामन्ति है सम्बन्ध रखनेनाता एक तेरह का रिवाब कैन नहीं में इस्त रिविये किन तरह के प्राथिकों का परम्परायत याकार (हा है, २) । ३ धाचार-विशेष का प्रक्रियक धन्य (ठा १ २ वर्ष १)। ४ मर्थांदा, स्पिति मनरना (हिरि)। कृष्य पु विक्रया है परस्परा से धायत भाषार । २ परस्पराकत मानार ना प्रतिपादक प्रत्य (पेचा ६. भीत)। रुप्पिय वि विकस्पिकी बीत करावाला (क्ष १)। घरनि घिरी ध्याचार विकेष का बावकार । २ स्वना<del>श क्</del>वाड एक वैनावार्थं (संदि) । वक्दार पु क्यिबहार] परम्बरा के अनुसार व्यवहार (वर्ग रु पेका १६)। जीकाण देखो जीवन्य (बार-वित २१ ) । अधिभव वि चिनित्तवत | वीवितवता मोप्त जीवनवाचा (पण्ड ११)। जीआ की [क्वा] १ क्यूप की और (दूमा) । २ दुनियो मृथि । ३ मादा जननी (ह २, ११४: पर्)। अधिय न दि अधिन विल स्टबरी पीठ पर विद्याना नाता चर्ममन मासन (पन वर्ष)। जीम्अ र् जिस्ति १ में वर्ष (पान गडर) । २ मेल-निरीय जिल्ले बरवने हे नमीन दश नर्पतक विकरी रहती है (# Y Y) I जीर केदो बार=मृ।

पाइअस**इसइ** एक्ट्रो जीरण गणिती र मन्तराकः। २ वि पराना, पचा हमा' 'सजीरता' (वित २७)। कीरच न जितिको बीस प्रसम्बद्धनीकोच (सर १ २२)। कीरथ सक जिरिया प्रमानाः भीरवद (52 355) जीवमक [कीस्] १ वीना प्रका वास्स्य करता। २ सके प्राथम करता। जीवड (दमा)। भक्त जीर्यंत जीवमाण (विपा १ १ रू एप ७२व टी) । हेब्र सीबिर्ड (बाबा)। संक्रकोधिक (शद)। इ.सीधिकका कीविपाका (सुध १ ७)। प्रको जीवलेखि (fr xxx) i किम पूर्व किमि १ सप्रमा केवन प्राक्षी (ठा १ १३ वी १३ सपा २३४) 'श्रीबाई' (पि १९७)। २ जीवन, प्रास्त-नारस 'बीबोचि कीवर्स पाछकारतं कीविर्यस<u>ि</u> पण्यामा (विसे ३६ ८० वाम १) । ३ पूं. ब्रहस्पति म्र-पुर (तुपा १ व)। ४ वय पणम्म (मा२ t): १ देशो क्रीस = बीप। कास प्रक्रियो बीवन्तरि भी<del>य-प्रमूह (सूच र ११)।</del> साम्रहन िमाइ] विन्दे को पकवना (सावा १ २)। णिकाय व िनिकायी बीव-परित (स्र ६)। स्विकास व िस्तिकासी जीव समूह, नीन-राति (बन १९४) बालु) । इस वि दिया भौतित क्षेत्रका (सम १)। दमा भी दिया । प्राति समा दुःशो नीव का बुच्च से स्वरूप (महाति न)। "देव पू विवी स्तराम-काठ प्रसिद्ध वैश दावार्य नीर प्रवकार (धुपा १)। पद्मसं <u>प</u>ु भिवेशकी व वित्तम प्रदेश में ही बीच की रिवरित मी माननेशाचा एक वैशासास धार्ट-भिक (राष)। पद्मिय प्रविश्वकी देवो पूर्वीच्छ सर्वे (झ ७) । स्रोग "स्रोय 1 [सेक] १ वीक-वारि, प्राशि-बीक बीन-समूह (बहा)। विजय व विजयी

बीन के स्ववंत का विकास (चाव)। विभाषा

की ["विभक्ति] बीव का घेर (उत्त १६)।

"दुव्हिय न ["वृद्धिक] सनुत्रा, संगति,

मञ्जनित (स्त्रीय)।

जीव न जिल्ली सात दिन का बच्चार क्रमास (संबोध १०)। विसिद्ध व विशिष्ट वही धर्म (संदोष १०) । कीवंजीय वे जिल्लाची र बीवन्य पान-पराक्रम (भग र, १)। २ वकोर-पदी क्कवा (स्तर)। जीवंत को जीव = बीव । मुक्क वे सिंखी बीवनानः बीवत-शरा में ही संगार-शन्त है मुक्त सङ्गरमा (धन्द्र ४७)। कीकरा पु जिलाको १ पक्षि-पिरीप (ज इ.स.) । २ तुप-विशेष (शिला) । जीवजीवरा द जीवजीवकी वनोर स्वी<sub>र</sub> बक्ता (पर्स्ट १ १ — यह हो । सीयण न [सीयन] १ बीता विन्सी (लि ११२१३ पटन द २४ )।२ तीमा, धावीविका (स. २२७- ३१)। ३ Rs विमानेनामा (एव)। "विस्ति की "वृत्ति] सामीविका (क्य २६४ दी) ह बीवमळीव व जिवाजीवी वेका बीर वर्र पदार्थ (भावन) । प्रीतनमुक्त केवी क्रीबंद-मुक्क (उनर १११)। बीपयमङ् की दि ] मुन्ने के धारपंड के तावत-मृत व्याव-मृती (दे ६ ४५)। जीवाकी [जीवा] १ क्लूप की डोग्रे (व ३ ४)। र बीवन बीना (विसे ३१२१)। ३ क्षेत्र ना विश्वय-विशेष (सर्व १४)। क पाउ पूँ जिलाहाँ | किलानेवाका चीनक बीवनीयव (धुमा)। जीवावित्र वि [जीवित] जिलावा हुन्म (<sup>हर</sup> **⇒६** 8) i जीवि रि [बीरिम] बोनेवामा (य २४०)। जीविश्र पि [जीवित] १ वो निमासे <sup>।</sup> र न बौधित बौबन, बिल्बी (हें रे<sup>ड्ड</sup>रें) माम)। भाइ पु [ नाम ] मारा-पर्ण (बुग १११) । रिसिम 🖷 [रिसिम] बनस्यकि-विकेष (पहल १—नभ १६)। कीविमा की जिलिका १ धारीविका निर्माह-सामक द्वारा (ठा४ २; स<sup>२१४</sup> खाया १ १) । र्जाविमोसविय वि [जीवितोस्सविक] जीवन में अध्यन के तुम्ब, जीवतीरतव <sup>क</sup> बनान (बन १, १३) धम)।

चीविजोसासिय वि [साविदोच्छवासिक] श्रीयन की बढ़ानेवासा (सब १ १६)। कीविया देवो श्रीविधा (स २१८)। जीह एक [ छरञ् ] धवा करना करमाना। बीइद (है ४१३ पर) । जीहा भी [ जिह्ना ] भीम, रसना (माना स्तप्त ७α)। छ वि [यस् ] बस्वी चीमवाला (पटम ७ १२ लिम **स**र २ १२)। चीहाविश्र वि [छिखात] तमा-पुष्प किया गमा सवामा क्या (कुमा)। जु देशो जुज (दुमा) । क्वड जुव्वंत (सम्म १ ७ सं १२ ८७)। ज़ की [युम्] तहार, प्रव कृति वारिमर बेध्यद (विदे ६ १६)। ज्ञ च [बे] निरुपय-सूचक सम्मय (सा ४) । अनुस्र देखो <u>अपू</u>ग (धे १२ १ । १४० पण्ड ११)। ६ द्वान चौड़ा छनय (पिन सुर २,१२ गुपा १६)। उद्यक्ष वि सित्री पुरुष शंकान, संबित्त (वे १ दशसुर ४ १४)। जुल देवी जुब (बा २२० कुमा धुर २ tww) I अपन की [युवित] दरकी अवात की (बरहा कुमा)। अन्तर्भमुक (वप) व [युवयुव] कृत-पूरा ब्रह्मपुन्यसम्बद्धाः स्थापना (१४४ ४२२)। .क्टबल दि] **वेको** सुमन्त=(१) (वर्)। जुञ्जलद्भ पूर्वानद्भ व्योक्ति प्रस्ति एक बोन जिसमें बैत के की पर रखे हुए हुन-चुमाना चुमाठनी तपहचना सीर सूर्व त्तवा नश्चन सनस्कित होते हैं नह बोन (सुक १२--पण २३६)। सुसय न [युनक] पूरा प्रयन (रे ७ ७३)। जुआरक न [पीतराज्य ] पुरस्य का बाद या पर, पुनरापन (स २६०)।

मुज्ञक (युगस्त्र] १ कृप्म चोड़ा चमय (पाम)। २ वे दो पद्य जिल्हा सक्युक बूसरे से सामेदा हो (या १४) । खुमछ र्रु दि] दुवा, वक्त जवान (दे \$ 80) 1

जुमछित्र वि दि] प्रिपृणित (वे वे ४७)। ज्ञानिय देवो जुगन्निय (ए।मा १ १)। सम्बद्धी की स्मिकी दूरम बोहा (प्राइ १८)। जुडाज रेको जुडाज (गा ५७ २४६)। <u>ज</u>ुआरि भी [दे] कुपारि, धल-विधेप (सुपा प्रथम्। सूर १ ७१) । जा की चिति किन्ति देव प्रकार, जनक (बीप भीव १)। स, संख वि [ सम् ] केशस्त्री, प्रकारताली (स ६४१ पटम १ २ १४६) ।

जुड़ की [यृति] संयोग युक्ता (ठा ३ ३)। क्षुइ पू [युशिस्] स्वनाम क्याल एक वैन मुनि (यउम १२ १७)। जुईम वि [धुविमत्] देवस्यी (सूप १

बुबच्य धक [अुगुप्स्] एखा करना निम्हाकरसा। भूरण्यह (हे ४ ४ पर् सं X, X) I

जुडिकाय वि [जुगुप्रिसस ] निर्मित (पिन्४)। अधिय नि दि । नाति वर्गमा राधेर से हीत विसको सन्यास देते का बैत राजों में नियेष है (पुष्क १२१)।

जुंगिय वि दि] १ काटा हुवा (पिर १४१)। २ बूबित (सिरि २२३)। र्शुज सक [युक्] भोड़ना पुक करना। चुनद (६४१६) । मझ अनुवित (योच

422) I सुज्ञणन [योजन] बोइना पुक्त करना किसी कर्म में सवान्त्र (सम १६)। शुंजपया ∤ की [योजना] १ अनर देशो र्जुबणा <sup>)</sup> (मीप छा ७)। २ क्रस्ट-विरोप---मन बचन घोर शरीर का व्यापाछ 'मणुब

मजन्ममनिरिमा पलस्मिन्। वृत्रसाकरस् (विसे ११६)। सुंबम [वे] वेबो शुंचुमय (सर ११०)।

भुजिल वि वि दुरुषित भूवा (सामा १ १—गम ६६: ६८ दो) ।

जुंजुमय न [दे] इच कुछ-बिरोध एक प्रकार नी इस्त्री जास जिसको पशुचान से चाते 🥻 (स ४८७) ।

<u>जुंजुस्ड वि [दे]</u> परिष्यु-रहित (दे ३ ४७)। जुरा पूर् [सूरा] १ कास-विशेष-सरप, वेंदा इत्तरधीर कसिये चारपूर (कुमा)। २ पाचवर्षकाकात (ठा२ ४----पत्र **८६** सम ७६)। ६ न चार हाव का सुप (सीपः पर्याः ४)। ४ शक्टकाएक घैग भूर, गाड़ी या हक चींचने के समय की बैसों के कुम्बे पर रहते वाते हैं (उस दू १६१ उस २)। ५ भार हाव का परिमाण (प्रपू)। ६ रेको सुञ = पूम । प्यवर वि [ प्रवर] पूत-चें हु (भग)। प्पद्दाण वि [भिषान] १ दूप-म ह (रंगा) । २ प्रै फूग-म ह वैन **बाबार्य की एक उपादि (पर २६४ दुर** १)। बाहुपू बाहु १ विदेह वर्ष में क्रपन स्वनाम-प्रसिद्ध एक जिनदेव (विपा २ १)। २ निषेद्व नर्पका एक नि बर्गविपित समा (बाजु ४)। १ मिनिसा काएक राजा(दिल्क)। ४ वि मूप याचीना की श्रेष्ट् कम्बा हाववाका, धैर्व-बाहु (ठा १)। मच्छ पू ["मत्स्य] की एक कादि (विपा १ व—पत्र वक्ष टी) संघ**च्छा**र 🖠 ["संवरसर] वर्ष-विशेष (ठा ४, ६)। जुर्गंतर व [युगाम्तर] सूप-परिमित चूमि-माम, भार हाव वामीन (पर्राह २,१)। पक्षेत्रणा भी ["प्रक्रोकना] काते समय चार हाम वसीन तक इष्टि रवदना (सप)। नुर्गावर म [मुरान्थर] १ गामी का काह निरोप, रास्ट का एक सबसव (वं १)। २ पुँ विषेत् वर्षे में सरपद्म एक जिल-केन (साबू रे)।३ एक थैन सुनि (पतम २ १∉)। ४ एक मैन भाषायें (पाषय) ।

लुगस्र न [बुगस्र] सुग्म कोड़ा समय (संसू

च्य)। जुगसि वि [मुगजिन्] बी-पुश्य के कुम का

से उत्पन्न होनेवाचा (रयस १२)।

नुगसिय वि [युगसिय] १ कुम-पुट इन् सहित (नीम ६)।२ दुरम का छेस्बित (चन)।

जुनव वि [मुनवन् ] समय के प्रपद्वत से वर्षित (बलुः राम)।

सुगर } म [पुगपत्] एक ही साव सुगर्व } एक ही सबये में कारएकझ-

<b>1</b> 50	पाइश्रसदमहण्यको	सुरा <b>च्य</b> —कुसिब
विभागो शैनपवासास पुननवामीति' (विशे १९६ शै गीत)। द्वराष्ट्रको स्टेटच्या । सुरुक्ता (हे ४	के किए एक इसरे से भीका हुमा। 'मुहरेसि तम मुद्रका चुकिया तह साम्प्रापि सार्द्धि'	े समहा देवो कव्या (सवा ११७) ।
४)। द्वरान्स्रक्या दे [द्वराप्सा] क्या द्वरान्स्रा विस्तार (व १६७ म्राम)।	(रुप करंद दी)। जुण्म वि [दे] विरुच निपुष्ठ दश्च (दे ६ ४७)।	जुम्म न [युग्म] १ ब्रुप्त, दोनों, स्मा(१ २ ६२) ब्रुमा)। २ द्वं सन एडिए (योन ४ ण्डाका ४ ३पन १९७)। प्रास्थिय
जुरान्यस्य वि [जुराप्तित] चीछतः निर्मितः (कुमा)। अस्मा न [सुस्य] १ नवल, ससी वनेष्य बल	ञ्जुष्ण वि [जीर्ज] बूता वृत्तना (हे १ १ २) ना १९४)। जुष्पदुरम व [बीर्जदुर्ग] नगर-विशेष को	वि [पादेशिक] एम एंदर प्रदेशों के किन्त (भग २४, ४)। जुम्म म [सुम्म] परस्पर तालेब से का
(माना)। २ तिर्मिता पुरसन्तान (तुम २, २: वं २)। ३ नीत्व देत में प्रसिक्त को तुम का तत्वान्त्रीय सत्तिकातिकातिकातिकातिकातिकातिकात्तिकातिकातिकातिकातिकातिकातिकातिकातिकातिका	भावकत श्री 'ब्रुनायड नाम से प्रतिख है (से २)। जुण्ड वैची जोण्ड् = क्वीरस्न (सुन्न १६)।	(सिरि १९१)। सुम्ह" च [पुष्पन् ] विद्येष दुश्य का गाल सर्वेताम "बुम्बूबस्वपद्ध" (हू १ २१९)। सुद्धिक वि [ब्रे] ब्ह्नून, निवेद सन्द्र
मरत प्रार्थः । १ फार-शाहकः (छा ४ १)। त्यरियाः ।रियाः की ["प्यर्थ] नाहन की मंति (छा ४ १—यव १३१)।	सुण्डा क्ये [क्योत्स्ता] चांक्शी चित्रका चन्त्र का प्रकारा (पुगा १२१ सरह)। सुच सक [युक्त्य] बोठना। संक्र सुन्तिचा (ती १४)।	"पुरुष्यिकानरल" (दे र ४७)। सुद्र पुँ [पुष्प] बनान तस्य (दुव्य)। राज पुँ [राज] नहीं का नारिन (स्वर)-
सुमा वि [योग्य] सायक अवित (विधे १९६२: वं ६१ प्रानु १६: दुमा) । सुगा व [युग्म] दुक्त इन्त सम्ब (दुमा)	अनुष्य वि [युक्त] १ संकत च्यावत, कोस्य (छासा ११६ यंवर )। २ संयुक्त, जोहा इसा सिका हुसा संबद्ध (युस १ १)	विकारी) राजकुमार, मानी राजा (पुर ६ १७१, प्रति =२) । जुबह की [सुवित] तस्सी वनल के(ह
मध्यः मात्।। जुळ्यं देवी सुंजः। दुष्यः (हे ४ १ ६ वद्)। जुळ्यं देवी सुः।	शाकु)। १ तमार किसी कर्न में क्या हुमा (पन ९४)। ४ सहित सम्बन्द (सुम्र १ १ १ माना)। स्थिककान [संस्थेय]	र ४० बीच परण प्राप्तू २३: कुमा)। जुलैंगर दें [पुत्राय] तच्या वेद (बाण ६ ४९)। जुलरव्य व चिनियास्य] १ दुरग्रवण (स
सुम्म एक [युध्] बहार करना, बहुता। बुम्मद (हे ४ २१७ पर्) । बहु- जुनमंत्र सुम्ममाण (युर १ २२२) १ ४१) । बहु-	सक्या-क्रियेप (राम ४ ७४) । अचार्यंतम पूर्व [तुष्मतन्त्रक] क्षत्रतः विदेश (सञ्च २६४) ।	२११ टी: मुर १६ (१७)। २ एका है मरने पर कब तक पुत्रसम्बद्धाः का स्वस्थिति न हुमाही सक्तक का स्वयं (साच्य ६ ६
कुम्मिचा (ठा १ २)। प्रतो पुरुमानेद (महा) । नद्र सुरुमानेत (महा)। क जुरमायसम्ब (ध्य द २२१)।	जुलासंकेळाय केवा जुलासंकिळा (ध्यूप ११४)। जुलिकी [जुलि] १ नोम योजन, बोड़ बंगेम (धीमा छाया ११)। १ न्याम	<ol> <li>१ एका के माने पर और पुक्तन के राज्यान्त्रिक हो कही पर भी वक्तक हुने पुक्तक की निमृद्धिन हुई हो क्काक का</li> </ol>
जुडम्ह न [युद्ध] नदाई, संवास समर (जावा र : दुना, कप्पूरा १ ६४)। इत्युद्ध न [ोतियुद्ध] महसूद्ध, पुक्तों को स्थूतर नकामों में एक क्या (भीत)।	पंपात (का ११० प्रामु ६३) : ३ धावन हेर्दु (तूम १ ३ १) । व्यानि [क] प्रक्रिया बाक्सर (भीप) । सार्वानि	एस (स्त् १)। सुरुक केरो सुतक (स ४००) परम १५ ११)।
मुक्तमस्य न [कोघन] द्वत सदाई (पुता: १२७)।	्यार] बुक्त-प्रवात पुक्त, व्याप-प्रवत   प्रमाश-पुक्त (स्य ७२८ दी) । सुवक्य व [सुवणे] वतावटी सोना (ब्य १ ३३) ।	जुनसिय केवो सुनाक्षिय (वयः वीप) । जुनाम केवो सुन (पतन क १४६८ छान्। १ ११ कुमा) ।
श्रुमिक्तम वि सुद्ध र बहा हुमा, दिस्ते वेपास विया हो बहु (वे १४, १४) । २ त इ.स. बहाई, वेहाम (ध १९६) । सुद्ध वि सुद्ध वेदित (प्रामा) ।	सभ्य पुरुषण   ऐरन्द्र वर्ष के ब्रष्टम वित-देन (बस १६६)।	ञ्चनाणी रेको जुगइ (१३म व, १०४)। गुरुवण } देको खारुवण (शहू ४६- जुरुवणच ∫ ११६)। एकतं निम नवर्ष 'यसो दुमरतकुरुवलाई' (दुगा २४३)।

बादः 'बुतिस्तुरंतमार्खं' (सुरा ७७) ।

नुब देशो जुग्म=इड (दुमा)।

नुस देवो जुष्य (तुर १ २४४)

जुसिम नि [कुए] हेनित पाएए दे बोगी

क्षमारिषु परिचित् व बुद्धित्वा (अ Y

8) (

सुद्ध नि [सुद्ध] वेनित (प्रामा) ।

नेति (गोवि १३३)।

तुद्ध व [रे] कुठ थळता 'सा दुद्ध तुर्थ कुद्ध'

जुद्दिद्विर—जेच दुविद्विर ) केवो जिदिद्विक (रिया स्व सुविद्वित ) वश्य दी एगया १ १६— सुदिद्वित । यत्र २ द २२६) । सुदू एक [हूं] १ देना धर्पण करना। २ हबन करना होम करना । पृष्टुणामि (ठा ७--पण १८१ वि र १)। अरूअन [स्तुत] भूषा प्त (पाप)। स्ट पि [ कर] पुषाध पुष का सिमानी (सुपा १२२)। नार वि किरो वही पूर्वीक सर्व (ग्रामा ११६)। कारि वि विशासिन्] पुषारी (महा)। देखि से [किदि] च्छ-क्षेक् (रवण ४८)। श्रष्टम न [सङ्क] पूर्वा दोसने का स्वान (राम) । क्रिकि देखी देखि (सस्य ४७)। ञ्चल पू जिया है जुमा हुर, गाड़ी का घरश्व-विरोप जो बेतों के कन्ये पर काता जाता है, बुधक् (उगद्ध १६६)। २ स्वस्य विरोध 'बूप्पनइस्ते भूतव सङ्ख्ते च उत्तरवेहें (कृप्प)। 🤻 सक्र-स्तम्म (व 🐧 🕽) । 😮 एक महापातास- 🕸 क्सरा (पव २०२)। ज्ञाभ पूँ [दे] बाउक पश्ची (दे १ ४७)। अनुभगर् [स्पर्क] देवी अनुभ चयुप (सम wt) 1 स्त्रा पु [सूपक] सन्या की प्रमा चीर कन्त्र की प्रमाक्त मिमला (ठा१)। ज्ञाकी [यूध] र पूर्ण भीतर, भागत हुइ ! की-विदेष (बी १६)। २ परिमाण-विदेश, याठ विशा का एक नाप (ठा ६ इक)। सेकायर वि [शस्यातर] प्रशामी को स्वाम क्षेत्राता (मन १६) । अपूजार वि [ब्यूनकार] बुधारी बुध का स्रेताकी (रेना मनि तुपा ४ )। अवारि ) वि [पुनस्तरिम्] पूर्वा सेतरे-जुआरिश<sup>5</sup> शता, पुए का केपाड़ी (इ.४६ ४वटा स ११ )। ज्य देनो जुग्म = पुर्। इ सूम्तियवत्(विरि <sub>।</sub> ₹ **२**१)। जुह र् [जूर] दुराम नेश-समार (६४ ५४३ वरि)। सूय व [सूप] सफतार ध. रिनों का कावात

(संबोध १८)।

खूयय ३ ५ [थूपऋ] शुक्तपत्र की दितीया ज्या 🕽 मार्डितीन विभी में होती अन्य की कता चौर चैन्या के प्रकात का मिभग्र (मण् १२ ३ पव २६ ८)। च्या सक गिर्दे निशा करन्य । कूर्रति (सूप २२ दर्भा अर्रमकिष्यीकोवकरतापुरसाकरता। ब्रुख (हे ४ ११२ वर् )। सुर पड़ स्तिश्रीचेद हरना घरसोम हरत। बुर्व्य (हे ४ १६२ पत्र )। बुर (हुमा)। भनि पूर्विहरू (हे २ ११३) । यह-ज्रत (हे २ ११६)। मूरमह[सूर]१ भूरता मूबता।२ सक वय करना दिसा करना (राज)। खुरणन[सूरत] १ शुक्रमा मूरुगा। २ निन्धा पर्देश (राज)। जूरव धर [वस्क्] ठक्ता वैक्या। बुला (हे ४ ११) । जूरपण वि विद्यान् । उन्होनावा (हमा) । मूराबग न [सूरण] भूयना शोपछ (भव ₹ **२**}। स्पवित्र वि [क्षेत्रित] हुव किया ह्या कौषित (दुमा) । जुरिस वि शिक्षा केश्वास (पाम) : मूर्यम्मस्य वि चि न्यून निवित्र शास्त्र ( R & YO) 1 मूछ देवी सूर = कुन्। बूस (ना ११४)। अपूप देवी सूझ = धूत (ग्रावा १ २ — पत **ब्**ष } रेजो जूध⊭पूर (स्कार भूषेय ( १)। जूम केलो सूच (ठा२ १४ कप्प)। ज्ञान पूर्व दिए । भूस भूत वर्षे एक का नवास मधी (भीष १४७) हा ६ १)। अपूसम वि [दे] क्रीक्षत कॅना हुवा (वह् )। जूमगा भी [जापगा] सेवा (क्य) । मुसिय वि [जुन्न] १ देवित (ठा२ १)। रे द्वपित सीखं (कप्र)। जूदन [यूय] समूज्यस्था (ठा१ वा १४८)। यह पु ["पति] सपूर् ना सपि

पीत पूर्व का नायक (न ६,६४ छ। बाह

पूर्वोक्त ही बर्च (सा १४०)। हिस्स र् ["विपति] यूप-गायक (क्त ११)। जुद्द न [यूथ] यूग्म यूमन जोड़ा (घाचा २, ११२)। काम न विद्यमी नगतार चार दिनों का उपबास (संबोध ४०)। जुहिय वि[युधेक] यूव में उत्पन्न (पाका सुब्रियठा म म [स्थितस्थान] विवाह-अएडप बानी जनह(माचार ११२)। जुहिया भी [बूबिका] वता-विरोप पृही का पड़ (पएए १) पतम १३ ७१)। जुही भी युर्थ। नता-विशेष मावनी नता (दुमा) । लेब १ पार-पूर्णि में प्रयुक्त किया जाता भव्यय (हे २ २१७) । २ ध्रश्रवारण-मूचक धम्मय (उप)। जेज वि जिये जीवने मौग्म (दिनम १८)। क्रेक्स विक्तियु वित्रवासा (सूम १३१ 2 2 3 2 3) I लंड वि जिल्ली चौतनेवासा, विमेता (मय 8 8)1 जेहमान जेपं देखो जिए। = मि । जेत्रण जेबार पू [जयकार] 'चय-जम' पाताब स्तुति 'हुति देवास जेल्लारो' (या ११२) । जेटू देशो ब्रिट्ट = व्येष्ठ (दूर १७२४ महाऽ बना) । जेट्ट देवाँ जिट्ट = ग्यैष्ठ (महा)। जहाँकी जिहा (धन व बादू ४)। मूछ पूर्विस्ड] के मास (भीप छापा र १६)। मुख्य की "मुखी बेठ मास की पूर्णिमा (नुज्ञ 🕻 ) : जट्टामूख ध्ये [स्पष्टामूक्षी] १ वेड मास की

"पत्र २३३) : बोज स्ट [पोद्यम्] बोइन्ड दुद कला। भोएड (महा) । यह जोड्यम्य जोएअस्य जोसणिय बायणिख्य (का ४६६) स

५६ ३ मीता निष् १)। कोश्चर्ष कि रे क्ला क्लामा (देव ४०)। २ पूरम पूरम (शादा १ १ टी--पद ¥4): खोश के को कोग (पनि २६८ स १९१) कुमा)। **बड**य म विश्वक**ि पूर्ण-विरो**य पाचक वर्ण, शावना (स २६२)।

जार्मगण (दे) देवो जोद्रगण (मॉब) I बोजग दि [दोत्र ही १ प्रकारनेवासा २ त म्पान्त्रसा-प्रसिद्ध निपात वदेख पर (विसे ₹ **३**) : जोअड र् दि चयोत कीट-विशेष पुरुष् आंभण न [दे] नोपन नेव पहु, ग्रीब

(**₹ 5 %** ) | बोळल न [थोजन] १ परिमाल-विहोद चार कोरा (बद इरु) । २ धंकक संयोग की हुना (**पदा** t t): क्रोमज न [बीयन] पुरानत्वा, तस्कृता बनानी (दर १४२ दी) गा ११७) । जोजजा 🕸 [योजना] बोइना संबोद करता (का इ. १२१)। को आर और [यो] १ लाई। १ प्रकार (**प** x ) t कोमापदत्तु दि [योजयिष्ट्र] नोइनैनासा संयुक्त करनेवाला (ठा ४ ३)। को इ वि [यागित] १ दुन, संयोगवाला ।

ओइस = न्दोतिस । कोइअ प दि कीर-विशेष सर्वात, प्रश्री पन्दीजना (दे ६ १)। कोइल वि[इष] देवा इष्यः विमोधिक (इर ३ १७३) सदस्य ग्रीत) । भोइल दि [योजित] कोहा इ<sup>या (द</sup> REY) I कोइञ देवो जागिय (धन)। कोईराण पू हि | कोट-विरोध, इन्द्र-नीर (व कोइक कुर [ब्योतियक] प्रधीप ग्राप्ति हरी। शक परार्थ कि बुरस्य रंग्स्साञ्चिक्ये बार्डा वरं बनेबीयवि' (रेमा) । बोइस्ल वृद्धि श्योतिष्क्री र प्रधेन शील (दे ६ ४ रॅं पर ४ वर्षण)। २ प्रचैर धारिका प्रकारा (भोव ६६३)। कोइजी की [योगिनी] । बोक्नी वन्तर-सिनी। २ एक प्रकार की देशी में चीतक हैं (बीचि ११)। चोइर वि चिं]स्वतित (वे वे ४८)। बोइस न दिं| म्बन (रे**१** ४९)। कोन्स देवी सोइ = क्योतिस् (वेर १४ वर्णः विके इंदर । को १० छ ६) । सर्व ["शक] रशूर्य। रभक (सुम २ ३१)। २ वित-निरोच करनेवाला, धमाबि लयूने स्मिन हूं [किय] पूर्व साथि देव (उठ कला। ६ ई. मुनि बटि, शबु (सुरा २१६) 84) i

६ ভাৰ । ৬ খাৰ-ৰুক্ত। দ মৰিফি-যুক্ত।

₹ शकर्म-कारक (ठा४ ३) । १ सर्वे।

११ ग्रह नपैछह का विमान (यव)। १२

क्योतिप-शाक्ष (निर १ १) । और <u>१</u>

िश्च क्रिक्त का काम करमेवाना नस-

इन्द्र-विशेष (ठा१)। रसन [रिस]

यन की एक नाति (छाना **१**१)। देखे

जेवें (धप) वेबी जिमें (है ४ ३६७)। नेवड (मा) देवी असिम (इ.४.४ ७)। क्षेत्रव (डी) देवी एव ≠ एव (सि. नाट)। बेह (सप) वि [ मादस ] वेशा (हे ४ ४ २ पद)। जहिस र् जिहिस् स्थान प्याद एक वैन दुनि (द्रप्प) । ) धर दिरा विकास कोइ (सल्स) । बोम रे एस है कित्र नंबर पूरे नुपूर बेए' (मुर १ १२६) । बोबंदि (स ३६१)। नमें भोरका (स्टल ६२)। नहा. जोशंत (बम्ब ११ दी मदा मुर १ २४४)। नवर भाइजीत (मृता १७)। र्ष [ सुन् ] प्रशासित होता, चन-

(पत्रम १ व वर)।

(भूपा ३०३ मधि)।

असपम 🕽 ८ चीप) ।

'कम्पा" (दे ६ ४८)।

(धन ११ रेग)।

¥ 2 41) 1 जेयस्य देशो जिल्ल = वि ।

₹♥) (

जेम (मप) च यिया किने जिस तरक है

जेसम ∤न [केसन] जीमन क्रोकन (योज

जेमण्यन 👣 स्थिए श्रेम, प्रश्लाती वें

नेमणी भी जिसनी शीमत (संबोध

जमारण न [केमन] भीवन कराना विसादा

रोमापिय वि जिमित् मोवित क्यिको

मीजन करावा दवा हो वह (उप १३६ टी)।

जमिय वि जिमित्री भीमा इया किसी

अन्त (सी) देको एव = एव (र्गास्प्यू)।

श्रोजन किया हो कह (शाया १ १--नव

कोग देवो जुग्ग=पुग्म सपाउमानीग सोइस थूं [क्योतिय] १ देवों की एक बाति भूमें, चन्द्र ग्रह् मानि (कृप्पः ग्रीपः वंड २७)। २ न सूर्यभाविका विमान (ति १२ को १)। ३ शास-विशेष क्योपिय-शास (उत्त २)।४ सूर्वे झादिकाचका ६ सूर्वे साहि का मार्च भाकारा जिल्हा जारसम्मि चार बरंधि' (पर्छ ६)। कोइस र् [बबीतिय] १ सूर्वं चला मारि देवीं की एक वादि (कप्प पैकार)। र वि क्योतिय साझ का भागकार जीतियी (बुता १४६)। जोइमित्र वि [स्पीतिपिक] र स्पोतिप शास का जाता। देवस भोतियी (स २२ नुर४१ मुगा२३)।२ मूर्यंचन धाति अवोक्तिक देव (मीत जी २४ पर्या २)। राष पुं[ैराज] १ सूर्व स्वि। २ चन्द्रमा (पएए २)। सोट्सिंद र् [स्पोतिरिन्द्र] १ पूर्व रिन। २ भन्त्र चनामा (ठा६)। जोइसिय पु [क्षीस्त] गुन्त पत्त (वो जोइसिया हो [स्पोसना] चन्त्र की प्रमा चरिता चौकी (ठा२४)। पक्ता प्रै पिश्ची हुक्त पन (वेद १६)। मा की [मा] चन्द्र की एक ग्रंप-महिपी (मन १ १)। कोइसिया की क्योतियों देश-किरोप (पएए १७--पत्र ४११)। लोइ की दि] विषुद्ध निवती (दे १ ४८ यह)। जोइरस देवो जोइ-रस (इन्यः बोद ३)। कोईस प् [योगीश] योगील गौण-सब (8 t) t जोईसर पूर्णिगीधर] अपर देखी (मुत्त दश रक्त ६)। जारकण्य न [बीगकर्तर] गोन-विरोप (पुत्र १ १६ हो) । को बहरिणाय न [यीमा हर्षिक] योक-विशेष (नुस्तर १६)। जानार देवो जेनार (या ११२ घ)। क्षोक्स्त्र नि [वृ] मसिन वनवित्र (१०

YE) I

समाद्रतं (समा४)। जोग ( [योग] नशक्तमपूर्का व्या संबन्ध भीर सूर्य के साथ संबंध (सुव्य १ १)। खोग र् [योग] १ व्यापार, मन वयन और शरीर की चेटा (ठा४ १ धन १ ३ छ ४० )। २ वित्तितिरोव मन-प्रशिवात समामि (पडम ६ २३ छत्त १)। ३ वरा करने के लिए या पागन गादि बनाने के क्षिए फेंब्स भारत पूर्ण-विशेष' प्योगी मद्दमीह करो सीवे विक्ती इमाख मुक्ताल' (मुर न २ १)। ४ सम्बन्ध संयोज मेनन (ठा१)। ≭ इंज्यित वस्तुकानाम (स्पाया १ ≭)ः । ६ शान्य का शत्रमदार्थ-सम्बन्ध (भास २४)। ७ वस वीर्य पराहम (कम्म ५)। वस्त्रेम न [ैक्स] इंप्सित वस्तु वा साम सौर क्यकाचीयत्रस्य (स्थान १ ६)। स्थान िंस्य] योम-निष्ठ, भ्यान-बीन (पडम ६a २९) । "स पूँ ["सर्वे] राज्य के सनसर्वो का सर्वे ब्यूप्पति के समुख्य राज्य का सर्वे (बास २४)। "दिहिसी ["हिंह] विक निरोप से उत्पन्न होनेपासा ज्ञान-विरोप (एन)। भर नि भिरी समावि में कुरास योगी (भड़न ११६ १७)। परि व्याह्म की विरिधासिको समर्थि । प्रवान विविश्व-विशेष (खाया १ १) । पिंड पुं [ैिपण्ड] पर्योकरण धारि के प्रयोग छे , माप्त की दूर्व भिन्ना (पंचा १६ भिन्नु १६)। सुद्दा की [सुद्रा] हाथ का विश्वास-विधेष (पैचा ३)। व वि[ सन्] १ शूप प्रकृतिकासा (सूम १ २१)। २ योगी त्तमानि करमैकाना (बत्त ११)। बाहि कि [<sup>\*</sup>बाहिन्] १ राम्म आन नी धारापना के लिए शास्रोक कामगीको करनेनासा। २ समावि में चानेवासा (ठा३ १---पत्र १२) । पिदि पूर्ण [विभि] शासी नी माराबना के लिए राज्ञ-निर्विट मनुहान तरस्वर्या-विरोप 'इय दुत्तो बोगविद्वी' 'धुमा । कोर्चवहै (मेर) । सस्य न [शास्त्र] वित्त-निरोम ना प्रतिपादक शत्त्र (स्वर १६)। आरग देनो कोरगा इस हो न एल कोवी

744 बोगापूल होइ घरपूरी (शम १२ पुर २, २ ४,महासुपार ६)। कोगि देखो जाइ = योगिन् (कुमा) । जोनिंद पू [योगीन्द्र] महान् योगी योगीचर (स्थल २१)। जोगिजा देवों जोइफी (पुर १ १०१) । जोगिय दि [यौगिक] दो पर्धे के सम्बन्द से बना हुया राज्य बेरे-जनकरोति यमि-पेणपति (पण्डा२ २---पत्र११४)। २ सन्द-प्रयोग से दना हुया (उप पु १४)। जोग।सर वेडी जोइसर (स २ १)। कोगसरा को [यागचरी] देव विशेष (स्छ)। जोगसी की [यागशी] विद्या-विशेष (परम **७ १४२)** । कोरग वि योग्य योग्य, जवित सायक (ठा**१** र मुपा२०)। २ प्रमु समर्थ राफिमाम् (निष् २)। कोम्मा की [दे] चाटु चुरामद (दे ६ ४४)। कारना की [योग्या] १ शास का धरवात (मय ११ १६ वर्ष ३)। २ गरी-बारण में समर्थ योगि (तंद्र) । क्षोज देखों जोश = गोतप्। सदि जोज इस्सामि (दुप्र१३)। इ. जोट्य (उट २७)। जाड सक [योजय्] कोइना संयुक्त करना। बद्ध-कोब्रेंस (सूर ४० ११)। संह खोडिकण (महा)। बोड पूर्त (के) १ नक्षत्र (के ६ ४६ पि ६)। २ रोन-विरोप (सए) । खोड (धप) भी [वे] जोड़ी युक्ता 'परिस भीवन बूत्त (दूप्र ४३६)। जोडिस र् दि स्थान नहेलिया निहीसार (R R YE) 1 जोडिल दि [योजित] थोहा ह्या संयुद्ध शिया हुमा (मुता १४६ ३५१)।

बोग र् [यान यपत्र] म्लेक्ट देश-विशेत

जोणि भी [यानि] १ उपवि-स्थान (भन

**सं**ब्द प्राप्तु ११४)। २ नारण हुन्

क्सान (टा ३ ३६ वंदा ४) । ३ जीव का

उत्पत्ति-स्वल (ठा ७)। ४ की-विन्ह अय

(मए)। विदान न विभानी प्रशास

(ए।पा १ १)।

योति का एक रोग (साम्य र रेड)। कोणिय वि चितिक स्वतिकी स्तार्व किन-विशेष से उत्पन्त । बी. सा (बड धीय सावा १ १—यह ३७)। जोण्यस्त्रिया भी चिने सन्त-विरोध भाषारि बोलरी (देव ४)। कोण्ड वि विवीसनी १ तक, धत 'काबो

ज्ञाच (विसे १५५४)। सन्दर्गिकासी

312

वा जीराहो वा केससामावेश चंदस्य (सज १शे। २ वं सक्क वर्ष (को ४)। बाज्या स्था विशेषस्ता । चन-प्रकाश (पत्र ) काम १६७)। मला मन्द्रिशायक (हे २ १४१)।

बाच्हास वि विशेषतावत् । स्पेरस्त बोच देतो अच = सक्द (इप्र ३१) : जान्त । नियोक्त की बोठ रस्तीया जोत्त्व प्रमुद्धे राधस्मा जिससे लेख का थोडा, बाडी या इस में ओवा जाता है (पराहर १६ मा ६६२)। जीव देशो सांश्र = इत् । बोबइ (महा-भवि)। जोवपृद्धी १ विल्हा र विस्तोत्त बोहा (वे १ १२) ।

जावजन वि १ वल कल 'माउन्होबल'

(बोव १ मा) । २ शास्त्र क्य मर्थन धस्त्र- । सन्त (धोष ३ था)।

कांचारि स्त्री डि. स<del>मा-विदेश</del> बद्यारि कि

जोबिय वि हिन्नो विकेतिक (स १४७)। कोस्वजन मिवनी स्वास्त्य वयाना (भाष्र कस्प) । २ मध्य साव (से २ १)। खोब्यनर्णार ) न विशेषमः-परिणाम बद्धस्य जीव्यमदेश बदास जोम्मसभीर तक

रावसे वि विविधित्याम परिवास है ¥ 22) : आंक्बणिया स्वी [वीबनिका] यौजन, बवाती (राम) । जारुश्लोवय न दि] दृश्ला, बृहत्त वरा

( 1 2 2 t) i कोस देवी जस= वप । वह खोसंत (राज)। प्रजो संक जोसियाज (वय ७)। जोस पॅम्बिपी मदशान मन्त (सम्र १ २ ३ २ (z) i को सिम विख्या देशित (सूब १२३)। बोसिआ स्त्री घोषिन स्त्री मक्तिस नायै (वदः वर्ने २)। कोसियी देवो कोण्डा (प्रिम ११) । सोइ सर्व पुष्] सङ्गा। बाह्य (मान)। चाह प्रसिपी सूमर मोद्रा (क्रीपाडूमा)।

दाजन दिवानी दुवर्गका यद-कादीक

Ores 2 ) i खोक्या हैने जोक्स (**क्रै** ५१) ।

कोंडास्थे थिया सब-परिसर्वभी रक पाठि (समार १ २१)। खोडार सक दि । बढाएना बोदार करू,

राधेर विस्थासः चेत्र-रचना-विशेषः (स्र.)

प्रशास करता । कमें बोक्सरिन्यह (प्राप्त 21 21) I कोद्वार पं चि निकार, प्रसाम (पर १८)। जोडि वि योधिमी सक्तेवाता दर (पद ७१)। कोडि वि [बाधिम] सबनेवला सब्देव (cha) i

जोडिया स्त्री सिक्षिका वत-विदेव हर्न से बसनेवासी एक प्रकार की धर्म-वार्थ (बीव २)। क्षित्र ) (शी) च दि वनवारण-निवर स्त्रोध कासमझ सम्पद (प्राक्त € ०)। स्रोव ) (शी)। देखो एवं = एवं (गिर्ध व्योग्य । वस्त्रह केलो सहस्र । वस्त्रहरू (हे ४ १३ वि)। वसङ्गराविक्र वि दि | निवासित निवास प्रात (पर)।

।। इस सिरिपाइअसइमङ्क्यानस्मि जन्नायहसङ्सनस्त्रो टोलइमी दर्श समसी ।।

#5

म र् [म] १ वातु-स्थानीय व्यवस्थानं वर्त तिरीप (पाचा प्राप)। ३ व्यान (विधे 118 ) : मंदार दूं [सङ्कार] दूपर वनैष्य की व्यासन

बारान ना भूतना (देशे १६)।

(नर १ १ का प्रति काल)। मंदारिक न दि] धरववन पुन वसैछ दा

मंद्रतक हि | स्वीरार रच्या। अंदा (पर) (faft (y) । मंत्रत सक [ सं + तप् ] **रं**क्य होना, संवार करता। मंद्रार (हि. १४)। र्मराधः [वि+छप्] विकास करना, बरबाद वरेंगा। जंबर (१४ १४०)। बद्र मन्त्रेत (दुमा)

'मरानाधामी नहिसीनुबी खंबद गरेठ (एन द्वर्<sup>1</sup>) धीमोवि क्याद भाषाति तुवेद बहुतीहुग्द्रविद्धी (**41 (Y)** (

मध्य तक [उपा+स्वभ्] जालंद का वनाइना देता। प्रदेशह (है ४ ११६)। मीन घर [निर्+क्षस्] ति धाप नेन्द्र। TUT ( X Y ? ! ) !

संस्थान (उपाछम्भ) क्यानम्म, स्पाहना	मंजुळ पृंदि ] दूस-विशेष पीलुका पेड़ (दें	कं सिए चोडाब द्याय का सकता घपन पास
(इमा)।	8 88)1	रखते हैं वह (वे ३ १४)।
महिला हुं चि दे कि से से से	मंत्रहर्की की दि] फनती कुतदा। र की का	महर यह [श्रद्] १ मजुना, पके एस मादि
1 XY)1	बेस (दे ३ ६१)।	का गिरना टपकनाः २ हीत होता। ३ सक.
मंत्रिशि दि] देवो मंत्रारिम (दे १ १६)।	र्मृदिय वि [वे] प्रदुत पत्तावित संपाया हुआ	म्मपुट मारमा, मिरानाः । मन्द्र (१,४१३)।
म्हेलायम वि [संतापक] संताप करनेवापा	(यह्)।	वड़ महबंद (ड्रुमा)। इवह वासासु सीय-
(क्ष्मा)।	मन्प सक [भ्रम्] दूमना फिरना। भंगद	बार्ण्ड् भ्रव्यक्रेते' (माब १) । संहः स्टब्स्
मंद्रित वि [नि मसित्] तिभास मैनेवाला	(£ x \$45) i	उत्प्रपद्मविद्धाः पूर्णावि वार्मीत सवरवा तुरिये।
(हुमा ७ ४४)।	र्मप सक [का+च्छादय्] मॉर्फी I	भोराएकि वए दिशी गया किन हुमुसहा एवं
र्मस पूर्विमा क्यह, सबदा (सम र )।	धाच्छारत करता सकता। मंपद (पिप)।	(सप ७२०)।
कर वि किरी कसहवारी कुन करानेवाला	संक्र संपिकण संपिति (कुमाः सनि)।	मङ्किष [महिति] स्रोध, बस्दी तुर्रत,
(सम ६७)। पत्त वि विप्राप्ती क्लेश-प्राप्त	मंप सक [आ ≕कामय्] माद्रमण कर	(इस ७२६ टी महा)।
(सूच १ १३)।	ৰাপা। মনৈহ (সাকুভ )।	सङ्घाप म [वे] शीवता बन्दी (सरप्र ११)
संस्मा ) यह मिंग्सणाय ] मन-मन	मंद्रपण वि [भ्रमण] भ्रमण-कर्षा (दुप्र ४) ।	
म्हेमलबा । राज्य करना। मन्तरहरू (ना	म्मूपण न भ्रिमगीपरिश्रमण पर्यन्त (हुमा)।	मद्रप्प सक [आ + द्विद्] मपटना मपट
इ७६ झ) । क्टेम्स्स्यक्क (सिंग) ।	मंत्रणी सी दि पस्म ग्रांड की वरीनी मॉड	मारना ग्रीनना। भक्तभमि (मनि)। संह
संस्था ही [सहस्थता] 'मन मन' शब्द	के बास (वे वे ५४) पाम)।	महत्राप्पयि (मनि)।
(परा)।	म्ह्रेया औ [सहस्या   एकदम कुबना सहसा पाठ	महत्त्वड व [व्] मरपर मस्तित शीम (ह
मस्मा को [मुक्तमा] वाच विरोध म. म., म्हल	(स्पा १६≈)।	Y (444) 1
(सप १ हो)।	मॅपिश्र वि कि देशक दूसहमा। २	मद्रापिम वि [आचिक्स] सीना हुपा
भंभा की [सक्रमा] १ प्रवरण वापू-विरोप (या १७ । सर्थ) । र वजह, वसेश, समझ	महित महित (देव ६१)।	(मीर)। 
(यारका धर्मा र नगरु नगरु नगरु (छक् क्षूड्र क्षे) । वै सामा कपटः। ४ कीव	•	माबि म [माटिति] शौज पत्थी तुरुतः "माबि मापहायद पूर्यो" (गा ११६)।
प्रस्मा (नुस १ १९)। ४ द्वप्छा नीम	शिया द्वारा (पिंग)ः 'पदिवयी अर्थियो स्टिपी	• • •
(सूच र २)। ६ व्याकृतका व्यवका		महिक्ष वि [वे] १ सिमिस बीमा मुस्त
(धारा)।	मिन्द्र पुत्र सुन्द्रस्य खाइनेखा (महानि	(गा २३)। २ मान्त निम्न (पड़)।
स्मित्र वि सिक्निस्ट्यी दुव्हतित मुखा	A) 1	<ul> <li>१ सक् हुमा निस्त हुमा फरक्कबामक्रिय- पश्चित्रमें (पदम १६,१६)।</li> </ul>
(ए।या १ १)।	म्ब्रिक्सन [द] वचनीय शोक-निन्दा (१३	मिडिचि देवो महचि (सूर २ ४)।
मंद्र सक [अप] पूपना फिरमा। मंद्रद	र्मार)। १. मरि)।	महिस देशो सहिस (हे १ ११४)।
(£.3. ££5) i	महाकेको महिक=कि+सर्। कह महत्रद	मधी की दि] निरुत्तर वृद्धि मनी दुवराती
मीट सक [गुक्ट्यू] प्रवास्त करना । बक्र	(शय २३)।	में फर्म (दे द दर)।
'क्षेत्रवर्जनसम्बद्धनातिये मानिवं गहिउ'	माड र् विकास कार्य (मून १४६	मिय सक [जुगुष्स्] प्रखाकरना। मस्त्र
(बुत १२६)।	170)1	(पर्)।
महिष् न [भ्रमण] पर्वेशन, परिश्रमण	मन्त्रुकी की [के] प्रक्शिरिता प्रिय में मिलने	ं सत्रप्रसम्बद्धाः [सत्रमस्त्राय् ] 'मत-मत'
(दुमा)।	के लिए धीरत स्वान पर वालेबाली की या	भाषात्र भरतः । वक्तः सःजबसःगंत (प्रत्य) ।
संटक्षिक्राकी दिं] चैक्रमका दुश्चि समन (के १ ११)।	म्यापिरा (विज्ञार र)।	स्याम्भविश्व दि[सलस्तित] 'सन मन'
स्टिम कि विकित्य पर प्रकार किया परा	मामर दू [सर्गर] १ वाय-विशेष, माम ।	भावाजवाला (पिप)।
माटमार[क]।म्बपर प्रहाराक्या प्य हो बहु, प्रहृत (दे ३ ११)।	A ACE BUT I & MIAME I R EGAGOS	
मंदी सी [बे] योग विन्यु सेंबा वेश-कार	(पि २१४)।	(1):
(देव देव)। (देव देव)।	माजमारिय वि [सामारित] शाय विदेश के राज्य ते युक्त (दा १)।	मायस्थारवर्षु [मायस्थारव] 'मन-मन'
( - 4 4 4 7 ) .	1 200 2 4 40 (81 ( ))	धारात (महा)।

मणि देवो भणि (रेशो । मति देवो महत्ति (है १ ४२ पर महा सर २ को। मर्ट्य विविधित क्या हमा। २ कु (दे 3 42) मपिश्र वि वि पर्वस्त दक्तिस (पड)।

मणमणिय देवी सम्बद्धमणिय (सपा 🖫 )।

सःप्य देखो सत्य । सन्तद् ( थइ )। समाप्त कि देशकाम भागा-जास (दे । X3) I मध्य पूँकी भिज्ञी व्यव प्रतका (क्षेत्र २७) भीत)। भी मा (भीत)।

मरमकक्षिर्]मरनाटपक्ता दुना विरता। मरद (है ४ १७६)। वह महित (ज्ञमाः सुर ६ १)। मर तक [स्यू] भार करता। सन्दर्शि ४ कर वह )। इ. महेबब्द (बह १)। ) प्रेंदिरी दश का काम्य हमा प्रस नवा (देव ११)। भरत नि (स्मारक) चिन्तन करनेवाला स्मान वरनेवाला 'करावे वरवे करवे प्रशासक णाकरंभराषुकार्त्तं (स्ट्रीर)। मरम्प्र र् [मरम्र] निकंर या करना मादिना फरेन्सर सादान (नृर १ १)।

महत्व न [शर्य] करना, टरनना पटन (**4**1 **t**) i मत्या सी [शरणा] कार देशो (सावम) । मरय दू भि वृष्णैरार, सोतार (दे ६ १४)। महित्र वि [क्षारित] टारा हवा विस् हवा पवित् (दर दीप ७६)। मरुश्र 🛊 💽 नशर मण्डा (रे ६ १४) । गुल-बिज रि [क्स्पे] बता हमा कस्पीतृत 'बब्दुप्यूर्यत्रप्रान्तत्रानोत्तिव दियं हिब्दं' (511 4x0 & v 16x) : मसमस्य धर जिल्लाम् ] भनत्ता चन-वना रीपद्य । वर मामामानेन (वर्ष) ।

मन्तर्मात्रप्राधी [व] बाती कोवली चेत्री

मनदम रेनी सत्यस्य । बटर्मद (बुरा

१व६)। वह महरूमान (या २.) ।

(t + 24))

हरियगर मनद्रविषयाया चनिवसमाकृतस्त्री (क्सक ६३) ह मस्मा और दिंगि मनतप्ता पार में बस बात स्पर्वतस्ता (वे वे १३) पाळी । मलंकिम ) वि वि दे क्या बसा हमा (दे मलसिम । रही। मक्टी की [मक्टिंग] नतनाकार नाच-विदेव हरण वाका माल भानर (ठा १ भीमा सर प्रदेश समाह कथा। मक्तरी भी विकास सबरी (बंद)।

मध्यद्विय वि दि । सम्ब विवर्तताः भार

म्ह्योगम्बद्धित्र वि दि । संपूर्णं परिपूर्णं भरपूर (प्रकि)। महत्रजा की विरापणा र नारा विनास (विशे १९१)। २ घम्ममन पठन (विशे १४८)। मन्स पू मिला र एक देवनिमान (देवेका १४)। २ एक गरक-स्वान (देशेका ११)। मत्स इं. मि.पी १ मरस्य मक्की (पर्का १ १) । २ विषय १ [विद्यक्त] कामके स्मर (क्या)। मस्य ⊈ दिहे । समय स्थलीर्जा २ ठट.

किनारा। ६ वि उपन सम्परन। ४ दीई-

पत्रीय. सन्ता चीर गंबीर, बहुत बहुत (वे १ ६ )। ५ टंक के विद्रा (१ ६ ६ ; पाम)। मस्य पु [सतक] सोटा मन्स्य (दे २,१७)। मत्सर पुत्र [४] शक्र-विशेष सापूत्र-विशेष, 'सरमजरमस्तितस्मन- (परम व ११)। मर्क्षसम्बद्धि १ पर्यस्त प्रतिसाः । २ ( 1 1 1 1) म्हर्सिष र्षु [महपाणाह्य] कानः समरः (हुना) । स्टसर न विहेर ताम्ब्रुल पान (वे व ६१ मता)। १ वर्ष (दे १ ६१)।

बाक्य, जिल्लार बाजीश दिया दश हो वह मग्रंबङ [भ्य] विन्ता वरना, स्थात वरना। माद, माध्य (हे ४ ६) : वह मार्वत मग्रपमात्र (प्राप्त महा)। संक्रम् कर्ण (पास ११२) । हेर साइत्तम् (रन) । इ मापदा सूप माइबब्ध माएगस्य (दुवाबाध का बार ४ वि १ । मुर ty y)ı

माड वि विभागियों विकास करनेताला ध्यान करनेनामा (बाचा) । मधक्र वि भ्याती विन्तित (सिरि १२११)। माउ वि विदात् विश्वत करनेवाला विद्यक (धाक ४) । मब्रहम दि भद्रटी १ वर्ग-वहन निकृत

मानी वि ६ ६७ ७ वक्ष याच सर्व २४९)। २ वल पेड 'सतस्त्री स्ववदेशीमा' (दे १ ६१) "विद्रों व सह योगाइम्बाइसस इम्मिन परसे विकित्यको पायको (स १४४)। सप्रदल गमिश्चनी १ मोत स्वयं शीलता। २ प्रस्केटन म्यवना (ग्रम) । मध्यस्य पृष्टि क्यांस-एक बोब्रें, क्याब (हे 4 XW) i साबायण क्येन सिग्रटनी कानला, बाम कपना मार्थन कपना। सी की (सप 191):

माज वि [म्बान] व्यक्तको (ब. १२ ) १ माण पेत ज्यानी १ विकास विवाद फलन्छ-पुरुक समस्ता सोच (माच v म ४ १ हेर २६)। र एक द्वी बर्द्रु मन की स्विध्वा सी बयाना (ठा४ १)। रे मन पारि की जिल की निरोध । Y हर्ड प्रमल से मन वर्षेख का व्यापार (विने 1 with Stry t): मार्जवरिया की भिवानान्तरिका र धे व्यानों का सच्या भाव, बद्ध समय जिस<sup>क्</sup> प्रथम स्थान की समाधि हाई हो और इनरे मामारम्भ वक्तक न किया यस हो सौर भन्य मनेक स्थान करने के बाती हो (बा दे. मग ६,४)। २ एक म्यान समाप्त होने वर थैप स्थानों में विद्यी एक को प्रदय प्रारंत करने रा विवर्ष (श्वर १)। मधिय विकित्ती स्थान करने जान (पाच ८६)। मास एक [ बृह् ] बलाना बाह देता, शब रता। मधीद (तूप १०२, ४४)। वा मामैत (सूच २ २ ४४)।

माम रि [दे] रूप वसा हुमा (बादा रे t t) । अंदिस न [\*श्यव्हिम] राष मृति (पाचा २ १ १)

म्हास वि विश्वासी सनुवन्तन (पर्वह १ २--पत्र ४)। स्त्रासण न विकेतना धाम सवाना प्रधीप नक (बन २)। मासर वि वि क्य, बूबा (दे ३ ५७)। सामछ न दि रिधीच का एक प्रकार का रोग गुजराती में 'मधमरो'। २ वि मधमर रोगबासा (स्म ७६८ दी बा १२) । म्यास्छ वि चियासङ्गी स्याम काला (वर्मरी < b) ! स्माद्भिय वि [व्यामस्तित] कामा विया हमा (भूम १८)। म्प्रमिअ वि [वे] बग्य प्रम्वतित (वे व **१६: वव ७ द्या**वम) । २ रयामधित काला विया हुमा । ३ वर्षकितः 'वस्त्रवर्टपर्यमास्त्रि बीए वा कामियों मेर्च (सार्व १६)। माय विध्याती मसीहत राव वना ह्मा (ग्रंदि)। भायव्य देखो मा । मारुआ की वि] शीरी बुद्र जन्तु-विशेष ( T X 10) 1 मावण न [ब्यापन] देवी मामग (यव)। मध्यणा न [ध्यापना] बाह, बनाना धरिन संस्कार (मावम) । म्युप्रमा देखो अम्युदमा (संदोष २४) । सिल्लम न [दे] पुस्साकरना (वर १४६८)। मिलिल न दिविषतीय नोनापवाद, नोक निन्दा (दे ६ ११)। सिंगिर ) पुँ वि धुप्रकीर-विशेष चीत्रिय सिंगिरक ) जीव की एक जाति सोंबुर या भिल्मी (जीव १)। स्मिनिका वि [दे] द्वारित मुका (दह ६) । (मृक्तिशी) की दि एक प्रकार ना पेड मिनिर्द्धा । महानेषिरीय (क्य १ ६१ धी धत्वा२ १ = ५०६१)। मिळाँद ) वि[शीयमाज] को सब को फिल्लमान । प्राप्त होता हो हरा होता हमा (से ४, ४८ ७२व टीः कुवा)। मिन्म पर [छि] शील होना । मिन्नद (प्राप्त ६३)। मिनिक्री भी दि] बम्सी-बिरोप (माबा २ 2 = 3)1 म्हिण्म देवो म्हिण (चे १ ११**१ पु**मा) ।

स्थित्य ) न दि । ठिएर के सबयवाँ की मिनिमय र पहला (पाचा)। मित्रा देखो स्ता। सिमाद, सिमायद (उना भग करा पि ४७६)। वक्क- मिल्यायमाण (ए।या १ १---पत्र २= ६ )। मिन्नरिक म दि नी से दूस पूर्वा इनाय (वे 8 XW) 1 सिक्किश विदि मिला ह्या पक्की हरी नह बस्तु जो उसर से गिरती हो (सुपा १७०)। सिद्ध प्रक [स्ता] मीनना स्तान करना। भिज्ञद (कुमा) । मिक्रिया की [मिक्रिया] बीट-विशेष भीन्त्रम बीत की एक बाति मिल्ली(पाफ पएए। १)। किविरिजा भी दि र नीही-नामक कुछ । २ मराक मण्डाक (देव ६२)। मिन्निया भी दि । मधली पश्चन नी एक त्तरहकी वास (विपार द—पत्र ८६)। मिक्की की वि नहरी तरव (पडड)। सिद्धी की सिद्धी १ वनस्पविनिशेष (पराख १ बन १ ६१ दी) । २ बीट विशेष मीद्वर (वा ४१४)। म्ब्रिण वि [क्षाण] हुवैन इस (हे २ ६ मीय न [के] १ थंग, ग्रधेर । २ कीट, कीश (वे ३ ६२)। मीराकी दि] नवा शरम (दे ३ १७)। मन्त्र पू [बे]तुस्य-नामक बाध (दे ६ १८)। मुद्रेमिटय वि [वि] १ बुद्धशित मुक्ता (पराह १ ३—पर४६) । २ मुखहुषा, गुरमा हमा (मग १६ ४)। मुनुमुसयन दि] मन ना दुवा(देव मुद्रेय न [दे] १ प्रवाह (देश ५०)। २ पर्यु-विदेव भी मनुष्य के शरीर ही बरमीने बीता है भीर जिसका रोग कपड़े के लिये बहुनूस्य है (उप १११)। मुपबा भी दि] मोपड़ी, दूल-दूरीर, दूल-निर्मित घर (हे ४ ४१६ ४१व)। र्भुवयगन दि] प्राचम्ब (शाया ११) । मुत्रमः स्को जुत्मः=पूर् । मुत्रमः (रि २१४) । वह मुज्जी (है ४ १७१) ।

मुद्ध कि वि] मूठ समीक संस्था (दे वे 3c) 1 मुख्य सक [जुगुप्स् ] इसा कला दिश्वा करता। भूरणक (हे ४ ४ सुपा ११८)। मुणि पू [ध्यति] राम्य प्रावाम (हे १ ४२ पक् क्रमा)। मुणिल वि [जुगुप्सित] विस्ति बृखित (इसा) । मुक्ति की दि देर, विच्छेर (रे १ १८)। म्हम्मस्यसय न दि। मनका दुल (दे व 2a) 1 मुलुक्त र दि ] सहस्माद प्रकारा (भारमानु मुक्त मद जिन्दोल् ] मूनना डोसना सन्त्रमा । बद्धः मुह्नेत (सूपा ११७)। मुकाय भीन दि । क्य-विरोप। सी गा (पिग) । मुक्तुरी की मिं] गुरुम चता बाख (दे ६ X= ) | मुस देवो सूम । चंद्र. सूचित्ता (पि २ ६) । मुसणा देखो मृसणा (एव)। मुसिय देवो मृसिय (इह २)। मुक्तिर व [शुपिर] १ रत्म, विवर, पोत काली वगह (एगया १ = मुपा६२)। २ विपौसा सुद्धा(ठा२ ३ ग्रामा१ २ पराहर २)। मृत्मः रेको जुमः । मृत्मंति (धंबीव १८) । मृर सक[स्मृ] याद करना विन्तन करना। फूख (दे ४ ७४) । वह मूर्यंत (हुमा) । मृर स**क** [जुरुप्स् ] किया करना पूरा 'निरवमनोहरवम्बं दिस्ट्रुलं तस्य स्थ्युलस्टिंह । इंदी वि देवराया सूरद नियमेशा नियन्त्रं (एसए ४)। मृर यह [क्षि] मुरना वीख होना सूचना। बक्र मृर्रत मृरमाण (तरा ठर इ.२७)। मूर वि [दे] दुनिस वज टेड्रा (रे ६ ५६)। मृदिय वि [समृत] विन्तित याद विया ह्या (परि)। भृत्स संब [जुप्] १ सदा दरना । २ प्रीति

करना । १ और करना स्थाना। क्य

446	<b>श</b> इश्रस <b>इ</b> महण्यको	<b>मृसमा</b> रगर		
म्समाण (वाषा) । यह मृसिता मृतिताणं मृतिताणं मृतिताणं मृतिता (वीण रिष्ट व यह रहे) । मृमाणा की जिएका विता वायकता (वता वंद वीण कीण कामा ११) । मृमाणा की जिएका है वि १ वायक वायकता (वता वंद वीण कामा ११) । मृम्माण की जिल्हा १ के विता वायकता (वता रिष्ट वि १ वायक विता विवास (वायक विता वायक वायक विता वायक विता वायक वायक विता वायक वायक विता वायक वायक विता वायक वायक वायक वायक वायक वायक वायक वाय	स्प्रेडिकमा की [र] एव के वनल एक प्रकार की की (दे १ ९ )।  स्प्रेड एक [शाटम] देड़ धार्ट है एक के विद्यान होते की पिएला। स्प्रेड (रे १२९)।  स्प्रेड द [र] १ देड़ धार्ट हे पर धार्ट है एक घार्ट है एक घार्ट है एक घार्ट है एक घार्ट है एक देड़ है एक प्रकार की एक एक देड़ है है आप विद्यान की है है आप विद्यान की है है आप विद्यान की स्थान की स्थान है है है आप विद्यान की स्थान की स्थान की स्थान है है है स्थान है है है पर प्राप्य है है है स्थान विद्यान की स्थान की स्थान है है है स्थान है है स्थान है है है स्थान है है स्थान है है स्थान है है है स्थान है है है स्थान है है स्थान है है है स्थान है है स्थान है है स्थान है है है है स्थान है है है स्थान है है है है स्थान है है स्थान है है है स्थान है है है है स्थान है है स्थान है है है स्थान है है है है स्थान है है है स्थान है है है है है है स्थान है है है स्थान है	मोससाय मोसंसाय (गुरा २६: यात्रा)। योड पंचेद्रसार वस्ते मोसिया निर्मार्थ दु (गुर ६ २१६)। मोस यह [ग्रवयम् ] बोनना सन्तर्थ करणा मोनेहि (रह १)। मास वह [मोयम् ] बानना मनेत करम। ह मोसेवयम् (पन १)। मोस वृ [मोयम् ] योठनी रेतेर निर्मार निर्मार विकास सामार हो वह यात्रा (तर १)। मोस वृ [मोयम् ] योठनी रेतेर निर्मार मामार हो वह यात्रा (तर १)। मोस वृ [मोयम् ] व्येचल वार्तया (तर १०)। मोस वा वि वृ व्येचल वार्तया (तर १०)। मोस वा वेरो मुस्सा (यव ११६ यम्)। मोससा वेरो मुस्सा (यव ११६ यम)। मोससा वेरो मुस्सा (यव ११६ यम)। मोससा वेरो मुस्सा (यव ११६ यम)।		
। रम विरिपार्मसर्मम् व्यवस्मि सम्प्राप्तर्ववस्यो। वस्यस्मी वर्षीः स्यती ।।				
	ट			
उर्वृ [2] मुर्ज रकारिय काजान वर्ग थियेर (बारा आर)। हरपा थी [व] पातान-राग्द, दुकारने मी पातान इस्तुती में दीता (दुब दे दे)। हर दुन्यू विकासिक निवा न रवा कि दुन्यू विकास सार्थ काल (गा दे दे—पन दे)। दे यह बता वा निवा (या देद नुमा हाई)। राग्द दिना में दिख मेंना (स्वाय देन- पत्र देत) प्रमाद वान्य वाल होती। देनी (में यु देश वाल होती)	निति गीठ। र टर, विषय (वे ४ ४)। १ मनित पुरास (वे ४ ४ वे १, ११)। ७ वि विल धेरा हुळ रागा हुया (वे ४ ४)। १ ४)। १ ४)। १ १० विल धेरा हुळ रागा हुया (वे ४ ४)। १ १० विल धेरा हुळ रागा हुया (वे १ ४४)। १ १ १ विल धेरा हुळ रागा (वे १ १)। १ १ १ विल धेरा हुल	टेरिया की [टक्किया] स्वत्य नारने ना यह. दर्शी (स्थात २९७)। टंबरय दि [वि] स्वास्त्रता, द्वर नार्ध (रे ४९)। टंबरय दि [वि] स्वास्त्रता, द्वर नार्ध (रे ४९)। टंबर्स (टिव्ही देशनेत्रेत (हेर १११)। टंबर (वि] देशन, धंन ते तंत्र ना नार्या (पुर १९, ६० वर १)। टंबर यं वि[वि] दर्शर, पुंच ते तंत्र ना नार्या (पुर १९, ६० वर १)। टंबरा यं वि] दर्शर, पुंच तिह मंगी ना सामान (पह १ देश)। टंबरात श्री [वि] स्वरित्ना ना पुर (रे		

(ty t):

र्टक्रिज रि [र] प्रधा नैजाहमा (रे ८१)।

र्टेडिप्र रि [रहित] हारी ने राज हुमा

v 2) i

९ राहुचा)।

टगर इं [तगर] र बुल-बिटेंग वहर का

बृता र नुनियत बाह्य-बिरोप (र t

र्रह मू [र] र तरगर, तरका व आह.

नुराह्मा बनाटका ६ वहा बाका ४

६ वधिर्शितरेष (मीर ) ।

टबक रूं [के] सम्बी सारिक सामात की धाकात (दुन ३ ६)। टहुइआ सी [दे] वयनिका परवा (देथ १)। टच्यर वि दि] विक्रयत्त कर्णवाला भर्यकर नानगमा (दे४ २ मुग ६ र उनप्रु)। टमर वृ [व] केश-वय वाल-समूह (वे ४ १)। टचर देता टगर (दुमा) । टक्ट सक [टक्ट साय्] 'टन-रग' मानाव करना । बङ्ग टब्फ्रग्लॅन (प्रामृ १६३) । टस्प्रतिय वि [टस्प्रिकित] 'रस-पर' पातान । बामा (डा ६४८ दी) । टसपल यक [र] १ तहरूत्रामा वहराना । २ परवना, हैरान हाना । समर्थित (पर्मीष । १०)। वा टस्टालंग (सरि ६ ०)। हसिम वि दि] बना हुमा इटा हुमा (विरि 448) 1 टमर न [द] विमोटन मोइना (रे४ १)। टमर वृ [यसर] टमर, एक प्रकार का नूता (資中平里里田) ( श्रसग्रह न [क] शेलर, मार्तन (के ४ १) । हर्द्दिय रि दि देश क्या हुम, 'टर्गरेय नाना बाधी मिल्य नीर नई सीई (पर्णा १४७ गामन १६ )। टार पुंदि ] यबम यथ हटी थोहा (व ४ २) 'बर्जनस्तिमामीव न तुमद, मण्यं हारवा हारते (था २७)। २ हर् ह, दौन चोरा (टर १३३) । टास व दि ] बोयप पन दुर्गी उपन हाने के पाने की मारका कारा करा (दन ७)। (न्ट<sub>ो</sub> [प] देखो टेंटा (मरि) । सास्य हिंदा रे पी [ शास्त्र ] दुपलाना दुपा क्षेत्रने का बहा (तुमा ४६६) ।

(टेवरूमा हो दि] कार देखो (ति २१०)। टिकान [दे] १ शेका, तिमका २ मिरका स्तवक मस्तक पर रक्ता भावा ग्रुक्टा (दे Y 1) I टिकिन (शी) पि [दे] तिमक विमूपित (**₹**○1) । टिग्पर वि [दे] स्वविद, बृद दूदा (वे ¥ 1) I टिट्टिम र् [टिट्टिम] १ पनि-विधेव स्टि हरी टिडिहा। २ जस-धन् विधेय (मुर १ १=१)।स्यैर्भा(विपार ६)। टिट्टियाय सक [दे] बोसने वी प्रेरणा करना 'हि-नि' साराज करने को मिलमाना। र्शिट्टवानेइ (छावा १ ६)। कनक् टिट्टिया येखमाण (ए।वा १ १—पष १४) । टिप्पणय न [टिप्पनक] बिरएए धारी धेश (मुग १२४) । टिप्पो की दि कितक टीका (दे ४ ६)। टिरिटिश तक [भ्रम्] पूपना फिन्ना वसनाः िरिटिस्न "(हे४ १६१) । वा टिरिटिह्न (रुपा)। टिहिबिय नि वि तिमृतित (पर्वति ११)। टिविडिक सर [ मण्डम् ] मण्डित करना विमुख्ति करता । निर्विदेशना (हे ४ ११% कुमा) । यह टिविडिक्टन (मृता २०)। निविद्यिक्षित्र रि [मण्डन ] रिकृपित यमेर्ड (पाय) । ट्रॅंट वि दि दिन-इन्त जिनस हाप करा हुमा ही यह (दे ४ ३: बानू १४२ १४३)। हुदुष्य यह [ हुण्डुमाय् ] पन नर्न प्राप्तात्र 🎚 बरना। वह टुंटुण्णीत (गारदर कार्र) टिवर । पूर्व कि बृह्म-विधेय सेंद्र वा देव (त्वरात्र) (देश रे चरा श्री शैक्स)। 582) i

375 द्विय पू [के] बापात-विशेष गुजराती में 'ठ्र'बी' (मुर १२ ९७)। दुरु पर्क [हुट् ] हुन्ता कर पाना। हुरा (चिष)। बद्द दुईत (वे ६ ६३)। दुरपरंग म दि] येन साधु का एक छोटा पात्र (ब्रुसर ११)। दूबर पुं[तूबर] १ जिसको कादी-पूछ म उमी हो ऐसा पारासी। २ जिसने वाही-मूँप कटपा दी हो ऐमा प्रतिहार (है १ ९ ६) कुमा)। टेंट पू [के] १ मध्य-स्थित मणि-विशेष । विभोषस्य (कप्पू)। टेंटा धी [रे] पुषासाता पुषा सेन्ते का महा (दे ४ ३)। टेंटाक्री [ब्] १ थरि-मोसकः २ छाती का मुक्त वस (बप्पू)। ठेंपरुष न [द] कत-विरोप (धावा २ १ K ()1 टक्टर न दि | स्पन प्रदेश (दे४ ३)। े न [दें] दारु नापने ना बस्तत शहमानंद 🕽 (दे ४ ४)। द्यपित्राधी [ब्] दोरी बिर बर रवने श मिना हुमा एक प्रकार का बद्ध (मुपा २६६)। टोप्प पू [द] चेहि-विधेर (म ४४१) । द्याप्पर पून [ **रं** ] शिरफ्राण-निधेप होती (पिंग) । टोस र्[द्] १ शतम, जन्नु-रिशेष । २ रिशाव (के ४ ४) प्रानु १६२) । शङ् ग्री ["गर्ति] पुर-यन्तर का एक बीव (पब २) । स्माई की [शहरित] प्रशरत बारगरवामा (सत्र) । द्यम र्षु [ दं ] १ दिशे निशे (बर २) । २ पूप (रूप ५०) । टालंपपू [द] मपूर ब्लानीरेर महमा

बादेश (देश ४) ।

।। इय पिरियाणअसाहमह्णमधीम हवाराण्यस्तरम्यो मगप्तो दर्गी ननतो ॥

ठिवेश कि "स्थापित" रका हुया, संस्वापित

(पदाविद्दशस्य स्ट. १)।

ጸ

र पं स्ति वर्ष-स्थानीय व्यवस्थान वर्ध-विशोध । (प्रापट प्राप)। ठब्रज कि बिी र बिकाश्त क्रमर व्यक्त इद्या २ प सम्बद्धाः (दे ४ १) । रुक्त के स्थितिती र ध्यान्यक्ति बना ब्रमाः। २ वन्त्र सिमाः क्षमा दशा दशा Zer 203) i रक्क देखी रुविध (सिन) । र्रोडिट केरो धडित (स्त्र) । प्रम क्यो संस्र⇒स्तस्य। इसे इंक्रिज्यक (min €): र्रस देखों थेंस ≕स्तम्म (हेर ८८ पड़)। ठकर १ पुटिस्करी १ अकुर शक्तिय ठक्टर र राज्युत (स ४४० सुना ४१२) सटि १ व )। २ पास वयैच्य का स्वासी रायक मुख्यमा (भावम)।

ठकार ई डिज्झरी के मंबर विस्त करते. करिमगतिकाइ महोद तुरम्बुरलेखी । विश्विमा रिक्रण विकर मंदी उनकारपंदि मा (वर्मवि ठगो सकस्थियो बन्द करना ककता। ठम क्रिके क्या (पदि २३ टी सुद्ध २ 141 ठगर्विकी इन क्रुतं पक्छ (देश र इमा)।

ठिपिय वि [वं] विका रूप क्या कि दारित (ब्या १२४)। ठिगिय वेचा ठइय = स्विपत (क्य प्र ६वव) । ठट्टार पू 💽 वाच्य, विचनमादि बागु के बर्चन बनाकर बोबिका बंबालंगाला ६ठेस (बर्म २)। इव्ह वि [स्त्रध्य] इत्तालका द्वरिष्ठत बड़ (डे २, ३६) बण्या ६२)। इच्य वि स्थाप्य स्वासीय स्वास करने

बोग्ब (पीच ६)। ठम पत्र [स्थग्] बन्द करना रोक्ना। ठएति (त १११) । ठयण [स्वरान] १ वकाव धटकाव । २ वि रोपनेपाचा। भी जी(काश्य)। डयत्र न (स्थान) धन्य करना 'धन्तिहरूको च (वैचार, २३)।

रुपिश्च कि स्टिंश गैरक्ति। २ अर्थ feet (0 x 4) ( ठक्किय विदेश वासी रूप्य, रिक किया वता (सवा २३७)। ठळ वि वि वे विभाग वन-परित विधा(वे x 11) i ठव सक रिशापय ी स्वापन करना । हवड, हतेद्र (पिक: कथ्य महा) । हवं (स्प) । वक्र ठबंद (रवल ६६)। संक्र-ठदित्रं ठिवळण ठविचा ठविच ठवेचा (पि १७६) १८६ **१**दर प्रापुर्ण पि ४∈२)। ठवच्चम रिमापनी स्वापन संस्वापन (तर 2 (mm) 1 ठवजाची स्थापनाी श्रातकृति चित्र मृति बाकार (ठा २, ४० १ ३ मरा)। २ स्वापन स्थास (ठा ४ १)। १ सामेतिक बरद् मुक्त बरद् के समाव मा सन्द्रारिकवि में विश्व किसी चीज में छसका पंकेट किया बाम बड बस्त (विसे २६२७)। ४ वैव धालको की मिलाका एक शेष, साव की किसा में केने के लिए एकी बड़ी बस्त (हा क ४---पत्र ११६) । १ धतुका धैमवि (बौर्स) । ६ पद बळा बाठ दिलो का कैन पर्व-विशेष (लियर)। इस्क वेन विस्त्री विद्याण सिए प्रतिविद्ध क्रम (निक्का)। अस्य पं िनयी स्थापन को ही प्रवास सम्बोदाला

ठविज्याकी विशेष्ठिमा मूर्ति प्रतिकृति ( X X ) i अचित्र केलो स्वतित वि १६६)। ठा पत्र स्थिती बंदना स्थित होता पर्यः गरि का कराव करना । ठाइ, ठाइस वि ४ १६ पक्र)। क्रम्स ठावसाय (छन १६ टी)। संक्र ठाइकण ठाकव (पि. १ ध वंचा १६)। हेब- ठाइचए ठाउ (क्य पाद १)। इ. हाणिका टायम हाए-पठप (हाला १ १४) सूत्रा १ २३ घर ६ 44) : ठाइ वि रिधायिन ] प्रत्नेताचा स्निर होने नाना (भीप क्रम्प) । त्रायथस्य देखी हा । रापयञ्च देशो राज । ठाण विद्योगात पूर्व धरियात (१ ४ x١i ठाण कुत [स्थान] १ स्थिति सभस्याम परि शी निवृत्ति (सूध t % t) क्या t)। १ स्वयन प्राप्ति (क्षम्म १)। ३ निवाब, एट्स (सूप र रश निष्र र)। ४ कारल निवित्त 🗗 (कुस १ २ ठा२ ४)। ३ वर्ष धावि मानन (राम)। ६ प्रकार, नेर (म र भाषुत्र)। ७ पद, वद्या (ठार)। मंत्र (चर्च) । पुरिस पु पुरुष । पुरुष । ≖ पूछ पर्याच कर्म (ठा ३ ३ धरच ४)। मूर्विया चित्र (ठा३ र सूचर ४ १)। **१ साध्य, श्रामार, मस्ति सकान पर (श्र** यरिय 🕻 िवार्ये विश्व वस्तु में धावार्ये ४ ३) । १ पूरीय केन संपन्तक उन्होंने का चंकेत विवा बाय वह बस्तु (वर्थ २)। सूत्र (ठा१)। ११ फालाव तून का सम्बद्ध श्च न िसत्वी स्वापना-विचयत्र प्रत्य परिच्चेर (ठा १ २ ३४४-३) । १२ कामीरवर्ष जिन भरतान् की मूर्तिको जिन कड्डमा यह (भीप) । अट्टलि [भाष्ट] १ भागी वर्ग स्वापना-क्रस्य है (ठा १ ३ पर्य ११)। से भूत (सामा १ र)। रेवारिव से प्रतिप ठकत्रा की [स्थापना] नावना (कृति १७६)। (र्देषु) । शह्म मि [ (विग ] कामोर्चर्न ठवजी की [स्थापनी] न्यास न्यास क्या से करनेवाचा (धीप)। सिम व िंगव ] रका हुना इस्प (मा १४)। सोस वृ र्जना स्वान (बृह १) । [मोप] व्यात की बोरी श्यास का अवसाप ठाण न [स्थाम] १ दुवरा (कोवस) देत ना 'रोहेम् निचरोहो हनस्त्रीमीतो स्थेसमीदेम्' एक नगर (ब्रिटि ६६८)। २ टेप्ट लि (या १४)। का समातार ज्यमात (वंदीय र )।

ठापाग म [स्थानक] राधेर की वेश-विरोध (पंचा १८ ११)। ठापि वि म्यानिन् ] स्वानवासा स्थान-पुकः (मूम १ २ वर्ग)। ठाणिज्ञ देशे ठा । ठाणिज्ञ वि [दे] १ मीरवित सम्मानित (दे ४ ४)। २ नः भीरव (पड्)। ठाणुक्तविय ) वि [स्वानीरकटुक] १ उटक-ठाणुक्कृत्वय ) हुक माधनवामा (पण्ड २, १; भव) । २ न, मासन-विशेष (इक) । ठाणुदेशो लाणुः लोडन [सण्ड] र स्यासाका भवयव । २ वि स्वास्तुती तरह र्जनां सीर स्विर एहा हुमा, स्तम्मित शरीर बासा (ए।पा १ १--पत्र ६६)। ठाम } (धप)। धवो ठाण (पिंगः एस)। ठाय दे [स्याय] स्थान भाषय (पुष २, tw) 1 ठाव सक [स्थापय्] स्थापन करना, रहना । हाबद्द हाबेद (पि ११६ कृप्त महा)। बह-ठावंत, ठार्वित (वच २ : सुपा ४८)। संह ठावहत्ता ठावेत्ता (क्सः म्हा) इ. ठाएयब्स (सुपा १४१)। ठावाम न [स्थापन] स्थापन, बारहा (वैवा **23**) 1

ठापमया ) देशो ठवणा (इप १८६ धै; ठा ठावणा ∫ १३ द्वाइ ३) । ठावय स्थिपको स्थापन करनेवासा (ए।या ११६० मूपा २३४)। ठावर वि [स्वावर] खुनेवासा स्वावी (प्रन्तु 23) ( ठाषिअ वि स्थि। पिठ देशापित रबा हुमा (ठा३ १३ भा १२० महा)। र्ठाचन्त्र [स्थापितृ] उत्पर देवो (ठा 1 () i ठिक्स अन हिं] कम्बै अर्था (१४६)। ठित्र की स्थिति । स्थारमा क्रम मर्गारा नियम 'क्यांट्रई एसा' (ठा ४ १) उप ७२६ टी)।२ स्थान मचस्यान (सम.२)। ३ बद्दनादस्य (वी ४६)। ४ सम्यू सम काब-मर्गाद्य (मर्ग १४ १) शब ११) प्रमुख ४ भीत)। क्सय दं कियी बास का श्चम मध्या (विपार १)। पश्चिमा देशो बहिया (क्रम्प)। र्वच पु [ व च ] कर्म-क्ल की कास-मर्पादा (कम्म ४ =२)। वहिमा 🛍 🛛 प्रतिता 🕽 पुत्र-म म-सम्बन्धी क्रमन-विदेप (ख्रामा १ १)। ठिकान विशेषुस्य-चित्र (रे४ १)। ठिकरिकाकी [वे] ठिकरी बहाका दुस्का (बा १४)।

ठिय वि [स्थित] १ मवस्यित (ठा२ ४)। २ व्यवस्थित नियमित (सूम १ ६)। ६ बड़ा (सम १, १३)। ४ निक्ए ए बैठा हुसा (निदुर प्राप्त दूमा)। ठिर देखों थिर (सण्डु १३ मा १६१ म)। ठिविअन दि] १ कर्म अर्था। २ निकट समीप । ३ हिनशा क्रियकी (दे ४ ६) । ठिम्त्र सक [घि+पुद्] मोइना। संह ठिक्विक्यकण (सूपा १६) । ठीण वि स्तियानी १ जमा हुमा (बृत माहि) (हुमा)। २ व्यक्तिकारक मानाज करने-बाला । १ न जमाव । ४ थानस्य । ५ प्रति-व्यति (हेर ७४० २ ३३)। दुंठ ईत [वे] ईंछ ईंठ स्पारा (वं १)। 🏂 सक 📳 त्याप करना । दुस्कइ (प्राष्ट्र 44) 1 ठर पूंची स्थिषिर दिया, बुद्दा (मा बद्देश म (१ १६६) परुष्त्रवाणी मामो महमासो मोमर्स पर्द हैरो । पुरस्पुरा साहीला प्रसर् मा होड कि मरत ?' (य १६७)। की री (य ६२४ म)। ठोड दृदि] १ भोतिपी देवतः। २ पूरोहित

(नुपा ११२)।

।। इम सिरिपाइअसङ्महण्यवस्मि ठवाराइसहर्भक्तको पुरुषीसहमी दर्पने समती ॥

₹

ड पूं [ड] मूर्ड-स्वानीय व्यञ्चन वर्ण-विरोप (प्रामा प्राप)। डमोपर न [ब्बोदर] पेर वा रोक्बिरोप । डकिय देवी डक्क च्छा (वै ८१)। जनारर (निषु १) । बंक पुं चि १ रेक, बुविक (विक्यू) सारि वर कांस (पण्ड ११)। १ वेश-स्वान, जहां पर | बंब देखी वृंब (हे १ १२०-प्राप्त)।

बृरियक साथि बसा हो। 'बह सम्मस्परका विषं निर्देशिषु वेकमारिएति (मुपा ६ ६)। बंगा भी हि] बांग, लाडी यति (गुरा २३०-1cc 141) 1

बड़ न [दे] पक्ष के सीए हुए दुक्ते (के Y #)1 बंदगा की [इण्डका] दक्तिए देश का एक प्रतिक धरमय-अंपन (सुक्ष) । बंडय १ वि रेप्या महत्ता (१४ ०)।

बंडारण्य न [दण्डारण्य] रिधण रा एक

बंस पू विरा द्वार मन्तु-विरोप बीस मन्दर (सामा ११ जे २) पव ४) सीप)। १ (की १व)। क्सह, सबार्ट, विश्वह (पराह १ २ दे a: द्यंस पृथिती १ क्ल-स्टरः २ सर्वे धारिका 1(9) काटा हमा बाद। १ दोष। ४ खेळन । १ दौष बसरुभ ) प्र विश्वस्क वाद-विशेष ६ वर्षे कवच । ७ सर्ग-स्वात (प्रान्त १६) । दमस्या । कापासिक योगिनो के बनाने का बंसण पूर्व विद्यारी वसे करन 'बंहको' शाबा डमक (दे२ ६ पठम ५७ २३ सूपा (शाक्र १३) । १९पर)। डक्स वि [ब्रुट] बस्रा इस्स बाँव से कारा इसा कर मक [क्रम्] करना सब-दौत होना। (हेर र गा धर्र)। क्छ (हे ४ ११a) ; बकाविदिशिक्तनहीत वर्ति से प्रमात (वे बर पु [बर] बर, भर, धीति (हे १ २१७ x 4) 1 क्या) । डच्च भीत [डच्च] नाच-विरोध (गुपा ११४) । बरिभ वि प्रिस्त] मन-मीत क्या हमा दक्करिजात का दि] गीकित होता हुआ (कुमाः पुता ६६६: सक्त) । (सूत्र पूना ६१६)। बस्र पुंचि] बोट मिट्टी वा देशा (दे ४७)। बगज न वि यान-निरोप (धन)। दक्क एक [पा] पैना। अस्तर (हे∀ १)। डरामग मक [वे] चलित होना क्रिलाना बर्म ) म वि शिरिका, बाला बाली वांत क्षांत्रना । स्वमनीति (स्व) । बहरा वाँचना हुमा फल-पून रक्षते का द्वराज न [दे] १ कन ना दुक्या (शिवू १६)। पात्र (रे ४ ७ झावम) । र इंट. पापास नरेख वा दुवजा (सीव बस्राच्ये [रे] बला, बली (पूत्र २ ६)। ३११: ७० मा) । काहर दि [पान्] पीनेगवा (कुमा)। बग्गस 🕻 [इ] पर के कार पा मूक्तियम इव सक [ भा + रभ् ] मारम्य करना सुक 62 (g.A. ) 1 करता। बन्द्र (पद्)।

वि वस्तिवासाः 'तस्य सामग्रह्मकाः) प्रया नक्तालो प्रवासेड (बारा ८४)। बदर पंडिंदि छिल, यलक बच्च (रे४ का पाया वद का बस इ. इ. सम. १९ १ २,३ २१ १२:२३)। रेनि गा सोटा सत्र (धोष १७०२६ वा)। गाम प्रे विमास कोटा कांच (वव ७)। बद्दरक पूं [६] कुल-विरोध । २ पुण्य-विरोध 'बारकपुत्राखरता श्रेनदी क्यान प्रस्ति (मामि ६७)। बहरिया की बिरे बान से सकारह वर्ष क की सक्ती (बन ४)। बहरी की दि । प्रतिकर, मिही का पर वि Y w) i दाभस्र न [वं] तोषन सांच नैव (६४८)। बाइणी और [डाकिसो] १ डाकिमी गर्म प्रकृत प्रेष्टिनी । २ अंतर संतर माननेवाली की (प्रकृत के दुना इ. इ. स. इ. इ. मदा) । काउ पुं[र] १ फॉलईसन कुन यक पाति का पेड़ा २ वछपति की एक रूप्ट की व्यविमा (दे४ १२)।

द्धाग पून [दे] मानी पत्राध्यर तरकारी (भय ७ १ २४ दशा १ पत्र २)। डागन [दे] शान शासा (बाचा २१ ४२)। हातिजी देशे डाइणी (१ ३ ४)। डामर वि [डामर] मर्थकर, 'डगडमियडमस्या-होबडामधे' (मुपा १६१)। २ पुं स्वनाम-क्यात एक जैन मुनि (पठम २ २१)। डामरिय वि [डामरिक] नदाई कजेवाला विग्रह-नारक (परम १ २)। क्षाय न दिं] देखो क्याग (एन) । **बायास** म [ब्] इम्मं-तम प्रासाद मूमि द्यन (प्राचा२ २१)। बास जीत [दे] १ राज शाला टर्नी (पुणा विस्म पून [हिस्स] बासक बचा रिग्य १४ नेवा रेश है (४४८)। २ शाम काणक देश (बादा२ ११)। ध्यै ह्य (महा पाग्रः कका २६) टी (दे४ शः पद्यः १ । सक्तः निष्कृरः।। द्वाव पू [दे] बाम इस्त बन्धा हाव प्रवस्ती में 'हाबी' (देश ६)। बाह देवो दाह (हे १ २१७) वा २२६ **५६५) इमा)** । बाहर दूं [दें] केत विशेष (निय)। हाहास व [दे] देश-विशेष (नुपा २६६) । ष्टाद्विण देखी बाहिण (का ७७७- दिग)। क्रियसी धी हि स्तूल धना मूँगै (दे४ 1 (3 हिंद्य वि [दं] बत में पतित (पर्)। हिंति पू [इण्डिन्] सत्रवर्गकारी-तिशिष्ट धनिकार-संग्रम (भर वृ क्या पक-४७ श्रोद ४) । हिंदिम न [डिण्डिम] दुनरुपी दुन्गी बाच विहेम (पुर ६ १८१)। हिटिस न [हिण्डिस] कान का पात्र (पाका 2, 2, 22, 3) 1 निहिंद्धान [दे] १ शनि-प्रवित बच्च क्षेत्र-रिट्ट में स्वात काहा । २ स्वरित इन्त (३ दीम दि [दे] धनती लें (रे ४ १)। Y 8 )1 टामारय न दि ] उत्तरिकार (१४१) । हिंदि भी वि तिरे हुए बच्च याण्ड (१४ o)। दंघ वृ[ वग्य] वर्नेनंतर (तिन् दीर न [ने] भन्ता नरीन संदूर (१४१)। ट्रार पू [दे] धेन वर्षा पुत्रवती में हुवर' 11): दिशीर पूर्व [दिवर्गार] बहुद का केन, नहुद क्क (जा क्रेंब दी नुस २१२)। टंप 🛊 [रें] मास्यित का क्या हुमा कात्र

विशेष को पानी निकलने के बाम में पाता हिंड्याण न [डिप्डुयाण] नमर-विशेष (दुप्र ₹a) 1 डिंफिज वि दि] वन-पतित पानी में गिरा हुमा (दे४ १)। **डिंब** पून [डिस्ब] १ भय डर (से २,११)। २ किन भन्तराय (सामा १ १---पत्र ६) धीप) । ३ विप्सव डमर (वे २) । हिंद पूं [हिम्त] राष्ट्र-शैस्य का मय पर वक काभय (मूम २११६)। क्रिंस पक्र स्त्रिस्] १ मीच दिरना। २ ध्यस्य होता ना होता । दिमा (हे ४ १६७ यह)। वह विभिन्न (प्रमाण ४२)। (पाचि हेर २२ महा मुपा १६)ः 'यह दुविकारारे वह कुविसामार्थ्य विविधार बिमार (विने १११) । हिभिया भी [हिम्भिया | धीरी नहरी | (शमा १ १ €)। क्रिक बरु [गर्ज**्] सं**हका यस्त्रता। <sub>[</sub> शिद्य (पद्)। डिहुर पूं [त्] भेक मरहरू मेहरू बन(रे ४ Ł) 1 हिरवर्ष (हिरय) १ बछ ना बना हुमा हाबी । २ पूरप-विशेष को स्थाम, विद्वान, मुन्दर, पुता बीर केनते में प्रिय हा ऐमा पूरव । (मात ७३)। हिष्प यक [दाप्] रोगना जनकता। टिप्पर्, डिप्पए (पर्)। हिष्य सक् [सि + गङ्ग्] १ पन बाला, सङ् मानाः २ निर पह्नाः हिप्पद्वः हिप्पप् (पा)। दिमिस न [न] वाय-तिरेप (तिक ८७) । जिल्ला की दि। यस बन्दु-विरोध (बाद १)। हिय मक [टिप ] दर्भपन कला। हिर (क्व 1 (5

( Y tity we dil)

1 (15 Y F) # र्बुदुअ र्दु [दे] १ प्रचना भाष्टा (२ ४ ११)। २ बहा पएटा (मा १७२)। बुंड्या की वि] वाध-विशेष (विक ८७)। क्ष्यक्ष प्रमृ] भूमना फिरना चकर नगना। दुइस६ (पट)। र्द्धप पू वि दे होन चाएडान ध्रपच (रे ४ ११ २,७३ ७ ७१)। देवी बींच (पर ६)। द्रञ्जयन हिं क्यो का धोरायद्रा क्य खएड 'खिबिडे पयलुम्मि दुवर्ष घर्ड पदा ग्नराम्स बुद्दं (मुपा १६६) । इस्स पर्वालय् दोलना कोपना हिलना। हुनइ (निन)। बुलि पु वि] कन्द्रर नपुत्रा (वप पूरे १६६)। बुदुबुदुबुद्द धक [बुदद्दाय्] 'हु-हुर्' भाषात्र करना नदी के बेग का स्तरामसाना। बर्क इत्हरू हर्दे तनत्मिमं (पटम ६४ बहु म पू [दे] मरहुए। सन्यन शुद्र कीट निष्टेप (पर्)। बब दुर पू [व] बर्दुर, मेक मएकूक महरू थग (पद्र)। हर नि [द] वेषदान भीची ऊँची मासवाना (सिंग) । क्य सक [क्रिप्] ट्यांपन करता, नूद वाना धवित्रमण करनाः नर्भ टपमाण (राष)। इयण न दिपनी टब्रॉबन सरिक्रमण (योग टाश्र (दि] गष्टभा दला दान सार मादि पर्देशने का कांछ पात्र विदेश पुरस्ती में होची (र ४११ मा)। हाअगन [दे] सावन, योग (१४ १)। दौंगर देखी हुंगर (बापमा २ टी) । हो गन्ध की [क्] १ तामूत रतनेका माजन स्रिय । २ ताम्ब्रुतिर्शा पात केवनेवाने की भी तमी<sup>र</sup>तन (दे४ १५)। क्षंत्री धौ [दे] १ हराबिम्ब स्थापत । २ पान रवने का भारत विदेश (र ४ १३)। द्यांव वं [ब्र] १ व्हेच्य देन-विदेश । २ वह

Y (9) 1

होस्प्रयमाण देवी होस्प्रजेत (निष् १)।

ह्या (पडम ३१ १२४)।

होत्सविय वि [दोक्कित] क्रीमत हिस्त्य

बास्टिज पूँ दि । इप्सवाद, वावा दिल (र

बोस्रि वि [ वोस्रवन् ] शेववनारा, वाले-

बाह्यसम्बद्धाः हिंदुी पानी में होनेवाका वन्तुः

बोदल इं दोइव र बॉमरी की ग

मन्त्राय । मनोरव नालधा (दे १ २१४

वानाः 'दरशैलिरधीर्ध' (कुमा) ।

मिरोप (सूच २, १)।

बाद इंदि विकास नित्र (मुख १ १)। क्षाब्रिजी की दि] बाह्य ली (मनु ६९ सूत्र)। श्चाहियौ स्मे [दे] बाह्मशी (प्रपू ४१) । कोडू पूँ दि ] एक मनुष्य-वाठि सञ्चासः दिहो तत्त्वलुविभिन्नो हिग्यबर्वतो बाँह बोहो। वी दल्पूरर प्रक्रियं (उन १३६ छै)।

इतिस्व दिक्षिय दिनेता दिनता

बसा ६६) ।

होंबिक्स हु हूं हि १ स्त्रेच्य केट विरोप । २

बोंबिक्य एक घराने जान (परह १ १

इक)। १ डोम चल्हाम (ग २८६)।

बोक्सी की दि दिया की (दूप १८६)।

ξ«Y

क्लेक्स-आति जीम (पर्वह रे

६)। ३ देखी बुंब (पाप)।

क्षोर १ दि | कोट, इस्त स्मी (वा २११

१। इका पन

होत पूँ कि कारितिय भीव की एक बारि (क्त १६ १४वा गुल १६ १४८)। होस्य भी [हास्य] हिटोबा भूमना या भूना (इ. १. ११७ पाम)।

**पूजनाः । २ सेराधित होना समोदाकरना ।** 

क्रोड पुँदि] १ सीमन धौचनसन हुव-

(इह १)। ६ फस-विरोप (पंचय २)।

रादी में 'बोसो'; (वे ४ ६)। २ वन्तु-विशेष

नक्र देशंव (मन्द्र ६ ) ।

द्यास्य की है। दल्ली तिविद्या पालकी (दे ¥ (1): बोध्यक्षत वि [दोस्पयमान] संतय करने-बाला ईवाडोल (पण्डु ७) । हाजाइअ वि [दोन्सयित] पंथमित वैवादोता

'बङ्ख डोलाइचे हिंघपे (पा १६६)।

बीनहमी तरेंदी समत्ती ।।

क्षांव कि देशे क्षेत्र (शक्ति सर प्र २१)। की. वा (पमा २७)। डासिकी की [दे] स्रोधना, कन-प्रकार चौदती (पद्)।

।। इप क्षिरपाइअसद्महण्यवस्मि हवाराइस्ट्रबंदम्छो

(भूमा) १

त्र

**रंड्**य र् दि मन्द्रण बन्मत (दे ४ १४)।

हकुण पूं [हर्कुण] वाच-विशेष (बावा

2 (11):

१६३ मर्दि ।

रै स्पोर्कि इसका उल्लाएए पूर्वा से होता 🕻 (प्राचा प्राप्त) । इंक्र दिही शास बायग शीमा (दे ४ १३ व २३ प्रतः चलः व्यक्ति राष्ट्र)। बरधुन न (बान्तुस) शास विशेष एक षध्द्र वी नाबी या तरवायी (वर्न २) : र्वेक पूं [बहु] पुरवरार-जाग्रेय एक केन क्रानक (विते २३ ७)। दंग्रे देगो इका मित्र देतिसई (ति २२१) । **देश्यन दि धारती १ दक्त, शिवल** (प्रमुद्धः धनः)।

दंबनी क्षे दि हाइती दश्यी रिवर्निस

बरने ना नामन्दिरेय (है ४ १४)।

दक्षित्र रेपो दक्तित्र (निरि १५६) ।

दंश्य रेगो दिस्त (धन) ।

इ.पू.[इ] ध्यान्तर वर्ण-विरोग यह यूर्यन्य

बंग्र देनो बंड = (द) (ति २१६ २२६) । बॅग्स पुत्र [दे] इन पत्र से सीहर बल 'इंबरनेमोरि इ महम्रोल पूरशे हा मूलई विवर्षे (दा ७११, वरण १२)। र्दगरम विकास प्रदेशकाय (प्रास्त्र-नत्म को नाय**णी भार**यानक क्य---४ वय ६१)। हरेगारी की [ब] बीला-बिरोप एक प्रवार शी मैला (रे Y रे Y) । दंड इं[दि] १ वंग वीच वर्षत कांशे (ह

Y १६)। १ रि निर्देश निरम्या (रे ४

हेंद्रज पू (इण्डम) स्वताम-स्वात एक <sup>हेर</sup> बुनि (विवे १२) परि)। र्वेडणी को दि] श्रीकच्यू, देशंच, देश शिक्षेत्र (के v (क) । **बंब**र दृ[हे] १ फिलाप । २ फैर्जा (<sup>६</sup> Y (#) 1

(इना)।

इंडरभ दूर्दि]क्संगर्वक राग <sup>नांधे</sup> (t Y (4) 1 **रंडर**- एक [भ्रम् ] भूमना किरना भ्र<sup>म्</sup> नला। इंडस्नइ (द्वेप १६१)। र्दर्शस्त्रज्ञ रि (भारत) मान प्रशाहमा

डंड पुडिण्डण] एक देन सहसि *दस्स* 

हंड वि दि विकास अधी (समत शे)।

ऋषि (तुवार ३१)।

दंडसिञ्जू [दें] १ प्रामकास्त्र । २ पंत्र

इंडोड एक [गवेपय्] क्षेत्रना प्रन्थेपण

करना । इंडोसप (हे ४ १०१) । संझ

इंडोस्ड रेडो दुंबुस्छ । संद इडोस्डिनि

इरेस घर [वि+पृत्] वसना वसकर ।

र्बंदुरस देवो संदरूत । बंदुरूद (सए) ।

का बुश (दे ४१६)।

बंबोस्डिज (मुमा)।

(सए)।

रहना विर पदना। इसिक् (हे ४ ११८) । बक्त इंसमाण (कुमा)। इसिय न [ वे ] सवत, वपनीति (१४ १४)। श्वनक सक [ बादय ] १ दकता मान्यादत करता बन्द करता। दश्कर (ह ४ २१)। भवि वक्तिस्सं (या ११४)। कर्म विक्ति-कबत कूनाई (गुर १२ १२)। संक-'ताब दक्षिका' शार' दक्षिकरूण संस्कृत ऊर्ण (नुपा६४) मध्यापि २२१)। इ हरकेयव्य (रस २)। दक्क पूं [दक्क] १ केग्र-विशेष । २ केश-विशेष में एहनेवाची एक बादि (मदि)। ह मार की एक जाति (उप प्र ११२)। इक्क्यन [दे] वितन (रे४ १४)। इक्टिरि वि] प्रमुद्ध, प्रारवर्ष-वनस (8 x x23) 1 हरूकपरमुख देशो श्रीक्र-वत्युख (पन ४) । इसका की [इकका ] वाच-विशेष वैका. नपाड़ा क्रमक (या १२६) कुमार मुपा २४२)। ह्यक्रिका वि [साहित] वन्द किया हमा बारकवित (स ४६६) हुमा) । इर्विद्यम न [दे] देश की कर्नना (प्रस् **२१२ मृत र., १)**। इस्स्ट्रमा सी [दे] 'दर-दर्ग प्रापात पानी बपैछ पीने की मात्राका 'सोशिय' ब्रामकामाए मेह्रमंती (स २१७)। बार्जन देवो सम्मंत (पि २१२) । डब्ड पू [दे] मेधे बाज-बिरोप (रे ¥ (1) 1 डब्बर र्र [ दे ] या (गुण्य २ )। छङ्कर पूँ [द] १ वदी मात्राज महान्व्यति

६ वि पृष्ठ पुढ़ाः 'बहुर-सङ्गाण मामेण' (सार्व १८)। इणिय वि [ब्बनित] सम्बद्ध व्यक्ति (गुर १३ ८४)। इसर न [वे] १ फिटर, स्मानीया पाली (वे ४ १७) पास)। २ गरम पानी उप्याचन श्चयरप्र [स्] १ निशाच (रे४ १६ पाछ) । २ ईप्या द्वेष (६ ४ १६) । इस्तर प्रकृति । टपकना नीचे पहना क्रिता। २ मूक्ता। वक् दर्शद (दुमा) वस्तुसेयचामरपीमी' (इन १८६ टी) : इस्तिय वि [ दे ] भुका हुमा (सर १११८)। डाक सक [दे] १ डासना नीचे मिराना। २ भुकाना चामर वयैष्ट का वीजना। दानए (मुपा ४७)। हरुइ उप वि दि ] मृदु, क्षेत्रच मुकायम (बन्ध 2 2 X ) 1 इस्तिय वि वि निराहमा स्थवित (वजा 1 ) 1 हाक्रिय वि [दे] नीचे गिराया हुन्य 'सीसम्बो द्वासियो मुरो' (सूर १ २२०)। डाय प्रविदेशी याष्ठह, निर्वेत्य (कृमा) । खिंक पूँ [विक्कृ] पश्चि विशेष (पण्कृ १ १---पद्म ८)। किञ्ज रेपूँ [ दे ] सुत्र जन्मु-विशेष गौ विक्रुग पार्विको मक्तेशमा कोट-विशेष (स्वाधी १८)। क्षिकस्त्रीमा की [वं] पात्र-विरोध (मिरि 428) 1 हिंग देवो दि रु (स्व)। विंद्रय वि [ दे ] बस में पवित (दे ४ १६)। विक्क प्रक [गाज] सोहका परवता। दिसका (६४ ११)। वह दिसरमाण (द्रमा)। क्रिक्कयन [वे] निध्य इमेशा सवा(दे ¥ (X) 1 दिक्किय न [गजन] संदर्भी नर्जना (मका)। विविद्यस न [विविद्यम] वेव-विवात-विशेष (धोष १६६)। २ त. ग्रुब-वन्दन वाएक | (इक्) ।

डिस्स्ड वि दि देशना शिषिम (पि १४)। क्षोप को स्वर से प्रणाम करना (प्रमा २१)। डिल्झ्रं की [डिल्झ्रे] भारतवर्ष की प्राचीन भौर भ्रचतन राज-बानी दिल्ही रहर (पिंग)। नाह पुं ["नाथ] दिस्सी का राजा (प्रुमा)। दुंब्ह सह [ भ्रम् ] दूमना फिरना बत्तना। द्रद्वप्तदः(ह∨ १६१)।द्रद्वप्तन्तिः(कृमा)। बुंद्रह एक [राषेपय्] दूवना बोबना सन्वेपण करता । हु हुन्मह (हू ४ १ वरे) । बुंदुक्रम न मिनेप में बोज धन्नेपए (कुमा)। इंद्रक्तिल कि गिमेपिकी सन्वेषित ईहा हुमा (पस्प)। दुक्क सक [डीक्] १ मेंट करता मर्पेस भरना। २ उपस्पित करना। ३ धक सबना प्रवृत्ति करना । ४ मिलना । वहः बुक्कीव (भिग)। करह तुक्कंत (उप १८६ ही) पिष)। **बुक्क सक**्त्र+विशः ] दुक्ता भूमना प्रवेश करना । बुक्कड (प्राट्क ७४) । दुक्क वि [डेडोकिन] १ ज्यस्तित हाबिर (स २६१) । २ मिलिव (पिंग) । ६ प्रकृतः ींबतिजै बुक्की (मा २७) एएए सूबि)। दुक्छलुक्कन [दे] वसके से सदा ह्या बाच-विशेष (सिरि ४२६) । बुक्किम वि [बीकित] उत्तर देखो (पिन)। दुम ) सरु [भ्रम्] भ्रमण करना दूसना। दुस र्रहमद्दुसद (हे ४ १६१) दुसी) । हुरुहुछ देवो हुनुछ = प्रम । वह- हुरुहुर्सुत (वजा १२¤)। बेंक पूं [बक्क] एक बन पती परित-विशेष (बज्बा ६४)। बेंग्न को [यू] १ इर्प कुतौ। २ इंद्रका, इक्सी बूप-नुमा (१४ १७)। हॅंकिय देवो डिक्टिक्य (राज) । हेंकी की [रं] बनाका बट-रंडिट (दे ¥ {X) | वेंकुम र् [ ६ ] मधुः ख बटम र (१४ १४)। इंडिअ वि [द] पूरित पूर दिया हुया (t y (t) 1 क्षणियास्मा ) पुत्री [ क्षणिसालक ] पश्चि क्रियासम्बद्धियासम्यस्य लिपा (पनु ४)। तक वि [दे] निर्धेत दिख (दे ४ १६) । क्षोज देवो तुका = कीर । क्षेप्रवह (महा) ।

बोह्य दि [बोक्टिन] १ मेंट किया हुया। १ जारियज किया हुया (महा) मुखा १६६ स्तरे)। जीयर दि [के] अवस्य सेक कुमकड़ मुननेकला (१ ४ ११)। बायल केसे डोक्ट (काम ११-इस ११८)।

होबिजिया हो [ होकिनिका ] चयहार, मेंट (वर्मीर करे)। होड़ दु [ के ] प्रियः पित (पंचि ४०० हे ४ ११)। होड़ दु [के] रे बोल पटहा २ वेस विरोद, निक्की प्रमानी बीलपुर है (सिंप)।

होतन ) न हिक्कित की १ वेंट करता, होतनय प्रेमरेख करता (कुमा) । र काहर, मेंट (गुरा २८ )। होदिय वि हिसिकती जरकारित क्यस्कित निका हुमा (छ १ य)।

श इम सिरियाइअसङ्मङ्ग्णावस्मि डशराइसङ्ग्रेननको प्रक्रनीसहमे वर्षने समतो ॥

## रा वम न

ण १ [ण न] स्वस्थन वर्शनंबतेष इतका उपनारता-स्थान नुवाहि इससे यह मुर्जन्य नदावा है (प्रता प्रामा) । प्राप्त [म] तिरोतार्वेड सम्पर, नहीं भव (दुमानार प्रानु १३६)। उपा उपा उनाइ बजीस पुना न तुन्हीं। ि (दे १ ६% वर )। "संविपस्त्रानदाउ वि [शान्तिपरस्थक्रपादिन] मोस सीर परलोक नहीं है ऐसा माननेत्राला (ठा )। याम[नन्]बद्(देव ७ दूना)। ण ह [इत्सृ] सह इस (हेश ७० इस 55 : ## \$18 (85) : वादि 🟗 वास्तार, वॉएस्स विकास (इना२ ८)। षभ देगो जद ≔ना (ना १ चैत ४२) । दीम पूर्विष्य विदास ना एक रिक्तन नगर, वा न्याय-शास वा केन्द्र निताबाता है जिनको धावकन 'नदिया' बर्ने हैं (नार-भट १२६)। णप्रेयर रेगो गनवर (चंद्र) । गाइ धौ [मिति] १ नवन, नग्रनाः २ ग्रस पान, मन्त्र (धर ४६) । **नइ य १/नवर नुपन्न प्रध्यय ग**ैर लहुर (हे रे १ ४ वर )। २ लियार्चक सम्बद्ध 'नद्र भाषानेय स्थि' (नूर ६ १ १)।

णह केवो पाह (गउड है २, १७) गा १६७ पुर १३ ३४)। पद्ञ वि [निय इ] तक्युक्त, प्रतिप्राय-विशेष बाद्या (सम ४)। पद्मभ देशों गी = भो । शदमासय न दिने पत्नी में होनेकाता फन विरोप (वे ४ २६) । णङ्ख्यन [नीसस्य] भारताका सम्बद्धः। बाद पूँ वादी बात्मा के व्यक्तित्व की बद्धी नाननेत्राचा दर्शन, बीद्ध शबा भागीक बढ (बर्मस ११ १)। यई स्री [नदा] नदी पर्वत स्राह्मित से नितना बढ़ सीत को ननुत्र या बड़ी नहीं में बाहर मिने(हे १ २२१ नाम) । सन्दर्द ["इण्ड] नरी के किनारे **दर** की मधही t)। गाम पुनिमा नकी के दिनारे पर न्वित ग्रन्त (प्राप्त) । गाह दू ["नाव] समुद्र बानर (कर ७२० दी)। पद्रपु ["पठि] बदुर सामर (पर्या १ १)। संनार दु ["संनार] नम्र फाला बदान मारि वेनचै पारजाना (राज)। सोस 🐒 [स्रावस्] वरी वा प्रवाह ( REP & Y Y ) गउ (पर) रेनी इप (रूना) । भाग्नान [नयुन] 'नयूत्रान' का चौधनी

दात से पुराने पर को संस्थान**ः हो प**र (धार ४० इक)। अन्तर्भग न [समुताङ्ग] 'प्रपूर्व'को *चीपनी* से प्राप्तने पर को संस्का काव हो बड़ (स ६ **४ इइ**)। णबद्दकी [नवदि] संस्था-विकेश नम्बे ध (डम ६४) १ प्यत्रद्वाचित्रपत्ती र वा (पद्म<sup>द</sup> 4t) i णडळ र्षु [सङ्ख्य] १ स्वीबा, नेरबा (पद्य १ १; ची २२) । २ पोचवा पाएडर (<del>टा</del>ण t (\$) i ण इस पु [तकुरु] बाय-विरोप (चय ४३)। णश्रस्त्रे हो [सङ्ख्या] एक व्यक्तित (ही १)। णश्रस्त स्री [मकुत्रो] विचा-विकेष क्र<sup>र्र-विद्या</sup> की प्रक्रिया विद्या (राज) । णंध [दे] इत सर्वीता तुवक सम्स्य⊸ै प्रस्तः । २ कामा (प्राक्तः ७१) । र्णम १ वाल्पानीशर में प्रपुत्र क्या बला मप्पय (दे ४ २ दहः दवा वटि) । २ प्रर<sup>क्</sup> गुषक धरमक ३ स्त्रीसार-योगार सम्बद (सम्)। र्ष (डी) देनी बल्यु (ह ४ २ १) । भ (धार) देली इब (है ४ ४४४ मर्थर <sup>महि</sup>

वरि)।

स२२)।

पणु १ ८ पाम)।

र्धाराम वि वि] यह रोका हुमा (पड्) ।

र्षागर पू वि निवर, बहान को बस-स्वान में

बामने के लिए पानी में जो रन्सी साहि वाली

बाती है वह (इस ७२० टी सुर १३ १६३

वंगर ) न सिम्हरू है इन विसंधे केंद्र बोता

र्णगल है और बोगा बाता है (परम ७२ ७३

र्णगस वृंत वि निष्ठतु, नांव चांच 'वडाउछो रद्रो नहलंगनेमु पहरद, बनाललं बिटम-बक्छमते (पडम ४४ ४ )। र्णागम पूर्व [स्त्राह्मस्त्र] एक देव विमान (देवेण्ड 233) I धंगक्रि पू [साङ्गलिम्] बमभ्र हली (दुमा)। वंगस्थिय पू [सङ्गास्तिक] इस क बानारनाने शक्तिरोप को बारश करने वाना पुमर (क्या बीप)। र्णगृस न [स्राप्तृस] पुण्य, पूँछ (ठा ४ २ हेर २४६)। जंगुन्ति मि [सार्गुसिन्] १ सम्बी पूँचवासा २ वृं बानर, बन्दर (हुमा)। संतक्षि देनो जंगोसि (पर २६२)। व्याप्ति हो प्रमुख (गास १ व १२७)। नंतापि १५ [स्वर्ग्स्टिम क] १ पन्तु लगोक्षिय के किन्निरिधेये । २ वसरा निमासी मनुष्य (नि १२७ ठा४ २)। of तरान [द] क्या क्यका (क्या मार ६)। वाद् स्माम [सम्दू] १ पुरा होना मानन्दित होना । २ मपुद्ध होना । एद्दिः एद्दि (यह ) । করা পরিজনাম (বীন)। র পরি ब्राह्म प्रतिभव्य (वड)। र्शंट बुं [स द] १ स्वताम-प्रशिद्ध पार्टापपुत्र नगर का एक राजा(सुप्रा ११ एति)। २ वरत-नेत के कारी अपम वामुदेद (सम ११४)। १ अरव-शेष में हान बाने नवर्षे सीर्वेशर का पूर्व करिय माम (सम १६४)। ४ स्प्रताब-प्रमिद्ध एक वैत्र कृति (बढम २ २)। १ हात्रवश्यात एक भेळी (तूरा ६१८) । ६ स. देर विमान विशेष (मम २१)। नोट्रे का एक प्रकार का कुल धामन (गावा १ १—पर ४१ छै)। या त तपुद्ध होने ¥=

बासा (पीर)। यन न ["बाना] देव विमात-विशेष (सम २१)। कृत न किटो एक देव-विमान (सम २१)। वस्तय न िष्यक्की एक केव-विमान (सम २९)। च्यम न दिस्सी देव विमान-विशेष (सम २१)। मईस्त्री [मता] एक मन्दरन् सामी (फ्ट २४, सब)। ऐस तुं ["मित्र] मरतयेष में होने बासा दिवीय बायु रेव (सम १६४)। "लेस न ( लस्य] एक देव-विमान (मम २१)। यह की चिनी १ माउर्वे बानुदेव की मत्त्रा (पडम २ १८६)। २ <sup>1</sup> रतिकर पवत पर स्पित एक देव-नगरी (दीन)। दण्य न विर्मी देव-विमान-तिरोप (पम ११) । (सँग न ["श्टक्त] एक देशियाल (सम २१)। सिंह न [सुष्ठ] देव-विमात-विशेष (सम २१)। सिरी की [ भा] स्त्रनाम-कात एक भेडि-कर्मा (सी ६७)। सेजियाचा [सेनिश्च] एक वैन साम्बी (प्रेड २६)। र्णद् वृ मिल्ल मात्र विरोध भीष्ट्रप्त का पासक धोपास (बजा १२२)। णंद पूंची [नम्दा] पद्म भी पर्मी (प्रतिस्त) पही सौर एकारसी तिथि (मून १ ११)। र्णदृत्र विर्देश क्षा क्षा के स्व नागण। २ नूग्डा पात्र विशेष (दे ४ ४१)। र्षद्ग पु [मन्द्र ] बानुदेव का खडम (परह् 2 Y) 1 र्णदल पूँ निन्दनी १ पुत्र सहका (शा ६२)। २ राम का एक स्थमाम-क्यात नूजर (पदम ६७ १)। १ स्त्रताम-स्पाद एक बनरेर (तम ६३) । ४ भरतक्षेत्र का मार्ग कादमा बामुरेव (सम १६४) । ६ स्थ्रनाम प्रमिक्त एक वीही (दर ११)। ६ मोरिएक रामा पाएक पूत्र (निर ११)। ७ मेड पर्नेत पर न्यत एक प्रशिद्ध वन (दा २ ३ इक)। य एक चेरव (तप ११)। १ वृद्धि (साह रे ४) । १ नगर निरोप (बर ७२० टी) । नर रि [ बर] दृद्धिनारक। कृत्र न [क्रू<sup>7</sup>] स्थल बन का हिन्तर (राज)। अह 1 ["भर] एक वैद पुनि (कम) । दम न [बन] १ रपनाम-स्यात एक बन को मेर

पर्वत पर स्थित है (सम १२)। २ उदान बिरोप (निर १ ६)। णंद्ण पू [दे] मूल्य नीकर, वास (दे४ ₹**€**) ι गंद्रज पून [सन्दन] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। २ म संताप (संवि ४४)। णदणाको निन्दना निर्देश पूर्व (पाप)। र्णर्र्णाः हो [नम्द्रती] पूत्री सद्दर्श (सिरि {X } 1 गंदराणय १ [नन्द्रशनष] धीषुप्ए (प्राष्ट र्णदमायगपु [सम्बमानक] पर्धाकी एक भाति (परह १ १)। र्णश्यापत्त ) पूर [नम्दापत्त] १ एक देव र्णशावता } विमान (देशक १६६)। २ पू चनुरिन्तिय जीव भी एक चार्ति (शत ३६ (४८)। ६ न सथातार एस्टीम दिनों ना उरवास (संबोध १८) । णदाकी निन्दा र भगतान ऋपमन्त नी एक पन्नो (पडम १ १११) । २ राजाओं सिक **की एक पत्नी भीर समय**ामार की माठा (गुप्पा ११)। ६ भपवान् भी श्रीवसनाव मी माता (सम १११) । ४ मपरान् महाबीर के धवनचात् नामक गणुवर की माता (धावम)। इ. स्टान्स की एक प्रती (प्रतम क्ष्य १)। ६ पश्चिम न्यक-पश्च पर रहतेशाची एक रिक्रुमारी देवी (ठा व)। ७ रिहानेन्द्र की एक ध्रमहिषा की राजधानी (हा ४ २)। < स्वनाम-वयात एक दूप्तरिएरी (टा ४ १)। ६ व्योडिय शास्त्र भ प्रसिद्ध डिवि त्रिधेय---प्रतिरत्य, पत्री सीर एकादरी विभि (चंद १)। र्णद्राध्ये दिने गो गैया (दे ४ १०)। र्णनावस र् [सन्दायस] १ एक प्रशास्त्रा स्यन्तिक (गुरा १२)। २ सूर वन्तु की रक जाति (जीव १)। ६ म. देव-दिमान विदेश (पम २१) । व्यक्ति पूर्वी [सन्दि] १ बाध्य प्रशास के बावों वाण्क शीनाव धाराज (परा ३ ४ रोदि)। र प्रबंध हर्ष (दा ४ २)। ३

र्मितराम साहि पांची ज्ञान (गुहि)। ४

बाधित सर्वेशी प्राप्ति । ३ मेगर (ब्रह १

सर्वि १०)। ६ समृद्धि (समू)। ७ दन

देखो यायत्त (६३)। "तहत्र तुं ["तृद्ध] संणिया सौ ["पेजिन्ह्य] शता मणिक सी एक प्राचीन निर्देशा नाम (कप्पू)। 🖘 🕻 तर वि [\*ax] मैवर-रारक (रथा लाया ण्डपली (धंत)। स्सर्पुनिकरी १ १ १)। गाम पूँ विद्यासी वाम-विशेष देयो पैहासर (स्वर)। २ वासा प्रकार के (स्व ६१७ घाषु १)। धाम दु [ योय] वार्षों का एक ही साथ बत्ताव (बीव ३)। पंदिम न [दे] सिंह की चिल्लाहरू क्ला**ड़** (रे १ मारह प्रतार के नायों की धामान (एडि)। २ न देवविमान-विरोध ( सम ¥ (1) (७)। पुण्यसन ["चूर्जस्ड] होत पर पंदिअ वि निष्ट्ती १ समूद्र (दौन) २ क्षवाने काण्क प्रकार का पूर्ण (नूस १ बेनमूनि-बिरोप (बप्प) । र्वदिक्तापुदि] सिंह, मुकेबर (१४ ११)। ४२)। नूरन [िन्∡] एङ सा**व ब**कासा जीविपास पु निनिष्पोप बाद्य विशेष वाता वाद्य तरह ना वास (बृद्ध रे) (ঘৰ ४६) ৷ र्णित्व्य न [नन्दाय] वैत मुनियो का एक दुव (कप) | र्पदियां भी [मन्दिनी] दुनी नक्की (पद्म ४६, २)। "पिंड पू "पिता अनवान् महाबीर का एक स्वनाय-क्वांत नृहस्य क्यां-सकं (बग) । पंदिर्णक्षे की दिवाद, नेमा साम (दिश रेक पाम)। जंबिस र् [मन्दिस ] धार्यमंद्र के शित्र एक वैनमूनि (ग्रंदि १ )। विदेशमर रे पू [नन्दीधर] १ एक बीप । २ अंदीमर र्रिकेमपुर (गुँक tê)। १ एक देर दिवान (स्थेन्द्र १४४) । र्णती रेग्री लंति (सदा स्रोद ६२१ मा क्यूह १ । बीत सम १६२ स्टि)। र्णाकी [दे] वड, ताय, मेमा (दे४ १ः) र्णंदासर र् [मन्दीश्वर] स्वतान प्रस्ति एक द्वीर (छाया र व्यूर) । यर दूर् [बर]ं क्रिसर-दीर (स ४ ३) । बराइ दू [बंधेर] नगुर-मिटेच (बीर ६)। र्णदुचर 🖠 [सम्दाचर] केर-विरोप, नाव-पुमार के भूतानत्वनावक श्रा के रबनीव्य का मक्तिति देत (द्य १ १ इ.६) । वर्षि

(सरा औ [ (सेरा] नाइ का बिज़ (पाप)। ण<del>दो</del>वर दे[नच्छकार] १ राज्य । २ दोर। ३ विकृतः। ४ वि राजि में कनवे किरने-बाना (हे १ १७७)। जक्**ल पु**[सम्न] नवा नल्पून (३२,८६) प्राप्त)। अ वि "द्वितवासे प्रत्यम (ग १७१)। आहर् दू [आयुप] विक मुनारि (कुमा)। षस्त्रतः पूंतः [नश्च] शतिरा, मरिली भरती माति ज्योतिस्व-विशेष (नामः नप्पः इकासुस्य १): इसम दु[दसम] क्तस बंग का एक सभा एक संकेश (बार ६ २६६)। मास दु ["मास] व्योधित राम्न में प्रांत्य समय-मात-तिरोप (वर १)। शुद्द व ["सुन्य] काग्र वसः (राव) । संयरदार दे ["संयरसर] क्योगिय-व्यक्त प्रक्रिक वर्ष-विकेश (स. ६)। जस्यत्त वि [नगप्र] १ वक्तिम-गर्धि 🍍 मदोन्य नार्यं करनेशना (वर्गीत १)। र पुन एक देव-रिमान (देवेन्द्र १४६)। णकरपत्त वि सिक्सिकी नधक-नगर**नी** नधन मा (मं ७) । षरयचगीम दु [दे मभत्रनीम] रियाः माधवण (के ४ २२)। णस्यसम न [द] नत धीर नरण्ड नि⊞ तने ना शम्र गिरोन (इस t)।

न विपुरी चापिडस्य वैद्यास्य एक ननर (बर ११६६) । परत्र दे फिला दूध विशेष (लामा १ का ११)। साज व िमाजन] उत्तररण-विशेष (हत् १)। मित्त 🖠 ["सत्र] १ देका मॅन्-सित्त (स्व)। २ एक सम्बद्धमार, जिनने मणवान् मन्त्रिताव के बाव बीन्ता सी भी (लाया १ मद्रीपुरिष्दृिष्दृृ्षिक प्रशासका नुरंग, पाच-पिरोप (चय)। सुद्द न िसस्त्री र्शापनीरदेव (चत्र) । यर देवी कर (पत्रम ११६ ११७)। यात्रच र् ["झावर्च] १ स्त्रस्तिक-तिरोप (बीग पहर १ ४)। २ एक नोतपात चेत (ठा ४ १) । ३ शुद्र पन्तु-प्रिरोप (पन्छ १)। ४ व देर श्चित-रिशेष ( सत्र )। सप दू ["सञ्ज] दागढरा के नव-वागीत एक छन्ना (गावा ११६-पर २ ६)। शव दू (श्रित) नमुद्धिमें सूर्व (बन २ १)। स्थाय पू ["नुशा] नुम-शिरेष (पण्ण १) । बहुनुमा रेगो पढ्या (१र) । यद्ध प्र १ विभेनी 🕻 मगरम् नदारीर वा अनेत्र भावा (रण) । १ वत-रिक्टेर (बच) । १ तक राजाुमार । (रिया १ ६)। ४ त. नवर-निर्देश (नूस १)। पद्माम भी [वर्धना] १००६

देख्य

धानम पंप-निरोप (एपि)। ८ काल्सा

समिताय बाह्य (सम ७१)। १ नाम्बार

स्थताम क्यात एक चन्तुभार (दिया १ १)। ११ एक जैन मूनि जो बराने बाबामी सब

में द्वितीय बतरेव होना (प्रस्प २ ११)।

१२ बुध-विशेष (पत्रम २ ४२) । आवत्त

ग्राम की एक दूर्यन्त (ठा ७)। १

णक्ति व [निहान्] मृत्यर नवाना (ग्रह 1 (J णल देशो जनन (मुप्र ४०)। ष्मा देवी गय = नव (प्रहु१ ४° उन ३६६ श मुर १ १४)। राव र्ष ["राज] मेर पर्वत (ठा १)। [भर] र् पर मेर वर्गत (शाका १ १)। यस्ति पुं ["यरेम्ब्र] मद-पर्वत (पत्रम ३ ७१)। वागर म [नक्रर, नगर] शहर, पुर (बह र कल गुर३२) गुचिय गोचिपपु िर्मुप्तिक] नगर रखक कोटपास कोतवास बरोगा (गामा ! १० थीप परह ! २, हासा १२)। यात्र पूर्वितन स्थार में भूग्यार (गावा १ १८)। विद्यमत्र न िनिश्रमन निपर का पानी अपने का सन्ता मोरी साम (ग्राया १ २)। रक्तिसम पु शिक्षकी देखा गुलिय (निष् ४)। वास प्रतिवासी पत्रपानी पाननगर (\* t----1 k) व्यारी केली मंगरी (राम)। वामाणिका की [नगाणिका] धन्कविके (पिय) ध व्यसिंद प्रे निराम्द्री १ चेत्र पर्वेट (प्रस्म ६७ २७)। २ मेद पर्वत (मूम १ ६)। र्वाताम वि निम्नी नेवा वद्म-पहित (माचा जापु रहरे)। गामा देखी गम (नंदू ४६) । णसावि निमी नेपा यस पीता (प्राप्त दे ४ २०)। इ.इ. [ जिल् ] क्लार रेस का एक स्वनाम-स्याद राजा (पीरा मदा) । प्रसाठ दि [दे] निर्देश बाहर निकला ह्या (4x-43 fef) : वाताह द [स्यमाच] इस-विदेव बहु का देइ (पाय- पूर १ २ १) । परिमंहस व [ वरिमण्डल] संन्यान-निरेप राधेर का ब्रावार-निर्देश (छ ६) । षपुस र्षु [नपुत्र] स्रशायन्त्रात एक राजा (श्राम २२ ११)। णचिरा वयो अइस = मविसन् (वि ३६६)। राष्ट्र (वर ) वह पार्चन, पायमाग (मूर । (का ४)।

२, ७१३ ६ ७७) । हेक्क मिन्रिर्ड (स १६१) ह अधियम्य (परम = प्रयो क्यक प्रचायिक्षत (स २६) । प्यश्न द्विस्य वानशारी परिन्ताई (कुमा)। लाइ म ज़िरवी नाव मृत्य (वे ४, ८)। णधारि निर्देकी १ नावनेवासा । पून्ट मुखबसा (बक् ६)। णद्मम [नर्तन] माच मृद्य (क्यू)। **पदामा को [नदानी] शायनेवामी का (हुमा** क्ष्मु मृत १६६)। णवा | देवा णा = हा । जबावित्र वि [नर्सित] नवावा हुवा (घोष २६१ हा १)। ं ज्वासञ्जन ∫नास्यासञ्ज} घडि समीप में नहीं (छामा ११)। जबिर वि [नर्सितृ] भववैया नावनेवाना नर्वन-शीन (गा ४२ शुपा १४ हुमा)। णिवर वि [वे] रमछ श्रीत (वे ४ १८)। धारकुण्ड वि [नास्युग्ग] को बति परम ह हो (हा १ १)। णक्र सक कि। जानना । एउनक् (प्राप्त) । णक्र वि [स्पास्य]स्पाय-धंगत (प्राष्ट्र १६)। णक्रीत ज्ञासमय } देखो जा≖का। प्रज्ञर वि [दे] मसिन मीचा (रे∀ ११)। जामर वि [रू] विमन निर्मन (रे४ १८)। ण रूपक निट्री शतकता। २ सक दिना करनाः सन्दर्भ (हे ४ २३)। पट्ट पू [मट] नर्तनों की एक जाति 'एक्बीत गहा पमलुदि बिपा (रीमा मला बच्च)। पट्टन [नान्य] मृत्य गीत बीर नात न"-वर्ष (सादा १ ६३ सम ८३)। पान र्षु ["पास्त्र] माटबन्सामी, मूचपार (बाब्र t)। माछप पू िमान्य ही देव दियाय सएरप्रात दुग का समित्रायक देव (सा २ ६)। । भरित्र 🐧 [ीपाय] नुत्रपार (AI Y) I णटु [नुस्य] साच मृत्य (से १ का कच्चू)। णय सर्क [नृत्] नारता तृप करता।। यहम न [नार्यक] रेक्षो यह स्वाहर

₹७€ लहुझ } वि [नर्चक] नावनेताना नववेया पट्टेग ∫ (बाबे खार्म ११ और)। औ. इ (प्राप्त है २ ३ कुमा)। णहार पुं [नाज्यक्षर ] नाज्य करनेवाना (म्रस) । णद्वायत्र वि [नन्तरः] नपानवामा (कप्पू) । णहिया क्ये [नर्श्तिक्य] भटी शर्तकी भावने-वासी ग्री (महा)। णन्दुमच रु [नर्सुमच] म्बनाम-स्माव एक विद्यापर (महा)। यारू र्जु [नार] एक नरक स्थान (देवेन्द्र २०)। २ त. पत्तायन (दूप ३७)। पट्ट वि निर्यो १ स्ट बनात नारा-भाष (मुम १ ३ ३ प्रामुद६)।२ पून म्यून-चत्र का सङ्ख्याँ मृहुर्च (चत्र) । सङ्ख्य वि "सर्विको १ को विकर-वहरा हुन। हो (लाबा १ १—पच ६६)। २ शास के नाम्तरिक बान व सम्त (राम)। णदूव वि[नष्टयत्] १ मारा बातः। २ म यहोरान का एक मुद्रती (राज)। लड सक सिंद दे रे स्वाइत क्षेत्राः २ सक सिम करता। एउडा, सार्वित (हे ४ १५ कुमा)। कर्मशुक्तिकः (या ७७)। करहः पारिकांत (पुपा ११८) । णड केको णह≕ नर्। एकइ (ब्राष्ट्र देश) । ण इंदेनी पछ = नड (हे २ १ २)। भड़ पूँ[नर] १ नर्डकों की ए≨ बाठि नट (हे रे रेश्फ प्राप्त)। न्यक्रिया भी [न्यादिना] शेलानीकेष नर की तयह कृतिम साभुतन (धा ४ ४)। गहास न [सन्नाट] भार करान (हे१ ४४-११७ वतर)। पशस्त्रिमा की [संग्रानिका] संभाद-सोमा, नपान में कन्दन थादि था विशेषत (कुमा)। गद्याविम नि [गापिन] १ स्वार्त किया हुमा। निम्न स्थित हुमा (मुदा १२४) । ण दम वि[गुषित] व्यापुत (न १ ७ ३ ਚਰ) । ण इ.स. वि. दि. दे वित्र वित्रतारित (दे

४ १६) । रेन्द्रित वित्र क्या ह्या (दे

४ १६ पान गुप्ता १ ६)।

पदाविदी शक्क(दे४ १०)। मिचिमाः) भौ निष्त्री देवस्ती वनी णर्खा रेगीस (इस्से) । र पूर्धकी जदंबनम् न [दे] १ सङ्खाङ्खामा पुनी नार्वित नविनी (स्व)। वित कास्रस्तर । २ किया (दे४ ४७)। पपट्ट वि [अप्रमृत] बनवीत क्लिप्ट्र्स् णतु १ (नष्य क) देशो पश्चिय ज<del>न्म ∫ (तिर २.१) हें १.१३० सूपा</del> बबेरपीटा (नरह) । णपहुष्पंत वि [ अप्रसवत् ] सपर्वात होता ११२: fen १ ३) ı (**पबद**) ( यच्ञाच्यो पश्चिमा (इ.इ.१ दिया १३)। णपुर । पुन निर्मुसकी नांबक स्तीव जन्द्रप्री भौ [नप्दक्ति] १ गौर नौ औ। नावर्षे पेड (बीभ २१ वा १६) र रोहित की भी (निया १ ३)। ज⊆सर्ग का १ तम १७। महा)। श्रेय जर्मक्यो जभी (क्या १ ३) कल्)। प्रविद्यों कर्म-किटेप विश्वके स्वय है औ णलुनिज व [सप्तृ] १ सीव कोठा। २ कीर पुरव कोतों के स्पर्ध की बाल्या होती प्रतीय परतीया (दन क ह )। **कै** (ठा **१**) ।

अमसिक्ष न वि] प्रवाधितक मनौदी (<sup>६</sup> ४ २२)। प्रसिद्ध निमि । स्वताय-करात एडीकर्ग वित-रेज (सम ४३)। २ स्वनाम-सर्दिश चर्नाप (उत्त ११)। भवनान् श्रावमरेन स प्रण पीन (बख १४)। णभिक्र कि नित्री प्रख्या विसने नगर किया हो वह 'पडिन्त्रवाचनाचो तस्य धारको निमन (महा)। र्गासिम कि [संसिद्ध] नमाना हुमा (ग 44 ) i मामिश्र देखो लग ।

णमिका की [निमिता] १ स्वनाम-क्यात एक क्ये । २ 'ब्राहापर्यंक्यानूत्र' ना एक सम्पर्यन (ए।या २)।

णमिर वि [सम्र] नमन करनैवासा (कुमा मुपा२७३ ग्रस्)।

ष्यमुद्द (निमृषि) स्थान-पराव एक मन्द्रो (मद्भा)। णमुद्य पू [समुद्य] मानोविक मत का

एक उपासक (मग 💌 🐧 )। णमरु व [ममेरु] बुध विरोध (पुर 💌 १६

स ६३३)। ष्मो ध [नमस्] नमस्कारु नमन (मग

णसोद्धार पु [नमस्कार] १ कनत प्रणाम (हु१ ६२ २ ४)।२ मैत-शाका में प्रसिद्ध एक सूत्र-सन्द-विशेष (विसे २८ १)। सहिय न ["सहित] प्रत्याक्यात-विरोध वत-विशेष (पत्रि)।

णमीयार रेको णमोकार (चंड)।

णन्म प्न[नर्मन्] १ ह`सी उत्हास । २ भीश केमि हिर देश था १४ दे र, ६४ पाम) ।

व्यन्स्या की [नमदा] १ स्वनाम प्रसिद्ध नदी (नृपा १ व )। २ स्वनाम-स्रात एक राज-पत्नी (न ३)।

ग्रंथ देशो गर्=मर् 'विस्पर' नयदै नई (सम १)।

जय पु [सर्ग] १ पहाइ पर्वेठ (का दूरश्र गुप्त १४०)। २ वृत्त देइ (हे १ १७७)। देती ज्ञा ।

लय स[नच] नदी (उप ७६० थै)।

णय [सर] १ नमा हुमा मुता हुमा प्रशुड नम्र (ए।वार १)। २ जित्तको नमस्तार विया मया हा बहु शीयेयश्चिवश्चक्रिक्यनयद्यो रियमी रावा (गुरा १६६)। १ म. देरविमान विदेव (नव १७)। सच पु [मत्व] भीग्या नारावस (घण्डु ७)।

णय पु [नय] १ म्याव नीति (निने ६६६६) मुता १४ व्याग २ १)। २ दृष्टि (३७ ७६)। ६ प्रशाद धीतः 'जनए। दि देशा' परए। दुवार व रेका राक्ष (स ४१४)। ४ मल्

के धनेक बर्मों में किसी एक को मुक्त कप से स्वीकार कर प्रत्य पर्मी की ज्येशा करनेवाला मत एकोश-प्राहरु बोच (सम्म २१) विशे रहेक्ष ठा ६ ६)। १ विधि (विसे ६६११)। चंत्र प चिनक्री स्त्रनाम-स्थात एक वैन प्रत्कार (रीमा)। त्य वि ["विम्] म्याय चाहतेवाडा (था १४)। य, यत वि [ यत् ] नीविनासा न्याय-परावरा (सम मुता १४२)। विजय दु [\*यक्य] विषय की सदरहर्वी शताब्दी के एक बैन मुक्ति को मुप्रमिख विद्वान् भी महोविजयत्री के गुरू । वे (उदर २ २)। णयचकान [समनक] एक प्राचीन वैतः। प्रमाण-प्रन्य (सम्मत्त ११ )। णयण न [सथन] १ ने जाना प्रतरण (इस १३४)। २ वातना ज्ञान । ३ निधाय (विसे **६१४)। ४ वि ले भानेत्राना 'त्रम्**खा" गुपहनयणार (गुपा १७०)। १ पुन च च

मैत्र सीचन (हे १ ३३ पाम)। उझान [जस] यम् याम् (पाप)। णयय पुं[देनपत ] ऊन का क्या हमा

भारतरल-विशेष (लावा १ १--पत्र १६)। जवर देखो जगर (है १ १७७ मुर ६ २ मीय भव)।

श्रवरंगमा हो [नगराङ्गना] बेरमा परिवृक्त (धा२७)। लवरी की [शगरी] शहर, पुरी (उस पत्रम te t ) :

शर दुं[नर] १ मनुष्य मनुष पुरुष (हे १ २२१ मूष ११६)। २ सर्जुत सम्यम

पाग्डव (दुमा)। उसम पू [ दूपभ] भेड मनुष्य क्षेत्रीकृत नार्व ना निर्माद पुरुष (मीर) । कंतरपयाय र् ["सन्त्रयपात] हर-विशेष (ठा २ ६) । इता सी ["पारता]

वरी-विरेप (दा २ ३: सम २७) । दौना-क्ष न [कान्ताकृत] परित्र पश्च का एक धिक्तर (ठा क)। दत्ताकी

[रचा] १ दुनि-पुत्रव मनगर् की शाननदेनी (यन) २ नियादेनी-बिटेन (सीरि)। त्य पु विषयी बरानी सना (स ११) नायग दू [नायर] एका नराति (का १११ के)। नाह्यु

िनाथ] राजा भूपात (सुपा ६३ सुर t रेर)। पहुर्व ["प्रभु] राजा नरेश (उन ७२८ टी सुर २ cv)। पीरुसि दू ["पीरूपिन्] सम-विशेष (छा ७२८ शे)। स्पेक्ष पु [स्थेठ] मनुष्य सोक (शी २२) मुपा ४१३) । वह पुं["पठि] नचेरा सजा (मुद्र ११४)। वर पु ["बरे] १ स्प्रता मरेश (मुर १ १३१३ १४ १४) । २ उत्तम पुरुष (उप ७२८ टी)। बरिंद व् ["बरेन्द्र] यम भूमि-पठि (सूपा ४६ सूर २ १७६)। वरुमर पु [ वरपर] में ह राजा (क्त ta)। यसम वसद्दू विषुपभी १ देको उसम (फ्यहर ४ सम ११३)। २ एका कृपदि (पडम ३ १४)। ३ दू हरिनेश का एक स्वनाम प्रसिद्ध राजा (परम २२ १७)। बाह्य ("पाफ] राजा मुगम (मुश २७३) । बाह्य दू ["बाहुन] स्वनाम-स्यात एक पत्रा (भाक १ सए)। बेय पू ["येद] पूरव केद पुरुष को की के स्पर्धं को ममिकापा (कम्म ४)। सिंघ सिंह, मीह पू [मिंह] १ उत्तम पूरप मैष्ठ मनुष्य (सम १६६; पतम १ २ वर्षमाण में पूरप का बीर मर्पमाण में धित ना धानारनामा भीड्रप्त सारामण (णाया १ १६) सुंदर वृ [\*सम्दर] स्व नाम-स्यात एक राजा (यम्म)। हिंदा वृ [रिभिष] सना नरेश (गा १६४ मुपा

परण्ययः पुं [नरकण्यः] नरक-स्थान-विशेष (देनेश्वर १)।

परकेट पूँ [न(३०ठ] सन की एक कावि (राम ६७)।

परिसह पु [मरिनह] १ बनरेन राती सोयम्म बनदेरो नर्रोंग्रहा छि पछिन्नौ (गुप्र १ वे)। २ एक सम्बुसार (इन्न १ ६)।

णस्म १९ [नरक] नारक बीकी का स्थान णस्य है (सिंगा है है पटन है। सा १ प्रापृ २१ का)। दास, वास्त्रय र्द्र[<sup>\*</sup>पान्ड क] परमाणानिक के का नरक क नोरों को याजना (पीड़ा देते हैं (पत्रय ₹ ¥१: # ₹₹3) I

वपनेत्राता (इमा) ।

पराच-ग्रमीक

जस्य । एवं निराय है । लोहमय बस्स । जसाईतर रि क्षिप्राटम्तपी सनार की कराज्य २ संडमन-विशेष शरीर की रचना का एक प्रकार (दे १ ६७)। ३ ध्वल-विशेश (ছিভা)। णसम्बद्धाः विकास विकास णरिंद पं निरेन्द्री १ राजा नरेख (सम ११६ प्राप्त १७ कल्प)। २ शाक्षीस्क सर्पे के विया नी उत्तारनेवाना (स. २१६)। कंत न िकान्ती के निमल-विशेष (सम २२) पहुर पिया सप्रभाग महास्य (परम ७६ व) । बसह दं विषय में बेस यमा (उस १)। परिंद्रचरवहिंसग न मिरेन्ट्राचरावर्तसङी देव-विमान-विकेष (सम २२)। जरीम पंनिरेशी सवानस्पति सो पर

हबनधेसी होडी प्रस्ति न संदेशें (नूर १२, णरीसर द्रं[नरेश्वर] एका नलाति (ग्रीक भरतम ९ [नगेत्रम ] धौरप्र (धिरि **83)**1 **परच**म प्रे. निरोत्तम] जनम पूरप (पडम Y# #1) | णरेंब् धेनो गरिंब् (पि १४६: निय) । जरेसर **क्या** जरीसर (का ७२८ टी सुना XX; XX() 1 जन्न प**िंड**े दुए-विशेष श्रीदर से पोला रुपमरकुण (देश्य २२ छ।)। अस्म निस्की र उत्तर देशों (पदशार का १ ११ धी मन्द्र १३)। २ ट्रंचनाचम च्या का एक सुक्ट (में रु) । ३ वसमस्त ना एक स्वन्धम-स्यात पुत्र (चीत ४)। कुम्बर कुबर ई[कूबर] र दुर्बबपुर ना एक स्वत्यम-स्वाद राजा (पत्रम १२

७२)। २ विध्यमण ना एक पुत्र (क्यावस)।

"गिरि पूं ["गिरि] चएक्प्रचीत राजा का

गस्य व [दे] प्रतौद, बस ना तुस्र (दे ४

ण**धार देवी जहास (१**२ १२६ <u>इ</u>मा) ।

एक स्ननाम-स्थाउ हान्द्र (महा) ।

११ पाम)।

णसिअन कि । पृष्ट वर मकान (दे४ २ यक्र∫ा णसिज न मिसिनी १ समातार तेईस दिनका क्यमास (सेंबोम प्रव)। २ ईन, एक देव विमान (विकास १६२)। पंजिण न निश्चिनी १ एक क्रमल (श्रम चंद १ । पाय) । २ मझाविश्वः वर्षे शायकः प्रदेश-विरोप (ठा २ ३)। ३ 'तमिनान' को चीराडी मान्त से समाने पर जो र्यस्थानमाही वह (ठा२ ४। इक)।४ देव-विमान विद्येष (सम ६३ ६४)। ४ क्लाम पर्वेत का एक स्टिक्स (कीव) । काब पं किटी बनस्कर-पर्वत-विरोध (छा २ के)। सम्म न शिलमी १ देव-विमान विरोप (सम १४) । २ तुप-विरोप (ठा व)। ६ मम्बर्ग-विदेश (मार ४) । ४ सना भैषिकका एक पुत्र (चात्र)। विश्व औ ियती विकास निर्माणक विजय प्रदेश विरोप (ठा२ ३)। जक्रिणंग न [निक्रिनाङ्क] संक्या-विशेष पद्य को की पढ़ी साथ है बूखने पर को संबम सम्बद्धी बहु (ठा२ ४ इक्)। जिस्ति ) की [निस्ति] कमलिनी पधिकै पिंडणी ∫ (पार्में छार्यों ११) । गुम्म क्यो पश्चिम-ग्रम्म (निर २ १ विसे)। बज न विमा ज्यान-विकेष (कामा १)। पश्चित्राद्यः र्षः [मस्मिनाद्यः] स्पूत्र-विशेष (बीप) । प्रक्रम न वि] देवृति निवर, बाहला क्रिका २ प्रदोबन । ३ निमित्त कारण । ४ कि क्योंमित की वशक्ता (दे ४ ४६) भव केवो जस । शावद (यहः हे ४ १६४) २१६)। यप दि [नव] तया नूतर, नवीन (पडड प्रामुष्टर)। यहुया बहुकी [क्यू] नवोडा दुवदिन (हेका ११ सुर ६ १२)। णवाचित्र [सवन्] चंक्रा-विदेश नव ६ (ठा ६) । इ.सी [ति] <del>संस्था-प्रितेप लागे</del> र (स्रण)। सन [\*क] नवना समूच्यन (वे १)। जायणिय वि ["योजनिक]

नव मोजन का परिमाणवाका (का १)। गडड, नडड की "नवति । संकाशिक रिग्यानचे ६६ (धम ६६ १ )। प्राप वि नियन्ती १६ वी (प्रका १६, ७६)। नवह देशों एउड़ (इस्य २, १)। नमसियाची निवसिका वन सव रा बर्ल-विशेष (सम ब∉)। स वि विशे गवर्षा (तथा) । मी की "मी तिकिश्वरेक पण का नवची दिवस (बम एट)। मापस्त वं विभीपमा विकास किन प्रामी (वे ६)। जबद्धार देशो प्राप्तकार (सिंट १ केन ६ चल)। णनभारमी की मिनरभारस हेती शला-बन्दान-विशेष वत-विशेष (संबीय १७)। णबस्य (यप ) वि निवी यनोबा कुल क्य (8 Y Y22)। श्री स्त्री (8 Y Y2)। णयशीक पून [नवनीत] नक्तु मत्त्वन भनरा (रूप सीप: प्रामा) 'सनुबद्धमोग्न नर-फीमो (परम ११८ २६)। प्रवर्णात्या क्षे [सबनीतिक] स्वताह-विदेष (पएक १) । जबपय न [सबपद] नवस्तार-मन्द (स्विरे Rut) I अथमाखिया की निवमासिका े पुन्त-स<sup>मूच</sup> बनस्पति-विशेष, बसेती नेवारी, बेवार (वप्प) जबनिया की मिनसिस्त र दवक वर्षेत वर खनेवासी एक विश्वक्रमाधी वेशी (ठा )! २ सर्प्रस्य-गामक इन्द्र की एक धर-मिहरी (ठा४१)। १ शक्केन की एक पटणी (ठा ≼)। जमय केनो जब-ग (वंचा १७ ३)। प्रवय देखी धामय (खाबार १७)। जबबार देवी जबकार (देवा रा सि ६ ६)। भवर सक्त किया दिल्ला। कर्ने खर्री क्याँ (সায়ভ ৬৬)। जबर) घरकेवल धिर्टक्क (हेररंश जनर द्विपाठ पत्र क्लाइ सूपा । जी १**०**३ मा ११)। २ धनन्तर बाद में (है २, १४४) माप्र)। भवरंग ) पुं[स्वयुक्त, क] शहुतन रेफ भवरंगय ) नया कर्ण (तुर ३ ११)। र

क्किनिरोप (पिय)। ६ कीमुस्य रंग ना

वज्ञ (वचका भा २४१) सुर ६ १२ वाम) ।

क्यरित की [सबराजि] मध दिनों का ग्राहिबन मास का एक पर्व (सिंह ७८)। णवरि स वि] ग्रीय, बस्ती (प्राप्त वर)। प्रथित ) देखो प्रवास (हे २ १८८ से १ णमरिल । १६ प्रामाः सुर, २६४ वह या १७२)। प्रभरिजन दि]सङ्गा नस्यै तुरन्त (दे ४ २२ पाम)। ध्ययस् देखी गवर (चैंड) । णसञ्ज्ञमा भी विदेश बहुद्रत जिसमें पति का माम पुष्कते पर उन्हें नहीं बढानेवाली की पत्तारा की तता से ताहित की आती है (है ¥ 21)1 णवद्धदेवो णव नगर (हे२ १९४३ दुमाः स्त ४२८ थै)। णयमिञ्ज न [दे] उपमाचितक मनौदी (रे ४ २२ पाम **वका** व**६**)। णया की निया र नवोड़ा दुलदिन । २ पूर्वित को (सूर्य १३१२)। ३ जिसको श्रीसा निए दीन वर्षे हुए ही ऐसी साम्बी (बद ४)। ४ स. प्रश्तार्वक सम्मय, प्रयवा नद्वी १ (स्वस्य ६७)। णविस १ वेपरीत्म-पूचक सम्मय 'राति हा वर्ती (हे २ १७८) कुमा) । २ निपेवार्वक धम्मय (पडः)। णवित्र देशो जिमिश्र = नत (हे ३ १४६ णविभावि निरुपी दुवन नपा (धाचा २ २ ६)। णयीज वि [सर्व स] दूतन नया (सोक्ष् **८**६ वर्गीक १९२)। णयुक्तरमय वि [नवाचरशततम] व्यक्ती नववी (पडम १ २ २०)। लयुद्धय (प्रत) रेखी अय = नव (नुमा)। णबाडा की [नय'डा] नव-विवाहिता की दुसद्दिन (काप्र १६७)। ज्योद्धरण न [दे] वश्चित्र **पु**ठा (दे ४ २३)। याच्य पुंदि] पातृतः वात्र वय पुष्पया (रे Y (#) 1 लक्ष्य वि [सक्ष्य] दूता, नवा, नदीन

(भा २७)।

लब्द देखी मा⊐ का। पारवाहता पू कि र वैघर, पनाच्य मोमी। २ नियोगीका पूत्र सुवेदार का सहका (वे ¥ २२)। णसंख्यः [नि+अस्]स्थापनं करना। नमेजब (बिसे १४६)। कर्म, मस्सए (बिसे १७)। संक्र नसिऊण (स ६ ८)। यस प्रकृ[नश्] माला प्रसादन करना। ए। ए। (पिन)। ज्सण न स्थिसने स्थाप स्थापन (बीव १)। प्रसा **को [स्]** नप्र ना*नै 'प्रमुद्दैरसनियम*ण्ये हर्ह्यकरकाम चम्पनसमुद्धे (पुरा १११)। णिस्थ वि निष्टी नारा-शत्व (कूमा)। णस्स रेको नस≔ मय्। एसका एसकर् (पट हुमा)। यह नस्मैत, नस्समाण (बा १६ मुपा २१६)। णस्मर वि [नन्धर] विषयुक्त भेषुक्त नाज्ञ । पानेवाचा वाणनस्थया क्यार ( मुपा २४३)। णस्सा 🛍 [नासा] गामका प्राणेन्द्रिय (तार-मृच्य १२)। णह् देखो णक्स (सम ६ कुमा)। णद्र व [नभस् ] १ माकाकः गमन (प्राप्यः है १ ६२)।२ पुंभावण मास (देश/११)। अर्वि वर् र प्राचारा में विचरतेवाला (से १४° १०)। २ पूँ विद्यावट माक्सरा-विद्वारी मनुष्य (सुर ६ १८६) । किउमेडिय । न ["केतुमण्डित ] विद्यापर्धेका एक नपर (इक)। गमा की ["गमा] भाकाश-नामिनी निया (गुर १३ १०६) : गासिकी भी "गामिनी पाराश वर्गमंत्री विद्या (गुर ३ २०)। यर देखी छार (छा ११७ धी)। बहाइणय न विद्यासन्त्री नव टवारने का शक्त (माचा २ १ विस्प न ["विस्तः] १ नगर-विशेष। ९ नुमट-विशेष (पदम ६६) । बहुण प् [ बादन] कुल्लिटेय (मूर ६ २६)। ैसिर न [िशारम्] नखकामग्रमा (मग १ ४)। "सिद्दारी ["सिमा] नव कामक्रमाग (क्या)। सर्वा पू [क्सेन] चन वपरेन का एक पुत्र (चन)। इरणी की ["इरणी] नव सतारने नाशन्त्र (बह १)।

पार्ट्सि वि [ नस्रयत् ] नववाना (दस ६ **\$**\$)1 णह्महर्ष् दिं] वृक्र उम्मू (दे४२)। णहर र् निस्तर] नव नावृत (मुपा ११ **६ ६)** i णहरण र् [दे] सबी नवनाना चन्तु, पापर (बग्बा १२)। णहरणी भी [नम्बहरणी] नहरती सव उतारने का राज (पंचव ३)। पाइराम्न पू [नस्यरिम्] नवदावा चापर नेतु (स ११ टी)। णहरीकी [दे] दुरिका दुवी (दे ४२)। पाइयक्षी की [द] विदुद विजनी (क ¥ 33) I णहाद म स्नायु स्तायु रग नस नाही। पद्धि पू [नस्यन्] नतःश्रवाम बन्दु, स्वापद बन्दु (यसू)। पहि वि [निविष्] उत्तर देखो (प्रणु १४२)। गहि य [निहि] निरेवार्षक घष्यय गही (स्वय ४१ विग धगु)। णहुम [नसलु] बगर देको (शट—पृ**न्**य २६१ सम्बद्ध १८)। णा चरु [क्या] वानना समभना। मनि याहिक (निमे १ १६)। ए।हिनि (नि १३४)। कर्म गुस्तक गुस्तक (है ४ २१२)। क्यक- णस्त्रंद पञ्चमाम (से १६ ११ वर १ १टी)। संइच्छाई जाउप जाउन्ये जबा जबार्ज (महा ति रंब ६ घीतः सूच १ २ ३ वि १००)। इ पायस्य प्रेम भी स मुर४ दंश हेर १६६ मण ३१)। णा घ [स] निरंब-मुबद धव्यय (धरुष्ठ) । णानम् } वेदो पायग (प्राप्त २६) । णानम् णाभक्ष (पा) वेशो णायग (पिंग)। णाइ वृं [हारित] दरबादु बेरा में घटाना धतिय-निशेष । पुत्त पू ["पुत्र] मदनान् म्या महाबीर (पाषा)। सुय र् [\*सुन] भगशन् भी महाबार (प्राचा) । णाइश्री [द्यावि] १ नाउ ममान जावि ११ मीपः प्रसः)। २ माना

(पडम १

रिवाधादि स्वतन तमा (खाया १ १)।

१ ज्ञान बीज (याचा टा ६ ३)।

धर्म (सम ६६ मीप)।

मात्रग ∫ सर्व)।

(झोब ६१८)।

२१६१)।

सायार देलो । बार (पक्रि) । व, पैस वि [ दम् ] द्यानीः विद्वान् (पि ६४ साचाः

समू ४६)। स्व वि [ विम् ] बात-नेता

(बाबा) । । यार पूं ["बार] ज्ञान-विपयक

शास्त्रोक विवि (राज) । वरण न [गैयरण] ज्ञान का बाच्छादक कर्म (क्ला 🐼)।

|वर्रावाज न ["वरणीय] धनन्तर उठ

पाज हो न [वे] सिक्त⊳ मुद्रा (मुण्या१७

प्राणतः व [नानात्य] भव विशेष सन्तर

जाणता भी [नानावा] क्रमर देखो (विदे

भग सुर १ द १)। थिइ वि ["विघ]

सनक प्रकार का विविध (जीव वे सुर **४** २४% व १३)। णाणि वि [झानिम्] बानी बानकार, विद्वाप् (प्राचा उप) । पाविय देखी जाइय (रण)। जाभि पू [नामि] १ स्वनाम स्वाठ एक कुनरर पुरव भनवान ऋपमनेन का रिवा (सन १६)। २ फेर कामव्य भागः। १ बारी का एक घदस्य (दस्र ७)। नेतृष्य पू ["सम्बन्ध] कारान् ऋषमदेव (परम४ ६८)। थास सक [नमय्] १ नमाना नीका <sup>|</sup> करना। २ स्टास्थित करना। २ सर्गेण बरना । सामेद (देश ४६) । बद्ध- वामर्थत (विते २१६)। चंद्र- पामिचा (निदृ१)। जास दूं[नाम] १ परिकास मन्द्र (मन २३ १)। २ नमन (विमे २१७६)। णास च [साम] संबादना-मूचक धम्पद (नूप १ १२ ३) । व्यास व [सास] इन मनोका मूनक बच्चन — श्रीमादना (मे २,४)। २ धावन्त्र**ण संदीपन** (शृष्ठ १ वं १)। १ प्रतिक्रिक स्पाति (ग्रन्न)। ४ धनुता धनुमति (विम) । १.—१ वास्या-संबार पार-पूर्ति में भी दमरा प्रयोग होता है (हा४ १ एव)।

वैत प्रमाश-विशेष पांचवा पूर्व (सम २६) । णास न नियम् नाम मान्या मनियान (विपा १ १ विसे २५)। इस्मान [\*कर्मम्] कर्म-विशेष विवित्र परि**णा**न का कारण मूजकर्म (स.६७)। धिका, विद्य भेवन भिवातान मत्या (कप्प सम ७१ पत्रमे ४ ८)। पुर न [पुर] एक विद्यापर-नगर (इक) । शुद्दा की ["शुद्रा] नाम से अधिक पुरा (पत्रम ४, ६२)। सम्ब वि [ सरम] नाम-मात्र न समा नाम धारी (ठा १) । हिअ वेको चेय (पउम १७६ सपा ४३)। णासप्य न निसनी नमानाः नीवा करना (विदेव ८)। णाममतक्त पुंदि वाराय पुताह (वरु)। जासागोच्य न [नामगोत्र] १ वनार्चनाम। र न.म तथा गोत्र (गुल १६)। णाया च [नाना] धनेक पुरा-पुरा (उपा जामिय दि [मिनति] नमाया द्वारा (सार्थ णामिय न [मासिक] नानक राम्य, पर (विस **t 1)** i **जामुद्धसिञ**्चन [दे] कार्यकरन कान णामाकसिक्ष ) (हे २, १७४० हे ४ २६)। णाय वि वि] गविष्ठः समिमानी (दे४ २६)। णाय देशो जाग (कटा ७७७) कप् भौरा पत्रक बना १४: मुपा ६३६) पठम २१ **YE)** 1 णाय प्रै नािद् राज्य बादाज व्यक्ति (बीप पत्रम २२ ३८ स २१३)। ष्माय पु [स्याय] १ प्रश्वनार—प्रकीत न्याय शास्त्र (गुज्ज ६ १: वर्मीव ६८) । २ साममिक षारि पर्-सर्मे (बल् ३१)। जाय प्रे नाव किनुसाधिक वर्श सर्पवन्त्राकार ययर-विदेश (सिरि ११६)। ष्पाय नि [स्पाय्य] स्वाय-पूक्क (सूच १ १३ प्याय पू [स्थाय] १ स्थाय, नीति (प्रीक व ११६ भाषा)। २ स्टारित समास्य (पंचा ४० विते)। सारि नि [व्यक्तिम्] म्याय-वर्षी (मानू t) गर वि [\*हर] १ स्याय-वर्षा । प्रै स्यायाचीरा (भारः) । ण्य रि[कि] न्याय का जानकार (सा 418) 1

प्राय पूँ निक्क स्वर्ग देव-मोक (पाम)। याथ प्रक्रिति र भयवान् महावीर (सूम १ २२ ३१) । २ वि प्रसिद्ध (सूम १६२१) । जाय वि ज्ञात । र जाना ह्या विदित्त (स्वः मुर २ ११)। २ क्राठि सैंबल्बी समा एक विराहरीका (कप्प बाउ ६) । ६ वंश-विशेष में उपान (बीप)। ४ ई वैश-विशेष (ठा६)। ३. सम्बन्ध विशेष (सूम १ ६ कप्प)। ६ न. रबाहरस्य द्वप्रन्त (उक् मुपा १२०)। कुमार वृ [कुमार] बात वंदीय राज-पुत्र (ए।मा १ व) । कुछ न ["इ.स.] बरा-बिरेप (पएइ १ १) । "इन्द्र चौर पूं [**"कु**खयन्त्र] समनाम् सी महानीर (धार्षा)। कुछनंदण र् [ कुछनन्दन ] मनवान् भी महाबीर (पर्यह ११) । पुत्त पू [िपुत्र] भगवान् यौ महाकोर (बाका)। मुणि पूँ [मुनि] भगवान् भी महाबीर (पएइ २,१)। भिद्धि पूंडी ["विभि] माता या पिता के शास संबन्ध संबन्धियन (बंध ६)। संद्र न ["पण्ड] क्वान-विरोप कहा भगवान् शीमहाबीर देव में दौला की दौ (बाकार ११)। सूम प्रै सिवी मनवान पीमहाबीर। सुयन [ मूर्व ] 'जातावर्गेकचा' नामक चैन धायम-धम्प (लावा २ १) । । घम्मऋदा भी ["धमक्या] वैन मागम-भ्रंब-विशेष (सम १) ) णायग र् [नायफ] हार के कीच की मणि मुमेद (स ६८६)। जायगर्द्र[नायक] नेता मुलिया सरुपा (उप ६४८ दी कप्पः सम १३ मुपा २२)। शायच पूर्वि सपूर मार्ग दे स्थापार करने-बासा वरिष्ट -पवद्दश्ववाखिन्त्रपरा मुहेकरा माधि नाम नायता' (ठा ५६७ टी) । पावर देखो प्यागर (मद्दा गुपा १०८)। णावरिय रेको णागरिय (पुर १४ १३३)। क्यै या (मनि)। णायरी रेघा जागरा (पनि) । पायस्य देनां पा = हा । पार पूँ निराे चनुचै नरक-पूजिती का एक प्रश्वर (इक) । पारदभ वि [मार्सकित] १ नरक द्विती में बन्धम भारती। २ पूंतरक का भीद (ह

t well

रेको समस्य । (प्रस्त प्रशे का स्था रहे । प्रवेह प्रवेह नेमा)। जारत देवी जारय = नारक (विसे १६ )। जारन देखो जास्य (व्रपी ४१) । व्यारतीश वि निर्मायीयी नारर-सम्बन्धी नारद का (प्रयो ३१)। पारय व निगरत र मनि-विकेष नारद भवि (सम १६४ का ६४० टी) । २ गन्पर्वे सैन्य का धरिवर्धत देव विशेष (ठा ७)। भारय वि सारको १ वरक में उराज वरक-संबन्धेः नरकका 'जायर नार्यं वस्तं' (नपः १६२)। २ वै नरक में उत्तम माली नरक काशीव (सम्)। पारमिद् रि [मारसिंह] नर्सस्-सम्बन्तै <sub>,</sub> पारंपिमं न [दें] धामन्दितः धामन्द-स्वति (ध्रा १४८ हो)। माराय व निरास हो होतने की छोटी हराब. वादा: नाराय निरस्तार सोहर्वत सोहत व तुरुक कि घणियों । य बार समें बखर्य दोलंदी नइ न सम्बेसि १ (सम्बाध्य गाराय रेवो वराअ (हे १ ६० चरा तम १४६ पनि १४)। तता प्र वाजनी (पण माना ४६ ६)। यज्य म विस्रोतिसम्ब-विदेश (पडन १ १ १) । नारायत्र 1 निरायय रे विया चीवया (तुमाः त ६२१)। १ मर्थेन्डम्पती राजा (पत्रम १, ११२ ७३ २ )। नारायम प् [मारायम] एक ऋषि (गुप 2 9 × 9)1 नारायमी भी [नासवमी] देशी विकेत नी है दर्व (गउर) । शारि देगो जारी (बच राव)। ब्हेता सी िंद्यन्ता नरी-रिशेष (सम ९७ ठा २ शारिएर १९ [मारिपछ] १ शारियत का बादम (प्रति १२०; नि १२ )। देनो णारि अर भारित व [मारिह्र] नारंगे का कर बौधा बेचु वसराजीपु (बच्च) । भाषि भी मिरी] ऐसी चौरा बनाना

बॉ॰स (रेस २३ : प्रमु ६२ १४६) :

प्यारुद्ध व विकेतार, गर्तांकार स्थान (पाप) । जारोड पें कि दिश्वस सौर मादिका छने का स्वान विवर । २ कसार, मर्ताकार स्वान ( Y 98) I णाळ न निष्ठी १ कमन-वर्ष्ट (से १ २ )। २ मर्थे का भावरता (चय १७४)। णार्श्वरक्टा वि निरस्तियों १ नातत्वा-संबंधी। व नासंबा के सभीप में प्रतिपादित बन्ययन-विशेष 'सनक्रतांम' सन का साहनी सन्दयन (सूच २ ७)। णार्भवा ध्यै जिल्ह्या राज्या वपर वा एक ग्रह्मा (रूप सुप २ ७)। (RY RY) I पार्लिय दि दुन्तन केश स्मान (रे४ २४)। णालय न निस्त है चट-विशेष (मोड ६) । पासा) की निष्धि नामी नम सिख (से १ पाछि । २० रमा)। व्यक्ति की मिल्ली परिमाण-विशेष समसी (भारक १६)। व्यक्ति दिक्तिस्त विख्या (पद्र)। पास्त्रिम विचित्र पूर्वे, बजान (वे ४ 439)1 व्यक्तित्रर देशो पारियर वि २ १ । प्रत्य १२)। दीय दं दिंग्यी बाय-निधेय (बम्बर १६)। णानिका) स्मै निक्कियी १ तत्त इंडी णालिया । भमने भी बंधी (सम १ १ )। २ परिवाल-निरोप वंड पनुत (धल १२७)। ६ मधै तर्भे ना सनवं दो बाधिया मुक्तीरे (तेंर् १२)। ४ नती 'जड उतिर नर्शनयाप विणयं विदुष्टयरीग्ड्रभ्रीरवार् (वर्षते ६० )। रेंग्डू व शिक्ष धन विशेष (वे १ है-दर १११) । वानिमा भी [मानिसा] १ बझी मिरोन (१ %. ३) । ३ वर्षा पत्ते बरान्तरने का एक वर्ष्ट्र का सन्त्र (काम; निमे १२०) । १ बाने शरीर ने बार बंग्य तस्त्री लड़ी

क्या (धीप भग ६, ७)। देशा भी िक्रीका एक तर्या नी चात-मेरा (बीत)। व्यक्तिक के आदिवर (सामा १ ६)। काबिकरी 🖈 जिस्से हैं अपने बार्क स्त बाज (पत्रक पि १२१)। पाक्टी को (नासी) १ क्नस्पर्छ-विरेष, एक सता (प्राता १)। २ वटिना, वदी (बीव ६)। णान्धी की नािसी १ चव-विशेष (सा १ ४)। २ शीन डाव चौर स्रोतत मेल नंसे सदी या सरवी (बॉस) (पव वर्ष)। पासी को निक्ती नहीं नहीं पर किय (दिस 1 (1 5 णासीय वि निस्तियी नात-संबन्धी (पाना)। पाळीता रेको पाविका (सप र १.१६)। पावत (सप) देशो तव (हे ४ ४४४) गरि)। णाबन न विरे बान, शिवरहा (पदा t 1-48 X 1): प्याचा की विशेषकारि संगती, परिमाल-विशेष (पव १ ६ थे)। णावा को निर्देशित बहार नार (मर क्त) । वॉणिय **५ िंश**विज क्रिक सर्व ते व्यापार करनेवाला वित्तक (श्रावा १ )। णाबापूरव वृद्धि इन्द्रक इन्द्र भिन् राजनारएकि धायानव (बह १)। णाविक प्रिमिषित् । नारं हत म (दे रे २६ : दुर्गो पर्) । साम्राच्य [शाय] नायों वास्रज्ञ (या १२)। जाविम वृ [नाविक] बढाव क्वानेगवा, शीरा वा नान इक्तिन्ता, मलाह, केरह, मानी (ए।या १ रा दूर ११ ३१)। जाम देतो यसस । खाद्य (बर भ्या)। मक्र पासंव (तुर १ र २०११ वर)। ह जासिवस्य (पुर ४ ११६)। जास यह [ नाराष् ] कर करना। हातर (१४ ११) । छान्य (बन बर) । जास पु [नारा] नाठ प्रदेन (बानू १३%) नाम)। यर वि [ नर] नारुनारर (पुर 12 11x)1 यास व [स्यास] १ स्वात्व (वा १६) हा १२)। १ वरोहर या मनाना रणो कीय (क्रीप १६)। ४ यत-सिटेन एक तरह का वन प्रारि (३१ ७६० ही वर्ष २)।

३) । २ धवर्य-माबिता (ठा ४४° सूम १ १

(R Y 7Y) I

णासम वि [नाशक] नारा करनेवाना (पुर

२ ४८)। णाहिय वि [नास्तिक] १ परतोक मारि पासण न [नाञ्चन] १ पतासन सरहमण मागना (वर्म २)। २ वि नारा करनवासा (स ३२७ तल २२)। श्रीणा (से १ २७)। णासग न [स्यासन] सापन रवना, स्थव स्वतःन (घए) । णामणा भी [नासना] विवास (विसं ६३६)। थास**व स**र्क [नाराय्] नास करना। ग्रामनइ (हे ४ ३१)। णामविय वि [नाशित] नष्ट किया हुया, मवाया हुमा (हप ३३७ टी हुमा) । णामा की [नासा] नाक ग्रासीनिवय (वा २२ मापाः हुपा)। णासि दि [नाशिम् ] दिनघर, नट हीनेतला (विमे १६८१)। जासिक देखो जासिक (संदि १६६)। णासिक्य न [सासिक्य] बनिए मास्त ना एक स्वनाम प्रमिद्ध नघर, जो बाजवन भी लागिक' नाम से प्रसिद्ध है, आहाँ शुपर्यंका शी नाक करी थी पंचवरी (सर इ २१३ १४१ री)। णासिगा धौ [सामिका] नाक प्रश्लेन्द्रिय (महा) । णासिय वि [नाशित] नटनियाहुमा (महा)। णासियस्य देनो पाम = नस् । णासिर वि [मशिन् ] नष्ट हेलेगाना विनयर (दुमा) । णामीक्य वि[स्पासीकृत ] वर्धहर वा मपानन स्त सं रक्षा हुमा (या १४)। णासक देयो जामिक (उर १४१)। वाह र् [साथ] स्वामी मानिक (रूमक प्रामु 22 eE) 1 लाइड व [साइट] एक धना का काव (डी 2X) 1 पाइस ( सिद्ध ] मेच्य की एक पार्टि (हे१ ११६ दुवा)। णाहि देनो पाभि (क्वा कम्)। बहु पू िंस्ट्री बच्चा चर्लुव (यण्ड ११) । वादि (पर) प [नदि] नरी नदी (१४४ ४११। दुवा मनि)।

का प्रवर्तकः। बाइ, वादि वि [ यादिस्] नास्तिक मत्र ना सनुवायी (मुर ६ २ स १६४)। बाय वृ ["वार] नास्तिक-पर्यंत (गण्स २)। ुर्[कि] भवत करी के णाहि विश्वद्रम पाडीए-विरुद्ध अंतिकता माम (दे४ २४)। जिय [नि] इत मधौ रा मूचक मध्यय—१ निवय (उत्त १)। २ निवतान नियम (ठा १) । १ मानित्य महिराय (उत्त १ निपा १ ६)। ४ धनोमान नीचे (शए)। १ निव्यपन । ६ संद्यम । ७ घारर । व उपरम विद्यमः १ सन्दर्भाव समाक्ष्यः । १ समी पता निकटता। ११ क्षेप निम्छा। १२ बन्पन । १३ निपेश । १४ दान । १४ चरित क्यूहा १६ ब्रुक्ति, मोश (दे २ २१७-२१=)। १७ ममिनुवता संमुखता (नुभ १ रे)। रे≪ घल्पता, **सपु**ता (पएड् रं ४)। णि ध निर्ीदन सर्वो का सुबक सम्बय-१ निषय (उत्त ६) । २ माबिक्य व्यक्तिशय । (बत १)। १ प्रक्तियेग निपेप (सम १३७ मुपा १६८)। ४ व्यक्तिर्भाव । १ निर्मयन निष्मपण (ठा ६ १ नुरा १६) । विष्ठस्य [रह्य] देवना । लियद् (पर् हे ४ १०१)। यह जिल्लान (हमा महा मुश २६१)। संद्र नियर्थ (महि)। णिअ वि [निज्ञ] मारमीय∽ स्वरीय (गा १६ दुमा मुग्त ११)। णिय रि[मीत] ने जायाच्या (से १०६ गिम वि [नीप] ग्रैव वयम्य निहट (बम्ब 1 1): िज देशो जिद (नूप २ ६ ४३)। णिमइ धी [निह्नित] मापा नाट, छत बोसा (पस्ह १ २)। णिभइ भी [नियति] १ नियत्तत स्रीत-म्बजा होती मान्य नियमितजा (सुध ११

णाहिणाम न [दे] विदान के बीच की एन्सी र)। प्रश्यम वृ विषयत पर्वत-विरोप (बीव श)। याद्र वि विषित्म विषय कुछ मनित ब्यदाके बनुसार ही हुचाकरताड प्रयन्त नो नहीं मारुनेवासा। २ पूँ नास्तिक **म**ठ वपैरह प्रतिश्चिकर हैं ऐसा मानलेसका, म्यापनाधी या दैननाधी (राज)। णिझंटिझ वि [नियम्बित] १ नियमितः। २ न प्रत्याक्यान-विरोध हुए में या रोगी से बपुरु दिन में बपुरु क्षप करन का किया हुमानियम (पद ४)। णिअंटिय वि [नियम्बित] १ वेंबा हुमा, वनका क्रमा। २ त सवस्य-कर्तम्य नियम षिरोप (ठा १) । णि औठ वि निमन्धी १ मन परितः २ पूर बैतपुति सँयत यति (मगः द्या ६ ६ थ, १)। १ जिम सगदान् (मुझ १ ६)। निर्मेठ पू [निमाध] मपशान् कुछ (कुप्र 443) I णिर्मीठ देनो जिग्मीयी । पुच पू (<sup>8</sup>पुन) १ एक विद्यापर-पूत्रः जिसका दूसरा नाम मरपिक भा (ठा १)। २ एक बैनमुनि और भनवान् मञ्जीर का शिष्य वा (मन ६ ८)। णिशं ठय वि निर्प्राधिको १ निर्देश-संग्रेगी। २ जिन देव-स्वन्दी । इसी या 'एमा घाला णिपंडिया' (तुम १ १)। जिमेटी देशे जिमोधी (हा १)। णिश्रंत वि [नियद] स्पिर (मूप १ ८ विश्रंत रि [नियन्] बाइर निश्रका (नम्पत्त १११) । णिअंतिय मि [नियम्बित] संयमित परदा हुमा वदा हुमा (मद्रा तल्)। गिर्मयण न [दे] नग्न नाहा (दे४ २०)। णिओं दर्जुनियम्यो १ पर्येट का एक जाए पर्वेड का कर्मात-स्वान (मोध ४)। २ छी को कमरका काछना माग कमरक नीके का मान प्तड़ (कृता गड़ड)। ३ जून मान (मे ८१ १)। ४ वटी-प्रदेश, बजर (सं४)। त्रिव्यविका व्याक्तिकारियना १ गुल्स वित्यवरात्री स्टं। २ स्टी वर्षता (क्यू पाय मुसा ६३०)।

रि ७४) । प्रयो- शिबंगानेड (रि ७४) । क्रियंक्स म कि निकारनी शक करता रि ४ के या किशा पाम गुजब परव 2 3 Hat 2221 Ber 3211 क्रमिय के सिक्स्मिसी का क्या (पन ६२) । जिल्ला सक किया विकास किया किया है (प्राप्त) । लि अक्ट कि कि वर्गत मौनारार पदार्थ (देश वेट पायो। विश्वत वि जिल्लाकी पत्तवीय, स्वतीय (बस्ती)। जिल्लाहरू सक दिया देखना। सिम्ब्युड (दे ४ १×१) । यह जिल्लास्ट्रिंग विश्व च्यामात्र (का २३० तत्र साथ )। रह णिजन्मिकाण जिम्रान्तिम (नर १ ११७ दुमा)। ह जित्रक्षिक्षक (बठइ)। णिअन्छ सर्चिन + यम् । १ विस्तत

दरना निवन्त्रस्य करना। २ ग्रास्य ग्राप करताः ३ वोइनाः संदू जिल्लासङ्ख्या (नप १११२)। णिमच्छ धक [नि+गम्] १ सँदत होता मन्द्रदेशा । रे नक प्रदर्ग प्राप्त करता । नियध्यः (तृषर १११ ११२ to t t R t ) i

गिर्भाष्यम वि [इष्ट] देना हुवा (बाब) । णिसहयक नि+प्रती निवत होता पीद (न्या स्ताना । लिमहर (नल) । बह जियरमाय (पाना) । সিসহ লছ [বিহ + তুৰু] ৰবাৰা रचना निर्वात करता (बीर) जिप्तर्मा [नि+अ६] प्रमुक्त करता (भीत) । त्रिप्रहु र्ष [निवत्त] स्थार्थन विवृत्ति व्यक्ति

बहुनानीम् (बाचा) । विभट्ट रि [बिहुच] स्वहन की हम हवा (वर्त २)।

विश्र ! [नियमिय] निय हानेगाना

(क्षेत्र वहर)।

१ ११)। बायर न विवासी १ इफ-स्वानक-विरोध (सम २६)। २ व प्रश-स्वातक-विशेष में बर्समान बीब (पाव ४)। जिस्टिय कि 'जिवकित' स्पार्थतित गाँधे हराया हवा (धीर) । णिश्रद्यि वि निर्वनिती धनेत निर्मित बनाया ह्या (ग्रीप)। णि अहिय वि स्थितितो सन्यत स**न्**यत (गोप) । जिल्ला निक्यी १ निकट, समीप नव श्रीक पास (का ४ २ प्रत्या स्या ३४२)। २ विपास का समीप का (पन्छ)। पिनदि विकितिकारिया मानाची क्यायी (TH & 2%) 1 णिमदिक्ये निकृति । को बाँडमाई को दक्ता—सिराना (राय ११४) । भिअडि की कि निकाती माबा क्या (दे ४ २६) प्रकार र सम्राप्त भग रे**८, राज्य २ २ शाचार र**ा साव १)। जिमहिम वि सिगहित तिवनित वरहा इया (ता ११६ जन इ. १२ वृता १६)।

णिप्रविभ रि शिकटिकी समीप-वर्ती पार्थ में स्पित (पाप)। णिअहिस वि [निकृतिसन्] वस्यै सामाची (ठा४ ४० मीर मण णिश्रद्धतक [नि+कृप] सीक्ता। **एंड** नियद्दिकाणं (सम्पत्त १२७)। णि अप दि निम्नी नेवा वस-विश्व (पत ₹+₹)1 गित्रच दि [निष्ट्च] बाध हुवा छिन (भव ६ ३३)। णिश्रच दि [निर्द] शास्त्र ग्रीन्त्रर, 'नुग्ग जमनियतं (त<u>र</u> ३३ मूय १ १ 1 (4) त्रिशच देनो 'लभर = वि + दुर् । श्रिमतद (क्यादि२ t)। का निभक्तं शिक्षक

मात्र (रा ७६ १६३) ते ६ ६७ मार)।

मने शिमतारे (पि १ ६)।

क्रिक्स कर जिल्ला है । इपि गाएक सन्द (बका) । २ निवृत्ति व्यालतीर (पार ४)। प्रिअक्तप्रिय विजिन्निकी निर्मा वरिव्यवस्था (ब्रप ६ १) । क्रिश्निक देवो जिल्लाहि (क्रि. ३१)। क्रिअस्त कि कि । परिवित्त, पहना क्या कि ४३ इका सारका मार्क) । २ परिवासित जिसकी बाब धारि प्रशास मध्य में फ 'रियमस्या को बरियमाय' (बिमे २६ ७)। णिअक्स स्टब्स् नि + गदी रहता केवला। शिवरदि (हो) (नार—देव ४३)। यह णिझेनत (सह) । जिमहिय देशो जिमहिय = वर्तित (पर)। जिल्लाद्यान विशेषरियान पहले ना दत्र (पव)। जिसम एक [ति + यसय] नियन्ति करना निजय में रचना। बैड जिश्रमे उत्य (पि ३व६)। णिश्रम सक्दिन समय १ रोजना २ वचन से बरामा । इसरीर से क्यन्त । विषमे (पाचा २,१३१)। णिश्रम पू [निवस] १ तिस्वय (वी १४)। २ सी हाँ प्रक्रिया क्ला 'परिवासिन्य' शिवमा शिवमतपती तमे भगव (३१ ७२ टी) । १ प्राचीपवेशन संबन्ध-पूर्वक प्रवरण मराण के सिए क्यम (से व १)। साब सित् निषय से (बीत)। सी <sup>ब</sup> िशस<sup>न</sup> किरचयद्ये (भार४)। स्पिअसण व [नियमम] विक्यण संस्थ (विशे १२५)। जिनमिय रि [नियमित] नियम में रण इया निवन्तित (से ४ ३७) । णिभय न दिंदि र स्त मैदूर । र स्परीय

रुप्याः ३ मद्भवद्गानसरः (१४ ४४)।

४ वि शाधन निष्य (दे४ ४ । <sup>दाप</sup>

विवय रि [निजर] तिरस स्परीक

जिज्ञव वि [नियत] नियम का नियमपुगाएँ

मानीय घनना (पाम)।

नुप १ धव) (

(उस्) ।

णिभया **भी** [नियता] जम्मू-मूग विशेष जिसमे यह जम्बू-हीय नहताता है (इस) । णिजर प्रे निकर रिश, समूह, बत्बा हैर (गा १६६ पाम (गउ४)। जिअरण न दि दिएक किया (स ४८६)। णिभरिज वि दि । यश रूप ने स्वित (दे ¥ 4c)1 णि अस्य न दि ] मूपूर पैंथनी या पाक्षेत्र की का पासामरता-विदेश (रे ४ २०)। णिमस पंत्रियाही वेशी सवस शि ६ व्य विपा १ ६)। देखी णिगस्त । णिमसार्थ । दि [निगहित] सीम्न ने णिअस्त्रविञ्ज नियम्बित जनका हमा (गा णिअखिआ । ४१४ १ । पाप गर्म से X Yc) 1 णिअद्गर् वि नियक्ती प्रहाविशयक देव विशेष (ठार १)। णिश्रक्त निज्जी स्त्रीय भारमीय (पहा)। णिअस रेको णिजेस । नियस (पुरा ६२)। णिशसण देवी जिल्लंसण (क्षेत्र १६) कार 3 ()1 णिर्कासय वि [निवसित] परिक्रित पहना ह्या (गुपा १२३) । णिश्रह देतो णित्रह (नाट-मानती ११०) । णि आ औ [निदा] शाखि-क्रिया (पित्र १ ३)। णिमा देशो णिश्रय = (दे)। यात्र नि [यान्मि] तिस्परादी पराचे को नित्य माननगता(ठा ६)। णिझाइय देखा णिशाइय (सूम १ ६)। णिमारा र् [नियास] १ नियद योगः। २ निश्चित पूजा। १ मोश मुखि (याचाः मुख १ १२)। ४ त. मामलागु देवर थी निता थी जाय बहु (इस ६) । णिश्राम देगी णाय = ग्याय (दाना) । निजान [निहान] १ कारण नाव ब्बागर (पूर्व १ १) । १ रोप-नारत रोग की पहचान (सिंट ४११)। णिभाग न [निनान] १ नार**ः १**न न्यही मर्ग निवार्ग गर्रती विश्वमें (स १६ : नाम गामा १ १३)। शतिका वत्रमुगत की फर-प्रांति का प्रमित्रण

संक्रप्य-विरोप (था ३३ टा १)। ३ मन कारण (भाषा)। कद्र वि किन्ती नियने भपने सुमानुहान के फल का मिननाप क्या हो वह (सम ११३)। शारि वि िशारिन् निशे धनन्तर उठः धर्ष (ठा ६)। णिआण न [निपान] दूपमा तात्राव के पान पशुमों के यस पीने के लिए बनाया हुआ बस पूर्व बाहार होये बच्छी 'पहमाण पहाटू पदमार्ग पासह पद्दिवाएँ (उर ७२५ थि)। णिज्ञाणिया औ दि । बसद दलों ना **बन्द्र**सन (वे ४ वे१)। णिमास केबा जिसस = नियमप्। संक् वबसगा णिश्नामित्ता बामोन्द्राए परिवाए (नुष १ ३ ३) ( णिमाम केका णिशास (पूच १ १ ८)। णिआमग् ) वि नियासकी नियम-कत्तौ यिमामय र्रीतक्का (तुपा ३१६)। २ निरवायक विनिगमक (विसे ३४७ to ) : णि शामिञ्जाव [नियमित] नियम में रका हमा नियन्त्रित (ल २६६)। णिमाय प्रे [नियाय] प्रशस्त धर्म (सूच १) **१ २ २ )** i षिशार सक [काणेकित 🖫 वानी नजर से देखना । शिमारद (हू 😮 ६६) । णिआरिक्ष वि [पाणीशृदीकृत] १ कसी नजर से देखा हुया माणी नजर ने द्या हुया। २ नः भागी नगर ये निधिश्रण (दुमा) । णिबाइ पू [निशाप] र बीव्य नान बीव्य म्बन् । २ ६०ए पर्म गरमी (यदह) । णिश्च वि [निरियक] निरय का नीरप सिंदिन्दर (पाचा २१११)। जिह्म ] वि वि नित्य, नीरेयड ] नित्य जिद्दय रे रायवं व्यक्तियर (पएत् र ४---पत्र १४१: सूम १ १ ४ २ ४: छहि मानातम ११२)। जिइप वि[निष्ट्रप]तिथ्व क्योर (बाह्र २६)। णितमार [नियुत्त] परिषेदित परीक्षित (\$ 1 111) ; गितम रि [नियुत] नुगंग्त मुश्रिष्ट (स्रावा ₹ **₹**<) i

णिउंपित्र वि [निकुद्भित] संदूषित सङ्खा हुमा थोड़ा मुद्दा हुमा (गा १६३ रो ६) १६। पाम' स १६६)। णिक्रम सरु नि + सम् ] जोड़ना संबुद्ध करना किसी कार्य में सगाना। कर्म शिर्ड भीपछ (पि १४६)। बहुः जिउन्नमाण (मुम ११)। संद्र निर्मक्षिकण निर्मेनिय (स १ ४ महा)। इ. गिर्डियक्न. गिडच्च्य (टा पु १ ३ दुमा)। णिर्देश पूर्विक अर्थित स्वामादि में निकि स्पान (कुमा मा २१७) । २ महर (वे ६ १२३)। णि'स पु [नियुम्स] हुम्मझ्णे का एक प्रम (से १२ ६२)। णिडीयना भी [निष्टुनिमता] यह स्वान (छ १४ १६)। भित्रकाति दि] तूप्णीक भीत छत्रेशना (दे४ २७ पाम)। णिक्क्य पूँदि ! कायस काक की मा। २ निमूर बार-एकि में द्वीन (१४ ११)। णिडळ न नियुष्त मासन-विशेष (गुरि १२६ टी) । णिङ्कम वि [निरुद्यम] बद्यय-रहिन मानसी (सूचर २)। णिउद्वयक सिरम् नि + ब्रुड् नि मध्य करना दुवना : श्यिकदूद (हे १ १) । गा जिउद्गमात्र (दुमा) । णिडहृदि[सन्त निमुद्धित] ह्वा हुण निमान (गेर रु रूप प्रश्)। गिउगरि [तिपुत्र] १ दर चतुर, बुटन (गामा स्वयं १६ मानू १६ भी ६)। २ मुस्य यो मुश्म वृद्धि न जाना जा सके (शी २ स्पर)। १ मिन दक्षताने चनुस्केत्रे, पुरावा है (बीप १)। गिडण वि [नियुग] १ नियत पुणसना । २ निरियत द्वारा में पूनः (स्वत्र) । ३ मुनिरियत रिक्तिगृति (वंदा ४) । णिडमिय वि [मैपुणिक] निपूछ दश बहुर (रा ६)। मित्रमारि [नियुक्त] १ स्थातील कार्य व नगाया ह्या (पंचा क्र) । २ तिक्य (स्थि \$ C = ) |

माज्ञा विवाता (शीत)। ७ वॉव प्रामा ६ क्षेत्र मूर्मि (क्षू १) । १ संयम त्याद (सूच १ १६)। देवो पिमोशः प्रतिपुरी १ सबमनो । २ देश सह। ३ सम्ब (बीव) 1 णिओ ग वि [नियोगिन्] नियोग-निशिट नियुक्त, बाह्यप्राप्त व्यविकारी (सूपा १७१)।

णिभोजिय देवो णियोइथ (ग्राहम)। **रेवो** णी= पम् ।

ाणतः } भितृपः } णि द्राप एक [नि+कासर्] प्रक्रिता णिइ सक [निन्द] निन्दा करना बुधाई करना बुदुन्सा करना । स्प्रिवामि (पवि)। बह्न. जिद्देव (भा ११)। क्वक जिदिस्तत (सूना १६१)। **चेद-र्जिदिचा** यिंदम (प्राचा२ **१** १ शमा ४) । 👣 पिंदिर्ट पिंदिच्य (महाट ठा२ १)। इ. जिंदिसम्ब जिंद जिञ्ज (पद्याप १ का १ ६१ दी शादा पिंद वि निन्धी निन्धानीय निन्धीय (माचु १)।

पिदिञ कि [निन्दित] निसरी निन्दा की गरै हो बहु दुए (बारदक्ष्म ब्रासु १४)। र्पि दिली की दि ] दुष्टित सूखों का उन्प्रतन सिंदु की [निग्दु] मृत-कंट्या थी किस्के बरूरे भीपित न रहते हों गैती की (धंत का

मा १६)। यिव वृं [निस्थ] नीम ना वेड़ (हे १ २६ ; प्रानु २६)। गिंबोसिया औ [निम्क्तुस्टिम] नीव का नियोजन (इ.स. १) । ३ धनुयोज नून नी

क्षम (खामा १ १६)।

र्णित् (प्रश) की [निद्वा] शींद, निव्रा (पवि)। र्णिदण प [निन्दन] फिला इन्हा पुहुत्सा (स ४४५ ७२ ही)। र्णिदणया रेखो णिदणा (इस २१ १)। (भाषा)। र्णियण भी निम्यना किया पुरसा (भीत भोग ७११: पळा२ १)। जित्र वि निन्दकी क्लिस करनेवासा (प्रक्रम ₹ २१)। णिता औ [निन्दा] ह्या दुरुसा (पार ४)।

(सम २१)।

णिशय देखो जिल्लाइय केल कमसम्बद्धार वप्या कम्माण्यि निकामार्थं (तिरि १ ११९)ः YK)I है (विते २४१४ हो। मन)। २ लिविड

क्रवन । ३ दापन दिसान्य (चन)।

णिउस प्रेकिनिक फरी प्रकार महिल अर्थं समप्पन्नी दविखनिक्तीति (भट्टा) । णिकड वि निग्रही द्वार प्रच्यान विशा हमा (भन्दु ४३)। जिम्झ वि [नियत ] नियम-युक्त, बरिहर मचापै (तूम १ ६,६)। गिए**ड रेडो** जिसह = तिन (दादन) ।

जिहिता की निकृति विराम (प्राकृत)।

णितद्वान [मियुद्ध] बाह्य-पूर्व, बुस्ती (टा

णितर पुं[निकुर] बुज-विकेष (सामा १

णिउरम [नुपुर] की के पाव का एक

ध्यमध्य पैंदनी पासन (दे ११२३ नूमा)।

णितर विदि र किया काटाइम्स । २

णिकर्पन निक्रमन समृह, भरना (पाक

णिडर्ब म [निकुरम्ब] समूहः बल्बा (स

सूर वे ६१ मा ४६६: मुना ४३४)।

४१७: ना ४११ साथि १७७) i

२६२)।

१ – पत्र १६)।

भौर्ण पुरस्त (पड)।

णिओञ स्कृति + धोडम् ] किसी कार्य में बयाना । शिग्रीएवि (शी) (बाट--विक X) 1

णिक्रोभ देवो पिछोग (हे २६ द्धि २७ वर्षाचे ६४०)। १ यात्रा सन्देश (स २१४)। णिओन्भ नि [नियोजित] निदुक्त निवा हुधा विश्वी कार्य में कवामा हुया (ब ४४२ मनि ११)। जिओन्त्र वि [नैयोगिङ] विशेष-सम्बन्धी

(बाह र)। णिलाग 🛊 नियागी मोज दुखि (नुब १ 2 24 K) :

विभाग पुनियागी १ क्यिम सामयक वर्तस्य (रिगं १०७६ वंश्वर ४) । २ सम्बन्ध

करना। शिकामएका (सूब १११)।

**क्क.** णिशसर्थत (गुम १ १ ११)।

विद्यास म [निकास] इसेटा परिमरण है क्बादा बावा बाता घोक्त (पिंड ६४१)। जिम्मन निकामी श निवद किर्णेर।

२ बल्पन्त सर्विशव (तुस ११) । णिश्रममीण वि [निश्रममीण] प्रवर बार्वी (सूच ११६)।

णिश्यस्क[नि+श्राचय] १ विस्त करना निकन्नल करना। २ कि विद्रकारे

वीवनाः ३ तिमन्दस्य देनाः । स्तिनादिः (भव)। भुका शिकाईस् (भगः तुभ २ १)। मनि जिकादस्तीति (स्त)। ब्रेड्स जिस्स णि स्रय दे [निकाय] १ समूह बला **ग्र** 

जिटल---पिम्बरण

णिकर पू [निकर] हमूह, बला परित, हेर,

णि इरण म [सिइस्पा] १ निवर, निर्हेग।

जिर्धरम वि निकरित्ती धारीक्ट वर्षय

जिम्रहर वि निमिन्नि १ म्बलानित

निव्यमित (संदि)। २ शस्यन्त निविद्यस्य से

इया (कर्म) (स्व सूत्रा १७६)। ग. कर्मी

का निविद्यासे सम्बद्ध (ठा ४३)।

२ निकार, इ.स.-उत्पादन (सामा)।

णिक्स 🖬 णिइस (वर्ग २१२)।

संशोषित (धीप) ।

वर्गचरित (ब्रोव ४७ विसे १ ३<sup>ई</sup> २व) । १ मोला मुच्छि (झारा) । १ धावरस्य धवरम् करने बोरम् सन्<del>त्रान विध्य</del> (मर्गु)। इसव दूं [\*इसय] <del>वीव-पर्निः</del> क्यो प्रचार के बीवों का बसुद्द (दन ४)। আি হাৰ বু[নিৰাৰ] সিৰ্লত <sup>কাঁচা</sup>

আংল্যেল বুলি হাৰনী কিলেক (<sup>মিট</sup> णिस्रयणा स्मै [निस्नवना] **।** नारह-विदेश विसरे वर्गी का निविद् कम होण

णिकित सक नि + कुन् निरामा भेरता। লিছিবার (পুল্ড ১১৬ চন)। ভিন্নিবত (उपः कता)। णिक्तिय वि निकर्तकी काट बालनेवासा (काल)। णिकुटसक [नि+कुटु] श्रदुरनाः २ नाना । शिद्गह र शिद्गुहैमि (उवा) । णिक जय वि निकृषित देश क्या हुण वक्र दिया हुआ (वे १ ८८) । णिक्य पू [निकंत] गृह ग्रामय निवास स्वात (सामा १ १६ वत २) माचा)। णिरुपण म [निकेतन] उत्तर देशो (पूर १३ २१: महा)। णिश्चेय पू निश्चेष विमेश विमेश वि {\\\) 1 णिश्च वि दि । सृतिर्मेश सर्वेश मल-रहित (सामा ११)। णिक्र देखी जिक्स = तियक (प्राष्ट्र २१)। जिस्हालय वि [सिप्केनय] १ वपट-पहित निर्माय (कूमा) । २ कपट का धनाव निष्कपटपन (मा ६६)। णिकंदर वि [निष्द्रपुट] १ भाषणा-पहित (बीप) । २ उपमात-प्रीत (सम १६०) । णिश्रंति वि [निष्क्रविश्वम्] धरिनाया र्चात (उत्त १६, १४)। णिकंसिय न [निन्यक्कित] १ पानांता का समाव । २ वर्शनान्तर की धनिक्या (उत्त २, पश्चि। भिष्यग्रिय वि [निष्धविशत कि र मानावा-परित । २ वर्गनान्तर के प्रधान से र्धाइट (मूच २ ७) सीप राम)। विष्टंचण वि [निष्कास्थन] पुनर्व-रहित यन-रहित मिप्त निर्धन (मुपा १६८)। पिपांटय वि [नि"३ण्टक] बगटक-एरित बाबाचीहर राष्ट्र-परित (पुरा २ )। जिक्द नि [निष्द्राण्ड] १ नाएक चीहत स्त्र्य-वित्त १ वासर-परित (गः ४६०)। णिष्टं व [निष्कास्त] १ निर्मत बाहर निक्नाहूमा (के १ १६) । २ जिसने धीला की हो वह गुरस्याधम से निर्वेत (माका) । जिल्लार वि [निन्तान्तार] परएव वे निर्वेत (চাই ই) ৷

जिक्की के निकानित निकास बाहर निकास (प्राक्त २१)। णिबंस वि [निष्कृमित् ] बाहर निकतने-नामा (ठा ११)। णिक्कंद सक [ति + क्:न्न] छन्पूमन करमा । निक्रवंदद्र (सम्मत्त १७४)। क्रिक्ट्रंप कि [नियहम्य] क्या-पन्ति स्थिर (क्रेट ४० मिन २१)। णिक्य विविधि मनवस्थित चंदन दि ४ ३३ पाम)। णिकट्र वि [निग्इस] इस दुवैत शीए। (ठा ४ ४--पद २७१)। जिल्ला कि दिंदि १ किन (के ४ २१)। २ वं लियवं निर्ह्में (पह)। जिस्तिहर वि निष्द्रस्, निष्टरिंड विध्र की बाह्या बाहर दिकासा हथा (स ६ **२१%)** ( जिक्तम वि [निष्मम] भाग्य-मण-परित प्रत्यन्त वरीन (विषा १ ६) । णिकस प्रच [निर्+क्ष्म्] १ शहर निरस्ताः २ वीया सेना चैन्यास सेनाः। शिवकमानि (रि ४६१)। वक्क जिक्कमेत (हेका ११२: मुक्क वर) । णिक्टम पू [निष्कम] नीचे चेत्रो (नार---मना २२४)। णिकसम्य न [निप्कसण] १ निर्वसनः बाहर निवसना (मुद्रा २२४) । २ दीक्षा श्रीन्यास (माना) । णिकस्म वि [निप्क्रमेंस्] क्रमेरीहर मुक्ति मास मुक्त (इस्प १४) । णिहम्म वि [निप्तर्मन्] १ कार्य-रहित निवस्मा(गा१६९): २ मोल युक्तिः। ६ धेवर, वयाँ का विधेष (बाबा)। णिद्धय पू [निष्महय] १ बरना कम्रलपन (मुपा १४१: पडम 💌 १२६)। २ भूषि वेतन मबूरी (है २ ४)। **पिदरण न [निकरण] १ तिरम्कार । २** परिमय । ३ विनाश (संबोध १६) । भिष्यस्य वि निकारणी करणा-पीत दया वर्षित (नार-मातती ३२)।

गिष्ट में [निष्टर] गण-पीत (गूप १)। '

णिक्छ वि वि ] पोसापन से पीरत (सपा १ मग १६)। णिक्लंक वि निष्यक्तको क्यंक-र्यात बेदान (स. ४१८ महाः सना २५३)। णिकलुण देवो णिकस्म (पएड १ १)। णिकलुस वि [नि कल्प] र निर्देश निर्मंत। २ निरमहरू ज्यहरू-रक्कित (से १२ १४)। णिक्रवड वि निष्कपर ने कपट-चीरत (उप 9 14 ) 1 णिक्क्य वि [निग्रुध्य] क्ष्मच-चहित वर्म बर्जित (ठा ४ २)। णिकस धक [निर्+फस्] बाहर भिक तना । णिदस (सम १ १४ ४) । णिकस सक [निर + कस् ] निकासना बाहर निकातमा । कमें जिससिक्तक (रह t)। णिश्वसण म [निग्रुमन] निर्ममन (राज) । णिकसाय दि [निष्क्याय] १ क्वाय-पहित कोकादि वर्जित (बाउ)। २ पं बरत-नंत्र के एक भागी वी बैकर-देश (सम ११३)। णिक्य की निीरा दिस नासिका (कूमा)। णिकाम वि [निष्यम] शनितापा-पहित णि**ष्टा**रण वि [निष्कारण] १ कारण-पीठ महेनक (मुरू२ ३६)। २ क्रिमि विना कारत (याद ६)। णिकारण वि निकारणी निक्यत्व जैस निकारकी बहो" (पिड ११६)। जिहारणिय वि [निः धरणिक] कारण-र्णहत, रेनू-कृष्य (घोष ४) । णिकारिम वि [निष्कारण] विना वारण (मास्यानक २३ घषिकार, मानादेवाकना पद्य १२१)। णिकास एक [निर्+फासय] कार तिशानना । संह निकालेर्ड (सुपा १६) । णिकासिय (वा ११)। शिकास पू [नितास कियान बाहर निया मना (बर्मीव १४१)। णिकासिय वि [निष्यंसित] बाहर निराना हमा (राज)।

विधियम वि [निधिम्बन] निर्धन पर

चीत निस्त गरीब (पातम)।

<b>1</b> 93	पाइअस <b>र्गद्</b> णको	जिब्द्धि—जिमा
पिषिद्ध है [निद्धय] यस मैच होत. समया च्यतिनिक्दुणिकृद्यांचे यहां (या १४ २०) युपा ४० र रहें १४०)। गिष्ठिम यह [नेर्-हो] विक्य करता. स्रोदेशा शिक्यांचे (दिस्के)। गिष्ठिम यह [नेर्-हो] विक्य करता. स्रोदेशा शिक्यांचे (दिस्के)। गिष्ठिम यह [निर्फ्यो क्या-यहित पर्वाय (यह १३)। गिष्ठिय हि [निर्फ्यो क्या-यहित पर्वय (यह १३)। गिष्ठिय है [निर्फ्यो क्या-यहित पर्वय (यह १३)। गिष्ठिय है [निर्फ्यो क्या स्थाय (यह)। गिष्ठिय है [निर्फ्यो क्या ह्या प्रिनिक्त (यह १३)। गिष्ठिय है हि है सेता हमा विकास हित्य पर्वाय (यह १)। गिष्ठिय है हि है सेता हमा विकास स्थाय है है से सम्ब करता। र यह साथि का उत्पर्ध पर्वर १)। गिराम्य है हैं है से सेर। र मूचर्ड काम्य (२२ ४)। गिराम्य है हैं है सेर। र मूचर्ड काम्य (२२ ४)।	निस्ति (कण)। वङ्ग णिकसमामान (द्याना र ४ पदन २२, १७)। वङ्ग णिकसमा (क्या)। हेर. जिकसमित्तय (क्या करा)। विश्व जिससमा (क्या करा)। हेर. जिकसमित्तय (क्या करा)। विश्व जिससमा व [निक्समा र रावे र १)। जिससमा व [निक्समा जार केरी (मूल रोश जार र र पदन र १ ४)। जिससमा व [निक्समा जार करा हुए। (१४ ६२ वाय)। जिससमा विश्व विश्व जिससमा विश्व विश्व करा हुए। (१४ ६२ वाय)। जिससमा विश्व विश्व विश्व करा हुए। (१४ १२)। जिससमा विश्व विश्व विश्व विश्व करा हुए। विश्व विश	णिक्सुड वि [व] प्रमम्म सिंद (वै४, २व)।  णिक्सुड वृंत [निक्कुन] र केंद्र, केंक्स, केंद्र्स (वृंद्र १३)। र प्रतिनिक्द्रं (विरंदे १३)। र प्रतिनिक्द्रं (विरंद्र १३)। र प्रतिनक्द्रं (विरंद्र १३)। र प्रतिक्द्रं विरंद्र (विरंद्र १३)। विरंद्र विद्र (विद्र १३)। विद्र विद्र विद्र विद्र (विद्र १३)। विद्र विद्र विद्र विद्र विद्र (विद्र १३)। विद्र विद्र विद्र विद्र १३)। विद्र विद्र विद्र विद्र (विद्र १३)। विद्र विद्र विद्र (विद्र १३)। विद्र विद्र विद्र १३)। विद्र
१११ जन्म)। प्रान्तेय वि[निप्तरस्थ]स्कलन्यी्र्ड वाती पीट्रण (च ४६० च)। प्रारक्षमा न [निकानन] गावना (दूप १११)।	र १; वर १)। ज जिलेस्सविभावय जिल्लेक्टर (स्वह १ विसे ११७)। जिलेक्टर सह सि स्विता विभाग	(स्पे)। पिक्तोस ) पुं[सिक्तोस ] कोम्प्पैप पिक्ताइ निकस्स (स्प १ १, प्रवंश)। पिताब केडो पिक्ताय (कुप २२६)। पिताब स्टिक्टों स्कापिसेय से बर्ट

(घणु १)। धर्वः निश्चित्रस्यामि (बस्यु

जिक्तिम पु [निक्षेप] १ स्थापन। २

(मा १४) I

न्वास-स्वापन वरोहर, वन भावि क्रमा रखवा

णि क्लावण न [सिक्सेपण] १ स्थापन । २

बाचना (नुपा ६२६ पक्रि)।

फिलक्ष्य न [तिलकें] संन्या-विशेष सी वर्ड

णिलिक मि [निक्किस] वर्ग धरत <sup>धन</sup>

णिगड पत्र [सिगडयू] नियनित करण्य

बोबना । क्रंक निगडिकण (दुप १०७)।

(प्रश्नु नाट-महाबीर १७)।

णिगीठ देखो चित्रांठ (विसे ११६९)।

सी प्रस्त (संक)।

रहित (पि ११६)।

जिस्कात वि [निःश्वत] धन-प्रीत धारिय

णिरस्यमध्यक [निर्+क्टम्] १ बद्धर

नितत्तना । २ दीसा तेना, बन्दास नेदा ।

रिक्समद् (मम)। जिल्ह्सम् (कप्प)।

भूगा, शिक्सनियु (गण)। सनि शिक्स

णिगडिय वि [निगडित] नियन्ति (इम्मीर णिएम्द्र पुंदि] वर्ग वाम वरमी (दे ४ २७) । णियाण वि [सप्त] नेमा वस-पहित (सूध १ २११)। णितश्व सक् नि∔गद् रिशासाः २ पदना सम्यास करना । वक्क- णिगन्दमाण (विशे ८१)। णिगम पू [निगम] १ प्रदृष्ट बीच (विसे १२८७)। २ व्यापार-प्रवान स्वान जहाँ व्यापारी विरोप संबमा में एन्ते हों ऐसा राहर भावि (परहुर ३) भीप मात्रा) । ३ व्या-पारि-समूह (सम २१)। णिसमण न [निरामन] प्रमुपान प्रमास का एक प्रवयन ज्यसंदार (वसनि १)। णिगमिञ्ज वि [वे] निवासित (पक्)। जिगर पू [निकर] समूह, राशि, बरवा (विपा १ ६ चवा)। णिगरण म सिक्स्प नियम केंद्र (भग w w) t णिगरिय वि [निकरित] सर्वेषा शोषित | (पर्दार Y) । णिएस देवी णिशस्त । २ वेडी के प्राक्तर का सीवर्णं प्रामुक्त्य-विशेष (प्रीप्त) । विगन्धिय देखो णिगरिय (व २)। पिगाम देखो जिस्तम⇒ लिकाम (पिंड **६**४६)। किसाम न [निष्मम] म्हक्त परिस्प (स्र ५, २३ वा १६)। णिगास र् [निक्ये ] परस्पर धंयोजन, मिसाना, बोड़ (मप २४०७)। जितिकिस्य 🖦 जितिषह । जितिह देवी जिविद्ध (सुपा १८३)। णितियं वि [सन्त] तन तैमा (प्राचा % २ शास्त्र १ विश्वेश)। णिशिणिज न शियम्य] नेनासन नम्तवा (बत ६, २१) गुत्र ६, २१) । णितिमद्द सक [नि+मद्] १ निप्रह करना बर्ग्ड करना किया करना । २ रोक्ता। १ धर- बैठना स्पिति करना।

संकृ जिनिविक्त्य, जिन्धेर्ड (ठा ७) कम्प च्या)। इ. णिगिण्डियस्य (स्प ६ २१)। णिगुंब सक [नि+शुक्त] १ पूजिता यम्पक्त शब्द करना। २ तीचे नमना। वक्क जिन्दिसमाण (खस्या १ ६---पत्र १४७)। जिर्मात देवो जिरुस = निष्क्रम (मानम) । णिगुष्म वि [निगुष्म] गुण-पहित (पण्ह t (F 9 णिगरंथ वेको जिउरंथ (परह १ ४) । जिगुद्ध वि निगृद्ध र पुप्त प्रव्यक्षप्र (कप्प)। २ मीना मीन स्लेबका (राज)। णिगृह्व सक [सि + गृह्य ] विद्याना गोपन करना । सिग्नाहर (ठवा महा) । सिग्नाहरी (संद ३२) । संद्र- जिगुह्विक्ज (स ३३४)। जिस्हूण न [निस्हून] मोपन क्रियामा (पंचा १३)। णिगृहिक वि निगृहित विपाया हुवा गौपित (मुपा २१८)। मिनोअ पू [निनोद] धक्त की वें का एक साधारण राधीर-विशेष (भक्त पर्य १)। जीव पूं जिया निमोत का भीव (मय २१ ६ कम्म ४ व६)। णिसा केवो णिमाम = निर्+यम् । बहुर-णिग्रति (मि)। जिस्मीठेव (ती) वि [निप्रवित्त] ग्रीम्थ्यः प्रवित (वि ११२)। णियांतुं णियानूण } वेको णियाम = तिर्+ वर्। णिमांव देवो णिअँड (बीपः घोम १२०) प्रामु १३७ छ ६,३)। णिगांस वि निर्मेन्स निर्मेन्स-समानी (सावाद १३३ क्या)। पिरगंधी की [मिर्मन्धी] बैन साम्नी (ग्रामा १ १ १४) उसा भवा भीप)। णिग्गच्छ । भक् ि सिर + गम । बाहर णिग्यम । निक्सवा । खिग्यच्या (क्या: कप्)। वह जिमान्द्रतं, जिसान्द्रमाजः जिग्गममाज (नुग ३३ : शाया १ १३ पुरा १११)। चैक्र शिमाचिक्चा विम्री-तून (क्या च १७)। देश विग्रांतुं (का ७२८ थै) । जिग्गम पुं [निर्गम] १ उस्तरि, बन्द (निर्म १४३६)। २ बाइर निकतना (छ ६ ३६)

क्य पू ११२)। १ हाए, बरनामा (से २ २)। ४ बाहर वाने का रास्ता(से व ३३)। ५ प्रस्कान प्रमाख (शहर)। णिमामण न सिर्गमनी १ कि प्रस्तु बहुर निकसना (ग्रामा १ २४ सूपा ११२ भय)। २ प्रमायन भाग बाला। ६ मप्रक्रमख (वव १)। णिमासिभ वि [निर्गेसिव] बाहर निकासा इया निस्सारिन (भा १६)। णिग्गमिय वि [निर्गमिष्ठ] यगामा हुमा पसार किया हवा (सम्मत्त १२३)। णिम्गय दि [निर्गेत] निचन बाहर निक्ता हुमा (विसे १३४ ज्या)। उत्तस वि यिशस विस्कामरा बाहर में फैसा हो (ग्रामा ११८) । सोअ नि भिनोदी विश्वमी सुगन्त जूब फेली ही (पाध)। जिग्गय वि [निगेज] हामी-रहित (मवि)। जिस्सह देवी जिसिष्ह । इ. जिस्सहियक्य (मुपादद)। णिगम्बर् पु [निमह्] १ व्याः शिक्षा (प्राप्त १७ ३ धान ६)। २ निरोच सनरोच स्कावट (सर्व ७ १)। १ वहा करना कासू र्ने रचना, नियमन (प्रासू ४०)। द्वायान रिकानी स्थाय-दाज-समृद्धि प्रतिज्ञा-हानि भादि पराजय-स्वान (टा १ सूम १ १२)। णियनद्वण न [निमद्दण] १ निवह, रिज्ला बएड (गुर १६ ७)। २ इमन नियमन, निमन्त्रण (प्राप्त १९२)। णिमादिय वि [निगृद्दीत] १ विसवा निवह किमा गया हो वह (चे ११६)। २ पराजित परमुख (भारम) । जिम्मादीय देखो जिग्महिय (मुख १ १)। थिग्गा की दि हिसा हतती (दे ४ २१)। जिग्गाछ पूर्व [निगास्त्र] निशोह रस 'सीत-वदीनिग्वास (संदू ४१) । जिम्माद्विय वि [निर्माष्टित] धनावा हुमा (का प्रकार)। षिग्गाद्दि वि [मिप्राद्दिम] निवद्द करनेताचा (बच २४, २)। जिम्मिण्य वि [वे निर्मीणै] र निर्मेत बाहर निकता ह्या (१४ ३६) पाय)। २ बान्त बमन किया ह्या (से इ. २०)।

जिमेंट वे सिंचण्टी शक्त कीरा, भाग संवद

किस्सिक्टिय है जिसेक्टित शत्त बसन

णिनियण नि निर्मेण**े निर्मेश, क्या**ला-सीहर

(पा४ १६ प्राप्त ११ पुर २ ६१)।

पिन्धोर वि वि निर्मेष, बया-हीन (वे v

जिन्देरं देनो गिनिषद् ।

1(05

किया क्या (स ११०) । (धीप सह)। जिस्सीकी की जिस्सीकी कीविक-विशेष णियस पं [निक्रय] १ क्यौटी का प्रवर बनस्पति संद्राल (पराज १) । (धरा)। २ कमोटी पर की वाली सवली विग्राण वि निरामी क्य-रहित एय-सीत भी रेका (सवा १४१) । (पार शास्त्र पतार १ र उप ७२० दी)। जिवय पंतिचयी संबद्ध संवय (सूम १ णिग्राण्य ) म**िनेगञ्य**ी दश-रवितपत णिग्गान प्रखनीन्द्याः निकल्पद (बस - **€**) ï जिनम वं निजयी १ सन्ह चिता २ पत्त १४)। 8Y) 1 काचम प्रति (योज ४ का स ३११ बाजा णिम्ग्रह वि जिसेंही स्विर क्य से स्वाधित (समेर की। मद्या)। णिएनअ वि निवित्ती १ व्यास अस्पर जिग्गाह प श्यिमाची बन्न-विशेष बरयद (भवि १)। २ निविद्य प्रष्ट (सन्)। वह का पेड (पडम २ १६) पड )। परिमुख्य न परिमण्डस र शरीर-सस्बल-विशेष पिष्ठ प्रतिष्ठी वस-विशेव वंदल क्स परकार संधेर का साझार (सम. १५१) (स १११३ कमा)। **ठा ६**) । जिम मि [निस्य] १ ध्यविनस्य र शास्त्रत जिन्धेट } क्या जिथेटु (क्य) । चिन्धेट (ब्राका बीप)। २ न. निरस्तर, सर्वेश इमेर्फ (मद्वा प्रासु१४ १ १)। व्यक्तियव णिग्मद्रीवि दि कुछव निपूछ क्यूर (दे वि विभिन्नी निरुत्तर उत्तवनाता (शास Y 14) 1 १ ४)। मेडियाको "मण्डता वस्तु णिग्मण वेको पि ग्रमण (विकार २)। क्त-विशेष (इक)। वास प्र विवास जिन्मित्तिक नि [दे] क्षित चेंक्स हमा पदार्थों को निरंप माननेवाद्या गता भूडदुक्द-(पाप)। र्शपद्रीमो न बुरुबद्द निरुवदावपस्वस्मि (सम णिग्याइय वि [निर्मातित] १ यात्रात-प्रान्त १)। सों म [शस्] क्या सर्वत ६ १७२)। भाइतः। २ व्यासास्ति विनारिका (ग्रामा १ निरुवर (महा) । स्त्रोभ स्त्रोग स्त्रोव प्रं ["स्मेक] १ एक विद्यावर-राजा (पठम जिल्हाय **र्ड** निर्मात । <del>एकतः वंद्य का</del> एक रु १२) । २ वहानिहानक केन-निरोप (ठा २, १) । १ न. नगर-विशेष (पडम १ १२) चवा (पठम ६ २२४)। इक) । ४ वि. सर्वेश प्रकातवामा (क्य) । जिग्माय पू [निष त] १ सामात 'रंकिर नुष्पारंगमपुरस्यक्तिकायविकृतिम् बर्गरारं (सपा णिव देखो जीस = नीव (सम ११)। के)। रे विजनी का विस्ता (संवेशक कीया। णियवस्य वि [निकाशन्] वयु-सीहा t) । ६ म्यन्तर-क्रव वर्णना (ठा १ ) । ४ मेव हीन सन्धा (पडम बर ११)। विनास (सूच १ १६)। णिवट (प्रप) वि [साढ़ी गढ़ निवित्त (हे णिश्यायण न [निर्मातम] नात विनासः ¥ ¥39) I क्वादेशन (पक्ति सपा १ ६) । विश्वय क्यो जिस्क्य (प्रवी २१: वि ३ १)।

णिवर देवो जिस्तरः छिन्नसः (हे ४

पिष्य क [ शुरू ] भरता शकता, बुता।

णिज्यवद (देश १७३) । बनी शिक्सादेद

1 (2) 1

(इम्प)।

इ.स.म. स्थाग करना । सिक्तह (हे Y १२ दि)। जन्म सिक्यकीय (क्या)। णिक्य कि जिल्लामा विकास कर करत (केर २१) ७७)। यस न पिकी बर्फि मोख (पंचय ४)। जिल्लिक कि जिल्लिक विकासीत वेफिक (विक ४६ प्राप्त २०) बुदा २२६)। पिकिट वि जिल्लेको केल-प्रीत (एप जिबाद (शी) देखों जिन्दिक्षय (पि ६ १)। जिल्लाका व जिल्लोहकोती सकीतर बीप के सब्ध को बड़िया किया में स्कित एक धेत्रसमिरि (पन २६६)। णिब्लुकोस ) वि जिस्योदयोत्ती १ एव णियमञ्जीय प्रकारका । २ व वह-विदेन ण्योक्तिक देव विशेष (ठा२ ३)। १६ एक विद्यावर-नयर (इक्) । णिश्चक वि वि र अलक्त बक्र निरम हम्य (पड्)। २ निर्देश वता-द्वीन (पान)। णिक्वकियस हि [तिस्योतिमा] एरा विश (इस १, २)। जिच्चे**ड क्वा** जिचिद्ग (छाना १ २ पुर णिक्षेयण वि [तिश्चेतम] काना-धीर जिब्बोडमा हो [तिस्पर्तक] हमेरा रवस्त्रहा चनेनाची सी (का ४, २)। णिक्काय सक **हि**] निकोइना । निक्नोवह (क्रम २१६)। णिक्जोरिक न [मिश्चीर्य] १ जोरी ना ममल । २ वि चौरी-सीति (स्प १३८ मैं) णिध्यद्भ वि निरुविको १ किर्यस सम्बन्धी । २ पूँ निश्चय नव अध्याजिक स्थ परिवास-गार (विसे)। णिचक उस विनिक्त साथी १ कपट-पहिट च्या ११ )। र नाया-वॉक्स (क्ल किये. विकासपट (सार्व ६१) । णिच्छाचा वि. वि. र शिवेंग्य वेतरम ब्राट £ौठ(ब्रुड १। नव ४)। १ सवतर मील्हीं जाननेवाला सदयस्य (एउ)।

णिच्छम्म देवी णिच्छउम्(धर-सार्व १४१)। णिरस्य सक [तिर्+िव] निरवप करना निर्णं करना। वह जिब्द्धयमाण (बन ७२८ दी) । णिक्क्षय पु [निर्चय] १ भिरचम निर्णम (समः प्रामु १७७)। २ निसम सदिनामाद (राज)। ६ नय-विरोध प्रच्यापिक गम बास्तविक पदार्व की ही माननेवाला मत परिसाम-बाद (बृह ४) पेत्रा १३)। कहा को [\*क्या] धरवार (निष् १)। णिच्छ्रस्य सक [द्विष्] धेरना, काटमा । श<del>िक्या</del>सद् (दे ४ १२४) । पिष्क्रहिन्द्रअ वि [सिम्न] काटा हुमा (हुमा: स २५८। बटह) । णिकक्काय वि [ निश्क्षाय ] कान्<del>ति र</del>हित शोमा-हीन (पस्ह १२)। णिच्छारय वि [निस्सारक] सार-पहित, 'निकासकारम्बोरा' (मा २७)। লিখিবৰ বি [নিহিন্তুর] ডির-ছবিত (ভাষা १ ६ उप २११ टी)। गिरिष्टुच्य वि [निरिष्टुक] पुबक-कृत सन्तर वियाह्या काटाहुमा (विसे २७६)। जिपिकार देवो जिथ्लिक (स ११ )। जिक्सिस देशो जिक्सिया (पुरु ४६६ मका)। অভিনয় ৰ [নিমিক] নিখিক, নিৰ্যাত धर्मशिक (ग्रामा १ १ म्यहा) । जिच्छीर वि निक्वीर | बीर पहित दुग्य-শবিত (৭০ত १)। णिबद्धंड वि [वे] निर्वयः कच्छा-चहित (वे ४ इंशी। जिच्छुट् वि [निरह्युटित] भिमुक्तः कूटाः गिज्ञिण्य देवी जिज्ञाण्य (स.४१)। इस्स (पुर ६ ७२) । णि≁द्वभ सरु [नि+सिप्] १ वहर ∣ निरातना। कॅंबरना । किन्द्रभद्र (मन)। कर्म शिक्कमा (नि ६६) । क्वड शिक्ट्स बममाज (विया १२)। तक जिब्ह्य भित्ता, णिक्यद्रिमित्रं (का निर १ १) । प्रयो शिन्द्रमध्द (समा १ ×)। विच्छाम प्रतिक्षेपी क्लियन (सिंह

tex):

णिच्छूमण न [निक्षेपण] नि सारस निष्मसन (निष्(१)। णिनदुरभाविय वि [निक्षेपित] निस्सारिक बाहर क्लिप्सा हुमा (गुप्पा १ ८)। जिच्छाइ सर्किनि + क्षिप् विसना। निष्युत्र (सुबा ७ ११)। जिच्छूहणा भी [निझेपणा] बाहर निक्तने की माजा, निर्मेर्त्सना (छाया १ १६ टी-पद्र )। णिक्छ इ.वि. [निश्चिम ] १ क्युत्त निर्यंत (क्रे.४ २३६)। २ फॅकाहमा निश्चित (प्रामा) । १ निस्सारित निष्कासित (ग्रामा १ स-पत्र १४६३ १ ६६-पत्र १६१)। णिकस्तुः म [निष्ठ**प्**ठ] **पुरू सवा**र (विसे X () 1 जिब्छोड सक [निर+छोटम्] १ बह्यर

निक्सने के लिए जमकाना। २ निर्मेर्सन करता। १ सुरवाना । शिक्कोबेट शिक्कोबेटि (शाया १ १६ १०)। शिष्कीवेजा (उना)। र्षक्र णिस्क्रोडइत्ता (भग १४)। णिक्कोडम न [निरुद्धोटन] निर्मर्शन नाहर निस्थवने की पमकी (उन)। जिच्हारणा भी [निरमोटना] उत्तर देखी

(शाया १ १६-- वम १६६)। पिच्छोडिज वि [निर्छोटिठ] समाक्रिया इपा (निष २७६)।

णिक्कोस सक [निर्+तक] भीतता. खान उठारना । निम्द्रोनेड (निष्कृ १) : वह णिण्योतित (निष् १)। सङ्ग निष्यास्त्रिज्ञण (महा)।

णिर्वेदिय नि [नियम्बिन]निविभव संदुर्शित (9T 1 Y) 1

णिजुँ स देनो जिज्ञ = ति + कुन्। निर्मुबद (इप्र १४६)। णिज्ञद्व वेचो जिट्ट (निष् १२)।

णिजाञ्चण व [सियोजन] नियुक्ति, वार्य में सगाना, भारवर्षेषु (इस १७१ दी) । णिजाजिय देवी जिजाइय (स्प १७१ हो)। णिक वि वि ] पृत्र सीमा समा (दे ४ २६) यय्)।

णिज्ञत देखो की ≃ हो ।

णिक्रण वि [निर्जेम] १ विवत मनुष्य-र्यहेत मृतसाम। २ न एकान्त स्थान (मज्ज)।

णिज्ञप्य वि [निर्योप्य] १ निर्वाह-कारक । २ निर्वेस यस को नहीं बदानेवासा धरस विरस्तीयनुग्वकिकमपाणभोदणाई' (पण्ड २ ४)।

णिञ्जर एक निर + जी १ क्षय करना नारा करना । २ कमें-पूर्वी को मान्या से मन करना । ग्रिज्योद, ग्रिज्य, ग्रिजरींड (भग्र ठा ४ १) । भुका, सिक्टिंग, सिण्य रेंस (पि २७६) मग)। सनि श्रिक्तरिस्ति (टा४ १)। वङ्ग णिज्यस्माण (मग १a ३)। क्षक णिखरिक्रमाण (ठा १

णिकारण म [निर्जरण] भीने रेखो (धीप)। णिञ्चरणा 🛍 [निर्ञ्चरणा] १ नारा सव। २ कर्म-श्रय कर्म-नारा : ३ विससे कर्मी का विनात हो ऐंसा कर (तर १३ सूर १४ ६४)। णिञ्जरा की निर्जरा कमैन्सव कमैन्सक (धावा, नव २४)।

जिञ्जरिय वि [निर्जीर्थ] बील विनात-माप्त (तंद्र)।

णिज्ञव वि [निर्योप] तर्वाह करानेवला (पंचा १६ १४)।

णिज्ञयम वि [निर्मापक] १ निर्माह करने नामा। २ धारायक मारायन करनेवासा (भोग२ व मा)। ३ पूँ जैलमुनि-विशेष को रिप्य के मारी प्रायक्ति का भी ऐसी बर्प्ड से निमान कर देकि जिससे बड़ उस निवाह सके (ठा का भप २३ ७)।

जिज्ञक्या भी [निर्योपना] १ नियमन, दरित धर्न ना प्रापुचारात (विसे २१३२)। २ दिया (पएद ११)।

णिञ्जबय देवो णिञ्जयग (ब्रोप २८ भा टी)

K YE) I णिज्ञवित वि [निर्वापवितृ] अपर **र**ही

(पद ६४)। मिञ्जा भर्य निर्मणी ग्रहर निरासन्त । खिन्नावृति (मन)। मृतिः खिन्नाहरस्यानि

(भीर) । वह जिज्ञायमाण (इ. १, १) ।

णिज्ञाण न [तिर्योण] १ वाहर निक्यन निर्णन (ठा २, ६)। २ बाहरी-रहित पमन (बीप)। १ योज पुष्टि (पार ४)। पिज्ञापिय नि [नैर्योणिज्ञ] निर्याण-र्यवर्षी,

निर्देम-धेवनमी (यन १६ ६) निष् क)। णिज्ञासमा वृद्ध निर्देशिक विश्वेषात् -णिज्ञासमा वृद्ध का निरूद्धा (विधे १९१६) ग्रामा १ १७ सीना गुर १६ १८)।

४६)। जिज्जामण म [सिर्वापन] बस्ता चुकावा भरियण्डामण्य (वद १)। णिज्ञासय वु [निर्यामक] १ शीमार की सेवान्यूच्या करनेवाला मुनि (यद ७१)।

२ वि स्वराजना-कारक (पत-गाजा १७) । जिज्ञासिय वि [नियमित] पार पहुँचामा हृया वारित (म्हा)।

जिज्ञाय वुं [वे] बन्तार (वे ४ वे४)। जिज्ञाय वि [निर्वाद] विषेठ निष्ट्य (वसु जन पुरुवर)।

णिजावण न [निर्मादन] वैर-नुम्नि, वदमा (महा)।

णिआवणा की [नियावना] स्मर केवी (उप ४६१ थी)।

भारताय के भी भिक्षासय (धीर)। जिज्ञास पूर्वी निर्वासी क्वी का रख गाँव,

(तुम २ १)। जिजिका वि [निर्कित] बौता हुमा परमूर (भोग १० लाटी पुर १, १६ मीरा)।

मि जिया सन् [निर् + बि] बीतना परावन करनाः निक्रियाः (सन्) संक्र निक्रिणिकयः (महा) ।

সিজিসিত ইন্না সিজিম (বুল ৭২)। বিশিক্ষম ) বি [নির্মাণ] নতেনার বিজিয়ে ) বাতে (বব তা ४ १)। সিজের বি [নির্মাণ] বাব-টোত বীক্রম বাবিত (ধাবা মা ৭ মরা)।

गिरनुंद्र [निर्+ युज ] काकार कला (सिर २६ टी)।

पिश्चुत्त वि [मिर्मुक] १ वेवत, सपुत्र (विष् १ १) सीव १ मा)। २ वरित, विद्वा (बीव)। ३ वर्षित सीत्रमूख (सावपू

जिज्जुक्ति को [नियुक्ति] ध्याक्या विवरण दीका (विसे १११) मीच २ सम १ ७)। जिज्जुद्ध देवो गिउद्ध (स ४७)।

निक्षतं (स्त म २२)।
जिज्ञात् सक [नित् + युद्धः] १ परिकाम करता । २ रक्ता जिल्लीय करता। कर्मे रिज्युद्धिका (प २२१)। हेक जिज्ञादिचाय (कर २)। इ. जिज्ञादिका (कप्प)। जिज्ञाद्वं दें कि निस्त हो १ नीय स्वरित

शन्त् पूर्विद्यु र तीय व्यक्ति प्रत्यक्तिमार पटन (वेश्वर प्रदेश)। २ च्याच कोचा किन वाद जिल्लु मेटी रिज्यवृद्धिमों (बस्स १ टी।वव १)।३ बार के पास कारका-विदेश (छास्स १ १— पत्र १ पास कारका-विदेश (छास्स १ १— (बार २ ० वा)।

जिन्सूहरा वि [नियुष्क] बन्तान्तर वे ज्युत करनेनाना (दवनि १ १४)। जिन्सूहण म [नियुष्ण] केवो चिम्बूहणा

(क्य वेद, २११ पन २)। जिल्लाह्मपा १ व्यं [निज् ह्मण] रे निस्ता-पिक्सोह्मपा १ ए० वाहर निकालना (वन रे)। पीरवाव (ठा ४ २)। वे विरवना विस्तित्त (विसे १११)।

जिम्ब्रिस देवो जिम्ब्र (स्ति ११६) । जिम्ब्रिस ४ [निम्रित] चीत (पर

्रहरू)। पिज्ञोञ पुँ [हें] १ प्रकार, राशि । २ पूर्वी ृक्षा यक्कर (है ४ १३)।

का याकर (१४ ६६)। विज्ञोध १ वृं [नियोग] १ काकरल विज्ञोग १ कावन (एक ४६) निष १६)।२ कावार (निव २६)।

जिज्जोज १ दि निर्मोत परिकर यिज्ञोत । नामर्थ पास्तिकासं (धोन ६६ सं ए।सर १ १ — सम् १४)। जिज्जोसि दे दि रुक् रस्यो (१४ ११)।

ाणआसम्बद्धाः हिन्दुः स्तर्धाः (१४ ११) । जित्रक्षः चकः [स्तिद्द्र\_]स्तेद्दं करमा । स्तित्रक्षः √श्राकः र )।

जिसम्बर पक [सि] बीस्स होना । स्वस्थ्य (क्षुण १ जर ) । शक्क जिसम्बर्ध (क्षुण ६ ११) । जिसम्बर्ध (क्षुण ६ ११) । जिसम्बर्ध (क्षुण १ विश्व क्षुण १ विश्व क्षुण १ विश्व क्षुण व्यक्ष के निष्ण वर्षण का समाह (क्षुण १ क्षुण १ विश्व क्षुण १ विश्व क्षुण १ विश्व क्ष्य (क्ष्य क्ष्य क्य क्ष्य क्य क्ष्य क्य क्ष्य क्य क्ष्य क्ष

(हुमा)।
जिस्सा सक [तिसन्धा] केवात विशेषक करणा। शिक्ताद शिक्रमाण्य (है ४ ६)। वह प्रिस्ताद शिक्रमायसाण (मा) पाचा २ ६ १)। वह जिल्लाहरून, जिल्लाहरूमा (महा पाचा)। जिल्लाहरूमा (महा पाचा)।

जिल्लाह वि [मिश्लायिम्] वेक्नेत्रका (प्राचा)। जिल्लाह वि [मिश्लायिम्] जिल्लाह वि [मिश्लाय] मिरीवक (क्य १६) तम ११)।

निरोधक (उत्त १६) तम ११)।
पिममाइकु वि [सिर्मात] स्रोत्तम क्रियं करनेशामा (३)। जिममाइस वि [निरमात] १ हर, विवेक्ति (स ११२) वाल ४१)। २ न क्रोन, मिर्म-

सास (महा—इत १)। पित्रमधिकय वि [निर्माटित] विनासित (ज्

् ६४% दी) : भित्रमञ्जय नि [के] निर्वय, बसान्यदेश (वै ४ वक्ष)।

रण)। जिल्लामान कि [सिल्मात] हुट विजीवत (दुर ६ देवना दुवा ४४०)।

पिमपूर वि [दे] बीबॉ, पुराना (दे ४ २६)। जिम्मप्रेड एक [क्रिंड] देखा वाटव। विज्ञासक (दे ४ १२४)।

जिममोहण न [छेवन] हेनन कर्तन (इना)। जिममोसहणु नि [निम्मोपशिक] हम कर्तन बाबा कर्मी का ताल करनेवाला (सावा)। जिह्नक वि [वे] १ टंक-फिब्ब। २ विकन्त

| । पहिकात | पूर्व | १ टेक-विकास । २ तिर्मेन | प्रकार ( ४ १ ) | | प्रदेशिक्य कि [निद्धिकित] निर्देशक स्त्र | वार्षिक (तुरा २ १ ) |

णिह्यणिज्ञ (दर ११७ धै)। णिट्रवण न [निष्ठापन] १ मन्त करना समग्रीत । र वि नारा-कारक स्वतम करने-बाला (मुपा १६१ यज्ञः)। ६ समात करने वाला (जी १)। णिट्रयय वि [निष्ठापक] सनाप्त करनेवासा (भाव ६)। णिट्रविभ वि निद्यापित । र समाप्त किया हुमा (वेषत्र २)। २ जिनासित (से ६, १)। णिट्रा यक [नि + स्था] बतम होना समाप्त होना । स्मिद्धाइ (विसे ६२७) । णिट्टा भी [निष्ठा] १ बन्त बन्छान, समाप्ति (विसे २८११ सुना ११) । २ सङ्गान (बाह्र t)। भामि वि ["मापिम्] विज्ञ-पूर्वेड बौतनेताना, निरमय-पूर्वक भाषण करनेतासा (माना)। णिट्राण न [निष्टाम] सर्वेन्द्रण-पुष्ट भोजन (रम = १२)। जिट्टाण न [निष्ठाम] १ च्या वर्गेष्य व्यव्यन (ठा४ २ पट्या२ ४)। १ समाप्ति (निमू श)। वहा की "क्या ] मछ-कवा-तिरेप रही कीए ध्यानक की बाव-बीव (टा ४ ₹) ( णिहारण केने णिह्यम (बुना ११७)। णि द्विय नि [निष्टिन] १ समात्र विया ह्या पूर्ण क्या हुमा (क्या १ ३१ टी कम्ब ४ ७४) । २ नटस्या हुमा विनारित (नुपा ४४१)। १ स्वर (११ ७)। ४ हिना पिक (माना २ १ १)। १ पूँगीज पुनिः (माना)। हुवि [ीर्थ ] इतास (क्ल्स

णिट दुम--जिण्ह्य

णिवृद्गमः (इ.४.१७३)।

जिद्दुइअ पि [शरित] ध्यका हुमा (पाप)।

किन्द्रह ग्रक [वि+ग्रस्] स्व वाना,

णिट्ट देवो णिट्टा ≈ नि + स्या । निद्वद (मवि)।

जिह्न ) एक [ नि + स्थापम ] १ समाप्त

जिह्न ∫ करना पूर्व करना। २ केन्द्र करना

सतम करना। १ विद्याप स्प से स्वापन

करना स्पिर करना । मुक्ता, शिहुबेसु (मग

२१ १)। संक् णिटुविञ (चिग)। इ

तर होना । सिट्ड्रूड (हे ४ १७१)।

पिट्टिय वि निष्टिकी निष्ठा-पुक्त निष्ठानामा (पराहर, ६)। णिट्रीय पुँ[निष्ठीय] पूर्व गुँह का पानी णिट्टीयण कीन [निष्टीयन] पूरु खखार। २ बुक्त (सिंह ७ व टी) । स्त्री जा (बस **t**)1 णिद्दुस न [निष्ठचून] पूत्र (दुनर ३)। णिट् दुमय वि [निष्ठीय इ] पूक्तेवाका (क्एह २ १ ग्रीप)। णिद् ठुपण देशो निद्ठीश्ण (वेश्व ६६) । णिट् दुर । वि [निप्दुर] निप्दुर,पश्य कठिन णिट्ञुख ∫ (प्राप्त दृृह २,४४ पाम प्रजाह)। पिट्दुवण न [निष्टीवन] १ पूर ककार (वय १)। २ वि यूक्नेबाला (ठा १, १) त पिट् दुइ अक [नि+स्तम्भ्] तिष्टम करना निरनेट होना स्तब्ब होना। सिद्दूर-इद (हे ४ ६७ पह्)। निद्द्व पर [नि+शीप] पुरुग निद्दुस्थी (वंदु ४१) । णिट् दुव् वि [वे] स्तस्य निरवेट (रे ४ 11) ( जिद्दुहण न [दे निद्धोपन] पूरु पुँह ना पानी बखार (महा)। जिद् दुश्वण वि [निप्तनभक्त] नित्वेष्ट कर्त-वाना स्तम्ब करनेवाला (कुमा) । पिट्टुद्धि न [दे] पूत्र निहीदन श्राप्तार (\$ Y Y !) 1 जिह में कि मियान रामन (है ४ २१)। णिडस र न [स्टस्ट ] मान सत्तार (पि मिद्राख∫ २६ ँ पठम १ १७ मुपा ₹€) 1 जिह्न निह्यी पीत्र-पुरु (पाप)। मिहुइज न [निर्देहन] बना देश (का ११३ जिड्डर रेजो जिट्डम । जिड्डर (रूमा मिमाय १ [निनाइ] राज बादान व्यक्ति (छाया १ १) ९ इस १ १ १ १ १ १ १ १ १

(**≹**२ ४२)। खिएए**नपू (भा**षा २ २ १)। (पर्या १ पराहर ४)। (देश रेः)। र क्रियता (मुपा रेरे)। णिण्यपा देवो जिल्यता (पाध) । 24) 1 जिण्माम पू [निर्णोश] विनास (वर्षि) । (सुर ६ २६१: मनि)। EXE) I र्णहर । ३ मनुस्योगी (छ। ४.२) । संक्ष निज्यहर्त (वर्षीय १३६)। क्या हुमा (बा १२)। स्पिम (समि २ १)। १६क मूर १ २२१ महा)। (सम १४)। गिण्या जिण्ह्य **गिण्डब** सार (सर्वि ४१) । विम्द्रमण्डिन + इ.मृ] बानार करता । णिएणहरद (स्ति ११६६। हे ४ १३१) ।

पिप्य वि निम्न र गीवा घपस्तव (बत १२, इवर् ११ टी)। २ क्रिकि नीचे सक पिण्यक्स् कि [निम्सारयित] बाहर निना-नवा है, व्याणाया राज्ये साहरवि बहिया ना णिण्यया श्री [निम्नगा] भरी श्रीतस्विधी णिणगद्ग वि [निर्नेष्ट] माराश्राप्त (पुर ६, णिण्यव पु [निर्णय] १ निरुपय सपनारण पिन्नार वि [निर्नेगर] नगर से निर्गेत (मप जिण्यास को कि **क**ि प्रमुद्ध की ब णिण्यास सक्षानिर + नाराया विकास करता। बद्धः निश्नासित (सूपा ६१४)। णिण्यासिय वि [निर्याशित] विनासित णिज्यद् वि [निनित्र] निका-पीहत (ग जिंग्गिमस दि [निर्निमेप] १ निमेप-पहिल, विता पसक भएकामे एक-टकः। २ वेश णिपनी सक [निर् + यी] निरुप्त करना । णिण्तीञ वि [निर्गीत] तिस्वित नश्री णिष्णुण्यस वि [निस्नोशत] ह्रवानावा जिस्मेद्द रिक्तिस्मेद्दे स्मेद्र-रिक्त हि ४ णिण्डह्या ध्ये [निह्नविद्य] तिति-विरोध पुं [निद्वय] १ सप्यका धातान करनेशना निष्याशरी (दोक् ४ मां ठाण थीर) र शर

<b>1</b> €¢	पाइकसहसहष्यको	जिल्ह्द्स-निद्दं
क्में रिएएक्नीमिर्द ( श्री ) (नाट—सना	जित्वणण न [निस्तनन] विवय-पूचक भ्रान	मए तीए' (सुर ६ ८२ तर ११७ तार्व
३१)। वड जिल्ह्बंट जिल्ह्बेसाम (इर	(पुर२ २३६)।	¥)ı
२११ दी चुर १ २ १) ।	भित्यर सक [निर्+तृ] पार करना	पिवृरिसण केरो गिर्मुसप्प (का पर १८४)।
णिण्ड्वगमि [सिद्धावक] बनलाम करमे-	पार अवरना। सिरमरेद (सुपा ४४३)	जिब्धिसम वि [निव्धित] ज्यर्केट, क
नामा (स्रोप ४० क)।	<b>"जिल्बरीत बलु कामराजि पायनिज्ञायन</b> .	माया इद्या (वर्में र )।
जिज्यानम् न [सिद्यान] स्पनामः (विमार	इप्लेख महएखर्ग (स १६६)। इसक्र.	णिवा की वि १ वेबना-विशेष बल-पुक
ूर धर)।	णित्यरिव्यंत (राव)। इ. जिल्सिरियक्य	वेदना (भग १९ ४)। २ जानते हुए थै
जिल्ह्बल वि [निह्नन] प्रश्तास-कर्ता	(खामा १ ६) मुदा १२६)।	की वाली प्राप्ति-र्दिशा (गिंड)।
(र्जनीय १)।	फिल्परण न [निस्सरण] पार-पमन पार	णियाज भागे णिकाण (निपा १ १) मेर
णिण्ड्वित देशे णिण्डुवित (नाट-रुड्	माप्ति (ठा४ ४ उप १६४ दी)।	१५ माट—वेद्धी ६६)।
( <del>1                                   </del>	विस्वरिम देवी जिल्लिक्य (उप १६४ दी)।	णिदाया देखो (यदा (यएछ ११)।
जिल्हुय नि [निष्नुत ] अपन्तपित (गुपा	णित्याण वि [नि स्वान] स्वान-पहित स्वान-	जिदाइ पुं[निदाय] १ वर्गवाय अञ्चा
२६०)। जिल्ह्युव केनो जिल्ह्युव = नि÷ छ । अस्तै	अप्ट(रामा १ १c)।	२ ग्रीम्प-कासा गरमी का मीतिम । १ केंद्र
पिन्द्विक्तेति (पि वृक् )।	जिल्लाम नि [निज्ञ्लासम्] निर्वेत कमजोर,	मास (ग्राम १)।
जिल्हुविद् (ग्री) वि [नि+हृत] सन	मन्द (पाध्य महत्व धूपा ४८६)।	जिल्लाइ पुॅं[निदाय] तीवस नरकना एक
मसिव (सि ६६)।	जित्पार सक [ मिर्+ वास्य ] १ पार	गरक-स्वास (क्षेत्रा ≤) ।
जितिय देनो जिब (पाना ठा १)।	व्याप्ता वारमा। २ वनामा हुन्हारा	णिदाइ द्व [निदाइ] प्रधानास्त्र सद (धार
णितुबिस वि [मितुबित] द्वया हमा क्रिय	ेना । फिलारम् (काब)।	<b>x</b> )1
(पण्ड १४) ।	णित्पार [निस्तार] र कुन्मच ग्रुवितः	णिरेस् पू [निरेष्ठ] मात्रा १ <b>३</b> म ( <b>१</b> म
जित्त देवी अंत (पाक पुरा २११) शहूम	र नवान प्रता। १ स्वतार (सामा १ १	¥38) I
tx) i	यै—पन १६६। पुर २ ४१ ७ २ १।	जिवेमिश वि [निवेशित] १ प्रवर्कत । ९
जित्तम वि [निस्तमस् ] १ <del>प्रकार-पीत</del> ।	मुपा २१६)।	चक, कवित (पस्प ६ १४६)।
२ समाय-रिवृष्ठ (समि )।	णित्पारम नि [निस्तारक] पार वानेवाला	णिदोचन [दे] र धरका समार १९
णित्तस्र वि [दे] सनिवृत्त (स्व ११)।	पार अवरनेवाला (स १ ६)।	स्वास्थ्य वेषुक्स्ती (पव १६८)।
णिचि (प्रय) वैद्यो जीइ (प्रवि)।	जिल्लारणा की [निस्तारण] पार-भापका	णिइम्हण म [तिद्राच्यात] निवार्मे हेण्य स्थात, इस्पति-विशेष (प्राप्त)।
पिक्सिस वि [निस्सरा] निर्देश करणासीन	पार प्रांचाना (व ३)।	भिद्रंद नि [निर्देश्य]हरू-एड्रिस, स्सेस-मॉनर
(दुवा ११४) ।	पिरवारिय वि [निस्तारित] वनामा हुमा	्सिंस स्ट्रंड)। स्त्रवंद भा स्थितकी क्रिकेन्स्टर्स स्वरूपात
णिसिर्राष्ट्र वि [वे] निरन्तर, सम्मवीक (दे	पीवत ज्युत (सन नुपा ४४६)।	णिरम नि [निर्देशम] स्थानीत क्पान्यरि
Y Y ) I	पिरिषण्य ) वि जिस्तीजी १ जनीले वार	(पुपा १४७)।
णिचिर्रावभ नि [वे] इंटिंग दूस हमा (वे	पिन्निम ) बातः 'खिरिक्एखो सपू <b>र'</b> (स	णिहरी (मप) केरो पिहा = रिजा (न १६६)।
Y Yt) 1	३६७)। २ विडको पार किया हो बह	जिह्न वि [सिर्वेग्स] १ जनामा ह्रम्य
जिलुप्प वि [वे] स्नेर-पीत, इत सावि वे	एिल्क्सि मालया गर्दर (गुर u ut)	मस्य क्या ह्या (स्ट १४ २६। धंत १६)।
वजित (शहर)। जिनुस वि [निस्तुस्त्र] र निस्तम प्रशासास्त्र	'मिरिकर्श्यमण्डपुर्दे' (स १३८) ।	२ पुंतुपनिशेष (पतम ३२ २३)। ३ एक
(का इ. १६)। २ किकि सद्यानास्त्र का	णिरंस धक [सि + वसैय् ] १ क्याइप्स	प्रमा-नामक नरक-पृत्रिकी का एक वरकावार
वे 'बएखहा नितृतं मर्यव' (नुता १४१)।	वयवाता रहान्य दिवाता। २ दिवाता।	(ठा ६)। सत्रसः पुं ["सप्य] नरकानात-
पिचुस वि [निस्तुप ] तुब-धील बूसा	शिरंधेद (नियः)। यक्क प्रियंति (दुना	विशेष, एक नरक-अवेश (श ६) । शनच 🕽
वृद्धिः विदेशः (तर्गः ४ सः वर्गः वर्गः	वर)। जिद्देसण म [तिदर्शन] १ स्थापका दशमा	[पर्व] भरनावाध-विकेष (ठा ६)।
4) 1	(मधि १३)। २ विद्याला (स्रार्ट)।	ोसिष्ठ ई ["विश्विष्ठ] नरक-स्रदेश-निषेप (ठा ६)।
णिचय रि [मिलीजस् ] देव-पहित (सामा	णिई सम है [निहरीत] बर्चान रिकमा	(वा ६) । जिद्देव वि [मिर्देव] स्थानीन, कस्ता-रहेत
t t):	हुमा। 'एवं विविद्यालयं निर्वतियो नियक्ये	निष्द्र (त्या १ १) सक्ता)।

णिद्धम वि [दे] प्रविक्ति-गृह एक ही वर

जिइसम न [निर्देसन] १ मर्दन निरास्त (धाचा)। २ वि मर्बन करनेवला (वजा ४२) । णिक्षक्रिक कि निर्वेद्धिती मन्दि विद्यास्ति (पाक गुर १, २२२, सार्व ७१)। जिद्द सरु [निर्+दृ ] वसा देना मन्म करना । निरहर (महा जा) । णिर् इंग्जा (पि २२२)। णिहासक [नि+द्रा] निया सेना मीँद करना । छिहाइ ( यह ) । बङ्क णिहार्अंत (से १ प्रर)। णिहा की निद्रा १ निया, मीर (स्वान ५६ क्प्यू)। २ तिहा-किरोप बहु तिहा जिसमें एकाप भावाज देने पर ही भावनी जान उरे (इस्म १११)। और वि [ यम् ] निप्रा-यूच्छ, निक्रित्त (से १ ५१)। वर्धीकी ["करी] सता-विशेष (दे ७ ६४) । "पिदा की "तिद्वा निधा-विशेष वह निधा विसर्ने बड़ी कठिनाई से झारमी उठाया वा सके (कम्म १११ सम १४)। छ, सुनि प्राप्त)। यझ नि ["प्रवृ] निप्रा केनेवाता (A 6 X1) णिहाअ वि [नित्रात] को श्रीव में हो (से १ 28) I जिहास वि निदानी मन्ति-प्रतिष्ठ (सं १ **1(3** णिशांश्र वि [निर्दाय] सन-परित पेतृक वन से वर्जित (से १ ११)। गिहाइअ रि [निट्रित] निज्ञ-पुष्क (महा) । जिहाणी भी [निद्राणी] विद्यादेशी-विशेष (पदम ७ १४४)। णिश्चाया देली णिश्चा (परस्य ३३)। णिदारिभ वि [निर्दारित] बरिक्ट विवरित (P X = \$1 28 EX) 1 णिहार वि निदायी १ सायतत-धीरतः । २ बेनन-परित (से १ ४१)। मिटिट्र वि [निर्दिष्ट] १ विषय बक्क (मग)। २ ब्राजिशक्ति निक्षित (पंचा ६) देस) । णिरिट्टू रि [ निर्देष ] निर्देश करनेराना (रिके १६ ४: विक ६४)।

णिहिस सक [निर्+दिश् ] १ उपारण करना कमन करना। २ प्रतिपादन करना निकास करम । निविधः (विसे १४२६) । कर्म जिहिमद (नार-मालवि ५६)। इक निरदर्द (पि १६)। र गिरिस्स णिइस (विन १४२६)। जिद्दबस्य वि [निर्देश्य] दृष्त-पहित पूनी (सुपा १३७)। णिद्तुर पू कि नत्तर] धेरा-विशेष (क)। णिदुवृसम वि [निवृधम] निर्दोप (वर्गीव जिहेस ५ जिनेंगी १ सिंग या धर्मेनाव का क्यन (ठा ६--पत्र ४२७)। २ विरूप का यमिवान 'मविशेषियपुर्सो विशेषियो हाड निहेती' (बिसे १४८७, १६ ६)। ३ निवाद पूर्वक कथन (विसे १६२६)। ४ प्रति-पाइन निकास (बता १ स्वीह)। १ माहा हुटूम (पायः इम्राट २)। ६ वि जिनको देश-निकासे की मात्रा हुई हो वह (भाउम ४ **⊏**₹)1 विन् निर्माणला (प्रीप्त २ वि १९३३ । शिहेस्म । वि निर्मेशक निर्मेश करने-जिहेसर∫ बला (विसे १६ क १६ )। णिशस्य न [निर्दोश्यय] १ दुव्यका का ब्रमान (बन ४)। २ वि स्वस्थ इत्स्यता-चीहत (वव ७)। णिहाम वि [निर्दोप] रोप-धीत, इपल-बर्बित विशुद्ध (गडक नुर १ ७३) । णिक न स्निग्मी स्वह, रव-निदेप (ठा १) मणु)। २ कि.स्ते**इ-पूक**े विश्वा (द्वे २ १ ६३ वर पर )। १ कान्ति-युक्त तेत्रन्ती (TE 1): णिउंत वि [निर्फात] भीन-पंगीय से विशे:-बित, मन-पीत (पण्ड १ ४३ चीर) ।

णिद्धंधस वि दि ] १ निर्देश, निरूद (**१** ४

२६ मुपा २४३ मा १६)। २ निर्पेश्व

वेग्रस (विवे १२**०)**।

**७६ टी** महा) ।

र्मे रहनेवाचा (दे४ ६८)। णिद्भण न दि जात मोरी पानी कानेका शस्ता (र ४ वेट बर २ १ ३ ठा ४ १ मादम रोद्वा सदा स्थापा १ २)। यिद्रमण न [निष्मान] १ तिरस्कार, घव हैतना (तर पूर्व ४६)। २ वं सञ्चारियेष (पान ४)। णिद्धमाय वि [दे] घविषय-गृह, एक ही वर में छत्तवाजा (वे ४ ६८)। णिद्धमा नि दि । एकपूल-गायी एक ही तरफ बातवाबा (वे ४ ३५)। णिदम्म वि निर्वसन् पर्य-एद्वित प्रवर्गी (या २७)। णिद्धय वि दि | देवी जिद्धम (दे४ ६०)। णि**द्वाइ**ऊण दे<del>वी</del> जि**द्वा**य । णिढाड सक [निर् + घाट्य] बाह्र विकल देना । कर्मे. निदाहिकई (संबोध १६) । णिद्वाडण न [निषाटन] निस्तारण निजा-सन बाहर निकासना (पंछा १ १)। णिकाशिय वि [निर्माटित] क्रम हारा बाहर निकत्तवाया हुया याच्य हारा निस्सारित (महा)। णिकांच्य वि निपाटिया निस्तारिय किनासित (पायः महि)। णिद्वारण न [निघारण] १ प्रण मा अर्थात मारिको सेकर समुद्राय स एक मानका पुषद्रस्य । २ निवय धनवास्य (विने 224=): यिद्धाप धर [निर्+धाष्] शैक्ता। **धेर** णिद्धाइऊण (महा)। णिद्वापिय वि [निर्मापित] शैका हुमा वानित (महा)। णिद्रुष सह [निर्+सृ] १ विकाश करना। २ दूर करना। संद्र निदुण शिपूय भीय ४४३। पाम: पुण्ड ४३४ सट्टि (रत ७ १७ तूस १ ७)। णिट्णिय , रि [निर्मृत] १ विकारित णिक्य रेन्ट क्या हमा। १ भागीत णिद्धण नि [निर्धन] वन-रहित प्रविचन (बुरा ११६ थीर) । (देव राग्यार देव रेप भारत जिब्स वि[निर्मुस] १ प्रम-प्रीत (इच्यू पदने १३ १)। २ एक तस्द का बान्धरा जिद्धण्य रि [निधान्य] बाग्य-चीत्त (तेर्) । (यय २)।

<b>X</b> ≥0	पाइअसङ्ग्रहण्यश	विद्य-विप्युद्यव
जिल्लुय रेगो जिल्लय (श्री र १)  जिल्लाम कि कियोंगे र बेचा हुमा (मा क्रिक्क रेप रेट ज रेशरे) र मैसेन स्वाम कि कियोंगी र बेचा हुमा (मा क्रिक्क रेप रेट ज रेशरे) र मैसेन स्वाम कि कियोंगी कि कियोंगी कियोंगी कि कियोंगी कियोंगी कि कियोंगी जिलाय गुण मेरि कियांगी कि कियोंगी जिलाय गुण मेरि कियांगी कि कियोंगी जिलाय गुण नियम कि कियोंगी रिकारित, सिवंद (स स्नाप र १४)।  वियम के नियमों र वर्गों का एक वर्ष् कार को मात कर्गगात (स प १)।  वियम के मिलियोंगी कर्मानी कियोंगी कार को मात कर्गगात (स प १)।  वियम के मिलियोंगी कर्मानी कर्मानी वियम के मिलियोंगी क्रिक्स के नियमेंगी (सीव १७ वर्ग)।  वियम के मिलियोंगी क्रिक्स के नियमेंगी वियम के मिलियोंगी क्रिक्स के मिलियांगी क्रिक्स के मिल्लेयांगी क्रिक्स के मिलियांगी क्रिक्स के मिलयांगी क्रिक्स के मिलियांगी	वरता, पंच क्षेत्रका । दिल्पंबंधि (विचा १ व) ।  शिर्णंद वि [तिष्पान् ] चकन-पहित्र विचा १ (व १ ४) ।  शिर्णंद वि [तिष्पान् ] चकन-पहित्र विचा १ (व १ १ ४) ।  शिर्णंद वि [तिष्पान् ] प्यत-पहित्र विचा १ व एव १ ४) ।  शिर्णंद वि [तिष्पान् ] प्यत-पहित्र (वच्च) ।  शिर्णंद वि [तिष्पान् ] प्रत-पहित्र (वच्च) ।  शिर्णंद वि [तिष्पान् ] प्रत-पहित्र (वच्च) ।  शिर्णंद विचा (वच्च १४ हो) । विशेषंद विचा विचा विचा विचा विचा विचा विचा विचा	जिप्परिसाह हि [निप्परिप्तह] श्रीस-पाँड (वर १४)। जिप्परिक्यण हि [निप्परिप्तह] श्रीस ए. वतर के में बदावर्थ (कप १)। जिप्पर हि [निप्परित्त कर्मार, विका केतान न है (से १ १)। जिप्पर हेता जिप्पर (हे १ १ १)। जिप्पर हेता जिप्पर (हे १ १ १)। जिप्पर हेता जिप्पर (ह १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
ित्तपार्थन केची जिल्लावेद (हे ६ ४००) ।	साव (जा १६६ है) । विपान । [जिप्पत्र] कर-रित (जा ६७ हर है - जिपानि । देखे जिपानि (वंता है जीव जिपानि है है)। जुन जिपानि के प्रोत्ताचकत (दुत है )। जिपानि से (जिपानि ) सिर्मेट वंत्रा	सार्थन । द प्रतिस्तर्यत् (दे ११)। [गणुमा र [मिलुक्य] पुरस्तर्यत् (दे ११) [मणुमा र [मिलुक्य] र पुरस्तर्यत् । १ वृत्तरम्बस्तर्यत् एक्सुमूर (दुस्तर्थत् । १ वृत्तरम्बस्तर्यत् ।

जिप्पुस्पय नि [निप्पुस्पक] नारिनशेष हे | चीता (स्व १ १६)। जिप्पन देवो जिप्पेन (हे २,२११ छापा १ २३ मूर ६, १७२)। जिप्फैस वि वि] निकिस, निर्देय (पड)। किएफद्ध यह [निर्+पद्ग] नीपवना छर बना सिक्र होना। खिप्कबर (स ६१६)। वक्र जिप्फक्तमाण (पर्या १४)। किएफोइज वि [निस्फटित] १ विधीर्यं। २ जिल्लामिशक क्रिक्तेपर न हो। ३ क्र<del>पुरा-रहित</del> (सप १२८ टी) । क्रिक्कण वि [निष्यम् ] नीपवा हुमा बना हमास्टिक (से २ १२) महा)। जिप्पति वि निष्पति निष्पति निष्पति (स्वास्प २८ टी कार्व १ ६)। जियम देवी जियमण (क्या सामा १ 14)1 णिएकरिस वि वि निर्देश बसाबीत (वे ध गिएकस वि [निय्मता] फ्ल-परिव निरर्वक (के १४ २६ का १३६)। णिएकास देवी जिप्पन्नव (प्राप्र) । विष्याद्वरूप देशो जिप्पाय । जिल्ह्याङ्ख वि [निष्यादित] नीपबामा हुमा बनाया हुआ सिक किया हुआ (विसे ७ टी इत २११ दी महा)। भिष्काय स**क** [निर्+पादय्] कीप-बाना बनाना, सिक्र करना । संक्र जिप्पसंद ठत्म (वंदा क्र) । चिष्फायम वि [मिष्पावक] नीपवानेवासा बनानेपाला, सिक करनेपाला (विशे ४०३ हा ६३ इस ५२०)। णिप्कायण न [निष्पादन] गीपनाना निमांस इति (बार ४)। जिप्स्त्रव पूं [निष्याय] बान्य-विशेष बज्ज (के २, ४३ पएता १ डाइ ३ मा १a)। व्यिप्पद्मय **्रं** [निप्पा**व] एक** माप बॉट-विशेष (मणु १११)। विभिन्त पर [नि+स्टिद्] सन्तर निकवना । बङ्ग- फिएफर्बंद (स १७४) । जिप्पितीक नि [मिस्पितित] निर्मेत, बाहर

जिएकुर पु [निस्कृत] प्रमा देव (बन्ध)। णिप्फेड र् [निस्फेट] निर्मम बाहर निक-समा (दप प्र २३२)। णिप्फेड्य वि [निस्फेटक] बाहर निकासने-दाता(सूध २,२ ६४)। णिप्फेक्स्य वि [निस्फेटित] १ निस्मारित किन्मसित (सूचर, २)। २ मनामा हुमा मसाया हुमा (कुष्ठ १२१)। १ बराह्रत, बीता ह्मा (ठा३४)। जिप्क**रिया थी** [निस्फेटिका] प्रयहरण चोरी 'एसा प्रधमा सीसनिन्देशिया' (मुख २, १६ पव १ ७)। जिप्फेस पू दि राज्य-निर्मम मानाम निक-नना (वे ४ २६)। जिप्फेस र् [निप्पेष] १ वेपण पीसना। २ संबर्ध (हे २ ४३)। क्षियं सक्ति + वन्यु रिवीवना। २ २ करना । निर्वेषद (भग) । णिबंध एक [ नि + बरम् ] उपार्वन करना। खिनेबेरि (पेका **७** २२) । णिबंध पूर [निवन्ध] १ धंवन्य संबोत (विसे ६६०)। २ झायह इट (महा)-'श्चिमनाधि' (पि ११व)। जिबंधण न [निबंधन] बार्ए प्रबोदन निनित्त (पाम प्रामु ११)। णिबद्ध वि निवदः र वैवा हुमा (महा) : र समुख्य धंगड (से ६, ४४)। णिविड नि [निविड] सान्त्र, यना माड (गरक कुमा) । जिविकिय वि [निविक्तित] निविक् विया हुमा (यउड) । जि**नुक [रे] केवो** जिस्**नुक** (पर्याः १ ३—-पन ४१)। णि<u>तुक</u> घड [ मि + सरज् ] भिनवन करना बुषता । बहुः जिलुक्कित निमुक्ताल (यण्डु ११ उसा)। णिबुद्ध वि [नियम् ] द्ववा हुमा नियम्न (धा १७। पुर ३ ११ ४ व )। णिजुकुण न [निमञ्चन] कुपना, निमकत (पडम १ ४३)। णियोज देवी जिल्लुक = लि + मस्य । यक्त. जिवोक्षिज्ञमाण (यव)।

णिदोइ 🛊 [नियोम] १ प्रकृष्ट क्षोत्र । एतम काम । २ व्यनेक प्रकार का बोब (विसे २१०७)। णिबोइण म [नित्रोधन] प्रदोप समम्बना (पडम १.२,६२)। णिक्वंच पू [निबंग्य] बाबह् (गा ६७१) मक्टदुर ३ ६)। जिष्यंपण न [निर्मेन्बन] निषम्पनः हेन् कारण 'सारीरियसेर्यानम्बन्धं पर्स् (कास)। भिष्य**ः रेवो** भिष्यस्य = निर + पर। रिका सद (प्राप्त ६४)। णिक्यस वि [निर्वेश] वत-रहित दुर्वत (पाना)। जिम्बद्धि म [ निर्वेदिस् ] प्रत्यक्त वाहर (ठा ९—पत्र ३१२)। णिस्वाहिर वि [निर्योद्ध] बाहर का वाहर यया हुमाः 'सैंवमनिष्याद्वितः जाया' (क्वा) । जिस्तुक वि [दे] १ निर्मून मून रहित। २ विश्व मूल के किन्दुक्विक्रस्यावय-- (पराह १ १--पम ४४)। णिक्लुकु चेती जि्युकु च निमन्म (स ३१ गउड) १ णिबर्भद्रण देवो जिब्सच्छ्य (स्व ३ ३)। णिबर्सकण न [दे] क्लाल के क्लाने पर बो रोप इट ख्टा है वह (पमा ६६)। जियमंत वि [निर्मान्त] निःसंदेह, संराय-पहित्र (ति १४)। णिकसम्मान [व] उद्यान बनीवा (६ / जिस्समा वि [सिर्माग्य] माग्य रहित वस-नसीय, समाना (उस ७२ व टी नुपा ३०४)। णिक्सच्छ एक [ निर् + मरर्से ] १ विर स्कार करना प्रथमान करना धवहेसना करता बाकोश-पूर्वक बपमान करता। णिमन्त्रेत्र, शिक्सन्त्रेत्रा (गामा १ १८) उवा) । संक्र णिक्स**िक्**झ (नार—पासदी ₹**>**₹) i गिष्मध्यण न [निर्मरसैन] विरुद्धार धारमान परंप नवन सं धवहेलना (पएह १ ६३ महत्र) ।

णिष्मच्याणां थैं [निर्मस्तेन] उत्तर को

<b>४</b> ०२	पाइअसइमहण्यत्रो	विद्यविद्याल-निम्म
णिसमय कि [निर्मय] सम्प्रांत किया (शुण्य के प्रदा)।  गिरमर शक [निर मे यू] मरना पूर्ण करना कक्क जिस्मरेत (दे ११ क्र)।  जिस्मर कि [निर्मय] सुने मरना पूर्ण के कि युक्त के जिसे में सिम्मर निर्मय (शहर प्रका के जिसे में सिम्मर निर्मय करना कक्क जिस्मार्थ जिस्म विद्वा कि विर्माण कि वर्ष (गुन १४६, २४६ रक्ष)।  जिस्मार्थ कि [निर्माण] स्वार्थ जिस्म विद्वा (त्रिप्त) रविष्ठ के जिस्म विद्वा (त्रिप्त) रविष्ठ किरर (शहर क्ष)।  जिस्मार्थ कि [निर्माण] स्वार्थ जिस्म विद्वा (त्रिप्त) रविष्ठ के जिस्म विद्वा (त्रिप्त) विद्वा के जिस्म विद्वा (त्रिप्त) के जिस्म विद्वा (त्रिप्त) के जिस्म विद्वा (त्रिप्त) के जिस्म विद्वा (त्रिप्त) क्ष्म विद्वा (त्रिप्त) क्षम	क्ष ) हैनो चिहुल (स्पष्ट र है। या व ) ।  8 पट [निर् मे केव्य ] बाहर करना।  6 पट [निर् मे केव्य ] बाहर करना।  6 पट [निर मे केव्य ] बाहर करना।  7 (ह १ १ ११ व्याप्त करना।  8 पट [निर मम्बद्ध ] निमल्य करना  8 पट १ ११ व्याप्त निमल्य करना  8 पट १ ११ व्याप्त करना  10 पट १ व्याप्त करना  11 पट व्याप्त करना  11 पट व्याप्त करना  11 पट व्याप्त करना  11 पट व्याप्त करना  12 पट १००० व्याप्त करना  13 पट व्याप्त करना  14 पट व्याप्त करना  15 पट व्याप्त करना  15 पट व्याप्त करना  16 पट व्याप्त करना  17 पट १००० व्याप्त विष्ठ वि	(ह्य ९ १) ३ शक किय महिल महिल महिल महिल महिल महिल महिल महिल

(प्राष्ट्र ६७)।

3X) 1

जिसिज वि [श्यस्त] स्वापित विदेश (कुमा)

णिमिक्र वि दि] मानत सुवाहमा (पद्र )।

णिमिया देवी णिम्माण = निर्माश (रध्म १

णिमित्त न [निमित्त ] १ रास्त 🔄 (प्राप्त

१ Y) । १ नारजनिरोप च्यूनारिनारख

षे १ ४२ वा ६ ७६ : वर्ष)।

णिमसि वि [निमपिन] योच वृंदेनेपाना

जिन्म तक [तिर्+मा] वनन्य, निर्वाध

वरता । शिम्बद्द (यह ) । शिम्पेद (बन्न

१२ टी) । क्या जिल्लाकी (बार---

जिस्स बुद्धी [सैस] बनीन हे अँवा निश्तना

(मुपा ४४) ।

माववी १४)।

प्रदेश (राव २७)।

जिम्में र र [निमद्ग] क्रम वर्षन क्रोफ

त्रिभाय का [नि+भाष्य ] देशना

निभाक्तिजंद (इर १ ६ ६ ६)।

निर्देशक गरना । क्रिमामेडि (मायम)।

क्य जिमासमें (उर दूरे)। क्वह-

विमासिय रि [निमासित] रहे निर्मात

(ধ্বৰ) গ

(उरदूर)।

म) ।

तिर्द्ध (मुपा ७१)।

(लावा ११ भग)।

¥ 32)1

णिम्मइञ वि [निर्मित] चवत इत (गा |

णिस्संधण न [निर्संधन] १ विनास । २ वि

विनारक 'राष्ट्र व पयट्टमु सिग्बे सम्बनिग्मेंपर्ए

णिन्मंस दि [निर्मास] मान रहित गुरू

णिम्मेसा की दि देवी विशेष वापुएश (वे

णिम्मं<u>स</u> वि दि नि"रम<u>म</u> तक्य ववान

पूदा (दे४ ३२)। णिस्माबन्धम क्यो जिस्मानिख्य = निर्मेकिन (नार) । णिम्मच्छ एक [नि + स्रक्ष] विलेग करना । श्चिम्मच्यद् (अवि)। णिम्सप्द्राण म [निम्नस्य] विभेषम (भवि)। णिस्म**च्छर वि [**निर्मारसर्ये] मारसर्य-पहित, **६**व्यां-सूम्य (उप द्व ८४) । जिम्मक्ष्य वि [निम्नश्चित्र] वितिस् (मर्वि)। गिम्मच्छित्र न [निर्मेक्षिक] १ मधिका का মনাৰ । ৰ শিখন নিখনিৱা(মনি ६৯)। जिम्मदशाय वि [निर्मेर्यार] मयादा-प्रीत बेह्या (दे १ १६६) । णिम्मिक्सिय वि [निमार्जित] क्यसिक (स णिक्सण वि [निर्मेनस् ] मन रहित (हस्य १२) । जिन्मणुय वि [निमैनुदा] मनुय-धीत (सए) । जिम्महरा वि [निर्मदक] १ निरन्तर मध्न बरतेरात्मा । २ द्रे बोरी नी एक बाठि (पएह 1 (# 3 निम्मदिय वि [निर्मीद्व] विषया गर्रन किया गवा हो (परह १ ३)। जिस्सम दि निसमी १ ममता-धीत, निः स्तु (सन्द्र १६ तुरा १४)। २ ई भारत-बर्च के एक भागी जिनकेत (सम १९४४)। जिम्मय वि [दे] यउ वया हुमा(दे ४ ६४)। जिस्सन र निर्मेखी नन-परित रिहर (स्वज ७ । जानू १९१) । २ द्र बद्धानीक भोक ना एक प्रश्वर (ठा ६)।

णिम्मरुखन [निर्मास्य] देन का उपिक्स प्रव्या देवता पर चड़ाई हुई वस्तु का बचा युवा (हे१ १८ यह)। णिस्सव सङ [निर + सा] बनाना रचना करना । लिम्मवद् (हे ४ १८) पह )। कर्म, निम्मनिर्मेदि (बना १२२) । जिम्मय सक ितर + मापय् विनवाना कचना (ठा४ ४ दुमा)। जिम्मवर्त्तु वि [निर्मापयितः] बनवानवासा (ਨਾਖ ਖ)। णिम्मधण न [निर्माण] रवना इति (उप ६४८ टी मुता २३ ६४ ३ ४)। जिम्मध्य न [सिमापण] बनवाना कराना (क्यू) । णिस्समिश वि [निर्मित] बनाया हुपा र्रापत (दूमा गारे रे गुर १६ ११)। जिस्सविक वि [निर्मापित] वनवासा हुसा (कुमा) । णिम्मा सक [गम्] १ वाना गमन करना। २ सक् फेलना । शिम्महर् (हे ४ १६२) । **वह** जिम्म**हं**न जिम्म**हमा**ण (से **॰ ६**२) १५ ५३ स १२६)। णिस्मद्दु[सिर्मेष] १ विशस्य । २ वि विनाराक (स्वि)। णिन्मक्षण न [निर्मेशन] १ विनासः । १ पि विनाश-कारक (सूपा ७३) **क**ी जा (पुर १६ १८४)। णिम्महिअ वि [ग्रन] मवा हमा (दूमा) । णिम्महिम वि [निर्मियत] विवासित (हेका X ): णिम्मा देखे जिम्म । जिम्माइ (प्राष्ट्र ६४)। णिम्मार्भत देनो णिम्स । जिम्माइक्ष रेगो जिम्माय (वि ५६१)। णिम्माण सङ [निर् + मा] बनाना करना,

बनानेशाला (से १ ४१)।

णिस्माणिभ वि [निर्मित] चेषत बनाया हमा (इसा) । जिम्माणिश वि [निमानित] धरमानित विरस्हव (मनि)। जिम्माणुस वि[निर्मातुप] मनुष्य-र्यद्रव (सूपा ४४४)। स्री सी (महा)। णिम्माय वि [निर्मात] १ चीवत विहित इत (स्व पाधः बजा १४)। २ निपूर्ण बम्यस्त करम (बीप कप)- 'नादियसप्येपु निम्मामा परिवाहमा (मुर १२ ४२)। जिम्माय न [निर्माय] हप-विशेष निर्मि कृतिक तप (सेबोम ५८)। जिम्माक्षित्र देवो जिम्मछ (प्राष्ट्र १६)। णिम्साव सङ िनर + मापय ने कनवाना करवाना । शिम्मावद् (घरा) । हः गिम्मा-विच (तूप २ १ २२)। जिम्मापिय वि [निर्मापित] बनगवा हुमा, कारित कराया ह्या (मुपा २६७) । जिम्मिल वि निर्मित् रिविट बनामा हुमा (ठा ८ प्रापृ १२७)। याद्र नि विपादिन्। वन्तु को दिवस्थिन्द्व माननेताला (ठा ८)। णिस्सिस्स वि निर्मिश्री १ मिना हुना पिमित्र। बद्धी भी विद्धी भाषकतम-बीक ना स्थवन पैस माता शिवा, मार्ड भगिनी पुत्र भौर पुत्री (वद १)। णिम्मीस वि [निर्मिम्म] निचल-धील (देपन्त्र २६)। णिम्मीसुभ वि [दे] रमधू-रहित दाई।-पूँच मर्जित (पद्र)। णिम्सुका पि [निर्मुक्त] पुक्त निया गया (मृत्त १७३) । णिम्मुक्त्र रू [निर्मोस] मुक्ति, पुरकारा (विने २४६८)। णिग्मुस वि [निमुख] मूल-रहित विशवा मूल काटा बवा हो वह (नुवा १३१)। रवना जिम्माजद (हे ४१८) वह । प्राप्त)। पिम्मर वि [निमयाद्] मर्वादा रहित निर्मेण णिम्माण न [निमाण] १ रचना बनाउद (ठा६१ मोकनुता६)। इति । २ वर्ष-विदेश राग्रेर के भौगोपांग के निर्माण में नियानक वर्ग-विशेष (सब ६७)। णिम्मोभ पुं [निर्मोद्य] पम्पुर रॉप्टन नाँ णिन्माग वि निमानी मा<del>न-पीति</del> (ने ३ भी स्वचा(देश t=२ भन्न tt गेt जिम्माणभ वि [निर्मायक] विमाल-कर्ता, णिस्नोक्रणी की निर्मोधना राज्यर निर्मोद (बन १४ ११)।

णिस्मास वि जिलाहा र क्या वर से सीत रमस्य १)। (समा १९२) ४७१) । २ घरकाली सीती णिएंडम वि निरक्ता वेदस-शील स्व निर्देशक (प्रस्ते । व्यक्त (रमाः मा २०)। 'जिरक्कण कि निर्द्यन ] प्रवंत-सीहत जिरंगण वि [मिरक्रण] निसंप चेप-राजित (<del>11</del>) i (भीप चन साबार ११—४व १७१)। णिस्ट ) वि निस्वे की शतर<del>बं</del>क यिरंगी की विकित्त का समदयका बैक्ट णिखरा निवासिका निकासा (उत्त २ ) २ व प्रवीवन का समझा "तिरक्यस्थि णिरंबण वि निरम्बन निर्मेप नेप-पील विष्यो वैद्वशायो पूर्वदूवी (क्त २, ४२)।

(प्रदेशका)। जिल्ला विकिन्नी जी क्या-सीठ करव से जिरंतव वि क्लिस्क्वकी सन्तर्यात (क्ल मुक्त (सपा रुवक) ४६६) । ₹ \$2 El) i पिरणास आपी पिरियास = शतः। विर जिरंदर विभिरन्दरी बन्दर-धीत व्यव पासक (के ४ १७ )। पाल-प्रीद्ध (मज्ज्ञ- हे १ १४) । पिर**जुर्ब**प वि [मिरमुकम्प] **प्र**कृतमा-**रहि**व णिरस्ताय वि स्तित्वायो । विक्र निर्देग (द्यासार २ वह १)। निर्मात । २ व्यवसान-पश्चित सतत 'सार्धा जिएएककोस वि [निरमुकोश] निर्देषः क्षेत्र विसर्व व निरुद्धार्थ (प्रका ४४ दमा-सम्ब (सामा १ २. प्राप्त ३ ∉ )। 4.0): जिस्कृताव वि [मिस्मृताप] परवाताप-सीत मिरंदरिय वि [निरम्दरिय] प्रचर चीच, (जम्प १२)। व्यवनान-प्रीत (बीव १)। णिरंच नि निरन्त्र किर-रीवर (पक्र १७)।

गिरवकेल वि [बिरवकाकक्ष] स्त्राः धीरं पिरणुवाबि वि [निरनुवापित्र] परवासाप गिस्सङ (धीप) । वर्षित (पथ २७४) । णिरमक्षीक वि [तिरमकाकिश्वन ] विराह्म णिएक वि [निरस्त] पगस्त निरम्बत (बक णिरंबर नि जिसम्बरी पक्र-रक्षित नान (श्वामा १ १)। ۲) i भिरत्व । वि निरर्ध को बनावंक निकास णिरेंभा को जिस्मा दिन स्टासी वैसेवत निरस्था कियाबावन (व ४ १६) व्यप स्त्र की एक प्रश्नकृति (हा १, १) १४) ।

मिरलाय ६६४ प्राप्त १ ६ बनः ब Y() (

जिरहाय पू [निरम्बय] मनव-चीत (वर्मेर्स जिरोह नि जिरोहसी निर्मेश परित्र 'महबे Y(t) I

४ १६)। मुक्त, जिल्लीम (हुना)।

(पह्)। **च्च्ये,** स्पेरी (पाप) ।

जिरमाह वि [निरवगाह] अववह<sup>न-प्री</sup> णिरवम्मक वि [निरवमक] विरंक्त <sup>स</sup>

सीता. निःस्पद्य (वंचा २ ६) ।

जिस्स वे स्टिएस । सरक. बाय-क्षेत्र-स्वत

(ठा ४ श माना तना १४ )। २ गर्ड-

क्षित क्षेत्र गारक (हर है) पांच प्र

िपास्नी देव-विदेव (स्तुप १) : विस्ति

की विक्रिका र बैन धानम-प्रन्त विके

(निरंश्)। २ नरक-विदेश (पक्क २)।

पिरवर्षि जिस्तीयक सरद्रस्की

पिरवरि निरवसी श्वो-सीह <sup>लिमी</sup>र

जिरव कर विमुद्धा | बले भी इच्छा <sup>करता</sup> !

णिएव स्वर्ष का + क्रिय ने सक्षेत्र *करता* ।

जिरवहरू वि [ मिरपेस ] सपेना-धीर

जिरक्त वि [सिरक्य] निर्मंत क्तिय (वर

८,१ दुर थ,१ ३)।

निरीहः निरुद्ध (विसे ७ दी) ।

(ज्य ६७६) इन स्था २१) :

(मकामान्धक)।

रिएसइ (पड )।

श्चिरवह (यह )।

जिरम्ब रि [।तरपुरा] यपुष्य-र्रह्मत्, वि वरान (क्यासमध्य)। विरस्प प्रक [स्वा] वैठवा । क्रिस्पइ (क्रे

जिरंस वि [मिर्देश] भेरा-र्यक्ट सक्तरह, रुपुर्व (विते) ।

(मलम) ।

(परीय १४६) ।

व नाहियों को निर्देशन देख बकलावेल

णिरसिञ्ज वि [निरस्त ] परास्त, वपास्त (रे पिरवणाम देशो णिरोणाम (उद)। **ዲ ጳ**ጲ) i जिर्वयक्त देवी जिर्महरूस (लाम १ णिरस्साय वि [नियस्त्राद] म्बाद-पहित १ पतम २, १३)। (उन १६, ३७)। किरबद्ध वि [ निरश्यव ] धवयव-रहित णिरस्सायि वि [निराह्मायिम्] नहीं टाइने-निरंश (बिने)। बाना, छित्र रहित । और पी (उत्त २३ णिएवजाम वि [निरवद्मशा] प्रवहारा-धीर वर मुख २३ वरो । (मठ४) । णिखंधर वि निर्धांचारी वर्ष-प्रीच (का)। जिरवराह वि [मिरपराभ] मनतव पीहर णिरहारि वि [निराहारिम्] वाहार-रहित बेपुनाह (महा) । उपोपित 'इवड व वक्क्प्रवारी निखासे जिरमगृहि वि जिरपराधिम् । जार रेखो र्थमनेरनयमारी' (मुपा २५२) । (धाष ६)। णिरहिगरण वि [निर्धिकरण] श्रविकरण जिस्सीय वि [निस्बल्प्य] सहार रहित र्रीहड दिसा-रहिड निशेष (गैशा ११) । मसारोग (पएड १ ६) s णिरविगरीय वि निरिधक्रिक्ती कार जिरबन्धम वि निरमध्यप र मरबार वैची (मा १६१)। रहित । एक बात को प्रकट नहीं करनेवाला जिर्मास वि [निर्मिसाप] इन्दा-चीव इसरे को नहीं कहतेवाला (सम १७)। निरीह (बढह) । जिरवसंक वि जिरपशक्की दुर्शना-वर्षित वि [निहेंतु क] निकारण पिएडं उ (वरि) । णिरहृत्रग | कारणधीरत ( वर्षेष ४४३ जिरवसर वि निरवसर ] प्रवस्त-रहित **जिस्हेतु**म Ytu Y ) ; (गबर) १ निराइअ वि [निरायदे] नम्बा हिया हुआ जिरमसाथ नि निरमसान ने मन्त्र-पहित विस्तारित (मे ४ १२ ७ ३६)। (गबद्द) ह णियास दि [नियमुप्] मार्-पीत जिर्देशमा वि जिर्देशी के किन (है (प्रकृष्ट)। १ १४३ पद ने १ १७)। णिसाउद वि [निसमुम ] धापूत-वित णिरवह कुछ जिर + यह ौतर्वाह करता निःस्टब (पहा)। निवाहना । निरवहेका (संबोध ३३) । णियस्र १ सक [निय+कृ] १ निरेव त्रियगर ) करता । २ दूर कंग्री, दुटाना । जिरवाय वि निरंपाय र क्या रहित वे विशव का प्रमुखा करना। निरावरियो किम-क्षित्र । २ निर्देश किनुद्ध (धा १६ (इ.स. २१४)। चंक्र जिसक्तिक (सूप १ सुपा २७१)। f f f 7 7 t tt); णिर्रावस्य ्र रेगी णिरवहस्य (था ध उप णिसकरित्र वि [निसप्टन] निनिद्ध (वर्गनि णिरचंकार है वि १४१३ से ६, ७१, पुच शिरवण्ड <sup>।</sup> १ ६, पंत्रा ४ निष् १३ 8×4) 1 जिसमारण न [मिसकरण] नियन निवारण मार--चेत २१७)। निरेप रोक (पंचा १० ११)। जिरम नक [निर्+ अस् ]धवास्त करना। नियम्पण न [नियद्भण] १ विरेष व्यापन (बख) । प्रतिरेव (वंबा रेक)। २ केवना निरमस जित्मत्र वि [निस्सन ] मदार-रहित (TY E) बपोपित (धर मुता १व१) । णिरागरिय नि [मिराइन] हटावा हुमा, पूर जिस्सण व [निरसन] विचवन्छ इस देश विया हुया (बरव ४६ ११; ६१ ११)। पूर करता धीरन (बेर्स ७२४) । गिरायम रि [निराइप] निर्मेत रह निर्यम व [मिर्णस] चर्क्सन (१३३)। (निष् १)।

णियंगार वि [निरास्तर] १ बाइवि-सीहत २ धरनाय-रहित (पर्म २)। जियजंद वि [नियनन्द् ] धलन्द-रहित शोकानुर (महा)। णिएगिड (मा) च नित्त्वत नदी (बुमा)। मिराणुद्धंप देखो जिराणुक्षंपः क्षितिकारिएराणु-कंपी मामुरियं भावलं कुलई (ठा ४४) 'मह मो शिरास वंदो (संगद ४ पटम २६ २१)। णिराणुवत्ति वि [निर्नुवर्तिम] १ मनुवरण नहीं करनेवाला । २ मेवा नहीं बरनेवाला (उप) । णिसद्धि हि नह विनास-प्रान्त (६४ **1** ) i पिरावाय ) वि [निरावाय] यावावा-रहित गियमार रे इल्डॅन-चहित (मॉम १११ मुंग २३३ हा १ बाद ४)। णिरामर्गेष वि [निरामगरूप] **हु**पस-रहित निरोंप वारिनवासा (बाबा सूध १ ६)। णिरामय वि [निरामय] चैन-पहित नोचेप (मुपा १७१) । गिरामिस वि [ निरामिप ] पापकिहोन नियह, निर्यमञ्जाह 'मामिस सम्मूरिमना विहरिस्यामो शिरामिसाँ (एत १४ ४६)। शिराय दि [दे] १ ऋतु सरतः (३४ र पान्न)। १ वक्त भूमा। इ.पू. स्पू राप्र (दे४ १)। ४ विसम्बादिया ह्या (名 × )i शिराय दि [दे] बायन्त प्रदुर, प्रदिक (धुन २, ७) । जिसमें वि [निस्तवक्ट] मातकू-सहित ग्रीरोप (धीप) । णिसयरिय देशा जिसमारिय ( प्रस्म ६१ 84) I जिसमय वि[निसत्तप]बातर रहित (परव)। णिसवार देनो णिसमार (पत्रम ६ ११६) । णिरायास वि [निरायास] वरियम-चीट्व (रदार ४)। निरास्म व [निरास्म] भारम्बन्धवित (पुरा १४ गउर)। मिराजंब रि [ निराक्तम ] धानम रहित (स १६३ ध्वत ८)।

(एए: महा)। बद्ध जिरिक्सं र णिरि जिसम्बन रि [निसम्बन] धनम्बन-सहित क्लामाण (सला प्रप २११ टी) । संद्र (भीकणाम १९)। पिरासंबण वि [निरासम्बन] प्रारोश-पीत विरिक्तिकरण (हरा)। इ जिरिक्त-संराव-पीरा प्राचेता-पीरा इच्छापीरा मन् णिग्रज्ञ (अस्पु)। मान-र्यात (माना २ १६, १२)। विरिक्टन न [निरीक्षण] धवनोवन (गा जिसास्य वि [निरास्य] स्वात-प्रीहर एकत्र tτ ) ι णिरिक्सना को [निधिसणा] भवतौरन रिनति ग्दी करनेवासा (यीप) । प्रतिहेचना (पीप ३)। णिराक्षम वि [मिराक्षेत्र] प्रकार-धीत जिरिक्सम वि निरीसिय समीकि (Prt t t): जिरावर्कील वि [निरक्काडिसन् ] प्राराधा-हरू (कृष्यु पत्रम ४० ४०)। प्रीकृतिस्पृत्(सूष ११)। णिरिश्**ध सक** [सि + सी] १ शास्त्रीय करता णिराष्यवस्य वि [निर्पेश्व] व्लेखा-शीहत प्राप्तिका करता। २ थक विद्याना। विकित्त निरीइ (समार १६) वत्त १४०)। (₹ **と ₹**₹) I णिरावरण वि [निरावरण] १ प्रक्रिक्क जिरिनिषभ वि [निकीम] पान्ति पानिक पश्चि (धीप)। २ लग्न (मुर १४ १७व)। (<u>र</u>मा) । जिसक्या मि [निरपराघ] धपराव-धीत णिरिज वि निकायी ऋष-मूक्त, स्करण (मुपा ४२३) । (ठा३१ धी—पद १२)। णिराधिकता ) देवो जिराध्यवका 'विस्त्त जिरिवास एक गिम् | नगन करना। पिरावेक्स विराविक्ता वर्राव संसार मिर्हिस्सास्य (हे Y १६२)। चंदार (मत ४१ पठम १ ४ १ जिरियास स्ट्रा पिय विश्वना । शिरिसासक जियस वि [नियश] १ भारा-परित स्वास ( Y ( ax) 1 (पक्रम ४४ १६) वे ४ ४ मा संबंध १६) । णिरियास बन ितर् । यनावन करना। २ व. मारा का सम्प्रव (पद्द १ ३)। भारता । खिख्यास (१४ १७ : कुमा)। णियस मि दि ] तुसंद्य, इद (यद्)। जिरिजासिस्र वि [गत] प्या ह्या याउ षिपार्सस वि [निपशंस] बानामा-प्रकृत (इमा)। गिरीइ (गुपा १२१)। जिरियासिश वि विष्ट विशाश्या (पूमा)। जिरासय वि [निराधय] विधवार (बच्चा थिशिजिज एक पियु विश्वाः शिरि 222) I शिक्का (हे ४ १०६)। जिरासन नि [सिराभन] बायन परित, कर्म-विरिविधिक्का वि [पष्ट] गीसहमा(द्रमा)। क्षण के कारखों से स्थित (पर्या २ ३)। पिरिचि की [निरिधि] एक रानि का न्यम जिस्तरस**ेको** जिस्तरसंस (प्राना २ १६ ६)। (इप)। पिराद्व वि दि किया किकस्त (**१**४ णिरीइ वि निरीइ विकास विज्ञान (दुमाः ४२१) । जिरिज्ञ वि दि । यस्कैवित बाकी पता हमा णिक (मप) म. निक्ति नलमी (हे ४ ६४४ ( X Y Y ) ! दुपाद६ः दश्चा व्यक्ति)। जिल्हिको जिल्ह (दुष्य १ १२)। जिस्म देवी जिस्म (विधे १४ १, मुग थिरिक नि [दे] ना वना ह्या (दे४ ६ )। ME) I जिरिगी वि देवो बीरंगी (नवत)। जिस्क्य [निर्स्कीकृत] गीर्पंत क्या प्या पिरिषया वि [निरिन्धन] इन्नन-प्रकृत (प्रव (चा ११ थी)। v t) i विदेश एक सिंग हुए निरोप करना। शिरिक्स एक [निर्+ईश्] केला, खिरंकः (धीप) । कम्बः विरुभगाज यस्तीकन कथा। दिश्लिक दिश्लिक जिरुवर्भत (सद्दर यहा)। एक. जिस्-

भइता (मुम १४२)। **इ जिर्**मियन्द्र, णिरुद्धक्य (मुपा ४ ४ मिसे १ ८१)। जिस्मण न निरोधनी पटराव सनार (सम १ ६३ भवि)। विरुद्धंद्व विरुद्धक्य । उत्तर्थ प्रदे निबरमाह (नार)। क्रिस्त्र**य देवो** प्रिरियम् । लिसमा (नर ) । जिस्लार वि [निस्तार] १ क्वार-पूरी योरपूर्व के लिए बोर्चों के निर्वमन से प्रतित (सादा १ व---पच १४६)। २ पासास वाने से जो रोका पना हो (पर्राह १ १)। विस्वाह्य वि [तिरूसय] उत्तव-प्रीत (मिथि १व१)। जिरुषद्वाह वि [निरुसाह] स्ववन्ति (धे १४ वर)। णिरुज वि[निरुज] १ रोव-छी्तः २ व रोग का प्रवाद : सिला न ["सिल] ९० प्रचार नी करमयों (पद २ १)। णिरुकाम वि [निरुवाम] क्यन-पीर्ट. यासदी (उनस देश संपादेव¥)। थिरुट्राइ वि [निरुवादिम्] गरी क्लोसबा (बर्चश्र)। मिरुचिन [मिरुच्च] १ बच्च वनित (च्च ७१)।२ न निक्तियां क्रीक (फस्)।**६** मून्यति । (विसे २) १६६) । ४ वेराह्र शास-विशेष विश्वमें वेदिक रुखों को स्थानक ह (बीप)। णिरुच वि [निरुक्त देशमुक्त धवनित ध्यन्त सिंचु निक्तो मानी परस्य नजह करिये (पिरि बर्ग्ड)। २ जुलानि-पुक्त (सिरि ११) जिस्त किनि हिंदि निकास समी नोवन (दे ४ ३ पज्य ३४, ३१: दुमाः (क्लाः बनि), वहनि हु मरद निवर्त पुरिती दंपन्ति कासे (पदम ११,६१)। ए वि विद्वित चिन्ता धीस्त (दुमा)। जिस्तत वि निस्ता विसेव वार**ा**प धंतप्त (ठव)। बिरुचम वि[निरुचम] स्टब्स थेर (गव)। विरुत्तर दि [निरुत्तर] बतर-पीट क्रिय हुमा, परस्त (बुर १२ ६६) । जिस्चि हो [निस्चि] नुताचि (विषे **45**(3) 1

णिरचित्र वि [नैरुक्तिक] सुलति के प्रनुसार विसका धर्व किया जान वह राज्य (प्रस्**र**)। गिरुचिय न [नेरुचिक] निर्रोक, मुलिव 'तो नरपवि मास्त्रिति नियतियं वैदसदस्सं' (संबोध—१९)। णिरुदर वि [निरुद्दर] घोटा पेण्यामा मनुदर । भी रा (पएह १ ४) । णिरुद्ध वि [निरुद्ध] १ रोका हुमा (णामा ११)। २ माइट माच्छास्टि (सूम १२ ३)। ३ र्युमस्त्य की एक जाति (कप्प)। ाणसञ्ज्ञ वि [निरुद्ध] योहा संशिप्त (गूम र (Y 38) 1 णिस्टब्य रे क्लो जिस्म । जिस्मान ∫ विरुखि पूँची वि दुस्मीर---नव की माहर्षि वाला एक वन्तु (दे ४ २७)। जिस्वकित्र देखो जिस्वकिद्र (मप)। णिस्वद्यस वि [निस्पन्तम] १ को कम न हिमा जा सके वह (समुख्य) (पुर २ १६२ मुपा२ ४)। २ मिश्रपी**हतः समाम**ः 'निय-निद्मानकम्बद्धमध्यस्य सम्परितवद्यो (सुपा 44) 1 जिस्सबस्य वि [वे] पत्रत नदी किया ह्या (8 Y Y8) I णिरविद्यु वि [निस्पक्रिप्त] क्तेरा-वर्षित बु:बार्रीहत (सन २६, ७)। णिरवक्कस वि [निरुपक्तेश] शोक मार्थि होती से चहित (ठा ७) । जिरुवक्त वि जिरुपायी शब्द से न क्षा या सके वह, धनिर्ववनीय (वर्नेष २४१) ₹**%** ) ( जिस्त्वरा वि [निरुपक] प्रविपासक (सम्मत ₹€) णिस्वगारि वि [निस्पकारिन] क्यकार को नहीं माननेवासा प्रजुपकार नहीं करनेवासा (बारम) । जिस्मागाइ वि [निस्पमाइ] क्लार गर्ही इस्सेबाला (ठा ४ 🐧) । चिरुपट्टाणि वि [निरुपस्वानिम्] निरुपमी श्रालगी (प्राचा) । णिरुपद्व वि [निरुपद्व] अध्यव-रहित धावावा-वर्षित (धीप) ।

किस्त्रम वि [निस्पम] प्रसमान मसावारण (भीपः महा) । जिस्त्रपरिय वि [निरुपवरित] बास्तविक तम्य (ग्रामा १ ६)। णिस्त्रपार वि [निस्पग्नर] ज्यकार-पहित (उप)। जिरुमहोत्र वि [निरुपक्षेप] मेप-वर्तित ध-मिस (कप्प): "प्रमणुमिन प्रिवननेवा" (परम ( \* \* \* \* \* \* \* \* \* \* \* **चिरुवसमा वि निरुपसर्ग र असर्ग-धीव** द्रपद्रव-विद्य (सूपा २८७)।२ पूँमोश मुक्ति (पृष्टि वर्गर) । १ न. एमस्पैका ध्यमाव (यव १)। णि **इबद्ध्य वि [निस्पद्द**] १ ज्यवाद-परित सम्बद्ध (भग **७** १) । २ वकावट से शुम्प मप्रतिहत्त (मुपा २६०) । जिस्वहि वि [निरुपधि] माया-पहित किन्मपट (बसनि १) । णिख्यार सक मिह्नी प्रहुण करना । जिस-वासः(६४२६)। णिस्वारिम वि [गृहीत] उपात गृहीत णिखालम व [निस्पादम्म] उपानम शुम्य (गठक)। णिरुविवाग वि [निरुद्धिम] बा ब-चीहत (खामा १ १—गभ ६)। णिस्स्साइ वि [निस्त्साइ] प्रखाह-हीन (सूम १ ४१)। थिएव सक [नि + इत्पय्] १ विवार कर कहना। ए विवेचन करता। वे केवाना। ४ विश्वदाना । ३ तत्तारा करना । निक्नेड (महा) । वह जिस्त्रविंत निस्त्रमाण (बुर १६, २ ६८ कुत्र २७३) । संक्र णिरुविकाण (पंचा च) । इन णिरुवियम्प (पैचा ११)। क्षेष्ट निरुक्षितै (कुप्र २ ८)। जिस्स्य न [निरूपण] १ विशेषन निध-कारत (सप १३७)। २ वि फिक्कालेकासा

क्ये जी (पडम ११ २२) ।

णिस्माविञ्ज वि [निरूपित] पवैषित विस

की बीज कराई नई हो नष्ट् (स १३१/७४२)।

ER )1

जिल्लीम कि [निरूपित] १ देवा हुमा (स १३ १६। सूपा ५२३)। र श्रास्तीयना कर कहा हवा। १ निवेचित प्रतिपादित (हे २ ४) । ४ विक्रमाया हुमा । १ मनेपित (प्राक्)। णिरुसुअ वि [निस्त्सुक] धरुएअ-पहित (गडर) १ जिल्ह्य पु [निरुद्ध] धनुवासमा-विशेष एक स्यक्त का किरेकन (स्थाना १ १६) : णिरेय वि [निरेजस् ] निष्कम स्वर (मग २४, ४)। जिर्यण वि निरंबनी निवस स्विर (क्रम भीप)। णिरोजाम **१** [निरचनाम] नभका-पहित वर्षित स्वत्त (स्व)। णिरोय वि [मीरोग] चेन-प्रदेव (मीप: ग्राया 1 (1 1 णिरोम 🛊 💽 माक्ट भाजा एक्का (तुपा णियेवयार वि [निरुपद्मर] ज्वकार को नहीं माननेवाला (बीव ११६ घा)। णिरोषपारि वि निरुपद्मरिन् अपर देशो (घन)। जिरोबिक केलो जिल्लीका (पुना ४३१ मक्रा)। णियोद् पू [निरोध] स्त्रबट, रोक्ना (अ ४ १ मीप पाम)। णियेहरा वि नियेश ही चेशनेवाला (रेख)। णिरोक्ज न [निरोचन] स्कानट (पर्**त** १ णिक्षंक पूंदि । पत्तव्यह्, पीकवान होवत-पात चुकने का पात्र (दे ४ ३१)। जिस्स्य पू [निस्न्य] घर, स्वान, धामय (के २ २ ज्याध२१ पामा)। जि<del>ड</del>्डपण न [निद्धायन] वस्रति स्वान (पिसे)। भिस्तद न [स्टब्सट] याच क्याच (क्रुमा)। जिक्किश वेबी जिक्कीश । ग्रिसिमइ (यह )। जिस्कित गीचे देवो । णिक्षणवा को [निक्पणा] निक्पण (स विक्रिक रे एक [मी + स्ट्री] र मारवेष करता णिधीस ) गैंन्सा नवे से जयलाः २ इर

करताः १ मन-विप बाताः शिक्तिकद् सिवी-

यह (है ४ ६६)। खिबिनिजा (क्रम्)। बह्र

क्रीकेका (करा) ।

(ky ett)

किस्टिन किञ्चित्रकाराण विक्रीओन विक्री-

बावाल (बाया सव २ २) नमा सा ४७४)।

विक्रीकर वि [निजेत] शास्त्रेप कर्णकासाः

किरमक केटो पित्तरिक । रिकास (दे V

शिक्तक एक दिस्ती तोहता। रिट्यचर

प्रभू कर )। यक शिलक्षेत्र (क्या) ।

णिलक विकि निसीनी १ विकीत, कर भिक्ता प्रचार प्रज्वान द्वार विदेशिय (शास e aift en, bi at twete f to en: सपाद ४)। "२ सीन, धालक (विवेट)। जिल्लाम म निस्तवनी विद्यार (देश २६२)। शिवांक विशेषको विषयं (र ४ ११)। णिकेस्य न [निर्संस्कर] स्पेर के किसी प्रथम का केरन (प्रवाः वृद्धि) । विश्वच्छ देशो पेक्स्च्य (पि ६६)। णिक्रच्छण वि [तिसँशल] १ वर्ष वेवरूज (६४ ७१७ टी) । २ धनबद्धशनाता खरान (का १२) । गिक्क वि निर्मेको सम्बन्धील (हे व 1 F #45 जिक्किम ﴿स्मैं [निस्किमन] निर्धन्यन केलरमी (के र ६६)। चौर्टमा कि र RE) i पिकस पर्वाचन स्टा च्याना विकासा । रिप्रक्रसाइ (क्षेत्र ११) । जिद्वसित्र नि [ शहसित ] जहार-एक. विकरित्य (कुमा) । णिक्रसिम नि वि विर्वत निष्ठत, निर्मत (8 × \$4) ; णिकास्मित् वि [निर्माणिक] निर्माणिक बद्धर किल्ला हमा (कावा १ १) ---पप्र १९६३ सर १९. २३६८ सक्त)। पिक्किइ क्लं [मिर्+क्किल ] क्लिस । रिक्षिक्किमा (धाका २३२३)। जिस्**होत् रा**च [सुन् ] कोहता, साथ करना । किन्दु सर् (हे ४ ११) । जिल्ह्योंक्रक में [मुक] अब, क्षेत्रा हुए। (इम) । निरक्कच नि [निर्जुत] निर्णातित (चित्र २३)। }

किन्तरह (हे ४ १३४) । विन्तरह (पांच (m) ( क्रिस्करण व स्रिक्तों केर विकोश (बमा) । विस्तरिय दि क्रिक्री क्या इपा विन्द्रितः 'मानलविषद्माइयनिस्त्रियद्विय-संबद्ध (बार्य क १४०) । जिल्लेश वि मिर्लेश केय-प्रीता (विशेष ६३)। णिकेक्स पं स्तितीयकी स्टब्ह बोबी (माप 4) 1 णिक्षेत्रण व निर्कोपनी १ मन को इर करना (बार १)। २ वि. निर्मेष केय-सीक्त (बीक (६ मा)। कास पं विश्वकी सरका विश्व समय गरक में एक भी नारक पीत क क्षो (सव)। णिकेषिक वि निर्देशिती १ केर-सीत फिना हुया । २ विश्वकत सुद्र पदा हुदा (सन) । निदेशण ग [निर्देनिया] व्यवसंग पॅप्रका (बाचा२ ६ २)। विद्योग ) वि निर्देशी केंद्रशील क जि**ल्हेड** किन्युं (गुरा ३६१) था १३) क्रिको । भिष**्** [नृष] राजा, मरेट (कृषाः राज्य ४७)। तमय वि दिवस्थित य स्वन्धी राजसेव (स्पा ११६) । जिन्दार निपति । असर केली (का ३३ परम ६ ६)। मना व मिली एक भाने, काहिर चस्ता (प्रज्ञम ७३, १३) । जिवहम नि [निपवित] १ नोचे विराह्म (रामा १ ४)। २ एक अकार का लिय (**ठा** ४ ४)। भिषद्य वि [नियविष्] नीचे विस्तिमाना (# Y #) t विवयम् ज व [व] धवतायतः स्वारतः (व Y Y ) ( जियक क्षेत्र [सिर् + पत्] केलव होता. गीपक्काः वनना । शिवन्यदं (यहः) । पिक्क प्रक [सि + सङ्] कैला । विकास

(श.६.६)। एक जिल्लामाण (स.६.६)।

कुमा)।

अनो दिल्लानेड् (निर १ १)।

णिक्रम चक्र [नि+सर्व] सोचा। लिग्ल (क्स २७ १)। वित्रह अब ित + वर्तव निवस गरप। निवदालका (सम्र १ १ २१)। क्रियद क्षत्र नि + प्रती १ जिल्होत. सीटार क्रमा । १ दस्ता । यह जिस्ता (मच १६२)। गिक्ट वि मियुक्त । निकृत का इस, ब्रवक्ति-विक्ता । २ त निवृत्ति (हे ४ १११)। निवडण न सिम्बेनी १ लिखि मार्डि-निरोप। १ बार्स सत्ता क्य होता है वर त्यान (लावा १ २-- पत्र ७६)। प्यवद्भिम् वि [किन्दिन विश्ववद्भार क्रीहरू, बिस (माचा १ ४ २ ६)। फिलाइ क्षत्र [नि+पत्त] तीचे पहन्द office flower i ferrent ( ar en; महा)। वह- विवर्धत विवस्ताम (स १४' सूर १ १९७)। ब्रोड विविधिया, मिक्किश (रंग ३) महा)। णिबद्दण व [निपत्तन] सब-यहन (एन)। जियक्किम वि [निपतित] श्रीवे निप इया (से १४ क्षण का रक्षण कर व २६)। विषक्ति मि [निपविता] नीचे विरनेता (न्या ४३) हरा । जिवन्त्र वि [तिपन्त्र] १ वैद्य ह्या (गर्) संग ११/७३)। २ दं गामोरकर्ग विरोध विसर्ने धर्न मादि किसी प्रशार का स्थान त किया बाद्या ही. वह कामोत्सर्ग (पान १)। विवश्य पू ["निवण्य] विसर्मे मार्थ थीर रीर कान किया जान वह काबोलाई पान 1) I जिवण्युरिसम् <u>५ [मि</u>यण्योरस्**त**] शर्वोत्सर्वः विशेष विसर्वे बर्ग व्यास और युक्त व्यास किया जाता हो वह अयोग्तर्व (अल १)! जिल्ह्य देखी विवद्ग=नि+क्टा <sup>सह</sup>-णिवसमान (श्रम १)। इ. विवसमीय (गाट--राष्ट्र १ )। प्रवे- विश्वतारेदि (PT EER) 1 निवच केवो जिवह = निव्रुष (वर्; क्वो) । विवस्तव देवो विवद्ग्य (सहर दे <sup>२, ६</sup>

णिवसय वि [नियर्सक] १ वास धाने-

बासा. भीटनेबासा । २ लीटानेवाला बायस करनेवामा (हे२ ३ प्राप्त)। पिवत्ति भी [निवृत्ति] निवर्तन (उद)। णियस्तित्र वि [नियस्तित] रोका हुमा प्रति पिक (स १६४)। गिपत्तिञ वि [निर्वेत्तित] मिष्पारित 'निव तिया समयमा (स ४६३)। विविध रेबी विविध (वीन र)। णियस देवी पिपण्ण (स ७६ )। जियय प्रक [नि + पम् ] समाना धन्तर्भूत होता । तिनयंति (पन यथ थी) । णियय देशो णियस । शिवस्था शिवप्या (रपा) ठा १ ४)। वह जियर्वत, जियसमाज (ता १४२ टी मुर ४ ६३) क्या)। जियय पू [निपात] गाँवे विरता सवः-गतन (ब्र १३ ११७)। जियरूज र्षु [नियरूज] बुग्र-बिरेप (दा १ ६१ टी) । णियस सक [ नि + बस् ] निराग करना ध्रुमा । रिएवसइ (महा) । वर जियमंत (मुपा २२६)। हेक जियसित (मुपा 1 (138 णिबस्य न [निवसम] बस्न कपशा (मनि १३६। महाः पुता २ )। जियमिय रि [नियमित] बिसनै निरास शिया हो वह (महा) । व्यवस्तिर वि [नियसियु] तिरास वरनेतना (गउर) । प्रियहत्तक[राम्] वाता वनव वरता। श्चित्रहरू (हे ४ १६२)। विग्रह् सक [मरा\_] भाषना, बनायन व रना । जिन्द्द (दे ४ १०८)। विषद् तक [ थियू ] रीवना । छिराद (हे ४ १६५१ वर )। जियह पुन [नियह] ममूह धारा जन्मा (ने ६ अरा गुर ६ दश तागू १४४) ' धरपत क्षा चलनियदं (बजा ११२)। श्चिष्यह क्षेत्र (के ४ २६) । ियंद्रज्ञ रि [नए] गए-प्राप्त (दुवा) । विवर्द्भ रि [पिप्ट] पीना हमा (दुना) । निवाद रि [निपानिन] निरनेराना (धाना)। \*

६ ६१)। संदू जियादेइता (बीव १)। णिवाडिय वि [निपातित] गीचे मिराया हुमा (मद्या)। णिवाडिर वि [निपासियतु] मीचे वियते-नासा (संग्)। णिवात्र न [नियान] कृप मा शलाब के पास पराभी क अस पीने के लिए बनावा हुया वस-पूर्व पर्सा (स ११२)। सास्य ध्यै [\*शासा] पशुधों दा पानी पित्ताने का स्थान जियाय देखो जिपाड । शिवायद (कुमा) । शिवाएमा (पि **१३१)**। जियाय पूर्वि स्वेद पर्धीना (१४ १४) सर १२ =)। णिवास र्ष [निपाद दि पतन समान्यदन विरमा (वा २२२) सूपा १ १)। २ धैनोव संबन्धः 'दिद्रिणियाचा ससिमुरीए' (या १४८ उत्त २: गडड)। १ च प्र सादि स्थाप्तरस प्रक्रिय धम्यम (पएइ.२,२ मुपा२ १)। ४ विनास (पिंड) । णिशाय नि [नियाव] पनन-प्रीवत स्वर (परहर के स्वय के अध्यक्त)। जिवायम न [मिपातन] १ मिराना निपा सन बाहुना (पएह १२)। २ व्यापरण-प्रसिद्ध शन्य-मिद्धि प्रदृष्टि मादि के दिना विभाग विथे ही सम्बन्द सम्बन्धी निव्यक्ति (सिमे २१)। जियार तक [नि + धारय ] निसस्तु वस्ता निरोप बरनाः रोकना। खित्रादेः (दतः महा)। **बहु जियारेंत (महा)। बबहु जिलारा** र्जन, जियारिक्समाण (नार-मृज्य ११४) १११)। इ जिमारियस्य, जिनारयस्य (नुपा ४८२) मदा) । णियारम वि [नियारक] निरोध करनेमाना

रोरनेशना (मुर १ १२६, मुग्त ६३६) ।

गिराएम म [नियारण] र निरेप स्राहर

(मा ८,११)। २ सीत मारि को रोक्नेसना

र बड़ भारि न वे निरास्त्री करिय

फरितारों न सिन्द्र (प्रचर ७)। ३ प्रि

निवारण करनेतामा रोपनेवामा व्यवसाग-निवारणो एसो' (समि ६०)। णियास्य बेद्धो णियास्य (उर ११ थे)। णियारि वि [नियारिम्] निवारक प्रविवेशक। की, रिणी (महा)। णिवारिय वि [निवारित] रोहा हुमा निपिक (मन प्रामु १६६)। णियास र् [निवाम] र निवसन चर्ता । २ वास-स्वान हैरा (दूमाः महा)। णिश्रमि वि [निधासिन्] निपास कलगामा प्हनेपासा (महा) । णिबिश्र देशो जिसिल = स्यस्त (ध १२३)। जिबह देशो जिबह = निवृत्त (एए) । णियिट्र वि [निविष्ट] १ स्पित बैठा हुमा (महा)। २ मासकः, शीन (स्वा)। पिबिद्धि वि निविष्टी सब्य प्रपात मुहीत (हा १,२)। १६ प्पट्टिइ की "कल्पस्थिति] वैत सामुग्री का एक सरद्वाका मानार (ठा ጂ የ) ፣ णिविड देवो णिविड (पर् है १२४)। जिविद्वित रेसी जिविद्विय (पर पि 3Y ) I णिविक्ति औ [नियुक्ति] १ नियत्तैन ज्यास प्रवृत्ति का समाव (विमे २७१८; स ११४) । २ बापस सीटमा अत्यावर्शन (मूपा ११२)। णिविद्धाति [दे] १ सोकर प्रस्न हमा। २ निरास, हुनारा । १ बद्धट । ४ नूरोस निर्देय ( \*Y YE) 1 जिषिम वि [निर्दित्त] विकिश् कान सं परित (तंद ११) । णिविस बद [नि+पिन्] वैद्या। का णि पर्सन (वा १२)। जिविम (घप) रेगी जिमिम (प्रति)। र्णिविसर रि [ निवेष्ट्र ] बैडनराना (बर्ए) र णियुरम्भाण वि [ग्युधमान] नीयमान जो भी बाया जाता हो बंद (माना २ ११ व)। णियुद्ध वि [निर्मष्ट] बरमा ह्या (धापा २ Y ( Y) 1 णिइटक नम [नि+पर्पेन्] १ स्वाय करता सीह्या २ हाति करता । क् िपदरमान (दूस १ १) । ही निय द्भिता (तुम १) ।

विषेशायिय नि [निवेशित] बैठामा हमा

11 (c) 1

(वंचा ११)। इत णिषेयगीश्र (स १२)। णिबेजरा दि [निवेदक] सम्मान-दूर्वक ज्ञापन करनेवाना धार्थी (सूत्र २६ )। जिनेजम ा [निजेदम] १ सम्मान-पूर्वर शिक्षभ्रणय कारत, विकस (पंचा १। निद् ११)। २ मेरेच वेवता को प्रसिद्ध प्रश्न पार्वि (प्रसम्भ १)। णिवेश्रणा ही निवेदना क्यर रेखी (ए।सा १९)। विंद्य पू [पिण्ड] देखा को चरित दय धादि, मैनेच (निद णिकेश्रय केवी णिक्षमा (मूपा १२१/छ 284) i जिबन्य ४ [निबंदित] सम्मात-पूर्वेत प्रापित (बहा भूषि)। *विवेदरचात्र वि [ सिमेद यत् ] तिरेदत* करनेत्रासा (धमि १६१)। णियेस सक [ति+ यस्य] स्वतन्य । बरना, बैटाना । खिवेमा - खिवेसेड (सरा) बण)। धेह जिबेसइचा विद्यमिष विद्यासक्त विदेशिका िवसिय (बन ६२ मन गरा करा बरा)। इ. त्रिवसियम्य (नृता ३६४) । गित्रस 🐧 [स्तिरेश] १ स्वतान बापान (बार का पूर्व)। र प्रदेश (निपूर)। ३ मात्रागनपान देश (बृह १) ।

निश्म प्रियसी १ मसन चन प्रमाण

निरेगण न [निरेशन] १ स्थान बैटना

(धाना) । २ एक ही बरशबेशने धनेक गृह

धना (गुरा ४६३) ।

(एव ४)।

(ठार ३)। २ दिन भी भ्रोटाई (मन)।

पिवृदि हो [निवृति] परिवेष्टन (प्राक्त १२)।

णिवेश मक नि +े बेद्य ] १ सम्माद-पूर्वक

बारत करना सर्व करना। २ सर्पेत करना।

६ मालम करना। कर्म शिवेदक्द (निच् १)।

सह जिबेड्डज (म १९६)। हेक् जिबेएई

भिनुद्ध रेखो जिस्मुद्ध (सूच २, ७ १८)।

जिबुज रेनो गिउन (मन्दु ११)। गियन्त रेको निवद ⊏निवृत्त (स १वद)।

(मद्रा)। णिक्य न निध्य स्थि, पन्त-प्रान्त (वे ४ ४८ः पाम् । जिस्त न निया समर के स्थर का समर्रेन (लंदि १३६) । भिम्बन **दे] १ तकुर, विद**ः २ व्याव बद्दाना (दे ४ ४६)। पिक्यकर नि वि] परिहाद-रीहत *स*त्प (क्म १६७)। विक्य**क्ष**प्र वि [निवसम्ह] वस्क्रम-पहित (पि ६२)। विक्यक देखी जिक्यक्त = निर्+वत्त्र्। संक्र. पिक्वहिका (तार ४)। जिन्दह (घर) देखो जिबह (ह ४ ४२२ ह)। पिक्करूग दि [निवर्तक] बनानेवासा, कर्ता (बाद ४)। णिक्वट्टिम देनो जिबट्टिम (इस ¥ ३६)। जिञ्जाहर कि [निर्जितित ] तिन्मावित वनाया ह्या(द्याचा२ ४२)। जिन्त्रहरू मुखी दुक्त की बोह्ता। खिलक्द ( पर )। पिन्तह यक भि र पूरत होता पूरा होन्ध। ९ रतप्र होन्ध। शिष्यबद्ध (हे ४ 18); णिस्वड देखी जिस्बड=तिर्+वर् (पुना **१२२)** 1 यिक्तक्षित्र वि [भूत] १ पूर्व-मूट जो **पूर्व हमाक्षे (देद**)। २ स्स्<u>ती</u>पृत वो व्यक्त ह्या हो (नूर ७१ Y)। विश्वदिश नि [निग्यम] निज इत, निर्देत (शय) सूर्युत्रसी प पुष्ठभूका य सम्मे इमीप शिम्बन्तिया (मुता १२२) । थिक्तड नि [दे] सन्द, नंख (दे४ २)। जिञ्चन रि [निर्मण] बल-चीत वर वर्जित विनामात्र भा (एएमा १ ६ सीम)। विस्वण्य कर [निर्+वजय] १ स्तावा ररमः, प्रशंका करना। २ देनना। बङ

निष्यण्यंत (ने १ ४४) का १ ११ ही।

नहा) ।

षिक्वत सक [निर्+वर्त्रम्] स्थानाः करना, पिछ करना । खिल्लीह (नहा) । धं**क जिब्बस्थितज, जिब्बस्थेतज (मद)।** जिन्दत्त सक [निर्+वृत्तम्] सेत मताना वर्तुंत करता। क्याइ, विस्वत्ति उद्यमाण (मन)। णिक्वच वि [निर्वृत्त] निका**न,** प्रेस्त निर्मित (सक्ता भीप)। जिञ्जन वि [नियन्त्ये] बनाने योग्य, सम्ब (मक्कर)। णिक्यच्या म [निर्वेश्वेत] निमत्ति, रका बनाबट (इप पू १८१) । शिक्सविता, हिगरणिया की ["धिकरणिकी] ल वनाने की किया (ठारु १ क्या ३) ≀ जिन्द्रतम्या ) हो [निर्देर्शन्य ] ज्यर रेवी मिन्नचणा (पर्हा १४४ पर्च १)। णिवन साथ वि जिले सका कियान करवेदाना बनानेवाला (विसे ११४२) स दश्य है १ n ) i पिक्वति सी [मिर्बत्ति | निव्यति विक्रिक्ति (विदेष २)। देखो विक्थिपि। णिक्वतिय वि [मिर्वेदित] निव्यक्ति, वनामा मुद्रा (स ११६) पुर १४, २२१। बीच र )! जिम्मत्तिव वि [निर्मृतित] ग्रेनामार विध हमा (वप)। जिम्मसिम वि कि विरुद्ध (दे ४ रेट) ! णिक्दय सक्तित + क्री शन्त हैला फ्परान्त होना । **इ.** जिस्स्यवित्र (व **4 ()** ( प्रियम कि [निर्देख] १ क्यतल्य *राप-वाण* (सूम १ ४२)। २ परिलंख परिलाम-प्राप्त (बस्ति १)। णिक्षय पि [सिद्धत] इत-पौरूत नियम चीत्त (पडम २ ००० इप २६४ टी)। णिस्वयत्र म [निवैचन] १ निरक्षि, रापर्व नमन (भारत) । २ बत्तर, जवाव (ठा १)। १ वि निर्मेख करनेवाला निर्मावका जार्र क्यां व्यवस्थित विकास श्री मो श्री यो यो (सम्बद्ध)। जिब्दबिका देवी जिब्बद = निर्+ र । विकार तक [कश्यम ] दुवा वहना !

1 (3F

(इमा) । क्म भह तम्म निर्मारम्बद दुस्य बंहुरबुएए द्विपएए। ग्रहाए परिविषं व अभिम दुशक्षे न संदम्ब (स ३ ६)। जिस्तर एक जिल् देश गरना काटना । णिम्बद्ध (हे Y १२४) । विषयरण न [कथन] दुःध-निवेदन (गा २४४) । जिस्वरिक्ष वि सिमा कारा ह्या सिएक (क्या) । विकास कर [ सुन् ] दुन्त को चोहना। णिनतेष (**१** ४ १२)। जिब्बस सक [ निर + पद् ] निरम्न होना सिक्क होना बनना । शिष्यसङ् (हे ४ १२८)। जिब्बस देशो जिब्रस=शर्। जिम्ममद (₹ ¥ १७३ €) : चित्रवस देखो चित्रवड = मृ। वह गिक्करोड णिक्वसमाण (से १ ३६ ७ ४३)। आ क्वासिक्स विविद्यालया निर्माध बोमा हुमा । २ प्रविपश्चित । ३ विवर्टित बियुक्त (दे ४ ११) ( णिक्क्य एक [निर्+धापय्] ठंडा करना इस्ताना । पिष्णवेदि (स ४३३) । शिष्णवस् (काक)। वक्क णिक्यवंत (सूपा १२५)। कः (जञ्जवियक्य (सुपा २६ )। किञ्जूषण न [निर्मापण] १ कुमाना श्रान्त करता। २ वि सान्त करनेवाला, ताप की इम्प्रनेदाला (तुर ६ २६७)। पिञ्चवित्र वि [निर्वापित] बुमस्या हुमा र्टबाकिया हुआ। (या ३१७ सुर २ ७४)। णिज्या यक [निर्+यक्] १ निका, निर्वाह करना, पार पकृता । २ माजीविका थमाना । विस्माहद (स १ १८ वश्या ६) । कर्म, खिन्तुन्द (पि १४१) । वद्य- विकारत (बा१२) कुप्र ११)। इस्तिव्यक्तियस्य (कुन २७२)। णिम्बद्ध दन चिद् + वह ] १ बारख करना । २ क्रमर घटना । शिम्बहर (वर्) ।

(सेवद)। णिस्वापाइम वि निस्पाधाविम स्थानत रहित स्थलना-रहित (मीप) । जिल्ह्यामाय वि [निर्व्यामात] १ प्यामात-वजित (ए।सा १ १४ मगः कप्प)। २ तः व्यादात वा समाव (पर्ए २)। जिम्श्रामाया की निर्व्यामाता एक विद्या-देवी (पडम ७ १४४)। णिक्याजन [निर्वाण] र ह्यांक मोधा लिहीं (विमे ११७३)। २ सवा चैन स्वन्ति पुष्प-निवृत्ति निक्यामणी निकाली मुंदरि निस्तासर्व कुछई (उप ७२८ टी परम ४६ १६)। ६ बुम्पना निष्मापन (मान ४)। ४ नि दुम्ब हुमाः 'नह बीबो खिनालों (विदे रेश्रेर कुप्र ११)। १ पुँ ऐरवत वर्ष में होनेवाले एक जिल-देव का नाम (सय ११४)। णिष्याण व [निर्वाण] हुन्ति (इस १ २ **1**=) 1 णिक्वाण न विरेडुच-४वन (३४ ६६)। णिक्याणि पू [ नियाणिम् ] मारहन्यं में बदीत रुत्धांपणी-काल में धंजात एक जिल-देव (पष ७) । जिम्बायी की [निर्वाणी] मन्बाद की राश्विमात्र की शासम-देवी (चींत १३१)। णिक्वाय वि [निर्माण] शीवा हुमा व्यवीत (8 ty ty) 1 जिल्हाय वि [विमान्त] १ विसने विमान किया हो यह (कुमा)। ए पुरिवत निवृत (B (1, 21)) णिख्वाय वि [निर्वात] नाषु-राहित (ग्राया ११ मीप)। णिष्पास्थिय वि [माक्ति] इक्क किया हुसा (से १४ १४)। जिल्लाव देखो जिल्लाव । शिल्लावेसि (स ११२)। संद्व- णिज्याधिकप (लिच्नु १)।

णिष्याय व निर्मापी भी शाक मादि का णिक्वहण म [निर्वहण ] निर्मत, यक परिमाख (निष् १)। इन्हाकी किया नाटक की एक संधि (सुपा १७६ क्रूप १७५)। एक तर्फानी मोजन-क्या (ठा ४२)। णिकवद्दण न कि निवाह, शारी (वे ४ णिज्यायहत्तम (शी) वि [निर्धापमितृक] ठेवा करोतामा (पि ६ )। णिक्या सक [ वि + सम् ] विभाग करता । णिक्ताषण न [निर्योपण] बुम्पना विष्यापन णिन्नाइ (हे ४ ११६) । वह जिल्लाजीत (इस ४)। णिञ्चायजान [निर्मापजा] कुम्प्रना, ठंका करना उपशान्ति (यवह)। णिक्यायय वि [निर्मापक] माग ग्रुम्धनेवासा (सूध १ ७ ३)। जिक्याविय वि [निर्वापित] ठंडा किया हमा (साया १ १) इस १ १)। जिक्यासण म [निर्योसन] देश विकास (स ११४ मूम १४१)। णिख्वासणा की [निर्मासना] उत्तर देखो (पदम ११ ४१)। जिल्लाह पु [निर्योह] १ निमाना पाए-प्राप्ति। २ भाजीविका जीवत सामग्री 'तिस्वाई किपि दार्व च (सुपा ४८६) । णिक्वाहरा वि [निर्वाहक] निर्वाह करने-बाला (रमा)। णिब्दाहण न [निर्माहण ] १ निर्माह, निभामा (सुपा ३१४)। २ मिस्मार करना (राम)। जिक्वाहिक वि | निर्पाहित | शतिवाहित विताया हमा द्वनाय हुवा (घेट ४२)। पिक्वाहिस वि [निक्योधिक] स्मावि रहित मीरोग (से ६ ४२)। मिठियञ्जल देखो जिक्कियराच्य (सम्म ११) । जिब्बिकार वि [ निर्विद्वार ] विकार रहित (साथ ६)। णिञ्जिद्वअ वि [निर्विकृतिक] १ इत बारि विकृति-जनक पदानों से रक्षित (और)। २ न. प्रत्यास्थान-विशेष विश्वमें बृत शादि विस-तियों का स्माम किया जाता है (पन ४ पंचा ४)। जिटिवाइगिच्छा वि [निर्विचित्रेरस] फन प्राप्ति में श्रीका-प्रद्वित (क्या वर्गे २)।

जिक्किश्वरिक्क ए निर्विकिक्समा छन

प्राप्ति में सन्बेद्ध का मभाव (श्राप्त २८)।

विकारिकारिका से किविधिकारी फार

विचारता । निविष्यः (इतः ८ १६) ।

जिक्किंग सक निर +शिव रेशन करना।

जिक्रकरण) वि जिविक्रमणी १ सलेक

विस्तिदेश्व (संघर २३ १२)।

प्राचित में लंबर का धावान (धीप पीर्र)।

२)। २ भैद-एडिल (ग्रम्म ३३)। किविज्ञाच्य देखी जिस्तिहम् (प्रवीच ४०)। णिज्याएपम न मिर्निकाप ही बीड प्रसिक् प्रत्यस शान-विश्वेष (वर्ततः ११६) : र्विकारिज देवी गिक्किका (प्र २)। जिक्किम कि [निर्विष्ठ] विष्य-राहेत- वाका-वर्जित (मपा १८७ सहा)। विकिथित वि निविधिमा दिलानाल. निर्वित्य (सर् ७ १२३) । जिक्किक यक लिए + विद्यो निर्देश पाना विरक्त होता । विश्विकतेरमा (स्व) । किकियक वि जिलिया पर्व (क्य ११ २)। जिक्कित वि सिर्वेश क्यार्कित नामिकित weet (पिंग रेक) । जिक्कित कि कि जिल्हा नीम्य (के ४ ६४)। जिक्किट वि निर्विष्ठी उपपुत्तः वासेविद बरिपाबित (पाम म्हा) । ब्राह्म न िशायिकी पैन शास में प्रतिपादित एक धारा नारित (महादर)। किक्किका दि जिन्दिया निर्देशभात दिस (महा)। णिक्रियत्त विदि विकर का हमा (दे ४ 89)1 णि**डिवासि देनो** ग्रिक्वसि । २ दन्दिय ना सामार प्रमोश्यिम-विशेष (विसे २११४) । णिक्यित हेली जिडिंबर = निर्+िंग (सूध

१ २ ३ १२)।

चीत (बर्म १) । चिकित्रम देती गिक्किण्य (हर) ।

(रंख २) ।

. 100

जिठियम्य वि [तिर्विज्ञात] १ मनध्य-सीलः ३ २ न व्यान्त स्वस (सर ≱. ४२)। जिल्लिक पन सिर + बिन्दा पन्धी दया विकार विकि विकास केंद्र करा धारिए-निरमासार (छ ७२*० दि*) । जिक्कियास कि स्थितिसम्बर्ध केराव-कीन (रूप प्रश्ना} । जिक्कित क्रिन निर्विद्धम्य रेक्सम्बन्धील विविद्यारण । रहित नि संस्थ (क्या) गण्य शीक (समा २४४) कब ४२) । जिक्किक वि [निविकेत] विकेश-सम्ब (सपा ३२३) १ नबक्ष घर क रेक्ट)। मिकियस एक सिर + विश्व दिवान करना । निनियसेका (क्या) । यक गिरिकसीत (राजा)। णिब्बिस सक निर+विद्या अपमोध करता (पिंड ११२ टी)। णिब्यिस वि निर्विष् विष-पद्भव (ग्रीप)। विकास कि सिविवासी संस्थापित निर्मेद (सुर १२, १६) । णिब्बिसमाण न [निर्विशमान] १ बारिक-विशेष (ठा३ ४) । २ वि उसँ मारिक को पावनेताचा (ठा ६) । काव्यटिक की िक्टपस्थिति चारव-विरोध का मर्वास (क्स्रो । शिक्तिसम वि [तिर्धेशक] अमोककर्ता (विंग्र ११६) । णिक्विसम वि निर्विषयी १ विदर्भों की यमिताया से सीहत (बत रे४) । २ धनबंड निर्देश (पेचा १२) इप १२१)। ३ देश से बाहर किया हुमा विश्वको देवल्काने की तमा हुई हो सह (सुर १ ३१ सुपा १६६)। जिब्बिसिट्स नि [निविशिक्ष] विशेष-शक्ति समान तुस्य (का १३ टी)। णिब्बिसी की [निविधा] एक महीपवि (वी ६)। पिक्विसंस वि [ानकिस्तप] t विशेष-पहिल, बमान वाबाच्छा (व २६) बम्म ६६: प्राप्त जिक्कितुर्युष वि [निर्मितुर्युप्स] प्रशः ६०)। २ समिल भो पुराव हो (के १६, विक्षी की [मिर्विष्टति] वय-विशेष (बंदोष विकित्रभाग वि [मिर्विभाग] विकान-परिव X0) ( जिस्तीय देवो चिक्किइज (संबोध १७) । जिल्लीस की [निर्मीस] पुत-चहित विपश जिल्लाम देवी मिक्सिइम (संदीव २० पुत्तक श्री (गीह ४६) ।

णिक्यम वि सिंगती निर्मेश-सार्थ 1 (1 mm) जिम्बुइ की निर्वति र निर्वाक नोध मुक्ति (कमा प्राप्त १६४) । २ वन की स्थरनताः निवित्तता (तर ४ हरे)। र सबा व ब-रिवर्तन (धाव ४)। ४ वैन बावशे की एक शाका (कप्प) । ४ एक राजस्का (बर १३६) । बर वि विदासिता (num t) : senu fe l'arreil fefa का अस्पनक (ना ४२१)। णिक्न इस्ता की क्रिकेटिक्स**ों फरा**ल मुम्यिनाच की दीवा-तिविका (विचार 222) 1 जिब्बाह रेखी जिब्बाओं (द्वमा व्यक्त)। जिल्लाह कि [निर्दर] प्रक्रित किया ह्या (EE 1 4 9)1 भिन्दक देखो जिदक = विश्वस्थ । यह णिक्वब्रमाण (स्व)। पिन्यबद्ध देवो जिल्लाहर । वह जिल्लाहर साथ (सम १--पव व )। तंत्र णिम्बे-बढेचा (तुम ६) । जिस्तुद्दह वि [निस्तु हा] निर्वाहित, विद्या सम्बर्ध (चा ११) । णिक्वत्त देवी जिवत्त (पा १६६)। भिक्रवास देवो जिस्तास = निवास (भिन)। णिस्वृत्ति **क्षो** णिष्वृत्ति (स व १४)। णिम्युद् केबो जिस्तुम (वंशि र) । णिक्वदि देखी प्रिक्यद (ब्राइट )। जिस्तुरम" देवी जिस्सह = विर् + वर् । विक्युत वि [निक्यु हाँ] १ जितका निर्माह किया बना हो बहा। २ करा निर्मित विभिन्न (नारश्राधे १ ४६)। ३ जिल्लो निर्नाह रिवाही वह पार-ब्राप्त (विवे ४४)।४ रमक, परिद्रक (से ४ ६२)। इ. बाहर निकास ह्या, निस्तारित -निज़्बा व वएता वची यावणयोत्तनाथमा' (इप १३१ दी) । जिब्दुड दि [द] १ स्टब्स (१४ ११)। नः पर वापवित्र सोक्त (दे∀ २६)। थित्रवृद्ध कि [निक्यृद्ध | विद्यी वंश्व के ण्**रते पर बनावा हुया बल्प (दवनि** १ (8**2**)

गिरवेस पू [निर्वेद] मुकिसी रच्या (समाच १६६)। विक्वेश पू [निर्देष] १ बेर, विचिक (हुमा द्र ६२)। २ संसार की निर्द्रणादा का सब बारए—निस्वय (ज्ञान) करना (तप ६८६)। णिक्यअण न [निर्येदन] १ बेद, वैराप्य । २ वि वैराग्यवनकः। सी. गी (ठा४२)। णिम्बेहु सक [निर्+वेष्टय ] १ नारा करना सम करना। २ केरना। ३ बॉर्चना। बहु णिक्सट्रंत (विसं २७४१) ग्रीवा २,

₹ **२)** । णिक्षद सक [निर्+बेष्टय्] स्थान करना । खिच्छेड (सुरुव २ १) । णिक्षेत सक [निर्+ बेप्टम्] मजबूती मे बेप्टन करना । णिज्नेडिक णिक्षेडेरव (द्याचार ३ रः पि ३ ४)। चित्रवेद वि वि] नान गंवा (वे ४ २८)। 1 जिड्येन देशी जिड्नेस (स्त २६, २)। विकार वि [निर्पेर] वैर-पहित (प्रन्तु १९)। शिक्वेरिस वि [वे] १ निवेद, निजनस्छ । २ सत्कृत सविक (दे४ ६७)।

णिक्षेत्र धक [ निर्+वेद्य ] पूरमाः सस्य ठहरना, साबित होना। सिम्बेझ्ड (पि १ ७)। विक्षेद्वित्र वि [निर्वेद्वित]प्रसूरित स्कृति-मुन्द्र (ते ११ ११)।

विक्रोस वि [निर्दूष] हेप-परित (वे १४, 1 (83

जिन्मेम र् [निर्वेश] १ नाम प्राप्ति (ठा १,२) । २ व्यवस्था 'कम्माख कलियाखं बारी कमंत्ररेमु को शिष्टेस (धण्डु १०)। जि**व्यक्**णियां **ध्ये [तिर्वे**पनिस्त] वनस्पति विदेव (वृद्ध २ ३ १६) । जिल्होडकर वि [निर्वोदकर] निर्वाद-योग्य बहुन करने बोग्य निमाने सायक (माव ४)। जिल्लास सक [क] बोब से क्षेत्र की मनिन करना । शिम्बेलन (हे ४ ६६) ।

णिक्बोसम न [करण] बोव से होठ की मित्र करना (कुमा) ।

जिस देशे जिसा (दुमा पडन १२ ६६)। णिस सक् [नि+अस ]स्पान करता। छिपेद (पीत) ।

जिसंद दि [निशान्त] १ युव मुन्न हुमा (शुस्मार १ ४ टका)। २ मध्यन्त ठेका (बादम)। १ रानि का धवसान प्रनात व्यक्त रिएस्टि तबस्पविमासी पद्मासई केवल भारत्तुं (स्त १११)।

थिसंस वि [नृशंस] हूर, निर्देय (नृग 1 (3 8

जिसमा 🕯 [निसर्ग] १ स्वमान प्रकृति (स्र २ १ कुप्र १४०) । २ निसर्जन स्पाप (विके) । जिसमा वि निसरी स्वमाव में होनेवासा

स्वामाविक (मुपा ६४८) । जिसमा न [नैसर्ग] बायल की वर्ष स्वमाव से सक्तता (सूम २३३ १६)।

गिस्तिय वि निस्तिक स्वामविक (सण)। णिसञ्ज दूं देवो जिसञ्जा निसम्बे विवय खार (बन १)।

क्रिसञ्जा की [निपचा] र मापन (रप ६)। २ उपनेशन वैदना (शव ४) । देखी विसिद्धाः। जिसदू वि [निस्ट] १ निकास हुमा त्वक ११६)। २ इत दिवा हुमा (सामा

१ १---पत्र ७१)। णिसद्व वि [दे] प्रचुर, बहुत (धोप ८७)। णिसदू (घर) वि [नियण्म] वैक्ष द्वमा (ਚਚ) ।

णिसद पूं [निपय] १ इरिवर्ण क्षेत्र से क्तर में स्थित एक पर्वत (ठा२ ३)। २ स्वताम-बयात एक बागर, राम-सैनिक (से ४ १ )। ६ देख सोड (पुत्र ४) । ४ वत्रदेव ना एक पुत्र (निर १ १८ कुछ १७२) । १ केत-विशेष । ६ नियमकेशका राजा (कुमा)। ●स्वर-विशेष (१११ २२६ प्राप्त): "फूडन ["कूट] नियव पर्वेत का एक शिक्स (ठा २,३)। दह दूं दिह्यों ब्रह्मिरोप (में ४)।

जिसका व [नियण्य] १ प्रपन्ति स्पत (या १ ८० ११६) उत्त २ )। २ कायोग्मर्य काएक मेर (माप र)। विमण्ड कि निःमंद्री संज्ञ-रहित (से ६

जिसस दि दि संदुर्ध संदोवनुष्ट (१४ **1** ) i

जिसम देखो जिसज्ज (दर राज्या १ १)। णिसम सह [ नि + समय ] मुनना । वह णिसमेत (पारम) । कन्द्र जिसम्मेत (गउड) संह. जिसमिज, जिसम्म (गार बेली ६८ सना माना)। जिसमत्र न [निशमन] भवत पाकर्तन

(हु १ २६६, मतह)। थिममा बरु सि+पद् ी १ केट्या। र स्रोता रापन करना । सिसम्मर (स ६

१७) । हेक् जिसस्मित्रं (हे ४, ४२) । णिसर रही जिसिर स्वकः निसरिव्यमाण (भप)।

णिसह देवो जिस्सह (मा ४ )। जिसह देखी जिनह (६६)। णिसह देवो णिस्सह (पर्)। जिसह सक [ति + सह्] सहत करना। शिसहर (प्राष्ट्र ७२) ।

णिसा ही [निशा] सन्दर्भावाती नव्द-भूमि (सूचरे ११)। णिसा [निद्या] १ चित्र चत्र (दुना प्रामु ११)। र पीसने का पन्पर, शिनीट, सिसवर

(स्वा) । आर पूं [ैकर] कन्न कोंद (ह रै द यत्र ) । अर पूं [ैंचर]-राज्ञस (कप्पूं है १२ ६६)। ऑस्ट्र [ चरम्द्र ] प्रतसी का नायर राजस-पति (से **७ ११) । नाइ ब्र**िलाम] कन्नमा (मुपा ४१६) । स्पेड न ["सोप्ट] रिज्या-पूत्रक ग्रीसने का परवाद सोहा (उदा) । यह दूं ["पछि] चन्द्र, चाँर,

बन्द्रमा (गउड)। देखी जिसि । गिमात्र एक [नि + शायय ] स्वर पर बहाता पेताता, दौरख करता । चेह निसा गिऊम (स १४३)।

णिसाय न [निशाय] शल, एक प्रकार का पत्पर, जिल पर हरियार तेज किया जाता है (बढहा मुत्त २८) ।

जिसाणिय नि [निशाणि**त**] राज रिया

हुथा, पेनावा हुमा, ताध्छ शिया हुमा, पैना-बारशर, नुशीना (मुख १६) ।

णिसाम देवा जिसम । शितामेद (नदा)। बद्ध- विसामेत (पुर ३ ७८)। संह जिसामिकन जिसामिता (महा उत्त 7) (

विकासका देवी जिससण (मृग ९६)।

316)

(60)/1

क्षेप्स्स (बस्प) ।

बाला (पाम)।

. ( . .

पिसासिक वि कि निक्सित**ी** र मह

ग्राकस्तित (दे⊻ें २० मा२१) । २ वर्ग

लीवत स्थान स्था । ३ सिमटाया स्था.

संकोषितः 'मल्यामियो क्यानोयो' ( ध

क्रियाचित वि जिन्नास्थित ने मन्त्रेग्राम

किसाय वि सिन्धती राज दिना हमा

विसाय व निया है । बादबाब एक प्राचीन

बावि (से ४ ३३) । २ स्वर-विकेप (ठा ७)।

किसारत वि (निशातान्त्र) तीव्छ पार

जिसास कर [ निर + चासम् ] निजनाब

शक्तम् । क जिस्सासपेत (पत्रन ६१

णिसि क्यो णिसा (दे१ ८ ४२) पर्

णिसास 🖦 जी जीसास (पॅन) ।

जिसाय वि दि | प्रमुख (१ ४ ११)।

र बोझे समय के मिय ज्यात स्थान जिल

१४ १ )। ३ शानायस तन म एन

मुमि (सम ४)। २ वाल-विस्ताना स्टब्स

ब्रह्मासन (ब्राचा २ २ २)।

रितसिय वि म्थिस्ती स्वावित (वर्ष ७६)। जिसियण न [निपनन] स्पन्तन (पन)। शिक्षिर सक िस + संबंदि बाहर निका-किसीहिआ की नियंभिकी १ सामान-सना। परेता स्थाप करना। १ करना। किसिक्ड (शस १८ भन) 'किकारकास १ निविद्वि के स बंबे तेनि ह पानिति निस्तार्ग (सर ११ २३४) । कर्म, निशिष्टिकार. शिक्षियक्य (विशे १४७) । वक निसिरंत (रि २६६)। क्यकः निसिरिज्यमाण (पि

(पृष्ठि कमा)। व व्यापारानार के लिये का बालार (का १)। देखो जिसेक्रिया। जिसीहिजों की [निर्शायिती] छनि छ (का पुरुष) । नाइ प्रश्नावी करण १११)। संक्र णिसिरिचा (पि २११)। (इमा) । णिसमानि कि निश्वी पुक्र मार्कीका प्रको, निसिधारीत (वि २३४)। 355 8 131 1 25 48 AB विसिर्ण न [निसर्जन] १ हिस्सारल (अस सक्षाः पत्रम्) । को । २ लाग (एम्पा १ १६) । णिसंद १ [निसन्द] चवल का एक पुट विक्रिरणया ) वी [निसर्जमा] १ व्याप शिक्षिरणा ∫धान (मात्रा २ १ १)। (क्क्स १६ २१)। णिसूम सक [नि+शुम्भ] बार सक्रय २ निस्धारण निम्बाधन (मप) । जापारत करना । क्वह, जिस्सेनेत जिस क्षांत (ते ६, ६६) १४ ११ से १११) ।

जिसील सक [नि + पर्] बैठना। शिर्धीमद (मय)। बङ्ग विसीओय जिसीआमाण (जन १३ ६ सम १ १ २)। सङ णिसीइचा (क्य) । हेक्- जिसीइचप (क्स)। इ. विसीइयस्य (खासा १ १) जिसीक्रण व [निपदन ] क्लेरन केना (क्य २६४ टी व १४ )। णिसी**आवण न** [निपाइन] बैठाना (क्स ४ ११ दी) । क्या)।

केले का पत्ता (एन ६३)।

रहाती (सामा २ स्ट)। पिसुमिय वि [निश्चमिता निपालित 🖦 पिसीह देवी जिसीह = निरीव (दे १ २१६) पास्ति (सपा ४१६ )। जिसीच्य देशो जिसीअय (ग्रीप)। किसक जिस्सीक्स रिका के र वर्ष) । विसीह पुन [बिशीय] १ सम्म धार्व (है १ २१६३ कुमा) । २ प्रकाश का सम्बद्ध (निद् ६) । ६ म जैन शागमन्त्रत्व विशेष (छवि)। जिसीक्ष व [शूसिंक] प्रतम पुरूप भेड महुष्य (कृमा)। जिसीहरू नि [नैसीनिक] निज ने लिए बाबा बना है ऐसा नहीं सामा हुआ औष विश्वसिक्ष वि [सर्त] बार से नवा हुयाँ नारि पदार्च (शिष्ठ ६६६)। णिसीहित्रा सी [मैथेबिसी] १ शक्याँखाः (राय) । विश्वविक वि [सिश्वविक्य विश्वविक (व पत्र-सूमि स्परमन्तुमि (सन्तुरः)। २

सुर १७)। पाइटच ⊈िपाइटको ध<del>्या-विशे</del>य (स्पा)। सत्त ग िंभ**ा**जी राविन्योजन (ग्रीम ७०७)। अस्य म [ मुक्त] एपि नोजन (पुना ४**११**) । णिसिज देवो जिसीज जिसिमा ( एए कम्प) । संक्र दिवस्थितस्य (कम्प) । पिसिज वि जिलिता कान विवा ह्या तीरक (ते १,४६ म्ब्रुट 🕻 ४ ११ )। जिस्सिक सक [ मि + सिन् ] प्रभेष करण्य, बलता। सेक् जिसिक्य (भाषा)। पिसिजा के प्रिसका (कम का दर क्ष ६,१) । ६ क्यांच्य साबुधी का स्तान (वंच ४) र विशिक्तमाण देवी जिसेह = श + विवृ । जिसिह वि [सिस्ध] १ बाहर नियाना इस्स (भाष १)। २ वतः प्रवत्त (माप)। ६ भनुभाव (शृह १)। ४ ननामा हमा। हिति सायमञ्जा ... पत्रमी निही चितिह क्वरादेश (का १ ६ में)।

) वि [के] उत्तर केवी (है Y जिस्स देशो जिस्स = तर् । तिसुम्द (वर् )। जिस्**बंद देवो** जिस्सा (ह ४ ११८ डि)। जिसुद सक [नम्] बार दे भावस्य देखर तीचे मनना कुकना। सिमुड्ड (हे ४१३४)। थिस्ड तक [नि+द्वन्स्] वारत⊳ कार कर विशास । क्या विश्वविद्यात वि व

णि<u>र्म</u>म प्रतिशुक्स १ सनाव सात एक

पन २११) । २ केल-विशेष (निष) ।

**3,** () i

tr 21) |

रामाः एक प्रतिकालके (पदम ४, १४५)

णिसीमण न निरम्भनी र मध्य जानार,

विनासः। २ वि मार कानतेत्रकाः (सूधः १

णिसमा को [मिझन्मा] स्वनाय-स्थाउ एक

जिस्सार एक जिर +सारव ने बहर निकासना । निस्सारह (क्रथ १३४) । णिस्सार ) वि निसार र सार-हीन

जिस्सारग । निरर्वेड (घर्जु नूप १ ७ भाषा) । २ वीर्जु, पुराना (भाषा) । जिस्सारम नि जिसारको निकलनेनामा (स्प २८ टी)।

णिस्सारिय वि [नि:सारित] १ निकाना ह्या। २ भ्याविष्ट अन्य किया हुमा (सूध t (x) 1 णिस्सास ५ [निन्धास] विकास नीपा

रवास (ब्ला) । २ काल-मान मिरोप (६४) । ९ प्राण्-पायु, प्रस्वास (प्राप्त) । जिस्साहार वि [मिल्लामार ] विरावाद, धनम्बन-पील (बस्र) ।

णिसिंग वि निःशृङ्की श्रव-पहित (पूरा 111) | पिस्सिषिय न [ति:शिक्कित] क्याच राज्य विशेष (विधे १ १)। णिरिंसच प्रक [निर + सिच्] प्रक्रेप करन्त्र, शासन्त्र केंक्न्य । वह जिस्सिक्सान्य (धन)। संद्र जिस्सिचिया (बस १, १)। णिस्सिणेड वि [सिन्स्नेड] लेड-फीट (पि

tr ) 1 जिस्सिय वि [निकित् ] १ मानित मक्कमित (घरे मात ६८) । २ सासत्ताः मनुरकः तल्बीन (पूच १ १ शास्त्र)। १ न राग माम्रीक (ठा १०२)। गिरिसम वि [निमित्त] १ फिल्म है बद (तुष २. ६. २६) । २ पद्माची चपी (वव १)। जिस्सव मि [ निःस्त ] मिनैत निर्मात

(मस १५)। जिल्हीस है [ निज्ञीस ] बचनास्थित, बुळ्डीच (पद्य के बयां का के २)। (<del>41</del> (3) ( जिस्सेका देशे जिसेका (१४ ११७)।

जिल्ह्य वि [निज्ञूक] **निर्वेत निज्**रुद्ध चिरसेण की [मि:भेणि] चीकी (परक्ष १ १ पायो । जिल्लाबस न [निकेयस] रक्तकाङ क क्षेत्र (का∀ ४० काला१ थ)।

मम्बद्ध सम्मति (उत्त =)। णिस्सेयसिय वि [नै: केयसिक] <u>सम</u>्या मोद्याची (मद १६)। पिस्सेस वि [नि:शेप] धर्व सव सकत (इस २ )। णिइ वि [निम] १ समान, पुरुव, पहरा (से र प्रकामा रहेका के १ प्रहो। एन

बद्धाना ब्याब सून (पास) । पिद्द वि निद्दी र मानावी कपटी (सूच र ६)। २ पीवित (तुम १२१)। ३ व. मानात-स्वृत (सूम १ ४, २)। णिइ वि [स्तिइ] समीः सव-पूक्त (बाचा)। णिइंतब्य देखी णिइण = श + इन । जिइस र जियमें वर्षेत्र (वडह) । णिइंसण न नियर्पण वर्षश रवह (स % प्रदेश ग्रहत । भिरुद्<u>द</u> य. १ वृद्य न ८, इनक करके (धाचा)।

२ स्वलन कर (शासा ११६)। जिस्त्र वि [निष्युः] विश्वा हुन्य (हे २. णिइण एक [नि+इम्] १ फिल्ट करना माप्ताः। २ कॅम्पाः रिक्कारीम (प्रश १६२)। विष्रुषाद्वि (कप्प)। चुका-खिइचित्र (धाना) । कह निद्धणंत (स्रह्म) । पंड जिह्नजिता(पि १०२)। इ. जिह्नतस्य (परम १, १७)। जिद्द्रण धक [नि + लाग्] शक्ताः विद्वर्शत मरा भरतीकामा (गम्बा ११ )। हेक्

1 (88 (पडम १६, ६२)। (महास १९६)।

मीर रिवर्ष्येस्वीत (भग)।

'बोरो सम्म निष्कृषि छम् ब्राप्को' (महा) । णिइण न [दे] दून सौद, किनास (दे∀ पिक्षण व [नियम] १ मध्या विकास (पाध्य भी ४६)। २ दुं सक्साकाएक सुकट जिल्लाम [सिद्नम] विवृति मारता

जिद्द्रजिम कि [मिह्द] ग्राप हुवा (<del>दु</del>वा १३ । स्या) । जिह्न यक [नियन्तम्] कर्गको निविक জন ব ৰাহণা। দুজা হৈছেহিছু (মল)।

मिद्दासक [नि+इत]स्तपकरमाः चैक-णिहास (तुस १ ११)। ) क्षत्र [ दश्र ] केवला । रिव्हास

पिहामा ) सिहामाद ( **गर्**) ।

1 (## जिल्ला पुंचि । शत्मीक सर्वस्मीर राज्य ( Y 22) 1 जिइसण न [निवर्षय] वर्षण रवन (है ८ रं । मार्पर मध्या मध्या ११ )। जिब्र्सिय वि [नियर्पित] विश 💵 (वर्ग 18 ) ( िमदा क्यें [निद्दा] नावा कपठ (दूर्घरें व)।

विद्या सक [नि + भा] स्वासका करका।

मिहेक (च ७१ )। क्सक्र-बिहिप्पेत कि च. ६७)। संद जिल्लाम (तप १ ७)।

जिह्स पू [निक्रम] १ क्यप्टुक करीयों क पत्वर (पाम)। २ करीटी पर की करी रेवा(देश र ६३ २६ अस्त्र)। णिहरा है [निषयें] वर्षेत स्पन् हि ५

णिइव दे [नियह] समूह (वर्)। णिश्स सक [ति + पूर्] क्लिन। सक पिइसिकण (स्व) ।

णिह्व वि [के] मुख सोसाहुध्य (य**र्**)।

रिक्रफ ( दर )। णिहर**न देवो** पीहरण (खामा १ २~ पम वर्)। जिद्द्व देवो जिद्दुव। जिद्द्द्र (चट) <sup>हर</sup> Y(1) 1

जिहर पक [सि+इट] पल्यम बन्ध (प्रामा) । जिहर यह जिह्न + क्रन्द् | विस्थाना । विद्धा (पा<u>र</u>)। णिहर प्रक [निर्+स्] बद्धर विकवनाः

करना । शिक्षम्यद् (हे ४ १६२) । जिह्न वि [निह्त] मारा हुया (वा ११० et 1, ye) i णिह्य वि [सिद्यात] यावा हुमा (स ४६६)।

जिह्नम स्ट सि + हस्स वाना कर

णिक्ष्य देखी जिन्न (मन)।

शिक्षण व [निभक्त वर्गना निमे बन्दर (भव)।

विवर्षि देवी जिम्ली (यह)।

भिक्षाण म [निषान] यह स्थान वहाँ पर बन साबि पाड़ा मगा हा खबाना मरागर (क्या पा ११४ पडने)। जिह्या पु चिंदु र सेद, गणीना (४ ४१)। २ समूह सत्या (१४ ४१, से ४ १६)। स ४४४ महिन पास गडका पुर १ २११)। जिह्या पु [निषात] सामात साम्यसन (से ११० महा)। जिह्या देवी जिह्या निष्मा नि+हा।

जिह्नय देवो जिहा = नि + मा नि + हा। जिह्नय पुं [निहाद] सम्पष्ट राज्य (पुष ४६)।

जिहार दु [निहार] निर्यम (पणहर ध ठान)।

जिह्नारिम न [निह्नारिम ] निवके मुदक सरीर को बहुद निकासकर संस्थार निया बाय ठठकर मरण (मग)। २ वि दूर याने-बाता दूर कर फैमोराला (पद्ध २ १)। विद्वास्त्र देवो जिस्साला। जिह्नाकेदि (स १)। का-जिह्नाकेद जिह्नास्त्र (कर ६४८ टी ६५६ टी)। संक जिह्नासर्व (पन्धार)। कु जिह्नास्त्रेयकर (कर १ ७)।

शिहास्त्रम म [निभासन] निरोत्तरः सबसोकन (सन ६ कर सुर ११ १२: सुना २३) । शिक्कास्त्रिक कि [निमालिक] निरोधिक

शिद्धाक्षित्र कि [निमावित ] निपेषित (पापा स १ )। जिद्धि कि [निमि] १ बनाना मेदार (एएया

जिहि वि [निधि] रे बनाम पेसर (एला १ रहे) २ वन साहि के बदा हुसा पावा (है र देश वे रेश जा रू. है) 'सम्बेर्टन जिहि किस सम्ये एम्बे क समयन्त्रण वे (पा १२६)। वे बक्तमार्थी एमा की संपत्ति क्लिये नैकर्प साहि गढ़ निष्टि (ठा रे)। 'साह पूँ [नाय] हुनेर, करेश (पाय)। जिहि पैकी निस्ति। बनाम कर हुन हुन

णिहि पुंधी [निधि] सपाधार नव दिन का कपवाध (संवीप १२)।

णिहिम वि [निहित्त] स्वर्धात (हे २ दश प्राप्त)। जिहिष्य वि [निर्मिम] विदारित (सम्ब

रशे। जिद्दि वेको जिद्दिम (मा १६१) काल र शामा)।

णिद्विष्यंत देशो णिद्धा = नि+शा।

व्यद्धिक वि [निसित्त वि च च क क (यण्ड ) श्राप प्रत्र)।
व्यद्धिक केलो निष्ट्रिक (पुल २, ४६)।
व्यद्धिक केलो निष्ट्रिक (पुल २, ४६)।
व्यद्धिण वि [निष्ट्यीन] मुन्न (पुत्र ४४४)।
विष्ट्रीण वि [निष्ट्यीन] मुन्म (पुत्र ४४४)।
विष्ट्रीण वि [निष्ट्यीन] मुन्म क्याव हत्काः
सुरु भ्यत्वि विद्योग हेड्डे कि पानिर्वेषणे
पुत्रक (१ (छन ७२६ दें))।
व्यद्ध विद्यानु प्रौप्योध-विरोध (वीष १)।

तुका ( एव परंद दा)।
पितु के [स्तित्तृत्ते] सैप्तीमनियेष (बीच १) ।
पितुका वि [नितृत्ते] रे ग्रात प्रमानक विस्ता
वृद्धा (ते १११२ मात) । २ विमीत महुत्ता
(ते ४ १९) । १ मान, बीमा (बाय महुत) ।
४ मिनन विस्त (तत्त ११) । १ याचेमान्त
वीप्तमयीत्त्त (व्य १) । १ वृत्त वायत विस्ता
वृद्धा । ७ विस्ति एक्तता । व सत्त वृत्ते के
तित्र विस्तित्त (हृ १ १११) । १ वयसात्त
(प्रमु १ १४)

णिहुआ नि [वि] शब्दानार-परिव सनुषुष्क, निरुष्टेष्ट (वे ४ से के ४ सुध्य शब्द श्रे । २ सुष्य श्रे का वि ४ स्था । २ सुष्य श्रे का सुरक्ष मैन्न (वे ४ से स्वार्थ) । १ न मुख्य मैन्न (वे ४ स मन)।

णिषुक्षण देशो जिहुसण (मा ४८३)। णिहुका की [दे] कामिता संमोप के निए प्रावित की (दे ४ २६)।

णिहुण न [दे] व्यापार, बन्धा (दे ४ २६)। णिहुण न [दे] निमान, इवा हुमा (पडम

१ ११७)। भिद्वस्थिमगा श्री [वे] वनस्पति-विरोध (परात १—पन ११)।

(पर्वत ( ---- व व र ) । जिहुब सक [ कामय् ] सेमोप का समिताप कला । शिहुबद (है ४ ४४) ।

णिहुबण व [निसुबन] मुख्य संजीत (कप्पू काम १६४): विशुवलक्ष्मीवस्थातीक्ष्मीया (मै ४२)।

पिहुल न [वे] १ गुप्त मैचून (वे ४२६)। २ नि सम्बद्धिकर (स्ति २६१७)। वेदी जीकृषा

णिह्रुकण न [के] १ गृह, वद सकान (१ ४ ११ है २,१७४० पुता पर ७२० दी स १८ १ गाम मिशे। २ वयन सी के कमर के तीवें का मान (१ ४ ११)।

णिहो च [न्यग्] नीचे (पूच १ १,१ १)। णिहोड सक [नि + वारय] निवारण करना नियेव करना।

णिहोडइ (हे४ २२) । वक् णिहोडेन (हुमा)।

णिहोड सक [ पाटम् ] १ विधना । २ नास करना । सिहोडाई (है ४ २२) ।

णिहोडिय वि [पातित] १ गिरामा हुवा (रंग १)।२ विमारित (वत ११० थी)। पी सक [सम्] बानाः समन करताः स्रोह

(हे ४ १६२ मा ४६ म) मिन एगेहिन (मा ४४६)। बङ्ग जिल, जेंद्र (से ३ २, गउड मा १६४- छप २६४ टी मा ४२)। संङ्ग जिल्लुण, नीर्ड (गडक्ट विसे २२२)।

यो तक [नी] र वे जाता । र कातता । वे कात कपान व्यवता । एक छ्यद ( वे ४ दश्च विते दर्श) । वह जेंद्र (ता ४ : दुना) । क्वह जित्र देता प्रांत्र प्रांत्र । इस्त श वे ६ द : बुना ४७६)। चेह याह्म छेंद्र जीवामाण जेंद्र जा (ता ४ -मुक्त २६४ दुना यह या १०९)। हेह जेंद्र (ता ४६७ दुना) । हु छोद , जावळ

िस्पानद (सण्)।

पोलला वि [व] समीचीन, सुन्दर (पिन)।

पोलारण व [व] बॉन-चटी बनी रजन वा

स्टेट कवार (वे ४ ४३)।

(पठम ११६ १७ मा ११६)। प्रयो

जीह की निर्तिति र त्यार चित्रत स्पन्तर, स्थारम स्पन्तर (ठर १ वर्ष सद्दा)। २ तय बस्तु के एक वर्ष की मुक्तवता मात्तरताला मत (ठर क)। सरस न दिशास्त्री नीति-

प्रतिपारक शास्त्र (मुर ६ १४) मुगा १४ ) महा)। पीच्य की [नाका] दुस्या नहर, सार्पण

चान्य का । चाक्य | दुस्या नाहर, सारक्षि (हुमा)। पीक्सय वि [निज्यत] निवित्त संपूर्ण निव

आरुप व [निजात] मिल्ली संपूर्ण जिय नीजमंबरपार्ण वीट्ट बाइल मुतस्त' (जिबार ८)।

णीचळ म [माचेस्] १ मीचे, बर (हे १ १६४) । २ पि नीचा, बच-सिच्छ (दुमा)।

जीबद्ध देशो जिन्ह्युई (गुहि) ।

योजह रेवो जिस्तुह = रे. निर्देश (धन) : यी इस्लो पिक्क (गार २ इरि १६)। लीज तक शियु जिला पमन करना। खौल६ (🕻 😾 १६२) । छोर्खिंद (रूमा) । र्जाञ्ज सक्द निर्धी श्रेमे कानाः २ वस्टर ने कान कार निशासना भारमंद्रास्त्र स्टिन्हे, क्यार बराज्यार (बतार १२) । मनि मौलैंदिर (मक्ष) । यह जीपेमाण । करह मीणिग्रज्ञ यीजिश्वभाग (वि ६२ धाना)। संक्र जीणक्रम जाजसा (महा उग)। पाणावित कि [नायित] दूतरे द्वारा से भावा गया स्रम्य हारा सानीत (इप १३६ पीलिज वि [श्व] प्या ह्या (पाप) । मीजिज विजित्ती है से बाबा क्या (का **५६७ टी पुरा २८१) । २ नाटर निकला** हवा (ए।या १ ४) 'क्यरप्यविद्वधारिमाए नीणियी पंतरस्मरी (मुपा १०१) ) भीषिमा की [नीतिमा] *पर्रापेत्रव बन्*र नी एक माति (जीन १) । श्रीम वृं भीषी १ वृध-विशेष नवेशना देतु । २ श क्य-विकेष (बस ४, २ २१) । जीस दू [मीप] दूत-विशेष वदम्ब ना पेड़ (बटल र चीरा है र २१४) । थीमम दि [तिमैस] सम्भ-धीत (पण्य 1 () 1 जीवी **दे**ती शीश (दुमा: वद् ) । शास्त्र (तीचे ] १ तीच प्रवत्र अपन (इस नुस १ ७)। २ रि धमरान (नुस ६) । । । । । । व भिन्ने प्रीप्ति । २ वर्ष-शिरेष, भी शुद्र जाति य जन्म होते नानाएए है (सार्थ प्रवास)। ६ नि नीय केष में प्रभाव (बूच १, १) । र्खाय रिमिनी ने नाम नया (प्राचा उप TT () ( कीय रेगो जिब्ब = निव (दन) ।

(TE XXI) 1

(इस ११६) ।

रा चेतमा क्षे [भीचेतमा] नही

र्पार म निर्देशन पानी (कुमा प्रामु ६७)। निष् ि निषि समूत्र सामर (मुपा र १)। "स्द्रन दिही कमत (वी १)। बाह दे विवाही येन सम्म (क्य दू ६२)। "हर में िगृह निमुत्र सागर (क्य पू १११)। "दिर्दरियों समुद्र (इस **१**८६ दी)। किर प्रे विस्ती समूद्र (अप १३ मी)। फीरंगा की दि नीरकी सिर का बनप्राटन विधेनम मुंबर (वे ४ वे१ पाद्य) । पीर्व सक [सम्अ] तोइना भःसना। कीरंबद (द्वेप १ ६<u>)</u> । णीरिजिज वि[सम्ब] तीवा इसा प्रिय (411) 1 गीरंग नि [शीरनमं] तिरुद्ध (बजु)। फीरण न [व] बार बारा 'विननो रंजनगर्ब गीरिवयमीच्यादर्शदूर्स (न्ना १ १)। जीरय वि मिरिक्स रे रबो-रक्केत निर्मेश युक्त 'बिर्फि वन्यार क्योरप्रो' (दुव १६) वरूल १६ तम १३७ पतम १ ३ १९४ वार्य ११२)। २ वे ब्रह्म-नेत्रकोक का एक प्रस्तृत (स ६)। पीरव संक्र का + शिप् | पातेप करना। क्षीयम (हे ४ १४१)। पीरव तक [सुमुख ] बाले को चाहता। धीरका (ह ४ १) । मुख्य स्तीरतीय (दुना) । प्यीरवर्षि [माझपक] मालेप वरतैयाचा (इमा) । प्रारस वि [नीरम] रन-एति सून्द्र (नवड) फीरसञ्ज्ञ व [मीरसञ्ज्ञ] वायौरत का (संबोध ५८) । भीराग ) वि [मैराग] चन-धील वीतचन सीराय ( (वस्ट दुव १२६ दुना) s जीरणु रि [ मारणु ] रजो-एड्लि क्रूप-एडेन्ड (481) : र्षाराम वि [मीराम] येव-परित, तर्पन (बीप १) । र्णादेशम वि [मार्थशम] गीवे अनेशका , र्णास सक [मिर + म] बार्र निवतन्त्रा । गवले, दोवारंव (स्

trifite (E)

१) । ३ रायकड का एक तुक्त, बालस-क्रियेव (से ४.१) । ४ क्रम्य-विदेश (सिंग) । ४ पर्वत-विशेष (हारे १) । ६ व. *पन* की एक कार्डि कीलन (दामा १ १)। » विहरा वर्णवाचा (परुष १ सर) । बैठ र्ष [क्युट] १ सकेद का एक केपपीर, शहेश्य के महिप-रीम्प ना मन्त्रिति देश रेरोप (ठा ६, १० ६४)। २ मद्गर, शीर (पायः द्वार २४७)। १ सहारेत तिन (इम १४७)। कमबीर र्र । करवीर रेरी रंग के कुलॉनाला करेर का येह (रान)। शुक्त की [ गुक्त ] उपलक्षिक (बालन)। सनि (ती ["गणि] रण विदेव मोसम भएरत (हुआ)। ज्ञेस वि बिर्य) नीत मैरपानाचा (नर्ख १७)। सस्य 🕏 [क्षेत्र्या] यगुर प्रव्यवस्थित (स्र (११ ठार)। बोसस क्यो स्रेस (१९९७ (७) । सेस्सा देवो "ससा (एव)। "वंत र्पु [बन् ] १ पर्वत-विदेश (हा २ १) वम १२) । र शह-विशेष (सा ४, २) । १६ रिकार-विदेव (ठा र. १)। कीछ दि (नीस) कन्दर साह<sup>®</sup> (शा<sup>दा</sup> २) ४ २ १)। केसी को [किशी] तस्ती दुवरी (सम् ४)। पीसनेती की [के] ब्रज्ञ-विशेष वाल-इव (है X X5) 1 णीक्षा की [नीका] १ मेरपा-विशेष एक वर्ष का प्रारमा वर प्रमुख वरितान (क्रम्म ४ १३) मन) । र गोलबर्लनामी सी ( वर्.) । णीक्षित्र वि [मिस्त] निर्वेत, निर्वेट (mi) i जीकित दि [सीकित] नीत नर्ज वा (श 1 (88 2 पीक्षिमा ध्यो पीक्षा (भन) । गीसिम वृत्री [नीसिमन्] भीतार बीवार्यः इरावन (नुग्र १२०)। जीशी की शिम्बी १ वनलक्ष-निरोप गीन (राग्छ १ पर ६ १)। र मोन वर्छ गर्मी की (पट्) ६ मान वा रोम (दुत्र ११६) । था-भुंद्र तथ [कृ] १ नियानत वरेना। रे

याच्योक्त नरना । तीत्रयर (१४ का

वर)। वर्षा जीलीदश (प्रवा) ।

श्रीलुकासक [सम्] वाना वमन करना। ग्रीलक्ष्य (हे ४ १६२)। णीलुप्पल म [नीकोस्पछ ] नीव रंगका कमल (हे १ बक्ष कुमा)। धीलय पृति । साम की एक प्रतम काठि (सम्पत्त २१६)। णीक्रोमास र् [नीस्प्रमास] १ पहाचि प्रायक देव-विक्रीय (ठा २३ व)। २ वि शील च्चाय को नीसा मासम देता हो (ग्राया 1 11 1 जीव वृं निष् वृद्ध विरोध करन्य का पेड़ क्षि १ २३४० कप्प सामा १ ६) १ णीवार प्रे जिलार] कुश-विशेष विशी का बेब (गराव)। कीवार प्रे जिलार] कीवि-विरोध (प्रम १ 1 7 1E) 1 क्रीची की [जीकी] सून-वन पूँकी। २ नाय इबारक्त (यब् ३ कुमा) । क्षीसंद देवी जिस्सेक = निःसंद (या ६४%) दमा)। वीसंक पु वि ] क्यम, केन (पर्)। धीसंकित देनो जिस्संदित (विश्व १६२) सर ७ १४४)। पीसंदा वि [नि:संबय] संब्या-एवत, प्रसंबय (धुपा ६६६) । जीसचार देवी जिस्संचार (परम ३२, १)। कीर्सद ( निष्याची स<del>म्मा</del>ति स्वका म्हण (परुष्ट) । णीसंदित्र वि [निष्यम्बित] भए **ह**मा, टपका हुमा (पाम) । णीर्मदिर वि निष्यम्दित् कानेवाला हक क्नेवाचा (गुपा ११) । णीसंपाय वि दि वहां बनपद परिभान्त हमा हो वह (वे ४ ४२)। जीसद्व वि [नि सप्ट] १ विमुख (पराइ १ १ पत्र १०)। र प्रवतः(बृह २)। ३ क्रिके र्धातराम, धरमन्त 'गौसरूमनेयणी य पा भरदं (उन) । पीस**प पू**[निस्तन] प्रमानः सम मनि (सुर १३, १वर कुम १६)। योसणिआ र मी [व] ल बेलि श्री (व चौसपी ∫४ ४**१**)।

पीसच वि सिन्सन्त्री सत्त्र-होन वस-रहित वि (पडम २१ ७४, इसा) । पासद्वी (ति:राज्य) र<del>ाष्ट्रपी</del>त (१ ७ २६ मिन)। जोसर मन रिस्] बीड़ा करना रमण करना। शीक्षयः (हे ४ १६=) इ मोमर्राज्ञ (क्या) । पासर पक [ निर् + स्] बाहर निक्नना । गीसरह (हे ४ ७९)। वह नीसरस (बोब ४४= टी) । र्णासरण न [निःसरण] फिल्लन एएटम (बच ४)। र्णासरण न [नियसण] निर्नेषन (से **१.** t=) 1 <sup>1</sup> जीसरिम वि ति सत् कि किनेत निर्मात (सपा २४७)। णीस**ड वि [नि:राज**] १ विस्वत स्पिर। २ बन्नदा-रहित पतान स्पाट भीसनतहिय वंदावपृष्टि मंडिमकडिकमावेसी (सुर ६ ७२)। णीसह वि [निजास्य] शस्य-पीक (पवि)। र्य सब सक [नि + शाबय ] निर्वाण करना श्रम करना । वह भीसब्गाज (विशे RUYE) ! जीसका देवो जीसक्य (प्राप्तम) । णीसवा वि [नि सपरन] राष्ट्र-रहित विपन्त पीछ (मुम्ब क नि २७६)। पीसवय वि [नि:श्रावक] निर्मेश करनेवाता (FIB TOYE) 1 पीसस म**र्क** [ निर्+ श्वस् ] गीवाय धेनाः श्वास की नीचा करना। श्रीससद (यह)। **बह जीसर्संद जीससमाज (बा ३३** दुव ४६। भाषा २, २, ६)। वंक जोस-सिम जोससिकम् (ग्रदः महा)। णीससण १ (नि:चसन् । फ़रवाय (ब्रमा)। णीससिम न [नित्यसिव] नःस्वास (ह 2 4=)1 जीसाई वि [नियाई] मन्द, यशक (हे १ १६ दुमा)। णीमद वि[निःसातः] शाबा-सीतः (स २३ )। भीसा की [दे] पीवने का बस्बर (बस x,

णीसा **रे**सो णिस्सा (कम) । जीसाइ वि जि स्वादिशी स्वाद-रहित (प्रवि णीसाण देखो जिस्साण = (दे) धर्मीव = )। णीसामण्य ) वि निसामाभ्य । धरा-जीसामझ । बारख (गडहा सुपा ६१: है २, २१२)। २ प्रद (पाप)। थीसार सक ितर + सारयी कार निकालना। स्तीसारक (मित्रि)। कर्मे नीसा रिज्या (इ.स. १४)। पासार ५ वि । महत्वप (१ ४ ४१)। णीसार पि [नि सार] शर-रविव फला (से 1 Ys) 1 णीसारण व निःसारणी विकासन, वाहर निकासना (भूर १६, २ ३)। णीसारय वि [निसारक] बाहर विकासने वाचा(से व ४०)। णीशरिय नि [नि सारित] निकासित (मुर X, (a=) : व्योसास देवी णिस्सास (हे १ १६ कुना प्राप्त )। पीसास ) वि [नि:भास, क] विश्वास णीसासय रे सेनेबाला (बिसे २७१५,२७१४)। णीसाहार वेको जिस्साहार: "नीसकारा व पबद मुमीय' (सुर ७ २९)। पीसिस वि निष्यक किया स्वयन्त सिक (पद्ध)। जीसीमिञ वि वि निर्वासित देश-वाहर किया ह्या (दे ४ ४२)। णासेयस 👫 जिस्सेयस (नीव १)। योसेण की निक्षेत्रि सोबी (नर १६ 82 ) I वीसेस 🖦 जिस्सेस (गवह 🗷)। णीहदुदुधः निकास कर (धाका २ ६ २)। णीइट्टुम [नि+स्त्य] बहर निका कर (बाचार, ११४)। णीइक विकिस्ती १ निर्णंत निर्मात (माचा २) १ १)। २ माइर निकासा हुमा (बृह् १३ क्स)। णीइडिया 🗣 [निद्व तिका] सम्य स्वान में ते कावा काता हम्य (शह १ तृ १८)।

णीइरमङ [तिर्+स्] १ नद्गर निरु-सना । छीइट्ड (है ४ ७६) ध्वक्र मीइरंत (सूत्रा ४६२)। संक्र- पोहरिस (निषु १)। ह. जीहरियम्ब (सुना १६ )। णीहर मक आरा⊬ क्रन्यु । सक्त्य करता,

पीड़िम्मप्र वि [निर्द्रमित ] निर्वतः निस्तत

( Y Y 1) I

22 2. 38) 1

जीइरियक्त (मुरा ४०२)।

विस्तान्त्र । स्प्रीयुख्य (हे ४ १३१) । पीहर धक [निर्+ह्रद] प्रतिष्कति करता। यह जाहरत, जीहरिश्रंत सि ६०

श्रीहर सक [ तिर् + सारम् ] वहर निका-चना । क्रि. गीइरिचए (उन ६ ४) । 🖠 थीहर यक [निर्+ह्र] पाचाना वाना

पूरीयोत्सर्वं करता । नीवृत्तः (हे ४ २६६) । जीवरण न [निस्सरण निर्देशन] १ कि मनः निर्देश बाहर निकासना (निरा १ ६ खाया १ १४)। २ परिध्याव (निच् १)। ३ चपनमन (सूच २ २)। **जीव्**रिक्ष **क्ष्रो** प्र**व्हर** = निर्+ धः जीव्**रिञ वि [निःस्त**] निर्णत निर्मात (सूर १ ११६, ३ ४६। पाय) ।

र्णव्हरिय वि [निक्क बित] प्रतिष्यमित (से ११ १२१)। আহিমিস (ছি) তথ্য লাখন অনি (ছ A AS) 1 जीहरिश्रंत देवी जाहर=तिर + हुद् : जीहार **प्रं**[साहार] १ हिम तुपार (चन्द्र ७२ : स्वय्त ६२ हुमा) । २ विष्ठा या पूत्र का ब्यत्तर्वे (द्वम । )। भीद्दारण न [निस्सारण] निम्नासन (छ २ 4) I

भीक्षारि थि [निर्कारिम्] १ विक्रतनेवासा । २ फेन्नेनाबाः 'बोक्छडीहारिका सरेख' (प्रापम सम ६)। जदारिति [निर्हादिन] गोप करनेवाला पूजनैयासा (ठा १ ३ पि ४ ६)। जहारिम देवो गिहारिम (ठा २ ४) धौर खाग ११)।

इर सक्नेशमाः 'पष्यग्राजीह्यार्ज' (धार्मी ७८७) । देवी पिहम । णुब [स्] इत्रवर्षी का मुक्क भ<del>वन -</del>१ व्याग्य व्यक्ति। २ वक्तेकि (स.१४६)। १ वितर्ज (६७)। ४ प्रतः। इ.विकासः । ६

सन्तर । भ हेत्, प्रभीवन । व सपमान । १ धनुवार बनुवरः १ प्रत्येष्ठ, बहुत्य (बजर है २ २१७) २१८)। षु स्र [तु] । १ भिष्यासूच व प्रम्पय (स्त २, १)। २ विशेष (विदि ६११)। णुप्र विकिश्व विकास (या वर्ष ३)। पुष्पार प्रशिक्षरी कुछ ऐसी भागन (चम)। भुक्तिय विदेशे कव किया क्ष्माः मुख्येत 'क्याया क्षेत्र कृष्टिया सुविद्यं से वक्सी, किलाय इत्यां (स १८६)।

णुचर्षि जिच्छी १ प्रैक्टिं। २ फिल व्लॅंग इपा(से १ ११)। णुम ग्रक [नि+अस्]स्वापन करनाः समद (हे ४ १११)। मुस सक दिश्वय दिक्त सम्बद्धक करना । सुनद् (द्वे ४ २१) । णुसम्बद्ध **स्थ**ित + सक्ती बैठना । सम्बद्ध ( पक् )। भुसस्य स्कृति÷सस्य ] हुक्ता। युमन्बर (हे १ १४)। णुमस्य प्रक [शी] सेता सूटना । सुमन्त्रह (RIS WY) 1

णुसम्बन्धः **व** [नियम्बनः ] हुक्ता (**एक**) । पुमक्त वि [तिपण्त ] केंद्र इस, उन्होंक्ट्र (qg t ! twy) ! णुमण्य } वि[तिसग्न] इवा इया औत णुमका है (दे र र र ४)। गुमित्र रि [स्वस्त] स्वान्ति (रुमा) । णुमिश्र वि [कावित] वस हम्म (कुमा)। पु**द्ध केदो जोद्ध**ा सुद्धाद (स २४४) ।

लुक्ज्य कि [के] कुत सोवा⊈मा (के v

আুৰৰ তৰ মি≕ক্ষয়ব্]সংশিষ करता। जुन्मह (हे ४ ४१)। बह्न बुन्स (**5**41) ( भुसा को [स्तुपा] दुननकु दूर के का (प्रयी १ ३)। जुटर देखो ज़िटर=सुर (व**ब**ादे <sup>१</sup> णुण वि[स्यून] कव कन (स्पदः१६)। णूणे ) य [जूनम्] शतमर्थे साहत णुजे देशसम्बद्धाः देशसम्बद्धाः २ तेर्ज विचार। १ ह्यु प्रशेषन । ४ काली

<del>पीक्षम-नेत</del>

६ प्रस्त (**६ ९** २६: प्राप्त क्रुमत कर स्त् १२, बृह् १३ मा १२) । भूतक वि[मृतन] नक्ष नवीन (वद १)। पुपुर ध्वो जुबर (बाब ११)। णूस सक [क्लाइम् ] १ डकमा विकास भूमइ (इ.४.२१) । सूमित (साम ५ १६) । यक्क जूनीय (या ८६६) । ण्यन दि र प्रचलकात, विदासाः र प्रंतरम कुठ (पर्सा १ २)। **१** शास क्र (नम ७१)। ४ प्रम्बल स्थान द्वार कीय (ब्रुप्त १ व इः सव १२ १)। १ सन्वसर् ध्रह सम्बद्धार (स्त्र)। भूम न [दे] कर्म (तूप १६ <sup>३ १) १</sup> निक्र क [शृक्ष] भूमि-पृक्ष (बाल्या २ ६ \* () : णुसिक वि क्वादित किया क्या किया<sup>जा</sup> हेबा (के १ ३२:पाम कुमा)।

ण्**सिक दि [दे] योचा विश्वाहवा (स्प**र् ₹**₹**₹}1 णुष्याच्ये [दे] शाक्षा अन्त (दे ४ ४३)। णे व पार-पूलि में प्रपुक्त होता सम्बद (धव)। यंभ देवो या = हा। भंक केवी था⊏ शी। णेम वि[नैक] सनेक नहुद (पक्रम ≰४ ११)। "विद् रि ["विव] सनेक प्रकार का (पडम ११६ १२)। भेश म [नेंब] नहीं ही क्वांपिल**हीं** करी नकें (वे ४ ३ ३ का १३८३ क्या गुर ३०

y 22

बेप की सकावर नारक मादि में दरदे के श्चेतर का स्थान जिसमें भ7-नदी नाना प्रकार का देश समावे हैं; रक्षणता नाटकशाना (शाबा १ १)। २ वेष (विसे २१८७ सुर ६ ६२: लग्र युवा ११६)। मवस्यण न [दे] निरंधन, उत्तरीय वस का

साचन (कूमा)। गंबरिबम वि जिपध्यित विको वैप-तूपा वी हो वहः 'पुल्सिनेवरियम' (विपा १ वे):

णेवाइय वि निपातिक *नि*पा<del>त निपान</del> नाम सम्पद्मादि (विशे २०४ सन्)। णवास र्]निपास्त्री १ एक मास्तीय देत,

नेपाम (स्प प १६६) मूत्र ४४०)। २ वि नेपान-देशीय नेपाची (पदम ११ ११)। मेबिजा ) म [निक्य] देवता के बाने बस भवेच्य हिमाँ सन्त सादि ( व १२२

मा १६)। पेक्नाण रेडो जिक्नाम <del>- निर्वा</del>श (प्राचाः बुद ६ २ । स ४४४)।

गेम्बुअरेपी णिम्बुज (स ७३ टी)। णेक्यद देवी शिष्यद (इस ४६*०* दी) । णेर्साग्गव **दे**नी जिसगित्रय (नुपा १)।

णस्त्रि वि [नैपदिन] मा<del>उन-विधेव</del> से कारिष्ठ (पन ६७) वंदा १०) ।

णसिक्का विविधिको स्वर धर्मा (स ४ १३ वीय मद्ध(२ १३ वस)। गैसल्य पू [द] वश्चित् नन्ती वश्चित प्रवान

(RY YY) I णमरिश्या ) धी मिर्चाष्ट्रश्ची नेराश्चिधी णसर्था

🕽 १ विश्वर्णेत निधीपत्तु। २ निधर्मन से होनेबाना वर्ष-बन्द (ठा ९ १ नद १)। णसप्प व [नीमर्प] निषि विशेष बन्नर्शी

रामा पा एक देशविद्यत निवान (ठा ६) (कार्दरी)। शेसर वृं [वें] चीर तूर्व (४ ४४)।

णसाय रेनो जिसाय = नितार (ध्रत्र) । गतुरुव [वे] १ बीह मोठ, वोठ । २ वॉवः ।

क्ष विकारतनेता व्यक्ति विदिश्लीपूर्व (31 11 1):

शह बुं [स्मह] १ यन धनुसन बैन (राय)। २ मैन ब्रारि विषया रम-परार्ष । ३ विषया, । वागाण्य रि [मागीण] प्रवदार्व (माम) विरस्तर (हे २ का ४ ४ ६। प्राप्त)।

पाइस पु [स्तह्न] कर विशेष (पिर) । थाइल कि [स्तेइल ] लोडी स्लेड दुव्य,

पिनयाई बेह्नाई प्रलारतामी विद्यालीमी (वर्मीन १२६)। केहाल वि [स्तेहचन् ] रनेह-पुत्र, स्तिग्व

(हेर १११)। लेहर पूर् [नेहर] १ वेश-विटेप एक धनार्व

रेश। २ उसमें बस्तेवानी सवार्य नारि (परहर १---न १४)।

णो प्र[नो] इत सर्वों का सूचक स्थ्यद---१ नियेन प्रतियेव यजान (ठा ६ इस यज्ञ)। १ भिष्मण भिष्मताः 'बोस्ट्रो मिस्सनावस्मि'

(विशेष )। १ देश, भाव, यंद्राः हिस्सा (निमे 4 c) । ४ धनवारहा निरुप्त (राज)। "आरम र् [आरम] १ दानगणा

भ्रमावा २ भ्रावम के साव मिश्रहा। १ मानम नाएक धेरा (बानम निसे ४६) ±३३१)। ४ पदाचै दा यपध्याल (छॅबि)। इदियन [ इन्द्रिय] मन झ<del>न्द</del>ाकरस्य वित्त (ठा६। सम ११ उप १६७ टी) । इसाय तू "कपाय" श्वाय

के बहीरक हास्त्र भगैयह तम प्रदार्श ने मै

हि—्हास्य चेठि घर्सद, शोर कम **कुपु**न्दा वृषेत्र ब्रीवेश मीर नर्युतक्षेत्र (बस्म १ १७ ध १)। किवसनाण व [किवस्थान] सर्वि भीर सनापर्यंद अर्ल (हर २ १)। गार वूं ["नार] भी रून (धन) । गुण वि शिल् विवार्ग प्रतास्त्रविक (प्रक्ष)। र्जाय दे [आंख] १ जोर भीर संजीद से

क्लि प्राचं स्थल्यः। २ स्थीयः, निर्वीदः। ६ भीव नाबदेत (विते) । तह वि ["तम] नो वैसादीन हो (स ४२)। लाम [दे] इत सदी ना नुषक सम्पर---

१ भेरः । २ धामन्त्रत् । १ विवित्रता । ४ विदर्गा द क्रमेन (बाहुक)। या दे [तृ] दुलः वट को सगरकातीन मान्त्रा मन्त्र केर इरल्डी (बर्बर्ट **११**28 १२28) i

लाउरर रि [दे] धनोला, धरूर (चित्र) ।

(पणु १४)।

पाविज रेबो पावित्र (धर)। जोसदिया से [मनमहिन्य] दुर्शन क्र बानरा कुछ-बिरोप नेनारी, पार्वकी (पार्ट पि १६४)। णोमाक्रिया **व** [मनमास्त्रिय] स्मर रेचे

(हि १ १७ ३ मा २८१३ वर्: दुना

जोजुरा व [सोस्या] श्रृत पुर (दुरव ११) :

मिन २६)। वामि दृद्धि रसी रखु (१४ ११)। पोछड्जा ) को दि नातु नीन नात (र थो**डच्छा**∫ ४ देर्∫≀ षोइस्क[क्षिप्तुत्[१फॅनव।शेष्टा करना। खोल्लइ (हू ४ १४६) वर् )। स्प्रत्मेद्द (पा वच्द) । इनक जोक्षित्रय (दुर १६ १६६)।

णाहिम वि[मोदित] प्रेरित (वे ६ ३२) कार १, पकार शास १४)। प्रोक्ट पू 💽 बायुक्त, सूना वा नुवेदार सर् प्रतिनिधि (१४ १७)। गोइस र् स्थिइस | क्यांच शब्द-विशेष (गर्.

पि २६ । समित ११)। पोइक्षित्रा को [तक्फक्किय ] १ ता**र्थ** फ्ती नवेहपन क्सी (हे १ १७)। १ कृतन फलबली (इना) : ६ तृतन कर रा क्त्वम 'छोड्नियमप्पडो कि छ नक्ते,

मन्त्रने कुरबद्धरश (ना ६)। जाहा की [स्तुपा] पुत्र की भागी **उ<sup>त्रप</sup>्र** वनोद्धः बहु (वि १४ : इति १६) । **ग्रम्भ विकिद**ेशनकार (वा२ ९) ।

ज्जास देवी जास = न्याप (सप्त १३४) । ण्युम **रेवो** ज्यम (सा४ ४)। प्ट्रेस १३ वाक्सलंकार और पारास्ति <sup>क</sup> प्रपुक्त दिया जाता सम्मय (कृत्र, कृत्र) । **प्रद** सक (स्तप्रम् ) शहसाना स्तात करावाः

छानेद (दुप्र ११७) । क्याह- व्हविजीत

(नुगा ३३)। संक्ष व्यविक्रण (गि २१३) । **प्रदान (स्म**स्त्र) स्तान क्राना स्ट्रनाना (इस्त)। न्द्र्यम वि [स्मपित] वितरी स्नात वराया

वबाद्दीबद्व(न्दर ५ प्रवि)∤

ण्या } घक्त [स्ता] स्तत करना, नरानां । न्दात्र । एतर (र ४ १४) । व्यक्ति ररग्डेनि (रि. १११)। परि

(पि ३१६) । बद्ध- व्यायमाव्य (लाया १ १६)। संक जहाइचा, जहाजिचा (पि 323) ( क्ट्राज न शिलाली नहाता नहान (कप्प प्राप्त)। पीछ पूर विशिष्ठ स्तान करने का पड़ा (सामा ११)। व्हाणमहिया की [स्तानमिक्का] स्तान-योग्य पुरा-विशेष मानदो-पुरम (राम १४)। ण्हाजित्रा को [स्तानिक] स्वत-दिया (पर्छ र ४--पन १९१)। ण्डाणिय वि स्नितिती विसने स्नान क्या ही वह (पन ६०)।

ण्हाय वि स्नित् नियने स्नान किया ही बद्ध, बद्धाया हुमा (क्य्या सीप) । न्द्रायमाण देखो न्द्रा ण्हाकृत स्तियु १ प्रस्य-बन्बनी मिध नस. धमनी (धम १४१ पएड १ १ छ। ५ १; बाबा) । २ धनवरा धेर्गी में की एक भेली कुम्हार पटेन माहि (बोस्प्रकार) ४६४ पत्र सर्वे ३१)। ण्डास दे<del>वो पहच</del>ा एडावड एडावेड (भवि: पि १११)। बद्ध पद्मायञ्जल (पि १११)। **धहः जहा**विङ्ग (महा) । ण्हायिम वि स्निपित नहताया हुया

जिसको स्नाल करामा गया हो सह (महा मवि)। च्हाबिश प्रे नािपत हिवाम नार्द (हे १ कुमा)। चेत्ए एक्कवियं धावर्ण मुशनियो कुमर्थे (स्प ६ धी) । पसेवय र्ष मिसेयकी नाई की घरने धरकरण रखने की थैबी (तत २)। ण्हु य दि ] निरुपय-सूचक सम्पय (बीवस 1( = 5 ण्डुसा की [स्तुपा] पुत्र वयू पुत्र वी भार्या, पत्रोह (भाषमः पि ३१३) । ण्हुहा देखो ण्हुसा (सिरि २११)।

॥ इस विरिपाइअसइमहुण्यमे जमाधहत्वहुर्वन्त्रको बहुर्वेख नपायद्वर् संक्लाको बाईसदमी तरेंगी समत्तो n

त

त पू [त] रन्त-स्वामीय व्याप्तान वर्ण-विरोध (प्राप्रः प्रामा)। वंग[तन्] मह (ठा १ १ है १ ७) वप्यः दुमा) । त व [स्पन्] दुः वय वि विद्वा देख क्याह्या (म ६८ ) । त केतीतया ≈ स्वप् । दोसि वि [दोपिन्] १ वर्ष-रोयो । २ दुष्टी (विष्ठ ४७१) । त्रअंदेगी तम = तपस् (इस्य १९४)। तइ वि तिनि विजना (बर १)। तुः (धरा) म [तत्र] बहुर्द, इममें (बड़ )। तद् य [तश्] धन समय (प्रत्य) । तद्रम वि [वृतीय] ठीवरा (हे १११ तद्वज (या) वि [सादीय] तुम्हार (महि)। तर्भ स [नरा] रम मनम मितियो रुगा वेती बद्गापर तह्य बम्बदेवेछ ।

वाएए घर मिखनो भगिली ठालाम्य दायस्या (47 t 174) i वदमहा (पप) म [वदा] इस समय (महि मखो । तइमाम [तवा] उत्र समय (हेव ६%) ना € ₹) ( वहमा स्म [चृतीया] विनि-निधेय तीत्र (सम RE) 1 तइया ध्ये [सूतीया] तीतरी विमक्ति (वेन्य ₹**८**₹) ( वास्त्र रेको तेष्ठ (२७ १२१) । वरखेर में [बिसोरी] दीन नीच-स्वर्त मर्स्य भीर पातान (नुस ६८) । वात्यंक हेन किया क्या कार केली वासीय । (यान १ १ शंद २ राज प्रवर्श पूर वे २ : जुना वृक्षका वृक्ष तआ देवी तय (दा ३ १ प्रानुष्ट)।

। तदस (पप) वि तिष्टरा विशेष पन तप्त म (१४४ वर्)। तइ की जियी | तीन का समुद्दाय (भूपा १०)। तईम देवो तड्म = तृतीय (मा ४११) मन)। ) न जिप् नान-विशेष सीसा ततम ∫ शंगाँ (समें १२श मीप का १०६ टी महा)। यद्विका स्पे ["पद्विका ] कान का प्रामुक्त विधेष (दे १, २३)। वउस न त्रिपुर्य देखी तडसी (धन)। "मिजिया सी "मिजिया पर शेट शिरेन नीनिय जन्तु नी एक वादि (नीन १)। वडम न [प्रपुष] बीय नगरी (दे ८३४)। वडसी ध्ये [प्रपुति] शर्रेयेन्त सीच श पाद (सा १३४)। त्रय म [ दनस्] बनन क्षम कारण है । २ बार में (बत्त र दिवा १ १)। शण्यारिस वि [स्वाहरा] तुन वैना, नृज्याचे

त्रपुरा (न ३२)।

वत्तव-उपन्यासः 'सं किम्न्यवैदियोगर्वे (हे २

१७६: यह )- 'ठ मरखमखारेने विहोद

बच्ची उरानदीरं (सा४२)। "बद्दाय

["यथा] क्राइएए-प्रकर्तक सन्पन (मानाः

र्तंड क विकेशाम में सबी इर्देशार। २ वि

र्देडम् (धर) वेस्रो तड्डम् । तडमहु (मनि) ।

तंडव सक ( ठाण्डवय् | तृस्य करना । तंड

शंबद न [ताण्डन] १ तूरन रुख्य नाम (पाय

बीव ३३ सूपा वर्र)। २ एक्टाई पार्वीक्ट्र

क्प्रदर्भक्तं क्यावंश्रेतिः कि मुद्धे (बस्म च टी)।

तंबविय वि तिएवविती नवाया ह्याः

र्वहरू वृं विष्हरू । भावन (स. १८१)।

ततन [तन्त्र] १ देत एट्(पूर १६ ४४)।

२ राज सिकान्त (तवर १) । ३ श्रतेन, भत

(इस ६२२) । ४ स्वयेक-विन्ता । १ विष का

थीयम विरोध (दुशा १ ×) । ६ तूम कल्यारा-

क्टिप: नुतं बांगुर्वं तेतं सरिज्यव ताम

व बनावी (विदे)। ७ विदा-विरोप (सुपा

४१९)। म्नुनि [\*ह] कल का माननार

(सुपा २७३) । बाह् दु [ बाहिस्] विधा-

विशेष से श्रेष आदि को मिटानेबाला (दुपा

ধ্ৰত দি [বাদ্ব] দিল কাদ্ব (বাদ্য १ ४

तंतकी की वि] रस्य बढ़ी और पारत श

र्वतवग ) र्र [वान्त्रवक] प्रतृतिहर क्यु

र्ततपव र नी एक बाति (गुब्देश्य, १४६)

संतिय पूं [तान्त्रिक] बीरण वजनैवाका

बना मोक्न-निरीप (दे १८ ४)।

र्वक्षविष (परा) देखी तकुतिक (मरि)।

मस्तक-पश्चित । ३ स्वर से समिक (दे ४,

र्तंथा देवो तया = तदा (गरह) ।

इंट न दिं । इस बीठ (वे ४, १)।

धस्य)।

(E) 1

वेटि (मारम)।

नर्वित (नक्क)।

रेकी संद्रुष्ठ ।

¥88) 1

विपादे ६)।

बस १६,१४६) ।

(पणु) ।

d--- 6¥8

एक भेव (बस्रिन २ २६)। भवा-पिरोप (दे ६ ४)। र्वती की विस्त्री] १ नोहा नाय विरोप र्चंदरची की दि] यह में ब्रुक्तम की काया (वे (कम ग्रीस सूर १६ ४०)। २ वीखा-Ł, Ł) 1 विशेष (पराह २ ६)। ३ तांत चनके की

तंत्राकी दि] यी केंद्र वैद्या (वे १८, १३ वा ४६ ३ पाधा वस्था ६४) । र्शवाय र् [तामाक] चारतीय शाम-विशेष

(चम)। र्वयिम पूंची [ताम्रस्य] पच्छता ऐप एकवा

(द्वर)। र्शियन [ताझिक] परिवादक का ध्वलने का एक चपकरख (भीप) । र्धावर वि वि] साम वर्शनला (हे ८ <sup>१६</sup>

गुडक स्वि)। र्वविस वि देशी र्ववस्थी (र ४, ४)। संबुद्ध न [दे ] भाषा-विशेषा पुरुलेखनगढुद

(गुपा ६)। र्शवरम प्रहित्तम्बरम्] इस्ता इस्ता (का प्र र्रविद्यी की चित्रे पुका-सवान बुक्त-विरोध ऐप्समिका (दे **१,** ४)। र्तबाक्टन [साम्बुळ] पान (हे १ १९४)

वंदीक्षित्र वृत्तिस्त्रुक्षिक्र] १ तमोसी पान वेष्यैनामा (बा ११) । २ प्रामः में होनैनामा र्वेदोकी की [राम्बूकी] पत्र का बाद्य (वर् र्टम वेको थीस (वह)।

र्वस पू (प्रयेश) तीराय क्रिया (तंत्र ४, ६४) स्था कमा ६, ६४) । र्वस वि [प्रयस्त] वि-कोशः रोजकोनवाना (देर २६ वंडड छार मार प्राप्त

धावा) ।

कुमा) । बीव ६)।

114) I र्वनोतिमा नाग ।

वेव्सय रेको विवृक्षय (मूर १६ १६७) । र्वत पू [स्तम्ब] एखर्विका दुव्या (हे २, र्थंद न [तास्र] ? वानु-विशेष, तांवा (विपा

मरुय-विशेष (श्रीव १) । विद्याद्धिय न धंदुक्तेत्रवन पु [तन्दुक्षीयक] ननस्पति निरोप

र्ततुक वेको धबुद्ध (प्रवम १२ १६८)। २

र्वतुक्सोडी ही हि तिलुबाय का एक उप-

[<sup>\*</sup>ज] गुडी क्यड़ा (जत २, ११) । याव पुँ ["बाय] कपड़ा कुलतेनाला जुलाक्षा (मा २९)। साव्य भी दिशाच्यी अपहा दुनने का वर, तित-वर (मन १४)।

देतु प्रतिन्त्री सूत तापा भागा (पठम १ (३)। ज गर्प कि चतप्रतुपित्रैय (पटन १४१ क्या २ १)। जा यन

एस्डी (विचार ६ सुर ३ १३७)। र्तती और कि क्लिक कानस्त वसर्वित

कप्पा(देश भ्रो।

(पद्दा १)।

४२८ क्रमा) ।

दुवाँ (पन्न) ।

विदेव (पहलु १७) ।

४ ६३ वर्)।

विभारिक विन कक्-विशेष (श्रीवे)।

रै फी है २ ४६)। २ दूं कर्ण मिकेया

३ वि सक्त भर्तनाला काम (पर्न्त १७)

यीप)। "बृद्ध वृं [बृद्ध] कुलुट,पुर्वा(युरः

११)। वण्त्री की पिल्ली एक नदी का

नान (नप्पू)। "सिद्द् र्षु ["हिस्तु] दुनकूट,

र्जनकरोड पून [वे] ताम वर्णनाना इस्य-

७वकिसि वृंकि] वीठ-किरोध क्यमोस (के

वंबकुसुम पुन [दे] बूध-विशेष पुरुष,

र्ववच्च न [चे] मात्र-विदेश 'प्रस्तुप्रकारकम्

कटपरेशा (देश हा बद्)।

वस्तिम् (ती १५) ।

(मा २) ।

ेतल एक [तर्क] तर्ज करना स्तुमान करना, घटनक करना। छन्केमि (वै १३)। बंक विद्यार्थ (भ्रामा)। तक न [तक] सङ्घ द्वाच (धीव वक्षः पुरा X 4 \$ 97 \$ 250) 1

तक पूंतिकी १ जिमर्ग विकार, मन्त्रक-बान (भा १२ ठा ६) । २ न्याय-राज (सुरा २८७)। तक्या की दि क्षेत्र, शक्तिय (वे ४,४)। तक्य वि (तक्कि) तक करनवाका (पण्ड **१३**)। तकर हुँ [तस्कर] चोर (हे २ ४' क्रीप)। तका कि की दिंदि करबी-मूल नेते का प्राप्त (बाका २३१ ८६)। तक्षति ) की [वे] बनयाकार कुन्न-विशेष वक्कभी (पए**स** १)। तब्ध की तिकें} केलो त ≍तर्र (ठार मुघ १ १६ भाषा)। सङ्गाङ हिषि [तस्त्राङ] स्वी समय (हुमा) । तक्किम वि [तार्किक] तर्कशास का जनकार (सम्द्र ११)। त्रक्तिगाणे देखो तकः ≃ तर्क। तक्कु पूँ [तकु] सूर्य कालो का सन्त्र तकुमा सकता चरवा (दे ३ १)। तक्कुय पूँ 🛊 स्वयन-वर्ष 'सम्माधिका सामेवा चहिन्संदिया नागरवा, परिचोधिया वन्द्रमञ्जाति (स १२)। दक्त सक दिश्त किनग, कारन्य। तक्ष (यह दे ४ ११४)। कर्म तमिल-बाद (कुप्र १७) । वक्क तकलामापा (मणु) । श्वक्य पू विश्वको विश्व पद्मी (पाप) । तक्का पूं [ तक्षम् ] १ भवनी कारनेनाता, बढ़ाई। २ विश्वकर्मी, निप्तरी-विशेष (हे इ १६ पर्)। सिम्रा सी शिखा प्राचीन ऐतिहासिक तमर, को पहले बाहुबर्सि की राजवानी की बद्द नगर पंजाब में है (प्रतम ४ ६वः दूप्र ६६) । तक्समा प्रतिशकी १२ ज्यार देखी। ६ स्वनाम-प्रक्रिक सर्पेन्टान (स्य १२१)। तक्काम न [तस्क्रम] १ तस्कान क्लीसम्ब (का ४ ४) । २ कि वि शीम, शुरुष (पान्न) । तक्स्रय देवो तक्स्रग(य २ ६) दूप 1 ((385 तक्त्राभ रेको तक्ता = त्वान् हि ३ १६ यद् )। तुगर देखो दगर (परह २ ४)।

त्तारा की [तारा] चेलिनेश-निशेष (स ¥44) वगरा की [वगरा] एक नगरी का नाम (पुन २ व)। समान वि] सूत्र-विका वामेका वैक्स (दे ५ १: मउह)। तमाधिय वि [तद्गन्धिक] एसके समान र्षववाचा (प्राप्त १४)। तथा वि [तृशीय] तीसरा (सम ८ उना)। त्य न [तस्य] सार, परमार्थ (माका मारा ११४) । | वाय वे ["वाद] १ तत्व-नाद, प्रमार्थ-वर्षी । २ इष्ट्रियार, वैन धैव-धैय क्लिप (ठा १)। सदान [तप्य] १ सत्य सवाई (हे२ २१ क्त २०)।२ वि वास्तुविक सस्य (क्त श) । स्थापुं [भये] सत्य हमीकत (पदम १ ११) विस्त पू विषय के के "वाय (ठा१)। **छर्वास** विने कीत कार (मर: पुर २ २६) । तिवित्त वि (तिवित्त ) छ्डी में विख्का मन सगा हो वह उल्लीन (विपा १२)। तच्या सक [तस्] क्रियम, भारता । तच्या (१४,११४) पर )। सं इ सन्धिम (सूप १ ४ १)। क्यक्क, वस्त्रिक्कांत (तुर १ ₹=) 1 ) वि [तप्ट] विका ह्या चल्लाक तिकाम ) 'ते निप्तरेहा फबर्ग तका (तथ t x 3. tvi t x t 3t va te. 44) ı सन्द्रम स्पेन [तक्ष्म ] द्वितना, स्टॉन (पर्स् १ १) की जा (ग्रामा १। १६)। त्तविद्वाद वि ] कराम मर्थकर (वे ४, विष्युद्धांत वेको सच्छ । विष्यस्थि वि [वे] उत्पर (पर्)। दकाधेकी दया≈ लाम् (दे १ १११)। सञ्ज सक [तर्जेय्] तर्जन करना प्रस्तेन करना। तमह (भिन)। तज्जैह (गामा १ १०) यह राजात समित सम्बद्धित वसमाण वस्त्रेमाण (गाँव पुर १२, १३३ खाचा १ का राज विसा १ १---

छप १४६ टो)। उदा पटम ११ १३)। २१ मुग १)। तस्य-मतीय (बान ४)। वस्त्रित सञ्ज्ञिकांत रेको सङ्घा वक्तेमाण तट्टबट्टन दि] मामस्य मामुपस चिंत्रमं चित्रमं महत्त्वाचा सवहरिति निवयपमी त्तरी की कि विशेष कर (के में, १)। तद्र वि [तप्र] किलाहुमा(सूम १ ७) । ष्टांगक देव (ठा २०३) । सुक्रतं (सुक्राः १६)। करना। तब्द (हे ४ १६७)। स्य वि दिया १ मध्यत्व पद्मपात-शित । २ समीप स्वित (क्रुमा) दे ६ ६ ) ; वहत्रहा [रे] देवी वहनहा (शीन है।

४२४ पन ११)। দনত রজিজার (জন র १३४) चळण न चिर्जनी मर्लन विरस्कार (धीप वस्त्रणा की [वर्षना] जनर देनो (पण्ड वज्ज्ञजी भी [बर्जनी] पूषरी मंत्रनी मंत्रूटे के पासकामी भेयुनी प्रवेशिमी (मुपा १३ हुआ) ३ बळ्याय वि [बळ्याव] बमान वादिवासा कट्याविम ) नि [तिजिद] वर्षिक मासिक दक्षिका (स १२२) सूरा २६३ स्वि)। तलुपारं तहबहार । हारेड प्हम्मि क्लिनेटो (सुपा ३११)। वट्टिया की दि वट्टिका] विशेवर वैत साब् का एक स्पक्रस्य (वर्गसं १ ४६ १ ४α)। बहुवि[त्रस्त] १ वय हुमा मीत (हे २ १३६ कुमा)। २ न मुद्धरी-विशेष (सम तब्रथ न जिस्तपी स्कर्त-विरोध (सन ६१) । वट्टि वि विदिम् विद्वार प्रस्तवासा (सूच तक्षिः ) पुं[स्वाद् ] १ ध्यकः विस्वतमा तद् द्व ) (स्वार) । २ भवान-विरोध का ग्रावि बर्डु 🕻 [सब्दू] महोपन का बायहरी वद सक [सन्] १ विस्तार करना । २ वक्ष पून [वट] किनाय चीर (शम्द्र नुमा) ।

१९)। र रि. मात नाम्कर वेपनेवाला

मनिवारा (धलु १४१)।

(वर्गीव १४८)।

वणुभव देवो वणु-ध्यव (वर्गव १४२)।

वक्षिम न [वक्षिम] १ विवित मौत। २ द्वद्विन

शासाम् प्राप्ति से मैचा हुमा मूमितम (से र

वत्तविभ न [पे] रेगा हुपा क्य**का** (मण्ड

2 YE) !

रोम बात (उप ११७ टी)।

तज्ञाह्य देशो तजुहुआ (पराः) ।

दुमा) ।

त्रपुत्री--तब्भक्तिय

वणिस प् कि विश्व नामि (देश व पर्)। त्रणाय प्रै तिण की बच्च बच्चका (पाम या ११ गउड)। क्षण्याय विदिष्टि साथ भीता (दे ४ २ पाधा गढडा से १ ११ ११ १२६)। त्तण्या भी [तृष्या] १ प्यास पिपासा (पाम )। २ स्प्रहा बाम्या दल्या (ठा २ ३) ग्रीप)। सु सुधावि [ बन् ] तृप्णा-बाला प्यामा। समरताल्हामू (पडम = === c Y\*)1 तुष्टाइभ वि [वृष्टिमन] वृषानुरु पवि प्यामा (वर्नेवि १४१)। सन् केयो तय = तत (ठा ४ ४)। तत्त न [तस्व] शत्म स्वक्ष्म तत्म, परमार्थ (जा ७२० टी पुत्र ३२)। आ म िश्वस्] वस्तुनः (टर ६०६) । व्यापि िंद्रों दिला का बातकार (पंचार) । <del>तत्त्र प्रे[तप्त] १ तीमधै नरक-मूमि ना</del> एक नरक-स्थान (देशन्त्रः )। २ प्रथम नरन मूमि का एक नरव-स्पान (वेवेन्द्र ४)। कत्त नि [क्य] यरम क्या हुमा (बम १९६) निगर ६३ दे र १४)। असाधी ["ब्रह्म] नपै-विटेप (छ २ ६)। तत्त य [त्र] ब्रां। सब, होत वि ि संबन् ] पूर्व ऐसे बाप (वि १६६) मनि १६)। वचरुमुत्त न [वस्त्रार्थमूत्र] एक प्रतिक पैन रर्शन-प्रत्य (श्राम्ह ७०) ।

त्रगृ•धि [सन्] रुपैर कामा (गा ७०० त्रचिकी विसि वृष्टि चंदीय (दुमा, कर पाम (१)। २ ईप्रधारमारा-नामक प्रमिक्षी २६)। इ. पि [सन्] तृष्ठि-पुक, (ठा द)। स्व दि [क] १ रुपैर से इन्ड सन्तृष्ट् (सन्त्र)। क्ष्मपत्र । २ वृंशद्दता, पूत्र (सः ६०६) । त्ति भौ दि रिमाड़ेस, हुदूम (दे ४.२ "अत्य की ["करा] पंपन्नाध्यासमामक स्य)। २ बन्परता (६२)। १ किना पूजिशी जिल्पर मुक्त जीन रहते हैं सिख विकार (बार ५१ २७३ सासुपा २३७ शिमा (सम २२)। रह पून [रह] देश २a)। ४ वार्टावास (मार वण्यार)। **४ कार्ये प्रयोजन (पराहर २ वन १)**। त्तिय वि [ तायन् ] काना (प्रामु १४६) : क्षणण (भव) भ निए बास्ते (हूं ४ ४२% र्ताचस ) वि 🚰 तलर (पर । दे ४, ६ त्तिहि देश ११० प्रापृ ११)। तत्तु(मप) देवी तत्य≔ वत्र (हे४ ४ ४ द्रुमा)। तत्त्विक्षन दि]सुरत धैमोन (११६)। वर्गसमान वि चि चित्रत (पर्)। वची देवो सओ (दुमा की २१)। सह वि [ मुस्ते विस्ता गुँइ उस चरत हो वह (गुर २ २३४)। वचोद्रच न [दें] वर्षामुख उसके सामने (गढण) । तत्व च [तत्र] वहाँ क्यमें (हेर १६१) : सव वि भिवन् ] पूर्य ऐसे माप (पि २६३)। य वि [स्य] वहां का स्तृतिकाता (इप १६७ थी) । तस्य वि जिस्तो भीतं वत्त ह्या हि २१६१ कुमा)। तरथ देनो तब ≈ तम्म (वर्गसं ६ ४ स्ति तस्यरि पू जिस्तरि नय-विशेष 'तस्यरितपुरा हविया संप्रेड मन्म पुरे (यन्तु ४) । तदा देवो तया = तवा (मा ११६)। वदाय वि [स्परीय] तुम्हाच (नहा) । सवीदेवो सभा (हेर १६)। तक्षअवय न कि ] तृत्य, नाव (हे ३, ८)। र्वाद्रभस । न [दे] प्रतिरित प्रतृहित वरिअसिय इस्तेन (दे र, का नरहा तरिष्ठह । राम)। वदासि देवी व-दासि = खादीयन् । तदिय प्र [तदित] १ म्याकरत-प्रतिद प्रत्यव-विदेश (पएइ १ २ निसे १ १)।

२ तक्ति प्रस्पय की प्राप्ति का कारण-मूख धर्ष (धए) । तथा देखो तहा (ठा३ १३७)। सद्मय देवो सण्यय (मुर १४ १७४)। सन्हादेको तण्हा (मुर १ २ ६ दूमा)। तप देको तथ = तपस् (पैड)। सप्प सक [तप्] १ तप करना। २ मक गरम होता। तप्पा, तप्पीत (गिमः प्रासू X1) 1 तप्प सक [तर्पयू] तून करना। पह वप्पमाण (मूर १६ १६)। हेइ 'न श्मी बीबो सबो सपोर्ज काममौगेडि (भाउ १ )। कु नद्येयस्य (सूपा २३२)। ठप्प न [तस्प] राज्या विद्योग (पाप्र)। म वि [रा] रुप्या पर कलेवापा सोते बाला (पएड १२)। ष्टप्प पुन विश्र] क्रोंथी क्रोटी नौरा (परह १ १ विशेष ६)। तप्प पून [तप्र] क्दी में दूर से व्यक्तर भारत ह्मा कछ समूह (एवि ८ टी)। **वप्पक्षिमञ्ज वि[वत्पादिम्क] एस पञ्च का** (मा १२)। तप्पद्ध न [तात्पर्ये ] तापर्यं मतस्र (राज)। तप्पण न [वर्षण] १ सन्तु, सतुमा, सत् (भएह २ १)। २ झीन- वृति-करात प्रीत्वन (नुपा ११६)। ६ स्निग्व बस्तु से शरीर की मानिश (छाया १ १६)। वप्पणमान [दे] यैन शाबुका पात्र विशेष वरप्रस्थी (हुसक १)। वप्पत्राद्धालिया भी [र] मक्सिशिव भीवन (बरा व वृ बनुरेवहिंशी परिम नहिंदी)। दप्यभित्रं म [त प्रमृति] तबसे, तबसे सेकर (क्य सावा ११)। तप्पमाण देनो तप्प = वर्नेव् । वप्पर रि [वस्पर] बाधक (रे १, १)। वप्पुरिस र्थु [वस्पुरुप] स्पानरल-प्रक्रिज सनाग-विधेष (मणु) । तप्पयस्य देशो तप्प = तर्पम् । वस्थितिय विद्यास्तिकी प्रतका रिक

(भग १, ७)।

तरमत वे तिरासयी बडी बन्म इस बन्म के समल पर-जन्म । सरण न सिरणी बर मध्य जिससे का बस्त के सवात हो परकोच में भी बाम हो। बर्जा मनप्प होने से मान्त्रमी कम में भी जिससे मनस्य हो ऐसा सद्या(सव ११ १)। सब्सारिय व सिवामार्थी बाब भीकर, करें चारी कर्मकर (घर ६ ७) । हरभारिय प्रतिद्वारिकी क्यर देखी (मन . . . . .

23/

तब्भम वि विद्यामा । उसी भूमि में कराब (48 2) 1 तर्भात्त प दि । श्रीहर अस्यी (प्रक्र ६१)। रच्या करना । यमर (प्रक्रा ६१) । राम पुंचि शोक, मक्योस (१ ४, १)।

तस स्वयं तिस्सी र क्षेत्र करणा। २ सक. दम प्रेन [समस ] १ यन्यकार । २ यकान (के र देन विश्व ध बीन वर्गन)। तम वं तिमा सात्रकी नरक-प्रविकी का पीव (कम्म १ पेच १)। समध्यमा धी विसप्रभा दावना नरक-पुनिनो (सन्त)। तमा की विमा चलनी नरक-पृथिनी (सम ६६ ठा)। "तिमिर न "तिमिर] १ सम्बकार (इड ४)। २ सवान (पवि)। ६ चन्वकार-समूद्ध (बह ४)। प्यामा भी िंशभा किली नरक-प्रतिनी (पएए t)। तसंग् ( तिसही सतवाच्या वरका वच्चा समा (बुर १३, ११६)।

सम्बद्धार पु [समान्धकार] प्रश्त धन्तकार (पदम १७ १)। समजन दिविद्या विसर्वे साथ स्वापर रसोई नी माती है यह (दे १ २)। समिण पूंधी [व] र द्वाव द्वाव । २ भूवं बूर विरोध की छात्र जीवपन (दे २ २ )। तमय दूरिम की १ चौचा नरक का एक नरत-स्वाम (देरेन्द्र १ ) । १ वाचरी नरक-भूमि का एक नरक-स्वान (रेशेन्द्र ११)। वसरान [वसस्] मन्त्रराठ व्यवस्थि रिनाम (शब्द १६ )। रामस वि [रामस] अन्यरारशाचा (रत ६, 1 2) i

तसस देखो तस = तपच 'चंतरियो था दमीर वान वंबदै वंबदै संबोधितो' (पव २)। वमस्सई को विमस्पर्वती योर मन्त्रकारणांकी un (er t): तमा और तिसार र करनी नरक-प्रतिकी (बम ६६) हा ७)। २ सबोधिशः (हा १)।

समाद्र सक भिन्नम् । दुनाना फिराना। वमाबद्ध (हे ४ ६)। यह वसाइव (क्या) । वमास प विमास्त्री र बल-किरोब (रूप रे वेरे दीर मत ४२)। २ ल. तमलाबक्ष काञ्चल (से १ ६६)। विभिन्न पे विभिन्नी पौचर्य गरक का एक

गरक-स्वात (देवेन्द्र ११)। विभिन्न विभिन्नी र बल्कार (सूचर थ र) । सहा की "शहा एक-विकेत (14) I विभिन्नेषयाः व विभिन्नास्यकारी प्रवस भन्तकार, नीर संवेश (सुध १ १ १)। विभिस्स ध्वो तमिस (१ १ १६)। वनी को विमी । चनि चन (वनाः)। तसकाय केवी तसकाय (वर ६, १,—वन 9 54)1

त<u>सुकाय दुं [तमस्क्रय]</u> धंदकार-प्रवय (क्र ¥ 3)1 तस्य वि तिमस् ी श्वन्तान्य वास्त्रन्य । २ मस्यन्त बमानी (सूब १, २)। तमाकसिय वि [तम कापिक] प्रव्यव क्रिया कलोबाला (तुर्घ २, २)। वस्म यक [ वस् ] क्षेत्रकता। (या ४०३)। वस्म देवी सम = दम्। तस्मद् (प्रतु ११)। वस्मण ति [ वस्मस्] व्यक्तिन वश्चित (विवा 1 (5 3

वस्मय वि [वस्मय] १ वक्रीन वरार । २ प्रतम विकार (पर्याह १ १)। वस्मिन [द] पक्र वददा (नबः)। वस्मिर वि विमिन् और करनेराता (श देवह)। वय वि [वत] विस्तार-पुतः (दे १ ४६) है | २ देश मदा) । देन-वाप-विदेव (ठा २,

२)।

सय न जिया होन का बनड, रिका कि लुए किन मये (चड ४३, जा २०)। तय देवो त्वा⊐त्याः प्यमित्रः िप्रसिद्धी तर से (ब ११६)। तत देखो स्या≕त्वच। विसाध रि िलाइ दिवा को चलेनाचा (स.४.१)।

द्याय दिशी व्य समय (क्रुमा)। तवाक्षी स्तिची १ लया, अप्य बमही (सम ११)। २ शक्तांकी (का ¥शो संत कि सितीलप नाला (शाबा १, १)। विस १ विन सर्वं की एक काति (क्षीय १) : तमार्जतर न [तदनग्तर] उसके बार (धीत)। त्याणि ) स तिदानीस ] इस इस सि समाणि । केर को से र र र)। तबाष्ट्रमा वि [तद्युमा ] एउका स्पृष्टल करवेबाबा (सुझ १ १ ४)। सर सक्द्र [तु] दूराव ख्ला⊳ वीरोप ख्ला।

वर्ष (पिर ४१७) । तर सक लिए दे लग्न होना, बस्ये हेला तैय द्वीता। तर (विसे २६१)। तर सक दिल्ही समर्वदोना सकता। सप (हे Y =६)। नक्क. तरंद (बीन १९४)। तर सक् [त्] वैरना, तर्फ (दे ४ वर्ष) । कर्म, स्टिन्नेड, तीरड (हे ४ २१ ) <sup>स्</sup> ७१)। वक्र-तरंत तरमाण (पाम दुन १वर)। क्षेत्र तरितं तरीतं (समय ६ १४० हे २ १६ )। इन्तरिश्रम्य (य १२. तवा २७६)। तर न [तरस्] १ केप ≀ २ वस परावन । मिक्ति विशिष्टि १ वेपनाचा । २वट नला। सद्विद्यावण वि ("सद्विद्ययने) वस्त पुना (भीप) । वरंग पूँ [वरङ्ग] १ कलाव बीच वर्ष

(पद्यार ३) ग्रीत) । लंदल न मिन्दनी इप-विदेश (देव १) । सामि दे मिलिए) समुद्र, भावर (राग्र) । बहुँ भी विनी १ एक शायिका। २ कवा-बोध-विशेष (र्वेन १)। वरंगसासा भी (वरद्वसासा) वनवट्टिवृरि इत एक बाह्यत प्राष्ट्रत केन कवाओं (सम्पर्त ( P # 3

शरीम वि विशिक्षम् वर्षमञ्जल (पान क्ष्यु) । वर्रीगम वि [वर्राज्ञन] वर्रवयुक्त (पडड से ८ ११: द्वा ११७) । नर्गिर्जा को निर्द्धियों निर्दे गरिवा (ब्राव १६: गडड: मुना ११८) । वर्रागरीलाह प्रतिपालाम् सम्प्र मागर (बन्बा १६६)। शर्य १ पून [नरण्ड, क] वीके नीका श्चरका है (मुता १७२ प्रश्ने मुख्य है का पुरह १+१)। तरम वि [तर, क] तिलेशाला विपाद (हा X X) 1 नरण्डा वृत्री [तरका] चापर वणुर्नेवरोय श्याप्रशी एक जाति (पण्डु १ १ ए।या १ १ स २२७)। और व्यदो (गिरेन्स)। मह रूप्रे ["मह] चार पन् किरोप (पडम ४२ १२)। शह रि कि प्रयाम, प्रमु समर्व करूर हानिरक्षांव क्लोडी (बाह ६०)। शरहा ) धी [व] अगल्म धी श्रीता गाविसा बरहा रे शिक्षार की 'मालेल द्वार चिर वरणी शरही (राष्ट्र) राम १६६) भाई द बादवाधी तरलहरकुत्मी प्यापी (मुता४२)। श्रदण न (तरण) १ तैरता (मा १४ म ६६६: मुद्रा २६२)। १ जहात नीरा (Fth 1 40) 1 सर्वाप पू [सर्वाप] १ मूर्व दवि (मूना)। २ वहाज नीरा । १ प्राप्त्रमाध का पह पीर्श्वार का वेषः। ४ धर्म बुग्न सन्वन Tu (£ 1 11) : शरनम रि [तरनम] सुनाविक 'शराब योग्युनेहि' (राप) । श्रामान देनो सर = स् । तरम रि [तरम] बंबर कात (यार; बार बच्च प्रानु १६ गा २ ४० गुर २, ८६) । नस्य गर [नरण्यु] चंदन बस्ता चरित गरना । वरनेद्र (पार) । या करलेन (PH Y# ) 1 नराम न [नरहन] दल परमा हिएका 'काम्महेर्य द्राच्या द्रस्तात्वर्ष्ट (ब्यू) । मराप्र वस दि [नर्धाञ्ज] चरा हिन्तु हवा कर प्रमान विया हुया (देशक व्यक्त)।

सरित कि (सरितम्) दिसानेवासा (कपू) । श्राक्तित्र वि विश्वतिक्षेत्री चंदन विश्वाहरण (प्र ७८ जायू ११ सामे ११२)। करवह व कि बुध-विदेश बक्बर प्रमाद पशार (दे ४, ४३ पाप)। । तरस न दि ] मास (६ १,४)। सरमा में सिरमा ] ग्रीम पत्नी (मुत X#3) 1 वरा ध्ये [स्तरा] पत्ती शोपता (पाप) । तरिभक्य देशो तर = त । वरिअकान विकेश हर एक वस्त्र नो बोधै शीका (दे ४, ७)। तरित्र वि [तरीत्र] छैल्यामा (विष्ठे १ २०)। ष्ठरित्र धेन्नो सर ≕न्। तरिया की दिहें इस धारिका सार मनाई (प्रमा १३) : सरिहिय तिहि ते तर (नुर १ १३२ **tt bt**∫ι वरा औ [बरा] शीरा, बॉबी (युवा १११) देव ११ - प्रामृ १४८) । बरु दे विद्यों दूर पेड़ पाय (जो १४) प्रामु २६)। त्तरम्म वि [तरम] जरान नम्य वयरावा (पडम ४, १६८) । तरुमा ३ वि [ तरमा ३ ] बावध, विशोध सरुगय (पूर्व १ ४)। र नबीन नदा (मर ११)। की. त्यांगा व्यया (माना ₹. 1) 1 वरुमरद्ध पून [न] रोन बामारी (बीप तरियम पूर्ण [नरियमम्] यीवन अशानी (बध्द) । सम्मा थी जिस्मी देशी की बरात की (यज्ञ स्थल ६२ महा)। नम बर [तम्] धरना पूरमा केर साहि में बुतरा । वराजा (विश्व ) । बार समित (श्मि १ १) । हैर सबिजित (त ११६)। नस न चि १ धन्या विद्योगा (दे स. १६) बर्) र रे ई बाबत बाद का कुन्तान (ह

2, 22) 1

गवर् [गत] १ इत्तातिक समुकाका

1 set 18x 64-12 { 1.mm}

७१)। २ म स्त्रका 'वर्राणक्तिमी (बप्द) 'इस्सवित्यस्त्रि' (दूमा) । ३ इपेसी (में १)। ४ तहा, मुमिशा नवडने पानाए (मुर २ =१)। प्रचनीमान नीचे (लामा १ १) १ इ.स.च इस्त (कप्प परहु २ ४)। ७ सम्बद्ध कराइ (हांद)। द देनवा पानी के मीचे का जाप या संबद्ध (बर्ट्ड १ ६)। शास पुन विवासी १ हस्त-ताल वाली। २ बाव-विशेष (ब्ल) । व्यद्वार पू विश्वहार] तकाका करेटा (के)। संगय के विसक्त की हार का बालुपल-निरोप (बीप)। बहु न बिद्धी विद्योते की अहर (काता १ र) । यह न विप्रत्री ताइ दूत की पता (देश्या t 4) 1 सरु पुन [तस] धुनाय-विधेप (राय ४६) । २ हपेती। पामगाउसी करतमे' (सुम २ १ १६) । ताम कुत्र की पछी (सूच्र १ ६, १२)। बर दूं विर्यो स्वा ने प्रकल होकर वित्तको रत्त-अधित क्षेत्रे का पट्टा दिया हो। बह (भए २२)। ् दक्षभेग सम भिन्नी भनत करता. बुनना करना । दपर्यन्द (है ४ ३६१) । राजमागति ई दि ] पूप श्माय (रे ४ ८)। वलभारा सी [वं]बनस्रति-विदेश (प्राप्त १)। तक्षण न [तन्दन] दलना भनेन (पर्स्टर t () i वस्य यह [तप्] वाता गरम होता। दक्यद् (सिन्) । तरापय पूर्वि साथ की पान (रे ₹,७) เ तस्य दे [दे] १ बान वर धानुरण-विदेव (देश रहे याय)। २ वरांग उत्तरांग (R X 32) i तस्यरं (दि तस्यर) नवर साह बोह्यात (राजा र रा नुसार, धर सीत सहा धारं काम स्वयं भन्न क्या)। तस्यितः (न [तामहन्त] स्वयन रहा (हे तस्योतः । १ १० मात्र)।

तक्षमस्त्रिति दि] द दर्भार स्थाप

कुर्व (देश १) ।

तस्तर सक सिन् सीवना। उत्तरहरू तबाह्य (सूचा ११६)। वक्क तबबहुत (स्ता १११) । त्स्वदृष्टियाची दि] पर्वत का मूच पहाड़ के नीचे की कृति। तत्त्वहरी तथाई हुक्सरी में-- तब्दी' (समत ११०)। वसाई की [वक्तिम्स ] क्रोम तकाव (कुमा) । वस्था ) न [वक्षाः] वातम सरोवर (यीप **त्रसम्य∫ इ**रिं? ३ प्राप्त खाना १ क स्व)। सम्बद्ध (विशेषि नवर स्वास्त्रः कोतवान (वे ४८ व मुपा २३६३: ३६१ वड कुप्र १६६)। वसारम्स र् दि वसारम् अगर देशो (भा १२)। तकाय वेको तकाम (दबाः पि २६१)। द्रसभि विक्रिये नुवाह्मा तवाहमा (विपाद्दि)। विक्रिक्षा हेत 💽 अपानह चुवा (धीन वसिगा 🕽 ६६ र **₹₹**() | विक्रिय वि विक्रियों १ प्रवत सुब्ब शरीह (परद्व १ ४ भीत वे ६,६)। २ कुच्छ सुद्र (से १ ७) । ६ दुर्बन (पाप) । विक्रिम पून [दे] १ रुम्या निक्रीना (६ ६, २ । पाया कामा १ १६--पत्र २ १३ २ २। वतक) । २ दृद्धिम फरास-कव कमीन (देर,२ नाम)। ३ वर के अपर की मूमि । ४ वास-सवनः सम्बान्यू । १ प्राष्ट्रः भूतने का मानत---वरतन (वे ६२)। विक्रमा जी [विक्रिमा] नत्व-निधेप (निष्ठे धी लुक्तिही)। तकुण वेदो तस्त्र (सामा १ १६ छन बर १६)। तसर वि] देशो तस्पर (ऋषे)। तस्थान दि । शत्यन क्षेटा तलार (दे र, ११) । १ कुल-निरोप बक (वे २, ११ पण्डर १) । ३ छत्पा, विद्योगा (१ १, ₹ध दर्)। वस्य ६ र् [वस्थक] मुख विशेष (धन) । सम्बद्ध न [वे] सन्या विश्वीना (वे ४, २) । द्यान्त्रपद्धाति दि । तस्य द्वानाम् (दे १, ३ मुर १ १३/ नाम)।

वस्त्रसः ) वि [वस्क्षेत्रम] असी में विस्का तुरुद्वेरस ) बच्चबद्याय हो। तत्त्वीन तत्रासक विपार २३ राव)। वस्त्रोविस्थिको हि । वस्त्रक्ता वस्त्रमा व्यानूच द्वोगाः 'बोड६' वति विम मण्डविया एस्सोविध्नि करंदं (कुप्र =६)। त्रक्षक (त्रप्री १ तपना गरम होता । २ हक, तपरचर्यां करना । तयह (हे १ १६१) वा २२४)। भूका, त्रविधु (भव)। वङ्ग तवसाण (भा २७)। त्र सक (तापय) क्रम करना। तकेह (ফর) ৷ सम्बद्धाः विषयः ह्या विषयः ११ तम २६ प्रभु १०)। गण्यस् पू [गच्छ] कैन गुनियों की एक शासा गए विरोध (पंदि १४)। गत्र प्राप्ति पूर्वेत ही सर्व (इ.७.)। चरण बरण न [चरण] १ तक्तवर्गा तथ ⇒रतः (तूष १ ४, १ उप दृ ६१ वर्षि १४७)। २ तप्रकाञ्चन, स्वर्गका घोष (शामा १३)। वरणि वि विरक्षित् । कास्य करनेवामा (अ. ६,६)। केवो तनो । तव केवी सन (हे ५,४६) वर् )। तव वेदी धुषाः तदह (प्रकृदः)। बबन्ग पूर्विक्ती किसे बेक्ट न बक पांच भनरः। पविमक्ति न [शविभक्ति] नाटव-विशेष (यव)। **टबज रुं**[डपत] १ सूर्व सूरव (<del>ड</del>र १ ११ टी दूप २१४)। २ छन्छ। का एक प्रवास सुमट (के १३ १)। ३ म. शिकार-विशेष (दीर) । तद्या पूं [तपस] दीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्वान (स्वेन्द्र ): व्यथमा हो विसमा] वापी गरी (इस्मीर १६)।

वक्ता के [वपन्य] यातानवा (बुपा ४१३)।

दर्बाणक न [सपनीय] नुबर्छ, सोना (परह

वक्षणिक्य र्न [तपनीय] एक देत-विजल

दबयी भी [दे] १ व्यव पञ्चल-केय कल

मारि (रे १. १) सुरा १४ । शस्त्रा ६२) ।

१ ४ मुग ३३)।

(रोन्द्र १३२)।

२ वाम्य की खेत है फाटकर क्वल सेन्स बताने की किया (सूपा १४६)। १ हरा, पूना ब्राहि एकाने का पात्र (दे २, ४६) । त्वणीय देशो तवणिका (सुगा ४०)। तवमाण देशो तथ = तपः तवय वि [दे] व्याप्त कियो कर्ने केवा इस्सा(देश २)। वबस पृंदिप इंदिय पुरने का इसका (जिया १ व सुपा ११वः पात्र)। वदसि देवो वदस्सिः 'पर्ययवदिन नना इतो तमधील में गेर्नु (वर्गीन १९ १९)। व्यक्तिस वि विपरिवन् र कास्य करनेवाला (बम ११) चप वरे १ टी)। २ ई छाडु प्री-द्मपि (स्तप १)≀ तक्तित्र कि[तप्र]धनाइमा परम (दि∿ १ १ पाम)। त्रविद्यपि [तापित] १ यच्य दिशा ह्या। २ संवापित एसाए की न स्त्रिको, वक्सन सम्बद्धि सम्बद्धि (दुपार ४) नहास्ति)। क्षक्रिम कि (तिपित) तीवरी नरक-पूर्मिका एक गरक स्वाल (देवेन्द्र स) । त्रविका की [तापिका] तथा का हावा (रै 1 (425 5 तुमु देखो तुझ (प्रथम ११ व. व.) । त्वो देवो तभो (रैम)। तथो देखो तत्र = तप्रस्। इस्सान["नर्सस्] रुप-करण (सम ११)। भूज प [भने] ब्रह्मि ग्रुनि (झाक्)। घर एँ [भिर] **गपस्मी मुनि (पतम २ १६३**। १ व १ ¤)। दण न [वन] भ्रविका धार्मन (दप ४४६) स्वया १६) । तम्बर्णिय नि दि] चीयतः बीब, दुब-वर्तन হা মনুবাৰী 'বৃন্দান্তিবাকু বিৰ' বি<del>ধৰ</del>ান दुक्तवज्ञवस्त्राविद्यार्थं (विसे १ ४१)। तक्वक्रिम कि वि एतीयवर्णिक रू<sup>केव</sup> भाषम में स्वित (इप पूर्श्≡)≀ तम्बद्ध विविधा स्वी श्वार का (मा)। तस यक [बस् ] करता, बास वाता । तबर (दे ४ १६=) । इ. तसिमन्द (जा १६६

तस द्रं [इस] १ सर्त-दक्षिय देशीय∓

इन्द्रियकाता जीव होन्द्रिय भावि बाली (बीव

शाबी २)। २ एक स्थान से बूखरे स्थान में काने-माने की राजिमाला प्राएति (निष् १२)। ैद्याय पु **व्यियक** विषय प्राप्ती, शीन्त्रियावि जीव (पराह १ १)। काय पू िकायी १ मध-समुद्र (ठा२ १)। २ भेदम प्रायी (पाचा)। जाम, नाम न ितासम् ] कर्न-विशेष विसके प्रभाव से बीव वसकाय में उत्पन्न होता है (कम्म १ सम १७)। "रेण वं "रेख्] परिमाण विदेव बत्तीस इबार साथ सी प्रवृक्त पर माणुझों का एक परिमाण (क्यू पव २६४)। वाष्ट्रमा को [पादिका] शीन्त्रव नन्तु विरोध (बीव)। -तुसण न जिसने १ स्पन्दन वसन हिनन (एक)। २ वसायन (सूम १ ७)। त्तसनाडी की जिसनाडी जिस बीबो के रहते का प्रदेश को अन्दर-धीन मिलाइट नीवड रक्क परिमित्त है (पब १४३)। नसर देशो टसर (क्यू)। त्तसिक्ष वि [दे] तुल्क सूक्षा (दे ४ २)। ससिम वि [मृपित] त्वानूर, विपासित व्यासा हमा (रवण ८४) । तसिका वि जिहा | कीत क्य हुमा (जीव ६ महा)। तसियक्य केवी तस = क्स्। तुसेयर वि जिसेतर एकेकिय बीव स्वावर प्राणी (मुपा १३८)। तह स सिया र छती वर्ष (हमा प्राप्त १ध स्वया १)। २ मीट, तवा (है १ ६७)। ६ पाद-पृत्ति में प्रयुक्त किया जाता सम्पय (निष् १) । कार रू ["नार] 'वना राम्य क्रम्बारण (एक २६)। जाण वि िकान] प्ररत के चतर की वाननेवासा (ठा 4,)।२ त.सस्य अनि (ठा१)। त्ति म विति स्वीकार-योजक शक्यव—वैशा ही (कैसा मान फरमाते 🕻) (ग्रामा १ १)। य स ["च] १ एक सर्व भी शहता-सूचत धम्बदा २ सपुन्वय-सूचक सन्दव (वंबा २) । "विवय "पि] डी मी (गडक) । विद्या वि [विघ] का प्रकारका (दुवा ४२०)।

देवी वदा ।

तह वि विषयी सध्य सस्य, सच्या (सुम 2 23) I तह प्री वियो बाबाकारक यस्य, मौकर (ठा ४ २--पत्र २१६)। तद्द )न तिच्यी १ स्वसाव स्वस्य ताहीय (सुप्रीत १२२)। २ सत्य वचन (सुद्र t tv (t) 1 तहं देखो तह = तवा (सीप)। **तहरी की हिं| पबुकाली मुख** (दे ४ ९) । तहक्रिया की दिंगो-शट, पौर्यों का बाका गोशासा (वे १ ६)। सद्दादेको तद्द⇔तमा (कुमा नउट प्राचा सुर ६ २७)। गय प्रीगडी १ मुख मारमा । २ सर्वेद्ध (भाषा) । सूय वि िमृत् । उड प्रकार का (परम २२ ६४)। इस्म वि स्पि ] एस प्रकार का (मन १४)। विकि वित् रिल्प कन्र २ पुंचर्षा (सूम १४१)। हिम िहि वह इस प्रकार (उप १=६ दी)। विद्विषेत्री सह = चमा (गा वश्व कत ६)। **८६६) भ तित्री वहाँ छ**समें (का २.६ सक्षि । प्राप्रकेण रिक्षे क्या १ को। विद्यिष [वध्य] सत्य, सन्ता मान्तविद्य (श्राया १ १२)। विदियं स [तत्र] वहाँ छर्छने (विशे २७०)। सहेम ) म [तथैव] उसी तरह, उसी प्रकार वहेव 🤇 (हमा पर ) । ताम तिवा । स्पने उस कारण से (हे ४ २०६ मा ४६ ६७: सम्)। तादेको ताव≈तानद (हेर २७१ मा 2×2 2 2) 1 साम [तदा] सम प्रस्न समय (रमा कुमाः सया) । ताम [तीई] तो तव (रंगा कुमा)। वाकी वा बक्सी (सुर १६ ४०)। ता स तिद्∏े बहा संघ दू विल्मी १ **प्रदशक्त । २ प्रतके तत्त्र के प्र**मान क्रम (पर्यण १७)। फ्यास १ [स्वर्श] १ च्याका स्पर्त । २ वैद्या स्पर्त (प्रमुख १७) । रेख दु[रिस] १ वह सर्व। २ वैशा स्तर्थं (प्रस्ता १७)। इस्तान [कूप] १ बहुक्या २ केना कर (पदरा १७ —पत्र ११२)।

ताझ देवी ताय ⇒ताप (भा ७६७ # ty क्षका ६)। साम प्रसित् १ तत पिता गए (मुर १ १२६: बत्त १४)। २ पूत्र नस्स (सूम १ ३, २)। साञ्च पत्र जिल्ला करना। इत्तायस्य (मा१२)। धामप्य म [धादात्म्य] तत्रुपता यनेद, प्राप्तिका (प्राप्त २४) । ताइ नि स्थानिम् । स्थान करनेवाला (ना २३ )। वाइ वि विविम् । रक्षक परिपासक (उत्त वाइ वि [वापिम्] वाप-पुक्त (पूर्व १ १४)। ताइ वि ब्रिमिम् रिजन खाए करनवाना (वस २१ २२)। ताइ वि [सायिम्] उनकारी (सुम १ २ २ १७) । ताइ दे [प्रायिम्] मूनि साधु (४सनि २ वाइक्ष वि [त्रात] चीतव (ज्व) । नार्ड (घप) भेबी ताथ = धावद (हुमा)। वाठा (**प्र**पे) केनो दाशा (हे ४ १२१) । वाड एक [वाडयू] १ ताइन कला पीरना। २ प्रेरणा करना भाषात करना। **१ प्रणाकार करना। ताबद्र (हे** ४ २७)। मनि वाडक्सर्व(पि.२४)। वक्क सार्क्रिक (काल) । क्लक् वाहिक्समाण वाहीओत. वाद्योअमाण (स्पार६ पि २४ । धामि १११) देश तादिवं (क्यू)। इ- वादिका (बच ११) । वाक पूं [वाख] वाङ्का वेङ्ग (छ २४६) न वार्वक पूं [वारकः] क्ला का मामूक्स-विशेष पुरस्त (वे ६, १६) कप्पा हुमा) । वाडम न वाडम र वाइन पीटना (चप रेवर दी गा **१४१)। २ प्रेर**णा शामल (छ १२ चक्)। वासाविध वि [वासिव] पिटवामा नवा (सुपा २००)। वाडिश केवी वाड = कव्यू। वाहिम वि[वाहित] १ विश्वम कास्त्र

किया समाही वह पीटा हुसा (पत्रम्)। २

ताइ रेगी ताओं व तान (बाइ १२) ।

(मारक १२४ १२७)।

8 t Ytt) :

वारस्य न [वार्य्ये] वर्षनाव चलके निय

ताह्बम्ध न [ताह्यस्थ्य]स्वनपना बागम रा

नहीं प्रतरका प्रविद्यकरका (वर्मेंसे ४ ४)

तार विकिटी र निर्मेत स्थलक (से ६. (मॉर) । ४२)।२ वमशता वैशीत्ममान (पाम)। वै वारिया औ [वारिका] वाच के धारार धी प्रति क्रेंबा (हे ६ ४)। ४ प्रति क्रेंबा एर प्रकार की विभूता निकती, विक्रिया स्वर (रायः मा ४३४)। १ न, ४ नेशी (ही "विचित्तसंबंदवर्द्धरमादम्म" (तुर १ ४१)। २) । ६ व बातर-निरोध मि १ ३४) । तारिस वि तिहरा देश, क्य वर्ष व बद्र धी विश्वी एक राज-समा (बाकु ४)। (राजा मार्थ कुमा ) । की, सी (शह सारंग न निरक्तिक वर्य-समूद्र (से १ ४२)। **१२**६) 1 सारम वि निर्देश कारतेमाना पार प्रवासी वारी की [वारी] वारक्जातीय देती (रा बला (बर ६ ६२) । १ ई. इस-निशेष te v) i त्रितीय प्रतिवापुरेत (पत्रव १, ११६) : १ सूर्वे बारि नर धह (ठा ६) देवी तारय । **221)** ( तारगा की (तारका) र नवन (नुम २ ६)। २ एक राजाणी पूर्णबद्ध-मानक राज भी एक पहरानी (हा ४ १)। हैगो साहया। तारण न तिरम् । श्रे श्रे बार बतारता (मुना २४०) । २ वि वारनेतामा (बुगा ४१७) । वारत्तर १ [रे] बुट्तं(रे १ १)। १ : वि २४ )। हारय क्रो तारम (सन रः भान र र) । ४ नः चय विदेश (भिन्) । नरनाः चंद्रे बास्त्रीय (नुता४३)। हारया देवी तारगा । १ व्यंच की ताच (पनायारे र २१४)। तास भी तिसी स्थास की पूत्रती (क ४११ ४३६) रेन्स्स (श्राद्ध हे से १ १४)। रे गूरीर गीधी (ने १ १४) ४ नुसूत वस्तानीं की बाता (सन १६२) ह नग्री स्थित (ग्र.१.) ६ वीओं की रामक देरी (इंच ४४२)। उद्द व [ पुर] शार्रकः रनान (इस प्रथन) । यह हूँ [ चाँप्र] एक रार-पुनार (बाब ७२ है) । तमय हु

रादिस रेगी वारिस (नाण्डेव प्रानु ६४)। ताम देशा तस्म≔दन । दापद (गा द६६) । ताम (धाः) रूपे नाप = वारत् (हे ४ ४ ६) वारुभ नि [वारंक] वास्त्रेगला (वारं ऋरि)। शामरी। हि] सम नुतर (रेड रे तारण्य ) न [तारण्य] तस्त्रता शील वारुम 🕽 (पर्वेश क्यू दुवा कुत १११)। तामराग न [तामरम] नमन रच (दे १, तास रेगो नाड = तात्रव्। तानेर (वि १४ )। t (14) नद्र वाक्साण (रिवा १ १)। नद्र तामराग न दि ] पानी में बन्दन हानेराला नामिज्ञत, धालिजमान (प्रम १९६ नुग्र (देश है)। हामनि 🐧 [नामनि] स्वनाव-स्वात इव धारम तास क्य जिल्लाम् । ताला नयाना क्य (भार शकार)। रामन्त्रित से [रामनिमि] एक अधीन हास र् [हास] १ क्ल-फिरेन (बरह १ ४) । कारी मेंन देश में। बाचीन यसकारी (दरा २ बाय-रिधेव वीसिश (बगह २ ६)। व सन ६ र<sub>1</sub> पराह र) वाती (रन र) । ४ क्या वयाचा (ते र बार्बार्शनयाः भी [नायनिर्मतः।] वैन्तुव १६) । १ वाय-नपूर (राज) । ६ बारीस रंत की एक राजा (क्या) मानाएक दलावर (पनंद ३)। ७ व-शासस व शिससी १ सन्दर्भर । १ सन्द वात शर कर करने वी कल (बा ६६६)! 411-17 (424 151) 1 ≖ नाप कृत का कल (दे६ १२) । विश् साम । वि. निर्माण निर्माण समा (नाम न [पुर] सरात आतानसम्बद्धिति वृष्ट्रा । स्पन [147] (जांचा र् १४ कुता १६०-१११)। जेव कुन्तु बर्ज का क्षक्र किटेंच (परेष 🔍 ३.) । ई ["प्रहा] १ तुन-विरोध :वर्ग १) । १ रि

राष्ट्रकम पहाड़ (ती १) । पर्लंच प्रै

[<sup>8</sup>प्रदम्य] गोरात्रक का एक खनासक (मग

c x)। पिसाय र [पिशाव] येट-

काय राज्यस (पएए १)। पुढ देवी सब

(या १२) । यर व [ पार] एक मनुष्य

बाठि बारए (बीय ७६६)। विंट "दिन

बॅट, बोट न ["इस्त] व्यवन, वेदा (पि

संयुष्ट वृं ["सपुर"] तास के पत्रों का चेपूट,

तात-पत्र संचय (सूच १ १,१)। सम

वि [सम] ताल के मनुनार स्वर, स्वर

धामूपण-विशेष । २ सन्द-विशेष (भिग) ।

विदेव (ठा ७) ।

भी जी (पिय)।

का यग्व (उर ११६ टी)।

वासण देवो वादण (पीप)।

प्रहार (पराह्र २, १। भीप)।

मेर (स्पनि २ २३)।

६५: बाह्य १२१) ।

(EE 1) 1

वासय देवो वास्म (नुरा ४१४- दुप्र२६२)।

वाससम्बद्धाः विश्वसम्बद्धाः वास्य वास्य

वात्रहस्य पुं [रे] शानि बीदि (रे १ ७)।

सास्त्र च [तदा] उम समय चिला पापेटि

दुला बाबा वे सद्दिमएड् विप्यंति (है ३

तास की [र] ताना की के मान ना सामा

तालक—ि

(खावा १ ६)। तास्त्रितंट सक [ भ्रमम् ] पूमाना फिराना । राशियदा (हैं ४ ३ )। तालिक्षेत्र न [तास्रपृन्त] स्वयन पंपा (स **१** =) 1 वास्टिपेटिर वि [भ्रमयिव्] पूमानेवाचा (इमा) । तास्त्रिक्षतं चेतो तासः = वारम्। तान्त्रिम रेखो ठारिम (उत्त ६, ११)।

ताडी थी [ताझी] १ दून-विरोप (बार ६ )। **१३ नाट—वेली १ ४ दे१ ६७ मा**प्र)। २ छन्द विरोध (निग)। "पत्त न ["पञ्च] तास-बुध के पत्ता का बना हुआ पंचा (बारु ६३)। वाञ्च १ न [वाञ्च क] वानु, पूर के घन्स तालुक ) का इसमें बार्फ उसुपा(सत्त ४६ शासंस्ट्रं [ताबक्क] १ दुयब्स काम का याया १ १६)। वासुरपाइणी भी [वास्प्रेद्वाटनी] विचा-वासंकि पूर्वी [वास्त्रीद्वम्] स्टब्नियेपः। पिरोपः सासा सीसने की निया (नम्)। सासूर पूर्वि देशीर केन कोण । २ कपिल वासगन [वासक] सना द्वार करने बुद्ध कैंब का पेट (दे ४,२१) । ६ पानी का बावस (देश, २१ मा ६७ पाछ)। ४ प्रै पूध्य नामप्त (विक्र ३२)। तालगा हो [ताहना] चपेटा वाहि का राजवि देवो राख = रामय् । वाय सक विषयु दिवाना करम करना। वारुप्तस्त्रे सी हि] ससी नीक्पनी (६३,

> वापणिञ्ज (मय १४) । दाव दे दिवायी १ वरमी ताप (नुपा ६०६) क्ष्णु) । २ संतार दुःस (सलः ४) । ३ नूर्यं र्थाः। तिसाध्ये [ "दिश् ] सूर्य-कारिक दिशा (चन) । तात घ[तापन्] रत यदौ का गूदक धम्पय । १ तवतक (पत्रम ६०,१)। २ प्रस्तृत सर्पे (सावय)। ३ भावारण निवय।

२ संताप करना, कुच बाजाना । तार्वेति

(सावर )। कर्मतिक्वंति (सा**७)।** इ

४ धर्मक हर। ३ पत्रान्दर । ६ प्रशंसा। ७ बास्य-भूगा । व नात । १ साइन्य, बीपूर्णंदा। १ तर सम्बसनय (११११)। तापभ वि [नारक] स्वधेय, नुष्टाच (पण्ड

**28**) ( ताप्रस्म रि [ नावन् ] काता (सम १४००

) (म्प) देखो साय=ता**वत** सार्वेहिं (पुमा)। सायण पूर्वितापन] चौबी नरकपूमि का एक नरकस्पान (देनन्द्र a)। २ वि तमनेवाना (पि १७)। बादण न [बापन] १ परम करना बपाना (निदूर) । २ दें समादुर्वशकाएक स्तवा (प्रज्ञम ३ १)। तार्वाणक्त रेखो ताय = तापय्। रायतीम ) देवो रायतीसय (वीप रायतीमग }

तार्व देशो ताय = ताबद (मन )।

सायेचीसम् ( वि ४४३, ४३८) इ.स.)। हादशीसा देखो तायशीसा (पि ४१८) । सामस पूं [सापस] १ कान्त्री मौगी श्चन्यासि-विशेष (भीष)। २ एक वैतपुति (कप्प)। शिक्ष निही द्वापसी का मठ (पाप) । वापसा औ वापसा नैन पुनियों को एक शाबा (रूप) । वाबसी भी वापसी वपस्तिमी योगिमी (गरा)। वाबिम वि [वायित] बराया हुया परम कियाह्या(या ४३ विराट ३ मुर ३ २२ )।

वाविकाकी [सामिया] वरा पूपा पारि पकानं का पात्र (दे२ ५६) । २ कहाई। द्योग कहाइ (धारम) । । वाविषद्ध पुन (वापिषद्ध) बृद्ध-विरोध वमाम बा पेड़ (बूमा है १ ६०) मुत्त १८) । ताबी क्री [ताबी] मरी-विदेव (परन १२, शःमा २३६) । ताम पूर्विमा १ मन बर (बाह्र १६)। २ वर्षे गः चंत्रार (पएइ १ १) ।

वासि नि [बासिन्] १ भाग-पूरु ऋतः। २ वाग-जनक (ठा४ २३ कणू) । दासिम वि [ब्रासिन] निगरी वाग कर भाषा गया हो बहु (वर्षि)। ताइ व [नदा] क भनव तर (६३ ६४)।

वासम रि [श्रासन] वाष क्यमनगण

ति स [[ता] दीन कर (योग १४२)।

(पएद ११)।

(t x, t ) i वाध्यपर र् [वास्पर] वात (राष) बनाने-बाना (निषु ११) ।

तास्यचर ) प्रे [तान्यचर] १ मैजक-सिटेप वासायर ) वाल देनवाना प्रेशक (राज्य

११)। १ नट नत्तैक स्रारि मदुष्य-वाधि

चप) ।



देशों से ।

१२ १४ । इ.११)। मुख्याणि पुं [ैश्रंड-पाणि] १ महादेव छित्र। २ त्रिपूचका हाय में रबनेवासा सुमट (पटम ४१,३४)। पुलिया की ["शुद्धिका] छोटा क्यून (सूच १ १ १)। इत्तर वि सिप्तवी किस्तरवी ७३ वी (पतम ७३ ३६)। हा स ["सा] तीन प्रकार से (पि ४२१ मणु)। हुझण, हुण, हुमण म [सुयन] र तीन बगद, स्वयं मार्थ सीर पाताम शोक (हुमा मूर १ = प्रामु ४३ चन्द्र १३)। २ पू. राजा दुमारपास के पिताका नाम (दुप्र १४४) । हुअप्यपास पु िमुवन-पाछ] राजा दुमारपाल का पिता (दूप १४४)। दुवणालंद्यरपु ["मुपनार्खनार] रावस के पट्टहरती का नाम (पदम वर १२२)। हुणविद्वार पुं ["सुमनविद्वार] पाट्या (इवसत) में धवा कृमारपास का बन बागा इसा एक जैन मन्दिर (दुप्र १४४)।

"सि देखो इक्षः = इति (हुमाः कम्मः २१२ २६)। विज्ञ (क्ष्म) यक [विम् , स्तिम् ] १ माड होता। २ सकः यात्र कल्ला। तियद (प्रक १२)।

तिक्र न [त्रिक] १ तीन ना ल्युसम् (सा १ एर क्शन दी)। २ नइ नालु नहां दीन एसते मिनते हीं (सुर १६)। सेक्स मुं[संयत] एक सर्वाप (पत्रम ११)। देखों तिना। तिक्रानि [क्रिक्स] तीन से उत्पन्न होनेसाम

(राज)। विकंकर र्षु [त्रिकंकर] स्ववाय-कारा एक वैक्युनि (राज)।

तिक्रम न [त्रिक्क] तीन ना संपुत्तय (विशे २१४९)। तिज्ञहां की [त्रिक्रहा] सन्तमस्यात एक

एक्सी (ते ११ ८७)। तिक्रमंती स्मे [जिसक्री] स्टब्स्टिय (त्रिय)। तिज्ञय न [जित्रम] सीन का समूह (सिटे १४६२)।

तिमलुक्क न निक्षेष्य तीन वास-तिमल्लेय देवर्ग सार्थ और पातल सोक (कार्य द जिद्द दा के बेवता (दुनार पुर र ह)। ताज द [मद्दा] के बेवता (दुनार पुर र हो। ताज द [मद्दा] के बेवता (दुनार पुर र हानीर इन बहानी (व र र र)। नाह दे [माम] इन (वर रूप रेप से पुरा प्रभा र पहु पु [मुन्न] इन बेव-नामक (पुरा प्रक र रूप)। सिस्त [म्ब्रापि] नाम प्रति (दुन रेपर)। सीस दे [चेक्ट] हार्ग (जन र र र)। मिस्त्या की [म्ब्रीन्ता] की की क्षा क्या (पुना ररण)। सीर की [सरिन्] नेना नवी (दुन)।

भरत टीट पूर ( १४२)। हिंच इं [पियण] पत्र (पुता १४)। पियम इं [पियणित] पत्र (पुता १४)। विश्वसम्बद्धि इं [विष्यपूरि] बास्मवि (वमत्त १२)। विक्रसिंस इं [विष्योग्द्र] एक १४-मवि

(बण्या ११४)।

t () i

सेख प्रैशिखी मेद पर्नत (सुपा ४८)।

ालय पुन िलियो स्वर्ग (दूप १९ दप

विज्ञसँद देशो विज्ञसँद (बह्म ११)। विज्ञसास पुं [त्रिद्रोस] इन्ह्र वेश-गमक (१११)। विज्ञामा की [त्रियामा] चन्द्रि, एवं (मण्ड

४६)। विद्वस्त एक [विविद्यु] ग्रहन करना। विद्वस्त्वप् (धाना)। बङ्ग विन्करमाण (धाना)। विद्वस्ता स्पे [विविद्या] चना, स्विप्युटा

(पाना)। विद्वात १ में [युवीस] वीसच मि ४४६, विद्वस ) वीज २ )। विद्वस्तर न [त्रियुष्टस्त] नाच-विद्येष

(सर्वि ६१)। विष्ठ बक् [त्रोटय्] १ वोक्ताः २ वरि त्यापंकरनाः विक्ट्रिय्काः (सूस्रः १

विष्टू सर [ब्रट्] १ ट्रम्या २ प्रख होना 'सम्बद्धका विक्रूर' (तूस १ १६०१)।

विउद्घ वि [जुङ्ग, श्रुटित] १ द्रश हुमा । २ मण्डत (माना) ।

विउड पुंदि नजार भोर-पिन्स (पाप) । विउडरा पुंत [श्रिपुटक] मान्य विरोप (वप्रति ६ व पद ११६) ।

६ स पर्वर ११६)। तिज्ञह्य प्रमृष्ट्रियालय देश में प्रसिद्ध वास्प विदेश्य (सा १८) । २ लॉग वर्षम (सापत्र ११)।

|बरुष (मा १८) ! र बाग | बबम (मा पत्र ११) ! विउर म [त्रिपुर] एक विद्यावर-नगर (१२) ! विउर मूं [त्रिपुर] चमुर-विरोग (त्रि १४) !

णाह्य पुं िनाध] बही (ति वर्ष)। तिहरी की [त्रिपुरी] नगरी-बिरोप वेदि देख की समानी (कुमा)।

वित्रस्त वि दि । सन वनन सीर काया को पीड़ा पहुँचानेवाचा दुःख का हेनु (उत्त २)। विकास देवो तिकृत (से व य ६ ११ ६८)। विगित्रा भी दि | कमस-रव (दे ४, १२)।

विभिन्द्य देवो विभिन्द्य (६६)। विभिन्द्यायण न [विकित्सायन] नद्यव बोत-विदेश (६६)। विभिन्द्य की विशेषसम्बन्ध पर का रज

पराम (वे श्राहरा मतका है र १७४४ में ४) । विंद वि [वीमित] भीना हुमा (व १३२) हे ४ ४११)।

तिर्तिया } नि [के] बड़बड़ करनेशाना (वितिष्यिय बड़बड़ानेशाना बान्धिय नाम म होने पर बेच ये माने भो भाने सो बोनाने-बाता (बच १ डा. ६—यत १७१ नम)। वितिया भी [वित्यिया] १ विचा समती कर पेड़ (बीन ७१)।

विविधी की [वे] बहरहाना (बब ६)। विवुद्धणी थी [विष्दुकिनी] बुध-किरोन (बुद्र १ २)।

विद्या १ वृ [तिरद्वक] १ क्यानेक्टेप वॅद्र विद्यम में बेद (याच्य प्रवस २ १७ सम ११२ पट्टा १७)। २ म. क्यानिस्टेप (पट्टा १०)। १ स्वास्ती नगरी का एक क्यान (विते २१ ७)।

विदुस ) पू [शिखुक] बीम्बिय पस्तृ की विदुस पर बार्ष (बत ३६ १३८, नुख १६, १६८)। वि देनो नद्रश्र = वदीय (रम्म २, १६)।

939

भाग भाग हाम दे भागी ततीय माय, दीनच दिल्ला (राज २) राजा १ १९—१व २१८ क्यो। ति देवी धी॰ 'उनुन गार्वीत मृत्यु मन्नतिप्रता विमो पर्यारवाजीवी (राज)। ति विव [बि] तीन, दो बीर एक (नर ४० मरा)। अगुजन जिल्हा दौन पर भागपों से बना हवा हरूर, 'बराबदर्राह पारद्वरभे निमाणये ति निरेशाँ (सम्ब १६६)। उगरिशियो १ छेन्युसाः १ ना राम बीर तमम गुलराना (धण्ड । र्राणय कि [गुणित] सोनपुत्रा (मीर)। उत्तरमय रि विजासातनमी एक मी टीनच १३ वॉ (पबस १३ १७६)। उस रि ["तुम] र दीव को पीउनेसास । १ तीन को तीननेसामा (man १ १— पर ६४)। आयन ि आजसी रियम परितिरोप (का र ३)। स्ट्रंट चंडग रि विश्वण्ड की धोन नात्रताता वीन मागराचा (राष्ट्रा सूच १६) । सङ्ग्र न विद्वा नार नरीय धीर वीपर (यम) । इत्या रेनी शरण (धन्र)। धान न [भान] मूत सीम्य सीर बर्स बान कार (भग नुसा ) हाल देशा का (देश १६६) । अह वि विश्वास वीत याच्यात (सा १६६ छ।। योजा दिव व िराग्याध्यांत्री क्रवे वकासी यम बागुन्त (बान ६१ २६)। सन गाउन केता बहुझ (स २४६ २६३)। ररेंग व[रा] मन बचन और बाबा (इ. इ. च्या देशो क्या (सल)। गुर्ग रि [गुरेंग] वर्तर्गत वर्णः साव लंगमासम्बद्धाः । सम्बद्धाः [६न] हेन को हमा (छत) - यसा भे चिपरिशन् । तेरानेव (कान ४ ११ - १३व [जगा] सर्वकर्म क्षेत्र बच्च क्षेट्र (दि १) । अवस र् [नाम]स्तारिक (वेश्यूष्ट्रास्त रंग स्थानमः) तुत्र क्रिके बाउ tern t t t -re to); Tan (वर)रेपो सी। भागक⊾न[धर

सिंशन दिसंबत-विशेष ६३।२ वेटीस वेदरावाता वेतीय (कपा वी १६) गर १२. १६६ ६ २७)। बंद्र न विण्डी १ डमि-बार स्थाने का एक उपकरता (स्टा) । २ तीन वएड(धीरा)। बंदि पं विशेषम् सिम्पासी सीवर मत का मनुवासी साथ (का १६९ टी) मुपा ४३६ महारे । तपद और जिल्लाति । संस्था विशेष तिरावते । २ तिरामने संस्था बाला (सम्म १ ६१) । योचा वि.स िपञ्चम् । पंचा (धोष १४)। पंचासक्रम पि पिद्धान्नी विश्ववर्ष (प्रत्य ४३ १४ )। पड न पियी पड़ा तोन सलो एक किस रीते ही यह स्वान (राज)। पायण न िपाननी र रायेद, इन्द्रिय चीर प्राप्त इन चीनों का नास । २ मन वचन सीर नाथा कारिनास (स्टिं)। पुंड न ["पुण्डा] क्षिमक-विशेष (च र)। पुर वे विषरी र धना-विरोध । १ न सीन नवर (राज)। प्रेय की [पुरा] विद्यानिक्षेत्र (मुना ११०)। दर्मनी स्व [ मानी] एव-विरोत (रिय)। सदूर न "संघरी भी सदूर और म्४ (मण्) । सासिआ ही विसासिकी विषयी प्राप्ति सीत मात की है ऐसी एक वित्रमा, बच-तिरोत (सम २१)। मुद्द नि [\*अम्ब] १ तीव दुस्मास (स्तव) । २ वृ क्यरान् संवरनावत्री वा शासक्देर (सर्वि ७)। रत्तन थिप्री तीन रात (स १४२) 'बम्बररास बुदुत्तीरि दुवनी हिन्नुत जिल्लं (इत्र ११८) । ससि न [ सिरा] भीर सनीर सीर नोतीय पर होन राशियाँ (धर)। रण्य व धिन्नभी सर्वस्थ भीर पाता र संक (पुत्रा प्रात्नु द६ सं१)। स्प्रभग 🕻 ["सपन] महारेत विस (मा १६ नाम १ १२२। तिक)। राज्य प्रमाद [ रेग स्पूरत] बातराकार के रिदेव में बनाय एक विनन्त (बदम ७३ - ११)। स्वाधि स्विधी रेगी स्वेत्र (परा बन (५३)। स्टाम देनो स्टाम (साह १) व<sup>र्र</sup> की ["पर्रा] १ तीन का का कपूर। | र जून में की बार का बा स्वान (बीत)। र मीतिन (देत १६)। वस्त न [वा] । वर्षे सर्वे स्वेत राज्ये ते व

प्रकार (साथ थ-पत्र २०३) संच रे लावर ७)। रक्तीक वेद सीर दमर इन तील का वर्गा वस पर्व प्रते क्रिका क्षेत्रों का सबद्व (पाच १३ पारन)। बण्य वं विकार प्रमात । बरिम रि िंदची तीन वर्षे की धवत्वाचारा (वव हो। वस्तिको विकित्ति वससे से दौर रेक्सर्व (बच्च) । बक्किय वि विविधिकी तीन रेपानामा (राय) । बता रेवो वर्डि (बारक्षा भीप) । वह दं विष्ठी बट-रोन के भावी नवस बालरेन (बम ११४)। वय न विपन्नी दीन परिवास (\* ६०१)। वहुआ हो विद्यानी भेदा नहीं (है ६ सं चण्डु ६)। शायणाको पातना रेको पायत्र (पछ: १ १)। विद दिद ठूप पिष्ट विष्टी बाल के व क्लम प्रदेश धरी-वक्तरती राजा दा नात (सम दवा पत्रव १, १११)। त्वा हि िषियी तीन प्रवारका (बंग मी ६ ) नव के) । विद्वार पू ['विद्वार] ग्रम कुमारपाल का बनदाया हुया दाउँए वा एक वैन मन्दिर (तुत्र १४४)। सङ्गई [ैराट्र] नूर्परंशीय एक राजा (पवि वर)। संस्कृष "सम्बची बनाउ नच्याह धीर सावेरान ना समय (नूर १६ १ ६)। सङ्घ वि ["वड] विरमध्यो ६३ वो (राज ६३ ७३) । सहि यो [पिष्टि] शिएम ६६ (प्रवि)। संच दिंग [सिप्तर] एक्रीम (मा६)। सत्तत्त्वी म [सप्त इत्पस् ] त्रोत धर (शाबा १ ६) दुरा ४४६) । रामह्य वि [शामविक] <sup>होत</sup> सनवर्षे प्रशास होनेशाचा तीन नवर्षी माविशास (स १४): सरप न ["मर्ह] वीन वस या नहीराचा हार (रामा t १: धीर: नग)। १ बाद विशेष (प्रयू १६ ४४) । तस हो [नस] क्या राजे ना चल-सिटेन (स्ति। १ क)। सरिव व ["सरिक] १ स्टेन क्या सासदी काम ह"र (बप्प)। २ बाद-सिटेच (बढन ११३ ११)। रे हि माप्र स्टिप-नेरनी (राम १३ १११)। सम् र्नु[र्याय] देशीया (देर): शुत्र स[ श्वीत] १५५/१८४(१ व

१२ १४ छ ६८८)। सुख्याणि वूं िशूल-पाणि १ महादेव रिजा २ त्रिशूल का हाय में रखनेशासा सुमट (परम १६ ११)। सृष्टिया धी "गुलिफा] द्योटा निपून (सुष १ ४ १)। इत्तर गि["सप्तत] विक्रतरही ७३ वॉ (पटम ७३ ३६)। हा ध िंघा विन प्रकार से (पि ४४१ मणु)। हुअण, हुष, हुषण न [सुपन] १ तीन जयत, स्वर्ग भार्य और पाताल सोक (ब्रमाः भूर १ = प्राप्तु ४३ मण्डु १३)। २ र्यु राजा दुमारमात के पिठा का नाम (इप्र१४४)। हुअणपास पु मिनन-पाछ] राजा कुमारमास का पिता (कुप्र १४४) । हमजासंस्मरपुं "सुवनासंकार] रावण के पहुद्वारती का नाम (परम = १ १२२) । हणिकार प्र िमुयनविद्वार पाटल (पुत्रचत) में शका कुमारपत्न का बन बाया हुया पुत्र केन मन्दिर (नूप्र १४४)। रेको तं ।

<sup>\*</sup>सि दे**वी इच = इ**ति (कुमा कम्म २ १२) ₹\$}1 विञ (म्र) भक [तिम् स्विम्] १ माद

होता। २ एक. मत्र करना। तिमद् (प्रतक १२)।

तिअ न [त्रिक] १ तीन ना समुदाय (मा १ काण्येय टी)। २ वह वाह बहा दीन चस्ते मिसते ही (पुर १ ६३)। संज्ञा पुं ["संयत] एक धनपि (परम ४, ११)। देशों तिग ।

तिभ नि [त्रिज] तीन से उत्तम होनेनाता (चन)।

विभेष्ट इं [त्रिकंकर] स्वनामन्यात एक पनपुनि (राज) ।

तिञ्जान [ब्रिक्क] दौन ना समुदान (विसे २१४३)। विजडा की [बिजटा] स्वताम-क्यात एक

चनडी (वे ११ र७)। विमर्भगी स्रो [त्रिमहो] सन्द-रिधेव (दिव)।

विअय न [त्रिवय] दीन का स्त्रूह (विधे **१४११**) i

विअलुका न जिल्लोक्यो तान काल्-विञ्ञासीय किया मार्थ भीर पाताल सौक (वर्ग ६ ३ लहम १) :

विञम पुं [त्रिव्रा] देन देवता (हुमाः पुर १

श)। गर्झ पूं िंगञ्ज देखनत या देखनल हाकी इन्ड का हाँकी (से १ ६९)। नाह पू िनायी सम्ब्र (उप १८६ दी सुपा ४४)। पहु पू जिस्से देश-नायक (सुपा

४७: १७६) । "रिसि पु ["ऋषि] गरव मुनि (कुप्र २७१)। जोग व िंद्रोकी स्तर्ग (उप १ १६)। विख्या औ

[विनिता] देनी की देवता (सूपा २६७)। सिरिकी [सरित्] गंगा नदी (हुप्र)।

सेंख पूं [रीख] मेर पर्वत (सुपा ४०)। ख्य प्रैन **ी**ख्य स्वर्ग (द्रुप्र १६ उप **७२व टीम पुर १ १७२)। हिवा** पू [शिभेप] स्त्र (सुपा ३४)। हिनद्र द्र

[ भिपवि] धन्त्र (मुपा ७६)। विश्रससूरि र् [त्रिष्शस्ति] ब्रह्मिठ (सम्पत्त १२)।

विमसिंद पुं [त्रिदरांग्द्र] एव देव-पठि (बरमा १६४)। विअसेंद क्यो विअसिंद (बाय ११)। विभसीस 🛊 [त्रिष्रोरा] इन्ह्र 😂 नावक

(Rt t): विकामा भी [बियामा] धति, सव (मन्द्र

विश्वस्त सक [विविशः] सहव करता। विश्चर (धाना)। वह विश्वसमाण (धावा)।

विद्रक्ता को [विविक्षा] शमा, सहिप्युवा (धावा) ।

विद्रव्य हे वि [वृतीय] वीवच पि ४४६।

विद्यी सील २) ।

विउक्तर न [त्रिपुष्कर] बाव-विशेष (मनि ३१)।

विषट्ट सक [ त्रोटयू ] १ तौक्ता । २ परि ध्याप करना । तिर्द्धिन्ता (सूच १ १ t () i

विबद्ध सः [इ.स्.] १ दूरता। २ मुख क्षेत्रः, 'सम्बद्धका विक्टूर' (मूध १ なれ)1

विष्टृ वि [ गुरू, बृटिव] र दूस हुमा। २ मपस्य (माना) ।

विडड पू दि ] कमाप मोर-पिष्छ (पाम) । विउद्दर्भ पूर्व [त्रिपुटक] बाल्य विशेष (क्षति ६ = पम ११६)।

विषय न [ब्] १ मालब देश में प्रसिद्ध बान्य विरोप (भा १८)। २ भींप, लबंग (भाषत 1 (33

विषय न [त्रिपुर] एक विद्यावर-नगर (६३)। विवर पूँ [त्रिपुर] पगुर-विशेष (वि १४)। पाद पुं िनाय] बही (बि ८७)।

विटरी की [त्रिपुरी] नवरी-निशेष नेति देश भी राजवानी (दुमा) । विद⊌ विदि]सन वचनसीर कासाको पीड़ा पहुँचानेवासा दुःस का हेतु (उत्त २)। विकड देशो विकृष्ठ (से व वर्ध ११ ६८)।

विंगिआ भी दि] कमस-रव (वे १, १२)। विगिच्छ देवो विगिरक (इक) । र्तिभिच्छायण न [चिक्स्सायन] स्थान-पोत्र-विशेष (इक) ।

विंगिष्या की वि] कमस-रज पद्म का रज पराग (वे १८१२) यवका है २ १७४ वो ४)। विवि वि विभिन्ती भौना हमा (स १९२)

KY Y11) 1 विवित् १वि 👣 बहबड़ करनेगला

विविणिय } बहुबहुनिवाला वास्तित साम न होने पर खेद से मन में जो बादे सो बीचने नाला (सव १ ठा ६—पत्र ३७१ नम्)। विविभी को [विस्त्रिणी] १ विवा इससी कापेड़ (समि ७१)।

विविणी भी [बे] बहुनहाना (बह १) । विदुरणी भी [विस्दुकिनी] क्युक्तिम (कुम ₹ **२**) i

विदुग १ पू [विग्दुक] १ प्रानिक्षेप वृद् विदुय का पेड़ (पायः पडम २ १०: सम ११२: पएए १७)। र म. फस-विरोध (परस्य १७)। ३ व्यावस्ती नवसै का एक ष्पान (विशे २३ ७)।

निदुग रे पु [तिग्हुक] बीनिवय कानु की विदुव<sup>ी</sup> एक बावि (बता ३६ १३८, पुत्र 16 (11) i

(मुरुव १ १६ टी)।

विद्सार (पएए १)। २ क्लुक वेर निद्सार (शावा १ १६: मुग ११)। ३ श्रीहा-विदेश (मानम) । तिस्त न चित्रस्यी तौनों कर का विषय (पएक २२)। तिकृष प्रै जिल्ला रे संश के समीप का एक पहाच मुक्ते पर्वत (प्रतम ५, १२७)। २ सीता महातथी के बन्तिया विनारे पर लित पर्वत-क्रियेप (ठा २, १—पत्र व )। मामिय पू स्मिमनी पूरेन परंत ना स्वामी धक्छ (प्रज्ञम ६६ २१)। निक्रम क्रिनिक्षमी १ देव दीका पैता (शहामा १४)। ३ मूध्म । ३ प्रोधा शक् (कुमा) । ४ पदव निष्ट्रर (वन १३ ३)। १ देवश्वक, वित्रनाय (वं २)। ६ कोबी, गरम प्रशतिकाता । ७ वीता नदूरा द क्याही । इ. प्रताय-एति । १ वर्षः क्ता। ११ व निष मद्दरः १२ लोद्धाः १९ वर, संप्रार्थ । १४ शक्त इपियार । १६ बस्य ना नोन । १६ मरनार । १ चेच कृष्ठ । १० क्योडिय-अस्टिङ तीरस्य क्या अवा भरनेपा भावां, स्थेता धीर पुत्र नगत (है

२ ७१ १)। तिस्य बर्स्स [र्तक्ष्मय्] तीरल करवा हेज बरता। क्षिक्तोइ (है 😨 १४४)। तिसम्यम् व विश्वित्व वैश्वन्यस्य उत्तेत्रव (<del>र</del>मा) । निरम्मस सक [ वीक्ष्मय् ] वीक्ष्य करना । पर्ने विशासिक्योवि (बुर १२ १ ६) । निरम्बन्धित वि कि देख विवाहना (देश १६ शाम)। निस्ताम [ श्रिस् ] द्येत बार (श्रिस । रंकप कीर सेवें)। िय रेगो शित्र व्यक्ति (वी १२) नुसा ११ गापा १ १) । बरिम वि वितिनी ।

मन रचन भौरशियर को बारू व रलनेशना 'नरमा जिल्लामान विमें कानवर बता (41) 140) 1 नियमपुण्य न विकासपुर्यी नवाजर होन दिन का प्राप्ता (संबोध र )।

(ठा२,६—पर ७ ३ इक् सम, ३३) ३ २ इड-विशेष निषय पर्वत पर स्वित एक ह्रद (ठा२ ६---पत्र ७२)। निगिश्च सक [ थिकिस ] प्रतीकार कला स्वान करना बना करना । विकिन्सर (उस रेट घटा वि २१४३ ४४४) । विगिरक ए जिस्सि ! वैद्या हुई म (बद १) । विशिष्क पू विशिष्क र १ इड-विशेष भिष्य पर्वेष पर न्यत एक ब्रह (इक्)। २ न देवविभाव-विदेश (गम ६०)। विगिष्क् र [वैक्सि ] विक्सानाह (सिरि १६)। विगिष्क्य) वि चिक्सिस् ही प्रवीकार

विभिन्नायण न विभिन्नायन वित्र-विधेय

तिर्मिति १ जिगिन्ति १ पर्वत-विरोध

(पिंड रेवड) । विगिन्द्यम व [पैकिस्स] विहित्सा कर्न (स ६--पन ४६१)। तिगिच्छा भे [चिक्तिता] प्रश्रेकार, स्ताव रन (टा६ ४)। सस्य **म**िशास्त्री पायुर्वेद देवक्सान (एव) । विभिन्दायण न विभिन्दायनी नोक विदेव (नम्बर १६)। विभिन्ति देशो विभिन्ति (धार ६०० पत सम बक्ष १ कि वि शेश्वर)। विगिन्छिय दे चिटित्सकी देख दिन्तरहरू tty) i निमानि [निमा] तथ्ल नेवाई २ ६२)।

तिनिश्क्य <sup>5</sup> करनेवला । २ दू वेच क्रुपेन

दिगिन्द्रज न [चिक्सिन] विकिता

(स ४ ४) वि १(३) ३२७)।

निग्प वि[क्षिप्त] निदुना, वीत-पुना (स्तत्र) । तिपृष्ठ पू [विगृह] शिधावर वेश का एक चरा (चरत १ ४१)। विजय र [जिजर] १ शियाचर वंग के एक राजा दा नान (चडन १ १)। २ छसन रंग का एक स्था (पान १, २६२)। निवामा ) भी जियामा । चरित्र एत (रव तिज्ञामी देश र (बा) ।

टिही (बीरेद)। की ही (सुपारंग्रे)। विक्रम एक [वाहयू] वाह्य करमा रिज्यह (प्रक्र ७६)। तिजन दिली क्ल बास (बुधा २३३ सदि (७६) सं १७१)। सम् व शि.सी त्रल काद्यय ज्ञाय (वय १३) । इत्यव र् िंडस्टकी बत्तः का पूता (भव ३ ३) १ विभिन्त व [विनिता] ब्याबिकेव बेंग (म ४ २ कम्म १ १८। ब्रीत)। विभिन्न न दि । मधुनाम मनपुरा हि ६ **११३ १ १२)** । विजिस वि विनिशा विभिन्न वर्षिक वैत का (सम ७४)। विजीइय दि [तृवाहत] तृशनुस्य मना ह्या (क्रप्र १)। ) यक [तिम्] १ शाप्र होना। विष्ण विष्माभार रिसर्व शहर कराया विरका

विश्व वृंती वि यल गरा करनेरामा गर,

यह (प्राष्ट्र ७४) । विज्य वि [वीर्य] १ पार वर्डेश ह्रमा (धीर)। २ शब्दः समर्थ (से ११ ११)। विष्य र स्तिम्य निर्ण क्लिक्स्एक नर्षे (क्ष प्रदेश हो) । विष्य देवो वि≖र्ता भीग दि [भिज्ञ] नि-प्रकृष्ट तील चत्रवस्ता (समि १९४)। "रिक्र दि "विघो तीन प्रकार का (नाम-र्वत ४३) र विणिग्ध र् [विक्रिक] केवी विचित्र व विविद्य (६६)। विषद्भेको विस्त्र (देव ४%, वश् वि ₹**१२)** । विष्हा देशो तलहा (धन धनना ६ )। नितंत र् [नित्त ] चानवी वा चनवी पाण, याद्य सामेदा द्यानन का पात्र (श्रामा)। विनय देगो तिअय (दर १)।

निनिषय हेरी निष्ठस्य । विधित्तर तितिसाए (बापा वि ४**१७)**। वर्ष विविक्तसमाग्र (स्वर)। विवित्रसम् व [विवित्रम] स्व वर्ग (원 및) ( विजिस्त्यया देनो निनिसस्य (निम १९९)

विविश्वस्था देखो विद्यवस्था (सम १७) । तिस्त वि दिली इत संदूध सुर (विमे २४ ६ चीना के १ १६/मूपा १६६)। तिस्त विकि रे बीवा करूपा (खाया १६)।२ वं दीतास्त (ठा१)। तिन्ति देवी त्या = दे (चिरि २७ संबोध ६)। तिकि की विमि विकि संवेश (वर १६७ क्षी हे १ ११७- सूचा ३७१ प्राम् १४ )। विचि दि वासर्य, सार (दे १ ११ पर)। तित्तिञ्ज वि विवित्त विद्याता (हे २, ११६)। विचित्र व तिचित्र र मन्द्र देश-विशेष। २ उस देश में रहनेवाची मनेष्य पाठि (पएड १ १)। देखो तिण्मिका। विकिर ) प्र[निकिरि] पश्चि-विरोप वीवर विचिर् मा विविर (इ.११ दूम ४२७)।

तिचिरिक्ष विदि स्ताव में मात्र (२ % (R) तिचित्र वि नियम् । उद्या (पर)। विचित्त दे हिं) बारशन प्रजीहार (ना XXE) I तिस्त्रभ वि [दे] पुर, माधे (दे ४, १२)। विश्व (दा) देयो विश्वित (१४ ४३१)।

तित्य वं जिस्यो साम्, सामी, मानक सौर शामिता वा समुदाय, बैनर्डय (विशे १ ११)। तिस्य वृं क्रियथे] कार वैधी (विन १३ )। तित्य न [तीर्थ] प्रयम मणुकर (एदि

ta 21) 1 तिस्य न [तार्थ] रक्क्सर रेगो (मिसे

१ १३) ठाँ १) । २ स्प्रीन मत (सम्बद्ध दिनं १ ४ )। १ यात्रा स्थान परित्र प्रयद (बर्मेरः स्तर समि १२७) : ४ प्रापन शासन जिन-४६ प्रखीत हाइसाही (पर्ने १) । १ पून धरतार, पाट, नग्रे गौरह में बतरने का चम्ता (निमे १ २६ विक ६२ प्रति बर प्राप्तु ६ )। यर, गर देशो यर (धन ६७: वप्प' चरम २ 🖝 🕻 १ १७७)। जना भी ["पात्रा] सेंपे गयन (वर्ष २)। पाइ नाइ पु नाय] क्रिकेटर (ग ७६१: 🗆 पू १२ दश्ह नर्च ४३: वे ३४) । यर वि विसी १ ठीचें का प्रक्तेंद्र। २ पूँजिन नेर जिल्ला

भाव (सामा १ व हे १ १७ अ से १ १) की. श (एकि)। यरणाम न [करनामम्] रुमें विशेष जिसक उदय से बीव डीमैंकर होता है (अ १)। सम पू ["सज] जिन रेक (चप प्रभ )। सिद्ध पु [स्टिद्ध] शीर्प-प्रवृत्ति होने पर भो पुक्ति मान करे वह वीद (हा ११)। ।हिनायग प्रीिवना-यक मिनदेर (ठर १=६ टी) । हिय प् िधियो संपनायक जिन-रेव (उप १४२) दी)। दिवह पू [ विपति ] जिनकेन बिन मेदरान (पाम)। ष्टित्यं इर पु [ व भेडूर ] देवो विरय-पर (चेद्रम ६५१)। विरिव वि वि विम् ] र वार्यनिक वर्रान शास का विद्वार । २ विन्ही दर्शन का धन यामी (प १)। तिरिया वि [तार्मिक] उत्तर केको (प्रको तित्यीय वि [तार्थीय] कार देवो (विसे 1884) 1 तिस्यमर र विधियर विन-रेत जिन-मयवाम् (सूरा ११ वह २६)। विदस वैधो विअस (माट-विक २०)।

तिदिय न [तिदिय] स्वर्थ देवसीक (सूपा १४२: गुप्र १२ )। सिम (मा) देवी सदा (द्वे ४ ४ १ कुमा)। विस देखो निज्य (सम १)। विद्रां वि वि स्वीमित बाद गीला (शाया 2 K) i विपन्न रेवी स-यण्ज (रेच १, १८)। विष्प का [विष्] केता। विषद (संब ११७)। विष्य सक [ नृप् ] नम होना । वह निष्यंत (Fit & 80) 1 विषय सक [सपय ] तुम करता, हैक भा इमा बीरो तरसे निष्युत्र कामग्रेदेद्वि (पक्क ११)। इ. निष्यिक्य (पहम ११ ७३)। विष्य सक [ निष्] १ सरता, कृता। १ यक्रतेत परता। इ.संसा। ४ एक मून चुत करता । जिलामि जिलित (मूच २, १ २ २ ११)। सः निष्माप (छाता १

१--पत्र ४७) । प्रयो, बङ्ग तिष्पर्यंत (सम X ( ) 1 तिष्य वेत चित्र वे प्रमान माहि योने भी क्या शीष (मण्य २ ३२)। विष्य विदिन्नी संदुरु नुग्र (दे१ १२८)। विष्पण न सिपनी पीइन रेसनी (मृष २. २ ११)। विष्यम्याको [तपनता] सम्भीकोषन रोवन (ठा ४ रें) भीप)। विष्याय न [श्रिपात् ] त्रा-निशेष नीनी (संबोध १०)। निस (मप) देखा तहा (है ४ ४ १ मर्पि कम्प १)। विमि प [विमि] मस्य को एक बावि (पर्क 1 (1 1 विभिंगित पू [ र ] मरस्य मध्यमी विमि (मन्त्य) को नियत्तनेवाला मस्त्य (दे ४,१६) । विमिंगिछ प् विमिक्कि मस्य मी एक जाति (दे १, १३ में ७ को पस्तु १ १)। "गिळ पूं "गिस्डी एक प्रकार का महान् यतन्य बडी मारी मध्यनी (गुम २ ६)। विमिगिछि पु [विमिद्रिकि] भरस्य भी एक पाति (परम २२, ८३) । विभिनित देवो विभिनित = विभिन्नित (उप 2 ( c) t तिमिच्छय ) पूं [रे] पविष्ठ प्रशास्तिर (रे विभिष्याह । ६ १३)। विमिगन दिंगोलाकात (देश, ११)। विभिर् न [विभिर्] १ घन्पकार धीपेत (पक्किन्य)। २ निराधित कर्म (वर्म २)।

६ मन्य शहा । ४ मजान (पाषु ४) । १ दु बुल-विदेश (त २ ६) । निमिरिष्द र् दि ] क्षारिय करत हा **प**ष्ठ (दे २, १६) । विमिरिम र् [द] इत्र-रिधेष (पण्ण १--

पत्र ११)। र्तिमञ्ज भीत [तिमित्त] बावर्भश्चेत (बरन १७ २२) । धी. स्प्र (घर) ।

निमिस पुं [निमिष] एक बकार का बीधा, पटा कुम्हदा (कप्पू) । निविमा ) भ्य [ार्नामहा] बताइव ५३५

निमित्ना 🕽 भी त्र प्रम (मे २, ६) पान ₹ ₹<del>~</del>43 ₹४) :

निस्स क्रम मिनीस नै क्रीकरा, क्रान क्रोता । क्क. तिस्सामाण (पत्न ३१. ए ) । क्रियस्करिया र श्राप्त करना।२ द्याव कीमा होता। तिमाद (प्राव्य ७४)। शंक तिस्मेरं (शिंक ३४ )। किया केले जिला (देर ६२)। तिरियात्र कि लितिसिती स्तार योजा कि 1 (05 3 तिया को स्थिति की महिला भीती तब क्रियनम्बर्धा पत्रं बची एक्सिम बीचे (त्रब Y 10) i तियास केले से-स्थानीय (क्रम ६ ६ )। विरक्त सक [विरस + कृ] विरक्तार करना. स्वर्गराम करता । क तिरक्षाधीस (नाट) । विरद्धार ए विरस्कारी विरस्कार, भगमानः धवदेवता (प्रवी ४१) गया १४४) । विरक्तिजी ) को विरस्करिजी वर्गनकर तिरक्श्वरिकी प्राप्त (शि. १ ६) प्राप्त 1 4 5 2 5 तिरक्त देवी तिरिक्त (प्राप्त १६) ३ व) । तिरि ) स िर्विषेक किरका, देवा (प्राप्त रिविक । 1 (83 तिरिक्ष कि तिरक्षी विर्मेष का विरिमा मराजा व विष्यमा ध्यस्या विविधारियारिया (समार क क क्ष्र)। निरिय वि विर्वेच दिनक,⊈2व विरिध्नेच । बक्ता (यह रे उप प्र ३६६ विशिष्टा । सुर १० १६६) । २ व पव विरिया पानी भारि मान्ती केन नारक बौर मनुष्य है किस योगि में करपन बन्तू (मराभर है ६, १४६) सुब १ व १) का दूरे इंटर प्राप्त रेक्टर महारू भारत प्रदेश परम २ १६ मी २ )। ३ मर्ल्यकोच बच्च सीफ (टा३ २०)। ४ त सम्य वीचा (यन: बग १४ रे)- 'तिरियं सर्वचेत्ररां बीवतपुरार्थ बरक बरकेल बेलेव बहुरिये धीर (रूप) । शह धी शिवि है कियेग-मोनि (टाइ,३)। २ वक्ष मीर टैडी चान कृत्ति गवन (चंद्र ३) । खीमगर् ["जुम्सक] देवी वी एक वासि (कप्प)। क्याणि और विश्वानि ] पशु पद्यो धर्मद का

बरपित-स्थात (महा) । ओणिक नि ियानिका निर्वय-प्रोति में ज्वारस (सम २३ प्रसाधीय र छ। देशे। खोणिजी बी ियोनिका विशेष-पोति में छापन औ क्षमा निर्मेश की (परारा १६-पन प्र. १)। किसा किसि की जिल्ला विकास किन (कारम क्या) । वस्त्रम वं विकति बीच में पहला प्रताह मार्थावरीयक पर्वत (भारप र) । मिलि का निर्मित बीच की बीत (माया)। स्रोग वे स्मिन्ती मत्त्री सोच्ड सम्ब ब्रोफ (हा १ १)। बसाइ को विस्तिति विश्वय-पोति (पण्ड १ १)। तिरिच्या वि [तिराधीन] १ तिर्मेष वत टेबा धनाइया (राज)। २ तिर्वेग-संबन्धी (क्ल. २१ १६)। सिविक्किक देवों तिरिद्ध (कें. २. १४%। एक )। विविधिक्रम क्री सरिधिक्रम (प्राचा २ ११. x) i विश्विकी की जिल्ली शर्मक की (करा) । विरिक्ष पं वि । एक काल का पेड विधिर मक्र (दे ५, ११) । विरिडिश नि कि रै विमिर-पुक । २ निवित (t 2 38) i विधिक्त पंदि उपग नतः, परम पनन (दे 1 (53 .2 विरिक्षि (मा) देवी विशिक्ष (है ४ २६४)। विरोड प्र किरीट पुरूद विर का बाजनरा (प्रवर ४ सम १३६)। विरीह पं विरीटी क्य-विरोध (बह १)। पट्टम न पिट्टकी क्त-विदेश की बाल का बना ह्या क्यहा (ठा ३ ३ -- पत्र ३३८)। विरोधि विकिरोटिको सुक्रमुख पुसूर विमृत्ति (क्त र. ६ )। विग्रेभाव 🖫 विग्रेभावी तय धन्तवीत (विके २६६६)। विरामद्र कि कि∏ कृषि से अन्तर्कृत बाक्से न्यरदित (दे ४, १३) । विरोहा कर विरम्+बा ] प्रतक्त करता. नीय करना प्रदेश करना । विदेशिव (वर्नीन ₹¥) I

विधेदिन वि [निधेदिव] पुत प्रकाहित

महत्त्व मान्सारित देश हुमा (राज)।

तिस्र वं तिस्रों र स्वयम प्रस्ति का निर्म िमा (बा ६३६) बाह्य रे राज्य रेप s - ) i v millem briftigen feit bi १.१)। इसी की किसी शिव की की ही एक जोएस बस्त शिवरूट (बर्ब २)। यप-किया को विपर्वतिका कि की की हो है एक कार बीच विस-पापर्श्वाया १)। पुण्यान व विद्यालयाँ विश्वीतिक देन-वितेत गर-मिलेप (कार र्र)। सकी को किसी एक साच प्रस्तु (वर्ग २)। स्मानिय से िस्सास्त्रियों दिल की क्ली (का १६)। सक्कविया थ्ये ["ब्राव्यक्रियो जिल्ही कती हाई बाच वस्त-विदेश क्रिब्ब्सिया (सर) विस्वत्रम कि [विस्थित] विकास से वय विभवित "चनवम्य (विकासी धावरित मंक्सरमस्त्री (वर्मा ६)। विश्वाग व [विश्वत ] देश विशेषः एक बर्टीन द्मित देश मांग्र श्रेत (रूपाः १४)। विस्माकरणी भी [विस्मकरणी] १ विवर करने की समार्थ । २ मोरोचना पीने रंग ना एक सूर्यक्ति प्रमा, को शाम के रिटाम्स <sup>है</sup> निक्नता है (सम १ ४ % १)। विस्ना ) इं विस्त्र । इद्य-किरोग (वम विस्त्य 🕽 १११ धीरा क्या समा १ छ चप १ वर्ष दी' सा १६)। २ एक प्रतिनर्तुः देव राजा जरफ्रोज में प्रराम्न गर्बा बर्धिः नामुचेन (सम. १६४) । १ हीप-विकेष । ४ सदुव-विशेष (राज) । इ. त. पुरा-विशेष (दुमा) । ६ टीका सत्ताट में किया बड़ा कारत गारि वा किश्च (कुमा वर्गो ६)। क एक विद्यानर-नगर (१४)। विसन्धी की [विसन्पर्यटी] किन की क्ये हैं एक बाच परत्, विचयहो (पर ४ दी) ! विश्विवित्वयः पुं 📳 का क्यु विशेष (स्म्प)ः विक्रिय क्षेत्र [बे] नाव-विकेष (इपा २४६) क्छ)। अधि मा (तुर १ ६०)। विशुक्त न [ब्रेडोक्य] सब्दे बार्व धीर पाठाल लोक (वे २३)। विज्ञचमा को विज्ञेचमा(वम्मत १४४)।

विम्नेष्ठ न [विम्नवैस] क्षित का केर (इ<sup>ना)</sup> ।

विस्रोक्त रेकी विलक्ष (तुर १ ६२)।

क्करा (का ७६८ दी। महा)।

विद्योदय 🕽 बर्ल (बाबा क्या) ।

तिह न [सिह] धन्द-क्रिये (रिय)।

२४ ) ।

(45 t) t

तामोधी वामी ध

तिसोदग ) न [तिसोदक] तिन का योवन--

विद्वत्व सिंखी वैत्र तेल (मूक्त १४) दूप

विक्रस वि शियक विनवेजनवास तेनी

विद्वारी हो नि विसहरी यु चीसनोती

(मंद्रो नियम १६६ पुत्रित) मारवाड़ी में

विद्वादा ध्यै मिन्येदा निधी-प्रिधेप (निद् १)।

विवर्णा हो विवर्णी एक महीपपि (वी

विभें (घर) देशों वहा (हे ४ १६७) ।

X) 1 ेपाय सक् श्रि+पादयी मन वयन बीर नाम से नट करना, जान से मार तात्ताः विवासप् (पूसरे ११३) । विषद्भ र् [त्रिविक्त्म] वैतपुनिः 'गहिमा निवर्णाह ( ? विचर्णाह ) मही विविद्यमो रेल जिप्पामा (वर्षीय **=६**)। ाविका स्वे [र] मूची मूर्द (रे १, १२)। ५विश्री स्में [४] पुटिका सीटा बुदवा (दे १ । 22) I देष्य वि [नाझ] १ प्रयम प्रवएक प्रत्यट (मप १५ भाषा)। २ रीप्र मदानक क्राप्तना (तूच १ ४, १) । ३ माइ निविद् (पएट १ १)। ४ तिन, बहुमा (मग १ ६४)। १ महाट कतम मार्च-पुट (लावा १ १--पत्र ४)। तथ्य रि[इंतिय] १ दुच्य यो विक्रिता संसद्भ द्वासर (देश, ११ मूच १ ३ ३११ ४, ११२ ६१ माचा) । २ मण्यत् श्चरिक सम्मर्थे (दे दा ११ वर्षे ६, भाग वतह १ व वंबा ११। यात ६। यत।)। मिथा [बिसंस्य] दीन बार नुता से मन्द्री वर्ण बार कर की की स्त्री बात वर्षेत् १२ ७)। मात्र का [जिससा] बगरन् बहातेर को ग्रज्ञा का काम (ग्रम १६१)। सुन्न कृ तु र] भागत नहारीर (रार १, १६) ।

विस्रोत्तमा हो [विस्रात्तमा] एक स्वर्गीय | विसा हो [तृपा] प्याप्त पिरासा (मृर १ २ ६. पाप)। विसाइय ) वि [ कृषिव ] तूरानुर, प्यामा विसियं (महा धर परहेर के मूर र 1 (755 विसिर पूंब [ त्रिदारस् ] १ देश-विधेव (पडम १६ ६५) २ पूँ नूप निरोप (पडम ११ ४१)। व स्वरणका एक पूत्र (में १२ १६)। विस्तृगुत्त रेजो वीसगुत्त (एन)। विद् (पा) रेमो महा (रुमा) । तिहि वंत्री विधि वंबद्ध बद्ध-कसा स मुक्त नाम दिन शायेष (वेद १ श्रीअ वि [तृतीय] तौनरा (सम १६ वीभ नि [अनीव] १ प्रमय हमा बौद्धाः हुमा (शुपा ४४१, मग) २ पूं भूतसन (ठा 🛚 वीइअ प मितिस्त्री व्योविय-प्रसिद्ध करण तिरोप (तिन ११४८) । शीमण व [वामन] कही पाय-विशेष, मोर (देश, ३३ मरा)। श्रीमित्र पि [नीमित] मात्र याला (रूत बीय वि [चैन] बीन (सूम १२२, सीर पर्कशिक्] समर्व होना । कोरइ (है Y at) 1 वीर सक [सीरय ] सनात करना परिपूर्ण करना। तारह, तीनेइ (है ४ ८६ मन)। धाः दारिचा (क्य) । बीर देन [वार] जिनास, वट, पार (माज रेरेर प्रापुर द्वाप राज्य)। शास्त्रम रि [शार्यम] बार-पामी बार वाने बादा (सरवा) । वीरदू र्व [वारम्य कायथे] सभू पृति मबंग (स्त्रीत २ १)। दर्पास्य रि [न.रिन] मनारित, बरिपूरी रिचा ह्या (पर १)। धारिया भी दि ] सर वा चीर रातने वा चैना वरम्य द्वजादंबराप्य (१) महिबरकेन पामार्थ पणुरदं, कथबा हारियाचर' (ब

२६३) ।

श्रीस न जिसम् दिसम् विश्वन-विशेष तीत ३ । २ तीस-संदर्भनाता (महा भवि)। तीममा ) श्री [ त्रिशत् ] कार रेतो (र्वति वासङ् रेश)। बरिस वि विषेत्री वीव वर्षे शीसम्बद्धा (पठम २, २८)। वीसइम वि [त्रिश] १ वीसवी (पटप 🤏 **१८)। २ न नगतार चौदह दिनों का** उस-बाम (ए।या ११)। धीसम वि [ब्रिशक] दौन वर्ष वी कमगता (तंतु १७) । धीसगुन्त वृ[तिष्यगुप्त] एक प्राचीन प्राचार्य विधेप जिसने धन्तिम प्रदेश में बीब की सत्ता का पन्प चनाया वा (ठा ७)। सीसभद्द ( विष्यभद्र ) एक वैतनुति (क्य) । र्तासम रि [बिरा] शैसर्वा (मरि) । वीमा औ वेदो वीस (हे १ ६२)। वीसिया की [त्रिशिय] क्षेत्र वर्ष के उन्न नी की (पप ७)। तु म [तु] इत सर्वों का सूबक सम्मय---१ দিসরা मेद विशेषल (था २० विसे ३ ३४)। २ धरमारल निरुप्त (सूम १ २२)। ३ समुख्या (सूध १ १)। ४ नारण **१**तु (निषु १) । १ पार-पूरक धम्यय (तिसे ६ ६६ पंचा ४)। शुभ सक् [सुदू] स्वता करताः रोहा करता । तुमह (पर्)। प्रयो, संह- तुवापहत्ता (का **₹** ₹) i नुभर पू नियरी काल-किरोप घर (जै नुअर धर [स्पर्] शाव होना कीम होना जल्दी शना । तूपर (या ६ **१**) । भुग वि [तुद्ग] १ ≰वा अवव (या २४६ धीर) । २ र् एन्स-रिधेन (रिन) । र्तुगार पुं [ तुद्गार ] यान बाल का करन (पात्रम) । तुगिम पूंड्ये [ तुद्धिमन ] ब्रेनाई, पानप (मूरा १९४) बडा ११ : बच्च अछ) र शुंगित पू [मुद्धिक] १ धाम-विकेत (पारब) । २ वर्षेत्र-विदेश में विश्वविद्यांबार देवे हिन्न वर्ग नवर् (इव.१.२)। व दूर्वा लान्निक्टन में बनाय जनवर् मुनर चेर' (छरि)।

W. र्तिया की तिक्रिका निर्माणिक (भगे)। तुंगियायण व तिक्षिकायम एक मीन का नाम (कस्प)। तंतीको कि रिचकि एउ (के स. १४)। १ प्राथम विदेश चित्रपरसङ्ग्रहेचीपीच्छ-(काव)। लंगीय प तिक्रीयी पर्वत-विदेव (सर १ **a** ) i हुड क्रीन हिण्डी १ मुख गुँइ (शा ४२)। २ धव-आर्ग (निकार)। को की की कोतिः वीविजनती बटनाइ प्रक्रिस्स तंबीयं (सपा १२२)। <u>क्षीर व विते संब</u>द्धिमी-क्षा वि ६ 14)1 शुंबुक्त पु विही की खंबर, पूराना वड़ा (र Z, (X) i तंतकसदिल वि वि अध-पुक्त (रे र तुंबत [तुन्त] अवर, फेट (वेश १४) ज्य wac Δ) ι हुविद्धः ) नि [हुनिद्धः] बड़ा फेटबाला सैरिन तंबिता (कप्प वि १११, उत्त ७)। हुंब न [ हुम्ब ] तूम्बी चलानू, शीकी (पस्प २६ ६४। ब्रोज ६० वस १३६)। २ पास की नाकि 'न दि तुबस्यि विख्डी घरवा चम्रारमा द्वृति (सलम्) । ६ 'ज्ञातानमैकना' कुद शा एक सम्बद्धन (सम)। वजन िवसी हॅनिकेल-विदेश, एक मांव का नाम (सार्व २६)। बीज वि विगा वीसा-विशेष को बजलैनाला (श्रीन ३)। बीजिय वि ["भीणिक] नहीं पूर्वोक्त वर्ष (बीमा **भग्रह २ ४० शामा १ १)** । हुन व हिरूको पहिए के बीच का दोला सन वर (स्टिंग्स)। बीजा की विशेषाी बाच-विरोग (सब ४६)। तुंबर देवो तु गुरु (दक) । हुवाती [हुम्बा] बोरपान देवीं की एक सम्बन्दर परिमद् (ठा ३ २)। तु बाग र्ज़ [तुम्बक] रह्, सीनी (रह ४,१

४२७: सम्) ।

त्रविद्धीकी विी १ मध्यप्रत मवपुरा। र सरकार कव्यत (दे ४, २३)। सदी की सिम्बी रिदम्बी मनाव. सीनी. का (के र्रेट १४) । २ केन साबुधों का एक पात्र संपंछते (संपा ६४१)। मुंबुरु पु भिुस्तुकी १ बृध-विरोध जिल्ह का पेड़ (के ४ के)। ए सम्बर्ध देवों की एक बार्ति (पएए) १३ एपा २१४)। ३ मनवान द्यमिताच का रहसनाविकासक देन (संदि ) । ४ शहेल के क्यर्व-रीत्य का चरिपति देव-विजेय (हा ५) । पुरुक्तार पुदि | एक उत्तम वादि का धरन बा बोबा 'बाल' व तत्व पता तक्वारतर्वमा मानिवीमा (सर ११ ४८) वर्षि)। वेशी तोक्सार १ तुष्य प्रेमी तिष्या रिका विकि चतुर्वी नवमी दवा चनुर्देशी दिवि (सुरव १ 12) 1 प्रनद्ध वि [वे ] सनपुष्ट सूका दीवा तुच्छ वितिच्छा र इसका वक्त्य, निकट, क्रीन (काया १ ४ आसु ११)। १ मल्य चैदा (वय ८, ३३)। ३ तून्व रिख, बाली (माना)। ४ मसर, निकार (क्य १८ ३)। ३. पनुर्ण (ठा४ ४)। तुरुबहुक ) वि [दे] चीनव वनुचन-प्राप्त तुष्याये 🕽 (देश, (१)। तुष्टिक्स पुंची [तुष्टक्र व] तुष्टका (वर्ष्णा 224) I द्रव्यान तिर्थी वाघ वाना (स्वार ) । हुइ यक जिद्र हुइड़ी १ हुटना विक होना वर्शिक होता । २ वृष्ट्या, वट्या, बीद्यमा । कुद (सदा स्टाई ४ ११६): 'बल्बर्स रेंतस्त्रि नद्वांति न सामरे एक्खाई' (बजा १६६) । यह- तुर्द्धा (एए) । सुट् वि जिटिया द्वारा, विका बहिस्य (स ७१ व्ये सुद्धा १७ वे १ ११)। हुदुष्प न ब्रिटिसी विन्देर, पूचरकच्छ (सूम १ १ रायमा ११६)। तु विजी की [तुस्थिती] शन्ती-विदेश (है ४ तुहिम नि [ मुटिय तुम्बित] निषय बरिस्त (दुवा) ।

सुद्धिर वि । प्रटिव ी झ्टोन्ससा (क्रमा क्र)। तुझ वितिष्टी तोष-पात दुव संख्या 🕶 (सर १ ४१/मत)। तदि को तिष्टि । क्ली. मारूक की (खर बर १ २३ वस २४४। स १ १) । २ इत्या नेइरबाची (इत्र १) । हुइ एक हिन्दु हिन्दु कार क्षेत्र।हुइ ar eeti सुद्धि की जिटि रे जुनता, क्मी । १ केंद्र इपछ (हे ४ ११ ) । १ संस्थ, श्री (ग्र · (22) 1 प्रक्रिश न. [प्रटिक] धनाःपुर समान 'तुरिकमन्त्र पुरमपुष्टिको' (बोदादि 🔻)। सुद्धिम न सिटिकी मन्त्रेपुर, बनास्का (सम १=-पत ग्रा)। तुरिम वि [ बृटित ] दूस हमा, <sup>कृतिका</sup> (Reg 14: 2 t ttt: 411 1)1 तुविभान [दे <u>प्र</u>टित] १ सतः, सर्देर मामा (धीरा चके में शेवस र र)। र बाहु-एक्टक हान का सामध्या-विशेष (बीद द्या वा पठमा वर १ ४४ स्टब्र)। १ <del>वर्ग</del> विरोधः 'तुर्विभीन' को चौरातो बाब हे हुए पर को संस्था करन हो यह (इक क्षा १४)। ४ सामा को इस वह साहि में कराते की पद्मी फैबन (निच् २)। हुकिक्स न दि प्रतिवाह] र <del>वेका</del> विरोध पूर्व को बीधरी बाद है इस्ते स को संक्या सम्ब हो यह (इक <u>स.२, ४</u>)। २ पु. बाद्य क्लेबाबा करानुष्ट (म १० सम् १७ पत्रम १ २ १२६)। तुक्तिमा को [तुक्तिता] बोक्सव रेतिहै मय-महिपियों हो समय परिन् ( ¶ ₹)Î हुकिमा को [के हुटिका] हल का बावर<del>स्य विदे</del>त (क्टा ८ स्त्रमा १ १ टी—ला४३)। हुणब दूं [दे] बाय-विकेत (रे र. १६)। ठुणमा केवो तुण्याग (राव) । तुष्पण न [तुमन] क्टे हुए वस का क (इस द्र प्रशेष)। तुष्त्रागः 🧃 [तुमवाय] वय को शुक्रमाय नामा एक कररेगाया, (छवि; इस इ.२१ महा)।

तुम् व [तुमुख] १ नोम-हर्पश दुव, भगा-

नक चैवान (मर्स्ड)। २ व सोएक्स (माम)।

प्रुष्णिय—तुन्रगा

हुरच पू [हुरग] १ मण, जोड़ा (पर्हा १

हुस्मान [दे] काक्दालीय स्पाय (के ५

११। हे ४ एक)।

हुमा (बृह १)। २४६)। ४)। २ इन्द-विशेष (पिन) । "देहपिंडरण द्रमहकेर वि [स्वदीय] दुम्हारा (दुमा) । प्रुणिक् म [तूष्णीम्] मौन द्रपी दुक्की न ["देहापञ्चरण] सच को सिनारना सँवा-प्रमहकेर वि [युष्पदीय] प्रापका हुम्हारा हुपवाप दुपकेसे, मीन होकर (मनि)। रना र्यागर करना (पाप)। वैची सुरग । ( t ? Y ? ? (Y)) I तुन्दि ( दि] सुकर, सूधर (वे ४, १४)। हुरयमुद्द देनी तुरग-मुद्द (पन २७४)। द्वम्हार (भप) क्यर देखो (मनि)। हुर्जिंद् केवो हुर्जिद् = तुष्कीम् (प्राक् १२)। त्वरावासा वस्त्वान (से ४ ३)। हुम्हारिस नि [युष्मादरा] प्रापंडे कैसा हुष्ट्रिं भीत स्वाह्म्याः हुरिअ दि [स्वरित] १ स्वरा-पुक उतादता तुम्हारे वैद्या (दे १ १४२) वस्त्रा महा)। प्रुण्डिक ∫ मीत पहतेताला भुप पड्नेबाला (पाम हे४ १७२ सीपा माप्र)। २ किमि पुन्देवय वि [सीव्याक] प्रापका तुमहारा (प्राप्त पा ३५४ तुर ४ १४६)। बीज जल्दी (गुपा ४६४) भवि) । सङ्ख (दे २ १४६) कुमाः वब् ) : हुण्डिकः वि [दे] मृदु-निश्वव (दे ४, १४)। [ैंगवि] १ शीम महिमासा। २ 🛊 हुयट्ट धक [ स्वर्ग् + बृस् ] पार्थं को बुमाना तुष्हीअ वेको तुष्हिल (स्वय ४२)। समित्रपति मामक इन्द्र का एक सोक्पास कष्वट फिएना। तुबद्ध (कम्मः भग)। तुत्त केंद्रों वोत्त (पुषा २३७)। (अ**४१)।** पुण्हें क, पुण्हें का (मपः मीप)। हेक तुय तुरिल वि[तुर्य] चीचा चतुर्य (मुर ४ तुत् देवो तुमा। तुत्प (थक)। वद्ग-तुर्द हित्तप (पात्रा) । इ. तुमहियस्य (ए।मा (मिसे १४०)। २१ कमा४ ६६। गुपा४६४)। निहा १ १३ मन मीन)। शुद्र पुं [तोव] प्रतीय, सरदार बंबा, चाहुक 🛍 [ैनिद्रा] मरसारता (स्प पू १४३) । हुबहुज न [त्वम्यर्तन] पार्थ-परिवर्तन (सुमार ६ २, २,३)। प्ररिष्ठ म [तूर्य] बाध बाविव बाका 'तुरि हुमज न [हुमन] रक्न करना (नम्ब ३ ७)। करवट फिराना (बोच ११२ बार बीप) । यान्सं धीमनाएए। दिव्येखं रामणं पूर्वे (प्रत तुमाय देवो तुष्याय (संदि १६४)। सुयङ्कारम न [स्वरक्तेन] करतर बस्तवाना । २२ १२)। हुसार ई [हुसदार] एक करनेवाला रिक्सी (प्रत्या) । तुरिमिणी रेको तुरुमणी (राज)। (वर्गीव ७३)। द्वभाषद्क्ता वेको तुकाः द्विपीकी [दे] रंपीन कुट। २ सम्माका हुप्प पू कि] १ क्षेत्रक । २ विवाह शादी। ह्मर मक [त्यर\_] स्वय होना वस्यो होना **छपकरण (वै ४ २२)**। ६ सर्पंप सरसों, बाल्य-विदेय । ४ क्रुनुप की र्यम होमा । वह द्वरंत द्वरंत द्वरमाण, हुरु न [वे] नाय-विधेष (विक्र ८७)। धादि माले का चर्म-पात्र (दे ४, २२)। ४ हुरेमाण (६४१७२ प्रासु रहः वड्)। पुरुषः न [तुरुषः] धुपनि प्रध्य-निरोप भो वि प्रक्षित प्रस्का हुमा भी मादि है सिप्त द्वर }की [स्वरा] सीमका वर्ती (दे र, क्य करते में काम भावा है सोबान, सिस्हक (दे ४, २२ कच्या या २२ २८६। हे १ द्वर्षा १६) । वर्ते वि [ वन् ] लयं-पुत्तः, (सम १३७ स्थावा १ १ पतम २ ११; २)। ६ स्तिष स्तेत्रपुक्त (दे ४, २२) द्वरंग प्रक्ति सम्ब, भोड़ा (कुमा प्राप्त पौप)। सोव ३ ७ मा)। ७ न बृत बी(छे १४, ११७)। २ समयन्त्रका एक सुमद्र (पडम हुरुवा पुं [हुरुष्क] १ देश-विशेष पुक्तिस्तान। वेस सुपा ६६४३ कुमा) । २ वि तुर्किस्तान का (स १३)। **₹₺ ₹**#) ( हुप्प वि [दे] वैष्टित (प्रत्यू २६)। हुरंगम र् [सुरक्तम] मध्, चौड़ा (पान्य; हुरुकी की [हुरुष्क्री] तिपि विशेष (विशे तुप्पर्म দিন)। धुर्मित्र । वि. [दे] वी से सित (बा ४६४ टी) । हुर्रीगमा को [दुरिहरूम] नोमी (पाप)। तुरुमणी की वि] ननरी-विशेष (मतः ६२)। क्षणविञ । १२ म)। द्वरंद ध्यो हुर। तुरेंच हुस्त हारेमाण } देखो हुर। हुमहुम र्ड [दे] बोबन्द्रत मनो-विकार विदेश शुरक ई [के हुएक] १ केन्सिकेंग, सुन्धि-(छ य—पत्र ४४१)। तुष्ट सक [तोष्टम ] १ तीलना। २ क्याना। स्तान । २ मनार्यं बावि-विशेष तुर्वं (वी हुमंहम र् [दे] १ तुकारवाला वचन, ६ ठीक-ठीक निकास करता। पुनाइ पुनेह **१**४) 1 (है ४ २६ तथ बना १६०) । वह गुरुखि विस्कार वयन तू. तू (सूच १ १, २७)। तुरम देवो तुरम (मन ११ ११, राज)। २ बान-कन्नकः 'घणवूर्यनुमे' (उत्त २६ (पिंग)। चंद्र- द्वालेकण (बार् १)। इस् सुद् पूं ["सुरू] धनावं देश-विशेष (तुप १८)। १ वि तुकारे से बात कहनेवाला द्वसेथम्य (से ६, २१)। १ रटा)। मेडग पु [ मेडक] बनाव 🗷 🕶 भा भुला (दुना १६)। (संबोध १७)। बैरा-विशेष (सूम १ ४, १ टी)। हुस्मा देवो सुसम्मा (पन्द्र = ) ।

तरमणी देवो द्वरमणी (सर्द्ध १७ दी) ।

द्वरमाण देवी द्वर ।

पारभसरमहरूको र्तिगदा-पुरुष

हॅगियायण न निक्रिकायनी एक बोब का . वाम (क्प्प)। त्रगीची हो र चक्रि चत्र (देश, १४)। १ भाग अस्ति। पालिपरत्र्तानीयंद्यः---(काव)। हामिय प्र हिझीयी पर्वत-विशेष (कर १ हॅंड भीत हिपड़ी र मूच गुँउ (वा४२)। २ घप-माप (तिकार)। और अति कि

र्तिगया की तिक्षिका नगरी-विदेव (मग) ।

कोरि कोवियाची कावा प्रतिस्त संदीवं (त्या ३२२)।

8्डीर न वि] मधुर-विस्थी-कस (वे ध्र तंडम द विशिष्टें बट, दूरमा बहा (दे Z. 22) I इंत्रमहित्र वि दि विरामुक्त विश् 24) i

5.व न जिन्दी बरद देट (दे ६, १४) उस 4 (£ 4) र्तेविस ) वि तिन्दिली बढा देखना होरेस गरिक्ष (रण ग रहर, क्छ ७)। ठ्रेच न [ हुस्य ] दुस्ती धनातुः सीरी (पदम २६, ६४ भीप १व- इत्र ११६) । २ पार्थ नी नामि 'न दि तुनीन विख् दे बरवा

तादारमा इति (धावम) । ३ 'ब्रातावर्गरका

मुत्र का एक सध्ययन (हम) । सम न [ बत] वॅनिरेश-सिटेप एक पंच का शाम (नार्थरेश)। बीम दि [धान] बीला-विदेव को बजानैशाला (बीच के) । बीजिय वि "बॉल ही वरी प्रशेष्ट वर्ष (बीत प्रदेश क्लाबार १)। तीय व निम्बी परिए के बीच का बील सब धर (गरि ४६)। बीजा औ [बीजा] बाद-रिटेच (राव ४६) । नुंबर देगो तु पुर (६४) ।

यम्पनार गरिगर (स १ २)

हुदाधी [हुम्स] भोषपात देखें की एक तु बाग इंत [तुम्बक] बट् सीरी (दग क्र.१ मु विश्वी भी [मुविवर्ता] बानी-विदेश (१४

४१ राष्ट्र) :

संबी की ज़िम्बी रेशमी, बसाब सीबी का (देश रेप)। २ वैन साइमों का एक पात्र वपस्यै (सपा ६४१)। र्तेषर प्र**ितन्त्ररु**] १ क्ल-विशेष दिवस का पेड़ (दे ४ दे)। २ यन्त्र देशों की एक वार्षि (पएस १: मुपा २१४) । व सगवान समितनाम का राममान्द्रियक देव (सीत )। ४ शान्त्र के पन्तर्भनीत्व का प्रक्रिपति

तकि की की रेमक प्रश्न मक्पका।

२ जावत क्रमत (हे १ २६)।

बैन-विशेष (हा ७)। तुक्तकार पुंदि । एक उत्तम बादि का सहस या भोड़ा 'सन्ते च तस्य पत्ता तुम्बारमूर्यमा महिमारीया (गर ११ ४६३ अभि)। देवी हरिकास । तब्दरप्रेकी तिब्दक्षीरिका विवि अनुवी नवमी तवा चनुर्वसी तिथि (सुरुज १ तरक वि वि विषयप्त स्वानीस (૧૫, ૧૪) ા

सुरुद्ध कि तिरुद्धी १ इसका, कस्त्य विक्रस्ट डीन (लाघ १ ६, प्रान् ११)। २ ग्रस्ट नोड़ा (मय १, ३३) । ३ सून्य रिक्ट, बासी (याचा)। ४ धडार, निसार (वद १८, ३)। १ पार्छ (घर ४)। तरदात्र ) वि दि ] छीन्न व बनुसक्तात तिष्यम } (दे रे, ११) i तुरिक्षम पुंत्री [तुरुख-क] तुरुद्धता (नरना 1 (225

हुळान [तूस] बाय बाता (सुझार )। हार पर [ प्रद तह ] १ हरता, दिस होता चरित्रत होना । २ सूरना, घटना बीठना । बहर (बहर क्या है v ११६): 'मध्यस्य रतस्त्रति तृ∑ित न नायरे स्मणाई"(बन्ध १४६) । बर तुईन (धल) । तह विदिश्वित द्वा हमा, दिल सरिश्य

(4 afe: da fa gf. 64): तुरा व [बाटन] सिन्देर दुवर छ्ला (तूप t t tranttti):

तुष्टिम रि [ पूरित गुडित] दिव बरिस्त

(<u>1</u>77) (

(बन्द्र १३) दे १ ११६) तुन वर्षे। द्वकिमन विक्रिटिश गयः गमा (धीप चक व ३) वटा ६ ३)। बार-राजक बाब का स्वावस्थानिये ह्य कः पडम वर १४ राग)। 1 ₹ रिशेक 'तुरियंद' को बीचनी बल ६३ पर को संस्था करन हो नह (हर म रेंगे ४ सावा की हए वस पट्टी पेशन (निच् २)। सक्तियान कि ब्रह्मिडी ! ब्रिटेव 'पूर्व' को बीखड़ी काय है 5 बो बंबरा साथ हो वह (शरू स ८ <sup>६</sup> २ दू. बाच वैवेशामा बरस-प्रम (म । सब १७ पडम १ २,१२६)। तृष्टिमा स्मे [तृष्टिता] सोतपत्र ह प्रत-मधिवियों की सम्बद्ध वरिया है **1** (⊊ 1 तुविभा का [दे तुटिया] स्पूर्ण हाप ना गानारा विदेश (क्या ६ <sup>1</sup> राया १ १ डी—नव ४१)। तुमय पू [द] बाव-विदेश (रे थ. १६)। तुष्णम देखो तुष्त्राम (सन्) । तुष्यम म [तुमन] क्रे हुए बन्न वा (21 E Y ( 1) I तुल्लाम 🦙 🛣 [तुस्रमण] यह को तुरुमाय } वाबा, रह वरनेसला (लॉदकाइ २६ वरा) ३

i tet) i (सब १८—पत २६१)।

सर १ २ध स्य २४१ k रे १) । २ इस्मा मेहरलाही (रूप t)। सुद्ध भक्त हिन्द है हुए का देखा।

तदिर वि विद्विति देशीलका हिंग स्त्र।

तुद्ध वि तिया तेरस्माम दर वेत ह

तिह और जिलि । क्यो सम्बद्धार

(सर १ ४१/इस)।

(Rx tts) i तकि की जिटि रे वक्ता क्ये। र बचरा कि ४ वर )। व बीहर, बीचे त प्रक्रिय क. शिटिकी सक्दर ५ 'तिरुक्तमन्त परमधाँकस्पते' (बोबर्गन 🏋 त्रक्षिम न तिरिक्षी मन्त्रप

सक्तिल नि जिटिनो झ्यार्प्प

४ मह्नुतम्य, प्रयाव। ३ वत पराक्रम (कुमा)। संदर्गि विम् विकवासा प्रमान्द्रक (मण्ड्र २ ४)। बोरिय द्र िंधीये | मरत चडनतीं के प्रपीत का पीत र्षक्याकला (सम ६८)। आस्त्रीसङ्गम वि विसको भावर्री भवत में केवसकान हुसा का ४१)। आसी भी जिशीति ! संस्था-(ब ८)। निरोप मस्त्री भीर तीन । २ तिरासी की

तेम न [स्तेय] चोरी (भग२ ७)। तेअ देको तेअय (भन)। तेभ दें [?] टेक स्तस्य : सेमंसि वि [सेजस्थिम्] वेनवामा वेन-पुक (मीप रवण ४ भय महा सम ११२;

परम १ २ १४१)। तेअग वैंबो सेमय (बीव) । तेञ्जान [तेञ्चन] १ तेत्र करता पैतासा। २ उत्तेवन (हे४ १४)। १ वि उत्तेवित करनेवाना (दुमा) । तेव्यय न [तैवस] शरीर-पर्वारी सूक्त राधीर विशेष (छ २ १ ६, १) मन)। तेमसि पूं [तेतस्तिन्] १ मनुष्य वाति-विरोप

तं अस्सि पू [ संजस्बिम् ] इत्वाङ्क बंग्र के एक खना ना नाम (पढन १, १)। तंभा भौ [तेजा] पा नौ तैप्दशे सद (पुरुष १ १४) ।

X1 4 9) 1

चीसदम वि [त्रपक्षिश] वैदीसवी (पटम (वं १३ इक)। २ एक मन्तीके पिताका ३३ १४=)। बह्निकी [पष्टि] तिरहात. नाम (खाना १ १४)। प्रच १ [\*पुत्र] साठ भीर तीन, ६६(नि. २६१)। वण्णा, वस्त रावा कनकरम का एक मन्त्री (स्राया १ क्येन [ पस्चाशन् ] नेपन, पवास और tv)। पुर न ["पुर] ननर-निरोप (ए।मा १ १४)। सुगपु ["सुत] रेको पुत्र (स्व) । देखों तेतस्ति । बीस धीन [त्रवीविरावि] देश्व धीव भीर तेअव सक [म+दीप्] १ दीपना चमकना । २ जनना । तेमनइ (हे ४ ११२ यह)। तेअवास देशो संजपास (हम्मीर २७) । तेळविय वि [प्रदीप्त] बसाहुमा (दुमा)। २ अनका ह्या उदीप्त (पाम)। तंअपिय वि [तेबित] तैव तिया दूषा(दे = {1}) i

तमा भी [तशस्] त्रयोग्धी विवि (भी

विभाकुरे य दासच्छी रामो सीमानकरए-संपुर्मादि (तो २६)। सेमा देवो तेअय (सम १४२ वि६४)। सेमाबि पुंचि प्रानिशेष (पएए १, १--पत्र १४)। तेइच्छ न [चैकिस्स्य] विकिरसा-कर्म, मवीकार (बस ३)।

तेमा की [त्रेता] पूप-विशेष दूसरा पूरा

तंत्रच्या की [चिकित्सा] प्रतीकार, इवाक बना (धानाः सामा १ १३)। तेइच्छिय वेंबो तेगिच्छिय (विपा १ १)। तेहच्छी भी [चिक्सिसा, चैकिसी] प्रतीकार, इश्राम (क्य) । तेइस्बर वि [वार्वीयीक] १ क्षेत्रस्य । २ क्वर-विशेष, बाहा देकर वीसरे-वीसरे दिव पर धनेवाता ज्वर, विवास (बत्तनि १)। तेइस रेको तेअसि (मुर ७ २१७- नुपा 11) I

तेड पृ[ते अस्] १ सान, स्मीन (मन € १६)। र सेरवा-विशेष तेजी-नेरवा (भग: कम्म ४ १)। ३ मनिशिवनामक इन्द्र काएक बोकपाल (ठा४) १)। ४ ठाए, ध्यमिताम (सूम १ ११)। १ प्रकारा रुवोद (मूस २१)। आय **दे**को काय

(भग)। इतं पु ["कास्त] बोक्पात केर-विशेष (अ४१)। काइयपु [व्यापिक] र्मान काबीव (ठा६ १)। काय प्र [काय] श्रामिका और (पि १११)। नकाइय देवो "काइय (नएए १) श्रीन १)। प्पम पुष्मिमी प्रिमितिस नामक इन्द्र का एक सोकपात (ठा ४ १) । <sup>\*</sup>टमास वं ["स्वर्श] क्या लग्नं (धाना)। होस वि [ सेर्प ] तेजो नेरपानला (भव)। हिसा की ['सेदया] तप विशेष के प्रमाव वे होनेताची व्यक्ति-विशेष वे उत्पन्न होती

देव को ज्यासा (ठावे १३ सम ११)। "तेस्स ध्यो "तेस (पए**ण १७)** । "तेस्सा वेषो केसा (हा १ १)। सिंह 🐒 ["सिग्र] एक मीरपान (हा ४ १)। सोय न [श्रीय] मत्म धारि है किया

बाता शीब (द्ध १, २) ।

वीसहम वि [त्रयाविश] तेईसवी (परम दर २३ २६ ठा६)। सम्दन िसम्भ्य] प्रातः,मध्याद धीर तार्यशास का सबय (पत्रम ६६ ११)। सहि सी [ पि हि देखी विदू (सप \*\*) । सीह को [अशीर्व] विराधी मस्त्री मीर कीन (बम ८६) वप्प)। सीइम रि [काशीत] विद्यसीवी (बप्प)।

िचत्वारिंश विषाधीसमा ४३वाँ(पटम ४३

पंच्यानामा (पि ४४६): आसीइम वि

["मञ्जीविद्यमा] विरासीमाँ (सम 🖘 परम

=१ १४)। इंदिय पू विश्वय स्वर्ध

बीब धौर नाक इन तीन इन्द्रियक्सा प्राणी

(छा२ ४० वी १७)। क्रीय पू

[ स्नाजस्] विवय राज्य-विकेष (हा४

१)। पाउइ भी निवृति विरामने सम्बे

भीर तीन, १३ (सम १७)। जडम वि

िमत्रती तिरानवेषां ६२ वां (कमः पदम

१६ ४)। एउइ देखो एउइ (मुपा

६१४)। धीस, चीस चीन जियक्टि

शस विकीस बीस और तीन (भग्नसम

१८)। स्त्रे सा(११११ १६४ पि४४७)।

तीन, १३ (हे २ १७४ वर् । छन ७२)।

यत्तरि की ["सप्ति] विद्वतर(पि २६४)।

धीन १६ (बन ४२ है १ १६६)। बीस,

तंभ तक [तेज्ञय्] देव करना फैनाना बार वेत्र वरना, वीरणं वरना । वेदय ( यह् ) । तेज देवो वहुज = दुवीय (रंग्य) । तम पु[तजस्] १ कान्ति सीप्त प्रशास,

ब्रवा (उना मन्, दुना, छ व)। २ तार |

तसपीका वि तिष्यीकी भीनी (धण्य

तसमा हो हि । याच्या स्वैतितः स्वेच्या

धारि तुल्य कल्प (झाव)। २ कल्पका

विकास भूमी (दे २ १६)।

त्यद्व ५ तिजावत दिवासक सम सम्बी मेला (शिक्ष ३४) । (sws वक्तनेवाचा (पण्ड २, ४ और क्यो । ਬਲਾਸ਼ ਸਰਿਕਤੀ ਗੈਕਸ਼ ਗੋਕਕ (ਵਾਸ त्तसकी की दिने भाग्य-विकेष 'तं दल्वनि त्तवय प्रतिवाही बाद-विकेत (देव रे बना ११७)। दो दर्शन नावड सो विकिश बच्चीयें (सपा . . तसमा की तिससी दीवता तेवत (अ १४१)- 'बेबबिके बेतीय सबक तथनी तुष्ता की तिथा दिशा कि निर्मातिक (प्रस् सुजि ∫ प्रशु । २ इप्रवि शवा (व ३. है E 8050 E 488) 1 म्म्सरलामा (सपा १३ टि)। तस्याधीतसमातिक दयन (वर्गीक ह्ममार न हिवारी क्रिम वर्षे, शका (प्राय)। कर पं किरी यन यनमा (नपा १३)। तुषरी की [तुषरी] चट बयार(सँव १११) तक्य पि तिरेक्टी तीलनेशका (स्पा तूर केते तुरव । तूप (१ ४ १०१:वर् )। तसारकर देखो <u>त</u>सार-कर (दि १ ३) । क तरंत तरंत तरमान तरेमान (ह tto) i तुसिण देखो तसणीक (प्रवोद १७)। तसिया को [प्रसंतिका] योचे देशो ४ १७१ समा २६१। बढ )। इ.सिजिय ) वि [तूच्यीक] यौनी **द्व**र तुर पुन [सूर्य] बाद बाबा, प्रदो (हे ३,६३ (इमा)। सिंसिणीय | वचन-रहित (खाया १ १--चक् प्राप्त)। बक्क पु विति}क्टी स क्कसी की दि क्रसी | बता-विशेष दूसरी पद २६३ ठा ३ ३)। (देश १४० पएटा रेटा वापल्य)। नटी का समिता (पड़ रे) ! तसिजी प [तुष्णोता] मौत कुणीः हुस्स की [प्रस्ति] १ च्यकि-विशेष (सपा १३)। तूरव तूरमाण } देशो तूर = तुरत । 'तहमा तुषिस्तीर चुनव पडनो' (पिंड १९२ र ठराव. दौलने का सावन (मुपा ३६ 1(111 त्रवित्र नि [स्वन्ति विश्वने क्षेत्रत कर्ण ना १११)। १ ज्यमा, साहस्य (सूच २,२)। हासिय प्रहिषियाँ बोक्सिक देवों की एक सम वि समा पन हेपसे पहित मन्यस्य मदेशो यह (से १२ वरे)। भावि (सामा १ व्यस्त बर्)। तुरिय प्र [तीर्थिक] शत्य वनानेनातः, वर-(TE 1) i हुसञ्जीम न दि । सद, नक्की काह (दे त्रधाकी तिकाी १ १ ग १ मिन्नी (स ७ ३)। पत्त का तूरी की [क] एक प्रकार की मिट्टी (की ४)। 2. (4) 1 एक माप (बाग्र १६४)। तूरित } क्यो तूर व्युख। हुसोदग ) न हिपोदकी धेक्रियादिका तकिम वि [सर्कित] १ व्यापा ह्या, अवा तसोवय रे बीठ <del>वया वीवन (स्वय क्रम्</del>)। मिना क्षमा (छ ६ २)। र तीला समा तूछ न [तूछ] चर्च, स्था, वीजनीय <sup>क्रास</sup> (पाय)। इता हवा (यन)। द्वस्स वेंची क्स - तुम् । तुस्तव (विशे १६२)। त्रसम्ब को तस्र। (धीपा गायः वनि) । द्वाद प्रदिन्ती दुन । तजय नि सिक-तूचिञ न नीचे वेबरे, मस् विस्राधिन्या हुँ है दि दिस्व समान सरीवा (क्रम प्राप न्मिन् दुम्हार तुमरे संबन्द रक्तदेवला महरिक्त तुलिन रोह्मनाहर्म (पदा) । ₹**₹**1₹\$} ( (पुपा १११)। तुस्थिमा को [तुस्थिमा | १ वर्ग वे गरा योग हुबहु केवो हुयहू । दुक्टू (बब ४) । हुइग र् [हुइग] क्य की एक बादि (क्त विज्ञीना पहा दोसक (दे ६,११)। १ <del>एउ</del> ह्यबह र स्थित्वर्ती श्रयन, सेटना (वश्व ४)। 1 (99 25 द्वार पर [स्वर् ] लय होता. शीव होता बीर-चित्र बनले की कतब (सम्बद्ध १,४)। हुमार (देश) वि [स्वतीय] दुम्हास (हे ४ देन होता। तुरुष्ट (हे ४ १७)। वह तृतिभी को [वे] वृत्र-विदेश राज्यकी रा YRY) I तुवरंत (६४१७ )। प्रवो पत्र तुवराक्षेत हुद्दिष न [हुद्दिन] दिन दुपार, वर्ष (पहर)। मिक् (के क्ष्ट्रिक) । (नाट-भानती १)। इरि पु ["गिरि] दिमाचन पर्वत (पत्रक)। तृक्षित्र कि [तृष्टिश्रवत्] तस्येर व्यते तुवर इंव तुपर] १ रस-विदेश क्याय स्व कर दें [कर] चलवा (क्रप्यू)। शिहर वी वलमवाला कृषिका<u>नुष</u> (बार)। (देश, १६)। एकि नवाय रवनाला, देशों होरे (युग ६१०)। "श्राप पू तूबी को [तूबी] क्यो तूबिआ (इर ६ क्रीसा (से व १६)। िष्ठय] दिमालय पर्वत (नुवा २: पत्रम १६. २४ पुत्र १६२)। नुषरा देनो तुरा (नाट-पहाबीर २७) । तुद्दियायस पू [तुद्दिनायस] द्विपालय पर्वत तूबर देखो तुबर (विचा १ १-वर १९)। तुपरी भी [तुपरी] भग्न-विशेष सरहर (सा तूम यक [ तुप् ] चुत होता। वृबद, वृत्रः (वर्गाव २४)। (f v titi effe tei et) i f. term tr 11 सूम पू [वे] रेव का नाम करनेवाला (वे ४, तुस 🕻 [ सुप ] १ वोप्रव—बोधर या बोधो **१६**) । तृसियम्य (नया १ ४)।

नूण पुन [नूज] रपुनि बाना शरकन कुछीर

(दे १ १२श वह दुमा)।

तूह केनो वित्य (हे ११४) रू कर प्र

R X, 84) 1

तूहण दु [व] दुस्य घारमी (दे ४, १०) । व्यासीस स्वेत देखो विविश्वा [ जलारिशम् ] १ तक्मानिकेन वासीत भीर तीन नी संस्था। २ तेमातीस की संबन्धनातः (सम ६०)। आन्द्रेसर्म वि [\*बत्यारिश] हेमातीहर्वा ४१वाँ(परम ४३ ४१)। \*मामी श्री [ खशीति] १ पंस्पा-विशेष घसी धीर दीन । २ तिरासी भी संस्याधाना (पि ४४६)। आसीऱ्म नि ["मर्झावितम] विरासीमाँ (सम ६६ परम तः १४)। इंदिय ई ["इन्द्रिय] सर्ग योग और नाक इन शीन इन्तियनासा प्राणी (छर ४० की १७)। जीय प्र [क्षाजस्] विषम चरित-विरोप (ठा४ १)। यहद्रश्री ["सत्रति] विधनवे नस्मै सीर तीन, १३ (सम १७)। जडम वि ["नचत्] तिरानवेवां १९ वां (वच्य पडम **१६ ४)। शहर देखो शहर (मुपा** ६९४)। 'दीस, चीस बॉन [ श्रयंदिः रात्] तेतीत तीस भीर तीन (भगः सन १ व) की सा (११ १६४, वि४००)। चीसइम वि [प्रवरिक्ता] देवीयवी (वरुम ३३ (४४)। वट्टि सी [विद्र] विरस्त, साठ बीर तीन, ६६(वि २६१): बण्या, वस्न क्षेत्र [ प्रस्पाशन ] त्रेपन, प्रवाद धीर तीन रे६ (हे२ १७४ वर्। सम ७२)। बचरि की "सप्तवि] विश्वर(पि २६१)। बोस धीन [त्रयोदिशति] वैदन बीच धीर श्रीत, २३ (सम ४२ है १ १६१) । वीस बीमाम रि [त्रपाविश] हेरेसरी (परव बर, २६ १६ ठाँ६)। सम्बद िस्तरयं] प्राठः मध्याद मीर सामेशात का इत्य (पत्रम ६६ ११)। सङ्क्रियी [\*पष्टिं] देयो \*बद्धि (तम ७७) । साई स्र ["सर्गानि] विष्मी मस्मी भौर धीन (सम दश करा)। सीश्म वि[असीत] दियसीरी (१प) १ क्षम धक किजय ] देव बरमा, वैनला, बार क्षेत्र शरता कीरण गरता। तेस्य (पर्)। तम देवी वर्म = दुविष (रंग)।

तंत्र र् [तंत्रम्] १ वर्ग-त रोति प्रशास,

प्रवा(इवाचनः प्रवादाव)। २ सार,

व्यक्तितास (कुमा भूष १ ४,१) । ६ प्रतास । ४ महिल्म्य प्रसाव। ५ वत परावन (कुमा)। मंत्रवि [ विम् ] देवकाना प्रमान्द्रक (परह २ ४)। वारिय प्र "धीर्य] मतः वक्तर्ती के प्रतीत का पीत जिसको धाररी भवन में केवलबान हुया वा (छ ५)। संभान [स्तेम] चोषी (भग२ ७)। तेल देखी तेलय (मग)। समार्थ 💽 टेक स्टम्म । तेशंसि वि सिजल्यम् । देवनाना देव-पुक (सीप रपहाक भगः महा सम १३२ परुम १ २, १४१)। तेलग देवो तेमय (नीप)। सेमज व [तेमन] १ देव करना पैनाना। २ उद्येगम (हे ४ ३ ४) । ३ वि उद्योगित

करनेवाना (कुमा) । तथ्यम न [वैज्ञस] श्रीर-सङ्गाध सूच्य श्रारीर विरोप (ठार १ ६, १) भवे)। तेम्बर्ड पू तिवर्डिम् । शतुष्य पार्विन्विधेव (वे १३ इक)। २ एक मनी के पिताका नाम (खामा t tv)। ध्रच प्रै प्रिप्नी राजा कनकरम का एक मन्त्री (स्ताया १ १४)। पुर न ["पुर] नवर-विशेष (छाया t tv)। सुय पू ["सुन] देको पुच (राम) । देशो तेतछि । तेमव धक [प्र+दीप्] १ शीपना थनकता । २ जनता । तेपाद (हे ४ ११२) बर्)। संभवान रेजे तंजपान (इम्मीर २७) । तंत्रविय रि [प्रदीर्स] बना हुमा (हुमा) । ९ थनता हुमा चहीत (पाम) ।

द ११)।
तलसियु [तंत्रसियर् ] एत्याद्र येण के
एक एता वा नाम (युवन प्र. प्र.)।
तल्ला की [तला] पत्र की देएशी एव (पुत्र र १४)। तल्ला की [तला] प्रस्ति (की क्ला की [तलामु] प्रस्ति (की

तम्बद्धाः तिक्रित्ती तेत्र क्या ह्या (दे

तेआ भी जिता प्रतिश्वित वृष्य प्रया प्रया विद्या वृष्य प्रया विद्या रागी वीयामाण्डण-संद्रुपति (दी २६)। तेशा देशा तेश्य (यम १४२ पि ६४)। तेशासि दु चि वृज्व-दिशेष (परण १, १—पत्र १४)। सङ्ख्य म [चैकिस्सा विदित्या-माँ, प्रतीकार (रव १)। तोङ्ख्या ली [चिकिस्सा प्रतीकार, इनाम चर्चा (माण पामा ११६)। तोङ्ख्या की [चिकिस्सा, चैकिस्सी]

तीर्च्या की [चांडस्सा, चांडस्सा]
प्रतीकार, इसान (क्य)।
प्रतीकार, इसान (क्य)।
प्रतीकार, इसान (क्य)।
प्रतीकार वाहा केर तीतरे-तीतरे कि
पर धानेवाना जबर, विज्ञाय (ज्ञान के)।
तेर्ड केशो तेजीस (तुर ७ २१७- तुग
क्का)
रहे।
रहेर्या निर्माण धानि (क्य केरो-देखा (क्या
क्रम्म ४ १)। केर्यामारिक नामक इस

काएक सोकपास (ठा४;१)। ४ हार. ममिताप (सूम १ ११)। १ प्रपाटक ध्योद (तुपर t)। आयरेको स्वय (मन)। क्षेत्र पू ["कान्त] शोकपाल हे<sub>द-</sub> विदेव (ठा४१)। काइयपु ("काबिक्री धर्मण गाणीय (टाव १)। काय प्र िकाय] श्राप्त का भीद (रि १११)। बकाइय देवो काइय (प्राप्त १: बीव १)। प्यम पु [मम] समितिहरू नामक इन्द्र का एक सोकपान (टा ४ १)। एसस दं [रिपर्न] उप्य सर्वे (पान्त)। होन वि [ "सेरम ] तेशो-नेत्पाताना (अर)। "तेसा की [ नेदया] का विटेन है अबन ने हानेवाती स्वीक-स्थित है जान होती तेत्रकी प्रताना (दाई () सर (()) "सेरस देवी "सम (काए !)। क्रिया केनो जिसा (ध । ए) जिल्ल ["शिय] पर बेस्स (E & 1) 1 साय व किया का को है किया बचा देव देव हैं।

तेर ) वि व. अयोदराम् ] केवा. बस

हेर रेपचर रेक्ट पर्देशिया)।

दंसि रि [दिशिन्] तर्वत सर्वसर्थ

तेव वेको तेळाम (पन २३१) ।

१ वन बरङ (क्त)।

तेरस । बीर धीन (भा ४४ वे दशे कम र्वेडम न दि बत-विरोध टीवर का पेड (दे तेपता ११ कमा एक्स कायोग ४ २)। तेजय रिपक्षोगप जियोगी १ कोर की 7 78, \$\$) 1 z. tw) i तेरच्या देशो विरिच्या - विर्वेष (प्राप्त १३)। वेंदु | पुष्टिन्दुक] १ क्ल-विरोग वेंदु वेंदुम | का पेड़ (पर्या १) ठा ० वटम वेंदुरा ४२, ७) १२ तेंद, कन्दुक (पडम चोरी करने के किए प्रेरवार करना । २ चोरी तेरस रेबो वेरसम (कम्म ६ १६) पर ४६)। के सावनों का बाल या विकास (वर्ष २)। तेरसम वि जियोदकी तेरावा (सब २३४ तेणिश्र ) न स्वित्यी चोधी प्रसत्त परा 2×, 23) 1 राया १ १-पत्र ७१)। तेजिस्को का प्राप्त (मा १४० ग्रांव १६६, तेंद्रसय पूर्वि] कन्द्रक शैर (शासार क)। देरसया की दिने केन समिनों की एक करता पद्धार ६)। तेंबर पंडि का बीट-विरोध बीमिय बन्ध (क्प्प)। रेजिस वि [चैनिश] विभित्तकुत्र-संबन्धा वैठ की एक पार्टि (बीव १)। तेरसी की जियोदशी दे है एवर्ग । २ हिन्दि का (मय ७ ३)। तेगिष्य रेवो तंत्रयह (सुर १२ - २११)। विशेष वैरंत (सम २१; सुर ६ १ ४)। तेणा की स्तिन(] नोर-की (समन १६१) । तेरिन्धार वि विकासकी १ विकिता तेरसचरसय वि त्रिबोवन्धेचरराववसी तेष्ण न [स्वैश्य] बोध पर-प्रव्यका प्रपद्धस्य बरतेवला। २ वं वैश इकीम (इन १६४)। एक सी वेद्याची ११६ वॉ (पक्रम ११६ (निष् १)। तेशिक्या देवो तंत्रक्या (धर १२, २११)। ७१)। तेण्डाइञ वि [तृत्यित] तृष्णा-पुत्र, जाता तेशिक्कायण देखो (नेशिक्कायण (धन) । तेया विको तेरस (हे १ १६४८ माम)। (8 44 FE): तिविक्रिक देशो विभिक्ति (राम) । तरासि पु दिराशिक निर्मान (निर १७६)। तेविधि ए तिविधिन् । १ वर्शन्त के बन्वर्व-संगिष्टिय वि चिकित्सकी १ चिक्तिया तरासिम विजियमिको १ मत-विधेव का रेनाका नास्क (इक)। २ देनों तेशकि कालेकला। २ एं. देख इकीय। १ न भगवानी वैराधिक मध-जीव मजीव मीर (सामा १ १४ — पत्र १६ )। विकियानमें प्रतीकार-करछ । सास्त्र श्री नोबीन इन चीन चारियों को भारते कहा। **िशास्त्र विशासना विकित्सन्त्रन (**शासा तेतिस देवी तीवच (वं ७)। (भीपः स्राप्त)। २ न मत्त्रियेप (तन १ १६-- २४ १७६) । तेत्तिक नि शिवन किल्ला (प्राप्तः वटक ४ विशे २४६१ ठा**७**)। तंचतारीस बेबो ते-आसीस (प्रतः ११) । मा ७१ इस्मा)। तेरिच्छ देवो विरिच्छ = विर्मेष् (पर १०)। तंत्र देवो तेल व्हेब्द (देन्द्र (प्रक्र ४६) । तेचिक (वी) देवो तेचित्र (शक ६६)। तरिकार केवी विरिकार = विरुवीन किन तंब व निका देश-विशेष (सम्मत्त २१६) । तेचिर देवो विचिर (कीन १)। व मसुरसे वा वेरिका वा सराविधारली तर्जसि देवो तर्जसि (११ ४४)। तेचिक वि तिवत् चित्र (हे २ ११७) (माप २१)। श्रमपञ्ज विश्वपाञ्जी दुरुष्य केराना कमा)। तेरिकान विभैक्तन विभेक्तन पर-बीरबंबस का एक यसस्यों मंत्री (ती ९)। तेचिक न विदिश्जी ज्योदिव-प्रक्रिक करण पनियन (कारे वर दी)। तंत्रप्रपुर न [तेजधपुर] विजार पर्वेत के विकेष (सुमधि ११) : तरिष्यम विशिक्षको तिर्मन्त्रको पान मंत्री देजपाल का बचाया हमा एक नेत्तछ । (मन) उपर वैको (डि.४.४ ४) (बीव २६६३ सव) । संबद्ध ∫ दुना, हे ४ ४३६ टि)। नवर (ती २)। तेस न विज्ञी १ योच-विरोफ को मादक्य तेत्यु (धप) वैचो तत्य = तत्र (द्वि.४.४ ४) तजस्मि रेचो तजैमि (वव १)। नोजनीएकं सल्दा है (बाक)। २ दिव राज्य (या) देखी चय = स्वन् । तेमा (स्व)। नाविकारु देन (संक्रिट १७)। तेरह देवी शिक्तिस (हे २, १६० प्राप्त पहः तेव्हेंगर्जुण [वैद्याहा १ केट-विरोध । २ संक्र समित्रक्ष (निय)। कुमा) । पूंची बेरा-विरोध का निवासी सन्त्य, रीसंदी त्रीक्रअ (बर) दि स्विक विकासम तंत्र देवी तेष्ण (रव) । (বিদ) <u>৷</u> तेस (ब्ला) देखी तह – तवा (लिप)। तंबाडी भी [वैहारी] और-शिक्त, बंबेली शक्ष चक्र [ दे ] दुनाना । वैश्वेष (बम्मच वेमासिक वि किमासिकी १ कीन महीले में (R to ex) | (123 क्षेत्रेवासा (भग) । २ तीन मा<del>व व</del>्यंत्राची **(दुर** तंत्र दे दिहे १ रालध, धम-नातक कीर, न जिल्लाको दीन अक्ट—स्वर्ग व २११३१४ ११ )। िर्म । र रिसाप, राजप (वे ४, २३) । तस्योग नत्ये भीर पातल शोक (बास १७) तम्ब देवी तेम (हे ४ ४१व) । तज्ञ य [तन] १ सक्च नुवस्यध्य 'भव तर वि वियोदशी वैयादी (कम १ १६)। तस्त्रेचा ∤ प्राप्त लामा १ ४ पत्रम का थ∜। श्रद्ध देल कमनवर्ण (ई. २, १०६: दुना) । तर (पन) वि लिदीय दिए तुम्हाच (शह

22 ) 1

तोटल न [बोटक] धन्द-विदेव (पिय)।

२ चक टूटना । ठीवर (ह ४ ११६) । वक्

वोद्धंत (भवि) । सह ताद्वित्रं (भवि)

तोड पु [बाड] दुरि (स पु १८)।

वाला(दे ६ १०)।

वाहिचा (ही ७)।

(सोप १६६)। णाइ पू ["नाय] तीनी अक्टूका स्थामी परमेघर (पड्)। मंडण न [मण्डल] १ तीनों बगद् का मुप्छ। २ व चारण का पट्ट-इस्टी (परम क तुद्ध म [मेंड] हैम दिन का विकार, स्निग्ब ह्रम्यक्रिये (हेरे ६० सर्पुपव४)। फिला हो किस्स मिट्टी का मानत विदेश (स्त्र)। पद्मन ["पस्य] धैन रफनका मिद्री का भावत-पिरोप (दशा १)। पाइया श्री [पायिता] यूर बन्दु-विरोध (ग्राप्त्रम) । तेह्रम न [मंखरू] मुख-स्टिप (बीच ६) । শলিস বুঁ [মিডেড] উপ बेबनेवाना (बद ६)। ग्रहाम नहींका } रेगो तलुक्त (पि १६६ प्राप्र)। । तयेँ } (धर) देशे तद्द=तथा (हे ४ तर्वेद्व र्रे १६७: दुमा) । तपट्ट रि [र्रेपष्ट] विस्तर की संस्थानका जिसमें निरमठ योगक हो ऐसी संख्या निश्चि वेपद्वारं पाशाह्मसमारं (पि २६१)। तबह (भा) वि [ तापन् ] उत्तरा (हे ४ ४ ३ दुमा)। तवण्यामा ध्ये [त्रिपद्मारात्] नेरत, ४३ (प्राष्ट्र ३१)। त्तर्थामद्र भी [प्रतादिशति] वैदेव (प्राप्त 11) 1 तवृत्तरि देगो न-वत्तरि (कम्ब ६, ४) । तद (घप) ति [ तादग्] उम्ह पैता देना (१४४२ वर्)। तर्दि (धर) च बान्ते निए (हे ४ ४२१ नहिष रि [प्रशादिक] होत दिन का (पीरत तटुमर देनो न-पचरि (बलु १०१)। ता रेनो न भी (याचा दुमा)। ना म [नदा] वर उत्त सबय (दूबा) । शामप र् हि] बाउद बती (रे १, १८) । मीड देगो ग्ड (हे १ ११६: प्राप्त) । तीति भी दि । बत्तव की मात्र को की हर्द एक गाउ बलु (हे ४, ४) ।

ताइण वि [दे] यमहत यसन्त्रणु (१४, 24)1 नाइण न [तोदन] स्तपा, पीकृत्राण (ঘৰ)। शाहर न दि ] टांबर, मास्य-विशेष (सिरी १ २३)। वोडडिआ ही दि । शय-प्रिटेप (माना २ वोडिज वि [त्रोटिव] सोहा हुमा (महाः ਚਚ)। तोड व दि । धूर कोट-विधेप चनुधिन्द्रय बीव वी एक कादि (सन)। होण देव हिन्नी सर्वेष भाषा तरक्स तूलीर (पाधा धीर है १ १२६: स्मि १ १) । ताण र पून [तूर्णार] शर्चक भाषा (राम हे १ १२४ मिंग)। वात्त न [तात्र] प्रत्रोद, दैन को मारने या ह'वने ना ब'स वा मापूप-रिकेष पैना शोग बाहुम (पाप दे ३ ११ बुरा २३७ मुर १४ ११)। वोत्तरि [दे] रेगो नींतरि (पाप) । हाइम रि [ताइक] स्थ्या जरवलेशना दीत<del>-दारद (उन्</del>च २ ) । तामर दून दि नामर] वयुगा अपुनशी का बर या धना या बिहुबाउ देखर नगाउ मन्महिराह्य सम्प्रती (वर्षीत १२४)। वामर पूं [न'मर] १ बागु-विटेन एक प्रकार का बार्स (पार्टरी गूर २ २० थीत)। २ व ६० स्टिन (पिर)। शामरिक्र र् 🚰 १ सम्म वा प्रमार्थन करने-

तोक्सार देवी मुक्तार 'नुरनुरश्चववीणीय-संबंधक्रेत्रेत्रारमस्त्रुवी (सुर १२ ६१) । तोइ सक [तुइ] १ तोइना मेदन वरना। माप (पएड् १ ३) भीप) । नगर-विरोध (महा) । **25**3) 1 (महानि ३)। वानियम्य (म १६२) । माए-विशेष (डेर्) । नाप करना (साम)। नासिय वि [नासिन] कैना हुमा (बहा) । tyt) i कोयह र् दि र राज का मानुग्राप्र-किटेव। नमत्र की किंग्राहर (दे ४ २६)। नाम नर [नायय] गुटी रखा नमूत्र बरना । तानर (३४) । वर्ने, तोशिका (य X #) ( न'म र् [नाप] नुधे, पातम, वंतेच (राप ग्या २०६)। यर दि [कर] मंत्रेष बरस्य (बान) । नाम न दि] यन योगा (रेथ १०)। नामनि ﴿ [नामिन] १ सप्रतिरा । २ बाला (दे ६ १८) । २ राष्ट्र-नार्थन(बड़ ) । रेट रिटेर । १ एक देश कामार्थ (छत्र) ।

884 बोमरिग्ही औ चि नही-विरोप (पाप) । वोमरी की दि] बज़ी तज (रे ४. १७)। वोम्हार (बन) देखो तुम्हार (पि ४६४) । षोयन विषयी पानी, जब (रएह १३ बजा १४ वे २ ४७)। यरा घारा, ध्ये िंधारा दिक स्वित्माचे देवी (रक्ष का द)। पहु, पिट्टम ["प्रष्ठ] पान्धे का कारि ताय पूर्व (ताद् विस्ताद प्रेश (हा ४ ४)। वारण न विरम्नी १ हार ना वरवर-विरोध बहिर्दार (वा २६२) । २ बन्दनप्राट, कुन या पत्तों की माना (मधारर) जो बरंगर में नत्का६ पाती है (बीर) । सर न िपुर] सारविश्र वि [दे] इतेनित (पाम: दुप तोरामदा की दि] नेत्र का ग्रेय-विदेष वास देवी तुल = वेलय् । वोनद्द, वीनेद (पिंग महा)। यहः तास्त्रंत (यमा ११८)। रवर तासिक्षमात्र (तुर १४, १४) । ४ वास पून दि ] मयब-देश प्रनिद्ध पन परि वालम पूं [दे] पूरप भारमी (रे ४, १७)। वासमान निरम्भी दीन बरना दीवना नाइ न [नास्य नीख] तीन बनन (रूप

पुत्त ["पुत्र] एक प्रक प्रशिद्ध केन यानार्ग (ध्रावम) । तोसंख्यि दे [तोसंख्यि] ताबबि-बाम का सबीत समित (सावम) । वोसिका) वि विभिन्न पुरु किया हुया वोसिम 🕽 वंदोवित (है 🖣 १४ ) परम ww ca)! वोद्वार (भ्रप) बेची ग्रहार (पियः पि ४६४)।

च नि 🔄 पायानदा, रायाना 'बन्तची

क्ताड़ो सक्ब की हो करों डोड़ (युपा १९६) ।

"त्तव्य केन्द्रो तव्य (दे १ ६१)।

(ब्रह्म ७०)। **ेित वेको इम = इ**ति (कम्प स्वप्न १ सर्छ)। स्य केवी एस्य (पा १९२)। "त्व दि ["स्य] रिन्त यहा हुमा (बाना) । रिय देवी अल्प (नाम ११)। "भाग्रा वेलो यय = स्तत्त (से १ १)।

"त्वरह देवो यरह (वरह) ।

रैलीव देखी धीन (पाद २ )।

त्यंमण देवी श्रेमण (शा १ )।

रमंभ को भंग (इपा)।

रैंबर केवी यह (पि १२७)। रबस्र देवी शस्त्र (काप ४७)। रमध्ये देवी मध्ये (पि ३०७) । त्वय केवी भव=त्त्रः। यष्ट्रः रेखर्यद (गर)। **ैरवक्षण केतो वक्**ष (से १४३ नाट)। रेपाय की वाण (गट)। त्वास्त्र देवो यास्त्र (इसा) । "रिधन्न देखो थिन्न (ना ४२१) । े लिस देवी दिश (क्रमा)। स्योक्ष केवो योज (बाट--वैजी २४) ।

॥ इम्र विरिपाद्मञसङ्ग्रहण्यवन्त्रि तदाराद्मस्तर्वकायो **देनीसहमी दर्शने समती** ॥

ध

व व वि क्य-स्वामीय स्थानव-विदेव (हाप)

व ग १२ वाक्याचीकार और वाक-पृति में

प्रयुक्त निया बाता सम्बनः किंव तर्प थम्बद्धे भै भ तका जी चर्यत यवर्षान्म (खन्य १ १---पत्र १४८ वेदा ११)। स वैची परंच (मा १३१ १३२) सन्छ)।

बद्धभ वि स्थितिहाँ पाल्कादिक दका हमा ( B X YR # XW ) | **बढ़भ**ै) की [स्परिकारी पानवानी पान थाइंगा∫रक्लेंका पात्र पालेबान (महा) । इस्त

र्व वित् किम्बल-पात्र-पाद्यक्र भोकर (कुन्न ७१)। घर द्री <sup>\*</sup>घरी वाल्यस-शाव का वस्तक कीवर (कुन १ )। श्रीहक ई ['बाइड] पानरानी का बाइड नीकर (पुता १७)। देखो वनिया

बड़आ ही वि क्रिकेट करी, पोक्सी बा बस्ती-कमर में बांकी की क्या की की बैधी 'संबन्धद्रपाराज्यो' 'वैकिया संबन्धदर्भ (१ ६) मां(दूब १२८ )।

भट्ट देखी जय = स्वरत् ।

(धावा)। ₹X) i र्वत देनी मा ।

यत्रवन रिवपटी १ निवस और सन्तर प्रवेश (वे २ ७०)। २ वि कीचा-ईवा (बढड)। यडडिश वि स्थिपुटित रि विवय और क्नत प्रदेशकाः । २ दीवा-व्या प्रदेशकाः

(धडह)। थठडू न [के] प्रस्थातक, कुल-विशेष विद्याला (R X 24) 1 *थेग दक [ बद्+मामय्* ] ढँना करना

फनत करना । भेगद (माञ्च ६१) । यंदिस्त म [स्वण्डिस्त] १ शुद्ध मूमि वन्द्र-रवित प्रदेश (कथ निष् ४)। र औप क्रता (स्प१ १)।

थंडिक पुं स्थिपिक हो और पुरसा (तूप र L (11) 1 **वंडिक न** (रथण्डिक) तुत्र नृति (कुरा ६६

धंदिखन दि∏ सरकत दुत प्रदेश (दे%.

र्थन कि कि निवम प्रथम (के ४, २४)। र्थंद पुं रितन्त्र देख साहित्म पुरुष (दे ४ ४६ः शीव ७७१ः **प्रत** २२६) ।

बैस पर [ स्तम्स ] १ कता, स्टब्स (शिद्र, रिवर होता निरुवत होता । २ इन्ह किस-निरोप करना, धटकाना रोक्ट, निरस्त करता । चेनद् (मनि)। कर्मैः चेथिन्यद (डे. १. १)। संक्रथंमित्रं (क्रूब १०१)। र्मभ प्रे (स्तुरम) वेदाः 'कंप्रीतकार्यम्ब एक रोराप्परक्कुक्यो नाइ चंदामरीही (इम्बीर ११)। "तिरमार "तीमें] एक वैन दीनें

(इम्पीर २२) । धंम एं (स्तम्म) १ स्तम्भ, बन्ध बन्ध (ह २, ८। कुमा प्राप्तु ६३) । २ स्राप्तिमा नार्थ-ध्यक्तर (तुस १ १३ व्य ११) । विस्था की विद्या स्टब्स-नेप्रोग्र वा निर्देश

काले की विद्या (तुवा ४६६) ।

र्थमण व स्तिन्मन दि<del>राज्य क</del>्रस्थ मधीना(विते ३ ७ नुपा ४६६)। र arthur mer (eur bas) : h प्रमुख्त का एक नगर, भी सामनम 'संमात'

नाम से प्रक्रिक है (सी ११)। पुरन

"पुर] नगर-विशेष श्रीमात (सिम्ब १)।

र्धमणया की [स्तम्मना] स्टब्ह-कच्छा (ठा

भूमि पहराई का घन्त शीमा (रे ४,२४)। 4 4) 1 चंभणिया सौ [स्तम्मनिका] विद्या-विशेष धाया ही दि उत्तर देशे (पाप)। (वर्गनि १२४)। बहु पुन [बे] १ ळ भीड भूरक चपूरु र्चभणी जी स्वरमनी] स्वस्मन करनेवाली मूच बत्पाः पुरुष्पुरंगस्ट्रां (गुपा २८८) विदा-विशेष (सामा १ १६)। विहरह सह बुट्टानिट्टशेष्ट्रपट्ट (नहुम ४) । र्धम्य देखी र्थम = स्तम्म (दुमा)। २ ठाठ ठाट तहक-भड़क, समयम घाडम्बर वंभिय वि [स्त्रम्भित] १ स्त्रम्व क्या ह्या (परि) । ममाया ह्या (कुत्र १४१) कुमा कप्प धट्टि की वि] प्या जानवर (वे २, २४)। ग्रीप)। २ वो स्तम्ब क्या हो प्रवहत्व श्रद्ध (न दि कि पूप समूत्र (मनि)। (A ASA) I यहरू वि [स्तब्य] १ तिरुप । २ वर्षिमाधी श्रक शरू (स्वा] चूना बैठना, स्थिर होना । र्पाष्ट्र (मुपा ४३७ १८२)। १ बक्कड (हे ४ १६) चियो । सबि यक्किस्सड महिद्रम नि [स्तन्मित] १ स्तन्न किया (पि १ १)। हुमो । २ स्टब्स निरमद । ३ न पुर-मन्दर शक्त प्रकृति भीने पाना । वस्त्र प्र का प्राचीप मक्त्र कर पुर को निमा (\$ Y = 0) I शक्क पर्व [ अस् ] पदनाः मान्य होना । बादा प्रयाम (यमा २३)। बस्मंति (विष)। यण सक स्तिम् । १ वरमना । २ मारूप बच्च वि स्थित है एहा हमा (कुमा) बण्धा करता, विस्ताना । ३ धाक्रीस करता । ४ १व पुपा २१७: धारा ७७: सङ्घ ६)। भोर से नीवास सेना। बक्क मर्णत (ना अकापु कि र मनसर, प्रस्तान समय (के 84 ) I ५,२४० वन ६ जहाः विशेष ६३)। २ यण र् [स्तन]यन, रूप परोपर, पूर्व (याचाः दि वहा हुमा थान्त 'वस्त्र' समग्र**ी**र कुमा क्याप्र १२१)। जीवि वि जिलिस्] विका पूर्व पुरुष्कि पर (पुर ७ १८१. ४ स्तम-पान पर निमनेवाला वाबक्र (बा १४)। 14X) 1 पइ की विदी कि स्तनशाबी (गडर)। थब्दिल वि [भारत] बना ह्या (प्रिय) । ।यसारि वि [विसारिम्]। स्तन पर यद्भव सक [स्थापय] स्वापन करना फैमनेवासा (गडड)। सुक्त न ["सूत्र] रखना । मस्त्रमद् (प्राष्ट्र १२ ) । चर-पूत्र (वे)। इर दू िंभरी स्टान का यग रेचो यय≈स्वत्य्। प्रवि पश्चरश्च मार बाबोम्ड (इ.१.१८१)। (पि २२१)। थर्णभय पू [स्तनम्यय]स्तन-धान करनेवासा थगण न स्थिमन दिवान, बक्ता संबद्धा बानक क्षोटा बच्चा "नियर्थ वर्छ धर्मतै धाररण मान्यारम, पर्रा (१ २, ८३) हा यर्गपर्व इरि निच्छी (नूर १ X X) 1 मणु १३)। बनवन वक विनयमस्य वहरना थपान व [स्तानन] १ वर्षेत्र परवता (सूच काँपन्य । वह धगयगित (महा)। १ ६,२)।२ साइन्द, विश्वसद्य (तूस १ वरिय वि [स्परित] विदित्त, वान्यारित, ६१)। ३ माशेश श्रीमदाप (एव)। ४ ब्याबुत (दम १, १३ मादन) । याका जवाता की सास (पूर्व १२,३)। श्वनिम देवा भएम । गगहि पू जिनहिन्। यणय दु स्तिनकी दूसरी शरक-सुमि का वामून-नाइक नीकर (तुपा ३३९) । एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

धगायां की दि] चंदुः चोंच (दे १ २६)। थणकोलक प स्तिनकोळपी इसर्य नरक-बाय सक स्तिम ] बत की बाराई की मुमि का एक गरक-स्थान (देवेन्द्र ७) । थणित्र प स्तिनित् एक नरक-स्वान नाराना । कर्म वरिवरश्य (पव ८१) । (क्षेत्रदर्द्द् बरघ दु [दे] माह, दसा, पानी के मीचे की थणिय न [स्तुनित] १ मेप का गर्बन (बका १२३ दे ६, २७)। २ बाइन्ट, विन्धाइट (सम ११६)। ६ पू सबनप्रति वेगों सी एक भावि (धीन परेह १ ४)। कुमार पु ["कुमार] मननपति देशों की एक जाति (कार १)। थणिह सरु चिरम् ] पुराना चोरी करना। वरिएस्वइ (प्राइ ७२)। यपिष्ठ वि [ स्तनवन् ] स्तनवाता (कृष्यू) । थपुत्रञ पुस्तिनक श्रोटा स्तर (यहर)। थण्य रेकी शाग्र (या ४२२)। यश्चिल न [दे] विभाग (वे ४, २६)। यद्ध रेको यहाड (श्रम ११: ग्रा १ ४ थण्या १)। यज्ञन[स्तस्य]स्तनकादूवः। श्रीयि वि िजीमिन् ] क्षोटा बण्वा (पुता ६१६) । यद्य सक [ स्थापय् ] स्वाना, बच्नी करना । वणइ (सिरि ८६७)। थप्पण म [स्थापन] म्यास म्यहन (हूप ₹ **₹ ७**) 1 थप्पिम दि [स्थापित] एक्टा दुवा ग्यस्त (सिंप)। थयम सक [स्तभ्] प्रहेशर करता। पत्म६ (सूप १ १६ १ ) । बडमर पू [ वे ] संयोध्या नावधे के संयोप का प्रकृतक्ष्म सामग्रेण (ती ११)। थमिम वि वि] विस्तृत (वे ४, २४)। थय सक [स्यगय] माण्यादन करना धानुत करना, इकना। वर्ष, क्रम् (पि १ ७ गा ६ ४)। मनि वदस्तं (गा ३१४) । हेक्. यद्वतं (या १६४) । थय कि [स्तृत] स्थात मलूर (छे १ १)। थय पू [स्तव] स्तृति स्तवन पुण-मीर्तन (पवि १६: हे ४४)। थमण न [स्त्रवत] उत्तर देवी भूरपम्छ-बंबरानमंत्राहार दमहिपारित एयाई (भाव २)।

117 Ma

धरस्यर देशक दिने वरपरमा कांग्ना।

बरबर -बरस्य, बरबरे, बखर (सह

वरप्रद १६ वि २ भा पुर भ भा गा

24x ) 1

11(22.18

मठ (दे दे. २४) ।

(14) t

R. 9%) I

रूप धरधारेत

राश्चेत, बरवराजमाण बरबरेंत (योव

va दिश्यकः सार-भाषती प्रश्ना प्रथम

धरहरिक्ष वि वि] वीनत (देश २७) मनि

श्रद व कि एसकी बहुय-पूर्णि, श्रवकार की

बरुगिंग पुंबिरुकिम | १ केर-विरोप । २

पंची, क्य देश का निकासी। सी गिविका

श्रम किया है। भूमि वन्त सुवी वसीन

(बुमा, उप ६ व६ दी)। २ प्राप्त नेते समय

युत्ते इए प्रोह की फॉर्क क्षेत्री हुए प्रीह की

थानी बना (वन ७) । इस्त वि विता

रकत-पुष्ठ (नवर) : "कुम्बुडियंड न "कुम्बु-

ट्यापड़ी बबस प्रतेष के निय सता हथा **बस** 

(बच ७)। बार प्रे विवारी बनीन में

क्तना (पाचा)। निरूपी की निर्धानी

क्यीन में ड्रोनेस्प्रता श्रमत का काछ (तुमा)।

य प्रिकित बनीत में अल्पन होनेनाका

(पक्छ १ पत्रम १२ १७)। बर पि

[भार] १ जनीन यर चलनेवाला । २ जनीव

पर चलनेशाला पंचेलिय विस्तेत प्राती (बीव

का और २ व्योग)। और री (मीय के)।

शक्य व कि निया कुलादि-निमित्त पृक्ष (वे

ध्यक्तिमा ) ध्ये [वे] मुनक-स्मारक, राज को

ध्यक्रिया । गाइकर का बर दिवा काता एक

बद्धी भी [स्थवी] वत रूप्य वृत्याव (वृद्धाः

वाम) । योद्यन १ (पीटक) नय-विशेष

ब्रहार वा चबुतरा (त ७३६ ७३७)।

नर १ ७ मुपा२ १ वय १ )।

પ્ર**ર∌**) ĭ

थाण्यन दिर्देशीकी पहराः भवास्त्रय

भागपंस्थियां र स्थापेक विव (के क

का समा पाप)। २ क्या क्या (चा २३२)

पाप)ः 'वनवदृद्धवालुद्धरिखं' (कुथ १ १)।

थाणेसर न स्थाने घरी सका के किनारे पर

का पक रखर (प्य ७२० टी: स १४०)।

माम गस्तिमन्] १ वंब वीनै पर्यक्रम

(दि ४ २६७) ठा ३ १)। २ वि. बद

प्रक (निषु ११) । व नि वित् वित् वित्रास्तिनात्

भागपेत स्थितमारी १ वर्ता १ प्राप्ताला

(१ मा) मी वापितानक द्वरणका (१ द्वरूक-

खणु) मेद्दासुब बसदो' (शिंड ६६४)।

थास व दि स्थान] स्थान, जब्द (देशित

४७: स ४६: ७४६): न्येशसियनवित्तरे

फिल्युटनाया व धानवानीम (सुर २,

वारुजय दि [धारुकिन] देश-विरोध में

कराम । धी जिया (धीरा) । केशो

थाछ प्रैन स्थिछ] बड़ी बसिया भोतन

बार ⊈ [दें] यत मैव (दे प्र २७)।

भाग वि वि मिल्तीर्लं (दे ४. १४)।

(उत्त २)।

१ १)।

धरगित्र ।

व बीबा। ४ स्टब्स् (राष)।

#1—UID

यन देती वय = स्तर कि २ ४६३ सपा ~ · / • · · यम व वि परा, जानवर (वे ४, २४)। थवार् स्थिपति । वर्षीक वर्ष (६ २

मक्षि कि निविद्वाई बारकवाई 'क्यो बहुबी-33) [ वियाग्र स्थापीय बारायनिविद्या वरिकारिय-भवद्रय वि [स्तवकित] स्तवकाता क्या-माप्या प्रवस्तिता (स १९७) १४६)। २ वं जीकीशाय जीकी करनेवाला पारमी पच्छ (स्राया १ १३ कीच) । पहरेवारा 'सामसम्बद क क्रिनेटियन' कारा-थवडक निर्दिती बॉव कैसकर केटा ह्या एसँ (स ११७)। (\$ 1. 24) i काणिका वि वि । गैरवित सम्मानित (के थवक र विवेशिक समुद्र, बरबा। सम्बद्ध ¥ 1) I कुलवहसूरए वरक्यी सम्तवीतकारा (बच्छ बाणीय नि स्थानीय स्थानापत्र (स ६६७)। (1)

यवण देखो समया (साम २) । थवणियाकी स्थापनिका न्यास क्या रवी हर वस्तु, 'क्यमोनुमानियवनशिवयव शास्त्रव्यक्तिक (तुपा २७१) । थवय र् [स्तबक] इथ मादि का दुव्ह (दे २१ ३ पाप)। यमिका की हि ] प्रदेशिका श्रीला के सन्त में सवाबा जाता छोटा कहा-विरोध (दे र २४)।

वविष वि [स्थापित] स्थरतः निविति (स्वीर)।

वर्षिय वि [स्तुत] विस्तृती स्तुति की यो हो मह, श्वापित (मुपा १४१)। विषय वि [स्थविय] युद्ध, दूवा (वर्णीव **११४)** ( थवी [वें] फेबो धवित्रा (वे २ २१)। थस यसङ्ग हे हि [बेट्री विस्तीको (वे ४, ९४)।

बह् 📢 [हे] क्लिय सामय, स्वात (हे ६, 21)1 मारेको छा। भाद (वर्षि)। धरि काहिद (नि १९४)। वह बंद (परन १४ १९४) मिति)। संहर, याळज (हे ४ १६) । थाइ वि [स्थायिन] च्हनेताला । पी श्री

करने नानान (देइ, १२: ब्राह्म श्राप्त का क्र िनी वर्ष-वर्ष पर बच्च वरलेयानी योगी

धागत्त न [वे] जनन के बीतर पूजा हुमा रानी (तिरि ४ १६)।

१७: पुर १ (७)।

वहियाकी विश्वासिता क्षेत्र

बान औरने करने का बरतन (चरन २ 144)1

(4**4 %)**1 यहीं हो [स्पद्धी] केंदी वर्षान (उस ६

(पन)।

amma b [ê] ..... / ee \ .

९५७) । थाकद् वि [स्थास्त्रिक्तृ] १ वाववाता । २ पूरं, मान्यस्य भा एक मेर (ब्रीप) ।

२१ हो)। संद्र विपिन्न (माप्र = २२

(ठा६१ सूपा४८७)। पागवि ["पाक]

इंग्ही में प्रवास हुआ (ठा ३ १)। थाय प्रकृ[स्थापय्] १ स्थिर करना। २ रबाता। मामए (उत्त २ १२)। थावदा हो [स्थापत्या] हाप्का-निवामी एक पहरब की (ग्राया १ ६)। पुच्च पू ["पुत्र] स्माप्तमा का पुत्र, एक बैन मुनि (खाया १ र, यंत्रो। यावण न [स्थापन] न्यास माक्षन (स २११) । मानय र् [स्वापक] समर्व हेनु, स्वपक्ष साबक हेनु (ठा ४ १---यन २१४)। थावर वि [स्थायर] १ स्विर ख्लैवाता। २ र्षु एकेन्द्रिय प्राणी कैनस स्पर्शेन्प्रियवाना---वृथिकी पानी भीर कमस्पति मादिका कीक (का ६२ को २)। ६ एक विशेष-नाम । यक नौकर का नाम (क्य २१७ टी) । आर्य र्\_["काव] एकेन्द्रिय शीव (ठा२ १) । ∣ णाम, नाम प नामन् कमें विशेष स्वादएक-प्राप्ति का कारायु-भूष कर्म (वंब १ सम ५७)। बासग वि दुराम (प्राव टिप्पल-पत्र 28 2)1 बासग र् पुस्थिस की १ वर्षण करते द्यासय रेशीश (विषा १ २—पत्र २४)। २ वर्षेत्र के बाक्सर का पात्र-विशेष (बीप बनुस्राना १ १थी)। १ वयं का धामरस्-निरोप (धन) । माइ पुंदि ] १ स्थान, बर्च्या। २ कि सरवाद पंगीर क्ल-शका । १ शिरदीशी । ४ दीर्घ, सम्बा (दे ४, ६ )। थाइ पुं[स्थाम] माइ-स्था सहसाई का कर्ला सीमा (पाक्र) निसे १३३२) श्रामा **१ ६ १४ वे**८ ४)। थाहिल 🕽 वि वाकार स्वर किटन (गुरा ₹₹) 1 विभ वि [रिवत] एत हुमा (त २७ : विशे १ वस, भवि)। बिद्द केवी ठिद्द (से २, १०) पत्रत्र)। विविणी की वि अवनिरोध विविश्विकांत-चक्केण' (सम्मद्ध १४१)। Ý

री)। बिमाझ न दि । शितिनार, भीत में किया इमादरवाना (दस: १११)। २५⊅ पुरे बस्र में किया काता संवान कर प्रादि के बंदित भाग में सवाद जाती जोड़ (पर्स) १७३ विते १४३६ टी) । थिमाफ पून दि । सिद्धार गिरने के बाद इस्त (ठीक) किया हुमा मृह मान (माना २१६२)। बिख देशो धळा = स्पेर्व (संबोध ४३) । बिष्ण वि [स्स्वान] कठिन जमा हुवा (हे १ ७४० २ इ.इ. चै. २,३)। देखो श्रीगः बिण्य वि वि १ स्टेब-रहित स्थानला । र धर्मिमानी धर्म-पूर्वः (दे४ ३)। थिक वि वि । गरित समिमानी (पास)। भिष्य केलो विष । क्लिइ (हे Y ११८)। विष्य ग्रन्न [सि+गड्ड] गल जाता। नियह (है ४ १७१)। भितुक पू [स्तिमुक्त] कन्द-विशेष (पुष १६ 1 (33 यिम एक स्तिय] पात्र करना गोवा कला। के विमिन्न (राज)। थिमिल नि [दे स्टिमित] स्पर, निवन (देश २७) से २ ४६ म हरे ग्रामा १ शः विपार १ पर्या १ ४८ १ स मौग्र युक्त सूप १ ३ ४)। २ सम्बद्धीमा (पाम)। थिमिम पू [स्तिमित ] एवा सम्बद्धीया 🗣 एक पून का नाम (श्रंत ३)। भिन्स सक [स्तिम् **१ श**क्ष करना। बक यह होना । पिम्मद (प्रक्त १२ )। बिर पि स्थिर ? नियम मिम्बस्य (विधा १ १३ धम १११३ खावा१ व)। २ निम्मय संपन्न (इस ७ ३६)। जास "नाम ग ["नामण्] कर्म-विशेष जिनके करव से करा हुई। मार्थि मनवर्गों भी रिवरता होती है (करन १ ४६: सम ६७)। विक्रिया की ["विक्रिक्त] क्यू-विशेष धर्मं की एक कार्षि (बीव २)।

बिरणाम नि [बं] चत-नित्त चन्त-मनस्क (देश २७)। थिरञ्जेस वि दि । बस्पिट, चंचस ( पड् )। विरमीस विदि १ निर्मीक निकर। २ निर्मेर । ३ जिसमें भिर पर मनत्र शीवा हो बहु (दे १ ११)। थिरिम पू मी [स्थैयं] स्वरता (सए)। थिरीफण न [रियरीकरण] स्पर करना इव करना वमाना (भा ६ रमण ६१)। थिस वि दि ग्रेस (चटपम विद्वारानेय)। बिहिन्न भी दि । मान-विरोध-१ वो भोड़े की बन्दी। २ दो समार पावि से बाह्य गान (मूप२२ ६२ छावा: १.टी—क्व ४३ इति)। विविधियं पक [ धिष्वविषाय् ] 'धिव विव' धाराज करना । वक्क विविधियंत (दिया १ 📦 । विदुग) पूँ [स्तियुक्त] वत-विश्व (विदे मिसूर्य कि ४ कि इ. सम १४६) । संक्रम पु सिंकमा कर्म-प्रकृतियों का धापस में संबमरा-विरोप (पंचा १)। थीतु पूंडी दि] सम्बन्धिय (बत ३६, **ee)** i बिहु पू [स्विमु] बनस्तवि-विशेष (एज)। भी भी [भी] की महिला नारी भीरत (हेर १३ इस्मा प्राप्त ६४)। बीय देवो थिएम (हु १ ७४ दे १ ६१ पूमा पाप)। गिद्धि की ["सृद्धि] निक्रष्ट निमानियेप (ठा १, विसं २१४) उत्त ६६ थ)। दिस्य ["र्दित् ] सम्म निवाननिरोत्त (सम १४) । "द्विय वि ["द्विक] स्वानदि निद्रावाला (विशे २३६)। मु म विस्कार-सुषद्र धम्यन (प्रति वरे)। धुम वि[स्तुत] जिसकी स्तुतिकी नई हो मइ, प्रशंसित (देव २७३ मस १३ समि मुझ देशो भुण : दुसद (प्राकृ ६७) : धुइ की [स्तुदि] स्तव इंग्र-कीर्तन (दुमाः चैलार पुरुर १३)। सुद्रवास पुं [स्तुतिबाव] शर्तसा-वबन (बेदन WYY) I

भुक्त विहित्रुखी मीटा व्यक्त । और

शुक्ष देको शुप्प । धुक्द (प्राष्ट्र ६७) ।

(पिंड ४२६) ।

निरामना । पुरतेष (तमा ४६) । संक्र शुक्तिक्रम (मुगा १४१)। धुक्त न [बूल्कृत] दूत्र क्या सवार (दे ४ Yt)ı श्रुव्यार दे [ब्रुरझर] किरम्शर (चव)। युद्धारं सक [ युरद्धारय् ] विरस्तार करना । क्षक शुकारिकामाण (वि १६६) :

5 क्रमक [बून्+कृ] १ दूपना। २ सक

विरस्तार करना बुतकारना धनावर के साव

27.

धुव्दिञ्ज वि 🕏 बन्नत औषा (देश २०)। चुक्किन वि [बुत्हत] पूरा हुया (रे ४,२८) मुग ६४६)। पुड न [ने सपुड] दुल नास्तन्त 'नौरीब श्रीक्रण बढा राज पुरेर्मू (मुपा १०४

भुइंक्जिय न हिं] रोक्युक्ट ववन (पाय)। बुइंक्जिम वि] १ यस-दुनित पूँइ का सनीय बीहा प्रस्ता होने से होता हुँह ना संशोध । २ मीनः चुत्रकी (देश ६१) । भुदूरीर न [दे] चामर (दे ४ २०)। भूज दक [स्तु] स्तुप्ति नरना प्रस्त-कर्तन करता। बुलुद्द (द्वे ४ २४१) । वर्षे बुम्बद्द, कृष्णिक्य (दे ४ २४२)। वहः सूर्णत

(अति)। कवड् धुक्वत भुक्तमात्र (गुन ≈स नुर ४ ६६, त ७ १)। बंक थाऊल (गान)। हेइ सोर्स् (दुष्टि १ ७४)। र धुक्त थाअक्त (सीर क्य क्रा **≠**₹ ) i धुमम न [लवन] द्रुल-निन, स्तुवि (नुस धुजिर रि [स्तोतृ] लुद्धि वस्त्रैराचा (कल) । मुण्य रि [दे] इत धन्मिन्से (दे ४, २७) । धुच न [लाप्र] स्पृति स्पृतिन्यळ (चरि)। भुग्भुकारिय कि [सुभुरशारित] बुतकार

हुम्प निरम्बन, मपनानित (स्री)। धुपूरार 🖠 [धुपूरशर] डिएनार (अरी t)ı धुरणुक्तमय न [व] राज्य विशोध (१ ६, हुएम रू [रे] पर-पूर्व हैं। यहनर वस्त

कार, धेवा (देश दे)।

धुनम वि (स्तानको स्तुति करनेवासा (है) ₹ **७**₹} i धुवण न [स्तवन] स्तृति स्तव (दूप १६१)। घुम्म धुम्मंत } देशो धुण। मूग कि<del>या-पूत्रक शब</del>्दक 'कू किस्सको सौघो (दे२ २ ३ दूमा)। व्यूजर् [वे] घरन मोड़ा(देश २०)। भूण रेंबो तज ≖स्तेन (दे २ १४७)। मूणा भी [स्मूणा] बस्ता भूटी (वर्: पएए १३)। बूजाग पुँ [स्बूजाफ] ब्रियेश विशेष वान विरोप (पारम) । धूधू ध वि] दशा-पूचन घच्या (वंश) । शूम वे [स्तूप] दूरा दीवा, दूर, स्मृति स्तम्म (विकेद्दर: मुता २ टा दूप १६४ याचा २१ २)। धुमिया ) और स्मिपिस्र] १ और स्मूप भूमियारा 🤰 (बीप ४३१, बीप) । २ क्षोटा क्तिकर (तम ११७)। भूरी की हि ] तन्तुनाय का एक काकरण (वे **र,** २ ) । बुक्त बेंब्रो भुक्त (पाम) पतन १४ ११% प्रा)ः सद्वं ["सत्र] एक सुप्रधित वैन महर्षि (दे १ २४६; पछि)। युस्रपाय व विशे मुक्ट, बराह (दे ४ १६) । युव ) देशों जूस (रें ७ ४ : नूर रे युद्दे (रे ) । सुद्दृद्दि । प्रापारका शिवर (देश, ) ६२। पाम) । २ पातक पणी । ६ वस्वीक बीमक (दे ४, ६२)। थंझ ति[स्थंय] १ छ्दने बोग्य । २ को छ्द नरवा हो । १ वे पैमना वरनेशना, स्याय-

400 (\$ 4 364) 1 यग वृह्ये] नन्दविदेव (या २ । वी १)।

पञ्ज रेतो धन्न (रर १) ।

येज्ञ न [र्ग्यवे] रिवरता (विने १४) ।

येजिकिये वि[र] १ इट की नाहुमा। २ धीत वर्ष ह्या (रे १८ ६९)। बेप्प केटी थिएए। येपाइ (पि २ ७) संक्रि 4A) 1 मेर वि [स्वपिर] १ दूब, दूका (हे १ १६६) २, वर मगर, ३३)। २ प्रं केन बापु (बीव १७ वय)। क्या पू [ क्ल्य] १ भैन मुनियों का ध्यापार-विरोध नक्स में खुने-वाबे पैन मुनियों का धनुहान । १ माचार निरोप का प्रतिपादक प्रन्य (ठा १ ४) स्रोप ६७ )। कप्पिम दू ["क्रिसिक] गाचार विशेष का भाष्य करनेवाला शब्द में खते-वासा वैत पुनि (पव ७)। मूसि की मिमी स्वितिका पर (ठावे २)। ीपक्षि वि**विक्ष**ि शक्ति सुनिन्धे का समूह। २ कम से कैन पुनि-पश्च के परिच का प्रतिपत्तक प्रव-विशेष (स्त्रीर, क्रम् ) । मेर पूर्विस्वविर] बहाद विवासा (वे द रध पाम) १ थेरासण ग[देस्वविरासन] पथ कनव ( R 1 , 7 L) 1 बेरिम न [स्थैयें] स्थिका (दूपा) । थेरिया ) की स्थितियाँ १ बता. बहिना मेरी (पाम भोप रहे हो)। र वैत सामी (रप)। थेरोसण न [पे स्वविद्यसन] प्रमुद्र क्यन पष (पड्)। थेय पुदि विन्दु (३ ६० १६) नाम यह)। मेव देवो कोव (हर १२४८ शता गुर १

१८१)। नास्थित नि "कास्तिकी यस नाम तक प्रतेताला (सूता ३७४) । थेपरिभ न [दे] थल्य-तमय में वजाना शाता नाय (दे ४, २१)। मोभ रेको भाग (दे २ १९१ मा४८, नजाः विचि १)। भाज **र्ग्**दि] १ एउट कोबी। २ बूतक पूता, बन्द-विरोद (दे ४, ६२)। धोजन्म } ध्यो सुज । योजन

भोक्र रेनी मान्य (प्राप्ट रेव)। थोडः थोग् } देवी वाय (देश १९४३ वर्ग १)। बोडेस्य देखो घाडेस्य (स्प ७२० टी) । योजा देवो यूजा (दे १ १२४)। बोचन[स्तोत्र] शृति स्तन (११४) मुपा २६६) । बोर्च देवो धुण। वोस }ुं[स्तोम क] 'वं वं मादि

बन्कारा हृति य सकारमा बोममा हृति (**रह** | १ क्रिकेट्ट टी)। योर देवो शुद्ध (हे १ २१६८ २ ११) पत्रम २१६ छे१ ४२)। श्रोर कि दि इस्म से किस्तीर्लं सक क मोल (देश, वनना १६)। योल पुदि] यस का एक देश (दे ४.३)। 🕽 श्रीसम् निरबंक यन्यम का प्रयोग, 'चम

ृदि [स्टोइ-] १ धरा नोड़ा (ई भोबाग रि १२४ उदा सा २७ मोन २x१ विसे १ १)।२ दुसमयका एक परिमाण (ठा२ ३। सम्)। योड न हिं] बन पराव्य (४ ४,३)। योहर पूंची [दे] बनस्पति-विशेष पूहर का देश सेहॅब (सूपार ३)। की रीं (इप १ ३१ टि जो १ ) वर्ग ३)।

## ।। इस विरिपाइअसइसहरुगवस्मि असायहसहर्यक्काओ बक्बीसहमी तरंबी समत्ती ॥

## द

दश्च पू दिन्य दिन्य सन्दर्भ स्थाप इ र्च [दे] रक्त स्वामीय व्यव्यन-वर्छ विशेष (प्रापः प्रामा)। **ब्झच्हर पू**[दे] प्राय-स्वामी पविका ग्रविपति (दे ४, ३६)। इंडरी की विं पुष, महिष्य, बाक (दे ४, 1(Y) इड़ ही दिति भएक वर्म-निर्मित बस-पात्र (धीप १८)। वद्रम नि हि दी दी है (वे र. ११)। वृद्ध पूर्व [ हतिका | मरुक वर्ग-निर्मित जन-पात्र चमहेका बनाहुमा बहु यैशा जिसमें मानी भरकर बाठे हैं 'बहुएएए वरिक्छ। वॉ (पिट ४९)। की आर (मस् १६२ विका १४)। ब्ह्म वि [ब्यित ] १ प्रिय, प्रेम-पान 'बामो भरकामिछीरइमी' (मूर १ १०३)। २ समीट बाध्यिक चम्हाण मणोब्दर्य र्वश्राप्तमानि कुल्लाही मानी (मुर १ २६८)। ६ पूर्वात स्वामी मर्जा (पायः पूमा)। यम वि [वर्स] १ मत्वन्त प्रियः। २ दू पति वर्ग (नस्म ७७ १२)। दह्मा की [द्यिता] की जिया, प्रशी (दुमाः महाः सुर ४ १२६)।

क्रमाः पाम) । शुरु पु िशुरु] गुरू शुक्राचार्यं (पाम) । ब्द्रम न विस्थ] शीनता, परीवपन गरीनी (B t txt): दृद्ध पून [देव] देव भाग्य, धरष्ट, प्रारम्य पूर्वे-इरुडकर्मे (हे १ ११३ इटमा महा पठम २८ १ ): ध्यह्वा कुवियो शहती पुरिसंकि हराइ सडोगा (पुर ८, ३४)। का, ज्या वे कि ज्योतियीः ज्योतिः रास्त्र का विद्वाल (हि.२, ८३ वड)। देखो देव = देव । ब्रह्मय न [ब्रेनत] देन देनता (परह २ १ हेर १६१ द्वमा)। दक्षमिंग नि दिशिको स्व-संबन्धी दिध्य चत्रम (स १११)। बुद्दम्य देशो बुद्दव (६१ ११३ २ १६) कुमा विकास है । इंडिंच (शी) म [द्राग] शीव, बस्धी (प्राप्त ६१)। दब्दर ) न [बुक्रोदर] योग-विशेष, दक्षोदर ∫ वतौदर, पश्ची से देट का प्रतना (खादारे १३ विचार १)।

द्योगास पु [दद्यवमास] नवल-स्पूर में स्पित बेलंबर-नागराज का एक धावाच-पर्वत (इक्)। वृंद्ध बेबो बाहा ( नाट---मामदी १९) । वंठि वि [वंष्ट्रिम्] वहे बौतपाला दिसक बलु (नाट—नेएरी २४)। **एंड** एक [दण्डयु] समा करना निवड কলা। কলচ বৃষ্টিভার (মাধু ६६)। **थुंड पूँ दिण्ड**ि १ की<del>व-दि</del>सा प्राण्य-नारा (सम १ छामा १ १ ठन १)। २ धपराची की मरराव के प्रमुखार शारीरिक या पार्विक **रएड समा निषद्ध, दमन (ठा३ का** प्राप्त ११ हेर १२७)। १ बाठी यहि (इन १३ टी: प्रामु ७४)। ४ दुःख-वतक, विद्याप-अनक (धाषा) । १ मन वयन सीर राधेर का बारुम स्थापार (पत १६, इ ४६) । ६ घन्द विशेष (पिंग) । ७ एक बैत उपायक का नाम (संबा६१)। ८ पून परिमाण-विधेष १९२ बीप्रम का एक नाप (६क)। १ याजा (ठा ४ ३)। १ पून् रीम्य, सरकर, फीज (परह शिक्षा ठा ४,३)। मस १ विस्त बन्दियेप (सिप)। जाम न ["सुद्ध] यटिनुड (बाना) । गाया व

"नायक १ श्वाह-शता स्वयमितार

ৰুৱাঁ। **१ ট্যান্তি ট্**যালী স্তিনি<del>য</del>ুৱ

सैम्प का कालक (प्रस्तु १ ४ मीरः कमा

खामा १ १)। जीइ को निर्ति नीवि-

मिरोप, प्रमुक्तपन (ठा १) । पह पूँ ["पय]

मार्च-फिलेप सीवा भार्ष (सूब ११६)।

पासि दं विपिन्त, पारीम् र बएड

धरा । २ कोतनाव (स्त्रामा २०)।

( वं १)। भी दि भी । रएड से डरते

वाला इस्ट-ग्रीड (ग्राचा)। स्रक्तिय वि

"स्मृत विरुद्ध क्षेत्रेवाला (वय १) । बहु पू

"पुद्रजय न [प्रोब्द्धनक] स्ट्यकार ऋड्

["पवि] समान्यः सेनायवि (सुपा **१२१**) । वासिम, बासिय पू [बाव्हपाशिक] नोतनाम (कुप्र १४१) त २६१, वर १ ६१ धे)। नीरिष पूर्विने राजा भरत के र्वत का एक राजाः विसकी सावशी-नृह में केनबज्ञान उरस्ब ध्रुमाना (ठा ) । रास 🖞 ["यस] एक प्रकार का नाम (क्रम्)। ाइम वि [ स्वत ] दए व की तर्या तस्या (नसः भौप) । । यद्य नि [रैं। नतिक] पैर की क्एड की उच्छ सम्बा फैकानेबाला (पीम क्स का १, १)। "शक्तिका प्र ीरशिक्ष] स्वत्रवाचै प्रतीहार (निष् १)। ारण्य न [ारण्य] दक्षिणुधारत का एक प्रक्रिय चैक्स (प्रतम ४१ १ ७१,३)। सियिय वि [सिनिक] श्रुव नौ तरह पैरफेना कर केटनेवाचा (कत) । देखी देवग बंदव । पंड पू [व्यव] १ वरह-मामक धेनामति (वर १)। २ जनात क्राप्त 'व्यक्तिकोदनं विस्कृत तियं कानुबन्तिति वह कृष्ये (पत्र १३६ सिंह १वा विचार २१७) । **एंड**स ) थे [द्रण्डक] १ रखें दुरक्त नगर **रंडन**े शाएँक समा (परम १ १९)। ९ बग्दाकार बाक्व-पद्मति बन्नात-कितेप 🔑 (श्रेष) । ६ नवनप्रति प्रप्रदः नौबीत बर्डक प्र-(मिरोप ( ई.१) । ४ न. ब्रिक्टि मास्त ar एक प्रक्रिक जैनल (पत्रम ११ः २३) । 'तिर्दि र् ["गिरि] पर्वेत विशेष (प्रका ४२ १४) । देशो देह (उर ११) बह १३ गूप ु र प्रमाप १३)।

**र्वड**ण न [क्पडन] स्वड-कर*श कि*सा (तूम २२ दश्यः।)। **रंड**पासिंग र्यु [दाण्डपाशिक] कोतवाब (मो**ड १**२●)। र्वडक्षश्रम वि [ब्प्डलाविक] श्एर बेनेवाना मप्रस्वी (नव १)। **ংতাবল বৃহতন** চৰা হতলা দি**জ্** क्यना (भा १४)। इंडाविभ वि [प्रिंडत] विस्को स्पट विनादा गबाही वह (भीव ११७ टी)। द्रिडि दि [दण्डिन्] १ दए≇भूकः । २ व क्रव्यारी प्रविद्यार, बरवाल (कुमार भी ३)। देखि भेको देखी (कुप्र ४४४) । इंडिअर्थ [इण्डिक] १ सामन्त सका (पन २६०)। २ सम क्लानुक्त पुरुष (पद ११)। १ राएक्पारिक कोतवाल (वर्गरी १८१ )। दंडिभ वि [दण्डित] क्लिको स्वादी गरै हो नह कैरी (सुगा ४६२)। दंडिम वि [दण्डिक] १ स्ट्रनाता। २ व् स्वा नुप (वन Y)। १ स्वृत-वाता, प्रपस्त निवार-कर्छी (वद १) । **दंडिमा ध्यै [दे]** देखपर तवाई नाठी एक मुहा रुप्पा, मोक्र (शुक्र १)। क्**विका**स वि दि] धनसानित, 'वीविक्यो समाको समबद्दारेख नीखेद (इस ६४० दी)। **र्डिणी को** दिव्िकती सभी सकता (सिंद**र** )। **वं**डिम दि [व्णिडम] १ व्यव से निर्मातः। २ क एका करके बसूत्र किया हुआ इस्त (शामा १ १--पत्र ३७) । की की विदेश सम्बद्धा २ वॉका इया वक्र-कुरम (दे ६ ११) । १ श्रीवा ह्या भीर्ज वक्त (कान्य १ १६—पत्र १६६) परहार र---पद्र द्र रू । र्दर वि [ ब्दन् ] यल असी बासा (सिंह KEY) 1 र्देठ पूर्[दान्य] के कादाब देना (इंटीक

बैंद नि [दान्द] से कावल (श्रेवीय १)।

वंत ई [के] परंत ना एक देश (वे ६, ३३)।

वैत वि [वान्त] १ जिलका दशन निया कहा

हो बहु बरा में किया हुआ। 'बंदैश विदेश

चर्टिंद बीर्प (प्राप्तु १६४)। २ वितेन्त्रिय (खामा १ १४३ सम १ )। देव दू [रूउ] रात परान (पुमाः कम्पू)। इसी की डिटी देश राव (तेर्) । स्थाप र्षु [च्छाद] घोष्ठ घोठ, होठ (पाय)। भावण न विश्ववती १ शौर सफ करना कान करता । २ वॉव बाफ करने का काह, क्ठबन (पर्याः १ ४ मित्रः १) । पक्रमाध्रम त "मञ्जासनी वही पूर्वोक्त धर्व (तूप १ ४ रे)। पास न ["पात्र] क्षेत्र का बना हुमा पत्र (भ्राचा२ व १)। पुर न िंपुर] ननर विशेष (वया)। आद्दोषण न प्रियायनी केवी भाषण (क्स.६)। सास्त्र पूर्विसाखाः **क्ज-क्रिके** (वंर) । बच्च दूं विक्र∫ क्टपुर नदर का एक छना (वस १)। बलहिया को विक्रमिका । ज्यान-विधेप (स ७ ) । शाणिका न [वाणिक्य] श्राधी-बाँत वरीख्य श्रांत का व्यापार (वर्ष २)। ार पूँ ["द्यर] दश्च का काम करनेनावा किसी (पएए १)। वृंतकार दुं [वृन्तकार] बांत बनलेवला रिल्मी (पणु १४१) । ब्दर्डकी की [दन्तकुमकी] सब, रंहा (वंद्र इंतनक र्षु [हास्तवाक्य] नक्स्ती राना (सूम १ ६ २२)। वैद्यापन विद्यासम्बद्धी १ वर्त-पुरिष्टः । १ **बद्दन र्यंत साफ करने का नक्ष (दे २, १२)** ठार---पत्रप्र व्यवपापत्र)। देवक्य्य पुर हि वृत्तपवन वितक्त (स्त ۱ () ا र्वेदमोइण न [दन्तरोजन] स्तरन (श्त **(₹ ₹७)** 1 वंडा**स्ट इंडर दि** । <del>राज वि</del>रोप वास कारने काहिक्तार (तुता १९६) । इसी (कम्प १ ३६)। वंति द्रं [दन्तिमः] १ इस्तौ इस्तौ (शब्द)। २ पर्वत-विशेष (पत्रव १६, ६) : दॅविम र् [दे] रुक्त बलोत बया (रे **₹ ₹ Y** ) 1 दंतिंदिज नि [दान्तेन्द्रिय] विदेश्यत

इन्दिन-निच्छी (धोद ४१ व्य) :

देखिकाम दि] बलाकका धाटा (इह १)। देविका न दि । मांस (बर्मेंस ११९)। वृंतिया की [दस्तिका] एक बृत विशेष वदी सताबर (पएए १--पत्र १२)। बंदी की दिस्ती ] स्वनाम-क्यात बुच (पर्स्य १—पद ३६)। दंतक्कार्डिय व [बन्दोल्स्सिक] वापस विशेष जो बोर्स से ही पीहिया पल वमैछ को निरुप कर बारे है (निर १ ६)। र्वसूर वि [इन्सूर] अनव शतकामा विसके वांत जबव-बावव ही । २ व्यवा-नीचा स्वान विवागस्थान (१२ ७७)। अधामे धामा हुधा बाये निकस बाया हुचा (क्रम्यू)। र्तुरिय वि [दुग्नुरित] असर देवी 'विवित्त पासायपॅरिंगुरिये' (दर १ ६ टी सुपा ર ) ા र्वत प्रक्रिक्ट्री १ व्यक्तिशान्त्रस्थि प्रमापर प्रवान समास (क्रष्ट)। २ न परस्पर विस्तर शोठ-क्या मुख दुःस मादि पुग्म । १ क्सह, वतेरा । ४ युद्ध, संप्राम (सुपा १४७ कृमा) । स्पद् पू व. [सम्पति ] स्य पुरुष पुरुष — जोड़ा पति-पत्नी 'ते पंपर्दे तह तह सम्मीम समूजमा निक्कें (सिरि २४८)। दंभ पूं [दम्भ] र माबा कपर (हेर १२७)।२ छन्दनिरोप (सिंग)। १ ठमाई, थप्रयमा (पत्र २) । इंसम वि [दस्सक] दस्मी पाचेशी ठप पूर्तः 'र्यमगो ति निकाब्दियो (गुज २ १७)। वंभोक्ति पुं [दरमोक्ति] वह (दूप २७)। ब्स सक [दर्शम्] विकासमा बद्याला । बंबद (है ४ १२) महा)। यह वंसंत बंसित. देसकेत (मक भूपा ३२ मनि १०४)। क्यक इंभिज्जंद (नुर २ ११६) । संक्र र्देसिअ (नार) । इ. देसियब्द (नुपा YXX) I दैस प्रकृ[देश्]काला, दोत से काल्या। वैवह (गाट-चाहित्य ७३) । वैचेनु (भ्राचा) । बङ्ग देसमात्र (ध्यवा) । ब्स पुंदिरा] १ वास बड़ा मन्दाइ (सक ) मापा)। २ क्लास्त सर्वे साधन्य क्रिसी विचेते की है काटा हुन्य पान (है १ २६ छि)।

र्सस पु [ब्रह्म] सम्यतन्त्र सत्त्व-पद्मा (पावम)। र्युसरा नि [दर्शक] विक्रवानेनासा (स ४८१)। इंसण पून विश्वीत र सबबोकन निधेक्षण (पूज्ड १२४ स्वयन २६)। २ वज्र नेत्र यांच (से १ १७) । ३ सम्यक्त वस्त बदा(ठा १ १.३)। ४ सामान्य कार्रा च सामन्त्रकातु । चंत्रसमिद्धं (सम्म ११)। श्मत वर्षे। ६ शाक्र-विशेष (ठा ७ ८) र्यमा १२) । मोद्द न विशेद्द <del>तरव-दश्का</del> रा प्रतिकेशक कर्मे-विरोध (कम्म १ १४) । माहणिक न "मोहनीय कर्म-विशेष (हार, ४ मग)। विस्त न [विस्त्र] कर्म-विशेष सानात्म-ज्ञान का घावरक कर्म (धरः)। शरणिज्ञ ग विस्पाय ] पूर्वीक ही धर्व (सम ११) । वेची द्रिमण । द्रमण न [दंशन] बांद से काटना (से १ 1(#5 दस्य वि [दर्शनिन्] १ फिली पर्नका मनुयायी (सुपा ४६६)। २ दार्शनिक दर्शन शक का बातकार (कुत्र २६ कुम्मा २१)। ३ दल-भवानु (घणु) । व्सणिभा की [वर्गनिका] शर्रन धननोकना 'बंदमुरवंबास्मित' (भीतः सादा १ १)। देसणिज्ञ ) नि [ दुर्रोनीय ] केवने योग्य वैसनाञ रे क्तेन-मोध्य (सूर्य २० ७ समि ादम्यक्त)। दंसाव सक [दर्शम्] दिवसाना । इंसाकेड (प्राप्त ७१)। पैसाक्य न [ब्र्झन] रिक्राना (उप २११ टी)। दंसापिअ वि [वसित ] विवताया हुया (सुपा १८६)। देंसि वि [दर्शिम] केवनेशना (धावा- हुप्र ४१३ द २३) ।

देशो इस = वर्षम् ।

**ए**सिम

देसिव

र्वासञ्जात

रंसियम्ब

(पह)।

२७)। प्रयो बन्सानद्र (पि १६४)। कर्मे, बीसइ (उप) । क्यष्ट दिस्समाण वीसंत, दीसमाण (मान र मा ७३) मार---चैत ●१)। सक्त दक्तु बट्दुः दन्दुआण, दट्दुं, दट्डून, दट्टूण, बिसंस, विस्सी, विस्सा (क्या पर कुमा मक्का पि ४ व्ह मूर्य १ व २ १३ प्रि १६४) । हेफ्र- दट ठुं (हुमा) । फ्र- दुइस्ब विट्ठहव (महा चत्तर १७)। दक्त सक [ दश्य] दिवलाना सीनि ह बरुबद्द बहुब्दो अपर्नेतर्गताई (सूपा २६२) । इक्क्स कि [इहा] १ निपूछ चनुर होशियार (इच्यासूपा यवश्यास्य) । र पु मूता क्ष्य नामक इत्य के पदाति-चैत्य का अविपति देव (ठा ४, १ ६क) । ३ मगवान् मुनिनुदत स्वामी का एक पीव (पठम २१ २७)। द्करा देवो द्कसा (परम ११ ७६, दूमा)। दक्सकापु [दे] मूम गीव पति-विशेष (R 2 3 Y) 1 दक्ताण न विश्वीनी १ प्रवतीकन निरोक्षण । २ वि देखनेवाचा निरीक्षक (कुमा) । द्वस्तद सक [ द्शीय ] दिश्रवाना बदनाना । **44845** (\$ 4 42) 1 वक्कायिक वि दिशित विकासमा श्रम (पाध कुमा)। दक्ता की [हासा] १ वस्ती-विशेष बाब मा संबूर का यह। २ फल-बिरोप बाज, संबूर (कप्पू सूपा २१७ १३१)। दक्तावणी औ [बाक्षायणी] गौधी दिव पली (पाम) । वक्तियण वि विक्रिणों १ व्यक्ति विकास स्विति (मुर ३ १ व गउक)। २ निपुरा बनुर (प्राप्ता)। ३ दितकर, सनुरूष । ४ दंसिञ वि[दरित] विचनामा हुमा (पाम)। भवसम्य नामेजर, बाहिना (पूमाः ग्रोप) । पश्चिमा माँ ["पश्चिमा] दक्षिण सीर परिषम के बीच की दिशा नैस्ति कोए (मात्रम) । "पुरूरा सी ["पूचा ] प्राप्त-कोए। (बंद १) । देनो शाहिए। त्क वि [ब्रष्ट] को बीट से बाटा परा ही बह दक्तिमत दि [दासिणाता] बीवण दिस वें बलान (धार्य)। दुक्रम चक [दर्] देवना धवतीयन गरना। निकास भी [दक्षिमा] १ पविण क्रिस दल्यानि दक्तियो (पनि ११६) निर्म (को १)। २ व्यक्तिए केत (क्यू)। ३ धर्म

किसमें पानी स्पन्नताको (पराहर ४)।

१ ६१। हे ४ ४२२ मृथि) । २ शील, बच्छी

कर्मं का पारियोधिक, सम्म, येंट (कम्मू यूप २, श)। 'क्रेंकि मिं [क्यिक्शिम् ] विभावत का परिकार्यों (उस्त १ ९४)। यान का [यान] १ वूर्मं का परियक्त मिता में प्रथमा २ कर्मं की संस्थानि के बान भी संशाधित कर के का मात्र का क्या भी १)। यान, बहु पूँ [पान] वरित्य केय (कप्पूर १४२ थै)। इस्तित्यापुरुषा हैको द्वित्यन-पुरुषा (क्य १६)।

में अल्पाल या स्थित (सन १ ) प्रस्म ६

११६) । इस्कियाय कि [इसिक्रेय ] विस्को विद्याला स्थ साठी हो यह (विदे १२०१) । इस्किय्य ] कि [साहित्य ] १ इसक्य हा इस्किय ] पूर्ण्या चित्रपर्देश कि ऐसे मुद्दा मुहसेशिय यह दिस्साई (स. व.८) स्था ६०) । १ उस्माद्या सीमाई । १ सम्ब्राला माई (दुर १ १४) २ वश्य प्राप्त )।

मार्थन (दुर १ १६/२ १ १३/ प्राप्त )।
४ समुद्रका (रंग २)।
इस्तु कर्म (दुर्शित) रिवनाया हुमा (दिने)।
इस्तु क्षेत्रे वस्त्रं स्टरः
इस्तु क्षेत्रे वस्त्रं स्टरः
इस्तु क्षेत्रे वस्त्रं स्टरः
इस्तु क्षित्रं वस्त्रं स्ट्रियः
इस्तु क्षित्रं वस्त्रं स्ट्रियः
इस्तु क्षित्रं वस्त्रं स्ट्रियः
इस्तु क्षेत्रं वस्त्रं स्ट्रियः
इस्तु क्षित्रं वस्त्रं स्ट्रियः
इस्तु क्षित्रं वस्त्रं स्ट्रियः
इस्तु क्षित्रं वस्त्रं स्ट्रियः
इस्तु क्षित्रं स्ट्रियः
इस्तु क्ष्र्वं क्ष्र्यं स्ट्रियः
इस्तु व्यक्ति

वर्षक किमनेच (सुध रे व १)। (गा न (इन्हे) र गरी, चन (हर र व १४: कम्म)। २ पूँ स्ट्वियेण पहास्तिहास्त्र देन-दिखेश (ठा र १)। १ वच्च-ग्रह्म में रिक्स एक स्थापन वर्षक (जन १)। ग्रह्म यु (मानी) सम्म वास्त्र (जम १)। ग्रह्म पुंच्चित्र में प्रमास (जा १)। स्वत्रस मूँ (मासम्बे) व्यक्तित्य ११-स्वत्रस मूँ (मासम्बे) व्यक्तित्य ११-स्वास्त्र मूँ (मासम्बे) व्यक्तित्य स्वास्त्र मु

[\*(परपक्षी] बनस्रात-विदेप (परण १)।

भास प् [भास] वेतन्वर वावधव श

एक साराव-पर्वत (धन ७३)। संचग व्

२ स्प्रटिक परन का बनावा हमा सकरप (वं १)। महिया मधी और मिलिका र पानीवासी मिट्टी (बढ ४३ पक्रि)। २ क्या-निरोप (वं र)। "रक्तास पू "राशस] क्त-सलब के प्राकार का बंध-विद्येत (सप १ थो। स्थ पेन दिखस किन्द्र-निन्द्र, बस करिका (कप्प)। "बप्पेब व विद्यानी च्योतिक वह-विशेष (मुख्य २ )। बारा बारव वं विश्वकी पानी का छोटा करा (यक खामा १ २)। सीम प िसीमनी वेलेकर नाक्यक का एक बावाल-पर्वत (सम्)। इरान (इ.स.) सम्रदेश एन (एम ७१)। सोवरिक वि विशिक्षित्री सांस्य मत का क्लमाबी (पिंड ११४) : द्या देवी वा । श्यक देवी दक्ता=१यः। यदि दन्तरं, बन्बधि बन्बिविधि (प्राप्तः चत्तः २२, ४४) पा द१६)। बुच्छ देवो पुबन्त = बक्त 'रोनसमक्त्र सोतह' (क्य ७२० की प्रमुह र ६—पत्र ४४) ₹ ₹ **१७)** । द्यस्य विदितिस्य देव (देद ३३)। दरमंत } देशो दह ≃ स्ह । दरममाण बद्ध वि विश्वी विश्वनी बीच से नाटा पया हो। च्छा(यहः म्छा)। इट्ट वि डिप्टी केबाइया निनीतित (राज)। **पट्टें**तिय वि [ब्राइरेंग्विक] जिसपर दशका विमा यद्या हो वह सर्वे (क्य वृ १४६) ।

रहरूप } क्यो दक्त = रश् । दद् दु

(Nt t ex)

ৰ্ত ভ্ৰমাণ

दट 🕏

बद् ठूज

ब्ट् टूर्ज

ब्द् दु वि [ त्रघू ] देवनेयाना, मेसक पर्तक

वेको इक्स = १स् ।

(4x) : विक्रिकी कि विज्ञानिक (स्रिक्त) । व्यव्य वि विगयी कता ह्या (हे १ २१७ सव) । वसहासि की विशेषन-मार्ग ( वह )। वस मि हिन्ती र समझत मनवान पोड (पीया से ह ६ )। २ मिल्बक रिकर निष्करण (संघर ४ राज्यारक)। क समर्वे कम (सम १ ६ १) ५ ४ इटीट निवित्र प्रवाह (राम)। १. कठोर, वर्डिन (पेचा ४)। ६ क्रिकेट प्रतिसम्ब प्रत्यक्त (पैचार क)। किंद्य पूक्ति | ऐस्त क्षेत्र के एक पानी जिल-देश का नाम (पन णेमि देवी निमि (श्वव)। प्रमु भिन्यी १ देखत क्षेत्र के एक मानी रसकर का नाम (सम ११३)। २ वरा-बोप कें एक धारी दुवकर का नाम (धार)। थम्स वि [भर्मन्] १ को नर्स में फिल्ब्स हो (बाह रै)। २ वैक-विशेष का बाम (धानम)। "भिईय नि "धृतिक्री धरितम वैर्ववाला (परम २६, २२)। निमि वै िनेिमी धना समुद्रविजय का एक प्रव जिपने मरनान् नैमिनाम के पास श्रीसा की नी भीर सिकायन पर्वेट पर सुद्धि नाई नी (भंद १४)। पङ्ग्लामि (मितिका र रिवर-प्रतिक सरप-प्रतिक। २ व सर्वाक देव ना भागामी बन्ध में **होनेदा**वा नाम (राम) । प्पदारि वि ["प्रदारिम्] १ वन्तृत प्रहार करनेवाला। २ दु केन्यूनि-विशेष जी भाने नोर्धेका नावक का और रीक्षेड बीमा नेकर प्रक हमा का (खामा १ १०) च्या) । सूमि 🛍 मिमि एक वाव का नाव (पारम)। मृद्ध वि [ मृद्ध] निदान्त दुवं(रे१ ४)। सद् 1 [रेस] १ एक दुसकर पुरतका भाव (बस १६)। २ मनताल भी किल्लानालाओं के पिछा का नाम (सम १६१)। रहा को ["रवा] नोकनाव मारि देशों के सफ़-मदिविजों की बाबा चरित्रह (स.व. १—यत्र १९७)। पेश तू ियपी मनदान नदानीर के बनव

में तीर्पंडर-नामक्रमें चपार्जन करने वाना एक मनुष्य (टा १--पन ४२१)। २ मरत होन के एक माबी कुसकर पुरुष का नाम (सम १६४) ( वहगाठिकी दि वह विशेष क्षेपा हुमा सदश बद्ध (पद २६४ वसनि १ ४६ टी) देवो दादगाछि। विकाम वि विश्विती हर किया हुमा (कुमा)। ह्या १५ [इनुक] केल कालक (हे १ वर्णुक रेशक हुमा पर्)। इत पेर पु [\*श्रुज़ ] १ दानमाँ का मिनादि (यसका के १२)। २ समञ्ज संक्रमति (पत्न ६१ १ ) । बद्द पूँ ["पति] देखो । ईद (परम १ १३ ७२ ६ सुपा ४३)। बुक्त वि दिक्ती है विका इस्सा वात निया हुमा विदीर्श (हे १ ४६)। २ व्यस्त स्कापित (वं १)। ६ पुं स्व-नाम-स्मात एक मेहि-पून (इस १६२ ७६० टी)। ४ मरत-वर्षे के एक फाबी बुलकर युवर (सम ११६) । १ चपुर्व बसदेव के पूर्व-सम्म का माम (सन ११६)। ६ भक्त-दोन में उत्पन्न एक समी-महनतीं राजा, एक बातुरेक (सम ११)। ७ मध्यकोष में महीह राहरिक्ती वात में छराप्र एक जिन-देव (तथ ७)। c एक बैनमुनि (बाक्र)। १ गुरुविरोध (विधा १ ७)। १ एक वैन सावार्य (दूप ६)। १९ म बान उस्तर्ग (उत्तर्)। वृत्त न [दात्र] शतो आस बाटने का हैंसिया (**4** ? ? y) : इति स्मै [द्वि] एक बार में जितना दान दिया बाय बहु, प्रविच्छिप स्थ से जितनी मिया की जाय बहु (हर १, १ तका १८)। वृत्तिय पुंजी [वृत्तिका] अगर देशी 'संबो इतिगरमं (भव १) । इतिय पु [दितिक] नामुन्यूलं चर्मे (राज) । व्धिया ध्ये [दातिहा] १ प्रोटी बीठी वास कारने का राज-निरीय (राज)। २ क्रेनेशासी की दान करनेदानी की (बाद ४) । दत्यर पुं [दे] इस्त-साटक कर-शाटक (दे 2 78)1 वर्षत रेठी दा।

दरर पुंदि व्येर] कुतुन मावि के पुँद पर बोबा बाला कपड़ा (पिड ६८० ११६ यम **६**< ₹ )( दहर दि दि दर्दर] १ वना प्रकुर, बस्यन्तः 'दोसीससरसरत्वंदण्डर्राडर्खण्यपंचंप्रविष्टना' (सम १३७) । २ पु चनेटा इस्ट-उस का बाबात (शम १६७) बीप एगया १ व)। १ बानाव प्रहाट 'पायरहरएखं कंपयंतेत मेइणितर्स (गामा ११)। ४ वचनारीप (पर्राष्ट्र १ च---पत्र ४४)। १ मौपान-वीबी सीडी (सम १३७) । ६ वाच-विशेष (वं २)। वृद्धरिमा देखी वृद्धरिया (स्व ४६) 4 दश्रीया को द ब्दरिका र प्रश्नार, प्राचात (लाया १ १९)। २ वाच-विशेष (राय)। दद्दु पूँ [बुत्र ] बाद शुत्र दुष्ठ-रोग (मग वब्दुर पु [वर्दुर] प्रहार, मानात (बर्मनि < X) ( दद्दुर पू [पदुर] १ मेक मेक्ट बेंग (सुर १८४३ प्राप्तु ४३)। २ चमके से सवनक मुहिवासा कसश (परहा २ १) । ३ देव-विश्वेष (एतमा १ १६) । ४ राष्ट्र बहु-विहोस (मुन्म ११)। १ पश्च विशेष (ए।वा १ रेक्) । व नाय-विकेष (वे ७ ६१ वजह) । ण्न वर्दुर देव का सिद्दासन (**ए**ग्या १ १९) । वर्षिसय न ("वर्षसक् वेद-विरोध सीवर्ग देवतीक का एक विमान (शाया ₹ **₹₹**) i व्युद्धि की [ब्दुरी] की-मेडक मेकी (लावा र १३)। वद्बुस वि [वदुसन्] बार-रोगवाला (सिरि 224) i द्धि देशो दृद्धि (इम ७० नि ६०१)। पद देवो सहह (दुर २, ११२, वि २२२)। दप्प पू [दर्य] र सर्हार, योगमान मर्द . (सम्पूरे १२)। २ वस परावन बोर (से ४ ६)। ६ श्रुवा विठाई (मव १२ ४)। ४ ससीय से बाम का आसेवन (नियु १)। क्ष्पण पू [क्षेत्र] १ काच औरा, सावसै (शाबारे रें। प्राणु १६१)। २ वि वर्ष-बनक (पएड्र २ ४)।

व्यक्तिक वि विर्येगीय वन-वनक पृष्टि-कारक (कामा १ १) पएए। १७) मीफ क्प्प) १ वृद्धि वि विर्दिम् विभागतो पविष्ठ (कप्पू)। द्यप्तिश्र कि [द्यपिक] दर्ग-जनित (उत्रर 232) I द्िपश्च वि [द्पित] श्रीमनानी पवित (सुर पएह १४)। व्याप्ट वि [व्याप्ट] यत्यन्त महंकारी (गुपा २१)। दप्पुद्ध वि [दर्पेषम् ] बहुआ प्लाखा (हे २ १३६ पर्)। ब्रम पू [बुर्म] दूछ-विशेष बाम कारा, कुरा (हे १ २१७) । युष्क पू ["पुष्प] श्रीप की एक जाति (पर्राह १ १ —पत्र ¤)। ) न [दार्भायन दाभ्यायन] विक्रियायण रे विज्ञानका का मोत्र (इक सुम १)। द्रकमय ग [हार्भिक] गोत-विरोप (सुन १ १६ से)। व्म सक विसय् निषष्ठ करना वनन करना रोक्ता। इमेर (स २०१)। कर्म कमार (ब्ब)। क्षक इस्मीत (ब्ब)। श्रेक्ट इसिऊज (ब्रुप्र १११)। इ. वृश्चियव्य द्रम्म, द्रमयव्य (कालाभाषा २ ४ भासक)। द्म पूर्विम्] १ दमन निष्ठः। २ इन्द्रिम नियम्, नामा कृषि का निरोध (पराह र धा एरि)। पास पू ["पोप] भीर भेत के एक राजाका नाम (एग्या १ १६)। देव पुंचिन्ती १ इस्टिक्टीपैक नवर के एक रामा का नाम (का ६४८ टी)। १ एक वैन पुनि (तिसे २७११)। घर प्रैिघरी एक र्थन मुनिकानाम (पत्रम २ ११३)। व्मग रेकी इमय (खावा १ १६) मुपा ३८८।वर ६ निपुरेश बहर छन्)। इमरा वि [इम ह ] धमन करनेवाला (निक् दमण रैयो दमणक (यव ३४: १२१)। दमण न [दमन] १ निषद् यान्ति । २ वश

में करना कार्ने करना, 'पॅश्विक्यसमागुपरा'

(बार ४)। १ क्यतार पीड़ा (बरह १

को । ४ परत्यों को धी काशि शिका (पक्य t 3 wt): इसक्क ) दूर [इसनक] १ दौना स्वतिका दशकरा : पक्तमा बनस्पति-विशेष (पर्यक्र बसप्पय ) २ १, पक्छ १ पठड) । अन्य-विकेश (विया) । 1 सम्बन्धक-विकेश (शाहा) । रमतमा पर विमरमायी धारमार करना । कारमाह, वयस्तान्छ (है ३ १३०)। दमय दि दि हमकी बरिट रंग स्तीव (4 % 9Y Rt 3qxx) 1 वसर्वती औ [इसयन्ती] राजा क्य की पत्नी का बाग (पति इस १४ : १६)। इसि वि [इसिम्] विदेशिय (उत्त २२)। बसिम वि बिसियो निप्तीत रोका ह्या (बा वर्द क्य ४व)। दमिख पंडिविको १ एक मास्तीन केता २ पॅकी जसके निवाकी समुख्य आविक (क्रम १७२) इक धीपो । बी भी (जामा १ श इका मीयो । बुमेयक्व } क्वो बुम = बुमय् । बन्म वं डिस्मी कोने का विकास सोनाः मोबर (छन प व क्ला के ४ ४२२)। व्यमतः देखी दम - वमय । इय कर [इयू] १ फाल करना। ९ इसा करायः । ३ महान्तः । ४ केनः । स्वदः (सामा)। मक बर्जन बन्नामाण । (के १२ ६४) ६ १२. मनि १२)।

मेहर (कर दृश्यक है ४ ४२२)।
दमार केवो दम — वयन्।
दमार केवो दम — वयन्।
करुवा । श्वाहमा । ४ का। वयद (माणा)।
करु वर्षात द्वाहमा । ४ का। वयद (माणा)।
करु वर्षात द्वाहमा । १ हे १२ ६४) १
१८, महिर २)।
दय म [श्वाहमा वर्षात (माणा)।
दय म [श्वाहमा वर्षात (स्वाहमा)।
दय म [श्वाहमा वर्षात (स्वाहमा)।
दय म [श्वाहमा वर्षात मिलागेरे (स्वाहमा वर्षात (स्वाहमा)।
दय म [श्वाहमा वर्षात मिलागेरे (स्वाहमा)।
दया मी [व्या] करणा माण्यमा क्या (या १ १)।
दया मी [व्या] करणा माण्यमा क्या (या १ १)।
दया मी [व्या] करणा माण्यमा क्या (या १ १)।
दया मी [व्या] करणा माण्यमा क्या (या १ १)।
दया मी [व्या] करणा माण्यमा क्या (या १ १)।
दया मी [व्या] क्या (स्वाहमा व्याहमा द्वाहमा (स्वाहमा व्याहमा व्याहमा

स्थाबळ ) कि किंदी क्षेत्र वरीज रेक कि वयावम १ ६४: मनि पत्न ६६ ८६)। बर सक स्टि बाबर करना। बरक (बड़ार)। बर पेन बिरी मध्य बर (क्या)। १ म विता बीमा प्रमय कि २ २१४) । बर येव बिरी १ क्या समस्य। २ वर्ते नका पता मा नवता बराट के सकता मिद्रया दे में (ब्रमीन १४ )। दर न विरोधक काना (वेश, वदा अवि t 2 211. mc 1) : बरंबर व कि ] क्लाब (दे १ १७) । दरमचा की दि । वसात्वार वहारतरी ( X X. 10) वरमञ्जूष मिर्देशी र क्लेंक्ला विद्यालाः २ मानात करनाः। वरमबङ (धरि)। यह बरमकंत (धरि)। बरमञ्जिब कि मिर्वित ने सकत वर्षकत (परिते १ धरवस्त्रित्र वि दि च्याच्य (धूमा) । बरबद्ध ए कि । बाम-स्वासी वांच का सुविवा (केश कर)। "पिद्रेक्टम न कि राज्य महत्र्वामी पर वि.श. ३७)। बाह्य व विद्यासी १ व्यक्ति किय (६ ४८ १७)। २ कारा वरशेक ( बंद )। "विंबर कि कि ] र बीचे बन्धा। २ विरच (दे ४ ४२)। बरस (बी) देवो बरिस । बरवेदि (प्राक् **44**) : दिर विधी कन्दर इन्द्रः विधिष्ठ वा (भाषा १,१ २)। इसि केदो इसी। अर पूर्विया किंगर (BE YY) 1 दरिक वि (इस) वर्षिष्ठ, व्यक्तिमानी (हे १ १४४ पास) । वरिश्र वि (बीजें) १ वर्ष इया भीत (कुमा) नुपा ६४६)। १ प्राका हुमा विदासित (হার ভ)। करिका (बप) ने विरिक्री क्षाप निरोध (पिय)। परिमा को [दरिका] करर पुरा (शह--विक्र वक्)। ब्रिट्रिक [ब्रिट्रिक] रे मिल्लेंच निकास सम-रिक्ति । २ कीत गरीन (शाधा जानू २३ क्ष्म् () ।

वरिक्टि ) विकिशिक्षित को उसर वेकी वरिक्रिय । भाग्ने वरिक्रियो, वर्ष विवस्त्रयेकां रानो स पर्व बरेसी' (ब्रह्मा बाव: वि २९७)। वरिक्रिय कि बिरिवित्ती इन्स्मित को वन-पीत हमा हो (महत वि २४७)। वरिष्टीहर वि विरिक्तीमत् । वो निर्वन हमा के (इस के रहे) ह बरिस एक विशेष दिवसाना काताना। व्यक्तिक विशेष (के ४ ६२) कुमा। महा)। वड. वरिसंत (सूपा २४)। इ. दरिस्थिक. बरिसणीय (बीपा पि १३५) सर १ १)। दरिसण देवो इसण=वर्शन (हे २ १ ६)। पर न पर ] नगर-विशेष (इक)। आवरणी **की** शिक्षानी विका-वितेष (पठम १६८ ४ )। बरिसणिका न विश्वेनीयी १ माइनि स्पः। र धनसामन (तंद ३३) । वर्गसियिका । वेदी वरिसा १ न वेट वर-वरिसणीय और पहित्रम शरिएसीर्व चेनती राष्ट्रको मूची (सूर १ ट) । वरिसाव देवो वरिस । वह वरिसावंत (स्प **4 t** € ) 1 वरिसाव दे विसेन विशेष सामास्त्राच एको न म्हणा कान्यवरीस शरिताली शासन पश्चिमियत्तर (महा)। न्यस्त इत दार्च स्वयमिये रिसार्व पुरुप्ति महंबर्गीकोई (नूपा ११६)। वरिसाव पू [बर्सन] विकास (वव १)। दरिसामज न [बर्फ़न] १ वर्तन सामारकार (मान t) । र वि वर्तक विकाशका वरिसि नि [वर्शिन्] केवनेनासा (का, नि fart & ade) ! वरिसिम वि [ वरिति ] विवासना हमा (虹中 🖛) ī बरी भी विशेषिकार क्याय (स्राप्त १ १) AS AL MARKS ANSE)! बक्रिमक वि कि विकास (वे ४, ६७)। दल तक दिती देना, यान करना, धारेस करना। स्वाद (क्षम्या कस्य) ३ भी तस्य मोज तमाई स्वामि' (ज्य २११ दें)। सुद्ध-मान इसेमाज (कप्प कामा १ १६,---पण २ ४० कर ४<sup>°</sup> २०००च २१६) **स्**त

बुक्तिया (क्य) ।

क्छ सक [क्स्] १ विकसता। २ फटना सर्पित होता दिया होता 'धहिसमप्रि-रएछिउरेक्ट्रविमें स्तर कमस्वर्णे (मा ४११) अपूर्व दसद' (हुमा) । वह वृक्षेत (8 2 X×)1 द्रस सक [ दुस्य ] दुस्रे करना, हुक्के हुक्के बंदना, विदारमा । वकु "निम्मूल बुळमाणी समस्तरसत्तिसम्बद्धं (सूना ८३)। कवड्र दक्षित्र्यंत (से ६ ६२) । संक्र दक्षिकण (कुमा)। वस न [वस] १ सैन्ध सरकर कीन (कुमा)। २ पत्र, पत्ता पंचाड़ी या पेंचुड़ी श्रूड्डस्वाइस्स गोसम्म बासि बहुरो निमाणकमत्त्रको (हेका दर मा ६ १८ २१७ ११६) १६२ १११: मुपा ६६८)। ६ मन सम्मति । ४ समूह, समुदाय मधेह (मुपा ६३ व) । १ समुद्र माग बीरा (से ६ ६२)। इक्रायन (इक्तनी १ पीछना पूर्णन (मुपा १४) ६१६) । २ वि चूर्ण करनेवासा (सुपा २१४ ४१७ हम ११२३ १८६) । वसमाय देवो दस = श । ब्द्धमाण देवो व्सः = बसम्। इसमस देवो इरमस: वह वसमसीत्(श्रीव)। ब्रुय देशो ब्रुज्ञ = रा । ब्रुयह (धीप) । प्रवि दनदस्त्रि (सीप) । बहु वृक्षयमाण (ए।या १ १—पन ३७ का ६ १—पन ११७)। संक द्रस्यचा (धीप) । इस्रय एक [ दापयू ] विपाना (क्प्प) । ब्लवट्ट वेको ब्राम्स । रलवट्टर (धरि) । ब्रह्मद्विय देखी इसमछिय (म्र्रंक)। दुद्धाव वक [दापय ] दिवाला । दलादेइ (पि ११२) । वड दक्षावेमाग (ठा ४ २)। द्खिञ दि [द्कित] १ दिवसित विका ह्या (मे १२ १)। १ पीना हुपा (पाप); न्द्रसिमनरवासितंतुनवयसनि श्रेपानु रान्तु (वा ६६१) । १ विशास्ति चरित्रत (हे १ १६६: बुर ४ ११२) । द्क्षित्र न [द्क्षिक] १ चीत्र वस्नू इस्म (धीय ११) जह बोरयन्त्रि श्रीत् सम्बन्धि न नीय्य, पश्चिमा (निसे १६३४)। २ पर्रिक्ट (इद्दरमा च ४)।

पाइअसदमङ्ख्याधी व्यहुत्त न [र्] दीव्य-मुक्त दीव्य काम का वस्तिभावि वि र निकृष्णिकाल जिसने टेबी नवर की डो वह। २ न. सँगती (दे ४. प्रारम्म (वे ४, ३६)। इषाय सक [दापय] दिलाना। दनावेद १२)। काप्त शक्की (वे १, १२) पाम)। (महा)। वह दवावेमाण (लामा ११४)। विश्वित्रंत देवो द्ख=वत्। संक द्वाचकम (महा)। हेक्क द्वावेचय विक्रिय देवी वृरिष्ट् (हे १ २४४ भा २६ )। (इस) । वसिका प्रकृ विदिन्ता दुर्गत होना वरित्र होना। व्वावण न [दापन] विकास (तिभू २)। विश्वाद (हे १ २६४)। मुका विश्वविद्या दवाविश्र वि [दापित] दिसामा हुमा (सुपा (सीम १२)। स १११ महा उप पू १८१ वृत्तिह वि [ वृद्धथन् ] बन-पुक, बसबाता ७२व टी) । (ਚਹਾ)। द्विञ पूर्व द्विष्य है । सन्त्रभी वस्तु जीव ब्लेमाय देवो द्रस्ट = दा । द्यादि मौतिक पदार्थ मूस बल्दू (सम्म ६ द्वसक् द्रि\_ीश्यदिकला।२ कोइना। विधे २ ११)। २ वस्तु प्रसाचार पदार्थ (मीन १, माचा कप्प)। ३ वि सस्य दशप (विसे २८)। मुक्ति के योग्य (मूध १ २ १)। ४ सम्ब द्यपु [द्य] १ वंक्यका शनिक दन की मुन्दर, सूद्र (मूच १ १६)। ५ राप-∎य से मार्ग (दे १३ ३३) । २ वन, बंगवा। "सिंग विचिद्वि वीतसम् (सूम १ व)। स्पुआंग र्द्रीमि विकास समिन (हेर १७७ पु ीनुयोग परार्व विचार, बस्तू की प्राप्त)। मीमांसा (ठा १)। देवी वृत्यः। द्य पुंद्रियो १ परिहास (६ ४., ६६)। २ द्विञ वि [त्रुविक] स्वम वाला स्वम युक्त, पानी जल (पंचन २) । १ पनीबी करतु, र्धयमी (प्राणा)। रशीली बीज (विसे १७ ७) । ४ वेग दव व्विम वि [श्रवित] इव-पुष्ठ, परीती वस्तु दवचारी' (सम ३७)। १ समा विरित्त (मोप) । (माना)। इट् वि िक्ट् परिहातकारक व्यिष्ठ केली व्विक्ष (मुपा १८)। (भग १ १६) । कारी गारीकी "कारी] द्विकी की [द्राविकी] लिपि-विशेष सामिल एक प्रकार की दासी जिसका काम परिशास-मापा (विसे ४६४ ही)। वनक वार्ते कर भी बहुताना होता है (मंग क्षिण न [द्रविष] वन पैसा संपत्ति (पास ११ ११: शामा १ १ टी पत्र ४३)। कप्प)। क्षण न क्विनी यान नाइन (सूप्रति द्विय न [द्रक्य] १ वास का जंगन वन में १ =)। मास के बिए सरकार से अवस्त्र मुनि (साथा इक्यय वैको दमणय (मिर्व)। २ ३ १ १)। २ धूण भावि इस्य-समुदाय ) म द्विषद्रयम् । शीम, अस्थीः (सूम२२ ⊏)। इयद्वरस ∫ 'दनदेवेचरा पमर्चेनए।' (धंनीच व्यक्ति र् द्विषिष्ठ र देश-विशेष दक्षिण १४: बत १७ व): 'दबदबस्स व गन्धेव्य' (बस देश-विशेषः महास प्राप्तः। पूंची हविड् देश का थ, १ १४)- 'बह वल्लवी वलं दवर निवामी सनुष्य, द्राविड् (पण्ड् १ १—पत्र वस्त बतियो बखेल निर्दृष्ट (धर्मेव a६)। ₹¥) ı द्वद्यां की [द्रवद्रवा] वेक्ताकी धरि द्रका देवी द्विम = इच्य (सम्म १२) मग 'नाउन्छ गर्न नुहिन नगरवर्गी वाविधी दव-विते २ व मणु उत्तर क)। ६ वन पैसा बबाएँ (पत्न्य = १७३)। र्चपति (राम प्रानू १९१) । ७ मून मा इयर पूर्वि है । तनु शेख, मागा (देश, व्यक्तिय भद्यवैका कारण (निमे २० पंका १३ धारम)। २ रन्यू, रस्ती (छावा ६)। व वीसा ध्यवातः। श्वासः साध्य t =) 1 (बंबा ४) ६)। द्विय द्व शिविक रिवन, दशरिया की [दे] घोटी रतकी (विशे)। ास्तिक हम्य की ही प्रपान मान्तेवासा

चराप्यसमिखडं (सम्म ११ विसे ४१७)। \*किंगन विक्रमा पत्र केप (पंचा४)। "खिंगि कि "खिकिम् ] मेपवारी साबु (दु १ )। सेस्सा को जिस्मा वर्णर मारि पीरवित्रक बात का रेन का (घर)। 'देव र्विंदी पूरव मानि ना नाम भानार (धर) । यरिय प िवार्थी मत्रवान बानायें बानायें के क्यों से स्क्रित प्राचार्य (पंचा ६) । बक्द न विकयी योग्यता 'समयम्ब दब्द-

सबसे पार्व जे जोगनवाय रही ति । शिक्सप-

चित्रं (पंचा६ १)।

पार नय-विशेष 'बम्बद्वियस्य सम्में सवा

इञ्बद्धस्त्रिया की जिल्लाहरूकी बनस्पति-विद्योग (पहल १--पन ११)। वक्ति देवो दस्ती (पर्)। दक्षितिक ग दिस्येन्द्रियो स्तूल प्रतिय (भन)। बरुपीको विक्री १ क्यों कराती पराची होई (प्रथ)। २ साप की फन (दे र ३७)। बरंकर पुंकिरी सौंग सर्व (के रु

३७) वर्त्त १) । दुबबी की दि] बनस्पति-विधेद (पएछ १ --पत्र १४)।

वस तिव दिशामी रूप. नी भीर एक (है। र १६२) हा ६ १—पत्र ११६) सुपा २६७): बर न [पुर] नगर-मिरोम (विशे २६ ६)। बंड पं किंग्डी एनस एक संकान्यति (से ११, ६१)। क्रमर प्र [\*सम्बर] एका घषण (धरक) **बा**ख्रिय न विश्वकि एक देन मादम-प्रव (दतनि t) । गर्न [क] स्टब्स स्पूद (र ६ नद१२)। गुण विद्यापी दव प्रम (स. १)। शुनिम पि [शुणित] वय-पुना (बग: बग १)। स्तीव पू ["प्राव] सवस्य (पत्रम **७३** ह)। इस मिया की दिशामिका कैन तला ना एक वार्षिक सनुदानः प्रतिवा-विशेष (सन १) । "दिवसिय रि । "विवसिक विस दिन का (ख्रामा १ १ -- नत्र १७)। द्व

र्नुव ["tu] नोव ४ (तम ६०- क्यामा १

१)। चण्ड चित्रप्री देख्ठ धेर के ह एक धानी कसकर पुरुष (सम. १६६)। प्रशिव नि विश्वदेशिकी वस धनवन काला(ठार)। पर देखों सामिता)। पश्चिम वि विवित्ती का प्रकेशन्त्री का धम्पाती (धोर रे) । वस प्रविद्या मन्त्राल क्रम (पामा है १ २६२)। सावि िंसी १ दक्षना (राज)। २ चार विनींका धनातार जपनास (धाना गामा १ १) गर ४ **४**४)। समचित्र वि विश्वचिक्री चार दिनों का संयक्षार अपनास करनेवाचा (पणहर, १)। मासिक वि भाषिकी दन माधे का ठीसवाला वस माखे का परि मध्यवासा(क्रम्य)। सी और िंसीी र दसमा । १ विवि-विशेष (सम २६) । महि याणंदग न "<u>महिक्सनन्द</u>को धन की रंगवियों की वस बाहरिया (बीप) । सुद्र पं मिला यमस यसस-पति (दे र २६२ प्राप्तः हेका ३३४)। सहसम्बर्धः [स्वस्त ] स्वतः स्वतः मन्तरं साहि (वे १६,६) । स वैक्से ग(छा१)। रचन ["राम] रच राज (मिना १ ४)। या प्रियो १ सम्बन्धा के विद्यास नाम (सम १६२। पक्रम २ १८३)। २ घरीत क्टापिएी-काम में प्रयुक्त एक धुनकर पुरुष (धार---पत्र ४४७) । शहसूत्र पू िरमञ्जूत] राजा क्टारच का कु<del>त्र रा</del>म सरपदा परा चीर सनुम्म (पत्रम ४१, ४७)। नक्षण पू ["बदन] सका सवस (स १ **३)। वस्र केटो वस्र** (प्राप्त)। विद्वारि िविधी दस प्रकार का (कुमा) । विका-क्षिण न विद्यक्तिको कैन सापम<del> इन</del>-मिटेन (दम्पीत ६: खिंदी) । इत सं भिन्नी श्चप्रकार से(की २४)। । प्राप्त पुंिंगनी राज्यकेषवर रावशा (से १ ६६)। हिया की [रीहिशा] पूत-बल्त के प्रांतक्य में रिया काता दर्शिको का एक क्रसद (कप्प)। द्सग वि [द्श≭] दस वर्षनी कम का (dg (w) i दसम्प र्च [दरान] १ राठ रन्त (सन कुमा)। **१ म. देश, नाटना (पद १) । बद्ध्य दू** 

["नद्यत् ] होळ यनर, थोळ (तुर १२ ११ ४) ।

बसण्य प्रविशाली हैत-विदेव (वप २११ ये इमा)। इन्हर किटी शिवर-विशेष (यावस) । पर न पिरी नवर-विशेष (ठा१)। सद्दर्विमद्री क्यारोपर का एक विकास राजा को समित्रीय साक्ष्मकर से भववान महाबीर को बन्दन करते करा का भीर जिसने संस्थात महाबीर के पास बीसा सी वी (पडि)। बहु पूं पिति करानी कैय का राजा (क्या) । वसवीय न हिं बन्ध-विकेच (परास १---प्रमुख्य है प्रभाग बसम बेबो इसण्य (पत्त ६७ दी)। द्धा 🗗 दिशा १ त्विति प्रदस्या(धा २२७ २ वर प्राप्त ११)। एसी बर्च के प्रास्त्री की बस-बस वर्ष की सबस्का (बस्कि t) । ३ सव वास्त्र का खोटा धीर पत्था वादा(घोष ७२१) । ४ व कैत छाएक-प्र<del>व्य</del> विशेष (ग्रस)। दसार प्रविशार्की १ सम्बद्धियम धारि का मानम (सम १२४ है २, ४, और २ खाया र ४—पन ११) । २ वाल्देव भीकृष्ण (शासा १ १६) । १ वसकेन (भागम) । ४ नामुदेव की संतरित (स्वा)। "गेड पुं ["नेत्] भीष्ठम्ख (क्व) । नाह् प्रै नियम] मीइन्स्स (पत्रम) । सङ्ग्री ["पवि] बीक्रम्ह (कुमा) । दसिया वेची वसा (पुता ६४१)। पस प्री वि] सीक विकरीचे (दे ४, ६४) । दशुचरसय न [दक्षोचरशत] १ एक सौ यस । २ वि एक सी दसवाँ ११ वर्ष (मक्स ११ ४४)। वसुब र् [वस्यु] कुरेय, सङ्ग, बोद, सन्बर (ब्रुट १६)।

रम-रह

वसेर 🛊 👣 पूचनक (६ ४ १३) । द्रस्स देवी वृंस = दर्शव्। इ. वृस्साजीक (स्क्य ६१)। व्स्सण केवो वृंसण (मे २१)। बस्स दं [बरब् ] बोर, तस्कर (बा २७)। **दर** सक [ **दर**्] बसना, सस्य करना । यह (महा)। नर्म स्थित्म (ह ४ ११६) बरकर (माना) । वह बहुत (भारद)।

क्---पत्र व व ४)।

सुपा ४७४ मा २०)।

४४ प्राप्त)।

११४) ।

( X, 74) 1

३ ; पि २२२)।

क्वक द्वर्मन द्वसमाण (नाट-मामठी

दृद् पूर् [त्रह] हुद, वड़ा बनाशय भीन

सरोवर (भग कवा ग्रामा १ ४---पत्र

**१**६: गुग १६७) । पुरक्षिया की

["कुद्धिका] बक्की विशेष (पएएँ १)। यह

[बाई की [बती] नदी-विशेष (ठा२

वह देखों इस (हे १ २६२ व १२ पि

२६२: पद्धम ७≈ २३८ से १३ ६४ माम

से १४ १६ व ११) १ ४ पटम =

इक्क्णन [दक्ष्म] १ बाह, मस्मीकरणः । २

र्गुद्धरिन विक्रि (पशहृ १ १) उप प्र २२

वृद्दणी की [वृद्दनी] विद्यानविशेष (परम क

वृद्दोद्धी की [दे] स्वाती व्यक्तिया परिया

बहाशम वि [दाहक] बसानेवासा (एए)।

इद्विम दिथि दिश्री दूव का विकार (ठा ६

१ ए। या ११ प्राप्त)। घण पूर्वियनी

दक्षि-पिएड प्रतिराग जमा हुमा दही (पर्एए १७—पत्र ४२१) । सुद्र पु [\*सुसा] १ द्वीप-विशेष (पत्रम ४,१ १)। २ एक नगर (पदम ११ २) । ६ पर्वेत-विशेष (राज)। कप्पा वक्त पू विर्णी १ एक धना, तुन-विशेष (बूप्र ६१)। २ बृप्त-विशेष (भीषा सम ११२ पर्या १--पत्र ६१) । वासुया व्य ["बासुका] वनस्तरि विधेय (श्रीव ६) । बाइम पू ["वाइस] नुव-विदेप (महा) । सर पूं विहा बाद्य-ह्रम्य-विशेष मलाई (वे ३ २६ ४, ३६)। विदि नि विभि । स्वी 'ब्रन्दास्थीय महरोख' (बर्मेन ११)- 'घर्नतु सहै' (तुम ५,१ १६)। २ देता सगावार दीन दिन का क्याबात (संबोध १८)। X, {X) | वृद्धि दे दे दिन विकास के बा कैय था बेह (दे घ ३४)। बृहिण देवो दादिण (नार-वेणी ६७) ।

दक्षित्यर १ पुं [ वे ] शविसर, वही पर की वृद्धित्यार् । मैसाँद, बाध-विशेष (देश-44)1 वृद्धिमुद्ध र्यु चि ] कप बातर (दे १ ४४) । दृद्धिय पु दि] पक्षि-विश्वय 'न सावयदिति रिवहियमोरं मार्रति धहोत विके वि मोर (कुम ४२७)। दासक दिवा देना उरसर्व करना। शाह देह (मवि हे२ २ ६) धाचा महाक्स)। मनि बाहं दाहामि बाहिमि (है ३ १७ धाचा)। कर्मे दिनद् (हे ४ ४६०)। नक्न विंत वेंत वर्षत, वेयमाण (सुर १ २१२) बा २३ ४६४ हु ४ ३७१: बृह १: णाया १ (४---पत्र १८६)। कमक्र दिख्यंत, विकासण दीक्षमाण (मा १ १) सूर ३ ⊌रु:१ १८ सम ११३ सुपा ४ २३ मा ६६)। संक्र. त्या वार्व ब्राऊण (विपा १ १ पि ५८७ कुमा उन)। देह⊱ दार्ड (पना)। इ. बायस्व, देव (पुर १ ११ ह्या २३३ ४४४४ ४३२)। हेब्र. देव (मर) (हे ४ ४४१) । दा केको दगः। थाउला न ["स्वाक्षक] बन से नीमा यान (यग १६--पन ६८ )। कदम पूं ["बस्परा] पानी का घोटा बढ़ा । क्ष्म किन्मी क्स का बढ़ा। बिरा पु विरक्ती जल का पात्र-विरोध (सप ११—पत्र ६६ )। वादैको ता⊏ तानव (सॅ३१)। हाम देवो दाव = सर्गव। श्रएव (विशे =४४)। क्में शहमद (विवे ४६ )। क्यक् दाद क्यमाण (इप्प) । क्षा पू कि प्रतिमृ, वामिनदार, वमानद करनेवाला (दे १, ६८)। दाञ र् दाय । सन, प्रसर्व (ग्रामा १ १—पत्र १७)। बाइ वि [बायिम्] रहा क्रीवाना (छा प्र वृद्धितप्त न [वे] नवनीत मेर्नु मन्त्रन (वे : बाइम वि [वृद्धित] दिववाया हुया (विधे १ १२)। बाइअ र् [बायिक] र पेतृक संपत्ति का

दिस्सेदार (उप पू ४७: नहा)। २ नीविक

समान-योबीय (नप्प) ।

वाइद्यमाण रेको दाम = दर्यंय्। ब्द्रसम् न [देयक] पालिप्रहरण के समय बर-बयू को दिया जाता प्रस्य (सिरि ४६६) ! क्षाउ वि [वाषः] बाता बेनेवाता (महा' सं १३ सुपा १६१) । बार्ट रेको दा = दा। वाओयरिय वि [दाकोदरिक] बनोदर चेय-बाबा (विपा १७)। ब्राक्टलय (ग्रम) देखी वृक्तलम् । दावसम्ब्र (ब्राइ ११६) । वाध वैसी वाह (हे १ २६४) । दाकिम न [दाकिम] फस-निरोध मनार (महा)। दाडिमी की [दाडिमी] मनार का पेड़ (वि २४ )। वाडगांकि रेको वडगांकि (व्यक्ति १ ४६ दी)। दाखा की [देशा] बड़ा बाँठ करा-विशेष भौमक पहु, बाक (है २ १६ । गतक)। दाकि वि [दंप्ट्रिम्] १ शहाबादा। २ पू विशव पशु (वैशी ४६) । सूचर, वर्षाह कि धादीममभीको निमयं दूई केसधी रिवर्ड (प्रम ७ १८)। वाडिमा की दि | बाबी मुख के नीचे का मार्ग रमप् हुद्धी के नीचे या हुद्दी पर के बला (वे २, ११)। बाढिआछि } श्री [बॅप्ट्रिश्चबिंख] १ दाहा बाढिगारिं } नी बॅर्फि । २ बस-रिशेव (बुद्ध ३३ जीत) । बाण पूर्व [बान ] १ धान करसर्व स्थान 'प्रह्मति दाणा' (पटम १४ १८० कपा) प्रापृथय १७ १७२)। २ हाबी हा मद (पाम पड गढड)। १ वी दिया काय बह (गरा)। विरय पू ["विरत] एक समा (पुण १) । सास्य की ["शास्त्रा] धत्रागार (दी ८)।

बार्णवस्य व [बानान्तसय] वर्ग-निरोप

दाणपारमिया भी [दापपारमिता] शत

ध्रम्पर्वे समर्पेणः दिवस्त विरुत्नादी धरम्यमा

देवमादियं केत । धानम्हर्गिणिविसी जा रेट्टा

बा राजुपारिनयाँ (वर्षेष्ठं ७३७) :

है (स्प्य) ।

जिसके रूपम से बान की की इच्छा नहीं होती

w ) :

थका १३८)।

वास्त्रिह केलो वारिह (हे १ २४४ मापू

वास्त्रिक देवो वासिद्देय (गुर १३ ११६)

वासिम देवी दाविम (प्राप्त)। बाक्षियंव न [वाटिकान्छ] दान का बना हमा बाद्य-विशेष (पराइ २ ४) । वाजिया भी [वाल्कि] देशो वाजि (उना)। वासी देवो वालि (मोन १२१)। वायसक विदेश दिस्ताना वउनाता। बाबद्द बानेद (इ. ४ ६२ मा ६१४)। बहर दापंत (ग १२)। न्याय सक [ न्यायय ] दिनाना दान करनाना। बाबेड् (कम) । बद्ध- वार्चेत (पउम १९७ २६: मुवा ६१८) । हेड्ड दायेच्य (क्य) । वाय वेशो वात्र = वावत् (वे १ १६ स्वप्न १२ धमि १९)। बाय पूर्वियो १ थन, जनतः । २ देव देवता (से १ ४३)। ३ वंकत का धरिन (पाप्र)। मिन दृ[ीकि] चंदन की मान (हेर ६७) । एमछ, इनक पू ["लख] बंबस की धान (चए नुपा १६७ पवि)। दायम न [दामन] छत्न पसूर्वीको पैर में बावने की रस्ती (कुछ ४३६)। दावण म [दापन] दिनमा (गुपा ४११)। दावणया की [दापना] दिलाना (स 🖈 १ पीर)। शाबद्य पुं [दायद्रव] क्त-विरोध (छावा १ 1 (909 PP-99 बापर ५ द्वापर] १ दूरु विशेष शीवरा प्रमा २ स. क्रिक को भी तिर्यं मी केव दावर (मूम १२९२६)। ज्ञुस्म पुरियमी चरित-विदेप (ठा ४ ३---पत्र २३७)। दाचाप सक [दापय ] दिवाना । शह-दारायडं (महा)। दाविभ वि [द्रिशन] दिवसाया ह्या पर्दाछत (पाय मेर दर १, ४)। शायिअ वि [दापित] दिनावा हुया (दुरा २४१) । बाबिश वि (शाबिन) १ मराच हवा हन नावा हुमा। २ नरम किया हुमा (धन्द्र 54) 1

दार्वेद देशी दाव == शापम् । वास पू [वर्श] सर्गन भवनोकन (पर्)। बास द [बास] १ मीकर, कर्मकर (इ.२ २ ६ सुना १२२ प्रापु १७४, स १० कृष्यु । २ बोबर, मझाह किन्ही बीवरो दासी (पाप)। येह, चेटन पू चिट र छोटी कम का बीकर । २ तीकर का अक्का (महाः एतमा १२)। संभापु [सरम] भीकृत्य (यण्डु १७)। दासरिंद् पु [दाशरिय] सना यतस्य का पुत्र रामचन्त्र (से १ १४)। दासी औ [दासी] नौकरानी (भीन महा) । वामीखरगडिया श्री [बामीक्वेटिस] वैत मूनियों की एक शाका (कप्प)। वाह प्रविद्वा १ ताप असन गरमी : २ बहुन, अस्मीकरण (हे १ २६४ प्रासू १०)। १ रोग-विरोप (विषा १ १)। उद्धर पू िंक्यर] क्वर-विरोध (शुपा १११) । अ**व्ह**ं- । विय वि [ विमुक्त्यस्तिक] जिसको सङ्घ । उत्पन्न हुमाही वह (छाया १ १--- पत्र 44) ( दाई रेखों दा = रा। वाह्म वि [वाह्क] क्लानेवाला (उपर ०१)। वाह्य न [वाह्न] भनाना मत्म कराना (पठम १ २ १११)। दाइविय वि [दाहित] वनगया हुमा. भाग भक्ताया हुमा (हम्मीर २०)। वाहिण देवो रूकिसा (मरूवसः है है ४४८ ७२ गा ४३६ व्हे६)। दारिय वि [क्वारिक] बांबरा विशाम विश्वका द्वार हो बहु। २ न, व्यक्तिन्त्रपुत्र धात

हार्या में [याहन] कताना माम कराना (पत्र्य र १११)। हार्याय में [याहिन] जननाना हुमा. भाग भारत्याय हुमा (हमीर २०)। हार्याय में में कराना (मान वस्त्र) है है ४८.२ ०२ मा ४१६ वरेश)। वारिय में हिंचा हुमा (मान में प्रत्याय का तमान (ठ०)। पत्र्यायमा में प्रिमिमीम] बांत्रस्त्र धीर परिया हिंदा प्रदास है (२०)। पत्रयिमा हिंदा प्रवास १९)। पुर्यायमा में हिंदा स्व श्री पत्र श्री १ क्लिय के भीर का भारत्य १ १९)। पुर्यायमा मिल्यों हो भीर प्रत्ये मिला के भीर का का भीर में हिंदा के भीर का का भीर-मेख (मान)। वाच मिल्यों भीराय से सामना (श्रीन चारि) (ठा ४ दाहिणिक देता विकासिक (परम ७ १० विका १ ७)।
दाहिणा की [विका ] विकास दिया (कुमा)।
दिक्ष मा [क्षु] को के से सेवायाका
(हे १ १०४ वे ६ ४६)।
दि देतो दिसा (गा ४६६)। बारि पु
[करिय] विभुक्त (कुमा)। स्पर्देत पु
[मोमा विभूक्त (कुमा)। स्पर्देत पु
[मोमा विभ्ना किया का पुक्र मास्य (कुमा)। स्पर्देत विभा ।

विक्र पुंत [क] विषय नित्र (वे स. १६)।

पंत्रितियार (क्या)।

विक्र पुं [क्रिज] १ बाइस्ट किन्न (क्या)

प्राप्त पर ४६० दी)। २ वत्र वेदि। ६

बाइस्ट धारि तीत वर्ध-बाइस्ट द्वित्र।

दीर वेस्त। ४ माइक माइस्ट द्वित्र वेद्वान विरोण

विक्र का पेत्र (है १ ६४)। साम वृद्धि विरोण

४१२ क्रिन १६)।

विक्र पुंत्रिक क्या कीमा (वन ४६ वटे)।

विक्र पुंत्रिक क्या कीमा (वन ४६ वटे)।

विक्र पुंत्रिक विस्तर्ग हर्गा (हूर ४९)।

विक्र पुंत्रिक विस्तर्ग हर्गा (हर ४९)।

खेश साग् व हिंगिक स्वर्ग वेश्वलेक (प्रज्ञ पर प्रश्च पुर छ १)। टिक कि चित्र विश्वलेक कार्य ह्या (बस्सी १)। चित्र कि हिंदी इठ मार काला हुया (बस्सी १६)। विश्वलं वृद्धि हिंदी कार्य कार्य ग्राम् (महा)। विश्वलं वृद्धि हिंदी हिंदी कार्य मान्य ग्राम् प्रदेश । दुर्ग एक केन्न व्यवस्था (मिर्क क्षर

दिआम पुं [ व ] मुवर्तवाद, सोनार (वे य, वद)। दिसमुत्त पुं [व] कात कीमा (वे ४, ४१)। विसर पुं विषर] पति का क्षांश वाद (या वेशः सात्र पास दे १ १४६: सुना ४८०)।

१२२ दूम ४४६)।

देशस्त्रिज वि [दे] मुखे यक्तानी (दे ४, ५६)। देशस्त्री की [दे] स्वृता खम्मा, बूटी	विरा प्र विरा माकरक-प्रक्रिय एक समास	
worth at the same arms at the	I Id 3 T FIRST I LO VIGE AL O U.S.	(तूप २२) । कीय पुं ["क्छीव] नपुणक-
	(बसु पि ११०)।	विदेप (निष्क्र ४)। अंद्रान ["अंद्रा
(शय)।	दिग्गु को विगु (मणु १४७)।	द्वय-निरोप भाषा नी स्थिरतानी सहाई
देशस पूर्व [त्रियस] दिन दिवस (पहड	बिरम वेको दीह (हेर ६१ मामा वंशि	(पत्रम ४ ४४)। "वंघ 🐧 ["वन्घ] तवर
पि २६४)। कर दे किरी सूर्व स्विति	१७:स्वय १वः विदे १४१७)। जंगूस,	बॉबना(इस ७२ = टी)। में संतर्वि
१ ११)। नाइ दु [मान] पूर्व नुरव	संगुष वि ["साहगृस] १ नामी पूँचवाता	["मन्] प्रसस्य दक्षिणमा सम्बद्धाः
(न्तम १४ ८१)। यर देशो कर (पाम)।	२ पुनानर ( पत्)।	(दूस १४ १। सामा)। राष दुं ["राग]
देशो दिशस ।	दिस्पिक्षा को [दीभिक्षा] वापी चौकीवाका	१ वर्शन-राग सन्ते वर्गपर सनुराग (वर्ग
देशसिश्चन दि । एए-भोक्न (रेप्	ूर्यनीरोप (स्तप्त ११ विक ११६)।	र्)।२ चालुप-लोइ (घमि ७४)। <b>इ</b> .वि
४)। २ मनुस्ति प्रतिस्ति (देश, ४	विष्याची [विस्सा] के की बच्चा (द्वप	[ मत् ] प्रसत्तु इहिन्तमा (परम २०
पाम)।	344)1	२२) । बास 🛊 ["पात] १ नवर बलाना
<b>ब्रिक्ट देवी दि</b> ञ्चस (प्रायः पाम) ।	दिज वैश्रो दिञ्ज≕ क्षित्र (कुमा) ।	(से र ५)। २ बायको मैन संकर्धक (हा
दिशहत्त्व ग[दे] पूर्वोह्य रामोक्त द्वपहर	विकानि [केस] १ देने सोन्सः। २ मो दिना	t —पत्र ४६१)। वान प्र [माद]
का घोतन (दे १४)।	चासके। ९ धून कर निशेष (विषा १.१)।	बाद्वापैत संक्थल (ठा१ समा१)।
विकास [दिया] दिन दिनत (पास या	विज्ञात   विज्ञामाण   रेको वा = वा ।	पिपरिआसिमा भी पिपर्पासिमा,
१६। धन १६, वसन १६ १६)। विस	विकास ।   विद्वार विद्या कवित प्रतिसारित कहा	िसिता] मति भ्रम (सम १६) । विस र्
न [मिछ] निन-रात समा (पिन)। राभ	इसा (ज्य भई हो)।	्रिविप] विश्वनी इष्टिर्मे पिप हो ऐसा धर्पे } (से ४ "१:)। शुद्धान (त्रियुक्त) नेत्र कर
्त [र्यत्र] स्ति-रात सर्वस (मुझ ३१०)।	विदूरि [इप्र] १ केवा ह्या निकोषित (स	रोग-विशेष (शासा १ १३पत्र १०१)।
भेगो दिया ।	४ ४) स्वयं २०। प्रासु १११)। २ व्यक्तित	
दिआहम् पु [वे] माच पत्नी (वे ४, ३१)।	(सर्यु)। ६ ज्ञान प्रमान्य के लाना हुमा (क्य	विट्टि की [इस्ति] ताराः निवा पादि वीवन्दर्षः
विभाइ देवी बुजाइ (पाम) ।	समरा बुद्ध है)। ४ व. व्हांत विलोकन	(Reft 221)
विष्ट की [हरित] मश्क पमने का बस-गाव	(छ २ १)। पाडि वि विशिष्ठम् वरक-	दिद्वियाय [दिष्या] इत प्रवी ना तुवक सम्पय—१ संकतः १ हर्ष सामकः कुछ ।
(मनु ध कुत्र (vt)।	सुस्यादिका वानकार (ग्रीव ७४)।	वे भाग्य से (हे २, १ ४ लिल १८) सनि
विकास नि [िश्रापन] दूना दुवना (नि २६०)।	सामिय प्रशिक्षिक] हेट क्लु की ही	2x 17x 2x) ;
र्दित केवीदा≖ छ । दिकाम पुंद्रिफ्सल ] नेप सामि कानीका	महामा करनेवाला वैन साथु (पराह २, १)।	विद्विभाको [दक्षिक आर] शक्ति
वसर्वे दिस्ता (सर्वे)।	विद्वत (इ.स.) प्रत्यताचा मनुमान प्रमाण	निरोपवर्तन के निर्मयमन । २ वर्तन से
दिक्त तक [दीक्ष] देता देता प्रतापना	1	नमें का बरम होता (ध्रा र १—पव ४ ) ।
देना सन्पास देना, किन्य करना। विकरी	साहम्मव न [सामम्बेबन् ] धतुरान का	
(स्त) । बद्धः विकसीत (पुता १२६) ।	एक नेद (समु ११२)।	विद्वीमा चौ [हरीया] स्पर देखो (नव १)।
दिवस क्या देवस । स्टियर (रि.६६) ।	बिट्ठंच 🕻 [ इस्रन्व ] स्वाहप्त निकर्ण	विक्रीवाभावपसिभा थी [टक्टिवादी-
दिवस्त स्रो [दीक्षा] १ प्रवच्या देता, स्थानस	(ठा४ ४∼ महा)।	े प्रविधिक्षे चित्रानिकेत (र ११)। विकेशाल के क्यांतिक कार्या
(ग्रीव ७ वा) । २ प्रवच्या संन्यास (वर्न २) ।		विहेस्सम् नि [इप्त] वेनाह्मा निरोक्तियः (भागम)।
[ब्विसाध नि [ब्रोधित] निबनो प्रवण्या <b>यै</b>	च्याइच्यादिया युवादीच्य (निवेर ४	विद्दुह विको वृद्ध (काउ-मालाती (का से
वर्ष हो वह जो साधु नन्त्रमा क्या हो यह	दी)। २ व- व्यक्तिय-विशेष (ठा४ ४	विके रि रेश स्वयं र शासू हर)।
( <del></del>	(स्वर्ष)।	विण प्रैन [दिन] विश्व (बुपा १६) ई १४)
दिराच्या वेची दिनिक्षा (सि ७४)।	विद्वान्त वेची पृष्ट्या = रस्	वी १५ शतु १४)। इंद पु [इन्द्र]
विरावर केनो विश्लवर (स्व पालन) ।	विक्कि की [इ.सि.] १ नेप सम्ब नवर (ठा	एवं पन (क्ल)। क्य दु [कुन् ]
[किम्प्सा की [किम्प्सा] दुख्या मुख (दन ४ ) विदे २११४७ क्य २, बाबू)।	1	दुर्ग एन (घन)। कर दु (कर) दुर्य
क र त्यस १११४४ वर्ष १, मानू)। विभिन्दा धक [जिमस्स् ] वाले की बहुता	(प्रस्कारशंकाभार)। १ वर्तनं सन-	सुरम (तुमा ११२)। त्यह द्व [भाम]
वक्र विशिक्ताय (भावा पि ४१४) ।	। नौकन निरीक्तल (प्रयु): ४ दुवि, यदि (सम २३) उत्त २)। ३ विवेक विचार	तुर्वे एवं (नक्त)। वेसु दु विल्लु
the state and facilities at 444) I	) (कारक व्यापा र लग्न विवास	ं तुर्व धर्म (दुष्प १०) । सथि दु [मिणि]

मूर्व दिराहर (गाम से १ १ क मुता २६)। [दुन्तिया ] की [दिहसा] देवने की दक्ता | दिव न [ दिय् ] स्वर्ग देवनोक (हुप ४३६ दिदिच्या । (एवं मुस २६४)। मुद्द व [ मुख] प्रसाद, प्रादकाल, दिद्ध वि [दिग्य] पित (निष् १)। (पाय)। यर देखी कर (पडा भवि)। दिस रेखो टिप्स (महा प्रामु १७)। ७ मी रवित्रक्षरे की "रजनिक्री]शिवानिकीय गीतम स्वामी के पास पांच मी शासी के (पत्रम १६८)। बद्ध पूर्वि मूर्व साथ बैन दीना सेनेदाला एक तारन (उन र्चा (रि १७१) । १४२ टी मूप २६६)। ८ एक पैन बाचार्य दिविद पू [दिनम्ड] मूर्व, एरि (सुरा २४)। (क्प) । विशास व [निनस] १ वूर्व मुख्य (क्यु)। दिसय प्रै दिसको मेन निया हमा पूत्र (छ २ बारह की संबद्धा (क्लि १४४)। विष्य विदित्ती १ दिया ह्या विदेशी (हिर् ४६। प्राप्त स्वय्न प्राप्तू १६४)। २ तिवरित स्वारित (पएइ १ १)। ३ वृं अगरान् पार्शनाव 🗣 प्रपम पण यर (सम ११२) । ४ मनशन् येवायनाय का पूर्वजन्तीय नाम (सम. १५१) । ५ भवदान् चन्द्रप्रम का प्रवस यत्त्रवर (सम ११२)। ६ भगरान् निनाय को प्रयम भिना देनेराना एक गुरुष (सम १११) । देनो दिशा । दिया देशो दृहस (स्रव)। दिष्णह्य वि िन्दी निवाहमा (मीप २२ मा. टी) । दित्त वि[दाप्त] १ व्यक्ति प्रशास्ति (सम ११६ पति १४ तरूप ११)। २ वान्ति यून भाग्यर, नेजस्मी (पाम १४ ११ सम १२२) । वे तीयगभुत, निरित्र (सम.१४व सहय 💔 । ४ सञ्ज्ञात अमरीता(एडि)। १ पूर परिवृद्ध (बन १४) । ६ प्रसिद्ध (मय २६ ३) । ० मास्त्राता (योष ६ ३) । ापस रि [िपस] हरें के बॉतरक ने रिनरो रिन्ताम हा बरा द्वाबद्द (इट्ट ३)। त्ति वि [द्य] १ वीरा वर्षेनुक (बीरा) र २ मारनकारा । ३ हानि-सारक (बीप १ रा। इत्तरितिती र विश्वदेगा में दर्द हो। २ वर्ष के ब्रिटिट में जो पण्य शे रण शे बर् ।दा ६, १—१३ १२७) । শিল ঐ [ব্যাম] ৰাগ্য ইর মধ্যে (গায Trates ( Af emter) i u (र[ सर्] राजिन्द्रतः (रम्प १) । रिनि **`{**र्रिन्न}ऽ(पर(च्च १०१)। टी [ मा] क्राटाचा (स्थन (25)

१०--पम ११६)। दिष्प धक [दीप्] १ चमरनाः २ तेत होना। १ जनमा । ज्यिह (हे १ - २२१) । बक् दिप्पंत दिप्पमान्न (मे ४ ८ गुर १४ १६ महार पएड् १ ४ पुरा २४ ) 'दिन्नमाछे वरदर्ख (स ६७१)। दिप्प बरु [ नृप् ] तुत्र होता, सन्दुः होता। न्पिश्(पर्)। दिष्य वि [दीप्र] चमरनवाना वैजली (छ दिष्प (दप) पूर्विषी १ क्षेत्रकः । २ छन विरोत्त (पिंग) । दिप्पंत दू दि] एत्रचे (रे ४, ११)। दिष्पंत दिष्पमाग } स्त्री दिष्प = सेप्। दिष्पिर देनो दिष्य = श्रेप्र (दुना) । दियात्र मरु [दा] देता । दियास्य (वेदा १३ (1) t दिरव पु [द्विरद] हम्बी हाथी (हे १ १४)। दिलॅन्डिम [४] देशे दिहिदिसिम (गा 98\$) I विसिदिस मर [ निस्रदिनाय्] रिन् रिट् माराव करना। वा दिसदिलंड (परम t 3 3t) i र्टिनेडम ५ [टिडिस्टर] एए प्रसार ना बाह्य बन संगु की एक बार्ति (पाट् १-१) । िहिनियात्र (इ.) बारत हिंगु नहता (रेश, ४) की, जा बचा सप्ती (या करी)। त्वि न्द [त्यि] १ बीहा करता। २ भीवने वी इच्या करना । वे मेन-देन करना । ४ चप्ता भागाः ३ माश करताः [TE [TT (SE) 1

पदि)। दिबहुत वि [द्वायपार्थ] देव एक बीर पापा (शिच ६६३ स ११ सर १ र द मुना ५८ मनिसम ६१। मुज्य ११ ठा६)। न्यिस ) देखो दिअस (हे १ २६३ उप दिवह प्रामू १२ मुग रे ७ वेळी ४७)। पुरुक्तन ["प्रयस्त्र] को से मेकर नव दिन तक ना समय (भम)। टिपादेको दिशा (छाबार ४० प्रादुर )। इति दूं [\*दीर्ति] काएगक मंगी (रे x yt)। \*सर पू [\*सर] मूर्व मूरव (बत ११) । दिस्ति पू विशिधि नापित हमाम (रूप २८८)। गर देखी कर (स्प्रामा १ १ दून ४१६)। मुद्द न ["मुल] प्रभाव (पढा) । यह देखी कर (मुपा १३) ११४)। यरस्य न [कराम्त्र] बनारा-भारक सक्र-विटेप (पत्रम ६१ ४४) । दियायर दू [नियासर] १ विक्रवेत नामक विकात केन कवि चौर तार्विक । २ पूर्ववर मुनि (मम्पत्त १४१)। दिषि देशो इय 'धिनिणादि काण्यूरिने-एका एसा दामी महें न निप्पनचे एवदा दिहीए िम्मामी (रेमा)। दिविश्र पूँ [द्विपिद] बालर-विधेय (मे ४ क **१1** ≈₹) ı दिषिज वि दिषिजी १ शर्म में स्थाप । २ र्षु देश देशका (प्रश्नि ७) । दिविद्व देगो दुविदू (राम)। दिय (धा) देना दिवा (१ ४ ४१८) हुमा) । न्यि वि [निय्य] १ स्वर्गेशम्यत्यौ स्वर्णीय (त २ ठा ३ ३)। २ इतम मृत्रु वनोद्रुर (पान = २६१ मूर २, २४२ प्रामू १२=) । १ मपन सूक्त (बीत) । ४ देर सम्बन्धी (हा ४ ४ मूम १ २ २) । ६ न शायनीये चयेत्र हो गर्दि करिए विवा षाता मन्त्रिया गार्थ (स्त द ४)। ६ प्राचीन कार में ब्राइक स्टार की कुनू हो यान पर जिन बनाशास्त्रजन काना है राज न्हों 🕏 निर्णादमा मनुष्य का निर्शादन होता बाबर इंटिनचेंन चरत हैया चर्न बरी-रिकश्या (सर१३१ मै) । स∏स

नती ना विटर्ने वर्तन हो ऐसी कवा-वस्तु (જાવ)ા दिब्धन [दिब्ध] १ देता दीन दिन का सन्तरार कामाध (सेवीय १०)। २ वि केन-प्रमन्त्रीः विदिशा महावाम दिव्यका स्न सन्दा विविज्ञाहिमासियाँ (सूच १ २ २ (X) 1 विक्य देशो दशन (सुपा १६१) । विरुष देशो देश 'प्रमोई हिन्नदंशलंति' (नुप्र **11**3) ( दिष्यार पु[क्षियाक] सर्पेनी एक वाति (पदश् १)। दिस्थासा भी [दे] पाहुएस देवी-विशेष (t t, 12) : दिस सक [दिह्यु] १ कहना। २ प्रतिनास्त करना । विश्वद (वर्ति) । ववक्क. विस्समाण (धन)। दिस र् [दिश] एक वेव-विदान (वेदेन्द्र (185 दिस दि [दिग्य] दिशा में अलब (से ८, X ) i विसक्षा की हिपदा | १८वर, शकाल (पर् )। दिसाइ देशो दिसा-दि (गुल्य १ शि-पत्र • ) t भी [विशः ] १ फिला, पूर्व साथि दिसा दिसि बन विद्यार्थे (नजड प्रासू ११३) भक्ता दुवा २६७ वर्गह र ४ दिसी रं ३१ क्ल)। १ प्रीक्षाची (छ १ १४)। अक्टन [चक] क्लियों का सबूद (ग्र १६)। इसरी भी [इसारी] वेगी-विशेष (तुरा ४ )। कुमार हे [कुमार] नानपति देशों की एक वाति (वएका २ भौत) : "हम्भारी वैश्वी इत्मरी (नदा नुस ४१)। गम दू [गम] रिक्ट्स्की (से २ शः १ ४६) । सद्द 🕻 [गमन्द्र] रिष्-बृत्ती (रि. ११६)। भवा देशी अद (नुग १२६) नहा) । चक्र ग्रह न विक-बाढ] रे क्लियों का बहुद्द । २ वर-निधेव (निरंद १): चर्च विश्वरी वैद्यादन करनेवाना बच्च (बग१४)। दाचा वैदी

बचा (ठप ७६० टी)। बच्चिय देखो विचय (ज्या)। बाह् थू [ शाह् ] क्सिमॉ में हीलैंगला एक तथा का प्रकास, विश्वमें नीचे धन्तकार धीर उत्पर प्रकारा शिक्षता है। यह व्यक्ती अध्यक्ती का मुक्तक है। (मग १, ७)। भुवाय पु [अनुपाद] विकास प्रमुखरक (परका १)। इति प्र [ वृत्त्विम् ] विम्-बृश्ती (तुपा ४८) । दाह केवी बाह (मग १७) । दि दे [कादि] मेर परंत (पुरुष १)। "बेबबा स्प्री "बेबता | रिलाक्षे व्यक्तिको स्त्री (रंगा) । पाक्तिका पं विशेक्षिये एक प्रकार का शास्त्रपत (भीत)। माञ पुंिमाग] सम्बन्ध (क्य क्रीपाकप्पुतिया ११)। सत्तत [भात्र] धरमन चैदिह (स्प ७४६)। सोद पुसिद्ध किया का अग (सिन् ११)। पर्चा की [ बाजा] देशस्य दुता-क्रिपै (स १६४)। यत्तिय वि ["यात्रिक] दिशामी में किलोकासा (बना)। धोय प् िआक्रोको दिशाका प्रकाश (दिया १ **१)। बहुर्पु["पण] दिता-का मार्ग** (पडम २ १)। बास्ट र्ष ["पास्त] क्लिपाल विराम अविपति (स ३६१)। "वेरमण न "विरमण] केन मुक्त्य को पासने का एक निवम-दिशा में कले-माने कापरिमाख करना (कर्मर)। ब्रवस न ['इत] देवी 'बेरमण (मीम) । सोरिवय र्षु ["स्वस्तिक] स्वरिक-विदेश (ग्रीप) । सोनरियय पु सिनिश्तिक । स्वीतिक विशेष ब्रीतिखानर्त स्वस्तिक (पद्मा १ ४)। २ व. एक देव-विमान (समय )। ३ इचक पर्वतका एक रिफार (ठा )। इतिक प्रै "बस्तिन | किनव किताओं में स्वित केरवत मारि याठ इस्ती । इत्सिक्ष दुन विस्ति कुट दिशा में रिक्त इस्ती के भाष्यरकता विश्वर-विशेष, वे भाउ हैं-पद्मीतर, नील बन्त मुहस्ती मन्त्रननिरि हुपूर, प्रश्नारा, धवटेंच और शेषर्वावृरि (वे ४)। दिसेम १ [दिगिम] दिचन दिन्दसी (बडर) ।

हिस्स वि हिरवी देखने ग्रेप्य प्रतबद्ध जान भा रियद (वर्गते ४२ )।

विस्स विस्स वेको दक्का = हरा । दिस्समाण विस्सामाण वेची विस । दिस्सा देवी दक्त = इस् : बिहा स [द्विमा] थे प्रकार (हे १ १७)। विकि की [कृति] देने कीरक (के ए, १६१) भूगा)। स वि [सत्] वैवैद्याली भीर (दूमा) । दीज देशो दीव = बीप (ना १३६८ १४७) । बीक्षक देवी दीवय (गा १९१)। वीक्षमाण वेको साम्यः। दीज दि (दीन) १ रंक वर्षेव (प्रापृ १३)। २ दुःचितं, दुःस्व (खाषा १ १) । ३ दीन म्पून (छाप २)। प्रशोक प्रस्त शोकानुर (विपाद २, मद)। वीपार १ विनार ] धेने का एक विका (क्या का ह ६४) ११७ हो)। बीयकः (सप) पुन [बीयक] बन्द विशेष

दीपऋ ुें (सिन) । तीय केशे विष = विष् । वहः, धनवेदिः कुत् नेकि बीवर्ष (सुध १ २ २ २६)। दीव एक दिश्य ] १ दीपाला श्रीमान्द । ९ वस्तुन्धाः १ तेव नरन्ताः प्रज्ञकर करनाः।

१ निवेदन करना । धीवद (ग्रीन ४३४) । बीमेड (महा)। यहः, श्रीवर्धतः (कप्प)। र्शकः इतिका (भीव ४३४ करा)। इत दीवविक्र (क्य)।

बीत पुँ [दीप] १ प्रचैप दिनाः विराव, धानीक (बाद १६ खामा १ १)। २ कलपृष्ट की एक बाधि बदीपका कार्यकरनेकाला कश्यकुल (सम १७)। च्यंत्रस ह [चम्प३] दियाना दलना दीप-पित्रान (कम ६)। ासी की [फिसी] १ कीन-मीका २ धीनाती पर्व-विरोप कार्रीन्त्र नदी धनावस (दे ६ ४६): त्वसी की विस्त्री पूर्वोच्छ हो यर्च (तो ११) । दीव दृद्धिये । त्रिमके वार्षे सोर वद

वस हो देना भूमि बान (सन ६६० कारे)। र जनवर्गी देशों की एक बाति, डीपपुनार देव (प्रमुद्ध १ ४) भीत) । ३ ज्याम (भीव १) ।

"कुमार पूं ["कुमार] एक देव-का**र्ड** (मन १६१६) । ज्यु दि [ इस ] इति के मार्च का जानकार (उप १६१) । सागरपन्नश्चि **की** ["सागरप्रक्रि] कैन ग्रन्थ-विशेष विसर्ने हीयों और ममुत्रों का नर्यान है (ठा ३ २---पत्र १२६)। हीय पुं[सूरिय] सीराष्ट्रका एक नगर, धीन

(पव १११)। दीषअ पूं चि ] इकसास गिरविट (रे ४, 48) 1

शीवल पूर्विपक] १ प्रवीप दिया निराम द्यालोक (बा २२२ महा)। २ वि यीपक, प्रकारक, शोमा-कारक (दुमा) । ३ न सन्द विशेष (यकि २६)।

दीवंग पू [दीपाङ्ग] प्रदीप का काम देनेवाने कस्पकुत की एक जाति (ठा १)। दीवरा देखो दीव अ = दीपक (भा ६) मानम)।

बीवड प्रे वि विज्ञानतु-विशेष फुरतिशिय संपृत्त मर्गतमी स्रीयतं (सुर १ १८०)। दीवण न [दीपन] प्रकारान (मीव ४४)। दीवणा को [शीपना] प्रकारा 'कुपो संख्युए श्रीवर्णाह् (स ६७१)। दीविज्ञ वि [र्वत्यनीय] १ वटरान्तिको बड़ालेबाला (ए। था १ र — पत्र १६)। २ शोमायमान वैदीप्यमान (पएस १७) ।

दीवर्य देनो दीव - दिन्। ब्रीययत देखी दाव = दीपम् ।

दीवायण र् [द्वीपायन, द्वैपायन] एक प्राचीय ऋषि जिल्ले हारका नवरी जताने ना निवान फिया था भीर जो भागानी उप्पणिक्षी काल में बरव-ब्रेज में एक द्वीर्यंकर होगा (संत १४, तम १४४३ कुप्र ६३) । दीवि 🕽 र्दु [द्वीपिन्] स्पान की एक वर्षातः

दीविभ ) बाता (श ब्दर छावा १ १-पव ६३, परह १ १)।

दीविञ वि [दापित] १ वताया हुया (पत्रम २२ (७) । २ ब्रकारित (योग) ।

बीविर्मग दू [दीपिसङ्ग] वस्यनुत्र की एक वादि को सन्बकार को धूर करता है (पत्रम १ २ १२६)।

दीविमा की [दे] र जाधीका शुर कीट विशेष। २ व्याव की इरिस्ती को इसरे

हरिएमें के बानर्पण करने के सिए रखी वाटी 🕽 (दे ५ ५३)। ३ व्याय-संबन्धी पिनके में रका हमा विविद् पद्मी (शामा १ १७---वचर ३३२)।

दीयिभाकी [दीपिका] छोटा दिया सपु प्रकीप (जीव १)।

दीविद्या वि [द्वैष्य] शिव में छप्पन्न शीप में पैदा हुन्ना (गुप्ता १ ११--पत्र १७१)।

वीषी (मप) वेको देवी (रेमा)। दीकी की [दीपिका] सबु प्रदीप कीय दिया

'दीवि व्य ठीइ बुद्धी' (मा १६)। ष् यूसव पूं [दीपास्सव] कार्तिक वदी ममावस धीनाती शीपानमी (ती ११)।

वासत दीसमात्र } देवो दक्त = हर्य ।

दीइ नि [दीर्घ] १ मास्त अस्या (ठा४ २ । प्राप्त कुमा) । २ वै वो मात्रानामास्वर (पिंग)। ६ कोशन देश काएक पाना (उप ११८) । काय विश्वयी धरितकाय (प्राचा प्रम्य १—१—४)। कासिगी सौ ["काक्रिकी विकानविशेष बुद्धि-विशेष विससे पुरीने पुरकात की बार्तों का स्मरस भीर सुधीर्पे भविष्य का विकार किया का सकता है(दैदर निधे ५ ८)। काछिय नि ["स्त्रस्थिक] १ शेर्व काम से उत्पन्न विरंद्यता पीड्कामिएएँ धेनार्तकेखें (छा ६ १)। २ धीर्वेकाल-सम्बन्धी (पाषम) । शैला औ ियात्रा रिलम्मी सफर। २ मरण मीत (स ७२१) । "इका वि ["इप्ट] जिसको साप में काटा ही वह (निचूर)। । प्यहा की "निद्रा] भएए मौत (एज)। इत पूर्विस्ती १ फारतवर्षं ना एक माबी चक्र-वर्ती राजा (सम १४४)। २ एक वैतनुति (पंठ)। पेंसि वि [दिसिम्] हुलसी पूरुपेकी (मुर १ १) सं १२)। दसा भी व दिसा किन वंक-विरोध (ठा १ )। दिद्विष ["दृष्टि] र पूरवर्ती पूरवेशी । २ और धीर्प-शिका (वर्ष १)। यह दू प्रिष्टी र वर्ग सीप (का इ. २२) । २ बरयत का एक मन्त्री (बह १)। पास बू िपा की ऐरवड क्षेत्र के सीलहर्षे मानी जिल-देव (पव v) । "पेहि वि ["मेझिन्] दूर

क्रती (पत्रम २१ २२ ३१ १ ६)। बाह्र पूं विद्वाह र मध्य-सेन में होनेनासा दीसध बासुदेव (सम १६४)। २ मगवाम् चनाप्रम का पूर्व अग्मीय नाम (सम १५१)। सद पुँभिद्रीएक कैन मुनि (कप्प)। सद्धा वि भिन्न] सम्बा रस्टावाचा (राज्या १ १८ ठा२ १ ४,२-- पत्र २४ )। सञ्ज वि **िद्ध**े **रीर्थकान** से गम्य (ठा ५ २—गम २४)। साठन [ौसूप्] सम्बाधाद्रुष्य (ठा१)। स्त, राय पुन रिकी १ सम्बी रात । २ बहु रात्रिवासा विर-नाम (संक्षि १७ राज)। साथ पूं ["राज] एक चपा (महा)। "छोग दु" ["छोक] बनस्पवि का बीब (बाबा)। खेगसत्य म जिल्लेक-शरुः] धरिन वहि (धावा)। वियव्ह पू [वैद्या**ट्य**] स्वनाम-स्थाठ पर्वत (ठा २ १---पत्र ६१)। सचन मित्री र बका मुता (निषु ५) । २ धामस्य मा बुरासु धिहमूलं परकरमं धीयमं परिकर्णशे' (पडम ६)। सेण पू ["सेन] र मनुत्तर देवलोक-यामी पुनि-विशेष (मनु २) : २ इस भवसमिती भान में उत्पान ऐरवत होब के भाठने निन-देव (पद ७) । उत्, उस कि [ीयुप्, ायुष्क] सम्बी छन्नशासा बड़ी मायुवाला जिरंबीबी (हेर २ ठा ६ १ पब्स १४३) सिण न [ौसन] सम्बा (# t) i कीईय कि [दिवसा घ] किन को केलने में

बीह देवो विञ्च (दमा)। मसमर्थः 'रित्वा दीहंबा' (प्रातः १७६) । थीइमीइ प्रं वि रोच (वे ४, ४१)।

दीइपिड वेली दीइ-पट्ट (मिरि १ ४)। बीहर देगो दीह=दीमें (ह २ १७१ मूर

२ २१ ८ प्रानू ११३)। पछ वि[क्कि] सम्बाद्याच्याता वहे नेत्रवाला (सूपा tvo) i

दीहरिय वि [दीयित] सम्बा विया ह्या (यस्त्र) ।

दीद्या से [र्द पिक्र] वारी बनारव-विटेव (पुर १ ६३) कथ्यु)।

क्षीदीकर तक [दीर्घी+कृ] सम्बा करता। बीहीकरैंडि (भग)।

हु म [दुर] इन घर्ने ना भूवक सम्बद ---१ समान । २ इण्टाबाधनी । ३ इटियन कठिनादै। ४ किमा (हे २ २१७ मातू रेश्च युवारेश्वर शास्त्र र १३ जना) । द्रस्य न द्वित विभिन्नसमितेष (एम १९)। हुक्थ न [द्विक] पूग्म पूत्रन योदा (न 44t) ( द्वाम वि द्विती १ पीहित हैयल दिया हुन्य (क्प ६२ टी)। १ देव-पुष्टः। ६ विकि रौत,भर्मा (गुर १११ मञ्जू) । विस्त-विमन विद्यम्बदी र इन्दरिक्षाः २ प्राप्तकनियेष (सम्) ।

हुअस्तर वृं दि] वदव गाँदछ (र १) Y#) [ दुशक्तर वि [दूषशुर] र यज्ञान, पूर्व, मानम (जन १२६ दी)। २ पुंची, राष नीनर (सिंड)। की (रया (यात्रम)। हुमणुष पृं [दूबणुड] से परतासुधी ना स्क्रम्ब (विमे २१६२) ।

बुक्तर वि [बुप्कर] गुल्लिक नर्कनाई से को रिकावासके वह (प्राप्त २६)।

हु अझन [दुक्क] १ वज्ञ क्यका। २ महिन वक्त, मुक्तवक (हे १ ११६, प्राप्त) । देखो उक्छ। दुआ इर् [द्विकारि] बाय्य स्तित योर कैरव के द्वीन वर्श (हे १ १४) २ ७१)। हुआ प्रस्ति [हुरास्त्रय] इच वे बद्ध

योज्य (छ। ६ १—यत्र २६६) । लुकार व द्वारी बरवाबा, जवेश-मार्न (क् 1 (50 \$

दुआराह् वि [दुरायभ] विश्वम धारावन क्छिनाई से हो सके वह (प्यहरू Y)। तुमारिमा की [तु।रिका] १ धोल हार । २ 🖡 द्वार द्वार, ब्ल्यार (स्त्रमा ११)।

हुआवत्त न [तुथावर्त] हटिनार भ एक सूत्र [ (धम १४७)। दुर्ज दुर्ज कि [द्वितीय] दुवस (दे १ १ १) ब्रहेम र ए इसा क्यू रमत ४)। हुइड (पर) वि [द्विचतुर] थे-बाट, शे बा भार (प्राक्त १२)।

दुरंद र वह [अुगुप्स] निवाकरना, दुवर्थ्य रे एवा करेंग्रे । दुरेसद् दुरुद्ध (X Y X) दुरण विदिन्ति देना पुरुष (दे ६, प्रध हे १ र४)। बर नि विर] दूने गेमी किरोप ग्रस्थना (से ११ २०)। दुरुणिम वि [द्विस्तित] उत्तर देखी (दुपा) १ बुल्ला देशो बुआ इत (प्राप्त मा १६१ पर )।

देक्ट १५ दिग्हमी १ वर्ग की एक वाटि हुद्म (रे ७ ११) । २ व्योतिस्क-विशेष एक महत्त्राह् (ठा२ ९—-पत्र ♥ )। दुदुभि रेको दुदुद्धि (भर १, ११) । बुंदुमिल न 📵 गवे की मानाव (वे ६ ४४३ पड्}। हुंदुमिणी भौ दि] स्पनावी भौ (दे १, ४१)। तुंद्रहि पुत्री [दुन्द्रमि] बाद्य विशेष (क्रम

ge € € aus 3x \$\$¢) : तुंपक्ती की [के] बांक्, नवे (दे १, ४ )। बुक्त देवो बुक्क्स (र ४७)। हुक्य देवो हुद्धप्य (५५)। हुईम्म न [हुएइमीन] पाप विशिद्ध स्थार थाकाप (च्या२७) मित्र)।

दुश्रस पुरुद्धिको सन्तत पुरिष्य (शिरि ¥!) 1 दुस्थि देवो दुवस्य (मर्दि)। इक्% पुदिक्क रेक्त-विरोध । २ वि

दुर्त इत की झान से बना हुमा वक्र शाहि (छाया १ १ टी—यत्र ४३)। दुर्वदिर ति [दुप्कानित्] भाषना मा<del>व्य</del> करनेवाता (श्रीव) । तुब्दर म [बुप्हरत] पाप कर्म निन्य सामध्य

(सम १२६० 🛊 १ २ ६। वर्षि)। दुक्सदि | दि द्विपहरिष्ट को दुक्त तुनक्रिय करनेतला, वसी (तुम १ १, बुक्करप द [बुक्करप] सिमित बाबु का बायरङ परित सबु का धावार (पैक्स)। हुक्कमा न [हुट्स्मैस्] बुर क्मै प्रवश्यक्त (नुपा२वः १२ ४ )।

हुक्कय व [बुक्कव] पाप-वर्ग (परह १ १) शुक्र विद्विष्टरी में दुख वै विया मा सके दुरितन रष्ट-बाप्प (है ४ ४१४ पंचा १६): आरम वि विगरकी पुरिकत कार्व को करनेपाला (वा १७१) ≹ २,१ ४)। करण व[करण] वित्र कार्य को करना (इ. १७)। स्वरि वि िंदारित्। देवी बारअ (स. १९१)। दुक्छर त 👣 साथ मान में धॉप के चार्छ प्रकर में किया बाता स्तात (वे ५,४२)। दुक्डरकरण र [दुष्क्ररकरण] पोच दिन का बधारार उपग्रह (संबोध र )। हुक्क्द्र वि दि प्रश्तिकार परोचरी (बुर १ १६) यत २७)।

दुक्त छ प्रेड्टिय छो परस्य पुरिश्व (सार्थ बुव्हिन देवो हुद्धम (ग्रीन)। **दुक्डुक**णिआ को [दे] पीकरान, पीकरानी (₹ ₹, ¥**4**) | हुक्कृत न [हुप्कुछ] निन्ति दूस (वर्त र)।

दुक्द्रम् वि [दे] १ मध्यन पत्रदिश्यु विव-विकार विक्रमीत (रे ६ ४४) ह हरू ज दुन [दुन्त] १ समुख कह पीड़ा क्लैस मन का बोम (दे १ ६६) 'पुरुवा

चारीरा माछशा व संसार (संसा १ १) ध्यकाभयः स्थल ५१: ४: प्रामु १३, रेश्च रंबर)। २ क्रिये गए छे पुरिश्वा धै कठिमारै से (क्यु) । ३ वि दुःखबन्ता, इ:वित द्वाद (दे ११)। क्षे क्ला (भग)। इट वि विद्**रो दुःस न**नक (सूरा १११): च वि विते दुव वे गीवित (इपा १६१: स ॥४१: प्राप्तू १४४)। काबेसम न ["चीगबपम] पुरब है पीकित को देवा, बार्च ग्रुपूरा (वंशा १६) । मिक्रम वि [सर्वितदुःसः] निवने दुःसः क्यार्वत किया हो यह (बच ६) । । । । । । । । । ।

िरास्य] दुःच वे धारामक्त्रोत्व (क्रमा

११२)। बिह वि विषद् द्वित्यस्य

दुक्तुमाध [मि] दो कार दो द्या

(साथ २—पर १ ८)।

इन्दिय वि [जुनुष्मित] प्रतित निन्दित

दुगाम्म । प्रश्तिका ना तके बर (परम

४ १३ धीय ७१ मा) चित्रवननरिंद

दुक्तुस देवी दुकुछ (मनि २१)। (ग्रीम १०२)। (परम १४, १ )। सिया 🕏 दुर्गुदुरा दू [दीगु दुक] एक सन्दि गंभी िसिका] बेदना पीक्ष (ठा १ ४)। दुक्रशीह र् [दुन्सीय] दुन्ध-पशि (पदम देश (सूपा १२८)। १ व ११६: भूता १६१) । देखो दुइ = दुःस । दुगुच्छ रवी दुर्गुत्र । दुग्नार (हे ४-४ हुकाद स दि] यदन श्री के कमर के पैछे दुक्रोद्ध वि [दुक्तोम] क्ष्टुन्डोम्य नुस्पर पड़)। वह दुगुच्छत (पतन १ ३ का भाग कुत्र (दे ४, ४२)। (सुमा १८१ ६२६)। ७४)। **ह** दुश्च**द**भाव (पउम ∈ २)। दुक्त पर [दुःसाय्] १ दुबनाः दर्र दुर्संड वि [द्विहाण्ड] वो हुम्बेबामा (दा शना। २ सके दुखी करना किर्दर्भ दुर्गि देशो दुरा (हार ४' ए।या १ १ १८६ ही मिशि)। पुरुष (स १ ४)। पुरुषामि (स ११ इंट क्ट ३ २१६)। दुखुचो ध्यो दुक्खुचा (क्स)। दुन्य एक [द्विगुगय्] रुप्ता करना। १२०)। दुश्वति (सूस २ २ १४)। दुम्पूर र् [द्विशुर] से सुरवामा प्राची मी दुक्तीर (दूप २८४) । दुबराह रेवो दुहर (शह २३)। भैंस बादि (पएए १)। हुकारण म [दुक्यन] दुसना, वर्ष होना दुर्गुणञ रेखो दुउणिश (रुमा) । हुगम [द्विक] को युग्म युग्न कोड़ा (तक दुगुद्ध (रेवो दुधद्ध (हे ? ११६ दुसा (ता ७११ सूम २ २ ११)। सुर १ १७३ भी ११)। दुर्ग्स (मुर २ँ० परि)। दुक्त्यम कि द्विअनुमी १ यस्त्रमे। २ दुगोत्ता ध्यै [द्विगात्रा] शस्ती निरुप दुर्गञ्ज वेली हुर्गुद्ध । वह दुर्गञ्जमाण (बच मग्राप्त (बरा २ ११)। ४ १६) । इ. दुर'द्धणिज्ञ (स्त १६ १६) (प्रदश्य १) । दुक्तम् देधो दुवर (स्थण ६६) । दुग्गम दि] १ दुश्त क्ष्ट (३ ४ ४६) R ex) ( दुबरारिय पुं [दुष्यरिक] यह भीकर पद पर्मा १ ३)।२ इस्टी कमर (१ १ दुर्गवणा भी [जुनुध्मना] प्रखा निम्ब (निष् १६)। (पउम १४ ६४)। ४३)।३ र*ण संधान पुद*्र नाइतंत्र दुक्तर्रारया स्म [दुष्क्ररिका] १ दासी लेलिमे दुग्गे (स ६३६)। दुर्गद्वा ही [जुगुप्मा] एला फिन्हा (पाप भाग रामी (निष् १६)। २ वेरना वाराञ्चना दुरग वि दिशी १ वहां दुन्त से प्रोस किया रूप ४ ७) । देखी दुर्गुछा । भा सके **बह पू**र्गम स्पान (भग ७ ६ जिपा (fig () ( दुर्गेच देखी दुरगीय (पडम ४१ १७) । दुक्यदिय (पर) वि [दुर्गितः] दुच-पूक १ को । २ वाइन्छ से जाना जासरे (सुप्र दुगच्छ ) एक जिल्लाच्स ने क्ला करना १ प १) । ३ पून, शिसा यह कोट दुराख निम्ता करता । दुनन्दर, रूप सह हक्यक्षित्र वि [दुर्गरान] दुःयौ विमा हवा (पुता १४=)। नायग पू ["नायक] किने (पर ६४ ४) । शा दुर्ग्ञन, दुर्गुख (प ६६४) म्बर)। का मातिक (मुपा ४६) । माण (कुमा वि ७४ २१६)। स्ट दुबरमाय सक [दुरमयू] दुःश्व परामाना दुरगइ हो [दुगति] १ दूपति, नरर प्रारि दुर्गुद्धिरं (धर्म २)। इ दुर्गुद्धणय कुलियत यौति (ठा व ६। ६, १ उन् ७ ब्रुची बरना। दुशराबद्र (दि ११९)। (पद्म ४६ ६२)। बर् दुवस्यापेन (पटम १० १०)। पनर १८ मामा)। २ निपत्ति दुग्गः। १ दर्गशा रगर्सपुण्य न [द्विगर्सपुण] शगातार दीस हुपगापिर्जन (मारम)। बुधे मास्या । ४ भंगधीत्वत रिद्धता ( ९४ दिन का जपराम (संबोध ४८)। १ १ महादा १ ४ मध्य २)। नवस्मानपार्था (तस्मा) इन्ही करता, दुर्गुद्धग मि [तुगुष्मक] पूरा कलगण बुगांठि सी [ दुमन्य ] रूपांच निद् दर्भ क्षाज्ञाता । य १ ३)। पार १)। बटिन ग्रीन (वि ६६६) । हरिय वि [हारिय] दुवी दुच दुव हर्म्| द्रम न [नुगुप्पन] इस किस (ति दुगाय पू [दुगाय] १ वसन कर । २ वि (धाषा) । चराव रूपवाना दु<sup>र्ग</sup>न्ति (ठा ८ – वत्र ४१ ४-दुरियत्र विदियत क्षानुहर दुनिया दुरापमा भेगो पुर प्रमा (बाबा) । नुसार १ महा)। (है २ ७२ बार ब्रायू १३ महा पुर पुरुद्धि देनो रगेद्धा (मन)। कस्म न हुम'ध रि [दुगिधम] दुवैत्यकाना (पुता 1 (131 1 [ सर्मन् ] रंगो पीद्धे का सर्वे (स्त १ ) । 4C0) 1 हुबार्त्तर रि [रूग्णार] के इस में तर मोद्याय न [साइनाय] वर्गनिरोच दुरममं विकिममी भी कटिन वेसे बन्ह रिना कार जिल्हा कर बरने में बन्तन बिगारे बन्द स जीव की समूम बालू बर षा नदे बहु (बर्नीह ४) । (1 ) (TTP) बुग्ग होडा है (बस्म १)। द्रमान । नि [दुमम] १ वहा पुत्त ने

हुनुद्धि रि [जुनुष्मन् ] क्रा करनाका

नाग्य वानेशना (बता र ४०६ c)।

हुमग्र (दुमग्र) एक बसार का दुस्कर,

1) ( हुरपट्ट ) पुंचि इस्ती इसी वर्ष (६ ६. हुरमोट्ट) ४४ वर्ग भीरा।

दुग्यर न [बुगु इ] बुग्र वर (नवि)। दुग्पास र् दुर्घास द्वास प्रशास (इह

बुरम्ब वि बिर्मेट्री मध्यत (वर्गीव २७ )। दुरपडिश वि [दुर्वेदित] र वृक्ष संस्कृता । २ बराव पीति से बना दूषा 'बुग्बरियमंच-धारत व करने करने पामपञ्जेली (बा ११)।

हबहिदा (पर्याह १ ६ — पन ४४)। हुम्बद्ध वि [बुपैंट] भी दुःच वे हो एके वह क्: मान्य (तुपा १३) ६६१) ।

बुग्गाम्म देवो दुग्गिम्म (से १ ३)। हुउपद नि [दुर्घेट्ट] निश्वना धान्तास्त दुःब ते ही क्षेत्र का भारतकी उत्तावता है के की

तुग्गुड वि [तुग्ड] घतक्त पुत्र, प्रति प्रच्यक (**वव ७)** ।

भा ६६)। बुनियम् विद्याच्य दुस्की विश्वम ध्यम्स दुवासे हो। सके वह (सुपा २४४)।

**बुमार्ग** कुमा) । समा वे [रमय] स्वाचेन दिन (पद्)। बुम्गास न [बुर्मास] दुनित प्रकान (पिट

(चंड)। ३ पश्चि-निरोप (मा १९)। हुगाई औ दिनहियों १ पार्वती दुरगायेंनी किन-पंजी योग्रे । २ देवी **बुग्गादेहें** विशेष (यह **हे १** २७

ही सके वह (उप द ३१)। हुम्मा हो [दुर्गा] १ वर्जनी वीचे रिपन पन्ती (पास सूपा १४×)। २ देवी-विशेष

हुम्मन [दुमन] १ विश्वता । २ दुवः नोइंदो जिल्ह्यमं नोहित्मं दुरगमं सहर् (संबोध ४) । कुरमह वि [तुम ह] जिल्हा बहुछ दुःव से

. १. १। सा १८)। २. दुर्ची विपत्ति प्रस्त (पाया ठा४ १—पव २ २)।

हुम्सय वि [दुरीत] १ वरिक वन-दीन (ठर

मुस्सिव (ठा ३१)।

बुनिविधित (वे ६, ६६) पाम) ।

हु चिल्ला देनो हु चिल्ला (पि वे४ धीप)। बुबान [होस्य] हुत-नर्ग समाचार पहुंचाने भाकार्य (पाध)।

या मानिक (भीव १०१ मा) ।

हुंबर ) नि [दुआर] र निसर्ने दुःख से दुंबरिक्ष | बार्स पान नह (पाना)। २

दुंभासे को किनाकाय गहु (क्य ६४ ⊏ टी:

पष्टम २२ २ )। स्थाद र् ["काद] ऐसा

प्राप्त या देश जिसमें कृष्य से काशा जा सके

बुवरिअन (बुब्बरिव) १ वर्षक शायरक

२ विद्याचारी (देश ४३)।

दुषार वि [दुआर] दुरानाचै (त्रवि) ।

बुबारि वि [बुबारिन] दुवनार पुष्ट

मावरस्वामा (स १ व) । 🛍 सी. सी

दुर्बिटिय वि [दुद्धिन्तिति] १ पुण विन्तित

दुविनिष्म नि [दुशिनिरम] निस्का प्रती-

दुविष्ण न द्विर्धार्थी र ग्रष्ट यावस्त्र दुवरित । २ दुन कर्ने—द्विमा कारि । ६ वि

बुए संवित एककित की हुई बुए वस्तु (विधा

हुचेद्रिय न [बुरचेधित] बयन नेहा, शाध-

रिक दुए मानध्य (परि- सूर ६ २६२)।

तु**च्याच** वि [द्विप्रमूच] बायह बकार का

'बूब' बार्' प्रश्लुपद्धं, माहाचे म्हन सं निही ।

दुरुब्रस्करशामि बम्बरस धम्मर्स परिकित्तिव

कार पुश्चिक से ही कह (च ६१)।

१ १३ ब्राप्ट १ १६) ।

(421 %) (

(सक्य ११ ६)। २ न क्या किलान

बुष्ट वर्णन (पक्रम ३०४ १२ छन बु१११)।

(ग्राचा)।

(मक्का)।

(पिका)।

मा)। बहु पृति पादा का व्यवपति

तुद्धाच्य देशो तुच्छाका (वर्गर)।

1 (¥84

प्रव देनो दोख = प्रितीय, प्रिस (कम्प)।

दुर्वाडिश कि कि र पूर्वितः । दुनिकान

हुर्चवास्त्र वि [द] र क्साइ-निरत मनाइस्बोर। २ दुवरित दुष्ट याचरतुवाता । ३ परप

भागी नदा मोसलेगासा (वै ६, ६४)।

दुव्यका ३ वि [दुस्स्यका] कुवा से स्थावने हुँचय 🕽 योग्य (कुमा छन ७६८ हो)।

बुप्रय देवी बुक्तम (महा) । हुआप पू [दुर्जन] क्व कुण्मनुभ्य (प्राप्तु २३४ क्या)।

(से १२ ६१)।

(विशे १४१२)।

(मुपा२४ मक्त)।

पुर (ठा४ २)।

(भाषा)।

(**क**प्प) ।

बुजीइ इंटिंडिकिड वी १ वर्ग समा २ दुर्जन काल पुरूप (शहि ६३ क्रुप्ता)। पुर्वात देवो दुर्कित (चन) ।

बुळास विद्विषयीको क्ष्ट से बीता का सके

(जन १ ६६ की पुर १२ १६ पुरा

धुक्रावन[दे] ≃स्त पष्ट दुःच सराव

दुव्यास वि [दुर्जीत] पुत्र से विकतने नोस्य

कुक्याय न [कुर्यात] दुए नमन कुल्कित पवि

बुर्जित पुं [बुर्पेस्त] एक शाबीन मैत्युनि

दुव्यीव न [दुर्शीन] ग्रामीनिक का मन

दुस्तम नि [दुर्जेंच] दुन्त से बीठने बोन्ड

दुक्तोइण दु [दुर्वोधन] बृदरह का श्येष्ठ

हुन्म नि [दोद्य] बोह्ने योग्य (दे १ ४) ।

दुरमध्य न [पुध्वीत] दुर विकास (वर्ष १)।

बुक्सप्रय वि [बुक्यांत] वितके विषय में पुर

हुक्कोसय वि [हुर्कोप] निक्को देश क्ट

हुक्त्यसय वि [हु सप] विस्ता कर कर-

हुम्म्प्रेसिम नि [हुर्बोफ्ति] हुन्त ने क्रीत

विन्तन किया पना हो वह (वर्ष १)।

से हा एके ऐवा (पाना)।

साम्य हो वह (ग्रामा) ।

(माचा)।

दुक्ताह वेंची दुक्तीह (नवा १६)।

(वे १८ ४४ से १२ ६३ पाध)।

एक महायह (ठा२ ६)।

दुरक्षेत्र पि [दुरक्षेत्] निस्का केल दुःखते हो सके वह (पत्नम ६१ ४६) । बुकाडि पु विद्यादिन् दियोतिक देव-विशेष

बोड़ने मोरवः 'बुब्बकु बीबियासा ब' (बर्मीव

414

दुश्मोसिश्र—दुद्विणी दुरम्धेसित्र हि [दुःस्पित] कप्ट से मारित (पाचा) । ब्रह्म वि दिए ] दोप-पुष्क, दूपित (धोष १६ ) पाम कुमा)। एप पू [ास्मम्] कुर बीव पापी प्रास्त्री (पदम ६ १३१८ ७% १२)। यद्गविदिष्टि । इति-प्रकः (योग ७३७ क्य)- 'घरत्तवदस्त' (वृत्र १७१) । हुद्वाण न [तु स्यान] दुए बगह (भन १६ 3) ı दुटदु व [दुप्तु] बराव पशुन्तर (उर २ दी निर र रे सुपा श्रदाई ४ ४ र).। हुण्मय देलो तुस्रथ (विक ३७ मादम)। दुण्यास न दिनीसन् र भागीति भागतः। २ इप्र नाम चराव भावता । ३ एक प्रकार का गर्भ (भग १२ ४)। बुज्जिय कि [दून] पीकित दुःस्तित (गा 1 (15 दुष्णित्र देशो दुझिय (पन)। हुण्गिमत्व न दि] १ वनन पर स्वित । वद्धाः २ जवन स्मीके कमर के नीचे का भाम (दे ५, ५३)। द्विशक्त के कि वृष्टित कुरावारी (र χ **γ**ξ) ι व्यक्तिकम् वि वितिकम् विश्व विकास कुल्याच्य हो वह (राम ७ ६)। द्रिकेनिकास वि दि १ दुरावारी। २ कट संबोदेशानासके (देर, ४६)। दुणिमन्देव वि दिनियेपी रूच से स्वापन करने योग्य (मा ११४) । दुष्टिमशङ् देखो दुष्ट्यकोङ् (राज) । दुण्णिमिम वि [द्नियांजित] दृष्ट ध भोबाह्मा (न १२ १६)। कुणिशीमत्त न [कुर्तिमत्त] चएव स्कून मपराष्ट्रन (परम ७ ५) । हुण्यिवद्र व [दुर्निविष्ट] दुरापही इती, निही (निष् ११) । दुष्पिसीहिया की [दुर्निपद्या] कट-जनक स्वाच्याय-स्वान (पर्द्ध २ १) । दुष्पेव वि दुईयी विश्वय शव क्र-साव्य हो बहु(उदर १२८३ व्य ६२४)। वृतितिक्ता वि [वृत्तितिभ] दुस्सह को बु:ब से सहत किया था सके वह (ठा ४,१)।

पाम)। दुत्तिः इस्स १ देलो दुनिविक्तः (पापा दुष्टिविक्स ( चन)। दुरुद्ध पू [दुस्तुण्ड] दुमुख दुर्बन, (तूपा 3 a)ı दुचोस वि [दुस्तोप] विस्को संतुर करना कठिन हो बहु (बस १)। दुर्य न दिही भवन की की कमर के नीचे क्स माय (देश ४२)। दुस्य वि [दुःस्य] दुर्गत दुःस्वित (ठा व शः धनि)। हुरथ न [दी स्च्या] दुनींत दुःस्वता (मुपा २४४)' 'नहि निपुरसहाता हुटि पुल्पेनि भीय' (दुमा १४) । दुल्पिम व [दुःस्थित] १ हुवैत विपत्ति-प्रस्त (रमण ७५) मनि सल्)। २ निर्वत नधेन (कुन्न१४१)। दुरपुरहंड पूंडी दि निमहालोट, क्वड-शील (देर ४७) । भी बा(देर, ४७) । हुस्बोम ट्रं [दे] हुमँक धमला (६ ४, ४३)। दुर्देव वि [दुर्द्दित] ब्यात १ सन १००३ हो। धरास्य दुर्दम विस्तयभक्ता दुर्शवदेशिया वेदिशो बहुवे' (मूर व १३%) सामा १ ४, पुपा ६८ ३ महा)। दुश्स वि [दुर्वरा] दुषनोड, जो बडिनाई से वेबाजासके (उत्तर १४१)। हुईसण वि [दुवेदोन] विवका वर्शन दुर्सभ को नइ:(साक्)। दुश्म नि [दुर्दम] १ धुर्वम धुनिवार (गुपा २४): 'दुरमकर्मे' (मा १२) । २ पू राजा भक्तिय का एक हुत (शाक)। दुरम पु [दे] देनर, पठि का श्रोद्य बाई (दे X, 88)1

२~पद २१)। (मोच १६)। £ 28) 1 दुइ। छना की दि | मी मैगा (पड़)। (वे ४, ४३) पाप)। जाइ को "वादि] मदिए-विरोग विसका स्वाद तुम के पिसा होता है (भीव के)। समूद प्रिमुद्री और-वधून विस्ता पानी कुम की ठरह स्वादित है (या ३००)। दुर्देस वि दुर्ग्यस विस्कानारा मुस्कित से क्षो (सर १ १२)। दुक्यभिअमुद्द पूं दि । वास शिव बोटा मक्का (देश ४)। दुदर्गनिअमुद्दी भी [दे] बोटी सहकी (पाप) । दुस्ही | की [पे] १ प्रमुखि के बाद तीन द्वदी रे दिन तक का बो-पुन्व (पमा ६२)। २ वही काम छै मिनित हुव (पव ४ —वा २२व)। दुदर वि [दुर्घर] १ पूर्वेह, विस्तन्त्र निर्वाह पुरिक्त से हो सके बहु (पएए: १--पद ४ पुर १२, ११)। २ महल विषम (ठा६ मिति)। १ दुनीय (दुना)। ४ पूँ रावल का एक सुसर (पडम १६ १)। दुद्धरिस वि [दुर्घेष] १ जिसका सामना कठिनता से हो सके बीतने को ब्रासक्य (पस्क्र २ १, कम्प)। हुद्धवत्तही की [दे] बावन का माटा शनकर पकामा बादा दूव (पव ४---गावा २२८)। दुद्रसाडी की [वे] प्राप्ता निवाकर प्रकास पाता दूव (पव ४—पावा २२०)। इविल न नि] क्यू सीकी इवस्ती में 'दूषी' (पाप) । हुबि।जशा ) को [के] १ तेल शांवि रखने ∫काबाबन । २ तुम्बी (देश, विद्या XY) I

पाइअसदमहण्यमा बुक्तर वि ब्रिस्तर] दुस्तरखीय दुर्संच्य (सूपा ४७-११४ सार्व ६१)। द्रुच की क्ये दिस्तटी र नदी। २ कराव किमारा वासी नदी (बम्म १२ टी)। द्रच्य वि विस्तुप नष्ट से क्यते योग्यः दुःब से करने भोग्य (ता) (भर्मा १७) : दुचार वि दूस्तार | दुख से पार करने मोप्म, बुस्तर (से वे २४% व १)। दुत्ति स दि | रोप्प, वस्यै (वे ४ ४१

दुविट्ट नि दिस्ट ही १ दुर्ग तरह वे देवा हमा। २ वि इए क्टॉनबासा (परह १ दुविष्य न दिर्दिनी बादनों से व्याप्त दिवस युद्देश कि विर्देशी द्राप से देने मोग्स (उन दुइस्ती की दि कुल-वंदि, वेडों की क्लार दुद्ध न [दुग्म] दूम सीर (विपा १ ७)।

दुकालहि । ई [दुरमोदिध] समुद्र-विशेष	श्रुपणसिय वि [वि्प्रवेशिक] वी प्रवेतवासा	हुप्पबुप्पेक्सिम नि [हुप्परकुठोशित] क्षेत्र-
दुद्धोद्दि } वितना पानी दूव की उछा	(भव ४, ७)।	क्षेत्र व्यक्ति देखा हुमा (१व ६) ।
स्वादिश्व है बीरसपुत्र (वा४७३ वन २११	दुपक्कापु [दुष्पद्य] दुष्टपम् (पूर्वाः ३	दुप्पभीवि वि [दुष्पजीविम्] दुःच वे नीते-
<del>द</del> ी) ।	1)	नावा (क्लपु t)।
हुद्बोई जी की दि] नो-वितेव विसरी एक	दुपक्लान [द्विपक्ष] १ दो पळा(सूम १ २	दुष्पविचेत् वि [दुष्प्रतिशास्त] विस्ता
बार क्षेत्रने पर फिर भी क्षेत्रन किया का सके	व)।२ विवेदसम्बद्धाः (सूप ११२ ४)।	प्राथमित दीक-दीकृत किया पराहो बह
ऐसी नाम कामकेनु (देशः ६)।	दुपिक्षम्माद् न [द्विप्रविष्माद] इष्टिमात्र का	(क्यि ११)।
तुषा केवी तुवा (धनि १६१)।	एक सूत्र (हम ११७)।	बुप्पबिगर वि [बुष्पतिकर] क्लिश प्रतीकार
तुनिमित्त <b>रेवो</b> तुण्यिमित्त (था २७)।	दुपडोग्रार वि [द्विपदावतार] यो लानों में	दुःव से किया का सके (दृह १)।
दुक्तय दुर्[दुनय] १ दुण्गीति कुनीति । २	निसका समानेत हो सके वह (ठा २ १)। वुपकोत्रार नि [त्रियस्थवतार] क्रमर केवी	हुष्पविष्रं वि [हुष्प्रतिपूर] पूरते के निष स्रकाम (तंद्र)।
सनेक वर्गवाली वस्तु में किसी एक ही	(श. ६ ६)।	वरम्य (वर्ष) । बुष्पवियार्थरः वि [बुध्यस्यानम्य] १ वो
वर्गं की मानकर भन्य मर्गं का प्रतिवाद करते	दुष्पाक्रिय केतो दुष्पम क्रिय (पुण ६२)।	कियों तर्यहर्ष <u>त्तर</u> न किया वासके : २ वर्षि
शासा पत्ता (समा १३)। ३ वि कुल नीति	हुप्य वि [हिपद] १ वी पैरवला। २ पू	नष्टचेतीचणीय (निपा १ १—पन ११⊬
मन्याय-नारी (उप ७६× दी)। नारिति	स्मेल्स (बोसा ६ : सैनात क)। इस्स वैजनान निर्देशनी क्यान्त्रसम्भार देवे	23 A ≰)   25 A ⊈)   25 A ⊈   1
"कारिन्] भग्नाय गण्तेनाता (पुरा १४६)।	च्यमी राज्य (स्रोप २ ४ स)।	तुष्पविद्यार वि [तुष्पविद्यार] विस्तवा स्ती-
दुत्रिक्स वैची दोनिकस (वर 🤏 दी	हुपब पूँ [द्रूपव] कापिस्स्पूर स्थ एक राजा	कार कुच्छ से ही स्केषह (ठा ३ १—४ग
पत्र ६ ७)।	(छामा १ १६)।	ररका ररशा स रेमप सम्)।
बुक्तिसम् वि [बुर्निसह] विस्ता निस्ह दुःस	तुपरिवय वि [तुप्परित्वज] दुरूपव दुःख	तुष्पविसेद वि [पुष्पविसेक] के श्रेक-धैक
से हो सके बहु, सनियामें (बच प्र ११६)।	से भ्रीको योग्य (का ७६४ द्या रमछ ६४)।	न देशा वा एके पह (पत ≼४)।
दुमिबोइ नि [दुर्निबोम] र द्राव वे बलते	तुपरिवयणीय वि [दुप्परिस्पत्रनीय	दुप्पविसेदण न [दुष्पवि <del>नेस</del> न] अन्तरीक
योग्या२ कुर्नम (सूम १११ २४)।	दुष्परित्यज्ञ] स्मर देखों (कल)।	नाहिँ देखना (मात ४) ।
वुक्तिसिन भेगे बुष्णिसिन्त (भा २७)।	हुपस्स देवी दुप्पस्स (क्ष ६, १—पत्र	बुष्पबिनेदिय नि [बुष्पविनेक्षित] क्षेत्र है
दुक्तियन [दुर्नीत] दुष्टकर्म दुफ्का, बनीत	181) I	नहीं देवा हुमा (सुपा ६१७)।
वैदेशिः व दुक्तिवार्षि' (सूधः १ ७ ४)।	हिपुत्तं प्र [हुप्पुत्र] क्रुप्तं क्यूत (परम २६,	दुष्पविवृद्द वि [दुष्पतिवृद्ध] १ वहले को
हुसियस्य वि [वे] विट का नेतरहा है।	24)	मतक्य । २ पलले को सरक्य (ग्राचा)।
नीव देप को भारख करनेवाला <i>।</i> देवल स्थन	वुपेरम् नि [बुच्चेश् ] दुर्गरं, मर्कानीय	तुष्पविनृद्य दि [तुष्पविनृद्य] स्मर
पर ही वज्र-पहिता हुम्स 'सोए वि <del>दुर्सस</del> मी-	(वर्ष)। हुत्पद्ग पूँ [हुत्पति] दुष्ट स्वामी (श्रीव)।	वैचो (प्राचा)। दुष्पणिद्दाजन [दुष्पणिभान] दुध्यगेद,
सिनं वर्ग कृष्टिक्लमहरमस्त्रं सिरहं (स्म) ।	् दुष्पवत्त वि [दुष्पमुक्तः] १ दुल्यकोम क्ली-	भरुप मनोर कुनारीन (झ ३ १ दुरा
हुजिरिक्स वि [दुर्निरीक्स] वो कठिनाई वे	शासा (ठा २ १—पत्र वर्श) । २ विसका	KA)!
देशाधासने सह (क्या श्रीर)।	बुक्तमीय किया क्या हो वह (पन व १)।	दुष्पणिविष वि [दुष्पणिवित] दुष्पपुष.
दुनिवार वि [दुनिवार] रोक्ने के लिए		विका पुरुष्योत किया क्या ही वह (सुपा
मधाना नियका निवारश धुनितक है हो	तुष्परक्षिम ) वि [तुष्प्रज्ञक्कित] सेन-धेन तुष्परक्क ) नहीं पन्न हुमा सन्तम्भ (स्ताः	११व) ।
क्ते वह (तुपा ११३) महा)।	र्वचा १)।	दुष्पगीहाम देवी दुष्पणिहाम ऋग्यानह
दुक्तिवारणीय वि [दुर्निवारणीय दुर्निवार]	्र तुष्पओग 🕻 [बुष्पयोग] दुस्पयोग (स्व ४)।	भीति दुन्नखीवार्ख (तुना ५३३) ।
RITE BELL (# 177 - 175)	ं दुष्पयोगि वि [दुष्पयोगिन्] दुसर्वाय	दुष्पजोडिय नि [दुष्पजोच] दुस्तव बोहने
द्विमसञ्ज्ञानि [बुर्नियण्य] वयन देशि है देश ह्या (स. १. –यन ११२)।	करनेवाला (पदह १ १	को समोप्य (पूर्व १ ६ १)।
	हुप्पक्त वि [दुष्पक्ष] देशो दुष्पवस् (दुपा	दुष्पञ्जाजिस्स वि [दुष्प्रकापमीय] कष्ट
हुप देशो दिस≔क्ति (सन)।	(vet) i	त्रे प्रयोगपीय (प्राचार, ३१)।
दुपन्छ वि [विश्वदेश] १ वो घनवनवत्ता । १ तुं, इफ्युक (वस १) ।	हुप्पन्नसास नि [दुप्प्रशास] निवन्त्र स्वा सन्द स्ट्रेसास्य हो यह (दुपा ५ )।	दुष्पवर वि [दुष्पवर] दुस्वर (दूस १
2 Transfer ()	ा कर महतान्त्र द्वा वद् (दुवा द	' * t) i

**पाइअमहमह**ण्णयो

8,40

दुक्रोमहि--दुप्पतर

सफानहीं करता (वर्ग १)।

से पाचान्त (पाचा) ।

(R X, XX) I

હિવરિં≭)ા

(एपचेस वि [बुष्यचर्षे] दुर्वर्षे दुर्वेव (उत्त

दुप्पमञ्जग न [तुष्पमार्जन] क्षेत्र-शिक

हुप्पमध्जिम वि [सुष्यमार्जित] मण्डी राष्ट्

दुष्पयार वि [दुष्मचार] विश्वक प्रचार

इए माना काता है वह, धम्याय-पुक्त (कम्प)।

बुव्यस्त्रकृत वि [बुष्यप्रकान्त] दूरी वर्ष

दुप्परिजल्ड वि [वे] १ बशस्य (वे ४, ४१,

पाया से ४ २६।६ १८। मा १२२)।२

त्रिपुण कुणुना । ६ मनस्यस्त भस्थास-रहित

से सफा नहीं किया हुया (सूपा ६१७) ।

दुष्पय देखो दुषय = द्विपद (सम ६ )।

बुष्परिक्रभ वि [बुष्परिचित] स्परिचित (8 23 24) 1 हुप्परिकाय देवो हुपरिकाय (बन्न ८)। द्रुष्परिणाम वि [ द्रुप्परिणाम ] विश्वका परिस्ताम कराव हो, दुविपाक (महि)। बुप्परिमास वि [बुप्परिमर्प] कृष्ट-साम्प स्मर्गनाचा(से १ २४)। कुप्परियक्तण देखो कुप्परिवक्तण (**तंद्र)** । दुष्परिस्छ वि [वे] दुरावर्ष धाविहिस दुप्परिस्मपि होद परश्रं प्रमु वाहा (बा १२२)। तुष्परिवत्तव वि [तुष्परिवर्त्तन] १ विवका परिवर्तन कुमा से हो सके बहु। २ ल. पुःखा से पीचे चीटना (तंदु) । दुष्पर्वच र् [दुष्पपञ्च] बुट प्रवेच (स्वि)। दुष्पवम पुं [दुष्पवन] कुः वानु (व्यवि)। द्रप्पमेस वि [दुव्यवेश] वहां क्ष्ट से प्रवेश ही सके वह (यामा १ १ पठम ४६ १२) स २६ : युपा ४६६)। तर वि [वर] प्रवेश करने की करनम (पण्ड १ ३ ---पत्र ४५)। दुष्पसद् वृं [दुष्यसद्] वंत्रम मारे के मन्त में होनेवाना एक बैन मावार, एक साबी बैन सूरि (उन = १)। द्युप्पस्स वि [दुर्देई] को मुस्लिन से दिक्तामा चासके बहु(छा५ १८) ---पथ २६६)।

दुष्पर्दस वि [दुष्प्रश्यंस्य] विसन्त्र नारा कठिनाई से हो स**क वह (**खाया १ १०---यत्र २३६)। दुष्पद्वंस कि [दुष्प्रचृष्य ] मनेय, दुर्नय (लाबा११व)। दुष्पह वि [दुष्प्रभ] को दुःच से पुरू सके बद्धः दुर्दम (मोह ७२)। बुष्पाय न [बुष्पाप] तर-विशेष, पायेविन तप (संबोध १८)। हरियंड पू [बुद्धियंत्] दुः पिता (मुपा १८७ भवि)। हुप्तिच्छ देशो हुपेच्छ (पुर २ ४) पुण दुष्पिय वि [दुष्पिय] मप्रियः। स्मासि पि भाषिन् प्रिय-पद्ध (मुपा ११४)। तुरपुत्त देवो तुपुत्त (यस्म १ १, ७२) मनि कुम ४ १)। दुष्पर विद्रिष्परी को कठिनाई से पूरा कियाकासके (स १२६)। दुप्पेक्त रेक्षो दुपेश्द्ध (स्छ) । द्रप्येक्सजिञ्ज वि ज्रिप्येक्षणायी कट के क्रांनीय (गठ-नेग्री २४) । हुप्येच्य वेशी हुपेच्छ (महा)। दुष्पोक्तिय देवो दुष्पउक्तिअ (भा २१)। दुष्पद्र वि [दुष्पद् ] प्रतिकत्त हे प्रदर्भ योग्य (ति ८३)। दुष्फरिसः वि [दुःस्परो] विसका स्पर्धे बराव दुष्प्रास हो वह (परंग २६, ४६, १ १ दुष्प्रस कि छ द भग) बुकास वि [द्विस्पर्श] स्निष्य भीर ठीत मार्वि प्रविद्धा दो स्पर्ती से युद्ध (सप) । हुम्बद्ध वि [दुर्वेद्ध] संचव चैठि वि वैवा ह्मा(भाषा२ ६,३) : दुष्पद्ध विद्युद्ध निर्मेष समन्द्रीत (विश १ का सुपा ६ ३ प्रासु २३)। पदम्ब मिन्तः पुन ["प्रस्ययमित्र] दुवन को मक्द करनेवाला (ठा ६) । हुष्त्रक्रिय वि [हुक्किंड] दुवंत विवंत (मय १२ २)। । पुसमित्त 🛊 🗗 पुष्य भित्र स्वनाम-प्रक्रिय एक वैन धावार्य (হাভা ধীভ)।

बुरवित्य न [दीर्यस्य] भग बाक प्रकार (भाषा२३२३) । युक्युद्धि वि दुर्युद्धि १ ब्रष्ट बुद्धिनाता अध्यव नियतवासा (उप ७२८ सुपा ४४३ ३०६)। २ की चराव दुद्धि दुर्गनिक्त (मा १४)। दुक्बोरुस पू [दे] ज्यासम्य उत्तहना या प्रसाहरा (दे १, ४२)। दुष्म वि [पुग्प] दोहा हुया। २ त. दोहन (মা**কু ৬৬**) ৷ दुष्म देखो दुइ ≔ बुह्, । बुक्सग वि [दुर्भग] १ कमनतीव समाया । २ बाप्रेय बनिट (पण्डा १ २ प्रासू १४३)। जाम नाम न ["नाभम्] कर्न विशेष जिसके उदय से उपकार करनेवाला भी कोगाँ को भन्निय होता है (कम्म ! सम ६०)। क्य 🛍 ैिक्स देनैय बनानेवासी विद्या-विशेष (सूच २ २)। बुक्सरगत [दीर्मारय] दुर्मलता क्लेक्सें मप्रियता (पिट १८२) । दुष्मर्राण की [दुर्मराणि] दुष्य से निर्वाह, क्षीत धनगणी वेसि दुन्भरती पहर वद् बरस्साबि' (सूपा ६७ )। तुरुभाव पुं [तुर्भाव] १ देस पदाचै (पटम ८६ ६६)। २ प्रसन्-पान बार्चन-प्रसुक्त "पिमुक्तेश व बेख कमो दुल्मावो" (सुर ६ दुब्साय पु [द्विमाम] विभाग चुवार (पुर दुष्माम र् [द्विमाँग] दिल बुदुनारन (बेदव 42 )1 बुरुमासिय न [बुर्मापित] बएव ४५न (पडम ११८ १७ पछि)। बुक्ति पून दिएमि र अधन पन्न (सम ४१)। २ विमयुव, वराव प्रमुक्तर (ठा t)। ३ वि वास्य मन्यवासा वृर्यीच (प्राचः) । सैन ["सम्ब] पूर्वोचः क्री प्रवे (ठार भाषाः सामा राया र १२)। सङ्क्रीत "राव्य] कराव शब्द (खावा १ १२) i तुकिमक्त पुन द्विभिद्यी १ पुरुत्त प्रकान कृष्टिका समाथ (सम ६ ३ सूपा ३१६)

न्यासने रहारये यूढे बंधे ग्रहेम बुविसारखे ।

बस्त पूर्व बोन्जन को पुरिक्षो महीयके विक्ती (सम्बा १२)। २ विज्ञानामधीय (ठा४२)। ३ वि बहाँ पर मिला न निव तके वह देश मादि (छार १--पन ११व)। दुव्यित्रज्ञ रेवी दुव्याज्ञ (परम क र)। दुरमूत्र की [दुर्मृति] धरिष घर्मका (1 37): बुक्सूय र्न [दुस्त ] १ पुरशान करनेवाला बल्-टिडी वर्षेष्ट (सप द २)। २ त. प्रतिक धर्मक्य (बीर ६)। दुष्मृय वि [दुर्मृत] रुखवायै (क्त १० दुषभाव दि [दुर्मेष] तौक्ष को घतन्य (पि ४ २८७ नाट-मुच्च १६६)। दुष्भय वि [दुर्भेद] कार रेवी (सय) : दुमग रेनो दुब्मग (नव ११)। दुसयन [दूसय] वर्तनान और प्राचानी । बन्द 'दुमन्द्रसम्बो' (सा २७)। दुभाग ई [द्रिमाग] बाबा वर्ष (मग १)। द्वम सर्क्ष घवछय् देश करना। २ पूना मारि से पौतना। पुनद (हे ४ २४)। रुपम् (ना ७४७)। नद्ग- हुर्मत (रुवा)। हम 🕇 डिमी १ इस पेड़ बाद्य (हुमा: प्रापृ ६ १४१)। २ चयरेन्द्र के पद्यति-सैन्य काएक धविरति (टाइ., १—यत १ २०६४)। १ यश भैतिक राष्ट्र पुत्र, जिस्ते अन्यान् महावीर के पान धीया नेपर यनुष्टर देवबोक भी नदि प्राप्त भी भी (मनु२) । ४ व. एक देव-दिनान (बन ६३): क्यान ["नान्त] एक विद्यावर नगर (इक) । यस न पित्र रिकुत न बता। २ 'उत्तराभयन नुकका एक सम्बन्त (क्त १)। पुष्टियाची [\*पुष्पिता] 'रहरैपानिक' तून ना सूच्या सप्यान (रह १)। राप र्वस्ति जी कत्तम कृत (स ४ v)। सत्र र्वं सिनी १ यज वेशिक वा एक पुत्र जिसने कातान महाबीर के बात रीमा नेकर अनुसर रेवनोक में बति प्राप्त की वी (ध्यु २) । २ शवर्रे बलवेव बीर बानुरेस के पूर्व-जना के वर्त-पुर (प्रव ११९ पत्रम २ (०४)।

442

हुर्मनय पू दि] रेह-अन्य प्रस्तिल—वैशी बोडी, बुझ (दे ४,४७) । दुस्त्रम म [घषध्रन] चुना मादि से लेपन क्टेंद्र करता (फ्ट्यू २ ३)। दुमणी की दि ] मुक्त, मकान पादि पोठने ना भेत प्रम्य-विदेश पूना (वे ३, ४४)। दुमत्त वि दिमात्री से मात्रवाना स्वर मर्ग(दे१ ६४)। दुमासिय वि द्विमासिकी शे मात्र का शे याप्र-सम्बद्धी (राष्ट्र) । हुसिओ दि [भवक्षित] पुना यदि से पीता हमा तरैव दिया हमा (गण्ड दुमिछ रेवो दुम्सिछ (रिन)। दुमुद्द र्द्र [द्विमुन्न] एक धर्मप (उत्त १)। दुमुद्द रेवी दुम्मुद्द = दुर्गेस (पि ६४ )। दुमुहुत्त हुन [दुमुहुत] बचन मूहते हुन सपम (नुवा २३७)। दुमोक्य दि [दुर्मोक्ष] नौ पुचा से क्षोदा वासके (सूध ११२)। तुस्स देवो इ.स.≈ दत्तवम् । दुस्यद् (धवि) । दुर्मेति दुर्मेति (ग १७७; १४ )। कर्म दुम्मिक्द (ग ३२)। दुम्मद्र दि [दुर्मति] शुप्ति, दुष्टशुद्धिवावा (भारक मुपार ११)। बुस्मान्त्री की [दे] भवकातीर की (दे ४, ४७) वर् )। तुम्सण वि [दुर्मनस् ] **१९**मैश विश्व मनश्क ब्रीहान-चित्तं क्याम (विपा १ १) सूर ३ १४०)। २ दीन दीनतापुतः। ३ प्रिष्ट, देव-पूर्वा (ठा३ २—पत्र १३)। दुम्मण यह [दुर्मनायू] स्तीत्व (ता बदास होता । दह हुम्मणार्मन दुम्मणा-यसाय (नाड-नद्दापी ११, भानकी १२ ३ रवद्य ७६) । दुरमण्याम न [दीमैनस्य] क्यापी कोन भिना वेभी (स्पृष्ट **१**)। धुस्मणि अन् [दीर्मसम्ब] पुण्नको क्षर बन का कुष्ट विकाद, दुर्बनता (का ८, ६ दुम्मय र् [इसक] क्रियर चैवनंदा (स ★ ₹¥) i

४६४ दी) । दुश्मात्र पुरिसीनी भूठा प्रतिपत्त तिनिधा वर्ष (प्रमु १४)। दुम्भार दें द्विमार] विवय गाद, वर्गकर ताइन 'दुम्मारेख मधी सीवि' (भा १२)। बुम्मारि **श्री [दुर्मारि] उत्पट माधै-धे**व (इंदोप २)। दुस्मारुष पूँ [दुर्मास्त्र] हुप्र पदन (महि) । दुन्सिम वि [बूस] कारापित, पीदिस (पा ७४३ २२४३ ४२३ स्वीत काम ३ ) । दुन्मिन क्षेत्र [दुर्मिन] क्षत्र-विदेश । क्षे स्य (गिंग) । बुम्मुह देवो बुमुह = प्रिपुत (यहा)। दुम्हर् र् दुर्मुल वयरेर का कारणी देशे से बरमन एक पुत्र जिसने मयवान् नैमिनाव के पाम कीचा सेकर पुष्टि वार्र थी (प्रेट के पर्हर ४)। बुम्श्रह र्च कि मर्कट, बानर, बन्दर (वे ४, दुरमद् वि [दुर्मेषस् ] दुर्गीत दुर्वति (पर्वद , **t**)ı तुम्भाम वि [दुर्मोक] ९ व वे सीवते बीग्य (यपि २४४)। हुमणु देशो हुमणुम (बर्नेस ६४ )। दुख्यम वि [दुर्शिक्स] दुर्नेष्य, त्रिष्ठका कर्मनन दुःब-साध्य हो नहु (पाना) । दुखबमित्रज्ञ वि [दुर्गतेकमत्रीय] कार देखी (खामा १ १) । दुर्रंत वि [दुरन] १ विशवा परिकाब— रिपान चराव ही यह, जिलका पर्यन्त कुछ ही वह (लाबा १ : परंतु १ ४--पन ६१३ च ७१ व्या)। २ विवस्य विकास नय्ट-साम्य हो वह (तंत्) । दुरंबर वि चि दे के बेचनी सं (वे १. ४६)। दुरस्य वि [इस्स] दिवसी प्रवा करना क्टिन हो बह (तुम १४६) । दुरकार वि [दुरझर] पूरा बळेट बड़ा (वधन) (ऋषे) । हुरगद् ई [दुयमह] नरावह(दुम १७६)। दुरम्भयांसय न[दुरप्यवसित] दुप्ट विनान (नुवा ३७३)।

दुरणुपर वि [दुरमुपर] विश्वरा पकुल विक्ता दे हो सके वह दुस्सर 'एमी वर्डेंग धम्मो दुरगूवधे मेवनताए (नुर १४ ७१ द्धाः १—ेपत्र २६६ छावा १ १)। हुरणुपाल वि [दुरनुपाछ] जिसवा पातन बर्ध-साप्य हो (बस २३) । हुरत्प र्षु [दुरासम्] द्रप्ट माला दुर्नन (का बहा)। दुरस्माम र् [दुरस्याम] चरार पारत (मृत १६७)। पुर्राभ देशी पुर्विभ (प्रणु परम २६ ४ १२ ४४ पेलह२ शोधाया)। दुर्शभगम वि [दुर्शभगम] १ वर्। बुच्य वे गमन हो तके वह वट-गम्य (ठा १ ४) I २ दुर्बीय क्ष्ट से को बाना का नके (सब)। दुरमंच र् [दुरमास्य] रूप्य मंत्री (रूप ₹₹₹}1 तुरवास रि [बुरवास] दुवीव (रुप्र ४०) । द्ररपगन्म रेची दुरवगम (नेरव २४१)। दुरपगाद नि [दुरपगाद] दूप्यनेश यहाँ प्रतेश करना पटिन हो बद्ध (दे १ २६) सम tvz) i दुरम रि [दूरम] यस स्वारतना (का शाबा १ १२ हा ६)। हरमण रू [द्विरसन] १ एवं हाप। २ दर्जन इष्ट ननुष्य (नुपा ११)। हुरदि देवो हुरभि (बा ७२० में हर्)। दुरिशम रेवो दुरिभगम (तम १४१) विधे दुरदिगम्म वि [दुर्यभगम्य] इ.स. हे बाहते बोग्ब दर्शीय चन्त्र हि स बदरावगृह्य भीता दुर्यहरमा (सम्ब १६१)। दुरदियास दि [दुरप्पाम दुरविमद्द] दुरगर की कि से रहत दियांका नहें (नामा ११) धावा का १३१टी छ 420) 1 दुसमय 🛊 [दुसनन] शिक्षांबर बंध का एक रामा (परम १, ४१)। दुरापुणकार (दुरशुपर्व) विकास स्तुतर्वत बर्-अपन हो बद (बर १) । दुशपन[दियाय] ये एवं (व १.३) यम्)।

दराबार हि [बुराबार] १ बुराबाध दुष्ट द्यावरणवासा (मुर २, ११३ १२ २२१। बेली १७१)। २ दुं बुण् मापरस (मनि)। दुरायारि वि [दुरापारिन्] उपर देवी दुसराह नि [दुसराघ] निषम धारावन दुःस से हो गके वह (स्प्प)। द्वारोह वि [दुरारोह] विस पर दू स से बड़ा जासके वह, दूरम्यास (बत्त २३ मा ४६८)। दराव्याअ र् [र] तिमिर, सामगर (रे र, दुरास्त्रेम वि [दुरालोक] वो दुःच से देवा बाहरे देवने को भराम्य (से ४ दः दुमा) । दुराक्षेयण वि [दुराक्षेकन] उत्तर देखी, 'दुरत्तोक्छो दुम्मुहो रतनेतो' (मनि)। दुरायह वि [दुरायह] दुर्भेट दुर्बह (परम **₹** ₹) i दुरास वि [दुरारा] १ दृष्ट पारामना । २ धराब इन्द्राबाता (भींबः वंद्रि ११)। दुरामय वि [दुराशय] दूर पारावनाना (मुपा १३१)। दुससय नि [दुराधय] दुन्य है जिल्हा सामय निया जा सर्वे साध्य करने की मराव (पण्हर ३ एत १)। हरासय वि [बुरासद] १ दुष्तान्य हुत्तैय । २ दुर्भव । ३ दु सह (इस २ ६ राज) दुरिभ न [दुरित] पार (पायः गुपा २४३) । दुरिम न [दे] हुन शीम, पत्नी (पष्ट् )। दुरिशारि ध्यै [दुारतारि] मनगन् संमानाव भी सासमन्दी (संविद्)। दुरिगन वि [दुर्धना] रेगने वो पराच (दुवा) । दुरिष्ट्र न [दुरिष्ट] स्रयव नवत्र (स्ताति १ दुरिष्टू न [दुरिष्ट] रायद यजन-धाप(दन्ति 2 2 X) 1 दुन्द रि [दे] भोड़ा शिवा हुया और टीर न ने नी मा हुया (माचा २ १ च)। दुरुदुत रूप [भ्रम्] १ भ्रमण करत दूपनाः २ वैसर्दृर्द्दिन वीज वी सोज में 🖯 प्रवता । वह दुवदुर्वत (कुर १६, २१व) । दुराक्त देवी दुराप्तर (तुर २६) ।

दुरुत्त न [युरुव्द] दुगोक्ति, दूर वदन (सामं १ १)। दुरुच वि [द्विरुक्त ] १ दो बार वहा हुमा पुनस्कः । २ सौ बार कहने योग्य (रंभा) । ब्रुरुत्तर वि [दुरुत्तर] १ दूरतर, दुर्मध्य (सूम १ ३ २)। २ न बुष्ट उत्तर, धयोग्य पदाः (द्वे१ १४) । दुरुक्तर वि [द्वि उत्तर] को वै प्रपित्र । सय दि [रातदम] एक धी दावा १ २ वी (पत्रम १२२४)। दुरुचार वि [दुरचार] युच्च थे पार करन योग्य (मूचा २६७)। बुरुद्धर वि [बुरुद्धर] निसका प्रजारकठिनाई षे हो वह (शूम १२२)। दुरुपणाय वि [दुरुपनीत] जिल्ला उपनय पूर्वित हो ऐसा (चवाइरए) (दर्सान १)। दुरुवपार रि दुरुपचारी जिसका जाबार कष्ट-साध्य हो वह (नं<u>द्)</u> । ंदुस्त्रवादी [दूर्या] दुर्णकियेप दूर (स १९४३ छन् ११८)। दुरुद्र सम [मा + रह्] मास्य होना नदना। दुरहर (ति ११८: १९१)। वह दुरुहमाण (प्राचा २ ३ १) । संप्र दुरुदिचा दुरुदिचाप, दुरहेचा (मण महापि १८३ ४८२)। दुरुद्ध वि [आरुद्ध] सवित्रह कार वहा हुमा (खाया ११२१ चीप)। दुरूप वि [दूरूप] १ सच्य स्परामा कुरूप दुदोल (ठाव मा१६)। २ मलभूव दा क्दैम (गुक्त कुर्ज़ीया ३१७)। हरूप रि [पूरूप] मगूबि साहि सस्य मन् (तूप १ ६, १ २ )। दुन्द् रेगो दुन्द्। धा दुरुद्वित् दुरु दिया (मूप १ १ २, ११); 'अल ग्रामा र्तिए नारं नारपंत्री दूरहियां (सूच १ 22 2 ): दुरुद्य व [आध्रहण] धविधेन्छ अतर चद् बेटना (स ५१) : , दुरद् र् [िरफ] प्रस्त शीव (रच ह 1 (43 1 दुराभर न [दुरानर] दुस्त चत्र (स्त्रा) ।

एक प्रसिद्ध राजा (तु १)। राग प्रै "राज वहा धर्व (सार्व ६६: कुछ ४)।

लोस विकित्सी विसमी प्राप्ति इ.च से

हो सके वह (परम १६ ४०) सुर ४ १२६)

दुवई की [इपदी] कर-विशेष (स ४१) ।

दुवाज न [बाबन] अपताप नीइन (मद्या १

दुवच्या ) वि [दुवर्ज] श्वराय स्थवामा (श्वर दुवस ) ठा ) ।

सुषय पुंडिपद्री एक राजा, डीपदी का पिता

(श्रादा १ १६ वन ६४८ टी)। सुवा सी

[सूता] पाएक पानी सीमधी (का ६४०

हुवर्षनया की हिपदाहुको | एवा दूपर की

सङ्ग्री प्रीपनी पाएक्वों की पत्नी (प्रप

तुषयंगरहा की [इपदाहरूहा] उसर देखो

२)।

दी) ।

(YE Å) I

१३४)। २ पूँ. एक वरिष्क-पूत्र (तूपा

६१७) । देवी तुलह । हु कि पूंची [दे] कव्यत क्यूब्स (दे ६,४२ सापु १३२)। द्रुष्ठ न दि] वब, क्सइर (दे ४, ४१) । बुद्धंप नि [बुर्काङ] निसना स्ट्रांबन ब्रह्मनाई

से हो सके वह सर्भवतीय (पडम १२ ६८) ४१: देश ११ दुर २, ७८)। बुद्धम वि [बुक्तेम] दुराप दुष्पाच्य (क्य द १६३) नुवा १६३) घछ)। बुद्धकन वि [बुर्छम्] १ दुविक्रेक को दुन्ह से माना मा तके सतस्य (सेंद ३३ स **१६:** वजा १६६: मा २०)। २ जो कठि-भारी केवा नासके (कप्पू)।

द्रद्वमानि दिवे सम्बन्ध समुद्र (देशः ¥1): द्रक्षण म [दुर्कम] दृष्ट नाम दृष्ट कुर्त (बुका २१६) : बुक्तमा ) रेपो बुक्क, कि युक्तमें बछो

द्रवस र प्रणामा (प्र १७६ निष् ११)। दुइस्डिम नि [दुइस्डिन] १ दुटभावदाला। २ दुरु इच्छाराता जिलस्य नेसाल स्थि विविद्वारणामेदि दुव्यमियो वीलह दुर्खासय बस्यरीनार्थं (कुस ४०३३ ३२ )। ३ ।

म्पनी भाष्तरानाः 'पत्रा धा पुनुद्धरिसन्मिका

বিহুদ্বলৈ বৃহ সভাৱী। बोट प्रमुपी थि तुमं रीलुडएरिक-

दुर्जालपो (नुसा २१६)। ४ केंद्रिय दुर्शियति (पाछ) । ५ न. () (

बुद्धसभा यो [दे] सभी, नौक्यनी (देश

बी १ बाबू ११ ४६। ४०)। १ विका

**पुराशा दुरोन वस्तु वी प्रति**शस्ता (महानि तुद वि[दुर्सम] १ दुरा विनरी माहि विज्ञादे में हो बा (स्टब्न ४६) कुमार "पिट्रिं ["विष] कास्त्र क्रगर का (तत

(स्प ६४६ है)। बुबबल न [बुबैबन] बरुब बबन, दुर बर्फ (बज्म ६६, ११) । दुवयण न द्विवयन] दो का बोबक व्यक्तराज-प्रसिद्ध प्रत्यन, दी बंदरा की वायक विवर्षेष्ठ (हे १ १४ ठा १, ४—पन ११८)। ) देखो हुआ गर (है २, ११२ प्रक्रि तुवाराय रे ४१) नुपा ४००)) 'एवडुवाराप' (इस) । पास र् [ पास ] १९१न प्रतोदार (तर १ १९४३ २ १४)। वाहा 🕏 विका । सरभाष (माधा २ १ **१**) । दवारि विद्विपित्री १ द्वारणना। २ 🝨 रामान प्रतिहार बहुपरिशाये पत्तो राय-दुराची तहि बच्छा' (पूपा २६३)। द्वारित्र रि द्वारिक्र दरनामामन, मर पुरस्कारिए (१स)। दुपारिश्र र् [दीग्रारिक] दरशत हारशत (हेर १६ : सीन ६ मुता २६ )। दुवास्था त्रिज [द्वादशम्] बाद्यः ११ (क्या दुमा)। सुद्दिसाम रि ["मीहृतिह] बा**ट्र दृ**ढर्जी का किमाल गा। (मम ६६)।

११)। दाव["या] कदा प्रतार "

(**? इ)** विसय-सञ्चा<u>रय---</u> (पद २०४) । हुविद नि [ब्रिकिय] दी प्रकार ना (दे र EXP TY 1) I हुवीस कीन [द्वार्विष्ठति] बाईब १९ (ना ९ पर्)। दुक्नण्य हे देवी दुवण्य (बक्स ४१ १७) दुम्बम ∫परहर्दे∀)ः हुरुवय व [बुर्यंत] १ दुर विसव । २ ति दुव वर्ष करनेशासा । १ वर्ष-दक्षित नियम वर्गित (दा४ कः विदाद है)। दुक्तपत्र न हिर्देशसी दूर बंदि, शहर बदन (प्रज्ञा १३ १ ६, विदेश । यह भारे ।। दुब्दल देशो दुब्दस (नहा)। दुब्दगण व [दुब्दैसन] धरार वारत हते

(धम १३ के १ २१४)। ब्ह्री, नी (राव)। द्रशास्त्रींग वि द्वारशाक्षित्र गयः संक इत्वीं का वातकार (क्रम) १ दुवास्त्रसम् विद्विष्टरा १ वायक्या । २ न. वगलार पाँच दिनों का अपवास (धाचा स्त्रवा ११ का ६३ स्टल)। इसी. भी (रामा 1 (\$ 5 दुनिक १५ द्विष्य द्विष्यप् १ भक्त दुबिद् दुं}क्षत्र में इस भवसरिखी वाल में उरपद्म द्वितीय धर्म-मझ्ले राजा (सम १६० हीं पढ़न ४, १४१)। २ वळ-लेव में छलन होनैनासा बाठरां घर्य-वज्ञी राजा एक नातु-देन (सम ११४)। दुविभव्य वि [दुविभाज्य] नियका विधाप करना कठिन हो रह—परमासु (छ ६,१— पत्र २१६)। त्विसम्बद्धाः हुन्दिसस्य (स.५.१८)। दुवियद्द्र वि द्विपित्रच दुविद्याच वान-कारी का सूछ सनियान करनेवासा (का दरेरे थी)। दुवियप्प पू [दुर्विकस्प] दूर स्विकं (धारे)। दुविक्य पू [दुविक्षक] एक प्रवान देत 💃

दुवास्तरी क्षेत्र द्वितशासी वास वैत यातम-कृत्व 'सानारोव' यादि वार्यः सन् कृत्व

दु<del>र्वप - दुष्यस</del>ण १४ ६१): विश्व न [विदी नाया धावर्जनाचा बन्दव, प्रस्ताम-विशेष (सव २१) ।

दुस्मदग न [दुदरादुल] धारादुल (समि दुविष्टिसिय न [दुर्विष्ठसित] १ स्वस्क्षती दुष्यम् वि [बुर्वम्] बमय तराव इस विमास । २ तिकृट कार्स्य अपन्य काम की व (बाबा) । मुणि वृ [ मुनि] मुक्ति के निए दुम्संबर वि [दुरसंघर] नहीं दुःप से जाना माम (उप १३६ दी) । द्यवाग्य साबु (माना) । दुष्टियसङ् वि [दुर्भपङ्] मायन्त दुःसङ् भासके दूरम (स २३१ संजि १७)। दुक्यह वि [दुर्वह] दुर्वर, दिसना बहन दुरसंचार वि [दुरसंचार] कार देवी (पुर धवन (स १४०) पुर रे १४४' १४ बन्नि हो सहबह (म १६१) पुर १ 21 ) 1 2 55) t दुन्त्रिमोग्फ र [दुर्पिग्रोध्य] रूद करने को दुस्मत र् [दुष्यन्त] चन्त्रंधीय एक समा, दुस्या रेखो दुरुस्या (हुमा: नुर १ ११व)। घरस्य (पंचा १७)। राष्ट्रका रा पदि (पि १२१)। दुष्याइ वि [दुवादिम्] प्रतिदरका (स्व द्यस्यिक्ति न [दुर्विहत] हुए ध्युहान दुस्मवीह वि [दुम्मवीघ] दुर्बोध्य (माना)। ٤, ٦) ١ दुस्माम् ति [दुम्साध्य] दुव्हर (गुरा व (रम्पूर ११२)। दुव्याय ई [ दुबाइ ] दुर्बंबत इप्र बिक दक्षिदिय हि [दुर्विदित] १ एएव धीत हे XEE) I 'बक्गोलिंब दुम्ताची न य बादम्मी परस्य विया हुमा पुनिहिमविकासिय विशिक्ती दुस्मण्याप रेखी दुमग्रप्प (हुई ४)। पोडयरो (पतन १ ३ १४३)। (मूर ४ ११ ११ १४३)। २ धमुनिद्वि दुस्मत्त वि [दुस्सत्त्व] दुष्या दूर नीव दुष्याय पूं [दुषान] दुरु पषन (एपि ४)। धपरस्थे (पार १)। (परम २७ १)। दुब्यार वि [दुबार] दुख म रीवने योग्य दुब्बाम्स वि [दुर्बाझ] दुर्बह दुन्त से होने दुस्मभ्रप्य देशो दुसम्बद्ध (इस)। मनामें (मे १२ ६६: इन ६८६ टी मुना योग्य (शे १ १ ४ ४४ १३ ६३) वजा दुरममदुरममा श्री [दुप्यमदुप्यमा] शाप ११७ १७१: प्रति ११६)। विधेय सर्वाचन काल बारसी हो। काल का **(=)** घउराँ धीर बर्चारणी रान का पहरा माय दुस्योग्रह वि दि ] पूर्णाय पुच से मारने दुश्यारिम रेगो दुर्वारिम = रीगरिक (प्राप्त)। इसमें सब पदायों के दुएों की समों रूप हाति योग्य (से १ १)। दुश्याओं स्मे दि ] कुनर्यन्ति (पाम) । दुमका न [दुःसंकट] बिगम रिगवि होती है, इसना गरिमाल एक्तीम हवार दुब्राम र् [दुबामस्] एर मरि (पनि वयों का है (द्धा १३६३ इक)। 11c)1 दुमंबर रेगो दुर्माबर (मी)। दुष्टिअह रि [दुरिष्टत] परिपान-परित दुग्समदुसुमभा द्री [दुप्यमसुपमा] पेगा दुर्मध कि [द्विमंक्य] से बार मुक्ते से ही सीम हुनार रम एक श्रेटारीटि सामधेरम का शन नेपा (टा ४, २—पत्र ३१२)। उने भन्दी टर्स्ट्र माद कर सेने की शक्तिकाना परिमाणुरामा बान-विदेश बनमरिला बान दुरियप्रदेख | रि [दुविद्यय] शत का कुटा (पर्में सं १२ ७)। का चनुर्व और जन्मितिही कात का तीमछ दुर्विप्रप्रद्वे । भागमान गरनेशाना पुरिस्रातित दुमग्रप रि [दुम्मंताप्य] रुगेंच (स १ ध्यस (गपः इतः)। (पाय गा ६१)। Y-97 ((X)) दुम्पमाकी [दुष्यमा] १ इत्र काव । २ द्रविकासय रि [दुविहाय] रूप से बातने दुममदुममा देवो दुम्ममदुम्समा (मन एक्सीय हजार वर्षी के परिमालनाचा नान योग्य कानते की कानव 'बाहुनवारिताल \$ p) | निधेय, प्रायमिएी-बात का पांचवा धौर मन्तर्वाद्धान्तरात्तरं (पर्द्धः १ १)। दुमममुममा रेगो दुस्सममुममा (दा १)। उप्पतियोगान का दूबरा आस (उर १४० हां पदाप रि [हरता] द्राय से धर्मन करने दुसमारेगी हुस्मश्चा (मप ६ ० वर्ष)। £\$) 1 बेप्य बडिनार में बन्नान बीप्य (बुद्र २३८)। दुसद्देनो दुश्सद् (देर ११५ नुर १२, दुरममात्र रेगो दुरम । हुप्यितात रि [हुर्गिनी न दिया बात (355 055 दुम्मर र् [टुम्पर] १ वधर वासत्र (राम ६६ ६२ वन्त)। दुमाइ वि [दुस्माध] दुमाध्य, बट्टमाध्य कुष्टित करूर । २ वर्जनीरदेश विशव प्राप हांच्यण्याय वि [द्वितात] धनव देखि ने (रहम ८६, १२)। में नरक्त्य-कर होता है (काम १ २०० बाग ह्या (बाबा)। दुगिवियात्र वि [दुविशक्तिन] दुविशय नव ११)। पाम नाम व ["नामन्] दुध्यभव देनो दुषिमव्य (चत्र)। (बडम २४, ११)। राम्बर का बरागु-जन वर्म (दंबा तम ६७) । मुश्यिमण विदिश्याण्यी रूपंत र च दुर्माना रेको दुस्सुमित (र्राः)। दुम्मक रि [दुरराज] र्रास्टर वरिंग्ड नै जिनदी धानीवता हो। गरे वर (हा ६, दुसुरक्त्य व [दे] यते का बाकूना-निर्देश (f t) t ₹ <del>11-71</del> ₹₹६) 1 (4 44) 1 दुरसद् रि [दुरमद्र] को दुन ने करन हा दुस्त्रियात र दिशिमात्री कार देशे दुश्म तक [द्विष्] देव बरता। बर सके बाग्ध (रहण को है है है है । हार (ft4) i द्दरायान (न्य १ १२ १२)। (et ) t

पाइअसदमहण्ययो

दुम्पमु--दुस्सह

४३५

\$\frac{1}{1} \frac{1}{1} \frac{1} \frac{1}{1} \frac{1} \frac{1}{1} \frac{1}{	848	<b>पाइश्रसदमह</b> ण्णदो	दुस्तदिय—दूभ
है। इस्ता क्षेत्र कार्या के बच्चा के बच्चा के कार्या के किया किया के किया के किया के	इस्मद्रिय वि [इस्मोद्द] इच वे कहा दिया हुण (तृष १ १ १) । इस्मामण ई [इस्सासन] इत्तेवन वा एक पोटा कार्ड. कीरवर्गकोर (चार १२३ वेसी १ ७)। इस्मान्ड दि [दार्गहर] इच मे एवरिक दिया इच दि [दीरिकापिक] इस्ताम्य वार्थ वेश वर्षामण्ड (सि प्रश्न) इस्मान्ड में दि [दीरिकापिक] इस्ताम्य वार्थ वेश वर्षामण्ड (सि प्रश्न) इस्मान्ड में [दिरिकापिक] इस्तामण्ड वार्थ वेश । इस्मान्ड में [दिरिकापिक] इस्तामण्ड कार वेशे (चा १ ॥) इस्मान्ड में हि इस्तामण्ड इस्तामण्ड क्या (मा ॥) इस्मान्ड हों [दुरिकापिक] इस्तामण्ड क्या प्राप्त में हिस्तामण इस्तामण्ड क्या प्राप्त में हुस्तामण इस्तामण विवाद क्या प्राप्त में हुस्तामण इस्तामण इस्तामण व्याव इस्तामण विवाद १ १ गुण ११ )। की. इस्तामण विवाद स्वाव हुस्तामण इस्तामण व्याव हों इस्तामण विवाद स्वाव हुस्तामण इस्तामण व्याव हों इस्तामण विवाद हों हुस्तामण इस्तामण व्याव हों	कर, कर दो)। याम इ [स्पर्श] पूर्व जन्न स्पर्श (पाना र र)। मानि दि [मानिन ] इन में मानिता (पुन प्रशा)। मस्तु इ [मानु जम्मुक प्रशा)। मस्तु इ [मानु जम्मुक पाना मेंत्र (पुर., रश)। विश्वात इ [ग्यास] इन का कर्मकर दिला है। है। सिंद्रा संस्ता की [श्रेयान] पुन्व नक दम्मा (त्रा ४ श)। यह है [ग्याह] इन्व जन्न (यह न र र श पुर द र र र श महार र श)। यह है [ग्याह] इन्व जन्म (यह न र र श पुर द र र र श महार र श)। पुरुष है जो हुसा (कर न)। पुरुष है हुसा विश्व वर्ष रिते है साथ हुया (पाना)। पुरुष है हुसा वर्ष परिते हे साथ हुया (पाना)। पुरुष है हुसा हुसा (यह)। पुरुष है हुसा हुसा (यह)। पुरुष है हुसा हुसा (स्मा है से न र पुष्प हुसा है हुसा है से हुसा एक्स है से हुसा हुसा प्रशा हुसा है हुसा है से है साथ हुसा प्रशा है हुसा है हुसा है से हुसा है हुसा है से हुसा है हुसा है से हुसा है से हुसा है हुसा है हुसा है से हुसा है हुसा है हुसा है हुसा है हुसा है से हुसा है हुसा हुसा है हुसा है हुसा	हैंक)। जनक कट्यामान, किजामान (वि प्रकार पर १)। चंक्र कार्ड (महा)। द्वार मह [चिन्न] चंक्र कार्ड (महा)। द्वार मह [चिन्न] देश्या क्या करण बरियर करणा पुरास (ह ४ १२४)। द्वार पर [चुन्नन] पुत्री करण प्रमा (क्या)। द्वारिय कि [चुन्नन] पुत्री करणेला (क्या)। द्वारिय कि [चुन्नन] पुत्री क्या क्या (क्या)। द्वारिय कि [चुन्नन] पुत्री क्या क्या (क्या १८ देश)। के या (पुत्रा)। द्वारिय कि [चुन्नन] प्रची क्या क्या एक स्टर्ट देश। के या (पुत्रा) पुत्र कार्ट देश। चुन्न कि विश्व पुत्र कार्ट देश। के या क्या क्या पुत्र कार्ट देश के या क्या क्या क्या (क्या पुराव)। व्याप क्या क्या क्या क्या (ह १ ०)। चुन्न कि [चेश्य] पुत्र कार्ट देश कार्य क्या क्या क्या क्या पुत्र कार्ट (क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या हिस्स क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या प्रचार क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या
19   19   19   19   19   19   19   19	हुम्मुक्तित्र कृष्टिक्तिको हुए स्तक, बराव राजवाता (व्या १ १) । तुम्मुय व (दुर्फ्य) १ वृष्ट राज्य । २ वि कृति-र (व्या १ १) । हुम्मान्त्रा को कम्मिन्स (वर) । दुद्द भवः [तुद्द] हुम्बा इव विकासना ।	हुद्दा देवी हुद्दमा (राज्य व १)। हुद्द्द वि [दुर्चेट्ट] पूर्तरीय पुर्शर (लावा १ व)। हुद्द्य देवी दुप्पय (क्यूह र रे—वर १व)। हुद्द्य देवी दुप्पय (क्यूह र रे—वर १व)। हुद्द्य देवी दुप्पय क्यूह्म रेवेट प्रमानेट्ट	है । रहे) । वहस्त श्रु [विस्ति] बामाता (क्या १४०)। इदिवा दूँ [विद्या] कहा बहुईबा चरि इदिवा दूँ [विद्या] कहा बहुईबा चरि इदिवा दूर (व्यादिय) कहा बहुईबा चरि (क्या दूर १)।
	qui (qu) : £ { [u] accessor 11 ) : [Su [u [u] uccessor [u] 2 a p qui (luu r vi du 2c pių site = qu (au r), E [u 2c pių site = qu (au r), e s vi St pių site = qu (au r), St pių site = qu (au r), St pių site = qu (au r), 2c pių site = qu (au r), propiestoriai pie sim propiestoriai pie sim	ह)। इटहुदाई [इट्ट्रूर ] 'इट्टुर्र माराव (धर र र)। इट्ड रेगो दृदय (ति र हेर १२४ हो। धी सी (ति २११)। इट्ड टिज्यों से सरार से तरक कव क्या (ती आयू राग)। इस ति [क्यों दिवसी से सन्द रिश्ल मे हो सह (सन्द दुवा)। इट्डा हिस्स कर [द्विमा न वृत्ती से सन्द वरण	नाइमें, मीडिये (बाद का) । दृष्टिमों की दिशियों नाइमें से नाइमें, नारिये वा वर्षीय दृष्टिकों हों य क्या नार्मी में (यु ११७)। दृष्टिसा (वी) की दृष्टियों नाइमें क्या (वह ११)। दृष्टिस में [वृद्धियों और करनेवामा (मि ११८ के)। दृष्टिस [यू] (वर्षीय केमा र कामा। वर्षीय हम्में वर्षीय (वर्षीय स्थान) वर्षीय वर्षीय स्थान स्थान (वर्षीय स्थान)

```
वृभा रेखे पूआ (पर्)।
तुइ रेको दुई । पद्मसय न ["पत्मशक]
 एक चिग्य (उदा) ।
बूह्य पर [हू] पमन करना विहरना
  बाना । दूरबर (बाबा) । बह- दूर्झंट,
  वृक्ष्यमाण (भीतः सामा १ १ मग
  बाबाः महा)। हेक् बृङ्जित्तय (क्स)।
दृइत न [द्तीस्थ] दूती का कार्य दूतीपन
  (परम ११ ४१)।
 वृद्ध की [वृती] १ दूत के काम में निपूक्त की
  हुई भी समाचार-हारिक्षी हुटली (है ४
  ६६७)। २ वैन साबुधीं के सिथे निजाका
  एक बोप (हा व ४---पत्र १९६)। पिंड
  र्षु ["।पण्ड] समाचार पहुँचान से मिसी हुई
   फिला(याचार १.६)। देखो सूद्रः।
 दूर्ण वि [दून] हैरान किया हुया 'हा पिय-
   वर्षेत्र पृद्धी (? एते) मए तुमैं (स ७६३) :
  वण वृद्धि इस्ती हायी (वे १,४४ पर )।
  द्व (प्रप) देखी दुवज (रिय) ।
  दुजाबद्ध वि [दे] १ मरास्य । २ तहाब,
   तमाव तामाव (दे ४, ४६) ।
  द्रभ सक [दुन्तयु] दूमना दुन्तित होना
    तप्ता पुत्तीति दुमिनना प्रमिनन व बुननछी
    (मा १२)।
   इ.म.ग. देनी बुक्मग (स्त्रावा १ १६---पत्र
    884) I
   दशगान दिशिगियो पुष्ट भाग नता
    ननीय (उर पूरेरे)।
   दम सम [ पू, दायम् ] परिकाप करना,
    र्शनार वरना। दूसद दूसेद (मुपा दः इत्राः
    द्वै ४ २३) । वर्षे दूमिन्बद् (ब्रीव) ।
     बाद्में त(मे१ ६३)। क्वकृद्धि
     ध्यत (गुरा २१६) ।
   दुम रेगो दुम = वरतम् (हे ४ २४)।
    वृसक् शि [दायक] काताप-जनर पीहा-
    कुमग र बनके (बल्हें १ का चन)।
    दूमन वि [दायक] उपताय करनेरापा (मूच
     ₹ २ २a)ı
    दूमगत [द्यत दावत] वरिकार शहर
     (पएइ १ १)।
    दुमम न [धवछन] स्टेर करना (बर ४)।
```

```
तूमग रेको दुम्मण=दुर्मनस् (सूम र
दूमणाइअ वि [तुर्मनायित] भो उदाप हुमा
 ही छद्भिन-मनस्क (नार--मानती ११) ।
वृश्चिल [बून, वाचित्र] संतापित पीड़ित
 (मुपार १६६ २६)।
वृत्तिअ वि [धवस्तित] सकेर किया हुमा (हे
 ४ २४ कच्च)।
द्वासर व दि] कता-विशेष (स ६ ६)।
दूर न दिरी १ मनिकट सममीरा फ्लेब
 अस्य किलो नवा पूर्ण (कुमा)। २ मसिराय
 भायन्त भूरमद्वरं ब्रह्ते (नुमा)। ३ वि
 ष्रस्वित ससमीपवर्ती (सूम १ २ २)।
  ४ व्यवहित धन्तरित (पउड)। गवि
  ["ग] इरवर्सी बसमीपस्य (उप ६४= टी'
  कुमा)। सङ्गाइक्ष वि"सविकी १
  पुर कानेवाला। शीवमें बादि देवलोठ में
  फरान्न होतेवला (ठा व)। तराग वि
  ["तर] मस्कत बूर (पएए १७)। स्य वि
  [स्व] पूर्णस्वत बूरवर्ती (दुमा)। भविम
  पूर्विभव्यी धीर्वकान में मुक्तिको प्राप्त
  करते की योग्यतावासा जीव (उप ७२०
  दी)। य रेको ग (मूच १ १८२)।
   यचिति [ यर्निन् ] शूर्मे एरोकला
  (पि १४)। छड्य वि [ कियक] मुक्ति-
  कामी (माका)। "स्वय पू ["स्वय] १ दूर
  स्पित् साथव। २ मात्रः। ३ मुक्ति का मार्ग
  (भाषा)।
 पूर्वगद्भ देखो दूर-गद्भ (धीत)।
 बूर्रनरिक्ष वि [बूराम्बरित] प्रापन्त ध्ववित
  (वा ६१८) ।
 वूरचर वि [वूरचर] दूर छनवासा (बम्मो
 बुराय सक [बुरायू] बुरिनत नी तरह
  भागून होना बुरवर्डी मापून पहना । अष्ट
  व्ययमाग (वजह)।
 द्धिस्परि [द्धक्त] द्र विवाहका
 (था२ ≈)।
 क्रीह्य वि [क्रीभृत] को क्र हण ही
   (इस ११८)।
 दूरज रि [दूरान् ] दूरीबन दूरतनी ।
   (यार ४)।
```

```
वृसद् रेको दुख्य (संधि १७) ।
दूस सक [ दुप्] धूपित होना विद्या होना।
 दुसद (ह ४ २३१ संक्षि ३६)।
वृस सक [ दूपय् ] दोवित करना, दूपल--
 दोप लनाना। दूसद (भनि) दूसेद (बृह ४)।
दूस न [दूष्य] १ वझ कपड़ा (सम १४१)
 क्रप्प)। २ तंबू पट-दूटी (वे ४, २०)।
  गणि पू [गणिन्] एक कैन माचार्य
 (एदि)। मित्त पूर्विमित्र] मीर्वेचेश के
 नाश होने पर पाटीनपुत्र में ग्रीमिपिक एक
 यमा(यम) । इरन गृही चंदूपट
 षुटी (स २६७)।
वूसस्रवि [दूपक] दोष प्रकट करनेवामा
 (बरमा १८) ।
वूसग वि [दूप क्र] दूपित करनेवासा (सूपा
 २७१ स १२४)।
वूसग वि दियक दियस निकाधनेवाना
 धोप देखनेवाला (वर्मीव ८६)।
वृक्षण न [बूषग] दूषित करना (भ्राग्स ७३)।
बूसण न दूपणी १ दोप धपराव। २
 कर्तक राग (तंदु)। ३ तूं रावण की मौसी
 का सङ्का (प्रथम १६ २१)। ४ वि कृषित
 करनवाला (स ६२८)।
दूसम नि [दुष्यम] १ वस्तर दुष्टः २ दू
 कास-विशेष पांचर्य बारा 'दूसने काले'
 ( पट्टि ११६) । तूममा वेत्रो दुरसम
 दुस्समा (सम १६ ठा १३६) । सुसमा
 रेगी दुरसममुखमा (ठा २ ३ सम १४)।
वूसमादको दुम्समा (सम ३६) इन द३३
 ही में १४)।
दूसर देवा दुस्सर (राज)।
बूसस वि [बे] दूर्मेंग, धनामा (वे ४, ४३)
 पह )।
दूमह रेगो दुस्सह (ह १ ११ ११४)।
बुमहर्गाञ्ज वि [दुस्सहनीय] दुलह बनग्र
 (FI X#1) 1
दुमामण श्नो दुस्मासण (दे १ ४३)।
वूसा इंभ वि [हीस्साधिक] हुमाप वाडि
 में बरान्त चरहरव माति ना (प्राप्त १ ) ।
कृति १ [कृषित् ] नानक्षा तक मेर
'शेर्द्राव के प्रदूष सम्बद्ध हुगीर' (बह ४) ।
```

बुद्धद्व कि [के] सम्बाने बहिन (दे ३ बहुय देखो होपश्च (सिरि १६९)। बृह्यः वि वि ] दुर्मण, मन्बयस्य (१ ४ ४३)। वृद्ध देवी दुक्भग (हे १ ११६, १९%) दुवा सुपा ११७ मिव)। दृष्य सक [दुरसम् ] कुमान्य दुश्री करना । 1845 (feft 140) 1 दृह्दिश रि [दुर्नेसर] दुवी किया ह्या बुमाया हुमा "वि नेश्वानि बुद्दविमा" (कुम्मा ₹₹) t दृष्टिम नि [दुर्गतित] दुष्ट-पूष्ट (हे १ १६) the tole देश इत स्वीता तुक्त सन्दरः १ डीपुट-करायाः २ सभी को सामन्तरः (हे २. १६२) । देश [दे] पत-पूरक सम्बद (प्रकृ t) । देश देवाँ इब (इस १११ वह)। देशर देशो दिअर (रुमाः क्राप्त १२४) महा)। देशराणी को [देवरपत्नी] देवरानी पति के धीर मार्व नी बहु (दे १ ११)। पेई देशो पूजी (नाट-एस १०)। वैत्रस्न न [देवपुर्ख] देव-मन्दिर (हे १ १७१३ दुमा) । "पाइ मूं चित्रभी मन्दिर का स्तामी (वह)। बाह्य पुंत "पाटक] मेराइ ना एक नांदा विज्ञासम्पर्ध गुरुश-क्षीतं च सदबहार्थ (तच्या ११६) । ब्डिस्ज वि [बेब्ड्डिस्फ्रें] देश बात ना वरिशामक (बीव ४ वर)। क्रिकेट देशीयमा भी [देवहासिया] धीटा देव-स्थान (श र स्थाप से)। रेंत देवो दा = धा -द्वा कर [प्रा] देवना वरशेतन राजा रेस्पर् (हे ४ १०१)। वह

मर्चेत्रक (बढ ४) ।

इसिआ बी (दृषिका) प्रांच का मैद (दुमा)।

बुद्धारि [बुद्धारु] दुक्ष-मनक 'स्तरिये

वुसुमिया देशो बुस्सुमित (दुमा)।

रूपो पैरी (श्रमा १ )।

भ्वतादिक वि [दर्शित] विकास हमा वक्ताया ह्या (तुर १ १६२) । देल (दन) देवो देवका। केवद (मनि)। वेट्ट केटो विदु≈ हरू (प्रति ४)। देण्य देशो दश्या (शाबा १ १--पत्र ६६)। देपाल प्रदिवसाधी एक संशीका नाम (शि **२**) ≀ बेप्प देशो विष्य = शेन् । वह ---वृष्यमात्र **(要取 礼なな)** I द्य देशमाण देशो दा = रा। देर वेची बार ≈ बार (दे १ ७६ २ १७% ₹4 (( )) देव उप दिश्वी १ वीटने की इच्छा करना। २ पञ्च करना। ३ म्बरकार करना। ४ बाहुना : १ शाका करना : १ शम्बक शन्य रुरता। ७ विद्या भरता। देवद (संक्रिक्क्ष्म)। देख पुत [देख] १ धम८, बुद, देवता देवारित देवा (दे १ १४ मी १६ प्राप्त **द६) । १ मेद । ६ मान्नतः ४ राष**् नलिः, 'छङ्ग नेई व नई व मारण्यं न देव वेवति सिरं **परण्यां (वस ७ ६% मा**स **१६**) । प्रयुक्तरमेल्बर, वैशाविदेश (मय १९ १ वेत २३ सुता १९)। ६ ताबु नुषि, ऋषि (यन १२ ६)। ७ डीप-विशेष । व समुद्र-विरोप (वएए ११)। ६ स्वामी नारक (धापु १)। १ पूरुप पुत्रवीय (वंदा १)। बचावि [फिल] देव थे बीना हुमा । २ देव-५७ देवक्टी मधे बीर्य (दूष १ १ ३) : बचर्ति [रेग्रुस] १ देव से प्रक्रित (तुम १ १ १) । २ ऐरक्त क्षेत्र के एक मानी निनदेव (स ११४) । किस पुष्तित्र] रेव-द्रव (सूम १ १ ३) । क्छ न क्षिप्त देव-पहिर (हे १ २०१ मुच २१)। बसिया औ डिसियों देहरी क्षेत्र देश-निंदर (रूप (४४): दश के [क्या] रेपनुरी (लाका १ )। कदकद्य ३ [कदकदक]

देवताची ना शोताह्य (बीर १) । निविद्या

(ठा ४ ४)। "किकिससिय पू निकासिय-पिक] एक शवम देव-बादि (प्रव १, १६)। "दिन्दिनीया को "फिरिनपीया देवो वेशकिकिसिया (बुर १) । इस औ **िश्र**प्ती क्षेत्र निरोत वर्ष-विरोध (क्य)। **"इ**स्ट प्र" (इस्ते) बढ़ी मर्ग (पर्यार अ इक)। कुछ देशों कुछ (पि १९८ कम्पो। इक्षिम पु किसिक पुनारी (मारम)। 'कुछिया वेद्यो उद्यक्तिमा (इप्र १४४)। गइ की [गति] देश्योति (हा ४ गणिया की गिलिका विक्तिरहा. ष्टस्य (रामा ११६) । निद्रत [मूह] देव-वन्दिर (बुवा १३) ३४८) । शुक्त व िराप्ती १ एक परिशासक का नाम (ग्रीप)। २ एक बाबी निमदेव (सिरन) । वॉद् िचन्द्र देश क्यासक स्थानम (सूपा ६१२) । धूप्रसिक्त सी हैमचन्त्राचार्य के क्रूप काश्रम (कुद १६)। इस नि [विक] १ देव की पूजा करतेवाला। २ दूं मन्दिर का पुनाचे (कुम ४४१ चौ ११)। बर्कश्य र [च्यान्दर्क] क्लिक्ने का ग्राक्त (वीत १ राग)। असर् [ यरास्] एक वैन दुनि(पैष्ठ ३ पुपांदे४२) । आराजन िंदाती देव का शाहब (पंचार) । जिला र्दु विन्ती एक मानी जिल्लोज का नाव (पर 🕶) । दिंह भेडी देविद्दा (श र श्चान)। ओलाल पू [नायेक] गोप रेको (शन्द्र ३७)। व्याहः वृं ["लावः] १ स्य । २ परमेरनर, नरमात्या (सन्दू ६७) । तम न [तमस्] एक प्रकार नाधन्य कार (स्व.४ २) । देशुह, हात्र और [स्तुवि] देव का पुजानुबाद (प्राप्त)। देख पुँ [रिच] स्थविनाचक नाम (उठ श विश्व विश्व के श्री के भी किया है । भ्यक्ति-वादकवास (विदार १३ हा १)। इध्य त प्रियो किन्तरको अस्य (सम्य १ १६) । बार न द्वारी के नह निर्मय का दूरीय कार, विकास्तन का एक कार (at v १) । बाद पू [बारु] बूत-विरोप देशकार का वेड़ (पत्रम १३ थर) : बास्त्री 🗱 ["बासी] धनलाहे-विरोध रोहिएहै

(पर्या १७—पत्र १६)। दिण्ण, दिश पुं विता व्यक्तिनायक नाम, एक सार्ववाह-पुत्र (राजः सामा १ २ — पत्र ≤३) । दीय र्द्र विद्योप देशान-विद्येष (कीव ३) । दूस न चिंद्रप्य} देवता का बस्र, दिस्म बस्र (बींब है) । दिव दूं [दिव] १ परमेरबर, नरमात्मा (मुपा ५)। २ इन्द्र देवीं का स्वामा (पाष १) । "नट्टिया की "नर्विका" नाचनेवासी देवी देव-मधी (प्रति ११)। ैनवरी की [ैनगरी] ममरावडी स्वर्ग-पुरी (परम १२ १५)। पश्चिमकोस पू विपक्ति-क्षोमी तमस्ताय सन्दर्भार (भग ६ १)। पश्चिमसोस पू [परिश्लोस] सम्प्र-पवि (मग ६ ४) । यक्त्रमा दूरिपर्यंति पर्वत-विदेप (ठा२ ३—५व ६)। प्यसाय र्द [प्रसाद] राजा कुमारपाल क विवासह का नाम (हुप र)। पर्ताब्बर् पुं ["परिघ] तमस्काय, मन्त्रकार (मन ६ ५)। भाइ र्षु ["भद्र] १ देव-धीप का मविद्याता देव (जीव ६)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्थ < १)। मृमि **श्री ["मृ**मि] १ स्वर्ग वैवसोकः। २ मण्याः मृत्यूः भाह्यसन्तयाय सिट्टी **पिरवेनो देवमु**मिमशुपको' (बुपा ४०२)। सद्दासद् पू ["सद्दासद्व] देव-शीप का र्घावप्ता देव (बीव ३) । सङ्गयर पू ["सहायर] देव-नामक समुद्र का श्रामिष्ठासक देव-विशेष (बीव ६ इक)। रह दू [ रहि] एक समा (मत १२२)। सक्स दू [\*स्त्र] रानस-वंदीय एक राज-दुमार (पाउम १, १६६)। रण्यान [गरण्य] तमकाय, भन्तरार (ठा ४ २)। रमण न ["रमज] १ सीमाकनी नयसे का एक स्थान (विपा १४)। २ धरण का एक ब्रचान (प्रतम ४६ १६)। राय पू ["राज] इन्ह्र (पड्य २, १८ ४८, ११)। सिंस वृ [कापि] भारद मुनि (पडम ११ ६x ७म १)। स्रज स्रोग पृष्टियेक] १ स्वर्ग (सर खामारे ४० पुता ६१६० मा १६)। २ देन-जाति' 'नद्रविद्या खं मंत्रे देवलोवा पएखता ? योवमा चडमिहा देउलोना पर्शका तै पहा-भग्राचामी बाल्यंतरा, भोद्रसिका वेनारिएया' (मन द **१**)।

क्षोगगमण न [क्सेक्यमन] स्वर्गर्मे स्त्वतिः नामीवनमणाई देवद्योगनमणाई दुन् अपन्यायाया पृशी वोदिकामा (सम १४२)। बर पु वर देव-मामक समुद्र का यमिहा क्र एक देव (बीव १)। यह की विष् देवांवता देवी (प्रति ६ )। सर्णेकी की िंसंइसि } १ देव-इन्द्र प्रतियोग । २ देवता के प्रतियोग से शी हुई शीक्षा (ठा१ ---पत्र ४७३)। संणिषाय पू ["समिपात] र वेब-समागम (ठा ६ १) । २ देब-समूह । ३ देवों की भीड़ (एप)। सम्म पूं ["शर्मम्] १ इस नाम का एक बाह्यए। (महा) । २ ऐरबत क्षेत्र में करपम एक जिनदेश (सम १४६)। "सास्त्र म ["शास्त्र] एक नगर का नाम (उप 🛰६ टी)। #प्री की ["सुन्त्री] देशायना देशी (प्रति २०)। सुय देखो स्सुय (पत्र ७)। सेज पू ["सेन] र स्वकार नदरका एक सना, विसका दूसरानाम महापद्म वा (ठा१---पत्र ४३.हे)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव (पर ७) । १ भक्त-श्रेत्र के एक भाषी जिनदेव । के पूर्वमन का नाम (ती ११)। ४ भवतान् । नैमिनावकाएक दिख्या एक सन्तद्वद् सूनि (मैठ)। स्मान स्वि देव-प्रव्य जिल-मन्दिर-संबन्धा यन (वंशा ४)। स्युय वृ [कृष] भरत-क्षेत्र के **ब**ठवें मानी जित-वेत (धम १२६)। इर न ["गृह्य] देव-मन्दिर (उप ४११) । १६६य पु [ीतिहेस] महेन दैव विन समवान् (इस १२ १)। । । । । । र् [ानन्त्] एकत क्षेत्र में धामामी करेतींगणी कास में उत्ता होनेवासे चौबीसमें जिनदेश (सम ११४) । । गोंदा की ["नम्दा] १ भववान् महावीर की प्रचम माठा (भाषा २, १६८ र)। २ पदास्त्रै पनम्पूरी सत्रिका नाम (रूप)। ।णुदिपय पु [ानुप्रिय] मत्र, महाराय महानुभाव सरल-प्रहृति (सीप विपार र महा)ः । यरिश्र व [विपाय] एक पुप्रसिद्ध वैन धावार्थ (ग्रुष)। (रक्ष वेनो रण्य (मग ६ ३)। २ देनों ना कीहा स्पन (बो ६) । । । अय पून [शस्त्रय] स्वर्ष (ठप २९४ टी) । हिस्स पु [शिनस्य] परमेघर, परमात्मा त्रितदेश (सन ४३ स

 शहिषद् पृ शिभिपति दिन देव नायक (सूम १६)। देख पून [इंख] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३६): कुरु की किरु मात्रल पुनि-सुवत स्वामी की बीजा-शिविका का नाम (विचार १२६)। च्छांदय पुन [चेन्सुस्दक] कमालदार कुमन्दासा दिव्य ग्रासन-स्वान (माचा २ १४, ४)। विमिस्स पून िविमस्त्र] धन्मकार-चरित, वमस्काम (अग ६, ४--पत्र २६८)। दिसासी दिसा भवनान् नामुपुरम की द्योक्ता-शिविका (विचार १२६)। पश्चिम्स्रोम र्षु ["परिश्राम] इप्यासि इन्यानसं पुत्रशंकी रेखा (सर ६ ४—पत्र २७ )। समण द्री<sup>®</sup>रसणी मन्द्रीघर होए के मध्य में पूर्व-दिशा स्वित एक भैजनगिरि (पच २६६ टी) । बुद् थूं िंडगृह् विमस्काय (मग ६, १—पत्र २६०) : वृत्व देखो बृह्व (क्य १४६ टी, महान् हे १ १४६ टी)। स्तुति ["इर्] भौतिप-राम्र क जातकार (सुना २ १)। पर वि ["पर] मान्व पर ही भक्ता रक्तनेवाचा (पर्)। देयह की [देवकी] बीक्रम्स की मासा, मामामी उरवर्षिणी काच में होनेवाने एक रीचैकर-देव का पूर्व भव (पड़म २ १८४८ सम १४२ १४४)। रेखो देवसी। देवडप्प न [दे] पत्त्व पुष्प पदाहुमा फल ( **4** %, ye) : देवं देवी दा⇒ दाः देवीय स [दे विक्याहः] वेस्तूच्य वज्र (उप वंद्यंगण न [देवाइत्य] स्वयं विकश्च महिन् न देवंगणे रमद' (सम्मच १६ )। वेर्वचन्त्रर देवो देवेचगार (मन ६ १---पत्र २६०)। देपेयगार पुंबिया यद्यर] विभिर-भिषय मन्यकारका समूह (टा४२)। द्वकिन्दिस पु [देवकिस्वय] एक प्रवय देव बाति (ठा ४ ४—पन २७४)। वेबश्चिवित्ताया सी [वेबश्चिम्बिप्सी] मामना-विशेष को सबस देश-योजि में उपात स कारण है (हा ४ ४)।

िषराचकी बत मादि में मॉरिक दूवस

सनामेदाबा (सन = १)। विदाहि वि

इड़)।

t)i

हेबडी रेको देवई : लंदल रे [ निन्दस]

देवय वि [र्यक्य] वेन-सम्बन्धी (पन १२१) ।

देवय न दिवत देन देवता (तुरा १४७) ३

तेबम देनो देव = देव (महा; सावा १ १≤)।

बेंदमा की दिवना दिव धनर (मिन

११७। बर्ग) । २ वस्मेबरः परमध्या (वंबा

देशर क्यो दिजर (ह १ १ ६) नुपा ४०१) ।

मीर्च्य (वेसी १८३) ।

हबरान्धी देनो बेंबरानी (दे १ ११)। बेबिसिय दि दिवसिक विजय-संदर्भी (धोद बर्दा बर्द सुमा ४१६) । देविसभा भी दिपसिया एक परित्रता भी जिमका दूसरा नाम केन्द्रेना का (पुष्क ६७)। दैमिंद पूर्वियेश्ची १ देनों का स्नामी, इन्ह (देव १६२ रामा १ ० प्रामू १ ७)। र एक प्रतिब वैताचार्ने धीर प्रश्वनार (ग्रान २१)। मुरि वं विमुरि] एक प्रक्रिक कैना वार्य और धन्दरार (कम्म ३ २४)। दैविदय 🔩 [देवंग्युक] देवविज्ञात-विशेष (देवेन्द्र १२)। द्विद्विद्व श्री द्विति हो देवना वैसन। १ व एक नुप्रसिद्ध मैन मानार्य और प्रन्तनार (क्य) : देविय दि [दिविक] देव-संदल्या (बुर ४ २१६)। व्यास र [वेवस] एक प्राचीन ऋषि (तूप 1 4 × 4); देवी और दियी है देर-की (वेचार)। १ चनी, चत्र-पन्नी (बिहा १ १) १) । ३ दुनी, नार्री (क्णू)। ४ सत्तुवें चट्टरती सीर म्छारक्षे जिन-देर की माता (नम १६१ १११)। १ रठरे पत्रती के पक्षतीकी (शन ११२) । ६ इफ निदायर-स्या (परम 4 Y) 1 देपीक्य रि [देवीकृत] देवी से बनाबा हुमा चानिवमण्यसी उपनी बीए देवीहमी नोपों (सा ११९)। र्युष्टिमा भे [रेक्स्स्मिका] की वी हर, रेते दी भीव (शाप रे)। दरमर दू [द्वेधर] इन्न देशों ना एक (दुनः)।

**देवोबधाय र्वृ (देवोपपात**] भर**क्ले**न में भागमी क्यांपिशी काम में होनेवाने ठेउँसर्वे विन-रेव (सम १६४)। बेक्स देवो दिक्स = दिम्म (स्प १०६ टी) : चेब्य देखो दब्ब (मा १९२३ महा; मुर ११ ४ प्रमि ११७) 'एडो व देन्दो छाम मलायहरीयो क्रिएएए' (स १२०)। व्य पत्र प्रमुपि **कि** बोडियी क्योडिय शक्त की बालनेवासा (यद कप्पू)। देश्य अणुभः } देशो दश्य-का (प्रकृश्य) । दश्य च्युभः देस दंदिश] एक सी हाम परिमित समीन 'इत्बंधयं बनु देशो' (निष्ट ६४४)। दिस र्षु ["देश] सौ हाव से क्या बनीत (दिक १४४) । राग पं [राग] केल-किटेप (सोवा२ ६१७)। देस एक [देशयू] १ प्रकृतः कारेत केता। २ क्टबाना। बर्जे देसमेंट (सपा ४०६) मुर १६, २४०)। संक वृक्षिका (है १ **■**} I

देख दे दिशा १ मेरु माप (टा२ २ कृष्य) । २ वेतः जनगर (ठा ६, ६; कृष्यः प्राप्त ४२)। ३ समस्य (मिसे २ ६३)। Yस्वान जनइ (ठा३ ₹)। **ददा की** "कशा] वनपर-तार्वा(ठा ४ २) । कास्र**ं क्तो** याक्षा (विशे २ ६३)। अनद्र य ियति वारक उपाधक वैत पृहस्य (कम्बर सैधाउ)। ज्युपि [ैह] . पैरा की स्पिति को भारतेवाला (इस १७१ यै)। भासाकी [भाषा] के की बोली (सह ६) । मुसम ई [मुपम] एक केरलबानी महार्थ (पदम १६, ११९) । बास प्रविद्यान्नी प्रचेत्र, स्वतर, बोग्व सनम (पाम ११ १६)। साम पि [<sup>\*</sup>राज] देश ना राजा (तुला १५१)।

बन्द्रसिव देनो । बनासिय (नुतः १६१)।

"विराह की ["विर्रात] बावक वर्ग कैन

मुहस्य का का धनुकत, दिशा माहि का

योशिक स्वान (पेना १ )। विरच पि

[दिरत] यानर ज्यागड । २ तः शांचरा

মৱ ३)। रिस्तीर्ए (बाका २ १ ३ ७)। (बान २४ हेरा क्या ब्राह्म १११)। २ क्य-हैश द्वर (निष्ठे १४२६) । ६ प्रोर्ट्स प्रवास

["विराधिन्] बही धर्व (खःमा १ ११---पंत्र १७१) । विमास न [पिकारा] श्चानक का एक इस (सूपा १६१)। विग्रा सिय न ["वकाशिक] वहा सर्प (पीन मुता १६६) । । हिंच र् र्ीषिप रिका

(पडम ६६ ६६) । शहितक पूर्विक पिंदी समा(शा(४)। इस देशो चंस = हैप (रम्ण ३६) । इसंतरिक वि विशास्तरिको मिल देश का विदेशी (उप १ वर टी' कुन्न ४१६)। दूसग देनो दूसप (१ २६)। देसज न दिशनी क्यमः उपरेतः, प्रव्यक्त (दं १)। २ वि ज्यदेशक प्रकास । स्रो गी (इस ७)।

देसणा की [देशना] कारेड प्रवास (स्पर्ग)। वेसय वि [देशक] १ कार्रशक, प्रवयक (६म १) । २ क्षित्रहोतामा बत्रबानेनाना (तुपा१=६)। देसराग दि [देशरमा] 'देशरम' ६४ में मनाहमा देशसमाधि मां(धादा२ ३, ₹ ¥) i इसि वि [द्वेपिम्] क्षेप करनेतला (रम्छ

14)1 दुसि } विदिशिक्] १ मोदी मोदिक वेसिअ मानवाना (विने २९४७) । २ रिक्कानेवाचा । १ प्रपदेशक (विशे १४९६) देसिज वि [देश्य देशिक] रेठ में अलन, रेय तंत्रको (जा ७६ द्वा प्रकृत)। सह र्1 ["राष्ट्] देखेशया शा राज्य (शब्द ६)। इसिज विदिश्या १ कवित जादि?।

९ क्शार्यकत (इ. ५१) प्राप्त ११ ११६ दसिभ ति [दशिक] बृहक्तोवन्यानी देसिम रि दिशिकी १ विक प्रसादित १६२)। "सहाक्षी

िंसमा दिनशा (स ६ ११४)। बोर्किर्य वि [म्रिकिय] एक ही समय में से वेसिल रेको देवसिका 'पहिदय रिवर्ष सम्बं' कियाओं के चतुमन की माननेताला (ठा ७) । (पक्षिमा६)। देसिमय वि दिशिववन् विक्रो उपरेश दोकर देवी दुकर (भवि)। दिया ही वह (सूम १ १, २४)। दोक्टार पूर्विकाशरी क्यूड नर्पस (\$\$ Y) 1 वैसिद्धग देवो देसिछ = देख (बृह ६) : दोस्पंड रेखो दुन्पंड (मनि) । ब्सी की [ब्रेरी] भाषाविशेष घरवन्त प्राचीन दोर्ख डाभ वि [प्रिकण्डत] निसके से दुस्के प्राप्टत भाषा का एक भेद (दे १ ४)। किए गए हों वह (मित)। भासा भी विभाषा विशेष मर्थ (छामा १ दोर्गीछ वि [जुगुद्सिन्] क्ला करनेगला रा भीप)। (पि ७४) । देमुण वि [देशोन] दुत कम धरा की कमी-दोगद न [दोगस्य] १ दुर्नेति दुर्रेता (वंचन (देश प्रश्)। नाचा (सम २ १ ३ ई.२ थ)। ४)। २ वास्त्रिय निर्वेनता (मुग्र २३)। देश्स वि दिश्यी १ देखने योग्य । २ देखने दोर्गुसि देवो दार्गिद (प २१४)। **११)**। को शस्य (स १६१)। वोर्गुन्य पुन [दोगुन्दरु] एक देव-विमान वेड वेचो देवला। देवरी, देव्य (पता १६ ६) ह (रोन्द्र १४६) । नि ६६)। वह देहमाम (मग १ ६३)। योगुंदुय पुं [दीगुन्दक] एतम-वाठीय देव वेड पुन विद्वी १ राधेच नाम (की २८३ क्रम मिनेव (सुवा ११)। ११३ प्रामु १४)। २ ⊈ मिराच-किरोप दोम्गन [दे] ग्रुप्स ग्रुप्स (११८,४१८) पङ्)। (इक पएस १)। रथ न [रेत] मैदून दी मुपा ४६३)। दोग्गइ देशो दुग्गइ (सुर व १११) । कर (बजारे व)। बहुंबलिया भी विद्यालिका निजानित वि [कर] दुर्गेदि-सनक (पटम ७३ १)। भीख की धानी किया (ए। ए। ११-पत दोग्यद रेस्रो दोग्रस (मा ७६) । (बद ४' ७) । दोग्यह } पृदि] हाची हस्ती (पि ४३६ दोग्यह } पर् पाम महा नहुम ४ छ दोगह > ४११)। 1 (335 बेहणी की वि] पंत पर्दम नाश कांशे (ਚੱਤਿ ४)। (₹ X, Yc) I दोप्ट पू [द्विष्ट] विदावर वस क एक वहरय (पर) न [देवगृहक] देव-मन्दिर राजा का नाम (पद्रम ६, ४१)। (वकारेद)। दाय वि [द्वितीय] दूषरा(सम २ व दिया इंड्रको धी दिइसी शैचट, हार के हीने का नवडी (सा ४२४) दे १ १४, द्वार १४३) । 1 (P 1 दाचन [दीस्य] दूवानः दूव-नर्म (ग्राया १ देहि प्रदिन् यामा जीव (स १६६)। द्याव४)। इहर (भा) न [देवकुछ] देर-कान, महिदर दोष म [दूस्] दो बार, दो दस्त एई (नींव)। च निष्यामिता बोर्च्च दर्ज्य समुप्तबंदस्त् (नूर दा म [द्विया] के मधार के के करू (दुवा 7 74)1 २१३: ११२) । दोर्चगन [द्वितीयाज्ञ] १ दूसस सन। २ वृक्ति व द्विती दो प्रमय पुरव (हु१; पकाया हुमा शाक (१६१) । ३ तीयन, EY) I कड़ी (मीव ११७ मा)। दा र् [ दोस् ] इत्य बाइ (शिक ११६ दोबीह्यु [द्वितिह्य] १ दुर्गेन । २ सार (यः क्यू)। (5 t t t ) i क्मप्र वर्ष) । हाम६ थैं [द्विपदी] धन्दनिकेत (रिव) । क्षोत्रस्त विद्यासी क्षेत्रे सोग्य (साका २ दाभाव हि [द्विमान] से मानराता, से हामास र्षे [दे] हरन, देन (१ २, ४१) । ¥ ₹) i बएरगमा (स्र १४७ दी) । ŧ١

दोण प्रद्रीण] १ भनुदेव के एक सुप्रसिद्ध धानाम को पाएडन भीर कीरवों के पुरु से (स्तमार १६३ वर्णा १४) । २ एक प्रकार का परिमाख (को २)। सहस "अन्य] नगर, जन सौर स्वन के मार्गवासा शहर (पएइ १ ६३ वप्पः भीर) । "सेह पू [मेघ] मेन-विशेष, जिसकी बारा से बड़ी वसस्ये भर काम वह वर्षा (विसे १४१८)। स्या की [स्वा] सब्मण की की ना माम बिरुल्या (परम ६४ ४४)। दोण अर्थु [दे] १ सम्युक्त गाँव नामुखिया । २ हानिक इसवाह इस बीवनेवाला इरवाहा दोणधाकी [दे] सरवा मद्रुपतनी (देश दोणीकी [डोर्जा] १ नौका छोटा बहाव (पण्डर रेवे २ ४७ वस्म १२ टी)। र पानी का बड़ा हुँडा (बलू: हुप्र ४४१)। वोत्तकी की [दुस्तरी] हुए मधी 'एकतो बर्मी क्यती दोत्तरी विवहाँ (सा १६ बोरम न [बीसस्थ्य] दुम्स्यता दुरंदा दुर्नेति दोदाण वि [दुर्बान] दुवा से देने बोग्य दाहिल पूर्वि] वर्ष-कृष वसके का बना हमा माजन-विशेष (दे १ ४१)। दोत् वि [दोग्यू] दोइन-नर्जा (स्प ११ दी)। दोधक } न [दोधक] दोधक (तिय)। धन्द-विशेष दोभार पू [द्विभाश्चर] विवाहरण के भग करना (स १ १ -- पत्र १४६)। दानिकम दि [दुनिकम] सरम्छ कट्ट छे बमने योग्य (मण ७ ६--पत्र ३ १)। दोपुर **र्ष** [द] गुम्पुर स्वर्ग-गायक (यह) । दास्यक्रिय देवो दुस्त्रक्षिय (माना २ ) बाय्यद्व न [वार्येक्य] दुर्यंतजा (रि. २००)

1602

वोमणीसय-दोहि

दोमासिक वि द्विमासिकी के मान का (यव भूर १४ १२)। ब्री. व्या (सम २१) ।

दोमिय (भग) देखो दमिक = दावित (मनि)। बामिक्षी थी [बामिक्षी] तिनिनिक्षेप (राज)। दोसुद्द विशिष्ट्रस्य देश पुरुषाता। २ र्षे भूप-निरोध (महा) । १ दुर्शन (वा २११)। दार पूर्वि १ क्षेत्र भाषा मून (परन ४ प्रः पुत्र १२६ सूर ६,१४१) । २ क्रोटी रम्ती (भोष २१२ १४ मा) । ३ इ.टि-सूत्र

( X 14) 1 वारिया देवी दोरी (सिरि ६६)। श्री ध्ये शि दोधे सबी (या १६)। दास यह [दासय ] १ दिलता । १ भूतता । दोनइ (हे ४ ४०)। दोलीत (नणू)। शेष्टमय न [दाखनक] क्रूपन धन्दोतन (t = x1) 1 वासमा १ थी [दोस्र] मुत्रा दिशेता (गुपा बोस्म ) २८६ दुमा)।

दोस्पद्गापि [दोस्पयित] १ दिला हुमा। २ संश्रमित (नेका ११६) । दोख्ययमाण वि [दोध्ययमान] १ दिनदा हुमा। १ संराय कट्याहमा (मुता ११७) नबर)। बासिया रेनो दास्य (गुर १ ११६) । वान्तिर रि [दार्लायत्] भूवनेशवा (दूमा)। शाय पृं [दाव] एक सनाये बाहित (राज)।

इप्पट की [द्रीपईंग] समाहूबर की करन पाल्डा-पानी (गाया १ १६ उर ६४ ही; **4(x)** 1 ब्राबयम देनी मुख्यम = प्रिबंदन (दे १ EY (MI) बायार (या) रेनो हातर (गान) । श्वारिम १५ [शीबारिक] बाराल बर

१ ११ मन ६ ४१ मूना ४२१)।

नापारिय े बार प्रजीवार (शिच्न ६, छाया

१ १)। इ.वि. पी दोल-नालका पूर्वित पोक्क रोमहं नुवाँ (मुपा ६२१)। दास दृदि] १ सर्वे सावा (१३ ४६)। २ नीय क्षेत्र पुस्सा(देश १६) पर्)। १ हीप ब्रोड (बीप' कम्पाठा १ वत्त ६) सूध १ १६। भएल २३। पुर १ ३३। सला माँग दुम १७१)। दोस र [दोस] इतन इस्ट नाइ (ध ર, 🗱 ા दोसभिञ्जीतः पूर्वि]चन्त्रः चन्त्रमाचन्द्रः (३ X, X() t दोमा की दोपा राजि राज (दूर १२१)। बोसाकरण न बिंगित और (रे ४,४१)। शासाणिज वि वि] निर्मन किया हुया (वे X X() 1 दोसायर पुं[दोपाकर] १ चनः, चार (अप ७२ ३६८ सूपा २७५)। य दोवीं की बाल कुछ (मुसा २७६) ।

दोनेश्री की दि दार्थकात का भोजन (वे ४.

दोब्बद्ध केलो दोब्बद्ध (से ४ ४९, व

दास देवी दुस = पूज (धीप, पप ७६० दी)।

दोस १ दिवेष १ प्रशा गुरु ए १व (बीप)

सुर १ ७३: शल्ब ६ : प्रस्तु १३) । हिन्

वि [क] दोप ना वालकार, विद्राल् (वि

(पर्)। दोमासव दू [दापाधय] रोव-द्रक, दुर (पदम ११७ ४१)। दासि रि [दापिम्] शोपराना, शोपी (दुप्र Yta) I **दोरिश्चर् [दीध्यक]** बखदा व्यतारी (बा १२) बजा १६२)। श्वासिम [ब] देशो बासीण (पएड २ ३) यासिया [ दे ] तीव देवी (बा १, ४—वव ६)। नासी भा कारीएक क चनी (स्वर १ इस एकार) होसिमी थी [दे शांपम ] व्योग्ना, पत प्रसारा (के में, में ) समित्राण्या बीबिएी

कर्च (रूप ४३ )।

दासारमञ्जूषे दे दापारहा पन्न पार

दोसिछ वि [दोपमस्] शेक्पुक (वस्य ११ वै) । दोसिस वि [दे ] देव-इच्च, हेवी (विशे ttt )ı दोसीण न दि| रात का नावी सब (पदाहरू श मीन १४४)। वोसीछ वि [बुस्सीछ] दुष्ट स्वत्रावदाका (पद 98) I दोसोस्स विव [द्विपाडराज्] वतीस ३२ (कप्पु)।

दोइ एक [बुद् ] ब्रोह करना। यह दोइंड (संबोध ४) । कोइ **व [वोइ] कोइन (के २ ६४)**। बोद विदिश्यों शेहने मोग्य (बाग १)। होइ र्षु [द्रोइ] ईप्याँ हैद (प्राप्न मिन)। होइमान [दीर्मान] इट काम इचाह कमनतीकी (पराह १ ४) सूर ६ १७४- मा ₹१२) । बोइग्गि रि [दीर्भागित] कु मान्साना कवननीव सन्द-स्राय (भा १६)। क्षेद्रपान [दोद्रस] दोद्रना दूव निकलना (परहर रे) ≀ बाइज न [पाटन] बोहन-स्वान (निष् २)। दोइजहारी की [दे] र बोद्देशली की (वे

१ १ का ६, १६)। २ पनिद्वासी पानी मध्येनाती की क्लहारित (दे १८ १६) । क्षांद्रप्री की क्षित्र करका, कर्रम (दे ४ शहस वि [बाह्य] बोह्नेवामा, (गा ४६२) । बाह्य वि [होहक] होह नरनेवाता. देव्याँद (कर ११७ दी। भूषि) । क्षोदम र्ग [दाइद] गर्मिगी ध्ये वा मनोरव (R t ttm 221 44): दोद्दा म [द्रिमा] ये बतार (११ १७)। बाहाइअ रि [द्विपाइन] विका के बत्व शिया नया हो नह (है १ १७ दुमा)। बादासम्बन [द] नदीन्द्रः वचर (६ ४,

बादि वि [दादिन] मत्त्रेगाना, टरानेताना

(चा ६६६) ।

दोहि वि [त्रोहिस्] होह करनेवाला (यवि)। दोहित्या वि [त्रिक्षिमा] क्षेत्रका को दुरुण क्लिया गया हो वह (आह ११)। दोहित्य वृं [दीहिल्ल] कहनी वा सहका मार्ती (के द १ १ पूरा ११४)।

दोहिसी को [दीहिती] सड़की की सड़की सीतनी (महा)। दोहुज दे [द] यह मुक्त पुरस (दे ४, ४६)। दोम देखी दोस = (दे) अजियसम्बर्धेसे (दुज दे)।

त्रवाह (या) न वि सम् । मन बर, भीति (दे ४ ४२२)। त्रह वृद्धित् । बरा वसासन स्टोबर, सील (हे २ ८ तुमा)। त्रहें (या) की [प्रिट] नवर (हे ४ ४२२)। त्रोह वेको साह स्टोब (वि २६७)।

## ग इच विरियाइअसङ्महण्यापिम ब्राम्यदस्वरंगनाणी वंबनीयन्त्रो तरंगी समयो ॥

## ध

र्धस सक [स्थंसय] १ नाश करना। २

भमाद्र सक [ मुभ् व्याव करना को इना।

(सम १८)।

पंताबद् (हू ४ ६१)।

दूर करना। चंसद (सूच १ २ १)। चंसद

घ पूँ चि शत-स्थानीय स्थम्बन वर्ण-विरुप (प्राप प्रामा)। मझ देशो धव (गर )। र्धन्य पूँ [म्लाइका] काक कीया (सर वरशः वचा ११)। र्धन दे वि । भीव अमर मनव (दे १,१७)। र्घतन व्यान्त । सन्वकार, प्रविष (मूर १ १२३ वद ११)। र्घत न [स्वान्त] सद्यान (देवेन्द्र १)। चंत्र हि यदि यदिस्य यद्यन भंद-पि सुध्यसमिका' (पच २६३ विसे ६ ११, बह १) । धंत वि [यमात] १ यन्ति में तपाया हमा (स्तामा १ १ मीना परश १ १७ विसे ३ २६ मनि १४)।२ राज्य-पूक, राज्यित (पिंड) 1 र्घभा की [दें] सन्त्रा शस्म (६ ४, ४७)। चंत्रक्य न [बन्धुक्य] द्वरत्त का एक नगर, को मान कन चेंबूका नाम से प्रसिद्ध है (सूपा ६४८; भूत्र २ )। धंबोडिय (बर) वि [भ्रमित] पूनाया हवा (ঘড়) ৷

र्धस धक [ व्यंस् ] नट होना । धंसद, वंसए

(पड्र) ।

र्मसाहित्र नि [मुक्त] परित्यक क्षेत्रा हुमा (इटमा)। र्भसाविक्ष वि दि व्यागत नष्ट (वे ४, **1()** भगमग धक भिगमगाय् र जब्नव मानाज करना । २ जनना, मतिराय बदना । बद्ध भगभगेत (खाया १ १) प्रस्त १२ ३१ मिति)। धगधगाइभ वि [भगभगायित] वानुनाग् मानाननाचा (कप्प)। भगभगा देशो भगभग । वक्क भगभगगञ्ज-माण (दि ११६) । भग्गीकृष वि [दे] वदावा रूमा स्टब्स्त प्रदीपितः 'कस्यी वरमीलमी व्य प्रवर्णेशं' (बा १४) । भव रेडो भय = ध्वन (दुमा)। भट्टरेबो भिट्ट (दे १ १६ १ पटन ४८ २६: कुमा १ वर)।

बहुम्बुण १५ [धृष्ट्युन्त] धना द्वार का घट्टेंग्बुँग्ग } एक पुत्र (हिं२ १४० खावा १ १६ कूमा पद्र पि२७०)। **घड़ न दि**] बढ़ यमे के नीचे का शरीर (मुपा २४१)। **महर्दिय न** [दे] वर्षना मर्वारव (मुपा १७६) । भण न भिनी रे विश्व विमा स्थापर चंगन सम्पत्ति (उत्त ६) सूम २ १ प्रानू **११ ७६ पू**मा)। २ गरिंगुस मणित भेष या परिच्छेच ब्रध्य--निनदी से धीर नाप मादि से क्य-विकय योग्य पदार्थ (कप्प)। ३ पू कुबेर, कम-पर्कि 'सूच यो सिट्टी यलोध्य बएकमिम्रो (सूपा ३१) । ४ स्वनाम-स्यात एक येद्ये (एन ११२)। १ वन्य सार्वेडाह का एक पुत्र (खान्धा १ ta)। इत्तः इत्तः वि [ बस् ] मनी जनवाना (कुप्र २४%) नि रहर संक्रि १)। "गिरि व विगरि एक बैन महर्षि को अञ्चलामी के पिता पे (रूम पर १४२ थै)। शुच पूँ शिक्षी एक कैन मुनि (मायम) । गोव पू िंगोप] बस्य सामैनाइ का एक पुत्र (लामा ११८)। देहर पू ["स्ट्रा] एक वैतमुति (कप्प)। विदि पूर्वी "नन्दि दुवना देव-प्रच्या, देव

परिमाश्च (म्रसूट बी ११)। १ पूर्वपना

भागिक देनों की एक भाग्ति (तम १९)।

कुडिस न [कुटिसचनुष्] नक पनुष

(राव) । स्माह पु मिन्ना नामुन्ति ऐव (इ.इ.)

मचरतुम र् [धार्तराष्ट्रक] इट की एक

भारत वितके बुद्ध भीर पान काले होते हैं

(पद्ध १ १)।

करनेताला, बन्धे । १ दूं, इक चोही (रंब

धर्णज्ञवर्षु [धनद्वस्य] १ ग्रद्धंन यध्यव

Y)। ३ एक धना (विताद २)।

घत्ती को [धात्री] १ बार्ट उपमाता बार्ट (स्वप्न १२२) । र पूर्विणी मूमि । ३ माम सती-बुझ घाँवने का पेड़ (हे २,८१)। देखी घाई। सन्दर् [यन्दर] १ इत-विशेष वनुषा। २ न क्तूराका पुरूप (सुपा १२४)। घस्रिज कि [घास्रिक] विश्ने बद्धा का ल्या फिया हो वह (पुपा १२४ १७६)। घरम वि ज्विस्त विशेष प्राप्त नट नारु हुया (हैं २ ७६ छछ)। चम्र देखो चण्य ≔ वन्य (कुमाः प्राप्तु ४३ ८४' १६६ उपा) । समान [साम्य] १ भान सनाम सम्न (उना गुर १ ४**१) । २ घान्य विशेष** कुतल्य ह**इ** धन्नय कनाया' (पव ११६) । ६ वनिया (स्ति ६)। की ब पूँ विकेशी का व में होनेवासा बीट, कीट-विरोप (बी १७)। "लिहि पूजी ["निधि] बात रखते का मर, कोशाबार, महार ( का ६,६ )। परमय पु [<sup>\*</sup>प्रस्यक] क्षात्र का एक नाम (वन १)। <sup>\*</sup>पिक्रस न [\*पिटफ] नाम का एक नास (वव १)। पुंखिय न पुंक्षितभान्यी इतद्वाकिया ह्या मन्दर (ठा ४ ४)। "विकित्सत्त न [विद्यिप्तभाग्य] विरोधी सनान (ठा ४ ४)। विरक्षिय न विरक्षित धाम्य] बाबु से इंक्ट्रा किया क्रुय धनाव (ठा YY) । संबद्धिय न ['संबर्धितमान्य] केंद्र से काटकर करें-- बतिकान में नाया पना चान्य (झ ४ ४) । स्मर न ["सार] कोहायार, बात रक्ते का बृह् (निष्ट्र व)। बना की [बान्य] धन्त, धनावः 'सानिव वास्तिको बनामी सन्ववास्त्री (उप १व६ हो)। धना की [घन्या] एक की का नाम (उना)। भ्रम सक भिया दिवस्ता की कता भ्रात में तप्ताना। २ शम्य करना। ३ वायू पूरना। बमइ (महा)। वभेद (पुत्र १४६)। बहुः. धर्मत (तिषु १)। क्यक धरममाण (क्या ष्णाया १ ६)। धमग वि [ध्यायक] वमनेवाला (ग्रीप) । धमण न [धमन] १ घाय में तपाना (बाचानि ११७)। २ वायु-पूरस्त (पर्सार १)। ६ वि. यक्य, वननी मानौ (राज)।

धमिष ) श्री [धमिन नी] १ मक्य. धमणी अमनी चींकनी। २ नाडी सिख (विपार १ उपाध्येत २७)। घमघम धक [धमधमाय] 'बन्-धन' धादाब करना" 'बनवनइ सिर' विण्यं जायह सूर्तेष भग्नए विद्वी (सुपा ६ ६)। वहः धमधमेत धमधमार्थत धमधमेत (मुपा ११४ नाट---भाषती ११९३ ग्राया १ ८)। बमास पूँ [बमास] क्य-विशेष (पएस ₹**७**) i घसिअ वि [ध्यात] विसर्वे बायु पर दिया क्या हो वहः 'वनिमो संसो' (द्वम १४६)। चमिय वि [बमात] बान में समया हुवा 'बीमयक्खय कुकाए हाधनर हुन्म' (मोह X#) I भ्रम्म पुं[धर्म] १ एक देव-विमान (देवेला १४३)। २ एक विन का जावास (संबोध X4) 1 भस्स पूर [भर्से] १ ग्रुम कर्मे कुरात-अनक सनुद्वान, संशाचार (ठा १३ सम १ २ भाषा सूच १३ ६, प्राप्तू ४२ ११४ से ४७)। २ पुरुष मुक्कत (सुर १ १४) मान ४)। ३ स्वसाव ऋति (तिवृ २) । ४ प्रण पर्याय (ठा२,१)। १ एक शक्यो पदार्थ, भो भीव को परि-क्रिया में सङ्घयता पहुँचाता है (नव ६)। ६ वर्तमान धवसप्तिशी काल में धरान पनइएवें जिन-देव (सम ४३) पश्चि । ७ एक वर्गिक (का ७२८ टी)। द स्पिति, मर्याद्ध (माचु २)। १ कनुप कामु क (मुर १ ५४ । पाम ) । १ एक कैन मुक्ति (कप्प)। ११ 'सुनक्रवाङ्ग' सून का एक सम्मयन (सम ४२) । १२ बाबाद, चैति, व्यवद्वार (कप्प) । कत्त प्रशिक्ष किय (मार्क)। सर्ग [पुर] नगर-विशेष (रंस १) : व्हेंतिश वि ["काबिन्ध्य ] वर्ग भी पात्रवाला (भग)। कहा की [क्या] वर्ग-सम्बन्धी वात (क्य, सम १२ स्त्रामा २)। कवि पि िक्यिन् वर्गक्ता क्ह्नेवाला, वर्गका -उपदेशक (योथ ११६ मा था ६) । कामय वि [क्यमक] वर्षकी काङ्काला (भव)। काम वूं [काय] वर्ग का सावन मृत तरीर (पंचारक)। कलाइ वि [क्षेत्रायित्] वर्ग-प्रविपादक (ग्रीप)। बन्ह्याङ् वि

**िं**स्यादि नर्मसे क्यादिशासा धर्मीत्मा (भीप)। गुरु पुँ [गुरु] वर्ग-वर्गन प्रद, मर्मानाय (इ.१)। गुन नि [गुप्] वर्ष रब्रह (पर्)। भोस दूं [भोप] करैएक मैन मूनि चीर भाषायाँ का नाम (भाषु १ ती **७ मार्च ४** मग ११ ११)। **विका**न [\*चक्र] जिनदेव का वर्ग-सकाशक च≢ (पव ४ : सुपा १२)। **चक्काट्टि पुँ [ैप**क-वर्त्तिन् विन देन (मादुर)। प्रक्ति पू ["सकिन्] जिन भग्धान् (कुम्मा **१**)। जगणी भी जिननों भर्म भी प्राप्ति करानेवासी की भर्म-वेशिका (पंचा ११)। जस पुं[ यरास्] वैतप्रुति-विधेष का नाम (बार४)। जागरिया की "जागर्या] १ वर्ष-विश्वत के लिए किया बाता बायररा (मग १२१)। २ वन्म से इस्टवें दित में किया बाधा एक उत्सव (कृप्य) । बस्द्रय पू **िच्यत**े १ वर्ग-योगक स्थव दश्य-स्थव (राम)। २ ऐरनत क्षेत्र के पाँचने मानी वित-देव (सम ११४)। <sup>\*</sup>बस्मण त [<sup>\*</sup>स्थान] वर्म-विन्तन सूत्र स्थान-विशेष (सम १) । वस्त्राणि वि [वस्त्रानिन्] वर्ग म्पान से पुक्र (माव ४)। हि वि [विम्] वर्गेका समिकापी (सूध १ २ २)। पायम वि नायक र वर्षका गैता (सम १ पति)। ण्युपि 📆 वर्नका सता (रंग ४) । दिस्तवर दू ["दीर्घक्र] निनमपदाल् (जल २३, पवि)। देखन िक्षा पक्ष-विरोग एक प्रकार का इतियार (परम ७१ ६३)। "रिव देवो "ट्वि (पंचर v)। स्वकाय पू [शस्तकाय] वित किया में शहायदा पहुँचाने बाबा एक सकती पराचे (सर)। इस नि विसी वसे की प्राप्ति करानेवाला वर्ग-देशक (मम)। वार न [द्वार] बर्मका उपाय (ठा ४ ४)। दार पूर्व [दार] वर्ग-पत्नी (रूप)। दास र्र [दास] बन्दान् महागीर का एक किम्प भीर उपयेक्षणाला का कर्वा (ज्य) । "द्वापु [देव] एक प्रस्तिक केन (मानार्म (सार्व ) । देसग दूस र वि ["देशक] वर्ग का उपदेश करनेताबा (राजः क्यार्थात्र)। पुरा की [धुरा] वर्गस्य

(भय)। "पश्चिमा और ["प्रतिमा] १ वर्ग की प्रतिश्वाः २ वर्षे का सावन-भूत राग्रैर (छा १)। "पण्याचि की ["प्रकृति] वर्गे सी प्रवक्ता (क्वा)। पश्चिमी (श्री) **स्व** [परनी] वर्ष-पत्नी भी मार्वा (प्रधि ११२)। "पिनासय वि ["पपासक] वर्ग के सिष् प्रवास (क्रम) । ["प्रवासिय] वि िपिपासित वर्षे की प्यासवाता (तेषु)। पुरिस पूं विपुरुयी वर्ध-प्रवर्तक पुस्त (ठा६,१)। पछज्ञण वि "प्ररक्षन] वर्गर्ने भ्रमसक्त (ख्रम्मा ११) । प्यवाह रि ["प्रवादिन्] वर्गोलकेक (भावाति १ ४ २)। प्यक् दू[प्रम] एक दैन धानानं (रवश ४०)। प्यानावय वि िधाराहुन्ह नर्भन्नवाधी वर्गासदेशक (मानानि ११४१)। बुद्धि वि "बुद्धि" वार्मिक वर्गमिति। २ द्रीएक राज्यका माम (क्प व्रद्यो)। "मित्त पूर्विम] सदनम् पध्यम् का पूर्वस्तीय नाम (सन १२१)। य वि वि] वर्ष-दाता वर्षे केतन (सम t)। कह की "समित्र t वर्मनीकि (वर्गर)। २ वि कर्ममें सीव वाटा (ठा १)। ३ पूँ एक वैव मूनि (विवार र इस ६४८ में)। ४ वायन्त्रसे का एक राजा (मामन)। स्मान पुँ सिमा) १ वर्गभी प्राप्ति । २ चैन साबुद्वाच दिया वाटामारीर्वाद (सुर १६)। इससिक्ष वि "सामित्र विश्वको 'वर्गताम' क्य साधीर्यास्य विद्यानसा**ही यह** (स. १६) । ब्याह्रेको ब्याम (स ११)। ब्याहण न [स्थमन] धर्मनावनप प्रश्लेषीय स्नाप्त नर्ग यमनबाइएँ (ह ४९१)। "स्राहिश रेको स्थामिस (त १४०)। वेत ४ [यन्] वर्षवाला (धावा)। वय 🛊 ["क्यम] धर्मार्च शत समीत (तुपा ६१७)। मि "विष्ठ वि["वित्] वर्मशामनकार (धामा)। विका पु विद्या मर्थामार्थ (वंचव १)। स्वयं वेची वय (गुना ६१७) । सञ्चा को ["मञा] पर्ने-विकात (बच ११) । सप्प्राचेको सन्ना (धन ७

६)। सस्य न िशास्त्र वर्म प्रतिपादकः काक (रंद ∀) । समा की [\*स-हा] र वर्गे विद्यासः । २ वर्ष-बुद्धः (प्रदेशः १ ३) । सारकि पु िसारकि विमाल का प्रवर्तक, वर्म-देशमा (क्छ २७ पति)। साद्याधी िंगास्त्री वर्म-स्वात (कर ११)। सीख दि शिस्त्र वर्णिक (समार २)। सीक् र्ष्टिक् रिमन्तर प्रकारकाकापूर्व भनीय नाम (सम १३१)। २ एक वैन ग्रुनि (धना६१): सेम ५ सिन एक बनकेन का पूर्वस्वीय वाम (यम ११६)। शहरार वि [ैक्किर] वर्षका प्रवस प्रवर्णकः । २ वित-वेद (वर्षे २)। <u>। एपटा</u>प्य त ीतुष्ठान**े वर्ग का पानर**ण (वर्ग १)। खुष्य वि [ीसुझ] वर्षका धनुगीवन करीनाका (ब्रूप २,२३ छाता १ १व)। एपुर वि [रितुरा] वर्ग का समुख्यम करो-नावा (धौप)। विरिय है [ीचार्व] वर्ग-बाता प्रव (धम १२)। त्वाम प्र विवाद] १ वर्ग-चर्चाः २ वास्त्रवां वैत संपन्नल्यः श्रद्धिनाथ (ठा १)। हिरारणिय प्रै िधिकरणिको सामानीसः स्थानकर्ता (पुण ११७)। सहिन्द्यरि वि विधिका रिम् वर्ग-प्रकृष्ण के बोग्य (कर्म १) । यस्म वि [धर्म्य] वर्ष-कुछ वर्ष-संग्रह भ पुरा तुनं कहेति तमेव धन्मं (महानि ४ ह भन्ममण द्रे[दे] <del>कुप-विशेष</del> (क्य १ ६१ धीपकम ४२ ६)। धन्ममाण 🕪 घम । यन्सय दे कि १ चार श्रेष्ट्रत का इस्त<del>-क्</del>छ । २ लएडी देवी की वर-वित (दे इ. ६६)। वस्मिति विर्मिन् । वर्श्युटः, इव्यः पदाने । २ वासिक वर्ग-पदावद्य (पूपा २६) ६६६, ६ ६ वजा १ ६)। भस्मिति [मर्गिसम्] वर्षसम्बद्धिः पद (वर्ष ६६)। धस्सिकः ) दि [धार्मिक] १ वर्ग-तरार, वर्ग धरिमा । परावेख (शा १६७) वन नश्रः वर्ष्ण १ ४) । २ वर्ग-सम्बन्धी (इन २६४) पेता है)। इ बार्मिक-संबन्धे (ठा १ ४)। घरियदु वि [बर्सिप्ट] चरितन वानिक (धीप नुसार्थ)।

धस्मिह वि [धर्मेंग्र] वर्ग-प्रिन (धीम)। मस्मिट्ट वि [मर्मीष्ट] वासिक वन की जिप थिमकः ) पुन [थिमिनकः] १ चंकतः केत चन्से**छ** ∫र्वेषा हुमा केरा, क्रियों के बावे हुए बाल की 'पटिया या बुद्धा'। बीच में कुत रक्कर अनर से मोतियों की बायन्य किसी त्राज्य की कड़िकों से वीमा **ह्या केट-क**साप (प्राप्ट) वक्ष्य सिंखाक्)। २ पू. एक वैत सुनि (मान ६)। भग्मीसर पूं[भर्मेश्वर] मधीत व्यविज्ञानन में भरतवर्ष में उत्पन्न एक जिल-देश (पन ०)। थन्मुचर वि [घर्मोचर] १५को एको ध मेह (बादुर)। २ त वर्गका प्रावल्यः न्बस्युत्तरं बङ्गुवं (पवि) । घम्मोवएसग ) नि [धर्मीपरेशक] वर्ग का भन्मोवपुसव } <del>ध्वर्रेश भेवाना (हाना १</del> १६। पुषा १७२। वर्ग १)। भय सर्विषे पात करना स्वत-पात करना। मक्र घर्मत (सुर १ १७)। ध्य पृंजी [क्वज] व्यवः, प्रततः (ह २ २७) एमार रश पर्यार भागारे**)। भी** "या (पिंद)। वड पूं["पट]ध्वताका वक्र (दुमा)। भय पू [यू] नर, पूक्त (दे ४, ४७)। थयण न दिहे पुरु, नर (दे र १७)। बयरद्व दुं [बुकराङ्ग] इंच क्यी (पन्प) । घर एक 🖫 १ वारक्ष करना। २ पक्का। मरद, मरेद (हि. ४ २३४) ३३६)। कर्म बरिजर (पि १९७)। बड्ड घरंत घरमाज (सरा मरि या ७११)। शमक भरत भरेंत मरिवाद मरिवामाण (से ११ १९७१ ४ १ एका द्यार ४ भीत)। <del>एंट वरिषं (कुप्र ७)। इ. घरियस्य</del> (मुपा २७२)। घर तक [घरम्] इतिथी का पावन करना। नक्र मार्च (तुर र ११)। भर न [दे] तुल वर्ष (वे १, १७)। घर ⊈[घर] १ वरवाद पणवास का शिवा (बर्म १४) ए बहुस्त नगरी ना एक स्था (कामा १ १९) । ६ वर्षेट, बहाइ (के ब ६३ मन्द्र)। धर वि [<sup>\*</sup>धर] वाय्त क्लोनला (क्या) ।

भरमा वृ दि] करास (दे १ १८)।

धरण दू [घरण] १ नाय-कुमार देवों ना

दिनिए-दिशाका इन्त्र (ठा२३ सीर)।

२ पहुर्वशीय राजा सन्मक्ष-कृष्णि का एक

पुत्र (यंत्र १) । १ वेदि-विदेश (स्त ७२८

टी। गुपा १११)। ४ म. भारण करना

(देव इंशार्पदायमा ४८)। १ सोसह

सोमे का एक परिमारा (को २)। ६ करना

देना, संधन-पूर्वक उपवेद्यन (पव ६०)। ७

क्षोयने का सावन (यो २)। द वि कारख

करनेवाला (दुमा)। प्यभ पुं [भम]

बरुग्रेन्द का उत्पाद-पर्वेत (ठा १ )।

भएगा क्षे [भएगा] रेखो भारता (एपि)। धराँच को [धरणि] १ पूमि पृथ्विशै (बीप तूमा)। २ भनवान् ग्रस्तायं की शासक-देवी (संदि १) । १ मनवान् वानुपुरमं की प्रवय रिक्या (सम १६२) पत्र १)। स्पील पु ["कीस] मेर पर्वत (मुख्य १)। चर प् ["बर] मनुष्य (परम १ १ ४७)। घर र् [ धर] १ पर्वेत प्रहान (प्रति १७)। र प्रवोध्या नपरी का एक मूर्य-वंद्यीय राजा (वहन १ १)। धरप्पचर पु [धरप्रवर] केंद्र पर्वत (प्रति १६) । घरपत्र प्री धर पिती मेर पर्नेत (पनि १०)। घरा और ["धरा] मगशन विमननाम की प्रस्म विष्या (तम १६२) । यस न [विस्त्र] भूमि-दम भू-दन (लाया १ १)। पद व [<sup>\*</sup>परि] भू-पति सना (नुस ३३४)। बट्ट व [पूछ] महा-बौठ, भूमि-दन (बढ़ा) । हर देवो घर (व ६ ३६) । धर्रायद् पू [धरणन्त्र] नाम-नुमार्स की दिग्य दिया वा शहर (पदम ६, १८)। घरांपिमिंग रृ [धरात्रिश्टङ्ग] भेर परेन (पु**क्र ४)** । धरणी रेला धरणि (प्रापृ २३ ति १३) त २ २४ दूप १२)। घरा थी [घरा] पृथिती भूमि (पढड़ पुता १ १) । भेग हर 📢 भिर] पाँच पराह भी ६ वर १८ स देश छ ३; बा वर्द हो।। घरार्थ म र् [परार्थारा] चरा (ओह ४३)।

२ ६ तुस ६२१ सींस १४)। २ स्थापितः 'वधवियं मध्यं' (क्रूप्र १४)। धरित्र वि [धृत] १ बाव्य किया हुया (मा १ १ मुना १२२) । २ धोका हुमा (म ₹•६) ( <sup>भारळव</sup> घरिळमाण} देशो घर≃मृ। घरियी थी घिरिणा देशिया भूमि (पाप) । घरिता भी [घरित्रा] पूर्विशे पूर्वि (पू १२७ सम्मल १२६)। धरिम न [धरिम] १ को तपहु में तील कर वेदाणाम वह (मा१८ शासा१८)। २ इद्रल: करवा (खामा ११) । ३ एड त्तप्रकी नाम सीम (वी २)। धरियक्त्र केत्रो धर = वृ । धरिस धक [ भूप ] १ शहर होना एकवित होता। २ प्रगरमता वरता, हीठाई करता। ६ मिमना, संबद्ध होता । ४ सक हिसा करना, मारता । १ धमपै करना, सहन नहीं करना । मरिसद (राज) । घरिम सर्व [घर्षेय्] सुरव रस्ता विश्वतिष्ठ करता। मरितेद (अतः ६२ १२)। घरिसण व धिर्पेत्री १ परिनव मस्मिवः। २ संइति समूद्दा १ समर्पं धमहिष्यता। ४ दिना १ वन्यन, योजन (नियु १ राज)। ६ प्रयन्त्रजा पुत्रका बीठाई (घीप) । भरेत देशो भर = प । भष पूँभित्र १ पति स्वामी (ए।बा १ १। वय ७) । २ बूग-विशेष (पर्छ १ उन १ ६१ टी घीष) । धक्क यक [दे] पहरता असमे स्यादुत्त दीना बुनपुराना । परद्रह (मछ) । धविद्याय वि [दे] बहवा हुमा भवत स्माद्वत बना हमा (गठ) । भयन न [धापन] यौन, नारन बाहि ना पारक-बार (मृद्ध बड़) । भयत पुढ़ि स्त्र शक्ति में इत्तर (देश X (6) 1 भवत न [चयात] नवातार सीतर रित का

उपराद्य (तंदीच १६) ।

मुपा २५६) । २ दु छत्तम देत (ग्रा६३८)। ६ वृत्, धन्त्र-विशेष (पिय) । गिरि वृ िंगिरि कैसास पर्वंत (ती ४६)। गह न "गेइ] प्राप्ताद सहस (हुमा) । चंद् पू चिन्द्री एक वैत मुनि (वे ४७)। स्य प् रिय] मैयसबीठ (भूपा २१५)। हर न िगृह्वी प्रासाद, महत्त (था १२ महा)। घवस सर [धयस्य ] सहेत शरता । यत्रहरू (नि ११७) । कबकु धयसिक्रांत (गरह) । धयन्त्रक न [धयखार्क] प्राम-निशेष जो मानस्य 'मोतक' नाम से पुनरात में प्रसिद्ध **₹** (đì **₹**) i भवस्य व भिषस्ता सकेर करना खेती-करख (दूमा) । घवडसरुण पू 🔃 हुंस (६ ४, ४१, पाय) । थपरा सी [घयस्त] गी मैदा (ग ६६८) । धवसाम पर [धवसाय्] सदेव होता। **घवस्मर्भन (गा १)** । भयक्षाइभ वि भिषक्षयिती १ उत्तन वैन की उरह जिसने कार्य किया हो बहार न, धत्तम कृपम की तरह बाकरण (डार्क ६)। भषविम दुंबी [धवविमम्]सदेरान सुक्रता परेंग्री (मुना घ४) । भवस्थिय वि [भसस्थित] सन्देव हिया हुमा (मार्च)। धंपर्छाक्षी [धंपर्छा] बतम की सह दैया (गउद) । धम्य ई [दें] देव (दे १ १७)। घस सक [धरा] १ वसना। २ नीवे नावा । १ प्रश्त करना । वसद, धनत (F(4) ) घस र्षु [धम ] 'वत् ऐता पानाव विस्ते वी मातान भगति महिनंदते वहिन्नी (महार सामा १ १—पत्र ४३)। भसम्ब पुष्टि हरवकी वदसन्दर्भी बाहार पुत्रकती में 'माडकों'। 'तो जायश्चित्रदक्ता' (पा १४ १्रप्त ४३१) । धमदिम रि [र] तूर परशय हुवा (वा tv) i

यसन वि [रे] विर्णाण केता हवा (रे ४,

Ke) 1

VCC	<b>वाइअस</b> इम <b>इप्यम</b> ो	<del>परिम-भारपमा</del> ण
सिन्न कि चिसित्त वा ह्या (हम्मीर ११)।  शा वह द्वा वास्त करना। वाह, वास्त (वह)। इसे वास्त (क्रि)।  शा वह द्वा वास्त (वह)। इसे वास्त (क्रि)।  शा वह द्वा वास्त (वित्र करना)  शोता। वाह वास्त (हे ४ २४)। इसे वाहिर (वह)।  शोता। वाह वास्त (हे ४ २४)। इसे वाहिर (वह)।  शोह वित्र वित्र वित्र विदेश हमा (वे द, वर्ध वर्ष)। ४  शाहम वि चितित वित्र विदेश हमा (वे द, वर्ध वर्ष)। ४  शाहम वि चित्र वे ।  शाह वाह वाह वाह वे ।  शाह वाह वाह वाह वाह वे ।  हिंदि हमा (वर वक्ष)।  शाह वाह वाह वाह वाह वे ।  शाह वाह वाह वाह वाह वाह वे ।  शाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वे ।  शाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह व	पांड वर्ष ितः + सारय् । वाहर िका- सता । एंड पांडिक्ज (पुत्र वरे) । कतह- पांडिक्कंस (प्रका १७ ५० ६६ १११) । पांड वर्ष [प्रमु ] देरणा करता । र नाय करता । वार्डेस (सूपि ७ ) । कतह- पांडियंद (वर्ष्य १ ६—एव १४) । पांडण न [प्राटन] नायुर निकासना (तर्व ४) । पांडण न [प्राटन] र प्रेरणा । र नाय (क्रीक्ष) । पांडण न [प्राटन] र प्रेरणा । र नाय (क्रीक्ष) । पांडप नि [वे प्राटक] राका उन्तनेवाला न्याध्यपुरित्त ह्या एक्ज (व्रिति ११४६) । पांडपांडिक नि [निस्सारित] बाहर निकासने ह्या पित्रांडिक (प्रवा २२ व) । पांडिक नि [निस्सारित] बाहर निकासने ह्या पांडिक नि [निस्यु वाहर निकास ह्या (क्राम) । पांडिक नि [निस्यु वाहर निकास ह्या (क्राम) । पांडिक नि [निस्यारित] निर्माणित बाहर हरका ह्या निस्तारित] निर्माणित बाहर हरका हाला (व्या १ १ १ । व ११६०)	पान ) की पानकी इस-स्टेश काय पान है । का की (पान है । का की (पान है । का की ह
वस्तु—कक, वात नित्त रख रख, मॉर्स केर, सांस्य मना सीर शुक्र (सीर-कुप्र	भाडी की [भाटी] १ ब्लुमी का कत (सुर २,४० प्रकः)। २ इथका शाक्रमण वादा	चारणा की [चारणा] १ मर्गांदा स्थिति (धावम)। २ विषय प्रकृत करनेवानी वृद्धि (अ

(কন্ট) **৷** ११ ≈)।४ दुविकी वल देन भीर बायू मे (विक्रे २११)। ४ सम्बारस निरुप घाण देवी घटना = क्य (वटा १.)। चार महाशृत्त (तूम १ १ १) । ३ म्मा-(धानम)। १ मन की स्विच्छा: ६ वर क बराग्र प्रसिद्ध सम्बन्धीन 'मूं 'पब् प्राप्ति मजाकी [माना] वनिया एक प्रकारका एक भव्यतः वरुगो नावरल (स्य कः २)। (बलु)। ६ स्थमाच प्रदृष्टि (स.२४१)। नशाना (दे ७ ६६) प्रारू)। वबदार 🖠 [ब्यवदार] व्यवदार-विदेव गारम-शास-प्रदिख चारातिका-विशेष घाणुक्त वि [धाराध्यः] बतुर्वर, बतुर्विदाः में (ठा ६,२)। (इना २ ६१)। सीन जिल्ली १ कान से निरूप (का इ. ६) बुद १३ १६७ वेशी भारणा हो [भारणा] नकान का खंडा, बल्पन । २ वक्र-विशेष (पंचमा) । ६ नाम, ११४३ कुछ ४८२) । थरन (माचा २. २. १. टी) पर (वॅ३)। रुम्य (प्रकृ) । बाह्यम वि विवादिकी थाजुरिस व [दे] कम-नेव (दे ४ ६ )। भारणिक केरी भार - भारत्। भीवनि भारि के बोच है ताल शादि की लोना घान पुन [घामम्] छा(कार, वर्षः २ स्व वनैरङ् वनानेवाला विविधावर (दुन्न ३६७)। भारणो की भारणी १ बारश करनेतली धारि में सम्परता। इ.सि. वर्त-पुत्तः । ४ (मीप)। २ प्यारक्ष्में जिनतेन की प्रचम भाउ पुंधित् पहपनि कामक व्यन्तर देवो रत यानि में बागड़ (तंत्रीय १६)। रिप्या (सम १६२) । ६ शमुदेर शादि यनेक नाएक इस (छा ६, ६)। याम न [घासन्] यत पष्टम्म (माष्ट १३) यजामीं की समी का नाम (संदा साक् १३ धाउस्तेसण व [धानुसीयज] धार्ववत दर चरा)। निपार श्रेकाना १ १)। (बंदीय १.) । घाय वि[प्रात] १ तुत्र चंतुष्ट (शोव ७ भारणीय रेको धार = शारम् । भाइ यक [निर्+स्] बाहर जिल्ला। भागुर २ ६७) । २ नः नुम्बित नुकास धारय देवो धारग (योव १/ मनि) ।

(**1**র ২)।

भारतभाग केवो भार - नारत्।

बाहद (द्वे ४- ७१) ।

भारा की [द] एक-मुक्त एए-मूमिका श्राप्रमाम (दे ४, ४१)। घारा भी [घारा] १ प्रस के बामे का माण, भार (गतव प्रामु ६२)। २ प्रवाह राजनी (महा)। ३ धन्त्र की गति-विरोध (दुमाः महा)। ४ वन वास पानी की पास। ३ वर्षा वृष्टि । ६ व्रव पदाची का प्रवाह रूप से प्रतन (यउड) । ७ एक राव-पत्नी (मानम) । कर्यंत्र पू [क्ल्प्स्य ] स्थ्यंत्र की एक बाति को वर्षों से प्रमती-पूजती है (कुमा) । धर दूषिधर] मेव (सुग्र २१)। वारि । म विदारी भाषास किरता अस (भग १६ t) । वारिय वि ['वारिक] नहां पाप से पानी विष्टा हो वह (भग १३ ६)। इय वि [देत] वर्ष से सिक (कम्म)। हर देवो घर (गुर १३ १६४)। भारा की [भारा] मानव देश की एक नवरी (मोह ८०)। बारावास द वि ] १ मेक मेहक बेंग (दे १ ६ कः पत्र ) । २ भेष (दे १८ ६ व) । धारि वि [धारिम्] भारत करनेवाला (धीप कथ्य) । घारित देशो भार = बारम् । धारिद्व न [घाए-यें] बृटका जरूपरका नवें सञ्चय (प्रास्ता म कोरा म २३ भावटीना कवा पद्य २२१)। भारिजी रेजे भारणी (मौप)। भारित्तप देवो धार = मारम्। धारिय वि [धारित] बारछ किया हुमा (मविक्याका)। बारी देवी घर्ची (है २ =१)। चारी देवो पाय (रूपा) । घारेचण } क्यो धार = भारम्। भावसङ [भाय] १ दौइता। २ सूद करना भोना। बाबद् (हे ४ २२वः २३व)। वक् धार्वत धावमाण (प्रामु वक् महा) कम्म)। चेह भाविकम (महा)। धावण न [धावन] १ वेन छे नमन, बीहना। (तूम १ ७)। २ प्रशासन, क्षोना (तूप्र 144) 1

**{**3

भावणय पु भावनकी बीड़ते हुए समाचार पहुँचाने का काम करनेवाचा हरकारा धिरिया (मुपा १ ४ २१४)। बावणया 🛍 धानी स्तन-पान करना (सर E \$ \$ ) 1 धायमाण देखो धाय । घाविञ्ज वि घिषिती दौराहुमा (सर्वि)। धाविर वि [भावितृ] बीइनवासा (छछ। सुपा ५४)। भावी देखो भाइ ⇔भाती (उप १६६ टी स ६६: सूर २ ११२ १६ ६८)। चाहा की दि गह, कुरार, विकाहर (पत्रम ११ ६वः सूपा ११७ १४)। चाहायिय न दि । माह पूकार, विस्ताइट (स ३७ : सुपा ३० ४१६ महा)। भाहिय वि दि पनायित भागा हथा (बस्म (金99 धिय विकी निरमार, की (रमा)। भिष्ठकी पिति १ मैर्गमीरव (सप्त १ < पड्)। २ नारता (ग्रावम) । ३ नारता, कात विषय का धविस्मरापु (विने)। ४ बरस प्रमस्तान (सूच १ ११) । ५ प्रहिमा (परहर १)। ६ वैर्यंकी समितायिका देवी । ७ देवी की प्रतिमानियरेष (राजः णामा १ १ थै -- पत्र ४३)। व तिविधित-ह्या की व्यक्तिहासिका देवी (इक ठा २३)। कृष्ट म ["कूर"] पृति-वेशी का प्राविशित विचर-विशेष (बंध)। बर् वं विश् १एक धन्तहत् सङ्घि । २ 'घेतवह-दसा' मूत्र का एक सम्भवन (संव १८)। सं संव वि सिन् विशवना (ठा ८ पर्ह ₹ Y) I भिद्रभी प्रिति वेता समातार तीन दिन का क्यवाम (संबोध १५)। धिकय वि [धिककृत] १ पितनास हुमा (वव १)। २ न. पिक्बार, विरस्कार (28 4): थिकाण विकाण जिल्लार, विकार (खावा १ १६)। धिकरित्र वि [धिक्कृत] विकास हथा (रूप १६७)।

धिकार प [धिकार] १ विकार, विस्कार (पराइ १ ६) इ. २१) । २ प्रपक्षिक मनुष्योँ के समय की एक एएड-नीति (ठा ७ --पत्र 185) 1 धिद्धार सक [ धिक + कारय् ] भिकारताः तिसकार करना। इक्क चिद्धारिव्यमाण (Fr 353) | पिछान चिंवी भीरज पृति (दे२ ६४)। चिट्य विचित्र नायण करने योग्य (एगमा - t - t) i । श्रिद्ध वि विषेय विश्वतान-योग्य विश्वतीय (खाया १ १)। चिकाद पूर्वी [दिजाति, चिग्जाति] बक्कास विम : की 'तत्व महा नाम भिज्ञाहणीं (पादम)। भिज्ञाइय ) पूजी [ द्विजातिक, भिग्बा चिक्राइय<sup>5</sup> तायी बाह्यल विप्र (महा: वन १२८ मान १)। भिज्ञामिय न भिग्जीमित निन्दरीय बीवर (सूम२२)। भिट्ट वि [भूष्ट] बीठ प्रकल्प । २ विसंज्य वेद्यस्य (हे: १३ मुर २ १ मा६२७ भा १४)। भिट्रब्जुण्य बेस्रो धट्टब्जुण्य (पि २७६)। चिद्रिम पुन्नी [भूएस्य] पूरता धैका (मुपा **१**२ )। भिद्धा ) प [भिक् भिक्] धी धी (अर भिषी ∫ व टॅश रमें।}। थिप्य थक शिष्] शैषका चमकता। विष्यद्व (द्वेश २२३)। भिष्पिर वि [दीप्र] देशीप्यमान अमनीमा (इमा) । भियम [थिक] विकार, छी जेइ गिर विव मृष्टियं (उर ६६४) । थिएसु प [चिमस्तु] पिक्कार हो (छामा १ १६ नद्वाप्राक्त)। धिसम पू [धियम ] शहसकि सुर-दुव (पाम)। थिमिष [थिष्ठ्] विकार, धी (नुग ३११ सण्)।

भी देखों भी भा व्यं मंगलं डूं मतिपस्य बीए

मस्तीद खाँगरवंदि बाएँ (मंत्रत १२ २ )।

<u> </u>		
भी और भी दुद्धि, मंदि (पाम शासा १	भीवर पूर्विभर] १ मक्कीमारु सङ्ग्रम	(१.४१६ मा <b>प</b> छ पि १२)। कर्न <b>े पुल्य ६</b>
१६ कुम ११६८ २४७ मसू २ )। यज	मझाह बल्बबीदी (कुमा) कुत्र २४७)। २ वि	पुरिप्रकार (१४४ २४२)। वक्र पुर्णत (तुपा
कि["यन] र बुक्रिमल विक्रमः २ प्	क्तम बुद्धिवाला (क्य ७६ वटी  बुग २४७)।	१=१)। संक्र भुजितम भुजिया भुणकण
एक मन्त्रीका नान (इस ७६८ टी)। स	भुम देवी भुव न नात्। भुस्य (या १६)।	(पड्डस १३)। हेड भुणि सर (सूप
संव वि [ सत् ] बुविक्तानी विकास	धुभ सक [घु] १ कैपाला। २ फॅक्ना। ३	१२२)। इन्धुणेळा (प्रापुर)।
(का अरद ही कव्या धन)।	त्याय करना। <b>वह</b> धुसमाण (वे १४	मुष्पण न [मूनन] १ भपनमन । २ परिवास
पीश [भिक] विशवाद की (स्थावे	44) 1	क्रीडना (राष्)।
	भुमानि भुव⇔ भुत (मनि)। अल्ब-विग्रेय	
४१)। मीभाकी हिहित् नक्की पूर्व (मृज्य	(पिन)।	भुणवाकी [भूनना]कम्पन दिवना(धोव
१ ६ वि १६६ महाः मनि वस्त ४२)।	भूभ कि [धूत ] १ नम्पितः। २ न कम्प	१६१ मा)।
	(प्रमक्र ⊌ )।	भुणाबेबी भुणमा (बत्त २६ २७)।
बीइ देखो बिक् 'तुल्का नारवत्रक्रिया पनि-	भुभावि भित्रो र वस्तित (ना⊌ः देर	मुजाव सक [भूतस्] वैपाना हिनाना।
क्षिया कुल्यसाय कीईप्' (पन १२ टी)।	१७३) । २ त्वकः (सीप) । ३ बण्यमितः	प्रजाबद (बना ६)।
भीडिहिया की [वे] पुरुती (स ४३४)।	(से ४ ४)। ४ तः कर्म (तूस २,२)। १	भुजाविञ वि [चूनित] गॅपासा ह्या (स्प
भीसस्त्रम [भिक्सस्त्र] निम्दनीय मैक (तंदु	मीज मुक्ति (सूच १ ७)। ६ स्वास, संग	<b>पर्व दी)।</b>
<b>वे</b> च) ।	रमान संयम (सूचार २ २ घाला)।	घुणि भेगो सुन्धि (वर् )।
भीर अन्त [भीरय्] १ भीरत वरना।	बाय दू विवादी <del>कर्ण</del> नाश का क्लकेत	
२ सक-बीरथ देना प्रास्तासन देना। बीरॅंस	(माचा)।	भुषिकण } सेवो भुण। भुषित्तर }
(गरह)।	शुभग्ययं र्ष [द] भ्रमध भींग मनच (दे	-
धीर कि [धीर] १ वैगैनस्य, युस्सिर, य	१, १७: पाद)।	धुण्यिक नि [मृत] कम्पितः क्षित्रसा कृष्णः "मरुवर्वकृष्टिय" (भूषा ३२ ३ २ १)।
पञ्चल (से∀ ३ मा ३६७) ठा४	भुभग देवो भुवय (स्व १ १)।	
२)। २ बुद्रिमान्, परिक्त, विक्रान् (अर	भुभयम पुंदि अनर देशो (वह)।	भुणिया } ध्यो भुण ।
७६ टीऽवर्गर)। ६ निवेकी सिष्ट् (सूच	श्रुमार र् [मुन्युमार] क्रानिकेर (द्वप	भुष्ण विधास्यी १ दूर करते शोव। २
१७)। ४ स्वील्यु (युगर १४)।	361) 1	न. पान । ३ कर्म (दस ६, १३ दसा ६) ।
१ वृपस्मेस्वर, परमारमा जिन्न्सेन । ६	श्रीभ्रामाराच्ये [व] स्त्राणी तथी (वे	मुचनि [पूर्व] १ तम कावन प्रताल
महावर <b>-रेव (धावा धार ४</b> )।	K, K )	(बातु ४ ३ वा १२)। २ बुद्धा कैतनेशाचाः
भीरन[भैये] बीरव वीरवा (११९४)	भुकासक [श्रुम्] मूच सकता। द्वरकर	६ प्रजार का पेड़ । ४ बोड्रे की काट—मैता।
कुमा)।	(शक्त ६६)।	× समरा-विरोध एक प्रकार का नीत (हे २८
भीरव सक [भीरम्] सालवना केना	बुबाधुक पन [ कम्प् ] कांगता 'दुरु धुक'	<b>1</b> )ı
विभावा केना। कर्म बीर्यवस्त्रपति (दुन	होता। द्वलाङ्क्काइ (या ११)।	भुत्तवि [दे] र विस्तीर्ध (देश, ४.)। र
२६३)। धीरक्षण न [धीरज] वीरन केना शास्त्रका	भुक्दुश्चुञ् ्र वि श्रिक्षेत्रकाष्टिक	माझन्तं(पर्)।
(बर १)।	भुक्कुर्भुगिक र पुर्व (र x 4 )।	पुच } एक [ मूर्तम् ] स्था। प्रदार्थ
भीरभिय वि [भीरित] निस्ता सान्त्रता	पुरुकुपुम देवी पुत्रापुत्र । नव पुत्रकु-	धुन्तर ( (गुल ११४) । मह धुन्तर्यत (धा
काराक्य व [भारत] (नवरा कारणता के वर्षे हो नह याचानित (त ६ ४)।	मुभेव (यपि)।	१२)। पुचारिअ वि [पूर्चित] ठगा हुमाः वस्तित
धीराज सक [धीराम्] भीर शोना भीरज	भुक्योबिक्ष न [के] संद्या संबेह (नमा १ )।	(क्य ३६ दी)।
चाराश करु [चाराम्] जार इत्या जारज चरना। बक्तः भीराओत (से १२ ७ )।	मुगुपुन वक [पुनशुनाव्] पुन् पुन्	मुचि की [वृचि] वच बुदाय (चन)।
धीराविभ देनो भीरविष (वि ११६)।	भावात्र करना । वक्क श्रुगुद्धगोतः (पराहरः १—वक्ष ४१) ।	मुचिल वि [मूचित] बन्बित प्रवाधित (बुपा
धीरिझ देवो भीर ≓भर्ष (दे २ १ ७)।	प्रदेश केते सर्वात्रः इत्या (१ v	देश्य सा हर्।।
धीरित्र वेको चीरविय (मनि)।	165) 1	पुणिम पूंडी [पूर्वल] दूर्वत, दूर्वल स्पार्ड
भीरिम पूँगी [भीएल] देने नीएन (का द्व		(हे १ रेरु द्वमा मा १९)।
६२ चुने र ६० वन्ति दुव ११)।	करना इदला। ६ वात करना । कुण्ड, कुण्ड	श्रुची की [पूचा] कूर्च जी (नक्य १ ६)।
		- CK-2 *** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** *

पाइमसदम**्ञ्**यो

मृति । ७ हेवन इत्त्वादि निष्टु (मूप १ | भूम पू [भूम] १ भूम पुम' मन्ति-विष्ट

२१) । दर्गगार (यस्) । १ न पुनि का नारानु मौल-मार्न (माना)। १ नर्न | भुदूभुत्र (बर) वर [ शम्हाय् ] मागत (धार) । ११ घरकत घरित्र 'पुरमी काता। पुरुषद (हे ४ १११)। दिल्ला (टा ६)। अस्मिय पू [श्रीम ह] पुरव देनी थिएत । पुना (बार ७ )। सलार धर्ण हिली (बन १) चारि नि भूगत [भूष ] १ पूर्व भूष'। २ वर्ग [पारिन] पुरुष मुद्रि का प्रभितानी शिक्षेत्र बार्नेत्रवर्ण । ३ वि वर्गत पर्णे (बारा) । (ग्रग्यद् वृ ['समद] धार बन्ताः नग्न ने [151] एक समान (ने श्यतः प्रास्य करने योग्य पहुतकारियेष 15 6 ) 1 (भाग) । सम्य पुं विश्वायी दुष्टिनार्य मुर्ग देना पूरा (स.व.६६)। मोल-मार्च (तूप १ ४ १) । राष्ट्र वृ भूर वृ [पूर] १ वर्षेका पार्वका । ['सार्'] छर-सिटेप (मय २१)। वस्स वे हे)। वे कभलर ऋगी "सम्मवत र्दे [यो] र सबस । २ मध्य मुटि। ३ र्मात बीन्यांसारं तस्य पुरवर्ग नाभे राररत यस (पात्रा) । देनी भुझ ≓ प्रृष । दुग्गार दो पुरारे (दुग ४२६) । पुषान [भारत] १ प्रशासन (मोप ७२ पुरंपर दि [पुरम्पर] १ मार को कान काने १५७ स २७२)। २ हि इतिहासना वें समर्थ दिनी बार्द की पार पहुंचान में ितानशताः को या (रूमा) । हर्रामानु भारतान्ह (से १ १६) । ३ भुरम दूर (भूपन) १ पूर देश । पूप-पात नेता बुना महमा(ग्रंग उत्तर २)। ( en & E) i ३ वृत्तर हर या संपनेगात केत (ह पुविषा ध्वे [पूविता] श्वेनीक्षेत्र सूच बन्पिनी वर्षेन्द्रान्ति (र्वव १ ६६) । सरा ८ [पर ] रेयारी की देश बाब मुष्य रेगो मुव≂षात्। पुगर (वंधि भाग भूगे (एर) । २ व्याद केमा । १ विका (हे में १६) । चार वि [धार] पुरा की मुर्मन रेलो धर = पू । बन्त्र बानसारा, पुरमार (परत्र ७ १७१) । पुरसमान } रेवो सुग-पार । प्राधी प्रीया पूर्व नहां का इस (ec.) ( पुरम रि दि राहा को रिया का प्रधानि (प्रधान) पुरुषद् भाषा, धाका (बर्द ६ १३६ - यानन ११६)। पुत्र वि [पूर्व] तमा पुत्र - पुत्र (द्यक्त ध्यानर [धार] क्या रूप बरना पुरर ला रे रेरे ति रेरे रेरे पूर्व र पुर्श (इंड से मा होते कि है)। A 3} 6 क्त पूर्वत (में व है दे) क्या पूर्वत पूज रेका युव = दुर (म्स ६१३)। प्राप्ता नास्त्र के ६ रह दश पृश्च न [पूत्र] रणी केल हुआ वर्त पूर 20 ft 22 1 44 (PE 2 2 42) 44 64 [4] eme. [mm] | 444 (\$ मुआ की [नर्दित] जाना पुत्र (१ व प कर बर । बर्थ पुरुष् (नका बस प्रांत (बर) \$34 2" C411 quit [12] t frem fect (art 1) : भूतर्भ [ ] स्व हर्न्स (देव ६ ) tier eine einere ein t 4 44 (4 [444] 4 fr (42 4 ) स्था । १३ व्यास्ति (१९३ १) ध्य व [ध्य] र १११ व ८ वटर (पेटर Aller fece (ener) : X 4 ex A Rid width Fife Rich # tut de enty (last # &--1444 (4)

व्यक्तिक बार-शिया (रा २ ३) पार १ × भीप) । २ वहि भनित माप("त २२)। १ धरुम सात ना गुनन तसा-पुस्त (गारा)। चारम पूं ["धारा] पूर्व दे मापन्तर स मादारा में पसर वाने की र्राव्यक्ता मुक्तिविधेष (सम्द्रः) । जाणि र्षु[यानि] बन्त मेर (शम)। उन्हय रनो द्वा (छत्र)। नम र् दिली भिगा रह एक दोन क्षेत्र में मातन करना (बकार १ १)। द्वयं 🖠 [ध्वत] वीं योज (राय का १ ११री) । राभा, प्यदाक्षी ["प्रभा] पाचरी नरा-पृचिती (ग्रंक प्रके)। "स रि ["स] पुषी बारा (दर २६४ छै)। यहन्त र्नुन [ पटन्तु भूम-गम् (दे २ ११ व)। यण्ण वि [ यम] पान्द्रर वर्षां सना (मापा १ १७)। सिरा में [सिराम] भूत का वयक्त (घर २)। धूमंग वू [दे] भवर, में छ मनस (दे ४,१०)। धूमगत[पूमन] भूमदात (त्य २ १) । भूमहार न [व] नागा नाग्यत मधेना भूमदय पुंदि] १ तहाय हजान हानाब रमहित्र भैता (रे.१.६३) । भूमद्भवमहिमा भी व [र] र्गनरा मण्य (t z 53) i भूमप्रतिश्रम रि [र] नो में शास्त्र कर नगर्ने पर में को बेच्या दर बाद कर (तिद्व Hungentier [4] min Eint Einel 16 2 (1 44) 1 भूमतिक [न] र मेन्न काला (रे र the are fre (et) : طعرا (4 أج) (4 عبس حب (4 ع पूजा दिशालिका भूमा रेका भूमान । मुक्त (बाह भरे) । quis er [qu'] ! ye eie. A Rents A galati erz and erf

(गार)। रे हेंच मजीत (शर २ १)।

इंगाल र् व [ग्रहार] देव घोर राव

(सोप २०० का)। यत्र दूर्विनु] १

बमाप्रीति (से व १६ वटन) । वष्ट्र भूमार्यतः (पतक से १ व) 1 भूमामा हो [भूमामा] पाँचकी नरह-दृक्ति (पतम ७६, ४७)। कृमिज वि [कृमित] १ कुन्द्रक (निंड) । २ श्रीना क्या (शाक भारि) (दे ६ वद)। धर्मिजा की दिनिशाद दुहासा (दे ६. ६१ पाधा का १ वन ३ 🗢 मरा)। भयत देवी भ्रमा (सुम १ ४ १ १६)। मुरिभ वि दि दीर्व नम्बा(दे ४, ६२)। पुरिजनह वृद्धि यथ नोहा (दे ४ ६१)। मस्रविद्या (सप) देवो मुस्ति (दे ४ ४३२) । मुक्ति) आहे [मुक्ति, स्त्री] यून रव रेख भूकी (बर्गका प्राप्त २ ४)। कव क्रवा पू [क्रवस्थ] बीम्न ऋतु में विश्व-यनेवाला अवस्य-कृत (कृता) । जीव वि िंकक्षों किसके पनि में धून सबी हो वह (वव १)। भूसर वि ["पृसर] कृत से विस (स ७७४) वर्द) । भोड वि भिगेत् दूव की साठ करनेताला (तूपा १६६) । यंग पू [पन] धृति-स्टून मार्य (पोष २४ थै)। बरिस 🖞 विषे बृह की बची (भावम)। इर न गृही बची छन् में तक्के तीन भी पूल ना पर बनारी हैं बह (ज्य १६७ य)। मुख्यिक्की की [दे] पर्व-विशेष होली। बृद्धि इग्रेप्यच्छसरेस सम्बंधि हम्राजिल्हा व (कुलक १)। भूसीवहृ वृ वि प्रष बोझ (वे ४, ६१)। श्रम सक [सूपय्] कुर करना । क्षेत्र

(बाका २ १३)। यह सूर्वेत (दि ३१०)।

भूष र्रु [भूपं] १ शुगन्ति इस्य से अरुल बम । २ सुबन्दि इच्य-विशेष को देव-प्रश धादि में बदाना जाता है (शाना १ १ सर ६,६६) । सदी की पिटी कुप-पात क्य से मधै हाँ क्याची (वं १)। आत न विस्त्र ] कुर-पार (दे ३ ६१)। भूवण न भिपन देवप केता। २ दूस-साम, रोप की निवृत्ति के बिए किया वाता वृत्त का पाक 'इवड़ो कि वमसे य व श्वीकम्मविदेवसे' (स्स ६ ८)। बहिन्दी विचि विपनी वनी हाई विचा भगरवाची (कृप्यू)। वृतिक वि विभिन्न रे शायित वरम किया न्या । २ डीप थादि से भीना न्या (बाद ६) । ६ इन दिशा ह्या (योग गन्ध १) । युग्धर देखिसरी १ इनका पीना रंद ईस्य पारक वर्त । २ वि इसर रेक्सका इंक्ट पास्कुवर्णकला (प्रामुब्ध वा ७ ४ से ६, **4**₹)। **प्**सरिभ वि [पुमरित] वृषर वर्तना (पाद्यः स्विते)। में सक [मा] भाष्य करना। नेइ (संक्रि ११)- निक्रि चैरले (इस १ )। थे**अः ) वि व्यिय**े व्यक्त-शेष्ट (प्रवि भेज्य रश्रासार १)। भेउद्विमा केतो भीउद्विमा (तुच १ १)। भेज वि विस विषय करने पोन्स (शासा t () i वेद्धान थियी वीरव वीरवा (पश्चार वेणु 🕏 विसु] १ वय-प्रमुख यो । २ स्वत्स भौ । ३ दूबार बाद (है ३ २६ चंड) । भेर देखी धीर = दैसे (विक १७)।

वेषय प्रश्चित्त । स्वर-विशेषः विवयस्य**रत**-पएका भवीत क्यानिया (हा ७--पत 1611 भोज्य एक बाब, देनेना राज्य करता पकारमा । बोयुका (भाषा) । नक्त भोर्बत (सुपा दर)। मोभ दि [भीत] योगा हुमा प्रकाशित (वे १ २६४ ७ २ पा १६४)। भो भग विभिन्न ही १ थोले बाला। २ ५. बोबी (अपंच ११६)। भोजण वि भावन वोना प्रधातव (सा २ रक्स १८० ग्रीम १४७)। मोद्रम देवो मोञ=भीठ (ना t )। घोळा वि [सूर्य] १ द्वरील चारनाहरू। २ मपुष्प नेता भूरत्वर (वव १)। भोरव न 🔃 विक्रमानुर्य (धीप)। मोर्राण) में भोराण की पिक नतार भोरणी 🕽 (नुपॉ ४८) धनि पॅद्र) । घोरिय देलो घोड्य (मुग २२)। भारतीयी **थी [धोर्सकेतिक] रेत**निधेर र्मे स्टला भी (खाया १ १ — पद ३७)। मोरेय वि मिरिसी केलो भोडा (गुग 43 ) i योव केंद्रो घोठा≔ बाव्। क्षेत्रइ (ध १३७) वि । । योनेका (प्राचा) । वह- घावंत (व्यव) । क्वक घोडवंत घोडवमाण (पत्रम १ ४४० शासा १ व)। इट घोषणिय (श्रामा १ १६)। भोक्य देनो भोमण (विंड २६) । भोवय केवी सोवग (हे भुद्र (धर) स [भुक्स् ] सञ्च तिवर **(रे** 

Y YEE) I

।। इस विरिपाइअसङ्सङ्ख्यवस्मि अधायदसर्ववक्षो अधीतस्मी वर्रको सम्बो ॥

## गा न देखो

१ प्राह्म भाषा में नकस्पीद सब शाद शाकासारि होते हैं, प्रपाद भावि के तकार के स्वान में निश्य या विकास से खं होनेका स्थाकरुएों का सामान्य नियम है (प्राप्त २ ४२-६ १ ६३ दी। हे १ २२६८ यह १ ६ ११) सीर प्राकृत-साहित्य-प्रन्वों में बीनों तरह के प्रयोग पाए आहे हैं। इससे ऐसे सब सब शब्द एकार के प्रकरण में बा बाते से यहाँ पर पूनरावृत्ति कर ध्यर्थ में पूस्तक का कनेवर बड़ाना विषय नहीं समभ्य गमा है। पाठकरण एकार के प्रकरण में बादि के गए के स्वान में सर्वत्र नी समग्र में। यही कारण है कि नकारादि शक्तें के भी प्रमाण एकायदि शब्दों में ही किए थए हैं।

## ч

न्द र्ष [द] १ ब्रोह्य-स्वातीय व्यव्यत्त वर्ण-विशेष (प्राप्त)। २ पाप-स्थाग पत्ति व पारवण्डले (घावन) । प स [प्र] इन सनी का पूजक समाय—१ प्रकर्पं न्यमेखं (से २ ११)। २ प्रारम्भ वरापियं 'पकरेष' ( व १ मग ११)। १ वर्षातः ४ व्यक्ति प्रसिद्धि । १ व्यवद्वार । ६ वार्षे सीर्स (बिचु १ है २ २१७)। जमसरल मूत्र (पिने कर)। = स्टिनिटर (निमू क् १७)। १ प्रमण हमा निनष्ट नात्रप (ठा ४ २--पत्र ११६ दी) । प रि [प्राप्] पूर्व तरक स्थित (श्रीष) । पर्जगम पु [एसउड्रम] धन्द-गिरेप (रिप) । पर्भप र् [प्रजद्व] राधवनिष्टेय (वे १२, = 1) : प्रजब्भ रेजो पराध्म = प्रवस्य (प्राष्ट्र ७६) । पहच प्रिति १ यरेप्रा-नूबक (स्तृति १ १)। २ तस्य तत्त्व, भीतः भारतन्त्रं पर वनिर्व (सम्बत्त १४१) वर्गीत ११)। पह व [पिनि] १ वर वर्ग, परगीरत करने-बाता (बाम, धा १६६। बप्प) । १ मार्थिक । | प्रत्मिह देनो पदिश्चित् (स ६२६) ।

३ रदकः 'मूबई' 'तिघरागणवर्दे 'नरवद्र' (मुपा ३६ व्यक्ति १७३ ११) । ४ व्येष्ठ, दत्तमः चर्राण्डरवर्ष ( प्रति १७ )। <sup>9</sup>घर न [ गृह्] समुराह (यह )ः इया स्थया ध्यै [ झरा ] पवि-मेबा-पच्यम् धी दुनवती थी सनी (या ४१७) पूर ६ १७)। हर देवी घर (है १४)। पइ देखी पश्चि (ठा२ १) काम धार २१)। पदम वि दि र मिंबत तिस्सूनतः। र न. पहिया रय-वक्क (दे ६ ६४) । पद्दर्वेणो पग"⊂प्रदृति (से २ ४%)। पद्भ देशो पथ = पद्। पद्दवपरण न [प्रस्युपपरण] प्रश्नुरचार, प्रतिन्तेषा (रंगा)। पद्दञ्ख देगी परिष्ट्रस (नाग-निक ४३) । पर्धया देवी पर-यया (छावा १ १६-पथ १ ४)। पहर (घव) देनो पाइक (गिव) । पर्राथिति देशो पहिति दि (बाट-कडू ११६)। पश्च देतो पाइक (नियानि १६४)।

पश्च्यम पु [प्रविच्यम ] मूत-निरोप (चन)। पद्भ (प्रप) कि [पर्तित] निय हुया (पिन)। पक्क (स्त) वि प्राप्ती मिला हमा सम्ब (पिन)। पइद्धा बेसी पहुण्या (मनि' संख्)। पइट्रविदि १ विष्टने रस को बाना हो बद्धार किरना १ पूँमाम राखा (दे 4 44) i पर्दू रेवो परिदू (बहु र दी) । पहरू वि दि] प्रेषित मेना हुमा 'बढ घर कुमर मिण्यो समयाद्धं विशास परिवर्ष (संबोध १)। पहितु [प्रतिष्ठ] भगवातः सुराधेताय के पिता वा नाम (सम १३)। पहरू वि [प्रविष्ट] जिसने जोग रिया हो पर् (म ४१६) । परहुव बर [प्रतिनयापय्] दूर्ति साधि सौ दिपि-पूर्वेक स्वारमा गरमा । परदुरेण्या

(पैमा ७ ४३) ।

परदूषम रेगो परद्वापम (सम्) ।

स्विति (पेवा ८)। । मूर्ति में ईस्वर के इर्को का धारोपका निक्यनिकास पहरू कश्या विश्व बाश्चेतस्त (सर १६ १६)। ७ मामब, ग्रावार (धीप)। पद्या 🛍 भिविसा र नारणा नास्ता (श्रीद १७६)। २ समाचान श्रीका निराश-पूर्वक स्वपद्ध-स्वातन (वेदम १३४) । पददाम र् [मिरियान] एन प्रदेश (राव રથી ા पद्रद्राण न [प्रतिष्ठान] १ स्विति, सवस्वारः 'कारूण पद्धार्थ रमशिष्ये एत्य भन्तामी' (पडम ४२ २७) ठा १)। २ माबार, भागव (स्त)। ६ महत्त भावि की नीव (पन १४६)। ४ मगर-विशेष (शाक २१)। पद्मकाण न विकास स्टब्स्ट (वेद २३)। पदद्रावक ) देवो पदद्रावय (छाना १ १६ पर्देशका ( राज)। पद्भाषण न [प्रतिष्ठापन] १ संस्थातन (पैमा ७) । २ व्यवस्थापन (पैमा ७) । पद्भावय वि [प्रतिप्रापक] प्रविहा करन-बाबा (बीप पि २२ )। पद्भविषय नि [प्रतिष्ठापित] संस्वापित (स 42 . X) 1 प्रदक्षिम नि मिविधियो मीत्रका पना इसा (बाचा २, १६ १२)। पद्मद्भिय वि [प्रतिष्ठित] १ रिक्त प्रमस्तित (बना) । २ माभित "रम्यामर्खारपदिनाख पुरिसारत व व कालिह (प्राप्तु ७ ) । ३ व्यवस्थित (भाषा २ १ ७) । ४ गौरवासित (R 2 4 ) 1 पश्रम्बस वि [प्रतिनिक्त] निवम-संका विव्यमित (वर्मवि २१६)। पद्रव्य पि दिं विद्रश विस्तृत (वे ६ )। पङ्ख्य वि प्रितीर्णे | प्रकर्व से तीर्ख (धाना)। पद्मण्य ) विक्रियोजी की स्थितिय पहेण्यत किया १५० 'स्टबार्गहरूक्क्क्क्क लातुरै सा पश्चिम्लाए एँड (बार्**४** )। र प्रमेक प्रकार से मिनिया (पं**पू**)। र क्षिया ह्या (ठा६)। ४ क्सिस्टिट (ह्या १)। १ म. पंत-विरोप दीर्नकर-के के

पद्भार की प्रितिक्षा १ मादर, सम्मान । २

क्रीति, करा । ३ व्यवस्था (हे १ २ ६)।

४ स्वापना चेस्पापन (एडि) । ३ यनस्वान,

सामल्य किन्न हारा बनाना हुधा बंब (संदि)। कारा को किया किसने सामान्य नियम 'प्रस्तानो पद्मगुणुक्का मगुलुक घरनारो विश्वण्यक्तका मग्राह्य (निष्कृ ४)। तम व ितपस् ] तपरवर्गा-विशेष (पंचा ११)। पद्रण्याच्ये प्रितिद्वाी १ प्रस्तु रूपव (नार-मलती १ ६)। २ तियम (घीप वेचा १=)। ३ तकैताइ प्रसिद्ध धनुमान-प्रमाख का एक समयक शास्य क्यन का निर्देश (इसनि १)। पहण्याद (शी) नि [प्रविद्यान] निवरी प्रतिकानी गर्दे हो बद्ध (मा १९)। पत्रक्रिय वि पितिकावत ने प्रतिकावला 'बेबमोक्बपदिसारों' (उस्त १ १ **2** ) ; पहुत्त रेको धडत = प्रदृत्त (मनि)। पुत्रच नि प्रिकीसी बसाक्षमा प्रस्कृतिक (t (1, w)) i पहल देनी पविश्व - पवित्र (सूपा ७४) । पद्मवि (शी) वेद्यो पगद्म (नाट--- क्यू ६१) । पश्चिम न मितितिनी हर सेव (कल्ब)। पहिंद्रेस कि [प्रक्रिक] विभिन्त (सूम १ K, ?) i पद्मविसद्द न भिक्षिविक्सी अधिक्ति, इर रोज (सर १ १)। पद्मनियम कि प्रितिनियत दिक्त किया हुमा नियुक्त निम्ता हुम्म (मामम)। पद्दस देखो पद्दण्ज==प्रतीर्छ (परह २ १ धी-पन १ ६)। पङ्क पङ्कता } रेको पङ्ग्म (तन ग्रंदि। मा ६)। पद्ममा भेवो पद्ममा (पेदन १६) । पश्चमा वेको पश्चमा (पुर १ १)। पद्भय देवो पक्षियाः का पश्चमाण (बर ४१६) । पद्मपर्देश न [प्रविप्रवीक] क्र्यंब, इर सन (रमा) । पद्ममय नि मितिसयी प्रदेश प्रालीको धन जनवानिशाचा (शामा १ २ वर्ष्ट १ रः चीप) । पदमा की [प्रतिसः] दुवि-विशेष प्राकृतक मर्ति (बुष्ट ६११)।

पदमाणाण न बिविभाद्यानी प्रविद्य है धरपन होता ज्ञानः प्रावित्र प्रत्यस (धर्मर्स 22 E) 1 पद्मक् नि [प्रविमुख] धेनुस (३४ ७४४)। पद्गर प्रकृषिया जेला वपन करनाः पद्यापित (धाना २ १ २) । धुना-पद्याप्त (भाषार १ २)। प्रवि पहरिस्पृति (माचा२ १ २)। कमी, पहरिक्जीत (४ ७१६) । पद्गरिक वि [दे प्रतिरिक्त] र सूच चीत (देद अरांचे २, १६)। र निस्तल विस्तीर्थं (देद ४१)। ३ तुम्ब, इसका (चे १ ४०)। ४ प्रकुर, विश्व (पीव २४६—-पन १ ६)। ६ निवल्वं क्रव्यव 'पदरिकमुद्वाद मछाराज्यार विद्वारप्रमीत' (क्य) । ६ ग. एकान्य स्वल विजय स्वान. निर्जन क्षेत्रह (दे ६ ७१) स २६४) ४४४) मायम छन् २६६)। पहल (मप) वैको पहल (पि ४४६)। पत्रकाद्या सी जितिकाविका विकास के सन चननेवासी सर्वे भी एक वार्ति (एव) । पद्रक्ष प्रविचारिका १ स्वन्थिये धराविद्यानक देव-विरोध (छ। २, ६)। २ धैन-विशेष श्रीपद (पश्च २, ३)। पद्म पूरिविची एक शन्तव का नाम (चन)। पइवरिस न [प्रतिवर्ध] इत्युक वर्ष (१५ पद्माइ नि [प्रतिवादिन्] प्रतिवासी प्रतिकारी (विसं २४ )। पद्मविधिद्र वि [प्रतिविशिष्ट] विरोव-पुक-विरिष्ट् (स्था) । पद्मिसेस रू [प्रतिकिरोप] विरोप क्षेत्र मिन्ता (विशे १२)। पद्दस वेको प्रविस । यहबाह (भूवि) । यहबंदि (वे १ १४ दि) । कर्म, पद्मीत्रवद (माप)। भव पद्भव (यभ )। इ. पद्मसियम्ब (E 414) I पइसमय न [मदिसमय]इर समय प्रक्रिक्ट (पि २२)। पक्षर वेको पविस । पदछक्त (व्यक्ति) ।

पदमाखः (भीष)।

(महाः भवि)।

(\$ 4, 22)

1 (705) 5

संक्र पश्चिक्तम (स्व)।

पदमार सह [ प्र + वेशयु ] प्रवेश कराना ।

पद्मारिय वि प्रिवेशित निसका प्रवेश

कराया गया हो वह, 'यहसारियो य नगरि'

पद्दत पूर्वि विवास क्षेत्र का एक पूत्र

पद्वता सक प्रिति + हा विधाप करना।

पद्र देशो पद्र=पति (यह दें १ ४ पूर

प्रदेश वि प्रितीत् । १ विज्ञातः । २ विरवस्तः । व प्रसिद्ध विद्यात (विसे ७ १)। पर्देश न प्रितीकी द्रीय घरमण (रेमा)। पर्देड् की [प्रतीति] १ किरवासः। २ प्रसिद्धिः (स्व)। पर्राय रेखो पस्त्रीय । पर्रावेद (गय) । पहिंच पू मिनीप । धैपक, विया (पाम की १)। पद्दव वि [मलीप ] १ प्रतिरूत (१११ २ ६) । २ वृं राष्ट्र दुरमन (रा ६४८ ही) हेर २३१) पहेंस (प्रा) देवी पहेंस (परि) । पड (धन) वि पितिशी निय हमा (निन)। पक्त देनो पागय = प्राक्त (प्राप्त ६) । पाइज र् [ब्] दिन, दिवस (दे । १)। पद्मान प्रयुत्ती संस्थानियेत 'माताह्न' को की राजी साल से गुलुने पर को संस्या त्रध्य हो बहु (इक्ट क्षा २ ४)। प्रक्रम न प्रियनाही संस्थानिके 'ध्यन नो चौरामी ताग्र से प्रकृते पर को संबद्धा तस्प हो वह (टा२ ४)। पर्वत सर [प्र+पुत्र] १ जोइना पुत्र करना। २ उपबारता करना। ३ प्रपृत करना। ४ प्रेराणा करना। ३ व्यक्तरार करना । ६ वरना । पत्रैजद्र (महा प्रति नि १ ७) । पर्वति (रण) । यह पर्वतेत् पर्णजमान (मीत परम १४, ११) । क्या पराज्ञमात्र (प्रवी २६) । 🖫 परविश्वहरू पत्रम (सन्दर, ६) ए। ७२४ ही। सिन् ११८४) पत्रहरूप (बर) (इस)।

परंज्या दि प्रियोजकी प्रेरक, प्रेरणा करने-वाला (पैचव १)। पुरेज म मियोजनी प्रयोग करनेवासा (पदन १४ १)। देखी पञ्चीअण। परंज्ञणया ) श्री [प्रयोजना] प्रयोग (भीप पर्वञ्चणा । ११४): 'दुश्वं भीरद केम्ब रम्यस्य रूप् पर्ववणा दुस्तै (बन्दा २) । प्रदेशिक वि [प्रमुक्त] विसका प्रयोग किया गदाहो बहु (मुपा १४ ४४७)। पर्डजिन्तु वि [प्रयोक्तु ] प्रवृत्ति करनेवाना (स र १)। पर्वञ्चित् वि [प्रयाखियत्] प्रवृत्ति करनेवासा (ठा घंर)। पउट्य पउट्यमाण हेरे पर्वे । पडट्ट भ [परियुक्त्य] मारकर । परिदार पू "परिकार] मर कर किर बनी शरीर में उल्लाहीकर उस शरीर का परिमोध करता 'एवं सन्त भारामा । बरहस्मद-बादवामी पर्स्ट परिहार परिहरित (भग ११-पत्र ६६७)। पउट्ट वि [परिवर्षे] १ परिवर्षं मर कर फिर उमी राधेर में बराज़ होना। २ परिनर्त भार 'एम छ गौयमा ! योसासस्य मधान पुरतस्य पर्द्धः (भग ११—पत्र ६६७)। पउट्ठ वि [प्रकृप ] बस्पा हुमा (है १ 1111 पडट्ट पूर्विकास्त्री हाथ का पहुँचा कलाई सीर नेहमी के बीच का भाग (पर्ह १ ४---पत्र ७वः वष्यः कृमा)। पपट्टीर प्रिज्ञष्टी १ पिरोप मेक्टि । २ म. धति उच्छिए (चंड) । पउट्ट वि [प्रद्विष्ट] क्षेत्र-पुत्रक 'की की पठट्ट विद्यो (पूरा ४३१)। पत्रद्वन [दे] १ गृत्यर। २ द्वं परका परिचय प्रदेश (दे ६ ४) । परम घर [प्रमुखय ] तन्द्रशत होना नीरीय होता सप्तस्य चिवितसार चत्रपद बबो न नौर्याम (वर्षे में ११८४)। पक्रम 🕻 👣 🐧 क्या-प्रसेदः २ जियम सिरेप (रे ६ ६१)। पत्रा वि [प्रसुत्र] १ बद्ध निर्देश 'बद्

सम्बरणविद्वारो बागद पर्वोखदिवाणपि' (सूपा ४७२ महा) । २ हैबाट, तम्बार (रंस ३) । पत्रणाह पू [प्रकृताट] क्य-विरोप पमाह का पेड चक्कड (दे ५ ६ १)। पडल सक [प्र+धूस्] प्रदृति करना। इ पउत्तिदृष्ट्य (शी) (नार-राष्ट्र ५७)। पत्रक्त विशियक्ती विश्वका प्रयोग किया पयाहो वह (मद्रा भवि)। २ न प्रयोग (ग्राया १ १)। पत्रच पू पित्र संबंध नहका योठा (प्राकृरे य ११७)। पउस म [प्रतोत्र] प्रतोद, प्रावन बाह्रक पेता (इम्र १)। पडरत वि [प्रवृक्त] जिसने प्रवृति की हो बह (उदा)। पउत्ति भी मिन्नति र प्रगतैन (मप १५)। २ समाचार, बृतान्त (पाय: श्रूर २, ४%) १ ४४)। १ कार्यकान काम । बाउस कि िंट्याप्रत दिन में में सना हुया (धीप) । पंत्रति भी प्रिमुक्ति वात हरीकत (का प्र२२० सम्)। पडसिक्य देवी पडस - म + बृद्। पउत्त [प्रयोकत् ] १ प्रयोदकर्ता । २ प्रेरला क्वी। १ क्वॉ निर्मावा। स्री क्वा (तंत्र ¥X) 1 पण्स्य न दिही १ गृह्य स्ट (देव ६६)। २ विप्रोपित प्रशास में यदा हुआ। 'छहिद मोबि प्रज्ञानी महं स कुणान्य सोबि सस्युर्जेज (सारेक ६६० हेना ३ पत्रम १० ३) बमा ७६ मिने १६२ छन दे ६ ६६: भरि)। यद्भा ही पिनिशी बिनश पति देशान्तर गया हो पर की (शोध ४१६) भूपा १ व)। पत्रहरू हैता पर्वे हैं। पउपय रेगो प्रजाल्पय (भग ११ ११ दी)। पउप्पत्र देनो पश्राप्यत्र = प्रशिक्तः (मग tt (##): पत्रम न [पद्म] १ नूर्पे-श्किमी कमन (हे २ ११६३ पाइ १ ६ कम बीर प्राप्त

१११)। २ १र-निमान-रिटेप (सम १३

११) । १ मन्या-विधेन नवार्य को कौरानी

नाम न प्रमुचे पर जो धीमा नाम हो बह

१)। द्वय पुण्यिकी एक धानी समित [क्षेत्सर] द्रव्यीपुर नदर के एक राजा का (ठार ४० इक) । ४ कच-कम्प-विदेश नाम (कम्म ७)। त्यर पु [कर] र (ग्रीप कीन ६)। १ पुत्रनी समाका प्रक वो महाराच न्यमक विनदेव के पास बीका चेवा (ठा व)। नाइ **चेवो भा**म (<del>ए</del>प खिलायन (खान्य २)।६ विल का नवर्ग कमसी का समुद्र । २ सरोवर (छन १६६ मूलर्स (को २)। व विकास स्वय-पर्वत का ९४६ दो)। पुरुष "पुरो एक वक्षिल्याय थी)। "सम्प म ["सन] प्रयाकार भा<del>वन</del> एक किसार (ठा ६) । ६ प्रे समा सम्बन्धः नगर को धालकत 'नासिक' माम से प्रसिद्ध (**₹** ₹) i है (धन)। प्यस दूरिस से इस सन श्रीता-पति (परम १ १, २१८)। १ परमय देव [पदाक] कैसर (दस ६ ६४)। परिशी काल में जरका यह जित-देव का नाम धाठपी क्यारेन भीड्रमण के वसे मादै। १ पदमध्यद्व पूं [पद्मप्रम] विक्रम भी देख्वी (इन्प)। प्यमाची [प्रभा] एक पूल-इस ध्रवस्थितीकाच में उत्तर नवनी नवनशी शहान्ती का एक जैन मानार्थ (विपा ३) । रिख्यी का नाम (इक)। प्यष्ट केवो प्याम राजा राजा पद्मीतर का पुत्र (प्रज्ञम ६, पडमाक्षी पिद्याीर सम्मी।२ वेदी-(ठाइ.१ सम ४३ पति)। सङ्गप ११६ ११४)। ११ एक शामा का विशेष । ३ और, सर्वेत । ४ पुण-विशेष िभद्गी सवाभ एक्टिका एक पौत्र (पिर नाम (क्य ६४ व टी)। १२ माञ्चल नामक हुनुम्म-दुष्य (प्राक्त २ )। २ १)। साक्षिपुं ["साक्रिन्] विद्यावर पर्वत का शक्छिता केन (ठा२ ३)। १३ पठमाची पिद्यारि वीसरें ती लंकर वी वैद्य के एक द्वाबा का नाम (परुम ५ ४२)। यराजेन में धानायी उत्पर्तियों में परनम मुलिमुक्टरकामी की माला का नाम (सम देलेवाबा माठवी चक्रवर्ती राजा (सम ११४) । मुख देखी पडमाणण (धड़)। रहाई १३१)। २ धीवर्ग देक्तोन के इन्त्र की एक १४ वस्त क्षेत्र का मानी माठवाँ बत्तदेश (तम रियो र निवायर-पेश का एक समा पटचनी का माम (ठा क-पत्र ४२६) पटम ११४)। ११ पश्चली सना का निवि भी (पत्रम ४ ४६)। २ महुरा नपरी के राजा १२ १५१)। ६ भीम नामक राख्यकेन्द्र नी चैम-नातक मुन्दर वड़ों की पूर्ति अस्ता है बबसेन का १व (महा)। "राय दूं "रागी एक पटरानी (ठा४ १---पत्र २४)। ४ (उप १व६ दी)। १६ राजा भेलिक का रक्त-नर्ण मणि निरोप (१६६) १६६)। एक विद्यावर क्रम्बाका नाम (परम % एक पील (निर २ १)। १७ एक मैन पुनि राय प्रतिक्वी मातकी चएक की सपर २४)। ५ रावसानी एक फली (प्रका ४४) काशास (रूप) । १८ एक सुद (कूप) । क्का नवरी का एक राजा जिसने बीमधी का १)। ६ सहसी (राज)। ७ वनस्पति-विशेष १९ पच-मूख का समिहाता देव (छ. २ ३)। मण्डरण किया वा(ठा१)। स्कलाई (पएए १--पन ३६)। य श्रीकृष तीर्भनर र महाराधनामक जित्रदेश के पास दीका ["बुक्त] १ उत्तर-कुक्क्षेत्र में स्थित एक दुल मीप्रकटनाव की मुक्त रिज्या का नाम (१व केनेपाला एक राजा, एक बाबी राजींप (ठा (ठा२ ६) । २ क्यास्तर वहा क्यत ६)। ६ धुक्रांना-वस्तुकी तत्तर किशार्में )। शुक्स न ["शुक्स] १ मळने देन (बीव ६)। स्याको "ख्या १ कमिली स्वित एक पुल्करियों (इक)। १ वृत्तरे सोक में स्वित एक देश-विमान का नाम (सम परिनी (भीद १ मन कप्प)।२ कमल के यत्तरेत भीर वासुरेत की माठा का नाम। ६१)। २ प्रवस देवलीक में स्थित एक देव याकारवाली बझी (गामा ११) । वर्डिसय ११ भेरमा-विदेव (राव) । विमलकानाम (मक्षा)। ३ दुर्चाना बहेंसय न [किर्नस ३] प्रधानती-देवी का पडमाड र्यु [के] कुछ विशेष पमान का फैर्ड थेरि⊜क नाएक पीन (निर २ १)। ४ एक सीवर्ग नामक रेपनीक में स्थित एक विभाग मक्ष्यक (वे ४, ४)। भारी राजीं महाराधनामक किनरेव के (राज लावा २—पत्र २३३)। दरकेदमा पडमाणग र् [पद्मानन] एक चना का नाम पाढशोधा कैनेवास एक समा(छा)। की ["बरमेदिश] १ कमके भी घट (उप १ वर टी)। "परिय न ["परित] १ एका रामनक वैदिशा (मन) वे वस्यू द्वीप की कसती के पडमाम र्वु [पद्माम] यह वीर्वहर का नाम नी भीतमी—चरित्र। २ प्राकृत भाषाका कपर च्या हुई देवों नी एक मोम-मूर्गि (जीव एक प्राचीन बंब, बैन रामावशा (प्रक्रम ११ ६) । बृह् दू ["स्युह्] सैन्य की नयाकार (पडम १ २)। १२१)। णाम पुं["नाभ] १ वापुरेन रक्ता (पर्याह १ १)। सर प्रं ["सरसः] पडमार [दे] देको पडमाङ (देश १८)। रिप्ल (परम ४ १) २ मानामी ऋषरिएते कमलों से पूच वरीनर (सामा १ १ वर्ष) पटमानई की [पद्मानती] १ कमूतीप के महा)। "सिरी सी ["भी] १ स्ट्रम चड-नात में बरद**ोत में होने** गला प्रयव जिल्**रे**न मुमेद पर्वत के पूर्व तरक के स्वक पर्वत पर वसी नुनुभयन की परसनी (सम. ११२)। वानाम (पा ४६) । १ निम्ब-दानुदेव के प्रकृतेवासी एक रिरकुमाधी-देवी (ठा )। १ **९ ए% को का नाम (दुमा)। सेप्य दू** एक जारुमीनक राजानानाम (लागा र बगरान् पार्चनाव की शास्त्र-देती. को साव िसेती १ समा वेश्विक के एक बीज का १९--वन २१३)। दस न ["दस्र] राज वरहोन्द्र की पटरानी है (शंकि १ )। वसव-सव (प्राट) । इद्द्र पुरुद्ध निरिष न्यमं विश्वते जनवान् महाचीर केपाल दीराः ६ भीड्रच्य की एक परनी का नाम (बंद ब्रवार के वननों से परिपूर्त एक महान् सुव नी भी (निर १ २)। २ नानरूपार-बादीय १९)। ४ मीम-नामक राज्यकेख को एक वानाव (नम १४) नप्पा वस्त्र ११. एक केन का बाद (कीद)। सेहर रू पटरानी (सप १ १)। इ.सक्टेश्र की एक

पन्सनी (सामा २—पत्र २१६)। ६ वस्ये-द्वर सक्ष दक्षिकाङ्गती एक की ना नाम (मात ४)। ७ सत्रा दूसिक की एक पनी (मन ७ १)। ८ समोध्या के राजा इरिसिंह की एक पत्नी (कम्म ८)। ट तैवलिपुर के रावा नगकरेतुकी पत्नी (वेंस र)। १ कीशाम्बी नवरी क राजा शतानीक के पूत उत्तम की पत्नी (विपा १ १)। ११ शतक-पुर के राजा शैसक की पतनी (एगमा १ ४)। १२ राजा कृणिक के पूत्र कासकुमार की मार्यकानाम । १३ राजा महान्म भी मार्या का नाम (जिर ११ प्री १९६)। १४ बीसर्वे हीर्थंकर कीमृतिमुक्ततस्वामी की माता ना नाम (पथ ११)। १४ पूर<sup>न्</sup>रीनिस्हौ नवरी के राजा महायथ की पन्छकी (यानू १)। १६ रम्पनासक विषय 🖒। प्रत्रपानी (\* Y) I परमावशी (घर) हो [पर्मावती] एव विशेष (पिंग)।

पडमिणी स्मै [पढ्सिनी] १ वसिनी, वसत-तता (वस्स तुसा१४४) । २ एक सेही की स्मैकानाम (उन ७१८टी) ।

पउमुक्तर पू [पद्माक्तर] १ ननवें चक्रवर्ती श्रीमहत्त्रपायक के तिया वा नाम (मन १२२)। १ नन्दर पर्वत के स्तरसाय बन का एक क्षित्रस्ती पर्वत (इक्र)।

पडमुक्ता स्मै [पद्माक्ता] एक प्रकार की राज्ञर, जॉक कीमी (जावा १ १०—पत्र प्रमण २२१,१७)।

पउरति [प्रचुर] प्रमूठ बहुत (हे हे हेट । कुमा गुर ४ ७४)।

पडरिंदिति १ पूर-संबंधी कपर से संबंध पर्यक्रमा १ वयर में स्ट्रोबल्सा (है १ १६९)।

पारम र् पीरम्] पुम्नानम् मनः-वेद्ययः नृर का पुत्र (बॉर्स ६) ।

पत्रयम (यर) देवी पुराम (चौर)।

पहरिस रि [पीन्श्रंय] कुष्कन्तम, कुष्य वा बनान्त हुमा वेदरत तह बन्दरशिकारा (पर्वेड वर्दर)। हर्द

पटरिस १ पुंत [पीरुप] पुष्पतः पुष्पारं, पडरुम १ बीरता मरदानी (हे १ १११ १६२) : 'पडरहा' (प्राप्त) 'पडरहा' (स्वित

११२) 'पडस्सा (साम्र) 'पडस्स (साम्र १)। पडस्स सक [पन्य] पकाना। पञ्चक (हे ४ १ : दे ६ ११)। पडस्सम न [पन्यन] पद्मा पार्क (म्पह १

१)। पडस्टिअ वि [पक्त] पका हुमा (पाम)। पडस्टअ वि [प्रश्यक्ति] रूप कता हुमा

(उदा) । पण्ड देखो पण्छ । पहलह (पहुः है ४ ६

१८)। पड्डिम [पक्क] पराहुमा (पंचा १)। पडहुग न [पथनक] स्टोर्स नापान (स्टान कुशारि पत्र १७ २)।

पर्याचय ति [प्रकृषित] विशेष कृषित कृष (महा)। पदस सक [प्र+द्विष्] द्वेष करना। पर-

सेजा (सोप २१ मा)। पउसम वि [वि] देश-विशेष में उत्तरम । की

ँमिया (दीप) । पडस्स देवी पडस । परस्सति (दूम १७७) ।

बङ्ग पडस्सेन पडस्समाण (यन वैद १२)। सङ्ग पडस्सिकण (स्व १११)। पडहण (या) देशो पयहण (सवि)।

पञ्च न [प] गहु पर (१ र ४)। पए स [मा] पहुचे पूर्व 'तिन्यपालमण कराणे सार्वारामाणे कर्म पण्डोग्रे (सीम ४७ मा) 'बह पूर्ण विशावनता पण्डापणा करस्वर्ण कर्म ('सीम ११८)।

पर्याच्यार दे मिर्माचार स्वाव को एक बाहित को हरियों को करने के बिर हरियों-समूह को बचते एवं पानते हैं (पदह १ १—पन १४)। चयर दें [ब] १ इतिनंबर, बाह ना विद्रा

पण्डु [कु] १ कुन्तवस्य साहसा १८६१ । २ वार्ष, एप्या १ केटेटीनार नामक प्रयु-विटेश १ पने का थिर १ देननार सार्थ स्वर । ६ ति दुस्टीन दुर्यवार्ध (१ ६ ६७)। पण्म पुँ वि] प्रातिकेदिवन बहोती (१ ६

j) i logi I [4] mijania, gint (a पयस व बिदशी १ विस्ता विभाग म हो सके ऐसा भूक्य सबसव (ठा ११)। २ कर्म-दसका संबय (नव ३१)। ३ स्पान, जयह (कुमा ६ ५६)। ४ देश का एक माय प्रान्त (कूमा ६)। ६ परिमाछ-विशेष निर्रश धनयन-पर्श्वित माप। ६ होटा माग । ७ परमणु । न इप्युक्तः ६ व्यक्तः चीन परमालुधीना समूह (राज)। कम्म न [कर्मम्] कर्म-विशेष प्रदेश-त्म कर्म (मय) । रेगन [मि] नमों के दलियों ना परिमाल (भग)। सम वि ["पन] निविद्य प्रदेश (प्रीप) । जास न [नासन] नर्म विधेव (ठा६)। लाम दूं "नाम] वर्ष इच्यों का परिएतम (रा ६)। ६५ ट्रु विषे इमैन्दर्भे का माध्य-प्रदेशों के साय संबन्धन (सम १)। संसम प् सिंग्समी कर्म-हर्म्यों को नित्र स्वभाव वाने कर्मों के रूप में परिएउद करना (ठा४२)।

परसम्म न [प्रदेशन] छादेशः 'पएकण्यं णाम क्वएको' (माषु १)।

पणमय वि [प्रदेशक] कारेशक प्रश्लेक पितिपद्गत्वपूर्ण वेदें (विसे १ २१)।

पार्गम पुष्टिशिन् स्वनामकात एक राम, बोधी पार्थमान भगतत् के वेशि-नामक मछनर संप्रहुत हुमाया (राम कुप्र १ शमा ६)।

पम्मिमी की [व] पहोस में छनेवानी की पहोसिनी (वे ६ व टी)। पम्मिमी की [प्रवृश्चिता] बंदुत के पस

पर्णसंशी भी [प्रदर्शिता] मंदुत के प भी पंपती तर्जेंगी (मीप ११ )। पर्णसंय देवो पद्सिय (शुत्र)।

पञ्जाम पू [पयोद] मेच (रष्ट ७ १२) । पञ्जाम देवो प्रमात (हे १ २४४ धनि १

पञ्जाञ रेणो प्रभाग (हे १ २४% धनि ६ सण नि वर)।

पञ्जोभग्न न [भयोजन] १ हेनु, निर्मित्त नारण (मुझ १ १२) । २ कार्य, नाम । १ मननव (नहाः कत्त २१ स्वयं ४४) ।

पआहर (शी) ति [प्रपातित] निमता प्रभीय कण्या स्या हो वह (नाट—निक १९)।

पत्रांग पू [प्रयोग] प्रयोजन (पूर्व २,७ २)।

जोग 🛊 [प्रयोग] १ सम्द-पौक्ता (श्वस ६३)। २ जीव ना ध्यापाट, केतन का प्रयत्क 'रूपायी इतिक्यो पद्मोयविक्यी य विस्सरो वैन (सन २६) ठा १ १ सम्म १२६. स १२४)। ३ प्रेयमा (मा १४)। ४ ज्ञाम (धादुर) । ३ जीव के प्रमल में नारत)-मृतुसन मादि (ठा३३)। ६ बहर विवाद राजार्च (वसा ४)। क्रम्म न िंशर्मम् जन यादिकी केहा **से** यात्य-प्रदेशों के शाव वैवनेताचा वर्गे (राज)। करण न ["करण] जीव के व्यापार हारा होनेवाता विभी वस्तुका निर्माण 'होइ छ एपा बीवच्यावारो तेष्ठा वं विकिन्यानी पमोक्करणं तर्व बहुको' (विशे)। "किरिया की शिक्ष्याीमन कादि की केला (ठा के ६)। फब्रुय प स्पिर्धकी मन शाहिके व्यागार-स्वान की वृद्धि-द्वारा कर्य-परमाखधी मॅबइनेनला रच (कम्पा२३) । वीर्ष प् ["बन्ध] बीव-प्रकल हास होनेपाला बन्दन (मन १ व १)। सङ्घा मिति | बाक्-विषयम-परिवात (रमा ४)। संपमा धी [संपन् ] याचार का बाद-विवक सामम्पै (द्रारः)। सा स [प्रमागज] जीव प्रकरत से (ति ६६४)। प्रमाज केनो पर्यज्ञ=प्र+कृत्। पर्योजप् (पर ६४)। प्रभाजग नि [मयोजक] निम्बिसक निर्णावर बगढ (पर्नस १२२३)। fr Y)I वाव बानादीवान (ए। धार र)।

ያየረ

पञाह देवो यबहु=प्रक्रेष्ठ (प्रात्र धीप प्रभात्त न [प्रतोच] प्रतोव प्राप्तन-मट्टि पैना। घर र् [ घर] धनवाडी हाननेवाता, बहन प्रभाद पु [प्रनाद] उत्तर गेगो (भीप) । पआध्यय दु[प्रपीत्रक] १ प्रपीत्र वीव वा पुत्र। १ प्रक्रियं ना किया तिए नावेरी हैत्तं सम्राप्तं दिमलस्य प्रस्तुयो वर्गात्यप् धम्मधाने नाने माजवारे (वप ११ १। ्यम १४८)। दशांत्पय र् वि प्रपीमिकी १ शमासा ३ सिप्य-विर्ति रिप्य-स

क्षि ११ – पत्र ४४ ही)।

ter) i पञ्जोब्ह र्ष [पटांक] पटेल परवर, परोध (मयख १)। पजोधी की प्रतासी । तनर के भौतर का **एस्ता (मर्स्ट्र) । २ तपर भा बरबाजा 'बोजर्र** पद्मोनी में (पाद्मा सुपा २३१ व्या १२ द्वप पुन्धः स्वि)। पञ्जोबद्वान देशो भक्तकस्थातः प्रमानद्रानेहिः (पि २०४) : पद्मोबाइ पुष्पियाबाइ] मेन कल्ल (पटम ८, ४१। से १ २४। मुर २ वर्ष)। पभोस सरु [ग्र+द्विप्] देव करता बैर करता । पद्मोश्वद (मृद्ध १ १४) । पभोस पुदि प्रदेवी प्रदेव प्रकृष्ट हेव (टारार्थात धना सार्था मुरार्थ, **४ पूर्व्यक्ष ४५% क**रम १ मद्द्रित ४ कुछ स ६६६) । पञ्जोस दुन क्रियाची १ सम्बद्धका दिन भीर रात्रिका सम्बन्धन (मे १ १४° कुमा)। ९ वि प्रमुख दोवों से पूर्क (से २ 1(11 प्रभोद्य (वप) देशो प्रवद्य (वर्ष) । पश्चोद्धर वृ[पयोधर] १ स्तन वन (प्रसः धे१ २४ पडड बुर २८ ४)।२ मेक बारक (बळा १)। ३ क्रम्य-विशेष (निव)। ६६ दुव[प**ङ्ख] १कर्द**य शीवड़ कारा कारो बीका 'बस्ममितिप मो सर्व पंत्रव वक्छेपले' (भार) हेर ६ :४: ३१७ प्रापू २१); 'चुमद्द व पंडें' (वजा १६४) । २ पाप (सूधा २ २)। ६ धर्मनम इन्द्रिय वरीयह का থনিগছ (বিশু १)। সাৰভিসাকী िविक्रिमी क्य विशेष (पित) । प्यभा की ["प्रभा] चौची नरत-नृति (टा क इक्)। सहस्र रिविष्ट्रक] १ वर्षय-प्रकृष् (१ £)। १ पार-प्रदूर (तूम २ २)। **३**∫

पंध्रं की पिक्करी कीको नरक-मूर्ति (इक कम्म ३ ४)। पंचामा को पिङ्सभा | नीवी नरक-प्रविक्ष (एत ३६ ११८)। ५ कायह को [एक्सक्ती] पुल्लन गामर विवय के पश्चिम दाएठ की एक नदी (इका वे ४)। पॅकिय वि पि<u>डि</u>च्चे पेक-पूछ, कोवनला (मप ६ ६) मनि)। पॅक्सिक दि [पक्किस] कर्यनगला (बा २० बा ७६६ कमा कुत्र १०७)। पॅकेस्ट न (पद्धेस्ट) कमत पप (क्यू दुव \*\*\*) | पंस्न दंकी पिक्षी १ रंक प्रीक्षि पांच पक्ष (पि ७४३ रामा पठम ११ ११ वा भा १४)। २ पनच्या क्रिन, प्रवाशका (च्यन)। स्थिप व ासने भिक्न-विशेष (राप) । पैलि पुंधी पिक्षिम् विशे विकिया प्रशी (बा१४)। आदे जी (शि ७४)। पंतुविभा} की [के] पंच नन (कुत्र २८) पंसुवी } के ६ क)। पंगसक[मा(] प्रहल कलना≀ पंतर(है। Y Y E) I पंगज न [माझय] धांकन (दूत्र २६ )। पंगु वि [पङ्ग] पार विकस अध्य संबद्ध, चुवा कोहा (पासा पि ६६ : पिंप)। प्<u>रा</u>र एक मिा+की बक्ता सल्ह्यका करना । पंदुष्ट (स्वनि) । क्षेत्र, पंरारिनि (भार) । पंशुरण न [प्रावरण] क्य, नपहा (ह १ १७४३ कुमाः सा ७ २) । पंगुक्ष वि [पाह्न ] रेको पंगु (विचा १ १) र्शक्ष्यः प्राच्र∫। पैप फि. व [प्रद्रान्] नोव ४ (६)। ११३ क्यां कुमा)। उद्धान किंद्रकी र्थभागत (स.२१२) । "डब्स्य र्थु "कुन्सिक] "बाबन में 🚵 हर दिवार करने बला (त २१) ।{ . पुंडिश्चिकी नगान

केनसवान सौर निर्वाख । २ काम्पिस्यपूर, बड़ा तेरहर्वे जित-देव भीविमलनाम क पौचीं क्रव्याणक हुए थे (ती २४) । ३ वय-विशेष (बीठ)। कोटूग वि [कोएक] र पाँच कोहों से युक्त । २ पूर्व (तेंद्र) । गरुप न [राठ्य] याय के ये पान पदार्ज - दून दही। बृत कोमय धीर मूच पंचरम्य (रुप्पू)। "गाइ स ["गाय] गापाछन्य वाचे पाँच वद्य (इस) । "सुष्य वि ["सुष्य] पांतप्रशा (ठा५ ६)। चित्त पुँ [विश्व] एष्ठ जिन देव भीपचप्रमः विनके पाँची करपासक चित्रा क्लाव में हुए चे (ठा ११ कप्प)। जाम न ["याम] १ सहिता धरम प्रचीय, ब्रह्मचर्यं भीर स्थाग ये पांच महावत । २ वि जिसमें इन पाँच महावर्षों का निरूपण हो वह (झ.६)। ज्युद्ध की ["नयति] पंचानवे १५ (काल)। अध्य वि [नवत] १६ र्च (कात) । तास्त्रीस (घप) कीत ['पत्मारिशत् ] पैकाबीस ४% (रिया पि ४४६६)। "वित्यी औ ["वीर्वी] पांच तीयों का समुदाय (वर्ग २) : सीसइस वि ["रिञ्जलम] फैडीसबी ६१ वॉ (पएछ) १४)। दस वि व [इदान] पनछा १ (क्प्यू) । इसम नि दिशमी पनग्रका १२ वो (छामा १ १) । दसी की ["ब्रशी] १ पनच्या १४ मी (विदे १७६) : २ पूर्विगमाः। ३ धमानस्याः(नुज्ञ १)। ब्रह्मचरसय वि विशासरहाट तम] एक सी पनस्त्रा ११६ का (पत्रम ११६ २४)। नबद् केको शहब (पि ४४७) । माणि नि [\*झानिन्] मधि मूत प्रवर्षिः यन पर्यंत्र और केवल इन पांची डानों ने पुक्त सर्वेड (सम्म ६१)। पडली की ["पर्वी] मास की वो घटनी को बहुईटी धीर रुक पंचमी ये पाच किविमा (स्पन्ध २६)। पुरुषासाह पू िपूर्णपादी सार्वे विनदेव भौरतिवननाच जिनके पांची करवा-रणक पूर्वाचाडा नसात्र में हुए थे (ठा १८१)। पुस पू ["पुष्य] पनव्हर्वे विनवेद बीवर्ये नाम (ठा ४.१)। बाण 🐧 [बाल] कामरेव (तुर ४ २४६। हुमा)। भूय न न ["भूत] द्विनी, यस सरित बार्यु सीर

भाकारा दे पांच पदार्च (सूम १११)। मूयवाइ वि ["भूतवादिम्] धाला धादि पश्चीको न मान कर केवस पांच भूतों को ही माननेवाला नास्तिक (मूच १ १)। सङ्ख्याच्या वि [सङ्ग्रिश्वेक] पाँच महा **वर्तोदाता (सूम २ ७) । सङ्**ख्यम न ["सहाद्यत ] हिंसा यसस्य चोरी मेनून धीर परिवड का सर्वमा परित्याप (पराह २ १)। सहासूय न ["सहासूत] प्रविकी इस धरित बासू और सत्कारा ये पांच पदार्थ (विसे)। मुट्टिय वि विमुप्टिक] वाच पुणियों का, वांच पुष्टियों से पूर्ण किया वाता (केरव) (ग्राया १ १ कप महा)। सुद्र पूर् [सुद्ध] सिद् पंचानन (छा १ ६१ टी)। यसी देखो वसी (पदम ६६ १४) । रैच, राय र् चित्र] गौप राज (मा ४३ पराइ २० १—पद १४१)। शिसिय न शिशिक] र्गाणक-विकेष (ठा ४ १) । ऋषिय वि [क्यिक] पाँच प्रकार के क्लौवाता (ठा ४ v)। वर्त्युगन [वस्तुक] माचार्य हरि म्ब्रसूरि-रिवट प्रन्य-विशेष (पंचव १ १)। बरिस वि विर्धे] पाच वर्षे की सवस्ता वाला (सूर २ ७३) । "विद्व वि ["विध] पांच प्रकार ना (प्रयु) । योसदम वि [विशक्तिया ] प्रवीसवी (परम २४, २६)। संगद्ध प्रसिमही मत्वार्य बीहरिमहसूरि कृत एक वैन प्रन्य (र्पव १) । संबच्छरिय वि "मांबरसर्ग्यक्वी पाँच वर्ष परिमारण बारता पाँच नर्षे की बायुवाका (सम ७५)। सह वि [पष्ट] वैस्टवां ६३ वॉ (परम ५३, ५१) । सद्ग्रिकी [पष्टि] पेँसट ९५ (इच्य) । समिय कि ["समिव] पाँच श्रमितियों का पासन करनेकाला (सं च)। सर प्रै शिरो कामधेन (पाफ पुर २, १३ मुग ६ र्था)। सीस व् िंशीर्थ] देव-विरोध (श्रीव)। सुण्य न श्रिक्यो पांच प्राणियद-स्वान (तुम १ १४)। सुचन व ["सूत्रक] याजमं भौद्वरिभक्तपुरि-निर्मित एक केन प्रस्त (पत् १)। सेज सेख्य, सेख्य पृश्चिक. की सब्योदिन में रिन्त और यांच वर्नतों से विमूपित एक स्रोटा हीप (महा पह ४)। सोगपिअ वि विगिष्टिक स्मावकी बर्धेग क्ष्युर, इंडोस सौर वातीसन—नायस्त इन पांच मुगन्धित बस्तुयों से संस्कृता 'नग्नस्य पद्मधोर्योपएए तंबोलेएं, धवसेसपूर-वासविद्धि पचनकामि' (वना) । इन्तर नि ["सप्तव] पबहुत्तरको ७१ को (पटम ७१ ८६)। €चरि की [सप्तिति] १ संक्या विशेष ७६। २ जिनकी संबंधा पणहत्तर हो ने (पि २६४ कप्प) । इत्युक्तर पू [हस्ताचर] मनवात महावीर, जिनके पौर्वो करवारपुकः उत्तरपुकानपुती-तरात्र में हुए में (कप्प) । छिद् पुँ [ैं।सुन] समरेन (प्रण) । । प्राप्ता भी ["नवित] १ संस्था विशेष पंचानवे १४। २ जिनशी संक्या पंचानवे हो वे (सम १७) पत्रम २ १ १ पि ४४ )। । जिट्टम वि "नवर्टी पंचलवा ११ वा (पदम ११ ६९)। ाणण पू [ानन] सिंह क्लेन्ट्र (मुपा १७६ मार)। । णुज्यस्य वि [ । णुप्रतिक] विंसा असरम भोरी मैन्नुन और परिवर्ड का धारिक व्यायनाता (सनाः धीप गाया १ १२)। याम रेको जाम (इह ६)। ास कीन शिरात् १ धरना-किरोय पचास १ । २ जिनकी संबंधापचीस हो के 'पंचार्य समियासाहस्तीसो' (सम ७ )। स्मिन **ि**श्चिक् प्राचार्यं भीहरिस्द्रमृरि इत एक पैन प्रत्य (पेचा)। सिंह श्री [रिरीवि] १ चंद्रशास्त्रिय घरती और पाँच न १ । २ जिननी संख्या पत्रासी हो के (सम ६२ पि ४४६)। स्तीइस वि [ोरीप्रिविवम] पत्राधीना ८६ वा (पत्रम दर वेश कक वि ४४६)। पंचेभण्य देवो पंचायण्य (यउद्र) । र्पचेंग न [पद्धाङ्ग] १ दो इल्ल दो बलु चीर मस्तक ये पांच राधिधानयन । २ वि पूर्वीक

पांच भंपनामा (प्रशास माहि) 'पंचेर्य करिय

र्पर्यमुद्धि वृं [के] प्रस्टनक रॅडी का माध्य

पेचेगुछि व [पद्मागुछि]हस्त हाम (शाया

कोई पश्चिमार्थ (तुर ४ ६८)।

(\$ 4 60) 1

११ कप्प)।

400	पाइअसइमहण्या	पंचंगुबिआ—पंडरिय
पंचेतुन्तिभा स्मे [ पद्धाद्वस्थित ] वल्ती-	वास मोरावरी नहीं के विनारे सामते हैं, वर्ष	पंक्रिय पिसिस् प्रियो प्रदेश प्रदेश
निर्देव (नएस १—पत्र ११)।	कि बाबुरिक समेपक सीन बसार एमनाहे के	विदिया (चन १ ६१ टी)।
पंचरा वि [प्रश्नक] पांच (१एवा मार्थि) की	बिद्या कोर पर, बोबावरो के किनारे, इनका होना सिद्ध करते हैं (उत्तर न१)।	पंजर पून [पद्धर] १ भाषाने उत्तास्थाय प्रवर्तन मारि शुनि-मण् । २ जन्माने-मनन-
कीमत का (दसनि ३ १३) : पैपान [पद्धक] पौचना समूह (सामा) :	र्यचवमण पू [पद्माकदन] स्थिर मुनस्य	नियेव सम्मार्व-प्रवर्तन । वे स्वण्डलका-अपि-
पेषञ्चन पुं [पाञ्चजम्य] सोहप्स का शंद	(सम्मत १३)। पंचासय न पिक्सासूत्र] ये पांच वस्तू—सही	पेप (वन) १)≀ पंजरन [पंजर] सिनदा सिनदा (वडाः,
(काप्र ८६२) वा १७४) । पैसत्त ) न [प्रकास] १ पोसपन याच	दूव की मधुतकाशकर (सिरि२१ <b>०</b> )।	रणु, पणु २)।
र्मचूक्तज∫कातो (तुर्दि ५) । रोबरश	पंचाक पू [पाडाव] कामशाक-मलेवा एक ऋषि (सम्पत्त १६०) ।	पिजरिअ पूर्वि] जहान का कर्मणारी-विशेष (सिरि ४२०)।
मीत (मुर १ ४८ वर्ण का दूरर४)। र्षवर्ट्ट वि[पद्मपुष्टू] पाव स्वाती में	पद्माल पुन [पद्माल पाझाल] १ देत-	पंजरिय वि [पंजरित] निजरे में बंद विसा
नुरा, चित्र (सकेये) माना (सित्र मा ४३)।	क्षियेय प्रज्ञान केट (सामारे व सङ्घा प्रकृष्ट रे)।२ यू. प्रज्ञान देश का स्वता	हुमा (पडार)। पंजस्क वि [शाअस्तु वरत सीना बहु
पंचपुत्र गुन [क्] मतस्य-बावन विशेष मद्यनी पनवृते ना जान विशेष (विधा है	(मनि)। १ धन्द-विशेष (पिय)।	(तुरा ११४) वजा १)। पंजाबि पूजी माञ्जब्धि जनाल करने के विए
—ात हरे ही)।	५ चालिमा स्मै [प्रज्ञासिका] दुवनी कछारि स्मित दोदी प्रविमा (स्प्यू) ।	भोड़ा हुमा नर-सपूट, इस्त-नात-विशेष
प्यम नि[पद्धम] १ पोषको (क्रा)। २ ∮ स्वर-निरोप (टा ७)। घाराकी	पेचासिमास्य [पाद्धास्तिरा] १ द्वार एव क्षेत्रस्या, होत्स्य (वेस्त्री १४०) । २ वल	संपुत्त कर-सम् (स्ता)ः उद्वर्षु["पुट] सन्त्रति-पृट, संपुत्त कर-प्रम् (सम् १४१
["भारा] घरन की एक उन्छ की पाँउ	<sup>!</sup> नाएक बर (नप्पू) ।	भीप)। उड कड वि[कृतपाक्रिक]
(मरा)। पंचमहरूभूरअ वि [पाद्यमहाभृतिक]	धवाक्षण्यः ) जीन [द्रिपञ्चपञ्चारात्] १ धवाक्षमः } संस्थानीकरोपः पचपन, ४४ ।	निस्ते प्रणाम के विष् हात कीसा ही च्या (समाधीय)।
यांच महाभूनों को माननेताया, साक्ष्यकतः का सनुवासी (मुख २ १ २ )।	र जिमनी संस्था पचपत द्वी वे (है २, १७४) वे २ २७ वे २, २०११)।	पंजिस र [ि] यनेन्य दल प्रह्मांना दल
पंपमानिज हि [पाद्ममा सक] १ शाच	पंचायस रि [व पद्मबद्धारः] प्यपनवी	'चरकुनेपु वर्गती गॅनिमसर्ल गरिएहेर' (स्विरि ११=)।
नान री अग्र का। १ व च मास म पूर्त होनापता (समित्रह साहि)। सी अस्	्(पत्रन ४४, ६१) । दॅचित्रिय ) पि पिम्नेन्द्रिय] १ वर्शीय	पंड वि [पाण्डय] वैक्त-विरोध में बलना। की की पंडेश वंडवानीपुनक्षकुषवरता
(सम २१) ।	पश्चित्रिय ) जिस्सी लगा बोब, नाक धान ग्रीर शत ये वांची दक्तियां हो (पगल	(क्प्यु)।
र्पंपनित्र रि [पाद्मनिक] पांचगी, यदम (स्रोद ६१)।	राशाय और रामपि)।२ ने, सम्ब	पैड   पूर्विण्ड, क] १ नपूरक स्तीव पैडा   (बीप ४६७ सम ११: पाय) । २
चेपती ही [पद्रातः] १ पश्चित (शबा)। २ तिविनीस्टेग पत्रती विवे (गम १६)	घारिया इतियो (वर्गे ३) । पॅथिया ग्री पिनिन्द्री १ योग्नी संस्ता	पेडव न मेंद पर्नेत ना एक दन (टार ३०६७):
था )। १ व्यक्तगुद्रसिद्धं प्राप्तन	बला। र पँच रिन ना (बब १)।	र्पेडन केयो पंडय (हे १ ७ )। पंडर द्रं [पाण्डर] १ धीरतर बावस्र होत ना
रिमन्द्रि (मण्)। ६ चयक्र निर्मापद्मानका (लाहा १ १६	र्यपुंतर क्षीत [पद्मादुस्तर] का पीतत स्तुत्वर, प्ला मीर काशेदुस्तरी नाकत	मन्त्रिता केर (राज)। २ शंत कर्ण स्त्रीज
कुत १६४) ।	(चरि)। ध्रीः धि (चारः)।	रंग । १ वि. स्तेषार्णरामा, सक्रेर (रूप्प) । भित्रमु पूँ [भिक्स] स्थताम्बर पैन प्रेतराव
र्यचयप्रया स्टे [पद्मनीकित] पुनररिका रिटेप इत्त्व में चनतेत्तरे सो-माग्रीय झाणी	पंजुत्तरसय नि [पद्माचरराननम] एक बीक्षंत्रसी १ स्वा(तस्त्र १ १,१११)।	ना कुनि (त १११) । पंडर रेको पंडुर (स्थन ७१) ।
को एक कार्ति (कीर १) ।	पंचेडिय वि [वे] रिमारिंग 'पैल मोपल मोइनले वेडिये दुरुवेश्यास्त्वेच पंचेडिय'	पंडरंग दूं [रें] स्ट ब्हारेर किन (हे ६
र्थचत्रहाधी [प्रप्रदर्श] द'व वर-वृक्षयता एक स्थल वहां बीधनवद्यती नै सस्ते	(मरि) ।	२६)। विद्युत्र (दि) धनेष्ठ, स्टब्स समितीय
परशास के समय काशन शिया था इस स्थान पा मरियाल कई सीन 'मानिक' सबर के	पंपसु र् [पद्मेपु] नामदेर पंची (नन्मः रहा)।	(वर्)। पेडरिय देवा पेड्रुरिक (व्हेंर)।
	•	• • •

२१६)।

र्पह्रय पू [पाण्डव] राजा पाएडु का पुत्र---१

यूपिशिय, २ भीम ३ सर्दुत ४ सहदेन भीर

५ स्टूब (खाबा १ १६ उप ६४८ टी)।

पंड्रव पू [चे] बरन-स्थाक (?)ः 'सिट्टि मुहर्वेहि

वाधियपंडनवम्लेक् भरवरी रही' (सम्मत

पंडविज वि [दें] बसाद्र पानी से भींवा ह्या(दे६ २)। पंडिका वि [पण्डित] १ विहल, राकों के मर्म को चाननेवासा वृद्धिमान, दावब ( 'कामण्यम्यः शामं गरिशमा होत्या बावकरी-कलापश्चिमा (विमा १ २ प्रामू ७४ १२६) । २ संबंद साम्रु (सूम १ ८,६) । सरण म "सरण] साधुका मण्छ कुम मरागु-विरोप (मान-पण्च ४९)। साथ वि [स्मन्य] विद्यामिमानी निव को गएवत माननेवाला दुनियाम समयका मुक्क सनाही (बोब २७ मा)। माणि वि "मानिम्] देखो पूर्वोक्त धर्म (परम १ १८ उप १३४ टी)। शीरिकान विभिन्ने सेयत का बारम-वस (भव)। पंडियमाणि वि पिण्डिसमानिम् ] पंडिताई का समिनान रखनेदाला विश्वता का वर्गड रवानेवाचा (बेहम ११)। पंक्रिया ) म [पाणिकस्य ] परिवताई, पंक्रिया । विश्वता बेबुच्य (जर पुर १२, ६८: पुपा २६ र्रथाः सं ५७)। पंद्वी वेको पंद्य = पाएवय । पंडीम (पप) देखो ५डिझ (पिप)। पंड् पू [पाण्ड] १ तुप-विदेश पाएडमाँ का पिता (का ६४ मधी पूपा २७ )। २ रोग-विरोध पार्या-चीप (व १) । ३ वर्ण-विरोधः शुक्त और पीत वर्ण। ४ खेत वर्ण। ३ वि गुरु सौर पीतवर्णवाना (वप्पा बढक)। ६ छक्रेट, रवेत 'छम छिम वनक्त सनदार्थ पंडू वर्ष व' (पाछ पडड) । ७ रिजा विशेष, पार्ट्डकम्बला नामक शिला (बे ४)

इक)। बंबसंसिख औ [कम्बस्रीस्स]

मेद पर्वत के काएडक बन के बांग्रिए। धीर पर

स्पित एक शिला जिल पर जिन-देशों का

जन्माविषेक विका काठा है (वा ४)।

"दंबकाकी "कम्बद्धा वही पूर्वोच्ड सर्व (छार ३)। तणाय पु विनयी पएइ राज का पूत्र पाएडव (गतड ४८३)। साई पुं सिद्धी एक जैन सूनि को सार्थ संमूर्ति-विजय के शिष्य वे (कप्प)। सर्दियाँ मित्रया की "मृत्तिका ] एक प्रकार की सफेब मिट्टी (बी.र १३ पएए १—पत्र २३)। सहरा भी मिधुरा स्वनाम-स्यात एक भगरी पाएडवाँ हारा बनाई हुई भारतवर्ष के दक्षिण तरक की एक नवधी का नाम (ग्राया १ १६---पत्र २२१, यंद्य) । राय पू िराज राजा पाएड पाएडवीं का पिता (रणमा १ १६) । सुय प्रै [सव] पाएकव (इस ६४८ छे)। सेग पूर्विनी पाएक्वों का बीपरी से स्टान्त एक पूत्र (सामा १ १६: सा ६४८ टी) । पंबुद्ध वि [पाण्ड्रकित] १ श्वेत रंगका किया हुआ (खामा १ १---पत्र २०)। पंडुस 🕽 पु [पाण्डक] १ चडवर्ती का बल्बों

का २, १--पम ४४। का १०६ थी। २ वर्ष की एक बारि (पापू १)। ३ न मेल पर्वेत पर स्थित एक बन, पाएडक-ना (प्रम १९)। पद्भ प्री (पाणूप् १ रेवेत कर्ण पर्वेत पर स्थित पर्वेत पर स्थान प्रमान १ १ रेवेत स्थान प्रमान १ १ रेवेत स्थान प्रमान १ १ रेवेत स्थान स्थान प्रमान १ १ रेवेत स्थान स्थान प्रमान १ १ विषय स्थान स्थान प्रमान १ १ विषय स्थान स्थान प्रमान १ एक प्रमान स्थान प्रमान १ एक प्रमान स्थान १ एक बारी स्थान सम्भावता स्थान (पाणूप् १)। प्रमान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान प्रमान स्थान स

पंदुरय । धन्योधिनों की एक बाठि (छाना

क्सा पंडरमा इरिंह हैं (उत्त ३)।

रे १६—पन १८६) । २ देखी पंदुरः

पंडुय ) की पूर्ति करनेवाना एक निवि (चक

पेंद्वरिकः } वि [पाण्युरितः] पाण्युर वर्णः पेंद्रुक्तरः । बालावन्तः हुमा (गा वेवनः विदा १ २—यत्र २७)। पेतः वि[मान्त] र सन्तवन्तीं सन्तिमः (जन ११ वेव)। २ मसीकनः, सनुन्तरः (सावाः

भोव १७ मा)। १ इतिपर्यों के धनतुरूत इन्द्रिय-प्रतिकृत (परह २ ६)। ४ मनद धसम्य, धरिष्ट (धोष १६ टी) । ५ घपसव मीच इष्ट (स्तामा १ ×)। ६ दक्ति निर्मन (दोष ११) । ७ कीर्स फ्टान्ट्रा येत बल- (बृह २)। य व्यापमा विनष्ट पीएपप्रवचगावमाई बंट' पेर्ट च होड् वावल**ें** (इह १) माना)। १ नीरस सूचा (उत्त a)। १ भुकाविष्ट का देने पर वचा हुमा। ११ प्यूपित बामी (ए।या १ ४--- पत्र १११)। कुछ न िक्का नोच कुस बबस्य बारि। (ठा ८)। यर वि विश्वरी नीरस प्राहार की सोज करनेवाना तपस्वी (पराह २ १)। श्रीयि वि ["श्रीविम्] मीरव प्राहार से राधेर-निर्वाह करनेत्रासा (ठा ४ १) । ीहार वि ["हार] क्या-पूचा श्राहार करनेवामा (ध ६, १)। पंताय चक [वि] ताइन करना भारता ।

विज्ञते (सिंग १२१)।
पंति की [मक्टिंड] र पीळ, मेळी कतार (ह १२१ क्रमा कम्म)। र हेना-पिछेर निवर्म एक हामी एक रच, तीन भोड़े बीर वर्मक वपाड़ी हों पीजेंगा (पत्रम १९)। पंति की [में] नेळी केळ-चन्ना (हे ६ २)। पंति की [में] नेळी केळ-चना (हे ६ २)।

(पाचा २ ६ ६ २)। की 'पंतिनामा' (पापु)। पंत्र पुणिया, पित्रम् | मार्ग प्रस्ता। और किर पेनियां (हु १ वद) 'अक्षीम पह परिप्राप्तुं (पुणा ४१: हुआ १४- प्राप्तु १७३)।

वा सरपंतियासि वा सरसरपंतियासि वा

(७३)।
पेम श्रुं [पान्य] पवित, प्रवाधित (है १ वे सम्बर्ध ७५)। इट्टण न [कट्टन] नार पीटकर प्रकाशिक के प्

विरोप (पएए) १--पत्र १३)। पंचन वि पिञ्चकी पांच (श्वता मारि) वी कीमत का (क्सनि ३ १३)। र्यवर्गन [पद्भक्त] यौचना समृह (सावा) : र्पवजनम र् [पाद्मभग्य] भीरूप्य का शेव (शप्र दरेश या १७४)।

र्पर्गुडिया थै [ पञ्चाङ्गुडिया ] ससी-

पंजल १० [पञ्चल] १ पांचपर पत्रक-पेपत्तण क्यां (दूर १५) । २ वरण भीत (मुर १ ६४ सच्छा का पूर्रक्र)। पैच्ह दि [पद्मपुण्ड ] पाच स्वानी में

पुरपु-पिद (नरेबी) वाला (शिक्ष घा ४३)। र्यवपुतः पूतः [वे] मस्त्र-कावन विशेष मध्री परइते वा जाश्र विशेष (विदा है

—गम वस् दी) । ५ **पम रि[६६३म] १ योवदा (इ.स.)** । २ र्प स्पर-विशेष (हा ♦)। भारा की [भाष] भरत की एक तथह की यति (मग्रा) ।

र्पणमध्यम् अ वि [पाद्यमहाभृतिक] प'च महाबुरी को माननेत्राचा सांक्रस्य नायनुरानी (मूख २१२)। पंचमासिम वि [पाद्मसा सक् ] १ पांच

मान की उग्रका। २० व कान म पूर्ली ६ लेशका (समित्रह सार्दि)। स्त्रे स्वा (गम २१)।

र्पपनित्र दि [पाद्यमिक] पान्तरी पनस (धोप ६१)। पैत्रमादी (प्रज्ञमः] १ पोत्रसे (प्राया) । २ विकिनिकोण पत्रमी दिवि (सम २३)

मा २ )। १ स्वाहरण-प्रतिद्व प्रतासन रिमधिः (पान्)। ध्ययम् रेगे पद्मजञ्ज (ग्रामा १ १६

Ju 36A) 1

र्षपग्ण्यम् ध्ये [पणपीक्रिका] धुलारिनर्ष रिटेर हाम में चननेराने छा-वातीय ब्राली बी एक बाति (बीच २) ।

र्वपर्यक्त हो [पद्भारती]पांच बर-बृत्रवाला एक स्वान वहां औरत्रवस्त्रज्ञी ने धक्ती पनराम के बनव भारतन किया था इन स्वान या मन्तिच वर्देशीन 'नाविक' शार के

पास दोशावधी नदी के किनारे मानते हैं, कव कि धादुनिक प्लेपक तीन बस्तर एनवाने के इतिली धीर पट, योशवरी के किनारे, इसका श्रोना विस करते है (वत्तर ८१)। पंचयम प्रिमाधका विकास

(सम्मत्त १६०)। पंचामय न [पद्मामृत] ये श्रीच नश्तु--वही दुव की मञ्जूषमा शब्दर (सिरि २१८)। पंचाक र् [पाद्धास] कामशाव-वरोवा एक श्रवि (सम्मत्त १३०) । पञ्चास्त्रं विक्रास पाञ्चास्त्री १ केट

क्रियेप, पश्चाब केत्र (क्षाया १ व महाः प्रश्र ()।२ ⊈. कमार वैद्य का स्वा (धरि) । १ सम्बन्धित (पिन) । ५ बाक्रिया को पिश्वाक्रिया देशी करहारि र्भिष्त स्थेयै इतिमा (स्प्पु) । पंचाक्षित्रा सी [पाद्यास्त्रित] १ हुप्त-धन

रोक्न्या द्रीपरी (वेखी १६०)। २ वल राएक भेद (क्यू)। पंचायण्यः ) श्रीत [दे पञ्चपञ्चाशत्] **१** द्वावस विकारीक्षेप प्रमुद्ध ११। २ जिन्ही संस्था पद्मान हो वे (हे %, १७४)

देश २७: देश, २७ हि)।

बादि पांच इन्द्रियां (वर्ष ३)।

पंचावस रि दि पद्भवस्थात्र] पचपकर्त (पटम ११, ६१) । र्ज्जिव्य ) वि [प्रक्रेन्ट्रिय] १ वर्ड और पश्चितिय है जिस्को त्यचा जीव, मार्क म्रोन भीर नान में बांची दिल्ला हाँ (पर्य श कप्प कीर १३ भनि)। २ व. स्वरा

पंक्षियाको [पश्चिका] १ प्रीव की संस्ता बाला। २ वॉच क्लि वा (वर १)। पंचंबर क्रीन [पद्योद्धम्बर] वट पीएब प्रत्यद, यात्र और वारोद्रावये का प्रत (इपी)। धेर्ध (मा२)।

पंचारमय दि [पद्योत्तरहाददम] एक धी पांचवी १ २ वा (पत्रव १ ४, ११४) । पंचिष्टय वि 🕞 रिमासिक 'नैस सोबसन बीयुक्तरी पेरिये दुरुदेश्यरूपे च वीपीर्य

(11t) i पंत्रमु 🛊 [पद्मेषु] शानोत गंदर्ग (गणुः पंछि, पु[पश्चिम्] पेद्धी, पत्नी प्रश्नेक चिद्या (उत्तर ३१ टी)। पैकर पुन [पद्धर] १ धाचार्य, क्याच्याव प्रवर्त्तं वादि प्रति-पर्छ । २ उन्यापै-पमन-नियेष सन्मार्थ-प्रवर्तन । १ स्वण्यान्यता-प्रति-

पैन (बन) १)। पैलर न [पद्धार] पिश्रप पित्रका (प्रकर कथ्य सम्बद्ध २)। पंजरिक्ष (दि] ब्यान रा क्येंचारी-विशेष (सिरि ४९७)।

पंजरिय वि [पञ्चरित] निवरे में वंद किया ह्या (नक्क) ३ पंत्रछ वि प्रिष्ठित वस्त धीना वर्

(सुना ३६४ व्यक्ता ३)। पंजिष्ठि पूंजी प्राक्षिधि प्रमाल करने के विष् बोड़ा ह्या कर-सपुट इस्त-म्बाध-विरोध धेदुक कर-इय (चना)। "ठड दूर्व ["पुट] मञ्जलि-पूट संपूक्त कर-द्वम (सम १**१**१ भीप)। इड कड पि [कुतप्राजनिश्र] विमने प्रशास के विष् द्वार बोहा है य (वन: धीन)।

पेंद्रिज न 门 यपेन्ड शत मुँह-मोना रतः

'चयक्रवेप पर्मता पंत्रिमध्या परियोद (शिंदि ११८) । पंड वि [पाण्डच] रेश-विशेष में क्ष्पमा की की 'पेरोर्ड दंश्यानीपुषप्रज्ञानका' पैड | पूर्विण्ड, क] १ नपूरक स्थीत पैड्रग | (सीन ४५० च्या (क्यो ।

पेडिया ने मेद क्वेत का एक वन (टा२ \$1 **54**) 1 र्पेडय केरो पंडब (दे १ ७ )।

भडर दें पाण्डरी रे शोरवर शावक होए गा व्यविद्वाता देव (धन) । २ रवेत दर्ल, तरेन रंग । १ वि. रवेडवर्ण गता, स्ट्रेट (४०४) । निकम् पू िभिक्ष् रेशेडाम्बर वैत्र संप्रदाव ना नृति (त ११२)।

पंडर रेको पंडर (स्त्य ७१) । पंडरंग र् [रे] स्त महारेग किन (है ६ 21):

पंडरंग 🛊 📢 धानेश, बॉव वा सीपाति (पर)।

पंहरिय देवो पंहरिश्न (ग्रीर) ।

र्वड्ड पू [पाण्डव] सजा पाएडु का पूत---१

दुविधिर, २ मीम १ सर्दुन ४ सहरेन मीर

५ महत (शाया १ १६ उप ६४८ टी)। पंड्रम पू [मे] धरव-एतक (?), 'सिहि गुहमेरि वाधिमपंत्रवदम्णीह् नरवये रही' (सम्मत २१६)। पंद्रशिक्ष वि वि विषय पानी से भीका हमा(१६२)। पॅब्रिटर वि पिण्डित र विकास शार्की के मर्म की अलनेकाता कुद्रिमान, तत्क्व कामज्यक्षः शामं पश्चिमा द्वोत्वा दावलध-भनापश्चिमा (विपा १ २ प्रामु ७४° १२१)। २ संयव साबु (सूम १ ८, १)। सरण गमिरणी शाधुका मध्य दून मरुश-विरोप (मन, पण्य ४१)। माण वि [स्सस्य] विद्यामिमानी सिज को परिकत मातनेवाला वृश्विकाच समयका मूर्च सताही (योव २७ मा)। माणि वि "भानिस्] देखो पूर्वोतः धर्म (पडम ११ २१ चप १६४ थे)। वीरिभ न विशेषी संस्त का बाहम-बस (भग)। चंडियमाणि वि[पाण्डित्ममानिम्] पंडियाई का समिनान रखनेवासा विक्रमा का धर्मड रखनेवासा (वेदय ११)। पश्चिम ) न [पाण्डिस्य ] परिश्वाई, पंक्रिया 🕽 विक्रमा नेपूच्य (उनः शुर १२ ६व मुपा २६ रंबा से १७)। र्वती देवी पंड = पार्क्य । पंडीश (पप) वैको ५डिश (पिए)। पेइ पु [पाण्ड] १ कुन-विशेष पाएडवीं का विता (का ६४० में गुपा २७ )। २ देश-विरोध पास्कृतीय (वं १) । ३ वर्ण-विरोध, शुक्त बौर पीठ वर्णा ४ क्लेट वर्णा ५ वि शुक्र भीर पीतवर्छनाना (कप्पुः बढ्ड)। ६ सप्टेर, रनेत 'समे समे नतनत प्रवस्त पंडू वयल वं (पाम: मउड) । ७ दिवा विरोप पाएडूकम्बना नामक शिक्षा (बे ४: इक) । फेबर्डामच्या औ [कम्बद्धशिका] मेद पर्वत के पारहक वन के बीच्या छोर पर रिक्त एक रिला जिल पर जिल-देशों का चन्मानिरेक निया चाठा है (वे ४)।

क्षेत्रस्ता की किम्पद्धा नही पूर्वोच्ड पर्वे (छ २ ६)। तज्य पुरितयी पराह राज का पूत्र पाएडव (फाउड ४८६)। सङ् पूरिभन्नी एक जैस मुनि जो सार्थ संमृति-विजय के शिव्य में (कम)। सहसा मिलिया और मिलिका एक प्रकार की सुफेद मिट्टी (बीच १ पएए १--पन २६)। सहरा को "मधुरा] स्थनाम-स्थात एक नवरी पाएक्यों हारा जनाई हुई मास्तवर्ष के दक्षिण दरफ भी एक नगरी का नाम (ग्राया १ १६---पत्र २२४, धट) । राम प्रै िराजी राजा पार्ट्स पार्ट्सों का पिता (णावा १ १६) । सम ५ जिसती पाएक (स १४० हो)। संत्र पू िसेनी पार्डमों ना द्वीपरी से करान्त एक पूत्र (ए।सा १ १६ इम ६४ व टी)। **पंक्रक्य वि [पाण्क्रकित] १ स्वेट रंगका** किया हमा (स्तामा १ १--- पत्र २८)। पंदुग 🕽 पू [पाण्डक] १ चक्रश्ली का अस्पों पेंड्रुय 🕽 की पूर्ति करनेवामा एक निवि (धनः ठा२ १--पत्र४४ छप १०६ टी)। २ सर्पं की एक वार्षि (धाषु १)। १ न मेव पर्वत पर स्थित एक वन पाएकक वन (सम 1 (39 पंदूर पूर्विपाण्यूरी १ स्थेत वर्ली, सकेर रंग। २ पीत-मिधित श्वेत वर्णे । ६ वि सक्त वर्णे-वाचा । ४ शेव-मिभित पीत वर्तुवासा (कप्प क्ष से a ४१)। इस की शिया एक बैन साम्बी का नाम (दावम) । रिथय [ैंस्विक] एक यश का मान (धाकु १)। पंदरंग र् [पाण्डराङ्ग] संन्यासी की एक कारि मस्य बयानेवाका श्रेम्याशी (घणु २४)। पहरता } र्ष [पाण्डुरकः] १ तिह-भक्त पंडुरय } वंत्पाधिमी की एक नाति (शाया र १६—पत्र १६६) । २ देखी पंदर क्सा पंडूरमा हवंदि हैं (उत्त ३) i पंडरिक १ वि [पाण्डरित] पाण्डर वर्ण पंदुष्टरम ) बालाबना हुमा (मा १०० किया

१ २---पत्र २७) ।

पंत दि [मान्त] र यन्तवती यन्तिम (नग

**६: ३३) । २ यशो**मन यनुषर (याचा

धोष १७ मा)। ६ इन्द्रियों के मननुष्ट्रम इन्द्रिय-प्रतिकृत (पर्ह्ह २ १)। ४ मन्द्र शसम्बर्धा प्रशिष्ट (योष १६ टी) । १ वनस**र** नीच इए (साधा १ ८)। ६ इस्ति निर्मंत (धोव ११) । ७ बीर्ग फ्यान्ट्रग र्यत बत्ब--- (बृह २)। य व्यापना विमष्ट शिष्कावनग्रमाई बंदे पंजन हाद नावली (बहर भाषा)। १ मीरस मुक्ता (उत्त ५)। १ भुक्तवस्टिकामेने पर वशाह्या। ११ पपुषित वामी (शाबार ५—गन १११)। कुछ न किछी सोच दूस अक्य जाति। (ठा =)। बर वि ["वर] शीरस प्राहार की बोज करनेवासा समस्वी (पराह २१)। क्षीवि वि विश्वीविम् नीरस माहार से राधिर-निर्वाह करनेवासा (ठा ४,१) । इहार वि [ हार] कवा-पूबा शहार करनेवाता (घ ६,१)। पंताय सक दि] शहत करना मारता। विवादे (पिंड ६२६)। पंति की [पक्षिक] १ पंकि, बेखी कतार (ह १२४ डूपा कम्म)। २ सेना-विरोप जिसमें एक हानी एक रव, तीन भोड़े धीर पांच पदाधी हों देखी सेना (पउम ५६ ४)। पंति की कि वेखी, केश-रचना (वे ६ २)। पंतिय भीन [पक्षिः] पेष्ठि, भ छी 'सराहि। वा सरपंतिवर्गण का सरसरपंतिवर्गल का (माचा २ ३ ३ २)। इसे. 'पंडियायो' (प्पण्) । पंध पूर्व पिन्य पिन्] मार्ग चस्ताः 'संस किर वेभित्ता (हे १ ८०) 'दंशीमा पह परिमद्ध (भूपा ११ ) हेका १४ प्राप्त 1 (84) पंच पू [पाम्ध] पवित्र, मुनाव्हिर (हे १ ३ ३ मण्ड ७४)। इत्यान [कुटुन] मार पीटकर पुसाकियों को मुख्ता (**शामा** ह १व)। बाह पू किहा बड़ी बर्च (विपा रे रे—पत्र रेर)। स्टब्ट्रिकी [किहि] वहीं मर्च 'से बोरतेखानई पामनार्य ना बाद पॅबकोट्टिवाकातं वस्ति (ए।सार १०)। पैयम र् [पान्यक] एक वैत कृति (छावा १ १३ वस्त १ थे)।

पंदाण देवो पंदा = पत्त पद्मिन, पंत्रमान्ते |

पॅक्सिय पू [पन्धिक, पश्चिक] पुराक्ति,

पान्च 'पेलिय हो एत्व सेंबर' (काप्र ११८)

मञ्चः कुमाक्षामा १ व्यवस्य १ (१४व)।

पंशुक्तुहणी की वि । अपूर-नृद्ध से व्हकी बार

पंपुक्त कि [कि] शोर्चसम्बर्ध (के ६ १२)।

पंपुक्त वि प्रिपुक्त विकसित (रिम) १

नवार्णमध्ये (पाउ ११)।

मानीत की (दे ६, ६१)।

प्युद्धिम नि [दे] भनेपित निसनी बीज की नई हो नह (दे ६ १७)। पंस सक [पांसम् ] मलिन करताः यदेई (विसे ६ १२)। पंसण वि [पासन] कर्मक्व करनेवाना हुक्छ नव्यनेदाना (हे १ ७ सुना १४१)। पंसु र् [पांसु, पांसु] कृती रज रेजू (ह १८ पाफ भाषा)। कीस्त्रिय कोस्त्रिय वि ["क्रीडिट] निस्के साम वयपन में पीयु-क्रीड़ाकी नई हो नह वक्पन का बोस्त (महा स्वष्ट)। "पिसाय पूर्वी "पिशाच" भी रेज़-सिप्त होते के कारणा निराम के तुस्य मानुगंपकृता हो मञ्जू (क्ट १२)। सुद्धिका पुं[मुक्कि] विद्यावर मनुष्य-विदेव (ঘৰ)। पंसु र्षु [पर्शे] इकार, करशा (हे १ २६)। पंस केवी पशु ( पद् )। पेंस्तार १ [पोद्यसार] एक तरह का नोत, उत्पर सबद्ध (दस ३ व)। पसुख्युं [के] १ को किया को नवा। २ कार, क्लावि (२ ६ १६)। १ वि व्यः, रोका हुपा(वड्)। पंसुखर् पिसिखी १५ व्या पराकेश्वास्त्र (u tt : ttt) | P. R. Hegu (पडक)। पंतुका को [पांतुका] कुकरा व्यक्तिराहिती की (कुमा)। पंसुक्तिम नि [पासकित] वृक्ति-पुष्ठ किना हुधाः 'पनुविधकरेता' (वकः) । पंशुक्तवा की कि पंशुक्तियाँ पर्धकी हुद्दे (पर १३६) ।

की (राम' सुर १६, २ 🕻 २ १७१)। पर्देव देशों पर्राव (माना १ ६ २)। पर्स्तवत र्षु [प्रकृष्यक] य<del>ष्ट्र विते</del>त एक प्रकार का बोहा (ठा४ ६—१व २४८)। पद्भेय दुं प्रिक्क्य | अभ्यः अधिनः (स्त्रवः ४) । पक्रमण न [प्रकृत्पन] इसर वेको (धुपा 448)1 पर्कपिक्ष वि [प्रश्वमिपत] प्रकम्प-पुत्क, काँगा हुमा (मार २)। पर्श्वपर वि प्रिकृत्यित् । कार्यवाचा (ज्य ह १६२) । बर्ध. भी (रंख) । पक्छ वि प्रकृत दि प्रस्तुत प्रकल उप स्थित घराची स्था (घर ७१०---गत्र १९४४ १व **४०—तत्र १**४ )। २ **इन्**ट निर्मित (बय १ व 🐿 )। पक्क देशो पगइड = प्रकट (इस ७ १)। पत्रवृह देवो पग्रहर । स्तरू- पत्रवृहस मान (गौन)। पक्क वि[प्रकृष्ठ] १ प्रकरं-पुकः । २ सीवा हमां (भीम)। पक्क्षण न [प्रकर्षण] बान्त्र्रेण बॉनार (বি**ৰু**৭) ৷ पद्मश्रद धक [प्र+द्मल्] कावा क्ला प्रतीसाकरनाः प्रवदस्यः (सूधारे ४ र te 印 tyn); पकल्प थक [प्र+क्ट्रप्] १ दाव में याना प्रपोग में बाता। २ काटवा केला। इप्रदेशस्य (छा३,१—पत्र ३)। आसी प्रमुप्य = प्र+ 🐙 व । पद्भाग एक [प्र+कश्पय्] १ करणा, बनाना । २ बोक्स्य करनाः भाषी वर्ग विक्रि पक्रमधानी (तुम २,६ १९)। पद्भव्य 🛊 [प्रदूष्य] १ व्यव्य व्यवार, व्यव धानवह (इ.४ ६)। २ स्थान, शक्क निवम (का ६७७ टी) निषु १)। ६ प्रम्पना-विदेश 'धानाराव' सूत्र का एक सन्दर्भा । ४ व्यवस्थानः 'स्ट्रुलीकविद्दे प्राधारप्रकर्पे' (सव १४)। १, इस्ला। १, प्रकारता। ७ निर्मोक प्रक्रम केल (निष्कृ १)। द वैन बाबुर्धे का एक प्रकार का ग्रांचार स्वर्धिर

नत्प (पंचन्धा) । १ एक महाचह, ज्योतिय <del>देव विशेष (मुक्त २)। शंक्र पुँचिनक</del>ी एक प्राचीत चैत प्रत्य, 'नितीय' सूप (बीर t)। सहयू ["यति] "निरोद" शम्बल का कानकार साबु, 'बम्मो निरूपकरी पक्रमबद्द्या को बच्चों (वर्ष १)। धर वि [भर] किथीर धम्यस्त का बालकार (निवृर्)। देखो पगप्प ≔ प्रकरः। परूपपा धौ [प्रकापना]प्रस्पशा भ्यस्याः 'पडम्ख तिवा पडम्पक्ष दिवा एक्ट्रा' (Frg १): पञ्चलमा को [प्रकल्पना] करना (शहर (४१) सम्बद्ध १४२)। परुप्पदारि वि [प्रकृत्यद्यारित्] किंग्रेव सूत का वालकार (बद t)। पर्राप्त वि [प्रकृतिपम्] समर देवो (वव पश्रम्भिभ नि [प्रकृतिपत] काटा ह्या 'एका परकृतिकया एएश पर्काप (१ कप्पि)। धा छेमा (सन्सः १२)। पद्मिष्य वि [प्रदक्षित ] १ संदक्षित (ह २)। २ निर्मित (स्था)। ३ न् पूर्वीर्वानित रूपा 'ख को धरिव पत्ररिपर्य (सूर्य १ **७** १ ४) । देखो पग्रिप्य । पद्भव विशिष्ट्यी बहुत कर्द में बना हुमा (इप ६२)। पकर एक [प्र+कृ] (क्लो का ग्रास्व करना। २ प्रकर्षते करूदा। १ करना। पकरेड पकरेंद्रि पकरेंद्रि (बक्ट पि १ र )। **१इ. पहरे**माय (स्प)। **ए**ड पहरिता (भव) । पद्धर वेबो पदर = प्रकर (बार—वेवी ७२)। पद्मरणया को [प्रदर्भवा] करका क्री (44) 1 पक्रदिक वि [शक्रमित] किलो कहाँ का प्राप्तम निम्ब हो वह (का १ ६१ छ। वनु)। पन्धम व [श्रद्धारा] १ धरवर्षे परकत्त (साम १ १३ मध्या बाट— स्टब्रु २७)। २ ई प्रकृत परिकास (सम ७ ७)। पञ्चव (द्रप) सङ् [ पन्] नकामा । वन्त्रवर (বিভ বি প্রহেপ)।

(सं६३)। ४ एक धनार्यं केस्र । ३ पुंजी-

धनार्य देश-विशेष में रहनेवाली एक मनुष्य

बादि (धौप राज)। बी. या (सामा ११

भीप इन्ह)। ६ तूं एक नोज जाति का बर,

श्रवर-पृद्ध (पेरा १२) । उस्त म [कुछ]

१ बाएडाम का कर (इह १)। २ एक महित

पद्मम देखो पयास = प्रकारा (पिंव) ।

पक्टि देशो पगिट्ट (राम) । पक्षिण्य कि [प्रश्लीकों] १ सन्न, कोया हुमा। २ बत्त विमा हुमा 'बर्डि पक्षिएखा (सा) किर्मात पूरला (इस १२ १६)। देखो प्रज्ञ = दकीएँ । पহিবিশ্ৰ দি [মন্ধীবিত] দভিত কৰিত (ब्रद)। पश्चित् देनो पगइ = प्रइति (प्राष्ट १२)। पश्चिति (शी) देशो पहड़ = प्रकृति (स्वप्न ६ मिनि६५)। पक्रिम देशा पक्रिणा (उत्त १२ १३)। यक्रिरण न [प्रक्रिरण] देते के सिए फॅल्ना (वव १) । पकुम देखी पद्धर ⇒ प्र+ क्ष । पङ्करण्ड (कम्म 2 4 ) i पहुष्प सक [प्र+क्कपू] बोव करना पुस्ता करता । पहुष्पति (महानि ४) । पद्रपित (पूपै) वि [प्रदूपित] ह्य, हपित पुस्तामा हुमा (हू ४ १२६)। पकुविम ऊपर देवो (महानि ४)। पकुरव सर्गमि+ इत, प्र+ इस्पेर्ी १। करने का प्रारम्भ करना । २ प्रकर्षे स करना । ६ करना। पनुष्यद् (पि ५ व)। बहु पक्रुव्यमान (मुर १६ २४ मि ६ ६)। पहुन्ति वि [प्रकारिम्, प्रकृषिम्] १ करो-शका कर्ता। २ पुरायमित केररशुद्धि कराने में समर्थे पुर (इ.४१ टा क पूजा 125) i पकृषिक वि[पकृषित] अवि स्वर से विक्रामा ह्मा (ज्य द ११२)। पञ्जेद्र रेखी पञ्जाट्र (राज)। पक्षेष र् [प्रस्तप] एसस, ब्रीन (या १४)। थका वि[पफ] पराहुषा (दे१ ४७ २ ७६ पाय)। पक्ष वि [दे] र इस पविषः २ ठमधै, पद्य पहुँचा हुया (वे ६ ६४ पाय)। पर्वात [प्रमान्त] प्रसुत प्रकृत (दुवा ₹७); सक्तगाइ दे [द] १ मकर, ममरमब्द (दे ६ २३) । २ पात्री में वसते सक्ता सिद्धारार बस-बनु (से ४, ५७)।

कुस प्यक्तपुरने वर्सतो सरको इपरोवि पर्राह्मभी होड (पान १)। पक्किया विदिश्चित स्वीतराय शोममान भूव शोमताह्मया। २ फन भगाह्मयाः ३ प्रिववद शियमापी (दे ६ ६१)। पद्धणिय पूंडी दि] एक धनार्य केट में रक्तेबासी मनुष्य-वाति (परह १ १--पव १४- इक) । पक्तन प्रकास] केवब मी में बनी हुई बर्जु, मिठाई मादि (सुपा ६८७) । पक्षम सक [म+कम्] प्रकर्ष से समर्थ होना । पक्तमद् (सम ११---पत्र ६७०) । पक्कम धक [प्र + क्रम् ] १ प्रकर्ष से जाता चलानाना समनकरना। २ सक प्रमल होना। प्रवृत्ति होना। पर्कमाँ (उत्त १ १६)। पत्तकमंति (छत्त २७ १४० वस ६ १६)ः बालुमामसामेश पश्यमे (सूध १ २ **1** (\$\$)1 पक्रम पुॅ[प्रकम ] प्रस्ताव प्रस्त (मृपा पद्मजी की [प्रमृमणी] विदानकिरोप (सूच २२२७)। पष्टक वि [वे] १ समर्थ, राजः (हे २ रेक्प्र पामा मुर रेरे रे ४ मनवा ३४) । १ वर्ष-पूत्रः, यविष्ठ (मूर ११ १ ४० वा ११८) । १ मीडा 'पतारि पत्रकत्रवदस्ता' (या व१२ रि४३१)। पश्चस देवा पद्धस (पाना) ।

पक्रसावम पुँ [पें] १ शरम । २ व्याम (दे

पदाइय नि [पकाकृत] पकामा ह्या

'पहरा पमार्टीनपशरिष्दा' (बन्दा ६१) ।

६ ७२) ।

पक्टिर सक [प्र+क] फॅक्ना। वह 'द्वार' व भूति च कमवर' व उवरि पकिर माणा (एपया १२)। पक्कीखिय वि प्रिकाशित निसने कीहा का प्रारम्भ किया हो वह (साथा १ १ कम्म)। पक्षेत्रय वि [पक्ष] पका हुमा (उना)। पक्रम पूर्विद्वी वेदिका का एक भाग (राग **=**٦) ا पक्स र्रु [प्रमृ] १ प्रश्न प्रवराय, मावा महीना पन्त्रक्ष दिन-रात (ठा २ ४--पत्र ¤६ हुमा)। २ शूमस धीर इच्छापञ्च **छनेना धौर धेंनेप प्रश्व (दीव २ हे** २ १६) । १ पार्व पांतर, कला के नीचे का भाष। ४ पश्चिमों का भवदव-विशेष पंद, पर, पत्तन (कुमा)। १ तक्तिग्रह-प्रसिद्ध मनुमान-प्रमास का एक घरपत साम्यवासी वस्तु (विसे २८२४) । ६ सरफ, मौर। ७ जल्बा, वच टोसी। च मित्र स्का। १ राधैरका शावा शाव। १ वरक्तर : ११ तीर कार्यक्ष (हू २ १४७) : १२ वरक्काचै (वव १)। स वि मिन पञ्ज-गामी पश-पर्यन्त स्वायी (कम्म १ १a)। "पिंड पून ["पिण्ड] मासन-विशेष—१ भानुसीर भाग पर रक्ष भाग कर बैठना। २ बोर्नो हापों से राधीर का बत्बन कर बैठना (क्त १ ११) । य पूर्िकी पंदा ताल कुष (कप्प)। बंद वि [ यम् ] शरक दारीयत्वा (पद १) । बाइद्ध दि विपार्तिम् पञ्चमत करनेवाला शरकवाचै करनेवाला (का ७२ व दी) यस्म १ दी)। वाद पूँ [पात ] तरलवारी (का ६७ स्वयंत ४२)। वादि (रो) देवो थाइह (शट---विकर मत्वती ६४)। बाय देती बाद (तुपा२ ६ २६३)। बायपु [वाद] पस-सम्बन्धी विदार (तर द्व ६१२) । वाह् प्र विश्व केंद्रिका का एक देश-विशेष (पैर)। विक्रिम नि [पितिन] पन पानी (हे ४ ४ १)। । प्राइया औ [वापिस] होन-विशेष (स ७१७)। पस्पांत न [पद्मान्त] यन्यतर इन्द्रिय-जात चलमर देखिनामें बरवर्त मराग्रहें (तिह

पक्कोत् ॥ (पप्रान्तर्) क्रवं तम क्लि ।

प्य प्रवा प्रत (प्य - बहारी रहे। ।

प्रार्त्त्र वह [म + क्ल्यू] र माक्लण ।
क्ला । द रोक्ट पिला । व प्यप्तक्षम ।
क्ला । द रोक्ट पिला । व प्यप्तक्षम ।
(प्रयो । प्रार्थे व प्रकार प्रवेपविद्या ।
प्रार्थेत्रण न [माक्ल्युन] र माञ्च्य । र माञ्चय । र प्रार्थेत्रण न [माक्ल्यन्त्र] र साञ्चय ।
पर्वार्थेत्रण न [माञ्चया । र माञ्चय ।
पर्वार्थेत्रण न प्रार्थे (प्रवार क्ष्य ) ।
पर्वार्थेत्रण क्ष्य (मुच र म. र)।
पर्वारक्षण निवार्थेया ।
पर्वारक्षण निवार्थेया ।
पर्वारक्षण निवार्थेया ।

प्रशास कर [ में + महस्य ] में नह करता धरा का वजन में तिराय करता । क्लारेष्ठ (जुन २५०) करेंग पवन्ति(अ (रिन) । पकार हूं [ मुझर] धरण टरावना (क्यूरे १९) । पासर मूं [ च्यान नो रहा ना एक जन् कर्मा कार्यो (स्तिर २६०) । पासर म [ के] क्या प्रश्नेत्रम् धीते ना वचरमा और [ के] कार्य प्रश्नेत्रम् धीत ना प्रशास के [ के] कार्य प्रश्नेत्रम् हे र १ ) 'भीकाध्यानमें (रिना र २) । पार्शिक्ष मिल्लो क्रमील, क्षेत्रम् वचर के वरित्त (धरर) (दुना र २)

प्रकार कर [ प्र + झांडच ] क्वाला गूड करण केला करू प्रकाशिक्षणाण (ध्या १ ४) क्वि क्यालिक प्रका डिड्या (ताट—कैव ४ महा) । प्रकाशिक वि [प्रशास्त्र] प्रवास्त्र केला (ध्रार क्षेत्र)। प्रकाशिक वि [प्रशास्त्रि] च्याण ह्या केला हण (क्षेत्र क्षेत्र)।

विषय् क्षिप्त (क्षा क्षात्र) व्यवन विदेश विषक्षे नौके वर्षक व्यवस्थ के श्रीयों का विषक्ष कुंकी [पश्चिम] पाणी पत्नी (टा ४ ४ व्यवस्थ कुंकी [पश्चिम] पाणी पत्नी (टा ४ ४ व्यवस्थ कुंका १६६)। ही. श्री (व्यवस्थ १४)। (वराव कुंकी [विराज] वर्षित्र विसेश (व्यवस्थ कुंका है)। व्यक्त कुंकी (व्यवस्थ १)। याम कुंकियां वरहां (कुंस

है)। या पु [राज] नहर (पुत्त रहे)। मेरे देवो। पनियाम पुर्क [विक्रिक] र क्रार देवो (पा रहे)। र वि प्रमावी उपकार्य करनेनाना 'वर्णाच्यमे पुर्की प्रयूप्ते' (पा १२)। पनियाम वि [पासिक] स्टब्स कार्ति रा (पा १६क)। परियाम वि [पासिक] र प्रकार्य होने-नामा। र वस से कान्यन पानितान, सर्व-मारा। र वस से कान्यन पानितान, सर्व-मारा। र वस से कान्यन पानितान, सर्व-पान्याम पुण्यिकिको न्युक्त-स्थित दिनारों पुर नाम में कीत रिक्तानितान होता है। पीरिकाल मेरे कीत गिल्लान्य होता है। पीरिकाल मेरे कीत गिल्लान्य प्रकार र काल्य मेरे कीत रिक्तानितान होता है। पीरिकाल मेरे कीत रिक्तानितान परिवास पर नामिकायनो क्षेत्र विशेष

परिशय हैगो परिशः भद्र बन्तिताल मरोगे (पत्र १०१) परिश्यो हैयो परिशः । परिश्योग (मिश्चाम) देश हुया (मरा-शिर १) परिश्याद १ विश्वास) परा क्या

(वर्गीय ४)।

थी नीर्पेयक बीज की एक दाला है (ठा ७) ।

पश्चिम्पण प्रिक्तम् । पश्चिम्पण । पश्चिम्पणमान हे की पश्चिम । एक हेना । रे केना, पर्वेक हेना । रे केना । पर्वेक हेना । रे केना । पर्वेक हेना । पर्वेक हैना । पर्वेक हेना । पर्वेक हैना । प्येक हैना । प्रवेक हैना ।

पक्रतंहर---पक्कोड

बच्चे (तुपा ११६) । पक्ल्पाम मक [म+सुम्] १ सोम पाना । २ इस होना वहचा । वह- पहल बमत (ते १ २४)। परस्थात देशो परस्था । पत्रसुमिय वि [प्रश्नुभितः] धौवप्रापः बसम्प (पीप) । परम्बर हूं [मक्प] शास्त्र में बीधे है दिनी के बाच राना वा निभाग हमा बाहर (वर्नर्ट १ ११) । शहर पू [ीहार] क्यामार (नुपनि १०१)। **प**क्राय १५ मिश्चय **क**ीश क्षेत्रल पररावत र बेरमी, बहिमा बीरकरास्तीर (इस) : २ वृति कलेसमा इस्य वृति के निए गैधे के बानी जाती करता 'घराचैक पन बतीर सनवर (छाता १ ११--वर्ग 161) 1 परस्यम न [मक्सपन] संपण अक्षेत्र

प्रस्तरम क्यां प्रकारका (वह १)। प्रस्ताक वक [ विक्रम्याम् ] १ कोलाः १ केमाना । प्रकार (१ ४ ४२)। वह प्रकारिक्कण (१ ११ ११)। प्रस्ताक वक [ शहु ] १ वेमाना १ काई कर्रावामा । प्रकार (१ ४ ११)। वह प्रसारक (स्व १ ४)

(पोग) ।

पक्लोड एक [प्र+द्भादयू] इक्ना माम्बारन करना । <del>एंड</del> पक्लोडिय (दप १६४)। पक्सोड एक [प्र+स्फोटय] १ दृव भाइना । २ वारम्बार भाइना । पन्कोडिकाः वक- पक्लोबंद (बस ४ १)। प्रयो पक्लोबा विका (वस ४ १)। पक्काड पुं [प्रस्प्रेट] प्रमार्जन, प्रतिमेसन की किया-विशेष (पव २)। पक्सोडण न [रावन] बूनन कॅपाना (हुमा)। पक्सोडिम नि [शदिव] निर्माटिव मान कर मिरामा हुया (वे ६ ७ पाप)। पक्लोदिय देवो एक्लोड = रह, प्र + सरहम्। पक्छोम एक प्रि+क्षोभम् द्विम करणा धोम छराप्र कर क्रिसा देता । क्ष्यह ् पबस्तुबर्गत (व २ २४)। पक्कोसण न शिवनी १ स्वतित होनेवासा। २ विष्टु होनेवासा (प्रज)। पहास (पै) देवी = परमण् 'धवनवरामरा (प्रक्राः १२४)। पस्तोड देशो पस्चोड = प्रस्फेर (पत्र २)। पस्तक्ष वि प्रित्तर् प्रचलक तील तेन (प्राप्त)। पराइकी प्रिकृति । प्रकृति स्वमाय (मयः कमारे शासुर १४ ६६ सुपा ११)। २ प्रकृत सर्वे प्रस्तुत सर्वे न्यत्रिसेहबूर्य पगड तमेड (विशे २४ २)। व प्राकृत कीर सावा-रत वन-समूह: 'वित्रमुदारे बहुरम्ब पवर्रती' (तुपा १६७) । ४ कुम्मकार मारि मळारह मनुष्य-बारियरे बहुरस्यानध्येवरात को हो व को एइ (माक १२)। २ कर्नो नाबद (सम १)। ६ परन रजभीर तमकी साम्या बस्मा। ७ बनवेव के एक पुत्र का नाम (राज)। र्वच पू [किन्ध] कर्म-पूर्वमी में क्रिय-राचिमों का पैसा होना (कम्म १ २)। देखो पगहिः। पर्गंठ पू मिक्फ्जे १ पीठ-विधेष । २ प्रन्त का धवनद प्रदेश (बीच ३)। पर्गम सर्भ [प्र+कश्रम्] निन्त करना 'धनियं वर्ष(कं)ने सर्वा पव(कं)ने (धाना)। पगड वि [प्रकृत] व्यक्त, कुता स्तर परस्त्र

(FT P. L. P. ) 1

٤v

पराड नि [प्रकृत] प्रविद्वित निर्मित (स्त (F) पगड पू [प्रगर्थ] बड़ा पड्डा वा महहा (धाना २१ २)। पग्रहण र [प्रकटन] प्रकार करना कुला करना (ग्रीवि)। पराडि की प्रकृति र मेर, प्रकार (मन)। र--रेबी पताइ (सम ४१) धुर १४ **4**=) 1 पराश्रीकृत नि [प्रकटीकृत] स्वक किया हुमा स्पर किया हुधा (मुता १०१)। पराद्दा सक [ प्र + छुप् ] श्रीवता । स्वयु पर्भाव्यक्रमाण (दिपा र १)। पगप्प देनी पद्मप्प=प्र+कलप्। संह-पगप्पपचा (शुम २ ६ १७)। पगप्प देवी पद्मप्प = प्र+वत्प् (सूम १ द १)। पगप्य वि [प्रकारप] १ उरुपप्र होनेवाला प्रादुम् त होनेनामाः 'बहुपुराप्यनपाई कुमा चन्त्रमाहिए' (मूच १ व १६) । दे**वी** परूप = प्रकर (प्राचा)। पराध्यिल वि [प्रकृष्टिपत] प्रकृषितः कृषितः 'रा चण्याहि विद्वोदि पुक्लमासि पनन्तियाँ (पूर १ ३ १ ११)। रेखी पक्रप्पिछ । पगप्पित्तु वि [प्रकत्पित् प्रकर्तेथित्] कारनेवासा कराओवासाः हता खेला पर्वाच्य-(रिप)चा भावसम्मतुन्तमित्यो' (सूम १ ८ K) i पगयम सक [प्र+गत्म] १ कुटा करना, ष्ट होता । २ समर्थ होना । पाल्मह, पक्रमई (माशा सूच १२ २ २११ २ ६ १ उत्तर, ७)ः पगण्म वि [प्रगण्भ] पृष्ट, बीठ (पदम १९ ६६)। २ समर्थ (इस २६४ टी)। पगढभ न [प्रायस्थ्य] पृष्ट्वा, बीठाई, 'पमकिम पासे **बहुस्तिकाती' (सूद्ध १ \*** =) : पगण्मणा की [प्रगरमना] प्रकारता प्रका (पूष १११७)। परावमा की [प्रगरमा] नपनान् पार्वनाव

की एक रिप्ट्या (मानम)।

पगब्सिअ वि [प्रगतिभव] पृष्टवा-पुक्त (सूम १११२ (स्ट १ १ ¥) ( पग्रिमच् नि [प्रगरिभव्] काटनेनासर भूता भेता पन्निक्ता (सूम १ ८ ५)। पगयन प्रिकृती १ अस्तान प्रदेग (मूपनि ४७)।२ पू<sup>ँ</sup> और का शक्तिप्रयी (पर २६व) । प्राय वि प्रिगत | संबद्ध (शावक १८६)। पराय वि [प्रकृत] प्रस्तुत स्विकृत (विधे द्री सा ४७६)। पगय दि प्रिगत् १ बात (राज)। २ जिमने बमन करने का प्रारम्भ किमा हो वह' 'मुणि सीवि बहामिमये पदमा पमएस कन्द्रेस (सूपा २३१)। ३ म प्रस्ताव प्रविकार (मुझ १ ११) १४) । पगय न 👣 पग पौन पैछ 'एल्पेक्पिम साबी चंडपारमो । देश भागी तुरवपनयमानी (महा)। पगर पु [प्रकर] समूह, चरित्र (सुपा ६११)। पगरण न [मञ्हरण] १ मनिकार, अस्तान । र इंक-बाएंड विशेष इंधीश-विशेष ( विशे ११११)। १ फिसी एक नियम को सेकर बनामा ह्या खोटा घन्च (स्व) १ पगरिञ वि प्रिमस्तिती विश्वपुष्ट पुष्ट-विशेष की बीमारीबाला (पिंड ४७२)। पगरिस पू [प्रकृषे] १ अव्हर्य में प्रता (मुना रं ६)। २ माविषय मतिशय (तुर ४ 188) 1 पगरिसण न [प्रकर्मण] अनर देशो (विडि 22) i पगळ मक [प्र+गळ्] महरता टपटना। वह पगस्त (विपा १ · महा)। पगदिय वि [प्रगृहीत] प्रहल किया हुवा क्साव (सूर १ १६७)। पगाइय वि [प्रगीत] विक्ते करे का प्रारंभ किया हो वह 'पगाइमाई संपत्तमीउराई (स ७१६)। पगाड नि [मगाड] स्तमन्त गाड (विपा १ रम्बुपा १६)। पग्यम रेपो पासम (माना था १४) नुर ३

40; TR \$81) |

पगासँग (महा)।

(शाव)। इंडोन दुस्सा 'दर्भ पं पर्संड

शो को नय बस्क्रेस पदार्स माहरों (सुख

१ २, २६) । ६ वि. प्रस्ट व्यक्त (तिम

पगसम्बर्गकी [प्रकाशनवा] प्रकार

पगासमा थै [प्रकाराना] प्रकरीकरल

पगासय वि [प्रश्चराक] प्रवाश करनेवाला

पार्मासय विभिन्नशित्र । अर्पोदित शेव

क्रिक्स (दि ३ १ १ वर्ष की स्थास ०

पगामग रेबी पगासय (चत्र)।

पतासण देवो प्रधासम्ब (दौन) ।

धानीक (भीष ११)।

(बल ६२ २) ।

(रिमे ११४६)।

लगव १६)।

२१६)।

६४ ( रम)।

स्मार करना धण्य करता। कब्रुट पूरा जीकीरंत (सर १३ वर)। पर्मास र् [प्रसारा] १ प्रश्ना रोति पमक परो भ प्रियो सुबह, प्रमदत काच (पुर ७ (लामा १ १)। पूर्व महं भीनुत्पस्तयत्रसङ्ख-चन कुत्र १११)। यप्रयमित्रमूपपामाचे चित्र मुखारं खुन्तं पग्ग सक [प्रार्ट] बहुश करना। पन्तर (बना) । २ प्रक्रिकि क्यांति (प्रवं १ ६) । (प€): ६ मानिर्माप प्राहर्मात । ४ व्हचोत मान्य

स्र १) ।

नुका)।

(Fig to):

(Fig. 1):

२२६) ।

पपास बर्द्ध मि + गृणय्] वित्रता अपन

होता वर्षे चंद्राको शिवकुणार्थे (इब

परगठ वि दि पापन अन्यत (अन ₹ t)ı पम्मद्भ प्रिमही कले के लिए प्रद्रमा इमाधोजन-पान (सूध २ २ ७३)। प्रमाद् वे [प्रमाद] रे क्लीव उसक्ता (पीप ६६६)। र लगाम (छ ८, २७ १९, १६)। १ पतुर्वी को बाक में सनाई वाती डोरी शककी रस्ती नाव । ४ प्रयुक्तीं की बॉक्ने की दोरी परसी पद्मा (खादा १ ६, बरा)। १ शयक मुख्यित (ठा १) : ६ पहल कालान । ७ दीजन बोहन्द्रः 'संक्रियरक् হৈও' (সন)। परमिक्ष वि [प्रमृद्दियी १ परमूपक

ने गरिबन्स बाध्याबमेशो नाग विवासाह । वदानिर्दर्षि (सुम १ १४ १२)। प्रिद रेगी पगइ (वंबोब ६६)। पशिमद्रसरु [म+गृघ] सातीक का प्रारम्म दौता। निर्धिमक्यं (उत्त वार्तामर एते परिष्ट (रन धीर रि पशद्भार [प्रष्टि] र प्रयोग कुला (नुस ७३) । २ बत्तम, सीष्ठ (इत २ : गुरा व तरण सक् [स + सक् ] देवरल करता। १ "<u>द्वारा</u> १ कारत करता। ४ करता। सा प्रतिरुक्ता यीरियक्तार्ग प्रति-

सम्बर स्वीपृष्ठ (मनु ६)। र प्रश्ये से पूर्वत (मद मीप)। १ बळाचा ह्या (वर्ष ६) पगगद्विय नि [प्रमद्विक] कार वैधी (पना)। पिनातः) (का) च प्रियस् । प्राक पमिनिष केहना (बर् के के ४१४ पमान्त्र वृहि । भिष्ट समूह (दे ६ १६) । पपस तक वि + पूप् ] दिर-दिर धिनया। पर्वतेश्व (तिकृ १७) । बयो वह पर सार्वत पर्यसत्त्र व [प्रयपम] पुतः पुतः पर्यस एकं क्षि बार्यक्ष क्षि कि वर्णन

पचाछ तक निम-चास्य ने बरियम वकाता, पुर वनाता । वह ववासमान (मप ११)। पविय रि [प्रियत] नमुद्ध (राज ६१)। प्रभीम (बर) द्वीत[पद्मविशक्ति] १ वर्षीय मंद्रम्थ-निरोप बीय धीर बाब ११।९ जिनहीं संबंधा प्रयोग हो है (स्थिति है। १०६) पयुक्तिय दि [प्रजूचित्र] पूर-पूर विमा ह्पा(नुर २, च≢)। पपब्सि रि [पपेसिस] का का ह्या महत्रहरूपेशिकरपेड्रि' (नुवा 1)। पंचोइअ रि [प्रयादित] ब्रास्त (तूप (

पंचरण देनी पंचरप≔श्राचीयक (तुन र

\* \*>1

प्रयोख प् [म्रमोप] उन्हें रुक्त-प्रकार

पथोसिय नि [प्रथापित] गोवित किन

हुया क्या स्वर है प्रवासित किया हुय

पव धक [पच्]पकामा। पनदः वनर

पर्वेति, पर्वति परक्षे परक्ष पर्वाप

**ज्यू**भोक्सा (मरि) ।

(मिरि)।

वधानी, वधान, वधान, वधिनी, पविष (इसि ६३५ ४१६ ४४१)। स्वाह पश्चमाण 'नरए नैएइक्स स्वोतिति पत्र माधार्ख (पुर १४ ४६: सुग्रा १२ )।

प्राप्तमो—पद्य धा

पच (पर) रेडो पंच । आसीस टारीस कीन [ नश्चारिहात् ] १ वंक्य-विशेष पैतालीस ४% । २ पैतालीक संख्या जिन्ही हो के (सि एकड़ा ४४६ सिंग) । पर्वक्षमणगः । प्रिचहक्षमणः की पनि छे चबदा (गीप)। पर्वस्थावज ५ [प्रवर्षस्याज] परि से संचारल पांच से बताना (सीव १ १ है)।

पर्पंड वैद्ये पर्पंड (दव द)। पच्छिम देवो पर्यक्षिय = प्रवृक्षित (धीप)। पचार सक [ प्र+चारम् ] बक्राना । बदा-रेद (धिर ४१६)।

पचार वं मिचार | विस्ताद, वैनाव (नीव

२ )। वैद्यो पसार≔प्रवार।

प्रस्य वि प्रिस्पयिक है विश्वादी विश्वास-वासा (द्याता १ १९) । २ सानवाला प्रव्यवक्तमा । ३ त सुरुक्तल सायम क्षान (विदे १११९)। प्रवृद्ध वि प्रस्ययिक विश्वादकाला विश्व-स्य (महा पुर १६,१६६)।

पबहुत कि [प्रास्तिमिक] प्रायम के कराम प्रतीति वे संवात (प्र के के-पन १२१)। पर्वात न [प्रत्यक्क] हर एक सबस्त (प्रण् १४ कम्प्र)।

प्रचारित को फिरसिंह यो विदारियो-विदेश पर्वितियाले करें फिरसिंह यो प्रचितियाले करें सिंहरित प्रचारित करें विका (पुतारे हो) प्रचेत पूर्वित स्वारिक (प्रची

११)। २ कि समीपस्य देश संक्षिष्ट प्रान्त साम (सुर २ र )। पत्रित देखो पत्रसिय = प्रस्मानिक (धार्चा

२ १ १ ४)। पर्वातिय वि [प्रस्थन्तिक] समीप-देश में

स्वित (का २११ दी) । पक्षतिय वि [प्रास्थितिक] प्रत्रमत देश से सामा हुमा (बम्म १ टी) ।

प्रवस्त न प्रियम् १ स्तिय यापि की सहायदा के विचा ही करान होनेसा ज्ञान (विदे बर) न प्रीत्यों से बरान होनेसा ज्ञान (अर के)। के वि प्रश्नव ज्ञान का विचया प्रवस्तामी महाती यूरी करही महामार्थ (पूर के, कि)।

सबक्त } छङ [प्रस्था + छ्या] स्थाप प्रकल्मा करना स्थाप करने का निवस करना । प्रकल्मा (यग) । वक्र प्रकल्म-माण प्रकल्माप्साण (पि १६१) क्या। छङ्ग प्रकल्मारूचा (पि १६२) । इ प्रकल्मारूच्य (धार १)।

पबस्तामा न [प्रसामनान] १ परिष्या करते सी प्रतिप्रा (सम. क्या)। १ क्या करते सी प्रतिप्रा (सम. १६९) १ धर्म शाया—निय क्यों के स्मित्र (क्या १ १७)। 'परप्प प्र["बरण] क्याव्यक्तित्र धायक-रियं वा प्रतिप्रत्यक क्षोक-साहि (क्या १ १०)।

पबक्क्षाणि वि [प्रस्वासमा निन् ] स्वान की प्रतिकार स्नेवासा (भव ६ ४)। पश्चक्क्षाणी को [प्रस्यस्थानी] मापा-किरोप प्रतियेगवचन (भग १ व)। पक्कशाय वि जिल्लाक्याची त्वक धोड दिवाद्वया (सामा ११ मयः कप्प)। पद्यक्शायय वि प्रित्यास्यायकी ध्यान करनेवासाः, 'बतपञ्चवकामर्' (शय १४ ७)। पदक्काय एक जिल्ला + स्थापय ] स्यान कराना किसी विषय का स्मान करने श्री प्रतिका कराना । वह, पश्चमस्त्रार्वित (भारत ६) । पचित्रत वि [प्रस्यश्चिम्] प्रस्ततः ज्ञानवाका (वव १)। प्रवृक्तिस देवो प्रवृक्ताय (पुरा ६२४) । पण्डक्सीकर स्टब्स् जित्यक्षी + क्या प्रत्यक्ष करना सम्बाग करना। मनि पश्चकतीक-रिस्सं (धिम १८०)। पश्चक्लीकिय (शी) विजिल्लाकीकर्यो प्रत्यक क्या हमा साक्षात् जाना इया (वि ४६)। पद्यक्तीम् यक [प्रत्यक्षी + मृ] प्रत्यक्ष होना सांसात् होना । संक्र पद्यक्तीभूय

(पारम)। पद्यक्तिय देखो पद्यक्ता।

पबन्म वि [६२वम] १ प्रवानः हुव्य (घ २४)। २ व्यंत्र सुवद (व्य १-६६दी; सुद १ ११९)। १ नदीनः, नमा (पाप)। पवस्थितः वेचो पवस्थिम (घवः ठा २, १—पद्म ४१)।

प्रवस्थितमा रेको प्रवरियमा (राज)। प्रवस्थितमञ्जल हि [पाम्रास्य] परिचन स्थित में उद्यक्त पश्चिम स्थित-उन्तर्को (स्थ ६६) पि १९१)।

पविष्यामुक्ता देवो पविष्यामुक्ता (पत्र)। पवद क [क्षर] मरणा टरक्या। पवकर (हे ४ १०३)। वर. पवदमान (मण)। पव्यकु क [मा] वाणा पत्र करणा। पव्यकु कि [मा] वाणा प्रत्य करणा। पव्यकुक्त कि हिस्सी मरा प्रत्य टरका हुण (हे ४ १०४)। पविक्रिया के [विं प्रत्यक्तिका] महों का एक

प्रकार का करण (विशे १११७)।

पषणीय व [नरयनीक] विशेषी प्रशिष्की बुरतन (चर १४६ टी मुता १ ७)। पषणुभय सक [प्ररयत् + मृ] स्तुमन करना। वह पषणुभयमाण (सावा १

२)। पर्वगुद्धाः देवो पर्वगुप्तयः। पश्चपुद्धीः (उत्त ११ २१)।

पश्च कि [प्रस्यक्त] विश्वक स्थाप करने कर भारत्म्य किया पता हो वह (उर ८२०)। प्रयादा न [वे] बाद्ध कुरामव (दे ६ २१)। प्रयादारण न [प्रस्यास्त्ररण] विर्दीला (वि

२०१)। वेको परहस्वरण।
पद्मात्व वि प्रिस्पर्विम् जितवत्वी विरोधी
बुरान (जय १ ६१ दी माम कृत १४१)।
पद्मात्वम वि पार्त्यास्य, पश्चिम् । प्रिम्म
स्तित तरक का परिचन का। २ न पश्चिम
स्तित तरक का परिचन का। २ न पश्चिम
स्तित वर्षे को स्वापन स्व

प्रवस्थिमा औ [परिचमा] प्रथिम स्थि। (ठा १०—पत्र ४७६ः माचा)। प्रवस्थिमिद्ध वि [पामास्य] प्रथिम स्थि। का (पिपा १ ७) पि ११३, ६ २)।

परवरियमेर्स (उमा मगः भाषाः ठा २ ३) ।

पवस्यमुक्त्या की [प्रक्रिमोक्त्या ] विध्योक्तर दिया काल्या केल (झ १०—१४ ४७४)। पवस्युय वि [मस्यास्तु है मान्यास्ति इ इस हुमा (वटम १४ १९) वीच १)। १ विद्यात हुमा (वट १४४ दि)। पवद विद्याती हिस्सा सामा उत्तरार्थ

(एउड) । पबद्धभाषपहि वृं[प्रस्पर्धेचमवर्तिन्] नामु

देव कर प्रतिकारी राजा, प्रतिवानुदेव (ती १)। पवाच्या न प्रित्यपैया वास्य देवा कीटा

प्रवार्थित । प्राप्ति । प्राप्ति । कार्यः । कार्यः । कार्यः । कार्यः । प्राप्ति । कार्यस्य । विश्व । कार्यः । विश्व ।

वारत का वारता। र सल हुए काल का करके तिवेदन करता। पश्चिमणुद्ध (कप्प)। कर्म पश्चिमणुद्ध (वि ४४०)। वहा, पश्चिमणुद्धाला (वर्ष)। पश्चिमणुद्धाला (वर्ष)। हुमा। २ माण्डलक्ति (मानम)।

३१, ज्या कुत्र ४.)। प्रभारत स्ट्रिंटी

(ग्राप्त) । देवी पचनादेस ।

मतरक (दे ६ ६४)।

प्रत्युच्यारश (विशे २६३२)।

पच्चपसेख वि [दे] भारक-वित्तः तसीन

प्रकाशभास पुं [प्रस्थाभास ] विस्तान

वदवभिजाप 🜬 वदवभिजाय । परवर्षि-

माखादि (सौ) (पि रं⊭ ३१.)।

वस्य[मञ्जाणित् (शौ) देशो परविमञाणित्र (作 252) 1 यक्षभिजाय धक [मस्यमि + झा] पहि चानमा पहिचान हेना । पञ्चीमनास्त्रक (महा) । वद्ध पण्यक्तिकाणशाण (स्तापा १ १६) । वहः पच्चमिज्ञाणिकण (मका)। प्रविधाणिक वि [प्रविधाव] पहि-बाला ह्या (ब ११ )। वस्त्रभिणाय न [प्रस्थमिद्यान] परिचान (ह २१२ नाठ-राष्ट्र ध४)। युक्तमित्राय के पश्चमिजाणिस (स मुर६ ७८३ महा)। वस्त्रमाण देखो पच ० पन्। चक्क्य पू [प्रस्पय] र प्रतीवि झान कीक (इसाध्य १६ क्षेत्र १६४) । २ निर्धन, हिलाब (जिसे ९१६२) । **३ हिट्ट**, कारफ (श २ ४)।४ शाव विस्तार प्रयुक्त करते के क्रियं निया सा कराया कराय तस साय व्यक्ति का चर्नेल गरैयह (निधे २१६१)। ५ कार का कारहा । ६ झान का निधय, जेन पराने (राम) । ७ प्रत्यसंचनक, प्रदोति का करराज (मिसे २१६१ प्राथम)। व विश्रास भवाः । र राज्य, भाषानः । १ विद्यः, वितरः। ११ साबारु भ्राप्तमः । १२ स्थाकरण-प्रसिद्ध प्रकृति में लक्ता रूक्य-विरोग (है २ १३)। प्रकास वि [दि] १ पत्रम समर्थ, पह्निमा हुमा (हे ब, ब्हा बुना क्ष बुर है रेश कुत्र ६६। पाम)। २ मसहन मस्त्रियु (\$ 4, 48) 1 यक्कक्षित्र (प्राप्त) य [प्रस्पुत ] वैपरीरक प्रविद्धाः वद्भवं, वर्षे (१४४२)। प्रवासकत् (शी) वि [ध्रस्थवतव] वना हृष्य भूग में मोरि प्रशासकामित्रीय उन्तु निय क्रिएड (१) बंगे करेबि' (पवि २९४) ।

पद्यस्थाम न [प्रस्थवस्थान] १ रुक्क-परिहार, समाजन (विते १ 😕 )। १ प्रतिकारत काएकत (बृह् १)। पद्चवर न दि | सुस्क एक प्रकार की मोटी सकती जिस्से भागत साहि साम कुरे भारते ₹(% 4 tx) : प्रवास प्रसिद्धार्थी र क्षात्रः विका ब्याबाट (स्त्रका १ १, महा स २ १)। २ बोब कूपल (पडम ६४, १२) धक्यु ७ योग २४)। ३ पाप: 'बहुपश्वनावत्ररियो व्यवस्था (गुपा १६२)। ४ बुचापीका (野耳 ままそ) | पचनाय पुष्टिस्थनायी र जननात-हेत नप्रदक्ष भगरत (स्तुर १) । २ यनवै (पंचा ७ १६) पवनेक्सद (तो ) वि प्रश्यमेशित ] निधैकित (गड-- राष्ट्र १६०)। प्रवह न प्रिस्पह हररोज प्रतिन्ति (प्रीप 1) प्रविद्वाण ) रेको प्रविभाजाण । प्रवन-प्यदियाण । दिवायोवि (नि ११ ) । पण्य विवासक (४ ४२) । श्रंड- प्रवाहियाणिकव (# 8X ) I पक्षाकी किं] तुन्त-मिलेप मस्पन (छ १. ६)। "पिक्रियम न [क्] बल्पव तुद्ध और कूटी हर्ददाल का बना हमा रबोहरका—कैन बाबुक्य एक फ्लक्स्या (द्वा ४, ६—४व 11 ) : यबा केवो पक्का (बरी ११) नाट---रना ७) । पदाजच्या एक [प्रत्या+राम्] पीधे सीटमा, मारच धाना । प्रवासम्बद्धः ( वर्षः ) । प्रवाभव (शी) क्लो प्रवास (प्रयी २१)। प्रवाहनस्त हेको प्रवृत्तस्त = प्रत्या + क्या । पचाइसकानि (साचा २ १४, ४, १)। विष प्रवादिकस्सामि (पि ४२६)। वद्ध-पवाइक्क्समाज (पि ४१९)। पबारहुजना की [प्रस्वावर्शनता] बनाव---संराय रहित निषयातमक जल-विरोध निष-श्तरमक मधि-बान (एडि १७६) । पद्मापस पुन [मध्याबेख] इटान्ड निकर्तन प्रयाहरकः 'नज्नासुनीच्य अस्तिनिरम्मर्थ' (त ) पत्राजाम नि [प्ररंपामात] क्षत्रप्र (मन)।

पद्माग्य वि [प्रस्थागत] १ वापत यामा gai (सा ६३३ के १ वरा महा) । २ म. प्रधानमन (इस ६--- पद ६६६)। य**वाचनल यक [** प्रस्या + **चश्च** ] परिष्यन करना । क्षेत्र- पद्माचनिखंदु (दी) (पि YEEL YOY) I पद्माणयण न [प्रत्यानयन] काप्य हे माना (मुद्रा २७ )। पद्माणि रेसक [प्राया + मी] बागप्र ै प्रवाणी है याता । क्लाइ प्रदाणिक्रोंत (वे tt (11) i पंचाणीद (शौ) वि [ प्रस्वानीत ] वापघ वासाष्ट्रमा (पि ≤१) न⊈-~ विक १) । पद्माधरण न [धरवास्त्ररण] समने होकर बहुना (स्प्रम) पषाविद्व मि [मस्त्राब्धि] निचन निचन (पि १४३) मृज्य १)। पबादेस पुं [प्रस्थादेश] नियमच्छ (श्रीत **७२३१७ गठ—विश ६)ः वैद्यो प्रवास्स** । पद्मापक धक [प्रस्था+पत्] शपक बाना सीटकर था पढ़ना । वक्क 'घरकारि ह्यपुरार्थनप्रवापरत<del>्वं स्वा</del>मिधिस्कननं (यीग)। पश्चामित्त पुन [प्रस्ममित्र] धमिनः पुरमन (श्रावा १ २—-पत्र ×७) घीप)। पंचाय सक [डि+कायम्] १ प्रदीवि कराना। २ विद्याच कराना। प्रवासह (या ७१२) । पचाएमी (स. १२४) । पकास देवो पकासा । पद्मायम्य न [प्रस्थायन] ब्रान क्रयना प्रवीति बनन (निधे ११६१)। पद्मानयं वि [मरवायक] १ निर्शय-वनकः। २ विश्वाय-जनक (विकार ११३) । पवाया धक [ ११मा + अन्] अपन्त होता मन्त मेता: प्रवासीत (सीप) । सर्वि पचामाम्बद्ध (मीपः पि १९७) । पचामा घड [प्रस्था + या] अपर केवी। पवापति (पि र १०)। प्रवासाइ 🗗 [प्रस्वाजाति प्रश्सामाति]

कपि कम-धरेख (ध १, १—नत्र १४४)।

पदार सक [उपा+स्टम्स्] स्थलमा देना, उत्ताइना देना । पचारड, पचार्रीत (ह ४ ११६३ हुमा) । पदारण न [चपास्त्रम्भन] मर्दिनेद (पाम)। पवारिम वि [प्रचारित] चवाया हुया (चिरि 884) I पद्मारिय वि चिपाछक्यो जिसको समाहता दिया गया हो वह (सवि)। यबाद्धिय नि दि प्रस्मार्दित] मात्र क्या हुवा गीला किया हुवाः 'पकातिया य से महियमर बाह्मलिकेस बिद्री (स ३ ८)। पदाक्षीड न [प्रस्पाक्षीड] मान पाद को पीक्षे हटाकर और वक्षिण पाँव को माने रबकर कड़े रहनेवाने बानुस्क की स्पिति पनुपनारियों का पैतरा (शव १)। पवावड पू फ़िरपावर्ची धावर्च के सामने का मावर्तं पानी का मैंबर (राय १)। पचावरण्ड् पुं [प्रस्थापराङ्क] मच्चाइ के बाद समय रीसरा पहर (विपा १ ६ टि पि 44 ) i पदासण्य व [प्रस्मासन्न] समीप में स्थित सम्मिरट, बहुत पास (विसे २६३१)। पदासचि को [प्रत्यासचि ] वमीपवा सामीच्य (गुद्धा १६१) । पवासक्ष देनो पदासण्या 'निवं पदासन्तो परिसत्तरह सम्बद्धी मन्त्रु' (इस ६ दी) । यवासा ध्ये [हरमादाा] १ मानोत्ता वाम्स्स, समितापा। २ निरम्ध के बाद की धारा। (स १६०)। १ कोम, कालक (उप पू ७१)। पत्रासि वि [प्रश्याशिम्] बान्त मा क्य किया हुमा नस्तुना भवस्य करनेवाला (माना)। पदाइ एक [प्रति+मृ] उत्तर देनाः पण्याह् (पिड ३७८) । थबाहर एक [प्रस्था + हा] उपकेश देना । **रक पत्राहरओं दि** एं दिसमयमणीयो कोवएनिहाचै सदी (सम ६)। पबाहुत्त किथि [पद्माग्मुख] पीचे, गीचे नी चरक बाब न सकटु पए पन्यानुत निमत्तो षि (वर्गैनि १४)। पश्चिम केयो पश्चिम (विक पि ११)। पच्चुभ (रे) देवो पच्चुहिल (रे ६, २१)।

पच्चुमभार देवी पच्चुवयार (शह ३६ नार—मृच्य ५७)। पच्चुम्मच्द्रणया 🛍 [प्रस्मुद्रमनवा] सभिमुख गमन, (भग १४ १)। पच्चुबार पु प्रिस्युवार विज्ञान वर्त्रभावका (£ \$ €A) I पच्छुच्छुइणीकी [दे] मृतन मुख ताबा शहर (दे२ ३४)। पच्चुक्वीविञ वि [प्रस्युक्वीवित] पूनवीवित (मा ६६१) हुम ६१)। परचुद्धिस वि [प्रस्युरियस] वो सामने बहा हुमाहो वह (सुर १ १३४)। पच्चुण्णम यक [ प्रस्युद् + तम् ] बोहा र्जना होना। पण्डुए।मद्र (कप्प)। संक् पण्डुएएमिचा (क्या ग्रीप)। पच्युत्त वि [प्रस्युप्त] फिर से बीया हुमा (रेक ७७- पा ११८)। पण्युचर सक [ प्रस्यव + तृ ] नीचे भाना। पण्डवस (पि ४४७)। संइ पच्युत्तरिता (स्व) । पच्चुत्तर न [प्रस्युत्तर] ववाक उत्तर (सा १२ समुपा २१ : १ ४) । परुष्टुस्थानि [दे] प्रमुत किर से बीवा हमा पच्चुत्वय ) वि [प्रस्पवस्तृत] मारकारित परकृत्भुय ∫ (लामा ! १—पन १३ २ क्रम्प)। पच्चुद्धरित्र वि [दे] संपुद्धाका सामने मामा ह्मा (१६ १४)। पच्चुदार पुं वि] पंपुत्र धानमन (वे ६ २४)। पच्चुप्पण्य १ वि [प्रस्मुत्पन्न] वर्तमान काव पण्णुप्पम र्विक्सी (पि ११ श मन सामा रै कं सम्म ११)। नय पूर्वितयी वर्त्तमान वस्तु को ही सत्य माननेवाचा पक्ष निरम्य नय (विसे ११६१)। पण्णुप्पस पुं [प्रत्युत्पस] वर्तमान काल (सुमार २ व १)। पञ्चुष्प्रक्रिश वि [प्रस्पुत्फक्षित] बापह प्याया ह्या (से १४ वर् )। परनुष्मव वि [प्रस्युद्धर] प्रतितय प्रवस (संबोध १३)।

पष्चुरस न [प्रस्पुरस] हृदय के सामने (स्व) । पच्चुई य [वे प्रस्मुव] प्रधात काटा 'न दुर्मे क्ट्रो पण्डुरूचं समं पूर्णातं (बच १)। परनुषदार देशो पणनुषदार (नाट-मृज्य २११) । पच्चुबगच्छ सक [ प्रस्युप + गम् ] सामने बाना । पण्डुबम्ब्ब्र्ड् (स्प) । पण्चुषगार ) र्यु [प्रस्मुपद्मर] उपकार के पच्चुवयार ) बस्ते उपकार (ठा ४ ४ पडन ४१ ११, ए ४४ आक्)। पच्चुवयारि वि [प्रस्मुपद्मरिम्] प्रर्भुपकार करनेवाला (मुपा ४६४) । पच्चुवेक्स सक [प्रस्युप + ईस् ] निरीत्रस करना । पण्युनेक्बोइ (धीप) । छहः, प्रम्यु भेक्सिता (भीप)। पण्युचेकिस्त्रम वि [प्रस्मुपेक्षित] सवनोक्ति मिधिवित्त (स ४४१) । परमुद्दिश वि दि] प्रस्तुत प्रकरित, प्रश्ली वर्ष क्ले या टपडनेवासा (वे ६ २१)। परचूड न [दे] यात बार, मोबन करने का पात्र, बड़ी वासी (दे ६ १२)। पम्प्रस [दे] केवो परपृद्ध = (दे) 'फिक्प्रहि पयतेस्त्रीय काइण्यद्द कह् सु पण्डुसी? (पुर १ ११४)। पच्चम्स १ वै [प्रस्यूप] प्रभाव कान (हे २ पर्व्यादे । हरू सामा १ १० वा ६ ४)। पण्णमूह पुन [मत्युह्] विष्न चन्त्रसम् (पामः कुम १२)। परुष्ट दें दि] सूर्य स्थि (३ ६ ४) गा ६ ४३ पाम) । पच्चेक्षन [प्रत्येक] प्रत्येक हर एक (पर्)। पचेडन [दे] मुस्त (देद १४)। पचेतित (मप) देशो पचछित (भारे)। पचोगिछ सक [ प्रस्यव + गिछ ] धास्त्रावन करमा एस या स्वाद लेना । यहः, पञ्चोगिख-माम (क्स ४, १)। पच्चोणामिणी हो [प्रस्यवनामिनी] विद्या-क्रिकेट जिसके प्रधान से बुद्ध साहि फूस केने के बिए स्वयं भीचे नमते हें (चर प्र १९१)।

प्रत्योजियस्य वि प्रत्ययनिशृत्यो अवा धक्कत कर नीके निख हुआ। (परहर के ---यम ४३]। प्रकोषिक्षय क्षक [ प्रस्यवनि + पत् ] स्वकृत कर तीचे शिरता। वड परूपोनिवर्यत (पीप)। पच्चोळी हिं देशो पच्चोवणी (स २३१, १ २। सुपा हर २२४ २७६)। प्रकोश्च न वि १ छट के समीप का जैवा प्रदेश (श्रीव ३)। २ वि भाच्यादित (राय)। पण्यायर सङ्घ [प्रस्यव + तृ] भीने स्वरता । प्यायस्य (बाचा २ ११ २०)। बैंड. पश्चोवरित्ता (बाबा २, १६, २ )। पष्पीरुम ५ वण [ प्रस्यय + स्ट्र्] नोवे प्रकारह | उत्तरता । प्रकारमह (शामा १ १)। वजोरद्द (बच्च)। तक पच्चोदहिसा (क्य) । पच्चोबणिय वि दि] संपुत्त सामा इसा (वे \$ 2x}1 पच्चोत्रजी औ दि] संपूत्त प्राप्तम (वे ६, पचीसक एक [प्रस्तव + प्यम्ब ] १ और चवरना । २ वी**धे (**टना । वश्रीस**स्ट**, वश्री-वर्षीत (क्वा पि ३ २३ प्रत)। बेह्र धकको-सिंद्रचा (ज्वा: म्त)। पच्छ एक मि + धर्मम ] शर्मना करना । कन्द्र परिवद्धकारम्य (इप्प धीप)। पन्छ वि [पध्य] १ रोची का विकासी माहार हि २ २१ ब्राह्म कुमा। च ७२४।

वन्त्र पंत्रहार में क्षेत्र व ने मोद्यान क्षेत्र के मोद्यान क्षेत्र क्षेत्र के मोद्यान क्षेत्र के मोद्य के मोद्यान क्षेत्र के मोद्यान क्षेत्र के मोद्यान क्षेत्र के मोद्य के

६ ) भी बेहबायो सम्बद्धशासामध्य

बच्ह्यो बार्ध वर्ध रंपर (दुना २११)।

"कस्मन ["वर्धन] १ यजन्तरका **र**जे,

बाद की किया। २ र्याचरों नी निका का एक दीव दानु-वत् क दान केने के बाद की पान को सरक करने मादि किया (भीप १११)। चाझ पं विषयी बन्नुताय (दमा १४२)। द्धव किमी वैद्या मावा क्रयमें (बच्छ महा)। करम्बा न विशस्तकी विकास कर, कर का विकास दिस्सा (प्राप्त २ ४-- पत्र १६१) । याच दं विषयी पषाताप अनुताप (धादम)। देशो पन्छा ≈ पुरात १ पण्डड ) (घप) व प्रभात ने क्यर देखी यच्चार्य (दिर्भ ४२ यह मिन)। शाव प्रतिष् प्रमुखाय बहुत्व (कुमा)। पच्छेद एक शिम् विभाग यमन करता। 994E ( Y 142) 1 पच्छवि वि [गन्तृ] धशन करनेवाना (कुश)। पच्छोभाग दु[प्रसाद्भाग] १ दिवस का पिक्कस क्राग (राज)। २ पून अध्यक्त विकेष पत्र प्रत केर जिल्हाभीय करता है वह नश्च (ठा १)। पुष्प्रसूप क्षेत्र [प्रतक्षण] त्यक्त ना वाधैक विवादम बाहु धावि से पत्नी आज विकासका 'सम्बद्धिंद्दं संपन्नस्तिहं हे' (विपा १ १) 'तन्त्रसादि र पन्यसादि व' (साध्य 1 (\$\$ 5 पच्छाण्य वि प्रिच्छामी हरू स्टब्स्ट, (बा रे⊲३)। पद्र दू [पेति] बाद, स्वयिति बार (मूच १ ४ १)। पश्चाद रेको पश्चाय (धीप) । पच्छादण न मिच्छादनी सारतरस चारर-ध्यमा हे अपर का बाल्ह्यारन नका 'सुप्पन्नार राप् सप्तार् रित्रं रा समाप्ति (लप्त । )। पच्छा में देवी पच्चाप्प (जग पुर ९,१४४)। पच्छम द [प्रच्छन्] नक्ष-निरोप पुण्डुर, विद्योगी (कामा १ १६)। पण्डापण देशो प्रस्तपण (\*\*\* पश्चम्य हेरो ध्रमयय (मेद्र ४ )। पुरुष्कित (भार) देशो पुरुष्कित ( धार ) । पच्छा स [प्रशाह ] र मन्तर, शह, गोडे

(तुर १, २४४- वास, प्रानू १७)। पश्चा

वस्त निवाने रवंति वनुष्ठं परावृत्त्वा (अनु

१२६)। २ प्रतीक प्रतानः प्रधा

ৰমুম্মীৰদ্যা (তাৰ)। ই নিক্লা খাড় बृहा ४ वरम होय (है २ २१)। १ पनिम হিলা (ভাষা १ ११)। ভবাদি िंशामुक्त विस्तृष्टा भागोजन गां**डे** में क्रिका र्यग हो नह (क्य)। इस इं [कृत] बाह्मभ को फ्रीहकर किर पृहत्य बन्द हुआ (इ. १. १११)। इस्म देशो पच्छ कुम्स (पि ११२)। "पिवाइ वेबो "निवाइ (धर)। जुताब र् [ अनुताप] पथाताप प्युतारा प्रथम्भावतीया पुरानामधाउउ (धारम)। "गुपुरुषी भी [ आसुपूर्वी ] इत्तराइम (श्रुष्ट् इस्म ४ ४१)। तार्थ र्कृतिप् । क्यान्य (मार्क्ष V) । वादिन वि [तापिक] प्रवासायगामा (पर्या २ ६)। "निवाइ वि [निपातिव] १ ग्रीवै देविर कानेवासा। २ कारिक प्रकृत कर बाद में इसते च्यूत होनेनत्वा (धापा)। भाग 🖠 [भाग] विश्वका दिस्सा (स्ताबा १ १)। सह दि सिका परापुत्र विसन गुह पोचे की तरछ छेर किया ही वह (मा ११): देव बाद देनो ताब (पर्का en et gr en evr ger tet महा)। यामि नि ("वापिम्] पनाताः करतेवाता (उप ७२ टी)। वाप प्र विश्व पिक्षम विश्व का प्रमा २ पीके का पवन (शाया १ ११)। संस्थित की वि संस्कृति । शिक्का संस्कृतः । २ मरल के काबस्य में बाहि--इटेबी बबैरह प्रमुख भनुष्यों के बिद पक्सी बाती रशेहैं (बाबा रे १ । २)। संबाद **"संस्त्रा** १ शिवता धंतम्य इटे पुनी नर्पेटाका धंतम्य । ९ फैन पुनियों के निए विकास एक क्षेप सनुर थावि प्रत में धण्डी भिन्ना मित्रते की बालव से पहले फियार्ज माना (ठा ६ ४)। संभाव वि [संस्कृत] विक्रवे संगण से परिचार (माना १ १ ४ ४)। इस मि वि रीचे की करफ का 'स्ताबरमयरिम पण्डा-इतार प्यारं तीए स्टब्रुड' (सुपा २ १)। पच्या हो पिटवा हरें हुँ छैठना (है २ ₹१)। पच्छांअंडक [प्र+ सर्यु] १ इनना । २ दिनला । वक्त प्रवद्यात्रीत (ते ६, ४८)

रेर र)। इन्यच्छाइक (शनु)≀

पुष्पहाळ वि [प्रच्छाय] प्रदुर सहयागया (धमि ६६)। पुरुखाइअ वि [प्रच्यादित] १ दका हमा धा**च्छादित । २ व्हिपाया हुद्या (पह्य**' मनि) । धच्छादुः देशो पश्चाम = म + प्रायम् । पच्छात पू [प्रच्छादक] पात्र वॉपने का कपड़ा (भीव २६% मा) । वच्छाबिद (शै) नि प्रशास्त्रित निमा हुमा (साट---मुक्त २१६)। पच्छाणिञ दिं देको पण्याषणिञ (पद्)। पच्छाजुराविक वि [प्रधावतुरापिक] प्या-चाप-युक्त पञ्चताना करनेनाका (स्पर १४१) । पच्छाको (शी) केको पच्छा = पकाद (पि 1(57 पच्छायण न [पच्यवन] पापेब, रास्ते में शाने का बोकन 'बहुरा करिय पण्डाकणस्य भारियं (महा)। पश्चतायण न शिच्छादनी १ माञ्चाल कक्ता। २ वि भाष्यास्त करनेवासा। या की ["ठा] मान्काना 'परकुषपन्यामणुका' (उद्)। यच्छास्र देवो पस्त्वासः। पन्यतेर (कात) । यशिक्ष सौ [में] यिनिका, पिटारी, वैकारि र्चावत मानन-विशेष (दे ६ १)। पिह्नस न ["पिनक] 'पन्धी' रूप पिटारी (भप ७ ८ टी--पत्र १११)। पश्चिम्र (पाप) देवी पच्छा (हे ८ ६८व)। पश्चिम् क्रमान देखी पश्च = प्र + धर्मप् । पक्तिच न [प्रायम्बद] १ पाप की सुद्धि करनेवाचा कर्मे पाप का श्रय करनेवाला कर्मे (इतः सुपा १६६३ ॥ १२) । २ मत को सुद करनेवासा कर्म (पैचा १६ ६) । पव्छिति नि [प्रायक्षितिस्] प्रायक्षित का बागी, दोपी (उप ३७१) । परिद्यम न [प्रीधम] १ परित्र रिद्या (उपा ७४ (१) । २ वि. पश्चिम फिलाका पाधारव

> (सहरु ६२२९ प्राप्त) । ६ विश्वया बाव का विषयस्य पविद्यये काएँ (कृप्य) । ४

धन्तिम भरमः पुरिसपश्चिपनालं विभा

फरलें (सम ४४४)। इट न [िघ]

वत्तरार्थं बत्तरी प्राथा क्रिसा (महा) ठा २ १---पत्र =१)। सेख दू ["शैक्र] मस्तापत पर्वत (गरङ) । पश्चित्रमा की [पश्चिमा] पश्चिम विशा (हुमा पश्चिमिष्ठ वि [पाम्रात्य] पीचे से स्पन्न पीले का (विसे १७११)। पश्चित्रयापिष्टय देशो पश्चित्र-पिष्टय (धप ₹¥ ) I पश्चित् (यप) देशो पश्चितम (मिर्दि)। पश्चिम्ह ) वि पिश्चिम, पाञ्चास्य ] १ पश्चित्रक्य । पश्चिम दिशा का । २ पिछना, पूपवर्ती (पि देश्य देश कि ४)। पच्छत्ताव पू [परनादुत्ताप] पद्मावा परवाताम (सम्मत्त १६) वर्मीन १६० १२२३ 24 ): पच्छतायिक (भप) वि [पश्चाचापित] विश्वको परकाशाप हुमा हो वह (मवि)। पच्छेकमा देशो पच्छ-क्रमा (हे १ ७६) । प्रदेशियन विशेष रास्ते में निर्माह करने की भोजन-सामग्री करोबा (दे ६,२४)। पच्छाधवण्यम १ वि [पश्चादुपपन्स] पीधे पच्छोवनसङ् विकलम् (मग्)। पर्जप सरु [प्र + जरूप्] बोसना कहना। पर्मपद्ग (पि २१६)। पर्जापालय न [प्रजलपन] कोनाना कवन कराना (भीपा पि २६६)। पर्जपिश वि [प्रज्ञश्यित] कवित उक्त कहा क्षमा (बा ६४६) । पञ्जम वि [प्रजनन ] स्रतास्त्र रुराग्र करनेवाला (राग ११४)। पञ्जयण न [प्रजनन] निय पुरुव-विद्य (विदे २१७६ टी: बोच ७२२)। पज्रसम्बद्धाः 🛨 ग्याह् 🛚 १ विरोप वसना धविराय राज होना। २ जमकता। वर्ष

पञ्चलेख (मनि)।

(मुपा १)।

पञ्चित्र वि [प्रक्रपश्चित् ] धरकत वदनेवाला

'शिवनमाणानका विकास के द्वारा मुख्य हरू वर्ष

पञ्चह् सक [प्र + हा] स्थाय करना । पनहानि

(पि १ )। इ. पजहियक्त (याचा)।

211 पजास्त्रको [प्रश्वासः] धीन-रिका भाव की सी या सफ्ट (भूत्र ११७)। पश्चीयम् न [प्रजीयन] मानीविकः बीवनी पाय, रोजी (पिंक ४७०)। प्रमुत्त देखो प्रवस — प्रमुक्त (बंड) । पज्ञिस वि प्रियक्षिकी युवास समुद्रको वियाद्भा याचक-पण को मरित (माचा २ 2 × 2)1 पर्नेमण म [श्रेजेमन] भोबन-प्रहण भोबन सेना (एम १४६)। पट्य सक [पाथम् ] पिनाना, पान कराना । पज्जेद (विपा १ ६) । कनक्र 'ठगुडाइया ते वर्व वंद वर्त पश्चिम्बमाणाइवर रहिंद (तुष १ ५ १ २४)। इ. पञ्जेयस्य (ਸਰ ४ )। पका न [पश्च] बन्दो-नद्ध शत्य (ठा ४ ४---पत्र १०७)। पञ्चन पिद्यो पादशसानन जल 'धार्य' च पण्ड च महार्थ (शामा १ १६--पड ₹ €) : पळादेको पळाच (दे३३ कम्म ३ ७)। पर्जात पुरिर्येण्डी मन्त कीमा, प्रान्त भाग (हेर रक्ष र रशक्य पर्दर)। पठ्यत्र न दि ] पान, पौना (दे ६, ११)। पञ्चलान [पायन] पिनाना पान कराना (भग १४ ७)। দক্ষতন ইকা প্ৰক্ৰম্ম (বুমলি ২৬)। पञ्जामाग र दुं [पर्यनुयोग] प्रस्त (बर्मेंसे पञ्चलुकाम र्रिष्ट २६२) । पळाण्य द्र [पर्ळन्य] मेक कारल (सप १४ २ शट- पुण्य १७३)। देखो पञ्चन । पज्जवर नि दि] शनित निरास्ति (यह)। पळात वि पिर्योप्ती १ प्रविधि से सक्द 'पर्योति वाला (ठा२ १ पर्याह १ १३ कम्म १ ४१)। २ समर्थे शकिमान्। ३ त्तरम प्राप्त । ४ काफी सपेट स्टब्स जितने सै काम चव काम । ५ न दुति । ६ सामध्यै । निवारण । व योग्यता (कृ २ २४) माम)। १ नर्म-विरोप विसके हरम से चीव वाली वाली 'पर्वासिवी' से युक्त होता है वह कर्में (कम १२६)। जाम नाम न ३६१)। सम्बद्ध मिथ्यो एक नरतानास

(अ.६—पत्र ३६७८ी) । बहु दं ियसे

भरकाशास-विधेष (ठा ६) । सिद्ध ए

[ विशिष्ट ] एक गरकामास गरक-स्थान

पुक्रस्त देशो पुरुद्ध । पुरुषके (महा) । अप्र

पञ्चलप वि [प्रज्वलन] बनलेबाना (ठा

पञ्जिक्ति वुं शिक्वक्ति । तीवधे नरक-वृधि

प्रज्ञक्रिय विशिक्षक्रियी १ वदामा हमा

क्य (बहा) । २ जूब चमक्तेनासः, देशीप्त

प्रकासिस् वि [प्रश्वसित्] १ वक्षनेवाला ।

२ बुब क्यक्तेबाला (मुता ६३८) एका ।

पक्रकीह नि प्रिमेंपदीह | चीतर (निमार

पञ्जल पुषियों व ] १ परिच्छेद किर्याय (विस्

वर्षे मारम)। १ रेको पञ्जाय (मार्चा,

यन विदे २७१२ सम्म ३२)। अस्तिम न

िकुलन) चतुरेत पूर्वेश्वय तक का बात

मृक्ताल-विदेश (पेथमा)। साथ नि

िंबार्ची १ मिश्र मन्तरमा की प्राप्त (पश्**छ** 

% ३)। २ बान साथि बुद्धोंबाचा (ठा १)।

६ त. निपयोपनीय का सनुद्रात (सामा)।

ना एक वरक-स्वान (रेवेन्द्र ८)।

विशेष (का ६)।

पक्षात्रीय (कम) १

यल (यम्ब २)।

494) I

¥ 1)1

सन १७) ।

(शी) (मा ११)। पञ्जनत्वाचेद्वि ( नि

XX () (

का कावास (स्वीव १८)। फ्लाचर **[६] वेशो** प्र**व्य**तर (प**र्**—पत 1( \$8 पञ्चति की [पर्योमि] १ स्रोक्त सामन्ये (सूप १ १ ४)। २ वीव की बन्न शक्ति, मिसके बाद्य प्रदेशनों की बहुत्व करने तथा क्वनो भ्रष्टार, करीर भावि के क्या में बदल केरी का काम होता है, बीन भी पहरासी की प्रद्रश करने तथा परिलामाने या पश्चाने की शक्ति (भ्रय: सम्म १ ४६। सथ ४ ४ ४)। ६ प्राप्ति पूर्वे प्राप्ति (रे. १२) । ४ तथि।

िनासन् ] सक्तर तक कर्म वितेष (एजः

पञ्जल न [पर्योम] ननवार शैतीस दिन

"रियर्शकावशावीविवास की सदद प्रवर्ति ?" (इर ७६८ है)। पळालि भी [पर्याप्ति] १ प्रति पूर्वता (वर्षेति १४)। २ मन्त भवसान (मुख २ =)। यञ्जम पुरिकम्यो मे<del>ण विदेश</del> विदश्यक

बार बरकते से भूमि में एक इबार बर्य एक

चित्रताहर छाती के पञ्चा (१००) ले स्ट्रं

महामेड की के बाबेरों का बानकताई

मानेहिं (ठा ४ ४--पन २७ )। पञ्चय वं विश्वासीकी प्रशिवासक, सिवासक ना विद्या परवास (बन ६,३ वस ७) नुर १ 1441 72 ) I पञ्चय पूर्व [पथय] १ मृत-कान ना एक बेब, उत्पत्ति के प्रवन सुमय में तुवन-नियोध के बहिन-भपनीत कीन की जी पूर्ण एका बीच होता है फर्क्ट दूबरे धनव में बान का निहना भेरा नव्या दे नद्र स्तानन (नम्म १ ७)। २—देवो प्रकान (बम्न १६) छन्छि विवे ४७४) ४४६: ४१ (१) । समास र्षु [ क्षेत्रमास] भूषत्रान का एक थेरः ग्रनन्तर

एक वर्षत्र-पद का तनुसाय (शम्ब १ ७)। पञ्चयजन [प्रध्यत] निरुद्ध प्रामारक (पिने = १)। पक्तर तर [ प्रथम ] वहना, बीचना । प्रम-स्प्र प्रमार (हे ४ २, दे ६ २१ <u>प</u>्रमा)।

बाय वि ["बाद] इल-प्राप्त (स १)। "डिय प्र (रिवत विषक्त, (रिवक) नक क्रियेप इच्य की **क्षीहरूर केवल** क्यांगों की हीं मुक्य बाननेवाला क्या (दस्त ६) । वेदान, नय १ ["तय] नहीं समन्तर एक सर्व (धन निष्ठे ७३) क्यारबंधि नवंदि स बावा निम्नेश पञ्जापनगरम (कम्प १३)।

पञ्जनम न [प्रथमन] शरिब्येर, निरूप (विशे पञ्चमदाव तक [पवव+म्यापम्] १ बन्दी प्रतस्त्र में रहना । १ रिरोद करना । ) प्रतिस्ता के साथ भाव करता । श्रमकरवारे**तु** ।

पञ्चबसाज न [पर्यवसान] धना भवतन (मय)। पञ्जवसिञ्ज न [पर्यवसित्त] बनबान, धन्ता 'ग्रपण्यवसिए सोए' (ग्राचा)। पद्चाकेको पण्या (क्वेट स्की)। पक्रमाची पिद्याीमार्गचलताः भीमं च वहूच क्या भाषाया वनवस्त्रपञ्जा (सम्प (30) \$ 4 2 EX (0E) 1 पक्राक्षे कि निःचीति क्षेत्री (दे ६ १)। पद्माकी पिर्धायी पविकार प्रकल-वैद (दे६ १ पाप)। पञ्जा केवी पदा न्यमिक्टवर्शन नामे मिन्या बंडिक्वंदी नासे परका आस ६६)। पद्माबार पूं [प्रद्यागर] कापरश क्या का मनाव (मधि १६)। पळाडळ वि पियाँकुळ विरोप याद्वय व्यापूत (स. २०६० स. १४ २६६) । पञ्जाभाय छक पियों + भाजम ] कार्य करना । शहर प्रजासाहचा (चन) । पञ्जास पु [पर्सास] १ समान सर्व का नावक रुम्र (मिरो २३)। २ पर्खमाधि (मिर्ध य के) १ के प्रशासी-कार्य, करनू-पूरात । ४ प्रशासी का चूरमध्य स्कृत स्मान्तर (निधं १२३) TO FRY FRY SAY IN SOY १)। १ इत्य परिपाठी (द्याबा ११)। ६ ब्रकार, मेड (ब्राजम)। ७ व्यवस्थाद निर्माश (हे २ २४)। देखो प्रजान तमा पळ्याव इ. पिकासी तालाने सावाचे, ख्लस (सुधान १३१) । पञ्चाक दक [प्र+क्ताक्षम्] नवानाः

नुस्तरात्तः । राज्यासः (चरि ) । बोहः प्रजान क्रिज, प्रजातिकण (श्व १, १) महा)। पञ्चाक्रय न [प्रत्यासन] दुनवला (का 1 ( to 42 ) पत्नाविम वि [प्रमानित] बनामा हमा. नुबनाया हुवा (गुरा १३१) प्रस्तु र )। पांजाओं की दिमार्पिको है भाग को मध्यानही करनानी । १ क्विंग की मातानही, परशादी (यम 🖝 🕻 १ ४१) ।

पिज्ञासमाण देवो पज्ज = पादव् । पञ्जुद्व ति [पर्युष्ट] फरफ्कावा हुवा (?)" भिन्नी ए कमा करूपे छालवियं घरण्ये छ परबाई (मा १२१)। पाञ्चरञ्जाका पर्युरमुक् विशेषक्ष (नाट) । पाञ्चलसर न दि] अचाने तुस्य एक प्रकार का तूल (दे ६ ६२)। पञ्जुण्या पू [प्रयुक्त] १ ध्येष्टच्या के एक पुत्र कान[म (बंत)।२ कामदेव (कुमा)।३ वैद्याप्त शास्त्र में प्रतिपादित **चनुर्म्यु**ह क्य ! विष्णु ना एक मेरा (हे २ ४२) । ४ एक बैतपृति (निष् १)। देखो पाञ्चम । पञ्जुत्त नि [प्रयुक्त] बटित वनित 'माणिह परकुत्तकस्थानकस्थानस्थात् (स ११२) 'दिश्व

देवी प्रामुख । पागुदास र् [पयुदास] निवेष प्रनिवेष (सिक्षे १८३)। पामुक्त देनो पामुण्य (ए।या १ १ और रे ४ दूम रेव सूपा १२)। ३ वि यती भीमन्त प्रमुख बनशासा न्यजूनसीति पहिरुप्ततवतीयो (नुपा १२)।

बानवामश्यज्यसमूर्वतरातार् (स.११: भवि)।

पानुपट्टा वह [पर्मुप + स्या] उपस्पित होता । हेत- पामुबद्वादुं (शी) (बाट--वेखी २६)। पानुबहिष वि [पयु पस्थित] वपस्पित मीद्रव शाबिर, बलार (उस १० ४१)। पामुकास सक [पयुष + आस्] भेवा करना अकि करना। परवृत्तासः परकृ

बासंति (सर वय) । बङ्ग परजुपासमाण

(छाया ११२)। कर≰ परञ्जुपासिद्ध

माग (गुरा १७८) । संह. पानुदामित्ता

(भन) । इ. परनुवासणिञ्ज (लामा १ क्षा भीता) । पानुगासन व [पयु पासन] सेस, भीतः, क्रानना (का स ११६ टा ११७ टी मनि ३८)।

पानुवास्त्रमा । प्रै [प्र] पास ॥] कर पानुवासमा । देशी (ठा १ १ मन छाम १ १६। भीत) ।

14

परजुषासय वि [पर्युपासक] सेवाकरनेवाता (रास)। परमुसण पग्जुसक्य न देखो पञ्जुसञा (बर्मीद २१ विचार १३१)। पग्जुस्सपण् पम्जुमण परमुसमाधी[पर्युपमा]रेको पञ्जोसकमाः श्वरित्रसणा पञ्जुरुक्षा पञ्जासक्या य बास वासोर्ग (निष् १)।

पण्डांसुम ) वि [पयुत्सक] प्रति ऋतुक पम्बंस्क 🕽 विशेष उत्करित्व (धनि १ र पि वेरच ए)। पळ्योअ पु[प्रयोत] १ प्रकार उद्योत । २ सम्मिनी मनधी का एक राजा (उप)। गर वि [कर] प्रकाश-वर्षा(सम १ (रूप मीत)। पद्मोक्स्य वि [प्रद्मोतिस] प्रकारिक (स्प ७२० दी) 1 पञ्जोय सक [प्र+धोन्तय्] प्रकाशिक नरता। बङ्ग परजोर्यत (बेह्य १२४)। पञ्जोषण पु [प्रशोदन] एक कैन मानामें (स्व)।

पज्ञासय वह [परि+यस्] । बास **करना रहना। २ वैनानम-प्रोक्त प्रमु**पला-पर्वे मनाना । परबोसकेड, परजोसकिति परजोसबँडि (कप्प) । बद्दः पद्मासर्वेत पञ्चोसनमाण (निष् १ कम)। हैक पञ्जामविचय पञ्जोसवचय (क्य ≖स) । पञ्जोसयम नः देखो पञ्जोसवणा (पैवा ₹**₩** ₹):

पद्मामक्या धी [प्रमुपत्रा] १ एक ही स्पान में वर्षा-वान स्पद्मीत करना (ठा १ क्ष्यार क्षर्य-वान (निदूर) । ३ पर्व निरोत महत्त्वर के बाठ दिनों का एक प्रक्रिय दैन पर्व 'काधिकमी समादि पण्डोसक्लाहेनु विहीम् (मुणि १ ६ तुर १६, १६१) । कृष्य पु [किस्प] ब्युपणा में करने बीग्य

राम्न नित्त भाषार, स्वस्तिस्य (स्र १८ २) । पञ्चोसवया ही [पर्वो मवना प्रमु परामना] कार रेगी (टा १०—ात १ ६) : पञ्चामविव रि [पयुपिन] स्वित प्राह्मा (क्य)।

पब्कंक पड़ [प्र + स्ट्रक्] राज्य करता थावान करना । वह धारम् मध्याण (राज) । पामद्विमा औ [पामद्विका] धन्द-विशेष (पिष) । पब्सरमङ [झर,प्र+क्षर्] मला टपकना । पञ्चरह्य (हे ४ १७३) । पण्मर पु [मझर]प्रवाह-विशेष (पर्वा २)। पामक्रण न [प्रश्नरण] टपनना (राज्या **ર =)** ા पामारित्र वि [प्रश्नरित्त] टपका हुमा (पाम

परमास देखो परमार = सर् । परमान=(निग)। परमर्जलभा देवा पत्रमहिका (पिक) । पामाय न [प्रच्यात] चतिराय चिन्तन (वर्ण पत्रमध्य वि [प्रथ्यात] विन्तितः छोवा हुमा (फ्ए) । परमुक्त वि दि] कवित वहित वहा हुना (पाप)। देखो पाजुत्त पर्सुक्त देवी परमुक्ति । दङ्ग पर्श्वकमाण (स्य ८३)। पटडडी थी [पटकुरी] तंदू वस-गृह, करड़

कुमा महा सक्ति (४)।

कोर (पुर १३ १)।

पटल देखो पहल = पटल (हुमा) । पटह देवी पहरू (प्रति १)। पटिमा(पे पूरे) देखो पृद्धमा(पर् पि tet) i पटोच्य को [पटोक्य] बल्ती-विशेष बोश्यकी धारवस्ती (निरि ११६) ।

पट्ट तक [पा] पौतः, पान करना । पट्टूद (१४१) । मूका पट्टीम (कुमा)। पट्ट पट्टी १ पटनाका नपदा पट्टी कि हों? हरी देशमाएँख मो म भरवनी (हर क्षेत्रमा क्षेत्र)। २ क्ष्या मुख्या तिहासि मानियन्हें बंगूण करे नया माना' (मुना १७१)। १ पापाए साहिया दस्ता प्रनष्ट 'मिलिविनागट्टबन्छाहो बाह्यीनंहवा' (बाँब ९ ) "निर्माणिमारहा बरिरहा" (स्थल

४२) 'पट्टसंडियावस्यविस्यान्यान्यान्यान्याः' (बीर १) । ४ सत्तार पर से बँधी जाडी एक प्रवार की क्यों। 'तमिन' क्टूबदा रासान भाषा पूर्व वडस्यक्का सामी (मटा) । ३

YX) I

सन (का १२ वर्ष)। ८ रेहामी क्यहा। र सत का कपड़ा (कप्प बीर) । १ सिक्सम गरी पाट(क्य २० मुपा २०६)। १२ नमावच् (राज) । १३ पट्टी कोश धादि पर बाँवा बाता सम्बा वस्त्रीत पाटा 'चडरं क्लपमाश्रपद्ववीता विरिवण्डास किर्द धादर वण्डरवर्त (महा निपा १ १)। १३ शास्त्रीकीय (तरम २ ) । इस र्य वा प्रेन मोदकामुखिया(भी ६)। चकी स्में किनी संख्या वक्त-एक (गुर १३ ११७)। इतरे पू [करिन् ] प्रचान इस्ती

पत्र (रप्र गरे भी वे )। ६ रैतन । ७ पट-

(मुता १७६) । नार पु विनार ] तन्तुवाय नक कुननेनावा चुनाक् (पर्तर)। बासिआ भी विशिवाीएक किये-कुपरा (रे ४ ४९)। साक्षा की [शास्त्र] क्याप्य केत मुनि के पहने कास्त्रात (तुतार ३)। सूच न ["भूत्र] रेठगी भूता (धावम)। हरिब र्ष विद्वित् निष्यात द्वाची (तुपा ३७२)। पहुद्धः ) पुंदि] क्टेंग नॉन का पुण्या पहुद्धः (तुपा २७३) १९१)। पहुंसुभ न पिट्टीशुक्री १ रेतनी क्या। २ सनकामक (या ५२ ३ कप्पू)।

पहुरा देखी पट्ट (रस) । पहुण न पित्तनी नगर, रहार (मन मीन बामः दुना)। पहुन्की की [पहुन्की] पटरानी (सिरि **१२१२)** । पहुम केवी पट्ट (डशा छामा १ १६)।

पष्ट्रमुत्त न [पष्ट्रमूत्र] रेटनी नस (नर्नीन पट्टाबा की [बें] पट्टा, बीबे की पेटी करन 'होडिया पहुला क्याप्ति पहाला' (महा-नुष १ १)।

यहिय पि [पश्चिम पट्टी पर विद्यालता नांव वनेष्यु, पुष्मिं पट्टिक्यायरिय तुट्टबस्तर्थ पट्टरनो गरनाचो पुनित जो साधि प्राधीप चित्ती (पुता २७३) । पढ़िया भी पिहिस्ती र क्षेत्रा क्ला, सदी

पद्गीः 'दराउउरहिमा' (राव-व ६)।

"विकारिया" (पर १

पट्टी और पिट्टी र अनुविष्टि । २ इस्टबट्टिका हाब पर भी पट्टी 'क्न्सीडियसरासलपट्टिए' (विपा १ १-- पत्र २४)। पट्टम पूर्व देशो पट्ट्या 'पट्टपर्डि' (प्रच ६ १)। पट द्वा भी दि । पार-प्रधार, बाद ब्रमधती में 'नर': सिरियम्बो नोलेखं तहाइयी पदद्रसाए द्विमानिन (गुपा ११७) । देखी पबदुआ । पट दृद्धिक न विशेषक्रियालन गंदायन पद्दृद्धिये काल क्कुलबर्ब (पाप्र)। पद्र नि प्रिष्ठी १ यत्रकामी सबसर, सपुसा (शामा ११ — पन ११)। २ इत्या निरूखः ३ प्रवान मुख्या (औप राव)। पटू वि [रपूष्ट] विसका स्पर्ध किया पना हो। बद्ध (ग्रीप) । पट्रम प्रिष्ठी १ पीठ, शरीर के पीछी का भाग (खामा १. ८ भूमा)। २ तव उत्तर काम्पन विकिम पटुच तर्म (पाम)। बर नि विद्यासी सनुवासी (कुमा)। पट्ट वि [प्रुपः] १ विश्वको पूछा गवाही महा२ त प्रत्म, समाव 'अभिकेष पर्दे पएक्ती (हर ६---पत्र ६७६)। पट्टच सक [ग+स्थापम्] t प्रस्थान कराना नेजना। २ प्रवृत्ति कराना। ३ प्राच्न्य करता । ४ प्रकर्ष से स्वापना करता। ४ प्रायमित केता । पट्रमाइ (🛊 ४ ३७) । मुका, पहुंबदेतु (कप्प) । 😸 पहुंबिजक्य (क्या दुवा ६२७) । पहुचन देवी पटूचन (कम्म ६ ६६ ही)।

(नव १) ।

प्रारम्य करनेशाचा (विशे ६२७) ।

अकार का इविदार (पदाइ १ १ पत्रम व

पर विरक्षा रकाभाषा बड़ा बान्या (पर 1 (\$45 पठ देवी पद्ध । पठिर (शी) (नार-मूच्च १४)। पर्रति (संद)। कर्ने पठाविधार (FT 1 2: 120) | पठम देखी पाइम (क्य) । पक्ष संक [पत्] पदना, शिरुधा रक्य पटुक्य न [प्रस्थापन] १ अक्रप्ट स्थान । (उन्हापि २१ १४४)। बद्धापडत रं भारत्य 'दर्गं पुत्रा पहुत्रस्य पुद्रम्य' (ब्ब्यु) । पञ्चमान (ना २६४- महाः व्यक्ति हृद्द ६)। पट्टक्या सौ [प्रस्थापना] १ प्रस्ट स्वापना । र्थक पश्चिम (नाट—राष्ट्र ६७)। **इ.** पश्रणीभ (शव)। र प्राथमिक्यवरातः 'दुनिका पहुनका बाह्र' पञ्ज पूर्व [पट] वक्त कपड़ा (धीपा क्या स्वय्न पद्भव वि प्रिस्थापको १ प्रवर्शक प्रवृत्ति बर, स १९६३ था (×) कार वेली गार (धन)। इंडी की डिटी के, रक्त-ज़ करानेवाचा(खापा १ १ — पत्र ६३)।२ (११६; धी १)। गार ट्रे [बार]

पहिलेख कि [मस्मापित] मैका हुमा (पामः कमो । २ प्रवृत्तित (निश् २ )। ३ स्विर फिनाइमा (मग १२, ४)। ४ प्रकर्न हे स्वापित स्थवस्यापित (पराय ११)। पट्डिया) की [प्रस्थापिता] प्राक्टिक पट्टिया | विशेष धनेक प्राप्तिकों में जिसका पहले प्रारम्म किया अवविष्ठ (ठा ४,२ निष्र २)। पट्टाओ केको पट्टाय। वह पट्टापंत (स पट्टाण न [प्रस्वात] प्रकल (पुषा १४२) । पट्टाध देखी पट्टम । पट्टाबद (हे ४ ३७)। पश्चमेद (रि ११६)। पट्टामिश देवो पट्टविज (हे ४ १६) कुना, वि६ हो। पट्टिकी देखों पट्ट = प्रष्ठ (वडा करा)। संस न मिसि । पोठकानाब (परवार २)। पट्टिक वि [प्रस्थित] विक्रने प्रस्नान किना हो बहु प्रयाद (रे ४ १६ छोच ८१ मध मुपा 🕶 🕽 । पट्टिका नि दि । सर्वक्षा विस्तित (पद)। पट्टिक्सम वि [प्रस्मातुकास] प्रयास का इम्बर (स १४)। पद्धिसम म दिहे कदूर, कैन के वंदे दर शा भूगइ दिल्ला (दे ६ २६)। पट्टी देवो पट्टि (सदा' काल) i पट्टीचंस पू [पूछवंश] बर के मूल को बंकी

पहुत्रस---पह

तस्तुवाय, कपका कुननेवामा (पर्द्र १ २---पच २०)। बुद्धि वि [थुद्धि] प्रमुख सुवाची को प्रकृत करने में समर्थ बुद्धिवाबा (योप)। संबन्ध [ मण्डप] तंतु, मझ-मश्कः (बाक्)। सादि [ तन्]पन्ताना वक्रवामा (पर्)। यास पु [बास] वक में दाता जाता बुंबूम-बुर्ख मादि सुविभात पहार्थे (बड४ स ७३ ) । सादय पु[शान्त्रः] १ वज्ञ कपका। २ वोदी पहारते का बान्ता नका (अव ६, ६६)। ३ बोडी धीर बुम्हा (खाया १ १--यह १३)। पश्चा की दि प्रायक्ता] क्या कहुत का विक्राया कोरी (वे ६ १४ पाप)। पहंसुम देशो पहिंसुत् (पि ११४) पर्दसुव्या भी [प्रसिक्ष्म ] १ प्रक्रिस्ट, प्रतिम्बनि (हुई ८६)। २ प्रतिका (कुमा)। पश्चंसूका की [कें] ज्वा- वनुष का विस्सा (R & 1x) 1 पश्चमुच देवो पश्चिमुद (प्राक्त १२) । पश्चमर पुँ दि । सामा मैसा निरूपक मार्चि (दे ६, २१)। पश्चर र्षु [पटचर] चीर, श्रस्कर (ना---मुख्य (३५)। पश्चमनाम देवो पश्च = प्र + रह् । पक्षण न [पतन] यात, विरमा (खाया १ १ प्राप्त १ र)। पक्षणीय वि [प्रस्थतीक] विरोधी प्रतिपत्नी क्षेत्रं (च ४५१) । पड़जीस देशो पड़ = पत्। पश्युचिया भी [परपुत्रिका] क्रेश वड, श्रमात (संदीय १)। पद्मम देखी प्रतम (शि १ ४° नाट~ल्कु १ व)। पद्धक्ष न [पटक] रे समूह, संवाद, कुद (बूमा)। २ चैन धाषुमाँ ना एक झारुरक्त (प्रदाने समयपत्र परक्षका वाटा वक्क-**448** (448 2, 1-48 (44) | पडस्र न [वे] बीट निर्मा, मिही का बना हुमा एक प्रकार का चत्रका किससे सकत्त द्धाए जाते हैं (वे ६, ४ पाम)। पहरता } कीन [वे पटस्र है] नठरी गॉर्ड पहरतम | दुनराती ने भोटुक्क भोटनी ।

'पुष्प्रवक्तपञ्जामे' (सामा १ ८)। भी "किमा, "किया (स २१९) सुपा ६)। महवाको [वे] पटकुटी पटनगढा वक पृष्ठ त्रंकू (के ६ ६)। पहरू वर्क [प्र+दर् ] वताना राम करना । करक पहरसमाण (परह १ २)। पद्य र्पु [पटक] शाय-विशेष नवका क्षेत (धीप खंदि मद्वा)। परहरवं वि [दे] पूर्णे मरा हुमा (स १८)। पष्टदिय पू [पाटक्कि दोन नवानेनामा बोली बोलक्या (परम ४६ ८६)। पश्चदिया क्ये [पटदिया] क्षोटा बोम (सुर 4 ((2)) पदाअ देवी पद्धाय = परा + प्रयू । इ पहाइमञ्य (छ १४ १२)। पद्याद्रञ वि [ पद्मियित ] विश्वने प्रशापन क्तिया हो वह मागा हुया (से ११ ११)। पहाइसम्बद्ध देशो पहाद्य । पहाइथा की पिताकिका होटी क्ताका मत्तर-पताम (दूप १४३)। पदारा पूं [पटाक, पताक] पतान्य व्यक्त | (क्य भौप)। पद्याग्य १ क्ये [पदाक्य] व्यवा व्यव (महुहा पकाया रेपाम हे १ २ ६ प्राप्तः सबेक) । इपदागपु[ातिपताच] १ मतस्य को एक काति (विषा १ ६—पत्र ८३)। २ पवाका के अगर की शताका (यौप) । इराज न ["इरण] विजय-प्राप्ति (संवा) । पद्यागार म [ ी नौका में सफ्ते-मत्वा वस (वरावे चु १ प्रारम्म धीर धप ₹₹**₹**) i पबायाण वेची पक्षाण (है १ २१२)। पद्ममाणिय वि [पर्याणित] विस पर पर्यास नांशायसा हो वह (हुमा २ ६३)। पडाकी की [दे] १ पीक, मधी (वे ६ र)। २ वर के क्रमर की चठाई शादि की क्ष्मवी सहा (बंद %) । पहास देवो पस्पसं (गाठ – मृष्य २४१) ।

पढि वि [पटिम्] वजवाचा (मञ्जू १४४)।

पश्चि म [प्रति] रत प्रनी का श्चवक सम्पन्न

७द२)।

र प्रकर्म (नव १) । २ बस्पूरीका (नेदन

पढि य प्रिति का धर्म का सूचक सम्पर-१ विरोब 'पश्चिमका' 'पश्चिमपुरेव' (मनका **पडम २ २२)।२ विशेष विशिक्ष**क 'पहिमेनरिवडिसय' (भीप)। १ बीप्सा व्याप्ति 'पश्चिषार' 'पश्चिमेस्बाए' (पर्छा १ में से ६ १२)। ४ वायस पीछे 'पविनय' (विपा १ १३ भग सुर १ १४६) । ४ शामिमुस्य संपृक्षताः पत्रिकरम्, 'पत्रिकद्व' (पट्ह २ २ गतक)। ६ प्रतिकान वदनाः 'पविदेद' (मिने १२४१)। ७ फिर ने 'पश्चिपविज' 'पश्चिमित्र' (सार्वे १४- दे ६ ११)। ४ प्रतिनिधान 'पश्चिद' (उप ७२८ थे)। ६ प्रविधेन निपेच न्यक्रियान्तिस्तर्य (मन सम १९)। १ प्रतिदूसता, प्रिनशंतता 'पंडिबंध' (के २ ४६)। ११ स्वयाबः पंक्तिकार (ठा २१) । १२ सामीच्य निक व्या 'पश्चिमिय' (सुपा ४१२)। १३ मानिक्प मितराक 'पश्चिमाखेव' (ग्रीप)। १४ सारिय तुम्बता 'पश्चित' (प्रकार ४, १११)। १४ समुद्रा सोटाई: 'प्रश्नितुमार' (कम परख २)। १६ भरास्तता चाना 'पश्चिम' (बीव १)। १७ सीप्रतिकता, वर्तमञ्जा (ठा६ ४--- पव१४ व)। १८ निरमेंक मी इसका अयोग होता है, 'पश्चिम' (पजन १ १८ १)- पश्चित्वारेनब्न' (भन) । पक्षि वेको परिक्षिप्रस् स्टब्स्ट, मंत्र ७) । पश्चिम विदे] विवस्ति, विद्वतः (दे ६ १२)। पंक्रिम नि [पवित्त] र निव हुथा (शा ११ अस्यू ६८ १)। २ जिसमे वजने की प्रारम्य किया हो वहा भागवनम्बेश व पहिमी (बस्)। पश्चिम देखो पड = पद्। पश्चिमिक वि [प्रस्वक्कित] १ विगुपित । २ क्पनित्व 'बहुमराषुष्ठिसर्गक पत्रिमेकिमी'

पश्चिमंत्रअं पू [ वे ] क्मॅक्ट, नौकर (वे

पहिमाग सक [भद्ध+सम्] मनुगदश

करना, पीछे जाना । पश्चिमनेह (हे 🗸

(মহি)।

1 17)

१ का बद्री।

<b>41</b> 4	पाइअसइमद्दण्यपो	पश्चित्रग्गपश्चिपश्चिम
विश्वमा वह [विष + जातृ] र नाय्वणा। र नेगा वरणा चिंत करवा। व युवा व रता चंत्रा विश्वचित्र विश्वमीतवार्यः विश्वचित्र (त दर) विष्याम (वप्प)। विश्वचित्र रिची गरे ते वर्षः व विश्वचित्र विश्वच्य विष्य विश्वच्य व	पहिम्मरण व [मिडियरम] हेम, युम्पा (योप वर्र था मा रहेगा रहे)। पिक्रमरण की [मिडियरण] र बीमार की हेमनुष्य मा (याव नरे)। र बीक, मायर, क्यारा रहे हों। र की हैमनुष्य मा (याव नरे)। र बीक, मायर, क्यारा रहे के हैं हो हों र हैं)। र बीक मायर करें है निर्माण (योव व के)। र मिडियमण पाय करें है निर्माण (योव व के)। र मिडियमण पाय करें में महीं पाय की हैमनुष्य कि हमाया ने मायर विकास कर हैं।। यह मायर कह मिस्सा ने की हिस्से करण वर्गा। विकास पाय (याव रे)। यह मायर कह मिस्सा ने की हिस्से करण वर्गा। विकास पाय (याव रे)। यह मायर वाव (याव रहे रे)। यह मायर वाव (याव रहे रे)। यह मायर की मायर मायर (याव रे)। यह मायर की मायर की हमायर की हमायर की हमायर की पायर की हमायर की हमायर की हमायर की हमायर की हमायर की स्थान (याव रे रे)। यह मायर की हमायर हमायर वाव रहे साथ की हमायर हमायर हमायर हमायर हमायर की हमायर हमायर वाव रहे साथ की हमायर हमायर की हमायर हमायर हमायर हमायर की हमायर हमायर हमायर की हमायर हम	पिकाराग—पविष्यिक्ष  १ ४, १११) । ६ सामा-चीर के एक प्रमा का नाम (जम । ११२) । पिक्रियं प्रमा (जम । ११२) । पिक्रियं प्रमा निर्मा मा का मिरिया मा (जम १० १५) । पिक्रियं के पिक्रिया मा (जम १० १५) । पिक्रियं के मि पिक्रमा मा कमा (जम ११ १० १०) । पिक्रयं के पिक्रमा मा स्था (जम ११ १० १०) । पिक्रयं मा मि पिक्रमा मा सम्म (जम १०) । पिक्रयं मा मि प्रमुद्ध ने मा मा सम्म (जम १०) । पिक्रयं मा मि प्रमुद्ध ने मा मि प्रमुद्ध मा पिक्रमा मा मि प्रमुद्ध मा मि मा मा मि प्रमुद्ध मा मि मा मि प्रमुद्ध मा मि मा मि प्रमुद्ध मा मि मा मा मि मि मा मि मा मि मा मि मा मि मा मि मि मा मि मा मि मि मा मि मि मि मि मि मा मि
रे प्रधान वाला। वे तरे तार करता। हैन परिवार (ता वे वे )। वेंद्र तार्द्रण वेंद्रवारण्य प्रतियो तती (तुत्र के )। य अर तु [म] तुत्र नेतृत वाहे वा बूग काल (t. q. t. e)	स्मै । स्या (गाया १ १यत्र १४) । पश्चिमीरे डि [स्तिपारिन] कार वेगी (वद १) । पटिइ सर [पति + इ] सेचे नीम्या नायन बाता । बहु पहिलेत (जन १६० के)	बस्ता जीतान (बान ४ ७३: गुरा १११) । पश्चिमसम् पर्क [स्तुनु + घर्स] दुवरी तित तता तिर में भीता। बद्द पश्चिमसम् र्शत (में १ १३) ।
- पॅट्रिय ५ विश्वारी शंत्सर, चीव्हर	हेर्र पटिएसप् (बन) ।	

देश पंडिएसप (बन)।

प'हड् को [पनिर्ति ] नतन नात (वन ४) ।

पहिरोत के [प्रतिकृति । इस विश्वतिक प्रतिकास वेन्स पहिन्त । (राज १ थ. १) । व स्य का नामाति । पहिलासिक वि [व] क्षाणे व्यानुत्व (१ ६

रेग राज के लाग केरासाना केर (प्रजा | ११)।

पहिल्ला केरी पहिल्ला (बन्द्र व । ने व

11) 1

पॅटान र [बंधरर] बंदरा, जीवार

4 bel (42 fa) :

(१९)भाषुमित्रों वर निस्ती हैं से सेव

र्योद्यागः वि [द्वीतवारः] नेतानुष्यः अने न्यानिक रे पर रे) । पश्चिमासङ् न [प्रस्थीयम] एक मीपन ना प्रतिपक्षी मौराव (सम्मत्त १४२) । पहिंसुआ देवो पर्वसमा = प्रतिमृद् (बीप)। पश्चिमद नि प्रितिमत् प्रेयोक्ट स्नीहरू (प्राप्त पि ११६)। पश्चिम्य वि शिविरुप्टकी श्रीटरपर्य (चम)। पश्चिमंत देशो पश्चिमंत (उप २२ ये)। पश्चिम्य वि प्रतिकर्ते ] इसाव करनेवासा (घ४४)। पडिकप्प सक बिति + कृप्] १ सजाना समानट करताः विष्णामेन मी वैवाशुप्पिना ! कृत्शियस्य रएए। चिनिसारपुत्तस्य भाषिके**र** इत्पिरवर्ण पश्चिमपोद्दि' (भीप) पश्चिमपोद् (धीप) । पढिकप्रियञ्ज वि [प्रतिकसूत्र] स्थाया हुमा (विपार २—पत्र २३ मेहामीप)। पश्चिम वेको पश्चिम्य । हः 'पश्चिम्य ग्री पश्चिमधो पहिक्रमिलक्षं च प्रालुपुचीव् (धारि ४)। पश्चिम्मय न केवो पश्चिम्मय (धानि ४)। पढिकमा न [प्रतिकर्मम्,परिकर्मम्] देशो पारकम्म (भीपः सम्र)। पढिकय वि [प्रतिकृत] १ जिसका वस्ता कुकामा गया ही बहु। २ न प्रतिकार, बस्सा (a y y) पश्चिमार्ड रेलो पश्चित्रर - प्रति + 🛊 । पश्चिमाञ्जल र् पश्चिमामा देखो पश्चिमामणा (श्रीमम ١ (۵) पश्चिम्य प्रै प्रिविद्ययी प्रविदेश प्रविदा (बेर्य ७३) । पडिकिंदि की [प्रतिकृति] १ प्रतिकार. विम्य मृति (यवि १६६)। पडिकिय न [प्रतिकृत] अपर देखो (नेश्य wx)ı पिंडिकिरिया की [मितिकिया] प्रतीकार, वदसाः क्याविकिरियां (मीव) । परिकट , वि[प्रतिकृष्टि] १ विभिन्न पविकृष्टिस्च्या रे प्रतिपद्ध ( भोन ४ ३ एक a) गुपा २ ७): पहिदुद्विस्तर्यक्षेत्रे वन्त्रेका

धट्रमि च नवमि च (वव १)। २ प्रतिकृत (स २७ ) न्यन्मोर्न्न पश्चिद्वा शेक्षिण एए मधन्यामा (सम्म १६६)। पविद्युद्धेत्वम देखो पविद्युद्धिस्त्रमा (वव १)। पश्चिम्ब देवो पश्चिम्छ = प्रतिकृत (सर ११ २ १)। पढिकुछ सक प्रितिकृत्तय् ने प्रतिकृत याच रख करना । पह 'पविदुर्शतस्य मनम जिला वम्पों (सुपार कार ६)। इट पश्चिक्तो यठव (कुम २४२)। पश्चिम् अस्ति प्रितिकृतस्ति १ विपरीतः उत्तरा (बच १२)। २ सनिष्ट धनमिनव (साचा)। व विरोमी विपन्न (हे २ १७)। पविक्रसणाच्ये प्रितिकस्यना १ प्रतिकस भाषरण । २ प्रतिश्वसताः निरोत्र (वर्गनि Ke) I पडिकृक्षिय वि [प्रतिकृत्कित] प्रतिकृत किया ह्या (स्पर)। पिंडकूक्मा पूँ [मितिकूपक] कूप के समीप का क्षोटा दूप (स १ )। पश्चिकेसप पूं [प्रतिकेशक] बागुरेव का प्रतिपद्यी राजा प्रतिवासुरेव (पडम २ R Y) 1 पढिकोस सक [प्रति + सूत् ] मान्नेस करना कीसना शाप मा मासी देना । पश्चि कोसइ (सूप२७३)। पश्चिकोद् पुं[प्रतिकाय] एस्स (दय ६ ₹=)1 पबिक्क न [प्रस्थेक] प्रत्येक हरपुरु (बाका) । पश्चिमपूर्व वि [प्रतिकास्त] वीचे इटा हमा मिनुष (उनामसह २ १) मा ४३ स t () 1 इसाव । २ वरता (दे ६ ११) । ३ प्रति- | पडिककम सक [ प्रति+क्रम् ] लिखा होना पीची हटना। परिनक्षमक् (स्था महा)। पश्चिकमे (मा ३ ६४ पद १२)। हेर पडिक्कमित्रं पडिक्कमित्तप् (वर्षे १ कसम्बाद १)। संद्र पश्चिकसमित्ता (माचा २ १४) । इ. पहिनक्षतस्य पश्चिमःसियक्य (बादमः स्रोध व )। पढिकम ए [प्रतिकाम] देखी पहिल्लामता "मिहिपवितसमाद्द्याराज" (पर---पामा २) ।

परिकासमाय न [प्रतिकृतमाय] १ निवृत्ति म्यावर्शन । २ प्रमाद-वरा राग बीन से गिरकर पराम योगको प्राप्त करते के बाद फिर्से शुम योग को प्राप्त करना । १ चतुन व्यापार से निवृत्त होकर क्तरोत्तर शुद्ध मीम में वर्तन (पर्ह २,१ सीप चट १) पडि)। ४ मिस्सा-दुष्कव-प्रवान किए हुए पाप का परवालाय (ठा १)। ३ भैन सादु भीर गृहस्यों का पुब्ह भीर शाम की करने का एक बादश्यक मनुसन (मा ४६)। पश्चिमसम् वि [प्रविकासक] प्रविकास करतेवाला जीवो उ पश्चिकमधी समुद्रार्थ पावकम्मभोगाएँ (बारि ४)। पश्चिक्कमित्रं देखो पश्चिक्तमः स्त्रम वि िकाम] प्रतिकमण करने की इच्छादाला (णाया १ १)। पश्चित्रय पूँ [के] प्रतिक्रिया, प्रतीकार (के ६ (35 पडिकामणा औ [प्रतिक्रमणा] देशो पडि क्सण (मोव ३१ मा)। पडिस्कुछ देवो पडिकुछ (हे २,१७ पड्)। पडिक्ला सक [प्रति + ईस्] १ प्रतीका करना बाट देखना बाट बोहना। २ सङ् स्विति करना। पठिनकाइ (यह महा)। वह पडिश्लांड (पडम १, ७२)। पविकसास वि [प्रवीसक] प्रवीसा करने वासा, बाट कोइनेवासा (मा ११७ छ)। पडिकर्जम र्षु [प्रविस्तरमा] धर्मना, घरपना पागव भगरी स्पोंका (स ६ ६६) पबिक्सात्र म [प्रतीक्षण] प्रतीका बाट राष्ट् (दे१ वेश क्रमा)। पविकास कि [के] १ क्रूर, निश्म (के ६, २४) । २ प्रतिद्वा (पक्र) । पविक्तान पक [ प्रति + स्त्रस् ] १ हटना । २ पिरता। ६ क्लमा। ४ सके रोकसा। वड- पडिक्सरांत (मनि)। पबिस्त्रक्षय न [प्रविस्त्रकन] १ पवन । २ भवरोब (भावम)। प विक्ताक्षित्र वि [प्रतिस्तासित] १ परावृत्त पीके इटा हुया (से १ ७) । २ दका हुया

(वे १ ७) मणि)। देवी पहिद्यक्तिम् ।

216

२ क्य किरमानिय मेंबारे देश करिला विदा नगरनाची (इस)। र्गेड्डरेस्स्य रि. ब्रिअभित्र] निम्ही बद्धैण को व्यक्तिक (४ = १६)। परिकारण वि पिकिस्की विकासिक (47 0) 1 पश्चिमंत्र न दिर्देश प्रतास्थान प्रतास प बा इति मार्डि पातः १ बनगढ् मेव बादत (t + 2c) 1 र्षांडार्ग्या औ [दे] कार रेगी (दे ६ २८)। पंडरस्य रिटिश्च मध्य ह्या (?)-विकेश्या मान्यास्य बहिल्येन (महा) । र्पन्यतः देना पदिस्तरतः (वरि)। वर्षः पश्चिमाद् (इप्र २ प्र)। परिगालय हैगा परिशासिय (बर्वीर १६)। पाँडमान्स्य मि मिनिस्सिनी १ रका ह्या (वर्ष) । २ रोग हमा फला हनो र्नार्वतयो धन्तमोत् (मुख १२०)। देली वर्षहरमाध्यि । पहिलास बर (पर+शिव) निप्र होना परान्त होता। चौर्राप्रस्थीः (सी) (तार---मार्गा ११) । पंडगमन विशिवसती स्वार्शन, येथे भी ता (यव है ) र्षाक्षमय बुं [ प्रतिसात्र ] प्रीतरामे राज्ये (१९३४) । पहिनाम ई जितिनामी बीच और हमा क्षप्रदेश हो (सिता ११ का कीर APP PC ( tyt.) पोद्दगद देवो पीद्दगाद (दे ४ ११)। र्यंशाह न्य दिशि + बह ] राग uter el'ert urer ufer- (u'l)

रोग्ना रोग्नी (कार) मेह पहिला दिया परिवारिका बहिताहका (बार ब्राना २, १ ३ ३) । हेर्र ५ हिमादिया (T) t बारगारत है। [प्रांतपारक] करत कारे apr (mr 1 1 - 42 11 17 1 \*\*\*\*

पहिलाह वृद्धितहमह प्रतियही १ पात्र पहिचरणा रेघो पहिञाला (घर)। भारत (बार २ ४ बीप बोर १६ १६६) देश ४ कम्म)। २ वर्षे प्रश्चितिकोत्र वह प्रशृति जिल्ली इंतरी प्रशृति का कर्म दक बरिएउत होता है (रम्मन)। धारि वि िंधारिन् ] पाव एसनेप्रता (वण) । पहिलादिक विशिविष्यदिन प्रश्रद्वादिनी पारपाना 'ममणे मगर्ग महारोगे संसम्बर्ग नाहिये बार्न जात चीतरवारी ही पा हेल पर धरेनर पास्तिकारहरू (क्य)। पहिमादिक (श) वि विविवदित परि गुडावी सीहत (बार-मुख्य ११ । सत्वा **१**२) । पश्चिमाह देना पश्चिमाई। नश्चिमाहैद (धरा) । संह पहिमाहका (उम) । हेर पहिल्लाहरू (रन योग)। पहिलाह सर् मिति+माह्य\_ी घरण बचना । इ. पहिम्मादियस्य (शी) (नार)। पहिलाइय वि जितिमाहकी प्राथायका बारत नैतेशना (रे ७ १६)। पहिन्याय नुं [द्रतियान] १ तिरोप धन्तात (रम ६ १)। २ शिमास (पर्नीत ६४)। पहिषाय 🛊 [प्रतियात] १ तस्य दिन्यसः। र निरामरण निरमन 'रूलगरियायरेचे (माया पुर ७ ११४)। बहिपायम रि दिनियानकी प्रतियत करने-बारा (उस १६४ हो)। पहिपालिर रि [इनिपूर्तियु] होपनेगमा टिवनेशास (ने ६ ११)। परियोग [प्रशिवनत] वितेष अत्र की न्यान दर्गि का बचह है। दगा)। र्पादपद्य व दिर्शतपत्र विकास वक्रमा टर (रार) रेगी व दयद प्रीपन र्वाद्रभार देनो पाद्रभार = वीतः वर प्रदूष (प (रप १ ६) ए देश्यो वर्ष्ट्रवर्गराया (बार ४) ।

काम परिवाद (मात १ १)

पहिचार पुं [प्रविचार] बना ग्रिटेन-१ द्रप्रसारिको सर्वतका परिनात । २ रेग्सै को सेना-रूपमाका द्यान (वे २०६८) ह 1 (1) पहिचारव दूंबी [प्रतिवासकी शीरफ क्ष्में र । इसे (स्या (मुता १ ८) । पहिचाराज्ञमाण क्षेत्रे परिचाय । पहिचाहय रि मितियोदिती १ प्रक्ति (बर इ १६४)। २ प्रतिबंधित जिनको स्वर दिया गया हो बढ़ (रहम ४४ ४१)। पहिचोक्त वि बितियोर्गयत् वेरर (ब 1 1)1 पद्मभाग नद्द जिनि + भारप ने बेरण करता। वहिनौर्शन (प्रम ११)। क्राह पश्चित्राज्ञमाग (वन १४—पत्र ६७१)। पटियायणा धौ मिनियादना मेरहा (धारे का नगरप्र-पन ६ १) । पहिचायमा का विशिव्यक्ता निर्मेशीय किएता है प्रेरता (विचार २३ )। पंडरपारंग हेनो पश्चित्रार्थ (अ ६०६ £1) 1 पश्चिम् देनो पटिकार । क्यू पटिकाईका 'महि'यरि' पहिनद्यमात्रा विदूर' (श्रा न १२४१ मण) । ४ पटिण्डियस्य (TT) ( र्पावरुद्ध सर [ प्रार्थ + इपु ] प्रगण नरनाः वीकारः परिवर्णाः (बार बुश ११) । बर पहिन्द्रमान पहिन्द्रमात्र (बीप बार गांवा १ १)। बंद पहिन्द्रांचा पर्डिन्द्रभ पर्डिन्छ्न वर्डिन्द्रज्ञ (क्य प्रविध हा नुसंदश निषुष ) ह हेर पर्दिशन्त (बुरा ७३)। इ परि िरवस्य (युक्त १२६ युर ४ १ १)। क्ष वर्ष पहिल्लामार्थाम् (ते) (रि ११९ ना) । यह यहिण्यादेशास (44): परिचर मन [ दर्शि + पर ] गरिक्रमण परिचार रन [दिनगद्दर] १ मृति क्षेत्र (er (er 1 & w tetre 4): हे त्या स्वास हिंदि १६)। की स्वास ["] १४] बरूप (१११ (दा (दुवा) ।

पश्चिठाण न ब्रितिस्थानी हर अपह (भर्मीव पक्रिण देवो पक्रीण (निवरः ११)। पहिला वि किसिनवी समा मूदम, 'दुरम पश्चिम्बनुरबाद ग्रिरंतरबंबिव (विक २६)। पक्षिणिओं सजन दि । यद में पहलते का WW (\$ 4 44) 1 पश्चिणिअत्त सक [प्रतिनि + पूत् ] पीछे कीरना पीछे नापस बाला । पश्चित्रसन्दर्ध (धौप)। बहु पश्चिणिक्षचेत, पश्चिणिक्षच साम (से १३ ७% नार-भामती २६)। संह पहिजियत्विता (भीप)। पडिणियक्त ) वि [इतिनियुक्त] पीधे शौदा पश्चिणित्रच हिमा (शा १ व मा निपा १ १। चनासे १ २६। ध्रम्य १२४)। पहिणिश्चस वि [प्रतिनिकाश ] समान. तस्य (सय ६७)। पिक्रिक्सम यक [प्रतिनिद् + क्रम् ] बाहर निकसना । पडिणिस्खनक (स्वा)। सक् पश्चिणिक्स्त्रिम् (एवा)। पविणिग्गलक यक प्रितिनिर + गम ] बहुर निकल्ता। पृष्टिशिग्यन्त्रः (उन्)। पंक्र पश्चिमगाच्छाचा (स्ना)। पिक्रिजिञ्जाय सक [प्रतिनिर् + यापय ] प्रपेख करना । पश्चित्तिक्रमस्पूर्म (स्राया १ \* TY 284) 1 पिंडिणिम वि पिविनिम र चहरा कुर, बरागर । २ हेल्-विरोध बादो की प्रतिका का चंद्रन करने के लिए प्रतिवादी की तरफ से मयुक्त समान हेनू-यूपित (ठा ४ ६)। पश्चिमित्रच देशो पश्चिषिअत्त = प्रतिनि + बुन । बक्र पढिजिक्तमाण (नाट, राला XY) 1 पहिजियत देवी पहिजिशत = प्रतिनिक्त (नास)। पहिलिबिद्ध मि [मितिनिबिष्ट] बिट हैव

**418** 

वृद्दा वय पविजिन्नस्तान ( वेणी वव)। पविजिन्नस्त क्षेत्र पविजिनस्त क्ष्मियं ( विविद्धा क्षित्र क्ष्मियं ( विविद्धा क्ष्मियं क्षम्भ पविजिनस्त ( विविद्धा क्षम्भ पविजिनस्त क्षम्भ पविजिनस्त क्षम्भ पविजिनस्त विविद्धा क्षम्भ पविजिनस्त क्षम्भ पविजिनस्त विविद्धा क्षम्भ पविज्ञ क्षम्भ विज्ञ क्षम्भ पविज्ञ क्षम्भ विज्ञ क्षम्भ पविज्ञ क्षम्भ विज्ञ क्षम्भ पविज्ञ क्षम्भ विज्ञ विज्ञ विज्ञ विज्ञ क्षम्भ विज्ञ क्षम्भ विज्ञ क्षम्भ विज्ञ क्षम विज्ञ वि	<b>५</b> २०	पाइभसदमहण्यको	् पश्चिणि <del>युत्त</del> पश्चिपाव
पहिलोगी हिनितानी स्थान है। के स्वेताना देशीया करोनाना शिक्षे विकास कि प्रतिकार कि प्रतिका	पांकिणपुत्त केनो पांकिणप्रस्त = आरिमि + दूर। वर पांकिणपुत्तमाल (केग्री वर)। पांकिलुल केनो पांकिणप्रस्त = आरिमिन्स (ब्रांग देश)। पांकिलुल केनो पांकिणप्रस्त = आरिमिन्स (ब्रांग देश)। पांकिणप्रस्त केनो पांकिणप्रस्त = आरिमिन्स वृद्धा नद्धा पांकिणप्रस्त (कृत वर्षा)। पांकिणप्रस्त केनो पांकिणप्रस्त (कृत वर्षा)। पांकिणप्रस्त (कृत वर्षा)। देश प्रतिक्र कारि पांकिणप्रस्त (क्रांग देश)। पांकिणप्रस्त (क्रांग क्रांग व्रांग क्रांग क्रांग व्रांग क्रांग क्रांग क्रांग व्रांग क्रांग व्रांग क्रांग क्रांग व्रांग क्रांग व्रांग व्रांग व्रांग व्रांग व्रांग क्रांग व्रांग व्रांग व्रांग क्रांग व्रांग व्रांग व्रांग व्र	पिक्षियर रि. [व] यात्रात स्वरं (दे के व )। पिक्षियर रि. [पिरियर] किर फूलेल-पिक्षर रि. [पिरियर] किर फूलेल-पिक्षर हैं [पिरियर] किर फूलेल-पिक्षर हैं [पिरियर] कुस वर के बयात हुएय वर्ष किर्यर्थ सीरन्यमध्ये पित्रमध्ये हैं [पिरियर] कुस वर के बयात हुएय वर्ष किर्यर्थ (मीर)। पिक्षर कि [पित्रमा कि निर्माण किर्माण पिक्सप्त (क्या)। वर्ष पित्रमध्ये पित्रमध्ये (मीर)। पिक्षर कि [पित्रमा कि नेवर्ण किर्माण किर्माण कि पित्रमा कि नेवर्ण कि मिल्रमा कि पित्रमा कि नेवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि नेवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण कि नेवर्ण कि निवर्ण क	पहिनियन्त देवो पहिणित्रच = प्रतिनिश्च । परिनियन्त दे [प्रतिनिश्च ] र प्राप्त , पर्वाप्त प्रयुक्त , प्रतिनिश्च । र प्रतिन प्रयुक्त । प्रतिन । परिने पर्वाप्त (प्रयुक्त । परिने पर्वाप्त (प्रयुक्त । परिने पर्वाप्त । परिवे पर्वाप्त   र परिने । परिने परिकार । परिवे पर्वाप्त   प्रतिन । परिकार कर [प्रति + प्राप्त   प्रतिम । परिकार कर [प्रति + प्राप्त   र परिवार । परिवे पर्वाप्त । परिवे पर्वाप्त   र परिवे । परिकार कर [प्रति + प्राप्त   प्रतिम  । र र र र र र र र र र र र र र र र र र

पश्चिपिंडियं वि दि] प्रकृत वदाहुमा (दे

(सपा १४३) ।

€ \$¥) I

पविषिक्त सक प्रिनेत + विषय , प्रतिप्र + ईरय | द्वेरका करना । पश्चिमनद (भवि) । पहिषम्ख्या म प्रिविप्रेरण] १ प्रेरणा (सुर १४ १४१)।२ बल्लन पिवान। वे वि प्रेरला करमनत्ता। 'दीवसिहापविधिक्रणमस्से मिस्तिति गीसासे (क्रूब १३१)। पश्चिपहा देखो पश्चिपेहा । संक्र पश्चिपिहित्ता (पि ४६२)। पश्चिपीक्य न [प्रसिपीक्षन] विशेष पीक्रन स्वीतक व्याद (शहर) । पश्चिमुच्छ सक [प्रति + प्रच्छ ] १ प्रच्छ करता, पूक्ता। २ फिर से पूक्ता। १ प्रस्त का जवाब देता । पश्चिमका (क्य) । बहुः, पहिपुच्छमाण (क्य) । इ. पन्डपुच्छ-जिल्ल पहिपुच्याजीय (उत्ताः सामा र १ चय)। पश्चिम्बद्धण न [प्रतिप्रच्यान] नीचे वेदो (मराज्या)। पश्चिपुण्डाणया ) की [प्रतिप्रच्छाना ] १ पश्चिमुच्युणा र पूछना र क्या। २ किर हे पुण्या (उत्त २६,२ ३ मीप) । ३ क्तर प्ररम का बनाव (बुद्ध ४ कर दू ६६=) । पहिपुच्छणिज्ञ } पहिपुच्छणीय } देखो पहिपुच्छ । पश्चिपुरुक्ता की [प्रतिपृष्टका] देवी पश्चिपु क्स्मणा (पंचार, वद २३ हह १)। पहित्रकाश वि पितिपृष्टी विद्ये प्रस्त किया यसाही बहु (या २०१)। पश्चिम मि [प्रतिपृतित] पुनित धानित व्यरणभरक्रवसम्बरम्भिन्तिम्मयपित्र्येति (? पुण्डि पृष्ट्) वनस्थान्त्रमशीईदशरमाप् (खामा १ १---पत्र १२)। पश्चिपुण्य केशो पश्चिपुत्र (उनाः पि २१८)। प्रविद्वत्त प्रविद्वत्र । प्रविद्वत्र । प्रवृत्त प्रवृत्त वापूत्रः पोठा अंकनिवेसियनियनियपुत्तवपश्चिपुत्तनतः पुर्वीर्थ (नुपा ६) । देशो पश्चिपोत्तय । पश्चिम वि [प्रतिपूष्त ] वरिपूर्ण संपूर्ण (जम्पारे शाकुर ६, १:११४)। 44

पश्चिपद्रय देशो पश्चिप्रिजय (राज)। पहिच्चम ) वि [प्रतिपूजक] पूचा करने-पडिपूयय रे पार्ची (सर्वे समें ४१)। पहिष्यय वि [प्रतिपुजक] प्रसुपकार कर्या (उत्त १७ १)। पहिलूरिय नि प्रिविपृरिव दे पूर्ण किया हुमा (परम १ १ १११ ७)। पश्चिपञ्चल केको पश्चिपञ्चल (गतक से ६ 1(R) पश्चिपेक्षण न [परिप्रेरण] देवो पश्चिपिङ्कण (B ? ?Y) 1 प्रक्रिपेक्सिय नि प्रिविमेरित निर्मा निर्मा । प्रेरणा नी य" हो नह (गुर १४) १ व मद्भा)। पश्चिपेहा एक ब्रितिपि + मा विकास भाष्याका करता । संक्र पहिपहित्ता (सम **२ २, ५१)**। पश्चिपोत्तम 🙎 [प्रतिपुत्रक] नन्ता करवा कापुत्र सङ्कीका सङ्का नासी (धूपा १६२) । वेको पश्चिमुत्तय । पश्चिपह देशो पश्चिपह (कर ७२= दी)। पहिष्पद्धि पि प्रितिस्पर्धिम् । सर्वा करो-माना (हे १ ४४: २ १६ प्राप्त सीक्षा १६)।

पविष्यक्रमा औ [प्रतिफल्क्ना] १ स्वस्ता।

२ संबन्धा पश्चित्रपान्यमणायाज्यसे

पहिष्यक्तिम ) वि [प्रतिफब्लिट र प्रति-

पश्चिमारिक विभिन्न विभाग्त वि १६

समुर्वर्ट (बुपा ८४) ।

३१ दे१ २७)। २ स्वनित (पाम)। पश्चिम सक प्रिति + बन्ध् । चेत्रना धट कानाः पश्चिमद् (पि ११६) । इ. पृक्ति वर्षयस्य (वस्)। पश्चिम एक प्रिति+मन्य ] १ वेहन करना । २ सेकना । पश्चिमदः पश्चिमीत (सूब १ १ २ १ )। पश्चितंच पू [प्रतिबन्ध] व्याप्ति निवन (वर्मचे १११)। पडिमीम पुं[प्रतिबन्ध] १ क्लामट (तथा कण)। २ किम, सन्तराव (३४ ८०७)। १ घरमारर, स्थान (घन ७७६) क्षर १४६)। ४ स्टेब्सीटिराग (द्रार, वंचा १७)। १ भारतीक, प्रान्त्रनेय (छावा १ १) नप्प)। ६ वेष्टन (क्रूम १ ३ २)।

पहिर्वेषअ ) वि [प्रतिव घक] प्रतिकथ पश्चिमा करनेवासा (प्रसि रश्य का १४४)। पहिचेचल न [प्रतियम्बन] प्रतिबन्ध स्काबट (पि २१८)। पश्चितं वेयस्य देखो पहिस्म = प्रति + मन्द्र । पढिबद्ध वि [प्रतिबद्ध] १ रोश हुमा, संस्त्र' 'नामुरिन मध्यक्तियों' (रूप्प पराह १ ६)। २ छन्त्रवर्तित छन्पादित (गरुड १व२)। ३ सचक संबद्ध, संसन्त 'सरियाण वर्षयप्रवश्चापविवादमालयामस्या पुलिखबित्वारा (गवड कुप्र ११% छवा) । Y सामने अंग हुआ पश्चित्र नगर तुमे गरिद्वदं प्रयाविषयहंपि' (गढड) । १ व्यव रियत (पंचा १६)। ६ बेहित (यटह)। ७ समीप में स्मित 'तं केव य सागरिये जस्स मदूरे स पविषद्धों (बृह १)। पश्चित्र वि [प्रतिबद्ध] मिमत व्यान्त (वंबा ७ २)। पविवाद सक [प्रति+वाभ् ] पैरना। हैक पश्चिमहिद्दं (ग्री) (नाट---महानी 1 (33 पश्चिमाहर वि [प्रविवाह्म] मनविकारी धयोग्म (सम र )। पश्चित्रिय प प्रितिबिन्यी १ परक्रांकी प्रति-च्छामा (सूपा २६६) । २ प्रतिमा प्रतिनृत्ति (पाम प्रामा)। पश्चिमिका नि [प्रतिनिम्बत] निसना प्रतिविम्न पहा हो वह (कुमा) । पडिदुब्स धक प्रिति + बुभ ी १ बोव

पाना । २ बापूठ होता । पश्चिम्बद (स्वा) । **पद्ध-परिवृत्तमंत परिवृत्तममाण (क्य) ।** पाककुरुस्तरमा १ की [प्रतिकोधना | १ कोक पिंडचुँबसणा ∫सम¥ें। २ भावृति (स १४६ ग्रीप)। पश्चिम् व [मितिवुद्ध] १ बोच-प्रान्त (प्राप्त १३४, प्रम)। २ काकुत (खाना १ १)। ६ न प्रतिवीच (प्राथा) । ४ पूँ एक राजा

पडिज्ञाना की [प्रतिज्ञाना] कावन पृष्टि (सुम २ २, ६)। पडिवाभ देको पडिकोड् = प्रतिवेक (नार----मलती १६)।

काशाय (खादा १ ८)।

कावोधिश रेको पश्चित्राहिय (पनि १६)। पश्चिमेड सक मिति + बोधम ी १ जमन्य। २ बीच देना समस्त्रना, जल प्रस्त कराना । विक्रिकेट (क्या सका)। क्यक पवि बोहिक्फ्रेन (पवि १६)। एक पहिनोदिक (नाट-पानती १३१)। हेक पश्चिमोहिने (महा) । इ. पश्चिमोद्दियन्य (स ७ ७) । पश्चिमोद्य प्रितियोधी १ दोव सम्मः। २ जागति जायराज (मज्बः नि १७१)। पश्चिमोद्दग नि [प्रतिवाधक] १ मोर्च क्ले-वाला। २ वयानेवाचा (विसे २४ टी। यहिदाहण न प्रितिबोधनी क्यो पाड क्षात - प्रतियोग (काल स ७ ८)। पृष्टिकोडि वि [प्रतिकेथिम्] प्रतिकेथ प्रत्य **भरतेशला (बाचा२ ६ १ ८)** । पश्चिमद्विय वि [६विशेषित ] विस्को प्रति-भोज किया गया हो बढ़ (स्ताबा **१ १**) क्सका)। पश्चिमंग वे [प्रविज्ञांग] भेव चितारा (चै ६, 24) ı पंडिमीज धक प्रिति + सञ्जू निका, ह्रा । हेरू- पश्चिमीखर्ड (वव ४) । पश्चिमंड न [प्रतिभाण्ड] एक वस्तु को बेपकर अधके बरबे में खरीकी बाती जीत (स २ ६ पुर ६ ११४४)। पढिसम सक प्रिति + भ्रा सण | भ्रष्ट करना च्यूत करताः 'पेचाओ व पहिनंतद' (स १११)। पश्चिममा वि विशिधानी अला इपा प्रतासित (सीव १३३)। पश्चिमञ्ज पं प्रितिसटी प्रतिपदी धीवा (वे १३ ७२ धारा १६८ मरि)। पश्चिमण तक [प्रति + मण्] क्लर देना जराब देता । पश्चिमकाद (महाउद्यक्ताः नुपा २११) वश्चिमातानि (महानि ४)। पश्चिमणिय वि प्रितिमणिती प्रश्रुतीय निगरा कतर दिया क्या ही नह (बहा कुपा र्पाद्रमत्रिय वि [प्रतिमणित] १ तिराइत (भर्मेंसे ६६ )। २ म. प्रलुक्तर, निराकरका (वर्मचे ६१) । पहिसस कर्जाशीत परि+भ्रम् ] दूनना पर्वटम गरमा। संक्रः नरमञ्जूषापिय सम्बद्धः ।

वित पश्चिमसिय सहस्रोधई वर्षीय (मनि)। पश्चिममिय रि मितिआस्त परिभास्ती बमा बमा (मर्बि)। पश्चिमय न प्रितिसवी सब, बर (परम ७३ 83) I पश्चिमा पर्क प्रितिमा । मासून श्रोत्धः। पश्चि महि (शी) (नाट---धना ३) १ पविभाग र् पिविभाग र पेर भाग (धन २३ ७)। २ प्रतिविम्ब (राज)। पश्चिमास मन प्रिति + मास् ] मासूम होता । पश्चिमास्ति (शी) (ताठ-मूच्य tyt) i पश्चिमास सक ब्रिटि + माप् र क्लर देता। २ दोलना कब्रता 'सप्पेने पश्चिम धीर्त (सुघर ३१६)। पश्चिमण्य वि प्रितिभिन्ती संबद्ध, संसात (t Y K): पश्चिमिन्त वि प्रितिभिन्ती मेद-प्रान्त (पन-नावा १६ नेदन ६४२)। पविसमीय व प्रितिभूवको प्रतिपत्नी पुत्रीय-नेरमा बीपट (कपूर २७) । पश्चिम् पू [प्रतिभू] वामिनवार, बमानत करनेवाचा मनौदिया (नाट-चैत ७१)। पश्चिमेश पं कि प्रतिभव ज्यालम्ब निवा पश्चिमेयो प्रवास्त्र (पाध) । पश्चिमोद्र वि प्रिविभोगिन । परिनोव करने बाला 'सकलगढिमोद्यीया' (बाबा २ ३ ₹ #3 (\* Y X) i पश्चिम वि प्रितिसी समान दुश्य (योद्य 4x) : परिम को परिमा। हाइ नि स्थायिन १ बदबोरसर्व में राजनेवाबरा । २ नियम क्रिसेय में स्थित (पदाह १, १---पव १ ez t 1-94 PES) 1 पश्चिमंत एक प्रिति + मन्त्रम् ] उत्तर देवा । परिमंत्रेड (एतः १४० १) । पश्चिमस्य प्रितिमस्स् प्रतिका मध (मनि)। पश्चिमा की प्रितिसा र इति प्रतिक्रिका ·शिलपरिमार्गतचेक परिदुर्व (इन्ति १: नामः ना १३११४)। २ नामौरसर्व। ३ बैन-स्वक्रीक निवन-विदेश (पएस २ ६)

यम १६। इस २ ३ % १)। "शिक्षण िग्रह मिन्दर (लिच १२)। वेदो पश्चिम । पश्चिमाण न मितिसानी जिसके संबर्ध साहि का दौरा किया जाता है वह रती मता मानि परिमाख (भए)। पश्चिमाण न प्रितिमानी प्रतिमा प्रतिविक्त (वेदस ७३)। पश्चिमि )सक प्रिति ∔ साँ १ तीव पश्चिमित्र करना सामकरना। २ किनती करना । कर्मै पविमिश्चिक्द (अंगु) । क्ष्मकु पश्चिमिक्समाज (चन)। पश्चिमं च प्रति + सुच् ] क्षेत्रता। केक पश्चिमीचित्रं (वे १४ २) । पिंडमंडणा की प्रितिसण्डला सिनेक न्दिरास्य (बह १) । पहिल्ला विभिन्न की बोहा हमा (से व \$3) I परिमोक्तजा की प्रितिमोचना क्रमण (B t Yt): पश्चिमोक्सन न [प्रतिमोधन] कुन्मय (ब पश्चिमोपन पि [प्रतिमोचक] कुम्बर करने-मता (राम)। पश्चिमोयण देशो पश्चिमोचका (पौर)। पश्चिमक देशो पश्चिक (माचा) । पश्चिम न [मितिमक] पुरस्का-निरेप, चैश पूर्वी दिन निप्छाइसी इंश्रुप्टे पश्चिम्बे क्लुमुक्के प सत्तानुकि क्वास्' (बद्धा) । पश्चिमाम न [प्रतिज्ञागरण] सम्हान बबर (भर्मचे १ १३)। पश्चिमक देवो पश्चिल = प्रति + इ.। पंडियरण न [प्रतिकार] प्रतोकार, इवान (पित्र १६६)। पडियरिक वि [प्रतिकारित] क्षेत्रत, देवा किया इच्छ (नोक्ष १ ६) । पश्चिमा की प्रितिका] १ पहेरद "पंडवाद पविवाए' (कड माचा)। २ चानिप्राम (ठा ३ र-पत्र ६१४) । पंडिया स्मै [पंडिया] वक्त-विरोध भूपमाला य नुपूता

वहरूना सद्भव को नवा विसिरे ।

क्तो पुरुषेष्ठि विसा

केसा परिमम्ब संपद्धाः (यका ११६)।

पश्चिमाञ्चनका सक जिल्ला + स्वा] स्थाप करना । पविधायको (पि १६६) । पश्चिमाइक्सिय वि प्रित्मास्यादी श्रव परित्यक सीवा हवा। (ठा २ १ भग वना कसामिपार शामीप)।

पश्चिमाजस न दि पर्माणकी पर्माण के भी के दिया बाता चर्म गावि का एक उपकरण (स्वादा १ १७--पत्र २६ )।

पश्चिमार्गंद प्रजिस्थानम्द्र विशेष धानम्ब प्रमृत धासार, बहुत धार्नर (धीप) । पश्चिमाणम म कि परतानक, पमाणक] पर्याण के नीचे रखा जाता वस भाविका एक भूबसवारी का काक्ष्यत (खामा १

१७-पन २३२ टी)। पश्चिमारणा की प्रितिकारणा निपेत्र (पैता to 14) 1

पश्चिमासुर मक दि विक्ता प्रस्ता होता। क 'पश्चिमाभुरेयक्यं न कमाइवि पास नाएपि (माक २६, १४)।

पढिर नि [पविवा] विक्ताना (कुमा)। पंडरब रेको पहित्य (ता ११ का से ७

te) 1 पडिएंजिल वि दि] कर दूरा हुसा (दे

६, ६२) । विश्वपिक्तय वि [प्रविधिश्वत] निवकी पता

की पर्दे हो वह (भवि)। पंडिरव पूं प्रितिरवी प्रतिप्ति प्रतिरूप

(बरक मा देश मुद १ २४४)।

पहिराम र् प्रितिरागी नानी रखपना 'रुम्बहुद्र बह्यविद्याहरोहुम्बन्दराचेराचे । पाछोमरैतवहरं व प्रतिह्वसर्व इमा बक्छे' (बउद्द)।

पहिरिगम [क] देखोपहिरंजिश (यह ) व पढिरुभक प्रिति + रु प्रतिम्बनि करना, प्रतिरुम्प करता । वश्च पश्चिक्त्रांत (ते १२,

शासिका)। पविरंग र वर [ प्रति + रुप् ] १ रोक्स पहिरुम । घटकाना । २ व्याव नरवा । परि

बेमद (से व ११)। वहा, पश्चितंपंत (से 22 X) 1

पश्चिरुद्ध वि [प्रतिकृत्व] रोका हुमा, घटकाया ह्मा (सुपान्धः वका र )। पश्चिम्म ) वि प्रितिहरूपी १ एम्य गुन्दर,

पश्चित्रव वाद, मनोहर (सम १९७ डवा भीत)। २ क्यबाम्, प्रशस्त रूपमाता भ छ धाकृतिवाला (भीप) । १ धसामारण स्थवाला । ४ तुष्ठन क्यवल्या (बीव ६)। १ योग्य, चित्र (स =० मन १६) वस ८,१)। ६ सहरा समान (गामा १ १-पन ६१)। ७ समान स्पनामा सहश्च धाकारनाता (उत्त २३ ४२)। ८ न. प्रतिकिम्न प्रतिसृति

'कहवाबि विक्रफनए कहवा वि पटमिन वस्त पिक्ने सिक्किस (सूर ११ २६०) राय)।

१ शमान रूप समान भारती 'तमहपश्चित-वारि पासद विज्वाहरसदाई' (सपा २६०)।

१ पूँ इन्प्र-विशेष मृत-निकासका सत्तर विशासाइकारक (ठार ६ — पत्र ६६)। ११

विनय का एक मेद (वच १)। पश्चिम्प्यंसि वि प्रितिकपिस र रमखीय

युक्द (बावा२४२१)। पश्चित्रयम पून [ प्रतिरूपक ] प्रतिनिध्न प्रदिनाः 'शिर्विति परिकरणा यदेवक्या' (प्रावः 48) I

पश्चिरुवणयाची प्रितिकपणवा १ समा नदा सहरुदा या साहत्य । २ समान वेप भारण (स्त २६ १)। पडिक्मा की प्रितिकपा एक दूबकर पुरुष

की पानी का नाम (सम ११ )। पश्चिरोव र प्रिविरोपी पुनरारीपण (दुन

XX) : पश्चिपेड् पू प्रितिरोधी दक्षावट (यज्ज या ७१४) ।

पहिरोहि वि प्रितिरोधिन विक्रमेनामा (पड़ड) । पहिलोग सर्क मिति + सम् । मात्र करता ।

र्षक्र पश्चिमिय (स्प १ १३)।

पडिस्टेंस प्रे [प्रतिस्त्रम] ब्राह्म वाथ (सूब २ १)। पहिसमा वि [प्रतिस्टन] नवा ह्या सम्बद्ध

(8 t = 4) 1

पश्चिमगढ न दि । मस्मीक कीट-विशेष-पूर्व मृतिका-स्तुप (वे ६ ३३)।

पहिल्म एक प्रिति + छम न प्राप्त करना । पडिनमेश (उत्त १ ७)। एंह पडिलब्स

(सम १ १३ २)। पडिस्थम ) एक प्रिति + स्थमय सम्भय् ] पिक्सह र साथ बादि को बान हैना । परि नाहेण्यह (कात)। नक्ष पश्चित्राभेमाण (ए।पारे ५ मन/ उन)। सेक्रं पश्चिम भिचा (मन = १)। पिकसङ्ग् न [प्रतिकामन] रान रेना (रेमा) ।

पविक्रिक्ति वि प्रिविक्रिक्ति विकारमा 'सम्मं मंते दुवारि पर्विचिक्कि' (वि १४)। पिंडकीण वि प्रितिकीली क्रमन्त सीव

(वर्गीव १६)। पिक्रोड सक [प्रति + होस्त्रय ] १ निरीक्षण करना वेकमा । २ विचार करना । पश्चितेहेह एक कसा मन) 'पदेस बाजो पश्चित सामै एतेण काएण य मामवंड (सम्र १ ७ २)।

संक भूएहि कार्य पश्चितेह सामें (सूच १ १६)- पडिलंडिचा (भग) । हैक पडि नेहिचप, पहिलहेचप (कप्प)। इ. पहि सेबियम्य (योग ४ मृप्प)। पिक्रोड प्रितिक्षस्थी क्या पिक्रीका

(पेदब, २६६)। पश्चिमेदग देखो पश्चिमेदय (एव) : पडिस्नद्दण न [प्रतिसंखन] निर्धेशण (योष

३ भाषत)। पृष्टिलेहणया देवो पृष्टिलेहणा (उत्त २६.

1)1 पिक्रेंड्जा की [प्रविक्रेसना] निरोधण निष्म्परा (भग)।

पविनेद्रणी की [प्रविनेक्तनी] साबु का एक धपकरण पुंचाली (यम ६१)। पश्चिमेह्य वि प्रितिसम्बद्धी निरीतक

देवनेवाला (मोन ४)। पश्चिमेदा भी [प्रवित्तेसा] निरीत्तण धन-

शोरन (भीव ३ ठा ४, ३) कप्प)। पक्षिमेदि वि [प्रतिस्तित् ] निरीतक

(तुष १ ३ ३ ३)।

पीत पश्चिमसिय सक्रमीयाँ वर्णीत (भीर)। वजनोधिय हैनो पहिलाहिय (पनि १६) । पहिमानिय है। प्रिविज्ञास्य परिज्ञास्य पश्चिमेह स्कामिति + बोध्य ी १ जला। य बीच देता सबस्थता बान प्राप्त कराना । भूमाह्या(भवि)। पतियोदेह (रूपा महा)। इनक पवि पश्चिमय न प्रितिसयो अय, कर (पठम ७३ बोहिरकात (समि १६)। सङ्घ परियोदिश **2**9) ( (नाट-मलतो १३१)। देख पविचोडिचे पश्चिमा सक प्रितिमा । मासून होना । पश्चि (मता)। इ. पश्चिमोद्वियाय (स.च. ७)। भारि (श्री) (नाट-स्टना ३)। पढिशहर प्रितिकोमी १ कोन समस्र। पश्चिमाग व प्रितिभागी १ बंद्य, मान २ जापति जानरका (बढकः पि १७१)। (भग २३ ७)। २ प्रतिविक्त (राज)। पहिताहर वि प्रितिबाधकी रे बोर्च छो-पश्चिमास यह प्रिति + भास न मानुग बाला । २ भगानेवाला (विशे २४७ दी । होना । पश्चिमस्यदि (शी) (नाट-सम्बद पश्चिम्य न मितियोचनी देवी पश्चि 2×2) 1 बाह=प्रशिवीच (क्यन स ७ ×)। पिंद्रसाम सङ्गिति + भाग । १ वत्तर पश्चित्रक्षि वि मितिवाधिम् । प्रतिवेश प्राप्त देता । २ वीत्तराः स्वताः श्र<sup>म</sup>ने पश्चिम करनेपाक्षा (प्राचा२ ३ १ ८)। धीर्ति (समार वार का)। पश्चिमिण्य वि प्रितिभिन्ती संबद्ध, संसन्त पश्चिमोडिय वि दिविशेषित विस्को प्रति-(8 Y X)1 बीव किया पदा हो वह (स्तामा १ १) पश्चिमिम्न वि मितिसिम्नी मेर-प्राप्त क्स)। (पन--पाका १६ केइस ६४२)। पहिमान (पिटिमान) मन विनाट (से ध पविसुध्यंग १ [मितिशुक्रज्ञ] 183 सर्वम—वेश्या-बंदट (कर्पोर २७) । पक्रिमंत्र यक प्रिति + मञ्जी चौनना पडिस प्रतिसी जाभिक्सर, जमानत ट्रमा । हेक पश्चिमीकर्ष (वर ४) । पश्चिमंद्र प प्रितिमाण्डी एक बला को करनेवाला समीतिका (नाट-वित ७१) । वेचकर प्रसावे बदले में बरीची माती चीव परिभन्न दुर्दि प्रतिसंद् दिसलम्ब सिंदाः परियेमो प्रचारल (पाध) । (स २ प्र स्टर १५)। पहिलास पर जिति + भ्रा शम् निम्ह गरण पश्चिमोड वि प्रिविभोगिन । परिवेद करने-च्यत करताः 'पंतायो सपत्रिमंश्वर्' (व १६६)। वला 'सकावपरिमोद्रील' (बाबा २ ३ 1 → (1× × ) i पश्चिमग्ग वि मितिसम्सी वासा हुमा पश्चिम वि प्रितिमी धमल तुल्य (मोह प्लापित (धीर ११३)। पढिसड 1 [प्रतिसट] प्रतिपदी मोदा (ध 4X) 1 १३ ७२ बाच १६ मीर)। पश्चिम वैद्यो पश्चिमा। हाइ वि [रिधाविन्] पढिभाग तक विशेष मेगा वितर देता १ काबोरमर्ने में प्रक्रेताका । २ नियम विशेष बराब देश । पहिमलुद (बहुए क्या सूपा में स्वित (पर्दार, १—पव १ δI ¥. २१४) विश्वमणामि (महानि ४)। १--पम २१६)। पडिमेंत तक प्रिति + सन्त्रम ] क्तर पदिमणिय रि पितिसणिती मलतील क्ता। पडिमंचेद (क्त १०८३) । जिनहा बत्तर दिया प्रया ही नह (नहा नृपा ١ ( ٦ पश्चिमस्य पू [प्रतिमस्स] प्रतिका स्वा र्पाटभतिक विधितिमणिती १ तिरास्त (मरि)। (वर्भनं ६४)। २ न. प्रलाहर, निधवरक पंडिमा ध्यै [प्रतिमा] १ मूर्ति प्रतिक्रिका (बर्बर्स १)। ·विक्तपरिमार्थस**केल** पश्चित्र (दत्ति १) पहिमम कर मिनि परि+ मम् ] पुनक पाम ना १३ ११४)। २ बाबोरतर्षः ६ वर्षेत्र वर्षाः चंद्रः शत्वद्व वद्गापिव सब्द्रः पैन-शाक्रीक निवय-विशेष (वर्णा २ १३)

सम १६० इत २, ६ इ. १)। "गिक्टन िराही मन्दिर (निच १२)। वैको पहिस्तै। पश्चिमाण न [प्रविमान] क्षिते मुक्त पारि का तील किया जाता है बहारती माश्रा धारि परिमाग्य (परा) । पश्चिमाज न प्रितिमान । श्रीतमा, प्रतिक्रिक (बेहर ७१)। पश्चिम ) एक मिति + मा १ सील पश्चिमिला क्ला मन कला। र क्लिय करना । कमै पविमिष्टिकड् (मरु) । कम्क पश्चिमिन्जमाण (धन)। पश्चिम सक [प्रति + सुभू ] क्षेत्रता। केक पश्चिमंचितं (ते १४ २)। पहिसंख्या भी [प्रतिसुष्डना] निषेष निवारङ (शह t) । पश्चिमचा विजितिसक्ती चोश इस्य (वे % ₹**₹**)। पश्चिमोत्समा 🛍 प्रिविसोचमा 🗫 वय (t t v4) 1 पश्चिमोक्सप न [प्रतिमोचन] कुकाय (ब पश्चिमोयम वि [प्रविमोचक] शब्दाच करने माना (धन)। पश्चिमोमण देवी पश्चिमोक्सल (बीप)। पश्चिमल रेबो पश्चिम (फना) । पश्चिमक न [प्रतिचक्र] शृहकता-निशेष, चैल पूर्वी निव कियाइसी ईंडनी पश्चिमी क्लुबुरके व प्रधानुनि कवालु' (महा) । पश्चियमात्र व फ्रिविज्ञागरजी बन्दानः स्वर (वर्गसे १ १६)। पश्चिमक केली पश्चिम = प्रति + इ । पडियरण न प्रितिकर न । प्रतोकार, इकान (Fix 110) 1 पश्चिमीम वि प्रितिकरित वेकित वैका क्तिशहमा (नोहरू)। पहिषा की ब्रिविका र बहेरम सिंहराय-वश्चिम् (क्षामा) । २ समियाव (ठा ४ 2-44 \$(Y) 1 पश्चिम धी [पदिरा] क्य-विकेच

'नुपमाणा व पुनुता

बहुक्या तह य कोक्ता विधिरे ।

पहिस्तास न दि । परमीक कीट-विशेष-कुरा

पहिलाम सर्व प्रिति + सम् विश्वास करना ।

पहिनमेन (उत्त १ ७)। संक्रु पश्चित्रकम

पश्चिमाम ) सर्व प्रति + स्माय् सम्भय ।

पहिसाह र साब बादि को दान देता । पर्क-

साहेरबड़ (कास)। बक्र पश्चिद्धासंमाण

(ग्रामा १ १ मनः जना)। यहः पहिस्स

पविस्मद्दण न [प्रसिष्यमन] शत देना

पश्चिकि हुन वि [प्रतिक्षित्या] मिना हुपा

'धर्म मंत दुवारि परिविद्या (वि १४)।

पहिस्रण वि प्रितिसीनी स्पन्त क्षेत्र

मृतिका-स्तूप (दे ६ ६६)।

(सपर १३ २)।

भिचा(मन = १)।

(रंगा) ।

नतो पुरखेडि विखा वैशा पश्चिमन श्रेपडर. (बना ११६) : पश्चिमाइक्स एक जिल्ला + स्था रे करना । परिवाहनचे (पि १९६) । पश्चिमाइक्सिय नि [प्रस्थासमाठ] स्पन्ध परित्यकः बोहा हुमाः (हा २, १ भग दना कसं विपा १ १३ चीप) । पश्चिमात्रम न दि पयाजकी पर्नाण के नीचे दिया भाता चर्चे भावि का एक उपकरण (ए।वा १ १७--पत्र २१ )। विद्यार्गंद वे प्रिस्यानम्द विशेष मानन्त, प्रमुख बाह्यार, बहुच शानंद (धीप) । पश्चिमागय व [बे पटतानक, पयाणक] पर्यांक्ष के भीचे रक्षा जाता वस धारि का एक प्रवासी का काक्षण (सामा १ १७--पत्र २६२ धि)। विद्यारमा 🛍 [प्रतिवारणा] निपेत्र (पंत्रा ₹# ₹¥) I पश्चिपासूर सक [क्] विद्रवा प्रस्ता होना। क 'पश्चियासरेयक्व' न नमाहनि प्रका-वाएवि (भाक २१, १४)। पश्चिर वि [पविच् ] गिरनेवाला (हुमा) । पश्चिरक केलो पश्चित्य (गा ४१ वा से ७ 28) I पडिए जिल्ला वि [दे] मन दूरा हुया (दे 4, 49) 1 पिंडरिक्स वि [प्रतिरक्षित] विवशी रका भी पर्दे ही वह (पवि)। पश्चिरव प मितिरवी मितिप्यति, प्रतिराज्य (बडर पा घेषः सुर १ २४४) । पंडिसम ने मिसिसमी नानी रखनन 'कम्बद्द्द् बद्दवनद्वियाद्द्येद्रस्मिन्नवंतरोत्तरहिरासं । पालीसरेतनहरे व कमिहकसर्य इमा अमर्श (नडर)। पडिरिगाम [रे] रेखो पडिरेजिम (पर्) । पढिरु पक मिति + स्वी प्रतिप्ति करता. प्रक्रियम्ब करना । यहः पश्चिक्तर्भनः नि १२. E # 403) : पब्रिसेय ? सक मिति + रूप है। राजना

पश्चिम विद्यामा । २ व्याते वृत्या । पत्र-

बंगइ (से व ११)। वहा, पविश्वीत (से 11 3)1 पश्चित्व वि प्रितिकवा रोका हमा, मटकाया हमा (सुपा ६६) वका र )। पश्चिम्ब्ल ) नि प्रितिहरूपी १ रम्म सुन्दर, पश्चित्रप ) बाब, मगोहर (सम १९० चना धीर)। २ इनवान्, प्रशस्त रथवाना यष्ट धाकृतिवासा (धीप) । १ घराबारस स्पवासा । ४ शुक्त क्शवासा (बीम ३)। ४ याग्य, रुचित (स 🖘 मन ११ रस १ १)। ६ सहरा सभाव (सामा १ १—पत्र ६१)। ७ समान स्पनामा सहरा धाकारनाचा (उत्त २६ ४२)। ८ न. प्रतिक्रिम्न प्रतिपूर्तिः 'कस्पानि विचयसप् कद्या नि एवरिम वस्त पन्टिकं मिहिज्ञाने (सूर ११ २६८ एम)। धमान क्य समान माहति 'तुम्ब्यक्रिक-वारि पासद विश्वाहरतुवाहे' (मुपा २६८) । पु स्त्र-विशेष मृत-निकाय का प्रतार पिशा का शक्त (ठा २, ३--पन ax)। ११ विनय का एक मेर (वव १)। पविक्रमंसि वि प्रिविक्षिम् 🕽 कालीय पुलार (भाषा २ ४ २ १)। पहिस्ता पुन [प्रतिरूपक] प्रविधिन विश्वमाः 'विश्विम पश्चिमा य देवक्या' (बादः सर) । पश्चित्रवणया औ [प्रतिरूपणवा] १ समा नता, सहराता या साहरय । २ समान वेप नारण (क्य २१ १)।

\*\*) 1

(वर्मीव १६)। पश्चिमेह एक प्रिति + होखय ी १ निरीपण करना वैक्रमा । २ विचार करना । पश्चिमेश्वेष्ट उप क्या भग) पतितु वाले पनिश्वेह सार्य एत्सा काएसा व मायर्ड (सुध १ ७ २): संह मुर्पेड चार्य पहिलेड सामें (सुप १ ११)- पडिलेदिचा (म्प) । हेक्. पडि सेहिचए, पडिलेहेचप (क्य) । इ. पडि में हियम्ब (धोव ४३ १८म)। पहिलद ए मितिलेखाँ रेको पहिलेहा (नेदम, २६६) ( पश्चित्रहम् देवो पश्चितेह्य (श्वव)। पविरूपा को [मितिरूपा] एक कुमकर पुरुप पहिलेहण न [मतिहोसन] निरोशण (बोप भी पानी का नाम (सब १६)। ६ मा संत्र}। पविशेष्णया देवी पविशेष्ठणा (उत्त २६, पश्चिपेय प्रतिरोपी प्रचलेक्य (इप पश्चिमेद्या 🛍 [प्रतिसेसना] निरोद्या पंडियोद् पू [प्रतियोध] रकावट (वडक निश्चनस्य (घग)। पा ७२४) । पविसद्भी भी [प्रविज्ञसनी] सबु का एक पंडिरोड् वि [प्रतिराधिन् ] रोक्नेताका क्षपकरण पुंचली (पन ६१)। (पडर) १ पडिलेम वर्ष [प्रति + सम्] प्रात करता । पश्चित्रहरू वि प्रिवितरहरू निर्मेत्रक र्धकः पविस्थिय (नूप १ १३)। देखनेवाला (मीप ४) । पहिलेहा की [प्रविशंखा] निर्णयण यक पहिन्नेम पूँ प्रिविक्टम निर्मात बाद (बूब शोकन (सीम १ टा ४, ३) कम्म) । 3 2) 1 पहिस्मा वि प्रितिस्मा चना इसा सम्बद्ध पश्चिमेटि वि मितिमेलिया विधेयक (बुध १ ९ ६ ६)। (B & E &) 1

पश्चिमिकास (पि १६६ १०३) महाः रमा)। हेड्र पहिच्छित्रं पहिच्छित्रः

देखा प्रमा (बना) ।

पश्चितेश्वियक्त देशो पश्चिते 🕻 ।

पश्चिमेदिय वि । प्रविद्येखित । निर्धेशिव

बीव (बसनि १)। १ बनबाद (यन)।

१ भ्रतिक शेवा (क्रमा मक्रा)। ११ परि

पाटी, क्रम (बाब ४) । १२ भूत-विशेष वर्ति,

प्रशिव पावि कारों में से फिसी एक बार के

पडिलेडिय--पडिया

पश्चिम्पं देवो पश्चिमञ्ज । पश्चित्रकार के बो पश्चित्रकार (प्राप्त)। पहिनद्वायभ देवी पहिनदहायम । चौ.

पश्चिम देशो पश्चिमका 'पश्चिमामणे मुपरिसाया में होड़ से होते (प्राप्त ३) साम्य १ प्राच्चण सर्थ प्र⊌न्ध ६३६ क्रेस

विका (रंग)।

२६ पाम)।

पश्चित्रक्षिय (दय) देखो पश्चित्रण्य (द्वित्र)। पश्चिम यक शिवि + पत्नी अभि वाकर

विका। वक्र पश्चिमकसाम (साचा)। पडिचय सक्तिति + शक्ती उत्तर देता। ~ मनि पवित्रक्तामि (सम्र ११६)।

परिवयण न [प्रतिकवन] १ ऋषुत्तर वदाव (पा ४१६) स्ट्र १२६। धर्म) । २ भाषेत, माबा चेति ये पतिनकर्ण (धावम) । १ पं. इरिजेश के एक राजा का नाम (बचन २२, १७)।

421) 1 पश्चितसभार्ष [प्रतिवृत्यम] सूत्र स्कान से वो नोत की क्या पर स्वित औव (पव w )।

(देव १**१**) ।

पश्चिद् सक प्रिति + वह ने बहुत करता. धोरा । क्यक पश्चित्रसमाण (क्य) । पडिवह वैद्यो पडिपह (ते ३ २४-८ १३)

पक्ष्म ७३, १४) ।

पहिचद्व प्रतिकथ परिवयी का क्ष्मा

(पक्य ७६ २४)। पहिचा देको पश्चिममा (नुम १ १४)।

पश्चिममा क्ष्मी [प्रतिपत्] पत्रवा पद्मानी

प"सी किवि (हिर ४४० र ६ वद्)।

पश्चिमिय वि प्रिल्मुस किर से बोसा हुमा

पश्चिम् यक प्रिति + बस्र 1 निवास करनाः

पह- परिवर्तत (पि ३१७) बाट-सम्ब

निरोप नारसमा के सबस्य या प्रतिकारी की इतिरून बनाकर रिया भारत बार-सामार्थ (হা 1) ৷ पश्चिमी की दिहें रे कृष्टि बाहार समितिहा, वरता (दे ६ ६१)। पश्चिम देखो पर्स्स्च = प्र+ दीपम् । पश्चिमेद (B & 40) 1 पश्चिमद्वर न प्रितिवैर् विरका नरवा (मनि)। पविषद्भ देवी पश्चिममा (पम २७१)। पढिपेचण न प्रितिबद्धवनी वस्ता कर वक्रिवंचसुद्धः (परुम २६ ७३)। पश्चिम केली पश्चिमम (से २ ४६)। पश्चिमंत्र देशो पश्चिमंत्र (भूषि) । पृष्टिबंस वृ [प्रतियंश] क्रोट वान (राम) । पश्चिम सरु प्रिति + वच । प्रत्युत्तर देना व्यवाद देता । पश्चित्रवाद (मर्थि) । पश्चिमस्त्र वृक्षितप्रसी १ रिप् दूरमन निरोधी (पाफ वा १६२ मूर १ ६६) २ १२९ से १ ११)। २ धन्य-विशेष (शिव)। व निपर्मं व वैपर्यंत्व (सर्या)। प दर्शकरपत्र नि मितिपश्चिकी विस्ता पत्त-

याना निरोदी (दल)।

पश्चिम्बद् (पि ११ )।

धर परियञ्जिका परिवञ्जिकाणे

प्रक्रियेस वि [प्रविसोम] प्रतिपूच (मन)। २ विपरीत काटा (प्राचा २, २ २) । ३ न परबादानपूर्वी उत्तटा हम 'बार्च बहासाबी द्वेश तह व पहिलोमद्वी यह नत्न (सर १६ ४८: निष् १) । ४ अध्यास्त मा एक पश्चिमेक्षा प्रमितिकोमनिस्सी नह पश्चिम सङ्गिति + हाम विश्वत बला। पहिनम्द्र देवो पहित्रकरा, चह एक्सल बीको पहिल्ल्फ्रेनिए पहिनवारी' (या ६७६) । पंडिशञ्च सक [प्रित + पद्] स्थीकार करना संबोदार करना । पाँडवरंबड, पाँड बरमप् (चर महार अन्तु १४१) । भनि पडिपरियस्तामि एडिपरियम्बामो (१४ १३७ थीर)। नर पश्चिमद्रामाम (पि १६२)।

पश्चिपची (वैचा १० इस२ १ इन्छा रंश)। इ पहिचल्लियस्य पश्चिमञ्जेयस्य (बत्र ६२ स्टब्स्टर १ १)। पढिवज्राज न प्रितिपदनी स्नोकार, संगी कार (अप्र १४७)। पडिवळ्यान प्रितिपादन विशेषारख स्वीकार करवाना (क्या १४०: १०६)। पश्चिमकाणमा की मितिपदना स्त्रीकार (संक्रियार)। पश्चिमकामयाकी प्रितिपादना प्रतिसदन (संदि २३२)। पश्चितव्यय नि [प्रदिपादक] लौकार करने नाता 'प्र ताम क्यराज्यतप्रियण्यमी ति' (E X X) | पश्चितकारण व [प्रतिपादन] स्वीकारस स्वीकार कराना (कुप्र ६६)। पश्चिमञ्जानिय नि मतिपानिस स्नीकार करावादधा मद्रा)। पश्चित्रज्ञिय वि [प्रतिपद्म] स्वीतः तः (गवि)। पश्चिमुक्स व [प्रतिपहुद्ध] एक प्रकार का रेग्रमी क्यहा (क्य) । परिवद्धावम वि [प्रतिवर्धापक] १ वनाई देने पर प्रवे स्थानार कर बन्दवाद बेनेवाला । २ ववाई के करने में बबाई कैनेवाला। और (पया (क्य)। पहिचल्य वि[प्रतिपद्म] १ प्राप्त (पद)। २ स्नीकृत संधीकृत (पड़)। ३ साबित (भीपाठा ७) । ४ विक्ते स्टीकार किया हो षा(स ४ १)। पडिवत्त पू [परिवर्त्त] परिवर्तन (ताट. नृष्ट **48** ) i पडिमत्तम रेबो पडिशत्तम (नार)। पश्चिमित की प्रितिपत्ति । शाँधीकाति । २ अक्टी प्रकार (विशेष्ट )। ३ मब्रीट खबर (परम ४७ १) ११)। ४ साल (तर १४ ७४)। ५ मारट, वीरव (नदा)। ६ स्वीराट, प्रविकार (शक्ति)। ७ साब, प्रान्तिः 'बम्बवहिबतिहेवक्रलेख' (बहा) । ≈ नतान्तर। ध्यक्रिय<del>्-निरो</del>ग (बन १ ६)।

पश्चिमार-पश्चिसंघमा पश्चिमाइ वि [प्रतिवादिन्] प्रतिवाद करते-वासा बादी का विपक्षी (सवि ११ व)। पढिवाइ वि [प्रतिपादिस] प्रतिपादन करने वासा (मवि ११ ६)। पश्चित्राप्त वि [प्रतिपातिन्] र विनरवर, नष्ट होने के स्वमायवाक्षा (ठा २ १ घोष ५६२: उर पू ६६८) । २ सविष्यान ना एक मेद फूँक से शीपक के प्रकाश के समान एकाएक नट होनेवाका सविवास (ठा ६ कम्म ( ८)। पश्चिमाञ्चल कि [प्रतिपातिष्ठ] १ फिरसे विरामा ह्या । २ वष्ट किया हुथा (मनि) । पश्चित्राप्रश्च वि प्रितिपादित जिसका प्रति पादन निया हो वह, निरूपित (मण्डू ध EYE XYE): पश्चित्राह्म वि प्रितिवासित ] १ विक्ने के बार पड़ा हुना। २ फिर से बॉबा हमा (東京 224) 1 पश्चिमाइकण ) देशा पश्चिमाय = प्रति + पश्चिताइयव्य 🕽 वाचन् । परिवाह्य देशो परिवाह = प्रतिपादिन् (एर्वि =₹) t पश्चित्राज्ञि देखो परिवाज्ञि (या ११)। पश्चिवाद (शौ) शक प्रिति + पादय र प्रतिपादन करना जिल्लास्य करना । पश्चिमारेजि (नाट—राना ६७)। इ. पश्चितात्रजिञ्ज (धमि ११७)। पश्चिमाद्य वि [प्रतिपाद्क] प्रतिपादन करतेशाला । की "दिशा (बार---वैत ३४)। पडियास सक [प्रति + वाप्यस् ] १ किसने । के बाद बंधे पढ़ केगा। २ फिर से पढ़ तेगा। संक पश्चिमाइक्रम (क्रुप्र १६७)। ह पश्चिमात्रयव्य (इप्र १६७)। विद्यास सक [ प्रति + पादम् ] प्रतिपादन करना निरुप्त भरना । पविवासर्वित (सूच 1 1x 24) 1 पश्चिमाय पू प्रितिभाव दे पुनः-भवन किर से पिरना (शव ३६)। २ नम्स, क्यंम (विसे ४००)। पडियाय पू [प्रतिनाद] विधेव (मॉब)।

पश्चिमाय पू [प्रविचात ] प्रविचून पनन

(धारम)।

पश्चिमायण न [प्रतिपादन] निरूप्त (द्वप्र 224) 1 पश्चितास्य देशो परिवारः न्यविकास्यपरि यरियो (महा) । पश्चिमाञ्च सङ्गिति + पास्य र प्रतीका करना बार बोहना। २ रखला करना। पडिवालेड (इ.४ २१६)। पडिवालेड (सी) (स्वप्त १)। पन्त्रितह (ग्रमि १८६)। **पष्ट प है**बाळअंत. पहिषासेमाण (नाट-राना ४वः सामा १, ६)। पश्चिमाञ्चण न प्रितिपासन् देशल । २ प्रतीका मार (नार-भहा ११६) वर्ष 488) I पश्चिमास्त्रित वि [ प्रतिवासित ] १ चरित । २ प्रवीक्षित विसनी बाट देशी मई हो बड (मद्भा)। र्पाडवास र् मितिबास | मौचव भारि को विरोध क्रकट बनानेवासा पूर्ण भावि (उर ≖ १३ सूमा ६७)। पविचासर न [प्रतिवासर] प्रतिविन, इर रोब (पडक) । पडिवासदेव पू प्रितिवासदेव । बायुदेव का प्रक्रिपशी स्वा(पञ्च २ २ २)। पश्चिमिकण एक प्रितिषि + क्षा विश्वनाः। पहितितिकण्ड(बाक १३ वि १११)। पश्चिमञा सी [प्रतिविद्या प्रतिवद्या निद्या, विरोधी विद्या (पिंड ४६७) । पश्चिमितमर प्रै [प्रतिविश्वर] परिकर, निस्तार (स्थर २ ६२ दी शक)। पडिविद्धंसण न [प्रतिविष्यंसन] निनाश म्बंध (स्त्रत्र)। पडिविष्यिम न [प्रतिविधिप्रय] प्रतकार का बरबा बरते के रूप में किया बाता धीनप्ट (महा)। पश्चितिरङ् 🛍 [प्रतिकिरति] निवृत्ति (पएड २ १)। पश्चिमरय वि मितिबिरत निवृत्त (सम ११) सूच २ २,७४, धीए, उप)। पिंडिविसम्ब सङ [प्रतिवि+सर्जय] विसर्वेत करना विद्या करना। पश्चिमिसक्वेद (कम्पा भीप) । अति, पश्चित्रकोद्विति (पीत्र) ।

पश्चिमित्रय वि प्रितिविसर्जिती विवा किया हमा विस्तिति (सामा १ १--- रत **4** ) ( पश्चितिहाण न प्रितिविधान । प्रतीकार (स १६७)। पश्चिमुहम्ममाण देखो पश्चित्रह् = प्रति + यह । पश्चिमुक्त वि [प्रत्युक्त] १ जिसका उत्तर दिया गमा हो बहु (धनु ६ छन ७२० टी) । २ न. प्रत्युत्तर (छन ७२ व टी) । पृष्टिकुद (शौ) वि पिरिकृत्ती परिकृति (समि १७) नाट-मुच्छ २ १)। पश्चिम प्रितिब्युही भूडका प्रतिकारी म्पृष्ठ, सैन्द-र्चना-विशेष (प्रीप) । पश्चिमुद्दण वि प्रितिक दुर्जी १ बढ़नेवाला (भाषा १ २ ४, ४)। २ न बुद्धि, पुष्टि (माचा १२ ६४)। पश्चिमेस पू 👣 विशेष फॅक्ना (दे ६ २१)। पश्चिवेसिख वि [प्रातिवेरिमक] पहोसी पक्तेस में राजनेवाला (वे ६ ६ सूपा ४,४२)। पहिनोह देखा पहिनोह (एए)। पहिसंदाक्षे प्रिविश हो । 🚧 र्यका (पच्म ६७ ११)। पडिसेका एक प्रितिसे + स्या । स्यवहार करना व्यवदेश करना । परिसंकार (प्राचा)। पिंडसंस्थिव सक [प्रतिसं + क्षिप ] संजेप करमा । संह- पश्चिसंद्यिविय (भग रे४ ७)। [ प्रविसं + होपय ] पश्चिसीटेव सक धनेमना समेरना। वक्त पहिस्तिवेमाण (धव ४२)। पडिसंचिक्स एक प्रिटिसम्+ क्रेस्ट्री विन्तन करना । पश्चिमं जिल्ली (क्टा २ ६१)। पहिसंबल सक [प्रविसं+क्वास्त्रम ] रहीरित करना । पश्चिमकोरवासि (प्राचा) । पहिसंत वि [परिशास्त] रास्त, उत्सास्त (t 4 42) i पबिसंद वि[प्रविधान्त] विधान्त (इह १)। पडिसंत वि [दे] १ प्रतिकृत । २ झस्तमित. मत्त्र-प्राप्त (वे ६ १६)। पश्चिसंघ ) एक [प्रतिसं+धा] १ फिर पविसंबंधा हे सामगा। २ वर्त्तर देशा।

पश्चिम पत्र [ प्रति + शम् ] विषत होगा।

पश्चिमाहर एक प्रितिसमा + हा निवे

बॉब नेता: विद्विपहित्तमाहरे (इस ८

पडिसय दं प्रितिक्यी उपन्यय सन्दर्भा

पहिसर व ब्रिटिसरी १ मेला रा क्याउराय

निवास-स्वान (दस २, १ टी)।

बुट्ड (सम्मत्त २१व) ।

पश्चिमक (से ६ ४४)।

XX) |

१)। पश्चिमकाइ (सूख २, ६ ६)। संक् पहिसंधाय (नुम २ २ २१)। पक्रिक्य ) सर्व प्रितिसं + भाी १ मन्दर पश्चिमीया हे करता । २ स्त्रीकार करता । पश्चि संबद् (पञ्च ७)। संझ पश्चिसंधाय (सूप्र २ २ वहः वर वकः व४ वर)। पहिसंसद न बितिसंसको संप्रक सामने

६ सनुरूत करना। पश्चिम् (उत्त २४

835

'बम्रो पहिसंबद्ध पञ्जोमस्स' (महा) । पहिसंद्राय व प्रितिसंख्यप । प्रश्नुनर, जनन मिर रहा ११ ६४)। पश्चिमीण वि प्रितिमंग्रीनी १ धम्बर सीन सन्धी तरह बीन । २ निरोब करते-बाना (हाप २ चीप)। पटिवा चौ [प्रितिमा] शेव सावि के निरोप करने की त्रतिहा (धीन) । पहिसंदिकतः एक प्रितिसंदि + इ.च. ]

विभार करना । पहिसंतिन्ते (उच २ ६१) । पश्चिमीयः । धक मिरिएं + वेदय ] पहिस्तिय । धतुनन करना । पश्चितिहरू परिसीयपंति (पण वि ४१ )। पहिसंसाद्रणया भी प्रिविसंसाधना ने धनुबन्न धनुबन्न (धीप) मन १४) है। RX. w) 1 पहिसंहर वर प्रिविसे + ही १ निवृत्त करमा। २ निरोब करमा। परिसंहरेण्या (गुम १७२)। पहिस्तक देवो परिसद्धः परिशक्तक (मरि)।

पहिसद्दल न [प्रतिशदन परिशदन] १ सर बाना । १ विनाहः 'निरत्यराज्यिका-रीताविष् भाज्यनानु (नात) । प देसदिव रि [परिशटिव] को धह स्वा हो भी विशेष भीतीहमा हो यह (विह 1 (es# पहिराजु (प्रतिराज् ) प्रतिसती दुरवव

मैधे (तम १४२ पत्रमे ४ १४६)। पहिमाध र् प्रितिसार्थ रे प्रित्त के

(424 2 3%) 1

पहिनद् 🛊 [प्रविराष्ट्र] १ प्रविन्तन (परन १६ १३। सर्व) । २ छत्तर, प्रजुत्तर अवाव

(प्राप्त) । २ इस्त-सूत्र, वह कामा भी विदाह से पहुंचे बर-बबू के हान में रक्षार्थ बांक्टे हैं क्क्य (वर्ष १)। पश्चितरम न प्रितिसरणी वक्या (पंचा E (X) | पक्रिसरीर न मितिशरीरी प्रतिपूर्त्त पद क्यि पश्चित्र व (वर्गक ३)। पश्चिमकाना औ प्रतिसम्बद्धी पत्र किरोप (\$P# Y 19 1) I पढिसद एक प्रिति + शप ी रास के बदने र्ने शाप देना 'धारमधायों किन यंपकि-इएति सत्तादि न य पहिस्तेति (उन)। पश्चिसन बन्न [प्रति+मृ] १ प्रतिका

कला। २ लीमर कला। ३ यहर कला।

इ पश्चिसवयीय (स्ट)।

पश्चिसकत्त विशिविधयस्त्री विदेवी रख (रननि ६ १८)। पहिसायक [द्भम्] राज्य होना । पश्चितः ( Y 150) 1 पश्चिमा यक शिह्यो कानक शतानन होना। पहिताइ पश्चिमीत (देश १७६) पश्चिमाइछ वि दि विश्वका बना बैठ क्या हो, पर्वर नद्ध्वाला (दे ६ १७)। पविसाद यह मिवि + शाउप परि शास्य ी १ तक्ष्मा । २ पत्रस्या । ३ दास

करना। पश्चिमाहीत (भाषा २, १३, १)। र्षक्र. पहिसाहिता (बाबा १ १६, १ )। परिसाहका हो [वरिहाटना] चुत करता, भटनरमा (वद १)। पहिसाम यह शिम् । राज्य होना । रहिसा-मद (द्वे ४ १९७ वर् )। पहिसाय कि [शान्त] *হান্*য *হ*ৰ-মাত (इमा)।

पश्चिमाय पूर्वि वर्षे क्व्स्ट, वैश ह्या प्रसा(दे६ १७)। पश्चिसार सर्क [प्रतिस्मारय्] बाब विसानाः । पश्चिमारेक (मद ११)। पश्चिमार धक प्रिति + सारय् । चनता स्थानट करता । परिश्वार्थन (ती) कर्प-पश्चिपारीपरि (शी) (कप्पू)। पहिसार सर्व [प्रति+ सारव्] विकास

इटाना, धन्त्र स्वाल में से आना । पश्चिप्रदेश

(et 5) पक्षिसार दूं [के] १ फ्टुला। २ कि निदूरण मद्गुष्पपुर (दे ६ १६) । पश्चिमार पुनिर्मितारी १ समन्दः। २ धनस्यतः । ३ विमासः । ४ पातः मुख्याः (हे १ २ ६: ३ ६ ७६)। पश्चिमार पंत्रिविसारी धपसायक (है १ ર ૬)ા

(वव १)। पश्चिमारणा 🛍 [प्रशिरमारणा] संस्थायह (भग ११)। पश्चिमारिक वि दि राष्ट्र याव विज्ञा प्रया ( 4 44) 1 पडिसारिम रि प्रिविसारित र हर हिमा हुमा मपर्साच्य (से ११ १) । १ विकासित (वे १४ १०)। ३ पराक्रमुख (वे १३

₹₹): पहिलाइ एक पिति + क्यम | क्तर का । पश्चिमम्बर्गा (तुम १११४)। पडिसाइर वर्ष [प्रविसं + हूं] लिल्ल करमा पहित्रहरिका (तुस २, २ ४१)। पडिसाहर तह [प्रतिसं + हू] १ सकेवन्य समेळ्या। २ मारब से बेनाः ३ ठीं वे नाना। पश्चिमक्दा (श्रीपा सामा १ १— पत्र ११)। श्रेष्ट पव्यसाहरिका पश्चिमा-इस्पि (एल्बा १ १; वर्ग १४ ७) ।

पंडिसाइरण न पितिसंहरची १ इमेट-

र्षकोष । २ विकासः 'बीयतेकोत्साधीकाहर

रुप्परं (क ११--व ११६)।

पडिसारी भी हि नविका परदा(दे ६

प्रक्रिसारण न प्रिविस्मारण । यह रिक्तन

यद्विभिद्धविदि] १ भीत ब्राह्मसः। २ भन भूटित (दे६ ७१)। पहिसिक् वि [प्रसिविक् ] निविक निवारित (पाध उन धोन १ दीः सस्त)। यहिमिक्ति भी वि ने प्रतिसमा (वड )। पहिसिव्धि भ्ये प्रिविसिव्धि १ भनुत्स सिक्ति। २ प्रतिकृतिसिक्ति (हे १ ४४; पड)। पहिसिधि रेजो पहिएमधि (सँशि १६) । पहिसिस्रोग र् [प्रतिरस्रोक] स्नोक के उत्तर में बड़ा पया रखोक (सम्मत्त १४६)। पश्चिमियाञ र् प्रिविस्यप्तको एक स्वय का विरोबी स्वप्त स्वप्त का प्रतिकृत स्वप्त (क्य) । पहिमीसञ्जा न मिविशी पैकी १ शिक्षे पिकसीसक र्रे बेप्टनें पनकी (केप्पू)। २ सिर के प्रतिरूप सिर, पिसान (पाटा) भावि का वनाया हुमा सिर (पदह १ २--पत्र १ )। पश्चिम्द र [प्रतिभति] १ ऐरवत वर्ष के एक भागी नुसकर (सम १९६)। २ भरतक्षेत्र में करपप्र एक कुलकर पुरुष का नाम (पठम R X )1 पहिनुज सक पिति 🕂 भी १ प्रतिहा वरना। २ स्वीकार करना । पश्चिमुखद्द<sup>‡</sup> पडिमुणेद (धीन क्ष्य छता) । कह पडिसुजमाण (यथ १३ पि १३)। संह पहिस्णिका पहिसुणेका(मान ४ कल)। है। पहिस्मात्तप (पि १७८) । र्याटसुणम न [प्रतिसयम] संगीकार (३४ YE 1) 1 यहिसुगग की न [प्रतिसदण] १ सुनाना पुनकर उपना अवाब देना प्रत्युक्तर (पथ २) । धी या (पर २) । २ सबस (पंचा १२ ₹**₹**} 1 पढिसुगणा सौ [प्रतिभवज] १ संवैदार रशिकार । २ पुनि-विकास का एक क्षेत्र धापादर्न-दीपवाती विधा साने पर कतता सीवार धीर धनुवीन्त्र (पर्व ६) : परिसुण्य वि [प्रतिसूच्य] नाता रिक् रूप्य 'तम नित्रमा निवर्गातपुग्ला' (इस १ टी-पा ११)। यन्ति र [द] प्रविद्गत (६ १ १ )।

पडिसुद्ध वि [परिशुद्ध] चत्यन्त गुठ (वेदय 5 9)1 पहिस्य दि [प्रतिभूत] र स्वीहत संवीहत (छा पु १६४)। २ न. बंगीकार, स्वीकार (बत्त २६) । देखो पहिरस्यय । परिसुपा देको पर्दसुआ = प्रतिमृत् (पएह १ १—पत्र १८) । पहिस्या भी [प्रतिष्ट्रता] प्रश्यमा विशेष एक प्रकार भी दीशा (ठा १ टी--पन ¥\*¥) I पिंडसुइड पू [पितिसुभट] प्रतिपती योजा (कान) । पहिम्यम ६ [प्रतिमुख के कुरतवरों की एक मेणो भयर-पार पर रहनेवाला जागृत (वद १)। पश्चिम्र वि [दे] प्रतिरूत्त (दे ६ १६ प्रवि)। पिंडिस्रे पूर्व [प्रतिसूर्य] सूर्व के सामने देखा बाता स्त्याताहि-मुबद क्रितीय सूर्य (प्रणु **१२** )। पिंतमूर वृं [प्रतिमूर्य] एन्द्र-यनुप (राज) । पश्चिमेन्द्रा की [प्रतिशयमा] शम्मा-विशेष चत्तर-राप्या (मन ११ ११) पि १ १)। पढिसेंग 🖞 [प्रतिपंक] क्व के गीके का भाव (सम्बद्धाः)। पडिसेव बरु [प्रति + सेप्] १ प्रतिरूत धेवाकरनानिधिक वस्तुकी धेवाकरना। २ सहत करना । १ सेवा करना । पहिनेवड, पडिसेनए, पडिनेबंति (कस बच १ एप)। बह- पडिसेवंत, पडिसेवमाण (पब्रूः सम ११, ति १७) पिडिवेनमाणी फस्ताई धवते मगर्व धेइत्वा' (यावा) । इस पहिसेवियस्य (बन १) । पटिसेका देशे पहिसेवय (तिन् १) । पडिसेवण न [प्रतिपयम] तिपद्ध बस्तु ना सदम (कस)। पडिसेयणा भी [प्रतिपयणा] कपर रेगो ! (मग १३, ७ उन सीप २)। पर्रितेषय रि [प्रतिपयरु] प्रतिरूत स्वा करतेरामा निषित् बस्तु ना सेरन करतेवाला (मग २४, ७)। पहिसया स्म [प्रतिपेता] १ निविद्य बस्तू नामनिरन (धा व १) । २ सेरा(दूप **43)** 1

पहिसेषि वि [ प्रतिपेविन् ] राष्ट्र-प्रतिपद बस्तुका सेवन करनवासा (उदा पश्चन द **२**≖)। पश्चिमेविक वि निविधेवित विस निविद वस्तुका बासेवन किया यया हो वह (बच्चा भीप) । पब्रिसयेन्तु वि [प्रतिपश्चित्तु] प्रतिपिक् वस्तु नी सेवा करनेवासा (टा ७) । पडिसेह सक [प्रति + सिघ] निपेश करना निवारखकरना। इ. पश्चिसेह्अध्य (मग)। पडिसेद् पू [प्रतियेघ] नियेव निवारण रोक (बोन १ माः वंशा ६)। पश्चिमेद्रग वि [प्रतिपेशक] निवेय-कर्ता (ममें ४ ११२)। पहिसेहण न [प्रविषेधन] उत्तर देशो (निवे २७४१ मा २७)। पडिसेडिय वि मितिपेनिती वितका प्रतियेव किया नया हो वह निवारित (विपा 1 (# 3 पडिसेड्जन्य वेद्यो पडिसेड् = प्रति + सिन् । पडिसोज रे पुं [प्रतिस्रोतस ] प्रतिरूत पडिसोच । प्रमाह समझ प्रमाह (ठा ४ भ है २ देवां का २१२ा वि हर्)। पहिसास वि [वे] प्रविद्रम (पर्)। पश्चिस्संत देवो परिस्संत (नार-मृद्य 144) I पहिस्सीत सी [परिमानित]परियम (नार---मुख्य १२१)। पडिस्सय पुं[श्रविभय] जैन साधुर्यों की एहने का स्वान जनामस (सीव ८७ मा का १७१। स ६८७) । पहिस्मर केतो पहिसर (वंश = ४१) । पश्चिरमाम सरु [प्रति + भाषम् ] १ प्रतिज्ञा वराता। २ स्टीकार वराता। वह पढि श्माबञ्जन (नाट—बेली १४) । पहिस्मापि वि [प्रतिस्नायिम] मस्त्रेराना द्यक्तैराला (स्रज) । पडिल्सुण सक [बर्ति + झ ] १ मुलता । २ मंधीनार करना । वहिन्गुलीति (मूम २ व १)। वस्तिनुगोस्का (नूम ११४२)। पहिस्तुले (उत्तर २१) । पहिस्स्य वि [प्रतिसूत] १ प्रतिबाद । २ स्त्रीरत (मराह्म १ ) । देवी पहिस्य ।

पश्चिम्सया — पशुप्पन

पश्चिमका पि दि ] पूर्ण (सरा) । देवी पश्चित्रस्य ।

१०--पम ४७३)।

पश्चिद्दु थ [प्रतिष्कृत्य] धर्पल करके (क्य 48 t) i पश्चिद्व पुरितिसट] प्रतिपती मोका (स 9 X3) I पश्चिम्रण सङ्गिति + इन् । प्रतिबात करना

पहिस्सभा देवो पहिस्समा = प्रतिभूता (ठा

प्रतिद्वित वरना । पश्चित्ति (स्व) । पश्चिद्रकमान [प्रतिद्दनन] १ प्रतिकात । २ बि. प्रतिपातक (तुप्र ६७)। पश्चिष्णणा को [प्रतिद्वनन] प्रतिवाद (बोब 22 ) 1 पश्चिद्वणिय देवो पश्चिद्य (मुपा २३)। पश्चित्रजिम क्यो पश्चिमणिम (वर्षसे ७ ८)। पश्चित्रत्व वि दि । पूर्वं वध ब्रमा (१ ६ २क पाम कुत्र ३४ वजा १२६ कर ह रेदश पुर ४ रवेश मुना ४ व) पिक्ट रवर्षिनयहण्डलप्रशे ता वण्य बळाउँ (शाय ११)। २ प्रतिक्रिया अधिकारः बदबा। ६ वयन

काली (के. ६. १६)। ४ म्राठिममूट (बीव ३)। १ सपूर्व सक्रितीय (वर् )। पश्चिद्दश्च एक [वे] प्रकुरकार करना अलगर ना बरला चुक्ता । परिवृत्त्वेद (से १२, 44) 1 पश्चित्तस्य वि [प्रतिवृत्ततः] विष्त्वतः (चैर) । पश्चिष्टरूबी की बि बुद्ध (दे ६ १७)। पश्चिम्म देशो पश्चिष्ठज । पश्चिमनेज्ञा (पि १४)। सवि परिवृत्तिमहित् (पि १४६)। हिद्यम् नि [प्रतिकृत] प्रतिकृत-प्रातः (धीराः कुमा महार करहे)। पश्चिर का [प्रति + हु] किर ते पूरी करता। विकास (हे ४ २१६) ।

पश्चिम् प्रिति + सा] बल्युन होना सक्ता। पश्चिम् (पश्या १६२ पि ४२७) । पश्चिम की मिविसा दुनैह-विधेय, कुल मूनन करतेच १९ने में समर्थ बुद्धि (बुमा) । पाँडहा देनो पहिन्हाय = प्रतिदास; 'चंचविहा नामा ननता, वं नहा परिचामा (हा ६,

१—यत्र ३ ३) ।

(मा) । पश्चिद्धाण न [प्रतिभान] प्रतिमा, दुवि विशेष । व वि वित् । प्रतिभाषामा (सूध ₹ ₹₩ ₹¥) I पश्चिद्दाय देशो पश्चिद्दा = प्रति + त्रा । पश्चिद्दा यह (स ४६१ स ७१६)। पश्चिद्दाय पुं[प्रतिचार्थ] १ प्रतिहत्तन, बात का बक्ताः २ निरोत मधकात रोक (पद्म ६ १६)। पश्चित्रर पू [प्रविद्वार] इन्द्र न्त्रिक देव (पर 18) I पश्चिद्दार पूंची [प्रतिद्वार] हारपाम दरबाम (दे १२ ६ शाया १ ६, स्वय्त २२ व स्मित्र ७७)। की री (ब्रहर)। पश्चिद्धारिय देखो पाहिन्द्वारिय (क्स माचा २२३ १७ (व)। पश्चिद्दारिय वि [प्रतिद्वारित] धवस्त्र रोका इया (स १४१)। पश्चिम् सक [प्रति + भास् ] मन्द्रम होना सक्ता । पश्चिहत्थेवि (शौ) (सट) । पश्चिमस व शिविमासी श्रविकास ब्रिटियन (8 : २ : **पद**): पश्चिम्।सिय नि [प्रतिमासित] नियुका प्रतिकताहमा हो यह (उप १ ६ टी)। पश्चिम । र्ष [ प्रतिम ] वागीत वागीत-पश्चिम् रेशारं मनौतिमा (पादा देश, ६ )। पश्चित्र पन [परि + भू] पराभन कला, हराना । कशहः परिकृत्रमाण (वर्षि ११)। पड़ी भी [पटी] वब, कपड़ा (बक्का सुर ३ vt) ı पद्मीआर प्रक्रिकी हो । पश्चिमार = प्रतिकार (वैद्यी १०७- कुछ ६१)। पश्चीकर तक मिति + कृते मितिकार करता। वडीकरेमि (मै ६६)। पडीकार देवो पडियार (परह १ १)। पश्चीच देवो पहिल्का = प्रति = इर । नहीं व्यक्ति (पि २७३)।

पडीय दि [प्रतीचीन] पवित्र दिशा है बंदत्व

रक्नेत्राचा (भाषाः चीत स्व ६, ६) । बाय

र् [वात] रियम का बसू (ठा ७)।

पक्कीर पूँ [के] चोर-सपूद कोर्येका पूज (के **६** =) | पक्षीय वि [मदीप] प्रकिन्स प्रतिसंधी विद्येषी (ध्ववि)। প্ৰুণি [বহু] দিবুৱা করুত, দুৱাৰ (খীণ कुमा पुर २ १४६)। पड् (इस) रेखो पडिझ = परित (पिय)। पबुक्ताब्रिक्त कि [के] १ लिनुस क्लाका हुम्दः। २ काङ्ग्रितः पिटा हमा। ३ वर्षेट्य ( \$ 4 64) 1 पदुक्लोकर्दृ[प्रस्मुत्केष] १ काच-स्नति । २ उदनासन क्षेत्रन (बस्तु १६१)। पद्रक्तेव द्रशिस्युरवेष प्रतिस्प रिशा व्यति । दोपस्य **प्रका**ता 'शमतासप**रूपने**न' (ब्र <del>५---१४</del> ११४)। पहुंच थ [प्रवीस्य] १ याभ्य करके (शावा) बूम १ ७ सम ३६३ लव ३६)। २ स्पेका करके (भन)। १ शक्तिकार करके पहुच ति भारत्य विभा श्रीकिम ति दायफ्टाँ (मला१ः मणु)। इत्यान ["इत्य] किसी की सफेबा से की कुछ करना, माने-बिक इति (दृह t) । आव र् [\*शाय] धर्मातरोतिक पदार्थं आपेश्चिक रहतु (माठ २)। क्यण न ["क्यम] झारेक्रिक क्यन (कम्म १) । सवाको "सरवा] कव द्यापा का एक नेद, धनेसा-कृत सरप दचन (१एए ११)। पहुंच्या क्ष्मर हेक्के भी हिंबति भागपुर्व पुरुषा (सूचा १ ४ १ ४)। पदुसुबद्द की दि ] क्लीत तकती (दे ६ 1(11 पदुष्तियाक्षी [प्रस्तुकि] प्रसुक्तरु वनाव (भिन) । पबुष्पण्यः र वर्तमान पहुष्पम 🕽 कल (हा ६ ४)। २ वि. बार्चनानिक, बर्चमान राज में निचनान (ध १ । भय =, ३३ सम १९२; स्मा) । १

ब्राक्त-सम्ब (ठा४ २)। च पहुनको व से

नहोनियो धाहारो' (ब २६१) : Y अलघ,

बात (स्र ४२) - 'हॉिंति य पहुल्यमंबिए।स रामि मंबन्या स्वाइरए (इसनि १)। पडड़ न दि] १ वह फिर, छोटी वाकी। र वि विष्प्रपूर्व (दे ६ ६०)। पङ्गद्ध वि [दे] धीवस तेन (देव १४)। पहुंत्रची भी दि] वननिका परदा (दे ६ २२) । पद्यद्वेचो पद्यद्वः । पहुन्दः (दे ४ ११४ । पहोअ वि वि] शत वह स्रोटा (दे६०)। पद्माच्यम नि [प्रत्ययम्बद्भा] मान्यानित बाक्त 'बद्रविङ्कागतमयङ्गपडीण्डले'(उवा)। पड़ोबार एक [ प्रत्युप + बारय् ] प्रतिरूख उपचार करता । पडीयारैंति पडीयारेह (भग ११--पन ६७१) । पडीमारेड (मग ११--पन ६७१)। पडोवारे (पि १११)। कनक्र पश्चोब (१ वा) रिख्यमाण पश्चोगारेण्य भाष (शि १६३ मन ११--पत्र ६७६)। पद्मोबार पुष्टि ज्यहरण (पिट २८)। पद्योगार पू [प्रस्मुपचार] प्रतिकृत स्पचार (मम ११--पन ६७१: ६७१)। पद्योगार पुष्टिस्थकतार] १ मध्वरता । २ धानिर्मानः 'मण्डस्य नासस्य नेरिस्य ग्रानार भावपढीयारे होत्या" (सम ६ ७---पत्र २७६ ६—यम ६ शः धीत) । पक्षोयार पुं[पदायनार] कियी बस्तुका परों में विचार के लिए मततरण (स्प्र १—पत्र १वर)। पड़ोगार दू [प्रस्युपन्धर] क्यकार का क्यकार (चन)। पद्योगार पुंदि] १ तामधी । २ परिकट 'पायस्त पडीवार' (ग्रीम ३४२)। पड़ोस पूंची [पटोस] बता विशेष परवम कानाव (पर्राप १—पत्र ३२)। पडाइर न [वे] घरका गीधना सांसन (वे ६ वेर गावेरी काम २२४)। पहुवि [के] बनव स्टेश (के ६ १)। पहुंस र कि विरिश्चा पहान की प्रस्त (र पहुच्छी की [वे] मेंत 'नइन्धिनीर' (सीन E0) 1 पद्भाषी की [दे] १ बहुत दूषनाती। २ दे**ध्**नेवाली (देद ७) ।

8.0

पहुरा पूँ दि] भैंता पाड़ा पुत्रयसी में 'पाबो" 'सो चेब इमो बसमो पहुम्परिष्टुर्ख सहद्ध (महा)। पङ्गस्त्र की [दे] बरण-मात पाद-प्रहार (दे **4** =)1 पद्मस वि मि ] पुर्वयमित सम्बद्धे तरहसे संबंधित (दे ६ ६)। प्रकृतिक वि दि समापित समाप्त कराया हुम्स (पड्)। पक्किया भी [वे] १ फोटी मैंस पाकी । २ कोटी गी विक्रमा (निपा १२ -- पत्र २६)। ३ प्रथमप्रमुखा जी । ४ नव-प्रमुखा महिपी (क्व ६)। प्रश्ली की [के] प्रथम-प्रसूता (के (4 2) 1 पद्यक्ष आ भी दि । चरण-माठ पाय-प्रद्वार ( = F) पड ड इ फरु [धूम्] यूव्य होना। पद्हु इद (हे १ १६४ कुमा)। पद चक्र मिठ्री १ पढ्ना सम्मास करना । २ बोलना कहना। पढा (हे १ १६६) २६१)। कर्मप्रदीमहः पश्चिमहः (हे ६ १६)। वह पहेंत्र (पूर १ १३)। क्ष्म पहिलांत पहिलामाण (मुना २६७) दर १३ ही)। संक्र. पढिचा (हे४ २७१ वर्) पढिल पढिल्य (ती) (हे ४ २७१) पढि (प्रप) (पिय)। हेहर. पहिर्द (पा २ कुमा)। कृपविश्वका पद्धसञ्ज (पेसू १) बन्दा ६) । प्रयो. पहाचद (इम १०२) । पड पू [पड] कारतीय देश-किरोप (६६)। पहरा वि [पाठक] पश्नेनासा (बप्प) । पष्टण न [पठन] पाठ, धन्याध (विशे ११व४ः कप्पू) । पदम विशियमी १ पहला बाद्य (हे १ ११, कमा प्रवा भग दुमा, प्राप्तु ४६३ ६०)। २ नूतन नदा(३)। ३ प्रथान सुस्य (क्य)। करण व ["करण] धाला का परिकाम-विरोप (पंचा १)। "इसाय पू **"क**पाय] नवाय-विशेष मनन्त्रभुवन्त्री क्याय (कम्पर) । द्वाणि, ठाणि वि [रेशानिम्] प्रमुलपन्त्रि, प्रतिप्रशत (नेवा १९)। पांडस प्रे मियुपा रे धापाइ मास (तिषु १)। समीसरण न | पक्षे देखो पहाद। पदे (पाइ ६)।

समवसरण वर्षान्यम विद्यसमोसरण उद्बद्धं व पृत्र्व बासाबासीन्यही पदमसमी सर्प मरखर (निष् १)। सरय प्र [ शरम् ] मार्गेशीय मास (मग १४)। सरा भी सिरा निया शक रावद (दे)। पढमा की प्रियमा दिश्रीवरदा विधि पहचा (सम २६)। २ व्याकरस-प्रसिद्ध पहली विमक्तिः 'श्रिहेसे पहला होह' (बरा) । भडमाखिका भी दि प्रथमाखिका प्रवन भीवन (सोच ४७ मा; वर्ग ६)। परमिष्ट ी वि प्रिथमी पहला माख पडिसिस्ट्राञ्ज (भगमा २० सूपा ५७ पि पडमिस्लुस 🕂 ४४६३ ५६६३ किते १२२६ पढमुक्तुअ (पामा १ ६—पम १४४ पडमेस्लूच ∫ बुद्ध १ पतन ३२ ११ वल १६, ससु)। पढाइव [राी] नीचे वेची (नाट—चैत ८१)। भहाव सक [पाठयू] पक्षाना । पढावेद (प्राक्त ६ ) : चंद्र- पदाविकण पदावेकण (प्राप्त ६१)। हेक्- पढाविष्ठं पढावर्ष (प्राप्त ६१)। इ पडायणिका, पहाविश्रक्य (प्रकृदश)। पढावभ वि [पाठक] बध्यापक (प्राप्त ६ )। पदावण म (पाठन) पदाना (कुन्न १)। पहाबिज वि [पाठित] पहावा हुमा (भूपा ४१३ हुत्र ११)। पहासिक्षकंत नि [पाठितपम् ] जिसने पदावा हो वह (प्राप्त ६१)। पढाबिड ) वि [पाठविद्] भव्यापक (प्राक्त पदाविर 🕽 ६ 🗀 पश्चिम }देवीपद्य=पट। पश्चिम पव्डिज वि [पठित] पहा हुमा (कुमा प्रानु ₹1 €) I पहिज्ञांत पदिञ्जनाम } देवी पद = पठ्। पिंडर वि [पिठितृ] पद्गेवाला (चस्र) । प्रकृष वि [प्रदीकित] मेंट के सिए उपस्था-पिद्य (मिष)। पदुम वैद्यो पहम (है १ ४४) बाट—विक २१}। पर्केसब्द देखी पर ≃ पद।

(क्द १ ११ टी) सूपा ४६ ३ दूप्र १) ।

पण्डेबो पंच (सुरा १ तव १ ) करन २ ६।२६ ६१)। अउद्देशी ["त्यति] पंत्रावने सम्बे भौर पंच (पि ४४६)। बीस भौन [ऑ्ब्रान् वितीस तोस मीरप च (मीप कमा ४ १६। पि २७३ ४४१)। तुबह देवी पाउड़ (सूपा १७)। रसंविद िंदशम् ] पनपद् (त्रका)। अधिनय नि िंपर्जिकी पाच रजका (सूपा४ २) । बीस और ["विश्ववि] प्रवीत बौत मौर पौच (सम प्रेप नव (३३ कम्म २)। वीसइ जो [विंशति] पही घर्न (पि YYZ)। सद्द्रिकी (पिष्टि) पैंडड सङ मोरपॉच(सर्मं ७०० वि२३)। सब न शिद्धी पांच सी (वंद)। सीद की िशिति] प्रथमी ससी मीर पाँच (नम्म २)। सुकान चिन्नो पांच हिला-स्वान (एव)। पण पू [पत्र] १ शर्त, होड़ः 'तत्वपरीश विद्यम्पम परावर्षे (तो १)

۷ì

जुरुमार्जेटस्सं (मझा) । २ प्रतिका (पाक) 1 १ वतः। ४ विक्रेस वस्तुः क्रमासकः 'करन पण पूँमियो पन प्रतिका (नाट-मानती ₹₹¥) I पण ) न [पञ्चक] १ पोचका समूह (पंच पणग ) ३ ११)। १ तप-किरोप नौनी उप

(संबोध १७)। पमभक्तिभ वि [वे] प्रवटित स्पक्त क्रिया ध्य (रे ६ ३ )। पणभन्न देनो पणपन्न (हुर, १७४ हैं। राज)। पणा और प्रिणिति प्रकाम नमस्कार (पचन

दर ६६ गुर १२ १३३: दुना)। पगद्रविपित्रयित्री १ प्रशुक्तवलाः स्ट्रेडी प्रेमी। रेर्षु पर्किस्वामी (पाक्यः शहर १७)। १ माचक धनी प्राची (यसक २४६ २११। पुर १ १)। ४ बुल रामः नगरपर्याति प्रकृतनो (असः

पप्पर्श्या की [प्रश्नविमी] एली, वर्ष्य विका, भीक (तुपा २१६) । पत्रइय वि [स्विनिङ, सत्रियः] विशे শমহ=হতবিশ্ (হত)।

पत्रसम्बद्धाः विकास ११२। मुपा ६३६४ मी श व ३१। कम्म 3 (1) पष्मार्विदियन की १ छीवान सेवार श शिवाद वृत्त-विदेश जो बन में इत्यन होता है (बार क्ष कं सर्ख १ संबे)। २ व्यर्ट

वर्ध-काल में मुमि काह मादि में बरपल होते नावा एक प्रकार का बन-मैब (धाबाः पडि स द-नद ४११। इस्ते । ३ वर्षम-विदेव सूक्य पंक (शृह ६३ मद ७ ६) । देशी पणय (१)। महिया मचिया श्री मितिका निय कारि के पूर के बतन होने पर रह बाती कोमक विकरी मिड़ी (नीव १ पर्खर—पव २४)। पणवाधक [प्र+नृत्] नावना नृत्व करना। व≖. एजदमाण (सामा १ ≍— पव १३६ सूपा४७९) ⊧इमी सी(सूपा २४२)। यणवाण म प्रिन्दीन | तुक्ष नाव (नुसार १४)। पजिल्ला वि [प्रजुषित] नावा ह्या विश्वना बाच हुमा हो वह (छाता १ १---पत्र १४)।

t ) i पणविश्र वि [प्रशक्तित] नवावा ह्या (भवि)। पणद्वि प्रिनद्धी प्रकर्ष से बात को प्राप्त (तूष १ १ श वे ७ सुर २, २४७ १ १६३ मिर इस)। पणक् वि [प्रजद्भ] परिवत (धौद) । राजपञ्ज केदी पञ्चम (कप्प १४० टि)। पंजपण्यक्ष्म 📦 पंजपसङ्ग्म (इप्प १७४ ि वि २**०३**) ।

पत्रविक्र वि[प्रतृत्ती नावाह्नभा फलना

राक्पुरधी पशुन्तिया देवदत्ता (महा कुप्र

वणपद्म-वीव [वे पद्मपद्माशत्]पक्रतः, पनास्त्रीर पान (हेर, १४' क्या सम ७२। कम्ब ४ ४४′ ४१ कि ३)। पणपन्नाम नि वि पञ्चपञ्चाञ्ची पणपन्ना ११ वो (कप्प)। पणपश्चिम देवी क्लाइजिस (इक)।

पणपन्निय 🐧 [पंचमक्तिक] स्थलर 🚮 की एक बार्ख (वर १६४)।

प्रथम एक [प्र+नम्] प्रशाम करता, नमन करना । प्रसुमा, प्रसुपप् (स १४४) अप)। कड़ प्रमात (धरु)। क्वड़ पणसिकांत (सूपा बद)। सङ्ग पत्रसिञ पण राऊप पज शिक्तजी पणमित्ता. पणमिच् (यमि ११ वः ब्रावन् पि ११ षय कान)। पणसम्य न [प्रथमन] प्रखान नमस्कर (बन सुपा२७ ४६१)।

पणिमा रेको पणमः। पणसिक्ष वि प्रिज्ञ दिन्सा ह्या (भग भीप)। २ विसने नमने का ब्रास्ट्य किया हो बहु (रामा १ १ -- पत्र १)। १ जितको नमन किया क्या हो बहु। 'पलमियो अलेख रमा (स ७३ )। पप्पतिज्ञ वि प्रिवसित् ] नमावा हुन्य (व्यवि)। प्यमिर वि (अवस्र) बखाम करनेवाचा नमनेवासा (कूमा कुप्र वेद छन्छ)। पणय **एक [**प्र+णीः] १ स्त्रेश करना प्रेत करना। २ प्रार्थनाकरन्ता। सङ्घ प्रवर्जन (₹ ₹ **१**) ! पणन वि[प्रणत] १ विश्वको प्रशास विश्व पना हो नह 'नरमञ्जूतसम्बद्धमयं' (पुरा २४)। २ विसनै नमस्त्रार क्रिया हो वहः

**पर्काशिक्ट (गुर १ ११२) गुपा** ३६१)। ३ प्रस्त (तुस १ ४१)। ४ निम्ब, नीबा (बीब ६) राय)। पणय देशित्रयो १ स्तेष्ठ, प्रेन (स्तमा १ रः बहा भा २७)। २ ब्रावैना (कड≢)। र्वत वि [ वन् ] स्थेवलाबा प्रेमी (बन 1 (585 पणय पूर्वि] वंक कर्षक (दे ६ ७)।

प्रमप् दृद्धि पनका **१ तैयाव स्**माद इस-विदेश २ काई, वत-वैद्य (वीर्व १४६) । १ तुरुप कर्यम (महाद्व १ ४) । पत्रपाक वि [ वे प्रस्त्रवासासितः ] वैता-नीवर्ग ४२ वॉ (परम ४५, ४६)। पणवासः ) श्रीतः वि पश्चवस्तारिंशतः ] पजवासीस र्वेतामीर, नामीत सीर नान ४३ (दम ६३) कम्म ६, २७) ति ६) मद सम ६८३ मीमा नि ४४६) ।

पुज्रव देखो पुज्रम । पुज्रवह (मृषि) । पुज्रवह (दे २ १६६)। वक्त पणवीत (स्वि)। पणत्र पुं[प्रजाव] घोंकार, भी सतर (सिरि 1 (735 पञ्च 🕻 [पणत्र] पटह, डोस शाय-विदेष (धीरा कमा मेव) । पण्यभिय देखो पणविभय (भीप) । प्रमुख्या ३ देवी प्रमुपन (पि २६% २७३ प्रमाम ) भग हेर, १७४ टि)। प्रावसित्य पूँ [पत्रपश्चिक] म्यन्तर देवों नी एक वार्ति (पराहर ४)। पणविस देखी पणिमय = प्रख्य (मवि)। पत्रशीसी औ [पद्मवर्तिशतिका] प्रवीस का समृह (संबोध २५)। पणस पू [पतस] इष-विशेष करहत मा कटबर (पि २ वः) नाट—मृण्य २१०)। पणसंदरी धौ [पणसुम्दरी] वेरवा (वर्मीव १२७)। पणाम सक [ अर्थय ] अर्थण करना देते के बिए जपस्वित करना। पर्णामक (हे ४ ६१) नंदियो य प्रश्नास कस्तासाई प्रशासद् (भूपा १६६)। वजाम सक [ प्र + समयू ] नमाना । वर्णामेश (मद्दा) । प्रजास सक [बप + नी] ध्वन्थित करना । पगुनिद् (प्राष्ट्र ७१)। यज्ञास पू [प्रणाम] नमस्त्रार, नमन (१ ७ ६ मवि)। पत्रामिक्श की [दे] कीविषयक प्रस्त (2 4 4 ) 1 पत्रासय दि [अर्थेक] क्षेत्रका (सूप १२२)। प्रभागस्य वि शिकासकी १ वनलेवाचाः। २ शब्द क्रांदि दिवय (सूर्य १ २ २३२७)। प्रणामिक्र वि [अपित] तमस्ति के के निए भरा हुमा (पामः हुमा) 'भारतामि योग बहिये दुतुमतरेशा अहमात्रमञ्जीय पूर्व (क्षेत्रा ४.)। पणामिश्र वि [मणामित] नवाया ह्या (के प्र वर्ष गारेर)। पणामिल नि प्रिमिती नत नमा हथा

'पणानिया बायर' (स ११६)।

पणाशक १ वि [प्रणायक] से कालेबासा पणायम् 🕽 निब्बाणुममणुसम्बन्धसम्बन्धः (पर्याहर १ पर्याहर १ टी वन १)। पणाञ्च वं प्रिणास्त्री मोरी पानी माहि जाने का रास्ता (से १३ ४४ चर १ ४८६)। प्रणास्त्रिमा 🛍 [प्रणासिका] १ परम्परा (सुम १ १६)। २ पानी वाने का रास्ता (कुमा)। पजाओं की [प्रजास्त्र] मोरी पानी क्रमें का चस्ता (गतः) । पणार्थ्य की [प्रनासी] राधेर प्रमाण सम्बो साठी (पर्हारी वे--पव १४)। प्रजास सक प्र + नाश्य ने विकास करता । पर्शाचेद परहाचए (महा)। पणास प्रमियारा विकास जन्मेवन (ग्रावम) । पणासण नि प्रिणारानी निचारा करी-बानाः 'सम्बपारप्रकारणा' (प्रांडः कृप्प) । की पी(पा४६)। पनासिय वि [प्रणाशित] विसका विनास विमा बमा हो वह (कमा भवि)। पणिञ नि दि] प्रकट, स्पक्त (वे ६ 💌)। पणिअ वि [प्रजीत] र्यवत (पूपनि ११२)। पणिक न [पणिक] १ वेचने बोरब बस्तु (११ ४४ ६ ७ सावा १ १)। २ स्मनहार, मेन-केन क्य-विक्रम (मन ११. छाया १ ६--पत्र १६)। १ शर्त होत मीस । (१३ छात्र) गार्क का क्रम मुमी भी [भूमि मुमी] १ पनाव देश-विशेष वहाँ भागाम् महावीर ने एक भौमासा विद्याना वा (स्तत कप्प)। २ विक्रेस बस्तु रखने का स्वान (मय १४)। साध्य औ ["रााल्य] इस्ट दुकान (बृह २ निचू १६)। पणिक न पिण्यों विकेश बस्तु (तुपा २७३) धीत मात्रा)। गिरु घर न [\*गृर्ह] हुकान, हाट (निवृ १३) धावा २ २,३)। साक्षा 🛍 [ैशास्त्र] हाट हुकान (ग्राचा)। विन पू [पिया] (पान, हाट (पाना)। पणिञ्ज वि [प्रणीत] नुन्दर, ननोहर । भूमि की "भूमि] मनोज पूनि (क्या ११)। पजिमद्गी [पणिवारी] शोर (दव ॥ 10) :

पणित्रसाद्य 🛍 [पण्पशास्त्र] व्यार, मप्त या मास रहते का विद्य हुया स्थान गोदाम (प्राचार, २२१)। पणिआ की दि करोटिका सिरकी हुई। कोपड़ी (वे ६ ६)। पणिदि ) वि[पस्चे नित्रय] लागः शीमः पणिदिय ै ताक सांख सीर कान इन प की दिन्दर्भोदाला प्राप्ती (कम्म २ ४ १ ३ १० 18) 1 पणिक वि प्रिस्तिगम् विशेष स्निग्म (प्रणु २१६) । पणिचाम देशो पश्चिद्दाण (अमि १०१० नार — विक्र ७२)। पणिषि पुंची [प्रणिधि] मानाः धन 'पुणी पुराो पश्चिष(? भी)य इरिक्त अवहवे जर्छा (सम १)। देखा पणिहि। पविवस्य पि [प्रक्षिपसित] पहना हुमा (पीप)। पणिक्रिअ वि [दे] इत मारा ह्या (पर्) । पणिवद्भ वि [प्रणिपवितः] मह, नमा हुमा पश्चिमस्यम्बन्धसार्धं देवासुच्यिया । सत्तम पुरिवा (गावा १ १६—पत्र २१६ व ११ का ७६० दी)। पणिवद्दश वि [प्रणिपतित ] विवदी नमस्कार किया गया हो नहु 'तरफुद्धि विश्ववद्यी बीधे (वर्गव ३७)। पणिवस सक [प्रणि + पन् ] नमन करना बन्दन करना । परिप्रवन्तरिः (कप्पः। सार्व 6 2 ) i पणिशय पूर्णिपाती करून नमस्नार (गुर ४ ६८) मुपा २६ २२२) महा) । पणिद्वासक [प्रणि + धा] १ ८काट किन्द्रक करनाष्यान करना। २ वर्षना करना। ३ मिनिया करना। ४ चेटा गरता प्रमत्त करना। संकृपणिद्वाम (स्तुमा १ रू मग १६)। पित्राण न प्रिणियानी १ एकाय स्थान मनो-नियोन संबद्यान (बत्त १६ १४) स दका प्रामा) । २ प्रयोग व्यासार, विटाः तिनिहे परिवृत्ते पर्वाते हैं बहा-वरणारिकारे

वयाणिहान्तेः कावाणिहान्ते (धा १ १ ४

tium tei um) i a effecte armen

पणिहास देशे पणिहा । पणिक्रि ईसी मिलिभि है एनाएक यनवान (परहार ६)। २ शामना सम्मित्त (त me) : १ वे चरपुरूप इत (वर्णा १ ६) वाय-वर १ ४ समा ४६२)। ४ वेष्टा ध्वारार (रमलि १) । १ मावा कपट (मान ४) । ६ म्पनस्थापन (राज) । ঘণিছি বুলী মিলিছি] লয়া দিখি (বয **c.** (): पणिदिय वि प्रिजिद्दित् १ प्रयुक्त, व्यापूर (दमनि व)। २ व्यवस्थित (भाव ४)। पूर्णीय विक्रिय ही १ निर्मित इन्ह, र्यक्ट 'बारपेनियं पछीव' (विशे १३ ७) नर १२ ६२। स्पार १६७)। र स्मिम प्रत धानि स्तेइ वी प्रपुत्तावाला, 'विज्ञा दली र्धसमी पर्धायरमभौत्राणं (दम ६, १७) कत १६ ७ धोष ११ मा धीरा बुद्ध १)। ६ निकरित प्रश्रीत प्राक्यात (प्रयु: प्रश **३)। ४ मनीज मृत्दर (तन ६, ४)।** ३ सम्पन् मानरित (सुन्न १ ११) । पर्णाद्वाण देनो पविद्वाल (मास्य व) दिव 2X) 1 पणुष केनो पमोद्धाः बद्धः पणुक्तेमाण (पि 93Y) 1 पणुक्तिभ रेगो पत्रोद्विम (पामः नुपा रे४ प्रानु १६६)। पुणुशिस ध्येत [पद्मपिश्वति] संस्था-विसेप वधीय बीम बीर पंचा १ जिन्ही संस्था वयोन हों वे (स. १.६ वि. १.४) २७३)। पुर्जू सन्म है। [पद्मविंशदिनम्] श्वीतर्श रंश को (सिने ११२)। प्ताप्त सम्बद्धाः । भारता करमा। २ चैरनाः ६ शता वरताः । पर्योग्नद (प्राप्त)ः 'पारादं नण्नादं क्लीन्नहामी' (उत्त १२ ४ ) । बार्य पत्रीनिध्नमाण (हावा र र पण्ट्रर ३) । येट प्रजास (तूप t )1 पमीक्षण न [प्रमादम] प्रेरणा (सः । का g tyt) i पमामय वि [प्रागन्छ] हेरक (वाचा)।

पर्यादि वि प्रिमोदिम है प्रेरका करनेकला। र पूर्वायन वर्ण वैस इत्यावि इतिनी की बहरी (परह १ ३--पत्र १४)। पणाक्तिअ वि [ममोदित ] प्रेरित (बीवा वि 488) t पण्य विसिद्धी वलकार, बन विपूर्ण (उद्य र चातूप रं ६)। पण्य ६ निष्ठि १ ब्रह्मकामा बुश्चिमान् क्ष (देर १६ वन ६२६)। २ वि प्राव सम्बन्धी (सूम २१)। पञ्जन पिर्जीपत्र पत्तापत्ती (दूमा)। पण्ण देशो पणिअ = पत्रव (स्ट्रट)। पण्याचीन दिही पत्रास, ४.। और (बद् )। पण्ण देखों पंच पत्र (पि २७३ ४४) YXX)। रस निविधिता प्रतिकारिका १५ (सम २६) चना)। रसास वि विद्या पनपत्त्वा (बना)। रसी की विसी रि पनवाची । २ विभिन्तिरोव (पि २७ हा कम्म)। रह देवो रस (श्राप्र)। रह वि [ैद्रा] पनस्त्रा १० वा(प्राप्त)। देशो पना= पण्य दि पार्थी पर्त सम्बन्धी, पत्ते का पती से बंबन्थ रखनेशाना (राज)। पञ्च देखो पणता । इ.सि. वित् ] प्रज्ञा-भाषा (का ६१२ दी) । पण्डई [यसगा] मददल् वर्षनाव वी शासक-देवी (पर २७)। पण्यस्य वं पित्रस्यी सर्वे स्तंप (का ७२० हो)। सन पू [ शान] गरु पत्री (रिम्)। देशो प्रमय । पण्जम नि कि पश्च है इंगैली। "तिस है ितिस्त्री पुरुषी तित्र (राज)। पण्यद्वि औ [प्रश्चपद्वि] चैतक, तार और पोप ६१ (बप्त)। पण्जाच वि विद्यानी विरासित वर्धान्य कवित (धीनः बसाझा १ ६३४ १३२३ जिला १ १० अलू १९१)। ५ अधीत समित (बारमा चेर १ मन ११ ११ घीष)। पण्डलि की जिल्ली ह विवासी कि (थं १)। २ वैत सत्तन वंगरियेर सूर्य-ब्रद्धति स्परि प्रचीन-प्रेच (बा वे १३४१)।

भेर (राव)। नी एक वादि (इक)। यणिअस् (ग्र. ७)। (पिते ४४६) । (संबोध र )। पण्यविश्वतः देखी पण्यवः। मीवक धापा (तन १ व) । पण्याचर्यत् देनो पण्याप । पित (मला बत १६)। पए करनेवाना (ठर ७) । पण्यवैभाज देती पण्यत् । (<del>क</del>) ı पण्या रेनी पण्य (है)। पण्या धी "प्रज्ञा] मनुष्य की एवं बदरकार्यों में क्षेत्ररी भगवा (तेरू १६)। पण्या की [प्रशा] रे कृति जाति (का १६४)

६ विद्या-विशेष (भाषा १)। ४ प्र**प्र**गण प्रतिसारत (बनाः यन १)। सेवनी वी िकोपणा दिवाका एक वेद (ठा४ ९)। पक्लाबया की प्रिसपयी क्या का एक परुपपित्रस र् [पण्यपर्णि] व्यन्तर देवी पञ्जाय देखी पञ्जास (से ४४)। प्रज्ञान सक [प्र+ क्वापथ | प्रक्रपश करना कारेन करना प्रतिपारन करना । पराजेश. पएश्वेति (उना मन)। बक्त पण्णवर्धत पण्डवेसाम (मन: पि १६१) । इरू पच्च पण्जबरा वि [प्रद्वापक] प्रकापक प्रतिपासक पण्जवण न [ब्रह्मपत] १ प्रस्परा प्रदि पारत । २ साइट विकास्त (विसे ६४) । पण्याबाय वि शिक्षापनी सारक, विक्यक पञ्जबन्मा की [प्रकापना] १ प्रक्रमणा प्रक्रि पारत (शामा १ ६, छना)। २ एक पैन धारम वेच 'बक्तरना' सूत्र (स्त्)। पञ्चमभी की जिल्लापती भाषा-विशेष सर्व-पञ्चाबच्या स्रोत वि पञ्चपञ्चारात् ]पर-पन, पत्रात भीर नीच (दे ६, २७) पड् )। पण्जनय देवी पण्जनम (विदे १४७)। पण्त्रसिय वि [प्रज्ञापित] प्रक्रिप्तक्ति प्रक-पण्यकेल वि प्रिहापयित्री प्रविधास रूप-पण्तायक [स+क्षा] १ प्रदर्श के बालता । ९ वन्द्री तरेतु जानना । समै, पर्कारीत

७२ ≈ श: नियुर्)। २ ज्ञान (युपर

१२)। परिसद् परीसद् द्व [ परिपद् परीपद् र दुक्तिका पर्वम करला। २ कुदि के समाद में <del>को</del>द न करना(मन ⊏ व प्रवद्ध)। सय पु ["सर्] दुवि का म्मिमान (सूप १ १६)। बैत वि [ैयम्] हानदान् (धव) १ पण्याग कि [प्रदा] विद्वान् (वैचा १७ पण्याह देशे यसाह पर्लावह (हे ६ વ≹)ા पण्णाण न [प्रद्रान] १ प्रद्रुट झान । २ सम्मग् झान (सन ११)। १ द्यायम शास्त्र (मामा)। व वि [ैयन्] १ शानकान्। २ शासत्र (माना) । पण्णाराह् (पप) वि व [पद्माव्यान्] पन्छ (पिन)। पञ्जाबोसा को [पद्मविद्यति] पत्रीष्ठ नीष भीरपाच २६ (पड्)। पञ्जास कीन दि पद्भाशत् ] पनास ४ (दे ६ २७- पद्रापि २७३) ४४४, कुमा)। देखो प्रमास । पण्जासम वि [पञ्चाक्षक] प्रवास वर्ष की बन्न का (तेषु १७) । पण्जुवीस रेको पणुषीस (स १४६) । पण्ड पुंदी प्रारत] प्रश्न प्रव्या (दे १ ३१ कुमा)। वरी. जहां (हेर ३४)। (हेरः **१**४)। पाइज न विष्युत्त विन मुभिन्तल काएक दूत (वी १०)। । प्रागरण न िक्याकरण] स्या**रहराँ केन चेन-ग्रन्थ** (पर्रह र्घ छारे विपार र समर)। देवी पसिय। पञ्चल भक्त [प्र+स्तु] भरता, टपदना 'एक्टो परहमद क्लों (पा ४ १४६२ म)। पञ्चम ) दृष्टि प्रस्तय] १ स्तन-बाध पञ्चम ) स्तर संदूष का करता (दे ६ व पि २३१ रामा यत का पर । २ फरम, टनकमा 'विद्विपण्डव' (पिड ४०७) । पण्ड्य प्रेष्ट्रिय रियनार्थे देश-विशेष । २ वि पर देश का निवासी (परह १ १---पष १४)। पण्डल न [प्रस्तपन] सएए करना (विपा

₹ **२)** ।

पुण्डुविभ देखो पण्डुअ (१६ २१)। पण्डादेको पण्डा प्रिष्ट् पूंडी [पार्टिन] फीनी का सनीमान पुरुष्ठ को नीवता हिस्सा एकी (पएह १ 🗣 **₹ ७ ६**२) । पिक्साकी [प्रदिनका] एडी. प्रस्ट का धनोमाय, मिलसू परिह्याची नरही नित्ना रिज्ञण बाहिएमो (नेश्य ४८६) । पण्डुम वि [प्रस्तुत] १ व्यक्ति न्मस्य हुमा। २ जिसने भारतेका प्रारम्भ किया हो वह, 'दराहुदरमोहरामी' (पतम ७१ २ है २ ७१)। पण्डुद्द वि [प्रस्तोत्] ऋणेवाबा 'हरनप्रदेश) वरम्यकीनि परम्बद्ध बोहमगुखेश। स्वकोत्रसम्बद्धारि पूत्तम पूरुसेर्द्ध पाविहिसि (मा ४६२)। पण्डोत्तर न [प्रश्नोत्तर] सदाम-बदाव (सुर **१६** ४१) क्यू)। पराणु देको पर्यणु (धन)। पतार सक [प्र+तारय्] उपना। संह-पवारिम (पभि १७१)। पतारग वि [प्रतारक] धम्बक छन (धर्मेर्स ( (ex) पविष्य १ वि [ प्रतीर्थ ] पार पहुँचा हुमा पवित्र र्निस्तीर्थं (स्त्र परहर १— वय १६) । पसुष्य }न [प्रतुक्त] नत्कन का बना हुसा पतुंच ∫वसं(सोवार, प्र१७)। पतेरस ) नि [प्रश्नवीदश] प्रकट वैद्यवाँ । पतब्स र्वास न (वर्षी र प्रदृष्ट वैद्दर्ग मर्पं। २ प्रकृत तेष्ट्रमां मर्पं। ६ प्रस्मित देण्ड्वीवर्षे (धावा) । पत्त वि [प्राप्त] निवा हुया पाना हुया (कम्म सुर ४ ७ सूपा ३३७ वी ४४३ र्द¥क्षांत्रसम् ६६३ १६२ १≡२३सा २४१)। इसस्य याजन विद्यक्षी १ पैरम-विधेप (धन)। २ वि सवस्योपित (E 48 ) 1 पत्त व [पत्र] १ पत्ती पत्ता इत पर्शे (कप्पा नुर १ ७२। की १ : मानू ६२)। २ पक्ष पैच पीच (ए।सा१ १ — पत्र २४)। ३ नियार निया जाता है वह बानम बन्ता

(ह इ.स. १६ १ से २ १७३)। च्छेळ न "ब्रह्मेश्व" क्या-विरोप (धीप: स ६४)। मंत वि [ बस् ] पत्रवासा (लामा १ १)। छह् पू [रिय] पन्नो (पाध)। "सहा भी ["संस्था] अन्यनावि से पत्र के धाकृतिवासी रचना-विशेष मूपा काएक प्रकार (प्रक्रिंग्र-)। सञ्जीकी िंबद्वी १ प्रवासी सता। २ मुँह पर मन्दन पादि से भी जाती पत्र-मेली-गुरुव रकता (द्वाप्र १६४)। विंग्न [ैयुन्स] पत्रका करमन (पि १३)। प्रिटिम नि िवृत्तक, शृन्तीय] बीन्त्रय वन्तु-विशेष पत्र बुन्त में घटनन होता एक प्रकार का नीन्त्रिय मन्दु (पएए **१—पत्र ४**४)। विनद्भय पूर्विद्याकी भोव-विशेष एक शस्त का बुल्पिक चतुरिनित्रम चीवों की एक चारि (बीग १)। घँट वेको (बेंट (पि १६)। <sup>\*</sup>सगडिजा की [\*शकटिका] पताँ से मध हाँ याही (अप)। समिद्ध वि "समृद्धी प्रमुख पत्तेनाता (पाम) । "ह्वार प्रीवारी भीतिस्य बल्यु-निरोप (पएए १—पत्र ४३) च्छ १६ १६c)। हार दूं [ीहार] वसी पर निर्माह करनेवामा वानप्रस्व (ग्रीप) । पत्त न [पात्र] र सानन (कुमा प्रासू ६९)। २ बामार, बाध्य स्वान (कुमा) । १ दान केने योग्य पुरती सोक (छा ६४८ दी। महा)। ४ समातार वतीस उपवास (संबोध १a)। क्षिप पूर्व ["सम्बद्धी पार्वों को बॉबने का कपड़ा (प्रीय ६६०) । देखी याय = पान । पच वि [माच] प्रसादित (कन)। पत्तरुश्र वि [प्रत्ययित] विस्वस्त (चय)। पत्तक्रम वि [पत्रकित] १ धरा पत्रवाला। २ फुरियत पत्रवाला (छाया १ ७—पत्र

पत्तकर पूर्व **हिं] न**नस्प्रति-विशेष एक प्रकार

पत्तरक्षकान [पत्ररक्षेत्र] काल है पत्ती

वेवने की कबा (जै २ टी पत्र १३७)। २

नरकारी राज्यन कोटनेका कान (माना

पचंद्र विकिमासाची १ वड-किञ्चित

विक्रम सविद्वरूप (१६ ६६) सुर १,

का काम्र (पएए १ — एव ६१)।

1(115

२ १२ १)।

संदर्भ (जीवस २८१)।

पत्तज देवो पहुण (धव) ।

६ ६४ वार ो।

**दर नुपारे २६ प्रस्त १४ १**३ पाछ)। २

पचट्ट वि दि गुन्दर, मनेक्टर (दे ६ ६०)।

पत्तन के परक्रजी १ इ<del>यु-क्रमक,</del> कार्य

भाषनका १ पुंच, बास्तुका मूस माय (के

पत्तमा **ध्ये** | द पस्त्रमा | १—२ असर

देवी (एउड़ा से १६, ७३)। ३ वृंब में की

बाठी रचना-विशेष (छ ७ १२)।

पत्तमा औ प्रापमा । प्राप्त (र्द ४)।

पत्तपसाइका की दि | वितर्भ की एक

नी पन्छी जिसे जीन जोग पहनते 🕻 (दे

4 3)1 पचिपसासस न दि कार देवो (दे ६ २)। पत्तपन [पत्रक] एक प्रकारका केन (बा Y Y) I पत्तय केनो पत्त (स्टा)। पत्तरक न [र प्रतरक] यामुक्छ-निरोप (पएड २, ४---पत्र १४६) । पत्तक नि दि र शीक्छ देन (दे ६ १४) नमराई धवारितमपत्तनाई परारित्वीच्यरतार्थः । धरिवधियाते व स्त्र कान्य इत देव मार्रति । (भण्या ६)। २ पत्तना इत्त (६६ १४) वण्या ४६)। पत्तम वि [पत्रज] १ वर समूब, बहुत पठी-मामा (पान के १ ६२) गा ४३२, ६३३) **दे६ १४) । २ पश्मकाला (ग्रीपः मं २)** । पत्तस्य न [पत्र] क्टी क्टी (हें ६, १७३) प्रापा⊦ सक्तादे ४ ६८७)। पश्चम्प्र व [पत्रस्त] पत्र-ममूद श्लोता, पत्र-बहुत होता आसीत्रपार्तिसोक्युनुर्वपात-भारतमृत्रहर्षारेष' (वा ६२६) । पत्तकी की दिं कर-विशेष, एक क्लार का धन-देश पिएइइ द्वेत्यवर्ति सर्वि (तुपा 441) 1

यत्तहारक वि [पद्महारक] पर्ती को बेक्टे का क्षत्र करनेशना (यस्तु १४६)।

पत्ताण सक दि | पनाना भित्रनाः 'पुण्कुर धन कीनि को जासह सी तमझ दिवान প্তান্তার্ব (মর্থি) প্রসান্তান্তি (দবি) । पत्तामोड वंत आमाटपत्र विहा हमा पत्र 'बस्मे य दून य प्रामी " च केरहर्र (धैव 1133 पत्ति भी प्रिप्तिती वाम (दे १ ४२ उप २२६ केस ६४)। पित ए पिति । सेना विशेष त्रिसर्ने एक रव एक इत्सी तीन कोड़े और पांच पैस्क हों। र पैरल चवनेवानी सेना (स्य भरद दी)। पत्ति ) सर्कमिति + इ. १ वलका। २ पक्तिक्ष विकास क्रांता । व ग्राध्य करता । पश्चिमः पश्चिमित पश्चिमसि पश्चिमामि ित्री प्रभावि प्रदश्ने हेर ह मय) । पतिस्वा पतिष पतिक्रि पतिस (त्तयः या २१६ ६६६ वि ४०७) । बहुर, प्रिकार पश्चिमाण (बा २१६ ६७%) माना२ १२,१)। श्रद्ध-पश्चिपच. पश्चिमात्रका (सर्व १ ६ २७ क्ट ₹0 ₹)1 पश्चिम कि पित्रित्ते सैनात-पत्र विश्वमें पत्र करल इए हो वह (खाना १ ७) ११---पत्र १७१)। पत्तिभ वि प्रितीति प्रस्वयित् प्रतीति-नाचा निरमस्त (का रे—पन रेश्श कप्पा **∓**π() ι पश्चिम न शिविकी श्रीति, स्पेद्व (हा४ क्षा (—लादश्य) । पश्चिम पूर्व प्रिस्पयी प्रत्यक विश्वास (ठा ४ ६—यव २३४, वर्ग ६)। पत्तिम न [पत्रिक] नरनत-पन (कप्प)। पश्चिमा की पित्रिक्यों पत्र पर्श, पती (रुवा) । पत्तिकाभ देवो पत्तिक = प्रति + द। विषयमद् (प्राक्त ७३), शक्तिमामीव (नि Yes) 1 पश्चिमात्र बङ [मठि+श्चावर्] दिखात कराना प्रतीरित कराना । प्रतिस्थित (बाब 28) 1

पश्चिम देखी पश्चिम=प्रीतिक (वैचा ७ t ) i पक्तिक देवो पक्तिम = प्रति + ४ ) पवित्रिध पश्चिमामि (पि ४४७)। पश्चित्राव केवी पश्चिमाव। पश्चिमक (सूपा ६ २) । पश्चिम्पवेषि (वर्षवि १६४) । पश्चिमिक नि नि विका (१ ६ १४)। पक्ता की विरोपकों की बनी हुई एक दर्ख भी परकी विशे भीव सौय सिर पर पहली पत्ता को पिरनी कि भागी (क्य द १६६) साय ६६ महाः पाप) । पर्त्ता की पित्री निमन पन (इस १९१) महार वर्गीन १२६)। पत्तं देखो पाव = प्र + बाप । पत्तवगद (शी) वि [प्रस्मुपगत] १ सामने बबा हवा। २ बारास परा हुवा (नार.—विक 31)1 पत्तेचा । न प्रित्यकी १ इप्लंब एक एक पत्तेगा (हे २ १ कुना निष् १ पि ६४१) ⊢२ एक की धरड, एक के धामने 'यतेयं वरोवं वरासंबद्धिकाराची' (बीव १) ३ त. कमें विशेष जिसके स्वय से एक कीय का एक सन्तम शरीर होता है। 'परीनतन्तु वाले अक्टरतां (करमा १ १ )। ४ प्रवाह प्रवाह धनवधनप (कम्म १ १)। १ पूर्व वह बीव विद्यास रागैर सत्तन हो। एक स्वरूप शरीरवासा बीच 'साहारलपरीमा बलस्यर-बीबा बुद्दा सुग् भरित्रयाँ (बी. )। व्यास न "मामन्" देवी कपर का बीवस पर्वे (राव)। "सिगोयव र्" "सिगोवक] भीन विशेष (कमा ४ २) । तुद्ध र (तुद्ध) व्यक्तिनतारि भाषता के कारातमृत किसी एक बला है परमार्थ रा बान जिल्ही छताब हमाही देश 👇 मृति (महानव ४६)। बुद्धसिद्ध ई [बुद्धसिद्ध] अभेण्ड्रव होकर पुष्ठिको जास भीव (वर्ग २)। रस पि दिल्ले विकार प्रवाला (हा ४ v): सरीर पि [ सरीर] t विशिक्त रुपैरनाताः 'नचैनस्पेपानं सा ब्रॉलि प्रपेर बंबाबा (र्जन ६)। एम फर्न-विशेष भिष्की

पत्तेय-पत्पेयस्य होता है (पर्यह १ १)। सरीरनाम न [ रारीरनामन् ] वही पूर्वोक्त धर्व (सम 10)1 यत्तेय वि [प्रत्येक] बाह्य कारण (एवि १३ १३१ टी)। पर्य सक [म + कार्यप् ] १ प्रार्थना करना। २ प्रक्रियाया करना। ३ घटकाना रोकना। पत्येष्ट्र, वरवेति (उव भीत) । कर्म परिवर्णस (महा) । बद्ध परमेत परिमेश परमेजमाण (नाट---मालवि २६ मुपा २१३ प्रासु १२ ), 'कामे पत्येमाणा धकामा अंति हुत्वई' (उस ११७ दी) । कवळ परियद्यंत पस्थित्रामाण (गा ४ पुर १ २ ३ ३३ कप्प)। इन परथा, परश्राधिका पत्येबस्य (सूपा ६० सूर १ ११६ सूरा १४८। पर्वा २ ४)। परवार्ष पिराधी १ धाईनः मध्यम पास्कव (स ६१२) वेली १२६ जुमा) । २ पाकास देश के एक राजा का नाम (परुप ३७ ०)। ३ महिनपुर नगर का एक राजा (सुपा ६२१)। परभ र प्रार्थी १ प्रार्थन प्रार्थना (राय)। २ वो विभी का जनवास (संबोध १८)। पत्थ देखी पण्छा ⇒पद्म (पा द्र१४- पत्रम १७ ६४ राम)। पस्य देखी पत्य = प्र + धर्षम् । पत्थ पूरित्य र भूजन का एक परिमास (बृह दे बीवस दक्षा छेतु २१) । २ सेनिका एक पुरुष का परिमाण (चय पू १६) 'पत्नमा र ने पुरा धासी हीखनाखा च तेषुखां' (वय १)। पर्धत देशी परथ = प्र + सर्पन । परमेत देखी परभा। पत्थम वैको पत्थय (धन)। पत्यद्व र्षु [प्रशार] १ रचव-विशेषण्या सपूर् (ठा १ ४-- पत्र १७१)। २ सर्नी कं बीच का भन्तरज्व भाग (पएछ २ सम २५)। परवाह वि [प्रस्तुत] १ विद्याचा हुमा । २ फैलाह्मा(भन६८)।

पस्थण व [प्रार्थन] प्रार्थना (बहुः स्वीत)।

पत्यणया । श्री प्रियम्ता १ भ मेनापा परवणा जिल्लाहरू (दावर) । २ सावनाः मॉप । १ विक्रिति निवेदन (भग १२ 🏷 सुर १ र सपा २६६ प्रस्पू २१)। परवय देशो पर्य = पच्य (सावा १ १)। परयय वि प्रिर्वेक् अभिनाषा करनेवासा (समार २२१६ स २४३)। पस्थय रेको परय = प्रस्व (उप १७१ दी) योप)। परमयण न पिष्टयद्ती राम्बद पापेव मार्व में बाने का पुराक करोबा (लामा १ १५ स १३ । चर ८ ७ सूमा ६२४)। पत्यर शक शि + स्त्री १ विद्याला। २ फैनाना। सङ्घ पत्परेता (क्स ठा ६)। पस्यर र्षु [प्रस्तर] पश्वर, पायाख (बीक प्रशः पतम १७ वद सिरि ३३२); 'पत्वरेलम्हमी भीवो पत्वरं उन्ह्रमिच्छई। नियारियो सर् पण सक्तांच विमरणी (सरा२७)। परभर न [दे] पाद-ताक्ष्म सात (वड)। परभर धेको परधार (प्राप्ता संख्यि २) । पत्थरण न [प्रस्तरण] निधीना चहायत्वर एमं तहा एमं (बर्मेनि १४७)। परवरभक्किंश न दि | कोमाहन करना (दे व परवरा की [दे] चरण-बात कात (दे । **≖**) ( पत्थरिम पूँदि] प्रमण कीतम (१६२)। परधरिञ वि प्रिम्द्रती विद्यामा हमा 'पन्दरियं चलुर्च' (पान्न) । परमय देवा पत्थाव (हे १ ६०) दुनाः पदम 4 284)1 पस्वा सङ [प्र + स्था] प्रस्थान करना प्रवास करना । वहु प्रश्नंत (से ६ ६७) । प याण न [प्रस्थान] प्रपाश नमन (परि ८१। मनिशो। परबार र् [मरवार] १ विस्तार (अवर ६६)। २ तुष्डवन । ३ प्रताबादि-विभिन्न शस्ता । 😙 पियत मॉस्ट प्रक्रिया कियोग (प्राप्त) । प्र परयेजनात्र े प्रायमिक की रचना विधेय (ठा ६----पत्र पार्थत १७१३ कस)। ६ निनाश (पिंड ६ १३ पत्येमाण X ? ? ? ! परयमञ्ज

पत्थारी की दि । तिकर, समूह (दे ६ ६१)। २ सम्बा विसीना ग्रवराती में 'पत्तारी' (वेद ६३) पाया सुपा १२)। पत्याव सक [म+स्वायय] प्रारम करना । बक्क, परबावर्कन (हास्य १२२) । पत्माद प्रे प्रस्तावी १ भवसर । २ प्रसंप प्रकरण (हे१ ६व द्वमा)। परिश्रज कि [प्रस्मित] १ किसने प्रवास किया हो वह (से २ १६ सूर ४ १६८)। २ श प्रस्वात बृति भास (धनि १)। परियक्त वि [प्रार्थित] १ विश्वके पास प्रार्थेश की नई हो बढ़ । २ जिस चीज की प्रार्चना की बहिहो वह (मग पुर ६ १८ १६ ६ छन्)। परियक्ष वि 📳 छोगः वस्ती करनेवासा (दे ६१)। पत्यिक्ष वि [प्राधिक] प्रार्थी प्रार्थेना करते-वासा (स्व) । परियम वि प्रास्थित विशेष मास्थानाचा प्रदृष्ट स्माधाता (स्थ) । परियक्ष । भी [वें] नीस का बना हुआ परिश्वका र्रमाजन-विशेष (योग ४७६)। "पिक्रम पिक्रम न "पिन्क] बास का बना बचा माजन-किटेय (विदा १ ६) । पारधद रेखो पुरिधान प्रस्तित प्रापित (प्राक्ट २६)। पस्पिय प्रिमिया १ एका नरेत (सामा १ १६। पास)। २ मि पूर्विशो का विकार (राजा) । परनी की [के पात्री] पात्र माजनः भीत करबोरपरिव व माउमा मह पर्व विश्वपिति (का२४ म)। परभीया न दि । १ श्रमुख वक्तः मोटा कपहा । २ वि. स्पृत मोटा (वे ६ ६१)। परमुख वि [प्रस्तुत] १ प्रकरण-प्राप्त प्राकर णिक (तुर के ११६३ महा)। २ मा**स** तम्ब (तुम १ ४ १ १७)। पत्युर वेकी परसर = म + स्पृ । बंह परसु-रेचा (क्स)।

देशो परथ = म + धर्पम् ।

पशाहित । प्रविकास पर्क [प्रवृक्षिणम् ] दर्शनस्या करना शक्तिए है बैकर महब्नाकार अगल करना। केन्द्र, भवकित्राणे डे (पद्मा ४०० 1117 ( P. F. पदिक्रमणा भी प्रियमिया विश्वल की भोर से पर्वनाकार प्रमहा (नाट-नैत 14) | धद्यान पिद्रनी प्रत्यानन प्रतीति कपना (इस बद३)। यद्भ (ती) न भित्रन विरुद्ध (कार-मासदी ३७)। पदम (हो) देवी परम (ताट--मृष्य १६६)। पद्व देशो एयस = परंग पदक पदक पर्दन (14)

**बद्दरिस्तव वेदो पदिसम् (वर्ष**) । भव्द्य न [प्रवृद्ध ने] संताप नरमी (कुमा) । पदाइ वि प्रियायिन् देनेशाया (ताट---(Ru x) 1 **পর্**শে দ [স্থান] খল স্বিত্তা (খীন্য धवि ४१)। पवादि (शी) र् [पदाति] पैका फावेनावा बैन्छि (प्रयो १७- याउ—वेली ६६) ।

पदाक्य कि [प्रदासक] केलाला (किटे

पद्मव देवी प्रयाद (ना ६२६)।

33 11

(गर-मृष्ट् ११) । पद्रस्स इंत मित्रमी कोट, किना (माचा क १ २)। प्रकृति [प्रद्विष्ट प्रदृष्ट] विशेष हेव को मात (उच १२ वृद् १)। पतुक्रभेद्रय व [पदोद्भोदक] क्व-विभाव और राज्यानं भाग का पार्ययश (राज)। पद्मिय वि प्रदावित प्रद्वा प्रत्यन पीक्ति (सह १)। पक्स बर्ग [प्र+द्विष्] हेप करना। बहुसींड (पेका २ ६१)। पव्सम्मया 🖈 [प्रद्रोपना प्रदूपना] 🗟 र मारसर्वे (इन ४४६) । प्रकेशक सक मि + इस न प्रकार दे काला। परेन्बइ (र्जान) । सेहः "पदिश्सा व दिस्ता वयपाद्या (पर १८ R 114) 1 पर्वेस 🖦 पएस = प्रकेट (धन) । पदेस रू [प्रद्वेप] हेव (वर्गत ६०)। पर्वेसिम नि [प्रदेशित] प्रकारत प्रविपानित (भाषा) । फ्योस देशों प्रमोस = दे प्रदेश (प्रदेश निद्{र)। पदोस केरी प्रश्लोस = प्रधेव (एव) । पद न दिर्देश शाम-स्वात (देव १)।२

बौटा पाँच (पाय) ।

१८३७) । पद्धरविदिशिक्षयः, सल्त सीवा(१:६ १)। २ सीक दुवराती में 'पावर'। 'पबर-पर्णकृत्दवे पचारेष्ठं (शिरि ४६६)। पञ्च कि वि] शेलों पारवी में पशक्त (पक्)। पद्धार वि दि विश्वका पूँच पट बना हो सह. प्रकार (रे.६.११)। प्रमाह्य केवी प्रधानिय (मनि)। प्रमाण देवी पहाल (नाट—शुक्त २ ४)। पथार देखो भक्तार = प्र+ वास्त । भूतन-पवारेच (प्रीपः शाया १ ए—पव ८०)। पमाद शक [श्र+माय्] दौढ़ना प्रदिक वैद से भागा। संह प्रचावित्र (बाट)। प्रधावण न प्रियाननी १ शीव केंग थे गमन । २ कार्यकी सील विकि (मा १)। वै प्रवासन (वर्षेत्रे १ ७०)। पमाविक वि [प्रभावित] १ कीहा ह्या (महाग्रदश्चार ४)। २ वर्षि-धीका (राज)। यमाविर नि [प्रधावित] रोक्नेरावा (मा पभूक्यन [प्रभूपन] १ क्यु देता। २ एक प्रकार का बाबेपन श्रम्य (क्यू) । पण्डिय वि [प्रथ्यित] जिल्ली पूर वि प्या हो नह (चन) । पयोज्ञ सक् प्रि+भाष्] योना । सं पभोइता (यादा २ १ ६ ३)। प्योम वि [प्रयीत] नेमा इसा (यीत) । पभोग स्कृप्ति + धामृी बोला । पनोर्थे (Fr Yut) 1

परबोड--पबोब

पन देशो पंच । ६, रस वि व [वराम] पनत्त वस भीर पांच १४ (कम्म १ ४ १२ ६ ८३ वी २६)। पन्य (पे चुपे) देखो पणय = प्रखम (हे ४ 424) | पद्म देशो पण्या = पूर्ण (सुना १६१) कुम ¥ =) 1 प्रम देशो प्रज्य = दे (भयः कस्म ४ १४)। पद्धादेखो पण्ग≍प्रद्ध(भाषा क्रुप ४ ८)। पद्म वि प्राद्ध र पंडित जानकार, विद्वान् (ठा ७) छप १५१ वर्नेसं ४५२)। २ वि प्रज्ञ-सेवल्यी (सूच २,१ १६)। पन्न देशो यक्षः र, स्मित्र व विशास् पत्रदार १५ (४ २२ धम २१) मने चर्छ)। रस रखम वि विद्या ननस्वा १४ भां (तुर १४, २४ ; पडम १४ १ ०)। रसी की ["वसी] र पनधानी । २ पनखर्वी विभि (कप्प) । पक्ष वैश्वी पणिश्र = पएय (स्प १ वे१ टी)। पर्जरागा की [पण्याङ्गना] देखा, वासङ्गना (स्वर ३१ ध)। पद्मग रेनो पण्यम = पद्मय (बिपा १ ७) सुर २ २३०)। पसद्धि देशो पण्यद्वि (रूप्प) । पद्मत रेवो पण्यत (छामा १ १) मग सम १)। पद्मचरि की [पद्मसप्तित] पनाचर ४१ (समद्रकार)। प्रमुच्चि देवो प्रण्याचि (सुपा ११३) संकि शः महा)। १ प्रदृष्ट ज्ञान । जिससे प्रवप्त किया काय बह (तेंडू १४) । ७ पोषको होग-क्रम मधादीतुष (भाषक १११)। पश्च वि [प्रदापिया] पाक्यता प्रविपादक (RT 92 ) 1 पश्चपत्तिया की [प्रक्रप्रत्यया] देखी पुश्चप चिया (रुप) । पश्चपश्चम् देवी प्रव्यवश्चम् (पि ४४६)। पश्चय देवी पण्यम (पाम) । "रित्र वू ["रिपु] यस्त्र वधी (पाम) । यद्मया ध्ये [पद्मया] नवनात् वर्मनाधत्री को शायन-देशी (पंदि १ )। 46

पुरुष देशो पुरुष्याः पन्नवेद (श्रव) । कर्मः पल्लिक्स (स्व) । वक्त पद्मवर्यतः (सम्म ११४)। संक प्रभवेकर्ण (पि १८१)। पस्तरग वि [प्रद्वापक] प्रतिपादक प्रस्पत (कस्स ६ स६ छी)। पद्मक्य रेखो पण्यवम (सूपा २६६) । पद्ममणा रेको पण्णत्रणा (भव परस्त र ਲ ₹ ४)। पद्मवय देशो पण्णवा (सम्म १६) । प्रमध्यत् देवो प्रमय् । पद्मा वेको प्रजा = प्रजा (सावा का ४ १) **१**)। पना देखी पण्या - दे (मन १)। पम्लाक सक [श्रूक्] मर्रेन करना। पन्नावद ( Y 234) 1 पद्माडिक वि [सृद्ति ] विनका सर्वन हिया बदा हो वह (पाम दुमा)। पद्माण रेखो पण्याण (पाचा वि ६ १)। पद्मारस (पद) वि व [पद्मवदशम्] पनरह ११ (मिन)। पस्तास वेको धण्डास (सम 👽 र हुमा) । की सा(कम्प)। इस वि विसी पचासवा ६ वा (पडल ६ २३)। पमह देखी पण्डा (कप्प) । पन्द्र (मप) देखो पण्डुल = है. ब्रह्मब (भवि)। पर्यंच रेको प्रश्च (मुग २३३)। पपद्मीण वि [प्रपद्मियत] भाग इया (वि १४६ १६७ गार-पूच्य १८)। पपिकासद पुरिपितासदी १ आदा विवादा (राज) । २ पितायह का पिता परवाचा (वर्गतं १४१) । पपुच्च पुं[प्रयुक्त] थीव, पुत्र का पुत्र, योता (दुसा४ ७)। पपुत्त रेषु [प्रपीत्र] गीम का पुत्र पोठे पपोच र का पुत्र परनेता (विशे वदशः राज)। पथ्य सक [म + आप्] प्राप्त करना । एत्योद् पम्पोवि (पि १४) उत्त १४ १४)। पप्पोदि (शौ) (पि १४)। सङ्घप्प (बएए १७: मीप ११: विशे १११)। ह-पप्प (विशे १६००)। पच्या न कि पर्यक्र] बनस्पठि-विशेष (सूध **२,२६)।** 

परपञ्च ) पुंची [पर्पेट] १ पापड़ मूँग मा परपञ्चग ) वर्षे की बहुत पत्तकी एक प्रकार की रोटी (पन १७) सनि)। २ पापक के माकारनासा सुष्यः सुन्वएड (निष् १)। पायम प्र "पाचक] नरकाशस-निरोप (देशेल १)। मीर्य पू [मीव्क] एक प्रकार की मिट्ट करने (परएए १७—पत्र 288) 1 परपहिया भी [पर्पेटिका] वित्र भावि की बनी हुई एक प्रकार की साथ बस्तु (पर्श्य १। विष १६६)। पुष्पस्र वैद्यो पुष्पञ्च (नार-निक्र २१) । पञ्जीक्ष पू [ चूं ] चातक पक्षी पगैद्दा या वपीइस (वे ६ १२)। पप्पुक्ष वि प्रिप्जुती १ वसका प्रामी से मीजाहभा (पण्ड ११ मामा १ व)। २ ध्याप्त 'चयरणुवर्गनस्तारं च' (पन ४ दी)। १ न कूरना सामना (यजह १२८)। पष्पोद्धः पष्पोतिः } क्ष्मो पष्पः। पप्पद्यम [प्रस्पन्दन] प्रश्वत परकता (ग्रम) । प्रभाव पृष्टि प्राप्ति-विशेष (१६ १)। पिफिडिम नि [वे] प्रतिश्लीवत (वे वे 33)1 पण्ठल वि दि] १ क्षेत्रं सम्बाः र स्थिम-मान, धइवा (दे ६ ६४)। पप्हटू पट [प्र+एह्यू] १ कियना। २ कुटमा । पणुट्रद (प्राकृ ७४) । पण्कृत्रिम र् [प्राफुटित] नरकात्रासनीरोप (देशेम्द्र २१)। पप्पुत देवो पप्पुका 'बाह्यपूत्रमध्यो' (पुत्र २ २१)। पएकुर घक [प्र+स्कर्] १ करफना, क्तिया। २ कोपना। क्युट्ड (से १४, ७७) या ६४७) । पप्पुरिञ्जनि [प्रसुदिन] फरका हुवा (दे पापुरु बन [ प्र + पुरु ] विनसता। वहः पण्डकार (रंग) ।

पण्डल विशिष्टक] विकसित सिनाहरू

(राम्य १ १६। बर इ. ११४३ पत्रम ३

६६, तुर २, ७६: वर् । या ६३६ - १७ )

¥३⊂	पाइअसदमहण्यानी	पणु <b>क्षिम—पर्भवण</b>
'इम पश्चिएत सर्वन्द्र एन्युवनिक्रमता गामा'	पक्छ नि [प्रक्छ] बीवत प्रकार प्रकार	का भाव (से ४२)। व दोहातमा हुआ।
(भाग १९१)।	(हुना) ।	पर्वेत काध्यव (खासा १ १ — पत्र ६३ सन
परपुरिक्रज नि [प्रपुरिक्षत] कपर देवी (सम्मत्त	पंचादांकी प्रवाभां] प्रक्रुश्चामा विशेष	१८७)। ४ एक देश एक बाप (से १ १०)। ४
१ श मीर)।	पीका (स्त्रामा १ ४)।	। <b>ध्रत्थ</b> र्यं परमाग (गडड़)। ६ पून, पर्वेत के
पर्लुक्तिभा को [अञ्जूष्टिका] केवी करपुर-	पबुद्ध वि [प्रबुद्ध] १ प्रवीक्त निपूर्ण (वे	ळपरकाधाय (ठॉदि)। ७ वि वोकावसा
क्रिमा (च.१६६ घ)।	१२ ६४)। २ कामा हुमा (तुर १८२० ।	हुमा ईवदवनत (येत ११) हा १) ।
पप्टुसिय न [प्रश्रृष्ठ] प्रतम स्पर्त (चप	वे किसने सम्बद्धे तथा वालकारी मात्र की <b>हो</b>	प्रमास की माग्मासी बता-बिरोप पुरुष
₹ <b>«</b> ) ι	बह्(माचा)।	की एकर है यस्ती वर्ष कर की बदस्वा (हा
पण्डीह के पण्डाह । पण्डीक खण्डीकर	पनोध यक [प्र÷वोधस्] १ नातृत करता।	१ — पत्र ४११ तंदु १९)।
(शल्या १४१)।	२ इतम् करणना। कर्ने, पदोत्रीमानि (पि	पबसूख वि [प्रभृत] उत्तव 'महूनशेए वर्ज
पप्लोड सक [ म + स्प्रेटस् ] १ भ्यक्ता	( tyt)	परमुखा सर्दुरत्तेल (वर्गव १२)।
माइकर गिराना। २ मास्त्रातन करता। ३	पद्मीभज न [प्रदोधन] प्रक्रुप्ट दोदन (एव)।	पक्सीस पूर्वि प्रमाग] भोव विकास (रे
प्रक्षेपस्य करना। पण्डोबद् (वा ४३३)।	पश्चीह सेवी पश्चीच । इस् पश्चीहणाव (पर्वम	11)
बच्छे (वत २६ २४) वह परनोर्वत	• <b>₹</b> }!	पस प्रेशियों रे इरिकान्त नामक इन्द्र का
पण्छोद्वर्यतः पण्योद्वेमाण (वारभार पि	पनोइ पुं[प्रनोध] १ मानरखः २ कान	एक बोक्याब (ठा४ १) इक)। २ हीप-
४६१ ह्य.६)। संह "पप्पन्नेकेटलम् सेसर्व	समस् (बार १४ वि १६ )।	विरोप और समुद्र-विरोप का प्रविपति के
कर्मी (बार ६७) ।	प्योहण क्या पद्योगण (सन)। प्रवोहस वि [प्रवोधक] प्रवोदकर्ती (विसे	(एव)।
पप्छोडल न [प्रप्योटन] १ म्यद्गा प्रकृष्ट	(कर)। (कर)।	पम वि [प्रम] पात पुस्त (क्या स्वा)।
कुनन (मोन स्व १६३)। २ माल्डोटनः	पद्मोदिस वि [प्रदोषित] १ वरास हुन्य ।	"पसइ देवी "पसिंह, 'चंडाएं चंडरहपवाँठें'
मास्फानन (प <b>रह</b> २ र—पत्र १४०) सिंड	र विश्वको ज्ञान न कराया भगा हो। वह (मुख	(सम्मः १४१)।
२६१) )	164) 1	पर्मेक्ट पू [प्रशक्क्य] १ प्रश्वकियेन ज्योगिय-
पण्छोद्यमा 🛍 [पल्छोटना] उसर 🖦	पुरुष् के प्रो पुरुष (से ४ २१) ६, ११)।	केन-विरोध (ठा२ ६)। २ दुन देव-विमान
(योव २६६३ क्ल. २६, २६)।	प्रशास देशी प्रशास = सारप्। प्रशासद	(तम कः १४:पव २६७)।
पण्छेक्सिम वि [वे प्रस्सेटिव] निकॉक्टि	(t x 31) 1	पर्भव्य वि [प्रभावर] प्रकारक 'शक्तांम-
मधक्तर निरामा हमा (देद २७ नाम)-	पञ्चास देशो पत्रवास = प्लानव्। प्रवासद	पर्मरूपे' (एत २१ ७६) ।
'पण्डोडिसमोद्दनानस्त' (पडि)। २ फ्रोहा	(f( x xt) 1	पर्मकराक्षे [प्रसङ्ख] १ विदेश-वर्षे भी
हमा तीम हमा 'प्यक्रेडियसक्सियंडा' व	पब्तुद्ध देवो पतुद्ध (पि ११६)।	एक नवरी का नाम (ठा२,३)। २ चर्च
वे इति निस्ताय' (बंबीच १७)।	पदम वि[प्रह्म] नम्न (भीयः प्राष्ट्र २४) ।	की एक सप्मिद्देशी का नाम (इस ४ १)।
पप्पनेडेमाय रेपी पप्पनेड≔ प्र+स्केटन्।	परमङ् ) वि [ प्रश्नमः ] १ परित्रष्ट	३ सूर्यं की एक सक्तमिश्वी का नाम (सन
पञ्चक्र देवो पएट्टक (वह् )।	परमसिअ प्रस्वतित पुका हुण (पर्	र <b>र</b> ) ः
प्युक्तिम रेको पणुक्तिम (हे ४ ११६)		पर्मकरावर्ष को [प्रश्रह्मरावती] विदेश वर्ष
सिन) ।	१२३ वा६३। ६३)। २ जिल्लूच(से १४	नी एक नवर्ष (शाक्ष १) ।
पश्य तक [प्र+वन्ध्] प्रत्वक्य से		पर्मगुर कि [प्रमङ्गर] पक्षि विकरार
नहना निस्तार ते कहना। प्रवेशिका (स्त		(मार्चा)।
११,६)। सर्वेदाने सिक्तमारी १ क <del>्यारे</del> स्थान सम्बद्ध	बल्दा (देव देव द्वाप दे सेर १	पर्भज्ञण पुष्मिसञ्जती १ नामुकुनार-निर्मा
पर्वश्र कुं[प्रवस्य] १ सन्दर्गप्रव परश्रर याग्यद नास्य-समूह (रैजा ) । २ प्रविच्छेर	1	के क्यर रिखाका इन्ह (छारु,३ ४ १
मिरन्तरता (क्त ११ ७)।	पदमार वृद्धि विरिन्त्रम पर्वतनकरा (र	स्प ६१)। १ वश्या-सपुर के एक शासक
पर्वधण न [प्रजन्धन] प्रस्क बन्दर्भ धनित	१ ६६)ः 'पञ्चरतंत्रस्य स्मृती समाणी स्मृत (१व १)।	क्यात का मनितासक देश (अ.४.२)। देशाहुपदन (वे १४.६९)। ४ मनुपोत्तर
वास्य-अनूर की रक्ता अन्तर वास्त्र वास्त्र वास्य-अनूर की रक्ता अन्तर व कर्मक्ती		पर्यंत के एक शिक्षर का व्यक्तियंति देव (धाव)।
(सन ११)।	संक्षिपरस्यक्तमार्थे (क्षम व सै)। र अपर	

पर्मसण न [प्रश्न सन ] स्वतना (वर्षेषे १ ७१)। प्रमाण्य पु [प्रमच्चम्य] १—२ विषुष्पुमार क्षेत्र के इरिकास सीर इरिस्सह नामक कोर्नो क्षात्र के सीरुपाली के नाम (ठा ४ १—न्त

হৈও হছে)।
থমতা গুৰু [ম + মত্] কহলা বীলনা।
থমতা গুৰু [ম + মত্] কহলা বীলনা।
থমতা (সন্থা গুড়া)
থমতিব বি [মন্তাগ] বক, কবিত

(स्र्या)। प्रथम सङ्घ्या प्रभमित (सुर्देश)। सन्दर्भाः प्रसमिति (सुर्देश)।

पसस्यक [प्र+ भू] १ समर्व होता पहुँ कता । र होता स्टाप्त होता । पस्यह (पि ४०१) । बहुत पसर्वत (सुपा ८६) नाट—

विक्र ४३)।
पसव पूं प्रिम्म १ स्टर्गात वका प्रमुखे
प्रवर (ठा १, वसू)। २ प्रथम स्टर्गात का
कारण (खिरी)। १ एक कैन्द्रिक वामुनवामी
कारिक्य (इन्छा वसू, खिर)।

पश्चमा की [प्रमता] सुदीय बामुदेव की पटरानी (पडम २ १८६)।

पर्सावय वि [प्रसृत] वो समवें हुमा हो 'सा विक्या सिंदुगुए असम्बुमस्मि पर्सावता नेव' (वर्मीर १२६) ।

पसांकी [प्रमा] १ कॉल तेत्र (मङ्ग्ण वर्मेले १९९१) । २ प्रवाव "निज्युश्योगः समा सर्वपस्य ते विस्पर्वति" (वेदेन्द्र १२ ) ।

पभाइत्र ) चून [प्रभाव] र प्राटनस्स मुब्ह्
प्रभाव | (परम ७ १६ पुर ६, १६
महा च १४४) । २ वि प्रकारित रस्तीए
वन्नमाएं (च्य १४८ टी)। राज्य वि
[स्विनियन ] प्राम्यतिक प्रमात-सम्बन्धः,
मुद्द का (पुर ६ २४४)।

पमार वृं [प्रमार] प्रकट कर (सन १६१) । प्रमाय केवी पहाप = प्र + मादन्। पदावेद, ववार्षीत (दव पद १४४) । वहः प्रमावित (पुरा १७१)।

प्रभाव देवो पहाच-प्रशाव (साल १०)। प्रभावह की [ममावती] १ क्वांसर किल-देव वी माता का नाम (बम १११)। २ सवस्य की एक सली का नाम (सहस ७४

११) । इ. उत्तामन राजिय की पटराधी भीर देवा गरेश की पूर्वी का नाम (पिष्ठ)। ४ बत्तरेन के पूर्व निपय की मार्ची (बाजु १)। १ एजा बता की पर्नी (मन ११ ११)। पमाच्या कि [ममायक] प्रमाप बद्दाविशका रोगम की वृक्त करनेवाला (मा ६१ ह २६)। २ उन्निकारक। १ सीरक बनक (हुन १६०)।

पसावज न [प्रसावन] नीचे देवो (सु १)। प्रसावजा की [प्रसावना] १ महास्त्र, गौरव। २ प्रसिद्धि प्रच्याठि (छाया १ १६—पत्र १२२ मा ६) सहा)।

्राच्चन १९५ मा ६) महा)। प्रमानम् नि [प्रमानक] मीरन नद्गलेनाता (धेनीन ११)।

प्रमावाळ पुं [प्रमावाळ] बृश-विधेष (राज) । प्रभावित देवी प्रभाष = प्र + मावस् ।

पमास सक [ म + माप् ] बोनना भायल करना। पगासीत (विसे ४६१ दी)। वक पत्तास्त, प्रमासर्थत प्रमासमाग (सर कृश्व पदन १५, (का न्य १)।

पसास सक [ प्र+सास् ] महारित होता। पमासित (सुन्न ११)। मुका—पमासित (मग पुरुत ११)। सी पमासित्सीत (सुन्न ११)। वह पसाससाय (रूप)। पसास सक [ प्र+सास्य] महारित करवा। मनतेष्र (मग)। पमासित (सुन्न

करना अभवह (मा)। परावीष्ठ (मुक्स १-पन ६४)। नह-प्रभासयंत प्रमास भाण (उस्प १ ८ १६ देवण ४५ कम्प स्कार मीप स्व)।

अना धीर मा)।
पासा पुँ [मसास] र सपनाल महानेर के
एक मरेजर का बाग (सन १६ कम्म)। २
एक निकटनाओं पर्यंत का प्रतिक्राता के
(ठा १ स्—पन १६)। १ एक कैन पुनि
का नाग (समे १)। १ एक किन पुनि
का नाग (समे १)। १ एक किन पुनि
का नाग (समे १)। १ एक किन पुनि
विशेष नाम।। १ देन-विमान-निरोध (सन
११ ११)। विशेष न [जीवी] सीकेविशेष माधान में प्रतिक्रम न [जीवी] सीकेविशेष माधान में में प्रतिक्रम में सिवत
पह तीने (एक)।

प्रभासा चौ [प्रभासा] पर्वेहताः क्या (पद्यह २१)। पमासिय वि [प्रमापित] उक्त, कवित (सूर्य ११११)।

पसासेमाण बेडो प्रमास = प्र + भारत्। प्रमित्र बेडो प्रश्नित ११ ११)।

पिमङ् देशो पिमङ् (इ.१.१)।
पिमङ् वि.स. ["प्रमृति] इत्यादि वर्गेष्ट्र
(मग क्या गहा)।
पिमङ् ) घ [ममृति] प्राप्त करः (वहां
पिमः ) हे) शुरू करः, केडरः 'बासमायाधी

पमीक् पिना (सुर ४ १६७ कपा पमीक् महास ७३१ २७१ रि)। पमीय कि निमीत पितिमीत सरमन्त कपा

हुमा (बत १ ११)।
पन्नु दूं [मृनु] १ इस्पेड चंग्र के एक रामा
का माम (पत्रम १ ७)। २ खामी मानिक
(पत्रम १६ २१) व रामा मानिक
पत्रम भारतिक स्वाद्रमा (तिर्मुर)।
४ कि सम्बर्ध सर्वेद्रमा (सा २० मग १६)
क्वा ठा ४ ४)। १ योग्य, बावक प्रमुख

चना दा के का र भाग्य साथक पश्चापक सा सोग्नीति सा पश्चां (तिन् २)। पश्चीत ति (ती) (तम्ब दे)। पश्चीत (ती) (तम्ब दे)। पश्चीत (ती) केसो पश्चित्र (कुना)। पश्चीत (ती) केसो पश्चित्र (कुना)।

प्रारम्भ किमा हो वह (पुर १ ४०)। १ विस्ते भोजन किमा हो वह (स १४)। प्रमुख्य देखी पनिर्द्ध (पदम ६ ७६) स्व प्रमुख्य १९४६)।

षम्य वि [प्रमृत] प्रचुर, बहुत (समा परूप १, १, छात्रा १ १: सुर १ ८१: महा) । प्रसोय (सप) वेदो उदसोगः 'बीक-पर्यस्पासु वि किक्द्र' (सवि) ।

पमञ्च वि [प्रमक्षित] यदि महिन (काया ११)। पमक्तम्य न [प्रमुक्षम्य] १ सम्मक्त विते

पसक्तस्य न [प्रमुक्तस्य] र सम्मक्त विते यन । २ विवाह के समय किया जाता एक तप्ह का जब्दन (त ०४)। पमक्तियस वि [प्रमुक्तित] र वितित । १

विवाह के समय जिसको स्वटन किया बया हो वह (बसु सन ७१)। सिक्क सक [प्र + सूज्, सार्त, ] मार्वन

पमक्क धक [प्र 4 मृज् , मार्ग, गार्गक करता, साक-मुंबस करता भाइ साहि से दृति ववैस्त्र को दूर करता। पमकद (बदा (कुमा) ।

पीका (कामा १ ४)।

पवादा की प्रिकामा प्रकृत नाना निर्देश

पएरतिया को मिन्निका देवी कन्छ-क्रिया (ग ११६ म)। पप्तुत्रीसम् न प्रिश्तृष्ट्वी इत्तम स्मर्गे (राव

'হ্ব মড়িত্ত ডেম্মী বসুক্লবিদীমতা দামা

पपन्नक्षिम वि प्रिपृत्रकेत । कपर विवी (सम्पर्छ

(FIX 252):

१वशः विषे) ।

परफोड क्यो पएकुट्ट । पण्डोबर कम्प्रीस्प (बाल्या १४३)।

पप्लोड सर्विप + स्पोटम रिफाइना महर्वे गिराना । २ धारकालम् करता । ६ प्रश्लेपल करना। पण्डीबद (वा ४३३)। क्योड (क्त २६ २४) वह पप्कोर्डत पण्कोडगंव पण्कोडेमाण (गार४ प ४६१ ठा ६)। संक 'पप्योद्धेकम देखर्य नम्मं (धार ६७) ।

थप्योद्धण न [प्रप्योटन] १ म्यदना, प्रदूर भूतन (भीव ना १६६)। २ मालक्रोटक भारक्षत्र (परह ६ ६—पत्र १४०) पिड **244)**) पण्योदमा 🕊 [प्रस्कोटना] उसर 🐿 (योच २६६ क्छ २६ २६)।

पण्योडिम नि दि मस्प्रोटित निर्माटित माह कर विरामा हमा (वे ६ - २७ नाम)-'पण्डोडियनोहभाषस्त' (पत्रि)। २ कोहा हमा तीस हमा 'पण्डेडियनइस्त्रियंडर् न वे इति निस्ताच' (संबोध १७) । परफोडेमाय रेडी परफोड = इ + स्पोटन । पपुरद्ध वेबी पएइस (पर् )।

प्रमुक्तिम वेची पण्डक्तिम (१४ ११६) First 1 पक्षम बच्च [म+ वस्यू] प्रतस्य क्य से पहचा पिरवार से नहुता। वशीपका (क्स 2, 2, )1 पर्वय र् [प्रवस्य] १ बन्दर्ग क्रम परस्पर मन्तितं वातककपूर् (वंदाः ) । २ समिन्द्रोर मिरन्तरवा (बत्त ११ ७)। पर्वपण न मिनन्यमी प्रचल इन्दर्भ समित कारप-समूत्र की रक्कार अञ्चार म कर्बवर्ते

(गम ११)।

पबुद्ध वि [प्रबुद्ध] १ प्रवीख निपूर्ण (से १२ १४)। २ वाना इसा (सुर ४ २२१)। ६ जिल्ले बन्ही एख बानकारी प्राप्त की हो नाः (भाषा) । पत्रोच सक मि+कोचय ] १ बानुत करना। २ जल कराता। कर्मे पनोबीमानि (पि 1 (17 X पशेभव न [प्रदोधन] प्रद्वार शोदन (एव)। पदोड रेको पदोध । इन पदोडणाम (नजन ▼ ₹ ) i पबाह वृश्चिमी १ वायरखः २ ज्ञान समन (वाव १४-वि १६ )। धत्रोडल देवी पनोषण (राज) । पदोहर वि प्रजीयकी प्रवीत-क्टी (विसे ₹**₩**₹) | प्रवीदिश वि [प्रकीभित] १ वर्गमा हुन्छ । २ जिसकी बान न क्यब क्या हो बद्द (सूपा 424) I पब्बस देवी पबस्र (हे ४ २१) ६, ६६) । प्रकास देवो प्रकास = सारपु । प्रकास इ ( ¥ 21) I प्रकास देवो प्रकात = प्रावद । प्रकार । ( Y Y 1) I पण्युद्ध रेको प्युद्ध (पि ११६) । पण्म वि[महुव] नम्न (सीप प्रक्र २४) । } कि [ प्रभ्रष ] १ परिवर, परभासका प्रस्वतित चुन्य हुना (परह १ १ प्रविश्रष्टा या देश्य सुर ६ रेरका वा क्का क्ष्र)। र क्लिन्त (वे १४ ४२)। १ र् नरकाशक विरोध (देवेग्र रूव)। पण्मार दे कि सागमारी १ संकट समुक्ष भारता (के व ६६) के प्र २ मूर १ रर६ भप्यानकाः बुबन २१)।

पब्सार प्रिने बिरि-प्रका नर्वत-वन्त (हे

बदु" (एव ४१) ।

१ ६६) 'पञ्चरर'ररमच धाईती प्रमाती

परभार ई [मान्धार] र बहुट बाद, भूतरे

र्शंतिवरण्डपम्यरी (वान ही)। रे कार (

पर्वत का भाग (सामा १ १--- पन ६६ जन १७)। ४ एक केट एक मान (से ११०)। र चरकर्य परमाग् (गडड)। ६ पुन पर्नत के ऊपरकाधाय (संदि)। ७ वि योकावना हमा ईपरमन्त्र (संत ११) ठा १)। प्रभारा 🛍 [प्राग्मारा] रहा-क्रिये पुरस की सक्तर से परसी वर्ष तक भी धनरना (अ १ --पत्र ४१६ छन् १६)। प्रमुख वि प्रियत् जिल्ला भंदरवीए समें परमुपा बर्दुरत्तेल (धर्मवि ६१)। पक्सोबार विश्वभोगी मोन विकास (व पस वृश्चिमी १ इतिकास्त काशक एक क एक बोक्पान (स्राप्त १) इक)। १ होत विरोध और समूब-विरोध का अविपति देन (एम) । पस विभिन्नी धहरा तुस्य (कम चना)। प्रमुद्ध देवी प्रसिद्ध, 'चंदावी चंद्रवहपनांठी (सम्बद्ध १४१)। पर्भेकर प्रमिक्टर र बहु विशेष प्योतिय-देश-विरोग (ठा २ ६) । २ पून देश-वियान (समः १४) पद २६७)। पर्शकर वि[मसाकर] प्रकारक 'क्ष्मबोक पर्मकरो (कल २३ ७६)। पर्शकरा 🖈 [प्रसङ्ख्य] t विदेश-वर्ष हो एक नगरी का नाम (दा२ ३)।२ वर्ण की एक अपनिद्विपी का नाम (छा Y रै) । ३ तुर्वे की एक अध्यक्षियी कर नाम (वय - ૧) ા पर्भक्रपवर्द्द की [प्रमञ्ज्यवर्त] विधे की नी एक वर्गये (धानु १) । पर्मशुर वि [प्रमङ्गर] श्रवि विसर्वर (धाना)। पर्सक्रम पूर्विमक्तन] १ वसूनुवार-विवास

के बत्तर रिताका इता (दार ३ ४ ध

बन ६६) । २ सवल-ब्युट के एक पाताब-

नलरानाध्यीच्हालकदेर (ठा४ २)।

**३ बापु एवन (२ १४ ९१) । ४ मानुनोधर** 

पर्वत के एक शिक्षर का मिलाति देश (धन)।

वयम दू [ वतय] स्तूमान (दे १४ ६६)।

पर्भसण न [प्रज्ञाक्त]स्वसना (वर्मसे 1 (30 ) पमक्त पु [प्रमक्तन्त] १—२ वियुत्सुमार देशों के हरिकान्त और इरिस्सह नामक दोनों इन्हों के सोकपाओं के नाम (ठा ४ १--पन ११७: इक)। पमण सक [प्र+भण्] कहता दौसना। पमग्रह (महा चए)। पभणिय वि [ प्रमणित ] उक्त, कवित (इस्त)। पसन सक [प्र+भ्रम्] भ्रमस करना

मटकना। पममेसि (भू १३६)। पमग्रदह [प्र+भू] १ समर्थे होना पह चना । २ होन्त्र रूपच होना । पमन इ (पि ४७१)। बहु पमर्थत (सुरा ६६ नाट---विकथ्र)।

पस्य पुंप्रिस्य । १ छरपति वस्य प्रमृति प्रसन (ठा १, वसु)। २ प्रवम क्लांतिका कारण (एपि)। १ एक बैनमुनि चम्बु-स्थामी का रिष्म (कम बसु, श्रीत)। पभवा की [ममथा] वृतीय बागुरेव की

पटरानी (पदम २ १=६)। पभविष वि [प्रमृत] जो समर्वे ह्या हो 'सा विण्या सिटुसुए चरान्युद्धम्मि प्रमुख्या नेव'

(बर्मीक १२६)। पमा की [प्रभा] र कान्ति देव (महाः वर्गसं १९९९)। २ जमान "निन्दुस्त्रोया समा चर्पपमा दे भिरामीत (भिन्त ३२ )।

पसाइभ ) पूर्व [प्रसाव] १ प्रावत्रक्रम सब्ब प्रभाव (परमें के देश कुर १ हैं। महास २४४)। २ वि प्रकाशित रमछीए प्रमासर (क्य ६४ व हो )। तस्य व िंसंविधित् ] प्रामाविक प्रमात<del>-धरकव</del>ी जुबहमा (पुर ३ २४०)।

पसार हुं [प्रमार] प्रकृष्ट मार (सम ११३)। प्रभाव देवी पहाव = प्र + मावम् । प्रमावेद् यमार्वेट (एन पन १४०)। वह प्रमार्विस

(बुपा १७१)। प्रभाव देवो पद्दाव-प्रमाव (स्वप्न १ व) । पमावद् की [प्रमावती] १ क्यीसरे फिल-देव की माठाका काम (सम १६१)। ३ चक्छ की एक पश्चीका नाम (पडम ७४)

११) । ६ उदायन राजींप की पटरानी सीर वेदा तरेस की पूत्री का ताम (पडि)। ४ बलदेव के पुत्र नियम की भार्या (धावू १)। १ राजावस की पत्नी (मव ११ ११)। प्रमावरा वि [प्रभाषक] प्रमाव बहानेवाना शोमा की बृद्धि करनेवाला (मा ६ हरहै)। २ छन्नति-कारकः ३ गौरव वनक (कुप्र

₹\$¢) 1 पभावन न [मसावन] नीचे देखो (यू ५)! पमाधना की [प्रमावना] १ महत्त्व गौरनः २ मस्त्रिक प्रक्याति (स्त्रामा १ ११--पण १२२ मा ६ महा)। पमानय वि [प्रभावक] बौरव बदानेवासा

(संबोध ३१)। पमाषास्य र्षु [प्रभाषास्त] बृद्ध-विरोध (स्तव) । पमार्वित रेको पमाय = प्र + मारव् । पमास सक [प्र+माप्] बोबना भाषण

करना । पमार्चित (विसे ४६ हो) । वह

पमासीव, पमासयीव पमासमाम (का

पमाम मक [म+भास्] प्रकारित होनाः

दुर्शापटम ३४, १८, ८६ १)।

पमासिति (पुत्र ११) । भूका-पद्मसिषु (मग; धुण्य ११) । मनि पमासिस्संति (धुन ११) । वह प्रमासमाज (क्य) । पमास चट [प्र+भासम ] प्रकारिक करना । प्रमासेद (भव) । प्रमासेति (सुन ६-पत्र ६४)। बद्ध-प्रमासयंत प्रशासे माण (पतम १ व ३३ रमस्त ७५ क्या सवा भीपः मगः)। पमास र्रु [प्रभास] १ मनदान् महाकीर के

एक करावर का नाम (सम ११) कल्म)। २ एक विकटापती पर्वत का समिहाता देव (ठा२ ६—पव ६१)। ३ एक **वै**न मुनि का नाम (वर्ष ६)। ४ एक जिस्कार का नाम (नम्म ६१ दी)। इ.स. शीर्व-विशेष (व ३ महा)। ६ देव-विमान-विदोध (सम

१९ ४१)। दिस्य न ["वर्ध] ती<del>व</del>-विशेष भाष्यवर्षं की पश्चिम दिशा में दिवत एक दीवें (इक् ) ।

पमासा की [प्रभासा] धर्वेहता बना (पर्यह २ १)।

पमासिय वि [प्रमापित] उक्त, कवित (सुबर १ ११६)।

पमासेमाण रेको पभास = प्र + भासप् । पिमइ वेबी पिमई (ह ११)।

पश्चित्र किन ["प्रसृति] इत्यादि वर्गेरह (मय ज्वा महा)। पिमा ) म [प्रसृति] प्रारम्त्र करः (वहां थे) शुरू कर, सेकरः 'बासमावाधी पमीइ पिमि" (सुर ४ १९७ इस्स

पभीइं । महास ७३१ २७१ 🖹 । पभीय वि[प्रभीत] वर्षि भीत वर्षण्यक इस हुमा (सत् १ ११)।

पसुर्व [प्रसु] १ स्वनाष्ट्र बंध के एक सका कानाम (पतन १८७)। २ स्थामी मासिक (पदम १६ २१) इ.इ.२)। १ राजा तुरा 'पमुत्तवा क्युप्पमु कुवस्सा' (सिर्भूर)। ४ वि समक राकिमान् (था २७) मव १६० उदा ठा४ ४)। १ मोग्य सायर पशुति वा कोरगौति वा एमद्वा (निवृ २ )। पर्मुख एक [म + मुज्] मीन करता।

प्रमुखि (पै) देखो प्रभिन्नं (कुमा)। प्रमुख कि [प्रमुक्त] र जिसने काले का प्रारम्म किया हो वह (सूर १ १५)। १ विसने मोजन किया हो वह (स १४)। पमुद्र) केवी पनिई (परम ६ ७६) स पभूष रे २७६)। पभूग वि[प्रभूत] प्रदुर, बहुत (मफ पस्त १ १, सामा १ १। पुर ३ = १। महा)।

पर्भुनेदि (शी) (प्रथ्य १)।

पमीय (पप) देशो हमभीगः 'श्रीव-पगीवनासू वं कि कहं (प्रवि)। पमञ्च नि [प्रमस्थित] मति मनिन (छामा t () :

पमक्रमण न [प्रमुक्षण] १ सम्बद्धन विवे पतः। २ विदाहके समय किया जाता एक वास्त् का प्रवटन (स क्य)।

पमक्तिक प्रविद्यासी विशेष विशेष । २ विवाह के समय जिसकी सबटन किया प्रश ही बह (बनुः सम ७६)। पसळ सक [प्र 🕂 सूज् सार्ज, ] मार्जन

करना, साफ-युपरा बरना, मन्ना मादि है शृति वर्षे यह को दूर करता । पत्र मह (हवा

483 हवा)। प्रमृहिषा (माचा)। वह प्रमृह्योगाण (ठ. ७) । श्रंक पमञ्चित्ता (भय उदा) । कि प्रश्लिक (वि १७७)। पमञ्जूष न [प्रमाजन] सार्जन मूमि-शुद्धि (चंद्र) । पमकाणिया ) की [प्रमार्जनी] भार, भूमि पमञ्जर्णा । भाव परने का जावरहा (सामा १ ७ वर्गे ३)। धमञ्जय दि प्रिमार्जेक् प्रभावन करने तला ( R X. (c) 1 पमित्र विशिष्ट प्रमाबित । यह क्या हमा (बनाः भदा) । पमध वि [प्रसंख] १ प्रमाद-पुट्ट, ध्रमाद कान प्रमाधी वेदरकार (छन धानि १६६) प्रामु १)। २ व इटवी प्रश-स्थानक (कम्म ४ ४७ १६) । ६ प्रमाद (कम्म २)। स्रोग पुं विमा प्रमास्त्रक केल (भव) । संबंध पं चियत प्रमाश बाह्य प्रमाद मुक्त मृति (क्य १ १)। पमव् केही पमय (स्वन्त ११ कप्पू) । पसदा देवो पसया (तट--शकु २)। पसद्चक प्रि + सूद्वी १ मईन करना। २ विवास करना । ३ क्स करना । ४ पूर्ण क्ष्याः १ वर्षे शी पूर्वी—पूनी कालाः। मझ. पमदमाण (रिंह २७४)। पसद पे सिमर्ची १ व्हेलिय शास में प्रसिद्ध ।

एक मोर्स (तस १६ नुका १ ११)। २ र्चको संमर्थ (धाव)। इ.वि. मर्चन करने-नाया । ४ विवासका 'सार' गरालक सन्ने पवस्वार्धं भू सम्बूद्धाना(' (बंगीव ३७) । पमइण व [प्रमर्देश] १ दूरता, वृत्तं करता (छम)। २ शास कल्या। ३ रून कल्या (सम १९२)। ४ वर्ष की प्रती करका (निड ६ ६)। ६ वि. विनास न लोबाला (पैचा 1 (PY Y) पमद्य रि [प्रसर्क] प्रगरेन-कर्णा (ददनि **e (**) i पर्माद्र है। प्रमस्ति प्रपक्त करतेवला (बीम मिन्दर)। बसंघ वै प्रिमद् देशमन्द्र हुवै (काच या २७)। २ त क्यूरेनायनः। सङ्गीसी

रण्या की. व्यक्तिस्था (तथा २६ ) । वस्त

या वानीवा अर्हा राजा रातिवाँ के साव कीटा करे सि ११ ३७ स्प्राया १ 🖘 १३)। पसया और प्रिसदा दिलम और मेह महिला (बन बह ४)। पमत प्रिमभी तित का धनुवर (पाध)। णाइ प्रे[नाव] मक्ष्येव (मबु १४)। हिंद पू शिथिप दिव महादेश (बा YYK) I पमा सक मि + मा । सरव-सरव द्वान करता। कर्मपत्रीक्ए (दिशे ६४६) । पमा की प्रमा । प्रमाल परिवाल पीच सवाजीवित्यस्मिश्चविद्यात्मिमार्श्वनिवासस्या (रूपा)। २ प्रयाल स्वाय चिकारांची पमासिको' (बर्नेस ६८१) । पना केने पनाच = प्रभाव (वव १)। पमात्र नि मिमाविन् प्रमाधी नेपरकार (तुरा १४६) च्या भाषा)। प्रसारक्षका रेको प्रसाय = प्र + मन् । प्रमान्त देखी प्रमादः 'बामप्रपादन्ते' (ठर ७२४ थे) । यसाम सक प्रि + मानम ] विशेष चैति से मातना भागर करता। इ. पमाणशिका (या २७)। प्रमाण न प्रिसाण | १ यनार्वकान सस्य बात । २ विषये बल्युका धन्य-सस्य ज्ञान हो बहु स्टब्स बात ना सापन (ब्रेस्)। ३ विश्वरे नाप किया जाय वह, 'चकुप्पमानीप' (भ्रारक भरू भए)। भना गा परि माल (विभार १४४) हा १ १; भीवस १४ बम निपा १ २)। १ संदर्ग (प्रश्*र*ाणी २६)। ६ प्रवास शाव, व्याय-शाव, सर्व-शास वनक्यासदिक्यमागुनीहसाईन्डि सा बद्धरं (सूत १ ३)। ७ पून स्टब वन से विसकास्पीतार किया वास गङ्गः व मात-शीय धाररतीय। १ तथा ध्यो जैक-शिक यकार्व 'कमायको को व वैसि विकासको की यपमाछो होति (सुपा ११ मा १४)। भविरंति सन्द्रमाणी ववर्गमे पिच्छ इच्छत्ताशीमा । नीय न बानद नहुरी नद रेक्क वे व्यास्त्र वे (प्राप्त ११) । बाब वे विश्वती नगर-ग्रम, दर्ग-शास

न विना समा का करापुर-स्मित यह बन पमिस्रय सहिप+स्त्री इरकाना पस्त पन्नाय परेलं बोखा परिसायण महिविवालं (de v) i

(सम्मत्त ११७)। संबद्धार व िसंबर हरी वर्ष-विरोध (तुम १ २)। पमाण सङ्घिमाणयी प्रशास रुउ है स्वीकार करना । प्रमाण प्रमाणक (स्वि) । मङ पमार्थन (हरर १०१)। इ. पमानि यस्य (शिरि ११)। पमाणि अ कि जिमाणि डी बनाख कर है स्थिएत (गुरा ११ । भा १२)। पमाणिका १ व्य हिमाणिका समावर्गी श्चल-विशेष (विश) । पमानी पमाणीकर सक मिनाणी + की प्रमाण करना सम्बन्ध में स्वीकार करना। कर्ने पमालीक्षीपवि (शी) (ति १२४)। संह-पमाजीकिञ (नाट-मानवि ४ )। पमाद देवो प्रमाय = प्र+ वद । इ. प्रमादे यकः (छाया १ १—नव ६)। पमान देवो पमाय = प्रमाद (मा: ग्रीप' लान 1 1)1 पमाभ सक [स+सइ] प्रमाद करना बैश्ररकाची करना । यमायह, पमामय् (क्र<sup>हा</sup>) वि४६ )। यह पमार्थेत (पुन ६ )। इ. पसाइअक्ट (भव) । पमाय पूरिमादी १ क्टीव्य राजीं सम्बद्धि सीर सक्तेम नार्व में प्रबृधि का परायमानता नेशरकायै (धाना<sub>।</sub> उत्त ४ १२४ महा प्राप्त १वड ११४)। २ दुर्च करा 'समावसोबाका कि का विवाससमा चपुन्गदमपुष्पमामा (बत्त ६६)। पमार प्रै प्रियारी १ मच्छ का प्राच्छ (क्य ११) । २ दृषै वायह माएला (ठा ४ १) । पंगारणा को [प्रमारणा] हुए तरह मारण (4 17) पनिव वि [प्रसित्त] वर्षिनतः वापा हुवार्र 'पंप्रवर्गनार्वविषयावयामया प्रवृत्ति देवीयी' (पंगरुष)। पमिस्रक वि [प्रस्तात] प्रतिहर दूरमार्थ ह्मा (हा ६ १: नवींचे ११)।

पमिस्स पन [प्र+मीस्] विशेष पंत्रीय करना सङ्ग्रमा। पमिस्सइ (१४ २६२) प्राप्त)। पमाय रेको पमा = प्र + मा । प्रमीख रेको प्रमिक्छ । प्रमीसद (हे ४ २१२)। पसुद्दश दि [प्रमुद्दित] इर्पश्राप्त इपित (बीप जीव १)। पर्मुच सक [प्र+मुच्] छोड्ना परिस्थाप करना। पर्द्रवित (छव)। कर्म पमुख्यद (पि १४२)। मनि पमोनवसि (माचा)। **४५** पर्मुचमाम (स्व)। पसुक्क रि [प्रमुक्त] परिसक (हे २ ६७ षक)। प्रमुक्तः देको प्रमुद्धः (पुषा १३५ ११) भी १)। पमुस्थितम पू [ प्रमुख्यित ] नरकावास विशेष (देवेमा २७) । प्रमुत्त देवी प्रमुक्क (हि १६६)। पमुक्ति देवो पमुद्दश (पुर ३ २ )। पमुद्ध वि [प्रमुग्भ] श्रायन्त गुग्ब (नाट---मस्मदी ४४)। प्रमुद्द वि [प्रमुख] १ तक्तीन दृश्यामा, 'एरप्पमुदे' (माचा)। २ ट्रं ध्व-विरोध খনীরিক देव कियेष (হাৰ ३)। ३ न प्रदृष्ट्र मारम्य, माति धारातः कियागस्य-सरिनको भोगा पहुने हुनति तुसमहरा (पडम १ ३१ पाम)। पसुद्द विवर-[प्रसुद्ध] १ वर्षे छ । धादि । २ प्रमान भेंद्र, मुख्य (कीय प्रामु १६१) । पसुद्द वि [प्रमुखर] शावाल वहवादी (बस १७ ११)। धमञ्च वि [प्रमेवस्थित] विश्वके राधिर में वर्षी बहुत हो बहु, चूसे पमेन्ने बज्जे पाइमेरि य नी वए' (दस ७ २२)। पमेय वि [ममेय] प्रवाण-विषय, सत्य-पदार्व (वर्गं ई १११ )। पमेह र् [प्रमह] चेक्किये मेह चैव मून-बोप बहुमूनता (निष्कृ १)। पमोभ पुं [प्रमोद] १ धानन, पुता, ह्यं (पुर १ ७० महा छरि)। २ छतस-वैद्य के एक राजा का नाम एक खेला-पति (पडम १, २६३)।

पमोक्स देशो पर्मुच । पमोक्स पुन [प्रमोक्ष] १ ग्रुच्डि, निर्वाण (सूप ११ १२) । २ प्रयुक्तर, वशकः भो सवाएक किविवि प्रमोत्तरमञ्जाहर (मग)। पमोक्सम न प्रिमोप्तन] परियाग प्रकार कंठिये सनयास्यि बाहुपमीनवाएं करेड (लाया १ २--पत्र हव)। पमोयणां भी [प्रमीदना] प्रमोदन, प्रमोद भाइत, मार्गद (बेह्य ४११) । परमञ्जास बक [ब्र + स्ते] धविक स्थान होता । पम्पमाम्प्री (शी)ः (पि १३६ नाट-माषदी ११)। पम्माम ) वि [प्रस्थत] १ विशेष म्हान पन्माइज प्रत्येत पुरम्प्या हुमा 'पम्माम-सिरीसार्थन । सहसे जायार भौगार (मा ×६ गा×६ ि)। २ शू<del>व</del>ा 'वसङ्गय जायपामा यामा पम्मायजिक्सस्मा (वर्गीव पस्माण वि प्रिम्छानी १ तिस्तेव मुरम्प्रया हुमा। २ म फॉकायन मुरम्भाना पन्हा (? म्मा) एप्ट्ल्बिगी' (प्रलू १३१)। पस्मि दुं [क्] पाछि द्वाप कर (पक्)। पम्मुक्क केनो पमुक्क (हुर १७ वह् पम्मुद्द वि [प्राक्तुस्य] पूर्व की बोर विस्तका मुँह हो वह (भीव बज्जा १६४)। पमइ पूर्त [पश्सम् ] १ धरित-कोम बरवनी मीय के बास (पाम) । ६ पय भावि का केसर, किंबस्क (उदा भव विराह १)।। १ सूत्र मादिका मध्यस्य मागः। ४ वेदा पौरा (हे२ ७४ माप्र)। ३ केट का धर माग (वे६२)। ६ सप भाग "राप्रहाह मावणगहतातालम्ह (त ११, ०३)। महाविदेश वर्षं का एक विजय—सदेश (ठा२ ३४ इक)। यन एक देव-विमान (सम १३)। इन्द्रित [\*काल्च] एक देव विमान का नाम (सम १६)। कुछ पू [फूट] १ पर्वत-विशेष (स्तव)। २ व बद्दातीक नामक देवतीक का एक देव-विमान (सम १५)। १ पर्वत-विशेष का एक शिक्षर (दार १ १)। समस्य म ["ध्युक्त]

देव-विमान-विशेष (सम ११)। प्यमन [ प्रस ] बद्धासोक का एक देवविमान (सन १२)। "तेस, "तेस्स न ["तेरव] ब्रह्मामोक-स्थित एक दन-विमान (सम १४ राज)। यण्यन विर्णी नही पूर्नोस्ट धर्ष (सम १९)। (संगम ["श्टक्त] वही धर्म (सम ११)। "सिटून ["स्ट] नही पूर्वोक्त धर्व (सम ११) । यत्त न [ौयत्ते] वही धर्ने (सम १३)। पमद्भ देखो पष्टम (पर्राष्ट्र ४ -- पन ६७ ७ व और १)। र्साय नि [गिय] १ कमस की गत्व। २ विकमत के समान पम्पवासा (भग६ ७)। "ज्ञेस वि["होइय] पद्मा नामक नेरधानाचा (मय)। संसा की ["होरया] नेरमा-विशेष पाँचवीं नेरमा धारमा का शुमतर परिग्राम-विशेष (ठा है रः सम ११) । लेस्न देखी लेस (पर्ण १७--पत्र ४११)। पम्ह्रम सङ्घ [प्र + स्मृ] भूष बानाः निस्मरण होना । पम्हभद्र (प्राक्त ६१) । पमहरात्वर की पिएस समयी सहाविधेह वर्षकाएक विकय, प्रदेश-विशेष (ठार ३ इक)। पमइट्ट वि [प्रस्मृत] १ विस्मृत सि ४ ४२)। २ जिसको विस्परस हुनाहो वह कि पम्हट्ट मिह बाहं तुत्र वस्रणुष्पराणविवह मापण्डिएएं (से ६ १२)। पम्बद्ध वि [वे] १ प्रभट, विकुत (से ४ ४५) । २ व्हेंबा हुयाः प्रश्चितः 'पम्बद्धः वा परिदृष्टियं दि वा एयद्व" (वव १)। पम्ह्य वि पिह्स की १ पदन से उद्याप्त । २ न एक प्रकारका सूदा (प्रका)। पम्हर प्रीक्षि वासुन्य, बक्तस-मरण (दे पम्ह् वि [प्रह्मस्र] पश्य-पूक्त मबि-सीमसला (हे १, ७४३ हुमा पर् भीप पडक सुर ३ १३८-पाम)। पम्ह्य प्री वि किशक पप मारि का कैसर (१६१६: पर्)।

पम्बल्पि वि [दे प्रस्मक्ति] ववसित

सकेर किया हुमा 'सावएएकोन्हापनाहुपम्ह

विमयविद्यामीधी' (स ३६)।

थमहा की पिक्षमा र बेरवा-किटीय पथ-नेरवाः प्राच्या का गुभवर परिखान-विशेष (कम्म ६ २२ का २६)। २ विजय-क्षेत्र विदेप (सन्द)। पनदार 💃 [वे] मपमृत्यु, वेमीत मरख (**१** ६ ३)। पम्हावई थी [पह्मावती] १ विजय-विदेय की एक शबदी (ठा२ ३०३क)। २ पर्यंट-विशेष (ठा२ १--- मत्र )। पम्द्रद्रविदि] १ नष्ट नात प्रत्य (दे४) २१व)। २ विस्तृतः पम्बद्ध विम्हरियी (पाम) किंव तर्म पम्हर (छामा १ ब-यद १४वः विकार २६व)। पम्द्रक्तरवर्षिसम् न [पक्ष्मोत्तरावरसः हु] ब्यूप्रभोक में स्थित एक देव विमान (तम ₹**₹**) I

पन्द्रस सक वि + स्यू । बुबन्य विस्मरश

पम्हुस स्कृ[प्र+मृश्] सर्घकरूप्र।

पग्हबद वम्हस (द्वे४ १ ८ क्रुमा ७ २६)।

पन्द्रसं सर्व मि+सूप विशेषना नौधे

करमा । पम्हनकः पम्हनेक, पम्हर्गक (क्

पम्हुसम न [विसारम] शिस्पृति (वंचा

पम्द्रसिज्ञ वि [बिस्सृत] जिल्हा विस्वरश

पग्ह्रद् तक [स्मृ]स्मरता करता, बार

परदूषम रि [सार्व]स्मरश करनेतना

पव तक [पथ्] पराना सकरला।

बयद (हे ४ १)। बहु पर्यंत (रण)।

पप करु [पर्] १ जला । १ दाल्या । ३

हुमा हो बहु (रूमा क्य ७६ ही) ।

करता। वस्ट्रा (हे ४ ७४)।

संक्र पद्भ (दुन्न २६६) ।

विकारना । यहद्र (विकेश क्र) ।

४ (६४) क्या (३७- दुवा ७ २१)।

**परता। पम्∦सद (१४ ७३)।** 

tx, t+) :

(कुमा)।

मृत बाला । पम्हराइ ( पड्)ः पम्हरिकनासु

पम्ब्रसाबिय वि [बिस्मारित] मुकामा ह्या,

विस्पृत कराया हुमा (सुब्र २ ६)।

(অংশγ≼)।

सुना ११४ । मा २३। प्रसु ६ )। १ नद का दौवाहिस्सा(म्यु)। ६ निभित्त स्मरत (धाना) । **४ त्वाना घवमा**जनर्य डिसेव ति'(स्टर् १६७ मा२३)। परनी व्यवसाध 'कुनशायप कि निर् प्रविशिषद् वेष में पूछी हैं (मूर २ १७४) महा)। १ नाल शब्दाः १ प्रदेशा ११ भ्यवताथ (भा २६) । १२ कूट ज<del>ात वि</del>रोप (बूच ११२ ८)। देस न [स्रोम] क्रिन करवाण 'हुम्बह य शो पक्केनक्यको' (बस ६ ४ ६) । स्त्र पुँ [दिय] पश्चि वेस्त्र व्याताः चूच्युक्त सङ् तुर्वे पादको सङ् क्यरबेल (परुष ६ १२)। पास 🕻 [पाश] नाइस कान धादि वन्दन (सूप ११२ ०० १)। सन्तर ⊈[सह] पराति प्यापा (मिनि 🛊 ४ ४१)। बगगह दे ["विग्रह] पर्यक्रकोर (विदे १ ६) : विभाग दं विभाग दिन्हर्य धीर प्रश्वाद का सवा-स्वात निरेष्ठ सामा-चारी-विरोध (मान १)। बीड वेजो पाय-बीड (पर ४ तुपा ६१६) । समास र्द ["समास**ें** क्यें का स्ट्रुशद (कम्प १ ) । श्रुमारि व [ीमुसारिव] एक वर्ष में मनेक मनुष्क करी का बी मनुर्ववान करने री रुक्तिमां (भीत रह १)। शुसा रिकी सी [ ानुसारिकी] बुद्धि-विकेश एक पर के सक्तु से दूनरे समूह पर्शे ना स्वयं वता नवाने तथी वृद्धि (प्रयस् २१) ।

(दे १ ३२३ मोच १२३ पाय) १ २ पायी

वस (सूपा १६६) पाय)। इर देखो

पय पून [पद] १ विजिक्ति के साम का रुज्य,

'पवमत्त्रकावन कोक्य क र्व नामियाई

पंचित्र (विते १ १ मासू १६० मा

२३) । २ राज्य समूह, जानवा 'जनप्सपया

इतं सम्बद्धार्या (दर १ १४ मा २३)।

१ पैर, पांच चरछे 'बार्स च तकसातकसीह

सरनो ठनेमि मेरपुर, कम्बपहे बालो इन

चाव न सक्टूपर पदाइसं किनको वि

(सुपा १) वर्गीचे १४ शहर ३ १ ७ मा

२३) । ४ पाद-विल्ह्न-पदाङ्कः (सुर २ २३२

पय प्रे प्रिज्ञ] प्रासी कन्द्र (पाचा)।

पमोहर (विष)।

पव वेदो भया = प्रका। पास्त्र वि [पास्त्र] १ प्रवाका शासका । २ पूर्वप्य-विशेष (सिर ४३)। थय वि ["प्रवृ] देनेवाला, पीहप्पर्य (रंज) । पयइ और [प्रकृति] संदिका प्रमाव (शर्यु ₹**१**२) । पयक् वैको पराक् (मा ३१७) गरुक महार तन ६१ सत्त ११४ रुष्, हुत्र १४६)। पगरंद दू [पदगेन्द्र, पब्केन्द्र] बानकत्तर वातीय देवों का इन्द्र (ठा २, १)। पनई देवी पनवी (यहर)। पर्वत र् [पतक] १ सूर्य छी (पाम)ः 'ती इरिक्युबाइयेनी अदी इन क्यितन्त्रपनेती (डव ७२ **६ ही) । २ रंग-विशेष** सम्बन् इच्च-विशेष (कर ६ ४ शिरि १ ६७)। १ शक्षम प्रतिना, शक्षतेशाला क्षीटा भीट (शामा १ १७ पतम) । ४— १ विशे पत्रम = पत्रम, प्रमा प्रसा (प्रमा ! ४---पन ६४: एन) । बीहिया 🛍 [ बीयिका] रै रुक्तम का बन्ता। २ भिला के बिद पर्तन की तरह चलता बीच में को चार वर्षे की कोड़ते हुए भिन्ना नेना (उत्त ६ ११)। बीदी की [बीधी] बही पूर्वेत्व धर्व (क्य 1 (35 F पर्यं चुक पून [प्रपञ्चक्क] मत्त्वकान-विरोध, नक्सी पक्सेने को एक प्रकारना कल (विदार ६ — पत्र दर्)। पर्यष्ठ वि [प्रचण्ड] १ अनुह सीहः) प्रवरः। २ बबातक भवेकर (पर्सा १, १) ६। ४। पर्वड वि [प्रकाण्ड] चलुच चलट (पर्वड t v)ı पर्यंत देखोः पदा = पर् । पर्वप सक [प्र + कम्पू] शक्किल क्रोपदा। पर- पर्यपमाण (ह ११६)।

वर्षपं यक [प्र+ जलपु] १ काला.

बेलना । २ वस्याद करना । पर्यप्र (नहा) ।

चंक्र पर्वेषिकव्य पर्वेषिकव्य (बद्धाः वि

**१ ४)। इ. पर्यपिकस्त्र (श.४४.) तुरा** 

**223)** (

पर्यपण व [प्रजास्पन] क्यन रुक्ति (कर यु २१७) । पर्यपिय वि [प्रकम्पित] यति कांपा हुया (स ३७७)। पर्यापय वि [प्रवस्पित] १ कवित बर्छ । २ म. कवन, बक्ति । १ वक्तम, स्पर्व बरान (बिपा १ ७)। पर्यपिर कि [प्रश्रहिपश्च] १ कोलनेकामा। २ बाबाट बकवादी (सुर १६ ३० सुपा ४११, मा २७)। पर्वस सक [प्र+दर्शय] विवताना। पर्यसेशि (विसे ६३२)। पर्यस्य न [प्रदर्शन]विषयाना (स १११)। पर्यसिख वि [प्रदर्शित] विक्रमाया हुमा (पुर १ १ १ १२ ६२)। पयक रेको पाइक ( पयक्त एक प्रित्म + स्वा] प्रधाक्यान करना प्रविक्ता करना। पश्चकेड (विचार err) i प्यक्तिम वेची पद्कितान = प्रचित्रण (साया **१ १६**) i प्यक्तिसम् केवी पद्कित्सण् = प्रवक्षिण्य । **धंक** प्रविक्तिजिक्तम (सुर ८ १ १)। पमिक्तमा देवो पद्कितामा (चर १४२ टी युर १४ १ )। ययग वैको पश्यम = पद्यम पदक पदम (राजा पद ११४)। पयच्छा सक प्रि+पम् दिया सर्गेल करना । परम्बद (महा) । संक्र. पर्याचेन्द्राज्य (स्त्रा)। पयच्या न [प्रदान] १ शन धर्पेल (पुर २ १ ११)। २ विकेनेवाला (स्रष्ठ)। पयद्रध्य मि + पृत् ने प्रवृति करना। पबदूद(है २ ३ ४ ३४७ महा)। हा पयद्भिम्ब (सुपा १९६) । प्रयो- पयद्वानेषु (स २२) संब पयट्टाबिट (स ७११)। पसट वि [प्रशृक्त] १ जिसने प्रवृत्ति की हो बहु (हेर २६। महा)। २ विल्ला पण्डुच चलियं (पाप)। पयदृय नि [प्रवर्षेति] प्रवृत्ति करनेतत्ता (THERE T T) I

प्यट्टावञ वि [प्रवर्षेक] प्रवृति क्यनेवाला (इम्पु)। पगड़ाविञ वि [प्रवत्तित] प्रवृत्त किया हुम, विसी कार्य में लगाया हुया (महा)। प्याट्टिस वि चि प्रवर्शित] अगर देखो (दे 4 34) 1 पयदृश्च नि [प्रवृत्तः] प्रवृत्ति-युकः (उत्तः ४ २, सुबा४२) । पयहाण देशे पद्गहाण (काब पि २२ )। पयद्व एक [प्र+कट्यू] प्रकट करना ब्यन्त करन्त्र । वयबद्, प्रयवेद (सन्त महा) । वहः प्यद्यंत (सुपारे मा ४ ६ मनि)। क्षेष्ठ प्रविक्त (पि १७७)। प्रयो प्रवा-वइ (मनि)। पयक्ष विशिक्ष्य देश का श्रुमा महा) । २ विष्मातः विष्मुतः प्रशिक्तः 'विनदाधो विस्तृधो पवडो' (पाद्म) । प्यक्रम प्रिकटन र म्यक करना सुमा करना (सर्ग)। २ वि प्रकट करनेवाला चि तुज्यः पुष्णा बहुनेह्पवङ्णाः (वर्मेव ६६) । पमद्यावण न (प्रकटन) प्रकट कराता (स्वीत)। पयकाविय वि [प्रकटित] प्रकट कराया हवा (काख मीव)। पथिक देशो पगई (प्यास २३ पि २१६)। पश्चिष भी वि नाग रास्ता और प्रस् सम्महिट्टी वेसि मस्त्रो चडराप्यवीए' (सिट्ट 183) I पमक्रिय वि [प्रकटित] प्रकट किया ॥मा (सूर १ ४० मा२)। पंपश्चिय वि [प्रपतित] मिख हुमा (खावा १ प--पव १६६)। पयबीक्य वि [प्रकटीकृत] प्रकट किया हुमा (महा)। पयडीकर सक [शकटी 🛨 क्य] प्रकट करता । प्रयो पदशिकश्येषेमि (महा)। पवडीभूष ) वि [पकडीमूत] को प्रकट पपद्योहरू है हमा हो (पुर दे १ वर मा १६ महा सर्गो। पयद्दणी की दि । १ प्रविहारी । २ माइपि. बारपंख । ६ महिपी (दे ६, ७२) ।

प्यम देखी प्रकृत (दा ७७७)।

पयण केत्री पश्चण (विशे १०१६)।

पथण ) न [पचन, क] १ पाक पकाना प्याजना (बाँच कुमा) । १ पात्र-विखेप पकाने का पात्र (सूर्धान ८ ३ वीव ६)। सास्य की ["शाला]एक स्वान (बह २)। पयणु } वि[प्रतन्ते]१ इन्छ पतना।२ पयणुंज र सुसर्वे बार्रोके । यस्य नीका (स २४६ सूर व १६४ सम ३ ४ जै २ परम १ १६ है ११ प्रशंसा ६५२। परः)। पयण्यय रेखो पङ्ग्लाग (तेंदु १) । पयस बद [प्र+यस्]प्रयत करनाः पमत्तव (सी) (वि ४७१)। पयत्त देवो पयट्ट = प्र + वृत (कान) । पयत्त व प्रियम विष्टा एवम एवीम (सुपा) जकासूर१ ६ २ १<२४ ४ द१)। पयत्त वि [प्रवृत्त प्रतः] १ विया ह्या (मग)। २ धनुत्रात संमत (धनु ३)। पयत्त देवो पयङ् = प्रवृत्त (पूर २ १५७. म २४८१ से **६ २४३ व में या ४**मे६)। पयत्ताविम वि [प्रवर्षित] प्रवृत्त किया ह्रुपा (कास)। पंपरभ दू पिदार्थी १ शब्द का प्रतितत्त्व पर का वार्ष (विशेष १ व केव्य २७१)। २ कल्प (सम. १.६, शुपार ४)। ३ ५९% हु चीव (पाप)। पयभ देवो पङ्ख्य = ब्रामीर्ए (मर्थि)। पयमा देखी पङ्ग्या (हर १४२ धी)। पंचप्पण न [प्रकस्पत] नश्पना, विचार (भगेंस १ ७)। पसम देखो पासस≔ प्राक्टल (हि १ ६७ नक्ष)। पमम वि[भयत] प्रयत्न-सील स्टब्ट प्रयत्न करनेवासा (भीतः) पठन ६ ६६ सुर १ ४ **एक): 'इन्स्टिक न इन्सिन्स व तहकि प्रयो** निमंदर् सर्षु (पुष्क ४२६) पश्चि । पयस दूर्व [पटना पत्रक पदन] १ कान-म्पन्तर देशों की एक भावि (ठा २, ३) पएए १) इक) । २ पतन देवों का बक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २,३) । बद्द पूं ["पवि] पतन देवॉ नाबत्तरविद्याका शत्र (ठा२ ३—-पत्र

α٤);

पमय न [वि] प्रतिश, निरन्तर (वे ६ ६)।

पयर-पर्मा

पयर प्रमिक्त । समृद्ध सार्वे करवा 'पयचे पिनोसियारो मीनंपि चुनंगर्ने उन्नई (स ४२६ यक्षाक्षा पबर ( [प्रकृर] १ योगि ना शेक्-वितेष । २ निशास्त्र जीव । ६ श्रद्ध बन्छ (वे ६ १४) । पपर देखो प\$र≖वप अमेब्रुनिमो म किसे कर्त पर्यक्ष (सुपा १६ )। पयर=केशो पनार=प्रकार (हे १ ६८ पर्)। पयर देवो पनार = प्रनार (हे १ ६०) । पयर क्रम प्रिवरी १ क्लम क्या क्वया

'र राप्तरावयां बनासमूचासमूज्यसं

(चन)।

(स्व)।

4, 4y) i

हर्र भेटी (प्रयू १७३) ।

प्रवरिस रेको प्रथस । शङ्क प्रवर्शित (श्वन

प्यस्थान प्रि+ चता र चनता। र

स्वामित होना। प्रक्तेक्न (धावा ६ २

पनरिस केवो पगरिस (बहा) ।

पदर ६क प्रि+चर् द्रेशकर होता 'रका

रंबई (बादक ७३ टी)।

**48**) (

सूबारा सन्तिया वे लोए, पदस्य है सन्ते सन्ते

पपर सक [प्र+पर] १ फेबला। २

स्माप्त होना शाम में बमना । प**बरद** (शबि

नरविमारक्षुंबरीय (क्ष्मः भीत ३ साष्ट् १)। २ शृत कातार बाजूयल-विशेष एक प्रकार का बाता (भीता छाता १ t)। ६ गाँउए-विरोध सुनी से ब्रही हुई सुनी (काम १, १७ कीवर १२ १२)। ४ भैक्तिरोप बास सानि की सम्ब एकाई का पूर्वाभाव (भाष ७)। तप पूर्व [तपस्] क्रम-विशेष "वह न ["बृच्य] संस्थान-विशेष पनर्भ मितर निरिष्ठ निर्मेश भेजी से पूरी पदरण न [प्रकरण] १ ब्रस्तान बर्बतः २ एकार्व-प्रतिराक्त प्रेय । १ एकार्व-प्रतिरादक क्षांकः 'बुम्ह्यम्हयम्या' (हे १ १४६) । पद्मरण न [प्रतरण ] प्रचन कालच्य किया

प्**राम्य केको प्रवड**≕द्र÷कटव् । प्रकल (रिव) । संदूर पञ्चिष्ठ (दर) (रिव) । पुबद्ध देवो पुधद = प्रकट (स्प्य) ( पथछ (धरा) धक [प्र+ चास्य] १ क्लानाः २ विद्यताः प्रमानं (प्रिय)। प्रश्न वि प्रिक्त क्रियान कर्तनेताका (परम १ **₹**} i प्यस पूँ वि नीव पश्चिमुद्ध (३ ६ ७)। पमक । भी दि प्रकला । शिक्षा नीर प्यस्त ) (दे ६ ६) । २ तिहा-विशेष केंद्रे-बैठे भीर बड़े बड़े थो. तीर धाती है बहा ६ जिल्ले प्रथम है बैठि-बैठे और बडे-बडे नीव पाची है वह कर्य (स्म ११) कम्म १ ११)। पमस्म की विश्वपद्मी १ वर्ग विशेष जिसके जरप से बनते-बनते निज्ञा यादी है वह करी। २ वक्षते करते याने-माचौ नीव (कम्म १ १३ झा १३ निवृ ११)। पयस्य मत्र मित्रकार्यो किया देना गीर करता । परवाह (पाध ) । हेड्र प्रयस्पञ्चय (**9**E) | पयस्मक्ष्रंन [प्रपद्मियतः] १ नीय, निद्राः। २ पूर्णन भीर के फारश बैठे-बैठे किर का बोलय (से १२ ४२)। पयव्यक्ष्या औ [व] हान से पत्रनेवाने वन्तु की एक कारि (सुम २, ३ २१)। पयस्यम् वेदौ पमस्य ⇒प्रवहात्। श्वनायद् (बीव १)। वह पद्मवार्थंत (स्व)। पंत्रसम्पर्द [दे] १ इर, महादेव (६६ ७२)। १ सर्वे सॉप (दे६ २) पक्)। पंपशासमा व [प्रचासन] देशो पंपसाइम (17 1): पंत्रकाशमच्च 📢 🔃 महरू मेर (३.६ 14): पयक्षिक देशो पयक्षिक (पिक पि ११ )। पयक्रिय नि [प्रचक्रित] १ स्वतित थिए हुमा(एक मात्र)। १ हिला हुमा (१७म देव, ७३ खामा १ का कुमा कीप)। पनस्मिम नि [प्रवृक्तित] श्रीपा इमा श्रीवा इषा (क्य) । पयक्षे क [प्र = चाह्य ] क्लायमान हरता मस्मिर कारा। परनेति (स्टब्रु १ १७)।

पक्षाह (है ४ वठ साझ वर्)। पश्च पर [स] १ शिक्स्ता करना, सैना होता। २ मध्यता। पमलद (है ४ 💌 )। पयञ्ज वि [प्रस्तु ] फैमा हुमा (पाम)। पवह र् [प्रकरम] भहापह-विदेव (शुरुव पविदेश वि [प्रसुमर] फैबनेबला (दुवा) । पथित वि [शैथिकमकुन्] शिथित होने-वाता बीका होनेरामा (कुमा ६ ४६) । पथद्विर दि [सम्बनहृत्] सटकनेवासा (दुपा £ 8£) I पवन सर्व [म+तप्,तापर्] ठपलाः नरम करना । प्रधानग्य (रि. ४ २ a) । बहु प्रमिष्ठित (से २ २४)। पसप स्क पारी योगा पन करना। कनक 'बीका सर्व्यक्त बलपञ्चित्रतंत्रम्' हि १, (¥9 प्रथमि भी दि] छैना शरकर (व ६, १९)। पर्याप की [पश्चि] आजी पश्चिम (नेस्स \*\* ?) 1 प्यविभ वि जित्तम प्रतापित । एस जिला इया द्याया इया (बा१ वर- छे२ २४)। पचनी की [पत्रकी] १ मार्ग एस्टा (पान बारे भागुपा ३७०)। २ विस्व गर्ली (स्पद्धा)। पयह सक [म + हा] व्याप करवा, ओहना । बच्छे पद्धक्रिक, पद्यक्रेक्ज (सुधार १ १६) १ र २११ १ २ व ६ ४० ४ १३ स १६६)। स्रोहः प्रयक्तिम (प्रज्ञा १३ १ध वश्वार २४)। इन्यमहिसम्ब (स \*(X) I पश्चाह्य देवी पव्चित्रण - प्रवासल (वर्षि)। प्याधक प्रि + अनुस्ति प्रत्य करता, वर्ग रेना । नदामि (क्यि १, ७) । प्रवादण्यासि (विषा १ ७)। जवि प्याद्विति, प्रवादिति, नयादिति (क्षणा रि ७३) क्षण । प्याचक मि + मा प्रयास करना अस्त्रव करका। पसाइ (क्टा १३ २४)। पदा 🗗 [दे] इस्ती इस्ता (एव) । पयाकी स. प्रिक्षा १ वताली महत्त्र चैक चहुम नगाउ भाषी (बन विना

११)। २ क्षोक जन-समूहः (सिरि४२। र्ववा ७ ६७)। ६ वंतु-समूह, निम्बिस्स जारी द्वरुप प्यामु (द्वाचा सूम १ **१** २ २ १)। ४ रोतान वाली की: 'निन्तिय नींद घरए वयस्तु धर्मोद्वरंदी' (धाचाः सूप १ १ १६)। इ. इंडाल, संबंधि (बिरि ४२)। र्णाद् वृ [ सन्द] एक कुलकर पुरूप का नाम (पञ्च ६ ६६)। नाइ ई ["नाव] राजा नरेश (सुपा ४७४)। पाळ प्रं ["पाळ] एक किन मूनि जो पांचर्ने वसदेव के पूर्वेजन्म \_में युक्त में (बदम २ ११२)। विद्यापु ["पठि] १ अञ्चा विकासा (पाय- सुपा ६ १)। २ प्रवस बासूबेन के शिवा का नाम (पदम २ १=२ धम १६२)। इ नक्षत्र के स्थिप रोहिएक-मतन ना परिशासक देव (ठा२ ६--- मण ४४ सुरुव १ १२)। ४ का करका यादि ऋषि । **१ राजा गरे**स । ६ सूर्यं रवि । ७ विद्या समितः व रवहाः १ पिता कनका १० भीट-विशेष। ११ भागाता (हे १ १७७ १८) । १२ मही राव का उसीसभी मुहुत (सुन १ १३)। पयाद प्रविद्याति व्याचा पांत्र से (पैक्स) चवतेवाना हेतिक (हे २ १६६३ पर् ३ कुमा: मका)। प्रयाग पूर [प्रभाग] तीय-विशेष बहा बेबा धीर ममुना का धंगम है (पत्रम ८२, ८१) £ ? \$40) 1 पंपात्र म [प्रदान] राल निवरण (त्रवा का ११ वी गुर ४ २१ सुमा ४६२)। पयाण न [प्रतान] विस्तार (मन १६ ६)। प्रमाण न [प्रयाग] प्रस्थान गमन (शासा १ का पर्राष्ट्र १, १। प्रजम १४ २ । महा)। भयास देखो पद्मम (स ६५६)। थयाम न [वे] मनुत्रं अमानुशार (६ ६ €। पाम) । मयाम देशो पर्याग (कुमा) । भयाम वि [भयात] जिस्ते प्रकाल किया हो वह (बप २९१ धी महाः धीप)। नयाय दि [प्रकात] बराम संवात, पनाय-सामा निविधा (बस ७ ११)। पयान वि प्रिकात, प्रश्ननित प्रमृत, विस्ते कत्त दिया है। यहः 'दारन' नवाया' (निया १

१ २। कप्पा सामा १ १—पत्र ११) पवासा पूर्व (वसु) । पयाय देको यथान - प्रकाप (बा ६२६ वे \* 1 ) I पयार सक [ म + चारय] प्रचार करना । प्यारद (छल्)। संक्र. प्यारिवि (भग) (ਬਦ) । पगार सक [ प्र + वारय् ] प्रवारण करना इयना । पवारक, पदार्थन (सन्त) । पमार पू [मध्यर] १ मेद किस्म । २ इंव श्रीति श्रवह (हे १ ६८ हुमा)। पभार पू [प्राकार] क्या दुवै (पडम 🛚 ٧٤) I पदार पुं [प्रचार] १ सेवार, सेवरण (सुपा २४)। २ प्रसार, फैनावर (हे १ ६≈)। पमार पू [प्रकार] १ प्रकर-प्राप्ति (वसनि १ ४१)। र धानरख धानार (वसनि १ 177)1 पद्मारज न [प्रवारण] बज्बना ठमाई (तुर **१२, ६१)**। प्रवारिक्ष वि [प्रवारित] हमा क्रांट वस्थित (पाप्र सूर ४ १३६)। प्यास पुं [पातास] भगवान् यनन्त्रनापनी का हासन-का 'सम्पुष्ट पयान किसर' (सींद व)। पश्चाव सक [प्र + ठापय्] तथाना यस्म करना। बङ्क पद्मावेद्याण (दि ११२)। क्षक, पथाविस्तप (क्प्य) : प्याव पूर्मिताप] १ तेत्र प्रवरता (कुमह चण्)। र प्रकृष्ट साप प्रकारकस्पा (पण ४)। पर्यायम न [पाचन] पक्ताता पाच क्याता (पर्याहर १ भाव)। पद्माबय न [प्रतापन] १ परम करना तपाना (भोव १व मार्ग विड १४ माचा)। २ सनित (इम १८६) । प्रसावि वि [प्रदापिन्] १ प्रतापशाली । २ र्पू इस्ताकु नेश के एक राजा का भाग (पराम K, K) 1

बर्रेटी निर्देश)। **इ** पयासंधिक, पवासिमस्य (स्व ११७ ही जन ९ ११)। थयास देवो पंगास = प्रकार (वाप कुमा)। पवास र् [प्रयास] प्रयत क्यम (नेश्य २६ )। प्यास (बप) नीचे देखो (मनि)। पयासग वि [प्रस्नश्चक] प्रकार करनेवाला (ਦੋ ਚ )। प्यासण न [प्रश्नञ्जल] र प्रकार-करण, (माचा मुना ४१६)। र वि प्रकारकः, प्रकार करनेवाला 'परमत्वपद्मासर्ग बीर' (पुष्प १)। पंपासय वैको पंपासग (विसे ११६ १ पर वर)। पयासि वि [प्रकाशिम्] प्रकाश करनेवला (सए: हम्मीर १४)। पयासिय देवो परासिय (प्रति)। पयासिर वि [प्रकाशिक] प्रकार करनेवाता (मनि)। पदासेंस देवो पयास = म + कराव । पथाडिण देशो पर्विकाम - प्रदक्षिण (उवा भीप भन्ति पि ६५) । पथाहिण वैको पदक्तिम = प्रवक्तिश्चन ! पदादिगाद (मनि)। पदादिशाति (सूत्र २६६)। पदाहिमा देवो पदक्तिलमा (गुम ४७)। पच्यवस्त्राय (शौ) न [पर्येवस्थान] अङ्गति में भवस्थान (स्वय्म ४८)। पर बक [भ्रम्] भ्रमण करना क्षमनाः। परद (१४ १६१ भूमा) । पर केको प≕ प्र (तंदु ४६) । पर वि[पर] र फ्रन्य मित्र इतर (पा रेक्क महा प्राप्तु ह ११७)। २ तस्पर् ध्वतीतः कोञ्ज्लपर्धं (सहाः कुता) । ३ थेप्र क्लप प्रवास (पाचा राम्छ १२)। Y प्रकर्षशांत प्रक्रुग (धाचाः मा २६) । १ उत्तरवर्षी वाद का नरलोव— (महा)। द दूरलर्सी (गूस १ व लिखू १)। ७ धनाप्पीय अस्तीय (स्त १। निष् २)। व पदास सक [म+कारायू] १ व्यक पुं राष्ट्र दुरमन रिपु (पुर १७ १२) कुमा क्ष्मा। २ वनकानाः ६ प्रसिद्धं करनाः। प्रातु ६)। ६ न केवल फक (दूमां) मार्थि)। पमारेष (१ ४ ४१)। वक्र पनासीत, बहु वि [पुष्ट] मन्द से पासितः। २ तू. प्यासंत, प्रयासमेत (क्या पा ४ ३ वर क्रोकिस नवी (हे र १७१)। विशिध कि

िरीर्विक किर स्टीननामा (भन) । एस र्वे विद्या विदेश किया धन्य केश (विकि) । ओं स [तस्] १ बाद में परबी—दूबरे द्यापक 'सब्बाए परधो' (मक्षा) । २ दिस में इतर में (कुमा) । ३ इतर है, चन्त्र से (धूम १ १२) । राणिक्य वि विक्रमीयी निम मछ से संबन्ध रक्षतेत्राचा। और विमा (निषु )। गरिष्टम्बरण न [निर्दोम्पान] इतर नी फिलाका विचार (धार)। भाग पुंचिताती १ इसरेको स्त्रमात पहुँचाना । २ पेश, कमें विशेष जिसके जबय से और व भन्त बनवानों की भी इष्टि में बावेंस समन्त्र वाता है वह नमें 'परवाडवया पाणी पर्रीस क्तीर्लिप होत् दुव्हरिको' (कम्म १ ४४) । "चित्रप्य वि "चित्रज्ञी सन्द के मन के भाव की बाक्तेवाता (स्थ १७१ टी)। क्छंब, छंद इं विकल्पी १ परका यक्तियास सन्दर्भ मातृद (ठा४ ४० वन २४, ७)। २ पराचीन, परतन्त्र (राजा पान)। अराष्ट्रभ वि किही ( परको वाक्ताचा । २ प्रश्नुत्र वातकार (प्राकृ १व)। इ पु िंधी परोपनार (राज)। ट्रा 🗱 ["वि] इपरेके भिए, 'कर परद्वाप' (धाना)। जिल्लाम्याज न निन्दाभ्यानी सन्दर्भी कियाका विकास (बाप्त)। प्यूप्त देखी बागुअ (प्रकार)। तंत्र विजिला पराबान, परायस (दुवा २६९)। दिशिका **विद्या** सर्वेश करियम (मक्क सम्म X)। दीर न ितीरी समनेत्रका दिनाच (प्राय) । च न [कि] इ मिश्रक पार्वेचन । २ वैशे विक क्रीन में प्रशिक्ष दुशु-विशेष (विशे २४११)। च भ विशे १ सम्मन्तर मं प्रक्रीक में (मुपारे)। २ त कमान्तरः उटे स्ट्रांपि परचे गरकाई वृद्धि निवमेका (तुपा १२१) "छ। कोए किय दीसद सन्मी बरमी वर्तन **परतेश (क्य १३)। त्य स**िंची कन्पान्तर में "छा पराजावित वंदिस्ता न निजय टींप क्या विटिज् (इस १७) तुर १४ ३३ फ्ल)। त्य वेको "टू(तुर ४ ७३) । त्वी और विशेषी परनीय और (जास १२१)। बार प्रेन विहारी परकीय की (परि)- 'को अन्य प्रधार' हो धैनद हो कनाद

परवार (दुरा ३६१) 'बन्नेस घणकार्त गरिया वैद्यापि होत्र परशार्' (तुपा ६८ ) । बारि वि विहिन् । परकी सम्बद्ध 'वा एस नमुमदेर करना परवारियाए यानायों (पुर ६ १७१)। पक्स वि विका वैवासिक सिद्ध वर्ग का कनुमानी (इ.१७)। परिवाइय वि विशिवादिक इतर के दीयों को बोलनेवाला पर-निष्टक (धीप)। "परिवाय पू ["परिवाद] १ पर के द्वस्त-बोपों का विश्वकीलं बचन (बील कप्प) । २ पर-नित्वा इतर के बीपों का परितीर्त्तन (ठा १ ४ ४)। १ मन्य के सन्दुरहों का मपन्तम (पेन्त)। परिवास पू विदिपात] मन्य था पाठन शोवींस्थाटन-बाच्य दूखरे शो नियमा (भग १२ १) । पुट्र देशो चन्न (परश रक्ष स ४११)। सब प्रै भिया भाजनी जन्म (भीप परहरू १)। सविश वि "भविको सामानी जन्म हे शंकत्व रक्तेवाला (भया ठा६)। सागुर् भागी १ में इंग्रंग १ यन्य ना किस्सा। १ क्लम्ब उत्कर्ष (इस पू ६७) । सहेखा भी मिडका रे बचन की। र पत्नीय भी (ग्रुपा ४७)। यन्त वैको ।यन्त नरक्तो परहरी (पाम)। स्रोध्न स्थाग व **िकोकी १ फार कर-स्वत्रन से जिस (उ**स १६ टी)। १ भन्यान्तर (प्रयह १ २ विशे १९६९ मध्य प्रसम् ७४८ वटा)। वस वि विश्वी परावीत परालन (दूमा सूपा २१७)। वाइ दं विवित् इतर कर्त मिक (बीप) । बाय पू विश्वाद रिकार क्रीन विकास (ग्रीप)। २ केह बासी (बा २०)। बाम पूर्विशक्ती १ सम्बन गुरुतः। १ वि वहनालीनामा (स्रा२६)। ेंबाय वि [ेंबाळा] १ व्येष्ठ पतिकाला। २ पुरुष क्षमा (भारक)। बास कि िवायी जनकार, जानी (या २३)। बाय वि ["पाक] १ पुन्दर रक्षेद्र वनाने-काचा। १ पूरियोदमा (स्प १६)। बाय ⊈ ["पाठ] र कुमली कुएका केवाको । ९ सनूब समय (भा ९३)। बाब वृ [क्याद] बक्क्स निम (मा २३)। साम र् [चार्य] क्ली पुढाहा बनाव्य छन्। स्व

(बारश)। यायदि ["व्यवि] १ शहर सपूर्वामा । २ न मुक्तिः समवका भाग (भा २३) । बाय वूँ विवादी भीष्म समय वा बद्यविन्धर (मार्द्र)। याव 🖠 िद्वाची प्रचेटग (मा २३) । बाय रि िपायी बनीछवाना (था २३)। बाव वि [ याक ] वैदन्न, वैद्यविद् (भा २३)। बाय वि [पातृ] १ स्थापु, कार्यक्रका २ तुर्वपान करनेवासा। ३ तृब सू<del>वने</del> बाला। ४ ई पाबुद् काल वा सवास बूझी १ मध-स्थसनी (सा २६)। बाव वि ["बाइ] मुस्तिर (मा २३)। नाम नि क्याद्वी १ में इसम्बद्धाः २ <u>१</u> थल, कपका (या २३) । बाब वि <sup>वि</sup>वाद] १ प्रकृष्ट बहुत करनेवाला । २ ई में ह ट्यू-बाद, बत्तव कुस्तक्षाः १ बहान् पत्रन् (स्य २३)। बाय वि [ ब्यागस ] १ पवि बहाधनरात्री दुस्तर सपरात्री (का २३)। बाय वि [क्याप] प्रश्नप्त विस्तारमाना (मा १९) । बाव वि विवाही १ वहाँ पर प्रकृत वक-समुद्र हो बहुस्वातः २ त मध्य-पिंदुर्ज छरोबर (बा २३)। बाय वि िंद्यायी १ केष्ठ बायुक्तना । २ वहाँ पर पिठवों ना विशेष आयम्त होता हो वह। ३ पुँधनुष्ट्वपनत से चलता बहाव । ४ पुन्दर घर। र वनीहेरा बन प्रदेश (धा २३)। पास वि शिवानी १ **वहाँ** पानी का ब्रह्म द्राप्यम हो बहु। २ व बनवि-पुषा संपूर्व का पूर्व। १ दूँ ब्यालगुर, महा-धायर (धा १६)। बाध वि **"**क्ष्वाज] भन्दके पास-विदेव समन करनेवाचा। र प्राचैना-परायस (मा २३)। बाम वि ["पाम] १ सप्पत्त द्वीत-कृष्यः ३ १ <del>फिल</del>-श्रीक (या २३)। वास वि विषय] १ प्रक्रप्ट भपनवाना । २ वृंह्वक (भा २३) । वाव वि विषयी १ महायानी। र इस्त क्राजेनाचा (मा २३) । बाय दे [<sup>\*</sup>।पाउ] र कुम्मकार, बुम्बार । २ तुका बीव । ३ पह्नी दौन नरक-मूमि (या १६)। नाम वि विपास क्रिक प्रान्तिक (मा ९६) । बाय नि [बा**ब्**] <del>राष्ट्र</del>नारन (मा२३)। बाय पूरियह विवाह इस

बहादेव (बारक)। बाय वि [पास्] प्रकृष्ट देखाला (का २६)। वाय वि [वाच] फॉक्ट शक्ति (बा २६)। वाय वि ["वाप] १ विशेष मत्त्र से शतु की चिन्ता करनेवासा। २ दुसल्भी धमस्त्रः। १ सुमट, योदा(धा २३)। बाम नि [भाव] मानव-मुन्बर, को प्रारम्भ में ही सुन्दर हो वह (या २३)। वाय वि "प्राय] भेष्ठ विवाहवाला (बा २३) : बाय वि ["पाय] बंह रशाबाला क्लिकी रजाका उत्तम प्रवन्त हो बहा २ धरमण प्यासा। ३ ई राजा नरेत (मा २३)। याय नि ["क्यात] १ इतर के पास विरोध नमन करनेनाला। २ वृक्तिसुक माचक (मा २३)। वास वि[पायस्] १ दूसरेकी रक्षा के लिए कृषियार रक्षतेत्रासा। २ पुं मुक्त योजा (बा २१)। वाया श्री ["क्याजा] नेरवा वारोमना (या २३)। वाया की ["स्थागस्] धसती कुलटा (भा २३)। वासा की ["क्यापाँ] प्रनिष्ठम समूत्र की स्विति (का २६)। बाया की [पाता] कुर्त-मेंबी (मा २६)। वासाधी दिशासा दूर इच्छा (ध्या २६) । दाया की ["प्यागा] मस्-मूमि (मा२६)। वाया 🕏 [ वाच् ] करमीर-पूर्मि (बा २३)। नामा को [ नास्] दूप-स्विति (सा २३)। बाबा की [ पात्] रुतपदी कनु-किरोप (भा२१)। बाया की **क्याबा** नेपे बाध-विदेय (बा २३)। विषस पू [ विदेश ] पर्यक्त, विकेश (पत्रम १२ १६)। स्वस देवो वस (बर्मा १६४८ भिष्)। "संदित वि िसरको पर-संबन्धी परशीय (परा a)। समय र् [समय] स्तर वर्शन का सिंडल्टा 'बानडमा नमनामा ताबहमा वेद परक्रमध्ये (तस्त्र १४४)। हुस्र वि ्रित**ो १ इ**चरे से पूर, क्रम से पासित (प्राप्त)। २ पूर्वी, कीक्ट पिक पश्ची (इप्प)। की. था (पुर १ १४) पाथ)। ीधाय देनो भाष (प्रापु १ ४) सम १७)। ाभीण देखो । इीप्प (वर्मीद १६६)। । यन्त वि विषयी परामीन परान्त (पत्न ६४

पाइञ्रसदमहण्यमे ६४ इस पूर्दर महा)। दिशा वि [रैप्पोन] परतन्त्र परापत्त (माट---मानवि पर देखो परा - म (मा २३ पतम ६१ ८)। परंध [परम्] १ परन् किन्दु भी तुनै माल्येतित परंतुहभूरे नमरं (महा)। २ उपरान्त 'नो से कप्पद एतो वाहि, देए परं, बत्य मागुरंसखनरितारं कस्यपंति ति वेमि (क्स १ ६१ २ ४—७)४ १२—२६)। व केवल फरत 'एस मह संदायो, पर माखसस्य न्यांस बद्द प्रदानस्वरति (भहा)। परं भ [परुन्] धामामी वर्ष भाग्य करन पर पर्धार (के २) 'फर्म पर पर्धार पुरिसा चित्रित मत्पर्सपति (प्रासु ११ )। परंग सक [परि+अक्त्] वनना परि करना । क्षत्रक- परंगिळमाण (पौप) । परगमण न [पर्येङ्गन] पांच से चलना, अक्यास (ग्रीप)। परंगामक व [पर्यञ्जन] पत्तना चन्न्यण कराना (शर ११ - पन १४४)। परंतम वि [परतम] प्रत्य को हैरान करने बाला (ठा ४ २—यत्र २१६)। परंतम वि [परतमस् ] १ मन्य पर स्रोध क्रफ्तेबाबा । २ मन्ध-विषयक सकात रखते-दासा (ठा४ २—-पद २१६)। परंतु ध [परम्ह्य] किन्तु (बुरा ४६९) । परंदम वि [परस्दम] १ अल्य को पीका पाँचाने काना (उत्त ७ ६) । २ सन्य को राज्य करतेवासा । १ यस्य धादि को सिकानेवाला (ठा ४ २ — पथ २१६)। परंपर | वि [परम्पर] । भिन्न-भिन्न परंपरन | ( एवि ) । २ स्वत्रक्तिः परंपर परंपरच डिंद- (परंख १) हा २ १ १)। १९८ परम्पय समिक्त भाष (क्य ७३३) 'बुरिसपरंपरएस वेदि स्ट्रुमा धास्त्रियां 'एस सम्मपरंपरमां' (प्राय १) 'परंपरेशी' (कप्पः वर्गसं १३१: १३ ६) : परंपरा की [परम्परा] र चनुष्मः परिपाटी (मन, भीप पाम)। १ महिन्छिल दारा प्रवाह (शाया ११)। ६ निरम्बरत, स-व्यवदान (भव ६१)। ४ व्यवदान संस्तुट

'मलंतचेननएएगा चेन परंपचेननएएगा वेद'(ठा२ २ मप १३१)। परंभरि वि [परम्भरि] हुसरे का पेट मरने बासा(ठा४ ३—-पत्र २४७)। परंमुद्द वि [पराष्ट्रमुख] मुँह-क्षिराः विमुख (पि २६७)। परकीक्ष) वि परकीय विम्य-सम्बन्धी स्तर परकेर } से संस्था रखनेवासा (विसे ४१ परका सुपा ३४६ मिन १४१ पर स्वप्तप्र स २ ७ थक्ष ) 'न पेवियव्या पमया परमका (गोस १३)। परकान [दे] छोटा प्रवाह (देव ८)। परबंद नि [पराकान्द] र निस्ते पराब्य किया ही बहु। २ प्रत्य से धाइमला 'नामा णुयाने द्रारण्यमाखस्य द्रारणार्थं द्रापारन्तर्त मनइ (धाचा)। १ न. पराक्रम वत्ता। ४ **ख्यम प्रयत्न। १ धनुष्ठामः श्री धहुद्वा** महानागा गाँध मसम्मत्तरसियो प्रसूत वैधि परमर्दि' (सूम १ व २२)। परकास थक [परा+कृम्] पराक्रम करना । परक्षमे परक्षमेज्या परक्षमेज्यासि (माना)। वह-परव्हर्मतः परव्हममाण (माना)। इ. परक्रमियव्य परक्रम (साया १ १ सूम १ १ १)। परकस सक [परा+कस्म्] र काना। २ मारेवन करता। ६ सक प्रवृत्ति करता। परम्बमे (रस १, १ ६)। परम्बमिनका (बस व ४१)। संक्र परव्यक्ता (बस द ३२)। परकास दुं[पराक्रम] वर्तधावि से सिव्य मान (बस ४,१४)। परकाम पूर्व [पराष्ट्रम] १ मी वंशवं शक्ति सामर्प्य (विसे १४१ ठा ३ १ फूमा), पास परमध्ये नीयमार्श्वन तए सूर्य (सम्मत्त १७६)। २ उत्ताहः ६ केन्रा प्रमध्य (भाषु १ प्रसूद्द धाषा)। ४ राषुकानामा करने भी भाष्ठि (वंद)। प्र पर-माक्रमस पर-पराजय (हा ४ १। भावम)। ६ यमन यदि (तूस २, १ ६)। ७ मार्ने(दश स पूसू व≉)। परकामि नि [पदाकामिन] पदाका-संपन्न

(भर्मीक १६ १२ )।

परग—परम

R R 22)1

(61 YE) 1

(रह ७ ४१)।

बरत न हि परकी १ दुए-विधेष, निसमे

इत इंदेबते हैं (शका २ २ ३ २३

नुस २ २ ७) । १ काल-वियय (सूप

परम कि पिएसी दरत न्छ का क्या हुया

(काचार १ रे१ १ २.२.१ र४) । वरमासय रि विशासको प्रशास न स्तराना

वरम्य नि [दश्ये] महर्षे माना शहूबस्य

पर्ट्स (धन) सह [परा + जि] परानव करता इस्ता। परम्बद्ध (वनि)। पर्राजय (बर) रि पिश्रजिनी पराम्य-प्रकट्टिया हमा (मर्पि)। परामानि दिते १ पर-वस्त परापीतः। परतन्त्र 'जेर्गनमा मुख्यार पताई है देशन शैनगादवा परक्का' (उत्त ४ १६ बृह ४) : २ दूव परतन्त्रना वराषीनता (हा १००० पत १ १ मा ७ र---पत्र ११४)। परदू देनो परिश्रद्ध = परिवर्त (बीवस २१६) पर १६१ कमा ६, १८)। परदाधी कि निर्मिष्टेन (देश, ४)-'करवार' पुरावाली बचारावेनरिय दश्य करकार बही बीक्षण नधी (मुत्ता ६२ )। परदारिक 🛊 [ पारनारिक ] परक्री-सम्बद (पानर ११७) परवारि दिशे १ शीवन दुर्गनन (३ ६ पाय मुरु र १६ १०० दर इ २२ मणः) २ वितः । ३ मीद द्वरोड )। इन्यात 'त्रीइ बद्धा जीवा न रोनाग्रशीला हाति (बम्बा १८) परापर देगी पराचार (वि ६११ मार--मारने १६ । । यरस्थवनाय रको प्रसमय । वस + मू परभण रि [रे] और स्तोप ( बर )

परमात्र १ दि । दूरण मेपून (१ ६ ६०)

परम रि [परम] रे बच्चा, नर्जाचक (नप

१९ मो १७३३ ९ इन्द क्यूनिय

वीहर्यवर र वर्ष १ कुशार १ इन्हर्य

ब्यादन (रत्न १ व वा क्षेत्र) । ४

क्षत्र रूप द्वार १)। १.५

नुष १ १)। ७ न, नुषः (१५ ४)। ४ समाधार पाँच दिशों का अपनात (संदोध प्रक)। हुद्री "स्में] १ सस्य पदार्थ, वास्त्रविक चीन 'धर्य परमहे हेने क्लाह्री' (मगः पर्ने १) । २ मौतः, बुक्ति (उत्त १ वः पएड १ ६)। १ स्रोपम भारत (सुध १ **१)। ४ पुंत. रेखो नीचे "रय** जार्च पर महनिद्धिप्रदर्भ (पडि चर्म १)। एम देली न्त (सम १११)। रेथ पून शियी १ तन्त्र नन्त्र 'तर्तं प्रसन्दे (पाप्र) 'परम लग्ने' (धर्मि ६१)। २-४ देनी ह (मृग २४ ११ । स्ट बलु १६४ महा)। श्य न िस्त्र] सर्वोत्तम इपियार, यमोद मम (न ११)। देखि कि विशिधिमाँ। १ मील देवनवासा । २ मील-मार्वे का जलकार (साचा)। सम "स्री १ और, दुग्ब-प्रवान सिंट मोजन (मूर्पा १६)। २ प्र दिन का कानाम (तंतीय १८) । प्य न पिंदी मोध निर्वाण मृतिः (सक् मिरियार ४३ वैद्या १४)। दिवं व िरमन् विशेषक धानाः परमेश्वर (दुमा दुर्गे ६३८ रवस ४३)। यद देवी पय (गुग १२०)। त्यय देशी ैप्प (मरि)। प्यया ध्ये [शस्त्रता] प्रकि नेनेर्न बारहित बरिनेनरिन्छै बरमन्त्रमें पहेरी (दूस १२७)। अधिमत्त र् विश्विमत्त्री परमार्त्त वर्षत्रेत गा परम बड़ (नीहरू)। संस्थित न िम्बययो सम्यानीरदेव (बस्व ४ ७१)। सामग्रीभाव वि स्थिमगस्यित् नरीतन मनराता, संपूर्व बनरापा (धीर रण) । मामत्ररियय (रि.सीममस्यिक) बरी वर्ष(बीर बण) । देख दी दिस्री बन्ना विरामार (गुना ४३ ) विकास [ीयम्] र नम्या सनुष्य वडी दनर (प्रजन्दे 💌) २ मीरित दान उत्तर (सिंहरर) गा ई भिन्न, वर्ग-कृत्य बरपु (बा नडक) । हिस्सिय (। पासिक) बनुर्निक्टर राष्ट्र बोची को दूस देने पत देशो को एक की जब ३ ) ागटिश्र fe [ utefen] utfeneefebrere ، ۱۰۰۱ علاد کارکس

मोल मुकि। ६ धेवम चारित्र (भाषा

परमाइम्सिय वि [परमधार्मिक] नुब क र्धामनायौ (स्त ४ १)। परमिद्वि प्रसिद्धिम् र बद्धाः बहुधक (पाच सम्मत्त ७८) । २ धर्डन, विज धानार्वे चपाप्याय धीर मुनि (नुस १३) सार ६० गता ६३ निसा १ )। परमृष्ट वि [परामुक्त] परिवक्त (परम ७१ परमयगारि ) वि परमीपरारिनी बह परभूषपारि । बपनार करनेवामा (पुर ६ **४१, १ १**७)। परमृद्ध देनो परम्मद्व (ते २, १६) । परमंद्रि देखी परमिद्रि (दुमाः मनि देश Y55) 1 परमसर र् [परमेचर ] सर्पेपरं-सन्न बरबाग्मा (सम्मत्त १४४ भवि)। परम्बद्ध वि [पराष्ट्रमुख] विकुत कुर-विक क्यसीन (छामा है २। शाम ७२३। या परय न [परक] वाचित्रव, वतिरूप (रड 44 (A) 1 परखोदम वि [पारकीकिक] बम्पान्तर संबन्धी (बाबासम ११६ परहरू ४)। परवास वि प्रिरवाकी देशहरू राज्य ने मैरए। क्लोगना । २ ई सर्च्य, स्व होक्नेशला (या २३) । परवाय नि [शारबाय] १ थेह बाना दने-बाना। २ 🝨 उत्तन गरेशा (या २३) । परवास 🕻 [शरपाज] नाज (मन्त्र) अले वा कोठा, बहे वर करा शाल संगीत दिवा भाज है नोडाट, बसार (बा २३)। परवायां भी [ प्ररमाय् ] व्विरे-वर्ध वहारी नदी (भा २३) । परम (भा) रेगो भाग = लग्ने (रिय और)। समि 🖠 विणि । राष-विधेष, तिनके रार्ध में नेदर पुरुष्ट होता है (रिन)। परमञ्ज्ञ (या) रेगो पसक्ज (जि) । परमु ई [परमृ] बन्न-रिक्टेंग बरधन बुटाट. उत्पारी (भा ६, १३। प्रत्यु ६। १३।

<sup>कान</sup>)। राम पुं[शिम] बनर्रान चरि

का पुर जिला दर्श सकर है। साहस बुक्ति

परमुद्द्य पुंदि ] कृत येव दरका (दे ६ ₹₹)। परस्सर पुंची [दे पराशर] गेंबा प्यु:विधेव (पएए १: एवं)। भी री (पएए ११)। परहत्त वि [परामूच] परावित हराया यया (पंतम ६१ ६)। परा म [परा] इन मनों का सूचक सम्पव--१ माधिपुक्य संयुक्तता। २ ध्यापा ६ क्यें ए । ४ प्राचान्य, मुक्यता । ६ विक्रम । ६ वर्ति, यसन् । ७ मङ्गाद सनावर । ६ विस्तार । १ प्रत्यावर्तन (हे २ २१७)। ११ भूत, धरक्त (छ ३ २ मा २३)। यरा की दि परा] तूरा विशेष (पराह २ ६---पत्र १२३)। पराइ सह [परा+जि] इसना पराज्य करना । सक्त. पराइक्का (मूमन १११) । पराइज नि [पराजित] पराभन प्राप्त (पराध २ द्व घोषा स ६६४ मूर १ २०१६ १७१ च्या १२ १२)। पराइक्ष (पर) वि [परागत] यया हुना (मणि)। पराक्ष्ण वेको पराज्ञिल । पराक्षण (पि ४७६ मय)। पराइ को [परकाया] शहर से संगम रक्षते-वाशी वह वास्तिका को परपूरण से प्रेम करे ( के ४ वर ३ वर्ष ) । देखो पराय = प्रकीम । पराद्म देवो परद्म (सूम २१६)। पराक्य वि [पराकृत] निराकृत निरस्त (धरमध्ये)। परास्त्र सर्व [परा + क्व] निराहरण करना । पराकरोवि (शी) (नाट-वित ६१) । पराजय पूँ [पराजय] परिनव पनिवन श्राद (राम) । पराज्ञय १ पन [परा + कि] पराज्ञव पराजिय । करना हराना । मुका, पराज-विद्या (वि ११७) । अवि पर्राविशिक्साइ (वि ६२१)। चेक पराक्रियिचा (स ४ २)। हेर पराविभित्तर (भग ७ १)। पराहिणिल ) देवो पराहम = पराहित पराजिय ( (का द परा माहा)। वराण देखी पाम = प्राच्य (नाट--वैत १४) रि १३२)।

पराणग नि [परकीय] सन्य का दूसरे का 'बल्ब द्विरएएस्वर्एं इस्त्रेस परास्परि नो फ्रिप्पे (पण्या२ ६)। पराणिस वि [पराणात ]पहुँचा हुमा (अवि)। पराजी सक [परा + जी] पहुँकाना । पराखप (मिन)। पराखेमि (स २३४)- 'बाइ मएसि का निमेन्नियेख दूर्व कायमेंदिर पराखेमि (इप्र६)। परानयण न [पराजयन] प्रांचानाः क्रियम विणीपरानमणे का सजा भवि व करावी प्सं (सर ७२८ टी)। पराभव धरु [परा + भू ] इराना। क्यक पराभविञ्चेत परव्यवसाम (उप १२ टी ए। या १२ (८)। पराभव पू [पराभव] पराजय, हार (विपा 1 (} 5 परामविक वि [पराभूत] धनिमृत इराया हुन्। (वर्मीव ६८)। परामह रेको परामुद्ध (पत्रम १० ७३) । परामरिस सक [ परा + मृश ] १ विकार करना विवेचन करना। २ स्पर्धकरना। पद्मनिक्षद् (पनि) । वहः पद्मनिस्ति (मनि)। सङ्घ परामरिसिक्स (नाट--मृच्य परामरिम र् [परामर्थ] १ विवेचन विचार (ब्रामा)। २ प्रुक्ति, क्यक्ति । ३ स्पर्शः ४ न्धाय शास्त्रोच्य स्वाप्ति-विक्तित् रूप से पद्ध का श्चान (हेन १ १)। परामिष्ट्र ) वि [परामूष्ट्र] १ विचारित परासुद्व । विवेषित । २ स्प्रट सुमा हमा (बार-पुन्य १३ हर एक्ट्र-डार) हुम ११)। परामुम धक [परा + मृश्] १ स्वर्श करनाः सुना। २ विचार करना विवेधन वरता। ३ माण्यादित करता। ४ पॉछना। ५ तीर करना। परामुसक् (कस)। कर्म 'सूचे पचमुक्तिकः शामितृहार्वसम्बद्धिःहि (जनर १२३)। महः निमंडलरिन्जेस नमणाई परामुस्तिष मणिई' (कुत्र ६६) । **क्ष्मक** परामुसिक्समाज (स १४१)। परामुसिय रेको परामुद्र (महा पाच) ।

पराय मक [प्र+राज् ] विशेष शोक्ता। बहु परायंत (कृष्म)। पराय पू [पराग] १ मूली रज रेला पेनू रधो पराधो मं (पाप) । २ पुष्प-रम (कुमा पबद) १ पराय } वि [परकीय] पर-वंकनी शहर परायत र से संबन्ध रक्षतेवाला 'तो मञ्जूषा परामा पुरुणो कदमानि हुति सुदार्खे (सिट्टिर १८ इटि २०६० मय ८० ४)। परायण वि [परायम] क्यर (कम्म १ ₹**१**} । परार्रि म [परारि] मागामी तीसरा वर्षे (प्रासू ११ वे २)। पर छ देवी पहाल (प्राप् १३८)। पराष (भग) सक [प्र+आप्] মান करना । परावर्षि (हे ४ ४४२) । परावक्त सक [परा+ बृत्] १ वदनताः पस्टता । २ पीधे सीटना । परावताह (स्वर ८८)। वहः पश्चन्त्रसाण (स्टब्)। परावक्त सक [ भरा + वर्ते स् ] १ फिराना। २ मनुष्ति करता । परावत्तेति (पव ७१) परावर्तेषि (मोड् ४७) । संझ 'ठी सावरेख मणियं घरे परावश्विक्षण नियवर्ष (इ.स ₹**७** )। परावत्त पू [पराधतं] परिवर्तन हेरहेर, हेराफेरी (संदेश उप पूरण महा)। परावर्त्ति वि [परावर्तिन्] परिवर्तन करने-बाका 'बेस्परावर्डिएरि पुनिवर्ग' (महा) । परावृत्ति क्ये [परावृत्ति] परिवर्तन, वृत्तकेश (उप १ वर दी)। पछवत्तिय वि [परायर्वित] परिवर्तित बदना हुमा (महा) । परासर दु [पराशर] १ पशु-विशेष (चान) । २ ऋवि-विशेष (भीप गा ८१२)। परासु वि [परासु] प्राण-पीक्त मृत (मा १४) वर्गेशं ६७)। पराइप देवी पराभव = पराभव (इस्त ६)। पराहुत्त वि [दे पराष्ट्रमुख] विद्रव प्रहरू क्षिय (म २४६) से १ ६४ कर पूर्वत धीत ११४° नज्जा २६) 'सङ्गिखयपराहुची'

(पदम ३३ ७४ गुब्र २ १७)।

\* 7 22)1

कुब दूर्षे बते हैं (माना२, २ ३ ३ ३

शूचर २ ७)। २ वाल्य-विवय (सूच

परंग वि [पारंग] परंग कुछा का बना हुया

(काका २१११ का २२६१४)। प्राप्तस्य वि [प्रकाशक] प्रकार करनेवाला (65 Y4) 1 परम्य वि [परार्थ] महर्च महीया बहुमूल्य (दस ७ ४३)। परका (यप) शक [परा + वि] परायन करलाः इरामा । वरम्बद (मनि) । प्रक्रिय (धप) नि [परासित] पराचय-बाक हरावा हुमा (भवि)। परक्रम कि वि] १ पर-क्त पराजीन परतना 'बेर्सबनाः तुष्क्रपरपनाई ते पेरक-बोसागुक्या परमध्ये (उत्त ४ १६ वृह ४)। १ पुनं परतान्त्रदा परामीनदा (ठा १०---वत्र १८ मन ७ व—पत्र ११४)। परङ्ग देशो परिकड्ड = परिवर्त (भीवस २५२) वय १६२ कम्म २, ११)। परहा की वि] सर्व-विशेष (वे ६ १) **'क्वार' मुख्याची यपाल्डेसम्ब सस्य** परकाय, 😭 पौकाप नयौ (सुपा ६२ )। परवारिक 🛊 [ पारवारिक ] परवध-बन्नट (पजन १ १८ १७)। परद्ध वि [वे] १ गीविक कु चित्र (वे ६ का ताम देंदक के ईव ईक्शा के दें स २२ महा) । २ पतिता । १ मी ६, बरपोक (६६ ७)। ४ व्याप्त 'जीइ पद्या जीना न बोसपुरवर्षपद्यो होति (बस्मो १४) । परप्पर केवी परोध्पर (वि १११) काट-मानती १६)। परम्भवनाम रेवी पराभय न नरा + बू । परमत्त वि [दे] भीव वरलेक (वह)। परमाभ दे विशेषक मैचन (देव २७)। परम वि [परम] १ व्यष्ट , सर्वाचिक (तथ १ ६३ भी ३७)। २ वसन सर्वेतन सीह (र्यचन ४० वर्ष ३ दूमा) । ३ छन्नवं बायन्त (परहारे हैं, मर बीरा)। ४ নবল বুলন (মাৰা বলুং ३)। হুবু

मोक्ष गुर्कि। ६ सेनम भारित (धानाः सप १ ६)। ७ म. तुव (रस ४)। ८ सरादार पांच दिनों का उपवास (संबोध ka)। हुदुं[भिषे] १ सत्र क्याने, बास्तविक कीज 'धर्व परमहें सेवे कराहें' (भनः वर्षे १) । २ मोला मुनित (उत्तः ६८) पहारू १)। १ सम्म चारित्र (सूच १ श्रीत, रेखो तीचे त्म = लिंपर सहतिहिश्रहाँ (पिक्र वर्मे रे)। प्रजानेको न्त (सम १४१)। श्यापुत [ीर्थ] १ क्त्य प्रत्य कत्ते परमत्ये (पाप्र) 'परम-रक्दी (सप्ति ११)। ५—४ देनो हु (कुरा २४ । ११ । स्टाप्रासु १६४ महा)। त्थ न िंखा प्रजीतम इक्तिगर, प्रमीप भवा(चे र र)। देखि पि विशिन्दी १ मोल केवनेवाला। २ मोळ-मार्गका जानकार (मापा) । सन "भी १ और बुत्क-प्रवान मिष्ट घोषन (गुपा १६ )। २ एक दिन का उपवास (संबोध १८)। यस न पित्र] मोल निर्माश मुख्यि (पाम मस्तियनि ४३ पैचा १४)। एप पू िस्समा अनेतिम भारमा परमेत्वर (कुमा सुपाँ वद रक्त ४६)। ध्यय रेको पर्य (सूपा १२७)। <sup>१</sup>एप**य देवो** <sup>\*</sup>प्प (अपि) । प्यथा **को ि**रसवा । प्रक्रिः मोळा 'सेवेर्सि भाष्मीहर्ज धरिनेशरिसुरी परमञ्चन पत्ती (मुपा १२७)। बोधिसत्त पु विशेषसम्ब । परम**र्श्वतः धांनु के का** परम कर्फ (मोद्र १)। संक्रियान िसंक्पवी संस्थानवरोष (कम्म ४ ७१)। सोमणस्मिय वि सीमनस्यित् 1 सर्वोत्तम मनवाता, धेनुष्टे मनवाता (धीर्ष **१**प्प) । सीमग्रहिसमन्दि सीमनस्यिकः] नहीं सर्ने(धीर क्या) । हिस्स की हिसा करक्रम विध्वकार (गुपा 🕶 )। दिन [ायुस्] १ सम्बा प्रापुष्य वही बयर (पटव १ ७)। २ जीवित दाव उम्ह (विपारेर)। ह्यु (विष्यु) सर्वन्तस्य बस्तु (मन पर्का) । हिस्सिय [धार्सिक] धनुर-विदेव गारक बीची को पुण्य क्षेत्राती देवों की एक वासि (सर्व १)। शहीहिका वि ["भोवधिक] ध्यविकाम-विशेषवाला शावि-विगेष (नय) ।

परमाहिमाय वि [परमधार्मिक] नुस्र क प्राप्ताची (रस ४ १)। पर्धमिद्रि प्रे पिरमेहिस् र ध्या, ब्युपक (पाधः सम्मतः ७) । २ महिन्द्र सिन्नः भ्रामार्व उपाध्यम भीर मुनि (मुच १५) द्राप दद मणुद्राविसार )। प्रमुख वि [पराभुक्त] परित्यक (परम ४१ २₹)। परमुक्तपरि ) नि [परमोपकारिन] वहां परमुक्तपारि ) स्थलार करनेवला (दुर % **४२ २ ३७**)। परमुद्ध देखो परम्भुद्ध (से २ १६) । परमेट्रि देशो परमिष्ठि (दूमा भवि: नेध्र **Y(4)** I परमेसर र् [परमेचार] सर्वेषनं संस्त परमात्या (सम्मत्त १४४ मृषि)। परम्मुद् वि [पराष्ट्रमुख] विमुखः दुर्शिकः ध्यामीत (सामा १ २) काम ७२३: ना 464) 1 परयान [परक] शानितन महिशन (प्रत #X 4X) 1 परक्षेत्रञ वि [पारक्षेकिक] बन्धन्तर संबन्धी (बाचाः सम ११६: प्रवह १ ४)। परवान नि [प्ररवाज] १ प्रकृष्ट धन्त वे प्रैरछा करनेवाला । २ पू साधीव, रम इक्निमेवाचा (धा २६)। परवाय वि प्रारवायी १ वेंह याना करें-गम्साः २ द्वं उत्तन नदेशा(बा२३)। परवास दें [प्ररपाञ्जी नाम (बन्न) घरने का कोठा वह वर यहाँ नाम बंद्रहीत निन्ध भारता 🐍 कोठार, बचार (बा २३)। परवाया को [ प्ररवाप् ] बिरिन्तरे नहाँगे नदी (मा २३)। परस (म्ल) वेबो फास = स्पर्त (लिए मॉव)। मणि पुंकित्वी रल-विशेष विश्वरे हम्तं से नोम्हा मुक्त्यं होता है (पिंक) ! परसञ्ज (ध्य) देखो पराव्या (स्व) । परसु प्र [परशु] मक्र-विशेष परमक दुशाय कुम्हारी (मन १ १६) प्रानुद्ध १२१

काव) । राम पू ["राम] वक्योंन स्रवि

भा पुत्र निस्ते प्रसीस बार निःश्रारिय ग्रामनी

की भी (कुश्चापि २)।

परमुद्द्य दे दि] कुछ देह बरक्ट (दे ६ २१)। परस्तर पुंधी [के पराशर] वेन, पशु-विशेष (पएख १: एवं)। भी री (पएख ११)। परहुत्त वि [पराभूत] पर्यावत हराया परा (पत्तम ६१ ८)। परा म परा इन मर्वो का मुचक भस्यय-१ मामिनुका सेनुकता। २ स्थागः। ३ वर्षेणः। ४ प्रावस्य मुक्यताः। १ विक्रमः। ६ यति यसन । ७ मङ्गाय सनावर। १ शिस्कार । १ प्रध्यावर्तन (हे २ २१७) । ११ प्रत पायन्त (ठा १ २ या २१)। वरा की वि परा] इस्त विशेष (क्या २ ६—यद १२६)। पराष्ट्र सक [परा+चि] इराना पराजय करता । संज्ञ. पराश्वन्ता (सूपनि १९९) । पराइज वि [पराजित] वरामव-प्राप्त (पडन २, ८६ मीरा स १३४४ मूर १ २७ १३ १७१ वस १२ १२)। पराइक्ष (घप) वि [परागत] वया ह्या (मनि)। पराइण देवो पराजिल । पराइलइ (पि ४७३ मन)। पर्याई को [परकीमा] इतर सं संबन्ध रक्तने-वासी वह नाविका को परपुरूप से प्रेम करे (हे ४ ११ १६७)। देशी पराय = परकीय । पराक्रम देशी परक्रम (मूच २ १ ६)। पराज्य वि [पराश्चव] विराहत विराह (धरमः १)। पराकर सक [परा + कृ] निराकरण करना । पतकरोदि (शै) (नाट--दैत १४) । पराजय पूँ पराजयो परिशव सविभव हार (चन)। पराजय ) सक [परा + वि] पराजय पराजिण हरता इरामा। मुना, पराज क्रिका (नि ११७) । मनि पराजिल्सिह (पि १२१)। संक पराविधिता (स ४ र)। हेक पराजिभित्तप (भग ७ १)। पराजिणित ) वेदी पराइम = पराजित पराजिय 🕽 (का प्र १२ महा)। पराज देवी पाप = प्राप्त (नाट--वैत १४ Pt ( 127) 1

पराजग वि [परकीय] सन्य का पूसरे काः 'बल्ब हिरम्लुसुबस्फं हत्येग पराणगीप नो फिल्में (सम्बार १)। पराणिय वि [पराणात]पहुँचा हुपा (भवि)। पराजी सक विशा + जी विश्वाना । पराखप (मक्ति)। पंछणीम (स २३४)- 'नइ मणसि वा निमेश्वमिचेख वर्म वायमंदिर पराऐमिं (कुम ६ )। परानयम न [पराणवन] पहुँचानाः निषय गिलीपरानवरी का शका धनि य उन्तवी एस' (डा ७२८ टी)। परासय सक [ परा + भू ] हराना। कनक पराभविद्यंत, परक्रमयमात्र (उप १२ टी एाया १ २३ १८)। पराभव 🕻 [पराभव] परावय हार (विवा १ १)। परामविभ वि [परामृत] प्रमिन्त हराया हुमा (वर्गेवि ६८) । परामद्र वेको परामुद्र (परम १८ ७३)। परामरिस स्ट [ परा + मृश ] १ विकार करना विदेवन करना। २ स्पर्धकरना। परामरिसइ (मनि) । नक्क परामरिसंत (मनि)। संक्रु परामरिसिक्ष (गट-पुण्य परामरिस ([परामर्श] १ विवेचन विचार (प्रामा)।२ ब्रुक्ति स्पत्ति । ३ स्पर्शे। ४ न्याय- शाओष्ठ व्याप्ति-विशिष्ट क्य से पस का बल (द्दे २११)। परामिद्व | वि [परामृष्ट] १ विकारित परामुद्र | विवेषित । र स्पृत्त पूजा पूजा (नाट-- मुच्छ देश है १ १३१ स १ हुम ११)। पर्यमुम सर्विष 🕂 मृत्री १ स्तर्र करता द्वता। २ विचार करता विवेचन वरता । ६ पाच्छारित करना : ४ पॉक्सा । र सीर करना। परापुत्रकः (कस्र)। कर्य 'যুও পত্তপ্রনিক্ষা ভাষি চুক্তির বুলিরি' (उनर १२६)। वह- निमंत्रतरिज्येश नयखाई परामुसंतेण ऋषिवें (कुत्र ६६)। क्रमः परामुखिज्ञमाण (स १४१)। परामुसिय रेको परामुद्र (महा पाप) ।

पराय धक [म+राज्] विशेष शोमना। बह्न परायेत (कप) । पराय दूं [पराय] १ बूसी रक रिणु पंसू रघो पराम्रो य' (पाम्) । २ पुन्प-रव (दुमा गउड)। पराय ) पि [परकीय] पर-पंदम्बी इतर परायग् े से संबन्ध रखनेवामा 'नो मन्पणा पराया पुरुषो कदमानि हुनि मुद्रार्ख (सिट्टि १ १३ हे ४ १७६) सव द १)। परायण वि [परायत्र] तरपर (कम्म १ 48) ı परार्रि म पिरारि | भागामी शीसरा वर्षे (प्राप्तु ११ में २)। पराख रेको पक्षास (प्राप् ११०)। पराव (बय) सक [म + आप्] प्राप्त करमा । परामद्भि (हि ४ ४४२) । परावत्त मक [परा + धृत् ] १ कालनाः पत्तटमा । २ पीके सीटना । परावत्तक (उवर = प्रावत्तमाण (धव) । परावत्त सक [परा + पर्तेय् ] १ फिराना । २ माबृति करना । परावर्तति (वव ७१) परावर्त्तीस (मोह ४७)। सह 'तो सागरेख मिख्यं बरे परावित्तरण नियमधः (क्रम **1**0€)1 परायच र् [परावर्ते] परिवर्तन क्षेरकेट, हैपकेषे (स १२ जन ६ २७ महा)। परार्वाच नि [परावर्तिम्] परिवर्तन करने-बासा 'बेसपरावित्तुती दुलिया' (महा) । परावश्चि की [परावृश्चि] परिवर्तन, ब्रेटक्रिये (उप १ ११ थे) । परापत्तिय वि [परापतित] परिवर्तित वदना हुमा (महा)। परासर वू [पराश्चर] १ फ्यू-क्रिकेप (राज) । २ ऋषि-विशेष (बीक ना वहर)। परासुनि [परासु] प्रायः-रिहेत मून (बा १४ वर्गसं ६७) । पराइव देको पराभव ≈परामव (पुरा ६)। पराहुत्त वि [दे परावसुदा] विश्वक श्रीह क्षिय (व २४६) वे १ वक्ष वस पूर्वता

सोव ११४' वरवा २६) 'महविणवरसारती'

(परम ३३ ७४ सुब २,१७)।

पराहुत्त े कि [पराभृत] धरिभृत, इरामा

किसी ब्रकार की प्राप्ति । १६ याच्याल । १७ र्वतीय-सावस्त । १० सुवस्त सर्वकरहाः ११ मासिका । २ कियम । २१ कर्नेट, ग्रीतिवेश (द्वार २१७ ग्रीव मक्का) । २२ निर्वेत्र भी भ्रतका प्रयोग होता है (बडर १ चळा)। परि 🖦 पश्चि = प्रति (ठा ६ १ — पत्र १ २) पर्व्य १६—पत्र ७७४: ७०१)। परि की कि दिवेद (इसा)। परि तक [क्षिप्] थॅक्ना।परिद्र(दर्)।

१६ क्यरम लिङ्गति । १४ कोच्डा१४

परिश्रंत्र सक [परि+सब्द्] बॉक्ल दोइमा । परिसंगद् (नल्या १४६) । परिश्रंत एक [ किय् ] १ मासिका करता । २ बीतर्गं करना । परिभोत्तक (है ४ १६ )। परिश्रंत देशो पर्यंत (पगह १ ६ परम ६१, १६ सूच २ १ १४)। परिश्रंतच्या स्त्रे [परियन्त्रामा] प्रक्रिय क्ष्मणा (ताट-पावती २ )। परिअंतिञ वि [शिष्ट ] प्रानिष्ठि (हुवा) ।

परिश्रमित्र वि [परिजाम्भव] विविध्य (६ २,२ )। परिश्रद्ध धक [परि + पृत् ] पनटन६ वरू-शता । बर्ट दिही अपरिश्र हैतीय तहना-रक्छमध्यत्रे (दुव ४३ महा) परिवह माण (महा)। परिभट्ट वर्क पिरि + वर्तेष् ] १ पलबन्ध बरनला । रे बाइति राज्यं चीश्व चळ हो

बहर करमा । ६ फियानाः चुमाना । परिबद्धाः परिमद्रेश (मनिः इव) । हेक- 'परियक्तिक मक्तो निक्कीएम्मे वि क्रश्मम्बर्ध (कृप ₹**₩**₹) | परिश्रद्द सक [परि + अद्] परिभगस करना वसना। पण्डिक्ट्र (हे Y २३)। संह परिबद्धिव (बन) (मीव)। परिभट्ट दे कि रवक बोमी (वे ६ ११)। परिअद्भृ [परिवर्त] १ पत्रधव व्यक्ता । २ समय का परिज्ञान-विशेष करून करवरित्सी भीर भवशिंग्छी कात (विपा १ १) धुर १६ रक्षा पर १६२)। परिखट्टन वि [परिक्रोंक] परिवर्तन करने-वाक्षा (निष् १)। परिश्रद्रज व [परिवर्तन] १ पत्तराव वश्ता करता (सिंह ६२४ वै ६७) । २ विद्युष्ट विक्रण शाहि क्शकरण (माना १ २ १

परिभट्टणा को [परिकर्तना] १ किर सिर होल्द (पर्याहर १)। २ माइन्ति प्रदेख पाठका श्रोबर्टन (ग्रामा २१४२ वर्ष २६ १। १ १४। मीट् ठा ६,३)। १ हित्रुश साहि जनकरात्र (पि २ ६) । ४ वरता करता (चित्र ३२६)। परिखड़ व वि पिन्टैंटकी परिश्रमख करने-बालाः भरविरिधयवपरिषद्भै (भूप ६१)। परिश्रकृतिक वि [ के ] वरिष्यक (वे ६ 1 (P f परिश्रहविश वि [वे] परिष्यान (पर्) : परिअद्विय वि [परिवर्तित] बक्कामा हुया (बार ४० पिक देशी पेचा १३ (२)। वेको परिभक्तिम । परिश्रक्ष सक [परि+क्षद्] परिश्रमख करता १ परिवर्शीत (पारक १६६) । वह परिषदंत (गुर २, २)। परिश्रहण म [पर्यटन] परिश्रनल (स

ttv) ı परिमक्तिकी [कि] १ इति शाहा २ वि बुर्ख, देवपुत्र (रे ६ व) । परिभव्जि वि[पथटित] दरिमान्त कट्टरा [मा (तिस्ता (+))

परिविद्वास कि [के] प्रकटिश व्यक्त किया इमा (पड्)ः परिभवद यक पिरि + क्या नहमा 'परिवद्गद बानएस्' (द्वे = २२ )। परिश्रद्ध एक [ भरि + वर्षेय ] वहला ( Y 77 ) I परिमाहित की [परिकृति ] निशेष कृति (प्रकारश)। परिश्वविद्धां कि पिरिवर्षिम् की वदाने माबा 'समस्यस्य बंदपरिमहिए' (भीप) :

परिश्वविद्वल वि [ पर्याच्यक ] परिपूर्ण (पीप) । परिअक्टिश वि [परिकर्पिन, क] बॉवने-नला यक्तर्बंड (चौप)। परिश्रविद्वा वि [परिकृष्ट] बीना ह्या माइट 'नत्स समरेत् रेवद इयनयमदिमिक-परियमुत्यास । ब्यपरिवादिवनपविरिकेश-कतानी व्यवस्थाना (सूचा ११)। परिजय र् [परिश्वन] १ परिवार, कुटुम्ब, पुत-कतन सावि पालनीय वर्षे । ए अनुवद स्तुतामी (वा २०६) पत्रक पि ६६ )। परिअत्त देवो परिश्रोद - शिवप् । परिश्रत्तर ( Y ( E 2) 1 परिश्रम् केवी परिश्रम् = परि + कृत् । परि यत्तद् (र्मान) 'नदुष्प परिमात्तर कीवी' (वे ६ ) परिवत्तप् (बना )। नक्क परिव चमान (महा)। परिभक्त देवो परिवाह = परि + वर्तम् । तंत्र-परिवर्त्तेत (तंद १)। परिञक्त देशो परिश्रह = परिवर्त (भीप)। परिभन्त दि दि । प्रका फैबा हुमा: न्हरना-धर्मारवर्षकाड्डो करपरियता वार्व (हे ४ tex) :

परिश्व व पिरिश्ची क्वत ह्या (विशे)। परिश्रचण देवो परिश्रद्रण (यवः) 'बाह्यस्य करवारेपरपरियक्तस्य क्रिक्सियाः । भरना विविजयसम्बद्धाः कुत्वानस्य मुर्पीतं वर्ष (तुपा ६३३)। परिमत्तवा देशो परिभट्टपा (धन)। परिञ्चनाम 🖦 परिश्रच । परिभक्तमाणी 🖈 [परिवर्तमाना] कर्ने प्रदुष्टिनिरोग यह कर्म-प्राप्ति वो सम्ब प्रदृष्टि

के शत्य मा उदय की चीक कर स्वयं कत्व या धरम को प्रान्त होती है (पैत्र १ १४ १ श्री कम १, १ थी। परिश्रक्ता हो [परिवर्ता] कार देवो (कम्म 2. 2) 1 परिव्यक्तिक वि [परिवर्तिक] र मोहा हुमा कालियम् परिमात्तम् (पाम)। २ देखो परिश्व दिय (मिर्ग)। परिभर तक [परि+पर ] देवा करना। बह्र परिवर्रत (नार-शङ्क ११८)। परिवार वि कि सीन निमान (देव २४)। परिश्रर पूँ पिरेक्ट्री १ वटि-वन्पना 'सन्तद शक्तारिमरमदेशि (मवि)। २ परिवार, विराण-विकामियगरियरक्रु विविध वस्त खबूमतिमिधेई (पतंत्र नेहर १४)। परिवार प्र [परिवर] सेवक भूत्य भूगु-शिज्येतै रस्कार्यासमञ्जूषमम्बद्धमानपीएईएएँ (प्रवट) १ परिधरण व पिरिचरण विवा (धवीय 48): परिवरणा को पिरिकरणा देवा (मन्मस २११)। परिवारिय वि पिरिकारित परिकृती १ वरि 'इपनयरहर्वोद्दनक्रकारिवरियो' बार-पुक (महा, भवि स्रष्ट)। २ परिवेष्टित 'तसी त समायरिएकमण मुद्दमुई बाल येथे समेवया परिवरिया सन्तरोपेर्स (महा सिरि १२८२)। चरिक्र≅ सक गिम ] बाला गमन करता। परिमन्द (इ.४.१६२)। परिश्वत ) प्रेशी दि पात्र पतिया ग्रीजन परिव्यक्ति रे पान (मान के व १२)। धरिमस्त्रिक वि [गत] प्या पृथा (दूया)। परिवद्ध देशो परिवद्ध । परिवद्ध (हे ४ १६२)। चंड परिभ छक्रम (कुमा)। परिमारम वि [परिभारक] शेवक, पूर्य (बाद १६) । की रिमा (मिन १६६) । परिजाध सक [बटप्] बेट्टन करना बरेन्ना । परिपाचेड (ई ४ ११) । परिकास वि दि । परिवृत्त, परिवृत्तिक 'सो क्यह बाम-स्नापमाण-मुद्रवाधिवसभारियाम् ।

लिक्दिनिवेचित्रसम्बद्धः व को बहुद्र बरामार्स' (पुरुष्ट) । परिभाद रेखी परिवार (ए।वा १ क छ। ४२ मीप)। परिआस्त्रित विधित नगर हुमा बेहा हवा (हमा पाय) । परिआव देवी परिताव (रम ६, २ १४)। परिआवित्र सक [पया+पा] पीता। परिमाविएका (मृथ २, १ ४१)। परिश्रासमेव (घर) च िपर्यासमन्दान न वारों भीर से (भवि)। परिइ सक पिरि + इ | पर्यटन करना । परि र्यवि (उत्त २७ १३)। परिश्रणम वि पिरिकीर्ण विश्रम (सम्मत 2X4) 1 परित्रद् (शौ) वि [परिचित्त] परिचय-विशित्र शत पहचाता हमा (मनि २४१)। परिष्य सक पिरि + चुम्ब ] भूम्बन करता। परितंदा (मवि) । परितेषण न [परिश्वम्यत] सर्वतः पुम्बत (मा २२ हाम्य १६४)। परिचना भी [परिचुन्तना] कार रेक्ट 'पॅग्परिजंबसापुनन्त्रंग स पूर्ता विराहसीं (गर)। परिडाम्ब्य वि [प्युक्तिक्त] सर्वेदा स्वक परिष्ट्र वि [परितृष्ट] विशेष तुर्र (स ७३४)। परिजय कि [क] प्रोतित प्रकास में समा हमा(दे५ १६)। परिजिम वि [पर्युपित] वासी ठएउ६ भारु निकता हुन्य (भीजन) (दे १ ६७)। परिकार वि वि परिगृत वाम एस प्रतार 'रुप्रतिनयाद संद्वार मा एँ वारेड् होर परिक्रम । मा बहुएकारमध्ये पूरिनायती किविमाहिद' (पा ११६)।

परिकरण न [परिपूरण] परिपृत्ति (नाट---

परिएस देवी परिनेस = परि + निष् । नवड

परिपक्षिज्ञमाण (भाषा २, १ २,१)।

रकु ५) ।

परिकस देवो परिवस = परिवेश (स ११२)। परिभोस सक [परि+तोपय] संग्रु करना जुरी करना । परिमोश्चर (मर्वि चक्)। परिज्ञास पू [परिकोप] पानन्द एँडीय मुद्रो (मे ११ ६ घा ६०; २ ६ घ ६ प्रसारक है। परिज्ञोस प्रक्रियरिद्वेषी विक्षेत्र होत (मरि) । परिजोसिय वि पिरिनोपिनी संतर किया हमा (से १३ २६ मनि)। पर्सिन देको परी = परि + इ.। परिकृत्य सरु पिरे+ काक्स्रा रे विदेव धीनगण करना। २ प्रतीका करनाः परिषंत्र (एत ७ २)। परिकंद व [परिकास] घाम्य विस्ताहर (हम्बीर १)। परिकायि वि [परिकाम्पम् ] बाउराव कॅपलेबाला (गड४) । परिकापिर वि पिरिकान्यत् विशेष कांपने-शला (छए) । परिकृष्टिक्य वि [परिकृष्टित परिपृश्तेत (ध्यम्)। परिकट्टलिय वि दि रे एक र रिएमेक्टर (रिंह २१६)। परिकद्दशक पिरि÷ कृप्] १ पार्ट भाग में बीबना। २ प्रारम्भ करना। बह परिकटनुमाम (धन)। संक परिकटिकालम (पंचय २)। परिकटिय वि [परिकठिन] धारत्व विकत (महरू)। परिकृष्य सक [परि+कश्ययू] निमासन करना। २ कसना करना। परिकानवंति (मुख १ ७ १६)। संक्र परिकाप्तिकाम (बेक्स १४) । परिकृष्पिय वि [परिकृष्टिपद्य] दिन काटा हमा (पएड १ ६) । देवी परिगरियम । परिकरनुर वि [परिकर्तुर] विशेष कारा--विवयवध (पर्वत्र)। परिकम्म ) न [परिकमम्] १ प्राप्त-विदेश परिक्रमण 🕽 का बाबात, "शंस्कार-करात 'परितम्मं निर्दियाय बल्बुरी प्रशासिक्षेत

श्वापित (य. ११)।

म्बाप्त (पर १ १६)।

परिकासमा-परिकास

(इन्न २७१: क्या पर) । २ संस्थारका कारण-बात सक्स (श्रांति)। ३ गरिस्त विदेव । ४ बंब्यान-विदेश प्र वर्ष्य की नत्त्रना (ठा १ --पन ४६६) । १ नियादन (पद १३३)। वरिक्रमणा थी कार देती: चित्रपत्नी दिल्लं न हस्य परिचम्पणा नव विलाली (रिमे ६२४) नम्म १४० तेशीम १३७ धार्व १४)। परिश्रमिय रि [परिश्रमित ] परिशर्म रिरिष्ट्, संस्कारित (४९४) ।

परिकर देलो परिकार = नरिनर (पिन) । परिस्तान म पिरिस्तानी क्रानीम भागर परिवारताच्यावस्त्रावृतिसमर्थे (तुरा ६)। परिवासित्र वि [परिकासित] १ पुत्र, सहित (पिरि १ १) । २ म्यान (नमात २१६) । १ बाला 'धेर्यानारित्र निवयमें न यन्द्र इह पीर्व (वर्गी (२५)। परिश्वमणा भी [परिश्वपतना] बाग्छा 'इरियारिकातगार्ग्यक्रमंत्रुमा' (नुता ३) । परिर्धातम रि [परिरिधिन] गरंडीकार न रशित पर्गवाना (नाव) ।

परिक्रीबार वि पि स्क्रीपरा विकाय विकास रिकामा (महरू) परिक्रमण म [परिक्र म] धौनार (एउर)। परिषद्ध सक [परि + कयव ] प्रशाल बरस्य बन्ता । बरिप्रदेश (उस) बरिस्रहेनू (क्या ६ कर) वर्त शास्त्रीहरूमह (दि १४१) । द्वा परस्टा (पीर) परिष्ट्रण न [परिष्ठयन] बाल्यल प्रत्येत (नुस २) । चंदेरदणां की [परिकाशना] बनर रेगो

(बराव) वरित्रहाकी [परिक्रमा] १ बज्जीतः । २ बर्लन रिष्ठ १२६) पार्शास्य मि [परिक्षित] प्राप्त बारयात (मरा) । वर्शका देवी परिक्रिया "दिश्यावासकान

बार्तरमन्तर्भ (स्ता) र

(का २६४ हो)। परिकितेस वर्क [परि+क्रोसम्] दुव्या करना, हैएन करना । परिक्रिनेसंदि (अय) । संह- परिक्रिजमित्ता (भा) । परिकास प्र[परिकात] पुत्र कावा, रेक्सी (मूच २ २ रह बीग स ६७% वर्गसं १ ४)। परिश्रेष्ठिर वि पिरिश्रेडिन् विदेशक बीहा परनेशना (चगु) । परिकृतिय वि [परिकृतिका ] अहीभूत (सिमे १०६)। परिकृतिस वि [परिकृतिस] विदेश वक (सर ११) र परिकृतः वि [परिकृतः] सत्तन्त कृतित (मर्पनि १९४)। परिकृषिय वि [परिकृषित] प्रक्रिय कुड (लाबा १ अस्य वल)। परिश्रोसस्ट रि (परिश्रामस्ट) सर्वेका कोवल (दरा) । परिवान वि [परामास्त] परावन-पुन्त (नुब 2 2 × 22) 1 परिदान सक पिरि+ क्रम् ] १ पार ने चनता। २ नदीर में जला। ६ दरावा बारता । अ.स.स. पराज्य वरता । वरिद्यक्षीयः (र्रोग ४६)। बरिज्ञमंत्र (र्रोग १४)। वरियमव(सी) (रि४=१) । वक्त परिश्रमंत (नार) इ.परिकमियक्य ( लावा १ र-पन १ १) वी परवस्म (नुस १ e 1 7): वश्किम रेलो पश्चिम = पण्डम (लाबा १ १ नच बन १ १४) । वरिद्यादम रेगी परिवृद्धिय (मृत १ )। वरिवास देगी परिवास=वरि+वव्ः

परिहासीर (रि.४)

रि 🖘 ।

पर्यमा करना । परिभाग परिम्माः परिमारः परिमानि

परिक्रित कि पिरिकीर्जी र परिवत केटिंग. (धोव व सामार४)। धंत परिकेल ध निकारिकसुराधिकार्थे (वर्तीक १४)। २ (क्व)। इ. परिकित्यस्य (क्रल)। परिकलम वि पिरीक्षकी परीका करनेवामा परिकितंत वि [परिकास्त] विदेव क्रिल (मुपा ४२७-था १४)। परिकटाञ्च वि पिरिक्षत् । पारक वितरी बार हमा हो बहु (में ८ ७३)। परिकाम प्रियमी १ क्यरः इतिः वहनपत्त्ववरम्य जोपहापरिस्तयो निर्म (चाव क) । २ लाग भारत (चावर) । परिकतान व [परीभाज] पर्यक्षा (ब ४६६ कष्णुनुपा४४६। सुप्ता १ ७ महि)। परिकरममा की [पराकृषा] परीका (परम 42 33) / परिकत्तमाण देवी परिकतः। परिकास यक पिरि + समझ । स्त्रवित होना । यह परिकारलीय (के प्री १७) । परिकलक्षित्र नि पिरिस्पवित्री स्ववंग-प्राप्त (गि.६.६)। परिकास की [परीका] परक बाब (ता:---बलिदि २२)। परिकताइभाग वि दि दिर्गाल ( बर् )। परिकास वि [परिसाम] व्यवस्य इत (उत्तर ७२) गाट---रामा ३)। परिक्रिय वि [परिशिम् ] परवनेगवा परीक्षक (भा १४)। परिकित्त सं पि पिक्षित्ती १ वेदिन केय हुधा (बीपः पाम में १ १२। क्यू)। र सर्वेशा दिल्ड (भाषन)। १ चार्चे मीर से स्वान्त (चंद)। परिक्रिय मि परिक्षित विवरी परीजा वीय<sup>8</sup> दो बद्ध (मान १४)। परिकियाय तक [परि + क्षिप ] १ केहर बरताः २ जिल्लारं करताः ३ व्याप्त करना। ४ केंद्रमा "एवं नुबर्धकरही वर्धित्वद बादुस व वयहाँ (ट्राइ३ बीरम ( ६)। वर्ग परिस्थितीयाना (ति बर्धिंग्यांबय रि. विश्वक्रियों नेता ह्या (इन्नीर १२)। परिचय वर [परि+ईश्रे ] बलाना बरिकराय रि [परिक्षेप] वेच, वर्डिय (का

यम १६: वनः धीर) ।

३ व्याप्त करना । श्रेष्ठ परिगेतु (श्रेष्ठ) ।

'प्रकारकमारापरिवाधियसधीरी' (महा) । परिसाम वि [परिद्वाम] वर्षि दुवैस विशेष क्रुय (दा ११६)। परिक्षित्त देवो परिक्रिक्त (सए)। परिशिष्ठ देखो परिकित्सव । परिश्विक्ष (र्माव)ः 'राया तं परिविषक् दोहरककरेख मक्त्रप्रीम (सम्मत्त २१७ वेदम ६४६)। परिस्थिय रेको परिस्थित (स्रा)। परिख्नहिय वि [परिक्रवर्ष] शक्तिय स्रोत কী সাতে (মৰি)। परिलेश्य नि [परिलेदित] निरोद जिल क्या हुमा (प्रश्) । परिसेद (ती) पू [परिकेद] विशेष चेद (सप्त १ ८)। परिलेग सक [परि + लेव्य्] प्रक्रिय बिल करता। परिवेदद (एए)। सह परिसंहिप (पप) (स्वर)। परिकेविय (भग) देखो परिकिविय (प्रक्त) । परिगंत भा परिगम । परिगण सक [परि+गणय] १ वर्णना करना। २ विन्तन करना विकार करना। वक्त-'एव वक्का यम पमस्यस्य ति परि गर्णतेण विद्याविधी राजां (महा)। परिगप्पत्र न [परिकल्पन] कस्पना (धर्मस 458) 1 परिगप्पणा की [परिकरपना] क्यर देखी (पर्नर्स ६ ६)। परिगरिपय वि [परिकृषिपत् ] वितकी करपता भी परे हो नह (स ११३ भर्ते सं ६१६)। देखो परिकप्पियः। परिगम सक [परि + गम्] १ वाना

परिकलेवि--परिघग्पर

करनेवासा (उत्त ११ ८)। ारिलोध पुँदि काहार, कहार, बनावि

बाह्यक मोकर (वे २, २७)।

(उप १८६ हि)।

**3**5) |

रिक्लेबि कि पिरिक्षेपिन् विरस्कार

गरिकारू सर्कपिरि+**कर्य** दिनाना

सुनताना । कन्छ 'परिस्तरनमास्त्रमस्यदेशो'

परिकाण व पिरीक्षण | परीक्षा-वरण परीका

सेने परवाने वा बाँच करने का काम (पन

परिस्तविय वि [परिक्षपित ] परिक्रीयः

परिगमज न पिरिगमनी १ ग्रेण पर्याय ्र'परिमार्थ पण्याची प्रतीकहरतंद्रकोति एक्टबा' (सम्म १ ६)। २ समन्ताब बमन (निष् १)। परिगमिर वि [परिगम्यू] बलेवाना (स्र्यु)। परिगय वि [परिगत ] १ परिवेष्टितः 'मए स्तवन्युरापरिवर् (छवा मा १६) 'बहुपरि यक्परिनया' (सम्मत्त २१७)। २ व्याप्त 'विश्वपरिक्याहि दाडाई' (स्वा) । परिगर प [परिकर] परिवार, श्रेषाल ह हरियन्वं परिवर्षवृद्धकालमारीया शार्थं (वर्मस १२१)। परिगरिय वि पिरिकरित देशो परिखरिय (सुपा१२७)। परिगम्ड सक [परि + गर्क] १ फन वाना क्षीसा होता। २ फरना टपकता। परिकाह (काक)। कहा परिगर्छत (परम ११२ १६ तद ४४)। परिगक्किय वि [परिगक्कित] वना हवा परिशीख (कुत्र । महा सुपा = ७३ ११२)। परिगक्षिर वि [परिगक्षित] यस वानेवासा धीस क्षेत्रेवासा (सर्ग) । परिगद् देवो परिगेण्ड । एक. परिगद्दिश्र (भा ४८)। परिगद् देवो परिगद् (कुमा)। परिगद्दिय वेको परिम्मृहिय (बह १)। परिगा सक [परि + गै] पान करना। क्ष्क परिगिक्यमाण (ग्रामा १ १) : परिगासण न [परिगासन] मातन सामन (**परह** १ १)। परिगित्वमाण रेखी परिग्रा। परिगिम्स पारागामः परिगितिमस्य हेनो परिगेणः । परिनिष्द देशो परिनेष्द्र । परिवित्रहर (धाष् १) । यक परिनिण्ड्रंत परिनिण्डमाण (सूप २ १ ४४३ हा ७—पत्र ६०३)। परिनिक्षा मक [परि + ग्लै] ग्लान होता । वक्र परिगित्मयमाप्य (म्यवा)।

परिगुणण न [परिगुणन] स्नाम्याय (मोन 42)1 परिगुष सक [परि + गुप् ] १ व्याक्टब होताः। २ सक सतत भ्रमण करताः। सङ्क परिगुर्वत (स्व)। परिगुत धक [परि + गु] राज्य करना। बद्धः परिगुरत (राष)। परिगुक्य बन्ह [परि + गुप ] १ व्याकृत होता । २ सक सतत भ्रमण करना । वक्र परिगुरुवंत (छ १ -- पत्र ५ )। परिगूधक [परि+गू] शब्द करना। क्क परिगुरुवंत (ठा१ -- पत्र १)। परिगेण्ह)सक [परि+मह] ध्वरण परिग्गद्व करना स्थीकार करना (प्रामा) । वक्ष परिग्गहमाण (भाषा १ ८ ६ १)। धंक परिगिषिम्हय परिभक्तूण (राजा वि रत्र)। के परिषेश्व (विशेष्र)। ह परिगिम्क परिधेतम्य, परिधेत्तस्य (स्त १ ४३ मुगा ३३ सूच २,१४० पि પ્⊌)ા परिगाम के परिगम (इस १ २ ८)। परिम्मक् द्रेषिकिक्षी १ प्रहेख स्वीकार । २ भन मादिका संप्रह (पर्राह १ ३ मीप)। क्ष ममस्य मुच्का (ठा १) । ४ ममस्य पूर्वक विसका सदह किया बाग बहु (शाका, ठा १ १। भर्म २)। "बेरमण न ["विरमण] परिषद्ध निवृत्ति (ठा१ पराहर ४)। ार्वत वि [ वत् ] परिवाह-पूक्तः (माना पि १६६)। परिग्महि व [परिप्रहिन्] परिष्राह्मुक (सूम १ १)। परिगादिय वि [परिगृद्दीत] स्वीकृत (उवा योप)। परिगर्दिया भी [पारिमहिकी] परिवह सम्बन्धी किया (ठा२ १ तव १७) । परिषग्पर वि पिरिधर्परी बैठी हाँ (मानाम): 'इरिएो मनइ मिर्' निष्टयस्वयूरि

बन्बरा बार्सी (बज्रह) ।

करना यनती करना। परिकुणह (भप)

(पिंग) ।

[परि + चह्न् ] क्रिय कता। परिवास १ ई [परिस्पारा] व्याप, मोक्स
परिचार (वैचा ११ १४) छए ०६२ वि स्था परिचार (वैचा ११ १४) छए ०६२ वि स्था कर्ष काल कर्म कर
प्रकेष्ठ ( क्या ) । [परिचित्त क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या ( प्रोण ) । यो परिकेष । परिचित्तक ( प्रोण ) । यो परिकेष । परिचित्तक ( प्राण ) । यो परिकेष व्याप । यो प्राण । यो परिकेष व्याप । यो प्राण । यो परिकाष । यो प्राण । यो प्राण । यो परिकाष । यो परिका

किमानगाही यह (वें **स** २ । गुर ९,

परिवयक्ष न [परिस्ववस] विकाम (स

परिचाइ है [परिस्थामिन्] परिव्यव करते बाला (धीम धनि १४ )।

१२ । नुता४१ : नाट—तपु १६२) ।

11) (

वेराह्मा (दे६ २४) नीम रे)। १ वरि

परिच्छेन र् [परिच्छेर] फिर्ण शिवन

परिकास नि [के परिकास] नक् क्रोब

स्तक (दे १३ १७)।

(पीग) ।

(विते ११४४ थ ६६७)।

(k (Y) 1

(तुवा १२६) ।

पुरिचयन वि [परिचल्लाम] विवेदन पत्त

पारचरणा 🛍 [परिचरमा] पेवा प्रकि

परिवत्त देवी परिवत्त (महा भीप)।

परिच्छे अग वि [परिच्छेदक] निषय करने-वासा (उर बद्दे हो)। परिच्छेटा वि[परिच्छेच] क्यू वस्तु जिसका क्य-विक्रम परिच्छेर पर निर्मर पहला है-राज, वक्र मादि इच्य (भा १०)। परिच्छव देशो परिच्छेश = परिच्छेर (वर्मरी १२९१) । परिच्छेद्रग देवो परिच्छेशन (वर्गस १ )। परिच्छोय वि पिरिस्तोकी नोवा महा (भीग)। परिश्रक देशो परिन्छेक (मा १०)। परिजापिय वि पिरिजाल्यिस | उक्त, विषय (सूचा ६९४) । परिज्ञञ्जर वि [परिज्ञजेर] बर्विजीएँ (उप २६४ टी ६व६ टी)। पविञ्रहिस वि [परिजटिस] प्रतिराग वटिम (यउइ)। परिज्ञण देवी परिक्रण (बना) । परिजय सर्कपिरि + विश्वी प्रपट करना धनगण्या । सङ्घ परिक्रविय (सुध २ 2 ¥ ) 1 परिजय सक [परि + अप् ] १ वाप करना। २ बहुत बोलना बक्बाद करना। छेड्र 'स भिल्यू वा भिल्यूणी या मामालुगाने दूदक माणे यो पोद्दि वृद्धि परिज्ञविया २ मामा-शुग्रमं दूरन्त्रेमा' (याचा २ ३ २ ८) । परिजवण न [परिजयन] बाप व्यक्त यन्त्र बादिका पुनः पुनः बच्चारण (विधे ११४ ) बुर१२२१)। परिजाइय वि [परियाचित] मांना हवा (वर्ष १ ४३)। परिवाण वह [परि+का] सन्दी तरह धानना । परिनासाह (बना) । बा परिजा यामाण (बुमा) । ववह परिजाणिक्समाय (ए।वा १ १) दुमा) । यहः परिजाणिया (gut tttit e, eige १) । इ. परिज्ञानियस्त्र (याचा रि 1 ( OF परिजिम रि [परिजित] सांग जीत जिल बरपूर्य वृद्ध किया क्या हो बहु (सिप्ते 422) 1

परिच्छेजग--परिणम

परिज्ञुष्ण वि [परिजीर्ण] १ फटान्ट्रटा ब्रत्यन्त भी एँ (ब्रामा) । २ दुवँत (बत्त २ १२)। १ वरिक्र निर्वत परिवृह्णो छ वरिद्वी (नव ४)। परिज्ञाण्या देशो परिज्ञामा (ठा १०—पत्र **ਬਰਪ ਹੈ)**। परिजुत्त वि [परियुक्त] सदित (संबोध १)। परिज्ञम रेको परिज्ञुण्य (३५ २६४ धे) । परिजुला की परिजीर्जा, परिधुना । प्रवरमा विशेष विश्वता के कारण की हुई बैजा (ठा१ -- पत्र ४७३)। परिज्ञासिय रेखी परिमुद्धिय (अ ४ १--यत्र १८७३ भीप) । परिज्ञसिय म [पर्यु पित] धनि-परिवसन शत का बासी रहता बासी (क्ष. ४ २---पत्र २१६) । देवो परित्रसिम् । परिजार सक [परि + ज] सर्वमा जीता होता। परिवृद्ध ते सरीरम (उत्त १ २६)। परिवृरिय वि [परिजीर्ज] प्रतिमीर्ज (प्रणु)। परिकाय पु दि ] इन्स्ड प्रदश्य-विशेष (पुरुष परिकास देवो परिवारिय (इ.स. १. २ ४)। यरिश्मामिय वि पिरिष्यामिती स्पान (करना) दिन्या हुया (तिचू १) । परिग्रुसिय । वि [परिग्रुष्ट] १ देवित । परिग्रुदेसय } २ प्रीत परिग्रुप्टियकामयो परिभृतिम । गर्धपमोपर्शवर्ष (मन २४ पत्र १२३ १२४ हो। ३ परीच्या का ४ १—पत्र १वद थीः (र २ ३)। परिद्वप सक [परि+स्थापम्] १ वरि व्याय करना । २ संस्थापन करना । परिदृषेद परिदृषेण्या (माचा २, १ १ १) बवा)। संक्र परिद्रवेऊल परिद्रवत्ता (शह ४ वस)। देशः परिष्ट्रचन्तरः (कस) । वशः परिद्वर्षन (निष् २) । इन परिद्वरप परिदूरवस्य (बत्त १४ १) रहा । परिदूषण व [प्रतिद्वापन] प्रकिष्ठा करावा (बेह्य ७०६) । परिद्वाम न [परिधापन] परियाम (इस पर १६२)। परिद्वाना ध्ये [परिशापना] क्यार देखो 'व्यविद्वितिदृष्टिक्षणाएं बाउत्स्वायी य गुरस्तमी-

समिन (बह ४) ।

परिदूर्वणा 🛍 [प्रविद्यापना] प्रविद्या करामा नेयावच्यं जिल्लिक्स्बल्परिद्ववलाइनिल किन्दै (बेह्य ७७६)। परिद्रविय की [प्रतिष्टापित] संस्वापित (म्बि)। परिद्वा देखो पद्भा (है १, १८)। परिद्वार वि पिरिष्टापिन् ]परिवामी (नाट---साहि १६२)। परिद्राण न [परिस्थान] परित्याय (नाट) । परिदाय देशो परिद्रम हेक परिद्राविचय (क्रम्पः पि १७८)। परिदानम नि [परिस्मापक] परित्याम करनेवासा (मा")। परिद्रिज वि [परिस्थित] संपूर्ण स्य से स्पित (पद ६६)। परिद्रिक्ष देशो पहिंद्य (हे १ देव: २ २११/पद्मशासूर १ १४)। परिठय रेकी परिद्रव । परिठयह (धप) (पिंव)। परित्रधण रेखो परिद्वयण = परिहापन (पर---पाना २४)। परिपारेको परिणी 'परिएक बहुमाउ समर कन्नामां (वर्गीने ८२) । बद्घ परिर्णत (भवि)। संदू परिणिकण (महा द्वा ५६) १२७)। परिणइ 🖈 परिणति । परिणामः (ना १६८ः वर्मसं १२३)। परिर्णत रेको परिण । परिजंत वि [परिजन्तू] परिजान को प्राप्त होतेशला परिखंड हीनेशमा (विशे १४३४)। परिजंद सक पिरि + नम्द्री वर्णंग करना, स्तापा करना 'कारो परिवर्शता (१ कि)' (तर्भ)। परिणद्ध वि पिरिणद्धी १ परिगत वेकित 'सदुरमामापरिखदमुरम्बिमे' (उदा खाया १ ६--पत्र १३३)। २ न बेट्टन (छान्स t =) 1 परिषम दद [परि + णम्] १ ब्राप्ट करना । १ मक-कालारको प्राप्त होना। ३ पूर्ल होता, पूरा होता "रिक्ट्रनेसं तु परिल्मे"

(इत १४ २१) 'परिएमइ सम्मायी'

(स ६८४ भग १२ १)। वह परिणमंत्र,

परिवसमाण (ठा ७ शापा १ १- पत 1691 परिणमम् न [परिममन] परिणाम (बर्मंड Y42, 34 E ) 1 परिणामिश ) वि [परिजन ] १ वरियस ) (पाम) । २ वृद्धि प्राप्तः पाइ परित्तिक्यी कभी वह र्र कीमंति न मुखर्बि (बर्मिक क्र) : ३ सक्त्वान्द्रर को प्राप्त (हा २.१ – पद्रश्रेष्ठिक २६४)। अस्य वि वियस र बुद बुदा (लाया १ १--पत्र ४व)। मरिजयण न [परिजान] विशव (का १ १४ मूना २७१)। परिजयमा ध्री जार वैजी (बर्मीन १२६)। परिजय रेगो परिणम । परिएमः (कारा वरः मद्रा) । परिमाद पु [परिकाति] परिषय 'नह तुम्ब देश मन्त्रं परिशाई तत्त्राहेश प्रथमे (पदम १६ २४)। प रमाम तक पिरि + भमय न परिदात **परना। परिलामेद (ठा२२) । कन्छ** परिवासिज्ञमात्रः, परिवासज्ञसात्र (भग टा १ ) । देक परिवासिकाय (स्व ६ Y) I वरिणाम व पिरिणाम है। बारवान्दर बारैत क्तान्तरासाद (वर्मते ४७२) । १ रीवे नात के बन्दर ने उत्तम होनेतामा माध्य-वर्ष विदेश (द्वा ( ४---१४ २ ३) । १ स्टब्स्ट **धर्म (द्वा ६) । ४ यध्यामाय मनो-श्राह** (निकुर्)। १ वि परिणत परिवेदका "न्द्रिता बरिस्तामें (ब**ब १ ब्ट** १) । र्पारमामणया । 🗗 [परिणामन्द्र] परिए परियासमा । नाना स्थान्तरहरू (परान ३४--- वय अवश निते २२व 🕽 । पश्चिमय हि पिरियामको रस्मित करते कामर (ब्रा॰ १)। परिमामि रि पिरिमामिन् । चरितन होने । बाता (दे १ दे दे पाक १३) । बारण व ["बार"] बार्व-न में दरिशन होनेशना दारता उत्तारात बीरता (दरद २७)। बरिपामित्र रि पिरिपामि हो १ परिपान क्षण परितास में बराज । १ परितास र्षक्यो । ३ र्नुतरिहास । ४ व्यानी हेनः वै

क्ष्मदम्पारिहादस्यो परिकामित्री सम्यो' (RB RING TYEE) I परिणामिश्र वि [परिणमित्र] परिवृत हिना क्या (पिंड ६१२ मन)। परिजामिजा 🛍 [पारिजामिक्री] बींब विशेष धैर्व काल के धनवब से उराम होते-वाती बॉड (स.४.४)। परिवास वि [परिकात] काता हुमा परिविष्ठ (पबम ११ २७)। परियाण सक [पारे+ नायम् ] विवास करानाः परिछातम् (कुन्नः ११६)। इ परिजावियम्य परिवाबनम्ब (रूप १३) (XX) परिवादण न [परिजायन] दिशाह करान्य (मृत्त १६८)। परिवारिक वि परिवारित विश्व विश्व विश्व करावाबना हो बद्धा (सूपा १६६: वर्मीक (48 TH (4)) परिवाह र् [परिवाह] १ लम्बाई, विस्तार (शामा से ११ १२)। २ परिचि (स ३१२) ध्वर २)। परिजिज्ञम रेको परिज । परिचित देशो परिजी = परि + यन। परिणिक्षीत हैको वरिर्का = परि + स्त्री । परिनिज्ञत स्त्री पिरिनिर्भेषी विवाहः स्व (प्राप्त ३१ ६)। परिणिक्तिक नि [परिनिर्जित] गतन्त, पराज्य-प्रकृष (रहम ११, २१)। परिणिद्रा 🛍 [परिणिद्रा] संपूर्णन, समाहि (उबर १२६)। परिविद्वाय न [परिनिद्वात] यानन बन्द (विके ६२६) । परिविद्धिम रि [परिनिष्टित] १ प्रश्ने क्रिया हुमा क्षतरत रियाहमा (रमश १४)। २ बार-धाय (सम्बर्धः) माच ६० वंदा १२ १४) । ३ परिवास (वर १.)। परिविद्या ध्ये [परिनिद्धिता] १ इति विदेश निवर्षे से या तीन बार एक तीपन श्चिम एका ही वर पृक्ति संवीत की बा छीव बार की नोरनी (नियाई) की हुई सेन । १ धैलानियो समने बारकार पश्चिमार्थे शी

यानोक्ता की शारी ही वह बैद्रा (स्तर)।

परिविद वि पिरिजीती विस्ता निराह हुया हो वह (सस्य पर्वत)। परिजिम्बन एक [परिनिर\_+वापय्] धर्व प्रकार से सकिएन परिवास करना। संक्र परिणिक्यविव (क्स) । परिणिज्याग्रह पिरिनिर + भाी र सन्द होता। २ सकि पता मोझ को बन्द करना। परिक्षिकार्यक्ष (सम्)। सूत्रा परिकिच्याईनु (पि २१६)। नाम परि জিলান্তিরি (বর)। परिणिक्साण न [परिनिर्साण] नुष्कि, नोव (पाचा कप्प)। परिणिक्द्र की [परिनिर्णात] स्पर देवी (पत्र)। परिजिस्कृष देखो परिनिस्त्रम (मीप) । परियो तक पिरि+णा र विवाह करनाः २ थे काना । कब्दूर, परिणिक्रोत, परिकीय-माप (कुत्र १२७) भाषा) । परिजो सक पिरि + राम ] बदार लेक्सका। नकः परिणितः (स ६६१) । परिणीभ नि पिरिणीती निसना निगर क्षिमा बबाहो बहु (बहा) प्राप्त ६३३ स्टा) । परिकीस्त्र नि पिरिनीस्त्री स्वेका इस रेव का (सरह)। थरिये 🖦 परिजीः परिजेद (महा रि You) । केक परिलेखें (क्या र )। कें परिजयस्य (तुपा ४४३ दुश ११४) । परिपेषिय (धर) रि (परिप्रामित) नित्रा विकास करावा बना हो बाह (वर्छ) । परिणेक्यम क्यो परिनिक्षम (शत रेक **42)** ( परिक्रम वि [परिक्र] बाता, बानरार (धाना t to t v) : परिषय देशो परिषया (धारा १ % ( X) I परिण्या सङ पिरि + हा विश्वना । वेर परिज्ञाय (भाषाः त्रव) । देश परिज्ञार्ड (री) (पनि १ १) ।

परिच्या क्षे [परिता] १ शान बानगारी

(पानाः बनुः तेना ६ १४)। १ तिनेष्ट

(थाना) । १ दवीनीयन स्वित्र (नूस १

१ १)। ४ हान-पूर्वक प्रत्याद्यान (ठा X. 2)1 परिण्याण वि [परिज्ञान] बान जानकारी (बर्मेस १२१३ बन प्र २७४)। परिण्याय देखो परिण्या = परि + सा । परिष्णाय वि पिरिकारी विक्रिय बाना हवा (सम १६, ग्राचा)। परिक्यि वि पिरिक्रिम् । परिका-प्रक जीय-बधी च परिएकी वह निकार परीसहरणीय (दव १)। परितंत वि पिरिदान्त । सर्वेग विजन निर्विद्य (लामा १ ४--पत्र १७ विपा १, १ः चन) । परितंतिर वि [परितास्र] विशेष ताम-मरुए वर्षेवाचा (पर्वट)। परिवास सक [परि + वर्जीय ] विस्त्रार करना । बद्ध-परिवास्त्रयेन (परम ४८ १ )। परिवद्वविय वि [परिवत] चूर फेनावा ह्मा (सस्)। परिवर्ध वि [परिवर्त ] भ्रम्यक पवना (गुपा K=) | परिवप्य बङ [परि + तप् ] १ संवन्त होना यरम होता। २ परवाचाप करना । ३ बृ:बी होता। परिवयक (महा कर) परिवर्णित (सूम २ २, ११) चा चोडूमारवाङ्गतस्य परितायन पण्या (बर्मनि ६) । होहः परित प्पिकम (महा) । परिवाप सक [परि+वापय्] परिवाप क्तजाना । परितप्ति (सूच २, २ ११) । परिवरपण न [परिवपन] परिवर्व होना (समार २ ११)। परितण्पण न [परितापन] परिताप उपनाना (सूम२२ १११)। परिवक्षिण वि [परिवक्षित] वना ह्या (स्रोप यम)। परिविषय वि [परिवास] परिवास पुरु (स्छ) । परिवाण न [परित्राम] १ रक्कण । २ बागुरावि बन्बन (सूभ ११२६)। परिवाद देवी परिवयम=परि+वापन्। इ. परिवारेयम्ब (१४ १७)।

परिनाय व पिरिवायी १ संतल काइ। २ परवाताय । ३ दुन्ब पीड़ा (महा-भीप)। यर वि किरी दुवीत्यावक (पडम 119 11 परिसाधन देशो परितृष्यम = परितापन (पीप) । परिवाधिक वि पिरिवापिव र चंवापिव (बीप) । २ वसा हुया (बोन १४०) । परिवास प पिरित्रास । सक्समाय होनेकला भव (गामा १ १-- पत्र १६)। परितृद्धिर वि [परितृटितृ] हुःजेवाना (स्र्स्स)। परिसद्ध वि [परिसप्त] होपन्नारंग संग्रूप (उन बेन्य ७ १)। परिमुख्यि वि [परिमुक्कित] वीमा हुमा (ਚਚ)। परितेक्ति केमे परिचय । परितोस्ट सक पिरि + तीख्य ने स्टाना। बङ्क 'ज्याबै परिकोशता खर्ग समर्रमणुम्मि ती दोवि' (सुपा १७२) । परिकोस एक पिरि + कोपम ] इंद्रा करना । भीन परितोसहस्ते (कर्नुर १२) । परिदोस प परिदोपी मानन्द सरी। (शाट-पासवि २३)। परिवोसिय वि [परिवोधिव] चंत्रर व्रिया ट्रमा (धए)। परित्त वि [परीत] १ म्याप्त (सिरि १८३)। २ प्रमार (सुमा२ ६ १८)। १ संकीय क्यिकी गिनदी ही सके ऐगा (सम १ ६)। ४ परिमित्त नियत परिमालकामा (उप Y(७)। र सपु कोटा। ६ सुम्ब, इसका (उस २७ ३ ११४)। ७ एक से लेकर धर्मक्ष्मेय भीकों का माध्यम एक से सेकर घर्रक्येय जीववाना (ग्रीज ४१)। 🗷 एक थीववासा (पएस १) । करण न िकरणी सबकर्धा(इप २७)। जीवर्ग विशेषीयो एक राधेर में एकाकी रक्ष्तेवाला भीव (पएए १)। पाँउ न ीनन्त्री संस्थानिकेय (कम्म ४ ७१: **व**१) : संसारिका कि िसंसारिको परिमित संसारनामा (क्य ४१७)। स्टेख व िसंस्थात । संस्था रिरोप (कम्म ४ ७१) ७६) ।

परिचल देवो परिवय । संह परिचलिक (स्कन ११) परितेष्त्रि (यप)। (पिन)। परिचा ) एक पिरि+ त्री प्याप करना। परिचाल | परिचार परिचामम्, परिचाहि परितासह (प्राप्त ७ पि ४७६) हे ४ २६८)। परिचार वि पिरिकायिन विकास की (सुपा४ १)। परिश्वाण न पिरित्राणी रक्टछ (से १४ ११ मुपा ७१ धारमानु दः सरा)। परिश्वानीयय पुन [परीवानन्यक] संस्था बिरोप (म्ए २३४)। परिचास के परिवास (कम)। परिचानसेक्षेत्रय पंत पिरीतासंस्पेयकी धरम-निरोप (धरा २३४)। परिचीक्य वि पिरीताकृती चेनिप्त किया हपा सपुत्रत (लाया १ १--पत्र ६६)। परिचीकर एक [परावी + कृ] मन् करना ध्देय करना । परिसोकरेति (भग) । परियोम न [परिस्तोम] १ मस्तकः। २ नि वक्र 'विवयस्तियोगपञ्चरं (धीप) । परिषंभिक्ष वि पिरिस्तम्भित् । स्वन्य विया हुमा (सुपा ४७१)। परिधु सक [परि + स्तु] स्त्रुति करता। कत्रकः परिधान्त्रंत (सपा ६ ७)। परिधूर ) वि [परिस्तूर] विशेष स्त्रत परिधूळ ) चून मोटा (पर्मेश बरेदा नेहम बद्दशाचा ११)। परिदासक [परि + दा] केना। कर्ने परि विश्वस् (भर) (पिप) । परिवाह प्र [परिवाह] संवान (स्त २ ८३ भव) । परिक्रिणा वि [परित्त] विवाहवा (विध १२६)। परिविद्ध वि [परिविग्ध] उपनिष्ठ (सूक्ष २ ३७)। परिविम्न के परिविष्ण (मूपा २२) । परिदेव सक [परि + देव] विद्याप करना : परिवेचय (उत्त २, १३) । बद्ध, परिवेचंत (पदम २६ १२) ४८, १६)। परिदेवाग न [परिदेवन] विवास 'तस्स क्षरणुद्धीवस्पारिकेक्षणुद्धावन्तु।ई विवाह (संबोध

४१ इति वो ।

परिपंधिम ) वि [परिपन्निक] क्रवर देखी (इम्मीर १२)। परिधानिर वि [ परिभावित् ] शैकृतेवाका परिपंधिम । (ह ०४६) इर १३१)। (सन्तु)। परिपक्त वि [परिपक्त्व] एका इस्स (एक परिष्णिय वि [परिष्नित] धरकत वैपादा ४३ वर्षि । ह्मा (सम्पत्त १९१) । परिपक्तिम (बप) मि [बरिपविता] विस परिश्वसर वि पिरिवृत्तरी बूसर वर्शनला हमा (पिय)। (बक्बा १२व- परुष्ठ)। परिपान दें [परिपाक] विपाक, करा पूक परिलद्ध वि परिलय विवष्ट (महा)। कानिविमधुवरिव्यक्तियो एव अध्यत्नेपती परितिकतम् देवो परितिकत्तमः । परितास (रमदा ३२ माना)। परिपाइस नि । परिपाइस ने समान्य नास मेड (कप्प)। परिनिद्धित देवो परिजिद्धिम (रूप्ट रैवा र्रमाना पुत्रामी रंग का (पद्धा)। परिपादिश वि [परिपाटित] प्राकृ हुमाः परिलिय तक पिरि + इ.स. | देखना धक-विवाधित (वे ७ ११)। कोकन करना । नक्क परिनियंत ( गुपा

१२२)।

इया (तुवा २६६)।

बाचना(मद्या)।

दिनाएस्ट्रेसि (मन) ।

परिनिवद्ग नि [ परिनिविष्ट ] उत्पर कैय

परितिष्य रेको परिचित्रका । परिनिकार

(भन) परिनिच्नाइति (इप्प)। भवि परि

परिक्रिमाण देवी परिविच्याम (ए।स. १

क) ठारी वग**रण पर १९ टो)** ।

परिजिम्बुड नोसंगो प्राप्त (दा १ र

थप्रत २ वक्षा रुप्त)। १ सन्त स्था

करना। परिपालक (अपि)। 🗲 परि पाजनीम (१वल २६) । संह, परिवासिड (पूपा ३४२) । परितिविद्य वि [परितिविद्य] विशेष निविद्य | परिपाञ्चन न [परिपाञ्चन] एतदा (इप्र २२ € सुपा ६ )। परिपाकिय वि [परिपाकिय] रक्षित (श्रव)। परिपासय [कें] रेको परिवास (के) परिपिभ सक [परि+पा] शैका, पन करवा। कन्क परिपिम्बीत (नाठ---परिनिम्बुध ) रि परिनिश्व र बुक् **वै**त ४ ) t परिपिजर नि पिरिपिष्टजरी निर्देष पीत धरिपूजरा वृं कि परिपूर्णकी की क्व कलने

रस्य पर्ताशका (महत्र) ।

परिपीछ एक [ परि + पीइम् ] १ नीक्या । २ पोसना, इकाना । परिपीतन्त्रा (वि २४)। संह परिपीस्त्वा परिपीस्त्र परिपीक्षियाज (सर राज माना १ १ 5 2)1 परिपीडिज देशो परिपीडिज (एक)। परिर्मुगत वि दि ] भेड़- इतम (1): भेगर व्यक्तिवर्षः परिपूर्णन्तः होतदः धिंडविनिहरूः गेयकु (ववि)≀ परिपुच्छ एक [परि+प्रच्या,] प्रता करना । परिपन्तम (पनि) । परिपुच्छाय न [परिप्रच्छान] प्रल प्रच्या विकासित (पारश्र परि 🗸 परिपुण्य } वि [परि [जै] संपूर्ण ( मण परिपुस सक [परि + स्पूरा] श्रेन्सर्ट परिपृत्र एक [परि+पृत्रम्] पूनवा।

का क्यक्त, ब्राह्म (श्रुमि १४) ।

(vfr) t परिवास सक [परि+पास्त्र्य] स्वरू परिपृष्टिका । वि [परिपृष्क] पूका हमः नुपा ६८७)। परिपुत्त मिर्रा करना। परिपूत्तई (के ४ ५)। परिपृक्त (प्रप) (पिप) । परिपूजन पू कि परिपूर्णकी नक्षि विशेष का नीड इसरी नामक पत्नी का बीस्वा (मिरे १४१४) १४६१) ।

परिपृष वि [परिपृष] श्राना हुश्रा (कृप्पः तंदु १२)। परिपर सक [ परि + पूरय ] पूर्ण करना, भरपूर करना । यह परिपूर्त (पि १३७)। संह परिपृरिक्ष (नाट-मानवि ११)। परिपृश्यि वि [परिपृश्यि] परपूर, व्याप्य (पुर २, ११)। परिपेक्क सक [परिप्र + ईश्च ] फैलना। वक् परिपेच्छत (यन्तु ६३)। परिपेरंत पू [परिपर्येन्द] प्रान्त मान (ग्रामा र ४० १ का सुर १४, २ २)। परिपेरिय पि [परिपेरित] विश्वको प्रेरखा की गई हो यह (सूपा १८६)। परिपेक्षत्र वि [परिपेक्षत्र] १ सुकर, सहज खबस मासान (से १ १९)। २ महद्र। १ निसार।४ वयक चीन (चन)। परिपेक्किस रेको परिपेरिय (बा १७७)। परिपेस एक [परिप्र + इ ] नेपना। परिपेषद्र (भनि)। परिपेश्चण न [परिप्रेपण] मेनना (मनि)। परिपेसक वि [परिपेशक] मुन्दर, मनोहर (धुपा १ ६)। पश्चिमिय वि [परिश्रेपित] मेका हुआ (मनि)। परिपोस सक [ परि + पोपम ] कु करता। भवड़ परिपोसिकात (चव)। परिष्यमाण न [परित्रमाण] परिमास (महि)। परिष्पत्र एक [परि + प्तृ ] हैरना गोहा लगाना । नक्क परिष्यर्वत (से २ २०) १ १३ पाम)। परिष्युप वि [अरिष्णुव] प्राप्तुत व्यास्त (सम)। परिष्युमा भी [परिष्हुता] शैवा निशेष (सम्)। परिष्यंद र् [परिस्पन्द] १ रणता-विशेष 'प्रभद्र नाबापरिप्यंदो' (गटड) । २ समन्तास् चलन (चार ४३)। ३ वेट्टा प्रयक्ता चीवा रंमेवि विद्यिम्म धावसम्मे वर बांद्रसायुर्वेशि। स-परिपर्धेको निय शीमा मनिशारसम्बर्ध व

(गडव) ।

परिएक्ट वि [परिस्कृत] शत्वन्त स्पष्ट (वे

११६ तुरभ एरेभ करि।

परिष्कृत पूर्विपरिस्फोटी १ प्रस्केटन मेरन । २ वि फोक्नेवाला विशेदका 'तुमभवस परिष्कृत केन कैमसा परवर्गतको (क्या)। परिप्कुर ग्रङ [परि + स्कूर् ] वसना। परिफूरदि (शी) (गाट-उत्तर २८)। परिएक्सण न [परिस्पुरण] हिनन वयन (सस)। परिप्कृतिस वि [परिस्कृतित] स्कूर्व-पुक 'बयस्य परिष्युद्धरिक' (शवि)। परिफंस पू [परिस्पर्शे] सार्व भूना (नि PA. \$55) 1 परिफंसज न [परिस्पर्शन] अपर 🖦 (का १८६ थी) । परिकास वि [परिकरमु] निस्तार, बसार (बर्मेसं ६१६)। परिभासिय वि [परिस्पृष्ठ] व्याप्त (वह ४ ₹ **७**२)। परिकृष देशो परिष्कृष = परिक्षुठ (पराग १ = प्राप्त ११६)। परिफुडिय दि [परिस्कृतित] प्रवाहण भग (पडम ६८ १)। परिकुर रेको परिप्कुर । परिप्कुर (स्कु) । बह- परिकृतंत (स्रुए)। परिफुरिभ रेको परिएकुरिय (६००)। परिफुक्तिञ्ज वि [परिफुक्तित] कुना ह्रमा कुसुमित (पिय) t परिफुस सक [परि +स्प्रश ] स्पर्ध करना **पू**ता। बद्ध-परिपुत्संत (बर्मीक १२६ { **₹ ₹**} 1 पर्फिसिय वि [परिप्रोहिन्द्रत] वींका हुवा (अस्यु १४)। परिफोसिय वि [परिस्ट्रुष्ट] कृता हुमा **उर**नारिकोशिकार बस्मोलरिपण्यन्त्रवाए भिक्तियाय रिएकीयर्थि (स्ताया १ १६) कर ६४५ थे)। परिवृद्दण न [परिवृद्दण] वृद्धि करवय (मूप्पे २२६)। परिष्मेत वि दि] १ निपिक्क निवारित । २ मीद बरपोक (दे ६ ७२)। परिकर्मेसिन (शी) नीने देवी (मा १ ) : परिकार वि [परिकार] पठित स्वक्रित (सामा १ १३ मुना १ १; समि १४४)।

परिकास एक [परि+भ्रम्] पर्यंटन करना भटकना। परिकाम ६ (प्रत्रु ७६ पनि चन)। मक्र. परिक्रमसंख (पुर २ ८७ ३ ४४ व्ह मीत्र)। परिकासण म [परिभासण] पर्यटन (महा)। परिष्ममिञ वि [परिभान्त] भन्ता हवा (वेद्द स्लामि)। परिक्रमीअ कि पिरिभीत नियन्त्राप्त (प्रक्रम 28 38) I परिचम्अ वि [परिमृत] पराभव प्राप्त (पुपा २५व)। परिमग्ग वि पिरिभग्नी भांग हमा (घारमानु १४)। परिभट्ट रेको परिष्मद्र (महा पि = र )। परिमणिर वि [परि + मणिषु] कहनेवाला परिमम रेको परिस्थम । परिमम (महा)। बह परिभमंद, परिमममाण (महा धए मनि धैनेव १४)। संक्रु परिभमिकण (प १८१)। हेरू- परिममित्रं (महा)। परिममिक रेको परिकामिक (भाव)। परिममिर वि [परिममित्र] पर्यटन करने वतना (धुपा२६६) । परिमव एक पिरि + म् । परावय करना विदश्कारना । परिमनद् (जन) । कर्म परि मिकामि (मोह १ a)। इ. परिश्रवणिक (शाया १ ६)। परिभव र् पिरिभव पणम्य विस्कार (धीप स्वप्त १ ३ प्राप्तु १७३) । परिमधंत पू [ परिभवत् ] पार्थतः वाष्ट्र शिविसावारी मुनि (वव १)। परिभवण न [परिमनन] कार देखो (राज)। परिभवणा भी [परिभवन] उसर देखी (पीत्र) । परिमित्रिक्ष वि[पिमृत] समिनूत (वर्गवि 1 (38 परिमाञ एक [परि + भाजय ] बाटना. विभाग करना। परिभाएइ (कप्प)। कर परिमार्गत, परिमार्गत परिमापमाण (माना २११ १८ स्ताना१ ७-- पन ११७:१ १ क्य)। क्यक्र परिभाइक

माण (चन)। क्षेत्रः परिभावचा परि भावद्रता (क्य धौर) । हेइ. परिमापर्ट (Fr tot) परिभावय वि [परिभाजित] विजय किया इया (याचा २. १ ६ २)। परिभाषीत देशो परिभास । परिमायण न [परिभाजन] बैटना देना (Ku (11) परिमान छ परि + भावय र पर्य धौषन करता । २ जलत करना : परिश्ववद (महा)। संक्र परिभाविकण (महा)। परिभावजीय (एक) । परिसादश्च वि [परिसादयित] प्रमादक क्विटि-कर्त (ठा ४ ४---पन २६६)। परिभावि वि [परिमाविन] परिवत्र करहे-बाबा (धनि ७१)। परिभास एक [परि + भापू ] १ प्रकि-पासन करना कालाः २ किन्दा करनाः परि बासक, परिवासीय परिवासक परिवासक (बत्तरे ६०२ समार ४ ६ स ७ ३६: विधे १४४३)। वक्त परिमास साम (परम १९ ६७)। परिभासा की पिरिमाया र धरत (संकेत ६ । माध १६) । २ विरस्कार । ३ चूरिए द्रीका विशेष (चाष) । परिमासि वि [परिमापिन्] परिकर-वर्ता 'राइडियररिमाती' (सम ३७)। परिमासिय वि परिभाषिती प्रविपारित भाष २१)। (दमनि परिसिद्ध क्य [परि + सिद्ध] भेरत करता । क्यक परिभिद्धासाय (क्य प्र ६७)। परिमीय वि [परिभीत] करा हवा (क्व)। परिभंद का पिरि + मझाी र दाना शीवन वरनाः धेवन वरना छेवनाः ३ बारबार परबोम में बेना । वर्ष परिश्वविकाद वरिप्राग्नह (पि १४६ नन्म २ ११)। बङ्ग परिमंद्रत परिमंद्रमाण (निष् १) शापा १ १३ कम) । क्या परिश्वकराज (बीय क्षप्रकृषः) कामा १ १ — पत्र १७)। देह परिभोत्त (रह ६,१)। इ- परिमोग परिभोत्तव्य (हिंद ३४ क्य)।

परिमंद्रम व पिरिशोजनी परिशेष (का ११४ हो । परिमुज्जामा को पिरिभोजना । उपर रेको (बर्ग ४८४) । परिमुक्त वि [परिभुक्त] विकास परिचीन किया भया क्षेत्रे यह (द्या ६ )। परिभुक्त । वि [परिवृक्त] वेष्ट्रित परिवृक्ति परिभय किपेटा हथा वेश त्या (भाषा २ 21 si 2 22 24) i परिमुख व [परिमुख] धनिमुख विरक्षा (सूच २ ७ २ सुर १६ १२१ फिब्य **क**रेश्वर सक्तो । परिमोध रेको परिमोग (बिध १११)। परिमोद्र वि [परिमोगिम्] परिपाय करने मला (पि ४ १) नाट—रुक्त ३१)। परिमोग व पिरिमोगी र बारबार धोन (ठा ६, ३ डी) भाग ६)। २ जिसका धार शर मोन किया कार वह वस सादि (धौप)। ३ जिसकाएक ही बार भोग किया वाय---को एक ही बार काम में लाजा जावा बक---भक्तर, पान धारि (क्या) । ४ वाल वस्तुओं क्स कीय (बाव ६) । १. बाह्येवल (पक्का ह \*) ı परिभोग र्पारमोत्तकः} केशे परिभुत्रः। परिभोत्त परिमञ्च छक [परि 🕂 सूज् ] मार्जन करना (पश्चिम्म १३)। परिमद्रश्र नि [परिमृतुक] १ विशेष नीमनः। रे सत्तन्त सुकर् तरत (वर्षस ७३१) ६२)। भी उई (विसे ११६६)। परिमरक्षिम वि [परिमुद्धकित] वार्थे भोर উ ৰহুপিত (৪০৯)। परिसंद्रधान [परिसन्द्रन] सनंबरण निपूरा (क्य १६ १)। परिमंद्रक वि [परिमण्डक] बृत्त बोलावार (ब्रुस २ १ १३) बत्त ३६ २२) स ३१२ यस्य द्वीपायस्यास्य स्थार् परिमंडिय वि [परिमण्डित] विमुक्ति दुरोक्ति (कप्प) बीसः तुर १ ११) । परिमंत्र वि [परिमन्तर] मन, बीवा (Par # wtt.) 1

परिसंधिक वि पिरिसधित । कलत वानी-वित (सम्पत्त २२६)। परिमंत वि पिरिमन्त्री भन्द, धराख (बर x 3x )1 परिमारा पत्र [ परि + मार्गम ] १ धने-पता करना चौतना। २ म गनाः प्राचेना करमः । वद्यः, परिसम्प्रासाणः (नाट-निक ६)। सङ्घ परिमग्गेष्ठं (महा)। वरिसरिय वि पिरिसार्गिन । कोव करनेशका (बा २११)। परिमक्षिर नि [परिमक्षितः] इयनेनामा (सपा ६)। परिसद्ध वि [परिसूद्ध] १ विसा द्वमा (धे ६ २० ४ ४३)। २ मास्टावित परिमद्व मेर्साहरों (से ४ १७) । १ मानित रोजिंग (क्य)। -परिसद्द सक [परि + सर्दव् ] मदेन करना । बच्च वरिमद्दर्भेत (गुर १३ १७२)। परिसद्दल न [परिसर्वन] मर्वन पानिङ (क्य भीप)। परिसद्धा की परिसदी हैकावन क्लाम पैचली-पैर स्वाता प्राप्ति (निषः १)। परिमान एक पिरि 🕂 मन् ] बारर करना । परिमद्ध (मनि)। परिसद्ध सक [परि+सङ्ग सुद्] १ क्यिया। २ महेन करना जो गरहानांच परिमलंड इरचु (कुछ ४३२) 'श्रुविस्तीसु ममकि परिमक्कि सवर्ग महादेशि की प्रयदि । करणकर्म कह गती महधर बद पारका हरहा। (मा ६११)। परिमञ्ज 🕏 [परिमञ्ज] १ क्षूत्रम-सन्दर्भाव ना मर्बन (स १ ९४)। २ हुक्क (कुमाः नाम)। परिमञ्जन [परिमञ्जन] १ परिवर्शन । १ निषार (वा ४९ पक्क)। परिमक्तिम वि [परिमक्तित परिमृतित] तिसका नर्रत किया नवा ही बहु (या ६३७) हे थ दश महा, बच्चा ११ )।

परिमहिष नि [परिमहित] पृक्ति (पडन

t () :

परिमा (मा) देखो पश्चिमा (मर्बि) । परिमाद सी [परिमाति] परिमाल "मिल मासीय प्राजीवस्थात व पंडियमर्थण मुगर परिमाद व' (मनि)। परिमाण न पिरिमाण नान माप नार (दीरा स्वयं ४२: प्रामु यक)। परिमाम प्रे [परिमर्श] शर्य (लावा १ ध वदर स ६ ४८: ६ ७६)। परिमास र् दि] नौका ना नाष्ट-निरोप (सावा १ ६—पत्र १४७)। परिमामि वि [परिमर्शिम] स्वर्धं करनेताना (दि ६२)। परिसित्त मीचे रेगी। परिमित्र सरु [परि + मा] नाता शीनना। पर्रा परिमिलन (मुपा ७७)। इ परिमिञ्ज, परिमय (पच १६ पत्रम ४६ २९)। परिमिश्न वि पिरिमिती परिमाण-पुछ (क्षा का इ. इ. चीप पण्ड २. इ.)। परिमिश्र वि [परिपृष्ठ] परिवरित वेष्ट्रित (बरम ११ भवि)। परिमिष्टा धक [परि + म्ली म्लान होना। परिमित्रादि (श्री) (दि १३६ ४७१)। परिमिक्षाण वि पिरिम्हानी म्लान विषक्षय निन्देन (मण)। परिमिद्धिर वि [परिमोधन् ] बरियाम करने-बाना (सल्) । परिमुज सक [परि+मुप्] परिवाल बरना । परितुषद (सछ) । परिमुद्या रि [परिमुद्य] परिपद्य (पूरा २३२ महा क्छ)। परिमुट्ट वि [परिमृष्ट] स्टूट (बा ४४) । परिमुण कर [परि + हा] पातना । शर पुरानि (दमा १ ४)। परिमुनिअ रि [परिकार] जाना ह्या (परन १६ ६१: नए)। परिमुत्त तक [परि + तुष् ] क्रोधे करता । या परिमुमंत (पा २०)। वह परिमु सिक्रम (क्रीर २१) । परिकृत वर [परि + मृत् ] रार्त करता, इतः । चरिषुणः (वरि) । र्परमुक्तान [परिकोचन] १ वर्षे । १

बार्यमा द्वार्य (स. २६) ।

ul

मिति। परिममण रेको परिमुसण (गा २६)। परिमेय बेबो परिमिण । परिमोद्ध वि [दे परिमुक्त ] स्पैर, स्वच्छची (मर्बि)। परिमोक्स प् पिरिमोद्यो १ मोस मुख्य (भाषा) । २ वस्तियाय (गुम १ १२ १ ) । परिमाय सक पिरि + मोचय विदेशना युग्नाच ऋचना। परिमायह (सूम २ १ 1(38 परिमोयण न [परिमाचा] मोध गुरुरास (सरभ २५ मीप)। परिमाम पू [परिमाप] वारी (महा)। परियंच सक [परि+अप्रच ] १ पास में वाता। २ स्पर्धं करना । १ विमूपित करना । संरू परिश्रीचिभि (यप) (मिन)। परियंच एक पिरि + भर्भ े पुत्रता । संक्र परिअपिवि (पर) (भीर) । परियंपण म [पर्येष्ट्रपन] लग्ने करना (पुत्र १ १) । देवी पछिर्याच्या । परियंग्यिम वि पर्योद्याद्यो विमुख्ति 'पव चरामगामगरियं विजं (मृति)। परियंषिअ नि [पर्योच्छ ] पृत्रित (प्रति)। परियोग एक पिरि + बन्दी बस्त करता स्तृति करना । क्वर परियंदिस्त्रमाण (पीउ) । परियंदण न [परिषर्दन] बन्दन स्तुवि (धाना) । परिवण्य सक [हा] १ रेक्स । २ पानना । परिवरपद् (भाव उन) परिवर्ण्यति (स्त्र)। परिवर्गिञ्जय देगो परिचरिष्ट्रय (१३४) । परियम्दा की [परिकर्शा] परत (वर्गतन बुर्मा ३१ पत्र ९६, २)। परिवरित की पियसिती हैयी पन्हरियया 'बत्तो बारा बंगगी बॉर्स्सची दिरमद वर्ते' (424 (4 ) 1 परिषय वद [परि+दश्यम्] दलता करना, विन्द्रत करना । वर्ष्ट्र परियप्पमान (धावा१२,१२)।

**१३१**) i परियम वि [परिगत] धन्तित पुतः (स परियाद सम्म पिर्या+ दाी १ समन्तार पहुरा करना। २ विभाग से पहुरा करना। परिवाहयह (नूम २ १ ३७)। सैह परियादचा (हा ७)। परियाद्रश्र वि पिर्योत्ती संपूर्ण कर से गृहीत (ठा२ ६---पत्र ६३)। परियादम रेको परियार्दय (ठा २ १--- रन परियादणया भी पिर्यादानी सनन्त्राद प्रदुश (पर्रास्त १४-पन ७७४) । परिवादक वि [पर्याप्त] शामी (राज) । परिवार्रय वि पिर्यायातीती पर्याय को पविशास (सम्)। परियाग देखो पञ्चाय (मीप जना महा क्य)। परियागय वि [पर्यागत] १ पर्याय से मागत (ब्लाइ रह मुख इ रह सामा १ ३)। र सर्वेषा निष्यप्त (ए।या १ ७— पन ११६)। परिवास सक [परि + ज्ञा] जानका। परिवालक परिवालाइ (पि १७ ३ दया) । परियाण न [परित्राण] स्त्रल (पूप १ १ २ ६ ७)। प रयाग न [परिदान] १ शिनवय यक्ता सेनदेन । २ समग्वाद दान (मर्बि)। परियात न पिरियान र गमन (ठा १)। २ बाइन यान (इ.स.च) । १ यरतराण (हा 1 11 1 परियासम (परिसाम) मानहारी (म (F\$ परियाणित्र रि [परिवाणित] ररियाण युक्त (तूम ११२७)। परियानित्र रि पिक्तिको जना हक रिन्ति (पान ८० ११। एत १०। मरि) ।

परियप्पण न परिकर्णनी कराना (वर्गरी

पारयम पू [परिचय] जान-पहचान विशेष

बन से बान (यउड़ा से ११ ६६ धनि

१२०८) ।

परिवाणिश्र पुर [परिवानिक] १ मान श्राहुन ः २ विमान-विदेष (ठा⊏)। परिवादि देनो परियाद । परिवादिकवि (क्ल) । संक्र परियादिचा (क्ल) । परिवाय रेगो पन्ताय (छ ४ ४ मूपा ११: दिने २७६१ और भाषा उपा) । १ प्रस्थितय मत 'शर्यंड परिकर्णंड सोवं क्या को डियं (नूच ११ वे १)। १ प्रक्रमा बीमा (ठा १ २--पत्र १२१)। ११ ब्रह्मचर्ग (धार ४) । १२ किन-देव के नेवन-मान भी स्थति का समय (खाया है a)। धर पूरिवरित ग्रैबा की क्रोबा मे कुछ (ठा ३ २)। परिवार्यतररमृति ध्यै [पर्योगान्तकृत् भूमि विश्वेर के वेवन बात की क्यांति के बमय के लेकर सन्तत्तर धर्म प्रवम मुक्ति पानेराने के बोच के तमय ना मान्दर (खावा १ ६—नव ११४) । परिवार सक [परि+पारव्] १ हेना-सुपना राजा । २ संबोध करना निषय है। व वरन्द्राः परिमारेद्रः (छा**३ १**० भण)। क्ट्र परियारमान (घन)। करक परि । पारिज्ञमान (हा १)। परिवार पु [परिचार] मैनून विवक्त नेपन (प्रस्ति १४--पद ७ । हा १ १) । परिवारम रि पिरिपारको १ रिवय-नेवन करने गता (पराज २ टा १,४)। २ हैता मृत्या वरनेसमा (विया १ १) । (बरागु वे४) ।

परियाण व [परिचारत्र] १ हेज-सम्बद (नुवार----पत्र २६६) । २ वासंबीत र्पारमारमया ) स्मै [परिचारणा] कार् परिमारणा ) रेगो (फ्ट्छ १४ टा १, t) । यह दू ("दाव्य] स्तिक्तेस के नवप का स्थादन सम्पर्धातिक हो। परियाम देती परिवार (शय ३४) ।

परिपान्त्रपत्र व [पर्योग्राचन] विचार (बन्दर (बुरा ६ )। परिवाद हैनो परिताय = वरितार (बादा ET4 (XX): वरियास्त्र यह [पर्या + वर्] १ वर्षाः ।

होत्य । २ स्थान्यर में नॉराप्त होता । ३ أ

(क्य याचा)। परिवादक्रण न [पर्यापादन] त्यान्तर प्रक्रिस (स्विद् )। परिवारज्ञणा की [पदापार्त ] काटेवन (छ. १ ४ —पत्र १७४) ।

परियायन देवो परिताक्य (पूप २ २ परियानमा 🛍 [परिदापना] परिवाप संदाय (मीप) । परिवादिया हो [परिवापनिका] कारान्तर तक घरस्यान स्थिति (शाया १ १४--पत्र परिवादण्य ) वि [पर्योपम ] स्वित धव-परियापम रिच्छ (बार्चा २१११ । दाभप दे४ २ दत्)। परियानम वि पिर्योगमी तत्व प्राप्त (प्राना २११६): परियायस कर पियों + बासय विवास

कराना। परिवारते (इस १८ १४ गृह ₹**द ₹**¥)1 परियापसह रू [वर्षांबसम] मठ, संन्याती कास्त्रान (बाचा२ १ व २)। परियाविय वि [परितापिन] ग्रीहित (रहि)। परिवासिय वि [परिवासित] वाती रहा हपा (क्स) ।

परिरंभ धरु पिर + रभ् ] वातिका कला। शरिरंशल (हो) (पि ४६ ) । संह परिर्धिमत्रे (रूप्र २४२) । परिरंभन न [परिरम्मन] बानिद्वन (शब मा बरेर, भूगा २३ रेट्ड) । परिरक्तर थक [परि + रक्ष्] वरितलन कला। वरिसन्तर (वरि)। इ. परिकार-

परिरंज सक [अस्त्र ] कांक्स तौकृता।

दरिरंबद (बाह्र ७४) ।

पीत्र (निस्ता ११)। परिस्ताम व [परिस्थम] बरियलव (स्त ६ १ मरि)। परिरक्तम की [परिरक्षा] कार केनी (पान

१६ १३ वर्गे (१११ मार) । परितिकाय वि [बरितिश्वत] शरकानित (र्चर) ।

परिरद्ध नि पिरिरण्यो धर्मबन्धि (या 1 (239 परिरम वे पिरिरम र परिष परिनेप (क्व ३६ ११:पडम ८१,६१ पन १४० मीर)। २ दर्बाय, समानाचैक राज्य 'प्रवादित्य क्ति ना पुरूपण्यान कि वा प्रकाममेद कि वादपट्टा (स्पष्ट्र १)। ३ परिश्रम्ख किर कर बारता चित्रका बेरो तस्य व चंत्ररा

झ ऑनस था, वे समत्या है सम्पूर्ण पर्यात. जो प्रवस्त्री हो परिवर्त-भग-केश वचाई (क्रोपना २ टी)। परिश्वय थक [परि + शक्] विश्वना, शोक्ता। वह परिसयमाण (क्य) । परिस्ति सक [परि+रिक्स] भाग फरकरा हिल्ला । बहु, परिस्तिमाण (का १६ थे)। परिस्म पन [परि+रुघ] रोपना धटकाना । कर्म परिसम्बद्ध (वर्ड ४३४) । र्षक्र, परिरंभिकण (स्क्ट्र t) : परिक्षंपि वि [परिक्राहरू] चंका करनेताना

(पहर) १ परिश्लेषि वि परिश्लम्बन् नटक्नेप्रका (गरह)। परिसंभिक्ष वि [परिक्रमित्त] प्राप्त रचन हुमा 'सो बनवरो मुखीखं (मुखीहं) बनाणि परिमंदिया पत्तन्त्या (इउम ८४ १)। परिस्तरा वि पिरिस्तरी सवा हमा माडा (**81 315 £**); परिस्थिम रि [दे] सीव, श्रम्पय (दे ६, २४)। परिजी सक पिरि + स्मी लीन होता। गर परिजिन परिजेत परिधीयमान (लाग

र १---पत्र १, धीरा के ६ ४व- वस्तु ६, १३ राय)। परिक्री की कि विशेष विशेष एक हाए का धाना (धन)। परिसीज रि [परिसीत] निनीव (राष)। परिमुंग् बर्ग्य (+ मूप् ] तुला करस थार करना । क्या परिमुख्यमात्र (नहा)। परिसेंत रेनो परिमी = धार + सी । परिक्रेयत्र न [परिक्राचन, परिक्रोदन] भरतीस्त्र विर्वित । १ रि. रेननेराना 'बुर्वेडरारिनोयन्ताव् रिट्टीव्' (क्स) ।

परिष्ठ-परिवाद परिष्ठ देशी पर = पर (से १ १७)। परिक्रयास वि दि प्रवात-गति (वे६ वेव)। परिक्री केवी परिक्री = दे (राय ४६)। परिश्वी देशो परिश्वी। वह परिश्वित, परिकेंत (मीप)। परिवास महि परि+स्रीस विरायक्त सरक बाला। परिकास (हि.४. ११७)। परिवर्श्य वि [परिव्यक्षितः] गमन करने में समर्थे (ठा४ ४-- पत्र २७१)। परिसंद्रक (मन) मि [परिचक्र] सर्वेश टेहा (मिकि)। परिवंच सक [ परिवक्कम् ] ठवता । चंड परिवंधिरूण (सम्मत्त ११०)। परियंचित्र वि पिरियञ्चित्ती की ठगा गया हो (दे ४ १८)। परियंत्रि वि पिरिपन्तिम् विधेवी दूरमन (पि ४ १) माट---विक्र ७)। परियंश्य म [परियन्दन] स्तुति प्रशंश (पाचा)। परिपदिय वि [परियन्दित] स्तुत पूर्वित (प्रजम १ ६)। परिवक्तिमय वैश्वी परिवक्तिस्य (सीप) । परिवास पूँ पिरिवर्सी परिवत-वर्ष (प्रस 23 2Y) 1 परिषय्य न [दे] धरधारण निषयः 'हाम-गुरू परिवर्की (करपण २१४२)। परिवरिकाय देवो परिकरिका अञ्चलनेवाय हम्परिवन्द्रियाँ (शाया १ १६ टी-- पत्र २२१ भीप)। देखो परिपरियस । परियम्ब सङ [मिति + पद्] स्पीनार करना । परिवरमा (मार)। परिपन्न सक [परि+वर्जय] शिकार करना, परिस्थाम करना। परित्रज्ञक (धपि)। संद्र परिपञ्जिय, परियञ्जियाण (बाका FT XER) 1 परिवक्रण न [परिपर्जन] परियान (वर्षस 222 ) I परियञ्जना की [परिवर्जना] करर रेखी (बर) । परिवर्किय नि [परिवर्कित] परिवन्त (बरा मण मीः)।

परिवट्ट देखो परिवत्त =परि + वर्तम् । परि बहुइ (मृति)। संक परिवर्द्धिव (भ्रप) (मवि)। परिषद्वण म [परिवर्तन] मावर्तन मानुतिः न्मायनगरिवद्वर्शे (संबोध ६९) । परिषद्धि केलो परिषत्ति (मा १२)। परिषष्टिय देखो परिपत्तिय (मनि)। परिषद् दुन्न वि [परिवर्तुन] पोमानार (स \$a) 1 परिवद्यक पिरि+पन् प्रकृता। वर्षः परिवर्शन परिवरमाण (वेष १ ६२ ६७ उप दू रे)। परिवृद्धित्र वि [परिपृतित ] विरा हुमा (मुपा बस् यति २३ इम्मीर ३ वंचा **₹ २४)**। परिवद्य प्रकृष्यि + कृष् ] वहना । परिवद्भद्र (मद्वा पवि) । मनि परिवद्भिस्तद्र (पीप)। इ. परिवद्धतः परिवद्धमाण, परिषद्धमाण (मा १४६, खामा र ११ मका खामा १ १ )। परिवद्धरण न [परिवर्धन] परिवृद्धि, वहान (पडड पर्मेसे ८७१)। परिषद्भित भी पिरिष्टिं क्यर देशी (से とるりょ परिवृद्धिक देवी परिश्वविद्यम = पौजिवन (मीप १६ टि)। परिवक्तिक वि [परिवर्धित] बहावा ह्या (या १४२ ४३१) । परिवद्दमाण देवो परिवद्ध । परिवर्ण सरु पिरि+वर्णय ] करना। कृपरिवण्णेक्षका (मर्ग)। परिपर्कणम वि पिरिवालिया विश्वका वर्णन क्या क्या हो वह (धारम ७)। परिवत्त रेखो परिअद्र = परि + पृत् । परि त्त<sup>8</sup> (उत्त ३३ १) । परिवत्तमु (पा व ७) । वह परिवर्शत (पा २८३)। परिवत्त हैयो परिअद्र = परि + वर्डन् । बद्ध परिवर्षेत परिवर्त्तर्यन (त १ मूप १ ६, १ ११)। एक परिवक्तिकम् (नाम)। परिपत्त देवो परिअट्ट = परिवर्क विदिवस्य परिकत्तों (इप १६४)। २ संबद्धा भ्रमण (धन)।

परिवत्त देशो परिशत्त = परिवृत्त (कार्व)। परिधराण देखो पश्चित्रसाम (पि २८६ मार---विक ८६)। परिषत्तर (अप) वि परिपक्तित्रम् । पकावा यमा परम किया गया न्यंतु मसेवि गुर्वमान मोएं निमन्त्रिय परिवत्तरहोएं (भवि)। परियक्ति वि पिरिवर्तिन् । बदसानेवाला 'क्वपरिवर्षिखी विज्ञा' (कुन्न १२६३ महा) । परिवक्तिय रेको परिअद्भिय (मूपा २१२)। परिषत्य न [परिवन्त्र] वह, क्यहा (मनि)। परिवर्षिय वि पिरिवरिवरी भाष्याचित 'तम्बनेवन्द्रहरूप (?म्ब) परिवरिवर्ष' (धीप)। देशो परिविच्छिय । परिवद्ध देखो परिवद्ध । भट्ट-परिवद्धमाण (स्व)। परिवक्त केवी पहिचक्त (उप १६१ टी)। परिषय सक [ परि + यम् ] तिर्वेद मिरमा। परिवर्गति (सम १ १)। परिषय सक पिरि + यदा किया करता। परिवर्णका परिवर्गीत (ग्राचा) । वक् परिषयंत-(पण्ड १ १)। परिवरिम वि [परिवृत्त] परिकरित वेष्टित (सुना १२४) । परिवद्धाः व [परिवद्धयित] वेष्टित (गूस ( ) i परिवस सक [ परि + बस् ] बसना रहना। परिवसह, परिवसंखि (ममा महा वि ४१७)। परिवसण न [परियसन] बाबास (राज) । परिवसना भी [परिषमना] पपु बणा-पर्व (Fig. t ) i परिविसिक्ष नि [पर्येपिन] दहा हवा बाह रियाह्या (सए)। परिषद् सक [परि + पद ] बहुने बरन द्योताः १ यर भागू सहताः परिवरद (कप्प) । परिवर्हें (गस्त्र)। वक्र परिवर्हें त (Tie \$25) 1 परिवद्दण न पिरियद्दनी क्षेत्र (राज)। परिया यह [परि-म्बा] नुमना । परिवायद (पडर) १ परिवाह रि [परिवादिम] तिन्दा करनेताना (यर)।

नक्खचपरिवारिए (एस ११ २६) कता)।

परिवास देवो परिकास । परिवास (३ ६

(माचार ४ २.२) पि ४०६)।

परिविच्छाय वि पिरिविद्याती सर्वेश क्रिक्र-

₹**७** १४) ।

(पटम ६६, ४१)।

परिवाहय वि पिरिवाचित । पदा हथा (परम

परिवार्त को पिरिवारी कर्ड-नार्ज 'वर

दास ताव बता बद्धपरिवाद बहुं पत्तां

परिवाह सक पिटम र भयव संगठ करना । २ रचना, निर्माश करना । परिवादेश ( \* x x ) 1 परिवाहस देवी परिपाहक (भरा)। परिवादि की पिरिपाटि । प्रवृति पैति (तिसे १ ८६) । २ पॅकि, थेखि (ब्ल १ वेर)। व क्य परंपस (संवेध)। ४ सूनार्य बाबना सम्पासन विस्तिरिवासी सक्षितवर्ती (वर्गीव ६६)) 'एक्स्बीडि वर्षित करेपरि शास्त्रियातानीन सामि (क्लक ११)। परिवारिक नि [पटित] एकित (कुमा) । परिवादा वेबी परिवादिः 'परिवादीमावर्ग इवइ एक्ट (पटम ११ १ ६) पाछ)। परिवाद व पिरिवादी निन्दा क्षेत्र-गोर्डन (वर्ष ११४)। परिवादिजी भी [परिवादिनी] बौला-क्रिय (स्त्र)। परिपाय वेको परिवाद (कप्प सीत पत्रम राज्या ११ ४ ६२ मालमीह ex. t tx) ( परिपायम १५ [परिकासक] संभाती । परिवायय विका (सक्त कर ११, १)। परिवासणी 🛍 [परिवासनी] कर ठांकाली बीसा (सब ४६)। परिवार धक [परि+वारम्] १ केटन करता । २ इट्टम्ब करता । यह परिवारपैन (रत ६३ १४)। एक परिवारिका (तुप १ **१ २,३)** 1 परिचार है [परिचार] गृह-नोक बर के मनुष्य (पीतः महाः हुमा) । १ व, स्थान (बाघ) । यरियारण न [परियारण] १ नियन्यत (बएड १ रे--वन ११)। १ मान्यारत. हरना (दे १ ८६)। थरियारिम वि वि] परित रवित (१ व R ) :

3 2 d) ı परिवास सक [परि + पास्य] पन्नन करना । परिवासक, परिश्लीह (बर्फि महा) । बक्क, परिवासकीय (सद १ १७१) । चैक् परिवास्त्रिय (राष)। परिवाद देवो परिवार = परिवार (शाया र --- 4**4 ( ) (**) 1 परिवाणिय वि [परिवापित] क्वान कर फिर से दीमा हमा (स्र ४ ४)। परिवाणिया की [परिवाणिता] श्रीका-विशेष रिटर से बहाबदी का बारोगरा (ठा ४ ४)। परिवास 🕯 📳 चेत्र में बोलेशका पुच्च ( 4 24) परिवास न [परिवासस ] वक करका व्यंबोधनकुरुक्देतरपास्त्रं सुनियलक्षं मि महेस्ट-परिवास (सूवि)। परिपासि वि [परिवासिन् ] वधनेवादा (सुपा ४२)। परिवासिय वि [परिवासिक] पुनाविक मुक्क-पुकः 'सम्परितक्तपरितासियपूर्' (भवि)। परिवाद सक [परि+वाद्य] १ शहर कराना । र धवादि खेनाना, ध्रयानि-मेहा विव**धेवधिक्य**पूर्ण परिवाहर वादिवासीए' (नदा) । परिपाद प्रे [परिवाद] वत का अवस्य भरिजनरंतपर्वरिष्यप्रवर्षयस्य प्रतिभूतो वर्षास्य । गरिनको निम बुन्यस्य सहद समस्त्रियो नको (बा १०७)। परिवाह पृथ्वि वृत्तिनय, ध्यवनय (१ ६ २६)। परिशाहण न पिरिशाहन मधारि-केन्स 'बासपरिवाह्यप्रतिवित्तं स्पूर्ण (च वर्ः) मका) । परिनिजास कर [परि+विस.] केटन

शरता । शरिविमालक (प्राप्त ७३) पारवा

(44)

इत (सम १ ३ १२)। परिविद्व वि [परिविद्व] परोक्ता हुमा (व १८६ समा ६२६) । परिवित्तसंबद पिरिवि + ऋस् ] बरन्त । परिवित्तसंविः परिवित्तसंब्य (ब्राचा १ ६ X. X) : परिविक्ति की पिरिवक्ति । परिवर्तन (द्या रुष्क) । परिविद्ध नि [परिविद्ध] को विवा नवा हो च्या (स्पा२०)। परिविद्धांस एक पिरिवि + भ्वंसम ी १ विनास करना । २ परिकाप क्यानामा धंड परिविद्धिसत्ता (मग) । परिविद्यत्व मि [परिविध्वस्त] १ मिष्ट। २ परिवापित (सुम्र २, ६ १)। परिविष्कृरिय वि [परिविष्कृरित] स्कृति-प्रच (पंत) । परिविधिक वि परिविशक्ति र प्रा इम्प टपक्स इम्पा (सरह) ३ परिविवक्किर नि [परिविमाधितः] करनेनावा क्लेनला (क्या) । परिविद्धा वि पिरिविद्धा विदेश विदेश (वज्ञामा १२१)। परिविद्यसिर वि [परिविद्यसित्] विवासी परिविस तक [परि + विश्व ] वेहन करना । मरिनितद् (महरू ७३)। परिविस धक [परि + विष्] परीतना, बिनाना । सङ्घ परिविस्स (उत्त १४ १) । परिविदास 🖠 [परिविधाद] दमनाहा 🌬 (वमीर १२६)।

परिविद्वरिय वि [परिविद्यरिय] वर्षि गौरियः

मिरिकेनुवर्धिकरमधिकारमी वर्ष ग्रीस्

परिवीम सक [परि+वीत्रम्] वैद्या

करना इचा करना । नरिनीएमि (स ६७) ।

परिवीशम थि [परिवीमित] निवनो इस

भी नई हो बढ़ (उप १११ दो) ।

(TT tx tx):

परिभीड--परिसञ्ज्ञिल परियोक्ट न [परिपीठ] भारत-निरोप (र्मान) । परिग्रीस सक [परि-पीडप्] बनाता । शंक परियोक्तियाण (पाचा २ १ ८ १)। परियुक्त वि [परियृत] परिकरित वेष्टित (सामा १ १४ वर्गीन २४ मीर महा)। परिवृत्य वि [पर्युपित] १ एहा हुमा। २ न बास मिबास (पतंद्र १४ )। देखो परिवृक्तिञ्ज । -परिश्वन देखो परिवृद्ध (प्राप्त १२)। परिवृदि सी [परिवृदि] बेप्टन (प्राक्त १२)। परिवृत्तिक कि [पर्य पिन] स्नित रहा हुया 'से प्रिक्त सकेसे परिवृक्तिए' (साचा १ व 🐱 १ः १. ६. २. २)। वैक्षते परिद्युत्यः । परिमुसिक वि [पर्यु पित] पर प्रवप हुमा (भावा२ ६ १ ६)। परिवृद्ध वि पिरिवृद्ध ] सन्ते (ज्य ७ २)। परिवृद्ध वि [परिवृद्ध] स्त्रुल (मास ८९ उत्त ७ ६)। परिश्वद्व वि [परिवृद्ध] १ वसवल, वसिष्ठ (क्स ७ २६) । र मॉक्स कुट (बाजा २ ¥ 2, 1) 1 न्परिवृद्ध वि [परिक्यूड] वहन किया हुमा बोबा हुया 'न बदस्यानि यह पूरा बिरपरि बूद दर्भ लोहें (धर्मीय ७)। परिवृद्ध के परिवृद्ध (एव)। वरिषेद्ध सक [परि + नेष्ट्] केइना बपेटना । परिवेदह (स्रीत) । संक्र परिवेद्धिय (निच् १)। न्यस्थित पू [परिषेष्ट] बेष्टन बेर्फ जा नायह धो नि**श्वर देवलरमुह्**रपरिवेड (सिरि **६३**८) । वरिवेदाविय वि [परिवेशित] बेहित कंचमा हुमा(पि १४)। परिनेकिय वि [परिनेष्टित] वेहा हुया करा हुमा सपेटा हुमा (पर ७६० टी: बल ५ : पि **६ ४)**। परिवेश पक [परि+थेप्] कांपना 'कायरवरिणि परिनेयह' (मिर्व) । परिवेदित वि [परिवेदित ] कम्पन-शीम (वर्ग) । -परिवेष धक [परि+वेप्] कौपना । वह.

परिवेदमाण (माना) :

परिवेस सक [परि+विष ] परीम्रना। परिवेसक (पुपा १८६) । कर्म परिवेसिन्जक (सामा १ ६)। शक्त परिवेसीत परि वेसर्यंत (पिंड १२ सुना ११) छाया t \*) 1 परिचल पृष्टिपरिवेश या १ वेष्टन (गडा)। २ मैडन नेपादि से सूर्य-वन्त्र का वैष्टताकार मंद्रम -परिवेषी संबरे फरश्वरएकी (पटम ब्ह ४७३ स ६१२ दी गटह)। परिवेसन न [परिवेपण] परीसना (स १८७ विष ११९)। परिश्रसणा की [परिश्रेपणा] उत्तर देखो (বিশ **১**৫২)। परिवेसि [परिवेशिम्] समीप में पहने बासा (बउड) । परिष्यक्ष सक [परि + ब्रज्ज ] १ सर्पनात् यमम करना। २ शीका बेगा। परिव्यए परिव्यक्तासि (सूध १ १ ४ ३ पि v4 ) i परिकास कि [परिवृत] परिवेष्टित 'ताय परिन्नको विव सरमपुरिखमार्चदो (वसु)। परिष्यम वि [परिष्यय ] विशेष स्थय (तार-मृष्य ७)। परिज्यम र् [परिज्यम] बर्चा वर्ष करने कामन (वस ३ रेटी)। परिम्बद् सक [ परि + यद् ] बद्दन करना बारण करता । परिकाहद (संबोद २२) । परिश्वाह्या श्री [परिवाजिका] संन्यासिधी (स्रामा १ द महा)। परिव्याज (चौ) र्र [ परि + माम् ] संन्यासी (वाद ४६)। परिन्याजम (तौ) पुं [परिमाजक] संगाती (पि १०४- मार--मुख्य स्४) । परिव्यक्तिमा (शी) केही परिव्याह्या (मा२)। परिन्याम देशो परिज्ञाज (सूचित ११२) मीप)। पर्रिष्यायम र पु [पारिवास 🛊 🛚 सन्यासी परिश्वायम र्रे शांचु (ध्य) । परिव्यायम वि [परिव्यायक] परिवासक-सम्बन्धी (क्या) । परिस देवी फरिस - लग्ने (नाव बाह ४२)।

परिसंक धक [ परि + शक्क ] मय करना डरना : वक परिसंक्ताण (सूम १ १ २ )। परिश्रीकेय कि [परिश्रीकृष] भीव (पर्रह १ ६)। परिसंका एक [परिसं + समा] १ पन्धी त्रपद्ध मानना। २ शिनती करना। संक्र परिसंखाय (बस ७ १)। परिसंत्रा की [परिमंद्या] पंका विनदी (पत्तम २ ४६) बीवस ४ पव--गावा १३ वंदू ४ स्वर्ग)। परिस्त है [परिपङ्ग] संग सोम्बर (म्मीर परिसंग र् [परिष्यक्क] भाविक्कन (परम २१ १२)। परिश्लेगम नि [परिश्लेगत] प्रक सहित (कर्मीय १६)। परिश्लेठच सक िपरिशं + स्थापय ] संस्थापन करना । परिसंडवह (प्रेप) (पिय) । वह परिसंठपित (बपर्य ४१)। परिसंठविय वि [परिसंत्यापित ] संस्वापित (**dg %**=) ; परिसंठिय वि [परिसंस्थित] स्वित एहा **इ**म्पा (महा) । परिसंत नि [परिध्यन्त] चना हुमा (महा) । परिसंभविय वि [परिसंखापित] बाषावित (B X \$ \$) 1 परिसक्त कर [परि+च्यच्ह] क्लता नमन करना इवर-वबर भूमना । परिसक्तह (धन ६ वी कूप १७४)। वह परिसक्त. परिसक्तमाण (काम ६१७) च ४१; १११) । संझ- परिसम्बद्धाः (सुपा १११)। इ. परिसक्षियक्य (स १६२)। परिसम्भ न [परिष्यच्छ्या] परिश्रमण (स મંદ્ર પ્રાથમ કર્યા માત્ર કરો છે. परिसक्तिभ वि [ परिष्कृष्टिकत ] १ पत (धरि)। २ न- परिज्ञमणः परिश्लमका (ग परिसाधर वि [परिव्यक्तिक] गमन करने-नामा (ग्रामा ११ वि ४८६)। परिसञ्ज्ञिस (मर) नि [परिष्यक] धार्नियित परिसद्ध थक पिर + शद् ] सम्प्रक होता। परिसद्ध (भाषा २ १ ६,६)। परिसक्तिय वि पिरिकटिती सहा हम्म दिन्ह (शासा १ २३ भीप) । परिसम्ब कि [परिसम्भग] दूबम कोटा (से 1 ( 5 5 परिसन्न कि पिरियण्या को हैरान हमा ही नीवित (पदम रे**० २**)। परिमत्प कः [परि+श्चप्] वहना। परिक्रमेर् (माट-पिक ११) । परिसप्पि पि पिरिसपिय र अवनेवाला (क्यू)। २ वृद्धी हान और पैर से चमतै-बला बन्दु--बर्नुत सर्वे मारि प्राप्ति नरा। ध्यै पी (कीव २)। परिसम देखे परिस्सम (महा) । परिसद्भन्त नि पिरिसमाप्त्री प्रम्यूले जो प्रस ह्माही नह (संदेश देश सुर देश २१)। परिसमित्र वी [परिसमाप्ति] समाप्ति पूर्णंद्य (उप १३७ स १२)। परिसमापिय नि [परिसमापित] नौ समात फिया नवा हो, पूरा किया हमा (विसे 44 8) 1 परिसमान का [परिसम् + आप ] पूरी करना । बंकु- परिसमाभित्र (प्रति ११६)। परिसर १ [परिसर] नवर बारि के समीप कास्थान (धीन नृता हुई मीत ७६)। परिमहिष वि [परिशस्त्रिक] रूप-पूक (গভ) । परिमय कर पिरि + स्व] माला राइना। नप्र परिसदन (तर् ११: ४१) । परिसद् 🖠 [परिचद् ] देशो परीसद्ध (वन) । परिसाधी (परिपद्ती १ सन्द्र, वर्षेर (काम थील बना रिया है है)। २ श्रीरेगर (का 1 4-4x 220)1 परिसाद देवी परिस्माद (चन) । परिमाइयात्र रेची परिसाद ।

परिमाद पर [ परि + शाटम् ] १ त्यान

बरना । ६ धनन वरना । दरिनाहेर (कप्ना

थन) । बेट्ट परिमादद्शा (का) ।

परिसाध एक [परि+शाटम्] १ एकर उत्तर कॅकना । २ घरमा । ३ रसनाः 'परिता-क्रिज कोकर्स (इस १ १ २०)। परिसा हितिः चुन्नः, परिपारिशुः मनि परितारिस्तंति (धावा२१२)। परिसादणा थी [परिशाटमा] वपक बीमा (44 t) i परिसाडणा 🛍 [परिशाटमा] प्रवक्तप्र (समनि ७:२)। परिसाडि नि [परिशादिन] परिहादन-बुख (योग ६१) । परिसाबि नि [परिशादि] परितदन पूर-दरख (सिंड ११२)। परिसामिय 🛍 [परिशावित] नियम ह्या (रह ६, १ ६६)। परिसाग यक शिम् किल्व क्षेत्रा । परि सामद (हे ४ १६७)। परिसाम वि पिरिश्यामी भीने देखी परिसामक वि [परिज्ञामक] इप्सा कला (वयस)। परिसामिश्र वि [शान्त] क्रान्त कमनुद्ध (इमा) । परिसामिज वि [परिन्यामित] इच्छ क्रिया हुमा (शासा १ १)। परिसाप कर [ परि + स्नावय ] १ निजो इना । २ वानना । क्रु. परिसावियाण (माचा२१ = १)। परिसामि बेदो परिस्साचि (बहु १)। परिसादिय नि [परिक्रपित] प्रतिपारित उन्ह (स्मृ) । परिसिध वद्र पिरि + सिप् विविद्याः परिक्रिक्ट (इस १ १)। यह परिसिक्ट माण (जाना १ १) । १वड्र, परिसिचमाण (क्या विदेशको । परिसिद्ध रि [परिशिष्क] संगीतह, गरी यवाहमा(क्षांचा १२ ३ ६)। परिसिद्ध कि [परिशिषक] विशेष विशेष दीमा (गरह) । पर्धिन स नि [परिपिक्त] १ डॉबा हवा

(नार ६८ छर)। र नः वरिषेक केवन

(TUE ! !) I

परिसिद्ध वि [ पर्पेद्वत् ] परिवर् वाका (42.4) परिसीस एक [ परि + शीसम् ] धम्यान करना मास्त शासना । संब्र, परिसीक्षिकि (भप) (सरा)। परिसीचन न परिशीयनी धम्यात बाद्य (रंग्यः स्या)। परिसीक्रिय वि [परिशीक्षित ] यमस्त (च्छ)। परिधीसग स्वो पश्चिसीसञ्ज (चन) । परिसुक्त नि [परिशुष्क] भून पूरा ह्या (दिना १ २८ पटक)। परिसुष्य नि [परिशुस्य] साबी रिक दुव (से ११ वर्ष)। परिस्ता वि [परिस्ता] सर्ववा सेम्ब इप (गद्ध-उत्तर २६)। परिसद्ध वि [परिद्धद्वा] निर्मेश निर्मेत (का परिसद्धि की [परिद्युद्धि] किनुद्धि, निर्मेक्टा (भवदः ह्र ६६) । परिस्तुतम केवी परिसुच्या (विसे २०३३ क्य) । परिश्वस (का) कर [परि + शोपप ] भुवाना । चंत्र परिसुसिवि (बप) (धरा) । परिसूञजा हो [परिसूचना] तूनना (दुत्त परिखेब ई [परिपेक] रेवन (बीच १४७)। र्पाश्सस र्व [परिशेष] १ वाची वचा 💵 भविष्टि (ते १ २३) पदम ३५, ४ । वा ः कम्म ६ ६) । २ धनुमान-प्रमाखा वा एक मेर पारिकेशनुमान (वर्ष ६ वर ६६) : परिसेसिम नि [परिशक्ति] १ शारी वया 📭 पा(यन)। १ वर्षिकाच निर्धातः 'क्रमांब क्रमम् बहुबि नदृतु म्यू कुरति दिल्ला ता पुरुष् । व्यक्ति परिवेशियो स्लिम वो इस्ए वनिषयस्थानो (स ४१)। परिसेद् 🕯 [पारियेच] प्रक्षितेच विकारणः पारद्वाराच्या भी व रहितेही । बालुज्यमणा-

रैंग को व रिहा एत कानक्यों (कान)।

परिष् पु परिषा वर्षता भाषन (पणु)।

परिसोसण न [परिसोपण] गुजना (पा **₹**₹<) ! परिसोसिश वि [परिशोपित] पुताया हुया (सक्य) । परिसोइ सक [परि + शोधम्] शुरू करता । क्वक परिसीहिजांत (प्रण)। परिस्तव एक [परि + एवडा, ] मालिका करना। परिस्तुपदि (शौ) (पि ११४)। र्शक परिस्ताइक (वि ३१६, नाट--राष्ट्र 63) I परिसाद देशो परिसंत (ग्रामा १ १ स्वज ४ ३ वर्षि २१ )। परिस्सद (री) देवो परिस्सक्ष । परिस्तवह (उत्तर १७६)। वह परिस्तानीत (मनि १३१) । संद, परिस्तिकम (पपि १२४) । परिस्सम पू [परिधम] मेहनत (वर्गसं अवव स्कार समि ११)। परिस्मन्म यक [परि + मम् ] १ मेहनत करना । २ विधान बैना । परिस्तम्मद (विसे ११६७: वर्गने ७८९)। परिस्सव एक [परि + स्त् ] पूना मरणा टपनमा । मक्क, परिस्सर्वमाण (निपा १ 1)1 परिस्सव पुं [परिद्युच] यालन कर्म-बन्ध का कारण (माना) । वरिस्सह केवा परीसह (बाबा)। परिस्साइ वैनो परिस्साबि = पीक्राविन् (ठा ४ ४-पत्र २७६)। परिस्माव को परिसाप । संब्र. परिस्सावि-षाण (मि १६२)। परिस्सावि वि [ परिज्ञाविम् ] १ कमैकन करनेवाला (मग २६, ६) । २ ब्रुडेवस्ता, टएक्नेनामा : १ प्रम नात की प्रकट कर हैने-बाबा (बन्द १ २२) पंचा १४, १४)। -परिस्सापि वि [ परिशायिक ] युक्तिकावा (XEI YE) I यरिष् एक [परि + भा] परिस्ता, पहल्ला। परिवाद (बर्मीय १६ व्यवि)- फलांबीलीव परित्र बंदू रवशमवातंत्रार (वमेन १४१)।

परिहच्छ वि दि र पट्ट एक निपुछ (दे ६ ७६ मनि)।२ पूँ मन्द्र, रोज प्रस्ता (दे ६ ७१) । वेक्टो परिवहस्य । (44 1)) परिश्वच्छ देशो पश्चिक्च्य (भीप)। परिदुर एक [ सुदू परि + घट्टय ] मर्गन करताः पूर करता कवरता पुत्रवता। परि हरूद (हे ४ १२६ मार-साहित्स ११६)। परिद्राप्ट कर्षि + क्रास्त्री १ माध्या मार कर विदा देता। २ सामना करता। ३ चूट सेना । ४ वक भगीन पर बोटना । परिवृह्य (ब्राह्म ७३)। परिवद्भण न परिचट्टन र धरिमात मामल (से १ ४१)। २ वर्षस विद्या (से व 88) I परिवृद्धि की वि वाक्षित्र बाकर्पण की बाव (केंद्र २१)। परिष्कृतिका वि [भृषिद्य] विश्वका गर्वन किया यमा हो पह, 'परिवृद्धियो मासी' (ड्रुमा पत्प)। परिक्रण न [के परिभान] क्या, क्याना (के **६ २१ लामा है ४ ६४१ सुर १ २**३ पवि)। परिहरम र् दि । बसवन्तु-विशेषः परि **इत्यमञ्जातिकार प्रमाणके का प्रमाणक कर किया है** (सर १३ ४१) 'पोलबारिकी' "परि xuz): <del>इत्यस्तैवपण्डल</del>भवस्य से गस्त स्थापना स्थापन यरिमसन्दुरनद्यनहरस्रकाद्याः पासाईया' (शाबारे १६ — पत्र १७१)। २ विकत निपूक्त पाने कापाक्तित पूर्व (पटन ११ १) क्ला १ ६---पत्र १६८ पायः श्राम ४) । ३ परिपूर्ण (बीरा कम्प) । देखो परिक्षण्ड, पश्चितस्य । **4**) ) परिश्र दक [परि + भू] शास्त्र करना। र्थक परिवृश्यि (क्त १२ **३**) । परिक्र तक [परि+ हू ] १ व्याप कव्या धीवृत्ता। २ करता। १ परिवोज करता धारोबन करना । परिहरद (हु ४ २१३ जन महा) । परिवृर्दित (सम ११--पन ६६७) । वक्त परिहरत, परिहरमाज (वा १९८ यन)। ब्रेह्न, परिद्वरिम (निष्)।

γķu ४४ परिहरिक्टप, परिवृद्धिं (ठा ४, व काम ४ व)। इ परिश्रत्यीख, परिश्रार ध्यव्य (पि ५७१ या २२७ भोत ४१ सुर १४ ८३ सुपा ३१६। ४८८ परम २ ४)। परिकारण म [परिधरण] कारण करना परिकरण न [परिकरण] १ परित्याय कर्मन (मक्का)। २ घासेषन परिमोन (ठा १)। परिवरणा की [परिवरणा] कार वैको (पिक ११७): 'परिष्ठरणा होइ परिमोगी' (ठा १ १ टी-पत्र ११८) । परिहरिक्ष वि पिरिहरी परिवरक वर्षित (मद्रा स्पर पवि)। परिहरिअ देशो परिहर =परि + मू, हू । परिहरिक्ष वि [परिवृत्त] बारख किया हुवा 'परिवृद्धिकरणभट्टेंडलमेडत्वसमस्प्रहरेस् सन-ऐसु । प्रम्युष ! समग्रनरेखं परिक्रिण्यह राववेंटपूर्य । (या ११८ म)। परिद्वास्थास र्वं दि वद-निर्यंग मोरी पनावा (दे ६ २१)। परिद्वम सक [ परि + मू ] परावन करना । वक्त परिद्वित (वन १)। इ. परिद्वित्वियक्त (चप १ ३६) : परिक्ष र् [परिभव] पराभव किरस्कार (से रेर प्रधाना व्यवस्थित १८)। परिकाम न [परिभवन] स्मर देशों (स परिवृत्तिय वि [परिमृत] परावित विरक्षत (अगद्र१८)। परिद्रसं सक (परि + इस ी चनहास करना हैंकी करना । परिकृषक् (नाट) । क्याँ, परिकृ-धीपरि (शी) (नाट--शकु २) । परिष्ट्स्स वि [परिष्टुस्व] प्रत्यन्त बादु (स परिकाधक [परि + हा] हीन होना क्रम क्षेता। परिवाद, परिहानक (स्वतः तुक्क १ ६ ) । सदि परिहादस्यदि(शी) (सति १)। क्षक परिदार्वतः परिदायमाण (गूर १ **ध १२ १४ गामा १ १३३ धीप हा ३** ३) परिशीममाण (१० १४४)। परिकादक [परि + या] वीहरता । स्त्रीद पर्धिहरवामि (धाषा १ ६, ६ १)। वह

४ । २१)। इ. परिवृध्यम् (स. १११)। परिवृद्धः की प्रिंग्स्मा) बार्षः (स. ४ १) स्वयः)। परिवृद्धः कि हि वे परिवृद्धः वस्यः)। परिवृद्धः कि हि वे परिवृद्धः वस्यः । परिवृद्धः कि परिवृद्धः वस्यः । परिवृद्धः कर्माः (इप. १६१ व्यक्तिसम्बाद्धः अधिनवस्यः वस्तिम्बरम्बरः परिवृद्धः वस्त्रः वस्

परिश्वितम परिश्विता (दूप ४२) तुम १

286

परिकृतिक की [परिकृतिक] क्रम्य कुण्यान धर्मत (क्रम क्रम क्रम केर श्रे की वेद प्रायू १९)। परिदास कि [वे] बीच्च दुवंत (वेद २६) पर्याप के परिदास की है क्षे परिकृत परिन क्रम केर्

परिदार प्रे [परिदार] १ परिकाम नर्जन

(बद्ध) । २ परिमोच, धार्मवनः 'एवं बन्द

योगाला । प्रशस्तवकाव्याची पञ्चपरिकार

विद्रशित (का १२)। व विद्यार विद्राहित वामक देवर्गनितरित (का ४ १२)। १ प्रान्तिकेत (का ४ १२)। १ प्रान्तिकेत (का ४ १२)। विद्यानिक (का ४ १०)। विद्यानिक "विद्यानिक विद्यानिक विद्या

परिदारिय रि [पारिक्रांकि] १ शीयमा के नोम्म (इट २) । १ शीयार नामक ता ना सारक (इट ९६) । परिकृष्ट कुँ [के] जल-निर्देश नीचे (दे ६ १८) । परिकृष्ट कुँ [परि + पारम] परिच्या ।

बर परिहार्शन (घर) (वाँन)।

परिद्रारिणी की चि देर में ब्यारे हुई वेंत

(\$ \$ \$1)

परिवारिका नि परिवापित विन किमा **ह्या (बद ४)** 1 परिद्वाविक नि [परिद्वापित] परित्या हमा (बहास्ट१ १७ स १२६: कुप्र १)। परिकास ﴿ [परिकास] कवान ईवी (मा **७७१**३ पाम्प) । परिशासका औ [परिभाषत्रा] ज्यानम (धाव १) । परिदे वृद्धी [परिधि] र परिवेच 'सस्तिवेच थ परिक्रिया कर्ज सिमील कस्य राज्यीकाँ (पद १११)। २ परिवादः विस्तार (राज)। परिद्रिम नि [परिद्रित ] पहिल हुमा (स्नाः क्षत्रः रूप्या भीपा पामः सर २ ६ )। परिविकाण देवो परिवा = परि + वा। परिहिंद सक ियरि + दियद ने परिश्रमस करना । परिवृहरू (ठा ४ १ टी-पत १६२)। वह. परिश्विंखेंत परिश्विंसमध्य (पठम व १६०६ । धः १६६ चीप)। परिद्वित मि [परिद्विण्डत] परिमान्त भटका ह्या (पत्रथ ६ १६१) । परिदेशा परिदेशमा } देवो परिदा= + वा। परिक्रीभमाज देवो परिक्रा = वरि + क्षा परिद्रित्य वि[परिद्रीत] १ कम लून (ग्रीत)। २ औरण मिनार (नुक्त १) । ६ चीव्रः वर्जित (उन) । ४ व क्कास सरवय (राय) । परिहुत्त दि [परिभुक्त] जिसका चीन किया बबाही बह (ते १ ६४) ६४ ६१)। परिकृत कि [परिसृत] परास्ति परिमृत (पारेश्य पत्रम १ ६ हे २ )। परिद्रशा न [दे.परिदार्थक] व्यक्तक-निरोध (पीप) । परिद्रो सक [परि+मृ] पराधा करना। परिद्रोद (बर्धि) । परिद्राज्य देवी परिमोग (गढड)। परिद्रक्त (घर) मक [ परि + हुस् ] कन

होगा । पश्चिका (सिय) ।

YER) I

परीतक पिरि 🛨 इ] जाना पमन करना।

वरिषि (रि ४६३) । बद्ध परिष (वि

परिवास सक पिनि + द्वापम | भ्राप करना,

(खामा १ १--पत्र २ )।

नम करता होत करता। बद्धः परिहारीमाण

यरी सकि किया ी कैंना। परीद (दे ४ १४३) । परीसि (अमा) । परी सक भिम् ने भ्रमण करता, बुनना। परीक्र (क्रिप्र १६१)। परेंक्रि (क्या १ ३—यम ४६)। परीयाय पू [परियात] निर्मात विषय (पद ६४)। परीजस देवी परिजम = परि + सम चित-रक्को परावायसायसायो योगासरसेरा परी-सर्वति (स्तर्प १३)। वरीसोग रेखो परियोग (युग ४६७ अलड रक्ष पंचाय शो। परीमाज देखो परिमाज (बीवस १२३ १३२ पण १८६)। परीय स्वीपरित्त (स्वा)। परिवक्त पुंचि परिवर्ती केटन विभय-यद्वमधिस्सद्दे रबद्वच्छे बारस् एवं (भीव w e) 1 परीरंस र् पिरीस्की बार्किक (कुमा) । परीवळ हि | परिवर्ध | वर्जनीय (कम्प ६, (日) परीकास केको परिवास = परिकार (परम ११ वे पद २३७) । परीचार वेको परिवार ≔परिवार (दुमए नेक्य ४५) । परीसण न [परिवेषत्र] परोत्रता (१ % tv) I परीसम रेको परिस्ता (वनि)। परीसद र् [परीपद] कुछ मानि छ होनेनानी पीम (भाषा भीप भन)। परदय नि [मस्दित] को धेने तना हो नह (स धर्र) । परुक्त देशो पराक्त (निषे १४ ३ मैं) नुपार्वेदे या १। नुप्र २४)। पर्याप ) रेखी पर्श्वन (देश वर, रे परुष र ६४३ मा ११४ वर्ग महा **₹₹**Υ) ( परुष्पर ध्या परोष्पर (रुप्र ४) ।

पर्वमासिद (शै) नि [प्राह्मासिय]

पर्ड वि [महड] १ बलन (वर्गीव १९१)।

पस्स नि [पस्य] नहीर (वा १४४) ।

र बढ़ाइपा (धीप नि ४ र)।

ब्रम्मिटर्स (ब्रमी२)।

परूष सक [प्र + रूपय] प्रतिपादन करना । पक्षेत्र, पक्ष्मित (स्रीप, कम्पा सर्ग) । संह. परुवद्वा (ठा १ १)। प्रस्त्रा वि [प्रकृपक] प्रतिपादक (स्वः कुप 2=() 1 प्रसम्म न [प्रसम्म ] प्रतिपादन (पर्ग्)। परुवणा की [प्ररूपणा] ज्यार देवी (मापू 2) 1 परविभ नि [प्रस्पित] १ प्रतिपारित निक्षित (पर्व २ १) । २ प्रकारित 'उत्तमकं कण्यायापस्थितमा पुरमुख्या मासूरि संस्थं (प्रशि २३)। परअन्ते वि] पिछाच (वे ६ १२) पाम ्षर्)। परेण म [परेण] बाब मनतार (महा)। पर्यम्मण रेखो परिकृत्मण (कप्प)। पर्वय म वि । पाव-पत्तन (रे ६ १६)। पर्ट्य वि [परेपस्तन] परसीका परसी होतेवाला (चित्र २४१)। परे व [पर] एक्ट 'परेस्तिई तवेर्दि (उदा) । परोद्रय देवो पहन्य (सप ७६= दी) । परास्त्र न पिरास्त्र] १ प्रत्यक्ष-किन प्रमास 'पवनवपरोत्तवाई दुलीव बधी पनाग्याई' (सुर १२,६ ३ स्थित)। २ वि परीक्ष-प्रमास्त्रका विषय अप्रत्यक्ष (मुपा ६४७ हे ४ ४१०)। इन पीधे, शांबों की बीट में सम परीक्षे कि दए भए। मूर्य ? (महा)। प्रोह रेडी पस्रोह=पर्यस्त (पक्र )। परोप्पर । वि पिरस्पर विवास में (है १ पराप्तर । ६२ दुमा रुपू वह )। परावधार है [परापदार] दूसरे की सलाई (बाट-पृष्ट १६६)। परावयारि वि [परोपद्मारित् ] इसरे की मराई करनेवाला (बद्धम १ १)। परोबर केवी पर्राप्पर (प्राष्ट्र २६ ६ )। पराविष देखो परुष्य (उप ७२० दी स Aa ) i पराइ यक [प्र+स्क्र\_] १ जलब होना। २ वहता । पर्छेड्डि (श्री) (नाट) । परोहर्षु [मरह] १ चलकि (क्रुमा)।२ इति । ३ संदूर, मीमोत्सेर (है १ ४४):

'पुश्रवपाण परोहे रेहद मानासर्पतिन्त' (नर्मीन १६५)। परोद्वड न 📳 घर का पिछना सौबन, वर के पीड़ों का भाग (शोव ४१ का पास पा ६ बद्दायणमा १६१८)। पळ बक् पिस्त्रीर बीना। २ चाना। पसद ( बड़्) । देखों बस्न ≠ वत् । प्रक्र (धन) सक पिन् विकृता विस्ता। पत्तइ (पिंग) । वक्क पर्छन (पिप) : प्रस् (यप) सक जि. + कटच जिक्रट करना। पम (पिम)। पञ्च सक पिरा + अस्य ने मालताः 'बोराए कामुकाए। व पानस्पर्हियाख दुनदुरी स्टब्स रे पणह रमह नाह्यह नक्ष् त्रज्ञास्य स्मणी' (नज्जा 1 (X \$ 5 पस्त वृद्धे ] स्त्रेट, पसीना (दे ६ १)। पस्त [पस्त] १ एक ब्युत कोटी तीत जार दोबा(ठा३ १ सुपा४३७ वज्जा६८ कुप्र ४१६)। २ मस्रि (कुप्र १८६)। पर्राप सक शि + स्वरूप विश्वनाखा करना । पसंबेरका (मीप) । पर्सपण न [प्रसङ्खन] बन्धवन (धीप) । पर्लंड पूंपिलगण्डी धन चुना पोठने ना भाग कलोगामा कारीयर, 'पश्चनेंड पसंडा' (प्राक्त ३)। पर्लक्ष प्र [पद्धाण्डा] प्यात्र (क्स ३६ ₹α) ι पर्स्च धक [प्र + धम्ब ] सटकमा । पर्संदर् (पि ४२७) । नक्- पक्षंत्रमाण (मीप महा)। पर्छव वि [प्रश्नम्य] १ सटकमेशला बटकता । (पराहर ४ राव)। २ वामा, दीवें (से १९, ११, हुमा) । १ ई. छन्तिरोध एक महाबह् (ठा२ ३) । ४ प्रक्रचें-विशेष सही राज का बारुवाँ मुदुर्ख (सम ११)। ५ दून धामरण-विशेष (भीष)। ६ एक तरह ना भानकाकोठा (इह २) । ७ मून (इस बृह् १)। ८ स्थक पर्वेत का एक शिकार (ठाय--पत्र ४३६)। १ दुन. कृत (दृह रै ठा४ रे—पत्र १८६) रे वैद-दिमात-विरोप (यस ६४) ।

पर्लंबिक वि [प्रक्रम्बत] तटका हुवा (क्रप सविस्तपार )≀ पहाँविर वि [प्रस्टिन्वत् ] बटननेनासा बट-इता(सपा११ सुर १ २४८)। पञ्चा वि दि अस्पर "इय विस्तरतालकारों (इप्र ४२७) नाट)। पलक्स प्रेटिसम्बे वहका पह (कुमा पि पक्षगण पिसकी फल-विशेष (माचार १ ⊏ **₹**)ι पलजाण वि प्रिरक्षत रावी, मनुष्य वालान भागमपत्रमण्य — (ग्रामा १ १८: भीप)। पळट्ट यह [परि+अस्] १ पपना, बदसना । २ सक पमराना बदधाना । पस्तूहरू (पिय) कोहाइकारऐषि हु नो बक्एसिटि पत्र ति (संबोध १०)। संब्रः पत्रहि (पप) (पिन) । देखी पहरू । पस्रच वि[प्रस्थिति] १ कमित चेट, प्रवाप-पूक (बुपा ११४) से ११ ७१) । २ ज प्रताप क्यन (धीप)। पद्धय दे प्रद्धय र दुगन्तः करपान्त-कान । २ वयत् का सपने कारण में बय (से २, २) परम ७२,६१) । ३ विनासः 'बायस्वाद-पत्तप्' (ती १)। ४ वेटा-छम । ५ किएना (हेर १६७)। कार्प िकी प्रसय-काश का सूर्व (परम ७२ ११) । धम वू ["धन] प्रकाम मेम (स्रष्ट) । स्टिप 🐒 🖺 नस्त्री प्रसम काल की भाग (सरह)। पद्धान पिछ्छी १ तिस-पूर्व तिन-नोद (परहर ३३ विक १६१)। २ मान (हुन 1(## पद्धक्रिज न [प्रदक्षित] १ प्रशीक्ष्व (गुरमा १ १—यत्र ६२)। २ धन-विल्याम (पद्य 2 Y) I पद्धव तक [ म + सप् ] ब्रताय करता वक-बाव करना । पहानदि (दी) (गाट-नेर्गी १७)। बङ्ग. पद्धवंत पद्धवसाम (काब मुद्दर १२४८ सूपा २४ ३ ६४१) । परुषण न [पद्भवन] त्रह्मना, प्रव्यापन र्पपारमगाज्यहो स्ववस्य प्राञ्चनवासी याँ

(योग १४८)।

```
पससान दिही १ कर्लाच-क्रन । २ लोड
 पधीना (दे ६, ७ ) ।
पद्मस (चप) न [पद्भशः] पत्र पत्ती (दनि) ।
पछन् हो दि नेवा पूजा भक्ति (दे
 (, 1) i
पस्रिह नुनी डि क्यास (वे६ ४ पाम
 बरवा १व६ हे २ १७४)।
पत्तक्रिम विदि शिवम समय। २ पुन-
 भावत क्मीन का बास्तु (दे ६, १६)।
पक्षत्रिक्षत्र वि क्षि स्पष्टकृषये पृष्टे,
 पापाएड-इस्प (पर)।
पस्त्रुक्ष वि प्रसन्त्रुक] १ स्तरा वोहा। २
  कोटा (से ११ ६६) पडड़) ।
 पस्य देशो पद्धाय≔परा+सन् व व व
  कहारि स्वयं सक्ती बहि क्वाइ वे तुल्ल
  (भारमान २३) पत्तासि प्रभामि (ति
  $$#) I
 पद्धार्थन } देवो पद्धाय = पद्म + वय् ।
पद्धारम
 पद्माइअः ) दि [प्रस्थवित] १ चाचः 🛭 पा
 पद्माणं र्रेन्टरें भताक्य होंबयं (ख १६ँ)
  गरिक्तो प्रिमं बढ पदार्श (क्मीन ११)
  ११ परम १६ लग मोम ४६७) कर १६६
  दी मुपा२२ ६ ६ ती११८ वस म्हा)।
   २ म्, वकायम (दश ४ ६)।
 पद्माय न [पद्मायन] नाचना (तुपा ४६४)।
 पसानिक्र रि [पसामनित] विवने पदावन
   किया हो यह कागा हुआ। तेखनि धाननर्वतो
   रिनाधो तो काशियो हुएँ (तुरा ४६४) ।
  पस्मव रि मिस्सनी गुरीव (चंड) ।
  प्रस्य परु पिस + अय ] बाद बान्स
    श्वद्यताः गरायदः, नजायस्ति (महाा पि
    १६७) । मीर बताराचे (ति १६७) । वह
    पद्धर्यन पद्धश्रमात्र (श. २६१: शाना
    रेका मान १ । एत इ.२१): बङ्ग पद्धाइम
    (माट रि १६)। हेड प्रकाइड (पाक
     रशानुसा ४६४)। इ. पश्चाइमञ्ज (पि
    250):
```

पखिळा) विजिल्लिया पिती रे सर्वेक वहा

पर्स्सवत ∫ हुमाँ। २ न सक्तंत्र सावतः (वंड)

पद्धियर वि प्रिज़िपर किनारी (वे ध

ý.

पर्याहर २)।

25)1

```
पञ्चम पृदि विकार सकर (दे ६ व)।
पश्चाब केहो प्रसाइश्च = पनावित (खाया र
 ३ स १३१ उस यू २३७३ वस ४०)।
पद्मयण न [पद्मवन] भाषना (मोव २६
 दुर २ १४)।
पश्चायणया की उसर देवो (वेरन ४४६) !
प्रस्मयसाण देवी प्रसम् = परा + धन् ।
पद्माख वि शिक्सको शहत सानावाचा (प्रयु
  1 (145
पद्मास न [प्रस्ताक] तृष्ठ-निशेष पुष्पत (प्रस्
 २ ३४ पान भाषा) । पीडय व [पीठक]
 प्रवास का बाधन (निष् १२)।
पक्षास्मा वि [पद्धान्त्रक] पनलः—पूपलः का
 अना इया (याचा २, २ ३ १४)।
पञ्जब सक [स्थाराभ ] मगाना, नष्ट करना ।
पत्ताबद्ध (क्रि.४. ६१)।
पकाव पुंदिसावी शनीकी वाह (तेपूर
पञ्चव दे जिलापी धनकंक मानका बक्तन
  (मक्दा)।
 प्रश्लाच्यान [साशात] नष्ट करनाः अवस्ता
  (इमा)।
प्रधावि वि [प्रकापित् ] क्लारी पर्ववह
  प्लानिशी एसा (रूप २१२, संबोध ४७
  ममि ४६)।
 पक्षाविभ वि [प्रस्तवित] द्ववाया ह्या,
  क्लियाच्या (पुर १६ २ ४० कुत्र ६०
  ६७ एत)।
 पश्चिमित्र विक्रियमित् । भनमेन बौदित
  करवामा क्ष्माः नोबार् कि बुक्बरिक प्रवादित
  धरवरावलहो नार्व धरवानिव (स्वि)।
 पश्चाविर वि [प्रस्वापितः] वचनाद करनेवाका
   प्राह प्रशेषकण्याविरास बहुक्स देखा वह
  दुरमो' (शुना २ १), फिल्स्नाखीर वर्षेद्र,
  एसे एवं क्बावियें (तूरा २७७)।
  पद्मम प्रियाशी र इस-विशेष क्रियुक
   ना बुख काक (क्या १६२ ना १११)। २
```

**छत्र (क्रमा १६ या ३११)** । ३ दून

वर्ष वता (पार्थः बण्या ११२) । ४ म्हरूल

बन का एक विष्कृती कूट (ठा ---पव ४३६)

₹**₹**) I

प्रसासि भी है। असी और गवा राज-विकोष (वे ६ १४)। पद्मसियां हो वि पद्मशिका (अन्त्रहरूर **ब**ध्स की बनी हुई ककती (सुम १४ ર 💌)ા प्रसाह देनो प्रसास (सीम १६) पि २६१)। पद्धि देशो परि (सुम १ ६, ११ २ ७ ३६: उत्त २६, ३४ पि २६७)। पश्चिम न पिडिश्वी १ वृद्ध सवस्या के कारल शर्मीकाप्रकादेशों की धेवता। २ वस की मुर्दियों (डि.१. २१२) । ३ कमें कर्म-पुरसा के केद सता पश्चिम वर्गति (भाग १ ४ ३ १)। ४ इप्लिट ब्लूहर्ल डि समुद्रे वाहए वा मुनिए वापसियं पर्वरे (बाका१ ६ २ २) । इ. कर्मकम (ब्राच्य १ १ २ २)। ६ तपः। ५ कः, वि स्थित । १ वृत्तः वृद्यः (ह १ २१३) । १ पक्त ह्या परेप (वर्ग स निष् ११) । ११ वरा-बस्तः भ क्रि दिन्बद बाइरर्जं पनिक्तम्बर्ककृत्सर्थं (सन्)। हाय "ठाण न ["स्थान] कर्मस्यार कारकाना (पाचा १ ६ ६ २)। पश्चित्र न [पश्ची चार अर्थ का दोन की गीव कुम्बाकी नाग (तंदु २६)। पक्रिक देवो प्र≣च्यास्य (पद १६०- सक वी २६। तव रा इं २७)। पश्चिम (क्य) केवी पश्चिम (पिन)। पश्चिमें इ.प. ही वर्षक बाट हि र ६० तम ३६ मीप)ो आसणाव "बासन | या<del>वन विशेष</del> (दुपा ६३६)। पढ़िजंका की [प्रश्रूष] क्यासन मारत-विदेव (ठा ४<u>,</u> १—ग¥ ३)। पश्चिमं सम्बद्धि । प्रति + क्रम्म हे । प्रत्याप करना। २ ठवना। १ क्रियाना थोपन करमा । पति ईपैति यति ईपैनैति (स्त १४ १३; सूच १ १३ ४) । श्रेष्ट्र- पश्चितीयय (माचा२ ११११)। वह पश्चितंत्रमाण (माचार ७ ४ राव १८ व र)। पश्चित्रंचण न [परिकृक्षान] नामा कपट (तुम १ ६, ११)। पिंडिंग्या की [परिश्वामा] र तन्त्री बत को जिल्ला। र कार्या(शा ४ र

पश्चविश्र-पश्चिष्ठंचया

ही---पत्र २ )। ६ प्रायदिवतः विशेष (स्र ¥ 1)1 पश्चित्रीय वि [परिकृष्टिम्] मामानी क्यारी (नव १)। पश्चितंत्रिय वि [परिकृष्टित ] १ वरिवत । एन माबा कुटिमता (वद १)। **१** ग्रस-कन्दन का एक बोध पूरा बन्दन न करके ही गुर के साथ बाउँ करने सब जाना (पव २)। पश्चित्रंकिय देशो परिष्ठक्किय (भन)। पश्चित्रच्छ्रम रेको पश्चिआच्छ्रम (वाना १ 2, 2 3) 1 पिंडरम्ब्र देशो पविद्योद्ध्य (बीप-प्र 1 (₹) i पिछडिक्स वि [परियोगिक] परिजानी भानकार (सप २ ६)। प्रसिक्त देखो पश्चिक्त (नाट—निष्ट १८) । पश्चिमोच्छम वि [पश्चितावच्छम] कर्मी-ब्रव्य कुक्सी (घाषा १ ६,१ ३) । पश्चिमोरिक्स वि [पर्यवस्थिस] स्मर देखो (बाचा मि २६७)। पिनशोद्धाः वि [पर्यविश्वास] प्रधारित (पीप)। पिक्रजोबम पुन [पस्योपम] समय-मान विशेष काल का एक धीवै परिमास (ठा २, ४ भग्नम् महा)। पश्चिम (शौ) देखी पहिच्या (प २७६)। पश्चिकं बणया देवो पश्चितंत्रणा (सम ७१) । पश्चिम्सीज वि [परिश्रीण ] सय-प्राप्त (सुम २. ७ ११ मीत)। पश्चिमात्र 🖠 [परिग्रोप] १ पन्नः शासः कारी । २ मासक्ति (सूच १ २ २, ११) । पश्चिम्बण्य ) वि [परिषद्धमी १ समन्तः पिक्सम व्यान्त (सामा १ १--पत्र च≈ारे ४)।२ तिस्य रोताह्माः 'रोवेर्डियनिव्छनेद्धि'(द्याचा १ ४ ४ २)। पशिच्छाअ सक [परि+छाद्य्] इस्ता धानधास करना । नविनदाएर (धाना २ 2 2 4)1 पश्चित्र सक [परि+ विद्]केन्त करना बाटना । येड पश्चिष्टिकृदिय पश्चि-चित्रदियाणे (याचा १४४ ४ १३१ ६ ર ₹)ા

पछिप्रिकास वि पिरिकासी विशिक्त काटाहुमा (सूम १ १६ ४८ पण ४०% पुर ६, २ १)। पक्षित्त वि मिदीसी क्वनित (दूस ११६ र्ख ७७ भग)। पिलपान रेको परिपान (पूप २, ३ २१) पाचा) । पक्षिप्य धक [ प्र + दीप् ] असना । परिप्यद (वडः प्राक्त १२) । यक्त पश्चिप्पमाण (वि २४४)। पिक्रवाहर ) वि पिरिवाहा हमेला बाहर पसिवादिर र होनेवाँचा (धावाँ)। पश्चिमाग पू [परिमाग, प्रतिमाग] १ निर्विभाषी धैरा (कम्म ४ ६२) : २ प्रति-नियत बीरा (बीवस ११४)। १ साहरय, समानवा (चन)। पश्चिमित् सक [परि + भिद्] १ वानता । २ वीलना । ६ भेदन करता, तोकृता । संङ् पश्चिमिवियाणं (सूप १ ४ २ २)। पश्चिमेय पु [परिमेद] दूरना (निदू १)। पश्चिमीय सक पिरि 🛨 सम्बर्ी बॉबना । पविभंक्य (इन्त १, २२)। पिंतमिय दू [परिमन्द] १ विनाश (सूच २, २६।विसे १४४७)। २ स्वाच्याय-व्याचात (बत २६ १४ मर्मर्स १ १७)। १ विका बाबा(सूघ १२ २,११ टी)। ४ पूर्वा, म्यापार, भार्य क्या (यानक १ १) ११२) । पश्चिमेंश्रम र्षु [परिसम्बक्त] १ बान्य-विशेष काला चना (सुधार २,६६)। २ गोस भना। ६ विसंव (धन)। पश्चिमंद्र वि [परिशन्य ] सर्वना नातक (छ ६—पत्र १७१ क्स)। पश्चिमद्द वेको परिमद्द । परिमहेन्द्रा (पि पक्षिमद् वि [परिमर्दे] माविस क्लोदाना (मिषु ६) । पश्चिमोक्स देको परिमोक्स (बाला) । पश्चिपंचल न [पर्येश्वन] परिस्नत्य (सूर

७ २४३)। देवी परियंचण ।

पश्चिपंत र् [पर्यम्त] १ धन्त व्यव (तूच १

६११४)। २ वि धरतानकानाः सन्त-

भारता पिलयते मणुयास्य भीविये (मूच १, २११०)। पिछ्यतः न [पष्ट्यान्तर्] पस्योपम 🕏 भौतर(सुम १२११)। पिक्षपस्स न [परिपार्थ] समीप पास निकट (मप ६ १---पव २६८)। पिछ्य वैको पिछि अ = पितत (है १ २१२) : पंक्षिम केवो पश्चीव । पश्चिक (पि २४४)। पश्चिमत वेको पसीमत (राज)। पर्विविश्व वि [प्रदीपित] बनाया हुमा (पर् ≹ t t t) : पव्यिष्टिस मक [परिधि + व्यंस्] नष्ट होना । पश्चिमश्रीसंग्या (प्रसु १८) । पश्चिमय ) सक [परि + स्प्रज्ञ] मानिगन पद्धिस्सय करना सर्व करेना धूना। पिसस्यप्रमा (**११** ४)। नहः पश्चिसयमाणे प्रस्ता को सहना पारामाधील (बह ४)। श्रेष्ट पश्चिस्सक्**र्व (श्र**ह ४) । पिकड सेबी परिष्ठ = परित्र (राज) । पश्चिष्ट्य वि [दे] मूर्च वेदमूक (दे ६ २ )। पब्सिद्द की दिं] क्षेत्र केता नियमसिद्देश बोहिबि किसिकम्म काउमाहर्स (सूर ११. २ १)। पिस्सित्त क्रि. अन्यं दाव कार्य-विशेष ( 4 2 5 ) 1 पश्चिद्याय पुंचि क्यार देखी (देव १६)। पर्छा एक [परि + इ] पर्यटन करना अपछ करुता। पतेइ (सूम १ १३ १) पत्रिति (सूम ११४ १)। पर्छने सक [म + अस्ति] सीत होता सासच्छि करता। पेतिति (शुष्य १ २ २ २२) । महत्पहोमाण (भाषा १४१३)। पर्ध्मण विषिधिनी १ स्रति लीन (भग २४ ७)। र संबद्ध (नूष ११४२)। ३ प्रतय-प्राप्त नष्ट (पुर ४ ११४)। ४ विसा ⊈मा निनीन (गुर १ २०)। पक्षीमंथ देखो पक्षिमंथ (सूच १ ६ १२) । पन्नीव सक [प्र+दीण] वसका। पन्नीवद पर्ताथ सरु [प्र+दीपय] वनाना कुत्रपाना । वत्रीवद, पत्तीवेद (बदा- हे १ १२१)। बंह पर्कविक्रण, पत्रीविक्र

વહર	वा <b>रअसहमहण्यपो</b>	पदीव—पठि
यसीय १ [प्रश्राप] शेवर शैषा (प्राष्ट १२) यह)।	पर्योह सक [ प्रस्या + गम् ] सीटना, नापस माना । पर्योहर (है ४ १६६) ।	पर्द्रपत्र न [प्रस्कृत] १ स्रोतित्रमश (छ ७)। र नमन, प्रति (बच २४ ४)।
पर्श्रायम दि [प्रतीपक] धाम सनस्विताला (पर्श्वर १)।	पस्रोहुसक [परि+अस ] १ वॅदना। २ मार विस्ता। १ सक पत्रत्वा विपरीत	पद्धना देवो पद्ध = पद्म (दिवे ७ ६)। पद्धनु देवो पस्टू = परि + सत्। पद्धनुह (हे
पस्तीयम न [प्रदीपन] यान समाना (मा २८: दूप २६)।	होना। ४ प्रदृष्टि करन्छ । ३ गिरना। पत्तेष्टुह पत्तेष्टुह (हे ४ २ ः स्यां कुमा) । वहा	४ २ मणि)। संक्र. पद्धकृषं (पंचा १व १२)।
पश्चीवयाया की कार देनो (निष् १६)। पश्चीविक्ष देनो पश्चीम न प्र + रीपन्।	पक्तार्ट्स (बभा ६६ या २२२)। पस्रोट्ट यक [प्र+लुट्] बमीन पर बोल्या।	पहरू पूँ [वे] पर्वत-विशेष (पण्ड १ ४)। पक्षरू पूँ वि परिवर्ती बास-विशेष समन्त
पद्मीयिञ्ज वि [प्रदीस] प्रज्ञसित (पाम) । पद्मायिञ्ज वि [प्रदीपित ] वनाया हमा (ज्य) ।	वह पमार्ट्स (ने ६, ६०)। परस्रह वि [पर्यस्त] १ क्रित स्टॅना हुया।	काल कर्में का समय (बल ४०)। पछट्ट हे केवी प्रलाह=पर्यत्व (हे र ४०)
पलुंपण न [फलापन] प्रमोल (प्रील)। पलुंदु नि [पलुंटित] नेटा ह्या (११	२ ह्वा ६ विशिष्त (दे ४ २४)। ४ पठित, निष्ट हमा (ना१७)। ४ प्रदृत्तः	पद्धरंव रे ६०)। पद्धरंव के [पथस्ति] साधन-विशेव नलपीः
११६)। पलुङ्ग केरो पस्रोह= वर्गस्त (हे ४ ४२२)।	िरिक्षेत्रा वरणस्या तयो पत्तीहा बना बना   स्रोमा (कूमा)।   पत्रमहत्रीकृति   कि सुन्य-मेवी बात नी	न्यानरक्षार्यां पङ्गानिकंत्रत्यं विवयद्वितार्यं च । क्वासक्ष्मेत्रसम्बद्धाः जिल्ह्युत्यो सन्तरः सन्तराः ॥ (विष्टमः ६ ) । वैस्रो पक्कृत्यियाः ।
पसुष्टिञ रेजा पश्चाहिश्च = पर्यंत (दुमा ४ ७५) ।	प्रकट करनेवामा (वे ४ ६४)। प्रकट करनेवामा (वे ४ ६४)। प्रक्षोहण न [प्रमुख्यन] इनकावा सुब्दाना	पद्धन्न न [परुपत] बीटा तमान (शक रेक् बावा र राजुग ६४६, व ४२) र
पलुद्ध [ब्लुष्ट] रूप वता हुशा (पुर श २ ६ नुपा ४)।	विराम्य (स्व इ ११ )। प्रसाद्धिम केनो प्रसोद्ध = वर्षस्य (हुमा)।	पद्धत्र पुं[पद्धत्र] १ विस्ततम् अपूर (पाम धीरा)। ए पत्र पद्धा (के २१)। १ केट-
पस्तमाण केवी पक्षी = प्र+शी। पक्षिप पूं[प्रनप] एक आधि वा पत्पर, वापाल-निरोप (पी.वे)।	पस्रोभ एक [प्र+स्रोभय्] सुमाना नातव हेता । पनोमेरि (ग्री) (नाट—मुख्य १११)।	विशेष (वर्षि) । ४ विस्तार (कप्पू) । पद्मव देवो पक्षव (वस ११३) ।
पसोध्र तम [प्र+क्षाक स्प्रप्य] देसस निरोग्ध करना । क्लोसर, क्लोसर्	पस्तोमिक वि [प्रसाभित] नुवाया हुण (वर्मेवि ११२)।	पहचाय न हिं] शेव केंद्र (दे ६ दर्द)। पद्धप्रिम नि हिं] वाधान्तक (दे ६ दर्ध)
वनोग्द्र (गण्डः नदा)। कर्म वनोदश्यद् (वण्र)। वह पद्धार्थन पत्तोसर्थन पता	पसांभि वि [मसांभिम्] विशेष बौधी (वर्षीय ७)। पसांभिभ्र वेची पद्मोभिष्म (पुरा १४३)।	नाम)। पद्मविक वि [पद्मवित] १ पङ्मवाकार (दे
र्मन पन्दरम्माग पलायमात्र (रवण १४) न्या-मार्ग्य १२ नहाः ति २६१ नुपा	पक्षाव (धर) वेजो पत्साञ । क्तोबद (सवि) । पछाद्दर [द] देजो परोदट (बर ६ ४ म) ।	६, १८) । १ संङ्कारितः प्राप्तमृत, जन्मम (१ १) । १ स्क्रान-पुत्तः (रमा) । पश्चमित्रः १६ [सङ्क्षमम्] सक्रान-मुकः (तुना
४४ १४१)। यद्मेश्रण न [मलोकन] मश्तीरन (न १४) १४ या १११)।	पद्मोदित् (ही) क्लो पस्ताभिन्न (बाह)। पक्स पुन [पल्प] १ पीन मानार का एक	प्रसार होता प्रदेश (है रु. १६४)। प्रसार किया प्रदेश (है रु. १६४)।
पस्यभागा भ्यं [प्रस्थेशना] निरोक्तल (बीच १)।	नात्र्य रसने का नाम (१४ १४०० द्वा १ १)। १ नास-परिमाल विशेष नस्योपन (नजन २ ६७) व १७)। ३ संस्थान-विशेष	पहन्स केरो पसाङ् = चौर + सन् । चनस्यः (प्राप्न ७२) ।
यसंद दि [प्रस्यक्ति] प्रेयक (यीप)। यसंद्रम दि [प्रसादित] देना हुवा (बा	पत्रपंक चेरचान; 'पत्रासंद्रालखंदियां' (तत ७३)।	पद्माण न [पर्योज] सम्र सर्वर शास्त्र वर्षः वरिष्ठो प्रमानं स्वतेषु सस्त्रो तस्त्र (प्रीत रक्षः प्राप्त)।
११ वहा)। पर्योद्धारि[सस्त्रिकिट] वैसक (ना १	पन्न दृषिष्ठ] चान्य करने का बड़ा कीटा चहरे बड़्ना बल्तीले प्रिकृतिला विद्वति (स्तान १ क्यान ११२)।	। प्रस्न वर्ष [प्रयागम्] स्त्र सारि वी क्याना । श्रमाणेट्र (म १३) ।
वरि) । पर्माण्यः क्लोपसार्यः } देवीः पद्मेश्च ।	पहुँच होता प्रसिद्ध (हे १ ६ १ वर् )। पहुँच होता प्रसिद्ध होता निर्मेश कर स्थित	पद्माणित्र रि [पर्याणित्र] वर्षाल-पुतः (दुना)। पनि को [पति] १ को संबंध क्षेत्रों के
वनायर [व] रेगो परादव (स १११ व)		निराध का गर्न स्वान (धन ७२ ही)।

नाह् पूर्विनायी पक्रीका स्थामी (मुग १४१ तुर २, १६)। यह हु [पिति] वही धर्वे (सुर १ १६१) सूपा ३४१)। पिक्रिअ वि दि । स्थानग्द (निष् २)। २ बस्त (निष १)। १ प्रेरित 'पहाट्टा पहिन-बाख्द्रमं (वरा ४७)।

पहिच वि दि | पर्यस्त (पर्)। पद्मी देशो पद्धि (मउद्यार्थका १ 111 मुर२२४)।

पक्षीण वि [प्रस्त्रीन] विशेष सीन पुर्विदिए महोरा पहाँगी बिहुई (सम २१ ७) हम्म)। पक्केट्रजञ्ज [दे] देशो पञ्जोट्टजीह ( पर् )। पहनूत्व देवी प्रसाट्ट + परि + प्रम् । परहापह (ह्रे ४२)। वक्र पशहस्वीत (से १

१ ३२ १)। क्यष्ट पल्इत्यंत (से व 4 11 24) 1 थरहरय एक [वि+रेचण्] बाहर निका-

सना। पश्हल्बद् (१४२६)। पह्नदरम देवी पछोद्र = पर्यस्त भारतस पस्तपपुरे (मूच २ २ १६ क्रेप २१४)। पल्हरथण न [पथसन] धॅक देना प्रजेपल 'सप्तवा भूवलपस्त्रपलपवलो समुद्रिको दुर

पक्यों (मीड् ६२)। पस्द्रस्वरण देवी पदरवरण (६११ १ ६)। पस्त्रवाविश्र नि [विर्माचत] बाह्र निरम बाबा हुन्न (कुमा)।

पस्द्रियञ देशो पस्नोट्ट = पर्वस्त (स \* २ : लामा १ ४६--पत्र २१६, सुना

1(30 पर्स्तरथया की [पर्येग्टिक] मासन-विरोध---१ दोना वानुबाहा कर पीठ के साव वादर कप्रकर बैठना (पव ६८)। २ औद्यापर बद्ध सपेटकर बठना। ३ जैवापर पांव रखकर बैठना (बच १ १६) । पट्ट दू ["पट्ट] योव-पट्ट (राष्ट्र)।

पसद्य १ र्ष [पद छय] १ समार्थ देश-यस्य । विरेप (क्ल हुप्र १७) । २ दुंबी. पहुर देखका निवासी (मन ६,२—०व १० यंत)। धी वी, विया (पि ३६ : धीरा ए। या १ १ — पत्र १७- इक् )।

पस्त्वि दुंधी दि पह्सियि ] हानी की पीठ पर विश्वामा जाता एक तरह का कपड़ा 'पन्तृति इत्सरपद्याँ (पन प४)। पम्हविया } देवो पल्ह्य। परदंशी

परद्वाम सर्क [प्र=ह्स्प्रद्] भागनित्त करना कुठी करना । पत्हायद (संबोध १२)। शक्त पल्द्वायंत (स्त्र पुर ३ १२१)। क्र रेको परसायणिका । । पल्ह्याय पूँ [प्रह्र्स्टाव्] १ मानन्य न्युरी।

(कुमा) । २ हिरग्यकरियु नामक देख का पूत्र (हूर ७६)। ३ झाठवाँ प्रतिवासुरेव चना (पत्रम ६, १६६) । ४ एक विचावर [ नरेश (पडम १२, १)। पत्हायण न [प्रह् सावन] १ विच-प्रसप्ताः मुद्यी (उत्त २१,१७)। २ वि मानन्द शतक (मुना ६ ७)। १ वृ चवल का एक

मुक्तर (पराम १६ ६९)। पल्ह्यायणिकः वि [प्रह्नुसादनीय] यातन्त्र वनक (छावार र—पन रदे)। पस्तीय पूंच [प्रह्-द्वीक] देश-विरोप

(पडम १८ ६६)। पद्म वह [या] पीना। इह "घरसम्बद्धा स प्ययाज्ञां रगा भाग बासिद्धि (भग ♥ ६—पन ३ १);

पद्म धक [युनु] १ फरकना । २ सक सदम कर काना। ३ तरना। पत्रेज (सूम १ १ २, ८)। बद्द पर्यंत प्रवसाय (से ६, ६०) माचा २, ६ २, ४)। हेइ पवित्रं (मूच 2 2 Y 3)1 ेपचप्रे [प्छत्र] १ पूर (दुन्त) । २ इन्छ्यतः ै बुबना। १ वर्र्स्य विला। ४ मेक मेहक। ६ बातर, बन्दर । ६ बागुदान कीम । **७** वत-मकः। य पाष्ट्रहं का पेड़ । १ शारएक्व पत्ती। १ राम्य, धारात्र। १६ स्पूर, दुरमनः। १२ मेर मेंग्रा १३ थत-पुत्तुट। १४ जब पानी। १६ वसवर पती। १६ तीका नाय (द्वेद १६)।

पव ध्येन [प्रपा] पानीक्साला प्याळ सङ्ग्रीण वापकारिष्यां (प्राचा२२,२,१)। पर्यग दूं [प्छवङ्का] १ वानर (ते २ ४६ ४ ४०)। र बानर-वंदीय सनुष्य । नाह व

["नाथ] बानर-वंशीय राजा वानी (पदम हे २६)। यह पूर्णियति बानरराज (पि १७६)। पर्यंगम र् [प्छर्यंगम] १ बागर (पाम से

६ ११)। २ द्यन्य-विशेष (पिग)। पर्यंच पूर्णियाच्ची १ विस्तार (उप १३ धी थीत)। २ संसार (मूध १ ७ उप)। ६ मतारस ठमार (उन)। पर्यंचण न प्रिपद्धानी विप्रतारल वद्यना

ठगाई (पत्ह १ १---पत्र १४)। पर्वचा को प्रियद्धा । मनुष्य की दश दशामी में साउनी बशा-६ से ७ वर्ष की धनस्पा (ठा१ ठंदा१६)।

पर्विषय वि [प्रपश्चित] विस्तारित (मा रेश चूब रहरा)। पर्वद्ध सक [प्र+थास्छ्] काञ्चना यमिनाम करना । वह पर्वस्माण (उप 9 t= ) ı पर्वत देखो पम = प्यु ।

पर्वपुत्त पूर्व [दे] सम्बद्धी पकर्त का जाल विशेष (विपार य—पण वर)। पपक वि [प्यक्षक] १ वसन-पूर करतेराता । २ प्रेलेबाला (पएइ १ १ टी---पत्र २)। ६ पू पक्षी । ४ देवनाठि-विशेष भूपर्णेनुमार नामक देव बाति (पएड् २ ४-पव १३ )। पश्वस्त्रमाण देखो पद्मय = प्र + वच ।

पदम देशो पयक (परह २ ४) कमा सीप)। पथाल सक श्रि + पद्मी स्थीकार करता । पदम्बद्ध, पदम्बिका (स्वीत हित २)। भवि पविमिद्विति (पा ६६१)। बहुः पयर्ज्ञत (मा २७)। एंड पर्वक्रिय (मोड १) । इ. पवज्ञियस्य (पंचा ११) । पवण्डण न [प्रपद्न] स्वीकार, ह्रांपीकार

(स २०१ वंदा १४ ८) मावक १११)। पवाला वेको पढाउता (महादि ४) । पविश्वय वि [प्रपन्न] स्वीहत संवीहत (बर्मीव देवे क्या २६६: सूरा ४ ७) । पविजय वि [प्रवादित] को बबने सवा ही

(8 wxt) i पर्वाग्रहम रेको प्रशास ।

पद्य सद्य [प्र+पून्] प्रवृति करना। पनदूर (महा) ।

का प्रव (प्रस्म ६ ६०) । चंड ए विप्रही

(बड के २ २६ 🗗)। प्यक्रम वि जिल्लाको अनुति करानेगामा (सम्)। पवड़ि की प्रवृत्ति प्रवर्तन (हम्मीर १३)। प्रवृद्धिक वि प्रवृद्धित । प्रवृत्त विश्वा हुया (मिरि पे)। पबट्ट देखो पबट्ट≂ बकोह (दे १ १६६)। पवडं सक प्रि + पन् ] पड़ना मिरना। प्रवृद्ध प्रवृद्धिक्य प्रवृद्धक्य (भगः रूप्प ध्यका २ २ ६ ६)। बद पत्रवेत पवडेमाण (कामा १ १: सिरि ६ १: याचा२२३३)। प्रवास्त्र व मिप्रवानी सव ततः (शाः ६)। पषडप्यमा ) भी प्रिपतना विकार देखी (हा पवद्ययो 🕽 ४ ४ — यम २० ३ एक)। पवडेमाण देखो पदश्च । प्रवद्ध प्रकृष्टि | योहना सीना 'बाब एका प्रकृष तान बहेडि निधि प्रकारत्ये (बुच ६, १) । प्रमुख्य सक्ति + क्या विक्रता । प्रमुख (ज्य)। वक्क प्रवाह्यसाध्य (क्रम्पः सुर १

१ राज्य १२४)।

युष्ट ४१ )।

(शाया १ १४)।

नी एक सवान्तर वाति, वदवदुवार (भीव<sup>.</sup>

नरहर ४) । **२ हनूमान् ना मिता (के र** 

यवट्ट वि [प्रवृत्त] किसने व्यक्ति की हो वह

पषद्द वि [प्रपृक्त] वटा हुमा (सम्बर्ध )। पन्डक्य न प्रियम् नी १ वहान प्रमुद्धि (संबोध ११) । २ वि वक्तमेनासङ प्रसारस्य पवच्छी (सुमार १२ २४)। पविद्वय वि प्रविष्ठ विदान ह्या (स्वि)। पमण विश्विमकी १ क्लार (बूब १३४)। २ र्वदूरस्य स्वस्य सूरवः पश्चित्रस्मि या प्रवस्ते पूर्ण व बहा स संजामी' (का ११७ में; प्रकृत न [च्छ्रमन] १ उद्यक्त कर गमन (भीव ६) । २ वस्तु 'वरिज्ञानस्य परद्र्यं (१ बल् ) किथे (काया १ १४-- पत्र १६१) । "हिन्द र्द ["कृश्य] नीवा नाव, शॉवी प्रयाद [प्रयाद] १ तत्र वाह्य (दायः प्रान्तु १ २) । २ देर-जाति विदेव जवनाति देशों

व्यक्ति-काचक नाम (महा)। तपास पू िवनयी इत्रमान् (से १ ४०)। नेतृपा पु निम्दन हिनुमान (परम १६ २० कमक १२३)। पुत्त ई ( पुत्र दिस्तान (पत्रम १२ २०)। श्रीग व विग १ ब्राम्मान का शिंद्या (पद्मार १६८ ६६)। २ एक वैत प्रति (पठम २ १६)। सम पु [सुत] इतुमान् (पदम ४१, १६) धे ४१६ ७ ४५)। । जोद प्रसिन्दी हतुमान् (पदम १२ १)। पवर्णसञ्ज्ञ प्रेपिकतन्त्रस्यी १ अनुसन् का रिता (पट्टम १६,६)। २ एक मेहि-पूर्व (क्य १४७)। पक्षणिय वि [प्रविषय] पुरव विमा वृद्ध तंदुरस्य शिया हुमा (७५ ७६ टी) । पवण्ण केवी पवस (४७)। थवत्तः 🖬 पवडू=#+दृत्। पवतः, पवत्तए (पव २४७ छव)। पदत्त सक्षि + क्लीयी बद्दा करनाः पनतेह, पनतेशि (वन १, वप्प)। प्रवक्त देवो प्रवट्ट = प्रवृत्त (प्रक्रम ६२ ७ ३ स १७६ रेख)। प्रमच्या वि [प्रयक्तिक] अवृत्ति करमेनाता (प्रथ ६३६ टी) वर्मीच १६९)। पवचलान प्रिक्चैनी १ व्यक्ति (दे२ ३ क्त ११ १)। २ वि प्रकृति करानीवाला (क्ता ११ १) पश्च १ १) । पवत्तम विभिन्नतंत्री १ प्रवृत्ति करोनामा (हेर रे)। विप्रमुख करानेनाचा "क्रिक्टरप्यक्तम" (प्रक्रि १ ) यन्त्र १ १ )। पवर्षि भी [प्रवृत्ति] प्रवर्षतः। बाउय वि िष्यापूर्वी अकृष्यि में सवाह्मसा (सीप)। थवरित वि जिल्लीचन है अवस्थि करनेवाला (छ ६ ६) क्छा क्या)। पविचर्या औ [प्रयोचनी] साम्बर्धा क्षे धम्बद्धाः पुत्रस्य वैतः शास्त्रीः (तुरः ४३) मका)। पर्वतिय देवा पवड्डिश (रात) ।

पवित्तवा की वि विश्वकती का एक जाकरत (क्रप्र १७२)। पंचर हेबी प्रथम = प्र + वर् । वहु- प्रवृत्मान (भाषा) । पथि औ [ प्रश्नृति ] इक्ता, पाल्क्ष्यक (संक्रि ६) । प्रवेद केवी प्रवद्ध ≈ प्र + क्या। सक पषद्वसाय (पद्ध ६१६) । पश्च तु 📳 मन, इनीझा (वे ६ ११) । पविद्य केवी पविद्यय (महा) । प्रवास नि [मप्तस] १ स्वीक्टन धेनीक्टन (चेदन ११२ प्रातु २१)। २ प्राप्तः 'प्रकाशप्रविश्वायन्त्रमान्त्रवो' (म्हा )। प्रमाण देवो एव = प्रा पदमाज पुँ [पदमात] पथन वसु (हुव पद्म तक दि + बद् ी १ वक्क करक। २ बाक्-विवाद करना । बद्ध- पदयमाण (याचार ४ १ व)। पक्य सक [श्र+थच्] क्षेत्रता कहता । यवि कम्क प्रवस्तामाण (वर्गते ११)। कर्म पहुच्चा, पहुचा, पहुचारे (कम पि १४४३ भव)। पथ्य देशो पद्यक्र = ध्वनक (स्प दृ २१)। पवन प्रियमा वानर, करि (पत्रम ६% इ । हे ४- २१ । पाम से २ ६०। १६, १७): बह्र्यू ["पवि] बानरी का छना मुनीन (से २ ११) । "तिहम दूं ["विषय] नही पूर्वोक्त सर्व (से रु. ४ ; १२,७ ) । पवक्य प्रशिवासी कीहा बाद्रक (दे %) 1 (05 प्रवयण न [प्रवश्वन] १ जिनकेन-वर्धीय रेपर)। र भैन बंगा पुरातपुरामी धंगी पनस्क शिर्मिति होइ युन्हा (वेन्स व रेटा मिसे १११२० चन ४२३ हो। चीन) । रे बावम-कान (विधे १११९) । साथा की िमाता । पांच कपिति और तीन क्रीत का वर्ष (श्वन १३)। पनर वि[प्रभर] येह बत्तम (बना दुरा देश्य देश्यां शाचु १९६; १९४) ।

पवरंग न [दे प्रवरात] सिर, मस्तक (दे 4. 34)1 पबरपंडरीय पेन जिमस्पण्डरीकी एक देव-विमान (भाषा २ १६, २)। पद्मरा की प्रिवस निवास कासूपुरूप की शासनदेवी (पन २७)। पवरिस सक [म+वृष ] बरसना कृष्टि करता । पर्नासह (मनि) । पवज देवो पवल (रूपा कुप्र २४७)। पवस सक प्रि+वस | प्रमाण करना विदेश काला। बार पवर्सत (से १ २४ मा १४)। प्यसण म प्रिवसनी प्रवास विदेश मात्रा समाजिये (स १६६ चप १ ३१ थी)। प्रवसिक्ष वि प्रोपिटी प्रवास में क्या हवा (बा ४१ वर । बुर १,२११ सुवा ४७१)। पबद्ध सक [प्र+यद्य] १ बद्दनाः २ सक. टपकना भारता। पनहृद (भूकि पिय)। वक्र पवार्टस (सर २ ७४)। संक्र पविक्रिक्त (सम द४)। प्याद्य स्क शि + इस् ] मार ससना। वक्र 'विष्या पवहंतं गरम करवर्ग कतिय करवानं (मुपा १७२)। पबद्वविप्रयद्वी श्यक्तेवालाः २ व्यक्ते-बाबाः शुनेवाताः चड्ड खालीधो धरभैतरण-वद्वाभी (विपा १ १--पत्र १६)। पयह प्रवाही १ क्षेत्र बहान कम-बास (पा ३८६, १४१ पूना)। २ प्रदृत्ति । ३ व्यवहार । ४ वत्तम यस्य (हे १ ६॥) । १ | प्रमाद (राज) ( पबद्दम 👫 [प्रवद्दम] १ नीका बहात । प्रधायन वि [प्रशायक] पाठक मध्यापक (शामा १ ३ पि १२७)। २ पानी माहि । बाहुन 'भूग्यगया विशिष्यया विशिष्यया वत्रहरूकमा (सीप: मसु: कार **७** ) । पवदाइअ वि दि] प्रवृत्त (दे ६, १४)। पषदायिय नि प्रवाहिसी बहाबा हमा (ध्रिक्)। पपा भी प्रिपा] जलशत-स्थात वात्री-शाला, प्याक्र (बीर पएड् १ ३। महा)। धवाइ वि [प्रवादिम्] १ वाद करनेवाला मारी : १ शार्तनिक (मूच १ १ चढ Y#) 1

प्रवाहरू कि ज़िलाती बड़ा हमा (बाय) 'पनाइमा कर्तनकामा' (स ६८६) पत्रम १७ २७) सावा १ ८० स ६१)। पवाइअ वि प्रवादित विवादा हुमा (कप पञ्चाण (इस) बेको प्रमाण - प्रमाण (कुमा, पि २५१ मिका)। पवाह एक [ प्र + पाठम ] विचना । वह पनाह्रेसाम् (स्म १७ १—पत्र ७२ )। प्रवादि देखी प्रवाह (वर्मर्स १३३)। पदाय धक्र मि + वा र सक्त पाना। २ महना (हवाका)। ३ सक नमन करना। ४ दिशा करना। पनाग्रह (प्राप्त ७६)। वह पवायत (पाना)। प्रधास प्रियादी १ किंत्रक्ती बनभूति उप प २१)। २ परंपरा (सपा 🞙 प्राप्त छन्देश । २ मत दर्शन 'पदाय्हा पदार्थ वारोवा' (प्राचा)। पवाय वं घिपाती १ वर्ष गहुहा (खावा १ १४--पन १६१ दे १ २२)। र जीव स्मान से भिरता अल-समूह (सम ८४)। ६ **स्ट-पीत निपनार पर्वत-स्वात । ४ पत में** पक्नेवाली बाक बाद्य (दान) । ५ पदन (ठा २ १)। इद्द [४६] बहुपूरण बहा पर्वत पर से नदी पिरती हो (ठा२ १---पथ ७६)। पवाय द्रिवादी १ मझ्ट प्यन (क्एह २ २ वि अक्षा हुन्ना (पचन) (प्रीक्ष ७) । १ पक्त-धीछ (शुरु १) । (विदे १ ६२)। पद्मयगन प्रिकाचन विकास वस्पक्त (सम्मत्त ११७)। पनायणा की प्रवाचना कार देवी (विशे २=३१)। पत्रावय देशो पदायग (विशे १ ६२)। पदाख पुन [प्रदास] १ नवांकर, कितन्य (पाय १४१ छ।का १ १ सुना १२६)। ९ मुँगा, विद्रुप (पाम भव्य) ) संत संत वि [ बन् ] प्रशासकामा (ए।या १ १) मीप) ।

पद्मान्त्रित्र वि प्रिपान्त्रिया यो पासने सवा हो। बह्र (उप ७२८ टी) । पवास ए प्रवास विषेत-गमन परदेश-याता (सपा ६१७) हेका ६७) सिरि ६१६) । पवासि ) वि प्रियासिम् ] मुसक्तिर (गा पपास रिव पहा पि ११४ हे का 1 (25F प्रवाह सक मि + बाह्य विद्याना चनाना । पनाहडू (मनि) । मनि पनाहिति (निसे २४१ ही)। पत्राह देवो पत्रह = प्रवाह (हे १ ६८- =२) कुमा ग्रामा १ १४)। पषाइ प्रै [प्रयाच] प्रकट ग्रैका (विपा १ १--पत्र १)। पवाइय्य न प्रियाइनी १ वस पानी (पादम) । २ वहाना वहत कप्रशा विक्रम **1111** पथि पृति विशेष इन्द्रका ग्रह्म-विशेष (उप २११ टी सपा ४६७) क्रमा धर्मीक पविश्रमित्र वि [प्रविजिम्भित् ] प्रोक्सित समुत्पन्त (सा १३६ घ)। पविआ की दि] पशी का पान-पाद (दे ६ ४ ८ १२ः पाप)। पविश्रण्य वि जिवितीर्णे विया हुया (और)। पविश्वण्य ) वि प्रिकिशीर्थी १ व्याप पविद्रम 🕽 (भीप छाया १ १ टी-पत्र के)। २ किसिस निरस्त (खाबा १ १) र पविक्रस सक [प्रवि + करम् ] बारम-स्वामा करना । पविकरपई (सम ५१) । पविस्तित कि [प्रविस्तित] प्रकर्ष है किक-विव (चत्र)। पविकिर सक [प्रवि + क] लेकना । बहु पविकितमाण (ठा ॥)। पविक्तित्र वि [प्रवीक्षित] निरोजित धनतोषित (स ७४६) । पविकित्तर देखी पविकित 'नानिसक्छी व मंड पर्विषक्षिति समुद्दास्म (सुर १६ ₹ €): पविरय दि [दि] विस्तृत (वर् ) । पनिवरिय वि[प्रविवरित] गमन-हारा सर्वत्र

ETTO / 47-1 1

पविचिमिर वि प्रिविज्ञिन्भव् र स्मिथिव वनिलेति (भग) । पश्चित्र र पश्चित्र र दर्भ पूरा तूल-विशेष होनवाबा । २ उर्लम होनेवाला (धरा) । (र ६,१४)। २ कि निवॉर निम्मन**र**्रसूद पविविद्यान म [प्रविद्यक्ति] विकास विदर्भ

श्वन्त (हुमाः पक उत्तर ४३)। (उत्तरी १४)। पश्चित्त देखी पक्दर = प्रदृत्त (स ६ १७)। पवित्र सक् पिवित्रय | परित्र रुक्ता । वह-(क्व १, ६३)। पविचयतः (गुपा = १)। इ. पविचियस्य (मुपा ५ व४)। पविश्वय न [पवित्रक] वेबुक्षी वेपुनीयक पंतुत (क्षेत्र ३४० पत्र २६६) । (रापा १ १) भीत)।

पविचानिय नि [प्रविच्छ] ब्रब्स क्या हुपा (मनि)। पविचि देशो प्रविच क्ष्मृति (गुपार ग्रीन (१ प्रीप)। पविचिनी वैद्यो पदचिना (क्स) ।

पक्षियर यह [प्रथि + स्तू] फैलाला । वह. पव्सियरमाग (दब २११)। पविरवर पु [प्रविस्तर] विखार (क्ना) सूच २ २ ६२)। पवित्यरिक्ष वि [प्रविस्तृत] विस्तीर्छं (स **७१२)** ।

पवित्परिक्ष नि [प्रविस्तरिन् ] निस्दारनामा (धन-वर्षः १ १) । देशो पशिरक्षिय । पविरवारि वि [प्रविस्तारिम्] फैलीराबा (पार)। पविद्य देवी पव्यिद्ध (पन २)। र्पावकस यक [प्रवि + भ्यंस् ] १ विकरणांप-पुत्र होता । २ लिन्ट श्लेताः फैछ पर बोस्ती परिश्रं पर केल पर केली निश्रं पर के

t-14 (24): पविद्वत्य वि [प्रविक्वका] विक्ट (बीन १)। पविमाश्य भी [प्रविमाध्य ] दूसर-पुरस विश्वव (दत्त १,१)। पविभाग ई [प्रविभाग] स्मर श्वी (शिपे

teve) i

पवियक्तन वि प्रियम्भण विशेष प्रवेश पविदार पूँ [प्रवीचार] १ अस्य और वचन की केष्ट्रानीकरोध (इस ६ २)। २ काम-बीका पविवास्य न [प्रविभारण] संबाद, भारत निवारस्त्रा क्षमार्थ उत्पर्ध कुमा (सिंह 42 ) 1 पविधारणा को [प्रविचारणा] काम-बौध्य,

मैपून (देवेन्द्र ६४७) । पविचास एक [प्रवि + काराव्] फालक, कोलना 'पविमासक नियमकर्ष' (वर्गीव ₹₹¥) I प्रविमासिय वि [प्रविक्रसित] विक्रसित 'पविवासियकम्बद्धं दर्श किया हमा निकासेक निरम्नाड (सूपा १४)। पविरक्षभ नि दि । लिखि श्रीव्या-पुन्त (वे पविरंत इत [सक्ष्] घाँका दोका।

पविरंजव वि दि] स्तिन्य स्तेक्ष्मुक (पर्)। पियरिक्रिक वि [भग्न] वॉना हुमा (बुमा) RE WY) I पविरंत्रिका वि दि ] १ क्लिक क्लेक्नुखाः २ इन्छ-निपेत्र निवारित (२ ६ ७४)। पविरुद्ध कि [प्रकिरुद्ध] १ स्पेत्रिकार विश्विष्ट (परः)। ६ धारम्य बोहा, बहुत (! कमा अरक्षमकरकारविया दोसीत महोत्र चनियमगरियाँ (गुपा २४ )।

पविरक्षिय वि [वे] विस्तारवाका (पर्वा १

१-- वत्र ६१) । वेशी पविरवरिक्त ।

पविरंगः (हे ४ १ ६)।

पविल्रुश कि प्रिविल्ल्सी विवर्क्स क्ट (का ११७ हो) । पवितुष्पमाण देवो पवितुप । पश्चिम सक ब्रि+किस् ब्रिकेट करण्य-बुपना । पविसद् ( इनः महा)। धरि-पविश्वस्थानि पविश्विद्व (पि ३१६) ।

वह पविसंव पविसमाण (परम ४६ १६ युपा४४व विषा १ दःकम्प)≀संक्र. पविस्थित. पविसिम पविसित्ता प्रविसिक्षण (इका महा। श्राप्त ११५) भाग)। क्षेत्र पश्चिमित्तप्, पर्येटट्र (क्ष्म क्षणापि ६३)। इट र्पावसिञ्जन (बोन ६१) स्पा ३०१) । पविसम्प न [प्रवेशन] प्रवेश, फैड (निक ₹₹**७**) i पविस्थान [प्रवि+स्] प्रसम्बरणः। धेइ पविसङ्का (सम २, २ ६४)। पश्चित्स वेको पविछ। पश्चित्सक् (महा)। वह पुबिस्समाण (प्रवि)। पविद्वर एक प्रिवि + हो विहार करण-

पविद्वस धक [ प्रिये + इस् ] इसना इस्त करता। का पविद्वसन् (परंग १६ १७)। पशीहम वि [प्रवीखित] इस के लिए चनाय हमा **(मी**प) । पद्मेण विमित्रीजी निपृष्ठ दत्त (दर ६ ६ द्ये) । पवीची बेबो पविणी । वनीक्षेत्र (मौर) । पदीस एक [प्र+पोडप्] पीइनाः वर्ण करना। पर्नासप् (याचा १ ४ ४ १) । प्**तुर्वको प**त्रस= प्र÷वप्र पबुद्ध नि [प्रदूष ] १ पूर्व करता हम्म-क्लिने प्रमुख कृष्टि भी हो सङ्क (बामा २ ४

विचरमा । परिवरित (स्त) ।

१ १९) । १ त बसूत बृष्टि, वर्षशाः 'कावे पहुट विम महिलांदिर देवत्य साहरा (मणि पतुब्द वि [प्रदृद्ध] बढ़ा हुमा विशेष हुत (R 2 E) 1 पबुद्धिस औ [प्रयुद्धि] बदाव (पंच ४, ६६)। पबुक्त वि [प्रोक्त] १ को कहने समाहो, विस्मे बोलना झाएमा किया हो वह (प्रम २० १६। १४ २१)। २ उता कवित (बर्मीय दर)। पनुत्य [दे] देशो परस्यः 'चुर्च पूर्व पेतुं गाये पहुला (बाक २६३ २६)। पबुद् वि [प्रदृत] प्रकर्ष से मान्यादित (प्राक्त १२)। पबुद्ध वि [प्रस्युद्ध] १ वारण विस्या हुसा (सं १११)। २ निनंत (सन)। पवद्य वि [प्रवेदित] १ निवेदित प्रति-पास्ति 'चमेन सर्च नीसंक मं निर्णेहि पकेइच" (का इंध्यादी। मन)। २ विकास विकित (राज)। ६ मेंट किया हुमा (उठ 14 14: gu 14 14) 1 पक्षाय वि प्रविधित विमात (पतम ३, **⊌**□) | पदेख एक [प्र+धेत्रम्] १ विदित करना। २ मेंट करना। १ धनुभन करना। पवेकप् (सूध १ म २४)। प्रवृद्धिय वि [प्रवृष्टित] विच हुमा बेदा हुमा (सर१२१४)। प्रदेश देशो प्रदेश । प्रदेशीत (प्राप्ता १ ८ २ १२)। हेक पनेइसप (क्स)। प्रवेदण न [प्रवेदन] १ प्रक्पण प्रतिपारन। २ ज्ञालः निर्धेत । १ धतुमानन (राज) । पदेशिय नि [मदेपित] प्रकामित (कामा १ १--पत्र ४७) वस २२, १६)। पश्चीर वि [प्रवेषितः] क्षान्तेवाचा (पद्धा c (Y) 1 पथस धक [प्र+वेशय्] दुसल्यः। पनेसेद (महा)। पवेसमामि (पि ४६)। पनस पूर्वित्रवेश] भीत नी स्पूनता (ठा ४ २--पत्र २२१)। पवेस प्रियेश] १ फैंड, क्लाना (क्रूबा मबा प्रातु १२)। १ माटक का एक पिस्ता (क्प्यू) । पबेस ( प्रदेप] प्रविक देव (भरि)।

पुन [प्रवंशन, क] र प्रवंश-पर्वसम मैठ (परह १ १) प्राप्त १वा पवेसणग पर्वसणय ) ब्रम्प ३२)। २ निवातीय बन्मानार में उत्पत्ति विवासीय मोनि में प्रवेश (मव १ १२)। पवेसि वि [प्रविद्याम्] प्रवेश करलेवाला (पीप) । पदेसिय नि प्रवेशित । प्रशास हमा (सण) । पदोत्त पू [प्रपोत्र] पौत का पुत्र (भाक व)। पक्य पून [पर्वेन्] १ इन्ति नॉट(धीप ४ दश की १२ सुपाध ७)। २ करपन स्यौहार (सुपार ७ मा २८) । **१** पूर्णिमा मौर मनात्मा विवि । ४ पूर्णिमा मौर धमाबास्पाबाक्षा पक्ष (धा ६—पत्र १७ ३ सुरुव १)। १ सन्द्रभी चतुर्वती पूर्वितमा धीर धमाचारमा का दिन 'ब्रह्मी चल्लासी पुरिश्तामा य तहमावसा इवड पर्मा। माधिमा धन्यक्द विशि य पम्बाई पन्छमिन (वर्ग ३)। ६ भेषना गिरिमेबना । 🔊 एँप्टान्पर्वत (मूच १ ६ १२)। ८ ईक्या-विरोध (इक)। वीय पू विशेष । श्रु-मादि इस विश्वना पर्व-प्रनिष-ही स्रपत्ति का काएए। होता । है (यन)। सह दे िराह्रो सह विसेष, वो पूर्णिमा और धमानस्या में क्रमशः चन्द्र भीर सूर्व का शहुल करता है (सुरूव १६) । पस्याः न [पर्वेविम्] १ गोत्र-विदेव कारका वोत्र की एक शास्ता। १ पूँकी प्रसागोत्र में कराम (राज) । देशो प्रभापेन्छ्रह । पब्याई देवो पश्याइ (सा४११)। पब्यक्रम वि [प्रवृक्षित ] १ वैधित संग्यस्त (धीपः दक्षति २—माना १६४)। २ वद् प्राप्त 'घमाएको धलगारिम' पम्मद्रमा' (सीप सम' कप्प)। १ न बीका संन्यास (वन १)। पक्यईव पू [पर्यसेन्द्र] मैक पर्वत (सूज्य ६

धी, ना (इप पूर्व)।

(R 4 48) i

yuu . पञ्चा की पार्यदो नेरी रिव-पली (पाम) । पढवंग पुन [पर्योक्त] संस्था-विशेष (१क) । पस्थकः 🦙 पून [पर्वेकः] १ बाध-विशेष (पराह पटवरा 🕽 २ १—पत्र १४१)। २ 👣 बैसी प्रन्थियासी बनस्पति (पएए १)। ६ तुरा-विरोप (सिष् १)। प्रथम कि पिर्देको पर्व—क्षन्य— वाठका थनाहुमा(भाषा२२३२)। परुषद्वार्ष कि दिनका २ शरु अगरा। ३ मान भूप (वेद ६६) : पश्यक्याची प्रियमया दिवस पर्वतः २ कीशा संन्यास (ठा३२४४ प्रासू १६७) । पब्यमी भी [पर्यणी] स्वतिकी वादि पर्य-विषि (खामा १ १--पत्र ११)। परवपेश्लाह न [पर्वप्रेक्षक्रिय] देखो परुषह (ठा ७--पत्र ६६ ) । पञ्चय सक [प्र+ झज् ] १ जाना गर्डि करना। २ दीखा सेना संन्यास सेनाः पन्त्रयद (महा)। मनि पष्नद्रस्तामो पन्न-हिति (भीप)। वह पञ्चयंत, पञ्चयमाण (पुर र १२३ ठा १, १)। हेन्न. पन्त्रप्रचय, पञ्चाई (धीप भग भूपा २ ६)। पत्रवय वेको पञ्चरा (पर्ल १--पत्र १३)। पक्ष्यम देखो पञ्चाह्या 'समारमावर्धवावि धरएका वावि पव्यया' (सुध १ १ ११)। पक्ष्यमः ) पून [पर्वेत, क] १ विदि, पहाक पश्चयम (ठा १ ४) प्राप्त ११४) उना) 'पब्बवाणि बहााणि म' (बस ७ २६ ३ )। २ पू क्रिकीय वासुदेव का पूर्व-मनीय नाम (सम १०१) परम २ १७१) । १ एक बाबाज-पुत्र का नाम (पडम ११ ६)। ४ एक राजा (मनि) । १ एक राज-कुमार (उप १३७)। "राय पू "राज" मेर पर्यंत (मुण्य %)। विद्वारा पून ["बहुर्ग] पर्वतीय केरा पहाइबला प्रदेश (भग) । पञ्चारम वेची पञ्चाइक (दप प्र ११४)। पश्चपनिह न [पर्यतगृह] पनत नी प्रका (माचा २ ३ ३ १)। पव्यक्तिक न [बे] बाल-मय बंदक--- शाबीज पस्बद्धक [प्र+स्बभ्]पीइना दुःब क्षेत्राः वस्तरेका (स्था ११४६)।

<b>t</b> wo	पाइञसद्महण्यको	पश्चाह्या~-पस्य
काह परविश्वमाय (छामा १ १६— स्व १११)।  परवाद्वा की [सब्यमता] व्यन्ता पीड़ा (बील)।  परवाद्वा कि [सब्यमता] व्यन्ता पीड़ा (बील)।  परवाद्वा कि [सब्यमता] की एक नाम विष्य (ध १ २—वह १९०)।  परवाद्वा के हिम्मानित्र । दिन्दी केम परवाद्वा के हिम्मानित्र । दिन्दी केम परवाद्वा के हिम्मानित्र । दिन्दी केम विभा (परा)।  परवाद्वा कि [स्वात] विश्वमा छुट्य (दुमा १२)।  परवाद्वा कि [स्वात] विश्वमा छुट्य (दुमा को (स्वात)  परवाद्वा की [स्वाती विश्वमा छुट्य (दुमा को स्वात्वा की परवाद्वा को विष्यानिका को स्वार्थ (वहा)।	वेकाम (वंबस २)। हुइ. प्रकाशियार परवाशेषा परवाशियार परवाशिया परवाशिया (ठा १,१) रुठः परवाशा)। परवाश्यम व [ध्याधान] शैका देवा (का भाव ४४२ थे)। परवाश्यम व [श्री प्रयोग (वित्र ६६)। परवाश्यम स्थाप (प्रवाश की [ध्याधाना] शैका देवा (धीव ४४१ परवाश का [धीव १८०० १६)। परवाश का (धीव १८०० १६)। परवाश का (धीव १८०० १६)। परवाश का (धीव १८०० १६)। परिवाश कि [धीव थाइना (धीव १८०० १६)। परिवाश कि [धीव थाइना (धीव १८)। परवाश के (धीव थाइना थाइना (धीव थाइना (धीव थाइना धीव थाइ	पसंत वि [प्रशास्त्र] र महर साण कर माम (क्या थ ४ ) कुम)। र क्यांक्र साम क्ष्म स्थानित्री ताल विकाश कर मुक्तामंत्रील्य (विक्र ३)। पसंघल में [प्रशास्त्र] ताल विकाश कर प्रमास कह [मरीस] काला करता। यह सा (बहुत प्रमा)। यह पसंस्त पर्धन माम (बज्ज २० १४) २२ ६०)। वर्ण, पसंसिक्त (क्या)। यह पसंसिक्त (ब्या)। इ पसंसिक्त पसस्य पर्ध- सिपक्ष (क्या ४० १८०) पूर्व ११६। पसंस विक्र प्रशास । २ इ क्षेम (क्या १० १८०) प्रशास विक्र भर्म। इ इ क्षेम (क्या १० १८०) प्रसास विक्र प्रशास विक्र प्र प्रशास विक्र प्रतास विक्र प्रशास विक्र प्रतास विक्र प्रत
यहाइध्या की [प्रशासिक] परिवासिक, क्षेत्रासिकी (सह)। पश्चारिक के प्रकारिक = क्षानित (दे १ ४१)। पश्चारत के प्रकारिक = क्षानित (दे १ ४१)। पश्चार के प्रकार = दे के प्रकार (देव १ ४१)। पश्चार के [प्रकार = दे के प्रकार (द्वार १६)। पश्चार के [प्रकार = देव विकार के प्रकार (द्वार १६)। पश्चार के [प्रकार = देव विकार के प्रकार देव विकार के प्रकार देव विकार के प्रकार देव विकार के प्रकार के प्रकार विकार के प्रकार विकार के प्रकार के प्रकार विकार के प्रकार विकार के प्रकार विकार के प्रकार विकार वित	दर्श। पिन्द्रम् । प्रस्तका मा प्रक सेवा मा प्रियं । प्रस्तका मा प्रक सेवा माना हिस्स हिस्स ही पानता । (पन १)। पान्सीस्ता मा हिस्स हिस्स हिस्स हिस्स मा हिस्स हिस्स हिस्स मा हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स ह	पसंस कि [प्रशस्त्र] १ प्रशंका नम्य । ३ पुंचीन (कृप १ २ २ २१)। पर्संख्यान [प्रशंसन] प्रशंका स्वामा (वर
वासीर करारा (कनाता (है ४ ४१) । प्रसासक म [स्तावन] तारणेर मरण (है ६, १३) प्रसासिक दि [स्तावित] नवनकर वरा- गेर दिया ह्या (तार प्रसार है १ १ ) । प्रसासिक में [स्तावित] करा हुआ (दुआ) प्रसास कर [स - नाजन ] विदेश करार बंध्यत हैता। वस्तावर (वर)। बेंद्र- प्रसास	प्यस्ति विश्विष्ठेत्र प्रशेष कालेख्यः, यावकः 'हुम्प्यस्ति' (याद्यः काला १ १) । पर्धांत्र कर्ष प्रमः काला १ ३ स्वाकि करणा । २ सारावि होता, सालेह्याहि होता । परावद (वर) 'परितृत्वे जीत्तरीयिक कि हैवस् परावदि' (वर १ ११ १२) । परावेत्यः (विशे २६१) ।	पसंद केवा पसरक (का थ, १ वर्ग)। पानिका वि [मिशिका] किरेन केवा हिं १ दर्ग)। पसरमा मिशिका] १ कुछ, काव्य (वि थ, ४४। धा ४६॥)। २ कस्का, ठिवाँ (विणे धीम १४३)। भें कुछ, काव्य (वि थ, मिशिका)। इस्ता कुछ, काव्य (वि थ, सम्बद्धित के तक्य कुछ, छवाँ (वर्ग)

पसण्णा की [प्रसन्ना] महिए शह (सामा १ १६० विचार २)। पसत्त वि [प्रसत्तः] १ विषवा हुया (गडव ११)। २ मासक्ट (परः १११ स्त्र)। १ ब्रापति-धरत धनिष्ट-प्राप्ति के बीप से पुत्त (विदे १×१६)। पसचि हो [प्रसक्ति] १ प्राप्तकि धीमनङ्ग (इप १३१)। २ मार्गत-रोप (मन्स 2 (# 3 F पसस्य वि [प्रशस्त] १ प्रशंसनीय, स्ताक्तीय। २ कोंध्र सम्बद्धा (दे २ ४४८ कुमा)। पसिय 🕏 [प्रशस्ति] बंशोलीके वंश-वर्णन (सबड सम्मत्त ८६)। पसत्यु दू [प्रशास्त्र] १ नेवानार्थं निकत का सरमापक (ठा ३ १) । २ वर्ग-साक कापाठक (ठा ६१ कीर)। ६ मन्त्री मनास्य (मुम्र २ १ १६)। पस्तम केको पसण्या (महाः मीकः भूपा 48X) I पसमा केवो पमण्या (पाप: परम १ २, १२२: पुर २ २१)। पसप्प र् [ प्रसर्प ] विस्तार, धनाव (प्रथ्य पसप्पत्त व [प्रसपक] १ प्रकर्म से बाये-वाला मुखाफिये करनेवाला । २ निस्तार को प्राप्त करनेवाका (ठा ४ ४--पत्र २६४)। पसम सक [ भ + शम् ] सन्दी वर्ष स्थल होना । पसर्गति (बाक १६) । पसम पुमिशम] १ बसन्ति शान्ति (दुना)। २ समातार वो उपवास (धैवीन १८)। पसम र् प्रश्नम विशेष मेहनत-चेर (मान ¥) 1 पसमज न [प्रशामन] १ प्रदृष्ट रायन (विड ६६६। सुर १ २४१) । २ वि प्रतान्त करते-वाबा (स ६६%) : वर्षे पी (दुमा) । पसमाविभ वि [प्रशमित] प्रशन्त किया इस्स (स ६२)। पसमिक्त सक [मसम्+इस्] प्रकर्प से देवना। र्डंड प्रसमिक्स (उत्त १४ 1 (15

पसमिण वि मिश्रमिम् असन्त करनेवाचा, नारा करनेवाला 'पार्वति, पावपसमिण पास विखतुह प्यस्थितं (छनि १७)। पसम्म देखो पसम = प्र + शम् । पशम्मद (बरुष)। बङ्क पसम्मीत (छ १ मस्त्र)। पसय दृदि । मृग-विशेष (वे ६ ४० पए) १ १ः मन्द्रिसणः मद्यः)। २ मूप-स्टिन् (विषा १ ४)। पस्य वि [प्रसृत] फेला हुमा 'पस्यिका' (बजा११२ १४४)। रेखो पसिछ= प्रसुद्ध । पसर मक [प्र+ स] फिना। प्रस्ता (पि ४७७। मनि)। बहु- पसर्व (पुर १ वर मीर)। यसर व [प्रसर] विस्ताद, फेमाब (ह ४ १५७: दुमा) । यसरण न [प्रसरण] डमर वेशो (बण्)। पसरिक्र वि [प्रस्त] ऐसा हुमा विस्तृत (धीप ना ४ मनिः सामा १ १)। पसरेष्ट् दू दि] किंत्रस्थ (दे ६ १३)। पसिक्षा वि वि प्रेरित (पट )। यसव एक [प्र+स्] बन्ध देना उराध करना। पसन्द्र (हे ४ २३३)। पसन्ति (जन) । वहः पसनमाण (सुपा ४३४) । पसय (धप) सक [प्र + विश् ] प्रवेश करता। पसम्बद्ध (प्राक्त ११६) । पसम र् [प्रसव] १ वन अधित (कुना)। २ त पूप्प-कुला 'तूसूमें पसर्व पसूचे व (पाय) पुष्पाणि म कुपुमाणि य पुस्साणि वहेब हॉर्कि पसबार्थि (बसनि १ ३६)। पसव विशेषको प्रमय । 'पष्टवा इवंति पूर्' (पत्रम ११ ७७)। नाइ दें ["नाथ] मृत- | पसारण न [प्रशारण] उत्पर देखी (पूरा चन स्वाह (स ६४७) । सम प्र ["सज] सिंह (स ६६७)। पसन्द्रकान हिं] विशोधन (दे ६ ६)। पसम्बद्ध न मिसमती प्रमृतिः भन्न-धान

(मनः का ७४४: पुर ६, २४४)।

रकु ७४) ।

पस्रपि नि [प्रसदिन्] बन्ध देनेशला (बार---

पसंदिय वि [प्रमृत] वो चन्य देने बना हो

जिसने बन्म दिया ही वह 'सममेन पस्तिया

हं महाकिसेक्स नरमाइ (सूर १ ₹₹ ; युवा १६)। देशो पशुष्त = प्रमुख। पसंबर नि प्रसमित् निम्म बेनेनाता (नाट)। पसस्स रेको पर्सस । पश्रस्य वि [प्रशास्य] प्रभुतः शस्यवासा (पुपा **\$**72) I पसाइभ वि [प्रसादित] १ प्रसम् किया हुमा (स १८६ ५७६)। २ प्रसम्न होने के कारण दिया हुमा न्यंगविषागमससं वसाहर्व कडयमत्नाई (सुर १ १६३)। पमाइभाक्षी वि] क्लिन के किर परका पर्एं-पूटः मिस्सीं की पंगकी (वे ६, २)। पसाइयव्य रेको पसाय = प्र + सम्दर् । पसाम वि [प्रशाम्] शान्त होनेवाला (पर् ) । पसाय धक [ प्र + साव्य\_] प्रशन करना चुरा करना। पसम्बंति पसावृत्ति (या ११ विका ६१)। वह पसाञमाण (पा ७४३) । हेरू: पसाइडं पसाएडं (महुट पा १२४)। इत पसाइयब्य (सुवा १६१)। पसाय 🕻 [प्रशाद] १ प्रशति प्रशनका कुर्यः 'वरणमणपद्यायत्रसम्भो' (बसु) । २ इत्या, मेक्टमानी (कुमा)। ६ प्रसाम (गा **4**()+ पसायजन [प्रशादन] प्रसन्त करता, फेर पसामध्यपद्दान्छमछो (कुत्र 🏞 सुपा 💌 महा)। पसार सक [प्र + सारय्] परारता, फेनाना । पसारेद (महा)। कह प्रसारमाण (ग्रामा १ १) घाषा)। संक्र पसारिम (नाट---मुच्छ ६३४)। पसार पू [प्रसार] विस्तार, फेबाब (बप्यू)। ६८३)। पसारिक वि [प्रसारिक] १ केबाया हुया (एए गट-नेएी २३)। १ न प्रसारण (समत १३३ रस ४ १)। पसास एक [म+शासय्] १ शासन करना, हुनुमत करना । २ विका देना । ६ पालन करना । वड्ड. 'रण्ड' प्रसासिमाणे विद्याप (द्यामा १ १डी—पत्र ६) १

१४--पत्र १वधः धीतः महा) ।

करक पद्माहिक्साण (सामा १ १६---

20

पत्र १११)। पक्तहणा ही [प्रव्यवना] स्वका पीहा (मीप)। पक्ष्महिम वि प्रिक्मभित् । मधि दुः वित (ध्यक्ष १२६१)। पब्दा औ [पदा] बोडपानों की एक बाह्य परिवद् (हा १ २ -- पव १२७)। पश्चार्जन देखो पश्चाय = भी । पण्याइअ वि [प्रद्राचित] १ विस्को कीमा की गर्द हो बहु (मूपा ४६६)। २ न कीला देना (सम्) । पण्याहम वि स्मिति विश्वाय कुल (हुमा **4** (2) पम्याद्भा ध्यै [प्रश्नातिका] परिवानिका, धेन्यक्रिकी (महा) । पञ्जाहित्र देशो पञ्जातिम = प्तापित (है X, Y() ( पश्चाज दि [स्हान] कुन्द्र, सूचा (दोव ४वव)। यक्त्राय वेद्धी प्रवाय ≈ प्र÷वा । प्रवासद (शकु ७६) । परपाय सर्व मि + माजय ौरीक्ति करता (ST 244) 1 पहराय यह क्लि मुनतः । पश्चायह (हे ४ १)। यह पश्चार्अतः (से ७ ६७)। पबदाय वि स्थित प्रदायी कुंब तुवा ह्मा (बास मीव ३६३ स २ ३ से ४८) C 41 [41 XX) 1 परवाय प्रशिक्षती प्रहरू वदन (शा ६२६) । परमान तक द्विदय देशका, मान्यका क्छन्न । करमस् (हे ४ २१) । पक्ष्माल एक [प्रताक्ष्य ] सूत्र विज्ञाता । वराबीर बरना । बन्दलद (ह ४ ४१) । पक्षात्रण न [व्यायत] तत्त्रीर करना (स **६** (१) परवाविभ नि जिलापिती वन-व्याप्त सरा-बोर रिया हुमा (बाम हुमा बे ६, १)। पस्मातिम वि [साहित] हवा हुवा (हुवा)। पश्चाप तर [ प्र + माजय ] धीवत करवा क्षेत्रान देश । राजादेइ (तप) । क्षेत्र प्रम्या

बेठल (पंचर २)। हेइ- पठवाविताए पब्जाबेसए पब्चावेड (हा २,१) इन्छः पंचमा)। पञ्चाक्य न शिक्षाञ्चन विलादेश (उक मोप ४४२ धे)। पञ्जादज न दि । प्रवोदन (पिंड ११) । पञ्चाबणा के प्रियायना शिक्षा रेना (बीब ४४३ पद २१ सुग्रति १२७) । पम्पामिय वि [प्रजाजित] डीस्टर सामु बनाया हुया (छावा ११--- पत्र ६)। परवाह सक [प्र + बाह्य ] बहाना प्रवाह र्मे कामना । वक्क पब्याहमाण्य (भव १४) । पब्चिद्ध वि [के] प्रेरित (के ६ ११)। पठिवद्ध नि प्रवृद्ध निश्चान, बदा (छे १४ पश्चिद्ध व [प्रविद्ध] पुरूक्तर का एक दोव नन्दन को समाप्त किये दिया ही मानना (पदरी। पक्षीसग न दि पड़वीसगी शद निर्देश (पराहर ४--पव ६)। पसा को [प्रसृति] १ नाम-विशेष को प्रवृति-पकर का एक परिमाश (तंद २६) । २ पूर्व सम्बद्धि हो इस्ट-क्स--सँबुरी मिला कर यरी हुई चीन ( दूत ३७४) । पर्द्धा पूरु प्रसङ्ख्यी १ परिचय करलडा (स ३ ४) । २ इंप्रिट संबन्धः भीष् प्रतीवर्ताः पित्र पत्र लगुन-भद्यकेष्ठा (ठर ४ ४ दूप ₹€) 'वर रिद्वितियो प्रजी वर्ष हालाहब निर्दाः हीका बारावी अस्वतंत्रका रहे में वु को मह (संबोध १६)। १ मार्गात प्रतिष्टन्नारिय (स १०४) । ४ मेर्डुन काम-बीडा (पर्य १ ४)। इ.धानविः। ६ जस्ताव स्ववितार (तरा क्रीक वंचा १ २१)। पसंगि दि [ब्रसिक्ति] प्रसंद करनेदाना यातकः 'बूक्यमंब्र' (महार शादा १ १) । पसंज्ञ पद प्रि + सञ्ज\_ ] १ बावर्षि करता । २ बारति होना, सनिश्वाहि होना । प्रक्राह (का)- 'प्रशिष्मे पीरतीर्गाम कि दिशाए पनवर्षि (इस १०११ १२)। पदकेका (पिरे २६६)। पर्संडिन [दे] रक्त नुबर्छ (दे६ १)।

पञ्चहणा--पशम्ब पसंत रि [प्रशान्त] १ प्रहर राज्य, हर प्रात (क्रप्य: स ४ ३ क्रुप्र)। २ तार्थिक राजन्त्रसिक् रश-विशेष सान्त रस (भए)। पर्रति 🛍 प्रशान्ति नाग्र निनातः 'सन्द इन्नमसंतीरां (पवि १) । पर्सभाव र [प्रसन्धान] स्टट प्रवर्तन (निः ¥4 ): पसंस सक प्रिशंस दिलाना रुखा । पर् स६ (महाः मनि)। यह पसंस्त पसंस-साम (पक्षम २८ १६) २२ ६)। रवक पसेंसिजनात्र (वसू)। हंड पससिअप (भक्त)। इ पर्संसिष्णिक प्रसस्स पर्स-सियव्य (बुगा ४७ ६४१) बुर १ रिध परम ४१८ ह) वेद्यो पर्सम । यसंस वि प्रिशः वो १ प्रतेशः वीन्यः । १ पुनोम (नुम १२,२ २६)। पसंसण न [प्रदोशम] प्रशंश स्थाय (का १४२ टी सुपार ६, स्वर्ष १०)। पसंसय वि [इक्षेसक] प्रतंता करनेना (मा६। मित)। पसंसाको [प्रश्नंसा] स्ताना स्तुति वर्णन (मासु १६७- दुमा)। पसंसिभ वि [प्रज्ञसित] स्वाम्ति (वर्ष १४ वसञ्ज<sup>र</sup> ध्वी पसंज्ञ । पसम्मः ) म [प्रसद्या] १ क्लो तौर है, ब्लंड पसम्मी रोक्से (सूर्य १२ ११)। २ हरुत्, बस्तरकार छे (स. ३१) । पसम्बद्धेय व [प्रसद्धवेतस् ] वर्ष-निर्देश विश्व क्यापद्दी गर्न (श्वयु १ १४)। पसंद्र वि प्रसद्धी यनेक दिन रहकर सुना क्यि ह्या (बस १, १ ७२)। पसकारि प्रसार ] सन्तर राज (तुम ९ Y 1) i पसंद्रे देवी पसान्छ (ब्ला १, १ ७१)। पसिंदिस वि [प्रश्लिषित ] विशेष ग्रीमा (है 1 (3> \$ पसण्य विशिवसङ्गी १ पूछ, स्वरूच (वे ६ ४१) वा ४६४) । र स्त्रच्या त्रियंत्र (पीत) धोष १४१) : "चंह तुं ["चरहू] असार नदाचीर के बनव ना एक शत्रांत (वर्ष) दिश)।

पसण्णा की [प्रसन्ना] मंदिरा शरू (ग्रामा १ १६। निर्मा १ २)। पसन्त वि [प्रसन्तः] १ विनवा हुमा (गरह १९) । २ ध्यसकः (स्वतः १९१ दन) । व मापश्चि-प्रस्त प्रमिष्ट-प्राप्ति के बीप से दुख (विषे १०१६)। पसचि की [प्रसक्ति] १ बासकि, बरिनान (ब्प १३१ )। २ बार्गात-वीप (ब्रान्स **११६)** ! पसरम वि [प्रशस्त] र प्रशंसनीय, स्वापनीय। २ में इ. सम्बद्धा (हे२ ४% कुमा)। पसरिय 🛍 [प्रशस्ति] वंशोरकीतंन वंश-बर्तन (गठक सम्मत्त वर्ष) । पसत्मु रू [प्रशास्त् ] १ देवाचार्म परिएठ का सम्मापक (हर १ १) । २ वर्ग-शास द्यापठक (ठा ३ १३ धीर)। ३ स**ल**ी धमात्य (सूच २ १ १३)। पस्तक केलो पसम्प्य (महारु व्यक्ति पुपा 48Y) 1 पसमा के पसण्या (पाप पडम १२ १२२ मुख २ ५६)। पसप्प पू [ प्रसर्प ] विस्तार, फेनाव (ह्रम्प t ) i पराप्या वि प्रिसर्पेकी १ प्रक्ष्य से वाले-वाला मुद्रास्त्रियी करनेवाला। २ विस्तार की प्राप्त करनेवासा (स्र ४ ४--- थव २६४)। पसम्बद्धाः प्र+राम् विश्वाः राज्यः होता । परमंति (मारू १६) । पसम पूर्विशामी १ प्रशानित शानित (क्रुमा)। २ समातार की अपनास (सैकीन ३८)। पसस पू प्रश्नम विशेष मेहनत-चेर (भाग x) ı प्रसम्बन्ध (प्रशासनी १ अक्कुट रामन (पिंड ६६३; सुर १ २४६) 1२ वि प्रतास करने-बाबा(स ६१६६)। की जी (प्रुमा)। पसमाविक वि [प्रशमिव] प्रचल्च किया हुमा (स ६२) । पसमिक्त एक [ प्रसम् + इंस् ] प्रकर् ते देवता । चंड्र पश्चमिक्ता (क्व १४ **tt)** i

पस्तिज वि [प्रश्नुसिन्] प्रसान्त करनेवाला मन्य करनेशाचाः 'पार्वति पानपस्तिस्य पास विद्यातुह् व्यमनिद्य' (खमि **१७**) । पसम्भ देखो पसम = प्र+राम् । पराम्मद (पडव)। वक्क पसम्मीय (चे १ पत्रको । पसम पू [दे] १ मून-विरोध (वे ६ ४- पर्णाः १ १ मनि सस् महा)। २ मृक्-शियु (विषा १ ४)। पसय वि [प्रसृत] फैका हुमाः 'पश्यक्ति [ (क्का११२ १४४)। देखो पसिछ≔ प्रसुत् । पसरमक मि+स्] पेलना। पसरक् (पि ४७७। मनि)। महः पसर्व (सुर १ ८१ मिष)। पसर पूं [प्रसर] विस्तार, फैताब (ह ४ ११७ हुमा)। पसरण न [प्रसरण] उत्तर ध्वो (रूप्)। पसरिव्य वि [प्रस्तुत दिना हुमा विस्तृत (धीप) मा ४३ मनि एगमा १ १)। पसरह र्षु [दे] किंगस्क (वे ६ १३)। पसक्रिक वि वि] प्रेरित (वड )। पसव एक [म+स्] बन्म देना, बरास करता। पक्षमद (हे 😯 २३३)। पस्तर्वति (एव) । वह पसबमाण (सुपा ४३४) । पसव (धप) सक [म + विश्व ] प्रकेश करता। पसन्द (प्राप्त ११६)। पसंध पुं[प्रसव] १ वन्य कर्पात (हुमा)। २ त पूच्य पुत्रकः 'कुसूम' पश्चर्य पश्चर्य व' (पाम) पुष्कांसि म कुमुमाधि स पुरवाधि कोब होति परावारित' (बसनि १ ३६)। पसव [वे] देवो पसय । 'पत्तवा इवंदि एए' (भजम ११ ७७)। नाइ प्रे भाषी मूग राम बिह (स ६१७)। "राम दु ["राजा] सिंह (स ६१७)। पसवस्यान [वे] विलोकन (वे ६ 🏮 )। पसदान न [प्रसद्धन] प्रसृति कल-दान (भग का ७४४ तुर ६, १४८)। पसवि वि [प्रसक्तिम्] बना क्षेत्राचा (बार---**राष्ट्र ५**४) । पस्तविय वि [प्रसूत] को कम की तवा हो,

जिसने बन्ध दिया ही नहां 'सबसेव पत्तविया

इं महर्मिकेन्टिण नरनाई (सुर १ ₹₹; सुपा ११): सेवो पसुञ = प्रमुतः। पसंबिर कि [प्रसमितः] बन्न देनेबाला (माठ)। पसस्स रेको पर्संस । पश्चस्य वि [प्रशस्य] प्रमृत शस्त्रवामा (सुपा 44X) I पसाइम वि [प्रसादित] १ प्रसन किया इमा (स १८६३ ५४६) । २ प्रसन्त होते के कारण दिया हुमा "मैवनिकण्गमसेस पहादर्ग कबयमस्यादे (सुर १ १६३) । पसाइमाधी दिं भिस्म के किर परका पर्ण-पूटः फिल्मों की पयकी (वे ६, २)। पसाइमञ्य रेको पसाय = प्र + सारव । पसाम वि [प्रशाम्] राज्य होनेवाला (पङ् ) । पसाय एक [ प्र + साद्य\_ ] प्रसन करता **जुरु करना । पसार्वीत परार्वाव (बा ११)** सिक्का ६१)। यह पसालमाण (का ७४६) । हेतः पसाइडं पसाप्रं (महत् या ४२४)। इ. पसाइयव्य (सुना १६१) । पसाय र् प्रसाद र प्रवृत्ति, प्रसन्ता कुरी 'बएमखपसायबस्सी' (बसु)। २ इत्या मेहरवानी (ड्रमा)। १ प्रणय (शा **\***{)1 पसायण न [प्रशादन] प्रश्नन करना फेन पंचायसम्पद्धारणमधी (कुम 🗱 मुपा 💗 महा)। पसार एक [प्र + सारयू ] परारमा फेनाना । पद्मारेड (महा)। वह पसारेमाण (शाबा १ १३ घाषा) । संक्र पसारिक्य (नाट---मुक्त ६४१)। पसार पू [प्रसार] विल्हार, फैसाव (हप्पू)। पसारण न [प्रसारण] अनर 🖦 (सुपा द≪ १) । पसारिम वि [प्रसारित] १ फैनाया हुमा (सए) शब्द—श्रेणी २६) । २ व मसारुक् (सम्पत्त १३३ वस ४ ३)। पसास सक [म+शासम्] १ वासन करना, हुकूमराकरना। २ विज्ञादेना। ३ पासन करना । वह 'रन्ब' पसासेमाने

निहरवं (स्रावा १ १ टी---पत्र ६; १

१४--पन १४६३ और महर) र

(ना ६७१)।

पसाइ---पसंविजा

पसाइग वि [प्रसाधक] सावन, सिक क्रुलेबाला (वर्गंग्रं २६)। तम वि ["तम] १ प्रकृत साथकः। २ वः स्थाकरत्व-प्रसिद्धः कारक-विशेषः करछ-कारक (विशे २११२)। भो पश्चाह्य । पसाइण व [प्रसायन] १ विद्य करनाः **'विज्ञापहाइपुरुववविज्ञाहर** सावना सनिकद्वपनेती (सुर १ १२)। २ प्रकार बादम 'सम्बूतर्ग मारावर्त दुलाई पनस्यूहे परक्रम पैन्याग्रस्थ न निर्वर्गेति धर्म (स

७४४) । १ मनेबाद, भूबस (सामा १ १) से ३ ४४)। ४ भूक्त सादि की सवाक⊅ मुक्तप्रसम्पार्कर्याद्वे (बन्धा ११४-सुपा 44) I पसाह्य देवी पसाह्य (बान) । २ एकाने-नाचा (धन ११ ११)। पसाहा 🕏 [प्रशास्त्र] राजा 🛍 राजा. क्षेटी कवा (शामा १ १) भीप म्या)। पसाहाविय वि [प्रसाधित] विवृत्ति करावा

चमा समस्यामा हुआ। (समि)। पदाहि वि प्रिसाविन् दिक करवेवाना 'मन्पूरकरसाहिती' (स्वीच मः १४) । पशाक्रिक नि [प्रसाधित] प्रवंतन किया हुम, स्वामा हुमा (मे ४ ६१) पाय) । पसादिक वि शिशासिन् विशासमुक (gt = t ) i पश्चिम्र स्टब्स् मि 🛨 सद् नियम् होता । पश्चिम (बार्रिक ४६ स्ट्रांट्रिक्टर)। परिवद् (स्तु)। संक्र-परिकल परिकर्ण (इस्फ्राइस्स ७)। परिश्रावि प्रसारी जैवाह्या विस्तीर्ड परिवर्णका (भा १२ १२३)।

१९१ प)।

पश्चिम व [दे] पूर्वपन सुपारी (दे ६ ६)। पसिच धक प्रि + सिच् दिक्त कला। बहु-पर्कित्रमाय (सुर १२ १७३)। 'प्रसिक्ति (वे) वेको प्रसिक्त (पाप) । परिकास वि [प्रदिक्षक] रीकौरावा (च

पसिविक रेको पसविक (हेर 🕬 ग १३३ मध्य)। पसिज के प्रिस्ती १ इच्छा प्रस्त (दुना ११ ४११)। २ वर्षेश मादि में केता का बाह्यत, मन्त्रकिया-विशेष (सम १२३) बृह १)। "विज्ञा की ["विद्या] मन्तरिया विदेव (ठा१)। । पशियन विप्रश्नी मन्त्रविद्या के बत्त से इनना ध्यवि में बेबता के बाह्यान क्षारा काना ह्राया ग्रुमानूम फल का कवन (पव २) बृह १)। पसिणिय वि [पश्चित] दुव्य हुमा (पुरा 16 434)1 पसिद्ध कि [प्रिफिद्ध] १ किस्पात कियुत (महा)। २ प्रपर्यं से मुख्यिको प्राप्त मुख्य (flift x4x): पसिद्धि 🛍 प्रिसिद्धि र भगति (१११ ४४)। २ शॅकाका समावान साक्षेपका परिहार (मर्गु निश्म ४१)। पसिस्त भा पसीम (विषे १४)। पसीझ 🖦 । पसिझ ≈ प्र÷ छद । प्रशीयह. पसौबद (क्रुप्र १) । संक्रपसीऊ ज (स्रह्) । पसीस 🛊 प्रिशिष्यी क्रिय का क्रिया (परुग ¥ =\$) ! पस् पू पिछा १ कन्द्र-विशेष सीय पूँकनला प्राची चतुन्तार प्राणि-यात्र (तुनाः सीप)। र प्रव, वक्य (पशु) । शूय वि [ैभृत] पकु-दुब्ध (सूम १ ४ २)। मेहिंदु मियी विसर्वे प्रमुका धोप दिवा काता हो मह बच्च (पत्रम ११ १२)। बहुर्य [पेरि] महाकेन सित्त (ना १३ मुना ६१)। पस्च वि[मसुर] योगा इत्य (दे १ ४४)

प्राप्त काला १ १६)।

(चन) । वेदो पसुद्र ।

पसूच (पर) देवो पस (परि) ।

पञ्चक्य दे विदेश क्या पेन (वे ६ २६)।

पस् वि [प्रसृ] प्रवय-कर्ता जन्म-राता (मोह २६)। पसूच्य न [दे] पुण्य कुल (दे६,६, पार्थः च्यवि}। पस्त्र नि प्रिप्ती १ इन्त्रन भी पैस इस ही (शालारे भः चनान्नाम् १६६)। र क्यो पसविष (महा)। पस्चण व [ प्रसवन ] बन्म-रात (दुरा ¥ 1) i पसुच्चि 🛍 [मसुप्ति ] 📆 धेन निरोत नवादि-विशास्त्र होने पर भी धनेतनता

पसृद्धी [प्रसृति] १ प्रसन्ध वन्य, बल्यीच (पक्रम २१ वे४३ प्राप्त १२**०**)। २ एक प्रकार का दूह रोग नवाविधे विदारण करने पर मी कुरवाका स्तरिकत, चपड़ी का मर माना (प्रेंग ६)। "रोगा दू ["रोग] धैव-विधेव (चम्मत्त १०)। पसूत्रय दु [प्रसृतिक] नातरीय-विधेव (सिरि **११७**) । पसूचन [प्रमूम] क्रन क्रुव्य (क्रुवा बस्र) । पसेन र् [प्रस्वेष] पत्तीना (वे ६ १)। पसेढि को [प्रभेषि] धनान्तर वेखि—वीक (पि ६६३ एक)। पसेज प्रसिनी बन्दल पर्स्तन के (बंद ३)। (**9**11) ı पसे विका 🕰 [प्रसेषिका] वैश्री, कोवली

(के ६, २१)।

भवन भारत का नाम (विभार ६७८) । पसेणाः 🖫 🛮 प्रसेनवित् 🕽 १ कुलकर-पुरस-क्तिक (पत्नाव ११, सम ११)। २ सर्वेत के राजा सम्बद्धानिस का एक पूर परोजि को [प्रमेकि] धरान्तर वाति 'मद्वारस्थेडिप्परेखीमो सहावेद' (सामा t १--पव ३७)। पसेयग देखा पसेवय (छन) । पसेव एक [प्र + सेव् ] क्रिकेट ऐवा करना। वक्र पश्चेषमान्य (सु ११)। पसेवय १ [प्रसेवक] केवला, केवाः स्थापि बफ्डेनपोल्न करींस बंबंदि शोबि दश्त बसुर्या

पस्स सक [ दृश् ] देवना । पस्सः (पर् प्राक्त भरे )। वक्त परसमाज (पाच्छ बीरा बसु विपार १)। इट पस्स (ठा४ १)। पस्स (शी) देशो पास = पर्स्व (प्रमि १८६) सवि २६ स्वप्न ३६)। प्रस्र देवी पस्त = हरा । पस्तओहर वि [पर्यतोहर ] वेवते हुए कोरी करनेवाला, सुनार, धवदा 'नखु एसी पस्समोहरो हेस्से' (उप ७२८ टी) । पस्सि वि [वृर्शिम] वेत्रानेवाला (पएए १)। परसेय देशो परोज (गुड २ ६)। पद्द वि[प्रद्व] १ नम्र । २ विनीय । ३ बायकः (प्राष्ट्र २४) । पहुर् [पिथम्] मार्ग रास्ता (हे १ ६६) पान कुमा भारक विसे १०४२, कप्प भीत)। "वृद्धय वि "वृश्यक् मार्ग-पर्गक (पत्रम ६ ६ १७)। पहरह पू जि । धपुन पूपा बाध-विशेष (वे **€.** ₹c) i पहुंचर देखो पर्मकर (उत्त २३ ७६ पुख २३ ७३ इइ)। पर्देक्स केवो पर्मक्स (इक)। यहंज्ञण दुं [प्रमञ्जन] १ बायु, पबन (पाप्र)। २ वेथ-आति-विशेष महत्त्वति देशों की एक मनान्तर वाति (नुपा ४)। ३ एक राजा (मिन)। यहकर दि रेखी यहवर (खामा १ १) क्षणा भीता क्षत्र पू ४७० जिला १ १ रावा मन ६ ३३)। पहरू नि [रे] रहत उदव (दे६ श पड्)। र धनिरतर इट, नोड़े ही समय के पूर्व देखा हुया ( पड् )। पहरू वि [प्रहृषः] मानन्ति हुपै-प्राप्त (धीप: मन)। यहण सक प्रि+हम् । मार कासना । पहला पहले (महा उत्त रूप ४६)। कमै पद्रशिक्द (महा)। वह पद्रणंत (पटन १ १ ६१)। क्यक पहर्मात, पहण्यमाण (ति ६४ : सुर १ १४)। हैर पहिणाई पहिणेई (दूब २४ महा)। पहण न [दे] दुत बंग्र (दे ६ ६)।

पहुणि हो दि] संपूर्णाक्त का निरोण सामने धाय हुए का मटकाब (दे ६ ४)। पहुणिय देखो पहुम = प्रहृत (पुपा ४) । पहल्य दूर्व [प्रक्रित] राष्ट्र का मामा (वे १२ ११)। पहल् वि दि] स्वास्ट (देश १)। पद्ममा संक प्रि + इस्म ] प्रकर्ष से पवि करमा। पहुम्भद्र (हे ४ १६२)। पहम्मन दि] १ मुर-कात देव-पुरुष (१ ६ ११)।२ कात-यस कूएड। ६ विवर, छित्र (से १, ४३)। पहम्मत पहम्ममाण } देशो पहण = x + हन् । पद्य वि [महत] १ द्यु पिछा हुमा (ने १ ६ व ३ वह १)। २ मार डाला गया, निइट (महा)। पद्य वि [प्रदूत] जिस पर प्रदार किया गया हो वह 'पह्या चढिमंतियबसेए' (महा)। पह्यर प्रे कि निकर, सपूह, दूव (दे व १६ मय १६ पाम)। पहर सक [म + इ] प्रहार करना । पहरद (उर)। वह. पहरंत (महा)। संहू, पहरिक्रण (महा)। हेट पहरितं (महा)। पहर पूर्व [महार] १ मार, प्रहार (हे १६८ यड् प्राप्त संक्षि २)। २ अहापर प्रद्वार किया हो वह स्वान (से २ ४)। पहर पू [प्रहर] तीन की का गमम (का २०

पहराहचा केने पहाराहचा (पराण १—गन ६४)। पहरित्य हैं [प्रमाण ] नरवनेन ना एउनो प्रदेशनपुरेन (बच १२४)। पहरित्य मिं [प्रहून] १ प्रहार नरने के थिए क्यव (पुर १ १२१)। २ दिन पर प्रहार निया क्या हैं हम् (प्रिपे)। पहरित्य हैं [प्रहून] वानकर, पुरवे: 'वानोधां पहरित्य हैं [प्रहून] वानकर, पुरवे: 'वानोधां पहरित्य हैं (प्री)। पहरवादिद (पी) मिं [प्रहूमाहिन] वानकित (स्थन १९)।

पहरण न [प्रहरण] १ यज यानुष (याचा

भौराविपार र गजड)। २ प्रहार-क्रिया

३१ पाम)।

(से १ वि )।

4 8 पहळ सक चिण् े चूमना कौपना कोपना हिसता । पह्नाद (हे ४ ११७-पड्)। वक्र पहाईत (सुर १ ६१)। पहिंद वि प्रिमूर्णियु वृत्रनेवाला बोनवा (क्रमासूपार ४)। पहचनक [प्र+भू] १ ज्लाब होनाः २ समर्थ होता। पहच इ (पंचा १ १ स ७ संक्षि १६)। मणि पहनिस्सं (पि १२१)। वक्र पहर्णत (माट-मासवि ७२)।-पहुंच दू [प्रभव] स्त्पत्ति-स्थान (प्रथि ४१)। पहुष देवो पहाय – प्रमाव (स. ६३७) । पह्य देवो पह≕ प्रश्च (विसे १ ८)। पहुष पूँ प्रिश्चय दिक वैन महर्षि (कुमा) । पहिषय वि प्रिमृत वो समर्थे हवा हो 'मणिडूं बमायुभाषा सर्व नो पहिवर्य नरिवस्स' (मुपा ६१६) । पहस बक [प्र+इस्] १ इक्ता। २ क्पहास करना। पहुसद (भवि सल्)। वक् पदस्य (एए)। पहुमण म प्रिष्ट्सन दिस्पहादः परिकास । र मान्ड का एक मेर हास्य-रस प्रधान माटक काक-विशेष 'पत्रसञ्ज्ञायं कामसत्य बयएं' (स भ१३ १७७) हास्य १११)। पद्दसिय वि [प्रद्सित] १ वो इसने वया

पहिस्त कि [म्प्रसित ] र को इसने क्या
हो (सन)। र जियका सहास किया है।
(सर)। न न हास्य (इद १)। अ ई
प्रकारक का एक विधायत्मिक (ताम
११ १६)।
पहां सक [म + हां] र त्यात करना। र सकः
कम होना सीच होनाए। पहेंक कोई (तस
४ १३। वि ११ १६)। वह पहिस्तामण,
पहांच्याण (पन चन)। छैक पहांच पहिस्ता (याना १ १ १ वह हो।
पहां की [मना] १ छीठ स्वरहार। २
क्याठि मिन्नि (वह )।
पहां की [मना] कांनित केन साकोक सीति
(सीन पाम। पुर १ २३१८ दूना केया
११४)। सहस्य केनो सानंदस्य (पन १

रामक्त्र के भाई भरत से साब दीता बेनेराना

एक राजीं (शतम वर, १): बई छी

ta.	पा <b>र्म</b> सर्म <b>र्भ्य</b>	यहाड—यहुण
[यमा] व्यव्हें बाहुरेन की वण्यानी (पत्रम २ १८०)।  दहाइ वह [म+मानया] दहार वहर समाना कुमला। पदानीत (मूर्यन ७ दी)। पदाल में [मप्पान] है मानक पुष्टिया पुरान परानार प्रमान है दुरम्पार्थित (मुग्यन ७ दी)। पदाल में हुएमार्थित है दुरम्पार्थित (मुग्यन १८०)। २ नवाम मार्थित पत्र १२)। २ नवाम मार्थित पत्र १२)। २ नवाम मार्थित पत्र १३)। २ नवाम मार्थित पत्र १३)। २ नवाम प्रमान की मार्थित पत्र १४०। १२ नवाम प्रमान की मार्थित पत्र १४०। १४ नवाम प्रमान की मार्थित मार्थित (मुर्यान) पद्मान की प्रमान) व्यवस्य विकास पद्मान की मार्थित विकास पद्मान की मार्थित (मुर्यान) पद्मान की मार्थित (मुर्यान) वर्षाय की पद्मान की हरामा, प्रमान। वर्षाय की पद्मान की १ आत्रकाम महेर्य पद्मान की पद्मान १२। ११ मन पूर्व १२ ४४।। पद्मान की पद्मान क्रमार (है ४ ४४।)।	पहारचु कि [प्रमारकिय] किला करने काल च्यून्टमें सल्यक्षेति वर्ण पहारेण मणीर (मन द ६)। पहार वक [ म + मायप् ] प्रमाव-दुष्क करना वीर्यंत्र करना । प्रमाव-दुष्क विद्याविक्य (वरण) महिष्म मिर्ग प्रमाव-दुष्क करने किना । प्रमाव-दुष्क करने किना विद्याविक्य किना करने प्रमाव-दुष्क करने किना । प्रमाव-दुष्क करने किना विद्याविक्य विद्याविक्य प्रमाव-दुष्क करने किना विद्याविक्य विद्याविक्य विद्याविक्य प्रमाव-दुष्क करने किना विद्याविक्य विद्य विद्याविक्य विद्याविक्य विद्याविक्य विद्याविक्य विद्याविक्य विद	पहिंदु देशो पहिंदु अपूर (पीरा मुर १ १४% छुत ११४४)। पहिर क  ियो + आ पिरला, पहुन्या। पहिर क पिरो + आ पिरला, पहुन्या। पहिर क पिरोद (पीर वर्षीय थ)। कर्न पहिर्दित (पिरोद १४)। कर्म पहिर्दित कर्म विद्यालय व पिरोद पत्र १ विद्यालय व पिरोद पत्र १ विद्यालय व पिरोद पत्र १ विद्यालय व पिरोद विद्यालय व प्राव्य पिरोद विद्यालय व प्राप्त व प्राप्त व विद्यालय व प्राप्त व व विद्यालय व व व व व व व व व व व व व व व व व व व
हात्व १६२ चित्र) । सहाया रेगा बाहाया (धनु) ।	हाग्य (१म.१. ११) । प्रदासा की [ब्रह्मसा] देगी-विरोध (ब्रह्म) । प्रदिक्ष नि. (वाग्य) प्रियक] बुनसीकर (हे. १	र एक राज-पूत्र वायुद्ध के विस्तवयन गाँ एक पूत्र (बतु )। ६ स्वामी मानिक (बुद ४ ११६)। ४ वि समर्च सकितला वार्य
many are for a core of a former arm	11 Marit Tita 11 and 3 June ( 16 1	1 - 1

mennene Greek

UNITE-UES

पदार ना [प्र + भारय ] १ विन्तन नरना हरिहरन पहुरन संती (बानू ४०)। ६ व्यक्ति १६२ पुत्रा वर चर वरह)। साक्षा विचार वाता । र निचय शरमा । भूता विति कृतिस्थानायक (हि. १.)। यो [देशक] बुगाफिएनला वर्गशास पराध्य, परारत्या, पराध्य (तुम २ ७ पहुद्ध देली पश्चिद्ध (रणू)। (पर्वति च महा)। ३६ थोग गित्रहरू दुवार ३ १ )। पहुँद देनी पहुँची (बद् )। पद्मिम नि मिथित् रे नित्तृत । २ ब्रनिक **पद** पदारेमात्र (तूप २ ४ ४) । पहुँक हूं [प्रमुक्त] साथ नशके विदेश विदेश रिक्यात्र (चीर) । ६ एलाव-बीरा का एक पश्रद देशो पहर = प्रशार (शाक्षा है १ ६ )। ( \$ 4 YY) I राजा एक संगानति (ग्रम कः १६१)। पश्चारमा भी [प्रशासनिया] निश्चितन पटुच सक [प्र+भृ] वर्डवना । पहचा बद्धिम वि[प्रदित] भेगा द्वया जैतित (उर (44 £x) : (दे ४ ११ ) । वह पद्चमान (पीप पुत्रस्थ (वर्ष टी; भाग र ही)। पदारि रि [प्रदारित] बार करनेताना Z Z) I वदिम रि [र] वरित रिपोरित(रे ६-६)। (तुम १११ शानू १.)। पहुर् देशो परपुरु । परुद्ध (क्यू) । पर्राप्त रि [प्रशासि] जिन वर जगर क्या पहुंचि देशो पश्चिद्र (दे १ १६१) ही रे । वद्जिय रेगी पदा = प्र+ हा।

बहिसय वि [इहिमड] हिना करनेपला

वर्दश्यमात्र रेनो पहा = ४ + ११।

(योज ७१६) ।

**45**):

£ 1) 1

पटुल र् [प्रापुत्र] धांत्रपि नेत्रकार (शर

कम हो पर (न ६६ )

(ध्यम्) ।

बर्सारव रि [प्रभारित] रिचनित विज्ञ

परुणाइय न [प्रापुण्य] दाविष्य प्रतिथि सरकार 'न्हाणमीक्खक्तकाहरखकाखाहमञ्ज शाहि (? इ)में संपादेश (रंभा)। पहत्त कि विभूत र पर्याप्त काफी सकते च पहली (पाध गरह मा २७७)। २ समर्थ (मे २ १)। १ पहुचा हुमा (ती 8X) 1 पहुति देशा पसिङ् (धैवि ४' प्राव्ह १२)। पहुट्य र मर [प्र+ मृ] १ समय होता यहँव । सरना । २ पहुँबना । पहुण्य (ह ४६६ प्राष्ट्र ६२) एपाची वाडियाची निय-निक्सेक्ष्म यह पहुंचीत दह दूराई (भूम २३ )। पहुप्पामी (काल) पहुष्पिरे (हे ३ १४२)। बहु 'कि सहुद कोवि कन्सवि पाम नहार पहुच्चेतो धहुप्पमान (गा ७ मोप १ १, विरात १६) । क्वक पहुब्बंद (स १४ २४ वद १)। देहर पहुचित्र (महा) । पहची औ [पृथियी] मृति वरती (नार---मालडी ७२)। पहुँ दू प्रिस् प्रा (हम्मीर १७) । बहु पूँ विती बही धर्म (इम्पीर १३)। पहुरुष्तु देशो पहुन् । पहास नि [प्रसृत] १ वहुत प्रकृत (स

पहुंच्यतं स्वापपुर्वः। पहुंच कि [प्रमृत] १ वहुतः प्रकृतः (स ४११)। २ व्यक्ताः। १ मृतः। ४ उत्तरतं (प्राष्ट्र ६२)।

पहोत्र तक [ म न मान् ] प्रशासन करता बीता। पहोरस्य (माना १ ८ १११)। पहोह कि [ममानिन] बोनेबाबा (क्ष ४ पह)।

पहोद्राज वि दि] १ प्रवर्तितः। २ प्रदुल्व पद्दोद्ध सक [यि + लूल् ] हिसोरना धन्दो बना । पद्रोवद (मारवा १४४) । पहोच्या श्रीत प्रिधान ने प्रकानन देवपड़ी मण मं (दस व व)। पहोळिर वि [प्रवृणित् ] दिननेवामा बोलता (स् ७व: ६१६ से ६ ४१ पाछ)। पड़ीय देशो पश्चीब । पड़ीबाड़ि (प्राचा २, १ < 3) I या शक या शिना, पान करना । मरि पाहिता पाहापि पाहामी (कपा नि ६१६) कप)। कमें, पित्रद (उन) पीप्रीप्त (प्रि ११९) । शबक पिर्वात (गढार कुत्र १२ )। पीयमाप (स ६ €२) पेंड (पर) (सर्छ)। संक्र पाऊण पाऊणं (मार---मुक्रा ६१ गतः कुप्र ६२) । हेत् भारं पायस (काना) । इ. पायम्ब पिट्य (मुगा ४३६ पराहर १ २ इस्स २ ६) प्रम प्रवह्य (इस) य्वरण ६) पंजा (छाया १ १ १० जवा) । पासक [पा] रक्षण करना। पाइ, पामक (विसे १ २% क्षे ४ २४ ) पाउ (शिक)। भासक [मा] सूँबना गल्ब बेना। पाइ पामक (प्राप्त व २)। पाइ वि [पादिम्] विलेनामा (वंशा १ ₹): पाइ वि [पायिम्] पीनेवासा (बा १६७

पाइक न [न] करू-दिस्तार, पुँदू ना फेबाब (दे १ वर)। पाइक देनो पागय = प्रास्त (दे १ ४) प्राष्ट्र-ः प्राप्त (दे १ वना द पास (दे १४) "च्यू पास्थायो यासायो" (दुगा १ १)। पाइक दि [पायित] रिकास हमा यान क्यम हमा (दुप्र २६) गुगा १३ स ४४४)। पाइत देवो पान - पायद।

fk \$) 1

गहुत का पान गान्तु। पाइक पूर्विपति] पाता पैर से क्लनेवला स्रीत्य (हेर १३० कुना)। पाइकि के प्रापृति] प्रावस्य कक (सा २१०)। पाइण देवो पाईण (पि २११ टि)। पाइचा (वर) की [पिमित्र] झन्द-विशेष (एंग)। पाइत् [तो] वि [पाचित्र] पछतामा हुवा (माग-भार १२६)।

(तार-च्या १२६)। पाइम केनो पाइण (एसि ४१)। पाइम न [प्राविम] प्रविमा दुवि-विशेष (कुप १११)। पाइम नि [पाइम] १ पहाने मोग्य। १

काल-भाष्य पूत (वंड क २२)। पाइम वि [यास्य] मिधन मोस्य (याचा २, ४२ क)। पाइ की [यासी] १ भावन विशेष (याचा १, १८)। २ कोळा पाव (मूच २, २ क)। पाइण वि [याचान] १ यूपीरेशा-संकलो 'ववहार-पाइणाई (१ ईग्रास) (पिंड वेश कम्म सम १४)। २ क गोज-विशेष। १

हुंकी जस गोव में स्परण भीरे सात्रवाह बाहु पारित्यस्थीते (कप्प)। पार्दणा की [प्राक्षाना] दुवें दिशा (सुस २ २ दंद का ६—पन १९१६)। पाठ केले पाउं≃ प्रापुस् (प्राप २ ६ ११ स्वा)। पाठ कुंदियां पुरुष्ट पांक (का १—नव ४८ स्था)।

पाउ पूर्वी हिंदे हैं सक, मान, भोजन। २ सहुं, क्व (दे कर)।
पाउम न दिर्दे हिंदम स्वत्याय (दे दे दे)। २ मान १ दे हैं (दे कर)।
पाउम केरो पाउड = मानुद्र (मा १२ स्व देश पीत पूर के वापा है है
१११)।
पाइम देशों पागाय (मा २, ६१ वापा)

पाडम्बा की [पातुक्य] र कहा कर कर कर कुछा (मद्दे सुन २ २१) कि १७२)। २ कुछा पमण्डी (तुना २१४) थीत।। पात्र केसे पा = पा।

पाउँ स [प्रादुस्] मण्ट स्थकः 'सर्वि सर्वित सरिस्तामि पार्वे (सूस १ १ १ १)। **१**२) ।

पार्वद्वज ) न शिक्षोस्द्रन

पार्रेष्ठ्रणमा रे पुनि का एक छनकरक रजीवस्थ

(पत ११२ टी) स्रोप ६६ : पंचा १७३

पाइकर एक प्रादुस + कि] प्रतटकरणा । मि पाउनस्मिताम (क्य ११ १)। पाडकर वि [पाडुप्कर] धारुर्मानक (सूच १ ₹% **२४)** I पारकरण न [प्रादुष्करण] १ प्रादुर्शन । २ वि बो प्रकारिय किया बान बढ़ा ६ दैन सुनि के लिए एक किला-दौष प्रकार कर थै। इ**ई क्रिका 'पश्चिक्**याटकरहापायिक्य' (पर्यक् २ ४-- वत्र १४व)। पाउच्यम वि [पानुकास] पैले की इच्छा वाता 'तं को हो एवियाए माज्याए कुई पाउनामे से एो निग्यच्छा (सामा १ १०)। पाठका कि दिही मार्ग्यक्त मानित (दे ६ ¥१) i पाउद्धरण केवी पाडहरण (चन) । पाइकशास्त्र न वि पायुसासको १ पत्थाना रही मतोरहर्य-स्थाना काइ विव स्नापाउक्तवसीम रक्योप (स.२.४. भत्त ११२)। २ मकोरसर्प-क्रिया 'एकसीए पाउन्चालयनिपित्पुट्रियों (स २ १)। पाइग्य दि दि । सम्य सम्रास्ट (दे ६ ४१ सक्ता)। पाइम्म नि प्रियोग्य दिन्त साम्ब (तूर १६, २१६) । पादग्गद् तु [पत्तदुमह्] पात्र (धात्रानि ٦ ) ١ पार्डागाम मि [वे] १ पूपा चेनलेनामा । २ क्षेत्र सङ्गणिया हुद्धा (दे६ ४१ पाउड रेको प्राप्य (बक्त १९८ प्रय १२ )। पाउड वि [पाद्वत] १ भान्यत्रीत दना हुया (सूप १ २ २२)। २ वझ, अवहा (লং ₹)৷ पात्रज्ञ स्था । मा मा पान्क कि रखा विद्वारता।पाञ्च (विष्य ११)। संज्ञः अर्थः पाडिकरूण चींत रिगनवी' (नहा) । पात्रम सर्वि + अराप् | बात करना। पाक्रपुद् (वन) । पाक्रपुर्ति (धीरा सूध १

११ २१) । पाज्यतेजा (भाषा २,६१११) मनि पाउरिएस्सामि पान्निएक्सिइ (पि १६१) चवा)। चं**ड** पाडिवाचा (बीक सामा १ १ विपार शाक्या उदा) । क्रेब्र पाइणि-त्तप (प्रापा २, १ २ ११)। पाटण (धप) देशो पाषण - पारन (पिय)। पाटच देवी पडच = प्रयुक्त (मीप) । पाउप्पमाय वि [प्रादुष्यमाव] प्रशासुकः प्रकात-पूका 'कर्ल पारुपायायाप स्वर्णीए' (छामा १ १३ मर)। पाडच्सव बक [प्रादुस्+ भू] प्रकट होना। पाज्यसद् (पद Y )ः भूका पाकमित्वा (चना)। वह पाउदमर्पत पाउदमबमाय (सुपा 💔 🗫 २८) खांबा १ १)। एक पाकस्मवित्तार्थ (ज्वा धीत) । हेच्च पाउडमविचय (पि १७४) । पाडक्सव वि पिषोद्धभी पाप से उत्पन्त (सर ४६५ थे)। पाउदभवना सौ [प्रादुर्मवन] प्रभुपार (स्थ 1 () F पाउच्युय (बर) शीचे वेको (बरा) । पाउदम्य वि [पादुर्मेत] १ बलव संबात। २ प्रकटित (भीपा संगः, ब्यार विपा १ १)। पाडरण न [शावरम] वड, रूपका (सूमनि द**६ १** १ १७४ वंदा १,१ प्रदूष पाइरण न [दे] नवच वर्ग (बङ्)। पाउरजी की हिं] क्लच धर्म (दे ६ ४३)। पाउरिभ देवी पाष्ट = प्राकृत (रूप ४६२)। पाइस वि [पापकुस्त हतके दूत का चयन कृत में बलम 'दबानिये पाजवाल दक्कि-बार्य (छ ६२१), 'दतदर्गरताज्यमंगर-र्वयोदार ऐत्व हर्ष (तुर १ १)। पादक न देवो पाउआ 'पास्ताई बंदमदुर्ग (तुष १ ४ २ १४)। पाडव न [पादोद] पश्र-प्रसानव-जन नामकारं न एक्तपुनकारं न' (लामा र **७—ग्य** ११७) । पाइस दु[प्राइप्] वर्ग ब्लु (६ १ १९। इतक महा)। की इर् दू ["कीद] रची ऋतू में इस्तम होलेशला शीव-विशेष

(दे)। । गम पूं [गम] वर्षा-प्रारम्ब (पाय) । पाइसिम दि [प्राकृपिक] वर्ग-प्रमानी (स्व)। पाडसिञ न [प्रोफिट प्रशसिम्] प्रशस में पदा हुया, 'तह मेहादमश्रीसंबद्धादम्यार्ग परेस मुहामी । यन्त्रमञ्जानभारतीय निमन् पार्वाधयवन्त्रामी । (मुपा ७ )। पाइसिमा भी विद्विपिकी विद-मस्तर से डोनैपाला कर्म-मन्त्र (सम १ ३ ठा २ १) भवनद१७)। पाबदारी की [दे पाबदारी] शका को सलेगाची, भार-याली से मालेगाची (क ६९४ म) । पाय ब 📳 प्रपृष्टि, (वहां से) शुक्र करके (मोव १६६) इइ १)। पाय सक पावयी विकास । पाएक (ह ३ १४६) । पाएकाह् (महा) । वह पाईव पायर्थेत (स्र १६ १३४- १२ १७१)। **धंक पाएचा (यःक १**)ः पाए छक [पाद्य ] वित कराना । पाएस (\$ \$ 1 YE) 1 पायः सकः [याच्या] वक्ताना। पायः (हे १ १४१)। शर्म, पाइमाइ (म्यापम P पाण्जी म शियंजी बहुत करके प्रायः पाएल ) (विसे ११६६) काल, रूपा मानू ¥4) 1 पाओं व [प्रायस्] अनर देवी (धा रण)। पाओ म [प्राटस] ब्रह्मचार प्रमाट (सुरुव १ ६, कप्प)। पाञ्चेन्द्ररण देवी पाडक्ररज (पिंड २६४) १ पामीय देशो पाटमा (तूपल १६) । पामोगिय वि [प्रावागिक] प्रवल बनियः सस्यामाधिक (वेदस १४३)। पाञामा देवी पाउमा (अस १३ वर्षे **११**≍ )। पाओपराम न [पाइपोपराम] 🐿 पाओ-बगमप्प (बद १)। पाओयर र् [प्राहुप्सर] देवो पाडम्प्रम (ठा ३ ४ पेवा १३ ४)।

पाओपगमण-पाडपण पाञ बगमण न [पान्पोपगमन] बनरून-विशेष मध्य विशेष (सम ११) धील कम मम)। पाक्षोचगय वि [पाव्पोपगत] बनकन विकेप क्षे मृत (सीप कम्प संत) । पाओस दे [के प्रदेष] मरसर, हेप (ठा ४ v—पत्र रद )। पाओसिय देवा पादोसिय (धोष ६६२)। पाओसिया देखो पाउमित्रा (वर्ष ६) : पौडियाम वि [दे] वसक्ष पानी से मीका पांडु रेको दंबु (पद २४७)। सुझ ई [\*स्त] प्राथ्यय का एक मेद (ठा४ ४---पद २०१)। पाक केवो पाग (कप्प) । पाइस्म न [प्राकास्य] बोप की बाठ विदियों में एक सिक्षि 'पारम्मपुष्टेण पुर्शी मुनि 🕶 मीरे वर्ति व्य पुनि चरद' (कुप्र २७७)। पाशार पुं [प्राक्तर]किता दुवें (सर प्रद४)। पाक्ति (शी) वेबी पागय (प्रमी २४) गट---केछी १व नि १३ वर)। पार्टाड देवी पासंड (पि २६१)। पारा वै [पाक] १ पवन क्रिया (ग्रीमा उदाः सुपा १७४) । २ दैस-विद्येष (गउड) । ६ विपाक परिखाम (वर्गेष ६११)। ४ बनवान् दुरमन (बावम) । सासन्य वृ [शासन] स्थ, देव-पति (१४ २६४, वज्य पिर १)। सासणी 🛍 िशासनी इन्द्रजाब-विद्या (सूच२२ १७)। पागइम नि [श्रक्तिक] १ स्वाधानिक। २ वृं साबारण मनुष्यः प्राकृत शोक (१व ६१)। पागड एक [प्र+कन्यू] प्रकट करना, चुवा करना व्यक्त करना । वष्ट- पागडेमाज (ध ३ ४--पत्र १७१)। पागड नि [प्रकट] ध्यक, जुला (उस्त १३, ४२) मीप च्य)। पागडण न [प्रकटन] १ प्रकट करना। २ नि प्रकट करनेनावा (भर्में रू २६) । पागडिका वि [प्रकटित] व्यक्त दिया ह्या (उक्त भीर)।

पागिहरू ) दि [प्राकर्षिम्, क] रेयप पाग**हिरेक** ) बानी "पानही (1 द्वी) पहुनए बुद्धवरें (लावा १ १)। २ प्रवर्तक प्रवृत्ति करानेवाला (परह १ ६---पत्र ४३)। पागक्स न [प्रागहस्य] पृष्ठता, विकार (सूप **१ % १ %) 1** पागिक्स ) वि [प्रागितिसम्, क] बृष्टवा भागिक्सय | बासाः बृष्ट, बीठ (सूप १ ४,१ **ध** २ १ १८)। पराय वि [प्राकृत] १ स्वामाविक स्वभाव सिक्षः २ शार्व्यवर्षे की प्राचीन सीक्ष-भाषाः न्सन्क्रमा पायमा वेव (ठा ७—पत्र ३१३ विते १४६६ टी स्वल १४. मुना १)। १ वे शाबारल बुदिवाला मनुष्य सामान्य बोमः 'बेसि ग्रामागोत्तं न पागदा पर्म्य नेहिटि' (सुक्त ११) किंदु महामध्यम्मो दुरलबस्मी पानयनखस्त (नेहव २१६ भुर २, १६ )। भासा को "भाषा] प्राकृत भाषा (का २३)। क्षागरण न क्याकरणी प्राक्ट भाषा का क्याकरस्त (विसे ३४३३)। पागार दे [धाकार] किया दुवें (घरः सुर 1 (44) I पाजावब र् [माजापत्य] १ बनस्पति का विद्याता देश । २ वनस्पति (ठा **१** र— पत्र २६२)। पाटप (बूपे) वेशो वाहब ( पह )। पाठीण रेको पाठीन (क्या १ १— দর ভ)। पाड चेको पत्रड-पाट्या चर्चसपत्तकपूहि पार्वेषि (समिनि ७६)। पाड का [पातम्] विस्ता । पाडेद (उद् )। र्धक पांडिक पांडिकण (काप्र ११६ द्रप्र ४६) । कनक पाडिकांद (ज्य ३२ हो)। पाड देवो पाडय = पाटक 'तो सौ विदुद्राही सय वद्यो बेसपारमिन (सुपा ११ )। पाडवर वि दि] मासक विश्ववाना (दे ६ पाडबर 🛊 [पाटबर] बोर, ४स्कर (पाय-R 4 4x) 1 पाडण न [पाटन] विवादक (भान ६)।

पाइण न [पातन] १ विराना पाइना (मुम्मिन ७२)। २ परिप्रयण इवर-उवर 'बहुबदरपिदरपडिवारपाडखताख क्मकीसो (कुमा २ ३७)। पाडणा को [पातना] अपर देखो (विपा १ १—पत्र १६)। पाडय पू [पाटक] मुहल्मा रप्याः नैहान पाक्य गंतु (बर्मीव १६वा विपा १ वा महा)। पाइय वि[पादक] गियनेवाना । श्री विश्वा (मुच्य २४३)। पाडल पू [पाटक] १ वर्ण-विशेष श्वेत सीर रक्त वर्शे ग्रुसाबी रंग। २ वि रनेत-रक्त वर्णमाना (पाम)। १ न पान्नीका-पूज्य द्वतावकाकुत (या४५३) सूर्र ३ १२० हुमा)। ४ पाठना बृज्ञ का पूज्य पाठन का भूम (या**३**)। पाइक पूँ [दे] १ ईस पनि-विशेष । २ इपम बैन। कमस (दे६ ७६)। पाबंबसडण पूर्वि । इंस पवित्नविदेव (वे 4 x4)1 पाडस्य की [पाटन्य] बुख विरोध पात्रक का मेड़ पार्कीर (या ४३६ सुर ३, १२ सम १६२) 'चंपास पाज्यसम्बो वसास वसु पुरुवधितवो होई (पडम २ ३८)। पाडिंड औ [पाटिकि] अपर रेखी (गा ४६८)। एक पुक्तन पुत्रज्ञीनगर विरोप पटना भी मानकब विद्वार प्रदेश काप्रवान नगर है (है २, १४ पि २६२ चार ३६): पुच्च वि [पुत्र] पाटतिपुत्र-पंदम्बी पटना का (पत्र १११)। संद्र न [ पण्ड] नगर-निरोप (विपा १ पुपालक्)ः केको पाइस्सी। पाइसिय नि [पाटसित] स्वेत रक वर्शनावा किया हुमा (गाव)। पाडकी देनो पाडकि (उरप्रदेश)। पुर

न ["पुर] पटना ननर (वर्मनि ४२) । बुद्ध

पाडकं न [पाटक] पटुता निपुश्रक्षा (बस्स

पाइक्ण न [के] पाव-पठन पैर पर विस्ता

न ["भुज्ञ] पत्नानपर (पद्)।

प्रखाम-विशेष (दे 🐛 १४) ।

१ दी) ।

पात } फेबो पाय ≔ पात (सूस् १ ४ २

पाद् । पर्या २ १ — पत्र १४०)। वीषण व ["बाधनी पात्र बॉक्ने का बक्क-कर्य केन नुविकाएक उसकरता (पर्याहर ४)। पाव वेको पाय = पाव (निया १ व)। सम वि **"सम**े पैत-विशेष (ठा <del>७---</del>पत्र ६६४) । ीहपय न [\*ीप्टपन्] ह2नार शामक बारक्षेत्रं बैन यानग-प्रन्य का एक प्रतिपाच विषय (सम १२)। पादु देखो पाड=प्रादुस्। पादुरेसप् (पि १४१)। पातुरकासि (तुम १ २,२ ७)। पादो देवो पाओ = प्राठस (पुन १ ६) । पादोसिय वि प्रादोपिकी प्रशेष-कार्य का प्रवोप-शंकनी (मीन ६१व) । पाद्व देखो पात्रम (फ १६७ छ)। पामम देवो पाइम (वर्गर ४०६) । पाचार तक स्वा+गम् पाद+वारप ] पवारमा 'पावारक निमनेक्टे' (मा १६)। पाबक वि [प्रावक] विशेष वैवा हमा पारित्व (निष्कृ १६) । पासाइय ) वि [मासाविक] प्रमाव-पामाविय र धंकत्री (ग्रीवमा १११ पतु ६ वर्षी ५ )। पास सक [प्र+व्याप्] प्रत्य करना दुवराती में 'पामदू'। 'कारावेद परिमें किछारा विमरोक्तोसमीहास्। सी बाबमने पामइ मनमन्त्र बम्मनरस्त्रलं ।।" (रमज १२)। कमें पानिकाइ (सम्मत्त १४२) । पासप्त्रान [प्रासाप्य] प्रवास्ता व्यास्तरन (वर्षसं ७३) । पामदा भी [व] बोनी पैर वे बन्द-मर्दन (वे **(∀)**i पामभ केनो पामण्य (विशे १४६६) वेड्स ( YF 5 श्रामर पू [पामर] इत्तोवन वर्षक बैटी का काम वालेशमा वृहत्तः "पानरबहुबहुनेधालः बायवा दोखवा इनियाँ (शय' दला १६४) स्तर है ६ ४१/ पुर १६ १६)। २ हनती <sub>वार्षि</sub> का मनुष्य (क्ष्णुः का ११व) । १ हुनै केरपुत्र, सप्रानी (मा १६४)। नदी नान वानरं पुत्रुं बच्द दुर्वरहर्ते (ना १२)।

पामा की [पामा] चैक्शिवेप चुत्रती चान (तुपा २२७)। पामास पु पिद्याटी पनाक पपार, पनाक चक्क पूर्व-विशेष (पाय)। पासिच एक 📳 उचार होता। पासिच्चेक (भाषा२२२३)। पासिकान [के अपसित्य] १ भार केना बापस केने का बास्त कर बहुए करना। २ वि को प्रकार नियाबाय वह (रिकटिर ३१६ बाचा हा ६ ४ हा बीया प्रशास ५ पर १२६८ पंचा १३ दश द्वपा ६४३)। पामिचिय वि दि जार निया हुआ (बाका १ १ १)। पामुख्य वि [प्रमुक्त] परिस्पक्त (पाम स 4X0) 1 पासूचान [पादसूख] पैरका सूत बाय पॉव का भग्न भाग (परम १ ६ सुर का १६१) पिड ६२ )। देवी पायमुक्त = पारमूव । पामीक्स केवो पमुद्द = प्रपुच (शाबा १ ४) पामोक्स र् [प्रमोस] पुष्डि, कुटवारा (का ६४व दी) । पाय पुँ [वे] १ एव-वक रवका पहिला(दे ६ २७)।२ प्रशीसी (प्रा)। पाव पूर्विषक् देशचन-क्रिया। २ रही ई (माइट रेट) क्या २ टी)। पाव वि [पाक्य] पाक-योग्य (इस ७ १२)। पाव केवो पाव (चंड) । पाय 🖠 पात] १ भवन (वैचा २ २ ४ से १ १६) । २ संसन्तः पूखो बूढो वरमसिट्टि पाएकि( (सुर ६ १३)। पाय पूर्[पाय] पानः गोने की किया (धा पाय पूर्विषदी १ यमन वित (या २६)। २ पै८ परत नौत 'पललाकमा न नान। (पामः) स्टाबा १ १) । ३ पद्म का भीना विस्था(क्षेत्र १३४० शिव)। ४ किएड<sup>.</sup> चेतुरसमे कार्वा(पाम मनि २)। **१** तालु, पर्वत का कन्क (वास) । ६ एकारान क्षा(येनोव १)। चार्यप्रमीका इक नार (रक्) । कंकणिया 🛍 ["सम्मानिका] पैर ब्रह्मासम्बद्धाः एक उन्नर्यन्तमः (साज) ।

कंतर पुर किम्पर पेर वॉको का अस-बएड (क्स १०-७)। "कुमकुड प्र [<sup>\*</sup>कुसकुर] कुसकुर विश्लेष (स्ताना १ १० य-पन २३)। "माय प्र "भाव निपत प्रहार (चिन)। चार पूं विचार] पैर से गमन (छामा ११) । चारि वि चारिन्] पैर से याताबात करनेवाला भाव-विद्वारी (पचम ६१ १६)। आहम्छ जान्यान िकास की पैर का बाजूकछ-विशेष (बीर: थनि ३१ पळार ४.)। चाल न "प्राज] भूता प्रयक्ती (दे १ ६३)। पर्शन 🖠 ["प्रसम्ब] पैर तक सटक्लेशका एक धार् पछ (खामा १ १ — पत्र १३) । पीड देवी वीद्ध (युप्तमा १ १ महा)। पुंद्रमान "प्रोबन्द्रनी स्थोधस्त वेन साबुका एक क्यकरश (बाबा; बीब १११) ७ श ननः छका)। प्यद्वज्ञन ["यदान] पैर पर विरवा व्यक्ताय-विशेष (पटम ६३ १८)। सू**छ**न िम्**ड**ी १ देशो पामुख (क्स) । २ मनुष्यी भी एक सावारल जाति नर्तकों की एक वाति 'समायमाई पामपुताई' 'पुबदमदासी पारमुकेहि पत्ती रहसमीने परहिस्साई पायपुनाई 'सहावियाई पायपुनाई 'पस चिक्क पायपुलेकि (च ७२१) ७२२ ७३४)। 'सेक्जिमा का ['लेक्जिनका] पर गाँको का बैन साधुका एक करहमा क्लाप्ट (प्रोच १६) । बंदब दि विज्युक देर पर विरकर प्रखाम करतेशवा (सावा १ १९)। बद्यण न विश्वनी पेर पर विरम्ध प्रखान विशेष (दे १ ५७ ) द्वारा बुर १ १ ९) । विश्वया की विश्वचि । पाद प्रतान पेर क्रूना, मणाय-विरोप: 'पायवडियास क्षेत्रकृषके पुरुषि (सामा १ ए। सुना २१) । विद्वार प्री ["विकार] पैर से नशिः (मन)। नीज न ["पीठ] पेर रचने ना शासन (देर दुमा गुपा १)। सीसग व [री।पेंक] पैरके क्यर का भाव (छन)। | विकास न ["(कुछ क्र] कल-विकोद (शिय)। पाय देवी पचा≖पात्र (सावा; सीप: सोवस्त १६ १७४)। किसरिमा के [किसरिमा] बैन बाबुपों था एक काकरहा, नाव-प्रमानिन ET STET (che se .. 6.2 ..... A) .

पाद—पाव

टूब्ल, "ठ्यूण न ["स्वापन] वैन सुनियाँ का एक उपकरण पात्र रक्षने का वक्स खरूव (विदे २११२ टी घोष ६९८)। "णिज्ञोग, "निज्ञोग दु ["निर्योग] वैन साबुका यह उपकर्ण-समुद्र--पात्र पात्रकम पात्रस्वापन, पामनेशरिका पटम रवकारा धीर पुरुषक (पिंड २६ वह व विसे २६६२ टी)। पश्चिमा भी भितिमा पान-संगत्मी मनिपड--प्रतिज्ञा-विरोप (ठा ४ ६) । वेसी पाद = पाद । पाय (ग्रप) रेखी पत्त = प्राप्त (भिग)। पाय स [प्रायस्] प्रायः बहुत करके न्यासप्याण बरोद्र सि (निव ४४९)। "पास पूंच ["पाद] पूज्यः 'संदुष्यः सनिधः-संतिपासमा (प्रवि **१**४)। पायप देखी पा = पा। वार्व देखो पाय (स ७६१ सूपा २०, १६८) यावक ७३)। पार्य च [प्रावस् ] प्रकार (सूम १ ७ (x) थार्यगृह पू [पावाक्रप्ट] पर का बंद्रक (ए।या १ व)। पार्यक्रि वे [पावक्रक] पवर्णवद्भव शास, पातकत योय-मूत्र (एवि १६४)। पार्यंत न [पादान्त] मीत का एक मेक पार बुद्धमीत (सम १४)। थार्थद्वय पू [पादान्द्वक] पैर बांबने का काह्नमय जनकरण (बिपा १ ६-पन ६६)। पात्रफ केको पायय ≔पाठक (वद १)। पायक रेको पाइक (सम्भन्त १७६) । पायक्रिकण्य न मिष्धिण्य प्रशक्तिला (पडम १२ १२)। पायम न [पातक] पाप (बावक २४८)। पायन्छित पुन [प्रायम्बन्त] पाप-माधन कर्मे पाप-क्षव करलेवाता कर्मे 'पार्याच्या नाम पायन्त्रियों चंत्रुयों (सम्मयः १४४ क्वाः यीप नत २६)। पायक देवी पागक व्यव + कटम् । पामकद (भवि)। यक पायश्वेत (भुगा २६६)। क्तक पाय**डिकां**ड (या ६०१)। हेक पायकिर्द (दूप १)।

पायड न दि] शंक्ल शॉयन (दे६ ४)। पासद्व देशो पागड≔ प्रकट (हे १ ४४ प्राप्त बोष ७३ भी २२ प्राप्त ६४)। पायह देवो पागह = प्राकृत' 'सहीप वाच रियसे सामर्थ परिकामिम असळकोमां पाध डगिएचा विम रचि परसरो सहदू बामण्छामि" (प्रवि २१)। पायक वि [प्रावृत] प्राञ्जावित (विसे २१७६ दी) । पायहिम वि [प्रकटित] व्यक्त किया हुमा (ब्रम भा से १ अका ना १९६, २६ ३ गडड स २१०) : पायबिक वि[प्रकट] कुमा (बण्जा १ ४)। पायण न [पायन] तिज्ञाना पान कराना (ग्रामार ७)। पायस न [पादाद] पराठि-समूह, प्यानों ना सरकर (उत्त १८ २ और) कृप्य) । (णिय न ["निक] पश्चति शैन्य (पि ८)। पायपुंद्रण न [पादपुरुद्धन] पात्र-विशेष रायव सकोरा। पायप्पक्ष्ण वृं [के] दुक्टुट गुक्र (के क YX)ı पासय न [पातक] पाप (धन्द्र ४३)। पायय रेकी पाप = पाप (पाम)। पायय देको पागय (हे १ ६७)। पायस देवी पायव (से ६ ७)। पास्य देखो पात्रय = पात्रक (धर्मि १२६)। पायय देखो पाय = पाव (कृप्य)। पायस र्षु [प्रावसरा]प्रावःकाव का भोजनः क्तपान वदक्या (भाषा श्रामा १ ८)। पायस्य न [क्] चसु, स्रोत (के ६ ३०)। पायव दु [पादप] कुश पेड़ (शक्त)। पासक्य देशो पा≖पा। पावस र्पुत [पायस] दूव का मिछान कीछ 'पायको बीरी' (पाम धुपा ४६व) । पायसो य [प्रायशस्] प्रायः **बहुत कर** (तप ४४६ वंबा ६ २७)। पासार पुष्टिमा कोट, दुर्ग (पास ६१२६ कुमा)। पायास व [पातास] रश-धन सनो मुक्त (देर रेवा पाप)। इसका पु "इसका |

समुद्र के मध्य में स्वित कत्तराकार वस्त् (प्रण्) । पुर म व्युर निवर-विशेष (पडम ४६ ११)। मंदिर न "मन्दिर" पतास स्थित गृह (महा)। इर न ["गृह] वही धर्षं (महा)। पायास्त्र [पाददस्त्र] पासस्य धेन्य पेशस र्शनिक (बरुपञ्च पत्र १८१)। पायाक्षेत्रस्पुर न [पातासस्कापुर] पातान र्मका रामस की राजवातीः 'पामासकारपुर' सिग्बं पत्ता मजन्मग्या (पउस ६ २ १)। पायायक न [प्राजापस्य] महोराव का चौद इवी मुहुर्स (सम ५१)। पायाविय वि [पायित] क्लिया हुन्ना (परुप tt vt) i पायादिण न [प्रादक्षिण्य] १ वेहन (पन ११)। २ वित्रण की कोट भागाहिलेख विविद् पंतिमाहि मनपूर नदिपप्' (सिरि 1 (335 पायाहिया देवो प्रमाहिया पामाहिती किंतों (बत १, ११ मुख १, ११)। पार सक [अच् ] सकता करने में समर्थ होना।पारक पारेक (क्षेत्र प्रवाह पाछ)। **वक्र** पारंत (कुमा)। पार सक [पारय्] पार पहुँचना पूर्णं करना। पारेद (हे ४ ८६ पाम) हैहर. पारिचय (भग १२ १)। पार पुत [पार] १ वट, किनास (माका)। २ पर्वा विकासः 'परतीर' पार' (पाप) "किह मह होती मनकतिहपार" (तिसा १)। १ परलोक धारामी अन्य । ४ मकुन्य-सोक-मिस नरक स्थादि (सूस १ ६, २६)। १ मोग द्वकि, निर्माण 'पारं पूरायुक्तरं द्वारा विवि' (बहु४) । स वि ["स] पार वाले-बाबा (धीप) सुपा २६४)। राय वि ["सत्] १ पार-माप्त (मकः सीप)।२ दूकिन-देन भगवान् महेन् (डर १३२ टी ) । गासि वि [ैगामिन् ] पर पहुँचनेवाला (माचाः क्रम भीप)। पाजस न [पानक] देव ब्रम्स-विदेप (खामा १ १०)। विद्वि विद् पार को वालनेवाका (तूस २१ ६)। ामोय वि ["वोग] पार प्रापक (क्या) ।

एक येद (स्रत्र)।

पाडिका देखी पाडम = पाठक ।

११) ।

(सम १४)।

(का द १४६)।

पाडिएक } न [शस्येक] इर एक (हेर

पादिक रे २१ र कप्पे नाम शामा १

१६: २, १ पूपनि १२१ टी दूमा) 'एमे

पार्विदियं न [शास्त्रनिक] धरिनन-निकेष

पाडिकरण न [प्रतिकरक] देवा ज्यासना

भी बहुनी विकि बहुना (सब रेश सामा रे

titt (Urr):

भीवे पारिकार्धं स्पैप्पूर्वं (द्वा १—पन ।

पाडिहच्छ। ) 🐗 दि शिये-मध्य यस्तह-पाडिदरभी ) स्त्रित पुष्पमाना (र ६, ४२) चन)। पाडिहारिय वि प्रितिहारिक वागस की मोग्य वस्तु (विशे ६ १७) घौरा छवा)। पाडिहेर न [प्रातिहार्थ] १ देवता-इत प्रती-हार-बर्मः वेबहत पूजा-विधेय (मौदाः पन ११) 'इव सामक्ष् याचा ख्राहरी बागबत नरताहो । बाघो प्रपाधिकेपै (तुरा ५४४) । २ देव-सधिष्य (अन्त १६)- 'बहुर्स सूर्रीक्र कर्म पाधिहरें (मृ ६४ महा) ! पाड़ी आदे वि] मैंच को विक्या पाड़ी या परिवा एक्एती में 'पार्की' (बा ६१)। पाईकी की [दे] कडी-अवपनाने की पालकी (दे ६ ६१) ।

१ नद १)। निवार (देद ३६ पाप्र)। पाइइक वि कि प्रतिम् भनौतिका वाक्रिकet (t t v2) : पाडेक देवी पाडिक (दान ११)।

७१३ विते १३०४ समत १४ )। २ शहर यायम । १ ताइए का अस्तेत्र भागो विका सत्वं वि वा एयट्टा (बाबू १)। ४ प्रम्यास रिक्ता(उर दूवे द विदे १व०४)। पाड देवी पाड़ब = पाटक (बा ६६ टी)। पार्टकर न [पाठान्तर] भित्र पाठ (भानक **1(33** पाइग वि [पाठक] १ प्रवास्त करनेरावाः 'पहिन' मंपनपारकेंद्वि' (क्य १२) । २ धम्याची सम्पन्न करनेशना । ३ सम्बन्त करतेवाला बच्चायकः 'बरकुपहर्वा' 'सुनिए-पाडवार्ड 'क्क्टलमुपिलगाडवार्ज (वर्षीर पाडण व [पाठन] द्रम्यानन (बन 🛊 १२८) पारणवा को [पाठना] करर देवो (पंत्रस पाइय देवो पाइय (कम स भः साम्य र पाइच वि [पाबिय] प्रविक्षी ना विकार प्रविशोद्धा पाउन करोर क्रिया (उस र पाडा की [पाठा] बक्तपरि-विदेश पाड, पाड पाद्याच दक [पाठयू] पदाना, श्रम्यापन करना । नावावेद (प्राप्त) । संक्र, पादाविकण

पाडाबञ वि (पाठक) सम्मारक (बाह ६ )।

पाडाक्ल व [पाठन] बच्चारन (बाह ६१)।

पाडिरक्य वि [प्रतीप्स इ] ख्रुश क्रलेनामा (सूच २,१३)। पाडियान क्षेत्रो पाड = शहरू । ६६। छाबा १ १३ कम्प)। पाक्रिपहर [प्रतिपद] यम्ब्रिक सम्बन (सुष २, र ३१)। प्रतक ६१ः सम्मत्त १४२) । पाडिपदिक देवी पडिपदिस (नुस २ २ 11) i पाडिपिद्धि सी [वे] प्रतिशर्का (यव् )। पार्वगोरिति कि र विक्रज क्रय-प्रित। पाडिप्पचग र् [पारिप्छपऊ] परिम्पिशेष २ सद्में प्राइकः। ३ की सम्बद्ध केटन-भानी बाड़ 'पार योगी च बृतिनीं व वस्या १---पव २ : महा)। (पडम १४ १०)। पाहित्सद्धि वि प्रितिस्परिन् । सर्वा करने शिक्षेष्ट्रने परिवा (दे ६ ७ )। नला(दे१ ४४ २६)। पाइक पुँदि । समानम्बर, करून ग्राहिका पाहिर्येतिय न [प्रास्पन्तिक] माम्नय-विशेष शरीर में कल्लोप । २ कि पटु निपूत्त (दे ६, (छन)। ना नाध (परता १७)। पाडियक देवी पाडियक्ष (भीर) । पाइदिय दि [प्रातीतिक] किमी के बादय पाक्रिपय वि [प्रातिपद्] १ व्रतिपत्-संबन्धी तें डोलेंचाचा महोडिक । की या (स. १. बहवा विवि ना; 'जह बसी पाडिवमी पडियूती नुस्पन्तम्य (कार ६) । २ दू एक पादावेऊण (माह ६१) । हेह- पादाविषे पाडची की हिं तुरन-करण्य बीहे शा भागी केन धानायें (निवार १ १)। पादावंड (प्राक्त ६१) । इ पादावस्थित्र पादाविभव्य (बाह्र ६१) । पाडिनया भी प्रितियन् ] तिबि-बिटेय १४

पाडाबिस वि [पाठिन] सम्यापित (प्राक्त वर)।

पाडाधिअवंत वि [पाठितवत्] विसने पदाया हो नह (प्राष्ट्र ६१)। पाडाधिउ ) वि [पाठियद्] पदलवाचा

पाडाबर (प्राप्त ६१:६)। पाडिज वि [पाठिव] पदाया हमा सम्यापित (प्राप्त)।

पाहिकार्यत देखो पाडापिमपेत (माह ६१)। पाहिका हो [पाटिका] पदनेवामी की (कपू)। पाहिक) हे [पाटियत] सप्पापक पहाने-पादिर है बावा (माह ६१)। पाडीय वे [पाटीय] मन्य-विशेष पाटियाँ

मधनी मत्स्य की एक वास्ति (पा ४१४ विक ६२) । पाको आसास पुं [पूचगासरी] वास्त्र संक संव का एक भाग (सावि २३४) ।

पान्न सक [प्र + आतय्] जिसला । वहः पान्न सक [प्र + आतय्] जिसला । वहः पान्न सेव (नाट-पानवी १) ।

पाल तृकी दिं] प्राच चयुवाल (दे ६ ६८) चर दू ११४% सहा पाय ठा ४ ४ वर १) १ की जा (जुक ६ १ महा) "च्छी की [बुटी] चायुवाल की क्लेक्स (जा २२७)। किया की [बिल्डा] चायुवाली (जा क्षेत्र टी)। हिस्स दुं [बिल्डा] स्थानियो (जा क)। हिंदस दुं [चिर्म पवि] चायुवाल-स्थल (बहा)।

पाण न [पान] १ शीना भीने की क्रिया (पुर १ १) । २ शैने भी भीन भागी साथि (मून २ से पीन महा पाणा) । १ वे इच्च-सिटेच करणस्कालस्तानस्तामात्रास्ता मित्रारों में (गण्डा १) । पत्त न [पान] मेंने का मीनन प्याता (१) ।पार न [मार] म्य-मू (शाया २ अम्बा) । "हार वे [सार] एकारन कर (श्लोब २०)। । पान वेन [मान] १ शीवन के प्यावर-पुत के रूप पार्य-पान हिन्दा, सन, बक्त और स्रोर पार्य १ । महा स्व १ १ १) । समस-परिसाल स्टिट, कम्यून-स्थितन साम-सीरिस्स

वाद (इंग मेलू) । ३ अल्ट्र, प्राप्ती चीतः

'पारणास्ति वेब विशिष्ट्रंति मंदा' (सूम १ 💌 १६ हा १ माचा कम्म) । ४ जीवित बीबन (शुपा २६६) १६३ कपू)। इत्त वि ["वन्] प्रास्त्रवासा प्रास्त्री (पि ६)। बय दे िस्पयी प्रारण-गरा (मुपा २१=) ६१६) बाय हुं [स्याग] मच्छ मीत (नूर ४ १७)। आइय वि ["आविक] प्रास्ती जीव कल्तु (ब्रावा १ र १ १)। नाइ प्रे नाव । प्राणनाम परि स्थानी (रंगा)। स्पयाधी "प्रया औ प्रशी (मर ११ a)। वह प्रेविघी दिसा (परहृ ११) । विचि की विचि बोदन-निर्वाह (महा) । सम प्रै सिमी पि स्वामी (पाष) । सुदुम न ["सुस्म] सुरन जन्दु (क्य) । "हिंस कि [ इट्रेस् ] प्रालुनारक (रंग)। प्रति वि [ धन् ] प्राक्षकारमध्याली (प्राप्त) । शहसाहया भ्ये ितिपातिकी किया-विशेष दिसा से होने-शक्ता धर्म-कर्च (मद १७) । द्वराय प्रै [।विभाव ] मिला (उना)। "उ पून भियुस् ] प्रन्तारा विरोप बारक्वा पूर्व (सम २६७२५)। पाण ।पाणु क्री [ौपान] प्रश्रदास भीर निःस्तास (वर्गसं १ क ६८) । याम पु [ याम] योगाङ्ग विशेष-रेषक पुरनक सौर पुरकतामक। प्रार्कों को बमने का उपाय (बराइ)। पार्णनकर वि [मामान्तकर] प्राण-नाग्रह (सूपा ६१४) । पाणतिय वि [माणान्तिक] प्राक्त-भारतास 'पार्गातियावर्ष पह ।' (तुपा ४३२)। पात्रस पूर्व [पानक] १ पेक्-प्रवय-विशेष (वंशमा १) पूज २ टी शम्प)। २

पहणुकानक पहणुक्त करणा (वंदार्ग १) पुढा र टी कम्प्रामिकेत (वंदार्ग १) पुढा र टी कम्प्रा)। २ वि तम वर्षनेवाता(१) प्राप्ताची वे वको अस्स्ती (वंदी २२) क्या। पाजाद्विकी [व] रचना द्वारता (१९ वश)। पाजाद्विकी [व] रचना द्वारता (१९ वश)।

नीचे घोषना। पाणुमीत (तम २) भग)। पाणय न [पानक] देखी पाण = पान (दिसे ११७२)।

पामय पूँ [प्रायत] स्वयं-विक्रेय दनवाँ देर नोक (सन ३०: मग दम्म) । २ दिमानक्रक देशियान-विकेष (द्वेश्व १३४) । ३ प्रायत स्वर्गका इन्तर (ठा ४ ४) । ४ प्राण्य देव-सोक में प्रतिवासना देव (ब्रणु) ।

पाणहा और [उपानह्] चूटा 'पाण्डामी म सर्वं च णालीयं नामनीयएं' (मूम १ १ १८)।

पाणाञ्चम पृष्टि समय वाएकास (वे ६ वेद)।

पामास पुं[प्राम] कि चान (मा)।

पाजामा भौ [प्राजामी] शैशा-विद्येष (मन ११)।

पाणाठी भी [दे] से हानों ना प्रहार (दे ६ ४)। पाणि पूं [प्राणिन्] बीक भारता चेतन

(बाचा प्राप्तु १९६८ १४४)। पाणि द्वी पाणि] हस्त, हस्त (कुमाः स्वज १९ १)। सहस्य देशो स्वाह्म (अपि)। स्माह द्वी प्राप्तु विचाह (अप्राप्तु वर्मीत १२६)। स्माहण न मिल्ला विचाह, शारी (विचा १ ६० स्वल दशः स्वति)।

पाणिक न [पानीय] पानी बन्न (ह १ १ १: प्राप्त पर्व्य १ १ इमा)। घारिया की [मिरिका] पित्रपति गिनवजुन्त रुव्यो पाणिवम(१ म)रेस च्योवर्श (छाम १ १२—पन १०४)। हार्च की [हा्ची] परिदार्च (१ ६ ५६ महि)। की पारीका। पाणिण व [पाणिति] एक प्राप्त स्थावरुष्

पाणिमीञ्ज वि [पाणिनीय] पाणिनि संबन्धी पाणिनि स्त्र (हे १, १४०)।

पार्जी देखी पाम = (दे) ।

कार ऋषि (दे२ १४७)।

पाणी भी [पानी] बड़ी-बिरोप 'पाणी सामा-बही द्वांबही य बन्धाली' (परास १—यत्र ६९)।

पणीअ देवी पाणिझ (हे १ १ १ मानू १ ४)। यदी सी ["यदी] पीम्हारी (खास

ः राष्ट्रभयः चर्माः विद्यानीत्तरीः (खासः ११दी—पद्रभीः । पाणुपुर्विभिन्नोः १ प्रालंबाद्वः २ पानो

भ्युत्राय (कम्प ४ ४ दीन क्या)। ३ स्युत्राय (कम्प ४ ४ दीन क्या)। ३ स्युत्राय (कम्प ४ ४ दीन क्यानीतास एक पाण्यि द्वारा)। (सूपा२२७)।

गर् । परहर ५—पत्र १४०) । विभन्न न ["अन्यन] पात्र बोवने का वक्त-सन्दर्ग **के**न मुनिकाएक उत्तकरख (पर्याप्त रूप)। गद्देखो पाय≖पत्र (विपा १३)। सम दि ["सम] वेप-विशेष (ठा ७—पत्र १६४) । द्विपम म [\*ीप्रपद ] श्रीवार नामक बारक्षेत्र केन धाराम-धन्त्र का एक प्रतिपाद्य विषय (सम १२०)। पाद्व देको पात्र≔प्रादुष् । पादुरेसप् (पि १४१)। पातुरकासि (तूस १२२७)। पादो फैटो पाओ ≕ प्रतिख्(मुक्द १)। पादोसिय वि प्रिप्तापिकी प्रवेष-काल का. प्रदोप-संबन्धी (बीच ६१व) । पात्व केवो पावव (वा १३७ ध)। पायस देवो पाइस (वर्गर्ट ७८६) । पाचार सकस्ति। + गम् पाद + भारच 🗍 पत्राच्या 'पात्राच्या निप्रवेद्दे' (बा १६)। पामदः नि [पानदः] नितेन नैया हुपा पारित (निष् १६)। पाभाइय ३ वि शिभाविके बनाउ पामातिय र रक्ती (बोबना १११ बद् ६ वर्गीव १ )। पाम सक [म+स्तप्] प्राप्त करता युवरानी वे पामकु । 'भारतेह पहिने जिलाल जिल्लाले । सो प्रप्रवेश पामइ वरवक्ता बम्मवरस्वले ॥ (रमल १२)। कर्न वर्धमञ्जद (पत्मच ₹¥₹) I पासका व [प्रामाण्य] बमालुका प्रमालाव (बर्नरे ७३) । पामहा ध्ये दि ] दोनो वैर से नान्य-नर्दन (दे ( x ) ( पामस देशी पामण्ड (विशे १४६६) नेहर 1 (¥55 शामर पू शामर दिनी कर नवीक क्षेत्री का बाव करनेशाला बृहरू 'कावरबहुकहुमेदाल कापना दोगापा इतियाँ (पाया कमा १६४) क्या वे ६ ४१८ हर १६ १६)। २ हन्ती वाति वा ननुष्य (बण्यः वा १६व) । १ बूर्यः बेरर्फ, घटनी (ना १६४)। की नान भागरे दुर्गं, वचर दुर्गकर्षे (वा ११)।

गत } वैको पाय≓ पत्र (तुम् १ु४ २

पामाड वृ [यद्याट] प्रमान प्रमार, प्रभाड बक्रम क्य-निरोप (पाम)। पामिच सक [वे] स्वार सेवा । पामिच्येज (साचार, २२३)। पासिच न [दे अपमिता] १ वार देता, वापस केने का बासा कर बाइस्ट करना । २ वि को स्वार मिया बाय वह (निव ६२ ११६ मार्चा ता १ ४ €३ मीर पर्सार ५, वद १२४३ वंचा १३ 🔻 मुना ६४३) । पामिकिय दि दि] स्वार निवा हुमा (मावा **१ १ १**)। पामुक्त कि [ममुक्त] परिवक्त (पाम क (14) I पामुखन [पादमूल] पैरका पूत बान पाँव का धह काप (पडम १ ६) सुर का १९१। पिंड ३२ )। देशो पायमुख = पारमूत । पासोक्स केटो पसुद् = प्रपुत्र (स्तवा १ ६) द महा)। पामोक्स र् [ममोस] ग्रुव्हि, कुटकार (का ६४४ दी) । पाब दे कि दे रक-कड़, रव का पहिला (दे ६,३७)। २ अपनी स्रीप (वड)। पाब पूर्विषक् देशभन-किया। २ स्मोरी (प्राकृ १६। इस २ व ही)। पास वि पिक्ष्य पिक्र-योग्य (बस ७ २१)। पाय देखो पाद (चंड) । पाय देषित् । १ फ्लम (पंचा २ २ १ के १ ११) । २ बंदन्य 'पुछो पुछो धरवदिहि नहर्षि (दुर १ ११८)। पाब प्रीपायी पान दीने की किया (मा ₹₹) : पाय पूषाहै १ थवन वित (सा १६)। २ पैरु चरलु पाँव 'चनसा नवा म पाव। (पाष: लाबा ११)। ३ प्यक्र चीवा क्रिक्स (क्रे.व. १३४) हिंग)। ४ क्रिक्स 'र्मन् रम्द्रो दादा' (दत्य धनि २०) । १ सन्, वर्षेत् का कन्क (पाष) । ६ एकारल ता (वैदीव र )। सः भेद्रवी नाएक नार (रक)। "इंचलिया में ["राद्यतिया] पैर प्रकारन का एक नुवर्शनाय (घर)।

संबद्ध पूर्व [कावस] पैर पॉक्टो का वक्त-बएर (उत्तः १७ ७)। 5155 िकुरकुट कुरुदुर-विवेद (साम्य t to य-पन २३ )। धाय दू [धात] वयह-प्रहार (पिन)। चार पूंचियार] पैर से यमन (शाबा १ १)। चारि वि "चारिम्] पैर से वातायात करनेवाना पाव-विद्वारी (परम ६१ १६)। बास्ट बालगान िजाब, को पैर का मानुक्य-विशेष (मीप: यनि ११ पत्र २ १)। सामन बाजी बूता पनरबी (दे १ ३३)। यहाँगर् [<sup>\*</sup>प्रसम्ब] पैर तह बटक्नेनावा एक मानू पशु (सामा १ १—पन १३) । पीक्र वैको वीदः (क्राया १ १ महा)। प्रे**क्**य व [भोब्दन] स्वध्रत वैन ततुका एक क्पकरश (बाचा: बोच १११ ७ १ मन थका)। व्यक्तणान [\*4तन ] पैर पर विश्यः प्रशास-विकेश (पत्रम ६३ १०)। सूस्र स ["मूख] १ देवो पामूख (क्स) । २ अनुमी की एक सावारत जाति नर्तकों की एक वाकि 'समायवाई पायपुवाई' 'पुवद्गमाणी पावपूत्रीई पत्तो रहप्रसीते परावितार पायपुनार 'सहावियार पानभूबार 'पण-चतिद्धि पावसूनेहिं (स ७२१। ७२१ ७३४)! सिक्जिमा को [सिस्मिक] पैर पॉक्ने का दैन शादुका एक काह्रमय करकप्र (योष ३६) । बंद्रस दि ["कम्बुक] पैर पर विरक्र प्रशास करनेवाला (श्रामा १ १९)। **शक्यान "पदन" पेर पर मिरना प्र**जाम विदेव (दि १ २०) ह्वा धुर २८१ ६) । विक्रमा क्ष्री ["कृत्ति] पाव पतान, पैर कृता 'बादवंदियाए खेनपूराचे प्रसाद-विरोप पुन्दर्वि (लामा १ २:बुरा २४)। विदार पुँ विद्वार] पर संयक्ति (नप) । बीक्र न ["पळ] पैर रक्टने ना धातन (दे १ ९ ;दुनाऽसुग्र र≼)। सीसन्य न [शीर्थक] पैर के क्लार का नाव (चन)। ीडकम न ["1⊈स्ड३] <del>कर विशे</del>च (निन)। पाव देवो भक्त = चत्र (ध्यमाः ग्रीतः भोवभा ३६, १७४)। "केसरिजा व्ये ["केसरिका] मैन शहुर्योताएक क्राकेरल याक प्रमानित का कपड़ा (बीच ६६ ३ विशे १४४१ डी)।

ट्रमण, "ठमण न ["स्थापन] बैन मुनियाँ का एक उसकरात पात्र रखने का व<del>दा ख</del>एड (विसे २११२ टी घोष ६६८) । णिज्जोग, "निक्रोग दूं ["निर्पोग] **वै**न सा**बु**का यह उपकरण-समूह--पात्र पात्रकत्व पात्रस्वापन पानकेशरिका पटम रजकारा ग्रीर प्रनाक (पिंड २६ बृहु ६ विशे २६६२ थै)। "पश्चिमा की "प्रतिमा पात्र-शंककी श्रमिश्रह्—प्रतिज्ञा-विशेष (ठा ४ ६) । देखो पाद = पात्र । पाय (घप) देशो पत्त = प्राप्त (भिग)। पाय स [प्रायस्] प्रायः बहुत करके न्यास्त्यार्थं बसेड सिं (पिंड ४४३) । "पाय पुत्र ["पाय] पूज्य "चंद्रुपा समिप संविपायमा (प्रति १४)। पायप्रेको पा = पा। थार्थ देखो पास (स ७६१ सुपा २८। १६६) यावक ७३)। पार्य च माउस्] भवात (सूम t । पार्यगुद्ध पु [पादाङ्गुष्ठ] पर का संयुक्त (शामा १ ८)। पार्यक्रकि र् [पावज्ञक] पवज्ञक्कित राज पातकत मोब-मूत्र (एदि १६४)। पार्यत न [पादास्त] कीत का एक मेर पाद बुक्कीत (एम १४)। यार्यद्वय पू [पादास्तुक] पेर बांबने का कल्लमय सम्बद्धा (बिया १ ६--पन ६६)। पायफ देवी पायय ⇒पातक (वव १)। पायक देको पाइक (सम्मत्त १७३)। पायक्रिलप्य न [पाव्श्विप्य] प्रवश्चिता (पठप १२ १२)। पायम न [पातक] पाप (धानक २४८)। थायविकत्त पूर्व [प्रायक्रिक] पात-मध्य दर्भ पाप-ध्रम करनेवामा कर्म 'पार्चवरी नाम पामिन्द्रतो चंद्रतो' (सम्मत्त १४४ बकायीय नद २१)। पायड केको पागड=प्र+कटम्। पायड६ (मनि)। वक्र पायक्रत (सुपा २११)। क्तक पायविकास (या ६०४)। हेरू पायक्षित्रं (दूम १)।

पायकत [दे] सैमण स्रौमन (दे६ ४)। पासक देको पागक ⇒प्रकट (हे १ ४४) प्राप्त भोग ७३ वी २२ प्रासू ६४)। पायड रेको पागड = प्राप्ततः प्रहंपि दाव दिवरे समर् परिकामित्र वसद्भोवां गाव डविएमा विम र्रात पस्तवो सहबू मामन्दामि (पवि २६)। पायड वि [प्रायुक्त] माम्बादित (विशे २१७१ पायक्रित्र वि[प्रकटित] व्यक्त क्रिया हुमा (कुत्र ४ वेर १६) मार्रहर २६ ३ पत्र स ४१८)। पायब्रिक् वि [प्रकर] भुता (बरवा १ ४)। पापण म [पायन] पिशाना पान कराना (णाया १७)। पायत्त न [पादास] पवार्षि-समूह व्यापौँ ना मस्कर (बत्त १८ २ झीवः कम्प)। ।णिय न ["नीक] पदावि धेन्य (पि ८)। पायपुंद्धान न [पाल्युक्कान] पात्र-विकेच रुपन सकोसा। पायप्पद्रपार्षु [दे] हुनहुट गुर्ना (दे ६ पायय न [पातक] पान (प्रन्दु ४६)। पायय देवी पाव = पाप (पाप)। पायय देखी पागय (है १ ६७)। पायय देवी पायव (से ६ ७)। पासस देको पात्रय ⊏पत्रक (श्रीप १२६)। पाषय देखो पाय = पार (कृप्प)। पायरास र्र्ड [प्रावसहा] प्राव काल का बोजक कतपान वयवदा (साचा स्रामा १ व)। पायस्य न [के] चलु, यांच (के के केव)। पायव पु [पादप] कुछ थेड़ (पाछ)। पायव्य देखो पा = पा । पायस पुन [पायस] दूव का मिशन बीर। भागको कीर्प (पामा सुपा ४३=)। पावसो म [प्रायशस्] प्रापः बहुत कर (ध्य ४४६ वंशा ६ २७)। पाबार दू [प्राध्यर] किया औट, दुवें (पाप्र) **१** १ २६=३ कुमा) । पायास्त्र व [पातास्त्र] रक्ष∺तत्त सवी पूरन (देर रेवा पाय)। कलातु ["कसरा]

धमुद्र के मध्य में स्वित कवराकार वस्तु (प्रयु) । पुर न ["पुर] नगर-निरोप (पराप ४४, ३६)। संदिर न [मन्दिर] पातास-स्मित मृद्द (मद्दा)। इर न ["गृद्द] नद्दी धर्म (महा)। पायाल म [पाद्वला ] पादारम क्षेत्र पेदस र्श्वेतिक (कान्यस पत्र १०१)। पायासंस्थरपुर न [पावाससङ्ख्यापुर] पावान-र्मका रावण की राजवातीः 'पामार्मकारपुर सिग्मे पत्ता मङ्गानिग्मा (पत्स ६ २ १)। पायावक न [माजापस्य] प्रहोत्तत्र का भीव हर्वा मुहुर्त्त (सम ११) । पायायिय वि [पायित] धिनामा हुमा (परुम tt vt) : पायादिण न शिवक्षिण्य] १ महन (पर ६१)। २ वक्षिण की बीच 'पायाहिलेख विश्वि पंतिमाहि माएह सदिपए' (सिरि **१९९)** 1 पायाहिका केवी प्रमाहिकाः 'पामाहिको करियों (उत्तर ११ पुज १,११)। पार थक [झक्] सकता करते में समर्थ होना । पारक पारेक (है ४ नका पाछ) । बक्त पारंत (क्रमा)। पार सक [पारय्] गार पहुँचना पूर्ण करना। पारेड (है ४ ८६ पाछ) हेड्ड. पारिचय (मग १२ १)। पार प्रेन [पार] १ ठट, विन्तस्य (प्राप्त)। २ पर्वाकिनाया 'पर्यार' पार' (पाप) 'क्टिम्ह होही भवजनहिपार' (निसा १)। ३ परतीन, धानामी जन्म । ४ मनुष्य-सीक-निमनरक मादि (सूम १ ६ २६)। इ मोस मुकि, निर्माण 'पार' पुरायुक्तर हुइ। विदि (शाह ४)। स वि [ग] पार वाले-बाबा (मीप) सुपा ११४)। सब वि ["सव] १ पार-पाप्त (बग भीत)। २ द्रे विन-देव मगदान् पर्दन् (हर १६२ दी )। गासि वि ["गामिनः ] पर प**हुंच**नेवाता (ग्राबाः कृत्य भीप)। पाणम न ["पानक] पेन प्रथ्य-विशेष (बामा १ १७) । बिउ रि [विन्] पार को वलनेवल्ला (तूस २ १ ६) । भोष वि [विगेग] पारशसक (रूप)।

(पिंड ४६वा चुत्र १७व) ।

पालक का राजक (हह है) ।
पार्तमा की [पाठकक्या] क्यार केवी (ठवा) ।
पार्तिक की पाठक व्यान्त है।
पार्तिक की पाठक व्यान्त है।
पार्तिक की पाठक्या है। स्वस्तव्यन प्रहाप्त प्राप्तिक करों ।
के की सामुक्त निर्देश (विध्य प्रम्प) । भू के सामुक्त करों है।
के मीने सरम्या (पीप प्रम्प) । भू के मीने सरम्या (पीप प्रम्प) ।
पाठक्या की [पाठक्या] केवी पाठकेया विकास ।
'वस्तुकारियानकारिताकों स पाठकार्ये ।
पाठका की [पाठक्या] केवी पाठकेया
'वस्तुकारियानकारिताकों स पाठकार्ये ।
पाठका की पाठक (क्या भीप निर्मे पर्यक्ष की पाठकार्ये ।
पाठकार्यक्ष की पाठक (क्या भीप निर्मे पर्यक्ष की पाठकार्ये ।

पार्कंड व [पाइडब्स्य] तरकारी-विशेष

नेत (संगेत ११ सं ६०)।
पास्त्रपुद्ध दु [ क्रं] कुत-निर्मेश ( का
१ ११ के)।
पास्त्रप्य दु [ क्रं] कुत-निर्मेश ( का
१ ११ के)।
पास्त्रम कि [पास्त्रम] राज्ञ कर्मान्य-कर्मा (क्रुम पास्त्रम कि [पास्त्रम] राज्ञ कर्मान्य-कर्मा (क्रुम १ १६० कर्मा महिन्दीर स्वारण क्रम ( कर्मा २)। अभ्यास्त्रमा महिन्दीर

पास्त्रण न पास्त्रनी १ च्याच (महाः प्राप्त

१)। २ वि १०१<del>८। कर्ताः वस्मस्य पश्चाशीः</del>

के तिर्माण के किल प्रमित्तरण परंथी (क्रीन) वा एक राजा (तिमार ४२२)। १ केन-रिमान-विरोध (बार २)। पाद्धाल पूँ [पाकारा] चलार-प्रभावनी। १ त न्त्रार वृष्ट वा किरपुक-कल (चडड)। पाईड की पार्वित्त है रे सामार प्रप्रेट का कल्य पाईड की पाँचि १ रामार पार्वित के नामाः २ प्रभाव प्रमाव पार्वित के नामाः २ प्रभाव प्रमाव पार्वित के नामाः २ प्रभाव प्रमाव पार्वित के नामाः पादिका की हिन्ने करण पुष्टि जमार की गृह (पार्य)। पादिका को पार्वी = प्रमाण प्रभावनार की गृह (पार्य)।

88) t

पाक्षिकाय न [पानक्सिमीय] श्रीरक रेश का एक प्राचीत नवर को सावकल श्री 'पानिवाला' गाम से प्रसिक्त है (कुत्र १७६)। पास्त्रिका की हि १ राजकारी । २ मूक-गीगी। ३ कएडाट, निर्मि। ४ मेंग्री प्रकार (क्प्प्र)। पाछित्र वि पाछित्र रिक्षेष्ठ (ठा १ महा)। पाक्कियाय 🖦 पारिय = पारिजात (राम \* ) : पाकी की [पाकी] पींच, मेरिए (क्टड)। वेको पान्ति । पास्त्री की [बे] विशा (वे ६ ३७)। पाक्षीर्यम दे दि । शाकान सर्वेशर (६ ६ YX) ( पास्तीहरूम न दि ] वृष्टि, बाद (दे ६ ४४)। पालन ई पिल्झोपी पैर में किया इसा बेप (पिंड १ ६)। पानक (क्षेत्र २६६) । मनि पानिहिसि (पि १६१)। कमें पाक्षिमद् (इस)। बद्ध-पार्वत पार्वेत (पिंग प्रस्म १४ ३७)। क्ला पाविसेत पावेजामाज (पर्वा १

पाव सक [प्र+व्याप ] प्राप्त करना। १ और १)। संद्र पाकिकल (पि १४६)। देक पर्त्तु, पावेबं (हास्य ११६८ महा)। क पार्वीपञ्च पाविमञ्ज (सुर ६, १४२ **स ६ ६**) । पाव केवी पत्रवाह ⇔प्तावस् । प्रभेद (द्वे ४ पाय पुन [पाप] १ धरुप कर्म-क्लुक्ट कुकर्म (बाचा कुमार्र हा १४ प्रस्तु ११)- अम्मीवरक्य पाने पासी छात्तेस निहरें (पन्न १ ६)। ए पापी समर्थी दुकर्गी (परक्ष १ १) चुना १)। कम्म न [क्सैन्] स्तुन कर्म (धाका)। कसिम कि [\*कर्मिक्] कुकर्म क्लेबला (क्ष.) । इंड पू [विण्ड] मरकानात्त-किटेन (देनेना २१) । पगद् की ['प्रकृति] प्रशुप्त कर्म-सङ्ग्रे (राज) । सारि हि ["क्रारिन्] दुरानाचै (परम ६३ ४३ वहा) : समन र [ बमय] दुर बाद (क्त १७ ३ ४) : सुसिन दुन [रेन्स्स]

कुष्ट स्तप्त (रूप) । सुव र ["भूद] हुर रा≢ (ठा १)। पाव पे किंगे सर्व स्वेप (के ६ क्द)। पाद (देव) देवी पत्त - प्राप्त (दिव)। पार्वस वि [ पार्थीयस ] पार्थी कुकर्मी (म Y Y-98 988) 1 पावनलास्त्र न [दे पापशास्त्र ] केवी पावनसम्बद्धय (स ७४१) । पाइना वि पाइको १ पवित्र करनेवाला (राज)। पू. मानि विद्य (तुपा १४२)। पादरा वि [प्रापक] पहुँचानेदाला (**द्र**पा पादम देखो पाद = पाप (दाना वर्गसे १४६) । पावकार (बन) केवो परवकार (बनि)। पावडण देवी पाय-वडण = पार-पतन (प्रणी पापविव रेको पार्रदि (सिरि ११ व 222 ) I पाक्य वि [पाक्त] पतित्र करनेताका (धण्ड ४७ सम् १३)। पाणक न [च्झाचन] १ यली कामनव् ९ सराबीर करना (भिंड ९४) । पादजन ब्रियस्य दिशासि वास (दुर ४ १११) कर्प क) । २ बोध भी एक पिकिए 'पानक्षक्तीय क्षित्रह मेडक्रिसंद्रबीय इसी (**इव २७७)** । पानकि वेचो पारकि (वर्गेन १४०)। **पाक्य केवी पाच** ≕ पाप (प्राप्त ७३) । पायक वि प्रश्नृत्वी साम्बद्धकित दका **हु**ई (कुम २ ७-३)। पासब देन [वे] बाच-विरोग प्रवस्ती के न्याची (पठम १७ १३)। पावप देशो पावग = भावक (उप ४९ मैं″ **पुत्र २ ३: सूपा ४: गाम)** । पाषमञ्ज वेदो पथमण (हि १४४ वर्गाः शामा १ ११)। पावबाजि वि [प्रवचनित्] विकास का

बाबका**र, वैज्ञान्तिक (वेद्य** १२४) ।

पांचरभ वेंको पांगारय (स्वयन १ ४)।

(क्षम ६)।

पानपचित नि [प्रावचनिक] क्लर देवी

पायरण पु [प्रायरण] एक म्लेक्स वाति (मुच्छ ११२)। पानरण न [प्राथरण] बस्त, कपड़ा (है १ 1 (xes पावरिय वि [प्रायुक्त] बान्यातित (शुप्र ३०)। पायम देवो पाउम (रूप ११७)। पात्राकी [पापा] नगरी निरोप को सावकन भी विद्वार के पास पानापूरी के नाम से प्रसिद्ध है (कप्पा की ३३ वेचा ११, १७ पव ३४: विचार ४१)। पायाइ वि [प्रयादिम्] बाबाट, बार्गनिक (सम्राह्म ११)। पाबाइज वि [प्राग्नाजिक] संन्यासी (प्राप्त पाषाइम वि [प्रायादिक] देवी पावाइ (माना) । पापाइअ ) वि [प्रावादुक] वाचाट वार्श-पाबादुय ) निक (मूप १ १ १ १३) र २.८ (१२६४)। पाबार पे प्रावार दे देखानला नपड़ा। २ मोटा कम्बक (पढ ब४)। पाबारय देखो पार्य = प्रावारक (हे १ २७१) नुमा)। पापालिआ 🕏 [प्रपापासिका] प्रपा मा व्याक्र पर नियुक्त की (मा १६१)। पात्रासु ) वि [प्रतासिम्, क] प्रवास पात्रासुम्र । करनेताला (वि १ ३) है १ १६: दुमा) । पाविभ दि [प्राप्त] सन्य विना हुमा (मूर ३ १६ स ६०६) । पाषिभ वि [प्रापित] प्राप्त करवाया हवा (नए नार-मुन्य २७)। पाविक रि जिलाबित विराधीर रिया हमा नुब निवादा हुमा (दुवा) । --प्रानिह नि [पापिष्ठ] प्रत्यन्त पापै (एव **७२० टी मुर १ २११** २ २ ३० मूच १६६. या १४) । पार्यं द देखो पाय-पीद (पत्रम ६१ है १ २७ दुमा)। पार्पार्यस रेको पार्यम (ति ४ १ ४१४)। पायुत्र रि [मा [त] माध्यान्त (श्रीव ४)। पान्यमाम रेगो पान = प्र + बार ।

पानेस वि [प्रामेश्य] प्रवरोषित प्रवेश के सायक (प्रीप) । पावस 🛊 [प्रामेश] वज्र 🧚 दोनों तरफ सटकता रेखा (सामा १ १)। पास सर्व्ह द्विष्ठ देशे देशे वा १ वालना। पाचार, पासेक (कप्प) । पासिम = पास (द्याचा १ ३ ३ १)। वर्गपतिकद् (पि ७ )। बद्ध पार्मन, पासमाज (स ४४) इप्प)। संइ-पासिडं पासिचा पासिचाणं, पासिया (पि ४६६) क्या पि १८६ सहा)। हेह पासिचय, पामिडं (पि १७६-१७७)। रू पासियव्य (भूम्म) । पास पू [पारवे] १ वर्तमान धवसपिछी-काम के तैर्सिकें जिल-देव (सम १६ ४६)। २ मगरान् पारर्वनाम का मन्द्रियक यश (संदि c)। ६ न कल्या के मोचे का मान, पॉबर (खाया १ १६)। ४ समीत निकट (सूर ४ १७१)। विश्विद्ध वि शिपरवीयाँ भवशन् पारर्गनाय की परम्परा में संजात (मन)। पास पूरिका देखा बन्दर-रुद्ध (मूर ४ ११७-धीप हुमा)। पास न दि । १ भाजा । २ वांत । ३ कुल प्राप्त । ४ वि विशोग कुडील शोमा-होन (६६ ७६) । ५ पूनः सन्य वस्तु ना धानः-मिमला 'निन्दुमो वंदीमो पामेल विला न होद यह रंबी (मान २)। पास वि ["पारा] धनसद, निद्वाट, वपन्य दूरिसत 'पुस पासंदियतासी कि करिएसक' (सम्मत्तः १२)। पासंगित्र वि [प्रासक्तिक] प्रचेत्रसंबन्धी, बानुर्विक (बुम्मा २७)। पासंड न [पासण्ड] १ वाबएर सप्तरप वर्ष वर्तका सींग (ठार्डा छावार दास्स भाव ६) । २ वत्र (मए) । पासींद्र १ वि [पामण्डिन क] पासंडिय । बार्चरी लोक में पूजा पाने के निष्वर्षका बींव रक्तेशना (महानि ४० प्रमारेक्ट मुतारका १ का (६२)। २ पु वर्ती साचु पुनिः 'चन्त्रम् सलगारे वासंदे (? दी) चरन तावसे निन्तू । परिवाहर य धन्ते (दर्जन २-पाना १६४)।

पासंदर्भ न प्रिस्यन्दन किल टपकना (बुद्ध पासग वि [वर्षोक] देखनेवामा (धावा) । पासगर् [पाशक] १ फांसा कवन-रज्यू (उपपूरी मुर ४ २४)। २ वासा बुमा खेतने का उरकरछ-विशेष (वं ६)। भासम न प्रियशक नामिरोप (बीप) । पामण न [दर्शन] बदतोस्त्र निधेञ्चल (पिंड ६७३) छप १७७) सोव १४ सुपा 10)1 पासगया है अपर देखों (घोष ६६ उप १४व सावा १ १)। पासणिक वि दि । सारी (दे ६, ४१)। पासिपाम वि [प्रास्तिक] प्रश्नकर्ता (सूच १२२, २८ मामा)। पामस्य वि [पार्खस्य] १ पारवें में स्थित निकट-रियव (पटम १८ १८) स २६७-सूम ११२५)। २ शिक्सियाचाचे साद् (बर वरेरे टी एवड़ा १ ४३६ — पत्र २ । सार्वेददो । पासस्य वि [पारास्य] पारा में केंद्रा हुया पारित (सूध ११२५)। पासक्षत्र [दे] श्बार(देश ७६)। २ वि विर्यंक नक्त (दे ६ ७६ से ६ ६२ नजा)। पासक देवो पास = पार्श्व (छे १ १८ मतह)। पासक्रमक [विर्येच् पान्धाय्] १ वक्र होना। २ पाध चूमानाः 'पानक्रांति महिहरा' (वे ६ ४१)। बष्ट पामद्वेत (वे ६ ४१)। पामद्वरूभ देनो पासहित्र (ते ६, ५७)। पासक्रिकि [पार्थिन] पार्थ-र्वाया 'बतारा गरामकी नेसभी बादि ठाए ठराता (पर ६७ वंबा १० १४)। पासदित्र रि [पाधिन, विर्येक्त] १ पाय में किया हुना। २ टेक्स किया हुना (बडहा रि १११)। पासयम न [प्रस्तपन] मूच, पेराउ (नव १ वस क्ष्म उस मुक्त ६२)। पासाइय रेगो पासादाय (नन १३७ उस)। पामारम्म न पिटायुम्म । त्यारिकेट

प्रत्य कमनु निविध पानाहुनुमहितात

मा बरमु (वा ब१६)।

पारंक न [के] मानेप नागने का पात्र (के ६ ४१)। पारंगम कि [पारामा] १ पार वालेपाला। २ पार-वमन (यात्रा)। पारंगम कि [पारंगत] पार-वाल (मुत्र २१)। पारंगित कि [पारंगत] पार-वाल (मुत्र २१)।

पार देशो पापार (हे १ २६वः ह्रमा) ।

प्रामित्तव करनेवामा 'वार्यभेश केस्पूरि'
(श्र ४)।
पार्टीच्य क पिगामिकः) १ क्येंक्ट आक्दित्त क-वितरे वे प्रतिवादी की वार
प्रान्त्र (श्र ६ ४—पर १६२। वीर)। २
दि व्येंक्ट आमरित्त करनेवामा (श्र
६ ४)।
पार्टीच्य [पाराक्रित] उन्तर केमें (क्रक १६४))।
पार्टीच्य [पाराक्रित] उन्तर केमें (क्रक १६४)।
पार्टिच्य क [पारान्यों] प्रत्मय (चंस १६)।
पार्टिच्य क [पारान्यों] प्रतान्य (प्रता

पारंपरिव र्रश्

१११ व १११०) 'कायरिक्सारंपर्य (१ रिप्र)
ए प्राप्त (युपरि १२०-च्छा ४००)।
पार्रपरिय सि [पारम्परिक] वर्षत्य छ बक्ता
प्राप्त (उर २० ठी)।
पार्रप्त एक [मा + रस्] १ सारम्य करणा
पुरू करणा । १ रिष्ठा करणा सरमा। १
वीक्षा करणा । परिका करणा करणा
पार्रप्त १५० ०)। क्षाक्ष
पार्रप्तमार्था (वीक्ष)।
पार्रप्त वृ [मारम्स] कुक करकम (विष्ठे
१ व व ११६)।
पार्रिम वृ [मारम्स] सारक करकणा

ा गाँध १६३ वर्षे

(स्पेरि १४४० दूर रेष्ट १२ ११६) दूर ११)। पारकेर है दिस्कीय] पर का सम्बद्धि पारका (११ र ४४० ११४४) दूरा)। पारकारक को पारक (त्रका ११९)। पारकारक को पार्थम = श्रा १ क्ष्म पारका । पारक की पार्थम = श्रा १ क्ष्म पारका । पारक की पार्थि है सम्बद्ध पारका से नेवल वर्ष का सहा)। पारका से पारका कर की। कि सम्बद्ध

[ "नत् ] पारक्षपाता (पंचा १२ ६४) ।

(का दश्य पेता ६. परे ११ क)। पारच च [परत्र] परकोड में सावानी कार्य की 'पारच किंग्यती यामो' (पडम १ १९६१)। पारच कि [पारत्र पार्रतिक] पार्योगिक भागानी जन्म से पेक्न स्वतेनामा 'रंगी पारचाहिक सा भीरक रेता । वेक्सीस्था

पारका के [पारक पाराकक] पाठकालक स्वाधी करन से व्यंक्त एकटेनाका पैसी पारकारिक है । वंकद्विपारक (वर्षित के पारकारिक है वह देश है । वंकद्विपारक (वर्षित के विदेश है देश पारकारिक के विद्या है । पाराचित के विद्या के विद्या है । वाराचित के विद्या के विद्या है । वाराचित के विद्या के वारकारिक विद्या के विद्या है । वाराचित के वार्षित के वाराचित के वाराचि

पारद्व मि [मारच्य] र विश्वका प्रारम्भ मिमा स्था हो नहः त्यारवा व विष्यद्वितियेत ध्यमा शासमी (महा)। १ सो प्रारम्भ करं नया हो नहः त्यारे सम्बद्धानस्य वार्धी अभिन्तें (महा)। पारद्व व [स] पूर्वन्द्व कर्म का परिखान प्रारम्भ । २ हि सम्बेटक निकारी। १ वीवित (१ ४ ७०)। पारद्वित की [पार्याद्वि] विकार, पुत्रम (१ १ १३८ दुना कर ११४० पूरा ११४०)

करनेत्रामा प्रवासी में भारतीः भारत्यासून-परिकारियालयामानीतिया (युगा करे। मेश्च करे): पारिमंत्रा की [पारिमंता] कीव-स्तक-गीर कार्यक माध्यानियान-निपन्नजारि किसा-वर्ग परिका माध्यानियान-निपन्नजारि किसा-वर्ग परिका परिकार परिकार क्यान्य (पन्नव रहेश):

११४)।
पारच वि [पारा] तमचे (याचा २ १ २ १)।
पारच वे [पारा] तमचे (याचा २ १ २ १)।
पारच वे [पारा] तमु केरोल पार, एत-चारु। महण व [मईन] धमुकेरिहित पीरो के पार का नारण प्यानकरिता व्यानकर्मकर्मी वे केरोल नारकर्मी (त १ १)। २ के पारस्तारक (तु १ १)।

पारय न [क्] पुरा-त्राएड काक स्वते का पात्र (वे वे वेश)। पारय वेशो पार-ग (कप्पा क्या संघ): पारय पूं [प्रावास्क] १ पद क्या । र ति पारस्यक्र वि १ २०१ स्वर्ग)।

पारचे हुं भू निवासिक है पर के निवासिक का प्रतिस्था पर के प्रतिस्था कर के प्रत

देश का ईशन का निवासी। 'मान्यामारतज्ञा काविता तीहता य तहाँ (शब्द १६ 💵) । कुछ न किछी देशन का फिनाय देशन देत की शीमा (धाषम)। पारसिव रि पिएसिकी कारह रेठ क 'सहस्रा पार्यक्षेत्रहुयी समानग्री राज्यस्पूर्व' 'पार्चिमकोरमिहरा (स्पा १६७ ६६ )। पारसी भी [पारसी] र बारन केत की की (धीपा सावा १ १---पत्र १७३ इन) । २ मिरि-विमेद, फाफी सिरि (किने ४९४ मैं)। पारसीभ नि [पारसीक] फारब के म निवासी (वजह) । पार्खा औ [दे] क्षेत्र-पुरी निरोप बोडे नी र्वहाकार क्षेत्री वस्तु, 'चडनेबावकमस्तुपायई (१६) विभागत्वप्रत्येक्तारक्ष्या विर्व-भर्मधा (पछह २, ६)। पाराच रेको पाराचय (प्राप्त) ।

(१६) मिननस्वायनस्तरेन्द्रपारकव्यविर्ध-सर्वयं (पद्ध २ ६)। पाराय केची पारायम् (द्या) । पारायम् न [पारायम्] १ धराजारेन्द्र (विषे १६६)। १ पुरस्तनान्द्रकेन्द्रम् भागेत्रेत् (मृष ११६)। पारायम् केची पारेवय (प्राप मान्यं प्र १८० वन्य १६१)।

पारिहासय न पिरिहासकी रम-रिटेव

५९१

गया हो बह (क्यूप ११२)।

गप्त १७ )।

tet) i

सर प्र २७१)।

८---पत्र (१२)।

पारावर वृद्धिनामन यातायन (दे६ ४३)।

पाराचार व [पारावार] मनुत्र शानर (पाम

पारापित्र वि पारित निषको पारल करावा

पारामर र् [पाराशर] १ ऋषि-निरोप (मूच

१ ३ ४ ३)। २ न गोत्र निधेप अरो

वरिष्ठ मोत्र की एक शाखा है। वे कि उस

कीत्र में प्रताल (हा ७--- पत्र १६)। ४

र्ष मित्रक । ५ कर्म-स्थापी संस्थानी 'पंतिबि

पारिक्रासिय वि [पारितोपिक] तुनि-भनक

दान प्रमानना-मुक्त दान पुरस्कार (सम्मत

१२२: स ११६ गृर १६ १८३: निवार

पारिण्छा रेगो परिण्छा: जनपरिणाम विता

गिर्द्र सम्प्रामि सानि पारिष्द्वा (उन १७३)

पारिण्छल देनी परिण्यल (लाग १

बारामरा धरिष' (मुख २ ११)।

पारिजाय देगी पारिय = पारिवार (रुमा) । पारिट्राप्राचिषा हो [पारिष्टापनिर्दर्ग] समिति विशेष मन शाहि के बन्तर्ग में बस्पर प्रवृत्ति (नम१ धीर क्य)। पार्थिद की [प्राकृति] प्रावरात बस्न, कपहा विशिव्यद् माञ्चलारिम पामधे पाधिक सर लेग (ग्र २१ )। यारिगामित्र देवो परिगामित्र - पारिगानिक (ETT TITE Y SE) 1 पारियामिमा ) देली परिमामिमा (बार पारिणाभिणा है है। सावार १-वन ११)। पारिनायितया को [पारिनायितिकी] दूसरे को करिता-पून कामने है हिनेशका वर्त्र-क्ष (तत १ )। पारिनायमें। की [पारिनायनी] करर रेनी (47 to); पारिता सज्ज देनरे पारिआसिय (सार गुप्त RO RTELD : पारित रेका पार्क = रत्त भार्त न रिन्डको

सारियर [ [परिकार] र्नन स्टिर (सन्द

बादो (१८६६)।

t t-11 );

पारिमद व [पारिमत्र] दुन विधेन फर्धर | ना पेड़ (नण्र)। पारिय वि पारिकी पूर्ण किया हुमा (रमण 2E) 1 पारिय व [पारिजात] १ देव-क्या-विधेय कम्पनदर्शकरेष । २ फलद मा पेडा मानर पारियाल व बहिबवसे मानईर्वभी (शुभा ५ १६)। १ म पूर्व-विशेष करण्यका क्षत को रक्त वर्णका भीर सन्दन्त शोसाम मान होता है, 'मृद्विष् रा विद्याप पारियविद संदीरहं खंडद बगद सन्धि (अपि) । पारिवस व पितियात्री देव-विधेत 'पौर श्मनंती पत्ती पारियत्तियमये (रूप्र ३६६) । पारियक्ष न दि परिवर्ती पहिए के प्रष्ठ मान की बाह्म परिचि (एडि ४३)। पारियाय देवी पारिय = पारिशत (नुपा वहासे ह रद महा स वर्ह)। पारियायणिया रेगो पारिशावणिया (ठा २ १--पत्र १८) । पारियाय जिया हैयो पारियाय जिया (स 222) I पारियामिय रि [पारियामित] बाबी रवा ह्या (क्म)। पारिक्यञ्ज म [पारियानय] संन्यानान र्षणास (पदम ६२ २४)। पारिस्याइ की [पारिवार्जा, परिवार्जिश] राग्याधिनी (बर १ २७१)। पारिच्याय वि (पारिद्याञ्ज) संन्यानि-संबन्धाः (U4) i पारिमान वि [पारिपय] सम्य सनावर (पर्वार १)। पारिमाइ जिया थी [पारिसाटनियी परि शास्त्र-परियान के हैं नशना वर्ष-शब (यात ४)। पारिहरदी को [र] मना (१ ६ ४२)।

मे स्वची दूरि मेंत (दे ६ ७३) ।

निएए (हा t =स्त ४११) ।

धीरगर मानद हा बरनेराना (बस्) ।

वैत मुनियों के एक कुल का नाम (कप्प)। पारी की कि केन्द्रन-माएक विसर्वे केहन क्रिया बाजा है वर पात-निरोप (दे ६, ६७-वाह १७७)। पारीय वि पारीयी पार यन्त्र योगर मन्यास पारीसी (पर्वति १३ विदि ४०६) सम्मत्त ७१)। पारुअमा वं वि शिषाम (६६ ४४) । पारुगह रू वि] प्रयुक्ष विद्या (१६ ४४)। पार्म्सय रेजो प्रारंभिय (पाना १ ६ **∢ ₹ (\*)** ι पारहद्वा दि मानीहत भेली हर ने स्वातिक पानीबंधे व पारद्वश्लोकि (दे E YX) I पारवद्द की [पारापती] बहुतरी बहुतर नी माद्य (विग्र १ १)। पारमय प्रं [पारापत्र] १ पश्चिनिरक्षेत्र बाहर (हेरेट दुमास्या १२८)। २ दूस विक्षेप । ६ व. फन-विक्षेप (पएए) १७) । पार्धपरा ति [पाराञ ] परील-विषयक परोजन्धंबन्धी (वर्गंसं ४ २)। पारोद देवो पराद हिर ४४० मा १७१३ मग्रद) । पाराहि वि विश्वदिष् विषेद्राचा धरूर बाग (मरह) । पास मक [पासप्] पानन करना रक्षा करना। पानेइ (सम महा)। कर पास्र्यंत पार्छन पार्छन, पानमाम (पुर २, ७१) में ४६: महा भीत क्या) । संह पाछन्ता पानिता, पानज्य (श्या महा) पानवि (पर) (१ ४ ४४१)। इ पामिनस्य पानपण्य (गुरा ४३१ १०१ महा)। पात रेगो पार = पारव्। बंह पाछइत्ता पारिदर्श थी [रे] १ महित्रि । २ महि (TT) 1 मार्चितः। १ विर प्रमुश सहिती बहुत देर पाम 🛚 🔁 १ बन्सारु द्वयं देवनेताना । २ वि क्षेत्री क्षानुस (३ ६ ७४) । पारिद्रायि वि [पारिद्रान्तिक] व्यक्त है। पाय र्दन [पान] मनुष्रात्र रिकेट भूति का बार्ल का विकास का कारतुनात कर (बीक) । पारिहा रव वि [पारितारिक] करारी-विदेश २ वि पारक पारतनार्थः जो सबस्ति।

बालोसाई (बंद) । के स्टा (बर ४) ।

थार्कंक न [पाळकस्म ] तरकारी-निशेष पाक्षित 🖠 [पाइक्सि] एक प्रसिद्ध वैनानार्यं पाचक का राक्त (बृह् १)। (पिंक ४६ ३ कुछ १७४)। पासेना की [पासक्ष्या] क्ष्यर वैद्यो (स्मा)। पाक्षिचाण म [पार्यक्रियोय] सौराष्ट्र देश का पार्धत देवी पान = भारत् । एक प्राचीन नवर, भी सामकल भी पार्खन र् प्राप्तस्य] १ धनसम्बद्ध सहारा 'पानिवाला' नाम से प्रसिद्ध है (कुप १७१)। पास्कितिका की दि] १ एजवानी । र मूच

'पानइ तहविकविपासंब' (सूपा ६३३)। २ को का धामुक्य-विरोप (भीप) करा)। 🤏 रीर्चं सम्बा (धीप एत)। ४ पूर्वः महत्रा के भीचे सटक्या वजानवतः 'घोऊसं पार्वर्वे' पासका भी [पासका] क्यो पार्कातः 'बल्बुलपोरनमञ्जारपोइनक्सी स पानक्या' (पर्या १--पन १४)। पाइमा केवो पाइमा (इच्छा ग्रीय विशे २०१६ पंति १ यूर ११ १ )। पास्त्रम् व [पास्त्रन ] १ एक छ (महाप्रस्

 २ वि शास्त्र-नर्ताः बन्मस्त पावसी नेम (संबोध १६ सं ६७)। पाछन्त्रहरू दि ] क्ल-किरोज (चन १ ११ थे)। पास्रप्य 🕯 🐧 १ प्रविसार । २ 🕯 विष्युत (**१** ६, ७६) । पास्तथ वि पाइक रतक चतल-कर्ता (वृपा २७६३ सार्वे १) । २ तुसीवर्तेका का

एक व्यामियौतिक केव (ठा व) । १ भीकृष्श का एक पूर्व (पथ १) । ४ भनवाल, महाली र के निर्भात के दिन मंत्रियक समेदी (स्मीत) काएक राजा (विचार ४६२)। १ केव विमान-विशेष (सम ९) । पाञ्चस र् [पास्त्रश] पदारा-सम्बन्धी । ९ व पतारा भूख का कन किशुक-पन (कार)। पाकि 🖈 पाकि रै तानाव साम का कव (नूर १६ ६५: सत्त १२: मध्:)। २ प्रान्त चान (ना ६४६)। वैको पाद्मी ⇒पल्ती। पास्त्रिकी [वे] १ भाष्य मलने की नाय। २ पक्ष्योपन समय का नुधेर्य परिमास्त-निरोत

(कत्तर प्रदानुखरेव २४)। पाछिआ की वि] बद्दबुष्टि तनगर नी मुद्ध (पाष) । पाक्तिआ देवी पाक्ती ≖पानी प्रश्यक्रपानि शर्मि परिज्योदिय बहुरसङ्गर्दि (यनीय

की वी । ३ कर्डाट, विक्रि । ४ मेथी प्रकार (क्यू)। पास्क्रिय नि [पास्क्रित] चीक्रत (ठा १ः) महा)। पाक्रियाय देखो पारिय = गरिकाट (राज 1)1 पास्त्री की [पास्ती] वेच्छि, केरिए (करह)। रेको पाछि।

पावी भी दि] दिया (देव ३७)। पाकी मैंघ पूर्वि वाशान छरोजर (वे ६ 42) ( पाक्रीहरूम न कि विश्व बार्स (वे ६ ४१)। पाले ब 🕻 [पाव्सेप] पैर में विमा हुमा बेप (पिकार ६)। पान सक [प्र+आप ] प्राप्त करनाः पानद (हि ४ २३६) । सनि पानिहित्ति (स १११)। इसी, पाक्तिक (ठन)। मझ-

पार्वत पार्वेत (पिंगः पत्रम १४ १७)। क्क्ट पाविषेत पावेज्यमाण (पश्च र १ संव २)। धंक पाविक्रस्य (नि ६८६)। हेड. पर्चपामेर्ड (इतस्य ११६८ मध्य)। **४ पार्वोजक पाविभव्य (दूर ६,१४२ ₹ ६**) i पाव देवी परुवाझ = कालव्। पानेइ (है ४ पाव द्रेन [पाप] १ बतुम कर्म-पुरुक्त कुकर्म

(पाचा कुमार का १ मासू २४)- व्यव्योदस्य

पावे पाछी बुहुत्तेख निहाहे (बच्च १६) । ९ पापी भवनी हुक मी (पदाइ र रः हुना ७ **१)। कस्म न ["कर्मन्] सनुत्रकर्म** (पाया)। कृतित वि ["कर्मिन्] दुक्मै क्लोनावा(छा)। इंड प्रेडिएको नलानाच-विशेष (देनेच २६) । पराइस्टी ["प्रकृति] प्रमुद्ध कर्म-प्रकृति (स्पत्र)। बारि रि ["कारिन्] दुरानाचे (बस्म ६६ ४३ म्या)। समञ्जू ["कमण] कुट सक्

(क्त १७ १ ४)। सुमिय द्वन ["स्वप्न]

कुट स्त्रण (क्य)। सुय न ["सुत] कुट शाका(धार)।

पाण दे कि वर्ष सांप (दे ६ ६०)। पाव (मप) केवी पत्त ∽ प्राप्त (पित)। पार्वस वि [पापीयस्] पापी कुरूमी (स ¥ ¥-- 94 948) 1 पायस्तासम्य न [देपापश्रासक] केवी पाठक्लासम् (६ ७४१) । पावस वि [पावक] १ पवित्र करनेवाका (राष) । तु. सरित अबि (सुपा १४२) ।

पादग वि [प्रापक] पहुँचानेवाका (पुना पाक्स रेको पाव = यस (बाचा धर्मसं २४३) । पानजा (सप) देखो पञ्चका (वनि)। पावडण देखी पाव-बहुण = पल-पतन (इफ्रा-पानविद्य देलो प्यरिद्ध (बिरि ११ व 111 ) 1 पावण वि [पावन] पवित्र कलेनला (धन्द्र

Antel (# ): पाचम न [प्लाबन] १ पानी का≭नव्ह⊁ २ धराबोर करता (पिंड २४) । पार्वम न प्रापणी १ ज्ञाति बान (धुर ४ १११ जप्तं ७) । २ योज की एक किकि 'पानशासतीए क्रियह मेर्बबरमेंद्रबीए पुर्ली (কুম २७७)। वावकि देवो पारकि (वर्गनि १४व)। पाचय वैद्यो पाच = पाप (प्राप्त ७१) । पावय वि [प्रावृत् ] शालकावित करा वृध्य (सूम २७३)। पाचय पूर्त [क] बाच-विशेष प्रमधनी में पानी (परम १७ २१)। पाथम केलो पाचग ⇒पाचक (उप ७९० धी

पादविक कि [प्रवचनित् ] सिवान्त का वाबकार, सैबालिक (वेश्य १२०)। पावगणिव वि [ग्रावचनिक] स्पर वैकी (समाधः)। पावरभ रेखो पावारय (स्वन्व १ ४)।

पावधन केही पवकन (है १ ४४- वका

कुन १०६। सूपा ४० पाम)।

कामार १३)।

(#) I

पायरण पूं [प्रावरण] एक म्लेक्स बादि (मुख्य १५२)। पावरण न [प्रायरण] बस्त्र कपड़ा (हे र 202) 1 पावरिय वि प्राप्नती बाच्छादित (रूप्र ६०)। पायम रेनो पारम (१४ ११७)। पात्रा स्त्री पापा नगरी निरोध को सातकन भी विहार के पाम पाबारू है के नाम से प्रतिद्व है (कप्प ती ३ पंचा ११ १७) पव ६४: निवार ४६)। पायाइ नि प्रशादिन् वाबाट, दार्गनिक (तुष ३ ६ ११)। पापाइञ्र नि [प्रायाजिक] संन्यासी (रमण २२)। पाबाइअ वि [प्रायादिक] देखो पाबाइ (मानः)। पायाइम ) वि [प्रापातुफ] वावार दारी पोबाद्वेय } किम (मूम र र १ ११) २ २ व ३ वि २६६)। पाचार पूर्वि [प्रावार] १ र्थेयामाला कपहा । २ मोग्र नम्बन (पद व४)। पावारय रेपो पारय = प्राशरक (हे १ २७१ पापास्त्रिमा प्रमे मिपापासिका प्रमा या व्याक्र पर निरूष्ट भी (गा १६१)। पाचास ) वि प्रियासिन, की प्रवस पाशासूँ अर्ड करने स्ति। (ति १ स्री है १ १६ भूमा)। पाविम रि मिसी नाम क्या ह्या (सूर ६ १९३ छ ६=६) । पावित्र रि प्रिपित । प्राप्त करवाचा हव्य (नए: नार---मुम्प १७)। पाविश्र रि [प्यावित] संप्रदेश विया ह्या नुब निशास हमा (दूमा) । **०२** व से पुर १ २१३। २ २ ४। मुता १६६ मा १४)। पार्थ ड देगो पाय-बिंड (श्वन १ १; हे १ २७ दुना)। पार्थ। यंत रेगो पार्यम (ति ४ १, ४१४) । पायभ वि [मा [त] पान्यान्ति (संति ४)। पारमार देवी पार = x + दार ।

wY

सायक (पीप) । पावस पूर् [प्रावेश] बद्ध के दोनों वरफ मटकता रेखा (छाया १ १)। पास सक दिया | १ देवना । २ वानना । पासइ, पासेइ (कप्प) । पासिम = परप (भाषा १ ३ ३ ५)। मर्ने पासिकद (पि ७ )। बक्र पार्सन, पासमाग (स व्हा रण)। सङ्ग पासि र पासिका पासिकार्ण, पासिया (पि ४६६) वप्पा पि १०६ महा)। हेरू पासिचए, पानिर्द (पि १७०-१७७)। 🕝 पासियस्य (कप्प) । पास प्रे [पारव] १ वर्डमान सवर्वापछी-कास के तेई वर्षे जिल-देश (सम १३ ४३)। २ भगवान् पारर्वनाय का मक्तिप्रायक यस (संति व)। १ न करणा के नीचे का मान पाँजर (शाया १ १६)। ४ समीत निकट (मूर ४ १७१)। विधिज्ञ वि [ौपरवीय] मयरान् पार्यनाच नी परम्पय में संजात (मग)। पास व पारा दिया कवन-रञ्ज (नुर ४ ११७ भीप कुमा)। पास न दि | १ घ'च । २ रात । ३ हुन्त माम । ४ वि विशोम वृत्तीन शोमा-हीन (१६,७१)। १ पूनः सन्य वस्तु वा सन्य मिथला 'निक्तुमा तंबीका बाउँला बिला न होद पहरियो (मान २)। पास वि ["पाश] यासर, शिश्ट वयन्य, दुन्तित 'एम पासंदियससी हि करिन्सई' (बम्मच १२)। पासंगित्र दि [प्रासद्भित्र] प्रचंगचंक्यी घानुर्गीयक (कुम्मा २७) । पासंह न [पामण्ड] १ पायल्ड सत्तव वर्ग मर्भे का कोन (द्धार । प्रापार का प्रता मार ६) । २ वत्र (बलू) । पासीड ) वि पामिण्डम की पासंदिय ∮ पार्गसे सारू में पूरा वेल के निए वर्ष का क्षेत्र रचनेशना (महानि ४ पुत्र रे ब्हा तुत्त हहा ह हा हहर)। र र्पुंचती काचु पुनि 'चनरा'र घलनारे

वार्गहे (१ ही) चरमताबद्धे विल्यु । वरिवाहर्

य तमार्थे (रतीय २--याचा १९४)।

पासंदण न [प्रस्यम्दन] भरत । टपक्ना (बृह () i पासग वि [दर्शक] देवनेवाना (धावा) । पासग र्र [पाशक] १ क'सा, बन्धन-रन्जु (उप द्र १३ सर ४ २६) । २ पामा पूचा सेनरे का साकरण-विशेष (में ६)। पासग न [ प्राशक] नस∺विरेप (धीप) । पासम्पन दिशन भवतास्त निरीक्षण (निंह ६७१) रूप १७३३ कीम १४ सुपा 10)1 पासमया की ऊपर रेकी (धीप ६३ उप १४व खामा १ १)। पासिविध नि दि सानी (दे ६, ४१)। पासिया नि मिरिनकी प्रशनकर्ता (सम १२२२ व्यापा)। पामस्य रि [पार्श्वस्य] १ पारने में स्वित निकट-स्थित (पर्वण १० १वा स २६७-मूभ ११२ ४)। २ स्टिमिनावारी साभू (चर ⊏३३ टी। श्राहा १ ४) ६,—पत्र २ १ सार्वेदद)। पासरव वि [पाशस्य] पार में चैना हुया पारित (पूष १ १ २, १)। पासल्ल कि] १ बार(देव ७६)। २ कि विर्यंक वक (दे ६ ७६ वे ६ ६२ गडा)। पासह देवो पास=पारचे (ये १ ३० मतक)। पासल पक [तिर्येद्ध पाधाय्] १ वक होना। २ पाच पुगानाः 'पाछक्रीत महिद्रुच' (वे ६ ४६) । वह पासहेत (वे६ ४१) । पामहरूअ रेनी पासिहज (वे १, ७५)। पासित वि [पार्थिम] पार्थ-रावित विद्याल मरायही नैयकी कार्क द्वारण द्वारमा (पत्र ६७ वंबा १० ११)। पामदिश्र वि [पाधित विर्वेतः] १ पार्व में क्या हुया। २ देश क्या हुया (ग्रहा ft ttt) i पामयम न [प्रस्तवन] बूव पेछार (सब १ वस वर्णकार गुप्त ६२)। थामाईय देवी पामादाय (नव १३० उस)। पासारुस्य न [पास्त्रपुस्न] रूप्तिकेत 'धराय सम्बद्ध विश्वित सावाहुनुवर्ति हात ना नरन् (ना ८११)।

पासाज—पिभ

नुमा)। पासाविश्व दि दि । चात्री (६६ ४१)।

पासार रेगो पामाय (बीर: सप्त ११)। पामादिय दि [प्रमादित] १ प्रवय रिया ह्या। २ न प्रगप्त करन्य (छाया १ ६ ---पत्र १६२)।

पामादाभ नि [पासादीय] प्रसप्तता-जनक (बन मीर)। पामादाय वि [प्रामादित] महमकाना, द्रामा भूगः (सूच १ ७ १ टी)। पासाय पुर शिमादी महत्त इस्मैं (क्रम

काम व ४) । बहिसम व भिन्नतिसकी चैन महन (सा: पीत)। भासावपर्देसरा 🖠 [प्रामाश्चर्यसक] श्रेष्ट्रवर महत प्राताक विदेश (सम ६६)। पासामा धौ [द] क्यो छोटा मला (दे ६, 1(4)

पामाय ) र् दि] यतस्य बातावन सरोबा पामायय रे (वदः देव ४३) । पासि रि [पाश्चिम] पार्थेम्ब विविशासाचै नाकु चानिसारिच्यो (संबोध १२) । पामिति रेतो परिद्धि (हे १ ४४)।

पामित्र रि [हरप] रर्रीक्षेप, जैप (बाका)। पानिमं रेनो पाम ≖ रत्। पानिय रि [वाराइ] कहे में पैनलेसना (बार १ २)। पासिय रिशिष्ट] ग्रुपा हुया (भाषा---वर्ष्यम्)।

पासिय वि पिरिति पासिय प्रस्ति (धन)। पानिया हो [पारितना] द्वीय गर (नरा) । पानिया रेनी पाम = स्य। थाता रि विधिकी १ नाम व दनेवाना । २ वास्टादी (पर रूप संदूरिक मन) । थारा हो [र] परा चीने (वे ६ ३७) । याम देना ५म् (हे १ ११ ७ )। पाम्म रेके पशुन (म १९४ नूर १, १ होर हैर प्रशास्त्रकर)। धाराइय रि (प्रमोदित) प्रत्येशनुमा नगीना

पार्माटय रि [पाधरम् ] राष्ट्रीयोगे दनत

बाना (म र) ।

🐧 बानेताना (स्वर)।

निम्मवियाँ (वर्षेषि ६६ महाः वर्षि)। पाइया देवी पाणहाः 'तिपिन्धं पाहता वाए' (दन ६ ४)। पाइण्य १ व [प्राचान्य] प्रमानवा, प्रधानान पाइस ) (प्रामु ६२: बान ७७२)। पाइर एक प्रिम ही प्रकर्ष ने नाया, ने भाना । पाइचिह (तुम ४ ३ ६) । पाइरिक नि [पाइरिक] पहरेतार (ध १२१, सुपा ६१२/ ४२१) । पादाउप वेको पाभाइय (पुपा वशः ११६)।

पाद्याण प्रीपापाची पत्थर (क्षेट्र २६६)

पामोभर्सन (से ६, ४७)।

करमा। पाइसि (पि ३४१)।

पाइंड देखो पासंह (वि २६१)।

पाइ (इप) धक [प्र+क्षर्येय्] प्राचैना

पाइज देको पाइएएः 'भईतं पाइएं तर्व' (भा

(२): 'बडकोस्मा समतीस पाइसका य

मक्षा)। पादिक देवी पादेक (पाप)। पाटुड म [स्वयुद्ध] १ क्यहार, पाहुर, केंन (के १११) २ ६) विया १ क कर्युर २७ रूपा महा पूमा)। २ पैन बन्बाल-विदेय परिच्छेर सम्बद्ध (नुझार २०६) । ६ प्रस्तुत का अतन (इस्म १ ७)। पहला त ["प्राञ्चत] १ कन्यरा-मिरोत प्राकृत का भौ एक मॅठ (दुक १ १ २) । २ प्राकृत प्राचुन का बान (कम्म १ ७)। पाह्यस्य मास १९ ("प्राभृतसमास) क्लेड बायुट-प्राकृषे का कार (कम्म १ )। "समास र्न [समाम] धनेड मानूनी का जान (बच्द १ ७)। पादुक्ष न [प्रास्त] १३० कतह (क्छ-कृह १) । २ इटियार के पूर्वी का धान्ताय-विशेष (मन् १६४) । ६ बारच कर्म पार-क्रिया (पाना १,२३१ वन १)। छय व विदेशी वाद्धने देशनाम के दूरी का

प्रकाश-विधेन (वब १) । पार्टाक्टजा धी

[मास्तिम] हरिका का प्रकाल-मिक

पार्ट्डिमा भी [पासृतिका] १ रहिरार का

धोत बाबार (बलु ११४) । १ धर्मीत्रा

(कड़ २३४)।

रिनेत्र गारि (शर ४) ।

क्ति। (पैचा १६ ६) पत्र ६७३ छ। ६ ४ — पन ११६)। पाहुण वि दिहें विक्रेय वेचने की वस्तु (वे \* Y ) i पाटुण ) र्व [प्राधुम क] यक्तिय, बाहुनाः पाहुक्ता }-मह्यान(क्षोत्रमा दश तुर ६,०८ पाडुणम ∫ महा मुगा १३३ द्वप्र ४२ औा कत्तारेः पाहुणिक पूर्णिको सर्विक गुरूक मेड्मल (काप्र २२४)।

पातुडिमा की [प्राभृतिका] १ मेंट, ब्लहर

(पव ६७)। २ पैन ग्रुतिकी फिलाका एक

बोप विवश्चित समय से पहले—सन में

संकत्सिक मिला काहार इस के दी वार्ती

पाहणिश्च वै शिधनिक् । यह विशेष प्रा-विष्ठायक वैक-विदेव (ठा २ ३)। पाहुणिका ४ प्रिष्ठयनीयी प्रदृष्ट देवदार्ग निषको शन दिया जान वह (शामा १ १ यै---पत्र ४)। पाहुण्य ोन[प्राधुक्य 4] बर्डनच्यः ेबिटिय का सरकार पहुनाओ पाइण्या (कुम ४२ सार ३१ छी)। YZY) I 44) I मुमाम् चरि)।

पाहुण्त्रय 🔰 'क्लं मंत्ररीए पाहुल (१ एछ) में पाहेश न [पामेथ] छस्ते में स्वर करने की सामग्रे, बुमान्तिये में साने का भोजन (वर्ष रेट रेटा महा। भीव ७६। स. ट. मुना पाइटेज व [दे पायेस] अपर देशो (दे ६ पाद्वेयम (१) रेतो पद्वेषम (निश्च व)। पि देशो अबि (है ६ ११वां स्त्रण १४) थिअ तम [पा] पीमा। तियह (१४४) भरेका गा १६१)। भूगा धरिरान (मानः) : पह पिञ्चन पियमाण (बा १३ म १४६ वे २, ५, विशाह १)। वंड रिया पदा पिएऊण (रणः उत्त १७ १। बर्में वि १४) पिएपियु (घर) (ठरा)। प्रको-रियानए (दन १ २) । पिञ 🖠 [प्रप] १ वटि वल्ट सावी (दुमा) । १ ६६ ६५ मोति-वरङ (दुमा) । ब्यम दुं[तम] बर्ति, बल्द (बर १६)

घारम प्रिय (घाषा) ।

सए मि)।

(पटम १७ 🖜)।

पिज्ञभा देखो पिका (या १६)।

भानेवाना, सुरा करनेवाना (भवि)।

की पूत्रीका नाम (धानम)। घम्म नि िमर्मेन् । १ वर्मे की मदानावा (शाया १ =)। २ पूँभी समयन्त्र के शाम वैन दीमा बेनेनाचा एक राजा (परम ८१, १)। भाष्म पुर्भिष्ति पितक भारी (देप ६४व टी)। भासि वि भाषिम् जिब-वक्त (महा ६०)। "सित्त पू ["सित्र] १ एक कैन मूर्ति जो सपने पीछले भव में पाँचवा नामुदेव हुमा वा (पठम २ १७१)। "मेळ्य वि "मेळकी १ जियकाफ्ल— धंगीय करलेवाताः २ त एक शीर्थं(स १११)। "उटम नि ["(मुक्क] बीबिय-प्रिय (माना)। ापरा वि [ैायत, समक] पित्र देशो पीत्र, पीमापीचे पिमापिसे (प्राप्त पिछ देवो पिक (प्राप्तु ७६०१ व)। इट्र न ["गृह] पिठा का वर, पीहर, मेहरु मैका पिअइड (धप) वि मिलिथित् मिति जन-पिअइद्विय (घप) वैको पिआ (र्माक)। पिशंकर वि [प्रियंकर] १ वर्गीए-कर्ता हरू-क्नक (बस ११ १४)। २ पूँ एक वस्तर्ती राजा (उप १७२)। १ रामचन्द्र के पूत्र सब कापूर्वभाषाका भाग (पत्रम १ ४ २१)।

पिक्षेत् पू प्रियक्त र क्ल-क्लिप प्रियंह्र, कुमा)। असाची ["तमा] पली मार्मा करू दनीका पेड़ (पाधा धीप सम १६२)। (इ.सा)। अर वि [\*इर] ग्रीति-मनक २ लंगु, मासकॉक्टी का पेड़ा 'पिमेंगुखो (ताट--पिंग)। स्त्ररिणी की [कारिणी] केंद्व'(पाध)। ३ की एक की का माम धमवान् महावीर की माठा का माम विरुद्धा (विवार १)। "सङ्याची विद्वितका देवी (इच्य) । गीय पू [ प्रन्य] एक प्राचीन एक की का नाम (महा)। बैन मूर्ति भाषायें सुस्मित भीर सुप्रतिबद्ध का पिळांबय वि प्रियंगदी मदुर मापी (सुर १ एक शिष्म (कम)। आध्य वि विश्वाम] ६१:४ ११०-महा)। जिसको पत्नी प्रिय हो बह (या ११८)। पिछांबाइ वि [प्रिययादिम्] असर वेको (एत काञा की काया जेम-पात्र पत्नी ११ १४ मुख ११ १४)। (ग १६९)। दंसण वि [वर्शन] १ पिक्षण न दि दुग्द दूव (दे६ ४०)। विसका वर्तन प्रिय-प्रीतिकर हो वह (शामा १ १—पत्र ११ मीप)। २ पूं पिक्षण न पानी पैतः 'तुक्रवसपिक्शलेख्यं' वैव-विरोध (ठा २ ६--पत्र ७१)। (मर्गेव १२६) चुक्त ६ १) उस १६१ टी। व्सणा की विश्वीना मक्तन महानार स २६३३ सुपा २४४, वेदस ४७ )। पिञ्रणा 🕏 [पूतना] छैना मिरोव, चिसर्ने २४३ हामी २४३ रण ७२१ भोडे सौर १२११ प्यार्वे हो वह नरकर (परान ४६ ६)। पित्रमाची दि] धिर्मग्र दुल (दे६ ४१ पाम)। पिलमाहबी की वि] कोविला विकी है ६ ६१ पाम)। पिष्ठम पु [प्रियक] कुश-विदेश विजयसार का पेड़ (भीप)। पिअर पुन [पितृ] १ माता-पिता मा-बापा 'मुखंदु निएणयमिन पियरा' 'रिवराई इवे-धार्ष (वर्मीव १२२)।२ पूर्व पिता बाग (प्राप्त)। पिलरंब एक [सञ्ज] भारतमा चोक्ना। पिमरंबद (प्राष्ट्र ७४)। पिछा (धप) देशो पिछा = प्रिय (पिप)। पिमा की [प्रिया] पल्फी काला बार्स (कुमा क्षेत्र ११)। पिआसइ दु [पितासइ] १ सद्धा चतुरातम (से १ १७) पाया कर १६७ टी स २६१)। २ निवाकानिवासम्ब (क्य)। वणकार् [ "तनय ] नाम्बनान्, नानर-विशेष (से ४ ३७)। त्यन ["स्त्र] सक्र-विरोप क्यान्त (वे १२, ३७)। पिकामही की [पिवामही] पिवा की माता षाधी (धुना ४७२) । पिमार (भप)। रि [प्रियतर] जारा (हुप ३२ मधि)।

पिमारी (भप) भी [प्रियतरा] व्यारी प्रिया पत्नी (पिय)। पिमाछ पु [प्रियास] कुछ-विरोध पियाल चिरौँनीका पेड़ (कुमान्याम: देव २१) परस १)। पिआलु 🛊 [प्रियालु] इस विशेष विशे विकाश का शाह्य (सर २ १६)। पियासा बेडी पिवासा (ग द१४)। पिइ देखो पीइ, विर्ल पिइए सिट्ट (पक्स ११ ₹¥) 1 पिइ.पू.[पित्.] १ पिता अगप (इस ७२० टी)। २ मना-नलन का समिहायक देन (सुक १२ पि ३६१)। मेह पृंिंगेघी बत-विधेव बिसर्ने बाप का होग किया आय बहयक (प्रज्य ११ ४२)। वग व विता रमशान (मुपा ११६)। हर न ["गृह्य] पिता का घर, पीइर (पडम १८ 😼 सुर १ २३६): देवो पिंखः। पिइस्ट र् [पिइस्य] शाचा वाप का माई। 'मुपासो बीरजिएपिसम्बी (? एव)' (विचार ४७व) । पिइय पि [पैतृक] पिताका पितृ-संक्रको (भव)। पित रेप [पितृ] श्वाप पिता (सूर श पित्रक्ष रे रूप्ट मेरिंग च्या हे १ १६१)। २ प्रेन माँ बाप मावा-पिवाः 'फ़लमा सङ् पिऊखि मार्म पत्ताई (वर्गीन १४७ सुपा १२१)। कम्म वृष्टिकम] पितृनीरा पित्-दुल (कुमा)। कुछान [कुछ] पिता का वैद्य (पड्)। पर न ["गृड्] पिताका वर, पीइर (पुपाद १)। **ब**ळ्डा बळ्डी की ["ध्यास] पिताकी किंदिल पूछा कृता प्रकृ(या ११ । ११ १४२) पास खामा १३१६) 'कोर्ति चिडरिन (? रूब) सनकारेड' (स्ताया १ १६---पत्र २१६)। "पिंड पूर्विपड] मृतक-भोकत सा**ह** में विधानाता मीनन (माचा २ १ २)। भगियों को ["मगिनी] पूछी पिता की विदिन (पुर ३ ६२)। यह पूर् ["पदि] यम थमराज (हे १ १३४) । वणान [वेंसन] रमशान (पडम १ %, ११ पाघ है। १९४)। सिमाची [प्यस्] इसी (ह

₹ w ₹₹) ı

18.33

पीत मिनित रेंग। र वि रक्ष-पीत कर्तु-

वर्श-प्रक करना। वक्र पित्रस्यंत (पद्मा

नस्य सुरा

पाता (यस्टः क्रुप्र १ ७) ।

रेप इं स्थि कित प्रकार की स्वत्य-

विरोक्त क पित्रस्वप्रयाकामस्वतरत्राकाम् सम्म

(संबोध २) : स्थानु [1वी] सपूरामार्थे

(यक) । दाम न [दान] विदृष्ट केने की

क्रिया माड (नर्मीने २६)। प्रयक्ति स्त्री

िम**क**रिय**े भगल्यर येखाती प्रकृति (शम** 

१ २६)। बद्धण ग [ बर्चन] साहार-इदि

करत-इंडि, सम्प्रशतन (संत्)। बद्धा

वजन ["वर्धन] ध्यहार वहावा (गीन)

बाय पू [ पात ] विश्वा साथ, बाह्यार प्राप्त

(डार,१ कत)≀ शास द्री [बास ]

ग्रहण (यन)। विस्तित, विसाहि से

[निद्यक्ति] निया की निर्देशका (प्रेरा

मीरक १)।

पिठकी की वि] १ कवॉस, क्यास । २ तूव पित्रद्ध केवी पित्र (क्षेत्र १६४) । पिंचर र् [अपिकार] १ पर्षि राज्य । २ पिंसा की प्रिष्ट्रस] विकास कीका (पाम) १ पिंग्योस सक [मेहोक्स्] सूबता। स्क्र पिंग देवी पैंग = ब्रह् (कुमा ७ ४१)। चिंत दं चिक्की शक्तिश्व वर्णी, योच वर्णी। पिना प्रे कि पर्यट मन्दर (दे ६ ४८)। मिगळ पं[पिक्रळ] र श्रील-शीत वर्छ। २ वि पीत-नियत पीत-पर्तनामा (कुमा) छ। ४२ भीप)। ३.५° ग्रहक्तिच (ठा२ विभाग न [पिञ्चल] गीनका (पिट ६ १) वे)। ४ एक यस (सिरि ६६६)। १ **पत**-वर्ती का एक निर्मि सामुपता की पृति करते पिंबर इं [पिंक्कर] १ पीठ-एक वर्ल एक-नामा एक निमान (हार. इस १०६ हो)। ९ इ.च्छ प्रसम्बन्धिय (दुश्य १ )। ७ बाहर-विकादारसीयक कवि (पिय)। व पिंबर क्य [ विजरम् ] रक्त-विभिन्न गीत-एक **वैन क्**पासक (मन)। १.न प्रदानका एक धन्तर्थन (पिय) । हुमार पू ["हुमार] एक राजपुत्रार, जिस्ती सम्बान युपार्त्याच पिंबरण न [पिंडसण] रक्ष-निकित रीव-के समीप बीसा भी की (तुपा हर)। बदा वर्खवाका करता (कल)। वि ["स] १ नीनो नीनो सोसवाता (ता पिकरिक मि [पिक्ररित] पिन्तर क्लैपाबा ४ २—नव २ व)। ३ <u>द्</u>रीक्र-विक्टेन फिस ह्या (हम्सीर ११ (च्यार राग्रेप)। KRY) I

पिच्छान [पिच्छा] १ पन्न का मनसन पैच

पिंडेसणा सी [पिण्डेपणा] किया महरा पिंडम पूं [पिण्डक] उसर देवो (क्स)। काहिस्सा (उदा पाष)। २ मपूर-पिक्ट, करने की चीति (ठा ७) । विंडण न [पिण्डन] १ डब्बें का एक व शिक्यद (शामा १ १)। १ पत्र पीच संस्मेय (संबन्धा २) । २ ज्ञानावरणीयादि पिंडेसिय वि [पिण्डेपिक] मिता वी खोन (त्र ७६८ टी वत्र )। ४ पूँछ, साधून करनेवाला (भग १ १३)। कर्म (सिंह ६६) । (पराष्ट्र) । पिंडणां भी [पिण्डना] १ समूह (मीप पिंडोसम )वि [पिण्डावसमक] मिक्षा से पिंडोसगय निर्वाह करनेवाना मिना का पिच्छागत प्रिक्षणी १ वर्शन सवसोकन ४ ७) । २ हम्पीं का परस्पर सैयोजन (पिंड पिं**डोड**य प्रार्थी भिन्न (माना उत्त ४, २२ (बा १४ स्पा ११)। २)। सुचार, २२ सूचर १ १ १)। पिच्छप ) न प्रिक्षण, की तमारा केल पिंडय रेको पिंड (प्राथमा ११)। पिच्छणय नार्क पार्क पिच्छण वर्षि पिंच (बप) सरू [पि + घा] दक्ता । पिंचर पिंडरय न [वे] दाविम सनार (वे वे ४८)। सार्व (मूपा ४८१), तो भवश्चिमधिष्केति (पिन)। संबद्धः पिंचउ (पिन)। पिंडसङ्घ वि [वे] तिएबीइत विश्वाकार पिष्याः विकरिप पिष्याण्यं (सूपा २ •)। पिंघण (प्रप) न पिघान दिक्का (पिग)। किया हुमा (दे६ १४ पाम)। पिच्छल वि [पिच्छल दि लिग्ब, लोह पिंसकी की वि श्रेष्ट से प्रम भएकर बजाया पिंडसगत [वे] पटमक पूष्पका माजन युक्तार मद्युष्ण (स्रुए)। जाता एक प्रकार का तूल-वाद्य (वे ६ ४०)। (हा ७)। पिच्छा और प्रिसा निरोधल । भूमि औ पिक र्की पिक कोकिस पक्षी (पिम)। पिडपाइअ वि [पिण्डपातिक, पेण्डपातिक] भिम्नि रेव-महाम रंगमंच (पाम)। मक-सामनासा विसरी निजा में बाहार की की (देव दश)। पिन्छि व [पिन्छिन् ] पिन्छनाता (भीप)। की प्राप्ति हो वह (ठा ६ १ क्छा भीप पिकादेवी पद्धा=पन्द (हे १ ४७) पाप पिच्छिर विभिन्ने प्रेयक ग्रंग, देखने या ४६४) । प्राकृ€)। पिक्टर सक [प्र+इक्ष] देवना । पिक्टर पिद्यार पु [पिण्डार] योग म्बल्सा (बा बल्सा(मुपा⊎य कुमा)। (मर्ब)। वह पिक्संग (मर्बि)। इ पिक्सिक वि [पिक्सिक] १ स्तेत-प्रका 1 (580 पिक्लेयक्य (पुर ११ ११६) : रिनम्ब । २ मच्छ विकास (गतवः हास्य पिंडालु दु [पिण्डालु] बन्द विशेष (मा२)। पिकसमा वि [प्रेक्षक] निरीशक बटा (वी । 24 \$ 4 XE) 1 पिंडि देखी पिडी (भग गाया १ १ टी-१ ३ वर्षे वि ११)। पिक्यिसी भी दि विग्ना शरम (दे ६ ४७)। पत्र ३()। पिक्सम न [प्रेशम] निधेवस्य (स्वर)। पिष्मद्वी की दिने पूढ़ा बोटी (देव ३७)। चिंदिस कि [पिण्डिस] १ पिएड से बना पिक्सिय कि प्रिक्षित हिए (पि ६६ )। पिक्की की पिक्किका पीछी (मा १७२)। ह्या बहुन (पएह २ ४ -- पत्र १४ )। पिग वैको पिक (क्रमा)। पिच्छा औ [पूच्ची] १ पूच्ची घरित्री २ पुरत-समूहरून संवाद्यकार (ए।या १ १ पिचु प्रै पिचु क्यांस स्रै (देव ७८)। चळी (कुमा)। २ वडी इसायवी। ६ टी—पत्र घीप)। पुनर्नेवा। ४ इच्छा बीरक। ५ दिंदुरश्री (हे **"स्यास्य स्थिता प्रशास्त्र को प्रशेष** पिंडिय वि [पिण्डित] १ एकवित स्टूर **ጚ, ሂ**ኚ) i १ १२८)। क्या ह्या (सूमनि १४ : पंचा १४ ७ पिच्यास्य स्म वि] बीन बबाने की संविका पिचुमेद पू [पिचुमन्द] निम्ब बूप नीम महा)। २ पुलित (घीर)। का पेड़ (मीड १ ६)। (मुकड़ दूपक १४६)। विक्रिया की [थिण्डिक] १ निएकी निक्सी पिच ) ध प्रिरव | पर-सोक धागामा जन्म पिज्र सक [पा] पीता। पिन्न६ (१६ ४ कानुके नीके ना मांसन समयम (महा)। पिचा । (याँ १४० दुना ५ ६) मूच १ १ १)। इ. पिञ्चणिञ्च (कुमा)। २ वर्नुनाकार वस्तु (पीर) । वैद्यो विंदी । १ ११)। रेखो पच। पिच्च पूर्व बिमन् ] प्रेम बनुष्य (सूम १ विंदी को [विज्ञी] र तुम्बी ग्रम्छा (पीर पियादेशो पिश्र ⇒पा। १६ २: कप्पो । भग लावा १ १ जापू ११)। २ थर पिचियं वि वि पिचित्री पूटी हाई छान पिञ्च } देवो पा≕पा। पिञ्चैत का धाबार-भूत बाह्य-विशेष पीड़ाः विविधि (ठा ६, ६--पत्र ६६८)। यपिश्रीवेपस्तिपरिलेषिकालिएम्पोधा' (पडर) । पिच्छ सक [ दश प्र + इस ] वेदला। पिञ्चा भी [पेया] बबाबू (जिंह ६२४)। ६ वर्गनारार वस्तु योकाः विस्तार्पविधे पिष्यद्र, रिक्येति विषय् (कृष्य) प्राप्त १६ भिकाधिम दि [पायित] जिल्हा पन कराया (मध र ६ २६)। ४ वर्षर-विशेष (शट-३३)। यह पियदांत पियद्रमाण (तुप ममाही वह (नुबार १७)। शक्त ११)। देखो विद्याग १४६: मधि) । क्वइ पिचिक्कमान (नुस पिट्टबर- पिडप् ] पीढ़ा करना । पिट्टींट विंद्री धी [द] मध्यधी (दे ६ ४०)। **१२) । संक्र पिष्यित्र पिष्यिक्रम (बानू** (नुष २ २ ३३)। पिद्वीर न [दे पिण्डीर] साहम धनार (दे **११। चरि)। इ. (१६५) मिल (इप्प. मूर** पिट्टबक [भौजू] नीचे पिरता। रिट्टर 4; 84) 1 १३ २२३) रमल ११)। (पर्)।

पिङ---पिनाव

पित न वि दि, तरर (पंचा व १६: अमेरि ददा मेरन १३४ वर २६। तुपा १६६। र्द २१) । বিহুল ব বিহুলী ভাহৰ আৰক্ত (মুখ ৭ २ ६२) पिड ६४) पर्ला १ १) मोन REEL WE R & E) : पिट्रजन [पीडन] पीड़ा क्लेग्र (तुप २ २ ११)। पिकृषा की (पिकृता) शक्त (बीव ११७)। पिट्टाक्यमा जी पिट्टना वाहम कराना (#T \$ \$-- 4# \$ 3) 1 पिट्टिय कि [पिट्टिक] ग्रीटा हुया साहित

पिट्रक, पिट्रेक (ब्रामा निक मा १७१ सिरि ६११) । वक्र पिट्रंस (रिन) ।

(पुचर ११)। पिट्टन [पिष्ट] छपहुच मादि ना माटा क्रुं (शास्त्र १ १) स्वी १ ७० वा **1** ) i पिद्र न प्रिप्ती पीठ रहीर के ग्रीचे का हिस्सा (भौगः स्व) । मो व [तस्] शिवे दे, ग्रुप्त मा दे (उना निपार्टर भीत)। कर्यक्रमान करण्डकी प्रश्निशः पीठकी बही हही (तंद्र ६४)। परनि विश्व क्रि-कार्य भनुवाबी (कुमा) । वेको पिट्टि । (पद १६७)। EYE) 1

पिठ वि स्पृष्टी १ क्या ह्या । २ त. स्परी पिक्क कि द्विष्ठी १ प्रकारमा। २ क मरक पुल्का भागि विजय हा नेपसे पिट्ट (या पिट्रंत न [दे प्रकारत] प्रश्च चौट (दे 1 (3K 1 पिट्रलावरा की हि । पश्च-मूच, बलुव महिए (R 4 X ) 1 पिट्रसहरिक्षा की [के] बरिया यक (पाय)। पिट्रब्ब कि प्रिष्टक्यी पुक्को सीम्य - शियक-रक्षीकीन निकरों कि पिट्टि (हि) क्याँ (रेबा)। पिट्रावय पुन [पिद्रावक] रेशर धारि रूक सम्म (नक्का स ७३४)। पिट्रिकी [प्रश्न] पीठ राधेर के धीके ना चाप (देश शरका चानवा १ का रंजाः

क्मरी के पास की एक नवरी (कप्प)। सैस व भिांसी परोधार्ने प्रस्य के दोष का कीर्तनः पिट्रिमंशं न **बाइमां (द**म स ४७)। संसिय वि मिसिकी परोक्त में बीप बीलवैकाता भीक्षे नित्ता करनेवाता (सम ३७) । साइया और सातुक्यों एक धनुत्तर-पामिनी जो: 'चींदमा पिट्रिमाइमा' (धन् २)। देखो पिद्ध = प्रतः। पिट्ठी 🗱 [पैटी] बाटा की बनी 📑 महिए (F 8 P) पिड पुंक्ति १ वेश-पत साथि का बना हुमापाक-विरोप । २ कव्या समीतवा भा दान देखें मिन्स रेरेरे बाल सद विदे पवियो (सूपा १७६)। पिडम केतो पिडव=पिटक (धीप डवा-सुरुद ११)। पिक्षण्या को हिं। एको (१६ ४६)। पिडव न [पिटक] १ वंद्यमंत्र पात्र-विदेश भोक्योपि (१ पि) वर्ग करेडि' (शामा १ १—नव ८६)। २ को चन्द्र भीर को सूत्रों का समुद्ध (युज्य १६) । पिक्य विदि बाविन (पद्)। पिडव कर [ सर्थ ] फैरा करनाः क्यानैन करता । पिष्ठवह (वेष्ट्र) । पिकिता की [पिटिका] १ वंश-पम काल्ल-विशेष (दे ४ ७ ६, १) । २ आहेटी संबूषा देश शिक्षरी (क्य १८७ ११७ हो)। भिष्टु एक [ पीडयू ] पीइना । भिष्टूद (भाषा) (वि २७६)। पिङ्क धक [भीस ] गीचे पिरना। पिङ्कर (पइ)। पिहृद्ध नि [दे] प्रसान्त (वस् )। भित्रं य [पृथक्] मलप पृदा (पर्)। फिसर पून [पिठर] १ माचन-फिटेप स्वाबी (पाम माना पुना)। १ पृष्ट-निरोप : ६ पुस्ताः भोवा । ४ शन्त्राम-दश्व नवनिवा (ह १२१ मह)। पिमद्भाष्ट्र एक [पि+नार् पिनि+घा]

(मा १२) । चन्पाकी विम्पा विमा पिजवर्ष, पिजदिक्तए (प्रवि १०६, एक)। पिणदा वि पिनदा १ पहला ह्या (शम: धौपः पा ६२८)। २ वदः मन्तिः (स्त्र)। ३ पहलाया हथा। जिस्सवज्ञीति निराको करत सिरे रक्लविषद्यों (सुपा १२१)। पिजदाबित (श्री) वि [पिनियापित] श्र-नामा हुमा (नाट--राष्ट्र ६४)। पिजाइ दे [पिनाबिन्द] महादेव दिन (प्रस्ट मदह)। पिणाई की दिरीयाला बादेश (दे ६ ४८)। पिजाग देव [पिनाक] १ तिब-वदुव । २ महारेव का रूलाल (धर्मीन ११)। पिजागि देखी पिजाइ (वर्मीव ३१)। पिणाब देखो पिणाग (मउब)। पित्राय पू वि बसास्कार (वे ६ ४१)। पिणिक पि [पिनक पिनिष्ठि ] पिणाळ = पिनका (पराह २ ४---वन १३ म रप्प भीप)। पिणिशासक पिति + या विशेषिणक -ति + नव । के पिकियत्तप् (मीरा नि Xvg) i पिण्याग रेखी पिसाग (धर्म) । पिकियमा की वि पिकियका वन्त्रमान विरोप व्यामक, बन्ब-तूरा (स्तानि १)। पिन्दी की दि] छामा प्रशक्त (वेद, ४६)। पित्त कृत [पित्त] शरीर-स्थित मानु-विशेष-रिक मनु(भग्रह्म)। उद्यर्थ [भार] पित्त से होता हुआ।र (शामा १ १)। मुच्छा भी [मुच्छी] पित नी प्रकारी वे होनेनावी बेहोती (परि) । पित्तक न [पित्तक] बहु-सिरोप, पीठ**न** (क्य १४४)। पिकिका ) र् [पिक्क्य] पाना, पिता ना पिचिय र भार (अप्या सम्बद्ध १७३, विरि २८३ वर्गीव १२७३ स ४९५ सुपा ३३४) ३ पिचित्र कि [पैचित्र ] विच कर, विच संबन्धी (तंतु १६ सामा १ १० मीप)। पियं यं [पूजक्] सका दुर्ध (है १ १ अभूमा) । पिमाण केवी पिद्वाण (बाट-विक १ ६) व पिताग ) वृं [पिण्याक] बती हित मारि पिताय ) का हैव शिकास सेने पर वो वसका १ इक्ता। २. पद्दिलना। २. पद्दिलना। ४. |

विवीसित व [विवीसक] शीट-विधेव

१६; २ ६ २c) I

बीउँटा (कप)। पिपीडिआ र छी [पिपीडिस ] बीडी विपीतिका । शीउँदी (पगह १ ६ मी १६) रणमा १ १६)। पिष्पद्य सक् [दे] बहुबहाता को मत में ध्यदे । सो बक्ता। रिपड्स (दे ६ ६ दे है)। पिप्पद्वा औ वि अर्ख-निपीसिका (वे ६ YE) 1 शिष्पद्मित्र वि दि रे भो वहबदाया हो । २ न बहुबहाना निरमें इच्नार बहुबाद (दे 4 x ) i पिराय पुंदि र सक्त (१६ ७८)। २ विशाद भूट (पाय) । १ वि. उत्पन्त (दे ६ 9×)1 पिष्पर १ [वृ] १ ईख। २ वृपम (दे ६ 1 (30 पिष्पधि धौ [पिष्पर्छः] पीपर का बाह्य (परग्छ १) । पिष्पत पृत्र पिष्पत्नी १ पीपम बुद्ध धरमन्य (उत्त १ ३१ टी पाया दि १ )। २ द्वारा पुरक (निवार ६—वन ६६ धोप १११)। पिष्पश्चम मि [पैष्पसक] पीनन के पान का बनाह्या (घाषा २२३१४)। विष्यति । ध्री विष्यति सी सेविक पिष्पर्छ। विशेष पारक 'महस्मितिनुद्ध' बालेगा साहमें होई (वंबा र. ३ पाला 10) पिष्पित्वज रेगी पिष्पवित्र (वह )। .पिप्पिया धी [बे] कंद का मैन (तीर)। पिय रेगो पित्र = पा । निवामी (नि ४०३) । संर पिविचा (ध्यवा)। पिष्य न [रे] या नाती (दे रे, ४६)। पिन्म पू [प्रेमन] प्रेन ग्रीति सनुपन (पान मुर २ १७२ रंगा)। वियान र् [प्रियान ] १ क्य-विदेश गिरती | बाबेर । २ व कर-विदेश चिली जिली (दल १८,२ २४)।

पियास (धन) भी [पिपासा] प्यास (गरि) । पिरिकी की दि शहुनिका विदिया (दे ६ 80) I परिपिरिया रेको परिपिरिया (राम)। पिरिकी धी [पिरिकी] १ प्रव्य-विशेष बनस्पति-बिरोव (पस्तु १)। २ बाच-विरोप (स्व)। पिछ देशी पीछ । वर्म, विनिव्य (नाट) । पिछेनु ) पु जिस्सी १ ब्रानियोप पिछक्ति । पित्रसँग पाक्क का पद (सम ११२ योग २६। पि ७४)। २ एक तरह ना पीपस कृतः पित्तकतु पिप्पत्तमेदौ (निद् पिस्तान दि पिनियन देश विस्ती अवह ( \$ 4 YE) 1 विद्य देवी पीमा (वि २२६)। पिछाय न [पिन्क] फोड़ा फुनसी (नूम १ 1 Y 2 ) 1 पिळिम्ब देनो पिलंग्य (विचार १४=)। पिखिद्दा की [प्रतीहा] संग-निरोप विपद्दी विस्ती (तंद्र १६) । पिल्ञन दिखित छीह (पर्)। पिल्लंक ) क्यो पिल्लम् (पि ७४ पएए पिलुक्ता र - पत्र वर्षे )। पिल्लाम् देवी पिलंखु (काचार १ = ३)। पिलुट्टीर प्लिप्ट] राव (हे २ १ ६)। विस्तेम व व्यापी बाह बाब (६ २ १ ६)। पिछ देखो पञ्च = धिप । चिह्नर (भवि) । पिछ तक [म + इरयू ] १ मेरणा करना। २ प्रवृत्त वरना। प्रिमोद्द (वव १)। पिञ्चग व दि दियो ना बचा। पिद्धमान मिरण दिस्सा (वं ६)। पिह्रपा औ शिरणा बेरणा (रपा) । पिद्धि स्प्रै कि यान-जिटेव (रमा ६) । पिद्धित्र वि [शिप्त] बेंग हुमा (पामा स्रीव कुमा)। पिद्धित्र वि [मेरिन] जिनको प्रिरण को गर्न हो वह (दुवा १:१)। पिदिरी का [नि] १ इत्तर्भवरेत क्यून इत्तर । २ बीधे, बीट रिटेप । ३ वम पर्यंता (दे

₹ wt):

पिह्नम (१) देगो पिलुझ (वन २)।

पिल्डन [दे] यो ने पत्री के तुस्य (दे ६ 46) 1 पिय देखो इय (हे२ १८२ धुमा महा)। पिय सक [पा] पीता । पिक्द (पिय) । भूका धपिक्तिवा (भाषा) । कर्मे पिनीमेति (पि 198) I #F विविध, पिविश्वा, पिविचा (नाराका १२ महा)। हेक-पिषितं, पिविच्च र (मारु ४२ मीप)। पियम रेको पिअम=(दे) (मनि)। पितासय वि पिपासकी पीते की इच्छा बामा (मग---मस्व") । पित्रासा भी पिपामा दिएस पीने भी इच्छा(यगपानः)। पिश्रासिय वि [पिपासित] दूपित (धवाः वित्रावित्रा देवो विपीछिजा (दर च ४२ मा ४१)। पिञ्च देशो पिड्य (वड )। पिस सक [पिपृ] पीयना । निसद (पर्)। पिसंग पू [पिशक्क] १ निकन वर्ण महिवाच र्रैय । २ वि पियम वर्णवासा (पाम द्रम 2 X X X) 1 पिसंडि वि] देनो पर्संडि (गुगा ६ ४) दुन er (8xx) 1 पिसह पू [पिशाच] विशाच व्यन्तर-शामिक देशों की एक बाति (हे १ ११६ कुमा) पाम का २६४ टी ७६व टी)। पिसाजि वि [पिशाबिन] भूतपिष्ट (है १ १७७ कुमा पर चंड)। पिसाय रेवी पिसह (ह १ १६३ वर्ष १ ४३ महाः इक) । पिंसिज न [पिशित] मोर (पाम महा) । पिसुअ पूर्वी [पिशु ह] द्वार शीर-विदेश। धीया(धन)। पिसुग सर [क्यम्] बहुता । तिमुलुह, रियुणेट, रियुणेडि रियुणेडि, रियुणेष् ४ श वा ६०श पुर ६, १६श वा ११६, दमा । पिसुन 4 [पिशुन] सन दुर्गन बर-किन्स कुगमसोर (पुर ३ १६ प्रामु १व∹वा

१७० पाप)।

**(**4) :

३, १—पत्र ६ २)।

(चय १ १)।

पीण(पञ्जा

( (XX

11)

(ए। र t)।

२ (१४) पाम कुमा)।

(चीर रथ परंख १७)।

पाद न दि ] १ ईन पर्लोकासन्त्र (३ ६

११)। २ छन्द्र, युक 'उद्रियं क्लुव'दरीई

पणुत्र विस्रो निर्मा (रेसि) कम्पविया (स

पीत्रय∫(क्सेंपण्धर्रं स्थ∀ २०)।

पीडरम्बड न पीठरमण्डी नमेंध-तीर पर

स्पित एक प्राचीन वैश तीचै (पडम ७७

पीडाणिय न [पःठामीक] धरव-धेना (ठा

पीढिमा भी [पीठिका] वासन-विदेव मध्य

'बार्सरी पीडिया' (पाम) । देखी पेडिया ।

पीडी की दि पीठिकी कह-विशेष पर

ना एक माबार-फान्न पुत्रराती में 'पीडिडें'।

'तती निवतिकर्ण मत्तद्व पवाई जान पहरेह ।

ठा पर्शालीडियमणे खणेल बर्यान्यं तत्व'

पीण सक [पीनयू] पूरु करता। पीछींति |

पीण तक [प्राप्पय् ] पुरा करना । 🛊 देखो

पीय वि [दे] बहुरस बहुकोछ (दे६, ११)।

पीण वि [पीन] पुट, भोसन कावित (है

पामग न [प्रीपन] पुरा करना (वर्गीक

पीणिः वि [ प्रीणनीय ] ग्रीति-अनक

पीजाइय रि वि पैनायिक] वर्ष है निर्मुत्त

वर्षे में दिया ह्या 'पीलाइयदिस्तरहियमहरा

नोबर्देव व बेंबरवर्न (ए।या १ १--वन

पाणाराधी [इ पीनाया] या महत्तर

पीजिञ्ज वि [मीणित] १ तीपत (वर्ष)।

(वर्गवि १६) । [

'इतिवरीवसमापदी' (वि ११)।

पीसण न [पेपण] १ पीसना इतना (फ्छ्

रेरं कापूरंप स्मात्तरेष)। २ वि

पीसय दि [येपक] पीस्नेकामा (पुरा १३)।

पीसनेवासा (मूच १२११)।

पीणिम पूंडी [पीनता] पुत्रता मोततता ( R ? ? ? X Y ) 1

पीयमाग देखो पा = पा। पीयमाण रेखी पी = पी ।

२३३) । ३ पीठ, रायैर के यीचे का मान पीरिपीरिया की दि] बाध-विशेष (राय पुँदिस्स }न [पीठक] देवो पीड ≖पीठ

YX) I पीस सक [पीक्षय् ] १ पीमना, पेरनाः दवाना ।

९ पीड़ा करना हैरान करना। पीलइ, पीलेड (कारवा १४३, पि २४)। कवडू

पीछिञ्चत (मा ६) । पीखण न [पीछन ] दबाद पीसन पेरना मार्गिस्टिगेट मासी वीसस्प्रदेश व्य

दिधमाहि (नाम १६१) अंतरीकणकामे (उदा) । पीला देवी भीडा (उर ४३६) मुच्च ११०)।

पीस्प्रचय वि[पीडक] १ पेरनेवाला। २ पुँ तैसी यंत्र के तैस निकासनेवासा (वज्ञा tt ): पीक्षिम वि [पीडित] पीना या पेरा हुमा

(भीराध्य १ ३३ छव)। पीळिम वि [ पीनावत् ] बाबवाला बावने से बना हमा (वस मादिवी माहति) (दसनि २ १७)।

पीलुर् [पीलु] १ इत-विशेष पीलुका देव (बएए १ बज्जा ४५)। २ हाथी (राम: स ७११)। ६ न दूबा 'एवट्ट बहुनामं दुद वमो पीनु बीर व' (पिंड १६१)।

पीलुज 🛊 [दे पीलुक] रावक, बबा 'तरबंटियणीटेल'वगीतुमारक्यणेश्वदिएलम-रा (च १ २)। पीलुहु वि [ वे प्लुष ] देवी पिलुहु (वे

4 Xt) i पीबर वि [पीबर] फावित हुए (ए।मा १ शः पाषः मृतः १६१)। शस्मा श्री िंगर्भी को निकट अविष्य में ही प्रमुक्

t ३ द्वमा)।

२ स्तरिक परिष्ठ (श्व ७ २३) । ३ द

पीस सक [पिप्] कीतवाः दीनाः (पि कर)। यह पीसंत (सिंह रेक्ट एादा

पीह सक [स्यूह् , प्र + इह् ] प्रमिनावा करना, बाहना। पीइंति पीड्रेज्या (ग्रीप: ठा वे वे-पद १४४)। पीइस पू [पीठक] नवबात रिम्मू को पीताइ

वाली एक वस्तू (उप ६११)। पुक्षी [पुर्] छिर (विशेष ११४)। पुळान [प्लुत] १ तिर्देष् गति । २ महोपनाः मम्पनाति 'पुरुमामा पू (१ पू) यगाएई (विसे १४३१ थी)। जुद्ध न [मुद्ध] सपम पुर का एक प्रकार (विसे १४०७)।

प्रभंड र् कि वस्य पूना (र ६, १३ पाम)। प्रभाइ दि. विं] १४६७ पूजा (१६ व.)। २ बन्यतः (वे ६, ४ ३ यहः) । ३ वू पिरम्रच (दे६ = पामापड्)।

ा पुमाइणी की [दे] १ पिराय-मुहीत सी मुवानिष्ट महिला । २ सम्बद्ध सी । ३ दुनरा व्यभिवारिए। (वे ६ ५४) । प्रभाव सक प्रियंत्रयों से बाता। संक्र प्रयायइचा (हा १ २)।

र्धं दं [ इंस् ] द्रस्य वर्ष (वि ४१२) बाम १२ थी)। देवी पुगम, पुनाग, पुंचड मर्दि । पुरा पूँ [प्रज्ञ] १ बाल का सब साम किस्त य सरस्य 🚅 विवाद सम्मेख (तम्पनाखेख) (बमीर रेक, चर पू १८१)। २ म देर

निमान-विशेष (तम २२)। पुरियमग् न [देशोहस्यक] दुमाना शिसह वी एक धीति द्वनशानी में चौताणू" (मुसा पुरित्रत्र वि [पुद्धिन] पूंच-पुन्त किया हुना 'पण्डे दिल्डो वर्षे पुनिद्धो' (रस्पू) ।

। पुंगम ५ 👣 भेट रतन (मार)। चुनव वि [पुद्रव] थे उत्तन (नुस शह । # ¥21 #32) t र्देष तक [म+क्य्यु] नॉदना ना करता। इंग्ल (क्यू ६० १ ४) ।

न्दोति। त्रविद्ध योग-विदेश, वी पट्ने नूर्व या पाप्रका किसी पर्यानग्रह दाय शाहर बार के हुमरे सूर्य बादिके बाब उपबय को बात हुमा हो वह दीन (गुरुत १२)।

41

१ ७) । संद पीसिकन (रूप ४३) ।

करनेवानी ही वह की (धीपवा वह)। पीयस देवो पीम = रीत (हे १ २१३ २.)

र पुंधयीम (ति १०२)।

पिसपिका विकिथित र क्या इसा १२

स्थित (सुपा २३:पाम कृत २७व)।

पिसमय (पे) व [किस्मय] धावर्व (प्राक् 1 (858 पिक सक रिप्रह दिन्दा करता चाहता। शिक्षाक (अस ३ २--पण १७३) । संक्र पिहाइचा (यन १ २)। पित्र वि [पूजक] जिल कुरा निवृत्तिहरूरी (विशेष)। पिश्वं स प्रिवक्ती भन्त (दे ११६० वर् )। पिक्षंड पृंदि । शाध-विशेष । २ वि विनर्शे ( L 42) 1 पिद्वड देखो पिद्वर (दे १ २ १) हुमा चना)। पिद्यान [पिघान] १ बक्लन, पिदान (गुर १६ १६६)। २ डक्ना धाच्याका (वैचा १ १२: बंगोप ४६ समा १२१) । पिश्लया हो [पियान] याच्याका करूप (च ६१) । पिद्ध्य देखी पिद्ध = प्रक्र (कुमा)। पिद्वासक [पि + भा] १ दक्ता। २ वैद ररना । विहाद (भर ३ २)। एक विद्वादता पिक्किल (मन ६,२ वहा)। पिशाम देशो कि इप (स्र.४) एत ३६, कम्प)। पिदाणिश्रा श्री [पिद्यानिश्रा] दक्ती (राघ)। पिद्वाणी की [पिपानी] करर रेकी (रे) । पिव्लिश वि [पिव्लि] र बका हुमा । २ वैद फिया हुथा (पाम क्या का २ ४--<del>ग</del>र दश नुपा ६३)। ।सव नि [ीस्नव] १ जिन्ते प्राचन को ऐताहो (स्प्र४) । २ **पुं,** एक पैन बुनि का नाम (पत्रम २ पिक्षिण देखी पिक्षण 'धारतको केवनतो निहिन्ते नवप्त मण्यते वर्ष (भा ६ पहि)। पिद्दिम (घर) वो प्रिविद्यो पृप्ति बच्छी। पास व [ पास ] राजा (भार )। पिद्दीरूप रि [पूजनकृत] क्लब किया ह्रमा (fix tee) i पिद्वति [पूर्ध] १ विस्कीर्लं (दूबा)। २ र्नुएक स्थानानाम (प्रत्न ३४ ३४)। राम पू ['राम] नीन नास्य (र ६. X 20}i

पिह देशो पिह न प्रमान (सुर १६ ६६) संख्यो । पिह देवा पिहुस। पिहुबक्त कि मी वर्ष (46 + 4Y) ! पिश्च न [पिड्रण्ड ] नपर-निशेष (अस 17 3)1 पिद्या कि देखी पेद्या (बाका २ १ ७ ६)। इरब द दिस्ती सपूर-शिच्य का भिना ह्यार्थें बा(घाना२ १ **७ ६**)। पिह्नच देशो पुरुच (तंद्र ४)। पिष्ट्य पूर्व प्रिकृति साध-विशेष विकास (माचा २११ १४)। पिहुड वि [पूथुड] विस्तीर्स (पर्याः १ 🗠 मीत के के देशके अपनार्ग । पिहस्त न वि । पृष्ट के बागू से बकावा बाता तुत्र-वाच (दे ६ Ye) I पिक्ष केवो पिक्षा । शिक्षेत्र, जिल्ले (क्ल. २१ ११ तुम १ २.२ १९)। संक्र पिद्वेदरण (বি **২**বছ) ৷ पिद्वो म प्रिवद्ध विस्तर जिला (विसे १)। पिदोमर नि दि ] गु. इस, दुर्गन (दे 4 X ) 1 पीतक [पी] पन करना। नक्र फिल्क्सूच-धक्कंतिरीञ्चपूरं पीयमाणी (रवस ११)। पीझ पूंपित रेपीत वर्श पीका रेप। २ वियोग पर्खंपाला पीला क्रि. १ १७३ कुमा प्राप्त)। १ जिल्ला प्रजा किया धना हो बहु (छे १ ४ । दे ६ १४४) । ४ विस्ते पात किया हो वह (बाम)। पीक्ष नि मिति बोर्ति-मुक्त, संबूष्ट (सीप)। पीअपर (बाप) नीचे देखो (सिंग)। पीश्रक्त केवी पीश्र≂ वीत (हे २ १७३) इस्स्य)। पीकसी की विवसी विन-पात की (कमा) : पीइ वृद्धियाल भोडा (देव ५१)। पीड़ ) की मिर्रिते । बेम सद्गुप (कमा पीई रेमहा)। २ धवल की एक क्लीका नान (परम ७४ ११) । बद्ध पून [ैब्द्र] एक विवासायात बाठवा प्रवेदक-विमास (देवेन्द्र देवेश वर १६४) । राम व िरामी महाशुक्र देरेन्द्र का एक पात-विकास (इका यीत) । दास व [दान] हुते होते के |

कारण विदा काटा का पारितोकिक सुर ४९१) । वस्मिय न भिर्मित समियों का एक इस्त (क्या)। स [ सनस् ] १ प्रीति-पूर्व वित्तवादा २ वं महाराज के लोक का एक बात (हाद-—पद४३७)। बद्धण देंि कर्तिक माद्र का बोकोत्तर नाम (तुर १६। रूप) । पीईय पू हि इजनिरोग पुस्म भेद 'पीईनपासक्यहरकुण्यय छह ि द' (पएक १)। पीकस न (पीसूची धक्त पूरा (पाप पीड सक [पीडयू] १ दिपन करन दबाना । पीडवः पीर्जन (शिकः हे ४ 1 कर्म, पीविञ्चह (पिंड) । क्याहर पीर्र पीडिकामाण (घेरर १२,व सक्)। पीड देवो पीद्या। यर विकर् कारक (परम १ ३ १४३)। पीकरक्ष की दिने चोर भी की (दे ६ पीबा की पिडा पोस्त हैराफी (शाप)। बर वि विस् विश्वाना 'प्रतियं न प्राधिवन्त्रं परित्र हस्त्रंपि वं न सर्वापि सं व संबंधे में परवीक्रकर वन (भा ११) ज्ञास पोडिय नि पिडित र पेश है व हो वह समिन्त परामित ज्यादुन दु १ दवाना पना (डे१२) सहा पेड पुन पोठी र व्यक्त, पोड़ाः विद्वर भावल (पाका स्थल **१**१ मासन निरोप अधी का माधन (पी १ ६। थना भीत)। ३ तत नेडपीड (कुपा) । ४ पू. एक कैन (ब्रिट्स हो)। ब्राम् विग की संबद्धरिका मनिका 'तन व र्राहर्प फड़िन्जबार्शन देश कावल्ब श (६)। सद सदल वृद्धी नाम-पुरवार्व में तहाबच बावच का छ पुरुष, राजा भारि का कराम विरोध १ १—पत्र १८७ कमा) । की ४ (मा १६)। सप्पि पि सिर्पिन विकेष (बाषा)।

पाद न दि । इंख परने का सन्त्र (दे ६,

५१) । २ समूह, पूच "उद्गिव बरायरेक्सी है

पणुद्रा विक्षे दिनी (नि) कमहियाँ (स

२३३)। ३ पीठ, राधेर क पीछे का मारा

'हरिनपोरसमापरी' (वि ११)।

पीदग) न [पीठक] देखो पीद = पीठ पीद्रय र्र (कसें मध्य १ र ० रस ७ २८)। पीदरसंद्र न पिठरसण्डी नर्मेदा-कीर पर स्थित एक प्राचीन जैन तीर्थ (प्रतम ७७ **4**8) 1 पीढाणिय न [पाठानीक] बरन-पेना (ठा ध्र, १—पत्र ३ २)। पीढिजा औ [पीठिका] बासन-विशेष मध्य 'बार्मरी पीरिवा' (पाप) । रेक्टो पश्चिमा । पीनी औ [दे पीठिया] कछ-विशेष पर , ना एक माकार-काहा पुत्रसती में 'पीडिर्ड'। 'तती नियतिअर्गं मत्तद्र पदाई बाब पहरेइ । शा प्रशिक्षेत्रियनणे यापेण प्रश्नित्रमं तत्प (वर्षकि १६) । पीण सक [पीनयू] पूर करना। पीलंदि (शव १ १) ì पीय कर [प्रीयम् ] पुरा कला। 😮 रेसी पीण पञ्जा पीण रि [दे] बनुरस बनुष्नोल (दे ६, ११)। पीम वि [पीन] इंग्र भामन स्वाचित्र (ह २ ११४ पाम, दुवा)। पीयम न [प्रीयन] पुरा करना (धर्मीक (¥×) 1 पीपनिका वि [भीपनीय] भीति-जनक (धीर रूप पएए १७)। पीजाइय नि दि पैनायिक] वर्ष से निर्मुत य है ने दिया हुया 'पीए।इविटिखारिका हुरी कोहर्मते व धीवरतनी (गाया १ १---वत्र (1) पनादा भी [द पीमाया] यह वर्षतार (CIRI t t)। पीलज रि [श्रामित] र सोरित (एए)। २ क्रावित परिवृद्ध (एत ७ २३) । ३ वृ क्दोजिए-प्रक्रिय योग-रिधेय, की बहुने कुई सामग्राका विक्रो पर सामग्राक के बाद होतर बाद में दूतरे पूर्व था। के बाब वरवन नो प्राच हमा हो नह सेल (नुस्व १३)।

पीणिम पूंडी [पीनका] पुत्रका धोसप्तका (B 7 11x) 1 पीयमाण रेको पा = पा। पीयमाण रेखो पी = पी। पीरिपीरिया स्थे [द] काय-किटेप (राम YX) I पीस सक [पीक्रम् ] १ पीसना पेरना दवाना। २ पीड़ा करना हैसन करना। पोत्तह, पीनेड (माला १४३, पि २४ )। कब्रु पीक्षिञ्जस (मा ६)। पीसण न [पीसन] दवाव पीतन देएता भार्णीं क्रिकेट भार्णी पीसक्रमीच म्य दिममादि (राप्र १६१) श्रीतरीसणुरम्म (धनः)। पीला देवी भीडा (उद ४३६) मुपा ११४)। पीरमध्य वि[पीडक] १ पैरनेवाला । २ प्रदेशी संबंधि हैत निकासनेवाता (वज्जा पीलिम वि[पीडित] पीता या पेप हमा (भीग हार १। तर)। पीळिम वि [पीडाचम्] शवदासा दादने से बना हमा (यस मादियी माहति) (रप्रति २ १७)। पालु 🕻 [पीलु] १ दूप्र-विशेष पीलुका देह (पएए १: बज्जा ४९)। २ हावी (नाम स ७३१)। ३ न दुवः 'एनट्र' बहुनानं दुव पमो पीट बीर व' (पिट १३१)। पीलुम 🖠 द पीलुक] शारक, बवा 'तरबंडियलीटल'वरिष्ट्रपारस्यलेस दिलगुम-रा (पा १ २)। पसुहृति [दे प्लुष्ट]देवी पिलुह्न(दे ₹ **₹**१) i पंचर वि [पीवर] पर्यवत पुत्र (ग्रामा १ रः पाय पुता १६१)। सस्या की िंगमी को निका महिल्ल में ही बहुब करनेतानी ही बहु की (बीचवा वह)। पीवस देवो पील ≖रीत (दे१ २१। २. दे दे दुना}। पीछ दक [पिप्] गीतना । योगद (पि कर)। वह पीसंत (तिह शक्त सामा १ क)। वर पीमिक्रन (रूप ४३)।

पीसण व [पेपण] १ पीसना, दनना (पस्ट रेरे का पूरेप॰ स्मण रेक्श)। २ वि पोसनेवासा (सूधा १२११)। पीसय वि [पेपफ] शेवनेवासा (नुपा १३)। पीइ वरु [सपूर् , प्र + इह्] प्रमिनावा करना बाहना। वीहंति, वीहेण्या (ग्रीप स १ १—पत्र १४४)। पीइग वूं [पीठक] नववात रिखु को पीनाइ वाती एक वस्तु (उप १११) : पुर्वि पुर्] स्थिर (विशेष १४)। पुअन [प्युत] १ तिर्दन् मति । २ मस्पना भम्प-गतिः 'बुरुमधमो पू (१ पू) सपार्थाई' (विसे १४३६ ये)। जुद्ध न ["युद्ध] धरम पूर का एक प्रकार (विते १४०७)। पुर्मंड पू दि ] तस्य पूना (दे ६ १३ पाप)। पुभाइ वि [दे ] श्वरण पूरा (१ ६ व )। २ सम्बद्ध (दे ६ - ३ पड) । १ दू निराम (९९ = पामः पदः)। पुआर्गा सी [दे] १ रिखाय-गृहीत सी भुवर्षित्रष्ट महिला । २ स्टमन्त ध्री । ६ बूनरा व्यभिवारियो (दे ६ १४)। पुष्पाव सक [प्रश्रवयू] से जाता। संह प्रयापश्चा (हा १ २)। र्धं दं [र्युस्] पूरव महे (वि४१२) सम्म १२ टी)। रेपो पुगव, पुनाग, पुंचड मारि । र्थंग इं प्रिञ्ज दिक्षण का सब साथ 'तस्म य रुप्तर र्वेष विद्या समेल विस्तालेल (पमीर रेण) कर पू १८१)। २ म टेर विमान-पिरोग (तम २२)। पुरसमान (दे श्रोह्मग्रह) दुमाना स्विस् की एक सीति पुत्रसाती में कॉलगू (मुक्त ₹**₹**) i पुॅरिक्स वि [पुद्धिन] बुंच-युक्त किया ह्या पगुद्दे विक्यो मधे पुलिया (१२५)। पुंगल है [ब] थेट रतन (ब्रॉर)। पुंगप रि [पुद्रय] थेट एनव (मुस शह ) च ४१: गरर) : र्पुष तक [श्र+कम्छ] शेंदता सार

करता । इंग्रेंग (तर रेकें हे ४ १ १) ।

र पुंपनीम (रि१०३)।

पुंच पुन पुष्पक्षी पूंचा नाष्ट्रन (प्राइट १२४ t t 34)1 पुंद्रप्रत [प्राध्यक्त] १ मधौत (रूपः स्वा

६०२

नुपार६)। २ स्टोक्स्स वैत मुतिका एक प्रपक्षण (बृह् १)।

पुंडपी भी भिष्यानी विंडते स एक दोय तुरायब प्रयक्तरत (राम) ।

भुक्तिम दि [बोध्यिद्य] पॉक्स हुमा यूर (पाध-दूमा मीव)। पुत्र तक [पुन्नब् पुत्रम्] र सक्ट्रा

(१४ १२ मनि)। कमी, पुनिज्जाइ (क्यू) । क्वइ- पुंजइज्जमाण (से १२, **⊑€)** ( पुंच पूर पुत्र हैर, एवि (रूप रस नुमा) 'सारिक्यु बनाई समई' (शिरि

करना। २ फैनाना विस्तार करना। पूनक्

1 (2515 पुंबद्धभावि [पुंजिति] १ एकदित (से ८, ६३ पटम ८, २६१)। २ व्यक्त, मरपूर

(पडम ८, १६१)। पुंजरञ्जमान देवी पुंज = पुरुष् । ধুলক }ৰি [থুজাফ] ং অতি হণ ত ধুলায }লিত 'দ ফার ধুনকরুলকা' (মিল

वर)। २ **व्या** पुंज = पुस्ता। पुंचय पूज कि निवसर, ग्रनराती में 'पूजी'। 'कामोनि वर्षः पुत्रमपु प्रस्

छउमेरा विवयागरम ।

भवस्त्रितीयो दव त्तार्यनति निज्यंदिरंग्यार्यं

(मुपा२६)।

पुंचाय वि [व] पिएसकार विश्व हुवा भूकामे शिक्तरमें (राष)।

पुजापिय व [पुजित] एवर्नित क्याबा हुया

(शतः)। पुँकिञ्ज रि [पुक्कित] एकवित (दे १८ ७२ कुमा कृत्रु)।

पुंड पू [पुण्ड ] र केत-विदेश विस्थापन कै समीप रामू-कार (स २२४) बय १४) । २ इकु-विशेष (वस्य ४२, ११) व्य ७४ )। दे वि पुरुष्टिये (पान १६, ११)। ४ बरन स्तेत बढेर (ग्रामा १ १७ दी—पत्र

कुप्र २६४)। ६ देव-विमान विशेष (सम २२)। बद्धजन [वर्षन] नगर-विशेष (म २२१)। देखो पींड । पुंडद्रभ वि वि पिएशक्त पिएसकार फिना हुमा (रे ६ १४)।

पुंडरिक देवो पुंडरीम (सूम २, १ १)। पुंडरिकि वि [पुण्डरीकिन्] पुरुरिकनावा (सूब २११)।

पृष्टिरिगेणी भी [पृथ्वरीकिणी] पुण्कतास्ती विजय की एक नपरी (साजा १ १६ इक' कुत्र २६६)। पुंहरिय केवो पुंहरीक = पुरवरीक पौरवरीक (इक कात पि ११४)। पुंडरोज र् [पुण्डरीक] १ न्याच्य स्त्र पूर्वी में सारावी का (निचार ४७३)। २ एक ঘৰা মহমেম ঘৰাৰা হৰ গুৰ (ছুম २११ शाया १ १६)। ३ व्यात, तत्तु व (पाम)। ४ पून. इत्त-विक्टेप (पद २७१)। इ.स्नेन पच सफेर कम्बा (सुचनि १४३) । ६ कमन पदा 'चेतुर्ख क्ष्मवर्त सरोख

क-विमान-विशेष (सम १९) । इह, इह र् द्विष्टी कियारी पर्वत पर का एक महा-हुद (तार ३३ सम १४)। पुंडराम वि [पीण्डरीक] १ रवेत क्य का रनेत-पद्म-पंदन्ती (पूपवि १४३) । २ हवार, मुक्त । १ कम्स्त घट्ट, उत्तम (मूम्पीर १४००-१४४)। ४ न सुबद्धतौर सूत्र के क्रिकीय युक्तसम्ब का प्यक्ता धम्बदन (भूगनि ११७) । धेवी पींदरीय । पुंडरीयां की [पुण्डरीम ] ध्वी पींडरी

पुंडियमर्चिर (पाम तन १३ कप्)। ६

केन-विमान विरोध (सम ११) । ७ वि स्लेस,

स्टैंद (सेंग १३२)। शुस्म **ग**िशुक्सी

(स्व)। पुंडिय दि ] बह्मी (देश, १२)। पुंड रेको पुंड (क्य ५६१)। भंड दे दि के बहुए का (१ ६ १२)। पुनाग 🖠 [पुनाग] १ क्व-विशेष पूप्त-प्रवात एक कुळ-अपीत पुल्यव, पुलाक चुल

**७६ की बानत (७६)। १ वेड दूस** 

বল বনত পথের বা আরে (জারু হৈ

चत्तमे मर्द (बस्म १२ टी*।* सम्मत्त १७६) । वेचो पुनाम । र्मुपञ्च पृथि | स्वम (दे ६ १२)।

पुर्म पूर्व कि नीएस, कान्त्रिय का विश्वका (?) अध्ययम् धनत्त्रं वा निरोतियं पून-मप्पए तार्व' (वर्षीव ६७)- फिनत्य मन्विय् गौरसं पर्शामेद (मद्दा ११)]। पुंबर पुंब [ पुंबपस् ] व्याकरहोत्त संस्वार मुक्त राज्य-निरोप पुँचिय राज्य (परुख ११---पन १६६)।

पुंचेय पू [पुंचव] १ पूरप को बी-सर्व का विकार । २ इतका कारहा-मूद कमें (वि ¥{2)1 पुंस सक [पुंस् सूक्] मार्थन करना पॉब्ला। पूछद (हे ४१ १ १)। पुंस देवो पुः। काइस, कोइसम प्र [कोकिस्ड] मरदाना कोक्स पित्र (अ १<del>० - का</del> दश्श वि ४१२}।

पुंसण न [पुंसन] मार्गन (हुमा) । प्रसद् प्रतिसद् । प्रस्य पैसानस्य (जुमा) । पुंसकी की [पुंचकी] पुत्तरा न्यविवारिती 🕸 (वण्या १८) वर्गीव १९७)। पुंसिक्ष वि [पुंसित] वॉक्स इस्स (६१ **26**) ( पुद्धः ) एक पितृ + कृते पुकारता, डॉक्स, पुचर र धाहान करता । दुनकरेड (बम्म ११ दी) : यह पुर्वत पुरुरत (प्रवह १ ६---पत्र ४२७ सा १२)। देखो योखा। पुक्तिय कि [पूत्कृत] कुमाच कृषा (मुग

1=t) : पुरुष देशो पुरुषक्ष (पहारू १, ४--पर 222) t पुद्धा की देवो पुद्धार=पूत्कार (याग नुपा ११७)। पुष्पार देवो पुष्पर । पुरुषरित (एन) । नष्ट पुषारंत पुषारंत पुषारंगाण (दुरा ४१६, १०१३ २४८३ छाला १ १ ) । पुकार है [पुरसार] हुबार, श्रंक पाहुल (तुपा ११७) महा क्या । पुक्तर देवो पाक्तर = पुक्रर (क्या व्हा

ति १२१)। कण्यिमा की किर्णिस]

पप का बीजनीस, कमत ना सप्य साप (तीरा) कराई[सि] रे निवा चीठवा २ क्सीर के एक प्रमाना नाम (क्षा १४२)। ग्राम [मान] नाघ विधेय का हात, नमार्नकोग (धीरा)। द न [मो] १००० कर मानक हीए ना धाना हिम्मा (क्षा ११)। नद ई मिर्ग हीर्मनियोग (झ २ २ वीहा)। संबद्दा चेटो सुम्मान-स्वह्ब (सन)। । विचा चेटो सुम्मान-स्वह्ब (सन)।

पुक्तरिया देगी पाक्यरियी (पूप २ १ २ ३: बीव वाप) । पुक्ररहाम १ वं [पुष्टराद] समुर-किटेव

पुकरतियु ( (१६० को ११०) पूर्व १६)।
पुकरत्व वु (१९६२) एक रिक्य प्रान्त रिकेट निकरी दुश्य नचने का नाम योगीति १ (१८)। २ तथ कमा। विश्वनिवादाना वृत्तरतिता (गुम २ १ १०)। १ गम वेत्रर (याचा २ १ ४—पुत ४००)। रिक्रमा न [सिस्सान्त चन्नान्य (धाचा २ १ ६—मूत्र ४००)। संगृह संबद्द्य वु [स्वयं क] निकरिट निकर्ष वर्ष वृ [स्वयं क] निकरिट निकर्ष वर्ष एसी १ (तर २ ६। हा ४ ४—पत्र २०)। होगी पुकरहर।

पुकास में [पुनारत] रे एक तिस्स प्रदेश-रिकेश (द्वा रे रे-प्ला में ) र समार्थ रेश-रिकेश । रे पुंधी, ज्या रेश में कलाय रुपमें क्योगामा निकासींद्र पुनिर्दार्श पुकार्माति (?)' (त्वा र रो-प्ला परक) | फिल्मींद्र क्योगींद्र (?)' (त्वा र रो री-प्ला पर्रे )। प्रदेश स्वीद्रार्थ (त्वा र र र)। पुत्र स्वारत्य हुई (ही जनकारीकार)

पुरस्परित्रमय विश्व वेशनेसाधीवनगाँउ रिहेर (रूप के 1 १ १६) । वेसे पावस्थित्वया । पुरस्थय को पुरस्यवर्गा पुरस्थवना

पुरस्य व की[पुरस्यकी पुण्याका] वर्षास्य को वा विवय-प्रत्यक्षरते (स व. १ वर्ष का)। शृह पूर्व [ कृत] एव के वर्षत्र वर स्वतिस्य (स्व)।

पुरस्तायहूम मूं [ प्रास्तावर्षेत्र, प्रास्त्य वर्ते हु नेप्प्तिचेत पुरस्ता (ति) बहुत ए महावेहे एवेए बावेए इस बायमहस्मार्थ वार्षेत (ठा ४ ४) । पुरस्तायस मूं [प्रास्तावर्त, प्रस्टावर्त]

पुक्तस्वायस्य प् [पुन्करायम्, पुष्कव्ययम् ] महानिष्ठ वर्षं ना एक विजय-जान्त्र (त ४)। कुष्ठ प् [पूर्ण] एकरीन पर्वत का एक रिकार (क्र)।

एक एकर (६४) । पुरारिया श्री [द] वस्त्री श्रीयक मॅनू-विदेव (सुव कृता २०२)।

पुरा पुन वि] बाय-बिग्रेय 'सो पुरम्य पुगाई बाल्ड' (हुप्र ४ वे) ।

पुमास पूँ पुत्रस्त्रों है ब्रुग्निकेशेय । र न क्य-किशेय । रे माँग (क्या १ १ ०६) । पुमास केयो पोम्मन (बिल्झा ११ नव ४२) ति १२१) । यस्ट्र परायक्ष पूँ विवस्ति केयो पोम्मन परिश्वष्ट (कम्म १ ८६ वे

१ मिश्ना थ)। पुच्छ देवी पोच्छ 'तेनमस्तुस्य (१ व)

समी (तु ४)।
पुष्य तह [ सण्यु ] पूष्ता सरत करता।
पुष्य तह [ सण्यु ] पूष्ता सरत करता।
पुष्य तह सण्यु [ र १०)। मुन्त, पुन्युम,
पुष्प क्षेत्र [ र ११ हुना मन)।
कर्म पुष्पप्रवद (स्रीत)। कह पुण्युन
स्रम (स्रा १०० हुना)। ककह पुष्युन
स्रम (स्रा १०)। हेन पुष्युन, पुण्युन
स्रम (स्र १०)। होन पुष्युन्युन्य
स्रम (स्र २०)। स्र पुष्युन्युन्य

पुनद्दगाल पुन्दियम्य पुनद्दयस्य (धा १४ वि १०१। जा कां ४ कवा)। पुनद्द केगों पुत्र = १ कवा । पुनद्द (बर्)। पुनद्द केगों पुत्र = १ कवा (स्व)। पुनद्द केगों पुत्र = १ विकास

पुनदार मानन्तर्ज (सोरका देश हुर । १ ६१) और नियुत्रा (यांप १२१) । पुनदार न मिनदान, प्रदेश । दुनदान न मिनदान, प्रदेश । १६१। वर्षेत्र दा व्याक ६९ हो) ।

पुरक्षामा । वह [मरप्रता] कार केनो पुरक्षमा । (बा ४६६ वीन) । पुरक्षमा वी [मरप्रती] बान वी कास (बा ४ १--वर १८३) ।

सेबद्धत (ता) दुवा सेहै = सेंह (स्व) । त हे-चन हरू। । पुरुष्ठा की [युरुष्ठा] प्रस्त (स्था मृद व वर)। मुल्लाम वि [युरु] पूसा हुमा (मीथ-कुमा-मय करा मृद रे देश)।

पुन्धिद्ध वि प्रिष्टु प्रशननार्ग (ता १६८)। पुद्धान देवी पुण्छान (तित)। पुद्धान को पुण्छान (तित)। पुज्रम (पुज्रप् ) पुत्रना सार्ट वरता। पुज्रम (पुत्र ४२३ मित)। वर्ग, पुण्डिनम्म (प्रिक्)। वह पुज्रोत (पुत्र १२१)। व्यक्त

पुष्पाञ्चलं (चीर)। संह पुष्पितं पुष्पि कम (दुम १ २ थिन)। ह पुष्पिमस्य (क्षे ७)। प्रयो पुण्यास्य (पनि)। पुष्पारे पेनो पुज्य च्युनन्। पुष्पारे केनो पुज्य च्युनन्।

पुञ्जंत रेवो पूर = पूरम् । पुञ्जण न [पृज्ञत] पूत्रा वर्षा (रूप्र १२१)। पुज्ञमाण रेवो पूर वनूरम् ।

पुष्पा मी पुरानी पुरा, मर्भा (छा व २४२)। पुष्पाम वि [पृष्ठित] मेरित मर्पित (मरि)। पुरु सम [म + उप्पट ] पॉप्टना । पुरुष्क (मारु ६७)।

पुट्टन [क्] पेट, उक्तर (या रेका मोह ४१) या १६४ सम्मत्त २२६१ मिरि २४२। सण्)।

पुष्टुख ) वृत्त [ब] गुट्ट, यांड प्रजरानी पुट्टुझय ) में प्योरमुज ' खेरगजुजनव' ब यहेर्य (ग्रन्तक बर्)। पुट्टुख्या की [ब] योधी गांचे वान्ती मोनसे

दिहिस दें [बाहिंड] ६ मागान मनवार सा (पीया ४६ ६४४) । वराज्या स्मार्थित गांत वाच्या मान्य

एक किया भी जीत्या में वार्षेत्र होनेताता है (स्वार ४०६) । २ एर धनुनर होनीर पायों वैत सहित (धनु २) ।

प्रहुति[स्पृष्ट] १ तृषा हुमा (स्ता सोतः ११ १९१) । २ व स्तर्ग (हा२ १ वर १८) ।

पुद्र शि पुण्डे १ चता हुया (बीच ताण हे १ १४) । २ त. इत्तर (ल. २, १) । स्त्रीमय शि [स्त्रीमक] स्त्रीमानीकेय बाजा (बुन) (बीच बाट २ १) । नाम्यापरिक्रम बुन [किस्प्रायदिक

-मिर्गिपापरिकाम ई.स. िंधनिशापरिक मन्] रिनार का एक अन्तिम स्विद (का १९०) । , **₹**08

पुद्र-पुष

पुद्रव वि [स्पूप्टवन् ] विसने स्वर्ध किया हो बहु (माना १७ ४ ८)। पुरुषई वेशी पोट्टमई (पुरुष १ ५)। पुष्ट्रवया की [प्रोद्धपरा] क्याप्त-विशेष (पुण्य

3) I पुद्धि की [पुद्ध] गोवल जनक (विदे २२१ चेत्रस**ः)। २ माहिता वदा (पराह २** १---

पत्र ११)। संदि सिन् दे पुष्टिसला। २ व भनपान् महाबीर का एक शिष्य (धनु)। पुट्टि रेनो पिट्टि = पुत्र 'पाप्रपश्चिमस पश्को पुट्टि पुत्ते समाध्येतिम्म (या ११: ६६ 🕬:

प्राप्त संस्थित १६)। ।पुद्रिकी [पुष्टि] प्रचल घरत । य दि [ब]कल-वनित(ध२१—नन४)। पुट्टिकी [स्पृष्टि] स्पर्तः यदि [कि]

सर्व-बरित (क २.१)। पुटिया की प्रिष्टिकों प्रश्न से होनेवाली क्रिया – कर्मबन्द (ठा२ १)।

पुढ़िया की [स्पृष्टिक] सर्व से होनाओं क्रिया-कर्ममन्द्र (ठा२ १)। पुड़िस 🖦 पोड्रिस (मनु २) ।

पुट्टीया 🛍 [रपूछीया] धेवी पुट्टिया ∞ स्प्रीह्म (नव १)। पुटीया 🛍 [प्रशिया] १ 🖦 हे होनेनाची

क्रिया-कर्मकल (नव १ )। पुड ⊈ [पुट] १ प रमाशु-विकेच । २ फुट-

वधिनेत क्लु (सन १४)। पुद्ध प्रेम प्रियो १ भिष्य संबन्ध परस्मर जीकान मिलान मिलान 'श्रीवसियद---'ताहै करक्तपुरेण शीघो शो' (मीप म्हा) । २ बाब दोन पारि का चनवा' 'बुरस्त्राह संद्रालुक्किमा (ज्या १४ दी। यउड ११६७) बुवा) । ६ संबद क्लास्य, मिका हुम्त हो क्ता 'सिन्पपुरसंदियो' (क्या) चडड १७६) । ४ होबबि प्याने का पाव-विरोध (वासर १ १६)। इ. वकावि-स्वित यात्र केला (रबा)। ६ शास्त्रास्त्र बस्तन (करा धरव) । ७ वस्त्र प्रय 'पक्स्ती' (विक्र १६) । अयुज

व ["सेदन] नवर, शहर (क्य) । शास पू "पाक] १ पूट-वाबी से बोबबि का पाक-विरोत्त । र पत्त्व-विकास भौगव-विकेश पद (१व) वाएद्वि' (खामा १ १६---पत्र ₹=₹) ı पुड़ (सी) देवो पुच = पत्र (पि २६२) प्राप्त)। पुष्टकम वि [वे] पिएडीइन एकविन (वे ६ पुरुष्णिको वि पुरुक्तिनी] नविनी दम लिनी (वे व इ.६) विक्र २३)। पुरुग पुन [पुट रू] देशो पुर = पुट (हता) । पुरुपुद्धा की दि | गुँड से सीधी बजाना एक प्रकार को सक्ताब स्वचाब (पर ६α)। पुडम देनी पुडम (परि ७१) वि १ ४)।

पुरुष वेको पुरुग (काछ तुना ६६६) । पुर्किंगन [पे] ग्रॅंह, बदन । २ दिन्दु (वे ६ पुक्तिया की [पुटिका] पूक्त, पुक्तिया (वे ४)

पुद्ध (सी) देवो पुत्त = पुत्र (साप्र) । पुढ़ देवी पिई (पह )। पुढम वि [प्रवस] पहला (हे १ ११) बुमाः स्क्या २११) ।

पुढवि वेबी पुढबी (सामानि ११२ भए १६,६) वि६७)। स्रद्य आयद्य वि ["कानिफ] प्रसिनी संधिरताला (जीव) (पबस १ मा १६, ६) हा १ प्राचानि १ १ १)। स्मान वैशो पुर्वव(न्यान (शास्त्रीत ₹ ₹ ₹) 1 पुडको की [पूजिको] १ प्रकिश करती भूमि (हेर र रशर का १४)। र कार्क-न्यादि द्वरतवालाः पदार्वे द्वरम-विरोप---

मृदिका पाकारा कानु साहि (पर्या १)। १ प्रतिनीकान का जीव (वी.१)। ४ ईशा-नैना के एक बोलागाना की सप्र-महिनी (ठा ४ १—नप्र १ ४)। ६ एक विच्युनारी केनी (क्ष ब---पत्र ४३६) । ३ वस्त्राल स्पादर्मगाय 🕸 माता न गाव (स्तर)। बाइब देखी पुढनि बाइन (राम) । स्वय मि ["स्त्रस] द्वावती सधीरनाता (श्रीम)-(ब्रामिन ११३)। यह द्रीपिती

शुविनी का राजा । १ प्रविनी का राजा हत. कुरत्त पादि (पाचा) । देशो पुरुद्धे, पुरुद्धी। पुकी भूग वि [पूचगृभूत] को पत्तव हुए हो (कुस २३६) । पुद्रम नि प्रिथमी कुचा साच (दे १ ११, भूमा) । पुढ़ो य [ पूचग ] घनग, विश्व (बुवा १६२) थ्यल ६ भारक ४ ३ धाचा)। और वि ্রিন্র বিভিন্ন মনিমাধনকা (মাগ্ট ডি ण्द)। जग दु ["जन] प्रकृत बनुष्क,

सावादल सोक (सम १ ३ १ ६)। किंद पुँचिति विभिन्न प्राणी (तुप ११२ १)। विमाय विमाय वि विमात्र] मनेक प्रकार का, बहुदिव (एक ठा ४ ४--पत्र २६ )। पुढ़ोजग दि [दे प्रयस्त्रकः] प्रसम्बद्ध जिल व्यक्तित, 'नमिरो भवतो पुरोजना' (सूच १ र १ ४ो। पुढोपम वि [पुश्चिक्युपम] वृक्षिण की दख सम सङ्ग करनेवाला (सूध १ ६ २६)। पुढ़ासिन वि [पृथिवीमित्र] पृथिती है धापन मॅं च्हा हुम्म (सूप १ १२,१६७ ब्रामा) ।

पुण धक [पू] १ पवित्र करता। २ वल्प बारिको पुरस्ति करना, शास करवा। পুতা(হি ४ २४१)। পুতরি (জনোং )। इसै पुरिजनद्गपुर्व्यद्व (१४ २४२)। पुण म [पुनर] इन वर्गका का दुवन सम्बद्ध— रे जेस. विशेष (विशे व रे रे) । २ धनवारतः विश्वयः । ३ शक्तिः ८ प्रस्तान । ४ दिखीन बाद, नारान्तर। ४ पद्मान्तर । ६ सम्बन् (पद्मा **२,** ७ नवण कुमा। बीतः की १७३ प्राप्तु १, ५२३ १९ वः स्वयम् ७२ विद्य) । ७ प्रक्यूटि में बी स्तमा प्रयोग होता है (निष्क १)। करन न [\*करण]रेकर से बनाना। २ वि विक्रमी किर दे बदालद की काम बहु। शिक्ष संबं म सेर पुरुषकार्थ (सन)। ज्यान्ति ["तन्त्र] किरते बनावनाह्या तावा (इन ७६ वी क्या)। पुगंस [पुसर्]किर क्षिर, गरंगर। पुजन्तरज म ['पुनन्मरज] विर किर क्वान्य, बार्रवार निर्माण (वे १

(६२)। स्भव रृं [ैमव] फिर से फर्पित किर से फल्प-प्रहुत (नेक्स ११७-धीप)। **स्मृको [मृ]** फिर से विदाहित की जिसका पुनर्संगत हुमा हो वह महिला 'मारिव पुरुषमूक्यों ति विवासिया पत्रसन्ते (क्रम र संदर्भ। रिवि समिष [किपि] ाफिर सी (अनाः छत्त १ १६० ११)। रामिति को [कावृत्ति] पुनः प्रावर्तन (afa)। "एस वि ["उस्क] फिरसे वहा हुसा। २ त. पुतर्शक (वेदस प्रश्य)। व च [ अपि] किर भी (मैकि रेश प्राक्त ap)। हत्रसु दू ["यसु] १ नक्क-विशेष ा(सम १ ६०)। २ ब्राउर्वे वासुवेव के । पूर्वे अन्य का नाम (सम १४३ पडम २ १७२) ।

पुण (सा) देवी पुण्य = पूरव । संत वि [ अन् ] प्रस्थानी (निर्व)। पुण्यं एक [ इ.स.] देवना। पुणुपाइ (बाला

88X) 1 पुणइ हुँ दि । अपन नारवास (वे ६, ६०)।

पुष्पण वि [पवन] पवित्र कछोबाला । औ की (दुमा) ध

पुण्डेच रे म इच-म्प्य बार्रवाद, फ्रिट-फ्रिट पुजरुष र पार सुमार रमुनि सीसहेहि संग्रह पुरुष्त (हि.१.१७१: दुमा) 'छ वित्तह देशस्मारीवे हरीत पुरावत्तरामर्गाध्या " (स २७४)।

क देवी पुण = पुनर् (मि १४३) प्रका पुणाप है है है इस कुमार पंजब है, है। पुणार्व स्वा}।

पुणु (मन) वेको पुण = पुनर् (कुमा पि

पुजो देवो पुज = पुनर (बीव) पुनाः प्राष्ट E4) I

पुणांच देवी पुण-रुच, पुणरुच (बाह १)। पुजीस सक [ प्र+नोदम् ] १ प्रेरणा करना। र मस्पन्त दूर करना। पूरोक्रमानो (इस १२,४)।

पुरुष पूर्व (पुरुष) १ तुम कर्म सुहत्व (मीरा ,महा प्रानु ७४३ पाम)। २ वो छारास बेसाः भर्द पूर्व (१ रख) मुद्दाः (१ वि)वः

सद्भातस्य एपट्टा (संबोध १८)। १ वि **भा**युपिवा**मन**पुरूएं' (हुमा)। कस्रसाक्षी [किस्सा] नाग्येन के एक द्मीव कर नाम (धन)। घण पू ["पन] विधावरी का एक स्वनाम-स्थात राजा (पडम क्ष्य ()। मैंत मेत्त वि [यन] पूर्मवासा भाग्यवान् (हे २ १११ चंड) : स्त्रो पुत्र = पुर्व । पुल्ला वि [पूर्ण] १ संपूर्ण परपूर, पूरा

(ध्रीप मन बना)। २ प्रधीपकृमार देवीं का बाक्षिणसम्बद्धाः (१क) । व इक्षुवर समुद्र का समिहासक देव (राम) । ४ तिवि-विहोग पक्ष की पोचकी बसबी और पनगहकी दिवि ेरेपे)। प्रपुत्तः शिवार निरोप ( (६६)। इन्छस दे हिन्द्रमा इंदर्ज दर (ब १)। घोस दू [घोष] देखत वर्ष का एक मानी जिल-देव (सम १३४)। चौद दु ["चन्द्र] १ संपूर्ण मन्द्रमा । २ विद्यापर | ब्रंग के एक राजा का नाम (पदम ४, ४४) । ैप्पस पूं ["प्रस] क्युवर धैप का पविपति देव (राज)। सद् पू ["सद्र] १ स्वताम **इ**यात एक गृहु-पति क्सिने मगबल् महाबीर के पास बीवा नेकर मुक्ति पार्रे भी (धंत)। २ थक-निकास का एक इन्द्र (४ १)। ३ प्रेन धनेक कूप-रिक्षणें का नाम (इक)। ४ यहां का बैध्य-विशेष (भीष विषा १ १) चवा)। मासी भी ["मासी] पूर्णिमा दिवि (रे)। संग्रु [सन] समा योजिक का दुव जिस्ते भवनाम् महाबीर के पास बीक्षा की जी (धनु) । देखी पुस्त – पूर्जु।

पुण्तमासिर्णः 🛍 [पीर्णमासी] विधि-विशेष पूर्विया (भीपा मन)।

पुरुषात्रक्त न [४] सामन्द ते इत वक्ष (६ ६ । (मारु १प्र

प्रण्याकी पूर्णी रिविनि-विदेश प्रजानी **४,१ और १२ मी तिथि (संबोध ४४)** दुवार १६)। २ पूर्णम्य भीर मश्चिम इन्द्र की एक नहारेथी-पत्र-विद्या (इक रामा २) पुरतानहस्त सं वस्थितस्त बरबारमो नर्सार सन्नमहितीयो नर्याचामी तं वहा-पुता(र एका) बहुरृतिया बतना । पुत्ता की [पुत्री] बहुकी (रुपू) ।

वारमा पूर्व मालिभहस्सवि (ठा ४ १🖚 पम २ ४)।

पुण्याग } वेको पुष्ताग (पतन ४३ वेट व व्याम र १६ है ! १६० पि २३१)। पुरुगानी की [के] प्रसरी। कुसदा कुमरी

(देद ३३ पड)। पुष्पाइ पुर [पुष्पाइ] १ पुराय दिल शुम दिवस (दा १६६, घउड) । २ बाच-विशेष

'पुरुषाहरूके' (ह. ४. ११ ७३४) १ पुण्णिमसी 🛍 [पूर्णमासी] पूर्णिया (संबोध ₹**६**) ।

पुणिनमा सी [पूर्तिमा] विवि-विशेष पूर्वु मासी (काप १६४)। यद वृं ["बस्द्र] पूर्विणमाकाचना(महाईका४६)। पुष्णिमासिया देवो पुष्णमासियो (सम

६६ था २८ पुत्रव १ ६)। पुत्त दुं [पुत्र] नइक (अः १ कुमा मुपा दश इदेश प्रासु रक्ष कका सामा १/(२)। वई का ["पदी] बङ्ग्यनासी की (मुदा 2=1) I

पुत्तकीषय पू [पुत्रजीवत] वृत्त-विरोद, पूर्वजीया जियापोदा का पेड्रा पूर्वजीवसरिद्धे (पर्ता १--पत्र ११)। २ म. विद्यापीता का बीज 'पूर्णजीनवनासामंकिएएं' (स पुत्तय र् (पुत्रक) देखो पुत्त (महा) ।

पुचर पुंची [दे] योवि जयतिस्वानः पुतरे योनी (पंकि 🕪)। पुत्रक्य र्थ [पुत्रक] युवता (तिरि ४६१; 42 4Y): पुरुष्टिया ) को [पुत्रिका]राधमक्तित पूरती प्रचर्ता । (पाम कुम्मा ६ प्रवि १६ तुपा

१६६: विरि ८११) । पुचह देवो पुच (शह ११)। पुराणुप्तिय वि [पीत्रानुप्तिक] पीनारि के मोग्य पुतालुपुतिय सिति कपोर्ड (सामा १ १--- १०)। पुष्टिमा भी [पुत्रिम] १ पृथे सदकी

(सबि १७८)। २ पूतनी (रें ६ १३) कुमा) । पुचित्व देवो पुच (बाह १४)।

पुद्रति [पुष्ट] ज्यभित (कामा १ १ त 1 (398 मुटुचेको पिट्ट=प्रत (बाब्रः सैकि १६) । पुरुष वि रिप्राप्तन | विश्वते स्पर्ध दिना द्रो नद्र (स्थम १७ व व)।

पुटुवई देशो पोटुवई (सुन्त १ ६) । ्पुहुबमा भी [प्रोप्तपदा] नजद-विरोध (गुण्म X) 1 पुद्धि 🕊 पुष्टी पोबस्य उपनय (विसे १२१

चेदस को। २ प्रदिशादमा (पहाइ २ १---पप १६)। स्रवि सिन् देप्रकृतानाः २ दुम्मानान् महावीर का एक रिज्य (सन्)। पुट्टि देनो पिट्टि = पृत्त, 'पामपरियस्त पहालो पुद्धि पूर्त समारश्वाम्म (बा ११) ६६ वका प्राप्तः सीचा १६)। पुट्टिकी प्रिष्टि प्रचल प्रस्तः य वि

["रा] ब्रस्त-मनित (ठा२,१—पन ४)। भुद्विकी [स्पृष्टि] सर्वः य वि [जि] सर्व-बन्ति (ठ. २, १)। पुट्टिया वर्षे [प्रश्चिका] प्रस्त से होनेवाली क्रिया—सर्मेशन (ठा २, १)। पुहिया की [स्पृष्टिका] स्पर्ध से होनेकाकी

क्रिया—कर्मवन्त्र (ठा २, १)। पुट्रिस 🖦 पोट्रिस (धनु २) । पुद्रीया की [स्पूछीया] केवी पुद्धिया≃ स्पृत्रिका (नव १०)।

पुट्टीया 🕏 प्रिष्टीया 🖫 प्रकार से होनेनासी क्रिया-कर्मबन्द (सद १ )। पुड पूँ पुर] १ पच्याका-विदेश । २ पूट-परिनित्त नरतु (स्टन ३४) । पुष्ट पुन पुरती १ निकासंकल परस्पर पोवल मिनाम मिनान 'घेनविपुड---'वाहे करक्तपृष्टेख नीयो सो' (बीप महा) ! र बाल बीत धारि का चनका 'शुरुमारड संब्रहार्चेटमा (बना १४ दी) एउट ११६७३ पुत्रा)। ६ डॅबड क्वार, मिसा ह्या थी क्वा 'शिमपुरवंदियो' (क्याः यदा १७३) । ४ धोपवि पदाने का पा<del>व विशेष</del> (लामा १ १६) । १ पनाविन्धिया पान, बोना (रेक्स) । ,६ धाल्कारन बल्कन (बना) यहर)। ७

बक्त पर पुरस्की (सिन्न १६)। अयज

िपाकी १ पट-पानों से कोननि का पाक-विशेष । २ पाल-नियास भीवब-विशेषा एड (१ व) पाएकि' (खामा १ **१**=१) । पुड़ (री) देवो पुच = पुत्र (पि २६२; प्राप्र)। पुरुष्ण नि वि निर्मेष्ट्रत एक्तित (व ६

न [मेदन] नगर, रहर (क्ब) । बाय प्र

पुढश्यी की दि पुरक्तिनी नितनीः कम तियो (वे व दशः विक २६)। पुष्टम पुन [पुटक] देवो पुर 🗕 पुढ (क्वा) १ पुरुपुरा की दि] मुँह से सीटी नजाना एक प्रकार की सम्बद्ध सावाज (पद १)। पुडम देचो पुडम (प्रति ७१) पि १ ४)। पुरुष वेको पुरुष (बता सुपा ६६६) । पुर्वित व [वे] ग्रीह वक्ता २ किन्दु(वे ६, पुविवाकी [पुटिका] पूकी पुक्तिया (११) पुत्र (सी) देखो पुत्त = पुत्र (शस्प)।

पुढ़ें केवी पित्रूं (क्यू ) । पुडम नि [भवम] पहचा (हे १ ११) कुमा पुढावि देवो पुढावी (सामानि ११२ सन १६ ३। पि १७)। काइम "काइम कि ["स्विधिक] प्रतिकी शरीरनामा (क्रीक), (फ्एछ १ मन ११ १) ठा १ माचानि १ . १२)। व्यास देवो पुढेवा-काय (व्यवापि पुडवी की [पृथिवी] १ दुनियी वस्ती मूमि रेवेर ठाव ४)।२ काक्रि-न्यादि प्रखनाता पदाचै इत्यानिरहेत-कृतिका पापारा बादु साहि (दर्ज १)। रे प्रनिनीकाव का जीतः (बी.२)।४ ईस्त-केंद्र के एक शोकपात की धार-मञ्जूषी (at

स्त्रण २३१)। t ( ? ) ( ४ र—पन २ ४)। १ एक विकासी देशी (देश य--पन ४३६) । र अस्तरहा दुरात्मेंत्व भी नावा का नाम (राज)। काश्य वेदी पुरुषि साहय (राज) । साथ नि [कान] प्रतिरी सरीपनामा (कीन) (बानानि ११,२)। बद्र 🗗 [पिति]

चन (ठा ७) । "सस्य न "शका र दुविनी क्य शक्त । २ प्रकिनी का शक्त, इस कुराच थावि (याचा) । देवो पुहुई, पुहुवी। पुढीमूच वि [प्रस्त्भृत] को धन्तव ह्या है (सुपा २३६)। पुरुष वि[प्रयम] पहला प्राच (हेर १६, पुडो स [पूथम्] प्रवद् शिव (पूपा ३६२) थ्यसः ६ : मानकः ४ : बाचा) : व्यंत वि [<sup>\*</sup>अन्द] विभिन्न परिवासनका (भाष**ः** पि च्य)। जाज ⊈ ["जान] प्रतास्य मनुष्य, सावादश नोक (सूच १ ६ ६ ६)। जिय प्रैं जिला] विभिन्न श्राष्ट्री (बूच ११३. १)। "विमाय "वेमाय वि ["विमात्र] मनेक प्रकार का बहुविब (राज का ४ ४<del>--</del> पण २८ )। पुढ़ोक्स वि [दे पूजरजङ] इत्राजुष जिल

म्परियतः अभिन्तं अवती पृद्योजना (पृथः १ 4 ( Y) 1 पुढोषम नि [पुनिक्युपस] दुनिकी नी तथा धव धइन करनेनाक्षा (सूध १ ६, २०)। पुढोसिय वि [पुथिवीकित] पुनिवी के ग्रापन र्ने यहा हुमा (तूम १ १९,१३० माचा)। पुण सक [पू] १ पवित्र अच्छा। २ वल्ब मानिको तुनसीत करना, सन्द करना। पुरुष (१४४ २४१) । पर्लात (कामा १ ं कर्ने, पृष्ठिकद्,पुरूद (१४४ १४९)। पुण्य [पुनर्] इन क्लॉक्स तुरह धन्यस्य---१ नेव. विशेष (विशे ११)। २ धनवारक निरुवय । ३ श्रीकार मस्तादः । ४ क्रितीयः कार्, नारान्तरः। १ प्रमान्तर । ६ सप्रुक्त (प्रश्रह २,६) बढडा कुमा। धौरा जी ६७) जातू ६, ६२। १६० ल्ब्प ७६ थिय)। ७ प्रस्पृति में औ स्वका प्रवीप होता है (निचु १)। करण न [\*करण] फिर से करला। २ मि. जिल्ली फिर ते वराव्य की बाय बहा पीर्ज सेवी न होद पुराक्रपां (छर)। "क्यान दि ["सर्व] क्टि से नमाबना हुमा, ताबा (इस ७६० की क्यू)। पुगंस ["पुनर्] किर कर, गरंबर। पुजबरण व [पुत्र करण] किर किर स्थाना, वार्यार विशेष्ठ (वे 🏗

604

, ६२)। समत्र पुंचित्रवे विद्याचि किर से जन्म-प्रकृत (बहुव ६१७ धीन)। "सम्का ["म्] विर दे विवाहित की जिसका पुनर्तन्त इसा हो वह महिला 'यतिप वर्गास्त्रका ति विवाहिया पण्यन्ते (स्रम र द २०१)। रिव शिविम अपि व्हिसी (इवा एत १ १६) १६) । एतिनि को जिल्लाइचि पुनः मानवैन (पक्षि)। रुचिन [चिक्क] किर से नहा हुमा। २ न पुत्रसर्कः (कस्त १ ८)। स्य थ ("अपि] फिर मा (मैनि १६ प्राह co) : "कास वृ ["पस्] १ न्यम-निधेय (सम १ ६१)। २ माठर्ने मामुरेन के पुत्रकन्म का नाम (सम १६३ पत्रम २ १७२)। भुष्य (का) वेची भुष्य च पूर्व । संत वि [ °सन् ] बूएवरानी (निय)।

प्रणाम कर हिटा हो केवना प्रणाम (६ ६ ६८)। प्रणाम कर हिटा हो केवना प्रणाम (६ ६ ६८)। सन्दर्भ हों हो केवना प्रणाम (६ ६ ६८)।

ची (दुस्त)।
पुजरूत है च इडनरण बार्रबार, किरन्दिर पुजरूत है च इडनरण बार्रबार, किरन्दिर पुजरूत है घर मुम्मर पेनृति चोत्तिहिं चेनीह पुजरूत (है १ १७१ दुम्म) 'छ दि चर् देवन्यारीह हरीत पुजरूतचमर्यव्यार

(स्व २०४)। पुजा सः देवी पुण — पुनर (नि ३४३ पुजाइ | है १ ९६ तुमा पडन १ १७ पुजाई | उसा)।

पुत्र (या) हेपी पुत्र च्यूबर् (हुमा दि रुपो (या)

मुको हेनो पुष्प मधुनर (धीन द्वामा प्राप्त ८०)।

पुणान हेयो पुण-स्व, पुणान्त (सह १)। पुणास कर [ प्र+नोरम् ] १ प्रेरखा बरता। २ सप्या पुर करता। पुणीस्थायो (क्व १२ ४)।

पुण्य देश [पुण्य] र गुन्न कर्ने नृत्य (पीता सटा साथु ७३१ चाम) । २ वो स्तताय देवा स( दुर्प (१ एए) तुरी (१ १६)व

सद्भवस्य एपट्टा (संबोध रत)। १ रि परित्र 'बार्लुस्यावसमूरण' (द्भमा)। इस्रसा की ["क्ट्रस्स प्राप्त स्ट के एक प्रवेध का नाम (पत्र)। पत्र दु ["पत्र] विद्यावर्षे का एक स्वनाम-व्याद एपत्र। (वस्त्र १ ११)। मंत, मंच कि [ यम् ] पूर्वसाला साम्यवाद (१ २,१११ वंड)।

देवी पुद्ध = पुरुष :

पुष्ण वि (पुणी १ संपूर्ण, बरपूर, पूरा (बीप मग बना)। २ पूँ प्रीपकुमार देवी का शामिणाल रूप (नर) । १ वसूबर सपूर ना व्यविद्वायक देन (राज) । ४ तिबि-निरोप पत्र की पाँचनी असभी और पनगढ़नी विधि (मुख १० १६) । १ पुन, शिकार-विरोध । (एक)। बद्धसार्थ विख्यानी चंप्रार्थ पर (ज १)। योस वृ ["पाप] ऐरवव वर्ष का एक मानी जिन-देश (धम ११४)। व्यद र्षु विश्वारी संपूर्ण वश्यमाः। २ विदायरी बेरा के एक राजा का नान (बजब २, ४४) । ैरपभ १ ( प्रिम) इच्चनर द्वीप का समिपति देव (एज)। भार दूं ["भद्रा] १ स्थनाम क्रमत एक गृष्ट्-पवि, जिसने मलबान् महाबीर के पास धोला सेकर पुष्टि पाई वी (धेरा)। २ मरा-निकाय का एक इन्द्र (४ १) । ३ दूंत, धनेक बूट-रिक्टों का माम (इक्)। ४ यज्ञ वा बैत्य-विदेय (भीप-विचा १ १ जवा)। मासी 🛍 ["मामी] पूरितमा विवि (१)। सम १ [सन] समा भीतिक का दूव विसने यपनान् महाबीर के पास बीखा सी थी

पुज्यवस्य न [वि] मानन्य से हुछ वस (दे ६ १३ थाम)।

पुण्यमासिणी भी [पाणमासी] विधि-विशेष

(सन्)। देखी पुरा - पूर्व ।

पूर्वितमा (धीरा नव) ।

पुण्या की [यूर्यों । विविच्छिकेत तन की क, रं और ११ वी विवि (वेबीच १४) पुत्र रं ११) १ पूर्णच्य और मिपुन्य इस रो वह ब्योरी—स-मित्री (क प्राय १) पूरणवर्षक एं जिल्लास्य बनवाकी कार्यार साम्याद्धीयों वरणवाकी वेबा—प्राया(१ एटा) ब्याविमा जना

पुणाइ दुन पुण्याह्] १ पूर्व दिन शुम दिवस (स १६६, मडा) । २ नाम-निरंग नुरक्षात्रदेखें (स ४ १: ४१४) । पुणास्त्री स्मृतिमासी पुण्या (संगेष

१६)।
पुणिनमा की पुनिसा विभिन्नवेण पूर्व मानी (बाद १६४)। यह दू विमन्न पुणिनमा कर (सहा देका ४०)।
पुणिनमा सार (सहा देका ४०)।
पुणिनमा सार पुरुष है।
पुणिन सार पुरुष है।
पुणिन पुणिन से पुण

२८१)।

पूर्वनीया विकाशिका को ये भूतिनेवास्त्रि (पराण १८)। २ त विकाशिका का बीच 'दूर्ववीवक्यानानेकिएक्' (व १९७)। पुराव हैं [पुत्रक] रेको पुष्त (महा)। पुराव हुंकी [वै] योल वर्षात-म्याक् पुत्रदे योगी (स्थिए ४०)। पुराव हैं [पुत्रक] पुराव (विदि ६६१) ६२ (४)।

पुरासिया र की [पुत्रिका] धासर्वाक्या पूत्रती

पुचली | (पास कुम्मा र प्राव १९, मुपा

REE BIR CEE) I

युक्तकावय पू [युक्तकोयक] वृक्ष-विरोध,

पुण्य रेको पुण (माइ २१)। पुण पुरिष्य वि [पीतातुप्रीमह] पुत्र बीचरि के योग्य 'प्रालुप्रीचर विश्व क्योर्ड (पाला १ १—पत्र ४०)। पुण्डिया थी [पुत्रिया] १ पुत्रे सहको (पत्रि १७०)। २ पुत्रसे (१ १ ९०

्रुमा) । पुचित्त रेवी पुच (बाह ११) । पुचा वी [पुत्री] नहकी (वस्यू) । पुणी करें [पोरी] १ नक्ष-वएट प्रुव-नक्षिका (पन ६ संनीत १४)। २ साग्री नटी-नक्स (वर्मीत १७)। देवी पोणी।

पुत्तुक दुं [पुत्र] पत्र सक्का (प्राइ १४)। पुरुष वि [दि] सुद्ध कोमस (व ६ ४२)।

पुरत पुरत (पुरत क) १ तियादि कर्म पुरत्य (सा १)। २ पुरतक वोची कितान 'पुरुष सिद्दानेह' (दून १४४) 'मनहीराने पुरुषमें सहता' (समात ११०)। केंद्रो पोरक।

पुषवी देनो पुरुषी (बंड) ।

पुत्रुणी ) (पै) रेखो पुत्रवी (प्राप्त १२४) पुत्रुषो ) पि ११ ) । मान (पै) पू [नाय] पना (प्राप्त १२४) ।

पुभा देवो पिह= इक्क (छ १)।

पुर्व देशो विश्व (है १ ६०४)। पुष्प १ (में ) देशों पुद्रम पुदुम (वि

तान (१) ज्या प्रकृत प्रकृत (१) प्रमुस ११६४ हरू । पुत्र देशो पुष्पा = पुत्र कह यह इतिस्तुसा चंदो देशिय प्यार्थ (सुर १२ ११व वर्ष व्यवसी कार्या) व्यक्तिय सिंहिस्स्य

भ देव ती कृता)। केलिस वि (कारिक्षत क्रांदिक्षत क्रांदिक्स पूरा की कादकाता (का)। क्रांदिक्स पुरा की कादकाता (का)। क्रांदिक्स पुरा की कादकाता (क्रांदेक्स पुरा कि क्रांदेक्स पुरा कि क्रांदेक्स पुरा केलिस क्रांदेक्स पुरा केलिस क्रांदेक्स क्रांद्रिक्स क्रांद्र

भावं सौ अंभूतविजय ना एक रिज्य (रूप)। पुत्रसम्प पु [पुत्रसञ्जत] मन एक देव-वाति (पाप)।

पुत्राम | देवो पुनाम (बला हुमा परम पुत्राम | २१ ४१। पाम | १ त दुमा का पुत्राम | फून (हुमा है १ १ )।

पुमालिया ) [वें] देवो पुष्णाकी (पुषा पुमाली ) १२१: ११७)।

पुश्चिमा देशो पुण्जिमा (रेमा)।

पुष्पुञ्ज वि [दे] वीतः, पूष्टः चपवित (वे ६ १२)।

पुष्फ म [पुष्प] १ क्रम हसूम (शास ११ क्या सुर ६ ६६: इ.मा) । एक विभागाबास केवियाल-विकेष (देनेन्द्र १९६३ सम ६ ) । १ इसी काएन । ४ विकास । ४ घोचा का एक रोग: ६ भूकेर का विमान (दे र १२४)। इस्टिप् 3 (FF F 1985 [गिरि] एक पर्वत का नाम (परुम ७६ १)। बांत न विभागती एक देन विमान, पुरस्त-क्षेत्र (सम १ )। करंडय प् [ करण्डक] इस्तिशीयं नवर ना एक क्यानः 'पुण्यकरंक्य क्रमधे (विपा २, १)। केट पू कितु १ ऐरनत क्षेत्र का शातनी भागी तीर्थकर-विन्त्रोत (तम ११४) । २ वश्-विरोप प्रदा-विद्यापक केन-विरोध (ठा२ ६)। रान िंडी १ मूल मान मारास्य पुरस्तवी धरेकी करुनेहि पश्चितेहैं (भोव २ १)। २ पुरूप कुत (कम्प)। १ देशो नीचे य (ग्रीप)। चूका को [चूका] १ भगवान् पार्त्वनाव की मुक्त रिक्रमा का शाम (बाग १६९ कृप्य) । २ एक महात्रद्धी प्रतिकाणार्थं की मुवोरय किन्दा (पत्रि)। ३ सुवाहुनुमार की मुक्स वली का नाम (विपा २,१) । चुक्किया की ["पुरिक्स] एक मैन बल्प (निरं: ४) । विभिन्ना की [विनिन्न] पूर्वी से पुरा (शासा १ २)। विशिषा 📽 [भाषिती] कुल विक्लेबाकी की (पाय) । क्रकिया से ["हादिता] पुष्प-पाष-विशेष (चन)। अक्तय न [भारत] एक केन-निमान (सब ६ 🗇 - व्यक्ति पू ["सन्दिस्] एक राजा का नाम (श्रा १) । **"आ**खियाँ 🍽 नास्त्रिया (४५)। इंट 🛊 [ वृत्त्व] १ क्यां जिल्लेंस भी सुविधिताय (सम १३

ठा२ ४)। २ दैशलेलाके इस्ति-नैलाम मिवपित देव (ठा १, १ इक)। १ 🖛 क्रिपेप (सिरि ६६७)। देशी की [रिन्की] दमयन्त्री भी भारत का नाम एक एवी (दूप ४०)। "मास्तिया और "नास्त्रियी पण का बैट---डेटस (हंडू ४)। <sup>व</sup>निज्ञास ई "निवास ] पुष्प-रख (बीन ३)। पुर<sup>क</sup> ["पुर] पाटकियुव पटना शहर (यव)। पूरम दें [ पूरक] पूरा का रक्ता विके (लाया १ १६) । प्यस न [मम] एक देव-विमान (सम ६८)। बलि र् [विडि] क्यबार पुष्य-पूजा (पाप )। बाम 🕽 बाण कामरेव (रख)। सद् वीव िभन्नो नगर-विशेष पटनाशहर (स्टब) । र्मन मि ("बत् ] पुष्पवाचा (शासा १ १)। माछ न माछी पैतान नी पतर मेरि का एक नवर (इक)। साक्षा की ["साम्"] उर्घ्य सोह में धानेनाबी एक सिन्द्रधाएँ केनी (ठाद---पत्र ४३७)। "य पुं<sup>®</sup>क] १ फेन क्रिक्डीर (पाप) । २ म. देखनेड का एक पारिवार्तिक निमान रैक-विज्ञान-विदेश (का दः इक परम ७६, ५०८ धीए) १ ६ पूज्य कुच (क्य्म) । ४ ततात्रका एक पुष्पाकार बाजूपल (व २)। देशो अनर गः सर्वे सापानी [सानी] 🖛 विततेनाली भी (पाया दे १ ६) । होस न "फ्रीहर्य] एक वेच-विमान (श्रम ३)। नई और विती १ ऋतुमती और (१६ १४ वा ४६ )। २ सस्युक्त मानक निर्देश पेना की एक बाद-सक्रियी (दा ४ । सामा र)। १ दीसर्वे जिनदेश की प्रवर्तिनी---प्रपुत्र साम्बीका नाम (तम १४२) <sup>यह</sup> र)। ४ वैस्म-विश्वेष (क्य)। वण्य न ["वर्ण] एक केर-विमाल (बग १ )। "सिंग न ["अर्ज्ज] एक देव-विमान (तन देव) । सिद्ध न "सिद्ध देन-विमल-विशेष (तप १)। सुप पु [धारु] व्यक्ति नामक नाम (इप) । ज़िला न [ीवर्च] एक देव-विशान (सम ६०)।

पुष्पस्त व [व] कैमा, तथैर का एक भीवधी संव (तक्य १ % १%)। पुष्पस्त की [व] कुछे, शिवा की व्यक्ति (वे ६ ११)। पुरिकाम नि [पुरियन] नुमुनित संगठ-युरर (बर्मीके १४०- कृमा, खामा १ ११ मुद्रा ६६) । पुरिषात्रा स्रो [ दे ] रेको पुरमा (गय) । परिक्रका की [पुष्पिता] एक पैत्र मानन दंव (तिर १ ६) । पुरिषय पुंगी [पुष्पत्व] पुष्पत (हे २, 2XX) 1 पुर्व्या [ह] देनो पुण्या (वर्)। पुगपुत्रा में कि निपंप (बोमन्न) ना मरिन

'कुराबद्द देनेक्टीन्य दुरवधी पुरकृषामुर्धनाएं (मा १२१)। पुष्तु सर न [पुष्यासर] एक विमान (कप्प)। बहिमत न ["वर्तमङ] एक देव-विधान (बब १८)। पुष्कृत्वरा । श्री [पुष्पात्वरा] शकर की

पुष्पोत्तरा एक बार्ड (एम्मा १ १७--पत्र १२१, पग्गापु १०~नत्र १६१)। पुष्कोदय न [पुष्पादक] दुष्प-एउ स मिषित बस (गुपा १ (--पत्र ११)।

पुरस्तापय ) नि [पुरपापरा ] पूरा नाह पुरस्तामा । बरनेवाना पुरनेवाना (बुन) (हा १ मिन्पर ११६)।

पुस र्ष [ पुंस् ] १ पूरप कठ भीषत्रवारी विनुत्रतेल (वेच ४ ७२) 'पुमलपापम मुनार राजि ("त १४ ६) हा क बीत)। २ दूरर-देर (कम्ब २, ६ )। आग्रमणी भी ("आज्ञापनी देश की बाल ध्रेशनी बापा बचा-विधा (बग्छ ११) । पद्मायमा क्षी [प्रतापनी] अत्यानिक्षेत्र पूरव के सदातों का प्रतिशाक्त करतेवानी बहुवा (पएउ ११--पत्र १६४)। यक्त्र म ['बचन] पुनिष रुख का रुक्तारत (कान्त ११-- वर २७ )।

पुस्स (घर) नक [ एडा ] रेगन्छ । पुस्मार (बाह १६६)। पुषार्थं की [ इ ] पुत्र-वरेत क्यर के लीक वा ऋष पूर्वत वयोध्याने (वन ११ --4x 13t) 1

पुषायद्वा देनो पुत्राय।

पुरुष [पुर] १ सम्य शत्र (कुमा; दूर ४१८) । २ रागेर यह (१,५४१८) । "पंद र्दु विम्द्र] विद्यावा वैद्यका एक समा (पराय, ४४)। समग वि ["सद्त] (उत्त २ १८)। यद्भु [पिति] नगर का ग्रीकाति (मरि)। तर न ['तर]

बीत नगर. (सवा; परन् १ ४)। वरी की िंबसी केंद्र नगरी (छावा १ १: इस मूर २, १६२)। बाल पू [ पाछ] नपर ব্যায় ব্যায় (মৰি)। पुर केचो पुर 'पूरकम्माच्य प्रपुच्छा' (बह १)।

पुरपञ्ज } देशो पुरव्य (धरि) । पुरप्त

पुरश्रो व [ पुरनम् ] । वहतः, वार्व (धन १६७ ठा४ २० ख ६१ ; हुमा बीर) । र पहले पूर्व में पूरवो कव बंदात पुरेकम्में (धीत ४८६)।

पुरंब [पुरम्] १ पहले पूर्वमें। २ समत 'वप रो में बाँचे समुद्रिष्ट समाने पन्दा पूर्व च रो विजनमीयन्त्रियितम्मानने मावि विद्वतिस्वा (ठा २, १--पत्र ११७) । ३ बदे, बागः सम वि शिमी बद गम्भी पूर्ववर्ती (पूप रे वे वे वे)। देवी पुर, पुरा पुरंत्रव पू [पुरम्य] एक विचायर चका ।

पुर न [पुर] एक विचायर नगर (६क)। प्रसिद्ध प्रिस्टा रे इन केव्यत । २ क्षत्रम्पविदेव (हे १ १४०)। १ दूप विदेय, बम्ब वा मेड् 'पुरेश्रहमूमदान नुमिणेण नुस्या बायाँ (इन १८६ ही)। ४ एक राजीर (प्रतम २१ क) । अ.सन्दर कुम्ब नगर था एक विचायर राजा (पटन ६ १७ )। असा भी [ यराम] एक राम-गरमा का मान (उप १०१) : दिसि

को [ दिया ] पूर्व विका (पर १४२ ध)। पुर्ता } मी [पुरन्धी] १ कह कुण्यतानी पुरंधी | भी । २ वीत चीर कुरतानी क्षी (दुना दुन १ ०० मुता २६ वाम)। ३ ( यनेव बान पर्ने व्यानी हुई पूरे (बागू)। पुर (का) देवो पूर -पूरव्। पूरद (रिंग) । । पुरवह देवो पुरकाप्त (मूच २ २, १०) । ।

पुरद्धार वृं [पुरस्कार] र यामे कला यवक स्थाप्त (धाषा )। ? सम्मान पादर (44 A ) ) पुरक्रमाह वि [पुरस्कृत] १ आये विया ह्या

(बा६) । २ पूर्ववर्ती धानामी 'बहुए।-समयपुरस्को पीगमने वर्गारेति' (मग १, १)। पुरवद्या देखी पुरत्या (राज)। पुरुष्धिम मेनो पुरुत्यम (धार १--- पम ६० नुग्य २०—पत्र २०० वि ५६५)। दादिणा की [ विभिणा ] पूर्व-वितस दिया ग्रीनकोस (ठा १०--पत्र ४७६)। पुर्राच्छमा रेको पुरित्यमा (छ १ --पन

YOE) I पुरस्क्रिमिष्ठ देशा पुरस्यिमिष्ठ (श्रम ६६)। पुरस्य रि [पुटम्थ] मार्गे एत हुमा मा वर्ती पुरस्तरः 'पूर्व' होड समार्थ रहे वर्ग हेल' (हा १ ११ टी) जिल विद्यालया इत्य परावादि हु पूरायाँ (बा १४) । पुरस्य ।म[पुरस्तान्] रेपह्ले कान पुरत्यका का का की बरेवा से कारे। 'तन्तुर पुरचा 'पुरस्कार (गुरा ३१ ) भौतरप पण्याय पूराचयोगं (इस ३२ ३१),

१ २) । २ पूर्वन्याः 'पूरापामिमुहे' (कप-भीर मर रामा १ १~नत्र १६)। पुरस्थिम वि [पीरम्स्य पूर्व] १ पूर्व गी वरक वा 'उत्तर-पुरन्तिमे दिशीमाए' (कप्पा र्थार) । २ व. वृत्रं रियाः 'पुरक्षे पृथीयोग्तुं (एम्पा १ १--पत्र १४) धता)।

'माश्रीतियं पुरुषियं पुरस्ता' (तुम १ ६

पुर्यस्थमा भी [पूषा]पूर्व किया 'पूर्यस्थमधी वा रिसाधी धानमी (माचाः मृष्य १४ वटि)। पुर्रात्भीमञ्ज वि [पीरास्प] पूर्व विकास पूर्व दिशा में स्थित (बिता १ दिश्हर)। पुरद्व र् [पुराइव] भागत् क्रान्तिव 'पूरदेरिंगणस्त्र निष्मार्ज' (बस्म ४ ६०)। पुरुष देनी पुरुष (गरह है ४ २७ - ३१३)। पुरस्मर वि [पुरस्मर] बद्रशामी (हन्तु) । प्रा भी [ डर् ] सार्थ, स्त्रर (दे १ १६) । पुरा बनो पुरिहा च दूस (तुम ११३

रश्रास्य ११)। इव क्यारि[क्रि] दुर्व नान में हिमा हुया (बरि: दुन्न १११) ह भन र् [भर] र्व रूप (रूप ४०६) ।

पुरामण मि [पुरावत] पुराना प्राचीत । क्य क्यी (नार-बेट १६१)।

पुराष्ट्र पत्र [पुरा + 6] बारे करेगा। ACCR. (Ed. 6 x 5 x) 1

dan be [dan] i dour down (महार करा स (२)। न म आवारि-मीर-महीत क्षत्र विकेश पुरस्का के शांच निवर्ते वर्त-तत्त्व निवरित दिया बादा

हो वह साब (बर्गीव देव अवि)। पुरिस वु [पुरुष] क्रीक्रम्य (सम्य १९९)। पुरिकोबेर दें व [पुरीकोबेर] का-सिकेन

पुरिस्थिमा को पुरस्थिमा (हुम ६ १ ६)। ( ( Ex, 40)

पुरिम केनो पुरुष व पूर्व (हे २, १९१) प्राक १व) कर पुगा)। श्वेषवधी कर बामी परिमस्त व विकासस व विकास (पव करा वंश १० १) । दश वंश [ार्थ] १ पूर्वाचे । २ प्रत्यक्वाम-विशेष (वेचा प्र पारि) । १ तमनियोग मिरिस्टरिक तम (बनाव ४७) । "विद्वय वि ["विवत्र] पुरिमहर्क प्रयास्त्रातः करनेनाता (स्या २

पुरिस मि [पीरस्य] सक्तम, मक्तम साथे क्या क्य इन्त्रुपक्को स्मानेषु वस्मानीत स मिन्बर्स । इरिस्मुदे सम्मर्त (संबोध ६२) । पुरिस पू [के] प्रश्मेश प्रशिक्षण की क्रिया-विरोत व प्रतिमानम बीमा (प्रोप १६१)।

पुरिमवास न [पुरिमवाङ] नवर-विकेष (जिला १ ३। घीन)। पुरिमिक्ष वि [पूर्वीय] पहुँचे का पुरायम श्राचीना 'मापि गर्च पुरिमाल्बा, ता कि

सम्देशि एवं दीमी (बेदम ११४) । पुरिक है [है] हैल्ड, शास्त (बर्.) । पुरिकार [पुरावन] इरान्स पूत्रे का. बूबेबर्सी (बिसे १९९६) है ए १६९)।

पुरिक्ष वि [पीरसन] पुरेन्स पुरेनसी सक्तानी (के १६ के के रू १६६ आधा पुरिक वि [पीर] पुर-वर माबीक (अस

10 to 141) पुरिक के [क] अवट, क्षेष्ठ (के ब. १६) ।

विश्व देवी पुरिवा = पूरा पुरस् प्रियो ( 2 2 44× 50 4x ) 1

पुरिक्रमेन र् [मे] बहुद् बालन (र ८ ११) । पुरिक्रमहाला की [के] छोन की बात (के ६,

पुरिक्स च [पुरा] । निरुपर क्रिया-कराव भिन्दोर-पीर्त किया करता । २ प्राचीत्। पुराना। १ पुराने समय में। ४ सानी। १ निकट, समितित । १ वीत्रास, पुराष्ट्रत (दे

२ १९४)। तिरस व [ तरम ] बाह्य बबत (हु उ

पुरिस पूर्ण [पुरुष] १ दूमला, तर, मर्व (ह

१ १२४१ मना कुमा प्रापु १२६)। 'सन्वेरित ना पुरिसारित को (धाना २ ११ १०)। २ बीच बीचारमा (विसे २ ६ सूर्य २ १ २६) । इ.स्लर (ग्रूप २,१ २६) । ४ राष्ट्र है बाग्य साम्ने का काहारि-विमित्रं क्रीलकः। १ पुरुष-सरीर (एक्रि) । स्त्राप्त "बाद, "गार के ["बार] र वीबद, पुस्तान, तैस-इक्टर देख-सक्त (सार्थ रेड कार तेर र १७ कार ४७) । र पुरस्य स

स्रोतमाल (सीन)। "साय प्रं ["आव] १ पुक्त । २ पुक्त-बाठीन (सुम २ १ ६, ७) सर १ २।४१)। जुना म [मुग] क्रम-स्थित पुरुष (तम ६॥) । जोह पू [क्येष्ठ] मरुस्त पुस्त (वेचा १७ १) । न्त "त्त्रम न [त्त्र] गोल इत्वरन निष् विवयुग्रसम्बद्धिया पुरिशा पुरिशासमुनिति (बंद २ २४ महा। द्वारा ४)। अब द

िंकी वर्ग मर्च वामग्रीर गोम का पुरस 'समापुरिकामकाराजमस्त्रमहो मानुषी बनी एसी (बर्मीन बरा कुना) बुगा १९६) । 'पुंबरीम इ ['पुक्बरीक] इस समर्थाक्ष्मी बास में कराब का बासुकें

(पब २१)। व्यक्तीय वि ['प्रयोत] १ **१**रार-भिन्ति । २ बीव-र्यक्त (सूच २, १ १६)। मेद १ मिम] यह वितेष वियो

बुस्त का होम किया जाम वह यह (एक) । बार देवो कार (शरक सुर १ १६। सुना विकेष दूसन के ग्रामाञ्चल विक राष्ट्रपालने की पुरिस्तीलमा है पूस्त केल पुरस्ता २७१)। "छनसाम न ["छद्याम] कता

एक सामुद्रिक कता (व २) । "स्थित, न" ['fun] genfes | "fanfera 1 िक्रिक्रसिक्त प्रवस्तिति है को प्रवाहण हो नइ (खिरि) । बयण न [वसन] पुलिय रुम्ब (माना २ ४ १ १)। बर पू [बर] के पुरूर (यीप)। बरगंभहरिय प्रे [काराम्बद्धिन] । पूर्वी में बेह बल्बहरती के तुस्य । २ विबन्देन (कर, पवि)।

वर्षक्रीय पुं ['बरपुण्डतिक] १ पृथ्मी म् क्षेष्ठ पच के समाल । २ जिल्लीका साईन (बन पडि) । "भिजय पु ["विकय

विखय] बान-विशेष (द्वप २ २ २७)। बेव पुंचित्र १ बर्मनिकेन जिसके स्त्र हे पूरत को बी संयोग की शब्द क

है वह करों। २ दूरत को की नोड की परि साया (मएल २६) सम १६ )। स्टिंह सीम प्र ["सिंह] र पुरनी में लिए है बमान, में है पुरुष । २ वे किनरेप मि बराबान् (धनाः वडि)। ३ सम्बान् वर्तरार्व के प्रथम भागक का नाम (विचार १७८)। ४ स्थ सवस्पिती काल में क्यांत वीक्ट

बानुदेश (सम १ र, पत्रम र, १९६) ह शा) । सेण पु सिन्। क्ल नेमिनान के पास बीजा सेकर मीख कानेना एक बलाइन महर्ति औ बातुरेत के धन पुत्र के (संत १४) । २ मनवान् बहानी पास बीक्सा लेकर प्रमुक्तर विमान में । होनेबाडे एक मुद्दि को राजा संदि पुत्र वे (एव १)। व्याणिक, शार्व

[श्वानीय] क्यावेव पूर्व साप्त पुर ( **1** | **1** | पुरिसम्बरिका को पुरुषक्ररिक पुक्तार्थ, प्रवरण (रस ४, २ ६) ।

विश्वाम मन [ प्रस्ताम ] श्लोक करना । वक पुरिसामंत (का ११६१११) पुरिसादम न [पुरुगमित] निन्देन (8 6 xs)1 पुरिसादर मि [पुरुवायिष्]

करनेवामा 'बरपुरिसाधीर विक्रीधी मिताल द देखें, (बा ४५ A.५) व [प्रक्रोचम] १ पुरिस्चम ३

——भोजनीत्मकः (श्राचार १ २ ६ २ १

४ १)। सञ्चय वि ("संस्तृत्" । पूर्व

परिचितः। २ स्व-पतः कःनः सगा (माचा २

पुरो देखो पुरे (मोह ४६ दूमा)। अर्था

वि [°ग] सम्रगामी, सम्रैसर (प्रति ४ ३ विसे

२१४०)। सम वि भिम्नी बह्नो सर्वे

(उप प १११) । साइ वि ["सागिम्]

बोप को ब्रोड़ कर पुरस-मात्र को प्रकृत करने

पुराकर सङ [पुरस् + क्ष] र यापे करना।

२ स्वीकार करता । ३ सम्मान करता । संङ्

पुरोक्तिम, पुरोकार (मा १६ सूम १,

पुरोचमपुर न [पुरोचमपुर] एक विद्यापर

बाला (नार--विक ६७)।

₹ ₹ ₹X) ;

नवर का गाम (इक) ।

टी वर्गीव १४६)।

पुरेस पू [पुरेश] मगर-स्वामी (मवि)।

१ ४ ३)।

पुरी--पुरमय देन धहेन् (सम १३ मन पत्रि) : ६ जीवा विवरणानियति, चतुर्वे वासुदेव (सम ७ ; पतम ४, १११) । ४ भगवान् धनन्तनाच का प्रवस भावक (विचार ३७८)। १ भीकृष्ण (सम्मत २१६)। प्रियो प्रियो नवधे स्वर (दुमा) । नाह प्रं [नाथ] नगरी का समिपति स्तवा (उप ७२व टी) ा पुरीस पून [पुरीय] विद्वा (लाया १ क च्य १११ टी १२ टी पाम) पुत्तपूरीचे य रिक्विति' (वर्गेवि १६) । पुरु हुँ [पुरु] १ स्व-गाम-स्याठ एक राजा (मनि१७६)। २ वि प्रदुर, प्रमुख। इसी. इ (प्राकृ २८)। पुरुष्रिमा की [व] अलरुठा, प्रामुक्ता पुरुमिष्ठ ध्वो पुरिमिष्ठ (१७४)। पुरुष १ देको पुष्प=पूर्व 'छ क्रिसो पुरुष विद्वारती (स्वय ४४) प्रमंद-पुरोपग र्थ [पुरोपक] बृश-विरोप (बीप) । धार्छरपु सनपुरम् (मुपा २२) नाट--मुक्स प्रवेद र्थ [प्रवेषस् ] प्रवेदित (स्त ७२० १२१ वि १२१)। पुस्स (ग्री) देवो पुरेस (प्राकृत दे स्वप्न २६ सवि वशः प्रती १६) । पुरुसोत्तम (सौ) देवो पुरिसोत्तम (पि 1 (YF \$ पुरुद्धम वृं [के] पुरु सम्बू (हे ६ ११)। पुरुद्द्रम पु [पुरुद्द्रन] एतः, देव-राज (गतः) । पुन्तरप र् [पुन्तरवस ] एक बंध-बंधीय धना (रि४ ४ ४ १)। पुरे देखों पुरं 'जस्त शत्ति पुरे पत्रदा मरुदे

वस्य दुवो सिया (धाषा)। इ.ह वि [कुम]

भागे विया ह्या पूर्व में किया हुआ (बीप

तूप १ १ २ १ छत्त १ ३)। अस्म

न ["कमन्] पहने करने का काम पूर्व में

को जातो किया। 'पुरसीकर्म जे तु से पुरेकमा'

[मोन ४व६ है १ २०)। बार पु [िदार]

बंग्मान, घारर (बत्त २६ का मूख २६, ७)।

बारड देवो बड (प्राप्त १६—गव ७६६:

पएइ १ १)। वाय वृं ["बान] १ सन्तेर

बारू। २ पूर्व दिसा का पान (खाल ह

११-पत्र १७१) । संराहि की दि

पुरोक्क कि [दे] १ कियम सबसा २ पण्डोकः (१) (दे ६ १४) । ६ तृत् मादृत भूमि का नास्तु (दे ६ ११)। ४ यप्रद्रार, दरवानाना समसाग (सीम ६२२)। १ नाडा, बाउका क्षेत्रसम्बद्ध पर्से मज्यः बसङ्ग पुरोहरूसंतो । सङ् विद्वीए दक्षिक ठाएकमा (नुपार४४: नुहुर) । पुरेदिम र् [पुरेदित] पूर्ववा सातक होन पादि से शान्त-कर्म करनेवाका बाह्यस (द्रमा काल) । पुष्ट पुष्ट विश्व को साम पुनकी से पुना मिण्यंति' (ठा १ ---पत्र १२१)। पुढ वि[पुछ] समुच्छित प्रयतः 'पुनिक्टुसाए' (43 t t4): पुछ बक [पुल ] बत्रत होता (रस १ **(15**) पुष ) नव [हर्र ] देतना। पुनर पुनगर पुक्षम है (बाह कर है ४ देवदे। मान व ६१)। पुनएइ (बार १ ६३) पुनर्शि (बा १११)। बर पुर्छन पुर्वान पुत्रवंत (बण्डू माट-मामाबि ६ पडम व अ स )

सुर ११ १२ 17 70x 0 २१२) । संक्र. पुश्चक्क (स ६८१) । पुरुष पुं [पुष्टक] १ रोमाब (हुमा)। २ च्यत-विरोध, मिए की एक काति (पर्यूण १) वत १६ ७०३ कप्प)। १ वसवर कस्तु क्रियेप पाह का एक मेव 'सीमावारपुतु(? स)-मर्चुनुमार-- (पएइ १ १--पत्र **७**)। कंड पून ["काण्ड] रत्नप्रमा नरर-पृथिशी काएक कार्या (ठा १) र पुडअग वि [द्यान] देवनेवाला, प्रेसक पुळमण न [पुसकन] पुनकित होना (हम्पू)। पुरुमाञ बह [इत्+इन्] स्वसित होना बकास पाना। पुत्रमाग्रह (हे ४ २ २)। सङ्ग-पुत्तकालमा ग (कुमा)। पुष्टहरू वि [हए] देवा हुमा (गा ११वा सुर रे४ रेर पाप)। पुरुष्का वि [पुरुष्कित] धैमावित (पाका कुमा ४ १६ कप्यः महासार )। पुत्रहान पर [ पुरुष्टाय् ] रोगावित होता। नक पुरुद्धांत (वस्)। पुक्रक रि [पुक्रकिम्] येमाब पुक येमा-चित्र (पमा १६४)। पुत्रपंत देवते पुरस्य = हत् । पुर्लमञ्ज दुं [दे] भगर गीरा (पर्)। पुर्लपुक्त न [वे] बनवरत निरन्तर (पर्छा १ १---पत्र ४४, धीर) । पुरुष्कः वृदेशो पुरुष्का = पुत्रकः (पि २ व दिः पुँसगो लागे ११ समे १४ कम)। पुरुष पूर्व [पुरुक्त] बीट-विशेष (सावा १ 14 t) i पुछाग ) पून [पुद्धाट] १ बसार बन्न 'बन्न पुत्राय रेमनारं भन्न प्रशासकोए (संबोध २० पर १३)- 'निन्तारए होर बहा पुनाए' (तुम १ ७ २६)। १ चना साहि गुल्क मन (उत्त ६ १२ नुजूद १२)। १ सह तुत स्वति दुर्गन्य इस्य । ४ दुर रक्षशासा इच्या 'विविहं होइ पुषायं बाग्छे गंधे यस्त इताय्य' (इत् १)। १ ई माने संबन की निस्तार वनानेशना मुन्दि शिविनाकारी शापुर्मीका एक मेद (इस ३ २३ ३,३ संबोध १८ पत्र ११)।

िक्रिक्सिक् ] पुरुष-सरीर हे थी मुख हुआ हो बहु (छंकि) । बबल न ["बजन] पुचिय रूप्य (बाका २ ४ १ १)। बर र् िंपर | बेह पुरुष (धीप) । बरगंभइत्थि <u>प</u> ["वरगन्भद्रश्चित्रम्] १ पूर्व्यो में श्रेष्ठ मन्बद्दरती के तुस्य । २ किन-देन (भन, पडि)। वर्ष्ट्रक्रीय पु [वरपुण्डरीक] १ पुर्ली में भेहपद के समान । २ जिल-के प्रार्त् (स्व, पडि) । विजय पू विभय विक्य हाल-विकेप (सूम २ २ २७)। दिय पुर्विद् १ कर्म-नितेष जिलके करम से पुस्त को की-संबीन की है नह कर्म। २ पुरत को ब्रो-योग की सर्ति-नाना (बस्छ २३) बग १६)। सिंह सीक्ष पु ["सिंका] १ पूरनो में लिया के **स्मान, बॉह पुरूप । १ ट्रॉफ्ल देव जिल** भवपाल् (बच्छ पत्रि) । ३ अस्पत्रल् वर्तनार के प्रवय शावक का नाम (विकार १७४)। ४ इब ध्रेश्टरियी कान में करना श्रीकर्र बालुकेन (समार र, प्रज्ञाम र, १२६) पर २१)। सेज दू["सेन]र मनगर मेथिनाव के पास धीका सेकर भीवा बालेवाता एक प्रत्यक्ष बहुर्विको बातुरैन के सम्बद्धन पुत्र वे (ब्रेट १४) । २ क्यवान् महानीर के पास दोला सेकर अनुसर दिनान में प्रतान होनेकाने एक मुनि वो राजा संस्कित ने पुत्र चे(शनुर्)। दिश्यिक्य विश्पीत्र ई ["इस्मीय] बनादेव दुर्ख, धात पुरूष (इन पुरिसन्तरिमा को [पुरुपमारिमा वा] पुरुवार्षे, प्रयत्न (स्त १, २, ६) । पुरिमाध सर [ पुरुवाय् ] विषयेत वैद्वर करन । बह्न पुरिमार्थत (स १८६/१६१)। पुरिसाइअ न [पुरुगविन] विपर्धत वैद्वन ( t r r r ) 1 पुरिसाहर वि [पुरुपाविद्] विवरीत ख करनेशका 'दरपुरिताहरि विश्वविदि गुमाउ पुरिशास में दुनमें (ना ६२ ४४६)। पुरिसुत्तम ) ई [पुरुषोत्तम] १ वस्त्र

पुराय वि [पुराय] रे पुराय, पुरायन

[कि**ड**] पुरतिष्ठ । किंगसिद 🖠

पुराञ्चल---पुरिसोत्तमः

्यस न्युष्य । पुस्सदेशय न [पुष्यदेवत] वैनेतर शास विशेष (एवि ११४)।

पहलायण न पुष्पायण] योग क्रिये (गुरू १ द६)। पुर्वे क्रियो चित्र = पुष्प हि १ देवक)। पुर्वे क्रियो कि मियो बन्न भी हुवा हुवा है (बाज है)। पुरुष्के पुर्विची रहतीय नामुक्त भी पुरुष्के पुर्विची रहतीय नामुक्त भी

प्रकार की। वाल देशे पाल (प्रकार की)।

पुद्दस्सर वृ[पृथियीश्वर] राजा (कृत १ 💩 २४१) ।

पुरत्त न [युपवस्त्र] १ भेद वार्षस्य (यहा)। १ विस्तार (रात)। १ वहार (यत १ २ टा १ )। ४ वि निज्ञ समन 'सम्बाहरूरस्य' (रिमे १ ६१)। "प्रियक्त न ["विज्ञद्र]।

कुस ध्यात का एक मेर (संदीप ११)। रेको पुतुत्त पोहका। पुरुत्तिय रेको पोहसिय (भग)।

पुहत्तिय देखो पोहास्त्रय (संग)। पुह्य देखो पिह्≈ प्रमकः 'पुह्य देशीरा' (दुन्ग)। पुद्धि } देखो पुद्धशी पुद्धदे (पि देवदा सा

(दुना) क्यो पुर्व (त १ वर्ष । वा पुर्व ) १४० प्राप्त प्राप्त था १११ वम १११ व ११२) १ प्रमुप्त १११ व ११२) १ प्रमुप्त १११ व ११२) १ प्रमुप्त १११ । प्रमुप्त १९४ । (प्रमुप्त ) व्यव हुं [प्युट] १ प्रमुप्त (यति १) । प्रमुप्त हुं [प्रमुप्त ) १ प्रमुप्त विकार प्रमुप्त । प्रमुप्त विकार प्रमुप्त । प्रमुप्त विकार प्रमुप्त । प्रमुप्त विकार ११४ । प्रमुप्त । प्रमुप्त विकार ११४ । प्रमुप्त विकार । प्रमुप्त विकार विकार । प्रमुप्त विकार विकार । प्रमुप्त विकार विकार

(आहर राम)। पुतुत्त न [प्रमानस्य] १ दो से मत तक नी संस्था (सम ४४° मी १ । मन)। र—देवी पुत्तस्य (ता १ —पत्र ४७१ ४११)।

पुदुषी वेको पुदुइ (दे २ ११३) । पूरेजो पुँ। सुझ पुँ [शुक्र] बोला सर्व

निक-पशि (ता १६६ म)।
पूजा एक [पूजामू ] पूजा करता। पूर्व (महा)।कर्म पूरवाधि (पदा)। वह पूर्वत (पुता २१४)। वजक पूरवाद (पदा कर, १)। क पुत्रपोळ पूर्यक्रम, पूजाधिक (जा-पूजा १११: चवर ११६: मीप एवा १ १ दी विकास । वह से दी)। के पूजाला (महा)।

पुत्र न हिंगे परि दे रहे। पुत्र न हिंगे के परि दे रहे। पुत्र न हिंगे दे के फर्मरेरोन दुसरे न सार (तार)। रेने फर्मरेरोन दुसरे के रेपरे)। देवी पुत्र। एक्सी फर्सी की फिर्की पुत्रके सा देह (पन्न रहे करे.

पूम म पिने त्यान दूर्या साहि गुरामा, सम्मनान करना, देर-मंदिर कराना साहि सम्मन्द्र के दिल ना नार्य न्यपिदाणि स्द्रुपारिय (स ०११)। पूम वि पूर्वा है धरिन दूर्य (शासा है ३ सीर)। २ म. समझार के लिने ना ज्यवास (संबोध १.५) १ १ वि सूप मार्वि से सफ्र-तृप-रहित किया हुमा (णामा १ ७--पत्र ११६)।

पूजन [पूय] पीव दुर्मन्य रक्ष प्रशासे निकत्ता हुमा सन्दासकेद विभग्न हुमानून (परहुर र स्हासारे क)।

पूजाण न [पूजान] पूजा सेवा (क्रुमा धीप सुपाप्रदर्भ महा)।

पूक्षणाकी [पूजना] १ क्यार देखें (पर्यु २ १ से ७६३: संबोध १) । २ काम विभूग (पूज १ ६ ४ १७) । प्रभाग १ की प्रिन्ता । काक्ष्मत्यो कान्त

पूजागा } की [पूनना] १ कुण स्पन्तचे दाहन, पूजागी } काहिनी (सूप १ १ ४ १३) विकास ४१ सुना २३ पट्टर ४)। २ साक्ट, भेड़ी सेपी (सूप १ १ ४ १३)। पूजाय वि [पूनक] पूना करनेवासा (सूर

१३ १४३)। पूसर देवो पोर = पूकर (सा १४ मी १४)। पूसस पुं[पूप] सपूप पूषा साच-विकेष

(देश १८)। पूझिक्षियाची [पूपिका] अनर देती (पव ४)।

पूजाकी [वे] पिताय-पृष्टिता मुताबिट की (देद देर)। पूजा धी [पूजा] पुरुष धर्या सेवा (कूमा)।

सत्त न [भक्त] पूरव के सिद निप्पारित भोजन (कृद २)। सह प्र[मह] पूर्वत्वन (कृद २)। पह प्र[मह] प्रतालन (कृद २)। पह प्र[मध] प्रतालन कृत्वन प्रकाल का नाम प्रकालन विकासित (जनम र २१६)। पिंद्व, स्त्रू वि[है] पनान्योच (गुना ४६१ धनि ११८)।

पूमाहिक रि [पूजाहाय] पृतित-पूनक (हा

पूर्व [वृति] र बूमेंची बूगेंचराना (गठम ४४ रहे जा ७२० ही तेंदु ४१) १। सा-दिस (पंचा ११ १) १ की दुरेना १४ स्मानिता (तुंदु ६०) १ किया हा एक सेंग दुविनमें (निह २६०)। ६ ऐस-रिटेग एक मानिका-रिम माजनोय (विहे २०)। ७ पूर्व सैंग पर्याद्यानित्र (महा), पूर वतारिहानी (तुर १४ ४६) 'बहुत मुद्दी

पुरुक्त्यस्त्ती<sup>'</sup> (उत्तः १४)। दः दुन-विदेव एकास्पिक कुछ की एक बाह्या 'पूर्व य निव कर्पा, (तर्पक्ष ६--तक १६)। कम्म पून [कर्मम्] मुनि-मिला वा एक दोव पनित बल्यु में ब्रांतिक बल्यु की मिलाकर से कारी मित्राका महरू (टाइ ४ टी मीफ पत्रा १६ १)। स वि [सन्] र दुनेची। <sup>२ धारित</sup> (त्रु १८) । पुर नि [पूर्वि] हुनित सहा द्वा (माचा १ १ ८ ४) । विमाग कृत [ विषयाक] मर्गरनाम मरमों मी धनी (इस १, २ पृष्टम वि [पृथित] कार हेनी (सम १ )। पृत्रमालुग न [४ पुरवालुक] बन में हीने-वानी वक्षणानिविद्या (माचा २ १ ८--हिल्ली केती पूक्ष क्लाबर । इम वि [पूम्य] पूत्रा बीम्ब सम्बादनीयः जिला संप्रहमी होण पण्या होड संप्रहमी इन दि [पृजिन] समित गैतित (मीना एवं रि [पृतिक] १ मपनित समुख द्वालि नाइ र रेजा ४ २१)। २ ड्रॉन्पी ल नेप्यसमा (खाना १ वा तंदु ४१)। दूरि नानक जिला-कोच से दुन्क (शिंड \$5) r व देशो पोहरा = (दे)- वनी वसी पूरमा-ो (का १ १६: का)। अभ्य देखी पुश्र = पुत्रव्। रेम न [क] कार्य नाम नाम जनीयन र्ष [पूरा] १ ततूर चंबान (बीट १४) । (गो पुअ = इव (न थ ; धरे) ।

भो [पूर्ता] नुसारी ना नेहा परस्त न

गो पूर्व = पूत्रम् । वर्षः वत्रतः (तर) ।

ध्वरीत (लिंक) क्यूम

होत्र ११६ क्या १ मुद्री

तर रहर उस का रह )।

यो पूभप (पंचा ४ ४४)

1) पूजन (वंदा ६ १०)।

स] नुवार्ध कमेनी (स्वल ११)।

पूजा देवो पूजा≔ पूजा (इप १ ११)। प्रिय देशो पृष्य = प्रित (गीप)। पूण वृ [के] इस्ती हार्ने (के ६, १६)। पूजिमा वि दि ] पूर्वी पूर्वी स्व स पूर्वी पहल (दे र केंद्र है रहे)। पूप देवो पूजल (रिव ११०)। प्यंत्र हु [पूपकिन्] इनवार (संवि १६४)। पूर्वत केको पूक्ष - पत्रम्। प्याधी की [वे] रोटी (धावा २ १ व ६)। पूचावणा क्षे [पूजाना] पूजा कराना (संबोध पूर सक [पूरय] पुष्टिकल्ला घरवा। दुख द्वेष्य (क्रि.) १६८ और मर महाराजि ४६९)। बह पूर्व प्रसंव (हुमा कमा मीत)। त्यक पुर्वात पुर्वामाण पूरिवात पूर्व पूरमाण (स्प इ ११४) पुना ६० का रहरे की चीर चा रहर है रह ह्याद ६७)। सक्र पृथिका (धन) पृथि (मन) (मिन)। हेक्. पृरिक्चव (वि १७६)। & digner (g is AA) पूर ई [पूर] १ बल बच्चा बल-बबाह, बल पारा (इमा)। १ बाय-विकेश क्यूप्युच्छाहिए वस्त्र (ब्रंट ६ )। इ कि व्या वर्षा प्रवाशि व है वर्ग रवस्त्रशाचिक प्रकार क्य स्ट्रीनेया" अभिन्द्र व पुर वातिली विश्वासिकी' (स ३६३) । पूर्वत्र (शी) वि [पूर्वित] पूर्व वरनेवाना पूर्वतिया औ [पूर्यमितक] यत्रा भी एक बरिकर्-परिवार (सक्)। पूराग ति [पूरक] दृष्टि करनेकाका (क्या योग स्वल ७७)। पूरण न [परण] सूर्व नूप सिरनी ना बना एक पात्र जिनने सम नतीरा बाता है (है इ पूरत न [पूरम] १ पूर्ति नजनारुन् (निरि ६) । १ पानन (पादूर) । ३ र्षं नपुरंग के राजा सम्बन्द्रान्ति ना एक र्वति (यो १)। ४ एक स्ट्रनित का नाम (बरा)। इ.रि. पूर्ति बरवैराना (स्वर)

प्रमाम केनी प्र≃दूरव् ।

पूरव रेको पुरगः क्लीन कि का वर्ग कुन्स्युरमो ब्रिज़ों (मिर १४१)। पुरर्थत क्तो पूर कृत्। पुरिज्ञक्द 🖯 पूरिगा की [पूरिका] बोद्य करत (एन)। पूरिम मि [पूरिय] इसे १-मी **इ**निवासा (लागे १ ११ **मह** ३६ पीप) । पुरिमा को [पुरिमा] सन्तार राज रोहर मु**न्तं**ता (ठा ७<del>० - १०</del>१) । पूरिय वि [पुरित] वय इय (बार वर मेकि)। पूरी की [पूरी] उन्तुकत ना एक समर्थ ( 4 24) पूरेंव देशों पूर = पूरव्। पूर्णेष्टी की [दे] मनकर, रहनार प्रम (t . xu); पूम पुन [पूछ] पूना नास नो बीधा (र हर बी क्य रहर)। पूर हे देशों पूत्रक (क्ला हे ६ ११० प्रेड मिर है। पूर्वकिया } देवो पूर्वकिया (हर छ मि पृतिमा । १६)। पुस सक [ पुप् ] पुष्ट होता । वसह (हे ४ 6541 MIE 44) 1 पूस देवो पुरस = पूज (कामा १ : १) था)। मारि वृ मारि] एक केन वृत्त (बाज)। पानी की [पानी] बल्ली-फिर्ड (बएस १)। माच मानग द्र [धान मानय] मानव नद्भन-माठना - बद्धमाठ-दुवमालपंशिक्तोष्ट्रं (क्या चीत)। मात्रा पू ["मानङ] क्वीनिवेंच्या-विशेष बर्माव हानक देश-स्टिन (स १ १)। माजब रेपो मात्र (धीर)। मिल ई ["सत्र] रे स्थान-प्रतिष्ठ देन कुलिन्य-र इत ुच्यमित्रः, २ वस्रोुच्यमित् ३ दुर्वतिकः पुष्पमित्र को सार्च चीत्रतपृति के लिख (रिने नहाः १२८१)। १ एक धार (विचार ४६१)। मिलियन [मिनीव एक केन प्रतिनुज (क्या) ।

प्म 🛊 🔁 १ सन्त गावसहर (वे ६ है )। र मूक बोठा (देव दशसा २६६: बामा १६४: पाप) ( यस वृद्यम्] १ मूर्व धीव (१ ३ ६६) : २ मधि निरेष (पटम १ ११) । दमा सी [पुरमा] व्यक्तिनाबर नाम दूतर बोलिक बारक ही पानी (उस)। प्सात देवी पूम = पूरन (है ३ १६)। पृद् र् [अपोद्द] रिकार, मीमांना दिएक मामागुरुवेमागु करेमागुरम् (मीप पि १४२ २६६) । देगो अपाद् = सरीह । पृश्म (वे) रेगो पडम 'इपुमिनिट्रे (माह ₹**₹**¥} । प्रज वृद्धिती १ व्यावर भर एक देव-जावि (त्या ४६१ ४६२ वय २१)। र मुख्य (बरुध र १)। इस्स न [ क्स्मेन] ध्रम्पेति क्रिया मुख का क्षापदि कार्य (पउन २६ २४)। कामिल व ["कामीय] धनदेशि शिया (बरम ७१ १) । बाह्य वि विधिकी प्रैतनीति में उराज ब्दलर्र-रिटेन (बर्म १ o) । दिमयशहून रि [दिवनासायिक] मैत-देशमा मेत सम्बन्धी (मा १ ७) । नाइ ५ नावी वनपन बन (य ६१६) । सूनि, सूनी की भिमि मी रमहान (पुरा २६१)। स्त्रव र्षे ['स्त्रक] श्वरतन (पत्रव ८६ ४१) । बद्द [ वर्ष] स्व (स्त ४३६ री) । यस न [यन] स्मधान (राम नुर १६ २ ४ बन्सा २ गुगा ११२) । हिंद्य र् [िध्य] वय वनसम्(वय)। प्रमारि दिवस ] ब्रीताराव के सी (FRET TOX) : प्रम । रेको पा - या। पान भाषियों बन्द्र शिक्षे सन् fete (t 1 Press प्रमाप व [दे] १ वदान (१६ १० रिते tet to the table a least (les -8 v v is) Pyr vin f i (1885 ब्राट रे जर बारे का प्रथम क्ला

(32) 1

वेशालमा भी हि] प्रमाल-करल नम्बर देवामणा निशे (निः ६३)। प्रमान्य नि दि विवासि (विमे १४६२)। प्रमान [पेर्ड] १ तिता से मामा ह्या रिव्यक्तप्रतानाः वैत्यो परमी (पत्रम ८२ १३ विरि १४० छ ४६६)। २ म ध्ये के विता का बट वीजट नैहर मेका 'ता भा नुने वर्णरंको प्यत्रद्वात पेश्र एपं वर्शन' विवनेश हमी मिश्रमें पन्ध निए वैत्यनिवाणि (भूपा ६ ०)। पादर न [पितृगृद पत्रमृद] गीदर, स्त्रे क रिवा का घर, 'हम विविज्ञाल मिग्में पर्णार्थरार्थम्य सर्वालमी (मुपा ६ ६)। धक्रम न पिरायुपी धमूत गुवा (दे १ १०४ वा ६४: बच्च) । सम्म वृ [ीरान] रेव स्र (इसा) । वॅरियं मि [प्रद्वित] बन्सित (बला) । देंग्रास धक [प्रदाखय ] भूतना दिनना । बहु पेरमसमाय (गाया १ १--पत्र ६१)। वेंट देशो पिंड ≃िमार (दे१ «१ प्राह ४. ब्राप्त′ शुमा) । र्षेष्टन [दे] देशान्ड दूवदा। २ दसय (दे 4 at) : वेंडपव पू दि ] यहव सलतार (दे व ११)। वेंद्रवास वि ि े रेगो वेंद्रमिश्र (रे 5 Xx) 1 वेडय **प्र**[दे] १ तस्य प्रकार पण न्तुन्द (दे ६ १३) । पॅटन पूरि शिव (१६ रह)। पेटिन्त्र रि दि तिहरीहर तिमारार रिया ह्या (" ६ १४) । पेंद्रव नक [प्र+क्वापयू] १ रतना न्यान वरना । २ प्रस्पन वर्णना । वेंद्रश (t + 10) 1 पेंडविर वि [प्राध्यविष्] प्राप्तात करक थणा (पृषा) । पेंद्रार र् [रे] १ मा योगात ग्राना । १ महिनाम (देव र )। वेंदर्भ की [ " ] मोता(हे ६ दह)। वेंद्रा के [र] बंदुर मूछ प्रतानी साम्य (3 1 1) वेंद्र रेगो या = वा ।

पस्त्य स्क [ म + इक्ष्त ] देवता धरतोयन बरना । पेस्पार, पेलाए (संख् निंग) । सह परार्थत (पि १६७)। काह प्रतिसञ्जीत (व १४ ६६)। चंद्र पक्सितम, पंचनकण (धनि ४२ राप्र १४०)। इ. पश्याणिका (नार-नेची ७३)। पुरुरम ) वि प्रिक्तकोदेखन्ताना निरोत्तक पेकराम हे हा (मूर छ ह स ३७१) महा)। पक्रम म प्रिक्षण निधेशण बालोहन (मुवा ११६ मनि ११)। पश्चागा ) म [प्रेक्षण है] सम तमारा पस्मान्य । नाटके (पुर ७ १६२, ब्रूप ३ )। पनम्यम ध्यै [प्रेथमा] निधेपतः धनशान (धोप १)। पंपाम मी [प्रेम] कार देवी (बडम ७२) २६) । रेवो पद्या । पायम्यय देवी पन्छिम (राज) । परिवर्ख (पप) वि विदिश्ती हरू (र्रबा) । पश्च ) च प्रित्य | परनोश चावानी बन्द पवा (मर्ग थीन)- 'मंदेशी तात्र देख्य दुप्परा (य ७३)। सद् पू ["भर] धावामी पाम परलाइ (चीर) । साविध वि मिथिक विश्वाहर-वंशकी (पहर ર, રો ા पया रेग्रो पित्र = गा पन्छ सङ्दिश स + इस् | देलता । नेन्द्र पेन्द्र (६४ १८१ वर मण रि ४२७) । अहि देन्सिट्य (हि १२१) । बर परदंत (या १०३: वहा) : लंह पन्दिक्ता (वि १६१)। देश पन्दितं, पन्दित्तप (झा ०२६ ही थीए)। ह पंच्यतिया पश्चिमध्य (ग दर बीर Trt cht ti) i पन्द्रशिक्षि]का गाँव चारवाचाराई। (4 o ( x ) i परदार देगी पत्रमा (स्टम ४० वर्षन # (fr# पन्द्रम रेनी प्रश्यम (लग्न १४) र पण्यात ३ देवी पत्रस्तात (६ वा १ हर पण्डनिय है बन्धा ।

पादव रिविश्व है। शासिण्य (राज

et at a tit a te to

पेपञ्जन वि वि नो देने नहीं को बाइनेनाला इप्रभाव का श्रमिकायी (दे ६ १०)।

पेष्णका की जिल्ला जेवल के जनाता के ब नाटक' लेक्सक्राको सिस्छानेबोमलास बहा मुचीनधीनि न निविदेन (इस्से ६७) तुर १६ ६७ ग्रीप)। देखो पेक्ट्या। पर्म िंगुइ दियो इ.र. (ठा४२)। मीइप पुँक्षिणक्यों गाल्य-गृह, क्षेत्र साहि में वैसर्को के बैठने का स्वान (एव २६६)। इर न [भूड] बाटक-पूक् कैल-तमाराह का स्त्रान (पदम ∈ ५)।

पेरिक्स वि [प्रेक्सिक] प्रेथक ब्रहा (केवन

१ •⊍ वा २१४) । पेचिक्कम मि [प्रेक्षित] १ मिद्योक्तत सर नोफित (कुमा) । २ न निरोक्क्स स्वकोक्स

(मुर १२ १०४) मा २२४) । पे विकास कि जिल्लिक हिंदा विकास का विकास कि वि विकास कि व tax fat) i

पेटन देखों पा≈ गा।

पेळापून प्रिमन्] प्रेम धनुराग (सूध २ ६ २२) माचा चक छ। १३ वेच्य ६६४) । इसि वि [ इर्सिम् ] प्लुरुवी (प्राचा) । पेट्य वि [ प्रथम् ] यतन्त्र प्रिय (सीप) । प**ळा वि [सेक्स] पूर्वम पूर्वशील (राज**)। पेळा रेको देर = म + रेरव् ।

पेक्सस्र न [के] प्रपाण (के ६ १७) । देका किम वि [वं] संबद्धि (पर्)।

पळा केवो पेश्चा(ग्रीव १४६ हे१ २४)। पुजारक वि वि विपूत्त विदास (वे ६ ७)। देह } न [त्] फेट उबर (तिक पर्व १)। पेंद्र

पटुक्को पिटु= लिए (वैधि ३) प्रकृष प्रकृतिको प्रक्रमः नवपेवनिक्षां (संबोध १४)।

पंदद्रज ए दिने बल्प पारि वेक्नेसला परिषक (दे ६ ६६) ।

पेडक) न पिटको समृह कुक भक्त<del>ेकर</del>-पेड्रब डे बंगिहा जारा (बंबोन १३ पुरा **५४६। क्षिरि १६६ महा)** ।

पेडाको पिटा १ मध्यूका भेगै (के ४. ३ । महो) । ३ फेटानार **क्ट्रूप्लोक्स गृह-**∜कि

में विकासी प्रमाण (बता १ १६)।

पेडाल पुंदि पेटाल विशे मम्बूबा वही पैय (प्रत ११)। पेक्षामङ् वू [पेटकपिति] पून का नायक (तुना

पैक्सिमा 🕸 पिटिका मन्त्रुपा (ग्रहा २४ )। पद्भक्षी दृदि | मिद्रेल भैंसा(३.६.८.)। पेक्राको कि | १ जिंछ भीतः २ बा८, **शरवाता । ३ मिश्रियो मेंस (३.६.४.)** ।

पद्य भेजीपीब ≔पीठ (दे १ ६ इमा)ः ·काडरत पेड टेकिया करने एसा परिवर्ग (रूप ₹₹७) :

पेढाछ वि दि ] १ विपूत (दे६ ७) वस्त्र)। २ वर्तुन गोबाकार (दे ६ का यक्का पाप)। पेडास वि पिठवत् । पैठ-द्रवः (पर्दर) ।

पहाछ पूं पिडाकी १ भारत वर्ष का माठवाँ मानी जिनदेव 'पेडाल' स्ट्रपर्य घारांदवियं नमेशमि' (पर ४६)। २ न्याया स्ट पुन्ती

में बसवी (निकार ४७३)। १ एक बाय वहाँ कावान् बहानीर का विचरश्र हुया पट पेशकरबासमानद्यो भन्तर्व (भावन्)। ४ त एक त्याला 'तयो सामी शहमूमि नयो दीसे

वर्षि पेकाचे नाम जनार्श (मान १)। पुत्त र्पु [पुत्र] र धारतवर्षका महना नानी किन देवः 'जबस् पैदालपुरी व' (सम १६६)। २ मनाल पार्चरात्र के संदान में क्याब एक भैन पुनि 'बाह्य हो स्टब्स् फेरम्बपुरी मनन

पासावकिये निर्माठे मैमरूने गोर्सोडी (सुद्ध २ श्री । १ भनवान् महाबीर के पास कीका सेकर बनुसर विमान में करना एक वैत मृति (धनु २)।

पेडिया केडी पीडिजाः 'चतारि मस्तिपीक्षे यामी (ठा४ २—गत्र २३ ो। २ ग्रन्थ भी मुमिका प्रस्तादना (बसु)।

पेडी रेको भीडी (बीव १)। पेणी की [मैर्णा] इरिखी का एक मेद (फ्यह

१४—ला६)।

यदंड वि [दे] नुप-स्यान पुर्वे को हार मधा हो वह जिल्ला श्रम चच्चा मना हो वह (मृष्य ४६)।

पेस पूर [प्रेसस्] प्रेय सनुराय श्रीति क्लेक् (क्सामीलासंस्मुला३ ४ च्या ४४)। पेसालू अनि ब्रिमिम् ब्रिया बनुसर t=1 2) i पेस्म देशो पेम (दे २ ६ च) ६ २४) कु

१२६ मास ११६)। पेम्सा भी [प्रेसा] क्ल-विशेष (धिर)। पेयाकी पिया विश्व विशेष बढ़ी ।

(যব **४**೩) ৷ पेर सक [प्र+ईरय्] १ पळला ं द्रेवस करना २ वदा नदाना १ कल्ताः ३ व्यक्ति कल्ताः ४ किथीः बोबना-सन्तना । १ पूर्वका करना, करना विद्यान्य का विधेव करना विद्यानाः पेरद् (वर्मेसं ४९ ) स्वि ) । पैरंश (कुत्र ७ ३ दिव) । फ्यह- पर्र (धुपा २११: महा)। इ. पेट्स (चन) पेरंत देवी पर्जात (हे १ ४५; ६६)

धीव गढक)। अक्टबास्ट न जिल्हा माझ परिमि बाह्यर का नेराम (परह रै **"क्ब न दिर्थे**स ] मरकप दा निर्मित गृह (राज)। पेरत नि मिरको भेरता करनेवाला, पू (धर्मसं १०७)।

पेरजन [दे] १ ऊर्म्यस्थान (दे६ १ २ क्वेच स्पारत (स ७२३; ७२४)। परजन [मेरज] प्रेरखा (दूब 💌 )। परणा 📽 [प्रेरणा] क्यर ध्वा (प **₹**₹♥) 1

पेरिका विधिरित् क्रियनो प्रेच्छानी दो बद्द (वें व १२, धनि)। पेरिकान कि बाह्यस्य, सहायता सर

4, x ) i परिवर्तत वेदा वेद = प्र + (रम् । पंदक्षि नि [वे] पिएबीक्ट किएकाकार है

( \* \* \* \*) i पेश्वत्र विश्वत्र । कोवल नुदूमाए,

(पाग्रः से २, २००३ धर्मि २६३ धरीप)। भववा इस्तः। ३ चूक्य, सबू (फ़ाया रै. १ पत्र २३८ हेर २३७)।

पेता की पिता पूछी वह नी पहला कर यात केन्द्र (निबन्ध १४) । नरण ["इरण] पूछी—पूछी बराने का करकर शनाना मानि (विधे ६६ ४)।

थह सक किए ] केंग्जा केंद्र (है ४ १४३) । कर्म देक्सिक्स (उन) । ना पर्छत (इमा)। चेक्र पश्चिमम (महा)। येख देशो पर = म + इत्य्। देलेंड(प्राष्ट्र है)। क्षपु: पश्चित्रीत (से ६ २६)। संक्र पाँड (धन), वेहिअ (निम)। ह पहेपस्य (द्रोपमा १ = ध)। येख सरु [पीडम ] पीमना दवानाः पीइना। वेज्ञीम वेज्ञिम (स १७४ हि)। पेक्स स्था प्रम् पूरमा भरता। करेक पक्तिर्ज्ञन (सं६ २६)। पह र्पुन [व] बचा छिन् बानक (उर पेद्या (२१६)- 'धीयम्म पेलभाद' (उन 32 E) 1 वेह्मा देशो वेरम (निष् १६)। चेल्ला देखी देखा (परह १ ६ मजह)। चेह्नण न [झपप्र] फॅक्ना (वर्ष २)। चेह्य वृहि देशो पेह = (दे) (विशा १ २-पत्र ३६): न्याद्विमं नियानि (गुत्र २ ६६)। चेह्नय वैजो पेरम (बह १) । पेहम र् [पेहरू] मगगत् यहाबीर के पाव बीजा नेकर धनुतर विमान में जनम एक पैन मूर्ति (मनुर)। पेहत्र ) क्यो पेर। यहरद्र यहाकः (प्राक् पेद्धाय (१)। पेडिम वि [वे पीरित] पीरित (दे ६ १७)- विनयराह्यपेक्षियो (महा) । वेदिम देनो परिम (सा १२१ विना १ १)। पेहेयस्य देशो देह = प्र + देखा। पेस्व च मामन्त्रगु-मूबद्र गम्पव (पर)। पेस कर्म [प्र+पपप्] भेवना, पद्धवा। वेनद, वेनेद (चित्र महा)। बद्ध वेमार्थन (नि ४६ । रेका) । संक्र पेसिश्र पेसिक्र (मा महा)। १६ पसद्यब्य प्रसिद्धस्य भैसंगम्य (बुता १) २७८/६१ । इस ११६ थे)। पेम रेगी पीम । बा पेसपंत (राव) । पंस र्वेश [प्रेप्य] १ कर्जन्द, तीनप, शत बारर (तम १६: गूच १ २, २,३ बता)। २ वि भेजने योग्य (दे २ ६२)। पेस 1 [द पेश] १ शिष देख में दोनेशनी यक बहु-जाति (माबा २ %, १ c) ।

पेस वि वि पैश] पेश नामक जानवर के चमहेना बनाहमा (वस्र) (भाषा २ ५, ₹ =)1 वेसण म [दे] कार्य काल प्रवोजन (६६ १७ मूर्वि सामा १ ७---पत्र ११७३ पतम 2 7 2E)1 वेस्यम प्रिपण 🐧 पठाना, मेजना । २ निमीजन स्मापाद्य (हुमाः पडः)। ३ पाडा माचेरा (में १ १४) । पेसणबारी । भी वि देशी दूर-हमें करने-पेसमञान्त्र रे बसी की (दे ६ दश पर )। पसमा हो पियम विमना पेरण निनाए जबगोहमपेनाणार हेळार (उर ११० टी) । वेसक वि विशक्ती १ मुन्दर, मनोब (धार्याः गडड)। २ मधुर, सङ्ग (पाप)। ३ कीमस (बदद) १ पसस । न [द] फिल्ब देश के पेश नामक पसलस । प्राके वर्ग के मुस्म वरम से निराम बस पिराप्ति वा देसकारिए वा (२ माचा २ ३,१—सूत्र १४३) पेशाणि वा पंत्रपेसासि वा' (३ धावा २ ६,१ ८ (धन)। पस**व सक** [प्र+ण्पम्] नेत्रदाता । कु पसबेधक्य (ज्य १३६ टी)। पसयण न [प्रेपण] सजनाना दूसरे के हारा त्रेपए (उदा पडि)। वैस्रविञ्ज वि [प्रेविन] भेत्रवामा हुवा प्रस्काः पित (पाम का पू १८)। पसाय वि [पेशाच] रियाच-संक्रमी (बह परि स्री [पे हैं] रेको पसी (नुता ४००)। पंसिञ्ज वि [प्रेपिन] १ येजा हुमा प्रहित (दा ११२) मनिः काल)। २ प्रैक्त (प्रस E RE) : परिमा भी [पेशिता] बएव दुक्ता; 'धंद पेनिया जिबा धेवाबयोजिया कि वा (धन ६। याचा २ ७ २, ७- **० १)**। परिचार पु [प्रेपितकार] नौकर, जूप, नर्मन ६ (परम १ १४)। पेसिन्पंत (शौ) रि [ प्रचित्रपत् ] जिस्ते भेवा हो बहु (दि १६६)।

पेसी की पिती मोछ-खएड मास-रिएड (तंतु ७) । देखो पसिष्ठा । प्रमुख्य ) म [पैनुन्य ] परीक्ष में दोष पेसम } कीर्तन इलमी (धीप सूप १ १६२ खामा ११ मण मुना ४२१)। वेसेयस्य देखो पेस = प्र + एवम् । पेस्सिवर्गत रेको पेसिन्बंद (पि १६९)। पेह सरु [प्र+इक्त्र ] १ देवना, निरीक्षण करता ध्यात-पूर्वक रेखना । २ विन्तत करता। देइर पेहरू (पि ८० उप) पे**ह**ति (**९**प्र १६२)। मान पेहिस्सामि (पि ४०)। मह पेह्न, पेह्माज (उपग्र १४४ वेल्य २४ ) पि १२१)। सह पेदाए पेदिया (कसः कि १२६)। पद्द सक [म+इड्] १ इच्छा करता भावना । २ प्राचैना करना । देहेर (यस ह Y 3) 1 पेइण न ब्रिक्षण किरीपाए (वंबा ४ ११)। पेद्वाकी श्रिक्षणी १ तिरीसस्य (ब्लासम ३२) । २ नाबोरसर्व ना एक बोप कायोज्यर्व में बन्दर भी तरह बीध पृथ को हिलाने रहना (पन १)। १ पर्यानीयन विन्तन (धार ४)। ४ बुढि मति (उत्त १ २७)। पेहापिय वि प्रिक्षित् विशेष विजनपा ह्या (साथु १८८)। पहि वि प्रिक्षिम् । निरीशकः (वाकाः उद)। की जी (निवर्ष)। पेहिय वि [प्रेक्षिन] निरोधित (म्प्रा)। पेहण न 🔄 १ विषय संख (देद १०० पाधाः वा १७३ ४६% वजा ४४ महा १४१ गरर)। २ सपुर विषय, सपूर र्षय क्रियाण्ड (पगह ११२ १, जे १ छापा १ १) देवो विद्या पाञ्च सक [प्र+ध] तिरोता भूपना। पोमीत (बन्ध ३ १० मूमनि ४४) । बहु पायमाम (स ११२)। सीह पाइङम (वर्मीष ६७)। योभ रि [मान] रिटाया हुमा (दे १ ७६)। पाभ र् [पात] र जहान प्ररहत भीरा (पाय नुपा यह १६१)। २ बालक शिश बश्या (दे ६ ८१ पाम: तुना १६८) । इ म बार, बतहा (धा व १--- तव ११४)।

पोश र्यु हि ] १ वर दल नाय वी का पेड़ । १ कोटर क्षेत्र क्षेत्र (१ ६ ८१) । पोश्चाहुआ की हि ] नित्राकारी नता बता क्षित्र (१ ६ ६ ६) तथा ।

पएक नामरें (है ६ ६१) ।

पोर्जत पुँ [के] त्यान शीनन (वे ६, ६२)। पोभाज न [भवसन, प्रोतन] पिरोना प्रस्थन इंजना (प्रावम)। पोभाजपुर न [पोठनपुर] नगर-विशेष (नुपा

१ र भवि)। पोल्ल्याक्ये [क्रबयना श्रोतना] पिरोता (क्रा ११६)।

पोशय वि [पोठज] पोठ से उपना होनेवाला प्राप्ती—इस्ती सर्गव (ठा वे १)।

पोजव पु [पोठक] देवो पोझ = पोठ (स्वाः ्योर) ।

पोजस्तय पू वि] र सारितन मास का एक जरसन निसर्वे पानी के हाथ से लेकर पछि संपुत की खाला है। र एक प्रकार का संपुत-काला-किटेन पूजा। रेनाल बक्तन

(१ ६ ८१)। पोआई की [पोताकी] १ तपुति को करना करनेवानी विद्या-विशेष २ तपुतिका पति-

ं विकेष (विशे २४५३)। पोझाडव वि [पोतासुस् पोत्रक] देवी

पोझय (पडन १२६७)। पोआय पृति] ध्रम-प्रकार नावना सुविका

(दे ६ ६)। पोआख पुंचि | इत्या भवीवर्ष (दे ६ ६२)।

पामाख पुर्वु कृतम वतावद (द ६ ६४)। पोआ ख[दे पोत्र∓] नण्याः तिनु वासर्व (तीम ४००)।

(यीव ४४७)। पाइय वृह्ये १ इतवार्ड पिठाई वेचनेनाला।

र वयोज (वे ६ ६२)। वे निवान, ह्या ह्या (योज १३६)। ४ स्पन्तित (हृह १)। पोड्रम वि [मोत] रिरोमा हृया (वे ७ ४४) कर दूर १ दे नाम)।

पोइअहम देवो पाइश्र = शेत (योप १६६ दी)।

पाइआ के [ब] फिप्रसारी सता, कस्बी पाई विशेष (वे ६ ६६) पहल १---पत १४)।

पोठला को [बे] करोप-सूचा गोनर (भोडेंत) का यमित (रे.च. ६१)। पींग पूं [बे] पक पकता (स १०)। पोंगित कि [बे] पका हुमा परितक्त परि

पोशिष्ट वि [ब] पका हुमा परिपक्त परि पक्त-पुका कच्छी भाषा में 'पेशिका-'भनेवि सर्वमहितकसिसीय-

गुप्पन्तविशिवरौँपिका । गमिखकारमप्पडोच्हरम-विश्वदा समृदि द्विडेटि ।

(संदर्भ)। पींडन (दे] कुल पुच्चाः पूर्वधानियोडे

महो पानेनचे होई (ज्यानि १)।
पीड केशे पुंड। बद्धण न [क्येन] नगर सरेन (महा)। बद्धणना की [क्येनि केम पुनिस्मण की एक राखा (क्या)। पीड ) पुनिस्मण की एक राखा (क्या)। पीड ) पुनिस्मण की एक राखा (क्या)। पीड ) पुनिस्मण की एक राखा (क्या)।

७०)। वे स्थिकतिक प्रवस्तावाका कमक (विसे १४२३)। ४ कपाल का सुता व्यक्ते तु दौंडमाची कावे पुत्तमिङ्ग सुनर्थ नार्श्य (सुप्ति १)।

पोडिसिन्यो देवो पुडिसिन्तो (छ १ ६)। पोडिसिय देनी पुडिसेश = पुरशीक ( छ ४६६)।

४६६)। पोंडरी की [पीप्क्री पुण्डराका] बस्पूडीय के सेद के उत्तर दशक पर ख्लेशकी एक

विश्वपारी वेशे (ठा )। पीडरील वेडो पुंडरील = पुरवरील (बीन

जाना १ र, रहा चम ६६ वेकेन्द्र ६१ जूपित १४६) । पोंडराज १ म [पीण्डरीड ] १ परिवट-पोंडरीन १ किरोज १वड्ड-मणित (नूपित ११४)। २ वेडो पुडरीज = गीएवरीक (कूप

२ १ १) सूपनि १४६) १४१)। पोक सक [बपा + क्रूपन् + क्र] दुवा रता धाक्कान करना । पोस्क्य (है ४

६)। पोचा वि[ब] याने स्तून और अन्तर सवा बोचार्ने शिम्म (मासिना)। भीवारगर्ने (उठ

वाय न तत्व (वायरा) रास्ता (०० १२,६)। पोच्या दु [पाचल] १ सन्त हैस्ट-विस्था १ इन देस से बातेशनी स्वेज्य वाति (परह १ त)। याञ्चान । २ वि पुकालेशना (कुमा)। योक्सर केलो युक्कर । योक्सरित (सदा)। वक्स योक्सरित (सुपा १८)। योक्सरिय वि [पुक्कत] १ पुकास इत्या (सुर

पोक्कन न [ब्बाइरण पुरुद्धरण] १९४० ८

६ १६४)। २ न पुनार (वंध ६)। पोक्सर देवो पुनार = पुनार (उन ११४६)। पोक्सिन्न देवो पोक्सरेय (उन १ ६१ टी)।

पोक्कर त [पुरुकर] १ वस पानी। २ पर्य कमता १ पर्यकोरा । ४ एक वीर्षे सन्देर-नम्द केपात का एक क्साटन---दीर्च। १ हाली की मुँह का घड माना ६ बाद-माएडा ७ मास्ट हुक्ता । वधीर-कोर तत्वार की स्थार। १ हुक्च हुई।

देर पुत्र वाहाई। देने कर, बास्त । देने बाबरक नोत्त्वार्ट (हे १ १६ २ ४० बीत ४)। ११ तुं नाय-स्थित। १६ फेन विवेद। १७ बारक मती। १० एक पत्र का नाम। ११ तुर्वेद विकेस। २ वस्त

१ कुह रोप की बोपबि । ११ हीप-बिरोप ।

पुत्रा नोलबारी (प्राप्त)। येको पुत्रकार। योजकार वि [योगकार] र पुत्रकर-सम्बन्धी। १ पपालार रचनावाला नोलबारी प्रवहर्षी

(वाद ७ )।

पोक्स रेगो की [पुर शरेगो] १ ज्यास्त्र रितेय गर्नुक मारी (द्वारा १ — जर ६१) १ यदिमी कमलिन्ने परम्मणा 'कोल वा पोक्सपिरेलमार्ग' (जर ६१ ६) १३ मारी (कुमा) १ ४ परमाहा १ ४ पुन्दर-दुन (१ १ ४) १ द बीक्स मना स्व नेक्सर्थ नारी (स्वह्न १ ११ १.४) १

पोक्तास केतो पुक्तास (वस्त १८८० १८८० । धावा २ १ ११)। पोक्तासक्षिक्स ३ रेजो पुक्सास्क्रिय पोक्तासक्षिक्स ३ सम् (वर्ण १८८० १८८०

पोक्लसम्बद्धाः । सय (पएछ १---पन ११: एत) । पोक्स क पुर [पुरस्स्मिन] एक केन छान

प्रकः निक्का दुवय नाम तरक का (यत) । पोस्तर ) दुव [युक्ताक] १ क्यारि विधिः पोस्तक ) क्रम क्ये क्या क्याना वर्षाणे भीतका (तक १) का १ ४४ ४४ १ १ व) भोगलाई (पुरुष रः वेष १
४६)। २ न मोस (च १६० है १
११९)। रियम्मा पूर्ण (क १६० है १
११९)। पर्द वरियह पूर्ण (क स्व १६०)। पर्द वरियह पूर्ण (परिवर्त) १
समस्य पुरुष (परिवर्त) १
समस्य प्रदेशन (स्व सम्बन्ध परिवर्त (स्व सम्बन्ध परिवर्त (स्व सम्बन्ध परिवर्त (स्व सम्बन्ध करूर परिवर्त (सम्बन्ध करूर सम्बन्ध परिवर्त (सम्बन्ध करूर सम्बन्ध परिवर्त (सम्बन्ध करूर सम्बन्ध सम्बन्ध (सम्बन्ध करूर सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध (सम्बन्ध करूर सम्बन्ध सम्बन्ध

पुक्त (सम व १०—पत्र ४२३)।
पोत्माविय वि [पीत्माविक]पुक्तभय पुक्त संक्ष्मी पुक्त का (पित्माविक]पुक्तभय पुक्त संक्ष्मी पुक्त का (पित्मा १२४)। पोत्र वि [त्र] पुत्मार, कोसना पुन्नराती में भीट्र (१ ८, १ )। पोत्र वि [त्र] १ पाल, निस्तार (पाला १ १—पत्र १४)। २ सर्वित (निष् ११)। पोत्रवस्त स्व का नित्न ११)।

र्कना जाना । बङ्क पोच्छार्श्वत (पुर १३ ४१)। पोच्छाहण न [प्रेतसाहन] स्तेत्रन (वसी ११)।

१ १) । पोष्यप्राहित वि प्रितेसाहित विशेष क्या हित किया हमा, ज्वेकित (पुर १६ २१) । पीट वृं पुत्र] सहका 'प्लक्त कारमब पोट्टेल' (बब १ दी) ।

पाष्ट्र न [ब] घर कर, मध्ये में भोर (के के के ) जाया रे रूपन केश प्रोत्तव्य कथा वर्ष रेक्ट, देन्द्र, यु रेक्ट अवेदा क्या पूक्ष रे रेट, यु रेक्ट आह कशका वर्ष रे रेट, यु रेक्ट [शास] एक परिवानक का नाम (विदे देशर रहा) साराजी की [बाराजी]

सतीवार केम (यस ४)। योह १ न कि ] योरणा पहर, फारीक पाइक कि प्रोमिकीनिवर्षिक केम्प्योमेकास्याय-स्थितिया। न सूत्रह योग्यन्तीहुँ (युवा केष्ट्रश के २,२४ वर )। योहिस्स्या की [कि] योरबी प्रन्यों (युवा २ १७)।

पोट्ट्रिय वि [वे] पोथ्वी ज्ञानेवालाः गऊरी-वाहक (निष्कृ १६) ।

पोट्टिया [ वे ] वेको पोट्टिया (वप प्र १८० पुर १२ ११ पुत्र २,१७)। पोट्टिकी [वे ] ज्यर-पेटी (पुत्रक र )। पोट्टिकी [पोट्टिकी १ मारतवर्ष ना सावी नवर्षा टोकेटर—विन-देव (धन ११९)। २ भारतवर्ष के बीचे सावी विन-देव का पूर्वभाषा नाम (धम ११४)। १ समावान

भूतनाथ पान (सम १२४)। इ स्मान्नार्स् सहानीर का सुल्कम से झुठने मन का नाम (सम १०४)। ४ एक कैन मुनि निस्ते मनवान सहानीर के समय में सीलंडर-नाम कर्म कैंवा वा (ठा १)। ४ एक कैन मुनि (पत्तर २ २१)। ६ देव विसेष (सासा १

१४)। ७ रेको पोड्सिस (एव)। पोड्सिस की पोड्सिस ज्यादि-नावक नाम एक की का नाम (एग्या ११४)। पोड्सि प्रै पाड्सिस एक किंग का नाम (कर्म्)।

पोट्टबर्ड जो [मोडपदी] १ मादपव मास की
पूर्तिका। २ सावों की समावस्या (सुन्त्र | १ ६)। पोट्टिस पूर्व [टिस्स] स्थलक सहस्वीर के

पोट्टिस प्रं [ स्टिंस] यतनान सहसीर के बात ग्रीका बेकर प्रमुक्तर-विमान में उत्पन्न एक बैन पूर्व (यु)। पोडाइस न [व] पूर्ण-विदेश (युर्ण १—

भावस्थ्य मृत् वृद्धान्त्रस्य (नर्षण्ड १— पत्र केके) । पत्र कि दि प्रितिह १ समर्थ (गाय) । व निर्मुख बद्धाः १ प्रमासः । ४ प्रमुद्ध, वीवन क्षेत्रक्ष की सम्मानस्य (चर दृद्धः गुना १९४ र्षणा वार—मानस्य १६६) । वास दृ [ बाव ] प्ररिक्षा-पूर्वक प्रमानस्यन (मा

६२२)। पोडा की मिंडा देशीत से पणपन कर्य तक की की (प्रत देवर)। र नामिला का एक मेड, प्रकुष्टर का काम-का सादि सम्बद्धी तरह वालीकाली (स्राह्य दे)।

पोडिस पुंचे [प्रीडसन्] प्रीव्या, प्रीव्यन (मेह २)। पोडी की [मीडी] उत्पर देवो (पुत्र ४ ७)। पोप्रिज दि [ते] पूर्व (दे ६ २८)। पोप्रिज दि [ते] पूर्व दे वस हुमा बहुवा

(4 **4 41)** i

पोत देवो पोझ ≕गैठ (मीप गृह १ छामा १ =)।

पोतलया देखो पोजणा (उप ६४१२)। पोचा पूँ[पोज] पुत्र का पूप पोछा (दे२ ्षर का१४)।

पोच न [पोज] प्रवह्ण गौका विसाजसीमा बोमारिपार्यं सम्बाधि वेण पोणार्थि (क्र १९७ क्षे)) पोचा १ न [पोल] १ वक क्ष्यहा (सा

पोस्त १ न [पोत] १ वक्क कपहा (बा पोस्ता ) १२ सोव १६० करूप स १६२)। २ कोटी कटी-वक्क (गच्छ १ १० कस्प वक ८४ सावक १६ टी महा)। १ वक्स-कपह (शंव ६ ८)।

पोत्तय पू [वे] कीता कृषण भएडकोस (वे ६ ६२)।

पोत्तिक न [पौतिक] नम्न, भूबी कपड़ा (क्र १, ६—पत्र ३३०० कस २ ११ टि) । पोत्तिक नि [पोर्सक] १ वक्सवारी । २

ु बातप्रत्में का एक मेर (धीप) । योखिका की [योतिका] पुत्र की सहकी

(रना)। पोचिमा क्ये [वे] चत्रुपित्रिय अनु नी

एक बारि (एक १६ १४०)। पीनिका ) की पीतिका पीती है बोती पीनी | पहली का बक्क, साड़ी (सिर्स २६ १)। र बीटा वक्क बक्कन्सर 'कर-प्रक्रमार पीतीए पूर्व क्वेसा' (सामा १

- अन्तर्भाष् भाषाण्युह क्वता (सामा १ १--- पत्र १३ पिडमा १) 'श्रृह्गोतियार' (विदा १ १) १

योची की [दें] काच कीशा (दे व ६ )। योच्छुमा केले योचित्रा (खामा १ १०--

वस २६६)। पोस्स | पुन [पुल क] १ शक, कपड़ा पोस्सम (शामा १ १६—नन १०६)। २

भारतमा (शामा १ १६ — गण १०६) । २ भोरतमा १ ६ जो पुरुषा भीरतमा प्रकार होत प्रिकृत (जन्म वा १२। मुद्रा २८६ हिन्ने १४२३- इह ६ प्राप्त सीन) ।

पोस्मा को [मास्मा] प्रोत्नान मुमोराधि (उच २ १९)।

पोल्यार पू [पुल्लकस्तर] पोधी निकाशास्त्र, पोषी बनाले कर नाम करनेवाला दिल्ली बनारी जिल्लामान (बीच १)।

पोरिक्षिमेंस स्वयंधि चप्पार्श पुपदि (श्वास योमा देवी पत्रम (हे १ ५१: १ १ ११९ ₹ ₹¥--74 ₹€ ) 1 ना ७३) कुना, शक्त १०: कप्पू (११६६)। पोरिसी को [पीर/बे] १ दूक्त-करार-कराज योग्सा केवी पद्मा (पाक १०) ना ४०१। द्माया । २ जो समय में पुरुष-गरिनाक स्थापा द्वी बहु नास अदूर (जेना) विचा २ हा थोस्द देशो पस्ट=स्त्रम् अह व किर माना कप का ४)। १ अवन अहर धक खानिवाए विशेष विदुक्तान्द्रवरिवाए बीजन साथि ना त्यान, प्रधाननात-विशेष **त्रा-विशेष (पर ४** र्स्टबोष १७) । बीर पू [पुगर] बत में शिवाना ग्रुप्त बन्दु

पोरिसीय वि विधिषकी व्यवस्थात

पुरव-राधिका 'पुंगी महताहियोरिसीया'

पार वि [पीर] पूर में—नवर में बनानः (तुस १ ६,१ १४)। पोस्स 🛊 [पुरुष ] बळल इस दुरब (तूप थार रेनो पुर - पूरत । सम्ब न ["सम्य] t # t ) : पारुस वेबी पारिम (म २ ४; डा ७२ **०** योर पुरुद्धि पर्वम् | द्वीव पाँठ (झ.४ ये गा)। १ धर्) । बीय दि विशित्र वर्र-वीय हे पोरेक्थ } न [पीरम्हस्य] पुरस्तारः भगः | बनोराती बनराठि इच्च मार्डि (ठा ४ १)। पोरेगव <sup>5</sup> निरंप(भीत चक्रभीत १ ७४८)।

( t t, t i) i

धारमञ्ज (पर्वक्र) बनरातिका एक भेट, बनेतानी बनरर्गेड (नएन्ड १-- वन ६६)। (बीछ क्षम ६) निरादे दं भण्य)। बारण्य र् [ र ] दुरेन बन (रे ६ ६१ नाय) । वार्रान्त्रम रेनो पुर्यन्त्रम (युक्त ४१) ।

पाराय रि कि नावरी रैम्बेन हेरी (बद्):

···· - 4 \$) كار 1 جي - ----

fr tat) i

(वर्षप्र )।

(दे १ १० दुमा)।

नापरित (प्राष्ट्र १४) ।

धीमान्ति (धन) १

पार्श्वद दक [होत+कर्पु] विदेश क्रलंबन करना । नीलंबर (ट्राया १ १--44 (1) 1

१ ४--पत्र कता सीप ४१६। सीर) । धारेबच न [पीरापुरव] नुधेपतित्व सरेबच्या

पाक्षचा हो [वं] बरित पूर्व इर क्यीन योसन वि [पायह] १ वरिनारह ।

बोर्डन (तिजू ६) । १ लिन, कास्कः, 'छान वर्षात्लाम बाँचे बर्ल्स व पराः बोदा से होना से माहार दुई मी नार्ज (स ६—नत ५८ )। , यास नं [पीत] नीर नात (वन ६६)।

कानमनार्वे (पान् १-१)।

विकास प्रेक्टस व सहस्य वं (दीव वरे)

पोक्षरम [के] उप-किशेम मिनिइ<sup>तिक व</sup>

पीस धक [पुप्] प्रष्ट होना । केवर (<sup>बाग</sup>

पोस सक [पोपय ] १ पुट करना । १ वर्ग

पिंबर पोर्ल (नूस १ ३ १ ४) दोना

(तूम १ १ १ १६)। अनक पोसिम

पोध पि [बाव] १ क्षेत्रक शृष्टिकार

'समित्रको नोश्वनत्त्रं निर्मिति (सूप १

पास र [पोस] १ मान-रेट, इस (ग

१ ६) । २ दू बोयख दृष्टि (वंदीन ६६)

करना। वीवेद (वेचा १

(v); -4F

विचार ६६६) ।

(वंदीय १०)।

१४६ वर्षि) ।

(TT E \$2 ) )

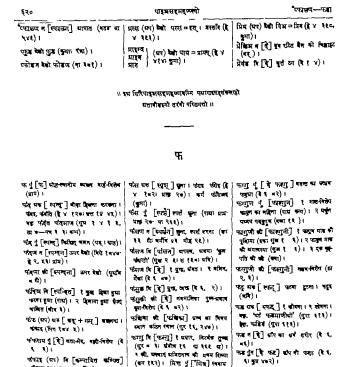
पोसम म [पोधम] १ पृष्टि (परा १ २)। २ पासन । ३ वि. बोपए-नर्वाः भीग पर धि बहाडियोगणी (तूम १ २ १ १६)। योक्तम न [पोसन] बक्तन प्रचा (व १)। योमणया की योपणा र पोपस पृष्टि । २ भएत प्रसन (दरा)। योमय रेमो योम = पोम 'पौमण डि. (हा ६ ही-नव ४१०३ बुह ४) । पोमव रेती पोमग (धन)। योसह रू [पीपभ पीपभ] १ म्हणी बनुक्ती साहि वर्वतिषि वें करन योग्न वैन बायक का बत-रिकेप माहार मादि के स्वाग नुषक दिया बाता मनुदान-रिधेप (राम १६) बरामीर महानुस ६१८ ६२)। र<sup>ी</sup> वर्ष-१४वस-व्यट्टमी चनुर्दश्ची साथि पर्वे विकि भोगहराही रहीए एक पश्चासुबायधी मरियुक्ते (नुता ६१६) । <sup>\*</sup>पडिमा स्त्री "प्रतिमा] भैन भारक का करने योग्य सन्तान-विकेष क्षत्र-विकेष (वंबा १ व)। बय व दिहा ] बहा पूर्वोत्त पर्व (परि)। माञ्चा की शाजा विषय-बन्न करने का स्यान (लाया १ १--पत्र ६१ घेटा मदा)। ोपपास पु ["ोपपास] नर्गास में दर शन-प्रदेक विद्यालाता देन धारक वा सनु शान-निरोध भैत स्पारक का स्वास्त्रको क्षत (बीर नृत ६११)। वार्माद्य रि [पार्यघड] शिने वीषप बत रिया हा बट, बीयम बरनेगला (लाया १ १~ वर्ष ६ गुरा६१६ पर्नेवि ६०)। पामित्रीत [र] दुन्द र्राट दुधी (रे 5,51) 1 पानिम रि [पुष्ट] पारत पुष्ट (सरि) । पानिम रि [पानिम] र पूर्व रिख ह्या । र पारित्र (च्या २०१४) । पार्शिद्र(क्षे) विभिन्नि विशेषको नामान राह्म। धर्मा से [संध्या किया र्चा प्ररण—सरोहा वें हता **हाँ क**र क्री (रपन १३४) । प्रामा को [योवा] १ कीर मान की वर्तामा । १ भेप बाग की सभापम (मूक्ष १ ६ 24) 1

पोद्द पूर्वि देस बादि भी बिद्धा का बेर क्क्सी भाषा में भीह (शिव २४४)। पोद्द 🛊 [प्रोय] प्रत्व के प्रुप्त का प्रान्त भाग (पढ़ा) । पोहण **पू [के] छो**टी मछनी (दे ६ ६२)। पोइत्त न [पुश्चत्य] चौड़ारै (म्प)। पोइच रेवो पुदत्त (वि ७८)। पोह्शिय वि [पार्थवित्यक] प्रपत्रत-संबन्धी (पग्छ २१--पन ६१६: ६४ : २१--पन £44) 1 पाइम केंग्रे पोप्पछ (बद् )। प्य देवो प = प्र "विमोसहिएकार्ग" (सींव २ मदह)। प्पञास **रे**पो प्यास = प्रयाग (धनि ११७)। रपंत्रस रेता पंत्रस = प्रवृत्त (मा ३)। प्याध रेतो प्याप (धमि १०६)। प्पन्त (मा) भक्ष मि + सप् निरम होता । व्यक्ष्यरि (नि २१६) । प्पाटजार देवो पटिआर = प्रतिकार (मा ¥1): प्यहिदा देतो पहिद्दा = प्रतिमा (रूमा) । प्पणइ रेखी पणइ⇔ प्रस्तवित (दुमा) । प्यमाम रेपो पनाम≈प्रणाम (**१ ।** ₹ **₹**) i "प्पनास रेपी पमास≖मनुग्र (दुन 420) i <sup>\*</sup>ष्पण्ञा देशो भण्जा ≈ प्रज्ञा (\*रूमा) । प्परमान देती परमान (समि ८१) । <sup>क</sup>टपद्स देगो पद्म (शाः—रिक्र ४) । ैपपुर्वित (धी) देना पट्युवित्र (नार---मासती १४) । रपरंथ रेता वर्षेष (रंबा) । प्यार्थान रेगो पश्चिद्र (रमा) । एरमून (धी) देगा प्रमूप (नाट--वेली 35) 1 प्यमत्त हेनो पमत्त (यात्र १**८१)** । प्यमाय देनो प्रमाय (नि १६६ व)। व्यमुक रेगी यमुक्त (सा-नतर १६)। व्यम् हेना वर्गेद (च्या) । त्पगर देशो पयर (दुवा) । <sup>क्</sup>टरपार देवी पदाय (दुवा) ।

व्ययास रेको पयास=प्रकार (सूपा ११७)। <sup>\*</sup>च्चस्रावि देवी पद्मायि (धनि ४६) । "प्ययत्तण रेधो परसण "मनिमनिए सुर पदछएँ (प्रवि ४)। "प्ययह देखी पयह (गुमा) । प्पवेस रेखे प्रेस (रेमा)। प्पनिस रेखो पर्येसि (प्रति १७५) । व्यसर देवो वसर = म + स । बर व्यमरीय (रंगा) । व्यसर देवो यसर = प्रसर । प्पसन देधो पसय = (नाड—मामनि ३७) ३ प्यसाय रेवो पसाय = महार (रंगा) । °प्पमुख देखो पमुख (रमा) । प्यमृद (शौ) वेखो पशुअ = प्रमृत (धनि 1 ( W ैप्पहर देवो पहर=ध्वार (मे२ ४ पि २६७ ए)। प्पद्दा रेपो पश् (रुमा) । प्पद्वाम रेपी पद्दाम (रेम्स) । <sup>'</sup> "प्पद्दाय देतो. पद्दाय=प्रमाद 'णहाउ' (रंग्र) । प्पहार हैगी पहार (रेमा)। प्यहाय रेपो पहाय (धर्मि ११६)। व्यद्भ देशी पहु (रमा) । प्पार्टम रेंगो पार्टम (रंग)। प्पित्र देती पित्र = तिप (पनि ११० मा **₹**<) 1 व्यित्रा रेगो (पत्रा (रूपा) । (देपच बेली इच (बाह २६) । च्यम रेथो पम (रि ४ ४) । प्यन्म देशो पन्म (दुना) । त्यान देता वोड (रंबा) i प्रांग रेवा पंग = स्पर्व (राज ४४३) स 463 XX6) 1 न्या देलो सामा (ब्रुस १९१) ( प्पञ्चा देवी प्रजा(दुवा) । क्रम रेती प्रज (विरं ) ।

त्याच कर [ रामञ्जू ] १ पारच बहुत ।

२ पद्धाना । स्थानज (रिन) ।



कार एक केन गुनि (कम्प)। रक्तिसय व

िर्रोधव दिन केत प्रति (धान १) । सिरी

की भी देश समर्शनती कात के पंचम

बारे में होनेशाबी सन्तिम कैन बाब्दी (विचार

XXY) I

फब्बरी [के] केबी फब्बरी (ग्राप्टर प्र)।

फदाको फिटा हो की फाक्री क्या

(बाग १ श वक्त १२ १) बाधा मीप)।

स्र पि [ बन् ] फ्लबल्य (हे २ ११८)

42)1

**कॅशका ह्या कम्प-श**ाप्त (पिय) ।

क्षाविद्या (दुन्य) ।

**प्टंस पन [विसम् + वर्] परस्य प्रभावितः** 

होता प्रचाल-विचय होता. सप्रयास साविश

हेला। चंतर (हे v १२१)।प्रयो, हुना

फडिश नि [स्फटिय] बोरा हुया 'ठो नीने सबरेहि नरेहि फडिया ऋडति सा मत्ता' (सुपा ₹₹₹) i फडिल ) देवो फलिह् = स्पृटिक (ग्राट---फडिंग रेपना वरे)- फडिंग्गाहाखनिमा (নিছু ৬)। फडिड देशो फडा-छ (नंड)। फडिइ पू [परिष] १ धर्मना मायन (से १व वद)। २ दुवार (वे ४ ४४)। फ बिद्दा देशों फ छिद्दा = परिवा (वे १२ **ν**ξ) ι कृषि सर्व की श्रमंग <del>ъ</del>т फहुरा मार्ग, निस्सा प्रवराती में 'छाडित' দৰ্ कम्मियकद्भिरसा भूती बत्बा य फर्बेंड्स । फ्रूपबुमार्च (शिंद रहत)। २ संपूर्ण क्ल के मविहाता के करावर्ती परा का एक सबूबर दिस्सा समुदाय का एक शक्ति क्षेत्र विभाग जो संपूर्ण समुदान के सम्मन्न के भवीत हो। 'पञ्चानच्छि प्रमापुरिम फुल्फर्डि' (भीप प्रश्) । १ द्वार साविका छोटा दित्र विवर । ४ धवविज्ञान का निर्मेन-स्वानः 'कहा य मर्चचीजा' 'कहा य बालुवानी' (विशे ७३वा ७३६)। १ समुराय शत् पन्नद्रमना फ्यूमेर्बि एंडि' (स्ततन साबु १)। ५ सबुराय-विशेष वर्वणा-समुदानः, श्रीकृष्यक्य-चर्यमेनं धविमापकरहता संदर्भ (कम्भप २० ४४ वेष ३ १८ ६ दिशे दिश शीवस ७६): व श्रीवहसूद्ध वर्षे वासि सन् कर दुवारं तुं (वंच र, १७८ १७१)। वद्भ ("पिति] वछ के सवाचार विकास का नायक (सह १)।

क्या पुं िक जो कर, वंध शी करता है है, ११ जाय शा २४ । युवा ११ मानू ११) । पणा पुं दि कर को करा, केत वसारे का उनकार (वस २९१) । फाराजुर पुंचि करतारिकीय 'पुंचती करदसीय ने करायुत्तिकीय 'पुंचती करदसीय ने करायुत्त्विक स्वस्त्र स्व पुण्यत्त् (स्वत्त्र १८-५ स्व १४) । प्रमात पुंचित स्व इस्ट्र का येह (वस्त् ११ है १ क्षेत्र प्राप्त) । प्रमात पुंचित स्व प्राप्त (वस्त्

फ्रिय पूर्[फियम्] १ सौप सर्वनाव (सप **३१७ टीः पाध-सुपा ११६ महा हुमा)**। २ थ्ये क्ला या एक द्वर मतरकी संता (पिंग) । ६ प्रतहत-पिगल का कर्ता पिनला-कार्य (पिय) । "चिम पू ["चिक्क] भवतान् पारचैनाच (ड्रुमा)। यह पू जिस् रि नायरुपार देवाँ का एक स्वामी अरहीन्त्र (धी १) । २ रोप माग (वर्मीव १७) । साम 🙎 [राज] १ रोप माग (क्रूप २७२) । २ पिय**ण-कर्दा** (पिय)। **सध्य क्षा ["এবা]** नायकता काकी-विशेष (कप्पू)। सह पू [पिति] १ श्या-विशेष वस्तीन्त्र (गुपा ११)। २ नाग-राज (मोइ २१)। ३ पिक्तकार (पिए)। सेहर 🛊 ["रोक्सर] प्राप्ट्य पियन का कर्ता (पिय) । फर्जिद र्ड [फर्मीन्द्र] १ माय-राज रीप माग (त्रासु ११६) । २ पिनवकार (रिय) । फणिष्ठं सक [चोरय्] चोरी करता। फरिएकद (बारवा १४६)। फिष्पहर्ष दि फिष्पिही क्या केश सक्शे का क्यकच्छ (सूम १ ४ १ ११)। फणीसर र्वृ [फणीश्वर] देखो फणिन्सइ (सिंप)। फणुज्ञय देवो फणगजुप (राष)। फद्म र् [स्पर्भ] स्पर्ग, दिसे (हुमा) । फद्रां भी [स्पर्ध] क्रमर देशों (दे व १६) कुमा ३ १ द) ≀ फर्कि वि [स्पर्निन्] स्पर्न करनेवाला (श्रष्ट ₹₹) ι पर ) ई[वे फम, क] १ का**छ गा**रि फरम ∫कासमा। र दाप । (दे १७६/६, वर क्या पुर २ **११)। देवो** फल, प्रस्मा । फरञ र्नुन [द स्फरक] सक्र-किरोद 'फरएहिं प्रावञ्चां तेवि हु विस्तृति बीवर्त (वर्गीव = ) 1 पर्राव्यकृति [र] प्रस्काहुमा दिवाहुमा कम्पित (क्यू)। फरस **रेडो** फरिन = लग्ने (रंभा नाट) । करम् ई [परमु] इबर इत्समः करन (मिकिति२४)। समञ्जूष्टिम] कक्क्स्स विटेन समर्शन अपि ना पुत्र (मल १४३)।

भरहर मरु [फरफराय्] फरफर मानाव करना । बाह्र- फरहरीत (मनि) । फरित देवो फसिट् = स्ट्रीफ (इर)। फरिस सक [स्प्रस्] छूना। फरिसर (पड) फरिसइ (प्राष्ट्र २७)। इस्मै फ्रीर सिन्द (कुमा) । क्वड़- फरिसिकांत (वर्मीव 24\$) i फरिस ) र्नुन [स्पर्रो, क] स्पर्ध धूना फरिसर्ग (भावा पएह ११ मा १९२) प्राप्त पापः कम्प) 'न य कीराः तलुकारीतं (AABL 5 AA) 1 फरिसण न [स्पर्शन] इन्द्रिन-विशेष स्वीक-न्त्रिय (हुप्र २२४)। फॉरिसिय निस्पष्ट] चुमा इत्या (द्वप्र १६८) फरिहा देखों फक्षिहा = परिचा (सामा १ ₹₹) ı फरुस वि [परुप] १ कवेंग कठिन (अवा पामः हे १ २६२, प्राप्त) । २ त कुलवत, निष्टुर बाल्य अस साबि किभी फरसे बरेका (सूम १ १४ ७ २१)। फरुस ) पू [दे पस्य क] कुम्मकार, फरसम 🕽 हुमहाद, ध्येहाँद, हुमाछ भोग्यसमी-यमण्डसम्बद्धि (दृष्ट् ४)। सास्म की ["शास्त्र] कुमकार-पृह (शह १)। फरुसिया की [परुपता, पारुन्य] क्रकेटता निप्हरता (धाषा) । फरत यक [फरत् ] फनना, बनानित होना। फलर (गा १७) यहर) फलींग (विकि १२०२)। बद्धः फर्संत (से ७ ४१)। फछ पून [फछ] १ इजादि का शस्य (बाना कण द्वाग हा शा १)। २ साम 'पुरुष्कर है सुनिकाल प्रदेश किमिह मह करी होर्र (का १८६ टी) । ३ कार्य क्षेत्रक्रमा नमी होति (वंतर १: नर्म १)। ४ वटानिट-इत कर्म का श्रुम या चतुन कक--परिशास (सम ७२, १४ ४ ११४)। ४ छहेरर । ६ प्रयोजनाः ७ विष्ठनाः व कामग्रवः ६ बालुकाशक कागः १ प्रकार १ दान । १२ पुण्कः बाएडकोषः १६ डालः १४ क्टोत कव-इध्य-विदेश (**१** १ २६) । १४ वय था रूप मा मुहिसा धर्

द्वेतारक्रेस्ट (साचा १ ६ ६ १)।
संत व ति [ यत् ] फुजनावा (श्राप्त १ १) स्थित्य विद्या न दिया न [विद्या कि तिया न स्थापित क्यार । विद्या कि तिया न स्थित क्यार । व त्यां का एक वैन मन्तिर (ती १२)।

(कार) परसम्भ } पुँत [फस्स्क ] १ नाह बारिका परसम्भ } क्वत (सत्ता ना ६२६ तेषु नशः पुर १ ११ बीन) । २ कुए का क्व कार्यस्था (बीन वचा १२) । ३ साम

एक बाकरस्य (सीत बस्त १२)। १ द्राव्य 'प्रतिवृद्धि करुपृद्धि' (शिता १ १) द्वाना सार्व १ १)। ४ देवी करू (याता)। "सस्या की [शायमा] वस्तु का उकता निस्तर कोया जाय (भन)।

फळाम न [फळान] फनमा (तुमा ६) । फछा १ पुंच [फळाइ क] फनम, काउ फळाइगी धारिक रा क्यांग मार्चकर मिल्कु स्वीयार पीके सा क्यांग मार्चकर किल्कु स्वीयार पीके सा क्यांग मार्चकर्तिक मार्चकर्तिक स्वाहर्त वा धार्यहर्द्ध करतीयत पुरदेकरा (धारा २ १ ६ १) 'मूनिकेटना काल् रूपमा' (धीरा) 'मरफनाई' (हे १ काल्युक्याधिक-

भागनवन्त्राहः भाइ फ्राइटिस्स विधितः इन्स्टरसेयरं (स्वि) पिङ्गासास्यमयनं सुस्तिवस्तिकाप्रसङ्घेताये। संप्रमिकसम्बासं वीहित्वं सुद्यासस्यास्य

(Mt 63 34) 1

प्रस्तिका ) स्में [जस्तिका परवर्ता] नाठ प्रस्ति | सारि ना तथा 'पुरिए सप्तन्तिय प्रसिद्धं परेक्शातकां 'दल प्राप्त्रकारी विद्वरं (तो ११), नमानवेद कर्ने वित्तं सामित्तु विच्छत्तविष् 'दुर १११)। प्रस्ति स्में वि र क्लीय न्यान (दे ६

फक्क्सी क्ये [ये] र जनीय नगाव (देश दश्या १९६८ ११८)। र जनाय की नगाउ 'शरकुरिक्षनेटमार्थेक्साइ इपिर्ध न कम्प्रोप' (ना ३६)।

फ्छान वक [फ्रायम्] ज्वारात् काला सकत करनाः 'ततीरि सं क्यूक्ता निप्तय-चमेर्स फ्लावीर्' (एत ११)।

पत्सवह नि [फसवह] क्यार, प्रत को बाज्य करनेनामा (पत्रम १४ ४४)। १७)। फुछि दुं[दे] १ तित स्विश २ इस्ट, केत (१९, ८९)।

द ११)। फिलाम न[दी वातन, नावन स्मेतन मानि ना नदेश बाता स्माहर (झ १ १—यन १४०)। फिलामारी क्षे [दे] दुर्ग कुछ तुश (१ ६ ८१)।

फारिक्ती की [फारिक्ती] प्रियंत्रमुख (वे १ १२ १ ४१ ताच पुत्रमा ना १६५)। प्रतिक्ष र्यु (पित्यु) र मर्थना, सामका 'परपाना परिद्यो' (ताचा सीत) 'क्रस्तिक-बर्धिक्षा' (सम २ १——पर ११५)। २ सक्त-विशेष में १६ का द्वार पर्धार सक्ता १ मृह १९१४ इसक्ष्य । १ क्योपिय-काक-

प्रसिद्ध एक बोग (दे १ ३३२) प्राप्त)।

फिछ पू स्फिटिको १ मिछ-विरोध स्वादिक

मिछ (भी ३३ है १ १६ ३ इस्यू) । २ एक

विमानात्राक्ष केर-विमान-विकेश (विश्व १९२) इक)। १ राज्याक्ष श्रीवरी ना एक स्वयिक-मय केरह (दा १)। ४ राज्याक्ष पर्वेद का एक हुट (१४)। ४ कुएका पर्वेद का एक हुट। १ वजक पर्वेद का एक श्रिकार (धर्व)। "गिरि दु [गिरि] कैनास पर्वेद

(वाप)।
परिषद् पू निर्मेद जिल्ला राज धारि सः
रक्ताः भौतिको जिल्ला (वाप) भारतेस्वारकमुम्परी क्वितायमित्र क्रिकार्रस्थ
(धारा )।
पर्मेद्ध पून हिन्दिन्दे सास्रत (स्व. २
३)।

२)। फरिया व [वे] कपाय का टेंटर, टेंट बा देवी (संदु वेट टी)। फरियांस वृ [फरियांसक] क्या-विशेष (वे)

४ १२)। फब्रिक्टा जी [परिकार] खाई निजी वानवर के वारी भोर की नहर (बीटा है १ ११२

कुमा)।

फिलिंद्र केवो परिष्टि (बाह्य १४)। प्रतिकारी पेपी पत्रकारी = वे (बालू १४ छी)। पत्रका स्त्री फिल्की बाठ बार्वि भी बाँध्ये शब्दों 'क्लो वेस्टक्सीय व्यक्तियहाँग्य

विशिक्त कहीं (तुमा वेटरे)।
प्रजीपा ) है [प्रजीपमा] यह-मार, यहप्रजीपा ) विहित्त (दा वे १ पर-११३)।
प्रज्ञ वि [प्रजम्म] यूने वा बहर, गुरी करम्
(वह रे)।
प्रक्रीह [प्रम्म] करें हाम मार करमा, दुवराठी में 'प्रमुद्ध । प्रकीमारे (वह रे)। यहम (यह प्रसाद है वे वे)।
प्रकार किमीर विश्व वे वेशिक्स' (प्राप्त वे ६ टक । र स्तावक (रे ६ टक)।
प्रस्तामिक ) कि चि हु उत्पाद किस

ध्यक्त (हुँ १११) । बेह, ध्यक्तेत्र (हुमा) । (हुमा) । ध्यक्तिक में प्रधादिक स्थादिक] निर्शाधिक ध्यक्ति में प्रधादिक स्थादिक] निर्शाधिक प्रधादिक हुन व्यक्तियों हुनों क्याधि (निहु ४) १ ९ हुन ना निकार-विरोध प्रधादिक स्थाधिक ध्यक्ति

दुव (सीय क्या विक ११६, ११६) का ४)। १ काल (पहला १७—पत्र ४१)। पद्मच कि [स्टील] १ क्या। १ किटीहों। १ क्याल (सिते १६ ७)।

पन्नर वि [स्पन्नर] १ प्रश्नर, गृहकः 'पन्नरफन आरम्बरसम्बद्धास्त्रसम्बद्धाः पन्नसम्बद्धाः (वर्गान ११)। २ स्थितसः विदुषः । ६ विस्तृतः केता हुमा (मुर २ २३६) काम १७ सुवा १६४) दुम २१)।

फारक नि दि स्पारको स्टरसङ्ख को बारण करनेशाला, 'र्च नार्चन बरहु कारनका मनुद्रवयणमो कुन्तां (भर्मेनि दर्)।

पत्रकृतिस्य न [पास्त्रय] पश्चका क्रोपकः क्ष्रेरता 'फाबीस' समार्थीत' (साना)।

काछ केते "एवज ।

प्राप्त केवो पाइ । प्रतेष (है १ १६०) १६२) । करक प्राप्तिकाँव, प्राप्तिकामाण (मा ११६ सम्मव १७४) । संक्र. प्राप्तिकाण (सा ४०६) ।

प्टाइ तुंत [प्टाइड] १ तोहानम कुटा एक प्रकार की लोड़े को बात्यी कीम (बना)। २ प्रकार की लोड़ी एक प्रकार की निक्त परीक्षा करम-विकेश (गुना १८६)। ३ प्रकार, तरिंक पीति वस विद्यालकों (कुत १२)।

फाडम न [पाटन रफाटन] निरायण "कोलो किन कोषि वीरपुरूको व वारिसं कारणे" (रेका कम १९१)।

पासम् देशो प्रशासम् ।

फास्म की [फास्म] फ्लाङ्ग लॉठ (क्रूप्र २७२ दुवक १२)।

फांकि को [सं फांकि] र क्यो क्षेत्री क्षित्रा २ शाका "तिविष्यतिष्य क्षित्रका कर्देर" (वंचा परे)। रे चौकं, दुक्का '— मानव्यतिष्णुयोक्तकार्यत्तिपद्गृह—" (क्रस्य रेरे)।

प्यक्रिम वि [पाटित स्प्यटित] विशासित (हुमा पर्धाः १—पत्र पत्म वर ११; सौर)।

प्राविक न [ब् प्राविक] बैठ-निरोप में ब्रोजा बक्र-विरोप "ब्रामिकारिंग वा बक्रवारिंग वा प्राविद्याणि वा कम्प्यारिंग वा (ब्राचा २, ४, १ ७)।

च्छातिका ] चूं [सम्बटिक] १ एत-किरेन च्छातिमा - (बच्च) । ९ कि स्वटिक-एत का च्छाटिका ) (पि ११६ का १८६मुना वट)।

फालिहर पुं[पारिसङ्ग] १ क्यहर वा पेतृ । २ हेवहाद का पेतृ । ३ विस्व का पेतृ (१ २१२)।

ष्टास सक [सूछ स्पर्तेष्] र सर्ग करता सूचा र पावन करता। प्रस्ता, धारेर (हे ४ स्टर प्रमा)। वर्ष प्रस्तिक (कुमा)। वक प्रस्तित, प्रस्तियंत (वेष्टर हेर प्रस्तित, प्रस्तियंत (वेष्टर हेर प्रकामाण्या-प्रसा । तक प्रस्तिका (प्रसा प्रसा प्रकामाण्या-प्रशा । तक प्रस्तिका (प्रसा प्रसा

क्ष्य क्यो। फास देन [स्पर्के] १ स्पर्ध, धूना (भग प्रापू १०४) । र प्रहर्नेक्ट्रेय व्यक्तियक देव-विदेव (हार १---पण ७०)। १ कुमा-विरोध न्यवादं प्रसादं पुर्वति पार्टः (पुत्र १ ६. २ २२)। ४ शम्ब साथि विषय (ज्ला ४ ११)। १ स्पर्धे इतिस्य स्थवा (मर्ग)। ६ रोन। ७ धरूसा ६ दृढ, सहाहै। १ द्वार घर-बायुक्ता १ वायु प्यतः ११ वानः १२ के से सेक्ट भावक के मनर। १व वि स्टर्स करमेनाचा (हे २ ६२)। कीव पूंकितीय] क्वीय का एक भेद (निष्कृष)। जास नासन ("नामम्) कर्ने-विशेष कर्मरा यात्रि सार्व का कारणमूर्व कर्न (राज सम ६७) : भैत वि मित् ] स्पर्यंगता (ठा १,३ घन) । ीमय वि मियो स्पर्ध-मय रार्ध से लिए का फासा गयायो कोनकायो (छ १ )।

फासरा वि [स्परीक] सार्ग करनेवाला ( (धन्क १४)।

प्रासण व [स्पर्शेन] १ स्पर्शनीम्मा (बा १६)। २ स्पर्शेनेत्रय, त्वचा (वव ६७)। प्रास्थाया | व्या [स्पर्शेना] १ स्पर्शेनीमा प्रासणा | (हा ६ ४ १९१) जीवब १व१)। २ प्राप्ति (स्व)।

प्रांसिम नि [सूप्त] र कुमा हुमा (नव ४१ विके २७०१) । २ प्राप्तः 'जनित् कार्वे निर्माणा पर्वं के प्राप्तियं तमं भारतम्' (पर ४)।

फासिझ वि [स्पर्क्तिक] स्पर्ते करनेवासा (विदे १ १)।

प्रासिम नि [स्परिति ] १ सर्वे पुष्क, स्प्रें । २ प्राप्त (रव ४---पाम २१२)।

पप्रसिद्धि न [स्पर्]न्त्रिय] स्वीनित्रव (भग खाना १ १७) ।

फासू । वि [प्रासु, क] क्लेक्न और फासुज रहित निर्मीय प्रवित्त वस्तु (अक फासूमा पेका १ ६ धीरा क्लार गाया १ १, पजन दर १)।

फिक्स बरू [फिन्+क] प्रेर—शिशान का विक्राना 'सह फिस्करीत पेवा' (बुवा ४१२)।

फिकि पूर्वो [के] क्ये खुती (वे ६, ८६)। फिज न [के स्फिप् ] निजन्म भूतर, वेका का क्यरिशान (तुंब ८, १३)।

फिंट्स पर [ भीत् ] र गीते विष्णा । र दूरता प्राप्ता । र प्यस्त होता । ४ प्रमुख्य करता प्राप्ता । किट्टर (है ४ १०० प्राष्ट्र वर्षा तावता । किट्टर (है ४ १०० प्राप्ट र र ), किट्टीत (चिर १२१४) । प्राप्त किट्टिक्टर किट्टिक्टर किट्टर्स प्राप्त कर्म वर्षा)

फिक्ट कि [फाट] किनट भाषिप्र तरह किस न फिट्टा (पा ११ सीर)।

चिट्टू की [कि] र मार्च रास्त्रः का विद्वार मिनियं कुट्टूम्बरपेटियां एवं (सिरि रहर)। २ प्रसाम-विदेश मार्च में किया बाता प्रसाम (क्रम र)। सिंग्यु में [मित्र] मार्ग के नियते पर प्रसाम करते एक की सबनिवासी मिन्नदेपर साम्राम करते एक की सबनिवासी

फिक केवो फिट्ट (केवर (है ४ १७०)। फिकिस के [जोड स्किटित] रे म राजाम । गट खुट (दोन का १११ ११२) हे ४ ४४ १४)। र परिवाल स्मोनित (दोनमा १७४ मीए)।

फिकू नि [के] बाबन (के के क्रा)।

फिप्प वि [में] इतिम बनावटी (दे ६, ८१)।

फिरिफ्स म [वं] यन्त्र—सांव रिवट मोह-विशेषः केवना (पूर्णत ४२, ५८६ १ १)। फिर सक [ गम्] किरम, वतना। बहुः

फिरंद (वर्गीव =१) :

पुरकृत सक [पोस्कुराम्] भूव कौपना बरमधना सङ्क्ष्माना । कुरकुरेन्य (महानि १)। बह- कुरपुरंत, फुरपुरंत (गुर १४ २११ स ६९१ २११)। पुत्रीक वि [स्फुरित] १ कम्पित, दिशा हुमा करका हुया चनित (वे ६, य४ मुर ६, २२६१ सा **१३७**) । २ दीस (दे ६ व४) । क्रुरिज दि [दे] नित्यत (दे ६ म४)। कुरसुर देवो कुरपुर । वह कुरसुर्गन, कुर-कुर्तेन (क्एह १ १ पिंग १६ ) पुर छ रंक्ट्र शामा १ ज-पत्र १६३)। पुत्र देशो पुत्र = स्तुट् । पुत्र (नाट) । पुत्रे (बन) (निन)। कुछ (सर) देशो कुर = स्कुर । कुमा (निन)। पुत्रक (प्राप) देखो पुत्रक = स्कूट (सिंग)। प्रमा (पप) देशी कुछ - दुस (चित्र) १ फुछिल देशो फुडिश =स्कृति (वे ६ १ )। पुरिक्त (सप) देशो फुक्तिल (पिय)। पुर्खिम र् [स्युक्तिक्क] धरिव कस (समा १ १७ के ६ १९६ महा)। पुद्ध सब [ पुस्सु ] पूजना पुरन-पुक होना विकसना पुराद पुताप, पुत्रोद (रंगा सम्बद्ध १४) पूजीत (हर २६)। मनि प्रक्रिशिष (गा ६ २)। पुद्ध देवी कम = म्म । पूज़र (वारवा १४९)। कुद्ध न [फुद्ध] र इस दुष्प (कुमा घर्मेनि

२ : उसमा (४६: प्राप्ति १)। २ क्रमा हमा प्रमित्त (सग ग्राप्ता १ --- प्र १ स् प्रमा) । माधिया औ [मातिका] क्रम केन्द्रेसमी मामाच्या के की माधित (पुर १ ४४)। विदे की [चित्र] पुत्र-तमान यता (प्राप्ता १ १)। पुत्रस्थ व [पुत्रस्थय पुष्यन्त्रयो सनद् नेत्य (प्र १ ६६ थे)। पुद्धा में [च्रिक्त] पुष्य में भारतिकाता स्थान (प्रकृत)। पुद्धा में [पुद्धा वुष्य भी भारतिकाता समान साम्राप्त (प्रीप)।

पुरस्या भी [पुरहा पुष्पा] बही-किश्व

दुष्पाद्वा राज्युष्पा, योगा का सामः, 'बद्दुक्रम-

कोतिसमा (१ मी)नहीं व तह घरवेंदियाँ
(परह १ - पन ११)।
पुद्धश्वत न [वे] पुण-निरोग महिरा-मामक
पुन्न (द्वर ४६१)।
पुद्धश्वत १ सि [पुद्धित] पुन्नस्य हमा
पुन्निय १ सि [पुद्धित] पुन्नस्य हमा
पुन्निय १ सिम्मत १४ विक २१)।
पुन्निम पुन्न [पुन्नस्य १४ २२०)।
पुन्निम पुन्न [पुन्नस्य पुन्नस्य पुन्नस्य प्रमान्य पुन्नस्य प्रमान्य प्रमान्य
पन्नस्य या फकार्य प्रमान्य प्रमान्य

स्म क्षति व पताची कडी पर्वोद्ध किवियो क्यं (पूर व प्रभा) । कुबिर वि क्षितिहाँ कुमनेनामा मुद्रसा 'विवयचे वयाचेनयकृष्टिकाकृत्वेदिं (सम्मच २१४) ।

कुस तक [आम] भयण करना। कुषर (१४ १९१)। पुत्स तक [सूज्र] मार्थन करना पौक्ता सारक करना। कुषर (१४ १ १ भ्रामी)। कर्म कुस्तित, फुस्तामा (मार्ग कुम १२४)। तक पुत्तिकर्ण (मार्ग) पुत्स तक [स्ट्रम्य] स्थरी करना कुना। पुत्रम (मार्थीण कर २ ६) क्वीत (स्वे

र २३) पूर्वेषु (सम्) । क्यं कुस्तेव प्रसामाण (सीम १४०) स्वो । वीह, कृतिक प्रतिकाण प्रतिकाण (वीम २ १ वाम भीण पि १८१) । क्यं प्रस्त (ता १ २) । प्रसाण म [स्यर्थेन] स्यर्थेन्य (स्वयं पूर्णा १) । प्रताण की [स्यर्थेना] क्यंर केशो (स्वयं ४१२ तत १२) । प्रतिका केशों पुसा स्वयं । प्रतिका केशों पुसा स्वयं ।

पुरितास कि [स्पष्ट] हुमा हुमा (क्षीतक ११६९)। पुरितास कि [स्पष्ट] जॉब्स हुमा (कप द १४४ हुमा १११ हुम २११)। पुरितास पुरत्त हुमा, कुर, कुर (क्षामा कम्म)। २ व्यकुतात (कम के)।

कुमिम वि [असिव] मुसमा हुया (क्या ७ ४)। पुर्वत्राम की [के] बार्क विशेष पंतावदुर्गा-सकुवियाँ (गराय १—पन १३)। पुरुत्त बेबो पुरुत = प्रमुग् सूत्र दूँ [के] बोदकार नोहार (वे ६ ८१)। पूत्र पर्वा पुरुत्त। वक्र पूर्मय (घन)। प्रश्लीय वि [क्र्रकृत] कुका हुया (वा प्र (४१)। पुरुत्ति की प्रकृत-पुरुत्त प्रमञ्जयक्षतिका

्ष्म वैसे पुरुष - पूज प्यम्प्रमध्यिक्टा पूजरावारिय बैजारिं (जी १९) । पेन्हार युं फिरहार् १ स्थान की धाराज (जुर १ १४) । २ धाषाज निहाबर (क्यू) । फेन्हारिय न फिरहारित] व्यार वैसो (स

१०७)। फेडामणिय न [के] निवाद-समय की एक फैल कपूकी प्रकम बार नजा-परिदार के वस्त विमा जाता स्पद्धार (स ≠८)।

फेडिक वि [स्फेटिस] १ नट किया हुया विकारिक (पत्रम ६६ २२)। २ स्याजिक (शिरि १११)। ३ सपत्रीय (प्रोजमा ४२)। ४ ज्ह्रास्टिक (य ७८)। फेज पुँ फिल फेल] केटा फाइ लक्ष्मस

वामी वागी के कार का बुहुदाकार वासे (पारा छामा १ १--पत्र वर कार)। माजिया की [माजिता] मधी-विधेय (का २ व वक्)। पार्माक रेड़ियाँ वस्प (वे व वर्)। सम्बद्ध रेड़ियाँ वस्प (वे व वर)।

फेनबड ) ३८५ न्या (४ ४८) फेन्याय यह [फेनाय् फेनाय् ]केल-फेन का बमन करना, स्थाप निकासना ।

वह फमायमाण (प्रयो ७४)।

फिरख पुंत [क] बाली पासे पार होने-बाली बाली पासे 'सामंत्रका दुनि कहाँ प्रवाद करारी प्रकारतियों । प्रदू विधि-मन्त्रिता किरस्क्रपुराधि कामंत्रि (युग ४९४)। फिरीय वि [गठ] यहा हुआ 'नेक्स्यमास्स्रित द्विरास स्ट्र

भीवश्यमास्यक्षेत्रं पूरिसादद् वेदि स्त्रमधो स्त्रिरेया । वे सुस्मध् सासलो

पुन्नेनि हु एस संसरकों (बर्नीव १६८) ।

फिरिस केरो फिरिका (से स १)। फिरमुस मा [वे] फिरानका विश्वपका विरता । बाह विश्वविकामितके फिरमुस-माणा स बानवासित्यं (सुर २ १ १)। केरो फिरमुस्स ।

फीस केबी फाय (युव २ ७ १)। फीजिया की [के] एक बाल की मीठाई, पुत्रपती में फेलीं। (सम्पत १७)। फुंश की [के] पूर्व, युव से इवा लिकानवा

(मोह ६७)। पुनार वं [पुद्वार] पुरुषर, दुनित सर्वे सारि की माराज (पुर २ २६७)। पुना स्त्रे [वे] वेश-कल (वे ६ वर)।

पुर्व देवी परंत् = सामाधुन्न (ते ११ ४७)। पुरव्या | वी [दे] मरीवारित वनस्वते पुरुक्ता | में स्पूर्ण (ताव दे ६ वर्ण ठेंद्र पुरुक्ता | ४२, बीच २३ व्ह १ वर्ण १

भर की) । र क्यानाम्याहित सम्बद्धाः पुर्वामा की [के] र गरीपानित सम्बद्धाः सम्बद्धाः भर की । र स्थानाम्याहित सम्बद्धाः सम्बद्धाः

की साम (मुख १ क)। पुरंतुम्त । करु [व] १ क्यारम नरमा । पुरंतुम्त । करुमा । कृष्टका (हर १०४)। पुरंत करुमा । कृष्टका (हर १०४)। नगर करमा । कृष्टि (साकृष्ट १)।

तिक सक् [की 4-क] ५ में बार्स हैं। विभाग हुना कामान (का से हैंत)।

कृ माराज करना । २ वक बुँहते हुरा विकासमा श्रुविमा गुलद (शित्र) । वह जुद्दे (चा १७६) गुल्काले (म) (है ४ ४१३) ।

कुक्त को [दे] १ निम्मा (११ व१)।२ कुँक (कुम ११)। कुक्सर दुं [कुरुकार] कुल्कार, कुँ कुँकी साकाल (दुन १०० वर्ष)।

प्रविद्य वि [पूरकृत] पुरुवाय हुया (बाव ४)।

कुक्की की [वे] रजकी, वोबिन (वे ६, व४) । कुमा कीन [वें रिकन्य] रुपिर का घनमन निशेष कटिन्सेव (संग्रीत ७३) ।

कुराकुरम वि [वे] विश्वरित रोमबासा परसार धर्मण्ड-विश्वरे हुए वेसवामा शस्त

पुरासी प्रम्युक्तारों (स्ता)। पुट १ सम् [सुद् भंदा] १ विस्ता, पुट १ सोता। १ सम्ब्र होता। १ स्टब्स भट्टा हुट्या। ४ स्ट होता। स्टब्स् पुट्टी

प्रहेर, पुरुष (गील वर्ष माल वर्ष, हे ४ १७०० २१रा ज्या स्त्रीर चित्र का २१ )। स्त्रीय पुरिस्त्रक वेस्ट्रिय्य सहित्रावस्त्रमध्येते वा'(वर्मीत ११) प्रहिस्त्रक (ति १२१)। वज्र पुरुषेत्र पुरुसामा (परुष्ठ १ का र ४)

नुद्र ४ देश शासा १ १ ८ - पत्र ११) । इन्हें विद्युटिय अब्दें १ इन्न हमा हम हमा विपेश (का अरु टी कामत १४४) पुद्र १ ६ १ ५४६ (चा ११) । १ अन्तु परिका (कुमा) । १ निक्हा पुरस्का

हरवीत' (छाना १ १६) विचा १ १)। प्रकृण न [स्कुल्म] १ क्रूटना हुटना (हुम ४९७)। १ के क्रूटनेराचा विकेश होनेताना (१४४२१)।

पुरित्र रि [स्टुटित] विचित्र, 'पुट्टियमेड्रो' (तुमा ७ ९४)। पटिर वि [साटित] क्लोसमा (क्ल)।

पुर्विर वि [सुद्धितः] ऋगोरामा (बल) । पुद्ध देनो पुद्ध = स्वट (वि वरर) ।

पुत्र केयो पुत्र = सुद् अरेश । कुरद (है ४ १७०१ ११११ माहः ६१) - 'कुरोंद समीन संधोधो' (करः ७२ टी) । वहः पुत्रमाण

(दुर १ १४१)। तुत्र रेगो पुट्ट = राज (भएछ १६१ का ७०० या १४१) चीरम १ । भण)।

नव इवके। बीरल १ : अग) । पुत्र हि [सुठ] सर्छ, स्थवः महतः हिरूरः (त्राम: हे ४ १४वः उस) । कुकान [स्कुटन] हुटना, बरिएक होना (पर्याह १ १---पन २९)। कुका की [स्कुटा] परिकास-नामक महोरोज्य की एक स्टारनी, इस्तरहोत्निकीय (सं

र ४६)। पुता को [पट्टा] सांप की धन, 'श्वरम्बु-बहु विवासीमानकस्त्रीयबबुद्धारीमकस्त्रानके (सन्त)।

पुरिकेश कि [स्पृतिका] १ मिलानित, विका हुया (पास पा ६६ ) । २ हुता हुया, विद्याले (स. ६०१) । ३ विकास (स्पृत्त १ २—पद्म ४ )।

कुरिक (चन) रेको कुरिज (चीर) ! कुरिका की [स्पोटिका] कोटा केस-कुरती (कुरा १३ ) ! कुरू रेको कुट्ट ! कुरूर (वर्) !

कुम वि दि शहर] सुधा हुया (पन १४० हो। कम्म १, घर हो) । पुरसुक्त न दि] वदरवर्ती सन्तरिकेर, कैसम् (पुर्वात ७३) पदम १६ १४) ।

कुम सक [भम्] प्रमण करणः। द्वर्षः (हे ४ १६१)। प्रयो कुमानः (कुमा)। कुम सक [के फून्+क] द्वंत सारमः प्रस् से हसा करमा। दुमेन्य (का ४ १)।

द्वित हुना नत्या। पूर्यम्य (न्त ४ १) । वक्षः पुत्रीत (न्त ४ १) । प्रयोः दुमानेन्य (न्त ४ १) । पुरु यकः [न्तुरः] १ करकना, शिवता।

दूर के प्रतिकार की तथा । १ विकास की तथा । १ विकास के तथा प्रतिकार की तथा । १९ वर्ष की तथा के तथा विकास के तथा । १९ वर्ष विकास का का का का किया । १९ वर्ष

प्रभागित विश्व क्षेत्रमान्य (स्वार्थः पुर १ २२१। स्यागित विश्व स्वार्थः २४)। श्री पुरित्ता (ठा ७)।

पुर शक [अप+स] कार्यक वरण धीरामा । असे, कुस्सित (वन ३) ।

पुर १ [स्तुर] श्रमनिके पुरस्कतनस्य नदिन— (त्तुर १ २—पत्र ४१)।

पुर (बर) देवी पुत्र = स्पृष्ट (शित्र) । पुरण न [स्पुरण] र करनना दुर्घ (लित्र) रंगा नगन 'त्रं पुण ब्योग्यकृष्णे न्य देवें

रेगर करात 'ते पूरा धीरा कृष्णे गई हैं। धारता तेला' (तूर १३ १२०) ३ देशी (तुरा १३ वक्षा १४) धानत १६१) ३ व

स र्वु [ब] मोह-स्थलीम स्मम्बत वर्छ-विशेष (प्राप्)। बजर (शी) न [बदर] १ फन-निशेप बेर। २ क्यास का बीज (प्राष्ट्र मध्) । बहुट (बप) वि [उपविध] वैठा हुमा (हे ४ ४८४३ मिष)। बाहु वृ दि] केन करन वृक्त (दे ६ ६१) मा २६० प्राक्त ६८ हेर १७४३ वर्गीन ३: शाबक २१ व टी सु ११३ प्रामु ११; क्रम २७१ ती १४ के ६ कप्पू)। वरस (सप) सक [ हप + विश ] बैठना पुनराती में 'बेसड्ड"। बदसद (मर्बि)। बङ्गायय (बा) न [उपवेशानक] मासन (बी 💌)। **बद्धार** (बन) धक [चप+ वेराय] बैठाना । बदसारद् (भवि) । बद्गस्त देखी बद्गस्त (पि १)। वर्डस (पर्र) रेवो बर्स । वर्षेत्र (परि)। बईस (घर) न [प्रपदश] बैठ बैठन बैठनाः 'दोषि गोटुवा कराविमा बुक्रप सह-वर्षस' ( X X 54) 1 बजनी की [दे] कार्पांची कर्पाचनली ( R & X w) 1 बरुष्ट पुंचित्रकी १ पुत्र-विदेश जीलपरी कावेड़ (सम १६२ पामा खामा १ ६) । २ बरुस का पूजा (दे १ १६)। "सिरी की [की] रेबदुस का पेड़ । २ बहुत का नुष्य (मा १२) । बडस दे [बकुरा] १ धनार्यं केट-निधेव । २ पूँधी, जम देश का क्लिसी (पराह १ १--पत्र १४)। भी सी(लापा १ १---यत्र १७)। १ वि श्रमेत वित्रक्रवरा। ४ मनित्र परित्रामा शरीर के बरकरण सीर तिभूषा बादि से सँयम को मतिन करनेवासा (टा व संबंध, को तुमाव १) सी तर छे सा भूगतिया भागा सरैकाइसा बावा वानि होल्या (द्याया १ १६)। ४ दून. मानन संत्रमः दिव्यमन चारित-विशेष (मृन्द **4 ()** (

वजहारी की [वें] दृष्टाचे संमार्जनी महाकृ (8 4 EW) I बंग पू [बङ्ग] १ भगवान् भादिनाच के एक पूत्रकार नाम (की १४)। २ के<del>स-कि</del>रोप बंपास देश (उप ७१% सी १४) । १ वंग दशका सबा (मिन)। देगछ (ध्म) पू बिक्क वेश का राजा (पिन) १ वंगाल पू विहाली बंग स देश भंगानदेश बन्धो हेर्स चुह समुख्यस्य दिन्ता 🐔 (सुपा 1 (00\$ र्यमः देशो र्यमः (पि २५६)। वंडि प् वि ] देको वंदि = वन्दिन् (पड्)। चंद्र न [ ते ] नेश कारा-बद्ध मनुष्यः भारति किपि (स ४२१) 'बंदाई किन्द्रद कमानि' क्ष्मेण क्षिति वंदाई 'वंदाण मोयावण्डप्' (वर्मेनि १२)- 'एक्त्यवंदयन्यहिकाहिकहीरंज-क्ष्यग्रह्मस्या (वर्गनि ५२)। महर्षु भार किया क्य से पक्षत्रकार 'परबोहतह-भावस्यवेदरमञ्जलकारायसमुद्राई (क्रूप्र११व)। ६६ म म (वें } कैदी (नंदीटिप्य वैनयि की बुद्धि में १३ वां क्यानक)। वंदि को [यन्ति] देखों वंदी हि १ १४२३ S ( \*\* 1 ) 1 वंदि १५ [ बन्दिम् ] स्तुष्ठ-पाठक, मंगव विदेण रेपाठकः मानवी जीवसपादयमापह बारखनेमासिया बंदी' (पाया कर २८ ही वर्गीव ६ ) 'च्यामसदरवींदरादहसमुग्दुट्ट नामार्ज (स १७६)। वंदिर व [ दे ] समुद्र-वाश्चित्रय श्रदान नगर, बंबर (विदि ४३३)। मंदी की [यन्दी] १ इट-इट की बादी (द २ वर पड़र १ १, बर्ग)। २ कैंब किया हुमा मनुष्य (बडड ४२६ मा १६८) । यंरीक्य वि [यन्तीकृत] वैव क्रिया हुया बांच कर भागीत (वज्रः) । वंद्रय को [बन्द्रय] यल-यास, बन्ध क्तिनेदि बंदुरायो, मुधेहि दुरए' (च ०२४)।

बंध सक [संध्] १ वर्षिना नियनसा करता। २ क्यों का चीव-प्रदेशों के शाय संयोग करना । वंबद (मन; महा' क्व' हे १८७)। भूता वीतमु (वि ११६)। कर्म बीविश्मद्ध वश्मद्ध (हे ४ २४७) मानि अविद्विष्, वरिमाहिष् (हे ४ २४०)। वक बंधीस धंधमाण (कम्म २ व पर्ए २२) । संक्र संबद्धा वीघर, संधिकण, वंधिकणे वंधिचा वधिचु (मर पि प्रश्व प्रवर प्रवर)। इत विकेट (है र १८१)। इत्तरियक्त (वंच १ ३)। क्या. कामीत, बाग्मनाण (गुपा १९४) कम्म १ वर धीम)। वंघ ट्रे [दे] मूल्प, नीकर (वे ६ ८८)। र्थं पूर्व [बन्ध] १ कर्म-पुरुषकी का बीव प्रदेशों के दाय बूच-पानी की तरह मिश्रना भीव-कर्म-र्संगीय (माना: कम्प १ १६) ६२) । २ वन्त्रन नियन्त्रण संयमन (भा १ आसू ११६) । ३ सन्द-विरोध (पिंग) । सामि वि दिशामिम् विमानक करते बाह्य (कम्म ६ ११२४) । बंघह की [बन्धकी] पुरवती सवती की (नार-मानवी १ ६)। र्वधम वि [यन्धक] १ बांबनेकासा। २ कर्मेनन्व करनेवासा बाला-प्रदेश के साथ कर्म-पुरुष्तों का संगीय करनेवासा (तंत्र रू. ex मायक १ ६ १ क) ग्रंबा १६ ४ कस्म ६ ६)। र्धभण न [बर्भम] १ वीवने का-संशोध ना धानन किसन बाबा जाय बहु रिनाय-वादि पुरा (मय ८ -- नव १९४) । २ थो वॉथायाय बहु। ३ कर्मकर्म-पुरुत्ताः भवर्म-वस्य का कारण (तुम १ १ **१** १)। १ सेंबमन नियन्त्रण (प्रापु ३)। ६ नियमण का सामन रुखु गादि (४३)। ७ कर्म-विदेश किस कर्म के उत्तर से पूरी पृष्टीय कर्न-पूर्वजों के बाब गृह्माल वर्म पुरुषों का बापस में सम्बन्ध हो बहु करी (कम्बर रेफ ११ १८) १६७ १७)।

फेप्पस) न वि केशो फिल्फिस फेफम । फुरफुम (एक दंद १९)। मेत्रण न वि | फेरना, ब्रमानाः द्व फराफेरक सुकारएष्ट्रि' (बुर २ व) । फेळासक क्रिया र फॅल्ला २ इस करता । केनदि (सी) (सर) । चेक्र फेडिय (शह) । फेक्स को कि फॉल्स-फॉल्स, बुटन भोवत धे बचा-मुचा वश्विद्धाः उस्त व प्राप्तरपाय देवी बाबी य तमित्र दुवस्य । निषं विषेति फेर्न चीर सो विवद पूलुक्त । 'ब्रागंबकुबबासी सम्मी वरातीह परिवरते हैं। वं कामरोत्तरां पूरा ते केमाहारसंकारं । (बर्मीन १४१) : फेक्समा की [वे] महासानी मामी (वे ६ **πξ)** ( फेक्स पृथि । बिरोधिय निर्मन (वे ६८ ०४)। फैरलास एक कि फिक्कमा विश्वकता विश्वकार विरत्ता । फैल्युग्रह (वे ६ व६) । **चंक्र** फेक्स्स्तिकण (दे ६ वदः च ११४) । पेक्स्युसण्यन्**द**ि १ फिल्सन पठनः। २ रिक्रिय बनीत वह बयह बड़ी पाँच फिपस पहे(देद १)। केल्डसम्भ देवी फेन्स्ट्रसम्म (१व ४ दी) । फेस इ. कि. र कास कर। २ धकाएक (के 4 44)1 फोश पूंचि जालम (१६, वर)। फोब्रमय नि [के] १ ५०० । २ किलारित ( t 4 = u) (

फोंफा की विशे बचने की मानान समोलानक राच्य हिर वरो। फोक्स सक [स्फोटम् ] १ फोक्स निवास्त्र करना। २ राई बादि छे छाक बादि की बबारना । फोकेम(कृष ६७) । नक्- फोबॉन फोडेमाण (गुपा २ १ ४१६६ भीप)। फोड प्रे स्किटि र फोड़ा वज-निरोप (ठा १०---पत्र १२ )। २ वर्ष-निरोप राज्य-नेव (एज)। ६ वि क्षत्रकः 'बहुछोडों' (बोबना १६१)। फोडल (शौ) वु स्फिटको उसर देवो (बक्त **=4**) 1 फोडन न [स्कोटन] १ विद्याच्या (पद ६ दी परक)। २ सई मादि से शाल मादि की बनारना (निंड २१)। ३ चर्ड बारि संस्कारक पदार्थ (शिक्ष २३४)। ४ रि फोक्नेकला विवादमा करनेवासाः कावर वराविवयकोबर्ध (खाना १ व) धन्त मध्यम्यहर्षाहप्रयम्बर्गस्त्रहर्षे पीर्पं (श ३≈१)। फोडन केबी फोडज (पडम ६३ -२६)। प्रेडाव एक स्पि<u>र्</u>ट्य र फोक्नला। वोदयाना। २ कुनवाना। संड फोडाविकव (E 84 ) ( फोबाबिय वि (स्फोटित**े १ क्षेत्र**वास हुम्म । २ कुलवामा हुप्याः "क्रोक्सविना संपूरा" (TYL)1 फोबि की [स्काटि] दिवाएड मेक्स जावे फोडीनु वक्ष्य करमें (परि)। करमा व िक्रमेंम् ) १ जनीत साहि का विचार**ा** करते नानाम इस शारिये मुमिनायता कृत बहाय मादि को दर्गका साम । २ वक्त काम कर बाबोविका बबाना (पश्चि) ।

फोडिय पि स्फिटिती र चेता ग्या विकारित (बारवा १ ७) स ४७२)। २ राई बादि से बनाय हुमा (नव १)। फोबिकाय विकिस्फोटित की परिदे बबास हमा शाकारि (दे ६, ८६)। फोबिश्य व दि । एउ के समय वंकार्य सिमावि से एका का एक प्रकार (दे ६ व )। फोडिया की [स्फोटिका] बोटा कोड़ा (क **७६**व टी) । फोडी की [स्फोटी स्फीटी] के फोडि (बकापक ६) पडि)। फोण्फस न 👣 रहीर का यनन्तिय 'कालिकवयमैत्रपित्तवरक्षियमकोप्फर्तकैक्सपि-Paper (dg se) i फोफस न 🖣 पन्त-क्रम वितेष, एक प्रवार भी धौरवि महर्गावरेवसामेनी कारणी फोफ्बाइल्लेडि' (मत ४२) । भ्रोफस **रेको** भ्रोप्परस (भएड १ १--पद ६)। फोरण न [स्फोरण] निरुत्तर प्रवर्तक 'विश्वदाम्म प्रपत्ति' 🛊 शिक्सकिन्द्रोयकेय फ्बसिदी' (ध्वर ७४)। फोरविभ वि किरोरत निरुत्तर आह्य विना ह्या 'विहित निन्तिनवत्ती 'बोरनीन' (धम्मत २२७ हम्मीर १४)। फोस देवो पुस्त≂ सुद्यु; 'तव्यं कोसंति वर्ग (बीनस ११६)। फोस हुं [वें] ब्यूबन (दे ६ व६)। फोस 🛊 📭 पोस्रो वनल-रेट 🕫 (**03** 2 ) i

फोसमा की [स्पर्समा] सर्ग्य-क्रिया (बीमप

tte) ı

श. स्म तिरियाद्वभसद्भवद्वभन्ने प्रभाणस्थर्वक्रमणो
 महानीवस्त्री गरेवी शनती ॥

**ब तुं [ब] धोत्र-स्मातीय श्यम्बन वर्ण-विशेप**ो (प्रल)। वक्षर (शी) म [बदर] १ फप-विशेष बेर। २ कपास का बीज (प्राप्त वश)। वहरू (पप) नि [वपबिश्र] नेठा हुण (हे ४ ४४४ मी)। बहुकु पू दि] कैस बरण कुरव (रे ६, ६१ मा २३६३ प्राप्त ३६३ है २८ १७४ मर्मीय १ बारक २१० ये यु १११ प्रानू १५ क्रुप २७१ ती ११। व ६। कण् )। बद्ध (पर) घर [ इप + विश ] बैठनाः प्रवर्णी में 'बेसपू"। बहसद (परि)। बद्धसूज्य (पर) न [उपवेशनक] बासन (बी ७)। बहसार (धन) सरु [धन + बेराय्] बैठाता । बद्धारद् (मनि) । बन्स्स देशो पश्चस (पि १ )। बहुस (प्रत) देनी बहुस । बहुबह (मनि)। चईस (प्रा) न [डपबरा] बैठ, बैठन बैठना 'तोवि पाट्रम कराविमा मुक्कप पट्ट-वर्रेस' (\$ X X54) 1 बर्ग्गी भी [बें] कार्पांची कर्पात-शस्ती धारस पू [बङ्का १ इत-विशेष मौलसरी का पेड़ (सम ११२३ पाचा खाया १ १)। रबर्तन का कुल (से १ १६)। सिरी स्मि [की] रेबर्रतका पेड़ा २ बर्र्सना पुष्प (भा १२)। बक्स पू [बकुरा] १ धनामें देश-विधेत । २ पूँची बस देश का निवासी (पर्या १ १~-पन १४)। सी सी(छापा १ १~-पन १७)। १ नि श्वत वित्रवादा। ४ मनिन वरित्रशाना । स्पीर के बारकरात और तिभूषा यादि में संबंध को मनित करनेवासा (बंदेश ६३ दुव ६१) छो. उप र्एं सा भूमतिया घरना संग्रेसन्त्रसा नाया र्यात शाला (ए। प्राप्त १ १६)। ४ दून, वरित संदम रिपित कारिक विशेष (शुन 4 ();

धत्रहारी भी दि दूरारी धंमार्जनी मार् (34 \$1) र्बरा पूर्विक्की १ समकान् साविताच के एक पूत्र का नाम (तौ १४)। र देश-विशेष बंगल देश (उप ७६% ती १४) । १ वंग दशका सवा (पिन)। दंगछ (या) पू [वहा] शंग देश का राजा (भिम)। धंतास पू (बङ्गास) बंबाम देश 'बंगामदेव बद्दशारे तेशों तुद्द समुप्तस्य दिल्ला हैं (मुदा too) वेम देवो वेम (पि २६१)। संक्रिपुं[दे ] देवो संदि = वन्दिन् (पर्)। र्बद् न [दे] कैसे कारानक मनुष्यः 'बंबेपि किपि (स ४२१) 'बेराई विक्ट क्यांबि खबेल फिहींट बंदाई 'बंबाल मोपाबसकर् (धर्मेवि १२)- 'एक्त्ववंदनन्यविषयहिक्कीरंड क्ष्मणस्मास्य (धर्मेव १२)। साह्यु ["मह] वैशी कर से पकतृता: 'परबोहरह बाव्यवेरायहबत्तवययामुहारं (कुप्र१६३)। बद्भ न [दे] कैथी (नदीटिम्य वनिय की बुविद में १३ वां कवानक)। चंदि को [यन्दि] देवो यंदी (ह १ १४२ २ १७६) । पंदि १५ विनिष्य स्तितिन्यक येयत-विदेश ∫ पाठक मानचा व्यवसायक भारतीमानिमा बंदी' (शास पर ४२८ ही) पर्नीर १ ) 'उदामसर्व्यक्तिण्यंत्रसमृत्युद् मामान् (स २०६)। वंदिर म [ वं ] सपुत्र-माणिज्य प्रवान नवर, बंबर (सिरि ४३३) । वंदी की [बन्दी] १ इड-इच की बन्दी (दे रेमशं गड़क १ %, ६४%)। ए शेर क्रिया हुमा मनुष्य (पत्रह ४२१ वा ११८) । वंशीरुप वि [पर्शाकृत] पैद दिया ह्या बांब कर वानीत (पडर) । वंदुरा भी [पग्हुरा] यस-शाहर, नाव्य निन्नेदि बंदुरामी, मुसेहि नुरार (ब ७२१)।

बंध सक [ वन्स् ] १ वॉमना नियन्वए करता। २ कमों का बीव-प्रदेशों के साय संयोग करता। बंबइ (भन महा स्त्र है १४७)। जुका वर्षिणु (शि ११६)। कर्म, बीपरमस्, बरमस् (१ ४ २४०) भाव विविद्धि विग्मिष्टि (हे ४ २४०)। बह्न इंधीत र्यथमाण (कम्म २, ४ पएए २२) । संक्र संबद्धा, बीचर्ड, बीचऊण, वंधिकणं वंधिता वंधित् (मगः पि ११६ १८४३ १८२)। हरू वंदेर्ड (इ. १ १८१)। इ. वंशियस्य (वंशः १ ३)। क्याः वासीतः वाससाय (सूपा १६६ कम्म १ ६६३ ग्रीप)। बंध पृत्वि [ भूरय नौकर (देश, बद)। बंध हु [धन्ध] १ क्मै-पूर्यमों का बीव प्रदेशों के शाब दूप-पानी की तरह मिलना श्रीव<del>-कर्म-प्र</del>ेमीय (भाषाः कम्म १ १६) ६२) : २ बन्दन, नियन्त्रया श्रीयमन (या १ । प्राम् ११३) । ३ ध्वन्त-शिरोण (सिंग) । सामि वि [स्यामिम् ] कमैनल करते वासा (कम्म ३ १ २४)। र्थमई की [बायकी] पुरवती मनती की (नाट-मानदी १ ६) । बंधरा वि [बन्धक] १ बांबनेपाताः २ कर्म-बन्ध करनेवाला, धारम प्रदेश के मान कर्म-पूर्वतर्ती का संयोग करनेवाचा (पंच ४, ८४) मायम १०६ १ ७ वेचा १६ ४ इस्म ६ १)। संबंध न [सम्बम] १ बॉबरे का-संत्मेष का शावन विसने बाबा जाय बहु स्तिप्य-तारि प्रस्त (भग ८ १--- १९४)। २ को बॉबाजास बद्दा ६ वर्स कर्न-पूर्णता ४ वर्ग-वत्व ना कारण (नूच १ १ १ १)। ६ संबयन नियन्त्रल (अामू ६)। ६ निमन्त्रस्त कर सामन रन्द्र साथि (दार)। कर्म-विदेश विश्व वर्म के प्रश्न से पूर्व मुद्दीत कर्म-पुरुवर्ती के साथ मुद्दानास कर्म पुरुर्वी का चारत में बस्तम्य हो वह कर्म

(THE E RY ARITHUR AGE 46) :

बंधग्रया स्त्रे [बन्धन] बन्धन (स्त्र)। बंधग्री स्त्रो [बन्धनी] निधानिक्रेय (पटम स्वरूपी)।

र्लप्य देवो र्यथा (स्त्रीय ४२)। वीचन पुँ [बास्थय] १ मार्ड, प्राता । २ जिन्न वयस्य, दोस्त । ३ नालेबार, संबंदी

नित्र वयस्य, बोस्तः। १ नातेवार, धंवेती बतैतः ४ माता । १ पिताः । ६ माता-पिता का सम्बन्धी यामा जावा साथि (६१, १ प्रातु ७६ सत्त १ १४)।

चेपाप (धरोः) सङ [यन्प्रयः] वैद्याना वैद्यानाः। वैद्यापनितः (पि ७)।

चंबाविभ दि [दम्बित] वैदाना दुवा (पुता ६२६)। चंबिम देशों वद्ध (पूप १९,१ १०

बर्मीय १६) ( दोचु (बन्ज़ी र मार्टमादा। २ मादा। ३ पिता। ४ मित्र दोस्ता र स्वतन नारोबार, नरीत (दुमा: महा प्राप्तु १ व: सूपा १६ (२४१) । ६ क्य-विरोध (धिय)। बीय र् ['कीय] इस-विशेष, दुगहरिया का देव (स्तरण ६१) कुमा)। कीवग प्रै "कीयक] यही सर्वे (शाया १ १ कम्प का)) वृत्त दु[दिन्द]१ एक मैही का काम (महा)। २ एक कैत पुलिका नाम (राज)। सर्वे वर्षे वर्षे [मिती] १ भवतान् मस्वितान नौ पुरूष साम्नी का बाग पत्र १३ द्वा १११)। २ (खाय १ स्वनाम-क्यात की-विशेष (महा चन)। स्तरी को भी भी प्रमापन पना की पर्ली (Per t 1) :

बंधुर विश्वपुर] १ सुन्वर, रस्य (पत्रम)। २ नज समका (तक्ष्य २ १)।

बंधुरिय रि [बर्ग्युरिय] १ विशेष्ट्य (दश्य ६ १) १ र गर्थाकृत, गमा श्वमा (वश्य १९६) । १ गुरुटिय शुक्रपुर्व । ४ विकृतिय

(पडा १९६)। बंधुस पुं [बन्धुस्त] वेरसं-पुन सक्ती-पुन (मुन्दा २ )।

(पुन्कर )। श्रीष्य द्वीयन्त्रको दश-निरोध दशहरिका का श्रेष्ठ (स. ११९) ;

र्यक्षोद्धपूर्[दे] येसरु केस संबद्धि (व ६ वट पद्)।

र्धम प्रक्रियान् ] १ कहा विवास (बप १ वर्दी। वेद वराकुम २ ४)। २ अवसात् शान्तिताम ना शासनामिद्वायक मन्न (सैति )। ३ घन्त्राय ना ध्राविद्वापक्र देव (द्वा दे १---पत्र११)। ४ प्रविषे देवलोड का द्वार (ठा २ ६—पत्र ८१)। १ शास्त्र ने नहतर्ती का रिता (धम १६२) । ६ तितीव वनरेव धीर वानुरेव का निना (सम १६२) हा ६---पत्र ४४७) । ७ ज्योतिप-शास मधिक एक बोन (पड़म १७ १)। द शक्काल निप्र (कुतक ३१) । १ चक्रवर्धी राजा का एक देन-इन प्राप्ताय (बत्त १६ १६)। १ पिन कानवर्गपुरुर्ग(तब ५१)। ११ व्यन्स-निरोप (पिन) । १२ ईन्छ्याच्याच पृथिशे (सम २२)। १६ एक वैत मुनिका नाम (क्य्य) । १४ <u>पै</u>न एक विमानाशान वेश-विमात-विदीप (वेवेन्द्र १६१; १६४) सम १९)। ११ मीला घपवर्ग (सूच २,६ २)। १६ बद्धावर्ग (सम १०० स्रोजमा २)। १७ स्टब सनुहान (तूस २, १, १)। रैं निनिक्त्य ग्रुख (माचार ३१ २)। ११ श्रीवयाक-प्रसिद्ध बराग हार (बुगा)। कंद न [कान्त] एक देव-दियान (सम १९)। इस्टर्जु [कु⊳] १ महाविद्या वर्ष का एक बकास्थर पर्वत (वं ४)। २ न. एक केन-विमान (सम ११)। चरत न ["बरण] बद्दान (पुत्र १९१)। चारि वि ["चारिम्] १ व्यवसर्व प्रताप करनेवाला (शावार १ क्या। २ पूँक्षणकान् प्रकौ नाम का एक वरहवर--प्रमुख मुनि (स ---यर ४२१)। चर, बोरन [वर्ष] र

भेडुन-निर्मित (साचा पराहरू, ४४ है। अथ डुना, सन्त तराहरू इत द्व ४४३)। र विनेत-राहन विन-सबबन (सूच २०६, १)। क्स्प्टब व िच्लाब] एक केन-विवास (सम १४)। वस्तु [बस्तु] सारवार्व में

करक बायूनी जरूनों राजा (अ. १. ४) यम ११२१ कर) । बीज ट्रं ["द्वीय] द्वीय विशेष (यज) । बीजिया की ["द्वीपिका] वैक्यूनि क्वाची एक शासा (क्या) । "प्यम केशे चारि (लाना १ १ घन १६) रूप दुगा २७१) नद्दाग्र चन)। की जी (काना १ १४)। रुद्दश्र [किपि] स्वतान-प्रसिद्ध एक बाह्यल नारह का पिता (पहन ११

न मिमी एक देर-विभाव (बन ११)।

भूद पुं ["भूति] एक एका द्वितीय वागु वेद का पिता (प्रकार १०२)। सारि

% हो। बिहा ब किराय जिल स्मिन्यात (चन ११)। शोज खोन द्वी प्रिकेड एक बन्दों, वीचनों केलोक (नन चन्नु का ११)। शोजकिस्सय व क्लिकार्लसक्ट्री एक स्टेन्ट्रियाल (बन्द १०)। व बंद ता के दु ब्लिका क्लिकार (बन्दा)। वाहित्य दु ब्लिका क्लिकार स्टूलाक्या प्रकार केलिकार (वाच २०)। व्यक्त मान्यात्र विवास क्लिकार प्रकार केलिकार (ताच २०)। व्यक्त मान्या विवास

िंगनी क्यावर्ष (जाबा १ १)। वि वि [ विम् ] क्या का काफार (वाप्प)। कनव वेचो वया (वे १६। प्राप्त ११६)। व्यक्ति पूँ [ व्यक्ति | व्यक्ति का सामकन्यर (प्रकु ११: ती ११)। विंसा व [ न्युक्ति पुरू वेशनीयार (म्या ११)।

ैसिट्ट न ["सुष्ट] एक केन-विधान (बग ११)। सुष्ठ न ["पूत्र] करनेत करो-पनीत (बोह्र १) मुख २ १६)। दिस १ [दित्र] एक विभागतम्बाक वेश-विभाग-विरोध (वेश्वर १४)। "बाच न ["कर्य] एक केन-विधान (बग्र ११)। देखो नेपाय

सम्बाः सम्बद्धः स्वाह्माण्यः सम्बद्धः स्वारः (पटणः कुमः प्रमुखाः १६ : १११)। समस्य दुः [साहस्यः] स्वस्यः निप्रः (स. १६

ुद्ररुद्देश सुपादश हे४ २ महा)। चैसफिजाको जिल्लाकिस्टी स्पेक्टीस

र्णसमित्रमा की [आहाणिका] पत्रेषीत्र कार्य-विशेष (पुण्ड १९७)।

र्थमणिका) की कि आद्योगिकों कीर र्थमणी } पिरेंच (देई रे) पास देव, ६६४ ७१)। र्थमण्या ) की जिसस्य जासस्य की

र्वमण्यः } जो जिद्याच्यः जाद्याप्यः कि] वेमण्ययः } १ वेद्यास्य का देशः १ वद्यास-- वेदानी । १ व वद्यास-स्थातः । ४ वद्यास- २ बेंबाह्या (प्रति ११) ।

वहम्त वि [यद्व] १ वत्वत्रकार व्यवस्थित वर्म बंबर्ग्णक्रकोगु सक्तो' (सम्पत्त १४ । क्ष्म भीग पि २४ )। वसदीविंग दि [ब्रह्मद्वीपिक] ब्रह्मदीपिक-शाला में उत्पन्न (स्वीद ११)। र्धमहाविता से [ब्रह्मद्वीपिका] एक पैन-मुनि-सामा (स्वित ११)। संभक्तिका न [ब्रह्मकीय] एक वेश मुनिकुत (इप)। बंसद्रत्दि इसस प्रा (दे६ ८१)। र्थमाण देवों बंभ (परम ४, १२२)। "राच्छ पुं िगुरुक्ष है एक कैन-पूर्ति मच्छा (सी २८)। र्थित ) सी ज़िल्ली देशानान आपमरेन र्दभी र्रेकी एक पूर्व (कटा प्रकार, १२ ठा ६, २४ सम ६.)। २ किपि-विशेष (सम ३४: भग) । ३ व्हरा-विरोप (सूना १२४) । ४ धरमती देनी (सिरि ७६४) । धंमुखर वृ [ब्रह्मोचर] एक विमानाधास देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३४) । शहिसक न ["पर्तसक] एक देव निमान (सम १६)। वंदि प्रविद्यु महुर, मोर (क्तर २६) । वृद्धिण (धप) क्षतर वेश्वी (पि ४ ६)। सक देवी बय (वर्ष्य १ १--पत्र म)। बद्धार म [बे धर्कर] परिवास (वे ६, ८१) नुप्र १६७ नप्र) । यदस न [दे] धन-विशेष न्वस्तर्थ मुद्रमाया दिनपिरानित्यप्रवर्ता (गुज व १२) एस ८ 19)1 नग देशो दय (दे २, १: कुछ ५१)। सगदादि पू [बगदादि] देश-विशेष बगशद देशः अपराविशिषयमपुद्वादिवस्य खलीपना-मधेपन्तं (हम्मीर १४)। यगी की [यही] बपुत्ती, बपुत्ते की मादा (बिरा १ के मोह के)। बगाह पुं [व] देश-विशेष (ता १४) । यामः नि [बाहा] बाहर का बहिराहा (पर्यह t व प्रातु to २) । स्रो स [ तस् ] बाप्त के बहिर्रय है। यह के बुउग्रेख बज्यती (माना)। नामः न [याय] यत्वन, बावने वा बाहुए मारि सावत 'महत परेल बन्द्र, धर्ड **ब**रमम्स का वर्ष (शूच १ १ ९ ८)।

धामतः वश्ममाणः } देशो वन्छ = बन्प् । वठर प्रविठरी मुखं धान (रूप १६)। वड (मप) वि [व] बड़ा महान् (निप)। देखो वहु। वहबह बंध [यि+सप्] दिवार करता, बहबहाशा । बहबहद् (पह् ) । वडहिस्स की [द] पुरा क मूस में की बाती कीम कीमक-किरोप (सद्धि ११६)। वक्रिस देनो विशिष्ट (हे १२२)। 🔾 🙎 विद्व की नहका क्रोक्ट्रा (चेप वक्षा (१३ मुतार ०)। बहुबास दि देवां बहुबास (दे ७ ४७)। वर्तीस वित्तस } (धप) देशो वत्तीस (दिष) । वर्त्तीस धीन [ द्वाजिसस् ] १ संरया-विधेप बतीस १२। २ जिनकी संस्था बतीस हों के 'बढीर्स बीयसंग्रहा पद्मखा' (सम ३७ धीप उन नियो। भी सा(सम १७)। वचीसइ भी ऊपर देखो (सम १७)। वद्भय न ["यद्वक्र] १ वतीन प्रकार रचनाओं से युक्त । २ वर्तीम वानीं से निवद (नाटक) अश्रीसहरूद्वपृद्धि पावपृद्धि (सामा १ १--- | पव ३१८ विसार १ टी--पत्र १ ४)। ैविद्व वि [ैविघ] बतीस प्रकार का (सम वक्तासहम वि [द्वात्रिशक्तम] १ वतीसवी १२ वर्ग (पत्रम १२ १७: पएए १२)। २ म. वनच्ह दिनों का सवाचार उपकल (खामा 2 1)1 वत्तीसा देवो वत्तीस । मचीसिया औ (द्वाबिशिका) १ वर्ताया पधीका निकाय-पान्त (सम्मत्त १४४)। २ ए≯ प्रकार का कार (बाखु∤। बद्ध विद्वी १ वेंबा हुया, नियन्तितः **चर्च पेटालियं निमनियं च' (शब)। २** 

चेच्छि चेंद्रक (अन नाम)। ३ तिवड

र्यंत्र (पारम)। ८४ %, प्रस्न दूं ("फल)

रेक्टम वा देह (हेर १७)। रहि

फत-पूक, कप-संपना (सामा १ ११६) । बद्भग पू [बद्धक] तूल-बाच बिरोप (यम Y() ! बद्धय पु [दे] कान का एक बाभूपख (दे६ ८१) : चढेहम } रेडो वद्ध (पणुः महा) । चढेहम बद्द पूर्वि दे दिस्मद, गोखा (दे ६ वद)। २ शहर पिता (दे६ चय दश्र ७ दय शास्त्र का ३२० मी मूर १ २९१३ कुप्र ४३) चया समि निग)। यप्पहृट्टि र्षु [बप्पमट्टि] एक गुनिस्पात कैन माचार्ये (विचार २१६ ठी ७)। वर्षाह् दूं [वं] परीहा चातक पत्नी (वे वप्पुड वि [ व् ] वेनाराः बीतः सनुक्रम्पनीय गुजराती में 'बापह्र' (हे ४ १ वर्ण पिन)। बण्ड पून बिह्म र माफ, ब्रह्माः अप्योग (इ.र.७ पर्) अप्ट (प्राक्षरके विधे १४१४)। २ नेत्र-अस समूह अपर्यन्ति य नवराजन (पाम) 'बय्ध्यण्या उन्नवीमसाहि' (ब १६१: स्वय्त वर) । पाप्पाउस वि वि वाप्पाकुको प्रक्रिप्य ष्या (दे६ १२)। वस्वर पूँ विर्यर है सनाये देश-विशेष (बडम रेव ६४)। २ वि. वर्गर देश का निवासी (परहर १ पडमा ११, ४१)। कूछ न [कुछ] वर्तर देश का किनास (मिरि Y1 ) | सब्बरी स्में [बे] केश-रचना (रे ६ १ )। बब्बरी की [बर्परी] नर्बर देश की क्षी (शाया १ १ मीछ १४)। सम्प्रत पू [बस्पूत] इय-विशेष अपूत का पेड़ (का वश्व की महा)। बस्म दृं[क] का को काहे की राजु 'वामी बर्दे' (दे ६ नव)- 'वजी वडी = (? बस्से बड़ो)' (बाध) । घण्मागम दि [बद्धागम] बहुन्पूत शासी

का मध्या भागकार (क्स) ।

e )۱

(सन्द्र ८४)।

मुद्री रोज (पड्)।

(रेकी १७७) :

वरिद्ध ।

वर्राह

दमाल १ दि | अवस्त अवस्य (१ ६ बस्द् पू [ब्रह्मम्] १ ज्योतिष्ठ देव-विशेष (दार १—पन ७७) । २ देखों वीम (ह २ ७४; दुमाः सा वर्षः सन्दुरः बना २६: सम्पत्त ७७ हे १ ४६, २ ६६ ३ १९)। वरिम वैजो बॅम-वर (१२ ६६) १ ७) । सरु प्रै [तरु] पनात का पेड़ (कुमा)। धमागी हो [धमनी] इद्युगकी बस्दस्य (शी) देखो संभव्या (प्राष्ट्रः 🔸) । बन्द्रण देवो वंसण (पच्चु १७३ प्रती १७)। वम्बूण्यय वैकी बीभण्डम (मग)। क्लाहर हि देशो वंशहर ( पह् )। बम्हास वे [बे] धनस्मार, बायू-रोय-विशेष भपार्वकि । १ पक्ति-विदेव क्यूका। २ भूबेर। १ महादेव। ४ पूज्य-कृत विद्येप मीहकाका यद्भ (भारः)। ३ छवाछ-विशेष (बा २६) । ६ समुर-विशेष ककापुर वकास्य देशो वर-पास्य (पव १६)। विमान्यवास वैनविमान-विशेष बरठ पूं 🐧 बाग्य-निरोप (पष ११४ धे) । क्रद्ध र किये | १ मदूर-शिक्ट (स. १) । २ प्रभा ६ परिवार (प्राक्ट २ )। देशो ) र्द्र [बहिन्] समूद, मोर (पान्यः बर्राईण ∫ब्राक्टर•्ड पक्का २ १२ ३ कामा १ १: चक्क १ १: भीप) ।

वरिद्देशीवर्ष्ट(१३२१४)। इरदू [भर]मदूर (पर्श्मकर)। वर्सिह् } देवो वसहि (वण्. १४ ४२२)। वस्मन[दे] दुरु-दिटेन इतु-तहर दुस (देश १६३६, ३१३ पाप) । बरहर्षु [ब] रिक्ष्यै-विरोप, बटाई बनाने-शमा रिक्ती (ससु १४१) ।

मद ।

चक्त्र । बलीति (हे ४ ४१६) । यस्र मरु [बल् ] १ वीताः २ स्क काताः **क्छ** धक पि**र**्विद्वस करनाः बनद (पड्)। देशो सम्र≔ पहा बळ पूं [बळ] १ बमरेन इसवर, नामुदेन का वंका बाई (पटम २ ८४-पाम) । २ इन्द मिलेच (पिम)। १ एक स्रविय परिशायक (भौत)। ४ न सम्बर्धनसम्बर्धनसम्बर्धाः स्वय ४२३ प्राप्त ६३)। ३ रहवैरिक पराबन्छ 'बक्कीरियाल' बाधे श्रेमो' (क्रम्फ ११)। ६ सेन्य सेन्य (उत्तर ४ कुमा)। **क्वा**य विदेपा भासादादि वसेटि बोजा कथ सावेटि (स्व १ १७)। द्रमाम तम नगतार वीन दिनों का करवास (सेवीन ६८) । १

मोक्रिप्र देख समरमिन क्यस्पिए विद्वार (य tan) t बस्य पूर्वि क्वन क्षेत्र (प्रमान १९) । वक्षया देवो बस्पवा (हे १ ६७)। क्कावहृत्यै [दे] १ स्त्री । २ व्यासाम को पर्वत विशेष का एक कूट--शिकार (ठा १)। सहन करनेवाची थी (दे ६ ११)। क्षित्र कि किन् देशक का गतक। बब्बर्दटुया की [बे] क्ले की रोटी (क्ल्म २ न बहर, विष (शे. २, ११) : ज्या देखी भ (राज)। देव पू दिव हती बाहुदेव ttv)ı का बढ़ा सन्दे, राम (सम ७१ और) । अ वस्त्र थ. को [ बस्तत् ] बदरराती वदारकार वि 👣 नव को चलनेवाला (याचा)। (से १ ७०- मोवना २ )। 'बबाए' (इस सद्दूष्णात्री १ थळकोत्रका मानी १ ६१ दो) । सादवा बामुकेन (सम १६४)। २ राजा क्का की [बद्धा] १ मनुष्य की वस करायों मध्य का एक प्रशीत (पठम १८३) । ३ एक में भौगी प्रवस्ता ठीए से चालीस वर्ष धर्म (देशेष की घरस्या (तंदु १६) । २ श्राष्ट्र-विरोध यीव १६६)। रेको ११ । भाष्ट्र [ मानु की एक इष्टि। ३ मनवाद दुन्तुनान की रावा क्वमित का भाक्तिय (काव)। अहवा राह्य-देनी, धन्तुरा (स्व)। **चौ** [मेणनी] विद्या-विशेष (परम ७ वसमा केने वस्त्रमा (परा १ १--पन व) १ १४२): "निच द्र "मित्र] इस मान का बस्रजबन है। १ क्वान धारि में मनुज एक रावा (विचार ४१४) कात)। वृति [बन् ] र बनमान्, बन्दिह (विशेष ३)। को बैठने के लिए बनावा जाता स्वाव वैन मारि (वर्गीत १३) शिरि ५५१)। १ हार् रे प्रकृत शैन्यवस्था (धीरा) । १ र्चु ध्रहोराण दरमध्याः 'पनिषंतो केन क्लाल्यीमा कुरना भाषाज्यौ कुर्दा(सुन्द १ १३) : दिह निसीश्वासिक (भाग ( ४)। 🙎 ["पवि] केचपरित, केनाच्यक (बद्धा)। देश देश देशों द (स्त्रामा १ १ मीप; बद्धमाहि हो हि बद्धमोटि] बदाकार धाना १ ×)। यस न [ वस्त्र] शिक्कता (मीपना ६) । बाडय नि ["ब्बापूर्व] सैन्द बस्ममंद्रिभ य वि बहादामीन्य विश वें नवाया द्वया (धीत) । इ.ट्. वू. विस्तृ त्यर हे, वदायाती है। फेरेलू स्नाबोरिय १ क्वरेद । २ क्वर विधेय (तिय) । देखी ठेख स बमर्यम्म सर्वाहरी पविद्या (सम १६७ क्तर १ के पि दक् )।

बदमासा-बसामोदिब

क्कान्तर 🦙 🛊 [ब्रह्मसम्मर] क्वासती (१७४

वस्त्रहार रिंद २६ १ ६ ४८ वर्षि २१७ स्वयन ७१)।

बस्नकारित् (शौ) वि [बस्मल्झरित] विद

बस्बर पु दि] बतव बैत (बुपा १४१)

बस्रमङ्गा की [वे] बनारकार, जबरहरती (वे

थसमोडि देवी बद्यमोडि 'मन्सिडडे स्म

वसमोहिम की बस्ममोहिल 'रेवेन बब-

मोडिचुरिए सपलेख प्रवसीरे (पा ६९७)।

माबती (२६)।

4 (2)1

नार---मुच्चार )।

पर वज्ञास्कार किया पंपा ही वह (काट---

वछामोकि-बहरसङ् बदामीसि देशे बत्यमीडि (से १ १४)। बस्यया की [यस्त्रका] बक्-बिटेग विश वरिष्ठवा बयुने की एक बावि (है १ ९७ उप १ वर धी)। चलाइस पू [बळाहक] मन, पीमूत' 'गलिय बतवसाहम हरे (वन् )। बराह्गा देखी पद्माह्या (ठा ×)। यसहरूप देशो चनाहुग (शावा १ १) वया गमो। यमादया स्ये [यन्ताहका] १ वर-विशेष बनाका (उप २६४) । १ वेशी-विदेश सर्नेक रिश्तमाधी देशियों का नान (इक-एन 412: 31Y) I क्षित् [कि ] १ बगुरदुमारी का उत्तर रिशामा स्मा(स २ ६ ६ ३ ६६)। २ स्यनाम प्रतिक्र एक राजा (वा ४६)। व शाननां प्रतिनामुरेव (पढ्य १ ११६)। ४ एक शतक देख-विशेष (बुना)। अ.पुंकी काहार, मेंट (शिव ११६ दे १ १६)। १ वृत्रोत्तार, देशका की घरा बाता नरेच 'नूर्यःनिरमेरणपरदुनुमदामबिदीराणीतुं व' (पत १ टी) 'वंशणुवल्यानिश्रीक्लेम्' (भेरव देर पर १३१ तुर १ वट पुत्र १७४)। ७ भूत धारि नी रिया बाला भीतः बनिरानः न्यूयर्शनम् (र ४६) । च पूरा धर्मा

यसिर्पूर्वि यधीयदी बनव इपम दो यक्षिमङ्का भी दि] बनान्तार न्यमह बीत गर्गा। १ यन-नाम भानः। १ वागर् ना बरार । ११ जनाव (हे १ १४) । १२ सन्दर्भक्षेत्र (लि) । उद्गर्भ विषयी नाव बीपा (बाम) । यामा व विमोन् । १ पुत्रन पुत्रा की जिला। १ देखांकी का हार---भेष घरन नी किया (मनः सूच २ १ १६) गावा १ १) ८ रूप चीर)। र्चना थी [चडाा] बनीन्द्र वी राजवानी (पाम १, १४) । सुद् ﴿ भिन्ने व्यक्तः वर्ष (बाध)। याम देखा कृत्म (बह्म 10 78) यक्ति वि [बन्दिन] १ बनवान, बनिष्ठ (नुसा प्राप्ता कृष १०३)। २ ई छत्रकाट का ८६ द्वार (राज १६, १८) । बाह्रिअ दि [रे] रे बीत बांतम रदून गोटा | बाद म [बास्य] बातन्य बालवान, रिजूता (दि ६ वर्ग प्राप्त से प्राप्त १)। २ वर्ग १ ११) । देवा वास-कारा

पाइअसद्गहणायो चिक्ति गाइ बाइ घतिराय घरपर्य 'मार्ड बार्व दिनमें परिएमें रामरतएए मकार्य (वाषा छाया १ १--पत्र ६४ मग ६ 22) मिक्किन वि [बस्टिम यस्किक] र वनवान सुबन पराज्ञी। बरबाबि बोबो बनियाँ कृत्यदि सम्मा" ईति बलियाई" (शानू १२६) 'रूम भ्रम्ह ताथी बलियबाइयपेक्रियी धर्म विद्ययं पश्चि समस्मित्रो' (महा प्रज्ञा ४० ११७-मूपा २७१, धीप)। २ प्राणुनामा (अ ४ १--- १४६)। बक्रिक विकित्री निष्यो नसं चराम हुबाही सबस (दूप २७७)। २ पू सन्द विरोध (रिव) । विजिश्रे हे [बहिनाडू] धन्दर्नक्रेप (निय) । विका ही वि विकासी मूर्व पूर मध को तुपादि-रहित करने का एक कारएस (भावम)। यख्डि वि [यस्टिट] बतवान, शबन (प्रामू

७३६ हो) । विख्यह देनो वर्ध्यपह (पत्रम १३ ११६) । वस्ति न [पडिरा] मद्दनी पक्षते ना क्या (R P 9 18) वस्त्रिसह् वृ [यस्त्रिम्सद् ] स्वन्यम-स्वात एक मैन मुनि धार्य मगाविर पर एक रिज्य (रप्द)। मनीअ वि [ वर्मः यस् ] धरिक वनवासा बनिष्ठ (बसि १ १) व बसीयद र् [बर्कायद] बेन शूरम (रिशा

नक्काए गर्दिबमणी क्षेम ! एकसिय" (उप

सारविद्याचि हु' (पुता २६८) ।

\$\$x) 1

1 (# 3

बमुद्दष्ट (यन) देवी बन्दन्यत्र (१ ४ ४३ )। बल म इन पत्रों का नुबंद सम्पद---१ मिषव निर्देश र निर्पारण (हे ए १०१ द्रभा) ।

बाद तक [म् ] बोतना बाह्ना । बाह, बनए (वर्)। रेजी मुख्यू। वर न [वय] व्योतिय शाल-मंडिड एक करण (सिंहे ११४८: मुख्ति ११ मुना १०६)। वस्तात वृं विशे विद्या हस्त (वे ६ ०६)।

वहड नि [ बृह्त् ] बहा महान् । "श्व न [वित्स] नगर-विरेप (ती १४)। यहत्तरी रेडी बाहत्तरि (पन २ )। वहत्पद्व ) देशो बहरसद् (हे १ १३०- २ यहण्डहे । इस् १६७ यह दूना सम्मत 1 (475

बहरिय देवो यहिरिय 'ठा उत्वास्त्रियंतर (महा) ≀ यहस्त न दि दे बर्ग करेंग कारा (दे ६ <**८) । मुरा की ["मुरा] पंदराती परि**ख (d x, q) 1 बद्ध रि [बद्ध ] १ मिबिस मान्द्र निरंतर, बाह (बंदहा है २ १७७)। २ स्पून मेच्य (ठा४ २) गउड) । ३ कूटरम

श्रदमन (श्रप् )।

वहस्मिन्द्री विद्वारि स्वत्वा योग्रहे। २ नातस्य निरंतरता बना १२ गा ७५६)। यहर्री भी विहत्ती रे देश-विशेष मारतार्थ का एक शत्रपेय देश 'तस्यसिवाद पूर्णप बङ्गणीनस्वाबयसभूपाएँ (कुम २१२)। २ बर्ता के दी भी (शाबा १ १-- पत्र ३७ थीर इह)। पहलीय नि [पहलीक] देश-विदेव में---बहुती देश में रहतेशाना (पएड १ १---पद १४) । बहुब देनो बहु बाते प्रमहत्त्वे धन्त्रहते (परम ४१ ३६), 'तीहरमनम्पन्नदारतपुर्वत

बा बुराइ नहते (बम्मत ११०) 'जार्गत बहरनेरायसमूत्राणितो वर्ति (हि १)। बहामक रू [बृहरपति] १ श्योतिषक देव विरोप एक बहायह (आ २ १-- पर ०४ मुत्र २ -- वर २६४)। २ मुखबार्य देव द्वर (दूबा) । १ दूव्य मारत का प्रविद्वाल देव (तुळ १ १२) । ४ राजनीति बारेता एक ऋषि । य नान्तित बत का बक्तेब एक रिशन् (हे २ ११०)। ६ एक ब्राह्मण पुरिदित-पूर । ७ विश्ववद्भा का एक प्रस्तान

(विशार १)। दत्त पुष्टिची देवो संत के को सर्व (विता १ १)। बहि स बिहिस् दिएए 'सर्वाक्षेते परिनर्' (बाचा) 'बामवहिम्मि य र्च ठानिक्रम् भागेतरे पनिद्रो से (स्प ६ दी)। ह्रूचि वि वहिम् च (दरह) । बहिस वि वि निवित विवैक्ति (पर्)। वर्ति देवी वहि (पाना उप)। वहिष्णिभा ) की [भगिनी] वहिन (परि बहिणी | १६७ कन्या पाम परम ६ ६। हेर, १२६ क्रमा) । २ सबी वयस्या (इस ४०) । वज्ञ वृ िवनय] भौती पुत्र (वे) । बद् पू ["पति] बद्धनोर्थ (वे) । देखी संदर्गी। विक्रिक्त प्रविक्रिक्तती क्षेत्रर (एक्स ६)। बहिद्धास दि ] १ बाहर । २ मैक्टन वर्ध-संभीय (हे २ १७४) हा ४ १--पत 3 () ( विद्वाध [विद्या] वक्र ना परक (रस 2 Y) ! विद्वा म [विद्वसः विद्वस्ताम्] बाहर (विशार १ म्याचा ज्वा भीव)। बहिर नि [बाह्य] नहिनु त बह्दर का (प्राष्ट 1 ) i विदर वि विधिरी बहरा, वो तुन न सकता बोबड (निराद र केर रेच्छा प्रस् 144) 1 बहिरिय वि [बिचिरित] वश्रिर किया हुमा (मूर २ ७३)। बहुवि बिहुी १ प्रदुष्ट प्रमुख यनेक सन्प्रम (दादे ( क्लाब्रामु४ (४ दूना या २७) । की, इर्द (पद आक १)। २ किनि मरक्त घरिक्य (तुना १ ६६: कान) । बदग ई विद्यक्ती शतकास्य रा एक वेद (पीप)। "मृद्ध प्रे "मृद्धी विधानर वंद्य का एक राजा (बदम १ ४६)। अधिर वि **ैंबरिपत् नामाट मकनाधै (नाम)**। ज़ज पु ["जन] फ्लेब्र सीन (वन) । २ वः मानीलन्य ना बुके प्रकार (ठा १)। "पाद्व देशो मह (सर)। जाप न जाही भवर-रिकेप (पर्यन ११, १६)। "बेसिस

वि दिश्व देख क्याचा चोहा बहुत (बाचा२ ६ १ २२)। नद्व वृत्तिही नट की चरह धनेक भेग को बारण करने-बाह्य (माना) । पश्चिपुण्य, पश्चिपुद्म वि िंपरिपर्णी पर्य प्रश्न (का ६ अप)। पढिम वि "पिठेवी मति विक्रित प्रतिक्य किसिक (सामा १ 1 (45 पसावि वि "प्रस्मापेद" बक्नावी (का द ३३६) । पुलिस न [पुतिक] बहु-पुलिस देवी का सिंहासन (निर १ ३)। "पुचिभाको [पुत्रिक] १ पूर्वोच्छ नामक क्लोना की एक प्रयानमंत्रियों (ठा४ र ब्याबा २) । २ सीपमें देवलोड़ की एक देवी (किट १ ३)। व्ययस विशिवसी प्रचर प्रचेश-कर्य-स्थ मन्त्रा (मन) । "फोड वि "रफोट" वह-अक्रक (बोजबा १६१)। मंगियन "मिक्कि हिलाह का सुक-विदेश (सम १२८) । समावि मिन् दिमञ्चल समीप्र (बीव १)। २ सनुमोस्तिः संनव, धनुमत (काप्र १७**१** सूर ४ रेक्च)। साइ वि[सामिन्] सर्वि कपरी (माचा) । साज पू भाम मिल-रुप बादर (बायमः पि ६ । नाट—विश्व शास वि मियी प्रति कपटी (बाबा)। सुरुत, मोस्ल वि मिस्यी पूरप्तानुनीमती (चनः १३)। रथ वि रिंदी र प्रत्यक्त पायक्त (पाना)। र बमानि का स्तुतामी। रे न बमानि का चवाबाङ्ग्या एक मठ—दिवा की निव्यक्ति धनेक समर्थी में ही माननैवाला मद (क्ष. १ ) भीत)। स्यन [स्वस्] **शाव-विरो**य विड्डाकी वर्षका एक बकार का बाव (ग्राच(९.१.१.१)। देव विदिवी १ प्रमुख करणाला, करली (ध्रम ११)। २ न. एक विद्यापर-नगर (इक)। केला की िरूपा तुरुप नामक पूर्वेन्द्र की एक सप-विदिशी (द्राप्त १३ सम्बद्धाः की वर्षः सिप वारव गादि के विका गाँउ का केप (पडि)। स्थल व ["स्वत] सङ्गत नीनक प्रस्तव (धाना २,४ १ ३)। विद वि विघ] मनेत्र बरार का, शानाविष (कुमा पन) । निहिष वि विध

विभिन्न दिश्विम समेक तया ना (सुम्रीन **१४)। संपत्त वि दिशासी दव वय** संप्राप्त (प्राप्त) । सम्ब व विस्ति प्रदेशीयन कादतनां मुद्धर्त (सुन १ १६) । "साम [शस्] सनेड बार (इव था २०० प्रानृ ४२ १११, स्वया १६)। स्मुबनि िंदरी राजब, राजी शा सम्बर्ध मानकार, परिवत (क्ष्म सम ११) हा ६--पद ११३ पुपा १६४) । "हा व ["या] स्लेक्स (धन धनि)। बहुआ ) विश्विद्व क] क्यर वेदी हि बहुभव र र र र र प्रा दुवार का २४)। बहुआरिया } की [व] हुइ।छ व्यक् (र बहुआरी } व १७ टी)। महत्र देवी बहु = ई । वहसाल विविद्याची १ वह-स्वर **पू**र्व बाले मोरम् । २ प्रमुक-चित्रका बनाले सेम्ब (शाला २, ४ २ ३)। बहुग केवी बहुआ (भाषा ७)। बहुबाज ट्रेडिं] १ कोट, तस्कर । २ वर्ण-ठम । ३ चार- ब्लपित (पर्) । षहुण दुंदि] १ भोरः तस्वर। २ दुर्वं (रे ₹ **₹**♥) | बहुणाय वि [बाहुनाइ] बहुनार-नरर वर (प्रथम ११ १३)। बहुत्त वि[प्रमृत] बहुत प्रदुर (हर २३३) । बहुमुद्द पुँ [वे बहुमुख्य] दुवेन बब (वे ६ 28) 1 बहुराजा को [वे] बहुर-बारा कावार की मारं (दे ६ दर्)। बहुरावा थी [बे] तिवा ग्रुवाबी (वे ५ 28)1 बहुरियाको [दे] धुहारी माह (बह १)। बहुस वि [बहुछ] १ अपूर, प्रवृत् स्त्रीत (कुनाः भारे) । र बहुनिय समेक प्रकार का (सभय) । ३ व्याप्टा (तुपा ६३) । ४ पुंद्रपद्धपत्त (पास) । ३ स्थनाम स्वार्ध एक बह्माल (सव १६)। भट्टल पूँ (बहुर्स) सामार्थ महामिरि के रिप्य एक प्राचीन वैन कुति (स्ट्रीर ४६)।

बहुस्ताकी [बहुस्ता] १ मी मैना (पाम)। २ इस नाम की एक की (बवा)। वयन [यत] महुत सारी का एक प्राचीन दन (से ७)।

बहाकि है [बहुद्धिन्] स्वापन-स्थाद एक राज-पूत्र (वप १९७)।

यहुद्धी सी [वे] माया क्यट बम्य (मुपा 44 )1 बहुद्धिशा की दि] वहे माईकी की (पर्)। बहुद्धी सी [दे] बीहोबित राजमिका सेमने

की पुरुषी (यह )। बहुयी देखो सहुद्ध (हे २ ११६)। यहुरुवीहिं पू [बहुर्हाहि] व्याकरण-प्रतिव

एइ समात (धरा १४७)। बहुआ वि [प्रभृष] बहुत प्रशुर (पर्राट)। बह्दय र् [विमीतक] १ वहेवा का पेड़ (हेर बर्टर श. २ ६)। २ म महेहर

का एम (दुवा)। वा पि क द्वि दि दे के में संस्था-बाबा । इसं (बप) देखी भीस (पिंग)। ईस देवो थीस (चिय)। पाउइ औ िनप्रति । समावे, १२ (समा १६ कम्म ६ २६)। पाउम वि [मिश्रत] १२ वर्ग (पदम १७ २१)। "मुत्रह देवी वाउड (एक्स ६२)। याच, वास्त्रेस धीन ि पत्नारिशम् ] वक्तरीय जातीस सीर को ४२ (क्या नक्ष ए मन; सम ६६; इप, धीप) की याहा, वालीसा (काम ६ ६ वर्ग)। याद्यसङ्ग वि िवस्या-रिशक्तमी बमातीसको ४२ वा (परम ४२, १७)। ६ सम वि. व [देशम्] बाख १२। 'बार्सम्प्राहिमवर्षे (बंबीय २२) सम्माप का १४, सब २ । ई. ७ क्या मी २०) कशो)। इस नि विशा निष्टवी ११ वर्ष (भूष १, १७)। रसंग क्रीन ["ब्राङ्क] बारह बैन संगन्धंव (वि ४११) भी गी(एन)। स्सम दि [दस्त] बाद्दवां (बूध २, २ ११। वब ४६ महा)। रसमासिय नि [ दशमासिक ] बारह मान वा बाध्य-मान-संबन्धी (नुप्र १४१)। रसय व दिशक विषद् का सबूह (योपमा

११)। रसपरिसिय वि विश्ववार्षिकी बार्यावर्षेका (मोह १२ कुन ६)। रसविद्व वि विश्वविद्यो गाउँ प्रकार स्त्र (नव १)। रसाह न [ दशाह, दशास्य र बारहवां दिन । २ जन्म के बार क्ष्में बिन किया बाठा चरसक करती (सामा ११ कप भीग पुर १२१)। रसी सी िंदशी बारहवीं दिवि बावसी (सम २६, पत्रम ११७ ६२ वी ७)। रसूत्तरसय नि [दशोत्तरशत] एक सी वास्त्रवा (पडम . ११२ २३)। रह वेकी रस= कर्ण (हैं। र २१६)। यद्भि 🛍 ["पप्ति] गास्ट, 🛚 ६२ (छम ७५, पंच ४० १वा पुर १३ २६८: देवेन्द्र १६७)। वया (धप)। देखो यश (पिम) । बण्या देशो सम्म (कूमा) । यचर वि [समय] बहुचरना, ७२ वा (परम ७२, १८)। वचरि औ ["सप्तिति] बहत्तर, ७२ (सम मध्य भग भीप प्रान् १९६) । वस श्रीन ["पञ्चारात् ] बावन पचास भीर को ३२ (सम ७१ महा) 'बायम' होति निद्यमनद्या' (सुबा १ १)। बस वि [पद्मारा] वावनवी (पदम १२ भ)। नीस भीन [किरावि] नारेंग्र १२ (मक भी १४), भी सा(वि४४७)। बीस वि ["विश] बारिको २२ वा (पर्जन - दर पव ४९) पीसप्रदेशो शीस ⇒ विराति (सक्त पर १०६)। बीसङ्ग वि [विद्याविक्रम] १ वादेख्या २२ वा (पडम २२. ११ चंत २६)। २ समातार वस दिन का ज्याबात (एगया १ १--पत्र ४२)। र्यासविद् वि ["विराविधिय] बाईन प्रकार का (सम ४ ) । सह कि ["पर] बात्रटना ६२ वर्ग (पतम ६२, ३०)। सिटि क्यो ["पष्टि] वापठः ३१ (सम ७३) दिन)। "सी सीइ धी ["अशीति] बनागी =२ (तव २३ सम **०१: रूपः १४)** १ । मीइम वि [ अशीतितम ] बमाडीबा ८२ र्वा(पत्रम वर १९२)। (चर (स्त्र) देशो इचरि (त्रण)। इचरि औ ["सप्ति] बहत्तर, ७२ (बच्दा बुमाः सूपा ११६)।

बाअ र्रं दि ] बान रिग्रं (बह् )।

वाह्या की सिंदि माँ माता: प्रवस्ता में कार्रे (কুস বছ)। थाउद्ध्या । स्री [ के ] पम्कानिका पुत्रसी वाउद्धिश्रा | प्यासिहिममितिवाउस्तर्य व न ह थाउसी है बिड वदर (श्रम्बा ११६) क्ष्याः हे ६ ६२)। वाउस रेको वडस (पिंड २४ घोष १४८) ह थाउसिय वि [बाकुशिक] 'बहरा' चारित मासा (सुद्ध ६ १)। बाउसिया भी [बकुरिशका] 'बहुरा' चारित बासी (खप्ना १ १६---गत्र २ ६)। वाद मिन निद्धी र मितितम भारमन्त भना (चप ६२ । पामा महा) । वैस्कार पू [ कार] स्वीवार-मुबक उन्ति (विशे १६१)। भाष्य पुर्वि १ पन्छ कृत कळ्डर का पेड़ा। २ वि सुमग (दे ६ ६७)। बाम पुंडी [बाम] १ बूम-बिरोप कम्सरैया

का माछ (परस १७ - पन १२६ कुमा)। र पूँ शर, माछ (हुमा, पढ़ा)। १ पाच शी र्थका (सुर १६ २४६) । वत्तन विवानी तुषीद, श्रवी (से १ १८)। बाध वेको बाह् च बाध् । भवकः यामीअसाण

(रि १६१)। वाचा की [बाधा] विरोध (बर्महाँ ११७)। याभिय वि [याभित] विधेववाना प्रमाश

विषय (धर्मसे २५९) । याद्याण वेको बम्ह्या (६१ ६७) पर्) ।

बाय न [बाक] वक्-सपूर् (व्या २३)। बायर नि बादरी १ स्त्रूप मोद्य प्रयुक्त (पर्याह रे १) पन १६२ वे ४४) । २ तरनी पुण-स्वातक (शम्म २ ६४६, ७)। "न्याम **न**["मामन] क्में-विधेव स्वूपता-हेतु कर्मे

(सम ६७)।

१२१) ।

यार न [द्वार] बरवाजा (६ १ ७६) । धारमा स्म (द्वारका) स्वयम-प्रक्रिय वसरी भी माजकत मी काठिमाबाद में 'बारवा' के की नाम से प्रसिद्ध है (बस २२ २२ २७)। पारवह की [द्वारवर्ता] रे कपर रेता (बन १४१ लामा १ ४, का ६४८ हो। ए मगराम् निवनाव की कैता छिनिका (शिकार धंबम-पहित (ठा ४ ३) । **६३ पू िंकवि**ी सदकी (प्राप्त ६१ महा)। तस्य कवि भया कवि (कप्प) । व्यापै वास्त्रिया की [बास्त्रा] १ वानकपर रिख्ला िकी अधित होता धूर्व (रूमा) । स्नाइ (मप)। र मूर्वता वेषपूत्री विश्वा महत्त्वा व प्राद्धी यालक की सार-समझाब करते-बानियाँ (दावा) । बाला नीकर (नूर १ १६२)। स्माहि पु बासिस वि [बासिस] मूर्व वेवरूफ (पाम: िम्नहिन् विही पूर्वीक वर्ष (ग्रामा १ (वस २३)। २—पत्र ४)। पाय वि पाती वात बाइ चर्क बाम् रिनियेग करना। २

धेक्ना । ३ पीड़ा करना । ४ विनास करना । इस्साकरनेवासा(याया १२१व) । तार्व पुत्र विपस र मजानी की तपनवर्ग बाह्य बाहर (पचा ६ १६ हे १ १ वर्ण (अस् चीप)। २ वि स्थान-प्रवेत तप करी-क्य) बाहेर्सि (कुप्र १) । कमक्र वाद्यिसीय बाला (कम्प १ १६) । तबस्सि वि बाहीश्रमाण (परम १० १६ मुता ६४६) ि तपस्थिम् ] प्रधान-पूर्वक तप करनेवासा, धर्म २४४) इ. बाहणिज (क्यू) ( मुर्खे हलाकी (पि ४ १)। पंक्रिका कि बाह प्रे बिगम्पी यन्, मीस (हे १ ७) "पविश्वत । सारिक स्थान करमेनाना पुत्र पाम कुमा)। श्रंतो में त्याची भीर कुछ में भरवायी (बन)। बाइ पूर्व [बाघ] विदेश (स्तव १४)। बुद्धि वि विद्वि स्थितिक (वस्तु ६)। बाह देवो बाढ (प्रयी ६७)। गरण न मिरण विशेष रहा का परवा बाह् र्षु [बाह्य] हान, प्रमा (संब्रि २) । क्संबरी के बीद (मक पूपा ६१७)। वियम, बाह्य वि [बायक] १ शेक्नेवासा (पंचा १ बीयण पूंची "क्याबन" नामरु चैंबर ४६) । २ विरोबीः 'सन्तुपबसमञ्जूष विसमा (शान्त १ ६) औ, 'बनसहाबी बावनी-

(शासक १६२) । क्छी (स्र १, १—५६ ६ ६) । दार 🖠 वाइड र् [बाइड नाग्मट] यजा पुषारतक [बार] बानक का सार-बन्द्राच करनेनाला का स्वताब-प्रसिद्ध मन्त्री (कुप्र ६)। 1 (111 माहर देखे माहिर (धाना) ।

नीकर (मुपा ४३०)। बाल रेबो क्सा प्रमास नि [क] बब बाइज न [बाधन] १ नावा निरोप (बर्मर्स को बालनेबाता (याचा १ २ ६ ६ ४ १२७६) । २ मिछवन (पंचा १६ ३) । सामा)। बाइजा की [बायमा] उत्तर केवी (बर्मेंब बास न [बास्य] बालका बचान बजकाव बावन्द, मुर्वेदा (अस ७ ३ ) । देवी वह । बाइक इ.ची वास्त = नान (वा १२६)। बाह्य पुं [बाह्य ] रेत-वितेष (ग्रावन) । बासभ पु [बे] वशिष्-पुत्र (वे ६, ६२)। बाहक न बिहाइप्यो स्थूनता मोधाई (सम बाकमापोद्रमा औ दि । बन-मन्दिर ₹धस --पत्र४४ मीप)। क्ताव मधीर में बन्तावा बाता बोटा मासाव । बाहाओं [बाघा] १ हरून इरना २ ए बसरी स्कृतिका (क्ट ६, १४)। विदेव (बुना ११६) । ६ क्रीका प्रसम्बद काक्ष्म की [मास्त] १ दूनारी बहुती संस्थेत के होलेगाती पीड़ा (में १) कर

tv )ı

माशा की [माड्ड] हान, प्रना (है १ ६६)

दुनक महार बनार भीत) ।

(भूमा) । २ सनुष्य की क्लाध्यक्ताओं में

नक्षी कता कर नर्प एक की अवस्था (तेषु

१६) । ६ वन्द-निरोप (पिन) ।

की भूक्-पंचित्र नवर के बाहर का प्रश्ली (तुम २ ७ १। व १६)। बाहिरिक्छ वि [बाह्य] बहर का (प्रकृति **222)** 1 मा<u>द्व⊈की</u> [माद्व] १ हान द्वना (दे<sup>१</sup> १६) प्राप्ता हुना) । २ ई. अन्यास् प्राप्तीर का पुत्र वाह्यपति (दुन्न ११)। वस्ति र्षु विक्रिके १ कारतार् सावितात 🖘 ए<sup>स</sup> হুৰ কেতিভাখা হুৰ-বৰা(*য*ন ই परमा ४ १२३ छन्) । १ साह्रमसि के प्रति

का पुत्र (पत्रम ४, ११)। मूक ४ [मूक] क्तावस्त (क्यू)। बाहुम दु [बाहुक] स्ववात-स्वात एक क्री (TT 1 1 Y P) 1 बाह्यसभाव कि विज्ञात सर्वेषय (5<sup>पा</sup> बाहुवा को [बाहुका] नीत्रिय मनु-विकेष

बाहुक्षेत्र दु [बाहुहोय] शोनस्य वेश हुन्ह

(चव)।

(मानग)।

बाह्यका वेदो बाह्न (देषु ११)।

माहिरिय वि [बाहिरिक, बाह्य] ब्यहर ग बाहर हे संबन्ध रखनेवासा (सम वरः सम १ १० विक ६६६ मीया कम्प) ।

र्जिल्ली सम्बद्धनेता एक योग बोतों पार्थिय मिकाकर और पैर को कैसक क्रिया बाह्य कामोरसर्व (बेदम ४०६)। वाहिरीत पि [वहिरक्कि] बाहर का नाम (त्वरु १ ४२)।

वाहिरिया की [बाहिरिया] निवे के व्या

पासा सामा उप) । ओ स [तस्] बहर से (कप्प)। बाहिर दि [बाह्य] बाहर का (मान्या स २.१—वर्षश्रामगर, बटी)। अदि

बाहिर स बिहिस निहर (है २ १४)

बाह्यिक न [बाधिये] विषय्ताः बहुयान (विधे२ व)।

१¥ 3 वि ¥=१) (

बाहुत्तेर वृं [बाहुलंब] कासी माथ का बचका (प्रसु २१७)। बाहुस्छ न [बाहुस्य] बहुवता प्रदुक्ता (सिंह प्रदासन सुपारण सम र ७)। वाहुस्ड वि [ वाय्पवत् ] व्यवसा (हुमा मुवा ४६ ) १ दिविव [दि] को २ किलि (हे४ **४१ व्हा सब ४ का २, २१ कम्म ४ २ १ १** नुबार १४)। "अविदु ["जिन्मि] एक महाग्रह् क्योतियम देव-विशेष (बुज्य २०) १ 'इंड न ['दंड] बना मादि वह बाग्य जिसके की दुक्त करावर के होते हैं। जब विश्लं पूर्णार्ट (विश्)ः याज वैकी या-यास (कम ६ ९०)। "पाससय पून [ शत्वारिंगच्छत ] एक वी नेमानीव र्४२ (कम्म २ २६) । विद्वि विभी क्ते प्रकार का (चिंग)। स्तृष्टि औ ["पष्टि] बास्ट, ६२ (बुज्ब १ ६ ध)। सत्तरि, संवरि ती [सप्ति] बहुत्तर, ७२ (पण १६३ जीवस १ ६ कम्म ३ ४) । वि<sup>क</sup>) नि [द्वितीय] रूपरा (ध्रम १ १५ विभ दियों । इसीय दूं [स्याय ] धप्रत्याक्यानापरातु नावक कपाय (कम्म ¥ 35)1 विञ्र न [द्विक] शे ना बदुबाव दुग्न दुग्त (अगः गम्म १ ६६: प्रानु १६) । विश्राया थी दि । गार-विशेष संबंध रहने-बाता बीट-इम (दे ६, ६६)। विद्रज रेगो विद्रग्य (हे १ प्रश्यव १६४)। विद्रमा देवो बीआ (सन)। विद्राप्त वि [द्वितीय] १ द्वाय (दे १ १४४: प्रानु ११)। १ सहाय महर करने-बाना (नाम भूर १, १४) 'ने दुर्ग्याम न दुर्द्दित, ध्यवद्वाचे विन्यवदा नेर । पहिलो न ते ए जिल्ला **पु**ता परमत्त्रमा ऐस (TE # EXX) : विद्यान दिशासी द्वारा (हे १ ६४) र, वर या रवर) । रिय नि [शारक] बुदुना करनेराला (गर्रन) ।

विद्यादक [ द्विगुणय् ] दुएना करना। विवर्णेष (पि १११)। क्रिन ह [पून्त] फलादि का क्रमम 'वमर्ग बिट (पाम)। सुरा की ["सुरा] महिरा शाक 'बिट्युरा पिट्टबर्रारमा मद्दर्घ' (पाप) । विंद देखों सूळ हूं। विविध वि [द्वारिट्रय] विसकी लगा धीर बीम में दो ही इस्तिमी हो बहू (बीप) । बिंदु र्नुन [बिन्दु] १ मल्य प्रेश । २ बिन्दी कृष, बनुस्वार । ६ दोनों भ्रूदन सम्य माए। ४ रेलाविश्वत का एक विन्दू, विदुर्छो, बिहुई (हे १ १४) क्या स्मार २२) सामा ११/क्ष पूना): क्या की ("क्या) प्रमुखार, फिरी (शिरि ११६)। सार न ['सार] १ पीखापा पूर्व, पेन प्रत्यांश-विशेष (सम २६: विसे ११२६) । २ वे मीर्थे पंराका एक राजा राजा चलापुत का युव (विते ८६२) । विदुष्टम वि [बिन्दुबित] विन्दु-पूक्त विन्दु विमिन्त (पाया नउड)। विद्युक्तित वि [विष्युयमान] विश्ववी है व्यान्त होता (मे ११ १२६)। बिट्रायन न [बुम्बायन] मबुरा के वास का एक पैप्छव-तीर्थ (प्राक्त १७) । विंव सक विस्व | प्रतिविध्यत करता। कर्म, विविज्या (गुरु ४६)। बिय न [विस्व] १ प्रतिवा, पूर्ति (तुपा) । २ सन्दर्भवरोप (रिप) । ३ व. विभ्वीकत कुन्दरन का प्रम (खाया १ व----यव १२६ <sup>१</sup>

हुन्दरन का प्रमा (पासा १ व--यन १२६ ।
काम हुमा १ २, १६)। ४ प्रतिविक्त
प्रतिकारमा १ स्मान्त्रय साकार, प्रमान्त्रय
कार्य प्रसानि निम्मूर्त (प्रमा १ १३ व)।
६ मूर्व तथा कार का साहक (प्रमा कर्यू)।
विकास न [ में ] क्यानिय निमान्त्री
विविद्यत सामार्थ (पास)।

ERY विंह सक [ वृह् ] पीपए। करना। इ. देशी बिंहणिश्रम् । विद्वापित्रज वि विद्वापीयी प्रीट-वनम् (ठा ६---पत्र १०४८ सावा १ १---पत्र ११)। বিছিল দি বিভিন্ন বিভাগ বিভিন্ন বিভিন্ন १२८) १ विग्गाइमा रेटी दि] गौर-निधेप संमान बिग्गाइ पहल कीट-ब्रुग्म प्रवराती में 'बनाई' (वे ६ ११) । विकारिको बीज विरुवे पित बहिया बहते (पडम ११ ६६)। विकार म विक्रिप्र] फत-विरेष एक तरह का बीद् "विश्ववर्धियादि कुछ। विदा-साई सम्बद्ध (बुवा ६३०) । विजय (धप) देशी विष्ठज (सर्वि)। विद्व पूर्वि वेटा, महका पूत्र (भेड)। बिट्टी की बिंदि बेटी पूर्ण सबकी (बैठ है Y 33 ) 1 बिट नि कि मिएी केंद्र हमा कपरिए (धोष ४०१) । विद्यास प्रे विद्यास निवास निवास निवास विस्ता (पि २४१)। विद्यासिया ) भी विद्यासिया विश्वासी विभाग मार्गाये विभागी वित्तेया (सम्पत्त १२२) ( २४१) । देखी विराज्ञित्रा । विश्विस रेको वहिस (३४ १४२ टी) । बिन्मि रेपो विद्या (उप २७६)। बिग्ना की [बेन्ना] भारत की एक नधी

विवासिका ) की [विवासिका, सी]
विवासी विकास । सार्वार विचास
सिवा (सम्प्रत १२३ १९ २४१) । देशे
विदासिका ।
विविध्य देशो विवास (स्टर १४२ देशे )
विविध्य देशो विवास (स्टर १४२ देशे )
विविध्य देशो विव्यास (स्टर १४२ देशे )
विवयस सी विज्ञा (स्टर २०६) ।
विवयस है [विव्यास ] र दो की गांगार
केशा-विवेश हैं तम्में को माणि होने पर
वह रेशे । दन उरावा, तक्तिया सीरीता
प्रकास केशा-विव्यास (व्याद २)
विवयस हैं [विव्यास ] सम्में विवास (स्टर १)
विवयस हैं [विव्यास ] सम्में विवास (स्टर १)
विवयस हैं [विव्यास ] सम्में विवास (स्टर १)
विवयस हैं [विव्यास ] सीरीता
विवयस हैं [विव्यास ] सीरीता

(उप्तार १--नप ११)।

frt t) i

विभेखव रेची वटेडव (पर्ल १--वन ११) : विद्वविद्वानीयस्य, महान् । प्यार् प क्रिक प्रीवकाली १ शिवन-प्रसिक्त मध्य िनको भन्द-विकेश (निव) । समुद्र पांच मानामासा क्लर-समुद्र । २ स्वर विषया । रेको वहस्सइ (हे २,१३४) बिहरसङ् । १३था २ दश वर्ग कुमा)। बिहरसङ् विशेष (पिय)। विरास देवो विद्यास (पुर १ १८)। विशास्त्रजा) देवो विद्यासिया (सम्मत बिक्रिय देवो विविध (प्राप्त ८) । विराक्त (१२६) पाप)। २ भूबंपरिहर्प बिडेस्स हैको सिरेस्स (इस १ २ २४)। विरोध द्वान से जननेताका एक प्रकार का बीआ देखों विकास कि १ १३ २ ७६३ मूर १ ब्रास्थी (सूचर ३ २४)। ६८: समा ४८३) । विराधिया की [निराक्षिका ] स्वत-कव बोअव विश्वि १ वोज वीमा काउमकीम निरोप (माचा २ १ 3) ( इसे नासक मार बुक्त बढ सहता (प्राम् विरुत् न विरुत् इस्काव पदवी (बस्मत्त १६१ साचाः मी १६ सीप)। र मूख 1 (1885 श्राप्ता 'साधिरमाणसाखेददत्त्ववीदमकास्य विस्न विस्तीर रुद्ध विवरु संस्थाति वराम्बरणसहं (महा) । १ नीमें शरीयन्तर्गत कलायों के पहले का स्वात (विपा ( क सस बालकों में से मुक्त बाल, तुन्न (सुपा वडड) । २ कुत कुमाँ (एव) । क्रोकीकारक मय है)। ४ 'हीं मदार (शिरि नि दि कोसीकारकी इसरे की व्यासन्त ११६)। बुद्धि वि बुद्धि सून सर्वको करते के लिए निस्तर अचन बीसमेताबा नावने से क्षेत्र सभी का लिन वृक्ति से स्वयं (पर्याः १ २ -- पत्र ४४)। पंतिया और थाननेवासा (धीप)। भीव वि विवासी िंधक्किक्तकः] चान की प्रवृति (पर्या २. बीधनाका (फास्प १ १)। सत्र की X-19 24 ) 1 िंश्विको एक क्षीपक से मलेक परधीर विश्वास } केवी विश्वास (भग पि २४१)। सर्वे का सनुस्थान क्रांस केतनेवासी कवि । २ वि च्छ चित्रकला(पहला१)। इदानि विद्यास्त्रा केशे नियक्षिमा (पि २४१) । िस्ता बीज से कराज डोलेनावी बनस्परि विद्वार्ष किस्य देश का पैक (परकार) । वाक पंचिरपी कर कर-(पद्रा १३ वन १ ११ टी)। एन वेन का विकेष (एव)। सहस न (सहस्र) विकेष पत्रद (पत्रम)। कासकामाप (क्य)। विद्वता पू [वितवक] र धनार्व क्य-किरोब । बीककरव न [बीकपूरक] फ्य-निशेन एक २ जन देश में पहलेकाकी मनुष्य-मादि (प्रवा तरक का गीव (मा ३६)। १ १--पत्र १४)।देशो विद्यस्य ≔ विश्वतः। वीक्षक्रमण न दि । वीव मनने का बाद ---चरित्रान (वे ६, २३) । विस न विसी कमब धादि के नान ना दन्द्रमुख्यस्य (स्त्रायाः १ १६: कुमाः) पाच्ये) । बीक्षण पुंचि । नीव देवते (दे ६ ६३ टी)। वठी की ["कम्फी] बबाका दक पनी की बीध्य पुंच कि बीजक] इक्ष-विशेष मतन पक्ष पार्टि (१ ६ १३)। देखी सिस ⊏ कुत निजयसार का माश्च (वे ६, ३३, पाप)। flee 1 बीक्सबाबय पू [बीजवापक] विक्वेत्रिय विसि देवी विसी (दे १ ८३)। मन्तुभी एक बाहि (पशु १४१)। विसिजी की [विसिजी] कमकिनी काव बीकाकी कितीया १ दिनि-विकेन क्रम राक्ष्य (पि २ १)। (बन एक) बा एक, रमख १० छाता १ विसी की द्विपी दिन का सावन (दे १ रु अपूर्ण रक्ते) । २ जिलीन निमर्णि 48 (8 R 8) 1 (वेदद १ १)। विद्र पत्र [भी] बरना । विदेश (बाह्र ६४) बीज केलो बीच = गीर

१-पर ११)।

बीहरा न [चीटक] बीहर यस का बीहर, सम्बद्ध सम्बद्ध (स्पा १३१)। भीकि अर्थिति ही असर वेबोट बीकी 'विकारमधीकी की हैवि प्रकृतिन परिश्ववद्ध (बर्मीव १४ )। वीभक्क प्रविभारती शाहित्व प्रदिश्व एक प्त (मस १३१)। बीभक्कः) विविधसः । इप्रोत्सकः बीभरव | कुछा-जनका २ मर्गकर मन ममक (चना तंदु १८) छाया १ २ संबीद ४४) । १ वं राजवाना एक नुमट (नस्य X2. 7): बीयक्तिय वि वि जीव्यविक् वीव बीवेरावा बपन करनेवासा । २ पू. भिताः बीवं बीवित-व्यक्तेष' (सूपा १६ : १६१) । बीयन पूर्वि वार्यन करापूनस-विरोध मान का एक ध्वरता (दे ६, ६३) । भीज सक मिी उरता। वी**व्यः गी**हेर (हैं ४ १६। यहाः दि २१६)। बद्ध- वीर्देट (ग्रीवमा १६) सम् ७६४ की मूना)। इन धीविषया (स ६८२) । बीड का केरी बीशका (पि ६२७) ( बीहरण } वि[शीयण क] <del>शर्म वरक</del> बीखाजा - वर्षकर (पि ११३) प्रशाह र १३ बीहणव परुप १६, १४)। बौद्धविय वि भीवित् । शराश ह्या (बम्बत 11 ) ) बीहिश दि मिति दे क्य ह्या हि ४ १६)। र न थय. इट चय गीडिये ममावि हूं (बा १४)। बीहिर नि भिट्ट इस्नेनावा (हुमा ६ ३४)। बुआव सम विश्वय दिल्ला। धेर-मुभावद्वता (हा ६, १--पव १९४)। बुद्रजनि कि जो निमन्न (पूर्वा २०० 68. 6 68 650 and 6' 6) 1 मुँदि दुंबी दिं दे पुम्पत । २ सकर सूघर (R & E ) : हुवि को [वे] करोड़ केर केर कुर दुवि भारतका क्य चंद्रण किरम्हर, (श. ई.श.—तेत हरा BER SHY FE HOT GES ----

श्रीर प्रदिशि महिल मेंसा। २ वि महस्य बदा (दे ६ १८) । कुछ न [मुच्न] १ बुध का मूल । २ कोई भी मुस मूलमान (हे १ २६: यह )। श्रीवा की वि] विकाहर, पूकार (तुना शहर)। श्रुप पु वि जिसर देवी (क्य देश) । संबुध न वि दिन्द्र मून समूह (वेद १४)। सुक्त वि [वि] विस्मृत (वव १) । भुक्त मक [गर्ज प्रका] गर्नन करता नरवना । इद्धर (है ४ १८) । युक्त यक [भप् भुक्] पान-भूता का मुक्ता। बुद्दर (पर्)। मुख दुन वि १ तुम विसका (सुक १६, १७) । २ बाच विरोप 'बुद्रवेबुद्रवेबुद्रवेबुद् इद्धे (मुपा ६ )। बुष्यज र् दि । काफ, कीमा (देव ६४) नाप)। वृक्तम देवो बोकस (ग्रन)। बुद्धा भी [रे] १ बुष्टि (१ ६ १४) पाप)। २ बीदिपुटि (१ ६ १४) । १ बाय-विरोपा व्याप्त हुद्रशहराचेत्र करियमिर्देशं मान-बार्स (सुरा १६५)। मुद्रा की [गजना] गर्नन गर्जारव (वपन ६ ६ व्यवह)। मुकार पूर्वि सृष्ट्रार] पर्वन, धर्वना (परम ७ १ श वटा)। युकास र् [दे] वसुराद, युकाहा (प्राचा २ ₹ ₹ ₹} t बुब्धमार वि [वं] मीट, बरतेक (दे द ex): यिक्तित्र वि[गर्जित] जिस्ते वर्जेक्ट सी हो बह 'मर द्वीपा तुर मा' (दुमा) । -युग्मः सक [ पुष्] १ जानना, ज्ञान करना समनता । २ वाषना । पुरसद (स्त्र) । मुक्त बुरिक्षेत्र (का) । स्थार, बुरिक्सीहरू (बी)) वर प्रामेत पुरम्मान (तिव बाबा)। थर पुगमा (१ र. ११)। ह मुख पाक्षस्य बीपस्य (शिक दुनाः नव र्षः भग नी २१)। बुग्मिष्य १ वि विधित हिनको हात बुन्नासिन । क्यांन नगं ही वह । र । मुद्ध देवी मुंध (तून र )।

वायाया मया (क्रूप ६४) स्पा ४२६ प्राज ₹¢} | युरिस्टर वि [पुद्र] शांत विक्ति (पाम)। विभार वि बोद्यू र पाननेवाता । २ बाननेदाना (प्राकृ ६८)। युटवुड यह { बुदबुडय ] बुटबुड धानाव करना 'मुरा वहा बुहबुबेद सम्बत्तं' (बेहब 464) I सुद्व पक [ बुद्ध , सरज् ] दुक्ता। बुद्ध (हे ४ १ १) छका बूमा सबि)। सबि द्वीनु (यप) (हे ४ ४२३)। यह मुद्धेत, मुक्रमाण (कुमाः चर रे ३१ दी)। प्रयो वह सुकार्यत (संबोध १४) । बुद्ध वि [बुकित, यहाँ] हुवा हुमा निमान (बस्म १२ झे था १७ रंबा ११ सुर १ रेंबर-मित्रे) "वयहुर्यहराई" (पत्र ५ हो) । सुद्राज न [ब्राह्मत] दूबना (ध्ये २, ४२५) । वृद्धिर दे कि निमा में मा (बक्र ) बुदर वि दिया देश (निंग) । की बहा ब्दी (गाप १६७ सिरि १७३) युष्पवि [दे] १ मीत इस ह्या। २ र्वाहर (के म १४ टी)। कुछी की [दे] ऋदूनती की (दे ६, १४)। त्रक विश्व १ विद्यान, परिषय जात कल (सम १। कर ६१२ दी मा १२। द्वार ४ सुरे)। २ जाग्र हुमा, जापृत (तूर **१ २४६)। १ पूरः पविष्य ग्रीर वर्तमान** मा मानकार (बेह्य चरेके)। ४ जिल्ला विदियं (दा १ ४) । र प्रे विकलेश शहनू, कीर्वपर (यम ६ )। ६ पुत्रदेश मनराम् कुछ (बाम के छ दर्श हर इ. ७ इ.स. ४४ : पर्यंतं ६७२) । ७ मानावं सूरि (बत १ १७)। "पुत्त पुं ["पुत्र] बाबार्व रिप्प (उत्त १००) । बोहिय वि विधिन] माचार्य-वीवित (सर ४६) । माणि नि [मानिय] वित्र को वर्षिक माननेताका (मूम र रेर २४)। स्वय पुत्र [स्वय] दुउनन्दिर (दुप्र ४४२) । प्रकारि [योदा] र बूद बका र बुद-संकर्ता, ध्य वा (ती ए सम्बत १११) । युद्ध देवी युगम् ।

युद्धेन पून [धुष्नारन] सपी-माव गीचे का क्रिस्सा का एक संदेश नर्दशासर्दशा मैट्यमाणे प्रवित्तं विशिक्ता प्रवेतेलं मुक्त (पुज २०) । युद्धि भौ [युद्धि] १ मति मेगा, मनीवा प्रज्ञा (ठा ४ ४ मी ६) हुमा कप प्रापू ४७)। २ वेब प्रतिमा-विद्येव (सामाः १ १ टी--पत्र ४९)। १ महानूएक्टीक छुद्र भी मविद्यामो देवी (ठार ३----पत्र ७२) इक)। ४ इन्द-विरोप (पिय)। १ श्रीमक्छे । ६ साम्बी (राज) । ७ धर्महुसा, इया (पराह २ १)। वर्षे इस माय का एक मन्त्री (उप avv) : कुछ न किल्ली पर्वत-विशेष का मियर (एज)। योदिय वि [वाधित] र धोर्यक्यी-धीर्यकर से प्रतिकेशित । २ सामान्य साम्बो से बीवित (राज) । मंत वि [मन्] बृद्धिवासा (ता ६१८, धूपा १७२ महा)। स दे [कि] र वक स्वताम-प्रसिद्ध बेही (यहा)। २ देखों इस (यह)। ल्य वि [म] हुत्र , पूर्व ईतरे की हुदि पर पीनेशालाः 'तस्त पंडियमास्तु(? रिप्र)न्त कुविकारम कुरण्याणे (कोषमा २६ टी २७)। र्वत देशो मीत (भीष)। सागर, "सायर र्ष ["सागर] विम्म की प्वास्त्रश्री रातानी का एक गुप्रसिद्ध वैनाबार्य और प्रत्यकार (बुर १६ २४२, सार्व ६२ समात ७६)। सिक पू िसिक ब्रिक में विकास र्धपूर्ध इदिवाला (मारूप)। श्रुंदरी की [ सुन्दरी] एक मनी-कमा (का करवटी)। सुप वैको सुद् (वरह १ ५ तुन २ )। पुरमुख पर [पुरूष ] भू भू पातान करना याग-परुष वा बोलना । बुरायह (बुन १४) । वह युरपुर्वत (इम २४) । बुरयुष ई [बुर्बुर] कुनकुत्र, पानी का बुत्तरा (हे ६ हर, चीता विष हटा छाता र राजे भशामानु दह चे १३)।

पुमुस्ता की [पुमुक्ता] पूप चाने की बच्चा

युव वि [मूक] धीतनेवाला (लूम १ ७

(पनि २ ४)।

पुषाम देशे पुष।

1 ( 5

११५)।

W ) I

देवी यु।

बुक्रंपुडर की [वे] प्रवहना, प्रश्नुव (वे ६,

बुस्स्र वेको मोस्छ। युद्धार (दुप्र २६) या

१४)३ बर्जार्सि (प्रत्म ४) । प्रयोक्त बर्जार वेह,

बुवानेथि बुद्धावए (कुप्र १२७० सिरि

बुव एक [मृ] कीनना। दूबद (पर्

मुख्युस र् [दे] उसर देखो (पर्)।

<del>पुण-पोप</del>

मुद्ध विदि] सुक वावा-ग्राटित से स्वित (निप १६= टी) । मूहसक[बृह्\_] ब्रष्टकरना। द्वार (सूप २ १ १२)। में वेचोर मि (ममार ३ वे ३ ११६८ १२ ३

वेबिस वि दि हैंबिकी ये ट्रक्नेक्स नोगम सहस्रोद (दश्व ६ १२)। वोंगिक्स वि दि । शुनिक यसंक्र्य । २ पुं भारोप भारत्यर (वे ६ ६६)। बॅटियान विशे पुत्रम साल का भा का (\$4 24)1 वॉडन दि] १ दुद्रुक स्टन्ट्रूच (१६

निय)। भासी (प्रत) की [कारीवि] बबासी बर (विंग)। इंदिय वि विक्रिय लाना और बीम में वो ही इनियमाना प्राची (ठा १३ मक संबंध भी १६)। विदेश

दुमा)। यहः बुर्वत बुयाण बुवान (उत ६६)। २ फल-विशेष कपास का कत (मीए [द्वयादिक] दो दिन का (बीवस ११८)। २३ २१३ दुमार ७ १ ३ वस्त २३ ३१)। लंदु२)। यन विश्वीसूधीमण पूर्वी बॅट रेको बिंग (महा) । कपद्म (सूच २, २, ७३; धीप) । मुस न [मुम] १ नुमा वन मादि का कर्रगर, वेंत देवो मू। बोंदन दि । पुद पुद (दे ६ ११) । बागका विज्ञका (ठा ब----गत्र ४१७)। २ वेंदि देवी चेन्द्रीदेय (रंग १, १६)। बोदि को दि । रूप । र इक प्रदि ६ ७ तुष्ण शान्य १७व-रम्हित बास्य (गरह) । बेट्ट देखों किहु (प्रोचम्प्र १७४)। ६६) । व स्रपेट केंद्र (दे ५ ६६ परहाँ युमि ध्ये [यूपि सि] पुषिका धाधना शक्याचीर क्वा १८.२ g v(V मेड 🐧 [दे] तीका महाप्र (२.६.६५, स संदर्भ सिस् विषयी क्यो पूर्वि बेडव (मुर १६ १)। विशेषश्चर पद दशः तथार Y)। वों दियाची [दे] स्त्रवा(तुप्र २ ९,४६<u>)</u>! बेडा ) डी दि] भीका मधाव (का बोक्क पूर्विकान, बक्त पुनाप्रयो<sup>ह</sup> वेकिया } ७२० की सिरि ३०२ ४ ७ वेडी बारर, कम १२ टी)ः भासीक्ष ML 8 (8 4 24 21) 1 वर्ष शास प्रसित्तसम्बद्ध बेक्सि (वर्गीव ११२)। भक्ता की हि रसम राही-पूँच के बाद वि 4 42) 1 वेदोणिय वि द्विद्रोणिको से होस्य का \$ A) 1 होता-हब-पर्शित 'कम्पद मे बेबीखियाए कंतपारेर द्विरएशासीयाए संबन्हरिया' वा (माचा२ १२०)। (चना)। बेसेस (बिसस) विल्याचन के बीचे का कोकार रेवो मुद्धार (पुर १ २२१) <sup>३</sup> एक वॅनिवेश (माग १ २--पत्र १७१)। बंगसिय वि विगासिको से मातका, से **20, 24)** 1 महीने ना बंदन्य रचनेपाला (पळन १२ वेक्टिक [दे] स्तूला भूष (१ ६ ६४) दाय)। बेस्ट देनी बिम्छ (प्राप्त १)। **पर्रांत बोट्ट**'ति स्तरवार्देवे' (नुवा ४६६) । चंक्क्या र्चु [चे] बैतः बनीवर्षे (पारन) । बस बद [पिञ स्था] बैठना न्यंतंत मोल्तिन कि बेश्चय पुरुष में धर् बेर' (धीन 220) |

(सूम २ ६, १४ माचा)। धुसिका की [बुसिका] पर धारिका कर्वपर, मुखा (दे २, १ ३)। मुद्द ( जुद्द ) १ वह-विरोग एक क्योंतियक देश (तुर ३ १३ वर्गीत २४) । २ वि परिस्त विकास (ठा ४ ४ तुर ६ १६ वर्गेवि २४ कुमा। पास) । पुरुष्पत्र ) केवी बहस्तत्र (हे २ दशः १६७: पुरुष्पत्र ) वहः क्रुया)। बुदुक्त क्ष्म [बुद्धुस ] बले नी रच्छा गरना । बुदुस्बर (१ ४ ४३ वर् ) । मुहुषस्या केवी बुमुकस्था (एत) । युद्धक्रियञ्ज के [बुक्किन] मुका (द्वमा) । मुक्क [मृ] योजना नक्षाः दून दूसा कृदि (अस २४ २८, तुम १ १ ३ १) १११२) । विति वेति, केमि कुमा (कम्म ३ १२ व्या १प्प) । नुबद्ध सम्बदी (बत रव प्राव्यायश प्रवश हा व र)। न्द्र जिन चेन (का कर बी) नुसा १६ ३ विदे १११)। बीट पूर्वा (हा १ १) वैधी यम चुन । बूर 🖠 [पूर] स्वन्धित-विशेष (लागा १ र—पन ६, बस १४ १६/ बया बीत)। १७१)।

बाक्क क्रिकेश (शी. २ देद ८६)। मोक्स पुणिक्स र मनापं देत-दिले (पद २७४)। २ वर्णसंकर वाति किटेप नियाव से बंबती नी पुछि में उत्तव (ड्रॉ बोकसाक्षिय दु [दे] तनुवास 'बेहानुवारि या नागरस्वदुवारित या बोडमावियदुवार्वि क्षक्रिय न [मूक्ति] नर्गन, पर्गना (पर्म बोगिएस वि [वे] वितरवरा, 'प्रसर्व सर्व सारं किम्मीरं विसर्व व बोक्कि (पाय)। क्षेत्र एक हिं। प्रीभाष्ट करना चूठा करचा दुवराची में बोटबुं 'रमग्रीय स्वतिवय थोड रिदि} १ वॉन्ट वॉन्ट । ९ वण्ट पुरा (१ ६ १६)। १ द्वाराजनावक 'एकेव मान्न बीडो' हुनराती में 'बीडो' (विड

बोडघेर न [दे] पुस्म-विश्वेष (पाप)। बोडिय पूबिटिकी १ विकास जैन संप्र श्राय । २ वि विकास मैन संप्रदाय का सन्दामी 'बीडियसिबमुदेसी बीडियलिंगस्स बोइ रुपती (विसे १ ४१ र४१२)। चोडिय वि दि] गुरिश्त-मन्तक (१)ः कोडिक्मिएर पूर्व मरखें (धोचमा ×१ टी)। बोबूर म [दे] रममू दाही-पूँच (दे ६ ६%)। योद्विष्ठा की दि क्यविका कीकी कैसरि न बहुद बोड्रियनि एयं शक्तीति केपंति है Y 44X)1 बोदर दि दिं] पुत्र, विशाबा (दे ६ ८६)। बोदि रेको वाँवि (मौत)। बोहर [द] देको बोहर (पाप)। थोद्ध नि [बीद्य] बुद्ध-मन्त (संबोध ६४)। बोद्धस्य देवो हुउसः। बोइड वि विंे तस्छ वदान (दे ७ ८ )। क्षोपण न [वोधन] बीन रिखा क्यकेर (सम ११६)। बोबस्य की पुत्रम् । बोधि देनो वार्षि (ठा २ १—पत्र ४६)। सत्त पुं [सत्त] सम्बद् शरीन को प्राप्त प्राणी, महीत् केन का भक्त और (सीक्ष क्र)। योषिक वि [बोधित] बायित समन्यित (वर्गर्ध १ १)। बोध्यड वि [दे] मूक (क्रा अवस्ता पूर पत्र २४६)। कोरन जिल्**र] फन-विदेश वेर (सा**र । है १७ ३ पर्३ कुमा) । बोरी को [बन्री] देर का गांव (प्राक्त ४ है १ १७ ३ हुमा देश २८१)। मोस एक [बाह्य ] हुनागर श्रवीको ध मोलइ मिछनपरिष्ट्रिएए बेरा खडो (सार्व ११४)। दुवृतं जीलय् धर्मा (सूक्त ६६) बीनेर, बोमए (संबोध १६) कींस च बंबित वने विनामी क्योंपि बीवंति महासर्वेष्ठि (सुम १ ३ १) मोलेमि (स्थिर १३०)। "इस्मामेर्ग कोए बोधेद बहु" (जबर १४२)।

बोस भन [स्पति + कम् ] १ पतार होना पुत्ररता। २ सक उल्लंबन करना 'पूर्व ए एइ, वंशेनि सम्बद्धी वामिएग्रीनि बोलेइ' (ना ८६४) पूर्णी संबंधिया स बोबद क्याहें (भावक ३३) । बोसए (श्रंड)। देखी धोखा≔ गम । वोळ पृदि] १ कतस्य कोबाइल (३६ मना सनि। कप्पू इप इप १ १) 'हासबोत्तबहुमा' (प्रीप) । २ समृह् 'कमहा-पुरेख रहयांचा भौताले प्रवयुक्तवस्त्रीते' (शल १ फुलक १४)। योजनापुन [दे ब्राड] १ मञ्चन हुनना। २ क्पॅरा बींचान 'उच्चूत बोलने पानेति' (विया १ ६-- यम ६८)। बोक्टिम वि [मोडित] हुवाया हुसा (वण्ना **₹**5} ι बोर्कियी की वि] सिरी-क्रिकेप बाह्मी लिपि का एक मेरा 'माहेबपीफिबी दामिसिबी बोर्कि-विसीवी' (सम ६१)। बोह एक [क्यय] बोबताः क्यूना । बोद्धद (६४ ९ प्राप्त ११६ सुर व ११७) मंत्रि)। कर्मं, वीरिचयह (श्रप) (कुमा)। इ योद्धेनय (यप) (कुमा) । मधी, बोह्मा बद् (डुमा)। मोडाज र् कियनी बोध वचन (गा ६ ३)। बोद्धणाय वि [क्यसिए] बोतने का स्वमाक-गता(द्वेप ४४३)। बोद्धा की किया | नार्चा करू शीमकोस्माप् (**9**4 2 (1) ( बोद्धाविय वि [कवित] दुसवाया दुम्स (स ver tee) i वोद्धिक्र विकिथित] १ प्रकः १२ व, प्रक्तिः (मरिट हे ४ ३८३)। बोध्यन [वे] क्षेत्र बेट (३ १९) । वोद् सक [बोघव ] १ समध्यना, कान क्यमाः २ वयमाः। बोहेद्र (क्य) । कर्मे गीहिण्यह (स्व)। यक बोहिंत बोहेंत (पुर १६, १४६: महा) : क्यह बोहियांत (पुर र १४२, न १६१)। हेक बोहेब (मन्मः १७१)।

बोह् ईं [बोघ] १ बान समक (बी १)। २ वायरण (कुमा) । वोद्दग देखो वोद्दय (४ १) । बोइण देवो बोघव (इस २ ६, सुर १ ३७-उपर १)। बोइय दि [दोचक] बोद देनेवाला ज्ञात-बाता (सम १ स्थाना १ १) मर्गकर्ण)। मोइहर पुंचि मागव स्तृति-पाठक (देव ₹#) I बोहारी की [दे] बुद्दारी संमानंती माहू. (g & sa) t वोहिको [बाघि] १ सूत्र बमैका नाम स्त्रमं की माप्ति 'पुश्चाहा बोही' (उत्त ६६ २१६) चोद्दो कियोहि मरियम भवेतरे सुद बम्मतंपती (बह्म ३३२) संबोध १४ सम ११६ वर ४०१ ही) । २ समिता सनुभागा यमा (पराहर १)। केलो मोधि। चोद्दिछ नि [चोभित] १ ज्ञापैत समस्या हुमा (मद) । २ विकासित विकेषिक न्यवि किरस्रवस्थानोहिक्सास्यास्य — (कम्प) । बोहिम ई [बोधिक] मनुष्य हरानेवासा भीर (निष्क है। मेहर ४४६)। वोहित देवो बोह = बीवम् । वोदिश केवी धोदिश = बोविक (एप)। बोहित्य पून [दे] प्रवह्छ बहान मानपान नीम विद्रश्रेष २ ६ वेहम २६४ क्रम २२२३ बिरि १८३३ बस्पत ११७ धुपा १४३ महि)। बोहित्यिय वि [बे] प्रवहल-स्कित (बका **t**t=) 1 बर्मस देशो इस्स (पुना ५ ६)। बमसर देवी समर (नाट--पुदा ११) । <sup>क</sup>मास देवो बक्मासः किंदु प्रशृह्वा वा रिट्रिम्माधेषि कुरवद न हुन्मेद (गुपा ११७)। "विम वि[सित्] भेवत करनेवाला, वारा-कर्ताः 'सनद्रात्म' (साचा १ ६ ४ १)। मो (धप) देखो सू । बोहि (प्राक्र १२१) ।

म 💃 [स] १ घोछ-स्वालीय अयस्वत वर्णी निरोप (प्राप्ता प्राप्ता)। २ पियम प्रसिद्ध धारि-पुर धौर दो हुत्व धक्षरों की संबद्ध मन्दर (निय)। ६ न नक्षत्र (मूर १६ ४३)। भार दूर्विंदार] १ भी सकरः। ५ काल (पिंद)। सम्बद्ध [फिन्न] पवस (पिय) । सङ्बेखी सम = मु।

मइ औ [भूति] वेतन वतन्त्राह (शामा १ द—पप्र १६ विपार ४ वदा)। देखो सुर्। मइअ रि[मर्फ} १ विमन्त (पन्नक १ ६, ध्य ७३)। २ वर्त्यतः न्यंदुनस्थासंबय्य-एमकार्य पुढी पयरं (र्थक २ १२ औप)। १ विषक्तित (वद ६) ।

सङ्घ्य व [संक्र] मापानार (रव १) । रैयो भय ⊏ प्रज्। मदशस्य ∫ मक्ष्र ) वि भिविष्ठ विशेष्ट, तीहर, भर्ग रे नाकर (एव रें!)। की [भगिनी] बीहर स्वस मश्री

मइणिजा (मृत रश स्वय रश रण । सिंगर ४ प्राप्तु ७ मक्की रेरेश कृपा)। बद्द ( "पति] व्यूलोर्द । (नुपारेर प्रकर)। सूझ व सिवी मानितेय मानजा (सुपा १७)। देखी

पहिला।

भइरव नि [भरप] १ कोवर, भौपल कत-जनम् (राघनुरा १२) । १ र्वनाट्यावि-प्रशिद्ध एक एन जपानक एए। ३ बहारेन रित । ४ महारेव का एक बरतार । ६ छय-रिटेन पैरव रागः ६ तद-विटेन (हे १ १४१: ब्राप्त) । क्रेनो भरव । भद्रावी धी [भरवी] दिव-वानी वार्वकी

(431) 1

मदरि द [मगीरिय] अपर नक्वली ना एक पुत्र, मशीरन (पान १, १ १)। भरत रि दि] भग का (रंग ११)। भरादा (शी) देनो महुदा (ति २११)। भगदा (बा) रेको भमुदा (तिन)।

भएयव्य देशो सय - वन् । र्मकार र् [मञ्चार] काकार, प्रम्यस्य प्राचान विशेष (उप पु ६) । र्मश्चरि वि [सङ्गारिन्] भनकार करनेवाता (धस)। भंग दूं[भङ्ग] १ खेला, क्यूब कर्कन (भोज ७० प्रापू १७ ३ वी १२, कुमा) । २ प्रकार, मेर, विकल्प (भग कम्म ३ ४) । ३ विमाश (क्षाः प्रामु २१) । ४ रवना-विदेव कर्रवर्गतमय- (क्य)। १ वरा थयः ६ पनासन् (स्यि) । स्यनः [रैरुत] र्षपुत-विशेष (वण्या १ )। र्मगर् मुक्कि धार्य केट-विशेष किएकी धरवानी प्राचीन काम में पावापूधी बी (इड) । भैग (ग्रप) देशो भगग⊐ सव (पिक)। भैगरय पूँ [सुङ्गरज्ञ भुङ्गारक] १ पीघा विशेष मृह्यात्र भैवस, मेदरैया। २ त. भैंबस का फूल (बज्बा १ ः सूना ३२४)। मंगा की [सङ्गा] १ वनस्पति विशेष पाट, <u>पृष्टा 'कम्पद्र शिव्यंत्राशः वा शिव्यंत्रील वा</u> पंत्र करपाई धारिक्य वा परिवरेक्टर था है **बदा** — वॅगिए मॅनिय् डाल्स्य पोतित्र तिरीव क्टूए खामै पेचमए (ठा ४**, ३**—एक ६६८) । २ बाध-विदेश -- नमहाह रह ह क्तामेधेमेवाशहरिमृश्विश्वमंद्युकुत्त- (विक मॅगिकी [मिद्रि] १ प्रकार, वेद (द्दि ४ ३३१ ४११)। २ व्याप्त छन बहानाः 'संहिमों बर्जारा समानिया वर्ग्यहरू' **११३)। ३ निण्यित, निण्येर (स्त्र)।** ४ ५ भी देश विशेष नास मंत्री व (पर

**२७१, विचार ४१)** । र्भागज व [भांत्र ३. भाद्रिक] १ वर्ण वर्ष, द्र तरा वा वस वा वा वा द्या द्या वपहा (# 1 1 L 1-47 (1er #5): ? राष्ट्र-विधेना जोर्थात्रकर्णां संस्थिपुते शिरिता क्यो क्लियाँ (वेहर १४३)।

र्थागद रि [भन्नपन्] बदाराला, भेर-र्वततः 'पहनशीयमा' (श्रीप ११) ।

र्मगी की [मुद्दी] केवो मीग (है ४ ११६) या दश्व विवाद प्रदे)। र्मेगी **ध्ये [भूज़ो**] बनस्परि-विशेष≻—रै

भाष विक्या। र महिवियाः महिन रा पाल (पएए। १--पन १६ पएस १०--पत्र १३१)।

र्सगुर वि [सङ्गर] १ स्वयं भोकनेत्रमाः विनरवर, विनास-सीमः 'तहिरदेशक्षरवेषुपर ही विश्वयद्योत्तवार्षे (क्य ६ दी १६६ १ ४ सुर १ दल स ११४) वर्षते ११७१ निवे ११४)।२ चुटिया वक्र 'चुटिस वर्ष मंदुरं' (पाय) ।

मंद्रा देवो भरमा (पद) ।

भीस एक [सञ्जू] १ मॉक्स टीइना । १ वसायन कराना, भवाना । ६ पराजय *वरवा* । ४ विलास करना। धंबद, धंबद (है ४, १ ६३ वर् पि ३.६)। स्टियंशिया (१५ ११२) । कर्म, मञ्जद (सरा वरा) ( बक्र संबंद (बा १९७) दुना १९)। क्लकुः सर्जात सञ्चमाण (हे ६,४४% नुदर २१७।स.६३)।सङ्कसमित्रः मेजिक सेजिकण सेजिकण स्ट्रीसण (मारः, पि इक्टा महा पि इव्हा महा)-मिला (पर) (हे ४ १११)। हेर्स-मंत्रिसए (समा १), मंत्रमई (बर) (X YIT R)

भंडम ) वि [भक्तक] बॉक्टेरानाः <sup>इति</sup> भेदरा हे करनेवाना (वा ११३) पर ६ ४) । २ ई क्य पेक् भोकपा कर कॉलोबे बी वर्षेति (ग्रावा)। ম্যেমের [ময়ন] ংখন চয়নে (<sup>রুর</sup> तुर १ ६१)। २ विकास (तुप ६ ६ पछार १)। ३ दि भैनन गरीन बाला थोड़गेपाला रिवाशका भारतेवर

(बिरि १४६) "रिवर्डवर्गन्येण" (बुमा)। हो. यी (गण्यर)। भवता भौ [भजना] इत्तर देनो । स्त्राचीन बवारम-(१र मा- ) छात्र अंत्रक्षा पूबसा

दुबरणान' (सिन १४६१) निष्कु १) ।

**मंजाबिञ } वि [मंजित] १ पैनाम् हुमा** भीविका ) तुहनाया हुमा; (स १४०)। २ मगाया हथा (पिन) । ३ थाकान्त (तेषु ३८)। मंजिस देशो भगा≈मन (कुमा ६ ७३ पिंग भीर)। मह एक माण्डय ] मेरास करना संबह क्रमा इस्ट्राक्रमा। मंद्रि (मुख २ ४३)। मंद्र सक [मण्ड ] महिना मर्चना करना माली हैना। मेडइ (सप्त)। बङ्क संबंध (गा १७१)। संबूध संबित्रं (वद १)। भोड पूँ [सण्ड] १ किट मङ्क्षा (पश्चन)। २ भौड़ बहुक्षिया मुख धावि के विकार से हिंगरी का काम करनेवाला निर्लंक्य (धार ६)। अंक्षत [दे] १ बुन्ताक वेंगन भेग (दे ६ १)। २ मृं मागव स्तृति-पाठकः। १ सवा मित्र। ४ शोहित पुनी कापुत्र (दे ६ ११)। १ पुत्र मस्क्रम क्रामुक्ता यहना(दे६ १ श. मक भीप)। ६ वि किन मुची शिर-कटा (दे ६ १ ६)। w न सुर, सुरा। द सुरे से मुल्डन (राज)। भेड १ देन [माण्ड] १ बरहन बारन पान मीहरा र पुरवार पुरुषि पहर अस्तान (धनिन र्भ के वे परश्च मा एका सूचा १६६)। २ क्याएक पहर, बेचने की बस्तू (ग्रामा १ १ -- पत्र व चीवा परहर १३ छन्छ दुमा)। १ वृह स्वात (श्रीव १)। ४ वद्य-पात्र मादि वर ना उपकर्या (ठा ६ १) कप्प मोप वदेद शाबा १ ४)। भंडल न [देमण्डन] १ कन्छ, बाक् कसर, यासी-प्रचल (दे ६, ११ दका महा छाया १ १६---पत्र २१३ कीच राक्ष पाद्रह, जा राष्ट्र क्षेत्र )। ९ होप पुस्सा (सम ७१)। मंद्रमा 🛍 [ मण्डला ] मोहना, यानी-प्रदान (सा व्हेद)। मंदय देशी मंद्र = चएड (हू ४ ४२१)। संबय रेफो सबगा 'पायसभवदिवारी भरि इन्स् भेडप् नरम् (महा च २६ =)। भंडवेशक्षित्र नि [भाग्डवेचारिक] करि बाता वेचनेराना (धए १४६)। मंद्रा ध्री [ द ] तम्बीवन-मूचक शव्य (संधि Y9) 1

मंबाधार ) ई [माण्डागार] भंबार, कोठा भंडागार ) या कोठाए बबार (पुत्रा १४१) स १७२) सुपा २२१ २६)। भंडागारि १९वी [माण्डागारिम, क] मेहागारिक निहारी महार का धम्मच (लामा१ = हुम १ =)। मी रिणी (सामा १ ८)। मंडार देवी मंडागार (महा) । मंहार पू [भाग्डकार] वर्तन वनलेवाला रिल्मी (राप)। सहारि १ देवो मंद्रागारि (च २ ७ पुर भंडारिय ∫ ४ ६ )। मंद्रिल पे माण्डकी मंत्रधी मंदार का सम्पन्न (सुवार ४६)। मंद्रिश सौ [माण्डिक] स्वानी यनिया (हा ब--यम ४१७) । मंक्रिआ । की वि] १ वंकी गानी (शह कः श्रद्धा दि १ १ १ मानम निष् १ वय ६) । २ विरोध कुत । ६ भागी भंदत । ४ घरती पुरुष (दे ६ १ १)। मंद्वार पू [भण्डीर] पुत्र-विशेष शिरीय बुज (बूमा)। बहिसय वहेंसयन विषयसकी मधुरा नवधे का एक क्यान, 'महत्तप रापरीय भीड (? बीर)वर्डेसय सम्बारी (राज रहाया २--पद २१६)। बद्ध व ["तन] । सपुराक्ष एक वन (ती ७)। २ मनुष्य का एक नेत्म (कावम)। भंडुन (दे) मुएसन (देव १)। भंद्र देवो भंद = भाएव (मनि)। भंद दि [फ्रान्त] १ प्रमा हुमाः 'नंतो वती मेइंडी (q) (पन्य ३ १=)। २ झान्डि युक्त, भ्रमकला, मुलाष्ट्रमा (दे१ २१) । ६ घोठ धनवरिनठ (विशे ६४४०)। ४ पूँ प्रमय नरक का तीसरा नरने न्यूड---नरनावास-विशेष (क्षेत्र ६) । भंत वि [ भगवन् ] भगवान, ऐस्वर्य-शासी (दा १ १: अन विशे १४४०--१४६)। र्मत वि [भत्रस्त] १ कस्यास-कारक । २ गुळ-नारक । १ पुण्य (विशे १४३६) कृत विया १ १ कटा विशे ६४७४)। भंद नि [सजन्] देश करता (विधे 1444) 1

भंत नि [भात्, भाजत्] वयकता प्रकारता (विते १४४०)। र्भव वि सिवान्ती भवका—संसर का मन्त करनेवासा, मुक्ति का कारण (मिसे 1888) I र्भव वि शियान्त निमन्तरक (विते १४४१)। मेंति 🗗 भ्रान्ति । घ्रम पिरन तान (वर्गर्स **७२ : ७२३ गुपा ३१२ भवि)**। भवि (पप) भी [भक्ति] 'मकि प्रकार (पिष) । संग्रह वि दि दे प्रियम, प्रतिष्ट (दे ६ ११)। २ मुखी सञ्चान पापल जेवकुछ (क्षेत्र ११ स्ट्राट १६३)। भंगसार पु [भन्भसार] भावान महाबीर के समकासीन और छनके परम अक्ट एक मत्रमाविपति में में शिक्ष भीर विस्वसार के नाम से भी प्रतिन्दा ने (शाया १ १३) थीप) । भेवो सिंभसार, सिंभिसार । र्ममा भी वि भम्मा र बाध-विशेष मेधै (R & E सामा १ १७- विसे ७८ टी सूर वे देदां सम्पत्त दे दे। राज्य प्रम ७ ६)। २ मा भा की बाबाब (बग ७ ६---पन ११)। ममीकी [इं] रेघडती क्रुक्ट (रेड् ६६)। २ नीवि-विशेष (राम)। भंस पर [ भंजु ] १ नीचे विस्ता। २ नष्ट होना । १ स्वतित होना । भीवह (दे ४ (44) मंस पू [भौरा] १ स्वतना। २ दिनारः (बुरा ११३ पुर ४ २३) फीगाइड धेपपार्रसं (कुत्र ४६)। संसग वि [भ्र शक] विगरक (वर १) । मंसण न [भारान] अगर देवो: को छु उपायी विख्यम्य-गंहणे होन्त्र प्रदेश (नूपा \$\$\$\$ gt v (x) i मंसणा भी [भाराना] क्यर वैधो (प्रह म, ४ व्यावक १५) । भारत चक [ मक्षय् ] भारत करना बानाः। घल्डेद (महा) । कर्मे. मन्दिरजद (बुमा) । वड सबस्ति (हं १ ५)। हेड सकिए हैं (पहा) । इ. सक्ता अक्लेप, अपराजिल

भक्त वैद्यो संज (ग्रामा २ १ १ २)।

सद्धादेखो सप= वन् ।

```
(परम वर ४: सपा १७ सामा १ १३
 सूर १४ ३४ मा २७)।
सबसाय सिक्ष मनाख भीजन भी और
 चीरतकररस्यामस्यं कर्रीह् तार' (मुपा
 २१७)।
भक्त देवो शहा = भवाप् ।
भक्त पूर्व [भक्त] बहर बाता चीती का
 बना ह्या बाध हम्य मिठाई (नुस्त्र २ टी)।
भवत्या वि [मञ्जूष] मन्नत्व कलेवाता
 (TR RE)
अवस्त्रज न [भाग्नज] १ मोजन (फ्एल २८)।
 २ पि कार्नेशनाः 'धन्ननतस्यक्ते' (भा२०)।
भक्तपथा हो भिद्याणा । मळला मोतन
 (उना) ≀
भवसर दंभिएकर दिस्कं चौर (बत
 १३ ७८: बहुम १)। २ मन्ति विदेश
 ६ धर्म दूस (चंड) ।
भवसराम न [मास्कराम] १ नोव-विशेष
 भी पीतम दोव की काका है। २ दूंकी कत
 बोव में उत्पन्न (ठा७--पव ३६ )।
भक्तावण न [सञ्चल] विकास (इस
  tr &) :
भक्ति वि [मिश्चिम्] बलेवाना (ग्रीप)।
भक्तिय पि [भक्तित] दाना हुया (भरि)।
 सक्रोप केडो सक्ला≃ मधन्।
भगपृत्रभिगी १ ऐस्त्यै । २ इप । ३
  भी। ४ मत्त्र नीति । इ.वर्षः ६ प्रयुक्तः
  'इस्मरिक्करविरिज्ञस्यम्करवद्या मद्या मन्त्र
  मिन्य (दिने १ ४० वेड्य १ )। ७
  नुवै र्राः। भाइतस्य । १ केरान्य । १
  नृद्धिः बोखः ११ बीर्यः १२ रच्छाः (रथः-
  ही) । १६ ज्ञान (शाना) । १४ पुर्वापाल्प्रनी
  नगर (बन्द)। ११ धी. बीति चनति-स्वात
  (बर्स १ ४--वन ६० नुस्य १
   १६ के.-पिरेंग पुर्वकास्तुनी नक्तव ना
  माञ्चाना देव व्योक्तिक देश-रिक्टेन (हा २
   ६ नुश्य १ (२)। १७ इस बीर बन्द
   नोरा के धेव का स्वल (इस ६) । इस ई
   ['दम:] दुनशिटेन (दे v २६६)। द
   रेचा देत (बर बता) । वई ध्ये विकी
   १ ऐरावीर-काम्या वच्या (पति) । १
```

```
मरनती-मूत्र पाँचवा केन ग्रंथ-प्रन्य (तंच
 ४, १२४)। मैत कि [ बत् ] ऐलामॉर
 इए-धम्मन । १ ई प्रकेश प्रवासा
 (क्या निषे १ ४वा ब्रामा)।
भगेदर दे िमगन्दर े रोकविरीव—प्रश के
 भौठिप भाग में होनेबाला एक प्रकार का
 फोबा(सतवार रव विपार र)।
भगेत्ररि वि [भगन्त्रिन्] सम्बर चैतना
 (मा १६: संबोध ४३)।
मर्गव्रिथ वि [मरान्व्रिक] ज्यर देवी
 (विपा १ ७) १
भगंदस 🖦 मगंदर (एव)।
मरिग्गी 🖦 विश्वी (छामा १ वा कृपः
 पुत्र २६६३ मका)।
मगिरिष्ट ) पुं[मगीरिष्ट] स्वर चक्रमर्सी
मगीरिष्ट्र ) का एक पुत्र क्यौरिक (राज्य ४,
 141 7111
भमा वि [मग्न] १ विदेश्य भौता हुया (पुर
 २,१२, दे४६ चका) । २ परानितः ३
 पनामित मामा हुमा 'बह धन्या नारकता'
 (Ex totitte ago at ?) i s
 र्ष जित् ] श्रीय परिवासक विशेष
 (पीप)।
सग्ग वि चि किए पोता इस्स (१९११)।
सग्गन [भाग्य] नहीब देन (पुर १३
 2 X);
भग्गव पू [मार्गत] १ वह-विशेष शुरू प्रद
 (बज्य १७ १ )। २ ऋषि-विशेष (तक्
 t t) i
समारम न [मार्गेशेश] योष-विशेष (दुव
  १ १६ से इक)।
भगितम् (दरा) । वैनी भगा = वन्त्र (निव) ।
श्रद्ध 🛊 📢 भक्तिय भन्नवा (पर्)।
संचिद्रभारि [महिसन] विराह्न (६१
 द दुवा १ वर् )।
सब देशो भाग्याचन । बाह- सर्वात सर्वेत
 भवसण्
                  (वर्)∤
भन ५
                 ी पराना, कुनना।
 वर्गत
                        {: रिशा <sup>€</sup>
  1) (
                        (FIT TOY
```

fect t

सर्वात देवो भीज । शक्रम ) पश्चिक्त र प्रकर, प्रक भक्तपर्वे (प्रस्ति शास्त्र रे) । र कुली कापाव (सूमनि = शक्या १ ३)। सक्समान देवी भीव । भव्या को भार्यों पत्नी की (कुमा: प्राप् 2**24**) i भक्ति 📽 मिक्किय़ 🖬 मेले मिलिया। मज्जिल देनो भाग⊐ कनः 'त्रवस्तियं ना क्रियाँ व मिन्द्र'तमध्य पेइस्ट (बाबा १ t t 3)1 भक्तिम विस्तित मिन्न मिन्न ह्या ह्या वक्रमाह्मा (पा ११७ माचा २, १, १ के दिपार २ कमा)। र्भाक्सभा की [मर्जिक्स] १ भागी, सक-पैर-पत्राकार करकारी (पत्र २१६)। ए रप्परन मार्वभोदन (प्रस्पक्षम्य वा ३६१०)। मकिया हि भिक्तियों पूर्व बेन्य (भाग २, ४ २ ११)। मक्तिर वि [सङ्बर्ग] बॉक्नेबला 'घरएक भारमञ्जरताहाहकर्षह्यो महासङ्घी (वर्षीय इ.इ.च्छा)। सर्वेद देशो सञ्ज≖ प्रत्न । भद्र पूर्वि सही १ मनुष्य-वादि-विकेत स्तुर्वि-राज्य हो एक वार्ति आरा 'न्यास्थलस्त-रेक्युब्द (विदि १११) युग्न २७१ वर पुरु है। २ वैद्यक्तित निर्मात सामाण क्षित्र (का १ वर्ष दी)। ३ स्ताविका याचिकपन, नातकियत (शति ७) । भद्रारम ) 🙎 भिद्रारकी र पुरुष पुत्रनीय सहारय 🕽 (बाँर शे नहीं)। '१ नाटके भी व्यवा में सना (बाह १६)। महिदेवी मसु≕ बपू(ठा३ रातत वरा क्षणा स १४ के प्रति ३ स्वप्त ११)। मुद्रिम र [१] विष्यु कीएल (१ ६ t ( ) i f की [भर्ती] स्तामिनी मानिशित

¥) 1

सद्दु (शी) वेकी सङ्गरम (प्रका ६१)।

सदू वि [भ्रष्ट] १ मीने विराहमा । २ न्युव स्बासित (महा ४४३)। ३ न्ट्र (पुर ४ २१४, खाबा १ १)। सह पुन [आपु] मर्वन-पात्र पुनते का बर्तन (a x, २ ), 'महुद्रियक्यानो निव धमणीय कीस तहरुडिस (शूर १ १४०)। महि) की वि शिल-रहित माय (भीप मही) ११ रे४ से भग । १ ये-पत्र 3 0)1 सह र् [भट] १ योजा सहाका (हुमा)। शुद्धीर (सं व श स्त्राया १ १) । व म्हेर्क्स की एक पाति । ४ वर्ण-संकर पाति-विशेष एक नीच मनुष्य-वार्ति । १ एतास (है १ १६६)। ऋडआ भी ["कादिवा] क्षेश-विधेप (ठा ४ ४)। भड़क्त बुंबी वि ने भारत्यर, वहक-महक टीम श्रम हाइमाट (बद्धि ४४ ही)। श्रो (**9**4) 1 भहरा पूँ भिक्षकी १ धनामें वेश-विशेष । २ क्रम देश में पहलेशको एक स्लेक्स माहि (प्रश्रह १ १---पत्र १४- इक्) । क्यो श्रष्ट । श्रद्धारम् (सप) देशा सङ्गरम् (स्वि)। भडित न [मटित्र] रून-पत्त मोदादि, ववाव (स २६२) दूध ४६२)। महिता नि दि । संगीतन-शुवक शब्द (सहि ו)। भण सक [ भण् ] बब्ता, बोलना प्रतिपारत करना । मराह, भरोद्र (हू ४ २३१८ हुमा) । क्रमें क्रएक भएएक मांग्रज्ज (पि १४० वद् । दिग) । मुका, अग्रीम (दुमा) । स्रवि, प्रशिद्धि प्रशिक्ष (श्वा) । वह अर्थश भणभाग भणमाण (दुवा; महा तुर १ ११४)। रक्क भण्यंत भण्यंत भणिजमाण भणीश्रेत, भण्यमाण (रूस: पि १४का चा १४१)। एक मणिस मणिई, मंद्रिकण (दूमा; वि १४१)। हेर मणिड भणिड (बब्म ६४ १६) पि १७६)। ह मणिशस्य स्रोपका

(याँ इंश्रामुपा ६ ८) । करह सर्वात,

मझमाण (तुर २, १६१) चर इ २३) चर

દુ ૧૧ છે) હ

मणग वि [मण क] प्रतिपावन करनेवासा (छदि) । भणज न भिजनी क्यन चिवा (इप ११६ मुमा २०६३ संबोध ६)। भजाविज वि [भाजित] कहताया हुया (मुपा १४८) । भणिम वि [भणित] क्वित (धर)। भणिइ को [मणिति] खंक वचन (पुर १, १४% सूवा २१४३ वर्गीके ६०)। मणिर वि [मणिवः] कालेवाचा वटा (गा ११७ कुमा सुर ११ २४४ मा १४)। की री(क्रमा)। भणेमाण देवो भण । भण्य प्रक [भण्] श्रह्मा शीलता। मर्प्युष (बाला १४७)। मञ्जूमाज हेचो सप = भग्र्। मच र्न [मर्क] १ धाहार, भौजन। २ सप्त नाम (विया १ १ ठा २,४ " महा)। १ मीवनः मात (प्रामा) । ४ तयातार शात दिनों का करवास (संदोन १०)। १ वि मकि-पुक, मकिमानः 'सा मुकसा बाबप्पमिति वेब इरिलेक्नेतीमत्तवा वावि होत्वा' (प्रेष ७ इप दू ६६: महरु थिप) । बहा औ [क्या] माहार-कथा भीवन-धंक**मी पाताँ** (अ ४ ४)। न्यंद छंद प्रं विकास ) रोब-विरोध मीजन की संबंधि 'कच्छू करी बाबी सांचे भत्तमांची मनिवादुवर्च (महा महा—िर)। पश्चकतात्र त ["प्रस्वादयात] माहार-त्याय-सम धनतन धनतन का एक भेद, यख्त काएक प्रदाद (ठार ४ --- पत १४ थीप १ २)। परिज्ञा परिश्रा भी ["परिका] र नहीं पुनील धर्न (मत १६८ १ पन १६७)। २ ग्रंब-निरोध (भर्तर)। पाजय न पानकी माहार पानी श्वात-पान (बिना १ १)। विश्वा की ["बेखा] भीवन-इसन (विना १ १)। भत्त वि [भूत] प्रताम संवात (हे ४ < ) i र्भाच देशो मचु (निव)। मसि भी [मसिं] १ सेवा विलय बादर (रापा १ ८-पत्र १२२) पत्र भीता मानू २२) । २ रचना (विधे १६३१) धीर ी

सुपा १२)। १ एकास-बृति-विशेष (धाव २)। ४ करना अपार (वर्मके ४४२)। १ प्रकार, भैव (ठा १) । ६ विकिस्ति-विशेष (बीप)। ७ बतुरान (वर्ष १)। व निमास। ६ मनमन । १० मना (हे २ १८६) । संत, वैद नि [ मत् ] मिठनस्ता मळ (परन दर रेंद वन सुपार्ट इ.२ ११६४ मचिक्य प्रै भिष्य स्था स्टीश माई का पुत्र (सिरि ७१६, बर्मेंबि १२७)। भक्ता नीचे देखी । भन्द **र्थ** भिर्त र स्थामी परित, मदार (शाना १ १६—नव २ ♥) 'श्वनह वर ध्यमतुर्या (ग्रामा १ ६ पाम स्वप्न १६)। २ मन्पिरिं सम्पन्न । ३ प्रज नरेश । ४ वि पोपक पोपण करनेवासा । १ भारण करनेनाचा (है ३ ४४३४४)। 🖚---मची (पिम) । मचोस न [मछोप] १ धुना हुमा यस (विवाद, २६ मभा १६)। २ पुकारिका बाध-विशेष (पत्र वेद)। मत्य पूंडी [दे] माना तूस्हीर, तरक्छ; प्रष्ठ मारीवियवांवी पिट्टे दहवन्यमत्त्वमी श्रममी (वर्गनि १४६)। सत्मा की [सन्ता] चनके की धौंकनी माची (उप १२ टी वर्गीक १६ )। भरिपम वि [मर्स्सित] विरस्तृत (सम्मत 242) 1 मरधी की [मकी] यानी चमड़े की बीकरी प्मरिव व्य प्रतिसङ्गुधा विश्वसियपुदर (कुप **RE4)** 1 यद् धक [सद्] १ धूब करना । २ कस्माख करना (विसे १४११) । वह शर्यता तीके ter : सर्वतः वि [सदस्य] १ वक्साश-कारक । २ मुखन्तारक। ३ पूज्य पूजनीय (विश्व १४६६) SAAA) I सह न [ र ] यामचक श्रावना-यन-विशेष ( \$ \$ T) भद्र ति [सह ] १ मंत्रन वस्यासः 'नह भद्दम } निन्द्रारं स्एएत्पृह्यहमस्य वारत्न विद्यवस्तुस्त धनवसी (सम्बक्त

**₹₹**\$ 1

भक्षम ) का महीवा (बच्च ८२) सुर ६

भव्य देवी सस्त ≈ भग्नत (हे २,६१) भूमा)।

समासक [भ्रम्]भ्रमल करना धूबचा। कनद्र वि ४ १९११ प्रक्र ९९)। यह

```
१६७: प्राय १६)। २ तुबर्ख कोना। ६
मूस्तम भोगा नागरमीचा (हे २ व )।
४ हो ठावास (संबोध १०) । १ देव-विमान
किरोप (सम ६२) । ६ राएएन मूठ (शादा
१ १ टी-पत्र ४३) । ७ महासन मासन-
विरोग (प्रावम)। व निधानु, वरण प्रसा
समा। १ प्रतम में ह (क्या प्राप्त १६)
सूर १ ४)। १ यु<del>व जनक</del> करेबाय<del>ुकार</del>क
(शाया १ १) : ११ वे इत्यों की एक
कत्तम वादि (ठा४ २—पंत्र द महा)।
 १२ फारतवर्षं का शीसरा मानी क्वारेन
(सम ११४)। १३ ध्रीपविचाका वालकार
वितीय घर पस्य (निपार ४७३)। १४
दिनि-विशेष---विदीया शतनी धीर दावती
तिषि (सूत्र १ ११) । ११ कल-विरोप
 (पिय)। १६ स्वन्यम-क्यात एक केन बाजार्य
 (महावि ६ कप्त)। १७ व्यक्तिनाचक
 नामक (निर १ ३) बाव १) वस्स)। १
 भारतवर्षं का भौगीयनां भागी जिनकेन (पन

 )। गुचार्य विश्वासी स्वतास-प्रक्रिय प्रकृति

 बैनापार्व (संक्रि सार्व २३)। गुन्तिय न
 [शुप्तिक] एक वैत प्रतिनुत्त (तस्त)।
  बस प्रियस के श्रम्तवल प्राचैताव
 काएक क्छवर (ठाय-पत्र ४२३)। २
 एक वैत पूर्त (कप्प)। अस्तिय त
 ियसस्के एक वैन प्रतिन्तन (क्रम्य)।
  संदि पुं ["निन्त्म] स्वनाम-काश एक
 चन-प्रमार (विशा २ २)। बाहु पू
 िवाही स्त्रतान प्रसिक्त प्राचीन वैनाचार्ने
 धीर प्रत्यकार (क्य गृहि)। भूत्या की
 िम्राना दनस्यक्षित्वरोच वद्यमोबा (पएस
 t)। वया की "पन्ती नवन-रिकेर (पुर
      ररें)। साम्र व विश्वासी नेव
 पर्वत काएक कन (धार १ इक)। सेप्र
  र्दासनी १ वर्ष्टेऋ के बदादि सैम्ब का
  म्मिनित देर (ठाइ १) इक)। २ एक
  में ही शानाम (ब्राम v) । "सिन ["म्थ]
  नवर-विदेश (१६)। सिंग न शिसनी
  मानन-रिटेन विदानन (लाबा १ १) पराह
  १ ४ वाय बीत)।
 महरार व [भद्रश्रह] देवसद, देवसर वी
```

सहदो (बर्गान ६) ।

```
महसिरी को दि | वीवएंग चन्क (दे ६
                                        भर्में असमाज (वा २ २) १८७ वर्गा
                                        धीप) । चंक्र, समित्रा, भविक्रण (पर
 ₹ २) ।
                                        वा भप्रदे )। इ. समिस्रस्य (सुरा ४३०)।
भद्दाकी मिद्रा] १ एक्ए की एक पश्री
                                      भस द्रै भिमी १ भ्रम्खा (द्रूप ४)। २
 (परम ७४ १)। २ प्रथम बलदेव भी माता
 (धम १६२)। १ तीसरे चक्तर्टी स्त्रे बक्ती
                                       भ्रान्ति मोह विध्यानकाम (से व ४००
 (सम १३२)। ४ दितीय चक्क्ती की औ
                                       क्रमा) ।
 (सम ११२) । १ मैं के पूर्व क्लक पर्वत पर
                                      भगगन भिगाकी समातार एकतीय दिनी
 खनेवाली एक दिल्हुमाधी देवी (हा c)। ६
                                        का स्पनास (सनीव १०)।
 एक प्रतिमा इत-विशेष (ठार ३--- प्रव
                                       ससद देवो सस≔ प्रश्न पर्शाम दगहर
 १३)। ७ समाय सिक् की एक पत्नी (श्रंत
                                       एक्चियं (निने १ का क्षेत्र १६१)।
 २१)। ८ विवि-विशेष--विशीया सन्तर्मी
                                       समक्रिय विभिन्न है । पूना हुमा फिए
 थीर हाक्की विषि (बंधोन १४)। १ कर-
                                       इष्य (स ४७३) । २ भ्रान्ति-द्रकः (क्रुमा) ।
 निकेष (पिंग)। १ कामधेर मावक की
                                       को मिश्र ।
 यामी का बान । ११ प्रतनीपिता नामक
                                      भगजन (भ्रमण) व्यक्त चढ्यता। (१
 क्तासक वी नाताका नाय (बना)। १६
                                       ४६: क्य)।
 एक साम्बद्धक की का नाम (विपा १ ४)।
                                      समगुह पुंदि] पावर्ष (६,११)।
 १३ गोरालक की माठा का नाम (यह १६)।
                                      ससयाकी [भ्रू] बोह, नेत के इसर री
 १४ महिलास्या(पद्यार,१)। १३ एक
                                       क्ट-विख (हे के १६७- हुमा)।
 कापी (दीव)। १६ एक भगरी (बाबू १)।
                                      भमर पुंधिमर] १ मधुकर, और (है ।
 १७ यरेक कियों का नाम (शाना १ ८,
                                       २४४ कुमा भी रू बातू ११६)। २ ई
 १६ म्यदम)।
                                       क्य-विशेष (सिष्) । व विटः एंश्रीवान
भदाक्री वि [दे] बतान यदि शाना (र
                                       (क्यू)। रुअ र् िस्च समाने देश-विरोध
 $ t 3) i
                                       (पर २७४)। व्यक्ति और [प्रविक्ति] र
महिमा की [महिका महा] १ होस्त
                                       धन्द-विशेष (सिंत) । २ भ्रमद-वीक्ष (धन) !
 सुन्दर (बी) (ग्रीयमा १७)। २ नवरी-विशेष
                                     भमरदेंदा 🛍 👣 १ प्रमर की तरह पक्षि
 (44) I
                                       गोतकनाची। २ सन्दर्भी तथा सन्दिर
महिक्किया 🕸 [भद्रीया भद्रीयिक्य] एक
                                       घाषरक्षाती । १ तृष्ट इस के शयानी
 वैव वृक्षिकाका (क्या) ।
                                       (क्प्यु} ।
भहिसपुर न [महिसपुर] बास्तर्य का एक
                                     समरिवा के [अमरिका] बन्द्रियोग वर्ष
 हाचीन बगर (ग्रीत ४० दूप ४० दक)।
                                       (भी १)। देशो समस्त्रिया।
                                     ममरी की [भ्रमरी] सी-प्रमद, शीरी (रे)।
भद्दचरवर्डिसग ४ [मद्रोच्छवर्टसङ]
                                       alle bait i
 एक देव-विमात (सम ६२)।
                                     ममस्या, सौ भ्रिमरीका री दिल्ल
मब्दुधर , सी [मद्राध्यय] प्रविवा
            विरोध प्रतिकाना एक भेर
                                     ममसी कि प्रशास होने तहा रोवशिय
भद्रोत्तर
भद्दोत्तरा <sup>|</sup> एक त्रस्त ना बर्ज (सीपः संत
                                       चकरा 'नमबी रिकरपादी बर्मतबहिर्दतक'
                                      (वेस्व ४३१: पहि) । २ शाय-विशेष
 ६०- पद २७१)।
मह रेनी मह (हे ६,
                                      (धय)।
                     बाइ (७)।
                                     भमस रं [रे] एउ-विशेष रेव की वर्ण की
भग्नन
भर्मर } रेबो भण= क्य्।
                                      इक ब्रहार का काल (दे ६, ११)।
```

भग्नाइअ वि [भग्नित] दुगाया हुपा, कियापा ह्या (छ ३ ६१)। समाइ एक [असम्] दुमाना किराना। भगारेद (हे ४ ३०) धनावेतु (सुपा ११४)। बह भमाइत (पठम १ ६ ११)। समाष्ट्रदेशा समाज्ञाम् । मनावद् (हे ४ १६१३ भवि)। समाट दूं [भ्रम] भ्रमण क्मका करूर (बोषमा २६ धै: वर धी) । भगाइण न भिम्मणी बुनाना (उन प्र २७०)। ममात्रम देशो ममहिल (हुमा)। शमान्द्रअ नि [आमत] पुनाया हुमा फिराबा ह्या (पटम १६, २४) । शसाय देखी समाह = अपम्। धमानह, भगानेह (ति १११) है ४ १ )। असाम दि] देशो भमत (दे ६ ६ ६) पाम) । अभि भी [भ्रमि] १ धावर्ष पानी का वक्स-कार प्रमेख (धण्डु १९)। २ विज्ञ-प्रम करने की रुप्ति (विशे १६१३)। वे रोक-विशेष चहर 'समिपशिर्मानवसयैथे' (हम्मीर भाम अदेशो भगदिल (वी ४० महि)। १ व भ्रमश्चः 'समियमश्चिद्दवदेवसीदेसं' (बा १२४) । भमिश्र देनो ममाइस (पाय)। भमित्रस्य } रेवो सम = प्रय । भमित्रा भिमर दि [भ्रमिष्] भ्रमश करनेवाना (ह २, १४२। पुर १ ५४, ३ १८)। अमुद्द व [ भ ] नीचे देखी भीड़ाई बनुहाई (याका २, १३ (७)। अमुद्राची [भ्रू] वी, बॉब के उत्तर की चेम-धनी (परम १७ ३ भीप) याचाः नाम)। भम्म } देखो सम ≔ भन्। समद (प्राक् मन्तद रेश भन्तपु (य ४११ ४४७) । मस्मरह (१४ १६१) । मस्महेह (भूमा) । मन्मर (था) देवी मगर (रिय)। भय देवी भद्र। बह्न देवी भर्षत्र अन्तर्त ।

सय प्रकृ[मञ्] १ सेवा करना। २ विकल्प से करना। ३ विमान करना। ४ प्रहुक्ष करना । भगह, नगह (सम्म १२४ ट्रमा) भए, मध्या (इह १) मर्गति (विसे १६१) - तम्हा भग भीव वेरासे (धू ६१)। बद्धः भर्यतः भयमाण (विवे **१४४५**: सूच १ २ २, १७)। क्याङ 'सम्बर्गभव्याणमुद्देशि' (क्या) । संक् भइता(ठा ६)। इ. भइअ, भइअस्य, भएबच्य भक्ष भयणिज्ञ (विशे ६१० २ ४९: उत्त १६, २६ २४: २४, कम्म प्र ११ विस ६१६३ वन ६ ४ विसे ३२ २ 🕶 🖈 🗗 १८१ भीवम १४४, र्मच र, चः विसं ६१६ः जीवस १४७) । भय न [भय] बर, नात भीति (पाचा लागा १ १ या १ २ दुमा प्रासू १६८ १७३)। क्षर वि [किर] भय-वनक (से ४, ४४४) ११ ७१) । कणणा की जिननी १ शास ब्रह्म अस्तेवाली (बृहु १) । २ विद्या मिरोप (परम ७ १४१)। बाह् वुं विश्वहा राज्ञस-वैद्यका एक राजा एक मेहा पति (पडम ६, २६३)। भय देशो भय (उन हुमा सला मुपा ४२ ) यउ≢)। स्य देखो भग (धीप पिय)। सर्वेष्टर वि [सर्वेष्टर] १ भय-जनक भीपरा (है ४ १३१ सरा स्वि)। २ प्रास्ति-वय मिला(पर्याः १)। भर्मत देवी भय = पर्। सर्यत देखो सेत ≃ मयत्त् (सूघ १: १६:६)। मर्गत रेबी भईत (योष ४० वस २) ११ भीप)। भर्मत देशो भीतः= मगल्त (विसे १४४१) trati tery) i भर्यंत रेतो भंग = भरत्य (विमे १४१४) अर्थत वि[अयथ] मर है रहा करनेशका (पीपासूच १ १६ ६)।

'कम्ममाद्यक्षये भगवारी' (सूम १ ४ १ २१) । समीत मि समार विवास के मा करते पाता संबद्ध ) पू सिनकी १ मीकर, कर्मकर भवग 🕽 (ँठाँ४, १ँ२) । २ कि पोपित (पए ११२ सामा १२)। भगण न मिजनी १ वेग (राज)।२ विज्ञान (सम्म ११६) । ६ द्वे सोम (सूम १ £ \$1): सम्बज् रे**वो** सद्यज (नाट---चैत ४ ) १ भमणाक्षी भिजना र सेवा (तिषु १)। २ विकास (मर्गा सम्मा १२४ व ११ वर्ग)। मयप्पड् ? रेको वहस्सइ (हे २ १३७ भषणके पर्)। अययग्गाम र्षु [वे] मोडेरक प्रवरात का एक नौद (देद १२)। भगाणम वि [भगानक] मर्गकर, भव-जनक (E 181) I भयांकि पू (मयांकि) प्रास्तवर्यं के मानी धठारहर्वे विनदेव का पूर्व-क्लीय नाम (सम १४४) । वेषो समाक्षि । मयाश्च वि [भीक्] भीड, बर्लोक (देड १७ सह)। भगावण (धन) वेची भयाणय (चित्र)। । सभावह वि[भयावह] भय-जनक भय-कारक (यम १ १६ २१)। भर सक [भू] १ भरता । ए बारण करता । १ पोपए करना । मछः (मनिः पिनो, मरम् (शम्म ४ ७६)। वह भारत (स्ति)। नवड मरंत, मरेंत भरिव्यंत (छ १ १६१४ ६ १ १७)। सह-भरेऊल (धाक १) । इ. सर्राज्ञ सर्प्यास, सत्तव, मरेजस्य (प्राप्तः नार राजः स € 1) i भरणक[स्यू]स्मरताकरना सहरताः। भरह (हे ४ ७४ मात्र) । बहु भर्रत (या रेटरे भीर)। बीड भरिम मरिजले (दुमा) । प्रयो वह सरायंत्र (दुमा) । मर ५न [मर] र सद्गद बक्ट निकट भर्षतु वि [भयत्रातु] बर से बता कानैपाना 'नरमच्चे धर् एमानिखाति भीनारिहरूवर'

भस्र धक [सस्तु] सम्बन्तना । भनिमानु

(तुपा १४६) । मदि जविस्तामि (कात) ।

क अक्षेपक्य (क्षोच १६ वै)। प्रयो

संद, भक्षाविक्रण (चिरि ११२) १११)।

भर्तत वि दि विकास होता, विरता (दे ६

मस्त्रक्रिम वि [भास्त्र] वीत ह्या

सम्हाबने के लिये दिया हुमा (मा १६)।

मकि पूंची दि नियम हठ 'यनुनहनेन्यरा

भाई मनि वै ननि हुर पर्लंडि' (है ४ १११)

श**क्ष [**स**छ**] र मानू.**रीव** (पदहर १) ।

२ पून, प्रकारितेयः माला वरख्ये (वा १. ४)

t () i

Zeti ZEY) I

१६) । ४ वर्ष-विशेषः मास्त वर्षे दिशेष

बंदुशिके क्षेत्रे सत्त कासा प्रसत्ता ते बद्दा---

भरहे हेमबए हरियास नहाविधेहें एम्मए

प्रत्त्रक्ष्यं प्रवदं (सम १२० वर्षः पक्षि)।

इ भारतवर्षे नाजवम मानी चळ्लाची (सम

११४) । ६ शनर । ७ तन्त्रुवाव । व तूर

विरोध समाबुद्धमस्य नापुत्र। १ मस्य के

र्वात्वच राजा। १ वट (दे १११४) पद्)।

११ केन-किलेप (वी व)। १२ पूट-विशेष

पर्वत-विरोध का रिकार (वंश्वकार, व १)। "लिकान ["क्षेत्र] मास्तवर्ग (तस्त)।

बास व ["वर्ष] मारावर्ष प्राचीवर्ष (परह

१ ४)। सत्य न [शास्त्र] नळपून-

बसीत मात्यकान (मिरि १६)। विद्य पूर् [विषय] १ संपूर्ण माध्यस्य ना समा निमा (१म)बमाय चार्षिक्षे (दुम ४१७)।

र्तक मविस मिन्ता मिन्तार्ग (प्रीव

१७, क्या भर पि १ ६), सह (धर)-

(पिन)। इ. समियक्त (द्यावा १ १) दुर

४२ ७ वनः थयः दुषा १९४)। हेवो

भवर्ष[भव] १ संसर (स १ १) वर्गा

चक विशा २ १। दुवर वी ४१)। १

बंबारका कारण (सम्म १)। १ वन्द

क्लांच (ठा ४ १) । ४ वरकारि वीनि, <del>वर्ण</del>ः

स्थान (ग्रामा का २३ ४३)। इ.महा देव दिव (पाम)। ६ नि होनेनका वामी

(art) । ७ अल्पका चलपद्र समेरी

सरव मनी है बहाबाय । (दुना ४,व४)।

च न- केन-विवात-विकेष (बन २)। 'जिले

सम्प ।

वि ["जिन] समादि को बीतनेवाला 'सासएं

विखाले भवविजाले (सम्म १)। हिंद की दियति १ देव बादि मोनि में बटाति महादेश (विम)। नी कास-मर्यास (अ.२.३)। २ इसिए में भवारिस वि [भवादश] तुम्हारे वैशा सवस्यान (पंचा १)। रेक्ट वि स्वि] आपके तुश्य (हे १ १४२, चंड पुग समार में स्थित (ठा२ १)। स्यकेणिक २७१)। सविष् सिविन् सन्य बीव मुस्ति-नामी षि ["स्यकेषिक्त्"] जीवन्तुक (सम्म **८**६)। भारणिञ्ज न [ भारणीय] भीवन-पर्वेन्त प्राणी (भवि)। संसार में भारत करने मोग्य राग्रेर (भग सविभ देवो सव = मु । भविभ वि भिन्धी र मुश्वर (कृमा)। ९ इक)। पद्मइय नि [ प्रत्यविक] १ नरकादि-योगि-हेपूछ । २ स धनविज्ञाय का बेंह, बत्तम (संबोद १) । १ मुक्ति-योग्य प्रामेद (ठार १ सम १४४) । सुद् मृक्ति-भामी (पर्एए 🐧 😽)। ४ मारी र्⊈िमृति] संस्कृत का एक प्रस्टित कवि होनेवाता(हि २ १\_७) पर्)। देखी सिद्धिय सिक्षीय वि भव्य = मध्य । ( वस्य ) । [\*सिद्धिक] उची बमा में या बाद के विसी भविभ वि[सधिक] १ मुक्ति-योग्य मुक्ति कम में पूर्व होनेवाला मुक्ति-वामी (सप २ पएछ १क मत विते १२६ । बीवय ७१ Y. & ) 1 श्राचक ७३८ ठा १३ विसे १९२६)। "संविञ्ज नि ("सविष्क] <del>पद-वंदण्य</del>ी (छए) । ामिनीर हिन्दि रि ানিগরি मर्षिची भी [मवित्री] होनेवाची (पिय)। ["भिमन्दिन्"] संहार की पसंब करनेवाला भवियव्य देखी सव = मू । संसारका सच्छा भावनेवाचा (राज संबोध भवियम्बया की [भवितम्बता] निवर्ति च १६)। "ोकमाधित िपप्राहिस्] श्चरयंगाची होती (मक्का)। कर्म-किरोप (वर्मसं १२९१)। भव देवो भव्य (कम ४ १)। भव ) वृं[भवन्] तुम बाप (कृमाः भवत ) हे २ १७४) । भू पत १६० सूत्र १२६)। मविस (पप) वेको भनीस । च अच्च दू भगंत रेवो सब = मू । िंद्त्त] एक क्वानमक (मीर्ब) । भर्षे (सप) सम = भर्। वर्ष (तल्)। संविरस र्ष [संविष्य] १ ब्रीवेट्य कहत बहु, अर्थेन (श्रीव) । श्रेष्ठ गर्वित् (श्रेष्ठ) । अवैन (पर) बेबी असण (वर्षि) । असण न [सयत] १ बराजि जन्म (वर्षेष्ठे र्रुत है ११४। क्यु)। १७२)। २ इद्र मदान बसर्वि (गाम भवीस (मप) उत्तर देखों (जवि)। नुमा) । व धनुरदुमार मादि वेशों ना विभाग (पण्छ २)। ४ सता (विसे ६१)। यह पू [पिति] एक देर-वाति (मन)। यासि वृं [वासिन] वहा पूर्वेण सर्व (छ १ चौप)। चासिणी बी ["वासिना] देशे विशेष (पर्छ १७ महा ६० १२) । । र्माहब दू [विषय] एक देर वादि (दूस **4**9); भवमाग रेतो सब 🛎 भू । मनर रेपो भगर (बंड) ।

यामी । २ वैद्यारी संसार में रक्षेत्रामा (सुर मबिस वि मिविस्ते निष्ट्र (रश शवस्य भागामी समय (पत्रम १४, १६ पि १६ )। र वि मंदिप्य काम में होनेदाला मात्री (लामा १ १६--पत्र २१४ पत्रम ६४. सब्द वि [सब्द] १ मुन्दर, फान्ने सन्दे करिस्सामि" (गुपा ६३६)। २ ळविछ, योगब (विशे २० ४४)। ३ मोह उत्तम (वज्जा ta)। ४ होता, वर्तमाना न्यूपै धूर्य वा मर्ग वा मविस्तं वर्ष (एतमा १ १६-सव ११४: वया विते ११४२)। र म्यौ होनेवाना (विने २० ४ व २ ०)। ६ बुक्ति-कोग्य, बुक्ति-मानी (विने १०२२) का भाषा र १)। सिद्धाय देवी सव-सिद्धीय

480 'पञ्चलपञ्चला सहसा कियहिया सम्ब सिद्धीया (पंच २ ७६)। भाष्य पुं चिही भागिनेय, शानका (दे ६ भस सक भिष् ] भूषता द्वान का बोधना । मतक (दे ४ १८६। यक्--पत्र २२२) मर्चित (सिरि ६२२)। ससम र् [ससक] एक राज-दुमार, भीवप्य के बढ़े भाई जरहमार का एक पीत्र (दब) । भसण देशो भिसंज । भरतिम (पि ४१६)। भसण पश्चिपणी १ क्लोका सम्द (मा २०)। २ पू. स्वान कृता (पाय छिरि **4**22) i भसवाय (भर) वि [संपित्] मुक्तेशका प्राप्त अस्पार्व (हे Y YY)। असम र्व भिरमनी १ वह-विशेष धन-मन्त्रह्मीदिनं इमें तिर्पे (सद्वि ४२ दी)। २ राज अमृतः तम्भमुर्घृत्रियगती (महा सम्मत ७६) । देखो श्रास ≈ मस्मन् । भसल केनी समर (है १ १४४८ ११४८ बुमाः सुपा ४ (पिन) । भसुआ भी वि विशा न्यूबली सिपारित (केंद्र १ शामा)। भस्म देवी भसम (बाह ३७)। असेड र्म हि | बाग्व मादि वा वीरल बब भाव न्छापिमधस्त्रसरिया से क्सा' (तवा)। भमास न दि भसोस्रो एक शस्त्र-दिवि (धव)। भस्य (मा) देशो सङ्ग ( पह )। भरधास्य (मा) रेखी सङ्गारय ( यह )। भरस देवी मेंस = घंश । मत्त्रद्र (शक् ७६) । नइ सस्त्रीत (कात) । भस्स पू [सस्मम्] १ वह-विशेष । २ शब्द (हिर ११)।

अस्सिम वि [अस्मित] बसार र राज दिया

आ धक [भा] चयरता सीपता बदाराताः

'साध्यमे वा रितीए' (रिते १४००)।

मा" (कप्पू) नामि (मजह)। वह देवी

भा समें [मा] देकि, प्रमा दान्ति, हेव

(दुना) । भेडल दू [भण्डल] राजा नगर

ह्या वस्म क्रिया हुधा (कृमा)।

भेत = मान् ।

(राज) । ६ धवकाश (दुरुव १ १—५४

माइजिल्ला पेश्व [भागिनेय] परिनी-पत्र

भाइलेश विद्वित का सबका मानवा (बँमा

बद्भा(हे४ १३)।

यः विदि १७७)।

(नुपा ४१)।

का पत्र (पत्रम २६ ८७)। कैलम न

िबलयी जिल-देव का एक महाधारिकार्य

पीठ के पीची एका जाता दीति-चंडल (संबोध

भा ) यक भिी दरवासम्बद्धाः। भारः

भाम । भाग द्रमाधामि (द्वेष १९ परः)

मद्याः स्वप्न व ) मावि (शी) (प्राच १३)

मामद (बरा) । मनि मादस्तरि, मादस्त

(ती) (ति १३)। वह आर्यत (कृमा) :

**क्र भाइयम्ब (पर्वह २, २) च १९**२

माझ देतो भा≈मा।मध्यदि (शौ) (बाक् दश) । श्राम कर [भाषयू] बरलाः मायदः, भार्द्र (त्राह्म ६४) भाएति (क्पूर २४)। क्क सायमान (मुना २४०)। भाभ रेबो भाव=शावम्। इ साप्थस्य (बच २१)। भागपुँभागी १ थाम स्वान । २ एक देश (के १३ ६)। ३ घेरा निमान दिल्ला (पत्ता सुपा ४ %) पत्र—मामा ६ : स्वरा)। ४ माप्यः नगीव (सार्वं व )। पिअ डिअ पून चिया १ भाग्य, नदीव (से ११ वश्र स्वप्त दशः हम्मीर १४° ग्राम ११७)। २ नट राज-वेप। ३ वाबाद. माधीरार, 'भागहेमी, भागहेम' (बक्त बन नट—देव ६) । देखो भाग । भाग पृद्धि गोह गोली रापि (१६ t (F f भाञ रेका भाव (भाष)। शालाव क्यो साल = भारत्। महत्वेदः। (प्रकृष्४)। भाइ देशो मानि 'तारिक वंबवहुमरएकाइसी मिना साहित वह विदें (बसा देश कर **६ ६८**)। मात्र ) वे भारती मारे क्यू (का ११६) भाइभ निर्मे भारमें) । बीमा की हिंदू तीया | पर्व-विशेष, बैगापूत कार्तिक शुल्त विद्यान विषि (दी ११)। सुभ पु ["सुन] क्तीजा (बुरा ४७)। देवी भाषा भाइज दि [माजित] र दिवस दिना हुमा-वास हुमा (सिंड २ )। २ सारीहरू (वंच व १)।

माइणेळा १२ टी गट—सना दरेस ९७ : जाया १ व-नव १३६ पत्रम १६,३८७ इथ ४४ ३ महा)। 🕊 🐿 (पक्रम १७ ११२)। भाइयक्व देखो भा व्यक्षी । भाइर वि भिन्नि वरपोक (देव १४)। भाइत एँ हिंदितिक कर्यक क्रवीक्स क्सिन (वेद १४) : भग्रद्ध नि मिगिन, की ग्रामीसर, सम्बोदार, <del>प्री</del>श-प्राद्धी (दूस २, २ ६६) पश्चारे एक वे रे—पन रेरके ग्रामा t (४)। देखो भागि। भाइक्टन दि भारुभाष्ट्री माद्रै स्थित मारि स्ववतः ग्रवराती में 'मौबड' (क्य (121) I भाइरही की [सागीरथी] पंच वरी (पड़क) हे ४ १४७ वाट-विक २ )। भाड ) प्रशिक्षाची मार्ड कल्य (मडा. भाउम मुर्दे केशि प्रकेश देश थप)। श्राया व्यवस्याक्षी**ैं**बायाँ भोजाई, मादै शी की (दें ६ १ व मूरा 38Y) 1 माउभ वैशो माभ = (वे) (वे ६ १ २ थी)। माठम न [दे] चापाइ मास में मनावा पादा *नैरि≔पानैदी ना एक स*रक्य (दे 1 ( 1 ) भावग केवी सात्र (सर १४६ टी बहा)। भारत्वा 🛍 👣 भी बाई भाई की पानी (8 9 9 8) भाउरायम र् [मागुरायम] स्वक्तिनामङ नाम (दृशा २२३)। भाषभव्य देवो भाभ = ऋष्य्। थागर्[भाग] १ वेत दिल्ला (दुवाः भी रक रे १ १६७)। र प्राप्तिस राजि, अनाव नाइतम्या 'नायोचिता तती स महा-मापो म्ह्राप्यजानो सि'(विसे १ र )। १ पूत्रा, भत्रम (सूग्र १ ३२)। ४ माण तरीक भन्ना वयापा है महराबाविमीवि महलन्दि (feft १३) । ४ प्रचाद, मंदी

१ ४)। चेम चेल डिम रेबी मात्र-इंका (परम ६ १७-२८ व्हा सहिं। सुर १४ ६ पाप)। केलो साक्ष स्मनः। भागन्तव विभागवती १ मक्तन् से संबन रक्षनेपाला। २ भक्षान् ना भक्तः (वर्षे **६१२) । ६ स. र्यक्-विरोध (श्रृति) ।** भागि कि भागिती १ वदनवाल, देख करनेवाला 'भारस्य मानी' (एव), 'नि पूर मराप्रेरि न में संबाद संदयनमाक्तियाँ (दुव १४७)। २ मामीसार सामीसार, श्रंत मंद्री (प्रामा)। भागिणेखा ) देवी भाइणेखा (म्यूरः इत्र मागिणेय रे १७१)। मागीरही क्यो भाइरही (चम्प) । मात पत्र भारती नगरपा सन भावत, भंत (सिंहे १४००)। माड प्राहि भाग वह बड़ा प्रका पर्द या पुता बाता है बड़ी 'आबा बाउबमासा मन्मा प्रचलवासुना ध्रमित् (वर्गीकर १ चस)। माइय व [भाटक] बाझ किएम्स (दुर ६ ttw) i भाक्रिय नि [माठकित] भाके पर निध हुमा, चोदिस्य माहित विवह (सर १६ \$K) 1 भाडिया | ध्यै [माटिका टी] बाह्य भाडी | दूरक किएस, 'स्तार ध्र थाति बद्यादि सर्ग एमेड एक्लीए 'विका-सिखीय राज्या इतिजयं मार्डि (सूपा ३ द १ १) प्रा) । इस्मान विर्मान् 🕷 बाह्य ध्यदि माहै पर की ना नाव---वन्द्रा 'मास्थिकस्म' (ग **१ ३ व्हा २२३ व**डि)। भाजदेवी भण=क्यु। ईक् शायिकण माणिकणे (रिव ६१४) एव )। इ माणियक्य (स.४. १) सम् ब४ भन बनाः शप्पः ग्रीतः) । भाग रेकी भागण (बीच ६११) है है २६७) शमा) । भाजित्र वि [माजिन] १ वहाता हुवा नाविकः नारास्थ्यादं भाविका' / राजा

६८)। २ कहमामा हुवा' 'मवलसिरिनामाए राजो मञ्जाए भारतचो नंती (सुरा १८७)। माणु दे [भानु] १ मूर्पे रवि (पडन ४६, ११ पुण्ड १६४ चिरि १२)। २ किरल (प्राप्ता) । ३ भगवाम् वर्गनाय का निता एक राजा (हम १६१) । ४ स्मै एक स्थाएी शककी एक सप्र-महिची (पडम १ २ ११६)। कणा र् िक्यों प्रत्य का एक सनुज (परम ७ १७)। सई की [ मती रामल की एक पनी (बाव ७४ १ )। माखिणा [मास्रिनी] विद्यानीयथेष (पबन ७ १३६) । सिस्त न ["मित्र] रज्जिति के रामा बसमित का धौटा माहै (राप्ट निवार ४६४)। वैग र् [विग] एक विद्यावर का नाम (यहा चए)। सिरी सी ["भी] राजा बनमित्र वी बहित (कार्त)। भाग देखों समाह = भ्रमम्। भागः (हे ४ १)। नपङ्गामिञ्चेत (मा४१७)। इ भामयस्य (श्री ७)। भामण न [भामण] चुगता कियना (सम्पत्त \$0Y) I मामर न [भामर] १ नधु-विदेश प्रमधे का बनाया हुमा मधु (पर ४)। २ पूँ दोवक द्यन्त का एक मेद (रिंग) । भामरी धी [भामरी] १ बीला-विरोप (रामा १ १७--पत्र १९१)। २ प्रश्रीताला (क्यू भार)। मानिज रि [भ्रमित] १ पुनावा हुवा (है २ ३९)। र प्राप्त क्या ह्या भागत-किल विचा हुमा: 'बत्तरमार्मिमी इव (नन २७) पर्नेषि २३)। भामिणी भी [ भागिनी ] भाग्वशारी (ह १ १६ : मूना) । भाषिणी को [मामिनी] १ शौर-कीमा स्ते । २ झी महिता (था १२ सुर १ ७६ सूत्र ४७२(मामतः १६६)। भाग देनी भाड (रक्त)। भार्यत रेगी था - थी। भाषा 🗗 [भाजन] १ शह । २ शहार । व बेरब 'मावला भागानाई' (हे १ वध २६७) कि बिर बन्ना के बुग्रवाक्तुर, सन्त पीर्वित्रं महत्त (स्व. १६६७ श्रुमा)।

भाणु-माप

भायर्जन दू [भाजनाङ्ग] क्टाबुत्र की एक जाति पात्र देनवामा कराबुक्त (पटम १ र सायणिक देवी साइणिक (वर्गीव १२ काल)। सायमाण देवी माम == भावप्। मायर देवा भाउ (हुमा)। मायज ५ वि जान घरत चत्रम शति का योहा (दे ६, १ ४) पाम)। भार वृश्चिरी रे वीका द्वारत (दूसर)। २ ग्रारकाती वस्तु, कोमझाली चीज (भा ४ ) । ६ शाप संगायन करने का श्रविकारः 'मारस्वमेरि पूर्व औ नियमार' द्विष्टु नियपूर्व न संस्थाद संक्रमी (प्रामु २७)। ४ परि माण-विरोप 'साउधकीये इंक्ड नासइ मार्र पुहस्त बह शहसां (शानू १५१)। १ परिवह, यन-बान्य बादि का संबह (पराहर ४)। गामी व ["प्रशस ] भार भार के परिनास से 'बस्जनकामला कुम्मागनी मा भारत्वसी यं (शायार य-पत्र १२५)। बह्न वि िंगद्वी बीमा बोनेवामा (मा ४०)। विद्व वि (विद्वी वही धर्म (पडम १७ २१)। भारत थी भारती भाषा बाखी बाह्य बचन (पाध)। देवो मारही। भारताय ) न भारताज १ मोत-निरोप भारद्वीय 🤰 भी बीतम वीम की एक शाका है (राप्त सुरम १ १६)। २ पूर्व भाष्यान गोत्र में हराधा 'ने नोममा ते गाना ते आरहा (१ इत्या)- वै सीवरमा (क्ष क-पर ६६ )। प्रतिनितरेष (मीयमा ay)। ४ बुनि-विदेश (रि २३६ २६वा ३६३)। मारय रेसी मार (मृता १४ १०१) । मारा न [भारत] १ मारतार्थं अस्त-रोत (इया)- 'बद्दा नियंदे वनग्रविमानी प्रवासनी भेजनगर्दार्षु (स्प्त १११४)। २ नागार भीरतीं ना मुद्र मद्दामास्त्र (परम ) १ ४,१६) । ३ देव-विटेच जिनमें पाएटर बोरर पुद्ध का कर्तन है, स्थल-बुनि मछीत । महानारत (द्वास सर १ x)। ४ अरत (

भागगन [भाजन] धाकारा धनन (घण

२ २--पत्र ७७६)।

मुनि-प्रशीत नाट्य-शात्र (घए)। ३ वि मारतकर्प-सम्बन्धी, भारतकर्प का (ठा २ १--पत्र ६८) 'तत्व बसु इमे दुवे सूरिया पश्रता सं बहा--भारद्वे वेन मुरिए एरनए वेद मृद्धि' (मुण्य १ ३)। देशेलान िंक्षेत्र} नारतवर्ष(ठा२ **३** टी—पत्र 1 (10 भारतिय वि श्रिमारतीय श्री मास्त-संबन्धी चा भारतियक्षा इव भीमञ्जूखनजनसङ्ख्य कोहिल्मा (नुपा २६)। भारही भी भारती । सरसकी देश (पि २ ७)। २ देवो भारद (स १११)। भारिक वि मिरिकी मारी भारतामा ग्रह (रे ४ २) ए।या १ ६ वन--११४)। मारिअ वि [मारित] १ मारवाना मारी (इप प्र १३४) । २ जिस पर भार नावा यया ही बहु, भार-पूक किया गया (मुक्त 2 4x)1 मारिमा देवी मञ्जा (हे २ १ ७ उत्ताः णामा २)। मारिक वि [ भारपन् ] भारी शोनवासा (वर्गीव १६७) । मार्रेड पूँ भारुण्डों से मुँह धौर एक शरीर बाला परी पश्चि-बिरोप (कप्प: भीर महाः \* \* \* =) : माञ्ज न [भारत] सपाट (पाम: दुमा) । भलुंधी [दे] रेपो महलुंबी (मध १६)। भाइ इंत [ दे ] महत्र-नेदता काम-गीहा (संग्रि ४७)। भाव धर [भाषम् ] १ वासित करना दुला-पान करता। २ किन्तन करना। आवेद (पिने ६c) मानिति (निष्ट १२६) 'मारेज्ज मारलें (दि १६) भारत् (महा) । वर्ने, थावित्रह (शानु १७) । वक् भार्चेन, भावमान, भावमान (पुर = १०३) पुता २११: क्रा) । चंद्रः सापेचा, सापिउत्य (उना महा) । इ. भाषणिका, भाषिपञ्च भावंगम्य (राष्ट्रा वाता तुर १४ - व४) । माय पक [मास्] १ दिलना सन्ता मन्त्रम् होनां । २ वनन्त्र होनाः, जवित नानुस

पदालद्विद्या मिलाग्द (सुपा १) 'प्रतिक

र्शाम व्यक्तिपरिवारिक्युक्तियुविवर्गम्बन्धेस

(सुपा ७६) ।

धी वन केवोयो केवहस्सानसीहिया समी। तुष्ट विर्यक्रमाइ इसिङ्क मायह नरघोषमी मन्छ । (सुर ७ १६)। र्श्व विवाहनं विवाहों राम्ने माणुक्यस्यस्यक्तिकारियं । नुमय् मुक्त धानद पहिमानमध्यस् नाहा । {नुर ७ १७}। 'एम्टर्डि राहामोद्दर्द में भावद र्व होउ' ( TY Y? ) I भाष 🕯 भाष 🕽 १ पदार्च वस्तुः 'ऋवो बल्ह् पक्तवी (पान विदे ७ १६१२)।२ भनियाय प्राप्त्य (प्राचा पंचा १ १ प्राप्त YR): १ वित-विनाद, मानस विक्रतिः 'हामगायपसमियविक्केवविकासधारितगीहिं (पर्राप्त २ ४ — पत्र १३१)। ४ वन्य धराति निहो रण्यं बहसमयमाबाजं (विशे ७१)। १ पर्याव वर्गवस्तुका परिसाम हम्म की पूर्गपर धवस्त्रा (पर्वह १ क उत्तर २३ विधे ६१ कम्म ४ १ )। ६ वारवर्ष-बृक्त पदार्व विवक्तित क्रिया का सनुसर करतेवाली वटा वारमाविक पदार्थ (विसे ४६) । ७ परमार्थ वास्त्रविक तत्त्व (निये ४१)। द स्वमाव स्वरूप (प्रक्षा तृति)। ६ मन्त्र स्टा(विसे ६ गठड ६७०)। रे बात प्राचीन (माधुर विमे १)।। ११ पेट्रा (खासा १ व)। १२ विमा, महत्त्रमं (प्रस्तु) । १३ विकि कर्डम्योपदेशः 'बाबाबाबवर्गाता' (मन ४१--पत १७१)। १४ भन का परिस्ताम (वैचा २ ३३) दवः तुना ७ ११)। ११ वन्तर्रत बहुमान हेथ् राग (का भूमा ७ वहान्द्र) । १६ आवता स्मित (बढा १२ ४ चेबीय २४) । १७ । नारक भी मारा में विशिष रशाबी का बिन्तक वरिश्त (सवि १ २) । १० स्टम्मा (स्ट १७ १) । ११ घरत्य दश (बण्यू) । व्हित ब् [din] udifre te-lebe agiug-febr (स २ ६)। रैच दूं [फो] सल्ला प्रशः(न ६)। संजुदि दि∏ी मनियात की कालोगांका (व्यक्ता करा) ।

पात्र ५ [ प्राप्त ] कात माहि मान्स

ना बचा(न द्वारा (नरारा १) । संबद दू

戦の

र्व "साध्यी बही धर्व (भव)। ससव्यू िक्षत्र वह पाल्य-वरिकामः विससे कर्म का भागमन होरु 'मातवदि जैवा करमें परि हामिलुप्पत्तो स विएरोमी भाषास्त्री (हण्य भाव प्रैभावी महत्त्वाची समर्वे विद्राल (सम ११ थी)। भाषत्र वि [भावक] होनेनाना (प्राक्त ७ )। रेची भाषम । भावद्धां थी (दे) वामिक-पृत्तिकी (दे ६ ₹ ¥) i भावन वि [भावक] वासक प्रापं, बुलावायक बस्तु (प्राप्तु १) : देशो भावम । भाषद् पू भाषको स्वतःम-क्यात एक वैन मुद्दर्भ (ती२)। मार्थ्य पूर्णियन र स्वत्यम-स्वतं एक विल्क (प्रक्रम १ दर)। २ वीचे देखो (संबोध २४ वि ६) । भाषणा 🛍 भिष्यतः 🏿 १ वामनः पुरुष्यानः, र्धस्कार-करण् (भीप)। २ मनुप्रेका क्लिक्त । ६ पर्याभोजन (योजभा ६ एका द्वासू ६७)। भावि वि भिविष् विषय में हीनेतावा (कृमा सत्त्)। मापिक विदिग्निक जात (दे६ t 1) i भावित्र न [भाविक] एक देव विमान (सम माविक विभावित । वर्षका (प्रकार, ४, कत १४ ५२३ मक् प्राप्तृ १७)। २ भार-दुक "किल्परक्शतिन्त्रशाहित्मशाहित्मश्रस" (बन) । १ तुब्र, विशेष (बृह्र १) । प्य दि [ीरमन्] १ वर्षका सम्बन्धरणवाना (पीर-साम ११)। १५ वृह्य-विसेप महोराव का तेम्हर्ग वा महाम्बर्ग कुर्व (पुत्र १ १६) तत्र ११)। "प्पासी ["प्रमा] बदरान् वर्तनाव नी दुन्य शिष्या (नव १६२) । भाविष्त्र न [भाविष्ट्रप] एत्रोच, क्रव (भन)। भाविर रि [भावित् भवितृ] ब्रीक्य वे

भाविक्ष वि भावति | भावति | भाव-क्षण , १८३ बीसं नावकारं मानिक्री पंत्रमहश्वपारंतं (संबोध २४)। माधिसम वेची सविस्ता 'पानिस्पमुकारका' मावद्याचीयबोयल् विमत्तं (मुता ४६)। भावुक वि वि विस्त्य, निव (वर्ति ४७)। साञ्चा १ रि [साबुक] समा के पंडा से भावूंच | जिल पर मतर हो सकती हो गई बस्तु (योव ७७३ संबाद १४) । भास क्य भाष दिवस बेखना। वन्ध भारतीय (मन प्रमा)। मनि वासिस्टानि (बर)। वह मार्संत भासमाज (प्रौरः वयः विपा १ १)। व्यक्तः सासिज्ञागाप (स्कातम ६)। संह भासिया (स्व)। इ- मासिअब्ब (पर म्या) । भास बक भास दिशोक्त । २ सम्बद् मासून होता । ३ प्रकारता, अपक्रमा । ऋष् (१ ४२३) मास**् वापंति, कार्या** (मोक् २६: वर्ष १६: नुर ७ १६२)। बढ़, मार्सत (यण्ड १४)। मास सङ [ भीषय ] इतना। मन्दर (बाला (**\*\***) मास दुमास] १ पक्षि-विशेष (क्या १ १ दे २ ६२) । २ दीसि प्रकारा 'ऋर-रिकार क्यापि । स्वरोतावरस्यमिति वर्ग वण्डपद्ममानो स्व<sup>र</sup> (विदे ४६८) वर्षि) । मास दू [भस्मन्] **१ वह-विशेष व्यो**तिर्ण देव-विरोध (ठा २, ३ विचार ६ )। <sup>१</sup> कस्य राख (श्रामा ११ मराहर र)। यसि 🙎 ["यशि] बह-विधेष (ठा २) १ क्ष्म)। मास न [भाष्य] व्यवस्था-विदेश नय-धा दीका (बैप्प १ प्रत ११७ दी विचार ११६ सम्बन्धे ११) । मास विकासासा (दुवा)। व्युवि [क] कारा के दुल-शेष का मानरार (वर्षक ६२१)। वृशि [ नन् ] यहे वर्ग (पूर्व Ertemi, untereil ung miertige-1 (#5 #3 #

भामग् वि [भाषक] बेलतेगला बस्म प्रतिराण्य (सिम ४१० वंदा १० ६ ठा २ २--पत्र ११)। भासल न भासती धमर पीति प्रकार 'बरमझिमामणाएँ (भीप) । भासत्त म [भाषण] कवन, प्रतिगहन (महा)। भासत्त्रणा ) के [भाषमा] अपर देगी (का भासमा रे १६६ विग रेक्ट बन)। मासय देवो भारतग (तिमे १०४ पएए 1625 मासप नि [भाम ही प्रनाशक (सिने 22ex) 1 भारत्न नि हि] क्षेत्र प्रश्वक्तित् (१ ६ 1 (6 3 भामा हो [भाषा] १ बोली चिट्ठारमरेगी मानाविधारए (धीर १ ६ चुना)। २ बाग्य बाली थिए। वचन (पाप)। अङ् रि ["क्रष्ट] बोलने की शक्ति से चरित वद (धार ४)। अर्फ्यात भी विर्यामि कुन्तों को भाषा के रूप में परिएवं करने की र्शक (नग ६ ४)। (बड्य इ [पियय] १ नाना का निर्हेष । २ इष्टिमाद, कारद्वरी पैत्र योग-याच (टा १०--नव ४८१) र विजय प्रीविकयी हरियार (टा १०) । समिम रि [निमित] गाली का संयम चारा (अत) । समिद्र औ "समिति" बारी वा बेयन (तन १)। देवी भाग । भासा की भामी बकाठ पानोक दीति (मम)। भ्रांगि रि [मारित] बचर बचा (पर्वीर **22 m(1)1** भागित वि [भाषित] हे बक्त वर्षित इति। दित्र (यो याचा वरा प्रदेश) : २ म अच्या द(इ. (दारद) । धानिज्ञारि[मादित् क] यहा, बास्ते बाना (र्द्ध) । भागित्र (र दि] रण याँग (१६ १०३)। भागित्र वि[भागत्र] प्रशासना अवास-4x (frg (1):

भ्रांतर विश्विपारिश्वी शता (त्य ११०

**₹**7)1

भासिर वि [भास्यर] धेस रेरीव्यमान (कमा) । भामित कि भाषायन भागा-पूच, बाछी-पुक्त (बत २७ ११)। भासीक्ष्य विभिन्नीक्ष्यो वसक्य राज क्याह्म (क्य १८६ ध)। भासंत यद वि वाहर निवसना। मार्नुबह (\$ 5 7 7 21) 1 सामंद्रिया दि निमरण निर्मन (६६ भासर विभासरी १ मास्वर, बीहिमान, बमरता (मृट ६ १०४: मुता ६६ २७२ वर्गेस १६२६ ही)। २ घीए भीषण सर्वेशर, 'मोरा बारणभानुरमहस्व सहादेशीमभीमणया (वाघ)। १ए४ देव निमान (सम १६)। ४ एन्ट-विशेष (धनि 30)1 भास्रित वि [मास्रुरित] देशप्यवात क्या हुमा 'मानुरभूगणमामुरियंगा' (मनि ११)। भि देगो (क्स (क्षाचा)। भिन्नपर भित्रप्टर रेनी बदरमइ (विश्वर वह )। धिशसा भिद्ग रेतो भद्ग = मृति (सत्र)। भित्र र् [भूग] १ स्वनाम-स्वात ऋषि विदेश १ वर्षेत-शाहु । १ शुरू-प्रदू । ४ महादेर छित्र। १ यहान्ति। ६ द्वा प्रधाः क मृतुषा पंश्वतः । ८ गेना स्ति

भिष्ठा रेको भिष्ठीह (बस्) ।

बिरर रि [बिर्दर] रिन्बर (बास) ।

ब्रिडस्य दूं [मार्गेव] मृतु मृति वा पंशव वरिवासक-विशेष (धीप) । भिंग वि वि क्या काता (देव १०४)। २ मीम हरा। वे स्वीप्ट्य (पट्)। भिंग वे भिक्की १ भगर, मधार (पत्रम के रेक्ट पाछो । ए पनि-विकेश (पएस्प १७--- पत्र १२६)। १ शीट-विशेष। ४ विश्वतित संगारः नीयमा (छाया १ १---रत २० चीप)। बलावपाकी एक माति (मम १६) । ६ छन्द-त्रिधेप (पिन)। ७ जार, द्वरपति । स मीवरा का वेर । १ पात्र विशेष भाषे (हे १ १२a)। शिमाध्ये शिनमा दर पुरुरित्ती (१४)। "प्पमा स्रो मिमा वृश्वरिक्ती-विशेष (वे ४) । भिगा को भिक्षा एक प्रकरिता गारी (रहेर (रह) । पुं[भृद्वार क] श्मात्रत भिसार विदेश भारी (पद्ध १ ४ भिगार 🛊 भीत)।२वशि-विशेष मिना भिगारग रस्वेत्रभेरवरदे (रत्नमा १ १--वन ६४)। 'मिमारकदीलकंदियरकम्' (स्त्रमा १ १---यत्र ६६ पहरू १ ६ थीत) । ३ त्वर्ण-नय समन्ताव (हे १ १२८) व २)। भिगारी की वि सहारी १ की निर्मन विशे मिली (दे ६ १ ४ वाच उन ३६ tvc) । २ मराग इति (वे ६: १ हो)। भिजा भी हिं] मन्दंग नातिए (तूप १ ४ भिन्या हो दि पृथ्वाधी बंध वा नाव (27 1 11 2) 1 भिटिमाल । १ [मिन्यिन्यान] एप्र विदेश भिदिपास । (वर्षेट्र १ ची। पान व देर न वेबल कुमा है र वेबल ब्राज ) । भिद्रगर [भिद्र] १ भरता नोहता। २ विकास करता । बिराइ क्रिएए (क्रार यह )। क्षीर अन्त्रं, विशिवति (हे १ १०१) बुबा ति १११) । वर्षे विश्वद (क्या हि १४६) । वह भिर्देत भिरमात्र (त १६६ रि १ ६)। १४र मिलन, मिलमान (ने १९६८ ११ वर्षः त्रवद्याः टा र टा स्थि १११) । वह भिन्त्र,

<b>4</b> 99	पाइअसङ्ग्रहण्यको	मर्ज-मिर्
मिन्यूर्ण मिनिक मिनिकला मेचमान मेचला (रंगा, चन १० २२ गा.— रंग में के कि एक रेग गा.— रंग में कि एक रेग गा.— रंग में कि एक रेग में कि एक रेग गा.— रंग में कि एक रेग में कि	अर करा) । तास्त्रिय पू [स्थिमिक]  मिक्क-विकेत (यीर)।  क्रिक्काता ) कि [मिक्काक] क्षिता मांगरे- मिक्काता ) कि [मिक्काक] क्षिता मांगरे- मिक्काता ) कि [मिक्काक] क्ष्मित परिक्ताता ।  १ ११ ११ कत २, २० कया)।  मिक्कु पूंकी [मिक्कु] १ शीक के निर्माद  करनेकला चातु पूरी, संस्ताती व्यक्ति  (मिक्कु] १ शीक के निर्माद  करनेकला चातु पूरी, संस्ताती व्यक्ति  (मिक्कु] १ शीक के निर्माद  (स्वार १ ११ १ कव्य  के ११ इस  १८०)। पिक्ता की [मिक्का] चातु का  संदित चातु के निर्माद के मिक्कु के ११ इस  १८०)। पिक्ता की [मिक्का] चातु का  संदित चातु के निर्माद के निर्माद का  संदित चातु के निर्माद के निर्माद का  संदित चातु के निर्माद के स्वार्थ  स्वार्थ । परिक्रा को [मिक्का] चातु का  संदित चातु के निर्माद के स्वार्थ  स्वार्थ  संदित चातु के निर्माद के स्वार्थ  स्वार्थ  स्वार्थ के स्वार्थ  स्वार्थ । परिक्रा को [मिक्का]  सिम्मु के को मिक्कु (चातु १४)।  मिक्कु के सिम्मु (चातु १४)।  मिक्कु के सिम्मु (चातु १४)।  सिम्मु के मिक्कु (स्वार्थ  स्वार्थ । १ सिम्मु  स्वार्थ  स्वार्थ  स्वार्थ । १ सिम्मु  स्वार्थ  स्वार्य  स्वार्य  स्वार्थ  स्वार्थ  स्वार्थ  स्वार्य  स्वार्थ  स्वार्य  स्वार्थ  स्वार्थ  स्वार्य  स्वर	सिवित्य के सिनिया (स्त ) । सिन्या के लिसिया कि निर्मा के लिसिया कि सिनिया कि निर्मा कि निरम कि निर्मा कि निरम कि निरम कि निरम कि निरमी कि निरम कि निरमी कि
		-

वि ११२)।

**१)। भवि धिरित्सीत (धावा२ १,६६**३)

सिम वि सिमा १ विशासित वरिस्त

(ए।सा १ वर सक पामः महा)। २

प्रस्कृतिक स्कोरिक (अ.४ ४, पर्वा २ १)।

(मप)। स्त्रा की [क्या] मैपून-बंदर

बात, रहस्त्राकार (स्रोप ११) । प्रदर्शाहय

वि विपण्डपाविकी स्प्रेटित सम मारि

सेने की प्रतिकाशासा (पएड २ १--पत्र

१ )। मास प्रै ["मास] पणीच दिन

का महीना (गांत)। शहरू प [सहर्ष]

भिष्क पू भिष्म] १ स्वनाव-स्वात एक

हुक्तंतीत व्यविय गरिय भीपन निवासङ् ।

२ शाहित्य-प्रसिद्ध एतं-निरोप भगानक एस ।

१ कि मज-जनक मर्थकर (है २, १४)

भिष्मस दि [किह्युस] स्वाहुन (हे र

यन्तर्मृहर्तः सून मुहर्तं (सर्व) ।

मिखित पू वि भम्बय, भाषाव-मध्यक-वैश

मर्रव (सूब १४ २ व्यी)। भिलुंग पूं [के भिलुक्क] दिसक पती (राम

**₹**₹४) 1 भिल्लुगा की दि] फरी हुई बमीन, मूमि की रेबा—काट (भाषा २१ ६,४)। व बाग्य विश्वस्था, निसंत्रात्य (ठा १)। ४ भिद्ध पु भिद्ध र धनार्थ देश-विशेष (पब परिस्वक बन्भित 'जीवबर्ड भावमी भिनी' २७४) । २ एक धनावें काति (सुर २ ४) (बृहर धान ४)। ३ छन कम **मृ**त

र १४४ महा)। भिद्यमास्त्र [सिद्यमास्त्र] स्वनाम रपाठ

एक प्रसिद्ध खनिम-वैश (विने ११४)। भिहायई की [भद्धातकी] फिनावों का देव

(फ्य १ ६ १ टी)। भिद्धित्र वि [भिक्षित] बिएस्त चोड़ा ह्या, 'पंचबर्ध्ववर्तुंबो पामारो जिल्लियो वेर्स् (चर)।

मिस वेको भास = मास्। भिराद (है ४ २ ६ पद्)। यह भिसंत, भिसमाण भिसमीण (परम ३ १२७ ७१, ३७) क्याभार राजींग कुमा काम्य र रा

पि १६६)। भिस पक [प्रतुप्] वताना (प्राष्ट्र ५%) बारवा १४७)।

मिस एक [भाषय्] बराना । मिसद, मिनुद्र (प्राक्त ६४) । मिस न [भूश] १ प्रत्यन्त, घतिराय घति-

रावितः 'क्लीतविमानिन्तरोहे में (शिव प्रदह क्य ६२ टीः बत्त ६१: मनि)।

मिस ध्यो निस (प्राप्त १४, परुष १ सूच २,६ १०)। बंदय १ किन्द्रकी एक प्रकार की बाने की निष्ट करतु (पएछा १७---**१९ १३३)। मुणाद्धी हो [मृणार्द्धा**]

कमाननी (पएए १)। भिसम 🛊 [भिषज्] १ वेच विक्तिसक (हे १ र इया) । २ घरवान् वस्तिताव

नात्रयम प्रश्नय (पर व) ।

मिसंद देशो भिस = मास्।

भिसंद न [दे] फर्प (दे ६, १ १)। मिसन रेको मिमम (छापा १ १--पव

भिसण सर [र] वेंडना, राजना । जिल्लीप (यः १११) ।

भिसमाण **रेको** भिस=भास् । मिस्य की दि । मस्य पक्तने का बाल

निरोप (निपार ६---पत्र ६३)।

भिमाव सक [ भावय् ] बराना । भिरानेष (प्राष्ट्र ६४) । मिसिआ र बी दि दुपिका माधव-विशेष

भिसिना 🕽 ऋषि ना बासन (व ६, १ १) थय मूत्र ३७२३ शासा १ 🕫 उप ६४८ दी भीप सुप २ ९ ४८)।

भिसिण देवो भिसण निविक्षेपि (गा

११२ छ) । भिमिणी भी विसिनी क्मिनी पधिनी (हें १ २३८ कुमाः वा ३०८ काम ३१ महाः पत्थः ।।

सिसी की [वूपी] वेशी भिसिमा (पाप)। भिसास न [वे] मुख-निरोप (हा ४ ४-पत्र २८१)।

भिद्र् । सक [भी] करता । भिरुष्ट् ( पत्र ) । भी र्कनेश्रद्भ (पुता १४४)। भी भी भी [भी] १ मय, भी बंडमी बंड समार

मेन्त्रार्ख (पाचा)। २ वि करतेवाला धेंद (प्रापा) ।

भीज वि[भीत] रुष हुमा (६ २ १६६ ४ १३ पाप कुमा प्रशा)। श्रीव वि िमात् । बायन्त क्या हुया (मुर ३ १६५)। भीइ की [भीति] बद, धन (गुर २ २३७

सिरि ६३६ प्राप्त २४)। भीइल वि [भीत] क्य हुमा (कर ६४ )।

मीइर वि [भेतू] बर्गवाबा 'ता मराप्रमीहर' विसन्देह में वस्त्र (बस्)। मीड [के] देवों भिडा संक भीडिपि (म्प) (भवि)।

मीडिल [के] केबी मिडिय (गुपा १६९) । मीतर वि] देशो मित्तर (दुमा)।

मीम वि[भीम] १ मर्वकर, भीपल (रामः वक परहरे है। बी ४४ प्रान् १४४)। र मुं एक पाएडच भीमनेत (बा ४४३)।

३ राज्य-निकास का बर्गिस दिसा का क्षेत्र (छा २, ६--पत्र ६४)। ४ जाळवर्ष का मानी स'तनी प्रतिवानुदेशा 'धाररान्य स भीने नहामीने व नुष्तीचे (तथ ११४)। ६ राजन-वंश का एक शक्त, एक लंबारावि

इ.स. ६ । ब्राइट ९४१ कुमार वरूमा ११६) । भिष्मस्य न [विद्वसन] न्यादुस बनाना (प्रमा) । भिक्तिस घर [भास्+पर्≖वाशास्प]

प्राकृ ६६३ दुना)।

द्यातम्य कीवता । वहः शिक्षमसमाज मिकिमसमीण (खाश्य १ १--५॥ ६८: श्चव पि ११६)।

भिमार इं दि हिमोर] दिन ना पव्य पाप (t) (t ? tuy) ! भिषम देवी भवग (बल)।

मिसंग 🕻 📳 घटल । रेको मिस्किंश (पूर इटान पूत्र २८३ दूर्ली)।

मिसमा वेची भिलुगा (रह ६ ६२)।

मिसिंग तक [के] धार्मक करना, मानिश करता। भिनियेत्र (माचा के इक का ४ श निष् १७)। यह मिलिनेन (निष् tw) । प्रमी, जिलियावेण्य (तिषु tu) पष्ट भिक्तिगार्थत (विषु १७)।

मिल्लिंग ) पूँ दि । बाग्स-विरोध मिस्या (रूपोर्वशा १ ७३)।

भीमासुरक-भूत

(प्रम १, २६१)। ६ स्वर चक्रवर्ती हा एक पूत्र (पठम ४, १७४)। ७ दमयेऽी का पिता (क्व ४८) । ८ एक दूत-पूत्र (क्रूब १६२)। १ प्रमान का पासुरव-वंदीय एक राजा—भीमध्य (कुप ४)। १ हस्तिनन्त्र नगर का एक नृटधाह—राज पुश्य (निपा १ २)। एव पूर्विवी दुनसदाकाएक क्षप्तस्य स्टब्स (कुन्न १)। **"इमार प्र"इमारी एक एउन्प्रव (बाम)।** प्यस पं प्रिमी एलक्ष्मेत का एक एका एक चैका-पति (प्रस्य १, २११)। रह् पूरियों एक समा दमनेसीका पिता (कुत्र ४०)। सेपार् [सेन] १ एक पाएकव भीम (ब्राप्ता १ १६)। २ एक भूतकर पून्य (सम १६ )। "व्यक्ति

पुंिषस्त्रि] भंग-नियाका वानकार पश्चा क्य पुरुष (विश्वार ४७३)। ौसुर न ीसूर**े तक मिरे**प (प्रस्तु) । मीमासुरऋ न [सीमा<u>स</u>रोकः रीव] एक बैनेतर प्राचीन राजा (प्रसु ३६) । मीर ) विभिन्न की बलोड (वेदय भीक्ष्म रिर्धे प्रका सर्व २० १ जिल < **₹**) 1 सीस एक [भीषय्] **र**धना। मौसर (बारवा १४७), मीचेद (प्राक्त ६४) । मीसम वि मीपनी मर्गकर स<del>म्भवक</del> (वी ४६: बदाः पत्रः)।

मीमव देखी नसरा(धन)। भीसाव देखों भीस । ग्रेसावेड (बार्ला (ve) मीसिब् (शौ) वि [भीपित] भय-बीत किया हुया बरावा हुया (नाट-माल ११)। सीद् धक [सी] बरवा । भीवृद्ध (ब्राह्म ६४) । मुझ देवो भुँव । पुनद, पुनद् ( दर् ) । मुम न वि भूनेनन इक्टलिशेन की बाल (दे ६ ६ ६) । इस्कार विद्यालय विशेष- भूजीयन का पेड़ (प्रयुक्त १- पत ३४)। वरान [\*पत्र] मोबपन (कळा 444)1 श्रुप्रदेशी सिवी १ इतन कर (कुमा) । ९ व्यक्तिक रेका-विदेव (दे १ ४)।

"पिमी (बीवर)। सुख्य म<sub>ि</sub>सुक्र] क्वा, क्षेत्र (पाप) । सोयग पू िसोचकी एन की एक पाति (बन भीरा उत्त **१६ ७६। ठा**२)। "संप्यु ["सपे] देशो परिसप्प (पर ११)। । इनि विन क्तवात् हाववाना (धिरि ७६६) । मुभव रेबो मुभग (बढ़ा पिना से ७ • ६ पाय) । मुभईद र् [मुबगन्द्र] १ बेह सर्वे (बस्ब)। २ देश्यान, भागुकि (प्रच्यु २०)। धुरेस पु विदशी मोइम्स (पन्द्र २७)। मुभारतः ) पू [मुक्तगेरवर] उत्तर देवो मुभपसर ) (पर्या र ४--पत्र १६) यन्त्र ६६)। विभरणाइ र् [नगरनाय] श्री इस्स (पन्त १६)। मुद्रांग पूर्विग] १ हर्षे होप (से ६, ६ । बा६४ वन्नतः बुर २, २४१७ वना महाः १८४०) । २ विट **रंडीवाच वेरवा-क**र्मी (कुमार भक्त ११६) । १ बाद, कापति (क्यू) । ४ च्वकार, बुध्यकी (का प्र ११२)। १ चौर् करक्ट 🗫 बनोत्तमी नेव मापापमीयकृष्टी वास्तिययवेषकारी मिक्की महातृक्षते (६४३)। ६ वरमात <sup>543</sup> 'तावसवेद्यवारिको वक्रिकाविदास्थी<del>य</del>-बन्या विकेशकुमारसंदिया वर्तारी महामूर्यंव षि (स १२४)। विक्रि **व्य** [ इ.चि.] **कंड्रक** (बा ६४ )। प्रज्ञात (क्य) **दे**शो १ वर्ष-वर्षः । १ क्रक्सिकेद (बर्षः) । राज्य पुं["राज] केवराग (वि २)। वहप्र [<sup>\*</sup>पवि] रोनगव(भग्रम) । <sup>\*</sup>।पभाभ (मप) केवी प्यज्ञाव (भिद्र)। मुक्ताम दू [मुक्ताम] १ वर्ग प्राप (बस्य १७३३ सिय) । २ स्वनात-करोट एक कीर (महा)। मुर्जिनिजी ) वी [मुक्कि] र विदानिगरे मुर्जिनी | (पद्म ७ १४ )। र नावित (सूपार १३ वस ११७)। मुक्ता (मुक्ता) १ वर्ग सम (मुर २) को बा (देश भ निद् सबर देश

२३६। महाः वी ११) । २ एव देर-मादि, ३)। परिसप्प पंजी विवरिसर्पी हान से माग-कुमार देव (परह १ ४)। १ शासनंहर वननेशना प्राणी द्वाव से वसनेशाची सर्प वाति (वी २१: पर्श्व १: वीव २)। बी. देवों भी एक जाति सहीरव (११०)। ४ रंडीनावा भी नुद्रश्चिम्न पूर्वन तुर्वे प्रवासि श्रतियवयद्धेष्ट्रिं (कृत्र ३१)। १ ति. मौगी विकासी (छाषा १ १ टी--पव ४ धौत)। परिस्थित न परिस्तित 🖛 मिटेव (पनि १६)। बहुँ की [क्ती] एर इन्हाली विश्वचार नामक नहीरकेंद्र की एवं ,यक्र-निद्यो (इकाळा४ १३ एत्यार)। "बर पूं "बर] श्रीप-विशेष (राष)। मुझग वि [भोजक] पूजक, ध्वाकारक (शावा ११६१—पन्४० मीगः यत्)। मुख्या की [मुख्या] एक स्वासी प्रतिकार नामक इन्द्र भी एक सक्त निर्म (सप्रशासाधका)। मुअगीसर रेको मुमईसर (वह २ )। मुझण वैजो भुषय (चंडः इस्म १९६ पिया गठक)। मुखप्पइ मुँअप्पन्न } केवो बहरमाङ् (वि २१२) वर्)। मुंभस्सर मुझादेवो मुख⇒पुर। मुद्र और भिति । दर्ला। २ गोप्सा । १ वैद्या । प्रमुख (दे १ १६१ पर्)। मुबढि देवो भिडडि (पि १९४)। मुगवान हो नाव-विकेत (विरि ४१२)। भुख बक [भुक्] १ ध्येवन करता। <sup>१</sup> पालव करता । ३ मोरा करता । ४ म्युक्त करना । मुबद (है ४ ११ क्या क्या)। मुनेम (क्य)- विश्वपूर्व पुंजनु बहुरहाँ (सिरि १ ४४) मुक्ट पुरित्या (पि ११७) । समि पुरिवरी मीक्बरि नोस्बामि बोस्बरे भौको (है १६२३ क्या है व १ १)। इसी पुरुष पुनिष्मा (१ ४ २४१)। स्मृ सुनिष् भुजमान भुजिमान भुजाय (धार्यः कुमान्त्रिया १ २३ क्या ३१३ क्या वि र ७३ वर्गेन १९७)। इसक्र सुकार्य (सुका ३७६)। वीक सुधिक सुकिसी, मु जिल्लाम मु विकर्ण मु विचा मुजिलु, मोज्या भालु मोलूब (ह देश दूस १ व ४ श वेंक शि दे द

चल ८, ६४ वि ५ छ। हे २ १६, दुमा

प्राक्त १४)। केल मुजिलाय, मोलु,

भोत्तार (वि १७० हे ४ २१२ माना) मुजय (धर) (धुमा)। इ. सुझ, मुंबि यस्य भुजेयन्त्र मोत्तरम् मुत्तरम् भोद्य सोगा (**त्रु** १३) वर्गवि ४१ उप १३६ शिक्षा १६ सुपा ४**१३३ विक्रमा** ४३ सम्मल ५१६३ लामा १ १) पत्रम ६४, ६४ है ४ ९१२ मुक्त ४६६ बज्य ६० रिस दे ७ २१ औष २१४। इत इ. ७८। सूर्य १६६ मनि)। अंद्या वि (भोजक) मोनन करनेवाका (पिंड १२३)। भुजण देवो भुज = दुन्। भुंबल न [भावत] भोवत (पिंड १२१)। मुंजना भी करर देखों (पत्र १ १) । र्मुजय रेवा मुजग (एए)। भुं आव एक [भोअय्] । मौतन करानाः २ पासन करानाः ३ भीय करानाः। भूत्रविद (महा)। क्ष्मक मुखाविद्यात (प्रथम २ ५)। यं इ. सुकाषिकण, सुकाषिता (पि ४८२) । हेक सुजायं है (पेका १ ४६ थी) । भुजायम वि[भोजक] मोनन करातनाता (स २४१)। भुजाविश्व (भोबिट) विस्क्षे भोजन कराया यथा हो वह (धर्मीव ६८ दूप **१९=)** : भुजित्र देशो सुत ≖ भूत्। भुँ सिभ देखो मुख (मदि)। भुक्तिर वि [मीक्तु] मौजन करनेवाला (नुगा ११) । मुंब पूर्व [ब] पूकर, बच्छ प्रमण्यी में भूत (देवें देव) । बा. की, "किणी (दे ६ १०६ टीः पनि)। अवीर [दे] कार देखों (दे ६ १ ६)। भुभल म [ब्रे] मध-पात्र (बच्च १ ११)। मुंहडि (मर) देशो मूमि (ह ४ ६१४) । मुख मक [बुक्] बुक्ताः स्तान का बीनना । पुरुष्ट (वा ६६४ घ) । सुकार दे [दे] १ स्तान पुता। १ नय धारिया मन (दे ६, ११)।

मुक्तिश्र न [बुक्ति] स्नान का शन्य (पाप पिर १)। भृष्टिर वि [युष्टिर] भूँकनेशना (कुमा) । मुक्टा की हि जुम्हा] मूच सुपा (दे ६१३ छाया १ १--पत्र २० महा चप १७६ धाय १६ सम्मत ११७)। लु वि [ वत् ] भूवा (धर्मीव ६१)। भुविश्वम वि वि बुभुक्षित] मुका शुवादुर (पाम- क्रुप्र १२६) चुपा व १। एप वर्ग के स रवर वे रह)। मुसुसुय पर [ सुराभुगाम् ] प्रापं प्राप मानाज करना। यह भुगुभुगेत (पत्रम ₹ %, **₹**€) i मुग्ग वि [मुद्रा] १ मोड़ा हुमा वक, ब्रुटिन (शाया १ ८--पत्र १३३३ घषा)। वि भान दूध हुमा (ए।मा १ ८)। ३ इन्ड कता हुद्याः कि मरुक बोविएएं प्रविक्तराः-भवन्यपूरमाएं (इप ७६८ दी)। ४ भूता हुमा 'क्खुक्क क्रुनु' (रूप्र ४३२) । मुझ (घप) रेको मुखा। हुमा (सए)। मुद्रांग देवो सुर्मग (मनि) । मुज्ञा देवो मुज्जा = प्रतम (वर्गीव १२४)। मुद्ध देवी मुज हुग्यद (पर्)। भुकापु[भूकों] रेषक-विशेष । २ न ब्रक्त विशेष की बास (कप्पा क्य दू १९७ सुपा २ )। यक्त वक्तन["पत्र] बहायर्व (प्रावमा नाट विक ६६)। मुख रेवो मुखा। मुज्य वि [ मृतस ] प्रमुद्ध धनस्य (चीपः Pi Y(Y) I मुळिय वि दि सुप्री १ मृत्रा हवाबाग्य। २ दू जाना जुना हुमा सप (पराह २ २ — पत्र (४व)। मुजा पड़ [ भूवम् ] फिर, कुर (एवा नुपा २७२)। मुण्य पू [भ्रूज] १ धी का वर्ष । २ बालक, रिम् (बलि १७) । भुक्त वि[भुक्त] १ मक्रित (खासा १ १ चरा प्रापू १०)। ५ जिल्ले मीजन फिया हो वह के मान्यों न बना (नुन १ १६) दूस ११)।३ वेदितः। ४ सनुबुतः भाग्यः

ξţģ त्ताय मए भौगा भूता विशवस्त्रोदमा (एत १६ ११ एल्या १ १)। एन मज्ञरा भोजनः 'हासमूत्ताहिमाणि में' (उत्त १६ १२)। ६ विय-विशेष (ठा ६)। सोगि वि िमोगिया जिसने मोनीका धेवन किया क्को बहु (ग्रामा १ १)। मुच्छक्त मि [मुक्तमम्] निहते भीवन क्तिमा हो वह (पि १९७)। मुसस्य रेको मुखः। मुक्ति की [मुक्ति] १ भीवन (सन्द्रु १%) द्यश्य≖ ≈२)। २ मोन (मुपा१ द)। ३ बाजीविका के लिए दिया चाता गांच क्षेत्र बादि पिराय' 'करनेली नाम पूरी दिला क्रस्य व बुभारक्रकीएँ (क्रा ५११ टी क्रुप्र १९१)। बास पु ["बास्न] गिरास्टार (बर्मीन १४४)। भूतु वि [भावतू] भोक्तेवाता (बा ६ सनोम १४)। भूचुण पूं [वे] पूरव नीकर (दे ६ १ ६)। भुरथह र् दे दि निस्ती को देका जाता मोजन (क्य)। सम केवी सम = भग : भग ह (है ४ १६१ च्छ)। चंद्र भूमिषि (थप) (वछ)। मुग | की [भू] मी मांब के छपर मनगा की रोम योजि (भक्त जना; है २ मुसया रे९७ धीप क्रमा पाछ पर भूमा १७३)। मुसिष्ठ देवो असिम = प्रान्त पुनिधपत्रू (द्रुमा)। भुम्मि (घर) देवी भूमि (विष्)। म्रहिभा की दि दिना गुवाती दिया चित्र(देव ११)। मुर्रोडय ) वि दि] उज्लीत वृक्ति-तितः भरकृतिक - पूनिपुर्विकारोहि परिमया चि मुरुद्रविञ् । वर् वती (नुवा २२६, ६ ६ र ६) भूरपुर (१६) दुवियंनी' (दुप २६३: सूत्र क पूर्णी मा २०१)।

भूष्ठ सक [भूदा] १ जूत क्षेत्रा। २

विस्ता । ६ भूनना "भूल्लाई है बला भग्या

हा पनामो दुर्रतमो (धार ११ हे ४

two) :

भूकी [भू] १ प्रविशे वर्ष्टी (कुमा: पुत्र ११६ जोवस २७६३ सिरि १ ४४**)**।

२ पूर्णीकाय, पार्विव शरीरवाना जीव (कम्म ाध ६६)। आर ⊈ [ैशर]

सूक्द, धूमर (कियत )। 🕏 पु िकान्ती राजा नर-पति (भा २०)। गोस पू ["गास] नेमानार मूनएबस

(कम्पू)। चंद पूँ [चन्द्र] प्रविनीका कत्र, मृति-क्या (कथ्रु)। घर वि विदा भूमि पर चलने किरनैवाला मनुष्य भावि (कारंगरी)। स्वयुत्त [स्वयुत्र] बनस्पति-बिरोप (वे १ ६४) । तपाग **वेवो** 

बजय (राज)। भागपू [धन] राजा (मा२)। घर दु["घर] १ एका बरपति (बर्मेनि ६) । २ पर्वत पद्माद (बर्मेनि शः क्रुप्र २६४)ः नाइः प्र**िनाद**ि सम (उप १०६८) वर्गनि १ ७)। सङ्ग्र िसह् । प्रदोयन का सत्तारेशको सुद्वर्च (सम

 थ्याय पूर चित्रण को बनस्ति। निरोप (महत्तु १--पत्र ६४)। इन्हर्यु **िरुद**ि **दश** पेड़ (भड़ा पूप्प ११९) वर्गीव १६६)। व दू ["प] राजा (का ७२ टी सी १ यु ६६ काव)। बद्र प्री [पिति] समा (सुना ३६ दिन)। बाछ रू [पास] १ धना (शतक सूपा १६)। २ व्यक्ति-शावक वाम (यवि)। विच पु ["विच] छवा(मा२)। दीह न ["पीठ] मूलच मूमि-सम्ब (पूपा ३१३) । हर वेदो भर (दान)।

) दु[मूथस्] कमें कच का एक मुभोगार । 1, t ) i

मूझ रेक्सर (क्स्स ६, २२/२३) । गार पुं [कार] नहीं धर्न (कम्म ४, २२)। केनो भूम पुँ [दे] सम्बद्ध, कन-नद्दक पुरा (दे भूम ति [भूत] १ इत धैनत क्लाइन्स । २ मतीत, प्रमध इसा (वद् । पिन)। ३ प्राप्त कल्ल (क्यामा १ १ — पत्र ७४) । ४ धमान, तहत, तुम्पः 'तसनूर्हि' (सूम २ ७ ७ व टी)। १ वास्त्रतिक क्यार्च तस्य 'मुक्कोद्वि दिय पुरुद्धि' (१४४)- 'मुक्काक्क-

वंबी' (समस्य १६१) १६ विश्वमानः 'एवं

२२११)। ७ कामा श्रीपम्य । ८ शास्त्री, त्वर्थ-नावः 'धोवस्थे तासमे व हुव वृक्ति मूबसदी वि' (शावक १२४)। ६ ६ प्रकृत्यकः कम्मत्तनमूर् (अ.६,१)। १ पुंपक देव-जाति (परहुर ४) इक छान १ १—पत्र ३१)। ११ निराप (पाकः दे Y\_२४) । १२ समूद-विशेष (क्षेत्र २१४)। १६ डीप-विशेष (सुम्न १६) । १४ पुन-वर्फ प्राक्षी 'पाकार पूनार' भीवार स्ता

बह स हली संती भूषी तरप्रहानुवी (लिंट

मुब-मुब

'मूमारित वाबीकारित का' (धावा १ ६ ६ २ १ २ १ १११। वि १६७) 'ब्रियाणि भूषास्यि विसंवकारित' (तुष १ % क्ष स्थर ११२)। ११ पुनियी कारियांत प्रकार, महासूत्र (स १९१), वीक सन्ते पर मूच्यं (मिष्ठे १६वर) । १६ वर्ष केंद्र क्तस्पिति (ग्राचा ११६२)। १५% [दैरम्(] भूत-केर्नेकास्त्र (पि १९)। गगह दूं [भाह] भूत का मारेत (क ६)। माम र [माम] चौक्**ण्य** (स २६)। रेज वि ["वि] मनार्चः वास्त्रविक (यद्यक्र पद्धन २०६,१४)। दिएमा वेधे (दन्ना (पणि)। "दिस पुष्टिन] १ वर्ग वैत स्त्रवार्थ (स्त्रीवे) । २ एक कार्यास-ग्रावक (महा) । (दुक्ताच्यं [\*दिक्ता] १ दक्तं प्र<sup>स्तु</sup> इत्यू की (बंद)। २ एक वैत सम्मी, व्यू<sup>मि</sup> स्कूलम्बर की भक्ति (क्रम्प)। "संडक्त्पर्वि भक्ति न [ सण्डक्ष्मविभक्ति] वाल्स्विह माएक मैद (राव)। "क्रिमि की ["क्रिमि] निरि-विशेष (प्रस ६१)। वश्चिमा <sup>स्री</sup> ['क्तंसा] १ एक शताकी (बीव ३)। ९ एक राजनाती (धोव)। बाब, 'बाइवं गारिय द्रं ['गारिन, गामिक] <sup>१ वर्ग</sup> केन-माति (इना पर्स्ड१ ४० सीप) । <sup>१</sup> वि मूदनाहका स्थापार करनेवाला, कर्ण त्तनादिका भानकार (ग्रुच १ १४)। "सर्व

पु [बार] १ क्लाबेशवः २ इक्लिन् नारवृत्ता केन संस्थान्य (ठा रेक्प्पर्य ४११)। विका विकासी <sup>(विद्या</sup>) मानुर्वेद का एक जेद भूत निवद्द-विका (दिन् १ च—पर ७३ छे) । स्थर् दु[मिन्द्] १ मान्युनार देशों का दक्षित किंता का दूस

भ्क्तुंदी [वे] वेको मस्तुंदी (पाप) । मुख देवो दुव ⇔म्। द्वार (पि ४७१)। कुमरि (सी) (मात्वा १४७)। भूका दुवि (का) । मुब देखो अञ्च = पुत्र (मवि) । मुनद्दं देनी मुखदंद (से ४ ७१)। भुक्य न [सुबन] १ वण्द, नोक (श्री १) नुपार १ दुमार १४)। २ जीव प्राणी 'भुवणामयदास्त्रनशिवास' (दूमा ) । ३ भाष्मरा (प्राप्तु १ )। क्लाइप्री की िंद्धांभनी निवानिशेष (दुपा १७४)। गुरु पु िगुरु | वयद् का पुर (सुपा ७३)। नाइ पुंचित्रको अनद्का प्राता (स्प्रपू ११७)। पास्त र् ["पाका विक्रम भी बार्याकी क्रवास्थी ना योपियरि का एक समा(प्रक्रिंश ११)। बंधुपू विश्वी र वक्द का कच्चा २ जिल्लोक (क्या २११ यै)। सोइ दू विद्यामी शतवें वसदेव केंद्रीक्रक एक वैन मुनि (पडम २ २ ३)। ।संचार प्र∫ाक्षंत्रारी पत्रख का एक मद्र-वस्ती (पत्रम २, १११)। मुष्या 🕸 [मुषना] विद्या-वितेष (परम 💌 मुन्त्रम् (मा) रेवी मुक्तमः (प्राष्ट्र १ १) । मुस देशो बुसः 'दुबरको स्ना दुवरको स्ता' (मन १६)। भुदुंदि **भौ** [ व भुगुण्डि ] र<del>क्त</del> विशेष (बख) । मृदेखी मुद=मृ। भीति (पि ४७६)। चंक्र भोचा मावूज (शौ) (६४ २ १)। भूकी [भू] भी संख के क्यर की रीज-राशिः 'रवा मुख्यार' (तुपा १७६ वा १४-बुश ११६। बुवा) ।

444

द१६: रम्) ।

(सूना १२३)।

(दुना)।

भु∎ वि [ब्रह] मूबा हुम, व्हामेवमी कि

पत्रमेडि मुल्बी (सृ १९३) तुपा १९४

मुद्धविज्ञ कि [अधित] भट्ट विमा हुमा

भृद्धिर वि [भ्राक्षिम् ] भूमनेवाला भागस्य

धबुक्तिरदुरववियमजिनुगङ्ग्तिवस्यमस्वीर्द्

(इक ठा२ ६ ⊸पत्र ६४)। २ समा कृतिएक का पट्ट-इस्ती (सम १७ १)। [अदप्यह र् [ "सन्द्रमा | मुहानन धन्त्र का एक प्रत्यात-पर्वत (राज) । (याथ देवी बाय (विशे ४४१ पर १२ टी)। अञ्चला पू [बे] बोती हुई बन मूमि में निया बाता यह (दे ६ १०७)। भूजा की भूता र एक केन साम्बी महर्षि म्बूसभव भी एक भ्रीतनी (कप्प-पडि)। २ इल्ह्रफ्री की एक राजवानी (बीब १)। अपूर् की [अपृष्टि] १ संपति वन, वीवत 'ता परवेसं सेन् निश्चिता मूरिमून्यस्यार' (मूर १ २२३ मुपा ३४०)। २ भरम रापा 'बारमधाससमुक्तमम् मुक्त्यसिकि-र्रतीए (साधाद साधुनवड)। वेसहा∹ देव कं ध्रेव की मत्म "मूहमूरिय हुएसधीर मं (गुपा १४८३ ३६६) । ४ इस्टि (सूच १ ६ ६)। ५ मीन-एका (बत्त १२ ३३)। कम्म वृत (कर्मम् ) शरीर बावि की रखा के लिए दिया बाता अस्मतेपन-सुपर्वेषनावि (पन ७३ टी बुद्ध)। यणा पद्म दि िंग्रही १ भीव-एता की बुद्धिवाला (उत्त १२ ६६)। २ कान की वृद्धिकाचा शतन्त ज्ञानी (सुध १ ६ ६)। देखी <sup>4</sup>मुई। भूदंद पूं [भूतम्द्र] भूवों रा रन्द्र (वि ₹4 ) : मृब्द्व वि[भृषिष्ठ] धवि प्रमुख प्रत्यन्त (बिमे २ वेश) निक्र १४१)। मृद्रु को [मृत्या] चतुरंशी तिनि (प्राक्)। भूई देला भूइ (पर २--११२)। समिसय वि विस्तिष्ठी मृतिन्तर्यं करनेवाला (सीत)। भूओ म [भूबस्] १ किर हे पून (बब्ब देव २० पंच २, १०)। २ मार्रमार, फिर फिर, 'मुमो स सिह्तसंद (दर ६५१)। तार पू विद्वार ] वर्ष-कव का एक प्रकार योड़ी कर्में प्रकृति के अन्य के बाद होनेवाला मविश-प्रदुष्टि-सस्य (पंच ६ १२)। भूमोद प्र [मूनोद] सहर्र-विरोद (गुज १६)। भूमावधाइय वि [भूतोपपातिम: क] बाबा की हिंता करनेवाका (सम १७- मौप)। मृं(शा (भा) रेपो मृमि (हे ४ १६५ छ)।

**≒**}

भूण देशो मुख्य (संक्षि रक सम्मत्त ६६)। भूज देशो भुद्ध = भूज (प्राष्ट्र २६)। मूप देशो भू-य (१४ १) । मुममा की भूमया (प्राप्त)। मुमणया भी [है] स्थान भाज्यादन (बब 2)ı मुसि की [सुसि] १ पृथिती बरती (परम ६१ ४० यतः)। २ क्षेत्र (ग्रुमा)। ३ स्वत वमीन वयु, स्वाम (याम स्वाः पूमा)। ४ इतस समय (६०५)। ५ मास मॅक्सि एमा 'सत्तमुमिय' वासायमवर्धा' (महा)। इप पू विकस्प] मू-कम्प (परम ११ ४०)। "शिक्ष "घर व ["गृह्य] नीचे का करु हुँहकरा तहबाता (या १६ महा)। गायरिय वि ["गोचरिक] स्वनवर, मनुष्म मादि (पउम ५६ ५२)। और रा (पत्रम ७ १२)। "वद्यस्य म [पद्यस्त विस्तरिक्त विरोप (वे)। सस्र म ["तङ] वय-१% मुक्त (गुर २ १ १)। विश्व पु वियो बाह्य ए (मोह १ ७)। फाइट ट्रं (स्पोट] बनश्पति-विशेष (वी १)। फाडी की ["रमेरेटी] एक प्रकार का कहरीना कला पाभवर्ण कुरामाणो बह्रो प्रकारीम मुनि फोडीए (पुरा ६२ )। "माग व ["भाग] मुमि प्रदेश (शहा)। स्द्र पूर्व [स्त्रह्] भूमिसकोर बनस्पति-विशेष (भा २ प्रव प्र)। **पद्र प्रिति । स्त्रा** (का प्र रेयद) । बास वृ ["पास] समा (पता) । सुम प्रे ["सुव] मंगत-वह (मृष्य १४६)। इर देवी घर (महा) । रेशा मुनी । मूर्मिया की मिमिका र तथा मेंक्स मान (महा) । ए वान्क में पात्र का वेदान्दर बहुए (कप्)। मूर्मित् पुं, [भूमीग्द्र] राजा, नरावि (सम्मत Rtw) I भूमिपिसाय र् [रे भूमिपिशाप] तान

बूज वाह का वेड़ (दे ६, १ ७) ।

भूमो देखो भूमि (ने १२ ८० इन्यू, विक

४४व पत्रम ६४ १)। तुक्रवकृत्र न

[श्रुष्टाकृट] एक विधावत्सवर (श्रूष्ट)।

सुर्यंग व ["सुज्ञक् ] राजा (क्रोह दव)।

भूमीस वृ[भूमीश] राजा (या १२)। भूमीसर दु [भूमीश्वर] धमा (दुवा ४०७)। भूयिट्र वेचा भूद्रह (हास्य १२१)। भूरि कि [भूरि] १ प्रकुर, शरमना प्रमुख (नब्द्र कुमा सुर १ २४० २ ११४)। २ न स्थली सोना। ३ मन कीमत (सार्म cv)। स्सम् र्व [अवस् ] एक पत्र बेशीय राजा भूरिभवा (नाट-अएरी ३७) । भूस सक भिषय ११ सम्रावट करना । २ शोमाना धर्मष्टत करना । मुखेमि (हुमा)। गहः भूतयत (र्गा)। इः भूत (रंगा)। मुसण न [भूपण] १ बर्लचार, भ्राना (गाम बुमा)। २ सवावट। व शोमा-करण (पर्स् २ ४. धस)। भूसा की [भूषा] उत्तर देवी (दे ६ ६, कुमा)। भूसिओ नि भिषित्र । मिष्ठि धर्महरू (गा **४२ दुमाकाल)**। मुद्री औ विं] तिनम-विशेष (सिरि 1 23)1 न म [मोस्] धानक्यान्यक प्रम्या (धीप) । सम्म पुर [सद] १ प्रकार, भूदविनेपाद धवार (की ४ १)। २ किटीय पार्वस्य (ठा २ १ गडड कप्पू)। ३ एक राज-नीति फूट 'बाएमाएगेनमार्थेह सामनेधाइएहि य (प्रान् १७) 'सामवंडमेयनप्याण्यीह मुप्पजन्तस्य पितिहर्म् (साम्पा १ १---पत्र ११)। ४ मान सामात भङ्गाति सम्बद्ध **विष्णुसरमाच वस्य प्रमासद अनु विदा** विद्यमेभी (कप्पू)। १ मर्बस ना शवान्त-रास बीच का भाग 'पश्चित्तीको स्वयं वह बादमरोनु स । भेयवा(१ वा)यो कर्एकशा मुद्दताल पर्वाति म ॥ (तम १ १)। ६ विकास प्रवद्याल विदारण (मीन थए)। बर रि विस्ति रिक्येस्वर्ध (मीप)। पाय पूर्िपात् ] संकत के शीक

में मनन (नुज्य १ १) )। समावक्र वि

[समापभ] मेर-माम (भग)।

भोड वि [भोजिम्] धोवन करनेवाचा (धाचा पिंड १२ श्व)। भाद देखों भोगि (धुपा ४ ४ धंबीव 🗓 : विंग (मा)। भोद १ देवि मोगिम, की श्रामा भोदन । ध्यक्ष दान का मुखिया, वान का माएक (यम का दे र १ ८ वस १४. १ बढ १ योजमा ४३। विष ४३६ सूब १ ६ पर २६६ मधि सुपा ११% मा १४६)। २ महेरा (यह )। भोश्रम नि [भोगिक] र मोय-युक्त मोवासक विमासी (क्त १४ श मा ११६)। २ मीग-वंश में क्यम (सत्त १६ ६)। भाइज वि [भोदित] जिसको भोजन कपमा यमा हो नहु (सुर १ २१४) : मोडवी ही कि भोगिती वागम्पत नी पुली (पिष्ठ ४३६ वा ६ ३ ७३७: ७७६ निकार 🕽 । भोइया ) हो [साग्या] १ भार्या पली भोई की (हार शिक्ष १६०)। र नरवा (वय ७) । भाइ देशों भी अध्यान । मोंड रेगे मुड (ग ४०२)। मारम रेगी मुख। भोग पुन भोग र स्पर्ध एक बारि विपय बागारव परापे 'स्वी मेरे मोमा मस्वी' (मग ७ ७--गत्र ३१ ), भीपमानाई भूजनारी निरूप (विवा १ २)। २ विवय-सेवा (सब १, १३ भीए) 'बुजेता बहुविहाई भौगा<sup>न</sup> (मेपा २४) । ३ मरन-स्थातर, काय-केराः 'काममेचे वे यत्तु अप् सन्ताहरु हु (सूध २,११२)। ४ विपरेन्द्र विश्वमानिताव (प्राप्ता) । १ विषय-पूचा 'बहतू बीत्याई धनानपा" (जल ११ २)- दुष्या व काक्सीयां (प्राप्तु ११)। 'सहिनीये तिस मीते किरापुर कार्पे मनोब श्रमनिति जन्नेता' (नुपा < रो)। ६ मोत्रम धाद्वार (वैश्वा ४ ४<sup>-</sup> सार भ) । भ गुर-स्पानीय कार्ति-विशेष एक शारिय-पून (कप: बम १६१) दर १ १—पन ११३ ११४) । स्थानम्य प्राप्ति इस्नवारीय नोक-इस्नीय में बररज़ (धीर )।

इ. शरीट केंद्र (तेंद्र २ )। १ सर्वे की फ्ला (ब्ला) । ११ सर्गे का ग्रेपेर (वे ६, ८६) । करा रेजी भोगंडरा (६क) । कुछ म (कुछ) पूरव-स्थानाय कुम-विशेष (पि 140) । पुर म ['पुर] नमर-निशेष (भाषत्र) । पारेस १ पुरुष) मोन-चलर पुरुष (ठा १ र---एन ११३ ११४)। भारि वि [मागिय] ग्रोप-धार्यी (पडम ११ ८४)। मूस वि विमूस] मोप मृति में उत्पन्त (पठम १०२ १६६)। मुमि सी "मुमि । देवपूर पादि पदर्म-भूमि (इक)। भाग पूर भागा मेगाई शक्याहि-नियम मनीज्ञ शक्याति (मग ७ ७ विचा १ ६) । मास्त्रिया की ["मास्त्रिनी] धावीलीक में धानेवाली एक रिनक्रमाधी देवी (ठा का बक्त) । याव पू चित्रही मात-पुत्त का का (इस २ a) । यहचा भी [ विदेश ] विदि-विशेष (काल १---पत्र ६२): 'भीगरमदा (दिया)' (सम ११) । वर्द की ["यता ] र प्रतीसोक में स्वतीयासी एक दिल्हुमारी देवी (इस ६ ६८०)। २ पण की इसरी शावजी और बारहबी एवि-डिबि (तुक १ १६)। शिस पू [शिप] सर्प की एक जाति (पण्छा १ -- पण ४)। मोर्गकरा की [मार्गकरा] बवातोक में रहते बाली एक विश्वमारी देवी (का ८)। मोगा की (भागा विशेषकार (१६)। मोगि पू [मागिम] १ धर्ग चौप (मुपा ११८, द्वार २१८) । २ दून शरीर देव (भगव प्राच ७)। ६ वि जीत-पुष्ट-भोजवनः विताली (गुण ६६६: गुप 286)1 भोगा भाष्य देशे सुवा मार्ट्स र्र [माटामा] १ देश-विशे नेतन के सभीप का एक मार्थ्याय देश, कोटान । ्र मोटान का ध्यूनैयन्तर (पिन)। मोज रेपो भामग (वर् ) भोस देतो मुत्त (बार मुत्त २, ८, नुस

YEE) I

\$¥E मात्तप } क्या मुखः मोत्तक्य भाचादेको सृ≕भूव≕मृ। भोत्त वि [भोक्तू] भोमनवाता (विसे 114E: \$ 7 Ye): भोत् }रेबो सुजः। मोत्तम भोचुने देवो भूचुन (दे ६ १०६) : भारूण देवो भू समुद्र समुद भोम वि भोम र पुषि-शन्त्रन्थी (पूप र ६ १२)। २ मुमि में बलम्प (प्रोप २८) भी दे)। ६ भूमि का विकार (ठा ८)। ४ वं भेगल-प्रद्व (पाध) । १ वं भनरातार विशिष्ट स्थान । ६ सन्द (सम्म १२ ७८) । ७ निवित्त-शास-विशेष, मुनि-कम्यावि से शुप्रायुक्त करुमानेकामा शास्त्र (सम ४६) । व धहोतन ना सतानियाँ मुदुर्त धाएवं च भीग (१ म)रिसहे (मुज्ब १ १३)। । जिय न ("ज्यक् मूर्वि सम्बन्धी मुवाबाद (परहु १ २)। भोमिक्स रेवो भोमक्त (सम २) उत्त २३६ सामिर देखी अमिर 'सम्बद गादमगारे श्वंतारे मुद्रोमिरो बीबो (श्वंबोध ६२)। मानळा ) वि [भीमेव] १ वृति का विकार, भोत्रयग∫पार्विव (सम्रोट न्ता ४८)। २ दू एक देव-जाति, भवनपति नामक देव कावि (धम २)। भोरष्टपु दिं] मार्रह वनी (१६१ व)। मास्र सक [बे] इनना (मुना १२) । भोछ वि दि । बर्र सत्त विनदाना गुजराना में भाष्ट्री के बिया (महानि ६ नुपर ११४) । सादम र् [सास्त्र ] यत्त-रिशेष "घोमस्त्रामा वरको प्रतिनिद्धितिका प्रवि (वर्षसै 1 (14) भाइत्य सम [कें] टनना पुत्ररात्री में 'मोञ्बर्द । संह भासंबर्द (बुरा २६४)। मालपग न [व] बञ्चन अक्षापण (सम्मत्त **२२१)**। भामविष १ वि चि विषय ट्या ह्या भोलिम । (दुन ४२१, मुत ४२२)।

सदद्भिगण्यी १ स्थि वेदानद (प्राप्ट

बनाना । मन्त्र, मन्त्रेड, मन्तिति वानी।

(भवि सक पि ११६)। वर्गे महीताम

(सकि पि ११६)। बहुः सन्मंत (वस्य रे,

)। इ. सइस्तियक्य (त १६६)।

मइस पड़ [इ मस्जितायु] हेर-पीर

४७-१ २७)।

(17)

1 () 1

होता फीशा सकता । यह संस्थित हि ६

सङ्ख्यन [मस्तिनता] मनित नरम (नाग)।

संद्रक्षणा थ्ये [मक्तिनता] १ कार <sup>हते</sup>

(मोप ७)। २ मानिन्य, मनिका। ।

कर्नक 'सहर दुनं महत्तले करा' (दुर ६

१२ ) दनार्मा त्याप्रमुनम्ब वरस्य

लानने नायोपायो प्राथितील बता<sup>त्र र</sup>

परिषयन्त्रं यर्गानुषी बरतदेशे' (व ६४)।

महत्त्रपुर्ता ध्ये [रे] पुरावती, रजा<sup>ना ध्री</sup>

मइसिम वि[मटिनित] वीत रिच <sup>वि</sup>

महत्र [मृत] क्ष हुणा भी दिव

धर्म सनु गामी । परमापती देशी व<sup>न्यान्त</sup>

वास्य बनामा । तर् सं बरावस्य समा

बररिनवार शरिवार श्रीतरते वर्गन वर्गन

शोरकर मवस्थित (पाम १ १४-मा

महरूर हु हिं] बल बतात बार का दु<sup>र्वा</sup>

(देश १३१) । देशो मगहर ।

(बारत १६:शि १६६ मार्ग) ।

सम्मितित नहीं (देश ४० व दूसाः बर्न घेती का एक धीवार अंबसे महर्च रि रेक्ट ११४ मित)। मिया (रव ७ २६ पर्यु १ १—पव ८)। मञ्जा [मृत्या किसर (वर्ष १६) : सन्त्र वि मियी स्थारल प्रीवेड एक सङ्क्षी [मृति] मोत मरण्(सूर २ १४६)। वदित-प्र'वय निवृत्तं बना हृषा 'पम्ममङ्ग्रह मण्डी मिति १ वर्ष्ट या परीका यानुरुप्ति (यन) 'बिरापहिन मोशीहर्चर 'भेग नरे महीमा' (राघनुर २ ६६: एमार्थ (महा)। पुमा त्रागु ७१) । २ जान विशेष द्रौत्रय मन्मा ध्ये [गुगवा] रिकार (विरि १११४)। भीर मन में प्रत्यन होने शना ज्ञान (हा ४ मद्रद पंचिंग्यी सव का एक सैनिक पानर भागीर बच्चा १ ४ १०१४-मिटेप (गे ४ का ११ दर्)। বিব ২০)। সমান ব ["সত্ন] বিষট্ত

र्मान्या भिष्यास्त्रीन-पुन्त बति तान (धन

साम देनो सारू या ।

१ : गुर १६ २४२: पता) । २ धनः ग सिने ११४ काम ४ ४१)। यात्र श्याम नाम **व** [हात] तात-विदेश एक भेर (रिय)। (शि १ ७ ११४ ११० सम्म १ ४)। मद्भारेगाम अ=मरीय(वर्)। मानाररण न ["सामाररण] वनिश्वात सङ्खाय[सन्] दुन्छे (बाप)। वासप्तरप्त वर्ग (निदेश ४)। नामि गइम'इमा जी [इ मनिमाइनी] दुध रि वितासयी अधिद्यात्रया (मन) मन्ति सन् (दे६ ११३) वर् )। विनेता की विश्वविद्यों तर पैत दुनि रणा (रण)। स्थेम र् िस स्रोत्र मशाध्य [म रुख] उत्तर देवो (र म छे रिन्छ (भग गुता १६४) । स सी । 2 tt @ to \$4 ttt): दीक्षिति स्वीतुष्यात् साव ६३ मद्रस्य न मिर्व] इत्तर देलो (गाय) । धाना र्दा)। मध्य रि [मन्द्रत] देवा ववनुत बन्दरम् मद्रदेनो सह मुद्री (पुर र) (देश के काम साक्ष्य प्राप्त का का सर्भ ( [सन] मरनुम, जनन (१ : A(1) I 11 to 12 1 4(1)1 माय र् दि] रतान केच्युर (देव

| (\*\*) |

सङ्की दि] मरिए, बाङ (दे ६ ११६)। सह की [सूर्गा] इरियो इरिया नी मना हिरमी (गारवण से ६ व ; हे ६ ४६ नगर)। सई देशो सइ = प्रति । स, ददि [सन् ] बुद्धिमाना (शि ७३) ११६ छप १४२ हो)। सईअ कि [सदीय] मेरा धपना (पक्। बुमा' स ४७७३ महा) । संदर्भ कि वर्षत पहाड़ (दे ६ १११) । सड 3 दि चिद की कीमम पृहुमार मज्ज्ञ हे (हेर रेरेण प्रक सम ४६) पुर १ १७: गुना)। भी ठड् (प्राट <sup>६</sup>८ पदक्र)। सडअ नि दि दीत सरीव (दे ६ ११४)। मण्डम वि [मृद्धकित] को बोमस बना हो (गरह) । सड्ट रेगो सह - पूर् । मर्गद पू [मुफ्नद] र विष्णु भीरूप (एव) । २ नाध-फिट्रेप 'बुड्डिमईयमहम विभिमानपूर्वेण कुरमहेल (मुर १ ६c) 'मञ्जामचे"रांदारणसदिव्' (क्न) । मउद्या देनो माउद्य = मुद्दरन (पर)। मत्रह दून [मुक्न] विकेश्वय क्रिकेट, सिरपेंच (पन वद है १ १ ७ प्राप्ता क्षा पान भीर)। सबह ) ई कि पिम्मस्त क्यरी पूट मंडिक पूरा (पाँच दे ६ ११७)। सक्य देवो सीम (दृर १६२) पंड)। सन्दर्भ (सुदुर) १ बलश्रुष प्रभाश बनी, धीर (दुमा)। २ इ.स. झाईना शीद्या । ६ दुनाल-दएर । ४ बदुस वा पेड़ । प्रमणिकानुष । ६ कोषीनुस । ७ इदि क्एी-इन पोरङ (दृ १ १ भ प्राट भ)। महर १५ 📢 📢 🖫 🖫 क्य-किटेप धनामार्ग महर्र पांच गन्त्रीय, विचित्व (दे द 11x) 1 मान रेगो महद = मुहर (ह y ११)। मास र्व [मुद्रण] बोही स्वितित बती, विता बीर (रेंग ११)। २ देह रुपेर। ६ मामा 'कर्ज महक्षी' (ते ११७ द्राव)।

माउस धक ( मुक्कुबय् ) सङ्ग्रवता संकृतिक होना 'मञ्जैति लघलाई' (गा १)। वह-महसंत, महिल्ल (से ११ ६२) वि ४६१)। मङ्ख्य न [सङ्ख्या चंदाच 'वं देव मक्सर्य सोप्रजार्य (ह २ १०४ विस ११ ६ घडा)। भाउत्पन्न मर्क [सुक्कुन्य ] १ सङ्ग्रमा । २ सक् चेड्रवित करना । वर्ष भड़शार्जेस (नाट-मानवी १४ प १२१)। मउद्यद्य वि [मुक्कित] स्कूषाया हुवा स्कोषित (बका १२६)। भारताव रेखी सरस्याः । कर्म महताविर्वति (पि १२६)। वह सउद्ययस (पत्रम १४ = (1) मदलायञ वि [मुक्कमय के विद्वावत करने-बहुना 'हरिसविश्वमो विवसावसी य मठनावसा य सम्बोगु (पडा)। मञ्ज्यायिय देशो भजस्यत्रय (उप प्र १२१ भिति)। मपा २ मडीं ईबी दि। दुश्य-रथ का वन्धरनम ( £ 22x) 1 मउद्धि वृ [सुकृ हिम्] धर्ननिर्देष (पर्याः । १--पन दः पग्या १---पन १ )। मप्रक्षि पूंडी [मीकि] १ फिरीन पुरूद, किसे । मुप्रतु (पार्च) । १ मरतम निर (गुत्र १८६) कुमा धार्ति २२ धन्त्र ६४)। ६ शिरो-पेष्टन विशेष एक तरह की पगड़ी (पन १०)। ४ चूका बाधी । १ सेयत वंश । ६ वं धरोक दूस । ७ इसे मूमि प्रभिन्नो (ह रू १९२ माइ १ )। मर्ज्ञाम रि [मुकुछित] १ संदूषित (पुर s ४% वा दरश में १ ६x)। २ द्वासा नार शिवा हुमा (मीप)। ३ एउन स्थित (रुमा) । ४ मुद्दन-पुषः विशा-परित (धव)। सच्यी देवो मदई (है २ ११६: बूबा) । मऊर दुंधी [मयूर] पतिनीर्देश भीर (प्रातः \$ t tot tim t 1) i al. () (निगार वे) । सास व ["सामः] एक नवर (गडम २७ ६)। मक्र की [मयुरा] एक वनी महापध

वागर्भी की बाता (बान २ १४३)।

२ क्रान्ति हेव । १ शिका। ४ शोमा (है १ १७१ प्राप्त)। १ रागम वंश के एक राजा का भाग एक संका-पति (परम रू 74X) 1 मणसक मिद्य मिन्द्रक करना समित वनाना। वक्त संग्त (से २ १७)। मप्रजारिस वि [माइरा] भेरे वैद्या भेरे तुस्य क्यारिसालं पूरियाइमालं इमे नेशेजिय (स ६३)। में (धप) देवों स≍ मा (पहुर है ४ ४१ दर कुमा)। स्त्रर पु विकार विभाग प्रस्मव (हा र -- पप ४१५)। मॅकड वेका सकड़ (प्राचा) । में रुण पू [सस्क्रम] सटमन धुर कीट-विशेष पुत्रयदी में 'मांकल' (भी १६) । मंक्रम पूंची कि सकटी यन्तर, बानर । ही यी 'समीव मंत्रणीय मलीए तं अंकली नका (मूत्र १०१) । मेशह प्रमिद्धाति । एक घरतहर महर्षि (प्रत १८) । मदार पू [मदार] भ भनर (छ १०---पद ४११)। संक्रिम न [सद्दिन] दूद कर पत्ना (दे = ₹X) I संकुण देको संत्रण≔मल्यूख (दे मरि)। इतिय पु [ इतिनन् ] दर्शीपर प्राक्ति-विशेष (पएछ १—नत्र ४१)। र्मंड्रम [द] रेको मंशुम (गा ७८१)। मंग देयो मक्त्र≖प्रत्। यह मंत्रंत र्मत्र पु [व] बगड ब्रास्ट (दे ६ ११२)। र्मस्य पू मिल्ली एक मिल्लक पाछि को विक पट दिसाकर बीदन-निर्दार बरता है (छावा र स्थापीय पद्ध २ क्षांतर ३ ८. क्या)। एउटर न [पाउक] र संत का दक्ता। र निर्माद-देवक भीव (वंबा ६ ४६ हो)। मेराम व शिक्षणी १ मध्यन 'चंतरा इ तुरुमानग्रें(का ६४a री)। २ धर्म्य मातिश (नूर १२, व)।

मजह पै [मयख] १ किएए परिव (पाप)।

चहते हैं (सुन्न ११--पन २३१)। हमीप

र् ितिमा १ मधान के क्यर का यक

क्रमर क्रमर रखा क्रमा मंत्र (पीप)। र

२ मोबल (खावा १ १)।

44I) I

मेनुमा } थी [सञ्जा] १ मिर्द ले हैं। मेनुमा } एक नगरी (डा १ १—१० "

रह)। २ विराधे घोटा बार (रूग <sup>१३)</sup>

की माता का नाम (सम १६१)।

मेगसम्बर्धा 🕏 [मङ्गस्यस्या] एक भवरी

संस्रप्ति पू [सङ्कृष्टि] एक मंद्र-भिन्नु, बोरा-

बढ़ का पिता। पुन्त पूर्विपुत्र] कोरालक

बाजीवक मत का प्रवर्तक एक मिलू जो पहुंचे

मेगण्य पुर मिद्रसङ्गी स्वन्तिङ धारि बाउ

अंगरमाम्यः म [वे] वह सेप्र निवर्षे बीद |

मोर्च-न्द्र दश्चर्य (नुवा ७७) ।

योश वाशी हो (वे १ ११६) ।

मिछत-प्रसिद्ध एक बोच किसमें करा, हुई मत्त्रातृ महावीर का शिष्य वा (छ १ ३ कानाम (प्राच् १)। सावि नक्षत्र एक पूछरे के उत्तर रखी ही मंगस्मवद् र् [मङ्गस्रापतिम्] धीमन्त-पर्यंत चना) । मंत्रों के भाकार से भगरिका होते हैं (उ काएडक्ट (इक वे ४)। संग्रह [सङ्ग] १ वावा। २ शक्ता। **(**7) 1 मंगध्यको सो मिन्नस्त्रकती । महाविध्य वर्ष ३ वानना । एमें मंदिन्छ (विसे २३) । मंची को मिल्ला] किया कार पायप क्ष्म एक विवय प्रान्त-किलोच (ठा ९,३ र्संग 🖞 [सङ्का 🐧 वर्ग (विसे २२) । २ रंजन-मंत्रीए (पुर १ १६८ १५१)। हम-विधेक रम के नाम में बाता एक हरन मंह्य (बर) य [मह्यू ही सेन की मंगश्राच च [मङ्गख्यमर्थ] र महाविधेर (सिरि १ १७)। (मिनि)। वर्षका एक विवय, शक्त-विवेष (ठा२,३) संगद्दम देशो सगद्दय (निर १ १)। मेकर दे [मार्कार] मंबार, विकार विकार इस्र)। २ देन विशेष (वं ४)। ६ न एक (हे २ १६५ कुमा) । क्यो सकार, समारे। संगरिया भी [बे] बाच विशेष (सव) । देव-विधान (सम १७) । ४ प्रवेत-विदेय का मंडरि 🛍 [मंडार] 🖦 मंत्ररी (पीर)। संगम र् [सङ्गम] १ यह-विशेष मेगारक एक रिकार (इस्)। मंधरिक वि मिश्चरित । मबरी-पूक्क 'वेर्बर्ग मंगस्थित ) वि [माइक्रिक] १ मंगत ब्रह् (इक्) । २ न कस्पास्त शूम, क्षेम वेद वर्षानकरो' (स ५१६) । र्मगुळीळ । बनके 'युप्तत्वीवतोष्मन्दिष-(दुमा) । १ विवाहतूत्र-वन्दन (स्वप्न ४१) । मॅबरिजा ) भी [मजरिका रा] नोर्ल बम्मनाहस्त (उत्तर १ ) प्रन्तु १६) हुपा ४ विष्य-राव (ठा ३ १) । ३ विष्य अस्य के मंत्ररी 🕽 पुरुमार प्राथाशार राष्ट्र स )। २ प्रदेश-भारत भोडनेगलाः 'तृहर्म-सिए निया बाता ध्रण्येक नयस्कार ध्रावि नुय (कुमाः सबस्) । शुंडी 🛍 ["शुण्डी] 😎 नायै। ६ दिप्त-सद का कारहा दुरित मसीएँ (तुस १ ७ २१) । विरोप 'दोमरिक्दी स संबधिकी' (गए)! मारा का निमित्त (विशे १२) १३ २२) २३ मेग्रह विमिद्धस्य भाइस्यी मेन्त-राधे, मंबार देवो संबद (हे १ ९६) । २४ मीरा नुमा) । प्रश्तवादास्य पुरामद मॅफ्न-अनक भावतिकः 'परमाको दिलक्श-मंत्रिका की [दे] गुलको (दे । ११६)। क्छनिक्द्रमंद्भविकार् (बेह्म ११) ग्हामा (तुम १ ७ ११)। इगर्थ-सिक्ट वास्टित-मंत्रिष्ठ वि [माश्रिष्ठ] मबीड रंगप्र व्यक्ति (कप्प) । १ तर-विशेष मार्वविक । १ १ इम १९२) रूप भीत पुर १ २६० समाध्ये ही (रूप)। (तैयोव १) । १ समातार माठ मिनों का १८. १७३ तुमा ४२)। मेबिद्धा की [मश्चिष्ठा] नगीड, रक्षीकी द्वाराम (संबोध X ) । ११ वि इप्रार्क र्मगी की मिल्ली] पर्ज बाम की एक मुच्चीता (407 t Y YEs) 1 सावर जेक्द-सारक (भार ४) । "उन्ह्य पू (हा ७--पत्र ३६३)। मजीर न [मझीर] १ 🖽 ट '(स्व <sup>हर्न</sup> ["भा**त**] बांगतिक भाग (धन) । तुर्ग मेर्गु र्दू [मङ्गू] एक मुत्रसिद्ध केन बाकार्य च मंत्रीर (पास स ७ ४ द्वपा ६६)। १ "तूर्ये] संपत्त-शात्र (महा) । दांव वृ मार्थमेदु (लुटि टी **४**- ब्रास्म २१) । ध्यक्तियेय (सिंग) । िंदीप ] मार्ग्ययक श्रेष देश-मन्दिर में बारकी मंगुल व दि । सन्तर (देव १४६) बुगा मंत्रीरन[दे] शहतक वांवत वं<sup>द्राद</sup> वे बाद दिया बाठा छैएक (बर्मीर १२६ रेरेश बुद्ध व ) । २ पार (रे. १ १४%) Ber (\$ 1 (14) २३) । पाइय ई पाँठकी बसाद बडडा मुक्त क) । १ वूँ चौर, मेशु वि [ सञ्ज ] १ सुग्रर, स्वोहर (राव)। भानच चारण (नाम) । पाहिया औ वस्कर (दे ६, १४६) । ४ मि समूचर, २ बोक्त सुरुवार (सीरा क्या) । ३ <sup>हिड</sup> ["पाठिसा] बीला-विदेष देवता के बाले खरार (बाच का ४ ४-वन १०१। स स्पू (स्थल व १)। भुष्यु भीर सन्त्या में बनाई बादी बीहा थरेर बंत रे) की. की अंद्रवी खं मेनुजा को [रे] तुसदी (१ ६ ११६ (धर)। बम्लस्य भगवधो शङ्कारीरस्ट बम्मप्रहारी याय)। मंगप वि [रे] र बरश, समात्र (रे र (बस्)। मंजुम रि [मक्स्क] १ मुन्दर, रक्तीर में ११६)। २ म धकि सावः १ डीस इतने मंगुस दृ दि] बर्ब ब्लीला, बुब्लालार्थ-(सन १११ कप हिना १ क नामा निः)। रा एक माधन । ४ धनानमा (विवे ५०)। पिरोप (दे६ ११ व सूच २ ३ २४)।

मंच पृक्ति क्य (१ ६ १११) ।

मंप र्मु[मद्म] १ वदल बदाइन (रण

दरहो । १ विच्छान्त प्रतिस दरा दोनी में

वीनरा बीच, दिवर्षे चन्त्रप्रीः नेशानार है।

मंठ वि वि] १ वळ, सुवा, बदमारा । २ पू बन्द (दे६ १११)। र्मंड सक [ मण्ड ] चूपित करना सवाना। मंबद ( पड् ) मंडीत (पि ११७)। मंड एक [रे] १ धाने घरता। २ प्रारम्म-करना, पुजराती में 'मांडवु" 'को मंदद रख मरभुरहो संबु (मर्थि) । मंड पूर्व [मण्ड] रशः 'चयाखेवर' व स्रो वसनिद्विपरिमार्छ करा, नग्नल सारदएएँ गोधवर्षकेषुँ (स्वा) । संद्रभ देशो संदर्व = मर्द्रप (नार--रक् मंद्रअ , पू [मण्डक] बाध-विशेष माहा सहग रे एक प्रकार की रोटी (ज्य प्र ११४ तक ४ दी कुत्र ४३। वर्गवि ११६)। संबंग वि [सण्डक] विमुपक, शोमा वहाने-भाषाः 'सप्ति प 'कोइलपुर्**पं**दर्गं । (FPT) I मेहम न मिण्डली १ भूपण भूपा (नरहा प्राप्तु १६२)। २ वि विम्यक शोमा वहाने-कामा (धतक कुमा)। को जी (भासू १४)। भाइ 🛍 विश्वाची प्राप्तकल पहनानेवाली वासी (छाना १ १—पत्र ३७)। अंडज दे वि मण्डस्रो धान कृता (६६ ११४ वाष्ट्रं स १६८; दुव २८ । सम्बद्ध ₹€ ) 1 अविकाम [सण्डक] १ समूह सूच (कूमा) पंकर सम्बद्ध है। २ केट (इस १४२ टो दुप्र ४६ २८ )। १ गोल पुरासार पदार्थे (दुमा गडेड)। ४ धील झाकार हे बेष्ट्रन (ठा वे ४---पन १६६। यस्त्र)। ५ चन्द्र-सूर्वे साथि का चार-दोन (सम ६१) मत्रा । ६ वंशा, मन्य (त्या ११ ६) ४) ३,६)। ७ एक प्रकार का <u>बहु रो</u>हा च एक प्रकार की पुताकार शाय-अपू (शिव । ६ )। १ किम्प 'दरमद एतिमेक्सक्सत दिएएएचंडापई समयो (पडा)। १ भूमटो का स्वात-निरोप (या) । ११ मध्डलालार परिप्रवश (पुरुष १ का स १४६)। १९ रेनिस क्षेत्र (स ७---पत्र ११४)। ११ त् मरनावास-विशेष (देवेन्द्र १६)। य वि [ वन् ] मएअन में परिश्रमण करनेवासा

(पुत्रज्ञ १ ७)। विद्य पूर्व [गिथिप] (भवि)। विद्यप्र 🙎 मग्रहसाबीरा िधिपति । वही सर्व (भाव)। मेहछ पुन [सण्डल] योदा का पुत्र समय का धासन (वन १)। पवेस पु [मनेरा] एक प्राचीन वैन शक्त (एवि २ २)। संबक्षा पन [मण्डनाम] तकार, अवग (है ६ ६४) মৰি)। संबद्ध्य दे [सण्डद्धक] एक मल वारह कर्म-मायकों का एक बांट (प्राप्त १११) । संबंधि र् [मण्डलिम] १ मएडसामार चनवा बायु, बक्र-बात वर्वेडर (बी ७)। २ मार्थेड सिक रावा 'तेवीसं तित्वंकरा पूज्यमवे मंबलियमाणो हात्यां (सम ४२)। १ सर्पे की एक काफि (नएइ १--नन ११)। ४ न नोप-विशेष को कीरस योगकी एक शाबा है। १ पूंजी उस पोष में उत्पन्न (ठा च-पत्र ११ )। पुरी को [पुरी] गरर विरोध हुबरात का एक नवर, भी प्राप्त का भी 'मोक्स' नाम से प्रसिद्ध 🕻 (शुपा ६१६) । मेडक्षित्र नि मिण्डक्षित् निप्रमानार दश भंडतियवंडकोर्यसमुक्तकोतिवर्षिय-बिरेबि( (सूपा ४ वन्त्रा ६२) गटक)। मंडक्रिम वि मिण्डक्रिक, माण्डक्रिकी र मगुडमाकारकाता । २ पूँ मंडल रूप से स्वित पर्वत विशेष (ठा १ ४---पण १६६) पएह २ ४)। १ मएडमाबीस, सामान्य राजा (स्त्रमा १ १) पर्या ३ ४ हमा हुए १२ महा)। मंडली की [मण्डली] १ पंक्ति केशी सपूर् (से ६, ७१, यण्डा २ १६)। २ प्रथ की एक प्रकार की बंदिः (धे १३ ६ ६३ महा)। ३ क्लानार मंडल - समूद्र (संबोध १७-ডৰ)। मंडक्रीम देवो संडक्षिम = महर्गतक 'तह क्तवरदेकाद्विवकोडाव्विवमंद्रजीयशामीते (सूपा ७१ ठा३ (---पत्र (२६)। संद्रप पुं [मण्डप] १ विमाय-स्थान । प नहीं मार्थि से नैष्टित स्नान (शीन ६३ स्त्रान

१६। महाः भूमा) । ३ लान स्वर्धर करने कर

पृष्ठ; 'क्रास्त्रमंत्रमंति 'धीयस्त्रमंत्रमंद्रि' (कप्पः

यौर)।

संबंध न [साण्डक्य] १ बोध-निरोध। २ पूँची उस मोत्र में इस्तम (ठा ४—पत्र वेर )। सङ्गिता भी [मण्डपिक] सोटा मएका (इमा) । मंड्रव्यायण प्र[माण्ड्रव्यायन] योष-विशेष (सुकार १६ इक)। संडावज न [सण्डन] समाना विस्पित कराना । भाई की ["धात्रा] समानेताली वासी (बाबा २ १४ ११)। सहायय वि (मण्डक) सवानेवासा (निष् १)। 🤈 वि [सम्बद्धते] १ मूर्वित (कप्पः मॅडिम र्रे कुमा) । र पूर भववाद महावीर के पशु क्लाबर का बाम (सम १६ विसे १८२)। ३ एक भोरका नाम (मर्मीक ण्यः ७३)। कुच्छि पून ["कुक्कि] मैध्य-क्छिप (बच २ २)। "पुक्त ई ["पुत्र] भवनात् महाबीर का घठवाँ गरावर (क्रम्)। मीकिअ वि [वे] रावितः भनामा हुमा। २ विद्याया हुआ र्चनारे इसविद्याना महिमाक्येया मंत्रिय पाने । बरम्हेरि बालमाला स्रवासमालावि बरम्हेरि 🗈 (रमए ८)। १ मागे परा इमा' भइ मीडिट रहामरजूरही र्षेषु (अवि)। ४ धारम्या 'रखु मीद्य कुम्माहिनेस तार्म (मनिः एस)। मंबिद्ध पुं [चे] अपूप, पूजा पकाय-विशेष (4 4, 220) ( मंडी की [दे] १ निवानिका, बक्ती (दे ६ १११। पाम)। २ मध का बाहरत मॉहः ६ मॉड़ी क्यप लेडे (बाव ४)। पाहुव्हिया क्यै ["प्राकृतिका] एक प्रियानोग यस के मॉड बंबना मॉड़ी को बुखरे पात्र में रखकर बी बातो भिन्ना का प्रहुए (प्राप ४)। र्मबुक ) देवी संबुद्ध (था २८३ वर्द्ध १ १३ र्मेड्ड ∫ है र. १०३ पर ; पाप) । मंबुक्तिया, की [मण्डूकिया, की र की मंदुक्तिया में स्टब्स मेडी, बादुरी (ज्य १४७ मंदुक्ती टी १३७ टी)। २ साक-

किरोप बनस्परि-विशेष (श्रवा;

44 SA) !

की माद्या का नाम (यम १६१)।

**ब्स**) ।

**१ शन**ना । इ.में. मॅपिक्य (विशे २२) । मंग पुमिक्की १ वर्ग (विसे २२) । २ रजन-इच्छ-विदेश रंग के काम में घाटा एक इस्य (例代 ? Xu) 1 मंगइय देवी मगइय (निर १ १) । मंगरिया की वि] बाच-विकेन (स्पर्य) । संगद्ध है [सङ्गद्ध] १ वह-विशेष संगारक ध्यः (इक) । २ न- कल्पासः तुम, श्रेम भीव (कुमा) । १ विवाह सूत्र-बन्दन (स्वप्न ४१) ।

संस्राधि पू [सङ्गति] एक संस्र-स्मितु कोशा-লৰ কাথিয়া। মুক্ত বু[পুল] আইলকৰ

बादीनक पत का प्रवर्तक एक मिनु जो पहले

मल्लान् महाबीर का कियम वा (छा १

भौगसक सिक्सी १ वालाः २ सावनाः

४ विम्त-सद (हा ३ १) । ५ विम्त-क्षय के विश किया जाता इल्डेक-नभरकार बादि राम कार्य। विकासिय का कारख दुरिय माराका निमित्त (विदे १२३१३ २२३२३ २४ भीरा क्या) । इतंसावास्य स्तामव (सप १ ७ २१)। इगर्च-सिम्ब वाम्बित-ब्राहि (कृप्य) । **१ हम-विदे**प धार्य**दिन** (प्रवीम १)। १ सवातार याठ दिनो का कानात (संबोध १०)। ११ वि इटार्क-धानक मेनक-कारक (मान ४) । उस्हार पू [\*भवः] सांक्तिक व्यव (त्रप) । तूर न [ैतू4] भेक्त-कत्य (महा) । दोव पू [°दीप] माण्डिक दीव देव-पन्निर मे धारती के शब्द निया जाता दीएक (वर्गीन १२३) २३) । पाक्षय 🖠 ["पाठक] मानव पायत (पाप) । पाहिया औ ["पाठिका] श्रीका-विशेष देवता के सामे नुबर्धीर क्रम्या वें बनाई वादी वीछा (**ঘৰ**) ৷ मंग्रज वि [दे] १ दारा, समान (१ ६

११व) । २ भूमिम् स्तव। १ औरादुनने

ना एक स्रवत् ।४ कन्द्रमध्या (विसे २०) ।

मंगध्य 🗺 [मङ्गस्टक] स्वस्तिक धारि महरू

संगतसम्बद्ध व [दे] वह चैठ निसर्ने बीज

बांवनिक दशर्प (नुस ७७) ।

बीता बादी हो (हे ६ १२६)।

मंगश्रास्या 🕏 [मङ्गास्या] एक नवरी का नाम (माचुर)। र्मगरमवर् पू [सङ्गलापावित्र] सीमनस-पर्वत का एड कुट (इक. वं ४) । संगठमवर्ष को सिक्त स्मवती निर्माणके वर्ष का एक विजय प्रान्त-विशेष (ठा २,३ 14) I संगतावत्त र् [सङ्गस्त्रवर्धे] १ महाविदेह वर्षकाएक विकय, प्रान्त-विकेष (ठा२ ३३ इस्र)। २. देन निरोप (वि.४)। ३ न एक क्र-विमान (सम १७) । ४ पर्वत-विकेच का एक शिकार (इक)। मंगक्तिक } वि [माङ्गक्तिक] १ मंगल संग्राक्षीय । करूक 'सम्बाजीक्तोधर्मक्षीयम-कम्मनाहस्सं (उत्तर १ यन्द्र १६) सुरा )। २ प्रशंसा-दास्य दोकनेदाका 'सुद्दर्य-नबीए (सूम १ ७ २१)। र्मगद्भ वि मिन्नस्य मान्नस्य विकाशास्त्र,

मंक्स-बनक भावतिकः 'प्रमास्तो विखयुक्त-पश्तिकद्वमंग्झविचाई (वेदम १६ ग्लाबा र १३ वय १२२ कम्पाधीय सुर १ २६० १४ १७३ सुपा ६६)। संगी **भौ** [सङ्घी] पश्च प्राप्त को एक सू**र्व्या**स (ठा ७--पत्र १११)। मेरा 🕯 सिङ्को एक नुबन्धिक वैन प्राप्तानी धार्यमंद्र (शिक्षः श्री ७- धारम २३)। मंगुक्त न [दे] १ मन्छि (दे ६ १४६ मुदा ३३ : सुक्त ॥) : २ वल (१ ६, १४२) कमा । बक्क तूर्खः ⊏ ) । ३ दूँ भीए, वत्कर (वे ६, १४२) । ४ वि संयुक्तर, क्यव (पाय व्य ४ ४—पत्र २७१) स **थरेश रंघ रे): स्प्रै की। 'संस्ती श्रो** बमरास्य कावधो महारीयसः वामपर्णसी (उदा) । मंगुस पूं [वे] वकुस न्वीबा, पुरुपरिवर्ष-विधेय (वे ६ ११ । सूच २, ३ २१)। मंच पुंचि] क्य (र ६, १११) । र्मच पूर्मिक्की १ सवाव बवाबत (क्र**ा**र

पत्रत्र) १२ व्यक्तिताच्य प्रस्तित रहा योगी से

चैनय योग, निधन चलादि मंचादार है।

यहते हैं (तुम १२--पत्र २११)। इस्त र् [ीतिसामा] र सदल के स्मरका यक क्सर क्सर रखा हुआ मंत्र (चीर)। १ मिएत-प्रसिद्ध एक बोध किसमें क्या हो मादि नक्षत्र एक इसरे के क्रमर रखें हैं. मंत्रों के बाकार से बपरिकत होने हैं (हर्व **१**२) । र्मची जी [सद्या] चटिया बाट अंडब्ब मंत्रीए (पुर १ १६क १९१)। संहुदु (पप) म [सङ्ग्रह्म] रीव 🕶 (मनि)। गंकर दू [भावार] मंत्रार, विकार विकार (हे २ १६२ कुमा) । **स्वो**सकार, सम्बार मंबरि भी [मआरि] देशो मंबरी (भीत)। संजरिक नि [सक्षरित] मबरी-नुष्क <sup>श्रेर्टको</sup> वृद्धिकरो' (स ७१६) । म्बरिभा १ भी [मङारिका रो] को प्र संबरी । पुरुषार पहारात्मर वह हो (कुमा करह)। गुंबी 🗗 [गुन्बी] 💣 विशेषा 'चीमरिसंडी य मंबरीइडी' (वार)। मंबार केरी मंबर (हे १ २६)। मंत्रिका की हि पुष्पति (दे ६ ११६)। मंबिह नि [साजिप्त मनीड रंगार्ड सत्वाद्धी, ही (क्रम्पु)। मेजिहा को [मिजिह्न] मनीठ, रहाँको (平字) \* Y Y \* ) I सभार ग[सऔर] १ ह्युट इंस्त<sup>े हेर्न</sup> च मंत्रीर (प्रस्य स ७ ४° दुपा६०)। १

मंत्रकि -- संबुध

क्रव-विशेष (भिव)। संशीर न [ दे ] श्रह्णतन वॉक्त वं<sup>हर</sup> सिक्स (देद ११६)। संसुदि [सङ्घ] १ सन्दर, मनोवर (राष्ट्र)। २ रोजन कुनुमार (धीरा क्प)। १<sup>९६</sup> ध्य (स्पन व t)। मंद्रका चौ [दे] दुवती (१ ६ ११६ नाय)। मंगुष्ट दि [मक्स्क] १ तुन्दर, रमधीर, <sup>सुर्</sup> (सम १६२ कप्पा दिना १ भ नामः <sup>हिन्</sup>)। र कोक्त (लामा ११)। मुनुसा रेका [मञ्जूषा] र विधा वर्ष व मंश्रुसा ) एक नगरी (म र ६-----इक) । २ पिटाची कोटी चंद्रक (दुना ३१)

**क्ष्म्)**।

र्माठ वि [दें] १ शठ, धुवा, वदमारा । २ ई

बन्ध (वे ६ १११) । मंद्र सक मिण्ड ] भूपित करना सवाना । मंदर ( पद ) मंदित (पि ११७)। मंड सक [बें] १ आये वरना । २ प्रारम्भ-करना सबराती में 'मांडब 'को मंबद रख भरतुरहो चेतु (मनि)। मंह पूर [मण्ड] स्म 'तमासंतर च ए चचित्रदिवरिमार्ग करेड. मधल्म सारवएएं भोपयर्गकेश (उना)। मंड्रस देवो मंड्रड = मर्ट्स (नार---शङ्क मंहम , पुं [मण्डरु] चाय-विशेष माम महरा } एक प्रकार की रोडी (जा प्र १३% पन ४ दो: बुद्र ४३। वर्मनि ११६)। श्रीहरा वि शिष्टकी विभूपक शीमा बढ़ाने <sup>े</sup>" शोदसमूहर्म\*र्गं । बालाः 'ससि व (बच्च)। मंद्रगत मिण्डली १ मूत्र सुपा (पबर प्राप्तु १६२)। २ वि जिम्पक शोना बहाने-कामा (गडड कूमा)। स्त्री या (प्रायु १४)। धाइ धौ ["धार्ता] बाधूपल पहनानेशनी शसी (गावा १ १--पव ३७)। मंद्रस पूं (वे मण्डस) पान पूचा (वे ६ ११४ पाक स ११८; दूप २६ । सम्मत 16 35 मंडस व [मण्डस] १ समूह पूर्व (हुमा गबर मामत १६ )। २ देश (का १४२ दी दुत्र ४६ २४ )। १ गोत बृतासार बदार्थे (दुमा पड़र)। ४ क्षेत्र मानार से बेहन (टा वे ४--नत्र १६६) वदह)। १ चम-नूर्वे यादि वा चारबीय (सप ६६) यबर)। ६ संसाद, मध्य (क्य ६१ ६: अर्थ ६)। अस्ट प्रकार ना पृष्ठ रोत्र। य एक प्रचार की कृषाकार कार-प्यू (पित्र ६ )। १ शिका 'स्टब्ट वृत्तिवंदस्यसम् शिक्षां क्षेत्र मुक्तां (महर)। १ सुन्ता ना स्थान-विदेश (राज) । ११ अएरनावार परिभागा (तुन्त्र १ ७; स ३४१)। १२ र्रोकत संव (ठा ७---वन १६०)। १३ व मररायाकिरिटेप (रिकेट ११)। स नि ि बन् ] मएडन में बरिधमण बरनेराता (

(गुजन १ ७)। ाहिष पूर्व विषयी (मिनि)। मिक्षेत्र प्र मरक्ताबीश िधिपति । यही धर्प (भाष)। मंद्रस्त पुन (मण्डल) योदा का मुद्र समय का कासन (वद १)। पर्येस पू जिनेशी यक प्राचीन वैन शास (छॉदि २.२)। मंद्रसमा पून [मण्डलाम] तनशर, सहय (हे १ १४) मनि)। मैडलय दे मिण्डलको एक माप भारह क्म-भावकों का एक बाट (मए। ११४) । मंडिंड प्रिण्डसिय्] १ मर्ग्यकाकार वसता बाबु, वर्ड-बात बनेडर (मी ७)। २ माएड तिक राजा 'तेवीसे वित्वेकरा पुरुषके मंत्रनिरावासी हात्या (सम ४२)। ३ वर्षे की एक जानि (नएह १---नत्र ४१)। ४ न योष-विरोप जो कीरब योजनी एक साचा है। ५ पूछी उस मोत्र में सप्पन्न (टा ७-पत्र ३६ )। प्रत की प्रिती नवर विधेय पुजरात का एक वयर, को धाजकत भी 'मोडव' नाम से प्रस्कित है (सूपा ६१६) । मैडलिम वि [मण्डलिय] मएरमाकार बना 'मंडलियचंडकोचंडमुद्द्रवैदेशिखंडिय- । विरोहि (गुपा ४ वन्त्रा ६२) पदक् ।। मंडसिज वि [सण्डलिक माण्डलिक] १ मएडलाकारवाला । २ ई मॅडल क्य से स्वित पर्वत क्रियेप (ठा १ ४--पन १६६ परह २,४)। १ मएडसाधीश सामान्य राजा (रामा १ १ पर्व १ ४ दुमा दूव १२ मका)। मंद्रजी भी [मण्डसी] १ विट, भेगी समूह (छे ४, ७१ मण्य २ ४६)। २ सचानी एक प्रसार की याचि (ते १६ ६६: मद्वा)। व बुक्तानार मीवल-स्युद्ध (संबोध १७-3व)। मंडलीय रेपो मंडसिय = गएडनिया तर् वनवरवेशाद्विनकोमाद्विनमंद्रसौदशामीवं (सूत्रा चर हारे र--पत्र १२६)। मंद्रप 🖠 [मण्डप] १ विचाप-स्वातः । २ बल्ली बादि है बैट्टिय स्वान (बीव ३) राज्य ११: मद्राः कुमा) । १ स्तान धारि करने का मुद्दः 'म्हालनंडर्गनः 'भीवलमंडर्गन' (बच्चा

धीर)।

मेंडन न[माण्डरुप] १ बोन-निरोत्र। २ पूँची उस गीन में स्थाप (ठा ४--पत्र १६ )। मंडिका भी [मण्डिपेश्च] छोटा मरहा (कुमा) । संबद्धायण न [माण्डक्यायन] गोत-विशेष (H# t+ tt sw); संदायम न [मण्डल] समाना विमृदिद कराना । भाइ बर्से [धात्रा] समानेताली बासी (बाबा २ १४ ११) । मंडायप वि [मण्डक] समतेवासा (निष्ट १)। ) वि [मण्डित] १ मृषित (रूपा मेडिअ र्रे हुमा)। २ पूर्व प्रमणम् महासीर के प्स महाबर का नाम (सम १६/ विके १८२)। ३ एक चीरका नाम (समीकि <sup>७२। ७६)।</sup> \$बिस कृत [\*इक्षि] बैद्य-क्तिप (बचर २)। प्रचर्ष [पुत्र] मानाम् महानीर का कानां मछवर (कप्प) । मंडिज दि [दे] पेचितः कनामा हुन्या। २ विवास हथा 'र्वबारे हवनिविक्ता महितास्त्रेका मंदिए पासे । बञ्मेति वालमासा सर्वासमाशानि बञ्मेति ॥ (रमए ५)। र साने बरा दूमा। 'बह मंदित रागुमरञ्जरहो पंदू (बीर)। ४ पाएमा 'रापु मंदित व व्यादिकेत वाम् (स्वीव वर्ष)। मंडित इं दिं। पार, इसा प्रधान-विशेष (t + t(\*)) मेडी को हिं। विकासका, करूनी (दे व १११ काम)। २ स्त्र का सब रक्ष मात्र। व मोदी रहा, हैई (बार ४)। पाहुकिया धी [प्रास्तिया] यह क्यानीय अस है मीं पत्रा मीमें की हतरे बाज में रखकर दे बाजे दिया ना बहुछ (ब्राम ४)। मंदर ) क्षेत्रम् (वा रेवा वस्त । । स्टेंड हे दे हवा तह ताता)। मंद्रक्रमा ध्री मण्ड्किमा की

मंद्रिता विकास कार्या करें

4 (10 2) [th 18/2/2/20 (21)

45.0

संद पू [सन्तर] १ वह स्थिते य धिरायर (पूर १ २२४)। २ हानी तो एक नावि (श ४ २—वत्र २ ते। १ हैं ए सक्त प्रीता मुद्र (ताय सात्र १६२)। ४ यहन योहा (साय घर)। ४ गुर्च वह सकाते (यूप १ ४ १ ११ तात्र)। ६ नीच यन पुरत्नेत वाहितं वह म नेस्तर्थ (सात्र १६)। छ एव-करक ऐसी (न्याट घ)। उठिमया बी [पुण्यात्र] देशी-विशेष (देना १६ २४)। समा वि [माग्य] कमक्तिय (मृत्र १७६ महाः)। साम वि [सात्र सात्र वि [सात्रिय] वही पर्म (स घर ६ मृत्र १ १८)। सात्र वेतो सात्र (पुर १ १८)। सहात्र वेतारी, एक ज व

संद म [साम्या] र बीमारी, रोक 'ग व मंद्रेण मध्ये कोड विधियो कहन संजुमी का' (जुला २२६)। २ मूर्वीला वेषकूरी 'वासस्य महर्ग वीय' (सूच १ ४ १ २१)।

संद्रकल म [सन्द्राक्ष] करना, शरम (राज)। संद्रा ) म [सन्द्रक] देस-विशेषः एक प्रकार संद्र्य | का बान (राज डा ४ ४—पत्र २८१)।

मंदर पूँ [मन्दर] र पर्यंत-विशेष मेह वर्षत (मृत्य ध स्मा रश है र राज कल कुत ४०)। र घरवान विशवनाथ का मन्य नकुत (स्मा ११९)। र कारकीर का एक एता मरणहुमार का दुव (यहम र ६७)। प स्मा का एक पत्र (शिव)। प्र मन्दर-वर्षत का परिहासक के (व्यं)। पुर न चुर्री नवरनिकेश (रह)।

मंदा की [मन्दा] रेमन्त-की (बरवार ६)। र महुन्य की कर सदस्याओं में डीसरी मदस्य २१ से व वर्ष एक की करा (वंदु १६)।

संदादर्भाकी [सन्दाधिकी] १ पंपा नशे मानोरमी (रठन १ ४ १ पाप) । २ सम्बद्ध के पुत्र सन नी की ना नाम (पत्रन १ ६ १२)।

संदाय कि कि [सम्ब] शनैः बोने के 'संदार्थ संदाय पम्बद्धार्थ' (जीव है)।

संनाय न [सन्दाय] गेय-रिटेश (जे १)।
संदार पू [सन्दार] १ कश्युप्प-दिरोश (जुल १)। २ लारिका कुछ । १ न सन्दार कुल का कुल 'सवारवानप्रशिक्युप्पें (क्या यटक)। ४ परिचार कुण का कुल (क्वा १ ६)।

सींदर्ज कि [मान्त्रिक] मन्दराबामा मन्द्र काले व मींदेए मूडे (उच ६ १)। सींदर न [मान्टर] १ मह पर (बउड मिंह)।

संदिर न [मिन्नर] १ मृह पर (शउडा मि)। २ नगर विदेय (दक्ष भाष १)।

मंत्र वि [मान्दिर] मन्दिनवर का 'सीह पुरा क्षेत्रा वि य नीवपुरा मंदिरा म बहुणामा' (पटन ११, १९)। मंदीर न [वि] १ शंक्षय स्वका । २ मन्यान-स्त्रार वि ६ १४१)।

मेंदुय पूर्वि सन्द्वक] जनजन्त्र विशेष (पण्ड १ १--पत्र ७)।

मंद्रुय की [मन्द्रुय ] मस्त्र-साता (दुपा ६७)।

मंदोब्धि । स्थि [सन्दाद्धि ] १ रावधा-पली । मंदोब्धि । सि १३ १७) । २ एक विशिष पत्नी (टर १९० थे) ।

संदोशण (मा) । वि [सम्टोण्ड] श्रद्ध गण्य (प्राप्त १ ्र) ।

मंत्राउ पू [मा चातु] इरिजेश का एक राजा (पत्रम २२, १७)। मंचाक्य पूँ [मन्मादन] मेरा माक्छ 'जहा

मंभाइण द्वी सिन्मादन वित्य माइक 'बहा पंचादण (१ छे) नाम पिमिम्मं ग्लेबरी दर्व (मूच १ ६ ४ ११)।

सभाय पुँ [के] पान्न, शीमंत (वे ६ ११६)। संगीस (प्रण)। एक [सा + सी] कले का रिरोज करना प्रथम बेना। चेकू संग्रीसिनि (नवि)।

्या । मैमीमिय **रेको** मामीसिम्न (भवि) ।

संस तुंत [सांस] मोत, सोरत शिरित भारपारमों मेंत्र सर्थ हुए (सुप र है रहा । आपता धीचा पर्थ हुए हुए है र है रहा । इस हि [सन्] मीत मीतुर (सुब र रेप)। मान मिक्का मोत मुनाने का स्वाम (साचा र १ ४ १)। चवस्तु तुंत [चहुस्स] र मोत्यस्य कुत्रा । हिंद सोतन्यस स्वृत्ताता, साम-सनुस्कृत्यक्त भार्यस्थ

नेतकपञ्चणं (सन ६)। सस्पारि दिशन] मास-भाव (दुमा)। सि सम्पारि कि िरितान् विशे सर्व (पदम ६६, ४४ महा 'मेंसामिशस्य' (पदग २६ ५७)। संस न मिस्ति प्रजा का कुहा (साका ६११ ६६)।

मेमल वि [मांसल ] पैत पुर उपवित (पमादे १ २६ पण्ड १४)।

र्धसी को [मांसी] कन्नत्रव्य-रिग्नेप नयमांसी (परह २ ४--पन ११)। मेस पून [इसकू] चाडी-पूंस-पूनप के सुख पर ना नाम (मन ६ चीच पूमा) 'मंसू'

(हे १ २६ प्राप्त), लंगू (उना)। मंसु देशा मंसः लंगूलि (प्राप्तुकार (पाना)।

मंसुडाप न दि मासोग्दुकी पास-सरक (रिंक १८६)। मंसुड नि [ मासपन् ] मासनमा (हे २)

( नतुकार मासवर्गः । सावतरा (६ २० ११६)। | सक्ष्मित्र मुस्सिकेण्डेण] ऋषिनीकोणः (स्रीत

र४४)। सम्बद्ध पुं[सर्फट] १ कला, कलार बन्दर(गा १७२१ तर पुरस्त मुद्रा ६ ६२ १ २

७२१ कुम १ : कुमा) । २ मकदा बात बनानेवाबा बोद्धा (सावा वस पा ६२ दे ६ १११) । १ स्टब्स् का एक सद (रिया) । बंध पूं [वस्स] बनानिकेश नारावनान्त्र (बस्स १ ११) (संनाय पूं [संनात]

मक्य का बाल (पशि)। सक्य देव द [द] श्रांकालकार पीका-यूपल

(वे ६ १२७)। सकारी और [सफेटी] बाति वे वेती (कुन वे वे)।

मक्स (मा) वैनो मक्स (गिम) !

सबार वृं [साहार] १ भा वर्ष । २ भा के स्वीतकार्ती क्रमतीति तिरोव-मुचक एक साचीत करावनीति (ता क---पन ११०) । सबुण केदो संकुत (वच २६२) दे १ ६६) । सबाब वृं [वृं] १ सन्तरप्रकार्त परि कन्तर

स्काब हु [६] र धन्तपुरराव राज करार राज्यों के मिद्र बना<sup>त</sup> वाती राजि (वे ६ १४२)। र तुंबी बीट-विरोज वींडा पुत-राजी में पायोगों 'पंतोडों (तिबू रा सावमा वो १६)। बी. बा (वे ६ १४२)। मगय पू [मगय] यन्त्रशास-प्रतिद्ध हीत इय नि विदय भाग-दशक (मपः परि)। न्द बन्नुचें की बंद्या (स्वि) ।

मगर्तिया थै [६ मगर्गनदा] १ वेर्ध मा महिरो का क्या। २ मधी की पत्ती (रह 2 7 2x 28)1 मगर 🕻 [मार] १ मण्डनच्य जनवन् क्टिय (प्राप्त १ व की र बा बुर १३ ४२ व्या: १४)। २ साह् (बुग्थ २ ) वा 🕮 [सर्क्षाम] बाव-विटेन (चय

(स २, १--१र ७३) ।

दीर्द-(रहेच (रह) ।

र्राप्त क्षेत्र [मृगरारम्] बण्य स्टित

किन्य देरियों मानित मता वें (ग्राप्त

(--पर ७३) की सा के सामिता

सम्बद्धाः सम्बद्धः निष्यं न [र्नियी]

माम् । ई. व [माप] रेट स्टिंग (हवा)। मार्ग्स | बरस्द [बर्पम] बनस्त्र-सिटेग

(x3 2, 2 1x 15) 1

मगर्गिका ध्ये 💽 १ भावती का कुत ।

२ मोनगदा पूत्र पुरुषं वा मदर्शियी

वित्र वि [ वित्र ] मार्चका जानकार (योव २)। इ.वि.चि.] नार्थ-नाराष्ट (पू •४)। श्रुमार वि [शरुमारिन्] बार्य का धनुषायी (वर्ष २)। मग्ग वै (मार्ग विभावतः) (भग २ - २---पत्र ५७१)। २ स्वत्रपद-नर्गे सामधिक द्यारि बर्-कर्में (द्यूप ११)

मार्ग ) दे [क्] नरचान, वीखे (के ६, मार्गाम) देश के देश नुर २ दश दास क्यो । सरगञ्ज वि [सार है] संपरेतारा (वडस EE #1) 1 मगगन व [मार्गन] १ शायह (मृता ९४) । २ क्षण स्ट (पार्थ) १ व. बनोपरा बीज (रिने १३-१)। ४ वर्गला, रिकारणा, वयानीयन (धीर विशे र ममान") की [मागता] १ म्पेग्ल ममानवा शिव (उर पुर कर दहरे मनाना भेच १) २ कराव-पर्व के

वर्षानेत्व हार्य प्रतिवात विकासना वर्षा भौषक (राज ४ १ १३ चीरण रे)।

(बारत १२)। मणा क्री [सपा] १ इत्तर देनोः (ब्र 🕶 पत्र ३ १९४)। २ देशो सहा≠वध (धन)। मपाय 🐒 💽 सपदन् देशो सपत्र (गर् ft v 1) i मय बन्ध [सक्ष] याँ करना। सन्दर (का ₹ ¥ ₹₹\$) r

मध्मधेन (स्य ११७- बन्छ धीर) ।

(सम १११ वज्ञम २ १११)।

मंपन पु [मंपनम्] १ एन्द्र, देन-धन्न (रम्म

सपराक्षी [सपदा] ध्वती १८६५ द्रीय

'मनक कि नाजबक्ति म पूरवीर्छ नाजनेगरी

कुमा ७ १४)। २ तुत्रीय चम्बर्सी छना

मब (मा) देशो संब अंदुरण्याह दुव वर्ध (वरि) । सवन [दे] नर मैत (१६११)। मच हुई मिल्पे नतुःस, बहुत (व मचित्र) १ रसः नाम तुन्द (

रे याणो । स्टेस दु['साड] बल्य-

सोक (कुम ४११)। खोई य वि किमेकीयी सनुष्य-सोम्ब से सम्बन्ध रखनेवासा (सुपा 288)1 भवित्र वि [वे] मन-पुक्त (वे ६ १११ यै)। मंदिर वि [मदिद्] पर्वे करनेशसा (कुमा) । सक्तु पू [भूत्यु] १ मीव मरण (प्राका सूर २ १६ ८ ब्रासू १ ६० महा)। २ यम ममराज ( पड़ )। १ रावस का एक शिनक (पतम १६ ३१)।

सच्छ पुमिल्स्य] १ मध्यमी (शाया १ १ तामः जी २ प्रासुर )। २ प्रा (मुन्ब २ )। ३ वेस-विशेष (इक स्वि)। ४ सक्तर क्या एक मेद (पिय)। स्रोतान िश्च व्यव्यों को पुचाने का स्वान (पाचा २, १, ४ १)। अंच पू ("धन्य] मन्द्रीमार भीवर (परह १ १ महा)। शब्द पून [संस्य] यस्य के ध्वकार की एक बनस्पति (माना २,१ १ ५ ६)। मण्ड(डिसा भी [मस्यण्डक] बर्डराईस एक प्रकार की रास्कर (पराह २ ४ ए।बा र रेण पर्वारेण विकारतक साथक)। मन्मंदी थी [मत्स्यण्डी] शक्कर (मण् 3×0) 1 मध्यतंत देशो संघ = नन्त् । मन्दर्भेष **रेदो** मन्द्र**म् नंत्र** (निपा १ «---पत्र **≖**₹) 1 मच्चर १ [मस्सर] १ ईम्बी हेव स्ता.

पर-संपत्तिकी सन्दिष्णुता (एव)। २ कोर कोष। ३ दि हैंचांतु हेंदी। ४ क्मेबी। प्रपत्त (है २, २१)। मच्छर व शास्त्रची देवा हैप कि 11)1 मन्द्रिरि वि [मत्सरिम्] शत्करवासा (वर्ष् १ व क्या पाप ) । इसी वर्ग (मा क्या महा)। मन्द्ररिज वि [भासरित, मासरिक] क्यर बेको (परम = ४१। पंचा १ वर, मॉब)। मण्याच रेबी मण्यार = मतार (हे २ २१। पद्र)।

सच्छित्र देवी सविकाम=माधिक (पव

४---भाषा २२ )।

मच्छित्र वि [मास्तियक] मन्द्रीमार (था १२ समि १८७ विया १ ६३ पिट ६३१)। मिक्का (मा) देवी सास=मातु (प्रारु 1 (5 3 मच्छिना देखी मन्द्रिया (१६६२ )।

मिक्सिया ) स्व [मिक्सिका] मन्द्री (यापा सम्बद्धी है है के को है । उसे १६ ६ प्राप्त सुपारवरै)। सका सक सिद्द भीनमान करना । मण्यक मज्जारी, मण्डाच्या (सव सूच १२२१ वर्मसं ७८)। सञ्जयक मिस्जी र स्तानकरता। २ क्षमा । अपनद (हू ४ ११) मण्यामा (सहा १७ ७ मर्नेस ६१४)। सह-

मक्रमाण (ना २४६ छामा १ १)। चंद्र- मजिकाम (महा)। प्रयो चंद्र-मजाविचा (ठा १ १---पत्र ११७)। मखा सक स्थिती साठ करना मार्गन करता। मन्त्रद्र (पह प्राकृ ६६ हे ४ **१ %**) 1 सक्य न [संच्ये] बारू नविच (धीन) चनाः हे ९ ९४ मीर)। इन्त कि [वस्] मविधा-सोहप (मुख १ ११)। य वि िप निव-पान करनेताचा (पाच) । योभ वि पित् विश्वते मच-पान किया हो वह (विया १ १---पत्र १७)। मजाग वि [माधक] मच-सम्बन्धी 'सल्बं बा

मण्डमं रही (दह १, २ १६)। मक्षण ग [सम्रात] १ श्लातः १ ह्वता (बुर ३ ७६: इन्यू पडक दूमा) । पर न िंगही स्वत्पन्न (ग्रामा १ १--पन १६)। धाई की चित्रती स्तान श्रपने-। नत्ती वासी (शासा १ १--पत्र ३७)। पाछी की विश्वी वही यन (कव्य)। सळ्यान [सार्चन] १ साठकरना रुद्रि (कप्प) । २ वि मार्जेन करनेताना (कुमा) । यर न ["गृष्क्] गुम्ब-मृष्क् (कथा धीप)।

मव्यर रेको मैजर (शाह ४)। की री को बुलगण्यारे कंत्रियता प्रविदारिक शरह (98 \$ 278) 1 मञ्जूषिम वि[मञ्जित] १ स्वरितः। २ स्त्राकः प्रांत्र चरे रे पेकिय सववदसहयाज

मन्त्रवियाँ (बन्ना १ )।

मळा भी हि मर्यो ] मर्वादा (१ ६ ११६ (भाष) । सद्या की सिट्या वातु विशेष वर्षी हुई।

के मीतर का दूश (बर्फ)। मञ्जाइक्ष वि [सर्योदिन्] मर्भावायामा (निष्

मस्त्रायां की [मर्यादा] १ म्याप्य-पत्र-स्विति व्यवस्था 'रम्खामरस्य मञ्ज्ञमा' (प्रास् ६८) माक्स)। र सीमा हर, सक्बि। ३ कूस किनास (है २, २४)।

मळार वृंद्धी [माळार] १ विद्वा विसाव (कमार्ग्सन) । २ वनस्यति-विशेष "बल्यून पोरनमञ्जारपोदनस्मी य पालका (पस्पा १---पत्र १४) । की "रिखा, "री (क्यू पाप)। मखार र्षु [माजार] शापु-विशेष (भग १५---पन ६८६)

मकापिक नि [मिक्नित] स्तपित (मक्त) । मिक्रिम वि दि । धनसीकित निरीकित । २ पीत (देद १४४)। मिकाल वि[मिकाल] स्थातः (पिक४२३ महाः पासः) ।

मजिक्स नि मिर्जित शांठ किया हुया (पक्य २ १२७ कम्प ग्रीप)। मञ्जिला की [मार्जिया] रवाचा भरम-विशेष---वही शहर धादिका बना हवा

भीर मुगन्त से बासित एक प्रकार का बाह्य-

भीक्एड (पाच वे ७ २ एव १९१८)। मजिय पि [मजियत्] मञ्ज करते की बादश बाना (बा ४७३ सए)।

मञ्जोकः वि वि । समितव नृतन (दे६ **११**€) 1

सबस्त मृद्यिषय है। याचरात सम्बद्ध बोच (पामा कुमा। वं ३६ प्राप्तु ४ १६७) । २ शरीर का धनमन-विशेष (कप्पू) । ६ चंदना-विधेय चलव बीर पराव्ये के बीच की र्चेक्स (हि२ ६ प्राप्त)। ४ वि सम्बद्धी बीच का (प्राप्तु १२४)। यस यूं विशा देश-विशेष पंता भीर शतुना के बीच का प्रदेश, मध्य प्रान्त (बढड) । शय वि विश्वती १ बीच का सम्पर्ने स्वित (धावाः कप्प) १ २ पुँघपपिक्राल का एक केद (छोंकि)।

(बन्सा १२)। सट्ट दि वि] धनसं धानती शन्द वह (वे सक्तक वृं [इ] नापित नाई, इवाम (दे ६ ६, ११२३ पत्य) । मद्रविस्थि रमानित रुक्त (सूप १.६ ११६) । १२) भीप) । १ मध्य भिन्ना (सम १६७) सामस्त्रार ९ हि नेन्द्रर, मध्क प्रशासक (दे६ १२१) तिक २०) तमा दाके निचे वेद ७)। ३ दिसा ह्या (धीत हे २, शहर मुद्द अस्तुपाअस्य है छै। १७४) । ४ व मिरन मरिन (हे १ १२ )। चा १): 'चमीनविखयाद मज्यसारीम्म' भड विदि सूती १ मध इसा विशीव (दे (मार ७)। ६ txt) पात्रीन्य समात्री (बचा txx) 'मॉर्थ (मा) (प्रताह १३)। "Tइ. पिर सामाविश्र व [दे] मध्यन्तिम, मध्यक्र (१ ६ ि विन् ी निर्मीय पद्म को सानैयाना (2x)

सामंदिजन [सम्पन्ति] सध्यक्ष (१.६

सार्मसामः न सिम्पसम्य दिकशीच (कस्

मामध्यस्य रि[बाष्याहित] मध्यक्र-संबन्धाः

सामक्रम न [साध्यरस्य] तरस्यकः, मध्यन्यता

मध्यम दि [सप्यम] १ थय-वर्टी बीद स

(६६ ४ ) बन ४३, ४मा: बन्ना बीचा

मिया ( १ पुर १ २४४)।

(उप ६११) संबोध ४४) १

(वर्षीक्ष प्र)ः

मानगार क्षेत्र मानजार (रात्र) ।

( YF

(इम ११६)।

(मर)। सिय र् [मय] स्वतान (निष्

"बाह पूं विदाह विका, पहाँ पर राज क्री भते होँ (याचा २,१ ११)। यूमिया 🛍 [स्तुपिका] भूतक के स्थान गर बनाया वया क्योग स्तूप (धावा २,१ १६)। सङ्ख पूँ वि]भाराज वर्ताचा (दे ६ ११४)। मक्बीवम्स को [बे] रिर्जबन्द्रः पानशी (दे ६, **१२२)** । सब्बद् वि [दे] १ सन्द्रः क्रोटा (१ ६. ११७) पल्ट छरो)। २ स्वलंप बोहा(या १ ६८ मुख्या बण्ड्स ४२) । मबदर प्रेडिंग व यमियात (१६ १२ )। सब्बद्दिय सि [दे] यस्पोद्धतः सून किया हुमा (परंद) । सबहुद्ध विदिशेषण धौटाः भशक्तियार कि दुइ इमीए कि वा दनेकि तनिसेकि (बड्या ४६)। सर्विमा 🕏 💽 सम्बद्ध 🖏 भारत महिला

( \$ 4 22x) 1

धीरण (दे ६ १४६) ।

१२६ सक्त ६०)।

मह्मक्ष्म वि [वे] १ इत विधास्त । २

महु बक [सुद्द] वर्तन करता । यहुद (है ४

सङ्ग्रुप पुंदि सङ्गुक] क्षत्र किरोप (राम ¥4) 1 मद्वा को वि] १ बसारकार, इठ, वबरवस्ती (३६,१४ पाम्स सुर ३ १३६ सुख २ ११)।२ बाक्ता हुकुम (वे ६ १४ सुपा २७६)। सङ्ख्रिल वि [सर्दित] विश्वका मर्बन किया यमा को बहु (हेर वद पद्धि २६१)। महरूभ रेको मद्दुअ (एन)। मह रेबो सङ्ग्रा महत्र (हू ४ १२६)। संद पून [संठ] संन्यासियों का प्राप्यय वृतियों का निवासस्थान 'मढो' (हे १ १६६ सुपा ए३४ वण्या ३४ मनि)ः 'गढ' (प्राप्त) । महिअ देशो महिल (बुमा) । मडिस्र वि [व्] १ वर्षित पुत्रचाती में "मञ्जू" 'एपाउ घोसहीयो विवाजमहिमाउ वारिण्या' (सिरि ६७)।२ परिवेष्टित (वे २ ०%) पत्प)। मही को मिठिश किए। मठ (बुपा ११६)। - भण सक् [सन् ] १ मानना । २ वानना । ३ चिन्तुन करता। मएक मस्प्रसि (पक् कुमा)। कमकु सणिज्यसाण (मन १३ ७) विसे 5 ( F ) 1 मण पूर्त [ सनस् ] मन, धन्त करण वित (मग १६ ७ विसे ६६६४ स्वय्त ४३, इं २२ दूमा प्राप्त ४४ ४६ १२१)। कार्याच की [कार्यात] मन का घर्षमा (पि ११६) । करण न ["करण] विन्तनः पर्यासीयन (धारक १३७)। गुच वि िंगुप्त] भन को संयम में रखनेवाला (मग)। गृचिकी [गुप्ति] मनका सेवम (उत्त २४२)। बाणुअ वि[क] १ मन को वातनेवासा मन का वावकार। २ सुन्दर, मनोद्धर (प्रतद्व १०)। सीविध्य नि िर्धाविक] मन की घारमा भागनेवाला (पर्याः १ २--पत्र २व)। स्तोधार्यः [ैयाग] मन की केटा, मनो-प्यापार (का) । का, प्यु प्युम देवी जाणुम (शह १८ पर्)। यंमणी भी [क्तन्मनी] विद्या-विरोध मन को स्टब्ब करनेवासी दिव्य शकि (परम ७ १३७) । नाज न [द्वान] अन वा साजारकार करनेवासा ज्ञान सतः

२१)। नाणि वि [कानिम्] मनः-पर्यव नामक बानवाबा (कम्म ४ ४ )। पट्यति की [पर्याप्ति] पुद्रतों को मन के रूप में परिएात करने भी शक्ति (मन ६ ४)। पञ्जब पू ["पर्येद] ज्ञाम-विशेष दूसरे के मन की धवस्या को जाननेवाला बान (मन भौप विकेदक्षे । पद्मयि वि[पर्येषिन्] मन पर्में ब ज्ञानवाला (पव २१)। पसिया विद्या की "प्रश्नविद्या" मन के प्रस्तों का एतर क्षेत्रामी विद्या (सम १२३)। विलिख वि [बिडिम्, क] मनो-बसवासा हक मनबासा (परह २ १ झीप) । शाहप्र वि [माइल] मन को मुख्य करनेवासा, वित्ताकर्षेक (गा १२०)। योगि वि ["सोगिन्] मन की चेष्टावासा (मग)। यस्तात्राकी [वर्गणा] मन के रूप में परिख्त होनेनाना पुत्रन-समूह (राज)। बळान विज्ञी एक विद्याबर-नगर (इक)। सिमिष्ट् की ["सिमिति] मन का संयम (क्षाय-पत्र ४२२)। समिम वि ["समिख] मन को संयम में **रब**नेकाला <sub>।</sub> (मग)। इसि प्री दिसी इक्टनियेव (पिन)। इर वि [क्र] मनोहर, मुन्तर, विताकर्षक (हे १ ११६ मीम कुमा)। €रण पूंग [\*€रण] निक्त-प्रसिद्ध एक मात्रा-पद्वति (पिव)। भिराम भिरा मेड वि [ कमिराम ] मनोहर (धम १४१ धीय उपयु १२२ इप २२ थि)। ास वि ["ब्नाप] मुन्दर, मनोहर (सम १४६ विर्पा १ १ मीच कला)। देखी मणो । मणं वेची मजर्म (प्राकृ वेद) । मणेसि वि [मनस्पिन्] प्रसस्य ननवाचा (दे १२६) । भी याँ (दे १२६)। मर्णसिम् १ की [ मन शिका ] तान वर्ण मणसिला की एक उपवातु ममसिन मैनरिक (दुमा है १ २६)। मणग पु [मनङ] एक बैन बल-पुनि महर्षि रान्यंत्रवसूरि का पूक्त और रिप्र्य (कृप्या वर्मीव ६८) । रेको मजय । मज्युक्षिया को [क्] योठिका (चय)।

मण्ण म [मनत] १ ज्ञान जामना। २ सममना (विते १४२४) । ३ विन्तन (भावक \$ \$ to ) 1 मणय पू मिनको द्वितीय गरक-भूमि का धीसरा नरकेन्द्रक---गरकाबास-विशेष (देवेन्द्र ६) । देखो मणग । मणर्यं च [मनाग ] मरूप घोड़ा (हे २ १६७ पाम पर ) । मजस रेको मण-मनस् परस्तमणसो करिस्सामि" (परम ६ १६) 'बामी भेव वनस्वस्य होइ बाहीसमणसस्य (प्रोप X 80) 1 मणमिल ) देशो मणंसिख्य (कुमा, है १ मणसिखा रि६ को ३ स्वय १४)। मणसीक्य वि [मनसिकृत] विन्तित (पर्य वे४—पथ ७८२ सूदा २४७)। मणसीकर सक [सनसि + कि] विन्तम करना मन में रखना। मण्डीकरे (उत्त २ २३)। मणस्सि वैको मणसि (कर्मकि १४६)। मणा देवो मणय (हे २ १६१, हुमा)। मजाह ) (पप) क्रयर देखी (कुमा भवित्र पि मजाडी रेश्भे हे ४ ४१= ४२६)। मणाग क्यर केवो (उप १६२ महा) । मणास्र वेद्यो मुणास्र (यन) । मत्राखियां ही [मूणांखिदा] पच-इन्द हा मून (तंदुर) । देखो भुजास्त्रिजा । मणासिद्धा वैको मर्णसिद्धा (हु१ २६) R TY) : मणि पूंची [मणि] परवर-विशेष पुत्रस धादि एन (कप्पा धीपा कुमा जी ६ प्रामु v)। अंगर्दु [अङ्ग] क्ल-कृत की एक वार्ति को बाजुपरा देती है (सम १७)। मार पुं [कार] बीव्री यजी के बहती का व्यापारी (३ ७ ७७- मुद्रा ७१) सामा १९ वर्गेनि १६)। क्रंचार न **ैंकाकात**] दल्पि-परंत का एक रिकार (ठा२,६—पद्यः)। इत्यः स["कूट] दचक पर्वत का एक शिवर (शीव)। क्लाइअ वि [<sup>\*</sup>समित] एन-मध्ति (नि १६६)। पहचा की [पविता] नवरी-

<b>Fuo</b>	पा <b>इम</b> स <b>इमहण्</b> यो	मणिस—गण्य
मिरोज (किंता व दे)। "बृह् दू ["पृष्ठ] पुर किंदा-वर पूत्र (महा)। "आता त ["बार्ड] मृत्यु-विरोज मिरा-वाता (पीन)। तीराज व [तोराज] नार-विरोज (महा)। पोता व [तोराज] नार-विरोज (महा)। पोता व [तोराज] नार-विरोज (महा)। पोता व [तोराज] नार-विरोज (महा)। पाता व [तोराज] त्यु किंता पुति (क्या)। मार् व [महा] पुर किंता पुति (क्या)। मार् व [महा] पुर किंता पुति (क्या)। मार् व [महा] पुर किंता पुति (क्या)। ब व [महा] पुर क्या वाता विद्या तिराज्य, पाता विद्या वाता विद्या तिराज्य, पाता विद्या वाता वाता विद्या तिराज्य, पाता विद्या वाता विद्या विद्या वाता विद्या विद्या वाता विद्या विद्या वाता वाता वाता वाता वाता वाता वाता वा	वितेन 'चोहहमणुचोपुण्यो' (हुना राव)। व तुत्र मधुन्य 'केतामी मणुचं (पत्रम २१ ६६) कमा १ १६ २ ११)। ४ त एक वेव-विमान (धम २)। मणुम १ मिनुजा ! र तुन्य मनव (बन्त, क्मा है १ ० जाम हुनम छ २२ मानु ४४)। २ घषणा व विकास करावणी 'तिरिया मणुम व विकास करावणी 'तिर्या प्रदेश मुनुजोपु । यान नामी (जार १२ १४)। मणुस व विज्ञा मुनुजार क्यो (गुम २४)। मणुम १ वि मानोज । गुमर मणेहर मणुमा (वाम वर ४२ थी, वम १४६) मणुम १ वि मानोज । गुमर मणेहर मणुमा (वाम वर ४२ थी, वम १४६) मणुम १ विशे मानुग्या १ मान्य मान्य मणुस १ वि मानोज । गुमर मणेहर स्वर्णा १ विष्य मानुग्य १ मान्य मान्य मणुस १ वि मानोज । गुमर मणेहर मणुमा १ वि मानोज । विश्व मानुग्य वा १ वि मानुग्य १ वो विर्या प्रदेश । मणुम वर १ वो विर्या प्रवर्णा । वेच मानुग्य । वो विर्या प्रवर्णा । वेच मानुग्य । वेच विर्या प्रवर्णा १ वेच विर्या प्रवर्णा । वेच विर्या प्रवर्णा । व्या प्रवर्णा । विर्या प्रवर्णा । विरा	द्व प्रमानिकोन 'वारियर छोनाविषयोगित- बतुर्वोद्यमणोगर्थ' (उस्य १ — वर ११)। व्या स हि [ को नुस्य कोस्ट (हे २ वर १ वर ११)। मान ही [ मान] सम्मेर, बन्दर्स (गुम १वः निष्म)। मिरामिणिक हि [मिरामियो ] प्रमुद्ध हिमामोगित (प्रमुक्त १ क्या १ मान हिमाने मानिक कर्म (क्यू)। मानिक केसिमामित हिमाने ह
		.,,,,,,,

888) I

बेखी १७)।

मण्गमाण (ताट बैत १६६)।

मण्या देखो समा (स्व)।

मण्य देखी संगे (रूप)।

मण्जिय देनो मिमिय (स्त्र)।

वसै, मिएलुज्बद् (कुप्र १०६)। वह

धहंकार-निषद् (प्रीपः कप्प) ।

प्रियं महद्दियं सावनियं (सूम २१ ५७)

Ęsę

वासा (ती १)।

मदल पू मिर्वेची बाय-विशेष मुख्य कृरेग (दे ६ ११६: सूर १ ६८ सिरि ११७) । मद्देश्चित्र वि [मार्देश्चिक्र] मुरंग वजनताना

(तुमा २९४: ११६)। सद्य न [सार्वेच] मृदुवा नवता, दिनव मइपि वि[माद्यिम्] नम्न निमैत 'प्रण्य

माना)।

(इह४ वव १)।

मद्वित्र वि [माद्विक, व] कार रेगो महिन्न देखो महिन्न (पाप) ।

मदो और [माद्रा] १ सका शियुक्त परी मा नानाम (नूम १.१ १.१ टी)। २ धना पारह नौ एक की ना नाम (बेखी १७१)। मद्दुअ र् [मद्दुध] भगगत् महाशेर का राजगृह-निजासी एक उत्तासक (मन १० ०---गत्र ७६ )। सव (मा) देखों मय = मृत (प्रारू १ ३) । भन्म देनी मयण (स्थन ६६ नार—पुच्य

मदुद्ग पूँ [मदुगु क] पश्चि-निशेच जन बायम (मय ७ ६-- पत्र १ ६)। रेखी मध्याः मद्दुग रेप्रो मुदुग (एम) । मधु रेखो महु (पंड : रंगाः रिय) ।

मधुपाद पु [मधुपात] एक म्बेन्द्र-जाति (मृष्य १४२)। मधुर रेपो महुर (निष् १ माह ८१)। मधुनित्य देवो महुनित्य (हा ४ ४--- १व २७१) । मपूला थी [दे सपून्त] बार-ततः (एव)।

सन प दि ] तिरेशर्षेत्र घण्य वट वही (रूमा) ।

मझ रेगी मण्य गयद, नप्रति (पाना गया) मम्पर्ते मन्तेनि (र्रमा)। समें महिरबाइ

मनुग्य रेगी मनुग्य (चेट घर) ।

(मरा) । बा सर्वत सन्नमात्त (ग्र १४ १७१ माना मन गुत ३ ७ तुर ३

tor) i

म्रज्याण म [मानन] मानना भारर (उप मण्यु स्प्रो सन्तु (शा ११३६ ८३६ ७१३

मत्त नि मित्ती १ मर-पूक्त, मतदामा (बया प्रामृद्धा १८ भवि)। २ न. मर्घ कारू (ठा ७) । ३ मद नशा (पद १७१) । अच्य भी ["जसाँ नरी निरोप (ठा २ ३ ६४)।

भत्त रही अस्य व्यात्र 'वयरामतमिद्रारा' (रंग) । मत्त म [असब साब] पत्र भावन (पादा २१६६ कोप २४१)। देखी मत्त्रपा मच (बार) देखो शब = मध्यै (मिनि)। मर्चगवर् [मसाङ्गक, द] क्याद्रण की

एक बाति मच देनेताला बस्ततक (सम १७-पर १७१)। मचंह र् [मानज्ह] मूर्व र्रात (मम्मत १४१ निरि१ च}।

मत्तगन दि दिस्सव पूथ (दूलक १) । मत्तरा ) पूर्व [अस्त्र सात्रक] र पात्र मत्तर्य ) मात्रन । र छोटा पात्र विष्ण्यको

मतमी होद" (बढ़ १ बप्प)। मत्त्रय देनो सत्तम = ६ (बुनक १६) । मचर्ग का लि । बतालार (दे ६ ११६)।

मसदारण र्न [मसपारण] वर्रहा, वरानदा यानात (दे ६ १२६) तुर ३ १ मॅर)। मत्तवार र् [दे] मतरात्रा, मरोग्मत (दे ६

१२१ यह ह्युप्त २ १७- मुसा ४८६) । मचा थी [मात्रा] १ परिमाछ (रिड ६६१)। १ प्रीय पाय हिस्ता (म ४०३) । १ नवय

ना नूष्त्र नाप । ४ रूप उपारत् नागराणा बागुरिया (रिब)। ३ घटा रेश नव (पाप)।

मत्ता च [गरा] जान्दर (न्य १ १ २ **1**3) i मन्त्रपंतर् दिमनायम्यी वरंग वय

मा (दे १ १३३ गुर १ १०)।

पत्र २१)। पद्र भी [यती] मारो-विशेष दशार्खेक्य भी चत्रपानी (पव २७१)। नत्व मस्याग है र स देन्द्रा चीत्र)। स्य वि मस्यय िस्य छिर में स्वितं (मउड)। "सिक्षि पूर्विसिक्ये] शिरोमणि प्रयान **पुष्य** (स ६४६ टी)।

सत्यय पूर्व सिस्तक येग में प्रम मादि ना मध्यभाव-धन्तासार (धाषा २ १ ८ **4)** 1 मध्ययघोय वि दि धीतमस्तक] राष्ट्र से बुद्ध एनामी से मुक्त किया ह्या (छाया

१ १—पत्र ३७)।

मस्पूर्तुत र वृ [मृस्युसुङ्क] १ मस्त्रक-स्नेह म भुलुप । निरं में से निरंत्तता एक प्रशास का चित्रता पदार्वे (पर्यक्ष ११३ तेषु १)। २ मेद का सिम्बस मादि (छ। १ ४—पर १७ मग्रतेद्वर )। मधिय देखो महिश्र = मपित (पएह १ ४-पत्र १३)। सब्देखो सय = मद (पुना प्रयो १६ ति २ २)।

मद्गमना(गा) रेवा मयगसद्याम (पण्ण १—पर १४)। सद्या रेती संयणा = महना (ग्रावा २—पत्र २११) । सद्गिज वि [सद्नीय] वाबीशाच्य बदय-

वर्षक (सामा १ १--वन ११ थीन) ।

मदि देगो सन्म्मा (मा६२ कुनाति १६२) । मदाज देगी मन्ध (ब १६२)। मदुषा देगी मत्रह (चेर) ।

मदाली की [दें] दूरी दूर बर्ग बस्तारी र्षा ( पर् ) ।

मदगर [सद्] १ पूर्व करता। त्राप्तिस करता भग्नता सत्त्यः। वहा£् (करत) । वर्षे महीयाँ (माट-मृत्य १३४) । हेर

मर्दितं (शि १८१)।

<b>FUR</b>	पाइमसहमहण्यपो	भ <del>्रम-</del> गय
सम्म देशो साण - मानप्। इ.सम्म समाय सम्मिष्ण समित्रसम्ब समिय (दर १६६ मोवि ७३) प्रति सुर १ देव	समाइय वि[समायित] निकार ममठा की वर्ष हो बहु (याका)। समाय वि[के] बहुछ करना। मनायंति (का १ ४६)।	(पदम ६, १६) । १ एक विधायर-गरेस (पदम ६ १) । इर पू बिर] क्रेटनावा (मुंब ६, १) ।
तुमा क्ट्रास्ट का १ के स्पन दशा संक्रा)। मजाओ [मनन] १ मित कुकि (ठा १ स्था पत्र ११)। २ सम्बोचन चिन्तत्र (सुस २ १ ४१: का १)।	प्रमाय कि [ममाय] मनक करनेवाता (निद् १६)। मसि कि [मासक] सेए सबैस्ट 'सर्मवा सर्मि का' (सूस २ २ १)।	समानि [सुत] परा हुमा कीव-परित (छाया १ १० ज्वा गुर २ १०० प्रासु १७ प्राप्त)। किया न [कुरस] मराउ के कससामें किया कातासाह सादि कमें (विना १२)।
मज्ञाकौ [मान्या] शमुख्यम्, लीकार (छ । १—पक्षे १९) । सज्ञाय देशो सभा≂ मानस्।	ससूर तक [चूर्णम् ] चूरता। ममूखः (बाला १४व)। सन्म कृत [सर्मेस] १ जीवम-स्वात । २	सय पुन [सद] १ वर्ग धनियाना 'एयाई समाई दिनित्र बीच' (सूच १ १६ १६) सम १६ वर ७२० टी धुना। कम्म ६
समाविष वि [सानित] मनस्य हुमा (सूपा १९९)। सभिम वि [सत] सलाहुषा (सुपा६ १८) दुसा)।	सन्ति-स्वान (ना ४४१) व्या १११३ हे १ १२)। १ मरुखका कारखा-मूत नवत सावि (सामा १ म)। ४ द्वत बाटा (प्रामु ११)	२६): २ हानी के मएड-स्वत से भरता प्रवद्मी पदार्च (स्तुस्य १ १ — पत्र ६६: कुमा): ३ सामोद, हुएँ: ४ कस्तुरी: ४ मस्तुत सन्द्र : ६ तद बड़ी नरी: ७ नीर्म
सम्मु पूं [सम्यु] १ क्षेत्र ग्रस्ता (सूपा ६ ४)। २ केया दीनता 'सोबसमुब्युस्पस्स- समुदशा' (पुर ११ १४४)। ३ महोदार।	तुना ६ ७)। ३ पहल्य ठाल्पर्य (यु २०)। य दि [ग] सर्य-वाषक (छन्द) (छन्न १ २३ तुक्र १ २३)। सम्सक्त दुवि] वर्ष प्यक्तिर (युर्)।	हुव्य (बाज) । करि हुं [करिज़] स्वताना हाथी (सदा) । यस्त वि [करिज] १ सव छै करूट, वरो में बुठ 'सम्बनक्रुंबरनमधी'
४ शोक परव्योतः । ४ अनु सत्रः (हे २ २६/४४)। सन्तुद्धय वि[सन्त्रवित] सन्तु-पुषः दुन्तिः (सुव ४ १)।	सम्मद्धा धी [प] १ जक्यका । २ वर्षे (१ १ १४१) । सम्मण व [सम्मत] १ सम्मक वक्त (१२	[पिंग)। २ थूं हानी (सुपा र है रै १ तथः पाम वे ६, १२१)। १ फल्मियेप (पिंग)। "पासणी जो ["नारानी] निया नियंप (पतम ७ रे४)। अस्स थूँ ["धर्मे]
समुस्यि दि [दे] उद्यान (स १६६)। सम्रोक्को सच्चे (दे १४१) रेका)। सच्यन दि] सन्द्र, बैटि टिख य सह बद-	दृरंदंदं १४१ विषा १ ४) वा २६)। २ वि सम्मद्भ वचन वोचनेवादा(सा १२)। सम्मद्भ दृद्धिं १ मस्त, रूपर्यः। २ दोप प्रस्ता(देदं १४१)।	विद्यानर-वेत के एक राजा का बाम (पड़म र, ४९)। "मौजरी की ["सड़सी] एक बी का नाम (महा)। वारण वृ ["बारम] मक्ताबा हमी: "मस्वारतो व मतो निवा-
छेत्रो बारोपेक य उस्त इट्टम्प्यास्ति' (कुपा १६९)। सम्मीसाडी ) (वप) की [मा मैपी ] बाग्य- सम्भीसा } कफा (हे Y ४२२)।	प्रसा(क्ष (१६)) सम्माजिका की [के] जीव पश्चिम (१६ १२व)। सम्मर पूर्णिसमर] रुज्य पर्धों की धावाय	विश्वास्त्र वर्षात्री (पद्य)। स्याप्त्र [सूर्य] १ इपिछ (दुवा ज ७२० दी)। २ पतु, बातवर। ३ द्वारी की एक
ममकार पूँ[समजार] मनल मौजा ब्रेम स्मेद (वच्च २ ४९)। समज्ञम विमिन्नीय] मैरा (दुच २ १६)।	(य १११)। मन्मद् पूं [मन्मय] कायदेव कल्पां (या ४६ यवि ११)। मन्मां की [व] मानीः मानुस-पती (दे ६	वर्षितः ४ वक्षक-विरोधः । १ कस्तुर्यः । १ सक्दर राशिः ॥ कस्त्रेयसः । « यात्रवः, स्रोयः । १ वक्द-विरोधः (१ १ १२६)। विक्री की [विदी] इत्रिस् के निर्देशिक स्थान वैत-
समत्त्र न [ससत्त्र] समतः, बोद्धः, लोदः (तृतः ११)। समता की [समता] क्रमर वैको (तेवा ११, ६२)।	११२)। संयन् सिठी सनन बान (सम्र २.१	वाली (मुरंश १६८ मुदा ६४१८ हुमा)। लाइ दुंिनाम] चिह्न (च १११)। लाहि दुव्य [नामि] कलुरो (तास दुदा २ ३
ससा वक [ससाय्] नमता करना । मपाइ, नपाव्य (तुम के के ४२ दन) । वहु- ससायमाण, ससायमीण (धाका तुम क ६,२१) ।	'श्रमधो मर्से (बाय्य धम्मत १२)। ४ वि	परा): तज्हा की [मुख्या] हुए में क्व प्राप्ति (के से से, को)। तज्ज्जिमा की [ज्ञीयाम] वही सर्वे (पि केश)। तिज्ज्ञा केवी तज्ज्जा (वि.स.४)। तिज्ज्जा केवी
सम्प्रदेशियस्थित् मिमकाशांका (सूच १ ११४)।	मन वृं [मय] १ तर् क्ट (शुव ६, १)। १ सकार, बचर, जननमृतस्यक्तेश्वरि—	वर्णिक्षा (१११४) । युत्त १ [मूर्य] श्यान, विचार (१ ६ १२१) । नामि देवो आदि (दुमा) । सम १ [श्याम]

मर्बष्ट--मर चिष्क् केसरी (परम २ १७ उप प्र**३**)। **देवल** पूं ["साध्यान] चनामा (गाम हुमा मुर १६ ४६)। स्थलना सी ["रोचना] पोरोचन मोरोचना, पौ<del>त न</del>एँ इस्य विशेष (प्रमि १२७)। ारि पु ["रि] सिंह (पाधा)। । रिव्मण पू ["गरिक्मन] राज्य बंग का एक राजा एक सका-पति (परम १, २६२)। "हिस है ["मिंप] सिंह, केसरी (पाप्र) स १)। देशों मिल मिग = मूव। सर्वक ) वेको सिर्वक (हे १ १७७ १८ सर्थरा हे हुमा। पड : गा ३११। रमा)। मर्चन देखो मार्चन ≈ माउँव, 'कूबर बरणी भिउद्यी योगेष्ठी बामस्य धर्मेगो (पत्र २६)। स्थेत दे [सूदङ्ग] बाच-विरोप (प्राष्ट्र ८) । सर्वगय र् [सर्वक्ष्य] हाची, इस्ती (परम व ६१ चप पुर्व )। सर्वता की [सुतगङ्का] बहा पर वंदा का प्रवाह कर गया हो वह स्वान (एएमा र ४---पत्र १६) । सर्पेवर न [सतास्तर] भिष्य भव बन्ध मव (मग)। मर्पष् वैको मर्पष् = भूनेन्त्र (मुपा ६२)। सर्वाध वि [सवान्ध] मव के कारण प्रत्या बना कृषा मदोत्पत्त (पुर २ ६६)। सबग दि [सृतक] १ मरा हुमा। २ न पुर्च (शामा १ ११) कुत्र २६। धीरा)। कियान ["कुत्य] म्बद्ध प्राप्ति कर्मे (सामा 1 (P 1 संगद्ध पू दि] धारान बनीवा (वे ६ ttx): सयण पूँ [सद्त] १ कन्दर्गे कामदेव (पामा क्ख २३८ कुमा रंग्रा)। २ लदमश्र का पक पूत्र (परम ११ २)। ३ एक शक्तिक-पुत्र (सूना ६१७)। ४ इस्टब्स एक मेर (पिय)। १ वि मर-कारक मास्का 'मयखा **र**प्तिस्त्रशिया निम्नतिया वह कोहना स्तिहाँ (विने १२२)। ६ नः मीन मौन 'भक्णी मक्यों क्षिप्र विक्रीरहीं (बख २४, पाग्रः गुर

**७ ९४६)। परियों की [\*गृहिजी]** 

८४

िंवाझा 🔁 ऋत्व-विरोध (पिंग)। तिरसी श्री [ श्रयादशी | भेत्र माध की सुन्त ममोवसी तिपि (इप्र ३७८) : दुम पू दिसी क्म-किरोप (मे ७ ६६) । फिल्ड म "फेर्ड किप विशेष मैंबदल 'तमी केपून्यमं मयगुष्टपेस माबिय मस्यूस्सइस्ये दिन्ने एवं बरदास्य देनाहि' (मुख २ १७)। मजधी श्री ["मझरी] १ एका **पर्**क्यचीत की एक क्यी का नाम । २ एक मेहि-कन्या (महा)। रिहा की "रेक्सी एक पूप्ताव की पत्नी (महा)। संय पू विग] पुरुष-विशेष का नाम (मनि)। संदरीकी ["सुन्दरी] सन भीयास की यक वल्ती (सिरि १९)। हरा की "गृह" प्रत्य निरोप (पिय)। हस देशो फुळ 'ममणुहत्तर्गवद्यो हा स्व्वमिया अंश हाससूरा (वर्गीव ६४)। मयर्णकुस पु [सदनाहुरा] भीरामचन का एक पूत्र हुए (प्रस्प रे७ रे)। मयणसञ्चमा 🕽 भी 💽 मदनशस्त्रका मयणसद्भाया जैनेन, सारिका (बीच १ दी-पत्र ४१ वे ६ ११६)। मयणसाद्ध्य की दि मन्तराख्यी शारिका-विरोप (मएइ १ १--पत्र ८)। संबंधा 🖈 🐧 संबन्ध मैना, शारिका (इप १२१ टी ग्राव १)। सवणा भी [मदना] १ वेरीवन बसीन्द्र की एक पटधनी (ठा ४, १---पत्र ६२)। २ शक के बोक्यास की एक की (ठा४ १---पत्र २४)। समयाय पुॅं[मैनाफ] १ होप-फिरोप । २ पर्वेत-विशेष (भवि)। मयणिक्ष रेबी मद्जिक्क (रूपा पर्ल १७)। मयजिवास पू [वे] शन्दर्ग कामदेव (१.६ **१२६)** 1 भगर पूँ मिकरी १ जबकतु-विशेष महर मच्च (भीप पुर १३,४६)। २ राधि-विरोध सकर राणि (सुर १३ ४६) विकार १ ६)। १ सम्बद्ध का एक शुभन (प्रत्य १६ २१)। ४ कल-विशेष (शिग)। किश व [केतु] कामरेव, कन्तरं (बप्पू)। द्वय १४१)। मरिलंड मरिलंड (मनि पि ४७७)। र्दु विभाज विद्यो (पाया कुमा रेमा)। मुका मधी मधैम (माना नि४६६)। नाम प्रिया, चीत (इत १ १)। तालंक व "संद्रग र् ["सम्बन] यहा (क्यू रि सवि मरिसावि (पि १२२)। बहुः सरत

५४)। इर प्रेन [ैगृह] बही (प्राप्त से १ १८ ४ ४ कः बना ११४ मनि)। मयरंद पुँ दि मकरन्त्र] पूप्य-रक पूप्य पराम (दे ६ १२६ पाम कुमा ६ १४)। मयरंद पू मिकरन्द् ] पूप्प रख पूप्प-मधू (र ६ १२३ सुर ३ १ प्रामु ०१३ हुमा)। मयळ हैको सङ्ग्रह = मसिन (सुना २६२)। मयक्रमा रेको मञ्चलमा (मुना १२४-२ ६)। मगळवृत्ती दि ] देशो मइस्रपृक्ता (दे ६ १२६) । मयितम रेवो मिडिणिय (उप ७२८ टी)। समित्रिया की [सतिहिका] प्रवान भेट्ट-'कूडक्सरविद्यो(?ड)ममहिद्यमासुं' (रंभा १७)। मयह के मगह। सामिय पूं कियामिन्। मगव देश का राजा (पदम ६१ ११)। **"धर न ['धर] राज-मृह नगर (वम्)** । ौद्दिषद् र्षु [ौधिपति] मनव देश का राजा (पदम २ ४००)। समाहर वृ वि । धान-प्रवान, धाम प्रवर, नौब का मुख्या (पन २६ वः महाः पतम १६ १६)। २ वि वदील मुखिया नायका **'ध्यवद्वत्याचेह्यहाणमयहरेख'** (स २० मक्कानि ४ परम ६३ १७)। ग्री रिगा. ैरिया री (अपर ३१ टी मुर १४१ मद्यासूपाच्यः १२६)। मयाई 🛍 💽 शिपे-नाता (१ ६ ११४) । सपार १ [सकार] रे प्यंत्रसरा र मध्य-रावि शरतीत--धवाच्य शब्दः 'जस्य बयार मवार समाग्री क्या विहुत्त्रप्रकार (तृत्त्र 1 Y) I मयास (धप) देखी मरास (पिम)। मयाकि 🙎 [मया कि] वैन महत्व विशेष---१ एक मन्तक्रम् पुनि (संत १४) । २ एक मनुत्तर-गामी पुनि (पनु १)। मयासी की [क] मवा-विशेष निप्राक्षी नवा (देद ११६(पाम)। मरंघक [सृ] मरना। मरक मरए (क्रिप्र २१४) मन ज्या महा यह ) सरं (है १

भरमाज (मा १७३) प्रामु १४ मुपा ४ ३,

प्रकृत्या **१११** प्राप्त = १) । संक्र मरिकल्य

(पि १८६)। कि मरिट मरेड (वंशि १४)। इ. सरियक्त (शंत २४ मुना २१% ११ प्रामु १ ६) मरिएक्यई (बंध) ( X YE ) 1 सर्द्दि रमलकार बस्तु पूर्क (र ६ (x) **बरअद् १ पून [सरस्त] नील वर्णनाना** मरगय । एक-विशेषः पद्मा (सींग ६ है १ १८२) बीस यह' या ४१ काम ११) 'परिक्रमिगपेशि बहुसी बस्सी कि गरवसी होद' (दूम ४ ३) । सरबीलम र् 🗣 सरबीलको समूद 🤻 मौतर क्तर कर को बस्तू निरासने का काम करता के पर (सिर १८६)। सरहर्व कि | पर्व स्वदंकार (दे ६ १२ मुर ४ ११४' प्रायु =१० वी ६३ मंदिर क्या ∦Y Y२२३ तिरि १६२)३ म<del>विव</del>स्तद (१र)द्रभंदममञ्जे सहजनगणनत्त्वं (वर्मीव 8w) 1 मरहा भी दि । असर्व प्रद प्राचीरमाचीतमगढाः (१६) भवनासाइ। विवयसाई सम्बंदाई व बस्सीम् विरम्धिः। (養育 २६६) । सर्द्ध (भग) वैद्यो सरहदू (रिन्न) । भरतः देवी मराहुः । ब्री. ब्री (क्रप्यू) । भरण दुन [मरण] मीत, मृष्टु (धालाः सन्द पास भी ४३। प्रापु १ ७३ ११६). चिता मरहा सन्त्रे क्रम्बनमञ्जेषा क्रान्ट्यां (पद (Xu) 1 मरस कर भराख = मराच (शहर १)। भव्हतरु [सूप ] यना करताः 'सर्पेत्र वर्षातु सं देवास्मृत्विका' (सावा १ क्-नम् १९१)। मराहरू 🗗 [मदाराष्ट्र] १ वहा केट : २ बेत-निकेप अहाराष्ट्र नराठाः 'मस्ट्रो मस्ट्रूर' (देर ६८ प्रार्ह ६) दूमा)। ३ सूच्छ (इमा १ ६)। ४ ई महाएड् रेड का

तिवासी मण्डा (पण्डा ! १—पन १४° पिय) । १ सन्द-विदेश (भिग) । मरहरी को मिहाराधी १ महासद नी खनेवाती और १ प्रतस्य काया का एक बेद (R \$\$¥) I सराख दि दि ] सलस मन्द प्राप्तसी (दे ६ ११२, पाम्रो । मराख्यं मिराखी १ हंच पत्ती (पाम)। १ सन्द-निरोप (पिग)। भयकी भी दि र मारनी सारस पदी भी माना। २ दुवी। ३ सची (३ ६ १४२)। र्मारम वि भित्री भरा ह्या (सम्पत्त १३१)। मरिअप विदिशि पृष्टित दूटा हमा। २ विस्तीरी (पड़ ) । मरिक देवो मिरिम (प्रवी १ ६, व्यव द दी । १ मरिंड केंद्रो मरीड, भाड छपाने नाओ जिलका मधि ध्योव निक्चोतो (पटम २ २४)। मरिस एक [सूप्] सहन करना धना करना। मरिसद, मरिसद, मरिसेट (हे ४ २१४ महा प ६७ )। इ. सरिसियस्य (# \$# ) r मरिसायचा 🛍 [मर्पैगा] समा (च ६७१) । मरीइ 🕯 मिरीचि 🖁 र भ्यवान् अन्यमदेव का एक पीच भीर मस्त च अन्तर्सी नापूत को मननात् मङ्ग्रीर का बीव का (पत्रम ११ १४) । २ देवी. किराय (परात १ ४ -- पत ७२: धर्मच ७२३) । मरीइयां की [मरीचिका] १ किरल-क्सूइ। २ कुर-कुच्छा, किरदा में क्ल फान्ति (राज)। मधीच वेचो सधीइ (प्रीप गुज्र १ ६)। मधिचिना देशो गरीइया (ग्रीत) । सर्दु[मरुन्] १ परन, बहु। २ वेव देखा । १ तुक्की हुत्र-रिक्षेत्र महमा सस्या (पर्)। ४ इतुमान का चिता (बदम ४६, ७१) । जंदण र्र किन्द्रजी स्ट्रमान् (परन १६, ७१) । स्मुत र् मित्री शही (क्या १ १) । देशो सङ्ख⊐ मध्यः। मरु }ु[मरु, ≼] १ विचंत केत गरम 🕽 (द्यांचा १ १६— एव २ २। भीर)। २ केट-विरोध सारवाड़ (दी १३ न्यूक स्ट प्रया १ ४-- पर ६ )। ६

पर्वत ऊर्जन प्रदाद (तिषु ११)। ४ क्य-विदेश सबका सस्था (पराइ २, १--- थव १३ }। १ बहास किय (नुवार २७) १ ६ वट तर-बंदा। ७ मह-बंदीय राजा दिस य पटीए नंदी परापद्मसर्थ व होइ महास्त्री। महक्क्ष्मं बद्धवर्षे (विचार ४६६)। = मह देश का निवासी (पर्सा १ १) । कैसार न िकान्दारी शिर्यंत्र लेग्ब (प्रस्तु दर)। रुपन्नीकी दिससी मस्भूमि (महा)। स की सि शिक्ष (धार्श)। यशि िक्की मद केत में बरुप्य (प्रकार ४---पत्र ६०)। सरुभ देखो सरु≔ मस्त् (पर्रह १ ४—पत्र ६८)। २ एक देव-वार्ति (ठा२ १)। "हमार प िडमार] पानयीय के एक धवाकावामं (क्रम ६ ६४)। वसम वृद्धियम् । एक (पर्याः १ ४--पत्र १४)। मस्त्रमः ) वृश्चिद्धनः देशनियोगं भरमा सस्भाग ) मस्ता (पत्रवे पक्ष १--पत्र मरुभा की [मरुता] राजा भेरिक की एक प्रको (शंत)। मरुद्वी की [मरुकियी] ब्रह्मस-की, ब्रह्मसी (विषे १२)। मर्स्ड देखो सुर्स्ड (यंतः यौरः) सामा t म**रुक्**त प्रदिस**रुक्**च] मस्ता मस्ते ग भाइ (मनि)। मस्य वेदो भस्म = गस्क (पर्छा १ १ — पद १४० इक)। मक्देव पू [मरुदेव] १ ऐकत क्षेत्र में फरात्र एक विभवेद (सम् १५३)। ३ एक दुवकर पुस्य का नाम (सन १६ परम 1 XX) i मरुदेखः ) व्य [मरुदेशः वी] ! नजलः महरेबी 🎙 ऋगम्हेब की माद्या का नाम (का धम १६ ३ १६१)। २ धचाम हिल्लामी एक पत्नी जिडने स्थलान् सहावीर के पास थैया केहर पुष्टि नहीं में (देश) 1 मरुद्देश की [मरुद्देश] अकल, महातीर है पास क्षेत्रा केवर क्षकि पालेशाची राजा भेरिक की एक पानी (ब्रंड २१)।

२६)।

सरुख दें दि] भूव-पिशाच (दे ६ ११४)।

सहवय देखो सहज्ञम (गा ६७७ कुमा विक

सस्रक्ष [सञ्जू] भाष्यु करना (मग १

मस्म रेशो मरिस । मरस्य (मधि)।

३३ टी-पर४८ )।

संख्यो सद्दा भन्नद्र, भनेद्र (१४ १२६ प्रकृ ६८ मनि) समेमि (से ३६३) मलेंति (सर १ १)। कर्ममिस वह (पेका १६ १) महसर्छेस (से ४४२)। क्लाइट मिट्टिचेत (रे १ ११)। संकृ मिळिया मणिकर्ण (कुमा, पि ४०४)। इत महोज्य (वै६८) तिसा६) । मस्त पूँ विदे स्थेब, पशीना (वे व १११)। सस्त (कृमा प्रामु २४)। २ पाप (कृमा) । ३ वैंका हुमा कर्म (केश्य 439) ı मद्भपिक्ष वि दि] पर्वी सर्वकाधे (वे ६ **१**२१) । संख्यान [सर्देन, सञ्चन] मर्दन मनना (एम १२१) मका है है हैं रू पुता ४४ पेका १६ १)। मस्रय 🖠 🐧 मस्रक] धारवरण-विशेष (लागा र र—पत्र रव र र⊯—पत्र २२८)। मख्य पृक्षि सख्य] १ प्रशाहका एक भाग (वे६ १४४)। ए ध्यान वरीचा (वे६ १४४३ वाम्) । मस्य र् [सक्षय] १ शीलका देश में स्थित एक पर्वेद (सूपा ४०६ श. सूमा पङ ) । २ मनय-पर्वत के निकट-वर्ती देश-विशेष (पन २७१३ निम्) । १ द्वन्य-विशेष (निम्) । ४ देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १४६) । ६ न भीवएड कवन (जीव ६) । ६ पूंबी मबय **पै**रानानिवाती (प्रसुद्ध ११) । "के खर्द किंतु] एक रामा का नाम (नुपा ६ ७)। "गिरि पू ["गिरि] एक सुप्रसिक्क वैन पानार्थ मीर प्रत्यकार (इक राज) । यंद्र पू ["चम्द्र] एक वैत्र उत्तासक का नाम (पूपा

९४३) : हि पु [ ाद्रि] पर्वत-विशेष (सुपा

४७७)। सव वि "भवी १ मनय देश में

मिती एका मसम्बेश की की (पुपा ६७)।य["ज] देशो मद (राग)। रुद्ध (सुद्दी चलन का पेड़ (सुद १ २६) । २ न. चन्दन-काष्ट्र (पाम)। व्यक्त पू [ व्यक्त ] मत्तव पर्वत (मुपा ४६९)। प्रिष्ठ पू ["निख] मत्तवाचन से बहुता शीवस पदम (क्रुमा)। "यस देखो । चल (रंमा) । मस्य विमालयी १ मनगरेश में स्थल (प्रष्टु)। २ न चन्दन (मनि)। मछपट्टी की [बे] तस्सी पुनित (वे ६ 13x) 1 मसदर्पु मि दुमुन-म्बनि (४ ६ १२ )। मिख्य वि मिख्यियाँ महत्रकाः मज-प्रका (मनि)। मस्रिअ वि [सृदित] विस्का मदन किया मया हो वह (गा ११ कुनाः हे १ १६६) चीप छामा १ १)। मळिञन [वे] १ सब्दु क्षेत्र । २ दुएक (वे ( trr) i मस्त्रिम वि[मस्त्रिय] मन-पुरु, मनिन 'मसमसियदेह्बला' (गुपा १६६) गुउर) । मिकिञ्जंत वेको सस = मृत् । मक्रिण वि[मिखिन] मैमा मब-पूक्त (कुमा मुपा६ १)। मस्त्रिणिय वि [मस्त्रिनिषः] मनित दिया इषा (स्व) । मझीमस वि [मझीमस ] मीवन मैका (पाम)। सक्षच्य देशो सञ्च≔ मुद्र । म**डेच्स रेवी** मिक्किस्ट वि ६४' गट---वैठ सङ्क सक [सल्ला] देखो सङ ≔ मन् (भग ह । (डिइइ सङ् पू [सङ] १ पद्भवान पूरती सङ्गे-वाला बाह्न बीजा (बीप: क्या प्राप्त प् ४) दुमा) । २ पाना चीनविद्यापविभिन्नाण मस्से मिल्लीं जीसावें (इप १६१)। ३ भीत का धरप्टम्मन-स्तम्म । ४ झप्पर का माबार मृत कछ (सग व ६—पत्र ३७६)। मुद्र न [पुद्र] दुरती (क्यू हे ४ क्याम । २ तः चन्दतः (वडा) । सङ्घा । १८२) । दिसं दृतः दिसा पुत्र स्वरः

दुमार (णाया १ a) । बाह पुँ विदिम् १ पत्र ३३२)। मीफ पि **व**€)। (देव १४१)। 11 2) 1 (मीप) । वव क्षी। कानाम (कुमा)। स्तान । २ नेश-कताप (का १, ११ टी---पत्र ४०)। म≨ी देखो महिः (ए।या १ वः पउम २० १४, विचार १४८३ दुमा)।

एक सुनिक्यात प्राचीन भैन माचार्य ग्रीर र्धवकार (सम्मत्त १२)। मझन [माल्य] १ पुष्प कुन (अ.४.४)। २ फूल की हुँकी हुई महता (याघा धीप)। ३ मस्तक-स्थित पुष्पमामा (४२ ७१)। ४ एक देव-विमान (सम ११) । **५ वक्ति** 'मक्क' कि वक्तीए छाम' (बाव कूर्रिंग मा महार पृ[सङ्कि, "दिम्] दूप-विशेष (भग सक्ता}न [दे सक्क] १ पात्र विशेष, मह्नय र राय वें (विशे २४० टी पिंड २१ वेंद्र ४४ महार हुनक १४ ग्रामा १ १ वे ६ १४% प्रयो ६७)। २ अपक पानपात्र मस्य न [दे] सपूप-भेद एक तरह का पूधाः २ विद्वसुम्म से एक (देद १४४)। महाणी की 👣 मानुनानीः मानी (दे ६ ११२ पामा माचा १०)। मद्भिष [मद्भिम्] बारए-कर्ता (भग श मद्भिष [मास्यिन्] मस्य-युक्त मानावाना र्माक की [मक्कि] १ छनी पूर्व वित-देव का नाम (सम ४३) शामा १ ८, मॅफ्न १२ पडि)। २ बुख-विरोध मोतिया का माझ (१९,१८)। पाह, नाइ पुं [नाच] कनीसर्वे निन-देव (महाः दुप्र ६३) । मिक्कि की [मिक्कि] पूज-विरोध (सव १ महिलग्जुम र् [महिल्लार्जुन] एक राजा महिआ भी [महिस] **१** पूप्त-कुन्न-किरोप (लाबा १ ६। द्वम ४६)। २ दूल-विशेष (कुमा) । १ धन्द-विशेष (रिय) । सहिद्यात्र न [साल्याधान] १ पूष्य-कन्यन-

<b>Fu</b> S	पाइस्रमङ्गङ्ग्यमे	मस्द्मद्
सह यक [र] पीय पाला कीया करणा।  कर सब्दें (६ ६ ११६ दी) खेले!  सहज न [र] भीता पीय (६ ६ ११६)।  सव कर [सापदा पाणता माण करणा  नाताता । मंदित (विदे ११६)।  काक मिलां (विदे १९६)।  काक सिलां (विदे १९६)।  काक सिलां (विदे १९६)।  काक सिलां (विदे १९९)।  साध्य (विदे १९)।  साध्य (विदे १९) की माण पाण (दु ६१)।  साध्य (विदा १९) की माण पाण (दु ६१)।  साध्य (विदा १९) की माण पाण (दु ६१)।  साध्य (विदा १९)।  साध्य (विद १९	(पार)। १ लिया किया हुया (वे हे हो)। १ विश्वित विश्वित हुया (वे हे हो)। १ विश्वित विश्वित (वे हे ११)। १ विश्वित विश्वित (वे हे ११)। १ विश्वित विश्वित (वे हे ११)। १ विश्वित वे विश्वित (वे हे १९)। १ विश्वित वे	महिता (धीष)। चंद वृ  [चान] हे परमुमार-विरोध (विदा ह हा )। य कि जिस्से हे वह का कि जिस्से हे हमा हिता ह हो। य कि जिस्से हमा

(हर १२)। ध्य पूं [आस्मन्] महान् मारमा भहा-पुरुष (परम ११६ १२१)। एकड वि [फिल्ल] महान् फबनासा (सुपा ६२१)। बाहुपूर्वाहुरक्षसम्बद्धाः एक राजा एक संबद-पति (पड़न १, २६१)। "बोह पूं ["अबोध] महा-सायर, 'दम बुर्ततं सोवं रएए।

निव्यासिया तहा सुबमा। महबोहे बंतूर्ए

पुराची नाम्या सत्नै (सम्मत्त १२)।

क्क्सर तुं [\*कक्क] १ एक राज-दुनार (बिपा २ ७) मन ११ ११ मीत)। २ वि निपूत्त बतनाता (प्रय ग्रीप) । देखो महा-वछ । असय वि विभय । महासय-वनक (पएह १ १) : समय न मिस् प्रिक्ती भावि पौत्र इस्य (सुध २ १ २२)। शरूप प् [ मस्त्र] एक महर्षि चन्तक्क् मृति-विदेश (पेठ २४)। मास व ["अय] महान मभ (मीप)। बर्देको चर(ए।मार १--पत्र १७) : "रव प्री [रय] यज्ञष चंद्य का एक राजा एक संख्याति (परम १ २६६)। रिसि गृ ["म्हाचि] महर्षि महा-मुनि (तर रमण ६७) । "रिष्ट्र वि ["धार्ड] वड़े के योग्य बहु-मून्य की मती (विपा १ श मीप पि १४ )। "वाय वु ["बाव] महान् परन (योग १८७)। ठमहम वि ["प्रति≨] महाधतवाला (गुपा ४७४)। "ब्बय पून ["अठ] महान् यतः 'महस्वया पेच हॅित क्षेप (पटम ११ २६) सिस महम्भवा दे बत्तरपुरासंबुदानि न हु सम्म (सिक्का ४० सना एक): ठकाम पू [\*स्यय] तिपुशः वर्णः (इपः पः १ ८)। संसाग की ["शब्द्रका] पन्य-विशेष एक अकार की नाप (ओवस १३६)। सिव पू िरिश्व ] एक राजा पह कतरेन और नामुदेन कारिता(सम ११२)। सुद्धारेको महा सुष (क्षेत्र १३४)। सण वृ ["सेन] रै माठवें जिनकेव का पिता (सन १६४)। २ एक राजा (सङ्घा) । ३ एक सारव (तर **९४व टी)। ४ न वल-विरोप (विशे** १४४४)। देशो महा-सेण । देशो महा"।

भहत्वर पुं [के] गङ्कर-पित निष्ठवका मानिक (वे६ १२६)। महर्द्धम [महाति] १ प्रति वड़ा। २ परयन्त विपूर्व। जह वि [कट] प्रति वही वटा-कला (परम ४८ १२)। सङ्गाईदङ् वु [ "महेन्द्रजिस् ] ध्रवाङ्ग-नंश के एक राजा का नाम (परम ४,६)। महापुरिस पू िमहापुरुप] १ सर्वोत्तम पुरुष सर्व-मेष्ठ पूरम । २ जिनकेव जिन मगवान् (पटम १ १८)। सहास्रय वि मिहत् । सम्ब बड़ा 'महदमहासर्थींस संसारीस' (बबा सम ०२) । इपै. किया (भव उवा) । सहर्द्द देखो मह = महत् । महंग दू वि] खद्र, केंग्र (रे ६ ११७)। महर्ष देशो सह - महर्ष (बाना बीप कुमा)। महत्व न [माइत्य] १ महत्त्व । २ महत्त्वनाना (ठा३ १ — पत्र ११७)। सङ्गन दि शिवाका कर (देव ११४)। मङ्ग्पन [सथन] १ विशेष्टन (छे १ ४६ वकात)। २ वर्षेण (कुप्र १४८)। ३ वि मारनेशकाः 'वरितनायक्यमहुखा' (पर्ह १ ४)। ४ दिनाश करनेवालाः 'ताएँ च चराएँ च भनमङ्खें (धंनोब ३३) सुर ७ २२५)। 🖈 पी(मा४५)। सङ्ग दे [सहत] धनस बंद का एक धना-एक चंका-पति (पश्म १८ १६२)। सहजिला के बो सह = महा महर्वि के बो महर्ष (ठा १ ४ शाया १ १ धीप)। भइती 🛍 [मइती] नीग्रा-नितेष सौ तांत नाबी कीएए (चय ४६)। **अहत्यार न [दे] १** मार्ग पावन । २ मोजन (दे६ १२६)। सङ्ख्या पू चि निष्यास्य प्रमाद नुह मुह्चरपहाए फरिसाण महपुरी एसी' (र्रमा सहसह के सम्बन्ध । महमहद (हे ४ ७० पड ना ४१) महमदेद (डन)। वक्र मह्महेत (नाप ६१७)। सेष्ट महमहित्र

(दुमा)।

सहसहित्र वि [प्रस्ति] १ फ्ला हुमा (हे १

१४६३ भन्ना १६ )। र नुर्राप्त (रंग्र)।

ξvo महम्मह देशो महमह, जिपलोपसिएँ महम्म हर (ग ६ ४)। मह्या वेदो सङ्घा 'मङ्गाङ्गवतमहत्वमस-मंदर्शक्तिसारे (स्त्राया १ १ टी-पन ६ थीप विपार १३ मन)। महर वि दि] ग्रस्य प्रतक्त (१ ६, 1 (#55 महत्वयपक्ता देवो महासमक्ता (पम-पूछ १७६) । महक्ष वि [दे सहस् ] १ दुळ वड़ा (दे ६ १४६ वना मतक सुर १ ५४-वेचा १ १६३ संबोध ४७ सोम १३६ प्राप्त १४ श. वय १२ सूपा ११७)। २ प्रकुल, विद्याम विस्तीर्ए (६ ६ १४६ प्रवि १ स ६६२३ भनि)। सी किया (सीप मुपा **??:** 4=0): मइस वि [दे] १ पुंचर, बाचाट, बंक्शारी (११६१४६) पद्)। २ दूधमानि सपुत्र (वे ६ १४१) । १ सपूत्र, निवाह (दे ६ १४% मुर १ ५४)। महक्तिर वेको सङ्ख्यः 'हरिनहच्चडिएनइक्तिर पयनहरवरपयप् विकराओं (मुपा ११)। मह्म रेको मध्य (क्रुमा प्रति)। महा वो [मपा] करव-विशेष (सम १२) मुज्य १ ४, इक) । सदा देवो सद्= भइत् (छ्वा) । छाडड व [ अटट] चंक्या-विशेष व४ तास महाघट-द्यंग की धंक्या (को २)। आइडांग न ["सटटाङ्क] सक्ता-विरोध «Y साथ पटट (बो २)। आस्त्र देखी कास्त्र (नाट---वैत पर)। उद्भाव [कि.ह] संक्या-विरोध वर माच महाउद्धांग की संक्या (जो २)। कार्प किया में ह कवि समर्थ करि (गठक चेहम ८४६: रेमा)। इतिहम वू [किन्दित] स्पन्तर देवों शी एक वाति (पराहर ४० चीन इक)। कल्छान् ["क्ष्यक] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय-धोत्र—मान्त (ठा २ ६। इक)। २ **१**व-विशेष (वि.प.)। कच्छा सी ["कच्छा] मंदिराय नामक इन्द्र की एक यक्ष-महिती (हा ४१ — पत्र १४ छात्रा २३ इक)। कण्ड् पुं [किटम] सना वीलिङ का एक

पुत्र (निर ११)। कण्डाको [कृप्या] राजा बेरिएक की एक वली (संत २१)। कृत्य व किन्न्यी १ क्षेत्र प्रत्य-विशेष (छदि)। २ काच का एक दरियासा (सन ११)। कमदान किमस्य संस्थानियेष भौराशी काळ महाकमबांप की संबंधा (बो २)। कब्त देवी भइ क्रम्म (प्रमात १४६)। काय व [काय] र वहीला देवीं का उत्तर दिखे का इन्हें (ठा२,३ ४७)। २ वि महान् शरीरवाटा (<del>ट</del>ना)। कास प् विकास र महाबह-विशेष एक **बह-रेवता (दुण्य २ ३ ठा २ ३)। २** बसिया सबद्या-समुद्र के पाताब-कत्तरा का ध्यविशासककेन (ठा४ २--पत्र २२६)। वे एक इन्द्र, विशाय-निकाय का उत्तर विशा मा इन्द्र (ठा २, ३ — पत्र थइ) । ४ पर्मा श्रामिक देशों की एक चार्ति (सम २०)। १ बायु-कुमार देनों का एक सोक्याला (ठा ४ ९—नव १६व) । ६ देसस्य इन्द्रशासकाः नोनपास (ठा४ १—पद १६ )। ७ सव निविधों में एक निर्मित्रों की बालू मों की पूर्ति करता है (का दब दी हा द---पन ४४९)। सन्तरीनरक-मूनिका**ए**ठ नरकास (छ १, १--पत्र १४१) सम ३ )। १ प्रिशाच वैनो की एक वाति (राम)। १ जनमिनी नगरी का एक प्राचीत मैत मन्दिर (दुप्र १७४) । ११ शिल म्यादेव (मात ६)। १२ कन्जमिनी का एक रमरान (धेर)। १३ एका मेरिएफ का स्कपूत (तिर १ १)। १४ न एक देव-विनान (सब ६४) । कासी हरी (<sup>\*</sup>कास) र एक विद्यान्देवी (चेटि इ) । २ धयनान् नुमविनाय की शा<del>का देवी</del> (तंत्रि र) । ६ यमाभेरिकनी एक पत्नी (बंद २३)। "फ़िज्हा की ["हुव्जा] एक महा-नशे (ठा धः ६—१४ १११)। इसुद असुय व ["दुगुर] १ एक देव-दिमान (बार १६)। रे संस्था-निरोप भौरानी सहय महापूनुसाय भी पंच्या (को २)। जुसुयक्रीय न [कुसु दाह्र] बंब्सा पुदूर को चीरावी कास है। दुस्तने पर भी संख्यासका हो शद्ध (भी २)। क्रम 4 [क्मे] दुर्गावतार (वडक)।

Sec.

कुछान ["इुक्त] १ थ हकुन (निद्र⊏)। र कि प्रकारत कर्म में स्टरनाः नितर्वाता के म्बह्मपूता (सूर्य १ व २४)। गॅगा 📽 िराक्करों परिमाल-विशेष (भग १३)। ग्रह र्वे भिद्दी १ सूर्य ग्राहि क्योरिक्क (सार्थ ab)। गद्द विजिन्न प्राप्त स्थि (सार्व ८७)। गिरि वं िगिरि । एक दैन महर्षि (उन कप्प)। २ वहा पर्यंत (बता)। तोष पंितायी १ महानुष्मणः। २ जिन सन्त्राल् (उदा विशे २६६६)। मोस प भिष्ये १ ऐरबत क्षेत्र के एक मानी नित्तेन (सम १९४) । २ एक इन्ह स्तमित कुमार देशों का उत्तर दिलाका इन्ह (ठा२ १---पत्र १)। १ एक दुसकर पुरुष (सम १३)। ४ परमानामिक देशों की एक भारत (सन २६)। ५ न. देशविमाल-विदेष (सम १२ १७) । चौत् पूँ <sup>वि</sup>चल् ऐरबत नर्प के एक शानी तीचेंकर (दम ११४)। अधिक पु["कनिक] येश्री सार्वनाह साथि भवर के क्यूक-माल्य शीप (कुमा) । असहि ५ ("अस्ति महा-कावर (मुपा४७४)। बसार्थ[ सहस्] १ घरत चक्करीं का एक पीत (ठा च--पन ४२१)। २ ऐरवद क्षेत्र के चतुर्व भागी तीर्वेकर-वेत । (सम ११४)। १ वि महाल् सरासी (इस १२ २३)। आह की कार्ति अस मिरेप (पर्छ १)। व्याण न [चान] १ बहा मान---वाहन : २ वारिय, धंमन (शाका) । ३ एक विश्वाबर-तपर का नाप (६६)।४ पूर्वासम्बद्धाः पुष्टि (क्षामा)। इत्ह ल ["मुद्ध ] बड़ी बड़ाई (बीन १) । अपूरम पूर्व अपूर्मी महानु राष्ट्र (क्ला ११)। ज beो सम्म 'नामकुसारम्बासे सनवस्तीने बहुत्स्तरके वा (धोन ६६) । जई की ["तही] सही नदी (पत्रका प्रकार (१)। विदियावच ९ [नन्यापर्ते] र बोव नामक इन्द्र का एक कोकपास (ठा ४ १---वश्रह )। २ न् एक देवदियान (इस १९) । जगर विती नगर (राष्ट्र)। पांच्य केने निजय (राज)। जीवान [मिश्चि] १ एल-पिरोप । २ विमिति मौत वर्णनामा (बीव ३) धीन)। जीध्य देखी

िअनुसार्गो महातुत्राच सहस्त्रम् (चट----मानती रेश तब्द १ ४ सग सिरि १६)। जमाप वि "अनुभाष] वही धर्व (दूर २ ३६७ इ.६६) । तमपहा की विस प्रभा] शास्य मरक-पृथिकी (पन १७२)। तमा की ["तमा] नहीं (नेदम ७१६) । वीस की वित्ते नथे-वितेष (का ६, र—पत्र १११)। तुक्रिय ग <sup>वि</sup>ष्ठति महानुद्रियोग को नौरासी साच से क्राने पर वो संबन्ध सम्ब हो वह, बंब्या-विरोप (बो प्)। रामद्रिप (वामास्यि) रेक्टनेय के हुतम-रीत्पका मन्तिराति (इक) । बामबिस पुं विस्मिद्धि विशेषकं (छा ३ १ — नव ६ ६) । द्वाम देवी सद-दुदुम (६४) । २ त. एक केन-किमान (सम कर) । तुमसेज पुरिमधेनी सवा मेरिक ना एक पुत्र जिस्ते भयवान् महावीर के शतः दीवा बी मी (स्त्रूप) । देव पूर्विषी समह देव जिल-देव (प्रस्त १ १ ११) । २ दिल की ची-पति (पटम १ **१ १**२। सम्मत ७६)। "देवी की ["देवी] पटरानी (कप्)। अम पु भिन्नी एक मरिक्क (परुप १६, १८)। थेणुपु [सनुप] मनके का एक पूर (निर १ ४)। नई सी [मनी] वही नकी (धम २७) कस) । मंदिआकर्त देवी र्णवियावशः (इक) । सगर म "सगर] वक्र ग्रहर (प्रकृत ४)। निम प्रक्रिता बहुतुका मादि बड़ी नदी (मानम) । नक्षिण न िनक्षित्री १ संस्था-विशेष, यहानविनाप को भीएसी बाब से ब्रुसने पर को संस्था लब्ब हो वह (बो.२)। २ एक देव-विमान (सव ११) । तक्कियंग व "जस्मिनाङ्ग] संस्था-निरोध बांसन की चौरासी साथ है इस्तेपर को संक्या सम्बद्धी ग्रह (भी ९) । निज्ञासम 🕻 ["निर्धासक] पेष्ठ क्र्यांबार (क्वा)। "तिहा औ ["तिहा] क्ट्र मच्छ (पदम ६ १६ )। "निनाव °निनाम वि [°निनाव] प्रकार, प्रतिक (मीच ६३ व६ दी) । निसीह न ["निशीष] एक धैन सम्बन्धन्य (गण्या व १६)। भीव्य की विशेखा पुत्र महानदी

नीस्म (स्व)। प्रमाञ

(हा १ १---पत्र १११)। परम वृं ["पद्म] १ भरतक्षेत्र का भावी प्रवस तीर्वेकर (सम १११)। २ पूँडरिकिएी नपरी का एक राजा भौर पीधे से सर्जीव (साया १ ११ — पत्र २४३) । ३ भारतवर्षे में उत्पन्न नवनां नक्सरी राजा (सम ११२ परम २ १४६) । ४ भरतक्षेत्र का मानी नवनाँ बक्राची राजा (सम ११४) । १ एक राजा (हा १)। ६ एक निवि (हा१---पव ४४१)। ७ एक हाह (सम १ ४ ठा २, र—पत्र ७२)। द स्पत्रा मी शिक्त का एक पौत्र (निर १ १)। १ देव-विकेष (धीर्य)। १ •(प्र-क्रिपेप (ठा२ ३)। ११ न संक्या विशेष महापर्याय को भीराची साव से कुलुने पर को शंक्यालक हो वह (को २)। १२ एक रेब-निमान (सम ११) । पष्टमञ्जेग न ["पद्माङ्ग] सस्या-विशेष पद्म को चौरासी बात से प्रशाने पर जो संस्था नस्य हो वह (भो २)। पदमा की [पद्मा] राजा स्रोतिक की पक पूक्त-क्ष्मू (निर १ १)। पंडिय वि पिण्डत व प्र विद्वान् (रमा)। पट्टण न ["पश्चन] बड़ा शहर (उवा)। पञ्च प्रकारि प्रका सेप्र कृतिकामा (उप ७७३ पि २७६)। प्रस्त म ["प्रस] एक देव विमान (सम १३)। प्रभाकी [प्रमा] एक सभी (उप १ वर टी)। पन्द पुं [प्रस्म] महाविदेश वर्ष का एक विजय-मान्त (ठा २, ३) : परिण्या ैपरिका की [ैपरिका] सावारीय सूत्र के प्रवम भूतस्त्रन्य का सातवी बाव्ययन (राज -माक)। पसुर्व [पशु] मकुष्य (बरुव)। पद् पू िपया बड़ा चस्ता चन-मार्ग (भगपणहर ३ भीत)। पाण न "प्राज] बहुम्लोक-रियत एक देव-विमाल (उत्त १८ एक) । पायास पु ["पातास] वका पातान-कत्तरा (ठा ४ २---पत्र १२६। सम पाछि भौ पाछि । १ श्रम पस्त । २ शामधेरम-पधिषत मद-रिवर्ति—सामु 'महमाति महापाले

ेषुह्मे वरिसद्योजने। वासापातिमङ्गाली रिक्ता वरिसद्योजमा (उत्तर १०)। "पिठ पूं ["पित्] तिता का बड़ा भारी (विषा १ वि—पत्र४)। पीडार्⊈िपीठी एक कैन भइपि (सिट्ट = १ टी)। पुंता म पुरुष्ट एक देव-विमान (सम २२) । पुंड न ["पुण्ड] एक देन निमान (सम २२) । पुंडरीय न ["पुण्डरीक] १ निरास रवेत कमस (राम) । २ पूं प्रइ-विशेष (सम १ ४)। १ वन निरोध । ४ देको पुंत्ररीञ (राज)। पुर न ["पुर] १ एक विद्यामर-नगर (इक) । २ तगर-विरोप (विपा २ ७) । पुरा की ["पुरी] महापदम-विजय की राजवानी (ठा २,३—पत्र = )। पुरिस पु [ पुरुग] १ मेह पूरूप (पएइ २ ४)। २ किपूक्य निकास का उत्तर विद्या का इस्ता(स्न २, १—पत्र ८४)। पुरी देखी पुरा (इक)। पाँडरीक्ष न "पुण्डरीक" एक देव-विमान (स ३३) । वेसी पुंडरीय (ठा २ ३---पत्र ७२)। फल रेखो सह-एफल (पना)। "फुलियान "रफटिक] क्रियारी पर्यंत्र का एक उत्तर-दिशा-स्थित कूट (राज)। अस वि विस्त्री र महान् वसवासा (भव)। २ पूं ऐरवट क्षेत्र का एक भाषी दीवॉकर (सम १६४)। १ मझ्यली भरत के बंग्र में स्पन्न एक राजा (पडम १, ४° ठा ६—पत्र ४२१) । ४ सोमबंद्रोय एक नर-पति (पत्रम १८ १)। १ पौचर्वे बसदेव का पूर्वकर्तीय नाम (पतम २ ११)। ६ मारतवर्षं का मानी बठनाँ नापुरेन (सम १६४) । बाहु पुष्पिद्धी र मास्त वर्षका भावी चनुवे नामुदेव (सम ११४)। २ रावस का एक मुफ्र (पठभ १६ ३)। सपर विदेश-वर्ष में छत्पन्न एक नामुदेन (साथ ४) । शह न [भाव ] दय-विशेष (पन २७१)। शहप-किमा की ["मडप्रतिमा] गीचे देखों (धीप) । भद्दा की ["मद्रा] बठ-विशेष कामीलार्न-व्यातका एक दत्त (ठा२ १—-पद ६४)। भय देशों मह्नमय (माना) । साध. भाग वि भागी पहलुमार महाराम (क्रिम १७४ महा मुपा ११= चप वृ ३)। भीम पूर्मिम] १ एलनों ना बत्तर विशाकाधना (ठा२ वे---पत्र ≈४)। २ मारतपर्यं का भाकी माठको बतिपानुकेक

(छम १३४)। १ कि बहा मयानक (थॅछ ४)।
भीमारीज दु िभीमारीनी परु कुमकर
पुरा का गाम (छम ११)। मुझ दु
[मुझ देव-विकेट (थॅम)। मुझ पु
[मुझ देव निकट कर्मान (छ ४१)। मोया
को [मोमा] एक महानमी (छ ४, ६—
पत्र ११९)। मंदेर दुन [मुझ्न्य] रावपत्र ११९)। मंदेर दुन [मुझ्न्य] रावपत्र ११९)। मंदेर दुन [मुझ्न्य] रावपत्र ११९)। मंदि दु [मिझ्म्य]
१ सक्षेत्र समान्त्र, प्रवाम मन्त्री (थीम मुख
१२३। जावा १ १)।२ हस्ति-तैय का
सम्पत्र (जावा १ १—पत्र १९)। मंद्र न
मास्त्र मुख्य का गांव (क्यू)। मद्र
दु [आसाय] स्थान मन्त्री (क्या)। मद्र
दु [आसाय] स्थान मन्त्री (क्या)। मद्र
दु [भाग] हत्तियक हार्यों का महारकः
पठा नर्गाध्विनस्य दुन्य।

'वर्षा नर्रासङ्गीननस्य कुँक्य सिङ्गमयिङ्गरिहस्या । धनगरिएयमङ्गमसा भरावि

पनाह्या महित्

(TX 12Y) 1 मस्या भी [मस्ता] राजा भेणिक की एक पत्थी (बीठ)। सह पु [मह] महो-रसव (प्राव ४)। सहदेव वि [सहसू] घति वड़ा (मुपा १६४) स ६१३) । साह (पप) की ["माया] अन्य-विशेष (पिय)। माज्याच्ये ["सातृद्य] माता को बड़ी बहर (विपार १--पत्र ४)। साहर पूर्विमाठर] स्थानेना के रब-रीय का सनिपति (ठा ४, १---पत्र ३ ६३ इक)। मापश्चित्रा 🛍 ["मानसिका] एक विद्या-रेनी (वंति ६) । साह्य द्वं जिल्लाहाजी भ ह बाह्य ए (ब्बा) । मुणि पू [मुनि] सष्ठ सादु (दुमा)। "सेड् पूर्व ["मेष] बहा भेव (सामा १: - पत्र ४: ठा४ ४)। ुमेह वि [मिघ] हृडिमान् (स्प १४२ हो)। मोक्स वि [मूर्स] वहा वेवकृत (का १ ११ थी)। यण पूँ जिल्ली वीष्ठ सीव (मुपा २६१)। यस वेदी अस (मीन) भप्प)। रक्तसस पु [पश्चम] तका क्यरी काएक राजा की जनवाहन कापूत्र मा (परम १ १११) । सह वृ [रेख]

१ वहास्य (परहर, ४—०४ १६) । ह

निवदारवराता। ३ वदायोदा इस

ह्वार सेडामों के वाब स्तेना बुम्मेनावा (त्य १ व १) वडा) : रेति के स्वल्मेस के साल-मैंस का प्रसित्धि (ता ४ १ १ १ वडा) : रेति के स्वल्मेस का प्रसित्धि (ता ४ १ व्याप्त के साल-मेंस का प्रसित्धि (ता ४ १ व्याप्त के साल-मेंस का प्रसित्धि (ता ४ १ व्याप्त के साल-मेंस का प्रसित्धि (ता ४ १ व्याप्त का प्रसित्ध का प्रस्त का प्र	920	पाइअसङ्भइष्णनो	महाश्च-महाणस
(छ २ २नत्र व इक)। वन केनी (हा १नत्र ४००)। श्रीहिनिधीकिन महालड १ वि महालड (वे	हनार सेडामों के तास ध्येता सुमरेगमा (तूर्य र १ १ श नवा) : रिह कि [ दिखा ] केंग्र पूर्व का रच सीर घर पर्य (क्य प्रव क्ष र) : राय प्र [ दिखा ] र ना चारा चाराविष्ठ र एम प्रव का चारा प्रवाधिक केंग्र एक प्रवाधिक केंग्र एक स्थापन महिन्दा केंग्र (प्र र १) : र कोंग्र एक हो हो हो हो है हिए विश्व का प्र हम ति से ह प्र हम ति कि हम ति ह	क्षेते पह (दे ! दर) । बाद हूँ वाषु ] हेतानेत के वारू-देश का परिवृत्ति (द्या र र—ज र र रक्ष) पाढ़ हूँ विष्णु ] हार वारू, वारून थेए, किरवाद्यावार विद्या है वार्ष्ण वार्म वारू, वार्म के पिता के स्वार्म वार्म वारम वार्म वारम वारम वारम वारम वारम वारम वारम वार	स्वतंत्र सार्वार के वाल क्षेणा नेकर स्वृत्तर विवोक में जराम एका मेरिक्र का एक पूत्र (स्वृत्तर)। मुख्य हूँ [शुक्र] रे एक रेस्तोक सार्वार के एके (स्वतः १६ विवा का तर्वार हों। १ र सार्वार के एके एके रेस्तोक सार्वार के एके एके रेस्तोक सार्वार हैं। १ र सार्वार के एके एके रेस्तोक सार्वार हिम्म १९३)। मिण हूँ [क्यार] एक का का एक पूत्रक स्वतः (स्वार १ ट्रिक्टा) मुख्यक मुख्यमा की प्राच्या की प्राच्या की प्राच्या सार्वार (स्वार १ र सार्वार सार्वार मुख्य की प्राच्या की प्राच्य की प्राच्या की
[वराद] रित्यु ना एक मरकार (वरार)। वर्षान्तरोतः (धराः वयः रेशर्मनावाः सहायसः न मिहानसः] रागेश्वरः पारस्वानः रेमानुष्यरः (प्रयः रः २ २२)। वदः १२२२)। वीद्यस्तिनः द्वी विद्यस्ति ] (छावा राज्यसः वा रशः का २२६ द्वी)।	(छ २ २पत्रं क इक्)। वस केनो मद-प्यं (तुन्नः ६१)। स्टब्स् बु [स्टब्स्] १ निष्मुना एक मन्त्रार (स्टब्स्)।	(हा १नत्र ४४०)। श्रीहणिष्टीस्थितः श्रीहनिश्रीस्थियः व ["सिद्दनिर्वाहितः] सार्थितः (धनाः वयः १७१नावाः	महाजड (वि महानट) स्त्र महानेत्र (वे १ ४ १२१)। महाजस न [महानस] स्तोर्शनर, पात्र-बान

पत्र ११७)-।

(विमा १ ८)।

(दे ६ १२१)।

महाणसि वि [महानसिन्] रसोई वनाने-

वादा, रसोधवा। भी, जी (स्रामा १ 🤟

महाणसिय वि [महानसिक] उपर देवो

महाविछ न [दे महाधिख्] स्थीम माधारा

महामति १ [महामन्त्रिन्] महावत हस्ति पक (राम १२१ हो)। महारिय (धप) वि [मदीय] मेरा (बय महास्त्रं [दे] बार, उपप्रति (दे ६ ११६) । महास्मरुव वि वि ] तक्या भवान (वे ६ १२१) । महाद्भय देशो सह ⇔महत् (साया १ वः उनाः भीप) मा कासि कम्माई महासवाई (उस १६ २६) । की "शिया (मौप) । महास्य पून [महास्य] १ स्तवों का स्वान (सम ७२) । २ वड़ा सालम। १ वि बृहत्ताम बहा शरीरवासा (सूख २, ४, ६)। महाज्यक्त १ [दे महाख्यपद्य] माउ-पम मास्तिन (पुत्रराती माद्रपद) मास का हृय्या पश्च (दे ६ १२०)। महावद्यी की [बे] निस्ती, कमनिती (दे ६ १२२) । महाविजय पु [सङ्घाविजय] एक देवविमान (याचा २ १४, २)। महासहज रू हि] छस्तु, पुद-पत्ती (दे ६ **₹₹७)** । महासहाक्षी हिं] शिका श्रामती (दे ६ १२ ३ पाप)। महासेस वि [माहारीक्ष] महारीब नपर धे संबन्ध रक्षनेवाचा महाग्रीत का (पटम ४१) **33)**1 महि देशो मही (कुमा)। शस्त्र न ["उस्त्र] मु-पैठ, मूमि-पूर (कुमा चडक प्राप्त ४४)। गोयर पू ["गोचर] ममुख (वशि पछ)। पट्टन ["ग्रुष्ट] भूमि-तन (पर्)। पास्त्र पू ["पाछ] राजा (वव) । संदक्ष न [मण्डक्ष] मू-मएक्स (प्रकार है ४ ३७२)। रमण प् [रैमण] राजा (था २७)। बद्द र्यु =1

["पिति] राजा (छाया १ १ टी: मीप)। बद्ध केलो पट्ट (हे १ १२६३ हुमा)। बह्नद्र पृष्टिम] सना(प्र१)। वास्र र् पाछी र सवा नरपति (ह र २२६)। २ व्यक्ति बावक नाम (म्ब्रि)। "बेड र् ["बेप्ट, पीठ] म<del>श-तन</del> भू-तन (से १ ४ ४८)। सामि दे ["स्वामिम्] चना (कुमा)। हर वृं [धर] १ पर्नव (पाम से ३ वेद ४ १७) कुम ११७)। २ समा (कुप्र ११७)। महिल वि [सथित] विक्रोबित (से २, १ वर्ग पाम)। सहिम वि [सहित] १ पुनित सकत (स १२ ४७ जना भीत)। २ न एक देश-विमान (सम ४१)। ३ पूजा सल्कार (स्राया महिल वि [सहीयस् ] वहा पुरु 'राघ-नियोधी महियों को खाम ग्रधायधनिह करेड़" (मुद्रा १८७)। सक्षियदुद्धान [वे] भी नानिङ्ग शत-मस महिमा की [महिफा] १ मुख्य कर्पा सुहन क्स-तुपार (पर्ए १ वी ४)। २ वृधिका बूंच कुहुस (कोव ३ : पाछ)। ३ मेप-समूहः 'मर्जनगहो कविद्या महित्रा' (पाद्य) । देवो मिहिआ। महिंद पूर् [सद्देश्य] १ वहा दल वेदाबीछ (धीप कप्पा एगवा १ १ टी-पन ६)। २ पर्वत-विरोप (से ६ ११)। १ ग्रस्ति महानू, भूतवहा(स्र४ २—पत्र २३)। ४ एक राजा (पतन १ २३) । १ ऐरवत वर्षका मानी १५ वर्ष की वैकट (एव ७) । ६ एन एक देव-विमान (सम २२) देवेन्द्र १४१)। कत न ["कास्त] एक देव-विमान (सम २७)। फेउ पू फिस् हिम्स हमान है मारामह कानाम (प्रथम १११)। वैसन्द्रय तू [भाज] १ वरा भागः। १ एव के स्वयं के समान ध्यन वंदा इला-ध्यन (ठा ४ ४--पत्र २३)। ३ स. एक देन-विमान (धम २२)। दुव्यिम 🗗 ["दुव्यिता] धान्त्रतानुव्यये इतुमान की माता (पडम १ २६)। 'विकम पू ['विकम] दस्ताक

वंश काएक सबा (पटन ४,६): सीह पुंधिकी १ कुर केर का एक राजा (उर ७२८ टी) । २ धनलुमार चहनतीं का एक मित्र (महा) । महिंद नि [माहेन्द्र] १ महेन्द्र-सम्बन्धाः। २ स्तात-विशेष (बस् २१६) । महिंदुत्तरपर्डिसय व[महेन्द्रोत्तरापर्वसक] एक देव-विमान (सम २७)। महिगा देशो महिजा (जीवस ६१)। महिच्छ वि [महेच्छ] महत्वाकांश्री (सूच २२ ६१) । सहिच्छा की [महेच्छा] महत्वकांत्रा धपरिमित बाम्सा (पर्वह १ १)। महिट्ट नि [दे] महा से संबद्ध तक-संस्कारित (विपा १ ५ -- पत्र ८३)। महिद्दिह वि[महर्तिक] बढ़ी ऋति सहिव्हिम नाता महान् वेभववाता (धा महि**द्**रीय । २७ मण ग्रीवमा ६ ग्रीपः বি ७६)। महिम पूंची [महिमन्] १ महत्त्व माहानम्म गौरव (हु १ ३३० हुमा) यस्त्र मनि)। २ योखी का एक प्रकार का ऐस्तर्म (हु १ ३४)। महिस्म देशो मिहिस्म (महा राज)। महिका की [महिका] की नारी (इमा हे १ ४१ पाप)। धूम वृं [स्तूप] दूप यादि का किमास (विसे २ ६४)। महिक्रिया भी [महिक्किम, महिसा] अपर देखी (छामा १ २ पत्रम १४ १४% प्रासु २४) । महिस्मि 🗣 [मिविस्मि, मिविला] रेको मिहिस्म (कप्प)। महिस पू [माहप] मैंबा (पडा बौक गा १४व)। सिर प्र [शसर] एक बानव (स ४३७) । महिसंद पु [दे] इत-विरोप रिजु का पेड़ (वेद १२)। महिसिज वि [महिपिक] मैंधराला, मैंस वयनेवला (मगु १४४) । महिसिद्धन दि] महियो-सपृह (१ ६ १२४) महिसी को [महिपी] १ धन-पत्थी (ठा४ १)। १ मेंस (पामा पदम २६ ४१)।

महिरसर-महेसर

केरों काब्रुतर विद्याक्षादलर (स्र २०६ — पत्र वरे)। 🐿 महिसर । मही की [मही] १ प्रविशे भूमि वस्ती (क्साप्याच्य)। २ एक नदी (ठा ६,२---पत्र १ त) । १ छन्द-विशेष (पित) । नाह दु["नाव] एका (उप ११६१) । पहु दु["प्रसु] समा(इस ७२८ छै)। पार्क र्ष विद्वासी धर्म (एप १५ धै एन)। रुद् पु ["रुद्[] कृत पेट (पाना गुर १ १९:१६ २४)। मह पू [पिटि] स्तवा (बारबासप १४१ टी सूपा ३०)। बीक्डम <sup>वि</sup>पीठ] मूमि-तम (पुर २ ७४)। सपृ["श] धवा (या t४) । स**व्ह**प [शाक] नहीं मर्प (मा १४)। **भ**वो महिः।

महुपू[मञ्जू] १ एक दैश्य (से १ सच्चु४)। २ वसन्त ऋतुः 'सुर्खासङ्क वर्षको (पामः कुमा) । ३ कैन मास (नुर ३ ४ १६ रेक्कालिन)। ४ पॉचर्नी प्रति-वासुवैव राजा (पडम ४, १४६)। ४ एक राजा (यु ११)। ६ समुख का एक राज-कुमार (पठम १२ २)। पज्नर्ती काएक देन-कृत स्थान (क्लारी १९)। ८ महुद्र का पेड महुद्या का पाड (कुमा)। ६ घरोल-नुप्र (चड)। १ न. मच दाक (से २ २७)। ११ सीज शहर (कुमा पत ४ छ ४ १) । १२ पक्त-रह । ११ पद्धर रम । १४ वन पानी (प्राप्त के ३ २३)। ११ कर-विशेष (पित्र) । १६ मद्वर, मिष्ट वलु (वदा २, १)। बार पुंची [कर] भगर, भींच (यहब स्वय्त ७३ भीता कण पित्र)। की रिका री (पनि १६ : ग्रस्ट—गुष्य ५७) । अरविधि क्षे िक्रवृच्चि । मा**बु**नचे | किशा-वृच्चि (कुना ३)। अरेगीय न [\*इरेगीत] नाटकः विकि विकेप (महा)। आसव वि विधासक] सम्ब-निरोपनाचा निसके प्रसाद है भवन मक्र समे ऐसी कञ्चितका (पराह १,१---पर १ )। गुविषया 🗚 ["गुविष्या]

रक्दकी नोली (छा४ २)। पडळान

["फटक] मधुरा (६ ६ १२)। मार

मच्चित्रभा को मिक्षिको सहय की क्स देश में प्रकृतिकों बनार्व मनुष्य-वादि मक्बी 'ब्यू विद्यात दामरमुद्वाद महत्त्व (पर्ह १ १--पत्र १४)। (?मनिक्क)बाउ सम्बक्ती (बर्मीक १२४) षा६३४)। समावि सिंबी मच्ची मराह्मा(वे १ १) । सह पूर्विसवी विच्या बाधुकेन स्पेन्स (पामा से १ १७)। र फ्रमर (से ११७)। सइ पू मिइही वसन्त का घटना (से १ १७)। सङ्ख्य पुं["सवन] १ विच्छु(से ११ वण्या २४० बा ११७३ है ४ ३०४३ पि १४३ पिन)। २ समुक्त सागर। ३ छेतु, पुत्र (से १ १)। मास पुनिमान के मास (मनि)। "मिलापुन ["मित्र] कामदेश (मुपा १२६)। मेइज न मिइन रोप-विदेव मकु-प्रमेद्ध (घाचा १ ६ १ ए)। "मेद्राविः वि "मेहनिया मद्र-प्रमेश रोक्याका (धाचा)। मेहिषु [मेहिन्] वही धर्प (भाषा)। रायपु [राज्ञ] एक राजा (रम्ख ४४)। अहि भी विष्ठि १ घोषवि-विधेष वर्ष्ट्रमङ्क, मुनेदी बैद्धे महु। रस्युद्धा(दे१२४७)। बचार् [पर्क] १ व्यवद्वक भन्न, वहाँ और रक्ष्य । २ नोडसीप चार पूका का कठवाँ ज्याचार (एतार १ ३)। बार पु [बार] सम्ब शारू (पाप)। सिंगी को [ महारि] नवस्रवि विशेष (पएछ १—पच वर)। शुक्रण पृ ["भूवन] विष्यु (बठव गुना ७) । सङ्कर्ष [समूद्ध] १ इक्व-विशेष महसा भाषाच्च (स. १.३)। २ न मङ्गमाका क्त (ब्राप्ता है १ २२२)। महुम पुदि] १ पश्चिम् विशेष भौत्य पद्यो । २ मानव स्तुति-पाठक (दे६ १४४) । सङ्घण सक [सभ्] १ निनोकत करस्य । २ विवास करना । यक्न 'विमुक्तहुदुद्वाचा वविनम्बर्कारपत्तकेता सङ्गुणित-नाताकराज निसामा दुवस (स्वदा)। महुत्त (प्रद) देवो सुहुत्त (धाँद) । सङ्घ्यस्य न [सङ्केरसस्य] क्यसः एकः 'बङ्क्यस पंचयं नक्षिएं (पाप) । महुनुद्द पुं [दे ममुनुद्ध ] नितुत्र, पूर्वत

बन (दे ६ १२२)।

सहर वि सिम्बरी १ मीठा, बिए (इसा) प्रापृ वेव पटक ना ४ १)। २ कोनन (क्य १, ६३ औप)। मासि वि िभाषित् विस-मापौ (पद्यम ६ १**१३**) । महरा की मिश्रुरा निवस्त की एक प्रक्रिय नगरी मध्या (ठा १ ३ सम १४३) प्रस्त १ का देश देश कुमा बच्चा १२२) : मंगु 🛊 [मङ्क] एक प्रशिक्ष वैतालार्थ (धिक्बा ६२)। दिव प् "थिप निष्रुप कारावा(कुमा)। सङ्ग्रह्मित्र नि [ व ] यथिषत (दे ६ १२४)। महरित पूंची [मधुरिमम्] बहुट्या माहुर्य (धुपा २६४) हुम ६ )। सहरेल दू [सधुरेश] मनुष्य का धवा (क्रुमा) । सङ्ख्या को [के] धेन-किलेन पान-नव्य (क्यू २)। सहस्रिक्त [सञ्जसिक्क] १ मक्त, मीम (इस पूर् ६)। २ वेक-विशेष, आप के केर में सभा प्रभा भवता तक बफ्तेवाना कत्य (धोषमा ११) । १ कता-विशेष (स ६ २)। सङ्क्सम् रेको सङ्ग्रस्य (राज) । सहस्र देवो सङ्घ्य=अपूत्र (कुन्छ हे १ **१**२२) । सङ्क्षस्य पु [महोत्स्यव] वहा छलाव (पुर व १ चंशाट—गुच्च १४)। महेंब् देवी महिंद् (से ६ २२)। सकेंद्र इं कि ] पंक कारा (दे ६ ११६)। सदेष्म 🕽 [मदेख] वहा रेठ (वा १६) । महेम ई [सहेम] बढ़ा हाथी (कुमा) । महस्म की [महेस्स] की नारी (हे १ १४६३ कुमा) । गहेस पू [महरा] गेने ब्लो (वि १४) पवि)। महेसर पू [महेचर] १ महादेव शिव (पडम १८ ६४) मर्गम १२ )। २ जिनके, महर्ग (परुप १ १ १२)। ३ अदिमत्त बाब्स (सिरि ४२)। ४ मुख्यानि केनों के प्रचर किया का इसा (इक)। तृत्त पू ["वर्षा] एक पूरोवित (विकार **१**)।

(Fig. (1))

**७**२व टी) ।

महेसि रेको मह-रिसि (एम १२६ परह

महोअरपू [महोदर] १ रावण का एक

महोअहि पूर्[सहोदभि] महत्त्वावर (से १

महोच्छ्यं वेसो महुसव (पुर ६ ११)।

महोदहि देशो महोअहि (परह २ ४ जप

महोरग 🕻 [सहोरग] १ व्यन्तर देशों 🕏

एक वाटि (पर्राहर ४ — पत्र ६८३ इरु)।

२ वड़ा सांप । १ महा-काय सर्पे की एक

काति (परद्वार १—पत्र म)। देशान

एक राजा (पटन ६ १३)।

२ महा)। रवर्षु [रेव] वानर-वंश का

पार्द(से १२, ४४)। २ वि व<del>हुना</del>सी

१ १ छप ६६७ ७२० दी मिन ११०)।

िस्त्री पक्त विशेष (मक्का)। महोरतकंठ र् [महोरतकण्ठ] एल-क्रिय (सम ६७)। महोसव रेडी महुसब (गट--रना २४)। महोसद्दि ही [महौपचि] यह सौतवि (परुष) । साम सि∏ा सर लहीं (मेदस ६≒४० प्राप् २१) । माध्ये [मा] १ शक्सी दीवत (वे ६,१६८ पुर १६, १२)। २ शीव्य (से १ ११)। मा } घक [मा] १ समाना, घटना। २ | माञ्र∫ एक मार्थ करता। ६ तिक्य करना वाक्ता । माध्, माध्य, माध्या माएका (पव ४ कृमा प्रकारक १६३ संदेप १० ग्रीप)। **यक्र**-सेंब साओव (कृमा) ४ ३। से २ ८, पा २७६) । क्वड्र- मिळांत मिळामाण (से ७ ६१, सम ७१, भीवस १४४)। इ. माअब्दाः 'पावा सहस्य-मह्या', माहम (पे ६, ६: महा कप्प) । देखों मेका = मैस । मामद्विपुर्[मावस्ति] एन्द्रका धार्यय (वे ₹**₹**, ₹₹) i माअस देवो माइ = मातू (कुमा है ३ ४६)। मामछि देशो मामडि (से १३८ ४६)। माअबिआ को [के] मातृष्यक्षा माता की बहुत (दे ६ १६१) । माआही भी [माराजी] काव्य की एक ग्रेति (क्यू)। देवी मानद्विमा।

े काथ १३ कुमाः सुना १७७)। २ देनता देनी (हे १ १६४, ३ ४६, सुक्ष ३ १)।३ की नारी।४ माना (गैंवा १७ ४०)। ६ भूमि । ६ विमृति । **७ नदमी** । य रेनती। **१ भारतकर्णी। १ भ**टामांसी। रै१ इन्द्र-वाक्सी इन्द्रायस (पद्रहे१ १३८ ३ ४६)। घरत गृही देशी-मन्दिर (मुक्क ३ १) । ह्याण ठाण न िस्यानी १ माया<del>-स्था</del>न (वैदा १७ ४८) सम ११)। २ माया इत्रद-कोय (पंचा १७ ४चः उत्तर द४)। मेह्दू [मेघ] यक्त-विशेष निसर्में माता का नव किया काय वह यज्ञ (पत्रम ११ ४२)। इर वेसी पर (हे १ १९६)। देखी सात्र साया≔ मातू। माइ वि [सायिम्] माया-पुक्त, मायावी (भएकम्प४४)। भाइ म [मा] मत्, न्यूरी (प्राक्त ७०)। साइ ादि [दे] १ रोमरा रोमवाना प्रमुख माइञ∫ बार्लो से पुरु (वे ६ १२ व∗ ए।या १ १ व-- पण २३७)। २ समृद्धि पुष्प विशेवनाना (धीप भगः सामा १ १ टी-पत्र धति)। माइअ वि[मारा] समाया हुमा, घटा हुमा (पुचार १)। माइम वि [मायिक] मायावी (वे ६, १४०) श्राया १ १४)। भाइञ वि [मात्रिक] माना-पुक, परिनिद (तेंद्र २ पन्दर ४ पन १८)। माइभ केंद्रो मा=मा। साई केवी साइ(= मा (द्वेर, १११ कुमा)। माइंग्ग न [बे] बुन्ताक मेटा (स १६६) । माइंद् [दे] वेदो मार्थद् (प्राप्त स ४१६)। माइंदर् मिगम्ही सिंह, केपरी 'प्रसर पहुरवारियमार्थवपत्रंदकुरुग्धमान्निक्रिय् **૪**૨) ા माई इवास ) म [मायेन्द्रवास ] माया-नर्थ. मान्द्रशास । क्यांवटी प्रतेष (तुर २ २२६) स ६६ )। माठभाकी [दे] १ एकी सट्रेसी (१ ६ साई(वा क्ये वि] धामसरी-धामसा का चाध

(R & ! ??!) 1

माइण्डिम भी [मृगतृष्मिका] पूप में बस की भ्रान्ति (क्य २२ टी मोह २३)। साइकि वि चि मुद्द कोमल (दे ६ १२६)। माइख केको माइ ≔ माथिन् (सूग्र १ ४ १ रेम भाषाः भग सीम ४१६ परम ६१ रश्मीप ठा४४)। माइवाइ ) पुंची [दे मादवाइ] हीन्द्रिय माईबाइ 🕽 बन्तु किरोप सुत्र कीट-विरोप (सत्त ३६ १२६ वी १४७ पुण्ड २६४)। की हा (पुचारेय १० मी १४)। माव देवो साइ = गाउँ (मगः पुर १ १७८) मीप प्रामाकुमा म**र**्के १ १६४० १९३)। रगाम वृं ["माम] की-वर्ग (बृह t)। ऋदादेती <sup>\*</sup>सिंबा (द्वेर १४२ गा∜४म)। "पित पुँ"िपत्री मां-बाप (पुर १ १७६)। स्महीकी [सही] मा कौ मानानी (रमा२)। सिमा सी "स्सिका को ["ध्यम्] गाँ की बहुत मौसी (के २ १४२ कुमा विपार कासुर ११ २१६३ वि १४ का विवा १ १—पत्र ४१)। ्रीय मिला, की १ प्रमाता माच्छ ∫प्रमास्य-कर्ती सस्य झानवासा। २ परिमाख-कर्वामापनेवालाः ३ पूंजीव । ४ माकाराः भाऊ भाउमी (पदः हे १ रेवेर मध्य प्रक्रांच के हे र १३४)। माध्य वि [मात्क] माता-संबन्धी (हे १ १६१ प्राप्त प्रकृष राज)। माठम पूर्व [मायुक्त, का] १ धकार मादि ष्माचीय प्रचंछ 'बंगीए खं सिनीए छायासीस' माज्यक्तार्यं (सम ६८० मात्र ६) । २ स्वर । ६ करण (दे १ १६१ प्राप्त प्राक्त प्र नीचे देखो । माउमा की [मात्का] १ माता मां (छाया १ १ -- नव १६०)। २ उत्तर देखी (सम ९**२)। पय पून ["पक्] रास्नों के सार-पू**त राज्य- स्तपासः व्यय भीर ग्रीम्म (सम ६१) । माण्या की [दे माद्रम] दुर्ण पार्वती

क्सा (दे ६ १४७) ।

१४७ पाम्द्र सामा १ १—पत्र १४०)।

२ क्यर के होठ पर के बास गूँधा परार्थड

गठकापय न [गायुःसन्द्] दुनस्यरः च

ग्रदक्क कि शिद्ध, की कोमन कुमार (ह

गरकान (शुद्रका को क्ल अं (हे १ १९७)

माचवा को [बें मादुष्यस्] देवो मार-न्या

माडदाच्ये (वे) तची तहेची (पट)।

मातकाह हि कि ] मुद्दु कोमन (दे ६

माउच्च } व्यो साठक्क≈पुदुत्व (कुमाः दे

*माद्रक प*ुमातुङ] नौका**का** देशमा

माइक्रिम केवी मजक्किय (से ११ ६१)।

माडर्किंगा ्र की [मातुब्धिहा 'सी] बीजीरे

भावकिंगी के गाव (प्रमुख १---पत्र

मावलीय देवी माद्रकिंग (हे १ २१४

मार्गिक्स र् [माक्रीन्फ] गाक्रीन्डपुर

शासकं एक वैत भूति (वर्ग १४--१ टी)।

प्रस पं विश्वती वही बर्च (सन १००६)।

मागसीसी भी विर्गितीर्थी १ पचन पत

से 'हैं तक के सज़र (क्सनि १ व)।

१ १९७-१ १६। दुमा)।

माबत्तम∫ शः २ःपङ) ।

(सुर ६, ६१ रेवा सङ्घा)।

वशासम्बद्ध ११।

मन्)।

माउद्विंग क्यो माइद्विंग (एक) ।

२, २३ कुमा)।

(धर)।

( t ( t ) (

(तर १४६ का ठा च-नव १००)। प्राप्तवा [माप्तवा वा] ज्यर केवो 'वतर प्राप्तवा [काप्तव वा] ज्यर केवो 'वतर प्राप्तवा [क प्राप्तव वि वृत्तवीलं मानवेता (विका १९ ४४)। देव 'इंग 'इंक वि [वर्त] परे-

कप्पः ची ३ ३ ५० १४)। ४ प्रमाण सर्व

बो. ता. ती (इसर भगः)। ईराई

मारुधापय—माणस

(भीवत १९ ६६)। माजार देवी मजार (देवि २)। मार्वविभ पू [माद्यन्तिक] १ भावत का

स्वावक पुस्सवाश्वक] ( भवन का श्रीवपति (स्रासा ११ स्रीयाकमा)। २ प्रस्कत--सीमा-प्रान्त का स्वता (स्वह १ ४---पत्र १४)।

प्रमाविका कि [माविक्कि किया मेरू का सम्माविका कि प्राप्त है । माविका कि कि कि कि कि रेरक)। माविका कि कि कि कि कि कि रेरक)। मावर के मिलने के रक्किक

का समिति (ठा र र-ाण १ १ रक)। १ ग क्षेत्र-विशेष (क्ष्म)। १ शाक विशेष (छपि)। सम्बद्ध वृत्ती [साठर] सफर-पोत्र कें प्रस्तान (इति प्रशे)।

(ब्रॉक १६)। माइटी को [माइटी] वजरतीय-विशेष (व्याप्ट १—न्य १६)। माडिक वि [माडिट] बजाब-युक्त, बॉनड (डूबा)। माडी को [माडो] कबब वर्ष बकार (हैं १ १९ डो-ब्या १ १—न्य ४४ तथा है

११ च स्तु ( १ — नव ४२ पस छ ११ ६३)।

माण वड मानम् | १ वम्मान करम सादर करमा। १ व्युक्त करमा मानम् मानेष्, मानेष्, मानेष्, मानेष, पुर १ १ राजा १ १— पन १३)। इस मानिष्यं पार्थ पार्थ १ । इस मानिष्यं पार्थ १ । इस मानिष्यं मानेष, मान

पूर १२ ११ ए चित्र १ अ कर १ ११ दी। चया व माणियों होत पच्छा होर च माणियों (स्वड १ ४)। माण दुर्ग [मान] १ एवँ पहुंचर, प्रीमान्त 'चस्टबीसम्माणिनिज्ञाची' (इमा) 'पूर्व विद्युक्तमच्चे इस्तो एकल चीर्य मालुं (सम्मत ११८)। १ मार परिल्ला कर्मने ११ छावन, मार-न्यद्वा पादि (स्वा ["वुज्ञ] एक प्राचीन कैन कि (गिर्म रहे)।
"वह की [वर्ती] मानवार्थी की (वे रहे)। र पानवार्थी की एक पियोचर-नवर (क्षण)। "वाह कि [बाविन] मानवार्थी कि (पानवा)। मानवार्थी कि (पानवा) मानवार्थी के पानवार्थी विवाद के पानवार्थी विवाद के पानवार्थी के पानवार्थी विवाद के पानवार्थी के पानवार्थी विवाद के पानवार्थी विवाद के पानवार्थी विवाद के पानवार्थी के पानव

१७ पर )। माण्यान [मानन] १ घानर, सर्वार (माचा) । २ मानना (रक्छा av)। । भनुभन । ४ तुब्र का धनुभक्त 'सुद्रवमाउखें (मन्दि ६१)। भाष्ट्रण को [मानता] इतर केवी (पद्धा १८ () एक्स बर)। माणव वेदो माण = (दे) (सूपा ३१)। माजवर्शिमल्बी १ मनुष्य, मर्ला(पाध्य सुपा ९४३)। २ सम्बानु महाबीर का एक क्य (त ६—यद ४६६१ क्य) । भाषका } दृं[मासक] १ एक विश् माणवर्ष र सक्ता की पूर्विक लेगाता निवि (बप १०६ दी) हा ६---पत्र ४४६) १९ कोतिष्क प्रहु-विशेष एक महाप्रह (अ २ ३) तुल २ )। ३ सीवर्ग वेनवीक का एक कैय-स्ताम (सम ६३)। मानवी की मानवी एक श्विकारेडी (धीर <) i माणस न [मानस] १ वर्षेवर-विशेव (परा

(४० मीनः सहा<u>प</u>्रसा) । २ सव सन्त

वरक (पास चुमा) । ३ वि सन-संबन्धी,

नी प्रियान। १ प्रस्तुत की ध्यासम्या (इर)।

गाइह्र विक्रित स्वय के में करात मायह केत का, गायन्त्राणी (दीन कहा मायह रेट का, गायन्त्राणी (दीन कहा किता १९६१) व पे ल्युडिनाटन कसी बारत (पाम परि)। सामा वी मियानी केती मागदिमा जी (मागपिना) र नक्त केत नी घरा असूठ करात ना एक घेर। २ क्यान्तरेत (वीरा)। व स्वय-स्टेग (इन व भारत स्वर्ण)।

मत का (मुर ४ ७१) । ४ पु. मुदानन्व 🤻 यन्वर्व-रीम्प ना नायक (इक) । मायसिध वि मानसिक पन-संबन्धी मन शा (वा २४' घीउ)। माणसिमा भी [मानसिका] एक विदा-वेशी (संदि ६)। माणि वि [मानिन्] १ मान-पुक्त, मानपाता (इ.स. दूप २७६० कम्म ४ ४)। की. णिणा (कुमा)। २ पूँ धवरा का एक नुमन् (पतम १६२) । १ पर्वत-विरोप । ४ । कूट-विरोप (चानः इक)। माणिज रि [रे मानित] पनुमूत (रे र १६ पाम)। माणिज वि [मानित] सक्त (गठड)। माजिङ न [माजिक्य] एन विशेष माणिक (मुपा२१७ वजा२ क्यू)। माणिज देखी माणि (पडम ७१ २७) । माणिभइ पू [माणिमइ] १ यस निकास के । प्रतर क्लिंग का इन्द्र (ठा२ ३—पत्र ८४ इक)। २ यज्ञरवीं की एक जाति (सिरि ६६६ इक)। ६ देव-निरोप। ४ शिवार रिद्येप (राज इक)। १ एक देव-दिमान (धम)। साजिम रेजो माग = मान्य्। मात्री भी [मानिका] २१६ वर्तेका एक माप (घणु १६२)। माणुम र्न [मानुष] १ मनुष्य, मानव मर्स्य (नूस १ ११ ६ पएड १ १ स्व पुर ३ १६ प्राप्त हुमा): व्यंपुख दिमवार्श व प्लडेश संमाणुसं निरामें (दूप रे) नयाणि मार्थि"पमु"मारगुमाणि सन्यास्ति (कुत्र २१)। २ वि मनुष्य-संबन्धी 'तिविहं बहाराखं ति पुरमार्यास्वयसाधा, त बहा दिस्य दिश्यमाणुरी मापुर्व 🗲 (घर) । माणुभी की [मानुषा] १ ध्ये-मनुष्य भागती (पर २४१) कुन्न १६) । १ मनुष्यसे संबन्ध रचनेतानीः 'मागुरी भारा' (क्म ₹v) ı मागुमुक्तर १ व [मानुकोक्तर] १ वर्गक-माणुमोत्तर र तिरोप मनुष्यपोर पा धोमा बारक वर्षेत्र (राजः हा १ ४० बीर ३) । २ न, एक देव-रिमान (सम २)।

माणुस्स देखो माणुम (माना मीप वर्मनि १व छार्व २३ विधे व ७)३ मारणुस्त्रं साब" (डा १ १—पत्र १४२) 'मालुस्तवाई भोसमोगाई (कप्प)। माणुस्स १ न [मातुन्य, क] मनुष्यस्य माणुम्सय ) मानुसपनं मनुष्यता (गुपा ११६, स १६१ प्रामू ४७ पउम ३१ ८१)। साणुस्सी देवो माणुसी (पष २४)। माणूस रेको माणुम (मुर २ १७२ ठा ३ ६—पत्र १४२)। माणेसर दुं[माणेश्वर]माणिम्द्रपत्त (मनि)। माजोरामा (प्रव) 🛍 [मनोरमा] सन्द-विशेष (पिय)। मार्तम देखी मार्चन (पीप) । मार्तकण देवो मार्गअप (ठा २, ३--पत मातुक्तिंग देवो मादुक्तिंग (पाचा २,१ व माइसिआ की [दे] माता, बननी (दे ६ 232) t मादु देनो साब मधी (प्राक्त प) । माधवी देवो भाहुयो = मावनी (हास्य १६६)। मामाइ पूंची दिं] धमय-प्रदान, धमय-धान धन्य (दे ६ १२१, पड्) । माभीसिम न [व] बनर देखो (दे ६ १२१)। साम म कोमब यामन्त्रण का भूकक सम्मय (परम १८ १६)। माम ) १ वि]माना, मो का माई (मुपा मामग ) १६। १६१)। मामग । वि [मामक] १ मधीय वैद्य मामय ∫ (मार्चा मण्डुच्दे)। २ ममतावाला (सूम १२२२ २ व) । यामय रेपो मामग = (र) (परम १८ ११, स •११)। मामाध्ये [दे] मामी मामा की बहु (दे ६ मामाय हि [मामाक] 'मा' 'मा' बोलनेराला, निवारक (योग ४११) । मामाम र् [मामाय] १ धनावै देश-रिशेय । २ बनार्ये देश में द्वतेत्रानी मनुष्य-काति (इक्)।

सामित्र सकी के मामन्त्रण में प्रपुक्त किया वाता ग्रम्पय (हे २ ११४) कृमा)। मामिया ) भी दि ] मामा की बहु (विपा मामी े १ रे—पत्र ४१३ रे ६ रेश्स मा२ ४ प्रकृशेद) | माय वि [मात] समाया हुमा (कम्म ६, ⊏रंटी पूल्ठ १७२ महा)। माय वि [मायावन् ] क्यटवामा, कीहाए मागाए मावाए सौभाए (पडि)। माय देत्रो मेल ⇒ पच 'त्रोपुत्त्वलुखगयमदि' (सूम२१४०)। माय देखो माया = भागा (घादा)। माय देवो शत्ता≕मात्रा। सादि दिही परिमाण का जानकार (सूच २ १ ५७)। मायइ भी वि] बुध-विश्वय (पराम १३ **■€)** ( सार्थम पू [मातङ्क] १ भगवान् नुपार्शनाव ना शासनपञ्च । २ मपनान् महातीर का शासन-यज्ञ (संवि ७ व)। १ हरदी हाची (पाम पुर १ ११)। ४ चाएडास क्रोम (पाम) । मार्चमी की मावद्गी र पाएकपित (निष् १) । २ विद्या-विशय (धाष् १) । मार्थं बण पू [मावजन] पर्वत-विशेष (६६)। मार्येष्ट पू [मारुण्ड] सूर्व, रवि (सूपा २४२) ৰুম ৰঙ)। मार्थद पु [दे सारुग्द] धान्न मान का पेड़ (है २ १७४) प्राप्ता के ६ १२८३ द्वाप \*\* ( \* ) i मार्यदिअ देवो मार्गदिभ (मर १८ १)। मार्थदी धी [माधन्दी] नगरी-विशेष (स ६) क्त्र१६)। मार्थता भी दि ] श्रेताम्बर साम्बी (दे ६ 19E) 1 भाविष्द्रया भी [सुगद्रविगम] हिरण ने यत की भ्रान्ति नद-मरीविका

'बढ् बुद्धमधो मायरिह्याए

सद् निन्धिवेषपरियो

दिनियो करेद बन-पुद्धि ।

नुगुद्द धरम्मेरि बन्मम्द्र

(दुगर )।

101	ISSHEAROUR	
मायदिय (था) देनां मागदियां (यांथे)।  माया = क्यो साइ = मारू 'मायाद यां के 'मायाद यां के 'मायाद क	ण है वाहत । १ द्विमा (मन वि [मारमिय] भारतेनका [मारमास्तिक] मरु के (धन १३ ११३ सीम [मारमा] मारमा (मन	भुता ने प्राप्त के प्रश्न हों हरे दे वा हिंदा सहा)। ने स्त्रामान का पिछा है से प्रश्नी। जिलमा है दिल्ला हिंदा है के दिल्ला हों हरे हैं के दिल्ला है कि प्राप्त है कि है कि प्राप्त है कि प
जार ई मिर् पुरान्धरावारी को नाति को सार की सिर्मा (कार्य हर १) बीध मिर्मा (कार्य हर १) बीध मिर्मा (कार्य हर १) बीध कर (वितर १) वार्य हर १) बार के (वितर १) वार्य हर १ कर मिर्मा (कार्य हर १) कार हर १ कर मिर्मा (कार्य हर १) कार्य हर १ कार्य हर	त (कर देनेत ४६)। प्रिक्तिक का स्वात, प्रमा प्रिक्तिक का स्वात, प्रमा रि रोम नैरोग प्रश्नु-सम्बद्धः ११८)। भारत्यः प्रमाद्धः भारत्यः पर्वा पर्वा प्रमाः । भारत्यः	माख पू वि माला १ केप्यनियंत (प्रमास्त १ केप्यनियंत व्याप्त स्वर्ध ११) १ वर का प्रमास्त क्याप्त स्वर्ध ११) १ वर का प्रमास्त क्याप्त स्वर्ध भीत्र प्रमास १९०० १ वर्ष ११ १ माला १ वर्ष ११ १ माला १ वर्ष ११ १ १ माला १ १ १ प्रमासियं १ प्रमास १ १ १ प्रमासियं १ १ १ प्रमासियं १ १ १ प्रमासियं १ १ १ प्रमासियं १ १ १ माला १ वर्ष १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

(dla vo) i

१४१) । रेखी मारिज ।

मारिस वि [माष्टरा] येरे वैचा (हुमा) ।

मारी सी [मारी] केनी मारि (व १४९) ।

मारिश र् [मारीच] ऋषि-विवेच ( वावि

मारीह रे ई [मारीबि] एक निधानर

मार्गिक । समस्त रामा (परम व १६१)।

रे सम्बन्ध का एक गुक्ट (पड्या १६ १७)।

(दुग ११७)। संइ. मारेचा (महा) मारि

(#1) (t : Y1t) | tp: 和(計)

(नदा): इ. मारियस्य मारयस्य (पक्रम

११ ४२) मार्रात्राज (का ११७ छ)।

मार र् [मार] १ ताइन (दुगा २१६)। २

१९ **थ)। इ.सम् मन** (तुसर १६

बरण बीत (बाबा। नूस २ १ रहा छन

पण १२३)।

मास्रम देवो सास≖ के माल (झ १ रं∽

मामव र्षु [माळव] १ आरटीय केट-फिरेन

(इक) वर १४२ हो)। २ मालक केट ना

निवासी मनुष्य (पर्या १ १—पत्र १४) ।

मासन र् [मासन] मो<del>न्स</del> निरोप, गानग्री

को का से वानेवानी एक बीर बाडि (वर

मासर्वत पु [ मारुपवत् ] १ वर्वत-विशेष (हा २ ३—पन ५६ व सम १ २)। २ एक रामकुमार (पठम ६ २२ )। परि थाग, वरिवाय व ["पर्याय] वर्षत-विशेष (स्र १ - पत्र हा ६६)। मास्रविणी भी [मास्रविनी] विति विशेष

(विदे ४६४ टी) । मासा की माला रिकुल मादिका हाए, 'मस्से मासा बार्य' (पाम स्वप्त ७२ सुपा कुमा)।२ पिक मणी ११६ प्राप्त १ (पाद्य) । ३ समूह 'क्समलक्रहमास' (सूचनि १६१)। ४ स्वन्द-निरोप (पिन)। इस्त नि [ यन्] मानावादा(प्राप्र)। स्प्रारेवि िकारिस्] माली पूष्प-ध्यवसायी। श्री. गी (पुपा ११)। सार वि[कार] वही मर्चे (इस १४२ टी इर्स्ट १८ सुपा १९२) उर दृ१६१)। घर र्ृृचर] प्रतिमा के उसर के मान की एवना-विशेष (वेदस **६६)। यार रहेको इदर (पैट** रेट कापूर्यक्षायरक्षी। बी. री (कुमाः

(पिप)। माख्य औ दि ज्योरनना चलिका (दे ६ 18=11 भाष्मद्भंदुम व [वे] प्रवात बुंदुम (वे व **११**२) ।

या ११७) । इस को विस्त प्राप्त करेप

मास्ति पुंची [साद्धि] पुत्र-विदेप (सम ₹**₹**₹} ( मास्ति प्र[माद्धिम् ] १ पाताब-संका का एक

राजा (पडम ६ २२)। २ देश-विधेष (६६)। ६ वि मानी पूरा-स्पक्तायी (दुमा) । ४ शोमनेवासा (दुमा) । माधिअ पू माधिक क्रार देशों (देर क 'परमुर २, तुपा२७३ चप पुरेर७)।

मास्त्रित्र वि [मास्त्रित] शौमित, विमूपित **परलोए पूल करनालुगानियामानिया क्**मेलेक' (धा२३३ पाचः चन २६४ टी) ।

मास्त्रित्रा 🛍 [माजिया, मास्रा] देनो मास्रा = माना (सा २३ स्त्रज्य १३ ग्रीर घरा)। मास्त्रिक्र न [मार्क्षय] ए≄ वैन मुनि-रूत्त (क्प्प)।

मालियों की मालिनी १ मानी की की (कुमा)।२ शोमनेवाची (धीप)। १ छन्द विरोप (पिंग)। ४ मानाबासी (भवड)।

सासिक्या) म सिस्टिन्यी महिनता (स्प मास्त्रिम । प्रचेरा पूपा रेश्च ४०६)। मालग) पंमािलकी १ श्रोनियम बन्द्र

माह्य किर्शय (सुर्व १६ १६८)। २ बूज-विशेष (पएए) १—पत्र ११ साया १ २—यव ७८)।

मालूया की [मालुका] १ वस्त्री नवा (सूध १ ३ २ १ )। २ वस्ती-विरोप (पएस १--पम ६१)। मालुदायी औ [मालुवानी] नवा-विशेष

(मस्ड)। मासर व कि मानरी कपिता की का माच्च (दे६ १६)।

मालूर पू [मालूर] १ विका कृत केन का गाञ्च (वे वे १६) या १७६, वटन अपा)। २ त वेश का प्रत (पामा गउड)। माह्य र पू [मासुस्र] मामा (पूर्णमासा शास्त्रह । १२ रेको व सनमादना)।

माविका कि [मापित] मापा हुमा (से ६ ६ देट ४०)। मास देनो मंस = मांग (दे १ २६) ७

कृमाः एव ७२८ दी) ।

मास पूर्मिस रम्बिना, छीस दिन का समय (दार ४ जन ७६८ टी भी ३१)। २ समय काम 'कालमासे कार्स किल्बा' (निपार १३२ पुत्र ६४) 'पसबमामे' (कुम ४ ४)। १ पर्वे—वनहाति-विशेष, 'बीच्छा (१ छी) तह इक्की य माने यं (पएए १---पन ३३)। इस देशो हस (धन)। इस्प पु किरुप] एक स्वान में मदिना तक चहने का बाबार (हह ६)। स्वमण न [क्षपण] नमातार एक गास का क्यक्स सा (खाया ११६) विदान १३ । मन)। शुरु न विशुर्की सपनियोग, एका राम धन (धंबोव ४७) । तुस पु ["तुप] एक मैन पुनि (विवे ११)। पुरा की [पुरो] १ नवधिनिया भूती के की राजपानी (हक)। २ 'वर्त' देश की राजवानी। 'पाना पेटी य मामनुद्ये बहुर' (पर २७६)।

(कप्प)। छद्गुन [ छपु] दप-विशेष पुरिमद्रह तथ (संबोध १७) । मास र् [माप] १ धनाथ देश-विशेष । २ बेश-बिशेप में रहनेवासी मनुष्य-वादि (परह १ १---पत्र १४)। ६ मान्य-विशेष बहुव (दे १ ६a)। ४ परिमाग्र विशेष माधा (बज्जा १६)। पण्या की विणी नगरपति निरोप (पएए १-पन १६)। मासंख देवी मैंसळ (हे १ २१ कूमा)।

पृरिया की "पृरिका" एक मैन मुनि-शाका

मासलिय वि [मोसछित] पूर किया हथा (गरह सुपा ४७४)। मासाहस पु [मासाहस ] पनि-विरोप 'मासाहससरस्थितों कि वा विद्वामि वेदसियों' (सवि ६ उका चर ३ ३)। मासिञ्जर् [दे] पिशून अस्म दुर्गत (दे ६ **१**२२) ।

मासिअ वि [मासिक] मास-धम्बन्धी (उवा मासिआ की [मानुष्यस्] माँ की बहित (वर्गवि २२)। मासुरेको मैसुन्श्मम् (११२ ८६)। मासूरी की दि] रमम् बाही-बूँव (दे ६ १३ । पाम)। माइ पु [माघ] १ मास-विशेष मावका महिता (पापा १४ ११७) । २ संस्कृत ना एक प्रसिद्ध कवि । ३ एक संस्कृत काव्य

माइ न [दें] द्वल्य का कूल (दे ६ १२०)। माइण पुर्व [माइन, माझण] प्रिंचा से निष्टम महिनक-१ सुनि, साबु ऋषि । २ मानक वैन उपासका ३ श्राह्मण (सामाः सूष २ २ ४८ १४ मग १ ७३ २ १ प्रामुद महा)। इसी आग (इस्प)। हुई इ न ["इएड] मक्च केरा का एक साम (मादुर)। भाइएव पुन [माहारम्य] १ महत्व गीरत ।

प्रेम शिगुराल-भव करूब (हे १ १८७) ।

२ महिमा प्रमान (**हे १ ६१ मजह कुम**ा मुर ६ १६) बानू १७) । माइप्पया भी करर देयो (बन ४६० टी)। माइय पुं [द] वर्शार्यंत्रप क्षेत्र-विशेष (उत्त

44 (YE) 1

(ना४४३ वरवा१३)। २ वसन्द ऋतु। रें वैशास गाम (मा ७०७) दनिय १३)। पणप्रजी की जिस्मितिती विक्नी (स **१२३)** । माइविका ध्यै [माघविका ] नीने केवी (पाम)। माइवी की माधवीं (तक-विशेव (क ६२२ अमि ११६४ सम्बन्धः)। २ एक राज-पानी (पडम ६ १२६: २ १८४)। माद्दारमण न [वे] १ वक्ष क्यका। २ नक-किरोप (वे ६ ११२) । मार्थित् पूर्[माइस्त्र] १ एक देव-कोक (सम )। २ एक इन्द्र माहेन्द्र देशदीक का स्वामी (ठा२ ३ — पत्र ५४) । ३ ज्वर विशेषा 'माविववरी वाची' (सुना ६ ६)। ४ निम नाएक सुदुर्त (दस ११)। ४ नि महेन्द्र-सम्बन्धी (पद्धम ११ १६)। माहित्पल १ मिहेन्द्रफर 📗 स्टब्स कौरेमा का भीव (उत्तरि है)। साहित पुंदि प्रक्रियो नाम पेंद्र वरानेवासा (देव १६ ) i

साहब १ [साधव] १ सीहब्स नारमधा

मादिक यू [व] महिली-तक सैंव वारतेशमा (दे १ १)। साम का जनत (दर्)। साहिलाय दू [वि] र सिरिटर पतन (दे १ ११)। र माय का जनत (दर्)। साहिला के को महिली (ज्या )। साहिला के महिली (ज्या र १)। साहर के [मान्य] र साहत के मुल्लामा। र साम के मान्यला (जुल्म र १)। साहर कि [मान्य] महुए ना (जर्र ११)। साहर कि [मान्य] महुए ना (जर्र ११)। साहर है कि [मानुर क्षा र महुए भी मानुर कि [मानुर क्षा र महुए के कि मानुर क्षा र महुए के मानुर कि [मानुर के मानुर करते हैं।

भीजीयतीन् ना पेत्र (हूँ १ २४४ मंड)। १ न भीजीरे ना कम (यह दुमा)। माहस्तर दि [माहंभर] १ महेल्बर मण (सिरि ४)। १ न नमस्पितेन (पत्रम १ ६४)।

मि (प्रप) देखी अवि--यपि (मनि)। सि दो सित् फिरी मही चा मिली बाधपमादलाकुद्योगस्त्रमेन नदबादौँ (विदे ११४२)। "पिंड वं विष्ड निर्माना निशा (व्यपि २ )। स्मय वि मियी मिद्री का बना क्ष्मा (उप १४९ पिंड ११४) सुपार ७)। मिश्र देशो मय = मूक 'सर्वाशिक्योसेस् निमी मंभी वाहबाखेश' (सुर व १४२, क्तार १३ पर्यार १३ सम ६ क्ष ४ श वि १४)। आचान [\*सक्त] निद्या-निदेश प्राम प्रवेश धादि में मुत्रों के दर्नन भारि से नुसाराम एक बाक्ने की निचा (सुम २ र २७)। प्रमणो, नयणा को "नयना" देखो सय-द्वरी (तार, सुर ६३ १६६) । सम दू ["सक्] करत्ये (रंग १४)। रिकर्ष रिया क्षिष्ट (सूपा १७१) । बाहण पुं विशासनी भरतक्षेत्र के एक भाषी तीर्वकर (सम १६३)। सिश्चर् [सूरा] इरिए के प्रकार का पर् विशेष, जो इचित से छोटा और जिस्का पुल्ला बाना होता है। स्रोमिश पि [क्षोमिक] **ए**सके नावों से बना हुया (प्रसु १६)। मिझ आचो सित्तः ⇔भित्र (प्राप्र)। सिञ्जिषि दि] प्रमंद्रतः विमृक्ति (वर्)। सिक्त कि सित् मानोपेत परिकित (क्त १६ ३ सम् १६२३ कल्प)। २ क्षेत्राः मक्त मिर्म पुरुष (पाम)। वाह वि िवादिम् बाला याति स्थानी को परिवित

माननेवास (ठा स्न्यम ४९७)।
सिस्त केसे सित्र = इर (सा १ ६ मा नाट)।
सिक्त केसे सिम्ना। स्यम दूं [माम]
सम्मन्दिक (किंगा र र)।
सिम्नम्सा की [सुगमा] किंगार (गर्मकु २७)।
सिम्नम्ब दुम्लाकु र कुरु को दिश्लाकुमा

ना प्रिम्ह (पुरूत २ )। ३ स्रशापु संस

े ।

मिर्धन विश्वो भर्यन = मृत्य (कन्यु) । मिलसिर रेको मगसिर (पि १४)। सिजा की सिगा र चना निजय की पली (विपार रे)। २ समामसमा की फरी (क्त १३ १)। उत्त, प्रत व प्रिन्नी रै राजाविजयंका एक पूर्व (विपार रा कर्म १४)। २ राजा दशका का एक पुत्र क्लिम रूपय नाम बन्नभी वा (उत्त १६) २)। बर्डकि विती १ प्रवस वासकेन भी माताका नाम (सम १६२)। २ एका रातानीक भी पटपानी का नाम (विपा t (x 5 मिइ 🐗 [मिति] १ मान परिमाणः। १ हर, धननि कि दुक्तरपुरायात्रों न पिई बमुबायस्तीए (वर्नीव १४६)। मित्र देखों सिक = मृत् (वर्मेंचं ११)। मित्रंग देवी सर्थंग = मृत्यं (दे १ १ १ १ १ भूमा) ।

तिर्मुत केसी मार्गुत प्राप्तेस (पित १२४)।

स्वा की प्रियु पितु मुद्देश मुद्देश पित्र केर्यान्तरभीरतामार्ग्यकेश कुमानुम्म (सामार्ग्यक्श कुमानुम्म (सामार्ग्यक्श कुमानुम्म (सामार्ग्यक्श कुमान्त्रम (सामार्ग्यक्श क्ष्मार्थक्ष कुमान्त्रम (सामार्ग्यक्ष १६६ क्षा कुमान्त्रम (सीमार्ग्यक्ष)।

सिव्य कि प्रियु मार्गाक सुक्रवार (सीमार्ग्यक्ष क्ष्मान्त्रा (सीमार्ग्यक्ष)।

सिव्य कि प्रियु मार्गाक सुक्रवार प्रियम्बर्ग क्ष्मान्त्रा (सिव्य कि विद्यान्त्रम हिमार्ग्यक्ष क्ष्मान्त्रम (सिव्य कि विद्यान्त्रम हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्य हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्य हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्यक्ष हिमार्यक्ष हिमार्यक्ष हिमार्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्ग्यक्ष हिमार्यक्ष हिमार्यक्य हिमार्यक्य हिमार्यक्ष हि

भिष्या न [है] योषना निर्माणन (है है है)। मिल्ला की मिल्ला है स्वीप का स्वयव-मिल्ला किया (प्याह है स्थापन के स्थाप क्रिया हैए हैं स्थापन के स्थाप

सिंठ र्पु [वे] इत्तिपक हावी का सहावत

मिठिका (क्य १२० टी, क्रुप्त १६ ) सङ्

मत कर, वर्गीत १ ११८ मत १ । वर ११ ) । देवी मेंठ । मिंड } पूर्वी सिंही १ लेंक मेद स्वाप्त मिंडम } (विशेष ४ के तर प्रशृह सुकूप ११९) के व वस मिस्सा के व' (वर्गीय १४)। की. "हिया (पाप)। २ त. पुरा हिंग पुनर्शका (पाव)। सुद वृ [ सुरा ] हा पार्थ कर पार्य कर पार्थ कर पार्य कर पार्य कर पार्थ कर पार्थ कर पार्थ कर पार्य कर पार्थ कर पा

ादिव पु [भीषप] सिंह (स्पाह २ ४)। मिनाया की [सन्तया] शिकार (सुना २१४ कुत्र २३ मोह ६२)।

मिगाञ्च न [सृगाब्द] उत्पर देशी (ब्रन्त रेव रे)। मिगसिर देशो सगसिर (सम क दक्क पि

४२६)। मिगावह रेको सिझा-कहूं (पठम २ १८४ २२ ११ पत्र बीट हुन १८६, पत्रि)। मिगी की [मूर्गा] १ इरिटी (पह्ना)। २ विमा-विदेश (ए.स)। पर न [पद् ] की का इस स्थाम मोनि (पत्र)।

मिच्यु देशो सच्यु (पद् । हुमा) । मिच्छ (पप) देशो इच्छा = इप 'न उ देइ च्यु मिच्छा न न बहु (पनि)।

निष्यः प्र्रृं स्तिष्यः यत्रमः सनार्यं सनुत्यः (पदमः २० १० १४ ४१ ती १४, सनोत्रः १९)। पद्रुं प्रृं प्रमु स्तेष्ण्यां तरावाः (रेपः) पद्रुं प्रमु स्तियः प्रमु स्त्रतः तर्माः पिष्यस्थियं प्रष्रुष्ठं वाः गेनो तान विस्तिः (वह १)। स्त्रितः प्रृं सिष्यः

यकों का राजा (गुक्क १२, १४)। मिष्य न [मिष्य] १ सकत बजन, पूठ। १ रि. सक्तय कुठा 'मिण्यं' (गुक्क १३ (जन) नी दहा नेन मिण्यं' (गुक्क १३ १६)। १ मिष्पार्ट्य, क्षत्र पर विश्वाय नहीं प्रजीताता तस्य कर सामबाद्या 'मिण्यो हियाहियविभाक्तासस्य एएसम्बन्धि कोई (विसे ११६)।

सिच्छ देशे सिच्छा (कम १ २) )।
कार दूं "कार] मिन्या-करल (लाग)।
च न [स्य] सत्य तरक पर अध्या सत्य वर्ष का व्यक्तिपत्तम (ठा १ १ साचु ६) मार सीच कर १११ हुना)।
"चि वि [स्थिम] सत्य कर्म रिश्तास नहीं करतेवाला परमार्च का सम्बद्ध (वे १८)। विट्ठ "विट्ठीम (इट्ठि "विट्ठिय वि [क्टिंट, क] सत्य वर्ष पर मदा नहीं रखनेवला विजन्मां से जिल वर्ष को मालने बाला (सम २६ हुमा ठा २ २, सीच)

मिष्टा व [मिष्या] र मतरम, मूटा (गाय)। २ कर्म-विरोग मिष्याल-मोहमीय कर्म (क्मा २ ४ ४४)। ३ पुरा-प्यालक विरोग मत्त्र प्रश्नात (कमा २ २ ४ १३)। देशाण न [वर्मन] ३ एस या पर समझा (सा ट सग्ध मीत)। द सस्य कर्म (कुमा)। नाया न [बान] पसस्य कान विरोग काना सक्रम (गरा)। सुझ न [कित] स्मराय साक्ष, विष्यातिन अस्थि साक्ष (वर्षि)।

सिळा प्रकृ[सृ] मरना । मिन्नॉरि (सूच १ च १) । शक्क- सिळामाण (सप) ।

भिर्वात } देवो मा≔या। भिर्वामात्र } भिरमाति [मेप्य] गुवि पदिव (उप ७२८ डी)।

सिट एक [ब्रे] मिटाला, बोज करना । मिट्रि बन्दु (सिंग) । प्रयो मिटानड्ड (सिंग) ।

सिह वि [सिष्ट सुष्ट] मौता, मकुण 'पूर्वमिट्टा मणुदुत वेषा सिद्धाण क्वमिट्टा' (वसीव ६६० कप्पू पुर १२, १७) वे १ १२० रेपा)।

मिल तक [मा, मी] १ परिमाल करता नारना डोनना । २ बातना, निरुष्य करता । मिलाइ (विषे २१८६) मिलुङ्क (पत्र २१४) । मिलाज न [मान] मान, मार परिमाल (वर इ १७)। मिणाय न ः वसाकार, ववरवस्ती (वे ६ ११३) । मिणास देवो सुणास (प्राक्त प्रांती) ।

सिच पं सिश्र] १ सूर्यं, चीर (मुना ६४%) सुबाध ६। पाम वजा १४४)। २ नधनदेव-विशेष प्रमुख्या नशन का प्रविद्वायक देव (ठा२, ३ — यत्र ७७ मुळ १ १२) । ₹ बहोराव का दीसरा मुहर्च (सम ५१) सुरुव १३)। ४ एक राजाका नाम (विपा १ २)। १ पून, बोस्त वयस्य समा मिली सही वर्षसी (पाम) 'पहालमिला' (स ७ ७) 'विविहो मित्तो इवर' (छ ४१४) चुना ६४६, प्रासू ७६) । किसी हो विस्ती स्वक पर्वंत पर रहतेवासी एक विकट्टमारी देवी: बार्लंड्सा मित (?त) केसी' (ठा य---पद ४३७ ६७)। मा की मा निरोजन वधीला की एक सप-महियी एक इन्ह्रासी (स ४ १ — पत्र २ ४)। लिव वृं [निन्दिम्] एक राजा का नाम (विया २. १)। दाम प्रं विद्यामी एक दुसकर पुष्पकानाम (धम १४)। देया औ भी विषा] धनुसमा नतम (सम)। य वि [ वन् ] भित्रवासा (उस व १८)। सेण इ. सेन] एक पुरोक्त-पुत्र (मुना X 9 - 1

मित्त देखों मेत्त = मात्र (कृमाः बी ६१ ूप्रामु १४४)।

मित्तक दृं [ये] कन्दर्ग काम (वे ६, १२६ सुर १३ ११व)। मित्ति क्ये मिती १ मान परिमाता । ३

मित्ति औं मिति] १ भाग परिमाण । २ चापेकताः 'जन्म'गरमायार्थं मितीए महरण भीमर्खं हुई।

क्सरम्बनायास् भितीर् सह रा भीमस् हुई। इस्सम्बनायास् भितीह तहेन उनगरस्' (धनमः ३७)।

मिचिका की [स्चिका] मिट्टी मट्टी (समि १४६) । बद्द को [बर्ता] बराएँ देश की प्राचीन राजवानी (विचार ४८)।

सिचित्र सक [सित्रीय्] मित्र को बहुता। वह सिचित्रमाण (उत्त ११ ७)।

मिचिय न [मैप्रेय] १ गोन-विशेष को बरस मोन नी एक शाबा है। र पूंची कर योज में करम (श ७--पत्र २१)।

रि ६६॥ छाना १ १--पत्र ६४)।

विचार १ ६। श्वीच १४) ।

.v2 (1) 1

मीत रेबो मित्त = मित्र (धींका १७)। मीमंस सक [मीमांस्] विचार करना। कु. पा-मीमंसा प्रक' (स ७३ ) । मीमंसा की [मीमांसा] वैनिनीय क्लन, पूर्वमीमीसा (मुक्का ३ १) घर्मीन ३८)। मीमंसिय वि मिमांसित विवारित (का € **< ₹** 21) 1 मीरा की दिं] की में भुरूकी बड़ा भुरूका (सुमनि ७६) । मीख पर मिल ने मीचला बन्द होगा सङ्ख्याना। मीसइ (हे ४ २३२ पड्)। मीस देशो मिस्र (वि ११)। मीडच्छीकार पूर्मिछच्छीकार] १ यक्त देश-विशेष 'मीलव्यक्कीकारदेसीवरि पतिबो बपरबाखरायां (हम्मीर ३४)। २ एक यक्त राजा (हम्मीर १४)। मीस्रम्य न [मीस्टन] संकोच (कुमा) । मीरूप देखो सिदाज 'क्युवर्णमरापीकरोविमा निसमा (वि ११: एव)। मीक्किय रेको मिलिश = मिसिस (पिन)। मीस सक [सिश्रय] मिलामा मिभए। कथा। कर्म, मीसिवद (पि ६४)। मीस वि[सिम्र] १ संपुक्त, मिला हुमा मिमित (हे १४६ २ १७ कुमा) कमा २ १६ १६, ४ १६) १७,२४० सब भीय इं २२)।२ न सम्प्रकार दीन दिनों का उपवास (संबोध १८) । मीसाक्षित्र विभिन्नी संयुक्त मिना हुना (६२.१७ : कुमा) । मीसिय वि [मिमित] अर्थर देवी (कृमा कम्पः धरिकः) । सुभ पन [मोद्य्] कुठ करता। स्वह सुर्व्यंत (से ७ ३७)। सुभ सक [सुप्] कोइना। पुगद (१४ ८१), पूर्वति (या ६१६) । वहः मुझति, मुममाप्य (वा ६४१) से व वश् वि ४०१)। र्षेष्ठः सुब्द्या (मग) । मुल वि[सृत] मध हुन्या (६३ १२ गा रे४२, बला ११व, प्रापू १७। पदम १०। १६८ च्य ६४० ही) । विद्युत स विद्युती रव-मान, ठठरी बरबी (वे २ २ )।

मुझ वि [स्मृत] यद किया हुमा (सुम २ ,७ ३० माचा)। मुर्जक देखो मिर्जक (प्राक्त =)। मुर्जन देवो मिर्जन (पर् सम्मत्त २१८)। मुर्धनी भी दि] क्रीटिका भीटी (रे ६ १३४)। मुख्या दें दि चात्मा बाद्य और धम्मन्तर पुरुवर्ती से बना हमा है ऐसा निम्मा ज्ञान (ठा ७ टी—पत्र ६८६) । मुभण न [मोचन] कुकारा बोइना(सम्मत **७**वा विशे ३३१६; बंद १२ ) | मुख्य (धप) देवो मुझ = मृत (पिप)। मुआ भी [ मृत् ] मिट्टी (चेति ४) । मुभा की [मुद्द] हुवें कुती बातका 'सुरयरधायोगि पूर्व महिने छनवराइ तस्त सा एस' (रमा)। मुआइजी भी दिं] हुम्बी डोमिन चाएडासिन (वेद १३१)। मुभाविम वि [मोचित] भूतवादा हुन्म (ध 884) I सुद्रवि सोचिम् विक्नेगवा (विवे ६४ २)। मुद्देश वि [मुदित ] १ इपित मोह-माप्त (सुर ७ २२३ प्राप्तुर १८ छनः भीष)। २ तू रावण का एक सुभाक (परम १६ १२)। मुद्रम वि दि योनि-शुद्ध निर्दोप माताबासा 'मुहमो नी होई बोशिमुडो' (मीप-टी)। मुद्रअंगा देवो मुर्जगीः 'चवविष्यते कामा मुदर्भवाद नवरि स्क्ट्रें (पित्र १६१)। मुद्दंग देखो सिर्भग (दे १ ४६ १३७ ब्राप्त धनः कण पुता ११२: पाछ)। **"पु**कस्तर र्पुत [पुष्कर] मुश्न का उत्परकला मान (मन) । गुरंगक्रिया ) भी [वे] भीटिका पीटी (स्व मंद्रेगा ) १९४ से संबंद ६ विसे १२ व चित्र १३१ ही)। सर्वनि वि [स्टक्किम्] मूर्वन वजानेवाला (कुमा) । भुइंद देखी सर्द्र = मुक्ति (प्राष्ट्र =) । सुद्रवांद देखो सुभ ⇒ मोरप्। भुद्दर वि [मोक्त्] सौक्षेत्राना (एए) । मुद्र देवो सिंह (काव)।

सुवर्वद पूँ [सुचुकुन्द] १ तृप-विशेष (धण्डु ६६) । २ पूष्पद्धा-निरोव (कृप्पू) । मुदंद र्षु [मुक्टन्द] विद्यू नारावण (नाट---चैत १२६)। सुरुर वेको सङर ज्ञमुहुर (पक्)। मुठल देको भवछ = पुरुत (पड भुदा ८४)। र्मुगायण न [स्क्रायण]योत्र-निरोप विराजा नसम का नोप (इक)। मुंच देवो मुखन मुन्। मुंबद, मुंबए ( यह कुमा)। मुका सुवी (मत ७६)ः स्रवि मोभ्दां मोम्बिहि मुक्तिहरू (हे १ १७१ पि १२६)। कर्ममुख्यकः मुक्ट, मुक्ति (धाचा हे ४ २ ६ महामन)। मनि मुनिहिति (सम्) । वहः, मुन्ततः (हुमा) । कनक सुर्वेस (पि १४२) । संक्र मोर्चु, मोत्तुआण, मोत्तूण (दुमा पर्, प्राक्त १४)। हेक मोर्च (कुमा) मुचलहि (भए) (कुमा)। इ. मोत्तस्य, मुत्तस्य (हे ४ २१२ गा ६७२ सुपा ४८६)। संब हुन [सुझ] मुंब दुर्ग-विशेष विश्वरी रस्थी वनादेवाती है (सूच २ ११६) रण्य २ १६, ज्य ६४८ टी)। "मेहस्स की मिसका मैंच का करियुत्र (शाया १) १६--पत्र २१६)। संबद्ध मि [मीआकिम्] १ नोन-निरोप। २ पुंची योत्र में उत्पन्त (ठा ७—-पत्र ३१)। मुंबकार पु [मुक्तकार] मूंब की एस्सी बनानेवाचा रिक्पी (श्रष्टु १४६)। मुंजायण पुं [मीआपन] ऋवि-विशेष (ह ११६ प्राप्त)। मंखि पुंसिक्षिम्] स्मर देखी (प्राष्ट्र १) । सुंट वि [दे] हीन राधेरवासा वे वंगचेरम्ट्रा पाए पाइति वंगवारीत्। वे इति द्वयद्भय बोहीन मुद्रुवरा वेदि (स्वोव १४)। र्मुड सक [सुण्डम्] १ मूंबना नात ध्यादना। ए दीका देना संस्थात देना। मुक्द (मनि) मुद्देह (नूम २२ ६३)। प्रयो, बड़. र्मुडावेंत (पंचा १ ४० टी)। देश मुंदावेचे, मुंदावित्तप, मुंदावत्तप (पैचा १ ४ वा ठा २.१ व्यः)।

भुक्ति भिक्ती श्रद्धोड़ा ह्या श्वक (इस० भूत ४७५ महा पाम )। २ पुण्डि-प्राप्त, मोला-प्राप्त (हे २)। देनपदार पौथ दिन का कानान (देवीय ४ ) । देखा मुच्च = कुछ । मुद्रव ५ हि ] दुर्शल के प्रतिरिक्त प्रन्य निमन्दित भन्दाका का विवाह (वे १ १६४)। सुकान्द्र वि [वि] १ कवित सोन्स (वे ६ १४७)। २ स्तेर स्तक्षम्, धन्तमञ्जूषः (दे र्व १४० पुर १ १३१ विते १ का बढका विरि ११३। नाया गुगा ११८) ।

मुख्बिल वि हि क्यन-पुक किया हुए।

धनिवन्तित (देर् १३६८)।

(क्या)। २ राय-विशेष (वि १३)। ३ पशि-विशेष बस-मार्क (माप्र)। पण्या श्री िपर्जी बन्नवित विशेष (पर्**ग**ी—मन ६६)। सेख दू [शीक] पर्यट-विशेष काक्ष नहीं सींपनेवाला एक पर्नंत (का ७२८ दी) र

सुन्धिकात वि [मृन्ध्यायमान] सुन्द्रा को मत्त्व होता (वे १६ ४३) । मुष्टिकम पु [मृष्टिकोम] मलन क्रिय 'बायाय काएक कछर्राहमाल न रास्तु रम्म । नोमणसङ्ख्यमाको पुण्यसमञ्जो समाहरह (मन १)। सुचित्र वि [मुचित्रीय] १ वहनेरावा । २

बेब्रोसीवाचा (कुमा) ।

सुम्मद्भवतः [सुर्] १ मीव् करना। २

वंबकृत्वा । हुम्बद् (धाष्ट्रा क्या महा) ।

मरि पुनिम्महिति (भीप) । क्र मुजिसमञ्ज

(म्या ६ ६ - मन १४१: जन) ।

मुगाइ र् 👣 गीवल म्लेक्स-शांदि विशेष (१४४१)। देशों मोम्पद्र। सुगार न [सुब्धार] १ पूप-विशेष (वन्त्रा

१ ६) । १ वेबी मीम्पर (प्राप्ता बाद ३६)

कम्म)।

मुजास्ति पुं [मुजालिन्] १ वय-समूह । २

पद्म-युक्त प्रदेश कमसवासा स्वातः 'मुखासी

मुद्दिम-मुचि मुद्रिम पूँकी दि वर्ष माईकार, प्रवस्तती में भोटाई: 'क्यमुद्रिमंदीकारों (हुम्मीर ११)। रेबो मोडिम । मुहु वि [मुष्ट, मुपित] विश्वकी चौधे हुई हो बह (पिक्र ४६६ सुर २ ११२) सुपा **६६१ः** महा) । मुहि पूंजी मिष्टि पूडी पूठी पूँचा गुवा पुट्टिएगं मुद्दीयं (विश्वेष्ट श्वेश पाम रभागि। मुक्तन ["युद्ध] प्रृष्टि छे भी वाती बहाई, मुकामुकी (मावा)। पुरवय न िपुस्तको १ चार मेंद्रस सम्बा बुतानार पूरवनः। २ चार धरुतः सम्बा बनुषकोस पुस्तक (पब ८ )। मुट्टिय र्रं [मीप्टिक] १ धनार्य केल-विशेष । २ एक धनार्थं मनुष्य-वाद्यि (परहर १---पत्र १४)। १ मुद्री से सक्नेवासा मस्त (पराह २, ६---पण १४६)। ४ वि मृष्टि-सम्बन्धे (कृप्प)। मुद्धिम पू [मुष्टिक] १ मस्त-विशेष विश्वको वक्षेत्र ने मारा था (पर्श्वह १ ४---पत्र ७२ पिंको । २ वसावै देश-विशेष । ३ एक भगार्वे मनुष्य वाति (इक) । मुद्रिकाकी [व] दिल्का दिवकी (वे ६ (4#5) I अबुढ देवो अंड (कुमा) । मुद्द वि [ मुख्य, मृह ] मूर्व वेरवृष्ठ (इम्मीर ११)। मुण धक 🗐 मुख 🕽 जलना। मुख्यः, मुर्खेल, मुस्सिमो (१४ ७ दूपा)। कर्म. मुखिन्बद (हे ४ १६९) मुखिन्बानि (हास्य १९८) । बङ्क मुर्जत मुजित (महा पस्म ४व ६)। इबक्र मुणिज्ञमाण (स २, १९)। संक्रुमणिय, मुणिटं मुणि-कण मुणेकर्ण (सीपा महा)। 🕏 मुणिअव्य मुणेभव्य (कुमा से ४ २४) क्न ४२३ कप्पाउका भी ६२)। सुणप न [कान सुजन] बान पानकारी (द्वाप १०४) संबोध १३८ वर्गीत १२४) रुख)। मुणमुज एक [ मुजमुजाय् ] धन्यक रूम क्ष्मा बहबक्रमा । वहः मुजसूर्णत

मुणमुज्ति (महा)।

बत्याली' (मुपा ४१३) । मुणावित्रा ) भी [मृणावित्रा, स्पे] १ मुणाञ्जी 🗦 विस-चन्तु, कमस-नाल का सूता (मार्र—सरमा २६)। २ विस का मैकूर (पढड)। १ कमिति (राम)। रेखो मधास्त्रिया। मणि प्रिनि र सम्बोप-स्मृत मनुष्य, संत साबु, ऋषि यदि (साचा पास कुमा गडड)। २ मफस्य ऋषि 'अवदिवसं व मुख्यिल (बुपा ४८६)। १ सत्त की संस्था। ४ व्यय-विशेष (पिंग)। चांत्र पू ["जर्जू] १ एक प्रस्तिक **वे**न भाषार्थ भीर प्रमुख्यार, को बार्यी देवसूरि के पुद के (बम्मो २४)।२ एक सम-प्रम (महा)। नाह् प्रै िनाम] शाहुमों का नामक (सुना ११ २४)। पुरावपु [पुक्क] भेहमूनि (पुपा ६७ मु ४१)। सम वृ [राज] मुनि-मामक (मुपा १६)। यह पु िपति ] बद्धीयमें (मुपा १८१ २ ६)। बर दू विर बेह मुनि (मूर ४ १६ मुना २४४)। विजयंत पू [चिजयन्त] मृति-प्रवानः बोह मूनि (तूम १ ६,२)। सीह पुं िसिंग वेष्ठ मुनि (वि ४६६)। सब्बय दं सिक्त रे बर्टमान कल में सरपन्न मारवर्ष के बीसर्वे वीर्यंकर (सम ४६)। २ जायानर्षे के एक गावी ग्रीचीकर (सम १६३)। मुणि पू वि मुनि वृत्त-विशेष प्रवस्ति हुम (दे ६ १६३) हुमा) । भृषिक्र वि [काव, मृणिव] बाना हवा (के र, १६६) पाम प्रमार मानि १६ पराह १२ का१४३ टी)। मुणिक वि वि मुणिक] वह पृश्चेत भूता-बिष्ट पापल (सर् ११-पन ६६१)।

टी मिनि)। मुचेवि (द्वाप ६२) । मान्मरनामा (नैस्य ६१)। २ कठिन। ६ मूका ४ मूच्यां मुक्त (हे २ ३ ) । ५ तु ६८)। ६ एक प्राप्त का शाम (कप्प)। मुत्तम्य देवो मुच। मुत्ता व्य [मुक्त] मोठी मौकिक (हुमा)। आक्षान [बास्त] मुक्त-समुद्द मोतियाँ की माका (मीप पि १७)। दाम त [ दामन्] मोदियों की माता (ठा ४ २)। वस्ति, वसी और विकि सी १ मोती की माला योदी का हार (सम ४४) पत्र्य) । २ वप-विशेष (धंव ११) । १ हीय-विशेष । ४ समुद्र-विशेष (राज) । सुन्ति की ['शुक्ति] १ मोडी की शीप । र मुक्त-विरोध (वेदम २४ वेवा ३ २१)। इस्त विस्त मोती (हे १ २६६) कुमा प्रस्तु २)। इक्कि वि [फल्लमत्] मोठीवाचा (क्यू) । मुचिकी [मूर्चि] १ वन बाकारः भूचि विमुत्तेमु (स्टिंड इंड विशे ११०२)। व् प्रदिश्यम, प्रतिमूचि प्रविषय चरपुरपुष्टि-

मुर्णिद पुर् [मुनीम्द्र] बेंध मुनि (हे १ वर मुजाळ दुन [भूणाक] १ पषक्रव के ऊपर की बेस—कता(माचा२ १ व ११)। मग)। २ किस पद्माला। ३ पद्मादिके नाम का तन्तु-पूत्र (पाम-खामा १ १६ भ्रीप)।४ बीरए का मूस। १ पथ कमसः 'मुलासो' 'मुलासे' (प्राप्तः 🕻 १ 👯 १)।

मुणिर वि [हातु मुणितु] वाननेवासा (एए)।

मुणीरा पु [मुनीरा] मूनि-नायक (बप्र १४१ मुजीसर र् [मुर्ना घर] रूपर रेवो (तुपा

मनुष्यपन । २ पुरुपार्य (हे ४ ३१०) ।

मुजीसिम (घर) पुन [मनुष्यतः] १ मुक्त सक [मृत्रस्] धूवना पेराव करना।

मुत्त न [मृत्र] प्रसन्छ पेरान (मुपा ६११)। मुक्त देवो मुद्ध – मुक्त (सम १३ से २ 🕫 भी २)। । छय पुत्री [शस्य] मुक्त को गाँ का स्वान, ईपट्यान्यास वामक पुवित्री (इक)। भवै या(ठा⊏ —पत्र ४४ ३ सम २९)। मुत्त वि [मृर्व] १ मृतिवासा स्थवासाः

करवास एक दिन का उपवास (संबोध मुत्त देवी मुत्ता (बीप' पि १७ वैस्प १४)।

\* \* \* x) ı

१५६) ।

2 (1)

(कुमा) ।

मोक्स ।

महिम । की [मुद्रिका] वैद्रश्री (पर्यह १

महिला र्रिश क्या चीप तंतु २१)। वंच

महिआ भी मित्रीका र बका की बता

(पएए १-- पत्र ३३)। २ झाला दाल (ठर

४ रे-पत्र २३६ वर्ष १४ १४, पत

मुद्दुय देवो मुद्दग (१ए७ १ - पत्र ४४)।

मुख देवो सुद्ध (धीत' कम घोषवा १६)

कुमा)। स्रवि मियौ १ मस्तक में अस्तर।

२ मस्तक-स्व चयेवर। १ मुर्वस्वानीय स्वार

यावि वर्षी (दूमा)। यर्द्री को केट

बाल (पएइ १ ६—पन ६४)। सुद्धान

िशास्त्र मस्तक-गोहा चैन क्रियेप (शाबा

मुद्ध वि मुख्यो १ मूद, मोइ-पूछ । २

मुन्दर, मनोजर, मोक्रशनक (हे २ ४४ जाज

सदाव्ये सिन्धी धून्याची नाविकाना

कुमार्र विपा १ ७—पत्र ७७)।

भुद्धा (बप) वेको भुद्धा (हुमा) ।

मुद्दी की दिने पुरवन (दे ६ १६६) :

वं विन्धी प्रस्थितन सन्त-विशेष (मीव

मचि-मस्मंद

करता । इ.व्यात करता : ६ बोनना । ७ प्रेंक्ना । सूर्य (ब्राफ्ट ७३) ।

मुरसक [स्ट्रट] चीलयाः प्रदर्शाः ४ ११४- पर )। मुर् पु [मुर्] रेल-किलेगः रिष्ठ पू ["रिपु] बीक्रप्छ (ती १)। "वेरिय व ि पैरिस्

बही धर्च (कुमा) । तरि पूर्विशिरी बही मर्वे (बन्ध ११४)। मुर्छ भी वि] बस्ती कुपटा (वे ६,११४)। मुरुळ ५ वै मुरुळ हे मुर्चन, बाच-विरोध (क्रम मुख्य रेपाध-या २१३ मुता ११६ धंत भर्मीय ११२ क्य २००७ ग्रीम का प्र

२१६) । देशो मुख्य । भुरतः प्रे.व. [भुरस्त] एक वारतीय विवस

केत केरब केरा 'स्वियर छ सिद्धा दुए बुस्मा' (**पा** ६)। मुरव देवो सुरय (मौरा का पू २३६)। २ मुर्राव की [के मुर्राजन] पानरल-किनेप (चीन) ।

धेव विशेष, गल-वरिश्का (धीप) ।

सुरिभ वि [स्फुटित] बीना ह्या (हुमा)। मुरिम वि [वे] १ वृद्धिः द्वय हुमा (वे ६ १९६)। २ मुकाह्मा वक्र बनाह्मा (पुन XY0) t मुरिल पू [मीर्च] १ प्रश्वित विषय-वंश (कर २११ टी)। १ मीर्स वंत में जलम 'रामिको

मू(१ मु)रियक्कमहे' (विशे २१४७) । (स्क पन २७४) । २ पार्यमासमूरि के धमय का एक रावा (पिंड ४६४ ४६४)। ३ पूंची पुरुष देश का निवासी सनुष्य (प्रस् र र-पव १४)। और विदे (रक)।

सुरंब ई [सुरुण्ड] १ मनामें केल-निकेप सुरुषि की [ब्] पकाव-निरोप (करा)।

₹₹♥) 1

[पे] प्रः केती की सद (दे ६

एक नेप नाम-नेप्रा-पश्चित श्रीपृत्ति बीवना मुरुवत देवो मुक्ता = वूर्व (हे २, ११२ क्रमाः गुपा ६११ प्राक्त १७)। मुग्सं≅

सुद्धाप केबो सुद्ध (बका कम्मा नि ४ २)। मुक्स १ वि वर के स्मरका तिमीव कता. प्रकराती में जोम' (वे ६-१६६)। देखो

सुनुष्मु वि[सुनुशु] पुरु हैने की बाह बाबा (सम्बद्ध १४)। मुम्मुद्द्र्भवि[सूक्त्रमुक्त] रबायन्त सूक्र। मुस्स्य र सम्बद्धभाषी (तुम १ १२

१, सन्)। मुन्मुर एक [चूर्णम् ] पूरणा पूर्व करता। मुम्बुरद (प्राष्ट्र ७३)। मुन्मूर वृष्ट्रि करीय चोडल (वे ६, १४०)। मुन्मुर वृ [के सुसुर] १ करीवानि योवेठा

की साम (दे६ १४०) भी ६) । २ तुमानित (तुर १ १८७)। १ अल्य-व्याप्ट ग्रीन् सत्त विविध यदिन-मण्ड (ज्य ६४ ही) भी ६ भीव १)।

मुस्स्क्री को [मुस्मुली] मनुष्य की कत क्लाफी में नवनीं क्ला--- व से १ वर्ष

पास प्राप्त १११)। २ निर्मोत्रका, चंदीप (धा ११)। १ द्रुक भीवों का स्वान दैपठ्यान्यस पुषिनी (ठा ब--पत्र ४४ )। ४ निस्तुनना (माना)। मुक्ति वि [मृत्रिन्] बहु-पून रोवनलाः 'उर्वार च पास पृत्ति च सुरिप्तयं च गिलासिखं (भाषा)। भूति वि मिकिस, मीकिको मोती पियेने

चठर्री (सबीच र) । ३ रारीय, वेड (मूर १

कृ। पाम) । ४ काळिन्य कळिलाव (के र

३ । प्रक्र)। संविषि [सत् ] मूर्त्विकता

मृतं सभी (धर्मीन ६) मुपा १व१ स् १७)।

मृत्ति की [मृत्तिः] १ मीच निर्मातः (पाचा

458

या दुष्मिने वाला (उन पुरुर)। मुचित्र न मिरिक्डो मुख्य मोतौ (से श ४८ क्रम ६ कुमा सूपा २४-२४६३ प्रामु ११ १७१)। वेली मोशिका। भुक्तोधी भी [बे] र पूत्रफाव (तंद्र ४१) ।

२ वह खोटा नोठा भी ठमर नीचे संनीवाँ झौर सम्बर्भे निरुद्ध हो (धन)। मुख वि [मुस्त] मोना नावरमोला (यज्ज) : की त्वा(स्वीव ४४ दूमा)।

मुद्रग्ग देवो मुक्तमा (ठा ७—वन १ २)। सुदा की [सुदा] इर्ष कुछी। तर वि [कर] इपैननक (मूच १ ६ ६)।

सद्भा प्रं वि] बाह-निवेष जल-जन्त की एक वावि (भीव १ टी--वब १६)। सुर एक [सुद्रय्] १ मोहर लक्का। २

बन्द करना । १ धवन करना । पुरेष्ट् (बस्म ११ टी) ।

मुदंग र्रं वि]१ जखन। २ सम्मान (१) (T YE DI YEY) ( सुरग ) पुं [सुद्रिका] भौदये (छन): भारते

सहय । पर् । तुमे कि शह शतुनिपुर्शी एको (प्रक्रम ४३ ५४)। मुद्दा भी [मुद्रा] १ नोहर, काप (मुता १२१ बमा ११६) । १ मॅब्रुटी (बना) । ६ श्रेय-

क्रियास-विशेष (केल १४) ।

मुक्तिभावि [मुद्रित] १ विस दर मैक्टर **नगर्दन्दे हो पद्व। २ वेद रिया हमा**  मुस्मुरिश्च न [दे] रणरणक स्मान्ता (दे ६ १३६ पाछ)। मुख्य देशो मुस्मन्य ( पर )। सुस्रासिक पू 🐧 स्ट्रॉनग प्राप्त-करण (वे 4 (12) सुन्न (प्रत) देशो सुन्द । युक्तर (प्राष्ट्र ११६) । ) पून [सूरुय] कीमत' 'को मुखो' मुद्धिल र (बका १५२ और पाम कुमा प्रयी ७७)। भुव (प्रप) देखी भुञ ⇔ मुच्। मुबद (मनि)। भुरुषद् देखो चरुबद्द = जर् + वह् । मुन्दहर (\$ ? (xo) 1 मुस सक [भूप] कोरी करना। मुसद (है Y २६६ साथै ६२)। भनि मृश्विसम् (वर्मीव ४) । वर्गमृश्चिमामो (नि ४३३) । वड मुसंद (महा)ः स्वड मुसिट्यंत मुसिकामाण (सूपा ४% क्रूप २४०)। पंत्र मुसिज्या (च ६६३)। मुसंदि देवो मुस्दि (सम १९७; परह १ १--पण = वत्त ३६. १ पर्या १--पत्र ११)। मुसण म [मोपम] को ध (सार्व १ कर्मीक मुख्य र्वन [मुख्य ] १ मुख्त या मूबर, एक मकार नी मोटी शक्ती जिससे चावस प्रादि शक्त क्री वारी हैं (भीप क्या पड़ा हे र ११६)। २ मान-विशेष (सम १०)। घर पूँ ["घर] मत्तरेव (कुमा) । विद्यु वृ विश्वया वसरेव (पाष) । मुस्य वि [वे] मास्य पृष्ट (पर्)। मुसछि पु [मुसांसम्] बनदेव (दे १ ११वः प्रमु)। भुसली देवो मासली (मीममा १६१)। मुख्य न [दे] सन की बादुवता (वे ६ ₹ ₹ ¥ ) 1 मुसाय क्षे [सुपा] मिन्या, धनुत पूठ, मस्तव मापस (स्ता वर्ध है १ १३६ **रव**)ः 'घवारांता मुखेवर' (सूम ११ व कर)। बाद केवी बाय (तुम र १ ४ व)। बादि वि विवादिन् । मूठ मैलनेवाला (पहरू १२ माचा २ ४ १

s)। बाय पूर्विवाद्ये भूठ बीसना सस्टब भाषसा (सम १ भवः वस्य)। असाविश्व वि [सोवित] पुरवाया हुमा भोचे करायाङ्कमा (भोव २६ टी)। भुसिय वि [मुपित] पुराया हुमा (सुपा मुसुंडि पूर्वा दि । १ प्रहच्या-विशेष शका-विशेष (भीष)। २ वनस्पति-विशेष (बत्त सुब्ध केई १ 1 75 भुसुमूर एक [ भक्ष ] भागना, दोवना। मुनुमूद्ध (हि ४ १६)। हेड 'वेसि प मुसुम् ? सुम् ]रिसमसमापो (सम्मत्त १२३)। मुसुमुरण १ भिक्षन | वोदमा सएवन (सम्मत्त १०७)। मुसुमूराविम वि [म्रांड्स्त] मेंगाया हुमा (सम्मच 🐧 )। मुसुमृरिक कि [मग्न] भागा हुमा (पामा कुमा सक्त)। मुद्द देवो मुक्क 'इस मा भूतपु मखेल' (भीवा १)। संक्रु सुद्धिम (पिन) । क्वकु मुक्तिकांत (वे ११३१)। स्दान सिका १ ग्रेंह भवन (पाधा के व १९४० कुमा प्रामु ११) । २ मध्माय (सुक्र ४)। ३ छनाम (बत्त २३, १६ पुच २४, १४) । ४ बार, बरनामा । ४ वारस्म । । ६ नाटक धादि का सम्बन्धिया । ७ नाटक मानि का राज्य-विशेष । व मास प्रवस । श्रेषात मुख्यः १ शब्द मानावः। ११ गान्कः। १२ नेद-साझः (प्राप्तः 🕻 १ १८७) । १व प्रवेश (निष् ११) । १४ वृ बुध-विश्वेय बहहत का पाच (पुत्र १ ४) । पश्चरा र्णतम व िनन्तको पुत्र-विका (योवना ११ व्यापक रो। तुरम न दियों मुह है बजाया काता कादा (मय)। भाषणिया औ भावनिका मुद्द बोले को सामग्री, बतवन मार्व, 'मुहबीविधियं बिच्ने बवलमेहि' (उप ५४व थै)। पत्ती हो पित्री दुव-विका (ज्या थीय ६६६, ह १व)। पुरित्या पारिया योचा औ [पारिका] पुर-विभाग बीलते समय मुद्द के भाने रखने ना वक्र-कारण (तीवीय द) निपा १ १४ पत

१२७)। फुद्धन ["फुद्ध] १ वसहस का फुला। २ चित्रा-नप्राप्त का संस्थान (सुअर १ व)। संद्रग व ["माण्डक] मुखामरण (भीप)। संगक्षिय, संगब्धिम वि माङ्ग-क्षिक मुँह से पर-प्रशंसा करनेवाबा, लुख महो (कल भीप) सूच १ ७ २४)। सकता सक्तिया की "सक्टा "टिका] गला पकड़ कर मूँह की मीड़ना सुख वसीकरण (पूर १२ ६७ स्त्राचा १ ८--पत्र १४४) । बैठ वि [ यम् ] मुह्याला (विति)। सद्ध पूँ [पट] मुँह के मापे रखनेका बच्च (से २ २२, १३ ४१)। वडग न [पतन] मुँह से पिएना (दे ६ १३६)। वण्य पुं[िषणी] प्रतंसा श्रुगामक (निष्कृ ११)। यास पू विवास मोबन के यनग्तर कामा जाता पान, चुएँ धादि मुँह को मुक्तको बनानेवाला पदार्थ (छवा ४२ बर ६ ४)। शीर्मिया जी ["बीजिच्च] मुँह से विक्त स्थ्य करना मुँह से बाद का शब्द करना (निष् ४) । सुद्द्य देखी सुद्दस् । सिय न िशिय एक नगर (ती १**४)**। मुहत्यकी की दि । मूह से किरना (दे ६ 1 (785 भुद्र देवी भुद्त = पुवर (गुपा २२०)। मुहरिय वि [मुहारित] बाबाब बना हुवा मानाम करता (गुर १ १४) । सुक्रोमराइ की [दे] मू भी (दे ६ १६६) पड १७३): मुद्दल न [दि] पुज पुष्ट (देव १३४ पर )। मुद्द्ध वि [मुद्धर] १ वाचाट, बकवादी (बा प्रथम पुर व १वा गुरा ४) । २ प्र. काफ कीया। ३ शंख (है १ २४४ प्राप्त)। रव पू [रव] तुपून भोवाहब (पाय)। सुरा प. की सिधा व्यवं निर्देश (पाप मुर वे १ वर्षं ११व२ का २० प्रामु भूत्रह क्षारिति मन्याली (संबोध ४६)। अविषि वि [ श्रीविम् ] निता पर निवाह क्रुलेबाला (उत्त २१, २०)। मुद्दिश न [द] पुष्रव बिना पूर्वा नुकत में करना (दे ६ १३४) । मुद्रिमा भी [दे मुख्यम] स्वर देवो (दे ६ १३४। दूमा पाम) वि तन्त्रेवि हु दूमरस्त

दस्त मुद्दिमाद हेवया कामा (सिरि ४३७); र्गबलसासलीय नहबनि सङ्घरित मुद्दियाएँ (नूपा १२४)- भूह (१ कि) याद निएइ सक्ब (दम २६७)। सुद्वुध [सुदुस्] कर कर (प्रासू २६, मुद्री है ४ ४४४ वि १०१)। सहरत । इंब [सहरते] वो बढ़ीका कात सहरताम | पहलतीय विकार का नवन (ठा रे ४ दे २ ३ और मन, कम शाह १ ४। इक स्वयन ६ ४ शाका क्रीन ४२१) । सुहसुद्ध देखो महसुद्ध (पाप) ।

मुद्दुष्ट केनो मुद्द = पुष्ट (हे. २. १६४: पड मनि}। मुश केबो मुक्क ≓कुक (हे २ ११ माचा नका विपार है)। मुझ देवी मुख⇔ मृत 'च ब्याइ वह ए। मूपी

सुद्दुख केवो सुद्दुस – मुकर (पाम) ।

रैनेती श्रमप्रकृतिये (बका १४) । मअरु ३ वि दि स्क] सूक, वाक∹शक्ति म्बद्ध है वे होने (के वे रेश्व पुर ११ 22x) 1

मृष्यप्रद्रञ् । वि वि सृकायित् ] सूक बना मृष्यक्षित्र ) कृता (ते १ ४१) वताः पि दश्द)। मईगश्चिमा १ वेदो मुईगश्चिमा (दप १६४ ी द्या घोष ११)। मुक्त

म्बंडिय } १४ [प्त] पत इन्स्ट मंप्रक्रिय

पृष्टि गोध वहाँ धरमा पुरूषो वर्डिवनगैः माहे विशेष गलाई

सम्बन्धानिर पेम

(या ६६६ य) । मृष्ट } वृं [षे] यद का एक दोनें परिमाशः मेरे } 'इयपुरुवत्त्वस्त्रार्देशमानि कर्ण ग्रास्त्र

कार्याकी, (बेंग रेंग्ड), वी दृष्टि वाहियी सो याद रुखपुरक्त नददेव् (वर्गीर tv)ı

मृक्ष कि [मृक्ष] मूर्च पुरूष (प्रत्यः वक्षः वक्षः रे रे⇔ेमरा; xलु ४१) । लक्षत सियक विशेष शास-विशेष (प्राप्त)। विसृद्धा थी [क्लिम्बिना] रोक्टियेच (मुता १६)।

मुजान[मीन] कुपी (स ४०० परहर Y-पद (६१)। म्बग दे [दे म्यक] मैबाइ देश में प्रक्रिक एक प्रकार का द्वार (पराह २ ३—पक **१२३)** ≀

भूर सक [ भक्ष ] मॉक्ना दोइन्द्र । पृथ्द (हे ४१६) । भूका पूरीय (दूमा) । मुरग वि [मझक] भोक्नेबला बुरनैवला (पर्वा १ ४--पत्र ७२)।

स्खन सिस्ती १ वह (स्र १ वटा दूसाः ख ११२)। २ निवन्तन कारहा (परह १ भ-पक्ष ४२) । १ व्यक्ति, झारम्म (प्रश्ताः २,४)।४ माय कारेश (बाबानि १.२ १---गवा १७३ १ ४)। ५ छमीप पास तिकट (मोव ३०४० सूर १ १) । ६ तत्तर क्छिप (कुर १ २२३) । ७ इतो वा पुतः स्यतन (चीप यंचा १६ २१)। द विष्यमी नुस (याचानि १२ १) । १ वर्गीकरश्र बादि के लिए हिका जाता भोपवि-प्रयोध-'द्यमेतमूस' वसीकरश (ब्रानु १४)। १ याद्य प्रवस पहुंचा । ११ मुक्स (संबोध १ यानमं सूरा १६४)। १२ मूलवन पूँबी (बच ६ १४-११)। १६ बरल पर ११४ नुरह रूक्तिरोप सोच। ११ दौरा प्रदि से मान्येय प्रश्न (चीत २१) । १६ प्रामन्ति विशेष (विशेष १२४१) । १७ पुंच कम विकेष मुद्दी (धनु । या २)। द्विज्ञ दि किया पून नामक प्रावस्थित से नास-बोग्य (विते १२४१)। द्वा 🗗 [देवा] कृप्छ-पुत्र शास्त्र की एक राजी (शंध ११)। दिव र् दिव व्यक्तिशतक गर्मा (नहा मुका १२६)। देवी की दिवी मिरि फिटेप (विके ४६४ टी) । माक्स्य पू "सायकी सन्दर की घरीक प्रतिमाध्यों में मुक्य प्रतिमा (संदोच १) । प्यादि हि िंदरपटिम्] मून को क्वाइनेशना (शक्ष २१)। विव व [[विन्व] मुख्य प्रतिमा (संबंध १)। यस वृ [यम] इनका

का चीलुल-वंतीय एक प्रस्ति स्था (दूप

४) । बंत नि [ बन्ह् ] मृतनावा (पीरा

श्रामा १ १)। फिरिकी भिर्मे} शामक

दुबार की एक पत्थी (बंद १३) ।

मुख्य ) न [मूमक] १ व्यक्तियेन मूबी मूख्य । मूख्ये (यएए १०वी १३)। २ शत-विरोप (पर १३४३ कुमा) ।

मुक्कात्तिमा 🗱 [मुक्कार्तिमा] मुत्ते—मुत्ती री पत्नभी फोर्ड (स्त ४, २ २३)। मृद्धवेद्धिकी दि मृद्धवेद्धि वर के धनर का बाबार-मृत-स्तम्ब-विशेष (बाबा २ ३ १ १ टीर पत्र १६१)। मृत्रिगा की [मृद्धिका] बोधिव विशेष (का म्लिय व [सीलिक] मृतवर दुशी (उठ च

₹€, **२**₹} ŧ मुख्यि वि[मुझ, मीमिक] प्रवतः मुक्सः भविकारप्रते (निरि ४२६)। मुख्यि वि [ मुख्यन् ] मूनक्तवासः, दुनी बाला फरिब य बेंबब्राहर बाहारहरती मृतिको भित्तरेको चयबनामा सञ्जवपुर्यो (मक्स)। मुख्ये की [मुख्ये] योपनि-विशेष क्यीकरण द्यादि के कार्य में बगढी घोषांव (यहा)। मृस देवी भुस = मृष् । मृषद् (शक्ति ६६) । मुख्या ) दृ[सूर्यक, सृतिक] मृता, शुक्र सृद्धेय ) (जानेर रेका हुर वरू

पद्दुमा)। मुसरिवि [के] यल, ग्रीस ह्या (रे ६ मुस्छ वि दि । उपनित (रे ६, १३७)।

मुमल देवो सुमल = मुख्य (हु: ११६) र्मा) ≀

म्सा रेका मुसा (हे १ ११६)। मुना 🛍 [मूपा] मृत वातु कलारे — वताले का

पण (क्यं पास १ पुर १३, १≪ )। मुखा की [के] बहु हाए, बीटा रस्तामा (हे £ (48) t मुसाम न [दे] ज्यर देखो (दे ६ १६७)।

मेसिय ध्वा मुख्य (ध्वया) । भेरि पू [गरि] मानौर, विक्रा (माना)। म म [में] १ मेघा२ मुक्की (लाज १४८ ह्य १)।

मेळ ६ मिश्री १ मनार्व केट-विरोध (सर्व) । र एक धनार्य क्युप्य-वाति (पर्धाः १ स⊸ पत्र १४)। ६ पूँकी काएकाक (इस्पद्य १७२) । की मेई (समत्त १७२) ।

मेळ वि मियी १ जानने सौरय प्रमेव परार्थ, बस्तु (उत्त १वः २३)। २ नायने मोग्म (बड़)। झावि कि पदार्थ-ताला (सत १८,२३; सुक्त १८ २३)। मेश पून मिवस | शरीर-स्पित बातु-विशेष भवीं (तेषु ६८ सामा १ १२-पन १७३ पडह)। संभद्ध न [वे] मान्य सप्त (वे ६ १६८) ! मेशक पू [मेदार्थ] मेहामे पोत में उत्पन्न (सूब २ ७ १)। मञक्त र् [मेतायै] १ मननात् महानीर का दसर्वा नग्रावर (सम ११)। २ एक वैन महर्षि (तव मुपा ४ १, विदे ४३)। मेश्रम वि मिषको काता इच्छ-वर्छ (गरह 114) 1 मञर वि दि धसहन धसदिन्यु (वे ६ ११व) । मधस र् मिक्क पर्नत-किरीन । क्या की िष्क्रम्या निर्मेश नदी (पाप) । मेजवाडय पुन [मेदपाटक] एक भारतीय देत, गेवाइः प्राप्त बाहियमे समर्पि मेध भावयं हम्मीरनीरेक्टि (हम्मीर २७)। मेक्षि ) की मिविनी १ प्रविक्षी वच्छी मंद्रणी 🕽 (मुना ६२: चूनाः प्राप्तु ६२) । २ नाएकविन (भूपा १६) सम्मतः १७२)। नाह र्द्र[नाथ] धना (काद्र १८६ सूपा रेद)। यहपु पिति रिसमा २ नग्राम भी विद्वाराज्यवरखोवि बोत्तमेर्द न नेक्सिएक्सिन हमाबंगी (सूपा ६२)। सामि पुस्यामिम् । एका (का ७२८ दी) । मेइपीसर पू [मेदनीहदर] एवा (स्प **७१**व दी) । मेंट प् वि] इस्तिपक महावत (६ ६ ११व)। देशो सिंह । मेंठी की कि कि मिदी, मेदी महरिया (वे ६ १६८)। में इंकी मिड़ी मेंबा मेच मेड़, शाहर (ठा अपि) । बी विशिध १३०) । सुद्रु

[मुख] १ एक भन्तर्गिषः २ भन्तर्गीष

विद्येष में पहनेवासी मनुष्य-वादि (ठा ४

रै---पन २२६ इक)। विसाला क्री

िवेपाणा विमस्यति-विशेष मेहास्तियी (ठा ४ १--- पत्र १८६)। देशो सिंद्ध । मेलडा रेतो मेहस्य (चन)। मेळान मियी मान, तीस बाट बटबार विसते मापा बाय वह (प्रस् १६४)। मेघ देखों मेह (कुमा मुपा २१)। मास्त्रिजी की "मास्त्रिनी अन्यत कर के कियार पर रहनेवाली एक विलक्त्रमारी देवी (स्र य---पन ४३७)। यह की ["वदी] युक्त विल्लुमारी देवी (ठा <---पत्र ४३७)। बाह्रज प्रे विग्रह्नी एक निवादर राज-हुभार (पठम १० ६१)। मेचक्रा भी [मेचक्रुय] एक विक्रुमारी क्षी (हा द-पन ४३७)। मेरह रेवो सिद्धाः = मोच्च (बीव २४) धीक इस ७२= दीः सुद्धा २६७)। मेका देवो भाग = गेव (पद ) स्ताम १ प---पण १३२ मा १**०)**। मेरम रेको मिरम (महा ४ ११) ४ मेंट देखों सिट। प्रयो मेटाव (पिम)। मेर्डम दूं [दे] मुगन्तन्तु (६६ १६१)। मेडवर् दि] मजबा समा, प्रवराती में भेडो': 'तस्य य समग्रहार्खं संवारिमकट्रमेड-यस्युवरि' (मुपा १४१)। मेहह देवों मेंह (उप पू १२४)। मेड १ दि । बल्डिक्-सहाम, बल्डिक् को मदद करनेवासा (वे ६ १६४) । मेडक पुरि किछ-विशेष काल का बोध र्वडा (पर्यक्ष १ १ -- पण म)। मेडि पू मिथि प्राचनका काह बधे के बीच का कार, वहाँ पशुको बॉव कर मान्द-मर्दन किया बाता है (है र २१%) बच्चार क राामा १ १--- पत्र ११)। २ मानार. स्तरमः 'समस्य मिथ ए कुरुवस्य मेदी पमार्थ बाहारे बासंबर्ध चस्त्र मेहीगुए (बना) 'मृत्तत्वविक सन्बर्धपुत्तो नन्द्रस्य मेकिनुसीसं(या १३ दूप २६१३ सनीव २४)। भूम वि [भूत] १ मानार-धारा धाबार-भूत (धग)। २ नामि- नृत सम्म ने स्वित (दुमः) ।

मेपाआ ) की [मेनका] १ हिमानम की पली । मेणका रे र स्वेर्ग की एक बेह्या (शीम ४९ नाट---विक ४० पिप)। मेच गमित्री १ सकस्य चंप्रयोजाः २ धनवारण 'नोधणुनेले' (हे १ ८१)। मेचछ 💽 वेबो मिचल (पुर १२ ११२)। मेची की [मैत्री] मिक्ता दोस्ती (से १ १० मा २७२३ स ७१६३ सम्)। मेञ्जिया देखो मेहणिआ (निषु १)। मेर (पप) वि[मर्शय] मेरा (प्राक्त १२ मनि) । मेरगर् मिरक, मैरेयकी १ ठठीय प्रक-वासुदेन रावा (पत्रम १, ११६)। २ पून. मद-विशेष (त्रवा विपा १ २---पव २०)। ६ बनस्पवि का स्वचा-रहित दुक्का 'उन्हा-मेर्प (मापा २ १ = १)। मेरा भी वि मिरा निर्मात (दे । पामा क्रुप्र १३१: सन्म ६७: सस है १ वधः कुमाः सीप) । मेरा की [मेरा] १ इक्त-किरोप सुम्ब की सतार (परह २ १--पत्र १२६)। २ दरावें नक्रवर्धीं की माता (सम १६२)। मेरु प्रमिरु] १ वर्गत-विरोज (४वः प्राप् १६४)। २ क्षाप-किरोप (पिए)। मेरु प्रमिरु] पर्वत कोई सी पहाड़ (धावा **२ १•** २) । मेळ एक [मेस्रय्] १ मिनाना । २ इक्ट्रा करना। केवाइ, मेलीत (भवि पि ४८६)। चैक- मेकिसा माख्य (पि ४=६ महा)। में इ. [में इ.] फैच मिलाप संगम संगोग मिलन (सूमनि ११) वे ६ १२ सार्थ १ ६) 'बिट्ठी पियमेलयो मए सुविएगे' (कुम ११ ) । मेलण न [मेसन] डपर देवो (प्रासु ११)। मेक्स पु [मेसक] १ संबन्ध समोग (हुमा) । २ केला चन-समूह का एकतित होना (दे क ৰ্থ দি ৰং)। मेस्य तक [सेस्र्य्, सित्रय्] क्लाना मिमए। करना : मेमका (हे ४ २ ) । सकि मैनवेदिय (पि १२२) । चंहः, मेस्टवि (सप) (BY YRE) I

मेंब्राइयम्ब नीचे देखो ।

₹**२**₹) i

मुख्य ) न [मुख्यः] १ कन्य-विशेष नृती मुख्य ) मुख्यः (पएशः १ वी १३)। १ राज-विरोप (पर १६४) ब्रुमा) ।

सुद्द-नेभ

भूक्यत्तित्रा 🕊 [मूक्यर्दिक] मृते—मृती भी पत्नी फॉन (स्पेर, १२३)। मुख्येकि की [दे मुख्येकि] पर के क्यार

का बाबार-भूत-स्वयन-विशेष (बाबा १, १ १ ( टी पर १६१)। मृद्धिगा की [मृद्धिका] योगवि विशेष (का

मुख्यि न [मीक्रिक] मुसदन पुंची (इस.) ₹& ₹₹) : मुख्यि वि [मुख, मौकिक] प्रवत्न मुक्य

'मिलिक्काक्को (सिरि ४२६)। मुख्तिक वि [ मुख्यत् ] मृतवनवाता, दुवी नेला 'घरिष य वेंबबतार, नावास्तुरती मुनिक्को भित्तसेसी भवकामा सरकारपुत्ती (महा) । मुख्ये की [मुख्ये] मोपवि-विशेष करीकरण कारि के कार्न में बपती घोपनि (सहा)। मूस वैको मुख = मूप् । मूसद (वीकि वेद)। मुसेग ) पृ[मूपक, मूपिक] मूसा पूरा मूसेग ) (क्या पुर रेट है र बडे

पद्कुमा)। मुसरि के [के] कल धौना हुमा (वे ६, मुसक नि [बे] काबित (रे ६, १३७)। मूसस वेको सुसस = मुस्य (१ १ ११६) <del>र</del>ुमा) ।

म्सा वेको सुसा (हे १ ११६)। म्या की [मूपा] मूब, बातु पाकी-पनाले का

पोच (कम्पं यारा १ ; सुर १६ १ स )।

मुखा की वि] कड़ हार, छोटा वरवाता (वे 4 (40) I

मुसाम न [वे] क्यर देवी (दे ६, १६७) ! मृक्षिय देवो मृक्ष्य (ग्याचा) । । । १९ प्र िहि भागीर, विका (पाना)। म घ [मे] १ मेछ । १ मुक्ते (स्थल ११)

व्य १)।

मेम 🗲 [मेर] १ मनाव देश-विशेष (१७)। २ एक बनावे कनुष्य-वाति (परहर १ — पष १४)। १ पूर्वी भारतस्त (तमस १७६) । 🗗 मेई (समय १७२) ।

बाहे निर्धं व नार्ध तम्बन्धार्थनरं केमं (चा ११६ घ)। मुद्द रे दिही स्वयं का एक दीने परिवाल मंद्रे । प्रवृद्धमान्वरावद्वियमान वान व्यक्ति वार्यायोहें (बूपा ४२७): 'दो वैहि वाहिसी वो नार्व १छपूराज्या नाउदेविं (वर्गीर ₹¥ ) i मृद्ध विभिन्नी पूर्व मूल्य (ब्राह्म-वर्क) पदन

[भिषिक] व **त-विशे**व

रेक्नवरेष (नुस ११) ।

र्धीः योष ११)।

'परिष्टं वारेष वसी तरमा

में अहिम हिमाँ (से इ. ४१ वहा मई।गक्किया 🕽 वेदो सुई।ग्रहिया (क्य १३४ मृद्देश्व } वि[मृत] मच हुवा संविद्य दूर्ज्ञभी विद्ववशी। १ रेट्य यहाः, प्रानु २६) । नद्भप न ४)। र्स्त वि [ वन् ] दृतदाला (धीरः शास-विशेष (मारन)। पिनृद्या की विसृचिता] राम १ १) । विरिधी विशे राम्स-नुनार नी एक पत्नी (बंद १३)।

(परहर ४ -- पत्र ७२)। म्खन [मूख] १ वइ (ठा १ यजक कुमा या २६२) । २ निकन्त्रम कारश (परहार ६—पर ४२) । ६ वर्षाहे, ब्रास्टम (पस्क २ ४)। ४ मन्द्र द्वारश (भावाति १ २ र---गाना १७३ १७४)। १ समीप पास तिकट (बोद १०४० सूर १ ६) । ६ तलक-नितेप (पूर १ २२३) । ७ क्यों का पूरः स्वापन (धीव वंदा १६ २१) । व दिव्यकी मुस (माचानि १२१)। १ वशीकरहा सारि के लिए किया काठा शोवकि-प्रयोग धर्मतपूर्व वधीकरवाँ (प्राप्त १४)। १ बाब प्रवय पहचा। ११ पुरूप (संदोव ३ मानम गुपा ३६४): १२ मूतवन **पू**की (बत ७ १४-११)। १३ वरस पैर । १४ सुरहा शन्द विशेष प्रोत्तः। १३ टीका भावि से म्यास्थ्य प्रन्य (संक्षि २१) । १६ प्रामन्तिः क्रिये (विशे १२४१) । १७ पून कन्द विद्येष सूची (बहुद बा२)। हिस्स वि डियो मून शामक प्राथमित से बारा-बोरन (विसे १२४६)। इत्ताओं विका कृष्णा-पूत्र शास्त्र की एक नाली (सात १३)। दिव र् दिव] व्यक्ति-भाषक नामी (भक्त स्ता १२६)। देवी वी दिनी तिन विदेव (विदे ४६४ ही) । नायग पू िनायको मन्दिर की धनेक प्रतिमार्थी में मुक्त प्रतिमा (संदोध ३) । प्याद्वि वि िक्तपटिम् ] मूल को क्वाइमेगला (इति रे!)। विविध् न [किल्ब] मुक्त प्रक्रिया (धंगेव ६) । सर्य दू [राज] द्वनस्त ना जीनुस-अंध्रेस एक प्रतिक रामा (नुप्र

प्रकार का दूरा (पराह २, १--पर

मर सक मिक्सी मॉक्स क्षेत्रता। मुख्य

मुरग वि [अक्तक] वांकोबाबा पूरनेवाला

(हे ४१६) । भूका गूरीय (दूसा) ।

सुदुत्त ) पृत्र [सुदुत्ती को पदी का कात सुदुत्तारा ) प्रवर्तातील मिनिट वा समय (टा रे ४ हैर ३ और भरक्य प्रसू १ १८ इक स्वयंत ६० सामा; सीच १२१) । मुहुमुद्द देखो सङ्गुद्द (पत्र्य) । मुद्रुख वेची मुद्द्रस - मुचर (पाम) । मुहत्तु केवो मुद्द = पुष्क (हे २, १९४ वड मिष)। मुख केतो मुख्य व मुक्त (हे २, १६, याचा नडानिपार १)। म्भ देशो मुख्य व्यक्तः 'चनाइ व्यक्त सूधो वेंबेटी यामबार्शकर्न (बज्द १४) । समस ) वि वि स्की पूक नाज-शकि स्मस ) वे होन (दे ६ १३७: मुद्द ११ (XX) मुभक्करभा । वि वि स्वाधित । सूक बता

शुद्धुः प [शुदुस्] बार बार (बालू २३,

मही हे ४ ४००३ वि १०१)।

(इप्र २३७)।

नि १९१)।

मुद्रमा

मेम-मेलाइयब्य मैक वि [मेय] १ जानने योग्य प्रमेव पदार्थ बस्तु (एक १व: २३)। २ नायने योग्य (वड) । स्निवि "हा पदार्थ-काता (कत रेट २३ मुख १८ २३)। मेल पुन [मेब्स ] राधर-स्वित बानु-विशेष वर्वी (तंत्र ६८) स्त्राया १ १२---पत्र १७६ बरु । मेळळाम [वे] पास्य द्यन्न (वे ६ १३८)। मेजव्य पूर्विशार्यी मेदार्ययोग में उत्पन्न (तूम २ ७ ४) । मञब्द [मेवार्य ] १ भगवान् महाबीर का रस्त्रीक्छवर (सम् ११)। २ एक कैन महर्षि (उका मुपा ४ १ विके ४३)। मेखव वि [सेचक] काता क्ष्म्या-वर्ण (एडड 111)1 सभार नि [दे] प्रस्तृत, बस्यद्रियु (१.६ (1s) ( मञ्जल ई [मेक्क] पर्वत-विशेष । कन्ना की **िंक्न्या]** नमेंदा नदी (पाप) । मेश्रवादय पुन [मेदपाटक] एक मारतीय देत मेनाइ प्छान बाह्यियं समानीप मेश-वाद्यं इम्प्रेरवीर्धेई (इम्पीर २७) ।

मझ्जि १ की मिदिनी । प्रक्रिश बच्छी महणी 🕽 (दुवा १२) क्रमा प्राप्त १२)। २ नार्शितन (सुपा १६) सम्मक १७२)। "नाइ र् [निस्य] एका (इप पूर्वर मुना

१६)। पद्रुं [पिति] १ समा। २ नाएराच 'की विक्रुप्रस्थयनरखोपि योक्सीई <sup>न,</sup> मेइन्सिपईनि व हुमार्यमी' (सुपा ३२)। सामिषु [स्वामिम्] राजा (हर ७२० दी) । मेश्णीसर पुं[मेदनीइवर] राजा (क्ल ७२व टी) । मेंड पुंकि इस्तिपक महत्वत (१ ६,

११व)। भेगे सिंठ। में दी की [के] में की मेनी मनरिया (के ११व)। में त रुखी [मेडू] मेंबा मेप चेड़ पाइर (ठा अत्र)।की द्वी (हर शब्द)। सहर्ष [सुक] र एक सन्तर्शीय । २ सन्तर्शीय विकेट में पहनेवाली मनुष्य-वाति (ठा ४ रे-पन २२६ इक)। विसाणा औ

[ विपाणा ] बनस्पति-विशेष मैदास्त्रियी (ठा ४ १---पत्र १वर)। देवो सिंड। मेसस्य रेको मेहस्य (एक)। मेळान मिय] मान तीस बाट बटलास विससे मापा बाव वह (मगु १६४)।

मेघ देनो मेह (कूमा मास्त्रिणी की ["मास्त्रिनी] कदन वस के शिवार पर रहनेवासी एक विश्वकृषारी देवी (ठाद—पत्र ४३७)। नई और ["वती] एक विक्कुमारी वेशी (ठा य--पत्र ४३७)। याइण पू ["वाइस] एक विचावर राज कुमार (पटम १८ ६१)। मेपंक्य औ [मेपहुरा] एक विकृतारी की (हा द---पम ४६७)। मेच्या रेवो सिप्स्य = मोच्या (ग्रीव २४-भीप सम ७२**० दीः मुद्रा २६७)**।

मेळा देतो सक्त = नेष (पड्राणाय १ ८----

रिवद (ब्रम्।) ।

पत्र १९२ मा १०)। में उस्त देखीं मित्रम्ह (महा ४ ११: ४ मेट देशो मिट। प्रयो मेटा (पिय)। मेर्डम इं वि ] मूग-जन्द्र (वे ६ १३६)। मेडन प्रिं मनमा तथा प्रनाशी में नेहो'। 'तस्म व समण्डाणं संचारितकहुमेह-क्स्सवरि' (सूपा ३४१)। मेक्ड देवो मेंड (उर प्र १९४)। मेह पू वि] वस्तिक-सहाय, वस्तिक् को मक्द करनेताचा (दे ६ १६४) । मेडक प्रवि] क्छ-विशेष क्यष्ट का घोटा

इंझ (पएइ १ १—पत्र ⊏)। मेडि पु [मेवि] प्राचनन करा सबे के बीच का कार, वहां पशुको बांच कर वाल्य-महिन क्या माता है (है १ २१३८ मध्या १ छ सामा १ १--पत्र ११)। २ भाषाद स्तम्म 'स्वस्त विव सं ग्रहणाम मेटे पमार्ग प्राहारे बार्चवर्ण चन्च मेद्रीकृए वरः (त पर्) । (क्या), भुतस्वविक्र बनवाएकुको यनकास मेडिमुमो म (मा १८ द्वप २६६) संबोध १४)। मूल वि [मूर्व] १ वाबार-प्रत्य, मेमकेदिसि (१४ ४.० साबार-बूठ (भव)। २ कॉब-मूठ मध्य के

ۥ मेपाआ ) भी [मेनका] १ हिमासय की पत्नी। मेणका र स्वयं की एक बेरवा (बाम ४२) नाट--विक ४० पिन)।

मेचन [मात्र] १ साकस्यः संपूर्णनाः २ सववारण 'मोसणमेत' (११ ८१)। मेच इं वि] देवो मिचछ (पुर १२ ११२)। मेची 🛍 [मैत्री] मिक्ता दोस्सी (से १ ०० या २७२। स ७१६: छन्)। मेषुणिया देवो मेहुणिला (निषु १)। मेर (क्प) वि [सदीय] केस (प्राक्व १३ मवि)। मेरा र [मरक, मेरेयक] १ वृतीय प्रश्त

मामुदेन राजा (पडम १, ११६)।२ पुन. मद्य-विरोप (क्षता किया १ २ —- यव २७)। ६ बनन्पति का स्वचा-पहित हुक्का 'उक्कू-मैरैपं(म्यवा२१८१)। मेराबर [के मिरा] मर्गादा (के व ११व पत्रसः क्रुप्र ६११८ सम्बद्धः सस्य है १ म् क्रमा भौष)। मेराजी [मेरा] १ इस्त्र-किसेय मुख्य की सनाई (परह २ ३--पन १२३)। २ वसर्वे षक्यतीं की माता (सम १६२)।

मेरु पू [मेरु] १ पर्वत-विशेष (सवः प्रामू १५४) । २ धन्द निरोप (पिंग)। में ६ दूं [मेरु] पर्वत कोई मी पहाड़ (बाबा ₹ ₹); मेळ सक [मेळय्] १ मिनाना । २ इक्ट्रा करना। मेकाइ, मेसंबि (मकिः पि ४८६)। <del>र्षेड-</del> मेक्किता, माक्क्य (पि ४०६: महा)। मेख दु [मेख] भेन भिनाप संयम संयोग निसन (सूपनि १४) दे ६ ४२८ सार्थ १ ६) रिहो पित्रमेक्को मए सुनिरहो<sup>\*</sup> (कुम २१)।

मेखम न [मसन] हमर देखों (प्रामू १४)। मेक्स दु [सेस्टक्ष्य] १ संबन्ध संमोग (हुमा)। २ मेडा, वन-समूह का एकनित होना (दे च मेक्न एक [ मेक्स्य की एकान (कर) (GA ASS) and 1

(पाया नग्रह १ भा मीमा वा ४६६)।

मिनगाचा (भया)।

इको ।

(বিৰ) **!** 

स्पर (इक)।

**49**6

प्रेख्यम इंग मिक र मिनाप अपम मिनन (शुप्त ४६१)। भित्रते विश्व मेशार्थ पुनाय-निरमास महत्त्व (सहि १४३)। सेखका के सेख्य (धारपार १८) । सेव्यवह (पर) देवी संख्य 'मलनस्तहदैना-

वरत वृद्धित सम्बद्द एड्ड' (सिरि ७३) । मेखावय केर्रा मेखावत (सपा १६१) वनि)। मेखकिम दि मिखियाँ विज्ञान हुना स्कट्टा किया इस्स (से १ ६४)। शक्ति मिसियो विकाहपा(अ.६ १ ही- का ११६ च्या प्रती 'एवं सुबीखर्गतो असीसम्तिक्षं मेलियो संदो ।

पानेव बरापरिवासी वैकरानोबालसंकर्त (ब्रालू ११) ( मेक्स्री की हि | बहारि भव-ठमूह का एकतित हीता, नेवा (वे ६, १३८) । मेबीज रेबी मिधीज (परम २, ६): 'धरकी-पुस्तक व्यवक रेपेनियमेबी खाँधिई प्रस्ता है (बा

६१६७ ७ २ म)। में इंदिंग सिद्ध । फेलाइ (हे ४ ६१), फेलोपि (रप्र १६)। व्यक्त मेखेर (महा)। वेद-मेक्का मेक्किया (बर) (१४ ११६) पि १००)। इ. मंदियस्य (६५ १११)।

मेक्य व [माचन] क्षेत्रमा परिस्ताप (बाह् t 1) ( मेहाविय वि [मावित] कुत्रनाच कुमा (दुर

द ६०० महा)। मेव वेकी एवं (रि ३३६) ।

सेवाडः } देवो संभवाडय (तो १४, सेव्ह् सेवाडः } वव)। सेख पूर्मिय है १ मेंब्र, मेंक् कालर (सुर ६ १६) । २ राजि-निरोग (विचार १ ६ दुर 2 22) 1

मेद्द मियी १ मध्य वदवर (बीप) । १ कारतार, तुर्वेशे पुरुवक्तितेत हि ६, ४६) । ३ क्लान् पुमितनाव का फिरा (बम

१५)। ४ एक कैन महर्षि (इस्त १४)। ६ ]

१३२)। ७ धन्द-विदेव (सिंप)। ≼ एक वरिक-पुत्र (सूपा ६१७) । १ एक वैक्युनि (क्या) । १ कैर-किरोप (च्या)। ११ नस्तक मीचिकनिरोप जीना : १२ एक रायस । १३ एक विशेष (ब्राप्त है १ १८०)। १४ एक विचायर-नगर (इक् )। इसार पू जिमारी धना में शिक का एक पत्र (शास १ १ धन)। बस्मण वृष्टियानी समय नेश का एक राजा एक बंबापरि (पडम १. २६६)। याज्य वं नािता रावस्य का एक कुर (के १३ ६४)। प्रति किसी वैताम पर्वत के पश्चित थेली का एक नगर (पक्का १)। सह इंसिल दिल विरोप (एक)। २ एक बलाईर । ३ मन्द-हॉर्स-विशेष का विवासी क्लूब्स (डा ४ '२~-नत्र २२६: इक)। रवन दिवी किन्छ-

पत्र ३७)। ६ एक देव-विमान (देवेन्द्र

६ १६१)। २ धनस्य का एक प्रश (परम = ६४)। सीवर व मिलियो विवादर-रंत का एक श्रवा (पत्य १,४३)। 🖬 मपः। मेद्द (मेद्द) १ धेषन (सूच १ ४ २) १२)। २ रीय-विकेत प्रमेह (मा २ ) नुस 1 (1) मेशंक्य क्यो मेपंक्य (क्य) ।

स्वती का एक दैन दीवें (परम ७७ ६१)।

बाइज र् [बाइम] १ एवत रहा का

मानि पुरुष को बंद्ध क्या राजा का (परन

सेइण व मिइल | १ फल, टबक्ला। २ प्रकारक पूत्र 'भागेतक' (पाचा १६ १ २)। ६ पुरूर-विष (एव)। मेहणि वि मिहमिए | भएनेनावा (प्राचा) । मेहर दृष्टि] वाम-सवर, वांव का मुख्या (दे ६ १२१) बुद १६ १६ )।

मेहरि पूंथी हिं] क्क-क्रेंद, पून (वी ११)। मेहरिया रेकी दि निमेत्रको की (दूपा मेहरी (१६४)। मेहस्य र् द. [मेलस्ड] देल-विदेश (पहन

te (1) :

मेक्क्क्रीर म [दे] वस पानी (दे ६ १६६)। ( YE)

मैरेख न [मैरिय] मच-निशेष (मास १७४)। मो ध-इत वर्गका तुमक धव्यय—१ धनबायतः निरंपमं (तूर्धीन *मधः मानस* 

वर्षते ६४६७ धारक ६ )।

में हुणि मार्च [वे] १ ताबी सार्चकी

व्यक्ति (२.६.४.)। २ मानाकी सङ्की मेहम क्या मेहक दिवाधियवीरिक ध्राम-परिवद्दे स निश्चिमते' (धोष ४०४) ।

१२१)। २ पार-पूर्ण (पक्य १ ए, १

मेंद्रियम ई [के] गामा का बढ़का (क्रा ४)।

मेड्रज्य (क्ष्म १ प्रचार ४० प्रमा भीतः प्राप्तु १७१: यहा) । मंद्रुपप दं [के] प्रकाका सक्ता (के ६,

**(**₩₹) 1 मेहिछ 🕻 [मेथिछ] जनवान् पारवैनाव है रंत का एक बैन मृति (स्प) । मदूष }व सिम्नुन चेरितीच्या संयोध

१=) । और पहि (चट<del>- हर्</del> ११६) । मंद्रि देवो मंद्रि (दे ६, ४२)। मेडि वि [मेडिस] प्रत्यक्क करनेवाका, 'मामेदियाँ (भाषा)। मेडिय न [मेथिक] एक **वै**न मु<del>निकृ</del>ष

मेहावि वि मियावित् दुवितात, प्राप्त (का ग्र. के बहाता १ १ व्यापा; कम्पा मीताक्त १४२ दी। क्य १४ ३ वर्गीन

मेहा की सिमा विकाद-कल (खीर १७४)। महाबई देवो मेप-वई (इक) : मेहाबच्य न [मेघावजै] एक विधावर-

१२६३ हे १ १६३ झाल्य १२६) । बार वि बिस्ती १ व्यक्त वर्षक । २ व क्रक्त विशेष

मेहा की [मेथा] एक इहारती अनरेज की एक ग्रम-महिली (ठा ६, १—१व १ २) मेहा को [मेथा] दुवि यन्त्रेपा प्रका (बन

मेहसिकिया की मिल्लिक्यों एक कैन

मोभ सक [मुक्] छोड़नाः व्याक्ता ।

मौमह (प्राकृष रे१६)। वक्र मोर्मत

(t = 48)1 मोज सक [मोचय्] कुरवाना ध्वाप कराना । मोमपदि (शौ) (नाट--मानदि ४१) । क्यक मोइजांत (वा ६७२) । मोल पूर्विद्या हुई कुछी (ध्यक्त १६) मद्राप्त्र भवि । मोज वि दि । समिनतः २ पूर्णिगैट धारिका बीबकोस (वे ६ १४८) । वे मूच पैराल (सूच १ ४ २, १२ पिंड ४६० क्स पमा १६)। पश्चिमा की निर्मिता प्रजनश्र-विचयक नियम-विद्येष (ठा ४ २---पत्र ६४ सीम वद ६)। मोजद्रपू [मोचकि] वृत्त-विरोप 'सल्बद-मोमध्मानुबबन्तपनासे करेंबे सं (पस्या र-पत्र ६१)। मोझग वि [मोचक] मुळ करनेवासा (सम र पश्चिम्पा२३४)। मोमग र् [मोद्क] वह, मिहाल विशेष (पैत ६) भूपा ४ ६) । देखो मोद्ञा । मोभण न [मोचन] नीचे देखों (स ६७६) बढर) । मोजना की [मोचना] १ परिस्तान (बावक ११४)। २ मुक्ति, कुटकारा (सूम १ १४ ta)। १ कुन्नानां मुख कराना (उप X{ }1 मोअय देशो सोख्या (चयः पत्रम ११४, ६) मुग्र ४ श नाट-निक २१)। मोआ की मोचा करती कुछ देशाका দাম (ধ্ৰুৰ)। मोआव धक [मोचय्] दुइवाना । मौमा वेषि गोमावेषि (ताट-राष्ट्र २१, मुख्य १११)। मनि मोपानस्त्वति (पि १५८)। कर्म मोयाविज्यह (कुम २११) । वह मोयार्वेत (तुपा १=१) । माभावज न [मोचन] प्रकार करना (बिरि ६१६३ च ४७)। मोभावित्र } वि [मोचित] पुरुषमा ह्या मोइअ (पि ११९, नाट-पृत्र्य वदा दुर १ दूस ४०० वहा बुर रु १६: ६ ७० तुता ११२: वरि) :

सोइछ पुँ दि यस्य-विशेष (नाट)। मोंड रेडो मुद्र=मुद्र (६ १, ११६) २ २)। मोक पूर्मिकी सर्थ-इंड्रक सांप का केंड्रन। मोक्द सरु दि ] नेबना प्रवराती में 'मीक्सक्" मराठी में 'मोक्सरों'। मौकरकड् (भवि)। मोद्यदेखो मुद्य≃ मुट्य (पर्)। मोक्कणिका ) की [दे] हुन्छ कॉएका, कमन मोक्समी का काता सम्य भाव (६६ ( ¥) मोक्छ देवी मोक्छ निवरिवर भएन तुर्म योक्कतह केए सिग्मंपि (सुपा ६१२)। मोक्स्य देवी सक्कछ (सूपा ६० हे ४४ 155 मोकस्थिय विदि १ प्रेरित, येना ह्या (पुपा १२१)। २ विख्य (मुपा १४)। मोक्स रेको सुक्स = मोध (धीप कुमा; है २ १७६३ छप २६४ टी भन; बसु)। मोक्स रेडो मुक्स = मुर्ख (६५ १११)। मोक्स न [दे] कारपंदि-विशेष (गूप २, २ ७)। मोक्सण व मोधण दिक प्रकार (स ४१ = पुर २ १७)। मोग्गड पुँ [बे] व्यन्तर-विशेष (मुपा ४ व)। देवी मुग्गड । मोग्गर दूं [दे] मुदुस क्ष्मिका और (दे ६ १३६)। मोग्गर पू [सुब्गर] मुक्य, मौनरी। २ नमध्य का पेड़ (ई. १, ११६) २ ७७)। ३ प्रमाहत-विकेष मीयस का वास (पर्स्स १--पत्र ११)। ४ वेबी सुमार। पाणि र् । "पाणि ] एक बैन महर्षि (श्रंत १८)। मोग्गिरिम वि [ वे ] संदुषित मुदुर्तित (दे ६ १३६ थे)। मोग्गस्ययज्ञ । मि दिगस्ययन स्या मोगगद्वायण १ योज-विशेष (इका टा का सुज्य १ १६)। २ दूंकी छत्त को इ.सं धपान (स ७-- पत्र १६ )। मोगगाइ देवो मुगगाइ । मोग्याइइ (१) (शला १४१) ।

मोध रेवी मोइ = मोन' 'मोनमछोखा' (परहर १--पत्र ११)। मोच देवो मोअ = मोचन्। एड्- मोनिअ (मनि ४७)। मोचन दि ] धर्मनेनी एक प्रकार का बूटा (R & 23E) 1 मोच देवी मोज=(दे) (पूप १ ४ २ **१२)** । मोचग देवा मोअग = मोचक (बसु)। मोहाय पर [ रम्] औहा करना । मोहायद (E Y १६=) 1 मोहाइअन [रव] रवि-भीड़ा रव मेपून मोहाइल न [मोहायित] भेटा-भिरोप प्रिय-क्या मादि में भावना से बटफन नेप्रा (कुमा) । मोहिम न [दे] बनाल्पर (पि २३७)। वैचो मुहिम् । मोड सक [मोटयू] १ मोइना टेका करता। २ सौमना। मोहसि (तुर ७ ६)। वन मोर्डस, मोडिंस, मोडर्यंत (मर्डि-महा स २३७)। क्यू मोडिजमान (धा पू १४)। सह मोडेट (सुरा १६८)। मोब र् [दे] बूट, सट (दे ६ ११७)। मोडग वि[मोटक] मौड़नेवाला (पण्ड १ ४--पत्र ७२)। मोडण न [मोटन] मोइन मोइना (बल्बा ₹c) : मोडणा की [मोटना] उत्पर देखी (पएद १ 4-44 X4) : मोडिल वि[मोटित] १ मन भौग्रहमा (ना १४१ शाया १ १--पत्र ११७) पल्दर ६—पत्र १३)। २ स्पन्नेक्टित मोझ हुमा (दिपा १ ६--पद ६ स स 11X) : मोड पु [मोड] एक वरिएक-कुम (कुप २ )। मोडरम न [मोडरक] नगर-विशेष (दे ६ १ राधी ७)। मोप न [मीन] मुनिस्त वाली वा संबव प्रयो (बीप बुग १३७) महा)। बर वि [बर] नीव शतकाता वालीका संयन

श्रीयय विपरित्र (सुध १ १३ ६)।

निमन्त्रता (उप ७६८ दी)।

मोजावजा की विशे बच्च बन्धि के समय

रिता की और है। जिना बाता करतव-पूर्वक

मोणि व भौतिम्] चौतवाता (उवः चुपा १४ संदेश २१) । मोच के मुच = सुक (बर्मस कर)। मोत्तम्य देशो मुखा मोत्ता देवो मुत्ता (वे ० २६) विश्व ४ प्रकृ€ पड् )। मोत्ति देवो मुक्ति = मुक्ति (पर्वह १ ६--पन १४)। मोशिज देवो मुश्चित्र (वा ६१) स्वय ६३ बीव बुधा १६१ महा गडक)। बाम न िदामी क्रम-विकेष (पिम)। मोत्त्रप्राप्त को मुच = पूर्। मोच्प मोत्व रेपो मस्य (जो ६ इंदिन ४: पि १९३) ब्रामा) । मोदभ देवो मोभग = गोदक (स्वय ६ )। २ न सम्बन्धित (मिंद)। मोध्म 👣 ध्या मुक्म (रे ४)। मोर प्रे दि दाव वाएडल (१६ १४)। मोर वृद्धि १ प्रीय विशेष मपूर (है १ १७१: शूमा) । १ स्टब्स-विशेष (स्वि)। बंध पूं विश्वयो एक प्रशास्त्रा बन्दन (दुरा १४६) । स्मद्दा 🗱 "शिला 🕸 महीददि (दी १)। मारत्रा, म. तुमा स्पर्वे (हेर.२१४) मारक्का दुगाः वज्यन वय-४४ नुर्वाधिक गरित्र) । मोरंड र् [रे] नित्त भारि का बोरक, खाप रिटेर (धन)। मोरग वि [मायुरक] नपूर के रिच्छों है

विश्वा(माना १२६१)।

tr ):

मारचय र्रं हिं] पाच चल्यान (३ ६

मौबंबेत में बलम (वि१९४)। पत्त वं प्रिय पनदान् महावीर का एक क्छवर --प्रवान रिव्य (सम ११)। मोरी भी मारी दे मनुर पश्ची भी माना मीरबी (वि १६६: नार-मुख्य १०)। २ विदा-विशेष (गुपा ४ १)। मोस्मा दे [दे मौसक] बॉबने के लिए बाहा ह्मा चुँदा (इन) । मोखि देखो मुउद्धि (काबा सम १६)। मोक्ष देशो मुह (हे १ १२४) चका चय द १ ४ इतसः ११—लव ६ ३ वर)। मास द मिोप र नोए। र नोए का मान 'राबा जंगह मोर्ख एसि धन्मपु' (सुन्य २२१) महा)। मोस इंट मिया सर, बसल कास्ट 'चर्याच्यो मोथे परक्ते' 'च्छपि मोधे पर्काचे (ठा ४११ थीप कम्म)। मोसल वि [मोपण] भोग्रै करनेवादा (हुप A.) 1 मोसकि भी [दे सुराक्षे मीराक्षे] मासकी रेकादि निर्मेक्ट का एक रोप वद्ध धादि की प्रतिवेखना करते धमन मुसन की तरह केंद्रे वा शीचे भीत मादि का स्तरी करता प्रक्रिकेबना वा एक दीवा चित्रेक्षना य मोतनी सहवा (बत २६ २६: २६) धोव **२६**६ २**६६**) । मोसा वेदो सुसा (इना है १ १६६)। मोइ दक्मोइय ] १ प्रय में सन्द्रा। २ पूरव दरनाः मोद्यद् (मनि)। वह मोइत माईत (परम ४ ६: ११ ६६)। क देशो मोहणिका। मोद्दे वेदो सफद (देश १७१ द्वपा) कुर ¥\$#) I मोद्दि [मोघ] १ क्लिक्ट निरवैक (के १ श्रीहाइ शतकाएं ती पूछ तीएर पनार्ट (धरक (०३) धरन र)। जिर्वि 'नीई वधी वयाची' (वेदन ७१ )। र बक्त, विष्या पित्र्या मोई रिहर्न

धनियं धर्वं घरम्यं (राष्) १

मोड पंसिडी १ पटता सबता सबान (बाक्षा कुमा प्रसुख १ १)। २ विष्यवेत ज्ञात (इमा २ १३)। ३ वित की व्यवस्ताता (रुमा ६ ४)। ४ राप प्रेयः। ३ काम क्रीदाः 'मीवानस्य अस्तरस्य वद्य कामदारं सहे विकि' (प्रापुरक पर्दार ४)। ६ मुद्रा बेहोती (स्वप्न ३१) स ६१६)। ७ वर्ग विशेष मोहानीय कर्म (कम्म ४ ६ ३ ६१)। द इस्य-विशेष (रिपा) । मोद्यम विभेदन दियुष करता । २ मन्य बाहि से बस करना (तूपा ४१६) । १ मुद्धा देत्रोठी (निवार)। ४ नदीकावा क्रम करतेशाचा सम्बादि-सर्गे (गुपा १६१)। १ काव का एक बास्त : ६ डीम सनुराय (कर्णु)। **७ मैदन, रति किया (त ७६**३ सामा १ ३ बीव रे)। द वि व्यक्ति वनलेशसा (स ११७ ७४४)। १ मोबूक पूर्व करत-. बाब्सा मीक्टर्ड पसूर्त्वाप (वर्मनि ६३: दुर कः १६। कर्षर २६)। मोहजिज विमोहतीयी १ मोह-काइ। र न कर्म-विदेश गोव का कारण-पुत कर्में (सम ६६) वय धरः मीप)। श्राह्मी भी [मोहनी] एक म्यौपनि (श्री १)। मोडर व [मोस्तर्य] वाचाट्या वक्कार (क्ल्ब्र २ १—पर १४का पुण्ठ १व )। मोहर वि [मीलर] वाचाद, वदवारी (हा १ -- पत्र ४१६)। मोइरिम दि [मीनारिक] इसर देशों (ध ६—पत्र ३७१ सीया मुवा १२ )। मोइरिज न [मीलयं] वाचानता वक्तार (क्या नुग ११८) ( मोहि नि [माहिन्] पुण्य कलेवला (र्वाप)। मोविणी 🛍 [मादिनी] सन्द-विरोग (रिन) । मोहिय वि[मोहित] १ प्राथ क्या ह्या (पएक रे ४३ डरे४)। रेन नियुक्त वैद्वन पठि-वोद्या (छामा १३६—रन t (x) t मोट्टचिन रि [मीट्टचिड] व्योक्तिशास ना बाक्डार (कुछ १)। यौद्धिम देवी सारिव 'किरेदेर यन एरिक्ट.

एक्ट्रॉलश्रस्य पीप्रियम्प्रसारिहाकस्य सक्तः सिम् सं पार-पूर्ति में अञ्चल किया जाता स्मित्र देशी इप (प्राप्त २६)। सम्प्रसार (प्राप्त १६)। सम्प्रसार (प्राप्त १६)।

> ॥ इस विरिपाइकसहमहण्यवस्य समायरहरूईकन्छो युग्दीवस्यो तर्रतो समतो ॥

> > ਧ

चैषा देखो क्षण = बन (बुर १ १२१)। याय एक 🚮 नानना । याग्रह, बार्ग्याह य पूँ [या चल्त्र-स्मानीय स्पन्नन वर्ध-विदेश थणहण (घप) देखी जणहण 'दी वि स बालेड पार्खीत पारामी बालियो (वि स्प्तस्य बकार (प्रायः प्रामा)। बेर मध्दराज्य मोपरीहोद मणस्पू (पि १४ ११० उपा भा वर्गीक १७३ वे १३ व्रास यम[च] १ हेनु-पूचक सस्यय (वर्षसं R) 1 2 2) I ६०६): २ देखो चाम्य (ठा३१ वा युक्त देशो कुरुम - कर्यो (पत्रम ६६, २८)। याण वेको जाण = मान (सन २)। पदम १, व४- ११, २ जा १२, बाना विचित्र वि [वात्रिक] याचा करनेशना, रेमा, अस्म २ ६३; ४ ६; १० देवेण याल रेको काळ (परुप ६ २४६) । भ्रमत् करनेवाचा 'समब्दपति दिसामध्यपति रेरे प्रापू २७)। पान (भा) वैको आव = यानत् (कुमा) । ष देवी स (धारा)। (बदा बह १)। यायदह नि [यावद्वे] स्पेट निवने ही पदावि स [यदापि] सम्प्रथम-पुषक मध्यत, व वि [ द] देनेवाला (सीप राम बीव ६)। भाषस्यकता हो स्वता (बस ६ २ २)। स्वीकार-योजन निपात (गंबा १४ ३१)। बरमा देवी जैंडमा (सति ७) । मुख देवो सुख = पूका 'एवन् सबूर्त कार्बा' पत्नोबहर देवा अण्लोबहर (इर ६४० <sup>\*</sup>र्यचसक [अक्क्ष्य] १ समन करला। २ (मारमः १६७ रंग)। पुनाकरणा। संक्र चेविय (स १, १---थेव 🧃 (पै मा) देखो एस (१५ हु, यम देखो अस्म ≔यम 'शो घलमा शो मर्गा। पत्र ३ ): येम्बर्रश्य)। (धार १--पप ७७)। र्थंत वि [यद] प्रवलकोत स्त्रोगीः 'स-वंदे' प्षिश्च (मा) } वैको चिद्व ~ स्वा। दकि-यर रेखी कर = कर (परह) । (युष २, २ ९६)। यभिइत (वे) । श्रीव (शाकारी भाषा) (शाक बस्र देशो तस्र ≈ तम्र (उदा) । <sup>व</sup>र्षत् केन्नो <del>चौत्र</del> (तुपा २२१) । रे ४)। युष्यतारै (पै) (प्राष्ट्र १२६)। या देखो जा≂या, 'युकारका य सम्मीद्वी यक्ष देवो चक्क 'विश्वान्यव्' (प्रवस १,७१)। र्व मंद्रि स्टब्स्ट्रएम्' (निधे ४३१) कृमा व्येव (सी) देशो एव (द्वे ४ २०)। ध्येक्य देखी येच (शि ११)। यह देशी वह = तर (मार्ड)। W = 1

> ॥ इस स्विरिपाइअसङ्गङ्क्ष्मशीन्य यशाण्डमहृषंक्रकणो श्लीकामो वर्षमी सम्बो ॥

धन्त्रज्ञाचन्त्रसिक् मप्य-सब् पदारमाने स्टेन स्वरीं वा समुद्ध्य (शिय)। a. नार-पूरक सम्यय (हे२ २१७ कुना) । : ध [रे] निवय-मूचक सम्यय (वसनि १ 222): oइ ब्री [रति] १ नाय-नीड़ा, मुख्त मैक्कुत (के १ ६२) दूजा) । १ नामरेव की की (कुमा)। १ प्रीति प्रैन धनुसम (कुमा मुता १११) । ४ वर्म-विस्टेय (कम्प २ १ )। ६ अंगदान् पपश्रम की मुक्स शिष्या (पद प्रेत्रात्रस्थामः इत्र का प्रः सेनार्गत (१६) । भर, बर वि विस् १ र्यत-अनक (सा १२।)। २ दूर् पर्वत रिटेप (परहर १.४० १ ३ महा) । कीखा क्ये [मिर्जा] राष-गंग (महा)। किस्त ची किंछि । बरी धर्व (राप्र २१)। घर न ["ग्रूइ] मुक्त-नन्दिर, त्लाव-नृद (११ १९६ ए) । जाइ, नाइ ५ ["नाय] नाबरेद (श्रुवा नुस ६ ६१) । पहुतुः [प्रमु] वहां वर्ष (पूत्रा) । प्यमा ध्ये [<sup>\*</sup>प्रसा] विघरतायक इन्द्र की एक सद-वर्षि (रक्षा ४ १-- वर १ ४)। °रिपय १ ["प्रिय] १ शामरेव (कुत ७२) । १ एक इन्द्र । ३ रिचर देशी भी एक वाति (राव) । "जिया की ("प्रिया) बातव्यक्तरी के एवं विदेश की एक यह महिनी (छाना २-- नव २३२)। सपत्र व [भवन] कामग्रेश-१६ (वरा)। मैत वि [ सन् ] १ राज-धनकः । २ पु कागरेन कन्दर्ग (ते(४६)। वेरिर व विमिन्तरी स्थन न्द्र (ताप) । शमण तु (समणी नानदेश (बुग ४ ३ ६ वण्)। संस दु[सन्स] र नुग्य की प्राप्ति २ कामदेव (में ११ )। बा १ [प्रांत] नातरेर (न्याः नुरा ११३) । विद्य की ['बृद्धि] विकारिटेन (राह + १४४) । हें हुए के [सुन्दुध] द्व राव-नगव (सर वर ही)। शृहद

पु [र] वर्ष-स्थानीय व्यक्त वर्ध-विशेष

(सिरि१६६) रिन्)। गण पू [गण]

ws7

रू [समाग] कामध्य (रूमा) । सेपा का सिना विभरेत की एक बग्र-महिसी (इन्हा४ १—यव २४)। इरब ["गृह्] रुमन-भूह भुष्टावन्दिर (उप ६४४ धीमहा)। रह दे [रिवि] सूदै सूरन (शा १४० से १ १४३ वेर क्यू)। रहम नि [रिनित] बनामा ह्या, निर्मित (मुर ४ २४४ गुप्ता धीनः कम् )। रइ.भ. ति [र्शवत ] शहत प्राप्ति और पौठ-विद्यि (मञ्जू ११४)। **धर्**भाव सक [स्वय ] बनवाना । से**ड** रङ्भापिम (वी १)। खगेड दि दि विभिन्न (दे ७ ६)। खरोही से [दे] एत-इच्छा (दे ७ ३)। रहजीत देशो स्य = रवन् । ख्छान्य न दि] भपन, निवास (दे । १३) पड्)। रइस्टरन न [दे रहिस्स] रहिन्हेबोस मैचुन (देक १३)। द्धक्षिय रि [शत्रसम्ह] ध्य हे दुख ध्यवता (ft tet) i रइपाहिया देनो सय-बाहिआः श्रामिय रदगहिवातमधी (सिरि १ १)। र्रोसर पूं [रतीचर] नायरेर नन्तरं (नुमा)। रहनाजिका भी [वि] येग-विदेश पाना, पुरती (विदि १ ६)। रतर थ्यो सह वरीह, 'रबर्बुरेडि प्रचीद हिलों (बदि ४२ भरि)। रप्तरह वि शिरवी मनेपट बोर । कास दू [ दाख] नाता के बरर में बतार दिया भाता बयम-विटेन 'नवनानदि नियमुक्बदि धरिबड पुल रहरवदानही श्रीतरिवर्ड (वृति) । ररामक रि (रवलक्ष) स्त्रोशुक्त, वृत्तिनुक (का क क--ार वे र)। राजा देशो स्य = स्पन् (गिर ६ दीः क्ल)। रंड रि [रष्टु] वर्धे र धैन (रिन) ।

रंकोस यक [दोळ्यू] १ भूतना। २ दिवना पतना, कौपना । रेबोलइ (हे ४ ४६३ वजा ६४)। रंखोक्किय वि [बोसिय] कम्पित (वतर)। रंतोडिर वि [शेडिन्] पूननेवला (बन्ध भूमाः पाप) । रंगे यह [ रहम् ] इवर-क्वर पतना । सह-रंगीत (कम्पा पत्रम १ ११ परहा ३-- वय ११)। रंग तक [रह्नयू] रैपना। वर्ग रंगिम्बद (वंदोच १७)। वहः, 'धमीखं वरतयरं वर नय-राजि-मॅरिरं चरित् (कुम्बा १८)। रंग कि खिल्ली रेख इस्स रंग कर कराया हुधा (श्तरि २, १७)। रंगन दि ] एक, एका बातु विशेष कीता रंग द्र दिक्की १ धन, प्रेम (शिरि ४१४)। २ नाटक्टप्रमा प्रैद्धा-भूमि (पाद्यः नुपा १ कुका) । वे हुद्ध-नएड४ क्य-भूति (वर्षेत्रं ७०३)।४ सेवाम सहाई (रिव)। १ रख क्टों माली (से २, २१)। ६ कर्ए, रेंक (त्री) । ७ रॅवना रंक्न, रंग पदना (यरह)। ज वि दिंदी पृतुद्व-जनक वि ६, ४२) । "पिक और "आपक्रि रंपोसी (बज्यम वह १२१ वा ७१४)। रंगम न [सद्दान] १ चन, रंजा। २५/-बीव धारमा (स्त १ १-- पण ७७६)। र्रियर कि [र्यक्रिक] चक्रतेगला (तुरा १) । रंगित रि [रङ्गपन्] रेन्सला (बर ६ रंज एक [रक्षयु] १ देव बयामा । २ जुडी करमा। रेनए, रंजेन (बन्ना १९६) है ४ ४६) । वर्षः रंशियद् (बहा) । वक्र रंजन (दी १)। वह र्शकान (रिश्वर)। इ रंजियस्य (सामार्ट ६) । र्रज्ञग रि [रफ्रइ] छवर करनेराता (रात) । (बन व [रक्रम] १ रक्स (शिव १९६१) ।

रे गुरी करका 'पर्धवतांत्रले' (स १०६

महा हेका २७२)।

बण्बा ४४ कथ् पिए)।

'treg" (t w 1) |

द्याः संवे १)। १ द्वे अन्य-विशेष (पिय)!

४ दि. बुद्धी करनेवाता, रामवतक (कूमा) ।

रंजण दु दि ] १ वहा कृम्म (१७३)।

रंबविय ) वि रिशिती चान्युक विया

-रिका रे इमा (स्टा से का ४० पड़क

रंडा की [रण्डा] श्रेंड विवता (उप प्र ६१६

रंडुअन [दे] रुक्प रस्ती प्रवयती में

रंघ एक [रूप , राध्य ] रावना पकाना ।

'रंबो रावयते' स्मृतः रंबद् (प्राष्ट्र ७ )

रवेदि (स २४१)। वह रंबंद (खामा र

२ भूएका पात्र-विशेष (१ ७ १ पाप)।

७—पन ११७) । <del>एक रवि</del>कण (कुप २३)। र्भन [राम] क्रिट विवर (या १४२) रंगड र्राया व [रम्पन राधन] राधना; प्रवन पाक (ना १४) पव ६४ सूम्रनि १२१ टी, पुपा १२।४ १)। घर म ["गृह्] बा≄-वृह (रमदा ६१)। रंघण न [रम्भन] पान-पृष्ट, रसोर्पनर (धाना 9 8 8x) 1 र्पयक[तभ्]कितना प्रताकरना। र्पाद (हे ४ १६४ प्राष्ट्र ६६, वर् )। रंपण व [तक्षण] स्तुक्षणः पतना करना (क्या) । र्रफ देको रेप । रंफ्क, रंफ्य (हे ४ १६४) पद्)। रेफम केने रंपण (कुमा) । रंस एक [गम्] काना पति करना। रंगर (६४ १६२) रंबरि (ड्रुमा) । र्रम देखे रफ । रख्य (बाला १४६) । रंग क्ष [बा+रम्] बायम कथा। रंबद् (पड्)। रेम र् कि प्रश्लेषक-प्रवत्र क्षिते का तक्ता (दे ७, १)। रेंमा की [रन्मा] १ करती नेता का चाव F (प्राप्त रक्ष के क्षा के अपूर्व (प्राप्त ) 1 रे देशांपण-विरोध एक बज्रास (बुदा २३४)

रम्या १)। ३ वेरोचन मामक वद्योत्य की एक श्रप्र-मदियो (ठा ६, १—यत्र ३ २। साया २--पत्र २६१)। ४ रावस की एक पत्नी (पडम ७४ व)। रक्त्वासक रिक्ष्यो च्याल करना पासन करता । एक्बड् (उनः महा) । मुका, रक्बीप (कुमा)। वह रक्संत (गा १०० मीप मा ३७) । क्वडू- र्वस्थितमाण (नाट--मानती २०)। इ. रक्त,रक्ताणिका रक्तिपत्र, रक्कोसका(से १ ४) सार्गर ग्उड मुपा२४)। रक्का पूर्व रिश्वस ] एक स (पाप क्रुप ११६ सुपा १६ सद्धि हटी संबोध ४४)। रक्का विशिक्ष है एक एका करनेवाला (सरप्रदेशक कम्म) । २ द्रु एक वैन धूनि (क्य)। रक्त देखो रक्त ≈ रह्। रक्सका ) विशिक्षको स्वयः कर्षा (तारः — रक्कारा 🕽 मालेनि २३ रमा; कुन्ने २६३३ सार्व ११)। रस्क्रण न [राध्रण] रजा, पालन (युर १३ १६७३ यउट प्रासू २३) । रक्स्रणा श्री रिक्रणा कार देशो (स्प = १ E (1) 1 रक्काणिया भी वि] रची हुई की रखेधिक रवाती स्वात (गुपा १०१)। रक्तवास वि दि रववावा ध्या करनेवावा (महा)। रक्सास पूं [राधस] १ देनों की एक वार्टि (पद्मा १४--पर ६०)। २ विचायर-मनुष्यी का एक मेरा (पश्रम १, ११२)। १ मेरा-विरोध में प्रस्तव मनुष्यः एक विद्यावरवातिः चैर्ध निव स्थयपर्ध एक्स्प्रनामं कर्म सोर्थ (परम ४, २४७) । ४ विद्यानर, स्न्यार सि १४, १७३ नह--भुग्ब १६२) । ६ सहोरान भी तीसवाँ मुहर्स (सम ११) सुमा १ १६)। दरी की [पुरी] तका भनती (से १२, EV) । जमरी की "नगरी की धर्व (दे १२, ७६) । लाइ प्रे साजी रावर्षी का राजा (वे क, १४)। स्य न [ीक] यक्र-निरोप ७१ ६६)। दीन पू ["द्वीप] सिहत

द्योप (पत्रम ४, १२६) । "नाह् वेदो प्पाह् (वज्य १, १६)। बहु दूं ["पवि] राषसॉ कामुक्तिया(पउन ६, १२३३ से ११ १)। ाहित पू ["विप] नही मर्च (६ १४, पण £ ( ) 1 रक्कसिंद् 🕯 [राशसेन्द्र] एतसीका एका (पदम १२ ४)। रक्शासी की रिप्रमुसी र पात्रस की की (नाट--मुच्च २१८)। २ ब्रिफि-निरोप (निसे ४६४ ही) । रक्सार्सेव देशो रक्सार्सिव (से १२ ७७)। रक्ताची[छ्हा] र छाछ पलग(मारः सूपार ३ ११३)।२ एकामस्म ची चंदरी रनवक्य विद्वा (सत्त २० पुपा ₹**₹७**) । रिक्तिक नि रिक्षित | १ प्रतित (पडड ना ३३३)। २ द्रंपक प्रसिद्ध वैन शहरि (कम्प विदे २२वद)। रिकाम के रक्तसी (रेम १७)। रक्की की [रक्षी] भववान घरनाव की मुक्य साम्दी (सम १६९३ पद द)। रक्कोबरानि [स्द्रोपरा] स्टब्ह में क्यर (सम ११६)। रगिष्ठ [दे] देवी स्वागेश (पर्)। रगारेको एक = एक (हे २, १ 481 पड्)। रमाथ न हि | भूगुम्म-वस (रे ७, ६) पाम; परङ्)। रपुस द्व [रपुप] इतिनेत का एक धना (पद्मम २२, ११)। रब सक [ वे राज् ] रावना, सातक होना, सनुध्य करता । एवह रज्वंति रज्वेह (श्रुमा) बना ११२)। क्मी, 'रते रविवनर बन्हा' (क्रुप्र १६२)। वहा. रखंदा (स्त्री)। प्रयो, रच्यांपीत (नमा ११२)। रवण न [देरक्रान] २ बनुस्तर। १ वि धनुषग करनेवाला, रायनेवाचा (कृमा) । रिवर वि दि रिअल् । राज्नेवाला (कुमा)। रच्या रेवी रक्ता (रेंब १६) । रच्छा को [रच्या] मुश्ला (वा १११ वीपः

**क्य)** ∤

कुष्पेच्छा कृतका कुराबीयाँ (वच्चा ७०)।

९ प्रदेश, पीक्त, स्मृतिः "वस्यविक्संब्सादाः

भेपक्षपुण्यक्षिकरक्षास्त्रतार्थि (पुर ४ २३ :

राष्ट्र) । र कानगुळा चौतपुरूप (वे १ १६६)

रक्रपाव भो श्रम्य - घड्रपहान् । सह

दार कील ४**० ६**वे २) :

रवरवार्यत (पठन १४ ३१)।

सुद्ध व (साध) फैल, बन्द्रम्ब (मुदा ३ ७ महा)।

वर क्ष १ [ बूट ] यमनियुक्त

प्रशिक्षित सुकेशर (निया १ ११- नन

रहिस नि [राष्ट्रिय] १ केट-सम्बद्धी। १ वृक्षात्रक की करणा में सभा का सभा

(() fres ( 1 - += (1))

(याँच १६४)।

(पन्द १ ४—पत्र ८१) । मोग सोव

इ [रेशोक] बाब धरोज़ का देव (काना

रच द्वं [पंच] एवं मिता (वी १४)।

रचेदम न [रक्तवस्तृत] बान बस्स (मुत

रक्ता देवो रच = रख (महा)।

रे रामका)।

t=t):

इत्तक्तर ग हिं] शीपु मद विशेष (वे ₩ Y) I रत्तवद्धः प्रेडिंगे रहेशार व्यक्तः (७ १३)। रचडि (बप) देशो रचि = यति (पि १११)। रक्तयन दिरक्तक] बन्दुक दुर्धकाञ्चल (R . 1) 1 रत्ता की रिका प्रकृति (सम २७) ४३ क्क)। यहप्पवाय पू [ ववीप्रपात ] हह विरोप (ठा १, ३—पत्र ७३)। रचि हो दि] यात्रा हुदूम (१७१)। रचिको [रात्र] एठ निरा (हे२ ७१ कुमा प्रासुर )। औधय वि [अन्यक] रात हो नहीं देश सक्तेताला (गा ६६७ क्षेत्र १६)। अर वि विषयी १ एउ में विद्वरनेनासाः २ प्रशासः (पर्)। "दिवह न "दिवस ] एठ-दिन, धहनिय (पि दव) । देखो राइ = राणि । र्श्चिदिअइ न [ रात्रिदिवस ] रात-दिन धहनित निरन्तर (धन्द्र ७**०)**। र्रितिहर्म) न [राजिन्दिय ] उसर वैशो र्शितियो (पठम व १६४ ४१ वर) । रिलेंघ वि [राज्यस्थ] को एउ में न देख सकता ही वह (प्राप्त १७१)। रचीक्ष पु दि । भाषित इसाम (१ ७ श पाप । रचप्पछ न [रच्छेत्पाछ] नान नम्म (पएड् ₹ ¥) I रत्तोमा भी रिकोदा पुत्र नदी (इन्ह)। रचोप्पक रेबो रचुप्पस्त (गट---गुण्ड १४६)। रस्था देवी रच्यदा (शाथ संव १२ पुर ₹ **६६)** । रद्ध नि [रद्ध, राद्ध] राना हुया, यक्त (दिंड १९४३ पुषा ६३६) । रिद्धि नि [वे] प्रवान, मेह (वे ७ २)। रक्ष विरूप्ण (सुपा ४१३ कुमा)। रप्प दक शाक्षाक्रम् विभावनयः करता । रपद (प्राष्ट्र ७३) । रण्ड र् [वे] बल्गीक हुनचती में 'चलडो' (रे भ रे। पाप) । २ रोक-विशेषा नहरि क्यू पाक्युनितु रप्यम् (श्रष्ठ) ।

46

रफडिआ क्री दि] नोवा पोह (रे ७ ४)। रस्वावि दि यव मनाष्ट्र(सा १४ चर २ १२: धर्मीके ४२)। रमस रेको रहस=रमस (या ८७२) ८१४ ₹₹Y) 1 रस सक रिम् रे कीहा करना । २ ईमोग करना । रमद्र रमप्, रमंते रमिन्न रमेन्ना (कुमा)। भनि एमिस्सदि, एमिन्दि (कुमा)। कर्म रिमन्बर (कुमा)। वहः समेत, सम माण (भा ४४। हुमा) । संक्र- एमिम एमिन्ने, रमिकण, रंसूण (हे २ १४६ ३ ११६ महाः पि ११२) रसेटिप, रस्मेटिपण्, रमेवि (प्रप) (पि १०६)। हेहर रमिउ (धर ६ ३८)। इ. रमिझव्य (गा ४६१) देशो एमणिका रमणीका रम्म । प्रयो रमार्वेटि (पि ११२)। रमण न [रमण] १ भीका भीवन। २ मुख्त, समोगः रित-बीका (पन १०- कुमा उप प्र १८७)। ३ स्मर-कृषिका योगि (कुमा)। भू अपन निरम्भ (पाय)। ५ पति वर, स्वामी (पत्रम ११ १६ चिय)। ६ अन्द-विशेष (पिन) । रमणिक वि रमणीय । सुन्दर मनोहर, रम्य (ब्राफ्र पाम मंत्रि ) । २ तुएक रेव-विमान (सम १७)। १ पुं नन्दीस्वर शीप के मध्य में उत्तर दिशा की भीर स्वित एक धक्रमन-चिर (पर २६६ टी)। ४ एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा२ ६---पत्र ६)। रमणी और [रमणी] १ नाचे और (शाम्र) सापु १८७। मासु १३६ ta )। २ एक पुष्करियो (६५)। रमणीक वि [रमणीय] रम्य, ववीरम (प्राप्त

स्वयन ४ । पडका सुपा २१३८ मनि)।

रमा 🛍 [रमा] बदनीः भी (कुम्मा ६) ।

रमिक्य वि [रत] र मीक्ति जिसमे और की

हो बहु (बुमा ४ १)। २ स. एअछ

कीका (स्ताना १ १---पत्र १६६; कुमार

रमिस वि रिसित रमाया ह्या (क्रुमा व

रमिम रेवो रम।

**च**₹)।

लुपा ३७६३ प्रस्तु ६६) ।

रमिर वि [रन्तृ] रमण करनेवासा (कुमा)। रम्म वि रिम्प र मनोरम रमणीय मुन्दर (पाय से १ ४७) सुर १ ६१। प्रासु ७१)। २ प्रविवय-विशेष एक प्राप्त (ठा २, **१—्यन ⊏ )। १ वस्पक का माछ (से १** ४७)। ४ न एक देव-विमान (द्वम १७)। रम्मग ) प्रीरिन्यकी १ एक विवय प्रान्त रम्मग ) विशेष (ठा२ १—पत्र ८)। २ एक युवसिक-कीन चंत्र-शीप का वर्ष-विशेष (सम १२) ठा२ १—पत्र ६७ इक्)। १ म् एक देव-विमान (सम १७)। ४ पर्वतः विशेष का एक कुर (वे ४)। रमद्व देशो एक । रम्हद (प्राक्त ६४) । रय सक [रख] रैंगना भी बोएका नो रएन्या नी बीधरवाई नत्याई बारेन्या" (भाषा) । रय सक रिपय विनामा निर्माण करना। रमद्द एव (हे ४ १४) पर्महा)। कन्छ-रहरपंद (से = ==)। रय पुन [रखस् ] १ रेणु भूम (प्रीपः पापाः कुम २१)। २ परान, पुरन-रज (छ ३ ४०)। १ सांस्य-वर्शन में बक्त प्रकृति का एक प्रण (कुन २१)। ४ बम्यमान कर्म (कुना **७ ४**० केइस ६२२ छन)। चाणन ित्राण] वैत गुनि का एक बाकरण (सीव ६६८ पराहर १-पत्र १४८)। स्सामा की [रेनका] बहुमती की (दे १ १२४)। हर दुन ["हर] भैन मुनि का एक क्वकरण (संबोध १३)। इरण म [क्रिया] नहीं धर्म (साधार १ कस)। रय दि [रत] १ सनुरक्त मासक (मीप क्या पुर १ १२। पुना ३ ६। प्रानू १६६) । २ स्वित (से ६, ४२)। ६ न उर्ति-कर्न मैकून (समरश्राज्य सारेश्शास स्वयं भण्या १ । सुपाप ४)। रय प्रै [रय] देन (क्रुमा धे २ ७ छए)। रम देवो रव (पउम ११४ १७)। रयग वेची रथय = रजक (बा १२, कुना ३,वय)।

रयजन [रजन] रैंक्स दिन्दुक इरहा

(तुम १ ६ ११) ।

us ţ	पार्थसर्गर्णको	रपत्र—रवव
रपाम वि [रचन] चरतेनाचा निर्माण नैपीधविद्यारकपूर्ण (शक्त)।	(इक दुर १ २ )। संवया की [संच्या] १ अंदर्शावती नामक विकासी	बर, करपू [कर] पत्रमा (हर द टिक्प)। बाह नाहपू [मार्थ]
स्यान पुंहिदन] बाँत स्थल (वन १०६ दी पाफ नाम १ २३ नाट छडु १३)।	धरकानी (ठा २, १ — पत्र ४)। २ हैता- नैन्द्र की कमुन्वस्थ-नामठ स्त्रास्त्री की एक स्पत्रकानी (इक)। समया की [समया]	क्लामा (पामा चुंगा १६)। सन्त व [मक्क] एवि में बाला (मुपा ४११)। रसन्त पुं[रसम्ब] कारमा (स्ल)।
रश्रण पुन [स्रत] १ मासिस्य मादि नामून्य पत्तर मिछ 'दुदे स्मणा समुन्यमा' (निर १ इत १६३ छात्रा १ १३ सुना	भंगनावती नामक विजय को एक स्वयानी (क्क)। सार पूर्व [*सार] १ एक स्वया (स्व)। २ एक रोड का नाम (स्व करेक	बढ्द ई बिडम] चलमा (इन्यू)। विराम ई विराम] बाउ काल धुरह (पाप)।
१४७- वी १ दुमा है २ १ १) । २ चेद्र, सम्प्रति में ज्लम (सम २६ कुमा ६ ४७) तहति ह चेद-गरिच्या क्रिया स्टन्	थे)। सिंह पूं ["सिंह] एक कैन प्रापानें धीनकृतिकारुकक कर्यों (धीन १२)। सिंह	रमणिइ पुं[रजनीन्द्र] धन्तमा (छए)। रमणिद्वर न [वे] कुमुद कमन (वे ७ ४-
खाबरेरमखाँ (बज्जा ११६)। १ स्थल- बिरोप (रिंग)। ४ क्षाप-बिरोम (खामा १	दृ[िरोस्त] एक एका (का १ शर्थ)। सेहर दृ[िरोलर] १ एक एका (प्राप्त १)। २ विक्रम की वनस्त्री सताकों में	पड्)। रसपी की [रहनीं] वैको स्यप्ति ≔ परिन (का शंतन १२ वीवत १७७: वी १३ धीन)।
१ पत्रम ४१ १)।१ पर्यंतर्वित का यक्त पूट (ठा ४ २, )। ६ ⊈ व. राजन द्वीप वाशिवामी (पत्रम ४१, १७)। टर	विषयम् एक वैत यात्रार्थं सीर संबद्धाः (सिरि १६४)। "प्रस्तुः गरपुं ["कर] १ सम नी बान (गर्)। २ समुद्रः (नामा	रमणी की [रजनी] १ स्त्रीय एक (पास) प्रापृ १६६१ कुमा)। २ ईक्तनेत्र के बोक्पाल
न ["पुर] नयर-निरोग (सण) । विचार्च [स्थित्र] निराभर वेश का एक राजा (यज्य २, ८३) । दीज र्जु ["द्वार] होप-	नुपा ६७) प्रानु ६७) शामा १ १७—पन १२व) । भारते [िमा] वैको प्यभा	शे एक पटण्याँ (ठा ४ १—वन २ ४)। १ जमरेख की एक यक्ष-महिन्नी (ठा ४, १— पत्र १ २)। ४ मध्यम ग्राम की एक मुक्कीना
निरोप (लामा १ ६—पत्र १६६)। तिहि दु [िनपि] तपुत्र सामर (मुना ७ १२६)। पुत्रदी की [पृष्टिकी] दर्जी	(उत्त ३६ १४०)। सब देवो सब (महाः सीप) स्वरमुख पुं[करसुत] १ कत्रपा। २ एक वर्षिक-पुत्र (मा १९)।	(स्र ७—पत्र ६१९)। १ पह्न साम नी एक मुर्च्या चित्रो कोरन्सीया इसी स रह- क्यों() न्यों) सरर्जना सं (स्र ७—पत्र
नरर-मृति राजबन्धानामक नरक-पृथिती (व ११२)। पुर देखी ठर(बुब ६ महा छछ)।	ाविक, (यसी की ["विक्रिं विक्री] १ राजीं पा द्वार (द्वान २२)। २ वान-विकेष (प्रैय २१)। ३ बाल-विकेष (देव ७७)।	१६६)। भाजाज न ["भाजान] एत में बाना (मा २)। सार न ["सार] मुख मैद्रुन (वे १ ४०)। देशो रयवि – रतन
ैप्पभा प्पडाकी [ैप्रमा] १ पहली नरर त्रुवि (टाक — पत्र देद सीराज्ञत)। २ मोम-नानक राखध्य नी एक नस्पत्री	४ एक विद्यावर-राजकरण (रजम ६, ११)। "वह व ["यह] नवर-विदेश (सहा)। सिव पूं[सिव] सवस वा विद्या (रजम	(दे १ व)। रमणी की [रजनी] धीचविन्तिकेच१
(छ ४ १पत्र २ ४):३ धन वातेत्र (न १३६): सय रि["सय] एलो वा वनाहुमा(महा): सास्य की ["सास्य]	<ul> <li>४६, १) सिबसुम वृ [सिबसुत]</li> <li>रावण (पत्रव द २२१)। दिव वि</li> <li>[पिक] व्येष्ठ, प्रवस्ता में बहा (राव)।</li> </ul>	रिक्शव । २ इस्ति, इससे (बतनि १) । रमणुक्वय १९ [इस्तोक्व] १ मेस्-वर्गेत रयणावय ) (वृत्र १ सेवर्ग ७७) इस्) ।
एन-विटेन (पनि २४)। साहित है ["साहितन] निषायर वैद्य में बत्तप्र नीम पन वा एक पूर (तसम १,१४)। "सुमर	रमणप्रमिम हि [रातप्रमिक] सन्त्रकः वस्त्री (र्वेष २ ६६)।	२ कूट-रिशेष (१०) । रयजावया की [सनोवया] बनुब्रता समझ स्वास्त्री की एक स्वतानी (इक) ।
ति [सुपू] एवाँ वो पुरस्ताना (वर् )। "रह् पू ["रथ] तिशावर वंश वा पुरु धना (वरव १ १४)। धानि पू ["राशि] बहुद	रवंत्रा की [रपना] किर्माण इति (क्ल १८ १० केरम ६६ मृता ६ ४ रेंच)। रवंत्रा की [सना] एत्रवानामक नरर	रयद न [रजत] १ स्था, नांध (छावा रवर १ १ — नव १६ जाङ १२। जाला
(बाल)। यद्र कृषिति] सर्लों का मानिक वती थीर्वत (नृता २११)। वर्द्द की	वृत्ति (पर १७१) । स्यति कृषी [स्स्ति] एक दाच की बात अब	रसय   बाद्याः बताः जीतः) १ वृद्धः केव रिमान (वेशेन्नः १६१) । ६ हाची का बीठ १ ४ हाट. बाता । ४ तुवकी कोवा । ६ स्थिट.
[बना] एक एमी (रवण ३)। बाज ई [पाज] रियापर-वेदीय एक राजा (बाज १,१४)। यह रि [बह] राज-बारक	हुट हाच ना चौरनाए (क्या पर ६८: १७६)। ृरपणि की [रजनि] रेगो स्पणा≔रजनी	भूतः। करोत पर्रतः। वरस्यक्षेतः ६ व्यवस्थिते । १ वि समेत्र वर्णवासाः चैत्र (बाइम्१) बाह्यः है १ १ एकः १
(गार १ ७१) । संवयंत्र [संवयं] १ वरण परंजवानूर (११) । १ एक नदर	(ताता ११ — वर्ष घरा घण)। आर पू [चर] १ तक्क (न १ ९६   चाव)।	र र)। गिरि र् [मिरि] नर्र-निरीत (छाता र १) सीर)। बच्च न [पात्र]

वांदीका वरतक (एउड)। सस्य वि सिमी चौदी का बना हुया (ग्राया १ १—पत्र হাপালিও)। र्यय प्रजिक नोगी (स २०६३ पाम)। रयमसी की दि शिशल वास्य (रे ७ ३)। रयमाडी देवो राय-बाडिआ (सिर ७१०)। रयाव सक रिचय वनवानाः निर्माता कराना । स्थानेक स्थानितिः स्थानेक् (कप्प)। पंत्र रयावेत्ता (क्य)। रयाविय वि [रचित] वनवाया हुमा (स ¥\$\$) | रक्का की दि प्रियंग्र, मालकर्रवनी (दे ७ रिक्षे पूंची [दे] बान्या मधुर राज्य (माल रमस्क[क] १ कहमा शोलना। २ वध करता। ३ पवि करता। ४ सक रोता। १ राज्य करता: 'पुत्रं रतति परिसार' (सूध १ ४ १ १०) एवद (है ४ २३३ संस्थि ३३)। यह रवंड, रवेंच (ए।या १ १---पत्र ६१, पिन, धीप) । रव सक [ रावय ] दूबवाना भाहान करना। नक रवेंत (ग्रीप)। रव सक [वे] भाग करना । भवि--- स्नेविद (एकि)। रव पूँरिया १ सन्दर भाषान (कप्पः महा चरा मान)। २ वि मक्कर सम्बद्धाता 'रवे मबर्स कसमेश्रुसं' (पाप्र) । रष (घप) देखो रय = रमस् (मीप)। रकेंग रक्त } (प्तप) रेको रसन (प्रकि)। रक्ण न [रक्ष्य] धाराज करना 'पद्मासची व करेणूया सवा रवणसीमा बासी (महा)। रवण्गे ) (मप) देखो एस्म = एस्व (हे ४ रवस ∫ ४१२३ व्यक्ति)। रवय प्रवि यन्त्रात-स्त्य विश्वोतेकी सक्ती, प्रवराती में 'रवैयो' (वे ७ व)। रवरव प्रक [रोस्प ] १ वृद धाराज

करता । २ वार्रवार भाषाम करता । शङ्क

रवि वि [रिविन्] प्रावान करनेवाचा (छ १

रवरबंद (प्रीप)।

RE) 1

रिमिन रिमि । सूर्य सूरव (से २, २१ गडर एए)। २ एक्स-वराका एक एका (पटम ४, २६२)। ३ सके दूस साक का पेक (१११७२)। "तेश्र पूर्विजस्] र इस्ताकु वंश का एक राजा (गतन १) v)। २ राश्चस पैराका एक राजा एक भेकेश (पडम ४, २६४)। तिया **ध**री ितेजा] एक विद्या (पत्रम ७ १४१)। "नेदण पू ["नन्दन] शत-बह् (भा१२)। प्पम र् [ प्रम] बानखीय का एक राजा (परम ६ ६८)। भत्ता की भिक्ता एक महीविव (वी १)। भास पू भास] बहन-विशेष सूर्वहास बहुए (पदम ११, २६)। वार पूर्ी वार ी किन-विरोध पनिवार (क्रम ४११)। सम्म द्रं ["सुत्र] १ रानिवर यह (से द २वः सूपा ११)। २ रामकत्र का एक सेनापति सुधीव (से ११ १६)। दास है [दास] सूर्यहास खर्ग (पडन X8 70) 1 रिवराय न [रिविगत] विश्वपर सूर्य हो वह नश्चम (भव १)। रविय वि दि । धार किया हुना सिकस्या हुमा (विशे १४५६)। रब्बारिक पूँ हिं] पूर्व प्रदेश-हारक चेएा मनज्ये रज्जारियो वि' (सुपा ४२६) । रस सक [रस्] विज्ञाना प्रावाच करना। रसद (ना ४३६)। नक्त रसंत (सुर २ **७४**३ सुपा २७३) । रस पुन [रस] १ विद्वा का विषय-अपूर, विक मादि 'एमे रखें 'एमें गंपाई रसाई फासाई (ठा १०-पत्र ४७१ प्रासू १७४)। २ स्वकाष प्रकृति (से ४३२) । ३ साधिएव राज्य-प्रसिद्ध ग्रृंनार साथि तव रस (चत १४ ६२ वर्गींव १६ सिरि ६६)। ४ वस पानी (से २, २७३ वर्गीन १३)। र पुच (च्छ १४ ११)। ६ सम्बद्धि क्तिवस्पी (वतः १३ धरुः)। ७ सनुस्य प्रेम (पाम)। दमच साहिश्वय पदार्थ (पराह १ १ दुया) । १ पारव, पारा (नियु १३)। १ पुष्ट सम का बचम परिस्ताम करीरस्व बातु-विशेष (भडड)। ११ कर्म-विशेष (कस्म २ ११)। १२ वन्द्रशास-प्रक्रिय प्रस्तार

विरोप (पिय) । १६ मापूर्व धादि रसवासाः पदार्व (सम ११ नत २०)। सामन िनामन् ] कर्ने किरोप (सम ६७)। **स** वि "इवी रसका जानकार (गुपा २६१)। मेह पि [ भेदिम ] रसवाली बीजों का भेन-सेम करनेवाला (पटम ७१ १२)। मैंत वि[वस्] रस-प्रक (भग ठा ४ १--पत्र १११)। वर्ष भी विती रसोई (सूपारेर)। एक, ह्या कि विस्ती रसनाता (हे २ १४६: सुख ३ १)। ीवण प्रं\_ीपण] सदकी दुकान (पक **११**२) । रस पुन [रस] निप्यन्त निषोज् धार (बसनि 1 (8) रसप्पन[रसन] विद्वा भीम (परह १ १-पन २३। धावा)। रसणा भी [रसना] १ मेबना कांची (पाम गबकः से १ १०)। २ जिल्लाः, शीम (पाम)। ैछ वि [ यत् ] रसनावासा (सुपा ११६)। रसाइ न [वे] द्वाबी-पूत इल्डेका पूत्र भाग (₹ ₩ **२)** । रसा भी [रसा] प्रनिशी नक्ती (है १ १७७ रेष क्रमा)। रसाठ 🛊 [ दे रसायुप् ] भ्रमर, भौत (र ♥ २८ पत्त्रा)। रसाय वृं [वे] इत्यर देखो (दे ७ २)। रसायम न [रसायन] वैद्यक-प्रसिद्ध प्रीपव निरोव (विपार ७ प्रामु १६२ मवि)। रसास र् रिसास पाम-इस साम का गास (सम्मत्त १७३) : रक्षात्म भी [के रमात्म] गानिवा पैप विशेष (वे ७ २, पाछ) । रसालुर्द्र[दे रसालु] मन्दिका राज-योग्य पाक-विशेष—को पत्न की एक पस मञ्ज, साथा साहक वहीं बीस गिरवा तया दर्तपत्र चीनी या हुतु से बनतापाक (ठा ३ रि—पत्र ११८ सूज २ की पत्र 448) I रसि श्रेषो रस्सि (पाइ २६)।

रसिम नि [रसिक] १ रनम रसिना,

(पुपा १६) २१७: पत्रम ११ ४६)।

सीमीन (से १ १) । २ रस-द्वतः रसमासा

(पर १) र न का सामान (नडक पण्ट्र १)। सीनझा थां चिरामझी १पूर मैर कछ में मिरामता देश गढ़र पूर पुरुष्ठी में 'प्याँ (मा १२) निसार का मध्य १ १)।

र्शमद्राव (रीमन) १ एमपुक रमवाना

२ बहर-रिकेट (तित)। रसिंद ई [समन्द्र] शास्त्र, वाय (बी के यू १७८)। रमित रेयो रसिस = रीम्ड (वैचा २, वेड्री)। रसिर रि [रसिद्र] माताव करनेवाला

(एक)।
स्ताइ (पर) केटो रसन्धई (वरि)।
स्ताइ (पर) किटो रसन्धई (वरि)।
स्ति पुंजी [रिहम] र फिरण 'कर्यु तमा
विभागी मार्च कर स्तीमी' (पत्रम =
६४ पाम, मार्ग)। र स्ती रच्यु (मार्मु
११७)।

ख धड [पे] एका १ यह पह तीर (सिंद गर्या धिरि स्टा), पद्म पद्म (विरि श्रेट ११३)। पद्म बड़िय् ] लाक्स धीका (क्या किस)। पद्म (स्टिस) स्वस्त पुरो पूरो देश्य

क्रीति (त्या र र र त)। देवी प्रसः = रखाः प्रदः कृष्टिस्सः ] र पणानः निर्वतः 'त्रस् प्रदेशित पालसं (कृष वर्) नाहु से रहे देवुं (तृपा रक्षा का रेद्र)। र प्रस्ताः नोष्य (तर र ४)।

िनेसि प्रवात शेविनाव का माई (उत रेर १८)। "नेमिच्यन ["नेमीय] चत्तर ध्यस्त सूत्र का बाइसवो प्रध्यक्त (उत्त २१)। मगल प मिमकी भारतस्य के एक प्राचीन बहाई पत्रा कोश्चिम भीर समा भेटक बर संज्ञान (बन ७ १)। यार देखी भार (पान)। रेण पुरिष्यो एक नाप बाठ क्रारेणु का एक परिमाख (इक)। बीरपर बीरपुर न [\*बीरपुर] एक नवर (धका पिथे २३६)। रद्धं प्रसिसाी पेन वे (व ७६२)। रहीत पूंधी [स्थाङ्क] १ चक्राक वधी चक्रत (पाकागुर ३ २४७ डूमा)। भी गी (सूपा ४६८ः सर १ १**०३ प्**मा)। २ न चक्र पदिया (नाम)। रहरू ध्यो भरहरू (या ४६ वि १४२)। श्कल न दि दिक्ता स्विति निवास (वर्मीप २१) रक्तु ६) १ राइव्य प रिद्वनी १ स्वाद । २ पिछीत विरामः 'रतफर्च (भिव)। ख्माय ⊈ दिहे १ दरन यत का एक वर्त्र-भैका (मोहर् ) । २ पूरा, धासा परमेस्बर (वी १४)। रदेस पुरिमस् । धौलानः कल्क्यका

(४मा) । २ वेव । ३ हर्षे । ४ पूर्वापर का

प्रम के प्रसः = प्रदः 'प्रतत्त्वाले'

पविचार (सीच ७ वडड)।

(जबाः संबीच ४२ मृता ४१४)।

(क्त ११ ७२): ध्रुस्स न [द्वारत] १ सायव घोळ्यः। संत पि [बत्] नेतुः चोळ (तृम ११११)। राहाविक्र वि [वे] स्वापित रक्षप्रवासाहमा (हम्मीर १९): रहि वि रिविमी १ रव से मध्येवामा क्षेत्रा

रहि वि [र्यावेस] १ रण से सङ्गेनामा सेवा (उर ७२ व टो)। २ रव को हाँकरेनामा (हुन्न २८७) ४६ । बमिंदि १११)। रहिश्च वि [र्यावक] उपर केवो 'प्रदेशकी

महार्धिको (उप १९० दी पहा १ ४— पत्र ११ । वर्षीत २ ) । रहिल वि रिहिती परिषयक, मन्ति कृष्य (पत्रा व १९)।

प्रीहम कि [प्रीहण] एकापी सफेबा (कर १)।
रिक्रिम कि ] प्राह्मण क्लिक्ट (वर्गीय
२१)।
रहु १ [प्यु] १ वर्ष वंग्र का एक स्थान
स्थात प्रकार का (क्लार १)। १ दु व प्रुरंग में करणन सामित (३ ४ १६)। १६ प्र सीधायकमा काहे क्लांक्सीकी के प्र प्रिमुचने विद्वी (उनम १११ ४ १६)। ४६ कालिस्ट्र-महोति एक प्रदेश कम्मनाम्य

रोरङ्ग्य काम्ब-शन्य का वर्ता, कवि कालिराय

(थडड)। आह्र पुंिनाभी १ औरसम्बद्ध

(के १४ १६) पत्रम ११३ ४१)। २

करमण (वे १४ ६२) । तप्पय मे विसयी

बड़ी मर्चे (से २. १; १४ २६)। विश्वय

व विस्तर भीरामक्तर (नुपा २ ४)।

पंसक् दिं] राम करता सावाद करता। पर (सक्त ६६)। संयक[क्री] सोव करता विस्तव्या। सह (वस्)। राइ देखो रिच (हेर बन्द्र काप्र १८६ महा पड्)। २ अपरेना नी एक यस मीहियौ (ठा५ १—पत्र १२)। १ देशापेन्द्र इ. होम सोडपास की एक परस्ती (ठा४ १—पत्र २४)। सत्त न ["सक्त] एपि-भोजन एत में साना (सुपा मोक्षण न "मोजनी यही मर्च(सम ११ कस)। देखी राई ≔रावि। राइ की [राक्ति] वीक चौकी (पाम मौप)। २ रेका नशीर (कम्म १ १६ पुरा ११७)। १ सई, सब-संपंत एक प्रकार का मसाना (दे ६, ८a)। राइ वि रिशिन् राम-पूक, राजवाबा (वस ६)। की जी(मद्दा)। राइ वि [राजिम्] शोमनेवामा (निष् १६)। राइ देखो राय ≔ राजन् (दे २ १४० ३ दराद्य **प्र**मा)। राक्षभ वि [राजित] शोमित (वे १ १६ कुमा ६ ६६)। सङ्घ वि [सञ्जाह स्विन्तान्त्रन्या (प्रत २६ ४१: मीप पडि)। राइआ की [राजिका] यह का गाल, गोसाए। इंप कन्ने चन्नतो राष्ट्रपाद पत्ताई (वा १७१ म)। देशो राष्ट्रगा। पार्देश प्रिजेम्ब्री बढ़ा रामा (कुमा) । राईदिअ र् [राजिन्तिय] एत-दिन महोरान (मग माना कप्पः पर ७०३ सम २१)। राइस वि [राजभीय] राज्याननी (६२ १४५ हुमा)। पर्या थै [शजिञ्ज] यह यह बस्से (रुप ४१) । राइनिभ वि [राहिनक] १ चारिनवत्ता, बंगपी (पंचा १२,६)। २ पर्याय से क्येंड्र, साबुरा-प्राप्ति की धवस्त्रा से बड़ा (सम रेक्षः ३ वः कृष्य) । सङ्गिम रि [सम्बद्ध्य] सना के समान वैमावला, सीमन्त (मूर्य १ २ ३ ३)। राइण्य १५ [राजस्य] राजनंतीय समिय राइम र (दम १६१) केंगा चीर मय)। राइम्रेंक्श संह. शीरकर (मंद्यीन्यनक मंबिम बार्सन्छक्ता वैनामिकी बुखि विचयक)। साचि । ४ १११: १ ४१ प्राप्तः)।

राम देवो राय = राजन (हे ४ २६७ ति राइस नि [रागिन् ] राप-पुटः ( देवेन २७८)। ₹**६**≪) । सई की [सओ] देवों सह≔सनि (पाट सुपा ३४। मासु ६२ पत्र २३१)। राई को [राति] देखो राइ = राति (पाम क्षाया २--पत्र १६ ३ और। सुपा ४६६३ २ १६)। क्स)। दिवस म ["दियस] चत्रिवित्य श्चर्यारा (सुपा १२७)। 9 Y) I राईसई की [राजीमता] राजा व्यक्ति की पुत्री सीर समदान् मेमिनाव की पत्नी (पत्रि)। राईवन [राप्तीय] क्नत पप (पाप हे १ १८ )। र्शासर हूं [राजेश्वर] १ धनाओं के नासिक मक्काराज । २ यूनराज (मीपः सना कप्प) । राज्य 🛊 [राजपुत्र ] राजपुत सनिय (प्रकृष्)। राइछ द्र[राजकुछ] १ राजामी का यूव राज-समूह (कुमा है १ २६७ प्राप्त)। २ राजाका वैष्य (पर्)। ३ राज-पृह दरवार, ₹**₹**¥) I 'र्ख इंश्विस्स राज्यस्य दुरेख प्रकामी कीर्यार बल्ब बंभराहि एवं विश्वेदिरचंटि (मोह ११) । देखो राओज । राष्ट्रिय वि [राजकुसिक] राजकुत-सम्बन्धी (मुक्ट २ ३१)। राउस देवी राइच (प्राष्ट्र ११)। रापसि दूँ[रामपि] १ थेव समा। २ ऋषि-तुस्य धावा सैक्डारमा मुति (धाव १शः विक ६८ः मीह १) । रामो म [सबी] स्व में (लापा १ १— पत्र ६१ सुपा ४१०) कप्प)। रामोछ देवो राइक 'तो किंदि पर्ण समर्थेहि विस्तिय किरिवाणि इतेर्षि । द्धिप यदं राघोते एन

मपुत्तति मांजुङ्गा ॥

राग रेको राय - चग (रुपः गुगा १४१) ।

रागि देवो राइ=रागिन् (पडम ११७ ४१)।

श्चम देशो सहस । परिणी हो ["गृहिकी]

शब ) [पूर्व वै] देवो शब=शब्त (ह

ग्रीता बानशी (परूप ४६ १७)।

(धर्मीर १४)।

रामस वि [राजस] रतो-पुरु प्रवान 'राज समितस्य पुरस्य' (कुत्र ४२८)। राकि की [राटि] दूम विस्नाहट (मुक् यहि भी कि सीटी संप्राम सहाई (के राजा भी [राजा] १ विमुता (वर्गसे १ १वः कप्यु)। २ मध्यवा (वज्जा १८)। १ जेगास काएक प्रान्ता। ४ वैदास देश की एक नगरै (कप्पू)। इत्त्र वि[ वस् ] सन्य धारमाः 'नेत्रणचिह्यो बन्नो चढाइताल संपद्ध (बन्दा १व)। सचि पूं विश्वी काच-मस्ति (सत्त २ ४२)। सन पन [वि+सम्] निरोप समनाः चस्र (१) (शाला १४१)। राज 🕻 [राजन] एका राजा (चंद्र किरि रागय र्र [राजक] १ एखा राजा (ती ११ सिरि १२३३ १२१)। २ सीटा राजा (बिरि ६ व ६ १ ४ )। यणिशा रेची [यदिका, की] यती यत राजी जेपली (हुमाई) धावेद १६ टी। सिरि १२४: १६७)। राम चक [रमयु] रमछ कराना। 🕏 रामेयब्द (बत ८१)। राम पू [राम] १ भी धमक्त्र धना बहारव का बढ़ापुत (सा ११ उत्प पू १७१। कुमा)। २ वरमुखम (दुमा १ ६१)। ३ धाविव परिवाहक-विशेष (धीप) । ४ वसवेष वतन्त्र नापुरेर का बड़ा माई (पाप) । ५ कि रसने बाबा (सर दू ३७१) । इत्यह दू ["कुरग] रामा मेरिएक का एक पुत्र (राज)। कण्हा की ['इएगा] एवा बेलिए नी एक परनी (मंत ११)। सारि पू ["रंगरि] पर्वत-निशेष (पत्रम ४ १६) । नास प्र [शुम] एक धर्मात (तूस १ ३ ४ २)। देव इं विवा पीरायक्त्र (पत्रत ४१, १६) । पुत्त ई ['पुत्र] एक वैन मूनि (बर र) । बरो की चिरा मनाना नवर्ष (ती ११)। रिक्स नावा [रासेता]

**१राओम्प्र को एक पटरा**मी (ठा क—पक 428 KE) 1 समिणिकाल न [समिपासक] रनलीयता क्रील्प्ये (सिक्र २६) । रामा की [रामा] १ की नदिला नाये (वंदु १ हुमा पाम बना १ ६ उप १६७ दी)। २ नवर्ने निमदेव की माठा (बम १६१) । व देशकोन्द्र की एक प्रत्रामी (ठा द—पत्र ४२६: इक) । ४ ध्रम-विधेप (गिंग) । द्यमायण न [रामायण] १ वस्मीवि-इट एक तरहत सल्यदम्य (पठम २ ११६, महा)।२ शतकत्र तयास्त्रज्ञान नक्ष (प्राप १ ६, १६)। रामिश्र वि [रमित] रमण रखन हुमा (मा १६। बच्च व १६)। रामेसर पू [रामेक्र] रक्षिण भाष्य ना एक दिन्द्र-दीवें (सम्पत्त ८४) । राय सक [ राज्] भगनना, शोमना । धनर (र ४ रें ) । कह रायाँ समाण (क्ष्प)। राय देशो स = रै । समद (प्राप्त १६) । राय पु [राग] १ मेम मौति (मापु १०)। २ वत्पर, इंबर 'च देमसस्क्रा' (देनेतः २७)।६ रैक्स, रंजन।४ वर्णन।६ सनुसदः ६ सता नस्पति । ७ वन्द्रः चाँदः। क शाल वर्श । १ काल रॅनवल्बी वल्लू। १ वक्त प्राविस्वर (हे १ ६)। राय र् [राजन] १ सना वर-पति, परेत (सामा प्रमासा २७) नूपार ३)। र क्य क्यूमा (भा २७ इम्मीर १ वर्गीत **३) । १ एर नहायह (तुल २)** । ४ रख । इ.स.चित्राइ स्याध्य हूमि नविवास थेह स्तव (है वे ४२ वे )। शब्दा व्यक्तिमा (वे १ ६) । १ द्वरस्थित (दिय)। इम दि [कीय] सम्बद्धकरी (बार १६) इस १ [पुत्र] राज्यत सत्र मुमार (बुर १: १६६) । इस देखी शास्त्र (हे १ २६० नुमा वद्: प्राप्त प्रति १ ४)। रीअ देवी ईस (शब—ा क्चुर v)। हक देवी बद्ध (महा)।

ut.

किर, इस वि [ैनीय] राज-संबन्धी (है ) २.१४०- कृमा वड्)। गिद्दम [ैयूद्र] यगन देश की प्राचीन राजवाती जो बाजकत 'राजभीर' साम से प्रतिका है (ठा १ ---पन ४७७: चनाः धेत)। "गिहि औ ["गृही] बही सर्व (ती १) । चीपव पू विमयकी कुत-विशेष एतम कम्पक-कृत (मा १२)। धम्म र् ["धर्म] एका ना नर्पम्य (गठ---दतर ४१)। घाषी और [धानी] सन नगर, राजा का मुक्स ननर, बद्दो राजा यहताहो (नाट-- वैत १३२) । पत्ती वर्ष ["पत्नी] रागी (मुर १३ ४८ सुपा १७४)। पसेणीय कि "प्रश्नीय" एक जैन भागन दम्ब (धम) । पहुर् ["पव] धव-मार्ग (बहुट बार---वैत १३) । पिंड पू ["पिण्ड] स्त्राके वर की मिडा—साहार (सम ६६)। दुक्त देखी बक्त (नउड)। पुर व [पुर] नवर-विशेष (पदम १)। पुरिस 4 [पुरुष] एका का भारती चन-वर्मवाचे (परम १ Y)। सग्ग दू िमारो राजपन, यहक (धीप महा)। सास 🛊 ["माप] बान्य विशेष वरवटी (या १० संदोष ४३)। सम र् स्थान राबाधीका राजा, राजेलर (तुरा १ ७)। रिसि देवो रायसि (शामा १ ४—पत्र १११: बन ७२: टी बुमा: बल) । रुक्त र् देशी दुव-विरोप (धीप)। सम्बद्धी स्थ िद्धानी राजनीत्रव (प्राप्ति १३१: नदा) । स्रक्षिय पू ("स्रक्षित) धाटने नतरेत के पूर्व सन्य का नाम (सम १८३)। बहुम न [बारोंक] राज-बंबेची बार्श-समूद्र (हे दे, श । बही की [बद्दी ] नवानियेप रिविशम केलो सङ्ग्रिम = स्क्रिक (इन (नएफ १--नन ६६) । बाहिआ बाही क्षे [ पाटिका "पार्टा] चतुरंत कैय-अव- । स्वयी क्षे [सजाहरी] विती, विरुधे का करण राजा की चनुष्टिय सेना के डाव बनाध (बुनाः बुन ११६: १९ पुरा १११) । सद्दूर्म रू [शार्स] प्रमती राजा बीह राजा (बन १४२)। सिद्धि हूं ि + द्विम् ] नवर-६क (ववि) । "सिरी की [भी] धननामी (ने ११३)। सुध र् [<sup>\*</sup>हत] सम्बन्धर (शच्या वर ७२० हो)। र् सुअ पू दिएकी बसन दौता (कर करन

दो)। क्षुत्र दुं ["शूय] सा-विशेषः "रिव्ये-हमात्रपेहे रामपुर धावमेहरयुमेहे' (पडम ११ ४२)। सेज पू [सेन] क्य-विशेष (पिंग)। सेहर १ शिलरी १ महाकेन क्षित्र । २ एक स्टबा(सुपा १२१)। १ एक कवि कर्पुरमंत्ररी का कर्ता (बच्च) । इसि र्दुल्के [दिंख] १ कत्तम (त क्यी। २ व ह शका (तुर १२ ३४) वा ६२४) यका भूपा १९६८ रेक्ट म्प्रीन)। की "सी (युपा १३४ नाट—राला २३) । इर न िगृही सवा कामहर्षा(पञ्चर र ≖र, है र, १४४४) । हाणी देशो धार्मीः (धन व पडम २ हिरान । हिराम ﴿ [अधिराज] राजामी का राजा मध्यक्ती राजा (काल युपार ४) । । द्वित प्रीमिपी नहीं सर्व (सुना १ x)। राय रेनी राव = धन (से १, ७२) । राज पू [वे] चटक, भीरैया पक्षी (रे ७ ४) । स्व ४ (स्व रिप्त रिप्त रिप्त (सम्ब)। स्य भेती सब = सब् रामंद्रम ) कुन [दे] १ वेटन या वेंट का रामंद्र प्रेम (पास वे ७ १४)। २ प्र शरम (दे ७ १४)। यर्थस 🛊 [सर्वास] चन-कमा, बद का न्यावि (धावा) । रार्थीस वि[राजासिन्] राजवरमायस्य खंद का रीमी (भाषा)। रायगद्द स्मी वि] क्लीना ऑफ़ (दे ७ ६) र रायगास र् [ राजागैस ] क्वेर्रिक इ.स. विरोप (का २ व-- पत्र ७०) । मोचमा १२३)। पेड़ (बजम १३ ७१)। संबच्या देखी सञ्चल (ठर १ १---पन ११४) ET 121 2) : यवनीइ स्त्री [राजनीति] राजा श्री शासन करने की चीत (राव ११७)। रायमस्या स्थी [राजीमतिका] रेजी राई-मई (दुप १) । रावस देवो राजस (त ३ द ३ १३)।

श्याण-रिक्स	पाइअस <b>र्</b> म <b>इ</b> ण्जवो	<b>परेर</b>
प्रमाण — रिकसं प्रमाण के सो राय = प्रवन्, (हूँ है रहा) पह ) पह ) पह ) पह   पून [पाठ के नाम्य-विरोप पाठम   पून प्रवाद के न्यु (पूम २ २ पाठम   ११ ठा ०—पन ४ १३ विव १९२१ कवा १४)। पाठम   ११ ठा ०—पन ४ १३ विव १९२१ कवा १४)। पाठम   ११ ठा ०—पन ४ १३ विव १९२१ कवा १४)। पाठम   ११ जा कन्म पाठम (विव पाठम ठा वि   पार्म कराम। प्रवि प्रवेदित (विव १४८ दी)। पाठ के पाठम   पुरारणा पाठ्रान कराम। पाठम द्वारणा १ एक स्वन्नमनीवर्म क्ष्म (पाठम हिम्म विरोध (विव १ पाठम १ पाठम १ एक स्वन्नमनीवर्म (व्यय)   पाठम द्वारणा (व्यव)   र प्रवाम विरोध (व्यव) १ पाठम व्यवमा व्यवमा व्यवमा व्यवमा विराम विव पाठम १ पाठम १ एक स्वन्नम व्यवमा व्यवमा विराम विव पाठम व्यवमा विराम विव पाठम व्यवमा व्यवमा विराम विव पाठम विराम व्यवमा विराम विव पाठम वर्षम वर्षम वर्षम वर्षम वर्षम वर्षम वर्षम पाठम वर्षम वर	सह पुँ [याघ] र वेशाल मासा। र वसल क्ष्यु (के र रहे)। व पढ़ कैन वालसी क्ष्यु (के र रहे)। व पढ़ कैन वालसी (क्य रन्दर, गुळ १ ररे)। सह पढ़ कैन वालसी (क्य रन्दर, गुळ १ ररे)। सहित क्षियः। र नि निरुक्त । वेश्वीमत (र १ रहे)। र क्षिय, गुजर (गाम)। र वित्त । र रहे के रहे के रिक्त हो है (क्य र १) र क्षिय, गुजर (गाम)। र वित्त र १) र क्षीयमक (र १ ररे। र रहे। प्रति वित्त के एक प्रवान के री रहे ररे। र रहे। प्रति वित्त के एक प्रवान के री रहे के राव के प्रवान के राव के प्रवान के रहे र रहे। र रहे। प्रति वित्त के रहे र रहे। र रहे वित्त के रहे के राव के रा	रिश्व के का दि है रेपी कुमा। यम रेपी।  रिश्व कि कि कि ही से स्वत सीवा (पुण रेपी)। उस मिरोप प्राण में पुणा के प्रो । उस में रिशेष प्राणे मानाजनित का प्रकार कि विशेष रिशे रेपी के प्रशा के प्राण में सिंध रिशे रेपी के प्रशा के प्रशा में प्रशा के प्र
४ का सीच सुर व का बुना)। २ क्योतियम-प्रसिद्ध मेप साथि वाद्य राणि (विवार १६)। ३ विणित-विरोध (टा४ ३)।	रियह (है ४ रेनवे दुमा)। रिज न [क्टन] १ गतन 'पूरमी स्ति बोह मार्गे' (मा)। २ शस (मग ८ ७)। रिज नि [क्] मृत, नारा हुसा (बहू)।	)। रिकटा सक [रिक्ट्र] चत्रता। बहु 'निरिक्त सम्तिकालयो संत्रीको रिकटीनी निरस्तरका' (बूट ६०)।

•13 रिक्श कि दिंदि इस दूता। २ वृंबस वरिखाम दूबता (रे • ६)। रिकल प्रे चिक्की १ मानु स्वापक प्राप्ति-विदेय (हेर १३)। २ न नजन (पास पुर १ २६ = ११३) । पद्म वं पिकी मानार (पूर ११ १०१) । राज प् "राज" गलर-वंद का एक राजा (प्रका 4 33Y)1 रिक्कमान विदेशिक्षणसम्बद्धः प्रक्रिया । २ क्या (रे ७ रे४)। रिक्सा देवो रेहा = रेवा (योग १७६)। रिस ३ 🖛 [रिक्स] र रॅक्स बीरे-बीरे रिमा मीर बगीन है रनद बारो हुए करना। र प्रमेश करता। रिना रिग्नह (हे ४ २१६, R) ı रिमा नुं [व] प्रवेश (दे च १)। रिचकीन देवी रिज⊐ऋप् (पि ३३ ११४) । और <sup>क्</sup>वा (नक्रस—कता ६४) । रिण्डा नि [दे] दूर, दूस (१ ७ ६)। रिरम् देवो रिक्का=कम्म (हे१ १४; २ १६३ पाय)। तिहम पु [पेकिय] बाम्बदान, राम ना एक हैनापति (छ ४ ( W VX) I रिन्द्रभक्ष पं [दे] सन् रोव (६ ० ७)। रिष्ठ देवो रिक=ऋष् (का) । रिमु देवो रिष्ठ = श्वयु (मिछे ४०४)। रिक देशो रिम= री । रिकार (याचा) । स्मित्रु देवो रिड= मानु(दे र १४१: डॉन्स रेकः चुना) । रिवमः क्षत्र [ब्ह्यू ] १ वदना । २ रीक्टनः, पुर्वे होता । रिकार (श्रीत) । व्हि इं दि बारिय] । व्योष्ट दुविव (स्त्ः ति १४२)। २ केट-मिर्टेच (वर्: के र १)। र काम कीमा (१७ ६) काम्य १ १—पन ६६। वर्षः श्राम)। निवि व ["नेमि] बाह्य दिवदेव (वि १४२)। रिक्क १ [रिक्क] १ केन-विशेष दिश्तानक निमल ना निपायी केन (कान्य १ य-पत्र १५१ १ देशस्य सीर प्रम-स्वत नामक इन्हों के बीमध्यक (स.४ I—वर १६२) । १ एक क्य बॉट, निक्ती

भौक्रप्रा ने मारा **था (पराह्र १ ४**—पण ७२) । ४ प्रीय विशेष (पटम ७ १७) । १ न एल-विशेष विश्व ६११ और सामा १ १ टी)। ६ एक देव-विमान (सम ११)। ७ ईन फ्टा-विधेय रीख (उत्त ६४) भागुक ३४ ४)। प्रशि को विदरी कम्बादती-दिवस की राजवानी (छ २ ३--पद ३ ३६७) । सणि पुं विधी स्ताम फा मिरेप (चिरि १११ )। रिद्वाकी रिक्षा १ महाकव्य विकासी यबनानी (ठा १. १--५न द०- इन) । २ पांचवी नरक-भूषि (ठा ४---पत्र ३८८)। १ मनिय सक (स्व) । रिद्वास न [रिप्टाम] १ एक देव-दिमान (तप १४) । २ दोकास्तिक क्यों का एक विनान (पव २६७)। रिद्रि को [रिक्षि] । बस्द, क्लार (है । ६)। २ म्युम। ६ वू. एक्स, विवर (स्मित्र)। रिड एक[ मण्डय् ] विमुनित करना । रिडव् (**44**): रिज न [च्छ्य] १ करवायाक्क विकार निया हुण वर (का ११६, कुमा; बानू ७७)। २वल पान्नी। ३ दुर्वं,किया। ४ दुर्गे दूरिः । र पासरमङ कार्य करण । ६ कर्म (है १ (४१) बाब)। वेबो क्राज = ब्यूरा । रिजिम वि [आक्रित] करकशर, स्वामर्श (58 YES) 1 रिते म [काते] सिवाब, विना (पिंड ३७ )। रिच वि [रिच्छ] र काली कुच (डे ७ ११८ का ४६ : वर्गीन ६ मीनना १६६)। र न विरोक्त सन्धन (क्या २८, ३३)। रिचृत्रिक मि [के] रुप्तिय कम्बाया ह्या ( T = 4); हिलान [हिक्क] कन, इस्त्र (इस. १९; सक्त त्रा कुच ४ ६१ व्यूष्ट)। रिकारि [काज] जानि-कंपन (शासा १ ध काह क्षेत्र)। दिद्र वि दि] पढ, प्लवा (वे ७ व)। रिक्रि वृक्षा [के] बन्नहः राज्य (के ७ ६) । रिद्धि के [क्यांदि] ( बंबति बस्ति केसन् (पाक विना २ १ द्वम, बुर २ ११

भागु १२ ६२)।२ वृति । ६ देव-विकेट अभोषमिनियेष हिर १९४८ २ ४१। पंचा =)। १ छन्द-विकेप (सिय)। में, ह वि सित् केत्र अधि-सम्पन् (क्रोप ६ दर परम १, १६। सूर २ ६८ हर २२६)। संबर्ध को मिल्ली ल वरिष्य-कम्या (सर ७२८ टी) । रिप क्यो रिय (क्य) । रिप्प न दि ] इस बीठ (रे ७ १)। रिभियन रिभित्ती १ एक प्रसार न कल (हा ४ ४--पत्र २८१)। १ स्तर स योलन । ३ वि. स्वर कोबना दे दुख (एन णामा १ १-पन १९)। रिमिण कि दि रोने की शास्त्रका (१% ७ वड्)≀ रिरंमा 🛍 [रिरंसा] खब 📽 🥦 मैदुरेक्ट (प्रस्त ४६)। रिरिक्ष वि वि | तीन (वे ७ ७)। रिष्ठ सक [ब्] गोस्ता । वड़. रिक्रा (की) रियु केवी रिंड=रिपु (प्रम ११ भी ४४ ३ । स १३० ज्य इ.सर)। रिसम् रे प्रचित्र विकास रिसत् रे के पन श्रेश)। र परिणा मध्यस्था सूर्य (स्य ११) **इ**म्प ( १९) । १ तहत परिचाय के इस ह मकसकार मेहल-सहः निक्रहो द*िर्द* (बीनस ४१)। देवो बसम (बीहरी) १४१: सम १४३: 🖛 २ १७ ह ₹4 ) 1 "रिसइ र् ट्र ["ऋपम] केंह, करन (<sup>हर्ड)</sup>" रिसि र् [फावि] मुक्त, कर 🕶 🥙 क्रमाः सुना ३१: मनि १ श व नी थे)। भाय द [भाउ] क्रिस्स 444) ( पिह सक [म + विश्व] बरेस कार्य 🕊 विद्वा(यह)। th ten [th] and mail that | then, then, then | 100 f १ २ मा स्त २४ ४)। 🌠 (भाषा) । वह रीयंत रीवा<sup>ल कर</sup> रीव की [रीति] बसाद वंद स्तर्क र् विवेद्यति निर्व नवकारीते (का व FOY) , ----

रीह सक [ मण्डय् ] सम्बद्ध करना । रीवह (\$ Y ? ? % ) ! रीइज न [मण्डन] धर्मकच्छा (कुमा) । रीह क्रीन दि । धनगरान धनावर (वे ७ a)। की. है। (पाम वस्म ११ टी<sub>)</sub>- पैवा २ द: बाह्र १)। रीण वि[रीण] र करित स्तुतः २ पीक्टि (मच २)। धैर यक रिस् विशेषना नमकना धैपना। धेवा(हे ४१)। धिरिव वि [सनिन] सोमित (कुमा)। र्चरी भी चिरी पानुनिरोध पीतन (कुप ११ः मुपा १४२) । रुको [ एक्] येग भीमारीः भाष (? क) उपसम्बो' (तंदू ४६)। स्त्र सक रिद्धी रोना। स्थव (पर्) संबि १६ प्राक्त ६८ मञ्जा)। मनि रोज्ल (है ३ १७१)। भक्र रुख, रुखंत, स्पमाण (ना 284 48E X मुर २, ६६, ११२ ४ १२६)। चंक्र रोक्तुण (कुमा प्राष्ट १४)। हेड रोचुं (प्रकृ १४)। इ. रोचस्य (दे ४ ९१२। से ११ १२)। प्रयोग स्मानेद (महा), समावंति (पुण्ठ ४४७) । रुज न [स्त] रुक्त ग्रासाम (छे १ २० यामा १ ११ पर ७३ टी)। रम रेबी रूडा = बम (इक)। रुज़ रेको हरज़ = (वे) (धीप) १ रुर्मिता भी [स्त्रुती] बझी-बिरोप (धंबीय X#)1 रुर्जस देवो स्थास (इक) । रुअग 💃 [रुपक] १ कारित प्रमा (पर्ह १ ४--पण ७०: भीप) । २ पर्वत-निरोदा 'नगुजमो होद पब्नको ध्यमे' (बीद)। ६ द्वीप-विरोध (दीव)। ४ एक समुद्र (सुक ११)। १ एक निमानानास—दैन-निमान (क्षेत्र १३२)। ६ व इन्हों का एक धामान्य विमान (देवेन्द्र २६६)। ७ राज विरोप (क्टा १६ ७६ तुब १६ ७६)। × स्थक परेत का पोचर्डा कुट (दीव)। १ नियम पर्वेत का बाठकां कुट (इक) । प्यास न [भग] महादिगरीत पर्नत का एक पूट

(कार १)। वर्षु [बर] १ कीय विशेष (सुव्य १६)। २ पर्वत-विशेष (पर्ह २ ४—-पत्र १३)। ३ समुद्र-विशेष । ४ ध्यक्षर समुद्र का एक समिहाता देव (भीव १--पण १९७)। बरसद् पुं ["बरसद्र] वयक्ष्यर होए का अधिष्ठायक एक देव (श्रीव १--पत्र १६६)। वरमहासद् र्यु ['बर महासद्गी नहीं धर्च (नीव १)। वरसहावर १ ["बरमहायर] रजक्तर स्पृहका एक भविष्ठाता देव (श्रीव १)। वरावमास 🖠 [<sup>\*</sup>वरायभास: देशीप विशेष । २ समूह विश्वेष (शीव १)। वराषभासमञ्जू िवरावभासमङ्गी ध्वकवरावमास क्रीप का एक प्रविद्वादा देव (बीच ३)। वराधमास-महाभद्दं विरारमासमहामद्री वही धर्षे (बीव १)। यरावभासमहावर 🖠 **ैवराषभासमहावर**े रवक्षरावमास नामक समुद्र का एक मिन्हाता देव (बीव वरावभासवर दे [वरावभासवर] वही धर्म (जीन १---पर्न १९७) । सरोव पुं विरोद प्रमुत्र-विरोप (सून ११)। बरोभास रेवा वरायमास (गुन १६)। [बद्ध को [बनी] एक इकासी (खाया र—पत्र २४२) । ोद् पु [ैोव] समुद्र-विरोध (बीव १--पत्र १६६)। कुअसिंद पू (कुषकेन्द्र) पर्वत-विशेष (सम ₹क्)। रुधगुत्तम न [स्पन्नेत्तम] कूट-विरोध (इक)। रुभण न [रोब्न] स्वन चेना (संबोद ४)। स्क्रम्य देशी कुत्रग (सम १२)। रुअरुक्तमा की 🔁 क्लरुअ (रे 🕶 🗷) । इआ भी [इज़] येप बीमाये (क्व वर्गेंड रुआविश्र वि [रोदित] स्नावा हुमा (बा gag) : स्द्रकी [स्त्रिय] १ कान्ति प्रसा तेज (सूर ७ ४० दूमा)। २ बनुसन्, मेन (को ६१)। ६ माराजि (पानु १६१) । ४ स्प्रहा, श्राम-वाप । १ रोमा। ६ दुद्धा, वाने नी रण्या । ७ गोरोजना ( वर् ) ।

७१३ रुइस वि (रुचित) १ ममीछ पर्धव (सूर ७ २४६ मक्का)। २ पून विमानावास-विकेष एक देव-विमान (देवेन्द्र १६२)। क्का देही रूज्य = चील (स.१२)। रुद्वर वि [स्विर] १ सुवर, मनारम (पाम) । २ कीम कान्ति-प्रक (तेषु२)। क्यून एक विमानेन्द्रक, देशविमात-विरोध (देवेन्द्र **232**) 1 स्वर वि चितित् चेनेनाता। की श्री वि **१६६ मा २१६ छ)**। करण वि किचिर, छी र शोमन सुनर (भीप ग्रामा १ १ टी तेनू २)। २ ग्रीस नमक्ता हुमा (परह १ ४--पन ७८) पूम २१ १)। १ धुन, एक देव-विमान (सम **4=)** 1 रुश्क न [स्वीपर, रुजिमत्] एक देव विमान (सम १५)। चौत न विभान्ती एक वेद-विमान (सब १६)। "कृश्व म [ कृट] एक देव-विमान (सम १४)। बम्ह्य न िकास] केवनिमाल-विरोध (सम ११)। प्यम न ["प्रभ] एक देवविमान (सम ११)। क्षेस न क्षिरय एक देश्वमान (धन १६) । सण्य न [ सर्ण] देवविमान पिरोप (सम १६)। सिंग न (\*शहा) एक देवनिमान (सम १६)। सिट्ट न िंस्छ] एक केवियान (सम १४)। । वस्त न ["वर्ष] एक रेवविमान (सम १५) : रुक्तुचरपडिसम न [स्थियेचराक्यं हा एक देवविमान (सम ११)। र्दम एक [स्त्रम् ] वर्ष से उसके बीज को मसम्बद्धाः करने भी क्रिया करना । बहुः कंपीन (विष्ठ १७४)। र्रवण न [रुद्धन] वर्ष छे क्याय की शनय करने की किया (पित्र ५००)। र्श्वणी भी दि] मस्त्री दतने का प्रकर-कन्त्र

(₹ ♥ ¤) ı

१५३ पर्)।

1)1

र्श्वमक [स्] धानात करना। चंत्रद्र (ह ४

रुवन ई विरुद्ध हो दुव पेड़ पाछ। दुरा

महीब्दा मण्या रोपया चंत्रगाई म' (इयति

<b>4</b> 12	पा-असदग्रहण्यचे	६िक्ल- धेइ
रिवस्य नि [दे] १ वृत्र दुवा । २ वृं वयः	भीड्रप्ण ने मार्च वा (पश्कृष्ट ४—पत्र	अस्त १२ ६२)। २ वृद्धि । ३ देव-विरोध ।
परितास बुढता (है ७ ६)।	भरे)। ४ प्रति-विशेष (प्रम ७ १७)।	४ मोपकि विशेष (है: ११का २ ४१)
रिवार पूँ शिक्षा र मानु स्वापत माणि	थ न राम-विरोग (केन्स ६१ <b>४, धी</b> प	पंचा को । दे स्टब्स-विशेष (पिय) । श्री, ह
व्हिप (देश है)। रेन नक्ष (रम्म	धामा १ १ दी) । ६ एक देव-विमान (सम	विस्तित् समूह अदि-सम्पन्त (सीप
न्दे ३६ व ११६)। यह प्रविधा	११)। ७ ईन. धन-विशेष, छैठा (उत्त १४	दसर तक्ता इ' इंदी सेंद्र सं देश सेंगा च्या सर्वा गरी वर्षेत्र अध्ययन्त्रम्थ (सार
माराण (गुर ११ १७१) । सम ब्रु	Y TO IY Y) 1 9th 4th ["9th]	१२३)। संसी की सिन्हिंगे एक
[राज] शतरनंत्र का एक राजा (पदम	न च्छानती-निजम की समजानी (धार ३ –	वरिष्क-कृत्या (उर ७२८ टी) ।
क रहर)।	दव ∈ । इक)। सणि दू[मिणि] स्तम	रिप देवी रिव (क्ल)।
रिकरणानं विदेशिकासम्बद्धाः स्वितनः। २	ध्य-विरोष (सिरि ११६ )।	रिष्य म [दे] प्रत पीठ (है । ४)।
क्यन (दे थ १४) ।	रिष्टा भी [रिष्टा] र महारच्या विकय की	रिभियन [रिभितः] १ एक प्रशार का नाटक
रिचना रेवी रेहा वरेवा (बीच १७६)।	राज्यानी (दा व ३पत्र ८ ४क)। २	(ठा ४ ४—वत्र २४१)। २ स्वरं रा
रिग । पन [रिक्षम ] र रेन्ता बीरे-बीरे	वांत्रवीं वरक-सूमि (डा ७—यत्र ३०८)।	मोलन । १ वि स्वर बोतना से पूर्ण (रावः
रिगा परि यमीन से रश्य बन्ते हुए बनना।	१ मिरिए दाक (धन)।	खामा १ १—पत्र १३)।
२ प्रवेश करना। रिगा, रिगाइ (हे ४ १३१	रिहास न [रिशास] १ एक देर-विमान	रिमिण वि [दे] रोने वी माकाशता (दे ७
Ř)ı	(सम १४)। र सोमान्तिक देशों का एक	भ मङ)।
रिगग ई [इ] प्रोत्त (हे ७ १)।	विमात (पत्र २६७)।	रिरंमा चौ [रिरंसा] रमण ना चार-
रिचरीन देगी रिज≠श्रम् (रिद्धाः	रिट्डि व्य [रिप्टि] ? सक्य, छनवार (दे छ	मैपुनंच्छा (धरम्ड ०१)।
३१)। क्षेत्रेचा(गाट—सना३०)।	६)। र प्रयुक्ता के पू राज्य, विश्वर	रिस्मिति [वे] सीत (रे ० ७)।
रिष्य मि [वे] वृद्ध बुद्ध (वे ७ ६)।	(वंधि १) ।	रिक्ष पन [के] शाला । वह रिक्केन (वर्ष)।
रिण्छ देगो रिकार=ऋग (हे१ १४ ३	रिष्ठ सक[ मण्डम् ] विश्वतित करता । रिष्ठद	रिनु देवी रिड=स्ति (पत्रम १२ ४१।
र १६ वर्षा। शहन वृ [प्रिपा]	( पर्)।	अर में उस देशा वर इ देश)।
मानवरान, राम का एक सेनापित (से ४	रिप न [ऋप्य] १ दरनाधादने प्रवार	रिसम 🕍 [भाषम] १ स्वर-स्टिब (झ
t xx):	निया हुमा यन (या ११६; बुना; प्रानू ७७)।	रिसाइ कि-अब क्षेत्र)। ए अहोता की
रिन्द्रभद्द र्थ [रे] बानू, रोद (रे ० ७)।	ः २ वन वानी । ३ दुवै, किला । ४ दुवै दूषि ।	मञास्त्रती पुरूषी (तम ४१) तुम्ब १
रिजुरैयो रिउ≕धर् (मर)।	र पाररवक कार्य करता ६ कर्म (हि.१	११)। रे वेहत मस्तिन्तम के करा ना
रितु देगो रिड = इट्यु (स्मि ४८४)।	१४१ः प्राप्त)। देखो अस्म = वस्सु।	वनगरार वेष्ट्व-पट्टा -रिस्ट्री व होई वट्टी
रिय रेवो रिश्र = छ । रिश्रह (बाबा) ।	रिशिम रि [अ:णित] करवचर, पनमर्छ	(भीवन ४६)। देशो उसम (भीतः है दे देशोः सम देशवः वस्म दे देव वृता
	(ÇX YEÇ)   For to Correct Order And Correct	64 )1 (45) 4m 4 45 20
रिग्तुरेगो रिक्≖मञ्जु (हे १ १४१ वर्षा	रिस य [बान] विभाव विभा (निष्ट ६७ )।	ैरिमइ १ विषयभी मेर बत्तन (इमा)।
रिक द्वरा)। Grant Cara Tarana	रिश्व वि[रिष्ठ] १ वाली रूप्य (वे ७ ११/ वा ४६ : बमेरिक वीक्स १६६)।	
रिम्म पर [त्राप्] १ वरना । २ सैनना गुरी रोना । रिज्या (वर्षर) ।	२ न विरेत मुमार (रह रद ११)।	रिसि वृं [क्युपि] बुनि, बंग बाधू (सीतः कृमा बुना ६१। स्रीप ११३ जा ७६०
रिट र [र मार्ग्य (स्टर) : रिट र [र मार्ग्य] : मारिट, दुरित (रहः	रिपृक्तित्र वि कि शिवत काराया हथा	मे)। भाव र [भान] दुनिहरक (स्व
रि देवर)। व देख्याच्या (बर्दः के द	(g.m. ) !	A(f) !
क्षेत्र क्षेत्र कीमा (देश के द्वारा ह	रिध्य व [रिक्य] बन, इस्य (ता १६)	रिंद एक [म + किए ] बरेश करना कैटना।
१ पर ६३ बर् । या ) मिसि ह	रागन रामुच∀ राचन)।	प्रिः (वर् )।
['निमि] कर्तवरे स्मिरेव (ति १४२)।	रिद्व रि [चंद्र] स्टेंड राम (प्रापा र	री १ मन्द्र [री] बान्य बनना। रीहरू
रिंद्र 1 [रिष्ट] र देव-विदेश रिष्ट शायक	रायसः येप)।	राम । राग्छ रादेने राज्या (माना) नुम र
नियम का निर्मा देश (गास १	रिद्वीर [द] पर पत्ता (१ ७ ६)।	र र श कर रूप भ)। मूचा, रीरणा
amer fit i a fait the un-	धिंद र्वको [दे] स्तर शांत (१ क ६) ।	(याचा) । वह रीयंत रीयमान (याचा) ।
क्रमन समय देशों के मोकारण (st V	रिवि को [कांड] र बंधीन, मनुद्रि केवर	रीप्र की [धिति] बराद, इंग नवति । ते कर्त विदेशीत विश्व नामरविदेश (प्रमीह १२)
1-44 (C.) 3 64 64 8,1 (144)	(Tie feit b.t gen ge b. tea-	4.1) 1

(\$Y 22%):

रीड एक [ मण्डम् ] धर्महरु करना । रीडइ

रीडण न [सण्डन] धर्मकृत्सः (कुमा)। रीड कीन [दे] मनगण्य भनावर (दे ७ म)। इसै. सा (पाम वस्म ११ टी; पैवा २ **ः; इह १**)। रीज वि [रीय] १ काँख्य स्मुखः। २ पीडिय (मत २)। रीर सक [राज्] रोमना चमकना सीपना। Ou ( \* \* ) : रीरिल वि [राखिन] शोबित (हुमा)। र्परी को [रीरी] मानू-विरोध पीतस (कुप्र रेरः पुत्रा १४२) । रं चौ [रुज्] रोव बीमारी व्यव (१क) वंद्रसन्यो (तंद्र ४६)। रुअ सक [स्तु] रोना। सम्रह (पड्ः संक्रि १६ प्राप्त ६० महा) । मनि रोज्यं (है १ १७१)। वह रुअ, रुअंद, स्पमाण (वा Y SUF 719 98 9 88 989 ४ १२६)। संक रोत्तुम (हुमाः प्राह १४)। हेड रोत्तं (प्राप्त १४)। इ. रोत्तवन (हे ४ २१२) से ११ १२)। प्रयो स्मानेह (मक्ष), क्यावीत (पुण्ड ४४७) । रुअन [स्त] रूक मानाज (हे १ २६) स्थार १३ पर ७३ डी)। रुभ देवी रूम = रूप (६४)। रुत्र देखी इत्त्र = (दे) (सीप) । रुव्नी की [स्त्रुती] वद्मी-विशेष (संबोध As) I स्अंस रेको इस्संस (इस)। रुअग र [रुवड] १ कान्ति प्रभा (पहारू १ ४--पत्र भन्न धीप)। २ पर्वत-विशेषा 'न्युवमी होड धन्ययी स्त्रयी' (बीब)। ३ डीप-विशेष (श्रीव)। ४ एक समुत्र (सुक ११)। १ एक विमानावास—देव-विमान (देनेन्द्र १९२)। ६ न इन्हें का एक पानास्य विमान (केनेन २६६)। ७ रतन-विशेष (क्य १३ वह तुम १६ वह)। ८ रवद पर्वत का पविवां कूट (रीव)। १ नियव पर्वेत का माठका कुर (इक) । \*एएस न मिमी बहासिमनेत परंत का एक पूट

(ठा२ ६)। बर वृचिरा १ शीप-विशेष (सुन १६)। २ पर्वत-विशेष (पर्वह २ ४—पत्र १३)। ३ समुद्र-विसेय । ४ ध्वकार समुद्र का एक धविष्ठाता देव (जीव १--पत्र १६७)। वरसद् वृ [ वरसङ्ग] रवक्तर द्वीप का धरिष्ठायक एक देव (बीच १--पत्र १६०)। वरसहाभद् र्व ["बर महासत्र] वहां धर्वं (बीव ३)। बरसङ्खर **प्रीवरमहायर] स्वक्वर समुद्र का एक** धर्मिष्ठावा देव (तीव १)। वरामसास वै [ वरावमास] १ डीप विशेष । २ स<u>स</u>्र विश्वेष (बीव १)। वरावसासमह वृ विरावसासमञ्जी स्वक्तरावसास द्वीप का एक पविहाता देव (बीन ६)। परावसास-महाभद प्र विचारमासमहामत्र] नही मर्न (बीन ३)। वराषमासमहावर व **"परापमासमहापर**] रवकवर्णकासम नामक समुद्र का एक धरिहाता देव (बीव १)। वरावभासवर पूं ["बरावभासवर] नहीं मर्ज (जीन २--पर्न १६७) । बरोद र् [परोद] समुद्र-विरोप (सूळ ११)। परोमास देवी वरावभास (पुन ११)। ौमई भी [ोषती] एक ए**जा**सी (साना २--पत्र २१२) । ोद प्र िोद] समुद्र विशेष (बीव १--पत्र १६६)। रुअगित् पु [रुवकेन्त्र] पर्वत-विशेष (सम ₹**₹**) : रूअगुत्तम न [रुपकोत्तम] कूट-विधेय (**६**क) । रुभण न शिदन देवल, रोना (संबोध ४)। रुमय देवो रुअग (सम ६२)। रुअस्त्रमाणी [दे] क्लम्छा (दे७ ४)। रुभा की [स्व] धेव, बीमारी (क्व वर्मंड १६८) । रुआविभ वि [रोदित] स्वामा हुमा (ग्र 156)1 रुद्रकी [रुचि] १ कान्ति प्रमा ते**न** (पूर 💌 ४ दुमा)। २ सनुसाय, मेम (को ११)। ६ मासकि (प्रापृ १६१)। ४ स्प्रहा मनि-नाय। १ दोना। ६ दुद्रमा, कले नी रण्डा । ७ मोरोचना ( वर् ) ।

रुइञ वि [क्षित] १ मधीष्ठ पसंद (सूर ७ २४१ महा)। २ पून विमानावास-विशेष एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)। रहज़ बेबो सम्म्य = धवित (स १२ )। रुइर वि [रुचिर] १ सुन्दर, मनारम (पाप) । २ कीम कान्ति-प्रक (तंदुर) । ३ पून एक विमानेन्द्रक, देवनियान-विशेष (देवेन्द्र (5#5 रुद्द वि [रोदियू] रोनेनाशाः की री (पि रेदद सा २१६ म)। रुक्त वि [किचिर, छ] १ शोमन सुन्तर (भीप ग्रामा ११ टीः संदूर) । २ दोस चमकता हुमा (पर्स् १ ४—पत्र ७३८ सूच २ १ ९)। १ दून, एक देव-विमान (सम ₹**=)** ( रुक्ष म [स्थिर, रुचिमत्] एक देव विमान (सम ११)। स्थेत न [\*सम्स] एक देव-विमान (सम ११)। कृष्ट न [\*कूर] एक देव-विमान (सम १४)। उसस्य न "म्पक] देवनिमान-विशेष (सम १४)। प्पम न [प्रम] एक देवविमान (सम ११)। त्रेस न [क्षेर्य] एक देनविमान (सम ११)। यण्य न ["यर्ण] देवविमान विशेष (धम १९)। (सँगन[श्टङ्ग] एक देवनिमान (सम ११)। "सिट्ट न िस्ट] एक देननिमान (सम १६)। विश्व न ["वर्षे] एक देवनिमान (सम १४)। रुइस्लुचरपडिसग न [स्विरोचरावसंड] एक देवविमान (सम १६)। र्रंप कह स्टिब्स्] वर्ष से उसके बीज की मतम करने ही क्रिया करना । बहु- संचन (নির **২৬**४)। र्रवाज न [रुद्धान] वर्ष हे क्यास को सबग करने की किया (पिंड १८४)। र्रमणी की [दे] पट्टी शतने का प्रत्यर-पत्त (₹♥ ⊏)1 र्रेज सक [६] साराज नरमा । रंजद (है ४ ४७ पर्)। रजग ई (के सक्त क) इस वेड गावा द्वार महीस्ता बच्या धेवता संत्रमाई मं (इत्रति ŧ) ı

विदेय (दे ६ १६)। २ व नवात्र (पाचा खामा १ १ टी)। ६ एक देव-विमाल (सम वि सित्त विश्वद, ऋदि-सम्बन्ध (क्रोप सर ३ वधः १११) । यह व विद्या ६६) । ७ एन एल-विशेच रोठा (सत्त ३४ ६वश परन १, १६। सुर २ ६व। सुपा पानारा (बंद ११ १७१) । राय व भावत १४ ४)। प्रति को प्रिती संबंधी की सिन्बंधी एक िंसजी नानर-नेराका एक सना (परम कण्यानदी-विजय की राजवाती (हा र 1-विधिक-कन्ना (स्त ७२८ धी)। 4 33X) ( रिप श्वो रिव (इप्प)। रिक्कण नं दि ] १ ७५सम्ब, स्थितम । २

**-1**3

क्ष्म (दे ७ १५)।

₽)ı

\$41 YE) 1

१७: दुना) ।

रिक्सा देशो रेहा = रेका (श्रीव १७१)।

रिध्म वं विशेषक (के क हो।

२ प्रवेश करता। रिवड रिवह (हे ४ २१६

रिचाडीन देवी रिजळक्रम् (पि इक्

रिच्छ के दिस्स=स्टा(देर १४)

२ ११: पाप)। ब्रिक्स प्रशिक्षणी

बाम्बनान् राम ना एक सेनापरि (के ४

रिण्यमत् (दि भव पेस (रे क क)।

रिज़ देखो रिज=ऋष् (स्प)।

पुर्ण होना । रिज्यह (बन्) ।

रिज़ देवी रिड = चच्च (निमे ४४४)।

रिश्न देशो (स्थ = से । रिण्यह (याचा) ।

रिम्तु रेको स्ति = श्रृषु (हे १ १४१) सींग

रिम्म यक [ श्राप ] १ वहना । २ रीमना

रिद्व र [दे मरिष्ट] १ मण्टि, दुव्यि (वदः

fi tve) : 3 tra-fete (4x; 8 ?

को। क्षार कीमा (केक 5 सामा क

१-- पत्र ६३। वर्ष पात्र)। निर्मित्

रिनात का निवासी देव (स्थाबा है

स्तन नावर दाडों के लोकपाल (डा.४

!—पर १६ )। १ एक एख बंद, जिस्सो

["निमि] बार्रवर्षे जिन्हेर (वि १४२)।

वेदेव)। क्यें चा (गट--एना वेद)।

रिण्य नि वि वि वृत पूरा (के छ ६) ।

पत्र का इक) । सणि वं सिणि । स्यास यत-विशेष (विदि ११६ )। रिष्य न विकासीठ (के कार)। रिद्या की रिप्ता र महाकृष्य कियम की रिभिय न रिभिय । एक प्रकार का माटक शक्कानी (छ २ ३ --- प्रकृष क्रक)। २ (हा ४ ४- पत्र प्रदर्श । प्रश्वर का रिग) यह रिक्रगी र रेक्स बीरे-बीरे रिधा रे शीर बमीन से रनड बाते हुए बसना।

पांचनी गरक-मूमि (हा ७---पत्र १८४)। पोचन । १ वि. स्वर बोचना से बुख (सवः व महिस्स शक (स्था)। खामा १ १--- पत्र १३) । फिन्म व सिंग्रामी १ एक केन-विसाद रिमिण नि कि । रोने की धारकाका (के अ (सम १४)। २ सोकाश्चिक देवों का एक ७ पर )। विमान (पद २६७) । रिरंसा 🕏 [रिरंसा] रमछ की बक्क रिटि को रिथि ! बहुब, धलबार (के क गैपनेच्या (भ्रम्मः ७१)।

६)। २ प्रयुक्त। ३ ई. एस्स, विवर रिरिश वि चि बीत (दे ७ ७)। (#Sr 1) 1 रिक्ष पण विशे शोपना । १४, रिह्नेत (४४)। रिंड एक मण्डम् ] विज्ञमित करता । रिडर् रिंग देशो रिंग=रिप (परम १२ ४१) (पक्र)। ४४ X ) सं ११का छन पू १२१)। रिण न किएली १ करवासाकर्ज छवार रिसम ) प्रशिक्षणम ] १ स्वर-किरोप (ब्र तिया द्वस्य वन (गा ११३ कुमा। शास ७७)। रिसार ) के पन १११)। २ महीएन का पञास्त्री क्षार्च (सप ११) शुरूप १ ९ वज पानी। ३ दुर्गकिकाः ४ दुर्गद्वमि । ११)। १ संइत गरियन्द्रम के जनर का इ. मानरमक कार्य करता ६ कमें (हे १ १४१। बाम ) । वेशो क्या व्यवस्था । वनपाकार बेट्टन-पट्टा गरिसको व होत्र पट्टो (बीवत ४६) । वैद्यो इसम (धीरा हे १

रिविक वि जिल्ला करमबार, सवनती (TR Y 11) 1 रितेय किता विवाद विवा (प्रिंड ३७ )। रिचरिकि । वासी ग्रूच (छ 🔊 ैरिस**इ प्रियम विश्व प**त्तम (कुमा) । ११) मा ४१ । मर्गनि ६ मीवमा १६६)। रिसि ई श्चिपि मुक्त संव साबु (सीप २ न विरेट समाव (क्छ २८, ३१)। रिस्टिम दि हिं] स्परित पर्वासा ह्या (R w c) 1 धिइ वरु [म + विस् ] अवेश करना, फैन्स।

रेपरा धम रूपश कम्प २ रहा सुपा

द्वमार पुरा ६१३ समि १ १३ का ७६०

दो)। याय व ["घात] ध्रुनि-इल्ब (उप

री ) धक [री] बाना, बसवा। रीवा, रीम । पैक्ट रोबी प्रांता (प्राचाः चुव १

रे २ राज्य रूप ७)। नुबा, धेरला

(माना)। वह रीमंत रीयमान (माना)।

रीइ थी [रीति] प्रवाद, इंप वक्तींत ते कर्छ

रिप्रवृति निर्धे गरमस्पेर्टर (पनींत ६२)

**₹**\$ ) |

1 (224

dell I

विद्र (बर्)।

रित्व [रिक्व] चन, ब्रब्ध (बर १९) पाम संद दुवाप ६। महा)। रिद्र नि [च्छ] बडि-बंगन (ग्रामा १ दि 1 [रिष्ट] १ देव-निर्देश दिश्लानक १३ समाह धीन) । रिद्व वि [दे] पत्र पत्ना (देश ६)। -पर १५१ । १ नेतान ग्रीर प्रक रिवि र्राक्षी [रे] बहुद, चरित्र (दे ७ ९)।

रिक्षि भी विश्वकि १ संति बन्दि देवा

(शायः विता कृषं पुत्रा नुष्टकः ।

**धैंड फ्रीन [दे]** समयक्षन सनादर (दे७

द)। और डा (पाधः चस्म ११ टी<sub>)</sub>- पंचा

रीज नि [रीण] १ करित स्तुतः । २ पीडित

रीर पत्र [ राज् ] होक्ता चमकता दीपता।

र्धरित्र नि [राखित] होमित (हुमा)।

रेक-स्वर

रे दा बह १)।

**θα(ξγ ξ )** ι

११ बुपा १४२)।

व्यस्त्रको (तंद्र ४६) ।

(महा), स्मार्थित (पुष्पठ ४४४०) ।

र्णमा १ १६ पर ७३ टी)।

रुम देवी स्टा = हप (इक)।

रुअंग हैयो व्यक्ति (इक्)।

E.

Ye) I

इत्र देवी स्टम = (वे) (मीप)।

(क्त २) ।

रेरी सी [रीरी] बाहु-विरोध गीतल (कुप रुं की [रुज्] रोग बीमारी नमव (१ क) रुम ग्रह[स्तृ] रोता। रुमकः (यक्ः संक्रि १६ अला ६० महा)। मनि रोक्स (है व १७१)। वह सम, समंद, स्थमाण (गा ११६ ३७६, ४ सुर २; १६ ११२ ४ १२१)। श्रेष्ठ रोत्तूज (कुमाः प्राक् १४)। हेड रोसं (मारू १४)। इ. रोस्टब्स (हे ४ २१२) हैं ११ ६२)। प्रयोक क्याकेड रुत्र न [स्त] सम्ब सावाज (से १ २० रेमेर्ना औ [रुएती] बझी-विरोप (संबोध रुअंग र्षु[स्चक] १ कान्ति प्रना(परह रे ४--पत्र कवःगीर)। २ पर्वत-विशेषः गपुत्तमो होड पम्तमो स्वयो (हीव)। ३ डीय-रिकेट (क्षेत्र)। ४ एक समुद्र (गुज १९)। १ एक निमानानाम<del> केन-वि</del>मान (रेरेन्द्र १९२)। ६ व इन्हों का एक मानाम्य विवास (देरीन्त्र १६३)। ७ रास-विदेव (बच १३ ७६ नुष १६ ७६) । थ एक पर्वत का बोबवां कूट (दीव)। ६ निरम वर्षेत का माठता कुर (इस) । "एएस न [भभ] नरादिवांत कोत का एक कुट

विशेष (सुन १६)। २ पर्वत-विशेष (पर्ह २ ४---पन १३)। ३ समुद्र-विशेष । ४ रवकवर समुद्रका एक प्रविद्याताचेव (जीव १--- पत्र १६७)। वरभ**र** पू ["बरमङ्ग] स्वकार ग्रीप का धविहायक एक देव (भीव १-- पत्र १६६)। वरमहासद प्रीवर महाभद्र विशेषक (की वर्ग हो वरमहावर पुँ वरमहायर विकास स्पुत्रका एक स्विष्ठाता देव (श्रीव १)। यरामभास **र्र्** ["बराबभास] १ शीप विशेष । २ समुद्र विचेष (जीव १)। वराषमासभइ प्रे िवरावभासभद्री स्वक्वरावमास हीप का एक प्रशिष्ठाता देव (बीव ३)। यरावभास महासद् 🖠 [बरारमासमहासद्र] वही धर्च (शीव १)। वरावभासमहावर १ िपरापमासमहावर स्वकवरावमास नामक समुद्र का एक समिद्राता देव (जीव ा वरायभासवर र् ["वरायभासवर] वही सर्च (बीव ६—पर्व ६६७) । धरोद पुं विरोदी समुद्र-विरोप (पुन १९)। यरोमास रेबो वरायमास (गुन ११)। व्यक्त की [प्रियती] एक इन्त्राएँ। (स्राया २—पत्र २४२) । ोव प िोद्दी समूत्र निरोप (भीन ६--पन ६६६) । रुमगिद् पु [रुपकेन्द्र] पर्वत-विशेष (सम 33) I रुमगुराम न [स्थकार्त्तम] भूट विशेष (इक)। रुमात्र न (रोदन) परन रोना (संबोध ४)। रुभय रेको रुअग (सम ६२) । रुअस्त्रमा वी [वे] बच्छा (वे ७ 🗷) । रुआ की [रुज़्] धेप, बीमाधै (इन वर्मंडे १९६)। रुआविभ वि [रोदित] स्नामा हुमा (वा 1(3=9 स्प्रदर्शे स्थिती १ मान्ति जमा देज (सूर प्रभूमा)। २ बनुस्ता, मेम (को ६१)। ६ मानकि (बाबु १६६) । ४ स्ट्रुट्, मनि-साय। १ शोमाः ६ दुवृता साने की

इन्दा। ७ गोरोचना ( बहु )।

स्त्रुष्ठा देवो स्प्रण = चरित (स १२ )। स्हर वि स्थिर र युन्दर, मनारम (पाप) । २ बीप्र कान्ति-पुकः (तंतुर )। ३ पूनः एक विमानेन्द्रक, देशविमात-विशेष (देवेन्द्र 242) | स्वर वि [रोदित् ] रोनेशलाः स्री री (ति प्रदर्भा २१६ म)। रुद्ध वि दिविर, छी । शोमन मुन्दर (बीप सामा ११ टी तंदू २)। २ दी स चगकता हुमा (पएड १ ४--पत्र ७८) सुम २१३) । १ पूंत. एक देव-विमान (सम **₹**<) | रुद्रक्ष म [स्थिर रुचिमत्] एक देव विमान (सम १४)। इतंत ["कारत] एक देव-विमान (सम १६)। कृष्टन विमान एक देव-विभाग (सम १४)। बसाय न [\*ब्बुक्त] देवविमान-विशेष (एम १४)। रपम म [मभ] एक देवविमान (सम ११)। "तेस न "तेश्य पृष्ठ देवविमान (सम १६) । बण्य न विर्धी देवविमान विशेष (सम १६)। सिगन श्रिक्ती एक वैविधान (सम १२)। सिटुन िसप्टी एक केनियान (सम १६)। । यत्त न ["बर्चे] एक देशविमान (पम १५) : कदरलत्तरपश्चिमम न निवयत्तरापतं ही एक देवविमान (सम ११)। क्षंच कद [रुप्यु] रैं में समय बीज को सत्तव करने की किया करना। कहा *के* चन (日本 XWY) 1 इंचण न [स्त्र्यल] व्हॅमे वपान को प्रतग न जो नी किया (सिंह १८०)। रुपणी भी [रे] पट्टी राने ना परंपर-याप ( to 5) 1 र्देश सक [रु] भाराज ररता । रंजह (हे ४ द्रशासह)। रेजगाई दिस्याही बन वर गांध देश

महोच्या बच्छा राज्या रंजनाई व' (१वर्गन

रुइम वि [रुचित] १ ममीष्ठ पर्वद (सुर ७

२४३ महा) । २ पून विमानावास-विशेष

एक देव-विमान (देवेन्द्र १६२)।

(ठा२ ६)। यर पृष्टिर दिशीप

क्तमंत चेता हथ।

र चौदी रच्छा(चै४) ।

(पराहर रेड दूस रेक्का बा ६३)।

रूप्प न [क्रप्य] चारी एक्ट (बीपा सुर ३ १ क्यू)। बूद वृ [कूर] सीम पर्वत का एक कुट (राज)। कुखप्पनाय पू [कुस्रप्रपात ] इड्डिशेप (ठा २ ३---पत्र ७६) । पूछा की [कूस] १ एक महानदी (ठा२ ६—पत्र ७२ व सम २७- इक) । २ एक देवी । १ घरिन पर्वत काएक कृट (बा∀)। सम्ब कि ["सय] चंदीना बना हुद्या (खामा १ रे--पत्र ×२ दुगा)। ।भास दु [ीमास] एक व्यातिक महा-ग्रह (हा २ वे-पण ७०)। रूप कि रिपि क्या का बौदी का (खाया ११—नम २४ छर व ४)। रूप्पय देखो कृप्य ≈ रूपा। 'स्थाम स्मर्ग (पाच महा)। रिष्प पूर् [स्किमम्] १ की विक्य नवर का एक राजा चरिनली का भाई (खाबा १ १६---पत्र २ शुमा क्षतिम ४२)। २ दुखान देश का एक धना (खाबा १ व— पत्र १४)। ३ एक वर्षभर-पर्नेत (ठा २ ६--पत्र ६१। सम १२ ७२)। ४ एक क्वोद्रिक महा-प्रह (ठा२ १---पत्र ७६)। १. देव विरोध (अं ४) । ६ दिनमा पवत का एक पूट (मे ४) । ७ वि गुवर्त्तास्ता । व पारी माना (हु २ ४२ ८१)। कुछ पून [रू] सीम पॉवना एक इट (ठार शासमध्य)। रुप्पिणी स्री [रिक्सिणी] १ वितीय बागुरेक वी एक परस्ती (पडम ३ 1 cq) | R ' भीडप्स बानुरेर की एक ध्रम-महिपी (पडम १०४३ परि)। १ एक महि-पस्पी (पुत्रा ११४)। मताबा (मुख्य २ )। १ वि रवा की ठए पमरता (बं ४)। रस्य क्रममात्र हिता क्या र्गमित्रा रेपो सूर्प्पणी ( बर् ) । **रुट् बर [श्टापय] स्नात ररता मनित** करता। ल-सम्हाद अर्थ (गे ३ ४)। रर 1 [हर] १ मुन-विदेश (परम १, ४१। | च्या १ १--- १ ४) । १ वक्तवितिहेद

(पर्ला १—पत्र १२)। १ एक मनार्थ देश । ४ एक बनामें मनुष्य-जाति (पर्यह र १—पत्र १४) । रुरुप सक [रोस्स्य ] १ सूब सावाय करना। २ बार्रबार विस्साना । वह रुरुपेंद्र (स २१६) । इन्ड भर [लुठ] भेटना। बर रहीन, क्लिस (पएइ १ ६--पत्र ४४, 'पहिमाम-मझ्तुरचे रुखेनवरनुहृद्धवदरायादली (बर्मीप ¤ ) ı क्लूपुल सक दि ] मीचे सांस मेना निःश्वास हासना । यहः स्ट्राधुक्तंत (मदि) । रुव देना राज = स्त्। स्वद् (हे ४) २२६ प्राकृ ६८ संशि ३६३ मनि महा) स्वामि (दुप ६१)। कमें समय यनित्रक (हि ४ २४१)। स्यण न शिवनी रीना (टप ११५)। स्वणाक्षी कपर देखी (भीवमा १)। रुवचा हो [रायणा] मारोपणा, प्रामहिनत काएक भेद (वन १)। स्बिस रेला महस्र (बीप) । कुठव रेगो सभाव स्त्। समाह (इसि १६) प्राकृ ५०)। क्सा की शिपी रोप बुस्मा (हुमा) । रसिय रेकी न्यंसअ (परम ४२, १४)। **रुद्धक [स्ट्] ≀ ब**राम होना। २ सम माव की मुखाता। स्ट्रम् (ताट)। वर्मे 'जल विद्यारियद्वीवि यान्त्रारपहारी हमीए पत्तरामगुरिकागुरि पण्डवेदणी रामगणा वेव रम्भद ति (स ४१३)। स्ट्र वि [स्ट्र] उत्तम्न होनेराना (धाषा) । मह्य न [राधन] निवारण (वद १)। क्ष्पामास वृहि अव्यायभाम ] १ एक | सहरह बाह [ब्] मन बन्द बहुना -बार्मान नुष्टि स्ट्राप्ट बार्ड (व्यति)। रहेन्द्य पू [द] पलगटा (प्रति)। रुधन [ब्लिन] न्हेनूच(३७ ६ बलायब ४। देवेग्द्र ६६२। बर्मेंसे १४ । भवा संबोध ११)। रूप र् [रूप] १-२ पूर्णस्य भीर विशिष्ट नामक राज का एक नोक्यास (हा ४ १---नम ११७)। ३ धारति मानार (गा

१३९) । ४ ति गरत पूरव (दे ६३४६) ।

पंत र् [भागत] १~२ पूर्णमक भीर विशिष्ट शामक इन्द्र का एक सीक्यान (ठा ¥ १)। क्षेत्राकी [नाम्ता] १ भूतातम्ब नामक इन्द्र को एक पद-महिनी (खाया २-पत्र २१२)। २ एक विशुमारी-महत्तरिका (राज)। प्यभ पुत्रिमी पूर्णम्य मीर विशिष्ट नामक एक साक्रपास (ठा ४ १---पम ११७ ११८)। एनमाची [मिमा] १ भूतानम्द इन्द्र की एक बन्न-महिपो [ग्रामा र---पत्र २५२)। २ एक रिल्हुमारी रैनी (ठा ६---/म १६१)। रमो नय=का (धउड) । स्वजंस वृ' [स्पांस] १~२ पूर्णभद्र सीर विशित्र इन्द्र का एक सीक्पान (ठा ४ १---पत्र ११७ ११०)। रूअंसा ही [रूपारा।] १ मुतानक इन्द्र ही एक भग्न-महिपी (ए।मा २---पत्र २५२)। २ एक विश्वमारी वैशि (गार---गत १६१)। सञा}द्वा[इत्पक्र] १ पाशा (१४ ४ रुभय र ४२२) । २ व् एक प्रस्य (लामा २ पत्र १३२) । ३ रया देशी वा सिहानन (लामा २--पत्र २६२)। बहिसय न [क्संसक] रूपा देवी का जान (खाना २)। (सरी सी [भी] एक गृहस्य ही (ए। या २) । । यह धी [ यर्गा] भूतानव मामक इन्द्र की एक यथ-महिपी (शामा १) । देवी रूपय = न्यक । रूब्रह्मा [रे] रेटी रभरद्रमा (पर्)। म्प्रमासी [≭पा] १ भूतातल इन्स्र वी एक चय-मद्विपी (गामा २~--गत्र २×२)। २ एक दिस्तूभारी देवी (ठा ४ १-- व (#35 रूभामान्ना भी [रूपमान्ता] प्रकारिकत (रिय) । क्षार वि अपबारी पूर्ति बतानेवासा मोत्तुमजोर्ग जोर्थे सनिए १ । कोन स्पारी (निगेररर)।

म्आपई सी [मपर्वती] दह त्रिपुराधि देश

रूड रिस्ट्री रेपरेप्रसन्त न्दिनिद्ध । २

वनिक 'कडनरमेग गाम नर्गाद्वा साव

बर्गाहाँ (३४ ६४४ धे) । ३ जन्म

(CIY !-TE ! (C) !

हर्पात्र (नाम)।

स्त्र हि [स्त्र] पना हुगा, करान (१४ ७ ११)। स्त्रीह की [स्त्रि] परमाय से बनी माती प्रतिक्रि पोखास्त्रोससीय एक पन्मायुक्तमी स्त्रिती (युग १११ कन्म)। स्त्रम कु [स्त्रो पुतु सन्तर (प्रस्त्र २ )। स्त्रम कु (स्त्र) पुतु सन्तर (प्रस्त्र २ )।

u ? §

क्स हुन्य (ठा ६—पत्र १९१)। क्सी हु [क्सीन्] सीतिक क्यार्ड (गुल्ब २ )। क्रम्य न हिंडे क्सम्या स्थासक (स्था)।

२)।
इस्त्यान [वे] उत्पुक्ता रखरायन (पाम)।
इस्तुमन [वेर] र साहित समार (पाम।
११ पाम)। र सीमर्थ पुनराता (मुमार स्वर १ मागू १४० थरे।। वे वार्ष पुनस्त प्राप्त १४ मागू १४० थरे।। वे वार्ष पुनस्त

क्ष प्रस्ता १५ अथे। १ वर्षे हुल प्राप्त रेन (बीग डा १ २ १)। ४ पूर्ति (विदे १११ )। ३ एक्सान (क्ष १)। १ उत्तर नाम। ७ स्लोक। द बाल्क प्रादि इस्त कृत्व (हि १ ४२)। १ एक भी संस्ता एक (क्षमा ४ ७०० कर ११) व ११)। १०-११ एक्सान कर्मेग्ला (हि

त्र । १०-११ रुपसम् स्तृत्रमा (१ १ १४२) ११२-चेनो स्त्र स्प = च्या च्या केनो समर्च्या (म ६-जन १४१) एका भाग १४५) । सार वि (च्या मा मा १४५) । सार वि (च्या मा मा १४५) । सार वि (च्या मा सा १४५) । सार वि (च्या मा १४५) । सार वि स्थान्यस्था (४०) । सेने केनो वेत (४०म १३, ४० ११ १९) । सुर्व की विती

१ मदानन्द्र नामक इन्द्र की एक सध-दक्षियी

(हा ६--पत्र १६१) । २ तुक्स नामक

भूनेना नी एक मध-महिनी (ठा ४ १---पव

२ ४) । १ एक विस्तूमाचै न्यूक्तरिका (ठा

६) वेत सम वि विन् ] कालां तुरत (वा १) वता का इ १११ जुन १४४४ वर)। समा वृत्र विवाह १ काला (स्त इ २६ बाग सरी तुर ४१४) २ वादीशन्तविद्य यह प्रवेतार (तुर १ १६ विते ११६ दी)। केता स्तार स्वरूप क्रतिस्त्री वि भागती की (१ १)।

स्यय देवा स्था (दुव १२३ ४१३) चार

1(48

लि कि [क्यिन] कारता (वाचा का य करे) इसे दुवी हिं] एक्यरिकेश क्यंन्स मान का पेड़ (प्रकार र—यन देर देश हो। इस्स का हिंगू] क्राण कारता कार, कार (जा दुना हे ४ २३६ शक ६८ नद्र)।को सेंहण्यह (१४ ४१८)।

रूवा विशेष्टआ (१७)।

क्सर (का दुगा है ४ २३६ आह ६८ वर)। अने संदर्भ है ४ २१६)। हुइ- स्मितं इसेतं (है ४ ४१६)। हुइ- स्मितं इसेतं (है ३ ४१६) है। इसियामं स्वितं क्या (श ४६)। इस्त स्मितं का स्था अर्थ वर्षा १ १ -- का रि. : तुर १६, ४५)। अर्थ, वह स्मितं हम्मा (श १७६)। दि दुस्मानेर ऐक करो- कमा (हुब १ ४४ १६)। दि दुस्मानेर ऐक करो- कमा (हुब १ ४४ रोगेष ४०)। इसिय में क्या (हुब १ १३ रोगेष ४०)। दे ए दुस्माने हम्मा (हुब १ १४ रोगेष ४०)। दे ए दिने हम्मा (हुब १ १३ रोगेष ४०)। दे ए दिने हम्मा का मुक्क स्थाय—१

प्रियातः व प्रिकेष (स्रीत ४७)। व संस्थात् (६ १ १ १) हमा)। ४ सम्रेते (स्ति ६०) रिएकार (पत १०)। रेख ६ रितस्] गीर्ग गुरू (पत)। रेस द (६४ ११)। रेस दिस हिंदुको केस ह्या स्वक्त (फुरा १० ११)। रेस दिस हिंदुको केस ह्या स्वक्त (फुरा १० ११)। रेस दिस हिंदुको केस ह्या स्वक्त क्ष्म हिंदा हमा दि ११। रेस दिस हमा किया हमा (१ ७ ११) गार स्व ११)। रेसा की (१३)। रेसा की (१३)।

रेशमं रि. रिषिया हिष्मा हुमा (ते ७ ११)। रेशिकार रि. हिंगू १ धातिता । १ तीन । १ तीतित वॉक्य (१ ४ १४)। रेश्वर १५ (रिकार) १४ तक्य, १४ व्या प्रशास (तर १)। रेरिह क्यो रिव्हें (विस्त १)। रेप्सा व्या रिप्सा मार्थि स्कृतका की एक

सन्ति एक वैत पाली (बला) सीह)। रेणि दुवी [दें] रक्ट, कर्रन (१७ द)। रेजु दुंबी [रेजु] १ रक बूसी (कुमा)। २ वराव (स्वन्य ७६)। रेजुया की [रेजुका] सोववि-विकेव (पर्यक्र

१--तर १६)। रेस ई [रेफ] १ 'र' मझर, रहार (हुमा)। २ ति हुट १ समम तीच ४ कर, विसंग १ स्पष्ट परीव (हे १ २१६) वर )। रेरिस्स मुक्त (रारास्य] मदिशन शोमना।

रात्य के पुरास्त्र । भावतक वानागा । कड देरिकामात्र (खास १ २ — तम कका १ १ — चन १०१) । रेक्क प्रकृत । वानोर करना । नक्ष रेक्क पुरामा । रेक्कि की [क्ष] रेक्त कोठ समह (खा) । रेक्कि की [क्ष] रेक्त कोठ समह (खा) । रेक्कि को [क्ष] एक कोठ हिल्ला के उस्ति (वॉर्स रहें) ।

ह्ली के किया पुरु बैन दुनि (तीर ११) । रेमइय पुं [रेमिकेड] स्वर-विकेष रेन्छ स्वर (स्यु ११२) रेमइय न [रेमिकेड] एक ज्यान का नाम (क्या)। रेमइया को [रेमिकेड] पुरु-वह विकेष (मुझ २ ११)। रेमई की [रेमिकेड] एवन्च व मिकेड रेपड़ को [रेमिकेड] एवन्च व मिकेड

भ्रष्टा चम १४५)। हे एक काम (धम १७)। देवई की दि रेपती] मादाबा, हेवी (देव ()। देवंड है दिवन्त] धुर्च का एक दुव देव विदेश 'रेवंक्यपुचना इक धारावितीय प्रमाणविद्यां' (वर्षीम १४६। पुना ११)। रेपतिकार हि [वी] उपताल्य (देव १)। रेपतिकार हि [वी] उपताल्य (देव १)।

रेनम न [र्षे] प्रणाम नामस्मर (१ ७ ६)। रेनन इ. रिवन ] गिरामार वर्षण (शाना १ १ स-मन १६। प्रंग मुन्त १२)। रेनम प्रदिक्त] स्वर-निर्धेष (प्रमु १२०)। रेनमिका की [थे] नाष्ट्रसम्बर्ग कुल ना धारत (१ १)।

रेवा की [रेसा] नडे-नितेच नर्मशा (गा १७०- पासः दुना प्रांतू (७)।

**१४२)** ।

रसणिया) भी दि १ करोटिका एक रेसमी 🕽 प्रकार का कास्य-माजन (पाछः दे ७ १४) : २ घछि-निकोच (दे ७ १४)। रसम्मि क्षेत्री रसम्मि जो उग्र सदा-पश्चिमी कर्ण देव अग्रकितिरेसम्म (स ११७)। रैसि (मा) रेको रसि (१४४४२६ एए)। रेसिम वि[वे] खित्र काटा हुमा (दे ७ ₹) ı र्सि (मप) ग्रीचे देखो (हे ४ ४२१)। रैसिम्मि म. निमित्त निए, बास्ते 'बंधरा-न्याप्रवरिकास्त एस चैमिनिम भूपसरको (वंबा 18 Y ) I रेड यक [राझ ] दीपना शोभना चमकना। वेदर वेदर (हे ४ १ नारना ११ महा)। यक्त. रहंस (कप्प)। परा भी रिसा र विश-विदेव सभीर (भीव ४८१ यतका सूपा ४१: बळा ६४)। २ पंक्ति, भौत्य (कृप्यू) । ३ व्यन्त-विशेष (पिय) । च्या व्य चित्रना दिशा कीत (क्यू)। चेदिम व [दे] विद्यापुण्य कटी हुई पूँछ | ( t + 1) रेडिअ वि [राबित] शोमित (पुर १ 2 = (1) रहिर वि [रेन्यावन् ] रेवावावा (ह २ ₹**₹**₹} 1 र्षोदर ) वि [राजिल् ] शोधनेवामा (तुर रहिस्त १ व सुर्गे ४१) भवरे नवरे दिस्ते' (दर ७२= थै )। रंदिष्ट देयो रहिर-रेखानम् (इन ७२० दी) । रोभ देश रुज = स्त्। रोमइ (सीप्त ६६: माह 🤻 )। यह रोअंत, शयमाग (ग १४६) का इ देशका सूर १ २२६)। हेह राई (स्ति १७)। इ रोभक्तभ रोडमस्य (दे F Act all fie fiel \$5) ! रीम देतो सूच = ६व् । रीयद, रीयप् (मन्: का) चित्र में पूर्ण से केर क्लंबि सबगा निष्पं (रंम)। यहः शयंत (मा ६)। राम कः [राषप्] १ स्व कल्य। २ वनम्य वरना चाहना। सेयद्र रोग्रीम रोग्रीत (क्न १८ ३६: मन)। स्टेश रायहत्ता (उत्त २६, १)। t (v) t

रोभ सक [रोपम्] निर्दंव कला। रोपए | (बस २, १ ७७)। रोब द रिची राष 'बुक्तररोमा विजना बासा मिखियेपि नेव बुरुमंति । वो मण्डिमस्त्रद्वीलं हिम्न्यमधी पवासी में (बेह्य २६ )। रोअ दे शियो प्रामय बीमारी (पाप) । रोजगति शिचकी १ वनि-वनकार न सम्पन्न का एक भेद (संदीप ६६ मुपा **221)** ( रोक्समाम शिवनी धेना स्वन (वे १ १ कप्र २१६८ २८१)। राधण प् रिजन र एक दिवहास्त-कृट (इक) । २ न योरोचन (पडड) । रोक्षणा ध्यै [रोचना] गौरोचन (से ११ ४१ नस्य)। रोजणियाकी दिविधिकी बारत (१७ १२, पाम)। राभच्छ रेहो रोध = स्र । रोमाविश्र वि शिदिती स्मामा हुमा (ग्र **३१७ त**पा ३१०)। रोड़ वि शिगिम् । शेमबामा बीमार (गठड)। रोड रेको रुड = धींक 'घाँव सुररेवि दिएले पुरकररोई कतहमार्द (पिट १२१)। रोइअ वि शिविती १ पर्धर ग्रामा हमा (मग) । २ विकीपित (स ६-पत्र ६११) । रोहर वि शिवित् रिनैशना (या १८६) पद्)। रों क्रम वि [वे] रंक गरीव (दे ७ ११)। रीय वक थिए | पीछना । धेंबर (१ ४ tex) : राक्षम वि वि] मोधित मति विक (रह ) रोकणि १ वि दि । श्रेषे श्रेषामा। राष्ट्रिया र कृति निर्देश (१० १६)। रोग पं शिगा १ बीमारी स्वापि (प्रता पटा १ ४) । २ एक बाह्मण-नाडीय भावद (सप ११६)। रोगि दि [रोगिन्] बीनार (नुस १७६) । रोगिन व [रागिक व] कार रेखी (न्य

रोगिणिमा भी [रोगिणिधा] रोप के कारत सी वाठी दीशा (ठा १ —पत्र ४७६)। रोगिह देतो रोगि (प्रामा) । रामस वि वि रिक गरीव (दे ७ ११) । राच देवी रींच । रोण्यह (वह )। रोग्म र् दि ऋरव पगु-विशेश पुत्रपठी में 'रीम' (देख १२) विसार अर पाम)। रोट र्नुन [दे] १ तंरुन-गिष्ट, बाबस माहि स्त माटा, पिसान ग्रुवसाती में 'सोर' (दे ७ रेश मीप १६६ १०४ विड ४४ वृह १)। रोट्टगपु [दे] रोध रोग (महा)। रोड सक दि र रोक्ता सरकाता। २ सनावर करना। १ हिरानकरना । रोजिति (स १७१)। स्वतः रोडिजीत (एर पूर्वा)। रोड न [व] वर का मान गृह-प्रमाण (दे tt) i रोडी की [दे] १ इच्छा धविचाया । २ वणी की शिविका (दे ७ १३)। रोचम्ब रेखो रुझ = स्त् । थेर पु [रोद्र] १ महोसन का पहला महती (सम ११)। २ एक कुरति तृतीय बनदेव मीर बामुदेव का रिता (ठा ६--गत्र ४४०)। १ घर्नकार-राझ-प्रविद्ध तक रखीं में एक रख (मणु)।४ वि दादल अमेक्ट मीपल (ठा ४ ४" महा) । इ.न. ब्यान-निशेष हिता यादि कर कर्म ना विस्तृत (कीत)। रोइ पू [रुत्र] महोरात का पहला <u>मह</u>र्त (पुण्य १ १३)। देशो रुद्र ≕ दा। ∪द्ध वि [वे] १ वृष्टिताधा १ न मन (दे 9 (X) 1 रोम पुन [रोमम्] तोन बात रॉबा (मीन नाम नरह)। कृप दु किए सीन का बिर (गाया १ १--पत्र ११ मूर २. 1 (5 5 राम न [रोम] सात में होता नवल (दत ₹ <) i रामंप 4 [रोमाधा] रोगों का बहा होता, नव या हर्ष से रोंबी का बड़ माता, पुरक (दुना काच चरिः सण्)। रामंपरम ) दि [रोमाझित] दुत्रतित समिति । निवह सेन सह हर ही बह

(परंव ३ १४) १२ १६ गाय

मर्दर) ।

ग्रेड् पृश्चिद् दि एक कैन मूनि (मन)≀२

प्ररोह बल बादिका सुख बाना (१ ६ ६१) । ३ वि धेदक, धेदण-कर्ता (वनि) ।

रोह पू वि र प्रमाख । २ वयन । १ मार्थेड

्रं[रोगम्ब] पष्टराना चनाई हुई वस्तु	११ १६)। सङ्गरोजिङ्ग (१४ ४०६)।
ा चवाना पा <b>द्रार</b> हिंदै स्था पास्ता	<b>१</b> इस-रोविर्ध(स.१.)।
1	रोव दुं [बे रोप] वीबाः इबक्ती में 'रोपो'
) यक [रोमन्त्रयू] पदार हुई	(सम्बद्ध १४४)।
) सक् [रामन्त्रम् ] पदार हुर   स } पीज का फिर से जवाना पछ-	
पूनानी करना । रोमंचक (है ४४३)।	रोबण न [रोबन] रोना (पुर २, ७६)।
(मधासमाज (चार ७) ।	रोबजन [रोपज] वपन बीज बोना (वन
	t) I
े पूर्वाकार्यात्व क्रान्यस्य रोम केत (पन २७४)। २ रोम	रोबाविक्ष 🐿 रोभाविक्र (बन्ना ६२)।
ं रहनेवाकी मनुष्य-जाति (भरह १,	रोपिश वि रोपित र बोमा ह्या । २
39 (V) 1	स्वापित (वे १३ ६)।
पू [रोमक] पश्चिमकेष, रोम की	रीविंदन न [वे] देन-विकेष एक प्रकार का
अवायमी (भी २१)।	
	सान (ठा ४ ४पत्र १६३)।
्ष्यो [दे] भवन निकम्ब (दे ० १२)।   	रोबिर देवो रोहर (देश श्रृहमा है २
शसय न [के] केंद्र, बक्त (के ७ १२)।	(vx)1
वि [रोमरा] रोम-बुक्त, रोमनवा	रोबिर वि [रोपयित] मैनेनाचा (हे र
् ११ पाम)। सन्दर्भ क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट	tvs) i
शुन [दे] जसन्, नितान (देश १२)।	रोस देवो इत्स । रोहद (१)(वस्था १४)।
[रीर] चीनी नरक-मूमि का एक	रोस र्व [रोप] प्रत्सा क्रोम (हे २ ११
मान (स.४ ४—पत्र २६४)।	१६१) । इन्छ । इन्छ वि [ बन् ] छेप
ा [दे] रक वरीन निर्वेत (दे ७ ११)	(संस्थि २ ३ प्राप्त) ।
भूर २,१ श्रमुपा २३३)।	रोसण वि [रोपण] रोप करनेवाचा दुस्साचीर
[रोह] साठनी नरक इतिही का एक	(स्त १४७ वे युव्य १ १९)।
स्वास (केनेना २४ ६४)।	1 .
्तुं [रोरफ, रौरव] १ रस्तप्रमा नरक-	रोसविक्ष वि [रोबिन] कोपित कुपित किया
री रा दूषस नरनेन्द्रक—नरकानास	हुमा (पत्रम ११ १३)।
य (देवेन्द्र ३) । २. एलप्रदाना ठेएएवी	रोसाज एक [सूज्] मार्लन करना सुद्ध
ानक (देनेन्द्र ४) । १ बाउबी नरसपुनियी	करना। रीतास्त्र (हेरे रे १८ जाक ६६)
एक नररायात नरक-स्वान (टाइ	<b>बद्)</b> ।
ं-पर्देश सम्भ इक्)। रंपीची	ेरोसाजिज नि [मृष्ट] तुव किया ह्या
द-धूमि वाएक नरवामान (ठा४ ४──	माजिला (पाम द्वामा चिय)।
(KX) I	रासिम देवो रोसविज (परम १८) ११
् ई [म्] १ वक्दर मन्त्रहा (१ ७ १४) ।	ग्रींग)।
रत नोबाइत नवनत यानान (वे ७	रोइ सक [स्द्रू] अलग होता। रोहीर
ं अन्य द्वासा सुना ४७६ - <b>नेरत १</b> ४	(488)1
[1]	राइ देवो रूप । संक्र राहिकण राहेर्ड
वर्ष् विराहम्य] प्रतर पश्चर वि	् (क्ला बहु १)।
२ दूब ६ )। के [] (5- )	1 ' '
। प्रे [राष्ट्र] छर-विरेत्र (रित्र) ।	ं राइ पु[रोम] १ वेश ननर मानि नासैन्य ं वे वेशन (कामा १ — नव १४६) अस वृ
देनो समास्य । देशव (१४ १२६	व दूब ११ )। २ स्तावट, रोक पटकल
ज ३६ ब्राप्ट । वह महाः नुर १	
ारे भाँर) । यह राक्षण रीक्साम (पत्रम रेका मुर र. १९४० ६ ११शास्त्रक	
ten de gette e etste ann	ं रोह् र्रुं [राथस्] एक विनास (नाम)।

(सम्पत्त १४४)। (\$ w \$4) t तेवल न (रोवन (रोना (पुर ८,७६)। रोहरा नि [रोधक] वेश शतनेवाता, पटकान दिखान शिपणी व्यन बीज बोना (वन करनेवाला 'रीहक्संकृतीए रीडियी क्यारेख' t) ( (स ६६१): 'रोक्नसंबत्ती क्या कीरड' (सर विवासिक केवो रोआविक (नवना ६२)। t? t t): वेषिक्र विचिवि रे गैमा∎मा≀२ रोहन वेको रोह≕रोग (स ६१४) पुर स्वाधित (वे १३ १)। 22 t t) 1 पेविंद्यन **दि**] देश-विक्षेत्र एक प्रकारका **रोइ**स द्व (रो**इक**) एक नट-चुमार (**ड**स **द्** यान (ठा४ ४ --- पत्र १८३)। 28%)1 ोबिर देखों रोडर (दे⊎ ७ कुमांडे २ रोक्सच्य प्रसिक्सको १ एक केव सहि tyx) i (रप्प)। २ त्रैपशिक सद का प्रवर्तक एक रोबिर वि [रोपयित्] नौनेनाता (६ २. मानार्व (विशे २४११) । tyr) i रोहण न [रोधन] १ घटनाव (बारा ७२) । रोस देवो इन्स । रोहद (१)(पारवा ११.)। २ वि रोजनेवाका (ब्रम्य ६४) । र्रेस पृथिपी प्रत्सा क्षेत्र (**१**२.११ धेइल म [रोइण] १ नइना याधेइल (दुना १११) । इस । इद नि [ बन् ] सेव ४३० वृत्र ३**११) । २ उल्लिस (विशे** १७६६) । ६ व पर्यंत विशेष (स्था ६२) (संस्थि २ ः प्राप्त)। कुप ६)।४ एक शिहरित-कुर (इक)। रीसभ वि [रीपम] रोप करनेवाबा द्वस्ताबीर रोहिज दि देशो रोश्म (रे७ १२ गम (स १४७ वे पूच १ ११)। पर्धारे रे--पत्र ७)। रोसविध वि शिवित् | कोपित स्रपित किया रोहिन कि [रोमित] वेस इसा, 'फेहिक हुमा (पत्रम ११ १३)। पार्वतपुर ठेखें (वर्षीच ४२) नूस १६९ च रोसाज एक [सूज्] मार्चन करना सूत्र \$\$X) i करमा। रीतास्त्र (हेरे रे १८ जाक ६६) राहिम वि [रोहित] र गुवाना हुमा (वार) यद्)। (रुगप्र ७६) । २ ट्रंबीय-विदेष (वे ४) । रोसाजिज नि [मुप्त] राज किया ह्रम्य १ ई मस्य-विशेष (च २१ )। ४ त. एक-माजिल (पाम द्वामा पिय)। निरोप (पश्या १--पद ३३) । इ.सूट-रासिक्र देवो रोसविक्र (परम १६) ११ मिरोप (हा २, ६ )। भवि)। रोहिअंस र् [रीहिवांश] एक होप (श्रे ४) । रोडिओस ) की [रोडिनोशा] एक नधे रोडिओसा ) (सम २७ १७)। पनाम प्र शेद सक [सद्] अलम क्षेत्रा। शेव्धि (घटट) । ["प्रपाव] ब्रह्मीकोप (ठा २ १४ वर्ष ४)। राइ रेको ६ म । संक्र राहिक म राहेर्ड रोदिसप्पनाय पू [रोदिताप्रपात] ह्यू-विरोप (4m (E 1)) (छ २ १--नव ७२)। राइ पू [रोघ] १ वेस पनर मानि का कैय रोहिमा की [रोहित रोहिता] एक नहीं के बैप्टन (कामा १ -- पत्र १४६) बना बू (सन २७) इका झार ३—-पर्च १३ व.)। र दुव १४ ) । २ व्यापट, रोक घटकला । चर्दिसा व्ये [चेदिदंशा] एक नदी (इक) । (पुत्र शासमा ४६) । व वैथ (पुण्ड १ ६) । राहिणिम व [रीहिणय] एक प्रसिद्ध कोर का रोद्द र्प िश्चस १ टट विनास (नाम)। नाम (या ५७)।

नवर्षे बलरेव का माता का नाम (सम रोहिजी की [रोहिजी] १ नज़श-विरोध (धम १४२)। ६ एक विद्या देवी (संवि दे)। १)। २ चन्द्रकी पत्नी (मा १६)। ३ ७ राहेन्द्र की एक परानी (ठा ८---ान मोपपि-पितेष (छत्त १४ १ पूर १ ४२१)। द मह्यस्य नामक विपूर्मेन्द्र की २२३)। ४ मनिष्य में भारतवर्ष में तीर्पंतर

१ शहेला के एक मोक्याम की पटरानों (ठा ४ १--पत्र २०४)। १ शप-विशेष (पत्र २७१ पंचा १६, २६)। ११ नी मैया (भाग)। रमण व [रमण] अन्तरमा (पान) । रोही हम न [रोही वर्क] नपर निरोप (संना ६८) ।

संघ तक [सक्य, सङ्ग्य] १ लांबना.

धविकास करता। २ मौजन नहीं करता।

संबद्द संबद्द (महाः वनि) । कर्मे संचित्रबद्द

(कुमा)। वह संपंत संपर्यत (मुपा २७१

परम ६७ २१)। सह संधिता, संधिकण

(महा)। देश होधर्ड (पि १३३)। इ.

## एक बाग्र-महियो (ठा४ (—पत्र २४)। ॥ इम्र डिरिपाइभसंद्रसङ्ग्याक्ष्म रघाराइमर्सक्ससी वेतीसहमो वरंगे समत्तो ।।

ल

पू [ैशोक] एछल वंद्य का एक सवा

(पडम १ २६१)। हिव ई "भिपी

संकाका समा (उप पू ३७१)। हिषड्

र् [ धिपवि ] बही मर्च (पउम ४६ १७)।

संग्रं की दि ] राजा (बन्स १३)।

कष्य)। की समगा(उन ११४)।

थड द )।

(दुमा) ।

वर्ष-विरोध (बाप्र) । सहस्याने धनका क्षेत्र (मृदि)। सद्देखो स्त्रय = शाः। स्वाप्त विकासित देशाया रेपिस प्रमा हुमाः २ औव में पित्रह्व (दे ७ १० पिट देश मिति।

स्थान प्रिम्पा देन (दे ७ १६) ।

स्याभा को सिविका छना विकासमा

(नार-स्ता ७ यहह स्त ७६४ ही)।

👿 🖞 [ख] मूर्थस्थानीय श्रान्तस्य स्थान्तरः

होनेवासी एक चाविका (सम १६४)। १

- संद्रणा) भी दि | श्रेष्ठा वस्ती (पर् । दे संस्थी 🕽 🗷 रेद) : खडम र् [सङ्घ्य] दूप्र-विरोध वहरूत का यस (मीत वि १६८)। स्त्रह रे पूँ [स्कुट] नवकी साठी देश नदर, सउछ । बेटि (वें के १६ नुर २ व बीप)। खास १ पू [सकुरा] १ सनामें देश-विशेष

स्त्रमय र (पूर्व २७४ इक) । २ वृत्री लहुत देख का निरामी मनुष्य । सी (संवा (सावा रे रे-नाम २०- सीया इक)। छंस भी [सङ्का] नवरी-विश्वेत सिर्नतीय गी चनकानी (ने ६ ६२ परम ४६ १८) पण्डो। सप वि [ सप] संशानिवामी (पन्ना

१६)। हुर्स्य की ["सुन्द्र्सी] हुनुपान की

एक पत्थी (चटन इ.स. २१)। सोग

(क्या)। संगर्खि ) **व्ये [सान्**खी ] पत्नी-निधेत संगती े धारपै तता (कृता) । क्षंत्रिम दूंकी [द] १ जवानी सीतन । २ वानापन नपीनवाः चितुस्यद्व वसुचत्री संविधे संवित्तं च (कप्पू)। स्रोत्तन [स्रार्ग्त] दुल्यः द्रीय (दे र २१६) पाच रूप रूपा)। लेग्छि वि [सार्ग्[श्य] पुरुवशया, वत

हांगोस देवो हांगुन (पुण्य १ क) ।

स्रोतः ृ पूंडी [छह्न] वहे बांस के अपर खेल क्षेपणिक (से २ ४४) क्षेप (इसा १ श्रीसा । करनेवासी एक नट-वारि (खावा १ (#) i १---पत्र २, पर्यह २ ४---पत्र १६२३ धीपः संघमन [सङ्घन] १ धतिस्यल (सूर ४, १६२)। २ म मोजन (इस १६५ टी)। लंगा न [साहम] हव विशेष वहीं संघि वि [शक्तिम्] संगत करनेताला (रुजू)। श्रंबनाए स्या (वर्मीव २४) है १ ११६ संपिभ वि [स्रिह्नित] जिमरा संवत किया क्षंग्रक्षि पु [साम्रक्षिम्] बनमा वसदेव यना हो भइ (नडड) । संघ दं वि दुःसूद्र, पुतां (१ ७ १७)।

संपा की [सन्ना] पून सिरात सरोप(पाच भएड १ ६-- तम १६ से १ ६२ ७ १० नुपा६ क)। संबिद्ध वि [स्वक्रिक] बूबयोर, रिराव ने कर कान करने गाना (बा १)।

संज्ञुबक [स्रम्यः] १ त्रोबना, कोहना । २ क्मॉबर्ड करना । कर्म, संदिश्वह (दननि < {Y}) I

मंद्र र्र [सम्द्र] चोएं वो वृष्ट वादि (विद्य १ १--एव ११)।

पानेवाको योहरण की एक पानी (बैठ ११) १३ एक समाप्त की की (का ७२० ठ)। करनाजिय कि स्थिताजिक स्वस्थ्य १ सम्बद्धी का सातकार। २ तकाल-मुक्क (पुरा ११६)। सम्बद्धा मा १ ई (स्वस्माम्) विकास को बार्

स्रक्षमम् । हुनी रुदाम्दी का एक बैन मृति ग्रीर प्रचाकार (मुना ६४८) । स्रान्ता स्री [स्टाक्ता] नाव ताह सनु, चनका

छन्नसाक्ष्य[स्त्रम्यात्र २४ व्यक्तः ४) । - कृष्णिय वि[ँकृष्णिय] ज्ञाच से रैना हुमा (याम)।

छिष्मित्र अपि [छिश्चित] १ बाता हुमा। २ पद्देषाता हुमा। १ देखा हुमा (पद्धक्त ताट ---रता १४)।

क्रम म [में] निकट पास (पिम)।

सर्गत्त में स्थिपण्डी वस कांत्र (पंचा १० १९ स १११)। साइ वि [शायिम्] वस वस्तु की तथ्य सेनेपासा (क्यू २ १— पन १ प्रधीन क्षत्र पंचा १० १६ का म्हार्य-व १९६९)। साम न [सिस्त] म्हार्य-विकेश (भूता मर्थ)।

स्युद्ध देवी सउद्ध (बूग १०१) ।

क्षमा महित्रा ] स्वत्ता, तीप करता वर्षक करता सम्मद्द (है ४ २६ ४२ ४२२ भक्त ६ माम्रा उत्त)। ग्रींक स्विमस्य सम्मद्द (है १ १२७)। क्ष्मांत्र क्षममाम्मय (क्षेम्च ११२) कर ६६६ मा १ १)। व्हें कमाण (ह्म ६६) व्हिमानि (पा) (है ४ ११९)। इ. व्हिमानि पार १ ११२)।

स्रम्म वि]१ विकार वि सवटमान, सम्बद्ध (वे ७१७)।

क्षात क [स्रान] १ केन वर्षक प्रशिव का उक्क (पुर २ १७ । मोह १ १) । २ कि चैकतः सक्द (वासः कुमा सुर २ १९) । १ पुंस्तुति-साठक (१ २, ६ ) ।

सम्माग न [स्थान] सेन संबन्ध 'कापाय अस्यक्राकावरोरा' (नुर १२ ४४) उन १६४) १६०)। क्रमाजय पूँ [स्टम्सकः] प्रतिभू नमानतः करतवासाः वामीन (ग्राम)। सम्मृण देशो क्रमा = नय। स्रमम्ण देशो क्रमा = नय।

२ सोव की एक निश्चि विशेषे प्रभाव स मनुष्य होटा बन सरता है 'सेवियम सविसप्रस्पर्धे प्रतिकास्तरि साधवें सर्मु' (कृप २००)। १ विधा-विदेश (प्रवास ७ ११६)। स्वव्य न विदे तुरु-विश्चेय गस्ट्रत तुरु (वै

७ १७)। खब्द्ध देशो स्टब्स ≃ शदम (नार)।

सन्दर्भ देवो छम । सन्दर्भ देवो सनदाम = वत्रम् (वृपा १४) प्राट २२ नार—नीत १४) ।

स्वन्द्वि ) की [स्वस्ती] १ संपति वैनन। २ स्वरुद्धि | पन कृष्य। १ कास्ति। ४ धौपम विरोप। १ प्रवित्ती वृत्तः। ६ स्वस-पीर्मी। ७ इति।। ८ मुका मोती। १ स्वनि नामक

क्रोपनि (कुमा प्रकृति निर्मात स्थाप स्थापनि (कुमा प्रकृति है है र रेप)। १ शोमा (से २ ११)। ११ विष्णुन्तस्यि (पाम से २ ११)। १२ एक्सा की एक पक्ती (पत्रम ७४ १)। ११ पृहसीक की माठा (पत्रम २ १८४)। १४ पृहसीक

७२)। ११ वेद-सर्विमा निरोप (छामा १ १ टी-पण ४३)। १९ व्हस्प विरोप (विम)। १७ पुरु महिल्य-सर्वी (७२६ टी)। १८ किवारी पर्वेत का एक पूट (एक)। सिक्कार्य पूर्व सिक्कार्य] मानुकेत (परम १७ ७७)। सह वर्षी मिनीहों १

ब्रह्न की समिद्धात्री देवी (ठा २ ३---पत्र

(२०) । ताब पूर्व (पर्वत १० १७)। सह की विस्ती रे. इस्ट व वामूर्व की माला (चम १४९)। २ ग्याद्व व कम्बती का की राम (सन १४९)। सहिर म [मिनिया] नगर किरोग (सुना ६३२)। यह पे गिलित कस्ती का स्वामी

६६२)। यह पूँ पिति] सक्सी ना स्वासी भीडप्प्य (प्राप्त १): बह की [बनी] यसिया क्षक पर पहनेवाली एक विरहुमारी

देश (ठा ८—पन ४३६) इक) । हर तू [ अर] र नामुदेश (पत्रम ६८ १४) २ खत्र विरोध (पिंग) । १ न नगर-विरोध (इक) । खमुक (बारो) वैनो रज्ञु = (१) (नण-

रस्तु)। स्टब्स् सर्व [सरज्] शरणानः। नश्जदः (दशः सहा)। नर्मे, सरिवरणदः (द्वै ४ ४११)। नक জন্তির জন্মদাস (রং দুংখ্য দর্ দাশা)। ক জন্মিসিন্ন (বি ११ २८ আমা १ ⊏—সং (४१)।

स्क्रम् ) न [ख्व्यम्] र रास्म नाम स्क्रम्रम्य∫ (सामः राम)। र नि नामा भारकः कि एतो सम्मण्यं में पर् रिण्यद्वसीले पनायमाले पमले नां (सुगा

२१ ४ मिन)।
छक्ता की [स्रक्ता] १ नाम रारम (सीय कुमा प्रापू १६) मा ६१)। २ स्टब्ट-किरोप (पिय)। ३ संसम् (सम २ ४) सीत)।

खजापद्वतम (गै) नि [खज्जयित्] तनाने-नामाः चुनद्देसमञ्जापद्यतमें (मा ४२) । खज्जाक नि [खज्जातुं] नज्जानाम्, शर्ममदा

(वर १०१ की)।
सञ्जाल । स्थि (सञ्जाल) र नतानिस्तेत सञ्जालुका। नागर्वती सग्वत्यी पूर्व्या सञ्जालुक्ती (यह है १ ११११ १०४)। २ सम्मातामी सी (यह है १ १११ १०४) सुर १ १११ मा १२७ मा १४१)।

क्षत्राव्यक्षा को [व] क्षत्र-गरिकी की (पर्)। क्षत्रास्त्रर ) विकित्सासी सरमानीस

कञानुहर ) नि [कञानु नगारीन कञानुहर ) रार्धनदा । की री (मा ४६२ ६१२ म)।

ভজাৰ দক [ ভজ্ম] হাংনিয়া ৰদানা নাৰানা। দকৰানিং ( ধী ) নাং—মুক্ত ং ) চ ভজ্জাৰখিজ (ও ৭২৫ সৰি)। উজাৰখা দি ভিজ্জানী হাংনিক্য কংগৰানা ব্যাহ ২ ২—শৰ ২২৮)।

स्रजाविय वि [सन्दित] सम्बादा हुया (पएह १ १—यम १४)।

स्रोजित्र वि [स्रोजित] १ सरमानुकः (पाप)। २ त नग्ना शरमः 'तसरिनमं मण्योपि पवित्राण्' (पा १४)।

स्रिक्तिर वि [स्रिक्तियु] सम्बान्धीन (हे क् १४४१ सा १४ - दुमा सम्बाधा स्वि)। स्रो. री (ति १६९)।

क्षामुळी [राजु] १ रस्सी सबुधी सेबुधी या सेबुदा २ कि रस्ती तो त्राप्त स्वस्त सीवा 'वाई सम्बुद कभे त्रवस्ती' (परह २ ४—पत्र १४६ मत)।

**4**22 काजु नि [सञ्जापन् ] सरकारालाः 'एगखा-स्तिको सम्बूपाने प्रस्तिको वरे (रुस ६ tw) | सञ्जु देवो रिम्हु = ग्रह (भग) । साम देवो सम । छक्त ) व वि ] १ बाधवाध साविका छैल स्रत्यो (पर्मा ११)। २ दूसुम्मः चहुमन यला (रे ४ १७)। सहा ही थि छहा दान्य निरोप दुपुम्म भाग्य (पव १६४)। स्कृत की [सन्धा] १ दत्र विकेष (दुमा) । २ पुनुस्य (बहुर) । ६ मीरैया पक्षि-विशेष । ४ भ्रमर, भींच । १ वत्य-विशेष (\$ 3, XX) 1 स्टक्षि विरेशमध्यकः (१७ २६)। र मनोहर, गुन्दर, राज (दे ७ १६ पाछ खाबार र पल्द र ४ नुस्र १६ कुन ११ सु ६ पूजा १४। सार्थ २१। वस र, नुपा ११६)। ३ प्रियंत्र प्रिय-मापी (१ ७ २६) । ४ ब्रजान धुष्याः 'वासिक्लो प्रवर्णी समावि पानिष्ट्रसङ्ख्या (का ७३० दी)। इंत र् [ैश्रम्त] र कैन सुनि (पनु र)। २ हीय-विरोध एक बन्धारि । ३ हीप-विदेश में रहनेवाला मनुष्य (ठा ४ र---पव २२६ इक)। स्टूरी की [रे] मुन्दर, रमलीय (दूब २१)। कड़ि की सिद्धि शासी छाते (बीर कुमा)। सदिश न [वे] बाय-निरोप अद्वादि नहिएत भोषा भाग्यं साहिति (मुन्त १ १७)। संदर् नि [दे] १ राम गुन्दर (७ १७) नुपा ६ विरि ४७ वक्ष्या वस्त्र सीच वच्छ नुमा देवा २६६ ततुः अति)। २ तुस्तार, कीमन (बार ७६५: अवि)। ३ विदान चपुर (रे ७०१७) । ४ प्रयास मुख्य (बूना) । सहद्वारमञ्जल [व] विचटित विदुक्त (**₹**♥ ₹ ) i संदर्भा भी [व] वितायमी भी (वर्)। सहास देनो पहास (बाङ्ग ६०: पि २६ )। स्रकृत न [वे] नाइ सोद प्यार (वरि)। सर्द्रम १५ [सर्द्रम] नह् नीतन

सब्दुग ∫ (नाद∀!) बरी ३। पूत्र २ १ मौरापाम ४ ४० स्वर १७३)।

सन्द्वार वि (सन्दन्नार) बर्ड वनले वाला इसवाई (दूम २ ६)। श्रद्ध सक [स्सू] स्मरमा करना पाव करना । नढद (हु ४ ७४) । वह स्वर्धत (कुमा) । सदिश्व वि स्मित् । याद किया हुमा (पाम)। सम्ब वि दिस्तरम् । विकास सम्बत् (यम १६७ क्ष. ४ शे बीच क्ष्यू)। २ बस्य भोडा। ६ न लोडा मातु-मिरोप (डे.२ ७७: प्राक्र ( ) । सन्त वि [स्मा, स्विपत] तत्त, कवित (गुपा 38Y) I ुक्की **हि**ी १ लाउ पार्क्या-प्रहार BTI: स-चर्ञा (सपा १९० छ।२ ६ —पत्र

६६)। २ भातोध-वितेष (छा२ ६ भावा 2 22 4)1 धन्य ₁ (मा) रेखी रयण = रत्न (मनि सदन } रेव∨ प्राकृ र २)। खद सक वि । भार करना बीम बलना, मारना प्रमणती में चारन । हेरू छहेते

(मुपा २७३)। स्वरण न दि । मार-शेप नावना (स ११७) । सदी की दि] शानी साथि की विहा पुत्रचंदी में सीचें (मुपा १३७)।

स्रद्धानि सिम्प्यी प्राप्त (बन्धः स्था सीपः B 4 33) 1 सदि ही [सब्जि] १ भगोपतम बान माहि के बाकारक कभी का वितास बीर स्पराधित (विशे ९१६७)। २ साम<del>र्थ्य विशेष</del>, श्रोब म्पनि से बात होती विक्ति राफि (पव २७ ; संबोध २४) । ३ सक्रिया (पण्ड २

र—नन ११)। ४ प्राप्ति साम (मन २)। र स्प्रिय धौर मन से श्रोतेवाला विद्यान युत बान का क्रमयीन (विशे ४६६) । ६ योग्करा (प्रश्नु) । पुद्धाञ्च 🕯 ["पुद्धाङ] मन्त्र-विरोध संबद्ध पुनि । प्रवाहशास्त्र करने दुविखान्त्रा चह्रवद्गिपवि बीख् । तीय् बाह्रीह

बुधो विद्वालाधी (संबोध १)। स्रदिश रि [मध्य] प्राप्त (रे ६१)।

ভতিত বি [ ক্ষমনৰ্ ] থাৰ-বুক (বৰ t w) (

सर्थे सङ्ग्री स्नाचन।

क्रव्यसिया और दिशेशवधी एक प्रकार का पहरूप (पष ४)।

स्वयंत्र गीचे देखी।

खस सक [स्रम्] प्राप्त करना। सनद शमप्(प्राचा क्य विशे १२११)। सबि. विकासि समिन्धं समितवामि (वय मञ्चा रि १२१)। कमें काममह सरमह (महा १६ हे १ १८७ ४ २४६ पूमा)। संब समिय सन्तु सन्दुल (वेच १ १६४ गामा कान)। हेड स्ट्रेड्र (कान)। **ह. सक्स (त्राह्म २, १) विशे २०३७) सुपा** ११। २६३ त १७२, वस)।

सम्ब सक स्थिती प्रहत्त करना । नएइ, नर्गति (इप) । कर्म-सद्भवद्, सिन्बद् (स्थि। शिरि ११३) । बहु खर्बत (बरुवा २०। महा सिर्दि ६७१)। संक्षः स्त्रः स्वर्धन স্তথ্যিতা (মণ) (থিয়া মৰি)। ইবা छे⇒सा।

छय न 👣 नव-सम्पति का भाषत में नाव बेते का परसव (वे क १६) :

स्य देवी स्वय = सथ (नदेश दे X (Y) ! क्य प्रक्रियो १ ल्वेष । ९ सन की साम्बा-बस्पा (पूना) । ६ बीमता वज्ञीनवा । ४ तिरोक्कम (विसे २६६६): १ संगीत का एक मेग स्वर-विशेष (स ७ ४) इस्म (45 t

स्रय देवो सन्ता। इत्यन ["गुद्दः] नतः-फ़्ह्र (दुपा ६०१) ।

स्य पुं [सप] तथी वा स्वन-स्वनिनितेत। समान सिप्ती पेन काम्यका एक नेद (इप्रति२ २३)।

स्रयंग न [स्रशाह] संस्था-निरोप शीएसी बाब पूर्व पुन्ताल सनसङ्ख्य पुनवीरहर्य

सर्धगर्माह होद' (यो २)। क्रमण वि [वे] र च्यू, इन्छ, साम (देश

२०। पाप) । २ पुदुको मजा। ६ ज वाही लता (वे ७ २७)।

स्थम न [स्थम] १ विदेशीप विश्वना (विदेर १७३ के ७ २४)। २ शतकात (गुर १२६) । १६मी संघ (ध्या)। स्रवयी स्पे [वे] बढा नहीं (पाप वर्)।

सम्बद्ध वि स्टिक्समृत् | बण्यानानाः व्यवसान द्यारियो सण्य याने मनियमो वर्र (उत्त ६ ₹•}ı

सम्बद्धाः रिकार् ≈ श्रूप् (मन)।

कामः देशो सम ।

धकः ) न दि∏े र चस्चस सार्दिका ठैवा **ध**रुये ( (व्यॉ रेर) । २ <u>५ सम्</u>यः 'सहस्य स्ला' (दे ७ १७) ।

स्त्रा औ [दे सङ्घा] वास्य विशेष पुषुष्म भाग्य (पम ११४)।

क्ष्माक्षे किट्या १ क्ष्प्त-किरोप (क्रुमा) । २ कृतुम्ब (इस १)। १ मौरैया पक्षि-विशेष । ४ भ्रमरः भीषः । १ वाय-विशेष

(**दे** २ ११)। स्ट्रहर्ष (दें) १ सम्बासक (देश २६)। २ मनोहर, नुन्दर, रम्य (रे ७ २६) पाम कानार रेपच्या रेश मुर्ट रेश कुत्र ११ भू १ पुण्ड १४) सामै २१३ वर्ष ३ सूपा १३६)। ३ प्रियंत्रक प्रिय-काषी (के ७ २६) । अ ब्रचान मुक्क 'चमियम्बो मनराहो समापि पाणिह्रसङ्कृत्स**ं (अ**न ७२० दी)। देत ने विकार के मिन प्रति (यन १)। २ शिष-विशेष एक मन्त्रशिप। ६ शोप-विशेष में एलेवाला मनुष्य (ठा ४ २---पण २२५ दक्)।

सर्री के वि चुन्दर स्वलीव (इस २१ )। सद्भि सौ विष्टि नाठी छन्नै (पीतः कुपा)। स्ट्रिश न [बे] बाय-निरोप 'नेट्राह बद्विपूर्त भोषा फनवं साहिति (गुनव १ १७)।

सहरू नि हि । रम्म, सुन्दर (७ १७ दुना ६ विर्दिशकः ७३: पदा धीरा कव्यः बुमा हेवा २६२८ हका मीर) । र सुकूमाए, क्रीमन (क्राप्र ७६१) प्रति)। ६ विदर्व पशुर (वे ४०१४) । ४ प्रवाश पुत्रव (दुमा) । सम्बद्धसम्बद्धमा वि वि विवरित विद्वार (**₹** ♥ ₹ ) (

खड़हा भी [व] वितासारती भी ( वह )। सदास देवो पडास (प्राप्त ६०: वि २६ )। स्रक्षियन [क] बाह छोड़ प्यार (बिंह)। **बर्द्रभ**्षं [बर्द्रक] नह् योस्ट सन्दर्भ कि रेप्रावरी र दूब र द धरित्रपत्रमः ४ ४० स्टि १३३) ।

संद इयार वि सिद्द सफकार] बद्द बनाने-शाला, इचवारै (दूम २ ६)।

अद्ध क्षत्र [स्सू] स्मरता करना, भार करना । द्वद (हे ४ ५४) । वह सर्वंद (कुमा) । श्रक्तिभ वि [स्मृत] याद विमा हुया (पाम) । क्षत्र वि दिश्यक्त १ विकास मध्या (सम १३७ इत् ४ २ चीपा कप्पू)। २ घस्य कोबा। ६ न लोहा कलु-विदेष (है २ ७७३ प्राष्ट्र १८)।

श्च कि (जिस श्रापित) एक, कवित (पुरा २३४) ।

्र भी [दें] १ भारत पार्ष्यि-महार छ-चमा∫(दुना २३०० ठा२ ६—पन ६६) । २ मावोक-विशेष (दा २०६ माण

7 11 1): श्चरूणा, (मा) **रेखो** रमग≂रात (मीर अञ्चल रिश प्रकार र}।

धर सक कि । बार परवा बीम्ड शलका, मानगः प्रवर्धती में 'सास्तु" । हेक् छरेते (मुपा २७३) ।

**स्ट्र**ण व [दे] मार-क्ष्य सारमा (स १६७)। सरी भी [दे] शभी सादि की चिता प्रवचकी में सीव (तुपा १३७)।

**स्टब्स् [स्टब्स्य]** प्राप्त (भयः **स्ता सी**यः ₹ ₹ ₹ ₹ **1** फ्रिक्सि सिम्बि । सबोलस्य बाल गावि के पानारक कर्नों का विभाश और क्यशान्ति (विदे २११७)। र सामस्य-विकेष शोध मानि से प्राप्त होती निरिद्ध राजि (पन २७ मेंबोब २ )। ३ महिमा(पर्छा२ र---पन ११)। ∨ प्राप्ति आरम (दन २)। १ इन्द्रिय और सब से होनेवाला विकास मुख क्रान का क्याबीन (विते ४६६)। ६ योग्यस्य (प्रयु)। पुस्तक्ष र्यु ["पुरुपक] मन्त्रि गिरीय संप्रय चुनिः न्त्रंगाहतास्त्र ग्रज्यो पुष्टिखण्या पद्माद्रिवाचि कोष् । शीर् बजीह

मुमो सम्बद्धामों (संबोध २ )। स्रीहरू विस्थिती शाह (५ ६६)। स्टिब वि [ स्टियमन् ] समिन्द्रः (वेच

t w) i स्टर्भ सर्व के स्था

क्रव्यसिया की दि वर्गा एक प्रकार का पद्माय (पष ४)।

स्वयस्य कीचे हेको ।

सभा सङ्ख्या । सभी प्राप्त करना। सभा बाधर (माचा क्य मिरे (२११)। मनि वाश्विती समित्ये समित्यामि (उन महा पि १२१)। क्ये बन्द्रह, कम्पह (महा १६ हे १ १४४। ४ २४६। जुला)। र्गक्र क्रिय सन्दुर्भ क्रक्कूण (वेश ४, १६४- मानाः काल) । हेब्र. संयुक्ते (काल) । 🚛 छक्रम (पराहर, १) विदेर ३७ दुपा ११३ २६३ स १७४, सस्र)।

स्मय एक [स्र] बहुरा करना । सप्त, वर्गीय (उप) । कर्म-सदण्यद, विरुद्ध (परिः शिरि ६१३)। यह स्वर्शत (वण्या २०/ सभा विर्दि १७३)। तक स्वा संपर्वि क्रप्तिप्पु (घप) (दिया समि)। देखो से व्या

स्वय न दि । नश-सम्मति का शायत में नाव बेने का जरसक (वे ७-१६)।

छन देवो छच ≕सव (पर्चड रे १, १४) । क्षय दु[लय] र स्वेप । रै यन नी सम्माः नस्ना(कृमा)। ३ बीक्ता तक्कीनता। ४ तिरोज्ञान (मिसे १६६६)। इ.चंधित का एक और स्वर-विशेष (ब ७ ४) इस्य 234) i

क्ष्य देवी छन्। हरम न ["गृहक] बर्गाः भूक (द्वा ३०१) ।

क्षय र् [क्षय] तुली का स्वत-कानि-विरोत। "सम न "सम् विभाविष्य का प्रवासिक (वसमि २ २३)।

स्रयेत व स्थिताही संस्था-विशेष कीएसी बाब पूर्व शुन्दास सम्बद्धाः पुत्रशीरपुर्ण सर्वक्रमङ्कोद् (यो २)।

स्रदम वि[वे] १ तनु, इन्त वान (वे भ २७) पाप) । २ मृदुकोमळा। ३ व वाही बता (दे ७ २७) ।

स्रमण न [धमत] हे विद्यासन विद्रम (विश्वे रच्याका के ७ २४)। २ धवस्यल (गुर ३ २ ६) । ३ वेबी संध्य (राज) ।

धपणी भी [दे] बदा, धुन्नी (पायः वर् )।

स्पर्देप यह [वि+सप्] विसाप करना, ! विक्त होकर रोगा । सासंपद (प्राष्ट्र ७३) । सार्विपिन्नन [दे] १ प्रवासः । २ वर्तीनः। ३ श्वासन्दित (दे ७ २७) । ब्यक्रीस देवो स्मर्रुप । नार्नमइ (प्राष्ट्र ७६) । ब्रास्टम् न [ब्राव्टन] स्तेष्ठ्-पूर्वेषः पानन (परम २६ ६६)। बारुप्प देवी खार्डम् । सातपद (प्राष्ट्र ७३) । द्यद्रप्प सक [ब्राप्टप्यू] १ भूव वक्ता। २ बारवार बोलाना । १ महित बोलाना। ११) । मुझा बल्लाद (सम १ १ स्पष्टप्रमाण (उत्त १४ १ : घाचा) : स्रास्ट्रपम न [स्रास्ट्रपन] वर्षित बरुपन (पएड् १ ६--पण ४६)। द्यक्रम ) देवो सार्वप । सामन्मह, शासन्हर स्रालम्ह् } (प्राइ-०३) वात्वा १४ )। स्रस्थम (स्रस्ट्राड) नाता नार (दे**र** 1(33 स्राप्तसः वि [दे] १ मृतु, कोमचा २ व्योग इच्छा (दे ७ २१) । स्थलस वि स्थितस्य । सम्पट सोकुप (पाम ₹¥¥₹)। खास्त्र की [खास्त्र] भार, मुँह से निरता कर क्षत्र (ग्रीपः या ४.१.१ कूमा सूपा ४२६)। खादिल क्षेत्र खदिल कृतुमिमहर्षिक्छ क्रुप्रबद्धवरिरम्बासियंगीयो (यउ४)। स्मिविक्य वि [स्मिक्ति] स्मेश्च-पूर्वक पासित (मिषि)। स्पष्ठित (प्त) पू [नाळिच] ग्रह-विशेष (पिय)। स्मक्रिद्ध वि [ ब्यख्यवस् ] नारवाचा (मुपा 298) I स्मव प्रक [स्थपय्] दुसदाना नद्दनानाः। नावप्रया (सूच १ ७ २४)। स्पन्न देवा स्पन्न (उस ६ ७)। व्यवंजन हि | पुरुषी तुस्स विदेश हरी ६ बब (रे ७ २१)। स्मदको पुंक्षिप्रको १ पक्षि-विदेश (दिया सावत है र ५—वर्ष ७३३ पराहर् र र— पण व) । २ वि काटनेवासा (विशेष २ १) । स्पर्वाणाञ्चानिक स्थितिक स्थितिक स्थानिक (विषा १ २ — पत्र २७)।

सायण्य ) देशो समयण्य (धीपः रंभाः कसः स्प्रवृत्त रेमि ६२३ भवि)। लावय देवी लावग (उना) । स्रविय (घप) वि [स्रव] सामा हुमा (स्रवि)। स्पर्धियाची वि] उपतोमन (सूम १२ t (a) 1 द्ध चर वि [द्धिवृत्] काटनेवाता (सः १४१)। स्प्रसंसक [लास्य्] नावनाः सापेति (चय t t) i स्प्रस न [स्प्रस्य] १ मध्तराज्ञ-प्रसिक्त येयपद मात्र (कूमा) । २ मृत्य, नाच (पाष) । १ की करनाचा ४ वाच दूरव और गीठ का समुद्धाय (हे २ ६२)। खरसङ् १ १ [खमक] **१** एवं गलेनाता । स्मसमा र जय सम्बं बोर्सनेकामा भाएक (शामा १ १टी—पण २ धीम परह<sup>9</sup> y = qq ₹ ₹ ₹ 4 444) 1 द्यासय पुंदियसक इत्यासकी १ मनार्थ देश-विद्येष । २ पूजी सनाये देश-विद्येष का खनेवाला । इसे. एस था (धीय खामा १ १---पद ३७ इक ब्रेड)। देखो इद्वासिय। सासर्याधहरा है दि व्यसर्वाधहरा] मनूर, मोर (१७ २१)। छ।इ.स. [ भराम् ] प्रतताकरनाः नाइइ (हेर १५७)। व्याह देखो छाम (छन हे∀ १६ मा १२ लामा ₹ ₹.)। स्माहण न दि] भोज्य मेद, बाध वस्तु की मेंड (दे क<sup>े</sup> २१ ६ व सिंह कददी। रवा १३)। स्प्रहरू देको जाहरू (से १ २१६) दूमा) । सम्बद्ध हैको सम्बद्ध (किराट १७) । स्मह्बि देवी त्यपंति (मनि)। साहविय केनो सापविश्न (धन)। सिक्स सक [स्तिप्] नेपन करना भीपताः। विषद् (प्राक्ट ७१)। खिल वि [जिस] र भीपा हुम्म (पा ४२=)। २ त. सेप (प्राक्ट ७)। विभार दें [सुन्धर] सं वर्ष (मह ६)। क्तिंक दृद्धि बला बड़का (वे ७ १२)। (उंकि अपि वि] १ माधित्व । २ सीन (४ **७** २व)। किनय देवो संस (गुपा १८६)।

छिंगसक [छिक्ग्] १ पातना। २ पति करना। १ माजियन करना। कर्म मिनिका (संबोध ११)। (छंगन [कि.**ह**ि? विक्र निरामी (प्रासू २४' यतक) । २ दार्तिनकों का वेप-कारण साचुका धपने वर्गके धनुसार केप (कुमार विदेश्यद्रक्तिकात्र १--पण १३)। ३ ब्रनुमान प्रयास का सावक हेतु (विसे १४४)। ४ प्रस्थित पुरुष ना ससामारण विष (गुउड)। १ शस्य का वर्ग-विशेष वीसिय स्नादि (कुमा राजः)। द्वाय पूर िध्वज्ञी नेपनाधी सामु (उप ४०६)। खिव प्रतिवी नही धर्म (ठा**०१)**। बिर्रगिक [बिक्किम] १ साध्य शतु ध वानी बाढी बस्तु (विसे १४३)। १ किसी धर्मके वैप को घाएल करनेनामा सापुर धन्यासी (पत्तन २२ ३ सूर २,१३)। 🛍 ण। (पूष्ठ ४३४)। लिंगिय वि [स्वेक्टि । मनुमान प्रमाण (विते ११)। र विती वर्ग के वेप की वारख करनेवासा साब्द्र सम्यासी (मोह ११)। **किंद्र न** वि. १ फुस्ती-स्थान फुस्क्य का म्बन्धमः । २ व्यक्ति-विशेष (ठा ६ टी--पत्र ४१३) । देवो किस्का। सिकान [दे] १ इतमी साथि की विहार प्रवर्णी में नीवं (साबा १ १--पत्र ६३ क्य २६४ के ही २)। २ होबस-पहित पुरानापानी (पर्याहर, ४—पत्र १६१)। सिंडिया की दि ] यत-वक्त धारि की विष्ठा, सेको पुजराती में 'सिकी' (छर दू २३७)। स्टिंद देखों है = बा। क्षिप सक [िछप्] सीपना लेप करना। मिपद (हे ४ १४६) शक्त ७१)। कर्ने भिष्यद्र (भाषा)। बङ्क-स्थ्रियेसाज (ग्रामा १ ६)। भन्न छिप्पत्त, व्रिप्पमाञ (मोममा १९४, रक्श २१)। किंपण म [स्रपत] हेप बीपना (पिंड २४६) दुपा ६१६)। र्जिपाबिय वि [स्टेपित] बेप करामा हुया (इप्र १४ )। क्षिपिय वि [किध्त] बीपा हुमा (हुमा)।

सद्ग र् [र] वाबी चन्न में पैच होनेकाता हीनिय बीट-विशेष (जी १४)। स्क्रप्रविस्थानी १ साम प्राप्ति । २ प्रदृष्ट लीगर (मा १४)। सक्रर व स्थिरो एक विख्य-पुत्र (मुगा 4 (w) 1 सद्धि । सी [सदिर शि वर्षन नक्सेन सक्रों } (क्या प्रानु ६६ दुमा)। स्वापित्र रि [श्रीमान] प्राप्ति प्राप्तरप्रमा हमा (इप्र २६२) । स्वित्रभ देशो सन्द्र (ग्रप्प रिम)। र्खाइम स्त्रो स्विम (पर )। द्धर } वि [इ.पु] । म्होटा करम्य (दूमा सर्देश } नुगाँदर्गनम्य ७२ महो)। र इसका (ग ७ ४४ पाम) । युष्य, निःसार (पद्या १ १ --- पत्र २ पण्डु २ २---पन ११६) । ४ रूपापनीय प्रर्शमध्य (ने १२ १३) । ४ बोहा धन्य (सूपा १४४)। ६ मनोक्स सुन्दर (हु २, १२२)। की ई भी (यह प्राक्त २०) पत्रह है, २, ११३) । ७ स. इ.च्छापुर सुपन्ति क्यूप इस्म (प्रदेशः । वीरात-पूत्रः (हे २ १२२) । **१ शोध, वल्ये (प्र. ४६** पर्यक्ष २, २—पत्र ११६) । १ स्पर्ध-विधेव (प्रस)। ११ बहरार्श गामक एक क्यीनेश (कम्म १ ४१) । १२ पुँ एक गात्राशाचा सलर (१३ १३४)। कम्म पि विश्वमान् जिलक पत्रा ही कर्में धवरिष्ट धी हो, ठीम मुलिन्समी (नुपा ११४) । इराज न [इराज] स्वराता बाहुरी (खाला १ १--पत्र १२३ वता)। परकम र् [परात्रम] रेशल्ड म एक पराति-देनागडि (ठा ४, १--पत्र ६ ३ इक)। संक्रिकान ["सम्बद्ध] सम्बद्ध-षिशेष अक्ष्य संस्थात (४२म ४ ७२) । क्यू भ वक [स्थ्य स्थु + कृ] बधु राजाः इद्रेटा करुदा। बहुर्जीत, सहुर्जन (बारः) मा १४६) । यहः सहस्रत (न.१६, २७) । समुभवत र् [व्] न्योष कृत बरमद ना देव (t w t ) i स्टुशास्त्र | नि [स्प्रुत] नवु निया स्टुर्म | हुमा नि में में १२ १४ स २ ः स्तर) ।

सहरू देवा सह । सहरा दको छह (क्या इ.४.)। सहया देखी सह । स्प्रदेश विजिति विषय ह्या (से २ २६ वजा ४ )। स्राप्त्रभ वि दि र नृहीत, स्वोद्धत (देण २०)।२ क्यू (के २ २६)। ६ व. भूपा मतदन (द ७ २०)। ४ मृति को पांचर मादिस सीपना (सम. १९७० कम्य मीर काया १ १ टी---पत्र ३)। ५ वर्मार्थ बाबा चमद्रा (दे ७ २७)। श्चाइभव्य केन साय = सावम् । धारक्षत्र रक्षा स्थय = सास्य । स्रान्म विकिष्यी काटने योग्य (दम ७ झाइस वि दि∑िशाजा के थोग्य **थो**ई क वीरव । २ धारण क बोरम क्षेत्र कामक (माचा२ ४ २, १६)। स्रोहत व दि । इपन वेच (६ ० ११)। साप्रकेषी अध्यद (इ. १. ६६: मक कहा यौप)। क्षात्रह्मादय न 👣 योगय भाषि छ मूनि का सेपन भीर बड़ी मर्थर से भीत मादि ना पोतना (एम ३१) । क्षां अरोक (हुं १ ६६ कृमा) । ध्यस्य (पप) देखो सङ्गल – शक्ष (पिप) । क्ष्मग्रं वि देवी प्रश्न प्रकार का सरकारी कर, नयन प्रवस्ती में 'तली' (बिरि४६६ X4X) 1 क्षापन न (आपन) भनुता बोधाई, तहुपन (भव कम्प मुना १ व मुप्त २०७) कियात tt) i व्ययनि वि [स्रापनिन्] बनुता-दुन्त, साधव नावा (क्त २१ ४२) याना)। व्यथमिश्र न [स्थमिश्र विद्वा सोटान, सामन (स. १. --पम. १४२) विन ७ टी. मुद्ध २ १ १७३ घर)। क्षांत्र देवां स्थय = बान (दे १०१)। ध्यष्ठ र्ष [स्मर] देश विरोध (तुमा ६१०- कुम २४४ एवं ६७ शि महि एक इक)। सार्थी की [सार्था] विशि विशेष (विशे ४६४ 4) t धाक्रिजंद (पुर १ ७३) मूपा २४) ।

साह र् [साह] उत्त विशेष यक मार्थ देश (बाबा) पर २७% विवाद ४१) । स्राट वि [वे] १ निरोप शाहर संघाना का निर्माह करनेवाना, सबमी धारम निर्देश (सूच १ १ १ स्थार १)। २ प्रमान पुस्य (उत्त १४, २) । ३ ይ एक 🗺 धाचाय (धन)। स्प्रद्रिवि वि वि वेठ उत्तम (प्रावा⊀ ३ १ स्थय व स्थिती प्रहल भारत (४०६)। स्मयु देजा शास्त्र (वह ) । समे 🕻 [सम] १ नवा प्रमध (रक नुब १६): २ प्राप्ति (स्त ३ ४) । ३ पुर, स्याज (उप ११७)। स्मभतराद्वय न [स्त्रभाग्नराधिक] बाम का प्रतिकृत्यक कर्म (धर्महाँ १ ८०)। व्यभिष्य । वि व्यभिक्री सार्य-प्रकासम ख्यभिष्क र्रे बार्से (धीत क्ये १०)। ख्यम वि दि । रम्य कुन्दर (चीर) । ल्यमंत्रप व [द्] तूक्प∺क्टेब स्टीर तूल बास-पांडर घास नी जड़ (पांच)। समा से [४] शक्ति शहा (१० २१)। स्यय सक स्थितम् । बनानाः नोहराः। साएछि (विसे ४२६) । वक्त स्मर्थत (धरि)। मनइ-स्याद्रजेत (स.११ ११)। संइ. स्पद्धि (घर) (हे ४ ३३१) ३७ ) । व्यय सक [व्ययय ] १ कटकाना । २ काटमा धेला । के बान्बंध्य (ने १६८ वर) । स्मय देवो छाद्रश्र=(दे)- 'कान्ज़ोद्रम' (मीर) । स्रय वि [स्रव] १ प्राच लोइन, गृहेव। २ म्बस्त स्वास्ति (ग्रीप) । ६ व वनव दा एक धीर 'भारतस्रोधपुरक' नरवर परश्चीकृते सप्पें (मृता १ व)। स्यय⊈की[स्थव] १ मधः त्रसुत्तः १ व् भट्ट नान्त भू वा हुमा नाज कोई (क्रप्यू)। ख्यपण व [स्थानन] वयनला (वा ४२.०) । क्षपण्य न[सावस्थ] १ तरीर-क्षेत्रकं विशेष, रुपैपकान्ति (पासः कुमाः सन्तुः पि १ ६)। रवनसम्बद्धाः (हर १७०१)। स्यस्तर [स्राप्तम् ] स्मेश्नर्यक प्राप्तर करमा । भावति (तदुर् ) । कतक

स्त्रक्ष वि दि] सुद्धः सोया हुमा (पङ्क)।

(मा ४६: ११वः गिप)।

₹₹**\$**) (

¥3) I स्र्वं सक [स्रम्ब] १ वस्य स्वास्ता। २ भक्तमन करेना दूर करना । सु चह (मर्बि) । मुका मुचिस (याचा)। र्नुषिम वि [जुड़ारा] केर-रहित किया हुमा मुद्रिया (दुन्न २१२ सूपा ६४१)। बुंझ सक [सूञ् म + सम्ब्रा] मार्जन करता पोंधना। पुचाई हि ४ १ ४ माइ ६७ भारता १११)। यक खेळेट (कुमा)। स्ट स्व [स्वयः ] सूरना । सुरंति (मुपा ११२) । वक्क संटेख (धर्मीक १११) । क्लाइ छिटिकांड (सुर २ १४)। स्टंगर[लप्टन] दुर (पुर २ ४६ हुमा) । सुटाक वि [सण्टाक] मुग्नेवासा मुरेप (वर्नेवि १२३):

खुंठत वि[सूच्छक] बस दुर्वत वहवंद बेडिया जबहुसिन्थमासा सुडगसीयस सस्य कंपिण्यंती बस्मियवरोख' (स्व २ १)। सुंदिय वि [सुण्डित] बनाव नृहीत बबर बस्ती से निया हुमा (पिन)। सुप सक सिप्] १ मोप करना, बिनाश करनाः २ इत्योदन करनाः सुपदः सुपहा (प्राप्त ७१ तुम १ ३ ४ ७)। कर्ने पुणक (मचा) मुलद (मूम १ २ १ १३)। क्रमक्त सर्पता सप्पमाण (पि (पि १४२ उस)। संक्र अधिचा (पि ६६२) ।

स्पर्य वि [स्रोपिय ] कोन करनेवासा (मापा-मूधा२२६)। स्प्रमाधी [स्रोपना] दिनारा (पदा १ १--पत्र ६) । र्थुपित्त नि [स्ट्रोट्यू] सीप करनेवाना (पाना)। र्धुंकी ध्ये [के सुम्यो] १ स्तक्क फर्लोका प्रभय (१० रहः, दुवाः वः ११२ दुव ४६)। र सद्या बस्ती (देश २०)।

सुष पत्र [नि+स्त्री] दुक्ता दिस्ता।

(पुनाः चन्ना १६)।

दुस्कः (हे ४ १६ वह् )। सहः स्टब्स्ट

त्य' (बेह्य ६७३) ।

छ्चा कि [इल्ण ] १ मन्त (कुमा)। २ बीमार रोगी (हेर २)। सम्बाधि सिम्बारी मुरिक्त केरा-पहिड (अस्पः पिष्ठः २१७)। सम्माण देशों छोश = मोक । लक्किल विशिवित द्वा हमा वरिश्व **(क्**मा) । सक्रिय वि [निसीन] पुका हुमा विसा ह्मा (पिंग)। लक्स पू [रुख़] १ सर्च विधेय पूबा सर्च (ठार सम¥र)२ विकटास्पर्शनामा स्तेष्ठ एतित सुवा क्वा (यामा ! t---पत्र ७३ क्य सीप)। देखो शुद्ध ≂ स्ताः सम्मापि विकाली १ मान भागा हुमा (के ७ २६) के २ २३४ २५०)। र रोगी बीमार (क्षेत्र २३४ २६० पङ्)। सच्छ देवो संद्ध = मूज् । बुष्यद (पर् ) । स्कट्ट सक [ खूब्ल ] बुटना । सुद्वव ( पड )। सुद्रु रची स्प्रदु=स्तप्। सुदूद (कुमा६ सङ् वि [सुव्यति] सूटा पदा (पर्मेवि ७) । सद र लिए रोग, देना के पाकिस दुश्रहा (दे ७ २६) । सद्द दवा लुद्ध (माह २१)। लंद पत्र लिठ दिवस्ता मेटना। यह लक्षमाण (सं २१४) । सुंह्रअ दि [सुठिव] नेटा हुया (दुवा ६ १) स १६१) । खण देवो सुध्र ≈ सु । कुछ ६ (हे ४ २४१) । कर्म कुणिन्त्रहः कुन्दहः(शाप्त हे ४ २४२)। चंत्र. सूथिकण सूजकण (त्रा**ष्ट** ६६) पर्) संभेषिय (धरा) (पि १०८)। स्प्रीयाञ्ज वि [सून] नाटा हुवा (वर्मनि १२६) Reft v e) i

लुद्ध र्पु [सुन्य] १ भगव (पर्याह १ २ निकु४)। २ कि कोश्रुप सम्पट (पाधा स्वकृषि [निळीन] तुकाहुमा विताहुमा विपार ७—पत्र ७४ प्राप्तु ७६)। ३ न सोम (बाहर)। स्द्रम सिप्नी सम्बन्धम-विरोध विरासि पद्भाक्तक मुद्र पडमगासि य' (एस ६ ६४) । देखो स्टोद्ध = मोम । लुद्ध पूर्व लिभी धार-विरोध (पापा २ ल पंत लुप्पमाण } रेको खुप। सुरुम , धक [सम्] १ सोम करता। लंभ रिमासकि करना। शुरुमक सुरुमसि (के ४ ११६) पुत्रा) शुमद (पड )। इ र्खामयन्त्र (परह २ ४--पत्र १४१)। ल भ देवो लुद्ध = मृत्। शुमद्द (सीधः ३३)। स्रपी भी दि] बाय-पिरोप ( रे ७ २४)। स्ट देवो स्टब्स । नुसद (पिय) । पद्म स्टूर्सट, क्षुसमाण (तुपा ११ : तुर १ - २६१) । सुचित्र वि [स्रिटिन] सेटा हुमा (बुर ४ (c) 1 लुखिश वि [स्रजित] पूजित चित्रत (स्वाः कुमा काप्र द६६)। छ प्रदेशों सथ ≕ मु। मुप्त६ (पारवा १६१)। सुध्य रेखो सूत्र । खुइ सक [सूत्रा ] मार्जन करता योद्धन्य । मुद्द (दें ४ १ ४ पद् प्राफ्ट ६६; महि) । सुद्भान [माजन] शुद्धि (हुमा) । सुध देखो सञ्ज ≂ पून (पङ्)। सुआ भी [व] मृत-तूप्णा सूर्व-किरण में जेस की भ्रान्ति (वे ७ २४)। सूत्रा जी [सूता] १ वार्षिक रोमन्स्रिय (पंचारेव २०) मुदारे४०३ सङ्घर्ष)। २ जास जनानैकासा कृति सक्यों (धोप १२३३ हे)। सृष्ट [सप्ट्] मृत्या कोरी करता। सूत्रद मुरेष, मुध्द (पर्वति व : संदेश २६: कुछ मुख दि [सूप्त] बीप-प्राप्तः 'क्रोद दुव्हो दबाये १६) । देक सर्दर्ज (पुरा १ ७) धर्मीक

१२४)। प्रयो वह नदार्थत (पूरा ११२)।

१६ हो)।

जर्द किया दे जिल्ला देख-रिकेट, तीन का पेड़ मध्ये में दिन (है रे २३ क्रमा छ रेर)। जिल्ला में [के] र कोस्ता र नम्म (ध्य रेर)। जिल्ला में [के] र कोस्ता र नम्म (ध्य रेर)। जिल्ला (पर) केला जिला करपणी में तिस्ता (हे ४ रेक्न कि रेरक)। जिल्लामा की जिल्ला (हि रहे)। जिल्लामा की जिल्ला (हि रहे)।

४ ११, यर )। वर्षे स्वयंत्रेत (कृमा)।
क्रिम्स्य न स्थित्रयों नेवा विद्यान नित्तर्थ स्थित्रयों नित्तर्थ विद्यार्थ (विदि ४१ ) कृमा ४२१)। देशों क्षेत्रस्थ । स्मिन्स्य स्थान [में] कोटा नोत (देश २१)। स्थान स्थानिक १९)। दिस्स्य स्थानिक स्थानिक

कार्य--वर्षक जाता व ह्या काहा (व. 4. सं 20) व देशरावा-कियरे (इक)। स्थिताय (यरो) यक [क्षेत्रस्य ] विकासना। और शिक्षणारियसं (ति ७)। विकासीय (यरो) विकासीय हिस्सी जिल्लामा हुमा (ति ७)। स्विद्धा तक [स्वित्स ] महत्व करते को व्यापना जिल्लाह (है २ ११)।

बादना । तबबाद (इ.२ २१) । तिच्या रेपो सिंख (ता —पत्र ४२७) । तिच्या वि रेपो सम्बद्ध = नेप्यंक (वर) । तिच्या को [बिप्सा] भाग नी रुच्या (क्य १९ प्राप्त २१) ।

हर आइ २१)। डिज्यु रि [किया] साम की बाह्यला (युव के कुमा)। डिज्यस (या) कि [स्थान] पृष्टित (तिय)। कियुस म [स]। काडु, पुरासक (केक २२)। कि सम्माम सेमूस (मुसा १६६)।

तिट्रु देवो सेट्रु (वनु)। सिम ति [सिम] १ चेर-पूज विदाह्या (११६ पुना चीत्र)। २ चेरिट्ट (तूप १३११३)।

रं व १६)। स्थितिनुको [के] तद्व मादिका देव (है ७ १२)।

जिय्प केवो किस (ग ११७ पर्व)। फिर्प केवो केय्प (गुज १४४)। जिय्पेत कियमाण } केवो किंग।

क्षरभाज } केवो किय । किरपासल व [किरपासल] मधी-धुवन बोज बोचाज बाबाज (धम १६)। सिरमंत्र केवो किय्=लिख् । किशिक्स वि[बे] १ व्हर्ण सात्र । २ वृष्ण

जिन्तिर विक्षिति । इस्य सात्रः । २ वस्य रेपवास्ता साधितितरप्रदेवकरानियेख जोरतु पृह्यत्रे व यो दुर्व दस्य जन्मार्व (वर्गित वर्ष)। जिल्ले । की [स्तिये थी] सकर-केबन प्रक्रिया जिल्ले । (सम्य ११ मन)।

क्रिया १ प्रमा । स्थित सक् [स्थ्य ] बोना सूत्रम रूपना क्रमाः सियद (१ ४ १ ४६) । द्विस सक् [सूय ] प्रक्रिया । स्रवि किस्समाने (सूय २ ७ १ ) । स्थितम १४ (वि विद्युक्त स्रोधा (४ ७ २२) ।

क्रिस देवो क्रिस = क्रिय्। सिस्पीप (तूप

१ ४ १२)।
जिद्ध सक [जिल्लू] १ निवादाः २ देवाः
करताः निद्ध (११ १ स्थ अक्षकः)।
कर्मी निश्वादः (उप)। प्रतीः निद्धानेदः
निद्धानिति (कृष १४ निर्देशकः)।
जिद्ध सक [जिद्धानाः निद्धारं (कृषाः
अक्षकः)। वर्षाति विद्यादः निरुप्ताः

४ २४१)। मुक्त खिद्य (मृत १४२)।

क्यक खिरमांत (देश ४१)। इन्होगम्स (द्यामा ११७—पत्र २६२)। सिद्धम म [सिद्ध] मात्र (दर १ प्रद्रा रंगा १४) सिद्धम म [संद्रात] १ निवामा सेव (द्वा

१६) । र रेबी करण (रंदू ४) । व तिकाशमा प्रदक्तिवाद्वी सद्दर्भी सत्त्वे तिज्ञमन्त्रकारणण्डी (बेरीन १६) । बिहा भी [चेरा] वेदी रहा = चेबाट प्रतक्ति चित्र भा मरण्डी तथ्या बमास्त्र पू (१ प्रतिर बहुर तिहाँ (सिरि ४ ७)।

सिद्धायण न [स्वयन] विश्वनामा (जन ७२४)। सिद्धायिय नि [सरियन] विश्वनामा हुमा (स.र.)।

ভিনেষ্ট্য বি [ভিনিল ] १ বিবাহুমা (মনু ২০)। ২ অনিক্ষিত (জনা)। १ বৈদ কিনাহুমা বিভিন্ন (ছুনা)। ভিনাহুমা বিভিন্ন (ছুনা)।

जिब्र जाञ्ज (यस) वि [ज्यंत] विशा हुया मुद्दीत (यस)। स्रीक्ष वि [ज्येब] ! काटा हुया (युरा स्रोत)। २ स्थ्य 'जीवस्थित' /2 ज्या)

संद्र दि क्रिकेट र बारा हुमा (पूरा ६६१): २ स्वर्ग 'प्रत्यिक्षिर (१ दिश) कुपुत्रवीक्ष्यत्यते (कुप्र १): ३ दुख (पत्र १२): क्रिय दि कि नी बस्युख (कुपा)। क्रीय दि कि नी बस्युख (कुपा)। क्रीय सि क्षित्रकी र विवास मौता २ क्षेत्र (कुपा पाटा प्रस्तु २१): ६ क्ष्य

विदेश (चित्र)। यह की [विद्योग] र विवास्य वर्षों की (प्राप्त रहे)। इक्स्परेस्टर्स (प्राप्त)। यह वि [क्स्सु] बीका-बाह्य (यत्र)। श्रीस्थाइन [सीस्मियित] र सीमा वेस्सि (कप्तु)। २ प्रवास प्राप्तास्य चीमास्य (त्रा र १९ दी)। सीस्मस्य चा [सीस्मस्य] बीका करता।

सङ्ग सःस्वयंत्र (ग्रास्ता र स्थान १६ स्था) । इ. सीस्त्राह्मस्य (स्वता) : सीत दृष्टि । सन्व शतक (१७ १२ पुर १२ २१ त) : सीहा रेकी स्था (ग्रासा र स्थान १४६) इसा स्थल पुरा र १११२) ।

सुभ सक [स्] केरका कारणा। पुरुष्य (पि ४०३)। तुत्र केरा सुंदा दुवर (शक्त १)। तुम वि[सूम] कारा दुवा किस (हे ४ ११क पा या को हे १ ४२।३ ७ १३)

मुर १३ १७६, सुवा १२४)।

सुम वि [युग्न] १ जिल्हा बोर क्लिंग कर्म हो बहु। २ व. सोर (माक ४०)। युम्नेत वि [स्नबन्] जिल्हों सेरन दिसी हो बहु (सल्ला १११)।

चुं कि [रे] दुन बोम्ब ह्या (रे ७ २१) ! मुक्रमी को [रे] दुक्त किला (रे ७ २४) !

सुंदा ई [वे] नियम (वे ७ १३)। सुंख्यम ई [वे] निर्मंत (वे ७ २३)। खंसिक कि कि किनुष मिन (से १% ૪૨) ા र्खुप सक [स्वस्थ्य] १ शस्त स्थादना। २

ब्रानवन करना कुर करना । सु वह (भवि)। मुका कुषिसु (माका)।

संचित्र वि सिक्सित केश-रहित किया हुमा मुस्पिकत (कुन्न २१२) गुरा ६४१) । संद्र एक [सूज् प्र+स्टब्स्] मार्चन

इरता पोंदना। सुबद (हे ४ १ १ प्राष्ट ६७ माला १११)। वह खंडीत (कुमा)। स्ट सक [ रूप्ट\_] भूरता । मुटीत (मूपा ११२) । यक ब्रंटिव (वर्गीव ११३) ।

भनक खेटिकांव (बुर २ १४)। स्ट्रण प [सम्दन] पूर (पुर २ ४३ कुमा)। स्टाक वि [सप्टाक] मुश्रेनासा मुरेश

(बर्मीक १२३)। स्ट्रिंग वि [सुन्द्रक] बच पुनंत भारत्य वेदिया उनद्वरिज्यमासा मुहनसोएस प्रश

वंशिन्त्रेद्धे शस्मिमवरोगु (सूच २ १)। संदिध वि लिण्डित विश्व मुद्रीय, वयर दस्तो से सिया हुया (पिंव) ।

खुंप एक [ खुप ] १ कोप करना, विकाश करना। २ इत्पीकृत करना। सुपाद, सुपहा (प्राक्ट भर सुधार ३ ४ ७)। कर्ने मुलद (बचा) मुलय (सूच १ २ १ ११)। इनह सर्पत जुप्पमाण (वि (पि ४४२) इना)। यह संपिता (पि

६८२)। खुंपह्यु वि [ छोपथितु ] लोप करनेवामा (पापा मुख २ २ ६)। संप्रणाधी स्मिपना विभाग (पद्ध र

१—यम ६) । स्पित कि [कोव्ह] बोन करनवाबा

(भाषा) । ४६)। २ वटा, बस्सी (१७ २८)।

सुंबी ध्ये [वे सुम्बी] १ स्तवक, फर्नों का पुण्या (वे ७ २०- क्रुमा) या १२२ क्रुप सूचा धक [नि+सी] पुक्ता, विज्ञा। पुस्तक (हे ४ ११: बहु)। बहुः छक्त

(दुना, पञ्जा ६६)।

ख्ळा सक [तुद् ] टूटमा। तुद्धर (हे ४ ₹₹\$ 1 लम्ब वि वि । मुद्रः धोया हुमा (पङ्रः)।

स्वकृषि तिलीमी सुकाहवा विसाहण (गा ४९: ११८ मिंग)। रुवा वि [ रूग्प ] १ मन (कूमा)। २

बीमार, रोमी (हेर २)। लुका वि चिक्कियाँ पूर्णिका केश-रहित (क्य विष २१७)। समाग देवी स्त्रेश = तीक ।

स्क्रिकाणि [तुचित्र] द्वरा द्वरा वरिका (•्रमा) ।

सिक्स वि [निसिन] सुका हुमा किया हमा (पिग)। सक्ता व (स्था) र स्पर्श विधेय सुवा स्पर्श (छार समापर) २ विकल स्पर्शनासा स्तेष्ठ प्रीरत, धूबा क्या (स्त्रमा १ १--पत्र

७३ कम भीत)। देखो लाह = इसा

लमा कि विरुग्णी १ मन मौग्रहमा (के ७ २३ हे २ २ ४ २४ व)। २ रोनी भीमार (हे २ २) ४ २६६ पत्र )। सुबद्ध देखो रहेन = मृज् । शुक्धद (पर ) । सङ्ग्रह [ सुष्ट् ] नूजा । मुद्रु ( पङ्र ) ।

खुद्द रक्षो स्थेट्ट≖स्वप्। ब्रुट्ट६ (क्रुमा६ र )। सुद्ध वि [सुण्टित] चुटा यया (धर्मेवि ७) । सुद्ध दू [छोट] रोड़ा देला देंट मादि का

दुकड़ा (रे ७ २१) । ब्बड रेबी लुद्ध (प्राष्ट्र २१)। सुद्ध पक [ लुठ ] तुक्कताः नेटनाः बङ्ग खुदमाण (स २१४)। सुंद्रभ वि [लुठित] वेश हुवा (बुवा १ ३)

# 448) 1 सम रेको सुध = दु । युक्त (है ४ २४१) । कर्म, मुख्यिन्त्रह, सुब्बह (महार हे ४ २४२)। बंक सुणिकण तुमेकण (प्रत्य ६१) यक्) सम्मध्य (का) (वि १६८)।

स्र्विम नि [तून] नाटा हुमा (बर्मेन १२८ सिरि Y Y)। सुच वि [तुम] बोस्त्राक्ष 'क्रेंद्र दुवो इसचे स्व' (बेद्द्य ६७७) ।

तिबु४)। २ वि सामुप सम्पद (पाधा विपार ७---पत्र ७७ प्रास् ७६)। ३ न मोन (बृह् १)। सद्भ सिम्रो क्य-क्य-विशेष सिराएं प्रदूषा कर्म मुद्धं परमयाणि मं (वस ६ ६४)। देखो स्रोद्धा≔ सोम।

र हो।

सुद्धः पुन [छोध्र] द्वार-निरोप (धा**ना** २ 23 2): सूरपंत बुष्पमाण रेकी सुव ।

रुचन लिपेटनी पोधीका माम (भा**नक** 

सद्भ [सुम्ब] १ म्याम (परह १ २)

लुब्भ । धक लिभ | १ मोम करना। छ 🕽 🤾 मासकि करना। सुम्पद सुम्पति (१६४ १४३ प्रमा) सुनद (वड )। इस र्द्धाभयव्य (पर्या २ ५--पत्र १४१)।

लुभ देवो सुद्ध = मृत्। सुमद्द (संद्धि ३१)। ख़रणी की [दे] बाय-विशेष ( वे ७ २४)। खुख देवो सदाः तुन्द (पिग) । नहः सुसंत **ब्**ख्यमाण (धुना ११ धुर १ २६१) । खें ति अपि [क्रिकिन] मेटा हुमा (मुर ४

खंखित्र वि [लंखित] पूर्णित चनित (उपः) धुमा कात्र = ६३)। क्षत्र देख्ये खुआ ⇒ सु । सुत्रह (पहचा १५१) । स्वादेशीस्य। सुद् सक [सूज् ] मार्जन करना वींध्या।

मुहद (दे ४ ९ ४, पट् । प्राप्त ६६, मकि)। सुरुण न [माजन] शुद्धि (हुना) । ल्भ रेपो लभ ≂सून (पर्)। ल्भा भी [द] मूप-तूप्छा मूर्व-किरण में वेस की भ्रोमित (के ७ २४)। ल्शा भी [सूता] १ वार्षिक रोक्सिशेय (पेवारें रक्षेत्रपारं ४०० सहस्र १४)। २ जान बनानेबाला धूर्मि सक्की (ग्रीम \$3\$ \$); सुद्ध [ सम्बद्ध ] पुरता और करका । पुरत मुदेद, मुद्दे (बजीव ः स्वय १६३ रूप 28) । देश- शर्दर्ज (तुत्रा १ कः वर्शिव

१२४) । असे यह नशार्थन (मुख ११२) ।

ल्लादेको सुभा=दून (दे७ २३ पूरा केंद्रश की [क्रेंप्या] बेपन-क्रिया (उत्त १९, १२२: हुमा) । स्प्राव [स्त्राय] १ तून तून नोल नमक <del>केड</del> देवो स्टेड्(पाचा मुख २०२ १०८ (भी४)। २ द्वनस्यति-निरोप (भा२। वर्ग २)। देखो स्टाप । छे । ﴿ छिप ] १ चेपन (सम १८) पक्रम २ कृत न [स्राज] बान्एय गुन्तरका शरीर २ ) । २ व्यक्तिश्रमास्त क्व (योजना ३४) । गान्ति (मुग्र २८६)। १ ई मक्कान् महाबीर के समय का बालंडा-लुरसङ [कि.सू] काटना। सूरद (३) ४ निवासी एक भृहरूप (सुद्ध २ ७ २) । 🗱 134)1 ीड नि कित्र वेप-पिश्चित (धोष ४६३) स्रिक्ष वि [छिम्र] काटाह्या (हुमा ६ å\$) ı क्षेत्रण न [क्षेपत] चेत-करण (वब १६६)। खेशक वि [खेपहरू ] केर कारक (वर १)। ल्झ सक [सदय्] १ वव करना मार कासमा । २ पोक्सा कर्यंत करना हैरान ¥स ⊈सिंग] १ मध्य स्तोक नव वोड़ा अस्त्र । ३ दुवित करता । ४ चौधे करता । (पाया के ७ २) । २ इस्तिप (इ.१) । ५ विनास करता। ६ धनावर करता। ७ बेस वि चि] १ विक्ति । र′यापस्त । ५ दोइना। प धोरेको बढ़ासीर बहेको विकार राष्ट्र-रहिता ४ वृं विद्या (दे ४ संस पुरिक्षेत्री संस्थेत्र संस्था भितान उसम व [स्डेमन] उसर देखी (विते क्**सम**् हि [स्पर्क] र दिलक दिना करने-सेंधग∫कर्मा े २ विवास≉ (तूम २.१ संसम्बर्ग । को [इस्टेपमा] उत्तर देवो (प्रीक स्टेसमा । का ४ ४—५४ २ । राज) । स्तर्भा 🕸 [श्रुप्रेयणी] विचानितरीय (तुम ∉मधक (तूस १३१)। प्रदूतित करनेताला (पूछा १ १४ २६) । ६ विधा-२२ रेका स्राया १ १६ — एव २१६)। सर्द्रपुत [संस्टु] रोहा, इंट पत्वर मादि वक यात्रा वहीं मध्यनेवाला (मूर्य १२२ नाटुक्का(जिमे २४**६६ मो**न **एव** नप्पः ≆साध्मै [स्टेब्स] १तेत्र शेक्षि । २ बंब्ब ६ माना) । ७ हेनु-विरोप (धा ४ ६ ~-पत्र विस्व 'चंदरच तेब' प्रावरेत्रासः विदुई' (प्रम महर)। 4XY) 1 सुद् । पुन [व छन्दु] उनरवैको (लघ २६) । ३ फिरस्र (गुज ११) । ४ देई होद्देश र र ५ (४४)। सुसम पि [सूराण] करर मेको (माचा सीन्दर्ग(स्पन्न)। १. धनस्माना परिग्राप-लेक्क पु[र]१ पेक वाट ⊦२ हि चीत) । विदेश, इन्छारि इन्दों के प्रांतिस्य के अस्त म्स्य दि [सप्रह] १ परिताय-वर्ध (माचा सम्बट (दे७ २१)। होनेशमा म्यरमाश्राश्चम दा सञ्चन परिशास । <sup>१</sup>१९४) । २ चोर, तत्तर (बन ४) । <sup>†</sup> स्प्रित न [व] स्परक स्मृति (१७१४) । ६ भारता के तुम या बसुम परिस्ताभ की अस्पीत

में निमित्त-मृत क्षम्यादि ह्रस्य (काः स्वाः धीय वर १४२। भीवत ७४। त्रेवीम ४८। प्राप्त १७ इसमा ४ १३ वरी)। सेसा की [संस्था] ज्यामा (यम १६) १७)। हेसिय वि रिवेपिन रे स्वेप प्रक (स ७६२)। **ो**सरक्षमसरु (दि] क्लोका पु पूका (भक्त्यस पत्र २४६)। छेस्सा देशो सन्सा (मग)। स्वद्रको सिद्द = मिक्। सेह्द (प्राष्ट्र प्र)। सेह रेको सिद्ध = सिह्न । बेहर (प्राक्त ७ )। क्षेत्र (धप) देशो सन्द = तम्। बेह्र (पिप)। खेब प्रसिद्धी धनसेह, चाटन (पटम २, ₹4)1 इस् पूं[छेख़] १ सिवान, तेवन पसर निम्यास (मा २४४ छवा)। २ पण विही (कृप्पू)। ६ देव देवताः ४ विदिः इ. वि. संक्य वो तिखा जाम (हे २ १ वर)। ६ सेचक विचनेपाताः 'सम्बंध तेहत्तरे दस्हा' (नमा १)। यहि नि ["याइ] चिट्ठी बे जानेवासा पद-बाहुड (पञ्च ६१ १ मुपा ५१६)। बाह्य, बाह्य वि [बाह्य] यही सर्वे (दुव: ३३१: ३३२) । साक्षा भी ["शास्त्र] पाठशाबा (एप ७२८ दी)। (रिय र्षु [ [पार्य] छपाप्याम रिकाकः (पहा)ः हेंब्ड वि दि] सम्पट मुक्त (वे ७ २४ छेरण न [केर्न] चाटन धारनारम (परम 1 (\* ) 1 संदर्भी की [जेसना] कमम धेवाचे (परम २६ १८ वा २४४)। छेदल देवी सदह (गा ४५१)। १६६ सन ६२) । स्पर्दिय वि [स्पेरिति] तिप्रवासा ह्या (टी w) t संबुद्ध हुं [द] सन्ह, रोड़ा, देखा (दे ७ २४)। स्रोभ देवो रोज = रोषम्। एक सीवमा (¥**स**) । क्षेत्र वर्ग [क्षेत्र व्यक्ष्य] देवता । वर्ष । (तुरा २ ) । साअर्थत (भार)। स्थाइ सम्हान (सर

१४२ थे) । सक्र स्रोहत (दूस ६) ।

E٦

स्रोध दूं [स्रोक] १ वर्गस्विकाय बादि हर्मी का धावार मृत धाकाश-धेत्र जनत् संसार, भूवन । २ जीव धनीव धादि हम्य । ३ द्यम्य, मावसिका द्यावि कास । ४ प्रस पर्यायः भगे । १ जन मनुष्य द्रावि प्राण्डि वर्ग (ठा १---पत्र १६ टी--पत्र १४ घर हे १ १० कुमा को १४ प्रासूधर ७१ चन सुर १ ६६)। ६ मालोक प्रकाश (बका १६)। या भ [ग्रिंग] १ **इ**वद्याग्मास नामक पूर्विकी मुक्त-स्पान (स्राच्य १ ४ ---पत्र १ ४ इक)। २ सुच्छि, मोख निर्वाण (पाप)। गगधाभिक्या स्त्री [प्रस्तृपिका] युक्त-स्थान विस्तारभारा दुनिनी (६क)। "गगपद्विद्युत्रमञ्जा स्त्री [ प्रप्रतिवोधना ] वहा धर्च (इक)। व्यासि र्दुनिस्मि भेव पर्वतः (सुम्र ४)। प्पनाय पुंजियादी जन-मृति कहावत (गुर २ ४७)। सबस्त पुं ["सभ्य] येव पर्वत (गुज x)। बाय र् [वार] मन-प्रति कोक्सेचि (स्र२६ सा४व)। (गासंदु िकारा | शोक-धेत्र, मामोक-भिन्न माकारा (भम) । इहायम न िभाजकी सक्कावत बोकोचि (भवि)। देखों छोग्। कोळ पूं [छाष] मुद्धन, गोषना केशों का जररात्न स्थापना (गुपा ६४१ कुत्र १७३ स्रामा १ १ — यथ ६ ३ घोष छव)। क्षेत्र र् क्षिप् प्रश्नेत, विष्यंत्र (यहम 468)1 स्मर्थविय र् [स्मरमन्ति है] एक देव-वादि (**क**म्म) । क्रोधग व [क्सोबङ] प्रज-संहत सब पाराव नाम (अस) । हेर्स रेबो जिस्स (पीना कप्पा कप्पू 🐩 | स्रामहा (पन) वर्ष [स्रोमनर्रा] कनस (ह Y Y ( ) | काञण कृत [क्रोधन] बांक बयु नेत्र (हे रे देश रे रेवर दूसक गाम नुर २

२२१)। यस न [प्रिप्न] सिंध साम.

स्रभणिङ वि [स्रोपनपन्] योजनाता

स्रोजापी सी [वे] बनस्पित-विधेव (पर्ए

बरमनी, पाम (से ६ ६८)।

१--पत्र १६)।

त्येद्रभ वि [त्येक्ति] निधितित हुए (मा २७१ स ७१३)। क्षोइअ वि जिक्कि सेक सक्ती संसरिक (भाषा: निपा १ २--पन १ सामा १ र--पण १६६) । छोडचर वि [छोकाचर] मोक्श्यमा भोक-ध्या बसाबारण 'सोउत्तर' बरिप्न' (धा १६ विशे =७ )। वेको छागुसर। छोउत्तरिय नि [स्रोक्षत्तरिक] जनर देती (भार)। र्जोक कि कि दिन सुप्त सोया हुमा (के ७ २०)। स्रोग पूँ सिक्षकी मान-विशेष भेषी से प्रशिष प्रवर (मरा १०१)। यव ४को यय (पए १६) । क्योग देवों छोअ:= नोक (ठा १ २ ६ रे—पन १४२ कव्या कुमा सूर १ ७३*।* हे १ १७७ प्रामु २१ ४७)। ७ न एक वेब-विमान (सम २१)। एटा व [कान्त] एक देव-विमान (सम २६)। कुछ न िकूद्र | एक धन विमान (सम २४)। रेगापुरिज्ञा श्री [प्रापुर्किम] पुष्प-स्पान धिकि-रिका (सम १२)। जचा औ "यात्रा] सोक-व्यवहारु धेनी (सामा **१** २—पत्र ==)। हिंद्र औं (स्थिति ] लोक-ब्यवस्था (छ ३ ३) । बुट्य न च्युट्यो जीव घनीव घारि पदार्थ-समूद्र (मग)। नामि १ "नामि ] मेर पर्वंश (मुख्य १ थ-पत्र ७३)। साह् पू ("साब] वक्द का स्वामी परमस्वर (सम १: भम)। वरिषुरणा धी ["व स्थूरणा] स्वकान्त्राच वृपिकी मुक्त-स्कान (सम २२)। पाछ वृ िपाछ**े इन्हों के दिश्याम दे**ग-विशेष (ठा १ १ मीप)। प्यभ पुरिमा एक बेंब विमान (सम ११) । पितुसार पुन विन्युसारी भौरहरा पूर्व-प्रन्य (यम ४४) । सम्मावसिक पुन [ मध्यापसित् सनिनम-विशेष (६३ ४ -- पत्र २०४)। सम्मायशाणित्र वृत्त सिच्यायसानिकी नक्षामचे (एव) । रूप न कियी एक बेब-बिमाम (बम २६)। लीख न [स्तर्य] एक देर-विमान (धम २३)। बक्य न ["वर्ण] एक देव-विमान (छन २५)।



(ख ६---वन ६६४)। ब्लुअ वृ[भक्युत] | रक्षप्रभा-नरक का एक नरक-स्थान (ज्वा) । स्रसंभावित्र वि वि रिवर-पूप्य विस्ते क्या की हो वह (दे ७ २१)। सोल्य देशो स्राप्तज (सूम २ ६ ४४)।

स्रोध सक [स्रोपम् ] शोप करना विम्लीस करमा । बोबेड (महा) ।

छोव र्न सिप विम्तंत निगत, घरतंता 'कम-सोवकारमा (क्रुप्र ४) 'मा बुद्दे पासु विक्र सोवं व दुर्ग प्रवंसस्ता होसुं (वर्गवि 223)1

स्रोह रेशो स्त्रोम = बोग (कुमा प्राप्त १७६)। साह देन जिल्ली १ बाहु-विशेष बोहा (विद्या १ ६---पत्र ६६: पाम) हुमा)। २ बात, कोई मी मानु 'नह बोहाए। सुवलं क्यास कर्म बरास्त्र स्मणाई (सुपा ६६६)। बार १ ['बार] छोहार (कुम १वत)। जीप पूर्विका १ मारत में क्टान वितीय प्रतिवासूर्य एका (सम ११४) । २ यजा चएकप्रयोत का एक १७ (महा)। "जंभवण न ["जाह्यत] मपुरः के समीत का एक बन (ती क)।

खोड वि जिड़ि बोड़े का बोह-निर्मित (री ₹¥ ₹ ) I क्षेद्रियोजी 🖈 [स्रहाहिनो] छन-विदेव (FI4) 1

छाइस ई सिंहजी सम्बन्धिय सम्बन्ध

रम्य (पर्)। खंदार ने [ओदफार] बोहार, बोह का काम करनेवाता शिक्ष्मी (४ व, ७१३ इर व---पत्र

X ( to ( X

) वेको स्प्रेडा 'क्रमंग म पपलेग खोडिस प सोतिसा य कह्नातिक्रीपूर् (श्रम्भित वर्ग ७६) ।

क्षोहिल र् ब्रिवित र कम रंग एक-क्छी। २ वि रक्त वर्शनाका साम (से २ प्राचका)। १ स दक्षिर, सून (पटम १ us) । ४ मोत्र-विशेष जो कौशिक माम की

एक शाबा है (ठा ७—पत्र ६६ )। व्यक्तिमंत्र वं िक्षेत्रिसम्बद्धः व्यक्तिमञ्जा पठाबी महापूर्त में दीवार महापूर (मुख्य

٦) I कोहिअस्य १ (ओहिताक्ष) १ एक महामध (ठा२ ६---पप ७७)। २ वसरेन्द्र क

मिक्किनी का मिनिवित (का ५ १ --- पत्र २३ इक) । ६ इटन की एक पार्टि (शामा १ १--पत्र ११। क्या उत्त १६ ७६)।

४ एक वैद विमान (वेबेन्द्र १६२) र ४४४) । १ रहनामा पुनिषी का एक कार्य (सम

१ ४) । ६ एक पर्वेष-पूट (इफ) । व्येदिक्षा }थण व्यिष्टितासी सल सोहिआस<sup>्</sup> होना । सोहियाद, घोडियावड

क्षि १ ११८ कमा)। मेरिआमुद्र प्र [स्राहितासुख] कलमा स

एक गरकाशस (स बय) । खोदिब पु [स्रोहिस्य] भाषायँ मृतक्ति के

रिष्य एक वैत मूनि (ग्रांदि १३)। ओहिच ) म जिहित्यायन योजनिकेष व्यद्विचायण र् (मुण्यः १ १६ टी इका

गुज्य १ १६)। व्येदिणा १ व्ये चि] बनलाति-विशेष कव

कोदियोह । विशेष (पर्व १--पत्र १४) 'सोहिलोड य बीह थ' (बत १६ ११; नुक

14 44) 1

जोहित वि दि छो।भन् । सम्मद्र पुरुष (६ ७ २६ पद्धन ६,१७ गा४४४)।

ब्रोही को जिस्ती और का बना हमा माजन-विशेष कराह (पर महेशे चार १)। स्ट्रस देशो छस = मस । स्ट्रस्ट (पाड ४२) । सहस पद हिंसी विवक्ता सरकता

निरंपक्ता। स्वयव (हे ४ १६७ पद्)। वक्ष स्टब्संत (वस्या १)। सहस्रण न [स्त्रसन] विसन्ता पतन (सुपा 22) 1

स्क्रसाय सक स्तिस्य विश्वनकाता । संह श्वरसाविम (स्पा १ ८)।

न्द्रसाविध वि [स्रंसिव] विस्कारा हुना (कुमा) । स्वसिञ वि [स्राप्त] विशव कर निय हवा (कुप्र १०० वक्स ०४)।

रुद्धसिअ वि दि दिवार (वेड)। स्बद्धाय केको स्रमुख (पक्छ १--पम ४ । पि २१ )।

स्वावि भी विकादि प्रावतः, मनोव नुस्ते (चन्न)।

क्हाय र् [ह्याह] ब्लर क्यो (वर्नर्स 774)1

स्कृतिय दू [स्कृतिक] एक बगार्थ मनुष्य-वादि (परह १ १---पन १४)।

विद्यापक [नि + क्षी] विदना। विद्यन्तः (हें ४ पर पहर है)। वक्र स्थितंत (इस्त) १

विद्यापि [में] १ वट (क्षेप्र २१a)। २ यव ( यह )।

॥ इस बिरिपाइभसङ्सङ्ज्यश्रीमा ख्याराइसहसंबनको चर्रतीसहमो वर्रनी समली ।।

(दे ७ ७२६) ।

र् [ दीर] भवकत् महाबीर (जब) । "सिंग

व [शृक्क] एक देव-विमान (सम २४)।

सिंद्र न [ मृष्] एक देव विचान (सन

२१)। ह्यान [शहत] एक देन-विमान (सम २१)। १६६४ न [१४न] नास्टिक-प्रतीत साम, चार्शक-स्रांव (संदि)। ीलाग (व [।साफ] परिपूर्ण पाकारा-क्षेत्रः र्शपूर्ण जयम् (इका वि २ २) । विश्व न ियस्ती एक दश-निमान (गम २४) । ह्याप न फियानी बोरोपि, यम-विद (उप १६ ही) । लगईवेस रेको साभवित (पि 41)1 स्रागिम क्यो स्टोइअ - सौतिक ( वर्मेंबे **१२४**€) । स्रोगुचर केने स्मेडचर। वहिंसय न ियर्तस्य विश्व देव विमान (सम २४)। संगुचर दूं [स्टब्सेचर] दून शद्रां २ विक्शासन, वैत्र पिदान्य (यहा २६) । संगुत्तरिम नि [सामेत्ररिक] र सपु का। २ फिन शत्मन का (मर्ख २६)। सागुक्तरिय देवो सोडक रय (योव ७६x) । सार् धक [स्वप् ] बोट्य सेना। बोट्टर | (हे ४ १८६)। यह स्टब्स (पास)। इतद्रदक [सद्] १ केळल । २ प्रकृत होता। सोट्टर सेट्टवी (प्राइ ७२ सूच १ रेर १४) । बद्ध स्रोहेद (बुरा ४६६) । स्प्रह १५ दि] १ क्यम पालस (निद स्रोहर<sup>9</sup> ४) । २ **९**व्हे हानी शास्रोटा दवा (राया १ १--पत्र ६६) ही दिया (गम्ब १ १) : स्रोहिज रि हिं] उपस्रि (है ७ २१) । स्राह्म ( वह ) । स्रष्ट हे (स्रष्ट) ऐस, हेना (हे स्ट्रेशांप्रश्न (र [स्टेंटन] पुनाया हुव्य (न 181) 1 स्टबर्ड द्वीकात निरादना नोहनाः "प्रकारि भार्त्र । यह खडर्ग (स्व) । ध्यदर्न[४] रे कोड़ा शिलापुरण लीको द्मशापर (रण ११४ प्राप्ता)। १ र्वा विदेश, बीपश्चेत्रह (१३ ० मा ।

स्पेड्य १ (हे. स्पेठक) क्यास के धैव विकासने वा मन्त्र (यवह) । व्यक्तित्र वि स्थितिती भेरवामा ह्रमा, शकाया हम्रा (पत्रम ६१ ६७)। द्याज न [स्रद्रज] १ मूनः नयकः। २ सावस्य, क्रपेर-कान्त्र (च ११६) हुमा)। १ पूर **बध-विशेष** (प्रसम् ४२ ७-धा२ । प्रव ४) । ४--व्यो स्थल (हे १ १७१) प्राय यकः भीप) । त्यांभिय वि श्रियमिक निवस्तुष्ठ, प्रवस्त सम्बन्धा (योप ७३६) । खंडल न [स्मपण्य] तरीर-कान्ति (प्राइ ४)। त्यंच न (ब्राप्य) नोरी का मान (स १७१)। खेद पं क्षिप्रो कुल-विशेष (सामा १ १—पद ६४८ पर्यक्त १३ सूची १ ४ २ का भौका दुना)। देवो सुद्ध ≖ लोग। स्रोद्ध देशो लड= दुम्ब (पास मर १ 🛷 २२३ प्रध्य)। स्राप्य देवो लगः 'वो एवं शार्य लोम्पाइ धो विनिधि कारपर्यतो कि केलावि बरिजे पारीयह' (स ४६२) । स्रोम तक [स्रोमय] सूप्राना बावद रेमा। क्यूके स्ट्रामिक्रीत (सूत्रा ६१)। द्योग ( सिम् ) यालव तुम्ला (बावा इस्याधीया क्या छा। ४)। २ वि धीय-बुक्ट (पश्चि)। ध्यमञ्जय रि [ध्येभनक] होत्री बासवी (बाकार १३,३)। स्राधि ) व [स्राधित] तोत्रशता (कम्म स्रमिष्ठ प्रभावसम् ४१)। धास इंट धाम रिन्द, रॉमी ईनदा (शरा)। परिनार पिक्षिमी धेन के वैद्याला पधी(द्वाप ४—पद २७१)। स वि िश] नीव-पुक्त (वस्त्र)। इत्थ पुं िहस्त्री पीछी रोशो का क्या हवा महरू (विया ह ७-- वत्र ७८। योग गाया १ २) । इतिस पुं [देव] १ नरवासन-मिरोच (देवेन्द्र २०)। रे सेकार पेत्रों का सहाहोता (स्तुर, ११)। दार र्न [दार] नार कर चन नुष्टेवाना पोर (इस १,२)। । इसर पू

[\*|हार] **इंद**र्श से किया पाता प्रश्<u>वा</u>र, त्वचा से भी बाठी जुराज (भग सूर्पीन tut) | क्षेत्रीक्षक्र वं दि । नट (नदि टिप्पण नेवपिक इद्विपत १६ वाँ क्यानक) : स्मासी भी दि र क्क्सी कोरा (सप प्र २१२)। २ कसी-विशेष ककडी का गाव (वद १)। क्षोय न विकेत समान मिलान (धाना 2. ( Y 4) I स्रोर दुत [दे] १ नेत्र स्रोधाः २ सम्पर्मतु (Fig.) 1 स्रो⊋ मक् [सुरु] १ तेळ्य । २ वक विश्वीवन करता । क्षेत्रक ( विव ४२२) पिय) 'मोलेड रस्वयवध' (पडम ७१ ४ )। **वह धोर्ततः घोष्ठमाण (क**ण दिवा परम १६ ४१)। स्त्रेड सक (स्रोठम् विद्यमा। सो**ने**श बोबेनि (उना) । खेस दि [छोस] १ कमट, सुम्ब पासक (द्यापा t t टी—पत्र रः भीपः पामा कृष्य सूपा १९६)। २ ई एरन-प्रमा नरक का एक नरनावास (ठा ६--- पत्र ६६३) क्षेत्र ३) ३ शर्मराप्रधा भाषक क्रिकीय वरक-पुनिनी का नवर्ग गरकेन्द्रक---भरक-स्थान (देवेण क) । सहस्त पुं ["सम्बद्ध नारनावा<del>ध</del>-निर्देष (स ६ दी-पन ३६७)। ।सह र्ष ["शिष्ट] नरकामाध-मिशेय (हा ६ दी)। |यस र् भियत्ते| नरकतास-विशेष (स ६ की देश्य ७) । स्रोस्टिजन [द] चाटुः नुसामर (देण २३) । स्रोक्षण व [ओडन] १ नेटबा बोसन (तुम रे×, रेरें रे∀) । २ वेटवासा(इस रा)। क्षेत्रपद्ध र् [स्रक्ष्माध्] मरत्र-स्वाद-रिरोप (रेस्प्र १ )। स्यस्मित्र म [भीस्य] बरगटवा बोनुपवा (वस्त १ ६--वस ४३) । धारिम रुंध्रे [घोडरन] इतर रेघो (रुमा) । धासुभ वि [चामुव] १ बनार, तुरव (रस्म र्रे १६ त्रे, पाम नुरश्प ११)। २ ईं स्त्यमा नरङ का एक नरकाशन बह्दही की विदेहीं ? एका जनक की की सीवा की मावा (परम २६ ७१)। २ कन कारमञा, चीरा । १ इतिक हस्ती । ४ विव्यक्ती पीपम । विश्वक-वर्धे (विद्वा १) । बद्धमा न विचम्ची विच्छम्मेवा विपरीव-पन (विसे १२२८) । बद्दमिस्म वि [क्यपिनिध] वीमिनित (धाषाः ₹ ₹ ₹ ₹) 1 बहर देशो बर = बैर (है: १ ११२)। बहर पून बिका र एल-विशेष हीएक, हीस (सम ६६: धीप भव्या भया कुमा)। २ इन्द्रका सक्त (यह)। १ एक देव-विमान (देनेन्द्र १३३) सम २५) । ४ विच त् विजनी (क्रुया) । १ प्रे एक मुत्रसिक्क वित महर्षि (क्या हे १ ६) इसा) । ६ कोस्टियाच बुद्धा ७ रवेद कुद्धाः ८ मीकुद्धाः स्म एक प्रदीवा १ न बासक शियु। १ वात्री । ११ क्रीजी । १२ मळ्यूच्य । १३ एक प्रकार का बोधा । १४ बाध-निरोप । १५ वयोतिय प्रसिद्ध यक यीम (है २ १ ४)। १६ कीविका छोटी कीब (सम १४६)। क्षेत्र ल विद्यापको सलदाना पूपिकी का एक श्रहरूत-मय कार्यह (धन) । स्ट्रंट न िंद्रान्त**े एक देव-विमान (सम २१)**। कुछ स फूट १ एक देव-विसान (सम २१) । २ देशी विशेष का मानासनत एक शिकार (धक)। अभापू विक्वीर मध्य-क्षेत्र में प्रशास तुरीम प्रतिवानुदेव (सम १९४) । २ पुष्कसानदी विजय के लोहार्यक नपर का एक राजा (पार्व)। प्राप्त न प्रिमी एक केन-विमान (सम २१)। मम्मा 🕊 ["सन्या] प्रविमा-विधेप एक प्रकार नायत (स्त ४ १---पत्र १६१)। रूप न दिया एक देश-विमान (बाय २४) : क्षेत्र न [क्षेत्रय] एक देन विनान ! (धम २४) । यण्य व ["वक् ] देवविमान- <sup>(</sup> विदेय (बम र४) । सिंग न (रैश्का) एक देव-विमान का नाम (सथ २६)। सिंह र्दृ["सिंक्]एक समा(कमानि ४)। २१) । सीक् वैको (संक् (काल) । सेवा र् [चेन] एक प्राचीन केन महिन को

बद्धस्थामी के रिप्प ये (कप्प)। सेगा की "सेना १ एक एत्राणी वाजिस्ट्य बानम्बन्तरेन्द्र की एक प्रश्न-महिपी (सामा २३७ सम १४)। र---पत्र २१२)। २ एक विश्वपुनाधी देती (इक)। इर वे चिरी इन्द्र (यह)। ीसय कि सियी क्या रालों का बना हमा (सम ६३ सीप वि ७ ३ १३४) की सर्वे (दे ७ ३१)। ौसङ्गामती (बीक्कपि २ ६ दि४)। प्रच न [प्रच] एक केन-विमान (हम गोम (राम)। २४)। ोसमनास्य न ऋषमनास्य संहतन-विशेष (सम १४१) भव) । देखी श्वात ≠ वह । बहुरा की विक्रा दिक क्षेत्र प्रति-साका (FPF) : पद्गाग विधामा विश्वक, उदावीका (पउम २६, २)। पद्गाक वं पिराटी १ एक पार्म देश । २ त. आचीन चारतीय नगर-विशेष को मदस्य देश भी राजधानी थी 'बहराड सम्मा बहरा। धन्द्रां (पर २०१) । षश्यम वेको वश्यम (नकि)। (सर्विष्ट वि ६१)। वहर ) वि[वैरिम्] दूरमण रिपु (गुर यद्वरिभ र र कामा प्रामु १७४) । यप्रिकेत दि निवत एकान्य स्थान देवी मंद्रियं मुक्काद निरंबकाद (इप १७१)। **वद्यविदरस्यपृक्षिमात् (ना ८७ )**। वहरित्त वि क्यितिरित्त क्यि प्रस्त (सर १२, ४४ नेहम ४९४) । (R ? \$32): यारी की विकारी एक कैन मूनि-राजा (क्प्प)। पहरुहा को [बैराट्या] १ एक विद्यान्त्रेशी (धरि ६) । २ मयनान् महिनावती की शासन-देशी (संवि १ )। पर्रुप्तविद्या ग [ प्रजोत्तप्रवेसक ] एक देव-विमान (सम २४)। बद्धा १ ५ [स्वित्क] १ सम्बद (पर्वस । (पर्नर ११)। बहरेंग रे ११२)। र शास्त्र के प्रभाव में हेर का निवान्त समाप (वर्षेत्रे १६२) जन प्रशिक्ष विकेश प्रशिक्ष प्रशिक सिंद्र न [सुद्ध] एक देव-विधान (सन । सहरोआण पू [बेराबान] र सामन नक्षि (बुध (विशे २१७०)। १ ६६) । २ वसि नासक इन्द्र (रेक्ट्रेट्र

१ ७)। १ वत्तर दिया में श्वीतावे प्रमुट

निकाय के देव (भग १८१ सम ७४)। ४ पेन, एक बोकान्तिक वेद-विमान (पव बहरोअण दुर्दि हुत देव (दे ७ ११)। बहराब दे [दे] जार, उपपति (६० ४२)। वन्यतस्य पृष्टि संप को एक वासि बुन्हम पद्मवाय वू (स्वतीयात) क्योतिय प्रसिद्ध एक यावस भी भि सीमा (दे ७ ३१)। धरम देली धरस्स = देखा 'वाश्चित्रकरियसाइयोरस्यसम्पाससेम्' उन्नता । दे होति बासनामा बाबास्यराज्या बीच' (पत्रम ६ ११६) । यहसङ्क्ष विधियमिकी विषय से उत्पक्ष विषय-सवन्धी (संशि १)। पदस्यायण व विशास्त्रायनी यह ऋषि जा व्यास का रिष्यं पा (हे १ १६१ प्राप्त)। बहसम्म प्र चिपम्य विषयता, 'बहसम्मो' यहसम्बंध दे विभवणी क्षेर (हे १ १४२ पश्चस न विरास रिमाधकारी पामस्य धइसानर रेको धन्तसागर (धम्म १२ मी)। वर्मात रेवा विशास्त्र विद्यास में स्टाप वइसाइ र् विशास र माय-विशेष (पुर ४ १ १ भवि)। २ सम्पत-समूखा ३ पुन मोठा का स्वात-विशेष (हे १ १११ प्राप्त) । यहमाही देशा वसाही (चन) । वहसिम वि [वैशिष्ठ] वेत स जीविका कार्जन करनेवाचा (हे १ १५२) प्राप्त )। महिंचद्र न [वैशिष्ट्य] विशिद्धा, भेर पदसे सिम न विद्यापिकी र दर्शन विरोध क्यास्टर्नेन (विधे ११ s) : २ विधेक 'जोएनम धाममी वा वर्ग्छतियक्षमकर्ता पत्रहा" बहरस पूंची [बेरच] वर्ध विशेष वास्त्रिक महाजन (विपार ४)।

य दृ[ब] १ श्राम्य स्थानन मर्ग-विशेष विकास ज्वारक्रस्थान स्त्य भीर श्रीस्ट हैं (श्राप प्रमाग) । २ दून बस्त्य (से १ श २,११) । व श्राम्ब हैं से से इस् (से २ ११ मा १ )

२, ११)। व स [ब] देखो द्वंद (ते २ ११ मा १) ६६, ६४० घट भूमा है २ १ २, प्रायु १)। व देखो या= स (हे १ ६०) सा ४२ १६४ द्वारा प्राप्त २१ स्वेते)। व देखो यागा = सन् । वस्त्रेयल ति

[भूपक] बक्त का विरातः—बहरू (वा १४२ च)। प्यद्रस्य पू ["पविराज] एक आधोत रथि "गठववहाँ" काम्य का कर्ता (क्वड)। बक्रणीया को [बे] १ स्थान की। १९४शीय

क्षे (पर्)। कारक धन [प्र+स] पसरना छेवना। कारक पन्

बागांड केलो बांबांड = बावांट (दर्बिट रे)। बहु सा [वे] इन सची ना सुवन्न सम्बय-र सम्बवार्ग्ड शिक्स (किसे रें)। र सम्बवार्ग्ड शिक्स (किसे रें)। बहुस स्वाह्म विसे, इस्प्ल वस 'क्षापुर्वेगर सहीर्द्ध (सूता वर्ष)।

बह मि [अपिन] दरणका एवसी (कर पूरा ११६)। और यो (ल र ४१)। में दे थी (ल र ४१)। में दे थी (ल र ११) कमा एक ११ मा ११ पा ११ प

श्रुको [तृति] नाम कटि धानि वे नगारै वादो स्वान्तिर्धित पेटा 'धन्मालं स्वरहा क्रीस्टिनोमी' (धा १ । मद्रशाना हो। दा १८८ पदम १ ११११ दना व।) 'धन्तु बोत्ति' नहें (बार्डिन ११) खनीन भरे)।

४२)। सङ्देशी पड्≕पठि (पा६६१ से ४ देश कम्म कुमा)।

यद् देशो वस = स्र

पद्ग केको त्य≔ पन्। पद्गम कि [दे] १ पीठ, जिसका पान जिला सनाहो नह(दे७ ३४)।२ घोणकारिय

भग हा गह (२ ० १०) । र भागक्यक्य इस्त हुमाः श्रमकाद्दमपृथियाई वस्माई (गाय)। वक्षम विकित्सयित] विश्वका क्या क्रिया

क्या हो वह "किंगई स्थेल वस्तृत बागूर्ल" (मृता १७०१ ७६ ४१ ) ।

बहुमस्म वृ [पेन्से] १ दिस्पे के हा चरा। २ दि. निर्दे के में करून (पर्)।

बहुसर वृ [स्मतिकर] प्रश्वश्च प्रस्ताद (दुर ४ ११६ महा)।

दह्मका देवी दय ⊃ दन्। बदमा की दिक्रिकों की

बद्धमा की [ब्रिजिक्स] कोटा नोहुक (स्थि १ स तुक्क रूप धीन नर्ग)।

बङ्गालिक वि विवासिको अंगल-मृति भारि हे एका को बमानेवामा भारत पारि (हे १ ११९)। बङ्गासीक कुंग[पैवासीय] सन्दर्भिटेश (हे

(हे र ११)। पद्मस कि [वेदेश] विशेष्ठ वेस्त्री, परमेशी (त्स्त्र के २० हे रे १११ महारे)। पद्मस्य वृद्धिका रे वर्शक वेस्त्र। २

(दल ६३ रश इ.१. ११६ (शह ६)। बहुपह पूर्व विवह रे. विवह वेशा - १ शूर पूरव चीर रेस्य की वे जल्म बाहित विकेश १ एता बन्का १४ वि. वेस्टव्हें है संकल प्यतिस्था। १ मिनिया देश भा (है १ १११) सक्त १)।

वर्शनजन [दे] देक्त, इन्द्राल पंश (देव १)।

बहुबन्धः वृं [येक्स्न] उत्तरप्रंव (योग) । यहुक्तिस्र न [येक्स्य] निक्यता (पाप) । बहुक्कं वृं यिक्स्य] १ क्स्म्य विष्णु (पाप) । सोक-विरोज विष्णु का बाम (सर्व १ ११ क्षेत्र-विरोज विष्णु का बाम (सर्व १ ११

व्य) । वर्ष्यत्व वि [व्यविकान्त्र] व्यक्षेत्र, दुवस हुमा (पत्रम २ ०४) पताः वर्षि) । वर्ष्यम दुँ [वर्गविकम] विशेष द्रव्यम

करकम ४ (० सवन्म) स्थाप स्थलम ६ द्यापनम ११ ११)।

बङ्गएजिय दु [थेइरजिङ] एत्र-इमेबर्गर विशेष (तुरा १४८)।

पहला देवो पहला (तुब २, ४, १६ ६)। पहलुक्त न [बेलुक्त] १ वेकस्य धर्मी-पूर्वेटा, प्रवेषन्त्रता (वर्षेसं ४४)। १ विर पैकस्त विवर्षेस् (धन)।

महिमा न [वैजित्य] निमित्रता (निवे १११: वर्गव ६१)।

्रहरः वस्य ६१)। वह्यवस्य वि [येजन्त] योव-विरोध में स्टब्स (हे १ १११)।

वक्ष्मा देकी पद्=वतित्। वक्ष्मुक्किय वि [वैतुक्किक] कृत्यता-पीठ

(निष् ११)। वहत्तप् वहता } देवो वय=वद् ।

पर्या हैया नय = सर्। नर्या देवी नय = नम्।

वहतु वि [पहिंदु] बोलनेवामा चुर्च वहता भनति (ठा ७—पत्र १०१) । बहरूकम केवो बह्मकम (हे १ १११) ।

पहिल्ल हुं [बैदिना] १ धननी केर, असर्व वेट, अस्तित कमणीए निकाडिमा एकपण्डे व' (का २२)। २ वि निविद्यान्धनी (का ३)

(स् ६)। वर्षस्य देशे वर्षस्य (प्राप्त)।

बहुबेसिम वि [संबेशिक] विशेशीय, परमेसी (सबि ४) कुत्र वेच । स्तिरै वेश्वारी ११)।

वहबृद्ध देवो वहपृद्ध (सात्र) ।

क्की जी (नडड)। बंस वि [धम्ब्य] शून्य वितित (कूमा) ।

वैस्त की यिन्ध्या निम्म की बयुनवती की

(पत्रम २६ वर मुका ६२४)। ¥टन [पृन्त] फबायापतों कावन्यम (पिड

8X) I भेटरा व विषद्ध विशेष विभाग (तिन्न १६)।

बैठ हे हैं | १ भक्क निवाह सविवाहित पुत्रराती में नाही (दे ७ ८३ माप २१८)। २ इत्युड हुक्या। १ मर्ड (१ ७ ८१)।

४ भूरम दासं (दे ७ ८३ सुर २ ११ वः । रमध वक्षः सिरि १११४)। १ कि निप्तक, स्तेत-राहित (दे ७ व३)। ६ भूत ठम ।

(बा१२)। ६८ वि विष्ठी वर्षे पामन, नाटा, बीना (\$ x xx0) 1

बंठण (धप) न [धण्टन] बांटनाः विनायन (বিৰ) ৷

संबद्ध्य वि चि वीक्षित्र (पर् )। वंद्ध देखो पश्च (पा २६४)।

वंद्रकान [वे] राज्य (वे ७ १६)।

वंदर देयो पंदुर (या १७४) । बंद प्रीकृतिक (के प्र २६)।

चंद्र वि [पान्त] पवित्र विश्व हुमा (स्त्र ३ १ टी)।

र्थत पूर्वान्ती र जिल्हा वसन किया क्या हो बहु(स्व)। २ पून. समय व्यंते इ.सा

पिती इ. वा (सव)। बंतर पूं [स्थान्तर] एक वेद आर्थित (वे २७) मद्दा} ।

वैतरिक पुं [क्यन्वरिक] उसर देखो (भव) । बंदरिणी औ [स्थन्तरी] व्यन्दर-पातीय देवी (सूपा ६१३) ।

र्वता देवो वसः।

वंति देवो पन्ति (या २७०३ ४६६) ।

विषयको प्रथ्य सि १ १६७३ ४२०१३ २ (पे४ ६)।

बंद सक [बन्द्] १ प्रकास करना। २ स्तमन करता । वेदद् (छन नहाः कृष्य) ।

मक्ट वन्द्रमाण (मोप रेब सं र मिर्म १७२) । इनक्. यन्त्रिक्समाण (उप १८६ टी प्रासु १६१)। संक्र यन्त्रिओ सन्दिओ, बन्दिकण पन्तिया, पन्दिस पंदेषि

(कमार १ वंश कमायका है ३ १४६ पंड) । हेक्-वंदिचए (स्वा) । इ. पंज, यंत्र, यंत्रजिका यंत्रणाल यंत्रिम (धनः) मिन १४० ब्रम्प १ खामा १ १ प्रामु १६२ नाट-सम्बद्ध १३ दस्य १)।

र्यत् न [यून्त्र] समूह सूत्र (पठमा १ १) मीपा प्राप्त)। वंदाच्रा } वि विन्दुकी बन्दन करनेरामा विदेश 🕽 (पडमें ६ १८) १ १ ७६) महार भौगः गुचार ३)।

यक्ष्ण न [यन्द्रनः] १ प्रश्नमन प्रश्नाम । २ स्तान स्तृति (कप्प सूर ४ १२) सन्)। कस्स १ फिल्हरा मिल्लिक वट (बीप) । घड व चिट विदे को (योप) । मास्म. मास्त्रिमा भी ["मास्त्र] पर के द्वार पर मंधल के लिए वेंबी जाती पत्र-माला (सुपा १४ पुर १ ४ ना ६२)। पश्चिमा,

विद्या से ["प्रस्पय] वन्तन्तेतु (मुपा ४१२ पश्चि। **बंदणाकौ [यन्द**ना] १ प्रखाम । २ स्त्रम (पंचा% २ पर्सार, १--पन १ : र्घत)।

**पंत्**षिया **को (पे**] मोरी नामा पनासाः घटिव कंबसो, यश्चियाएं नेमि । मुद्रो । दमो वीचे विद्रो । कीए भी (? मी) विक्रमाए सुद्री' (मुचा२ १७)। वंदर देशो पंद = इन्द (प्राप्त)।

र्मवाप (मर्था) देखो येदास । मेकपपति (पि ) i वेदारम दु [पुन्दारफ] १ देव देवता (पामः कुमा)। २ कि मनौजूर (कुमा)।

वे मुक्प प्रवात (हे १ १३२)। पंदाद वि [यन्दाद] करून करनेवाला (वेदम ६२१ सहम्)।

वेदाव एक [यन्त्रय्] बन्दन करणाना । वेद्यवद् (ज्ञा) । बद्ध्यजन न [बन्द्म] क्वन, प्रसाप (शतक

108) 1

धविक्ष देखो स्व ≔ वन्त्। विविक्ष वि विनिव्दा विश्वको बन्दन किया गमा हो यह (क्या जन) ।

पैतिस देखो चैत - गलाः पेत्रा ध्री भिन्द्रा भाविकामा पुरुशाम पस्तवस्य ।

र्बद्र म [बाद्र] समूह, पूप (हेर ४३ २ धर परम ११ १२ । स १११)। र्यंघ र्षु चिक्त्र विक्र महाबह ज्योतिक स्व भिरोप (भूग्ब २ )।

धपट सक स्थिकता प्राह्ना प्रक्रियाप करता.। मंफर, मंफर, मंफर मंधित (हे ४ १६२ कुमा) । र्षफ सक [यस्] कीटना। वैफद (हे४

१७६ पर )। वंफि कि विदिस् र मीटनेवासा। २ नीच भिरनेवाना (कुमा) । वंकिश्र वि क्रिक्कित् विभववित (क्रुमा) ।

पॅक्तिश्र विदि}पुक्त व्यस्म हुमा(देऽ **१**४ पाप) । थंस पूर्वि]कर्मक दाय (देश ३)। थंस र् [बंश] १ बांच बेसु (फ्रह २ ४---

पत्र १४६ पान) । २ बाध-विरोपः 'बाइमी वंदी' (कुमा २ ७ राम) । ३ हुना 'बुनुवर्वसरीवयो' (कुमा २ ६१) । ४ सन्तान संतिति। ५ पृहायसम् पीठ काम्प्रयः। ६

वर्ग । ७ इषु असा । ८ कुछ-विशेष सासकुछ (हे १ २६ )। इरि पू िगारि । क्वंत-विशेष (प्रथम ११, ४)। करिक्क गरिक दुर्ग[करीछ] वंताकुर वॉर्डका क्रोसब नवावमद (धा २ ३ पद ४) । आह्मी, थाओं की [काळो] दौषों का महत्र कक्ष (मुर**१**२ २ स्प १ १६)। राजमा

द्धी ["रोपना] बंतकोत्रम (इप्पू) । वंसक्येम्सूय र्न [वे वंशक्येस्पुक] का के नीने रोमों तरफ तिरहा रवा जाता बांस (बीव ३ दाय)।

पंसग रेको वंसय (चन) । पंसप्ताल वि [दे] १ प्रकट व्यक्त । २ ऋषू, **स्टल (दे७** ४≠)।

बंसय वि [स्पंसक] १ क्ली, व्या २ तू. हुए हेंचु-मिरोप (का ४ व---पत्र २६४) ।

(निर १ १)। बहस्साणर पू विश्वानर] १ वक्कि स्थित । १ विश्वक कुस । १ प्राप्तेत का स्वयस्-विशेष (१ १ १२१)।

स्तरिको सङ्⊐गम् (घला)। सब वि [\*सब] बच्चारमङ (स्त १, ३ ६)।

बईल कि [स्वतीय] स्तीय पुत्रस हुमा। सोरा पू [शोक] एक कैन सुनि (पटम २ २)।

२ २)। बद्धय धक [क्यति + क्रज् ] जाना क्यन करना। बद्ध- फोम्सावस्य धीनवेदस्य प्रदूर सामेकेड बद्देवयमाणे बहुवस्तकद्वं निस्तावस

्रमा) । वर्षमाय देवो वहसाय (राज) । सह दुवी [क्] बावस्य ठारैर-क्रान्ता 'वऊ

य सामसरों (के के )। यह व [बपुद ] छरिए के (एज)। बबक्तिम कि हों जून-प्रोत (के भार)।

प्रमाण देवी क्य = वर् । क्यां देवी क्यं = वष्म (धाषा) । संय न [ "स्य] बाङ म्य, राख (विते १९१) । क्यां देवी यय = वस्स (पटम (स्, ११४)।

यभीपस्य <sup>)</sup> राजधोर किल्लाका काम (के १)। व<sup>8</sup> केवी दाया = बन्द । "नियम तु ["नियम] काली की मर्कास (का कर डी)। यंक्र कि [बहु यक्त] रे बांका उंगा दुटिक

सभीवरूपक १ पूर्व [ वे ] विपूर्वतः समान

(कुमा) तुराध्यः विश्वः)। २ तसीका भाकः (दृश्यः प्राप्तः)। व्यंकः दृष्टि] स्वयः, दानः (देशः ३)।

वं इ देवो पेक (वे १) २१ च्टा )। मंडमूक पू [बहुमूक] एक प्रतिक राज-कुमार (वर्मीक ११ पाँड)।

करुपूछि पू विश्वपूछि उत्तर केवी। उसी बसा संक्ष्मियो श्रेष्ट्रे (यमीव २३) १६) ६ )। श्रीकृत व [वहून, वहून] वहीकरछ प्रस्ति

थनाना (धारे रि—पत्र ४)।

भेकिम कि [विक्टित] वॉका किया हुमा (ते

६ २६)। वंकिम वि[पङ्कित] पंत्रपुष्ठ (वे ६ १६)। वंकिम पुंत्री [पक्रिमन्] पत्रपा द्वश्यिता (पि ४४ हे ४ १४४) ४ १)।

(१५ के हैं । १५०० १) । चेडुड़ ) वेचो चंड = वेटा विविद्यविद्यव्यक्त चेडुज़ ) विभिन्नवर्षेत्रविद्यक्त स्कटरए। एया-एसिमा य वर्षे (स २२६० हे ४ ४१ व मसि रि. ४)।

दंकुम (शी) क्यर देवी (प्रक्र ६७) । धंग व [दे] बुकाक भटा (दे ७ २६) । धंग वि [स्पङ्ग] विक्र धंग वत्रवा क्योपश्चित्रवेतुष्यन्तवाविरोद्यावसोसमुद्रमामो

(क्स्बर ४--पत्र ७१)।

बंगस्ब ( वि ) प्रमण शिव का प्रमुखर-विशेष (वे ७ वेदे)। बंगाज क [क्यकुत्त] बद्ध (एक)। बंगिय कि [क्यकुत्त] विकट स्टिपस्ता

(एव)। वंत्रवादु दे दे दुकर, सुपर (वे ७ ४२)। वंत्र एक [बक्स] हम्मा। वंत्र (दे ४ १६) पर (सहा)। वर्ष वंत्रिक्स (सिं)। वंद्र वंत्रिक्स (स्वा)। वृत्र वंत्रप्रीक्स

(प्राप्त)। प्रयो मह और यो यो वैचार्विती

कुमारवहार वरह पुरवाहि (सुना १७२)। वंच (सर) केसी वच = वच्। वंचर (बाह-१११)। सेह- देखिब (वर्ष)। वंच सक [वज् + नसम्] सँचा स्टब्ना। वंचा १० (कारता १२१)।

वंच वि [ब्रह्म] इस्तेयामा वृक्षां भूकियाई व वंद्रक्षण्य व वंद्रक्षण्य वर्ण्य वर्ण (व्यक्त ११६३ हे ४ ४१२)। वंद्रमा १ वि [ब्रह्मच] इसर देवो (त्रह— वंद्रमा महार्थ्य च १ )।

र्षेत्रण न [त्राह्मध्य] १ प्रवास्त्य उन्हें (सम्पत्त २१७) । २ ति उन्हेंग्यामा, उन (संहोत ४१) । चाम वि [बाम] उन्हें में बहुद (समात २१७) ।

वंचण के [बद्धता] फाएडा (स्व कृण्)। वंचिम वि [बद्धित] १ म्याप्ति (धम)। १ प्रीत, वर्षित (बस्त)।

विद्वा की [वास्त्वा] रच्या चार (दुन ४ ४)। वंश तक [वि + श्रद्धः] स्वयः करना प्रकट करना। कर्म वंशिक्यः (विते ११४ ४६%) वर्मतं १३)।

प्रकृष्ण वर्षतं दशे। दंज देवो संघ = स्व+ वसम्। वंगदः (१) (बाला १६१)। संज्ञ देवो स्त = वन्दः।

मंत्र केटो ६२ ≔ मन् । इंजन केटो वंश्वय (चन)। वंजन केटो वंश्वय (चन)।

होण्य वंत्रज्ञकारों (मिन्ने १०) 'घी तरिव धारवरेमी वंत्रज्ञाराणा वर्ष निर्णा (मात्र ६६)। २ स्वर्तान्त सारक वर्ष इ तक वर्ण (पिने ४६१४ ५२२)। ३ तन्त वक्ष 'घी पुछ सामस्यो पित्र बंत्रज्ञारीसारो व साम्बन्धियो य' (सम्ब ६४ सुमिन ६

विक क्षि १७)। प्र तरकारी कही वार्षि स्व क्षाप्त कहा वार्षि स्व क्षाप्त कर है। इस देश कर देश कर है। इस देश कर देश कर है। इस देश कर देश कर देश है। इस देश कर देश कर देश है। इस देश कर देश है। इस देश कर देश है। इस देश है। इस देश हैं। इस द

र भ का २ १)। संबंध वि [स्थक्कि] व्यक्त कलोशाला (सर्व २९)। संबंध दे[मार्बोर] विल्ला विलार (हे ९ १६९ कुमा)।

बात-विरोध क्या धीर मन को को कर

क्रम्य इन्द्रिमों से होनेनामा बात-विशेष (क्रम्

पंत्रात [है] बेशी बटी-जब (के परी) । वेजिस हि जिस्किता चार किया हम्य क्रिकेट (डुमा रे रेस २, १६) । वेजुल (ड्रीक्ट्रिकेट (स्टेट) वेजुल (ड्रीक्ट्रिकेट (स्टेट) मेड्रक्टिंग्य (१११) । वेजुल (स्टेट) मेड्रक्टिंग्य (१११) । वेजुल (स्टेट) । (स्मा रेरे के क्या ६१) कर २१६ ही)।

३ प्री<del>व-विशेष</del> (प्रसाह १ १ स्थल )।

की वी (पबर)। वंस्तिक [यम्बय] सून्य वर्गित (कुमा)। वंस्तिकी [यस्म्या] बोम्तकी बगुववती की

(प्रज्ञम २६ ०३ सूचा १२४)। श्रंट म [बून्त] प्रश्न या पर्चों का सम्बन (निष्ठ

र्देट म [युन्त] फल या पत्तों का मन्यन (निष्ठ ४२)। थटरा पूँ [वफ्टक] बॉट विनाव (निष्कृ १६)।

र्थंठ पू [वि] १ सक्कत-निवाह सविवाहित प्रवाहते में बांकी (वे छ दव सोव २१०)। २ स्वतंत्र दुवजा। १ सन्त (वे छ दवे)। ४ साम साम (वे छ दवे सुर २ ११०)

रमण क्यां किरि १११४)। इ.सि. निन्हीह, होक्-रहित (वे ७ व्ये)। ६ यूण स्म (मा १२)।

क्ट वि [यण्ड] सर्वे वामन नाटा नीना (हे ४ ४४७)। नाम्य (स्था) व [सामन] सोमना नियानन

बटिया (भप) न [यण्टन] बटिनाः विस्तवन (सिय) ।

(स्पा) । ब्रॉड्स्अ वि [बेर्] पीवित (पब्) ।

बढरूआ व [बु] पाव्य (पर्. संबु देवो पबु (बा २८४) ।

संबुद्ध न [क्] राज्य (वे ७ १६)। संबुद्ध स्था पंबर (मा १७४)।

इंड वृष्टि सन्त (दे ४ २६)।

धंत कि [सास्त] पठिठ सिंध हुआ (वस के १टी)। धंत पू [बास्त] १ निष्टका बमन किया स्था को बहे (ठव)। २ ईट. वसना परी क्रवा

्हो वह (ठन)≀ २ पुनः नमनः भीते इ.सा पिते इ.सा' (मय)। संतर पुं[स्थान्यर] एक देव-प्रांत (दे २७)।

महा)। धर्मारे पुंचित्रपर्विक् असर केवी (स्प)। धर्मारे पुंचित्रपर्विक् असर केवी (स्प)।

यतारका का [स्थान्तर]स्थन्तर-माताय के (बुना ६१३) । चंदा देवी बसं ।

"बंदि देखो पन्ति (या २७८३ ४६६)। "बंध देखो पन्य (वे १ १६ ६ ४२३)

चैंध केवी पत्र्य (से ११६६ ४२) १३ २ पि./३)। अंक सम्बर्धिकारी १ प्राप्त्य स्टब्स्टर ३

र्थं इंक [क्रम्यू] १ प्रणान करना। २ स्टब्स करना। वंदद (क्ष्म महाकृष्ण)।

बहु सन्त्माण (बीप १० से १ स्रीय १७२)। स्थाहः पश्चित्रमाण (उप १०६ दी प्रामु १६४)। सेहः पश्चित्र सन्दिका, सन्दिक्त पश्चित्रमा, पश्चित्त सेव्या

सन्दिक्त वन्दिरा, वन्दिन् वेदेषि (क्रम ११ पंत्र कम्प्य वह है ११५ वंड)।हेड्ड\_वृद्धित्त (ब्ला)। इ. पंज, पंद, वंद्यम्बद्ध प्रशास, वंद्यम (पन) पंत्र १४) इम्प १ एएषा ११ प्राप्त १६२

साजारक क्रम्य र एएसार र प्राप्तुरस्य नाट---मुक्तारम् वसकारः)। संजुन [हुन्द] समुक्तः सूत्र (पदमः १ १

सीप प्राप्त)। पंदान ) कि [यन्त्रक] सन्तन करनेनाला पंदान ) (पत्रम ६ १०११ ७३) महार सीपा मुखा १३)।

यद्रभा म [सन्तुन] रै प्रणयम प्रधान। रै स्थन, स्तुर्ग (म्रम्म पुर ४ वर जम्)। ब्रम्भ वु क्रिस्ता प्राप्तिक पट (मैन)। पड यु प्रियोज्यो पर्प (मीप)। सात्र्य सारित्रमा की मिसमी मर के द्वार पर संस्कृत के मिस वीची पत्र-साता (पुरा

र्भ मुर १ ४ मा ६२)! बढिआ, बिक्ता की [मस्यय] बन्दम-हेनु (मृता ४६२ विक्री। वैद्या की [बन्दसा] १ प्रणाम । २ स्तवन (वैद्या के २३ वर्षा १ १ —वक्ष १

संत)। पंत्रभियां की दिं] मोटी भन्नता पतासाः 'मस्पि कंत्रको संख्याय् नेमि। मुद्धो । तमो तीले रिको । दीप् चं (१ वं) विख्याय् सूत्रो' (पूजा २ १७)।

र्षदर केको संत् = इन्य (प्राप्त) । पंताप (घरता) देखो संत्राच । नंदापमति (पि ७) ।

र्धवास्य पुं [युष्पारक] १ वेश वेशता (पाप्प कुमा)। २ वि मनोहर (कुमा)। वे ग्रुक्त, प्रवान (हु १ १२२)। र्धवारु वि [बन्दारु] वनन करनेनामा (वेहस

पंदारु वि [बन्दारुं] बन्दन करनेतला (बेह्स ६२१ सहूम)। पंदाय एक [यन्त्यम्] बन्दन करवाना। बेराबद (वर)। बेहाययान [यन्दन] बन्दन प्रसाम (शासक

ter) i

धॅदिअ देशो येंद = बन्द् । धॅदिआ थि [यम्बिटा] जिसको सन्दन किया

स्या हो वह (कथ्या स्व)। वंदिस देवो संद - वन्द ।

भदुराक्षे [सन्दुरा] वाकिशका प्रकृतस भरतवसः। चैद्रन विस्त्रीसन्द्रस्य (१११ १२

ण्ड पदम ११ १२ ३ छ ६२१) । वीभ दु [यग्य] एक महाध्य जमोतिषक देव विरोध (मुख्य २ ) ।

र्वफ सक [क्शक्तुं ] पाहना अभिजाप अस्ताः वक्तुं, बंक्यु बंकिंठ (हे ४ १६२ अस्ताः)।

मेफ सक [यस् ] मीरनाः वंफद (इं.स. १७६ पर)।

र्थफि वि [यद्धिम्] १ सीटनेवासा । २ नीथे भिरतेवासा (बुमा) । वैफिक्ष वि विश्वकृतियो प्रमित्तवित (कृमा) ।

वैफिअ वि[काक्शित]पनिकपितःकुश)। वैफिअ वि[के]प्रुकः वाषा हुमा(वै७ - वेदः, पाप)।

पंस पू हि] कसंक राम (रे ७ ३)। पंस पू [पंश] १ वास केगु (पराह २ ४---पत्र १४६ पाध)। २ वास-किरोपा 'वास्पो वंसो' (कुमा २ ७ पाय)। १ हुवा 'पुसुनवंद्योवसो' (कुमा २, ११)। ४ धन्तान

होति। १ पुरानवर भीठ का माना १ व वर्षा ० पुरु ज्ञ्जा । व पुत्र-विरोध सामपुत्र (ह १ २ १) । इरि ट्रे [mारि] वर्षट-विरोध (तत्रम ११ ४) । इरिक्क गरिक्क पुत्र [करिक] वंश्वकुर भीते का क्षेत्रम नेमाचन (वा २ व प ४) । जात्री भाकी की [आफो नीतों का स्वान क्या

(पुर १२, २ : उर पू १६) । राजणा की ['राजना] नराजीचन (क्यू) । धंसकतंत्रसूप कु वि धंराकरेल्डुक] कर के नोचे दोनों ठरफ रिस्हा रका नाता नीव

(बीव १ राव)। पैसन वेबो पैसय (राज)। पैसण्यास वि [प] १४६८, व्यक्तः। २ बाजू, सर्वा (१७ ४८)।

सप्पा(व ७ ४८)। वेसम वि [क्योसक] १ क्टॉ, ब्याः २ ट्रु कुण हेतु-विशेष (डा४ ३ — पत्र वश्४)। इस्सा क्षेत्र विद्या दिया गरक-पृथिकी (ठा वंसि के वे वंसी = वंध (कम्म १२)। ६स्थि नि विशिष्ठ । नेरा पत्त वजलेशमा (Èt ७ कुमा) i वंसिम वि (क्वंसिव) ब्रवित प्रतारित (ध्य)। र्थसी की बिरंशी र मुख-विकेष (बाह २)। ९ वॉस की बाली (ठा १ १-- पत्र १२१)। कर्छना की किल्कुत वांस की पासी की क्ली हाई बाजु (विधा १ ३---धन ६८)। पितिका की पितिका योगि-विशेष र्वराज्यों के पत्र के स्थानार की बोलि (स्र 1 (f # वंसी की विंशी] वाम-विरोध मुचनी (बुह २)। पहिया थी ("नरिसक्री) पनस्पति-निरोप (क्रस्स १--पत्र १ )। सह द्र-िस्ता है लिया बीब-विरोप (बीब १ टी--पन वर)। वंसी की [वंश] वास । मुख न [ मुन] गांव भी वह (क्य) । वंसी की वि अस्तक पर रिक्ट माना वि क 1 ): बक्त न विक्यों प्रशासन संग्रह्म (44 44 cff ext): तकान विस्कृतिका काम (उप ४६६ धीरा) । धंम दे ["बन्ध] शस्त्र-बन्धर (विरा ) ( वद्यारेका संकल्पक (खाना र रेवर सद्दर मर्बर्ध रेंद्र वश्रह)। क्षण ग मिनजो मुख बुहि (पच्य १११ \$ ## ## \$ \$ W ) 1 क्षक त [व] फिटु पिकान मामा (वक्)। यकत १४ (बकास्त) प्रवय तरक-मूमि का रप्तरी नरकेण्यक-नरकाशास-विद्येष (देशन्त्र बबंत थि [अवफास्त] स्थल (क्या दि **१४२)** । वर्षति धौ [अवकारित] सत्तीत (क्रम 🗱 २ः धन)।

नवाह म [वं] १ दुविन । २ मिक्टर दृष्टि (वे

w. 11) 1

बद्धकांच न [दे] क्यांबरत कल का बानुबस्य (वे ७ ११)। पद्मम प्रकृष्टिम् ] उरमन होता । बद्धमद् (भगे क्या) । मुका बद्धमियु (क्या) । पवि बह्रविस्पंति (क्य) । बह्र, पद्मममाज (क्ष्मः खाद्या १ १-- वन २ 🕍 सक्दर (सप) देखों सक्त = पंत्र (अवि) । धळळ व [बर छड़] दुस नी सम्ब (प्राप: गुवा रहर हे ४ १४६३ ४१६३ प्रति ४)। चीरि ए "बीरिम दिन महर्षि भी सका प्रथमनकात्र के कोटे माई थे (कुछ २ ६)। ) पि पिरक्रकियों इस की दान वक्किम र पहुन्तेनाला (दानस) (कुमार धनोन २१ पदम ११ ८४)। प्रवाह्मय कि 👣 पुरस्कार वाले किया क्ष्मा ( 4 4 XE) 1 यद्धसन दिरी १ प्रधना भागका वायकाः २ पुरावन सक्त-पिएड । १ बहुत विनी का बाबी बोएस । ४ वेहें का मांड (माना १ £ ¥ (1) विक्रिय (ती) देवी दंदिम (रि ४४) । बस्ता देशो शब्दा = सूत्र (चंडा पर मदर)। स्वता देवी शक्त = कास् (पनिः १३, शाह १२ बार-मृत्य ११६) । बक्ट देवो परसा (वा ४४२ में १ ४२, ४ २३: स ६४१) । वदसमाज देशो वय = व्। वस्ताक है। हिंदी याच्याचित, हमा ह्या बस्त्य स्ट [स्या + स्या] १ विवयस करना। २ क्यूना। इं यक्त्रीय (विशे १३०)। , बक्ता की विधायमा निवध्य विशव वय से धर्म प्रकाश (विसे १६४)। धनकाण ग[स्याधवान] १ स्मर क्यो (भेदन २७१: लिके द६६) । र कमन (दृ ४, ६ ) । वक्काय कर्क क्वास्तानस् । र विवयक करमाः २ कहनाः शक्कासद् (प्रति)। व्यवि पत्रवाखराचे (शी) (पि २७१)। करी पश्चारित्या (निषेश्वर)। यह मक्त्याणयत ( उत्तर १०३ रमण २१)। बंड, वक्कालेड (निवे ११)। इ. वक्काय-भ्रम्प (चन)।

वपस्माणि वि [उपास्पानिन्] श्रास्थान-कर्या (वर्षते १२६१)। **धनसाधिय वि [स्याक्ष्यानित] श्रास्ता**त (पिसे १ ७)। मक्स्माणीक (सप) क्रमर देशो (पिन ६ ६)। पक्छाय वि [क्वास्यात] १ विकृत पश्चित (स १३२) वेदय ७७१)। २ प्रेमाञ पुचि (बाचा १ ३,६ ०)। क्क्ट्रार पू कि विवाद, यस मानि रक्ते का मकानः योग्यम (उप १ ६६ ही)। बस्सार व विद्यार बश्चस्थारी १ पर्वत-विदेश रक्ष्यत के माकार का पूर्वत (सब १ १३ ६क)। २ जू-भाज मूझ्लेश (पटव यक्तारय न वि र एकिन्छ । २ यन्तपुर ( \* YX) 1 भक्त्राप सक [ स्वा +क्यापय्] स्माज्यान कराना । बनवाबद (प्राप्त ६१) । व्यक्तिप्राच विक्रियाशियों १ व्यक्त व्यक्तिय (योत १३) ब्रुप्र २७)। २ किसी कार्य में म्प्यपुद्ध (पद २)। **दरक्षेप रेडी दनका** अध्या + स्या । वस्त्रेत र् [स्यादाप] १ म्बद्धाः व्याह्मस्या (उसार कर १३६ क्षेप्त १४)। २ कार्य-बाह्य (मुख १ १)। वक्कोच 🛊 जिल्होची प्रक्रियेन अस्टब्स (बारभरमा)। पस्को देवो सद्या≂सबस्। द६ ई िस्त्रो स्तन वन (मुगा ३ ३)। बक्तु (शी) रेवो धंड = वक्ट (प्राष्ट्र १७)। वस्तात्र (पर) देशो वक्साज = व्यवस्थानम् । बबारा (प्रिन) । वसाजिञ (धर) वेबो धकसमजिम (पिन)। क्षाका की कि बाद परिवास (बन्द वर्ग है)। वसासक [बस्स] रेवाना विशेषस्त्राः २ कुरमा । व वह-पायस्य करता । ४ स्थिमात-नुबन्ध रुक्त बरना बृ'बारसाः। मानद (स्थीत क्षमहा पि २१६) मानीय (प्राप्त २ )। कमें वस्वीयादि (शी) (फिराट १७)। यहः समीतः (स १०३) गुरा ४६६ वनि)। वंक वरिराचा (पि 264)1

बमा पू [बर्ग] १ समलीय समूह (एकि पुर | १ ४ कुमा) । २ गस्तित-विशेष को समान संस्था का परस्पर प्रसात (ठा १००-पन ४१६) १ १ प्रमानारिक्येर प्रव्यान सर्ग (हेर १०० २ ४१)। मुळन [मूख] वस्तित-विद्येत वह भेक विस्तान वर्ग किया गुसा हो वैसे ४ का वर्ग करने से १६ होता है १६ का बर्गमुस ४ होता है (बोबस ११७)। बारा दू [बर्ग] मीएव-विरोध वर्तसे वर्तका ग्रह्मा और से २ का वर्गे ४ ४का वर्ष १६ सह २ का धर्मधर्म कहमाता

🕽 (स 🕽 । बस्स सक [बरोय्] वर्ग करना, किसी मेंक को समान ध्रेक से प्रधाना । बागम् (काम ¥ ¤¥)1

बाग वि [ड्यम्] स्पानुत (स्तं १५ ४ रमस्य ६०)।

भागा देखी वक्क = सन्द्र (विमे १५४)। ब्या देवी प्रश्न = वानय भुता चलित प्रवृत्ते वह बग्यवार्त (रंभा)।

ह्या (खाया १ १६ — पत्र ४३)। बर्गासिक न [वे] दुव सहाई (६ + ४६)। ब्रमाच्छिआ स्मे [बराष्ट्रिका] एक प्राचीन वैत क्रम (एसि २ २)। बमाण न चिमानी बुबना (धीप बुध १ ७) कप्प खाया १ १--पण १६। प्राप)।

धुरग्या न [बहरान] बक्नाव (रंधा)। धरगणा की मिर्गेगा समाधीय स्टाह (अ १--गम २७)। यस्य व दि विश्वविकास (देश ६०)। बम्मा धी [बल्मा] बन्धव (स्व ७६= टी)।

युग्गावर्गित स वर्षे कर हे (सीप)। बन्गि वि [पारिसन्] १ प्रकारत वाक्य बोमनेवाचा। २ पूं बृहस्पति (प्राप्तः) पि २७७) ।

वस्मिभ वि [बगित] वर्षे किया हुसा (वस्म X # )1

बस्सिक्ष न [बहिरात] १ वह भावण बक्ष्याव (बम्मत २२४)। २ वहारै की धानान (मोइ वण) १ ३ वर्ति वास (स्ए) ।

बीगर वि [विलाए] १ चुबार मानाव करनेशाचा । २ पवि-विशेषणता (पुर ११ 1 (505

बारा केटो याया = नान् 'नार्ट्स (मीफ कृप सम ६ कृम्मा ११)।

बरम् देखो समा = वर्षः 'बस्तूहि' (मीप) । बागु वि [यहमु] १ पुन्दर, शोमन (पूप

१ ४ २,४) । २ कल मधुर (ग्राम)। व र्षु विजय-क्षेत्र विक्षेप प्रान्त विक्षेप (ठा२ ६---वन व )। ४ दून, एक देव-विमान वैभगण बोक्साब का विमान (देवेन्द्र १६१ २७ )।

वरगरा न शिगुरा र मुख्यमन पर्य फैंसाने का जासा फैला (पर्या ११ विपा र २—पन ११)। र समूह समूरामा 'मणुस्पनग्रुरापरिनिवारी' (स्ना प्राप) । बरग्रिय वि [पाग्रिक] १ मृग-काम पे

बीविका निर्वाह करनेवाना व्याप पार्राप (धोष ७६६) । २ पू. मर्तक विशेष (एक) । बरगुष्टि 📢 [बलगुष्टि] १ पक्षि-विशेष (प्रवह १ १-पन व)। २ रोग-विश्वेष (बोबमा २७७ यावड ११ टी)।

बग्गेळ वि दि विषुद्र प्रभूत (वे ७ ६०)। बन्गोध पुँ [वे] ल्डुब न्यौसा (वे ७ ४ )। वम्गोरमय वि दि । इस पुदा (१७ १२)। वसोक्ष एक [रोमन्यम ] प्रापना क्वी

हुई बस्तु का पुना भवानाः प्रजयती में वानोक्यू । वापोस्ट (हे ४ ४३)। यग्गोलिर वि [रोमन्थयिषः] पंतरानेशका **(**≢मा) । संस्थ वि [सेवाप्र] व्याप्त-वर्भेका बना ह्या

(धामा २, १, १ १)। वग्य पू [अ्याम] १ बाब शेर (पाम स्वप्न ण : धुपा ४६३)। २ रख्ड एरए**ड** का देहा

६ करवा बुझ (दे २, ६)। "सदा बु [मुद्रा] १ एक बन्तर्शीय : २ इसमें यहने बाली मनुष्य-वाति (ठा ४ २—-वब १२६ इक्)। यग्पाभ दे दि । १ सम्बद्धम्बद्धः स्टब्स्

विकश्चित क्षिमा हुया (दे छ 🚓 ६)। यन्याकी की [मू] उत्तरम के किये की

वासी एक प्रकार की प्राचाना संप्येपहर्मा वरवाक्रीयो करेंदि (स्तामा १ ६—पत्र (22)

यापारिक नि [स्माधारित] १ नगरा हुमा सीका समा (मार--मक्स २२१) । २ व्यास: 'धीतीवयीवपञ्चनभारियपरिक्या' (मभ ३१)। वे पिमना हुन्ना (क्शा के वृषु भा• वसिया १६७)।

वस्मारिअ वि दिने प्रसम्बद्धः पश्चित्रहारीर वरभारित्रसारिणसूचममझदामकतावे' (सूच २ २ ११) 'बन्बारिक्याखी' (सामा १ ८--पत्र ११४३ करमा सीपा महा) । धरभावच न [ब्यामापस्य] एक गोव, जो वास्तिह नीन की एक शाबा है (ठा अ---पत्र ११ सुमार १६४ कृत्य इक्.)।

वस्थी और [ड्याजा] १ बाव की मादा (कुमा)। २ एक विद्या (विदे २४१४)। षपाय देवो सामाया 'प्राउत्स कासादवर' बनाए, नजासुमार्थं व परस्त बहुं (सूब १ **23** 9 ) i

यचाओं [यचा] १ प्रीयंगी वरती (से २ ११)। २ मोर्जन-विशेष वन (मृच्छ र्फ)। वेको धया = वचाः **चय एक [ब्रज्] काना नमन करना**। वचइ (हे ४ २९% महा)। भ्रवि विच-

दिखि (महा)। यहः धर्यतः यश्रमाम (गुर २ ७२। महात्वादश)। वक् सक [काइस ] बाइना अभिनाप करता। थचड, बचेड (हे ४ ११२ कुमा) ।

यक्षेत्रो दय = वर् ।

वश्र पून [यर्थस्] १ पूरोप मिष्ठा (पानः योग १६७ सुपा १७६ संबू १४)। २ पूबा-करकट भीनो वंगेमाद पूर्णवी विख

मिहे कुछ द वर्ण (संबोध ४)। ६ चीमा नरक का चीवा नरतंत्रक—नरकरवात-विरोप (देवेन्द्र १)। ४ देज प्रमाद (गुप्पा

११--पन ९)। घर, इर न ["गृह] पास्ता दही (तूच १ ४ २ १६) स #Y() I यव देवी वस = वचस् (स्थासः १ १ — स×

4) i

€3

476 वर्षेति वि विपरिवर्ते प्रस्ता वयनवाया (सम्बर्ध-पन्द्र)। वर्षांसि वि [वर्षेरिकम् ] ठेक्स्बी (द्यामा १ १ सम ११२। भीषा वि ७४)। वश्य पु [स्वस्थय] विवर्शन स्थर-पुनर (इनपुर६६ पद १ y) । **रेको सत्तक** । बब्दा (धा) वैको स्वा (प्रकि) । बबारेको एम = नव्। बबामेकिय देशो विदासेकिय (विशे tyat): गवास १ (स्पत्यास) विपनीय विपरीय (घोष २ १: कम्म १ वर)। ववासिय वि [स्परपासित] स्वयं क्यि इस्स (विसे ≤१३)। बबीसन दू [बबासक] बाद-विरोव (पर्) । थवो देवी वय = वर्गस (सुर ८, २८)। वच्छान [दे] पार्श्व समीप (दे ७ ६ )। वच्छाईन विश्वस्] काठी धोना (दे २ १७ वर्षि १३: प्राप्त पा १११ कुमा)। रशस्त्र म "स्वस्त्र प्रशःस्यव काठी (पुन्यः महा)। सुच र [सूत्र] मानुक्य-विकेस, वद्धारसस्य में पहलते की सँकवी--विकासी मा तिकरी (थन १, १३ ही—पत्र ४४४)। बच्च दू [पृक्ष] वेह साबो दून (प्राप्त-दूमा) है २ १० पाय)। बच्छ ([बस्स] १ बद्धता (पुर २ ६४, बाग्र)। २ किंदु बच्चा। ३ वस्पर-वर्ष । ४ वकस्पन सुखी (प्राप्त) । १ क्योतियतास-त्रस्थित एक **रह (मण ११)**। ९ क्ष्म-विशेष (धी १ )। ७ विजय-क्षेत्र-पि**टे**प (छ २, १—-पत्र ८)। न वोक-श्चिम १.वि. वस बोल में बरक्त (ठा च—रत्र १६ कम्प)। इर पूंकी ["तर] धूत्र बला। र दमनीय बद्धास साहि। और. री (ब्राइटरर)। मित्ताओं [मित्रा] र सबोराक में प्लेशको एक दिस्तूमाध देवी (इ.स.--१४ ४९३) इक्)। २ अर्थनीक य रहवेराली एक दिश्हबारी देरी (इक च्चा}। यर वेशी दर (दे २, ६३७ ३०)। स्वर् [स्वत्र] एक सना (ती १)। शब्द्रीय पान के मना (बाध) : ६६, ६६ (धारत) ।

यच्छाति [मारस्य] महस्य योजन्य (छवि वच्छ्रगावर्ष् की [बस्सकावती] एक विजय-सोव (ठा १ ६--- नत्र सः इक)। वस्त्रर पुन [बरसर] साथ वर्षे (प्राथ सिरि £ \$2) | बच्चारक वि विस्सानी स्मेदी स्मेदा-पूरक (बा का कुमार **सुर ६, १३०**)। बरमञ्जब [बास्सस्य] स्टेब् धनुषय प्रेम (कुमा, पश्चि)। क्ष्यद्वा औ [बस्सा] १ विकय-क्षेत्र विदेश । २ एक नवरी (इक)। ३ सङ्की (कप्पू)। मस्त्राज र् [स्युन्] वेव वशीवर्थः 'स्त्रवा नद्धा व पण्यासा (पाध)। बच्छावई धी [दस्सावती] विवय-क्षेत्र विशेष (#Y)1 विद्धाः वेद्यो वय = वयु । वस्तिहरू 🖠 [चे] वर्मायम (२ ७ ४४ टी)। बिष्यम देशी विश्वत्वी शृक्ष्मन ( क्य )। बच्छिम्ब र् द्वि] वर्ने सम्मा (१ ४ ४४) । बच्ची इस र् [र] नामित हमाम (१७ ४७ पामा संभ्यो । बच्छीव र् [वे] नोक खला (रे + ४१) पस्य)। बच्छ्यक्रिम रि [दे] प्रशुद्धत ( वर् ) । बच्छोम न [बस्रोम] स्वर-विरोप कुणत देत नी प्राचीन चनवानी (क्रम्)। यच्छोमी की दि] काल्य की एक धीठ (<del>7</del>7) ) वक्त पर जिस् दिला। बस्मक बस्मक (देश रेटका सङ्घ ७५, वस्तारेपरे) । बक्त देवो यश्च≔४ज । ४०७६ (सट—नुष्य ११६), बमसि (ति ४ )। थ्यासक विश्वीय है स्वाद करना। क्लाह. विकासी (पंचा १ २७) । वह विजय बज्रीब बिज्ञकण बद्धारा (महा काल रचा (१ ६)। इ-वञ्च पञ्जणिका बज्जयस्य (वित्र प्रदेशः स्वाः स्पत् रे, ४) नुपाप सम्बद्धानस्य १४ देव ११ ३ क्ष १ ६७)। याज यक [वर] दनना नाय मार्थि सी भाषान होने। नरनह (हे ४ ४ ६ नुस

पर्वास—क्त्र ११४) । वक्र वर्जाव, वद्ममाण (दूर १, ११३८ पुता ६३६) । क्काम दिल्ली गांगा गारिन (दे ६ ५० षा ४२ )। मध्य मि [पर्ये] १ भेड, क्लम (तुर १ र)। र प्रकात मुक्त (है २ २४)। बळ वि [वर्त्ते] १ रहित, गरित विस्तरम देशमार्थं न पगइ थी तस्य तर्जुनुद्वी'(ध्य ६) 'ख्रुपनियोधननस्य पार्यं न वहति प्रावारी' (वेदय ४७१) 'क्षोयववद्वारवक्ता तुम्मे परमत्वमुदार्थ (वर्गीव ४४६ विसे रेवप्रका सामका रेका सुर १४ कव)। २ में, क्रोड़कर, विश्वा शिवाय (मा ६) वे १७ करन ४ ६४: १९)। १ ए. विचा प्राण्डियम (पद्मा १ १---पप ६)। वका केवो अन्तका (तूम १ ४२ १६, क्का देवो पहर=यत्र (कुमा) पुर ४ ११२) इ.स. इ.स. १७३३ १० १ स. वस्तु कस्य १ ३६, भीवता४ शासम २४) । १७ द्र विश्वाबस्त्रंत का एक राजा (बस्य ४, १६) १ । ६, १३३)। १० दिशा प्राप्ति। नव (पर्याह १ — नव ६)। १६ <del>क्रम्ब विदेव</del> (पर्या १—पन १६) ज्ञा १६ ११)। ९ न कर्मे-विरोद, बैवाता हुमा कर्मे (कूप २,२ ६६ छ ४ १—पत्र (१७)। २१ पान (कुछ १ ४ २, ११)। **स्ट**र्ड [क्युट] वानर-क्षेप का एक राजा (प्रवन ६६)। अध्यय [अद्रान्त] एक देव विनात (बय २४) । चेब् वे ब्रिन्दी एक प्रकार का कन्द, बनशावि-विशेष (बार )। **कृत** न [कृत] एक देश-वियाल(सम २१)। क्स पू [ कि] एक विद्यापर बंदीन राग (वदम ६, १३२) : भूक तु [भूक] विद्यापर-वंद का एक राजा (पत्रम ४, ४६)। 'जेप र ['जह] विशावत-वरमेव एक मरेश (पडन २, १४) । जाभ 🛊 ["नाम] माराज व्यक्तिम्दन-स्वामी के प्रवस महाधर (धम १६३)। देवी नाम। इन्हर्नु ['वर्च] १ विदायर-वंत का एक सर्वा (पडम रे. १४)। २ एक जैन द्वति (पडक रे १)। द्वर र्र [भाव] एक विदासर

र्वसीय राजा (पत्रम द १६)। घर देखो हर (पदम १ २ १४६ विकार १ )। नागरी भी [ नागरी ] एक मैन मुक्ति-राक्षा (क्रम)ः नाम ⊈िनामी एक क्षेत्र मुनि (पचम २ ११)। देखो °णासः। पाणि पं िपाणि । समा (बत ११ २३ क्षेत्र रहका वर्ष रश हो)। २ एक विद्यावर-नरपति (पदम १ १७)। ध्यम न प्रिमी एक देव-विमान (सम २३)। यादुपू [यादु] एक विद्याभर नेरद्रेय राजा (पटम ४,१६)। भूमि की [मूमि] ताट देत का एक प्रदेत (प्रापा १ इ. १ २)। स (इस) देखो सय (इ ४ ३११)। सब्दार्ष ["सम्य] १ एखस-वैश्वका एक धाका एक सकेश (पदम % २६६)। २ रावसाधीत एक शामन्त राजा (पराम व १६२)। अवस्य 🗱 ["सम्मा] एक प्रतिना वर्त-विशेष (मीप २४) । मय वि ["सय] क्रज का क्या हुया (पटन ६२ १)। इसे मई (नाट---अन्तर ४४)। "रिस्त्रनाराव " "ऋपमनाराच सानन-फिटेप राधेरका एक तखाका सर्वोत्तम क्ष (कम्म १ ३०)। "ह्यान कियो एक केन-निमान (सम २३)। स्टेस न िक्षेत्रय] एक देव-विदान (दम २१) । "व (घप) देशो स (हे ४ ११६) । वण्णान विजी एक देव-विदान (एम २६)। देग र्वेचिंगी एक विद्यापर का ग्राम (सङ्घा)। "सिक्रक को ["शृद्धक्र] एक विचान्देवी (संति ४)। सिंगन शिक्को एक देव-विमान (धन २१) । "सिंदू न ["सृष्ट] एक देव-विमान (सम २३)। सुदर पु विसम्बरी विदायर-वंश में उत्पन्त एक राजा (वरुम ८, १७)। समजह ई [सम्बद्धः] विद्यावर-पंश का एक राजा (प्रजम ४ १७)। सण पु [सन] १ एक केन दुनि, वो सक्ताल अध्यक्षेत्र के पूर्व जन्म में पुत्र मे (पठम २ १७)। २ विकासी वीशास्त्री रातान्धे के एक बैन माचार्य (श्विर १६४६)। हर १ [ भर] र शन, देवतन (६ १४, ४व घर)। २ वि वक्र की बारख करने-बाता (सुपा १६४) । उद्य पू [ीयुथ] १ प्रमा (पदमा १ १६७ प्रश् १४) । २

विचापर-वैश का एक चना (परम १ १६)। स ई [भि] एक नियानर बंशीय राजा (पंडम ४, १६)। । घरा न [ पर्चे] एक केक विमान (सम २४) । "स पुं िशो एक विद्यावर-एका (पदम प्र t (es वटांड पूं विकास विवासर-वंश का एक राबा (परम ६, १६) । थळांडुसी ध्ये [यजाङ्कराी] एक निया-देनी (संति १)। यञ्जत देशो वञा≔ वर् । बक्जंबर वं विज्ञान्यरी विद्याधर-वंश का एक राजा (परम ४ १६)। क्ञपट्टिया औ दि ] मन्द-माग्य भी (सेंसि बज्जण न विर्जानी परिस्थाग परिकार (सुर ४ वर सं२७१ सुपा२४४६ सूर्)। वकाणा (घप) नि [यदिता] अननेनाया पबह बण्क्यार्थ (हे ४ ४४३)। धकाणया ) 🛍 [वर्जना] परिस्ताय (सम बळणा रिक्ट उत्तर १६ ६ छन्।। बज्जमात्र देशो यज्ञ - वर् । वज्यम नि [धर्जक] ध्यापननावा (स्ना) । थळार सक [क्रथम्] सङ्गा दोक्षना। मजरक मञ्जरेक (हे४ २ पड्डमहा)। मक् बद्धारंत (हे ४ २) बेहब १४६)। र्मक वकारिकम (हे ४२)। **इ. य**जारि भक्त वि [धाद्य] १ वहन करने योग्य (प्राप्तः अभ्य (क्षेत्र २)। च्य १**र** टी)। २ न **घरन** ग्राहियान (स बखार देशो बीजर = मार्जार (बीड) । यव्यर वृष्टिकीरी १ केल-मिकेव। २ वि केश-विक्रेय में चल्पना 'परिवाधिया व ठेग्री बक्स्य की (इत्या विव वात (सूद्ध ४ ६ बहुने धन्द्वीयनुस्नकनण्यसम्बाधाः ध्यसां (स 18): बज्बरण न [क्यत] सक्ति वचन (१४२)। धरिम्ह्यायण न [धष्यायन] योत-विशेष वकरा की [वे] वर्रावणी नवी (वे ७ ३७)। मञ्जरिञ्ज वि [कृषित] कहा ह्या उपत (ह वस (स्प) देवो वदा = धन्। वसह, वसदि ४ २ धर १ पर मिनी। बळा की [वे] पविकार, प्रस्ताव (वे ७ वर् एक [कृत् ] १ वर्धना होना। २ माच ६२) वृज्या २)। बळाय (प्रप) सक [स्थम्य्] वयवाना, पद्मता । भण्नावद (प्राष्ट्र १२ ) । शक्काय एक [बादम्] अवाता । वन्त्रावद

(मर्षि)।

यद्याविय वि [यादित] वकाया हुमा (मनि)। बद्धिः पुंचिकिन् । इन्द्र (संबोधः «)। यक्तिक नि वि सरकोकित इप्ट (रे ७ १९, महा)। विज्ञिश्च वि विदिश्व विश्वासा हुमा (ब्रिटि **५२**५) । विद्याञ्ज वि [बर्सिट] र्यहर (स्था) घोष: मझा प्राप्त ७१)। विश्वियाय पूर्वि | होत्तरी (स्थव गरस्य )। विक्रियायत पूर्वि देश क्या (वर १)। विक्रिर वि विविद्धी अवनेवासा (मूर ११ १७२: युवा ४४: वर्ण सिरि १४% सस्) 'पहिचा' १९व )बिराजकाशिवकरियर्वनंडमंडो-वर्षे (क्रम २२४)। बरुदुत्तरपश्चिम र [बजोत्तरापर्वसक] एक देव-विमान (सम २५) । यक्जोयरी की [धन्नोवरी] विद्या किरोप (पडम ७ ११८)। धरम्ह वि विकात विकास के मोग्य (सूपा २४०० या २६, ४६६ वे स ४८)। निवस्थिय वि [निपष्टियक] मृत्यु-रेक-प्राप्त को पहनाया वाठा वेष वाचा (प्रश्ना १ व---पन ६४)। शास्त्र की [मास्त्र] क्ष्म को पहनाई वादी माना कनेर के छूता की महता (मछ ₹**२** ) ı

६ ६) । सेनु म ['सेस् ] कवा-किरेप

रस करना। बहुद्द बहुद्द, बहुदि (सुद्द ६

१६४ क्या क्या) । यह वर्ट्ड यहुमाण (स्र

४१ । कम्म १२ वेदम **५११ म**कि

उबार पति कम्पर पि ११ )। हेक बहेर्ड

(बेस्य १६०)। इ. महियक्य (उन)।

यान की स्वाधी का इस्म (स ६ ३)।

(सुमार १६)।

(पष्)।

कडू धक [मत्तव्] १ वरतना । २ पिड

क्य से बॉक्सा । वे प्रदेशना । ४ इक्सा

धान्यादन करता । बट्?ति (पित्र २३१)।

अकृषि [भूचा] १ वर्गुब मोलाकार (सम

क्षक् श्रद्धिमाण (धीए) ।

६६ धील-वना)। २ भतीत बुजरा हमा। ६ मृतः। ४ संजातः उत्तरमः ६ मजीतः। ६ इइ । ७ ई कूर्य गळ्या (हू २ २६) । च न, वर्तन, वृत्ति प्रवृत्ति (सूच १ २ २)। क्यूर "भार पू [भूर] भेष्ठ परन (धोष ४३ / राज)। संदर, लेड्ड चौत सिखी क्यान्विधेप (छाबा १ १--पत्र रेक्ट वर्ष वर्षा ११ हि) देवो दस्य सबू।देशो यत्त वित्त ⇒बृत्त। वैश्वद्ध पुं ["दैताका] पर्वत-चिटेच (ठा १)। भट्ट पूर्त [प्रस्मेन्] बाट, मार्ग रास्ता: 'पकि-कोएस पनद्वा चला सरपकोधनप्रमिक्ती नद्वा (धार्थे ११व पुरा ४ तुपा ३३) 'सह (शाहर)। बादण न ["प्रातन] कुसा-कियें को धरते में कुन्या 'परबोद्दाबद्दवाम्य-वंशन्यक्रक्रक्राध्यात् (रूप ११६), ध्रो बहुवाक्क्षेड्र वंदश्यक्तकेड्र सत्तकक्रलेड्रि (वर्मीव १२६)। बङ्ग (न दि) १ प्याबा, पुत्रशती में 'बाटने'। 'प्रद्रमञ्जू इम्जि चलिया औहा इस्वाड निवरिये क्ट्र" (मुप्त ४६६) । २ वृं क्वानि, नुक्रतान पुष्तराती में 'बट्टो': 'यसह वनकाएएकि मूला बट्टो रहे होहि (शुरा ४४९)। ३ मोरक रित्ना-पुरस् सीहरू 'बहुावच्एए' (मन १६, ६---पत्र ७६६)। ४ द्वाच-विधेष नाही मही (पर्दार ६— पत्र १४ )। यह व [यत] पेरा-विश्व (यस ६७ टी)। "बह व (पहरी प्रवाह (ब्या) । देखी पह (व क्ष १४ मंदि गडह)। सहैत देशा पृष्ट = वृत्त । बहुक ∤ केसी यह्य = वर्तक ( पर्या १ बहुंस } १ पर्दे बिना १ ¥—वन **७६ तुम २, २, १** : २६: ४३) । पद्म्य देवा यत्तम (रम्य) । धरूपा देखा बचना (सन)। **भट्टमान [कर्मड] आर्थ, राखा (पाधा** क्षेत्र) ।

बद्दुत वि] पत्र-विशेष (बहु १)। कर बहुमाण देवो बहु = बृत् । भक्रमाजन विंदेश संग करोर। २ कथ ब्रचना एक तरह का मधिनात (दे w = **(**) ( षह्य देशो मह⇒दे (परम १ २ १२ )। सहस पु [वर्त हैं] रे पश्चि-विशेष, क्टेर (सूब १२ १९ छवा)। २ वाधकों को चेन्द्रते काएक उद्धाना परहेका बना इसामीस विश्वीना (प्रदूध स्ताना १ (य---प्रव २११)। बहुम केवी पहु (बढा) : बहा की [वे बामन] क्लो बहू = कर्मन् (\$ · it) : बहा को [बार्सा] बाठ कमा (कुना)। **ब्राव सक [सर्तेम] बरद्यन्त्र काम में** तपाना । बहाबेड् (छव) । पद्मायण व [क्तंन] बरदाना कार्य बराना (स्त्र)। सङ्गासम नि [पर्वेक] मराज्येनामा, प्रवर्तेक (बका कामा १ १४--पत १ १)। वहाबय वि [बर्वेड़] प्रविवानक तुम्बाक्तां (**44 t**): पहि थी विति १ वती शैपक में क्वनेवाधी बाद्यो । २ सबाई सांश्र में मुस्सा सपाने की क्वी या स्थाई । ५ शरीर पर किया बाटा एक दरद्वामेगः ४ सेव विकनाः ३ इन्तर वीची (इ.२.६.) । वेची यक्ति विक्ति । वृद्धिक वि [बर्सिस] १ परिवर्तित (वे ३) २७) । २ वसित (पर २१६ टी) । ३ वर्तुन बोब (पद्धार ४--- तत्र ७०: तंतु १ )। ४ प्रवर्दित (चित्र)। बहिया भी [पर्तिस] देवो बहि (व्यन २१७ नार-स्वा २१ स २३१)। र्बाह्म नि [रे] व्यव्यक्ति (रे 1 (¥ यहिय वि [व] वृत्तं निवा हृषा, रिवा हुवा पुजराची म 'बारेनु' 'परिवर्त साहित्यदिने धोर्खे (न २६४) । वहिष न वि] पर-नान (वे ७ ४ )। पट्टी और [बर्ची] केनो कहि (हे २,३)। बही की [पट्टी] पट्टा 'वाद व करिबट्टीकी परिया रमखाबसी मार्चि (तुशा १४४) tax) I रे---पर २३)।४ पीछेका वा मानेका

पुं िकर | मज-निरोप (राज)। करी को **िंडरी**] निरूपा-निरोप (एम) । क्द द्वस्त वि [बहुस्त] १ नोब बुताकार (पाष)। २ पून मकाराष्ट्र—स्यान के तनान एक तयाका कम्बन्धन (हे२ ३ प्राप्त) । ब्दुडरेको पहु∞यत् (यस्त्रामा १५ ३ हे t =¥ ( tt) | "बद्धि देखो सद्धिः 'वा-बद्धी' (बम ७६) पंच १. (८) वि २६१ (४६)। भव पू [दे] १ शार भा एक देशः दरनाने आ एक मार्थ। २ क्षेत्र (वै ७ चर)। ३ मल्ल की एक वार्ति (पएउट (—-पन ४७)।४ निजाप (निष्टु २) । देखो सङ्घा 'नवसंबद पश्रद्धार्थं (बिरि १०२)। वक पूंबिट] १ इक्र-विशेष वरवद, वह का पेड़ (प्राप्त १--पत्र ११ था १४० इस्यू) । २ म मझ-निरोण, 'चडपूरपद्रभूपाई' (छाना १ रदी—पद४३)। तयर प [िकार] मधर-विशेष (पठम १ १, वद) । सह न [पद्र] र द्वयस्य का एक तथर, बीधान वक 'वडीवा' नाम से प्रसिद्ध है (इस ११६)। १ एक बोर्ड (स ११७ दी)। साविसी भी विश्वित्री एव देवी (इस्त्र)। वड देको पड रूपयुः। वज्रा 'क्रम्बिरीन करु **पर्वत** (वे ७ ७) । ब**ढ देवो** एक २ पटा -पवस्तव्यवस्त्रकां वसामी **बन्दियो तह य सन्दर्भक्ष (सूर ४ % से** ्रेट मुर र ६१; ३ ६७) श 484) 1 यहरान [घटक] त्वन्य-विशेष वदा (विक्र ₹₹**७**) | पड़न देवी यड ≈ वट (धंद)। वक्षण देवी एकत्र (वा १६७) वडर नदा) । पडरप न [दे] र बता-पहन । २ निरुत्तर 現を(キャ Y) i वडस विदिया देशका स्टब्स (सोकस वरे)।२ विज्ञका प्र**त-कान वाहर निक**त मान्य हो यह (मान्य)। ६ वर्जन के दलर क्स जान जिसका देशा हो सह (प्याह ह

संय विश्वक बाहर निकस पाया हो बहु (पन ११)। १ दिवाका के बहु होकर साथे निकस पाया हो बहु । ही भी (प्राणा १ —यह ६७) धांण पि ६००। यहण देवो पहला = बण्ड (पुरा ४०१)। वहण देवो पहला = बण्ड (पुरा ४०१)।

बहरामि पू [बहरासिन] पहरातसः समुद्र के सीतर की साथ (सा ४ के) । सहबह सक [बि + संयू] विसाय करता ।

सहसद धक [ मि + छन् ] विसान करणा। सरसद (हे ४ देश्व) धक्वर्षित (कुमा)। जब्दा की [पडया] मोही (पास्य कर्मीक देश्वर)। जब्द, नख है [नब्ब] पशुद के धीठर की साम बक्वानि (पि २४ का देश)। गुद्ध न [गुद्धत] देवही सर्वे (छे १ त्र)। २ एक महा-मञ्जल (एक)।

हुआस पूं [हुवारा] वस्तालन (छ्यू ११४)। यहह केनो यहम (धाना १ २ १ २)। यहहू पूंचि पिक्ष-निरोध (१ ७ १३)। वहहू केनो यहहू (से १२ ४०)।

वहारी देवो पस्नेही (पराव)। विद्यासा देवो पदासा (ग्रा:१२ )।

वडालि की [रे] पंकि, मेशि (रे ७ ३६)। बडाडा रेको पडायाः वनसमयनसङ्गी (यहा)। वडिज रेको पडिज (रे ४, १ कुम रेक्श

चना)। यहिष्य वि [गृहीत] प्रहण किया हुमा (गृह ११६१)।

बहिंदा द्र[पर्यंत] रे नेव पर्यंत (मूज प्र टी—पन ७)। र क्ष्यु 'त्यमुक्तिस्त्य ति प्रीयंत्रधार '(वन कम्प)। रे एक रिवृद्धित-कू" (क्श)। ४ प्रमान, दुवर। १ त्यंत्र त्रच्य (कम्प) महा)। १ व्यर्तपुर, कान का मामुख्य (खादा रे रे—पन ११)। रेखो पर्यंत, क्षयुर्वस्त।

११)। स्वायप्रस्त, व्ययस्य। श्रक्षणाय पुंदि पर्यंत क्रम्स, देश हृधा सना (पर्)। यशिया सो [युचिता] वर्तन, 'व्ययंतरस्य वशिया प्रे [युचिता] वर्तन, 'व्ययंतरस्य वशिया प्रे [युचिता] वर्तन, 'व्ययंतरस्य

यश्चिमा देशो पश्चिमा व्यक्तिश्चा (सामा २ ७१)। सक्तिसरन [वे] मूल्ली-मूल मृत्ये का मूस

विकास कि [वि] पूजा हुआ हुआ हुआ विकास कि [विरिक्तयक] पूजक, पूजा करजेवादा (बाद १)। विकास कि [वि] सूठ टाक्स हुमा (बर्)।

करणवादा (पाद १)। पश्चिसाम वि दि ] जूठ टाक्स हुमा (पर्)। वडी की दि ] वड़ी एक प्रकार का बाद (पर १८)।

वबुसमा } देशो यहममा (पीप प्रापा)। वहाँस पुं[पर्यस] रोबार, मुकूट (प्रका सामा ११४-यव ४)। देशो वहाँस।

वर्डेस के [सर्वस] किंगर गामक किंबरिय की एक अध्यक्षिती (ठा ४ १—पन २ ४) एसम २—पन १४२)।

स्वास क्ष्यं क्षर्रः। बहेंसिया क्ष्यं क्षितंसक्ष्यं धनतंत्र क्षेत्र तत्त्व करणाः श्रृष्टस्थानात्रम् करणाः 'स्ट्रारस्वं करणामं भोच्यं ग्रीमावेत्रा नावस्थेवं पिट्टिव त्रीसमार् परिच्हेन्यं (ठा ३ १—पन ११७)।

४.६. मुना १२४ गाला १—यन १४४-ग्रम्मा १७५३ और १४ १६६३ १६७-१७६१)। अत्यस्मा हु श्लिस्टाइन ईंट भी पीठ पर जहां नाला मासन (यर न४ ही)। यज म श्लि] कम्पन, महाना (ह १ १६४ कम्पू)। यज्ञ (मर) म श्लि। गरी (हूँ ४ १६६, ४४७० दि १ ०)।

सङ्ख्या विशेषका महान (देश २० तेषु

्यर वि [वर] क्लिय कहा (हे २ १७४)। वहुमास द्वीती मेग, प्रश्न (हे ७ ४७ हुमा)। वहुहुकि द्वी यासास्यर, मान्यी (हे ७ ४९)। वहुहुर्दि (सम्) हेको वहुन्यर (सक्ति)।

विद्वम वि [चे] भूतः दशका हुया (वर् )। विद्वार [चे] येथो यहु, 'नमसम्बद्धाः वहन वनने महत्ता वननस्य बहुतां सिर्दे । मनुष्ठिमनशोवि विद्वे समुबंध

समुखिममधीत विरुट स्यूप्तर्थ माणि पुनर्वति' (पुर ४ २ वन्य ६२)। समुबुधर देखो सङ्ग-सर् (वर् )। पह्न पक [ पुप] वहना । वस्तः (ह ४ २२ महा काल) । भूका निहम्सा (क्प्प) । वह पहत्रेत, पहर्रमाण (हर १ ११८ महा चा १११) । हेक्क मिह्नुर्वे (महा) । पह्न वह [ धूपेंच ] १ बहाना नित्तारता । २ बचाई थ्या । वहर्षेति (ज्य) । वहर्षे पह्नकृत्य (गाट—जुन्स १०) । कर्म

सहित्यति (सिर ४२४)। देवो यदा = वर्षम् । सद्वत् (पृत्योक्ति) वहदं गुलार (सम २७ जन द्वारेशः नामा सर्मसं ४०६। दे ७ ४४)। सद्वत्यत् ५ दिं] वर्मकार, मोची (१७, ४४)। सद्वत् मृत्योनी (द्वांति, वदास् (क्यू)।

बद्दुण न [यर्जेन] र इंदि, बदाल (क्यू)।
द दि इंदि-बनक (तहा पूर ११ १२)।
यद्दुलमिर मि [ब] योज, यू (४ ० ११)।
यद्दुलमिर मि [ब] योज, यू (४ ० ११)।
यद्दुलमिर मि [ब] विसमी पूँच कर गई
हो बद्दु (४ ० ४१)।
बद्दुसमाण केयो यद्दुल = दूपः
बद्दुसमाण केयो यद्दुल = दूपः
बद्दुसमाण क्यो यद्दुल चर्षः
वद्दुसमाण क्यो युद्ध कर गुरू करा युद्ध करा युद

(सम्मत ७१)। २ घरविकान का एक मेर, जरपोधर वहता काला एक प्रकार का गरीक करी हम्मी का बान (ता ६—मन १० कम्म १ क)। ३ ई. भगवन् महम्मोर (मिंश)। वेको मद्दामाम। यहूबम वेको कृट्ट के 'पाराचीधन' वहूबने विपालपण्डमन्मि वीसमाई वि तीए मुस्टूबन क्रीनम्मूर्लाई (स ३०१)। यहूब्ब क [ सर्मेम्य वाद्यां का व्यवहन कहा विद्यां प्रमानम्म्यां का प्रमानस्य का

वनाई रेनेवाला (प्राक्त वर)। धब्दवग्र न [कृ] यक्त का प्राहरूल (वे ७ ८७)। धब्दुदश्य न [कृ पमापन] बचाई, धश्चुदश् मिक्टम (वे ७ ८७)।

विवेदन करना । बब्दबद् (प्राष्ट्र ६ ) ।

वब्दवम वि [यर्पक] १ वहानेवाचा २

बहर्रावस वि विभिन्न, वर्षापित निस्मे बबाई दी बई हो बहु (दे ६ ७४) । बहुद्वार (भग) एक विशेष ] बहुला पुत्रवाती में जबारकु । मह्बारक (मनि) । बहराय देवी बहरव । महरानेमि (प्राष्ट्र ६१ पि ४४२)। बर्द्यापम रेवी बर्द्यम (प्रक ६१३ प्रपू सदा) । मबद्धाविक वि [व] समापित स्वात विवा ह्या (दे ७ ४१)। बहिड नि विधिम् । बहनेशका (ते १ १)। वश्रिक क्षी [पूद्धि] बहुती बढान (ज्या: वेनेप्र

३६७) धीनस २०४) । विद्विष्ठ विद्विद्वी बदा ह्या (दुमा ७ देशानापर नद्या)। विविद्या वि विभिन्नी १ वहाया ह्या। महिनीते नद्दशीरवस्त्रीरी अमहिन्द निर्दर्श (स्थिर १२७) । २ वाधिकत किया हुमा काटा हुमा (हे १ १)।

विद्वाभाव्ये [वे] कृपपुत्रा वंदुवा (वे ७ 11) 1

वृद्धिम पूंची [पृद्धिमन्] इति, वहान-'पशा फिले परिहरमा' (आक् ६६ फल्यू) । **वह रेवो तह** = बट(हे १ १७४० हि २ ७)।

बहानि [पे] मुक्त पार-राधि से राहित (समिद्र ६६)।

बढर १ ई [बठर] १ मूर्च छत्र। २ बहार रे स्ट्रॉल पूरून और वेस्य की वे प्रत्यप्र रहानः सम्बद्धाः ३ वि राजः वृत्ते । ४ मन्द्र सम्रव (हेर १४४ वह)।

क्य इक [यन] मोक्ना, क्रवन्त्र करना। बबोद् (निश्व ४४६) ।

क्यार् दिर्देशियविकारः २ दनव भौज्ञा

समापुर द्विता पार बहार, बता 'बस्तेष

बलो हरतम बेमछा (बाध राधा १ स ४९७ वाष)। वह र्[पह] बाव पर बाबी पाछी पही (सा ४१ )।

वय न [वन] १ घरएक अंबन (करु पापा दबर दुवर सम्बू ६२। १४३) । २ पानी, वस (पाका पना न)। १ निपास । ४

यास्त्र (हे ३ ८४ प्राप्त)। १ वनस्पति (8) to 4 (8) 1 f (कम्म ४ १ क्याल वर्षेचा (तप १६८१)। ७ 🛊 देशों भी एक जाति मानस्पत्तर देश (मदः कम्प १ १) । व वस-विदेश (राव) । कुम्म पूर्व विर्माती अंतव को कारते या वेषने का काम (श्रय क् ४--पत्र ३७ ३ वर्षः)। कम्मंद न किमोन्त्री वसर्याद काकाण्याला (भाषा २, २ २ १)। गर्थ दूं [ग्रेज] जंग्ली शृत्ये (वे ६ ६३)। "सि। व शिनि देनाक्व (पाप)। वर वि विरो वन में प्रानेताला, बंबती (परद्वा १ १--पन १३)। वर्षः (प्रमुख ६) हे देशों यह । "किंबा नि िष्द्रहा विपन काटनेवाला (क्रुप्र १ ४) : रेंबडी को [स्पद्धी] प्रस्प-मूमि (स । ६६)। दब दु ['दब] दनमत (शस्त १ १---पत्र ६१)। वस्त्रय देन विवर्धती बनस्पति से ब्यास पर्वता 'चलारित का बक्यसम्मनारित वर्ष (धाचा १ ६३ ६, २)। "विराध प "विद्याध] चन्नी विद्या (६९७)। साम्छ न मास्छ प्रकार विभान (धम ४१) । माध्य व्ये [माद्य] १ पैर तक काक्नेपानी माला (भीपा सक्य ६६) । २ एक राज-वल्बे (पठम ११ १४) । १ राम्या भी एक पश्ची (पत्रभी १६, १२) । "य वि "जी बन में उत्तर वंदनी (कर्मा ११) । बर पि विसी र वेश में रोलेनामा, बनेना (छामा १ १--१व ६२) यक्का) : २ दुंखी. व्यक्तर देव (विधे ७ ७) वब १६ )। बड़ी दी (ज्य द्व ६६ )। सह **ब्रो** [ राखि] वस्-विद, कुम-सनुद्द (चंडा दुर ३ ४ २ थ धर्म १४)। "सम्मार स्व र् [ राजः] १ विषय की मार्ज्यों श्रीकरी का पुत्रस्य का एक प्रशिक्ष स्था (मोहारे)। १ सिंह, वेबरी (पेंग)। स्त्रूपा "स्रयां औ िंक अ∏े १ एक भीका तम (म1हा)। २ बहु बुद्ध विक्यों एक ही शब्दा हो (क्या राव)। पाछ वि [पाछ] ज्यात-पासक माची (का १×६ थे)। वास पूर्विवासी धरएक में पहला (वि ३११)। पासी सी ["बासी] भगपै-पिरोप (धन)। "विद्वारा

न [रिवर्ता] नामानिय दुधी का बनुह

(तूम २ २ व्याधन) : विरोधि ई िविरोडिम् । सापाड मास (मुख्य १ ११) : संब पुत "पण्डा" अनेकशित पूर्वी भी भटा-समूद्ध (ठा १. ४) भना शामा १ २ भीष)। इतिथं पुं ["इस्तिन्] चंत्रह मा हानों (पें व १६) । । किं, "ोडि सी ींकि] धन-पीन्ड (पा x७१, हे २, १७७)। मणह की हिं। बन-चान बुझ-वीक है क ६८) वह )। नजण ग विनन निकार को उसकी भागा है

निव कुसरी काम से बनामा (पर्याह १ २----पद २१)। रणम प (के स्थान) कुपता। सासाधी िदास्त्र देशों का कारवामा (रव १ t t) : भणदि स्म [दे] भो-कुन्द, यो-समूह (दे ७

बजनशक्तिक कि वि. पुरस्कृत माने किया हुए। (वड्)।

षणपद्धसायम् र् [प्] भरत, स्वापस्थित ( \* v x ?) I क्याप्कइ पू [पनस्पति] १ इस-विशेष क्रु

के विका ही जिसमें प्रजा संपद्धा हो वह कुछा (११६ प्रमा)। २ वता द्रस्य क्रम यादि क्षेत्रै भी याद्ध, पेतृ गात्र (धन)। १ ४. क्व (हुना ६,२६)। बाइम वि (बायिक) बनस्त्रवि का जीव (स्प) ।

बणय र् [यनक] दूसरी शरक-तृतिनी का एक गरक-स्वाद (देरीम्: ६)।

भगर्रास (घप) रेको कुप्पारसी (सिंग पि NY) I

बजद दू विशेषास्त्र (३ ७ ६७)।

यमसवाई औ [च्] कोविका, कोरब (दे ७ इ.स. साम्र)।

पणस्तद्र वेशो पणण्यद् (हे २, ४१) भी स् ज्ञामस्य ।)।

पमाय वि 🔁 ध्याव वे ब्यात (१ ७ १४) :

भगार प्रे. [वे] सम्बोध वज्रहा (वे. ६७) । पणि नि [स्थिम्] प्राप्ताका विश्वको पनि ह्मा हो यह (वेंद ६३) वंदा १६ ११) । ) पू [ वाजिज्ञ ] वाषिया व्यापायी, याणिया है वेस्स (बीता) कर ७२ व शेर तुर

ग्र ४१६ १४१ वस्त, ७४, १९)।

म्रल (विसं ३**१**४८ **मुपा**नि ११)।

प्रापृधिनापको मिशुक निकार 'विष

विश्व कि क ज़ियों पाक्याया करोड़िक

ग्रेश न विधिष्ठी क्योतिय-प्रसिद्ध एक

णेला की विशिक्ष्यों बाटिका बक्रेका,

धसोमवरिएधाइ महस्त्रायिक्त (गाव ७

णि आ 🛍 विनिदाी 🛍 , महिका, मार्च

(बार्क कुमान्त्रा सम्बद्ध राज्य राज्य ।

णिज देखो पणिश्च≔ वस्तित् (वाद ३४)।

जिल्ला । म विष्णिक्यी **व्या**पार, **वेता**र,

जिला रे प्रियमम हुई बद व विदेखि

विधानका (मुपा ४१ २५२) 'उन्मेछी-

मानको बल्लिक्वेल (पदम ११ ६६। स

४४६ सुर १ ६ ३ इस १६% सूत्रा १६४

श्रम द ग्रीक भा १२)। (स्य कि

वेद्य--वचम

मिंक ४४९) ।

३वा) ।

िश्चरको स्थापाचै (सूपा १४१ अप इ 2 x) 1 पणिम ) देवी वणीसय (दस ४,१ ४१)। वणीसम् । २ वस्तिः, निर्वतं (वस १८२,१)। बणी की बिनी] र मीच से प्राप्त कन (ठा र ३---पत्र १४१)। २ फ्ली-विरोध जिससे मधास निषमता है (श्वास)। थणास्ता 🐧 [पतीपक] शावक विद्यक थणासय } मिकारी (द्वा १८३० सुपा १६०८ सहा योग ४१६)। बण स इन धरों का नुबन सम्पय—१ ज़िक्स (४२२६) दुमा)। २ विकल्पः। ३ समुक्तमनीय । ४ संधानमा (हे २, २ ६) । धणचर देवी सत्र-पर (घरश ११)। वण्णसर्वायपान् १ वर्णन करता २ प्रशंसा करना । १ रॅंक्स । वर्णमानी (पि ४१ )। कर्म विष्णुण्यद् (विषि १९८८) बर्गिक्यर (मन) (हे ४ हेश्र)। सङ्

वर्ण्य (ग १४ )। हेक् विष्युर्व (नि

२०३)। स वण्यणिक, वज्येशस्य (ह

६,१५६३ मुप्र)।

बच्च व विजी १ अर्थना स्वामा (उप a w) । २ मरा, कोर्ल (बोप १) । २ शक्स भादि रॉय (सबाद्धा ४ ४ उवा)। ४ धकार मादि भक्तर । १ बाधुम्छ वैस्म भावि वादि । ६ इ.स. । ७ वीयराम । ८ स्वस्त. सोना। १ विदेपन की वस्तू। १ वर्ष-बिरोधः ११ वर्णनः ११ विशेषत-क्रियाः १३ थीत का कम । १४ विव (दे १ १७७ प्राप्त)। १५ कमें-विरोध सक्त धादि वर्स का कारस-मृत कर्न (क्रम १ २४)। १६ संग्या १७ मोख ग्रीफ (माम्य) । १८ न. इंद्रम (हे १ १४२)। पाम नाम प्र िंसासम् दिने विशेष (एवं इस ६७)। र्मत वि [ यस् ] प्रकरत वर्धवाबा (मप)। बाइ वि विदिम्] स्थाना-कर्ता प्रयोक्त (बच १)। याम प्रेिबाइी प्रशंक्त, स्थाना (पेचा १ २३) । । । । । । । । । ियास विस्तृत-प्रकारत वर्णन-प्रतृति (जीव ३ क्या)। पास दू [क्यास] पर्यंत-विस्तार (भए स्वा)। वण्ण दे विर्णे | देवन मादि स्वरः। सम न िंसमें देन काम्य का एक सेद (दसनि २ यण्य विदि र प्रच्यासम्बर्गा २ रठः। (R . a.) 1 बण्न वेलो पण्य (पा ६ १ यज्ज)। वण्यम रेको वण्यस (उसः ग्रीप) : वण्यम न [वर्णम्] क्ष्माचा प्रशंस (क्यू)) २ विवेषतः निवस्त, निकासः (एमस ४)। बण्गमा भी [धर्मना] अपर देखों (दे १ २१। साबै ४१)। वण्यम पुन कि मणीको १ क्लर धोक्स (वै **७ ७७**- पंचा स २३) । २ पिट्राठक-इसे धंपतन (दे ७ ३४; स्वप्न ६१)। वज्याय वृ[वर्णक] वर्णन-प्रक वर्णन-प्रकरश्च (विपार र अना मीप)। बब्दिय के [वर्षित] विस्ता वर्णन किया धमा हो बद्ध (महा)। विष्यमा देखो विश्वका (या ६२ )। थिक इं [बुद्धित] १ एक पना, को सन्तक-

ब्रांक्शि बाम सं प्रसिद्ध या, 'वरिष्क पिया वारिक्षी सम्मा (ग्रंड ३)। २ एक मन्तक्रक् मक्कि 'धस्त्रोम परेण्ड वस्त्री' (धंद)। इ प्रत्यक्षमध्यान्त्रंश में उत्पन्न यादन (संदि)। द्साओं व दिला] एक देन प्रायम-प्रम्य (निर १)। प्रेगम पु िर्पुगय] बादव-मैस्र (उत्त २२ १३ छात्रा १ १६-- पत्र २११) । घळिद्व पूर्विद्वि १ मीन घाण (पाप महा)। २ शोकान्तिक देशों की एक अधि (शाया १ ८—यत्र १११)। ३ विषक बुक्तः ४ भिक्तावीका पेड्रा ४ नीडूका पाला (केर ७३)। यद देखी यम = इद (भंड)। षति देशो यइ ≕ वित्य (जग ६०१)। पति देवो यह = वृद्धि (पंड) । ससुर् [दें] निवह, समुद्द (दे ७ ६२)। यक्त देवो वह ⇒ इत्। वत्त (स्थि) वत्तदि (शौ) (सप्त ६)। बत्त देशो वर् = बर्देन् । बत्त (स्वि) । बत्तेश्र (भाषा २ १६, ४२)। वर्तेमानि वर्तेहानि (क्या वि १२८)। वत्त न [वार्चे] मारोग्य (वत्त १८, १८)। वत्त वि [ब्बात] केला हुमा मरपुर (कृत्व-विशेष १९)। यत्त देको वहु≕ इति (छ ६ ०- महुः सूर १ रण्य र ७६ मीस हेर रथ्य) । वत्त वि [ब्यक्त] प्रकट् चूना (वर्गेष्ठ १११)। पसन [बस्प] पुढ मूह (हेर १० मिन)। वत्त देशो पत्त ≕पन (शा६ ४ इंका ४ यज्ञ)। वस्त क्यो पस्त = पान (मध्य का ६ )। पच देको दचा (भवि)। यार नि **ै**स्टरी वार्त्तां कड्नेवासा (ग्रवि) । यत्तं प्रस्तिम् । विवर्धः विपर्वाधः। र म्परिक्य समस्य (बाङ २१) । वत्तप देवी प्रथ = वयू । यचित्रजा रे (यप) देखी वशा (कुमा 🔭 😿 बचडी ४१२/ छन्। यत्तम न [वर्त्तन] १ शोविका, विश्रोहः कि न तुर्थ नण्यएष्ट् बुद्ध वनसन् करेति' (इस

२८)। २ मर्जुन परास्त्र (रेवा १२, ४१ विने १४२२)। १ ईव की दीवा-४६) । ३ स्विति । ४ स्वातन । ३ वर्तन, होत्यः ६ वि वृद्धिमानाः । ० छुनेपाना ((fir t )) बचना भी विचना | उत्तर ध्योग 'बतला-नस्यक्षा कर्ता (उत्त २६ १ मादन)। ६ चर्माको (५ सनी) मार्ग राजा (५०६ १ १-- नत १८ तित १२ ३ मुम्पीन ६१ की TH X(c) 1 बच्छ विदि दि । मृत्यर । २ वह सिमित ( \* w x) i बत्तमाम १ दिल्लानी १ शक्तिकेट. चनताकाल (बाज सी र )। २ कि বর্তমান-কার্থার হিত্যমার। ই বুঁ হিত नातना (भमेन २०३)। मर्चार रेपा सर्चार (का बर प्रापू १२६) fr vet) i वस्तर्भ दया यय स वस्। यश्चा 🗚 🚹 नुप्रश्ननप्रकः नुप्रश्नानन्त्रत्र (सन्दर्भ-नवक तबूरे)। देना पचा = (१) । बलाओ [यार्था] १ बाट, बबा (के ६ १ व कुसारे । प्राप्त कुमा) । रेब्बान्त इंशास्त (राम) । ३ वृति । ४ वृत्ती । ४ इक्तिनमें बन्धा ६ जनपति विपरन्ती। क क्षत्र का सनुभार । वात-वर्ग्ड पुत-कार (६२ १) स्वत्र ( स्वयं) क्टबर्स (बिंद १ १) यमार वि [ र] पॉक्ट परेनुक (१० ४१)। विक्तिका दिन्नी भागा (के अवस्था) । याच दर्श पृष्टि (स. २३२ ६४ ( 11) वर्ष्त है । विभिन्न विशेषाता (महा) र्यान स्व [यूनि] ब्राईन (मूप २ ४ २ व्यक्त दिल र्बान भ्राध्य को ध्युष द्व क्लु हाते सन् पद्धा स्व विकासी बीतान fece fax ena a in milet frame et aus fere et tr'ung e retret (414 12) श्चीनामार [शांतक] बराहर र प्रा (\$ 2 8 ) E fe, ber et det (44

व्यावया (विते १३४३) । बक्तित्र दि बिचित्री १ इत-पोस क्या हमा (सामा १ ७) । २ भाष्यादित (परि)। विलाभ देवी प्रवाद = प्रत्यव (बीर) । बक्तिओ देखी पट्टिओ (माप्र) । विचर्मा और [यश्चिमी] मार्ग चरका (पार्च च ४ पूर १२ १३**६**) । बक्तादेखी पत्ता=धन्मी (या ०१ १६) 1 (40) यसंबद्धाः पय = वन् । यक्ताम वि [यक्तुकाम] मेलने की पाह-बाला (ब ६१ ) ग्रीम ४४० स्वय्न १ ३ नाट---विक्र∀ )। पत्तस रेको यदगुर (यम) । बस्य देश विस्त्री कपहा (भाषा २ १४ रश बका क्यू १ राजा इ रेश्स मुता **क्त ४६१। दूमाः बुर ३ ७ )। 'शिद्र न** शिक्षी बना रिशेष (वे २ टी-पण १३७) । चोप दि [ मार्घ] दस्न मनेतन्त (तुष १ ४ २ १७)। युम प्रिप्यी एक पेन पुनि (इनक २२) । पुम्मित्त प्र िपार्यमञ्जी एक जैन नृति (सी ७)। विज्ञा के [विद्या] विद्यानियेव विद्यह प्रवाद ने दश्र हार्श कराते में ही बीमार पच्छाहो जाम (दर १)। साहगानि [ शपक] बढ़ पानेशना (न ४१) । परच विकिन्ती दुवर् किन्त पुता (नुर 24 2X) 1 क्यार र् [द वा पुर] से क्या नाट, \*\*\*\*\* (\$ \* 12) 1 याना देश यम व्यव पर्धस र्रु [बस्ताञ्ज] वरुष्ट्रा को एक जाति जो बंद्र दन का प्राप्त करता है (१३म १ %, कः ( रेक्टो प्रस्थर - प्रत्यर (म १११) । पर्व्यास्त्रस्य व [यक्तांस्टर] से वैव कृति-तूनी इ.स.स.(इस) क्यप्रशंश (वाभाव्य) घत्रसत्ता अससी (for eta gr 1 41 gen 142 मा चेनारभंता (बी १)। बदा) ।

बरधाओं भी वि बलो-विशेष (वहरा १---पत्र ६६)। मरपायाञ्च पुत्र 📳 काय-विरोध, प्रत्येञ बलालीयस भोजना चण्ये सामेति (सम t 1): वस्थितं[बस्ति] २ इति मनकं(भग १ ६ १८ १३ छात्या १ १a) 'वरिवस्त नायपूर्णी यतुन्तरिष्ठेण यहा ह्या नगर्ड (धंबीय १०)। २ यशन, बच्छ 'बस्बी सदार्त (पाय. परह १ ३--पत्र १३)। १ ६६६ में छवाना---पती---धवाई बैठने वा स्वान, यत्र का एक प्रवयन (यीत) । काम न िंक्सेन रिनर पारिमें पर्व-देशन हाए क्यामधावैष धारिकापुरसः। २ वर्त साक करने के लिए यदा में बत्तो बहार का क्यि नाता प्रमेत (तिसा १ १--पह १४) खाना १ १३)। पुष्टग दून ['पुर इ] केट का भीतरी प्रदेश (तिर १ १)। परिथय र् [बास्तिक] बद्ध बनाने राज्य किसी (#7) I पानी की [र] मत्त्र सामी को पर्त हुती (to 11) : परधु न [पस्पु] १ पद्यने भात्र (पादा उताः सम्म नुसार । प्रानु ३ १६१। स र रेश—पर १)। २ द्व, पूर्व-क्रमा का सम्पदन--- प्रकरताः परिन्धेत (यन २४, गुरियल कम्प १७)। पास, बास र्व ( पान्त) राज्य श्रीत्वरत्त का एक मुत्रस्थित नेत्र मंधे (धः (म्मोर १२)। यभूत्र[यान] १ सुर वर 'खलनातुर्मिह । परिवादो बरेड' (उता) । २ म्हारि-विवरिध-यात्र (द्वाया १ १६) । १ स्तर्कश्चित्र (बरा)। यहत वि [पाठक] शासू-राष्ट्र रायम्बद्धाः (लाखाः १ १६) वर्धेः ११)। यमाधा विषया दिनियन क्या (योग्रज र २)। प्रभुव 🛊 [नगुम] नम्य बीर इस्ति बनलातिनिवदेन साक्षावदेन (प्रत्य !-98 431 16 98 318) 1 पापून र् [बानूम] जार थेके बार् (शार्)

वृद् केती यय = वद् । वर्शन वदह (उनए मध्य कृष्य )। मुका बदासी (मध्)। हेक्क. विविचय (क्य) । यद देशो य्य = बत (प्राष्ट्र १२ नाट-विक **32)** 1 वृद्धिस रेको बहेंसा (१४)। यविकालिका वि [ वे ] बलित सीटा हुया (\$ 0 Xe) 1 बन्मत देवो महुमत (धाया)। यहरु न [दे पार्दछ] । यहस बारस केप बटा बुद्धित (१७ ३२ हे ४४१ गुपा ६६६ का बारक छ। ३ पत्र १४१)। २ दू धड़की नरकका दूसरा नरकेनाक-माक-स्थान (देवेन्द्र १२)। बहर्किया की [दे बार्वकिया] बन्ती कीय बहुत पुलि (भरा ६, ३६--पत्र ४६७ ग्रंत)। बद्ध केद्या पट्ट = वर्षय्। भूमी बद्ध सि (पुपा 2)1 शद्ध पून [धर्म] वर्ष-एन्यू, वण्यो बढी (? करमी बढ़ी) (पायः वेद यस पत्र बर्, सम्मद्ध (७४)। यद देशो यद्भ = इब (प्राप: प्राक्त ७)। बद्धण न पिभेली १ वृद्धि वहधी (सामा १ १ कव्य) । २ पि वहानैवासा (चप ६७३३ महा) । वद्यणिया ) ध्ये [पर्यनिया, ती] संगर्वती यद्वा अस्त (दे द रेश पर सी)। यद्याण पूर्व [यर्थमान] १ जनवान महाबोर (बाचार १६ १ । सम ४३; बेट क्या पाँड) । २ एक प्रविद्ध पैनाकार्य (पार्थ ६३ विपार ०६ हो १६ प्रद)। ३ स्वन्धा-देखित पूरव वाचे वर बहाया हथा पूरव (श्रंत भीत)। ४ एक शास्त्रत निवन्तेत्र। १ वृद्ध शायती जिल्द्रतिमा (पर ११)। ६ व. गृह-विदेष (उस १, २४)। ७ समा चनकर रा एक प्रेथा-पृत्त-- नाटकशाना (परम = १)। देखी पहरतमाण । पद्भाजन ) 1 [ पर्भमानक ] । पद्मपी पद्भवागय र बहाइहो में एक बहाइह, न्योदिएक

देशियोद (दार १-- अद)। २ व्ह देश-

£Υ

रात्र (ग्राम्म १ १--पत्र ४४) पर्वम १२ १२)। ४ र्षुपूच्य पर बास्य पूरम पुरुष के कल्पेपर चड़ा हुया पूरवा र स्वस्तिक-पम्बकः। ६ प्रासाद विशेषः एक क्या का महार (ग्रामा १ १-- पत्र १४ टी-पन १७)। ७ न एक गाँव का नाम मस्बिक पामा प्रद्विवनामस्य प्रश्ने बद्धमाणुर्य श्चिनामं द्वोरवा' (धावम)। द वि कृटा-मिमानः यमिमानी यक्ति (धौप)। बद्धय वि दि रे प्रवास्य पुरुष (दे ७ ३६)। बद्धार एक [ पर्चय ] पर्जा, प्रवचती में 'वबारवु"। बद्धा यद्भारत (सद्गि १२ संबोध साहद)। पद्मारिय रि [प्रधिष्ठ] बदाया हुवा (चरि) । मदाव सक [बचयू, बर्चावयू] बधाई देना । वदावेद, बजावेति (कृप्प) । कृषे, पदारीयसि (रना) । शह. ददाविद (मुपा २२)। स्कृ यद्वाविश्वा (क्य)। पदावण न [ वर्षेन, धर्षापन ] बनाई, यम्पुरय-निवेदन (महिन्युर १ २४ महा मुपा १२२ १३४)। मकाष्मिया स्म [बर्धनन्छ, मधापनिका] कपर देशों (शिरि १६१६)। यद्रापय वि विर्धेक, बचापकी बबाई देने शासा (गुर १४, ७६) स ४७ 444) 1 पद्माधिक वि [बिधित पर्शापित] विसको बनाई की गई हा वह (मूना १२२ ११४) । यदिअ पुं[ हे ] १ पएक नपुसक (दे ७ १७)। २ न्यूसक-विशेष द्रोटी एक में ही धीर वेकर जिसका ब्रह्मकीय मनामा गया हो नह वनिया (पन १ १ दी)। पश्चिभ देशो पश्चिम = इउ (भार) । बद्धा थी [दे] प्रपरमञ्जय, भावरपड क्लंब्य (रे ७ ३ )। पदासक ) पून [के पदासक] बार-फिरेप बद्धीसम र प्रकार का बाजा (क्यू २ 1-41 (ct 45 ()) यय देखो यह - सप (हुमा) । युग्न देश पहुच (मन) । रियात (१२४ १४०) । १ म बाब-रिराय, विभू देखी बहु (धीप) ।

**बच्च देवो** यण्ण = वर्णय्। बन्तहि (द्वमाः वर्ष) । हेष्ट्र- वश्चित्रं (कुना) । इ. वस्राणिका (बुद २ ६७: रवस १४)। धक्त देशो भवग = वर्छ (मक दम पुपा १ व ब्रुट देशे क्रम ४ ४ ३ ठा र ३)। ब्रह्मग्र वेको मुण्याच (कृष्य ध्यः २६) । यभ्रम देखो यणगण (उप ७६ व दी: विरि ७२७) । बसणा रेको प्रग्रम्म (रंभा) । यक्षय रेको वक्त्यय (निष्ठ १ क कृप्प)। पश्चिम देखो विष्यान (मन)। यभिमा स्वै [र्याणका र मानये नपूना 'सन्मस्य बरित्या मित्र नमर्र ह्यू बरित्र पाइसी-पूर्व (पर्वति ६४)। २ मान रैंग की निट्ठी (41 P) I विन्द्रिको विदि≈ मृद्या (क्ल २२ (३)। वस्ति देखो यणिह् = वडि (चंड) । यपु रेपो श्रा = बपुस् (वम १)। यप्प एक स्थिप्? देशमा प्रामधारक क्ला। क्यह (बाला १११)। बच्च पू विद्यो १ निजयक्षेत्र-विद्येष बंदुरीय का एक भारत जिसकी राजवानी विजया है वर्ष ४)। २ ईम (दा२ २—पत्र द किया दुर्वकोट (ती≤)। ३ केशार, धता केमारो विश्वती वर्णी (पाम: भावा २ १ %, २ १७ = १ दी) । ४ तट किनाय 'रीहो बच्चो य सक्ते' (शाम) । ३ उल्पन्त भू-धान केंची-जमीन: 'धप्ताणि वा प्रक्रितासि वायामाराधिया (मापार ( ५२)। थप्प दि [दे] १ ठतुः इत्छ। २ ४ तत् तुः बसिष्ठ । १ जूत-गोड म्वानिष्ट (के उ <111 मध्यनराय देखा व-ध्यनराय । ं बएपमा बैनो यटपा (धन) । यप्पमायद् ध्ये [बमध्यपती] बाह्य का एक विवय क्षेत्र विश्ववी राजमान्ध का साव धरधरिता है (हा २ ६—पत्र ≠ र∓)। भव्या की [यम्र] स्प्रत पुन्धान देखा र्जनी नपीन (भग ११-- पत्र ६९१)।

मण्या से प्रिया । सम्मान नाममार्थ्या को

ं बाडा का नात (दय १४१)। २ ६०३

२व)। २ मार्वाच परावर्तन (पंचा १२. ४६)। ६ स्थिति । ४ स्थानन । ४ वर्तन, होता। ६ नि वृधियाना। ७ यहरेवाबा (4fa t )1 बत्तमा ही बिर्त्तनी अपर देखें। 'बत्तला-सम्बद्धी कार्बी (यत २१ १ व्यापन) । वस्त्रणी की विस्तिनी नार्प सस्ता (पर्छ १ ६--पत्र प्रश्ना विशे १९ का सम्मि ६१ की नुपा ११०)। वस्त विदेशि सम्बरः २ वहरिशक्तित (R w x) i बचमाय 1 [बर्चमान] १ शब-विरोध यसर्वाकाव (प्राप्त) चंदित १.)। २ वि वर्तमाय-कामीन विद्यमान । ६ वृ विद्य मानदा (वर्मतं १७३)। बसारि केवो ससारि (हम दश प्रातु १९६) R 444) 1 वत्तक्व देवो सम = वन्। वक्ता की [चे] चूक-मकनक सूत्र-वेट्टन-यन्त्र (मग्रह १४—पथ ७ dदूर )। देशो भस्य = (दे)। वस्ता भी [वार्ता] श्वाद, नवा (स ६ ६०-नुवादेवकः प्रानु १३ कृषा) । २ बुकान्त इशीरत (पाय) । ६ वृत्ति । ४ दुर्खी । ३ व्यय-कर्म केली। ६ वनभूति, निवस्ती। ७ मन्य रा प्रमुपर । च काल-कर्तुक पूत-नाग (११६)। व्यय 🛊 [धाप] बातबीत (सिर २ २)। पत्तार नि वि विकास पर्य पुष्ठ (देश ४१) : विचि की [क्] कीमा (दे ७ ६१)। वृत्ति केरो वृद्धि (वा २३२) ६१ को निष्ठे (111 ) यांच रि यांचिम् ] कर्नेनावा (महा)। वित्त भी [युक्ति] ब्रह्मित (पूप २ ४ २)। देखी पिएचा विश्व में [स्वकि] स्तुत एक सन्, व्हारी करत् । "पद्रद्वा स्त्रे ["प्रविद्वा] प्रविद्वा-विशेष, जिन समय में को शीर्बंकर विश्ववान हो उसके बिन्द नी विकिन्तुधक स्वापना (नेइव ६३)। र्थाचभ रि [याचिक] क्वानार, 'बतियो' (६२३) । २ क्त शैका भी टीका (सव

४६ मिसे १४२२)। १ इंच की टीका---व्याक्या (विसे १३ वर) । विचित्र विचित्री १ इत—गोल किया हुवा (सम्बद्धाः ५ )। २ घान्यवित (पवि)। बिल्डिश देखो पश्चय = प्रत्यम (धीप) । विश्वभा देखी वदिश्वा (प्राप्त) । यशियों की विश्विती नार्ग परता (पत्ना ब ४ सर १२ १३६)। बक्तीदेवो पत्ती≂ प्रती (ग्र⊌१ १६) 1665 घत्तं देखी प्रसः = वत् । वत्तृशम वि [वस्तुकाम] बोलने की वाह बांबा (स ११ । ग्रीम ४४० स्वयन १ । नाट---विक ४ )। वत्तर देवो बद्दरस (धन)। मरचं देन विकासिकाता (शाका २ १४ २२) क्या प्रदूष १ १) उप प्र ६३३) सूपा **७२:४६१: दू**सछ तुर ३ ७ )। **विद्**र [क्रिक] वका किरोप (वं २ टी—पन १६७)। भोज वि विधानी नक कोनेनामा (बूब १४२ १७) । युस ४ विषयी एक बैन गुल (कुतक २२)। पुसमित्त र् [पुष्पसित्र] एक जैन पुनि (सी ७)। "मिजा की विद्या निया-निर्देश विद्यक्ते ब्रमान थे नक स्पर्ध कराने से ही बीमार यक्क हो वाब (वब १)। सोहरा वि [<sup>\*</sup>ठोभक] यक्ष बोनेवला (६ ४१) : यस्य निक्यस्ती पूजन किन पूजा (सूर 34 XX) I सस्यत्व र् वि बस्तपुर तेर्, कपश्चीत, बक्र-पृष्ट् (दे ७ ४१)। बस्थय देवी वस = दब् । परधंग र् [पश्चाक्र] क्लल्ब की एक जाति जो बज्र की ना काम करता है (प्रक्रम १ २ यश्थर देखी परभर = ऋतर (बा १११)। बरपर्किन न [बरुद्धिय] से बैन कृति-दुर्जी के सम (कप्प)। याथस्य वि [बास्तव्य] यहनताः विवासी

मदा)।

मत्थाप्पी औ [दे] बक्ती-विशेष (पर्स्ड १---पत्र ११)। यत्याणीक प्रन 📳 चाच-विरोप क्लोब करवाध्येपरा भोज्या करूने धार्वेति (सूच ₹\*): वरिय प्रविस्ति २ इक्षि मग्रक (मन १ ६ १० १३ सामा १ १०) 'नरिकम बारपुरशो बत्तुस्करिक्षेत्र महा छहा सबई (धनीय १८)। २ मपान, द्वरा 'नत्नी यकार्यं (पायः पर्याः १ ३ — पत्र १९) । १ कारो में राजाना---ससी---ससाई बैठने का श्वान, स्व का एक प्रतस्त्व (सीप) । क्रम्म न किर्मेणी १ विर साथि में कॉ-केट्रन शाप किया बाता देश काश्री का प्रदेश । १ सब धाफ करने के किए बचा में बची बाबि का निमा बाता प्रक्षेप (विपा १ १--पत्र १४-खामा १ १३)। पुढ्रम क्षेत्र पुट्रक केट का भीतपी प्रदेत (किर १ १)। परिषय प्रशिक्षकी वस बनानेवाला रिजयी (प्रसः)। बर की बमें [व] कटन वापनों को प्रश्ने कुछ (R w 41) : क्तुन [पस्तु] १ पदार्व कीम (पाया ज्याः सम्म दः मुपा ४ १। प्राप्त ३ ४ १ टॉ—पन १० ) । २ दून, पू<del>र्व पन्</del>रों का सम्मापन-प्रकरता, परिश्वीर (सम २४. एवि यात कम्म १ ७)। पाछ, बास् र्षु ["पाछ] राजा शोरक्श्च का एक बुप्रक्रिक वैत्र मंत्री (ही २) हम्मीर १२)। दरशुन [यास्तु] १ मुद्द, वट चेलवल्युनियि परिमार्ख करेड (का) । २ वृहाविनार्थक राम (खामा १ १३)। ३ साम-निरोप (ज्ञा)। पाइरा वि [पाठक] मस्तु राम्रका पन्त्रकी (सामा १ १६ वर्षीक ३३)। बजाधी विद्या] पृष्ट-निर्मातन कता(घीकानं २)। **बरपुत्र र् [बस्तुख] एवस और इंग्लि** बनस्रति-विशेष हा#-विशेष (पएछ !---पन ६२। ६४ पन २४६)। (लिंड ४२७) सुर वे देश गुला देदश परबुख र् [बस्मूख] कार देवीर 'वर्षु (रिप्र)

वा वेनमनंत्रा (भी १)।

धन् देवो यस = वद् । वद्धि वद्ध् (बनाः भना करा) । भूका वदाती (भग) । हेक विद्युत्प (क्या) । भन् देवो वस = वद (शाह १२ माट—विक प्र) ।

४६)। वर्षिसा क्यो महेंसा (६५)। यदिकास्त्रिय वि [दे] वनित क्षीय हुमा (६ ७ १)।

बद्दमा देवो पद्दमा (माबा)। पद्दश्च दिं बार्वजी १ पद्म बादम सेव-पद्द बुट्टिंग (१० ११ हे ४ ४ १) पुता १११, एका प्रकाश के १ - पत्र १४१)। २ वृं कुळी नत्क का दूस्य गरोन्द्रक-नतक-बान (देनेव १२)।

यहाँखिया हो। [दे बार्यक्रिका] बरली साठा बर्ल दुर्शन (सम १ ११—पत्र ४६० धीम)।

सद्ध देखो यहाड ⇒वर्षम्। कर्म वर्षात् (मुत्त १)। यद्ध पूर्व [युर्फे] वर्ग-रण्यु, व्यन्त्रा वद्दो (१ कम्मे वद्धो) (तामा १९ ८८० पद वर्ष सम्मृत १७४)।

यद्ध केतो थिदा = मृद्ध (प्राप्त प्राष्ट्र ७)। यद्धण न [यर्थन] १ मृद्धि वक्षी (छावा १ १ क्य)। २ वि वेदलनामा (उप ६७३। महा)।

बजुनाया । १ [ वर्षेमानक ] १ समयो बजुनामय । महारो मॅपड महारह व्योजिस १ सिक्य (टा २ १-- ३०) । २ एक हेर-दिमान (९वेड १८) । १ न पाननिर्देश

श्याव (खाया १ १--पत्र ४४ पदम १ २ १२ )। ४ पुंप्प पर मास्त्र पुत्र भ करने पर बात्र मा प्राप्त प्राप्त पूरव के करने पर बात्र मा प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त करने पर बात्र मा प्राप्त प्राप्त १ १--पत्र ४४ ११--पत्र ४७)। ७ म. एक मांव का नाम मिलक साम पहिच्यानस्य प्राप्त बद्धनायुर्ध का प्राप्त मान्य प्राप्त । द वि द्वा मिलक साम प्राप्त प्राप्त । द वि द्वा मिलक साम प्राप्त मिल (स्प्र)।

संतोष ४१ ह ८)।
यद्वारिय वि [पपिछ] यदाया हुमा (तथि)।
यदाय एक [ सर्पेप्, यर्थापय ] कमारै
देना। बदावेद, बदावेदी (क्य)। करे
पदावीयवि (रंता)। वह पदायिय (पुमा
२२)। धह, यदायिया (क्य)।
यदावय न [ सर्पेन, धर्माय ] कमारै

यद्वार सक [ पर्धेय ] बदाना प्रवराशी में

'क्यारहु"। बहुः यद्भारत (सिंहु १२)

मानुस्थनितंत्रम (भीता तुर ३ २४ महा तुरा १२२ १६४)। बद्धापणिया को [यद्यनिद्या, वर्षापनिद्या] क्यर देवा (विदि १६१६)।

वढापय वि [वर्षक, वर्षापक] बचाई देते बक्ता (मुर ११ ७६ व १७ मुना १९१)।

यदापित्र वि [पर्धित, यथित] जिसको कपाई यो पर्दे हो बहु (तुमा १२२ ११४)। यद्धित्र वृ [ ले ] र प्यार मधुक्त (१७ १०)। २ मधुक्तिकोच दोध्ये उस्र में हो देवे के कर नियम प्रयुक्तेय मनावा पया हो बहु विपन्न (यह १११८)।

यदिज देवो पहित्रत्र च दृष्ट (यदि)। बद्धा धी [दे] यदस्य दृष्य मनस्यक्र कर्तव्य (दे ७ ६)।

करोब्द (दे ७ ६ ) । पदासक १ र्वष (दे पद्मीसक) बान्निसेय पदीसमा १ एक मकार वा बाजा (परह २ १—वव १४८ सन् ६) । युव देखा एक कार किया)

वन देशा पर् - वप (पूजा) । वषय देशो पर्य (स्त) । वभू देशो पहु (शीप) । सम्र देशो परण = वर्णम्। समीह (पुमा प्रवा) । हेइ प्रसित्तं (पुमा) । इत्यम् ज्याद्या (सुर २ ६७ रस्या १४) । सम्र देशो वरण = वर्ण (सम्र स्वा मुगा १ १ । सम्र १६ इस्मा ४४ । तर् १ । । सम्रा देशो वरुपम (इन्स्म सा २३) । सम्राम देशो वरुपमा (इन्स ०६० ती। सिरि ७२७) । सम्राम देशो वरुपमा (रंगा) ।

यांकाल देशो परिवास (सत)।
यांकाला की पूर्वपक्ष हो नातवी नायुत्तर
स्वास्त्व की स्वास्त्व नातवी नायुत्तर
स्वास्त्व की स्वास्त्र की स्वास्त्व की स्वास्य की स्वास्त्व की स्वास्त्व की स्वास्त्व की स्वास्त्व की स्वास्त्

पप्प सक स्थिप ? दिसमा भाषदास्त्र

करना । बप्पद् (पारना १११) ।

थन्नय देखो यण्यय (पिक्षः १ ५ कप्प)।

थप्प थुं [यप्र] १ वित्रयोग-निरोध बांग्रीय का एक प्राण्ड निर्मण प्रकारी निज्ञा है (ठा २ २-च्या क अंभ)। २ पूंत किसा दुवें कोट (ठी ०)। ३ केबार प्रकु -केबारों वरिष्टी बणां (वाबा बाका २ १ ६, २१ के ७ ०२ टी)। ४ तट किनास्य प्रेमो क्यों व वर्षी (वाबा)। ४ व्यक्त यू-प्राण केबी-न्योत प्रकार यू-

वा पागापछि वा (धाना २१ ४ २)। यप्प नि [व] १ छुद्ध छुत्र । २ वनसन्, सन्तिह । १ मूच-पूर्वेत म्लानिष्ट (१ ७ ८१)।

पप्पन्यय देशा य-प्पन्यय । यप्पम देशो प्रप्ता (सन्) ।

भएपायर की [अप्रस्तवी] जेनुतीन का एक विजयन्तेका जिसको स्वयानी का नाम मरस्तिता है (अ २ १—पत्र २ ८क)। यप्पा की [मम] जनत पून्मान टेक्स

क्रेंची जमीन (सम १४--यत ६६१)। यण्या क्षी [यमा] १ भवतानु नरिमास्त्री क्षी माठा को भाग (तम १४१)। २ वसमें

धीप लागा १ १ टी---पण २ पाचा प्रस्म ર, દર, ભરાદ દ દ ર ૫) ৷ ર જિ वर्षित, जिसने बास किया हो यह (दे क 1)1 शन्त्रिण पुन वि] १ वेशस्त्रामा वेश । २ क्रमाबा देश (भन १. ७—पत्र २३व) । **श**ट्यी देशो भएया = नप्र (सन १६----थत 1101 क्दरीओ पूँ दि ] चातक पत्नी (वे ७ ३३)। बर्णादियान [रे] सेन बेठ (१७ ४८)। बच्ची हुई [वृं] स्तुः निही साविका भूट ( × × )1 क्या देशो श्रष्ट = बनुश् (भ्रष ११—पत्र 442) i वर्णे स [इं] इन सपी रा मुक्क मन्दर—१ उद्यान-पुषः बज्रापनः। २ विस्तय धावर्य (मधि 🕬) । ब्रुप्तात्रस्य देशो ब्रुप्तात्रस्य (दे ६ ६२ हो)। बफ्र न वि शक्त मिरोप (गुर १३ ११६)। परभ देशो वह=वह। बब्ध नूं [ब्रज्ज] यहारितेय (ब ४३७) । ब्रह्मय न [इ] तक्योरर, कमत का मध्य भार (देखें है 🕕 पश्चितिय वि [स्पश्चिति] व्यक्तिकार कोच ने इचित्र (भा १४)। र्याभपार रक्षे पश्चिपार (त ७११)। पश्चिमारि वि [इप्रशिवारिम] १ व्यान-साधीक सबर्विस ने दूपित ऐकारिक (वर्गरी १२२३ वंचार १७)। २ परकी-सम्बद्ध (वय ६ ७)। पश्चिपार देखो पद्विचार (उत्तर ७१)। यम मक [यम्] उत्तरी करमा के करमा । वक् बस्त यसमात्र (पान शिपा १७)। बंह- येश (याचा पूर्व १ ६ १६) । इ थम्म (इत्र १७) ।

चक्रवर्टी राजा इरियेल की माठाका बाम

२ मध्यक मिरोप (पूल्क १२१)। व वि

संदिपय र्थन [वं] १ केश ए, बेंग्र (दे ७ वधः

(पत्रम ब, १४४ सम १६२)। बर्टियंश व दि । १ वेचार चेठ (वड )।

एक राज्यक ( बड )।

यसम् दि [बायक] उत्तरी करनेदावा (देशव पराण न [धमन] स्वयीः पानित के (सापाः सामा १ ११)। बसाछ धक [पुडाय ] १ इक्ट्रा करना । २ विस्तारमा । क्यालाइ (हू ४ १२, यमाळ इंदि क्यक्य क्षेत्राहर (देव **१** प्राचास ४३४ १२ व्यक्ति। बमास र् पुरुष्टि चरिय, दन (सरह)। यसास्त्रज्ञान पुत्रस्त्री १ इक्ट्रा करना। २ विस्तार। १ वि इक्ट्रा करनेवाचा। ४ विस्तारनेवाना (कुमा)। यस्म पुत्र [पर्मम्] क्लच बंगाह वकार (प्राप्तः क्रमा)। वस्त देशो वस् । बन्मय ) पूं [मन्मय] कामदेव अंदर्ग मस्सद् । (चक्र प्राप्ता हे १ २४७ २. ६१३ प्राप्त) । ध्रमा देखो थामा (क्रम परव २ समारक र नगरर)। युम्पिश नि [बर्मित] क्वकित सेनाइन्द्रक (मिया १ २—यम २३)। वस्मिक्ष १ वं [बस्मीक] और-विशेष-इत क्सीभ मिट्टी का स्तूप 😝 या गीय क्षेपकों के खाने की बीबी (सुख २ १ २६ हेर र शावदा नामा स रहश सुपा \* ( # \$ F बम्मीइ व वास्मीकि एक प्रक्रिक आवि रामायल-नता पूनि (क्तर १ १)। बस्सीसर इं [व्] काम कन्दर्ग (वे ७ ४२)। सम्द्र न विशेषस्तीन (दे ११) । यन्द् प्रे जिद्यामी १ इत-विशेष प्रधात का वेह 'नग्योद्धास्त्रा क्व' (पत्रन ११ ७६) । २ वेडो वंभ (प्राप्त) । बम्बस व [बें] रेबर, क्रियक (१७ ३३ ₹ ₹ ₹#£} ( पमदान देवो बंशम (दुना) । पय एक [क्यू ] कामना, कहुना । क्यार वस्प (वर् )। मीर वर्णिसह, वर्णिसह, वर्षमहिति वर्षमति वोश्वित, वोशिक्षहित, षय र् [वर] क्वन चर्फ (या २३)। रोन्पित, बोन्पिर्दित, बोन्से (प्रति ६२: वय र्न [मन] निमन चापिक प्रतिश (चर-

वर्ष है र रंगरा हुना) । कर नुबह

(कुमा)। कर्म, माँव वक्ष वस्त्रामाण (विशे १ १६) : श्रेष्ट नक्या, नवा, **यो रा**ण (ठा ३ १—पत्र १ वः मूदर १ के हे ४ २१६३ हुआ)। हेइ. क्लप् वर्स वेर्स (पाया: पत्र १७२ हे४ २११: इस) । इ. एक वस्त्रम बोस्तम (बिसे र का १६६ दी: ६४८ दी। ७६० दी विष्ट वर्ष वर्षेत्रे १२२३ मुर ४ १७-युवा १४ ३ औषा बना 🕏 ४ २११) । सेवी वयणिखाः बस सक विद्वी बोधना करना। बदध वयति (क्याः कप्पः), वद्या वएक्यः (कप्पः) । मुका- नगांच, नगांची (भीपा कपा सन न्या)। वक्ष वर्षत वसमाय, वरमाज (क्या काम ठा४ ४---पत्र १७४ कान . १थ अ. ७) । संबं यहचा (माना) । केक पहलाय (क्रम) : वय सक [द्राञ्ज] जाना पनत करना। नगर (पुर १ २४४)। नगड (महा) नहज (नम्ब २ ६१)। ४ वयंत (बुर ६ ६७) बुरा ४६२) । इ. बहुमञ्ज (सना) । वब पूँ [पूक] प्रमुचिरोच मंदिया (पंत्रम tt= w) : वय पूर्वि] मूम पत्नी (१७ १६:पाष)। वय र्व [पत्र] १ संस्कार-करश्च । २ मध्य (पा २३)। वस पूँ [सर्व] र केश-किशेव (वा ११२)। र बोक्स पर हजार यीची का चन् ह (छाया १ १ थै-पर ४३: था १३)। ३ मार्ट सरवा। ४ हेल्क्सर-करखा १ एक्स, वर्षेत (भा२३)। ६ स्पृक्त, द्वन (भा२३ स रश्या गुपा रद्या हो १) । क्य ई [स्थय] १ बर्च (त ४ १)। २ हाति, पुरसाम (बन प्राप्त १६१) । देशी विभ ⇒ व्यव । षय न [ वषस\_] वषन, जीक (तूम १ र दे, देवे १ र १ १ सुद्राहरू ह क्षम दशः दं २२)। सनिभावि ["समिव] वयत का समयो (सम) ।

र्थवा । । दुना, जन २११ टी; सीवशा

वयराज्ञ देवो वद्गराज्ञ (सत्त ६७ ही)।

८४- पाप) ।

बस्क वि [रे] १ विक्सता, विस्ता (रे ७

८४)। २ पूँकलकत कोलाह्य (देध

धय---परक्सा

(धावा २ १ ६ १)।
यय पूर्व [ ययम् ] १ वम सम् (ठा ६, १ ४ ४१ मा २३० जर्म १ ६ जुमा-प्रायु ८० सा १४)। २ वसी (वडल प्रम १ १०)। १६४ वि [स्थ] वरुण प्रमा (धुक १ १६)। १ परिणाम पुर्वित कुरुण कुरुण स्वस्तु (वस्तु वस्तु भाव)। यस पुर्वित्व वस्तु भाव (स १४)। यस देवो प्रमान्य (स १४४, सा २६)।

बडड कप्पू से १ २४)।

बस देवो परा = पराब् (कुमा)।
बसी म [में] एक-विरुष (विरि १११०)।
वसीतरिक्ष मिं [कुत-विरुष ) बाद से विरो-हित (वे २ १६)।
कर्मात से सिकासी कमान क्याराता सिम

वर्धस हु [यवस्य] धनाल धनरलाता मित्र
(का १ र—पत्र ११४ है। २६१ नम्रा)।
वर्धसि केशे प्रयोधि = वर्षालग् (घन)।
वर्षसी को प्रयोधि = वर्षालग् (घन)।
वर्षसी को [यवस्य] चली तहेली (भ्यू)।
वर्षम हु ति नाक्षिण संयोधा (६० ११)।
वर्षम हु । १ मित्र, मृह। २ सम्या
विभिन्ना (६० ०१)।
वर्षम हु । एता १९० प्रकृ क्षा क्षा क्षार्यम् ।
वर्षम (यहा १९० प्रकृ क्षार्यम प्रयाण

(विधा १०६४)। बयम वृंग [बयन] १ व्यक्ति क्यम 'क्यमा' बयाम (१९ १३४) पत्र २ पुर १ ५४) प्राप्त १४/११४ (१४ : कुमा)। २ एकाम प्राप्त (विधा का क्षेत्रक क्याकटण-धाक्किट प्रस्था (वाय २ २ १ मे—पत्र ११०)। बयागिक्क कि [बयानीय] १ काम, क्यानीय बयागिक्क कि [बयानीय] १ काम, क्यानीय

३ ४४ प्रमुध्२)। २ स् कमत चौद्ध

वधारण वि [वधाराय] र काम्य, कारताय विभिन्न 'वाड्र क्यांद्विस्य वस्त्रीदेख' (क्या व पूच २ १ ६ )। २ क्यिक्सीय (पूच ६ )। ६ ज्यासमानीय, ज्याह्य की सीम्य (द्वा १)। ४ स. वचन ग्रास्य (है ४ १६) व्याच १३ हाम ८६६)। ४ कीम्य वस्त्र क्रिया (व १२१)। बसर वि [वै] प्रस्त्रिय (वै ७ १४)।

स्पर केयो पहर ≔ वज (कम्पः स्वः प्रोधसः व। पार्वे वेशः प्रसः धीपः)। वपर केयो पसर = प्रकर (वे १ २२)।

समझी भी चि] शता-विशेव निवाक्षी नता (दे ७ ३४३ पाप)। बयस देवो पय = बयस् । 'सबयर्थ' (घाषा 2 a 7 7)1 वयस्त देवो वर्यस्य (स ३१४ मोह ४०-समि १३ स्वप्न ७६)। स्याक्ये विपा १ विकट किहा २ मेक, भएकी (भा २३)। षयाक्ये विचा र भोपवि विशेष । २ मैना सारिका (मा २३)। वेद्यो प्रचा। थया की [क्यजा] १ मार्ग-विशेष क्य की बीचने के लिए राज्युबद्ध बड बादि वालमे का भागे। र प्रेरस-करड (बा २३)। बर सक [चू] र सवार करना संबन्ध करना। २ घाणकारन करना बकना। ३ मापना कला। ४ सेना कला। शरद (हे ४ २३४ सुकार ध्राप्रावर्) 'वरं वर्षेह्' (क्रुप म ) 'वर वरमु इच्छिये (मा १२)। मनि विधिसद (सिरि ६११)। इ. वर्णीज (पदम २०१४)। वर सक [बरय्] र श्रप्त करने की स्थक्त

(बींक गुरूब ७): के श्वीरत बरले (गुरूब ११)। बड़. यसिंव (गुरूब ७)। बर दुंदिर] रे तके स्थानी दुलहा (छ ७८ स्थान ११ सा ४ ४० ४०१, स्वीत)। २ बरताल, देव स्वारि का प्रशास (जुला सा १२ २७४ दुस ८ स्वीत)। ३ वि सेन्न

करता। २ संबद्धकरता। वर्ष्ट, वस्त्रति

बत्तम (रूप महत् कुमतः प्रामुध्य १७४)। अक्षमीत् (सा१२ कुम ८)। इ. स. कुछ प्रामीत् प्रमुख 'वर्ष से घप्पा देतो' (उत्त १ १६। प्रामु २२। १८। दक्त वृ ["दुष्ठ] १ मस्त्रात् सीमिनामजी का प्रथम

हिप्प्य (घप ११२ कप्प)। २ एक राज क्रुमार (विपा २ १) १ ) । श्वाम न [श्वामन] एक दीवें (ठा १ १—एक १२२, इक्च क्षर)। "भणु पूं ["भनुभू] एक मन्त्रिक्षार, बहुबस्य कामस्यों का काल नित्र (महा)। पुरिस पु [ पुरुग] बानुरेष (पएल १७—पत्र १२१ एन, मानन वीत १)। माल पु [ मालो एक देव विमान (देशक १६६)। माला वारक-मुक्त माला (इत्र ४ ७)। स्ट्र पु [ फूबि] एका भरत १ एन । स्ट्रिय क्षेत्र प्रिम भागी (इत्र ४४०)। स्ट्रिय की [ पिरिका] माणि बस्तु माने केलिए की वारी बोलाग रियल बस्तु क सान देने की बोलगा (लास १ ८—पत्र १११ सामन स १ पुर १६१ १८ मुना ७२। सरक व [सर्क] बाय निरोप (लाह्य १ ४—४५ १४८)।

नियान (भय १ ७ — यह ११० हेवेल २७ )। यह फो ग्रह । विक्रमा की ['पनिवा] वेस्सा (हुमा)। बर देशो पर 'चेंगाएम-भ्यत्रार्ण जो वेह ब्यावरी मरो निवर्भ' (हुम १८३)। यहाइ वि [ची] पान्य-विरोध (१० ४१)। यहाइ वि [ची] पान्य-विरोध (१० ४१)।

सिद्ध प्रा शिष्टी यम सोक्याम का एक

सर्द् वेचो परम - वराक । सरहष्ट वि [मृ] मृद (वे ७ ४७) । सर्द केचो पर्द - परम् स्मो वर्ष विस्त्रतस्त्रस्य स्त्य स्वत्यक्ष (नेसू वेश स्त्य २ १) । पर्द कृषिक हो से वे क्या नासी नक्सी। २ मिति भीत (क्या ६)।

(दे७ ४४ पद्यपि)।

बर्रंड पूंचि र एक पुरस्क सूख क्षेत्र (बाद के) र प्रकार क्रिया कि कर पर् (बाद के) र प्रकार क्रिया कि कर पर पर्)। के क्योद्रशामी, मान पर समाई बादी करनूरी मारिक क्ष्म (४० ०६)। ४ क्षमुद्र (स ६३)।

परंडियां की [क] कीन वरंडा वरामवा बालान (मुजा २ ६)। बालास न [बाजक] क्षेत्रसम्ब निर्देश विस्कृत (वे ६, ४४)। बालास ने बाजको - सोगी - 2 एका के

सरक्ता ⊈ [पराक्ष] र मोधी।२ यक्षा ६ वि सेष्ठ प्रत्रियकाता (न ६,४४)। सरकत्रा भी [पराक्या] निष्नता (से ६ ४४)। करा व [बर्फ] महामूरव गत कीमती भागत (भागा २,१ ११ ६) । वरह र् [दे] बाग्य विशेष (पर ११४) । बरका ) की वि यरहाँ १ तैकारी, कीट वर्सा 🕽 विरेन, वंशेनी । २ वरा प्रमुख मन्तु-विशेष (मुन्द्र १२ वे ७ व४) । बरण पू [बरम] १ सचा, विवाह-संबन्ध (तूस ११४) सुर १ १२६:४ १)। २ वट निमास (स्वर)। ३ पूज हेनु(ब्रोप १)। ४ प्राकार फिना (या २४४)। १ स्वीकार ब्धास (राज)। देशो धीर-शरण। ६⊈ देश-विरोग एक यार्थ देशा 'बहराज नम्ब बरला धण्यां (मूर्घन ६६ दी। इक) वेबी बसम् । बरण र म बिरम के देश मिरोप (वस्त्र)। बरणसि (धप) देवो वाराणसी (वि ११४)। बरपा की [बरपा] १ कारी की एक नहीं धस्सा (राज) । २ धण्य केराकी जाणीन राजवानी (तुम्पीन ६६ टी) : देखो वरुजा । बरपीओ देखी पर = हू । बरच वि 🕄 १ गीव । २ पविच । ६ पेटिंव, संहट (पर् )। यरचा की [बरजा] रुजु, रासी पाम विपा १ ६ सूपा १६२)।

बरवा की बिरसा रुकु रखी पास विश १ ६, मुता १६२) । दरस दूँ बिरको क्योर करनेवाना विश्वक का सारेक दुक्ष रित ६ १११) । बरस दूँ की व्यक्तिकीय एक उरक्क कामस् दूँ को रित

यरप कि [बराठ] शैन नगैन वेशाय, रेक (याय, गुर रे देश १ दश, गुरा देश ना प्रदेश)। की दृद् (शिक्ष रे कि )। बरस्य की [यरख] हुंगा हुंक्यणी की सावा (राज)। वर्तस केनो परिसि (संखू दे )।

परहाड पम [निर + स] बाहर निकाता। बरहाडर (हे ४ ०१)। बरहाडिक वि [जि मृत] बहार निकात

हुमा निश्त (हुना) : पराग देशो पराग (रंका) : सराज १ वे विसार करी

पराह । पुष्पाट की र प्रांतल का बराइस । पुष्पाट की र प्रांतल का बराइस । तक एक प्रांतल की नरार बराइस । तक एक प्रांतल की प्रांतल की पुराह । देश एक) । र वर्षक वीमा—

बड़ी कीड़ी (क्या ६६, १६ : सीव ६६४) भार)। १ न. कीड़ियों का जुशा निष्ठे बाह्यक केवते हैं (मोह ८६)।

श्याविया की [श्याटिका] कपरिका की ही (युपार १)। श्याय देवी अस्य - श्याक (या दश दक्ष

१४१ महा)। की राष्ट्रमा राई (वा ४१९१ पि वर )। वरायक दुंक-[वराकट] केत-विकेच (पत्रम

१८ ६४)। वराह् पुंचिराह्य १ शुक्र सुमर (पत्र्य)। २ सरकान् सुविभिनाच का प्रवस शिल्य

(सम १४२) । समाही की [बसाही] निकानिकोन (मिसे २४४६) ।

वरिय [दरम्] प्रच्या श्रीक वरि मरणे मा विद्योद

> विष्यो सन्तुष्यहो स्व परिवृत्तः। वरि एक्कं चित्र मध्याः, वेस्स सम्बन्धिः दुक्ताई।।

(तुर ४ १८२ वर्षि)। वरिज्ञ वैको बळा = वर्ष (हेर, १ ७ वर्)।

वरिज्ञ वि [बृत] १ स्थीक्ट (वे १२ वन)। १ देतित (र्धान)। १ निधानी स्थानी श्री वर्षे हो नह (वसु महा)। ४ न. संबर्ध करणा; श्रीनरिक वि (क्या १४० वे))।

वरिष्ट हुँ [वरिष्ठ] १ वरत-केत्र का पत्नी वास्त्रको पत्रवर्ती राजा (सम १४४)। १ सरि-कोह (सीप कम्म कर हु ६०४) हुना

४ २ घवि)। यरिक्कत [ब्र] वज्ञ-विरोप (कप्पू)। यरिस क्क [ब्रुप्] वरश्या इष्टि करवा। यरिस क्क [ब्रुप्] वरश्या इष्टि करवा।

वरिवह (है ४ १६६, त्रात्र ) । वक्र वरिसंत वरिसमाण (गुरा ६२४ ६२६) । हेड्र वरिसिड (वि १६६) । वरिस पून [यर्प] १ वृष्टि, वर्षी (दूमा)

वरिस कृत [यय] रे ब्रोफ, वर्ष (कृमा) करा प्रदेश) र प्रेरक्तर, शास (कृमा) कृत प्रदेश वर्ष से रेक कर्यू क्रमा रे रे ) र वेब्रुगिय का सर्श्वनीत्रेय, प्राप्त सारी धारा र केया (वर्ष रे रे रे रे) स कि [या] वर्षों में स्थलन (वर्ष )। क्रम्बर् म कृत्या र एक कीमा र उपने स्थावील

में छराम (डा ७—पन ११)। बर ई पिर] धरापपुर-एसक पश्च-निरोम (छामा १ १—पन १७ छन्या प्रोम ११)। वर ई किरो गर्मा प्रमाणिक धर्म (धीम)। वेबो सास मन्ये। धरिसक्तिक वि [वर्षित] वरसामा हुमा

धारतास्त्र वि [वाक्य] करवाना हुमा (हुमा १२६)। वरिसा की [वर्ष] (हुस्ट पत्ने का नदान (वे २ १ १)। २ वर्षी-कन प्रनात पीर मारो का महीना (मते ७४)। इस्त हुं [क्सत्र] नर्षा क्ष्म, प्राहर् (कृष ७१)। रण हुं [पित] वहीं धर्म (त्र १ छाना

११--नग६१)। छ देवी काछ (पर वर नहा)। देवी पासा। वरिसि नि [वर्षिन्] वरज्वेनाना (वेसी १११)।

वरिसिजी की [वर्षिजो] विद्यानिकेव (१वर ७ १४२)। वरिसोक्षक वूं [वे वर्षोक्षक] पक्रावनिकेव

पक प्रकार का काबा (पन ४ से)। वरिवृद्धिम केवो परिवृद्धिम (से ७ ६ )। वस् ) पून [वे] केवी बक्सा भाष्यसम्बद्धा

बर्केस है बरुपों कुलांव तुर्पोइबर्सायमा (? चा)' (प्रवीस ४७)। बरुट ट्रु [बरुपट] एक विक्तिसमारित (चन) ?

बरुट दु[बरुम्ट] एक शिश-वर्धन (एक)। बरुद दु[बरुह] एक प्रत्यस्थ्यार्थन (दे २. बर)।

च्या की एक जाति (स्व.४)। व सहोराव का प्रस्तुता धुनुते (सूत्र १.१६) स्व. ११)। १. एक विधायकाराति (पद्मा ६. ४४) ११ ११)। १. एक वेश्विनुत (सूरा १४४)। ११ ध्यम्पिकोच (सिरा)। १२

मध्यावर होन का एक प्रविद्वाता केन (जीव

स्पान १४व) । १३ वृं व एक पार्व ।

रेश (स्न २७६) । काइस् वृं विकासिक ।

कारति (सम १ ०० ना ११६) । देवकाइय
वृं विकासिक वृं विकासिक ।

रेश वृं विकासिक वृं विकासिक वृं विकासिक ।

रेश विकासिक वृं विकासिक विकासिक विकासिक विकासिक विकासिक विकासिक विकासिक विकासिक विकासिक व

(बीव २—पव १४० पुरुष ११)। यस्त्रा की [यस्त्रा] १ शब्द देश की प्राचीन साववारी (पव २०१)। २ वस्त्रप्रमा पर्वट की पूर्व रिशा में विच्य वरुष नामक बोक-पान की एड राज्यानी (रोज)। १ एक राज-परी (प्रमा ७ ४४)। यस्त्री की [बस्त्री] विद्या पिरोप (प्रमा ७

१४)।
बस्योकः । वृं [बस्योद] एक सद्भाः (ठा शस्योदः । प्रभः १ १६० पुरुषः ११)। बस्य वृषः [बस्य] रेग्र-निरोणः (पत्रमः १८

बस्छ दुष [बस्छ] केत-निरोग (पत्रम १८ ६४)। बस्कियों की [बस्कीयनी] वेन्स कीन्स (पाम)।

(११४)।
वद्ध सन [ये] एक (१ ७ ४७)।
वद्ध सन [येत ] १ कोटमा बातमा साता।
१ पुत्रमा, देवा होनाः पुत्रपती में नकुदूरी।
१ उत्पाद होना। ४ वत हरूमा। म पाना
समन करणा। १ सावता। स्वाह (१ ४४)
प्रीत वसित्यं (सहा)। यक बद्धेया बद्ध्यम्,
बद्धामा पद्धमाना (१ ४ ४२२। सावता।
१ ६ ४४० ४५२। सावता।
१ ६ ४४२ ४५० पत्थ स्वामा वद्धमाना (१ ४ ४२२)
प्रीत वसिद्धामाना (१ ४ ४२२। सावता।
१ ६४०। वस्ता विद्धामाना।

वछ सक [आ + रोपय] अपर वदाना।

मसद् (दे ४ ४७- दे ७ वर्)।

बळ सक [ प्रक् ] प्रकृत्य करना । बसाइं (क्वे प्र २०११ के अ.६) । खळणिव्य (क्वम्) । बळ दुं यिखे रस्ती सावि को मक्तृत करने के सिए विचा जाता बस (उन्न २६, २१) । बळ्ळांनी की [बें] इतिवाकी, बाव्यांनी (वे ७ ४६)। बळ्डान वि युळ्नीयती हे बक्सम्-कंपन की

७ ४%।

पछत्र वि [पळ्पेया] १ वसय--- कंपन की

पछत्र वि [पळ्पेया] १ वसय--- कंपन की

पद्म तेसामार किया हुमा वस्प की ठाए

पुत्र हुमा (पठम २० १२४ कम्पु)। २ विटि

(क्पू)।

पळ्पेसाणिमा की [ये] मानवासी (१ ७

४५)।

पळ्पेका कि [ये] असीवत स्तर्धप-रिपत

(पद् १०६)।

पळ्पेसा कि [यत्यु] श्वेत छन्पे (पाम)।

पळक्सा कि [यत्यु] श्वेत छन्पे (पाम)।

पळक्सा कि [यत्यु] श्वेत छन्पे (पाम)।

पळक्सा कि [यत्यु] श्वेत छन्पे (पीप)।

बज्या वह जा + रंबू ] भाषेत्व करना बहुमा। इन्दारी में 'बब्बमु'। इनस्माद (हि ४ २ ६ वह यहि)। वक्रमा वि [आहन्द्र] विश्वने प्रायोहल किया से बहु बहुम (त्राव)। बब्बमांगणी की हिं] बृद्धि बाह वि ४ ४६)। वक्रमाय वेद्यों बज्या = बाह्य (ब्रुय)। बब्बमाय वेद्यों बज्या = बहुब्य। विश्वम व [ब्रुवा] १ मोहमा बाह बहुव्य। विश्वम व [ब्रुवा] १ मोहमा बाह बहुव्य।

(धेन धे भवड)≀३ वॉक शक्ता(है

४ ४२२)।
वक्तमं (वी मा) देवो परण (त्राइ च्हा हे
२६६)।
चक्तमं वी विक्ता] देवो बक्तमं = वतन
(बद्ध)।
चक्तमं ते [वी वर्गेल (त्राने)।
वस्तमंत्र ते [वी वर्गेल (त्राने)।
वस्तमंत्र ते [वी वर्गेल क्तमं तेवा बन्तमंत्र
तार्थं (१० ४०)।
वस्तमं त्रावं (१० ४०)।
वस्तमं त्रावं (१० ४०)।
वस्तमं त्रावं (१० ४०)।

बेप्टन, यनवारा मादि (हा २ ४-ाव

८६) । ६ वेटन, बेटन । ४ वर्तुंब योसाबार

(वडक) कम्पू, ठा५ १) । प्रतिवी साहि के

के बाक से वेटिय भू-माग (पूत्र २,२ व मप)। ६ माबा प्रपंत्र (सूम १ १२ २२) सम ७१)। ७ झसरम वनन मुखा सुठ (पर्याह १ २--- पत्र २६)। द बसयकार दुख गारि केन बारियक बावि (पएए १ उन्न १६ १६) युक्त १६.१६)। भारः राज वृं (कार् क्दरक विकास बनामेवाचा रिक्सी(रे ॰ १४)। थ्छय वि (यछक्र) मोइनेवासाः 'ध्यसा-स्त-बसमा (सिंह ११४)। यक्तप्रकृति । १ क्षेत्र क्षेत्र। २ पृद्ध वर (केण ८४)। पञ्च देवो वल = वन् । समय वि ["सृतक] १ संबम से भ्रष्ट होकर जिसका मरण हुया हो बहु। २ मूब मादि सं दहस्ता हुमा जो मत्त हो वह (सीप) । सरण न ["सरण] संदम से ब्यूत होनेवाओं का मच्छा (सब 2 ()1 यक्तयजी की [ति] वृति वाह (दे ७ ४३)। बस्तवादा ) की [वे] र शेर्व कांग्र, विश्वप्र

बस्त्रयथाह् 🕽 व्यजा यात्रि बोना नाशा 🖁 बह सम्बा बाह्यः चिह्नारिमासु बनमबाहानु कविष्यु सिएम् मन्दरनेस्<sup>\*</sup> (सावा १ ८~~रन १६६)। २ हाम का एक बागुपण पुरूर कदा (के ७ १२ पाधा)। वलया देवो पडवा। लख्यं विस्तान वाग्नि (हे१ १७७ पत्)। सुद्दन िंसुका र वडवालच (देर २०२ प्राकः पि २४)। २ पूँ एक नदा पातास-असरा (ठा ४ २--पत्र २२६) टी---पत्र २२८-सम ०१)। पळपा की [दे] देना सपुर-कृत। सुद्द न ["मुद्धा] बेना का बंध मागः 'ठि बसायगुरुम्युक्तमे विस्त्रुत्तो वसयम्बर्धः। वि प्रचन्त्रका नाबेर्स, धर विप्रोदए बडे ॥ एकारिये अमे सर्व सर्व बहुयबहुद्धी। इन्दर्धि नक्षेण नेत्, यहो ते यहिपैयमा ।। (पिंग ६६२) ६३३)। षठमाइभ वि [बद्धमायित] यो वसव की

तरह बोख हुमा हो वह (कुमा) ।

षवयदि हैं। देवी बब्दाहि (दे ६ ११)।

बसना देखो यहमा न्योमहिसिबसबपूर्सणी'

(पडम रु २ के छ ४१ इक पि २४)।

क्छवाडी बी [द] वृति वाव (रे ७ ४३)। वस्त्रिक्ष न दि | सीम, बस्दी (रे ७ ४×)। बलक्षि की [बें] क्यांस क्यास (वे ७ ३२)। बन्धी । वी बिडिंग भी र मुस्यूबा, वस्त्री करना नरामदा र महस्र कर पदस्य पाय (प्राप्त)। ६ काक्षिमामाङ् का एक प्राचीन नवर, विश्वको साजकश्च 'वस्थ' कहते हैं (वी १४, सम्मत्त ११६) । कराज देवी पद्मय = १ए + धम् । वहः. 'रीयह नि मध्यअंदो (से रः ६)। बस्ताध देवो पद्धम = प्रमान (से १ ४५) । पछाझ देवो यख ≈वन्। सरण देवो पछद-मरण 'एंजमबोक-विसन्ता गरीत वे र्वं बनानमस्य हुँ (पन १३७ का २ ४---99 E4) ( विक्र इंड [विक्रि] १ केट ना सन्तरम-विदेश 'स्वरथविमीडिंदि' (निर १ १)। २ विवर्षिः, नामि के स्पर पेट नी धीन रेखाएँ (वा ४२३ मिन)। १ वर्ष माहि से होती तिक्रिका नमशै (खावा १ १-- पन ६६)। ৰভিম বি [ব] ছুড, মহিত (বৈ ৩ ২২)। विक्रिप्त विविद्य देश हो । (प्रदेश २७ मीप)। र जिस्को बच वहाना नया हो वह (परिच भावि) (क्स २६ २१) । विकास देवी पिकिश = व्यक्तीक (प्राप्त) । परिका की [ब्] का, क्लूप की होरी (बे 9 14 ) I र्वासन्ध्रस देवो पश्चित्रस (सीप) । र्वास्त्रत देवो वस = वव् । बह्रित देवो पछित्त (उस ७१ थै)। बह्मिड्स 🛊 [बह्मिट्ट 🛊 बनस्पति 🔻 वर्षि वा बनाकार केहन (प्रदेश १---पत्र ¥ ) ! विक्रि नि [विक्रिय ] बीटनेवाला (मुपा **1()** वसी की [वसी] रेबो वस्ति (निर १ १)। बहुज देवो बस्ज (है १ २१४)। वस्त्र व पंत्रीयकनूषन सम्दर्भ (प्राकृतः )। र-३ देवो मसे (वर् ) ।

₹**₹**₹) [

यक्ष घट [सक् ] क्यता दिवना(प्रुप्त | EA) 1 वश्चर्य दिवे किन्तु वालक (१९७ वर)। राठी में बाल (सूपा १३ ६६१ सम्मत ११४३ स्वयः) । बहुद् और [बहुदी] नोपी (वे ७ १६ दी)। बाह्य और विंे भी मैदा (वे ७ १६)। पक्कर ) की विश्वकी ] गोरहा (पामा वे यसकी इंद्रीर खाना १ १७-- पत्र **१२८)** । वह्मद्विष्टि] पुनवक, फिरधे क्हाइमा√ (पद्रा)। वक्षम केवो वद्धाः (शार ४)। बद्धरन दिवद्धरी १ दन म्यून (देश ब६ प्रकाटचल १३ t)। २ क्षेत्र **के**स (रेक वर्, प्रश्नु १ १--पत्र १४)। रे ध्राप्ययन्त्रीन (पास)। ४ वानुका-पूर्व्य क्षेत्र (चा १२)। बहुर न (दे) १ घरएव घटनी। २ निर्मेण देश । हे दू महिए मैंद्रा ४ हमी ६ प्राप्त इ.वि इवा एक्ट (के ॰ ६) । ६ वेष्टन-शील । ७ वेट्स न्यमक यालियत-विदेश करते की मास्त कामा। की, री (पा १६४)। वहरी भी [बद्धरी] शभी नदा (ग्रामा मचका सूना ६१६)। बहरी और दिनेशः सन् (दे ७ ६२)। वञ्चन पूंची [बद्धन] नोरा शहीर, स्वाचा (पाय)। भी नी(मा १)। बहुमाय न [रे] बेन चेत (वे ६ २६) बद्धविम नि [बे] बाखा से गैना ह्रमा (वह )। बहर र् [बहास] १ व्यक्त पति त्रती वालस (सक्तर मध्या का १२वः क्षेत्र ३०व)। २ वि प्रिन, स्मेष्ट्-पाक न्याई बाना नस्महा बर्वें निक्ती (महा च ४२, १७) दुमा पत्रम (१६ ७३) रक्त ७१)। राय र् [ सम् ] १ इनसव का एक चीतुक्य पंटीन राजा (दूस ४) । २ धनिए के दुलाब देत शापक राजा (कम्यू)। यक देवी यस वन्। बरमद (बल्ला, बहुदा औ [बहुमा] संस्ति पत्नी (स ⊌ર) ા

पद्माद्य न [दे] शाच्छातन इकने का नम्र ( to YX) 1 मद्राय ⊈िदे} १ ४२ल क्ली। २ क्कुलः म्यौता (देश वर्थ)। विक्रिकी विक्रि स्ता, देव (कुमा)। बहिर वि विद्वित् दिसनेताकाः च विरामद वक्तिरशस्त्रवा वि वस्थित्व क्वाईन्छा' (कुम **48**) 1 यक्की और विक्री सदा केव (हुमा पि teu) i स⊈क्री[दे]केट बात (३७ ६२)। यस्त्रीक्ष वे [बाह् सीक्र] १ देश-विशेष (ब १६: बाट) । २ वि. नाद्वीक देश में घराना, शक्कोक देश का (स १३)। वब एक बिप्] बोला 'ने संचिनितेषु वर्गति निर्धा (सत्त ७२) । वहः वर्गत (धारुपी। ७)। क्यक्र विकाद (श ११५)। वब एक [बय\_]देशा। बवद (वब १)। करें, क्यह (क्रूप ४१) । क्यइस अर्क क्यिप + विस्ती १ नइस प्रक्रियाचन करना। २ स्थनहार करना। बबद्धति (बर्मेसं ४३२) गुमनि १४१) । धर्धे धकावपराजस्यक्रमधे वहनिविधिनी मेद्रा। र मानुष्यितिकारक विविधियुक्तं ववद्वति ॥ (बायक १६२) । वयएस पुं [क्यपश्रा] १ कवन, व्रतिपत्तन । २ व्यवहार (दे १, २६) । ३ कार, बहाय, धम (म्या)। वश्यम र् [स्वप्राम] क्य (धनम) । भवतन नि क्यिपतर्शी १ इर किया ह्रमा (सुपा रहे) । १ मूल (पर्याप्त २ १ -- पत्र १४०) । १ सारा-सारा, बहुः 'बबयवविण्या सिन्नं पता विषद्भिष्यं ठालुं (स्विप ११) मीफ कम्प) : यपहुंस हूं [अयबग्रन्म] क्षात्रवानन, प्र्याप (TY YE) 1 बनहाबल देवी समस्वाबल (एक)। वनद्विभ नि [स्पनस्थित] स्वतस्य प्रान्त

(B 29 K2) 1

ययज-- यञ्याह क्वण न [सपन] बोला (दर १ः सु १) । व्यवण अर्थन [वे] कार्यस तूना करी न्यवही ववर्ष दूसी क्वी (पाम) । भी जी (दे६ दर ७ १२)। यवल्पम पु [दे] बल पराज्य (दे ७ 1 (38 ववत्या की [स्ववस्था] र मर्याचा रिवति (स १व पुत्र ११४)। २ प्रक्रिया, पैदि । ३ इंडमाम प्रकल्ब (सूपा ४१) । ४ निर्णय (स १३) । पश्चय न [पत्रफ] बस्तलेब (E & S ) I <del>वयत्</del>यायण न [ क्यवस्थापन ] व्यवस्था करता: श्रीवश्यत्वागसाविसा ( पर्नं सं **1**( 51 वयस्थायजा न [स्ययस्थापना] उपर देवी (बर्मेशं ४२ )। यवस्थित वि [ व्यवस्थित ] व्यवस्था पुत्र

(स ४६। ७२७) सुर ७ २ १८ सए)। बप्रस्थित वि [स्यवस्थित] विद्यते स्पवस्था की हो बहु (दश्चनि ४ ३४)। वषदेस देवो वसएस (स्वा: स्वप्न १३२)। वद्धि व [स्यपदेशिय] व्यपरेत करने-याला (भार--- एकु ११)। सयघाण न [अययधान] पन्तरः वो पवावी के बीच का सन्तर (पवि २२२)।

करना मार शामका । वनधेनेति वनधेनेकति, वनधेनेज्या (स्मा)। क्याँ वनधैविक्यपि (ज्या) । इन्. यवरोमिता (ज्या) । क्षरायण न [क्पपरोपण] विनात, विसा (स्य) । यक्रामिश्र वि विमारित विनारित

धवरोध सक [स्यप + रापयू] विकास

मार कला पनाः 'गीनियायो भगपेनिया' (पिंड)। बबस सक [स्थ्य + सो] १ क्या। २ करने की सम्बद्ध करना। करता (रह्म 3 =)1 वयस यक वियय + सो र प्रयस्त करना

बेष्टा करना। २ निर्खन करना। वनसङ् (स २ २)। यह प्रवसीत क्यसमाज (नुपा २६का स १६२)। संक समस्तिकण

(सूपा १९१)। क्वड क्यसिटामाण (पटम १७ १६) । हेक्क. यबसिर्दु (शौ) (नाट — **राष्ट्र ५१**) । वबसाय रू [क्यबसाय] र निर्हाय निबय।

२ बन्द्रुद्धान (ठा३ ३ — यत्र १६१ ए वि)। ३, ज्याम प्रवरण (से ३ १ ८ सुपा ३१२) स ६ व १३ हे ४ - १८१० ४२२ कुछ २१)। ४ व्यापार, कार्व सम (भीत राव)। मबसायसमा 🛍 [म्प/सायसभा] कार्य करने का स्थान कार्यावय (राय १ ४)।

षवसिक्ष म [वे] बतासमर (दे ७ ४२)। क्वसिन्न ) वि [स्पप्रसितः] १ स्वतः, ववस्तिम 🕽 स्वयन्युकः 'देशियो नाम स्या पयासुद्दे सुद्द् अवसियो' (वसु, इन्त २२ ६ वर)। २ व्यक्तः भावि वीविय वर्गसर्थ न चेव पुरूपरिमयो छहियोँ (उद)। ३ निवयवादा । ४ पराक्रमी (ठा ४ १---पव १७६) । ५ स स्पनसाय, कमें (शाया १ १—पत्र १)। ६ मेहित (स ७४६)। ७ कटम प्रकल (से १ २२)।

स्वहर् सक [क्यम + हूर] १ व्यापार करना ।

२ सक वर्तना माचच्या करना। वनहरहे,

थवहरए (बतारे⊎ रे⊏ स र व विशे २२१२)। वह वत्रहरंत वयहरमाण (बत्त २१ रा ३ मन = ८ शुपा१% ४४६) । हेक वषहरिते (स १ ४) । इ. वद्यारणिका भवश्रीयाज्य (चन २११ वै-वद १ सुपा ५०४)। ववहरम वि [स्थवहारक] स्थापार करते-बाबा व्यापारी (कुम २२४)। ववहरण न [स्यवहरण] ध्यवहार (फामा

१ क-१३६ संदेश उपारे के मुपा ४९० विशे २२१२)। पवहरय देशे वक्दरग (क्या १७६) ।

वब्रहरियस्थ देशो वबहुर ।

ववहार 🛊 [ब्यवहार] १ वर्तन प्राचरण (थव १ः मन द व विधे २२१३। छ। ४, २. पव १२६) । २ व्यापार, बन्बा रोजवार (मुपा ११४) । १ मय-विशेष वस्तु-परीक्षा का एक इंक्ष्मिण (विशे २२१२ ठा ७---पन ११ )। ४ मुमूखु की प्रवृत्ति-निवृत्ति का भारत-पृत कान-विशेष (यन व व--पन

**३व६ वस १ पन १२६ इ.४१)। ४** वैत भागम-प्रेच-विशेष (वव १)। ६ दौष के नाराचे फिया जाता प्रायमित भागारे-ववहारे पम्नती चेव विद्विवास्म (वसनि ३)। ७ विवाद, मामता पुत्रह्मा ववहार वियापसे कुछ इं (परम १ % १ ४६ नेइस १६ उप ११७ टी)। ब विकार-निर्ह्में फैसका चुकावा (उप 🔉 २०३)। १ व्यवस्या (सूध २, १ ३) : १० काम काम (विशे २२१२ २२१४)। ११ भोषधशि-विशेष (सल्बा १)। व वि [ बन् ] व्यवहार-पुतः (इ ४१) । ससिय

वि ["राशिक] भीवराशि-विशेष में स्वित (सिक्टा १)। यवद्वार पुंक्तियवद्वारी १ पूर्व-वेग । २ भीतकस्य सूत्र। ३ क्लासूत्र। ४ मार्गे चस्ता । १ मानस्य । ६ स्थितम्य (वन १)। वयदारि दे [ स्पनदारित् ] १ ऐरनत क्षेत्र में ब्रह्मल एक विन-देव (सम १४३)। २ वि. स्थापाधी वरिष्क (मोह ६४) मा १४ सुपा ३१४) । १ स्थवहार-क्रिया प्रवर्तक (वय १)। वपदारिक वि [क्यावहारिक] व्यवहार सम्बन्धी (भोष २०१ प्रस्तु)।

ववद्दिश्र नि [स्यवदित] स्पनकान-युक्त (प्रणुः धावम)। यविद्यान वि चि नत्त क्यत (१०४१)। पर्पोंख देशो यमाख (एए)। विश्व वि चित्र विश्व । विश्व चित्र विश्व विश्व विश्व विश्व विष्

प्राप्तु ६)। पवित्रजंद देवो वद ।

यदेश वि[स्पर्वत] स्थापत (सूच २,१ Y0):

बवेक्सा की कियपेक्षा विशेष संबद्ध परवाह (वर्मसे ११६७) ।

यध्य*य पू [यस्त्रज] तुल-विशेवः न्यूयमयस* (१ वर्ग) समुष्यक्रमः (पराह्म २ ३---पत्र १२६ क्स २, ६ )।

भक्तर वि [यर्वर] १ नामर । २ मूर्व (कृमा) । पञ्चा" देवो सञ्चय (क्स २ १ )। यम्बाह प्रेचि मन्द्र बन (दे ७ ३६)।

११९, ११)। कम्नचि (मा) देखो ससहि⊐ वसदि (प्राक्त

११)। वर्ष (म) देवा वर्ष्यः = कृष (प्राष्ट्रः ११)। वस सक विस्ती १ वास करना स्थापः।

१ एक बीक्सो नश्द (क्या सहा)। मूका वर्षीय (कुट ११ १) शक्त वर्षता बसमाय (दुर १ २१६१ ११ कुम १४ क्या)। कुक विस्त्रा बसियाजे (साम क्या शि ४०१)। हेत बस्थप सम्बद्ध (क्या शि १०० एक)। हा बसियाक्य (हा ११ १ पूर १४ ४० मूस ४१६)।

क्स कि किया र मानक मनीन (मानक से २, ११)। २ पून, सभीनका परकम्बता (कुमा) कम्भ १ ४४) । १ प्रकुल स्वामित्तः। ४ माक्स (कुमा) । ३. वन सामर्थ्य (कामा १ १७ भीप)। अगविगी वरी-मृत पराचीन (परुप १ २ : सन्दूरी गुर २ २३१ कुमाः सूपा २५७)। इ. वि [स्ते] पराधीनता ने पीक्षित समित्र स्पति की परवराता के काएस दु-वित (याचा विकार १--पव क बीप)। हमस्य व िर्देमरणी शिवसिर-परवश की मोत (ठा २, ४--पर ६६ थन)। वर्षि वि [वर्तिम्] पत्तीपृत स्वीत (पर १३६ द्य, दुवारेश)। इस्त वि [यर्च] स्रवीय परक्षेत्र (वर्मीन ६१) । । गुगानि िल्ला बहा सर्वे (परम १४ ११)।

वस दृष्ट्यि १ वर्ग (वस्य १४१)। १ वैश्व कृतम (व ११४) रस्य १ ४३)। देवो विस⇒कृत।

बसद्भ की [दशिय] १ रनाम, प्राप्ता (कुमा)। २ र्साव स्टब्स (के ४१)। ३ वृद्ध वर (ज १९१)। ४ नम्स विवास (हि.१ २१४)।

## बसंद देशो वस = वत्।

वस्त पूं[ब्रह्मण] १ ऋतुःकिलेब, क्षेत्र सीर केलक साथ का समय (लाम्स ११—वव ६४) पासः शुरु ३ ६१) कुकाः कर्ष्यु प्रातुः

१४१ ६२)। र पैन साथ (ग्रन्थ र ११)। उद न [पुर] नगर-विरेय (स्था)। विकास पूँ [स्वक्रम] र हरियंत में कराय एक पासा (वरत ३२ १०)। २ त एक उपान वहाँ मक्तान खरनके ने पोसा की वीटाम क्रांत्र कर रेप्प)। "विकास की [विक्रम] क्या-विरेप (विशे । स्वंपय कि (ब्रह्मपुर) मिन की सर्वान क्यूनेमाला (क्यूपि ६)।

्विक्यां व्यन्तिया (पाय)।
व्यापय वि [यर्थय] विष को समीन
व्यक्तिया (पर्वि ६)।
याया व [य्यात] १ व्या करमा (पाय
पूर्वा प्रश्ना वेषा ४ वर्थि १)। २
विसास स्वार्वा (दूर्य ४८)।
याया यूर्वा पूर्वा ४ वर्थि थे।

पीस कुत्र १६४)। बसमा व [क्यसन] १ कट विपति कुच्च (पाम पुर १, १६९ स्वा प्राप्त २१)। २ राजविक्कर ज्यास (सम्मा १२)। १ बराज साव्य-पृत सम्मान सावि बोसी साव्य (सुर १)।

१२६ मक पर्व १ व बिरा १ २

बसणि वि [स्यसनिम्] बोधी धारकासा (तुना ४०)। बसम वृ [युग्म] १ ज्योतिकश्रीव चितन

भिरोत वर साहि (पराम १० १ व)। २ मानवाज्य प्रायशेष (पराम ११)। ३ एक केन प्रीत, को नहीं कहारे के पूर्व करण में इस से (पराम २ ११२)। ४ केरावर्त प्रीत, कानी चालु (बहु ११)। ४ केरावर्त कानी सर्व (का)। १ करण मेहा प्रियोज्या (वन)। कारण म किस्सी वह स्थान बाही केन सीचे माते हो। स्थान ११ १४)। करोण म किस्सी सामानियेश

१४) । करोत्त म ब्रिज | स्वल्यक्तिक वहाँ पर वर्षा-क्स्स में धानार्थ कार्य रहते हाँ वह स्वल (वन १ लिड्ड १७) । भागम पुँषिमा | काम-विशेष पुरिस्त केस में स्वर-पुस्त वीव प्यास्त्र हु वसम्बन्धमा

पुरेशनगरेनमा चुहिस्तार्थ (नन १ )। स्पुताय पुँ [शतुआत] स्पोठितास-स्थित स्ता मोनों में प्रस्त शेष, स्थिमें पत्र सुर्वे स्ता सामा नेक के सम्बार से स्थित क्षेत्र से

की नाता ने प्रस्त चीड़ निर्माण के पूर्व भीर तक्का के के मालार के स्थित होते हैं (मुख १२—नव २६६)। देखों कसम

रिसम वसह।

यसमुद्ध पू [दे] काक कीया (दे ७ ४६)। यसम देखो पसिम (महा)।

ब्समाज देवी यस = वब् ।

यसा वि हि दी वे समा (वे ७ ११)। यसा वृं [पूपम] नेवाइस्य करनेवासा पूर्णि (योव १४)। २ तस्मात का एक पूज (पत्र द.२)। १ वेश तोइ तोई (पार)। ४ कार का सिंह। ४ योजकस्थित (पार)

(प्रवत् हर्र) विकास वाह पाई (प्रार्थ)
प्रकार का विकास र प्रोप्त-विरोध
(प्राप्त)। प्रेय पूर्व [विहुन्त] राकर, प्रारोधर
(प्राप्त)। प्रेय पूर्व [विहुन्त] राकर, प्रारोधर
(प्राप्त)। प्रेय प्राप्त (प्राप्त प्रदे
[व्याहन्त] र देशान देशकोड का हम (वे २—पत्र १९७)। २ सहायेश डीकर व्याहन पत्र पोत्र प्राप्त (प्राप्त प्रदेश)। प्राप्त प्रदेश विकास (प्राप्त प्रदेश)। प्रस्त प्रवास प्रदेश।
पत्र प्रोप्त प्राप्त (प्राप्त प्रदेश) दुना प्राप्त प्रस्त प्रस्त प्रदेश

४०२। वि १००)। बसा की पुरा । र तर्गरस्य मानुविदेश भेनवसार्गयः— (राष्ट्र र र — १४ द्यार १२)। २ केल चली (प्रापा)। बसारस्य वि [प्रसारक] देनानेकामा (वे १४)।

वसाहा की प्रसाहण (वे र. ४ )। वसाहा की [प्रसाधा] सर्तकार, बानुवस (वे र ११)।

(दे १११)। विस् वेको यसङ्, 'जाचन नवड पहि पहि सब्देवनीक्काक्यविशेष' (सुर ११२)।

यसिञ वि [यापव] १ प्या श्वाम किलो वस्त किमा हो गहा (वास स २६१८ पुण ४२१ वस ११२ के ७) १ व मती पुणित पमण्डेर प्राण्डिवविये निम्माने जीमावर्षण (संयोज १)।

वसिष्ठ पू [वशिष्ठ] १ वयनात् पारवंत्रव का एक क्षत्रवर (टा ८---पत्र ४९४, सम १६)। १ एक ऋषि (ताट---उत्तर ४२)। वसिष्ठ पू [वशिष्ठ] धीपकृषार देवों का क्षत्र

दिया ना एक (एक)। विशिष्ट न [विशिष्ट] योग भी एक विश्वि योग-जन्म एक ऐसर्व 'चाहुनविश्वकुरोर्छ पढमें दूर्तान बंदुको विशि (द्वस १७०)।

वसिम न [दंवसिम] ध्वतिवाका स्वयन (सुर १ १९, पुना १६५५ कुत्र २२५४ महा)। सिर वि [पसितृ] बास करनेवासा रहते-बाबा (सूपा ६८७ सम्मत २१७)। साफ्य वि [बशाइत] वर में किया हुया, ध्यीन किया हुमा (नुपा १३ महा)। रशीकरण न [बर्साफरण] वस में करने के ं लिए किया जाता मन्त्र झावि का प्रयोप (खादा १ १४- प्रामू १४३ महा)। पसायरणी स्त्रै [पशीकरण] वशीकरण विदा (गर १३ =१)। यसीहुज वि [यशीभूत] वा बर्गत हुमा हो बहु (दर १८६ ही)। यस व विस्ते १ पन, इस्य (घाषा पूप १ १३ १८ दुमा)। २ संयम कारित (पावा नुष १ १६ १०)। १ ट्रेजिनस्य। त बीडराम राम-रहित। १ संयत संयती शापु(धापा १ ६ २ १)। ६ माठ की संबद्ध (विश्व १४४' निम्) । ७ प्रमिष्ठा नदात्र का मिपिति देत (छ २ ३ मुझ १ १२)। व एक राजा वा नाम (पत्रमं ११ २१ मछ १ १)। १ एक पनुरंश-पूर्वो येथ महर्षि (शिरे १११४) : १ एक छन्द का नाम (निय)। ११ की स्थानन की एक पटपानी (इक)। १२ म-सावान्तिक देशीं का एक रिकान (इक)। १३ मुक्त सामा (इम्म रेक उस १३ वि.)। गुला की [गुपा] रिक्लर की एक परराशे (डा ८-- वत्र ४२१ इक राह्म २-- पत्र २३६)। दिख पू [दिख] नार्वे पानु "व श्रीष्ट्रप्टा धीर बनदेर का रिजा (ध ६ मम (६२ धत पर)। तर्य ब् िनन्द ही एक थएई भी प्रथम बनवार (नुर २ १२ मनि)। पुप्रतर्विषयी एइ धना, भगान रानुपूर्व का निता (क्य । प्राः)। पञ्ज [ च्छो क्रमा⊊∹ठ में द्धार एक समा (राम १, ४)। मान तू िनागी एक व्यक्ति-संबद्ध काम (बहा)। भाग्य क्रो ["भाग्य] क्विनग्र को एक परयन्त (एक)। नृह 1 ["नृ[ग] एक देव हुनि का बाम (राज्य २ । १७६१ ) पारप) । म, मीत वि [ मन् ] १ |

हब्धवान, पनी भीमंत (नुम ११३ ८) १ १४, ११ माचा)। २ संयनी साभु (मूप ११३ क बाबा)। मित्ता ही [भिता] १ न्यानेन्द्र नी एक पश-गदियो (ठा ६--पत्र ४२६ ए।या २ इड)। सद र् ["ग्रन्द] एव विशेष (पिन)। **श**ास क्षे विश्वारी १ मामार से देन-इत पुरस्कं बृद्धि (शय रेश करण १० वर्ष १२ ६६ बिया १ १)। २ एक बेहिनी (उन ७२० री) । यसुजा ) वक [चद् + या] रुष्क होन्य यसुक्षाञ्ज नेषुता । अनुसार, अनुसामर (कें ४ ११) वे १४४८ प्राष्ट्र ७४)। वक्र यसुकत (कुमा)। प्रयान स्वतः यसुआहवा माण (नवड) । यसुआध वि [प्रद्वात] सून्त्र (पापः स १ २ । पडड भाइ ७७)। पसुभाइम वि [उद्यापित] रूफ किया गया. मुखाया पदा (से १। २१)। पसुत्रा=ज्ञमाण देवा पसुत्रा । यम्,घर वृं विसुरुघरी एक वेन पुनि (पतन tet) i पर्मभरा धा विसुरवरा । प्रविका बरती (पाम पर्नीप प्रदे प्राप्त १८२)। २ दिख नन्त्र की एक सम-मृहियी (ठा ६--पत्र ४२१ छाया २ इक)। १ वसरेन्द्र इ सोम मारि बार्चे लोकगामों की एक पटलाबी का नाम (हा ४ १ – पत्र २ ४० इक)। ४ एक शिक्रमाधी देशे (हा ब-पत्र ४३६ इड)। १ नवर्षे बस्वती सना की पटसनी (तम १४२)। ६ सारण नी एक पत्नी (क्स ५८ १)। ७ एक मॅडि-गलो (जा ७२० थे)। यह वृं ["पनि] सना, मुर्चन (मुरा १६६) । बसुपा (धी) देखा पसुद्दा (त्यव्य ६८) । पसुपुत्र व्यो वासुपुत्र 'बनुरूबद्धी वेनी राष्ट्री वीचे दुमाराम्बरमा (विचार ११४ बंदा १६ १३:१०) 'बसुप्राजिला बहु त्तवो नामी (पन ११)। बसुम ३ ) ध्व [यसुमर्जा] १ इस्ति। परक्ष पसुबद्दी (उप अर्थ से पायः मूरा २६ ३

४३१)। २ क्षत्र नामक सामान्त्र वर एक

धध-महिपी एक एप्राफी (स.४.१---पत्र २ ८ सावा २---पत्र २४२३ इक)। व्याह्न. नाह पृत्तिमार्गे एका (का ७६८ क्षे पडम ७४ २१): "सयम न शियनी मिन-गृह, मोंपरा (मृखा ४ ६)। सह यू [<sup>\*</sup>पिंच] राजा (पदम ६६ २)। यस्त दूरी 👣 पूपली १ निष्द्रका राष ह मामन्त्रण सम्ब 'होनि ति वा सीवि ति वा बमुमि तिवा (भाषा२ ४२३) 'तहव होते योखि ति साखे या यम्सि ति य (दब ७ १४) । २ गीरप धीर ब्राया-बोपक धामन्त्रण शस्य 'होस बन्स गोस एवड शस्य निय रमण् (लावा १ १--पत्र १६४)। धी. ही (रव ७ १६ माना २ ४, ₹ ₹) : यमुद्दा हो [यमुघा] दुविशी पह्नी (वादः कुमा)। १६६ वे "ध्यप् । धमा (नुपा a ( ) I वस् ध्ये [यम्] रैक्स्प्र की एक परक्तो (ठा ६--- पत्र ४२६: इक खामा २--- पत्र 3×8) : यसंरी को [ स् ] वश्यका काश (नुग 1 (Fer यस्स (श्री) देधो परिस । बस्बद्धि (गाट----मुम्ब १११,। मरस नि [प"प] मधीन भागत (विन **⊏**υχ) ι यस्रोक्त व [वे] एक प्रकार की बीहा 'बप्नया व बस्तोहेल स्मेवि यव (१४) ले चित्रपात्र पोलेख कार्रित (याग ह १३ टा)। यद्द स्था दिव दिव वास्ता । २ वास्ता करना। ३ से बाबा शना। ८ मा **बक्तमा 'परित्रमदा**'ना द दा**रा' (रूमा**न बर महा) 'मंगा मार प्रक्रित (मृत्य २ ८६) बहुनि (हे २ ११८) । वर्षे पहिला यस्य" कुम्बद्ध(कुमा प्रध्या १४ हि.५८१ देर २४२) मञ्ज्या पद्मान (मद्ग दुर १११ थीर)। इन्ह कुनमान (न्त २१ ६श १व)। हेर ्रंड वहिन्नय पार्ट(पारन १३२) ४३ हा (१)। 🗲 पश्चिम्ब पाटम्ब (एस १३२ और 1) (

नामा (देवे ६ ती ६)।

यहण (ही) देवो पगय = प्रइत (प्राप्त ६७)।

वहिन्म दे वि पहिन्दी केंद्र वैश्व प्राप्ति

पश्चित्र वि दि शित्र, शीकता नुष्यः प्रवराधी

में 'बहेलो' (हे ४ ४२२) कुमा वण्या

¥) i

पर्यु (यव)।

t (=) :

पर—पा

४१)।क्रमे विद्वार्थित (दूप २१)। वक्र-बहुत, बहुमाय (पडम २६ ७७) सूचा १११ मानक १११)। करक- वृद्धियाँत बस्स्याज (पडम ४६ २ । मामा)। र्धक विकास (महा)। बद्रबन क्यिक् रियोशी करना २

बहुति (चल रेज के प्राप्त करका संबोध

प्रधार करना । इ. वर्ष्ट्यक्य (वर्ष्ट् २. १---यम १)। **बद्ध** (प्रप) देवो परिस = कुप । बद्दवि (प्राक्त **221)** ( वह पुंधी विष्यो गर्ज ह्या (प्रमा) हुया के र रश्चे प्राप्त रश्च रश्चे हा (मुख १ ६, स १७) । आग्री की कियी विद्या-विदेश (पटम ७ १६७)।

बद्ध (दे दि] १ कम्बे परकाक्याः २ वस् भाव (वे ७ ३१) । बहुर्ग विद्वार दूप स्तर विद्या गाला (विया १ २---पत्र २७)। २ परीमाह, पानी काप्रवाह (दे १ ११)। बह् दृष्टिमध] बहुट स्मन्ति का प्रदृष्ट (नुष t x 2 tvi act ts): बद्ध देखो पद्ध = पवित् (दे १ ६१३ १४ कुना)। बहुइस वि दि पर्वास (पङ् १००)।

बहुस वि [बभाउं] बाराज विस्तर मार बाननेवाला (जन) च २१३) दुपा १६४ बारक २१२ वा २३)। बहुग वि [स्वश्रक] ठाइना करनेवाचा (व २)। **धट्ड पूं [यु] दमधीय बखदा (दे ७ ६७)**। भद्रतास पुंचि वाल्या वात-पश्चा (**१** ७ ¥3) I सहस्र न [वयन] क्व, कात हत्का न्यज्यो क्षरनीयकारलहरूमियं (गुपा ४२२) वर्षेत्रि रेश मोस् १ १। महा। सारक १४४ २३७-का ह ११७ मुता १ अवस्य ४६ ४६)।

बद्दण व [पद्दन] १ दोना (पनीव ७२)।

रे पीत बहाज बालपात (बाया प्रप १६६

दुम्पा १४) । १ राक्ट मादि नाहन (छत

बहुज (धप) देखो वस्त्रज = वस्त्रव (मर्वि) । पहणयां की विद्वता विश्वति (साना १ २—पत्र €े। पहणाओं विभेगी वर बल, दिला (क्यह ११—पत्र ४)। बहुच्या व कियचक्र | एक बरक-स्थान 'क्रबे मल्य विश्वविषये हा विषयती वि (१व) इएएव मं (वेकेमा२)। बह्य देवी बहुग= शतक (सूप २ ४ ४) पक्षम २६ ४७- मावक १ = । एक)। पहिन्नेत्र क्यो बहसीय (१४)। यहा देशो यह = वव । बहाय क्य [बाह्य] यहनं करान्य । करी बहाविश्वद (शावक २१ व टी) । बद्दाविक दि [बंधित] मरनाया हुया (बा 3Y) I १६२) ।

बहाविम को पहानिम (छ ६, १)। बह्यि वि [स्प्रित] पीनित (पंचा ४, बहिश्र दि जिल्ली शहर किया हुया (बारवा वृद्धिक्ष वि [वृद्धित] विश्वका वय क्रिया क्या हो बहु (ब्रावक १० पदम १, १११, विचार शतक का २६, २४)। वृद्धिम वि [दे] मनवोकित निरोधिक रोबोरकर्श्वयर्थायस्थ्रपुरुपं (छन्।)। पश्चित्रक्ष देवी बहुद्रम (गर )। महिचर क्लाइयभि +चर**ी** १पर पुस्य बापर-व्ये से संघोष करना। १ सक निमम-भेग करना। वह विद्यारेत (स wtt) ı विद्यार नुं [स्पश्चित्रार] १ पर-वी पा **पर-पूरव है बंधोन** (छ ७११) । २ न्यानस्थास-प्रसिद्ध एक क्षु-दोप (वर्गसं ६३)। विदेशीय देशो पर = वर् । बन्निया को [बे] बही। दिखान निकने की कियान (सम्मत्त १४२) कुछ १ ४, १ ६)

रेक्कः १६१) ।

बह पूंची दि दिवार यन्त्रस्थिति (to at): वह देवी महु(हिरे ४० वड ≀ प्राप्त) । पहुचारिणी क्ये [दे] मनोबा, बुनदिन (दे · t ): बहुज्यों की हिं| ब्येष्ट-मार्च पश्चिक वहे बाईकी बहु (दे ७ ४१)। बहुमास र् कि रमध-विरोध क्रेश-विरोध जिसमें बेलका हुमा पछि क्योबाके अर से बाहर नहीं शिरप्रता है (दे ७ ४६)। बहरा की दिने दिया कियादिक (दे ७ ४ )। बहक्किया (धर) की बिमुटिका प्रश्न पर बाबी की बहुरिया (चिन)। बहुम्बाकी वि] बोटी तस्य (रे ७ ४)। बहुद्दादियों भी दि देन भी के पूर्व हुए ब्दाही बाठी दूसरी भी (वे ७ १ । पद्)। वह की विम् विह, नार्यनारी (स्वयः ४२ पामः हे१ ४)। बहास है [वे] छोटा क्य-स्वाह, हुवयती में पहेचे (रे ७ ११)। बहोसियां की [ब] देवी वहोज (बरुप्य पत्र २१४)। बाधक [बा] यशि करवा बसना। वदः (से ६ १७ मा १४६ दुमा)। बासक विस्त्र ] मूबना। बाद (से ६

RUTY E) I

वा वक [क्य] कुतरा। इ. बाइस व्यक्तिय

पूरिमदेखिमवाद्मसंबादमं केन्त्रं (दस्ति २)।

वाय[वा] इन सर्वे का गूरक सम्म<del>न</del>—

१ क्लिक्स यथवा दा (याचाः कुमा) । २

चपुरुष्य, धीर, तथा (उत्त ४ ११ गुध क

१र)। ६ मनि मी (कुमाः क्रम नुकार,

२२)। ४ यवकारका किरवय (क्षा )।

६ ताहरव कमानदा (विते १ १४)। ६

स्त्रमा 'क्यार्युम' एउँछेय कासकाहे हैं वे कामचेतु वा' (दि १७ मूम १ ४ २ १३ मूक २ ६ वन १)। ७ पार-पृत्ति (क्य २०२६)। बामक देवे मुक्ति योगक = व्यापुक - रहनायका वर्षते दिस्ति पूर्व योगक पार्या (या ४ )।

बामक केवो जानक = स्यापुट रहमाम्बर बार्स पिस्पि पूर्व पवक पापा (या ४) । वाह नि प्राहिष्य १ वीतनवाका चर्छा (बाचा मन क्या ठा४४)। २ नाव कर्ता राज्यार्थ में पूर्वपक का प्रतिपालक करमेनाता (सम १ विचे १७२१ कुन्न ४४ वेस्स १२०, बस्तात १४१। मा १)।

(ठा ४ ४)। वाइ वि [साचित्र] नावक समिनायक कहन-वासा (विदे = १४)। बाह्य देखो वाजि (राज)।

क शासीनक तीलिक इतर वर्ग का बतुमायी

बाइक वि [याचिक] चचम-सेचनी (सीरा-भा २४ पढि)। बाहक वि [बाजित] रे पाठित पहाया हुया (उत्त २७ १४ विसे २३१८)। २ पहा हुया जामीमा बाहर टसर्थ (मुसा २७) 'समाहि कि बाहरण केहेले' (हे

२, १०६)।
बाइम वि [याविक] ! बाठ के जलक सम्भूक्तम् (देव वादि) (बाव कावा १ १—
वस १ । ठंडू १६)। २ बादू के कुला हुम बाव-राजाला (बित्त रेक्टर के प्रका ११)। ६ जन्म (बित्त प्रकार प्रकार के विकास करूव की वसीनिय निवास कावा बहुमकों (बर्गा विवास के व्यक्त भी प्रकार के वसीनिय निवास कावा बहुमकों (बर्गा विवास के वसीनिय १३)। ४ वुं जुंक का एक अंव (कुन्क रूपा के वसीनिय रूपा वर्ग के वसीनिय प्रका वसीनिय निवास के वसीनिय कावा वसीनिय निवास के वसीनि

धारिमाधितः, वसावेतुं विनादिकार्तं वाह्मा क्रिक्सा (छ २१ )। धाहस न [नाय] र वाला नारेल (काल)। २ वाला वसावे वी कता (छत्र वहा धोल)। वाहस न [नाय] च्या हमा जनता हुमा पुत्रपुंद्य इस्लोविस एसाविस्त्रणाराधारोते (पुर २, ७६)।

बाइअ वि [वादित] १ क्यामा हुमा (धा

११७ इमार का ६६७ ७ )। र मन्द्रित

वाहेराण न विषे विपन इन्तान भेटा (क्य १९७ टी) है ७ २९) :

माद्वारणी ) की कि बैंदन का पास वाद्वीरणी ) कुलाको (राज परास १७— यम १२७)। माद्वार [वे] वेबी बादया (च्य १०६१ टी)।

भाइता [तं] केवी बाइया (चन १०६१ ट भाइतांत केवी साय जनावस् । साइतांत केवी साय जनावस् । भावता न (सामित्र) कारा कारा (कार १

बाइन्त न [धावित्र] नाम बाना (हुम ११ भाष) : बाइक्स वि [स्थायिक्स] विपर्यंप के क्यान्सरत

वाह्यः वि [ज्याविष्यं] र व्यवस्य व करणाव वाह्यः वि [ज्याविष्यं] रे क्योराय ज्यवितः। २ सक्र देशः (सप १६ ४—पत्र ७ ४)।

शह्म देवो वा = भे : बाह्यक्य देवो वाय = वादप्। बाह्यक्रम वेथो वाजीकरण (राज)। सन्दर्भ क्रिकारी के स्वयं क्रम (राज)

बात पूँ [बायु] र पत्रम बात (ब्रुया)। २ मानु-एरीरनाता जीव (मायु जी २४ वे १)। १ सुर्व-निरोग (या ११)। ४ शीयमाँग के सभ्य-पीम का स्मिपित केर (ठा १, १— पत्र १२)। १ न्यामनोत विरोग स्वाधि-नवात का स्विप्ति केरात (ठा २ १—पत्र ४७४ सुन्न १ १२ दें)। आग पुँ

िकस्य र प्रकार प्रवाप (ठा है हे—पन १९१)। २ बहु स्रोरास्ता कीम (दन)। काइस प्री [कासिक] बाद्ध स्रोरावामा बीव (ठा है १—पन १९१५ मि १६४)। कास है बो स्थाप (बी क पि १४४)। कुमार ट्री हुमार] र एक बेच-बाहि कारपारि केरों की एक धनायर बार्सि (वन)। इस्तार का राखा (पन्न १२ २)। क्रमिसा की [बारक्रीक्राम] नमू-विशेष स्रोम बाहोनामा बाद्ध (परस्स) १—पन २१)।

तीय बहुनेशासा पातु (परण १--पत्र २६) । बाइय देवो काइय (मय) । बाय देवो आय (धन)। "चरत्रहिस्मा पुन ["चच एक्त्रसक्] एक देव-नियान (स्त १ )। पर्वस धु प्रवेश] गतास महोबाऽनाहास्त्र

(भीवस्थ १०)। "परदूरुण वि ["प्रविक्तान] (पर वासु के ध्यवार से एक्नेजला (स्व)। "सूद् पार्वी पूँ ["सूर्व] अनवान महाशोर का एक बादह परवर—पुक्र रिष्म (क्य)।

बाह र्पु [बे] स्तु, स्वय (वे ७ १३)। वाबस्य वि [प्रापृत] १ पाल्यप्रवित स्वयः

हुमा (मन २ १ पन ६१)। न कपहा, बक्क (ठा ४ १—पन २६६)। बालचा वुं वि] १ विट। २ बार जपपति (हे ७ ८८)।

मारुच्च शु [सु १ श्वर । २ वार उपपाठ (१ ७ ८८) । भारतप्पाइया की [स् बातोस्पतिका] प्रस-परिसर्प की एक बाति श्वर से सकतेवाले करून की एक बाति 'सारुवासरकासकारा स

परिसर्प की एक जाति हाम से काननेवालें कानु की एक जाति एक्सरज्ञावालमुद्ध का बाहित्वाचाजीय (ज्याद्व अधिरोधित सिस्पित के स्वस्ते में (पर्स् १ १—व्य २)। वाह्यसमास पू विशोक्षभ्राम प्रत्वस्थित प्रकार प्रतिकार (स्था) से वाह्यस्थित।

प्यतः 'चान्त्रस्य (रस्या) ये वान्त्रस्यां (पर्स्त १--पत्र २१)। वाष्य वि विद्यापुतः विस्तो कार्य में कार्य ह्या (एता १ ८--पत्र १४६ पीए)। वाष्य वि [यानुतः] मूच-वक्त प्रमु प्रेक्षाते का बात कन्त्र (पन्न १६ ६७) हेना १११ पर १४०)। येको बरमुतः । वाह्यस्य वि [यानुत्यः] वाक में प्रेताते कर

काम करनेनामा स्थान (पछा १ छ। दिया १ स्थान ६५०)। याउल वि जिलाहुक्त १ वनकामा हुमा (पनः उर ६२२) कह के १० है २ ११)।२ वृक्षोम (पछा १ ६—पन ४४)। शहुस्त कि (भेगून) स्थानुन नगा हुमा (स्व २२ थे)।

बारुक्क वि[बात्क्क] र बारु-पीयी जमारा । २ तृं बारावपूर (के र १२१ प्राक्त व )। मारुक्कमा म [बें] देवा अधिक 'निष्णे विश्व बारुक्कमें कुळीठें (राष)।

बारसण न [स्यापरम] बानुर-क्रिया व्यापार (वब १)। बारसमा की [स्यानुस्ता] व्यानुना करना

बादसमा को ब्याकुकना] ब्याकुत करना (बन ४)। वालक्रिय वि ब्याकुक्टित] १ व्याकुम करा क्रुंग (एए)। २ विक्रोतित लोग-प्राप्त

गातक्र देवी गांतक≪स्यानुता (हे २ ११, पर्)। २१४ दम)।

£3) i

षाऊन रेवी चाउम = चातूनः चित्रशम्ख बाज्यो हमित्रह नयस्मीहरू (बर्बीव १११ शा≸ १ ।। बाऊके देत्री बाइम = म्यादुन (ब्राइ १.)। धाउन्तिक्र वि [पानुस्थित] १ वानून वन्त ह्या। २ नास्तिक दननि १ ६१)। याम वह पार्य विकास । बाएइ (बदा) : बह पार्गेन (नहा) । क्षत्रक पाइज्लेन (दुप ११) । हेड्र पाइडे (ब्रा) । थाण्यक[याचय्] १ पदानाः २ पदनाः बार्ट्स बार्ट्ड (धव करा) । इबहुः याद् र्जन (नृपा ११ पुत्र १६) । बार्यास्त्र वि बानरित पनन-प्रति इस व दिशक या चैत्राया हुया (बा १७६) । बाएयर्स क्षेत्र [पार्याच्यार] बास्त्रजी देशी कान्त्रचे पुष्पयसम्बद्धाः (पहि सम्बन्ध 1 (116

परंशात ? मा) निवर्रहिटी (वर्नी) २

नक्त राख र १--पत्र ६३)

waster (-mett)

§ (4.2 c)

(44 1)

बाउप वि दि बायुक्त वाबाट प्रपाप-बीच

बारमध्य प्रेन दिने प्रतका, प्रभारती में 'बार ३ 'बर्गनरियमितिबाससयो व्य ख

परमार ठाइ' (मा २१७) 'बानिनियमिति

बारस्य व न परन्त्रई ठाई (बळा १४)।

बाउन्तर ) की िने थेले काउउसा

ह्मय का राजपूर्व काई (या २१० व. दे ६

बद्दराध (रे ७ १६) पायः बद् )

स्तरेश (विन ११ कृत स प्रकृत ११ थे) । २ निरंदर, उत्तर (मीर उना कन्म) । ३ रुम्पराम् (पर्वेषि १८३ मोह २) । पागर्धक विकिताकर्मिन्। पाउना पाउनी पानिविधानितराज-करनंगता (सम्म २) । भागरणी 🛍 विदाहरभी भाग नाएक मेर परत के बतर ही भाग बतर हम दचन (ठा४ १—पन १ ६)। भागरिय वि भियाकृती वक् अक्ति (उनाः मंत ६: बर १४२ ही वय ७६ ही) । देशो बायक्षः = स्वाहतः । यागद्ध न विश्वकी दुर्ज की क्षाव (लावा १६--- रह २१६) । मागढ ति [पारुस्त ] रूप गी राजा-पान ते बना हमा, 'बायन रस्मीनवाचे' (मन ११ ६—यम ११६) । पागधी की 👣 बस्तो-विरोप (**वक्छ !**— पत्र ३३)। पारिक्ष वि [पारिमम्] मु पानी, बानल (रा )। यागुर वृ [यागुरा] मून-रम्पन, बान प्रन्या 'र रे रवह बायुरे' (बाद ७६) । यागरि ) रि विशासित 'रिक देशो बार्ग्रिय रे पार्शिय । प्रवस्ती में 'बाबरी' 'नावानयरोदिए व पादिवि बान्स (१थै) पार्थातः । ध्ये [यार्थातः ना] पत्र-तु (क्त्यु १ २—नव २१ मूच १,२, याज्ञान्य । बहुर कि ययनी वारिका ३६ रिता १ व-- पण ६)। पापाइय रि [स्रापाति है] स्थायत न क्लब (वं ७-- पत्र १११) । या ६ ३ व्यो प्रश्त थन्द्र (धीन विमे ६३ यागाइम वि स्थिपा तमें] ध्यायात्र न की-षा 🛪 (दिनाइ) ल्यसा काल्क माउ, पास (सू≋रे —नव २६६) । २ व. बराय-शिक-निद्ध दरानश बाहि वे होने शास्त्रकारमध्ये सदद्वेशास्त्रकारी प्रतिका काती भीत (भीत) । धापाय 🖠 [क्यापात] रेस्वपना (नुश्व श्वतः इत्राह (स्पार्त) श्रद्ध स्मि ह्या १)। २ ल्पिय ("१६३१) । ६ प्रतिकव पागर ४० [६३३ + इ.] प्रांतमात करना ६६/६८ (कर, धापना १) । ४ फिए हरूरत पर्धाः व प्रस्थित (पीत्र) । कृत्यः वायादः, वायाधा(कातः दि ३ ६)। याप-रिवार किंगा हिंदी बतन सन्त ध्र 🕆 स्माय स्मारमञ्ज (नुर 🗸 स्ट त्त करेर चीर) । यह यागरिसा (यह (iet 1 1 198) i

७२) । इक बागरिई यागरिखय (क्य

धागरण न ज्याबरण र क्यतः प्रवित्तकः,

क्षापुण्यिय वि [स्यापुर्वित] क्षेत्रसमान, बोमका (खाया १ १--- पत्र ६१)। माधक नं [ये] एक शनिय-वंश (ती २६)। वा प देवो दाय = वाचन्। काङ वाजीअसाज (शार---वामनि ६१) । संक्र पाणिकवा (इम्पेर १७) । वाश्य देवो वायम् = नापक (इध्य ४१) । द्यानिय देखो दाइअ = नाविड (स. ६२१)। बाज देवी बाय - ध्यान (रूप २१)। बाजि द बाजिन्दी सन्द, भोड़ा (विपा १ u) ı इसके परवान [बाजी करवा] १ वोर्य-वर्षक बीपब-बिरेन । २ उसका प्रतिसद्दक स्त्रक धापुर्वेद ता एक मेच (विदार ७००-पत ₩X) I का ब्राप्त (बाट) १ मार कंटक काहि से मी वासी गृहादि ही परिवि (क्स २३ १४) मार्च ११२) । २ नाहा नाज्याची नव्यु बृतिवासा हवानः विकासनग्रहानातं संयूक्ति बंगावेद् (बबामा २५८) वे ७ २३ कि वडड)-'बंदे को बाइल् यानाजनियेइल् क्रेड्स्स्' (विचार ६ १) । ३ वृति वर्गर ये परिनेतित नुर-नपुर रच्या, पुरस्ता (२७ । **'म्दो भारतमात्त्र हरित्रीबद्ध'** ut) ( बाइंतरा ध्ये हि दुर्धर, मोपझ वा ऋषशे ( \* v x ) i वाहम देखी बाद (विष ३३४) दिया है ४—१व १३, जा द २८१)। बाहण देशो पाइमा 'परशेहक्ट्रनारलबंदाब (बरुपछ्छाद्रगर् (द्रव ११३)। बाहर पू [बाहर] बहरावन समुर-स्वित व्यन्त्र (ब्रग्न) । नाउपागन र्ब [वारधानक] १ वह बोहा याँगः। १ ति चन वार का निवानी टाउँ केण पाद्यभग्रमा इतिहास विश्वादमा कर्या (नुष ६, १३ पदा) । बार्डिदेशो भादा≖ बारो (चाः हामा १ J-48 (11) I पाडिया चा [पारिसा] बनाना, प्रमान ारियां (बाद बावदद देव देश (≂):

थाडिस दुं [वे] पर्यु-विशेष परवक पेंदा (१७ १७)। वाहिक वृद्धि इसि की (दे ७ १६)। धाडी की दि । इति बादः 'बरवारे कारिया कटएहि बाद्यें (कुप्र २६) दे ७ ४६। ४० ष्यः)। बाडी की [वाटा] क्यीबाः उद्यान (वर्षेषे 48)1 वाद्धिः रृपुं [दे] बाँछक-सहाय बैरम-मित्र पाडिल ( (र ७ १३)। याण यक [ वि + सम् ] विशेष नमना---नत होना । बासह (?) (पारवा १६२) । वाण वि [यान] वन में इटलन वन संदल्वी (ग्रीप सम १३)। एस्य प्यत्वर्दे "प्रस्य] वन में सहनवाला वापस तृतीय माध्यम में स्थित पुरुष (धील क्य ३७७)। मंत्र मंतर बंतर पूंची [ क्यन्दर] केरों की एक बादि (सम; ठा२ र) सुर १ १३७ ग्रीयः भी २४ महा सि २४१)। की री (परएए १७---पन ४**११** जीन २)। वासिया 🕏 "मासिमा 🛶 विशेष (यवि ११)। शाष केवापाण ≃पान । यत्त व ["पात्र] पीने काप्पासा(से १ १ द)।

पीने का प्यासा (दे हैं दे दे )।
याध्य यू [से] कारकार कंग्स्स नागेनामा
कियों (के कर)।
याध्य पूने [बातर] हे कवार, क्षिय वर्षेट
(वर्ष्ण है है याध्य)। ह विद्यासर मुख्यों
का एक बेठा। व नागर-बेठ में क्ष्म्यम्म
प्रमुख्य (वर्षा है है)। वर्षे को [चुरी]
किविक्या नागक एक प्राच्योय प्राचीन वर्षये
(के हम कोई भी प्रसा (वर्षा न, देश्व))
वीत्र यू [चित्रीय] एक कीए (वर्ष्ण ह
कश)। उत्य यू [च्याब] हुस्यमा (वर्ष्ण ह

नामरिंब पूं [बानरेन्द्र] बानर-वंशीय पुरशें बा राजा बसी (पदम ६, ४ )। मानवास पूं [ब] इस पुरनर (४ ७ ६ )।

वाणहा देवो पाणहा वाहणा = स्वान्त् (ति १४१)। द्याणा देवो यायणा = वाब्ताः यरिष्ठा द्री [ैवार्य] प्रस्पारत करनेवाता साह्र विशक पहो क्विय द्या की त्व वालासप्यो वधी

पुक क्युक्त (वर १४२ दी)।
वापारसी की [बाराजवी] जाराजवी की
एक प्राचित नवरी की बार कर्त किराएं
वापार से प्रसिद्ध है (है २ ११६ वर्गा १
४ ज्या कर उद्दु धर्मित १. दि ६०१)।
बाजि की विच = बस्तिन् (भिन्)। कर्म पुष्त पुष्ति है १८ १९ १९ १९ वर्गा १९ पुष्त पुष्ति है १९ मुनार, बनिया का
बक्ता (क्रा १९ ८ वर २२१४ ४ ४ विदि
६०४१ वर्गित १ ४)।
बाजि की [बाजि] वेको बाजी (सित ४)।
वाजि की [बाजि] रेको बाजी (सित ४)।
वाजि की वाजि पुर १ २४० १९, २१
नाट—पुष्क १९८ वर्गु विदि ४)। २

सामित्र केबो पाणिल = पागीय (या १०२ सिरि ४ सुपा २२१) । बाणिलय दु [साणिजक] बांनया, बेरव स्पापारी (पत्त्या कात्र ८६१ या १११ वल सुपा २२१ २७१ प्रासु १०१) ।

एक पाँव कान्यम (ठवा बंद्यः विपार २)।

वाजिअ (भप) देखो वाजिक (स्वर)।

वाधिक म [वाधिक्य] १ ध्यासर, वेपार (युपा १४१) पति) । २ एक वैन पुनिकृष का वाप (कप्प) । पाणिका की [विधिक्या] ब्यापार 'घाक्यिक्य कार्र वासिक्यार स्मित्तव' (ग्राया १ १४)।

वाजिकिय रि [वाजिकिक] वारीयान्य-कर्ता कारारी (वरिदे)। वाजी की [वाजी] १ वका वास्त्र (दाय)। २ वाचेकटा सरस्वरी देशी (कुपा संति ४)। १ वस्त्र-सिदेश (दिय)। वाजीक केवी पाणीम (कार १२४)।

वाजीर दृषि] वस्त्र हुआ वासुन का पेड़ (वे ७ १६)। पाजीर पुवितीर] वैतस्वन्द्र्य वेंत का पेड़ (प्राप्ट पा ११६)।

बाणु जुझ पु [वे] बरिडक् बेरक 'एसे इस बदस्तो रीसद बस्यु बुधो कोवि' (उप ७२८ दी)।

वास देशो वास = बात (क्र. २ ४—पर्व ८६)। वातिक } देशो वाहुआ ≠ बातिक (क्यह १ वातिस ) ३—पन ४.८ स्रोब ७२२)।

थातक (स्था पहले ज्यातक (स्था ( वादिय ) १—न न प्राप्त भी कर रो। वाद्य देवी वाय = वाद (चत्र)। वाद्य देवी वाय = वादित (चत्रा)। वाद्य देवी वायर (विपा रे २—पन १६) विसे द६३ मुना ११०) पूक्यस्ववात्रसाल

न शार किनसीत विश्वार (पर्नेषि १११)। वार्षफ केवो वार्यफ । वार्षफ (पर्नेष १११)। वार्षफ (रहे) केवो वार्यफ (पर्ने)। वार्षक (रहे) केवो वार्यक = व्याप्त (वाट — केसी १७)। यावाहा की [स्यावाचा] विशेष पीहा

वाबाहा की [स्यानाचा] निरोप पीड़ा (खासा १ ४ वेहम १११)। बाससक [ससय] बनन कपना के कपना। बासेड, बासेटन (सम पिंड ६४६)। संक्र

सार्यक्र सार्यक (क्या एक ६४६) । क्षेष्ठ सार्मेखा (यय जना)। साम वि [कि] १ मुख (वे ७ ४७)। २ साम वि [साम] १ सम्म, सौद्या (इ४ ४ २– यत्र २१६ कुमा सुरू ४ स्वद्य)। २ यत्र ११६ कुमा सुरू ४ स्वद्य)। १ पुत्र स्वत्य स्वत्य १६४ कुमा)। ६ पुत्र सामोहर, 'साममोस्का (साम)। ४ न सम्म क्या 'सारको' (वजन १९, १९)। ४ स्थाद्य स्वरि (स ७ १)। स्ट्रोमस्का (प्रस्तु)।

फैनाए हुए रोनों हावों के बीच का सन्तराज्ञ (पब २१२) धीच)। बामण पुन [बामन] १ संस्थान-विदेश

पामण पुन [पामन] १ संस्थान-विशेष रुपौर काएक तरह का भावाद, नितमें

	<b>गडभसङ्गड्</b> ण्यनो	बासणिश्र—थाय
१८ एक, पैर साहि सवस्य स्मेटे हॉ सीर कारी	बात सक [ बालते ] ६ वर्षाः । ५ वर्षासः ।	याय पू [क्यांक] १ क्यर, नावा । २
द्र साहि पूर्ण या सम्बद्ध के बहु रुपैर (का	शास्त्र शास्त्र (क्षुत्र १६९)ः 'सावस्त्रा	बङ्गला सन्तः। ३ विख्यः वर्षाः (मा २३)।
	पुपमञ्ज्यी पाक्सवा पर्वाहर पास्त् वेर्	वाय देखो द्याग = वस्क (विवा १ ६—पक
१ वि उच्च मातार के वरी लागा हुस्य	(धर्मीव ४७) मृतं वाए अन्यसमी (बंबीव	(1)1
इप्तरं(मद ११  के २ ६० मध्य)। इसे जी	२४) । सङ्घ बार्यसः (सुपा २२३) । सङ्घ बाइक्टम (कुत्र १९८) । इन्बायणिकः (स्र	थान दुं[आर्थ] विश्वाह, राज्यी (था २९)।
(ध्रीक शासार १—४न ६७)। ६ पू मीक्रमण काएक धक्तार(से २ ६)। ४	3 x)1	बाध ट्रं [ब्याद] विक्तिष्ट पर्यन (या २६)।
किर्मकोद्ध एक व्यक्तिका (विदि १९७)।	बाय एक [वा] ब्ह्ना, याँत करना व्यना ।	वास पुं[बाप] १ वपन नीमा। २ क्षेत्र- 
१ त कर्य विशेष जिसके उस्त है वास्त	नायंक्षि (भन १२)। यक्ष दार्मतः (रिक	क्षेत्र (सार्क)। वास दूर्विवास] श्रदमन कर्षि । २ सूँक्ता।
रारेर की प्रान्ति हो धह कर्ने (कम्म १	बर बुद ३ ४ । बुझ ४६ । द∉ ६	रे जलना, अस्त । ४ रच्या । १ शास
४)। अस्त्रीको ["स्पर्छ] करा-विशेष   ∕-केकको	्रं ≼)। वाय प्रकृ[वेस्क्री]सूबन्धः।वामदः(तस्री	कसछ । ६ पविडका विवाह (सा २६) ।
(ती१४)। ‼मणिअनि विविद्वीलस्य वस्तू—पनःवित्र को	१६ श्राप्त)। सहस्यासीत (स्वतः ११६४)।	बाय वि [ब्याव्] विशेष <b>व्हल क्लेन</b> का
क्रिर छे इ <b>श्ल</b> करनेताला (दे ७ ११) ।	वाय सक [ साहम ] बनाना । वह नार्यंत,	(ब्र २९)।
समणिका की दि] दोने काह की बाद (दे	वासमास्य (मुता २६३) ४३२)। ह.	वास वि[वाक्] नद्या नोबनेनावा(मा २३)।
* 1 );	पाइयब्द (स ११४) ।	वास ट्रेसित] १ क्वन वासू (श्रवः छान्।
समद्गत [स्थासर्वन] एक तव्ह इस	वाय वि [वान] शुक्त, सूक्षा स्तात (परका से ४, ४७ पाम प्राप्त हुना) :	१ ११३ को ७ कुमा)। २ क्रकर्म (इन
प्यायामः हान धानि धंनो ना एक वृत्तरे वे		४३ क्रि): ३ पुन, एक वेय-विकास (सम
मोक्का (स्त्रमा १ १—पत्र १६ कमा धीप)।	1 (4)   3 4 444 (g n x1)	१)। फंच पूंत ["सम्ब] एक वेन-विमाल (हम १)। कम्म व["कर्मम्] धपाल वासू
चा। शर्मारपुदि] चिहुनुकेला (देक दे४)।	बाय प्रक्रियती स्पाद्ध संद (धा २३ धनि)।	न्य तरमा, पालना पान, नर्रन (धोन ६२२
शामद्भर पु [शामसूर] समीक दीशक	बाय वि [क्यान्] संबरण करतेवाचा (धा	सै)। इस पूर्व [इट] एक देव-विमान
(पायः परम) ।	२३)।	(बस १)। तीय पुं[त्सप्रय] बनवात
पामा <b>को</b> [यामा] वनवान पासर्वनावनी की	बाब वि [स्थायस्] प्रक्रम् धपण्यी (बा २६)।	वाधि वासु (ठा २,४०पत्र ८६)। उम्ह्रपर्युव [व्यक्त] एक देव-विमान (दम १)।
माताकाश्चम (क्य १२१)।	वाद दृ[बात्] १ परण- वसुः। २ क्यकः	"जिस्मा पू ["निस्मी] प्रपत्न बायु का
यामिस्स रेको बामीस (चम्न ११ ११)।	दुस्तेवासा, बुखाहा (पा २६) ।	सरना, पर्वेत (पिंड)। पश्चित्रस्ताभ पु
यामी भी विशेषी महिला (के॰ १३)।	बाय वि [स्थाप] शक्क्ष्ट विस्तारवाका (सा	[पिंधाम] इन्छतन सम्बे क्षसे हो
बामीस वि [क्यामिभ] मिष्ठि पुन्त, बहिन (परम ७२ ४ वेंदु ४४)।	् २६)। साय दु[बाक्ड] ऋग्वेद सादि वाक्य (या	रेका (वन ६ १—नव २७१) । एएस पुन [पम] रेव-विपान विशेष (शम १ ) ।
पामीसिय वि [स्पामिशित] क्यार ध्यो		फिल्म् पू [परिप] इन्छपति (सर ६
(चरि)।	माय पूं[स्वाय] १ वित चाघा २ ५वन	४)। स्ट र्ड [*स्ट] वनस्परि-विशेष
बामुखय दि [स्थामुख्यः] १ परिहरू		(मरण १—गर १६)। चेस्स वृह
्रवस्य हुन्या। २ प्रसम्बद्ध सटका हुन	् (भा२६)। याय <b>१</b> [स्थाद] संकत स्वर्ध (भा२६)।	िक्षेद्य] एक देव-विमान (बस १)। वष्ण वृत [वर्ण] एक देव-विमान (बस
(पीप)। बामुद्र वि [क्यामुद्र] विषुद्र चान्त्र (पु	कार में किएकी के कार लेका के लीव	रे )। "सिंग पुत्र [" हुन्न] एक देव-वित्रप्त
क रेडर इंड इन्डा चेंच क )। बार्मेंड १६ रिकार्गिको १०३६ अध्य (ते.	माला व राम्य, भावान । इत्या इतः	(धन १)। सिंहु ईन [सुद्र] एक देव-
बामाइ द [स्थामोइ] पुरवा मार्टन (क	पूर्वभी। ६ नानी बस्ता ७ श्रद्ध का भाग्य <sup>र</sup> (बा२३)।	नियान (तम १)। । पत्त धून ["वर्त] एक देर-विभाग (सन १)।
१ ६२१। तुस ११। परि)।	बाद न [याप] सू <del>ड ब</del> युद्ध (था २६)।	पाय दे [बाव] १ तत्त्व-विवाद, शाकार्य
नामाद्रण रि [स्थामाद्रम] भा <del>ग्वि-व</del> ना	ण्याप वि[दाज्] १ ६४ नेवादा। २ नासक	(मोक्स रेक्स क्वींद व ३ प्राप्तु ६६) । ए
(भर्तप) ।	(बा १६)।	कवि, रथन (यीप)। ३ नान याच्याः

**'बह्मप्रवाएल यहां** मर्म' (मा १२६) । ४

१४७)। ५ समैगै स्थिता (मा २६)।

"त्य पू िंची करन मन्तिः 'केहि समें प्रसद

बायर्ख (पदम ४१ १७)। स्थि वि

िर्धिम् । शाकार्थं की बाह्बामा (पडम

महत्तवायचक्रमध्यक्रीय (सिरि

2 to 25)1 "बाय दू[पाइ] १ ऐसोई। २ वसका ६ रैत्य, रामभ (मा २३)। देशो पाग। "बाय पूं"िपाठ**ो १** पछन (स ६४७ कुमा)। २ थमन । ३ च्ययकन भूचन (से १ ४४)। ४ पक्की। ५ न पश्चिम-समुद्धा(का २३)। <sup>\*</sup>वाय वि [पातृ] १ चता करनेवाबा। २ पीनेवासा । १ सुखनेवासा (भा २१) । वाय केको वाय (या २६)। वैद्याय दु[पाद] १ पर्यन्तः । २ पर्यंतः । १ युक्ता प्रमुक्ता प्रक्रियता ६ पैरा ७ चौना मान (मा २३)। देनो पाय = पार। \*बाय **क्यो** पाव = पाप (श्रा २१)। वाय पूर्णिय] १ एका रुक्स्य । २ वि पीनेबाबा(मा२६)। "पाय केवो खदाय = प्रपामः 'बहुबामन्मि वि देशे विमुज्यस्मासस्य वर मध्यी (स्व) । वायतच पू वि} १ विट महुष्य । २ वाट, क्रमपति (दे ७ ६६)। बार्यश्य न [पे] बैनन, बुन्ताक भेटा (बा २ । संबोध ४४ पद ४)। बार्थविय वि विगालिको ववन-मात्र में निर्मागत (एक)। बायरा प्रे विषय है । स्मिनायक, श्रीपना-वृत्ति ते धर्म का प्रकारक रूप (सम्बद्ध १४६) । २ क्याप्याय सूत्र-पाठक पूति (प्राप्त श संबोध २१८ खार्च १४७) । १ पूर्व-क्रवी का जानकार धुनि (पदशा १---पव ४-सम्मत्त १४१ः पंता ६, ४६)। ४ एक प्राचीन केन मञ्जूषि भीर प्राथकार, तरवार्व सूत्र का कर्ता भी समास्त्राधिकी (पंचा ६ ४१)। १ वि क्यक क्युनियासा। ६ पहाले-बासा (स्लु १)। यायग वि [पार्क] वजानेवासा (कुमा ६, मद्वा)।

वायम पू [बायक] कनुवाय वृवाहा (वे **4** 24) i बायगर्वस र् [बाचक्वंश] एक वैन पुनि-वंश (स्विद्य)। वायब वृदि एक चेहिनश्च (कुम १४१)। धायक वि क्याकृती साध्य प्रकट प्रजेवासा (बस्रान क) । बेबो पागरिय । वायडचड वं कि वाय-विशेष रहेर नामक बाबा (रे ७ ६१)। बायद्वाग पूँ 👣 सर्वे की एक वादि (परस् १---पत्र ६१)। षायण न विक्रमन देवो वायणा (नाट---चला १)। बायण त विदिनी १ वजाना (मुपा ११ २१.३ कुम ४१: मद्या कल्यू)। २ वि बजानेवासा (वे ७ ६१ टी) । भागण न वि] भोज्योपायन वाद्य पशुर्व भगवीय जाता समझार, वासन (वे ७ ५७-प्रमुख)। वासणयाः 🛍 विषयनाः 🕽 एकः ग्रस्-वायणा रे धमीने मध्ययन (इस २०१)। २ घष्मापन, पद्दाना (सम १ ६, छन)। ६ व्यास्मान (पद ६४)। ४ सूत्र-पाठ (क्रम्)। बायणिश वि [बायनिक] वयत-संकवी (गर-विक ११)। बायय वैचो बायस व्यवस्य (दे ५ २०)। बायर म वेची धागरण (दे १ २६८; हुनाः मन्दिपद्)। बायम वि [वायव] बायु रोक्शमा, बाह-पैनी (निपार १---पत्र र) । बायव वैको पायब (से ७ ६७)। वायब्य वि [बायब्य] बायब्य क्रोस का (प्रणु२१६)। यायक्त पु [वायक्य] १ बापुरेवता-संबन्धः 'बास्छवायन्वाई पद्वविमाई कमेख सम्बाई' (सुर ८ ४६, महा)। २ न. थी के बुर से प्रकृ हुई पृति—रत' 'नायम्बर्ग्हास्टर्हाया' (कुमा)। पायब्दा ध्ये [बायब्दा] पवित्र धीर एत्तर के बीच नी विद्या, नामस्य कोख (ब्रा १ ---बार दृंदि यार] चयक पात-राव (दे७

पत्र ४७व सुवा १८: २१ )।

वायस प्रविधयस्य । १ काक कोमा (बना प्राप्तु १६६ हे ४ ६१२)। २ कायोरसार्वे का एक बोप कामोरसर्प में कीए की तरह क्षणि को इचर-अचर चुमाना (पथ १)। परिमंद्रस न ["परिमण्डस] निचा-विरोप" कीए के स्वर और स्वान बाबि से सुधासुम पन करतानेवासी विद्या (सुध २, २ २७)। वाया की विषय ी १ नाचन नाणी (पाप) प्रासु १ पति सं ४६२ से १ ६७३ मा ३२ ४ ६)। २ वास्त्रीकी मनिष्ठायिका रेवी सरस्वती (बा २६)। १ व्याकरस्य-शाक्ष (नउड ≈ २) । देखो युद्ध = वाण । वाबाह प वि वाबाटी राज तोता (दे । **14)** i थायाङ वि विकासी वाषात वहवादी (सूर्या १६ केइय ११७ संक्रिय २)। षायाम र् [स्थायाम] क्यरव राग्रीरक भग (ठा१---पम १८ छामा १ १---पत्र ११: कम भीए लग ११)। भाषाम सक [क्यायामय्] क्यस्य करन्य, रक्षरीरक सम करना। वक्क पुदुर्द्ध वि षायामें तो कार्य न करेड़ किंकि पूर्ण (छन) : वायायण पुन [बादायन] १ वनाच म्हणेना (प्रमा १६, ११ स २४१) पाया महा) । २ प्रीयमंक्त एक सैनिक (पञ्च ६७ १)। बायार पूं [के] विकिथ्स्तात पुत्रकती में बायसे (दे ० ४६)। षायाळ वि [वापाळ] पुषर, बक्साध (धा १२ पाम मुवा ११३)। बायाळ देवो प्रायाळ (से ४, ६७) । वायाधिक वि [बाबित] वजनाया हथा (स १२७ क्रम १३६)। बायु देवा बाद्य≕वानु(सुन १: १२ हुनाः सम १६)। धार सक [वारम्] चैकनाः नियंव करना । बारद (डर महा)। वह बार्रत (भूग १४६)। क्या वारियांत (क्राप्त १६१)

मदा) । देख बारेड (पूज १ ६ २, ७)।

इ- वारियव्य, बारेयव्य (मुना ४४२

343)1

बार ई बारी १ बग्रह, द्वर (मुपा ११४)

सर १४ २४३ सामै ४१३ दुमा सम्मत

१७४) । २ प्रवत्तरु देशा दक्त (स्प ६२ व

सुवादेश लॉक)। इंसूर्व स्थवि सहवे

ग्रविकृत दिलः वैदे चीरवार, ग्रोमवार भावि

(श २६१)। ४ चीवा गरक का एक नरक-स्वान (स ६--पत्र १६१) । १ वारी परिपादी (ज्य ६४० दी) : ६ कुम्ब, बहा (दब १,१ ४१)। ७ वृद्ध-विधेव । व व, कत्तिरोप (बएस) १७ - वत्र १३१)। प्रयद् 🛍 "मुबद्धि वार्यकत वेश्या (क्रमा) । बाम्भणा भी "बीमना" नहीं पर्ने (शक्त १४)। तस्यांकी ितरुगी | यहा (बल) । बहु ब्हे विभू विशेषक (रूप ४४३)। विद्या ध्ये ["वनिया] वही दुवेंच्ड धर्व (दुमा) पुरा ७वा२)। विद्यासिणी वी विद्या-सिनी] यही (कुमाः पुपा २)। ह्युटी की [सम्बरी] बढ़ी धर्च (नुवा ७६)। बार व द्वार] राजाना (प्राक्त २६) कुनाः या व )। वह की [विदी] हारका वध्यै (कुन्न १३)। "बास्त्र पूर्व ("पास्त्री बरवान, वर्तीक्षार (कुमा) । पार्त रेखी बार - बारन्। बारबार न [बारबार] किर फिर (हे ६, ३२) या २३४) । बारग प्रीमारकी र वारो क्या (जा ६४० दी)।२ छोटा बड़ा संबुद्ध करा (विष २७)।१ वि निरास्त्र निमेवक (कुन्न २६ पर्निक्षि १६६) । बार्यक्षय न दि । रख बस्थ, बल क्यस (क्क्स २ ४१)। बारकृ वि वि विधियोग्डित (वर् )। बारण न बारको १ नियेव रोक बरकान निवारण (दुमा धोप ४४)। २ छन unar 'बारखबबामेध्यि बन्नेति पुत्रे सहा-नुद्रार्थ (सिर्दिष्ट २३) । ३ वि धेनने गणा निवारक (बुद्र ६१२) । ४ ई. हाची (शामा प्रमाप्तम ११२)। ए प्यत्रभा एक देर (Tit) 1 धारण देवो सागरण (दे १ २६ : **१** वट 42)1

पारपा भी [वारणा] निवास्त संस्कार (**1 1 1**) | वारचः व [बारचं] १ एक घन्तका पुनि (मंत्र (व) । २ एक अर्थित (स्त्र) । ३ एक समहब । ४ न, एक बनर (धस्म १ डी) । वारबाज दु [बारबाज] शम्द्रक कोबी (पम्प) । बारय देशो बारग (रेभा सामा ! १६--पत्र ११६३ उस दू १४२। ज्या संत्) । यारसिभा हो 💽 मस्बन्ध युष्य-विशेष (t = 1)1 षारसिय देवो बारिसिय 'बार्यप्रवमक्षाराख' (गुपा ७१) । बोराकी बिग्रस | १ वेरी वितमक प्रमानो किमक करने व सन्दा एतिया कारा' (पुपा Y१६)। २ केबा, रफा थो पुछरनि निरुम्सवद नारामी दुवि विक्रि ना बाब' (बहुर ये) 'स्व' म्बर्' नारास्टिन्स्यस्य' (विदुषानन्दी) । बारायसी देवो बाजारसी (कक वि १४४)। बाराबिय वि बारिती विश्वका निवारण कपमा नदा ही व्ह (रूप्र १४)। बासाइ दू[बासाइ] १ प्रीचर्ने स्वयेत का पूर्वजनीय नाम (सम १६६)। २ वि शूकर ने बहुत (उपा) । षाराही को [बाराही] १ विद्धा-विशेष (परम १४१)। २ वर्षाहिमिक्किर का बवामा ह्या एक क्योर्तिय-प्रन्य, वर्ण्य-संदिता (प्रम्यत tat) i पारि व [कारि] १ पानी, वर्ण (पाम कुमा; बर्ग) । २ इसे. हामी को रोजाने का स्थाना 'बारी वरिवरलक्क्सएं' (पान स १०० to)। भइगर् ["भक्क] विद्वत की एक बार्ख, शैक्बासी निष्टुक (मूपनि १)। सय दि [सव] पश्चेका क्या 📢 । धाः इ (दे१ ४ वि ७ )। सम्ब [सुप्]केष श्रवपर (वर्)) वर् िंद् ] शन्त्री देनेराला भूग्य (स ७४१)। पश्चित्रं ["पशि ] छ्युत्र, बावर (नध्यत १६)। याह् ई ["पाह] क्रेप, याह (रप १६४ से)। संवार्त विवा १ एक सन्तार क्यूनि, भी धना शहरेर के पूत्र ने

भीर क्लिक्टोने अवनान् माध्यनेथि के पास क्षेत्राची वी (सन्दर्श) । २ एक भनुत्तर यामी मूर्विको राजा सैस्तिक के पूर्व से (सन १)। १ ऐरवत वर्ष में जरपद्म चीनीतर्षे जिन्देव (सम ११३)। ४ एक शास्त्री जिल-प्रतिमा (पर ११ मक्त)। सेणता 🚓 चिया] १ एक रास्त्रती निन-प्रतिया (हा ४ २—पत्र २३)। २ प्रवीको इ.में राजे-बाबी एक दिरकुमारी केरी (ठा ---पत्र ४३७: इक २३१ टि)। १ एवा महावारी (स. ६ --- तत्र १११ इक)। ८ सम्बंतीक र्वे ध्यमेनाची एक विक्कुमाधी देशी (इक २३२)। इर पू [ भर] सेव (नब्द)। वारिल पुंदि] इवाम नागत (११ ७ ४०)। बारिक वि [बारित] १ लिवारिक प्रतिविद्य (पाच्या से २ २३)। २ वेडिल (से २०२३)। गरिमा की [द्वारिका] छोटा शरवाना, गरी (वी २) 'कपस्त का(का)विवाद परिक्रिती बाह्यायणके। भो वसपृरियमिद्रानुवासी चा(? गा/रिवाद विकासी । तो स्वरिवयसम्बद्धी बोस्टीए किन्समे स्वर (वर्षेषि १४१)।

वो व्यक्तिवसम्परी बोधीय किसमी हरत।
(वर्रीह ११६)।
बारिका वृंव [व] विषाह, साथी (१० ४१,
पायः कर इ. )।
बारिका वेदो परिवार (११६ ११)।
बारिक्रिय कि [वार्षिक्य १ वर्ष-प्रेमणे
(एक)। १ वर्ष-प्रेमणे
पापीस्त्रा किहुवर्षप्रविद्यों (पत्रमः १ ४१)।
बार्षिक्य किहुवर्षप्रविद्यों (पत्रमः १ ४१)।
बार्षिक्य किहुवर्षप्रविद्यों (पत्रमः १ ४१)।
बार्षिक्य किहुवर्षप्रविद्यों व्यक्ति वरणाया
(क्षे. १)।
बार्षिक्य क्षित्र क्षेत्र वर्षण्य वर्षणे
क्ष्मी वर्षिक्य क्षम्य क्षमी क्षमी (व्यक्ति वर्षणे क्षमी क्षमी (व्यक्ति वर्षणे वर्षणे क्षमी क्षमी (व्यक्ति वर्षणे क्षमी क्षमी क्षमी क्षमी क्षमी (व्यक्ति वर्षणे क्षमी क्षम

वारी न [धारि] बच वानो (हे १ ४० पि

यारुभ द [रे] १ खोग, वस्ती। १ वि

शोगानुष, का शस्ता समे( (द w

**₩**)ı

बार्य म [वास्त्र] १ का पानीः 'नित्याव-बार्यस्थानमंत्रिकारिकारावाणुष्येचे' (विशे १६१)। २ १४. कश्य-वेजनी (पत्रम १२. १२७ गुर ८ ४४. महा)। त्य म [त्रस्] बक्यानिष्ठित याच (महा)। पुर म [पुर] मन-विशेष (१४)। वास्त्री की [वास्त्री] १ महिर पुर वाष

क्य-रिकेश (क्क)।
सम्भी की [यास्थी] १ मिरा पुरा शक
(तार के २ १०- पुर १ ११ पर्यह २
६—न्त्र ११)। २ क्वा-निरेश एक
बारती एकसम्ब (क्या)। १ विकासिया
(क्वा १०--पन ४७६ तुमा २११)।
प्रमान पुनिकास की प्रका रिस्पा का
सम्ब (व्य ११२ व्य ११) १ एक निवकुसारी केशे (दक)। १ कायोरावर्ष का एक
बोरा-पन् निकास होती परिष्य की वर्ष्य
कायोरावर्ष में प्रकुत स्वामन कामा। २
कायोरावर्ष में प्रवस्ता की वर्ष्य नेमते व्यूना
(वर १)।

पारुपा र दो [वे] इस्तिनी हमिनी (स ७३१ वाह्म्या र ४)

वारेक रेको मारिक (स ५६४)।

सारेयरुव क्यों पार = नार्ष्। पाळ कक [पाछस्य] र मोकना। र नायक कोटाया। समस्य नायेव (है ४ की की स्वित विति १४९३)। कक्य, साविकारी (तुर दे १६६)। येक पाळेरुल (सहा)। याळ दें [क्याळ] र वर्ष योग (क्यर, स्वास र टे—पन की मीन)। र हुछ हायों (तुर र २१६ केप्य देन)। व दिश्य प्यु क्यारस (स्वास रे १८— यम ६ मीन)। देशों विश्राख ≃स्वास।

बात न [पास] १ एक गोन को करवर-गोन की एक राखा है। २ पुंची, ज्या गोव में करान्य (ठा ७—पन १६)।

सां केशी बांच - बाल (भीए पाप)। य वि [च] केशों सं बण हुया (रत्य १ २ १२१)। वीयणी की [ बीजनी ] १ बायर एक एक्स्यूरों से बहा--चार्च पाप क्येंचे बाहुएगों बालदीवर्डण (मी)। १ प्रोटा क्यान--चेशा वेयकारपास बीयणींद्र बीहान्यमाली (स्टास १ १--

पक करा सूत्र र र, रत)। हिं पूँ [\*घि] बद्दी सर्पे (राग्ध सुपा २०१)। बाळ रेको पाळ ≔पात (कास- प्रवि:कुमा र ९१)।

१ ९१) : वालंक्ट्रेस न [व] कमक, सेता (१ ७ ९ ) । साज्या न [वालक] पान-विशेष वी पादि के बसों का मना हुमा पान (माचा २ १

वाक्षत न [वाक्क] पाननवर न पायत क कसों का बना हुया पान (पाचा २ १ ८१)। पाळनपेरिया १ ली [के] देवो वाक्स्म-पाळनपोरिया १ पोइमा (पुत्र क ४—पन क क्टा २ २४ पुत्र १ २४)। वाक्स म [वाकन] पीळना (पुर १ २४६)। वाक्स म [वाकन] पीळना (पुर १ २४६)। वाकस्य म [वाकन] पीळना (पुर १ २४६)।

१७)।
बाद्धय पू [यास्त्र] क्ल-क्र्य-विशेष (पार्थ)।
बाद्धयास पू दि] मत्त्रक का भागूनस (१ ११)।
बाद्धिय पू [क्यास्त्रिक्] मदारी स्रोगों को
वस्त्रमे स्राहि का स्वत्रात करनेनासा स्रोप

(परहार २—पण २४)। बात्त्रहिद्ध दुं [बात्त्रश्लास्य] महाते ज्यान पुनस्य क्या न शाह हवार दुध मो बंधुद्ध पर्व के देश-मानवाचे ने ( पन्छ )। वेदो बार्किशिद्ध ।

था**छ। पूंची** थिएटा के**ट प**रन-निरोध

'संपर्ध मामानस्वध्यं (सा नार) । बाजि पु [ याखि ] एक नियानर-राजा करियान(पड्य १ व रे १ १)। वाध्य पु [ उत्तम ] याचा श्री क्षण संस्क (३ १६ - ६)। सुद्ध पु सुद्धिय] नदी वर्ष वि भ रेश ११ १२)

बाक्षि वि [बाक्षित्] बङ्ग हेदा (छ १ १३) । बाक्षि वि [बाक्षित्] १ केशवासा । २ वृं करियव (यणु १४२) । बाक्ष्मि वि [बाक्षित्] योहा हुया (सम

नाकन । [पाळव] नाम हुवा (पास च ११०)। बातिमाप्येस म [दे] करक पुरस् (दे ७ ६)। पाळिंद 2 [पार्थेन्द्र] विद्यावर देश वा युक्त

चना (नवस ३ ४१)।

पर की वाती करतूरी माबि की सदा (कप्पू)। देखी पास्ती। षास्त्रभ प विस्कृती १ परमावानिक देवी की एक बाठि में नरफ-नीवों को तन्त बासुका—बासू में बने की तरह सुकते हैं (सम २६)। र पूर्वी-सम्बन्धी (उस दूर ४)। शासुत्र<sup>8</sup>) की [वाळश] पूनि बासू रेत रज वास्था (मन्द्र)। पुरुषा की पृथिषी ठींसरी गरक-पूर्विकी (पडम ११६ २)। प्पमा, प्पद्दा की ["प्रमा] वीसरी नरक-मूमि (ठा ७---पत्र १००० इक संत ११)। भाक्षी भा नहीं प्रये (क्त ३६ १५७)। थाई हव दि ] परवान्त-विशेष एक तरह का बाच बीरर्राह्मुबस्ट्रसमे पुरस्यिषक्य-बाधुकि (पिड ६३७)। वार्ल्डन [बास्ट्रह्] क्क्स्म बीस (बनु ६

वाजिक्किन प विक्रिक्तिएयी एक धर्माप

याज्याज न वाख्यान । १९४० प्रेस (काया

बाजिक्कि केलो बार्छक्कि (मन्द्र १२)।

बाजी की दिं] बाच-विरोध मुहक प्रका से

षाकी की [पानी] रचना निरोप पान पानि

बजाया बाठा तूरा-मद्य (२ ७, १३)।

(परम १४ १०)। रेको वार्किहिछ।

१३ व्या)।

**कु**श द=)।

याव एक [कि + आप] स्थाप्त करता। सावेद (हे ४ १४१)। वाय म [साय] मरना या (तिवे २ २ )। साव पूं[साय] सपन शोता (वे ६ १२६)। साव पूं [साय] सपन शोता (वे ६ १२६)।

षार्लक्ष रूपी [पासुक्की] कम्बी का पास

**वासुंब्री** (मारे गारे घ)।

षास्म वैको मासूझ (स १ २)।

७४१) : माक्षण सक [कृ] सम करना । वार्यस्था (हि ४ ६८) :

वार्यक्तिः वि [ ६/१०५] ] यम करनेवामा (कुमा)। यादाज सक [क्या + ५६] सर जाता। काकम्बीर्ध (सर)।

£3

७६२

(के १२,६ मात्र व्यक्तः शुर १२६)।

बावड वि [च्यापुत्त] नौटाया हुमा वापस

बावडर औन दि विषयीत मैकून (६७

बाबण न [स्थापन] स्थापन करना (विसे

बाबणग वि [बासनङ] द्वितलो, द्विन्ता

बीना, क्षेटे स्व का (पद्भन पत्र १६१)।

बावणी और विं] क्रिय विवर (वे ७ ३४)।

बावरि को जिनापत्ति | विकास, मध्य

(बाबार र-पन १६६) छर र राज

बापचि 📽 [स्यापृति] ध्यापार (स्प १ १)।

बावित की [क्यापृत्ति] निवृत्ति (छ व

बावच्च वि [ब्यापञ्च] वित्तररा-प्राप्त (ठा ६,

२--पश ६१६ स २४१ सम्बद्ध २०

बावय पूँ [वे] यापूछ, मौर का पुलिया (वे

माक्र मक् [स्मा+पू] १ काम में नक्ता।

२ सम्बन्धम में अन्यान्य । बावरेड (हु४

व) वावरद (भ्रवि), 'स्त्र' विश्व परिच्यात्र

परिविद्यमित कानरे (उस्त १७ १० पुंच

प्रवी., हेड बावरावित (त ४६२) ।

र । १६) । बक्र बाबर्श्त (दुमा ६,११) । ।

बावरण व [क्यापरण] कार्व में बनाना <sup>|</sup>

यात्रक्ष केत्री बावड = ब्याह्य (स्प द ४७)।

बाय उर्दून दि यावछ । राज-विरोध (५७) ।

बाबदारिअ रि [क्पानदारिक] व्यवहार से

बानम्ब रबनेनामा (इक्ट विमे ६१३) बीवत

पाद्मम (१) धक [ श्रद + द्वार ] परकाश

रान्ध जबद्व प्राप्त करना । बाबायद (बारबा

बाएण्य देखी बावच (काबा ११२)।

६६१: ४६२ वर्षेत्रं ६६४: ६७६) ।

Y-- 44 (#X) 1

**t** ( ) t

\* XX) I

(मनि)।

EX) I

(FX3)

किया हुमा (सर १६४)।

१व)। ध्यै सा(पाप)।

વર)ા

कर्वा (स २१७) ।

**१२, २१६**)।

विकारक)।

इ. बाबारियण्य (बुवा १६२) ।

(विशेष ३ ७१ व्य ४ १)।

१४ ६६ इम्मीर १६)।

म्य २०४ वर्गेष्ठं १२१)।

a 5)1

**(3)** 1

(वर्षकं १२१) ।

प्रति वावाहर्रिकस्थह (पि १४१)। वेष्ट बावारक्तम् (स ४६६) । इ बाबाइयस्य (स १३६)। बाषाइस नि [ब्बापादित] भार कना नगर विनारिक (युपा २४१) 'सवावानि(१६)यो केव विकत्तो **दू** धूनी' (स ४११) । बाबादश वि विभागांदकी विश्वक विकास-

पाइञ्जस इसहण्यको

वादिर देवो वादर । शनियः ( वर् )। बाबी भी [बापी] चनुष्कोतः क्यातन विशेष (धीप वजह प्राया) । बायुड ) (शी) देवो बावड = ब्यापुत (बाउ-बार्युक र्रमुख्या २ १ पि २१ वाय ४)। याबोजधान कि निकोर्ल, विकस हमा (दे ७ ५१)। बाश् (श) की [कायु] नाटक की भागा

(द्रा १८ २--पण १११) ।

में बाला (मुच्च २७)। वास केवी वरिस = पूर् । वासीत (वन) ! भूका, बाह्यितु (कप्प) । इ. बासिवं (ह्य १ ६---वन १४१ वि ६२३ ४७७) । दास धर्क [माध**े ! किने**मी स<del>्थाप</del>र पश्चिमों का बोबना। २ माञ्चाल करमी; 'बीरबुर्वाम्य बाहद भागत्वी बामहो पविध-फ्ल्बो (पडम ११ ३१) बासर बासर (भारि कुम २२३)। यह वार्सव (कुम २२३ १०७)। बास सङ्बाधन् ] १ ४५कार रूपना । २ तुर्वात्वतः करमाः। ३ वासः करदानाः। वासद (नवि)। नह बासंत पासर्यत (मौराक्य) । इस्वासणिका (क्रिके १९७७: वर्गचे ६२१) । वास देवो दरिस= वर्ष(दन २ क्रप्य की देश पढ़क कुमा भग दे दा दम हुए इंट ४१। **२ ट छ बर्** ४८ दुना ह७)। काम र मिलो का कता (वर्गश मोव १)। भर इर दू चिरी वर्गत-

मिरोप (बना ४) २१३) व्य १, ६) सम १२३ इक)। वास 🛊 [बास] १ निवास चूना (बाबा च्य ४ ६ कुना; प्राप्तु ६०) । २ बुरूच (इपार वर्षि )। १ तुक्की हक्करिकेर (पडड) । ४ पुरम्बी पूर्व-विशेष 'प्रश्नुबा बातवासं विद्यं तोशाच विवदेषि (दुपा १ ७ । रंग्र२)। रद्योतिक वसुकी एक

ৰাশিত ৰি [হয়াসূত] আৰুচিবালা, দিয়ুৱ

क्षवासम्बन्धः विस्तापादने द्वितः मारञ्जना शिक्तार (स ३३ १ १ १ ३ **१०१, धूर** बाबायम देवी बाबायम (स ७६ ) । द्यवार सक [स्वा+प्रास्यु] अत्म में बपाना । का वानारेत (यज्य १४४)। वाबार र्षु [स्थापार] स्थवताय (क्ष. १ मै—वन १९४३ प्राप्त ६१३ १२१३ वट~ श्वारण र जिलाधारण नार्य में श्रमना वाबारि वि [ब्बापारिन्] व्यापारकावा (वे बापारित (सी) वि क्यापारित क्यां में बनाया ह्या (बाट--सङ्ग १२ )। बावि स [सापि] १ सवस, शा (पर ६७)। २ और वेको बाबी (प्रसुद्ध १ -- चव व)। वाबि मि [क्यापिम्] स्वापक (विशे २१%) वायिभ वि [द] विस्तारित (दे ७ ४७)। वाविभ वि विदित्ती र प्रापित कन्त करकामा हुमा (ते ६ ६२) । २ क्षेत्रा हुम्स पुनराती ने 'नानंत्र'। 'वं प्राप्ती गुन्तनने बन्मबीवे वावियं एत् बीवं (प्रात्पद्वि कः दे वाविक वि[स्याप्त] पर ह्या (कृमा ६

वार्वि (पर्यु १---पत्र ४४)। पर न

िशुक् डिम्पन-गृह (श्राप्ता १ १६~-पत्र

वास्त्र--वास

धास-माह २१)। सम्रान ["सवन] वहायवै | (महा)। "रेणु वं "रेणु] बुक्की रव (दीप)। इर न [गृह] रुवत-पृह (पुर **१, २७ सुपा ६१२, भवि)**। थास प्रे च्यासी १ ऋषि-विशेष प्रयस क्याएक मुनि (हे १ ६८ वस्प)। २ बिस्तार (मग २ ८ टी)। बास न [बासस्] वकः कपका (पायः बम्बा १६२३ धनि)। ैशास देखो पास = पारा (मनड) । वास देशो पास = पार्श (प्राष्ट्र १ मडा)। बार्सम दूं [ब्यासङ्घ] पार्धीक दलस्वाः 'ता सा पश्चिता विसेव मोल्ए विसय-बार्सक्षे (क्य १६१ टी) दूस ११० च्या प्र १२७)। बासेठ ) (यप) यूं [यसन्त] सन्य का एक यासेत ) मेर (पिय १११ १११ टि)। वासंत वृ [पर्योच्य] वर्षा-काव का मन्त-भाग (उप ४वव)। बासंविध वि [बासन्तिक] वसन्व-सम्बन्धी (\$ 1) I बार्सन्तिभ ) भी [पासन्तिका "न्ती] वता-बासंविक्षा } विशेष (बीप बजा हमा पर्छ )१—परं ३२ छाता १ १— वत्र १६ पर्सा १ ४ -- वत्र ७१)। बार्सदी की दि ] हुम्द का दूज (दे ७ ११)। वासग वि शिसकी १ खलेवासा (इस ७६व थी) । २ वासमान्यती संस्थारायायक (धर्में ६२६) । ६ शब्द करनेवासा । ४ वं

ग्रेन्डिम मार्थि वन्तु (भाषा) । धासण न [४] पान बरवन, गुजरावी में वाष्ट्रणः विद्ठं च प्यतद्ववित्रं चंत्रसुनार्थ क्य दिख्छवाङ्सं (म ११ ६२)। वासण न [बासन] शक्ति करना (स्वति क बासणा ध्यै [दासना] संस्कार (बर्मंच १२१)। बासजा की [वर्शन] पक्तोकन निरीप्रण (बिसे १६७७ "प ४१७)। देखी पासणया १ बासव देवो बासन । सङ्गा 🕏 ["सङ्गा] गामिका का एक भेर, वह गारिका जो नायक

की प्रतीधा में सब-पत कर कैसे हो (इसा)।

धासर पुन [बासर] दिनस दिन (पाधा यदका महा)। वास्य र् [बासय] १ एवं वेद-पठि (पामः म्या ३ ४ वेदस १०)। २ एक राज-समार (विया ११--पत्र १)। किंड 4 किंत् इरिबंश का एक शजा शबा जनक का पिता (पत्रम २१ ३२)। दत्त पूर्वित्ती विजयपुर नगर का एक राजा (निपा २ ४)। दश्चा औ ["इसा]एक पावगायिका (धन)। धरा र्वन भिन्तयी स्त्र-बनुष (दुप्र ४१६)। नगर न [नगर] मनचन्त्री इन्द्र-नवरी (बुवा ६ १) । पुरा की विप्रा वही सर्व (उप प्र १७१) । सुञ पू िस्ता श्चर का पुत्र जयन्त (पाय) । बासबदत्ता की बानधदत्ता राजा नेड प्रयोद की पूर्वी भीर ज्यमन-नीखानस्थयन की पतनी (उस्तीन क)। बासवार दे वि] १ तुरा चोड़ा (दे ७ ११)। २ दान कृता विद्यक्तिन्त्रद पंपा क्याद कि गासगारेडि' (नेदय १९४)। यासभाइ र्षे 👣 दान बुत्ता (१ ७ ६ )। बासस न बासस विश्व क्यहर क्रमेस्छा कुवाससा (पर्या १ २--पत्र ४ )। वासा केवो परिसा(कृमा पाद सुर २ ७८ गारः १)। रचिको देवो परिसारच (हे ४ ३६१)। बास र् विसासी चतुर्मास में एक स्थान में किया जाता निवास (बीप कातः कप्प) । बासिय वि विधिप्रकी वर्णकाम सर्वन्दी (धावा२ २ २ ८)। हुपू[ भू] मेक मेडक (देश ५०)। वासाणिया व्य कि पासनिक्री कालकि विशेष (भूम २ ३ १६) । षासायी स्मै [वे] स्म्या मुद्धा (१० ११)। वासि वि [ पासिन् ] १ विकास करनेवाका रहतेवासा (नूभ १ ६ १) उवार सूपा ६१८। रूप्र ४१ पीप) । २ वासना-सारक श्रास्त्रार स्यापक (विसं १६७७) । धासि श्री [पासि] अपूता वहई का एक शह —धीकारः 'न हि वाजिवस्टरीय हाई सबेशे ।

धासिक रे वि विधिकी वर्षानसमानी ।

वासिया 🕽 (मुल १२—पंत्र २११) ।

वासिह न [वाशिष्ठ] १ मोत्र-विशेष (ब कव्यः सुरुव १ १६)। ७--पत्र १९ २ पुंची, गरिष्ठ गोत्र में उद्यम (ठा ७)। भी हा द्वी (रूप्य उत्त १४ २६)। वासिद्रिया की [वाशिधिका] एक केन मुनि-शासा (कृप्य)। वासिन्त वि विपिन्ती बरस्थवासा (ठा ४ Y--- पत्र २९१) । षासिकः ) वि [वासितः] १ वसाया ह्या वासिय 🤰 निवासित (मोह २१) । २ वस्ती रवाह्मा(बस्र मानि)(सुपा १२ १६२)। १ सम्बन्धित किया हमा (क्या पर १३६) महा)। ४ भावित संस्कारित (मार्व)। वासी भी वासा] बनुना, बढ़ाई का एक मस (पर्हार र प्रमारे ४ ७८ क्या सूर १ २६ भीः)। सुद्द प्रसिक्ती बमुते के शुरुप मुँहवाता एक तरह का बीट, द्यीरियय बन्तु की एक जाति (यस ६६ (38) यासुक् १ पू [बासुकि] एक महानान, धासीं । धर्मां (से २ ११ मा । १ भवकः तो ७- दुमा सम्मत्त ७६) । यासुर्य प्रशासर्व र भीकृष्ण नारावण (परहर ४--पत्र ७२)। २ मर्थ-वक्र्यसी यना, विचाएड भूमि का संबीता (सम १७) ११२३ ११६ शत)। यासुपुट्टा र् [यासु (उम् ] मास्टरपे में उत्पन्न बार्खार्वे जिल सम्बान् (सन ४३) कप्पः पश्चि ।। यासुकी की [दे] कुद का छून (दे ७ ४४)। बाह्यक बिह्न विश्वत कराना बनाना। बाहर, बाहेड (मवि महा) । कवड वाहिकासाण (महा) । हेर्ड वादि ई (महा) : **क्र बाह्**म (हे२ ७≤ द्याचा२ ¥ 7 2)1 बाह् पुंबी [क्याघ] धुम्पक बहेतिया (ह १ रेक्फ पाम) । इसे हा (मा १२१ पि 1=1) ( याइ पुं[बाइ] १ मध मोड़ा (पाम नुम १ रु १३ १६ इन १२० टी पुत्र १४७३ हम्बीर कहेचिर्दान' (पर्मरी ४०१) । देखी वासी । (व) । २ जहाज भीका "वादोहवाइ सदस"

(विसे १२७)। १ भारबहुत योज्ज दीता

(तप १३ ४४)। ४ परिमाल-क्रिकेट

सवाधे (वर्मंदि ४)।

याउन्तो प्राहक का एक मान (तेषु २१) । १ शास्त्रदेक भाषी होकनेवाता (सुग्र १ २

१ १)। वादिया वो विविद्यी पुर

बाह्रगण १ 🛊 [व] मन्त्री प्रमारम प्रवान

पहिनम् (रे ५१)। याद्रेड वि [रे] पूर मध हुमा बहुबाहुडा प्रकार (रम ० ११) । थाइडिया भी दि ] कांबर, बहुँबी (छाड़ 114) 1 बाइज र्द पिइसी १ रव धारि वानः 'बह निष्पत्राहरू सोर्च (नष्ट १३ उना भीत कप्प)। २ जहान नीता व्यवसाय पुजराती में पहारां (ब्लाः सिरि ४२३ रूम्मा १६) । ३ न. क्यांनाः वाह्यसङ्ख्-परिस्तियों (दूप १४०)। ४ छक्ट, बीम मादि डोमाना, मार नाद कर चढाना (पहरू १ १--- पत्र २६) इ.२६) ः साद्धा 🕏 िद्धाव्यी यान स्वाने ना चर (चीव) । बाहणा ध्ये [बाहना] पहन कराना, बोक चार्वि डीमाना (भावक २५ टी) । साहणा की दि थेग शेक क्या (देश IX) I बाह्णा धी [ उपानश् ] पूटा (धीराः बनापि १४१)। बार्हाण्य रि [बार्डनि ठ] बार्व संक्रको (सर ७२० हो) । बाइ जिया 🛍 [यादनिशा] बहुभ कराता **बनानाः चासराङ्ग्डियम् (स. )** । वाहर्स रेवा वाहर। बाह्य वि [याह्र ] बनने सता, इक्टिसना (उत्तर १७)। याह्य वि [स्वाहन] स्वास्तवन्त्रात (सेव्ह १ ७ उर)। या(र तक [क्श + ह्र] १ दोक्या क्ट्या। २ बागुल करना। बाह्य (हे ४ २२१ मुवा ६२२ वहा) । कर्म पाहित्यहः वाहरिवद (१४ २१३) 'वर्धाव्यंति पराता वर्धाव्यं (पुर १६ ६१) इन्ह पादिप्पा (रुमा)। वक्र याद्र्रत (खार १ दुर र १६६) । क्षक्र वार्टारचं (सर ब) । रेष्ट पाइल् (b tt ttt):

(दुमा)। २ प्यञ्चान (स २६२३६ १)। वाहराविय वि [स्थाहारित] स्ववाना हुमा (दुप्र १६३ महा)। याइरिक्ष देखी बाहित्त ⇒ व्याहत (तुर १ १६ ४ ६: सुना १६२: व्यक्त) । बाइन्सर नि दि बात्सस्यकारी १ स्टेकी पनुराची । २ समाः पुत्रराती में 'बाह्रनेक्सी' 'धव् संस्थारो तमस्रवायंपि । निकासमा मर्भेडो नानेइ बाह्यास्म्ब (वर्मीव १२०)। बाइ किया ) की दिहे बह नहीं कोटा पह बाइकी 🕽 प्रवर्ष (बम्बा २२) १४ है 🔸 16)1 याद्दा की [दे] बालुका रेख (दे क १४) : बाहाया की दि ] दुल-विरोक 'समिसंबक्षिया वि वा बाह्यसार्थविद्या वि वा स्वर्शकर्शविद्या विका (मनुद्र)। वादाविय वि [बाह्रित] च्यामा हुमा (महा)। बाइ देवा बाहर । येड- माहिला (मान **१**ः विद्दर)। यादि पुंची [स्याचि] रोग बोमारी 'चर्जनाहे बाह्य कनते (हा ४ ४—यत्र २६३) पह्यः युर४ ७३ चना प्राप्तु १६३ नद्दा); 'एवामो तत बाहीयो सम्सामी' (महा) । बाह् वि विविद्यु व्यून करनेवासाः क्रेनेवासाः नहा परी चंदराशासाही (दन)। बादिभ वि [पादित] क्लादा ह्याः चाहिते वस्मि वंतरूको वं कार्य (व्यूत) 'तो वैस वेख बानेख कातकितंख वाक्रियो वामी (मुपा ६२७) । वाहिम क्लो पादिच≕म्बह्व (हे२ ३८) पर् भरा छाता १ १--पत्र ६३)। माहिअ रि [ब्याधित] रोम्रे मोमार (सिर रे ⇒ ३ लावा १ र—पन १७१ दिपा १ ७−पव १८ पर्सा१ ३—तद ६४० वादिया भी [याहिना] १ नधे (वर्वीत ६)। २ सेना नरहरः मेखा बरुद्दिको गरिको पर्कार्य **बबू डिल्म** (साध) । ३ मना-शिरोप जिबने रे हाथी, वरे रच, २४३ चोड़े बार ४ ४ प्यारे हा बर्द केय (१३४ ४६ ६) । यन्त र्ष ["ना ३] मेना-चरि (क्रियंत १३) ।

र् [ रा] को (क्या ११) ।

शाहित वि [स्याहत] १ वस्त कवित (ह १ १२ व २०११ प्रक्र)। २ मधुत,शब्दित (पामः) कतः १२)। बाहित्ति भी [स्याहति] १ वर्ष, वचन । २ बाह्यान (बन्दु २) । बाहिष्य देखो वाहर। वाहिम स्त्रो वाह = बग्रम्। बाह्यिकी भी [बाह्याओं] मरत बेबने भी क्या (त १६) सूपा ६२७३ महा)। बाह्यिक वि [ स्वाधिमत् ] चेची (बन्म ब री)। षाही देनो वाह = स्वाद । वाहुबिस वि [दे] यह चयित 'तो बाहुबिस वरेष्ठ' (कुम ४१ ) । देवी दाइक्रिअ । वाहुय देवो दाहित्त ≔व्याहत (धीप) । विदेशो क्यांग⊐ प्रति (हेर २१०) क्रमा स रा रक्षा कम्बर रहा ६ (स रमा)। विष[वि] इत पर्वे का सूचक सम्बय-विसेव प्रविषयताः रिन्त वियोग (ठा४ २३ वस्त १ रह पर २, २१४)। २ विधेका किसीस्तर (तुम ११२ २६ भग ११ हो)। ३ दिविषद्याः 'वियस्त्वपारा' 'निसंपाय' (मोनमा १००) तय १ टीर भावम)। ४ दुत्वा बयको निक्यं (च्य ७२० दी)। १ मध्य 'निस्ता' (ते २ ! )। ६ महत्त्वा 'विएम' (वडा)। ७ भिम्नवा' 'विएस' (महा)। व केंबारे, अमीवा विकास (योगम १६६) । १ पारपूर्ति (परम १७१७) । १ द्रे पडी (छ १ १ पुर १६ ४६) । ११ वि प्रशिक्त उद्येवक । १२ प्रवासक सारक क्षम्यं सम्मतियास्यं परं दिस्य परिवालं (ftt {Y1) i विक्यो नि=धि वै पुछ होत्व निद्वाला इम्माद्रवारमा बदम्नवु' (बिसे ११९१) । दिशि [पिट्र] बालगर, शिक्ष (प्राचा) ति र )। स्टा**ध**["तुग्**प**ना] विश्वन नौ किया बाधुनी किया (या । थै-रव १ )।

(4 e) [

रेवभेच खित (क्ला र

1 ( 1) [14 042]

विम-विशव थिअ एक [पित्] बालना। विविध (विधे १६ )। मनि विन्तं वेन्तं (पि १२६ १२६ प्राप्त ह १ १७१)। वक्क विजंत (रंग)। संक विश्वता, विश्वताणं, विश्वत (प्राच्या वस १ १४)। विभान विभान विभाग गामन सि ६ ४≈)। बर वि विर] बाकास-विद्वारी। बरपुर न [ घरपुर] एक विचायर-नवर (14) धिक्ष वि [विद्] १ जानकार, विद्वान, 'तं प भिक्त परिसाम वियं तेसू न सुप्पार

(सूस १ १ ४ २)। २ विकान जानकारी (धव) । विश्व देखी इव (दे २ १६२ प्राप्त) स्वप्न २७ हुमा पद्म ११ वशः महा)।

बिश्न दे द्विकी स्थापक बन्दु-निरोप भेड़िया (माट-उत्तर ७१)। विश्व वे डिप्रस दिनम दिनारः वेचनिहे धेसरो परस्ते त वहा- च्याकेकरो विक्की-बस्रें (द्वा १८ ६--पत्र १४६)।

विश्व वि [विग्व ] विनष्ट, मूच। या और िची पूर पारमा का राधेर (छ १---पत्र ११)।

बिछ देखो अविभ - सपिन (बीव १)। विभाव कि विजयिम् विश्वमा बीत हाँ हो वह (मा २२)।

विश्वद् भी [भिगति] विवस विवास (ठा 1(31 40-1

विकाद देवी विशाद = विकृति (हा १---पत्र १६: राज)।

विमञ्चा देवी विश्वव = वि + वर्त्तय। विषयिक्त १ विषयिक्त १ प्रधन्त विदेश। २ त. पुण्न-विरोध (हे १ १६६) कप्पू वा २३ कुमा )। ३ जि निकल, विकसित

(इए)। षिअअविक्य वि [पे] महित (१ ७ ७२)।

कला-इप कान मादि को काठता। वियेषेड् (सामा १ १४--वम १०१)। विभीग नि जिन्ही चैय-होन "विशेषपण"

(परहा १--पकाद)।

विजितिम वि वि निन्दित (रे ७ ६१)। विश्वंतिश्र वि विश्वक्रियों बरिक्त बिला (परात १ ६--पत्र ४४: दी--पत्र ४१)। विसंज्ञण देवो संज्ञण = व्यञ्जन (शक् ६१ सम्म ७२)। विभिज्ञित्र वि क्रियक्तियाँ व्यक्त किया हुमा प्रकट किया हवा (सुधार १ २७ ठा ४, **२—-पण ५ ८**) ( विश्वद्वित कि है। प्रक्तेपित । २ पुत्र

(यस्रधक)। विश्ववि हो स्थिति पत्र विमा । स्परंप रि किएको धन्त क्रिया करनेवासा कर्मी का प्रन्त करनेवाचा मुख्य-सावक (धावा 2 # X 4) + विश्रीसमण [वि+ अपूम्भ ] १ छरान होता। २ विकसना। ६ नैयाई बाना।

१ ४३७ मा ४२४८ मधा)। विश्वमा विविद्यमा विकास स्था भाग-सुर्व विर्वसमुद्धस्य (स. ६६ )। विज्ञीसण व विज्ञासमाणी १ जैयाहै, जनहाई (स ११६ सवा १४६)। २ विकास । ३ उद्दर्शिख (मंदि॰ माल व४)।

वियोग्य (हे ४ ११७ पर धनि)। वह

विश्रमंत विश्रममाण (बारवा ११२) से

(या १६४)। २ करांच्र (मान ०६)। ६ न वैभाद (वा ३५२)। विश्वंसण वि [विवसन] वक्स-प्रीहत सन (SHE 43)1

विश्वभित्र विजिनिमती १ प्रकारित

विश्रीसम् पू दि विषया बहेबिया (वे ७ पिश्रक सक [वि+ तक्ष्य ] विश्वारता, विमर्शं करना मीमांसा करना । वक्र. थिय वांत विवक्ताय (गुपा १६४० वर २२ a۱۱

विश्व पूर्व वितर्की विमर्श सीमांस (भीप सम्पत्त १४१)। की का (सूच १ १२, २१ पत्रम ६६ ६)। विभ क्य वि [वित्रवित] निर्मातत, विवा-

चित्र (धस)। विभाग्य सम् [वि + इस ] वेदारा । वह वियक्समाम (पावना १८०)।

बद्ध (यहरा प्रास ४१ मनिः मार-चेगीर 38) I चित्रमा विक्यिमी व्यक्ति (माक् ३१) । विकारण देखी सरम = स्थाप, ---महिस्ति (१विय)ग्मसम्बदीवियाः (पएह १ १ ---पम ७ पि (१४)। विकास वे विवासी व्याप-विश्व (परह t १—पत्र १८)।

विश्वकस्त्रण वि [विचक्कण] विद्वान, परिवत

विभक्तास देवो विवक्तास । (नार--पृष्य **478**) i विश्वदृतक [यिसं+वद्] बप्रमास्त्रित करनाः सदस्य प्राप्तितः करना । विसद्धाः (ह ¥ ( १२६) I

विबद्ध वर्ष [बि+वृत्] विवरमा विहरता । बद्धाः 'पिम्हसमयंति पत्ने वियह भाण (मु?) वर्णेसु वराकरेल्विविह्रिएख कवर्षस्वाची पूर्म (शाया १ १--पत्र 42) : मिमट्र वि विश्वची निश्चच व्याद्वतः विध-इन्नरमेर्ग किस्टेर्ज (सम १ मना कर्या

प्रतिदित भीवन करनेवाता (सर) । विञ्रह दू [भिषती प्रकल (स १७०)। ) नि [विसंपदित] संगय-एडिट विअक्तिम । अप्रमाशिक विमृद्ध विसंवद्दमी (पाम कुमा६ वद)ः विभद्ध वि [विक्रस ] १ दूर-स्थित । २ किवि

भीप प्रक्रि)। भोद्र कि भिश्चिम्

इर(स्रामा ११ टी--- पत्र १)। विश्रह सक [वि + फर्टय] १ प्रका करना। २ स्थाबोबना करना । वियदेह (ध्रा १ थ-पन ४०१)। सन्द्रः वियक्तिक्षेत (चन)। विश्व वि [स्पर्व] वरित्रत वरतान्युक

शाया १ ५∼–पत्र १४३)। मिश्रक वि [सियुत] पुनाहुमा मनाइत (ठा १ र--पत्र १२१ः ४, २--पत्र

११२)। सम्बन्धः विद्वा नारो तरक नुसा घर, स्पान-मर्डिपका (कम्प क्य)। जामन विश्वानी गुला बाहन जार स पुत्रा सात (ग्रामा १ १ टी-पत्र ४३)।

विश्रह व दि । प्रामुख बन चौद-स्थित पानी (सुग्रं । २१ ठा३ १--पव १६ : ४, २—यम ६१६: धम ६७) उत्त

410

२ ४० कप्प) । २ मघ दाक (पित्र २३१) । १ प्रातृह प्राहार, विशेष प्राहार जे जिलि पापन मन्त्रे ते शहुम्बं विषये द्वित्वा

(धावार १११) 'वियान' भीव्य' क्य)। বিশ্বর বি বিভূতী বিকার লাম (মাখা)

यल २ ४। इस्त वि २१३)। विश्रह दि [मिनट] १ प्रदट भूता (तुम १२२ २१ वंचा १ १ पन १६३)।

१ भिशास पिरतीको —सकोसान<del>वेद</del>नसम वेभोधिक्यक्यावें (क्या भीत का १ ६ बजा)। १ गुन्दर, मनोक्षर (पडड)। ४ प्रभुत प्रपुर (तुम २ २, १८) । दर्ग एक ज्योतिकः महाबह् (ठा २ ३—पत्र ७०° ।

स्व २ )। ६ एक निदावर सना (परन १ २)। भोद्रविभाजिन् प्रकार ∸ धोजब करनेवाला दिवर्ने ही धोजक त्रसम्बद्धाः (सम्बद्धाः) । तदः ।पाइतुः ें पातना देश विशेष (ठा४ २—वत्र | ~ a 3 ₹ --- 44 €€ a ):

--- १६.य.] विस्तीले होना । - 3 186 )1 िक्टा] १ पशिवाचे **वो** 

u-

हेर ४६ प्रदूर १ र—पण )। विभाग दि विज्ञानी निर्मेश यन-धीरका 'संबंधि विद्यालकाराता' (धरि)। विभ्रणाध्ये विवनाी श्रामः। २ ग्रुव-

२ पाव्हिस्य (कुन्न ४ ३) बणना ११४) ।

বিশেল বুৰ হিনাহানী ইবা বঁছা (সাস:

दुःख धार्मिः का धानुमन । ६ विवाहः । (प्राप्तः हे १ १४६)। ४ पीझ दुख स्रीताप (पायः वदशः हमा) । विश्राणिक कि [बिद्यानित बिद्यानी विस्त्री है (महिंद)।

विञ्जालय वि [बिगणित] प्रनारत विस्तृत (मिन)। विभ्रष्य दि [विदस ] मूर्त (दा १४१)। विभ्रम् मि [विवृष्य] कुम्छा-पीव

(बार्क)। विश्वत्त तक [मि+वत्तम्] दून कर बागा। बंद्र-विवत्त्य विवद्या, विवया (प्रापा १ = १ २)। यिभत्त वि [स्वतः] १ परिस्पृट (सूम १ १२२४)।२ यहुन्य निवेकी (तुस १

१ २ ११)। १ कुळ परिष्ठत-सवास 'रिहार्यमाले क्याह्रबरिश्रमाले' (हम १३) । ४ पूंजनरान् बहाशेर का चतुर्व बखबर---

water from James all a without will

इ. विवय्प (स्य ६२६ टी)। विभएप दुर्विकस्पी १ विविव तस्त्र की

क्रमानाः वैजयह विकर्तः पित्र विकासावा कईशाखें ( वडड )। २ विदर्क विचार (महा) । १ भेट प्रकारः वस्पद्रियो स पक-बनमोध देश विद्यापासि (सम्बद्ध)। देवो विगय्य = विकस्त । विश्रप्रण प [विक्रयन] अन्य विक्रो 'एरेक्कोप्रीन्स वि सुदुर्श्वविद्यालस्युत्ते

(सम्म १४) स ६८४) । विभव्यमा भी विभव्यन्त्री क्यर ध्वी (वर्षेषं २१)। विभव्भ देखो विद्वन्य (प्राष्ट्र १८३ पत्रम ₹ €)1

विअन्त देवो विश्लंभ = वि + वस्म । विस महर् (ब्राइ ६४) । विञय देवो विजय = विजय (घोरा वद्य) । विभय विभिन्नी १ विस्तीर्श विकास (महा)। २ प्रकारित, देजाना क्रुपा (विदे २ ६१ भागक २ ६)। परिस्त 🖠 विवयं = विवयः

[पश्चिम] पनुष्य-तोक से बाहर खनेवारे परी की एक बाधि जरतीकांची गर्बी **धपुग्मनस्थी शिवयास्त्री' (भी २२) । केदो** 

पित्रर सक [ाय + पर्] विहला बुनना-

७ ६ ज ११७ शि पाछ)।
विजयित हि [याचित] निकने निष्पण
हिमा हो वह विद्युत (महा)- 'पिमसोक्स्स्तु च्या हो वह विद्युत (महा)- 'पिमसोक्स्स्तु वस्तु बहुत्या निर्माण इसा तुरुम्म' (जिन्न ४१३)। विज्ञक यक [सुज्ज] मोहमा वक करणा। विभन्न वस्तु ११२)।

विभाग पत्र [पि + ग्रह्म] १ वस वात्र, सीए होगा २ स्वक्ता, ऋला। वड़ विश्वस्त्र (स ३६० सुर १ १२०)। विश्वस्त्र सक [शोवय] मनबूत होता (संस्थि

३२)।
विश्वज कि [विष्ठज] रे हीन सर्पपूर्ण (पर्याः
रे ५—पव ४)। र प्रीह्म कित्र, वस्यः
(ह्मा २)। रे किह्म क्यापुर्वः 'विष्युक्तं
प्रमुख्यः स्थारिकः क्याप्तं 'विष्युक्तं
प्रमुख्यः ह्वरीति वदः कित्रक्तं क्याप्तं (पाः
रवः)। केत्री विश्वजः विष्कतं क्याप्ताः।
विश्वज्ञं स्थाः

विक्रज एक [विक्रज्य] विक्रज बनाना। विक्रम (स्था)। विक्रज क्षेत्रों प्रजाह = विक्रज (वे ब, २१)। विक्रज क्षेत्रों विद्युः = विक्रण (सेत्रेष ४४)। विक्रजेस्क वि [वे] सैन्हें, सम्बा (१० ३१)।

विभाजिम वि [विभाजित] १ नात-प्रस्त नष्ट (ये २ ४१, ४४)। २ वतित, दवक कर स्पि हुमा विभाविस छक्त (वास)। विभाज सक् [वि + पंछ ] १ सुम्ब होता। २ सम्मत्तिक देनेसाः विकास वास नर

२ सम्पर्वास्तर होनाः चन्तर कीहा मुह वस्त्यु निम्नवरं (धीते)। विश्वास सक [सि + कस्तू] विकासः विश्वास स्त्रकं कर्षः हे ४ ११४)। वहा

विश्वसंत, विश्वसमाण (बीगः गुपा २ )। विश्वसायम् वि [विद्यसम्हः] विश्वसित करोतामा (पर्व)। विश्वसायित्रः वि [विद्यसितः]विकवित क्रिमा हुमा (मुगा २२३)।

क्रिया हुमा (पुता २२२)। क्रिजिया कि [विक्रसित] विकास प्रस्त (बारी) पाय पुर २, २२२ ४ दत स्रोत)। विक्रम केलो विज्ञह - कि + हा । संह विव्यक्त केलो विज्ञह - कि + हा । संह

विकारण न [वितरण] प्रदान पर्पेष्ठ (पंचा विकारण को [विधाविका] रोग निर्धेष ७ १ उप ११७ दी पष्छ)। विचार, या देवाई (४ ० ४१)। विचार, या देवाई (४ ० ४१)।

विज्ञानरी की [विज्ञानिजी] व्यक्षेत्राची
प्रवन करनेनाची (खाया १ २—यन करे)।
विज्ञानर केती नागर। विचायरेड, विचानरिंड
(याना २, २ व १) सूच १ १४ १०)

(धार्वा २ व १ स्मृत १ १४ १०) विद्यानरे, विश्वतेष्टका (यूप १ ६ २६ विते ११६। सूप १ १४ १८)। वह विद्यागरमाण (धार्वा २ २ १)। विद्यागर केवी वाण्य (धार्वा)।

पिश्वामय केवी वाण्य (यावा)।
विश्राण यह वि + ह्या वालगा, माहूव।
करता। विधाएह, विधाएति (यस मा
४०) विधाएति (यि ११) विधाएति
विधार्योद (यस्य १ — व ११) वहुः
विधार्येव विधारमाय (यौत उहः)।
सेह विधार्यिका विधारमाय (यौत उहः)।
सेह विधार्यिका विधारमाय स्थेत उहः
विधार्येव विधारमाय (यौत उहः)
सेह विधार्यिका विधारमाय स्थेत उहः
विधार्येव विधारमाय (यौत उहः)।
सेह विधार्यिका विधारमाय सेत क्या)।
हिसाण व विधारमाय (विधारमाय सेत क्या)।

'एक'रि प्रस' । दुबब्दे निरास्त्रपारिक्षण पुनिसार्थ (श्रष्ट्र १९)। केबो विभाग । विद्यान हिंदिया । दिस्तार हिंदार है। हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार है। हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार है। हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार है। हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार है। हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार है। हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार है। हिंदार हिंदार हिंदार है। हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार है। हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार है। हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार है। हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार हिंदार है।

विभाजन वि [यिद्यायम्] बातकार, विश्व (का पूरिरेष्)। विभाजन वि[यद्यान] पानना, मानून करना (स.२१७: पुर. १, ७)।

विसाणय केवो विश्वाजन (सन्म १६ मध धीन पुर ६, २१ सण्)। विश्वाणिञ्ज वि [विद्वात] बाना हुमा, निरंद (ध २६७) मुग ६६१ महा। सुर ४ २१४ १२, ७१ सिंप)।

१२, ७१ पिंच)। पिमान सरु [पि + जानच ] बन्म हेगा, प्रसद करना 'दुबराती में 'विचादा' पियानस पढ़मं ने निर्माण्डे गारी' (जन १९७दों)। संझ्या विज्ञास्य (राज)। विजार सक [भि + कारय्] विकृत करना। विकारिक (शी) (मा ४१)। विकार सक [वि + चारय्] विकारना

विभार तक [वि + चारम्] रिकाला वितर्ते करता। विपारित (माठ कर मन) विद्यारिक (स्त ११)। वह विपारचेत (मा ११)। कनक विद्यारिक्षेत (मुग १४०)। स्त विद्यारिक्ष (मिन ४४)। क विभारिणिक (मा १४)। विभार सक [यि + नारम्] काक्रा चीरात।। विधारे (सप) (निय)। स्त्रु

विभार थुं [बिहार] विकरित प्रकृति का किल करवाला परिणान है १ २६ पडड़ा पूर १ २६ प्राप्त ४१)। र तर्व-निर्णंय (मटकः विकार १: वं १)। र तर्व-निर्णंय के प्रपुद्धत राज-रचना (वो ११)। १ बमान तोच, प्रस्तुणी वक्करणात्रों प्रस्तुणी कर्या-प्रस्तुला राज-रचना (वा ११)। १ बमान तीच् वाहर बाना (वा १ १)। ६ विचारणा ७ पाचनका परिवर्ष र १। ६ विचारणा भावनका परिवर्ष र १। ६ विचारणा (प्रिणे)। पाचन प्रीयाकी एक प्रवार का नान

(उप ७२० दीः महा) । भूमि 🛍 अभूमि 🕽

विद्या-करायदा भाने का स्वान (क्रम छ।

विभारण देवो बागरण (क्रुप्र २४४)। विभारण वि [वैद्युरण] विश्वरण-विभवीः विभारण वे ज्याम होनेवामा। वी विभा

(तत ११)। मिजारणा श्री [मिचारणा] विचार, विषये (का ७२० टींडस २४७ पंचा ११ ६४)। विभागाय प्रविदापाठी भेट गाठ (याचा **ももえる**(を): विश्राविश्र देवो बायह = म्याप्त (वर्षेतं 2=4)1 विभास र् [विभारा] १ ईंड फर्वर की फ्ला-कुराधन, 'कुन विवास मुद्दे' (सुध १ ५, २, ६)। २ प्लकाट (यज्ञ २, १)।

६ वृंत एक देव-विमास (सम ६२) ।

विभास दे [विकास] प्रद्वाता (पि १ २ व्यक्ती। विञास देवो पास = ध्यास (एव)। पिभासइत्तम (हो) वि विश्वस्थितको विक्रीस्त क्लोबला (नि ६ ) । विभासन वि [विक्रसक] उत्तर देवी (गुपा 42 )1

विधासर वि [पित्रस्या] विकलेपाया সমুক্তা(বহু)। पिभासि ) वि विश्वसिम् जिल्ला केवी विज्ञासिक 🕽 (विषे शंबुवारे शंद)। विभाइ एक किया 🕂 क्या निकास्य करता । को विद्यादिकारि (बोर्स २२६) ।

विशिष्ट बंदास्वाका (अन १ १ दी)।

रादी (चा ४७६) नार-मल्लकी ६)। २ विशिव प्रवाह । ३ विशिष्ट प्रवाह । ४ वि

विक्षण वि [पिक्रीण] १ विकास क्रमाः विद्यमुक्ती (क्या) । र विश्वित क्या हमा (वे १ १) क्यो विकिल विक्रित विक्ष्य वि [वितीर्थ] दिया <u>ह</u>मा प्रतिव (Al fact fint a fait

पिडडम देशो विद्यक्तिका (धप ११ टी~

विश्वविभ वि [पिक्कि] विद्यारिक (प

विदेव सक वि + कुल निमम्बद्ध सेल्य ।

मिह्न देशो विभिन्न । बहु- बिह्न विभाव (बन्ह

विद्यक्तिप्रवादि जिल्ली स्वाह कैया

बिह्यका वि [स्मितिकाम्य] स्मृतीय हुनए

हुमा (हर १--पत्र ४४१, प्रशः, कृत्य) ।

पिइगिंडा ) देवा बितिगिक्स (पानाः

विश्वनिष्ट वि [क्यविष्ट्रप्त] हर-स्थित, विप्रकृत

इषा (भय १ १---पत्र ३६) ।

विश्वगिष्या ) क्या स्वा) ।

भित्रगिण्य देशो भिन्द्रिण्य (क्स) ।

विद्वांत केरी बीम - बीनम् ।

पिश्रमीय देखी विकित ।

४ ४४४४म् महा)।

विद्रतिह (क्याया १ १४ धि—पत्र १०७)।

पद ३७)।

24X) 1

244) ;

(55 t) :

विभाग्न र् [दे] चोद उस्कर (दे७ ६ )। विभास नि स्मार्थी कुछ भोद्यं विवास परिपद्वे देशम अहिन विकास वरिपद्वे देशम्, क्लिकेट नियानं परिपदे खार्च (भाषा २ १.२,४)। रेखो याछ≖माता पिभास पेको थिपास (एन) । पिभास्म देशे पिभासम् = विवासक (ठा R R-48 00)1 विभासम् देवो थिआरण = विकारक (योव | विकाह दें [विवाह] १ व्याह, परिजयन ६६३ निषेत् हिल्ला प्रदेश)। विश्वाद्यमा देवी विश्वादवा = विश्वादवा (विवे tre ti fit tto)!

46

विभारणा भी [पितारणा]

विभारत वि विचारको विकार क्रजबाता

पिआरि वि विचारिम बिगर देवी (पीत) ।

पिआरिअ रि [पिपारित] निवत विकार

विभारिभ नि [क्लिरिट] ? बोला इपा

धारा रुपाः 'पर्राथारियमरे महाकार्य-

सीडे (एनि १२)। २ क्सिएं क्या हमा

पिआरिश वि [पितारित] १ वर्षित, दिया

मद्य काचिया सिरोहरा विवासिता विदी

(स ६६७) । २ द्वय हमा विश्वतारिक 'बड

पुर पुत्रस्य पहुं विद्यारियों (सूपा १२४)।

विभारिभा भी दि ] प्रशंक ना भीतन (र

पिभारित ) वि पिभारपन् विकासकार

पिआरक जिसायुक (शांत्र है २

यिआस देयो विआस = वि + वास्त् । वद्य.

विभाव स्पो पिधार = वि + शरम । इ.

विभाष प्र [विश्वयं] सम्या सोम्ह सार्वकाव

(दे ७ देशे क्यू मिता १ ४--पद ६३)

इ. इ. इ. १०३ १२ ८ इस प्रमान पारितीय

[पारिम] भित्रल में नूबनेशका (सावा

१४१) । 🗱 🔳 (नुना १६४) ।

वियाखिपय (नयनि ३६ ३७)।

१ १—-पन ६० १ ४३ बीप) ।

विवासन (प्रतर बर)।

क्या क्या हो बहु (दे १ १६८)।

ठवाई (चर ६१६) ।

श्रीरा तथा (श्रीत) ।

**■ 98}** |

(पाउम क दें)।

विभागरणा.

बिड्न देशो बिजिल (मतक स २६६ ७४ )।

विइचित् (री) देखो विविचिय (सम्ब

चिद्रम देखी विद्यान = वितीर्ण (पुर४ ११)।

विश्वमिस्स वि [स्यक्तिमध्य] मिमित मिला

विष्ठ वि [ विद् विद्वस् ] विद्यानाः परिकतः

क्रमार (सम्म १ १६ वर वर्ष की पुर

१ १३४, युव २ १ ६ ३ रमा)।

"प्यक्रम को ["प्रकृत] र विद्यान आय

प्रकारत । २ विद्यान् द्वाय किया हुआ (सन ७

१ टी-पद ६२६ १० ७-पत्र ४१ )।

विकास वि विवादी विवाद रवित कार्य

पुण्यवस्थितम् स्था विश्वता य पुण्या मस्य

विकास [विवृत] १ विस्तृत। र म्या-

विद्रम (पप) रेखो विभाग = वियोग (हे ४

विश्वविका की वि विवर्षिका रोक्तिकीय

समक्रिया सेवया सस्त (सिरि ११७)।

मरशा मीव (भन १ ७)।

पामा दोव का एक मेद्द 'केनि विजविद्यपामा-

पिडेंज सक [वि+पूज] विशेष क्य से

बिइस देशो बिदिस (स ४४ )।

विद्रशा } देवो विञ≈विद्। विद्रशाणं}

विश्च देवी विभ = विद् ।

ह्रमा (भाषा)।

(सम्म १२)।

\* ( E) 1

क्साय (हेर १३१)।

44) 1

१४६ मुपा ११

प्रतिराय

री-पत्र

**4**₹.

१३१) विकद्ये (शाचा १ ६ ४ २) । विश्वक्तस्य प्रविद्यारकपे वर्षे प्रविद्यान (मूप 1 1 2 13) 1

षित्रच्या देवो वि-त्रच्या = विद-वृद्या । मित्रकार्थ वे विश्वभव्यक्ते विनास (वेदा

20 ta) 1 विउद्यम भक् [स्मुद्र + यम् ] विशेष स्थम करना। बद्ध, 'वरिष्टवी' चित्रद्यमंताण'

(पत्रम १ २, १३७)। विकास सक [ दि + सुघू ] कामता। विचरमञ्जू (मन्द्रि छए)।

विबद्द सक [ वि + कुट्टम् ] विच्छेर करना विनाश करमा । इक्र. विवट्टिचर (ठा २ १~--पत्र १६३ क्स) । विकट्ट सक वि + श्रीटय ी तीव शावना। विष्टूद (पूर्ण २ २ )। देख विडट्टिस्ट ए

रे पीड़ा संदाप (सूम १ १२ २१)।

वित्रद्रिम वि क्यित्यत्वी को विरोध में

बन हुमा हो यह निरोधी बना हुमा (सुम

वित्रह एक [पि+साराय] विकास

करता। विकास (हे ४ वरे)। कर्ने,

(कार १---पत्र १६)। विषट्ट यक [यि + यून् ] १ अलब होना । २ विक्ष होना। विवद्वति (सूम २ ६ १) निस्त्रेच्य (ठा द शे---पत्र ४१८) । वित्रह सक वि+वस्य । शिक्सेर करना। २ मुसकर माना। विस्कृति (स

१७ )। संझ विषद्वार्ण (माना १ व १ ९)। इक वित्रहित्त्वयं (ठा २ १~-पव 33) 1 बिडरू देवी थिमरू = विवृत्त (कप्प)। विडरूप म [बियर्तन] निवृत्ति (योग ७११)। यिष्ट्रभन [विद्वहूम] १ विच्छेर । २ ग्रासी त्रमा यविचार विश्लीर (योग वहरे) । ३ वि विन्देश-कर्ता (धरीसे ६६६) । विष्ठहुणा की [विकुटुना] १ विधिव पुटुन ।

₹ ₹¥ c):

বিভাগির (ছ ६७६)।

भोक्ता। विदेशित (सूप २ २ ३१)। विषयि भी [ब्युध्धान्त] प्रतक्ति भ-विकारिक प्रथमार्थ (मन १ ७)। विश्वति भ [स्पुद्धान्ति, स्वयम्बान्ति] विषयः यह [स्पृत् + म्रम् ] १ वरियाव करता। २ प्रसंदन करना। ३ धक ब्यूट

(पाम कुमा उत्प ७२० टी)। विक्रम कि विद्यागी हरू चीट प्रस्क-दिन ( Q 4 mm) 1 पिउत्त कि [विश्वक्त] विरक्षित विमोग प्राप्त (शर १ १२४) १ कस्य प्रस्तु। वित्रता देवा विश्वत व वि + वर्तम्।

वित्रत्यिक्ष रेको वित्रद्वित्र (हुन २२४) 1(3)1 पित्र देशो विदश्च = विश्वत (भाम)। विषय वि विस्ता र बाग्व (मुपा १४ )। २ विकसित (स ७६८)। 1 (25

विरुप्पक्क नि विमुत्प्रकटी प्रकट--व्यक्त (मम 💌 १ धिउष्माध सक विस्तु + आज् ी रोमना दीवना चमकना। यह विषयभाषमाण (भग ६ २—पत्र १७६)। वित्रव्याञ्ज सक [स्युद् + भावस्] शक्ति करता । वक्क विज्ञासार्यास (भग १ २)।

वित्रम वि (विद्युस्) विद्वान, विज्ञ । विद्या ताप्यक्रिक संबर्ध (सूच १ २ २१)। षिप्रर देखो भितुर (नेग्री १३४)। मिठक वि (विशुक्त**े १ प्रमृत प्रशुर**। २ विस्तीर्थं, विकास (स्वाः मोप)। ३ उत्तम भेहा (भग १,३३)। ४ भवाभ सम्भीर (प्राप्त)। १ वृ सन्तिर के सनीप का एक पर्वत (परम २ ३७)। जस द्र विरास् एक जिनकेन का नाम (चय ८८६ दी)। सङ् क्ये विशेषि मन-पर्यंत्र नामक क्रान का एक मंद (कम्म १ कः बावम)। २ वि चन्द्र बदमनाता (क्रम्पः चीप) । विकाषिकेत (बाम ७ १३c)। देशो विपुद्ध । पिडव देखो विचयत् = विक्रिय (प्राप्त ६ २) ;

विषयस्य देखो विभासिय ⇒ व्यवद्यमित

(स्क)।

होता मट हाता मरुद्र । ४ करण्य होता । रिक्ट्रमेटि (मन' टा ३ ३--पन १४१)। चेंद्र. विड⊶म्स (तुस १११६ उत्तर रद्रसमार ⊂ १२)। 84

विद्याय र् [स्युत्पाद] विसा प्राच्यि-वय

(सूचर ४ ३)। पिडम्ब सक वि+क वि+क्क्वे ] १ बनावा--विका सामन्त्री से स्टब्स करना । २ वर्तरत करूप अस्टित करता। विकास विकास (भव कम्फ सहा पि ६ व)। मका विश्वमित्त । भीत विश्वमित्ततीत (यथ । ३ र—पत्र १प्रदेशे विद्वविकस्सामि (पि १३३)। वह वितरममाज (पुन २)। क्षकः विद्वक्षित्रज्ञमाणः (धा १ --पत्र

विद्यक्षिका विद्यास्पर्व (पदा वि ६ ६ मन क्सा स्पा ४७)। हेह- विक्रीव्यक्तप (पिय )। विष्ठव्य न विक्रिया १ तरीर-विरोध स्रवेक रहक्यों और क्रियामों की करने में समर्थ मधीर (पत्रम १ २ १ कः पद १६२ कम्म १ १७) । २ वर्ध-विशेष वैक्रिय सर्वेट की माप्ति का कारक सुद्ध कर्म (काम १ ६६)। ३ नि वैक्रिय शरीर से संबन्ध रखनेवासा (काम ४ २१)।

४ २)। एक वित्रक्षित्रक्रम वित्रक्षिक्कण.

विषय्या रे मनावट, राक्टिकिसेप से किया बाता वस्तु-निर्मास (सूप्रनि १६३ भीपः पक्रम ११७ ११ पत्र २३ )। २ राष्टि-विरोग, वैक्षिय-करात राष्ट्रि (देवेन्द्र 31 )1 विजयनाव वि वि । रे विस्तोर्ध । बन्ध-सील

विक्रम्ययाः 🛍 [विक्रिया विक्रवेणा]

(\$ 2 272)1 विद्यास्त्र वि विश्विपित्त, विक्रवित्त र विदुर्वेष्टाकरस्ताता (उप ३६७ दी) । २ विक्रिक्त छाँरवाला (उन्न १३ ६२) पूर्व १३ 3 2) i विश्वविकास कि विश्वविका कि किया है। निर्मितः बन्धमा ह्या (वन मक्क मीरा) मुता

) । २ भर्बद्रल, विकृषित (इद्व १) । विज्ञस्थित विविधियको देखिन राधर हे बर्जाध्यभः

शंकन रक्तनेताला (कम्म ४ २४)। क्यो रित्रसंबद [स्पुन्+सूत्र्] केंग्जाः विक्रीता (पाचा १ १ २ ६) विक्रीतरे (स्वयार १६.१)।

उप इ. १. इ. स. १ भ प्राप्त ६३। ग्रॉन महा) 'बिटबेर्डि' (बेह्ब ७७४) 'बिटबार्टी'

विउस कि विद्यस् दिक्क परिकार (पाम

(सम्बद्ध २१६) । वित्रसमा देवी विश्लीसमा (हे २, १७४) यक् )। विश्वसम्बन्ध न वियपस्थन, स्वत्यसन् १ अस्तम अस्त्रमा २ त्रांका मामस्त्रान 'ता से यो पुरिन्ने निक्तमसुकानसम्मर्गति नेरिस्य सामाधोस्य प्रयास्थ्यसम्बद्धाः विहर्णये (तुब्धार क्या १२.६—यव १७८)। t it fenne 'erreventure fest मबी′(मशाद १⊸–पत्र १)।

वित्रसम्बद्धाः की व्यवक्रमना प्रसम्ब क्रेक-परियाप (६५ १७ १--- पद ७२६)। विरसमिय के विभोसमिय (एव)। पिडसरण न [ब्युस्सर्जन] चीप्रमान (वंड **t)** 1 वितसरणवा **ध्र**िव्युत्सर्वना] स्पर देवी (क्य स्त्रासा १ १ — पत्र ४५)। विस्तव केवो विश्लोसव । एक विरुत्तवेचा

(क्बार १६६८)। विरसम्भ को विरसम्भ (पर्य २, ४---पव १६१)। विचसविय देवो विभोसविय (अ. ६--४म विवसिक्ता देवो विभासिका (भाषा १. ६ ₹. २)। विद्यसिरमदा के विदसरमया (स्प

विहस्स धर्क [वि+च्छ] विशेष भोतना।

रिक्स्पेडि (बूच १ १ २, २३)। विकस्त क्ला पिट्रस्य | विद्यान की तक धानस्य करमा। विक्सरीत (सुध १ १ 3 34): विष्ठस्समा को विश्रोसगा (ध्य १ ६, क्या ३ १)।

विक्रिसच वि [क्युरिसव क्युरिसच्ड] ध्यविभिष्ट, क्लाब्यस्थुक (सूध १ १ १ विकस्सिप नि [ब्युपित] विशेष का ते पत इष्य (तूप १ १ २,२३) ।

विवृद्धिय वि क्यिप्यासी विविध स्टा है ध्यमितः 'चंबारं हे शिव्यस्तिया' (सूध १ १ २ २३)। विकास सक जियह | प्रेरलाकरना। श्रेक विडिटिचाम (इस १ १२)। क्टिश्व कि विक्यों रे परिका विशास । र

व देव हर (इ.१. १७७) : देवी विवड । विकरिक्र वि कि मह नम्ह-प्राप्त वि ७ **♥₹)** : विकसिर स्कृष्टिम् सम्भागिणनार करमाः विक्रसिरे किन् संपारतंत्रतं (प्राचा 1 (5 2) 9 विकाद प्रेमियह रिजना-विदेश (र्यमा क

थिएश कि [ वितेशस् ] म्यून्य प्रकार 'पर्वतिवर्षस्यताचि यस्त्रता स रिक्यबंधि संबच्या । विञ्चुञ्चूमी बहुबद्देश शेहेड सब्द्रीड निएकम म 👣 पुरुष, 'चुनवानए विए

क्छ बेल मुक्त्यक्रमुत्तनं विक्लं (पर्व्ह १—पत्र ४)। विएस द विदेशी र देखना परदेश (चिरि ४९७) महा)। २ इक्टिन मन बर्धन वान । १ व्यवन-स्थान (वा ७६) । विभोज इं [वियोग] पूचार, विवोद, विद्या (स्वय १३) प्रति ४६। हे १ १७७: सर

४ ११२ मध्य)। विजोइभ वि [वियोजित] पुष्य क्या ह्या (विश्वकारक्ष्य सा सरश्र **₹₹#}** 1 विभोग देशों विभोध (दुर २ २१६) ४, रेररः सम्रा विभोगिय वि [विभोगित] विशेषकार्य

(वर्गीव १६१)। विधोज धड [वि+धोजम्] स्वर करता। विधीयवेदिः (तुस १ ६) हे ११)। विभोजय वि [विभोजक] वियोजनारक (# WX ):

विभोदर पुं [बुक्केंदर] धीमसेन, एक नाएका (नाट-बेडी ११)। विश्रोस्य न [वियोजन] विमोन, विमान (पुर ११ ११)।

विभोरमण-पिषंप

धोव १२६)।

विज्ञोत नि नि जिमा प्रोप्युक्त है अ ६६)। विभोषाय वृं [स्वयंपात] अंग नाग

(पात्राः सूम १ व १ ४)। विजोसमा वृं [स्पुत्सर्ग] १ परियान । २ तप-विशेष विशेष्ट्रपत से शरीर पात्रि का स्थान (धीरो)।

विश्रीसमण वेशो विउसमण (रण्ड २ २— वह ११६ २ १—गह १४१)। विश्रासिय हि [स्ववस्थित] जनगन्त क्रिया हुमा (क्रष्ठ १ १८)। विश्रीसरणसा देशो विउस्सणसा (शैर)।

दिमोसरायमा वेशो विजयस्तामा (स्था) ।
विभासय एक [ स्वय + घामयू ] उपरात्त्र करा। उरहा करा, वर्ष केरा। वेष्ट्र 'तं धारित्राय प्रक्ता अरहा करा, वर्ष केरा। वेष्ट्र 'तं धारित्राय प्रक्रिक केर्मा विभाग प्रक्रियोस्य 'प्रक्रियोस्य 'प्रक्रिया 'प्रक्रिय 'प्रक्

िक्योचित्रा च वित्रसम्बद्धाः चीरवात कर (बाचा १ ६ १)। विश्वासिव १९ विश्वसिव चित्रके चनात किया हुमा (नूचा १ ६ ६)। विश्वासिव १६ [विश्वेद्धित] कोश-धीत निपत्रस्य नेवा विश्वेदित] कोश-धीत

विमासिय वि [विम्रोजित] कोरा-पीर्व निरावरण नंबाः विव(रोगोसियवरासि— (पद्मा १ १—पत्र ४१)। विमासिर रेको विकसिर (ति २१४)। विमासिर देवो विकसिर (ति २१४)।

(सीते)। विस्तान [दे] वाध-विशेष (धन)। विविधिकान दि [दे] १ पाटिन विद्यारितः। २ पास (१० ११)। विद्युस दू [दुश्लिक] कम्यु-विरोत विका (हे

विष्णुज ई विभिन्न विकार विकार (है ११२०-२१६ वर)। विद्यापक [वि+धर] यनव होना। विद्या (क्राफ्ट करो। विद्याप है केलो विज्ञास (है१ २६२) विद्याप है पर पूर्व १६१८। यसम्

वेद १०० प्राप्त" प्राक्त २३० या २३० य)।

विश्वण केवी विश्वण = स्वक्ताः पुत्रपती में विश्वण (र्रमा २ )। विश्व १ [विष्य] १ व्यंत कि विश्वचय (गा ११४: स्वाया १ १ व्यंत्र २६)। २ स्वाय महेसिया (१ १ २१ २१ स्वा)।

भिंदिकिंश } 'प्रसार्' प्रक्रिति (ट्रसांति )
ट्रबाई करमापनाई कम्माई (धिर्द १७) ।

रिपित्त पार्थि कम्माई (धिर्द १७) ।

रिप्तित पार्थि कम्माई (११) फिटीलपार्गिण पर्वर्थि (त्रका १ १६) ।

पिंदिकिमा की [क] फटी पोटमी प्रकारी

में 'विटकु"; 'ठाव दुवरेण विका समुद्रमा
कर्कारदिवार्य 'टीए दिटविसार' (गुणा
२११) ।

पिंटिया की [क] १ फटी पोटमी (गुळ २

2. वर १८२ टी) । २ प्रतिका संस्थीपक

प्रमणी में 'बीटी' 'क्यारोवारि प्रखा क्यायवर्णिट्या मित्रावर्ग (प्रता १११) 'मेंक्यायां प्रोत्ता (प्रता १११) 'मेंक्यायां प्रशिक्ति (टिन्ग्रेग्नीह यह योज् बीटा (ट्रिज्यन्तर) रे स्थित् प्रति प्रज्ञ क्या (वर ११५) 'प्रहाण को न बीहर विद्या क्याया के ब्यायां (प्रका १२) १२ एक वेक्यायां के ब्यायां (प्रका १२) १२ एक वेक्यायां के ब्यायां (प्रका १२) १२ एक वेक्यायां के ब्यायां (प्रका १२) १९ एक वेक्यायां कि मिस्सूच्यां क्यायां हि विद्या धीन किंदर्ग (या १२३ वें) वेचन का चार्च विद्या महिंद्यां हो च्यायां १२ प्रसा करताः

(समय ७३)।

विष् तक [पिट्ट] रे जानका। र प्राप्त करताः बामां क ज विषयि तथा तथा (तथा र र र रण)। वक्ष. विद्माण (तासा र र—पण र र, विचा र र—पण पण)। विद्य देवो र र – पण (तथा र तथा)। विद्यारा र रेचो पीतार (तथा र कार— विद्यारा र रेचो पीतार (तथा र कार—

कत (ती थ)।
विद्वाद्व कि [ब] १ उज्बेब देवेयावान ।
२ संपुध सोरम या क्ष्य-कंड । ३ जिलाय स्थान । ४ स्वर्षण के महि विद्वारिकापुर रुप्ति स्थान । १ स्वर्षण के महि विद्वारिकापुर प्रस्तुत्व के स्थान के स्थान । विद्वास्थ्य के स्थान स्थान । विद्यास्थ्य के स्थान स्थान । विद्यास्थ्य स्थान । विद्यास्थ्य (त्यास्थ्य स्थान । विद्यास्थ्य स्थान । विद्यास्थ्य (त्यास्थ्य । विद्यास्थ्य स्थान । विद्यास्थ्य (त्यास्थ्य (त्यास्थ्य । विद्यास्थ्य । विद्यास्थ्य (त्यास्थ्य । विद्यास्थ्य (त्यास्थ्य । विद्यास्थ्य । विद्यास्थ्य (त्यास्थ्य । विद्यास्थ्य । विद्यास्थ्य । विद्यास्थ्य (त्यास्थ्य । विद्यास्थ्य । विद्यास्य । विद्यास्थ्य । विद्यास्थ्य । विद्यास्थ्य । विद्यास्थ्य । विद्यास्थ्य । विद्यास्थयः । विद्यस्थयः ।

विभाग म [स्वयंत] धेरत. वेयता 'क्यंब विराय'—(पारि २२)। विभिन्न हिंदि जो वेचा मना हा बहु, विभाग कि विव्हा को वेचा मना हा बहु, विभाग कि विव्हा कि विद्या (वि ११३)। विभाग कि विद्या कि व्यक्त भवमान हुमा विश्वविद्या व्यक्त भवमान हुमा विश्वविद्या विभाग भवमान हुमा विश्वविद्या जापान-किय भोजुला श्रीवा कि (श्रि)यो व्यवस्ता विभाग कि [विद्यात] पापान-किय भोजुला श्रीवा कि (श्रि)यो व्यवस्ता विभाग कि (व्यवस्ता १ प्रदे)।

विस्ति (ती) की [चिंसति] बीच २० (प्रती २)। विव्हंच कह [चिं+कृत्यू] प्रत्या करणा। विकंत्य कह [चिं+कृत्यू] पूर्व करणा। विकंत्य कह [चिं+कृत्यू] हिल जाना विक्रत होना। वह चिंकत्य कहा [चं काना वृत्य रे ११)। विकंत्य कहा [चिं+कृत्यू] र स्थाना। र प्राप्त करणा होना। र स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान होना है स्थान स्था

करम । विश्वपद (मुख्य १ १)। संझ-विश्वपद्वा (मुख्य १ ६)। विश्वप वि [चित्रस्य] कम्प द्विपत (वंबा १८,११)। विस्टुटक [सि+छन्] काटना। कार. विकट्टत (संबाद )। षिश्चीत्व वि विकृत्ती काटा हमा (तेंद्र YY) I विकट्स देवी थि अट्ट (स्पर) । विकाद एक [पि + हुप्] बॉबना। विरुद्ध (पर्श्वा १ !-- पत्र १४) । बङ्ग विश्वद्रमाण (ज्या) । विक्त देवो विक्तु । दिक्तीत (मूच १ ३ २२) विक्लाहि (पहर ११ — पत्र १)। विक्रमुवि [विक्रिति] विक्रेपक विवासक 'याना कर्रा विकता व दुक्ताख व सुद्वाख व'(उत्तर १०)। विकर्ष देशो विक्रंथ । विकरवर् विकरणी (बना रूप १२४) । यह विश्वत्यंत (यूपा 324) ( षिकस्थण न [विक्रस्थन] **१ प्रतं**खा पानाः प वि. प्रशासका (पूर्ण ३३ वर्गीव 14) 1 विक्रमणा की [विक्रथमा] प्रतंता काना (भिष्ठ १२०)। विक्रम्प देवो विभएम (क्स वेचमा) । विक्रम्यम् न [विक्रम्पन] केल, काल्या 'पमोर (पर) नाम-विकासकारित व (परा t t--पन t )। विक्रप्यका रेकी विकायमा (कामा र 15-79 71 )1 विश्रप्रिय रेको जिमप्पिश्न (एव) । विक्रय देवो विगय = विक्रुत (प्रश्रुद t— वक १६ १ १—वक ४६)। विक्रय रेको विक्रम (रिव)। विदर वह [भि + कृ] विद्यारपाध । कन्छ. विभीत (प्रमु ४०)। विकरण व [विकरण] विक्रेपछ विकासः 'कम्बरमीकरणकर' (साम्रा १ क-----वक **113**) 1 विषयक देवी विगयस (दे यक) । विरम्भ वेदो विभस्त = रिस्कः 'क्या चरित्रका तुरमा (इत ८) विदिश्त वेश १ ३३)। थेवी दिगस = रियम ।

বিভ্ৰম বি (বিভ্ৰম) বিভাগত ম**ুক্ল (ই ৬** 

५५२

विश्वसिय देवो विश्वसिक्ष (क्य)। विक्रा रेची विगदा (६४ ४६)। विकारिण वि [विकारिम] विकार-पुष्क **बाबो प्रविकारियो पद्भागी** (प्रवम २६ **e** ); विदासर वेबो विशासर (हे १ ४३)। विकिन्न देवी किंगड़ = विकृष्टि (विसे २१६८)। विक्रिया देशो विशिषण (वीष्य २ ६ रो) १ विशिचणया देवो विशिचणया (योवम २ १ टी स्न ब दी— पत्र ४४१)। विकिट पि विकासी १ अवक्या पिकिन्न उ वडोडियंदी (महा) । २ क. बदावार नार दिनों का उपवास (संबोद १८) । देखी विगिद्ध । विक्रिय सक [क् + क्ट्री देवना । विकिशह (≹ Y ₹₹) I विक्रियम न विक्रयम् विक्य, देवना (चुमा) । विकिन्न विकिन्नी र माह, मरा ह्या (प्रव) । २---रेको विद्वाग विकिस = विकीर्छ (के)। विकिति देवो विगड् = विक्रीत (प्रकृ १२)। विक्रिय विकियो । पारट (परार १—यव १)। २ देवी विद्रापन = विकीर्छ (प्रवाह १ १---पत्र ४४)। विकिय देवो पिगिय (पोषश २ ६ दी)। विक्रियम [वि+कृ] १ विकासा । २ सक प्रेंग्या । ३ विकासा । क्याह विद्वार्थ बिब्बिटामाण (यक ११४) एक)। विक्रिएन देवो विकरण (हेन ४१) । पिकिरिया की [पिकिया] र विजय किया। २ विधिष्ट विया (राजा)। देवो पिक्टिकरिया। विश्रीण देखी विकित्स । विक्रीलय विक्रीलय ( **41**1) i विश्वीरत देखे विस्र । विद्विष्यभावि [विद्वतिस्त] बाधव ह्य (**1**(1)) विक्रम पर [विक्रमण ] प्रमा करता रदाय। एक विदुक्तिये (पाचा २ ।

٠ () ا

विश्वय्य एक [चि+कुप] क्षेत्र करता। विद्वयम् (या १९७) । विकुक्त केवी विज्ञान विश्व मार्थ + **इ. पूर्व** । विद्यांति (पि १ )। मुका, विश्वनिद (पि ११६)। यनि विकृत्विसीत (पि १३३) । सह. विद्वायपाया (हा १ १--वन १२)। विक्रम पू [विक्रश] बल्स्य धर्मा इस (बीप स्त्राया १ १ टी-पन ६)। विकृष्ट सक वि + कुल्य दिवस्य करना। विकृषे (सिंध १३६) । विकुण सक [वि+कुमय] **१**छा से सुह मोइना । विक्छेद्र (विवे १ ६) । विकास र [विकोच ] विस्तार, श्रेमान (वर्गचे १६१) मन १, ७ दी---पत्र २१६) । विकास देशो क्षितीय असे प्रवस्तं विकास धी नेपी श्रीइपंशारी (नेश्य वर ) ! विकोषण न [विकोपन] विकास, प्रसार प्रमाना 'बीसमद्भिकोनसङ्ख्या' (सिंह ६७) । विश्लेषणया 🛍 [विश्लेपना ] विपाद-'इंडियरवर्षिकोक्छमाप' ( झ. ६------------\*\*\*\*) 1 विकोषित वि [विक्षेतित] दूरम मित्रुश (पिंड ४३१) । मिक्सेस कि [बिसोड़] कोश-प्रहेत (dg ₹): विश्रेस १ वक [विश्रेशयू] १ कोह विश्रसाय पीत होना स्कित्य। २ कैयना। विकेश र (हि. ४. ४९)। सङ्ग विश्वसार्थत (प्रस्ता १ ४-- पत्र ४०) । पिस्सिम है। विसेशियों १ विक्रीत (इमा) । २ नोक-धील, मंगा (खन्मा १ --पद १९३)। विकास [वि + भी] वेशना । वह विकास (रहम २३ १)। क्यक विद्यासमाण (रघ **₹. ( ७**२) ғ पिक्य 🗓 [पिक्य] वेक्स (पवि १०४) बरा है १६)। विक्रम ध्वी विद्यव ( वर् )। विकाह वि [मिकासिम्] वेपनेशामा (दे र £ ) i

यिष्यंत वेची विष्यः।

विष्ठंत विकित्तन्त् । १ पण्डमी सूर (एम्पार १ — वन २१ विते १ ४६ प्राप्त १ ७ कम्प)। २ दुंग्हमी तरक-मूर्ध्य का बांध्यां मरकेनक- नरक-स्थान विदेश (देश्वर १)। विक्रेश्वर की शिक्तान्ति विकम्प पराज्य

विकास की [विकासित] विकास निवस्त (एस्सार रेक्-भन ११९)। विकास रेको पिक्कीम = विकास (क्रीफ

६१)। विद्रमण्य न [थिकस्यण] विकय वेचना (सुरा६ रूपहिश्दो)।

विद्यम सक [वि+कम्] वराज्ञम करना युक्ता विज्ञमाना। भवि विक्लमस्वरि

(ती) (तार्च ६) । रिश्वस (दू [विकस] १ तीर्म पदाव्य (दुरा)। १ तार्च (स्वक्र)। १ एक एका का प्रम (पुरा १९६)। १ एका पता का प्रम (सह)। पुरत ["दुर] एक पता तार्च (तार्च ) पुरत ["दुर] एक पता तार्च (तार्च ) पुरत ["दुर] एक पता

नाय (वी २१)। साय पूर्णा पुरु एका (नहां)। सेण पूर्णिने एक एक-दुमार (मुल १९२)। हस्न, हस्य पूर्णियों एक पुत्रक्षित एका (सार्थ्य एक समात १४६ सुना १९२ सार्थ्य)। विकासमा पूर्णिक स्वारका कोस

(देश ६७)। चित्रहमित वि [विक्रसिन् ] परात्रमी सूर (कुमा)। निरुष कि विकासनी स्थानन वेकीन (पर

विक्रम वि [विक्रस्थि] स्थानुस वेचैन (पव १६१ प्राप्तः संबोध २१) । विक्रायसाण देवो विक्राः

त्यद्वायमाण ब्या ।वद्या । विद्धि देवो यद्यद्वः ति नास्प्रीवस्कित्यो पुरत सम्बद्धत्वरच न ते पुणिस्तो (संबोब १६) ।

विधिक्ष वि [च] इंस्कृत, गुवास हुमा (स्त ७ ४९)। विकिट्स वि [चिक्क्ष्य] किल काटा हुमा (स्टब्स्ट १ चलप १४)।

विकिन्द देवी विकिन्द (प्रेमीय १०)।

विक्रिय सक [यि + म्ह्री] वेवना । विक्रियस (श्राप्त) । कर्यं, विक्रियमिति (पि ४४०) ।

बद्धः, विविद्यणेतः विविद्यणितः (पि ११७ सुपा २०१) । संकृ विविद्यणिकः (नाट---सुच्या ६१) ।

विकिर्माज १ वि [बिक्रीत ] बेबा हुमा (सुगा विकिय वेशरा भाषे) । विकिय देशो विउठमा वेशिया क्यांवि

दिसक्यो मुरो वर बनिवासीय' (मुरा १८७), क्यांविदिस-कामो देवुवर (सम्मण १ ४)। विविद्धर सक [चि + कृ] विवेरता विद्यापना, कितना। करकुः विविद्धरिक्तमाण (सम

१४)। विकितिया की [विक्रिया] विकृति निकार 'वीय नमसारप्रि विकितिया कृशार' (सुना १९४)। येको विकितिया।

विकास केवी विकास = विकास (सुर १, १९४, सुना १०४)। विको सक [वि+म्सी] वेचना। विकास

विक्तेसद (हे ४ १२: प्राप्त करना १४२)। इ. विक्रेख (६ ६ ४ : ७ ६८)। विक्रेयुम वि. हिं] विक्रेस, वेचने सीरस (६ ७ ६६): विक्रेय प्री विक्रेस विक्रास करना स्था स

द्वीह चिकुतना (देव २०)। विक्रोस कर्ण [वि + कुर्यु] विल्लाना। चिक्कोस (गो) (गुम्ब २०)। विक्कोस द्वीहे स्थान क्यह (दे७

ब<)। २ धरासक वीच का भाव (दे क दक्ष के हे, १७)। १ विवर, विद्वा (ते १ १४)। विकास पु [विस्करम] १ विस्तार (पएल

१— नव १२) ठा४ २ — एव २१६ हे ७ दब पस्य)। २ वीगाई भोडुरिव द्यीव एमं नोक्यग्रह्सं प्रमामवित्वक्रिया पहणतां (सम २)। १ वाहुक्य स्कूला, मोटाई (सुक्य १ १ — २४ ०)। ४ माठक हा एक निरोव (सम्मकरसं थ)। ४ माठक हा एक

पंप (क्यू) । १ द्वार के दोनों तरक के बीच का मत्तर (ठा ४ २----वन २२४) । विकर्शिमाय कि [विक्यम्पित] निष्य, रोका कुछ (सम्बक्तनों ८)।

पिक्सल न [पे] नार्द, काम अस्त्र (दे ७,६४)।

विकलाय वि [विक्रत] वरा-पुक्त, इत-बर्ख (भा ७ ६---पत्र ६ ७)। विवलार कर्फ [वि + चूं] १ विकला स्वत-विवाद करना। २ केनाना। ३ दवर

क्षर जेक्सा । विस्तादर (क्प्यू) विस्तारिका (तत्ता २ १७) । वतक विस्तारिकामाण (तता) विकस्तावण न [विक्रमण] १ विसास । २ विकस्तावण न [विक्रमण] १ विसास । २

(पुरा ५४)।
विकलाय की [किस्पाति] प्रविद्धि (येक्)।
विकलाय कि [किस्पाति] प्रविद्धः निष्कृत
(नाम पुर १ ४६ रंगा महा)।
विकलाय कि [के] किस्य स्वयः कुरिवत
(वे ६ ६)।
विकलाया कि [के] श्रेमान्स सम्बा। २
वर्षायेश्वी। १ त समस् (१ ७ ८ ८)।

प्रतिप्रोही । १ न वक्त (१ ७ ८०) ।

वि स्कापन केवी विक्रियम् (कहा) ।

विविक्तक वि [विविद्यम् ( र केवा हुमा
(ताम कस यवन) । र प्रान्त पागत
पश्चतिविक्तकले विद्यम् (क्र ७२० टीः

वे १ १११ महो) ।
चिक्तिकर केवो विक्तस्य (विक्तिकर्यका (क्रा)।
विक्तिकरिक्ष वि [विक्रीयो विक्तर हुमा
क्रिया हुमा किना हुमा (पूर ४, २ ६
मुग्त २४६ सवन)।
विकित्तन कक्ष [वि + शिव्यो ] र दूर

करना। २ प्रेरना। १ वॅम्बना। विशिवकद (महा)। विकित्तवयान [किसेपण] १ दूरीकरछ। २ प्रेरव्हा (वर १४)। विकास पुर्विक्षण] १ ब्रोमा क्षेत्रो

विश्वेवों (प्राप्त)। २ उपाट, स्वाधि, खेर (वे र १)। १ ईपा फेल्सा इन्स्वेदीस्य (प्रेयवा १११)। ४ केल्सा केरल (प्र १८२)। १ मू प्राप्त-पिरोप प्रवक्ता केल्स्स स्था सर्वत (प्राप्त १ ४—पत्र ११२)। १ विस्त-स्था (यु २८२)। ७ विस्तेव वेटे

(स ७६४)। तसैन्य, बरकर (स २४ ४७६)। विस्तेरवणी की [सिक्सपणी] कवा का एक भेर (अ.४.२—पण २१)।

दीव या पार श्रामेनियमाला यक्त (काम ३

रहार ३ रक्ष रक्ष भी ४१)। र 🖦

विश्रम = विक्रम (च्या का दर≤१ पैका

१४ ४०) । विस्त दु [विद्या] सम्बन्ध

(एक्ट ६२)।

२ २, ६१)।

विगराणा को [विश्वर्यमा] फैरन (का)।

भारमस्वाचा क्रप्तेनावा (अपि) ।

किस्पन नि [क्सपन ] प्रतेश करनेताता

सूख ११४ (२: विक ६३१) निर्दिय

(समार १९ २१) उत्तर १६, पिंग

१११)। यह विशिषेत विशिषमाण

(सत्तक २६२ दी; घाषा)। एउट विशिषि

कर्णविभिचित्र (विट १ ४, धाषा) ।

के विगिचित्रं (संब ११८)। इ विभिन्नियस्य (पि १७ )।

विशिवज व [यिवेचन] परिष्ठापन, परिश्रमाय (पिंड ४६३ वस)।

विभिन्नणया विश्वित्या] १ निर्वेष विभिन्नणा विकास (स्र द—पत्र g--99 पितियोणआ ) ४४१)। २ विषयाय (योषना २ रुष प्रश्मोप ६ ६ ८७)।

विगिद्धा की विचिक्तिता विदेश वंदम बहुम (या ६ पहि)। विशिद्ध देखी मिकिट्र 'मध्रे तर्व विविद्ध कार्च योगाक्तेससंसारा' (पटम २ वर्ष ४ २७ वच्छ २ २४ उत्त ६ २४३)। समग र् ( अपक्री वासी सादु (सब)। असिय वि [ भक्ति इ.] संयोगार पार या उपने

विभिन्न देवा दिना र = विक्रूत (बोपमा २०६)। पिगिद्धः } पकः [चि + ग्छः] विशेष न्हान विगित्यभ होना चित्र होना । विनित्ताह, विविधारणा (पि १३६ प्राचा २ २, ३ २द)।

धाधिक दिनों का उपराध करनवासा (क्या)।

बिगुज वि [पिगुत्र] १ द्वल परित (विरि १२३३ प्राप्तु ७१) । र सन्त्रुपुस्त प्रतिरूप (पंचा६ ३२)।

विग्रच नि [निगुत] । विषक्षक पनभोष्टि (भारेर)। र जो गुलापक क्या हो यह, जिनहीं पाल गून गई हो यह, जिल्ही फरी-ज हुई हा मण सहुदर्जानुती' (भा १४-पर्वात ३७)।

शिरुप्प दवा शिक्षेय ।

विगुम्बमा रेवो विश्वसमा (छ १--पत्र 16):

विगुम्पिय रक्षो वित्रस्थिम (परन ११ 12) :

विगाइक वि [दिगादिया] विशवत दोन प्रकट क्या स्या हा यह (क्ल) ।

विनाय मक [ दि+न्यपय ] १ प्रकारिक बस्साः ३ डिस्स्यार करताः ३ करोहत करना। भीर 'व गुत्र गुक्त स्वास्त्राह्मक भो नुर्हात्स्वं पर्वावद बण्डलं विद्यालन (मेंब १ ) । कर्द विद्वारम् (बनवि १६४) ।

वियुव्यक्षि (भ्रष) (भ्रवि)। संक्र-विगायिचा विगाबहत्ता (कप: सामा १ ११--पत्र

२४४) । विनायण व [यिख्यपन] विकास 'वहवि य बंधिरवंदी सोसमग्रीबर्धनसम्बद्धां (मावक

44c) t विसाह प्रे विभव् रे पक्र्या, बांक (ध्र २ ४-- पत्र वद्)। २ शरीर, देह (पायः स

७२६ नुपा १४)। ३ पुद्ध सङ्गाई (स ६३४) । ४ समान बादि के समान बर्धनाना बाक्य (विशे १ २)। ६ विनाम (ठा १ )। ६ बाइन्डि बाकाछ 'नरनदर्धनगहर्प' (यस २ ८)। सङ्घो [मात] बोहवासी मति वक्र गति (ठा२ १ — पत्र ४६ अय)। विगादिय वि [ वैप्रद्विक] राधेर के प्रयुक्त विष्यद्विय सम्मयहरूको (प्रमृह १ ४--- पत्र **9**€)1

बिगाहाञ वि विप्रहिकी पुर-प्रिक भी विग्यहीए बनायभानी (नूब ११३६)। विमादा (पप) श्री [विगाधा] पन्द-विशेष (पिय)। विग्रुश्च विदि नियास्त स्थि ह्या

(म्बि)। विग्रुख रवो विग्रुख (वर्गव १०) । धिगाय देवो थिगोव । संक्र थिग्गोविसा (इस पीर)

भिग्गाम वृ [मे] भारतता स्मार्तता (**१** ७ ६४ मनि बन्ध २३)।

विग्गायणया भ्ये [विगोपना] १ विरस्कार । २ फरीइंड (चर) । षिग्प 🛊 [पिछन] १ धन्तपन, व्यापाठ

प्रतिकरण (नुबा ११६, दुमा। प्राप्तु १४ १३४, रम कम्म १ ६१ वर् )। २ वर्ग विटेड मामा के बीर्य साम साहि साहित्सीं का पातक कर्न (कम्प १ १२ ११)। दर वि विस्ते प्रतिकवन्त्रको (क्रम १ ६१)। ६वि वि विचनायक (पुरुष)।

(३६ रि. विश्वही विष्यवाचा (बुर १ ४३)। शिषा वि [शिगुद] न्दु-र्यहत 'तह जनत विषयित्रांक्षित्रं व य श्रीव्यतं सद्दरं

(एला १ १ धि-ना १३१)।

यिग्यिय वि [विद्यात] विष्न-पूछ (हम्मीर ty) i यिग्पुट्र वि [यिपुष्ट] विस्थाया हुम्य (विपा

१ २—नव २६)। देखो विघट । विषद् सक [वि+षद्य] १ स्विक

करता । २ विनास करता । विपटटेइ (उद्)। विबद्धम व [विबद्धत विवास (गार)। विषद्ध म बजी विष्ठ हुए (य.व.)।

विचरव वि [विचस्त विमस्त] १ विशेष क्य सं मन्नितः। २ भ्यान्तः भादितिधरमस्य मक्समं (मद्रा प्राप्त)। विचर देवी विगमर (उन)। यिभाय पू विभावी विनास (कुमा)।

विषायम वि विषात ही विनास-कर्जा (पर्मेसं १२१)। थिपुट्ट म [निपुष्ट] निक्य मानाज करना (पर्यहर ६--पन ४६)। देखो थिरघटु। षिपुस्स यक श्वि + पूर्णय ] इसला।

**रह- मिपुरममाण (तुर १ १ १)** । विषयम् ति [विषयुष्टः] वशुर्धातः, मन्त्रा (उर ७२० दी) ।

विषविया सी [विवर्धिता] रोन-विरोध पामा (धन)। पिचित्र वि [पिचलित्र] बतायमान हाने

बासा (सल्)। मिचद्विय पि [विचसित] पंत्रम कता हुमा

षिपार रेखे विभार = वि + बारम् । विवान रीत (मुख्य १ ४)। पिपारम वि[विचार इ]विवार-क्वाँ (रंग्र)।

विवारण देवो विभारण = विवारण (इ.स 160)1

पिनारणा देवो निभारणा = विचारणा (वर्ष १ ६)।

विपाछ व [विपाछ] पन्तराव (हे प

विचित्र रिवित द्वाहवा (१०

विचित पर [वि+चिमायू] तिबार करता। विकत्त (पदा)। वह विचित्रेन (बुर १२ १६६)। इ विशिव्यक्त विभित्रम (रंब ६ ४६ हव १ )।

w

(भारसम्ब)।

ex) :

(मा ४६)।

रामः मानु ४२) । २ धद्वतः चाचर्यं बारकः 'विद्या विविद्यन वास्त्रिकर्न' (सुर १३

प्रेमिक रैक्सला स्वत (खाया १

१ कम्प)। ४ मनेक विशेषे बृद्ध (कम्प

मुण्य २ )। १ पू पर्वत-विदेश (प्रश्न १

६--वन १४) । ६ नेश्नेन धीर केश्चरि

नामक इनों का एक बोकरात (स्व ४ १-

इ.किनार पर स्थित पर्यत्त विशेष (इक)।

प्रकार हूं [ प्रभृ] १ वायदेव और व्यूच्यारि

नामक इन्हां का एक नीक्सन (स्राप्त रू---

पत्र १६७ ६३) । २ चतुरिनेशय नेतृ की

विचित्रता का विचित्रता] उपने बोक में

ध्यनार्था एक दिल्लुबारी देवी (झ ७---

**बन्न ४१७)। २ संपालाङ म प्**रतेवाली एक

तक वाति (पर्श्वा १—गत्र ४६) ।

कुह (मान)।

मानवा tvt)।

दुक्क्म-क्क्रा करना (इ.३.)।

विक्तेह (ती द)। देखी विक्रम । विधिकी की कि नाक-निरोप (एन ४६)। विष पुरु [दे] सूत दुलने की किया (एस विचितिक्या की [विचिक्रिसा] एंडब्ट **e**3) : वर्ग-कार्य के फब की तरफ वंदेश (सम्पत्त विवाद [इंसस्तेम्] १ बोच सस्य भिज्यम्य य सरम्भयो कामन्त्रो परमप्रयहेट पिचिट्टिल वि पिचिटित र विस्की को किन की नदें हो बहू (मुपा 🕫 )। २ न. नेष्टर, प्रमण (उप १२ धी)।

पाइअसरमहण्यको

(१९५४ ४२७) कियो सहं दुवदनावनिक्ये (तिसा १६)। २ मार्च, रास्ता(ह ४ ∢२१ कुमाग्रं भविः)। विविध ) एक विक्रियों १ कोज विव स्क [दे] स्वीप में प्राना। विकाह विचिष्य<sup>)</sup>कलाः २ कुब सदि प्रका। (स्वि)। विक्लिद्धेत (वि.१.२)। वक्क विक्लिक्द्रेत विवयम न [विक्यभन] प्रश्. विनश्त (विशे २११)। विविध वि विविध से इ विवामेकिय वि किन्स्यास दिती १ जिल तराह का किविशतको अमोहि (बहुछ किन प्रशीसे निभित्त । २ घरमान में ही

बीमधर्म भारो हिन्युस्य विस्तरिक्यामा (संशोव )। विचि क्ये [म.चि] तरंग करकोच (वस्म t 4 xt): पत्र १६७) । कूड ई ["कूट] श्रीवीच नरी विच्यु १ देवी सिंचुअ (इस १६६ वि विरुष्ट्रभ र १ वस्स १-वर ४६)। विष्णुद्र की [विष्णुति] प्राप्त, विशास (मिने १) : मिकाअयन दि] उपवान, योगीया (दे ७ विष्याचेयो विभ=निद्

(\$PP) 1

(दश्यमधि देशे (एन)। विश्विमय । [चिचित्रित] विवित्रता ह पिपृति (शी) का विभिन्न (गर---

पित्रुक्षण न [पित्रूजन] दुरुदुर करना

सिन हो कर किरयंकित तोड़ कर सीवा

কলোঃ 'বিশ্বাহৰ দিন'ৰ বুলালেটিনী घणुपुरतोति' (परार) । वह, विच्छात्रीत (FPF) 1 विविद्याश्र कि [वे] र पाटिय किसारिय। २ निषित प्रता दुमा। ३ विस्थ (दे ७ et) i

विच्छिम केवी विक्रिम (उठ १६ १४०frestest): पिच्छित् सक [वि+विद्] तोङ्गा प्रवास करना । विनिद्धारह (पि ४ °६) । प्रति विश्विदिद्वित (रि. १११) । वह विश्विद् माण (भग ३—वन ३६६)। विविद्यास्त्र निविद्यास्त्र प्रवास क्रिया [स्य (विशा १ २ ठि—्यत्र २०० सार— रुष ६६) :

विविद्यम-विविद्याल

२ ठाटबाट, सबबब वृगवाम; 'सङ्ग

विच्यहेर्यं संबद्धसम्बद्धाः बुरसमोद्शाः

कमताबद्धे उ एमा परिशीमा (मुद्द १ १६६

कुप्र ४१३ सम्मत्त १९३३ वर्मवि वर)।

थिष्यकृष्टि क्ये [विष्यद्वित् ] १ क्रिटेन नमत

२ परित्यान (प्राप्त) । ३ विस्तारः 'निम्पन

केनवाचीमावन्त्रिविच्य-( क्या )हिकारमी

विष्यकृष्टिमं विष्यकृष्टिती १ परिस्थकः

'पामुक्त विकारियो प्रवहतिका चरित्राचे वर्त

(पाम सामा ११ ठा च भीप)। २

विभिन्न केंद्राह्मण (से १ ४१)। ४

विकास कि बाल्का कि (कृमीर १७)।

विच्छद्वेमाण स्नो विच्छद्व = वि + श्वरंव ।

विष्युद्धि क्यो विष्युद्धिम् (गाट—गावती

विष्णाय वि [विश्वत] विवित्र तथा है

विश्वकृषि वि [विश्वकृषि] १ विकासकृषि-

वाला कुरीब (प्रस् १ १--पव १४) F

विच्छादय वि [पिच्छायित] निस्तेन विधा

विष्युत देवो विद्यान ( वर् ४ )।

रे पूंदक नरक-स्वान (क्षेत्र २०)।

हुमा (सूपा १६६) ।

पीड़िय (सूम १२ ३३)। देखो विक्लायः

(Raft t &t):

१२६) ।

ह्मा (विसे दर्द)। विकास र् [किस्थास] परिकास, नूसीस

विश्वद्व स्ट [वि+द्वर्षयः] परिस्थार

कला। यह विच्यामाण (सम्बद्ध

१ — व्या २३१) । संक्र-विच्याद्वरूषा

विण्यक्ष र् [विष्युर्दे] १ ऋष्टि, वेसन

वड )। रे विस्तार (दुमाः नुग्नः १६२)।

पिन्छ दुर्व वि] १ तिबह बग्रा (३७

६२: नक्क स्टब्स २ ६ वर्ग स्टब्स्

बंपति (पामः देश १२ मी ११ १६।

विच्याय वि [विच्याय] निस्तेन कान्ति-प्रदिष्ठ-प्रदेशः (नुर४ ११ कम्यू) प्रापु १९७ सहा क्या । विच्छाय सक [विच्छायम्] तिस्तेत

विकिश्चित्त को विकिश्चित्ती र निष्याक रवता (वामा स ६१%) सुवा १४० मा २६०। गुउड)। २ प्रान्त नाव (सूर ६ ७०) । ३ श्रीमराम (वा ४००) । विक्रिया के विकित्यका (विपा १ २ ध-

पथ २६) । विविद्युष सक [ वि + स्पूरा\_] विशेष क्य से स्पर्ध करना । कबक्र विविद्धारपमाण

(कप्पः भीष) । विक्छित सक [यि + क्षिप\_] देश्या । संक विकासिम (शार-केंग्र रेड) ।

विकास ) देवा विज्ञास (का २३० की विक्रूम रे द उस वर १४६ मानू १६३ सामा १ व-पन १९६)।

विक्यूडिय वि [विच्यूटिव] १ विद्वा हुमा जो प्रतम हुमा हो विरहित बहुनि इ बाबरदेशं सभी समुद्रामी व्यक्ति विश्व (१०६६)हिस्से (धन्त्रा १४६) । र मुख (स्थ)।

विषयारिक नि दि । प्रान प्रसम्ब (पर )। विष्कृतित्र वि विष्कृतिते । विषय वका हुमा 'कविमं विव्यूटिमर्थ परिमे' (पाछ)। २ श्रेट, जाहा हमा (छे १४ **७३) । ३ म्यास (परम २, १०१ मुपा ६** २१२ मुर २ २२१)।

विच्छ्रह सक [बि+सिप ] खेन्ना हुए करना। विच्छाद (से १ ७३ वा४२४ म)। इ पिरुद्धकार (से १ ११)। विकटह यह भि + सम ने विद्योग करता र्चवप्र हो उठना । विन्द्रीहर (ह ६ १४२)। भिष्यक्त वि [विश्वित ] र वेंका हुमा दूर किया हुमा (से ३ ११)। २ प्रस्ति (पाय)।

विषयात वि वि वित्यक विषयिक विषयिक विष्युश प्रायों (स ६७८)।

पिराह्तका देवो पिरहाइ = वि + विप । पिच्छम दे पि १ विकास । २ वपन (दे . . 11 विषया र् [बिष्युद्] १ विभाग प्रयूप्त

(विते १ ६)। २ विमीव (वा ६११)। रे बनुषन्त्र विनास, प्रवाह-निरोध (कृप्)।

विच्छभण व [विच्छदन] इन्ह छते (धन)।

विच्छेत्रम वि [यिच्छेत्क] विच्छेत्करी (चीप) । विच्छेद वि विच्छेदिन कार देवी (इप्र

विच्छक्त वि विच्छवित विच्छा क्या इपा (गाट--विश वर)।

बिखोदय वि वि विरक्षित (पवि)।

विक्रोड देने विक्रोत । संह-विक्रोडिव (धप) (है ४ ४३६)।

विकास पू कि विकर्भी नगर-निशेषा 'विषमें विष्योमी' (प्राक्त १८)।

विच्छाय प्रे वि विष्ठ, विदेश (भवि)। देको विषक्षोद्ध । विच्छोठ एक [कम्पयू ] कंपना । विच्छो

यह (हे ८ ४६)। यह विच्हीद्धेतः विच्छाद्वित (क्याः सर १ 2 8) I विच्छावित्र वि किन्यिती क्यामा हमा

(कुम्ह बढर) । विच्छोक्ति व विच्छोसित वैत क्या हमा 'नोम निष्योसिमं' (गाम)। बिच्छोब सक हि विश्वक करनाः विरोहत

करना 'काबेश करपेमी परोप्पर'

> द्विययनिष्वविष्यभावे । मक्षुस्क्रियमो एसौ

विष्योवह सत्तस्याएं (द १८६) ।

विषयां है [वे] विषय, वियोग (वे ७ ६२) # ¥ 384) : विवसीह ई [विकास] १ विकास के बेकू-

हाम भवी चत्रव चिम्नियमिति प्रणिष्ठ विष्योहाँ (या पुतारपक्षणीयमुखा विशुप्तकृतस्य विष्यादा (तम्पत्त १११)। २ श्रंबसवा (दा दु ११८)।

विश्वत्र सक [ पि + क्ष्रम् ] स्रवित करता ठएना । क्में विद्यक्तिका (सङ्गा) । पिछ्नाय वैको विच्छीन् । निष्प्रेयह (स १८६

हि)।

पिश्वद्र नि [बिश्रविम्] विश्वतः श्रीवनेपाता (क्ष्यू गर--रिक १)।

यिजोश देखो यिअस = वि + परम । बक्र विजीमंत (काम १८६)।

विज्ञह वि चित्रको परित्यक (वत ३६ दशः सुद्ध ३६ वह योग २४१)।

शिक्षण देशो सिद्धाप्र⇒ विजन । सरशासा बेक्षो इमो बिजलो (यहम ६६ १६) हे १ १७७) दुमा) ।

भिज्य स्कृति + जि १ जोतमा फतह करुता। २ धक अरक येथे वर्णना सरक पं पुष्ट होना । विजयह (पद २७६--पापा १६६६) 'विजयत है पएशा विहरेड जल्प बीचिक्समाही (बर्मीन २२)। इ. चिलंदक्य (पै) (कुमा)।

विजय १ विजयों १ निर्णय शास के मर्चे शा शात-पूर्वेष्ठ नियंब (ठा ४ १--पत्र १मद २२)। २ मनुष्यिकतः विशरी (पीप) ।

विजय दे [विजय] प्राध्य स्थान (रह ६ विजय पूर्विकामी र जम, औरत फराह (कुमाकम्म १ ६६ समि ८१)। २ एक देव विमान (बनु: सम १७) १०)। इ विजय-विमान-निवासी देवता (सम ५६)। ४ एक ग्रह्म, धाहोराज का कारहको या सतस्वनी भूकते (सम ६१ स्टब्स १६६) कम्म गामा १ व--पन १६३)। ५ भग बाम् मामिनायजी का चिता (सम १५१)। ६ मारतवर्षं के बीसर्ने मानी विश्वदेश (सम १६८ पर ४६)। ७ तृतीय सम्बर्धी के विता

का नाम (समे १६२)। द माधिन जान (नुम्ब १ ११)। स्मरतवर्षे में उत्पन्न ब्रिवीय बसबेब (सम बक्ष ११ व टी) बन् पद २ १)। १ भारतपर्यका भागो पूछरा क्तवेन (सम १६४) । ११ ग्याएउने पकार्ती यमा का पिता (सम १४२)। १२ एक राजा (ज्य ७६ व धी) । १६ एक स्वतिय का नाम (विपा १ १--पन ४)। १४ वववानु काह प्रमुक्त सामन-देव (संतिष्)। १५ जोबू क्रीप का पूर्व कार। १६ वस क्रार का

संविद्वाद्या देव (स ८ २—१व २२६)। रेण बनश समुद्रका पूर्वे हार। १८ इन्द्र धार का व्यक्तियांचि देव (ठा ४ २<del>००</del>१ व २२६ न्द्र) । १६ तेर-विदेश महाविदेश

वर्षे का प्रान्त-तस्य प्रदेश (स्य --- रव ४६४)

इक वी ४)। २ इस्करी 'अवस्तु विकर्तनु

बब्रावद (राज्य १ १---तत्र १३ मीपः

च्या)। ११ प्रधाना करके बहुता करुन्न

(बुमा)। २२ विकासी प्रथम सहास्वी के एक दैन घाचार्ये (पटन ११= ११७)। २१ बम्बस्य (एव) । २४ समृद्धि (एव) । २ १ वात नी बएक का पूर्व द्वार (दक्)। १६ नासोड समूत्र पुष्कर-वर्षीन तवा पुथ्कपेद समुद्र का पूर्व द्वार (राज)। २० स्वड पर्वेद का एक कुट (टाय-पन ४१६ इक्ष)। २ एक राजक्तार (यस्य ११)। २८ छन्द-विरोप (रिय)। ३ वि जीवनेनाबाः 'बरनुरए निरूपादिवर्गनमधेयवरे' (धम्मच २१६)। चरपर म विरापरी एक विद्यावर-नगर (६४)। जाला की ियात्रा] विजय के लिए किया वाता प्रयास (वर्नेष ११)। इन्द्रा औ विद्या किनय-मूचक नंधे (मूस २६)। देव प्रदेवी वक्षपानी राजानी का एक पेन बानामें (क्रम्म १)। पुर न [पुर] नवर-विधेव क्षेष्ट प्रमुख्य स्थान विकास क्षेत्र होत की परित्री परमशावती कामक विजय-धन की एउकाती (इस २ ६ -- पत इक)। साम पुनियानी एक वैन सामाने (x )। क्ये कि [बन्] किस्सी निवेता (दि १४)। "पच न ["पर्व] नेत्य-विकेश (क्यार्टिन्सक) । वद्यमाण प्रेय विभागानी पाप-निरोप (विचा १ १)। बाद्यदेता क्ये ("५ जयरना) विजय-मुचक पत्रारा (चीर) । सायर पूं िसागरी एक नर्परेग्री चना (पत्रन १, ६२)। सिंह, भीड़ पं "सिंडी १ दर्शस्त्र प्राचीन बैना-बार्वे (कुरा ६२) । २ एक विद्यापर राज दुशार (परम ६ १६३)। सृरि दू ["सृरि] बग्रदुन क मनय ना एक नेब धावार्य (बर्नेकि ४८)। सत्र १[सत] एक व्यविद्य कैन बारावें वा बाधरेत नृति के शिष्य ने (पत विजयंश । धी विजयमी १ वस की (बाजपंती है बाजरें। यह (कुरेंग १ १४) २ एक एको का बाब (दर ७२ दी) ।

की बीबा-रित्रिका (विचार १२६)। थिकया की थिकया र भवतान **श**बित-नावजीकी माताका नाव (सम १६१)। २ पांचरे बबदेव नी मादा (धम ११२)। १ देवरर वर्धन पूर्वे से एक प्रथमी स्व ४ १--पत्र २ ४) । ४ विद्या-विदेश (पर्स्य १४१) । १ वर्ष-वच्छ वर ख्लैवाकी वच्छ विल्लुमारी देवी (स्त च—पत्र ४३६)। ६ पोचर्वे कामधी एवा की प्रध्यमी-सी-एन (सम. १६२)। ७ विजय गामक देश की राजकानी (सम २१) । ८ वजा नामक विकय शी सब्बाओं (धार, १—पन न ३ इक्)। ६ पछ की प्राक्ती एक (पुरुष १ १४)। एक बेदिनी (नृपा ६२६)। ११ मध्यान विमयनानको की शासन-वेदी (पत्र २७ संदि १ )। १२ मनवान गुमतिनावनी की दीखा-रिधीयका (सम १२१) । १३ एक पुष्करिक्षी (\$#) I ৰিয়ত বি বিজ্ঞীং কৰ-মীৱে (ব্যুচ)। २ व. जत-पीत पंक (स्प्री ६, १४)। देवो विज्ञान । विज्ञह सक [वि+हा] परिधान करना। पिनहरू (रि १७३)। यह विवहित् (वत <. 3) I विज्ञहुना स्मे [विहान] परिप्राप (क व ३-पत्र १९१) । ৰিআহ্য দি বিজ্ঞানীয়ে নিৰ পাতি কা दूबरी तयह वा (पर १२ मी)। विज्ञान देवो विभाग=वि+शाः संद ষিত্রামিকা বিজ্ঞামিন (কম)। विजायतः | वि. [विजायक] वास्तेवाता निजागय ∫ रिक्र (माना भूग्रीन १८८) । पिकायुत्र वि [किस पिकापक] कार देखो (बाह्र १)। विजारीभ (ती) क्वी विजाइय (बार-चैत ) 1 विज्ञाय न विही नाय निर्माताः भारती रिनार्ष (पाप)। विक्रिअ रि[पिकित] परापूर हारा ह्या

(नर ६. २३: प 💌 🕽 ।

विञ्च वि [विद्वक्त] विश्वक (वर्षेत विजया से विजया ननसन् स्वन्तिसन tur) I विञ्जरि (घर) की [विष्नु] विकरी (पिनो । विशेष्ठ वि [विश्यष्ठ] मध्यम 'तेष्ठ विनेहा क्रीमद्रा वं (बेडच १४३) । विज्ञवस्य देशो पिज्ञयः = वि + वि । विजास सक वि+पाजम 7 विभोद करना यसन करना। संद्रः विदासिय (र्वेष १, १२६) । विजाजण न [वियोजन] वियोव- विद्य (मोक्क १) । विकाजिभ वि [विवाजित] कुछ विवा ह्या (रूप २०)। विज्ञायावहरू वि [धवाज्ययिल] विश्ववक मनय करनेवासा (ठा ४ ६--पत्र २१*०*८ 21E) 1 विजोहा को [विजोहा] क्षत्र-विशेष (दिन)। विकासक [सिन्ह] होसा । विश्वक विश्वस (पब् कमा धर, महा) विज्यादे (सुध १ ११ ६) । बहुः विद्यतः विद्यमान (सर २ १७६३ वंबा ६, ४७) । विज्ञासक [भीजयु] पंचा पद्मासा ह्या करता । कर्प, विश्वित्रवद् (स्थि) । क्यूक् पिञ्जिलीत (परन ६१ १७- परना ६६) । विकार् [यदा] विविध्सक हुनीय (पुर १२ २४० वट- विक ६४) । विकार् व [दं] देश-दिशेष (प्रजन ६०, 42)1 थिक दे [पद्सू विक्र] परिका, बावकर (देर १४० दुमाः प्राक्त १ का मुख १ क 1 (1 विज्ञ देखो दारिस (परम १७ ७ )। विम वेको विज्ञा। समूर (धा) वैको विज्ञानहर (वि२१६)। दिव वि विभिन्ती षात्र यम्दाशी (प्रस्ततः १४३)। विका देवी विश्वयु (पुत्र १६६) । विज्ञवभ केले क्लिया (सं २,२४४ वि ( 1) 1 विजय व विदा≨] विक्रिया (उर ८,१ः)

मीर) ।

रहित (निद् १)।

1 2 2 2) I

विद्याल ट्रे [विद्याल] १ मरकावास-विशेव

एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)। २ वि यस

क्रिक्रस } न दि विजली कर्मम वैक

भिक्तुख ) कांदी कादा (प्राचा २ <sup>१ ५</sup>

विकाबिया भी विष्युत् विवसी (इप

२०६)। विद्या की विद्या। ? शक्त कान, यपार्व कान सम्यग् कान (उत्त २३ २ एकिः धर्मवि ३१ हुमा प्रामू ४३)। २ मन्त्र क्ष्वी-समितित सद्धर प्रवृति । १ सामनावाला सन्त्र (पिक्र ४१४ सीप का १ ४ धी-पत्र १५६)। अञ्चलकासन [ अनुप्रवाद] कैन द्रीग प्रन्ताश विशेष, दसवा पूर्व (सम २६)। चारण र्ष [ भारण] राफि-विशेष-संपन्न मुनि (सम २ १--पत्र ७१६)। वारणस्थि से "चारजखेंचा राष्ट्र-क्रिशेष (मय २ ह)। धुष्पवाय देखी बगुष्पवाय (चन) । भुवाय न [ नुवाद] दश्चर्य पूर्व (सिरि २ ७) । पिंड पू िपण्ड विद्या के क्या से मॉक्ट मिश्रा (मिन्दूरके)। संख वि वित्र विद्या-संपन्त (प्राप्तर)। स्य पूर्व कियी पळ्याचा (प्रामा) । "सिद्ध मि ["सिद्ध] १ सर्व विचामी का मनिपति, सभी विचामी संस्थलाः २ जिस्सी क्या से क्या एक unifent für gi gel gi an fernig भक्रदी विश्वासिको सः परस वेगावि सिक्सेक्ज महानिक्जा' (पानम) । हर पू ["घर] १ सनियों का एक वंत (पदम x २)। २ पृथीः, इस वैद्या में उत्पन्न (महा)। की. री (मद्भा छा)। १ वि किया-पारी-शक्ति क्रिय-सम्बद्ध (धीप रायः विश्व)। इस्सोयाच प् [ घरमापाच] एक प्राचीन वैन पुनि जो मुस्थित और मुप्रतिबुद्ध सामार्थ के रिप्य में (कप)। इसे की ["परी] एक वैन मूनि-राज्या (कप्प)। हार (यप) न ["घर] सन्द-विशेष (पिष) । भिज्ञापव (मर) देवो यंयायव (म्हि)। विकाहर वि [पैयापर] विवाहर-बंबनी भी. 'एसा विज्वाहरी वारा' (यहा) ।

विक्तु पू [विकृत् ] १ विकायर-वैश्व का एक राजा (पत्रमें १, १८)। २ देवों की एक बादि मक्तपदि देवों का एक मेद (पस्ह १ ४--पत्र ६a)। ६ धामसक्त्या शयधे का निवासी एक मृहस्य (सामा २—पत्र २४१) । ४ एक नरक-स्वान (देनेन्द्र २६) । ५ औ, ईशलेज के सोम सादि सोक्पार्सी की एक-एक बद्रमञ्ज्ञियी--पटयनी (ठा ४ १---प्तर ४)।६ चमर नामक इन्द्र की एक पटपानी (ठा ६० १—पत्र ३ २ स्थाया २—पत्र २ ११)। ७ पूंछी विजयी विष्युखा विञ्चार (हे १ व १) जिला या ११४)। ≖ सम्ब्या शाम (इ.१.३३) । १ वि विशेष इस मे चमकनेवाला विश्वक्रोयामिगुष्पमा (उत्तर२७)। इधर देखो यार (शीव १—१४ १४२)। इसार व डिमार] एक देव-वार्ति (भग इक)। इसारी की िक्रमारी विशिष्यक पर **रा**लेशली दिस्त्रमारी देवीः 'चतारि विरुधुकुमारिगहत रियाची पएएतामी (ठा ४ १--पन १६६)। जिल्ला (?) जिल्ला प्र िश्रिष्ठ व विभूते संबद्ध सावराज का एक यावास-पर्वत (इक' राज)। "तेळा पू िते ≈स् ] विद्यापरवंश का एक सदा(पडम ४, रव)ः वैत पूर्विन्ती १ एक अन्त इपि । २ उसमें पहलवाकी मनुष्य-वादि (हर ४ र—वप्र २२६)। दत्त दू[इत्तु] विद्यावरबंध का एक राजा (पडम 🐛 १०)। दाह पूं [ देंप्ट] विचावर-वंश में ब्रदाब एक चन का नाम (परुम ४, १०)। प्रदु प्पम प्पद्रपूर्िप्रम] १ एक वस्तरकार पर्वेत काश्चम (सम १ २ धिः ठा २. ३ — पन ६६३ ६, २ —पत्र ६२६३ वॉ ४३ छन १ २३ ६४)। २ पूट-विशेष विश्वकास वज्रस्कारका एक शिक्षर (जे ४) इस्त्री। ३ दन-विशेष, नियुद्धान मामक बधारकार पर्वत कामिन्द्रातादेव (वं ४)। ८ सन्देवंबर नामधन का एक मानास-पर्वत (स्र ४ २---पत्र २२६० इक)। ३ छन्न पर्वत का निवासी देन (ठा४ २--पन २२६) । ६ देवकुद वर्षे में स्थित एक महत्त्रहा (ठा ४, २,--पत्र

एक यक्ष (महा)। २ स्त्रसम् का एक सुमन (से १६ ८४)। ६ बद्धादेवसोक का र्रा (धव)। मुद्द पूं ["मुख्य] १ विद्यापर-नेश काएक सभा (परुष ६८ १८)। ३ एक घन्तर्शीप । ४ स्थका निवासी मनुष्य (ठा ४ २—पत्र २२६ इक)। सहार्व["सेघ] १ विष्टाबान सेव, यस-एदिय सेव। २ विक्ती विद्यनेताला मेच (भग ७ ६--पच ३ x)। यार प्रं विदार विवासी करना⊳ विधूर्-रचना (मन २ १)। स्रश्रा "स्या की [कदा] विध्युत, विजनी (तहर-वेस्सी ६६: इस्त) । ह्याद्व म [ छेसायित ] विक्यी भी तरह याचरण (ब्ल्यू)। "निक सिम न विकसित र प्रमानिशेष (पनि २१)। २ विजयीका विसास (सं४४)। "सिंहा भी ["शिस्प्रा] एक रक्तो का नाम (महा)। विञ्जूषा 🛍 [विष्मृत् ] १ विवती (गाट---बेखी ६६)। २ बिल मामक इन्द्र के सोम माबि वारों सोकपानों की एक-एक पटरानी 'निसमा सुमहा विग्युत्ता (? मा) घटला' (स ४१ — पत्र २ ४ इक्)। ३ वस्सेन्द्र की एक प्रश्न-पहिची (खाबा २---पत्र २३१ **६**क) ≀ विज्ञाशसु वि [विवृत्स्त्व] विजनी करने-वाचा (ठा४ ४--पर्व २६१)। |केबो विद्यु=विद्यु (इ. २ विकास विज्ञासिमा १७३ पर् १६१/ कुमा। प्राप्त पिञ्जूतः १९ माम पि २४४)। पिञ् देवो विज्ञा साव्य को [साव्य] प्रत्य-विशेष (पिंग) । मिळाम [वे] १ मार्नसे सल्लासे । २ निए (धवि)। सिज्जोभ 🖠 [विद्यात ] बद्योत प्रसासा 'जेम्बर्छ बीनियं कर्व निरुजुनिरुजीयनवर्ष' (हिंत १)। विकाह्य ) वि [पिदातित] प्रकारितः

मिजाबिय 🕽 चमरा हुमा (जाँद ११ स

१७६)।

३२६)। ७ न एक विद्यापर-नगर (इन्हें

३२१)। सई की मिती एक की का

नाम (परहर ४---पत्र ८६)। माछि पु

"मास्तिन्] १ पंचरीच द्वीप का समिपति

विरुद्ध स्व कियस | बीक्स वेस करम

मेक्सा। विज्ञाति (सम् ११११)

विरुक्त (ता ४४१) संक विद्युल (सूध

विश्क्त बक वि+ घट विस्त होनाः

१ १ १ १)। इस्ति विक्सा (वर् )।

विकास (बारग १६२) ।

विक्रम न चि नीम, बन्न देता नी इसी विस्म के विरुद्ध सकता कुमरमत् मन्ये (वर्यवि १) कान क्यानारलेख न विजनाह (? रं) नर द्यपारमाखेख পুৰিবৃত্ত বিশ্ববুতাই পতিওঁ शानोहरुवाम्म (स ११६)। विक्रम नि भिद्रा विवाहका चार तेरि देस बास्केल विरुद्धते केल है विरुद्ध (पा AAL) I विस्म देशी विरम् = धाव । विकासिक कि कि दे मिनिया क्यान्ता 'बीज्ख्युक्तपश्चनायनिज्ञाकिया' ( अप 💩 ६— लगा ६ ७ वन)। विष्यास्त देवो विषयस्य = विश्वव (भग ७ ६ दी--पद ६ दो । विकास एक विकास पाप्य**ी इ**स्थान योग्ड महिको कुल करना टेंग करना। विरुद्धमा (पारः पुत्र ११७)। कर्प विरुद्धिका (साथ का साथ ६)। योह. पित्रक्षेत्रणं, विरुद्धिय (वर्गेषं ११४ ध ४६६)। इ. विकास्तियस्य (परम ७४ 10)1 विश्मक्षय क्षेत्र [विष्यापम] दुव्यताः स्म रान्ति (स ४०६) सम्बद्ध १६२ दुव २७ )। क्षे पा(धवा( १)। विक्रसंबंध वि विष्यापित् । वस्त्र हथा कुत किया हुया ठेवा किया हुया (छ व १६) १२, ७७ व्या ६३६ व्यक्त २ ६२)। विस्ता ) यह [वि+ध्यं] दुवना ठंडा विवयसम् होना, इव होना । निकास (धा ४६ हे२.२)। यह विकासकोत (वा t () 1 विस्थान ) वि विश्वादी ( इस्स इस शिग्माण । प्रकॉन्ड (ते र ११) खावा र १<del>००० ६६ १ १४—वह १</del>३ ।

ब्रुडा मुना ४४८ जानू १३७ वज्य ६, १=२)। २ संझ्म-विशेषा विज्ञायनाय देशं संस्मिपेतल सुरुम्हिं (सम्बद्धरो २१)। विकास के विकास । विकास (गा 484) ( विक्रमध्यम देवा विक्रमस्यम् (इप २६४ ही)। विकास विश्व देवी विकास विभा (महा)। विक्रिम्बंडिय प्रेडिं] करन की एक वार्थि (पहरा १--पत्र ४७)। सिर्ट इ देशो विश्वं क (मल २३४) धन) : विशास एक दि । सस्यस्य करका सम्बद्ध करता दिवादना इचित्र करना, स्विदिष करता । व्हितिहि (तुब १ ११) । कर्न क्ट्राविण्यह पेया स्माह कि शास्त्रार्धीई (वेदम १६४) । वह विद्यालयंत (चिरि ११३२) । विद्वात र् [चे] यस्त्रस्थानं अध्यक्ता धपनिकता 'तुइ वर्राम बंगबी, विट्टाबे करार' बा बरवाडि किट्र सुनक्ष य न तेल के रिदासी (बार २४३) है ४ ४२१)। विद्वाञ्चम न [दे] असर केवो (य ७ १) : पिहासि दि कि दिनाहमेराका प्राप्तित क्रोनाता। की जी (क्यू)। विद्याख्यिम वि दि । संच्या क्या ह्या सप्रिय किया हथा जिनाहा हुया (वर्गीन ४६ विदि क्रिंश सूचा ११६३ वेट । महा)। विक्री की वि] फरी, पोटवी (मीन ११४)। देवो विदिया । बिट्ट वि [बृछ] वरसा इत्या (दे १ १९७) बढ )। बिकृषि [विष्ट] १ प्रतिष्ट फैठा ह्या (लुख १ १ १ १३)। २ व्यक्तिह बैद्ध इत्या (N# 1 ) i विद्व वि [वे] पुष्तोत्कत सो कर उठा हमा (क्द्)। बिट्टम न [बिग्रप] दुनन क्यत् (नुम्ब विद्रम एक [दि + प्रत्मव्] १ रोक्ता। २ स्वापित करमा, प्रक्रमा । विद्व पंति (गीरा)। वंड विट्रंभिचा (वीव)।

विगम-विश्व विद्वेभणया 🗱 [यिष्टम्भना] स्थाना (भीप)। विटूर पुन [मिप्टर] धासनः 'विट्रपे' (प्राप्तः परम = ७- वायः सूरा ६ )। विद्यासी विद्यो बीट. पुरीप सव (पाम्प घोडमा २६६ प्रामु १४व)। इर म िगृह् । अबोरप्रये-म्बान, स्ट्री (परम ४४ Be) | विटिकी पिछि १ कर्मकान भाग (दे २. ४३)। २ व्योतिय-प्रसिद्ध एक करण्ड. यर्पे किनि (मिछे १३४० स २६६८ मर् ११) । रेम्बानवार (सुर १००) । ४ वेदार, यबूरी दिए दिना ही वयरवरती स देपन का कराना पाठा काम (घर ६ ११)। विद्विध्ये प्रिद्धी वर्षी काण्यि (हे १ १६७ प्राक्टचा धीरत ६, प्रस्म २ 🖘 हुवाः रामः) । देवो युद्धि । विद्वित नि [के] धर्मित ( पत् )। बिट्टिय व [बिस्थित] विकिट रिवरि (क्य र पर यें—क ४५३) । विश्व दे [विश्व] १ मॅंद्र मा(कुमा तुर, ६ ११६३ रमः) १ विद्यान विद्यो सम्बद्ध-विदेश एक तरह का क्सक (क्स ६१)। विषेक पूर [किटकू] क्योतपत्नी, प्रासाव भारि के माने की मोर काड का बना अधा पिक्कों के एहते का स्वान भारती (ग्राम्य १ १--पव १६३ हे ० वह, बहर)। विश्वंकिया की [वे] बेलिका, वेदी, बीतरा

( **\* ( \*)** ) विद्यंग वेची विदेश (पर्स्टा १ १--पत्र )। विद्यंग पुन [विद्यक्त] १ सीमन-विदेश। २ वि यक्ति विकास निन्द गएको जस्मी व प नमी एवं कोवि वीमधो ।

क्षप्रमा क्ष्मीकोले विज्ञानकोता समरकेरहें (बण्या १ ४)। विश्वयम [वि+क्ष्मम्य] १ शिप्रकार करना सप्यान करना। २ दू व केना। १ नक्य करा । विश्वय विश्ववेदि, विश्ववेदि (यनि कुत्र ११४० छ ६११)। सह

(सपा ७)।

मिडमंत (पराम ८ ३२) । क्वड विवंधिर्मात

विश्व सह [ यि + हम्भय ] विवृत करना

कैसाना । विश्वेद (मन १ २-पन १७१) ।

शिवंद प्त [चित्रस्त ] र विरस्कार, सपमान (भवि)। २ माया जास प्रयंत प्रिणिवर्ण च कामाख संवावित्रेत (सु १ कप्)। विश्वंतम वि [विश्वम्यक] विश्ववता-जनक न्त्रहतेसविद्यंत्रया नगरे (संयोज १४ एव)। विश्वं प्रमान (विश्वम्यती नीच देवो (मर्वि)। 🤌 विश्वयमा की [चिश्वम्बना] १ विस्तकाद धपमान (दे) । २ वृध्य प्र (वस्त ४२) । ६ धनुष्टाम् नक्तः। ४ वपहासः। ५ कपट वेष (क्ष्प्य) । विश्वेषिय वि शिश्वमियती विश्वम्यका प्राप्त ं (क्षम्या प्रकार १२)। विकासमाण वि [विवद्यमान] वो जवाया वाता हो वड्ड जनता हुथा (घाषा १ ६ × 1) i विश्वत देयो चित्रह (मा ६७१)। विश्रप्प ) र्व दि । एक (६७ ६४, पाय) सिद्धय<sup>ी</sup> गडाः बन्ना १० दे ७ ६४)। विद्यय पू [यित्रय] १ शन्ता (मूर १ ८८)। २ शास्त्रा (पनि ११) । ३ पस्त्रवननिवादार। ४ स्तम्ब युच्छ (प्राप्त) । थिष्ट व र् [बिटिपन्] युग्न वह बरस्थ (पाम मुपाद यज्ञक स्वा)। सिडपिड १ एक [रचय ] यवाना निर्माण funfug sen i fentre, fruftge (इ. १ १४) पर्)। मुका विश्विशीय (¶41) i विक्रिअवि [ग्राहित] सम्बद्ध (स ११ ६ विवर)। विक्रिनिश [ वि ] विकास भीवत विदिश्चिर मनगर (१७ ६१)। विदिस र् [र] १ बान-मूच (१७ ६१)। रम्बद्दर वैद्य (देश १ वद्या)। ३ दुध पर्न दुषा व पायता राखा स्थपना र्वित्मा तक (क्येंत १ १४)। र शाला (परह १, ८—१व १६ : योग तु २१) । ७४ मंगे।

२१ राम)। विदुष्ट्य वि दि विषयः प्रतिपिद (पड)। विविविद्ध वि [वे] धीपण भगेकर (मार---मानदो १३७)। विद्युर पू [थिदूर] १ पर्वत-विशेष । २ वेश- । विशेष यहाँ वैदुर्व राल पेश होता है (कप्पू)। विद्योसिअ वं दि । मरहक मूर, मेंदा (वे w X0)1 बिद्वापि [दे] १ थोर्म सम्बा(देश १६) । २ प्रयंग विस्तार (दे१ ४)। विद्व वि भिंड भाहित विन्त रापीन्या विविद्या विभिन्ना विद्वा (निर १ १ पि २४ )। विदुर देशो विदिशः सक्ष्मिष्ट्राचेर्य कि देव पाद्धां (उप ४६८ दी) । विश्वाकी शिक्षा सम्बा सत्म (के अ 11 P 38 ) 1 विद्वार न [पिट्टार] देखी विद्वेर (सन)। थिक्रिव कि ? समीय (के क ह)। २ मारोप भावन्तर (पाम)। ३ वि रौड भवंदर (दे ७ ६ )। यिश्विरिक्षाध्ये [व] एवि निद्य (वे क (v) ( विद्वम देवो चित्रवस (पाप) । विवदरा हो वि पार्टाप पातन्तर 'हि निपविषद्धीवारछेलं (दव)। विद्वदिक वि विदर्शन | विदर्श समाना (मूपा ४३)। पिष्टर म [दे विश्वेर] मध्य-रिशेष पूर्व हारवाले नक्कों में पूर्व दिख के जाने के बरते परिचम विद्या से जाने पर पहला नधन (पिसे १४ १)। देशा विद्वार। विक्रम (धी) सर्व [यि + दृह् ] पताना । धेर विक्रिया (वि २१२) । विद्रमाधी [व] पार्थ्य प्रोधी वा बीयता मान (देश दर)। विक्रच रि [आजन] प्रार्थित ने प्रार्थित ह्या (हे ४ २३६० वाह या ह यान

विक्रिमा की दि गाला (नएइ २ ४- वंड | विक्रति की | अर्थिति | धर्मन क्यार्नन (भा १२) । पिरुप्य सक [स्यून् + पद् ] स्टूलन हाता । विद्यपंति (प्राष्ट्र ६४) । धिक्राप नीचे देखी। विद्रभ सक अर्ज ] उपार्जन करना पैदा करताः विद्वबद् (द्वेष्ट १ ८) महा सवि)। कर्मे विद्यविश्वद विद्याद (ह ४ २४१) कुमा भवि।। षिद्धण न [भजन] सार्थन (मुर १ 221) 1 विद्ययिज वि जिज्ञिती पैरा क्या ह्या (क्याः सुपा २० । महा) । पिढिम वि निष्टिती सपेटा हुमा (नुश laa) I भिनद्र वि [ पिनशिम ] दूर करनेवाताः 'मारंभविक्दित' (माना)। विषयुक्त कि वित्यवन् विनयसासा विनय को ही सर्व-प्रधान माननेवाना (सूचिन ₹**१**≤) i बिगइन्त वि विनेत् विनीत बनानवासा षिनव की रिप्या केनेबाबा (उच्च २६**, ४)** । थिमइच रको विजा = वि + मी। थिण (प विश्वितियत) विवित्त क्यि ह्या. नियामा हमा (सन) । देखी बिण्यम । थिणइड ध्यो पिणइस (रूमा) । पिभवत्त देवा विश्वी ≈ वि + नी । बियद्व वि [बिनए] विवास-प्राप्त (बरा प्रामु ११: शाद--मुच्य १४२) । षिगड यह [ वि + नटम् , वि + शुप ] १ भ्यारुम करना। २ विकासना करना। विलुदेद (बडड ६०) विलुदेति (इस) मिल्लान (**१८१६)** ( विमिद्धि देवो विमृद्धि (बा ६३ टी)। विजय न [बान] बुनना (बह १)। पित्रभ सक [सार्य] विश्व करवा। निरान्द (भारत १४३) । पित्रन वक [पि+नम्] विधेत का त नमना । यह थियसने (बार-भाननि 101

विश्रमि देवी विनमि (चन्र)।

विजासिव (तौ) देवो विजसिस = विनशिव

11814 (w) 1

(ताट-मुख्य २१व) ।

(बठड) ।

बिक्सिक कि विनव कियेव स्प से का

(स्वरधीय सामा ११८) — पत्र ३)।

विजिमिश्च वि विनिमित्ती नमाया ह्या

विजय दे [वितय] १ सम्युष्तराः प्रसाम सारि स्टित सुमया तिहता, नक्षता (साया,

स्र ४ धे—पद २व३ दुमा बना

ग्रीप सबक सका प्रत्य व)। २ सैनम

पारित्र (सम. २१) । ३ वरकावास-विशेष

एक नरफ-स्वान (देनेन्द्र २६) । ४ घरनयन इरोकरसा १ रिका दीवा १ मनुस्ता। ভ বি বিদ্যানুক, বিদীর । = সিয়ুর, राज्य । १ जिस कॅमाइया । १ विवेशिक र्षममी (द्वे १ २४३) । ११ दू. शाकानुसार प्रवाद्म प्रातन (परव ६७) । मंत्र वि वित्र विकय-पुरु (दय पूर्**६६**)। विषय वि विनती १ विशेव व्यक्तिमा हुम्स (ग्रीप) । २ पून, एक देव-विकास (ग्रम (v) 1 विजय केवा विजया । तलय दे रितनयी बरह क्वी (बन्ध १२२) । सुध्र दू "सुत्र] बारी धर्म (श्राप) । विजयप्रत देवो विजय्तु (पुच २६ ४) । विभवंबर वं [किनपश्चर] एक छेठ का गाम (इस ७२ टी)। विजयन व विनयमी विवय-विका विवय-'धान्द्ररहेत्याचा मामरिया विस्मयहात्व णमाया (वितंद२ )। विजयाक्षी विनदाी परंग की बाहा का माम (माम) । तान्य वृ विनय विश्व पक्षी (हे १४ ६१) पूरा ३१४) । विजस देवो वियास । विश्वपद (पर ७ ३ वका २१)। पिर्णासर वि विनाधरी विवाधनीय नरवर (1 t t) विभास धर वि+नक्ष**ेन्ट होना** क्रियात होना । विख्यात विकासक विएम्से (उन महा) वर्षेत्रे ४ १)। स्वी विद्यक्तिश्ची (ब्यून) । बद्धः विद्यस्मान (उस) । इ. यमस्य (वर्षते ४ २) ४ ३) । विजयसर देयो र जसिर (चि ६१६) ।

विधायम पं विनायक यम एक देव बाईड 'तत्वेद प्राक्यो को दिकासको एकसी नाम' (पदम १६, २१)। २ गरापदि, प्रतेत (इ.स.च. १६४)। ३ एस्ड (एडम ७१६७)। त्व न िक्यो यक्ष विशेष वदशक (पहन we 4w) : विजास देवो विजयस । विज्ञासद (पवि) । विजास स्ट**िव + नाराय**ी व्यंत करना **पष्ट करना । क्यासिक (ज्या महा) । मनि** विकासिक्की, विकासेक्कामि (वि ४२% ४२ ) । कमें विशाधिकका (महा) । क्याह- विज्ञा-सिर्व्यत (मधा) । इ. क्यासियव्य (स्पा \$ YX ) 1 विजास पुविनाशी निष्मेस (स्मः १४ 444) I विज्ञासग वि [विनाधक] विज्ञास-कर्ता (ह tw) | क्रिजासण न [दिमारान] १ मिनार, विम्मंस (भवि)। २ वि विकास,क्यौ (परहरू १ ---44 55 46 at \$4) 1 विजासिक नि [बिनारिक] विकर-बाह (पामः महाः चनि )। क्रियोग देवती विकरी। विभिन्नंसण ४ विनिष्ट्रंग विस स्वयस्य किलेप इप्रान्त (से १२ ६६)। विधिश्रंसण वि [विमिवसन] वक्र-धीय, र्वया (दा १२६)। विजिञ्च देवी विजर्द (प्रच २६, ४)। दिणि उत्त दि [दिनियुक्त] भार्य में प्रवर्तित (क्य इ.७४)। षिणिश्रोग 🛊 [विनियोग] १ स्वरोदः बात (विदे२४३७)। २ कार्वमें अन्तरमः (देवा ६)। ६ विलिम्ब चेनदेन (दुप २ ६)। विजिओस एक विति + धोजस विशेषा बचना । विशियोगः (र्थान) ।

विभिन्न देवो विद्यो = दिनिर्+ ह ।

विभिन्नहित वि [मिनिक्नहित] पूट कर बैठामा इयाः 'येमबिशिक्किमार्वि पवर्राह सामाईबीर्डि (सपा १००)। विकिक्स देवो विकित्तका । विकित्तका (बस्य २७%, वि ४०१)। विभिन्नस सक विति + कप विभिन्नर विकासना । **पेन** विभिन्नस्स (सम १ ६ **१ २२)**। विभिन्नसंत् विनिष्मत्रम्ती १ वदर निकवा क्षया । २ किसने नक्ष-ध्यान किया हो बहु, संन्यस्त (स्प १४७ दी कुत्र ३६ मध्य)। विणिक्कम यक [विनिस् + कृम् ] t बाहर निकलनाः २ संस्थास सेनाः। विकिन स्वयद (पवड ११: ११=१) । संबद विभिक्किमचा (पन)। थिजिक्समज न [विनिष्कमण] १ नहर तिकत्तवा। १ संन्यास वेना (पंचा १ २१)। विणिकिकत्त वि [विनिश्चित्त] ऍक प्रधा (नाट--मृच्य १११)। विजितिणक् धक विनि + प्रद्र\_ | निवाह करना रंड देना । यह विजितिमण्डल (उस E 24) ( विधिग<u>तः</u> सङ्बिनि + गुहुस् ] धृतरवना दक्ता । विक्रिविद्यान्तिया (माचा २,१ १ **२)**। विभिन्नाम र् [विनिन्मम] शिक्षरण वक्षर निकसना (पराः)। विजिन्सय वि [विनिर्मेत] बाहर <del>वि</del>कवा हरा, सक्रर क्या कुमा (वेर ४, म्ह्रा**ग** भवित)। विविधाय र् [विनिधात] १ मरल बीत । २ संसार, पर-भ्रमण (ठा ४ १—०व 1(139 विजिस्क स≢ [वेनिस्+चि] क्रिय কলো। বিভিন্ম (হন্ত)। বাছ- বিভি-चिक्रजन (सम्र)।

विजिन्द्य रू [विनिश्चय ] फिल्ब, निर्हार,

र्थणान (पदार १—पर्यः १) छ। ३ ।

विभिन्दिश मि [विनिश्चित ] निवित,

निर्स्पेत (**धन्दः क्याः ग**्रम्पः नुर २, २ २) ।

उप)।

विष्णाउ क्षेत्री विभाद (एन)। ११)। भूवि विस्होददस्तामी (स्मै) (पि षिण्जाज देवो विद्याम ( **ज्या**) महार पत्र )। विष्णाय न विकासी धराय-अन्त, जिल्ल-यसमञ्ज्ञ प्रान (संवि १७६) । विश्वावि वि विद्यानियाँ निर्ध विश्वास (**5**∓π) ι

(194T) t

विष्याद दि [पिडात] १ वाना हमाः विकित् (पामः वडव १२) । २ म. विकास

विष्याम् देवो विष्यम् । विरुद्धानीयः विरुद्धान वेदि (मा ६वः ३६)। विभ्यास वि [वि+न्यासय ] स्वक्रमा करनाः रक्षमा । सङ्घ पित्रपासीतः (पत्नम ¥Ъ የ\$) I विभ्यास देवो विद्यास (ग ११)।

दन (उदा) । देवो निमुख्या ।

विभ्यासक स्थि+ द्वाी कालगा। श्रेष्ट

विज्याय (रसंद १६)। इ. विज्लेश

षिण्णासणा 🛊 [विन्यासना] स्वापदा (एन RXX) I विष्यु ) वि [विज्ञ] परिका कालकार, विष्णुस है निद्यान् (भग प्राप्त १)।

विष्णेय देशो विष्णा ।

विन्दाक्तक व विस्तापन ही सन्द साहि राध पंत्रुव का है क्याब बादा सात

(पर्स्टा १ र—पव १)।

थै कुप्र १४७) । २ हुत्स्व कीतुक (बा

मिळ्य देखो विच्या (समि १६)। विष्णाद्रम्य देशो विष्णव । पिष्णतः नि [बिक्स ] निवेशित (गुपा १२)।

विभाग का वि+न्धवयी १ प्रश्लिक

क्ला। २ १९ कला, इटला। ३ देन

क्या। ४ श्तक्ष क्या। विसोरहरू

विलोवीत (बद्ध) विशोवेंप (धौ) (स्वन

१२०)। वक्र विभावत्रीत (सी) (वार--

एतर ६१)। इनक्र विभावीक्षमाण (सी)

थियो अपर्विचारी १ केन और सा १

कीतुक, बुत्रह्म (पत्रक्र सिरि ३८) युर ४

पिजाइक वि [विमोदित] विमोद-पुक्त विमा

विक्रोबक् विविद्यादकी क्राक्र-वनक

विजायण व भिनादनी । घपतस्य, १९

करताः 'परिस्तर्गक्कोयस्थल' (इस १ ६१

विज्ञासकोत देखी विज्ञास = मि + गोरन ।

(गुट--मानवि ४३) ।

शस्य हे १ १४६)।

विजीयग (रंग)।

Y40) I

इपा(नुर ११ २३ । छन्छ)।

विष्यति स्मे [विद्यप्ति] १ विवेदन, प्रार्वेश

(क्मा)। २ व्याव (सम. १. १२. १७)। विष्यत्ति की विद्यप्ति विद्यान, विकास (चारि १३४)।

पण २ १ सुमा १ १३ २१ वि ४६ खामा १ १---पत्र ६२)। भूतम, विस्तर्वेग (सम्म १ १२ ३)। मनि मिलेहिद (पि १२t)। वह विजेशाण (द्याना १.t—

प्रच ३३) । कन्छ यिष्यिकसाम (सामा १ १-- पत्र २६) । हेड्र. विजयन्तु (धाना १ 2 4 Y (T 14 ) |

वियोध वि विभीत र प्रमाति हर दिना इप्र. इसका इया (श्रामा १ १-- वर ११)-'बन्बरूनैन निफीनक्**श**' (बत्त २६, १६) ।

बालु सम्बेद (सूपा १६)। विकिद्ध देवो विधिष्ठण ।

पिफिद्धट ट देवो विजिहा ।

विभिक्षण बक्र विनि + इन्हें नार कलना।

विक्रियक्तेजा, विक्रियंति (सूर्य १ ११ १७-

विधिद्य रि [विनिद्व ] नो गर राजा क्या

विशिष्टा एक विनि + भा १ व्यवस्या

करता। २ स्थापन करता। संक्रु विजिद्धदट,

विभिद्याय विभिद्दिन्तु (वेदय २६८) मुख

र्बिपादाय देखी विणिधीय (शामा ११४--

विभिन्निक ्रिनिवित्र स्वापित (वा

विकी सक विकास 🛨 ही बद्धर निकरणा।

शिक्षित विक्रीत (च ११४ मि ४१३)।

क्रिकी स्कर्णि + नी दिश्तकरना इसला।

२ वितर-प्रश्य करावा । विक्रिति (खामा

१ १-- पत्र २६, ६) विस्तिकामि

विकास विकास विकेश (बामा १ १ —

विभिक्ति } १६१ मुन ६२)।

बक्र, विकित (नवड १३ )।

विभिद्धित देखी विभिद्धा ।

७ १६)। कर्म, विशिक्षम्मीत (उत्त

ह्याः 'कदमानि क्युप्रिस्समनिक्त्यते वैदि-

विधिस्सद वि [विनिस्सद] यान्त पत्रा

इम्स (सम्ब)।

विजिस्सरिय वि विनि स्ता विदर निक्सा

पराच (बढड) ।

विविश्वक्य व विनिध्यनी स्रन्ति वसी-

1 () (

हो स्वापक्ति (महा) ।

१ ७ २६: ६०४) ।

पत्र १ ६)।

w

विचिद् देशो वचिद् ≂वृष्टित (राज)। विण्डु पूँ [विण्यू] १ मस्वान् चेत्रांसनाव के विवाका नाव (सम १९१)। २ धरेया नशक का द्राप्तिपति देव (इ.स. २ १---पत्र ७७) । १ स्तुतंश के राजा सन्यक्ष्मृत्या का नजवां पूत्र (यंत ३)। ४ एक देन मुनि विष्णुकृमार बानक पुनि (कुलक ६६)। १ एक मेटी (क्प १ १४)। ६ बासुरेन नाराक्ण भीड्रप्स । **कब्यापका संशक्ति शन्ति । ३. गूदाः** १ एक स्मृति-कर्तापुनि (दे२ ७४) । ११ मध्ये व्यक्ति के शिष्य एक बैन ग्रुमि (राम)। १२ की, श्यापहर्वे जिनसेन की बाता का नाम (सम १२१)। कुमार वं िकुमार] एक विस्तात कैन मुनि (पडि)। <sup>\*</sup>सिरी की [भी] एक सार्ववाह्-पत्नी (यहा)। धवो विमृद्ध । विर्तंड देखो मित्रद् (धाया) । बिरुण्ड् वि [बिरुष्य] तुम्सा-प्रीत निःस्य (इन २६४ धे)। विवत र् [विवसं] १ दाध का एक प्रकार कासम्बद्धाः ३ ६ — यत्र ६३)।२ एक महासद् (पुरुष २ ---पत्र २६४)। देशो थिआचा देखो विश्रय = विटर (स ४ ४---पत्र २**७१)** । वितरान दि] कार्यकाम काम (वे ७ 44) 1 १६—पन्द ()।

**बितन्त वि [वितृप्त] विशेष क्या** (प**रह** विश्वस्य पू [विश्वस्त ] १ एक महायह क्योशिष्क देव विदेय (छा २ ६—पत्र ४०) । २ वि अल-पीटः वस पूजा (यहा) । विश्वरथा को [पितस्ता] एक महान्वरी (ठा 1. 1-44 (X1) i

विवाह वि शिवादे हैं दे विवाह । २ प्रतिकृत (ब्राचा) । वितर देखो विभर=नि+तृ। वितयम विद्यमी (पि १ ४३६)। वितर (भ्रम) यक [यि +स्तारय ]

विस्तार करना । नितर (निव)। विश्वरण देवी विकारण - विरुप्ण (राज)। पितक वि [विवक् ] तम्ब, विवक्ष्य

विवस् वि विवय निया प्रस्त, मूझ (पाचा रूप संख)। शिविकिस्थित वि विचिकिस्सित् फन का तरह स्टब्स् बासा (मन)।

बितिफिप्प देशो विद्क्षिप्प (निष् १६)। भिविद्धंत देखो भिद्द्धंत (भग)। विविशिद्ध सक [वि+ चिकिस्स ] १ विचार करनाः विमर्त करना । २ संस्क करता । १ मिन्दा करता । विदिन्तिकः (सूम र २, ४९ १ मिलका २११)। विविधिक्ष केवा विविधिक्का (प्रापा र क कृ १३ १ × × २३ वि ७४)। बितिगिद्धिय देखो वितिविधिकाम (पि ७४

२१४) । वितिगच्छ देवो बितिगञ्ज। विविधिन्दानि (पि २१% ३२७)। विदिगिक्का को [विकिक्स्सा] १ पेरम शंकाबद्दम (सूभार ६ ६ ४८ पि ७४)। २ विज-विज्ञाद विज-भ्रम । ३ तिका (सूम ११ १ विषर)। विविधिकाम देवो विविकिच्छम (मन)।

विविधिक्ष देवी विश्वविद्ध (धन)। विविमिर वि [विविमिर] १ यन्वकार र्राह्त, विशुद्ध, निर्मेस (सम १३७- पर्राए १४--पत्र ४१६, ६६--पत्र बर्फा कमा)। २ धवान-रहित (धीप) । ६ ई बदा-देनसीक का एक विमान-प्रस्तुट (ठा ६--पत्र ३६७)। विविरिक्का कि विविर्देका ने बन, टेका

1 (101 विच रि दि दी रीवं, बामा (दे + ३१)। विश्वन विश्वी १ हम्म वन (पाम सुप १२१२७ चौप)।२ विप्रस्थितः, विकास (सूचर ७२ इस १ ४४)। "सर्विष्यत्" विशे (x x)।

(स १३१८ थि १११ मन १ २--पन

विचन [युची १ एक्, पद्म कविता (सुमनि १८: सम्मच वरे)। २ परित्र सामध्य (सिरि १ ६३)। ३ इति, वर्तन (हे १ १२≍)।४ वि चरपम चीवाद (स.७३०३ मक्को । १ मधोर, द्वारा इमा (सहा) । ६

इङ्ग्याबुद्धः। ७ वर्त्तुल योजः। च मधीतः

पठितार मृतं (हे १,१२०) । १० संसिद्ध, पूर्ण (सुर ४ ११, महा)। प्याय वि [\*प्रायः] पूर्णं प्राय (पुर ७ ६४) । **रेखो** बहु = बृद्ध । भित्त देखों सेता = देन (सूप्रति १ ८)। बिस केशे पिस (उप ४२२)।

वित्र वि दि १ वर्षित प्रतिमानो । २ 🗲 वृंबिसस्टि, विसास । ३ गर्वे धईकार (वे 1 (13 e विश्वत प्रं [वृश्वास्त] धनाबाद, बबर (परम २३ १८ सूपार ४३ म£ने)। विकास देवो विदास (पुत्र १ १ गाउ-

बेणी २६)। विचिविय देखी वृद्धित, विचिश = वर्षित (भवि)। विचास सक [वि+त्रासम्] भगकैव करना, अरामा । विचासन् (उच २ २ )। वहः विचासंव (एक्स २०/२६)। विश्वास र् [वित्रास] भय भास वर (सुपा AXS) I विचासण न [वित्रासन ] भय-प्रदर्शन

(भान)। विचासिम नि [पित्रासित] क्य कर मगाया क्या (पुना ६४२) । विचि पु विशिम् । बरकल प्रतीहार (कम्म 1 () विचि की [कृचि] र जीवका, निर्वाह-

सामन (शामा १ १--पत्र १० स १०६ द्वर २ ४६)। २ टीका विकरण (सम ४६ विशे १४२१ छार्व ७३)। ३ वर्तन मान रमा। ४ स्पिति । ४ कौरियकी साहि ४ वना-विरोप । ६ मन्त करन भावि का एक तरह कापरिस्ताम (हेर १२०)। आ कि किं] वृत्ति देनेपाबा (योग्ध्यंत खाया १ १ रो-पत्र १)। आर ति विकार दीका-कार, विवरता-कर्ता (क्यू) । बस्तेय द्विया [ब्रह्मेब्] भौतिका-विनाश (मानाः सूम १ ११ २ )। देखो विश्वी≖दुत्तिः

विचित्र वि [विचिक] विच वे पूक, का-

बाबा, बैभवरासी (भीप) मन्त्रा शाया १

१ दी—पत्र १) ।

(धम्) ।

<b>પ</b> ટર્૧	पा <b>इभस</b> इमहण्यमी	विची —विदुग्ग
	विस्ताद्यात्र (गै) वि [बेस्ताद्यात्र ] विज्ञानतामा (विव् २०: वि ६ )। विस्तारमा (विव् २०: वि ६ )। विस्तारमा वि [विस्तादक] कैनाने विद्यारक। विस्तारमा विव्यारको कैनानः 'कीवमार विस्तारमा विद्यारमा कैनानः 'कीवमार विस्तारमा विद्यारमा कैनाना ह्या (एकः वै)। विस्तारमा विद्यारमा विस्तारमा विद्यारमा विद्य	वचा (वदुः)    विद्वित्या कि [विद्विता] विश्व के वे स्था करण हो बह बहु, किया प्रकारमधी क्रिकेट के स्था करण हो बह बहु, किया प्रकारमधी क्रिकेट के स्था कर किया है।   विद्वा के क्रिकेट के के किया किया किया किया किया किया किया किया
१ जिनाम वर्षाः १ विदेश करताः बहुरः विस्थयन (स. १४१३ ७ ७४) । विस्थयन संगेषियक्ष (त. ६६४ छि) ।	विस्तिय देवो विस्तव (स ११७ सा ४ ७ स)। विस्तिय न [दि] विस्तार, वैसाव (वस्)। विस्तुय देवो विस्तव (स ११)।	र विकास के छेटुको निया गए हों नह (सूपनि ७१)। विद्यक्षित् (टी) वि [विद्यक्षित] परिवत वृद्धित (कार-वेखी ११)।
स्थिय । १ [ चिन्त ] र तिस्तारनुष्क, प्रियम ) १ हिम्त (स्व सोन सम् समु मित स्व ४७) । २ सस्य परित (ते ११)। परितर स्व [ वि स्स्त ] १ चैनना । २ चन्ना । तिस्य (त्रक्ष ७६ तः १ स्व १ स्व १ विर १२० सन ११) । स्व.	विषय वि [बिडिय] को विरोध में यहा ब्रुपा हो। विरोधी क्या हुणा (क्षा ४० का १९४)। विषय केयों विश्व = विष्या विषयाणी (दुष्य दे दे । हि. स्था हिस्साणी (दुष्य दे दे । हि. स्था)। विषय क्षा विषय क्या विश्व विषय क्षा विश्व विषय क्षा विश्व क्षा विष्य क्षा विश्व क्षा विश्व क्षा विश्व क्षा विश्व क्षा विश्व क्षा विष्य	विदास क्यों निहास = विदुष (वे ११ १४)। विद्रास्त   कि विद्रास्त   निवास्त कर्मा विद्रास्त   कम्मस्तिकारकार (स्त्रू दे , १—पन १६ एक)। विद्रास्त्र म [बिहास्त्र] विशेष प्रवार वे वीरस, स्त्राम्त (वेसू ११ १—पन १४)। विदिस केसा विद्रम (सन ११) पतन
वित्यदि (ति १ १)। वित्यद कृतिभित्त है वित्यद्ध प्रतेष (तदाः) १ क्षत-कृत् (वदाः १)। वित्यद देशो क्षियंत । त्रव क्षित्व करत पूर्व (त १ ४) वित्यते च त्रास्तृ (बरसार ४)।	(पत बरे)। विष्रंत्रमा पतो विश्वसा (पद्ध १ १ दी— पत ११)। विष्रंत्रमा न [विश्वती] याच्यारतीस्य सन्। ता प्रकारत (पद्ध १ १ —पत ब)। देवी विश्वतिस्या विश्वसा हि [विष्रंत्राक] स्टेन स्वार्थ देवन	र. ६ )। विहिष्ण वयो (तहुण्य = निर्शतो (विचा १ २—यत २३)। विहिण्य वि [विदीजे] प्यात हुषण चीय हुमा (बार—मुच्य २११)। विदिणा } व्यो रिह – विद् ।
स्थियन रि [स्थियन] र कैन्नेसबा । व वृद्धिवरेक दुमा। १६ विष्ठ वृद्धा (तुर रे ४४) पुत १६ विष्ठ वृद्धा वृद्धा पुत्र वे १६ विष्ठ वृद्धा वृद्धा वृद्धा । विरुद्धा पर्व (स्विचेद (स्वे)) (वार- स्वृद्धा वृद्धा वृद्धा वृद्धा वृद्धा वृद्धा । हे ११६४ मा-सु है) । वृद्धा वृद्धा वृद्धा ।	(पर)। रेता विद्वह । विद्यम पुळी [दिरम] है रेपनिकत स्पे विद्यम पुळी [दिरम] है रेपनिकत स्पे विद्यम पुळी हुन्तर्य कर्त (दूत ४ का ह)। है प्रवास दुन्तर्यन के स्वाप-	चित्रिम देशो वि त्या कारिओई (रिला १ २ थी-पा २२ गुर १ १ ७)। प्रित्स (मा) के [शिद्धा] एक वनसे वा बास (परि)। श्रित्वा १ थीं [शिद्धा] १ विदिष्ण, विदिसी ग्रेगिया कोल (पाचा वि ४१३ व्यक्त १—२१)। २ विनस्स श्रिया सर्वस्स (पाचा)।

रिको देश को प्राक्तन सम्बन्धि कृष्टिनकुर,

वा बारकत 'ताबार' 4 नाम व प्रतिद्व है-दुरेश्यान्त्र (दुव 🕶 ) ।

बिदु ध्यो नित्र (बंबा १६ ७)।

विदुर्गुम्रा देनो विजनदा (एव) ।

; विदुग्ग न [विदुग] बपुध्य (थन १ ८)।

[ र्राप] सम्बन्ध रिध्य बाला, बर पराची

का स्थित से अपने का बारावा बाक-

#43 (37 \$ st) 1

विद्रम वि [यिग्रस] विद्रानः जानकार। (स्व १ २ ३ १७)। बिदुर नि [बिदुर] र विवसण निक्र (हुमा)। २ थीर । नामर, नामरिक (हे १ १७७)। ४ वं कीरजों के एक प्रकरात मध्यी (खारा १ (१५--पत्र २ ६)। विद्वासीय विद्वासी वेद्यानिकेष, क्षाप्तक की भीराधी नाल स पुनन पर जो संस्था सम्म हो वह (एक) । विद्वस्ता सी [बियुद्धता ] संस्थानीयोप विवासतांग को बीधवी मात्र के पुराने पर थों संस्था सम्ब हो नह (इक) । बिदुस रेको विदुः रा पमार्थ धरित निबुसार्ए' (बर्नसं घव ) । विद्सरा रे पूँ [विद्यक] मध्वर स्था के बिवसय । साब प्रकाशना मुसाइव (सार्व १३ सम्मद ३ )। विकास करते विकास = विकेश (सामा १ २---पद ७३ धीयः पत्न १ ६३ः विसे १६७१ पुनाः मानु ४४)। विवसि कि [विवेशिम्] वरस्ये (मुपा ७२)। विदेशिक वि विदेशिकी कार रेवी (विदे REY) !

बिदेह पुंचियह र पत्रा नगर (ती १)। २ वं व देश-विशेष विदार वा उत्तरीय प्रदेश को बाजकस विकर्त के नाम से प्रविद्य है न्द्रोब धारहे बाने कुनरेने विदेश छाने जल्लाबा (ती १७ धंत)। इ पून वर्ष विशेष यहानियह-रोप (पर १६६)। ४ वि विभिन्न शरीयाता। र निष्टेंग मेक्-चीं हर । ६ वूँ प्रशंय शामीत । ७ पूर्वास (क्य ११)। = नियम पाँठ का एक कुढ़। १ मीलपैत य तावा एक कुट (ठा र-पप्रथर)। चिषुक्री विस्तृी बान्युपा-विदेव जिसके नाम से यह बान्यु क्रीम बदसावा है (अं ४० इस) । जाया ही ियार्थ, यान्य) भवगन बहागेर (क्य ११)। दिसा भी दिला मगरान बदानीर की याता रागी विराता (कम्प) : दुहिंभा भे ['दुदिद] राजा बनक भी

यमा दूखिक (पर अ व)।

विदेहतिक प्रविदेहदाती भगवाम् महाबीर | (इस्ट ११ दी)। विवेहा को विवेहा । स्यसम् महाबीर की माता, विश्वसा देवी (क्रम ११ छी)। २ भानकी सीवा (पडम ४६ १)। विवेहि पू [बैबहिम् ] शिदेह केत का स्रविपति विकास का राजा (सुम १ क ¥ 3) 1 विदेशी हो विदेशी राजा अनक से पली बीता की माता (पटम २६ २)। विदेशिक वि वि नि नाधित नष्ट किया हुया ( v v ) विदश्द र् [विदश्य] एक नरक-स्पान (देशमा २७)। विदय सक वि+ द्रायम ी १ विनास करना। २ हैरान करना बनाव करना। ६ पूर करना हुदाना। ४ महरना टपकनाः निश्वद (द्वप्र २० )। वश्च विद्यम्येत (रक्त ७२) । श्वाह, 'रस्त्रं रस्बद न परेडि विद्विज्ञीतं (दूप २७ शूर १३ १७ )। विद्या पू विद्रपी १ स्थाप कासर्थ 'परवस्त्रपरमधोराप्रविद्वा कृत्युवध्या सम्बे' (कुळ २)। २ विनाश (छामा १ ६ -- पत्र रष्ट्य वर्गनि २३) । विश्वित वि [पित्रपित ] १ किमाबित (से ₹ ६)। २ **१**र किमा हुमा हुटाया हुमा (मादद)। ३ विनासित (मवि एए)। विदा धक [मि + द्रा] भएन होना । विदाह (8 Y 31) i यिद्याण वि विद्राप्त र म्हान निस्तेत्र फेरए 'बिहालपुदा छग्नोपिस्ता' (बुर ब १२४) 'धरीएबिहालुमुम्मसो' (यति ४३) 'दारिहमविहम्यं नज्जह मायार्गनतमो तुम्ब (कुम १६६)। २ शोकानुर, दिलयोध 'विद्वाणी परिमर्खी' (स ४७३ । इस १ ४ चप १२ कि)। षिदाय वि [विद्वा १ विवट (दूमा)। र पसायित । १ हर-पुत्र, हर-प्राप्त (हे १ १ अपर्)। इमी मीका (की रे)। पुचार्च [पुचा विदाय पन [ विद्वस्य ] गुर का विद्वान मानमा । यक्न. विद्यापमाण (भाषा) ।

विशार देशो विशार (वन १) । विदारण (मा) नि [विदारण] चीरनेवाना फाइनेवासा । इसै जी (मवि) । विद्ययिय देवी विद्याय (मनि)। चिद्रदुसर् (चित्रस् । प्रवाह मूँगा (उ रहे क्लक पी है। र उत्तम क्ला सि र २१)। सि पू भिनी नार्वे वसदेव का पूर्व-कन्य का ग्रुव (पराग २ १६३)। विद्वय वि विद्वती धरिमूत पीकृत 'वरियमविष्ठ (?a)या (छाया १ १— पथ ६४)। विदृद्णां की दि। सम्बा शरम (के ७, \$X) 1 विदेस र् [मिद्वेप] हेप मध्यर (नवह १२-पत्र २६)। विदेस वि विद्वेष्य विश्वमाग्य प्रप्रिय (पण्ड १ २--पप्र २६)। विदसण न [विदेषण] एक प्रभार का ग्रमिकार-कर्म जिससे परस्पर में शहुता होती है (स ६७६)। विदेखि वि [विदेखिन] इंप-कर्ता (इप 140) i विद्वसित्र देवो विवसित्र (मा १२)। विद्रसिअ वि [बिन्नुपित] इप-पुद्ध (भिर्र)। यिद्ध एक [स्यघ् ] बीपना धेर करना। निकद् (प्रारवा ११६ माट--रला ७)। करहा. विदिक्षीय (व बद) । यह विद्यूष्ण (सुम १ ६ १ ६)। पिदानि [भिदा] बीवा हुमा बेम दिमा हुधा (से १ १६ मनि)। भिद्ध रेखो सुद्ध = कुछ (बच ३२ ३ ह १ १२८ मिन)। यिद्धंस घड [चि+ध्यंस ] विन्द्र होता । विद्धंसद (ठा १ १-नव १२१)। बहु-पिद्धंसमाय (तूब १ १६ १६)। विद्वस सङ [मि+म्यंसय्] विकार करना । प्रवि विद्विदिधि (भग ७ ६---पत्र वे ३३। भिद्धंस पूं [विष्यंस] १ जिनास (नूर १ १२)। २ वि विनास-कर्याः, 'बहुत से विभिधीरा हे प्रविद्व विभागरे (उस ११

१—एव ४८० वस १ १—वव ११, यूप १२, १० ११ १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०	चरा बुवा १६६८ ११६८
[विश्वाय केवी विद्वाय - विवास (चन) ।  विश्वार केवी विद्वाय - विवास (चन) ।  विश्वार कह [दि + भारत ] निवास करना । विह्वास (करना । वेह स्वित्य केवा विद्वाय करना । वेह स्वित्य करना । वेह स्वित्य करना । वेह स्वित्य करना । वेह स्वत्य करना   वेह स्वत्य वेह स्वत्य करना   वेह स्वत्य वेह स्वत्य करना   वेह स्वत्य करना   वेह स्वत्य वेह स्वत्य करना   वेह स्वत्य करना   वेह स्वत्य वेह स	विश्वापता] १ मार्चम, विनयो  ४ १) । २ सक्षिया आर्थे  १ १) । २ सक्षिया आर्थे  १ १) । २ सक्षिया आर्थे  १ १) । १ सक्षिया आर्थे  १ १) । वा = विश्वेष (वार्य) ।  १ १ १० ।  १ १ १ १० ।  १ १ १ १० ।  १ १ १ १० ।  १ १ १ १० ।  १ १ १ १० ।  १ १ १ १० ।  १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

(ग्राचा) ।

1 (373

२११)। देखो विषयः।

(प्रमुक्त १ ४---पन ६६ र, १--पश

विषक्त विषियक्ती परा ह्या (उप इ विकिमनिपन**क**-

विपयस देखी विवस्ता शक्का (सूरा १ ३ २४ )। विपविस्तय वि विपक्तिको निरायी दूरमन

(संदोध ११)। विपक्षत्रय न विप्रस्थियको नाराज्य जैन द्यंग क्रम्य का सूत्र-विशेष (सम १२०)।

विपयनाम वि विपयमानी १ वो प्रमुख बाता हो वह (मा २ सं=१) 'मामानु घणकान् विपयमाणाम् मंस्पेसीम् (संबोय ४४)। २ दाव होता जनताः 'तम्बरहात-सञ्जामाविषयमाखस्य मह निर्म (एक्ट

X\$) I विपञ्जय देशो विवक्यय (राज)।

विषद्मास देवो विवश्चास (ग्रह-मृज्य २२६) । विपश्चित्रिक्त देशो विष्पश्चित्रिक्त (निसे २६१४ सम्मत्त २२०)।

विपश्चिद्ध सक [ पिप्रति + सिम् ] निरेव करता। इ थिपडिसेह्यस्य (भव ४, ७ --पत्र २१४)। षिपणाञ्च सङ [ विम + नादय ] मच्छा करता। निप्राक्षप् (बाचा १३ २ २) वि २४४)।

विष्णा देवी विष्णा = विषय (बाद =) । विपत्ति देवी बियधि = निपति (था २०२ क्राध्या ।

विपरधानिद (ग्री) वि [विप्रस्तानित] धारम्य विश्वका प्रारंग क्रिया क्या हो बह 'एडाए नोरियाए एसम्ह यरे कनहो किरस्था-क्टिं (इस्स्य १२१)।

भिष्यम् सम् [विष्यं + मृशः ] १ स्ता- । राज करता दिसा करता। २ प्रेका करताना हैतन करता । १ यह जनम होताः जन-वना । रिस्पानुसद्, रिस्पानुस्ति विस्पानुस्त

(बाबा रि १०१) । देखी विषयगुमुख ।

**= 2)**1 विवरिकास वि विवरिकासनी विवरि कुषिय गामक कन्दन-रोववाताः देखन्ताः विस्ति करेड परवंदिए विपरिसंधी (बड ३)। विपरिकाचिय देवो विप्यक्तित्रचिय (एव)।

₹ર)ા

थिपरिक्राउट यक विपरि + स्लास्टी १ स्वसित होता पिरता। २ मुख करता। बङ्ग बिपरिसर्सन (पण्य २२)। विपर्णिम धक विपरि + जम ] १ वर सना. क्यान्तर को प्राप्त होना । २ विपरीत होना प्रस्टा होना। विपरितामें (विक

३२७)। बङ्क विपरिजनमाण (मण ७

पराक्रमुख माविरूप बदाबीन (परम ११६

विपरिक्रम न विपरिकर्मनी सपैर की

माकुद्धन-प्रशास्त्र मानि क्रिया (माचा २

१ — पत्र १२४)। विपरिणय नि [बिपरिणव] स्तान्वर को प्राप्त (पिष्ठ २६६)। विपरियाम एक विपरि + प्रमय ] १ विपरीत करना, इसटा करना। २ वरनवाबा क्यान्दर को अन्त्र करना। विपरिस्तायेड (स ११३) । हेक. विपरिपामिचप (उरा) । बिपरिणाम प्रे विपरिणाम**े ।** रूरान्तर

प्राप्ति (बाबा धौर)। २ इतदा परिणाम विपरीत सम्बद्धाय (वर्गस १११) । विपरिणामिय वि विपरिणमित् । स्मन्तर को प्रत्य (भग ६ १ टी-—ाव २५१) । विपरिभाव सक [ विपरि + भाष ] इवर उपर चौड़ना। विचरियानई (बत्त २३ ७ )। विपरिवास देवो विष्परिवास (चन)। विपरिपद्यात्र सङ [विपरि + वासय ] रखना । विचरिवडावेद (शामा १ १२--पन १०१)। वह विपरिपक्षाचमान

विषयीम वैद्यो विवरीभ (वृद्य १ १ ४ १) य १४ व)। षिपद्मभ वह [विषय + भव ] इर मानशा । वह विपद्धार्जन (बा २६१) । विपस्दरथ देयो विष इत्थ (ति २०१)।

(छाम्प १ १२)।

विपाग देखी विधाग (एव)। विविध्यस्य देवा विष्यंवस्य । यहः, विधियस्त्रीतः (चन) । विविज देखी विविज (इमा)।

बिपिक्त वि कि विकसित, विसा हुया (वे ७ ६१) । विप्रस रेबो विद्रस (स्थामा १ १---पत्र ७४) क्ष्म परहर १—पन ११)। याहण वे िधाइली पारतवर्ष में होनेवाला बारहवां बक्नवर्धी राजा (सम १२४)।

विष्य न दि ] पुरुष्य, दुन पुँछ (दे ७ ५७)। विष्य प्रीविमी बक्क्षा क्रिम (हर १७० मका)। विष्प पं विषय , विष्री १ मुद्र और विद्या क बिन्ह । २ विहा बीर पूका भूतपूरीसाल विष्युसी विष्या चले विक्रिति विश्रा भारति य पति पासवर्ष (विते ७०१ कीप महा)। विष्पश्च देखो विष्पगिट्स (एक) । विष्यद्रण्य पि विश्व क्रिया हैया ।

इवर स्वर पटका ह्या (से २ १८ इस) ।

विष्पहर सक [विम + क] हवर उबर पटकना क्यिएम । क्याइसमि (उवा) । कहा सिएए-इरमाम (खाया १ १--पत्र १५७)। पिष्पांच एक भिन्न + युक्त । शब्द प्रयोग करता । २ विरोध क्य स प्राप्तनाः बहुरा बामाची विणडेनेति" (ब्राबा १ ८ t (# 1 विष्यभाभ ) पू [विषयोग] सत्तारा समय विष्यभाग ) बुश विष्टु विशेष (उत्तर

११ स २०१ चीक पढम ४१, ४६) जा ४३ वस्त १३ 🗠 मद्वा)। विष्पक्र मि [बिमक्ट] विशेष कर स प्रकट (भग ७ १ — नत्र १२४)। विष्यक्रि हेवो विष्यन्त । वहः विष्यक्रिसाम (ख्रामा १ १--पत्र ३१)।

विष्यक्त रेयो विषयन (नि १६६)। विष्यास्मित वि [विप्रगरिभत] चप्का

प्ट(पूप १११ ५)।

का प्रधान 'वेलाडीक्यपरिका' (वर्षेषं १२१७)। विष्यगास्त्र पक [नाराम् विम + गास्त्रम्] नाम करना। विष्यमास्त्र (हे ४ ११) वि ११९)।

विष्पामिक्षः वि [नाशिकः, विप्रमासिन] नारिकः (क्रुमा)। विष्पामिक्कः विश्विमहत्त्वः] १ वृष्यसी दृषे पर

विश्व (त २२६) । २ वीर्ष सम्बग्ध प्राप्त विश्वविद्यक्षित्रं (त्यापा १ ११) । विश्वविद्या प्रस्कृति (विश्व + त्याक्ष ) क्षेत्रण प्राप्त करवा । इ. विश्वपष्ट्रयस्थ (तंषु ११) ।

विष्यवस्य पुं [विप्रस्तय] १ धेवेह, संदर्भ (बत २६ २४) । १ वि प्रस्क-प्रकृत प्रविद्यवसीय (दर्श) । विष्यवस वि विश्वसीया परिवक्त (आस

विष्यज्ञह नि [निश्रहीज] परिलक्त (शासा १ २--पत्र ४३ पंचा १४ ६ पत्र १२६)।

विपानम् एक [विमान मही विध्यान करना
छोत्र वेता। पिप्तस्य हिम्मणन्ति विध्यान्ति
(क्ष्रः व्याप्त पूर्ण १ १ व व्याप्त १ ४)। वक्ष्म
विपानम्भाग्न (छा २, २—नव १०. वि १ १)। धीत्र विपानम्भाग्न (छा २, २—नव १०. वि १ १)। धीत्र विपानम्भाग्न विपानम्भाग्न
(व्याप्त २१ ७१ मन)। इ विपानम्भाग्न
विपानम

विष्यक्रिय वि [विद्राक्षीय] परित्रकः (पि १९१)। पिष्यकारा देवी विष्यक्रीक्ष (वेश)।

पिएपडोग देवी विरुपश्रीक्ष (वंड) विरुप्रविद्य स्व (विरुप्ति + व) विरु

भिष्यविद्व सन्त [(बपरि + इ] विपयेत होना ज्वार होना । विचारिएह (तुम ११२१) ।

ध्यकत्त (याचा ११६—पन १४१)। विष्यविषद् दृं [विप्रतिषम] विषयेत मार्चे (च १ ११ थे)। विष्यविषयम् देवी विष्यविषयम् (पन ७१ थे)। विष्यविषयम् को विष्यविषयाः ( ११ थे।

विष्णावकाचि का [विकारियाची है दियाव (विष्णे २४ )। र महिवा-मेव (वर १११)। विष्णविकाम कि [किरियान] १ विष्णवे विशेष कर वे स्तीवार किया हो वह 'मिष्कट प्रकारीक परिवाद किया हो वह 'मिष्कट प्रकारीक वाए वाए समित होत्या' (प्राप्ता १ ११—यह १००)। १ विरोध-पात विरोधी कता हुसर (सावा १ १) सुता १ थे

र रहे)। विष्यविदेश १ सक [विप्रति + नेतृश्व ] विष्यविदेश १ सकता। र विष्यास्य । विष्यविदेश (सामा १ १, ४ ४) विष्यवि नेदेश (सुम २ १ रहे)।

विष्यविसिद्ध वि [विप्रतिभिद्ध] याज्य में प्रसंत्रत (प्रवर्ष १)। विष्यद्वीस नि [विप्रतीय] प्रतिकृत (ताब १७७)।

(४४)। विष्पणद्व नि [विभन्छ] स्वानिक, नाट-माप्त (त ११६) करा)। विष्पणस्य १ तक [विभ + अस् ] १ ननना ।

विष्पनास ई [पिप्रणारा] पैनास (स्मीरि १७)। विष्पतार स्ट [ विग्र-श्वारय ] स्थला।

विष्पतार सक [ विमानितारमा ] कमा । विष्पतार्थाय (वर्षीव १४०) । कमे विष्पतार्थाय (वर्षी) (वाट--टक्कु ४३) । विष्पतीसा ) (शै) क्षेत्रो विष्पतीमा (वट-विष्पतीसा ) सावध्ये १ १ ११६३ मुख्य

प्य)। विष्यमास र् [विष्रमाद] विविव प्रमाद (तुम १ १४ १)। क्रियमुंच वक [चित्र+मुप्] केव्य मुक्त करना। वर्गे चित्रमुख्य (क्य २६, ११)। विष्ममुख्य वि [चित्रमुख्य] विषुष्ठ (योग पुर २ २६७) मुच्च ४४६)। विष्मम् व [चि] र क्य-निक्सा। २ सम् । ६

कि बाविव । ४ दे बैच (के क न्यू)।
विध्यसार एक [विध्य न वारय ] इन्हां।
विध्यसारीत विश्वसारीय (क्रूप का कि न )।
विध्यसारीय (क्रप का कि न )।
विध्यसारीय की [विध्यसारीय] वेषमा
उन्हारी (क्रप का विध्यसारीय की विध्यसारीय की [विध्यसारीय]

विष्णमारिक वि [विश्ववादित] वर्षिक ठवा ह्रमा (मेंब्र १ है) । विष्णद्रक वि [वे] विश्वेत वीद्रिका 'करपच्य वेतपुरकावादिंद्व विष्णद्रके समस्ये है वैन महद्दर्भ तम्हीये वादेवे (त्राचे) बनीवदेवें (श्वाब १ १—वत्र ४५) । देखी पद्रक्ष ।

कोर्धक रिव्यास्मृतिक ब्युस्य वर्षकृत्य कर यरम् केष विभारमुग्तिक (धाला)। किय्यरियम केषो विपरियम। त्रिव्यरि एमिस्बति (क्य)। किय्यरियम केषो विपरियम (यत्र ४, ७

विष्यराञ्चस देवी विषयामुखः कार्यती वैद्यार्थतीः

है—पत्र २६६ करत)। विध्यरिजाम केवो विधरिणाम = विचरित्र खमब् । विध्यरिजार्मीय विध्यरिजार्मीय (माना)। केव्र. विध्यरिजासकर्ता (स्त्रो)।

(भाग) । इ.इ. १६८मी(जास इता (भाग) विष्यरियास वेदो विष्यरियास = विष्यिसस (प्यावा सन १, ७ वी---पत्र १६६) । विष्यरियासिय देशो विष्यियासिय (भय ६

र---पत्र ११)। विष्परियास सक [विष्परि + श्रासम् ] स्थापम करणा, श्रास करणा। विष्परियासेव (निष्ट ११)। वश्च विष्परियासेव (निष्ट

११)। विष्यरियास ट्रं [विषयोंच] १ व्यवस् विषयेतवा (कारण पूर्व १ ७ ११)। २

विपरीवात (कावात पूचार ७ ११)। २ परिकासक (कुछ १ १२ १६) १ १६८ १९)। बिप्परुद्ध वि विप्रसुद्ध हिरस्कृत 'हवनिह

विद्यक्षेत्र स्कृष्टिय + सम् किना।

विष्पुद्धेस व विश्वक्षमभी १ वद्यना ठगाउँ

(का २४) । २ श्रुकार की एक मंदरवा----

यविष्यद्वी वृधी (परम व वर)।

विष्यसंभेमि (स ६ १)।

थिप्प**स रेको** थिप्प = निप्र (प्राक्त २७) ।

करता (निष् ११)।

जिसमें सक्तर धनुषन होने पर मी प्रिय समायम नहीं होता (सुपा १६४)। ३ विप र्यास व्यवस्था केररीरम (कर्मस १ ४)। विच्या वियोग (कप्प)। विष्पसभाध नि [निप्रक्रमभाक] प्रवारक ठमनवाला (गुन्स ४०) । विषयक्ति भाग वि विप्रसम्भित् र प्रवास्ति। २ विचीरत (मुगाँ २१६) । विष्यसञ्ज वि [विप्रस्काम] बन्नित प्रवास्ति (बार ४२ सं ४१८ ६०)। विष्युक्षय वेम वि विविवता विविवता 'तंबट्ट सो पूर्ण बारहा संबंधनियालयं' (चमवि १२०)। विष्परुचित्र (रो) म [विप्रक्रपित] निर्पंक वपन बद्धाद (स्वप्न द१)। विष्यसम्बद्धाः देखो विषयमञ्ज । युका, विष्यता-इत्या (विद्या १ २--पत्र २१)। यक्क विष्यसम्बद्धान (सामा १ १-पन ६१)। विष्यकाल ) र् [विष्रकाय] १ परिवेदन विष्यसम् । रोता कन्दनः पविद्योगे विष्य सामो (तंदु दक एक्स ६४)। २ निर्मंक नचन बढ़वाद (क्य १६ ६६) । ६ विच्छा-साप (परम ४४ ६०)। विपरिकृतिकारी पुर-बन्दर का एक दाय संपूर्ण बन्दर स करके बीच में बावचीत करते संग बाला (पन २---पाना ११२)। विष्पर्कंपग वि [विषयोपक] नुरनेशता पुटेश (परहा १ १--पत्र ४४) । विष्पत्यद्वण वि [विप्रक्षोधन] नुस्रतेताता (# w41) I विष्यवर्ष[बिष्यव] १ केत का उत्तरक कान्ति। २ दूसरे स्था के सम्ब साहि से मन (दे २ १ ६)। ६ शरीर भी नियोस्दु-त्रवा यस्यस्थवा (कुमा) ।

विष्पवर न दि निकातक भिनावा (वे ७ 44) 1 विष्यवस सक विश्व + वस ] प्रवास में पाना देशान्तर पाना। संक विष्यपसिय (पाचा२ ६,२३)। विष्पवसिय वि [विप्रापित] केव्यन्तर में यमा हवा प्रवास में सभा क्या (लाया है २--पन ७६. १ ७---पन ११४)। विष्पवास 1 विषयासी प्रवास देतान्तर दमन (प्रवि १)। विष्यसम् वि विप्रसम् । श्विशेष वसन सराः २ प्रथम-चित्तका मरण (उत्तर ₹**5**)1 विष्पसर शक [बिप्र + स्] फैनना । भूका, 'बड़ने इरपी''' दिसी विसं विप्यसित्या' (पि ५१७)। विष्यसाय सङ्घिम + साद्यः । प्रसम करमा । विष्यसम्बद् (साथा १ ३ ३ १)। विष्यसीम पन [विम + सक्] प्रका होता। विष्यक्षीएव (उत्त १, १ सुद्ध १, १)। विष्पह्य वि [विप्रदृत] शहत जनमी (पुर € **२२१)**। विष्यहाइय नि [बिममाजित] निमक बेंटा हमा (भीप) । विष्पदीय ) वि विप्रदीय रीहर वर्षित विष्पहुण र (सं ७७) स १६१ वि १२ ३ X 1) i विष्पादम वि दि हास्य-कर्ता उपहास क्रमंत्राचा (शुक्र १ १३)। विष्यिभ पून [विभिय] १ मन्निय, मनिष्ट (रामा १ ६०--पत्र २१६ मा २१ ४ ३६ ६४ ४२३)। २ सपराव गुनाइ (पाम)। भारय वि [कारक] १ प्रशिय-क्दा । २ प्रपदान-क्दा (१ ४ १४१)। विपिक्षिभ वि वि । परिता (दे । विष्पीइ की विप्रीदि भन्नोदि (परा १

र---पण ४२) ।

(\$ 4 94) 1

विष्युक्षे [विष्रुष्] विष्यु, सवयव संद्रा

बिप्युक्ष वि [बिप्युव] उपहुत, उपहन-पुश्च

बिप्पुस पुन देवो विप्पु 'मसुनस्य किपू-सेखनि (पिक १६६)। वियोक्स सक [विप्र+इक्ष ] निरीप्तस करना देखना । शब्द-विष्यक्तीत (पराह १ १--पश्र १८)। विष्येक्टाञ्च वि [विप्रेक्षित ] विधिक्रत (प्रकार ४--पप्र १६१ मन १ ६६--पत्र ४६६)। थिएपास ह की वित्रीपश्चि प्राप्यारियक-शक्ति-विशेष जिसके प्रसाद सं यांगी 🗞 विहा भीर मुखका विल्यु भोषवि काकाम करता है (पराह २ १---पण ११: धीप: विस ७७६, संदि २)। षिरफंश **धक** वि + स्पम्द्र । इवर-उपर वतना तर्कना। वह-विष्ट्रंतमाण (भाषा)। पिप्संविभ वि विस्पन्तित व अपर-क्वर मन्द्राहमा परिप्रान्त व्हरतेस जस्मि सहस्य विष्कृति(१वि)एस जीवेशी। विरियमने दुनसाह सहवर्गाः-धिंख मुताई र (पत्म ११, १२)। विष्करिस र् [विस्वर्ध] निबद्ध स्पर्ध (प्राप्त) । विष्यप्रका वि विषाटकी चीरनेवासा विदारक (परहार ४-पत्र ७२)। विष्फाबिक वि [वे विषाटित] मानित (200) भिष्मारिय मि [सिस्मारिय] १ मिस्सारिय (क्ष्म प्र १६२) । २ विकासित (सूपा ८३) । विष्कात एक [वे] पूछना पूच्या करुता। विष्यानेइ (वद १)। विष्मान को विमान । एक विष्यास्त्र (धन)। विष्याल दृदि] इच्या प्रता (वव १ दी) । विष्यालया की दि] अपर देखों (वय १ टी)। पिप्फाडिय को पिप्धारिय (राज)। षिएकुत वि [विस्तृत्त ] साठ व्यक्त (रंबा) । विएक्त पड़ [ चि + एक्ट ] १ होना। २ 'पुरुप्रोक्षाण विष्पुता विष्या' (बीफ विदे विकस्ता। ३ दङ्क्ता। ४ फ्रक्ता दिलता । विष्कुरह (वंशवं १४' काका स्वति)। वक्र. थिएकुरंत ( बत १६, ४४) पत्रम

1 (# #3

e32

र ४१ वर्षः)। विष्णुक्षः तिः [विष्णुक्षः] तिकस्तिः प्रयुक्तः 'यदं यदं पुरद्दाः प्रयुक्तयंत्रतिकरंगुद्धाः द्वार्थः (दक्षः ४४) । विष्णेत्रस्थं यु [विस्सोटकः] चोद्दाः (सट—

रुष्ट्र २ वि ३११ माम)। विफंद देवी विष्ट्रंदा वक्र विफंदमाज (प्रावा१ ४ ३ ३)।

विषयस सक [वि + पाटम ] १ विश्वास्त करुवा २ सकाकृता । संक्र विषयस्त्रिय

कष्याः २ स्वत्याः सङ्घ्याः विकासियः (याचा२,३ २०६)। विकुद्धः सङ्ग्रितः विकस्युद्धः वटनाः वद्यः

वितिष्ठ कि क्लिक्ट्रेस वेडक्सेन्डसस्य को' (पुरा ४२)।

विकुरण देवी विष्कुरण (तुना २६)। विश्वेषक नि [विवन्यक] विरोध क्या हे बाक्येनाला (र्गक २, १)।

काक्यकाता (पच २, १) : मिन्नद्व नि [विक्य] १ विशेष कडा २ माहिल (सुम १ ३ २ १) :

विकादग वि [विकासक] विशेषी वालक (पर्यंत ४६६)। विकुद्ध वि [विकुद्ध] वागृत (विदे ६१६)। विकुप (शी) गीने केवी (वि ६६१)। विकुष दु [विकुप] १ केव विवस (पायः

विश्वद् पुं [विश्वय] र केर विश्वय (पास्य पुर ( ४४)। २ पविस्यव विश्वय (पुर र ४४)। जंद पुं चिल्ला एक प्रशिक्ष केलायां (पुरा दर )। पहु पुं चिल्ला एक (पुर र १४२)। पुर ल पुर ने कर्म (सम्मत रूपर)।

स्य (तर १ १४२)। पुर नियुद्धी सर्व (समस्य १४३)। विद्युद्धित वृ्धिवामीयस्य इत्य (सन्व १६)। विद्याद वृ्धिवामी सम्यक्त (वर्षा १४२)। विद्याद के विद्याद्ध (क्य)। विद्याद्य त विद्याद्य क्या

विजीहम देवी विकाहस (क्ष्म)। विक्रीहम न [विजीसन] कन करणा, 'समुद्रयत्त्रियक्रसम्' (तम १२३)। विक्रीहम नि [विक्रीसक] १ निकासक 'मुद्रवरत्त्रियोदम्' (वस्म १० दे)। १

#ान-वनक (निदे १७४) ।

हेता समियं सीमा विश्वीया विश्वीया विज्ञाती यं (शय) । वैश्वी विश्वीया । विश्वीय वेशी विश्वीय (स्त्य वह १२६ कम्म ४ १४) । विश्वीयी विश्वीयास्त्री विश्ववात्त्राचा

विक्रमीयि वि [किमक्रियाँ] विभव-सानकावा (सर्व)। विक्रमीय वि [किम्सान्य] रै क्टिन भ्रष्टक, कक्कर में प्रसूचा (साना रै ६ ४ १)। २ पं प्रकार नरक-मीर्यका साक्रमी नर

२ थूं प्रचम तरक-मृति का बातवर्ध तर क्रेन्नक-स्थान विशेष (क्षेत्रक १)। विकास थूँ [विकास] बरिताल विशा तरक-विश्लोसन (एव)। विकास हैं [विकास] विशेष कर (प्रति ४)। विकास थूँ [विकास] रै विकास (पास क्रेन्नर १ए (१४० कुमा)। २ क्षेत्र गैरा प्रति

के सप-मूत्र चेतुः निरोक्त (सज्जः स्व. १)। वे विश्वनेस्त्र पास्त्रवाव (स्व.)। ४ अर्थास्त्र स्वत्रित् (सुत्र ६२०) वज्जो। १ वेदेषः। स्वत्रेत्व । व रोगा (स्व.)। १ प्रस्तुत्व । स्वत्र-निरादम्य (कृता)। १ पास्त्रव वा एक कृत्य (स्वत्र १६ २१)। ११ त्रैषुर्व-सम्प्राः १२ वान-निकार (पर्याः १ ४—पत्र १९)।

(तुर १७, १९, १६०)। २ म्यावकः सङ्घोष १९ द्वी केषु वास्त्रस्य (यह ४) १२ १)। पिटमस्थित के [बिह् बस्तित] ब्याकुत किया हुया (हुना)। विध्यस्था व [ही] कावाद, सोसीहा (३७

विक्साविय रि [वे] गारिक (वीवे)। विक्सार देवो वेदसार (रि २९६)।

विभिन्नविद्र [क] मस्य की एक बाहि (क्या १ टि—पन ६): विस्मेदल नि[क] दूर ते निक्र (१ ७ ६७):

विभाग पू [विभाक्षा] १ विवरीत धवविकान वित्तव धवविकान, सिम्बहन-कुछ धवविकान

्व २४)। व विश्वचना व्यवना ४ मैंबून प्रमाप (पद्धा १ ४—नम १९)। वेको विद्यान निर्मम् । विमेगु देवी [के] कुल-निरुक्त प्रवे दूर्मार्थे करकार्युटे तहा निर्मम् म' (यस्स १—नम

क्षरकरण वहानामु प्र (२००० १— १ ३)।
विसंगुर वि [यसमुर] विश्वर (मृग १ १) प्रामृ १८) पुन्न १२ )। विसंन वक्ष (वि + थड़ा) चंप शक्ता, वीन्ता। चंक्ष विसंक्षितन्त्र (क्षत्र)। विसंग्री (व्य ) व्य [यिकान्ति] विधिष्ट अस (१४ ४१४)।

(प्रध्म ११३ २६)।
विभाज सक [वि+ मजा] १ वास्त्राः
नियाज करणा। २ विकार दे प्राय करणा।
प्रध्माः प्रायिक करणा- विकार दे प्राय करणा।
विभाज करणा। कर्मः नियम्प्रति (वृष्ट् १)। करणः
विभाजमाण (श्रामा १ १ – एव १
पर २१४ थ्री। श्रेष्ट विभाजिस्यण (वर्गीप
१ १)। केर्मा विभाजा।
विभाजाण विभाजा।
विभाजाण विभाजा।

(का १०)। पिसमा केते विश्वजा विशवजा (कास १, १)। विसम्बद्धार ) पुंचित्रसम्बद्धार स्थानः विसम्बद्धार स्थानसम्बद्धार स्थानः

(बर्चें १२१) मूस १ १४ २२ तथर ११)। विभाव दि [विभावः] १ विध्यतमुख्यः, वांस हृष्यः (बाट—चक्रु ४६ कम्म) १२ दिवरः स्वतः, बुद्धाः विकास स्त्रीमास्त्रे (सावाः स्वतः) सार्वः १ वर्षः स्त्रीमास्त्रे

क्यां खा)। १.व. सिखा (एव)। विमति की [विमाण] १ विधान सेवः (सर ११ - ११ - १५४४ तुमति ६६) काति ११) कीवस्य नगरेतु सर्गत्तरपरमा विमालीहें (चेव २ १४) ४ ४१)। २ स्वाकरकुमीस्व प्रत्यन्तिरोग (वीवसा ४४-

केट्स २१४४ पूर्णात ६९)। विभागण त [दे] ज्यवान, धोबीचा (१७०, ६०६)। विभय-विमण

विभवणा 🛍 [विमञ्जना] विद्यान (सम्म 1 (1 1 विभर एक [पि + स्मृ] विस्मरम् करण

मूस वाता। विभक्त (पि ३१३)। विसव देवो विद्यव (छव महा)।

विभवन प [विभवन] विकासात वराव करना (सम्)।

विभाइम वि विभाग्य विमाग-योग्य (ठा ३ २---पण १३४)।

विभाइम वि [विभागिम] विभाव से बना हुमा(ठा३ २—पद (३४)। विसाग पू [विसाग] चंद्य, बॉट (कास

विभागिम देखो विभाइम = विभागिम (छप

यु १४१) । विभाग देखो बिमाग (रेम)।

यिमाय न [विभात] प्रकाश कान्ति देव (सम्मु)।

विभाग प्रतिभाग परिचय 'कस्स पिस-मबसाबिमाधो न होई (च १३व)। विसाव सक [वि + भाषय\_] १ विचार करना क्याल करना। २ निवेक से प्रदेश करनाः ६ तमस्ता । यहः विभावतः विमा र्वेत, विमानेमान (धुन् १७०- का ११७ ही, रूप)। समझ. चिनाविस्त्रंत यिभा विकासात्र (वेद १२) संबंधि 💘 )। क्षेष् विभानसप् (क्व)। इ. विभाषणीय (रूफ

विभाव के विभव 'तपा महाविभावेखें पुरुष्ण वेस्मि गया मं (महा)। विश्रासम् पू [विभाषस् ] १ पूर्व, रवि । २ रविवार (परम १७ १७७)। देखो पिकाषस ।

पिशाबिय वि [विशावित] विवारित (सम्बर्ध)। विमास सक [ वि + भाप ] रे विदेप बरा संबद्धना स्पष्ट बद्धना । ३ व्याक्या करना ।

२ द्यायाः विन्तातंत्राचीरमुख्यादं (प्रव धीव)। ६ विकस्प से विवास करता । विवासक (पव बट रारीर पर धर्मकार-वज्ञ भावि की सजा ७३ टो) । इ. विमामियम्य (उन्तर ३६ बट (ब्यवार २१ के बीपः जीप के)।

2 ×x) 1 विमासण न [विमापण] म्यास्या व्यासमान (विस १४२८)। विभासय वि [विभायक] म्याक्साता

म्यास्या-कर्ता (विते १४२**१)** । विभास की [विभाषा] १ विकश-विधि पालिक प्राप्ति, सबना विधि धौर नियेव का का विमान (पिंड १४३ १४४ १४४

२३४, १ २ उप ४१४ टी ह १६)। २ ब्याक्या विवरण स्पष्टीकरण (विते १६०१ १४२१ चित्र ६३७)। ३ विज्ञापन निषदन (उप १८)। ४ विविच भाषण (पिड ४६८) । ४ विरोगोणि (वेनेन्द्र १६७) । ६

परिमापा संनेत (कम्म १ २८) । ७ एक मद्वानदी (ठा ४. ३—पत्र १४१)। विभासिय वि [विभासिव ] प्रकारिक अव्यक्तित (सम्मत्त ६२) ।

विभिन्न ) देशो विद्युष्ण = विमिन्न (बडड विभिन्न रे ४७ ३ ११व उच्च १६, ६१)। विभीसण दे विभीपणी र पनस का एक कोटामाई (पदम व ६२)। २ विदेश वर्ष का एक बासुदेन (राव)।

विभीसायण वि [विभीपम] मन-जनक धर्मकर (मिथि)। विभीसिया भी [विभिषिक्र] मय-प्रवरीन (अव) । विसुदुविसु । प्रदूर परमरण (पठम ४

७ १२)। १ इस्ताङ्क वंश के एक राजा का ताम (पत्रम ६, ७)। ४ वि व्यापक (विदे ११८४)। षिभूद्र औ [विमृति] र ऐस्वर्ग, वेमव (बनः धौप)। २ ठाटबाट धूमवाम 'महाविमुदेए

११२) । २ माच स्त्रामी मास्निक (पद्म

चित्रयो निल्नित्तार्' (सुर ३ ६२ मदा)। १ धर्मिसा (पर्या २, १—पत्र ६६) । विमूसज न [विमूपग] १ धर्मकार, बाना ।

विभूसाधी [विभूषा] १ सिंपारकी सवा

२ शरीर-शोभाः 'मङ्गुलामो अवर्धतस्य कि विमुसाद कारियं (दस ६ २ ६४ ६६ ६७ हत १६ ६)। विमृसिय वि [विमृपित ] विमृपा-पुक

मतहरू, रोभिट (भग उत्त १६ ६ महाः विषा १ १-- पत्र ७)। विभेद १ 4 विभेद ! मेदन विकास्य विभेय (वर्गस a २१)- 'अयगरणकुम-विभेगन्यमे (मडक का ७२८ टी)। २ भेद प्रकारः 'उड्डाहोतिरियनिमेमं तिहुवर्णीप' (चेद्रय ६१४)। विभेयत वि विभेवकी भेरतकर्ता 'परमम्म विभेयवी (वर्मवि ७१)।

विसन् की विसनि प्रत्य-विशेष (पिम)। विमक्त कि [ते] मस्सित तिरसक्त (के 5 5t) I विसरुख वि सिमुकुछ विकसित विसा हुम्स (सामा १ १ थे- पत ३३ मीप)। बिमंतिय वि [विमन्त्रित] विस्के बारे में मस

बहुत-नुप्त दुक्ति की नई हा नह (गुर ११ ₹**७**) 1 विमस्तित्र वि विमय विमरिति विवासित पर्यासोपित (सिरि १ ४३)।

विमग रेको विमय (एव)। थिसमा सक [यि + मार्गय] १ विवार करता।२ अस्त्रेपछ करना चौजना।३ प्राचेना करना भोवना । ४ इच्छा करना चाइना । विभागाइ, विभागाहा (उव उत्त

(स १५१ पुर २ १० से ४ १६ पहा) १ थिमारिगाञ्च वि [विमारिगन ] १ वाचित मोगाह्या(हिरि १२७ मूर ४ १०७)। २ प्रावेषित मनेपित (पाम) ।

१२ ६=)। वह विसम्मंत विसम्मामाय

थिसक्स न [थिसच्य] भनायन (यज)। विमण वि विमनस ] १ विषएण विम

रोक-क्टा (कप मुर्द १६८ महा)। २ शुभ्य-चित्त सूत्र चित्तवासा (विपा १ २--पत्र २७)। ३ निरास, इतारा (पा

७६)। ४ विस्तरम मन यन्यन नया हो नह (के ४ ३१ गबह)।

t00

विसद सक वि:+ सर्वेय, दिस्पर्व करना। २ मर्दन करना। क्वक विस्तृति व्यमाय (धिरि १ ३८)। विसर् र [विसव] र विकास पाससप्रिस-र्वतरकमिर्विभर्तेनल्यं (मृत्य १० मन्त्र) : र बेर्च , ए ७२२ पत्र तरे)। विमहत्र व श्विमदत्ती ज्ञार देशो (बरि)। विसम्र स्टर्शिक्स समी सलता विक्ताः बद्ध का मुस्लिव संविधन्तीना (मुर Y RYY) ! पिमाय वं वि वर्ष-वनस्पति-विदेश (पर्छ ₹~~1**9 11**} ( बिमर (मा) श्रीवे देवी । विमर्धा (पिन)। विमरिस स्कृति+स्त्री विवारताः पिमरिसिक्ब्य (श्री) (प्रमि १ ४) । विमारिस 🖠 [विमार्थ] विकास विकास (धन) । बिमका वि (पिमस्ते । मध-प्रतित विद्या निर्मेश (बप्प बीक्स ४१) पढ़म देश २०) दूसा बासु२ १५७) १६१)। २ प्रे. इत बार्गलावी-गांव में बलम्म देखने विमरेन (क्व ४६) प्रति)। ६ म्यस्टवर्ष में होनेपाने वा<sup>र</sup>नय जिन बबगन (सम ११४)। ४ वह आरोब जन बारावें बीर रुदि विकॉने दिश्य की प्रवत शतान्धी में 'चढनवरिप्र' मावड बैत रावायस बनाई है (पड़ब ११ ११ ) । ४.ए४ महायद्धः अधेक्षिक देश-रिशेन (द्वार १---पत्र ७८)। ६ ब्रह्माल प्रतिहरू बाब का पूर्वक्रमीय ग्राम (ध्रम१६१) । ७ दृत सहसार क्षमा ६ व इस हा एई पारिमानिक रिमान (दा -- नव ४३७) । पद्म-देशनाय में विश्व यह देश-दिवान (सन १३) दरेग्र १४) १ एक ध्रमक बेक्-रिमान (नन प्रशः देश्यः १४१) । १ वयातार धः दिनों का "रातम । ११ नवाचार याउँ रिका का प्राप्तन (वंदोव ६०) । १२ वं परिता दबा (पण्ड २ १---पत्र ६६) । "पास व ियाची एक दुनकर पुरत (सम १६)। चीर १ विश्व विषय केत्र मानावी (बहा)। त्यदा क्षेत्रिमा वासन् सीजानावत्री को द्यापनिर्दारका (विकास १३६)। बस

वं विदा पानत-प्रायुक्त देवलोक के इन्ह्र का | विमाज ईन [विमान] १ देव का निवास-एक पारिवानिक विमान (ठा १ ---पव ११a)। बाइण र विश्वनी १ भारत-बर्ध के धारी प्रवस विनवेद विनवे इसरे नाम देवकेन तथा महाराध होते (ठा ६---पत्र ४११) । २ **इसकर** पुरुष-विशेष (सम १ ४ ११३ पक्रक ३ ६१)। ३ मास्त्रवर्ष द्य एक घरी पक्तर्सी चरा (इन १६४)। ४ एक भैत को अस्पात् धरितकान के पूर्व थलम में बद में (पद्धम २ १२८१७)। ६ परकान् संबदनाक का पूर्व-वल्पीय नाम (सम १२१) । सामि वं स्थितिमा विजयकरी का परिशासक देव (felt २ ४)। संर्पी भी ["सुन्दरी] यह शतुरेत भी पटरामा (पत्रम २ १व६) । विमस्त्रन न [विमर्दन] मस्त्र वर्गद नो राख पर विस्ताः वर्षेष (दे १ १४०)। विश्वसद्द पृथि दे क्लाइन कोलाइन (दे क **७**₹) I विसद्यादी विसम्बार सर्वे दिख (व t — पत्र ४० )। २ वरछेन्द्र के लोकपानों <ी घद-महिषियों के नाम (ठा ४ रे—पत्र २ ४) । १ बीवर्राष्ट्र धीर नीवयश नाय है क वर्षेत्रॉ नी सब-महिषियों के नाम (स्त ४ (---पत्र २ ४)। ४ मीदार्वे क्रिकेट की दोचा विविद्या (सम. १६१) । विमस्तित्र कि [विमर्दिन] विश्वका पर्वेत किया दवा हो बहु, पूर (वे १ ७)। पिमसिक्ष वि दि देशपार से बच्छा २ राज्य सहित राज्यामा (दे ७ ७२) । विमक्षमर 🖠 [विमलधर] विद्यवस्त्री का र्षाश्हायम् स्य (स्थिर ७७३) । विमह्यचर र्नु [बिमह्यचर] ऐरवत वर्षे हा एक कारी स्मितेत (यम १९४) । रिमहिद (छी) रि (दिमधित) विकश पपन दिया परा हो वह (बार---मानीर v )। स्मित के विमानी बीतेनी वा (वत १६ विमुख वि[विमुक्तः] १ पुन हुषः, ल्युः tut) i निमान बङ [बि+मानव] धामन करता, तिरस्तार करना । रिकाली कह (पहा **11)** (

ध्यन (सवर् व १ १ ११ हिम्ह म बद्या कपा देवेन्द्र २४१३२४३३ पर्या १ ४---वक् बच्च कि १२)। २ देव-बाल मानवाय-मान्य बाबका में बीत बच्चे में सबबे एवं (सं ६. **७२। इत्य**े। ३ अपमान विरस्कार । ४ विमान रहित, प्रमास रम्ब (से १३७२)। पविभक्ति भी विभक्ति के प्रक विदेव (इन ६६) । समज न सियन विभानप्रकार गृह (कृष्प) । यासि प्रै विवासिन्। देशों की एक सत्तम जाति वैम<del>ानिकदेव (परहृह ४----पत्र ६८) सि</del> विमाजना 🖈 [धिमानना] प्रवरणना विस्कार (वेस्व १६२)। विमाणिम रि पिमानियाँ परमानित (गिर ४१६। कम्प महा ) । विमिस्स व [विस्ट्व] विवाद क्रके। गारि वि विशासन् विकार-पूर्वक वरने-नामा (स १०४८ १२४) । विभिन्छ नि [विभिन्न] मिथ्क मिवा ह्या, पूर्ज (पैप २ ७३ महा)। विभिन्सण न [पिमिभण] पिथल निवास्ट (बम्पत्त १७१) । विमीसिय वि [विमिक्ति] विविध विधिय (भूकि)। पिस्ड देनो पिस्ड (यम)। विसंच बक [पि+सूप्] र बीक्रा क्ष्मत-पुद्धः करमः। १ परिवास करमः। विश्वेषद् (मल्)। कर्म, शिमुबर्द (द्याचा १ १ ६ ६) । यहः विमुच्त (नहा), विमुच [सिप] माज (काबा १ १— वर ११)। इ विमाधका (जा २६४१) पिमाप ( on 7, 1--17 (a) पिसुकुन्द्र रेपा विमाउछ (पर्णा १ ४—वन

कन्दन-पहिता कारियुपरण बालेल (नहा

४१ पाप मानानि १४१)। २ परियना

विद्वारीयार्थं (महा ७०) । १ वि.संद,

बंब-पर्वत (पाबा २, १६ ८)।

• **२**) ı

विस्तृरण न [यिस्मरण] निस्नृति (प**न** ६

संबोध ४३ मुक्त ८ )।

481

विमोद्या न [विमोटन] मोड्ना (वे)।

विसाय सक [बि + मोचय ] सुज्ञाना

प्रश्न करना । संब्र, विमोधकण (प्रश) ।

करनेवाला 'न दे दुश्वविमीयमा' (मुद्रा १

थिमोसका देवो विस्च ।

विमीय देवो विमुख ।

विमुक्त र् [विमोक्ष] पुरुवस्य पुष्टि (वे ११ १६: मानानि २१८ २११ मनि १)। विसुबस्त्रण वेका विमोषस्त्रण (उत्त १४ ४) ब्रुप्र १६६) । विमुच्छिक वि [विमृच्यित] मूर्वा-प्राप्त (से 28 24) 1 विमुत्त देवो विमुख 'मुदिनिमुत्तेनुनि' (पिंड विमुत्ति की [विमुक्ति] १ मोब मुक्ति (बाबानि १४१ कुन्न ११)। २ माथारांन सब का शन्तिम शब्समन (शाबा २ १६ १२) : व बहिसा (परहार १---पत्र ११) । विमुयण व [पिमोपन] परिस्वाय (धंबीव 2); दिमुद्द वि [विमुख्त] १ पराङ मुख उदासीन (मरुद्रः भूपा२ ८ मधि)। २ पूंपक मरक-स्थान (बेंबेन्द्र २४) । ३ पून. भाकारा यसन (धय २ २---पत्र ७७६)। विसुद् यक [ वि + सुद् ] ववस्ता व्यापुत होता वेचैत होत्य । यक्ष- विसुहिटांत (से 8 X41 88 X8) 1 विमुद्धिभ वि [विमुग्ध] पवराया ह्या (व ४ ४४ मा ४१२) । विमुद्धित वि [विमुद्धित] पराष्ट्र मुख किया हुमा (पराह १ र--पत्र ४१)। विमुख्य विविभृतः देशका ह्याः २ बस्कुट, भ्रस्पप्ट (गडर) । विमुख वि [विभक्तक] डोक्नेवासा वर्डक-कर्ती; 'में मंदन' बाहुबबिस्स झासि देखस्मिछी मास्त्रिमूरसस्य (भंगव १)। विमाइय वि [विमोचित] स्वामा हमा (खाया १ २---पत्र वदा श्रुपा)। विमानका देवी विमुक्त (से १ a)। विमोधकाम न [विमाधक] १ कुळाच बुद्दाना बन्बन-मोचन (पाचा सूप्र २ ७ र पतम १ २ १वव स १व ७४२)। २ वि पुरानेपाचा विपुष्त करनेनाता 'सम्बद्धस्यविमोनकत्तं (सूध १ ११ २) २ ण १)। बर्री भी (बत्त २६,१)। विमोक्स्स्य वि [विमोक्षक] कुटकार पाने-बालाः 'ते दुक्ब-विमोनवया' (मूप १ १ R X) 1

विमोयण प[सिमोचन] र पुल्काण मुक्ति। २ वि पूर्वानेशालाः दुष्तस्यविमीयस्त्रकार्ष (पराह्र २ र-पत्र ११)। विमोयणा 🛍 [विमोचना] कुलाय (मूप t ta (t) i विसोह सक वि + मोहम ी मुख्य करना मोइ उपवाना । विमोद्वेद (महा)। एंड थिमाहिका विमाहका (मग १ ५---प्रमु ४६०)। विमोह क्या विमाक्स (धापा)। विसाह वि [विसीह] र मध्य-प्रीहत (उच ४, २६) । २ <u>पू</u>. विशेष मो**ग्र, क्लाध्य**ट (श्रम्मच १२६) । ३ श्रामार्थन सूत्र का एक श्रममन (सम ११/ठा ६ क्ष--पत्र ४४१)। विमोद्यन [विमोद्न] १ मोह क्पनागः। (सुर ९ ६०)। २ वि मोह्य उपकालकाता (उर ७२० टी)। विमोदिश वि [विमोदित] मेग्र-प्राप्त (महा २३ १२)। मिन्द्र न चिरमन् देशाबर (स्तर)। विमहरूल वि [विस्तित] प्राथवं विकत बमकात (मूर १ १६)। पिमह्य धक [थि + रिम] वमकृत होना विस्मित होना सारवर्शनित होना। ह विम्ह्यणिका,विम्ह्यणीम (हे १ २४६-म्रमि २ २)। बिम्ब्य पूं [बिस्मय] धारवर्ग, पगल्कार (ह २, ७४ पर् प्राप्त समा नवड समि १)। विमहर सक [स्यु] यार करना । मिनहरह ( Y & A ) ! विन्दर धक [च + स्मू | विस्मरत करना बाव व बाना भूव जाता। विमहरा (ह ४ **७८** प्राष्ट्र ६३ पर्)। सक्ष विस्तुरीत (41 £4) i

यिनदराइअ वि वि । र मुस्ति मुर्स्स प्राप्त । २ जिल्लापित (मे ६ ४१)। विम्ह्यवर्ण वि [सारण] स्मरण करामकामा विमायग वि विमोचकी धोइनेकामा हुर वाद दिलानेवाबा: बावएएवीरक्ट्रविम्हरा पसा' (दुमा) । यिमहरिअ वि विरमृती कुना हुया याद व किया हुन्म (हुमा पान्न)। विमहस्र देही विकास (उप १६ दी)। विम्हरूअ देवो विक्सक्रिम (प्रकार २२)। विमहारिश्र वि [विस्मरित] भूगया हुवा (क्रमाभा२६) । विम्हारिअ (पप) देशो विम्हरिअ (मस्)। विमहात्र सक [ मि + स्मापय\_ ] मामर्थ यभित करना । विम्हावेद (महा निष् ११)। वक् विमायित (उत्त १६ २६२)। विम्हायण न [बिस्मापन] भावर्य उपजाना विस्त्रम-कच्छ (भीप)। विम्हायणा भी [बिसमापना] अनर देखो (Preg. 22) 1 विम्हायय वि [विस्मापक] विस्मय-वनक (सम्मत्त १७४)। विम्हायिम वि [विस्मापित] बायपन्नित क्या हवा (वर्गवि १४७)। विनिध्य वि विस्मित्री विस्मय-धाप्त चमरक्षात्र (भा २०--पन १६ : उन) : विनिह्न (प्रप) देशो विन्ह्न । विन्ह्रियह (बरा) । विनिद्द वि [विस्मेर] विस्पय पानवाचा पमरहरा होनेवासा (भा १२ २७)। वियवा देवी विज-वा । वियद्ग सक [वि + यूम् ] वस्त्रता शांता। क्षेत्र-वियद्विचय (भाषा २२२३)। वियद पू [क्यर्व, क्यह] प्राकार, वाल (भग २ २--पण ७७६)। विर सक [ भंडरू ] मर्जना, तोहना । विरद्ध ( ( X Y ( 1) i विर मक [गुप्] म्यादुम होता। विरद (हे ४ १६), विरंधि (क्रमा)। विर (मा) देवो वीर (सगु)।

थिएक और विकारितों रे विकास निवासित। र शानदा --पाप कमें हे निवृत्ति, संयम स्थाय (रक पाना) । ३ क्ष्मध्यक्रमधिक निषाय स्थान यति (वेदन १ ०)। विराध्य वि विराधित । इस निर्मित क्नाव्य प्रच्या । २ धनान्य प्रच्या (पायः चीपः करा प्रस ११ १२१ कुमा महा। रेसा अस्य)। विराज के विराज्य (अम्)। विरायस्य देशो विराय = वि + एक्स । ४ रे वि ७ सम्मत्त १६२)।

#3*v* 

विरंचि वे विरक्षिती बहार, विकास (का थिरच । यक वि+रआ देश रिकडोना बिरद्ध है ब्यादीन होना । २ रैंब-प्रीत होना । विरुद्धाः (स्था यस २६,२ महा)। बद्ध विरक्षत विरवमान विरव्यमान कि ४ १४३ मिंग चता २६ २ मा १४६, 244)1 बिरक्त नि [बिरक] र क्यासीक नियन प्राप्त (सम १७ मानु ११६) १६६ माता) । २ विविध रॅवशका (याचा १ २, ३ १)। विर्मित की विर्मित वेगन व्यक्तिका (इस ६ ६२)। षिएस क्रक (वि + स्प् ] निक्क क्षेत्र बट क्या। विरम्भ (वा 🕶 ) विरमेशा (पाचा) विरम विकास (वा १४१: १४१)।

प्रयो... हेक. घिरमाचेड (या १४१) : बिरम र् किएमी विराम विद्वति (बटक शा ४४६ ६ ६ गुर ७ १६६)। विरमय देवी परमय (चन शना)। विस्माण सक प्रिति + पाळ्य**ी** पाळन क्रम्य, काल क्रमा । विस्मालक (काला 1 (825 विरमास वर [ प्रति + रेभ्र ] एक रेवना बार बीरुक्त प्रतीया करना । विर्माबद (है ४ ११६) । धेङ्ग विरमास्टिम (नृवा) । निरमासिभ रि [प्रशीकित] जिस्सी प्रतीका मी महें हो यह (पाम) । पिरय तक वि+रचयी १ करता काल्य। १ प्रमाना धनागर करता। विराहर विरक्षति विरक्षमानि विरमह (ब्राह ७४)

(सर १६ ११)। इंद्र- विरक्तम (नार)। क्षेत्र विराय (स्ता १)। इ. विरायम्ब (प्रथम ६६ ११) : विरय वि विरस्ती १ निवत्त क्या ह्या विराम-प्राप्त (अवास्ताना १४१ वे ४६)। २ पार कार्ब से मिन्न संबंधी स्वासी (भाषा) चन)। १ न-विचित्रः विच्यम । ४ धैयम ध्याव (वे ४६ कम्म २२)। विशय वि िमिर्टी धारिक धेया खलेगावा कैन क्यासक सावक (सम १६) । बिर्य पुंचि कोटा कत प्रवाह, स्रोटी नवी

**म्य. पि ११ ३ स्टा)। पश्च. विरयमाण** 

(रे ७ ११): विस्ता क्लुक्तिमानी (पाच)। निरम प्रे विराजस् ] १ महत्वह, क्योक्निक देव-विरोध (बुण्य २ )। २ एक देव-विपान (रेकेट १४१) । विरयण और विरयत १ प्रति निर्माशः। २ प्रवावट (नाट---पावती २८; कप्पू)। बी. णा (सूपा ६१ से १४, ७१): 'पश्चित्रस्य विम तमर विरम्मा (क्यू)। विरया की [पिरमा] १ मो-तोड़ में स्वित सवा की एक बच्ची। २ उत्तके राग से वनी इर्ड एक नदी। 'संविधविरधाधरियां' (यण्ड् 1) 1 बिरस्त नि (बिरस्त) १ धन्य योग्रा परपुरवी

दुन्बिमारिका (दे२ ७२) ४ ४१२

डन प्रस्तु १ ≼ा पड≢)। २ मनिविड ।

विरक्षि की दि । एक निरोध बोरिका बोरी

वाचा कपहाः विश्विमाई मुरिनेमां (पव बार दीरे र विरक्षिम वि [विरक्षित] विश्व वना हुन्छ निया किया क्या (गरह) । विराही केन्रो विराह्मी (एन) र विद्यार विक्वेद विकासि (हे ४ १३७)

६ विध्यक्त (नरवः स्व) ।

विराह यह विन् विस्तारमा, वैनाना । पदः । वच्छः) ।

बिरक र् [तान] बिरतार, क्रेनाव (वर ४) । विरक्षण व [तजन] विस्ताद, कैवाका 'चट्ट-मधीरकाले प्रया प्रवर् (३व) ।

विरक्षिम वि वित् । विस्तारकामाः विस्तारिक (दे ७ ७१) पाया हुमा ग्रामा १ १<del>७ -</del> 44 5961 Et A A---44 50871 488 ध्वा साहीया भारे नुबद्ध विस्त्रीतया सती (विशेष १ १२)। विरक्षित्र देवी विरक्षिम (राज वनि)।

पिरिक्रिश वि [द] बनाह भींवा इस्र (रे u ut) : विरस क्क [वि+स्त] विकास करन करता । वह विरसंत (बर्फ) । बिरस वि विरस्ते एव-धीव कुन (छाना १ र—पत्र १११ः स्टब्स के १ ७ सम्)।

२ विस्ता रतनामा (तम ७ ६—पत्र ३ ३) । ३ ई रामध्यता मध्य केशाव वैत रीता बेनेवाबा एक समा (परम १८३) ४ व. तप-विदेश निविद्वतिक तर (सबीव **x** ): दिएस र दि ] वर्ष साम्ब वाण्या मास (दे **₩ ६**२) ι विरसंस्कृद दू [के] बाब, कीया (दे विरसिय वि [पिरसिव] एस-दीन, एस-

विरक्षित (इम्मीर ११) । विखासक किं+का र परिकाय करन्य । २ व्यवप करना । क्यक, विरक्तिकांत (नार-नाकुर)। इ. विरहिसका (तो) (नम--शक् ११७)। नियह दें [विराह] १ वियोग, विक्रोह, बुराई (परका है रे अप रेरेश प्राचु रेश्ट कुमा म्बा) । २ मन्तर, स्थवतन (भव) । १ ई

इस-विरोध 'पुरवति विराहराका सीम्य पंचनुष्वार' (संबोध ४०) या ३४), चरा-दियो प्यारचे दिएही नाम तक बाहस्त बीर्ल द्वारावियो सी (द्वार १९१) कुल्लीत विधीखो विरह्मन सम्बन्ध वंबने वेदि (इ.स. २४०) । ४ यध्यक् । ४ विकास (धन)। ६ इरिवेश में इस्तब एक शना (पक्स २२ ६८)। विधानि [निस्थ] स्व-धीत (परम १

षिख्—षिरुट्ठ	पाइञ्चसद्महण्णवो	v3v
परम् — विरुद्ध । र प्रकार किया (१ ७ १ र जामा १ २ — पण ०६ पुण्ड १४४), धामाप स्थीप पर्वपाणि य विद्याणि व विद्याणि व विद्याणि व विद्याणि व विद्याणि व विद्याणि व विद्याणि विद्य	विध्य कि [चिछीन] १ विश्वेष्ठं, विगतित वधु (है ७ ६४ नंदर हुमा ६ ६०)। २ विषत्ता हुमा (गाम)। विध्य हुमा ६ ६०)। २ विषता हुमा (गाम)। विध्य हुमा हुमा ६ ६०)। २ विषता हुमा (गाम)। विध्य हुमा हुमा १ १ वमा १ हुम १११। विध्य हैमा हुमा १ १ वमा १ व	विरिनि वृ [विरिद्धि] इसर देवां (पुर १२ ७६)। विरिनिक वि [दे] १ विस्ता निर्मेण। १ विरक्त, उपायीम (दे ७ ६६)। विरिनित वृ [दे] १ वरस पोड़ा। २ वि दस्त (दे ७ ६६)। विरिन्धि की [दे] वाद्य प्रवाह (दे ७ ६६)। विरिक्ष वि [दे] वाद्य प्रवाह (दे ७ ६९)। विरिक्ष वि [दे] वाद्य प्रवाह (दे ७ ६९)। विरिक्ष वि [विरिक्ष] को कामी हुमा हो वह (वस्त्र ४४ ६२ प्रमा ४२०)। दिख्य वि [विसक्ष] र बोटा हुमा चेले विष्तम वि [विसक्ष] र बोटा हुमा चेले विषयम प्रवास के प्रवास हुमा हो वह प्रवास विद्या के कर को प्रवास हुमा हो वह प्रवास विद्या के या वर्गमा विद्या के या वर्गमा विद्या के वर्गमा विद्या करने वाला (वर्ग)। विरिक्ष विष्त वि विष्त वारा के विरोधन करने वाला (वर्ग)। विरिक्ष विष्त विष्त वारा के विरोधन करने वाला (वर्ग)। विरिक्ष विष्त विष्त वारा के विष्त करने वाला (वर्ग)।
विराध (भर) व [विराध] एक राज्यस का	३—पन ११)। १ पूँ, एक विद्यानर-गरेश (पदम ६६, ७)। विदिश्य कि [सरत] वाँचा हुया शोहा हुया (कूमा)। विदिश्य केवो सीरिका (सम्प्रीत ३१ ०००	विरु रेमक [थि+रु] चैना विकतानाः
(पद्य २ ४ पत्र देवर)। विध्य सन् [वि + धज्] डोस्ना वपत्रवा। विध्यस् (तस्य)। सन्न विध्यवह विध्यसम्प (त्रस्य मीरा स्वास १ १ डो पत्र २ पुर २ ४६)।	विरिंग पत्र [ यि + सज् ] विभाव-प्रपुत्त करना, पाव सेना वाट नेवा 'ग्रनणो वि य से रोज न विरिवार, नेय नासेड' (स	बिरुध दि [पे विरूप] ! बचाव हुउतील इप कारावा कृष्टित (वे ७ ६३ धरि)। २ विरुद्ध, प्रतिकृत (वर्)। देखो विरूध। पिरुट एँ विरुद्धा विरुद्धनात दिशेष विरुद्ध

पि ४ श सह— रच (६)।

मीन (माचा२ १६६)।

इस्ता। संकृषिसिक्तम (च १७१)।

म्मीको ।

(बज्बा ७ ) :

(R \* K) 1

(¥9

(क्य ७२ व है)। विस्त्र देवो विस्त्र (वे ६ ७१)। विस्ता सक वि + न्द्र विशेष कर से क्ला, चेन् रित होता । निव्यति (उच १२ (#3

विरुद्ध वि विरुद्ध विरोधनाका विपरीत

इतिकृत केत्रटा (चीन पश्चा)। यारि नि

िचारिन्] विपरीत सावरत करनेवासा

486

विस्त्र देवो विस्त्र (पर्श र⊸पन ६६) भवार )। बिरुञ ) वि [विकप] १ कुरून भौंडा, विक्रम करीन बराव नृतिस्त (पा २१३ व्यक्ति स्वरण ४४० वृद्ध रूप कर करव ही)। २ विकास प्रतिकृत जनसः (गूर ११ ) । ६ महोदन प्रस्कृत्यह का भागानिक

(मापा)। विश्वय पुत्र [विश्वय] चंत्रुरिट विश्वय-नाग्य (पव ४)। विरेश सर्वि | वि + रेचय ] १ मव को बीचे से निकासना। २ बळर विकासना। निरेम६ (हे ४ २६)। सङ्घ विरेशेत (इमा ६ १७)। विरेक्षण व [पिरंचन] १ मच-विस्वापन युक्ताव (उरकू २३) सुभग १ ११--पत्र (वर्)। २ वि भेरक, वित्रासक व्ययक

दुश्वितिरेक्छ सम्बद्धात्त्रद्धति (स २७०) 464) 1 विरक्षित्र देशो विधिक्तम = का (शामा १ 

विरायत व विरायती सान विष्ठ (वर्ष 121)1 पिरोक्ष सक [ सम्भ ] विकोवना विलोवन करनाः विरोत्तदः (हि ४ १२१) वद्)।

पिरोड संक [वि+क्का] १ पनसम्बन <sup>[</sup> करना । २ मारोह्य करना, बहुना । विरोक्त (धारम १६६)।

विराक्तिम वि [मिथित] विनोदित (पाम-

पिधह नव [ वि + संघय ] विशेषकरणाः

दुवा मधि)।

विरोह्त (वंदीय है )।

विस्त्राक्ष्म १ वि दि दत्तन, कुन्त (एव)। सिमञ्जोद्धीको दि**ौ**र विस्वर वक्ता २ विश्लोकना, तकारी (पर्यह १ १--पत्र १६) । देवो विकासेर्छ। । विक्रीय सक वित+स्क्रमणी अन्यदेव करना। विश्वविद्धि (वर्गर्स ४२)। वह विश्वयंत (काल)। विसंपण न [विस्तृत] सन्तंत्रन धरिक्यकः "ही क्री सोसनियंपर्य" (उस ११७ दी) । विस्पन्न (घप) देवी विद्यक्षणन्न (बद्य) ।

विश्रंपविभ (पर) नि विश्व वस्त्रितः ] न्यार्क राधेरकालाः 'सुन्द्धवित्तेवधित्र' (सरा)। थिसंत्र देयो विश्वंच=वि+श्रम्बय् । यक् पिस्टेक्साज (वर्ष १ ४) ३ विस्तर प्रकृषि + सम्बूष्टि केरी करवा। २ वर- सटकारा, बारल करता । वर्ग. विसंबीयदि (स्त्री) (नात--विक ११)। वक्र विस्मृत (वे १ २१) । बंक विस्निम (नार-वेस्त्री ७६) । इ. बिन्डेवणिज (या

व्यवस्था विकास है है है विकास (का

र )। २ तर-विधेष पूर्वीचे क्य (सेबोच<sup>्</sup>

३व)। ३ ल-नखन विशेष सूर्य ≢ द्वारा परि-मीन कर छोडा हमा नक्षत (विसे ३४ १)। दुरमगादै (धस्य मार-मानती १३ : विसंदर्भ विकासको नाएउ क्एरेनमा विरोह्नय वि [विरोधक] विरोध को (मनि)। (समारे ७ ८)। विरोद्धि वि [विरोधिम ] दूरमन अविपन्धी विद्यांबामा देवी विद्यांबामा (प्राप्त १ १)। विजेबका को विद्यम्यता निर्वर्तना बनावट, बिरोहिय वि विरोधित विरोक्तमञ्ज इस्टि (महा १९१)। विश्ववित विश्वमित्रमी १ सर्वके इस्प विस्र पक शिक्ष विश्वा करनाः शरीमन्ध योकर कोडा क्या नवन । २ सूर्वे विकार हो सबके पीछे का तीसचा नदान (वब १)। विस्तृतिस्त्रीनमक्षितेय एक इस्ताका विसंविध वि [विसंग्यत] र विवासनुत (कप्प)।२ मं नवात-विशेष (वद १)। १ विख्याल वि दि । स्रोधका बनुप की नात्म विशेष (राम)। कोरी पर चढ़ाना हुया। २ दीन, वरीन (दे विखक्त वि विस्ता १ विश्व रूपीमना ६२)। ६ ज्यर वहाबाह्या धारोपितः (बेर ७ । सर १२ ६६ सूपा १६०) भागा बस्य दिनाचा सीसे सेयम्ब हरिडरे १२×४ महा मनि)। २ प्रतिना-सन्द, तुर्द हिंपि (क्शा २४) 'पहुने चित्र रहनदशा (से १ 🖜 )। ज्यारि विकार तुलियी मरीव्य वित्तहमी विश्वनक प विद्यान्त्री विश्ववता, बना श्रप्त (पुर १ १७१) । विक्रक्तिकाम पूर्वी क्यार देखो। प्रवासीमानित निवाप— (पनि)। विख्यादक पि+ध्या र प्रकासक

करना सद्वारा बेना । २ चक्रताः सारोहरा करता । ६ पक्कारा । ४ विषटन्य । बुजराबी र्वे 'बक्जबुर'। विकासित जिल्लानेकापि (सहा)। पर विस्मिति (ति ४ )। विख्यात वि [विख्यात] १ वता ह्या विपया हमा, बंबरन: 'बह संश्रप्तिता क्याँप बोलप वह विमान्द्ररिसंपि' (संदोच १३। से ४ र में रेपरा मार्थका इप्राम्हा)। र मनसम्बद्धाः (नुर १ ११४) । ३ सास्स⊁ प्रमाना यापरिया विक्रक्रेत ठेख धर्म बैस्प विसन्दर्भ (मृद्ध १ ६)। विकास [वि+ध्या] रापस्य । विसम्बंधि (दूब १७)। मिर्क्यक्ष (बिर्काष्ट्र) बाहे तीन हान में

चार मेहन बम सदी केन साक्ष्मों का उत-

विक्रत रि [विक्रय] युव्यी तथा हा।

कर्राष्ट्र-चंड (वय वर्) ।

मुसम्ब (दिव)।

बिद्धाप पूं [विधास्मान्] एक नरक स्थान (देवेन्द्र २६)। विस्तान सक शिव्य | विश्व करना, क्षेत्र क्यमाना । विचमेद् (प्राक्त ६७) । विस्ता की दि] क्या क्युप की ओपे (वे 5 (x) 0 विक्रम पूर्वि पूर्व का बस्त होना (दे ७ ६३३ प्राप्त)। बिस्तय र् विखयी १ विनास (क्रुप्र ३१) सूपा १६० ती वे)। २ स्वतीन्या (ती वे)। ३ वं एक नरक-स्वान (देनेन्द्र २६)। विखया की विनिद्यों की महिला नापी (पाम देश १२वः पदः कुमा रैमा मित्र)। क्सिम्बक्क [यि+डप] रोना करेगा, विक्राता । विजयह (पर महा) । वह-बिख्यंत पिछवमाण (माहा सामा १ १---पत्र ४७)। विस्तव व [विसपन] रोनेवाबा, विकास-वाला। या की ["वा] विवाद अन्यत (बीप)। विद्धविभ न [विश्वपित] निनाप सन्दर (पामः भीप) । विश्वविद वि [बिक्यियत्] विद्याप कछोवाबा (इमा च्ख)। विश्वस यह वि + छस ी १ मीज करना। २ चनकना । निमन्द्र, विजन्नेम् (मक्षा) । बक्र विकर्सत (क्या सूर १ २२०)। विद्यसण न [विक्सन] १ विद्याप मीज (इस पूरेनर)। २ वि. भीव करनेवासा (तुर १ २२१ टि)। विकसिय म [बिकसिय] १ बहा-विदेव। २ बीसि, अमक (सहा)। पिस्सिर वि [पिर्झासत्] विकासी, विकास करतेवाता (मुपा २ ४ - ११४ पर्नीक १६ सए)। विद्य देवो निरा' 'मक्लै व मछो पूर्णिछोदि हेत सिग्वे विव विवाह (मत १८७) 'तावस् व नवणीय निमाद सी उद्धरिनंती (कृष **2 %)** 1

विद्यास के बो विरास (पि २४१)।
दिव्यस वृं [बिक्सप] करतः विवास-विरास सा
विकास होकर रोना परिवेदन (उप)।
दिव्यस के हिस्सिमित है।
विद्यास के हिस्सिमित है।
विद्यास के हिस्सिमित है।
विद्यास के ही पिद्धामी है की का नेक-विदयर।
२ की की अपार-नेस्ट विरोद, मैन भीर
विध्यास के ही कर्य-निरोद (प्राप्त २
४—पन १३२ वीप गवत)। २ विद्यान विद्यास के हिस्सिम्मित हो।
(प्राप्त )। 'पुर न ['पुर] नयर-निरोद मीत
(प्राप्त )। 'पुर न ['पुर] नयर-निरोद मीत
स्वार (प्राप्त २१)। यह की ['यवी] की
मारी, मीखा (है। ४१: प्राप्त)।

विस्तिति विकिसिम् र मौनी शौकीन

(हास्य १६वः महर) । २ चमकनवासा । श्री

"जी "पंदविषासिसीयो पंदबसम्बद्धावायो"

(कीए)।
विद्यासिक कि विश्वासिक कि विष्य कि विश्वासिक कि विष्य कि विश्वासिक कि विश्व

स्मार्थ । ६ प्रोट-विश्वर्य । ७ वि स्वययो । ब प्रकार-कर्य । १ विश्वय-कर्य । १ पूठ केमलेशामा (११ ४६ ११) । विकिश्य कि [श्रीविष्य] बांबल ग्रामित्या (पाप पद्) । विकिश्य कि ही ग्रीविष्य] बांबा, रास्य (१ ७ १३ एए)।

(बा ११)। ६ मनिय, विशिष (सा १६

पाम) । ४ धनुत, असस्य । १ प्रतारणा

विजिन्न वि [क्याक्षीकिय] व्यक्षीक-पुष्पः विकि (शिवा)ए विहु ( प्रव ११—पप व व १) एत)। विजित्त चक [ चि + जिल्ला] धाविष्क्रतः करता स्वर्णं करता । विविदेशः (ग्रांचा २)

9 48) I

विद्या सक [ब + किह्म] प्राविक्त करना सर्ग करना । विविदेश (ग्राचा २, १ १)। विक्रिमरा क्षे [ह] बाना, पुने पूप वौ (दे

विक्तिं सक [वि+ित्यू] वेर करना वेरणा पोस्ता। रितियह (सण्)। त्रष्ट्र विविद्धियुक्तम् (सण्)। हेष्ट्र विविद्धियस्य (क्य)। प्रसो, नक्न विक्तियस्त (शिष्ट् रण)। विक्रिज्ञ सक [वि+क्य] र लक्ट होत्य। र रिप्तका। विक्रिज्ञ विक्रमेट विद्यास्य ४ १६: १९: स्विद्धिक्त रितियस्य

साण (जन्म ६ २ १ २१ २२)।
विकित केवो विकित्र = वीरित्र (का २१६)।
विकित्र कि [विकित्र] विभा हुमा निसको
विकास किया समा हो गहु (बुर ६ ६१
१ १०। महिन)।
विकित्र के ही [क] केममा और निवंद सारियान की, जावुक करनाको नागे ही

७ ७ )।

बिद्धिद् एक [बि + लिख्] र रेबा करता।
२ वित्र बनता। १ बोरमा। विशिद्ध् (प्रवि)। कु विद्धिद्द्यमाण (प्रज ७ १२)। क्कि विद्धिद्धमाण (क्ला)।
११२)। क्किल्डिं (क्ला)।
१४८. बिद्धिद्वं (क्ला)।

भूम्यन करना। विशिष्टेत् (कृप्पु)। बह्रू

विक्रियं (पन्य १ १० घर १४२)। विक्रिय न [विक्रेसन] रेका-करण (वंदू १)। विक्रियेश में [चिक्रिस्तित] चिमेन (पुर १२,२)। विक्रीय येको चिक्रिय न्योगित 'योगार्च वर्गो निर्मार्थ (पुर १३१)।

पिक्रीओ वेदो विक्रिय = ध्यापिक 'वनकः विवीच नरवास्त परिवास किरि विचर्च' (पुरा व )। विक्रीदर वि [विक्रीय] प्रवण-ध्येच पिरवाने-वासा (कृता)। विक्रीय वि [विक्रीय] र पिवसा हुवा, स्वी-

भावा (द्वाना)। मेन्द्रीया कि [थिर्द्धन] १ पित्रसा हुया, हवी-भूता । २ किर्मुम 'स्पेर्धन द्वार प्रस्तुत्वस्ते भ्रमको मस्यक्ष किंद्र विश्वक्रिये' (ब्रम्म २३, पाद्य महाग प्रवित्त । ३ बुद्धानित्त (पर्मू १ १—यह १४)।

विद्योक देवो विद्योव । वह. विद्योर्थत (जा 4 es) ( विज्ञेस म्क [पि + सूद् ] पेटनाः विस्रो नंति स्वक्रिके विसुरित्रयेवनंपा (परह् र t-91 (c) 1

(बी) (मा ४२) ।

( \$ R ) |

44£) I

(स्व)। विसक्तिभ नि [विस्तिति] वितिष्ठ किया ह्म्य (मुर १२, ११७) । पिछोम एक [वि+छोक्] रेशका कर्न विक्रीप्रकाति विक्रोपीति (पि ११)। करक विज्ञोइक्समात्र (अप पू ६७) । संब विजेइऊण (काम १६६)। मिळोश र् [विक्षोक] मानोक प्रकार (इस

विसेविधा भी [यिकेपिका] पान-विकेव

२, १६ थस्य क्यू) ( विद्योग र् [बिद्धाप] पूट व्यक्ती धरक क्लिके वार्ष (सुर १६, १०)। विश्लोबय व विश्लापनी उत्तर रेवोर 'परक स्विवोदगुर्ग् (उद) । विद्योगय वि [विद्योपक] बुटनेशना बुटेस बद्धारहरिम सिबोवप् (उन्न ७ १)। विजेह को विज्ञासा है। विजेहहरू

विद्योस वि विद्योग विकास परिवर (ह

विसंगयाम—विवद

प्र वेदद) । पिक्रोभ देखो क्रिक्रेव (पुता ४४ ) । विस्थान पुन [भिसेषम] बाब नेप (बाब १६१: बा ६७ : समा ६२१)।

विस्माक्षय न [विस्मोकन] १ देवना निध-यस । १ वि वेकनेनाकाः कोमानोवरिको-बराने बननारोग्र बायक्यस्त्वं (गुर ४ 44) ( मिछोडू सक [ विसं + वर्] १ म्ब्यमासित होना मुख साबित होना । २ उत्तरा होना

विश्रमीत होना । विमोट्टकः विकोद्रम् (ह ४

विश्लेष्ट्रिश । सर्विष्ट्रिश हो (दुना ६

) वि विसंविषयी १ को प्रस्त

ररक्षः भक्ति स भरद् )।

विद्वादक [पेट्स] चवना विलनाः विस्वादिः स्दुनपत्थवा (रमा)। विक देवो विक (हे १ ४४ एव)। विद्व रि [दे] १ यन्त्र, सम्बाः २ विप्राधित, विकास-पुरु (देक् )। ३ पुनः सूर्यकी हम्प्र-विदेश को क्षुत्र 🕸 काम में प्रदेश 🦖 'दरमंत्रशिक्तदुरमुतुर्थश्चेमयपुगर्शनार्य' (स.

पिस्सय देवो चिस्छअ (धीरा) ।

पिइन ध्यो पिइन (रक)।

(पएस १—पद ३१)।

पिस्छप देवो बंद्धग (तुरा २७६) ।

निक्रहार देशो शहरू हा (प्रति २३)।

विद्विधि भी [वे] केत श्रम (४ ७ १२)।

विद्धी भी [विस्ती] प्रव्याननस्परि-विशेष

मिन्द् नि [दे] बाब स्टोद (दे ७ ६१)।

विवयेको इव (३२ १२) वा २६।

विस्मेद्रण वि विस्मेशनी र मरवर्ग-मरक १

२ सुक्षतेत्रासाः 'मुख्यस्थितोक्कृतं नेम' (श्वयक

विदेपित्त रेखो पिसंग्रहत्तु (प्राचा) । पिस्पा [रे] दिता हुमा (मरि)। वितक रि [विस्कृतिन] विदुश्चित, सर्वेश **फेर-परिव किया हुया (तिह २१७)**। क्षिमुत्तारि [पिन्छा] । काटाइया विका

विस्तृप सक् [बि+सुप्] १ फूरमा। २

कारमा । १ विभास करमा । विनुपित

विजुतह (पाचा सूच २ १ १६) वि

Yet)) पर्यं पीर विदुर्गीर्ट (महा)।

वह विसंपमाण (मुपा १७४)। क्यह

विद्यापन (वज्रापनाण (वज्रा १६ ६१

पिक्षंप धक [पद्मकश्रु ] पविचाप करता,

विसेप<sub>र प</sub>ि चिनेप्त नियोग-नर्ता,

बिर्सुपय पूर्वि कीट कीशा (वे ७ ६७)।

विसंपिभ कि [काविशत ] प्रमिव्यवित

विस्प्रेपअ र् वि विख्या विशिष्ठ, कर्वावत

काया इथा परने कनकियं परिवर्ध विनु

पिय विश्वये प्राप्ते (पाय) । देखो सिल्ला ।

"विधुत्तर्गान" (पडव १२ १६) काह्य १

१— पर १४)। २ कुष्टित कुटाहुमा

न्दमाद महामोदः मान्तिययकाची । माद् पुरि

धीं विश्वतोः वसं वितं वीं वर्ग (दुर

११ Y ) १३ तिन्द्रा चुने क्या वनानिच्च-

विनुध(अप्र वि (व) वा सम्य पर काम

करन का न बादता हो बढ़ (दे ७ ७३) ।

चमनद्धं केर नुमर्चतं (बण्) ।

बार्याः विजुत्तः (हे ४ १६२)।

मुपावः मुदर २१ वरा)।

कारभगासा (मूघ २, २ ६)।

(दुमाण ६ के क ६६)।

)। २ जो नहकर फिर नया हो, प्रतिका-न्युत नयाम् धमरानदिभादेशोयनस्यो विक्रियो का (स्व १६७ में) । १ किस् ४३२)।

**\*** ) (

विज्ञ (दुत्र १६४) ।

बना हुमा 'चर्रा महतरवर्षो विश्वीति (१ दि) सा चररियं नि सामिक्ती' (मूना विद्याह एक [वि + स्रोहत्] मंत्रत करता। वियोदेइ (पुत्र ६४०) ।

देवा । १ विस्तव अप्रताता । इ० विद्योभः

पिकाहिय वि [विकाहित] मनित (गुप्र

षिस्रोभ तक [षि + स्रोभय्] १ तुस्य दरता मुख्या, यायच्छ दरता । २ सलाव

विषद् धी [विषद् ] क्लिक क्ट इच (इस ७७१३ देश ४)। सर्वि

६६ का पूमा)।

[ दर] रुप्त-यनक (रुपा) । विषय का चित्रति । व्याक्श, निरात्त-धैना (दुप्र १३) । देखो निपृत्ति ।

विश्वत्यसाम } रही विस्पृतः विश्वास्थ्य वि [पिर्साधन] अवन्ति (वे व (a) :

विस्व (र [किस्त] समाह्या दिव (दुरा ١ (١

विवार्ण्य कि [चित्रारीणे] विकास हमा (पत्रम ७४ रहा से ४, ४२ ११ ८९)। विश्लंक कि [चित्रकृते] विशेष बांका टेका (स २४१)। विश्लेषिका को [चित्रक्रिका] बाय-विश्लेष

बीएए (राम) । विवक्त कि [विपनत] र सब्दी तरह पूर्ण किया हुमा। २ प्रवर्ण को प्राप्त सरस्व पका हुमा। ३ प्रवर्ण को प्राप्त सरस्व पित्रकृतस्वभित्रेयां देवाएं सब्त बदमाएं (द्धा ४, २ — पत्र १९१)।

विश्वस्त पुं [पिराय] गुग्यम, पितु, विशोगीः "विश्वस्त्रीतें ( पदा छ ११४ पण्डु ११)। २ म्यान-शास-प्रिय विश्व प्रस् सह शतु वहाँ शाम साबि का पताब हो। (बर्सात १ – पाता १४२)। २ विश्वयेत वर्मे (बर्सात १ – पाता १४२) ( वर्षात वर्मे

ही—पत्र ११)। पित्रकस्या की [विवस्त] कहते की रच्या (पत्र १ १ जात ११ सति १ ७१)।

विषयम नि [किट्याम] स्थाप के नाने से महाहुसा स्थाप-नर्त-पुष्ट (स्थान २ १) १ १)। विश्वकचास पूं [सिपर्योस] निपर्यंग निपन

विश्वकास पुं [भिषयोस] विषये विषय रोठता, स्थापात, स्वत्य (उत्त १ ४ सुब १ ४ मोन २६४)।

विषयम् की [विसस्स] १ एक महानकी (ठा १ — पन ४७०)। २ वत्त्र-पश्चिम की (राज)।

विवास सक [वि + पत् ] मरना, नष्ट होना। विवासक, विवासमित (व १११ पण्य १४) मुल २ ४१)। पत्रि विवासको (बुध १८६)। यह विपासन (नाट-प्रान ७७)। विवास सक [यि + वालेस ] परिस्ताव

विराज सक [यि + वर्जय ] परिधान करता। विवक्तेत्र (उन)। वहः विश्वज्ञयंत, विवक्तमाण (उन वर्गसं १ ६२)। इ विवज्ञयिज्ञ, विवक्तमीञ्ज (क्य ११७ टीम्म १८९)।

विश्वज्ञ वि [ विश्वज्ञ ] १ रहितः वाँचतः, नावद्यक्तिम्बद्धारणं सम्बं से देव भट्टस्य' (मुपा २७१) । २ परिष्यामः परिगर (पिंव ११९) ।

विंग्रज्ञन वि [पियजंक] कर्नन करनेवासा (सून २ ६ १)। पियज्ञल न [पियजेंन] परिस्ताम (सन

२२)। विषक्षणया) भी [निषर्जना] परिवास, विषक्षणया) परिवार, वर्षन (सन ४४

विषञ्जा ∫ परिवार, वर्षन (सम ४४ । स्त १२ २ रखपुर ४)। विवञ्जरथ वि [विषयस्त] विषयीत, स्वय

(पैचा ११ ३७ कम्म १ २१)। विश्वक्रम पुं[विषयय] निपर्यंच व्यत्यास, नैपरीस्य (पाम च्य १४२ टी पन १३३ पैचा ६ कम्म १ ४४)।

विवकास दुं [विषयास] १ विषयेय, व्यव्यव (प्रमः पंचा ६, ११)। २ भ्रमः विष्याज्ञान

(पुर ६ १६४)। विश्वक्रिकास कि [विश्वक्रित] रहित वॉन्स्त परिस्वक्र (उन ६ ६६ सूर ६ १६१ रसाम्बर्ग)।

विषट्ट पक [वि + भून ] बराउता, रहता। विषट्ट (हे ४ ११८)। वक्र विषट्टमाण (क्सा ६ ८ रस्म)।

विषक्षिय नि [भिपतित ] मिरा हुमा (न्तम १६ १२ मण ७ टी--पत्र ११०)। निवदक्ष मन [वि + कुम् ] बद्दना। बहुत

विवाहसमाय (एतमा १ १ टी---पव १७१)। विवाहसभा मि [विवाहीत] बहानेवाला 'मस्पीववहुर्ख' (उस्त १६ ७)। क्की जी

(उत्त १६ २) । देखो विषद्धमा । भिवविद्य की [भिवद्धि] वदाव वृद्धि (पंचा १ ११) ।

मिषाहित्य नि [मिष्ठाः] नदा हुमा (नाट--रियो)।

विवर्णि पूंची [विपणि] १ बाबार (भूता ११) १ १ हस्ट पूकाक निवरती वह मानको हुई। (गाम)। विवर्णीय वि व्यपनीत] हुर किया हुमा,

विक्यायात्र [स्वयनीत्] हुर किया ह्या हटाबाहुमा (कम्म)। विगण्य देवो विवसच्चविकन (उत्त २

प्रश्न वर्षा (वर्षा = विक्रम (वर्षा र प्रश्न गा १६ म) | विषयम वि [पित्रण] १ कुम्म कुरीन (वे १ ४० वे ६७१)। र प्रीका, मिस्तेन म्मान (जाया १ १—पन २व में व वण)। चित्रणम वि [द्विपर्य] १ यो प्राच्या। २ पुंक्रम पक्ष (सन)।

चित्रचं पूं [चित्रचं] एक महायह, ज्योतिष्क हेर-पिटेव (पुत्रक २ )। विभक्ति की [चित्रचि] १ दिनास (साया १ १—पन १२७ विभा १ २—पन ३२ मुता २३१. चन)। २ मरस्य मीत प्रस्ति २ ४१ स ११९)। ३ कार्य की प्रसिद्ध

का (तुमा २३४)। विवश्विक वि [विवश्वित] फिरामा हमा-मुमामा हुमा (वे ६ ८ )। विवस्य प्रे [ विवस्त ] एक महाग्रह (पुण्य

(स्ता २११ चन बड १)। ४ मारहा

विदरमे पुँ[विकास ] एक महाप्रह् (मुक्त २)। विवादि की [विकृति] १ विवयस टीका। २ विस्तार (संक्षि १)।

विषदाण न [विषधन] इदि बहाव (कप्प)। देखो विषद्दण। विषदाणा की [विषधेना] इदि बहाव (का ६०६)।

विवक्ति पुं[विवर्षि] वेश-विशेष (प्रणु १८९)। विषक्त देवो विषण्ण = विवर्ण (सुना ११९)।

श्वपत स्था (व्ययम = स्था (दुना १९६)) विषक्ष मि [विषक्ष] रै नार प्रत्न कार्य (क्षाता रै रू-चन १४०। स १४० पुता १ ६)। २ गुट, नार हुमा (पत्रम ४४ १) त्या १ ४४। स घर्डा मुसनि १९२ वर्गीर १४०। विषय सक् [वि+वद] स्वया करना

विवास करता । वह विवर्धत (मुदा १४६) सम्मठ २११) ।

विषय वि [दे] विस्तीएँ (पड्) । विषया की [विपद] कष्ट दुःश (स्प

विषया की [विषय] कह दुःव करवारी)।

विवर एक [वि+पू] १ वाज र्धनारता। २ विस्तारना। १ व्याच्या करता। विवरह (यवि) विवर्धहि (संघ१७)। वह किसे निवस्य विस्तरती (कुत्र २०१)।

बानु ७३) । २ वन्दय, द्वहा (वे १ ४६) । ३ व्यान्त विकतः 'कामरुमयाप् परित्याप् बहुति पंतराणि व प्रिहालि व विवयस्ति व पहित्रातरवारो २ विहर्पतं (विगा १.२---पत्र ६४) । ४ इंड सास्पर (भव २ २) । विषरंमुद्ध वि [विषरावसूत्रा ] विमुख पराक्रमुख (प्रत्म ७३ व ३ वे ६४२)। विवरण न विवरण ? स्थास्थान, 'सीऊरा विकारिकारणे (तुरा १०)। २ व्यास्या कारक प्रेया टीका (विधे १४२२ पर----माबा ३६। सम्मत ११६) । ३ वात सैवारना (देश सूद्र अपन के )। विवरासक ) देवा विवर्शसक (याँव स ११ विवसहरू र १)। विवरित्र वि विद्वत विद्वत विद्वार १३६२ संक्रेश)। देवी विवृक्षः।

विश्वरिक्ष (धप) तीचे देखों (तरा)।

क्षिपर न [कियर] t क्रिक्र (पाय<sup>:</sup> मडक

विषयीक नि विषयीती बसदा अतिकृत (मन ११ दो यटह कम्पू, जी १२। तुत्त ६१ ) । "प्पा वि "द्वी स्तरा, जाननेवाचा (वर्मसं १२ ४)। पिपरीर ) (यप) उत्पर देखा 'वह विवरीरी पिनदर प्रदेश होड निकानहों कर्मले (हे ४ ४२४) बाद मञ्जू विवरेरयो शीवद' (कर)। विवरुषमा १ वि [ विपराक्षा ] परोस य-विषराकार प्रत्यक्ष भावन्त्रम बहवयली विवयेत्यो बास्तीए पुराए (पडम ६ ११)। २ त. जनावः 'पात्रस्म बईकारो होहिइ वह का पुग्गाएं निकासी (फरा

७६) । ३ वस्त्रवता स्थापनाम 'दय बाहे भारत्यसम्बन्धार्यतस्य स्वरूपास्य । विवयास्त्रीम्ब पि जाना कर्मस् संबोधसामाना (नप्रदेश २ ४) । बिरुष्ड धक [मि+यस्] बुश्ता, देहा क्षता (नदर प्रेर) । विवनः ) यह [पिपरा+ अप\_]रवायन पिरस्यात वरसा, भाव नामा । विस्ताह,

KKE) I १ दिखा १ १३ मीप)। 223) I विषात् रे पूं [विषाद] फगरा शहरार, बाह-विस्तादह, दिश्लामीत (वंतर हरेश) विश्वाय निवास नवानी लड़ाई (उपद उना ११३६ वि १६३)। यह विक्रमार्थन स रे शंदुश रवशः १६१)।

विवद्धासमान (हे १ ६ या २१।। गढ़ड १६१। से १६, १४- पढ़ड ४०२)। विवस्थाल वि विवस्थावित । याना स्था (8 t 2 ty 1 )1 विवक्षित्र वि [विवक्षित् ] योवा हम्मू परावर्तित (या ६०) यसक ४२४। करा 22X) 1 विवसीओ रेवी विवरीओ 'विवसीसमास्य' (घए)। विवस्त्रस्य नि [विपर्यस्त] निपरीत अवटा (\$ 4 a) : विवस वि [विवस] १ मर्गेन, परावस परक्तन (प्राप्तुरि ७ दुमा कल्प १ ६७)। २ वाष्यं साचार (शूत्र १९१)। विदाइ सक [वि+यह] विवाह करना करी करना (प्रापा) । विवद्गा व [विक्यधन] विकास (सामा रे रे--पत्र ६४) : भिवादम व विपातिती व्यापानित थो कान से मार कामा क्या हो बहा किरोका विवाहको काली (पद्मा कर ०० प्रता १३ XE 41) 1 विवादम वि [विवादक] विवास-कर्ती (स क्यिमा दू [विपाक] १ कमें-परिद्वास दुध-इध्यादि मोन रूप कर्म-फन (ठा ४ १~--पंतर का दिया है है। बना सूधा है? सपा प्राप्त ११२)। २ प्रकर्ण व्यवस्थिताय-दरियामाँ (इ.४. ४ डी--पन २०१)। र पारकाम 'जे से पूछी होड रहे निराने' (बच ६२ ६३) । विजय दून भिष्यो धर्मेष्यात का एक मेर कर्म-कव का सन विन्द्रम (द्वाप ४--वप १४)। सूच न ["भूत] ग्याप्ता केन यहारन (तम विषामि वि[विषास्ति] विषायनामा (सम्ब विवास एक वि + पाइस ] मार सन्दर्भ। विवासीम (विसे २६०४)। वक्त विवासी विवादीत (पटन १७ ११; २७ १७)। कियाय देवी विवास (तर १२, ११६, व २७४: ६९१ ही ११० हन्छ)। 'क्वर चित्र सहदस्तं पुरुविजयसुरुव्यक्तम्बिराया । भागक विकास में ता को सेपो सक्यउनमेर्ने (इस ७२ ⊭धी)। विदायण वि [दिवादत] विवाद-स्टा है दोनि विनामल का समुद्रते (वर्जनि २ )। विश्वविद्व व वि विष्ठित गौरव (सीम 8m) 1 विवाह एक वि + बाह्य विवन करना, शबी करना । विवाहेमी (क्य १३१)। विवाद देवी विभाद = विवाद (क्या स्टब्स इश्रांसम १३ )। गणवार्ष [गणक] क्योरिकी, जोती (वे ६ १११)। जर्म पूँ विद्यो विवाह-क्यान (मोह ४४)। विवाह केवी विभाद=विवाद (तम १३ विवाद देवी विज्ञाद अध्याक्ता (वन १) 44): क्विकाहाविय वि [विवादित] विवकी राज्ये कराई पई हो यह (पहा) । विवादिय वि [विवादित] निसरी साथै हर्ष हो सह (महा रुख)। विविश्वसा ध्री [विविविचा] काले शे रण्या विवास (वन्फ ६६)। विविद्यादेशो विविधः (नूस ११११)। विविध कर [पि + पिथ्] दुवर करण धसम्बद्धाः सङ्ग्रीविधितः (तुम् २ Y 1 )1 विविध न [विधिन] बंगत वन (परस बाट--बैव ७२)। विविधारि [पिनिधा] १ सीहर बॉन्स। रेड्रबन्भूत (दन क, दक भन ६ ६६) उत्त २१, ६१; उन्) । ६ विवित्त सन्तरिया 'बायवेदि विविक्तदि तिप्रवासी दिवासर । वेबदि विविचेदि साउरामस्य वार**र** 

(याचार व द शारी)।

तारों (व ७४३)।

विविक्त कि [विविक्त] १ विवेक्युका। २ स्मिन्युक्त । २ स्मिन्युक्त कि सम्मिन्युक्त कि सम्मिन्युक्त कि सम्मिन्युक्त कि सम्मिन्युक्त कि सम्मिन्युक्त कि स्मिन्युक्त कि स्मिन्युक्त कि स्मिन्युक्त कि स्मिन्युक्त कि स्मिन्युक्त । २ स्म्यस्यस्य स्मिन्युक्त कि स्मिन्युक्त । २ स्मयस्यस्य स्मिन्युक्त कि स्मिन्युक्त । २ स्मयस्यस्य सम्मयान्युक्त कि स्मिन्युक्त । २ स्मयस्यस्य सम्मयान्युक्त कि स्मिन्युक्त । २ स्मयस्यस्य सम्मयान्युक्त कि स्मिन्युक्त । २ स्मयस्यस्य

४ म एकान्छ विकास किंदु विविधासम्बद

(धरित ४)। विद्युक्त वक [वि+धुम्] वादमा। विद्युक्त विद्युक्त (सार)। विद्युक्ति केवो विवविद्य (धोवमा १९६ व १९१)। विद्युक्त वेवो विद्युक्त (प्राप्त १२)। विद्युक्ति केवो विद्युक्त (प्राप्त १२)।

चितुर केरो दिवृद्ध (क्या) । चित्रेक केरो दिवेग (क्या) महा १२ ०७) । "जु हि [द्ध] निवेज-सादा (त्या ११ १८) । चित्रेक वृं [चित्रेय] चित्रेक कंप (बृता १४) । चित्रेक वृं [चित्रेय] पित्रेम चर्चा (बृता १४) । १४४ कृषा क्या) ।

रघटा कुष्ता क्या) स्विता चुँ स्थिते हैं र गरियस्य (गूस र ६ र च ता र व सीध समझित व हो) २ देक-दीक मनुस्त्रकल का स्थितः सिम्बस्य (बीम चुना)। व सार्याच्य (बाना र र ४ ४)। र युग्यस्य (बीन) विवेशि क्यो विवेषु (जुन्न सम्बाहुस ४०)

विवेशि वेशी विषेषु (कुल १४६: पुत ४७)। विवेश वह [यि + वेषत्य ] विशेषा करता, श्रीक-श्रीक करता विशेष करता । को विवेशिका (वर्षते होता) हेड विवेशितुं (वर्षते १३११) विवेश्य व [विवयत] विशेष किर्तुय (विशे १९४३)। विवेशितुं [यू विशेष सोमाह्य व्यवका वर्षता विशेष्णे वृत्ति वर्षणाहुतं (व १०१)।

विकोधिक नि [व] व्यक्तिकाच प्रवस हुवा कह्कबृषि निकोधिया में रफ्छी (स १ १)। विकोह केवी विकोह (प्रवि)।

प्रधा स्था (पा) ।
प्रधा सक [ पा + ठाय ] सान करण सने करण 'विश्वासिक्यप्रधा प्रथम क्स प्रियमप्रधार । ते विश्व वियम्प्रणे (प्रण १८२)। इ. विश्वेययम् (प्रण ४२०) २०१)। देशे विश्व – पि – घर्ष। विश्वाय वि चि ] र सनमोद्धः २ विसम्ब (४७ –१९)।

(४७ वर्)। विक्योत्र वेदो विक्योत्र (हुमा)। विक्योयण [व] देदो विक्योयण (छम)। विस सक [विस्] प्रवट करता। विसद् निवर्षित (क्या २५ सक सटक)। वर्ष

(बस व कि [बस्] अनव करना । वह विसंत (क्वा २६ स्टब व्यव) । वह विसंत कह [यि + स् ] । हिसा करना । २ व्य करना ववक विस्तितामान, विसीर्य (विसं देश : सम्बू च्यो । विसं तुंब [बिय] १ वहर, पर्णा हवाइमा

भर्तेत सही द्वारि विमोदिकों (यम्स्य २२६ वर्गा नवज प्रासु १२ । द्वारा)। २ वर्गा कस है व ६१)। तीवृत्रु [निविस्] प्रयम कसके का सुमेशीय साम (यस ११६)। स [स्तु] दिक्तियेत यस (वर १४६ टी)। सूक्ष्म, सर्य कि [मिय] विच का बना हुसा (द्वा१ १ ४ ) यह)। यहि [यह] है निवस्ता विस्तुत्वा १ वृष्ट कीव (देक ६७)। इर दु [प्रार] तोय सर्वे (दे र ११ । मुर्स

रेप नाम (ते र. ७)। हरित्र पूँ चिरेन्द्र] येप नाम (ते र. ७)। हरित्र पूँ चिरेन्द्र] येप नाम (बडड़)। हारित्रों की हिरियाँ] वर्णेहरिंप पानी मरनेतानी की (है ४ ४११)। विश्व वेको पिश्व (स ११९-गडड़)।

विश्व में [क्या] र वेब कांक कृत्य (तुर १ १८४० जुला १६१ ११० जुल व ११)। र ज्योरिक-शिक्स एक एडिए (तुला १ ८ विवाद १ ७)। १ मुद्रक, बुद्ध (वे ७ ६१) वस्)। ४ वर्ष। ४ वस्तुन्त । ६ वस्तुम नामक धीवस। ७ पुस्त-विशेष (तुला १६३)।

त काम कवर्ष । १ शुक्र-पुष्ठ, शिर्म-पुष्ठ । १ स्वकुताबा कोई भी बालवर (पुष्र १९७) ।

चित्रद्र मि [निगमिग् ] निगन्ता नियम् पुष्ठ (विदे २७६ )। विद्यंक वि [विदाक्क] र्याम-पहित्र निर्मक

पिसंक वि [बिशक्क] र्यक्त-रहित किरोक (उप १३१ टी)। पिसंकत वि [बिशक्कित] सम्बन्ध, सेपे

निरंहुर, बद्धत (नाम सं १० । वे १० । ६व)। विसंत्रक सह [बिन्द्रमुख्य ] निरंहुर करणा प्रकार कर स्थान । संह विसंत्रक्रकेत्रल (पुक्ष २ १४)। विसंत्रकृष्टिक वि [विसंवर्षकृष्ट विदुष्ट, विप-

विसंपाद्विय वि [विसंपाद्वित्त] विदुष्ट, विप-तित (क्वम १)। विसंपाड यक [ पिसं + पर्ट् ] यसन होना कृत होना। वक विसंपादेत (गा ११३)। विसंपादिय कि [विसंपादित] विदुष्ठ, को कृत हुमा हो वह (छाना १ ८—१४१ नहां)। विसंपाद्वय वि [विसंपादित] पंदत किया हुमा (मणु १०६)।

विसंपादय वि [विसंपातित] संहत किया ह्या (स्तु १७६)। विसंपाय सक [विसं + पातय] संहत करता। कर्य विसंपासका (स्तु १७६)। विसंपुत्त वि[विसंपुत्त] विग्रुक्त, वो समय हस्य हो (सम्बा २२, मूर्गित १२१ हो)।

भिसंबाध पूं [ विसं + योजय ] विषुक्ष करना धवन करना । विसंबोध्य (मन) । विसंबोध्य > पूं [विसंबोग] विचान (करन विसंबोध ) पूर्वमूचन पूर्वाई (कान १ = २) पंच ३ ४४) ।

विस्तान । प्रविक्तन पुराई (कला १ ८२) तंत्र ३ ४४)। विसंदुत्त वि [विसंदुत्तन] १ विद्वत स्मापुर (वार वे १४ ४१) हे २ ३२) ४ ४३६) मोह २२ वस्सो १)। २ सस्वतित्त्व (वा

दुरम्म को हैरान करमासा (हूं १ १७७)। पिर्धसुष्ठ केरो विसंदुद्ध (पन्य ४, २ य १९१)। पिर्धसुद्धिय वि [पिर्धस्युद्धिन] पानुस्व ४०६

यिसंत्र पू (द्विपस्त्रप) ठतु का कालेका

विसंधुद्धिय वि [विसंस्धुद्धिय] प्यादुस्य वन द्वारा (स्तु) ।

tel gu rtuik t fr) i

		0.10.0
#+¥	प्रदूषसहसहष्मक	विसंधि—विस्व
वर्षण वृ [विसाण ] १ एक महाण्ह् क्षीण वृ [विसाण ] १ एक महाण्ह् क्षीण के देवनिये (ख १ ६—पन ४०)। करण क्यांत्रम वृ [ क्रम] एक महाण्ह् (पुन १)। व्हिंसी के प्रोप्त (योग)। व्हिंसी के प्रोप्त (या)। व्हिंसी के प्रोप्त (या)। व्हिंसी के प्राप्त (या) विषक साम मेनन प्राप्त का स्वाप्त के किस साम प्राप्त का स्वप्ता के किस मेनन प्राप्त का स्वप्ता (या १ १)। विस्तीय के प्राप्त क	प्रश्नसद्द्रमहण्यत्ते  पिसंपाद्रण केवो पिसंपायण (ध्य ११	वहां जुपा ११ । ११ १० १८ व्यक्त विशेष वर्षिय विद्याल कार्यस्त व्यक्ति वर्षिय वर्ष्य वर्ष वर्ष्य वर्ष्य वर्ष्य वर्ष वर्ष्य वर्ष्य वर्ष्य वर्ष्य
विसंवाह्य वि [विमीवाहित] विसंवाह-पुक	पिसञ्जा भी [विसर्जना ] क्रिस् (वर	निवर्डीई (पडमा १२ ६२)। २ तु एक
(* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	} x) i	चेहिनुष (तुन्न ११ )।
विसंबाद क्या निसंग्राय = विश्वेषाय (वर्षके १४ )।	विसम्बाध हि [विस्तृष्ट, विसम्बाद] रे विद्य विष्य हुमा नेता हुमा (भीगः प्याव ११६)	विसम्ब वेचो वसम्ब = वृत्रस्य (वे ६ - ६२)। विसम्ब न [वेश्चन] प्रवेश (चन)।

पिसण्य वि [चिसंज] संज्ञा-पहिल केत्रम वर्षित (१ ६ ६)। पान)। पान)। विस्तान वि [पिसान्य] परव-पहिल (वव ६)। विस्तान वि [पिसान्य] परव-पहिल (वव ६)। विस्तान १६ ज्ञा करेट दी)। विसन्द केत्रो विस्तान विषय (मण्ह १ ४— पत्र कर) कम्मा वि १७)।

विसस् 1 [पिरास्य] र निरिष्ट राज्य । २ विस्तिष्ट राज्य । २ विस्तिष्ट राज्य । २ विस्ति निर्मा विस्ति विस्ति

विसमा को [विस्त्रा] विवानियेत (वजन ७ १११)। विसयस कक [वि + स्प् ] फैसना विस्तरता स्वात होना। वक्र विसय्यंत, विसयमान (क्या क्या कीर स्त्रु ११)। विसयस यु [विसयों एक नरक-स्वान (वेनेक्र

विस्तरप पु [यसपे] एक गरक-स्थान (देवेल २७)। पिसारिय कि [विसार्यम्] फेबनेबासा (मुगा ४४७)।

बिसप्टियर वि चिनपित् कार वेची (स्छ)। यिसम वेची बासम = वि + यम् । विग्रमदु (रेचा ११)। विसम वि वियम रि वेचा-वेचा कारणा

(र्रेज ११)।
विस्ता वि विस्ता । क्षेत्रा-वेश करवावत्रव (क्ष्मा वर्ष)। १ सदान स्वयान
कर्मा (स्वा स्वयः)। १ सदान स्वयः।
कर्मा (स्वा स्वयः)। १ सदान स्वयः
क्ष्मा (स्वा स्वयः)। १ सदान स्वयः
क्ष्मा क्ष्मे-एक कीन, तोष स्वयः स्विः।
प्र स्वारण किंद्रव र २)। वस्यः (वि
[सिर्] काविदान्यवास स्वयः क्षित्रेवासा (४ ४ ४)। कामा वृद्धिकान।
स्वारण क्षित्र (वस्तुः)। सर् पुं
[बाज] कामवे (स्वा)। सर् पुं
[वाज] कामवे (स्वा)।

विसमय न [वे] भद्भातक भिनावाँ (वे ७ ६६) । विसमय वेको विस-मय ।

विसमय बजा वस-मयः विसमिञ्ज वि [विपमितः] १ वीव-वीव में विज्ञोदितः (से १ ८७)। २ विपम बना हुमा (स्टब्स)।

(पडर)। विसमित्र वि [विस्तृत] भ्रुवा हुवा प्रस्तृत

(वे ६, ५७)। विसमिञ [विभमित] विमन्त किया हुमा विभाग-प्राप्ति (से १ ७७)।

विभाग-प्रापित (से १ वर्ष)। विभागक वि [दे] १ विभन निर्मेस । २ व्यक्षित (वे ७ १२)।

करता (४ ७ १२)।
पिसमिर है [पिममिर] रिश्मम करनवाला।
की री (वा २२: प्राक्त ३ )।
विसम्म सक [वे + सम्] विश्वाम करना
साध्य करना । त्रवि विश्वमिद्ध (वा
२७८)। इतिसम्म स्वर्थ (१ १ २)।
पिसम विश्वमिद्ध (ता २००१)।

४१६ स्टिट ७० ही)। २ स्यक्त स्तप्ट (पाय)। १ ववस स्टेर (सीत)। विसय पूर्व [विराय] १ पृद्ध घर (उत्त ७ १)। २ संगव संग्रहना (बाष्ट्र १)।

विधर तक [यि + सृज् ] र लाग करता। २ विधा करता, नेकता । विधरः (तर् )। विसर सक [यि + स] परकता वसता भीवे विरुध्य विश्वकता । वक्र विसर्दत (स्रामा र रूप्ता देशक से रूप्त रूप)।

**¥\$**¥) i

विसर एक वि + स्स् भूव जाना याद न सन्ता । विसर (ग्राइ ६६) । विसर पूर्वि सम्म सेना नरकर (दे ७ ६२)। थिसर हुं [बिसर] धनुष्ट, यून धनात (मुरा १ सुर १ दन्धः १ १४) । थिसराग मृद्धिरारण] विनास (धन) । विसरा कुं [वे] माच-विरोध (महा) । विसरा की [थिसरा] मण्डी पक्तने का जम्म विशेष (विसरा] स—पन कर) ।

थिसरिक्ष वि [त्रिस्तृत] याव नहीं प्राया हुया (वि ११३)। विसरिया श्री [कें] घरट, इन्दर्शनः विद्ययक्ष (एत)। थिसरिस वि [विसहरा] स्थमान विवान

धीम (वर्ष)। भिस्ततेस मुं [भिरत्नेत्र] भुषाई, विमोध प्रमृतात (चेड)। भिस्तक वि [भिराहम] शहस-रहित (जन्म

ावसक्ष व [प्यस्था राज्य-पहुत (त्रज्य ६६ देर: केंग्रल ६०): करणी औ [करमी] विधा-विशेष (मूच २ १ २०)। विसद्धाओं [विसाल्या] १ एक महीर्याव (क्र.स.): र वस्माल की एक की (बह्य ६९ १२)! विसस एक [वि + श्रस् ] वस करणा मार

बलनाः 'विस्तेष्ठ महिते' (मोह ७६)। करहा विस्तिकार्व (मज्ज ६१९)। विसस देवो पिस्सस - वि + स्वस् । हु-

विस्तिस्वयं (सं १ व)। विस्तियं वि [विश्वतित] वव किया हुमा वो मार बाला प्या हो वह (गडडा ४७४, सङ्मार १४)।

विसाई एक [वि + पार्] सहत करता। विसाईति (उन)। वक्न विसाईत (छ १२ २१) पुता २११)। हेक- विसाईत (छ १४६)।

पिसह वि [पियह] सहन करनेवाला सहिन्तुः वर्तुभरा दव सम्मञ्जसनियहं (कृष्णः सीरः) । विसह देवा यसम (सज्जः) ।

विसद्धण न [विपद्धण] १ सङ्ग करना (वर्गेश्च वश्क)। २ वि सद्धिणु (१व ७३ टी)।

क्ष)। विस्रक्षित्र वि [पिपोड] स्वत् किया ह्या (वे १ १३)।

विसाध (पर) स्टे [विश्वा] सन्द-विशेष (विष)। विसारि वे कि) ब्यवावन, बद्धा (वे ७

(नजर)। स्टेबन (रूप्)।

₹**₹**}।

प्रस्त (संबोध १६) ।

(कड र ⊸न

(929 Es \$2) 1

(शार---मण्डा १६६)।

पिमाइ रि [पिपाईम] स्थित-पुत्र कारू

पिसाण न [पियान] १ हामी का धौत

श्चम स्टॅम (नचा ६ १ पाम- घीर) । ६

मुद्रार का बांत (उस) । ८ वूं क. केट-विधेन

विश्वास वह [पिराजिय ] विक्या शास

पर पशासा । कर्म. विद्यालीयदि (धी)

विभाषि दि [विदाषित् ] १ सैवियामा ।

५ ब्रुबन नामक धौषप (धन्तु १४२) ।

२ व हाबी, इस्ती । ३ श्रु नाटक जिन्दहा ।

नगरहो। र

विमाय दर्प [वि + स्वाद्यु ] विदेव वसनाः पाना । यह विमाण्यात्र (खादा १ ६-- । पत्र १० सम्प्र)। विसाय १ [पियार] कर शोक विमयीध पारतीय (का नका नुता १ ४ **६**१ ११६)। यन दि थिन विश्व शोक-इस्त (पा १४)। विसाव रि [विसान] । नुम ची्र (दिन १६६) । १ र्ने इ.स. देश-शियान (नय १ )। विमात्र वि विस्थारो स्वार-धीटा 'धाम-महर्मर दिनावे विषयसे अमहस्त न ने पूर्व (fer (14) 1 थिसार गढ [वि+सारय] केनाताः बद्ध विमार्ग्य (उत्त २२ १४) । विसार 🐧 👣 केव, देख (वर् ) । विमार वि [बिमार] बार ची्रा, विस्वार (नहर) । विमारम व [विसारण ] बरान (विश 28 ) 1 विमार्शयप वि विभारीय है। स्वाध्यान र्राट्ड विवकी सह न स्तियास दवा हो। यह (राव) । fames fe [4] Ly tis erei (e a ((): विकारण वि [विद्याद] चित्र प्रदेश स्प्र(१९८) १ –सः ३३ वर्षः पुर ( ११ बाध्य ११)

विसास वि विश्वास रे विलात बढ़ा, विस्त्रीर्थं, चौदा (वामः मुर २, ११६) प्रति १)। २ व एक यह नेश्वा पठाती महा-यद्वी में एक म्यूनयह (ठा २ ३ -- पक us)। १ एक एउ विश्वतिकास का रतर दिया का स्त्र (ठा २ र--पर as) । y पूर, देव-विमान विशेष (सन ३३, देशेन्त १३६: वर १६४)। ३ र. एक क्यिन वर-कार (देख) । विसालय र् 🐧 👣 ] वर्षाचः समुद्र (दे 🕶 विसाला की विद्याच्यी १ एक वनसे का नाम बण्यक्ति बण्येन (मुता १ १ जर ६ a)। २ मनवान् पार्यनाम की **शेका**-विक्तिता (विकार १२६)। १ वेद्दुन क्रिये जिल्ले यह जेशीय श्रद्धांता है। ४ राजभानी-रिहेब (इक् )। १ अवदान् नक्षादीरको मात्रा वा नान (नुम १ ३, १ २२) । ६ एक पुप्परिती (ध्या) । विसाखिस देवो पिसरिस (उस १ १४) १ विसासम वि विशासनी विवादक रिया श्रदः (पनव्यवितामर्ज (तम्ब १)। विद्यासभ वि [विद्यासित] १ मारिक हिमिन जिन्हा वय दिया शे बहा र विशेष का वे वर्षतः ३ शिरनेपित विद्वात क्रिया ह्मा। ४ मार भनाना हुमा (ते द ६३)। पिमाह मं ितिशान्त । स्तन कार्तिम (पाम) 1 विमादा को [बिराएस] र स्थानविदेश (नव १) । १ व्यक्ति नावह नाव एड औ का नाम (कामा १२१)। ३ एक विद्यापर **स**न्द्ध (स्ट्रा) । निमादिन वि [मिर्मापत] । विद्व दिया पना । २ न, वर्तितः वामरिनाद्दि सि

नरहे विकास स्थिति यह (हे ४ वर्ष

¥{ t} 1

विश्वाद्यी को विश्वादयी ! वैद्याप मान गी पॉलिया । २ वैद्याचा माच को धमारह (सूज्य १ ६)। दिश्चित्री दि निरुद्धि मन पर्याख (ह विसि देवी विसि (है १ १२० प्राप्त)। थिसिज्ञमाज देशो विस = विन्ध । थिसिट वि विशिष्ट र प्रवान प्रका (पूर्व १६ क परा २ १---पत्र दश्)। २ विशेष-पन्छ (महा)। ६ विशेष शिष्ट, मुख्य-(बक्स १६)। ४ युक्त, संग्रेश (प्रस्त २३--- वर्ष ६७१) । इ व्यक्तिरेख, विम विश्वस्तर (विदे)। ६ व यक स्ट्रा, होपरुमार रेशों का बहुर विस्ता का एन (स २ ३ --पद ब४)। ७ त बदातार द्वाः दिनौं का कावास (सबीव १०) । विद्वि को विसि महिता (भग्रह र t)। विसित्ति की (विस्वित्र) रिप्रधेत क्रम (विरि बिस्सम वि कि पेमरा प्रदुर रोमरासा (व . 161 विशिष्ठ सक [बि + शिष्] मिठेक्छ पुक बरुवा। इन्द्रे, विशिष्य निवर्शित)समय पुरत नामाड, मुर अध्ये भरिष्यं (प्रकार १ वा **18** | विसिद् र् [विशिय] १ बाह्य और (नाहः पडन स १ ानुसा १२३ (६शत १६)। २ वि किया परित (बस्य ४३१)। विमी क्ये विसी (हे १ ११ अपर)। निर्मी ध्ये [निरानि] बोग बीन का नपूर् 'देतीं (१वि)माधा माधरकार्य विनीधी' (दास्य 1(3/5

विसीम यह [वि+सर्] १ धेर कला ।

रे नियान हाता, हुरता । विद्यायह, विद्योर्थात

निक्रमणुनिक्या (क्यार ६ ४ ६) र

वे ४ वे, व्य ४ ४---वंद २७ वर) । वर्ष

विकीश्य विशिक्षाची । बीटी पुरिवा

२ म. द्वामा जनेशित होता विकेषि रिहारिये रिव रिकेरवे पणापेनीई (बुर १२, १९१)।

षिमीयेन (ति ११०)।

विमीर्शत क्या विस = दि + श्व ।

**११ ५**)। विसुरम्भ सक [ यि + शुभू ] युक्रि करना । विश्वका (का)। वह विसुत्रमंत, विसु-क्समाण (का ६२ टी **स**म्या **१ १**—पन ६४३ ज्ञात बीच पुर १६-१६१)। विसुणिय वि [विभुव] विकाद (पएव १ ४---पत्र ६४) । विसुत्त कि [विस्नातस्] १ प्रतिदूत । २ बारान पुर (भनि)। विसंचिया बेको विसोचिया (धामक १६) रस ६,१ ६)। बिसुद्ध वि [विशुद्ध] १ निर्मेत निर्देश (सम ११ ६ ठा ४ ४ टी—पच २०३ मासू २२। का है ३ १०)। २ विशव जननत (पहला १४--पत्र ४०१)। १ र्य बसलेव सोड का एक प्रवर (ठा ६-- पत्र १६७)। विद्वाद्धि के [चित्रुद्धि] निर्दोषका निर्मनका (भीप या ७३७)।

व्यक्तिपारी (बमु: उप ११७ टी)। २ वर्ण

स्वभावशासा विका भावरणवासा (उत्त

विस्मर सक [वि+स्मृ] भूव कला याद न भाषा । विमुपरह, विद्युपरानि (बहुछ पि **११६), विनुपरेदि (ध २ ४)** । विस्मरिश वि [विस्मृत] विसन्ध विस्मरण हमाही वह (स २१४, नुस १, २१ तुर \$4 **\$9**)1 विसुराधिय वि [संदित] विम क्या ह्या 'धार्मीनभावनिमुरावियाचा निव्यव्य सोक्षाचे (बउड १११)। विद्सयन [विपुनत्] एव और दिन की धमानवात्रामा नाम नद्व समय वन दिन हीर चत क्षेत्री वरावर होते हैं (के अर्)। विमुण्या श्री [विमृचिका] रोव-विरोप देवा (उक् पुर १६ ७वें: बाबा २, २,१ ४)। विमुणिय वि [यिशुनित] १ कुना ह्या, मुजा हुद्दी (पराह १ १---पत्र १८)। २ रासा हुसा सम्बन्ध (सूध १ १,२१)। षिसृद दक्षों थिसुसर । विमुदद (प्राष्ट्र ६३) । विश्वर सक [रितर] धेर करता । रिनुदर (कें ४ १६२ प्राप्त दन)। सङ्गतिमृ(त

पाइअसइसइम्जबो विसूरमाण (उन मा ४१४ मुपा १ २) वर । प्र विस्रियम् (बरह)। बिसूरण न [सेदन] १ वर । २ पोड़ा (पण्ड १ ५---पत्र १४)। विश्रुत्या की [लेदना] बंद, भक्तोस दुःब (t x 1) i विश्वरिक्ष वि [स्त्रिम] सेर-पूक्त, विस्तरीर विसृद्धिय पून [विष्यन्दित] एक देव-विभान (सम ४१)। विसेडि की [विभेणि] १ विक्शि-सम्बन्धी मेखि कारेबा। २ कि किमेरिट में स्पिट (एमिर वि ११ वि ग्रियु विसेस स्ट [वि+शेषय] विशेष-पूज करना पुता बादि हारा पूचर से मिल करना विशेषण से सन्वित करना, व्यवन्त्रेत करना। विशेषक विशेषक (मिकि स्रका सूमनि ६१ द्या घर विसे ७६: महा) । कर्ने विसेसिन्यद (विसे ११११)। संकृ विसेसितं (विसे १/१४)। 🕊 विसंसणिका षिसेस्स (विशे ११४६ १ ३४)। विसेस इत विद्योग र प्रवेद, पार्वस्य किनदा 'ख संपद्मर्थाह विसेशमति (सूच २ ६ ४६ मग विते १ ४० इन)। २ मेर प्रकाट परविष्ठ विरोधे पन्तरो (ठा १ महा इन)। १ धरायाच्य ध्रमुक व्यक्ति बास (इवा जी ३१ महा समि २१)। ४ पर्मीय भने ग्रुस (विसे २६७)। १ मनिक मिरिएय क्याचा 'समी विशेषा से पुर्व (मगः प्रामु १७६: महा, भी ६१)। ६ विवन । ७ धावित्तरग्रास-प्रशिव मधेनार विरोध । द विदेषिक-प्रशिक्त समय पदार्थ (दे १६)। न्तु 💋 विशेष जानते गमा(दं ३२ महा)। श्राद्ध[तसः] बास करके (महा)। विसेस 🕻 [विस्छेप] प्रवस्तरहा (वव १)। विसेसम न [विशेषत्र] इसर दे मिनदा

≪धार्थच १ १२ाविधे ११४)।

२ धविद्यपित (पाम) । बिसेस्स देवा विसेस = वि + शेयम्। (माना)। ११ १२)। पत्र १६)। 11 95 (स य—चन ४४१)। १ ६ ६ १६)। नतानैवाता पुरत मादि (सर ४४४० माद प्रकार (शिक्ष इद्देश) । षिसेसणिज देश विसस = वि + रोपप्।

600 मिसेसय पुन [विशेषक] विसक करन माबि का मस्त्रक-रिमत विक (पामः से १० ७४३ वेली ४३३ मा १३८३ ड्रूप २४१)। विसेशिक्ष वि [विदेपित] १ विरेपण-पूक किया कुसा अधिक (सम्म १७ निसे २६८०)। बिसोग वि बिशोक शोक-पीत (भाषा) । विसोचिया की [विस्नोवसिक] र विमार्न-यमन प्रतिकृत यदि । २ यन का विमार्ग में बागम, धपब्यान पुर विन्तम (बाबा। विशे १ १२ इवा पर्मर्स ८१२)। १ र्राका बिसोपग ) र्नुन [चे विंशोपक] कीई। का भिसोयग र बीसर्वा हिस्सा (पर्यनि १७) पेचा मिसोइ सक [वि+शोधय ] १ युक करमा, मस रहित करना निवीप बनाना। २ ध्यान करना । विशेष्ठद्र, विद्योद्देद (स्व क्याः करो । विशेष्टिण्य (याचा २ १ २ **३) ⊧ क्षेक्र- पिसोक्विचप (ठा२ १**— विसोह वि [विशोभ] शोमा-पीठ (दे १ विसाहण न [विशोधन] युद्धि-करण (क्स)। विशोधना अर देशो विसाह्य वि [विधोधक] युद्धि-स्कृति (मुध विसोधि भै [विशोधि] १ नियुद्धि निर्मेणता विश्वदेश (प्रदेश १२ १३६ स्य पिंड ६७ हैं। मुता १६२) । र प्रत्रश्व के मोग्य प्रावस्थित (धोम २)। ३ झाउरवड़ समयिक मारि पट-इमी (मलू ६१)। ४ मिया वा एक दीप विश्व दोगराने माहार का त्याप करने पर शेव निश्चाया निशान्त्रक विगुद्ध हो वह बीप (पिक १९४)। अहि को ['कांटि] पूर्वोच्छ निर्मोति-दोव का विसोदिय वि [विद्यापित] ! गूर्ज क्रिया हुमाः २ दुर्मोच-मार्ग (वृद्धः १३ ३) ।

विमाद रेगो नामद (पनि १६६) प्रम ६ वृ ि (प्रमृ विकासिटेच (बाह्र हैप)। सम्बर्ग सम्बर्ग किमीनादेव देव विस्थम बक्ष वि + भ्रम् विक्रभेता। क्येंद्र । न र्व ६)। पुर न ियापद (बाह २६)। ह पिस्समिज ["पूर] समर्थिटन (सूत्रा ६३४) । अह र्नु [ नु[] प्रथम शब्भि का पूर्व मरीय (बार-नानके ११) । विसम ﴿ [विसम ] रिपाप विकास नाम (नाम १६) प्राप्त २ १०१ अल ११३ शा ३)। याम रेपो अस्म (म (गला १ ६) । विस्मृतिज्ञ रेषा विश्मंत (तुम १०२)। वाइज र् [वादिक] भवशान् शिवर वह [वि + स्थ] पूरवा । विकस महार्थार का एक क्या (द्वा ६--वन १८१) ।

(शाचा १२३) । मन र् मिनी १ बदशन् दर्शननावनी पिरमर वि [पिरार] थएव पागवसन बारिश एक एका (बन १२१ १२६)। (क्वर परहार—स्वरा)। २ स्थापन बारक हुन्ते (सम्र ४१) रेमा बाग = विश्व शिभक्त न [शिस्महन] शिलुति यह न धन्त्र (रमा २८ द्वा १४) । (श्याप्त का देशाहि हाय (शावा (शाव शिमारियरि [शिम्बन] बुता हुया (सर दिश्य हा स्वी वीधी ( (द्वा ४ ३) 2 ( 1) रियानक्षत्र (fquffश्रद) ब्युख का एड रिमाम मह [रि+धन] रिक्रम \*4 ( ) करना मधेना करना। शिन्तपद (प्राह्न धिरदंबर [वि म्यन्द] साला रको। यह विस्तारीह (या ta)। ह अन्तर पुरा । शिलांदी । हा र र-पन शिक्षमित्र (भारक तन ११)। 3 () शिक्षम् वर्ष [शिक्तमध्य ] शिलाव विस्मिति हि. [विद्यान ] विकास वरोबानाव (या देश पूर्ता है है)। इ.सिम्बिक्सिकारचारर 4 41 mi (t) सिम्हानिक हि सिमानिको विद्यारण स्मित्र र्वि स्ती सिन्य पदा असे wirter to b संस्ता यहि प्रिंखी िम्माय रेजा समाय (अपू २६ नाट— 1 1 1 4 4 75 (mg 1 1 - 41 1) C+ 1 ) feetage [feetag] free c e रियम भव वर्षिय स्वयो पत्ती हवस्रीय 1 1-11 sat 1864 ( 21)1 1111 द्धारात नेदार(प्राप्तः रेका दिश्य विशाहक र

देव-क्रिकेट (पदम ७२ २१)। पिरसास व विश्वानी प्रऐता, प्रश्रीत, थदा (तुष १ १ : पुत्त ३६२: बाब) । विरश्नासिय वि [विश्वामित ] विषये रिस्सा करावा पदा हो बढ़ (नुस १७३) । विम्हाइउ 🖠 [विष्तहरू] धंवतिया वा भारकार चपुर्व स्त्र-पुरुष (हिचार ४७३)। | विस्मुल रि [विभन] प्रक्रिय हिस्साठ (वाया मीतः शाहु १ ३)। विग्नुमस्य स्था विमुन्दित्र (सा १९०)। विभिन्न की विभिन्न जा क्रियेत विभावा मिक्के (पाचा) । विम्ममर 🛊 [रिधंधर] क्राग्रेनित्तक बाटो में रिवा बहारत नी एक मूर्ति (बानस 1 (24 शिवार्जावज्ञा का विर्वाधका (है र विद्वह [स्रथ्] तात्र करमा। बह-विद्यान ("न २० ३: दूब २० ३)। विद्देशो दिग = वित्र (याना दि ३६३)। विद्वांत विदेश मार्ने एत्स (पाप ६ ६) । र यस्त्र दिनो म "एनपनोप मार्न (पापा र र १ ११ र र र १ १८) र दावी बाद भागे (बामा २ ४ २ ३) । fig fa [ figisti ] mein, aca (ne

कप्प)। २ पुन भाकारा भगन (भग २

(मतह दर्श वर्थ १ २२)।

देखो विभंग (नवडः भनि) ।

मोद्र ६२। म ७७ छए)।

(भवि)।

(सम्ब्र)।

धए)।

२१६) ।

(से २ ६२) і

विष्टु देवो विष्टु । विष्टुर (मवि) ।

toq

(मा ६१२)।

वसमि १ २३)।

( \* 43) 1

२--पत्र ७७१३ माचा १ ८ ४ १३

पुष्टिपमाणुविद्वियो' (मनि)। विश्व धक [वि+सम्बय] विक्येत करना विनाश करना। विहुद्ध (मृति)। विदेशण न [विसप्दन] १ विन्देर, विनास (सम्मत्त १)। २ वि विष्योत-कर्या विनामक विद्वण दि [बिभण्डन] माङ्नेवासा पासि मुचका 'मएलसि रे वह विश्वका वसार्थ' विश्वंदिभ वि [विकाण्डित] विनारित (पिक बिह्रम दू [विह्रम] फ्बी चिक्रिया (पत्रम १४ वर्गेय ६१७ वस २ ६)। ाहित र् ["पिप] सब्द पद्मी (सम्मत विहासस्] बाकाराः स्वतः। गइ भी [गांव] १ म्यनात में बमन (वंचा १ ६) । १ कर्म-विशेष, बाकास में पति कर सकने में कारए-भूत कर्म (सब (A) Att ( SA, A) !

विहुई की दिं] कुलाकी बैनन का गास विद्य सक [बि + घटय ] वोइना वर्णिक्व करना । संक्षः विद्वाहिकाण (सरा) । विद्वार्थ विद्वार पदी विद्या प्रवेक विहर देवो विहल = विद्वास (से ४ १४)। विद्वा न [विघटन] १ यत्त्व होता (पाचा मतक क्या सूर १ २४% प्रास् १७२)। जाइ पुंचित्रभी नव्य पक्षी वियोग (सुपा ११६४ २४३)। २ मध्यम करता । ६ बोलना 'तह महेणा वह महिल-विश््री (विसङ्ग) विभाग दुव्या येत यसोयखडक्षिक्कणे वि ग्रसमाना (पन्ध (पर्वा १ १--पत्र ४४ गउव ४४)। 44) I यिश्वसम् पूर्व [दे] सन्तर्व (पद्)। विहरणा की [विघटना] वियोक्त समग विद्यास पु विद्यास विश्वी विद्या (गडड करना 'संयवण्यिहरुणावावदेश विदिणा वस्तो नहिमो' (बर्मीव ४२)। षिहंस एक वि + अञ्ज निपना, घोइना, विद्वप्तक वि [दे] १ व्यापुत व्यव (हे विनास करता। सङ्ग विश्वजिति (धरा) १ १७४)। २ स्वरितः सीव (धनि)। **बिह्हा की** [निघटा] निमेक क्रनेका फाट विहंजिअ वि विभक्ती बांटा हमा। 'मावम-क्रुट 'ब्ब्र मह दुर्ह बरिहरा न परह कह्मावि रंजक्सहेरा (मुपा ४२१)। विद्शाय सक [यि + घटय] वियुक्त करना यसन करना । विद्वानद (महा) । षिड्डामण न [बिघटन] वियोजन (स्वि)। विश्वापिय नि [विषटिष्ठ] नियोजित (गार्थ विद्वविद्य वि [थिघटिय] १ विद्युक्त, विक्यिम (महा ६६ ४) । २ च्रुका ह्रमा (महा ६ 1 ) i विद्या देवो दिह्या। विद्याहित (पि ४१)। पंक्र विद्यु (तूप १ ४ १ २१)। बिष्णु वि दि] संपूर्ण सक्क (सरह)। विद्रम्ण न [४] पिक्न गीवना भ्रुतना (दे ७ **(1)** विहत्त देखो विभक्त (सं ५० ११) वेहम देवता बेट ६ तक बेबा इंदर)। मिश्चि देखो विमत्ति (पत्रम २४ १० वप 4 (xe) 1 विद्युषेको विद्याः विद्दस्य नि [बिद्दस्त] १ ब्यादुसः व्यव (स पिर्दाष्ट्रम वि [विपष्टित] सपितत दिनामृत १२ ४१: इत्र ४ १ सिरि वेवदा वहदः सम्मच १६१) । २ दुरुन, बक्रा 'पहुच्छवि

इल्ब्स्वरं (द्वयर १२६) । ३ दू. धनप होना टूट जाना ! विहरह, विहरेह विशिष्ट हाम किसी वस्तु से मुक्त हाथा (महा- प्राक्त ७१)। वक्त विद्वांत (स ३ 'पडमें उत्तरिक्रलें बबसो का जाइ पाहुडिंड-हरनो' (सिरि १११): 'सहनमास्यविहरमो' (छव)। ४ वसीव (सम्मत्त १६१)। षिष्ट्रस्थि पुँच्ये [वितस्ति] परिमाण-विदेव बार्ण्ड्र प्रीप्त का परिमाण (हे १ २१४ कुमा प्रसु (१७)। यिद्दिको [मिसृति] १ मिरोप मेर्स । २ वि पैयं-रहित (संक्षि १)। विद्वा ) सक [वि+ हम्] १ मारता विद्रमा जाइन करना। रेनारा करना। १ मविक्यस करनाः निहतर् (३० २ २२)। कर्ने विहसिक्स (उत्तर १)। बङ्ग विहम्ममाण, विहम्माण (पि १६२ उत्त २७ ६): कवक्र विद्यम्ममाण (सूध १ • ₹ )ı विश्वमम् वि [विश्वमम्] निप्न वर्मवासा विभिन्न विसन्नाखः न्यास्युणस्यस्त्राचं वस्यव बाबु बिहम्मस्मि (विसे २२४१)। विदम्म सक [विधर्मय] वर्ग-रहित करना। नकः विद्रम्ममाण (निपा १ १--पन ११)। विद्रमान [पैधर्म्य] १ विष्मंता निद्य वर्मता । २ तकंशाश्र प्रसिद्ध उदाहरस-नेद, वैश्वम्य-रहान्त (सम्म ११३)। षिद्रमाणा स्व [विधमणा विह्नन] कर-र्वना, पीका (पर्यकृष्ट ३---पत्र १३) विश्व २३४ )। विद्य दि दि ] पिनित भूता हुमा (दे ७ षिक्य वि [विक्ति] १ मारा द्वमा पाक्त (पडम २७ २०)। २ विनास्तित (महा)। बिह्य देवो पिद्रग = प्रिट्रव (बडड सए)। विद्य केवो विद्य≖निमा (दे ३ २८८ नार---गावनि ३३)। विद्रर सक [यि + द्वा] १ क्षेड्राकरना धेवना। २ च्युत⊳ स्थिति करता। ३ स**क**. यमन करना, बान्छ । विद्युद्धः (ह्र.४ २१६ रुवाः कृष्यः स्व) विद्वरंति (भग) निद्वरण्य (पन १ ४)। मुका, विहरिमु, बिहरिस्वा

(बत्त रहे द्वारि हर प्रदेश)। महि

विद्यस्तिहरू (पि १२२) । यह विद्याल

१११ दी) ।

विद्रमाण (एत २३ ७ तुब २३ ७ दोष १२४ महत्र भव)। संक्र विद्वरित्ता

बिहरिश्च (मण नाट—वक १२)।

विद्वरिश्चय विद्वरिष्ठ (धना ठा २ १--

वर्ष १६। स्त्र) । इ भिद्दिरयध्य (स्व

विद्रुर सक [ प्रति + इस् ] प्रतीया करता,

बाट बोहमा । बिहरद् (पड ) ।

विद्वर देखो विद्वार (ज्य वह दे दी)। विद्राप न [विद्राय] विदार (दुम २२)। विद्वरिभ न [व] गुरुत संमोव (दे ७ ७)। विद्वरिभ वि [यद्भव] क्लिने विद्वार निया क्षो बहु (योज २१ । एक कुन्न १६६) । पिश्रास पत्र वि + इ.वस्त्र ने स्थानुव होना । **गह. विद्वार्तन** (स. ४१३) । शिक्ष केवा विश्वद=वि+वद् । ना. विद्संत (से १४ २६)। बिह्नस्त वि विश्व प्रस्ती म्यानून स्वय (हे २ **१**६३ माङ्ग २४० पदम इ.स. गा २ वर, प्रासु र, इसम १४ मण्या २४: पद् : यक्द) । विद्वाप देवा विश्वस = विक्रम (संविद्या)। विद्वस्ति विभिन्न । स्टब्स निष्यम निर्देश (गजह मुपा १६६)। २ वस्तरम भूद्राः मिन्धा मोक् निक्सं पनियं प्रस्तं प्रस्मपूर्य (पाय) । विद्यासक [विफल्डय ] निम्बन बनागा निरचेक करता । विद्याति (धन) । विद्रक्रमाः । रि [यद् बदाङ्ग] व्यादुव विद्वानीयन र गरीरवाला (काम १६६ व ११६ नुष्य १ । ३६८ नुष्य १७३ नुष्य ४४७) विक्याप्रविद्वलकता परिवा (नुर ₹**3,** ₹ () ( विद्यप्ति अपि [विद्यक्ति] ध्यातुव विमा हुम्स (कुमा १ ४६ महर नदा)। विष्टिंश रवो विष्टृडिय (हे ७ ४६)। बिद्धिभ वि [पिपःस्ति] विका क्रिया हथा (ਰਚ) । विद्रष्ठ यह [पि + स्, वि + स्तृ?] १ धाराजकान्यः। २ स्टब्स्टिस्टारकरूपः। विद्वार (शहरत १४६) ।

पुत्र (पिक्र) । बिह्ब दे [बिभय] समृद्धि, तंपति ऐपर्य (पाषा मन्द्र कुमाः है ४ ६ । प्रामु ७२) \*t) 1 बिहुब्य न [बियवन] विमाह (एव) । विद्वाची विध्या विख्या पति मर क्या हो नह भी री४ (पीछा जन ना १९६८ सन्न १६ मृर १ ४६)। विद्वपि वि विभवित् प्रवित-राजी वताश्र (हमा सूपा ४२२: परह)। विद्रश्य देशो विद्युव विशव (गार - मृत्या 5E) 1 विद्स पक [वि+इस] १ विकल्पा विकास, प्रदुष्ट होना । २ हास्य करमाः मध्यम प्रकार का हास्य करता । विहस्य विहस्य विक्रमेर, विक्रपंटि (प्राक्र २६ एए दूसा) क्केप्र १६१)। विक्रकेट, विक्रकेट (कुमा १, ८१) । मनि विहसिद्द, विहरेदिद (नुमा १८ वर) । यह विद्युश विद्युशेत (देर ३३, हुमा३ ; र, ≂४)। संक्र क्षिसिकण क्षिसिज क्षिप्सेकण (का aut ११६८ मार---शब्दु रेवः दुसा १, २)। क्षेत्र निवृक्तिक विद्योर्ड (कुमा ર ૨) ક विद्वसाय एक [वि + हास**्**] १ (पाना। २ विकसित करता । बेक्र. विकसाविकाय विश्वसावेळण (प्राज्ञ ६१)। किइसाविभ ४ [विद्यस्ति] १ (बाध हुमा । २ दिकछित किया हुम्म (प्राक्र ६१) । विद्धिम नि [विद्यासत] १ विक्रमित विकाहमा प्रकृतन -विद्यविद्यविद्योग विद विषमुद्दीप् (सङ्का सम्पत्त ७६)। २ व नम्बमप्रकार का हास्य (नजह ६१६) ७११)। विद्वसिष् वि [विद्वसिष्] दिवानेराका विक्रविद्य होनेनामा । र्दे ४ ३३ : ३६२: क्रिक्टि इ.२१)। ३ दुवन विद्धितिका वि [दे] विक्रिक विद्या पर्वत पायो केर कुरहेबसाविकास्त्रनिमित्त हमा (दे ७ ६१) । पगारिक्स परिमार्ड एयाए बानाहमी ह्विस्सर् बिह्स्सइ देवो बिह्स्सइ (राष्ट्रा ग्रीप) । (# 384) I विद्या पत्र [वि + भा] सोधना, वनस्त्र। विद्याप न [विधान] र शाबीख येति (४९ निहानि (दी) (रि ४६७)। ७६ ३ पर ३१) ३ १ निर्माल, रचना (वैवा

विद्या एक [चि+दा] वरित्याय करना। संक्रिकाय (तूप १ १४ १)। विहा म [बुधा] निरर्धक व्यवं, मुना (र्गरा t2 X) | विद्या की [पिया] प्रकार, मेर (क्रमा महा) प्राप्तु) । विद्वा देवो विद्या=बिद्यावस् (वर्ष 4(4) विद्वाइ वि विचायिम् वर्षा करनेशका (वेदस ४ ३ टर ७६० टी वर्गी (१६६)। विदाय नि [पिमार्च] १ कर्जा निर्मातः (बिसे १४६७ वेचा १ ६६) । २ वृ पद्मपदि-देशों कं उत्तर दिशाका इन्ह्र (स २ ३—-२४ ४), विद्यार एक [पि+भटच ] ! निकुत करना व्यवप करना। २ विनाश करना। १ बोधना चपाइना । विद्वारेद, विद्वारेति (स्व १४) महाभग)- वस्ममधुर्गितहः-र्वेट (धीर राम)। श्रेष्ट 'समुग्नम र विद्वादेव" (वर्मीव ११) । इ. विद्वादियस्य (महा)। विद्याद वि [वियाद] विकट (एक)। विद्याद नि [विद्याद] प्रकात-कर्ता (सम्म १)। विद्यादम [दे] मन्दें (दे ७ ७१)। विद्यादिम दि [विपटित] र नियोजित, यदन किया हुया (वर्गसं ७४२) । २ विका-रिख (उप ११७ दो)। विद्यादिम वि [चिपटिक] स्व्यापि बोना [मा(क्प पूर्γवम्)। विद्यादिर नि [प्रियम्थितः] प्रवन करनेनावा विद्योगक (क्छ)। विद्याल पूर्वि दे शिथि विवास देव सम्य (दे ७ १ ) 'मापुरामस**मूहनई** निहासानाही करेमाडों (स १३ : घकि)। २ विदान, प्रकार पुरद्व (दे ७ १ । दे १ ११ अपि

( **बह** १) ।

७ ४८ रमाऽसहा)। ३ प्रकार सव (से ३

३१ पर्हर १ मम)। ४ व्याकरणोख

विधि-विरोष (पराह २ २—पन ११४)।

× प्रवस्था-विद्येच (सुम २ १ ६२)। ६

विद्येतः "विद्यमणुमन्यस्यं पहुच" (सम १ १

दी)। ७ रीति (महा)। ८ इस परिपाटी

विद्वाण म [विद्वान] परिव्यन (राज)।

विद्यापिय (प्रय) नि [विभायन्] कर्वा करनगमा (सस)। विद्वाय सक [बि+भा] १ दोमना। २ प्रकाशना चमकना श्रीपना । विद्यानीत (म १२) । वह- विद्यार्थत (विरि २६८) । विद्वाय पू विभाव दे भवसान भव (से १ १६)। २ विरोधी पुरसन परिपन्नी (से व ५४) स ४१२)। बिहाय देवी विभाग (गडक से १ ३२)। विद्याय वि [विभात] १ प्रकारित, 'निसा विद्वार कि चद्रियो क्याही (कुन २६०)। २ न प्रमात प्रतिकास (से १२ १६)। विद्याय केवी विद्या = विद्यायम् (भा २२)। विद्वास देवो भिद्वा = वि + हा । विद्वाय (प्रश) देखो विद्विभ (प्रति)। विद्वार सक [पि+धारयू] १ प्रपेका करना। २ निर्देश रूप से बाएस करना। बहुः विद्यारत (पदम ८, १६१)। विद्वार 4 [विद्वार] १ विकरण मनन पछि (पन १ ४) चना)। २ झीड़ा-स्मान (श्रम र )। ३ देव-गृह सम-मन्दिर (उन्त ३ ७ कुमा) । ४ धवस्थान सवस्थिति 'सदा-सर्वे बद्दु इमे विहार" (क्त १४ ७)। ४ सीका (का द कम्म) । ६ पूरि-वर्तन मूनि वर्षां, साम्बादार (दर १ एडि. 🗃)। भूमि भी ["भूमि] १ स्वाप्नाय-स्थान (माचा २ ११ द क्याक्य)। २ विचरता-मूर्गि (वव ४)। १ क्रीड्रा-स्पान। ४ चल भी नगढ़ (कलः एव) । विद्यारि वि [विद्यारित] निद्यार करनेताका (माचा बना था १४) । विद्यास्त्रिय देवी विद्याहरूअः 'दुवार विद्वारतिय पासद' (इर ६४ व दी)।

बह, विद्वानेमि (धर्मि स्थिम १७) । इनहर, विद्वाविज्ञमाण (स ४१)। इ. विद्वावियव्य (वर १४२)। विद्वासण न [विधापन] निर्मापण करवाना (पेइस ६६)। विद्वाषण न विभाषनी सक्तोचना 'एवं विचितिकार्व पुरुदोसविद्यावर्श परम (पंचा L VII) I विद्यापरी की [विभावरी] एकि निरा (पाध रूप ७६= टी सुपा १११)। विदायस प्र विभागसी मन्त्रि द्याय (पाय)। देखो विभावसः। बिहाबिअ वि [विभाषित] रष्ट, निरोधत 'विद्रं विद्वाविद्यं' (पाद्यः या ५ ७) । विद्याविश्र वि [विभाषित] उद्यक्तित प्रस्कृतित (स १७)। विद्वास पू विद्वास हैं है उपहास (मनि)। विद्वास ) देवो पिश्वसाय । संक विद्वा-विद्वासाय े सिऊप विद्वासेऊप विद्वा साधिकण बिहासावेकण (शाह ६१)। विद्वासायिक) रेको विद्वासायिक (पाप्र विश्वासिक रे१)। विद्यं विभि रेष्ट्या बतुरानन विभाग (पायः सन्दु ३७: धर्मसं १२६ कुमा)। २ पुँकी प्रकार, भेद (स्वा) 'स्ववाद्धि समृति होर्डि (पथ १४१)। १ माध्येष्ठ निवानः पतुष्ठान व्यवस्था (वेचा ६ ४८ सीए)। ४ कम किकसिका परिपादी (बहु १)। ३ थैवि । ६ नियोग साबेट साम्रा । ७ साम्रा मुचक वास्य । ८ व्याकरण का सूध-विशेष । र कर्म। १ हायों को चाले का संघ(क्षेट्र १४)। ११ देव भाग्य, 'धायुकूती धहुव विही किया वे जंत करेहें (मुँट ६ ८१) पाम्यः दुमा प्रासु १०) । १२ तीवि न्यायः । १६ स्थिति, मसला (ब्रह्स)। १४ इस्टि करण (पंचा ११)। "ल्लुवि ["क्रा] विधि का वानकार (खामा १ १—पत्र ११) सूर < ११६)। पदण व ["यपन] निकि-बाक्य विवि-बाद, क्लिप्युपदेश (पेह्य **७४४)। बाय र्रु** [यार्**] यहा दूराँ**क मर्प (स्वत ७४, बेह्म ७४४)। विष्यु धीइस्य । १ द्रमा । ४ संहरू

611 विद्या नि विदित्ती १ इन अनुहित निर्मित (पाम महा)। २ भेट्रिस (भीप)। ३ राख में जिसका विमान हो बहु राज्ञोक्त (पंचा १४ २७)। विद्विस सक [ वि + द्विस्] विविध् उपायौ से मारमा, वय करना । विश्विसद (माचा १ ११४)। इ. विहिंस (परहर २---पन ¥ ) i विद्या वि [विद्या ] हिसा करनेवासा 'य-विद्वि मुम्बए देवे' (माचा १ ६ ४ ३)। विदिसम नि [विद्विसक] वय करनेवासा (मापा यण्डा ११)। विदिसण न विदिसन | विश्व प्रकार से मारना (पर्छा १ १---पत्र १a) । विद्विसा वी विद्विसा र विशेष दिसा (परह १ १--पत्र x)। २ विविध हिंसा (सुमार २ १ १४)। विवाज्या कि [विभिन्न] **१ पूरा** सप्तय यिद्दिम ∫ (से ७ ४३ १३ ≖६, मनि)। २ व्यक्ति भीम कर दुक्का-दुक्का बना हुन्छ। (P 4 4 )ı विद्यिम[दे] वंगस घरएम (उर ८४२ ਰੀ) । विदिमिदिय वि दि विकासित (पड्)। यिद्विसम्य देवा विद्व = वि + वा । षिद्विति सक [यि + रमय] वनाना निर्माण करना । निहिनिहाद (प्राष्ट्र ७४) । यि। भिन्न वि [थिहोन] १ वर्षित रहित (प्रामू १७२)। २ स्वर्कः (कृमा)। यिद्वीर सक [ प्रति + इस् ] प्रताक्षा करना बाट जीव्या। दिशेख (हे ४ १०६) विद्योरह (स ४१०)। षिद्दीर वि [प्रवीक्ष] प्रवीक्षा करनेवाला (कुमा ७ १८)। विद्यारभ वि [मताश्चित ] विस्त्री प्रतीक्षा को नदी हो बद्ध (पाछ)। विहीसण देखो विभीसग (न ८ ११)। विद्यासिया देशो विभीसिया (गुग १४१)। बिहु 4 [विभू] १ पना चात्र (पाम)। २

विदेहणा स्ट विदेठना स्टर्गम, शहर

महादेव । ५ वासु पदन । ६ कपूर (हे ६ प्रत्याची 'नियक्त्रवानिहस्ती' (वानि)। (बंद) १ 1 (35 विद्दोड सक सिक्टम | ताइन करवा। विद्यम्बन देखो विद्याः विद्वय कि [बिद्युत] कम्पित (मा ६६ ; विष्ठम वि विभूत । कम्पित (मास शिक्षोबद (के ४ २७)। बर्गा)। २ जन्युनित क्याहास्या(धे १ विद्वोबिक्ष वि [ताबिक्ष] विश्वका तस्य १७८)। २ वॉबर रहिता 'नगरिद्धिति १४) । १ स्पष्ट (बड्ड) । इपक्दी (प्रम ११ ४) । देवी विभूय, किया गरा हो वह (कुमा)। विश्वस्थ । दि । यह बह-विश्वेष (दे ७ विद्रोस (सप) वेची विद्रव (भवि) : \$X) 1 भिहृद् देखी विसृद् (घण्यु १४० भवि)। वी देवो वि = प्रति कि 'धक्क' विभ वात व विद्रण सत्र [वि+भू] १ वैपाना विहल देवा विद्या । प्रेष्ट विह्यिया वी इन्द्रं बोधेइ विद्यमित्मविद्यं (परम क्रियानाः २ दूरं करत्य इटानाः ३ स्पाद (याचा१ ७ व २४- सूघ११ ८ ₹**७** १₹)। करता। ४ दुवेय करता सक्षत्र करता। विद्वालहा **१२३ पि १ १)** । बीध्य सक बिजिया देश सम्बद्ध, वंबा विद्वरांति (वर्षिः पि १ ६) विद्वरागीः (उत्त करमा । बीव्यांति यवि ४६) दोवंति (सूर विद्वाय देवो विद्वीप (कुमार पन) । ३)। क्ये विकुत्रह (वि १६६)। १ १६) । यह बीस्रीत (वा =६ दुर विहुल्यन [विद्तार] व्यक्त पंचा (सूप वह विहर्णतः विद्युप्तसम्य (भूपा २७२) इ.स.)। क्यम विश्वस्ति वीश्वसमाम 2 x 2 2 ): पान १४ ६१)। करक विहुत्सीत (छ ६ (दे ६ ६० सामा १ १--पत्र ६६)। ११३ ७ २१) : तंत्र विद्वालिय (सूच १ विहुसण देवो विमृसण (दे ६ १२७) दुपा बीधः वि वि] १ नियुद्धः व्यापुतः। २ २ १ १४३ व्यक्ति २१३ छ १ ८)। (21 99 12) राकाश वात्काविक क्यो धमन का वि ६ विक्रमण न विषयननी १ वधेकरशा (पटन विष्ठसा और [पिनुपा] १ होना (सुरा ६२१) 41) : १११६)। २ व्यवन पंदा (राव)। में रहेत हैं की का उत्कोष है । (१३ १ ई बीठा केवो वीक्ष = क्रिकीव (दूमाः ना ६ प्रवादद (पंचा १ २१)। विद्वापिय वि [विभूत] देवो विद्वास (एपा २ शाप शामका)। २४३ विश्व २१)। बिहुसिख वि [बिभूपित] विभूपा-पूज, वीक वि विद्यो विषय, बहु (मक सक्त भनेहरा (भवि)। विदूर वि विद्युर दे विद्युत स्टानुब, विद्युत **६६)। कम्ब**न ["कदम?] t गोत (स्थप १३ महा दूमा दे १ १६ दूरा विद्वेतक [पि÷ भा]करुत दशना। विकेष । २ दूंबी, यस बोच में अल्लान (ठा हर नवड एक्)। २ औल (नवड १ वह)। febr, feite, febfer feblie ( aud ७—वन ३६<sup>°</sup>)। मूस पि विभागेद-६ विनहरू, विश्वसरा विद्या 'स्रॉब t ttie fir ute une tie पीत (मन ७ १—वर्ष २८१)। स्थय, किट्रनिमान जीवनिम बाह्यिरे होई विहरवाँ कुमा ७ ६७)। संक्र. विद्वेऊल (नि १८१)। भवन भव र नमर विशेष क्रिनुसीबीर (ग्रीव ११)। ४ विचित्र, विशुक्त (ग्रज क्षेत्र विदेश (दिल १)। इन विदियस्य देश की प्राचीन राजवाती (वर्गीव १६) २१ 🗸 इक विकार v सक्त)। २ विकास-पीर्य **४११)। १ म प्या<u>पुत्र-पा</u>व शिह्नकता** विद्वास विद्वेसम्य (नुता १४वा दि २२) 'विमादूय शिक्षुर्यन्य' (स ७१६) ववजा ६२) कम्मो ४ मध्य क्या १६६ व्या १६७ कि (वर्गीव २१)। मोह वि "मोह] मोह-१४ प्रापुर भगिम्छ)। २) पत्रव ६६, १८) मुपा १६६) । धील (पन्म ६१)। सम धा धा विश्वक सक [वि+इटय ] १ वारमा िरागी यम-प्रीहर, बीमाधव (अग व विद्रुपद्भ वि [विभुयवित] म्यदुव रूप दिशाकरका। २ वैकाकरका। स्टूर. ४१)। साम दृष्टिरो⊊ी एक व्यवस्थ ह्मा (बढ़ाई १११ थी) । विदेवपंद (उत्त ११ १६)। इनह (सुण्य २० ठा२ ६—गव ७६) । सागा विदुरिजनाय दि [विदुरायमाण] म्यद्रम 'বিষ্ণুদ্ৰভাৱি বিষ্টুৰ (१ट्ट)খনা' (বব্যস্ত ১ क्ये [\*शाका] धनिसावती नामक विजय-बनवा (वृदा ४१६) । **1—**47 ₹1} ; शान्त हो धनवानी, नवधे-विशेष (ग्रामा है विद्वरिय नि [विश्वरित] १ व्याद्वय पत्त विदेवय वि [विदेवक] ध्यारर-कर्ता (छ — पत्र १२१ इक प्रस्त २ (४१)। ह्मा (नुर २ २१६ ६ ११४, म्यूर) । ३ t t): बीमजमण रेजो साधजमण (१.६,११८)। रियुक्त बनाह्या विद्वाह्या हिस्स्टि विदेशि वि विदेशिया १ विंदा करनेवासा । वीअत्र न [यीजन] १ इताकरना येकाने र देश राजैशला धेरे मंद्रे धारित्रमंत्रि इवाकरना (कथू) । २ और वैद्या स्वयन पिट्रुंगेरवरि [थिपुरीहत] म्यादुवरिया पाएमूर्वाद**े**म्सि (तुप १ (पुर १ ६६) दूस ६६६) स्थला) । स्तेः जी (Tal (Zal) 1 पिश्र क्रिय कि [ विद्वारित ] पीईक (मत (भीष्ठ पूर्व १ ६,६८ सम्बद्ध १ ५०० पित्रुख रेको चित्रुर (ग्राव) । ( \*\* 3 पन ११)।

बीड्रमयमाज (राम १७ वि ७ १५१)।

वीचि देखों वीड्र=बीबि (क्रप्प' सम १४

वीचि की दि] नदुरम्या स्रोटा पुरुस्सा

कीं ख देखो साक्ष व्यक्तीप्रयुः। वीजदः, वीजिम

**६---पत्र ६४४**)।

(દેજ જર્ક) (

बीइ पूंची [बीचि] १ तरंब, करबोब (गयः

भौप)। २ भासन्य गनन (मय २ २ — ७७१)। ३ संप्रयोग, श्रेषत्व (मन १ २—पत्र ८१)। ४ प्रमम्-सात्र प्रसार (यय १४ ६ दी---पत्र ४४४)। इस्त्र न ["प्रक्य] प्रकेश सं स्पृत हस्य सवस्य द्वीप बस्तु (मम १४ ६ टी—पत्र ६४४) । योइ की [बिद्धति] १ निक्म कृषि दुए किया। २ वि कुट कियाबाला (मग रै २—पत्र ४६४)। ३ देखा विगद्र (क्य ૪ ५ हो)। मीक्ष्मास्त्र विकासार यम-प्रश्ति (भग i १—पत्र रेश्च पि १ २)। यीव्यत वि [स्यतिकास्त] १ व्यतीत, पुत्रस हुवा' 'बासीय सार्रीस्पृष्ट् बीरवक्वीह्' (सम ८१)। २ जिसन उपसंचन विस्माही वह (अप १ वेटी---पत्र ४११)। बाइग्राम एक क्यिति + अन्तु बल्लंबन करन्य । बद्धः भीतृष्क्रमभाष्य (करा) । भीकुळ्नाण देखो याञ ≕धीवम् । शीइमिस्स वि [स्यविमिष] मिषिव मिता | हम्रा (माना) । थीइय वि [बीजित] वितको इताकी परै हो बहु (धीप: महा)। भोद्रपय धक [क्यति + सज् ] १ परि भ्रमस्य करना। २ वयन करना, जाना। ३ ध्वर्सप्त करना । वीद्यपदा बीद्यद्वाः बीदवएका (मुक्त २ ही) मच १ पत्र ४६०)। वह, बीइपयमाण (शावा १ १--पन ६१)। संक्र-बीइवइत्ता षाइयएचा (मय २ ८ १ १---पत्र 1 (358 सीइ क्षे देखो वीइ = बीवि (पास सन १ ૨૨ ૨)ા वीई म [विविषत] दुवन् होकर, पुरा होकर

(मय १<sup>-</sup> २—यत्र ४११)।

१ र—पत्र ४६६) ।

भीइ य [स्थिपिनस्य] भिन्तन करके (सव

(हि४ ७ वह ने ६६)। वीजण देखो वाजण (धुमा) । भी जिय देशो वृद्ध (स ३ ×)। वीडग बीडय } देवो बीडग (स ६७) । मीडय पूँ (ब्रीडक) तथा शरम (बरड #11) i पीडिम नि जिल्लिक प्राप्तिना (रामा १ ५-- पत्र १४३)। वीडिआ 🛍 भिटिका 🖁 स्वामा 🛍 पानः बीका (यरह)। देखी वीकी। बीढ देखो पीड (पडक एव दू २२६) मनि)। यीण सक [यि + चारय ] विचार करना। बीखर, बोखेर (बारवा १४३ प्राष्ट्र ७१)। वीण देशो पाद्य (मुर १३ १ वर)। षीणाण न कि । इ. मन्ट करना (साद ११व)। २ निविद्य अस्ता⊳ शापन (स्व ৬६६)। भीमा स्मे [यीमा] बाय-बिरोध (धोर हुमा: बा १९१ स्तप्त ६७)। वर्रिया श्री [करी] बीखा-निमुक्त काबी 'ता सह बीखामर्थित सर्मे सहिम बीखामरिखी (स १ ६)। सायग वि ["बाइक] वीएग धवानेवासा (यहा) । यीत देवो सीभ=गैत (ठा २ १—५५ ×२ परुख १←—पत्र ४१४ पुत्र २ — यम २६४) । चीविष्टंत ) देखो वाद्यपंत (मन १ १---थातिकत ∫ पत्र ४६० छामा ११—पत्र २४ २६)। वानिषय ) देको पीइयय । बीठिवर्गति (भव)। यीवीयय विशेषय (शामा १ १२--पत्र १७४)। वह र्यातिवयमाण (कन्न)। संह-सीविषश्चा (पीप)।

धीर्मसिय (सम्मत्त १६)। थीमसय वि [विमर्छ] रू मीमांसक] विकार कर्दा (उन)। धीमंसा 🛍 [बिमर्श मीमांसा] विचार, पर्यासीयन निर्फाय की बाह्य (मूप १ १ २ १७ विस २०३३ ३३६३ १६५ छन योमंसिय वि विमर्शित मीमामित ] विवास्ति पर्यातीवित (सम्मत्त १४)। बीर वं बीर र भनवान महाबीर (पयह १ १—पत्र २३ १ २ मूज्य २ ३ मी रे)। २ द्रम्ब-विशेष (पिय) । १ साहित्य-प्रसिद्ध एक एस (पणु १३६)। ४ कि पराञ्जी शूर (बाचा सूच १ = २३३ कुमा)। १ र्जुन, एक केन-विमान (सम १२ इक)। ६ म विद्यास्थ पर्वत की सत्तर केंग्री में स्थित एक विद्याबर-नगर (इक् )। इ.स वृंत [ स्थान्त] एक देव-विमान (सम १२) <sup>\*</sup>क्रज्ह

थीसंस सक [यि + मूद्रा, मीमांस\_]

विचार करना पर्याचीचन करना। संक्र

र्पुकृष्णी समाधेखिक का एक पूप

(निर १ १ पि ४२)। इच्छा की िक्र प्या विशास के एक पत्नी (पंत २४)। कृष्ट पून [कूट] एक देव-विमान (सम १२)। गव धून विगवी एक

देव-विमान (सम १२)। उपस पै यशस ] भववानः महाबीर क पाछ धीक्षा मेनेवाला एक राजा(ठा व-⊷पत्र ४६)। स्टब पूर विश्वजी एक दर विमान (बम १२)। भवळ वे विश्वका নুৰবার কা एक पश्चिम বাৰা (বা २) इम्मीर १३)। "निहाण न "निधानी स्यान-विशेष (महा)। प्यान विश्वनी एक केन-विमान (सम १२)। अहर् [ भन्न ] समनान् पारबैनाय का एक मरह-बर (डन १३ कम्म)। सई की [मता] यक कोर मनिनी (महा)। उस प्रन [ सम्य] एक दब-विमान (स्व १२) । ब्रुप्स तुन [ यर्ज ] एक देर-जिमान (सम १२) सरम

न [ बरम] प्रतिनुष्ट से युद्ध का स्तोकार.

'इस मोका समें सब्बारिती मुक्क को मान

(क्या ६ ८६। १२)। परमाध्य

**वि**क्रणी प्रशिक्षण से प्रथम समान्त्रहार नी बाचना (Paft १२४)। यसम न विख्या नुमट का एक स्वामुपल की छन नुषक कथा (कम्मा तंदू २६)। भिरासी धौ विरात्धी क्सी-क्षिप (१ए७ १--बन (१)। सिंग पूर [श्रृक्त] एक देव तिमान (सम. १२) । सिंहू पुन [स्पृष्ट] एक देव-दिमान (धम १२) । सेण व सिन दिन प्रसिद्ध कीर माक्क का नाम (शाकार ४ -- पत्र र चीन-चप ६४० ध)। संजय पृत्र[सनिक्र, शेषिक] एक देव-विमान (सम १२)। विका पैन िंघर्सी केमीरमान-विरोध (सम १२)। ीस या विस्ति पायत-किरोप ग्रीवे पैर रनकर सिद्धासन पर बैठने के मैसा धवस्थात (स्राया १ १-- पत्र ७२) मन) । ौसणिय दि ["सनिक] **गै**एक्ट से बैठोबला (धर्म १--पत्र १६६ करू-धौरा) । बीरंगव र् [बीराक्कव] १ वक्सान् महानीर

क पाव दीया धेनेनाता एक राजा (का ---बन्न ४३) २ एक एजकुमार (जा १ ३१ a)ı बीरण धीन बीरण दिएए एए-विरोध प्रसीद

सम (क्ल २१२ वाम) । बीरख वृ [वीरक] स्पेन वधी (परह १ १---वम व ११)।

बीरिज र् [बीर्य] १ भगगत् पर्स्तनाम का एक मुनि-संघ र भनगत् पार्श्नाव का एक मणपर (द्या - पन ४२६) । ३ पुन र्शाक, सामर्थ्य (इसा छ १ १ ही-पत्र १ ६) । ४ घन्तरंग राजि शहम-स्म (प्रानु ४६ सम्म ६१)। ६ वराज्य (कम्म १ ६२) । ६ ८६ देव विमान (वेन्द्रः १६१) । शरीर स्पित एक बान्, शुरू । देश्व (६२१ + प्राप्त) ।

वीराता भी पिरिकी वर्ष वस्तिति सिटेच, नीएटा (१९३१) द्या इसको य नाव ये (पर्य १--१३ ११) ।

वारभरपहिमग पुत [वाराचरापनमञ्ज] बुक्त देश-रिमान (बन ११)।

बीस्त्राधी विस्था निस्तृत नता (कुम 42. **(44**) i योक्स्म वि वि विविद्धा स्तिष मध्य विक्ता (दे ७ ७३)। वांक्ष्य देवो वीक्य (दे ६ ११)।

थीरुओ क्षी दिही १ तरंग करनोस (**१** ७ ७३)। २ वीची दक्ति, चेठी (पड्)। बीबाह देशो पियाह = निवाह, एसा एउटा कुमा नस्वाहिया ता इभीए नीवाह" (सूर ७

१२१ मका)। र्भवाहण न [स्याहन] विश्वहरूपण विवाह-किया (सव १ ६ की) सिरि १११)। वीवादिय वि विवादिको विवाद-सम्बन्धी (वर्गीव १४०)।

बीवाहिय वि विवाहित विस्की सादी की पद्म हो वह (यहा)। बीधी की बि बिम धरम (बन )। वीस वेको पिस्स = विज (मूच २ २ ६६

इक्षिर)। वीस केवा विस्स = विश्व (सूच १६ २२)। इरी और [ पुरी] नवरी-विशेष (स्प १६२)। सभ वि सिद्धी क्यल्यां (पर्)। 'सेप द "सेन**े १ पम्नती एका ओह** शाए बहु की समेखें (सुद्ध १ ६ २२)।

२ इंग्रहोत्तर का १≤ व्हर्मुटी (पुरुष

t (1) 1 थीस ) को [बिंग्रित] । संक्या-विरेश वासद्द | बीस २ । २ निवारी प्रक्या बीस ही ने (कम्प पूजाः प्राथ ६१। संधि २१)। स वि मि र वीमर्रा २ वी (शूपा ४३२ ४३७) पक्य २ वर ४६) । २ नः संख्यार तव दिनी का उपनला(लामा १ १—पत्र ७२) । द्वाम िंघा वीस प्रकार से (वस्म १ ६)। बीसंत वि [विमान्त] १ विध्यव-प्रान्तः

जिस्ते रियाणिक भी हो स्दुइ 'परिस्थेता बीचेता समोद्धवस्तरे (द्वप्र ६३) पश्चम 11 11 2 tः पाधा चला अत (Y 2):

भीसंहम व [बिस्यम्हन] ब्ही भी हर सीर माद्रेष्ठ बनकाएक प्रकार का साथ (प्रा ४ पद ३३)।

बोसँभ देवो विस्सँम = वि 🛨 बम्म् । वीवंब्र् (मुमनि २१ टी)। बीसीम बेको बिस्सीम = विश्वम्म (उप महा-440) I

थीसिकाभ देवी विसक्तित्र (से ६ ७०) ११ ६३ पडम १ १२३ वर्गीय ४६)। बीसस्य नि [विश्वस्त] विस्वाय-युक्त (शका साध्या बीसद्भ वि [विभव्य] विस्वास-वद्भ (क ६७६) मनि ११६३ मनि नाट<del>-पूज</del>्य

वीसम देशो पिस्सम = वि + धन् । वीसमा, वीसमामो (सब् मङ्काः पि ४८१) । वङ्क थीसममाण (परम १२ ४२ वि ४ ६)। बीसम देखी विस्तान = विद्यम (दह )।

वीसस देवो वीसन्म । बोसमिर वि विमिन्तियाँ विमान करतेशका (सस्त)।

बीसर देखो बिस्सर-पि+स्प । बीबाधः (दे ४ च्छ ४२६। ब्राह्म ६६। बद: परि), नीपरेसि (रंगा) ।

बीसर देवो भीस्सर=विस्तरः भीवरसर रखतो जाता योशीपुरुष्यौ निरिक्तवर्ष (संद ta) i

वीसरया<u>स्</u> वि [ विरमतः ] पूत्र जानेवालाः (धीष ४२१) ।

वीसरिश्र ध्वो विस्तरिव (या १६१)। यीसन (घर) एक र्रिय + श्रमय रेरियान

करपाना । बीसवर् (स्थि) । र्यःसस देवा विस्तरसः। बीवतरः (वि ६४) ४१६)। वष्ट्र- वीससंव (पडव ११६

१)। 🔻 शीससणिज नीससणीज (स्व २६ ४२। गार-नावित १३)। पीससाय [पिससा] स्वयत प्रकृति (अ ३ १—पत्र ११२, क्या शासा १ (२)।

**बीससिय रि [बैस्तसिक] स्वामाविक** (धारन)। बीस्य देवो बीसइ (हुर २ : ६२: आ १

रे--पत्र १११) वह )। पीसा भ्ये [विश्वा] द्विती, परही (बार) । र्थंसाप र् [पिष्याच ] यहार, बोबन (ह

1 (FY 5

बुगाइ व स्थिद्महो र स्मइ भगका 🕰 विधि, इस वी] १ मार्ने शीसाम र् [विधास] १ विदान स्परम । २ वीहि थाहिया रास्ता (धाषा मूच । श्रीकी २१ प्रची १ (गवड ११००)। विग्रह सदाई (ठा ४ रे—पन ३ प्रकृत व्यापार का सवसान, कासू किया का १ पत्र २६८)। २ वाक्ष क्षमच (उपाद बंद (के १ ४३ से २, ३१ महा)। २ धें स्त्री पीचा (स १४) । ३ धेत्र माग २४४) । ६ वहकाव (स्वीम ४२)। ४ बीमामण रेको विस्सामण (क्य ११)। (हा १---पन ४६ व) । ४ बाबार (दम २० मिय्याभिनिवेश, क्याग्रह (राज)। वीसामणा देशो विस्सामणा (क्रम ११ )। महा)। बुगाद्अ रि [ब्युद्धादक] रखह-भारक सम्बद्धि है । दूना हुआ । २ दूनवामा वीशाय देवा भिसाय = वि + स्वादम् । हः नय पूरगदिसं कहं कहिया (दस १ १)। हुमा 'यस तयहा कीय स्थ हुम यंत्र विसायणिका (पएक १७--पत्र ४३२)। सुम्माद्विक्ष वि [बमुदुर्माह्यः] क्षत्रह-संबन्धी र्याद्वयमन्त्रस्यं (पद १२६)। देखो वृयः। धीसार केवो विस्सार = वि +स्मृ। बीसारेड (दस ११)। बुक्स } वि [पृत] १ प्रापित । र प्रापैता (वर्गेन ३११) । चुद्रय र प्राहि से नियक, पूर्मी (संक्षित)। बुम्गाह् एक [ज्युद् + प्राह्य] बहुकाशः विसारिक रि [पिस्मारित] भुवनाया सुमा भ्रान्त-चित्त करना । क्रुग्याईमो (महा)। ६ विहिता 'कुकम्मकुष्या' (शुपा ६६) । (कुमा) । बुइय कि जिल्ही कवित (उत्त १० २६)। बङ्ग, बुरगाह्ममाण (खाया १ १२--पत्र चीसाख सक [ मिश्रय ] मिलाना मिला-र्बुज (१) सक (वर् + नमथ ी खेंबा करना। १७४ पीप) । बट करना । शीक्षासद (है ४ २८)। पुणक (बारमा १६४)। बुगगाहणा भी [स्युद्माइणा] बहनार बुंताकी की [पुन्ताकी] वैमन का पास (वे चीसाकिश वि [मिश्रित] विवास ह्या (घोषमा २३)। v (\$3 v **(इ**मर) ≀ व्यमादिश वि [व्यवसादित] वहस्त्रमा बुंद देखो संतु = पुन्द (पा ११८% है १ १३१)। बीसार्षे (घप) रेको पीसाम (क्रुमा)। हुया भ्राप्तिवित्त किया हुआ (क्स्क नेइस र्जुवारय देखी वैदारय (दे १ १६२) कुमार धीसाम देवो दिस्सास (प्राप्त: हुमा) । ११७: विरि १ =१)। बोसिया धी [विद्यका] बीस संक्यानामा थुष देखी स्थ ≔ वच्। युदायण देशो विदायण (हे १ १६१) प्राप्त (वय १)। चुक्साण वि [क्ष्यमान] यो क्या वस्य हो संविद ४ दूया)। वीसुन [वे] पुतक प्रथम् भुवा (वे ७ बह्र (नूम १ १ ३१ ममः उत्र ११ टी) । बुंद्र देखो र्वद्र (हे १ १३ कुमा १ ६०)। w %) 1 ब्बाय डिक्स्वाी कहकर (बुध २ २ वुष्य देशो वृष्य = दे (परा) । वीसू प [ विष्यक] र समन्तात, सब घोर | दरे पि ४८७)। नुद्धंत वि [व्यस्कारत] १ प्रतिकारत व्यतीत है। र समस्तपन सामस्य हि १ २४० ४३ तुष्या वेशो पण्छ = युश्च (नाट -- मुख्य १४४) । पुत्रस हुआ भीतीस हुस्तेत सहिन्द्रस १२ पर्हुमा वे ७ ७३ टी)। नेप्लियं बहर्षतं (पाम) 'बुद्देवी बहुकासी बुष्द्र देशो धोच्छ (कम्म १ १)। षीसुंस देखा वासंस = वि + वस्सू । वोसू-तुक्ष पण्लेचं कुर्योकस्तं (सूरा ५६१) । २ मुख्य देवो बोव्यिक्त । मन्या (ठा १ २ -- पत्र १ ८० क्या)। विश्वस्य विगष्ट (धन) । ३ निष्कान्य बाहर व्यक्तिकाण देशो पुष्टिकास (राज)। वीसंभ पक [व] प्रवम् होनाः पुरा होना । निक्या हुमा (निजू १६) । रेखी बोर्खन । बुन्धिहत्ति देशो वाचिक्तति (विसे २४ ४)। बीसुंबेस्वा (ठा ६, २--पत्र ६ व. वस्त) । भुषंति की [ब्युक्झन्ति] क्यति (राज)। धुष्यिक्त वि (ज्युष्यिक्त क्यवश्यिक्त) १ बीसुंभण व [दे] प्रवक्षाव धतम होना (ठा बुष्टम पुंबियुक्तमी १ ६कि, बहाब (सूम पनपदाहराह्या। २ विश्तृ (स्व)। १ त् प्रदश्⊶मम ३१)। र ३ रे)। २ व्रश्चित (गूम २ ३ १ नगठार चौद्या दिनों का छावास (सेबोब थी£्रमण न [।पभस्भण] विश्वात **,(**छा १. २ ₹ ₹ ₹७)1 यै-पार )। मुक्कस सक [स्पुन्+कृप्] पीले की कार बुक्क्सभ देको योपक्का (पर २७३) काम बीसुय देशो विस्सुध (क्या १ ४—यम । नापस मोधनाः कुसराहि (प्रापा २ ३ र, २२ मुपा ११४)। **44**) : 2 2) : मुख्यस्यण देवा वोच्छेयण (अ ६---पव बीसेडि ) वेदो विसेडि (बाद १ एदि बुकार देवा बुकार (स्वा) । **114)** ( पीसेणि 🕽 १ ४) : बुद्धार सम [ दे चुद्धारय ] मर्जन करना । शुक्त पर [ इस ] बला। दुनद् (प्राप्त)। बीहि पुन [म्रं हि] कन-बाम्ब-विरोध धासीए बुद्धारेति (चय १ १)। देवो बोज्य । वा की ही एंग की इसारित वा के दूरिए का ' मुद्धारिय व [यु युट्टारित] वर्णना (म भुज्ञण न [न] स्मयन भाष्ट्रास्त, हकता (सूम २२११) क्स)। \$84) ! (पर्नर्स १ २१ थी। ११ २)।

बुशर्मन वि [स्क्रामान] पत्री के वेप से बीचा वाता बहु नाता (पत्रम १२२४) विदि निरम्मलीरपेष्टि बुरम्परा' (के बन्) । देखी 45 - 45. 1 मुक्तम रेको पुरुष (वर्ष १ २१) : वुक्तमाण रेची युक्तंत (परत दरे ४)। मुम (मर) देवो यदा≔ धन् । दुबद (दे ४ २६२ कुमा) । संद्र मुझरिय, मुझेरियणु (EY 183) 1 तुट्ट यक [स्युन्+स्था] छना बड़ा होगा। बुद्रुए (पि ३३७)। जुद्ध विदिष्टी १ वस्ता हवा (दे १ १३४३ वियार, १---पव १ कुमा १ वर)। २ व कृष्टि (दल = ६)। तुद्धि देशो विद्धि = वृद्धि (हे १ १३७ हुमा)। काय पूर्विशय] बच्छता अल-उभूह (अय १४ २--पत्र ६३४ वया)। बुद्धिय वि वियुत्तिकती यो च्छ कर बड़ा इमा हो बहु (प्रवि) । बुद्ध रेपो पुद्य अपद कर्मकतिवृत्ती' (परम १३ २२) र अपन पक दिया विकास (बॉल १४)। मुक्टींट (अन १, )। मुब्द मक [यर्थय ] बक्रमाः। वह युद्धंत (E 31) : मुद्द वि [पृद्ध] १ वरा धनस्त्रावासः मुद्रा(भीपः भूर ३ १ ४० भूगा १२७) सम्मल १६ : प्रानु ११६: सल्) । २ वहा स्यान् (पृता) । ३ पुद्धि प्राप्तः । ४ सनुवरी, बुद्दल बिहुत्तु । ३ वरित जानकार (Et tit t c c): Chigs सक्त, निवरार (झ. )। ७ ई तहस्य बंबानी (कामा १ १६—पत्र ११३: मेलू रेंग्)। एक पैत्र पुनि का मात्र (कप्प)। च चय ४ [स] दुरुत, नग्रस्य (दुरा ३६ : २४२) । बाइ दू [बादिम्] एक समर्थ पेताचार्य को नुप्रसिद्ध गरि विश्वतंत्र रिशाहर के पूर ये (बामत १४ )। वाय र् ['बाव] विवक्तो ब्हावत वर्म्पार्थ (ग र ♦) । साक्ष्म द्रियय हो eक्कु(क्रमा १ ११—स्व१६३ थीत)। ।पुन रि [शुन] इद का बहुदाने (वे ιij,

बुदद नि दि वितर (एव)। सुविद्व औ पुद्धि १ वहान महता (मापा) भन, स्वाः कुमाः स्वयः) । २ सम्प्रस्य, स्थाति । १ बस्बि संपत्ति । ४ व्याकरत्-प्रसिक ऐकार मादि कहाँ की एक संद्रा (सूधा t tigt tat) i z uge 1 4 क्सान्दर, सुर । ७ मोर्चाव-विरोप । य वृं क्नाक्किकियाँव (हे १ १३१)। ब्रह्म हि िंकर] वृद्धि-कर्ता (तुर १ १२६३ इ.२४)। भग्मय वि ["धरीक] बढ़तेवाला वर्णत-रीम (माना)। स नि भित् ] दुक्रिनाता (विचार ४१७)। बुष्पण न दि देनता (सम्मत्त १७३) । मुक्तिय नि [र] दुना ह्याः भ्र-दुष्टिया बद्रा' (द्वप्र २२६) । बुष्य कि वि १ मैत वस्त (१७ १४ विवा १ र—वश २४)ः २ स्रीपन (वे ७ बुक्त वि [क्कि] दक्ति (स्वा बन्दु श बक्का) : बुक्त वि [समे] बोबा हुमा (स्व)। बुश्च न [युश्च] सन्द, कविता, यथ (पिन) । देवो पट्ट = दुत्त । बुत्त देवी पुत्त (प्रवी २३)। बुर्चत रू प्रिचान्त्रीयबद् वदाबाद् हुसीक्त बात (स्वप्न १३६) प्राप्त है १ १३१३ छ युक्ति देवो पत्ति = इति 'जायानायाद्वीतप्र्रं' (बुगर, १६३ आह.)। बुरव वि डिफिटी बचाइया यहा ह्या (पाया साथा १ क-नव १४वा दर वस ४वे वन इ १२७: गुब २, १७ के ११ ) IN \$40) 1 दुर देशो सुभ ≠ दुत (सह )। नुवास 4 विमुदास निराम (विते १४०१)। पुर्विदेशो सइ ≠ दृष्टि (प्राकृद)। मुद्ध देवो मुद्दह = बूज (बह् )। नुद्धि देवो मुहिद्ध (ब्रा १०---१४ ६९१) सम (w) dfu v) i युम्र देशो बुध्य (बुर १ १२४ बुध २१ ; र्धाव १ । भीर दुवा है ४ ४२१)।

वृत्पंत वि [बप्यमान] बीचा वाता 'पेच्या य मंदलकाएडि बल्पिएं ध्रीरस्केडि कुमीर्थ (याक २४ पि ६३७)। बच्चाय वि स्थित + प्राह्म | न्हर्स्स कला होकियार कला। वह मुध्याएमाण (शाया १ १२--पत्र १७४३ सीप)। जुष्फ म वि] **रेवा**र तिरः-रिक्त (देण 44)1 बुक्स देशो दह⇔वहा धुष्टमसाम् देशो शुरुमस्माम (तुम १२१)। "वुर देवी पुर (मन्द्र १६)। "बुरिस देवी पुरिसा-पुरूप (पतम ६४<sub>५</sub> मुखाइ रूँ [के] शक्ष भी एक प्रतम कार्यि (बम्मत ११६)। बुसद् देवो वसम् (पाद धा वा ४६ वर १ नार--मुन्दर }। बुसिकी [कृषि] दुनिका पाएन। राह्य राइम वि[रामिन्] संस्थी (अलेन्द्रिय-थ्यानी साद्र (मिद्र १६)। देखो मुखि, वसी। बुसि वि विशिवा विशेष बाधु संयमी दुष्टि 'दुर्वि वंदिन्यो भरित्रमो' (विदू १६)। कुसिम वि [दश्य] वर्श्वमें मानेताचा संबीत होनेबाता 'निस्वादिनं बुद्धिनं मम्लगारता' (Frg. (%) युक्ती और [यूवी] मुनिशा बाइन । सार्थ [ सत् ] संबंधी माष्ट्र, पूर्ति, 'एड धर्म दुसीयदी (नुम १ ८ ११) १ ११ १३३ रे रेक् भाषता र र∉। सूद्र क्रुर }। रेपो बुसि । युस्समा देवो (दआसात- तरिक्ताप रुप्पादर्गाण सम्यास रुख्य कुरसार्ग (का १४३। वंदीय ११: १२)। नुह देखो पुद्द - दुइ (नुपा ११ : १२ )। पुर दि [स्पृत्त] १ पाएए किया ह्या. 'अधारिपार्टेश र इसे ठेल्डि लिखर रोनंबा' (त १४२ वर्ज २ ) विचार २२६ र्लंद १२)। २ होना हुमा कुलिहरी बीब वरी विवयस्थाता बर्रात की कोडू (वरि

र्षा व १६२) । ६ स्ट्रा हुम, वेब में जिला

क्या (मत्त १२२)। ४ जनकितः ५४ (से ६ १) । १ निष्ठ निस्ता हुपाः 'कम्पूहुमहृद्हाधो दुवानसंग्री महामई क्रुवा । दे मसहरकुमिनिरेग्रो सम्मे भंवानि मावेग्र (बह्म ४)।

भूगक र्युत (दे) बाह्य वच्चा (राज) । बूस वि दि] दुनाहुसा और तपहादूरी नम किंग्रिय नेय यहियमन्तरि (सुपा ६४६)। देशो तुष्य = (दे)।

बृह् पुन [स्यूह] १ यूद्ध के लिए की काछी रीम्य की रचना-विरोग (पर्वह १ ३—पत्र ४४ मोप स**६३ कु**मा)। २ समूह (धन १ ६ दुन ६६)। वंदेको सद≔ वे (प्राक्त व राज) ।

वे सक [सि + इ] नष्ट होना। वह (विसे tuty) i

दे ) इन [ह्ये] संबक्त कला। वेद श्रम विभार, वेमए (पड्)।

बंश सक [चेदय ] १ सनुभव करना भोक्ता। २ जातना। वेसद, वेएद, वेएति (सम्बन्धा १: मग)। बहु, वेंडांत, वेएमाण बेयमाण (सम्भक्तो १ परम ७१ ४१ सुवा २४३ छामा १ १---पव ६६ मीम र्वेच १८ १३२ गुपा १६६)। स्त्रकृ बेल्ड्यमाण (मग परह १ ६--पत ११)। संक्र. येयद्रका (पूष १ ६ २७) । इ. वंष बेक्सम्बद्धाः (हार १--पन ४७ रमण २४ नुष ६, १ नुषा ६१४ महा)। देशो बेठा = (वेष) चेमणिका वेषाणया मेश्र पक थि + एल् | किटेप कॉपना। वेषद (एवि ४२ धी) । वह वेर्यंत (स ७-

पत्र देवदे) । मञ्जयकि मिप् दिन्दाः क्या वेशसाय

(पा ११२ घ)।

वेस रू [बेद] १ ठाक-विशेष आप्वेद साहि प्रेम (बिपा १ १ टी-पम ६) पाछ वन)। २ कर्न-निशेष मोहनीय कम का एक मेर, जिसके उदय स मेंचून की इच्छा होती है (कम १ २२) का प्र ३१३)। व बाबायन धारि वैश्व क्रम (धाशा १ ३ १२)।४ विद्युप्तमक्त्र(अय)। स्वि

ियस विशेषा कानकार (प्रापा १ के १२)। थि, विड कि विद्∏ेषहो धर्म (पि ४१३ मा २३)। यद्य **ग** िंक्यक्ती बध्य-विशेष (बाबा २ १३ ११)। विचन [यर्ती देवा यस (पाचार १४,४)।

वेश्राम विद्य] कर्न-विदेश मुख धका दुख काकारसम्बद्धमृतकर्म (कम्म १ ६)।

वेश्व वृचित्र दिश गति की कि तैनी (पाच से १८ ४३ कुमा महार पत्रम १३ १६)। २ प्रवाह । १ रेक्स । ४ मून बादि निःसरस्त-मन । १ संस्थार-विशेष (प्राप्त ४१) । देखो र्धगा।

बेजेठ पू विदान्ती पर्शन-विशेष अभिपद ना निवार करनेवासा दर्शन (घण्डा १) । बेअग विविद्यारि भोगनेवाचा सन्भव करनेवाका (सम्यक्त्वो १२ ध्रेवीम १६ भावक ६ १)। २ म सम्बद्धका एक मेद (कम्म ३ ११)। ३ वि सम्बन्धव-विशेष

वि श्विभागवकी विस्ता पुरुष-विश्व स्तरीर काट्य क्या हो वह (सूघ २ २ ६३)। वेश्रयक्ष म [पैक्स्ब] १ उत्तरासंद, बाती में सजीपकोत की छएड़ पहना माता कहा. मन्ता यादि । २ वन्त्र-विशेष मर्बेट--वन्त्र ।

शासा जीव (कम्म ४१६२२)। व्यक्तिय

६ करने के भीने सरकता (खादा १ ६---पम १३६)। मेश्रद्ध सक [सम्प्] बढ़ना । वैधदद् (हे

४ वरुपद्)। वेअविभ वि [स्रपित] वहा हुमा बहाझ

(कुमाः पाम भवि)। भेअविञ वि [वे] प्रस्पुत्त, फिर से नोमा हमा (R . ...) 1

मंजिहरू हूं हि वैकटिक] मोटी वेबनेवाला क्रिक्स बौद्ध्ये (कप्पू)। नभड्डि देवो विश्वड्डि (घौप)।

वंशब्द व [वे] पत्यादक मिनावां (वे

w 44) i चे अब्द पूं [चैताक्य] पर्वत-विधेष (मूर ६ रेण मुख ६२१८ महा ध्वीत)।

बेजबुढ न [वेद्रम्य] विद्रम्या । वद-बएता(मुगा६२३)।

येअप न विवनी यन्त्री का मस्य वनकाड (पाप्रक किया १ ६ -- पत्र ४२ छर प्र **1**(a) :

वेअण न विषनी १ कम्प कॉपना (पेइस ४३% नाट-- उत्तर ६१)। २ वि कर्मपन बासा (बेह्य ४११) ।

वेअजन विद्रती धतुमक भ्रोप (पाकाः कम्म २ १३)।

बंअजादेको विभणा(अनाहर १८६ प्रामुद्दे ४३ देवेचे दे७४) । ने अणिस्त्र ) विद्नीय] १ भोमने याप्य।

षेञ्जिय ∫ २ ने कमै-किरोप मुख-दुव मादिका कारख-भूत कर्म (प्राक्ट ठा २ ४ कप्प कम्म १ १२)।

बेमय देवो बेअग (विते १२a)। बंधरणी और बिंदरणी दे नरक नदी (कुत्र ४३२) बन्) । २ परमामामिक देशों की एक बाति जो वैतराष्ट्री की बिहुर्वेणा करक क्समें नरफ-कीवों को बातवा है (सम २६)।

३ विधा-विशेष (भावम) । पेशक देवो यह्न = विवक्तिय विकासकुरन नियरण्यक्षेण हसक्य पिस्हरिज' (वर्मनि ₹)1

में अद्धारि [वे] १ मृदु, कोमस (३७ ७३)। २ क ससम्मर्घ्यं (दे७ ७४ पान)। थेमक न [दैक्ट्रप] निकसता स्पार्तता

(बस्ब) । मंभव्य देशो मंश = नेरम् ।

वज्रम प्रवित्यी पुत्र-विशेष वेंत्र का एक (दृश् २ ७ वद् । सा ६४२)। भेआगरण वि विधानस्य**ो व्या**कर<del>ण संबंधी</del> प्रेचे निधकरण से सम्बन्ध रक्केनसा

(पंचमा)। थे आर चक्र [दे] ठमना प्रकारका करना। वैयाख (भवि)। कर्म वेमारिकसि (या १ १)। हेष्ट पञारित (धारवर वज्जा ११४)।

वंबार्राजय वि [वैदारियक] विदारण-धम्मनी विद्यारण से जरान्य (हा २, १---पद्य ४ )।

वैभार्राणम् वि दि । प्रदारतः सम्बन्धः ठन्ते । से ब्रह्म (स्त्र २ १---पव ४ )। वे आर्रिय नि विचारियक विचार-संबदी (छ २. १--पत्र ४)। वैभारिकावि दिशे प्रशास्त्रिका हमा (रे ७ र.र., पठम १४ ४६) मुपा १६२)। २ वृदेशः, बास (देशः देशे) । वेभास 🖠 [पेतास | १ मूब-विधेय विद्वय रिशान मेत (पर्छ १ ३---पत्र ४६) वस्त्र मक्क पिन)। २ सन्द विशेष (पिन)। वैकाळ वि दि । एक्षा । २ वे पंतरार (twex) नेबाध्य नि [निदारक] निवाध्य-कर्या (मद्धवि ३६)। बंबाद्धव न [बिदारण] चम्ना चीरना (सुधनि ६६)। बंबाछि व विवाधिम ने बन्धे स्व्याधिनक (इप ७२ टी)। वैभाविक रेको बामाजिम (पाप है र ११२) बेह्म ७४६) । वैभादिस्य विकिय् विकिस से करण (तुस १ ६, २ १७)। वेआद्विय नि विवादिकी विकास-सम्बन्धी भगगढ में बना हुया (दवनि १ ६: १६) । वआस्त्रियन [विशासकी विवास्त्र-क्रिया (नर्धान ६६)। ब्रभाविय रेबो प्रधार्कां अ (नुष्यित १ )। बंधा छवा को विवासियी विदानविवेत (वीत्र १)। यभाजी हो [बैदामी] १ विदा-विहेव जिस इ प्रमार से याचनन बाह्य की उठ यहा होता है—- वेतन की तरह किया करता है <sup>1</sup> (नुष २ २, २३) २ वयरी-सिरोप (खामा १ १६—वम २१ )। भद्र क्षे बिदि ] प्रिन्टन भूमि-क्रिक शौतय (रकाः स्टा) । बंद्र रि [बेबिन्] १ पालनेताला (बेर्स ११६ बका)। २ धनुभर करनेवाता (र्थंत प्र (11) बाध विदिश्ची १ मनुष्ठ (का) । १ : 1) ı

चेत्रक वि विदेशी १ वेदानित वेद-बंदन्वी (ठा ६ ६ -- पत्र १६१)। र नेवी का पालमर (श्यकि ४ ११)। वंद्रम वि विशित्ती वेशायाचा वंद-पूर्व (सामा १ १--पत्र २१)। बंडम विक्यितिती १ कम्पित कॉपा क्रमा (यव १ १ दी---पत्र १६)। २ कॅपामा हवा (सन ७४)। भेड़का की दिने प्रशेषकी पानी बीनेवानी की (दे ७ ७६)। बंद्रका की बिदिका र परिश्रात मूर्नि विशेष चौतरा (ध्या च्या महा)। २ र्धपुति-पुता, संपूर्व (दे ७ ७६ टी) । ३ वर्जनीय प्रतिवेचन का एक गेर. प्रस्पेकणा का एक दोन (उत्त २६ २६ मुख २६ २६ बीवमा १६६)। भेइकायक [वि+ एङ्]क्रीनदाः दक्क वेदकामाण (वय १ १ यै-पत्र १प)। वेद्रक्षमाण देली वंश = वेदन् । वेद्रद्राविदी १ क्रीवाकिया⊈मा। २ विसंस्कृत । १ धारिक । ४ विकेश (१ ७ वेड्ड क्यो विषय (हेर १९६) २. १० कुमा)। प्रबंध केवरे बंबुंड (वरव) । वेदक्रिया को दि] पुन पुन किर-किर (क्य) । वंडक्य केवी विडक्त = वि + इ. कुर्य । संइन् चेड**ब्बिक**ण (सूता ४२) । बेउब्ब वि विक्रिये । विष्ठ, विकार-प्राप्त (विषे १२०६ टी) : २ वेको वितस्य = वैक्रिय (कम्प १ १६)। सःस्य धी िंधरियों सर्वित विशेष, विकास सरीर स्टला करने वा सामर्प्य (वजन ७ १६)। भवन्ति रेको विज्ञन्ति (पराह २, १---पत **११.** कप्प सीप सोवमा १७) : বহুলিক হৈটা বিবৃতিন্য লবিষ্টা, বিষ্টু-विक नेडिंगर्व प्रमुख्याई प्रश्निक्र् बादेखें (क ७६२: नुपा ४७) । बात नाता हुमा (श्रा ४ १ परम ६६, । यहस्थिक रि मिक्किय विकृषिक, विकृषिक) रे सरीर-विशेष अनेक स्वक्तों और क्रिकामी

संद्रम केवो विविध्न = वेपित (ग ३६२ घ)। को करने में समर्वे शरीर (सम १४१) मन वं व)। २ वैक्रिय राधैर क्याने की राधिनाचा (दम १ ३ पव—भाषा ३) । ३ विक्रवैसा से बनावा हता: किस्सीर्यास्त्रनीववर्ग एवं वैजन्तियं च सह भवशे (तुपा १७०) । ४ वैक्रिय शरीरमाना (विशे १७१)। १ वैक्रिय रारीर से बंगल स्वयंत्रका (भव) । ६ विकृ विद्या (सवारवा १---पत्र ७४६) । "स्रद्रिज वि विकास के किया करते जान करने नी रुक्तिमाना (भव)। समग्याम प्र "समुद्धार्थ] वैक्रिय शरीर वनाने के विष् धारम-प्रदेशों को शहर निकासना (धेत) । मेडम्मिम की दि] पुत:-पुत: फिर-फिर (क्य)। वेंकड पृथिकटी समित देश में स्थित एक पर्वत (पन्ध १)। आह्र पंिताधी विपन्न भी गेंक्सकि पर स्थित वृद्धि (धन्द्र १)। वेंगी और दिं । बृतिवासी, बाइनाबी (दे क **Y1)** ( वेंकण क्यो बंजण (प्राप्त ६१) : वेंट वेची विंद = इस्त (धा १११, हे १ रेक्ट र केर क्या माझ ४)। बॅटक देवी विद्युष्ठ (धीन ४२४)। बेंटली देवा बिटक्सियाः 'तमी केन तस्त (क्यियो) पुरको बेंटलीकाउन्छ पश्चित-पुराधियं (महा)। वेंडिआ देवो विंटिया (मीव २ ६ ग्रोवना **थ्यः स्ट** १४९ दीः वद् १) । वेंड प्रे[मेतण्ड] शब्दी इस्ती (शक्त १)। केवो संसद्ध । बेंडसुध 🛍 [ब्] बन्नुब महित्त (वे 🕶 ७०)। मेंडि है कि पहुर्व के कर)। मेंडिल वि [व] वेहित सफेटा ह्या(देश **७६३ सहा**) । वेंस**स्ट देवो विश्वस** (पर्शा १ ६—वत्र ४४) प्रम १, ११२)। वेशक्त देवी वशक्तः वशक्तवराधियाँ (इमा)। बेर्सच्छवा ३ देवो चर्माच्छया (पोषण े ६१मा योग ६४४) । बंबर्का विक्रिक्रियन दिही रोयन्त दिये हुई थीज को फिर से जवादा (दे ७ वर)।

वेक्ट्र मूं [बेक्ट्रज] र विच्यू नारमण । २ इस, वेबारीय। १ नवर च्यों। ४ सर्वेड इस सर्वेड वर्षी का बाय । १ लोक-विच्यु व्याद्य कर तक विच्यु सीर्थ (ठी ७)। वेश देवों वेश = वेय (उत्तर क्या हुमा)। वह क्ये [बर्या] एक नयी क्या नाम (छी ११)। वंस वि [चन् ] वेगनाम (प्रार, १९७)।

नाच्या केवो नेमन्यः (ज्या)। पराच्या की [नेस्सिका था] कता नेराच्या के [नेस्सिका था] कता न्यापंत्रं (व १२) 'क्यांत्रस्यो नेर्याच्या प्राणानवारपञ्चन' (संत्रेत १)।

बेगड बीन [व] पीठ-विशेष एक ठाउँ का बाह्य प्रकारी वेगमाएँ (पिरि ३=२)। बेगर पुंचि द्वाला साँच भावि स निभिष्ठ बीगी सांवि (दर ४, १)।

बेगुब रेको यहराज्य (बर्मर्थ ८०४° मुपा २१ ) ।

चेंगा केको विजया (प्राप्त १)। बसा केको केम (जर्षि)।

नेगाल वि वि दूर-वर्ती द्वयाती में अपर्रू (द्वेश वेश )।

वेभित्त केवी सङ्गित्त (मात १ पण्य ४६)। देख देवो सिंद ≃नि + सम्। नेवड (हे४

ह्या क्या (भ्याच्यान + भ्या नवह (हा४ - ४११)। नेप्यान केलो विकार ∼विका

मेच्या देशी विश्व≔विद्रा

बंच्छा देवो संगच्छिया । सुच व [ मूत्र] बरमीत सी तयह पहनी नाती सौनती (मध

त्रे सी— १४०० एता)।
वेससंस तुन [वेसमण्ड] र एक ध्युक्त केर विसास (का देश मोत च्यु)। २० वेस् त्रीम करण च्युक्त माजने वरण समीत च्युक्त प्रकारत केर तथा दुक्तीर स्पूर का रिस्पा हार (अ.४ २—वन २२६ और १८०१। ८१२ हुँ बहुँहोन सारण सुक्त स्थान केरिया हार्ग के सीस्तृत्व हेर्

४ २--पन २२१, जीव ३ १--पर २६ ठा४ २ --पन २२६ जीव २--पन ३२७- १२१ १११ १४०)। ४ एम प्रमुक्त देवीयाल का निवाती के एम ११)। १२ वर्ष-मनद के उक्तर करक पर्पेत का एक शिक्तर पिता में ११(१ न) ज्येतें (ठा ८--पन ४३६)। १६ वि प्रमान में (सुम १ ६ २ )।

घेवर्यती की विजयन्ती र व्यक्त प्रताका (सम १३७ मप १ ६ १ स्र १ म) कूमा)। २ वह वसदेव की माताका नाम (सम ११२)। १ सेपारक मारि महाव्यों की एक-एक बायमंद्विकी का नाम (ठा ४ १---पत्र २ ४) । ४ पूर्व क्षत्र पर एक्टोमाली एक विषक्तमारी देवी (ठा ब-पन ४६६)। १ विजय-विशेष की राजधानी (धा २ क-पत्र )। ६ एक विद्यामर-नयर्थे (गुर ३, २०४)। ७ रामचन्द्रजी की एक समा (पठम < ३)। ⊏ मनदान् पर्यक्रम की दौका शिविका (सम १३१) । १ ज्यार संजन्तिर्धर को बिध्य किला में स्वित एक पुण्यपियी (क्षाप २---वण २३)। १० वद्याकी घाटमी रामि का बागः विजया म विजयता (? वेजर्रती (सुझार १४) । ११ मणवान् । कुम्बुनाथ की बोबा-रिप्रीयका (विचार १२६)। वेश्च वि [वेदा] मोलने मोलम धनुमद करने योग्य (संबोध ३३) ।

भेका पूर्विया १ विकित्सक हक्षीय (वा २९७ जन)। २ मूक्तिनितेश के वि परिस्क विकास (हे १ १४० २ २४)। सत्य न ["शास्त्र] विविद्यानगास (च १७)। हेक्सा व विवास है विविद्यानगास (क्षेत्र

वेळागुन[यदाक] १ विकित्यान्यास (बीव वेळागु ६२२ टी: स ७११)। २ विद संबन्धी निया वेदन्यमें (बंद्यु २३४: इप्र १०१)।

देश्महोत् [बेच्य] बीक्ते योग्य (नार—साम्रिध्य ११०)।

बहुम देवो सहय (बाट—मावटी ११६)। बेहुमत दूं विदनको १ किर वर वांधी जाती एक दार्श भी पवडी। २ कात का एक स्राजुबस्स (स्टब्स)।

बेहुया देवो बिहुा (पुर १६ १७४)। बेहिह देवो बिहिह (प्ययवेहि व मर्मार्गा (उस्स

२० १२। प्रक्र ४)। वेहित्र (सी) देखों वेहित्स (नाट—मृज्यः ६२)।

थेड [बृ] देवो वेड (६ ६ १४ हमा)। थेडइअ ट्रं[बृ] बाग्रियक व्यापाये (६ ७ ७०)। बेडबग देवो थिडवगा 'जह बेडबर्गासर्थे

(संबाध १२)। सङ्क्षस दृष्टितस] इक्ष-विरोध वेत का साम्र (पाग्र सम १४२ कल्प)। संक्षित्र दृष्टिंग महिलक्षर, औद्दर्श (४ ०

४७)। पंडिच्छिति [वे] संबद्ध सकराः कनवीमा

शहाबक्षा (मृत्तु चन्द्र चन्द्र जन्मनान सहित्त वेचो नेवस्त (पाफ्र हे १ ४६० २ ७ मृत्रा वा ७६ )। संबुक्त } कि [वि] तुराहि तूच में स्टब्स वेबस्ता े (बारू सरि कि सा ७६

स्तेव धीरिकास्तर राज ए , २)। पंदुस्त १ देवो चेरुस्किल (हे २,१३६) पेदुरिका पास गह—सुम्बा १३१)। चेबस्तानि [दे] स्त्रित समिमाली (दे ७ ४१)।

चब्द थेको संद्र = वस्ट्। वेब्हद (प्राप्त)। सब्दम वृं [बेप्टक] क्षण विशेष (प्राप्त १)। मेद्र सक [बंधु] वर्षस्ता । वेदद, वदेद

(हैं ४ २२१) वजा। कर्म वेडिन्स (ह ४ २२१) वजा पर्वत पेदसारा (परस ४॰ २१ लाख १ ६)। क्का पंडित्स माण (नुग १४)। रोई पर्वित्ता पंडित्स मोण (नुग १४)। रोई पर्वित्ता पंडित्स वेडियें ६६ई (ति ६ ४ महा)। प्रयो वेडियें १६६१ (ति १ ४)। वेड र्बुविद्यों १ प्रकारियेण (स्ता १ ६)

चाणु २१३। छोति २ ६) । २ केप्टन सप्टन (चा ६६ २२१ ते ६ १३) । ३ एक नस्यू-निययक नस्य-चयुह, वर्णन-चन्य (छाच्य १ १६—पन २१६। १ १७—पन २८ धनु) ।

येड रेको पीड (यडह) ।

सञ्चन["न] लो≳य (वे १.६ भा १२ १र छ १६३: पर्यंते ४६०)। र्बोप्त्रस्य द्वानिया स्वा(अर काप बुद २ २३ ) । भ न्य वि [पाइम] । ब्टर न बना दूसा (41 1- 111 OMI 11-स्त्र १३ पात्र)। २ दुश्च याय-विध्त (पण्ड २ ४-- स्व १४६: सक) । थन द्रिद्वीत्य का स्तिक का (देण ह 4411 बन का) रेवायमा = वयन(हुर ३२१)। धनाइजन [धाः इ] १ दिश्य नम्रज (# 2 7-77 33? ET E ! 12 वर्षु ६ था। ३ विष्यावर्गस्था सञ्चे देशों धीर वर्षों का सत्य मानना (संशव ११) । रिसिन-देख्यो (प्रव १ ६ ६४) र निवासी हो प्रसान गाननसारा रिश्वन्याचा (तुव १ ६ २०) । बाह् द्री विष् किंद का हो पुरुव मानवाना सर्व (यमेवे ११२)। भन त ) भर[पनविध] स्वित्र के बात थबर् र रेहरों से इचिं(जा देश mat t-mitt): बन्धपा का किर्नाहमा । शिनिस्टेम (तन 7 t-74 ( ) बना अ [बन्त] मार्च (पुत्रवा को एड - 3 (441 1(E) 4 च क्षे (प्रच ) १ तह प्रकार वे रक्ष रचना e intract value रत्यं व १ । ६ वटा धीर बहुय दा वयः < 4 (0.1 ( 1.10.1 ( 1.10.1 ) CF PUT TO e tjanes som (t. s. kila च्याच्य[चर] को दिव न १ स 411 11 47 1 1 1 2 4 4 1 4 5 7 1 100 10 r'11 time de IIII. [C] tires relition or attention to the to

· क)। दिव वृं [देव] १ मुत्तर्जंडुमार नायक देर नार्विका र्रातिस विद्या का इन (स र १-- वर वर) । २ देर-विधेय (द्वर १~१४ ६७: ७६)। १ दस पर्धा (मुख १ ६ २१) । याणुजाय 🛊 [ नानुजान] धरिष्ठग्रान्त्र-मित्र दन योगी व रिकाय बोब, जियमें बार मूर्व मीर नगर बंदाहार व धपाबान करते 🥻 (मूत्र १२---यव २३३)। प्रदामास } १ [४] भ्रमरः शैद्यः (१ ७ श्रुमात्रः । ०६: बरः )। युज्य वि दि । याक्रम्य (वर् ) । पण्ताध्ये [बन्ना] वर्ष-निधेषः यहत्र [ तट] वयर-रिह्न (परव ८६, ६१; ब्राूर)। ६०६ रेखा चित्र (बीच ३: प्राक्त ५)। बतानी भी हिं] १ तर, हिमारा 'करने नावा पुरवाता है व कि स्वीता विभागि वता है से परवर्ति (तएस १६-- भव Ya ) । र वनी (ब्राव न पत्र ११११)। दश्च न [ते] सम्बादब (रे ७ ७६) । 4 स र् [ देव] क्त-शिरेट, देव का सम (950 t-17 1) fent t 1-15 ६६)। ।तम्य व [सन] देव वादना हवा बायन (४३व ६१ १४) । बत्तास्य हि (यहास्य) जानने बोर्ग्य (बार्ग) । र्याच्य 🖠 [व[यह] इतरार पायचे (इस ७१) परिको स्प्र≍सन् केस केसी केसी का नुष १ ( # ) (---t ) < # (424 (43) + yer सींतु (स १ ४ मना । भीत बीर तींत (D) ( 4) 4 E (4 JUL) (B भाषादर सान्त्रार-नार 414 6411 ८ इरेका वर्षत होते होते रक्षा स्थान रहे 1-11 रंगी रे ब ब रहा है धानर भीरतन्ति हर erita) t-111):

वेदरभी को [वैन्भी] प्रयूक्त हुमार शी एक धी ना नाम (धंव १४) । येक्स (छी) रहा एडिस (प्राह बर्ग नार -राह् १८)। येदि देशो बद्ध = बेरि (पाम ११ ७६)। र्शादम वे । बाह्य है एक एम्प मनुष्य-गावि, 'मेरहा य कसंद्य य वेदेश वेदिनाविवा (? इवा ) । हरिता पुतुष्ता चेत्र राज्या स्थानाचा ॥ (# 1-44 \$XE) I पार्य देखो देश्त = वेश्वि (मप) । थेदिन व [ बहिरा ] विशिष्य को तरफ मा ननर (यस १४६)। षेत्रिय देवो पर्सत्त्र (रह) । यशुप्ता भी दि ] नव्य स्टरन (१ ७ ६४)। पेरेमिय रेवा प्रश्रातन (एन) । य१६ ई [य१६] एक एम्य बनुष्य-जाति (स ६—गर १४ ) । देनी वहन्द्र । वर्गाद र्व विविधिमा विदेश एवं का एका (बत्त १ ६२)। वधाना रेगो पद्धमा (पर्नर (दर्श । बचम्य देवो दहस्य (बोर् ११) । वेद्या देखो दण्गा (उर ४ ११४) । यव्य रि [रे] पूर्व थारि ने स्ट्रीव प्रायम (80 05)1 पणुरव[र]१क्टिप दस्तारा मुजनरीत मुन्धार्ट(६० वर्)। पदा व [देर 1] निष्मता (हिंद होई बर्दने देश पान्त है है है । दरभव वि [(१६ थन] स्वह व (स्वत्र)। ध्यमार । र्रीयमारी प्रकाशकेत संकारी बनार हे हम हा बा एक बराब (जास । —समाधिका। ६व पा ५वर । स्वर (शह घर) । भ्य 1 [५मन] कृष्य का एक बाक्त ([14 4] ) : क्सइनांव [सान] प्रता द्वा (द्वा ६ धन रहत्र [पननाइ] हत्रत्यह प्रति E1 ( \$11 5 1 c n (v( )

ध्यय—देख्य

) केवो सहरि (शवहा पूमा पि चेरिछ ( ११)।

विदिख्य वि 📵 १ प्रसन्ताय, एक स्टी। २

म्, ब्रह्मयद्वा मक्द (दे ७ ७६)। बेरुक्किय पून [बेब्र्य] १ छन क्ये एक पार्ठि

'सचिर' पि सम्बन्धारणो नेरक्षियो कापमणीय जम्मीक्षी (प्राप्तु ३२ पाम) विकलिमी (हे २ १६६ कुथा)। २ विमानावास-विशेष (देनेन्द्र १६२) । १ श्रम थावि इस्त्रों का एक

धामाध्य विमान (देवन २६६)। ४ गहा क्षिमनंत पर्नत का एक रिकार (हा २, ३---

प्रकार α-पत्र ४३६)। इ. स्थक पर्वत का एक शिवर (ठा ८---यत्र ४६६) ।

६ वि. वैद्वर्यं एलवाचा (जीव १ ४: धर)। (सब दि "सब] देहुई एलों का का हुमा (fg w ) i

मेरीयण देखो नारोअण = वेरोपन (सामा २ १--पत्र २४७)। **बेछ न दि] एत-**मोस दोत के मूल का मोस (૧૧૦૧૧) (

बेस्रीयर पुर्विचन्यर् एक वेब-वादि भाग राज सिरोप (सम ११) । २ पर्यंत विरोप । ६ त. नगर-विद्येष (पडम १४ ११)। वेद्यंपर व [बैद्धम्बर] वेदानार-श्वयक्षी (पत्रम

**ጳ**ጂ (ቴ) ነ देखेंब पू [बेस्टम्य] १ बायुक्तार कामक देवों विश्वण विशा का एवं (छा २ ३~-पन ८३ इक)। २ पाताच-क्क्युका समिहाता केन-किरोप (ठा ४ १---पत्र १६० ४ २---

पत्र २२६)। थेळं प्रपृद्धि विद्यान्य] १ विद्याना (दे

 ७ ७३३ एउ४)। २ वि. पित्रम्बता-कारण (परहार २--पप ११४)। **९ संत्रापुं [बिडम्बरु] १ विद्युपक मध्या**स

(मीपासाबार १ दी—पत्र २) क्या)ः २ वि विकासना कारनेवासा (पूर्णक २२६)।

येखक्स न [बेट्स्य] नन्त्रा शरम (यज्ञ)। देखण्य न [क्रियाजन क] १ तज्जा, शरन (१० ५१ टी) २ व माहिल प्रस्कि समिक विशेषः भण्या-अनक यस्तु ४ वर्षेत्र आदि है उत्पद्ध होनेबासा एक रख (यस्तु १३६) ।

येख्य सक [उपा + छन् ] १ उपातम्य देना उसाइना देना । २ कॅपाला । १ व्याकुत करता। ४ न्यावृत्त करना हटानाः वेशवह (हे ४ १४६) पड )। बड्ड- देख्यंत (स २ ८)। इत्रक्ष बेखविस्त्रीत (से १ ६०)। ह बंटविणद्य (कुमा) । येख्य सक [बक्रा] १ ठनना २ पीड़ा करता। वेशवद (हे ४ १६)। वर्ष देश

८२१

विश्वति (स्पा ४६२ पद्ध)। वेद्धविधानि विश्वित**ी १** प्रतारित छन मुमा (पाम करना १५२ विने ७७) नै २६)।२ पीवित्र हैरान फिला हमा (बा मेख्य की दिहें दन्त-मॉन दौत के मूल का

मास (के ७४)। वेखा की विद्या १ समय, धनसर, काल (पाया कप्पू)। २ व्यार, समुद्र के पानी की मुन्नि (पर्यारे १ — पत्र ४४)। १ समुद्र का किनास (से १ ६२ और बटक)।४ मर्भावा (सूध १ १ ११)। ध बाद, इस्स (वैचा १२ २१)। उत्तन (कुळ) करा, महामों के अञ्चल का स्थान (सुर १४-६) अन ११७ ये)। वासि पू [वासिन्]

समूत-६८ के समीर रहनंत्रका वानप्रस्थ (भौप) । वद्भावका वि [के] मुद्दु कोमसा। २ दोन यधीन (वे ७ १६)। वेद्यान (घर) सक [ वि + द्रम्बय ] देशे

करमाः, विश्वस्य करमा । वेशावसि (पिए) । वेलिक वि विकासत् ] वेबा-पुकः (कुमा) । वेंछी की हि[ १ वटा-विटेप निवाकरी बटा

(देक ६४)। २ वर के बाद कोशों में रबा बाता ग्रीटा स्तम्भ (पत्र १३३) । षेखुदेशो पेषु (है १ ४०२ ६)।

थेलुर्[ति] १ योर, तस्करः। २ दुस्त (१ ው ፪૪) ፤

बर्छक वि [दे] विका बराब, कुरिवत (दे v (1) (

**पं<u>ल</u>ा} दून (पेणु**क] १ देन का बाद्या । २ मेलय<sup>े</sup> केल का फन (माना २ ३ क १४)। १ वैश यस चेतुयासि छए।एए मं (पर्वा १--पत्र ४३ वि १४३)। ४

माउथ ) वि विमात्की विमाता की माद्या | स्वान (सम्मव १७१ मोह 56) 1 स्माणि पृद्धी सिमानिन् विमान-वासी

देवता एक उत्तम देव-माति (वे २) । की "णिणी (पर्ख १<del>४ -- पत्र ३ ः पंत्रा ३</del> (s) 1

श्माणिल प विभातिकी एक उत्तमदेव वावि विनानवासी देवता (भग भौप पर्छ)

१ ५-- पत्र दक्त भी २४) ः धमाया 🛍 विभाजा विनयद परिमाण

(मन ११ दी)। वेक्सि कि विच्यि में बदता है (बंद) ।

बेबंब द विवण्डी इस्ती इस्ती (स ६६ ७११) । देवा वेंड ।

ब्यायम ) न [वैयापुरूव वैयापुरम] देवावडिय है सेवर सुमया (उप क्स छापा १ ४३ धीला सीमया १२१ माना सामा १ १--पत्र ७३३ वर्गेर्स १११५ म् ११) ३

बेर न विर] कुलमार्ड रानुता (वे १ १५२) यंत १२, प्रामू १२३)। केर म द्वारी करनामा (बक् ) ।

बेरम्म व (वैदान्य) विद्यवता प्रवासीतता (ज्या स्वरा ६ व्युपा १७६) शाह ११६) । धेरन्मित्र वि [पैरान्यिक] वेरान्यक्ट विश्ववी (जय' स १६६)।

बेरक न [बैराम्य] १ वैरिन्सम्य, दिस्स राज्य (मुकार १४। कस) । २ आहा पर राजा निर्मात न हो नह राज्य । ३ वहां पर प्रवान साथि सम्ब हे विरुद्ध सहते हों

बद्ध राज्य (कसा बद्ध १)। बेरचिय वि [देराविक] सनि के दुरोप वहर का समय (जेंद्र २६,२ सोव ६६२)।

बेरमण न [विरमण] नियम निवृत्ति (सम १ ३ घष उना)। बेसब दूर्विसही भारतीय केत-विरोध प्रम वर तया क्सक वार्धे भीर शा भक्त (मनि)। बेराय (बार) पू [विरात] वैराय, स्वासीनता

(मिक्) ।

बांतकरिका कमस्पति-विशेष (वस १८ २ २१) १ बेसरिय ) देवो वहविक (प्राप्त वि २४१ । सिक्किय र्रेष ४७)। मेसमा हो हि] सण्या, शाय (१ ७ ६४) । वेद्धास्य विङ्ी १ कलना । २ लेटमा। ६ एक क्पान्य । ४ मेरना । नेस्तह (पि १ ७) । केरबंदि (तरह) । तक में क्रिय बेह्मराम (बन्धः है १ ६६) पि १ ७) । मेह धक [रम्] श्रीश करना । वेस्पद (है ४ १६०)। इ. मेर्क्सण्डा (रूमा ७.१४)। वेद्ध 4 दिही र केश काम । २ पत्कवा ६ विशास (वे ७ वे४)। ४ सक्त-नेबना, वाम पौद्रा । प्रविष् मनिरम्भ बूची (बॉर्थि ४७)। ६ त देवी बंधग (तुवा २७६)। वेद्धप्रअ देवो वेद्धारम (दर् )। वेहस व[वे] १ एक तत्व्यकी नाही यो क्यर के बनी हुई होती है, पुण्लाची में पैच'। २ प्रतीके अनरका उका (मा 13) 1 बेक्क्स न [बेक्क्न] प्रेच्छा (परा) । वेक्कप देशो वेक्कम (तुका २०१ १ २) । बेहरिम 🖠 [वे] नेष्ट, बात (बङ् )। बेहरिमा की [वृ] शत्बी, बदा (वर् )। बेह्नरी सी [दे] वेस्ता, वारांगना (दे ७ ०६३ वर् ) । यक्क्षिम स्वा पेहिम (ने १ १६)। बंद्वायिम वि [वे] विक्रित वौदा दूधा (वे 1 34)1 पंडद्धः } नि [र] र शोपन मृतु (१ ७ बंद्यद्वः । १६ वर भारत मृता १६२ः ब ७ ४) । १ निवाली (दे ७० ६६) वर्षः नुपा ११) । १ नुम्दर (बा १८ )। बड़ाध्ये हिं मही नता, क्ली (दे ७ 20)1 बक्षास्त्र वि वि वेर्रायत बर्ज्या ह्या (वे • vt) : पछि देवो दक्षि (दव रमः)। विद्वास ति [पेडित] १ वंशया हुमा (ने ७

६१)।२ मेळा(तः ६६)।

वेद्विर वि [बेद्वित] काफानामा (मटड) बेद्धी देखो महि (या ६२ गरह)। बद्द प्रकृष्टियु ] कायन्त्र । वेनकृ (हे ४ (४७ कुमा वह )। बद्ध वेसंत देवसाय रभा कथा हुमा)। वंपरम्द्र न [बेबाह्य] क्यिष्ट, रहन्ते (सन) । वंतप्यान विवर्णी स्प्रेशपन (कुना) । वेदय पून [बेपक] रोग-विशेष कम्प (माचा) । येथाइआ वि दि] अस्तरित असास प्राप्त (\$ w w 8) I वेबाद्विश्र वि विदाहिकी संक्यी विवाह श्रेमन्त्रम्था (मुरा ४१६) कुप्र १७७)। बैविभ नि [बैपित] १ कम्पित (वा १६२ पाप) । २ तू. एक नरक-स्तान (धेरेला २७) । बैक्रि वि बिपिक् विपन्ता सामा (बमा हे २, trau a tax): देव्य व [दे] बायम्बल-गुषक ध्ययप (**दे** २ १६४० कृता) । बंदब व [बे] स्त यसौं का तूबक यध्यद--१ मन, इर । २ वारण समावट । १ विवास, बेर। ४ मामञ्जल (हे २ १६३) ११४) पुना)। बंस पूर्विये तथार कर कम्र पानि की तना-बद्ध (क्रम्पा स्वयम देश तुपा देवई व अ) पत्रकः कुमा) । वेस विकियानी विशेष का से श्राह्मीय (वय १)। मेस पू [क्य] १ विशेष वर। १ क्या, प्रयोति (सबस् भवि)। भेस वि [बेच्य] वेबोच्या वेब के योज्य (भव ९ १--पत्र १३७) तुश्य २०---पत्र २६१)। वेस हि द्विप्त] १ देव करने सोरथ, स्वये विकर (प्रम बद १६) मा १२६) पूर २ हे १ ४१)। २ विधेवी, शहु, बुरम्ब (मूच ११२) बर ७६ ही)। देस देशो गरूस्य = देरन (पनि)। भेसक्ष्म रि [बैपयिक] विवय के श्रंकल

ध्वनेवाता (नि ६१) ।

देसंपायत्र क्यो पद्संपायप (हे १ ११३) यस्)। वेसंस र् [विवस्त्र] विस्तारा (परव १७ 18)1 वेसंभए को दि] मृत्योचा विश्वमा (र \* \*\*) | वेसक्तिकात न [वे] हेव्यस्य मिणेर, **दुरमगाई (दे ७ ७६**) । बेसप्प न 🛛 वे 🕽 वक्तीक, बोक्सवार (वे \* vt) : बेसण न [बंपण] भीरा पावि मकाशा (सिंद १४)। बेसण १ विसन] बना बादि हिस्स-यन का माध्य बेसन (पिक २१६)। बसमज दु [बैक्स्सण] १ क्लायज कुवेर (पाम, बामा १, १--पन ११, नुश १२०)। २ इन्द्र का उत्तर दिशा का बोक्सक (तम बद अव ६ ७-- पव १११)। १ एक निदानर-नरेत (पत्रम ७ ११)। ४ एक ध्रमकुमार (मिपा २ ६)। ३ एक रीठ का नाम (तुपा १२८; ६२७)। ६ यहोपन का बीचहर्ता मुहर्त (सूत्र १ १३ सब ११)। ७ एक देव-विमान (अन्द्र १४४) । च बुड दिपराम् यापि वर्गती क रिज्ञाचे का नाम (ठा २ ३ -- व∎ ७ ३ काइय पू विश्वविक्री देवारत की धावा में पहलेकाची एक देव-आदि (सप । ७~~ पम १८१)। इत्त ई [दित्त] दक एमा म नाम (विमा १ र---पव वद)। वैसंभारत है ("बेवासमिक) वेचनत के भवीत्रस्य एक देव-सावि (सन १, <del>४--</del>पव १६१)। प्यम दे प्रिमी केप्पस के क्यारा-धर्वेत का नाम (का १ --पण ४०२)। भर् वृ भित्र] एक केत पुति (विशा ₹, 1) 1 पेसम्म न [बेपम्य] दिवनता बहमानवा (यम्ब श वर २१६ हो)। पंसर दुंबी [पेंसर] १ बांध-विकेश (१२६ t र--पत्र =) । २ वस्तवर, वन्पर। # 8 (gr a, tt) :

वेसका र् [वृपक] यूत्र यमन-पायीय मनुष्य (सूम २२ १४)। वेसयण पू [वैश्वयम] वेको वेसमण (हे १ १४२ चंड बेरेन्द्र २७ )। वेसवादिय पू [वेशवाटिक] एक वैन गुनि-क्स (कम्प)। वेसवार र् [हेसबार] पनिया बादि मसामा (कुम ६८)। देसा देको येस्सा (कुमा गुर ३ ११६ स्या २३४)। बेसाजिय वृ [चपाजिक] १ एक बन्दर्शेष । २ धन्तर्ज्ञीय क्रिकेप में रहनेवाकी मनुष्य-वाति (ठा ४ २—गव २२३)। वेसानर देशो वासानर (चहि ६ धे)। देसायज देशो देसियायण (धन)। वेसाखिअ वि [वेशाबिक] १ एपुर में धरान । २ विद्याधासम् पाति में घरपन । ३ विद्याल बढ़ा विस्तीर्गीः 'मण्डा वेसालिया केवं (तुबार १३२)। ४ प्रै मदवात् ऋषमदेश (मूचा १ २ ३ २२)। १ भवरान महाबीर (सूच १ २, ३ २२, बेसाफी भी [बशाजी] एक नवरी का नाम (#CQ1 \$\$ ) 1 वेसास देवा वासासः को किर बसामु वेद्याको' (वर्षनि ६६) । देशासिक वि विधासिक, विधासि । दिश्यास-मान्य विश्वसमीय, विश्वास-मात्र (स. १. ५--पत्र १४२ विपा १. १--पत्र ११८ कम बीप तेषु ११)। थेसाइ देवी ध"साइ (गम वन १) । पेसादा व्य [परास्ती] १ वेग्राच वास की पूर्विमा । २ भेराचा नास भी ममावस (इक)। यसि वि [दुर्पिम्] हेव करनेवाका (परम स १८७) पुर ६ ११६) । वसिभ त्यो परसिभ (१ १ ११२)। दिसम पुंधी [पेरिसक] १ फेरन व्हिलक (पूष १ १ २)। २ म, वैलेडर शास-विरोत्त, काव-शास्त्र (प्रस्तु १६३ राज) । बसिअ वि विधिक्री वेच-प्रत्य वेच-प्रश्चनी (तूम २,१ १६) स्यवा २,१ ४३)।

समित्रसित्। २ विविच प्रकार से समिमपित (भ्रम ७ १--पत्र २१३)। बेसिट बेको घषसिट्र (बर्मर्स २७१)। बेंसिका की दि ] बरवा परिएका (मा YOY) I वसिवा देवो बेस्सा 'कामासती न पुराह कमायमीप बंसियागुरू (भेत ११६ ठा ४ ४—पत्र २७१)। वैक्तियायण वृ [बेह्यायन] एक कम ठापस (सम १४---पम ९६४ १६६)। येमी की बिरवा] बेस्य नादि की की (मुख £ 4) 1 सेसम र् शिरमम् नृह पर (शाज २८)। वेस्स देवो वहस्स = देस्य (तूच १ ६,२)। वेस्स देवो बेस = इट्य (क्य १३ १८)। येस्स वेको बेस = वेप्स (राव)। धरसा की [बेदया] १ पएयांका मणिका (क्रिके १०३) सा ११६ वर )। र ' शोधनि विशेषः पाइ का पाञ्च (प्राष्ट्र २९) । देस्सासिम रेको नेसासिम (११)। येद तक [प्र+इक्ष] देखता धरमोक्स करणाः 'जहा धैनामकाससि पिट्ठठो भीव नेहर (पूजर १३१)। सह सक जियाम् ] शीमना खेरना । नेहर (पि ४व१)। बेह् दृं विघी १ केवन केस (सम १२४४) क्ष्मा १४२) । २ धनुबीव धनुगम मिपस्स । १ सूद-विरोप एक दर्शका पुषा (मूम १ **१, १७)। ४ धनुराम करमन्त द्वेप (पराह**े १ १—-पत्र ४२)। बेह् वृं [बेघस्] विधि विधाता (मुर ₹₹ ¥) I देहज म [बेधन] वेसन, बेद करता (राज १४३३ वर्मीच ७१) । बेहम्म केले वहपम्म (स्र १ ११ टी)

वर्षेषं १०१ टी) ।

वेदस्य र [विदस्त्र] तमा बेलिक रा एक

पुष (भन् ३ २) निर १ १)।

सेंह्य सक [ वस्त्यू ] ठपना । बेह्यद (ह Y 21 44(): बेहचन विभन्न विमृति ऐस्वर्षे (ग्रवि)। वेद्वविभावं वि] १ धनारः, विस्त्कारः। २ विक्रोपी (दे७ १६)। थेइविज वि[यङचत] प्रतारिक (दे⊎ १६ थे)। संहडक म [येघडव] १ विश्वापन रहापा र्थेश्वम (या ६३ 🕻 १ १४०: मजाः मुपा १६६) । बेहाग्रस देवो बेहायस (धावा २-१ ठा२ ४---पण देशे सम ३१३ छान्या १ १६---पन २२ भव)। वेद्याणसिय वि [वेद्यायसिक] कांद्री पार्व से सटक कर गरनेवाला (धीप)। मेहायस वि [वेहायस] १ प्राकार-श्रम्बन्धा भाकारा में होतवासा। २ न, परापु-विरोध फोसी सन्द्रकर मरना (पद १६७) । १ पू यवा भौतिक का एक पुत्र (सनू)। महारिय नि [मेहारिक] विहार-सम्बन्धी विश्वार प्रवश् (मुख २ ४१)। वेदास न [विदायस ] १ भागर प्यन (सावा १ ५-पत्र १३४)। प्रचरान बीच भाग (सूच १२१८)। षेदास देको येहायस (पद ११७ पनु १)। मेंहिम वि [यिधिक, वेष्य] तौड़ने योग्य हो दुक्त करने योग्य (बस ७ १२)। पैरंड देवो धंकुंड (वसु १४ ) । वैस्य देशो चेह्य (वि १ ६)। बाभस बेपा माक्स । करङ वायसिज्ञमाण (मन)। योद्य वि [स्थपेत] व्यति रहित (स्थि)। बींट रेबो पिंट = इन्त (हे १ १११)। माकिस वि वि नृह-गुर, घर में शेर वनने-शासा, मूळा शूर (दे ७ व )। योक्तिक न [व] रोमन वरी हुई बीज को पूना वशना (वे ७ ८२)। योधा सक [वि + शपय ] विश्ववित करना। मोरक्ड (है Y रेक)। यह बाह्य (इया) ।

बोक्त सर्व [स्या + द्वा कड् + नद्] पुका रता, धाञ्चल करता। बोल्कड (पडः प्राक्त WY) 1 क्षेच्च सक [सद्+ लट्] श्रीक्तथ करताः। बोल्ड (प्राप्त ७४)। को बंग विक्युस्कान्ती ! विपरीय क्या से स्मित (हे १ ११६) । २ व्यक्तिकानाः पश्य क्तक्योकांचे वे क्लू स्व्वट्टिमस्य वयानुवर्ग (सम्म ४)। वेशो बुव्हेरा। वोदस स्क [स्वप + **क**प् ] श्रुख शस्त करता, कमी करना । **रुवड- बोक्स**सि**ळ्**याण (भव १ ६--पव २२ )। गोश्वस देवो बोब्बस (यूप १ ६, १)। बोक्स देवो तुक्स= श्रुत्+ इन्। दोनक-क्षाहि(साबा२ १११४)। बाब्स की वि वाध-विशेष 'क्लामीलकास रवो विक्रीययो स्वयंक्याप् (पुरा २४२)। देवो मुख्य । बोब्स 🛍 [ब्बाइटि] पुष्पर (स्प 👀 4) + मोद्धार क्षेत्रो बोद्धार (पूर १ २४६) । थोक्स देवो बोक्स=व्य+न्य नेस्कर (मल्या १३४) । बोधवर्षस्य 🖞 [धवस्त्रम्य] प्राच्यशः (महाः) । बोनकारिय वि दि] विमुक्तिः 'शवरवेदैय-वत्ववोक्कारियक्क्यवर्वत्रं (स २३६) बोगकामि क्याकृत्वी १ नहा ह्या प्रकि-प्रक्ति (तूम २ ७ १० अथ इन्स)। २ परिस्कृत (भाषानि २६२)। बोगडा की [ब्याइटा] प्रकट पर्व वाली | बारा (पर्छ ११--पत्र १७४) । बोगसिञ वि [स्युरक्रंपर] क्लिपीन्त, बाहर निकला हुचा (तंतु २) बाप ) धक (यह) शेलना क्ला । नोपड, बोब 🕽 शेल्वें (बाला ११४) । बोबत्य वि [क्यरपहरा] विपरीय, क्रस्टा 'दियमिस्देव (दित)दुविशोक्ते' ( पत × मःनुखः म्,निसे म्३)। बोदस्य न [द] विवयोठ छ। (दे ७ १)। श्रम्भ देवो व्य ⇒ वच् ।

वोचिम्रद एक क्रियुन् क्यम + क्रि**व**े १ सॉक्का क्षेत्रमा, अधिकत करना । २ किनास करना । ६ परिस्थाय करना । वोन्यास (एत २१२)। मनि शौर्व्यवर्धित (पि १६२) । कर्म पुण्यान वीज्याहर, वीज्या क्य (क्या२ कारि १४६) कान)। व्यवि बोक्किविदि(पि १४६)। बहुः वो व्यर्ध्वतः वाचित्रदेशमाण (मे ११ ६२) ठा ६--पत्र १११)। इरह. वाच्छित्रतेत वोाच्छक्रमाण (ৰ দ, ম) ভাৰ t--- পৰ tts) : बोरिकण्य देखो बोरिक्सम (विपा १ २--पचरक)। बार्चिकाचि की जिन्नविकाचि विवास 'र्ववारनेतिकसी' (निवे १६३३)। जय पू िनवी पर्याय-तम (खबि)। था**ध्यिम देवो दु**च्छिम (मन ऋषा गुर Y 48) 1 बोबक्क्ष ) दे [ब्युब्देह स्मम्ब्छेद] बोब्देह हे इन्हेर, दिनका प्रशामी **भ्येत्वरे' (शाया १ १—यन ६** ) वर्मर्थ १२) । २ सम्बद्ध व्याकृतिः (कस्य ६ २३) । ३ प्रतिकला रकावट निरोप (वया: पैकार १)। ४ विजाव (कस्त्र ७४)। यो अक्टेयज त [ब्युक्टो-इन] १ विकास (वेदन १२४ वित्र १६६) । २ परित्राय (ब्र६ शे~- यव ६६) । वोध्य केवो सूख्य । गोन्स् (१४ ११ व धी) । बाक्य एक र्िंशेक्य री इपा करता । वीक्द (दे ४ १, ४३) । वक्र क्षोठ्यंत (क्रुमा) । वाज्यिर वि जिसित् विस्तेतला (कुमा) । बोस्म्ब देवी बद्द - बद्द । अनि छेछो प्रावेखी देशं समयस्य नंबाधिनुष्ये महानदीको खुरम्-वित्वसूची सम्बद्धीयन्यवास्त्रेची वर्ध वीरिय-विंदि' (मन ७ ६—पद १ ७) । इस. 'बातलीतास्वानवोग्नं धेतुर्गं (कृत्या १ १ १ — पव २३) दाव १ २३ जाप)। बोरमः ) वृं [बे] बोध, घर धरि-बोरमसाङ्ग | बोर्ड क्लब्बोरकालं चं वोज्यस्य विदि] । शसीय । र अस्य वस्य ( \* v es) 1

वाट्टि वि दि । एक, बीन (वर् )। मोड वि दि] १ दुष्ट**ः विव-करो,** जिसका कान कर बमाही वह (बाद४१) । वेबी कोक्टा वोध्दक्षी 🕸 📵 १ तस्त्री दुवति। २ क्रमाचै पीत्रकांतु कोव्हीमों (गा३११२)। रेको योउद्य । याङ्क वि [वे] पूर्व वेषकृष (स्व) । बोड विकित्ती बहुव किया हुया (बार्यः (YX) वास्त विदेशिको को क (पा ११ प)। वोडम्भ केवो यह = वह । बोदु वि [बादु ] बहन-कर्ता (मद्दा) । बोर्द्र देखो सह = महु। योङ्कण म [प्रश्रह्मा] शहर कर (वि १८६) । वोत्तक्त केवी यस = वर्ष । दोत्तुआय व [<del>ठवस्य</del>] इद्यु ३१ (द**र्—**६ (XX) I को<del>त</del>ं) ग्रापु भोर्जुल } केवो वय = क्य्। बोद्देय न [क्यबदान] १ क्यें-१४वीच क्यॉ नाविनास्य (का १ १—१व ११६ क्ल १६१)। २ तुमि, विलेप करते कर्न क्टोकर (पंचा १४ ४ टट २६. १ अव)। ३ तप तप्त्रार्थ (सूम १ १४:१७)।४ बनस्पति-विशेष (पहरा १---पत्र १४) । भोत्रह वि [दे] तक्ता पूरा (देण ४ )३ **'रोतकृतक्**मिन पश्चिमा' (क्वेट स )। **व्यो** की पिटलेनुबोध्यीयो (हे २, व )। भाभीसम कि कि विश्व क्षेत्र वर्शक है। **₩** ₹} i वास व [क्योमस्] बाकातः वयतः (वाद्यः विते ६२६)। "विश्व 🖠 ["विश्व ] एव चना का द्यार (पश्य ७ १३)। योमञ्चः दु [ये] स्तुष्ति वेष (र ४ ४ ) । थोसम्बद्धान **द**ि बतुष्यत थेर का ध्यस्त **a**) ( भोभिस्त र् [क्योमिस्त ] एक केव मुनि (कप्प) । कोमिस्स की [स्योमिस्स] एक केन सुनि-राजा (रूप)।

श

शिक्षाक (स) ई हिमाक] बहुका भाई | ब्रिट (मा) केवो चिट्ट न्स्साः विश्ववि सन्ता(प्राक्त र सुक्या २ ४)। (बारवा १२४) प्राकृते ३)।

> ॥ इस डिरिपाइअसर्महण्यदीम रामाधरसर्वक्रतलो धतीसस्यो वर्गने समयो ॥

> > स

स र् [स] स्पन्न वर्ण-विरोध रक्षक प्रण्यारक-स्वान गाँव होते से यह करन कहा भागाद्दे(प्राप्त)। अत्र सम्पर्द्र["सम्ब] रिपक-प्रक्रिक एक पर्त विश्वर्षे प्रवस के हो इस्त और दीश्य प्रश्नमधर होता है (शिर)। गार प्रकारी 'खं चमर (क्सांन १ २)। स्रदेखो सं= ध्रम् (पद् पित्र)। सर्वृद्धिल्]पल प्रवा(दे१ २०३ प्रदेश्यक्)। पाग दे [पाक] **क्रम**ण (क्व) । सुद्धि पूर्व्य ["सुन्ति] पूर्च की वयह बाबरक कुछेशी वर्ष भगछ-भूकिना(छात्रा t e---पन tt )। वच पु ["पच] चार्याच (दे १ ६४) । याग वाव देवी पाना (वे ६६ पाम)। स च [स्वर ] पुरुष्टब, स्वर्ष (विशे 1 1 सावि [सन् ] १ वेष्ठ⊦प्रतम (ज्या प्रूप⊳ दुव (४१) । २ निधमानः नीय छन्यक्यः य-व (तूष १११)। जीरस दे [पुरुष] बंध पुरुष, सक्त (स्तर)। क्कम वि किया धेमावित (पश्चा १ ४---पप ६)। देवो क्रिया। बद्ध पि [\*इ.स] क्ल बचा(पं १२)। विकास कियो करनार, बंगल (क्या १३ १)- वेको क्या । माध्र 🕸 [रावि] प्रथम नहि—१ स्वर्ग ।

२ पुष्कि, मोला (स्थित राम)। "काला पू **िक्रा**न] क्या धारमी *प्र*त्युक्त (वन है <sub>|</sub> र ११ः प्रापू ७)। चस वि ["चम] धरिताय चापु, सन्त्रनों में धरिषेत (दुरा ६१६८ था १४७ सार्व ३)। स्थाम व [\*स्थासम्] प्ररुक्त <del>वन</del> (वटक) । धन्मिम नि [धासिक] मेह नामिक (स्व १२)। श्राप म [स्काम] उत्तम क्रान (भा २७)। प्यभ वि[प्रस] मुक्द प्रवानका (छब)। पुरिस ( पुरुष) १ सम्बन भना भन्दमी (मधि २ १। प्रानू १२) । २ विश्वचनिकार के बीक्स किया का इस (ठा२ ३—-पत्र ४)। ३ **योक्ट**स्य (कृत ४)। प्रदेश कि (फिस्ट) यह प्रशासका (भन्द्र ११) । हमान रू [भान] १ ध्यम्ब क्लिपि (का ७३६)। २ क्ल्ब धरित्रम (बस्म १७३३ । ३ स्ट्रेस क्थ विकास सम्बास विकास व्हन्तानी पुरु जन्मुनदास्य कीर्वि विशेषेषं (प्रान् धः १७२ व्या है २, १२७)। ४ मानावै करपर्ने (मुर ११)। १ विद्यमन प्रदर्भ (प्रयु) । वभावशायणा श्री ["मावश्रीन] बाबोचना प्रायदिकत के स्थिए निम्न दोख का दुर्वावि के समझ प्रकटीकरुख (बीव **७११)। स्माविश्व वि ["मावित] स्व** मत्त-द्रुष्ट(य२ १३६६) ≀ \*स्पूर्मितः

["भूत] १ करन, पालाधिक सक्याः 'सन्दूर एक्ट्रियनेक्ट्रे (क्ला)। १ शिक्सान (वंदर ४ २४) । याचार ५ ("आचार] करल माप्रस्त (प्रस्तु १३)। इस्त वि [क्य] प्रस्ति क्यामा (पत्रम ६)। स्तार्प [ख्या] प्रस्तत संबच्या क्ष्मिक-संयम (तूर्य २.९. ४७): वास दु[वास] **स्ट**स्त शतः (तूप२,७ x)। शाया #री [ बाप् ] मराज बास्ती (सुम २ ७ १)। स र्रु [स्व] १ याच्य पुर (वश पुना) तुर २ २ व)। २ आर्ति मात (हेरु, ११४) पन्)। १ वि भारतीय, स्टीनः विश्वी (बना) बोक्स ६ <u>न</u>ुसा सुर४ ६ )।४ क वन इस्म (पंचान का स्वयना २१११)। १ कर्ने (भाषा २ १६, ६) । अञ्चलिस गडिम वि [क्विमिक्] निव ने किए हुए क्यों का निवासक (चिरेट६ प्राचा र १४ १)४)। सप दु["क्रन] ≀ शांकि सना। र मारपीन बीच (स्वप्न ६७) वड् )। वैव वि [विन्त्र] १ स्वाबोत, स्व-वह (निवे २११२, देव ४३: मण्डु १) : र न स्वभीन सिकान्त (निष्टु ११)। त्य वि [<sup>8</sup>स्व] १ तंतुक्ततः, स्वमान-स्थितः । २ गुवा ते मनतेनदा (पत्ना नतम १६ ६१ ल्या र व पुर १ १ ४४ दूसा २७६४ व्यक्त क्ष्म)। पक्षातु ["प्रश्ने] १ द्यावर्षिक

रव वि ["रस] कानो (से १ २०)। श्रद्धा वि [रास] वेय-पुक्त उदावसा (मा १४४) मुपा ६१२ कम्पु)। राग वि िंदारी सम्मिद्धि (ठा २,१---पण १)। रागसंबद, रागसंबद वि [ रागसंबद] बह बादु नियका यन औरत न ह्या हो (पहल्ला १७---पण ४१४ चेवा)। इत्य वि किया समान कमनाना (पतम द सूय वि [स्वथम] सावप्य-पुकः (बुरा २६३)। स्टेंग वि ["स्त्रक्ष] स्मान श्रदक (बद्धिपश्ची)। क्षेत्रण देखी सन्त्र (बा देहदा है ४ ४४४ हुमा)। स्त्री <sup>8</sup>डमेपी (१४ ४२ )। यत्रस**े**ची परस (पठकः, सवि)। यत्र वि ["अग] पायवाला बरा-युक्त (नुपा २०)। अस्य वि [ क्यस\_] सनल उपनाना (के **स** २२)। बय दि [रात] बद्धी (गुपा ४६१) वाय वि पाद विका (स ४४१)। साथ वि विश्व नाव-सरित (सूथ २ ७ ४)। बास वि [दास ] समान वासवाबा, एक देश का खने तथा (शामु ७१)। (यहा वि विद्या विद्यानन्, विद्यान् (क्य पू २१४)। म्बल केवी क्षत्र (गढडा था १२)। स्वयेक्स वि [ स्पर्प मा] पूनरे की वरवाह र#नेवासा सरोच (भर्मते ११३ ) । स्वाच ' वि विशाप ] स्माधि-यक धापक (यव १ ६--पव ७७)। कियम् (३ विवर] विवरश्च-वष्ड, समित्वर (नुपा ६६४)। संक मि विश्वको संगानुक (६३ मुर १६ ४४, पुत्र ४४४, पत्रत)। संक्रिश वि ['शद्भित] दरी (गुर ४)। सत्ता ध्ये ["सर्वा] धनम्म" निम्न्ती ध्ये (उत्त ११ । मिरिय सर्धय विशिव भी-मुख्ड, शोबा-मुखः (वि ६ छामा ११ राय)। सिद्धारि [श्युद्ध] स्ट्रशालामा (दुमा) । "सिद्ध वि ["रिश्ता] किया-पुत्रः । (धन)। सूर्य दि शिद्धे स्मानु (बर)। मेस वि [ श्रेप] र सक्तेप करो प्रा हुमा (दे ब, प्रशः प्रजः)। २ शेक्नाव-बहित (बब्द १६)। साग, सांगिष्ठ रि शाकी विनवीद, श्रोबन्युकः (परम ६३ ४) नूर ६ १२४)। शिगरिम स्सरीम रेको

सिरिय (पि रक्ष प्रमि १६६, मक धम | १३७ खाला १ ६—पथ (१७)। सम एक स्पिद् रे प्रीति करता। २ वस्ता स्वाद क्षेत्राः। सभ्रद्भ (प्राकृ ७६) वारवा (44A) I सम्बन्धः [सद्सः ]सम्बद्धः (पर्)। सञ्ज्ञव हि । रिका मल्यरका स्वरा र वि पूरिश्व (देद ४६)। समकात (दि) कित्र पुरारी (दे व ₹१)। समञ्ज्ञिक ३ दूंकी [दे] प्राविवेहिनक सञ्जनसञ्ज∫पहोसी (ग ३३६)। और, आ (पा ६६: ६६ म) 'सम्मिन्स्मे संदर्शकीर' (मा १६, वित्र १४२) । वेबी सङ्ग्रिक्स । संबंधिया देखो सगढिआ (प २ ७)। सभाइ दू दि] समा केत (दे ४ ११)। सम्बद्ध [झस्त्र] १ रेल्म-विशेष (प्राप्र) स्रोत ७ है १ १६६)। र पुन यान-विशेष-प्राप्ती (हे १ १७० १व )। हरि पू िंदि] वर्रीत्व क्येक्स्य (कुमा)। वेकी संगद्ध । सभर देशो सन्भर = ए-कर, प्र-गर । संत्रर केने सगर (हे २०२४)। सभाव [सदा] १ इमेग्रः विरुदा (प्रधा हेर ७२। कुमा बासू ४६)। चार बु िचारी फिल्कर वर्तत (स्वछ ११)। सभा हो [स्व\_] मता (वक्र) । सङ्घेको सभा=सर्ग(गम 🐧 १ ७२) कुमा) ३ सदय सिक्न्य दिक्कार एक एक (क्र १ १२ कम ३४, मुर २४४)। सङ्घ्ये [स्युवि] स्थप्य भिक्त धार (स्व ११)। बाह्र दुं ["बाङ] विश्वा फैसरे का समय (दत ४, २,६)। सङ्घ देशी सं = स्वरं सङ्ग्रारिमधिकापविभाग (सुनादश भवि)। सङ्क्षी सय = एवं जिल्लोयन्त्रं बोचावि पुद्रम् में न कश्चीरं (पुर १४ २)। क्रोडि भी ['श्रीदि] एवं वी क्यों एवं बाय--घरव ( वष् )। सह देवो सह = स्वयंद (बाक्षा है ४ ३६%) ¥1 )1

साइ देशो सई ≃ एटी (दुरा १०१)। सङ्ग्रीष [इविक] सो का वरिपालका (ग्राया १ (--पत्र ३७)। वैश्री सङ्गा । सद्भाव शिथित । पुरुत सोमा द्वापा (व ७ २८ वा २१४४ पटच १ १ ६ )। सङ्ख्या देखो सः=स्त्रः कातः य पापयो परिवासको बरवरेज्याको उपरक्षम् स्वीवर पुरिसे नेत्र्य (महा)। सदं वेनो सद्द = सद्भार (याना)। शर्म केवो सर्य≖लयम् (ठा २ ६—पन ६ शः क्रेट्र ४ ३ १८, ४ २ मणि)। सद्भग विश्विति हैं। यो (क्षमा धारि) भे कीनत का (दशकि ३ १३)। सञ्चन्द्र ्रपुटी वि] प्राविवेरितक, पर्वेशी संकृतिसूच्य रे (के व १ )। की आ (कुन २७वा निष्ट ३४२ दी। क्षम १४)। संप्रक्रियक्ता न [दे] प्राधितस्य पर्वासियन र दे)। सद्रक्त व [सैन्य] हेना सरकर ( गर्)। सङ्ग्रंप केने सम = ती। सक्ष्मंसक वि वि स्मृतिवर्श्वमी नकोश्वटः पिता में सवको किया विचार में प्रतिभाषित (देव १६, पान)। सक्षिष्ट वि चि स्मृतिद्य अनर ध्वी (व × ₹€) i सद्भ केवो सद्दर्भ (दे १ १११ दुना)। सदम वि (शततम् । सैना १ वाँ (छान १ १६---पथ २१४) । सद्भवस्थि (संच्यालक्ष्याः(६ र १६१३ प्राप्ता साम्य १ १६--पर २३६)। २ विकल, बलात (पाप) । ३ स्मैपै सम्बन्धे (यस प्राप्त) । सद्द्रसम् द्रं दि स्वैत्तृपमी सम्बन्ध सांक मर्मे के विष् को का जाका केल (वे १. ₹% = ₹₹)। सद्दि वि [स्वरिम्] स्वन्ध्रम्ये स्वेन्द्रावाये (पण्या १ ३०)। संहरियों भी [स्वरिजी] स्वीवकारियों से पुष्पय (प्रम १ १ १)। सहस्र वेशो संज (हे ४ १२६) । सर्धम वि [वे स्पृतिसम्भ] वेदी सान पंसप (देव १६ पाप)।

सरुण देखों स उज = स-प्रस ।

सङ्ख्यमभ १५ दि मनूर, मोर (रे स, सङ्ख्यसिअ) २ पर्)। सन्दर्भ सिचिय दिश्यात मन्त्री समाध्य (पाम)। २ सहाय मरद-कर्ता। ३ काला बनुस (प्राक्त ११)। सः।सिस्ति । दि सम्बद्धः वातिनेय (दे व ₹)1 सश्मृद् वि [दे स्मृतिमुख] देवो सङ्दसण (देद १६) पाम)। सहयो [रापा] एताछी सकेंद्र नी एक पटरानी (ठा ६---पत्र ४२६) शाया २---पव २५३ पाम सुपा ६= ६२२ दुप्र २५)। सार्द्र[ञ]इला(दुवा)। रका सनी। सङ्ग्री मिनी विवयत भी (पुपारक सिरि १४३)। सइ की [शर्फ] की १ ३ वंक्यर (पर्मंदि १४)। सईगाधी दि] यप्र-विशेष नुवधी खर (स १ १—वन १४३)। सङ् } (मा) रेगो सङ्घ (एए) र्घार)। स्तरंत पूरिक्टन्त्र] १ पधी पाषी (पाप)। २ वधि-विशेष भाव-पद्मी (व ४३६) । सर्वच्या धी [शकुम्तस्त] विद्यापित ऋषि **बी दुधी बीर राजा दुष्पंत बी क्यपं-**रिवा दिवापती (हेर २६)। सवास्य (शी) ज्यार व्या (यमि २६ १ : साज्यानि [दे] स्त वस्ति (देव दे)। सदय र्व [राष्ट्रत] १ शुक्रमुक्त-मूचर यह स्थल्यन, बाब-वर्धन पादि निवित्त महुक-न्द्रशेयाः बार्का परिवरताः ध्यते व (वर्ष २ मुक्त १०६८ महा) । २ वृं क्या पंची (बाज या देरे । देवप्रावद हैप्र बहुर थे)। ६ प्रतिनिध्य (ब्रष्ट १ 1-(1 a): [48 [6 ['feg] ara का बानवार(गुरा (६३)। ६,४व [ हत्र] रेपधायाधाना । रथनानियंत्र बन्न वार्थाम (उस ! १—वा १० अ 

संडणि पू [शकुनि] १ पधी पखेर-पायो (धीप देशा १ ४३ सेवाम १७)। २ पछि विशेष चीस पधी (पाध)। १ व्योदिष प्रसिद्ध एक रिवर करण वो कृष्ण भनुर्देशी की एत में धरा धवस्पित एहता है (विशे ३३१ )। ४ मासिक-निरोप परककी वध्य बारबार मैपूक-प्रसन्ध क्रीन (पत्र १ ६ पूप्क १२७)। १ दुर्योचन वय मामा (ए।या १ १६—पत्र २ ८ मूपा २६ )। सउणिअ देशे साउणिञ (एक)। क्षे शिक्किया नी ] १ सर्राणिशा संदर्भित्रा । धौ [शक्कानसः ना ] र संदर्भिताः | पश्चिमी पशो पी मार्ग (ग्र 🕽 💶 (मात्र १)। २ परित निरोध की मारा 'सक्लो जाया तुर्में (छो =)। सउण्य देखी स उण्य = सपूर्य । सउची ध्ये [सपरनी] एक वित वी दूसरी स्त्री समान पांतवाभी स्त्री सीत, सीतिन (नुषा ६८) । सउम्र देशे सन्द्रम् । सत्रम र् [सद्मन्] १ वृह, वर। २ वक् पानी (प्राष्ट्र २८)। सडमार वि [मुकुमार] बोमन (दे १ १४ पह)। सउर प्रसिर्धि १ मह-निधेष रानेषर । २ यन जमधानः १ इध-विरोध प्रयुक्तरः का पेड़ा ४ दि. सूर्यं वा उपलब्धः । ५ सूर्यं संस्पी (चंडा है १ १६२)। सररि पू [शीरि] विष्णु भौरूम्ण (गम)। संबंधित देवों सं अदिस = बलुख । सङ्ख् [भूजुल] मध्य मध्याः सङ्गाः बहुय मौद्या विभी भाषा बालिविशा बच्छा (त्रम्)। सप्रतिभ रि दि । ब्री ब्रीस्ट (रे व १२)। सर्शन्त्रा) स्रो (र गणुन्ध नी) सब्बं र रास्तिरोप सी सारा धीन पर्भी की भाषा (ती « मरणु १४१। है « ८)। र एक महीचित्र (डी. १)। । पदार इं [ (बहार] पुत्रयत्र क्रमधेन शहर क्ष एक प्राप्तेत देन वरिश्त (श्री ॥) । सर्दर्श[साथ] १ एव महत्र शहरतान्त (इया)। २ म. कस. वंदा। ३ वं वादाल-

(चंडा हे १ १६२) । संपवित्रभ देखों संप्रीमस्म (क्य १६३)। सभास देवो सओस = स-दोप स-राप। संब्धिम् ] नुष सर्वे (स ६११) नुर 12 x3 Hu x16) 1 सं प्र िसम् ोरन पर्ने का पुरुष पन्यय---१ प्रकर्षे । यदिशय (पर्मेसं ८६७) । २ संबद्धि । १ मुख्यका शोधनका । ४ मनुषय । ५ योग्यता स्यावशीन (वड्)। सक्त प्रकृति इसकी १ वराय करूप विदेश करना । २ घड भव करना डरमा । संबद्ध संक्य, संकृति संकृति संकृत संकृत, संकृत्यः संकामि संकामा संराम्, संकाम (बंद्यि ३ )-यबिक्याई संकंति (सूच ११२१) ११) "ने सम्ममुज्येदाख पाखि (१७१) छ संक्य ह पिहो" (सिरि ६११) । कर्य बंकिन्यर (ऋ ४ १) । भक्त. संबंद, संबद्ध माप्प (पक रंघा १३)। इ. संद्रमिज्य (उप ७२८ टी) । संपंत वि [संग्रान्त] १ प्रतिविभिन्त (पा १ से १ १७)। २ प्रविष्ट पूसाहमा(स ३ ३४ कम्पः महा) । ३ प्राप्त । ४ धीरमण कर्ताः प्रसंदाति-युक्तः ६ पिता मादि स दाय कर से प्राप्त स्थिका पन (प्राप्त)। संस्ति थी [संग्रान्ति] १ राज्याण प्रदेश (पत्र १११) धरक ११६) । २ तूर्व धाहि का एक एश्विषे दूबरी एशि में जाना 'मारम्य शक्संशिविदिरसम्मे दिरवनाह करः (पर्वति ६६)। संस्त्रा पु [संग्रन्तन] एक रेगापीय (साध्ये क्षेत्रस्थ)। संग्रह्म रिसिर्भाती काग्रहणा प्रव संबद्धिमार्गा (डा ८ ४—२व २७६) । संस्ट्र वि सिंह्यो म्याव (चर)। संस्कृ को मंद्रि (चर्)। संबद्ध (संस्ट) १ संसेट, दण पीस पत्र परकाधराचा (व १६२ व्या ४१६ बा दशे थे)। रेस्तित गून (विक (14) | 1 % TW

विशेष । ४ वि मुधा-संबन्धी प्रमुख का

'बन्धर्शाव वे घन्यः पुरिक्ता निर्मित्तम्बन्तिस्त्रुत्ताः । वे विवसम्बन्धमेनुवि पश्चिमि

विसमग्रेकनेपृति परिमापि वर्गीत छो वर्ग्म ॥

(रमण ७३)। संबाहिम नि [संबाहित] पंत्रीलं किया ह्या (कुम ३६)।

संबद्धित नि [वे] निरिष्ठा सित-पीत (वे ब. ११ तुर ४ १४३)। संबद्धित नि [स्न्वपित]सार्गपत (एत)।

स्त्रम् व [राकुत] शेषा स्वेष्ट (स्त्र ६ १६) । संकर्ष दे [संकर्ष ] १ सम्बद्धात, स्व-परिसाम निवार (स्वा कम्प का १ ६६) । १ संक्व साचार, सरावार (स्व १ ६१) । ३ सक्तिम बासू (स्वक्र) । व्यक्ति दे "बीति समाने कर्ष (स्वा) ।

संक्रम मक [सं+क्रम्] १ प्रवेश करणा । २ वर्षित करणा. बाला। संक्रम्स, संक्रमीत (शिव १ सूच २, ४१)। वक्र्म संक्रममाण (सम ११ सूच्य २, १ रेच्य)। क्रिक्स संक्रमाण (वत)।

संदेशा के लिए नक सारि है बांधा स्थान में दिन के सारि है बांधा ह्या नार्य दिन ६ र कर १ ४ प्राप्त १ १)। र पंचार मान कीट प्राप्त १ १)। र पंचार मान कीट प्राप्त १२)। तोर तिल कर्ममानी को व स्था हो क्यों का द सार्थ महित के स्था हो क्यों का द सार्थ महित के स्था हो क्यों का द सार्थ महित के स्था हो स्था स्थाप प्राप्ति के स्था हो स्था क्या महित के स्था की

क्त को प्रस्त हारा परिस्ताना वेंकी कार्य कर्म-प्रदेशि के प्रस्त क्ले-प्रकृति के क्य को प्रस्त कर उसे वेंधी जाती क्ले-प्रहृति के क्य के परिस्तुक करता हुआ र स्टिन्य कर है। संद्रस्ता कि [कलामक] बेक्स-स्ट-कर्स (क्लेस्ट १३)।

संकार व [स्कारण] र प्रवेशः 'नगर' पुत्त्व वर' वर्षांत्रकतं वर्षं देहिं (संवोध १४) १२ पंचार पात्र (पात्रु १ ४) १३ पारित, वंदव (पात्रा) १४ देवो संकार का संवार सर्वे (वंत्र १.४४) १ प्रतिनिकार

(परद) ।

संक्रद ( शि एक्स, प्रस्ता (वे व ६)। मंक्रद प्रशाहरी १ एक महाले (पर्वे ४, १२१ कुमा कम्मल ७६)। २ वि सुख करनेवाला (पर्वेम ४, १२२) वे १ १७०)।

संबर १ सिकर १ मिलानत, निष्णु (महा १ १ — पन २२) । २ त्यानशास-प्रतित एक शेष (उपर १७६) । ३ शुनागुन-का स्थि मान (शिरि १ ६) । ४ समुषि-तुन कपरे का देर (वस १२ ६) ।

सन्दरण न [सन्दरण] सन्दर्ध इति (प्रेनोन ६)।

संबर्धरसम्प पू [संकर्षण] मारतवर्ष का मात्री नवदा क्यरेस (सम १९४) । संबरी धी शिक्क्सी रै निवानिक्टेस (पदम

 १४२. महा)। २ देवी-विरोध । ३ मुख करनेवाची (वच्छ) । संद्रक्ष एक [सं+४क्कप ] एकमन करना बोहना । एक्कोइ (च्छ) :

संक्रक पुंच [श्रह्मक] र शांकच निगव । २ कोई का बना हुम्य पार-मानक केही (चिता र ६—पन ६६ वर्मीत ११६) सम्मद १६ / ई १ १ १) । १ किक्वी सानुक्क-मिक्टेस (श्रिटि ११) ।

संबक्षण न [संबक्षण] पिषदा मिनावट (साम वक)। संबक्षण विद्यालयों केले संबक्षण न्यालन (व tot पूरा २६६१ मार)।

संबंधिय वि [संबधिय] र एक व किया ह्या (चा दू वेश्रा) ग्रंदु २)। २ द्वार, 'कल व वित्यों में पूछ कार्यहर्षकावार्य-कतियों (सिल्या र )। व संबद्धिय जोड़ा ह्या (सिर्टि रवेश )। य संबद्धिय (क्ले)। स व संवयम पूछ जोड़ (वन र)।

संबंधिया थे [संबंधिया] १ गरेनच (शिव २१६)। २ वेश्यन। १ सूबहुताव नून का पनध्यां प्राथमन (धन)। संबंधिया ) भे [शृद्धांत्र्य स्त्री सम्बन्ध

रुक्की } विक्यों नेनीर, निवड़ (सूच १ ४ २,२० जामा)। (पतम ७ १२८-१ १ ६१ दुर १ १९६ वर ६ १०वः पित १९४)। संदर्भ शिक्षा ] १ प्रधम सम्बद्ध (पणि)ः २ मन वर (कुना)। सुम्म दि [ मन् ]

संस्था से [संस्था] संसम्पर पार्तवत

संस्थान स्थान्य (दर्भ)। संस्थान देवी संस्थान सं + स्था। पंत्रमद (नुष्य २ १: पंत्र १, १४०)। संस्थान एक सि + स्थान ] संस्था करण, तीर्थ नहीं कर्म-सार्थित में स्थान प्रकृति के

(स्त)। स्वत सेकामस्योत (मन)। क्वास् संशामिकामाण (ठा १ १—पप १२ )। संकामण व [संक्रमण ] १ तंक्रम-करण (मन)। २ प्रकेश करणना (क्वप्र १४ )। १ एक स्वान से इसरे स्वान में से बाना (पंचा थ १)।

करना । संकार्मेखि (अम) । भूका संकामितुः

(वंश ७ १)। संभ्रमणा की [संक्रमजा] संक्रमण के (वंश २०)। संक्रमणा की [संक्रमणा] विद्यानंतरोग वितर्ध एक से पूर्वर में प्रश्नेश विच्याना सके

नह निया (याचा ११६—दन २१३)। संक्रांमिय नि [संक्रांमत ] पुत्र स्वान से पूपरे स्थान में शेव (यान)। संभार केवो सम्बार = संस्कार (वर्मस ११४)। संशास नि [संबाह] १ समान तुस्त्र सर्थेश

(पाप कामा १ र क्स १४ ४ र १ ६, कम्म पंच १ ४ । वर्गीत १४१) । १ दे एक भावक वा नाम (उप ४ १) । संक्रासिया की [संक्रासिक्क] एक केंद्र पुलि-

वाका (क्य)। सन्दि वि[शक्ति] संग करनेनामा (तुर्व

११२ ६३ वा २०६ इंदोव १४४ भग्नः)। संक्रिम दि [सङ्कित] १ शंकावासः, शंका

मुक (वक वया) २ ल. संख्य वर्षेष्ट (पिड ४६३: महा ६ ) । ३ स्थ वर (ना १६९): 'धन्मिनति नेत सीरवास्त' (या १४) । संक्रिट्ट नि [संस्कृत] निविधित जोता हम्म

साम्द्र वि[संक्ष्य] विविधित जोता ह्रम्य भेटी विद्याहमा (भीवा छाता १ १ टी— पत्र १)। सकिएम वि [संदीयों] ? सेंदरा तंप, पश्मा-

बद्धाराजा (पाधः महा) । २ थ्याप्त (धन)।

६ विकित विकाश्या (ठा४ २० मय २६,

ध्य-पत्र १११)। ४ द्वी हापी की प्रकृ

पाति (स्र४ २—पत्र २ व)।

संक्ति देवो संक्रिम (प्राप्य १ र-पन 5X) ! संक्रियम न [संद्रीतन] उच्चाप्स (स्वप्न संक्रिम देखो संक्रिप्ण (ठा४ २ मर्ग २४, ७) । संदित व [शक्कि] राष्ट्रा करने की मानत बाबा शंकारीम (बा.२.६) ३३३ १४२ मुर १२ १२४८ मुपा ४६४)। संक्रिक्टि रि [संक्रिप्ट] पंत्रकेश-पूज, संबद्धेकवाचा (उच चौफ पि १३६) । संविद्धिसम् प्रक [ सं + क्रिय़ ] र क्वेरा-पाना बुची होता । र मसित होता । बंदि-विस्साद, सहिनिस्संति (उत्त २४, ३४° भगः थीर) । बह्न. संद्रिकिस्समाण (घन १३ र---पत्र ५६६) । संक्रियम पू [संक्रांट] १ घरामध्य रुक क्ष्यु देखती (छार —पत्र स्वर वय)। २ मिनका प्रक्रिपृद्धि (ठा ३ ४---पत्र १५६ वंबा १६ ४)। संक्षीलित्र वि [संक्षीकित] कीम समावर बोक्। ह्या (से १४ २०)। संद्रुपु[शक्क] १ सम्बद्धा २ कीसक, ब्रुंटा कील "प्रवितिनिद्धशृक्ष्मन" (रूप ४ २) राम ३ सावम)। कण्यन [फर्ले] एक निचाबर-नगर (इक्) । संबद्ध वि [संद्विषित] १ वहुवा हुया संदोच-प्राप्त (भीक रेमा)। २ न, संदोच (धन) । संक्रक पुं[अञ्चक] बढाव्य पर्वेष की ज्ञार थेशो का एक विदायर-निकार (राज)। संबुध भी [राष्ट्रध] नियानियेष (रात्र)। सञ्चय पर [ सं+ कृष् ] बहुबना संशोध करता । श्रेष्ट्रक्यू (याच्छ श्रंबोच ४७) बहुः. संक्रुपमाण, संक्रुपेमाज (याचा) ।

संबोद र् [संबोट] समोदना संबोद (पर्हे संकृषिय देवो संकृत्य (रघ ४ १)। संबुद्ध वि [संबुद्ध] संबय संबोर्स संबुधितः बोदी य संकृता काहि विल्का चंदगुपाएं' (सुरुव ११)। संकृष्टिय वि [संकृटित] सक्या हुमा, संङ्ग-चित्र (सम ७ ६--पत्र ३ ७) वर्गेसं १८०) स ११क सिरि ४८१)। र्सकुद्ध वि [संस्कृत] होम-युक्त (वस्ता १)। संक्रम देवी संक्रम । संक्रमह (वण्या ३ )। बङ्ग, सङ्घ्येत (बच्चा १)। संइक्ष्म विसिद्धको भ्यात पूर्णमण ह्या (से १ ४७ इता सङ्गः, स्वयन ४१३ मर्गीत ३१, प्रापृ १)। संक्रक्ति ) रेबो सक्कुति (पि ७४) ठा ४ र्सक्की ∫ ४-- पत्र रेरकः पत्र रक्का माना २,१ ४ ५)। संक्रुसमिम वि [संक्रुस्मित] मन्द्री वर्ष पुष्पित (राय १०)। स्फिअंसक [स+कतम ] १ इराए करना। २ मससङ्ख्यानाः। सङ्घः संबद्धय षोमिशियेषे (सम्बद्ध २१८)। सॅकेश इं [संकेत] १ रशाय, शन्ति (पुता ४११, महा)। २ प्रिय-समानम ना पुष्ठ स्थान (बद ६२६ प्रवाह)। १ वि विद्व-पुक्त । ४ न. प्रध्याच्यान विद्येष (बाव)। संक्रिम वि [साञ्चत] १ संवेत-संबन्धी। २ म. प्रत्याक्यान-विद्येष (पव ४)। संकेशभ वि [संब्रितित] संबेश-युक्त (या १४ वर्गनि १६० बम्पत २१६) । संक्रिकेश वि दि] सकेशा हुना संदूषित किया हुम्म (या ६६४)। संबन्ध रेको संबिद्धस (उप ११२ ब्रम X 48) I संग्रंभ सक [सं+काच्यम्] संपूर्वित करता । वङ्ग संस्राजेत (सम्मक्ष २१७) । संबाज रू [संधाय] बंबोय विवट (राव १४ टाः पर्मेशं ६६२ः श्रेगोन् ४७)। संग्रेथण न [संग्रेयन] संग्रेय प्रमुपाना (देश, देश) मन्द्र गुर १ ७६। वर्गीय , t (): संधेरप वि [संधानित] संबूचित क्या

हुमा, बनेसा हुमा (का ७२० टी) ।

१ ६—यम ६३)। संक्रेडणा 🛍 [संक्रेटना] उसर रेकी (धन) । संक्रेडिय वि [संक्रेटित] सकोग ह्या, संकोषित (परहार १---पत्र १३) विपा १ ६--पन ६० स ४४१)। संस पुन [अञ्च] १ नाच-विरोप, संब (संदि; राम भी १४० जुमा के १ के )। २ ट्रा *वसेतिष*क धक्-विदेश (ठा २ ३—-पत्र ७०)। ६ महाविदेह वर्ष भर प्राप्त-विशेष विजय क्षेत्र विशेष (ठा२ वे~--पत्र ४) । ४ तत्र निर्मिष् के प्रकृतिकि जिसमें विविध स्टब्स् बाजों की उत्पत्ति होती है (छ ६--- पत्र ४४१ वर १व६ थी)। इ सबल समूह में स्मित वसम्बर-नायराज का एक बावास-पर्वत (ठा ४ २--पत्र २२६; सम ६०)।६ उक्त याचास-पर्वत का यमिहाता एक वेव (झ ४ २----पत्र २२६) । ७ भवनान् महिसनात्र के समय का काशी का एक राजा (स्रामा १ <--- पत्र १४१)। य मयनाम् महानीर के पास दीक्षा सेनवाचा एक काछी-नरेश (ठा पत्र ४६ )। १ दोर्चकर-नामकर्म उपा जिस करनेवाका भनवान् महाबोर का एक बावकं (दा १--पत्र ४२६) सम १५८ पत्र ४६ विकार २७७) । १ जनमें बसारेन का पूर्वकभीय माम (पठभ २ १६१) । ११ एक राजा (चप ७३६) । १२ एक राज-पुत्र (पुरा १६६)। १३ सम्बद्ध का एक सुच्छ (पदम १६ १४)। १४ घरक विशेष (पिग)। १३ एक होता । १६ एक समुद्र । १७ शंकावर द्योप का एक प्रविद्यायक देव (द्योव)। १व र्जुन, सलाट की हुदूरी (वर्जीव १७३ है १ t ) । t. ह. मची नामका एक मन्य-द्रव्य । २ अध्यक्त समीप की एक शुद्री। २१ एक नाय-प्राति । २२ द्वारी कं दांत का मध्य भाग । २३ सक्या-किरोप रह निवाने की यंक्यापाला (हेर ३) । १४ व्यंक्र क समीप का धनभन (सामा १ ६--पन रम्क)। वर स्को पुर (तीक व्यूत)। पांस व िनासी स्वीतिक महाधानीका (पुरुव २)। मधरी ध्ये निग्धी घन्द-

मिटेप (पिप)। धमरा **ई** "म्माय**क**े बातप्रस्व वी एक जाति (राज)। भर पू [<sup>\*</sup>वर] बीहम्स विद्यु (कुमा)। पास्र देखी बाझ (ठा४ १---पन १६७)। पुर न [\*पुर] १ एक विद्याधर-नवर (दक)। र नवर-विशेष जो मानरभ पुनगत में संबे-चर के नाम न प्रष्टिक है (धन)। पुरी 🕸 ुरी कुर्मयत रेठ की प्राचीन राजवानी को पीक्षेत्रे शहिल्लाका के काम से प्रसिद्ध हरे को (सिरिष्)। सास्त्र पुंचितान्त्री कुल की एक जाति (जीव १---पन १४६) । वय व दिनी एव उदान का नाम (ज्या)। बण्गाभ्य वं विर्माभी व्योधिक महापह-मिन्देय (सूरुव २)। वस पुँ विर्धी भौतियक महाबद्ध निरोप (इस २ ६—नव ७०)। बद्धाम केवी बण्णाम (छ २ १—पत्र ७)। वर दूं [वर] १ एक हीप । २ एक समूद्र (श्रीव इक) । वरोभास दु विराधमास] १ एक होन । २ एक स्मूह (देव)। बाक्ष रू पास्त्री नाव-कृतार-देवी के बरशा और भूतातन्त्र नामक इन्हों के एक एक बोक्याब र। नाम (१क)। शस्य र् [पास्क] १ केनेटर वर्शन का मनुवासी इक व्यक्ति (भन ७ १०—५न १२६)। दक बाजीविक यत का एक उपासक (**भ**न ६—दव ३७ )। क्रम कि [यत्] श्रीवनामा (खाया १ --पत्र १६६)। ीबई को ["सर्वा] ननपै-निरुप (टी x) । श्चेति विश्विष्य विश्वात, विश्वा ह्या, विश्वती-माना (कान ४ १६) ४१)। संशाय [संस्थ] १ वर्शन विशेष कांप्यपूर्ति-प्रचीत वर्तन (सामा १ र—पन १ र. बुपा १९६)। २ वि स्त्रंबर मत का प्रमुदावी (घीष: पुत्र २६) । संदर्भ हिं| नावव स्तृष्टि-पासक (वे संस्कृतम वि [संक्यम] विषयी श्रेषमा हो बके बहु (क्ति ६७ : प्रशु दरे दी) । संसद्ध न [वे] कम्बर, कनका (पिंड १९४) सोप (१७)। संदर्शत की [दें] र विषय मादि के जनस्य न माठ-अक्रेयर धारि को किया काठा होज

बेदनार (प्रापा २ १२,४ २१३ १ ३ ६ विष्ठ २२६ सीच १२ वदा मास ६२)। संस्रवि ही [संस्कृति] प्रोदस्याङ (क्य) । संख्यम पू [ब्रह्मसङ] क्रोथ शंव (स्व ६६ १२६, प्रमुख १---पत्र ४४ कीव १ थी--पत्र ६१)। संकारह पुंदि] नोबानयी हर (१ व ₹¥) I संलगहरू पूं [दे] इयह की शक्तनुसार कर कर खड़ा होलेगाना बैच (रे व १६)। संज्ञम वि [संध्रम] समने (उन १०६ दि)। संस्मापी समापित (से श ¥3) 1 संलय वि [संस्कृत] संस्कार-पूका प्रम संबद्भाष्ट्र भौविषे (सुम १९२१) २ व १ पि ४३) "प्रदेखर्ग भीविय मा पमामव् (क्स ४ १)। संस्क्ष्य १ (दे) राजुङ युक्ति के पाकार माधा <del>पर अन्</del>यु निवेष (देव १व)। संसद्ध रेकी संबद्धा (यवह प्रामा) + साम्ब पूर्वा [दे] कर्ल-पूत्रण विशेष शंक-पव का बना हुधा तार्डक (दे क)। संसद एक [सं + भूपन ] निवास करता। संक्र संक्रवियाण (उत्त २ १२)। संस्कृतिभ वि [संश्विति] विगाठित (सन्द्र संख्या पत्र [सं + समा] १ मिनती करना । २ वानवाः। सङ्ग्र. संस्थायः (सूपः १२२ २१)। इ. संसिद्ध संसेक्स (स्वामी ४१। स्था क्या)। संबद्धधक [सं+स्त्ये] १ धवात करना। २ ब्रेंड्स होना सन्द्र होना तिनिकृतना। संबाद, संबाधक (हे ४ १६) वर् )। संकाक्षे [संक्षा] १ प्रका दुवि (माना र ६ ४ र)ः २ बान (सूप र १६ ∉)। ६ निर्देश (प्रयु) । ४ किनदी पदाना (मक ध्यकुकमा कुमा)। इ.क्ष्यल्या (सूत्र २ १)। इस वि विवि प्रसंस्य (भय र रेटी बीन रेटी—पत्र (श्रेषाप्र)। द्वित नि [दिचित्र] कानी ही फिता

तेते का वतनाता संगमी जितकी कि मपुक विने हुए प्रक्रेपों में प्राप्त हो जान (छार ४--पव १ ४, १---पत्र २१६ ग्रीप)। संसाम न [संस्थान] १ विनदी परना, र्धका। १ व्यक्तिय-शास्त्र (ठा ४ ४—५३ २६१३ मध्य क्या चीता प्रज्ञा स्थ, ६३ पोषस १६१) । संस्राय वि [संस्रपान] १ साला मनक निविद (क्रुमा ६ ११) । २ धानाज अध्येताचा। ३ सहत करनेपासाः ४ तः लोहः ३ तिरिह पर । ६ संहति संकातः ७ सामस्य । व प्रतिराम, प्रतिमानि (है १ ७४: ४ ११)। संसाय देवो संसा = र्ध + स्मा । संस्थाय वि [संस्थाय] संस्थानुतः (नूग १ 11 a) i र्धकायण न [श्राद्धापन] योध विशेष (पुन t (\$1.5#) i संत्यास र् [के] इरिल की एक बावि नांवर मुग (वे च ६)। स्तास्य को संवास्य = राहु-न्द्। संजापई वेची संन्धपई = राजावरी। संसाविय वि [संस्वापित] विश्वमे क्रिकी कराई वर्द हो नह (सुरा १६२) स ४१६) । स जेन रेको संक्रिय = शाक्कि (छ १७३) चुम (४**१**)। संक्षित्र विको संद्रा = ई + व्या : संक्षित्रह वि [संस्थेयतम] संस्थातमा (मस् संस्तर वि [संद्यित] संदेव-पूर्व, बोटा निया हुमा (क्या, वं ३३ औ ११) । ६ किस्प वि [ध्राङ्किक] १ संस्थ**े कि**र् करा-चींका संब की शह में बारश करी-बाला । रांच बनानेबाला (कृष्य धीप) । संक्षित्र देशो संबद्ध ≈ बंब्य (ब ४४१) वंच २, ११। बोबद १४६) । संकिया की [शक्तिक] कोळ होवा (जीव

र-पर १४६, वं २ दी-पद १ १० वस

संसुध्यक [रम्] क्षेत्र करतः, संबोध

करता। धेषुहर (हे ४ १६०)।

¥X) i

संबुदुण व [रमण] भीका पुरव-सेका| (दुमा) । संख्रुस (घप) भीचे देखो (प्रवि)। संसुद्ध नि [संसुक्य] क्षोभन्नान्त (स ११० ६७४३ सम्बद्ध १३६ मुपा ४१७ कुम tax) I संसुभिम ) व [संसुक्य, संसुभित] संस्थित उसर देवो (सम १२६ पण २७२) पठन ३३ १ ६ वि १११)। संदेशक केवा स्थ्या = र्स + स्या १ ु देनो संक्षित्रह (प्रणु ६१ संकेषा संखेळातम ह विसं ११ )। संक्षेत्र देवो संक्षित्र (का४ २—पत्र २२८: बेदव १२४)। संक्षेप ( संक्षेप) १ घल कम कोहा (शे <sup>१</sup> २१३ ११) । २ निक संबात, संबृति (योगमा १) । ३ स्थान: -वेरसम् श्रीवर्शकेवरम्' (कम्प ६, ६१)। ४ सामानिक सम-भाव से भव-स्पान (विसं २७१६) । संस्थपण न [स्तरोपण] याल करता सूत कएना (वद २०)। संकेषिय वि [संकेषिक] संक्ष्य-पूकः। दसा की व ["वृद्धा] बैन प्रन्य-विशेष (ठा १०---पव ६ ६)। संस्रोम । सक [सं+क्षामय] धूळा क्तोइ | कला । धंबोहर (मॉब) । क्या संस्रोभिकामाण (एप्पा १ ६—-१व ११६) । संत्रोह् दू [संक्षाम] १ मन माहि से सलय विश्व को व्यवस्ता, क्षीय (चन नुर २ २२३ । उपयूर्वशः पूर्व नि दशः वस्तः)। २ चनमता (यडह)। संख्याद्विभ वि [संस्रोभित] सूच्य किया इमा श्रीम-प्रक किया इसा (वे १ ४८) मिप ६)। संग व [श्रञ्ज] १ बीय, विपास (वर्मन्न ६३) ६४) । २ अस्वर्ष (कुमा) । १ वर्षत के उत्तर का कार, विकार । ४ प्रकारका मुक्तका। ३ बाय-विशेष। ६ काम का सत्र क (है १ ११)। देवो सिंग=सङ्घा

101

संग न [जार्क] ग्राष्ट्र सक्त्या (विसं २८६)। संग पुन भिक्की १ संपर्क संबन्ध (भाषा) मञ्जा दुमा)। २ सोक्षतः 'तक् क्रोस्थागरन इजलसंबं सहाल पश्चिमा (संबोध १६) बाबा प्रमु ३ )। ३ झार्साक विषयादि-राप (प्रकः भाषाः स्व)। ४ कर्मे अर्थ-वन्त (भाषा)। १ बन्बन्ध भोगा इमे संयक्त इवैति (उत्त १६ २०)। संगद्ध (संगति ) १ पीषिय स्वित्ता (मूपा ११)। २ सन (मनि)। ३ नियति (सूम ११२६)। संगद्भ वि [साङ्गतिक] १ नियदिनका मियकि-स**स्त्री (मूग १ १**२३)। २ परिवितः मुद्दी विकासद्वाए विकासक् ? यह)यु विवा (ठा४ १--पन २४३ यम)। सर्गंध पुंसिंगयी १ स्वयंत्र स्वयंत्र, समेकः समा(दावा)। र संकली पशुर दूस से निस्का संकल्प हो बहु (परहूर ४---पत्र १९२)। संगच्छ एक [सं+गम्] १ स्नीकार करना। २ सक संबद्ध होना नेस रखना। सनम्बद्ध (नेहम ७०१ पष्ट् ) संनम्बद्ध (स १६)। इ.सगमणीअ (गट-विकर )। सगरमुण न [सगमन] स्वीकार, धंबीकार (चन ६३)। संगम १ [स्गम] १ मेन मिकाप (पाय भहा)। २ प्राप्तिः सन्यापनन्यसंगमोहः जिल्ल-देशियो वस्मी (महा)। १ नदी-मीलक निर्दियों का धापस में मिनान (खामा १ १—पत्र ११)। ४ एक देव का नाम (महा)। १ की-पुस्प का संयोग (हे १ १००)। ६ एक कैन मुनि का नाम (उथ)। संगमय प्रे [संगमक] भनवान् महत्वीर को **चरधर्मं करनेवाला एक देन (वेहम २)**। संगमी भी [संगमी] एक क्वो का नाम (मद्भा)। संगय वि वि] मद्या विकना (दे ६०७)। संतव न [संतत] १ निक्ता मेनी (नूर ६, २ १) । २ संब, सोहबत (उदाबुत्र ११४) । ३ पूंपक वैव मूनि का नाम (मुख्य १०२)। ४ वि. युक्त चवित (विदा १ २—-पव ।

२२)। १ मिसित, निसा हुमा (प्रानु ११) वंका १ (३ महा)। संगयय न [सगदफ] धन्द विशेष (धनि ı (و संगर देशो संकर = एंकर (विते २५८४)। संगर म [च्यर] पुत्र एए शक्त (गमा काम रेटरे कुप ७३ वर्गीय टरे हे ४ 144) संगरिमा औ 🛐 फ्रनी-बिरोप निसकी तरकारी होती है। सौनरी (पन ४--पापा २२१)। संगळ सक [सं+ घटग्] मिसना र्धनदिव करना। संगम ६ (इ.४. ११६)। संब. संगक्तिश्र (दुमा) । संतक्ष यक [सं+गंख] यस वाना होन होगा। वह संगर्धन (से १ १४)। संगठिया की हिं किया क्रिया क्रीमी (भव ११--पव ६० मनु४)। संगद्द सक [सं+प्रद्] १ संवय करना । २ स्थीकार करना । ६ बाध्य देना । समहद (मनि) । भनि संपक्तिरसं (मोक्र ११) । संगद्द पुंचि वर कं उपर का विरक्षा काठ (देद ४)। संगद् र्षु सिंगद्दी १ संबय १ स्ट्रा करना बदोरना(ठा७—-पत्र १०४३ वर ३)। २ र्सक्षेप समास (पा**म ठा १ टी**—पत १९४)। ३ सपनि वस सादिका परिग्रह (ग्रोव १६६)। ४ वय-विशेष वस्तु-दराखा का एक इष्टिकोण, भाषान्य कर स बस्तु को देवाना (ठा ७--- नत्र १६ विस २२ १)। १ स्त्रीकार, ध्यूष (ठा ब--यब ४२२)। ६ क्ष्ट घावि में सहायता करना (ठा १०---पत्र ४२६)। ७ वि संबद्ध करनेवाला (वद ६) । व स. मञ्जूष विशेष दुष्ट ग्रह से माञ्चल नक्षम (मय १) ; संगर्ण न [संप्रहण] संग्रह (विते २२ ६ संबोध १७ महा)। गाहा की [गाया] वंबहन्दा । (कम ११ )। रही संगिष्युण । संगद्रणि स्पे [संग्रहणि] संबद्ध-प्रन्य, स्थिप्त क्य से पदार्थ प्रतिपादक ग्रंम सार-संप्राहक प्रन्य (संग १३ वर्गते १) ।

संगद्विक वि सिप्रदिकी संबद्धाला संप्रद

संगक्षिक कि सिंगारित रि निवक्त संगय

किया क्या हो वह (हे २ ११८)। २

स्वीकृत स्वीत्मर किया क्या (क्य) । १

पक्का हमा: 'संग्रीहमी हरवी' (चत्र वर् )।

का को पालनेवाका (विधे २०६२)।

वेशो संविधीयः। संगाधक (सं+गै) शतकरता। करहा संविद्यमाण (अर १६७ दी)। संगक्ष कि बला, भारे की भगाय (र C 8) 1 संगाम एक [सबमामय] नक्त करना । धशनेद (सक तंतु ११) । बहु, स्रगामेमाण (सामा १ १६---पत्र २२६ निर १ १)। संस्था दे सिष्टमामी बदाई दृष्ट (याचा पाम महा)। सूर दू ["शूर] एक राजा काबाम (सुर्)। समामिय वि (साङ्मामिक) पंजाब-पांजी नडाई से बंक्य रखनेवाना (ठा १, १---प्रम ६ सः धीप)। संगामिका की सिक्षमासिकी श्रीकृष्ण बालुकेन की एक नेरी जो बजाई की खबर देने के बिए पनाई वाती थी (पिछे १४७६)। संगामुहामधे क्षे [सहभामोहामधी क्या-क्रिकेट, विश्वके प्रमान से बढ़ाई में पाछानी से विकय जिलती है (तुपा १४४) । सगार 🖠 👣 चंदेव (ठा ४ ३ — ०व **१४६ शामा १ ३**। भीषमा २२ मुख २. १ सूचनि एक वर्मीचे १३०० वस १ ६)। संगाहि वि [संवाहिम] संवाह-कर्ता (विधे 114 ) i समिषि [सिद्वित] संबन्द्रक (क्रम संबोध कः कम्पू) । संनाजनाण केही समा = प + पै। संगिष्य देवो संगद्ध = प + पह । वेक्सिक्ड (दिने २२ ३)। कर्म, ब्रुमिन्यते (विते २२ ३)। यक संगिष्टमान ( यन ४, ६—यत्र २३१) । बह्न, संगिष्टिचार्च (पि 244) 1 संग्रह्म व [स्वद्धा] धानकसान (झ ब---वन ४४१) । **देवी स**ग**हरू**।

संगोषिक वि [संगोपित] १ विवास हम्ब संगिद्ध वि [सङ्गवन् ] यह संवशुक्त ] (स ८१) । २ पंरम्बर (मदा) । (प्रमा) । संगोविच ) वि सिगोपियत् । बळस को संगित रेको संगेक (एन) । संगोबेच् । (ठा ७--- १०६) । संगिकी भागे संगेकी (पन)। संघ धक [क्यू] श्रहना। वंदर (हे ४ संविधीय वि [संगृहीत] १ माधित (ब २) चंबम् (कुमा) । च-पत्र ४४१)। २ वेको संगक्षित्र = संप प्रसिप् र साबु सामा, पानक और संबक्षीत । मानिकाओं का सक्साय (ठा ४ ४---वर्ष संगील व सिंगीड़ी १ वाला वाल-ठाव २ रा इपेटि स्थानि ४० दिल्य रा ६ ४) ( (कुमा)। २ वि जिसका गान किया क्या ९ समान वर्गनालों का समूद्र (वर्गस हो बहा केस संबंधि हुई मेन प्रसामा रे व)। वे समुद्र, समुद्राय (दुना १०)। (कुस २)। ४ प्राण्डि-समूह (हे १ १०७) । शास द्रै रुगुज क्च सिं+गुगम**ो प्रक**मर ["बास] एक कैन पुनि और बंब-नदां (के करना। श्रेषुश्च (गुरुव १ ६ हो)। १: एन)। शक्तिम बास्त्रिम व पाक्तिन संगुज वि (संगुज़) पूचित विस्ता प्रस्कार एक प्राचीन चैन पृति को धार्नेद्रत पूर्ति के कियायवा हो वह (तुरव १ ६ दी) । रिज्य में (क्या राम)। संगुणिम वि सिंगुणित क्रियर देशो (धीव रुपम वि [संब्रुत] विविद् सन्त्र (देः २१३ देनेचा ११६३ कम्म १० १७)। ₹₹) ( संगुत्त कि सिंगुप्त । विकास हम्प संपंत प्रसिप्यों १ विश्वास, रतका २ प्रचलका रका तथा (क्य ११६ टी)। र यात्राच <del>बन्न</del>म (सामा १ १---पत्र ६४) प्रतिनुष्ट प्रदूषम प्रवृत्ति है चीवा (पर मा२द)। 177) संपद्धक [सं+मष्ट्] १ सर्व करना श्चेना**क प्रंक्**रिका समुद्राव (देव ४ कुर्य । २ यकः बाबाद बच्छता । सन्द्रह क्व १)। (बर्गि) संबद्धे इ. (स्राप्ता १ १ — यत्र ११२. संगद्धी और दि] १ परस्पर सपयम्बन्ध भग ६, ६---पत्र २२१) क्षेत्रुय (दत 'इटबर्डफेसीए' (छाया १ १—पत्र ६९)। )। यहः संपट्ट (पिड १७१)। संब-२ क्षमुद्र क्षमुद्राय (मय १ ३३---पत्र संपद्धिया (पर २)। ४७४) पौर) । र्धमष्ट्र पुं[समङ्क] १ धावात वक्ता तवर्ग संक्षेत्रज १६ 🐧 व्यंग्य, वस-पुर्व (दे (क्या कुछ १६, समीवि १७) सूचा १४)। (w) 1 २ सर्वे जैवा तक का प्रति (धोषम्य १४) । संगोरक ) र् [संगोरक] क्य-विकेश सर्वट रे दूधरा गरक का सहस्री ग्राहेन्द्रक-स्थान शिक्षेफ र्रे क्य प्रमञ्ज (बच २२, १४)। निरोप (देनेश्व ६)। ४ और व जमानवा सीरोक्क व [बे] संच्या समुद्र ( वर् )। (मिन)। १ स्पर्ते (धनः)। संगोकी और विकास प्रेमात (दे ४)। संबद्ग वि [संपद्भित] संबन्त (ब्राव)। संगोब एक सि + गोपय ] । विभान कुत स्वास्ता १ स्थलं करना। दनोक्द संपद्भव [संपद्भ] १ समस्त संबर्ग (शक्त ६६) । सह- सगापमाण संगोपेमाण (स्थाप १ t-पम क्रांपिक १ a)। २ (कामा १ - पन शां विवा १ २ --सर्वे करमा (सव)। संबद्ध्या को [संबद्धना] संबचन संबाध पत्र ६१)। संगोदग दि [संगोपक] स्थाल-का (कारा 'नवने चंत्रहुद्धा च पद्दंतुनेबनायीए' (रिड 1 14-48 9x ) 1 344) 1 संगोधाय केवी संगोप। बंधीनत्वयु (ब संपद्दा 🗷 [संपद्दा] बल्धे-विदेश (वर्ष **44)** ( 

संपद्दिय-संपर समद्रिय वि [संपद्दित] १ साउ प्रमा हुमा (ए।सा १ १ — पत्र ११२ पत्रि)। २ संबंबित संगदित (मम ११ ६---पत्र DEE 080) 1 संपद्ध एक [सं+ घद्] १ प्रयस्न करना । २ संबद्ध होना युक्त होना । इ. संघ इयस्य (ठा य-पत्र ४४१) । प्रयो संगद्यनेइ (मद्रा)। रुपड वि [संघट] निरन्तरः संवहर्गसर्थः (प्राचा १३४४४)। संबद्धण देखो संचयण(बंद--पु४८ मनि)। संबद्धणा की [संघटना] रचना निर्माण (समु १५६)। संबद्धिम वि सिंघटियाँ १ संबद्ध मुक्त (१४ २४)। २ मध्य वस्ति (प्रामू २)। संपदि (रो) ध्ये [संहति] समूह (पि २६७)।

रुष्यणान विस्तृतन] १ सपीर, व्यव । (दे व १४ वाम) । २ वस्त्र-रक्ता शरीर, के डाडों की रचना शरीर का बॉब (सन सम १४६ ११४, स्टा मीप प्रका कम्म १ ३८७ पड्)। ३ कर्म-विरोग प्रस्थि रचना का काराए-मूख कर्म (सम ६७) कम्म १ २४)। संध्यणि वि दि संदननिम् । संदनन-बह्य (सम १३४, धल वटी)। संपरिस रेको संपंस (उप २६४ धे) । संघरिसिद् (हो) वि [संघर्षित] संवर्ष-युक्तः विद्याह्मपा(मा ३०)। संबंध एक [स्+ पूर्] पंचर्य करना। संबंधिक (धावा २ १ ७ १)।

36) 1 संभाइम वि [संभावित] १ संकत कर से निष्पम्र (ते १३ ६१) । २ जोहा हुमा (पाष) । ३ इकट्टा किया हुमा (पश्चि) । संपाइम वि [सपासम] उत्तर देशो (गीप ब्याचान १२ १ वि६२ ब्रालु१२, रवनि २ १७)। संपाद देवो संपाय = सकत (बोदमा १ २४) U4)

संपाड १६ [द संपाट] १ मन्म संघाइत रे मुबल (राम ६६ वर्मसं १ ६६) चपद ११७ सुग ६ २ ६२३ मोन ४११ उन २७१)।२ प्रकार, नेद 'र्समादो ति वानम ति वा पमारो ति वा एयट्टा (निषु) । ३ श्राताममैन्यमा नामक वैन यंग-इन्द का बुसरा झम्पयन (सम ३६)। संचाहन रेको सिभाइन (क्य) । संघाद्या की [संघटना] १ संबन्ध । २ रवना 'मन्द्ररदुखमविसंपाम (? र)साए' (सूपनि २)। संपादी से वि संपाटा र मुग्म मुम्स (देद ७ प्राष्ट्र वेद या ४११)। २ उत्तरीय मझ-किरोप (टा ४ १--पत्र १०६) साबा १ १६—-पत्र २ ४<sup>-</sup> मीम ६७७ विदे २१२६ः पव ६२ः कष्ट) । े संभाजय पू [शिक्कानक] श्लेष्मा नाह में से बहुता इथ पदाने (तंदू १३)। संपादिम देशो संपादम (समा १ - १ - पत्र १७१ पर्याः २ ४—पत्र १४ )। संपाय सक[ सं + पातय ] १ सहत करना, इक्ट्राक्रमा मिसला। २ द्विताक्रमा माराध । संवायह, संवायह (कम्म १ ३६) मग १, ६--पत्र २२६) । 🛊 संघायणिज्ञ (उत्त २१ ११)। र्सपाय र्र [संपाठ] र संहारत सहत क्य से मधस्यान निविद्धा (भनः दग्न ४ १)। २ समूह क्ला (राम्। १५४३) मीर महा) । १ धेइनन-विशेषः मज्राष्ट्रपम-नाराम नामक शरीर-कथः 'तंबाएएं संठाग्रेखं' (द्योप) । ४ भूतकान का एक भेद (कम्म १ ७)। संपर्सिद् देशो संपर्शिसद् (गाट-भासकि ) १ सेक्सेच, सङ्ग्रवाना (साचा) । ६ न नामकर्म-विशेष जिस कर्म के उदन से शरीर योग्य पुरुष पूर्व-यूक्षित पुरुष्टी पर ध्यवस्थित क्य ते स्वापित होते हैं (कम्प १ ३१ १६)। समास दु ["समास] पुटबान काएक मेद (काम १७)। संपायम व [संपादन] १ विकास, दिवा (व १७)। २ वेको संघाय'का पळवा यक (कम्प १ २४)।

न हिरण प्रदेशों की परस्तर संहड क्य संस्थाना (विसे ३३ ८)। संभार तुं [संहार] १ **वडू-वंदु-स**य प्रसय (तंदु ४४) । २ नातः (पदम ११० ८ खप १३६ टी)। १ एंक्षेप । ४ विसर्जन । १ मरक-विशेष । ६ भैरब-विशेष (हे रै २६४- वड ) । रुपार (धाः) देवा संहर = सं+ ह्र । संङ संघारि (निम) । संपारिय वि [संदारित] मारित न्यापारित (भिवि)। संपासय दूं [के] स्पर्ध करावरी (र व (#) I संचित्र देवो संधिय = संदित (प्राप) । सभिद्ध वि [सप्पर्त ] संध-पुक, मनुदिव (धन)। संघाकी की दिं] स्पतिकर, संबन्ध (दे ८ संब (प्रा) देखो संचित्र । संबद्ध (महि)। संब (प्रप) र्षु [संबय] परिवय (भवि) । संबद्ध ) वि सिंपयिन । संबदवाता संचारेग∫ संबद्दी संबद्द कर्लेशमा (रस्त १ १ । पर ७३ ही) । संबद्ध वि [संबद्धित] संबद-मुख्य (राज) । संपद्धार दु [दे] धनकर जन्म भविगरिएय कुसकर्मक इय दुविषकरंक्कारले कीस । विवर्धात संबद्धारं तं नारपविदियदुक्कास ।। (इस ७२० हो)। संबच वि [संस्यक] परिस्वतः (प्रश्नः १७=)। संबय र् [संबय] १ संबद् (पराइ १ ५---पव १२ : भडकः महा) । २ समूह् (कव्य: थउड) । ३ वॉक्सन जोड़ (पत १)। मास र् मास] प्रायधित-संबन्ध मास-विधेष (सत्र) । संपरतक[सं+पर] १ वस्ता वर्षि करना। २ कम्पन् मधि करना मध्यी करह

चनवा। १ भोरे भीरे चनता । संबद्ध

ं संघायणा 🛍 [संघातना] संहति । करण 🖟 (वरह ४२८) घरि) । वहः संबरत (व २,

संबोभ ([संबाप] यच्यो तथा प्रेंक्य

मेपरा (पंच ४, १४६ १०)।

(पिंड १११)।

१६: भवि) :

१४ से १४ २व)।

संपर्रणञ्ज संपरिश्रम्म (ग्रह-नेवी

संवरण व [संवरण] १ वतना बढि। २

संपरिम वि [संपरित] कता हुया विकरे

संबद्ध्य न [संबद्धन] बंबार, बहि (बहुह)।

संबद्ध किया हो वह (जा पू ११० सहित

सम्बन्धि (वज्रापि १ २) कम्पू)।

संपव्छित्र वि [संपव्छित] पना हुया (तूर १,१४ मद्दा)। संपद्ध सक [सं+चछ] चनना परि करम्य । सच्चाद (मनि) । संबद्ध (घर) देवा संबक्षिय (प्रति) । संबद्धिभ देवो संबद्धिम (महा)। संचाइय वि सिरास्टि वो समये हमा हो बद्ध (मन १ २ टी-पत्र १७४)। संपाय सङ [सं + राष्ट्र] समर्व होन्छ । वंपार्ड (अग जवा) क्या) संचारमी (सूध २, ७ १ । छासा १ १८ — पत्र २४ )। संच्यय 🕯 [संत्याग] परिज्ञाय (वंदा १६ **14)**1 संचार तक [सं + भारय] बंबार कराता ।

वंचारद (धरि) । ४३ सेवारि (धर) (चित्र)। संचार पु [संपार] तंबच्या वर्षा (वडड म्द्राः वर्षि । संचारि वि [संचारित] यक्षे करनेताका (क्यू)। संच्यारभवि [संधारित] विवक्त संचार कराना दया हो यह (श्रवि)। संप्रारम रि [संपारिम] वंपार-केन्व जो एक स्थान से उस वर दूबरे स्वान में स्था ना यके बहु (जिस्हा मुक्त ३६१) । भंपार की [र] (उन्हर्म करनेताकी की (पामः पद् )। संपात पर [ सं + पादय\_] प्रवासा । र्वपानद्र (भरि) । इनक् संपाक्तिव्रत संशास्त्रिमाम (वे ६ ३६ ए।स्म १ t-11 (16):

संचारिक्षम वि [संचारिका] वशामा ह्या (d y 20) : संचिम नि [संचित] संन्हीत (योव १२६ यांना नाट—मेक्सी १७ सुपा ३४२)। संपित्रण व [संभिन्तन] विन्तर विचार (दिस् २२)। संविदणया हो [संविन्तना] जार देखी (बत्त ६२ ६)। संभिक्त पत्र [सं+स्था] ख्वा आहला मच्ची वर्षायुक्ता समावि से स्वता। सनिनवाइ (पाचा १६२२)। संचित्रको (उस २, ६३ मोच ६१)। संचिक्रभाग रेडा संचित्र । संचिद्व देवो संचिक्त । संचिद्वद (भग बना मक्त)। संविद्यम न [संस्थान] पनस्त्रान (वि ४८३)। संभिण एक [सं+चि] १ प्रवह करना इक्ट्राक्रमा । २ क्यब्य करना । श्रीकेलेक संवित्तः, सक्तिति (मृ१ ७) पि १ २)। चक्र-संचिजित्ता (मूर्व १, २, ६५: मद)। कम्क-संविक्तमाण (जवा२ १३२)। संचिषियवि [संचित्र] समृदीत (व ४०३)। संविम वि [संवीय] बावरित (क्या) । संयुष्ण पर्क [सं+क्लीक] कुर-कुर करना श्रेष्ठ-श्रेष्ठ करना दुकड़ा-दुकड़ा करना । करक संज्ञिकाञ्चेत (प्रमा ११, ४४) । संपूर्णिका १ वि [संपूर्वित] पूरनूर संबुधिभ रिमा हमाँ (महा) मीरा एला र र---पद ४४- दुर १२, २४१)। संचेयणा धी [संचेतना] पच्छा ठवह पूत्र भनः भडतंपेनहाउँ (तिरि ६१ )। संबाह्य वि [संपादित] ब्रेटित (ठा ४ ६ दी—पत्र रहें स्)।

९ अयस्य करना। ३ क्य निवस करना। ४ बन गांवता। इ. नापू में करवा। करी

संबद्ध ) दि [संबद्ध] इशाह्या (स्प संबंध्या र ११३ पुर २ २४७। पुरा संबंध १ १६२ वहा राज)। संब्दाइय दि [संद्रादित] इका ह्या (नुपा संद्राय नक [सं+धार्य] दक्ता । रह. संदायंत (परम १६ ४७) । संद्वद का [सं+क्षिप्] एकवित कर ो

१६२)।

संबोभग वि [संबोपक] प्रबेपक (एव)। संबोधण न सिंद्यपन प्राप्तन (धन)। संबद्ध पुंची [संबदि] उत्तम साधुः हुन्छ चंत्रहेश सम्मानग्रीकृतंतरं येस्परिकादरिन्यं (संबोध १६) ; संबर्ध भी [संवती] बल्मी (बोब १६ महा द्वर २७)। संक्रणगावि [संबनक] इस्सन करनेत्रवा (gr tt tie): संध्रचलाव [संज्ञनत] १ प्रपति ≀ २ कि जरान करतेशाचा (पुर १ १४२) सूपा **३व२)।और** सी(सम्बर्दा)। संज्ञजन केवो संज्ञणन (वेदन ६१६८ सूत्रा १ ः सिम्ब्य २१) । संबन्धिय वि [संज्ञतित] व्यतस्ति (प्रमृ १४६/ प्रस् संक्रम एक [दे] वैदार करना। शंक्तोह (**थ** २२) ⊦ संबचा की [संयात्रा] बहाब की दुशांकरी (खामा १ -- पव १३२)। संबक्ति को [के] वैक्किंक कारता निक पुरिया प्रविति पुरुष् समग्रात्वं' (तुर ४ th with with apple but संबक्तित्र वि [दे] 8 गर किया हुण (व YYE) : संबक्तिष्ठ ) वि [सांगानिक] बहान है संबक्तिग∫यागा करनेशाला समुह-नार्यका प्रमाणित (दुपा ६३१) ही हा सिर्दि ४३१) पथ २७६३ हे १ ७ ३ महाउसमा ६ म---मा १३४)। संबद्धावि [दे] १ द्रविष, क्रुद्धः २ द्रै बोच (दे 1 ) 1 संबद् देवो संबद = संक्त (प्राप्त; ब्राङ्ग १३८ पविद १)। संबम थड़ [सं +यम्] १ विद्या होना ।

εξo

संज्ञमर्थन, संज्ञममाण (परम ६४ वर्ष ने १४ वर्ष १६ २६)। इसक संज्ञमाण (क्रा १६३)। वेक संज्ञमण्य (क्रा १५०)। संज्ञमण्य (क्रा १५०)। संज्ञमण्य (क्रा १५३)।

संजम पूँ सियम है कारिक कर किएठि विश्वाद पतान्त्रमा है किवृद्धि (यह का क क क्षेत्र कुमा बहु। २ शुन महुक्ष्म (कुमा के रहा। ३ एका प्रीह्म (कुमा के रहा। ३ एका प्रीह्म (कुमा के रहा। ३ एका है। १ एका के )। ४ इतिकानिकहा १ केवान । ६ विकास के बहु है १ १ ४४१। इतिकास कुमा किव्यानिक किव्यानिक किव्यानिक किव्यानिक किव्यानिक किव्यानिक किव्यानिक किव्यानिक विश्वाद किव्यानिक विष्य किव्यानिक विष्य किव्यानिक विष्य किव्यानिक विष्य किव्यानिक विष्य किव्यानिक विषय किव्यानिक विष्य किव्यानिक विषय किव्यानिक विष्य किव्यानिक विष्य किव्यानिक विष्य किव्यानिक विष्य किव्यानिक वि

(क ना १६६ कुन १६६ १८)
संक्षमिक्र कि कि सेनीयिक किराया हुया
(के द १३)
संक्षमिक्र कि सिंगमिक्ज बोचा हुया यक
(ण ६४६ सुर ७ ४ दुव १४७)।
संक्षय कक्ष सिं न पान् | रे सम्प्रकृतकार।
र एक प्रत्यो उद्य प्रदुत करता।
संक्षय केम्प्रकृत व्यव १४ १)
संक्षय कि सिंगम् वायु, गुर्मि, वडी (सक् प्रोचमा १७ वन्हा)। 'प्रमावि माय्यविद्यारित संक्ष्मार्थ्य (लहा)। 'पंचा की 'प्रमाना' शाहु से क्षम्यक करनेशको की पानि (दोषमा १७ टी)। महिमा की

हेती व्यक्ति (योगना १७ थि)। स्टीअप वि ["स्टिंगनी विशो संघ में बढ़ी थीर किसी यंक्त में प्रकरी थानक (यन)। संक्रय पू [स्टिंबय] वननान प्रमुगोर के गास स्टीया केनेगाना एक प्रजा (ठा व--पन ४१)। संक्रम सु (स्टिंबयन) पुत्र केन ग्रुमे (एक्स ३.२१)। पुर न [पुर] ननर-निरोध

(**१**३)।

िशत्रिका ] पातु को पशुक्त प्लोकामी

संबद्ध मह [सं + श्वस् ] १ कराना । २ माक्षेत करता । हुन्द्र होना । वंजने (पूप १ १, ११: वत २ २४) । संबद्धता वि [संबद्धता ] १ मरिवाण क्रेप (कमा १ १७) । २ तुं कमानविरोत (कमा १ १७) । संबद्धिता वूं [संवद्धता वीसरी नरक पूर्ण

(इस्म १ १७)।
संअक्षित्र मुं [संग्रहित] ग्रीसपै नरक पूर्ण का एक नरक-स्वान (वेक्ट १)। संबद्धित्र (यर) वि [संग्रहित] प्राक्षेत-मुक्क (यवि)। संजय केको संज्ञम = चं + यन् । पंज्यक्ष (या) (यवि)। संजय केको संज्ञम = चं)। संजयक्ष (प्राष्ट्र वर्ष)।

(१)।
चंत्रियम वेषो संज्ञमित्र = (१) (नाय न्यंत्र)।
संज्ञित वेषो संज्ञमित्र = संयोग्त (योष)।
संज्ञाव वेषो संज्ञाव (१ २ = १)।
संज्ञावय वि संज्ञाव हो विब्रं, विक्रम्,
बानदार (यात्र)।
संज्ञाव हे वेषो संज्ञाव = संज्ञाव (तुर २,
संज्ञाव हे विक्रम् १ ११ । प्राप्त वि

र ४)।
संज्ञाय कह सिं+ बन् ने जनकन होना।
पेनाय (एक)।
संज्ञाय कि [संज्ञात] जनक (फ्या ज्ञा
नहरू एक कि १९३०)।
संज्ञायक है [संज्ञात] र पर्ये हुए के
संज्ञायक है [संज्ञायक] र पर्ये हुए के
सीरिक प्रोते कर्मकर्मी (क्या र ४,२३)।

संबोधि हि [संबिधिय] विवानेशाला वेशिय करनेशास (क्यू)।
संग्रुम हि [संयुठ] स्रीह्म, संग्रुष्ठ (६ २२ |
स्विध्या ४६: पुर १ ११० स्या)। हेवो।
संजुद्ध ।

चयनेवासा, फरकनवासा (वे ८ १)। संजद्भ प्रात्या १ जन्म सपूर (स १ —पत्र ४११)। २ सामान्य, सामारसाता। ₹ संक्षेप समाख (सूम २ २१) । ४ ग्रन्थ-रचना पुस्तक-निर्मास (बस्स १४१)। ४ इटिवार के मठाती सुत्रों में एक सुत्र का न्मम (सम १२८)। संजाञ सक [ सं + योजयू ] संयुक्त करना संबद्ध करनाः मिमण करना । संबाद्धः धेंबोसइ (विंड ६६८: मण दका पवि)। नष्ट संजीर्थत (पिट ६६६)। संक्र संजा-एऊष (निष्ट ६३१)। इ. संजाएअस्य (मय)। संबाध सङ [सं+ दश ] निर्वेशण करना केवन्य । संब्रः संजोहऊण (सू १२) । संजाम र् सियाग । संगन वेत-विद्याप मिभ्नस् (पद् ः मद्वा)। संबाजन व [सराजन] १ बोह्ना, मिनाना (ठा२ १—पत्र २१)। २ वि कोस्नेशकाः। ६ क्याय-विशेष, सबन्तानुसन्ति नामक क्रोबारि-अनुस्क (विसे १२२६) करन ४, ११थै)। चिक्रणिया स्व ["चिक्रणिक्री] बङ्ग पारि को उसको गुठ पारि से जोड़ने को किया (ठा२,१—पन ३३)। संजोभगा 🛍 [संयोजना] १ मिनन मिथए (पिंड ६३६)। २ फिकाका एक दौराः स्वाद के सिए निका-प्रात्न चीवों की प्यान्त में मिबाना (पिंड १) । संबाद्य वि [संयाबित] विवास हुस

जाड़ा हुया (मन्द्र महूर) ।

संबोध्य कि [संरक्ष] रह, निर्माणन (थेवे)। संबोग देवों संबोध = चंदेन (हैं रे १४६)। संबोधिक कि [संबोगिय] वंबोध-बुक, संबन्धे (येपीय प्रत्रे)।

संबोगनु नि [संयोजगितु] बोक्नेनला (स्र ६—१व ४२१) । संबोन्त (वर) देवो संजोक = ४ + योगन् ।

चंद्र- संजोत्तिवि (वनि)। संग्रः नोवे वेदो (सामा १ १---पन ४०)।

च्छेपाबरण के [च्छ्यासरण] र छन्या विभाव का धावारक। २ ग्रुं चन्त्र चाव (मणु १२ थ्री)। एपस ग्रुंत [प्रेम] राम के बोस-बोक्यल का विभाव (सब क ७—पत्र रेक्र)।

संम्बर्क सम्बारिय म, सम सर्वकृत (कुमा भन्नक सहा)। २ दिन और शर्वि का संविक्ताचा १ पूर्वो का संविक्ताता ४ नवी-विशेष । १ वस्य की एक प्रश्नी (है १ ६)। ६ मध्यक्ष काल "तिश्रंफ" (सक्का)। राय न [रात] र जिस्र भकान ये सूर्य धनन्तर काल में रहनेवाका हो वह नवान । २ सूर्व निवर्ने हो प्रतंत्रे श्रीव्यवी या पनशक्ती नकात । वे जिसके जनम होने पर सूर्य स्रीस्त हो पहलबन । ४ पूर्व के पीछे के बादले के बक्षम के बाद का एकमा (बना १)। क्रियाधरण देखो संम<sub>ा</sub>च्छेत्यामरण (स्व २६)। जुराग द [चुराग] श्रोक है गम्बाका रॅन (वस्सार-पन १ १)। "बस्री और ["बस्री] एक विद्यावर-क्या का सम्ब (महा) । "बिगम 🐧 "बिगम) तनि पर (निष् १६)। विस्ता र [किस्ता] कोच्ह भा समय (बीव ६ ४)।

संस्थाय कह [सं+ध्ये] काल करता फिलम करका म्यान करता। संग्रामिक (तो) (में ४०१ ११)। नक्न संग्रायेत (तुत्र १११)। संस्थाय कह [संभ्याय] बंग्या की तुत्र

संमात्र वह [संभाय] बंधा की वस् भाषात करवा। संमान (पात १११)। संदंक हूं [सरकू] कमन संक्ष (वह १८१)।

संठ वि [श्राठ] कुठे यात्राची (कुमा दे ६ ११९)।

संठ (ष्पे) देवी संद्ध (हूं ४ १२४) । संठप्य वेची संठय । संठय क्य [सं +स्थापय ] १ रवमा

त्रदेश स्का [संस्थापम् ] र एवता स्वापना करताः रेथालाजन देना अहोत-रहित करता सालका करताः संदर्भर संदर्भर (स्वीतः सद्वा) । क्षा संदर्भर (स्व

हरुनाइ (बाबा) गङ्का संदर्भय (स्व इ.श.) गण्यक संदर्भिकांद (नूर १२ ४१)। एक संदर्भका (म्था) संदर्भ (उन) संदर्भका (प्रत्)। संदर्भक रेको संदर्भण (मृज्य १४४)।

संहिषिक्ष वि [संस्थापित] १ एवा हुआ (है १ ६७ प्रक्र हुमा)। २ ब्राग्सित १ ३ ज्युनेक-पीट किया हुमा (महा)। संहिष्ट स्ट [सं + स्वा] ज्युना प्रवस्तान करना स्विति करना। संक्षद्व (पि १ १

४ के)।
स्त्रियं न सिकान ] र महाति मानार
(भय सीर, यन रेक्षा गत्या महाग्ने के)।
१ कोनितेन नियत्ने क्या से तरीर के पुन
या पत्तुत पानार होता है वह कर्म रिशा प्रेम (सम्बद्ध सामार केशा)। के सीरिकेट (क्या रिशा करें)।

संद्राव केवो संद्रम । चेक्न संद्राविक (लाट-विच ७१) । संद्रावण व [संस्वापन] प्रकार विशिक्त-संद्रावण व [संस्वापन] प्रकार प्रतिकार संद्रावणा की [संस्वापना] प्राध्ययन

बाल्कम् (वं ११ रे२१) रेची संधानवा । संद्राविक वेची संद्राविक (हे १ ६० कुमा प्राप्त ) । संद्रिक वि (संस्थित) १ चा बुधा कस्पन स्थित (क्य बना महा बनि) । २ म.

ध्यक्रर (धन)। संक्रिंड् की [सांस्थिति] र व्यवस्था (युव्य १ र)। २ स्मारमा क्ला विविध (उप १९६ क्षे)।

संबंध (ध्रिप्ड पेप्य) १ इत जैल सांक; 'नतसङ्ख्या क्षेत्र स्थितेह स' (सा ११ पुर ११, १४)। २ दुन पर्य साहित्यः वर्षा इस साहित्ये स्थितेहरा (साम्या १

संबिक्त ) य [य] वासकों का क्षेत्रस्थान संबिक्त / एवन स्वार १ १२)
संबिक्त / इस्तिक्त प्र १ १३।
संबिक्त / इस्तिक्त प्र १ १३।
संविक्त श्री (कार्य १० ८)। १ एक क्षेत्र प्र १० १०। १ एक क्षेत्र प्र १०। १ एक क्षेत्र प्र १०। १ एक क्षेत्र प्र १०। १ एक क्षित्र प्र १० १०।
संबित्र श्री (पाण्येचा वंद-कृष प्रदा १०)।
संबत्र ग (पाण्येक्य) १ योष शिवेष । १
पृक्षी कर्ष योग में करान (द्या ७—एक

स्तिष्य पूर्व [क्यू] पानी में पैर प्रान्त के शिष्ट् प्रान्त मात्रप्र प्रान्त (श्रोण प्रदेश) संस्तिष्य (वार्ष) पेको संक्रिय पान्य कुन्तुन-वनेस्वार' (विष्)। मंत्राध्यक्ष वि [क्यू] सन्तर्ग प्रमुख्य (वे । प्रश्ना)। संक्र पूर्व (व्यक्ष) नद्यक (पान्न कृष्ट क्रु

१६ )। वेको सहिद्धाः

संबोध ११) ।

संबा को [वे] डोइनी ऑक्टी (दुवा रथ )। संबाह्य वि [संबोधिक] जस्त्वामिक (दुवा १९१)। संग वि [संबो] बालकार, बाता (बारा

चया व [सम्बा] बालनार, ब्राहा (सान्य १ १ ६ १)। संपर्यक्तर वेबो संसदनार (राज)। संप्रत्य न [सोनास्य] मन्त्र व्यक्ति व संस्कार्य

वातमं वी वर्षे यह (प्राप्त १९) । रोजग्रह्म सक [सं + तह ] १ क्वन वास्त्र करना वज्रतर स्कूला। १ हेवार होता।

पंदाणका (दि १६१)।

संजविक वि मिनटिस् व्याद्भव किया इस्राः विद्यम्बद्धं (बस्वा ७ )। संगद्ध व [संनद्ध] धंगाइ-पुक्त, स्वपित (दिया १ २--पत्र २३) गडह)। संजय देवो संतय (यम) । संगवणा सौ सिद्धापना | एक्टिन विवापन संत्रा की [संद्रा] र प्राहार पारि का धरिमाल (सम धः भरः पर्या १ ३-पत्र ४५, प्रान् १७१)। २ मति, धुदि (भ्रम): व संकेतः इत्यास (से ११ १व४ दी) । ४ बाक्याः नाम । १ सूर्यं की परिधे । ६ गायभी (हे २, ४२)। ७ विहा प्रीय (इन १४२ थ्री। इ.सम्यम् वर्शन (यम्)। १ बन्ध्य् अधनः (सम १६६)। इ.स. वि [फून] टही फिय हुमा करायत मना हुमा (बच १ १ टी)। समि 🛍 भिर्मि) पुरीपोरसर्जन की जसक (उस १४२ टी वस 1 (4)1 संपामिय पि [संनामित] भगनत पिया ह्या (वंबा १२ वे६) । संभाय विस्तिञ्चाती १ कात नाव का भाइमी (पंचार १६)। र स्वयन स्वा (क्य ६६३) । वेबो सेनाय । संजास व सिन्यासी प्रसार-वाव, कार्य धायम (नाट—वैत **१** ) । संगामि कि [संग्यासिम्] वंशार-व्याचे चतुर्व-धायमी यदि, बती (नाट--वैत ८ ) : संपाद् एक [स+ताद्य] सहारे क तिए वैयार करना, युक्कण्य करना। संख्यो**देदि (धी**ष ४ )। संगम् १ [संनमः] १ पुत्र की वैदाये (स ११ १९ )। २ काफ स्थापर (गार-वेखी ६२) : पट्ट वृं [पट्ट] करीर पर नामने का वस्त्र विरोध (बृह् १)। संजाहिय वि [सांनाहिक] पुढ की वैदाध वे सम्बन्ध रक्षतेनाताः 'संसाविध्यार, येरीय् धाई सोक्ये' (स्ताना १ १६---पत्र ११७)। सीज वि [संक्रिम्] १ वंशवला, वंबा-युक्तः रेमननावा प्राप्ती (धम २० मसः थीप)। ३ मानक केन पृहस्त (योग व)।

४ सम्यग् दर्शनवासा धम्यक्ती वैन (भग)। **४ त योज-विशेष को वर्षिय गोत की** शाचा 🕻। ६ पूंची वस पोत्र में उद्यन्त (हर ७-पन ३१ )। संपिक्सिस रेको संनिक्सिस (यन)। संजितास क्यो संजियास (जाया १ १-पत्र ३२)। र्सणियास देवो संनिगास = एनिक्यें (एक)। संजिबस देखी संतिचय (धन)। संपिबिय देवो सानविय (प्राचा २ १ ₹ ¥) ı संणित्रक देवी संनित्रक (यहर)। संजिजाय देवी संजिनाय (एव)। संविधा देशो संविधा (नाट-माबतो ₹8); संधियाज देखो सनिहाण (माट--उत्तर 44) 1 संजिपविश्व वि [संनिपविव] विद्यास्या (विया १ १-- वन १८)। संणिम देखों संनिम (एज)। संणिय वि सिविती विश्वके क्याचे किया पया हो वह (सूरा वद)। संधियास र् [संनिष्धरा] धमान सरह (प्रमा २ १००) । बेड्रा संनियास । संविरुद्ध नि [संनिरुद्ध] स्नप्त हुया, नियन्ति (पापा२ १४४)। संधिरोइ रू [संतिरोध] पटकाव स्कावट (B X 4x) 1 संणिक्य भक [सीने + पत्] पक्ता मिरमा। वह. संविधवसीय (धावा २ t \* t ): संक्रियाय र्रुं [ संनिपाठ ] सम्बन्ध (वंबा (=) 1 संविषिद्ध देवो संनिषिद्ध (जामा १ १ धि—पत्र २) । संजिमेस 🜬 सिनिभेस (माचा १ ८६ ६ मनः, वतर नाट--मासती ५१) । र्सिनिस्था } देशो सीमिसिका (चन) । सीमिसेका संभाद्द देवो संनिद्ध (बा ११६ नाट—पूच्छ **48**) i

संणिहाइ वि [संनिधायिन] सभीप-स्वापी (मास १२)। संविद्याल रेको संनिद्धान (राज) । संगिति रेको संनिष्टि (पाचा २ १ 2 ¥)1 संजिद्धिश्र वि सिनिहित्त स्वामता के बिए समीय-स्थित निकट-वर्टी (म्या)। देशो संनिद्धियः । संगरक रहा सनरक (बरुर) । र्संद देशो स≈ एव (उवा रूप्पः महः)। संव वि शान्ती १ शम-पुरत क्रेक-रहित (कप्य घाचा १ ८ १४)। २ दृष्ट क्रिये विद्यारता केन पुरा चंत्रेतरसा किया ਰ भावता (सिरि ⊏व२)। संत वि [भारत] यका हुवा (सामा १ ४) चना रेटा ११२ जिला रे र इस्प ₹ = 34) i संव: भ्ये सिववि । भवान प्रपत्यः धक्कामामा 'बृद्रशीला च द्रश्यिमा विद्यालेड चैत्र (स १६ १६ मूला १४)। २ स्पेषिक्स पारा प्रवाह (बच १६, १) कर Q tet}ı संबच्छाण न सिंबक्षण विनन्ध (सुमार X (114) 1 संबच्छित्र वि [संबधित] विका ह्या (पद्याहर र---पत्र रेड)। संतद्र वि [संत्रस्त] वर्ष हुमा भग भीत (पुरश् २ ३)। संविध क्यो संवद् (ध ६०४) । संवत्त वि [संवत] १ विरुवर, वविश्वित । २ विस्तीर्ध व्यक्तिमीसियमितं गरिप सुई दुक्खमेव संवर्त । नरए नेरह्माल ब्लोगिस पत्रमाणार्ख ।' ( Tt 14 46) 1 संवत्त वि [संवप्त] धंताप-प्रक (दुर १४ दर्भारदर्भपार्दभाग्रा

संवस्य केंग्रो संवद्व (इन मा १४) ।

संतप्य यक [सं+वप्] र क्लब यक्त

होना। २ पीनित होना। स्टब्पइ (हे ४

१४ स २)। धर्व बंद्यानसम्बद्धः (स

(बुग ६२२)। य वि वि] सानि-प्रधान

2¥4 ६८१) । इ. संतिष्यक्य (म ६०१) । बङ्ग संवध्यमात्र (नुक्र र) । संबंध्यिभ वि सिंत्रही । बंबार-मुख्य (दुमा ६ १४) । २ व सताप (त २ ) । संद्रमान (संद्रमस) १ फ्लब्राट, वंतेय (पाम नुग २ १) । २ धन्त-नुप धेंबैछ र्देषा (नुर १ ११)। संतथ ६को संतत्त = ५६५ (पाय: मन) : शंतर प्रकश्मि + तृी देशा, तेर कर पार करना । हरू संतरिनम् (वस्र) । संदरजन [संतरत] हैरना हैर कर पार करता (याय १४ केन्य ७४३ कुत्र २२ )। संतम यह सि + प्रस् ] १ मन-भेत हानाः १ वदिग्न होना । वेटने (उस २ tt) ( सेना की ज्ञान्ता ] नातवे जिन-प्रवरान् की ग्रापम-देशवा (वंति १) । संवाय १ (संवान) १ एए (१८५) । २ धर्मिन्द्रम् बारा प्रमाह (विते २६६० पात्र नुसा ११.८)। ३ तेनुनात मक्की वर्धर का अपन 'कक्सप्रायंतालप्' (माचा परि क्या)। मेनात्र व (संभ्राची वरिवाल सरकाल (44 1)) मेर्याच रि [मेरानिन] १ मरिन्यप्र शय क्रमप प्रमय-वर्धी, चंद्रास्त्रिको न क्रिक्सो बद्द लंगाला व नाम संवाला' (जिन २३१० वर्ष २३१)। २ वस म प्रापम, वर्षस मञ्जलभ देव द्वाद्यांत्य पता उत्तरहो पामभाद्यं वाली । क्ये वाम मराजुर्य (वर्गेंट १) । र्मतार वि [संतार] र साध्याना, बार

बजानसमा (पदम २ ८४) - २ वृ बंबाट देखा (रिज) मंत्रारिज रि [मंत्रारित] पार कार्य हुया (fig) i मंतारिम रि [मंतारिम] देख बोन्ड (बाचा 2 2 2 (4) s भंगर वर्ष[से+ताप्य] र कस्य स्थानसम्बद्धाः स्थान

(पुरुष १) रुबङ्ग सीवार्षिव (दुरा २४ )। क्बाई- संवाविकामाण (बाट-मृण्य ११७)। संवास र्यमिताची १ मन का चेर (प्यह १ ६-- पत्र ११ इसाः नहा)। २ ताप बरमी (परह १ ३--- वत्र १२, महा) । सेवायण व [सेवापन] सेवाप सेवस करना (नुवा२३२)। संवादणी भी [संतापनी] नरक-दुम्मी (तूम 1 X 3 4) 1 संवायय वि सिंवाप को संवाय-जनक (धीर्य)। संवावि वि सिवापिम् । धंवत होनेवाका क्षतेमसा (रूप्) । संवाधिय वि [संवाधिव] बंदत किया हुमा (कास) । संवास एक [सं+ग्रासय] भन-भीत क्रमा क्रथमा । संतामइ (सिंव) । संवास के सिधारों का कर (व १४४)। संवासि वि सिंवासिन् । नास-अनक (उप ७६० हो) । संविध्ये [झाम्ति] १ होव सादिवास्य इप्रहम प्रश्नम (धाका ११ ७१ पेरन १६४)। २ मृक्ति, मोध (माचा १ २ ४ ४ नूम ११३ १ ठा ब-वा ४२४)। ३ वर्षेता (याचा १ ६ ४ ३) ३४ **इयान निवारत (निया १ ६---वन ६१)** नुपा १६४) । १ रिवर्षी है यन को शोकन्य । ६ चैन बाराम । ७ स्विस्टा (इर ७२ टी 🖰 र्शित १)। व बाहोस्स्यम अधारे (नुख १ व ४२)। १ देशी-विशेष (पंचा १६ २४) । १ पूँ स्रोत्तद्ववे जिनदेव का न्यम (यम ४६ वमा परि) । उद्यान विद्युक्ती क्षान्ति के निए बस्तक में स्थि बस्ता मन्दित राज्य (दि १९२) । बस्य न (समन्) उपार्शनसम्बद्धे विद्यालय अता हान पार्टर को (बस्ट १ २--पर १ नुस १६२)। धर्मत न विस्तास्त्री बहा स्पन्ति कर्ने किया जाता हो वह स्थान (बापा २२२६)। "शिद्व ["युड्डी क्षान्त-वर्षे करन का स्थान (क्षण) । जन न [ अम] ध्या "उर्श्न (वर्ग र) । जिया <sup>1</sup> र् [ीजने] शाहरे जिस्टर (वीत १) । महामा [मर्गा] एक पारिका का नाम । बोध-पर्दा नियोंके, बुक्ष (तूच १ १९

(पर ७२० क्षे)। सूरि वृं [मूरि] पक जैनाबार्व धौर बल्बनार (श्री १ ) । सैणिव र्वा श्रीपक प्राचीन जैन सूर्त (क्य्य)। इर म िगुइ] यनवान् शान्तिन्यवनी स मन्दर (परम ६७ ६)। होम व िहोनी शास्ति के बिए फिया जाता इतन (विशा र १-पन ६१)। संविधा ) वि वि सरकी सवली संवन्त संविग । स्वनंगमाः चम्मा-पिरचीरी बद्धमाले' (कप्प)- 'मो कप्पद निर्मवात वा भिन्नंबीय वा सामारियमंतिनं तेरवासम्बर्धा धायाए ब्रोहियरहो कर दु संपन्दरस्य (क्स) बरा मक्का सं ९ रा मुना २७ १२२३ पर्या १ १--पत्र ४२)। संविद्याचर देशो संवि-गिह (महा ६८ ६)। संतिष्ण वि सिंबीर्जी वार-बाह वार स्वय ह्मा 'स्टिस्ल सम्बद्ध' (यनि १९) । संसुद्ध नि [संतुष्क] वंदीय-प्राप्त (स्वप्न २ मद्रा)। संतुपद् ति [संस्थानृहश्त] जिस्ते पार्य दुवाया हो बहु, जिसने करनट बच्ची हो बहु थेता हुया (छामा १ १३-- वव १७१)। संदुष्टमा भ्री [संदुष्टमा] तुलमा, दुस्यहरू वधेपाई (सार्व २ ) । मंतुरम घड [सं +तुष् ] १ प्रस्त्र होन्य १ २ तुव होना । इतिस्तर (सिरि ४ २) । मेतजापर रेको संविज्ञायर (ब्या ५५ सं ।। म [भन्दर्] कम, बोक 'बंदो बंदों च सम्मार्चे (शाह ७१))। संतप्त सक [सं+अपयू] १ अवव करता, मुत्री करता । २ तुत करवा वर्गः षेठोसीयदि (शौ) (तार---राश ४ ) । संवास वृक्षि राव] तुति नोज का अवस्थ 'इरइ धमुनि धरन्छ। बस्तमिननि श्रिमप्रेले न नंदाश (पात्र पुषाः परह १ ४---पन दशः प्रातु १७३: नूस ४१६) । संग्रांस ध्ये [संनापि] क्रजोच, मुहि पुनि (उस) । मेर्नाम (र [भंक्रविन्] १ क्लोबनुष्ट

संबंध्य वि [संस्तावक] स्तुति कर्ता (ए।या

्र ११ स्त ७६व दी)।

१, १६--पत्र २११)।

११, सूपा ४३१) । २ मानन्दितः कुरो (<del>54</del>) ( संवोसिय र् [संवापिक] संवोग वृति (उना 1(25 संवोसिअ वि [संवोषित] चंतुर किया हुपा (महाः सरा) । संग वि [संस्थ] संस्था (विते ११ १) । संगड , नि [संस्तृत] १ पाण्यारित, संबद्धिय ) परस्पर के संस्तेन से धान्याध्य (मस्ट छा४ ४)। २ मन मिमिक (प्राचा २ १ १ १ ) । ३ म्यान्त (उत्त २१ २२ योष ७४७)। ४ समर्वे। इ.स्टर जिसने पर्याप्त भोजन किया हो वह (वस धावा २ ४ २ ३ वस ७ ३३)। ६ एक जिल (धावा२१६१)। संयण धक [सं + स्तन्] पाक्य करना । संबद्धती (गुम १२३७)। संधर सक [सं + स्तू] १ विद्यीना करना

विद्यानाः। २ तिस्तारं पाना पारं वानाः। १ निवृद्धि करना। ४ मन, सूत्रवे होना। **१ तुन्त होना । ६ हो**ना पिद्यमान होना । संबद्ध (भव २, १—वन १२७) तथा क्स) 'ण समुच्ये यो तंबरे वर्ख (सूत्र १ २ २ १३ प्राचा) संपरित्र, संघरे, संवरेत्वा (क्ष्णः इस्य ४, २, २ धावा)। वद् संबर, संबंध संबरमाण (कर १४२ सीप (बरा १०१ सामा २, १ १ ०)। संक. संधरिचा (मयः बाचा) । संभर र् [संस्वर] निर्वाह (रिंड ३७%) ¥ )1 संबद्द केनी संधार (बुद २ २४७)।

संबर्ध न [संस्वरण] र निर्माह (हह र)। २ विधीना कमा (धर) । संपद सक [सं+स्तु] १ लुवि करता, स्ताचा करना । २ परिषय करता । संबर्धमा (पुष १ ११)। ह संयविषय (नुपार)। संभव र् [संस्तप] १ लुदि, स्टापाः 'संपद्ये पुरे (निषु शत्मा शास्त्र स्वरः)। र परिचय धत्रमें (स्पा: शिक्ष वरे । प्रचप्रः ।

४०६ भारक बद)। ३ वि स्तुति-वर्ता

(सामा ११६ धे--पत्र २२ सन्)।

101

संध्यिक्ष देखो संटमिश्र (पडम वर १)। संघार । र् [संस्वार] १ वर्गे--द्रश मावि संधारम | की सुम्याः विद्योग (साम्यः १ १---संधारय पत्र ३ च्या च्याभय)। २ द्यपनरक कमरा (भाषा २ २ १ १)। ३ उपाध्या, साधुका वास-स्थान (वन ४)। ४ संस्तार-स्वा (पष ७१) । संभाव देखो संठाव । बद्ध, संभावंत (परम ( \* **२**४) । संधाषण न [संस्थापन] धान्त्वना समाधासन (पराम ११ २० ४० क १६, ४७) । देखी संठावण । संभावणा ध्ये [संस्थापना] धेस्पारन रखना (सा २४) । रहा संठापणा । संधिव (धौ) देशो संठिम (गाट-मृज्य संधुभ वि [संस्तृत] १ संबद्ध संपद्ध (मूप ११२२)। २ परिचित्त (माचा १२ १ १)। ३ किसकी स्तृति नी याँ हो यह श्चापित (चल १ ४६ भवि)। संधुइ 🛍 [संस्तुति] स्तुति स्तान प्रशंना (बस्य ४६६ मुपा ६४ )। ं संयुण स≢ [सं+रतु] स्तृति करना अधवा करमा। सञ्चलद् (द्याः यति १)। वह संभुजनाय (पदम ८३ १)। प्रश्रह संयुष्पियांत, संयुक्षत (मृग १६ भार ७)। सक्र संग्रुणिचा (१४ ४१४)। संप्रुष्ट वि [संस्थुतः] रमणीय, रम्य, मृत्यर (बाद १६)। संभुष्यंत रेवो संभुष । संदूषक (स्थम्ब्) १ फला स्पक्ता। सर्वति (तुम १ १२०७)। संद १ (स्पन्द) १ फरम प्रका (दे ७, ११)। २ ए० 'एव-चंद्र(१५)म्म मर्गती

(वर्षीय १४४)।

विक २३)।

संबंध वृह्मिद्दा बिक्कण हुस्य। बिकावियो निमेर्ग कोषवसा तहाँव उस्स संबंधी (क्रम २३२)। संबंसण न [संबंशीन] क्रांन, क्याना साधारकार (उप १४७ टी)। संबद्ध वि [संबद्ध] को काटा ममा हो वह, विसको देश सम्म हो वह (हे २ ३४० दुमा ३ व पट्टो। संदद्व ) वि दि ! संस्था संयुक्त संबद्ध्य र्रावद्ध (३ ८ १८ मउड २१६)। २ न संबद्ध संबर्ष (केंद्र १८)। संबद्धक वि सिव्यथी धति जना हमा (गुर १ २ ४, मुपा ४११)। संदर्भ (शब्द महा)। २ भारतवर्षे में धतीत जस्मिणी-कान में क्रपन्त तेप्रसमा जिनकेष (पष ७)। वे स क्षरण प्रस्ता। ४ वहत बहुना। १ जम पानी: 'करम श्री नई निक्कोसमा निक्कसदाहा' (इस्प) १ संदरम र् [संदर्भ] रचना प्रयन (जनर ર ૧ વઝા संदमाणिया ) 🛍 [स्पन्दमानिस संद्माणी प्रकारका पाहन एक तरह की पालकी (भीप शाया १ ४---पत्र १३११ हो<del>...पत्र ४३३ को</del>प) । संदाय धक कि भवसम्बन करना सहारा क्षेत्राः। सदालक् (हे ४ ६७) । बहु संवरणंव ( कुमा )। क्षक्र, संदर्शक्रजंव (माट-मानवी ११६)। संशामिक वि [संशानित] वद वियम्पित (बाइट केंद्र ६ १३ ७१ मारा ६) **रूप्र ६६ नाट—मानवी १६६)।** संवामिय वि सिंदामित । कार देवा (छ ११६३ सम्बद्ध १६०) । संदाय देवो संदाय = सवाप (बा <१७ ११४३ वि २०५ स्वप्त २० धर्मि ११ माच १७६)। संदाय 1 [संदाय] समूह प्रमुक्त (विदे ₹5)1 संबिद्ध नि [संदिष्ध] १ निमन्त्र भपना संद्रित [सान्द्र] यन श्रिया (पण्ड १० बितको हीरम दिया नया हो बढ अपिए. क्षित (पाम जर अरव दी) मोपमा ११; मानि) (सन ६७)।

भारि)। २ जिसको सामाची गरिही वहा

'इरिप्रहेनमेदिशा सम्मन्त्रम्य विद्देश' (क्य)।

३ ग्रेंग ह्या जिनका निकला हुया (बारम

संदिद्ध वि [संब्राम] सराव दुवर, संद् बाला (पाय) । संदिश वृ [संदत्त ] रक्तीय रिनो का बनातार प्राथास (संदोध १ ) । संदिय वि [स्मन्तित विकार स्परा ह्या (पुर २ ७६)। संदिर वि [स्थितितृ] भरतेवला (स्रह) । संत्रस स्टब्स्स स्थित् है। संस्था हैना, धमाचार पर्धुवाना। २ माजा वेना। ६ अनुवादेश्व सम्मति केताः ४ दान के श्रिप सक्क्ष करना। सक्किन (पड् यहा) सरिक्य (पवि)। करक. संग्रिस्तंत (पिक २३६)। प्रवान, सङ्ग संविधाविकाण (वंशा 2, 1)1 संदिसय द[मंदसन] क्येंट, क्यम 'दूबनी-इद्विद्दनस्थानुहारोपन्यपीतस्विद्दस्यं ( बंदीन ₹**₹**) 1 संगीण पूं[संशिन] १ होपनीक्षेत्र पत्र मा मास बाहि में पानी के बचकीर होता होप। रै सरम्बन्ध एक प्रतिनादा शैपक । ३ भुतकातः। ४ धोम्प, धौमस्रोत (पाचा १ 4 4 4) 1 श्रंदीका है [संदीपक] स्थेतक वहीयक भागनिवस्तरीयम् (रंभा) । संदीयण व [संदीपन] १ वर्चवनाः वदीपन (क्ष्मोच ४०३ माड—उत्तर ११)। २ वि **उत्तेतन का कारण उन्होपन करनेवासा** (रतम ८०)। संदानिय वि [संदीपित] बतेकित क्रिक्ट (भिषि)। संदुक्त धक [म+दीपू] वचनाः पुनका । संदुक्तह ( पर् ) । संबुद्ध वि [संबुद्ध] ध्यक्ष्मप्र बुद्ध (4वील ११) । संदुस पर [ प्र + शेप् ] बबना, बुबबना संदुत्तद (ह ४ ११३: द्वारा) । संदुविश्व वि [मदीस] प्रवाद्वसः दुलका

हुव्य (नाम) १

मेलक नदी-संपम (रे = ७)। संबेस ( सिंहर) विका, समाचार (बा कुप्रशः सक्षाः होत्रः प्रकृताः सुना के है। 1 (93x संदेश पुं सिदेश संस्था संस्था ६६० यतक सङ्घा)। संदोद र् [संदोद] सनुह, बल्या (शब्द पुर २ १४६। विर्ति १६४)। सीय एक सिं+भा र धाननाः भोवनाः। २ समुखेबान करना चोन करना । ३ वॉबना, च्याच्या। ४ वृद्धिकरुत्य वहाता। ३ करनाः 'धन्यं व संबद्ध यहं सो' (कुम १२) संबद्ध सबस् (भाषा) सुम १ १४ २१ १ ११ २०३४) । मनि वेशिस्थानि संबिद्धिस (पि ४३)। बक्र-संभेत (से ४८ २४)। कर्ज संधिक्रमाण (पर्व)। क्रेक संविधं (क्रुप्त १०१) । संब केने संग्र (केन्प्र १० ) : संघण क्षेत्र [संघान] १ शाधा, सेवि जोद (बर्मर्स १ १७) । १ प्रमुखंशन (पंचा १९, ४३)। और, जा (याचानि १ ४ सूमनि १९७- धीव ७२७) । संबयना 🖶 [संबन्ध] संबना बोहना (**चय १)** ३ संबंध कि [संबंध] संबंध-कर्या (दत १ संचया केवो संघ=ध+वा। संवयती (बचर ६ २)। संघाकी [संग] प्रविका, विक्य (मा १७ स्पत्रेरेर सम्बद्ध (७१)। संबाय व [संघान] र यो शर्मे का संगोर स्थान (पुर १२ ६)। २ समि दुबाइ (इस्थोर १३)। । नच पुरा शक (वर्तनी १३)। ४ मोन् समाप निवास (भाषा कुमा; भवि)। १ घवारु लोहु साहि का पराचा विका काच-विशेष (पण ४)। संभारण न [संघारण] कल्लन, कल्लान (E 484) I संभारिक वि वि] योग्य सम्बद्ध (दे = १)। संभारित वि[संपारित] रहा हुमा स्वाधित

(लाका १ १--- १६)।

(क्टार ४५)। संधिवृद्धी [संधि] १ क्रिक, क्विर। २ संबात, उत्तरोत्तर परा<del>वे</del> परिवास (तृष १ १ १ २ : २१: २२ १३: १४)। ३ स्याकरका-प्रसिद्ध वा पक्षाचें के संबोध से होने बाबा वर्ल-विकार (क्या २ २--वन ११४)। ४ सेंब चोटी के लिए मीत में किया पाठा क्रेस (बाद ६ ) महा इस्त्व ११ )। ४ हो हाड़ों का संगोदस्थान 'बस्तामी स्था-संबोधो' (सूर ४ १६६, १२ १६६) वी १२) । ६ वत प्रक्रियामा 'प्रकृत विचित-श्रीक्युरोहि पुरिसाहकर्ति (स २६)। अ इस्सं<del>क्रांश</del>ेववि (भाषाः सूप्र ११ २)। **असम्बर्गसन् कान की प्रान्ति । १ पारिप** मोहनीय कर्म का अयोकतम । १ सक्दर, ध्रमय, प्रसंद । ११ मोधन, धंनीय (भाषा) । १२ को प्रताबी का श्रीकोन-स्वान (विपा र ३—पत्र ३६८ महा)। १३ मेश व विष् कृतिपय किवमी पर जिल्ला-स्वापन, मुख्य (कप्पु: कुमा ६ ४ ) । १४ ग्रेंग का प्रकरण द्माच्याय, वरिल्केन (धरि)। "गिद्ध न ["गृह] दो भीतों के बीच का प्रच्यन स्थल (क्रम्प) । ब्दोन्सा क्षेत्रम वि [चक्क्क] वेंद त्तवा कर चोचै करनेताबा (शाया १ १व--- तम २६६। मिपा १ १--- तम ६६)। पास, बास्र नि ["पास्त्र] को सम्बों की नुबा म आर्थ (ब्या बीर्य कारा १ १-पष ११)। संविम वि [दे] दुर्गील दुर्नेलवामा (१ ۹, ۹) ۱ संधित्र वि [संदित] स्तंत हुया, क्षेत्रा हुया (Triangle extite to वक्रा⊌ )। संधिम वि [संधित] प्रवाधित (परः) । संध्यमा देवो संदिया (योव ६२)। संभिन्नं देवो संग = सं + वा। संधित देवो संधित्र = प्रदेश (मन)। संविक्तिमादिक र् [साक्षिकिमादिक] सम भी संदि योर बहाई के कार्य में तियुक्त मन्त्री

(इस्मा)।

संधीर सक सि+ भीरय ी माधासन देना बीरत देता । वह संघीरंत (मूपा ४७६) । संधार्रायय वि [संधीरित] जिसको घाषानन दिया गया हो वह बाधासित (मूर ४ 1 (5 55 संघ्याधम [प्र+दीपु सं+धुस ] १ प्रतमाः मुसममा। २ सकः प्रतानाः १ उर्धावत करता । संपुद्ध (इ. ४. १६२ युक्त)। वर्गे संपूर्विकद् (क्या १३)। संघद्यान [संधुक्षण] १ मुसमना जसना । २ प्रम्थानन, मूलपाना (भवि)। १ वि नुनयानेवाना (स २४१)। संपृष्टिश्र वि सिंधुधित । वनाया ह्या सुनवायाह्या (सूराद १) । २ जसाहया प्रदोप्त नुसमाहृत्य (पाय-महा छ २७)। ६ इतेजिक 'धनिवेयपवल्रसंपुद्धियो पत्र-सिधा म मल्हिम कोपालुका (स २४१)। संप्रांच्यत् (हो) उत्तर देवा (नार-मृज्य 333 1 संघुम व्या संदुम । यंप्रवद ( वर् ) । संघ रेका संघ = रा + था । संपेद, संपेति संवेद्या (बाका १११४) ति ४ ३ नुष १ ४ १ ६)। बहु संघेत संध्याम ( (परम ६८ ६१) वंदा १४ २७) माचा: fex ): संतरेको संज (धारा १ ६,६ ४)। मंतरगर न [मंद्राधर] यहार यहि यहाँ की प्राकृति (एदि १६०)। संनाम रथा संपाम । वंतरमद (मनि)। बंह संन्धिन्द्रण (पदा)। देक संन्धिनदर्व (# lat) | संत्रवर[संग्रात] एटाय करता बंग्रा करता (उप २६ )। संबद ध्यो संबद (परद्व १ ४-- पर ६) । । राज्य देशा राज्य (योग निच १ र ये---44 31) 1 संनय 🕫 [मंनव] मन हुमा धरमव (धीरः , 4W1 (2 )1 मंतर वह [ मं + शायव\_] बंधरण के बद्ध व ना। वंबरद (एव १४ )। रांनद रेका मंत्रान्द । इंस्ट्र (क्रीर) इंस्ट्र (4 14 3 ) 1

संतद्भाव सिन्द्रनी संनद्भा (पटन १ 1 (¥# संबद्धिय देखो संजद्ध (मुपा २२)। संता देशो संगा (ठा १—१३ १६ पएड १ ५—वन ११ याम पुर १ ६७ विड २४४ चप ७११ दे है)। संनाय वि [संज्ञात] विद्यांता हवा परिचाना हवा 'संनाया परियक्तेल' (महा)। देखी सीपाय (पर १६३)। संताह रेवो संजाह = र्ध + नाह्य, । र्धनाहेर (बीय- वंद ११) । संक्र सेनाहिचा (वंद्र 11 (15 संनाह रेको संपाह = धनाह (महा)। संताहिय हि सिनाहित् । हम्यार हिमा हमा समावा हुमा (भीप)। सेनाहिय रेपो संजाहित (छाया १ १६-पत्र २१७)। र्सनि देशो संणि (सम २३ ठा २ र—पत्र रर पी ४३ कम १ ६)। संनिधस देवो संनिगाम (छ १--पत्र ४१६ क्या)। सीनिन्द्र वि [मीनिष्ट्र] बासप्र समोप में स्पित (मुख ४ ८)। संनिविध्यत्त वि [सीनिधिप्त] हावा हुया, रबाहुमा(क्या)। संनिग्तम रि [संनगत] १ बनान तुस्य (मन २ १ छाया १ १—पत्र २६८ मीत स १व१)। २ दू प्रास्तर (पंदू)। ३ दून समीप पास (पाम १६ २०)। संनिमान 🐧 [मंनिक्रये] बंबोय 🛮 बजान पंत्रियाची पद्भा संबंध एवट्टा (शहर १२० मंनिषय ५ मिनिषयी १ विषय मध्ह (याचा)। २ वंदह (याचा १ २ १, १)। मानिषय वि[मानिष ह] निवंद दिया हुया (पर १६८ काम ११६)। र्मनिर्मुत वर [मान + युज् ] यच्छे दयः बोह्ना । इसः सीनजुली (तिह YXX) I में निगम न [मानिध्य] च्यादश करने क बिर् वर्षीर में ध्ययन, निरस्ता (व १०२)। मंतिना र 🛊 [मंतिनार] प्रशिप्तरि, प्रशिप्त (97) 1

संनिभ देगे सेनिइ (ए।या १ १--पप ८६ बरामीप १)। संनिमांद्रअ रि सिनिमहिती १ म्याप्त पूर्ण भरा हमा। २ पुनित 'पंपा नाम नवधै पंदुरवरभव्छसनिमहियां (धीप छाया १ १ टी-पत्र ३) 'परिय मगद्रा क्छा। यामसनसनिमदियो' (यम्)। सनिय रमो सं जय (सिरि ८६ ३ भवि) । सेनिय, वि सिनियसी यस हमा विखा यारि वि [पारिन्] प्रतिपद्ध का पर्यंत इरतमा (इप्प)। संनियास देखो संनियास (परम ३३ (35) संनिदयम व [सानिटयन] माधव, माबार 'नामपत्पा संसार' मित्रमति समारुम्पमनि-समर्ख (परह १ ४--पत्र १४)। संनिधश्य देखो संणिपहित्र (छाता १ ₹---- 4¥ {X}; संनिषाइ वि सिनिपाविषा सम्बन्धी सम्बन्धरसंविवादणा (कृष्य सीतः सम्बद्ध (४४)। सीनगाइ वि [सीनियादिन] संयव बोतन-बाना, ब्यावबी कहतेरासा (भग १ १--पत्र 111 संनियाइय वि [सांनिपादिक] संनियत रोव से सम्बन्ध रसननामा (छामा १,१---रव र तदु १६ मीर वज् । २ मार-रिटेन मनेक मार्थे क संयोग स बना हमा भार (प्यूरेरेर सम्बंध ६८६०)। ३ व सनित त. मैन सम्बेद (प्रापु ११३) । सीनगर्य वि [मीनपार्विक] रका मीनि-पाइ, सम्बक्तरवेतिराहपाएँ (धीत १६) । संनिपादिप वि सिनिपादिकी विकास विवाहवा (लावा १ १६--वर २२१)। र्मनियाय ५ [मेनियात] सद्यक्त सम्बन्ध (इप्त घोर) । मंन्डिक, व[मंन्डिक्ट] १ शहरा राजा (भीर) । ५ वि विद्युत बहाब शता हा वह स्परं व बहर बहाव सामवर बहा हथा (बस) । । बंदन मीर स्थिर मावन ब धर्माना-नेत्र रूख (त्या १ ६---------श द्य 🕬 ।

संनिवेस-संप्रविवाय

संतिवेस १ (संतिवेश) १ वनर के नाहर का प्रदेश, बाढ़ी साधीर परीच्छ सीन चार्चे क्षों। २ वॉच नवर दावि क्वान (सम. १ १--वन १६)। व वानी वादि का वैरा मार्चे का वास-स्वान प्रवाद (उत्त ३ १७)। ४ प्राम कॉन (सिरि ३≤)। ३ रचना (स्प 4 (24) I सैनिवसण्या को सिनिवशना संस्थापन (क्त २६. १)। संनिवसिक वि [संनिवेशिम्] रवनावाया (बप पूरे ४२)। संजिमक वि [संनिपव्यं] वैठा हुमा सम्बद्ध स्थित (सम्बद्ध १ — नव १६ कुत्र १६६ म १२ सको। सीनिसिका 🕍 [सीनिस्या] यादन-सीनिसेट्या े सिरोप ग्रीड धारि धारन (श्रम २१: वर्ष ११ । च्या) । संनिद्ध वि [संनिम] तमान सहय (प्राप्तु १६ क्या)। संनिधाय र [संनिधान] १ अध्ययस्ट्रीय यक्ति कर्म (भाषा) । २ कारक-निरोप यकि-कच्छा कारक माबार (विशेष ११) छ। --पत्र ४२७)। १ साम्रिक्ट, निकारता (त ७१ : ७६१) । सत्य न शिक्षी क्ष्में का स्वका वदानेवाला शास (भाषा) । संबद्ध (उद्यंद १४, वस्त्र १ू १

cm

संकालपाप (धाषा)। सत्वान विशास्त्री संनिद्ध पुर्व [संनिधि] ! क्यमोन के लिए स्पाप्ति केल् (बाबार २ (४)। २ संस्थारमः। इ.सम्बर निश्चि (धाना १.२ x, t) t ४ इमीपता निकाता (ज्य प्र मंतिहाल १ [संनिद्दिन] बलानी देशे के बीमल निरम का क्ला(ठा २ ३---पत वर) : देवो संभिद्धिभ (कामा १ १ दे— 97 Y) 1 मेनाम रेका सेनिंगमः 'क्वारीर वि करेड बुमस्त्र प्रचेत्रव(? क्यं) (बुच ११) वेहत । . 1) : संप्रत ) (यप) वेद्यो संप्रमा (पिक पि ४१३) मंग्रह है है ४ ११६ हुमा)।

(पाय महाभी १ वे ४६ कुना)। २ वं वह प्रसिद्ध पैन एना सम्बद्ध प्रशोक का पीत्र (दुप्र २ वर्मीव ३७) पुण्क २६ )। बाउ वं विवासी वर्तमान काव (सुना १८४)। स्टब्सेण वि विस्तिती पर्वमान-काल-पाम्बन्दी (विदे २२२६)। संपद्मण्य वि विशेष शेर्ण ने स्वाप्त (**ए**क) । संपद्धक वि [संप्रमुक्त] तंत्रक ग्रेचन, बोहा इस्स (अ. ४ र---पण १८७ सूम २.७» र ज्या और वर्षेत्रं ६६१। एवं १४६)। संपक्षांग र सिप्रयोगी संगय संस्थ (ठा ४ १--पत्र १८७ स ६१४- स्त्र ७२६ टीः क्रम ६७६ भीप)। संपन्नर वेचा संपगर । संग्रहरेक (क्व श 14) 1 संपन्न र सिंपकी धन्तन (मुग्र ४८ समय १४१)। संपन्ति रि [संपर्कित्] सक्तंत्रका संबन्ध (क्या कार्य १७)। संपक्षकास्त र् [संप्रकाम] तारव का एक मेर जो मिट्टी वर्षे एक मिस्र कर राग्तरका ज्ञानन करते हैं (पीप) । संपन्नाक्षिय हि सिंप्रशासिकी चौना ह्रण संपविस्तर वि [संप्रश्लित] प्रक्रिय, वंका हुया, शवाहमा (ग्य ४, १४७) । संपगर एक स्थिम + क्वी करना । संपन्धेत (40 98 84): र्धपगाद वि [संप्रगाद] १ मलन्त यात्रध (क्टर ४४, मुखर ६, १२)। र म्बर्ग्य (क्षम १ ६८१ १७) । ३ स्थित व्यवस्थित (सूच १ १२, १२)। संयोगदा वि सिमगुद्धी यदि यात्रक (क्या १ ४-- वत्र ६४)। संपरमध्या वि सिप्रमुद्दीयो बुद प्रदर्भ वे पृहीत, विरोध मिमान-मृत्य (दय १ ४ संपन्न पत्र [सं+पद्र] १ संपन्न होनाः संपंजिपाञ्च ) द्वं [सप्रजिपात] प्रस्तनः संपंजिपाच ) प्रपोधीन वसस्यार (रेवा रे

बिक्क क्षेत्राः २ विसनाः संयमकः (प्रका

मद्वा)। व्यवि संपन्तिसम्बद्ध (मद्वा) :

संपञ्जक्षित्र दं सिप्रमानिया विस्ता गरन का नवची परकेमाक नास्त्रवास-विकेष (विनेश्वर ६)। संपद्भित्र के संपरिवध = संबक्ति (का १४२ टी. धीपा सेवीच १६८ सूपा 🕶 चनप्र १६८)। संपद्म धक [सं+पदा] १ अल्ड होन्य-मिक्न प्रवर्णी में 'सोपक्ष । २ सिंड होता विकास होता । संपन्ध संपर्वत (दका ११६ यह १६८ वस्था ६)। नक्र. संपर्कत (चे १४ १: दूर १ संपविद्य नि हिं संपन्नी सन्न मिना हम्म मान्य (वे क १४४ छ २६६)। संपश्चिष्ट् यक [संप्रति + तृ ६] क्रर्यश करका तारीफ करना । सपविवासि (सम् २. 8 XX) I संपश्चिम पन सिक्षत + संस्था । प्रति-बायराज् करना, प्रस्कृतेकस्य करना सन्बर्ध वयह निरोध्यक्त करना। श्रेपक्रिसेह्य् (क्व २९, ४३) । ५ संपश्चितिकास (रणा t () 1 संपद्भित्र एक [संप्रति + पद्ग] स्नीकार करना । ध्रेपविकश्वद (म्प) । संपद्भिवर्त्ति स्मे सिप्रतिपत्ति लोकप धंबीकार (विशे १६१४) । संपश्चिमाङ्गा वि [संप्रतिपावित] स्थि (क्त २६ ४६) हवा २६ ४६)। र स्वापित (रच २, १)। संपरियाम एक [संप्रति + पाद्य ] शंगवन करता, प्राप्त करता । श्रेवकिताका (रह है **२२)।** संप्रविष } क्यो संप्रवाहय (1070) संपन्नीहर्य र कन्न) । संप्रभा देखो संपत्रमा (दे ८, ४) । संप्रवाह्य ) नि [संप्रतादिक] स्पैन् संप्रवाहिय ) चीन शब्दनासा नुष्टियवर्ष पराह्मा (और १ ४-नव १२४) पर १२७ दे)। संप्रयास यक [संज + शासय ] वर्षेश

करमा। सपद्मानय (इस २६ १७)।

१ थे नेहन २१७)।

मुक्किमें (उपर्व ४६)।

संपणाह्य । सङ्

संपर्णोक्क्या (वस १,१ १)।

इका १३१ नाट-मुख्य रे)।

संपष्पणान [संप्रतुषा] प्रेरित क्लेक्ट

'प्रकार बंदा निसर्थ प्रमुख्या विस्तोत वासास वर्षे

संपणक ) सक सिंग + नदी प्रेच्या

मेपण्य देवो सेपन्न (सामा १ १--- १४

संपण्या की दि वेबर या बीबर (मिप्टान्स

विश्वका कृतपुर वनका है (के द प)।

विशेष) बनाने का घाटा मेर्डे का वह साटा

संपत्त वि (संप्रात) १ सम्बद् प्राप्त (सामा

२ समाप्ता सामा हुमा (सुपा ४१६)।

संपत्त पून [संवात्र] कुचर पान, गुपान

संप्रमुखिया,

(मुवा ४१६) । संपत्ति की [संपत्ति] १ छम्दि बैमन संपद्धा (पाधा प्रामु १६ १२=)। रसंसिधाः ३ पूर्णि तब बोइचस्त संपत्ती भवित्सई (बियार २ – पण २७)। संपत्ति की [संग्राप्ति] साम, माप्ति (वेदय दश्य पूपा रहे )। संपश्चिमा की वि र नामा हुमारी। नवकी (दे व १४) वश्या ११६)। दिप्पणी-पत्र, पीप्त की पती (वे ८ १८)। संपृतिकथ न [वं]रीज, बनवी (वे ८, ११)। संपत्त्वय ) वि [संप्रस्थित] १ विसनी संपरियत । प्रयाग किया हो वह प्रयास प्रस्मित (श्रीत २१ चन ६६६ तुना १ ७) ६५१ खान्या १ २--- पत्र ३२)। अपरिकटः वहिमारहेहि वहवि ह एनिकार पंतरीवरकारे (? प्यो)वि । वहनि ह मरद निस्ते पुरिसी संपरिषय् कावे ॥" (प्रमादद ६६) । संपर्ध प [साम्रहम्] १ युक्त, प्रक्रित (प्राह १२) । २ प्युत्रा, यव (प्रवि ११) । संपर्त्त नि [संपर्त्त ] दिया हुया, मनित (मद्दा, प्राप्त) । संपदाण देवो संपनाण (ग्रामा १ ८---पन

१५ माचार (१. १)।

संपदाय र् [संप्रदाय ] प्रश्नरं एक उपवेय, द्यान्ताय (संबोध ४३ धर्मर्स १२३७)। संपदावण न सिप्रदापन संप्रदान करक-विशेष 'तरिया करलिम क्या नग्ली सपदावरों (ठा य-पत्र ४२७)। संपवि देखो संपद्म = संप्रति (प्राष्ट्र १२) । संपति देवो संपत्ति = प्रेपति (संवि ६, पि 2 Y) I र्सपभार देखो संपद्धार ≈ संप्र+धारय । बंपपारेवि (शौ) (नाट--मुख्य २१६)। कर्म, संपद्मारीधव (शी) (पि १४३) । संप्रधारणा की सिप्रधारणा नियमहार-विशेष धाराजा-स्वद्वार (वव १ )। संपदारिय वि [संप्रवारिय] विभिन्न, निर्णात ११ जवा विपार १ मक्य, बी× )। (धरा)। संवध्मिय वि [संप्रभूमिव] हुप-वारिव बूगरियाधुमा(कस कम्म माचा२ २ t () ( संपन्न मि [संपन्न] १ संति-पुष्ठ (वय: महा कप्प)। २ संबिद्ध (निपा १ २---पत्र ₹€) 1 संपप्प देशो संपाय । संपयुरम्य पर [संग + सुष्] क्या बान को प्राप्तकरमा । संपद्मन्त्रीति (वैद्या ७ २६)। संपमक एक [संप्र + मृज् ] गार्थन करना माइना साध-पुक करना । संपन्नवेद (सीप ४४) । यह सेपमकोचा संपर्माज्य (ग्रीप याचा २.१ ४ ४)। र्सप्तार **एक** सिंग + सारव | मुल्ह्य करता । धंपमारव् (सामा १ १ २, ३) । संपय वि [संप्रव] विषयान वर्तमान पाएस संपद बिय कावस्थित साइकोहका सब्द्या (विश्व दश्य) । संपर्ध देखो संपर्द (पायः महा: मुता ११०)। संपयह मक [संग्र + पून् ] सम्यक प्रकृति करना । संप्रमध्देक्या (वर्गेर्व १३१) । वहः संपयद्देव (वंचा ८ १४) । संपयह वि [संप्रपृत्त] सम्बद्ध प्रमुख (पुर Y WE) 1 संपया भी [संपद्] १ समुद्रिः संपत्ति, बरनी निमन (स्वा कुमा सूर ३ ६८) महाः प्रामु १६)। २ वाक्तों का विकास

स्तान (वर १)। १ प्राप्ति, श्रीहोबायो जिएायस्मर्सपमा' (वेदस ६६१ वय ६२)। ६२)। ४ एक विधान-की का नाम (छप १ (डि बग्रू संप्रयाण न सिंप्रदानी १ सम्बद्ध प्रदान बन्धी तब्ह देना समर्पेख (भाषा २ १४ क्ष्रा६८ मुगा २६८)। रेक्सरक-विशेष क्तूची-नारक विश्वको दान दिया जाय वड (क्सिं २ ११)। संप्रमायण देको संपदाब्यः श्रद्भको संप्रमायछे (बस्यु १६६)। संपराक्रम ) वि [सापराधिक] धरतय-संपर्धाय र्रे संबनी संपर्धय में इसन्त (का २ १—नत्र ११ सूप १ व, दः अस्य भाषक २२६)। संप्राय वे सिपरायों १ सराय व्यव (सप १ ४.२ २३ वस २०४)।२ क्रोच बावि क्याम (ठा २ १-पन ११)। १ बादर कवाय स्तुत कपाम (सूच १ ६,६)।४ क्याम का जरम (भीप)। १ पुत्र संग्राम सहादै (ए।वा १ ६---पत्र १६७ कुन्न विक्र कदः दश २ १)। संपरिकिथ र् [संपरिकीर्च] एप्रस रह काएक धना एक संका-पति (पदम 🍇 ₹ ) ( संपरिकस एक [संपरि + इस् ] हम्बक परीक्षा करना । संक्र संपरिकस्ताय (संबोध २१)। संपरिक्सित ) वि [संपरिक्षिप्त] केप्रिक संपरिक्षित्त 🕽 (मनः पडम 🕴 २२: स्नामा १ १ टी--पत्र ४)। संपरिका वि [संपरिस्का] पुरस्क प्रति म्पन्य (पडम ७८, १६)। संपरिवृद्ध वि [संपरिवृत्त] १ सम्बन्ध वरि बृत परिवार-पुष्ड (विदा १ १---पव १ उवा भीप)। र वेटिस (सूच २, २, ११)। संपरी एक [संपरी + इ] पर्वटन करना भगता करता । संपरीह (विशे १२७७) । संपन्न (ध्य) घर [ सं + पन् ] या पिछा। संरक्षद्र (पिन) । संपक्षमा वि [संपद्मन] १ संप्रक विका हुमा। २ जो सङ्ग्री के लिए भिड़ सवाहो बह् (एम्स १ १८-पत्र २६१)।

21Y) I

धन करना। ४ प्राप्त करना क्रमधीयमे क्षेत्रके बस्ताकरण्यास्य (महा).

प्रतिनिदेश (एमा १ २-- वत्र वर्ष) । भंपन्सीयय वि भिष्नत्रस्थिती विश्वा धान्धी तरह बावन हुया हो वह 'मुह्तांतर्कावया' (पीर) । संप्रक्रिय र सिप्रियो एक देन महर्षि (1924) ≀

संपद्धच वि सिंप्रस्थिती वस्त कवितः

संबंद्धिक र सिवयक्ती रक्षाप्त (यह भीक रूप राप १८४)। संपर्कत्ति विभिन्नश्चित्र अध्यक्तित नुषक्त हमा (काया १ १ -- पत्र ६३ पत्रम ३२ १६ वर्षते १७ : मूच २१८ वहा)।

रुपस्थिमा मण्डिमीपरि + सूत्री बमा

वन करना । वक् ६५टिमञ्जमाण (माना ( L Y 1): संपर्ता बद [संपरि+इ] बाना, परि करता। संत्रज्ञित (मूज १ १ २ ७)। संपर्य ) यह सिंग्र + चप किपना । संपत्र । बनवदेन, बननवर (धाना न 15 1) 1 सपरेस ५ [सहयश] श्रेश, फैंड (वडर) । सप्रयाग वक्ष [संघ + प्राप्त ] यमन करता,

१, १ टा ६--तन ११२)। हेरू मीप्रयू-\$ (44) p 272 संवसार वे सिमसारी एवरिक शना बच-बाब (धन) । र्मप्रमारगः । विसिद्रमारकी १ सिल-संप्रसारय है एक देशानेवाला (तुप १ २ २ २) । २ वर्धनायनवर्धा (द्यापा 1 2 / 31

जाता । गा संपम्पयमार्था (धाचा १ ६

र्मप्रकृति वि [कदसारित] उत्तर देखा (तूच t ( 14) : श्रप्रेसद्भार [ योगङ] **या**च्य श्राद (वर्षन कर्रा) क्ष्यास वड (स + इस् ] १ क्ल्फ्रे सम्ब देवना विशेषका बहु श्रेणीमध (177 अबदार यक [ श्रीत्र + धारव ] र निपन

a et 1 lang alei letere et i

करता वर्ष वर्ष ११० पूर्वा बाह्य बु

(E 1 5): संपद्दार 🖠 [संप्रधार] शिरुषय शिर्ह्णय (पत्रम १६ २६) चप १ ३१ टी। मनि)। संपदार वे सिंगदारी यद, नवादै (मे ब संपद्दारण न सिंपधारणी मिरनव (बदम

\* (e) : संपद्दाय बन्न [स्त्र + घाय ] श्रीहवा । संप-इतिह (पाचा २ १ ३ ३)। संपद्धि व [संप्रदृष्ट] श्राप्त अनुवित (उत ((2, 1)) संपाध्ये [त] सभी मेखवा करवनी (वे ब रो ध

। संपादभव वि [संपादितपत्र] विसने सम्पा हत किया हो बहु (है प्र २६६८ विशे 11411 संराप्तम वि सिंपातिमी १ अपट क्षेट्र बर्धन पार्टि उर्देशाला जेनू (पाचाः निष्ठ रश युवा ४६६। योष १८)। २ माने-बाला, वर्ति-कर्ज दिशिष्युनंपादमा का तबा कर्ला(माचार १३ ६.२ ३ १ 14)1 संपाइय वि सिपाविती र मायव माया हुआ । २ जिलिय सिकाहूमा (मृति)। संपादप रि [संपारित] क्रावित दिन्न क्रिया इक्ट बंगहराहर्मन (म्ल) । संवाज्ञण वह सिंव + आप ी पन्धे वस्ट

अस्य करम्य । संराज्याद संराज्याति (क्य रथे. यथ रि.म. ४) । भरि बोरास्ट्रांस्वामरे (जाया १ १०-- नप २४१) । प्रयो. अगुप्तारो परं पत्र निश्चि बंद्याग्लेश्यानि (बल ११ १२)। र्मयाना व [संप्राप्तर ] १ वन प्रमात्र होव हर प्राप्त करता के भारत महात बहा मुक्टा क्ष्या (स्रक्षा (स्थ्ये—नव ११) । श्यमद्वारिसियस्त्रीत्रदर मूत्र चत-

बर्शांडरी (स र १--प्प १३ ः याद्य वद [शं+पाइप ] १ तिञ्र करमा, निगता वरता । रे प्रानित बरतू हेता,

मान पराधाना (का ४ ६६) ।

भंतायग वि [भंत्राय है] हे बाब करनराता; 'विभाग्नामयसे शह' (बहर र १)। १

tve ft) i संपाइण म (संपादन) १ निप्तासन (ह ७४६)। २ करला निर्माल (पंचा६ ६६), 'वररवर्तपावशिकर्यक्रमत्तं' (बा ११)।

'संपादिन भगपयो याख वि (व ६व४),

संपादेश (स. १६) । इ. सेपाडशम्ब (स.

संपादन वि सिंपाइसी वर्ग निर्मादन के

को सबो तस्मुप्रदेश संपात्रयी क्षेत्रमा (प्रश

संपादिक वि सिपादिती १ किस विना हवा कियारित (स २१४० तुर २ १७ )। र प्राप्त किया हथा (चप इ. १२४)। १ रत पणित (स १११)। संपायो क्यो संपाला (झ १ १--नव

(# t संपाद (शी) देवो संपाड = व + पावर्। बंदाददि (बाट--राष्ट्र ६१) । इ. संपाद प्राथ (पार-पित्र १)। संशदद्वसभ (खे) । ति [संवपादपितृ]

र्वपादन-राजी र्वपादक (चि.६.)। मेपारिअपर (धी) व्यो संपारअप (ति 246)1

संपाय वं [संपाग] बस्यक्पका- विजय वसमायगर्जुनीमयं (न्र. १ ११६)। १ धेरूच कंपोला सारीयलाखालेकाच्छान बसमियं वि' (मुर ४ ७३; बद्धाः) हे स्पर्व का चुठ निरुषेत्र सारव-बाक्छ (क्या र र---पत्र ६२)। संक तर्गतः (धा ६, वंदा १ ४१) । १ बात्त्वत् (रंका ७ ७२) । ६ पनन दिवन (बस १० १६) मुख १० ₹₹) : भेषाय देवी भेषाध्य (राज)।

संचायम वि [संचार ६] सत्तरमनको (उन इ रेट करा बेहन है हो।

भेरापन रेको संतरत (पुर ४ ३६। पुता t i teti ece aca) i

संपुरुष्क्रण क्षीन [संप्रच्यन, संप्ररूत]

करना । संपासद (पनि) ।

करवाना । संपावेद (छवा) ।

23 (0) 1

संपायणा की [संपादना] क्यर देखों (पंचा

संपाछ एक [सं+पारक्य] पापन

संपाय सक [संभ + आप्] प्राप्त करना।

संपन्नेद्र (भूषि) । संक्र संपष्प (संवेष १२) ।

सेपाय सक [संप्र + आपय ] प्राप्त

संपाषण व [संप्रापण] प्राप्ति नाम (सामा

संपाविक वि सिपाप्ती प्राप्त सम्प (मुर

१ १६--पत्र २४१ पुर १४ ४७)।

२ २२६ सूना १११८ सस्त)।

क्षेत्र संपाबित (सम १ घर्म धीप)।

संपाविस वि [संप्रापित] बीठ वो से जाया यया हो वह (राज)। संपासन नि वि वि की कमा (दे ६ ११)। संपिडण न [संपिण्डन] १ बच्चों का परस्तर संयोजन (पिंड २) । २ समूह (क्रीव ४ ७)। संपितिक वि सिपिण्डित विवशासर किया हमा एक म किया हमा (मीया की ४७) संपिक्स देवो संपेड् = सम + देम् । संपि-नवाई (वसचू २ १२)। संपिद्ध वि [संपिष्ट] विवाहमा (सूच १ ¥ 4)1 संपिजद वि [संपितदा] नियन्ति 'रज्यू विशिक्षो व इंबडेल विस्कृष्टीनपुरस्थिएक (परहर ४ – पत्र १६)। संपिद्धा धक [समिप + भा] पानकारत करना, बकना । संक्र- संविद्यिकार्ण (वि X44) 1 संपीड पू [संपीड] संपीडन स्वान्य (गडड)। देशो संपीछ । संबोदिश नि सिंपीविद्यी स्वाम्य ह्या (पड़क १४४)। संपीणिक वि सिपीणित | पुरा किया हमा (एए)। संपीक्ष पूं [संपीड] संचात समूह (क्य १२, 21) संपीध्य क्ये [संपीका] प्रेका कुळानुमव (क्य १२, १८) १२ १३ ७८)।

प्रस्त प्रम्या (सुभा र १ र सुपा २१)। क्री. मां (बस १ १)। संपुंद्यकी ही [संपुष्छना] महर् समार्थनी (राय २१)। संपुञ्ज वि [संपुत्रव] संमाननीय मावरणीय (पसम ११ ४७)। संपुष्ट वे [संपुट] १ पूढ़े हुए के समाम मंध वाली बर्ल, वो ममान घरों का एक कुसरे से बुक्ता 'कवाइसंपुरवस्तिम' (करा ३) 'बतसंपृष्ठे' (कम्म' महार अबि से ७ १६) । २ संबय समुद्र (सूचार ४, १२३)। फलग र् िफलको शेनों वरण निस्य बँधी पुस्तक दिसाय की बढ़ी के समान कितान (पद प)। संपुद्ध एक [संपुत्य ] बोड्ना बोनों दिस्सी को मिसला । संपूर्ण (मनि) । संपुर्विश्व वि [संपुटिक] बुहा हुमा (साम: २=)। १ १--पा ६३)। संपुष्त्र विसिपुणी दिवस, पूरा (इका महा)। २ न दश दिनों का समाधार क्यमाक्ष (संबोध ६०)। संपूध सक [ सं + पूत्रम\_] सम्मान करना मम्पर्कता करना । यह सपूत्रत्व्य (र्पका **4. ()** संपृजिय वि [संपृष्टित] बर्म्माइत (मद्य)। संपूरण न सिपुक्त । पूजन धरपर्वत (सुध ११ ७ वर्गसं६३४)। संपूरिय वि [संपूरित ] पूर्ण क्या हुपा. 'संपूरियदोक्ता' (महाः सद्याः) । संपेक दु [संपीड] बबाब (पठम = २७२)। संपेस सक [संप्र+ इप्] भेजना। सपेस इ (महाध्यक्ति)। संपेस र् [संप्रेप] प्रेपश मेजना (ग्राया १ (वव ३)। **म-पन १४७)**। संपेसण न [संप्रेपन] स्पर रेको (शाना १ च---पत्र रेप्ट्रं सः ३७६ वटक सनि)। संपेसिय वि [संप्रेपित] नेवा ह्या (पुर एक जाति (पश्य १ १---पत्र ४- दे स, दः te ttx) i क्रम ४२६)।

संपेद्द सक [संप्र + इन्ह ] देवना निरीवस करमा। संपेद्रकः संपेद्रेक (बसक् २१२) पि १२१ भग तमा रूप)। तं संपेहाए, संपद्विता (बाला १२ ४४१ १३ रः सुधार २१ मन)। संपेद्या औ [संप्रेक्षा] पर्याचीचन (प्राचा १ 2 2 4) 1 सफ न [इ] दुनुद, चन्त्र-कमल (दे = १)। संफाळ एक [सं+पाटय] फारना, बीरमा । संफालइ (मृदि)। संफाछी की [रे] पंतित, भेड़ि (रे व रे) । संफास धक [सं + स्पूरा ] सर्व करन छुनाः 'मादद्वार्ड संकावे' (बान्ता २, १ ३ 1 ? ? \* \* \* ? ? ? \* \* \*): संफास १ सिरपर्शी लाई (बाबा का ६४ व दी पार दी है १ ४६ पहि)। संफासण न [संस्पर्शन] इसर रेकोः 'बाग्डावीरिवसम्बद्धसराभावतो' (वंदा १ सिफिट्ट प्रदि] संयोग मेलन (मा १६)। संपूर्ध वि [संपुक्त विकरित (बाह्र १४)। संकृतिय वि [संमूप] प्रमानिक 'रस्युकर तिवरसञ्जसिवविधिमुह्नम्बा' (सूपा २६६) । संव पूं [शास्त्र] १ मीइप्स शासुरेन का एक पुत्र (यास्य १ ४ — पत्र १ ३ और १४)। २ राजा कुमारपाला के समय का एक सेठ (क्रम १४३)। संवर्षक [सम्ब] वज्र इन्द्र का प्राप्तुम (सुर 14, X ) i संबंध सक [सं+ वन्यू] १ कोइना। २ नाता करना । कर्मे संबद्धमञ्जू (वेदम ७२७)। संबंध दूं [संयन्ध] १ संसर्व, संव (भूवि) । २ संयोग (कम्म १ ६१) । ६ माता समाई. रिस्तेवाचे (स्वप्त ४३)। ४ बोजता, मैस संबंधि वि [संबन्धिन्] धननव रवनेवासा (ज्या सम्य ११७) स १३३) । संबर दें [शम्बर] मुन-विशेष, धरिए की

(4 t t):

( 3 )

વશ્યો દ

मंद्रांचल विकित्रांत्री प्रधान वृद्ध (m mu 1-m () 134 () म क्योदा स्ताप्त का)। भर्षक्राज्ञ वह सिर्दर + सूत्र ] प्रया रव दरना वर् । प्रतिसञ्ज्ञान (चादा 1211

श्चान र [संग्राना] का गर्वा

संस्थान विभिन्न की विद्या प्राची

तरह मानव हमा हा वह नुस्तातर्भियाँ

संगतप्रतिमालतो एक देव सर्व

गर्चन्द्र (धराष्ट्र) स्टब्स (सह

देश दल गाव है है।

द्र नर्गाःत (त्या १ र- पन वर्र) ।

ו (ולצו)

(\$44)

मध्य ४४ [धं र ४] जना द्य बसा सरमात्र तुव ११३)। भारत । व्य [ मत पा] क्षमा भीवत्व देशक्त बराधन विश्वत व (1 1) संबंध [सन्दर्भ] करण देव (दरह) । । परपा वह शिय + प्रयो स्वत वस्त

ne er tiertene imet f 2 र र ग्रां-लाध्सा स से व 177 (44 संस्ता र्र[सन्धर] संस्त्र हता सक 4 4 1 4) मध्या दृष्टिमाहि । किन i jen te ber ent gu t 111 A APPARATE PARA ( : + 1) 1 4 (1)

वद्राव { चंत्रको हरत इन्द्र (444 1 ) क्षेत्र विकास स्टूबर्टाइ 174

क्ष्यास्य (११० व्यापः) । तिल

THE THE THE CT

हारेह (बाबा ३ १ व ६) । संबंदि रि [मंद्रष्ट] द्वा प्रमुख्य (सत ((1 1)) मंग्राध्य [र] कथी नवता करवती (रे € ₹) s मेशस्त्रकारियं विद्यालया विकास ल ब्लिश स (६ / स्स्र लि £14)1 मंत्राह्म हि मिर्गाहमी १ भगर, शेर, वर्ष्य पर्दार उपनेशाना जी (पाना, रिह २४ इस ४६१: योद १४६)। रे जान-र वा चीत्रको शिरुद्धसम्पास स्व क्ला (काका २११ ६२ ११ 11)1 स्याद्वीर स्थिति हो बारा क्या ह्या । रे वि'क्त विशाहन (चीर) । मंत्राहव वि [ि प्र हा] क्रिका विश्व विका [ T with That ( g) t भंगाप्रव दृष्ट भित्र जात्र विषय उत्तर क्षत वरता । वसक्ता इसक्राति (दन te te fet e) ende unterent

(~# t te-# tet) 1 ##

क्ष्मण्याच्या वेश विदेश वेश चुक्र स्टीवी

र्वाचान विभागत है। स्वत्रकार्य

4 TT47 | \$4.1 TEL 45 444

iftteifat th-titt):

शचन्द्र हि [बीइक्ट] ब्रह्म दुव दुव-

1 1 mmf . u u '2)1 m2

418 44 [4+777] 112

eralmerer trarele

(17 tt 11):

£1)

संप्रता र् सिंप्पार निरस्य निरुप (पान

संपहार र् [सद्भार] युद्ध, नहार्ष (ने व

मंन्द्रारम मान्यारमी भरवर (व्यव

सरहार हर [स्त्र + पाप्] रोहन । सा

१६ २६ उत्तर ११ छे पर्या)।

को प्रयो सानुष्यार नतायो । हारवा (प्रव tvर दी) । मंपादन व [संबादन] १ निमास (व ७४६) । १ करता जिमीस विकास १६). 'परायमंत्रासीयवर्यनवस् (स्य ११)। संपादित्र वि [संपादित] र निवासिय ह्या, स्थितीत (व २१ ८ वृर २ १०)। र प्राप्त किया हमा (बर इ. ११४) । १ श्च वर्षात्र (इ.२११) । मंदाना रंगो संपाधा (ध १ १-ना 1(01) संपाद (धी) देखों में इड चर्च+ पास्त्। बंशर्वेद (बाट-शह ११)। हः संधर ष न (शा-(रह १०)। मंत्रास्थ्य (छो)। वि सिरवासीया नेतारवन्तर्भ स्वताद्व (दिव ०) । मेर्चाइअवर (धी) त्यो संयाद्वत (ग tat) : भेराय है [भेराय] इध्यहत्रकः ही है क्षाप्तावस्तुन्यवर्ते (तुर १ ११६) । र नंदन्त बंद्रांका बारीरकटायालेयालवंग-यर्शनमें ति (बुर / १) शहर) हे मार्ने erng, ferde eine wern jeret 2-17 (2) | 114 HES (41 1 44 t 48) | 2 meer (ver o at) 1 5 थनन, द्वित (उत्त हरू, ३६ व हेन 111 मंचर रेश मंचना (घर) । भवादम विशिव्यक्त स्वरं क्य 13C att ett the

thata te [thank] t win ecent

E-3 60(F-11 (30 2 52))

वेशकार्या वस्ता (१९४)

1 141 458 1 11

It The heavy Cit ( als & s) + g

वन्नरिहर्य, संपादेइ बरमामरहाइय' (क्यू)

'बरावेदि मरस्या धाले वि (न १०४).

संस्तीय (स. १६) । इ. संपादणस्य (स

संपाइम रि [संपार्ड] वर्ता निर्मता च

यया हो शह (राज)। संपासंग वि वि विकंतम्य (रेट ११)। संपिष्ठण न [संपिण्डन] १ हम्बों का परस्मर संयोजन (पिंड २) । २ समूह (ग्रीम ४ ७)। संपिंडिश वि [संपिप्डित] पिएडाकार किया हुमा, एक प्रभात हमा (भीपानी ४७ चल)। संपिक्त देवो संपेष्ट् = संप्र + रेम् । सपि नवदै (वसमू २ १२)। संपद्धि [संपिष्ट] पिशा हुमा (पूप १ संपुध सक [ सं + पूधव ] सम्मल करना, X =)1 धान्यक्ता करना । संक्र सपूक्षकण (पंचा संपिणक वि [संपिनक] नियमिक 'रण्डू < w) I पिरिको व देवका विवुद्धक्षेपकुणस्मित्तव संपृत्रिय वि [संपृत्रित] प्रस्पवित (महा)। (क्या २,४-व्य १३)। संपूर्वण न [संपूजन] पूरन धन्यर्पन (पूष संपिशः सक [समपि + घा] पान्यःसन हो १ ७ वर्मेस ६३४)। करता, रक्ता । संक्र. संपिद्दिशाणं (पि संपूरिय वि [ संपूरित ] पूर्व किया हुन्छ 3=3) i 'संपूरिनशोहका' (महाः सरा) । संपीद रूं [संपाद] संपीदन बदाना (पडड) । संपद्ध र् [संपाड] दबाद (पठम ८ २७२)। रेवो संपाछ। संबोहित नि [संपोहित] स्वामा ह्या संपत्त सक [संप्र + इप्] भेजना। सपस्र (बरह १४४)। (यहा सवि)। संपेस र् [संपेत] बैफ्छ नेबना (छामा १ संपीजिञ्ज वि [संपीजित] कुरा किया हुमा ; द—पत्र १८०)। संपीत र् [संपोड] संवात तमूह (उत १२, संवेसण न [संप्रेपम] कर देशो (शामा १ ₹1)1 द---पत्र १४६। स १७६ यज्ञ भवि)। संपीख भी [संपीडा] पीड़ा, दुःबानुगव संपंतिय वि [संप्रेपित] येज हुमा (तूर एक वार्ति (पराकृष १ --पत्र ४- दे ८, ६)

26 222) 1

**१२१५ घार १८२४ प)**। संफास 🖠 सिंस्पर्शे स्पर्ध (प्राचा स्प ६४८ टी पण र टी। हे १ ४६। पडि)। संफासण न सिंस्पर्धनी स्मर देखो 'घाखानीरिमधकामणुगानतो' (पंचा १ संफिट्ट पूँ [क्] संयोग मेलन (सा १६)। संफुद्ध वि [संफुद्ध] विषयित (याङ १४) । संफूसिय वि [संसूष्ट] प्रमानिक 'दश्लाकर नियरसफुसियरिसियुग्मता' (मुवा २६६) । संब ९ शिम्ब र भीइप्ल बसुरेव का एक पुत्र (सामा १ ४ — पत्र ३ और १४)। २ राजा कुमारपास के समय का एक सेठ (इम १४३)। संव पुन [सम्ब] वज्र स्त्र का सामुब (पुर 14 X ): संबंध सक [सं+ वन्ध्] १ जोइना। २ माता करना । कमै संबद्धसङ् (बेह्म ७२७)। संबंध र् [संबन्ध] १ संस्वं, श्रंग (स्वि)। २ संयोव (कम्म १ ३१) । ३ नाता समाई रिस्तेवाधे (स्वप्त ४१)। ४ मीजना, मेव (वय ३)। संबंधि वि [संबन्धिन] सन्बन्ध रखनेवासा (ज्याद्र सम्म ११७३ स १३१)। संबर पू [शम्पर] मुक्तिकेव इच्छि की

रूप ४२६) t

CN.

(44 15 10 15 (20 ac) 1

<b>■</b> };;	गर्असर्माएकश	संबद्धसंभव
संबक्ष पुन [सन्बक्ष] १ पारोय, रास्ते में बाने का योजना 'कनाश' विय पानेवारीको मिनद कवारी' (सन्बत्त ११० पारा, पुर १६ १ दे ६ २ तः महा जिल पुरा १४)। २ एक नाकुमार हैव (पारान)।	स ४८६। पूच १ २, १ १ वे ७६)। सङ्ग संबुरममाण (याचा १ १ १)। संबुद्ध वि [संबुद्ध] बानग्रस्य (ज्या यहा)। संबुद्ध की [संबुद्धि] बान, बोच (सरस	संभणित्र वि [संभणित] कांक्त, उक्त (रिप)। संसम एक [सं+भ्रम्] १ परिष्ठ- भ्रमणु करमा। २ पक्- पस-बीत होनाः कस्कृता। वक्त संभमेत (पि २०४)।
संबंधि केवो सिंबाहि = शिन्तिव (धाना रः ११४)। संबंधि शुद्धी शास्त्राधि हुण-निर्देश देखा का पेत्र (धार २ २६४) व ४०)। देखों सिमांडि ।	१६)। संबूध पूं [शस्युक] क्व-पुष्टि, तुक्ति के मास्तर का वय-बंदु-क्रियेव (दे व १६ क्वम)। संवोधि की [संवोधि] धाम वर्ग की प्रास्त	संसम पुंसिन्नमा १ सारण 'प्रममो मामणे प्रमाणे व (पाप) । २ ममः वनस्त्रहर बाकः 'पेबोदो प्रममो तमा' (पापः प्रायु १ ३३ पद्मा) । १ करमुक्ता (मीरो । संभर सक सि+द्मी १ बास्त्र करणः।
संबाधा देवी संबाहा (यदन २ वर)। संबाह एक [सं+ बायू] १ पोड़ा करता। २ करता। चली करता। संबाहरता। (लिहु १)।	(बनंसे १९६९)। संबोध् सक [सं + बांच्य ] १ समझाना कुम्प्रमा । स्थासन्बद्ध करमा १ विक्रपि करमा। समोब्रह्स संबोद्ध (व्यक्ति महा)।	र पोषण करना। व बंदेय करना संकोत करना। वड्ड. संसरमाण (दे ७ ४१)। बंड. संसरि (बन) (सिन)। संसर डक सि + स्मृ] सरण करना, वह
संबाह दुं [संबाज] १ नपर-विशेष व्यक्ती व्यक्तरण भागि चारो वर्जी वी प्रमुख करती हो बहु स्वहर (बस्त ६ १६)। २ गीहर	क्ष्मकः संबोदिकामाण (यामा १ १४)। इ. संबोदिकामा (अ.४ १—यत्र १४१)। संबोद १ [संबोद ] कल बेम बमम	करना । चंचरेड, बंधरीमी (महाः ति ४४४) । बड्ड, संसरंत, संसरमाज (ख रहः दुवा १९७) वे ७ ४१) । इ. संसर्विक संसर्वित (बस्तो १ । दर १६० वे) ।
चंत्रमा बहुने कुन्नो दुरस्तकमा घवारायो स्वाययो (भाषा)। १ वि संकीर्ण छक्राः चंत्राई पंक्तिर्णं (बाय)। संबाहण न [संबाधन] वेगो संबाहण	(धारन २)। संबाहण न [संबोधन] १ उत्पर देखो (विसे २६६२: गुज्ज १ १: विस्त ७०३)। २ धानम्बर्ग (स्वयं)। १ विजयि (ग्रामा १	संभएज न [संस्मरंज] स्वष्ण बाद (व २२२ जासा १ १ — पत्र ७१ वे १६७ वनकु १४)।
(धावा १ १ ४ २)। संबादण की [संवायता] को संवादणा (धीरा)। संबादणी की [संबादणी] विचानिस्टेव (वसम ७ ११७)।	६पम १११)। संबोहि देखो संबोधि (दन द्व १७६ वे ७६)। संबोहिज नि [संवोधित] १ धनमध्या इथा (संवे ४५)। २ विज्ञानित (छाना १ ८	संभारता की [संसारणा] उत्तर देखों (वर्ष १६ दी)। संभारतिया वि [संसारित] यह क्यां हुया (वै ११ कुंब ४२१)। संगरिक वि [संस्मृत] वाव किया हुक
संबाहा की सिंवाचा र पीका (ध्यवा र x x २) । र संव्यवंद, चली (विलूत) ! संवाधिय वि सिंदाधिय र शीका (स्व t x, र t) । २ वेको संवाधिय	पत १११) । संभंत वि [संभान्त] १ प्रेत नवहामा हुम्म नरत (कंत १०० के म्या, नवह) । १ पुंत प्रथम नरक का पोकर्ता तरकेनक- तरकस्यकन्दितेय (वेसेल ४) । १ त. कर्य,	(सक कात १२)। संसक्त कक [सं+स्तु] यह करणा। संसक्त (कप पूर्दश्रे)। कर्म, सन्नतिन्वर्थ (रुवाव)। बहुद्ध संस्क्ति (सर्प) (स्व २१)।
(धीरा)। संपुक्त पुंशिस्त्रकृतः र तंत्र (साथ २	संभितिय वि [सीझान्तिक] संग्रम से बना इ्या (वन १६ १वन ७६)।	स्थान यह [सं+मळ] १ तुल्ला इनको में 'पोलकु'' । रामः बान्तव पायमा होना । संस्था (प्रीः) ' पोलकु' म्ब राम्न' (प्रमाण राष्ट्र) । तोः संसर्धि (पर) (स्मर १) । संसर्धि के हि संसकी १ तुरों (१ ए वर १) र दुरुष, रारनुष्क के ताल सम्ब को मानो करनेताली के (हुना) ।
		and account at (Ball) (

संबुद्धाः वकः [सं + चुप् ] वनकतः, द्वानः । संसाध वकः [सं + मण् ] कद्याः। शहः. संसाव वकः [सं + मृ ] रे उस्तवः होताः। सन्नाः। सहन्त्रकः, सहन्त्रकः सहन्त्रकः संवत्रकः होताः। सम्बद्धाः

१६६ स १० विने २६३)।

संभिन्न न 🛐 पापात (गउड ६३४ टी) ।

संभिय वि सिभूती १ पुट, बार्यवसमियाँ

(मुख १ ६, ६) । २ सस्तार-पूज, संस्तृतः

'बहर्ष-गरसंदिर (सामा १ १६--पत्र

मेन १ शिम्बी चित्र शहर (मग्र २४)

साम १६४ सनु १४ )। २ धरण का एक

मुम्ह (पत्रम ५६ २)। १ एन्स-निर्देष

१६ मीर)।

ar

वाता बुद्दाना (दे ब, ४) ।

82)1

(ति ४३६) काल भवि)। बहुः संभयेत । (स्रा ११)। इ. संसब्ध (या १२ मूपनि

संमय वृ सिमय] १ बलांत (महा बन हे ४ ११४)। २ सेनावना (मित्र)। १ वर्तमान धरमाणी कास में जात होसरे जिनदेव वा बाम (सम ४६ पडि)। ३ एक पैन मुनि जो

पूसर बामुरेन के पूर्व-कन के पुत्र में (परम २० १७६) । ६ इसा-विधेव (बीप) । संभव ह कि प्रवय-क्या प्रमृति वे होने-

संभय (घर) देवा संभम = बंधम (मनि)। संभवि नि [ संभविम् ] निस्ता सम्मर हो

बद्ध (पंच ५, २६ मास ३१)। संभविय रेपो संभज (वेदव ११६)। संबच्च रेवो संभय = र्र + भू।

संभावय म [संभाव ह] युवरात का एक प्राचान नगर (राज)। संभार एक [सं+भारय ] नवामा धे

संस्तृत करना वासित करना । संगारेक, संगा-र्शंत रामाचे (लामा १ १२--पत्र १७३, १७६)। इह संभारिय (सह १६६)। प्र. संभार्यग्रज्ञ (लख १ १२)। मंगार वृ [संभार] १ बपूह, बरवा 'उल्.व-चेम्बेमारमञ्जूषार्थं करार्यं रायां (उर ६४८

क्षे भारक १३)। २ वकाता शाक मारि में क्रवर राजा बाता मन्द्रजा (कान्य र 25-44 (25): 3 Tite E E4-844 (बरहर १ - पत्र १२)। ४ वस्त्रक्य क्रमें का रूप (गूप २ ७ ११)।

मेभारअ वि [संस्मृत] याद क्यि हुम (वे tr tt) i मेमारिक रि मिरमारित । यह क्यम हुन (दाला १ १—वन ७१: बूर १४ २३४)।

र्गनात पर [ सं + भारत् ] प्रेयतम् । वंगलाः (मांद) । मंभाव ([मंभाव]कोत्र करावतः 'र्जन्य

मुर्गाम या न प्रदर्शन श्रापश्चानार्थश्रीवर्षे क्यमध्ये बाद राज्येचे बाद्ये कार्य, व बर्जार

बाह रशा ब्रं व न्याद्या (न्य देर

संभाष घक [ लुभ ] सोम करना धासकि करना। संबाद (दे ४ १४३ वर्)। संमायमा की [संभाषना] सनव (वे = १६ संभाषि वि [संभाषिन] विश्वना संबन हो । बह (या १४)। संभावित्र वि [संभावित] विवरी संगावता को नई हो वह (बाट-मिंड १४) । संभास सङ [ सं+भाय ] बाउबीट करता, बानाव करता । हु संभासमय (तुम (X15) संभास र् [संभाप] संभाप वार्धानार (बन प्र ११२ सबीच २१ एए काम

नुस ११६, ५/२)।

(पीर) १

पारअसरमहण्यवा

संभाव मक [सं + भाषय ] १ संभागना

करता। २ प्रमुख सगर स देखनाः 'न

रामाबरि धारपेहैं (मोह ६) संगादिन

(सक्य ४) सम्मानेहि मोह २६)। कर्म

संभागीर्धाद (शी) (नाट-मुख्य २६ )।

बच संभावजंत (बार-सङ् १६४)। सङ

संभावित्र (बार--राष्ट्र ६०)। इ.

संभाषणिञ्च, संभाषणीय (उर ३६६ क्र

(एए)।

स ११ मा २३)।

संगासि वि [संभाव] संग्राण 'संबद्धि-स्क्रापुद्धि (कास)। संभासिय रि [मंशापित] निषके साच राधास्त नार्वातार दिना क्या हो बह (म्हा)। संस्थित न [संभइन] पाराड (परर)। संभिना , रि [संनिम्न] १ परिपूर्ण (पर माध्य र ११०)। २ विचित्र सूत्र, इय ६म (देशेप १४१) । ३ म्बल । ४ सिन दुस सिच—े <sup>भ</sup>रामा (पट्टा २ 1—पत्र ६६) । ३ स्टिंड (स्पर् १ १) । साज

रिंटित ०१] समस्पित्स हता देव भी दान हम की लगुका

संभासम्म न [संभाषम] क्रार देवी (स्थि)। संभासा हो [संभाषा] संभाषण बाउपीत

दर घोर प्रका

(तिव) । परिण हो [ गृहियो] केंग्रे वार्वेडो (मुचा ४४२) । संसद सर्वास + सूत्र विस्तर भीवन

करना, एक मध्दती में बैठकर भीवन करना । संपुरः (भ्य)। हरः संनुजित्तम् (गुप २ ७ १६ हा२ १--- वर्ष १६)। संनुबना 🚨 [संभोजना] एक्ट मानत-म्बरहार (र्वन्)। संनुकृति [रू] दूर्वन यन (रे व ७)। संभूभ वि [संभूत] १ व्हान संगद (दुरा ४ ६ ३ महा)। २ वू. एक दन मृति

या प्रथम बानुसर के पूर्वतमा में पुर ने (सम १४६ पढम २ १७६)। ६ एक प्रतिद्व वन नहीं वा स्पूनमद मूनि ६ पुर वे (पर्मीव १८० सार्चे ११)। ४ व्यक्तिनाषक मान (मरा)। व्याय पू [विजय] एक देन महित (कुत्र ४३३ विसार १) । संसद्ध भी सिन्ति । स्वति (पाप १० रक्षा घर बुर ११ ११२ वर स्ता। २ थेत रिमूर्ति (नार्थ १३) ।

संभूम सर [ सं + भूप ] याहा दरता । समुद्राः (सस्य) । संभाध र् [संभाग] गुन्स धेन (क्या ८६० ६ए)। देशे मंजपाः में भोइज वि[क्षीभागि है] बनाव गावाच से ब्बिट्डान होने के प्रारण विषद्भाव बाय-

राज मारिका स्पत्तरहो प्रके देशा काथ (पायमार पंचार ४१ द्वर)। संभाग र् [संमात] बनल शाबाबादेसके सपुधीका एका ध्येतरहीर-भारत (क्रम

0):

संबुद्ध वि [संबुद्ध] बान-प्राप्त (ज्ञा: मदा)।

संबुद्धि औ [संयुद्धि] बान, बोन (यरफ

संबुध पू (शस्त्रक) वन-तृष्ठि, तृष्ठि है

शास्त्रर का <del>पद-जंतु-विशेष</del> (वे व १६

संबोधि की [संबोधि] चव्य वर्ग की प्राप्ति

संबाद एक [सं+ बाधय ] १ ध्रमम्मना

इयाना । २ मानन्त्रश्च करना । ३ विक्रांति करता । सर्वेद्वय, सर्वेत्वेद्ध ( मनिः नव्यः ) ।

क्वड. संबोडिक्समाण (खादा १ १४) ।

संबोद्धेश्रम्ब (अ.४.३—पर २४३) ।

राक्स पूर्वा १ रा नेहन ७७४)। २

14) |

बतश) ।

(वर्गसं १३६६)।

(ब्राह्म १)।

संबद्ध-संघव

(पिन)।

'संबोधो संमनो वास' (राम प्राप्त १ स मक्ष्र) । १ फलुक्ता (धीप) । संमर दक [सं+ मृ] र गण्ड कला।

२ पोक्स करना। ३ संबोध करना संकोष करना। सम्बद्धां स्थारमाण (वे ७ ४१)। एंड. संभरि (घप) (मिम)। संभर सक [सं + स्यू ] स्परक करन, गर करमा । संबरेद, संबरियो (महा) पि ४३३)। नक्र. संभरंत संभरमध्य (ग १८) पूर्व

११७ के ७ ४१) । इ. संसर्विक संभरणीय (बम्बो १० का १३० टी)। संभरण न [संस्मरण] स्मरक मान (न

२२२ छामा १ १--पत्र ७१ वे २६३ क्दब्र १४) ।

संमरणा 🖈 [संस्मरणा] छनर रेको (न्म X\$ 41) 1 संभगविश्व वि सिस्मारित । बाद कवना **इमा (दे १६, द्वम ४२१)** ।

संगरिश वि [संस्मृत] यह किया हुण (नगर-काम १२)। संसद्ध तक [सं+स्यु] याथ करवा। संपन्नद (क्य दू ११३) । क्ये, सम्बन्धद

(क्ल्या र )। कहा संश्रक्ति (स्प) (पैंक ₹€ )1

संभक्त धक [सं+मक्र\_] १ दुलस≭ पुनराती में 'सामान्यू'' । २ सक. सम्मनन धानवान होना । संमन्द (व्यवि)ः चीवनर् यह पहन्त (समात्त २१७) । तक समिन (यप) (पिंव १८६) । संभद्धी की [दे संभद्धी] १ इसी (दे

वन १) । २ बुट्टनी, पर-पुरुष के साम धन्य की का बोप कराने राली की (कुमा)। संगद धक [सं + भू ] १ उरपन होना। संगायका होता. घर इट रोसन होता । संघनक

संबद्ध सक [सं+वाघ] १ पीदा करना। (Frg. %): 'संगाई संवित्रक' (पाप) । (याचा १ १ ४ २)। (पोप)।

धामन्त्रस्य (धक्क) । ३ विकरित (स्नाबा १ -- 98 1X1) I संबोद्धि देखो संबोधि (ज्य प्र १७६, मै ७३)। संबोधिक वि [संबोधित] १ सम्बद्धमा हमा (मति ४०) । २ निवासित (ग्रामा १ ४---पत्र (६१)। संगंत वि [संभाग्त] १ चीत, व्यवपा इस्प परु (उत्त रक्ष भ सहरू परुष)। ९ पून प्रयम नरकता पांचना नरकेन्द्रक-बरक्तमाम-विशेष (दिनक्ष ४) । ६ म. कह, बनस्त्रहरू (महा)। संभविको (संभानिको समय, अध्यक्ता ना एक मा<del>क्तिर---नरश</del>ूचल का पूत्र (पत्रव ४३ १) । ३ एक पांच नानाब (राज)।

(मन १३ १ — पत्र ७ ६)। संबंदिय वि [सांध्रान्तिक] संध्रम से बना [मा (वन १६ १-- पत्र ७ ६)। **(1)** संभिषिभ (पिय)।

संभग रि [संभान] पूर्वित (उत्त १६, संभण एक [सं+भण्] नहुना। संह.

संबाहणा 🕸 [संबाधना] वेको संबाहणा संबादणी को [संबाधनी] विद्यानीनेव (पत्रम ७ १६७)। संबाह्य की [संबाघा] १ धेड़ा (काबा १ १, ४ २) । २ धंन-वर्देद, चनी (विचू १) ।

प्रतासमी (पाचा)। ६ वि संदीलं सकराः संबाह्य न [संबादन] देवो संबाहण

संबाह पे सिवाधी १ नगर-निकेश बड़ी बाह्मस मानि वार्थे वस्त्री की प्रमुख वस्त्री द्वो बहुरुद्वर (उत्त ३ १६)। २ पीक्ट संबोध प्रसिद्योभ दिल बोच धनम 'बंबाहा कार्व पुरुवा बुरहरूका धवारायी संबाह्य न [संबाधन] १ अनर देखो (विसे

संबद्धधा देवो संबद्धा (पदम २ १) । २ वनमा अभी करना। सेनाहरूना

संबंधि पूंडी शास्त्रकि दुन-विरोप, रेमक कार्यक (सुर २ २३४० व १७)। देखी सिव्यक्षि ।

संबक्ति देशो सिंबद्धि = किनीब (प्राचा २) 2 t x)1

१६ १० दे६ १ व्यामा प्रति गुरा **१**४) । २ एक नासकृषार देव (भावन) ।

बाते का घोजक 'कलाएं जिय परहोयसंबर्ध विकार नमार्खें (सम्पत्तः ११७ पामः, गुर

संबद्ध (न (क्रम्बद्ध) १ वस्त्रेय, एस्त्रे में

때감독

संवादिय वि [संवाधित] १ पीवित (पूप १ ६, ९ १०)। २ वेशो संबाधिक (बीप) ।

मेलुक १ शिम्पुक] १ श्रंब (स.४.२— यत्र २१६: तुषा १ : १११) । २ सम्ब्र

बनन निज्ञान्यमी (बच १ ११)। देवी संयुक्तः मंद्रम्य रह [ मं + पुष् ] तपमन्त, हान

नामा । समुज्याः सनुज्यति सनुज्यम् (बद्धाः ।

[बहा को [ (क्यों] शंच के पावर्त के

(लामा १ १४ पि १६१)।

संस्कृत वि सिरमुक्ती पन्धी उर्पर यहा

करनेवाना (ग्रामा १ १८—पत्र २४ )। संरक्ष्मण न [संरक्षण] समीवीन पत्रण

संरक्तम देनो संरक्तमा (उत्त २६ ३१)। संस्थान सि+राष्ट्रीयकानाः इ संर्याद्यस्य (कृत्र १७) । संदंध सक [सं + रूप ] रोक्ना घटकाना। कर्म संबंधित्रमह, संस्थादह (है ४ २४०)। भवि संबंधिहरू संबंधिमाहिद (हे ४ २४०)। संसद् र् [संरोध] मञ्जान (कुत्र ४१ पन , ₹₹ 1 संरोहकी की [संरोहकी] बाव को सन्धने वाबी ग्रीपवि-विशेष (मुपा २१४)। संबद्धत पद [ सं + छश्रय ] पहिचातना । क्में संबन्धीमदि (शी)- (बाट-नेसी ७०)। संख्या वि सिख्यती सवा हवा संयुक्त (मपा २२१)। संस्थितार वि [संख्याति] संबुद्ध होनेवाला पुरुनेशना (धोव १०)। संबन्ध वि [संबंधित]संगापित एक क्षित (मुर ३ ६१ मुपा १२६ १०६८ महा)। संख्या नीचे देखी। संख्य दक [सं + छप ] धंमाक्या करना । संसवद्, संसवेषि (महाः २व १४६)। वहः संख्यमाण (ए।या १ १--पत्र १३) क्या) । इ. संख्या (स्वर) । संख्य प्रसिद्धायी संभावता नार्धानाय (मुधनि १६)। संद्यव वक [मं+स्रापय ] बाहबीत करता । संनाविति (कम्प) । संख्यप देनो संख्य = संसाप (चीर से २ रेक्षः व्यव ६) । संद्र्यप्रभाव [संद्र्यपित] १ उक्त कवितः। २ महानामा हुया (शा १११)। मंतिद्ध वि [संदित्य] संपूर्क(संगेष १६) । मंद्रिद वड [सं+द्रिका] १ निनें। करता। र सर्वेर यहिका स्रोक्स करता इसकरना १ विकास । ८ रेवा करना । श्रामिद्वित्रमा (भाषा २, १ २ १)। श्रामिद्वे (क्य ३६ २४६) दश व ४ ७) । बंद्र मंसिद्धि (क्य) ।

संस्थितिय वि [संस्थितित विसने दश्यमी ] से राधैर प्रादिका शोपरा किया हो वह (E (1 )) संक्षेत्र वि सिकीय संस्थानपुष्ठ (एवि 2 4)1 संख्रीण वि सिंब्रीनी जिसने इनिय तथा क्याय धारि को काबू में किया हो बहु, संबुद्ध (पत्र ६) । संद्रीगया 🕰 [संखीनता] वन निरोप राधैर धादिका संयोजन (सम ११ नव २८) पव 4) ı संखंब एक [सं + सुद्ध ] कारणा । कवह संजंबमाणा मुख्यहि (भाषा १ १ ३ ६) । संक्र संबंधिया (न्स ४, २,१४)। संक्षेत्रणा श्री सिक्षेत्रचा राधेर क्याय मादि का शोपण मनशन-वत से शरीर-स्वाव का बनुद्राल (सह ११६ सुपा ६४०)। "सुभ न ["भृत] धम्प-निशेष (शृंदि २ २)। संदेश की [संब्रह्मा] कार देवी (उत्त १६ २४ ३ पुता ६४=) । संख्रेभ पू [संख्राक] १ रहीन प्रवर्गकन (प्राचार, १६ राउत २४ १६ पर **११) । २ इ**टि-पात इटिप्रचार । ६ जगत् संपूर्ण तोक । ४ मकास (राज)। १ वि र्षाष्ट्र-प्रकारकाला जिस पर रृष्टि पढ सकते। हो बहु (उस २४ १६)। संक्षेत्र सर्वास [सं+ छोड्] देवता। इ. संख्रोकणिव्य (नूष १४१)। संबद्ध्यर पु [संस्थाविकर] व्यक्तिकम विपरीत प्रश्नेन (उन)। संबमार् [संबर्ग] १ पुलन, पुलाकार (वय १३ जीवस १३४) । २ द्वणित विसम्ब दुलाकार किया गया हो बहु (राज) । संबद्धर दूं [संबत्सर] वर्ष पास (उन हूं २ २१)। पश्चिम्र्यम न "प्रतिस्त्रसन्ह्री वर्ष-पाठ वर्ष की पूर्णका क दिन किया वाता बरसर (छाया १ ८--पत्र १३१ मयः यंत्र)। संपन्छरिय 🖠 [सापासरिक] १ क्योजियो व्योदिय राख का विद्वान् (स १४ पूत्र १२)। र नि संत्रकर संबंधी वार्षक (वर्णीत १२६)

परि)।

618 संबच्धास रेको संबच्धार (हे २ २१)। संबद्ध वर्ष सि + वर्तेय ी १ एक स्थान में रवतः । २ संकृषित करना । संबद्देश् (मीर)। संबद्धेञ्जा (मापा १ द ६ ६)। संद्र संबद्धता(अ२ ४---पत्र ८१) संबद्धिता (भाषा १ = ६ ६)। संपर् र् [संवर्ध] १ पीका (जा २६६) : २ भय भीत सोपों का सर्ववाय-समृह (उत्त १७) । ३ बायु निरोप दुर्ग की समाने बासा बागु (पराख १--पन २१) । ४ मनवर्षेत (ठा२ १---पत्र ६७) । ४ परा। ६ नहीं पर बहत गांधों के लीम एकतित हो कर रहें वह स्थान, हुमें धादि (राज) । दशो संवचः संबद्धम वि [संबर्वेकित] बुद्धन में चंत्रा ह्मा (चर द १४३) । संबद्धम पू [संबर्तक] बायु-बिरोप (सुपा ४१) । रेका संपद्ध्य । संबद्धण न [संवर्तन] १ आहो पर धनेक मार्ने मिसते ही बहु स्वान (खाया १ २--पत्र ७१)। २ मपनर्तन (विसे २ ४१)। संपट्टम र् मिनवेंकी मनवर्तन (क्ष. २. १---पत्र ६७) । देखो संबद्ध्या । संबद्धिअ वि [दे संवर्षित] संदृत संदोषित (केंद्र १२)। संपट्टिश वि [संयवित] र विश्वेशूत पुत्रवित (वन १)। २ तंबतं-पुद्धः (इ.२.३.)। समब्ब यह [सं + पूर्य ] बहन्त । सबस्दह (महा)। संबद्धम देवो संबद्धण (यांच ४१) । संविद्दान् रि [संद्वा] बदा हुया (महा) : संपद्धित्र वि [संपीयत] बदाया ह्या संबच चुं [मंत्रत] १ प्रतय काल (म १, २२)। २ बायू-विदेशः 'पूर्वत-सरिसं संबद्धशाय विकास्त्रक्त (इत १६) । १ मप । ४ मप वा यक्तिति विदेव । ४ कुछ-विधेष, बहेहा वा देव । ६ एक स्मृतिकार कुनि (वंधि १ ) । देवा संबद्ध = वंबरी ।

संबच्चम देखो ६ पट्टण (हे २ १ )।

et.	पा <b>इ</b> ञस <b>र्गरण्य</b> ो	संगोगि—संरम
क्ष्य स्थापित है को संभोद्रण (द्वा रण्य) । स्थापित को संभोद्रण (क्ष्य र म्याप्त को संभोद्रण (क्ष्य र म्याप्त को संभोद्रण को संभोद्रण को संभोद्रण को संभोद्रण को संभोद्रण को संभाद्रण (द्वा र क्ष्य र क्षित र र क्ष्य का के स्थाप के	संवाहोनो (श्रीण क्या वहण क्या ति १००) । प्रति संवार्णयि (ति १२०) । यह संवार्णय संवार्णय (तृता २२४ । यह संवार्णय संवार्णय (तृता २२४ । यह संवार्णय संवार्णय (यूग २२४ । यह संवार्णय संवार्णया (यूग २२४ । यह संवार्णय संवार्णया (यूग २४४ । यह संवार्णया (यूग १४४ । यह प्रता । यह स्वार्णया (यूग १४४ । यह प्रता । यह स्वार्णया व [संवार्णया (यूग १४४ ) । संवार्णया व [संवार्णया व [संवर्णया व	समुचित्रम हि [संमुच्छिम] बी-गुल है समाम के दिना करण है हैरेना। माठी (भाषा ठा र. १—पत्र ११४ तम १४८ से २१)। संगुच्य हि [संगुच्छिम] बाल्य (पुत्र ह)। संगुच्य हि [संगुच्छिम] बाल्य (पुत्र ह)। संगुच्य हेना संग्रुच्य (पुत्र)। संग्रुच्य हेना संग्रुच्य (पुत्र)। संग्रुच्य हेना संग्रुच्य (पुत्र)। संग्रुच्य हेना संग्रुच्य (पुत्र)। संग्रुच्य हि [संग्रुच्य] सामने सामा हुम्य (है १८१४ १९१४)। संग्रुच्य हि [संग्रुच्य] वान संग्रुच्य (पाय पुत्र) संग्रुच्य (सुत्र)। संग्रुच्य हि [संग्रुच्य] वान संग्रुच्य (पाय पुत्र) स्था ११४ १९४० माद्र)। ए सम्बन्ध (प्राय १९४०)। संग्रुच्य (पुत्रम १६५)। ए सम्बन्ध (प्राय १९४)। संग्रुच्य (पुत्रम १६५)। ए समित्रा (पुत्रम १६५)। संग्रुच्य (पुत्रम १६५)। ए समित्रा रोज्य १९४)। इन्य १९४०। २ पुत्रम्य (पुत्रम संग्रुच्य प्राय)। इन्य संग्रुच्य (पुत्रम संग्रुच्य
मीरत करना चंगालड, बंगालेड, बंगालित,	(धर्मक १ ३१)।	पार्टीत (पुना १ २१) ६ १९) । ३ कदम (दुमा १,७) । ४ क्लेब प्रत्वा (ताम) ।

संस्कृषक [सं+यम ] पकाना । इ संख्यम्ब (इप्र-१७)। संकंप सक सि + रूप ीरोक्ना घटकामा । कर्म संबंधिकबद्द संस्कृतद् (हे ४ २४०)। मनि संस्थिदिङ, संस्थिमहिङ (हे ४ २४०)। संग्रेह वृं [संराभ] घटकाव (कुन्न २१ पन ₹₹#) | संग्रेहणी भी [संग्रेहणी] बाव को सम्प्रते-वासी सीववि-विशेष (सूपा २१७) । संस्थल सक [सं + छश्चम ] प्रिकारता। कर्म संसन्धीपवि (शौ)- (गठ-वेरा) ७०)। संख्या वि [संख्यान] सवा ह्या संयुक्त (सूपा २२६)। संख्यार वि [संख्यात् ] संयुक्त होनेवासा पुरुनेशमा (घोष ६०)। संबन्ध नि [संब्रियित]संब्रापित एक निपत (तुर ३ ६१ सूचा ३२७ १०% महा)। संख्या धेवे देखो । संजय सक सि + सप | संग्रपण करना। धंतवद्, संसवेभि (महाः पव १४८) । वक्र संख्यमाण (सामा १ १--पत्र १३) क्य) । इ. संक्रप्प (एव) । संख्य प्रे सिंद्यपी संग्रहण पार्ठानाप (मूपनि १६)। संबाद एक [सं+ध्यापय ] बातबीत करना । श्रेनाविति (कम्न) । संख्या देनो संख्य = धनाप (धीपः से २ १६ परः या ६)। संख्यविश्र वि [संख्यपित] १ उक्त कविछ । २ कहमगमा हुया (चा १११)। संक्रिय वि [संश्वित्र] चंद्रक(चंद्रोप १६) । संख्रिय सक [सं+श्रिक ] १ निर्मेत करमा । र सपैर मादिका शोक्स करना इस्य करना। १ पिछना। ४ रेखा करना। धींकदिश्या (धादा २, १ २ १)। छाँछो (30 )( 540 KM # X. 0) 1 GK संस्थिद्ध (क्य) ।

संस्कृत वि सिरम्बंडी पन्यी उर्ध रहा

करनेवाला (प्राया १ १८--पत्र २४ )।

संस्कृतक न [संरक्षण] समीचीन प्राय

संस्कृत देनो संस्कृत्या (वत २६ ३१)।

(सामा १ १४ मि १६१)।

संखिद्विय वि [संखितित ] विसने दरवयो से शरीर बादि का ठोपए। किया हो वह (स १३)। संस्थेद वि [संस्थेद] संवेदना-पुक्त (गृहि R () 1 संब्रीण वि [संब्रीन] विसने धनित्रय दवा क्याय बादि को कामू में किया हो वह, संबद्ध (पद ६) । संबीगया को सिंबीनता विपन्तियेप सरीर माविका संगोपन (सम ११) नव २० पव 1 (1 संक्षेत्र एक (सं 🕂 स्टब्स ] काटना । कवड संस्थामाणा प्रत्यपंत्रं (माना १ ६ ६ ६) । संकृ संसंचिक्षा (१स ४ २,१४) । संदेशमा भी [संदेशना] वरीर भगय सावि का शोपण प्रतरात-शत से शरीर-स्माप कामनुद्रान (सङ्ग ११६ मुना ६४८)। "सुञ न "भवी ग्रन्म विरोध (शंदि २ २)। संतेका की सिंग्रह्मी कार देखों (उत्त १६ २५ पुपा ६४=)। संख्रेभ १ सिद्धेकी १ वर्तन, यवतोकन (धाबार, १६ २ उठ २४ १६ पव **६१) । २ इ**हि-पाठ इष्टियचार । ३ जपत्, संपूर्ण बोक । ४ प्रकारा (राज)। १ वि हृष्टि-प्रभारताला जिस पर हृष्टि पढ सकती हो बह (उत्त २४१६)। संक्षेत्र सकृति । क्षेत्र विकास । क्ष संबादणिक (पूप १ ४ १ ६)। संबद्धपर १ [संस्पविन्त] स्पविसंकत विपरीत प्रधंस (उव) । संबग्ध र् [संबर्ध ] १ प्रक्रम, प्रकारम (वर्ष १) बीवस १५४) । २ बुलित निसंका प्रशास्त्र किया नया हा नह (राज)। संबच्छर दूं [संबरसर] वर्ष साब (उन हे २ २१) । पढिसंद्रणग न "प्रविद्यसन्ह्री वर्ष-बाठ वर्ष की पूर्णता के फिल किया वादा अस्तर (ए।या १ व--पत्र १३१ भक्षात्री। संबद्धरिय व सिम्बरसरिको १ क्योजियो क्योविष राम्भ का विकान् (स १४) पुत्र १२)। २ वि संपत्तर संबंधी पाणिक (वर्षीर १२१)

परि)।

संबन्धक देवो संवच्छर (हे २ २१) । संयद्ग सकति + बर्तेय | १ एक स्वान में एकता । र संकृषित करता । संबद्देश (सीप)। संबद्देश्या (धापा १ ८ ६ १)। सङ्घ संबद्धता(अ२४--पन वह) संबद्धिता (माचा १ = ६ ३)। संबद्ध वे सिंबर्धी १ वीका (उस २६६) । २ भग भीत बोगों का समेवाय-समूह (उत्त १७) । १ बाय-विशेषः तला को सहाने-बासा बाद्र (क्एल १---पत्र २१) । ४ मपन्दैन (ठा२ र---पत्र ६७)। इ. मेरा। ९ वर्षा पर बहुद ग्रांकों के बोप एकवित हो कर धोँ वह स्थान दर्ग ग्रावि (राज) । देखो संबच । संबद्धक वि [संवर्तेकित] तकान में कैंसा इया (का प्रश्रे)। संबद्धम पू [संबर्धक] बायु-विशेष (सूपा ४१)। वेका संबद्ध्य । संबद्धण न [संवर्तन] १ कहाँ पर धनेक मार्चे मित्रते हों वह स्तान (सामा १ २---पत्र ७६)। २ स्मानतैन (विसे २ ४१)। संबद्ध्य पूं [मंबर्तेक] धपवर्तन (ठा २ ६---पत्र ६७) । देशो संबद्ध्या । संपद्रिक वि [दे संवर्तित] संवत संग्रीवित (t = t2) 1 संयक्तिम वि [संपतित] १ विश्वेन्त प्रस्कत (वन १)। र संबर्ध-पुटः (१ २ ३ )। सपद्ध मक [सं + हुम् ] बहुना । संबद्ध ह (महा)। संबद्धम देवो संबद्धण (याप ४१) । संविद्धान्त [संद्वा] बदा हुमा (महा) । संपद्धिम वि [संवर्धित] बहाया हुणा (बाट-एना २२)। संबत्त पं [संपर्त] १ प्रसय कात (से ६, ७१। १ <sup>च</sup> २२) । २ बायु-विटेवा 'युवत-सरिसं संबद्धार्थं दिवनिष्ठार्थं (कुत १६) । १ मप । ४ मेप का मिकाति-सिरोत । १ क्य-विकेष, बहेड़ा था पेड़ । ६ एक स्मृतिकार

मृति (वंदि १ ) । देखा संयद्ग = संवर्त ।

मंबचन देवो संबद्धा (हे २, १)।

संदयन वि [संदर्गक] र परवर्तनकर्ताः २ पूंचकरेतः । रेज्याननः (हे २, १ प्राप्त)ः संपन्तपत्त पू [संपर्तोद्वर्ते] स्वट-पुषट (ठ १७४-२१)ः

संबद्धण म [संघर्षण] १ इदि वहात । २ वि इदि करनवाता (वर्ष य ७२७)। संदय सक [सं+वद्] १ बोबना,

बहुता। २ प्रवर्धात्त करणा स्वयं सावित करणा। संदयद्व संवयंत्रमा (कुत्र १८७) जुद्य १ १४ २ )। कुद्र संवर्धत (पर्नस १)। संवयं कि [संयुक्त] सावृत सावकारित

स्वयं । [स्वयुन] याद्रव यान्यकाव (द्वयं १९)। संबंध स्वष्ट [सं+पृ] १ नियेत्र करना १४ सम्बद्धा १ योग्न संस्त्राः। संस्तित्र सर्वाः। संस्त्राः

सन्तव सर्पम (मन आर सक्त हास्य १३ पन २३६ दो)- सर्व्यह(दुन्न १११)। वक्त संवरमाण (क्लो)। संज्ञ संवर्षय (यहा)।

संबार वृं स्थित है क के निरोध हुवन वर्ष-करण वा धारण्य (क्या प्रवृद्ध १ तव १) २ सारकार्य में हानेपाले करावृत्धें जिनोत्र (दार ४६ तथा १३४) १ वे पीले जिनोत्र क गिर्मा वाला (द्या ११) ४ एक वैत पूर्ण (प्रवृद्ध २ २) १ भ

क पास्त्र को एक वर्षत (हे १ १००)। संग्राण न [संदर्शन] र निरोध प्रदान (वंदा १ ४४) धानकारण्य दाराणें (व ७)। र कोन्न (क १६६ दुना १ १)। हे संहर्शन, बनाव (क १०)। ४ प्रायस्त्र कीपान (धान १७) तिहे १६१० भारत १३१)। १ घानक का प्रकार

बदार चीववान (चन द रेक्ट)। ७ दिनाइ बन्द टाडी (चडव ४८, १३)। ब दि एक्टेनाचा (पर १२३)। संबंधित दि [संबुन] र बार्गन्त, सार्वाचक 'पुनिक्तं सनस्त्व चार्थ नाम सर्वास्त्र होह

(परह् २, १--पद १ १)। २ संकेषिय (१ द १२)। १ प्राच्छित (इह १)। संपद्धम व सिंवलनो मिनव (पडक वाट--

मानदी १०)। संतिक्षम वि सिंतिकियी १ म्याप्य (गा०४) सुर ६ ७६ स, ४६ स्त्रीम ६)। २ पुर, मिन्नव मिन्नय (सुर ६ ७४० वर्गीन

पुक, मिन्नत मिम्नत (पुर १ ७०॰ वर्गीन ११६)) 'सरमा नि वृता सनास्त्रेस उन्मति पुन्वसंत्रिता' (नवा १४)।

संबद्धार प्रं [संबद्धार] व्यव्हार (विशे १०१९) ।

संबंस यक [सं+वस्] ! वाय में राज्या । रे एका बाह्म करणा । रे वासेव करणा । वेग्वर (क्य) । बाह्न संबंधसाय (स.र. २—११७ । होत्र संक्र संबंधित्य (क्या १ २) । होत्र संबंधित्य (ख.र. १—वन ११) । हा

संबस्यम्ब (का द १६) ।

संबद्द वक [सं+वह्] र बहुव करा। २ सक सम्बद्धीय उत्त्वार होगा। वक्क संवद्धाया (मुद्दा पर प्रायः ११ र वक्ष रेव )। क्षेत्र संबद्धिया (स्वरू)। संबद्ध्य व सिवहान् १ दोन्न, बहुव करता। (पन)। २ वि बहुव करनेवाना (सावा

२ ४ २, ६ वत ७ २१) । संवद्भिय (१ [सांघद्दिक] देवो संवाद्भिय (क्या) ।

संविद्ध है सिन्दु वो कात्र हुमा हो वह तस्वार करा हुमा आनिस पुरिस्तेमा सम्दे सर्वेद संविद्धां (सिट ११६६) सम्बद्ध १९७)। सेगह है सिनदिन्न जनगढ़न करनेताका

क्षत क्षेत्राच्या (पुर १२ १७६)। संध्याप्य वि [संध्यादेन] १ यक्त दिश हृत्या क्षत्या हृत्या (व २६६)। २ प्रवासित (व २६१)। संबाद ) वे सिंधानी १ प्रांत्रण का स्वय

(१९६८) । संबाद १ [संवाद] १ प्रांत्रण का करत संवाद विदेश करणेताला करते, बहुत त्रवाद (वर्ष १४ १ व १२६, वा ७२ दो) । २ स्वाद शा-क्वद् "स्व वायो धंवायो हैवि पुरास्त वाराजे पत्नी। त कीराजे प्रियम्पे सम्बन्धीने प्रमावस्त्री । संवाप पत्न [सं + वाहन ] बता केन, स्वापास कहना। संवापीम बेनापी (व १६१ १२६)। संवासम ([वि] व बहुन भीता। १ स्मेन प्रमी (१ - ९ ४०)। संवासम (१ वि. ) सम्बन्धा । तान में प्रमे

संसाय हुं [है] र बहुत क्षीता। र स्म पत्नी (र क. ४ को। संबास कर सि + बासय है ताल में प्रदे रूपा। हैक संबासि (र्थवा १ ४० की)। संबास हुं सिसासी है च्युवास बाव में मित्रास (कर २२३ सा ४ १—पत्न १६४० सीम १७ विहु १७) पेवा दे १,१६)। र नैपुत के विद्य की के साम निगल (सा ४ १—पत्न १६६)। स्वीत्र करा १६९।

स्वाधिक दिना बसाहे वह जिन्ने ज बराबक पंजाबिक (स्वे) : संबाह सक [सं + साहस्य] र वहर करणा। र सम्बार्ध करणा। पंजाबंज — कर्मा करणा। जंबाहर (स्वेश)। करण

क्या करता। वनस्य (स्वार)। करन संबाहित्रांत (सुधा २ १४६)। संबाह पुं [संबाह] १ पुनैक्शिय वर्स इन्द्रक्त्योव बाल्य पार्टिक को प्रता के क्यि ने बाक्ट पार्टिक (अ.२ ४—नव वर्ध)

प्रस्तु १ ४—पत्र १वः श्रीतः स्त्रो। १ सन्तु निराम् (तृतः २२१) १ विधिन्नपत्र यागः । संसाह्य न [संसाहन] १ श्रेननबरेट क्ली (स्त्रा १४ ४ च्या १९११ तृत् ४ १४४ या ४४४) । १ वंतास्त्र विशास (स्त्रा

४६४)। ६ पु. एक पता का नाव (वर)। ४ वि च्यून करनेतावा (धाना २, ४ १, १)। चैनाह्या व्ये [संपाहना] ज्ञार वेदो (कन्छ) वीन)।

संगादिकय वि [सीदाइतिक] कार-पर्व करने के काम में पाता गादन (बरा)। संगादय वि [संगाहक] कभी करनेराणा (भारताक)।

(बाद ११)। मंश्रद्धि दि [संबादित ] विषय प्रेक् मर्दक-चन्त्री दिला क्या हो बद (क्या तुर ४ २४६)। २ वहन किया हुमा (व्यक्ष)। संविक्तिकात वि सिविक्तियों सब्बों तरह ब्यान्त (क्यास २—यन १०)।

धार्या (पराप्त २—पत्र १०)। सिविक्ता सक [सिवि-म्रिक्स] सम्मा ते केवना, रामानि-रिक्स हो कर रेवना। वक्त-सीवक्तमाण (स्त १४ ११)।

रके सावस्त्रमाण (वस रव वर) संविध्या वि सिविध्या विशेषपुळ, सव-मीब. ग्रुविट का व्यक्तियों उत्तम स्त्रपु (वस पेका १, ४१ तुर व १६६ सीवधा ४१)। संविद्याण ) वि [संविद्योग] सेविवरिट,

संविधिका प्रेमाधेवित (एएटा १ १६) । पत्र १ एएमा १ ४ — पत्र १६) । संविद्य सक् [सं+ थिट्सू] विद्यमात होता। संविश्वक (सूस्र १ २,१८) । संविद्व सक् [सं+ वेष्टम ] १ वेट्स करण,

बपेटना। २ पोप्पण करना। चेक्न संधिद्वमाण (णावा १ र--पत्र ६१)। संबिद्धन्त वि [समस्तित] वैद्या क्रिया बुमा क्यांजित (त १)। संविक्योय वि [सीबनीत] विकस्पुत्रत

(भोनक १९४)। संविक्त केवो संबोध (सूच १ १, १ १०)। संविक्त वि [संबुक्त] १ संबाठ बना हुमा (सुर १ ०१)। २ वि सम्बद्ध सावस्य-बाका। ३ विसमुक्त कोव (सिर १ ११)। संविक्त को संविक्ति संवेदन साव (विक

१९२६: वर्गसं २६६)। संविद् एक [सं+विद्] जानना 'विज्वपायो न संविद् (५० ७ २२)। संविद्ध नि [संविद्ध] १ संदुक्त (उपर

१११)। २ यानस्ताः १ इष्टः 'सम्बद्धाः' (पाचा १ १८ १)। संविधाः श्री [संविधा] संविधाः रचना बनास्ट (बाव १)।

संविधुण वक [संवि + सू ] १ शूरकणा। २ विध्यक कणा। १ वस्त्यका विस्कार कणा। येक संविधुणिय संविधुणियाणे (धावा १ ६ १ शूम १ १९ ४) सेव)। वेविभण वि [संविभाक] बात हुधा विश्वपत्तिक पत्र (कुर ११३)।

संविभाग ] पू [संविभाग ] १ विभाव संविभाग ] करणा बाँट (एगया १ २— पत्र वर्ष बना मीन)। २ मावर, सरकार (स १व४)।

(स १४४)। संविभागि वि [संविभागिन] १सरे को दे कर मौकन करोजाला (स्त ११ टे, यस १,२२३)। संविभाव सक िसंवि + मामय ] पर्या

बोचन करना चिन्द्रन करना। चेद्वः संवि-मायिकस्य (राज)। संविद्यस्य मक [संवि + राज्] कोमना।

सामग्रय मण्डू साथ + ग्रज् ] काम बद्धः संविधारीत (पतन ७ १४१)।

संविद्धाः देवो स्विद्धाः बङ्कः संविद्धाः (वै ४२)। एकः संविद्धाः अत्र (कृषः ११४)। संविद्धियः वि सिवद्धितः विद्याति (वदा)।

संबद्धिम केवो संबेद्धिया = संबेहित (कुमा) । संविद्धित्र केवो संबेहिम = (वे) (उपछ वं १) । संविद्ध मुस्लिय] योदाने का एक जासक । (जा द ६—पन १६१) ।

संविद्याण न [संविधान] १ रचना, बनावड (पुता प्रदर्भ, वर्मीव १२७) माल १४१) १९६)। २ शेष, प्रस्तर (वे १ )। संवीक्ष नि [संवात] १ म्याप्ट (पुत्र १ १ १ १९)। २ पर्तिकृत चक्रमा हुमा संवी-

नविष्णवस्त्यों (वर्मीव १)। संबुध केनो संबुध (हे १ १११: सीम ४ सीम)। संबुध केनो संबुध (रंगा ४४)।

संयुक्त कि [संयुक्त] रे तंत्रक सकता स्वीर कृत (स. वे. १—तक १९१) । र तंत्रक्ष्युक्त स्वारम प्रकृति के परित्र (सूच १ १ ११। रंजा १४ ६ मन्) । वे किया हिरोक-मान्य (सूच १ २, व १) । व मानुदा व संयोगित (हे १ १४७)। व गा स्वारम सौत सहित्यों का निकल्या (स्वाय ३, वे.—तब

संबुद्ध वि [संयुक्त] बढ़ा हुथा (गूथ २ १ २९, योग)। संबुक्त वि [संबुक्त] धंगत, क्या हुया 'पन्नस्या वे बंधारंतकमा बंदुता' (बन्ना

१२३)।

कुत्र ४६१ किरात १४- स्वप्न १७: यमि वशं कतर १४१: यहा वस्त्र) । संबुद्ध केवो संबुद्ध (प्राक्तं व १२ प्राप्त) । सर्वति की सिक्ति | संबरण (प्राक्तं व

संबुद्धि की [संबुद्धि] संबद्ध (प्राकृ व १२)। संबुद्धि [संबद्धि] १ ठस्यार करा हुमा, शक्ति 'बा द्वा नगरतियो सम्बन्धिमित पूर्व संबूद्धे (प्रायः) पूर्व १, ११२)। २ बद्ध कर किमारे नवा हुमा बहु कर स्थित 'चन्द्र पूर्व ने मार्गस्यमाया हेन्द्र क्याव्यक्तियां (अक्ट्रोक्ट्रामाया ३ स्थाव्यक्तियां संब

'कर पूं है नावादगारा केंद्र क्यावक्य कु (१४) जन्माना र प्राप्ता वेदेश चंद्र-(१६) मा वावि होलां (ग्रामा १ १ — पव १४७)। सेवेस कि [संवेग] मनुमन-गोग्य (विवे १ ७)। संवेस ) इं [संवेग] १ मन वावि के कारण संवेग ) हे होती लग्ग-कीमता (कार)। २ मन-वेग्ग्य संवाद वे क्यावीकता। १ मुर्लि का मानिवाय मुन्ना (द १६ सम १२६)

१६४. पुना १४१)। संवेचण म [संवेदन] १ जान (वर्षेसे ४४ कुम १४१)। २ वि वीय-जनकः वर्षे, गाः (अ.४. २—पत्र २१)। संवेचण वि [संयज्ञन] संवेम-जनकः। की

भग क्या पुर व १९४३ सम्मत्त १९२,

जा (ब ४ २—नव २१)। संवेयण वि [संवतन] कर देवी (ब ४ २—नव २१): संबद्ध सक [सं+वेस्] वाधित करना, कॅगला (से ७ २१)।

संबद्ध सक [सं+ प्रमू] बप्गा। सबेस्तह (हे ४ २२२, सम्नि ६६)। सबैक सक लि। स्रोधका सम्प्रमा स्वतिक

धंबेळ एक हिं] ब्रोक्स संस्ट्रास्त संबुद्धित करणा । सहेकोह (स्म १६, ६—वन ७११) । वह संस्कृत संबुद्धिताम् (वक्ष प्रम १६ ६) । सङ्घ संबुद्धितम् (स्मा) । संबद्धित्र मि हिं] सद्दुत्त संबुद्धितः 'सब निवार्ष सर्वाव्य' (ताम हे व १२ एव १६

६—पत्र ७१२ एवं ४३)। संबक्षित्र वि [संबक्षित] वर्तित (के ७ २१)।

cky	वाइअसङ्गङ्कावी	संवेडिय-संगीन
संबंधिक वि [संबंधिक] करेटा ह्या (या १९४)।  स्विद्ध वृं [स्वेय] सारोप प्रयम्भवाने वृद्धांकार्य प्रकार प्रयम्भवाने वृद्धांकार्य प्रकार प्रवास प्रवास करेटी कारोप से स्वास्त के स्वास्त करेटी कारोप से से स्वास्त वृद्धांका करेटी कारोप से से से कि इस्ता करेटी करेटी कर से	वाह्मसहमहण्याची  क्रमचंद्रव्याची  इसी क्ष्मचंद्रव्याची  सिर्मा के सिर्म के सिर्मा के सिर्म के सि	संवेदिय — संवीव संसारि ) कि सिसारियाँ नरक धारै संचारियाँ अभित वे रोधकरण करनेनवा मौत (वो न), भागित्या वे पुक्र नैरुष्ट मुद्दे पुक्र सिर्मारिकाँ कर केये। (व ४ २ एका)। संसारिका कि सिसारिकाँ कर केये। (व ४ २ एका)। संसारिका कि सिसारिकाँ कर केये। (व ४ २ एका)। संसारिका कि सिसारिकाँ संचार के सक्त रक्षनेतावा (रक्त १ ६ ४६। वन १४२ दी व १७६ विकास १ वर्ण करने। संसारिका कि सिसारिकाँ प्रकासकाँ (का १ च-पन १६२)। संसाद्या कीय हिंचे पुक्रमा ६ ६ १६ वर्णन १ वट्ट)। यो. जा (वन १)। संसाद्या कीय हिंचे पुक्रमा ६ ६ १६ संसादिका कि सिमारिकाँ कि किया ह्या (यूना १६७)। संसिक्त कि सिमारिकाँ कि किया ह्या संसिक्त कि सिमारिकाँ कि स्थापित (यूट ११ ६०)। २ क्षियां (वन यू १६१)। संसिक्त कि सिमार्ग वार्णन (विचा ११)
(पंता ४ २: स्वा ६ तंत्रीत १२ कम्म ४ ११) । संसमा पूर्वा [संसमी] संस्त्र क्षेत्र, कोब्रका (पुता ११ हो—पन १०१: त्रान् ११ कृत १४१)	संसर कह [सं+स्] वरिष्मस्य करता। वह-संसर्गत संसरमाण (विष १: वे व । संतेव ११ सन्तु ६०)। संसरम व [संसरम् । सृद्धि सन्तु (यू ७)। संस्वय व [संसरम् ] स्वयः कृत्वयः (दूर	१ - प्रमुप्त १८ रहा १ ४ - प्रमुप्त १८ रहा १८ रहा १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८
्र्युं रिच नेष्ट्रीत बाहुनी वण्डलेषु संस्थित । बाह्या रिसोजीन्द्रियः द्वियस्त्र, म क्षेत्रने मार्च (मुर २ २९६) । संसाम यह [सं + सञ्जू] संस्था करण,	१२४२) रेसा)। संसद् वक [सी+सह ] स्थल करता। स्वत् (वर्गते ६०२)। संसा की (संसा) प्रतेवा, स्वाचा (वव ७३ की क्या)। संसा की हिंसी १ सम्बन्ध । १ कुछिता। १	संसिम्ह यह [सं + सिम् ] वन्यो वर्षा वित्र होना। संदिग्मीत (व ४६७)। संसिद्ध वेदो संस्कृ (वर्ष)। क्रियम वि [क्रीयक] वर्णस्य हान मनना प्रत्य वे ये याची स्थिता को ही बहुत करने के
रावर्षं करता । संकारति (कम्बल २२ )। संक्षत्रिम वि [ संसारित्मम् ] बीच में विरे हुए योगो के पूच्य (रित १३ )।	पीत । ४ जीरण (वह )। ससार पूं [संसार] १ वरक सादि वसि में गरिप्रमान इक गणा थे जनानतर में कान (मानार कर १ रूप्या १८०४ ४ २०००	नियमनामा पुनि (नराह ए. १पन १.)। सींसच्य नि [सींसच्छ] तीचा हुव्य (पुर ४ १४ महा है ४. १८१)। सींसीदास नि [सींसिद्धिक] स्वस्थनन्त्रिक

(माका झ ४ १---वर १६८) ४ २---

पत्र २१६८ रक्षति ४ ४८८ **बत्त** २६, १

हर बरहा भी ४४) । १ अवद् विस्त (उस

द्वमा बरश बरब १ ७ (४१)। वंड

रि [ यन्] संबारतचा राजार-स्थित

मीर, प्राणी (परम २, ६१) ।

संसद्ध वि [संस्थ] १ पर्यन्तः विक्रियः।

बर्धर (योष) । देवा मंसिट्ट ।

२ व पर्यस्थत हो व में दो बाती किया

संस्थान [६सन] १ क्वन । र प्रतंदा ।

। यत्याचा नुश्रीवरीचे पूरा नुकालको

संचिद्रिम वि [सोचिद्रिक] स्वयनिक

चिवित्रस स्त्रो संबेस (एव) ।

र्साससम्बद्धाः स्था-संसद्धाः (पत्र)।

संसीय रुक [सं+सिव्] क्षेत्र रिकारी

कण्य । संग्रीविञ्जा (पाचा २ ६८ १ १)।

(tt + ):

संसुद्ध कि [संगुद्ध] र विद्रुख निर्मन (पुरा १०१) । र न, बपावार करीय दिन कर जनाय (वरीय ४८) । संसुद्धन कि [संसुद्धक] कुम्म-कर्या (रंग) । संसेद्धन कि [संसुद्धक] कुम्म-कर्या (रंग) । संसुद्धन कि [संसुद्धक] स्थापन कि वर्ष दिन कर रंग्ड क्या) । र तिवर की कोमन (प्राचा २ १ ७ ८ । ४ विश्व की कोमन (क्या १ १ ४ ८ ) । संसुद्धन (क्य १ १ ४ ) । संसुद्धन (स्वय १ ४ ४ – यून वर्ष) ।

संसेष्टम में [संस्वेदम] १ पर्यंते से कराम एनेवामा (क्यू र ४-व्यू व १) । संसेप प्रकृति ने स्थित् ] बरख्या जाने व से बहे बरकता करायूमा संस्थिति (स्व)। संसेप पृत्तिसंत्र ] पर्यंत्र । य मि [ज] वसीने से स्टार्य (पूप १ क ११ ध्येषा) । संसेष पृत्ति सेकि ] मिलना (क १ ६)। संसेष पि मिलिका | मार्चेषण (पूपा २१७)। संसेष पृत्तिसंत्र ] सन्द्रम्य संगोन (पाषा ११६ १)।

संसेचिय वि [संदक्षेत्रेक] संबेदनाता | (बाचा २, १३ १)। संसोचण व [संशोचन] पुर्वकरण [वंड ४२६)। देवो संसोहण।

४२९)। ऐको संसोहज । संसाधित वि [संगोधित] यच्यी तरह युव विवाहमा (युव १ १४ १८) । संसोव तक [सं + ग्रोबय ] रोक करना।

संत्रीय वह [सं + होत्यय ] तोल करता।

क संत्रीयविष्य (पूर १४ १४)

के संत्रीयविष्य (पूर १४ १४)

संत्रीय व [संग्रीयन] विषेत्र बुताव

(पाचा १ ४, ४)। के संत्रीयण।

संग्रीहा की [संग्रीया] कोच्ये की (पुन

पंत्रीहा की [संग्रीयम] कोच्येनला (पुन

४०)।

संग्रीहर के संग्रीयम् । कोच्येनला (पुन

४०)।

संह केवो संप (नाश—विक्र २१)। संहडण केवो संपयात्र (वंड)। संहरि की [संहरित] प्रदार (संबेड १)। संहय हि [संहरित] हिला हुया (पराह १ ४—वंड ७)। संहर सक [सं + हा] १ समहरण करना । १ दिनारा करमा । १ संबरण करना, संकेन सना, संकेन्ना । ४ से बाना । संहर्ष (पर १६१ है १ ६ ४ १११) कबक्र संहर्रिक्समाण (ग्राम्स १ एनव १७) । संहर पूर्व (संमार) सनुवास, सनावा 'संमाभो संहर पूर्व (समार)

संहर पूं [संमार] जुराव, सवाक 'संभाषो संहर्ष नमरो' (गय)। संहर्ष न [संहर्षण] सहार (पू ००)। संहार केवो संमार = सं+ यारा। क संहार केवो संपार (हे १ २६० वह)। संहर्ष केवो संपार (हे १ २६० वह)। संहर्ष केवो संपार (हे १ वह)। टिकामा 'कारसंहरण्डर्स्टर' (पाणा)। संहर्ष केवो संभाद = संभाषत् । वह

संदायभंत (ती) (वि २०४) । संदिष ये संदिष (प्राष्ट १२) । संदिष य [संदृष्य] तम में मिमस्ट, एक्षित होकर (खाय १ १ टो-प्य ११) । संदिय सेता संदिष = संदिष्य (क्ष्म नाट-महामी २६) । संदिया की [संदिया] १ विक्था वारि

'पम्बक्तिम्युक्ताराख्या घर धीरीय प्रवेतमा (बेरव २०२) । धर्मा की [संस्कृति] बच्ची तवा धीवक (संब्द ४) । सक्त देवो सत ≠शक (तवाई १ (—पन १४) ।

शाकः; 'विभिन्नश्रास्तिमाधी' (स १७)। २

धरकवित स्थ से सुत्र का स्थारस

स्क्रम का स्क्रम (पान) स्क्रम के स्क्रम (का स्क्रम का स्क्रम का (शिर ३, १) स्क्रमा केमें सक्क्षा चेरावर्षनेतृत्रिण्डका विश्वीवादा विर्हति (तुन्न १५) सक्ते व स्क्रमा (का १६ ४५)

सक्तं म [सक्त्र] एक बाट कि वह (१क)में बेलील' (तुर १६ ४४)। सक्ता कि [सक्त्रें] विताल, बानकार (तुर व १४५, १२ ४४)। सक्त्र बेबी जयस= क्ष्में (यह १ ४— पर ५४)। ६६ मृत ६१७ पन न्हे)। सद्यान देवो स-स्तान - वमन । सद्भेत दुं[राष्ट्रन] नदी (हुत ६० पणु १४१)। सङ्ग्रा देवो सद्या=राष्ट्र । वङ्गलेनो (व ७६१)।

सम्बद्धा की सिविन्धम् ] परिष इत्त (सम

सकेय को स-केय = सकेय।
सक्क प्रकार [राक् ] सक्या नगर्म होगा।
सक्क प्रकार [राक् ] सक्या नगर्म होगा।
स्रित करके सक्यामे स्रित्सामी प्रकार सिंह (स्रित है। कृत्यक सिंहित्सामी प्रकार सिंहित (स्रित है। कृत्य सिंहित्सामी प्रकार सिंहित (स्रित है। कृत्य है। ४२० स्व ११४४ सिंगिय प्रमुद्द है। । सक्क सक्ष स्थित है। स्वाप्त स्थित करना। सक्य सक्ष स्थित है। स्रित करना।

सक्द्र (पि १ २) । सक्त [राक्त] स्तव (६३ ३४)। सब्द नि [राक्त] समर्थ शक्ति-पूक्त 'की सक्षी वेयसावियमें (विवे १०२३ है २, २)। सम्बदेखी सम्ब=ग्रकः सब प्रिकृति १ श्रीवर्य नामक प्रयम देनकोक का इन्द्र (ठा२०३ — पद ∉इ) जवा मूपा २६७) । २ कोई ची इन्द्र देव-पवि (कुमा) । १ एक विद्यावरसमा (पद्म १२ वर)। ४ सन्द-विशेष (पिप)। शुरु र्व िग्रह दिस्पति (विरि ४४)। व्यम र्प [मिम] सक्का एक उत्पात-पर्वत (ठा १०—यम ४६२)। सार म िसारी एक विधावर-तपर (इक) । विदार (शी) न ["स्तार] धोर्म-विशेष (पणि १४३)। ीवयार न ["बतार] चैरय-विशेष (स 1 (37 R tock

दि बोब दुवं का मक्त (पिटे २८१६) भाषक वद पर ६४ दिवं ८४६)। सर्क (पा) वेको सात≃स्तक (यदि)। सर्वेद्दय दुं [मॅटरन] दत्र (दुर १ ६ मि ४ ९६)।

सक्द [सास्य] १ द्वा देव (पाम)। २

सगडिका देवो सनाडिका = सन्दर्शनः । सगराज पूं [शक्टाज] राजा गण का सुण्सिक मंत्री सौर सङ्ख् स्वृत्तमङ्ग का पिठा (配対 AA#)! सगरिया की [ शफटिका ] कोटी पाकी (असः विसा १ १—यत्र सः सामार १--पन ७४) । सगरी की [शक्टी] पाने (खावा १ ७---पत्र ११८)। सग्ण देखो स-गण = स-मण । सराम देवो सकम (कुप्र ४ ६)। सगय म दि] बढा विचास (देद ३)। सतर १ [सतर] एक पक्रवर्ती चवा (सम दश क्त १७ ३३)। सगद्ध देखी समस्य = स्कल (ग्रामा १ १६--पत्र ५१३) मन्, येव १ १३) सुर १ ११६३ एव २१६३ सिनवा १७)। सगसग प्रक [सगसगाय] 'सम-सग' मानाव करना । वह सगसगत (पवन 42, 18) I सगार देवो स-गार = सामार, धानार । सगार देवो स गार = स्नार ! समास न [सन्धरः] पास निनदः, समीप (धीर नुरा ४३२। ४वव महा)। सगुण देवो स-गुण = <del>प पुष</del>ः। सर्गाण देवो सर्गाण (पद्ध १ ४--पत्र सगुच वि [सगोश्र ] समान वोत्रवाका एक्याबीव (क्या) । स्ताह व [वं] क्लिट, बनीप (वे व ६) । सगोत्त देवा सगुत्त (कुम ११७)। सत्ता (व [स्वर्त] देवों का प्रावसक्तरपान (शासा १ ६—पत्र १ ६ भयः पुपा २६३)। क्रिया काम सामा साम (पारंग)। वस्तुं ["वस्तुं करवृद्धा (वे ११ ११)। सामि 🖠 [स्यामिम्] इनः (उन २६४ हो)। बहु थी [ बच् ] देवांक्स देवी (इप ७२= धै)। समा ﴿ [सर्ग ] १ मुक्ति मेता बद्धा (पीप)। २ छटि रचन्न (रंग्य)। समा देशो स गा = सा ।

समा देखो सग=स्त्र (उत्त २ 241 सम्माद् देखी सामगद = सम्मादि । समाह वि [वे] मुक्त पुक्ति-प्राप्त (वे व ४ थे)। समाह देवो सनगह = ए-पह । सम्मीय वि [स्वर्गीय] स्वर्गसम्बन्धी (विधे t= ) 1 सम्मु केले सिम्मु (का १ ११ में)। सम्मोक्स र् [स्पर्गीक्स ] देव देवता (पर्मा ६) १ साम सक [क्य ]कक्षा। सम्बद्ध (वर्)। सम्ब वि [रह्मच्य] प्रतिश्रमीय (तुम १ 🐧 २, १६३ विसे ३३७८)। सचिण देवो स-पिण = स-दर्ख । सम्बन्धः सम्बन्धः सचित्त देवो स-चित्त = य-वितः। सचिष रेको साध्य (स्ए)। सची देवो सई = रापो (वर्गीव ६६) गाउ--शहू १७)। बर पुं ['बर] एक (स्विरि 43)1 सुर्वमण देखो सन्देयण = सन्देतन । सच न [सस्य] १ दयाचे भावता समुबा-क्यन (ठा १०--पत्र ४व१ क्रुया पर्सा २ ५—पत्र १४०। स्थप्न २२ प्रासु १४ १७७)। २ शत्रम क्षाप्ताः ३ सस्य सूनः। ४ विदाला (हे २ १६) । १ वि. यथार्थ, सक्ता वास्त्रविकः न्सक्तपरक्तमे (बस र्व प्रश्नार सप र-पन रहरा कुना) । ६ दू संयम भारित (पामा जल ६ २) । ७ जिलायम जैन सिद्धान्त (माना)। व महोराव का इसनी मुक्कें (सम ११)। **३.एक व्यक्ति पूत्र (का ११९)। पर** त [पुर] सारत का एक प्राचीन नगर, / जो बावकव साचोर' साम से मारवाक में प्रसिक्त है (बीक सिन्दक)। दरी धी [ पुरी] बहा सर्व (प्रीव)। विमीन, निर्मिन वृ ("निमि] मनवान् प्रिष्टिशीन के पाव धेवा से पुष्टि पत्रेवाता एक पुनि यो पत्रा समुत्रवित्रय का पुत्र था (धेव- धेव १४)। प्यकास न ["प्रयाद] एउता पूर्व-श्रेष (सम

२६) : "भामा को ["मामा] क्षेत्रया की एक पर्शी (यंत १४)। धाइ वि [थादिन] सरम-वन्ता (पर्वम ११ वर) । संघ वि [ सन्भ] स्रथ प्रविज्ञानासा प्रविज्ञा-निर्वाहरू (सपद्भाष्ट्राम्य २८३)। सिरीकी [°भी] पांचनें मारेकी मन्तिम भानिका (विकार १९४)। सेण ई ["मेन] ऐखत वर्ष में होनेवासा एक विनवेद (सम १४४)। हामा देवो भामा (वि१४)। वाह रेक्टो बाइ (प्राचा १ व ६ ५ १ a 6 %) i स**बद्**षु [सत्यकि] १ मामामी नाम में बारहूवां टीमॅंकर होनेवासा एक साम्बी-पुन (ठा ६--पन ४३७) सम ११४। पन ४६)। २ विषय-सम्पट एक विद्यावर (उव उर १टी)। ३ भीकृत्स का संबन्धी एक म्मानित (चरिन ४६)। सुष प्रं ['सुरा] न्याया क्यों में बन्तिम क्य पुरुष (विकार 1 (108 सर्चकार नि [सरमंदार] सत्य सावित करते-बासा, बेस-देन की सच्चाई के सिए दिया जाता बहानाः 'यहिमो संत्रमस्यये सन्बंकार म्ब सिमीएँ (पर्नेषि १४° मास ६६) रमस्य ६४)। स्वय स्थ [इस ] देवना । सन्तरह (है ४ tat पर्। संख्)। कर्म, सण्यवित्रवद (द्वप्रदेव)। संबंध तक [सल्मापय] संख्य साबित करता । सञ्चवह (नुवा २६२)। कर्म. पानिवापि सम्बन्धिक पहुत्तर्ग देश स्मरिए ई (पुत्रत द≷)। सब्दल न [बुईन] प्रवतोकन निरीप्रण (दुमा सुपा २२६)। सच्चय वि [दर्शक] ब्रष्टा (संबोध २४)। श्चावित्र वि [रप] देखा ह्या, विनीवित (स १६८) व १३ मुर ४ २१३३ पार्च सच्चित्र वि [त्] यांकात दर (देव

१७३ मूपि)।

सवाद्री [सस्या] १ श्ररप वचन (पर्ण

११—पत्र २७६)। २ धीमृत्यु की एक

क्ती क्रममामा (कुत्र २१०) । ६ क्ष्टाची । (बरुपान भाषत-बरित)। सीस वि [सूपा] मिष्मभाषा सत्य से मिला ह्रूपा मुठ वचनः क्वामोसाति क्रवह(धम १ )। समित्र देचे स-मित्र = स-मित्र। सचिक्रम नि दि सस्यो प्रच्याः स्थार्थ (R =, tx) 1 सबीसय र् [दे सबीसक] नाय-विकेष (पक्ष्य १ २ (२३)। देशो बद्धीसङ। सम्बद्धिय वि [वि] धीवत निर्मित (वे व १८) । सम्ब्रुवि स्वयम् । पवि निर्मेव (सूपा १ )। संबर्धद वि [स्यब्धन्त] । स्वाधीत, स्व-वरा (बर १३१ दी। युर १४ वर्)। २ त ध्येष्यानुसार (ग्रामा १ --- तम १६२) भीप भाग ४६ प्रामु to)। गामि वि िंग्रामिन देन्द्रमुदार धमन करमेनला स्वैरो । की जी (बुपा २६१) । बारि बारि वि ["पारिम्] सम्बन्धे सम्बन् बार विद्वारत करनेशका स्पेरी । बी. जी (स ३६ था १६ यण्ड १ १)। सम्बद्धर सक [इरा्] देवना (संविद्ध १९)। सन्पद्द वि [दे सन्छाय] सरह, प्रयाद, e or x yx re-तुस्य (दे प्रसः । ६वरं ७२१ सुर १ २४६। शांसि X#) ( सच्याय वि[सच्याय] १ तमन काळ-मामा दुस्य (नचरः कुन्न २३)। २ शब्दकी कान्तिकासाः (कृमा) । ३ सृत्वर श्रामावाधाः । ४ नम्दिनुष्ठ । रष्ट्रयानुष्ठ (हे १ २४६)। | सन्दाद नि [सन्दाय] किन्ने बाह्य नुकर हो यह १ वर्डी बाला । १ समान व्यापा बाला शुरुव सहस्य (हे १ १४१)। सञ्ज्ञा स्व [सच्छ्राया] वसपरिभविदेव (नुम २ ३ १६)। संज्ञन देशां स-ज्ञप=स्य-जन। संजिय ध्वा सर्वीष (पुर १२, २१ )। सनुष ध्वा संजूष (सिप)। समाद्र देशा स आह्र = ए-ज्योतित् । खळाल विदियोज्ञित् र क्व बादिका स्थानारकामा । २ दुनः ठेरह्वां द्वल-स्वातक (रि४१९८ मन २६३ सम्बद्ध २३२)।

सन्नोजिय वैको स-काजिय = य-धोतिक । सञ्जयक [सम्बद् ] १ वासकि करना। २ सक धार्मिनन करता । सन्द (उच २४, २ ) सम्बद्ध (शास्त्रा १ द--पत्र १४६)। वड्ड, सळ्यमाण (गुम १ ७ २७ स्तर् २, १ ३ वर्ष १४३ ६३ उत्तर १२)। इस सक्तिबञ्च (पराहर १—५व १४६)। सञ्ज्ञायक स्तिस्त्र ] १ अभ्यार क्षेत्रा । २ सक सम्बार करना सजावा। समेद सम्मेति (क्रमा: शामा १ ६—-पत्र १३२)। कर्मः सन्धेनीत (ज्ञान् )। क्लाइ- सम्बद्धांत (क्यू) । प्रेक्स सक्षिक्रण सक्षेत्रं (स ६४० म्यूर)। इ. संजियका सङ्गेयका (सत्त ४ ६ ० )। त्रयो 👣 घट्याचेळण सका र्र [सर्व] क्य-विशेष (कामा १ १--पत्र २५८ मिले २६ व२३ घारतः कुला)। सञ्ज र्षु [पङ्ज] स्नर-निरोप (हुमा) । सकावि [सका] सम्बार, बहुता (कामा १ ब—पश्रास्त्रापुरा १२२ ११७ क्षेत्रा ४६: पिन)। सज्ज ) य [सद्यम् ] तुण्त वाची स्रीक सज्जे ) 'सम्बद्धनती से कम्मलुजोर्ग पर्वनामि' (पर का पुष क, १३० च ४३७ च क्स)। सर्जनवर्षु (इस्टमन्सव) एक प्रतिस्त्रं वैव महर्षि (यार्वे १२) । शक्कण देनो स-काय = स्टब्स । धव्या ध्वा सेवा (ए४)। सिजिथ नि [सिजिय] सनावा ह्मा इस्कार किया हुमा (मीप' कुमाः महा) । सिवाध नि [सीबात] बनावा ह्या (दे १ 194)1 सक्तिभादं दिही । नामित ना । २ एक्स, बोबी। ६ वि पुरस्कृत भावे किया हुमा 🛊 ४ दीवें, बान्ध (रे ४०) । सक्रिया को [सिविया] वास्तिके सामी बाठ 'बर्च परित्रधाबारेज प्रजुतिपदि' (छाबार ४—नवर ६६)। संजीत } देशों स अर्थ ध ≈ त-ओव । संजीत

सर्वाध्य पर [सर्वा+भू] सम्ब होनाः वस्वार होना । सम्मीहनेद (मा १४) । सुरको देवो सरज = तदाप (पुपा १६७)। सक्योध कि पि] प्रत्यक पूर्वन, वाजा (वे ¤ ¶)∣ सम्बद्धि [साम्य] १ बावरीन विक्र करने योग्यः। २ वस्त में करने योग्यः 'वक्रियो ह इसो बत् ताव य सम्बद्धेन पुरिस्पारस्य (मुर « २६: सा २४)। ६ क्लैशाब-प्रक्रिक मनुषेय परार्थ, येते भूग ते कातव्य गर्ध (पंचा १४ ३१)। ४ 💺 साम्यकामा पक्ष (विसे १ ७७)। १ वेवपश-विशेष! ६ बोस-विशेष । ७ सन्त-विशेष (है २ २६) । सनम्ह वृं [सद्धा र पर्यंत-विदेश (स ६७१)। २ वि सङ्ग-योग्य (हे २ २६ १२४)। सम्मंदिय दू [दे] ब्याचारी (राम) । खम्मदिवाको हिं] चरिनी कील (सन)। सम्बद्धेशिस र् [स्वाच्याबान्तेशस्मि] विद्यानरिक्य (तुब २, १४)। सरमञ्जूष वि [साध्यमान] विस्तरी सारगा की बाठी हो वह (एमछ ४ )। सम्मूप एक दि विक करता, दनुस्य करना । सकत्रवेदिः सकत्रवेदिः (पूच २, 82) t सम्प्रस म [साम्बस] का बर (हे १ ९६ <del>द्रमा</del>) । सम्बद्ध्य वि [स्त्राच्यायिक] १ विवर्षे स्त्र बार्वि स्वाप्तान हो सके ऐसा साझीक देश. काव मावि (ठा१०—-तव ४७१)। २ तः स्वाप्याय, शास-पञ्च प्राप्ति (पर १६०; इचिंद ७ दी)। सम्भाय र् [स्थाप्याय] शोक्त यम्पन्ध शास का फन, भावर्तन मादि (दौरा हेर २६ इसाइ सम २६)। सम्बर्ध र [साहाराज] शहरू 🗣 एना थं सम्बन्ध रक्षनेताथा, सक्कारि के राजा की (परम ११ १७)। सरिम्ब्स्य र् [दे] भारत सार्द (इत २७४, १७७: विष १९४) । स्रिमस्त्रमा स्रो [बे] स्रोक्ती विद्वन (दिव **18€ 61 € 0**) t छन्निद्धम देवो समिन्द्रम (राज) ।

सङ्ग्रिया दि । पट्टा निनियम बदसा । (तुपा २३६)। धी ही (नुपा २०४८ वरना १४२) २ वि. सटा हुमा भीपुरसम सदुई यस्पवदुई (भृति)। सह ो पूर्व [सट्टफ] र एक तप्द ना माटक सह्य है (क्यू, रंभा १ ), 'रंनं वं परिलेखि बदुवित्वं एवम्मि सट्ट वर (रंगा १)। २ बाय-विशेष (रंगा ११)। सद्ग (आड्य) राज्या पूर्वता (रा ४२० क्री पुत्रा २४)। सह (ग्री) देशो छह (बाद ७ प्रदो ७३ वि । XXE) I सद्धि भी पिष्टि १ संस्था-विधेष साठ. ६ । २ साठ संस्थानामा (सम ७४ कम यहापि ४४६)। तंत ५त व ["सम्प्र] राध-विरोप सास्य-राम्न (भनः, ए।मा १ ५— पत्र १ ६, बीस्ट बलु ३६) । संवि िंदमी साठती (परम ६ र )। पि [पष्टिक] १ साठ वर्ष की सद्भिष सहित (नवनता (तंदु १७- धन)। २ सदीअ ) देन, एक प्रकार का बादन (राज-षा १=) । सष्ट यह [सङ्] १ सङ्ग्र । २ विपाद करना थिप्रदोताः ३ सक् वर्षि कला अन्तरः सबद्द (हे ४ २१६ प्राप्त पहुः मारपा 122) I सह यह [ शट् ] १ यहना । २ धेर करना। ३ रोनो होना। ४ सक जाना। सम्ब (शिपा E E 93 25)1 सर्वेग व [पहले] किया वस्त व्यावस्य निरुष्ट एन्ड सीर म्योजितः पि नि विष्: दिया का नानकार (मन: योग वि ६८१)। सक्ष्म न (शहन) स्टिए पहना (नरह १ १--वत्र २३। छावा १ १--वत्र ४८)। महादेशो स्पा(वे१ १ वि२ ०)। महिन दि [सब्ब शादित] एस ह्या, बिद्धी (बिता १ ७ - पत्र ३३ व्या १० (TI) ( सहिजीनाज रि [रे] १ १विद, बहारा हुवा। रे प्रेटन ( पर् )।

सब्दानक[शद्] १ विनास करना। २ इरा इरना । सङ्ग्र (मरग १४४) । सक्द (स्रो भादा । मारक, वैत पृहस्य (योष ६ : महा)। की. दुईा (गुपा ६१४)। २ वि भद्ध्य वपनवासा जिसका वयन यदीय हो यह (ठा ३ ३-- पत्र १३१) । (ग्रह)। स्यो सद्ध = पाद्ध । सद्दरका सर्ह = सार्थ। सष्ट्रद्र र्रू [भाद्वक्ति] शाकास्य वापस्र भी एक वाति (पीप)। सद्दा स्त्री [भद्रा] र स्त्रहा पनिकाप बोद्धा (विपा १ १ पत्र २)। २ धर्मे धादि में विधास प्रतीति। वे धादर, सम्मान। ∢ शुद्धि । ३. पित्त को प्रष्ठता (हुई ४१ समप्दर पर्)। रेबो सञ्जा समप्रस सदिव वि [भदिन] १ महानू, महावान् (छ. ९—पत्र ३३२ । उत्त ४, ३१ विक्स **३३)। २ र्वमायक पैत गृहस्य (कम्प)।** सहिद्ध रि [बाद्धिक] देवा सहह = याद (पि ३३३ सम)। (दवा)। सब्दी रेबो सब्द = याड । संद नि [राठ] १ पूर्ण मायाचे क्यटो (हुमा रप २६४ टी बारमा ४०० मक कम्बा १ १व)। २ दुटिस यक (पिड ६३३)। ३ **त्** पत्याः ४ मध्यस्य पूरव (६ १ १८६, । धरा (रंग) । दंधि ८)। संबर्ष [दे] १ पास जहान का बादरान पुत्रस्ती वें तह (सिरि १ ७)। २ कस बान (देद ४६)। ३ स्तस्य पुच्छा (देद प्रामीस (🔻 ⊀६ पाम)। ८ वि विषय (देव ४६); मतय न [र] दुनुव दून (र व १) : सदा ध्ये [सटा] र सिद्ध पारिकी क्यस । ं २ जटा । वे पडी वा वस्त्र-प्रमूद् । ४ किया (\$ 2 (E4) 1 सदानः र्षु [सदास्त] नदाराचा,सिंह (हुना) । मदि वृं [दे सटिन] क्यि(देव १) : सदिन विश्विभन्नी देना (६१ १ नुबा) । मन (न [राम] १ वस्य-सिधेव (ब्य.१८ पर १६८ ६०६२ ६ - वत्र १८४)। २ म्प्रे-दिवर, प्रद्र, बियब क्यू रस्था वर्धर

बनाने क काम में साए जात हैं (सामा १ १—पत्र २४ पएख १—पत्र ३ वप्यू)। 4भण म [धायन] सन का पूरा-इन्ड (मीत ए।या १ १ धे-पत्र ६)। वाडिआ सी ["सटिस्र] सन का बयोजा सम्बद्ध स्थिती शब्द प्रायान (स. २०४) । सणकुमार र् [मनस्कुमार] १ एक चन्नासी राजा (सम १६२) । र ठीसरा रामाङ (मनु भीप)। १ ठीसरे दश्लोक गाइन्द्र (टार १---पत्र वर) । यहिमय पून ["पर्यक्षक] एक दर-विमान (सम ११) i े देशा स-पाप्पय = स-मधार । सन्नाधा [सन्ध] सद्य हमेशा। तम यण वि [तन] परा प्रतेतमा निख राध्य (पूम २ ६ ४७) 'शिकाण स्र्वायणमो परिशामिको सम्बद्धीत पुर्णो (संबोध २)। समाम न [स्त्रान] नद्दाना नद्दान परगाइन सगाइ देवा स-गाइ = च-नाच । समाहि र् [मनामि] १ स्वयन प्राति 'बंपू समलो बलाई। मं (पाद)। २ समान · स्रिप पूं [शनि] १ प्रदू-विशेष, सनैबर (पडम १७ ८१) । २ शनिशर (नुरा १३ ) । सणिअ 🐒 📳 १ साधा पराह । २ साम्य, ro)ı समित्रं व [ नुनम ] बीदे, हीन (लामा १ १६—वेद २२६ सा १ : १ २, १६= पार मुमा)। समिवर र् [श्रनिश्चर] पर्शनस्य स्टब्स पर (१ बर) । संरष्ट्रर र् [ संस्तर] वर्ष-सिदेव (हा ५, १--- पत १८८) । मजिपरि 🕽 🖠 [शनैधारिम] यूर्वनह सर्विचारि । बनुष्यी को एक बोति (इक् मगर ७---रम २७६)। समिबर / देवो समिचर (ध ? १--मनिग्दरी पर ३३ इ. र रेस्ट कीर पुमा पुण्य १ २ २)।

सणित देवो सिणित (६२ १ ६) द्वमा)। संपित्भवाय र् [राने अपाव] की में दे भरी दृदे पौर्कावक करनु-विशेष (ठा२ ४—पव छणह् द्रै [स्तेह] १ प्रेन प्रीति (प्रमि र७ कुमा)।२ इत्र तैल बादि किन्द रछ। १ विकार, विकास (प्राप्त है २ १ २)। शुष्य **क्रो** सम्र (वे १६ ७२)।

सक्त्रस्त्र व [साम्प्याच्य] मन्त्र पारि है श्वेरकारा बाठा वृत सादि (प्रतक्र १३) । स्वव्यक्तिओं वि [वे] वरिवापित (वेद २व)। सळ्यक्सिति [के] १ किल्ब्स । २ वः साविष्य मदद के लिए समीय-वमव (दे व X ) 1 सक्तिक वि [वे] पार्व धेवा (देव १)।

स्रिकार केवो समिर (एव)। सम्मृतिभ वि [दे] १ धीनीहरा । २ पापित, नापा हुमा । ३ अनुनीत अनुनय-पुर्क (१ ४ सुष्णु मञ देवो सम्नुमिश्र (दे, ८, ४४ दो)।

सळ्यान्ड वृ [बे] स्थ-वेषका (वे सण्डू वि [स्ट्य] १ वदस्य विकता (कमा सौरा)।२ स्रोटा वारीच (विचार च---पत्र क्षे) । ६ न योदा(दे २,७४८ पड्) ।

४ वृ बृक्तरिकेय (पर्छ १--पन ३१) । हरता को [बरणो] पीपने की किया (सम ११ १ - पत्र ७६६) । सम्बद्ध 🖠 [सस्य] मद्दनी शो एक वार्ति (रिंगा र ६—यम वरे पर्या १-- पत्र ४७)। सांपाओं में रिस्सिया पाठ रण्ये गरहरलविखडा का एक नाप (६७) । सम्बर्धाः [शुक्त] । कोटा, वारोक (हुना) । २ स. देवद क्यट । ६ सम्बास्त । ४ यसंगर-विदेव (हे २ ७१)। देवी सुद्दम

मुद्रुम् । सम्दार की [रे] दुवा (रे व रे)। स्तर्भकास्य ≉स्य (पारे)। वस्तर्भ [किंगु]ध्य (स्प)ः स्पीक्षे विदे Bu-fette (402 1 1-43 et 47) : पुत्र को [प्र] एक बरालके (साय-) १—या १११) (असवाक्षे ['भपव्]

क्सार-किटेव (सम ११) । रिसम प्रै [ब्रुपभ] बहोधन का स्टीवनी पुरुष्टे (सम २१) । वस्त्र पु [वस्स] पश्चि-विशेष (पस्या १—पद १२) । बाह्या की ['पाविका] श्रीनिय कन् भी एक वार्ति (क्रस्य १-न्य ४३)। स्त देवो स्तच=स्तन् (पिप) । र पि

["इप्तन्] सत्तव्ह, १७३ व्ह बांग्रेक्ट्रवंधि । वरिरहरूकः स्वरनेधरसमेधं (सिरि १२ व कम्य २, १३३ १६)। रसय न िरसराती एक सीक्षतपर (कम्म २,१३) । सर्वत रेवो स-र्वत = स्व-स्व । सतत के समय = सक्त (राम)। सत्य देवो सपय = तत्क (सम ११४)। सतर न [सतर] सनि स्वी (परेन ४०)। सिव देवा सङ्बस्पृष्ठि (इ.४ १--पव १०७ पीप)। सती ध्यो सई = परी (इम ६)। सरीया देवी सङ्घ्या (ठा ६, १--- १त 141) ( सतेस और दित्र स्टब्स पर सही

पत्र ११ व इक्)। सत्त वि[श्राष्ठ] धनवै (दे २ २४ वर् ) । सत्त् विशिष्त्री शाय-वस्त्, विस्पर माध्येत किना बच्चे हो नह (प्रकार ११, ६ पन १ ६ के प्रशिव वर)। सक्त देवो सद = स्टब (यभि १०८७ वित)। सत्त वि[सत्तः] धासकः पूतः नोनुतः (नूप १ १ १ ६ मुर १३६। व्यूत)। सत्त क्षेत्र [सथ] १ स्थावत वहाँ हमेळ मन पारि स रान रिया बाता हो यह स्तान

नावी एक वियुक्तमारी देनी (स.४.१---

(पूत्र १७२)। २ यज्ञ (मनि )। साध्य म्में शिक्षा मचन्त्रस्थाम, चनक्षेत्र (इंग्र)। । गार व [गार] पक्ष वर्ष (वर्षीके २६) । सत्त वि दि] का बल हमा (पर्)। सत्त ईन सिल्बी १ अल्डो, जीव चेहन (मानाः नुर १ १३६) नुस्र १ ३३ वर्गत ११ ६) । र म्यायत्र ना पूथ्य पुरुष (यन

२१)। ३ व दर प्रधनः । ३ मनबिकः

क्लाब् (पिड ६३६ मतुः) बाहु ७१) । ३ विध्यम्नवा (वर्नर्थ १ १) । १ वर्जकर बात दिनों का उपनास (संबोद १४) ।

सत्त (स्प्रम्] सत्त संस्थायम, क्य (विया १ १--पत्र रूपाः कुनाः की ६४ ४१)। किस्ती सत्ती की विशेषी विग-वैश्व विग-विश्व केन प्रापन पत् शास्त्री भागक और सामिका ये सार्व का क्या-स्वान (सी दां सु १२६:सत्र) । गन [\*s] चात का समुद्राम (र ३१) कम्म ६ प्र २७:६ १६)। चलास्र वि िपरवारिंशो सेंताबीस्त्रां Ye वॉ (पटम ४७ १०) । यशासीस स्रोत [ वस्तारि रात् ] बॅवामीच ४० (सन ६७)। आद्रम

पुं['क्क्स ] इय-विशेष कालन का भी, छंदींचा(बार्यः से १२३३ खाना ११६ ─ पत्र २११३ छन्छ)। "द्वि भ्ये ["पश्चि] १ **श्रंपा-विदेश सङ्**तठ ६७। २ सङ्ग्रह संबन्ध माला (सन १ रेकम्म १ २६) ३२३ **२** ६)। "ट्रिया च ["वरिया] स्मन्त अमर का(दुवा१२—यव २२)। आरह वेली ौणउ६ (धव)। वीसइम वि**ि**श्चिप सहतीसमाँ ३७ मा (पडम ३० ७१)। वैर्ज वृ["तम्तु] सत्र (पाम) । "वृस वि

['दरान] स्टब्द १७ (पन्न ११७ ४७)। पळण देखो बच्चा (राज) : सूस <sup>वि</sup> ["भूम] बाद श्वादाता प्रस्त (मा १९)। भूमिय नि [भूमिय] बद्दी पूर्वी जान (म्यूरा) । संवि [स] सबर्ग करी (क्रम्य)। की. सा (वी २६) । सासिम वि [मासिक] धार्य मास्य का (क्ल)। मासिका की [मासिकी] बादमा<sup>त में</sup> पूर्व होनेशाची एक साम्र-विका कर-विधेष (इन २१) । "मिया मी ध्यै ["मिम मा] १ श्रीवर्ग ७ वॉ (महाः सम<sup>२६</sup> भारते । सम्म ते ६। प्रांतु १२१) । र सातवीं विश्वसिक्ष (वेद्याय ६०२। सत्रत्र)। य सेको स (इस्टर्स ६६८०)। रिवि [ी] बत्तरर्वक वी(पटवक कर)। र वि [द्रान्] स्तव्हः १७ (क्रम्य ९, ३)। १च पुं ["राप्र] बात रातरित का संबद (गरा) ह रसंति ["इरान्] स्टप्टा १७ (४४)। रस, रसम रि [रात्र] काप्रा (कमा ६ १६ पतम १७ १२६) पत्र ४६)। रेष्ट्रकेको रसः= सरल् (पड्) रिकी [\*ति] सत्तर, ७ (सम =१ कप्प पक्)। रिसि र् [ क्युपि] सात नक्षत्रों का मैक्स विशेष (मुग्र ६१४)। थण्या सम पु िपर्णी १ इस-विशेष सठीना (धोप) याम)। २ देव-विशेष (राय द )। सभय-हिंसय र् ["पर्णामतंसक] सीवर्म देवसोक न्य एक वियान (राम ११)। मिह वि विघी सात प्रकार का (भी १३३ प्रामु रे ४ पि ४३१)। वीसइ, वीसा धी [\*विंशति] स्वार्षेत २७ (रि ४४३: भय) : "सद्य वि "शतिक] सत सौ की संस्पा-बाबा (स्प्राया १ १—पत्र ६४)। सङ्ख दि [परि] सङ्ग्रहकां, ६७वां (पत्रम ६० ११)। सिंद्धि देवो द्वि (सम ४१) साच मिया की ["सप्तमिका] प्रविद्या-विशेष नियम-विद्येष (धेव) । सिक्त्सायह्य वि ["दिश्वाद्रनिक] सत्त रिक्रमतन्त्रका (खाया ११२ मीप)। इसर वि [सप्तव] सत्तकृतरका ७० वर्ष (पडम ७७ ११व)। **"ए**चर्र **को** ["सप्तवि] १ सक्या-विशेष चतर्वर की संस्था 👐 । २ सवर्वर संस्था--शाचा(सम ८६: सय या २८)। द्वाय [भा] बाद प्रकार का सन्दर्भिक्ष (वि ४८१)। हुन्त १ देवो इन्तरि (नव व)। । इस (इस) देखों। बीसा (प ४४६)। ीव्यक्त की [सवति] सतानवे १७ (सम १८)। (अष्ठम वि [नयत] १ स्टानयवी १७ वां (प्रत्म १७ ३०)। २ विसर्ने सठा-नवे प्रविक्षः वह 'सत्ताशास्यवीयशास्य (भय)। १८६८ (धन) देखो रहा (पिय)। ापण्या ।यस कीन [ पद्धारान् ] १ संस्था-विदेश सहाजव १७। २ प्रताबन सक्याबाला (पक्टि चिंग सम ७३) तप २)। की पत्राक्षा(पिय पि २६६८ ४४०)। Iपम वि ["पद्धारा] संवादनवी १७वा (परम १७)। ।शीस म [पिराति] र प्रस्ता-क्रिय सनार्दम । र प्रवार्दम री सक्यानामाः 'प्र' चलानीतं भंग ग्रीमन्ता' (मन)। ।शिसद् के [पिंशति] नहीं पूर्नेक ! सक्ति की [शक्ति] ' मक्रनिकेष (दुना)। मर्च (इन्य)। ,।यत्तवहम वि ["विश्वविवम]

सत्ताईसबी २७ वॉ (पटम २७ ४२)। बीसइबिह वि [विश्वतिविध] स्वादेश प्रकार का (परख १७---पत्र १९४): पिनेसा क्षे देवी भीस (हे १ ४ पर्)। सिद की शिशीति स्वासी ५७ (सम ६३)। "सीइम वि [शिविवम] स्वाद्धेवा वक बहै (पदम वक २१)। सत्तंत्र दि [सप्ताहः] १ राजा मध्ये निक. कीश-चंदार, केश, फिला तथा ग्रैम्प ये सात चन्याञ्चनाता (कुमा) । २ न. इस्टि-शरीर के से सात धनवन---भार पैर, सुँह, पुण्य बीर सिफ 'सर्तगमश्रद्धि<sup>व</sup> (ब्बा १ १)। सत्तव्य देशो सन्तव्य = सन्तव्य । सन्तरम नि [वे] धमिनाव पुनौन (वे व t (+5 सत्तम वेशी सत्तम = प्रद्-तम। सत्तर्वेदो स-त्तर= ध-त्नर। सचर देवो सच-र = क्य-दरुर, रहा। सत्त्वत्र न [सप्तक] दुव्य वितेष (पर्वः)। सत्तरम् । श्री [सर्वस्य] स्वानिशेषः वन-सच्छी ) मानिका का याख (पाम या ६१६, प्रस्त १३ ७६)। संस्कृति से नि सप्तव्य विश्वनिरोध रोसिका का यादा (वे ० ४) । सत्त्रदीसंत्रायण स्था सत्तादासंबोधव । (**4**3) i सत्ताओं [सचा] रसद्भाव मस्तित्व (एवि १३१ टी)। २ धारमा के शाव संये हुए कर्मी कामस्तितः कर्मीकास्वकासे प्रप्रकान----धवस्यान (कम्म २ १:२१)। सत्तापरी की शिवाकरी क्य-निरोप 'सता-वर्धे विरामी दुमारि वह बोहरी गुलोई व (पर ४० संबोध ४४ भार)। सत्तावीसजीअव वृं [वृ] चनः चन्नमा (दे < २२) 'चतानीश्रंतीयसकरासरो भाव धन्त्रवि न होई (बाम ११)। सचि से [वे] १ तिपाई तीन पामा वाला रोत काह विशेष । २ यहा रचने का वर्धम को बर्फ् अँग काह-निशेष (देव १)।

२ निरुत्त (पर्याः १ र⊷पत्र १८) । ३

सामर्प्यं (ठा १ १---पत्र १ ६ कुमा प्राप् २६)। ४ विद्या-विरोप (पत्रम ७ १४२)। म "संत वि ["सन्] द्यक्तिवाना (ठा ६--पत्र ११२, संबोध का उप १६१ दी)। सचि प्रसिद्धि सरव चोहा (याम्) । सचिव वि [सास्त्रिक] सरव-पूक्त सरव प्रधान (नुमनि ६२ इम्मीर १६ छ ४)। सचित्रणा की हि] धामित्रहम दुसीनता (\$ a {\$)! स्राचिवण्यः) वेबो सन्त-भण्या (सम. ११२ सचिवम 🕽 नि १ व विकार १४६)। सन्त्रं [शब् ] रिन्न, दुरमन, वेरी (खाना र र-⊶पत्र कथ्यू सूपा ७)। देव वि [बिल् ] १ श्रुषो जीवनेकामा । २ पू एक राजा कर नाम (प्राष्ट्र ११)। स्माचि ["झ] १ एपू को भारनेवाबा (प्राकृ ६५)। २ 🐒 रामचन्द्र का एक छोटा धाई (परम २४, १४)। निक्ष्ण ["निह्म] सही पूर्वीका धर्ष (पक्रम १ ६६)। सङ्ग्रह कि ["सर्दन] राष्ट्र का मर्बन करनेवाचा (सम १५२)। संज पुं [सेन] एक धन्तक्ष्म मुनि (धेत ६)। •ह्भादेशो स्प (दतम व , ३,व)। १ ई [सक्तु] वत् वतुवा मुबे सत्तम 🕽 हुए यह भावि का बूखें (पि वेदेश निष्कृते छ २३३ सुर ३, २ ६ मुपा४ ६ मध्या)। सर्चन न [शतुःश्र] १ एक विदावर-नवर (१४) । २ प्रे. रामपणानी का एक छोटा भाष्ट्रे, राष्ट्रप्त (पद्मन १२ ४०)। सत्तवय र् [ब्रव्यक्षय] १ काविमानाइ में पानीवाना 🛎 नास का एक मुप्रसिद्ध पर्वत वो केरों का सर्व-मेह शीर्व है (गुर ४ २ ३)।२ एक स्त्राक्तनाम (स्त्रा)। **छत्त्रम र् [राष्ट्रम्यम] एक प्रमान्य नाम** (पत्रम १० ८६)। सनुग देनो सनुभ (हुप्र १२)। सन्तिरे ध्ये [सप्तसप्तिति] ववरूतर, ७३ ( \$PH ( Ya) 1

सस्य वि [रास्त्र] प्रशस्त व्लावनीय (बह्य

सर्वन [राख] हनिवार धावुच प्रहरश

(माना पर मय, बानू १ १)। ऋसं वृ

१७२)।

ध्रन्द-विशेष (पिय)। ४ नाम शतका

(मक्षा)। १ प्रसिद्धि (धीन सामा १

१ टी-~पण ३) विकिति विधिनी

शब्द के चनुसार निकाता भारतेशका (साम्य

१ १८—पत्र २६६: वज्रत)। ह्याद्र दे

(আ. ৬—বস ২৪

(खामा १ १६—पत्र १≠१)। दास£ वि िवच्यी इक्षिकर के मान्त्री सोग्स (साम्य र १६--पत्र १६६) ीवाडण न ियपा-टन रेख हे चीरना (फामा १ १६--पन २२ भव)। सस्य वि दि] का वसाहमा (१ ८ १)। सरम रेडो स-स्म - सन्स्म । सत्य न [स्थारध्य] स्वस्थता (शामा t E-44 \$44) I सरव र् [सार्व] १ व्यापायै मुसाहिरों का यमा (सामा १ १६--- पत्र १६३ उत्त ६ १७-वहर मस्य पुर १ २१४)। र ब्रा<del>विक स</del>मुद्र (कुमा हे १ ६७)। ३ वि धन्तकं स्वार्वतामा (वेद्य १७२)। वह

याह वृत्ती विवह यार्थ का मुख्या चय-तामक (स् प्रेप्ता क्या क्या १ २ — वय ३१)। और, की (जना-विपा १ २--पत्र ३१) । "वाद्विक पु "बाद्विम् ] शहा प्रवॉक धर्म (मनि)। इड वैको बाह्य (वर्गनि ४६३ इक्)। हिंद पू ["पिप] शर्व-क्रवड (पुर २ ३२: पूपा ४३४)। हिबाइ पू ["पिपवि] बही मने (सुपा १६४)। सत्य र्न झाडा हितोपरेशक क्ष्म हित-रिवाक पुस्तक परम-प्रम (निशे १६व४ बुमा) चारामस्ये गुरुंगोनि (भा ४) । प्पन्न कि कि जान का बानकार, 'सुधि हाइत्स्रहर्त्त (ज्य १८६ दी स्पाद १२७)। गार नि विदरी शास-मधोता (वर्गवे १ ३ फिल्का ३१)। रेशाई (पैजी) राज-राह्न (दुप्र ६३२ ६ वर्गि) । वार विको तार (बाध गर्मेंबे १०२)। विकास ("विद्रि] सम्बद्धाता (व ३१२)। सम्बद्धम नि [रे] क्वेब्ड (रे व ११)। सत्पर १ वि विकट, प्रमुख (व संस्थर १ पूर्व [स्तरतार] राज्या, विश्वीना संस्थरय १ वे ४ धी नुशा ६ व प्रस्थ बर् इस्ट ३८ पुर / १४४)।

सरभव देवी सनव=सरवन (प्रक्र ६६) रि ७६)। स्प्रत्याम देखी स-स्थाम = व-स्थापन् । सरपाथ देवो संप=संस्तर (ब्रह्म ११)।

करेड कमियो' (वस्म १६, ६२)। २ क्षेम कारमध्य मंत्रतः। १ पूर्वं पादि का स्वोक्सर (हर ४६) वित २१)। सई भी मिता १ एक वित्र-की कीरकरम्बक जगम्बाम पी बी (प्रजम ११ ६)। २ एक मच्छी (ज्य १ र)। १ सनिवेश-विदेव (स १ १)। वेको सारिप । सरिधक्ष दे [स्तरितक] १ माजुलिक विन्यास विशेष सकत के लिए की नाती एक प्रकार की चानस धार्वि की एवना-विशेष (धा १७-सूपा ६२)। २ स्वस्तिक के माकार का धासन-सम्ब (बड १) । १ एक देव-रिमान (रेक्ट्रेट्४)। पुरन [पुर] एक नवर का नाम (भा २७) । देखी सारिधम । सरिवश्र वि [सार्विक] १ सर्व-सम्बन्धी बार्व का सनुष्य धार्वि (क्रुप्र ६२) च १२६। त्र ६ ११६ सूत्रा ६३१ मधीन १२४) । २ पुरार्वका द्वाविका (इह १)। सस्यक्ष व सिवियक्ष करू वाव (स.२६२)। सरिषधा के [स्रक्षिक्ष] दुएँ (श्रप्र) । सरियम केवो सरिनभ = स्वरितक (पंचा 🕶 २३)। सरिवा देवो सरिवान = पार्विक (नुर १ **₹** ¤) i सरिवद्वय देवो सरय = बार्व (महुए भवि)। सलाविधास्त्री व्यक्ति-कर्ता धोव की गमा(बागासूप २ ६,४८१ १६,२)। सरप्रभ देवो संस्था (प्रक्रा १३) पि ७६)। स्वादेशी सभा = स्वा(एव)। सदावरी देवो समावरी = स्टावरी (इन्त 14 (18)

["पाविम्] एक कृत वैदास्य पनत (स्र र. २---पत्र ६६३ व ३४ १---पत्र २२३३ इक्)। सहस्र न [भादूक] इच्छि हुए पास (पान्ध र्णमा १ १---पन २४ नडड)। सर्ख्यि वि शाङ्किती इस चलकार (माचार ४ २ ४)। २ तुम्म-विकेश

सरिस (दौ) देशो सरिस = सरध (नक्र---मुच्च ११६)। सद्भव [शम्बय ] रे मानाव करना । ९ सक प्राह्मल करमा, कुराला । सहस (स्वि)। संदर्ग[अब्द] रचकि सन्तव (हर २६ ३ र ७८। क्रमा सम ११): चंद्राच्या विकारकार्ति (बूध १ ४ १ ६), 'सहाद'

प्रकेत (पडड)। सद्द एक [भद्र + घा] भदा बरम्ब, विद्याब करता, प्रवीति करमा । नरहरू, बरहानि (हे ४ १३ घर ज्या)। भूमे. शहीस्ताई (नि १६)। यह सम्बद्ध सम्बन्ध सदहाम (का वेश है ४ शायु २३)। पंद्रः सद्दिता ( बत २६, १)। इ. सहिद्यम्य (ज्ञा सं ५६) हुत्र १४१) । सरहण देवो सरहाण (ह ४ २१० कुमा)। सर्हणया ) की भिदानी यहा निकार संदद्गा प्रवीति (ध ६—पर १४६) पंत्रमा)। पि १३३)। पाय, भीप) । **धरानेति (शी**फ कम दल) । वहानेत्रि

भ**रहा रेको सहक्ष = व्या** (वर्षे १२७) । सद्दाज न [शद्धान] चदा, निवास (पानक दशकारहर हेच राव)। सरहाण देशो सरह । सर्दिम वि [सक्कित] जिस पर बदा की परिहो गाः नियस्त (ठा६—पत्र १६६ सराइन (श्री) वि शिष्यायिती पहुर कुषाया ह्या (ताठ-- मुख्य २०६) । संदाज देवो संदाज । सद्दाखद ( वङ ) । सराज्ञ वि [ श्रध्यक्ष् ] राज्याचा (हे % ११६ परम १ साम पुर १ ६६ सरम्बद[दे] गुरूर (देव १ : वद्) । पुच पु ["पुत्र] एक बेन ज्यातन (ज्या)। सराम सम [शब्दन सम्बाधन ] माञ्चान करना, क्यान्य । बहानेच, बहाविति,

सङ्खियसप्भन	पा <b>र्मस</b> रम <b>र</b> णयो	<b>~ (3</b>
(सन ११)। इने वहांनीचीं (पीषे १२०)। वेह सहाविचा, यहांचेचा (वे १८२ वहा)। सहाविय वि [ादिन्द, सब्हावित] बाहुत बुकाक हुवा (च्या पहा तुर १११)।	सदेव दि [मदेव] मदासर (मिते ४०२)। सपम्म दि [सम्पर्मन] समान मर्भनाता (१७१२)। सपम्मात्र रेको सन्धम्मित्र = वद्नामिक। सप्मिमा की [सर्घामणो] पत्री (१० १९ सन्।)।	स्रप्य ग्रह [सूच् ] १ जाना समन करना। २ साममण करना। प्रत्यह (पारना १११)। वोर्तवशा विह कमा सम्प्रत न करमस्यम् । (मुरा २ २११)। यक्त सप्यमाण्य (सहस कष्ण)। इस्तरप्रतिस (बाट
सहित्र वि [शस्तित ] १ प्रस्कि (योग ) एवा १ १९ — पर १) १ १ साह्र (योग ) बात परे गर्दे कहा ) १ वर्षाति विवक्ते । बात परे गर्दे शहर (क्ष्म १ १४) १ सहित्र वि [शास्तिक] रुख-राप्त का साता (यह २६४) । सन्दर्भ द्वं [शार्युक] १ स्थान्य पश्च की	संघवा देशों सं घमा ≈ स-वदा।	छत्त पूर्वी [सर्पे] १ डाप प्रत्नेगम (वसा मुद २ १४३) भी २१ प्रामु १९ ६६ ११२) भी द्या (एव)। २ वृ सरोवा मध्यम सामित्राता वंत (मुक्त १ १२ द्वा २ १—वन ४५)। १ प्रत्नेशस्यात (देग्प्र २७)। ४ धन्द विशेष (गिम)।
एक जाति कार (शास परहर १ - पन ७ वे १ २४ सिन ४ ४) । २ एच रिटोय (रात) । विकाकिश न [विकाकित] कनोत बस्ता के शतस्याता एक स्पन्न (रिज)। सह पुन [साउक] स्थलनियोग (रिज)। सह स्वा स इट स्थली।	सम्राम यक [आ + ह] पारत करना पंजाब करना। यानायह धानाभेह (पत्र है ४ व १)। सम्मामक्ष वि [आहत] धंयानित (कुमा)। सम्माक्ष वि [ब] पंचित्र पहना हुमा (मुख व ६)।	सिर पू [ शिरस_] हत्त्व-विधेष बहु ह्वा हिससी उन्होंना और संदूछ मिता हुया हो भीर कमा भीचा हो (दे ८ ०२)। सुगंधा को ["सुगम्या] चनलंदि-निधेष (तरहा र—पत्र १६)। सप्यम देनो म-दम्म ≃हन्त्रम धनु तर्ज
सद म [आद] र शतरों भी तृष्टि के बिए वर्षेण निरह-बामारि (यण्डु रेका कुम्ब १९७)। २ रि चढावामा अद्वापु (उर बहेद)। रेका सब्द्रक बाद (उर रहरे)। प्रस्त र्यु (यर) बारियन बात वर इच्छ	समिद (यर) देवो समित्रं (श्री) । समिद त [त्र] वत्र-ग्राकः श्रामी (रत १, १ ७ )। सन्तुम शक [सादय] व्यवस्थास्त करता बाक्ना। सन्तुम (द्वे ४ २१)।	सन्त्रच। सरप्तनाण देवा सरप = खर्। सव = खर्। सप्तरिश्राव } देखों सन्परिश्राय = क- सप्त्रिश्राव   परिकार। सर्प्य क[सप्तिस] पुट पो (याव वक्ष
वय (हे ६ १२७)। सञ्च व्यो साम्ह = बाव्य (बार—पेट ११)। सञ्च वृं [माद] व्योध-नावक भव (यहा)। सञ्चय व्यं [सायय] एसीस वयर्थ क बारायाला एक स्वयं (सिंग)।	सम्मुमित्र वि[दादित] दश्य हुमा (दुमा)। सम्ब देशो सम्ब = श्वरत (द्वमा)। सम्ब देशो सम्ब = श्वरा (शिव २२२७)। सप्तम्म देशो स-पस्त्य = श्वन्यः। सप्तम्म देशो स-पस्त्य = स्वन्यः।	भ नुता १६ किरि ११०० चण्छ। आसय यासच रि [आस्त्रय] किय- रिदेशकात विमहा वचन यो को ठाइ नपुर हाता है (तहा २, १—तवा १)। साध्य वि विरिचनी १ जानस्थात कींद्र करन-
सद्भाव (श्वरह) एक प्रशार का दुविधार, दुखा को (श्वरहार राज्यवारक) । देशो सव्यक्त । सद्भाव राज्यक्म (ब्राहर रहे प्राप्त) । सद्भाव स्थास स्थास (इ.स. ११) छाता र	सर्वायमं व सिप्छाम् ] व्यव्यापः (स्व १४)। सप्यापः क्षे [सप्छां] यह महौत्रवि (दी र)। सप्यापः क्षे [सप्या] युग्र (स्व ५ ०)।	बामा (एक)। र यदि रिटेर, हुन हैं तबसे क सहार व बन सक्नेताना सर्वि- विदेश (शाहर १—वह १ )। सर्विशतका रची म-विदादन =सनीता बहु।
र्-नव २४ अपूं ४६, वायो। "स्व हिर [ ११] स्वाचामा (धाः वावह १०४)। प्र हि [ जो वहे वहे (बेशव व)। क्षेत्रप्ता (वा ४ ४)। महिन्ना १८ (धाः को स्वाच्या १९ स्व)।	सराह दिन च [ मधांतिहुङ् ] च्यत्नत चैत्रण टार गामने (वेत्र १४) । संशास्त्र वि[सप्तित्र] बाल व बांत्रध्यंपत्र (६ ६ १६६) । सपद देवो सत्रह (वर्षत्र १२६) ।	सद्या देवा गर्दा अर्थ । सत्यादम देवो तन्त्यु दम अवस्तुदर । सत्यादम [चाया] वन तृत्व, अन्य पाव (६ २ २० अत्र)। सत्याद व [द] दृष्ट् देवतः भी,वर्थ दृ
सदि य [साध्य] गरित पात्र (याचा उस उन १९३) :	_	्रदुर्घ पर्र्व ६२४ वन्द्र (ग्राप्) । सप्टेंद्र रवा सन्दर्धरू ≈ मनस्य ।

वर्देश सरफाड केवो स-प्रस्त = सनका सफाड केवो स-प्रस्त = सम्का सफाद केवा समाद = शका (वे र )। सफाद कृत विग्नी पुराविकी: 'बासकरावस्

कार्स (विरं १६२)। सदस्र केवी सन्दर्भ व इन्द्रन ।

सफ्छ एक [सफ्छय ] सार्वक करना। बहु, सफ्छेंत (गुण १०४)। सफ्डिअ वि[सफ्डित] एक्स किया हुया (मुण ११६) वर)।

स्तर (दा) केसे सकर = वर्ग (रिप)। सकर र्थु [शावर] १ एक क्यार्थ केछ । १ वत्र केछ में पहनेवाली एक प्रतार्थ मनुष्य-व्यक्ति किराय, केम (वस्तृ १ १—वम १४ पाछ पत्रक)। "वित्तस्तत्व वामान्यका (त्रतार्थ १) केसे सकर।

समय की [समयों] ए दिया नार्ति की की (क्षाया रे रूप्पण के की मान्य कर हैन इस्त्र )। र मान्येक्षने मान्य देश रेल, समय इस्त्र के की सम्मर मान्येक्षने मान्य (क्षाय प्रमा)। समय है [समय] र मान्यमानिक नेतें की प्रमा मान्यि (क्षाय २०)। र नि मन्द्री, विस्तरमाय (क्षाय) उन १०० वना)। ने

न. पुरिष्ठ चारित । ४ वि दुव्हि चरित्रवासा पुनि (बन १२) । सर्वाउप रि [राबहित्र] कर्मुष्टि (बरहे) । सर्वाउपम व [इनक्रीकरण] बरोब करमा, च्यारित को दुव्हित बरामा (साव ४००) ।

च्यांत को दुवित बरामा (योष कथन)। सम्ब (या) देवो सम्ब = वर्ष (मैंन)। सम्बद्ध दुव द्वि ठक्किस्टीक च्रायम्बद्धार्थन बस्पब दुव दुवित उत्तर ४ १४ वर्गीय ११)। सम्बद्धार्थ देवो सन्दर्भ = बनवा।

सम्भाव रेको स-६२५ - इन्तव । सस्स्र हि [मध्य] १ वच्छाड, वस्स्य (पास्त सम्म्रत ११६) - १ वच्छीएक स्टिट, प्रस्क-मार्थी (स्त ६,२ वः पुर.६, २१६, व ६६ )। सस्स्रा रेको सन्दर्भक प्रस्त्राच । सस्स्रा रेको सन्दर्भक स्वरूप ।

सम्मादिय वि [साद्माविक] पारमाविक सम्मादिक (स्पति १ १११)। सम्भ न केशो समा "सम्माति" (स्पत्ती २ १ २)। सम्भ दुवेश (साम्भ) मस्य, मक्षती (नुमा)। सम्भ दुवेश (साम्भ)। सम्भ दुवेश (स्थानिक सम्माति । सम्भ दुवेश (स्थानिक सम्माति ।

समर दें [क] गुभ नवी (व क, 1)।
समयक क [स्टिप्सिया] विश्वने यहम की
तरह पात्रपत हिन्दा है। वह (दुना)।
समय को सम्मद्ध को स्वत्य है।
समा को [समा] र निरुद्ध (दना एक्ट)
को वर्गीत है)। र यही के क्रार की
क्ट—क्क (सा रहे)।
समाव क [समावय] पूक्त करता।
के समाव क [समावय] पूक्त करता।
के समाव के समावय] स्वत्य करता।
के समाव के समावय है।

(तेनाः २ नट्ट (तेनाः ३ यासचः (तेनाः

यवद, समीठ (दे ४ १६७ कुमा)» 'बह

समद स्वरूपद पित्रं ता कि पटोकार (सिरि

११९)। वक समेनाम (पाला १ ४ १३)। धन पर्व [सामय ] १ करवान्त करवा, स्यमा। १ नात करना। वक्र 'हुदुविष् करेते। (स्वर्ग' १)। धन १ [सन] १ परिचय बामाता। २ केट स्यम्बर (क्षत्र कर बामात करा है १ १९६१ कर ६ १६० हुना १२६, क्षत्रक स्वर्ग हुना)। आज व [अस्त्र] स्टेस्स (साम)। सम १ [सान] स्वर्गित करन, क्षेत्र बादि का

निव्य (दुवा)। सम वि [सम] रे बनान, तुम्य वरिवा (बर करा कर दुवा; वी १३; कम ४ ४० १३)। ४ कम व्यव्य करातीय, यक्तव वे सीठ (दुवा रे १३ राज व)। वे वर्ष यह (दुवर)। ४ ईक्त पह रेर्सरेशात (बर १३। श्रेक्ट १४)। र सम्प्रदेश (वर्ष परा श्रेक्ट १४)।

६ याकार, क्ला (का २ १-दर

७३६)। पार्तस व [\*वनुरस्र] संस्थान-

विधेष, बार्धे केलों के स्थान छारेर की

संस्वतिके (स्ता ) (स) प्रशा को।
साम्मित्र के साम्मित्र (हे १९, ०१)
साम्मित्र के साम्मित्र (हे १९, ०१)
साम्मित्र के साम्मित्र (हे १९, ०१)
साम्मित्र का सामित्र मान्ने । स्वयंत्र
साम्मित्र का सामित्र मान्ने । स्वयंत्र
साम्मित्र का सामित्र मान्ने । स्वयंत्र
साम्मित्र (सी स्वयंत्र का का से स्वयंत्र मान्ने । स्वयंत्र स्वयंत्र है । स्वयंत्र स्वयंत्य स्वयंत्र स्वयंत

समद्रभ न [समयिक] धामाविक वानक

१४६ पर कस्प १ ४ )। वद्यान व िचक्रवाखे दृत केमाचर (पूज ४)। ताळ व िंदाक्र १ क्या-विरोध (प्रीप)। २ विश्वनाय कम्बदाला (ठा७) । अस्मित पि ["र्घामक] समान वर्गकवा (स्प १) क्षे) । पार्युत पून ["पार्युत] मानन-विशेषः विसर्गे दोली पैर मिकलर वसीन में सकार जाते हैं वह सा<del>धन-व</del>न्प (स्र १ र---पत्र ।)। पासि वि विशिष् देशिया है दुस्य ह्यप्रिकास्ता समद**ार्जे (बच्चा १**२२) । प्यम कृत [प्रस] एक देव-दिनान (धम १९)। साव दे साम समता (मुना ६२)। या और [\*ता] सक्त⊀न का यगा-मध्यस्वता (बत्तः ४ १) पत्रम १४ ४ मा २७)। यति पु वितिन्] समयन वप (पूरा ४३३)। सरिस वि ['सहरा] प्रस्कृत तुस्य सहस्य (प्रस्य ४६ १०)। सहिय दि सिहिती दुक्त पहिल (पदन १७ १ १)। सद्ध पं शिव एक एवा जो बढ़ने केशर का रिखना (प्रदम २ १=२)। समझ्य वि [सामधिक] समक्षेत्रकी, क्यान का (भन)। समइभ वि [समिथित] धरिकत (धरेडे X X) :

धाङ्गति-विधेष (ठा ६---पत्र ११७ सन

समुत्र (पप) बीचे देखी (मनि)। सर्मग्रामिम्]साव सह (मा १ उ १६४: २१%, उत्त १६ ३ महा पुना)। समंत्रस वि [समअस] विवट योग्य (बाबा रखा मंबि)। समंत देवो समंताः 'वसियो प्रेम् समंत-वीशक्लक्ष्मचे देघो' (पडड)। समेत रेवो सामन्त (पर प्र १२७)। समेत (प्रच) देशो समत्थ = समस्त (पिय)। समंत्रा प [समन्तरस ] सर्वेत पार्चे क्तरह(कार्जापुर २ २३८)। समेवा १ घ [समन्तान्] उसर देखो समितिया (पामा मण निपा १ २--पत्र रहा के ६ प्रशासूर २ २०-१३ १६४)। समद्भव कि [समाम्ब्रन्त ] १ जिक्पर धाक्रमण किया नया हो बहु (से ४, ४७) । २ बास्त्र रोश हुया (म = ३३)। समक्त न [समभू] बबर क सामने प्रत्यक्ष (या १७०३ मुपा १४ वहा)। देखो समय्द्र । समस्त्राय ) वि [समास्याव ] उत्तः, समिक्स में गर्भक (बर २११ थे: ५१४ को २४: पुरुष)। समर्ग देशो समर्थ=सपस्य (पर २३२) मुपाः ६३३ बस्)। समगा वि [समय] १ सक्त, सपस्त (नुगा **११): १ पूछ, बर्दित (पर्दा १ १-पन** ४४: दुम ७) । समगास र [समगेस] पार्वापक (सिर बर्क दुस १६७३ ४२ )। सबगान्त (बर) देवा समस्म (सिन) । समाय रि [समर्थे] बत्ता चल मूखराना (नुस ४४६, ४४७) सम्पत्त १४१)। सम्बद्ध व [सम्बद्ध ] पूत्रव पूत्रा (गुच ६)। सम्बन्ध र [सम्बन्ध] पूज्य (परव tts (t) समन्द्रपद्ग [सन्+भास ] १ देशाः रेटक प्रश्नम्बन करना । १ प्रचेन एक्सा यह गन होत (ज्य हर्द हा)। समग्द्र वि [समभू] प्रत्य का विषय (बंध १३)। ध्या समस्य ।

116

समच्छायग वि [समान्छाद्क] स्क्नेशता (स १६)। समञ्ज ) सक [सम्+अञ्] पैरा सम्बद्धिय है करना उपार्थन करना । सनग्यह, क्रमन्त्रियणः (सर्या पद १ मदा)। मक्त सम्बन्धिणमाण (बिना १ १—पत्र १२)। संकृ समजियि (भग) (मण) । समज्जिणिय ) वि [समाजव] उपाविव समझिय 🕽 (इल् छ ौ ११४ पुपा२ ५ छए)। समाम्यसिय वि सिमध्यासित प्रविद्वित (मुग्य १ १)। समद्रति [समर्थ] संस्ठ पर्ण स्तावनी न्याय-युक्त (सामा १ १—पत्र ६२ सरा)। रेखो समस्य = समर्थ । समय न [श्रमन] १ उपरामन रशासा शास्त करना (नुषा ३६६)। २ पप्यानुहान (उबर १४)। १ एक दिन का प्राकास (संबोध १८) । ४ वि उपरापन करनेवाता, दवाने शासा (डा ७६२ वंशा ४ २६) सूर ४ २११) । समाप देखो सन्मण = सन्मन्छ । समण देखो सपन = धक्य (परन १७ १ ७ एव)। समज र्षु [समज] स्वत्र जवान प्रदृतियासा दुनि साधु (मणु)। समग र् [अमज] र भगराम् महासीर (मानार १४३)। र दूक्तो, निर्देश पुनि सापु माँत मिद्ध सन्यामी तारक निरम्भ मन्द्रतारक्षपेस्पद्याजीनं पंत्रहा सक्ला' (राज ६४ मण् याका क्या क्या स्था र रा पण रहे नुर १ - २२४)। ध्ये, जा (भक यन्य १ १६)। सीह नू [सिंह] १ एक नैन पुनि नो रूपरे बनरेर के पूर्वभरीय एक थे (परम २ ११२)। २ व्येष्ठ द्वान (पर्स २.४-पत्र १४६)। "ीवासग "ीवासय र्ध्भ [।पासक] धारक देश ग्रास (३६) । भी समा (उसा ग्रास्त १ te-93 (ca) : समयन्द्र (पर) व [समसन्तरप] प्रश्वर

ate a Ch (10) i

समज्ञस्त्र देखो स-मज्जनस्य = स-मनस्य । समणुगच्छ । सक [समनु + गम् ] । समर्थुगम 🕽 बनुबर्ख्य करना। २ पेण्डी तरह म्यास्या भरता । ३ **घ**क- संबद्ध होना पुर भागा । वह- समणुगरसमाण (लागा १ १--पत्र २५)। कनकः समञ्जूगार्मतः समणुगम्समाण (बीप: मूप २ २ ७१) खाया १ १---पत्र ३२३ कप्प)। समगुत्रव वि [समनुत्रव] १ प्रयस्त (स ७२)। २ सनुनिद्ध पुराहुमा (पंचा ६, 84) I समणुचिण्य वि [समनुचीय] प्राचीत विद्वित 'त्रशे समस्विष्यो (पदम ६ 25x) 1 समणुजाण मङ [समनु + हा] १ धनुपोरन करना मनुमति देना । २ मधिकार प्रशन करना । समयुकाराहः, समयुकाराहः सक्तृ-पाणेमा (पाचा) । वह समणुत्रागमान (घाषा)। समणुद्धाय वि [समनुद्धात] उत्तव वंशत २४ मुग्र ३७४) । (पडम १ समणुनाय वि [समनुज्ञाव] धनुवा, धनुमोरित (परम 🖘 ७) । ससणुझ वि [समनुक् ] मनुबोदव-कर्वा (माचा १११ १)। समणुष्प वि [समनाद्म] १ मुन्दर महोहर। २ मुन्दर वय धारिवामा (धावा १ ८ १ रे) । ३ वंशिन, वंश्वेद-पुत्र पुनि (याचा १ ६ २ ६)। ४ तमान तनाचारोशाना---धार्थावक पूर्व (स. १ १--पर १११ 41 t) : समगुष्रा भा [समनुद्रात] १ बर्चात संबद्धि रे पविकार प्रधान (दा १ र---वर १११) । समनुष्राये रवा समनुनाय (वाना १ १ t v}ı ममणुरच वि [समनुत्रात्र] बंदात (दुर १ रेको १ १२ विक्रिप्रकानहा)। समगुबद्ध वि [समनुबद्ध] निरम्बर का व स्वत (गान रे ४—पर ११ चीन वर)। मयपुन्य वि [ममतुन्त] काळ बाह विषया पण्डर विद्या बच्च हा बहु (४ ६२) ।

समञ्जूषक वि [समञ्जूषक] वेषक, प्रयाव (पडम १ १) । समणुदास सङ [समतु+शासय\_] t शासन्ध-मृत करना। २ सिक्क करना। ३ परिपायन करना 'ध्ययर्ठ धम्मं ममधुकारे-अपनि'(ब्राचा २१६,१२४४ \$ 2, 8 2 1 4 1 4 ) 1 समञ्जनद्र वि[समनुशिष्ट] मनुष्यत सनुपत (काचार ११ ४)। समगुनास सक [समनु+भ्रासय] सम्बन्धीय देनाः पन्धी तथा तिवाना । धमज्ञाधमंदि (नूप ११४१)। समणुसिद्र वि [समनुशिष्ट] पन्धी तथा रिजित (वर्ष) । देशी समणुमटू (पाचा २ 1 2 x)1 समगुरा कर [समनु+भू] सनुभव करना । समसुद्दोद्द (वव १) । समण्डागय वि [समन्यागत] १ वयन्तितः स्ट्रित 'वटोस्ट्रुएसमर्खामएख' (पन्द्र १ १२)। २ संबद्ध (स्व)। समण्यादार पू [समन्त्रादार] समावनन (राष)। सम्बन्धि समक्षिय (कार्क) । समितिकत थ्यो समञ्जूत (खाया १ १~ 44 (1) I समनुरंग नक [समनुरंग्यय ] नमल बद की उरह भारत म भारतहरू करना भारतेय करमः । कः समनुर्गमान्न (काळा १ ---पत्र १६४ पत्र १७४ हो) । समत्त वि [समस्त्र] १ बंदुर्श (पर्या १ र—नत्र ६ ) । २ शक्ता एर (विन ४३२) ३ मनाव-पूरन । ४ पिरित मिना ह्या (६२ ८६, बर्)। समस्त वि[समाप्त] पूर्व, पूर्व विक जो हो पुराहो वह (बस धीप) । समान भ्यं [समाप्ति] पूर्वता (वर १४२ ७२ ही वित्र ८१३ वर—न्याचा ६३) त ३३ दुसारदा (११)। समस्य बङ [सम् + उर्धय ] १ बास्ति क्या, किइ करना। २ पुरू करना। ३ पूर्व करम । कर्म, बक्तमेवह (ब १६१);

'स्वारो जि समस्यव्या द्धहेरा सरोद्धास हेर्नतो । चरिएडि शब्द क्लो संयोजनीति सप्पार्ख (पा ७३)। समस्य वेको समज्ञ = तमस्य (स ४ २८ सुर १ १वशः १६, ४४) । समस्य वि सिमर्थे । राष्ट्र, राष्ट्रियात् (पापः ठां४ ४—पत्र २०३३ प्रात् ३३ १०२, पीप) । समस्य वि [समर्थिन्] प्रापैक वार्नेवाका (#X 122) I समरिमध वि [समर्थित] १ पूर्व पूछ शिमाक्कमा (क्रुप्र १११८ सूत्रा २६६) । २ प्रदक्तिका हुमा (तुर १६ १६) । ६ प्रमाखित साबित किया हुया (घरमः १११)। समदासिय वि [समाध्यासिय] पविद्वित (B \$% \$9\$) I समद्धि केवो समिद्धि (च ४२६) । समञ्जागय देवो समञ्जागय (योग ७६४) स्रामा १ १—पत्र ६४३ स्रोपः महास्राह्य **१** १--पन ११७)। समित एक [समगु+इ] १ प्रमुख्य करुवार सक एकवित होना विवासाः कमन्देर, धर्मनिवि (विष्ठे २११७) मीप) । समिश्रभ कि [समस्पित] पूछा चहिल (हे १४६ मुर १ (१ ४ २१ वज्रः)। समम येवो समित। समप्य वड [सम्+अर्पय्] पर्यस करमा, दान करना देशा । समयोह (महा) । **प**क्क समर्पन समप्पर्भन (लब्द-भूष्यार र सला ४१, पत्रम ७३ १४) । यद्गः समय्यभः सर्माष्यक्रयः (गाट-नृष्य ११४ वहा) । हेन्द्र, समस्तितं (महा) । इ. सर्माप्पयन्त्र (मुना २१९) । समप्त देखी समाद - बन् + मान । समप्यय न [सम५य] क्षेत्र प्रधन (नूर क देश देश रक्ष देश) । समप्यमया ध्ये [समर्पमा] इत्तर देशो (इत (30) ४ विकास, राम्न, मानव (माना; विक्र ५

समिरियय वि [समिर्यित] विकाह्मा (महः, काव)। समस्त्रस सङ्ख्याभि + अस ] मन्यर करला । समस्यास (इस्य 🐠 । समस्मिक्ति वि [समस्यविक] धरका धविक (से १४, वर)। समस्त्रास व [समस्त्रास] निकट, पाव (पद्धमा ११ १७)। समस्मितिय नि [वे] मिना हुप्प, बना हुप्प (पडम =६ ४८)। समिक्षावण्य वि [समस्यापम] वंद्वव धाया इया (सुझ १ ४ १४)। समभिजान सर्व [समभि + 💵 ] १ विर्तेष करना । २ प्रतिवानिर्वाह करना । सर्पावय-रिया समीपनासाहि (पापा) । वर्ष-सममिजावमान (पाना)। समभिद्रव वह [समभि=द्र ] हैएन करना । समनिश्चिति (उस १२ १)। सनभिषेस का [समिथ + व्यंसर] ग्र करना । सन्तिक्रिक सन्धिकेनेति (अन)। समिवपड धक [समिथि + पत्] धारूपत करना । हेक्क, समिमिपश्चित्रप (प्रेव २१) । संसमित्र वि [सम्मिभ्व] प्रवाद पर-मृत (जना वर्मीव ६४)। समभिरुद्ध पू [समभिरुद्ध] स्व-विशेष (स समभिक्षेत्र सक [समिति + स्रोक्] देवन, निरीक्षण करना । सम्बन्धीरक (यन १५---पन ६७ )। पञ्च समिन्ध्रापमाण (पर्य १७--पद ५१व)। समिक्षांइअ वि [समिक्षांकित] विवीः क्ति रष्ट् (क्त ११—पन ६७ )। समय धक [सम् + अय ] स्पृतित होन्य प्यक्तित होता। फाले प्रस्तित बार्ज नेवर-सामी नया विस्तावि (विस २१६७)। समय र् [समय] १ काव वस्त्र, सववर (पाचाः नुपनि रहा नुमा) । ५ काव-विकेट पर्वेनुष्य काम जिल्हा कुल्या दिल्हा व ही क्षे ऐटा पूरत शास (धरा, इक काम दे २३ ९४३ १)। ३ मर्ग धर्मन (धर्म)।

समय-समस्सिध सूचित रहा क्रमाः दं २२) । १ पदानं, चीज बस्तु (सम्म १ टी प्रष्ट ११४)। ६ संकेत, क्लाय (सुमनि २१८ निकर प्राप से १ ११)। • समीचीन परिणाति सुन्दर परि स्ताम । य माचार, रिवाज । १ एकवास्थया (सूमिन २१) । १ सामायिक संयम-निरोप (विसे १४२१)। "मलोच, सोच ग["क्षेत्र] क्षत्रकोपस्तरित मूर्मि मनुष्य-सोक, ममुष्य-सेत (भक्त सम ६८)। स्त्र, ज्य सनि [\*इ] समयकाणामकार (वस ६६ वा ४ ६) वि २७६) व समय देवो स मय = स-मद । समय) व [समकम्] १९१५तः पक सुमर्थ रे पाम (पन २१६ टी निसे ११६६) १६६७) सुर १ ४३ महा पत्र ११ ६)। र सक्रु साम (मा ६१)। समया 🖦 सम-पा । समया ध [समया] पास, नजशेक (गुपा (44) t समर एक [स्मृ] ग्रह करना । इ. समरणीय (कड २७: नाट राष्ट्र ३) समरियम्प (सम्बद्ध २८)। समर के से सवर (इ.१ २१६) वर्)। की. धे (क्या) । ससर कुत्र [समर] १ द्वार अकार (वे १६ ४७ का ७२० टी, कुमा)। र सम्क्रिये (भिय)। १ तोहकारणाचा (उत्तः सध्य १ या २६)। ह्या द्रं [ीदिल] यश्ली-देत का एक समा (स ६)। समर वि (स्मार) कामरेव-धंकनी कामरेव का (मन्दिर धारि) (स्त ४९४) । समराज्ञित [सर्व] समराज्ञानां (सम ११) । समर्प्य न [स्तर्प्य]स्मृति सन्द (वर्मीन २ ध्या ६०)। समरसद्दय वृ [वे] स्थान उम्राला (वे ब, २२)। समराहम वि [दे] चिट, विश्वा हुम्य (वर् )। समरी देवो समर = रावर ।

समलंकर एक [समदम्+क] विभूषित करना। समर्मकरेड (बाबा २०१४ ४)। संब समस्रेकरेचा (प्राचा २ १४, ४)। समस्त्रम् । समस्त्रम् + कारम् ] विभूपित करना विभूपा-मुक्त करना। सम-संदर्भः (वीष) । संद्रः समसंदर्भारेचा (पीप)। समल्य (पप) दि [समास्त्रकथ] विकिन्त (मवि)। समद्भित्र पर [समा+की] १ वंदर होना। २ शीन होता। ३ सक. धामय करमा। समस्सियद् (माक ४७)। वक्र समक्रिमंत (से १२ १)। समझीण वि [समाधीन] बच्छी वरह सीन (धीप)। सक्यक्रज वि [समयतीणे] सबतीणे (सुपा समक्ट्राण न [समवस्थान]सम्यन् प्रवस्थिति (सम्बद्ध १४७)। समबहिष् की [समबस्यिति] उत्तर देखीः 'कोई विधि पुर्छीएं सहामधमबद्धिई इवे बराव (घरमः १४६)। समयन्ति देवो सम-यन्ति = सम-परिन् । समयय रेको समये। समयसर देखा समोसर=समद+स (प्रामा)। समबसरण रेखी समीसरण (बूपनि १११)। सम्बर्सास्थ देवो समासरिश = सम्बद्ध (वर्गवि ६ )। समयसेश्र वि [समबसेय] जानने योग्य इसरम्ब(सा४)। समबाई वि [समवायिम्] समबाय संकल्प का समस्य-संबन्धे (वित १६२६, वर्षसं 749) I समपाय र् [ममचाय] १ तंबन्य-विधेव पुरा-पुराणी साहित्स संबन्ध (विसे २१००)। २ संबन्ध (पत्रम १६, २४) वर्मचे ४०१ विवे ११६) । ३ बमूब, समुख्य (नूम २ १ दर बोच ४ ७३ बणू २७ टी रिड राधारा शासिक्ष ३४१६ टी)। ४ एकत्र करना 'कार्ड हो संपन्नवार्य' (विते समरच् रेको समराज् (स १--पत्र ४४४)।

२५४६)। ५ वैन धम-धंव विशेष चौषा द्यंग-प्रेष (सम १) । समने मक [समव + इ] १ शामिस होता । २ संबद्ध होता। समवेषि (शौ) (मोह ६३) समबर्धीत (विशे २१ ६)। समबद (शौ) वि [समवेत] समुदित एक मित (मोह ००)। समसम प्रक [समसमाय ] 'स्म 'स्मः' प्राथान करना । बद्धः समस्तर्मतः (अपि) । समसरिस देखो सम-सरिस । समसाण देवो मसाणः 'समसाचे सुप्रवरे देवउसे वावि तं वसम् (मुपा ४ ≈)। समसीस वि [वे] ! सहरा तुन्य । २ निर्भर (देद १)। मेन स्पर्मा (से मेद)। समसीसिआ र भी [वे] समी, बरावरी समसीसी । (पुणा ७ वज्जा २४- कप्पूा बेब १३ स्र १ क बज्जा वेर १५४० विवे ४१३ सम्पत्त १४१३ हुत्र ११४)। समस्तम सर्भ [समा + भि ] पापव कला । समस्यम् (नि ४७३)। संइ. समस्यद्रम (पि ४७३)। समस्यस यक [समा + ऋस् ] मारग-सन प्राप्त करना, साम्त्वना मिसना । समस्य सम (शै) (प ४७१) । हेड्ड समस्प्रसिद्धं (ही) (बाट एक् १११)। समस्टसिद् (रो) देशो समासस्य (नार---मुच्छ २३८)। समस्या को [समस्या] बाक्षे का मान भोदने के सिए दिया नाता रचीन-वरण मा पद मादि (सिरि वर्षका दूम २७३ मुगा ttt) i िसमा + भासय ] समस्यास एक श्चान्त्रमा करता, विज्ञाचा देन्ता । समस्यासदि (दौ) (नाट)। भारू समस्सासमंद (बिध २२२) । हेड्ड. समस्सासिव (शी) (नाद---मुच्छा ८१)। समस्तास र् [समाश्वस] बारवातन (विश्र समस्रासण व [समाधासन] स्वर रेखी (मेध्य)। समस्सिभ वि [समाभित] प्राप्य में स्पित याधित (च ६३१३ वर १ ४४३ तुर १३ २ ४० महा)।

स्मिदिश कि [समिथिक] किटेव न्यावा (वायू १७० व्या कुमा पुर ११७ वया)। समा देगा कि [समिथिगत] १ प्रस्त किया हुणा १ वार्त (वया)। समिदिह यक [समिथि +स्वा] कुमू वें व्याय वर्षण व्याना। वनक समिदिह-व्यामण (यव ११२)। समिदिहा कि [समिथिहत] व्याय दुवी व्यक्तिय (व्या २, २,३ १:२,७ १

रा ।

समितिहुन वि [समितिहा] ध्यम्क (वर
करत से पूपा र १)

समितिहुन वि [समितिहा] ध्यम्क (वर
करत से पूपा र १)

समितिहुन वि [समितिहिहुन सामितिहुन पानमिक्क कुळे किया हुमा (वर ११ टी)।

समितिहुन वि [समितिहुन पण्टा (वर ११ टी)।

(बडड़)। समझुन दि [के] संमुख, प्रविभूक (प्राप्टु २२२)। समा की [समा] १ वर्ष बाएड् नात कर सम्प्र (की ४१)। २ काब सम्प्र (सम १७) ठा २ रे—गव ४० कम्म)।

समाध्यम रेवी समागम (य्यं २ २) गाउ मन्दरी १२)। समाइत्यम् एक [समा + गम् ] १ तम्परे यथमा २ समाइत्यम् स्टला स्टला स्टला पंक समाइत्यम्बद्धाल (महा)।

समाइनियम वि (समाग्व) सम्बद्ध स्वयं (त १७२)। समाइट्ड वि (समाविष्ट) क्यान्य हुमा (म्बर)।

समाइब्रु कि [समाविद्य] के किया हुया (वे १ १)। समाइज्य कि [समाद्योज] व्यन्त (बीटा कुर २२४१)। समाइब्य १ कि [समावीज] व्यन्त्र ठख् समाइब्य १ कि [समावीज] व्यन्त्र ठख् समाइब्रु भाषीक्ष (भरु व्यन्त्र १३)

तुर ४२१) समाइस्य १ हिस्सायोजी बन्द्री उत्तर् समाइस्य १ वार्गाय (मरु उत्तर १३) दियार ११)। समाइह यक [समा+यून] वस होगाः करतः स्पेत होनाः मुद्दा समाईद्वा (नूय १११)।

समावह वि [ समावृत् ] विनम्न (वर १)। समावन वि [समायुक्त ] दुक्त समित (पीप) युगा १ १)। समावक वि [समाकुक्त] १ समित, विभिन्न (एस)। २ व्यन्त (स्ता १ १)। १ साइन

समावन वि [समाकुक्त] र सीत्रथः, विभिन्त (फा)। २ व्याप्त (हुता १ ४)। १ वाहुन व्याहुन (१४ ४४४४ हुर १ १४४४) समावकि कि [समाकुक्तिय] व्याहुन वना हुवा (व ११)। समापस इं [समावेत] र सावा हुइन

(जन १२ र दो)। २ तिसाझ धारि के दरहाड में किए हुए भोमन में बचा हुया बहु बाद निताको निर्देशों में बाँदेशे का पंत्रकर किया कया हो (किंद्र २२१ २१)। समाएसाज न [समाहेशान] ताका हुदूब (मिन)। समामोना है [समायोग] हिक्सता (वैंद्र

रंग)। समाभोसिय वि [समावीविव] ईकु विमा इया (वर्ष)। समाभ्रतिस कर [समा+कुर ] बॉक्ना। कु. समाभ्रतिस (वि रण्र)। समाभ्रतिस्य व [समाभ्रतेष] बॉक्ना

(पुता ४)। समाबार एक [समा + ब्रार्य] धाङ्कल करना, दुखना। धङ्क समाञ्चारित्र (बम्मच २२६)। समानन्द्रत्र हैको समागम = बना + गर।

समागन के समाग (दृर १. )। समागम के समाग (दृर १. )। समागम के [समा + ममू ] १ समन समा २ सामन कला । १ बानना। समानकार (महा)। और समानकार (ति १९६)। और समागिकार (ति

११)। समामान द्वी [समा + गप्यू] १ धेपीय धेरुव (स्वयः परा)। २ वर्षण्य (सूप १ ७ १)। समासामान व [समासामा ] करा केले

१वर) किमालेख समागन्म (बच २३

७ १)। समागमन न [समागमन] कपर देवो (न्दा)। समागम नि [समागन] धामा हुमा (नि

१६७ हो ।

समागृह्व वि [समागृह्य] स्वाधिष्ट साविध्यः (पटन ११ १२१)। समाज वृं [समाज] स्वृह्यः संवादः (वर्षीर १२१)। वेतोः समाय = स्पानः

१२३)। वेकी समाय क एपान ।
समाञ्चल न सिमायुक्त सेनीयन कोन्नन
(एन ४):
समाइन्त वि सिमारच्या १ बाठन निवस
प्राप्त किया क्या हो नह् (क्या वि २२६)। २ विकर्ष साहा हो वह (क्या वि २२६)। २ विकर्ष साहा हो वह
रचे पाठिन प्रमादन (हुर ११)।
समाज एक [मुज् ] पोक्य करण,
बाला। यमावन (हुर ११) पुना।
समाज एक [समु + आप ] समाज रुप्त,

बाना । उसावा (हु ४ ११ दुना)।
स्मान्य कर [सम् + आप् ] समस्य करम्,
पूप करवा । यसावार (हु ४ १४३)
समाव्य कि [समान] १ वारा-दुस्स वरिवा
(क्या) । र मान्यविद्य व्यक्तार्थ (वे १
४६) । हे पुनः, एक देव-विकाल (स्थ १३)।
समाय कि [सम् ] विकास होता हुवा
(क्या करा १ २—क्य १४)। की वी
समाय केवो समाय = वैद्याद (वे १ ४६)।

स्थानम विस्तिपत्की वहत्व करोपास (दे १ ४६)। समायम विशेषका क्राप्त वाद्या चित्रम रुगाउपराजकारतकार्य (द १९)। समायम विस्ति स्थापकारी विस्ति हुइन विस्ता क्या है यह (स्था)।

विका पता हो यह (यहां)।
समाणिक वेद्यां स्थापित (के १ ९४)।
समाणिक कि स्थापित वेद्यां का बाग बंध हो यह पायों (यहा पुणा र र)।
समाणिक कि समाणा पुण किया हम्म (के १ १२) जाता १ — वन ११६१ व १ १ हमा १ ११)।
समाणिक कि विका किया हम्म, म्यार वे अका हमा। विकायका हम्म, म्यार वे अका हमा। विकायका वस्तु वेद

बमारिज मंद्रवर्ग (च २४१) । समाजिज नि [मुख्य] पश्चित काना हुमा (च १११) ।

(प ११६) : समाणिमा स्मै [समानिका] स्टब्सीस्मैन (सिंग) ।

**८**१९

समायी सक [समा+नी] वे पाना। समारोद्र (विसे १३२६)। समागा देखो समाग=सर्। समाणु (प्रप) देवो समे (१४ ४१ क कुमा)। समाद्द् सक [समा+दृद्द] बनाना मुख्याना । वहः समानुद्रमाण (पाणा १ E, 7 (1) समाया सक [समा + वा] धहरा करना। संक्र, समावाय (म्यवा १ २, ६ ३) । समादान व [समादान] प्रवृत्त (राव) । समादिह वि [समादिए] फरमाया हुमा (मोक्कादर)। समाविस सक [समा+विश्व] यात्रा । करना । सङ्ग समाविधिक्ष (ग्रह) । समावस भेवी समायस (शट-माबदी 84) I समाधारणया 🛍 [समाधारणा] समाव भावसे स्थापन (बला २३१)। समाधि देवो समाहि (हा १०-पत्र ४०३)। समापणा को [समापना] समाप्त (विसे ३१६१)। समामरिज वि[समामरित] मामप्य-पुष (मणुरश्र)। समार्वे (समाज) १ समा परिन्त् (४७ ३ १७: प्र**ण्यु**४)। २ क्यु-क्रि**ण** सम्बॉ कासमूह संबद्धाः कहाची (पद्)। समाय र् सिमाय । सामामिक संगम-विशेष (निषे १४२१)। -समाय देवी समनायः 'पूढे वन य रीसा पुरिस्तायाची इतियाखीय (मुमनि ६३) समार्थ देखो समर्थ (भव २६, १—३३ 2x ) 1 समायण्य स्म [ समा + कर्णम् ] मुक्ता । **४इ** समायण्यज्ञ (महा)। समायण्यत्र न [समाञ्जीत] व्यव्छ (वडह)। समायण्यिय वि [समाक्तिक] पुना दूधा (कार्य)। समायय पद [समा + दुरू] प्रहुण करना स्वीकार करना । समायर्थीत (क्य ४ २) । समायय देवी समागय (परि)।

समायर सङ [समा + चर्] माचरण करना । समामधा (उनाः उन) समापरेसि (निसा १)। इ. समायरियम्य (उवा)। समायरिय वि [समाचरित ] धावरित (परह) । समाया देखो समादाः चेष्ट समायाध (बाबार व र ४)। समायाय वि [ममायात] समानत (स्प ७२ व टी)। समायार र् [समाचार] १ माच्छा (विपा १ १--पत्र १२)। २ सराचार (मसू १२)। १वि मानच्य क्लोनाना (संदि ११)। समार सक [समा+रचय्] १ क्षेक करमा दुस्साकरना। २ करवा बनाना। समारह (हे ४ १६ महा) । मुक्त समाधिय (कुमा) । बहु, समारंत (परम ६५ ४ ) । समार एक [समा + रम्] प्रारंत करणः। समारइ (पड्)। समार वि [समारवित ] बन्धवा हुमा, 'मञ्जूसमार्थीम वरकुशियीम' (तूर २ ६१)। समारंभ सक [समा + रम्] १ प्रापन करना। २ दिसा करनाः समारंगेण्या (बाका) । कहा समार्थित समार्थमाण (माना)। प्रमो समारंभावेग्या (माना)। समार्थम र् [समारम्भ] १ पर-परिजान हिंसा (बाबा परहार रे—पत्र ४) बा ७): 'परिवादकरो भने समार्रमो' (संबोध ४१)। २ मारंभ (क्रम्)। समारचम ) न [समारचन ] १ क्षेत्र करना, | समारण र पुस्त करना 'कारेद जिल्ल-इस्सं समास्य पूर्यसम्पर्धास्त्रात् (परम ११ ६)। २ वि वियासक, व्यस्त (क्रुमा)। समारद्वा केको समाइत्त्व (पुर १ ४ समारम १ वेको समार्ग = समा + रम्। समारक प्रभारने स्मारने समारनेका समारनेकास समाप्दर (पूष १ ४, १, नि ४३ : वर् )। संज्ञ समारदम (वि १६ )। समारिय वि [समारिया] दुस्त दिना हुष्य (कुत्र ११४) ।

समारुद् सक [समा + रद् ] पाधेद्रश करता बहुना। समास्ह्र (मनि पि ४६२)। बह्न. समार्ख्य (या ११) । वहः समार्ख्य (भद्दा)। समारहण न [समारोहण] पारोहण बढ़ना (मुख २६३) । समारुद वि [समारुद ] बहा हुया (महा) । समारोव सक [ समा + रापय ] बहाना । संक्र समारोषिय (पि १६ )। समाईचर) रेशो समर्थं घर = प्रमर्थ + समार्जक 🥬 कारम् । समाजकारेक तमाजकेक (बीप माना २ १%, १८)। संब्र समा-संग्रहता, समाजकता (पीप पापा २, ₹X, ₹a) 1 समाजेन र् सिमाक्षम्बी प्रावस्त्रम, स्कारा (संबोध ४)। समार्जभण न [समाजम्भन] पर्वनस्य विमुख करना 'मेमससमाबीमसाहि विरस्ति' (पर्मि १२७) । येवो सम्रास्त्रमण । समाख्य वि [समाव्यपित] इक, व्यवत 'पबराजियो समानका' (पडन १४, ६४)। समासभय न [समाजमन ] निदेवन मैनयप (मुर १६ १४) । वेको समा<del>र्क्</del>मक समाख्य सक [समा+छप्] विस्तार से कहना। समासरेग्या (मूच १ १४) २४)। समाख्यणा 🛍 [समाख्यनी] बाद्य-विदेव 'बसूबीखासमानवस्त्रिरनपुंबर मञ्जरिकोससंगी सकरपुद्धिसरं (मुगा ६ )। समाप्रमिय देवो समाउच (परि)। समान्य धक [समा+स्रम्] १ विशेषन करना । २ विमूपा करना यसंबार पहला । संक समास्त्रहिष (सन) (महि)। समास्त्रण देवी समास्त्रमण (गुरा १ ८) दस ३ १ टी नार—राष्ट्र ७३) । समानात्र 🕯 [समानाप] बादबोत बंगापण (पडम ६ ६)। समास्त्रिगय व [समास्त्रिक्त] मालिका, पर्मत्पष्ट (भीष) ।

समास्रद्ध वि [मनारिज्य] जार देवो

(विन) ।

समक्षित्र वि [समिविक] विशेष प्यादा (बालू १७≈। महादुमा दुर ४ १६६। <del>ठ</del>छ) । सम्भागम वि [सम्भिगत] १ प्राप्त निषा ह्या। २ इस्त (स्प्र)। समिद्वि सक [समिधि +स्था ] कत् में रक्षना, प्रयोग रक्षना । इनक समहिद्धि-खनाण (धम १६२)। समहिद्वाउ वि [सम्बिष्णात्] यम्पन पुनी ग्रिशिति (पाचा२, २३३२७ १ समहिद्वित्र रि [समिदिद्वन] मान्ति (उप ७२ टीसपा२ १)। समाइडिडय देवो स-मोइडिड्डय = स-महद्भिक्षः समिक्षिप्रिय वि [समिनिनिम्ह] यत-मिक्क **मुद्धे फि**न्द्र हुमा (धर १६ दी) । समिद्धि वि [समितिष्ठ] बक्ब समस्त (बडर) । समङ्क्ष वि दि । संमुख परिमुख (पणु २२२) । सम्प्रकी [समा] १ वर्ष वास्त्र नास का धमम (बी ४१) । २ काम समय (धम ६० का २ ६—नव ४३-वय्य)। समामन वैद्यो समागम (प्राप्त २ २) कट मानको १२)। समाइच्य पत्र [समा + गम्] १ धामने याना। २ समादर करना श्रदका करना। र्शक समाध्यक्रिक्क (बद्धा) । समाइच्छिप वि [समागत] भारत, ब्युक (# tut) i समाइट्ट वि [समादिष्ट] करवाचा ह्या (मक्)। समाइह्ड वि [समाविद्य] वेव विना ह्या (F C 1 ) i समादञ्ज वि [समाद्यीपे] बास्त (बीप; नुर ४ २४१)। समाइण्य । वि [समावीर्ष] बच्छी उत्प समाप्त विचेति (मर्ग्य १६) विचार १३)। सभाजह्मक[समा+पृत्] नम्रहोताः | कारा, परीव होता । भुषा, सवार्क्यपुतु (तुम

**୧ . .** ):

समाउद्ग दि [समातृत्] दिवस (दर १)। समाउत्त वि [समायुक्त] पूच, स्र्वाहर (बीप मुका १ १)। समारक वि (समाङ्का) १ सीपय पिनित (राय)।२ व्याप्त (युगा ३ १)। ३ माङ्गूच ब्यानुस (द्वेष ४४४४ युर १ १७४)। समारक्षित्र है [समाङ्गवित] बाहुम बना इष्य (स ११)। समापस र् [समादेश] १ माका, १९म (चप १२१ टी)। २ विकाइ घावि के . उपलब्ध में किए हुए जीमन में बचा हुया बहुबाद क्रिसको निर्देशों में बॉटने का संकल्प किया बना हो (शिंक २२६ १३ )। समापसण व [समादेशन] प्राथा 👣 व (मनि)। समायाग र् [समायाग] स्वित्ता (वैर् समाभासिय वि [समाठोपित] पंदुर विना हुमा (भरि)। समार्भरस कर सिमा + कृप ] बीक्ता । हेड. समाद्धिसिर्द (वि १७१) । समाद्धरिस्य न [समाद्ध्येय ] बीवार (मुपा ४)। समाक्तर स्व [समा+क्राय्] बाह्नव करना दुवाना । यह समाद्वारिय (सम्पत्त समागया देशो समागम = पना + न्यू। समागत ≒वो समागव (दूर २, ≠ )ः समागम द≠ [समा+मम्] १ तदरे पानाः २ भाषमत् करताः १ जलनाः समाज्ञका (महा)। ध्रतिः सनायमिस्बर (विश्रक्ष)। संक्रसमागिष्यान (वि १ १), फिम्मचेए समायन्म (स्त २६ **41**) i समागम 🕻 [समा+गम्] १ धेपीच, ध्यन्त (इसकः मद्य)। २ प्राप्तिः (तूम १ • 1 ): समागमन व [समागमन] इत्तर देशो (महा) । समानव रि [समानन] धामा ह्या (पि 140 g) i

समागृह नि [समागृह] वंपानित पानिनित (पत्रम ११ १२१)। समाब र् [समाब] सनुद्र बंधाव (वर्गीव (११) । वेदो समाय = प्रमान । समाञ्चल म [समाञ्चल] धंनीयम औड़क (सव ४)। समारच वि [समारका] र मारज विस्का प्राप्ट्य किया गया हो वह (काब दि १२६) २८६)। २ विसने धारम्म क्रिया हो गए न्दं महिन्दं समादती' (पुर १ ११)। समाज एक [मुक्] धोजन करण काना। क्रमाशुक्त (हु४ ११ ३ कुमा) ३ समाज एक [सम्+ आप्] समाज करता, कुछ करना । समावाद (हे ४ १४२) डमासेमि (स १७१)। समाण वि [समान] १ सरक तुम्य धरिका (कम्प)। २ माक-सम्बद्धाः बाईकारी (वे व ४६) । ६ पून एक देव-विवास (सम ११)। समाय वि सित् देवियान क्षेत्र ह्या (भाक्य)। समान 🖬 संमाण = हंगल (हे १ ४५)। समाजञ्ज वि [समापद ] सवान्त करनेवाबा (चे **१ ४६**)। समायण न [भोजम] प्रवास सामा र्सनीय समाज्ञानमाञ्चलकाम्य (स ७२) । समाज्ञ वि सिमाइएको विश्वको 🗗 दिया नया हो यह (महा)। समाणिश केवी संग्राणिय (के व १४)। समाजिम विस्मितीयी जो बास क्या हो बहु सामीत (मक्का सूपा १ १)। समाजिल वि [समाप्त] पूर्व क्रिया 🕼 (डे ६ ६२) खाला १ 🖚 🔫 १६३) छ ११ कुमा ६ ६४) । समाणिश्र वि वि स्थान क्या हवा स्थान में राजा हुमा। 'विशिष्ण क्रमार्ड देव **एमान्सियं पंडमायं (ह १४२)**। समाजिभ वि[मुक्त] बौबत कारा <sup>(सी</sup> (T REX) 1 समाणिया 🗱 [समानिदा] भन्मियो (विष्)।

समाहिथ वि सिमाइस्यी महीत (धावा रै c. X 2) 1 समाविक वि सिमास्थाती सम्यव कपित (संधार ६ २६ माचार १६ ४)। समाहस (मप) नीचे देखो (भवि)। समाहक वि [समाहत] क्लामा ह्या याद्य रिव (मार्थ १ १)। समाइ एक सिमा + घा । स्वस्य करना न्सहरुमार्ग समाहेड' (संबोध ५१) । समि औ शिमि विको समी (क्ला पाप)। ्विशिमिम, की १ शम-पूर्छ। समिभ रिव साथ, मृति (सुवा ४३८) ६४२ उप १८२ ही)। समिश्र देशो सत = शान्त (सिरि ११ ४)। समिश्र विसिमिती सम्पन्न प्रवृत्ति करने-बाला सारमान डोकर यदि मानि करनेवाला (बराउप६४ करा बीफ बरासमार १६ २ पर ७२)। २ राम-मादि हे रहित (मुग्र १ ६ ४)। ३ छपपम (मुक्र १)। ४ सम्बन्धत (सुम १ ६ ४) । इ.स्प्लेट (ठा२ २ — पत्र १०)। ६ सम्यम् व्यवस्थितः (सूथ २ १ ११)। समित्र कि [सम्बद्ध ] र सम्बद्ध प्रकृति वाना (भग २ ६ --- पत्र १४) । २ सम्बद्ध मुन्दर, शोभन समीबीन (मुख २ ४, ३१)। समिश्र कि शिमित्री शास्त्र किया हमा (विशे २४८८ मीर प्रमु २ ४--- प्रम १४६ सणी। समिन विभिन्ती यम-पुरु (मग २ म्—पम् १४ )। समिश्र कि सिमिक्री सम राप-क्रेक-रहिता 'सनियकारे (पहड़ २ ६—पत्र १४६)। समिभ व [साम्य] तनता एकदि का ममाव तप-भाव (सुध १ १६, १, धावा 1 < x (x) 1 समिश्र वि [संमित्त] प्रकारतात्व (प्रापा १ १--पत्र ६२, भन)। समित्र वि [सामित] देई के बाटा का बना , हुमा पद्मान-विधेष महाब्द्र (विष्ठ २४४) । समिश्रं व [सम्यत्] पन्धः वयः (पानाः म्पा र १-नम (११)।

ममिका की म उसर देको (तम २ ६---पद धाचा १ १, १ ४) 'समियाए' (धाचा १ १ १.४)। समिका की सिमिता । येहें का पाय (एएपा १ द—पन १३२३ सका४ ४)। समिया ही सिमिया, शमिया, शमिया बार काबि सब धर्मी की एक प्रभ्यन्तर परिश्व (भग ६ १ दी---पत्र २)। समित्र की सिमिति । सम्पक् प्रवृत्ति ध्ययोष-वर्षेक मधन-भाषण बादि किया (सम घोषमा १ उक्त चर ६ २. एवस ४)। २ समा परिपदा गरिप किर देवलोनेकी देवसमिर्देश मोयासो' (विवे १६६ टी दंद २४ टी)। ६ द्वा. सहाई (रक्छ ४)। ४ निच्दर मिनन (अस् ४२)। समिक्को स्मिति । स्वयका २ ग्रास विरोध मनुस्पृति भादि (सिरि ४४)। सभिद्रम वि [समितिम] येहें के माटे की बनी हुई मंडक ध्याहि बस्तु (विंड २ २)। समिखन प्रसिक्तको ग्रीन्स्य बन्दकी एक बाठि (प्रत ३६ १३१)। समिक्स सक [सम् + ईक्ष ] १ बाबोबना करताः युक्तरोय-विचार करता । २ पर्यासोचन करता किरतन करता । र धनकी तरा देवना, निरीधात करना । समिनवए (उठ २६ २४) । श्रेष्ठ समिक्ता (नुम १ ६ ४ ज्ला६ २ महाः उपयो २६)। सभिक्ता स्री सिमाक्षा । पर्यानोधना (मुघ ₹ \$ \$ {x} ! स[मक्तिम वि [सम]द्वित] मानोवित (वर्षे ११११)। समिच देनो समे। समिच्छण न [ममीक्षण] बनोबा (व्हि)। समिविद्यय देवो समिविनाञ्च (परि)। समित्रस्य सङ [सम् + रूग्यू] बार्स दरह हे बनक्या । तमिञ्चाह (हे २, २०) । वह-समिगमन्त्र (दुगा १ ४)। समिता रेका समिआ = दनिया (ध १ २—-पत्र १२ : मन ३१ —-पत्र ३२)।

समित्र वि सिसदा १ प्रतिस्थ संपत्तिकाला (धीप खामा १ र हो--पत्र १)। २ इद्ध बद्धा हमा (प्राप्त १६) । समिक्ति की सिस्कि र पविरूप संपति। र बॉब किर ४४ वह बमासप्तर ६६३ प्रामु १२८)। छ वि "छि समुद्भिवासा (HT ? YE) 1 समिर प्रसिमरी प्रवत शबु (सम्मत txe) i समिरिहज विशे स-मिरिहम=समरी-समिरीय विका समिख को जिसिया, सम्या । वय-कोसक गाडी की बॉसरी में दोनों सोर डामा जाता सक्तीका कीला (क्य प्रदेश स्पारथण)। समित्र देवो संभिन्न । समित्रह (यह ) । समिद्राध्ये सिमिघी कछ. सक्की (धंत ११ पत्रम ११ ७६ पिक्र ४४ )। समी भी शिमी १ क्य विशेष ऑकरका पढ़ (सुमार २२ १६ दी उपार ३१ टी बजा १ ६)। २ दिशा किसी, फली (पाप)। सरक्रय न दिही फ्रोंकर को पत्ती रुमी इत्र का पत्र-पूट (सूम १ २, १ १८ दी बहु १) । समाअ रेको समाय (नार-मात्तवि १)। समीक्ष्य वि [समीकृत] समान क्रिया हथा. 'वे किथि घएने दात देशि समोक्दे' (सूच १ व २ = पतक)। समाचाम वि [समीपान] सपू. मृत्यः, रोमन (पाट--पैत ४०)। समीर सक [सम् + इरय ] प्रेच्छा करना। समीरए (घाचा १ ८ ८, १७)। समार दू [समार] व्यव बानु (शय, व्यव)। समार्थ पू [समारण] जार देवा (गढड) । समास रथो संमाल । समीमद (पङ् ) । सर्मेष रि सिमापी निष्क पास (परम १६ का महा)। समाद सक [सम + ईद् ] पादवा बांधा करना । बङ्ग ममीइमाम (उप १२ वै) । सम दा की [समोदा] रूप्य चौद्य (उर

1 (4 1 5

समाइविभ वि [समाहव] बाह्व दुवाना

(मप) (मवि)।

हमा (वर्गीव ६ )।

समाझेष-समाधिम

(स्प १६६)।

का बर्सन (विसे २७६)। समाव क्ष [सम्+आप्] पूर्य करना। समावेद (द्वे ४ १४२) । कर्म, समायद (द्वे ¥ ¥₹₹) I समाविकाय नि [समाविकाय] प्रसन्त निमा हमा (नदा) । समाबद्ध धक [समा+पस्] १ चपुत्र मान्द्र पहला निरता । २ बनता । ३ ग्रामन्त्र क्शना । समायबद् (ग्रीम) । समाधक्य व [समाप्तन] पर्मा विस्ता (महरू) । समाविषय वि [समापविव] १ धेवुच 'समान्यक्रिये वर्ष' (त ६ ६ महा) । १३४ वन) ।

समाध्ययण व सिमान्येयनी प्रामान्य वर्ष

माकर विषाद्वमा (सुर २ ६ भूपा २ ६)। २ व्या (बीप) । ३ को डीने बना हो नह, समायण्य मि सिमापक्षी संप्राप्त (धम समावन्ति 📽 सिमान्यप्ति समाहि पूर्वताः 'ते व बमावतीय विदर्शता' (सूख २ ७)। समान्द ४० सिमा + ४४' देशका करता। सम्प्रविका (पाचा १ १३ ३४)। समावस देवो समावण्य (स. ४७१) द्वा ठार १—नवर्षक स्वाध, २२)। समाद्य देवो समाद्य । चनावद्या (प्राचा **२ १**६ ६)। समावय देवो समावद्य । वष्ट्र समावर्गत ( E S B) समाविभ वि [समापित] दुर्ज किया हुमा (# 41 \$ v vx) 1 समास बर्फ (सम्+ आस् रे केला। २ चद्रमा । स्थ्यमदा (चर्मि) । समास सर्व [समा + अस ] प्रव्यक्षे हता चैवना । वर्षे सवाधिकारि (एवि १२६) । समास (सिमास) १ बंधेप बंदोच (क्षेत्रस रः जी ११) । २ बाबायिक, बंबय-विशेष

(विते २ ६३)। ३ व्याष्ट्रस्य-त्रविद्ध एक

प्रतिकार समझ परी के देश करने की रीति

समासंग प [समासङ] पंगेद (न 222 1) [ समासंगय वि [समासंगद] संबद सम्बद (रमः)। समासद्य 🖦 समासाद । समासस्य वि [समाश्यस्त] १ पापसन प्राप्त (पत्रम १० २ छे १२ ३७) सूच २ ३)। २ स्थरन बना ह्या(स १२ सुर ६, ६६)। समासय र सिमाभयी मन्यय स्पान (पडम ★ १६८ ४२ ६१); धमासव वद सिमा + स्न ी बाला पारम्य करना । समाधर्गा (शब्द ३१) । समासस रेको समस्यस । 🖈 समाससि-ध्यम् (छे ११ १६)। समासाद (री) एक सिमा + सादम् ] प्राप्त करना । धमासावेदी (स्थम १७) । इस धमाधादप्रवस्त्र (मा ११)। श्रेष्ट, समा-सका समासिका (भाषा १ ८ ६ १) पि २१)। समासादिभ वि [समासादिव] प्राव (का ર રહ્યો) ા समासासिक कि [समापासिक] विकास घाषासम विया बना हो नह (महा)। समासि पक [समा∔ कि] सम्बद्धान्य करता । कर्म, समाधिकवद, समाधिकवति (श्रीकि १२६)। सम्प्रसिज्य 🖦 समासाव । धमासिय वि [समाभित] धायकशास (१६००

हमा (मनि)।

समाद्दद्व ध्यो समाद्र ।

२ स्थेइन (एज)।

(भीपानुर ४ १२७- क्या)।

(सद्धा)।

१ ६)। ४ एनीय (क्या के क्याँ यह)।

समासिय वि [समासित] उपवेरित बैठाया समासील वि सिमासीनी कैस इसा समाइड वि सिमाइत | १ विवड, विर्मेश 'सतपद्धाम् बेस्साम्' (धाषा २,१ ३ ६)। समाद्य वि [समाद्व] पाध्यकात प्रापृत

समहाज व [समाधान] १ समावि (ज **१२० टी) । २ घोलुस्य-निवृत्ति क्**म लास्म मानक्षिक सान्ति कित-स्वस्वता (सन्द् १९६ सपा ६४०)। समाहार वे सिमाहारी १ समूह 'बरम-समाप्राचे माविका एस जिस्लोचा (मू ११४) । "दंद पु ("द्वन्द्व] स्थलरसम्बद्ध समास-विरोप (वेदन ६६ )। समाहार से [समाहारा] । श्रीवर रक्त पर प्रानेनामी एक स्विकुमारी दे**नी** (अ व—पव ४३६ इक)। २ एक की वास्त्री यति (तस्य १ १४)। समाहि पुले [समाभि] १ वित्र 🕏 स्वरक्ता, मनोनुःश्व का प्रधान (ध्रम १७-उत्तर्भ हास्य १६ १ वेदन ०००)। २ स्थरनताः 'साहाद्वि क्ल्बो बन्दे समाहि विकामि सहावि उनेन बारवु (पत्त १४ २१)। १ भने। ४ तुम स्यान, विश्व सी एकाशता-कम व्यानावस्था (कुम १ १ ह मुपा ६) । इ.सम्बर्ग, सन्द्रधानि का सन्दर (ठार धि—पव ४७४) । ६ व्टब्स् ७ वारित श्रेयमानुदान (ठा४ र—पत्र १११) : व पूं. मरतकोत्र के स्टरपूर्व वाली धीर्वंबर (सम १६४ वह ४६)। पश्चिमा की िप्रतिमा । क्यावि-विकास वत-विकेष (A v t)। याणान [\*पान] शबर मारि कापनी(फ्ला४) । सरस्य व ["सरव] धमधीर-पुष्ड मीत (प्रीव) । समादिम नि [समादित] १ दर्गानगुर (तूप १२, रॅं४) तूपमि १६ वर्ष १६ १९, परम १ - २४। बीता सङ्ग)। १ **सन्त्र** वय् व्यवस्थापित । ३ उपक्रमित (बाबा ८ ≈ ६ ६)। ४ समापित (विदेव४६६) । <sup>६</sup> रोजन, गुन्दर। ६ श्रदीमस्त । ७ निर्देश

(नुष १३११)।

**≈ ₹.** ₹) 1

समाहिश वि सिमोइति भारत (पाचा र

समाहिक वि सिमास्याती धम्यय कपित (समार ६ २६ माचा २ १६ ४)। समाहत्त (धप) नीचे देखो (मणि)। सप्ताहळ वि सिमाहती ब्लामा हमा पाय-रिव (सार्थ १ ४)। समाद सक सिमा + भा । सत्व करना भवनमार्ग समावेद' (संबोध ११) । सकि और शिक्षि देखों सभी (भए पाम)। ्विशिमित्र, की १ शम-पूर्णः। सक्रिक्ष रिवं साथ. मूनि (मुपा ४३६) ६४२ इस १.८२ टी)। मसिस देवो संत⇒ शस्त (सिरि ११ ४)। समित्र वि सिमित्री सम्बक्त प्रवृत्ति करन-बासा सारमान होकर पवि मादि करनेवासा (मगाउप ६ ४ कन्या भीया ज्ञानूम १ १६ २ पव ७२)। २ छन-मादि से सीवा (सुस १ ६ ४)। ३ ज्याचा (सूच १)। ४ सम्बद्धाः (सुधाः ६,४)। ३ सन्दर्धः (ठा २ २-- पत्र १०)। ६ सम्यम् स्पनिस्त (सुम २ द ३१)। समिअ वि [ सम्बद्ध्य ] १ सम्बद्ध प्रवृत्ति-थाना (समार ४---पत्र १४)। २ घन्छा मुन्दर, शामन समीचीन (सुध २ ४, ३१)। समिश्र वि [रामित] कान्त किया हुना (विसे २४३ छ मीप प्रवाह २ ४--पत्र १४८ धरा। समित्र वि शिमित्री यम-पूछ (भन २ **₹—99 १४** ) । समिश्र वि [समिश्र] सन, राव-हेब-रहिता 'समियपान (पराह २ ४--- पत्र १४६)। समिभ व [साम्य] समहा रामादि का यमान समाधान (मूच १ १६ ४ माना 1 < = (c) : समिन रि (संमित) प्रमाणेलेड (जाया १ १—पद ६२ भग)। समिभ वि सिमित्री देव के बात का क्या [मा पकाम-रिशेष महत्त्व (विष २४६) । समिश्रं व [सम्बत् ] बन्धे त्या (बानाः क्टार १-नव १९६)।

समिआ भी य. इसर देखों (मप २ ४ -- पव बाचा १ ४ ४.४) 'समियाए' (प्राचार ६,६ ४)। समिता की सिमिता है में का प्राया (शापा १ ६-- पत्र १३२। स्वा ४ १)। मनिमा की सिमिका, शमिका, शमिता बनर धार्डि स्ट इन्हों को एक ग्राम्मन्तर परिवद (मय ३१ टी---पत्र २)। समित्रको सिमिति । सम्पन्न प्रवृत्ति सप्योय-पूर्वक यमन-मापण बादि किया (सम मोबमा ३ चव चन ६ २ रमण ४)। र समा परिपद 'नरिव किर देवलागीव देवसियाँन योगासी (निवे १३६ दी तह २१ टी)। १ मुळ सङ्गई (रमस्ट ४)। ४ । निरन्तर विसन (ब**ए** ४२)। समित्र इसे स्मिति र स्मरण । २ शाइस-विशेष मनुस्पृति सादि (सिरि **११)**। संविद्रम वि सिमितिसी थेरे के बारे की बनी हुई मेडक ग्राहि बस्तु (पिड २ २)। समिजा र् [समिजह] बीविय कर्नुकी एक जाति (रत ३६ १३१)। सक्रिक्स एक सिम + इस ी १ बाबोक्ना करनाः प्रशासिकार करना । २ पर्यानोचन करता विश्वत करता । १ मन्द्री तरह देशमा निरीयस करना । समिक्सप (उत्त २३ २४)। संक्र समिक्स (पूर्व १ ६ ४ उत्तर्दशमहा **स्तर्पर**≭)। समिक्सा स्रो [समाभा] पर्यायोजना (नूच 8 8 8 8×) 1 स(मक्तिप्रअ वि [समीधित] प्राचीवित (बर्मसं ११११) । समित्र देनी समे । समिन्द्रक र मिमीश्रवी समीवा (मरि)। समिष्यिय देवो समिक्तिय (भीर)। समितम् धर सम् + रूथ्] वार्वे वरक हे बयक्ता । हमिनमाइ (हे २ २४) । वक्र-समित्रमस्य (दुमा १४)। समिता रेका समित्रा = वर्मिना (स १ २—पत्र १२ : मन ३ १ —पत्र १ २)।

समिद्ध वि सिमुद्धी १ परिशय संगीतवासा (पीप लामा ११ टी—पत्र १)। २ वस बहा हमा (प्राप्त १६)। समिति औ सिमिति । प्रतिस्थ संपति । २ इस्ति (हे १ ४४) थक कमा स्वयं ६६ प्राय १२०)। स्ट वि सिंही सम्ब्रियासा (4x 1 7F) समिर ए [समिर] पत्रन बामू (सम्मत्त exe) i समिरिर्डम ) रेबी स-मिरिड्ड = समरी-समिरीय पिका समिस ध्ये सिमिजा, सन्या । प्रयन्तेसक पाड़ी की घोंसपी में दौनों धीर डाला जाता वक्को का बीवा (उप प्रशेष: तुपा २४८)। समिछ देशो संभिद्ध । समिक्षद (वह ) । समिद्राधी सिमिभी काह सकती (बंद ११ पतम ११ ७६ पिक ४४ )। समी भी शिमी । यश विशेष क्वेंबर का वेड (सूर्यार रेर १६ दी उपार कर टी वजा १६)। २ सिंश कियी कसी (पाम)। स्रद्भाग दि । छोंकर की पत्ती रमी बुध का पक्ष-पट (सुधार २ २ ११ टीः शहर)। समीअ देखो समाय (नार---मानवि १)। समी∓य वि [संगीइत] उमान किया हथा 'में किकि प्राणा' तात तींप समीक्त' (सुद्र १ ३ २ ८ यउह)। समीप य नि [समाचान] सपू, नुबर, शोसन (नाट-भव ४०)। समीर बक सिम + इस्य विशेषका करना। समीरप्(भाषा १ व व, १७)। समार र् [समार]पवन बाद्व(राम, नडह)। समार्ग्य दू [समारत] ऊरर देशो (१३३) । सम स देवो संमातः। गगीसः (वहः)। समय वि [समाप] निष्ट पात (परन ११ व महा)। समाद सरू [सम + ईंद् ] पारवा शास्त्र करमा । बङ्ग सम्राह्मात्र (दर १२ क्ष) । सम-शाकी [समाहा] रच्छ बाळ (उत ₹ ₹{-₽}+

(महा)।

समिविय दिस्मिक्टी एक किया पर्याद

में धन्त्रत (विधे १७६)।

समीडिय रेको समिक्तिक (वन ६)। सम्भाषार र सिम्रसमारी प्रमीनीन मापध्य (दे२ ६४)। समुद्रश्च वि [समुचित] योग्य अचित (से १९६ मध्या)। समुद्राय नि [समुदित] १ परिपृत द्वारा-समुद्रको (जन स २०६)। २ एकप्रित (मिसे १६२४)। समुद्दम वि [समुदीर्ज] उत्तर-प्राप्त (सूपा (type समुद्रंद देशो समुदीर । कर्म 📲 दुरुवाछ मेम्रो स्पूर्वेष्य किन् उक्तारत' (क्ला ३ 125 समुद्धस देवी समुद्धरिस (पत्त २१ ००)। समुद्धतिय नि [समुत्कृतिय] कर हला हवा (बुर १४ ४६) । समुद्धरिस र् [समुरूपे] पविकय जनन (प्रच २३ वया मुख २३ वय) । समुद्रस यक [समुन्+ इत्] १ अवस् वनाना । २ सकः पर्ने करमा । संप्रदेशका (स १ र--पन ११७), सपुक्रपंति (प्रायु 24X) 1 समुक्तिह नि [समुस्कृष्ट] अल्लाट (स. १ र-पन ११ )। समुक्तिया न[समुरकीर्वेच] क्वाच्छ (तुपा \$4£) 1 समुक्तम वि [समुख्यात] कामा ह्या (भारक्र)। समुक्कण क्ष [समृत् + कन् ] स्वाहना । प्रमुख्याद (वा ६a४) । वह सञ्जनकर्णत (पुत्रा १४१)। समुक्तपण व (समुस्तानन) प्रभूषव, प्रतास्त्र (कृष १७४) । समुक्तिक नि [समुख्यित] का कर केंग द्वचा(चे ११ ७२)। समुक्तिकार एक [समुन्+स्थिप्] का कर कॅनवा । स्तुत्रिकानइ (मैं: ३१६८ करहा) । समुग्ग र् [ ७ मृद्व ] १ किया, धर्ट (एम

समीदिय नि [समीदित] वह नानिहर

पश्चिम् विकेश (भी २२ ठा४ ४ -- पत्र 201)1 समुनाद (हो) नि [समुद्रव] समुस्मृत स्पूराच (गाट---माचवी ११६)। समुमास पु [समुकुगम] ध्युरुष्ट (माट— रका १३)। समुभ्यास्त्र वि वि] प्रतीविक्त (वे व १३)। श्चमस्याञ्च विश्विमन्दरीऔं उच्चमा द्वमा, क्तोसित स्मर प्रधान हुया (परम ११, WY) | समुस्तिर हर [समुद् + गृ ] असर स्थला क्यानना । का समुम्मिरंत (पडन ६१, ¥**≅**)। समुग्यविश्व दि [समुद्भादित] कुता हुमा (वर्गीय १३)। सभुग्णास्थ वि [सभुद्भावित] विनारित (प्राप्तु १६४)। समुग्याय र् [समुत्यात ] क्यैनिकंच विरोध जिस समय सारमा वेदना क्याय भावि से परिवाद होता है उस समय वह म्पने प्रदेशों को बचार कर उन प्रदेशों है वैक्टीय, क्वान माहि क्यों के प्रदेशों की को निर्मेष—निर्मात करता है वहा में चनुस्त्रत सारा 🏣 भेदना, कमान, सदश भेतिक, रैक्स प्राप्तारक धीर केनकिन (पद्मा ३६----पर ४६६) मन्द्र भीत निषेत्र र )। समुग्पायण न [समुद्र्यातन] विनात (पिकेष ६ ६)। समुग्युद्र वि [ समुद्रभोषित ] अविभित (पुर ११ २६)। समयान देवी समुख्यान (र ६) । समुख्य वृह्मिमुख्य विकिट चिक्र व्य स्पृष्ट (सन व, १—५व ११३, वनि)। सञ्चर धर्म [सञ्जूत+ चर्] ४ चरक करमा, बोलमा । अनुसरक (वेदन ६४१) । **च्युवस्थित्र वि [स्युवस्थित] क्या इया** (दर पुरुष मनि)। समुद्रिय एक [समुत् + वि] इस्ट्रा करना ९६६ स्कू काया १ १७ के क्योंनि १३३ धेषव करमा। सङ्ग्रीक्यलह (स्ट १ ४)।

समुख्य पत्र सिमुत्+श्रिषु र अधूवन क्या क्याक्ता । २ दूर क्या । यदुनी (सुध १२२१)। प्रवि समुच्चिति (मुघ २ १ ४)। एक समस्मिता (युष २ ४ १ )। समुच्यास्य वि [ समक्ष्यादित ] कर पाणकारिय (पदम ६३ **७**) । समुख्याओं की दि] तंपार्वती श्राह (६ म १७)। समुख्यक सक [समृत्+ग्रह] १ ज्यक्ता, उपर बदया । २ विस्तीको होन्छ । सङ्ख्या (पञ्च १ ११) । यहः समुख्यास्य (पुर २ २३६)। ससुच्याकिम वि [ससुच्याकित] र ज्यान ह्मा। २ विस्तीर्ग (भन्दा १ ६) सद्धा)। समुच्चारण न [समुस्सारण] हर 🕬 (मवि ६ )। समुश्चित्रम नि [दे] १ तोषित, र्वतुष्ट किया हुमा। २ धनारचितः। ३ म. सेबन्दि-क्**य्व** नमन (दि ४६)। समुच्चित् (री) वि [समुच्छित] की क्लत (पि २०७)। समुच्छित्त र [समुच्छित्त] और विक्त (स्र ४ पक—१०७)। समुच्युंतिन नि [समुच्या द्वित] सेन <sup>इर</sup> चढ़ा हुम्या (हम्मीर १६) । समुच्यू ग रि [समुस्पुक] शरि-उत्वस्थि ( GE & SEX! Y EWD) ! समुच्छेद ) १ [समुच्छेद]स्वत विवर समुच्येष (ध्राच—गर्भ ४२६) एव)। माइ मि [भादिन्] पदार्व को प्रक्रिकी सर्वेद्य विशर्वर मानवेदावा (ठा क-वर्ष ४१६७ सम्बर्धाः समुख्यम यक [समुद्द + यम ] प्रश्रव करणा। वहः समुख्यमंतः (पञ्च १०% toti ber tx ) i समुख्यम र् [समुद्यम] १ समीवीन क्यन। २ मि. समीपीन ज्याननावा (बिरि २४०)।

सर्वे के [समुख्यान क्रिकेट क्रिकेट

(बरहा भार)।

समुज्ञाय-समुद समुज्ञाय वि [समुधाव] १ तिर्वेष (विसे २६ ३)।२ ईवायमा हुमा (कप्प)। समुजीय पह [सनुद्+सुन् ] वनक्रा प्रसारमा । यह समुख्योयंत्रं (परम ११६ ₹**%**) : समुधाभ र् [समुद्यात] प्रकार देखि (मुका ४ ३ महा)। समुजायय सङ [समुद् + चात्रय] प्रशासिक करना । बद्धः समुख्यापर्यतः (स 18 ) 1 समुक्तस सक [सम्+ कान्त्] स्यान करमा । संह समुजिमक्रण (वे ६०) । समुद्राधः [समुत्+स्था] १ कनाः। र प्रयास करना। ६ प्रहुण करना। ४ बलप्र शुन्ता। संह- समुद्रिकण (स्थ) समुद्राप, समुद्रिकण (पाना १२२ 1; 1 3 4 1 BO) 1 समुद्राइ वि [ समुखायिन् ] सम्पर् अन करनगमा (धावा)। समुद्राह्म क्यो समुद्रिम (छ १२१)। समुद्राण व [समुपस्थान] फिर वे बाव क्रका। सूचन [कुत] येन शाक्ष सिरोप (एदिव वे)। समुद्धान न [मसुरधान] १ सम्पन् उत्पन्न । २ सिन्छ कारण (राज)। देखो समुस्थाण। ममुद्वित्र वि [समुस्थित] १ सम्बर प्रयान-ग्रीम (पूर्व ११४ २२) । २ उपस्थितः। रेबास्त (तूप १ १ २ १)। ४ बटा हमा, को सन्ना हमा हो बहु (बुर १ १६)। ४ पनुष्टित, शिद्धत (नूष १ २ २ ३१)। ५ ज्याव (गाय १ ६—१३ १२६)। ७ माधित (घव)। रामुद्राय वि [ममुद्रान] रहा द्वरा (रामा ६२। यद ६३) । मञ्जनकृष स्थो समुत्तकृष (एउ) । समुख व [संमुख] १ धार-स्थित । १ र्देभ्यः उब बोध में उत्पन्न 'प्रपुत्र (१वा)' (स -- नर १६ )। वेश समुचा मञ्जदर वि [र] वर्षत (रिंड १८६) । धनुषर कर [सनुष्+तृ] १ तर माना १ यह शब उत्तरमा १ यस्त्रती

tt.

पाइअसरमहण्यपा होता। समूत्तरद (महर १४१ १०६६)। बंड समुचर्य (धर) (धर)। समुचार्यायेव वि [समुचारित] १ पार पहुँचाया हुन्ना। २ दूर धादि स काहर निकासा हुया (स १ २)। समुचास सङ [समुन् + शास र ] परि श्रम मम क्राजाना । समुलावेदि (शो) (मार — मासती १११)। समुचिष्ण वि [समयन प्र] परठोए (परप ₹ ¥ **₹** }1 समुत्त्रा वि [समुत्तङ्ग] वर्षि उँवा (नवि)। सभुत्तुम वि 🛐 मवित (गरह) । सम्राथ वि सिमुख्यो बराम (स ४० ठा ४ ४ दी—पत्र २०३३ सुर २ २२४३ मुपा ८०)। समूरभइते देशो समूरमय = प्रमुत् + स्पन्य । समुत्यण न [समुरयान] क्यांच (ए।पा १ ६--- तत्र १५७)। समुरथय सब [समुन् + स्थगव ] बाच्छ-धन करना अस्या। हेइस समुख्यहर्त (या १६४ घ, पि १ १)। समुत्पच वि [समबस्तुत] बान्द्रादित (दुन समुर्यक्ष पि [समुद्धकित] उपना ह्या (日 艾田田) 1 समुरधान न [समुरधान] निर्मित नाएए (वित २०२०) । देवो समुद्धान । समुध्य देवो समुद्रिभ (मीर) । समुद्रय वं [समुद्रय] १ बदुरय, वंहाँउ सपूर (धीर भर, परर १०६) । र मपुत्रति बम्युष्य (इष २२) । समुदाभार ) देशा समुभावार (स्रप्त समुरानार । ४२ वाट-शहू ३३ घीर W TET): समुदान व [समुदान] १ विधा (बीर) । २ मिधा-बन्नुर (भग)। ३ क्रिया विदेश प्रशेष-गर्ध क्यों को प्रदर्श क्याशास्त्र वे ध्यास्त्रिक करनेशाला क्रिया ( नूपान १६६)। ४ बनुष्य (बार ४)। यह वि [ पर] निज्ञा को बाद करनयत्ता (क्यू र १<del>--</del>न्द १ )।

निर्भवत् करना। इंड समुश्रोजेज्य (पछार १---पत्र १ १)। समुदाणिश्र देवा सामुदाणिय (भीत भव ० १--वर २६३)। समुदाणिया स्मे [सामुदानियी] स्थि-विरोध समुत्रान-क्रिया (मूर्यान १६०) । समुराय ( [समुदाय] मधुह (भए २७० टी जिन ६२१)। मनुशाहिय रि [समुशाहत] प्रक्रियारिङ कवित (इत ३६ २१)। समुद्रिअ देवा समुद्रश्र - प्रपृद्धित (नृपनि tरt मर ७ ३६) I समुद्रिणम रतो समुद्रम (यम)। समुरीर वर्ष [समुद्र + इरय] १ ब्रेस्ला करना। २ कमी को गींच कर उदय में साना उदीरणा इरना। वह [?रा] रमाण (छावा १ ₹9<del>--</del>4¥ २२६) । संक समुदारिकण (सम्बन्धां समुद्र वृ [समुद्र] १ छापर, जनवि (नाम्ट सामा १ ८-- तत्र १३३१ मणः स १ २१४ हे २० इन्द्र प्रानु ६ )। २ सम्बद्धान्ति हा क्नेष्ठ पुत्र (धत १) । १ माठी बतरेन मीर शापुरेय क पूर्व जाम क बर्म-पुर (तम १४३)। ४ देशन्यर नयर का एक राजा (पद्धव १४ ११)। १ शाहितस्य मृति क शिष्य एक पैन दुनि (एरि ४८) १६ वि जूल-गद्धित (हे १ २१) । इच प्रंदिची १ चीच बामुदेर का पूर्वनमीय नाम (यम १६३) : १ एक मन्ध्रमार का नान (शिया १ ८---वर बर) । इसाओ (दिला) १ इस्तिल बाबुदर बर एक बरनी (यहाँ हर) । २ बदुररभवन्द्रवार की मार्ची (शिस १ क)। लागा भ [लगा] सम्ब रा थे यक मार्'त (शता १---वन ४४)। चित्रव 1[स्रवय] र क्षेत्रे कश्चनी एमा का रिश (नम १६२) । २ मदशन् वर्गपूर्वाप वर रिजा (वस १६१३ कमा धीत) । सुन्ना M [ [ [ 41] 441 (42 [ 123) 1 C41 ममुद्र ।

समुदान सर्व [समुदानय] भिधा क

समुद्रवद्यीभ न [दे समुद्रतनतीत] १

सम्बद्धाः स्वाप्तः + द्वावयः ] १

क्षांकर क्षम्बक करना। २ मार शासन्य।

समुद्दर न दि] वाशीय-पृद्द पानी-बर (वे

समुदान वि [समुदान] प्रवि स्टान प्रबर,

नो स्वर-पधिका करने के खिए स्पवेश

४ प्राप्य मेना। १ प्रविदार करना। क्रम्री

"वर्ड क्याशमधारेका" (नेदम ६१ )।

बमूत धूपा।२ चन्द्रमा(दे ∈ ४.)।

पद्दवं (नम्ब २ ४)।

**= ₹₹)** |

समृद्दिस्सइ (इना), समृद्दिस्सम्प्रीत (धारा ६)। एंक समृद्धिस्स (बाबा १ १ २ २ १ ४ ३)। हेक समुद्धिसम् (ध्राप, १--- पत्र ४६)। समुदेस दु [समुदेश] १ पाउँको रिवर पधिकत करने का अभारत (प्रश्नु ३)। १ भ्याच्या, सुत्र के सर्व का सम्बादन (वद १)। वे वैन का एक विकास, सम्बद्धा प्रकरस परिच्छेर (पदम २ १२) । ४ श्रोक्स 'जन स्पूरेक्डावे' (गण्य २, १६)। समुरेस व [सामुदेश] ध्वा समुदेसिय (पिंग्रद्ध)। समुदेसन व [समुदेशन] पूर्व के धर्म का मन्यायत (स्ट्रिंट २ ६) । समुद्दिय वि [समुद्रेशिक] १ सप्रेश-क्षमधी। २ विकास कामि के प्रत्यक्य में किमें की बीवन में बचे हुए वे आराम प्रधार्च निकारे सब साबु-संभातियों में बॉट केने का पंतर क्या का हो (पिंड १२६)। समुद्धर वन शिमुद्ध + इटी १ वक करना । २ बीर्यं मन्दिर पादि को क्षेत्र करना। स्कृतस्य (प्राप् १)। यक समुद्धरंत (गुपा ४७ ) । एक समुद्धरेकम (विनदा ६ ) । कि समुद्रम् (क्य २६, )। समुद्राण न [समुद्राप] । स्थार । २ नि बढार करनेवाथा (इस्) । सञ्जारम व [सञ्जूषुक] कार-कर (बाररशस्त्र)।

समुद्धाइभ वि [समुद्धायित] सपुरिवत वटा हुमा (ब १६६ १६७) । समुद्धाय वर्ष [ समुद् + भाष्] कर्मा । बह्नः समुद्धार्थत (परम् १ १—पत्र ४४)। समुद्धिभ देशो समुद्धारिअ (मन्द्र १ २६)। समुद्भुर वि [समुद्भुर] इव वगुर (स्व १४२ थे)। समुद्रपुरिक्ष दि [समुद्रभूपित] कुर्नाक्त, रोमाञ्चाः क्छायम् १ मेवदुनुम् व स्वाप्तु-समुद्दिस धक [समुद्द + दिशु ] १ पछ (१९५) विमे स्थिर' (रूप २१ ₩ 1 € 1 वर्मीव ८०)। देशाः २ व्यावमा करनाः । ३ प्रतिका करनाः समुद्र वे सिमुद्र है एक देव विवाद (क्षेत्र १४६)। २ केवो सम्र (१ २ ८ )। समुध्रह की [समुक्ति] पम्पूरप (क्षावें 43)1 समुमद्भ वि [समुमद्भ] एउड एक वं भौगमा सम्बद्धिका जिएसा घर्षतस्य समूच्या । **वेख** विकास स्था विभिन्नि नामे विकिन्मविके (केस्य ६१६) । समुद्राप नि [समुद्रात] पवि सँदा (नद्रा)। समुपेद पर्कसमृतुष + ईस ] १ क्लाहे तप्त देवना निरीम्बल करना । २ पर्माचीवन करना निचार करना । वह सम्रावद्वमाण (सूम १ १६२६)। श्रेष्ट सञ्चरिया समुपहियान (रह 💌 ११) महा) । समुप्पक्ष पन [सपुत्+पद्] क्या होता । समुत्रकद (भर, महा) । समुप्रक्रिक (कम्प)। मुका कपूप्पक्रिका (भव)। समुष्यच्या वि [समुख्यम ] क्लप (वि समुप्पन्न र र में बच्च)। समुप्पदण न [समुत्पदम] देशा कना, क्रमने-पमन, उद्गयन (वटा) । समुद्धानम वि [समुस्यवक] क्यांत-कर्ता (**■ t** ): समुप्पाड वड [समुत् + पान्य, ] स्त्रम करणा । समुध्यतिह (जस २१, ७१) । सञ्जूष्पाय र् [सञ्जूष्पाव] क्यांच अनुवर्धव (सूप १११ १ । भाषा)। सञ्जूष्यज्ञ व [वे] धवर, सक्सेति । २ धनः पुनि (दे दे)।

समुर्दिपस्य वि दि । अवस्त भय-भेट (गुर 18 88)1 सम्प्रेषक । सम्पेषः । यह समुप्रेषकः समुष्यद्द्र माण समुष्यद्दमाण (घरः पाचा १ ४ ४ ४) । संह समुख्य (स्व १) । देवो समुबंदरा । समुष्पाद्ध्य वि [समुख्यटक] स्टब्स् को-वाला 'पहुप जयशिरसमुज्यावय बंसकार' (स. २२)। समुख्याख्य वि [समुख्याख्य] धारकावित समुष्ट्रंत यह [समा + इत्म् ] बाव्यत करना । वज्र समुद्रभूति (से ४ ४३)। समुप्तोडण ४ [समुस्त्योटन] कल्पन (परम ६, १०)। समुख्यक वि [समुद्भट] प्रचेत्र (प्रापु समुक्रमप यह [समुद्र + भू ] उत्तव (मा। कपुम्मचीव (अपर्य २६) । समुध्भव 🖠 [समुद्भव] उत्पत्ति (मा मान)। समुद्रियय वि [समुद्रित] इंदा क्यि 🛍 (मुपाददाध्यीक)। समुब्मुय (यप) नोषे देवो (धरा) । समुब्भूभ वि [समुद्रमृद] पराष् (व ४०६, मुर २ २३३ दुवा २६३) । सञ्जयाण देको सञ्जदाण⇒तमुराग (विग १ २—यम १४: बीच १४४)। समुगाय देवी समुदाय = बहुरावर् । सन् सञ्जयाभित (पुषः १ १)। समुबाणिब देवो समुदाजिय (बीद ११२)। समुयाय पत्र समुदाय (राष)। समुद्रव सक [समुन्+अप्] धोवनः न्युशाः। सञ्जानतः (स्वरः) । शहः, समुद्रानंद (पुर २ २६) । क्लाइ- सञ्ज्ञक्तिकांत (दुर २, २१७) । समुख्यम न [समुद्धपत] क्षम, विक (वे ₹₹ **₩**¥) | समुद्धानम वि [समुद्धपित] इक्. कल्ट (पुर १ १११ ४, १६वा प्राप्त ७)।

कुमाः क्षेत्रः ५१: सन्द्राः पामः) ।

समुद्रस-समोकर समुद्रस पर [समुन + स्स् ] स्कृतिक होनाः विकस्ता । सङ्ग्रहस् (काट-विक ७१)। गइन समुद्धस्तेत (कृष्यः पुर २ 5X) } समुद्धसिय वि [समुद्धसित] सद्भाष प्राप्त (प्रज्)। समुद्धास्त्रिय वि [समुद्धास्त्रित] उवावा हुमा (शाया १ १व-नत्र २६७)। समुद्धार र् [समुद्धाप] सामाप चेमारच (बिया १ ७—यत्र ७ महाः सामाः स १६--यम् ११६) । समुद्धाम र् [समुक्कस] विकास (गरव) । समुष्यह वि [समुप्यिष्ट] बैठा हुमा (बा २०६)। समुवत्रच वि [समुपमुक्त] ध्वयोकपुक, सामकान (जीवस १६६)। समुपाय वि [समुपात] सनीय मामा हुमा (यद ४)। समुपक्षिय वि [समुपार्जित] क्यांबिव, वैश्व किया स्था (सुपा १ ਦ⊎)≀ समुवत्थिय वि [समुपस्थित] शक्तिर क्वस्पित (छन ४३%) । समुष्यंत देशो समुवे । समुनविद्व नि [समुपविष्ट] केन हुन्। (एप समुक्तंपन्न कि [समुप्तंपन] स्थीप में समानत (पर्य १)। समुद्धसिञ वि [समुद्रासित] विसका सुव **उपहास किया यथा हो वह (क्या)** ! ससुवागम वि [ससुवागस] सवीप में धामत (खाया । १६—यत्र १६६: छन्। । समुने बड [समुपा + इ] १ शह में माना । २ प्राप्त करना। समुदेश, अमुनेति (सर्वि ४२। पि ४६६)। नक समुख्येष (**छ** 30 ) i सप्तुरेस्क ) एक [सप्तुरुप + देश ] १ निरीक्षण भारताः २ ध्यनहार करना भाग में बाला। वहा- समुबेकसाराज सञ्जंदमाण (कामा १ १--०५ ११ मत्या १ ६, ५ ६)।

समुद्दम दि [समुद्रस्त] प्रमुद्दात-प्रस्त समुद्राच वि [समुद्रुच्च] देवा क्यि हुमा (शावक ६५)। (B 22 K2) 1 समुद्धि देखो स-मुद्धि = स-मुखि । समुख्यसिय वि [समुद्रुतित] दुनमा हुमा क्तियम हुमा (सुर १३ ४३)। समूसण न [समूपण] विकटुक- पूँठ पीपव समुख्यह सरु [ समुद् + यह ] १ पारस तवा मरिच मा मिरचा (धत्ति ३) । करता। २ होता। सनुष्यहर (मनि सप्त)। सम्मवय वेको समुस्सविय (वर्षः १ क्क समुख्यकृत सि ६ २ माट-राणा **३---**पत्र ४४) । सम्सर पर [ समुत् + अस् ] १ वैंवा # 8) I समुख्यह्ण न [समुद्रहत] सम्पन् वहन-नामा । २ प्रक्रांसित होन्य । ३ उज्ज्य पास होना (उन) । केता । समूससींग (पि १४३) । यक् समू ससंत समूससमान (गा ६०४ नजर समुक्तियाग वि [समुद्धिगत] परवात वा प-से ११ १६२)। बाला (गा ४६२) । समुससिख न [समुञ्जूषसित] १ निषाय समुज्यू वि [समुक्ष्यूड] १ विवाहित (वे ११ १६)। २ वेको समुस्ससिय (स्व प्र १२७)। २ उत्तालित केंद्रा किया (साबा १ १---यम १६) कम्पा पतक) । हुमा (से ११ ६)। समस्तित्र देवी समुस्तिक (भक्र मीप पूप समुख्येक वि [समुद्देश्वित] शतकत केंगमा १ प्र ११६ विकास १ ३-- पत्र ४४)। हमा संवामित गम्बूह्समायहियनिसमस समुसुअवि[समुत्सुक] परि उत्पठित (पुग मुख्येह्मक्ष्मसर्वकार्य (पतम १४ १२)। समुसरण रेका समोसरण (पिष २) । ४७७) बाट--विक १२) । समूह् कुंग [समृह्] सनुष्य यकि, संचारः समुस्मय पुं [समुच्छूय] १ अँचाई कर्णता 'मंद्रीहि य चवर्षाभवें पूर्यवमार्थ समूर्व व' (सूप २ ४ ७)। २ अवति उद्यक्ता (सूप (बंधन १ व. १६) सीच ४ का बंबक १ १४. ७)। ६ कमीका उपवय (धावा)। मनि)। ४ संबास बाबुह, चारित बय (बस ६ १७ समृह् (प्रा) वेश्वो समुद्ध (प्रति) ( धस्युर )। समुस्स्विय वि [समुच्युचित] क्रेंचा क्रिया समे एक सिमा+डी र मायनन करना हुझा (परम ४ ५)। बाला संयुक्त भाष्य । २ जानना । १ प्राप्त समुस्ससिम वि [समुच्यूवसिद] १ स्वाम करनः । ४ मन संद्वा होना इक्ट्रा होना । 'समूरसस्विरोमकृषा' (क्या)। २ धमेह समेंति (भक्ति विशे २२६६) । अङ्ग प्रकारमध्य (परम १४ १८)। **रेवो** समेमाण (बाचा १ व १ २) । संद्र समिच समेच (सूम १ १२ ११ वि समुससिम । १६१ माना १ ६ १ १६/ वेम ६ ४१)। समुस्सिक्ष वि [समुच्चित] कर्म-विका क्षेत्र पहा दूधा (यूम १ ४,१ १६ वि ६४) । सप्तेश } वि [समेद] १ समक समायद समुस्सिना एक [ समुन् + मृ ] । निर्माण सत्व ी शासक परिशेष कि समिया महिद्वीय (भार६)। २ युक्त सहित केहि कृतना कनाना । २ वेस्कार करना सेवारमाः समेको बहुमं बयामि वा विशेषपीय मुम्हर्य जीले,मन्दिर सादि को ठीक करना । समुस्सि (बुर १ १६३) रे यह पुता २१६। छाद्रि धमुस्स्मिणामि (याचा १ ८ २ १३२)। मद्वा) ( समुत्सुरः } देवो समृतुत्रः (६ ४८) महा) । समुस्तुरः समेर देखा सन्भर = प्रनगर्गद । समोभर पर्ज [समय+व] १ तमनाः समुद्र केलो संसुद्ध (हे १ २६ मा ६६६) समाप्रेश होता अन्तर्गाव होता। २ शीक्

समोआर—सम्म

उत्तरनाः १ जन्म-श्राह्मा करमाः समोप्रसः (प्रज २४६) इन- विशे १४३), समोघार्यंत सूच २ २ ७१ प्रमु ११)। समोभार र् [समक्तार] फ्लर्बार (पणु 3×4)1 समोदन वि [संबंदीर्ग ] नीचे अरध ह्या (बुर ७ १३४) । समोगाड वि [समक्ताड] सम्भ्य भवका (धीप)। समोच्यद्भ व [समवय्द्रादित] भाष्यकृतित प्रतिश्चयका ह्या (सुर १ 2X9) 1 समोजम सक [समव+मम्] चन्यप् नमना-नीचा होना। यक समाजसेत (धीन्छ पुर व २३७) । समोजय वि [समबमत] यति नमा प्रया (पा २०२)। समोत्पद्भ व [समवस्मागत] प्राच्छारित (हर, द४)। समोरवय वि [समवस्तृत] ज्या देवो (उप ७१ थे) । समोखर क [समग+स्तू] १ पान्कल करना धक्रमा। २ व्यक्त्यस्य करना। क्रक समोत्वरंद (छावा १ १ पत्र २६) पक्षम ३ ७ )। समोपार 🕯 सिमवठार । यन्तर्गत समावेश (विशे ११६ मधु)। समायारणा भी [समनदारणा] बन्दर्बार (विसे ६७३)। समोयारिय वि [समवतारित] बन्तर्वाक्त पमानेतिक (निचे ११६) । समोस्ड्य वि वि] स्पृत्यिक (पश्रः) । समोलूमा नि [समवक्रम ] ऐनी ऐक्-इस्ट (t + vo) : ६मोबअ **यक** [समद+पन्] १ खनने मान्य । २ नीचे स्वरता । यहः समीवर्यव समावयमाण (च १३१ ३३ )। समोबद्दम वि [समबप्तित] गीवे क्वय ह्या (कामा १ १६-वन पे१६) । समोसर्ह } वि [ समवस्व ] समान्त समोसर | ववारा ह्या (समस १३)

a.

पि ६७३ घर प्राया १ १ — पत्र १३३ भौक सुपा ११) । समासर का सिमान + स्त्री र पनारमा पात्रमन करना । २ नीचे निरुप्त । समीपरेका (पौप पि २६१)। हेड्र. समोसरिव (पौप)। **बक्र** समोसरंत (चे २ ३६)। समोसर पत्र [समप्रस्य] १ विश्वे ह्टमा । २ प्रमायन करवा । समोसरह (काम १९६) क्रमोश्चर (हे २ ११७) । वह समासरैत (वा१६२)। समोसरण पुन [समवसरण ] १ एकन विवन सेवापक मेवा (सूधनि ११७ राग १९६)। ९ समुदाय सम्बद्धाः समुद्धाः 'समोसरका निषय क्षत्रम बए म बूम्मे य शक्षी व (क्षोप ४ ७)। इ साम्र-समुदाय. साकु-समूह (पिंड २ १ २ व ही)। ४ नहीं पर सरका बादि के इस्त में कोक स्टब भोन इकट्ठे होते हॉ वह स्वान (सन २१) । १ पर्छानिकों का समुदान, बैनेदर बार्सनिकों कासमनाव (सुभ १ १२,१)। ६ कर्ज-विकार, धायम-विकार (युध २,२ ५१) २)। ७ 'सुबङ्गताङ्क सुव के प्रवस स्टरकंब का बार्ख्य सम्मयन (सुन्नति १२)। व पनाध्ना मायम्न (जना) सीपः विधा १ पन ७२) : १ तीवंकर-देव की प्रवृत्त । र पहाँ पर <del>निय असराह बरदेश देते हैं</del> महस्यान (धानमा पंचार १७) तो ४३)। वंद 🖠 [वपस्] कामिरोद (पद 201) i समोसरिक वि [समपस्य] १ गैवे इटा हुमा (बा ६१६) प्रस्म १२ १३)। ए पच्चापित (से १ x) । समोसरिश्र नि [समनस्त ] बनावार दम। क्द (दे∀ ४१ ३ क्या)। समोसव एक [रे] टुक्झा टुक्झा करना । क्रमोधवॅति (बूच १ १८ २, ॥)। समासिम पन [समन + सर्] मोल होना थय यनाः नष्ट होन्य । वह समासिश्रंत (B w) 1 समोन्सम र् [रे] र प्रातिनेतियक पहोची ४६। प्रम**्रा** २ मरीचा ६ वि चम्प वद-बोग्न (दे ४१)।

समोद्द्रण पत्र [समुद्र् + इम् ] रहुत्का करता, बारम-अदेशों को बखर निकास कर रुत्ते कर्य-निर्मेश करना। समोक्**र**ार रामोहरतेति (कम्पः ग्रीपः पि ४६६)। सेहर समोद्दापचा (मगः सम्म धीप)। समोद्य वि [समुद्रुत] विद्ये स्पूर्णत विश्रा हो वह (ठा २, २-- पन ६१)। समोह्य वि [समबह्व ] सावात-बाज (दूर ७ २०)। सस्म प्रकृष्टिम् ] १ केर पाना । २ वनका । सम्मद्द (बत्त १ १७)। सम्म पत्र [राम्] रान्त होना अस्य होता । सम्मद (बत्तवा ११६) । सन्म न शिर्मीनी गुड़ा (हे १ ३९ कुमा)। सन्म रि [सन्यक्ष्य ] १ प्रत्य, सन्य (पृष २३) कम्प सम्बद्ध वस्)। १ समिवरीत सविषद्ध (हा १---पन २४ व ४—पम् १४६)। व प्रशंतकीयः श्रावतीय (कम्म ४ १४) पव ६)। ४ होमन सुन्दर। १ स्वतः स्वितः स्वास्त्री (तूम २ ४ ६)। ६ न सम्मन्-वर्तन (कम्म ४ ६३ ४४)। चन [ति] १ समिकित बम्मन्-वर्तन, सत्य तरन गर श्रद्धा (प्रशास्त्र प्रमा ६३३ श्री ३ ३ कम्म ४ १४)। र स्टब परमार्थः 'सम्मद्यवीक्ष्ये' (बार्वा सूच १ = २१)। विद्वन, विद्वीय वि [ दिखिक] स्टब तस्य पर भवा रक्षमंत्राता (ठा १---पत्र २७) १ २---पत्र १३)। इस्तिय व विद्यान । सम्बद्धान पर मदा(ठा१०---पद ६३)। दिद्विति [कांग्रे] क्यो "हिट्टिम (सुमान १२१)। साम प**्रिकाम**ें सत्त्र द्वान अवार्य दान (सम्म ७) वहु) । "सुव व ["भूत] १ परम्बरमाः र ६०० व्यक्त-सावं (छॉरे)। र्मामञ्जूदिहि वि ("मध्यादृष्टि) विव दक्षिमा सत्यं मीर् संस्त्य तस्य पर अम रखनेवामा (बध २६ झा १--पम २ )। ।बाय प्रे विवासी १ सक्तिस्त्रः गार्थः १ रहिनार, नारहरा देन संकर्म (ठा १०--पत्र ४६१)। ३ बामान्तिकः बंदम-निरुद्ध 'बामादर्ग सम्बद्ध सम्माताच्यो समस्य संबेधे (माद १)।

सम्मद् देवो सम्मुद्द=सम्मतिः स्वमति (उत्त २८ १७ माचा)।

सन्माइग देवो सामाइय (संबोध ४३)।

सम्मेद्रस्थित्। प्रस्का द्रिक्त

सूध १ १४ ११ महा)। सम्मुद्द की [सम्मति] १ संगत मति । २ मुन्दर बुद्धि विराद बुद्धि (उस्त २० १७ मुख २० १७ कमा धावा)। ३ ई एक कुबकर पुरुष (पडम ३ १२)।

सम्मुद् औ [स्पमति] स्वकीय पुढि (प्राचा)। सम्ब्रिश वि [संस्मृत] प्रच्ये उपाया किया ध्रमा (मन्द्र ३४)।

सव धक [शी स्थप्] सोनाः रायन करनाः समद्वार सर्ज्या (कृष्यः साचा १ ७ द १३ २ २,३ २५ २६) सयति (सम १६ ६-- वद १७)। बङ्क संसमाज (प्राचा २२ ३२६)। क्षेत्र सङ्ख्य (नि १७०)। इत्रेडो समण्डिक संपर्णाभ । सब प्रक [स्वदू ] प्रवताः कीर्एं होता माफिक

माना। समा (माना २०११ १)। सय सक [स्र] मत्ता, टपक्ता । स्वह (पूप २, २ १६)।

स्य स्टब्स् [भि] सेवा करता। स्र्यंति (भया १३ ६--पद ६१७)। सय देवो स = सत् 'वंदिणुम्बो समार्थ'

(# Fex) 1

सय रको स∞स्व (नूप ११२२) णम्य १ १४—१व १६ धाषाः स्वा

स्वय १६)। सम देशो सग=सन्तन्। (त्तरि सी

["सप्ति] सतहत्तर, ७७ (या २०)।

सय म [सदा] हमला, निरुद्धर भरहुको दन करेड कंट्यं' (अन)। सास्र न विद्यास्त्री

इभेटा निएतर (गुरा ८१) । सम दून [रात] १ संस्था-विशेष सी. १

र धी की बंदगनासा (जना पराया १ १३ भी २६३ वं ६)। ६ बहुत, मूरि, धनस्य बंबनावाला (सामा १ १—पत्र ६१)। ४ मध्ययन ध्रेष प्रकाश प्रमाश-विशेषाः विवाहनमधीय एकास्त्रीत महाजुम्मस्या

पमता (सम ६०)। इतंत न [कान्त] १ एल-पिरोपः। २ वि राजकान्त एती से बना हुमा (क्लेन्ड २६८)। किसी तू ["ब्ह्रीतिं] एक माबी जिन-देव (पन ४६); 'सच (१म) कित्ती' (धम १६६)। गुणिञ वि [गुणित ] सौप्रना(भार २६२)। स्वीकी [किनी] १ यन्त-विशेष पापास-रिजा-विशेष (सम १६७) र्घटा यौप)। २ वही जोता(देव प्रदी)। व्यक्तन [<sup>\*</sup>क्युक्त] १ वस्य का विमाम (देवेन्द्र २० )। देखो सर्वज्ञ । २ एल की एक पाति। ६ विश्वतम्बन-सर्लोकावनादुमा (केनेन्द्र २६१) । ४ पुन विद्युक्तम नामस बद्धस्कार ; पर्वतका एक किकार (इक)। तुवार न [द्वार] एक नगर (धेत) । धणु प्र ["धनुष्] १ ऐरवत वर्ष में होनेपला एक । कुलकर पुरुष (सम १६३)। २ महरत वर्ष । में होनेवामा वसवा कुलकर पुरुष (ठा १०---पत्र ११ ६)। पह की ["पदा] सुत्र कन्<u>त्र</u> । क्रीएक वर्षि (मा २३)। पत्तारेका यच (शाया १ १—पत्र १व) । पाग म [ पाक] एक सी घोपनियों से बनता एक तरह का उत्तम तेल (ए।या १ १ ---पत्र १८ छ ३ र—पत्र ११७)। पुण्छ क्षे [पुष्पा] बनस्पवि-विशेष सीया का बाब (पर्स १--पत्र ३४ व्यक्ति ३)। पार म [पर्मेन्] इ.सु. उत्था (पण १७४ ' दी) । बाहु दूँ [बाहु] एक समिति ! (पडम १ ७४)। भिसमा भिसा 🗗 "भियुज्ज निश्चम-विशेष (इक पदम २

६०)। यस वि["तम] सौना १ ६४)। रह पु [रथ] एक (पठम १

कुलकर पूरव (सम १४) । रिनह्र र् [\*बूपअ] ध्योधन का वेदेश्व मुदुर्द (मुज

१९) । बद्द देशों पद (देर ११) । <sup>।</sup> बत्त न [पत्र] १ पथ कमन (पाप)। र बी पत्तीबाडा कमल पद्म-क्रियेत (मुपा

४३) । १ दूर्वपिनियोग भित्रका रक्षिण ! फिरा में बोलना घरशुक्त बान्य जाता है

(पका ७ १७)। सहस्स प्रा ["सहस्र] संबद्धा-विरोध साम्र (सम. २ मकः नुर ३ २१: बानू १: ११४)। सहस्सदम वि

['सङ्ख्ताम] बाबवा (ग्रामा १ ८--पत्र १३१)। साहस्स वि "साहस्र] १ धाक-एंक्पा का परिमालकासा (खामा १ १—पत्र ३७)। २ ताच रूपमा निस्का मूक्य हो बहु (पत्र १११) दसनि ३ १३)। साइस्सि वि ["सहस्तिन्] प्रवर्गात, बबानीरा (जा पू ११४) । साङ्क्सिय नि िंसाहस्त्रिक देवा साहस्स (व १९६८ चन)। साहस्सी की ["सहस्रा] सर बाबा(पि ४४०-४४०) । सिक्सर वि िशकेरी एउ बंध्यामा सी दुवस्थाना (बुर ४ २२ १३३)। इत व ["घा] सी प्रकार सं. सी दुक्ता हो ऐसा (मूर १४

२४२)। हुर्चप ["हत्यस ] सौ नार (हेर १६८ प्राय पर्)। उर्द [ियुप्] १ एक कुसकर पुस्य का नाम (सम ११ )। २ महिरा-विशेष (कुत्र १६ यम)। णित्र एमोश्रद् निर्मेकी एक

राजाका नाम (विपा १ ४--- पत्र ६

सब देशो सर्थं = हार्य समग्रनणा य एव्ये (पंचा १३१)।

र्थाती १)।

सर्य देवा सार् = सहन् (वे ८०)।

सर्वं च [स्वयम् ] धाप नुद, वित्र (पाचा १ र १ ६ मृर २, १६७ भक्त प्रापृ ण्ड धर्मि १६ दुमा)। इन्द्र वि[कृत] भुद्र किया हुमा (मय)। नाह् वृं [भाह्] १ जबरदस्तो प्रहुण करना । २ विवाह-निरोप (दे १ १४)। १ वि स्वय प्रहुत्तु करने-बासा (बब १) । यस वृं ["प्रस] १ ण्योतिष्क प्रदु-विदेश (ठा २ ३—पत्र ७०)। २ मास्तवर्षे में मतीत क्षत्रशिक्षी कात में

कराय भीवा पुत्तकर पुरुष (सम. १४.)। ३ पायामां स्थापिता नास में भारत में हुम्नेशसा चीया दुवकर पुस्य (सम ११६) । ४ मायामी बरवर्षिको कास में इस भारतहर्ष में होनेवाते कीचे जिन-देव (प्रय ११३)। इ एक केन मुनि को भगतान् संभाताब क पुक-जन्म में पुरुषे (पत्रम २ १७)। ६ एइ हारका नाम (पत्रम ३६, ४)। ७ नेह पर्वत (सुव ४) । य सम्बोधर क्षोत्र के सध्य

में पश्चिम-विश्व-स्थित एक अंत्रक-विदि (पह

विश्वते कृष्या नियन्तित दिवासूर्वियों में से

प्रस्थी **१५ अनु**पार प्रथमा पति नरस कर वे

(अल भक्क श्रीव ६१) । युरी भी ["युरी]

धपनी रच्छानुसार वरहा करनेवासी (परम

२६६ टी) । १. स. एक नपरकान्त्रम

रामा रामछ के बिए कुमेर हारा बनामा इचाएक भगर (प्रसम ७ १४६)। १ वि बाप से प्रकाश करनेवाला (पञ्च १६ ४)। पमा 🛍 "ममा] १ प्रथम बातुरेव की प्रश्तमी (प्रस्प २ १ वर्ष) । २ एक राजी कान्तन (इप १ ६१ टी)। पहुचेको पस (परम द २२) । सुद्ध वि [धुद्ध] सन्व के उपयेश के जिला ही जिसको तरज बाज हमादी चा(ला४३)। सुदू [भि] १ व्यक्ता(प्रदेशाः २ ---पत्रः २०)। २ कारत में प्ररुप्त की सच का नुकेत (सम १४)। १ सत्र**ध्**वॅ किनदेव का क्लबर<del>—पुक्</del>व रिज्य (सम ११२) । ४ कीव भारमा केटन (२०) २ २—पत्र ४७६)। ३ एक महा-सावर, स्वयंपुरमश्च स्पूतः 'महा श्रयंम् इच्छीशः धेट्ठें (सूम १६२)। ६ पून. एक देव वियान (सम १२) । वेको भू । मुनोहिका के [ मुगाँइनी] स्टरनडी केरी (प्रण्डु २)। मुरमण र् मुरमण को भरमण (पएइ २ ४--पत्र १६) प्रज्ञा १२ **देश, घर ७ मुळ १६, जी ३, २—**नत्र १९० भेन २११)। सुव सूर्व[मू] १ प्रभावि-दिव सर्वेष्ठः 'नय बन नाड् स्पोतुन' (स.६४७ वनर १२२) । २ व्यक्ता (नाम पतन २ ४ ती ७ ते १४ १७)। ६ धीसध बामुबेद (पडम १८ १११) । ४ धवस्त ना एक स्प्रेका (पदम १६,२७) । १ इन्हान् विमवनाय का प्रवस्थावक (विकार ६७)। **इ.प.** स्तन (प्राक्त ४) । देशो सु। "मुप्सण **१** "मुप्सण] १ प्रपुर-विशेष । २ द्वीत-विदेश (कींच ३ २---पत्र १६७) १७) । १ एक देव-विसाव (सन १२) । भूगमणभद्द ["म्रामणभद्र] स्ववंतरमञ् द्यीप का एक घरिष्ठाला देव (बीव ३ २---पत्र १६७)। मूरमणमहाभद्द र्व भिर मणमहाभद्र] वही धर्व (बीट ३ २)। मृरमणमहावर । [भूरमणमहावर] स्वयंपुरमञ्जूषका एक प्रविद्वासक देव (ओव १ २--पव १९७)। मूरमणवर 1 ["भूरमणवर] वहा सक्तर रेख सर्व (क्षेत्र १ २)। वर वृं [क्षर] कृत्याका

१ ६, १७) : संबुद्ध वि [संबुद्ध] स्वयं बात-तरन (धम १) । समेजम पूरितस्त्रय] एक का वैद्दर्श विवद्ध (सुरुव १ १४)। सर्वक्र र् शिवन्त्रस् । एक कुबकर-पुश्र (सप १६) । २ वस्य बोक्सब का विमान (भव ३ ७-- नत्र १८०)। देखी सय-व्यक्त । ३ ऐरत्र वर्ष में सरका भीवार विनयेन (पद ७)। सर्वभरी को [झा स्म्मरो] केन्निरेव (पूछि ₹ **\***₹) i सकारेको समय (पन ८६ कम्म ४, १)। सयरबी 🛍 💽 बांडा, चन्द्री थे इने म **क**न (**रे स, १**)। सबद्द प्रक्रिक्ट र याची (प्रक्रम २६ २१) 'सपडी की' (पाय) । २ म. मनर किरोप (परम १२७) । "मुद्द न ["मुख] अवान किरोप वहाँ बदवान् ऋषधदेव की केनबद्यान प्रत्यन हृष्या पा (परम ४ १६) । समक्षान देवो समक्षान (दुव ४४ )। सयज केहो स-थम = स्व-वन । क्ष्मच्यान [सङ्ग्ला] १ मूक्क वर (वतक दुपा १६६) । २ धैक्ष्मार्थिः राधैर-पीड्रा (सब)। सयण न [शदन] १ वस्त्रि स्वान (भाषा १ ६,१ ६) । २ सम्बद्धः विद्योगः (यज्ञः कुमाः वा ६३) । ६ निशा (कुमा ४ स्वाप क्षेत्रा (प्रयुक्त २ ४३ मूच ३६१) । सर्वाजञ्जन [रायनीय] राभ्या विश्वीतः (स्थारे रेश—पत्र रेरे वस्त्र)। सर्यापद्मश देवो स-यण = स्व-क्वः श्चितस स्वतित्रमञ्जाभाषमा (पोषमा १ हो)। संपर्णाम रेवो संपंत्रित्र (त्रण १२) १८) UT 1 & ) : सयण्य देशो सक्रम्म (महा) । संयक्ष् वेद्यो सन्यक्ष् = वन्तुव्य । सवत्त वि [वे] मुम्बि, इपित (रे व ४)। सबम के सम्बद्ध (नुबा २ २)।

समय वि [सवव] निएवर (अन नु १३३ महा) । समय वृं [रातक] १ वर्तमान मनर्सा कात में बरकल ऐस्वत क्यें के एक वि (इस १६६)। २ घामानी उट्यांनवं मारतवर्ष में होनेवाचे एक जिनवेव के पूर मान की अवदान महाबीर का भार (ठार—पद ४२६) । १ म. वं समुदाय (दा ण १ सण्दु ११)। संबर देवी सायर = शनर (विवे ११: सपर्स्ट देवो सपराई (र ७६१)। समरा देवो सक्तरा 'ठवर' वीं( पं रूबे कुशबुसक्तिस (प्रज्ञन ११४, ≖)। सवराहं । य हि रेशीन, कार्य ( सवराहो । ११ कुमा भरक बेस्ट ६। २ पूत्रक्तु एक सहय (जिसे ६६६) मस्मनात् (गीप) । समिर देवी संस्ति = सम्बद्धि (पि ¥ ( \$) 1 सवरी की शिवायरी | कुब-विधेयः र नाबा(पएस १—पव ६१)। संबद्ध व (शुक्रक) बंद दुक्ता (दे १ १ सक्छ वि सिम्छ १ पेन्छं पूर्व १ समग्र (का ६३ अनुगर सुपा ११ ३६) की १४० प्राप्तु १ व्य १६४)। र् [ अन्द्र] 'मुकास्तार' स्व क्वी एव दुनि (चारे ६६) । भूसण 🖠 🖁 मृ एक केनवज्ञानी युनि (पदम १२ । ादेख **प्र**िव्हा द्वापिती वास्य, प्र नास्य (प्रकट ६२) । सबिक 🛊 [ध्रम्भिम् ] मीन मक्क फ, **११**) । समहरिक्य नि [सीवहरितक] १ स से अरुपचा⊦२ न⊾ <del>राज्य निरोधा</del> "म**र्**क गरियो मिल्हा प्रवृहित्यं स्कृत्येयं ( YE! YE?)! सयाचार देवो सन्याचार = धराचार । सना नार वेद्यो सञ्चा-नार = एवा-नार

समाय देवी सुन्याज = शन्त्राव :

स्थावि र् [शताब्दि] भारतस्य के

धठारहर्षे विनदेश का पूर्वजामीय नाम (पव ४६। सम ११४) । देवो समान्ति। संयोल नि [स्यास्त्र] सोने की भावतकाका धावसी (कुम)।

सवाबरी की [सवाबरी] नीन्त्रमं चन्तु की एक बावि (क्त ३६ १३१) पुंच ३६ (31)

स्वावरी देवो संबरी = रातावरी (एव)। सवास देवो सुगास = सकारा (कास भनि

१२४ नाट—मृष्या ४२)। सवासव वि [श्रवाभव सवाभव] पूज्न विकासमा (मध)।

सम्बं के सका = स्वत् । 'सम्बंभगुति स्यां भगेन्द्रीपारम् जमी देखें (धर्मी र १८)। सम्बंधन देवो सर्वाधन (पर्गनि १०)!

सम्बद्धाः सनम्ब≂धाः (हे २ १२४ पद्)। सरयक [सु] १ तरता विश्वकता। २

धरवान्यन करना साध्य वेना । १ धनुसरस्य क्रम्य । परद्र (१४ २३४) सरेक्या (चपर् २१)। इ. सर्पाभ (वड २७) सर्अङ्ग (मुपा ४१४)। सर वह [स्तु] बाद करमा । चता (है ४

७० द्वाव १२३ प्राप्त) । शहुर सर्रत (सूपा १९४) सरमाण (सामा १ १---पत्र १९६) पत्न व १६४ नुता १६१)। इक सारि चप (पि १७व)। इ. सरणीख, सरेभक्व, सरियस्य (बच २०) धन्मी २ । एका ६ ७)। प्रयो सर्व्यक्ति (युम १ ६, १ te) ı

सर तक [स्वर् ] प्रकार करना। प्रदर षर्ति (विशे ४६२)।

सर पून [श्वर] १ बाग्रा 'नरभे संपंति वरि सर्वित' (सामा १ १४--पत्र १६१) भूमा पुर १ १४) स्वय्न ११)। २ तूछ विशेष 'शे बरवाहे निमोत्हो रहियो दक्षियम बन्ध्रदो' (वर्वीत १२ क्लंड १—पत्र ११ (द्वत १)। १ प्रश्निवरोप । ४ पोच की संक्रम (विव) । पञ्ची ध्ये ["पर्णी ] कुछ-विकेद, ≖पुरुष का पाड (सर्व) । पश्च न [°प्ञ] मध्नियेष (विदेश ११३)। याय व [याव]

मनुष (सूध १ ४ २ १३) सिख पूर्व [\*[सन] धनुष (निपा१ २—पन २४° पाद्यः भीप)। सिणपट्टी "सजबद्विया **को "सिनपट्टी सिनपट्टिटा] र पनुर्वे**ष्टि बनुबर्ग्ड । २ मनुष बॉबने के समय हान की रक्षा के लिए बीधा जाता वर्गपट्ट-वनके का फ्ट्रा (विपा १ २—पत्र २४<sup>-</sup> सीप)। ासरि न [शारि] पाए-पुर (सिर 2 47)1 सर पे स्मिरी कामध्य (कुमा: से १ ४३) । सर वि [सर] यमन-कर्वा (इस १ १ १)। सर ५ स्वरी १ वर्छ-विकेष भी हक के प्रधार (पर्या २ २) विधे ४६१)। र गीत बाबि को व्यक्ति मात्राज नाव (मुपा ११ भूमा)। १ स्वर के सनुस्य फलाफत को क्लानेवाका शाक्ष (सम ४६)। सर पुन [सरस ] तकान तानाव (से १ क्याः कृष्यः कृषाः कृषाः ६१९)। पृतिः श्री <sup>"पक्</sup>षिडे ठड़ाम-पद्मित (ठा १ V---वच वर्ष)। स्त्रू न "स्त्रू क्याब पद (प्राप्त हे १ ११६ कुगा) । सर्पविया

बी ["सर पष्टकि] बेग्रि-वड रहे हुए पनेड त्रसम्बद्धः (पर्राह् २ ४---पण १४ )। सर देवो सरय = शत्र (मा ७१२)। विंदु

र्प ["इन्द्र] शरम, महतुका मन्त्र (नुर २ witt 284) (

सरकं की सिरम् निर्मानकरेप (छ ५, १--- यच ६ व्हाती ११३ कस)।

स्र(ग (घप) र् [सारङ्ग] धन्द-विशेष (पिन)। सर्व वृं [शरम्ब] हाब हे बतनेवाचे हर्ष की

एक जाति (प्रवृह् १ १--पत्र व) । सरस्य एक [सं+रश्] पच्छे वर्ध

रक्षला करना। सरस्यए (सूध ११४ tt ft) :

सरक्छ वि [सरवस्त्र सरभः] १ वैद-पर्नी शिष-अक, भीत थैर (धोप २१० विते १४ का १७०)। २ वि स्प्रोनुक (माच ४)।

सरक्त र्व [सद्रवस्] र दूसि रक 'सबरक्बीद्व पार्श्वाह्र' (यस ४, १ ७)। २ माम (पिष ६७- धोप ६६६)।

सरा रेको सरय = शरक (गुरमा १ १८---पष २४१) ।

सरग विशिष्टकी शर-दूरण से बना हमा (शूर्वमिषि) (माचा २ १ ११ ३)। सरिगका (भग) भी [सार्यक्रमा] पन्य विशेष (पिष)।

सरह र्षु [सरह] इकमास, विरोध्द (छावा १ य—नव १३३ मोध ३२३ कुण्ड २६७३ वेद ११: उप पू २६८ सुपा १७७)।

) न [शस्त्रह्म क] बद्द फल जिसमें सरबाध ∫ प्रस्वि—प्रक्रती न वॅपी डा कोमध फस (पिंड ४४) माचार १ व,६ पि बरा २४६)।

सरप पूर्व (शरप) १ बास्ट एसा (माना सम र प्रामु रेप्ट पुना) २ त्राण-स्वात (मानाकुमा २ ४३)। १ गृह माध्य स्वानः 'निवाससरराज्यईविवव विर्त्त' (संबोध ११)। दम वि ["दम] प्राय-कर्ता (परा पि)। प्राय वि िगती रारणायस (शामु ५)।

सरण न [स्मरण] स्मृति याव (प्रोप ८) विवे ४१८ महा छर ४६२ और वि ६)। सरण व [स्परण] धावाज करना व्यक्ति करना (विसे ४६१)।

सरण न [सरज] बमन-(राक)। सर्राण पूंची [सर्राण] १ मार्च, रास्ता (शफ मुपा २ कुम २२) 'सरलो बरणो धनव कहियों (वार्ष ७३)। २ धासवास स्थारी

(पचड)। सरण्य वि [दारण्य] रारण-योग्य, बास्त क निष् याध्यस्तीय (सम १४३ वर्ष १ ८--यत्र कर नुपा २६१३ सन्द्र ११३ संबोध ¥4)1

सर्रांस म [वं] शोध, वर्ता स्ट्रा(वे स

सरद् केवी सरम= रुख् (आप)।

सरप्र देखी मरण्य (दुवा १८३)। सरभ देवो सरह = धरण (अन्द्र साह्य १

१---पण ६४ वयद १ १---पण काया ७४२ चित्र)।

सरभाव कि दि स्पृत याद किया हमा (दे « 23) t सरमय रू.व. [झर्मेंड] वेत-विदेव (पट्य 24 (2)1 सरय प्रेन शिरक् ने ऋतु-विकेच पाधीक-स्मरियम तथा कार्यिक ना महीना (परह २ र--- का रेरक्ष सबस्य से रे २७ वर १९४४ स्वप्त ७ ३ बूमार हे १ १४)३ 'मूब गारी मास पिमें पिपकार्य बाव बच्चा सर्खें (बजा uv)। यंद्र्य विम्त्र विष्य स्ट्रास चार (छामा १ १--पन ३१): देवी सर = शहा सरप देशिएकी काह-विशेष धरित उस्तब करने क किय अरशि का काम विद्याने विद्या पाला देवड (लामा १ १व—नम २४१)। सरप प्राचित्की १ मध-विकेष दह तथा बादवी का बना हुन्य क्षक (प्रकार २, ६---पत्र ११ पुरा ४ ७ स ११६ स इत्र १)।२ मच-नान (वजा ७४)। धरव देवा स-स्य = ध-स्त । सरम (प्रव) र् [सरस] चन्द-विकेद (प्रिव) : सरक र् सिरखी १ क्रा-किरोग (यस्या १---पत्र १४)। २ ऋतु, माया-रवित (रूमा **४७) । ६ धीना, धनक (नु**मार नजर) । सर्वज्ञम वि [सर्वज्ञित] श्रीवा विमा हमा (दुनाः धराः) । सरकी की [वे] चीरिक युद्र कीट-विकेष भींदुर (देवं)। सर्व्याभाधी दि] १ कन्तु-विदेश नाइदी । निवडे शरीर में बारे होते 🕻। २ वृक्त काठ का चीड़ा (दे 1135 सरव र् [शरप] पुरुप्रीवर्ग की एक प्रशास (तृष २ ६,२१)। सरस रि [सरस] खनुक (धीरा धंतः बार)। रव्या र्व ीरव्या प्रमुद्र शावर (વેદ ૪૬) ા सर्पसन्त्र वृत्त [सर्पसंत्र] क्ला, वय मर्रावेष र्रे (हम्मीर ३१: रेम्)। सर्रसम्ब व [सर्रसम्ब] दक्त १प (हा वर री: बम्बत वर् )।

सरसी औ [सरसी] बड़ा कलाव - वड़ाव (ग्रीपः स्मयु १६३ मुपा ४०१) । स्यु न िख्य क्यन (सम्बद्ध १२ १६६)। सरस्वर्द्ध सिरस्व भी १ वाली घटती, भाषा (पाभ- भीष) । २ वाली की मविहासी देशी (तुर १ १६)। ६ वीशारीत नायक श्वा की एक पटएनी (स्राप्त १—पत्र २ ४ सामा २ - पत्र २११)। ४ एक राज-पन्धी (विपार २—पत्र ११२)। १ एक जैन साध्यी वो सूर्यास्य कालकाचार्य की बहित को (काव)। सरहर्ष (शरम) १ विकारी पश्च की एक वार्ति (दुवा ६३२)। २ हरिबंध का एक धवा (पत्रम २२ ६०)। १ सहस्रक के एक प्रवासाम (बढम ११ १)। ४ एक सामन्त्र नरेश (प्रवन 112) 1 2 एक शानर (री.Y. र.)। ६ क्रम्य-निरोध (पिंद) । सर्वा दे कि ? इस विशेष वेतस वा बेंद का ऐकु (देव ४७) । २ विकृतम्बालन (र ४७ पुर १ २२२)। सरङ् (घर) वि [इस्टब्य] प्रतंत्रनीय (दिन) । सक्रम देवो सन्दर्भ = सन्दर्भ । सरका भी सिरपा नपुन्तविका (देर) सरिह दूंनी [इरिय] तूरीर, तीर रहने का भाषा-- उरकत (मे 💌 ) । सर्वादी माना (दे र)। सराग देवो स राग = स-राव । संयोद भी [शयदि, संयोदि] वही की एक बार्षि (बढद) । संधव दे [राधव] मिट्टी का पावनिक्षेत वरोष पुरदा (दे २ ४० जुना २१**१**) । सरासण स्वो सरनसण = रायका । सराह वि [र] स्तीवृष्ट वर्ष न प्रवद (हे संग्रह्म दे हिं तर्व तप (है सरि वि [सहरा] बहर, वरीका तुम्ब (भन सामा १ १-नव १६) वेत हा हेर १४२ः दुना)। सरिप्री [सरिन्] नचै (द १ २६) क्या

धरश द्वा ४६: वर्ष १२६: वदा)।

नाइ पूर् ["नाथ] समुद्र (वर्गीप ११)। देवो सरिजा। श्चरित्र मि [स्मृत] यह किया हुम्य (परम ३ ५४ सूच १२१) ४६२)। शरिक्र वेदों सदि⇒ बहरा; 'सोनेमारी' सरियं संपरिषया विरुवसः वेर्डिसः (धीर)। श्रीकोन सित्तम दिशो पर्योच वस्ट अहर्धाराएस भरिषे (एमस १ )। श्रीका क्ये [सरित्] नथै (क्रूमा 🕻 १ १ र महा)। यह पु [पति] समूर (व ■ ¥t € ₹) i सरिक्षा की [के] पत्रता द्वार (पर्याद र ४-- वर ६ ब्रं कुत्र १ सुना १४३)। सरिक्स ) वि [सर्छ] धरव, प्राप्त सरिष्या र तुम्य (प्राप्त वर्ष, प्राप्त है ! १४२) २ १७३ इसा( । सरिच वि सिर्म् दे दिसरक-कर्ता (ध ५---पद्म ४४४)। सरिमरी और दि । धननका वरीवार्यः प्रभक्ती में 'सरकर'ं सभी बाया शेसाहि खरैमरी (महा १)। सरिर ध्वी धरीर (पव २ १)। सरिवाय व विशे प्रत्याद वेक्सावी वृद्धि **१२)** 1 सरिस विसिद्धी स्मान वर्धना दुम (हे १ १४२) समाचन हैका ४ )। सरिस ईव [दे] १ शह शक का समझेशी दिर्मातस्याप पडवाबखस्य सरितम्य ≀ **उत्तरिम्मीस्क्रोपस्**रो मनपारी इंबर्स वस्य । (बळा१३४)। "बारको बंद्यानी क्यावरका केया वरित्रोचि

(न्यूर) । २ तुल्बताः समानता (बंधि ४०)-

"मीरपाधिके पनोइनं शर्सारेख' (ब्दा) १

सरिसय दू [सर्पय] करने (चेक्र मोर्न

सरिसाहुक वि दि समार, बारा (र

सरिस्सम देवो सरोसम् (पत्रव १ १९)।

त्र ई: क्रें रस्ट्रीता क्यां र कर करा

सरिसरी धेवो सरिमरी (मधा)।

¥कः द्वास्य १ र—दत्र १ ७) ।

**4 €)** ;

सरी की [में] मासा, हार (मुपा २३१)। सरीर पुन [शरीर] बेह, कार वनु (सन ६७ छवा कूमाः जी १२)ः कइ छी मेंबे स्पेय पर्णाचा (पर्ण १२)। नाम, ैनाम पून नामन् ] कर्म-क्रियेप स्पीर का कार्या-मूत कर्म (राज सम ६७)। बंघण न विन्धन कर्म-विशेष (सम ६७)। 'संपायण न ['संपादन] नाम कर्मका एक सेव (सम ६७)। सरीरि र्षे शिरीरिम् निशेष पारमा (पटम रेरेसः १७)। सरोसम १५ [सरीस्प] १ वर्ग वाप (बा सरीसिव रेशे मूच १२२ २१४)। २ सर्पं भी सरका पेट से पसनेपासा प्राणी (सम 🕻 )। स्क्य } आयो स-रूप = स्व-रूप। सर्म सङ्ग्रदेशो स-इश्व=सङ्-क्य सङ्ग। सक्षि प्रस्तिक्षिम् विशेष भाषी (अ २ १--पन ३८)। सरेबव्य देवी सर = ए, स्मृ। सरेयप दृष्टि । र बर का जन-प्रवाह, मोधी (देव ४०)। सरोधान [सरोध] स्मन पप (हुमा मन्द्र ४२ सूपा १६ २११। द्वप्र २६०)। सरोस्द्र स्रोस्ट्र इसर देवी (प्राप्त कुमा,कुप्रदे४)। सरोपर न [सरोपर] नका कानाव (नुपा २६ मद्दा)। सबम देको सस्तद् = स्वय (राज) । सबसी की दि ] देवा (रे व १)। संस्थ पक [रत्मप] प्रतंता करना । सत्तहर (हे ४ वद) : कर्यं, सलहिज्यह (पि ११२)। 🔻 सम्बद्धिः (दुमा) । देशो सस्प्रहः । स्व्यद् र्ष [राज्ञम] १ स्वर्ष (पामा वशक मुप्त १४२)। २ एक वश्चिक-पुत्र (मुपा 420) i सस्द्र्ण न [इस्त्रपन] त्ररोता स्तामा (मा ररति वि ११२)। सम्बद्धः वृ [ते] दुवधी मादिका हाना (\$ = \$2) : सस्बद्ध वि [स्स्मियः] प्रशंकितः (दुमा) ।

111

सलहिन्न देवो सल्ह = स्माप्। सद्यम् न शिखनय निकित्सा-शता--बायुर्वेद का एक बंग जिसमें मनल शादि शरीर के कर्म भाग के सम्बन्ध में पिकिरसा क्र प्रतिपादन हो वह स्प्रक्ष (निपा १ ७---पत्र ७३)। सद्भाग । और [शस्त्र झा ! सकी सकाई सद्यया (सूम १ ४२ १ इ.सू)। २ पश्य-विरोध एक प्रकार की नाम (जीवस १३८ कम ४ ७३ ७३)। पुरिस र् पुरुष] २४ किनवेद १२ वक्काची ह बामुदेश । १ प्रतिबामुदेव तथा १ वसर्वेव ये ६३ महापूरुप (धंनोब ११)। सव्यव्य देशो सव्यव्य = भ्यन् । समाव्य (प्राप्त २८)। वक्र सस्प्रहमाण (या १४६) सम्म ११६)। इ. सम्बद्धणिका, सम्बद्धणिया, सद्भारपीज (प्राप्त २० कामा १ १६---पत्र २१ सूर ७ १७१ रम्या १४। पुजम ६२ ७६ वि १३२)। सरसङ्घन [रस्मपन] कावा प्रशंस (सा११४ जगद्र ६६)। सम्बद्धा को [रखामा] मर्शसा (प्राप्त है र ११ पद्य)। सद्यद्वित्र देवो सस्देश (हुमा)। सक्रिक पून [सक्रिक] पानी वन 'ससिवा ए सर्विए विवास (मूस ११८ क कुमा प्रापु ३३)। जिहि दु जिनिया सायर, समुद्र (से ६ १) । नाह् पु [नाम] बाह्र (प्रजम ६, ६६)। "बिक न ["पिक] मुचि-निर्मेट अमीत से बहुता भरता (मन र् ६—वण १ ४)। समितु[सरित] समुद्र (पाध) । वाद् पू [बाद्द] मेव (पडम ४२ ३४)। इर दुं ["धर] वही (स १ १४) । वह वर्षा 🛍 ["सर्वी] विजय-धेन-निरोप (धन सामा १ व---पत्र १२१) । त्रचम [मिर्त] वैद्यान पूर्वंत पर उत्तर दिला-दिवत एक विचापर मदर (इक) । संब्रिया की [संस्थिता] महानदी बड़ी नदी (सम १२२)। सहित्युष्याय वि [सिस्मिनेष्याय] प्यावित, द्वरोद्या हुव्य (पाप) ।

८८१ सक्रिस पत्र [स्वप्] सोना रायन करना। सविसद् (पड्)। सस्य देवो स-स्य = स-स्वर्ण। सर्धात दू रिकार्क अशब प्रशास (सूप १ १९ १२)। देको सिखोग। सस्रोग रेको सन्द्रोग = सनोह । सस्रोण रेबो स-स्रोज = ६-मस्छ । सस्रोय देशो सस्रोग = कोक (सूम १ ६ सद्ध पून [शस्य] १ घळ-विशेप दोनर, संक 'तमो सस्त्रा प्रश्लाता' (ठा 🖣 ६—पत्र १४७)। २ शरीर में पूना हुमा कॉटा धीरधादि (सूप २०२२ वंदा **१ १६**। प्रामु १२ ) । १ पापानुहान पाप-क्रिया 'पार्याडमसम्बद्धा' (उन सूप १ ११, २४)। ४ पापानुद्वान से सननेवासा कर्ने (सूम ११६, २४ वर्ग)। ५ पू भरत इ. साय बीचा देनेवाले एक राजा का (पडम बद २) । ६ न छन्द-विशेष (पिंव) । गैव कि राज्यकामा सून मादि सस्य से पीक्टि (पर्याट र र--- वन १६)। स न [ैंग] परिकान जनकारी (सूप २ २) X9) 1 सक पूंची वि हान से नवनेनाने सर्व-जातीय बस्तुकी एक जाति (सुधार, ३ २३)। सङ्ख्य नि [शस्यकित] राम्यपुष्ट, जिसको राज्य पैरा हुमा हो बहु (सामा १ ७---पत्र ११६) । सङ्गई की [सङ्ग्री] बृध-विशेष (सामा १ धे—पंच ११६० च्या १ ६१ दीऽ पूर्वाः धर्मीच १६ सुपा २६१)। सह्यादेवां सह-ग=रुप्त्य-क्राय-क्राय-क् सद्भग देवा सन्द्रग = सन्नव । सद्धर पून [श्रास्पद्दय] प्रापूनेंद का एक भ्रंप जिसमें राज्य निकासने ना प्रतिसदन किया गया हो वह शास्त्र (विदार ----मद्धा भी [शल्या] एक महीवर्षि (दी १) । संविध वि [शस्यित] स्वय-पीरित (पूर १२ १४२ मुपा२२७३ वहार मनि)। सदिद्दे देवो संखिद् = र्च + सिद् । सङ्क्रिहरि

(पाप ३३)।

૮૮ર	पार्श्वसर्महण्यको	सस्टुदाण-सम
सान्द्रशाल व [रावणदाया] र सम्य को वाद रिशालक (रिता र व न्या करें) । यालोचन कर लिए तुव के याल हुग्लानिरेशन (योल करें) । यालोचन कर संदेश (याल पर, योव) । सहिद्या के से संदेशना (याल पर, योव) । सहिद्या के से संदेशना (याल पर, योव) । सहिद्या कर से संदेशना (याल पर, योव) । सहिद्या कर से संदेशना (याल पर, योव) । सहिद्या कर से प्राचित कर से यालोच कर से याला पर से यालोच कर से याला से यालोच कर यालोच कर से यालोच	स्थल वे स्थित । र बर्ध, कल (याक वृत्ता रेक) २ क्यक् रिकेट (या व रेश) तृत्र र रहे। 1 ज याक्टरें , पुत्ता (स्त जूर र रहे) 1 क्यों स्थल । (स्त जूर र रहे) 1 क्यों स्थल । (स्त जूर र रहे) 1 क्यों स्थल । स्थल व वृत्ता वाद्याल (रिवे रेशे रहे) । स्थल के से स्थल व विवाद के से स्थल व विवाद के से स्थल व वृत्ता है से स्थल व र र स्थल कर र र स्थल र र र र र र र र र र र र र र र र र र र	सावह दू शिषण है र साक्षरण्यक कार्ये (शाम र र प्रव २१, केंद्र ३१)। र शोकक वर्ष (शाम र र प्रव २१, केंद्र ३१)। र शोकक वर्ष (शाम र र प्रव ११)। र शोकक वर्ष (शाम र र प्रव ११)। र शाम श्री १६ वर्ष ११ प्रव
	सरम रेखा संवज्य (हम्बीर १७)। सरव रवी मन्यय = गन्यम् सन्वर । सवर रेखी संवर (राम १४, ११, इस, इस्यू)	नियार्थं (मण ११ — पत्र ११)। सञ्जत [सर्थे] १ वत्र सबस्य समस्त । २ ग्रेलं (इ.१. २६) १ आग्रमः [सस्तु
कारमा इवन शिवाहाको मह छाए बरसाना ग्याह्मान्त्रमा हरता (वसम १३) वस व चहित्साने संशिवको बरस्हार्ग (वसम १३४)। सदस देवा समझ प्रवाह (बास १३	सर्वरिमा देनो सप्तज्ञा (नार—वेद्यो १६) । ह्यप देवो सप्तज्ज (वे २ ४४० द्वार हू १ १९० रेका)। सर्वज्जा को [न] मधन का प्रकाशन	रे सब में। १ सब धोर में (हूं १३०) इना। भाषा) । आसक् दि लिभिजी १ सब प्रवार में मुग्ते। १ म. बब प्रवार वे पूप (पेत्र १)। १ पक नियेत, शुक्रमुक १ जान का माध-मूत्र तृष्ठ पक्र (ति ६)। व म्हामुक रेस्ताक में दिश्य प्रथा दिवान
र्वार)।	प्रेय मन्दर (मश्चिष्ट दे <b>दे)</b> ।	(तन १२) । १ र पदा हैदेवक रिमान

र्वसि (केश्य १४१)। द्वा और ["ग्रूग]

सब काम सरीत सावि सर्व समय (भय)।

(पव ११४)। ६ एक नगर का नाम (विपा १ ४ — पत्र ६१)। ७ सक्युटेनर कार्यक पारिवानिक विमान (छा १ -- पत्र ४१ व मीप)। व इष्टिवाय का एक सूत्र (सम १२०)। १ पूँ यस्य की एक बादि (राज)। ि देन-विमान-विद्येष (देवलः १३६ १४१)। भोमदा स्य [तोमदा] प्रतिमानिशेष एक क्य (बीमा ठा २ ६--- मत्र ६४ बंद २६)। स्त्रमसमिद्ध पुं [स्त्रमसस्द्रः] पत्रकास्क्रको दिवस पही विभि (स्क्रक रै १४)। इतमा आधि विद्यमा विश्व विशेष-विश्वने सावना से सर्व इच्छाएँ पूर्छ **होती हैं** (पडम ७ १७)। गय कि [भव] व्यापक (सन्द्र १)। गासी [ गा] प्रक्षर इचक पर्वत पर प्रकृतिवासी ण्ड विक्टुमारो सेनी (ठा ब---पत्र ४३७) । गुच रू [गुप्त] एक बैन मुनि (पडम रे १६)। च्यामि ["इद्र] १ सर्वे पदाची का जातकार । २ पूँ जिल मधवानु । ३ पुरुदेव। ४ महावेव। १ परमध्य (हे २ ८३ वर्श्याप्त)। हतु [पर्य] स्थाहे-यम का उनतीसकी महत्ते (युज्ज १ १३)। १ पून, ध्वकार रेक्प्रोक का एक विमान (सम १ ४) । १ सनुसर देवसोक का स्पॉर्पसिंड नामक एक विमान (प्य १६)। ४ दू सव धर्म (म्राचा १ ८ ८२४)। हुसिद्ध र्पृत ["प्येसिक] १ म्योरात का <del>धनदीसवाँ मुद्रुर्त</del> (सम ११) २ एक सर्व-चेष्ठ देश-विवास समुक्तर देशसीक का पांचवां विमान (श्रम २)मग श्रंत श्रीप)। ६ वृं ऐरक्त वर्ष में सरपम होनेवाने सकवें जिनकेव (१४ ७) । हासदा ब्री ["ब्रिसिटा] मन-नाम् वर्मनायनी को शोशा-शिविका (विवार १९१)। हुसिद्धि भी [ विसिद्धि ] एक देव-विमान (देवेन्द्र १६७)। व्यु देखों उस (हि १६६ पर्: घोष)। चादेको स्थ (स्यु १४)। ची देवो आ (पाप)। रिय ष [\*त्र] सब स्वयन में तत्र में (नज्जा प्रासू १९ रव)। दसि, दर्शिस वि [ दशिन] रेसव वातुर्धों को केसलेवासा। २ दूं जिल बनागत् बहुन (राजा मन्द्र सम १। पडि)। "रेव इं ["वव] १ एक प्रतिक वैन व्याचार्य |

भत्ता ही [यत्ता] स्थापक सर्वेन्याहरू (विते १४६१)। न्तुबंधो झा(सम १) प्रामु १७ महा)। प्यतावि [सनक] १ व्यापका २ पूँ मोम (सूम १ १ २ १२)। "प्पमा श्री [प्रमा] उत्तर वश्वक पर्वेद पर चुलेशासी एक विस्कूमाची देवी (चन)। सक्तानि ["मम् स्वमे बाने बाबा सर्व मोबो 'मरियमिव सम्बन्ध' (ए।या १ २--पच ७१)। महास्री [ सङ्गा] प्रविका विशेष इद-विशेष (पव २०१)। मायविष्ठ 🖞 [भावविद्वा] ध्यगामी अपन में स्थल वर्ष में होनेवाचे बाहरवें जिन-देव (धम १४३)। या वि वि] सव विनेतामा (पराहर १—पत्र ११)। याच [दा] इमेशा प्रदा(रैमा)। ैरयण पू िरत्न । १ एक महा-निर्मेष (ठा ६—मन ४४६)। २ पुनः पर्वत-विशेष का एक शिक्स (१७)। स्थणा ध्ये [रस्ता] रैरामेला भी चतुनिया पानक इत्याणी भी एक राजवानी (इक)। स्वयासय वि ["रहनमय] र सब रहनें का बना हुया (पि जीव १४)। २ वडनर्सीका एक निवि (का १०६ थे)। "पिगादिक वि ["विप्रदिक] सर्व-पंतिष्य सबसे ध्येटा (मग १६ ४--पत्र ६१६)। विरम्न स्वी िविरति । पाप-कर्म से सर्वका निवृत्ति पूर्ण संबन (विसे २६**०४) । संगय** ["सङ्कत] मृत्यु (पर्वम--वम ।२१ वर्ष ११ गा ४४)। संबम पू ["संयम] पूर्ण संगम (राम)। "मद वि ["सद] बच सहन करतेवाचा पूर्णं सहित्या (पत्रम १४ ७१)। "सिका भी ["सिका] पथ का कीवी नवर्श मोर भौरहति यश-तिथि (गुरुव १ ११)। सोम[शस\_] श्रद धार के स्वप्रकार सं (उत्तरं ४ भाषा)। स्त न ["स्व] सक्त प्रथ्य, यव वन (व ८६६ मर्गि ४ क्यू)। ≰ाम ["था] सगप्रसर है, सर तया थे (भावदेश) पहा प्रापु ३

१ थ१)। ार्णवृर्षु ["ानस्व] ऐरवत क्षेत्र के एक मानो जिल-देव (सम ११४)। श्रुमुद् पुं [ानुमृति] १ मारत वर्ष में होनेवासे पौपर्वे जिन धनवान् (सम १६६)। २ भय-वान् महावीर वा एक शिष्य (भय १५---पत्र ६७८)। स्हा ध्ये [ीस्हा] विद्या-विशेष (पक्षम ७ १४४)। विकास [एप] संपूर्ण (मप) । संग पू भाग परिक मान (魔 Y 16%) i सब्बंह्स वि [सर्वेह्य] १ सर्वेहियाची सर्वे से विशिष्ट (क्रप्यू)। २ न पाप (काव)। सब्यंग वि [सर्वाङ्ग] १ वंषूर्वं (ठा ४ २---पत्र २ व)। सर्व-शरीर-स्पापी (राज)। सुंतर वि [ सुन्दर] १ सर्व दशों में ब्रेस २ पून कर-विशेष (राजा पव २०१)। सम्यगिञ ) वि [समाङ्गीण] धर्व प्रापनी सर्विगीण 🕽 में स्थाप्त (हे १ १११ हुमार से १४, १४)। 'सम्बनीलामरक' पत्तेयं तेस ठाख कर्षे (क्रम २१४, धर्मींव १४६) । सम्बण देवो स-म्यण = स-व्रण । सम्बयद्वज वि [सार्वपश्चिक] क्षूर्य चित्र वे सम्बन्ध रक्षनेवासा द्वारी राजका (सूच २२ ११ क्या)। सम्बरी को [शर्वेंछे] चत्रि, चव (पाक पा est alt Ast) : सम्बद्ध र् [त सर्वेष] कुन्त वर्धा (सन नम्ब)। देखी सञ्जूखः। सम्यख्य भी [दे रायस्य] द्वरी सोहे का एक इपियार (वे व ६)। सम्यवेषस्य देशो सन्त्रयवेषस्य = यन्मपेदा । सम्याय देशो सम्बाय ≈ सर्वाप । सम्भाव देवी सन्बन्धव = सन्धाव । सम्मावंति म [द] सर्वं सर्वं संपूर्वं 'एया वंदि सम्बावंदि सोवसि' (माषा) सम्पारंदि च एरं वीतं सं पुरस्तरियीय्' (तूब २ १ ६), समार्थीत व एवं सोवीत' (ग्रूम २ ३ १) सम्बं ति सम्बाविति दुसमाणशाससमयिति बाबतिये येलं पुसरं (भग १ ६—उब ww) : सम्बद्धिः से [मर्वदि] स्मृतं वेनव (खाया १ क--पत्र १३१)।

सस्सम्भागं वि सिम्भाया । सम्बंदे, निपृष्ठ (कुप

सरमेसहि 🛊 [सर्वोपधि] १ वन्ति विशेष विश्वके प्रक्रव में सरीर की क्षत्र मानि तक भीन सीपविका काम करती है (पराह रे. र-पत ६६)। २ वि सम्मि-विशेष को प्राप्त (सब) । सस पन [ धस् ] साथ देनाः चारताः। सस्द (प्रश्न ६) । वह ससंद (समा १ १--वा ६६ मा ६४६ ब्रह १३ १६४ बाट<del>-पूच</del>्य २२ )। सस र् शिशो बरनेस (साम १ १-५न २४ ६१)। इंध दं [शिक्क] करमा (बडा) : इर दे चिर कामा (छामा

सक्तिपद केलो स-किप्तर = स-विवर ।

र रर सुर १६ द व है व वर कुमा, बरुवा १६ रोगा) । सर्वक में सिक्षाक्की १ कवामा कार (कवा सूर १६ ६४: सूचा २ व्यव्या रेम्स)। र हुप-विशेष (पच्म ४ ४३ ४, २)। धन्म पू िंथमें ] विद्यावर-वेत का एक राजा (पत्रभ ४, ४४)। सर्वेद देवी स-संड = ए-सङ् ससंक्रिय देवो ध-संक्रिय = स-शक्ति । सर्गंग देशो मर्सं 🗷 राजकः । ससंदेवण देवी स-संदेवण = स्व-संदेवन : संसक्ताति [संसाध्य] धानीनामा (पर समा 🐒 [शराष्ट्र] देवो सस = रुख

(च्य) । संस्य र् [भसन] १ कुरग-५रग हाची भो गुँड (तंदु२ सीत)। २ बायु, पथवा ৰ দ দিয়তে (অস)। संस्तादेको समचा≖ छ-तत्ता। सस्यस्य वि [सरवस्य, स्टब्स्] र रुके-युल, भूमोबासा (याचा २ १ ६, ३ २ २, ३ ६३ मार्थ)। २ दूर्वीका का का क्षपु(नुगाः ४३ महा)। सस्याप्तभावि विशेषिकः, विश्वापा (वे ١ ( ۴ समा क्षे [स्पर्] बरूर, प्रवेशी (रित ११७)

金儿双 5円)

संसि वे शिशिया र कन्नमा वर्ष (सुण्य २ ---पण २११ छण कप्प-भूमाः पि ४ १)। २ एक विद्यार्थीका साम (प्रज्ञ र, १४) । १ कत्र नावी गाम नानी (सिरि ६६१) । ४ एक व्यर्भवमात (देवेला १४६) । १ <del>क्षत्र विदेव</del> (चिप)। ६ एक श्रवा का शाम (घ४) । ७ रक्षिका क्लक पर्वत का एक कर (स्र ८---पत्र ४९६) । श्रीद पुंचिक्तारों चन्द्रकान्त गरित (भन्द्र १४)। अद्या की िक्रमा पात की कता शोलहरी पान (पक्क)। इदेव देवो क्षेत्र (कुमा संस्)। पस पद्दे प्रिसी र पार्ज निवरेत मकाल् चनकामा । २ इक्ष्माकु वैदा का एक राजा (परम १, १)। प्यक्ता और जिल्ला एक छनी अपूरिमंबचे की माखा (पराव ६,६१: क्यू)। मूजि कुछ मिणि पत्रकान्त्र मणि (सं १,६७)। विद्या औ ["झेका] पन्त्र की कता (तुपा ६ ३)। बक्स न [बक्क] प्रामुक्छ-विशेष (बीप)। नेग प्रविग्री एक एक-भूमार (कार पर मि)। संबद दु[प्रिकार] महायेन दिव (गुपा व ६) । संसिम ग विसित्तो पान बीत हि १६ 1(3) संसिण देवो संसि (प्रम्)। ससिविद् वि [संस्मिष्य, शस्तिम्य] लेक् पुष्ड (बाबा २ १ ७ ११। इन्य)। संसिरय न [संसिक्य] बाटा बाबि से लिप्त द्वान या बरतन साहि का बेलन (पाँड) 1 समिरिय } क्यां स-सिरिय = ध-मीन । सिंद् देवो स-निद् = प्र-सद्भ स-क्रिया। ससुर पु [बासुर] सपुर पति धीर पत्नी का निया (पदम १८ हेका ६२: इमा गुप 144) 1 सस्य वेको सन्ध्य = सन्ध्र । संबेस रेबो स-सेस = र-केर : संशोग संशोग } रेपो स-साग = व-दौर । संस्मितिह

1 (x) 1 सस्सिय र् [शस्यक] इशेवत, इस्क (एव) । सरिसरिक रेको स-रिसरिक = ए-धैन । वस्तिरिकी भेगे सिस्सिरिकी (उत्त 👀 2=)1 सरिसरीक्ष ध्यां स-स्सिरीक्ष = स-भीकः। सरस्य क्ये [म्यम्] बाब्द, पति या पत्नी भी भारत (भाष्ट्र ६० सिरि ३११) । सह सक [राज् ] दोपना विराजना । प्रहर (क्रेप्र १ पत्रसः दुस्य सुपार)। सह प्रकृतिहरू । सह ने करना । सह ५ बहरि (पना महा। कुमा) सहबरे, सहबरे (नि ४६८) बद्धः स्त्रदेवः स्त्रहमाध्यः (महाः बद् ) । तह, सहिथ (महा) । हेक सहिदं सार्च (महा बाला ११३८ ११७)। फ सहिष्णका सोबच्च (बारवा १४४) पुर १४ व पाइवाक्ष्यु सर्थश्व दी पाला रदम्यो ( सह रूप प्राप्त का दिल्ला करता, पारेन क्रमा क्रस्थाना । सङ्गद्ध (बारवा ११४) । सद्गि [दे] १ बोग्य, बायक (दे ८, १) । र प्रमुख्यः मदद-क्टर्ड (कूछ १ ६ २ ६) । सद्भि [सक] देवो स=स्व (प्रापा)। "रेस प्रीविशा स्वरेश, स्वक्रीय केए (शिव)। "संबुद्ध नि [संबुद्ध] १ निवासे ही बान को मत्त्व । २ दुविक-देव (धीप) । सम्हर्षि [सङ्क] १ तमर्थं शक्तिमान् (गम्म हे ४, २३)। र सक्कियु सदन≠र्था (याचा) । १ द्रं प्रवक्षिक समुख्य की एक भाषि (स्कास्तर)। ४ सः साव संय (सम्ब केश माना। वी ४३३ जानु ६ ) । ४ कुनायः एक साब (राव)। सार वु [कार] रे मान का पेड़ (क्रम्प) । २ प्रान मिककर काम करन्य । वे सबब साहास्त्र (हे १ १४४) । नारि वि ["नार्यन] १ बाह्मकन्त्री (वेबा ११ ११)। २ कारण-विशेष (विशे ११६वा मावक २ १) । तन्, ताप वि सस्स व [शस्त्र] १ धव-यद काला (का ['राव'] वंद्रक (परस्य २१--वम ६३०) ६ रुव्या गुण ३२) । २ वि वर्गनीय, कर)। भारि गारिम देवो कारि (वर्गके स्त्राच्य (नुग ६२) । वैद्या सास = तस्य । रे शास्त्र प्रकार वहर वह)। यह देवी

यर (दूमा)। चरण न िचरण] सहबर, स्त्रव स्तृता मेबाप 'रमणतिहासीहि भवड सहप्रक्ष (बृदर)। च वृच्चि । स्वभाव (बुम्पाः दिव) । २ वि स्वामाविक (नास ४३१)। जाय वि ["जात] एक साम उत्पन्न (ग्रामा १ १—पत्र १ ७)। "देस पू ["देख] १ एक पाएकक मात्री-पुत्र (वर्गीव ८१)।२ राजमूद नगरका एक स्मा (क्य ६८८ टी)। देवा की दिवा] म्रोपमि-विशेष (वर्षीव वर)। देवी की ["द्वा] १ चनुर्व चक्रवर्तीकी माता (सम ११२ महा)। २ एक महीपर्थ (शी १)। भग्म आरणा की [धमश्रारिणा] <sup>पानी</sup> भार्या (प्रति २२) । प्रमुखेन्त्रित व ["पाञ्चकीकित] कास-भिक (मुपा २५४) खासा१ र—पद १०)। य देवी ख (पेह्म ४१६) राज)। यर वि [ चर] १ स्माय, माह्यस्थ-कर्ता । २ वयस्य दोस्त । ३ मनुबर (याचा चुत्र २। मन्दु १ गर—राष्ट्र ६१)। यरी भी [चरा] परनी, मार्ग्य (कुम १९१३ स.स. ६६)। यार देवी कार (पाध ह १ १७७)। सम वि चिमा सम-समित (प्राम १४ १)। (र देखी कार (पत्नम ११ ७१)। सह रेवा सहा = सना (क्रुमा) ! सद्गीधया की [दे] पूर्वा (दे ८, १)। सहस्रह दे [दे] दुरू उत्त्यू पश्चि-विधेष (दे **₹ ₹**\$) i सहरामुद्द न [गक्टामुख] वेताव्य की | चत्तर भेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर<sub>ी</sub> (**इइ**) 1 सक्षाय वि] सक् साय में (सूत्र पूर्ण मा २१७)। सद्भ न [महन] १ विविधा वर्षेषु । २ वि महिष्ण सर्व करनेताचा (स २६)। सहर पूंचा [रापःर] मध्या मध्या (पामः मारः)। प्रांश (हे १ २१६) नराः)। सहर वि चि । व्यक्तिमन्तर्वे सहाम न वस्त कामा न रियान भाषा कासीक समित (३स्मा) म्यूच मधीर्ड (व ४३) । सङ्क्रीत [सफल] फन-पुक, मार्थक (का

र शा के हु। २३६ हुमाः सन्त्र रहे)।

सहस्र देवी सहस्स (मा ४४ वि ६२ १६)। केरण दृं किरण] मूर्प पी (सम्मच ७६)। क्ला पुं["स्त्र] १ स्त्र (सुपा १३)। २ धावस्य वस एक योद्धा (पत्रम १६ २९)। १ सन्दनीयोप (पिन)। सहस्रकार ई [सहस्राधर] १ विचार स्थि विना करना (याचा)। २ वाकस्मिक क्रिया, मक्त्सात् करना (भन २४ ७---पत्र ११६)। क कि किचार किए जिला करनेवासा (धाबा) । सहसचि म महस्मान, शीध, जल्दी तुण्ड (पाम प्राष्ट्र वरे)। सङ्सा म [सङ्सा] पत्रस्मान, रोज, जल्बे (पाप्र- प्रामू १९१ मनि)। विचासिय न ["विश्वासित] सक्तमाद् की के नव-स्प-मन साहि औदा (उत्त १६ ६)। सहस्य पुन [सहस्र] १ श्रेक्या-विधेय वय । २ दि. हजार की संस्थानासा (जी २७ डा ११ टी-पत्र ११६, प्रामु ४) बुमा) । ३ प्रवृद, बहुत (कम्प: मात्रम है २ ११८)। किरण पूर्विक्रण] १ मूर्प, र्श्वर (मुदा ३७)। २ एक राजा (पठन १ ३४)। कस पू [मि] इत्र देशविराति (कप्प प्रचार ११ २६)। प्रयंग नयप पू [\*नयन] १६०७ (उव हम्मीर ४) महा)। २ एक विद्यावर राज-कुमार (पडन ४,६७)। पत्तथ [°पत्र] इनार दर बासा कमल (कम्प)। पाग पुन ["पा∓] हुआर सोविव संबवता एक प्रवार का तैस (ब्राया ११ — यत्र ११ ठावे १ — यत्र ११७)। रस्सि दुं ["र्राशम] मूर्व र्यव (लाया १ १—पत्र १० मन स्वल वरे)। क्रायम पूं ["सम्पन] एत्र (स ६२२)। सिर वि [ विरास ] १ प्रमुख मस्त्रान् काता। २ वृं रिष्यु (हेर ११व)। यस्त रेको वस (ग ६, १ दुना ८१)। सा म [ शस ] हेनार-हनार, घलेंड हनार (बा १२) शाब ["बा] मरव बचार म (बुस ११)। दुवं व [रित्यस ] इसर बार (बार इ. २ १४)। देवी सदस

सदास ।

सहस्संपयन न [सहस्ताध्यम] एक उपान, धाम के प्रमुत देशींबाबा बन (खाया, १ ८---पत्र ११२ ग्रीत तका)। सहस्सार पूं [महस्रार] १ प्राठवी देवसाक (सम ६४ मण; यंत्र)। २ याळमें देवसोक का इन्द्र (ठा२ ३—पत्र ८४) । ३ एक ' क्षेत्र-विमान (देवेन्द्र १३४) । बहिंसय पून ["वर्तसः है] एक देव-विमान (सम १४) । सदा की [समा] समिति परिपद (इसा स १२६ ११६: मुग १८४)। सय वि ["सन्] सम्य भवस्य (पामा स १८४) । सहारेको साहा = साबा (या २३)। सहाअ देवी स हाअ = हर-मान । सद्दाश्च दु [सदाय] श्राह्मप्य-कर्ता (एग्या १२—पत्र सम्पाम सेव १ स्वस्त १६ महाभन)। सहाइ वि [साहाय्यम] इतर देवी (सिरि १७- मुपा ११६) । सहादया हो [सहायिश्च] मध्य करनेवाती (उदा) । सहार स्त्रो सहनर = सहन्तर। सहाव देवो स-हाव = स्व-पाव । सहास रेको सहस्य (मिंग)। हुन्तो म [ ऋषम ] हबार बार (पर्)। सहामय देवा सहा सय = वना-वर। सिंहि [सिह्म] नित्र दोस्व (पामा उर २६)। रेको सर्हा। सिंह देवी मही (दूर्मा)। संद्रिज वि [साढ] सहन विका हुमा (वे १ २१, बारवा १४१)। संदित वि [संदित] १ युट, समन्पित (उर कुमा जुरा ६१)। २ दिल-पुट (पूच १ २ २ २३) । ३ वृं ज्यातिस्क पर्-निधेप (दा२ १—नगण्ड)। महित्र र्ष [सभिष्ठ] प्त-शरक पूपा धेननसमा (१६ ४२) पाय दुस ४८६)। सद्भि देश मन्द्रिय = स्व द्वित्र । संद्रित हेवो संद्र=सर्: संदित्र ) दि [सद्भुय] १ पुण्ट विक सदिज्य है बानों। रे प्रस्तान पुद्धियाना (देश नदश, देश शमात्र दनश)।

सहिभा देशे सही (च्छा)।

सहिक्क नि सेवो सहाश्र क्यांग्य भूषि प्राप्तमा मित्तर द्वारवाधि प्राप्त कर्म (द्वार १९० प्राप्त १९) भी, क्यों (द्वार १६ दि)। सहिक्ष केवे सक्द + स्वरत्य (प्राप्त १, १ १ क व १९४ १९६६ १९३)। सहिक्षु हे नि (सिंद्राप्त्र) स्वरूप करने नी सहिर है प्राप्तनाया (प्रश्न नि ११६९)। क्यों के दिला १० नि ११६९)। सही के सिंद्रांगी क्योंगी क्षांगी क्षांगी क्षांगी

(भर दुना)।
स्वर्धि वेची सहि। बाय थुँ [बाद] मित्रवामुचक बचन (हम १ १ १७)।
सहीमा कि [स्थापीत ] स्वायत स्व-स्य
(पक्र १ १०) वचा सत्त ६)।
सहीमा कि [स्थापीत ] स्वायत स्व-स्य

अक्र प्रीमार्ग हैं बर क्यर १४२० वर ४) : सहु (वर) देखों संघ (प्रीम १६) । सहु (वर) प्र [सह] वाज क्य (है ४ ४६६ दुया) । सहेन्न देनों सहित्न (वहा) ।

सहेबा क्यो सहिवा (महा)। सहर (पन) प्रृं [रोकर] बट्च कन क्र एक मेर (पिन)। सहस्र के [सहेख] हेवा-पुष्ठ प्रसमाव हेमितना बच्च प्रनाती में 'बहेब्र'

हरनाता वर्षा प्रत्यका य वहुद्ध (तरि ११) । सहोभर वि [सहोदर] १ पुल्य कार (के १ ४) । २ पूंचक पार्ट (कार कार) । सहोव के कि सहोदि (का वीदि (का)) सहोद के हिस्सोदि वे नात के पुक्र वन्नीय (तिष्ठ १ ) कारा १ — कर वन्नीय (तिष्ठ १ ) कारा १ — करोड के सहोद के सहोद (वर्ष २४ महोदे।

पत्र ६)। सहोत्र केवो सहो अर (पूपा २४ मए)। सहोत्तर केवो सहो अर (पूपा २४ मए)। (१ र १४६)। साञ्चल एक [क्यु] र पाप करवा, कृष कर्णा : १ कोण्या। सायुक्त (१४

१०७: पर्)।

· (15 · साजव (धी) देखो सागद (पनि १ २ मध्—मृष्य ४३ वि १८४) । साइ वि [शायिम्] धोनेनासा राजन-कर्ता (सुधार ४ १ २६) भाषा यस ४ २६)। साइ वि सादि । भाष-संदि स्वयंति युक्त (सम्म ६१)। २ व संस्थान-विशेष शरीर की प्राकृति-किरोप जिस शरीर में नाभि ते भीचे क सबसव पूर्ण सोर नामि के कार के भवपन क्षीन हो ऐसी करीयकृति (सम १ /६: मणु)। १ कर्म-विशेष साहि-धेरकाव की प्राप्ति का कारण-मत कर्म (\$FFE ( Y ) | साइन [साचि ] १ नेमच का पेड राज्यकी कुत । १ र्सस्थात-विदेव देवी साइ - साहै का इसरा भीर तीमरा मर्च (जीव १८)----पत्र ४३)। साइ पूर्व स्थाति र नतन-विधेय (सम २८ क्या)ः साधाई तं च वनं पत्तविदेते त भंतरं पद्धं' (प्रानु ११) । २ र्नु भारतवर्षं र्वे **होनेवाते एक जिनकेन का** पूर्वजन्तीय नाम (छम ११४)। ३ एक फैन मुनि (छन्दि ४६)। ४ हैमबळ-वर्ष के रूक्तायाती पर्वत का श्रामित्रामक देव (ठा२, ६—नव ६६ < ) i साइ 🖠 [सादिम्] दुरूपगर (स्प

साधविद्यक्ष नि [कृष्ट] बोचा हुमा (कुमा

का है [सादिय ] प्रस्कार (ज्य कर दी)।
साइ ईस्ने [सादिय ] र पच्छे पीन के सार स्वाद पीन का मिन्न्य उत्तय करतु के सार हैन करतु की निवास (तुम र २, ११)। र सादियक्त में प्रत्यक्त र १८)। र सादियक्त में र १८—गर १९)। र सादियक्त में र १८—गर १९)। र सादियक्त में प्रत्यक्त प्रदेश पीन (पन १४)। जीग है [भाग] दे मोद्यक्ति कर्म (जन १४)। र साव्यक्त पीन हो कर्म (पन १४)। स्वाद्यों पीन हो सादियक्तिय है [प्रत्यक्तिय हो हो स्वाद्य (पन १४)। स्वाद्यों हमान्य (पन १४)। स्वाद्यों हमान्य (पन १४)।

साइ 📢 👣 केवर, 'बलको सारिकिमा

सक्तर कींड संसाहपत्रमेर्दि (दे स, ११)।

साइज्ज वक [स्वाष्ट्र सारगी + छ] १
स्वार केता, पारग । र वाहता प्रकार करणा । १ स्वीकार करणा घड्ण करणा ।
१ स्वारोव करणा । १ स्वीकार करणा ।
१ करणोव करणा । १ स्वारोवेल करणा ।
१ करणोव करणा । धारम्बर सारमारो ।
१ साम्रोज करणा न्यारमार (पाष्ट्रा) ।
१ साह्याय विश्व (पीष्ट्रा) ।

सदिमा-साउत्र

साईणिक्ष हि [सारित ] १ अनुक (क्या—धे)। २ उरहुत-सक्यो। की या (क्या) स्माम हि [सारिम] पम, पुराणे सारि प्रकाश (क्षा ४ २—या २११। स्माम क्या योग स्मार्थ हिसारित साईप हिसारित साईप हि [सारिक] साईपता (क्या १ १० गर १६)। साइप हि हो संस्था = स्वास्त्र (पूर ११ ११७)। साइप में [क्ष] संस्थार (६ ४ ११)। साइप में हि हि हो । स्नास्त्य हिस्स्त्र

धाइरेग हि [सांतिरेख] ब्यांबन, जमेलेन (धन ११ मन)। धाइसब हि [सांतिखन] यांधलनानां (म्बा पुता १९७)। सार्वे की सहै न लगे (१७)। सार्वे की सहै न लगे (१७)। सार्वे देशाई न लगे १९। १२० वर १०) हे २ १० पुता हैं

(पिक्रमा ४२)।

सावन वि [स्वादुक] स्वास्थ्य कोजनवाना नदुर भोजनवाना कुमाई वेजानद साम्पाई (तुम १ ७ २६)। साउका न [सायुक्य] सम्बोन साहस्य (मणु ६१)।

सागृहिञ वि [शाकटिक] गाड़ीवान वादी सार्राणम वि [शाकुनिक] १ पक्षि-वादक पसा कर निर्वाह करनेवाला (पुर १६ पश्चिमों के वस का काम करनेवाला (पर्यह १ १ २—पत्र २६ इस्सु१२६ कि विपा १ द--पत्र वरे)। र्र शङ्कानशास का बानकार (मुपा २६७ कुन्न १)। ३ स्पेन पक्षी द्वारा किकार करनेवाला (प्रणु **१२१ टि)** । साउप देवो साउग (राव) । साउव वि [ सायुप ] बाबुगाना प्राणी (ठार १—नव रेव)। साइस्ड वि [संक्रुज] ब्याप्त भरपूर (सुर t=3) 1 साउस्य वि [ साकुल्य ] प्राकुत्रवा पुक व्याकृत व्यवः (व्यानुद्वास्थ्यो पर्धिहर्षः सोनि संदार (पदम १ २ १६७)। साउनी की [व] १ वदावन (ना २६१)। २ वस करका (मा ६ १) । देखो साहुस्त्री। साइड रू कि अनुसम, प्रेम (१ व २४ पड्)। साप्त्र देनी साइक्स । सम्बन्ध (भी ₹> ₹) 1 साएय व [साक्त] प्रयोप्या नवधे (इक. क्त ६३)। पुर न [पुर] मुपा ११ बह्रो पर्न (उन ७२० टी)। पुरी की ["पुरी] वही (पदम ४ ४)। देखो साह्य। सापना 🗣 [सायना ] प्रवोद्या नवचै (प्रमा २ १ सुम्मा १ ६---पत्र १६१)। संतपन व [सान्तपन] बत-विशेष (प्रवो **91)**; साइ देवो साग (वे ६, १३)। सारुप न [साकेत] १ नपर-विशेष धपोम्पा (दी ११) । २ वि वृद्ध-वंकपी । १ न. प्रत्याक्यान-विशेष (पब ४) । साफ्य वि [साङ्क] १ वंदेन कर पंकेत-इंदरकी। रून प्रस्थातमान का एक मेद (43.8) 1 स्तान भू [शाक] १ द्वानिकेष (पराम ४२ ण दे १ २०) । १ तक-सिद्ध बड़ा साहि थाय सामा सो तनकतियाँ वें (पर नगर)। ३ साक करकारी (पि ३ ४) 1401

२२३ स २६२३ क्त १, १४ मा १२)। सागय न [स्वागत] १ ग्रीमन प्रानमन प्रस्ति धाममन (भग)। २ घतिषि-मत्कारः बादर बहु-मान (मुपा २१६) । ३ हुरात (इमा) । सागर थ्रं [सागर] १ सपुर (परह १ ३---पण ४४' प्राम् १३४)। २ एक राज-पूच (त्य १३७)। १ राजा प्रत्यक्तृम्यि का एक पुत्र (संत ३) । ४ एक वर्षिक्-व्यापारी (उप ६४व टी)। १ सावर्वे वनश्व वना बामुद्रम के पूर्व भन क धर्म-पुर (सम १५३)। ६ पूंत कूट-विरोध (६क) । ७ समब-परियाण विरोप वरा-कोटाकोरि-सस्योगम-परिमित्त कास (नव हा बी ६६; पव २ ४)। व एक रव विमान (सम.२)। इति ईत ईति ["काण्य] एक देव-विमान (सम २)। चंद द्र िश्वस्त्र] १ एक थेन माचार्य (कात) । २ एक स्पक्तिपाचक नाम (दव<sup>्</sup>पडि राम)। चित्त पुरु ['विद्य] बूट-विशेष (६७)। दस्त दुं [दस्त] १ एक पैन मुनि (सम ११३)। २ दीसरे बनवेत का पूर्वजन्मीय नाम (सम ११६)। ३ एक बेडि-पूर्व(महा)। ४ एक सार्ववाह का नाम (विपा १ ७)। ४ श्रीरपेख बक्रवर्धी का एक पूत्र (मझा ४४)। "दत्ता स्मे ["बृत्ता] १ भववान् वर्षनायनी की बीआ-शिविका (सम १६१)। २ मणवान् विसम्भनामनी की योधा-शिविका (विकार ।२१)। दिव र् [ दव ] इरियेण चळ-वर्तीका एक पूर्व (नक्ष)। यूद्र पुं विस्तूद रीम्य की रचना किरोप (महा)। देखी सागर = मागर । सागरिअ रेपा सागारिय (वित ११८) पर 1659 सागरायम पुन [सागरोपम] बनव-परिमाख विकेष वत-कोद्यकोटि-मस्यापम-परिमित कास (द्वार, ४—पत्र ह समार का दां हा ११ चन वि ४४०)।

सागार वि [साद्यर] ! चामार-स्मित

की शांकि सिरोप-पहुछ आन (पोरा मनः )

[\*वृश्चिम्] बानशासा (पर्वण ३ —पत्र 988) I सागार वि [सागार] गृह-पुक्त, गृहस्य (धारम) । सागारि ) वि सागारिम् रिकी १ सागारिय ) मुद्द का मास्रिक उराध्मा का मासिक साभू को स्वान दनेवामा गृहस्य राम्यादर (पिंड ११ माचा२ २ ३ %) सूच १ ६ १६ योग १६१)। २ सूटक प्रतब मोर गरख की मनुद्धि, मरोच (सूम १ १ १६) । ३ मृहस्य से युक्त सामाप्ति स्थस्सर्′ (सावा२२१४०४)।४ न⊾ मेबुन (बाका १ ६, १ ६)। १ दि शम्यादार गृहस्य का उपायम के मालिक से श्रंबम्य रखनेवासाः 'शानारियं विवे पूर्वेशाणे (सम ११)। सागेय रेडो साक्रय=साकेट (शाया र ब—पत्र १३१ उर ७२६ दी)। साब बन [ शाटय , शावय ] सहावा विनास करता । हेड्ड साबेश्वय (विपा १ र—पत्र १६) । साम पू [शाट शाव] १ शाटन विवास (विशे १४२१)। २ साटक उत्तरीय वस पहर (पर १८) । १ वस काहाः प्वतार बद्दा बचेते (बादा मुण ११)।

सम्म ६४)। ६ प्रात्वाद-पुक्त (मद ७ २---

पत्र २१%, उप ७२० टी)। पस्सि वि

विवास (बिन १११६) स ११६) । २ केरन (पूर्वान ७२)। साहना सी [शाउना, शावना] पर्य-वर्ष होक्ट विधने का कारल विवास-कारण (बिसा १ १--रण १९)। साहित्र वि [शादिव सादिव] सहाहर विरामा हुया, दिनायित (मूर १४, ६) है

साहम ) पुन [शाटफ] वह कामा (मुण साहग ) १११) धन)।

सारम न [शाटन, शावन] १ विशय्यः

9 ਵ)। । साहिआ भी [शाटिया] रक्ष काम (बोन: क्ष)।

बाइतिवासा । २ विदेशीय की बर्फ करने साहिद्ध देवा माह = साठ निर्मावयवातानु-

मनिएसर्रिक्की (नुस t t) ।

साबी की द्वाटी कर, रपका (दुम ४१२)। साक्ष्रों की किन्द्री] नाक्षे । इस्म पून [ कर्मन् ] नाड़ी बनाना, वेचना चताना धारि शकर-वीविका (उवा: म्य २२)। सामीना देवो साहिका 'वह आहा सामैया सासु सुक्क निर्यक्रक सर्वी (निसे ३ ३२) । साह्येक्ट रेडी साहभ (शमा १ १८---पत्र २३३)। साथ छ । [स्राप्य ] राश पर वड़ाना श्रीक्ष्म करना । बारिएन्वर्स (सी) (गाट) । साम (के [मान] १ दुत्ता (पाम परह १ र-पत्र का प्रानु १६६ हे १ ४२)। की जी (नूपा ११४)। २ दूँ **क्रन्य** निशेष (पिंद)। साज वि [स्यान] निविष्ठ क्योमूत (वा **44**9) i साज र् [छाज शान] रज को विस कर वीक्त करने का यन (बार्ड रीमा)। साथ वि [शाय] स्त का क्या ह्या पाटका क्ताइमा। **व**द्रै, यी (रघ३, ११८)। साज देवी सासायज (कम १ २१)। साजक्रश वि कि शायित विशेषित (के न (1) साजय न (शायक) सब का का इस वस (स्व १ ६ - प्य ११ च वस्त)। साणि की शामि ] स्वकाक्ता हुना क्लक्स (रम ११)। साजिभ वि दि हान्त (पड्)। साम्बी केवो साम = क्षत्र । साओं को शियों देशे साचि चालीय-वारतिविष्यं (वस १, १ १)। साज बुंब [सातु] पर्वंद पर का क्याल मुक्ति बाला बदेश (पाम; बुर ७ २१४४ व ३६४)। मंत रे मित् विशेष (क्य १ ३१ छ) : र्वाहमा स्त्र विद्या शत-विदेव (पन)। साजुद्धेस वि [सानुत्रांस] कन्द्र (स ४ ४—नव २ ६। क्या १ ४⊷ वर ७३। स्वयं १६ ४० वन्)। सामुद्रमा न [सानुप्रम] प्राव काच प्रसावunu (gg t) :

साजुर्वभ वि [सानुवन्य] शिल्वर, प्रविद्य साधारण रेको साम्रारण = सामारक (वि व्यक्षिमा (उप ५७२)। साभारणा बो [सेभारणा] गरना, भाष्णा साण्धीय वि [सानुवीख] विवर्षे प्रशासन-स्परशकृति (श्रीर १७६)। राजि क्टन हुई हो बद्द दीज (याचा २ १ सामीज देशो साहीज (माठ -न्यासती १११)। α **1**) ι साणुवाय वि [सानुवात] धनुवृत्व पवन-सापद (शौ) देखो सावय = चारव (नाट---गवा (स्त्)। **275 ₹** ) ( सजुसम वि [सासुराम] प्रमुखाप-मुक्तः (पवि साफ्ड ) देवी साहत (विषे २१६६) १११३ गढ४) । साफक्ष्या रेज ४६० दी वर्गीव ६६३ व साजूर व [दे] देव-मृह, देव-मन्दिर (दे व ▼ €) 1 साबाह् नि [साबाय] पावरवा-प्रदित (का सात ग[सात] १ दुद (ठा२ ४)। २ ११६ ही)। कि सुख्याला । श्री. ता (पर्य ३३--पत्र सामरग रू वि साभरकी क्या धीवह ७०१)। वियाणिक्य न चित्नीय] पुच ध्यने का धिका (पर १११) । का कारश-भव कमें (स्र ४ ४ - पत्र १६)। सामम्ब देवी साहस्य (विशे ११६)। सावि केनो साइ = स्वावि सावि पावि पावि साभाविक ) देवो साहाविज (मुर्पन tध (सम २) ठा२ ३ -- यव द ६ -- पव ६१७) सामाविष । क्या भारत ११ व हो)। बीन १--पन ४२: वस्ता १ २--पन २६: साम पूर [सामम्] १ तहु को रह करने क सम 💌 १) । साविज्ञाणया केवी साद्वज्ञानया (ठा १ <del>ण्याय-विशेष एक चन-मीति (छाना र</del> रे—पर ११ः प्रानु**१७)।** २ फिल वास्त ६--पन १४०)। साद् वृ [साद] घषसार, केर (दे १ १६०)। (कुमा: महा १४) । ३ एक वेद-राज (वन् क्य)। ४ मेवी मिवता (विसे ६४ १)। साहित्व वि [सर्देव] देवता-प्रमुख, देव-इट ३ सर्वे संबंधित किंद्र करता 'महरपरिमान (प्या२६)। सामें (धाव १)। ६ सामाधिक श्रेषक-विशेष साहित्व देवी साहेक्न (विट ४२७) । (धैबोब ४३)- 'साम सर्व च सम्मे स्पर्भाव सारीभ वेदो साइय = धरिक (घर; धीप) । धानाहकस एक्ट्रा (धान १)। कोट्र**ई** सारीजर्ममा हो [सारीनयहा] प्रामीतिक िकोष्ट**े ऐरनत वर्ष में प्रत्यस एक्सीवर्गे** मत में बच्छ एक परिमाश्च (मन ११--पक निनदेव (घम ११६) । देखी सामि<del>-प्र</del>स् 104) साम र् [ह्यास] १ इम्ब्स्ट वर्ग, क्रमा रंब । सारेश्य न [सादिस्य] देव का सनुष्ट-२ इरा वर्ण नीवा रंग । १ वि नावा वर्ण-प्राप्तिम्य 'कारेम्याचि व देवपामी कर्णेंद बाबर । ४ इस वर्तवाबा (बाबर कुमा शुर क्रक्तकते स्मार्थ (क्सा २ २—पत्र ११४) ¥ ¥¥) । इ. पू. परमानमी देशों की शुक्र वार्धि \*) 1 (सम रूक सूर्यान ७२)। ६ एक वेल हुनि, सार्वस्य (भा) वेले सर्वस्य सह स्यामार्थे (स्वीर ४१)। ७ म. तुश्च-विशेष क्ष्य-उस (त्य २ २ ११)। स देश. साथ देशो साह=तावव्। प्रापेति (दुन मान्मत पदन (वप २ २—पद ७७६)। (v) 1 इति र् [ इस्तिन् ] सम्बान् महानीर साचन देशो साहन (नर्नदे १४६) १३३)। म किया एक धुनि (सप १ ४—पण सायम्म देवी साह्यम (वर्षेत्रं वर्ष्ण)। ₹ ₹) : साधिमाभ देवो साहिमाम (पर्स ११ सामइम वि [मतीभिन] निक्मी मतीबा वी वर्ष हो वह (दुना) । ww) I

सामक्ष केवो सामाक्रम (विते २६२४) 341 341× 3414)1 सामग्रम 🐧 [सामयिक] १ एक मृहस्व सामक्षा का नाम (सूचनि १६१)। २ पि समय-सम्बन्धाः (पंच ४, १६१)। ३ सिंदान्त का मानकार (संबंधा ६)। ४ धामन-धामित धिदान्त-धामित (ठा ३ र--पन १६१)। ६ बीळ विद्यान (बसनि ¥ 41)1 सामद्रग देवो सामाद्रभ (विसे २०१६) । सामग्री व [सामायिकिम् ] सामायिक-गावा (विसे २७१६)। सामंत पून [सामन्त] १ निकट, समीप पास 'तस्य सं महत्त्वार्थते' (स्त्राया १ २-- पण ७५ इस, कम्प)। २ वूं सबीत राजा (महान्यत)। ३ प्रपने देश के प्रमन्तर देश का राजा समीप देश का राजा (कप्प)। सामंती 🛍 🔄 सम-मूमि (वे 🖛 २६) । सामवार्थाणयास्य न [सामन्दापनिपाविक] मिम्मय का एक बेद (राम १४)। सामवीयणियादया ) भी [सामन्तीपनिया सामंत्रोव मीळा िविधी किया-विधेय चार्वे उरफ से १९४८ हुए अल-स्मुदाय में। होनेवासी क्रिया-कर्म बन्च का कारण (ठा २ र~पव ४ तव १०)। सामवाषायणिय पुत्र [सामनापपार्वानक] प्रमिश्म-विशेष (ठा ४ ४--पत्र २०६)। सानवल रेका समयका संगरित विय वयर्ग, 'वे दे प्राप्त एक्स सम्बद्ध । महिन्दे प्रदेवकार्म' (पदम १ व४)। सामग रेको सामय = श्यामाङ (राज) । बामगा यह [ शिक्षप् ] धानिङ्गत करना । सामान्द्र (६ ४ १६ )। धाममा } व[शामम्ब] बामके संयू साममित्र } स्वतं, सकतता (वे १, ४० माना २११ श महा)। सामित्रम् हि [दिस्मृ] पाविश्वत (दुमा) । सामनिन म कि [वि] १ विवितः। २ सव व्यक्तिया ३ पानियः, एप्रियः (३ ० १३) ।

११२

पाइअसदमहण्या सामर्गा 🛍 [सामर्गा] १ समस्तता। २ कारण-समृह (सम्मच २२४ महा; कप् रमा)। सामच्छ सक दि निक्छा करना पर्या बोपन करना । संक्रु सामन्द्रिकण (पहन YR (X) ( सामच्छ न [सामध्ये] बमर्पेता शक्त (हे २ २२ कुमा)। सामच्छ्रण रेको सामस्थण (राज)। सामक्त्र न [साम्राभ्य] सार्वभीन चन्य बहा सम्म (इस १३७ ठी)। सामण ) विशिष्यमण णिकी धनस सामणिय 🕽 चननी (चन)। सामणिय देशो सामण्य = बानएय (मूच १ ७ २३ वस ७ ६६)। सामणेर व भार्माणी धमण का स्मध्य साबुकी संवान (मूच १ ४ २ १६)। सामञ्जा न [भामण्य] यमग्रवा सामुपन (मरावस २१ महा)। सामण्य 🛊 [सामान्य] १ मण्पमी केर्ने काएक इन्द्र(ठा२ १--पत्र ८३)।२ तः वैशेषिक क्योंन में प्रसिद्ध सत्ता पदार्च (वर्मस २ ११)। १ जि सामारख (सा ८११) १९६ माट—स्टना वरे) । सामस्य देवो सामच्छ (र) । संष्ट्र सामत्ये क्रम (क्रम्)। सामस्य देवो सामच्छ = सामर्थ्य (हे २ २२ कुमा ठा १ १--- नव १ ६३ मुपा २वर प्रामृ १४४)। सामस्य १ न [दे] पर्यानोचनः सन्दर्शाः सामस्थात्र । नास इरामोचि धन्य सम इति सामार्थ करेंति पुरुष्त' (पश्क १ १---पत्र ४६ विक १२१ इद्वर है)। सामग्र देशो सामण्य = भागएम (भगः रूपः gctt): शासका देवी सामण्या = सामन्य (क्का स ३२४ वर्गन १८ मन्त्र १ ११)। सामय सक [ प्रति + इक्ष ] प्रवीपा करता बाट घोडना (हं ४ १६३ पड )। सामय वृ [इयामाक] चाम्य-विधेयः सन्ता (ह ्र ७१ः दूमा) ।

सामरि पुत्री [म् -तास्मिकि] शास्त्रसो बुध सेमरका पड़ (देव २६ पाप)। सामरिस वि [सामर्प] रैप्यांतु, प्रशहिप्तु (सूर२ १)। सामक वि [स्यामल] १ कसा १०७ वर्छ वासा (वे १ प्रदासूर ३ ६५ कुमा)। २ पुंपक वरिष्य — वनिया (सूपा ११६) : सामग्रह्भ वि [इयामस्टित] काता हिया क्ष्मा (में द ६६)। सामद्भव वि [इयामस्यक्ष] र कानाः २ कसमा पानीकासा (से १ ११) । ३ ट्र बनस्पति-बिरूप (राज) । सामव्य को [श्रामव्य] १ इपल वर्णगानी की। २ छोनह वर्षकी की रमामा (वका **११२)** i सामिक रूंची [शाल्मकि] सेमस का गांध (सूम १ ६ १० वस मीप)। सामक्रिय बंबो सामस्त्रक्ष (पुर ४ १२७) । सामसी देवो सामदा (यज्ञका था १२३ रहेडा कर्ड हे सुना १०६) । सामसर पू [शावस्त्रय] सम्बर्धनत गी—निव क्वरी गाव ना बस्स (बसू २१७)। साम की [इयामा] १ वेषा वें क्लिय की माठा (समे १११)। २ तृतीस विनदेव की प्रवम शिष्या (सम १४२)। ३ सानि, सात (सूम २१ द६ से १ दर कोम ३४०)। ४ राज की एक सम्र-महिपी--पटसनी (पडम १०२ १४६)। १ त्रियंपु बुख (पस्ण १--नम केरे १७---पत्र प्रदेश सद्धार) । इ एक महीपनि (टी ४)। ७ सठा-निशेत साम-नवा (पीप)। व साम नवा (से १ प्रशेष्ट्र मारी की (संदर्भ प्रमुप १६६)। १ स्थान कर्तकाली की (दूमा) । ११ सोवह पर्व की जलवानी क्ये (करना १ ४) १२ पुन्दर सी रमली (वे १ ४६) पउर)। १३ मनुनानची। १४ मोन का वासः। ११ प्राप्तमः का बाद्यः। १६ प्राप्ते नता। १७ प्रताः १४ इच्छाः । १६ र्धान्यकाः २ कस्तूषै । २१ यण्यशे । २२ बन्दाकी सता। २३ इ.चै पूर्णबा। २८ रिप्पत्तो का बाधा २४ इतिहा, इतको । २६ मोन दुर्सा२ नुबक्षी । १८ पदशैज ।

रक्षीयेयाः ६ कानाः ६१ फिसपा

सीसमानमा पेका। १२ परित-विशेष (हे रै

२६)। सिर्विशी स्पन्निमोजन (सूच

सामाइअ व [सामायिक] संबम-विशेष

सामाद्रभ नि सामाचित्री बगाप रा

SH:

२ १, १६ धाचा १ २ १ १)।

सपन्धान राग-होध-सीरत प्रवस्तान

२1 € २६ ३) २६≈१ २६१

धीफ नव)।

स्पद्ध से संकन रक्तेत्रामा सम्य (सत्त ११ 241 58 22 24) I सामाइभ नि [स्यासायित] धनिन्तर (मा 24 )1 सामात प्रीइयामाकी मनवान सहातीर के धाम ना एक भृद्वस्य जिसके अध्युवासिका वदी है फिनारे पर स्थित क्षेत्र में मनवान महाबीर को केन्द्रशान हुया था (कथा)। वेको सामाय = स्थानाक । सामाजिक रेको सामाइक = बामाजिक (ERT 11 /1 सामाण देवी सभाज≃ धमल 'नोझो इति इश्रेयक्षक इमनि मिराप्यामास्त्री (क्रम १ र ३ प्रमादक्षो । सामाण पुन (सामान) एक धन-विमान (द्यन ६६)। सामाजिक विसिमानिकी १ संविधन निकट-वर्ती नज्योक में स्वित (विने २६७१)। २ दूं. इन के समल प्राविकाने देशों की एक भाठि (सम ३७ अन ३ १ — पत्र ११६ स्याधीक प्रस्त २ ४१)। सामाय धक [स्थामाय ] कला होता । सामाद, सामावद, सामावंति (यहह) । वहू-सामार्थत (परः)। धामाय ध्यो सामय = स्थामक (धन)। सामाय दे सामाय । ध्रेयम विशेष सामा-विश्व (निने १४२१ संबोध ४१)। सामापारि रि [समाचारिन्] प्राप्तक क्रोपाचा (स्त) । सामायारी की सामायारी ने ताबू का बाबार-क्रियानकार (क्ल्ब्र १ १६) प्रतः वन १९६) ।

(PRU (YOU) I सामि ) वि स्विमिन् १ वावक धवि सामिक पिता १ देखर, मानिक (सम वद्धा विचा १ १ टी---पव ११; चका कुमा < ₹₹) I प्रामुबद)। इसी पी (मक्का)। ३ पूर्वप्रकुट वनपान (कुमा १ १३ ७ १७३ सूपा १६)। Y राजाः नूप । ३. मर्द्धा पदि (सङ्खा)। कुद्र 4 [किष्ठ] ऐस्तत वर्गमें अस्तरून एक्सीवर्वे किन-देव (पर ७)। देवा साम-कोट। (14) त्तन स्थि मामकियत ग्राक्यिय (स्थ वदः सं २२) । पुर व [\*पुर] नवर-विश्वेष (स्प ११७ दी)। सामिक्य वि दि । याच चनाया ह्या (है < २**३**)। सामित्र वि [शमित] राज्य किया हुया (मुपा ६६) । सामिद्धि 🕰 [समृद्धि ] १ व्यव संपत्ति । २ 1(35 कृषि (प्राप्त है १ ४०४ कुला)। सामिषेव व [सामिषेथ] काल-समूद्र (सेव tt E X X t) | (वव १)। सामिकी न स्थिमिसिन् र शेक्षिकेन को बस्त बोज की एक रुपका है। २ एकी चय बोन में कराना (स <del>७ पान ६१</del> )। सामिसाक केवा सामि (परम = ६ ; गुपा २६६७ जीव स्टर)। ध्ये. स्मे (स.६.)। सामिहेन को सामिक्न (स ६४ : ६४४) मात)। सामीर वि [सामीर] चगौर-धक्त्वी (यज्ज)। साम्बर्भ देशि दुष-निशेष वद उदा नियकी रखप की पाठी है (पाम)। सामुक्त वि [सामुद्दत] संप्राचारतावा **'धामुग्बदिमाक्तृह**नाम्' (धीप) । सामुच्छेत्रय वि [सामुच्छेविक] वस्तु को एकान्य महिन मान्त्रेवाला एक मद भीर क्षका प्रमुखानी (स ७—-पन ४१ : विसे

Riat) i

१६--एव २ )।

स्मभुदाद्यं दि [सामुदाभिक] प्रयूक्त स्र

समुद्यम के संशन्त रक्तनेताका (काना १

सामुदाजिय पि [सामुदानिक] १ पिया संबन्धी मिला से सब्ब (ठा४ १-- पत्र २१२ समार १ ४६)। र फिद्धा, मैश (क्सा ७ १ टी--पत्र २६६)। सामुद् र् [वे] इद्ध-तमम दुरा-विदेश (वे सामुद्द ) विसिद्धमुद्ध की १ व्यव सामुद्दय प्रमानी सापर का (जाय र क्रम १४४३ धन १ २<del>० प</del>न २११ रस ३ व)। २ त क्रम-विदेव (सम्पी सामुद्रिक्ष न [सामुद्रिक] १ शाक-विके राधेर पर के विक्रों का गुजाशून पता बरकारी-बामा शाब (था १२) । २ शरीर की रेवा यारि विद, 'सापुरिश्तक्वकारा दर्सनि' (धैबोच ४२) । ३ वि समुक्रिक साझ क साता(द्वप्र ३)। सामुराणिय देवो सामुदाणिय (उत्त १ साय केवो साइक्य = स्वार, सक्ती+४। द्यामर (भाषा २०१६ १) श्रारण्या साय देवो साग = शाका 'मोसम्बं संबद्ध धीमर्यं न सम्पन्नाहिक (पद्या २ ६---पव ११६ पर्य १--नव १४)। माय न [साव] १ एक (भट पर)। १ दुव का कार<del>्यह-पूत कर्व (काम १:१३)</del> ४१)। १ एक **१४-वि**स्ता (धम १४)∤ बाइ वि विश्विमा सक्त-स्वन संबी दुर्व की जरपति भावनेताला (क द---पव ४९६)। याहण पुं विशाहनों एक प्रक्रिय सम (कल)। । गारव दून "गोरव] १ दुब शीवता (दम व)। २ स्ट का वर्ष (राव)। ा<u>त</u>ुक्ता न ["सीस्य] प्रक्रित्व पुत्र (बीन मेको साव = क्वत । साय पू [स्थाव] रख का धनुवन (विधे भदेश प्रत्य देवे १ ; **चन** ७६*० दी*) । सायन [के] १ महातज्ञ केत का दक नपर। २ दूर (दे क, ६१)। सार्यं य [सायम्] १ सम्यान्यमर राज् (पाम वजाः कृप्यु)। २ साम, सन्ता (अ

सरदा २ सरद-फरण (ठा १ --पत्र ४६६)। तण वि ["तन] सन्त्या-समय का (विक ११)। सार्यदर व वि नगर-विशेष (वे ८ ११ टी)। सार्यवृक्त भी [बे] देतकी केनदे का गांध ( tu (X) 1 सायकुंभ न [शावकुम्भ] १ सुवर्ण सोमा । २ वि मूनद्धीकावनाहुद्धा (सुपा २ १)। साबग र् [सायक] काछ तीर (मुना 122) I सायग वि [स्थाब्फ] स्वाव बेनेवाला (वर्ष ¥ 24) 1 सायणा भी [शावना] बएरन धेरन (सम र∗)। सायणी भी [शायनी, स्वापना] मनुष्य भी वस बरामों में वसवी-- र से र वर्षे की उप्रवासी—दश (तंबु १६) । सायत्त वि [स्वायत्त] स्वायीन स्वतन्त्र (स २७६)। सायय देशो सायग (पाप्र) स ५४८) । सापर वृ [सागर] १ वक्क (क्या १६) वदा भी ४४ ग्रज्ज प्रामु दक १४४३ प्राक्षा है २ १८२)। २ ऐरवट वर्ष में होनवाने भीचे जित-देव (पव ७)। ३ मूप-क्रिये । ४ संक्या-विशेष (प्राप्त) । ५ एक स्टेड शा नाम (सूपा २× )। घोस पूं ["पाप] एक बैन मूनि को बाउने वसदेव केपूर्वजन में दुव में (पद्भार १६३)। सद् पू [ सद्र] द्रवादुरंत का एक राजा (परम १, ४) । देखो सागर = सावर सायर वि [छ।वर] बादर-पुष्ट (वडक मुर २, २४४)। सायार देशे सागार = सकार (सम्म ६४: पत्न ६ ११८)। सार वक [प्र + हूर] प्रहार करना। सारा (६४ ८४)। वङ्ग सारंग (दुना)। सार वक [स्मारय ] याद दिमाना । सारे (बर १)। न्तर वद [सारव ] १ क्षेत्र इतना दुस्ता ।

करमा। र प्रकात करना, प्रक्रिय करना ।

६ प्रेरए। करना। ४ धन्नत करना चत्कृष्ट बताता। ५ सिद्धं करता। ६ सम्बेपरा इरना क्षेत्रमा। ७ सरसमा विसमाना एक स्थान स सम्य स्थान में से बाना। शारक (सुपा ११४) सार्रीत सारमक (सुम १२२२६२६४) 'सारेहिकीर्य' (स ३ १) सारेड (सूच १ ३ ३ १)। कर्म, 'ईसारा' सरेहि सिरि सारिज्यह यह सराण (सिहि' (या १४३ काम व६२)। क्रमहरू सारिकांस (पुषा १७)। सार सङ [स्यरय\_] १ दुसवाना। २ चक्चारस्य-योग्य करना। सारीत (विसे ¥43) I सार वि [शार] र रुवत वितकवय (पामा बरु इ १७० ११)। २ वृं सार पासा द्यमने के बिए काठ बादि का भीपहस र्भविरंग सीचा (सुपा १३४) । सार पुन [सार] १ बन दोसत (पामा से २ १। २६ मुद्दा २६७) । २ न्यास्य, न्याम कुक्तः प्रकेषु नाणि एते सार्यन दिसद क्षिपर्स (पूर्वा १ ४ १)। १वत पराक्रम (पाम्रः सं १ ५७)। ४ परमार्थ (ब्राचानि २६१)। १ प्रकर्षे (प्राचानि २४) । ६ फल (धाणानि २४१)। ७ परिएाम (स्र ४ ४ टी—पत्र २६३)। ब रस नियोद (रुप्पू) । १ एक देव विमान (क्षेत्र १४३)। १ स्पिर प्रेश (से ३ २७- यज्ञ )। ११ व बृध-विशेष (पएछ १--पत्र ३४) । १२ दश्य विशेष (विष) । १३ वि मेष्ट उत्तमः यह वंश सामार्थ गुणाया साच दहह बचा' (बस्था ६ स ३ २६)। देता दी [दाम्ता] पर्व धम शी एक मुद्रौता (ठा ७—पत्र १११)। य वि [द] बार बनेशसा (से ६, ४)। बहु को [यवा] छम विदेश (तिम)। दत रि [ यन् ] सार-पुष्ड (श च—पत्र ११४: गढर)। वंदी वयो यह (पिय)। सार्ध्य वि [शार्धवक] यद बदु श (बचर १ वर्खरू १४—यत्र १२६) , क्षे ६, इस) । सारंग वि [साज] । सोवका वन्य ह्या ।

ं प्राप्त)। ४ विष्णुका मनुष (हे र मुपा १४६)। पाणि वृ [पाणि] विष्णु (प्राक्क २७)। सारंग वृ [सारंग] १ विष्, भूपेन्त्र (सुर १ ११ सुपा १४८)। २ वातक पक्षी (पास क्षेत्र वर)। वृह्यिण मून (ने ६ वरः कृष्णु)। ४ हाथी। ३ भ्रमर। ६ छन्। ७ राजहंस । ८ विष-मूब, विवस्था हरिए । **१ वाश-विश्वेष । १ शीखा ११ मपूर** । १२ क्यूचा १३ केटा १४ मामरण यसंकारः १४ वद्धाः १६ वद्यः कमनः। १७ मन्दना १८ कपूरा १९ कूना २ कोवता२१ मेप (सूपा३४०)। स्टअफ, ह्रपड (प्रच) पून ["काफ] ध्रम-विधेष (विन)। सारंग न [साराष्ट्र] प्रवान बस श्रेष्ठ धवयन (पस्त्र २ ५---पत्र १५ । सूपा ३४०)। सारंग र् [शाहिंग् ] विष्यु मीइप्छ (दुमा) । सारंगिया ) की [ सारक्किया ] कर-विशेष सारंगिको (प्रत) । सारंगी भी [सारद्वा] १ इरिखी (पाप)। २ पाद्य विशेष (मूना १६२)। सार्रभ देखो संर्यम (ठा ७---१४ ४ ३)। सारमञ्जूण 🖠 [सारमञ्जाप ] बनवाबार बनस्पति विशेष (पएछ १---पत्र १८)। रेबी सासऋदाण। सारक्या सक [सं+रम्] परिपादन करना सच्छी तरह चाल करना । माराज्य (र्हेड् १३)। वड्ड सरक्यंत सारवसमाय (पि ७३३ दरा)। सारपस्त्रम न [संरक्षम] सम्दन् रहास वाण (कामा १ २—पत्र १ मूख १ ११ १८: घीप) । सारक्राणया भी [मंश्क्रणा] इतर रेवा (Pt at) 1 मार्पक्य वि [संरक्षित ] धरप्रकृतना (ft wt) i सार्धीस्मञ्ज वि [संरक्षित] विवस बंद्यानु स्थित नवा हो यह (पटह २ ४---पत्र २ ल बर्नुप । ६ मात्र ≉ भाषे (देर 11 11

सारक्लेल् वि [संरक्षित् ] संख्या-का (झ ७—्यून १व६) । सारग रेको सारय = स्मारङ (पाचाः पीन)। शारका व स्वायम्य ) स्वर्गे का राज्य (विधे t = 1) 1 सारण र् [सारण] **१ एक मनव-द्र**मार (बंद १ पूप १ १)। २ रावसाबीय एक सामन्त स्वा (प्रम = १६६) । ३ सदस कामली (से १९६४)। ४ एक्याका एक सुबट (ते १४ १६) । ६ न वे बाता प्रापश (ग्रोप ४४ )। स्प्रस्थान [स्मारण] १ कम कसना (योज १४८) । २ वि साद विचानेराला । 🛍 । जसा औं (छार -- पत्र ४०३)। सारणान [स्मारणा] १ कर क्लान्त्र (पुर १६, २४० मिचार २६ वा कस्त्र)। सार्रण) की [सार्रण जी र पाक्काव सारजी की के कियारी (बंद रहा दूध १)। २ पर्षया (बस्मतः 🕶)। साराष्य व [सारप्य] सार्यकान (ज्ञादा १ १६ पत्रव २४ १८)। सारवा देवी सारवा (रक्त) । सार्यक्र देवो सारहय (वनि ११)। सारमिश्र वि [दे] स्माध्य, बाद कराया हुमा(दे २६)। सारमंत्र वृ [सारमेव] बान, ब्रुता (इन < देवी दूस १६६ सम्पत्त १ ६ प्राप्तु (X) 1 सारमई भी [सारमेनी] इसी कृती (दुर tri tax) i सारय विधियत् । स्टब्स् इत् इत् (सर ११६ पर्या रे ४--पत्र ६वः विदे १४६६ः मनि १९ कमा ग्रीप)। मारय वि [मारक] १ वेह कलेवाचा (व १ ४ ) ) १ तायक, स्टि करनेवाला (बप्प चे €, Y ) ! धारप दि [स्मारक] १ वतः करवेदानाः ३ यर क्षिमनेनामा (मनः स्वयः १४४ १। क्ष्य)।

सारव वि [स्वारत] पासस्य वृत्र कीन (धावा १ ४ ४ १)। सारय रेकी सार-य । सारमा की [झारहा] शब्दनती केनी (सम्मव सारव देवो सार = सारव । वर्षव वार्णवर्षा (वव १)। सारव सर्व (समा + रच् ) पाद करना क्षेत्र-अन् करता, दुक्त करता। सार्थाद (१४ ११) 'तास्त्रह चन्त्रचरस्त्रीमी' (पुर ११, वर) । वह सारवेंत (पथा) । दवह सारविभ्जेत (एए)। सारव धर्क [समा + रम् ] कुल्पात करना प्राप्ट्य करना । शारवद (बद् ) । सारका व [समारचन] समावेद, साध करना (पीष ७६) । सार्यक्रम वि [समार्ययत] इक्ट किय हम्य साठ किया हया (दे < ४३: क्या मोदना व)। **सारस दे [सारस] १ पवि-विशेष (क**प्प ग्रीतः स्वप्त ७ कुमा **क्षतः**)।२ **क्ष**रू विवेद (पिन)। सारसी 🗬 [सारसी] १ दब्ब बाम 🕏 एक मुद्धीना (ठा ७—पत्र १११) । माना धारध-पद्यौ । १ सन्द-विशेष (गिय) । सारस्यम् र् सारस्यव र बीक्सन्वक केरो भी एक वार्षि (खाना १ व-- पत्र १११; पि ६६६)। सारहण[सारप] नदु टहर (क्रमः दे 1605 सार्धाः द्वं [सार्धि] रव हांक्नेवाना (हम १ वाम महा)। साराधि इंद्री वि विश्व-विशेष सरारि वर्षी ( C C, (Y) सायम मक [सायम्] सारम्म होना। पष्ट सारार्थत (दर ७२ थे)। साराव एक स्थिरय ] विषयवास, सकावा क्षेत्र क्यंता । तंत्रः वास्त्रीरद्भातः वस्त्री बीरवर्ष कर्म कर्म (वर्गव १)। सारि भी [शारि] १ परित्र-भिक्तेप वैद्य (क ४.४२)। २ पालाधिकाै कार्यक्ति(शा

स्रोपा(या १३ व)। ३ मुद्र के किए वन-क्वील (दे ७ ६१ घर्का) । सारि रेको साधी (वे) (पाप) । सारिश्र वि सारिको सारवाताः पारोपन तारियं मासुबत्तर्तं संक्तारियो वस्मो (**व्य** ξ=)ι सारिक्ष वि [सारित] विवकाया हुया, शील क्या हवा: एतो क्येप निश्वित्रास सन् सम्में मुद्रं पृरिक्क उत्तरि वस्ताए तारियए (सम्मत्त २२६)। सारिया } को [सारिका] मैना, की सारिक्षा | विशेष (या १८६ वाया है क 2Y) 1 सारिक्स न [सारक्य] समानता सरीबार्ड (दे २ १७) कुमा वर्गते ४२६ समू १४ ) विशे ४६१)। सारिक्स ) वि सिद्दस्ती समान सर्पेक्य शारिक्य कारिक्डिक्जिक द्या वेरे किंगड सारिनर्ड (वर्गसं ४२३) सन् १७६३ प्राप हे १ ४४० दूना चारे ३१४)। सारिक्य देवो सारिक्य = प्राप्तन (हे ६ १० मुर १२ १२२)। सारिधिवामाओं विदेशी दुर्वादूव (वेर्थ ર•) ા सारिकात के सार = सारव्। शारिस केवो सरिस≕दात (धनि % बचा ११४) । सारिस ) व [साहरूय] स्थाक्ता,स्थैवार्ष स्परिस्स 🕽 (राषा बाद - राजा ७९)। सारी की विशेषकी, बादिका मामन (दे वरः वर)। र मृत्तिका, मिट्टी (दे क २२ दी) । सारी की शिरापी े आले सारि≖स्त्रीर 'दरिवयो अञ्चलकुरास्त्रचीहि ह्राची (कुर्व **१२** ) i छाधेर वि [शारीर] रुपैर का, रुपैर संबन्धे (सरा दुर ४ ७५)। सारारिय वि [सारीरिक] ज्यर केवी (दुर १२ १ ३ कल)। खारुवि ) पूं[स्त्रह्मिण, व]वैवसाई खारुविय ) के समान वेपको बाएत करने

नामा स्त्रीकृष्य-सनिव को-सीव पृहस्य-

¥) I

साबु भीर पृहस्य के बीच की भवस्यावाचा कैन पुरुष (सवीच ११) १४) बहु १ वय साहरित्र न [साहरव] समान-क्यता (मुघ २ ६ २ २१)।

सारं रह देशो सारिक्स = साहस्य (वडह)। स्त्रऐहि वि [संरोहिय] सरोहस-कर्ता (वि 44) (

सार रू [सास, शास्त्र] १ व्योक्तिक महायह विशेष (ठा२ ६—पत्र ७६)। २ द्वाप क्रिकेय सामू का पेड़ (सम १६२ मीपः दुमा)। ध्रदुस पेड़ा ४ किया प्राकार (मुपा ४६७) । १ एक राजाः साल महासाल

सालिमहो म' (पडि) । ६ पश्चि-विशेष (पश्इ ...११£1—पद१)।७ ⊈न एक देव विपान (सम ११) । क्षेत्रकृत न ["क्षेप्तक] कैय-विदेव (राज) । याहण, ["बाइन] एक सुप्रसिद्ध राजा (विकार

**१३१। हे १ २११ प्राप्ता वि २४४) वर्** दुमा) । साख देवो सार = बार (नुपा १०४) एएमा १ १६—पत्र १६६)। इस वि ["पित] बार-पुन्त (काया १ १६)।

साउन शास्त्र] वर, वृहः 'मामामङ्गालपि इसमेरा सदलपुष्टमं (पुरा ६८४)। सास र् [श्यास] साला, बहु का बाई (मोह बद निरि १ वदा प्रविश्वाद मुख्य १४)। सास र् देखो सावा = (६): 'पत्स सामस्य

१--पन ३७: हा ब---पन ४२६)। "मंत वि[वन्] श्रकानमा (शास्त्र १ यै--पत्र ४३ मीत)। साक्ष देशो साद्धा = शाबा। शिद्ध, घर न [गृह] १ मिति-रोहत पर (निष्कृष) । २

भग्मस्य'ः 'परिचनीये च से सामें (परए

वरामधासमा वर (सव) । सारह्य देशो सारहय = शारीहरू (लावा र \$4~GR \$84) 1

स्पर्वस्थय न [शास्त्रहायन] १ शीशिक भन वा एक शासा-बोब । र दूंबी, उस भीवरामा (हा ७---पत्र १६ )।

साउँची भी [दे] धारिका मैमा (दे = २४)। सासंगती की [दे] धीकी किम सी (देव २६ हुत्र १२ )। सार्वेद वि [साउम्य]ध्यतम्बन-युग्ह घाषव

धूफ (गरब्द धन) । साउद्यन्द्राण र् [झाळड्क्याण] वृक्ष-विद्यप (भग = १ टी—पत्र १६४) । देखो सारश्रम्खण । सास्त्रिका की [दे] सारका मैना (पड)।

सास्त्रान [दे] १ वृत्र की बाहरी मान (निचुरेप्र)। र सम्बी ग्रांबा (माव रे)। ३ रस 'प्रेंबसालगं वा प्रवरत्सनं वा मोतए वापायए वा' (भावा२ ७ २ ७)।

सक्षयय न [सारणक] कही के समान एक

तरह का बाद्य (मनि)।

सावभंदी रेखी साख्यंकी (वर्गेवि १४७ नुमा)। सारस वि [सारस] पातस्य-पूछ, पत्तरो (सडड सुपा २६१)। [शास्त्रभव्यक्रम सास्त्र[जिया ) धी साध्यंत्री क्रियी कार प्राप्ति की बनाई हुई पुतनी (सुपा ४६ १४)।

साध्य की [ग्रास्थ] १ गृह वर। २ मिति-चीत घर (कुमा उन ७२४ दी) । ३ घन विशेष (पिष)। साम्राची [रे] शाका (रेव २२ परहर ६- पत्र इ.४ रह ७ ३१ रास वद)।

सास्त्रिका १ की [व] सारका यैवा (पाय:

सासदी । या रेंब देव २४)।

साद्याऱ्य देखो सद्यग (राज) । साध्यणय दि [वं] १ स्तृत विसभी स्तृति भी वर्ष हो गइ। र लुख स्पृति-योग्य (दे < ₹**♥**)1 साता(ण रेपा सात-(पा = शस-गर्न ।

साखि देव [शास्त्र] र बोहि, बान, वास्त (मुम २ २, ११) मा १६६) ६८१। प्रमा बढड) । २ यसमाकार बनहाति-विशेष बुध-विदेव (वएछ १--वन १४)। सद् ["भड़] एक प्रसिद्ध भौद्विश्वात निसरे मनश्रम् महाशेर क पात रोधा नी थी (उन

पि)। ससेन समझ 🕻 🚹 पन

के क्रिया—बास का तीक्ष्ण सप्रकाप (राजः ब्बा)। रक्तिस्त्रथा की ["रक्षिय] पन कारसञ्ज करनेवाली भ्री कमम-गोपी (पाम) । पाइण र् विवादनी एक मूप्रसिक्ष राजा (सम्मत ११७)। रेको सास-बाहण । सन्दिख्य पूर् ["साक्षिक] मरस्य की एक जाति (पर्शः १ – पत्र ४७)। सिरम १ ["सिक्च] मत्स्य-वितेष (पाछ 41)1 सावि वि शिक्षित] शोमनेवाला (मज्जः कुमा)।

साखिआ भी शाखिता वर कर कमरा-प्रिंह सुर्वति वरमिन्स्नवातिष्यम् (स्प्) । साविका रेवो साहिया (एव)। माक्रिणिआ ) श्री [शास्त्रिनिम, ना] १ साजिमी ग्रोमनेवासी पीएग्रॉलिय-एसचिरिष्रमाहि' (मनि २६)। २ छन्द विशेष (पिन)। साजिमेत्रिया 🛍 [शास्त्रिमञ्जिम] पुतरी (पटम १६ १७)।

सास्त्रिय 🛊 शिक्षिकी क्युबाय, भूषाहा (विशेष १)। साव्यि वि [शास्मक्षिक] शास्मसि बुध का केमस क माख कार 'एवं साविधारी' है बड़ी समेनयो होई (उत्तरि १)।

सासिस धेवो सारिस = वरण (खाना १ १---पत्र १३) हा ४ ४---पत्र २६४, कुम्प)। साविक्षीपत्र वृ [शाब्दिशीपत्] एक केन मृहस्य (उता) ।

सार्क भी [इयाका] पत्नी यनिये मार्पों की बद्दन (रे ६ १४८) । सासुभ र्ष [शासुक] बत-कन विशेष क्मेंन क्लर (पाचा दें १ व ३ दक्क ४,

२ (व)। मानुजन दि । रूप्युक्र र्शवः। नूचे यर र्मारे शास्त्र नामग्रमा (रेट १२)। मामुर पूंछे [शासुर] १ थेड मेंडड (पाप

नुर २ ७४३ मृत देश सापै १ ६३ नुक २)। प्री सं (या १११)। २ म्, सून्र विधेष (निव)।

(मञ्)। ४ माद्रा हुकूम (पर्राह २,१—रव ११ महा)। १ प्राप्त निर्वाह-सामनः भोनंदशानिपरिमाए सासर्ग विमरिक्**र** मत्त्रीए'(कुमक २३)। ६ वि प्रतिपादक प्रविशासन-कर्यां (सम्म १ यस २२) स्वीव Yc) । ७ प्रतिगद जिसका प्रतिपादन किया प्रम बहु(प्रसुर १—पत्र ११)। "देवी भी दिया । शासन की धविद्वाची देवी (इम)। सुरा की ["सुरी] नहीं पर्व (पंचा ₹**₹**) i

सामग देवो सासायण (कम्म २ २ १ रिक्टर २६ १८ ११ ६ ११ पेंच 3 K2)1

सासणा की जिस्ता हिन्दा (परहर । {—-प**न** १ - ) ı

सासपावण न [श्रासन] बाह्यपन (स ¥\$\$)1

सासय वि [शाद्य] नित्य, प्रविनपर (भग पामा के २ के सुर के द्रहा प्रानु १४१)। सासय १ [स्पामय] निजन्म माधार (से

₹ ₹) 1 सासम् १ [सर्पेत्र] बरहीं (बाबा २ १ ८

t)। नाजिया धी ["नास्त्रिका] कन्द-विशेष (मत्या२ १ ⊏ ३)।

सासपूछ पूर्वि दिशक्त का यह कीय. क्विक, कवास (दे ८ २१)।

सासाम ) न [सास्यादन] १ युण-स्थनक-सासायज ) विद्येष, द्वितीय दुश-स्वान (कम्म र रेवे १६)। २ विष विक्रीय द्वरा-स्थान में बदमान जीव (सम्ब १६ सम्म २६)।

स्मिन वि [ भ्यसिन् ] पास-रापवाना (ठेर् X ) i

मानियु (ग्री) वि [शासियु] सम्मन्दर्श रिप्यान्तर्वा (मभि २१४) ।

षासिञ्ज देशा सासि (विषा १ ७—पत्र 33) 1

सामुया देखा सामृ (मुर ६ १३७) ह रेश्य विदिधात् ।

सामुर व [ भागुर ] प्रगुर-पृष्ट (पुर व ter) :

सामुर (घर) रेपो समुर = प्रश्रुर (मर्दि)।

सास्का [ यम् ] मान् पात वया परनो की माता (पाम पउन १३ ४ मा ११६)। सास्य वि [सास्य] प्रमुग-रूक मध्यप (मुर १ १६० का ७२व ही)।

सासेरा भी [र] यान्त्रक नावनेवासी यन्त्र की बन्धे हुई नर्लंकी (स्वर्)।

साइ सक [क्अय बास ] कहना। साह्य इ. साहेद (हे ४ २ उन कास महा)। साहनु, साहेनु (महा)। घनि साहित्सह, साहिस्सामो (महा साचा १ ४४ ४)। बह्न साहें व साहर्यंत (हेका रेक काम । पुर १ ११२)। स्त्रकृ साहिण्जंब, माहिष्यंत साहिष्यंत साहियमाण मुता२ ४, चैक मुताः (चंडा सुर १ ३ २६३ सरद्वप्र२ चंड)। सङ्घ साहिजण साहेचा (काम)। हेइ-साहित (कास म्हा) । इ. साहियक्त्र, माह्अक्त्र (महा मुर १ ११४)। साह् देखो सत्साह = धाष्। इ साहणीअ (प्राप) ।

साइ सरू [साघ ] १ सिद्ध करना बनाना। २ वराचे करना। सम्बद्धः साहेदः, साहित (मकः कम्याधन प्रामु २७) महा)। नङ्ग

माहत साहित साहेमाम (सिर १२० महा पुर १६ ८२)। स्वष्ट साहित्समाग (बाट) । हेड. साहिए (महा) । इ. साह भिक्रा साह्यीअ साह्यक्त्र (मा ३१ पउम १७ १ मुर ३ २८)। साइ वृंदि ] १ वानुषा वादू । २ उनुष जन्तु । १ दक्षिपद, ददी की मनाई (दे a द१)। ४ प्रिय पठि (सीवि ४७)। साह (धार) देखा सका=सर्व (हे ४

३६६ द्वमा) । साई उम रे पृं [ स् ] नोयुर, योपन (र

साह्य र्वा २०)। साह्या हो [साभाञना] नवधै-रिधेर

(शिवार ४--पव १४)।

साह्य वि [साघड] विदि करनाला नापना वरनगता (गान्स १ व दी—पत्र १६६० कम्य नव २६० मुख वर्ग वर्गव હાં ફિર)≀

साहग रि [ शास इ, इ.स. ] इत्तेशता (मूर १२ ३ म १६१) । साहुः न [साहुय्य] छ्हायना मदद (निमे २११८ वर्ण १ रवण १८ निरि १६८

इष १२)। साहरू एक [सं+पृ] चंगरण करना, सभेग्ना । साहदृह् (हू ४ व२) । माइट्टिअ वि [सर्व] वर्नेश इया संह्व किया हुवा निशेष्ट्रत (कुमा)।

साइटट्र म [संहत्य] सम्बन्ध संदूरित कर 'राष्ट्रिएं काग् वर्षाणुडसीय साह्रदुर्' (क्य) 'साहद्द्रपार्थ रोएन्स' (माना २ १ १ ६) 'वियोग साह्द्टुय ने विसाई' (नुघर ७ २१)।

साहट्ट वि [संद्वर] पुनवित (एव) ।

साहण धक [सं+इम्] चैरात करना सङ्गत करना, चित्रवामा । साङ्ग्लेखि (भ्रम) । कर्मे. साहानंति (भव १२ ४--पव १६१)। इतह साहरूवि साहर्मव (चन क्ष २,६---पव ६२) । श्रेष्ट साहजिता (अव)ः साइन व [साधन] १ साय, बायस हेन् (विशे १०६)। २ छैन्य, सरहर (कूमा

मूर १ १२१)। ३ वि सिद्ध कलंबाला 'जह बीशाए पमामी मएत्पत्रयनाहुली होई' (हिश्चमूर ४७)। स्ते मा, जी ( t 1 1 q q ) : सार्थम म [संश्तन] संगत पायरी का

धारस में विरक्ता (मय ८, १--- १४ ११४) १२ ४—गत्र १६७) । साइणिश्र र्षु [माधनिक्र] धना-पवि (दुरा

₹€ ₹) 1 साइनिम्म को साइ ≃ राष्। साइपः रेको साइम ≠ सावन ।

सादणान्न रेको साद = रपाप् साम्। साहण्यंत रेवा साहम = प्रं + हुन् । साहर्थय (स्तर्रान) १ यस राव में। र बापाद (एाया १ ६--१४ १६३)

उस) । साइरिया ) श्री[सार्शन ग्री]श्यार्थका साहरची पल हार य नृहीत बार पारि हाच दिंगा करने न होनगता कर्य-कर

(द्वा२ रे—२व ४३ मद र्व) ।

(मीप समापत्रम १

साव सक [भाषय ] धुनाना । सार्वेति

(मीप)। वह सार्वत सावित सार्वेत

साव देशियों र स्थल याचेक (धीक

भुमा) प्रति १६) । २ तरकः सीर्यव (प्राप्तः

३७)।

९ ४४ कल्याम्या)।

सामतेय रेपत्र ३६ ग्रीसर सूच २ १

₹ —98 ₹₹₹) ¡ सावतेष्व ) केवी सावपद्म (खाना १ १--- भारता (मा १० संबोध ४१)।

साविगा देवो साविजा (छ १ --- नव

४६६ स्राया १ २—पत्र ६ महा)।

\$ 4 484) 1
साम पूं [शाम] शतक, बना (प्रपू ११६)
माइन्द्र)।
साव पू [स्वाप] स्वपन क्यन, होना (विशे
(wxx):
साव (पन) देवो सन्त्र = सर्व (१४४२)।
भाषकृष्य क्ष्मी सावप्रस्य (कृप्प) ।
सावद्रमुनि [भावयित्] गुनानेवादा (मूप २२ ४१)।
सावपद्य न [स्वापतंष] का इस्व (क्रम) ।
सावब न [स्प्रपतन्य] सप्त्रधिपन, वौक्तिपन
(इम्र २२१)।
सावच रि [सापरत] ग्रीठेग्री मा की प्रतान
(समेवि ४७)।
सावदा की [सपरनी] क्रीतेबी मी विमाद्या
हुबराती में 'बाबकी'। शास्त्रा सुबनगाडी
पासल्य विद्व बायस् नेहैं (बर्मीव ४७)।
सामा कु [भाग इ] १ केन क्यासक प्रहेर-
मच्डम्बर्स (ठा १०—पत्र ४६१) क्याः
कावार २ — यन १): २ बह्य रा। ३
कावा १२—यन १) । २ ब्रह्मशा । १ इद स्थलक (लागा १ ११—तन ११३)
वृद्ध स्थानक (सामा १ ११—तक ११६) सन्तु २४) वायो सागरवंदी कमदामिता
वृद्ध स्थानक (लाया १ ११—१० ११३) प्रमुप २४) 'तथो सागरचेदी कमसामिता व 'यरिवारकुम्बस्यित साववारित संबक्ताकि'
मृद्ध ध्यत्र (लामा १ ११—१ ११३) प्रमु २४) वायो बागरलेखे कमकामेमा व परिवारकुमध्यस्ति बाववासि बंबुलाखि (याच ११)।४ वि युक्तेसामा। १ मृत्योके
हुद ध्यानक (लामा १ ११—ान ११६) प्रमु २४) ज्यां चारतर्थीं कमनातिमा न 'परिनादुक्तातिक चानवाति खंडुलावि' (ध्यक ११)।४ ते नुक्ताता। ४ मुख्ये- नामा (है १ १७०)। द्वासा व चिट्टी
इंड पानक (तामा १ ११—१व १६१) प्राप्त १४) तामे बातरांची नम्मानीमा व 'परिनायुक्तपाति धावकरित धंतुताहित' (पाक ११)।४ रि तुक्तेनामा। १ मुक्ते- बामा (हा ११७७)। धामा वु पिमो अस्त्रातिकार्यन्तरास्त्र वर्षात कर कैक
इंद यार (जार १ ११—पर ११)। मणु १२) ज्यो सारत्यी अवस्थित स्वास्ता च परिवादनयाँ सारवरी स्वासि स्वासि (यह ११)। ४ वि कुलेनासा १ सुरक्षे- समा (१ १ १७०)। सम्स १ चिमी अस्तारिकार्शस्य सार्थ स्वास्त्र स्व
इंद ध्यक (जाता १ ११—न ११)। पण १२४) जयो साम्प्रभी कम्मामेसा व "रिवायुक्ताबरि भारतरीर क्रमामेसा (बार ११)। ४ वि कुम्मेसमा। १ कुम्मेसा शवा (१ १ १७०)। सम्म १ चिमो प्रसामितानर्भरपत्र वर्षा बाद् कर कम गृहक्त न। वर्षे (जाता १ १४—न४ १११)। सामक्रां व (जाता १ १४—न४ १११)
इंद्र स्वयंक (लागा १ ११—गत्न ११)। प्रणु २४) जयो शारावरी अवस्वामेना व परिवाद्यक्तव्यक्ति स्वावस्थित बेह्नाविष्टं (क्ला ११)।४ ति पुरुषेत्राचा। १ मुक्ते- वामा (१ १ ४००)। सम्म द्वियानी अस्त्राध्यात्वर्वत्यस्य वर्षाद्यस्य केन पूरूल वा वर्षे (क्ला १ १४—ग्वर १११)। सामक्रा वि च्यारम् । ग्रान्युक्त पारवामा (यस प्रण स्वीच ०६१ तिर्थ १४६९ तुर
इंद स्वयंक (लाग १ ११—गत ११)। पणु २२) जयो सागरपंग अन्यामेमा व जीवायुक्तस्यक्ति सावस्यक्ति संदुतावि । (स्वतः ११)। ४ वि जुल्लेकामा। ४ गुल्ले- सम्म (१ १ १७०)। सम्म १ जिमी प्रसारकार्य-रिस्स्त सार्व स्वतः विद्याना । स्वतः वा स्वतं (लागः ११४—ग४१११)। साम्म वि शिल्ला ११४—ग४१११)। साम्म वि शिल्ला ११४ विश्व स्वतः वा स्वतः वि
इंद्र ध्यक् (लाग १ ११—न ११) च्यु २१) ज्यो वाराज्ये क्षावास्ता व प्रतिवादुक्तवादि धावादि बंदुकादि (ध्यक्तवास्ता १ एक्के स्वात (१ १ १००) वस्त १ प्रतिवाद ११)। ४ ति कुल्लेख्या १ एक्के स्वात (१ १ १००) वस्त १ प्रतिवाद कर्मा व्यवद्व वस्त प्रत्या वस्त व व्यवद्व वस्त प्रत्या वस्त विद्या स्वात वस्त वस्त वस्त वस्त वस्त वस्त वस्त वस्
इंद याक (लाग १ ११— न ११)। पणु २४) जयो शारूपरेश क्यामेसा व परिवादक्तपार्थी धावस्थी क्यामेसा व परिवादक्तपार्थी धावस्थी क्यामेसा व परिवादक्तपार्थी धावस्थी क्यामेसा वार्था (१ १ ४००)। सम्म द्वियोगी वार्था (१ १ ४००)। सम्म द्वियोगी वार्था (१ १ ४००)। सम्म द्वियोगी वार्था क्यामेसा क्यामेसा क्यामेसा वार्था क्यामेसा क्यामेसा व्याप क्यामेसा व्याप क्यामेसा व्याप क्यामेसा वार्था क्यामेसा
इंद्र ध्यक् (लाग १ ११—गत ११) । पणु २४) जयो यागरची अवसीमा व परिवाद्यन्यस्त्रि धारणची अवसीमा (धार ११) । ४ वि नुक्तेवामा । १ पुरुके- सामा (१ १ १७०) । प्रमा ( प्रमा ) महाधाराम्बर्धस्यक्र धारे साम् का केन पुरुक्त ना वर्षे (लागा १ १४—गर १११) । सामा कि जिस्सी नाम-वर १११) । सामा कि जिस्सी नाम-वर १ पुरुक्त । सामा कि आप ) १ पुरुक्त । सामा कि आप ) १ पुरुक्त । सामा कि आप ) १ पुरुक्त । सामा कि प्रमा १ पुरुक्त ।
इंद याक (लाग १ ११— न ११)। पणु २४) जयो शारूपरेश क्यामेसा व परिवादक्तपार्थी धावस्थी क्यामेसा व परिवादक्तपार्थी धावस्थी क्यामेसा व परिवादक्तपार्थी धावस्थी क्यामेसा वार्था (१ १ ४००)। सम्म द्वियोगी वार्था (१ १ ४००)। सम्म द्वियोगी वार्था (१ १ ४००)। सम्म द्वियोगी वार्था क्यामेसा क्यामेसा क्यामेसा वार्था क्यामेसा क्यामेसा व्याप क्यामेसा व्याप क्यामेसा व्याप क्यामेसा वार्था क्यामेसा

(वर्षेट १२ १)।

```
35) I
सावश देवी सावद्य (दे १ २६) वक्ति सिर्दि
 ४६ इच्यू)।
सापस्यिगा 🖈 [भावस्तिस्र] एक 🖣 पृति
 रामा (क्य-पू द१)।
सामरवां भी [भावती] दुरुत्व देश की
 प्राचीन सन्बन्धि (साना १ व—पन १४
 उदा)।
सावस (६९) देही सामस्र = धामन्य
 (पवि)।
स्थापम देखो सावना (मन्ट उचा महा), 'पूर्व
 क्रोंकि पुंतर समित्वर सक्सानको पुत्रवे
 (पक्षम १६ २६)।
सामय र् [मापद] किमारी पत्रु विसन
 वानवर (सावा १ १—५४ ६१) वद्धाः
 प्रामु (१४ भहा सङ्) ।
साध्य रृं [दे] । शरब, धारब क्यू-विशेष
 (रेव २३)। २ वासीं की कड़ में होतेपाला
 एक वर्षाका दुख और (बी १६)।
सावस दु[शायक] शतक, वच्छ कियु
सावधे को [शावधे] विदानवितेष (तूच २
 २ २७)।
सावसेस वि [सावसेप] प्वक्टि बाकी
 वदा हुमा 'बाराऊ सारदेस' (उन)।
सावदाज वि [सावपाम] क्यवान-दुःहः,
 बन्देव (बाट्य रंगा)।
सावित्र वि [सापित] र निषम्भे रात दिश
 पना हो नहा २ जिसको बीवन विना नया
 हो वह (छाता १ १-- तत २६: मत १४--
 पद ६ ब २ व १२६)।
साविक्ष वि [शाक्ति] सुनाया हुमा (धन
 १४-- वर ६ २ छान्छ १ १-- वर २४)
 पाव १ १ ११, ६६: बार्व १ )।
साविधा की [भाविस] वैत पूर्व-वर्न
 वाकनेवल्यों को (त्रक साम्या १ १६--- । व
```

साविद्धी औ [मानिक्षी] १ मानल माध औ पूर्णिमा । २ मानस की मनावस (दुन १ ) \$ \$\$ (F) सावित्ती 📦 [सावित्री] व्याग 🖈 कथी (स्व ११० की मूप ४ १)। स्वादिक पू [साविक] कापर प्रश्नुनिकेत सामी (दे२ र = ११) साथेक्स देखो सादिवस (पदम १ 111 चप वच )। सास सक [शास्] १ स्वरा करना। २ धीख केता । ३ हकुम करता । मुक्त, सास्त्रिय (इप्र १४)। इन्हें, साम्रिक्ट, सीस्ट्र (बाउ---मुख्य २ कुत्र १११)। यक सास सासंद (क्व १ ३७: धीप १८३३)। सासजीअ (नाद—निक् १ ४)। धरङ सासिकांत (इस १४६ वै) । सास पत्र [इभाग] झहताः ( थर् ) । कर्म, साराइ (प्राप्त ७०) । सास र् [श्वास] १ व न (बा १४१) १४७)। २ रोक-विशेष आस-रोप (स्त्रमा १ १६---पथ है है। क्या विचाह है)। इस औ [ पर] भीषन बार्छ करनेवानी (सर इ.स. १ पार १ र सास दुन [रास्व सस्व] १ क्षेत्र-वत वान्य (पर्याद ४ — पत्र ७२) छ १३१)ः वाबा मन्द्रिगमा (पत्म ३३ १४) । १ **१४** मार्दिका प्रवा ३ वि वय-योग्य (हेरै ४६) । देवो सस्त **- र**स्य । सासगदुन [सस्य इ.] छन की एक कार्टि, रुवनवहरिक्शीवस्त्रप्रकृषेयस्य वाहित्तव -(कप)। सासग र् [सासक] रूक-विदेव प्रेयक प्रम क्म पेड़ (खावा १ १—वत्र १४)। सासय न [शासत] १ छक्तकी नाम र्वत चंत्र-पत्य, म्हायम विकास्त शहरा 'मर्चू'

सम्बद्धेय प्रदर्भे (तुमार २ १ ११) मनु

रेन्द्र कम्ब १३ निसे वर्ष)। २ प्रतिकारन

(स्टिक्स ३ ६७४)। ३ किया, सीव

ह्यारण न [सम्रारण] श्रेक तथ्ह से वारख इरहा, टिकाना। 'ग्रमिक्से पडिस्क्रमे संकुष्य रद्वारए कामसाद्वारस्टद्वाए<sup>\*</sup> (ब्राचा १ व ८, ₹**%**) i अहारण न [स्वाधारण] सहारा करना

व्यथार करता (सम ५१)। सहारण म [संहरण] संकोचन समेटन (विशेष ११२)।

Bigiरिश्र वि [संघारित] क्षेत्र ठ**प्**र पारण क्या इष्य (यवि)। साहाविश्व वि [स्वाभाविक] स्वभाव सिक् नैसर्मिक पुरारकी (या २२%) बढका कप्पा पुता ४६६) ।

साहि प्री [शास्त्रिन्] कृषा पढ़ (पाम, बरा च्य द ११६)। साहि 🛊 दि ] १ तक देत का सामन्त राजा 'पतो सक्कूर्स नाम कूस । सत्य ने सामंता दे

रुम्पिको मएए। ति (सन)। २ देशो साही (ta, 41 8 (2 62) 1 साहि (पन) रेको सामि = स्वामिन (पिष)। साहित्र व (इधित, श्रासित स्वास्पात) पहाह्मा, प्रश्न प्रतिपादित (मुपा २७६ पुर १ ९ ४ वासः पादः सावा)।

सम्बन्ध व [साधिव] विक किया हुमा निष्पारित (संत १६) सुर ६ ६६ मनि)। सामिम विसिधिकी सविशय, बाठिरेक (क्ष्मः सुपा २७१)। साहित रि [स्वाहित] स्वहित से विषय

निवका प्रदित (सूपा २७३)। सारिकरण वि सिधिकरण १ व्यक्तिस्ट इक (निष्कृष्ट) । २ वन्त्रह करता मनद्रवा (ध ३--पत्र ६४२)।

स्पद्भिरिव [साधि अविन् ] विषक्रण इष्य रापेर पार्वेश धाविकरखनामा (सब १६ 

साहितरण देशो साहित्ररण (राज)। साधितार्यक केवो साधिकर्याक (क्य. १९, १ ध-ना ६११)।

साहिद्धांत देखो साह = क्यम् । साहिकामाण रही साह = पाप्।

मस्य क्रम १३)।

साहिण (प्रत) वि [कथिम् ] व्युनेनासा (ਚਗ੍)।

साहित्र देवो साहक (वैत १३ मुना२ ४)

साहित न [साहित्य] यसकार-काम (नुपा \$ 2 XX8) 1 साहिप्पंत

साह्यमाग रेको साह = कन्य्। साहिष्यंत साहिर वि [शासित्, क्यियत्] शासन करतेवासा, कहनेवाचा (पत्रव) ।

साहित्स्य न [दे] मधु रहर (वे व २७)। साही की हिं] १ रप्पा. प्रदक्षा (रे व. ६ से १२ ६२)। २ वर्तनी मार्ग सस्ता (पिंड ३३४)। ३ स्थलमार्ग (स १२ ६२)। ४ बिड्की, छोटा दरनामा (प्रोच ६२२)।

साहीज वि [साधीन] स्वायत सतन्त्र (पाम पा १६७ चार ४३ मुर ३ १६; प्राप्त ६६)। साहीय देखे साहिम = शायकः वितीस

(श्रीवस २२३)। साहु वृ [सामु] १ पुनि यदि (विसे १६ धाषाः मुपा १४२)। २ सम्बन सःपुरुष 'साह्यो सुम्राणा' (पाम)। ३ वि सुम्बर,

शासन, प्रवस्ता (भाषा स्वप्न ६७) कुप्र

४४९)। कमा न [कमम्] दा-निरोप निविद्वतिक तप (स्वीव १८)। कार **का**र र् [\*सर] पन्तरार साधुरार प्रशंसा (रेखो ११४० हा ४ ४ टी-पत्र २व६ परम १६ २३ सं १३ १६ महास्थितिक १ ६)।। मा**इ पूं ["नाथ] येष्ठ पूक्ष चावार्य (नु**रा १४१)। याय पुत्र [भाद] प्रशंकाः न्त्रासं

च बाहुबाय" (स्थिर ११४) स १०३८ मुत 1 ( eg साहुई को [साभी] १ की-सापु, घनछी सर्विधे। २ वर्षी स्था ३ सन्द्री (प्राष्ट्र २०)।

साहुणो ध्ये [सध्या] ध्ये-सापु व्यविधी (बालः प्रम १ १४। मुता १७ ११२। सामे २६ कुष २१४)।

साइस्री । व १२, या ६ ६ यः कर्णू पाध- सुपा २२ २४६)। २ शिये<del>वस-बं</del>ड (रंग्रा)। ३ शाखा कामी (३ ८ ५२ पड्ः पाष)। ४ म्रुमीं। ४ मुन इत्पः। ६ पिकी कोमत । च शहरा समान । य स्वी सहयरी (देद १२)। १ मयूर-पिण्स (स १२३ हि)।

साहळिया ) को [दे] १ वस करहा (रे

साहेळा देखो साहळा (दे ७ वर्ष सुपा ११२: गता महा सब्दे २०)। साइट्य वि चि प्रमुग्होत (वे व २६)। साहमाण देवो साह = साम् ।

सिम देवो सिय = छिन (सिस १७)। सिम्न विकित् यापित सि ६ ४८३ उत १३ १४ मुखर ७ ४)। सिअ रेको सिमा = ध्यात (मय मारक १२८ धर्मधे २४८ १११२३ मण ६ दूप

सिश्च वि शिव विभन्न वारवामा (मूपा YOX) I सिका वि स्थित । सब्दी तरह प्राप्त (विश

EYYX) ! स्पर्धितामा सम्बोद्धा दृष्टि अवयसम्मार्ण । सिञ्च पूर् [सित] र गुस्त वर्ण । र वि येत सफेर गुम्ब (बीपा उर नाट---विक्र ७१) मुदा ११: मनि) । १ वज्र वैषा हमा (विसे ३ २३)। ४ सः नाम-कर्मेवा एक घेट. धेत-वर्णं का नारण-भूत कर्म (कम्म १

४)। किरम प्रेकिरणी चन्त्र चार (बर १३३ थी)। गिरि पू शिवरि] वैदाद्य पर्वंद की बत्तर भें शि में स्पित एक विद्यावर-नदर (इक)। बस्प्रण व [ध्यान] मर्वे यह ब्याब, शुरन ब्यान (मुना १)। वक्त वृं ["पभ] शुक्त पथ (मुना tot)। यर पूं [ स्र ] क्टमा (डा घर व धी)। यह दू [पट] पात बहाब शा बादरान 'बंकोइमा शियवधे पारका बनवाख निप्रसी' (उप ७२= ध)। बास वृ [ बासस ]

शताम्बर र्वन (क्षे १६) । सिम (पा) देशो सिर्ध = भी (पति)। यंत वि [ सम् ] सदमी-बाप्य वनाव्य (भवि)। सिम्रज देवो सिष्य (मा बार्श बहुद्ध ₽**7**() 1

111

t ( ) :

साह्य देवो साहु = साबु, 'यह देव्यह साह्ये

वर्ष्ट् बार्ब्स (प्रज्य ६, ६१३ ७७ ६४) ।

साइव न [साभव] सापुरा, सापुरान (पराय

साइम्प्रिम १ वि [सावर्मिक] अपर रेक्टो साबस्मिग (धोव १६, ४०६ मील उठ २१ १ क्सामुता ११२३ पंचा १६ २२) ३ साह्य देशो साह्य-धावक (ज्य ३६ स ४६६ कालो । साइप रको साइग = कावन कनक (सम्म tys) i साइय वि [संद्वत] संदिष्ट, समेद्रा हुमा (प्रदार ४—पत्र थय सीफ तंदुर )। साहर पण [सं+ मृ] संबरण भरता। साइरइ (इ.४ =२)। साइर यह [से+४] १ वंडोव कलाः र्वदेश करमा, सरेनना समेन्ना। २ स्वान्धश्तर में वे नाना। १ प्रदेश कराना। ४ विसना। १ स्थासार-गीव करता। नक्षरर सम्रहे, नक्ष्रित (मन ३,४—पन २१ : कम क्वामूम १ च १७३ दि ७६) । सार्ह्यस्थ्य (घन ४,४) । असि धार्द्धरिंग्यस्वानि ( नण ) । कवडू- साह् रिण्डमाज (रमा चीर)। संह साहरिया (भय) । क्षेत्र साम्रारिचय (मन १,४---पम रहे)। साइरण न [सहरवा] एक ल्यान के क्यारे स्थान म से जाना, स्थानप्रन्तर-नक्ष्म (सिंड **4 4 4 0)**1 सार्यप पि [व] का शाह, बोय्-चीहत (र ₹\$)1 साइर्रिज वि सिद्धवी १ स्वान्यन्तर वें बीव (सव ६ कम्प) । २ सम्पद थिप्त (सिंड ११)। १ संत्रीय किया हुआ, संबोधित (पीरा) सार्रास्त्र व [मेर्न] बंदरल-दुक (दुवा क्षाच)।

साबस्य व साथस्यी १ धमान पर्य तस्य

कर्ने (सम्ब १६६) विष १६६) । २ साहरव,

तमलता (विशे २३=६ मोन ४४)

वंबा १४ ११)।

मक्त)।

सार्थम वि सिर्धामम्, सार्धमिन् दिनान साहरू व [स्वाभावय] स्वमावता स्वभाव वर्षेत्राचा एक-वर्गी (पित्र १९६ १४६) पन (वर्गतं ६६) । १४७) 🕸 र्णा(याचार ११ १२) साइस न [साइस] १ विना विचार किया बाढाकाम (क्वमहा) । २ दूपक विचा-बर नरेन्द्र सम्बन्धित (पत्रम ४७ ४०)। गह दें [गहि] बड़ी सबै (पदम ४७ ४१ः महा) । साहस ने साहस्स = बाहन (रात)। साइसि नि साइसिनी साइप क्यं करने-बालाः समूचिकः 'दे धीय साहस्थितो कतम-सर्वा (ज्य ७२ व टी फिराट १४) : सार्सिभ दि [सार्सिक] जार देखी (भीगः मुखर २ ६२ बाद ३७ कुछ ¥(€) 1 सम्बद्ध कि [साइस्र] १ निवका मुख्य हवार (पुरा, स्थम मार्थि) हो वह वस्तू (स्थति १ १६३ व्यः महा) । २ हमार व्य परिमाद्यका भोनसम्बद्धसम्बद्धाः विकिएको पेस्नामीमी (भीवस १०१)। १ व. हुनार (बोबस १०१)। सङ्ग दू [सङ्ग] व्यक्तिः बायक नाम (क्व) । साइस्सिय वि [साइस्तिक] १ इवार का परिमाखनम्बा (स्वाया १ १—यन ३७ कम्म)। २ ह्वार म्हरती के साव सक्तेताला मझ (एन)। सार्स्सी में [सार्स्सो] हगर, स्परी बिहरका प्राचेकाचे सम्हलोको समावना (बचर६ १८ सम २६, बक्ता सीप, बच २२ २३। इ.३. १२३)। सादा 🛍 [भग्नमा] मर्चना (सन ११) । साहा म [स्वाहा] स्वता के क्रोस से क्रम-त्याव का नुबद्ध स्थ्यकः ब्राहुति-मुबद्ध स्थ्य (स द--वर्ष १२७ वाषमा १७)। साहा के [शासा] १ एउ ही बादार्थ की वंतित में सराम पहुंच दुनि की बादान-पणनाय समान्तर संतर्ति (समा)। २ वृक्ष

भीपाप्रासु६ २)। ६ देव का एक देत (युवाप ६)। सीग र्यमिक विश्व का दुक्का परवद (माचा २,१ ७ ६)। मय, मिभ मिग र [मृग] रतर क्लर (पामा ती २ मुपा २६२। ६१८)। र, स्र नि [ भेम् ] १ ताबाधाना, राजा-मुक्त (बस्य १२ दी: गुपा ४७४) । २ ई इप्रापेड (सूपा ६३)। साहाञ्चसाहि ई [वे] शक देत का बमार् बारसाहः 'पत्ती समनुत्तं वाम कृत सन वे सार्वता ते पाहिएत भर्तात भो सार्वता-द्विष्यं सम्मनस्थितंत्वृद्यमञ्जी सो सङ्ग्रहास् यस्राई (काब)। साहार सङ [सं+भारव] वष्ये वष् बारांत करना । शाक्षाराः (अपि) । साहार र् [सहकार] यान का गांध, 'हेनर फिन साहारे साहारे संबद्धांमा बहु वे' (बन्ह १६ ३ सुपा ६६०)। साहार दृ [दे साधुरार] साहमर, मह-बन (बस्म १२ दी)। **भा**दार दे [सदाबाट सदकार] प्रका बाबार, ध्याप, बरबस्यन, श्रामता, मर्द, करकार, 'पर्याचल' बढ़ोड़ा व बेडवेरोंड चाहारो' (क्का पुष्प १२१) 'पुंजको स्पर्धा' पुर्शनबारसंघेरसकार" (क्षेत्र १०६) व ४२४. **रब्ध १९** : सल्) । साहार दि [साहकार] बान के गर्व दे क्रम सम्बद्ध-सम्बद्ध (क्रम्)। साहार ) दुंव [साधारण] १ ववस्परि-साहारण रे विशेष, यहां एक सरीर में सन्तर बीर हो यह प्रमस्तित कर प्रारं । २ कर्न क्टिंप, जिल्ले क्या से सावारत-वनश्रीत वें मन्म होय वह कर्य (काम २, २०८ वस १ र—पन ६ इस्स १२७ मी व भएत १—पन ४२)। ३ कारत (माइ १)। ४ ई टाभारक वसपरिन्तान का जीव (मर्ख १--पत्र ४२)। इति बामाना समान्य तुस्य (प्रसु १—पत्र ४१)। ४ ्रेन. काकार, स्ट्रापटा मक्छ कम्रार**ा**। य केंद्र विकालिया स्मित्र । वक् स दुस् क्षि (सम ११)। सर्गरनाम न सिर्धर

सिक्किय है दिशासर के का एक एक का स्वाध्या को संस्था (के र १४) मान वर्षा १ १ १ १ १ वर से मान वर्षा १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	<b>CEC</b>	वा <b>र्यस्मार्</b> ण्या <b>य</b>	सिक्षेग-सिंबाव
(सर्वः) भी [चैत्र (चित्रणा)] वाचाया वामराविन्नीकेनं (वस्त्र रे—गव प्रश्र)। स्वास्त्र हुमारित रेडियार हुमारित (वस्त्र रेस्ट्र)।	सिक्षी हुँ हैं वस्त्र केरता (र ११)। सिक्षी हुँ हैं वस्त्र केरता (र ११)। सिक्षी हुँ हिंदी हुँ हिंदी हुँ एक उपन्य एक देशनार के (दुन १६०)। सिक्षी हुँ ही हुँ	सिक्या क्यो संस्था (यण्ड ४)। सिंस्स क्यो संस्था (यण्ड ४)। सिंस्स क्यो क्यो संस्था (क्ये १ १५ प्राया गयः—पृष्य करे)। सिंस क्या (वंदा १ १० व्या स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्थ	सिंगि वि श्विमिनी र केल्यान (क्ष क. १६) दे ० १६) १ १ वर्ष के ११ १ वर्ष के ११ १ वर्ष के १६ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

सिंपावित्र वि [सेवित] विवृक्ताया हुमा (स १ ३१ दी छ २० । १४२)। सिविम वि सिक्त स्वा हमा क्रिक हुमा (कुमा) । सिंव पर शिक्ष । प्रस्ट प्राथान करना । का सिर्वत (सुरा १ सए)। इसिर्वि अव्य (या ३१२)। भिज्ञान न [शिक्सन] १ यस्पट राज्य, भूगस क्षे पाताव । २ वि सस्यष्ट पाताव करने-मध्य (भूपा ४) । सिंवा की शिक्षा मुक्त का सन (क्या प्राप)। सिंकिया की [शिक्षिता] बनुष्ट बनुष भी होदी (मा १४)। सिंजिय म [शिजिन] पम्बक समान (उप १ ३१ टी, कप्पू)। सिंबिर वि शिक्षित् । बस्ट्रस्ट बावान करने वाला 'सहास सिविट' करिवर' (पाछ)। सिम्ह पूर्व [सिम्हाम्] दूस रोय-विरोध (भन ▼ (-74 € b) | सिंह वि दि] मोटित मोड़ा हुआ (वे प ₹€)ા सिंदपुदि| मनूरु मोर (देव, २)। सिंहा भी दि निश्चिमनार, नारू की मानाव (देव २६)। सिंदाण न वि] विमान (उप १४२ मी)। सिंशी की दि । बन्धी बन्ध का यास (दे **क, २६ पान्न भावम)।** सिंशिरन दि] द्वार (दे ब, १)। सिंदु ग्री दि रम्बू रस्वी (दे क, रव)। सिंदुरयन [वे] १ रज्यू छली। २ छन्य ( R = 4x) 1 सिंदुवल पूर्वि । सन्ति, साम (देव ३२)। सिंदुबार दू [सिन्दुबार] दूस-विधेय नियुक्तो प्रस्तान का बाद्य (बरह कुमा वर १ रशः दूम ११७)। सिंदर कि चित्र (रे व १)। सिंदूर व [चिन्तूर] १ चितूर, रख-वर्ण. क्रुर्र-विरोध (बर्ड २, ३ वटा महा)। रे पूंच-विरोध (हे १ वश बंदि ३)। सिंग्रिम वि [सिम्बरित] स्थार-पुट किया [मा(शाद )।

सिंदोस न [दे] बब्द, फ्रम-विरोय (पाप)। सिंदोक्षा की वि वि वहिंद, बहुर का पेत (देद २१)। सिंचय न [सीचव] १ विव देश का सबस्य सुँचानोव (मा६७३ कूमा)। २ पूँ घोड़ा (F t txt) 1 सिंचविया श्री [सैम्धविद्य] निवि-विशेष (विसे ४६४ टो) । सिंख की [सिम्झ] । महो-क्रियेप सिन्धु नदी (धर्मविष्य व व ४--- ११ २७)। २ नदी 'सरिमा वर्रिमली निर्मणया ' नई मानगा सिमूं (पाप्र)। १ सिन्धु नदी की श्चविद्यापिकादेशी (जं४)।४ प्रै समुद्र साबर (पाक क्रुप २२ मुपा १ २६४)। **इ देश विशेष शिक्ष देश (पूरा २४२) मार्थ** कुमा) । ६ डीप विरोध । ७ पध-विरोध (न -४—पत्र २६)। "प्रदृत ["तद्]पत्र बिरोप (पत्रम क १६०)। पाइ प्र [नाथ] सपुत्र (समु १४१) दिवी की ["देवा] सिन्धु मधी की प्रविद्वापिका देवी (उप ७२८ दी) । "ब्रेबीकूड पू ["ब्मीकूट] सुद्र द्विमर्वत पर्वत का एक शिकर (वं ४---पत्र २६६) च्यवाय पुत्र ["प्रपाव] दुस्य विशेष बाह्य पर्वत से सिन्धु नदी पिरतो है (स्र २ ६—पर ७२) । सप्य विजी सिम्ब देश का राजा (द्वार २४२)। यह पुष्पिती १ सम्रास्तर (स २२)। र सिन्द देश का राजा (द्वमा)। सामीर 1 ["सीबार] सिन्दू नशे क समीर का देश-विशेष (मग १३ ६ महा)। सिंपुर दू [सिम्बुर] इस्तो झानो (नुना द्रव सम्बद्ध १८७: दुमा)। सिंप देशों सिंप । सिंग्र (दे ४ १९)।, क्रमें सिप्पद (६ ४ २११) क्यक सिप्पंत (भूमा ७ १)। सिंपित्र देखो सिंपित्र (रुमा)। सिपुञ्ज वि [व] पायब मूट-पृगीत भूतप्रीवर (t = 1 ) i

**२)**।

सिंबडि देवा संयक्ति = शास्त्रीत (ह १ १४६: द २३ पामः मुर १४ ४३ पि १ क्षां संपादक उत्त १६ ६२)। सिंब कि भी शिम्बलि, शिम्बा कनाम साहिकी फ्ली सीमी फलियाँ (मन १६---प्याद्धाः भाषा २११ ३ । इस ३८ १ ७३) । शास्त्रम प्रेन (स्थाबक) १ फ्लोको मासो। २ फ्लोना पार्क(माना ३) । देशो संविधः। [सर्वाष्ट्रम भी [सिम्बन्धि स] येक्यै (बिन दवादरात) । सिंबाकी जिस्सी करते धीमी कीसी समी व स्वा (पाप)। सिंधाडा का [द] नाक की धानान (र **≖ २१)**। सिंचारन दि] पसल मास (४ ८ २८)। सिंग दे शिक्षणम् देशेमा कठ (हे २, ७४ तंदू १४ महा)। सिंभछि देवो निविधि=शास्त्रवि (मुपा ex) : सिंभि वि [स्ताप्मन्] स्वेप्न-पुष्ठ, स्वेप्न-रोग्रे (नुपा ४७६) । सिंगिय नि रिलिपिकी सेप-सम्बन्धी (तंद १६ लाया १ १-पन १ मीप पि २६७)। सिंह र् [सिंह] ? धार पश्-निशेष मूप-राज केसरी (पानु १६४) १६१)। २ एक सम्बद्धमार (बर १८६६)। ३ एक समा (रम्ख २६)। ४ मनवान् महाबोर का एक रिप्त्य, मुनि-विधेत्र (स्वत्र)। १ वर्त-विधेत विविवाहार का स रखना-परिष्यय (बंबीय १०)। अख्यायम (पन) न [ । यद्यायन] र सिन्द की तरह पीचे देगमा। २ इटक विदेश (निय) । उर न ["पुर] पंत्राव केव का एक प्राचीन नगर (मिन)। उपनी और ["कर्मी] बनस्रवि-विशेष (पएए १---पत १र)। किसर १ किसर] एक प्रकार ना उत्तन मोरक-सर्ह (का २११ टी)। ∢च र् [रेस] १ म्यकिनावह नाव। सिंबक र् [शास्त्रक] हेमत का माछ (रेमा रिनिहिनेदिया हुमा (हे १ ६२)।

[पानेक वृ ['पानेक] १ विष् की ठाव् ती के के उपक किया। १ सम्मितिक रिया। (साम व ['पानी पानक-पिनेस पानसन पान-पिनेस विष्क तीर संस्कृति (क्षण पूर् १३ २३) २०)। वृ दुवेदे, हित्स-पीन का निनापी (सीप)। की 'स्त्री (धीन पानस १ १ ८—पा १७)। स्त्रितिक्या की [चृ दिक्या, कोर्य (पाप)। स्त्रितिक्या की [चृ दिक्या, कोर्य (पाप)। स्त्रितिक्या की [चित्रति] क्षण-पिनेस (पिप)। स्त्रितिक्या की [चित्रति] क्षण-पिनेस (पिप)। स्त्रितिक्या की [चित्रति] क्षण-पिनेस (पिप)।

सिकता | की [सिकता] बाद रेत (प्यू सिकता) १० दी गरम १११ १० विश १०६१)। सिक्ष द्र [सुक्ष] द्वेत का मन्त्र मान (दे १ २०)। सिक्सा द्रेन[सिक्सक] सिक्स्य, शेका खीम, एसी ही क्यों सेक्स्य एक भीव भी कर्म में नरमामी मानी है सी एक्से भीने एक मैं गानी है लिक्से प्रस्ते भीता न करें

य नाता है जिससे ब्यामे नीर्ध्या न पार्ट वैरेश स्थे दिस्ता न बान (एम ६६ ज्या) निष्ठ १३ मानक ६६ दी)। सिक्षक दुंग [में] बार्डम मण्याण कोन सम्बाधित वर्षामाधिकते तहह बरिसमा (पुरा ६)। सिक्षम केडो सिक्षम (एम ६६ भागक ६१

रीः च १०१)। सिक्स्य को [राज्या] बंग टुक्क्स स्वत-विकरणे (व १११)। सिक्स्य मा [सीस्कृत] समुख्य से क्रमम सम्बद्ध (स १११)।

विधारम में [सारहत] बनुधन है कराना धानान (धा १६२)। विधारमा सी [मूं भोकरी] सहान का धानश्य-विशेष (चिरि १८७)। सिस्धार पूं [सीरकार] है धनुशन की धानान

सिष्पार पुं [सीरकार] १ धनुगत को प्रशास (बा ७२१ थींग करा नाठ-भूष्य १२१)। १ दृष्यों भी विस्ताद्वर पुंत्रसिक्तशरी-नवपुत्रकारिक्तारसप्रधीन अपरीच्यं (एपि १९)।

की बनी हुई एक शीव को शहने के काम में माती है (शिरि ४२४)। सिक्ता क्ष्म [बिह्य] धीवना पढ़ना सम्मास करना। सिल्बाद (सं ४००- ४२४) सिन्दों सिल्बाद (सं १८२) सुर्च ४)। मेरि शिल्बादामि (सन्म १०)। शहर

प्रमास करणा। विश्वक (था ४०६- १२४) विश्वकेंद्र विश्वकक्क (वा १६२) हुए ४)। भीर विश्वकक्क (वा १६२) हुए ४)। भीर निश्वकक्क (स्वयक्त वा १४४) विश्वकेंद्र विश्वकक्क (श्वर्य १४४) विश्वकिक (श्वर—प्रच्या १४४) । विश्वकक्क (श्वर—प्रमा १४)। वेष्ठ विश्वकक्क (श्वर—प्रणा ११)। वेष्ठ विश्वकक्क (श्वर—प्रमा १४)। विश्वकक्क विश्वकक्क (श्वर—प्रमा १४)। विश्वकक्क (श्वर—प्रमा १४)। कृष्टिस्तक्क (श्वर—प्रमा १४)। कृष्टिस्तकक्क (श्वर—प्रमा १४)।

सिक्कम वि विकास विकास्तर्भ वस्कार्ध

12 x ):

हिस्सर्य पे परिवर्धीय से पुरुष्कः (१४मा)।
सिस्त्रमा पूँ [री.मुक्क] एकन रिक्स (त्रूपनि ११)।
सिस्त्रमा मूँ [री.मुक्क] एकन रिक्स (त्रूपनि ११)।
सिस्त्रमा मूँ (त्रूपनि १९)।
सिस्त्रमा सेत्री सिस्त्रमान परिवर्धीय (त्रूपन् १४)।
सिस्त्रमा सेत्री सिस्त्रमान रिक्स (त्रूपन् १४)।
सिस्त्रमा सेत्री सिस्त्रमा (त्रूपन् १४)।
सिस्त्रमा कित्रमा सेत्रमा सिस्त्रमा (त्रूपन् १४)।
सिस्त्रमा कित्रमा सिस्त्रमा सिस्त्रम

िम्हा केन, प्रध्यस्य कराना प्रध्यानन (तुरा ११)। १ नेद का एक प्राप्त (तुरा स्थितना की [शिखा] १ एका प्राप्त (तुरा क्ष्माण्य प्रध्यानी पंतर्नारित, प्रकारों के क्ष्माण्य प्रध्यानी पंतर्नारित, प्रकारों के क्षमाण्य प्रध्यानी पंतर्नारित, प्रकारों के प्रध्यान क्षमाण्यक्षी (वर्षीय प्रध्यान प्रथमान प्रदेश)। १ एका प्रीर प्रध्यान प्रथमान (प्रीरा कुद्र ११ महास्त कुद्र ११७)। क्या न [प्रस्तु वर्षान्तरेत के गृहाल के प्रधानिक प्रधान कर (प्रीरा प्रस्ता नुद्राप्त १९))। विकार प्रध्यान (प्रीरा)।

ह्मा, बढ़ानाह्मा (वा ३४२)। २ व

सिक्ता (पप) भी [शिक्षा] भवनिकेत (सिप)। सिक्ताण व [शिक्षाण] भवारसक्ती स्वरोत केतावा शत (क्या)।

सिकताव एक [रिह्हण् ] एकान्य पहण्य, सम्बाध करामा । रिल्लावोद (हि रहरे)। मारि रिल्लावोद्देरि (येण)। येक सिक्का वेचा (क्षेप)। हेक सिक्काविचए, सिक्कावेचए; सिक्कावेच (अ र १—एक रहा क्यू र्वचा १ ४० थै)। सिक्काव्य देवो सिक्काव्य (मा ११५) प्रकृ ११)।

सिक्कापण म [रिश्चण] किवाना, तीव.
विशेषित (मुबर १६ मात्र ६१ मण्ड)।
विश्वणायमा की [दिश्चणात्र ६१ मण्ड)।
विश्वणायमा की [दिश्चणात्र ३०२ की।
विश्वणायमा मि [सिशिय] विश्वणात्र हुया।
पान पान्य ६७ २६ प्रत्या १ १—१६
६ । १ १—गव २६६)।
विश्वणास्म मि [मिशिय] क्षिणा हुया।
विश्वणास्म मि [मिशिय] क्षिणा हुया।
वानामा, विश्वणा (रापा १ १४—गव
१९०७ योग)।

सिमिन्तर हि [शिक्षिय ] चौको से याक्काला, प्रामती (च ६९१) र सिन्ता की [शिक्षा] क्वर्यप्रेस (तर्प) । सिन्ति के सिहिन्दिक्षम् (तर्प) । सिन्ता को सिहन्दिक्षम् (तर्प) ।

सिमाक को सिआक (क्ल) । सिमाकी को सिआक = ग्रवली (व्यव ११)। सिमा कि [वे] १ व्याट कम हवा (वे क २०) बीच २३)। २ तुंब परिमा कमक

(स्व ४)। विष्यु वृ शिष्टु के किये व्यक्तिय न देह (से १ १ ज्या)। विषय में शिष्ट्री श्री पूर्वत । श्री क्षेत्रका क्षाय-प्रकार (नास-स्वा ४% वीका-पुळ व्यव्यक्ति (नास-स्वा ४% वीका-पुळ व्यव्यक्ति (नास-स्वा ४% वीका-पुळ व्यव्यक्ति (नास-स्वा ४% वीका-पुळ व्यव्यक्ति (नास-स्वा ४%

विषय दे विश्वयो का, क्यम (प्रश

म २६१ द्वर ४३३)।

184) 1

181 1

सिच्छा औ [स्पेच्छा] स्वन्यन्य (मुपा

सिट्य प्रकृ[स्पिद्] परीना होना । सिन्नह

(पर् २०३) । वह-सिर्द्धात (नाट-उत्तर

सिर्व्यमण पू [शब्दांमण] एक सुप्रसिद

सिम्न रेबो सिम्ना (सम्मत्त १७ )।

```
प्राचीन कैन महर्षि (कृष्य-पूण्ड एवि)।
सिर्ज्ञस देखो सेर्ज्ञस ≈ धेर्यास (कव्य पक्रि
 याना२ १६, ३)।
सिद्धा की [राष्या] र विद्यीमा (सम १४,
  स्था सूपा १७९)। २ उताबन वस्रीत
  (योग १९७)। तथी, यस की [तथी]
  स्रापय की मात्रकित (ग्रीच १६७ नि
  १०१)। वार्क्स की ["पांक्से] विक्रीना का
  काम करनेवासी बासी (सुपा ६४१)। देखी
   सेव्या ।
 सिजिध (पन) वि [स्पृ] उत्तम किया हुया
   क्ताया हुन्ना (पिन)।
  सिजिए वि [स्वसु] विसको परीका हुमा
   करता हो बहु पर्धानावासा (पा ४ ७
   ४ स वयप्रकृता)। की ही (हि ४ २२४)।
  सिम्बर् न [व] राज्य (दे ६ १)।
   सिम्म पत्र [सिथ्] १ किया होना
    दनना। २ पक्ता। ३ मुद्ध होत्या। ४ मैपस
    होता । १ सक पवि करना आबा । ६ शासन
    करना। सिरम्बद् (हूं ४ २१७ भग महा)
     सिरमंदि (कप्प) । पूका सिरिनंतु (सक
     रि ११६) । यदि सिरिमाहिह, विरिमाहित
     बिजिमहिति सिजिमही (इसा स्पर पि
     १२७३ महा) । बद्ध-सित्रम्टेन (तिह २५१)।
    सिगम्ब रेको सिम्ब (धन)।
    सिम्मणया । व्य [सेघना] १ स्विव प्रुष्टि,
     सिम्मना विश्व निर्माण (प्रम १४०-
      का १३१। ७१६। वर बय पर्मीय १६१।
      विशे ३ ३०)। २ निकासि बाबना
          बन्ते परोश्यारं करेड
                 नियक्त्रशिरमध्यामिरधौ ।
          निर्दारको नियम्पने
                 परानपारी हरह मन्त्री ॥
                             ( स्वय ४६) १
```

```
सिहू वि [मेर्स] पति उत्तम (का ८०६)।
सिंह वि [सुष्ट] १ रचित निर्मित (ज्य
  ⊎र्द्ध टीः रमा)। २ युक्ता ३ निमिता४
  भूषितः। ५ वहुतः प्रदुरः ६ स्पन्तः (६१,
  १२८)।
 सिटू वि [शिष्ट] १ कपित उत्तर उपविष्ट
  (मुर १ १६४) २ १८४ मी ४
   १३६)। २ स्टब्स मसामानस, प्रतिप्रित
  (जा व्हेल की कुछ हर बिरि प्रशः पुपा
   ye )। । यार र्षु ["प्पार] मसमनेशी
   सराचार (वर्ग १) ।
  सिंह नि दि] सो कर स्टाहमा (वह )।
  सिद्धि को [सृष्टि] १ विश्व-निर्माण जन्म
   रचना (मुत्रा १११: महा)। २ निर्माण | सिव्याण इ हिनान] नहान बनवहन (मम
   रचना। १ स्त्रमादः। ४ जिसका निर्माण
    होता हो यह (हे १ १२०) । इ.सीमा क्रम
    ध्रविपरीत समा त्यदाई जंतजीमेर्ग सिट्टि
    विशिद्धिकमेणं एवंडरियं धर्मताई (शिरि
    48E) 1
   सिट्टि पूर्वि केडिन्] बनर-सेठ नगर मा
    हुका समूचार, महाजन (कप्प मुपा १६ )।
     वय न विद्री नवर-नेठ की परवो (नुपा
     १४२) । देवो संहि।
   सिट्टियां की [अप्रिना] बेप्रिन्पली वेठानी
     (मुपा १२)।
    सिट्ही की [इ] बीक्रे नि मेरिए (यग्न
     u ) i
    सिविष वि [विधिर, शिधित] १ धन,
     दीला। र महरू जो मजदूत न हो गहा
      १ मन्द (हे १ २१६८ २६४ मात्र हुना।
      प्रामु १ २३ वटा ।
    सिहित सर्व [शिथिसम् ] विर्विषम् करना ।
      सिहिनेह विदिसंदि, सिहिनेटि (दन पत्न
      १ : छ ६ ६१) स्त्रीस्वी (बर्फी १४६:
      ति प्रदेश) । बङ्ग सिडिस्टेंग (व ६ १९) ।
     सिडियाविम वि [शिपिकिन] शिविन
       क्त्यथा हुथा (बाइ ६१)।
      सिडिसिअ वि [शिपिसिव] विपित्र दिया ।
       हुव्य (रूपाः वत्ररः चरि) ।
```

क्यि हुमा (बुट र १६ १०१) ह

```
सिहिनीमूच वि [शिधिनीमृत] स्विपत
                                  बना हुमा (पत्नम ४३ २४)।
                                 सिण देखो सण = शए (की र मुपारेव रू
                                   या व्हेव)।
                                 सिष्मार देवो सिमार = श्रृङ्खार 'हिस्पार
                                   बास्बेसो' (संबोध ४०)' 'कारियमुरमुंर्रारीय
                                   खपार' (सिरि १३व)।
                                  सिया सक [स्ता] स्नान करता, तहाना ।
                                   सि∪ाद (सूम्र १७ २१ माइ≭ २०)।
                                   संदूर, सिणाइसा (मूघ२७१७)। इंइस्
                                   सिवाइसए (पीप) ।
                                  सिगांड दुसी [स्ताय] नामो-निरोप बार
                                   बहुन करनेवासी नावी (प्राष्ट्र २८)।
                                    ३४, बोम ४६६: रम्ख १४)।
                                  सिणात रेको सिणाय = स्नाउ (अ ४ १--
                                    पत्र १६६ १८ १--पत्र १३६)।
                                   सियाय देशो सिया। विद्यार्थित (दह ६
                                    ६३)। बद्धः सिमार्यतः (ब्लः ६ ६२ हि
                                    (##3 i
                                   सियाय ) वि[स्तात, की १ प्रयान
सियायम } भेड (मूर्य २ २ १६)। २
                                   सिगायम ) पुनि-विशेष केनलकान प्राप्त
                                     मुनि केवली भगवान् (सन २४, ६ छंदि
                                     १३८ क्षे का १ २—यत्र १२१ पर्मर्स
                                     १६१=: उत्त २४, ६४)। ३ इड रिप्य
                                     बीपि बस्य (नूप २, ६ २६)।
                                   सिशाम सक [स्तपय ] स्तान कराना ।
                                     प्रिलाबंदि (शी) (बाट--पेत ४४) ।
                                     क्षिणावीत क्षिणावीत (माबा २ २ ३
                                     र किरमेश्री
                                    सिवि की [सुव्य] चंद्रुष्ठ (नुता ३३ अ पिरि
                                    १ १ )।
                                    सिवान पर | रिनद् | बीठ करना।
                                     चिल्लिम्बर (बाह्र २४)। कर्म, मिला (ह
                                      ४ २३३) । काङ सिप्पंत (दुवा ७
                                      €):
                                     सिजिद्ध रिनिम्ध] १ वीर्दशुस सद
                                      युक्त (स्वय्व १३) प्राप्तु ६२) । २ पाउ
                                      रत-युक्त (रूपा)। १ मद्याप्त कीमन । ४
सिहिस्टस्य वि [किंपिसीहरू] विवित्र ,
                                      विस्ता। र न. भाग का शाह दि २ १ ९
```

227) (

963) I

**41** ) 1

(प्राप्त के ४ ६)। सिण्हाको 👣 रिहाम स्थकात से क्या वस-क्या (रे व, ११) । २ धनस्याव, कृतस्य, दुशसा (दे ६ ६३: पाच )। सिन्हाइन र्न हैं। क्य-क्रिय (मन् ६)। सिवि केलो सिद्द = (दे) (वद १)। सिच वि सिक होंचा ह्या (पुर ४ १४३) कुमा)। सिच्य देवी सेच्य (पुरुष १२)। सिर्ध व विकेश प्रतः करा को अधि किर्द व बारोत्तवर्व सङ्ग्रही देव दूमेई' (दूस ६४) पाम)। सिरंग । न [सिक्य] १ वान्य-क्रम्छ (नग्रह स्टिरभय १ १ -- पत्र ११ कवा भीता यस १४२) । २ मोम (दे १ ६२) पाछा प्रमुख्य थी)। ६ घोष्यवि-विशेष, गीबी कील (हेरे ७०) । ४ पूर, करवा दाव 'मारे मारे व वा सन्त्रा एवडिलोस पार्च (नम्बादे २ प्राप्त)। सिर्श्याकी [व] रेवालाः २ कीवाः कत्य

नी होचे (दे ८ ११)।

इचा(देद दे)।

सिरिय 🛊 [दे] यक्त्य, मक्क्यो (दे २)।

सिद्ध में वि परिपारित विद्याचित कीच

सिउ वि [सिद्ध] १ दुक, पोश्व-प्राव, निर्माख-

प्राप्त (ध्रम १—-पण २४, व्यव, कव्य विधे

१ २७ २६। एवम १ की १४। दुना

२४४ १४२) । र सिप्पंत्र क्या ह्या

(ब्रालुरेर) । ३ पक्त हुमा (नुपा६३३) । ४ साध्य, किय (बहुप ६७३)। र प्रतिक्रित

सम्बन्धित्त (केश्य ६०३) प्रत्य १) । ६

विकार, निकीत (बान १)। ७ विकास

अस्ति (पेस ६८) । व <del>ठवारिटेन</del>

सिकेश रेको समेद (बक साम १ १६--

सिणेदास नि [स्नेह्यन् ] स्नेह्यामा (स

सिक्य हि (स्थित स्नेह-पुक्त (च २४४)।

सिण्य देवी सिम = शीरी (नष्ट---मृष्य

सिण्ड प्रेन [शिरन] पुष्कि, पुस्कर्णन

पत्र १८१ स्मप्त १५, कुमा। प्राप्त ६)।

किया इस्सा १ इसीत कात (पैचा ११ २६) । ११ वृं विद्या मंत्र कर्ने शिक्स पारि में विश्वने पर्यांद्रा प्राप्त भी ही पर पुरुष (ठा १—पत्र २४; विग्ने १ २० वका **१**८)। १२ समस्यारिमास विशेष स्वीक-विकेष (कम्म)। १६ न, सन्।तार पनयह दिनों के प्रश्नास (संबोध १०)। १४ प्रन. बढ़ाद्विमर्वत मादि मनेज पर्वतों के शिक्तरें कानाम (ठाद—पत्र ४३६ १—पत्र ४६४ इट)। स्टार्डन **ि**शरी नमो मरित्राप्तां यह बल्द (मांब)। शिक्षिया की विशिवस्त्री फिट-संबन्धी एक कन्द-प्रकरण (धन) । यक्त न [चक] पहुंद म्मप्रिनदपद(सिरि३४)। स्रत["सि] काना हमा यस (स्वा ६३३)। प्रच दे िंपुत्र विन साथु भीर मूहस्य के बीच नी धनस्मानामा पुरुष (संबोध ३१: निष् १) । मजोरम १ "मनोरमी पद का इन्छ क्लि (दब १ tv) । सम द सिजी रिक्रम की शासूबी रहान्द्रों का दुवस्त का एक सुप्रसिद्ध राजा जो सिक्कराज क्यांसिङ्ग के भाग ते प्रसिद्ध वा (कुप्र २२३ वाघ १४)। बास वं पास्त्री बारक्ष्मी स्वान्धी का पुनरात का एक प्रक्रिक केन करि (क्रम सिद्धम पु [सिद्धक] १ इक्ट-विरोध विद्वार (७१): सेज 🛊 [सेन] एक स्वस्ति प्राचीन चैन महत्वनि भीर दाक्ति धानारी (सम्मत्त १४१) से जिया को ("अधिका) बायावें केन येप शत का एक येठ (सुनि)। संस र् ["रीस] स्त्रुक्त पर्वत सीचह बैत में पाबीताना के पाय का कैन सका-वीर्व (नुकार । शिरि ११२) । द्विम न हिंसी भाषाने हेमक्द्र विश्वित प्रस्ति म्बारुप्य-प्रम् (मोह १) । सिद्धीत र् [सिद्धान्त] १ मास्य शहर (क्ल यारे छोरे)। २ विकास (स. १.३)। सिद्धस्य दू [के] च्या केन-विशेष (के 41) ı सिद्धाव वि [सिद्धार्थ] १ इटाने इन्हरू

(पटक ७२ ११)। २ ई मध्यान् महासीर

के पिका का बास (बन १३१ 🕶 छ पतान

२ २१ दुर १ १)। ३ ऐस्तर वर्ष के

भावी इसरे जिन-देव (सम १६४)। ४ एक पैन पूर्वि को नमने बढ़केर के रोपान्द्रर वे (प्रकार १६)। १ प्रचानियेन (सुपा ७७: पिड ४६१) । ६ सर्वत सरसीं (यहा रह कुछ पूर्व पत्र हेश्या है ४ ४२३। का द १६)। ७ अनवात सहावीर के कार से कीस निकासनेदाका एक विश्वक (बेहर **११) । व एक देव-विमान (बम ६० ग्रावा** २ १४, २३ देनेच्य १४४) । ६ व्या-निरोप (बाक्)। १ पार्टीवर्धकन्तर का एक सर्वा (विपार ७— वन ७२)।११ एक वॉर्व कान्यम (अव १६—पत्र ६६४) । पुर न िपरी धंग देश का एक प्राचीन नवर (नूर २ ६०)। यम न विना वननितेव (वन)। सिद्धार्था हो [सिद्धार्था] १ मनगर मनि <del>नन्द्रन स्वामी की माता का मान</del> (सम १११) । २ एक निया (एउन ७ १४६) । ६ मनवान संभवनावशी की बीका-विशिवन (विचार १२१)। सिवध्या के सिवार्षिक र मिश्नस्ट विशेष (प्रहार १७—पत्र १९६) । २ मार्थ-

सिद्धा की सिद्धा र क्लान महावीर की शासन-देशी शिकानिका (इस्ति १) । द पूर्विश विशेष पुष्ति-स्थान विज्ञ-शिका (सर्ग २२) । सिकाइबा को [सिकायिका] वयरान् स्वा बीर की श<del>ासन देवी</del> (क्शा १२)। सिद्धाययण पुर [सिद्धायवन] १ सम्बद्ध मन्दिर-केन-पृष्ट् । २ जिल-मन्दिर (ठा ४ २—नव २२६, इका सूर ६१२)। ६ महरू

वर्वेडो के दिखाएँ का नाम (इसर में ४)।

सिद्धास्य कीन [सिद्धास्त्र] पुत्र-सान,

धि<del>क दिवा (वीना पदम ११ १२१ इक</del>)।

**थी. या** (द्या —-पश्च ४४ सम २**२**)।

सिद्धि के [सिद्धि] १ क्रिक्टरिया प्रीमीन

विकेप, बड़ी पुष्क बीन पहले हैं (मन) उन उन्

कुछ सन्दानुबर पाछ। २ साथ इस (है

एक-विदेव होने की क्ये (बीप)।

1 (w ) 1

ब—नव ४४ सीरा इक)। २ प्रीष्ठ, तिर्वाण योध (क्षा १—नव २४ पाँक सीरा कुमा)। ३ वर्गन्यव (सूच २०, २४, २४)। ४ वर्षणमा भागि थोग वो श्रीख (ता १)। ४ इतार्थता, इक्ष्युरस्ता (ता १—न्य २४. इतार्थता, इक्ष्युरस्ता (ता १—मा १४. इतार्थता, इक्ष्युरस्ता (ता १)। य सम्बन्ध (वर्षा)। य सम्बन्धिय प्रीयो सम्बन्धित समार्थि (वर्षा)। य सम्बन्ध (वर्षा)। याह बी [माति] प्रीच-वर्षात में पन्नव (क्ष्या भीर वर्षि)। गीडिया की [मागिडश्च] सम्बन्धरुप्त-विशेष (यव ११ १—एव १२९१)। पुर न [मुर] स्वर किस्त विश्व २२)।

सिक्स कि [क्योर्फ] जोस्त्रे गक्ता हुम्म (पुण ११ वित्र ४० टी) ।

सिन्न वेको सिष्ण = स्वित्त (पुना ११)। सिन्न पुणा [सीय] १ मिया पुणा पुणी नोहा यारि। २ केला का संयुक्त (११ ११: पुना)। की 'ता त्याव्ये नपरे पवेदियं संयुक्तिकार' (पुर १२ १ ४)।

च्यु-उत्तर (दुर (१ १) सिप्प केबो (संप । सिप्प ( पड्) । सिप्प न [क्] पडांब पुगल दुस्त-विशेष (वे व २व) ।

सिंप्य न [शिल्य] बाव-कार्य, कांधेवधे, विश्वासि-रिकान कता, हुगर, किवा-मुक्तका (परंतर र विन्य प्रध्य प्रमान मानू को । विश्वस्थय, स्वित-व्यास्त । के स्वित कांधिकात के स्वित प्रभू के तक्कार का स्वित्वास्त के स्वित क्षेत्र । प्रभू के तक्कार का स्वित्वस्य का स्वित्वस्य के स्वत्यस्य का स्वित्वस्य के स्वत्यस्य का स्वत्यस्य क्ष्यस्य (स्वास्त्र) स्वत्यस्य का स्वत्यस्य स्वत्यस्यस्य स्वत्यस्यस्यस्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्

सिप्पा को [सिमा] नदी-विशेष को उच्छैन के पाय सं ग्रमणी है (सं २६३ वन प्र २६० कृत्र रं)।

पण ३ ३)।

विधिय वि [विदित्तम] करोगर, हुवरी पित्र मार्थित क्या में कुछल (प्रोत्य मा ४)। विधिय की [कुछित] धीत, नीचा हि २, १९ क्या; यह दुनार प्राप्त १६९ वि सिप्पित्र मि [शिक्षितः] शिक्षी कार्यगर (ध्या)। सिप्पिर न [वे] तुस्त-विशेष प्रवास प्रधान

सिप्पर न [वं] क्यूल-निरोध पनास पुधान (व्याय १—पन वेवे गा वेवे )। सिप्पी क्ये [वं] सूनी, सूर्व (पन)। सिप्पीर केनो सिप्पर (पा वेवे पा पि

२११)। सिनिर वैजो सिनिर (नजन १ २७)। सिन्म देनो सिन्म (नंत्र)।

सिक्स देवी सिम्स (वैड)। सिमा औ [शिफा] इत्र वर जटाकार मूल

(दे १ २६६)। सिम स सिमी सर्वे सव (प्रामा)।

सिम देवो सीमा। 'वाव विमस्तिहार्ग क्यो व्यवस्य बाह्रिकार्थ (पुण १६२)।

सिमसिम वृष्ड [सिमिमस्य ] "रिम सिमसिमाय । रिम' धानाज करना । रिम रिमायीर (ज्ञा २२) । जङ्क सिमसिमंद (ना १९१ म)।

सिमिण वैद्यो सुमिण (हे १ ४६ २१६)। सिमिर (मन) वेदो सिपिर (मन)।

सिमिसिम । वह सिमिसिमाअ । सिमिसिमंव, सिमिसि-मार्जन (वा १६ । वि १९८)।

सिमिसिसिय वि [सिमिसिमिय] विश सिम सावान करोनाका (पत्रम १ ४, ४३)। सिर सक [सुन्न] १ क्नाना निर्मास करना। २ क्षोत्रमा स्थाप करना। सिप्त (सि २४३) सिस्मि (विसे १४०४)।

सिर म [शिरस ] १ मस्त्रम, तावा विर (पास मूचा नवने) १ समान से छ । से म स्या स्वत्र (१ १ १९) । सा म [क] तिरुक्ता मूज २६२) । सा म [क] तिरुक्ता मूज २६२) । ताम तास म मूजा मूज २६२) । ताम तास म माला स्वत्र [चीर्स] मिल्या हैन्द्रेत कि स्व में स्वत्रे-स्वत्र वेदर ज्याने सम्बन्ध के स्वास पूर्ण स क्यान (मिया १ १—वन १४) चित्रमोसीह (शिव्यम्बीहिन्स (ल्या १ १६—वन्हर १९) । सीने स्वत्री सिन्ने स्वि

(नुपा १६२)। य पूँ चित्र] केश काल

(महाकृष्य भीष, प्रश्चेत)। हर न

[ैगृह] मकान के उसर की क्रम, बनासाबा (वे व ४६)। देखों सिरा ।

सिर देवो सिय (भी १)।

सिरय १ देशों सिर = शिरस् (क्याः क्याः "सिरसः १ १ ४—पत्र ६० वीपः) । सिरसायच वि [शिरसायवै, शिरस्यायवै] अस्तर्भ पर प्रविद्याः करोबाताः शिर पर

सरसायच व [शास्त्रायत, शास्त्रायत) मस्त्रक पर प्रश्चीका करोबाता, शिर पर परिभ्रमण करता (खावा १ १—वक १३ कप्पा धीप)।

सिराकी [शिरा, सिरा] रेपन नव नाड़ी।
(स्वामा रेरेस-पन रेपरेकी रेकीस
१)। रेनाय प्रनाह (कुमा उर पूरेरेक)।
सिर्धि टेकी सिरी (क्या और रेक साम

सिरि देवो सिरी (कुना वी ६० प्राप् <sup>३२ दश-कम्म १ १ पि १व)। उत्त</sup> पु प्रिज्ञी भाष्यवर्ष में होनेनाबा एक वक्रवर्धी राजा (सम १६४)। सर म ["पुर] नपर-निरोप (इप ४१)। कोट प्र [\*कण्ठ] १ धिव महादेव (कुमा)। २ गानखीपका एक सना (पटच ६ ३)। क्टेंच पूर्व [कारत] एक देव-विमान (श्रम २७)। इता की [कारता] १ एक एक-पानी (परम न १०७)। २ एक मुसकर पश्री (सम १६)। ३ एक राज-क्रमा (महा)। ४ एक पुरुवरिखी (इक)। इदेव स्म 🐒 [किन्दसक] परानितेष एक-चुरा वानवर की एक जाति (पर्या १००० पत्र ४१)। करण न िकरण १ न्याया-या**व**य स्थाय-मन्दिर। २ फेसला (भूपा १९१)। करणय वि [करणीय] बी करेश-संबन्धी (पुरा १६१)। क्रुष्ट पुन [फूट] दिसरेत परेत का एक शिक्षर (धन) । सिंड व [साम्ब] पत्रन (सूर २, १६, कम्यू)। गरण देखों इत्रम (नुपा ४२१)। तीम र्र्ड [माण] राज्यानरा स एक धना एक अफा-पति (परम १, १६१)। गुच पु [गुप्त] एक वैन महर्षि (क्रम्)। धर न ["गृह] नगर, धनाता (ए।सा १ १-- पन १६ नूपनि १४)। परिश्र वि [गृहिक] मंगरी समाननी (हिन्ने

१४२१)। यंद वृं ["बन्त्र] १ एक प्रविश्व

वैनावार्य सीर सन्बद्धार (पत्र ४६, नुपा

६४०) । २ ऐरमय योग में होनेवाचे एक

जलन दूसरे जिस्केन (पन ७)। सेज दू

"पेया एक एका (उप १०६ थे)। "सेस

जिल्लोव (सम. १३४: पत्र च) । ३ मासर्वे बस्रदेश का पूर्वमशीय नाम (पत्रम २ १६१)। चंदा को चिन्द्रा १ एक परव्यक्तिश्री (इक्) । २ एक ध्रम-परनी (उप tat टो)। इक्ष पुँआस्या एक पैन द्रीत (कम्प) शेवर न िनगरी वैद्राइम की शक्तिल-चेली का एक क्वियावरमधर (इक)। रेको मयर। जिक्कम म निकेतन विकास की प्रवर-घेशी में स्वित एक विचावर-वयर (इंड)। "जिस्तय न ["निस्तय] वैद्यालय पर्वंद की दक्षिका-भेरित में स्मित एक तपर (इक) केवो निख्य। विक्रमा स्मै िनित्तवा । एक प्रवासिकी (एक) । जिल्लाम व विभागक विष्णु मीइप्ए (दुमा) । ताकी की विद्यों कुत्र-किरोप (करपू)। बचार्य दिखी पैरवत वर्ष में बरपल पोचर्वे जिल-देश (पण ७)। दास न िंद्रामन् दिशोधां वाली माना (जे र)। २ ब्रावरक-विशेष (ब्रावम)। १ दू एक राजा (विपा १ ६---पण ६४) । इस्मान्द्रेष्ट दामगंड पून ["दासन्धण्ड] १ दोन्धनानी मामार्थों का क्यूइ (अर्थ)। २ एक देव विवान (सम ३१)। दासग्रेड वृत [<sup>\*</sup>दामगण्ड] १ शोध्यवाची मानामों का दरमनार प्रमुद्द (जंद)। दिवी की ["वर्षा] र देनी-विशेष (राज) । २ सदमी (धर्मीर १४७) । "दुवीनंदण पू विदेधी-मम्दन] कमरेव (क्वींत १ ८०) । प्रीयुज र्[नम्दन] र वामध्यः। २ फि. भी के समुद्ध (पुता ११८) यस्त्र ११ दी)। "लयर न [नगर] शंधल देश का एक स्टूर (दुवा)।स्त्रो वयर । 'निस्तय व 'निस्तव' बाबुदेन (बच्च १८, ६ )। देवा "जिस्त्य । पट्ट ई [ पट्ट] नवर-देश्यर्ट का मुचक एक धर्मन्द (नुसार १)। यज्यस नु ["प्रश्त] पर्वेड विदेश (क्षण्या १ )। प्रद र्द ("प्रभे ] एक प्रश्वित जैन भाषाने भीर इन्बकार (क्वीर १४२) । पास देवी बास (फिरि ६४) फल इं फिस्सी दिस्द-दुष (दुमा) । एमो दुस्र । भूद र् [ भूति ] भारतस्य में शनेसाने छाते बह्मधी एवा (स्व १६४)। स रेक्षा

"संतु(उप दृ३७४)। सई की <sup>\*</sup>सतीी १ इन्द्र-नामक विद्यावर-राज की एक पारी (पक्स ६ ६)। २ एक राज-पत्नी (महा)। ३ एक सार्ववाह-कन्दा (महा)। संगद्ध व भिक्रको श्रीताल भारत का एक देत (ज्य ७६ व टी)। संत वि सिन् दि रोबागमा रोबा-पुछ (डुमा)। २५, क्षिक कृतः। धरवरव कृतः। ४ विच्छुः। १ क्ति महादेव। ६ मान भूका (है २ ररश वर्)। समज न सिक्स्यी वैवाक की व्यक्तिश-मेखी में स्वित एक विद्याबर-नवर (इक)। सद्विक्ष पून "मिश्चिक युक केन-विमान (श्वम २७) । महिवा को मिहिता एक पुन्हरिएी (६७)। सास्त्र पुर्व मिस्त्र पुर्व प्रक्रिय वर्ष (दुप्र १४६) । मास्रपुर न ["मास्रपुर] एक क्यर (ती ११)। पैठ देखी बर्ड (बढा) । यंद्रस देवी कंद्रसम् (पर्वृ १ t—पव७)। पद्र दृष्पिति मीक्रम्स बानुरेव (सम्मच ७१) । बच्छ वं विश्वा १ जिन्तेत मारि महापुरुगों के हुरन का एक जैंचा घरमशाकार विष (धीपा सम ११३ महा)। २ महेन्द्र देवलोक के इन्द्र ना एक पारियानिक विमान (ठा ८---पन ४३७)। ६ एक देव-विमान (सम ३१ धेनेना १४ चीत)। यचका की विस्साी मनवान धेनासवानकी की स्वसन देवी (प्रति श्री विद्यास्य न विश्ववस्य के श्रीवर्गः देवबोड वा एक विमान (राज)। यूज न [बन] एक प्रदान (येद ४) । यञ्जा ध्ये विक्री इस-विदेव (पहल १--पत ६१)। यस (पन) देनो संव (मिन)। बद्धाय पुबिर्धनी एक समा (पत्रम ४, २१)। थय पू [ यह] प्रतिनिधेत (दे ह १२ थे)। बारिसय 🛊 िवारि पानी पराव वर्ष में होनेताने चीबीतने विनदर (९४ ७)। बास्कर्द ["पास्क्र] १ एक प्रतिक भैन समा (तिरि ३१) । २ रामा विजयन के समय का एक देन बहुत्ति। (१व ११६)। संभूमा सो ['संभूता] वयाची प्रज्ञी सद (तुम्ब १ । १४)। ासबय र ['सिबय] ऐरस्त वर दे

र्वे विक्रीको इनुमान (पत्रम १७ १२)। सोम प्रिमा मण्डवर्ष में होनेकता सारावी पत्रवर्ती राजा (धम १६४)। "सोमजस प्त [सीमनस ] प्र≉ेन विमान (सम २०)। इर न गिहा भेशार (भारद)। इ.र. प्रंथिर] १ भनवाल पाधेनाच का एक प्रवि-पछ । २ भगवान् पाधनानं का एक वर्णवरं—पुस्त शिष्म (क्या)। १ महरूवर्गमें पदीव उत्प्रिति कार्य में उत्पन्न ग्राउने जिन्हेन । ४ ऐरवट वर्षे में बर्तमान सवस्थिती क्षत में उत्पन्त बीसमें निक्देन (पन ७३ उस १व६ टी)। १ कामुरेक (पर्वम ४७ ४१) वर)। इर वि । ["इर] भीको इरख करनेशना (कुमा)। इत्तर व [फुक्क] निस्व फर्स (पास) वैका फर्जा। सिरिअ पूंबिक, भीयको स्कूबश्यका द्योद्य मार्दे और नम्ब राजा का एक मन्ध (पक्षि)। सिरिभ न [स्वैभे] सम्बन्ध्या (मै ७३)। सिरिंग पू दि दि, सम्बट, कायूक (र # **\$**3) i सिरिहा पूंची विशेषामा का पान-पान (पामा देव ३३)। सिस्सिद्ध वि वि] सब्भूवा निवने पूर्व में मर हो वह (देव ६२)। सिरिया देवो सिरी (सब १११) । सिरिक्री की [के भीन्त्री] कम्बनिरोव (क्व 16.6)1 सिरिपच्छीय र् [वे] बोतान स्थासा (वे 1 (## सिरिवय पू [क] इंड क्यों (वे ब, ३२)। सिरियय देवी सिरिन्य । सिरिस र् [शिरीप] १ इक्र-विशेष शिरमा

गोपेक् (समार्थशाद्वीर ११)। रूम-

सिरी ध्ये [भा] १ सच्यो कम्बना (बायः

कुवा)। २ इपित बबुढि निमर (राष

दुव्य)। १ सोन्य (धीरा सद; नमा)। ४

सिरकाका प्रस (हुना)।

पक्ष ७२)। ५ उत्तर स्वक पर खुनेवाली एक दिशक्तारी देशी (टा व-पत्र ४१७)। ६ देव-प्रतिमा-विद्यंत (खाया १ १ टी---पत्र ४३)। • भगवान् कृत्युताम की की माता । कानस्य (पद ११) । द एक योहि-कस्या (कुप्र १६२)। १ एक क्षेष्ठि-परनी (कुप्र २२१)। १ देव पुत्र बादि के नाम के पुत्र में सदाया जाता धादर-मुचक राभ्य (पद ७० कूमा निर्¤)। ११ वाणी। १२ वेक-एकता। १३ धर्म प्राह्म पुरुषाये। १४ प्रकार मेर । १६ क्यकरण गायन । १६ पुछि मधी। १७ भविकार। १० प्रस देवा १६ कीर्ति मरा २ सिक्रिः। २१ वृद्धिः। २२ विजूतिः। २६ सर्वेष सींगः। २४ सक्त कुछ । २१ विस्त-कुछ । २६ मोलावि विशेष । २७ कमत पद्म (इ.२ १४)। ३ चो सिश्च सिर्दिसी⊐ मी। सिरिस के सिरिस (सामा १ ६—पण १६ । चीत कमा)। सिरीसिष र् [सरीस्प] सर्वे साप (सूच र ७ १४: विवरः १७०)। सिरें केनो सिर≖फिरब्≀ घरा (धी) केवो इस (न १४७) । मणियु [मणि] प्रवान प्रप्रशी मुक्क 'धनस्तिनरोमसी' (बाह्क सुपा ६ १ प्राप्तु २७)। दह पुष्ति केल शक्त (प्राय) । विभागा की विद्ना सिर की पीड़ा (है रै ११६)। वृश्य रेखो सिर-वृश्य (एज)। इस की "परा] पीवा, मना डोक (पाछ शामा १ ६ च ⊏ धमि २२४)। सिस्क देवी सिख्य (कुमा)। प्यमास्त्र न "प्रवास्त्री विद्रम (भीप) । सिसंब रेको सिसंब (राम) । सिसप पू [क] सम्बद्ध विरे हुए सन्त-कर्णी माबद्वस्य (रेब, १)। सिका बी [शिक्य] १ सिक्य- बट्टान परवर (पास प्राप्त कम्प कुमा)। २ मोसा (दर < ६)। सरपुन [वनु] शिकानिट पर्वतो से उत्पन्न होनेवाचा प्रव्य-विशेष, बो रवा के काम में शास्त्र है, रिका-रह (उप **७२व दीः वर्तवि १४१)** ।

पपत्रव की प्रविद्वाची देवी (ठा २ ६--- सिस्नाइब प्र [शिस्तादितः] वसभीपूर का एक प्रसिद्ध राजा (ती १४)। सिख्यमा देखो सद्यमा (सं व४)। सिटाप (शै) श्रेष रेबो । 🕏 सिखपणीअ (प्रयो १७)। सिव्यह् सङ [स्प्रद] प्रशंसा करता। **इ** सिटार्गिज (स्क्य ११)। सिव्यद्दा 🛍 [स्टापा] प्रशंता (मै 🖙)। सिखिद पु [ शिक्टिन्द ] माम्य-विशेष (पव ११६ स्वोब ४३ मा १८ वर्सात ६ व)। सिस्पिय पुन [शिकी भ] १ कुश्र-निरोप स्वतः कुछः मूमिस्फाट बुस (ग्रामा १ १— पत्र २३८ १—पत्र १६ ३ ग्रीम: कुमा)। २ वृंपर्यंत-विरोप (स. २१२)। निस्तय पु ["ानतस्य] वर्गत विशेष (स ४२४)। सिस्मियु [वे] कियु, बण्या (वे क, वे सूर ११ २ ६ शतुषा ३४)। सिच्छि वि [दिख्य] १ मनोज मुन्वरः 'मञ्च तथिसप्यमारामस्यमुक्तासकुम्मसंठिम सिविद्वपरणा (पद्य १ ४-- पत्र थर)।। २ संबद्ध समुद्धा(भीप)। ३ भ्रामिण्हितः। ४ संबर्ट । र स्थेवालंकार-प्रक (हे २.१ %) प्राप्त)। सिक्पित्र देखो सिक्पित्र (राज)। सिक्तिम्ह दृश्ये [ रहण्यान् ] स्वेष्णा स्व (हेर ४६८ १ स्ट पि १३६)। देखी संमहा सिक्या को [सिक्सि] १ विधा मादि तुरा सापनि विशेष। २ पापारा विशेष, राक्ष को ठीक्स करने का पापास (सामा र ११--पन १८१)। सिविसिअ देवी सिविष्ठु (कुमा ७ ११)। शिक्षिण वि [ शस्त्रपश्चिम् ] स्त्रीपद नामक रोवनामा विश्वयं पैर पुता हुमा भीर कठिन हो बाता है उस रोप से पुक (पाचा हुई १)।

योद्धा (पत्रम १६ ३६)।

(मवि)। सिक्सोसींग्रि (मूझ २ २ ११)।

(मुख १) । २ पर्वत पाहाइ (रेपा) ।

सिछेच्छिय दू [शिक्टेशिक] मस्य-विधेष (बोब १ दी - पत्र ३६) । सिक्षेन्द्र देखो सिक्ष्मित् (वर् )। सिक्षेस सक दिख्य दिस्त्र करना भेंटना । सिबेस६ (हे ४ १६ )। सिबेस 🛊 [रखेप] १ बक्रदेप मादि धंमान (मुम्रति (α))। २ मानिज्ञन में Σ (मुर १६ २४३)। ३ ससर्गा ४ दशह (दे २ १६ पद्)। इ.एक शन्दानंकार (पुर १ ६६ १६ २४३)। सिस्टस देखो सिकिन्ह (मनु ६)। सिस्रोध ) पूरिक्रांकी १ क्षिता पच सिक्रोग ) काम्य (मुत्रा १६०: मुपा १६४) सर्वि ३ महा)। २ मकः कीर्ति (मूपः १ १३ २२ हेर १६)। ३ क्सा-विशेष कवित्व काव्य बनाने की क्या (धीप)। सिक्सेचय रेको सिक्क्यय (पाम मुर १ 💌 स्व)। सिद्ध (दि] १ दुन्त बच्छा, शक्ष-विशेष (सुपा १११ क्रुप्र २०३ काल सिरि ४ १)। २ पोरा-विशेष, एक प्रकार का बहाज (सिरि ₹58)1 सिक्स देवो सिद्धा। र 💃 ["क्सर] रिजा-कट, परवर महनेवाका शिक्ती (क्षे १६)। सिस्त न [सिस्टुडफ] कन्न-स्थ-निशेष (धव)। सिस्द्वाकी [दे] शौठ वाका (वे १२,७)। सिवन [शिय] १ यङ्गन कस्यासः । २ मुख (पाया कुमार संबद्ध) । ३ व्यक्तिशा (पराह २ १—पत्र ११)। ४ पूर. मूच्छि मध्य (याच- क्रमत ७६) सम १) क्रमा धीपः पति)। १ वि सङ्गत-पूक्त, उपप्रव-पहित (क्ष्म्य यौपः सम १ पत्रि)। ६ ई महादेव (स्था १ १---पत्र ३१, पाका क्रमा [सिक्समुख] र काल चीर सम्मत्त ७६)। ७ जिनदेव चीर्वकर, धार्मन् (पाप्रः सुर ६ (४)। २ तावता का एक (पब्स १ ६, १२)। व एक स्टबर्ग जिसने मनवान् महाबीर के नास बीला सी भी (ठा सिकीस केवी सिक्सा⊏ विज्ञात । विक्रीका ब---यत्र ४३ मन ११ ६)। ६ पाचर्ने बानुदेव तथा बचारेव का पिता (सम ११२)। सिखबन पू [शिकाबन] र पेर पर्वत देस-विधेय (एक क्यू)। ११ पीव यास का लोकोच्यर नाम (सुक्य १ (15) t १२ एक देव-विधान (देवेन्द्र १४६)। १६

क्रान्त-विद्येष (विष्) । इस व विद्यो १

शक्ती धमस्या की माति। २ मुकिन्सार्वे

(नूपनि ११६)। गइ की [गैर्डि] १

मुक्ति मोदा। २ वि मुक्त, मुक्ति-प्राप्त

(च्चा) । १ र्यु मास्त्रपर्यमें धरीत ञस

रिको कार में असन भीवार निभनेत (पत

७)। हिरभ न ("ठर्घी कारवे वनारड

(क्षेप्र ४४२) । नंदा की जिल्ला

ध्यानकथावक भी पत्नी (उदा)। "भृदु पु

िम्ति । एक वैन सहस्य (कम्म) । **२** 

बोर्टिक मत--विर्ववर केन संप्रवाय का

स्मापक एक सुनि (विन रश्यरे)।

याचे) मास क्षेत्र कुम्बा चनुर्वेको दिन्ह (सद्वि

सिर्वक्र पुं [शिक्कर] प्रवित्र केराव का

सिंक ३ ([शिवक] १ पक्ष वैवार होते

सिवय ) के पूर्व, मा एक धनस्वा (विश

जरपम एक धाईन (तम ११६) १

पिता (गरम २ १२)।

थे)। सेप्प वृ [सन] ऐस्वत वर्ष में।

२३१६)। २ वंतन्त्रर नावधन का एक ध्यमान-पर्नेत (६७) । सिया की [शिया] १ भनवान वैभिनान की नी माताचन नाम (मन १६१) । २. सीवर्ष वैक्कोक के सन्त्र की एक श्राप्त-मश्रिपी (द्या — नम ४१६, खादा २ -- नम २५६)। वनरक्ष्यं जिनकेर को प्रवर्तनी—मुक्य सामी (पत्र १)। ४ शूपाली माधा निवार (भशुवज्वा ११) । ३ पार्वेटी (ग्राम) । सिवार्णस को सिन नंता (जवा) । सिकासि वृ (शिवादिम् ) भरवतेत्र में प्रधीत उत्तरिक्षी-अस में उद्धान बाधार जिन्हेर (दर ७) । सिवित्र देखो सुमित्र (दे १ ४६ प्राप्त

रमा दुना कपू) । सिपिया ध्ये [शिपिया] नुवानन, पातशी, समी (कप सीर: बहा) : मिथिर व दिशंबरी १ सम्बादार, कैन्द-

निराण-स्थान, स्प्रानी (शता) । २ सैन्व केना, मरहर (मुझ ६) ।

सिम्ब सक [सीध्] धोलक स्रोपनाः क्षिमद (पड्निसे (३६०)। मॉर्थिसिम स्वामि (धाषा १ ६ ३ १)। सिम्ब देवो सिय = शिव (प्राप्त २६ धीम ₹**७**) । सिविषम वि [स्यून] फिया हुमा (वन ६२)। सिम्बिणी } क्ये [के] सूची प्यूर्व (के व सिन्दी (२६)। सिस रेको सिस्टेस = विलव् । विकार (यह ) १ शिभिरत [दे] दवि दक्षी (दे क, ११ पाम) । सिमिर 🛊 [शिक्षिर] १ ऋनुनिक्षेप माण वया प्रापुत का नाहिता (इन ७२० टी है र्राच को रिशनि क्रिक्टन (इनएकी

४ ११७)। र माथ माह था नोबरेसर (सुज्ज १ ११) । १ प्रापुत महत- दिसियो फायुफ-माहो' (पाय)। ४ वि अह, ठॅबर, क्षीत्रत (पाम चप ७६८ टो) । ५ इतरा (उर भी ब टी) : ९ म. दिम (कर १०६ दी)। किरण पुं िकिरण विश्वता (वर्गवि प्रिक्रिक्ष्र पृक्तिकारी विकासन प्रबंध (उप ६व६ टो) । सिसिरमी रेंबो सिस्सिरिजी (चत्र) । सिम् पुत्र [शिष्टा] बालक, बक्का (तुपा सम्मत्त १२२); 'सा ब्हाइ पायमेश्रह तिसम्बा कीर्य पदमयको (कुन्न १७३)। आछ प्रविद्यास्त्री वास्य वास-कास (नाट---

पेव १७)। नाग पु िनाग] सूत्र मीट विकेश समस (प्रत ६, १) । प्रास्त प् ["पास] एक अधित धना (छाया १ १६-gut t t tiar ten धि दुप्र २१६)। यथ वृत्र चित्री तुल क्रियेव (वस्त्व १—वन ११) । शास्त्र केयो पिछ (नूप १३११ र हो)। सिस्स पुत्री [रिष्ट्य] र वैश्वर ग्राप विश्वली (खास्त्र १ - नव ६ । नूसनि १२७)। इसे. स्सा १२स्त्रणी (बादः स्ताया ₹ ₹Y---9₹ ₹ ) i श्विस्स देवी सास = ग्रीवे (श्वद १ )।

सिस्सिरिकी को [रे] स्वरूपियेव (उत्त 16331 सिद्धं वक [स्पूर्ह ] इच्छा करना चाहना ।

सिंहर (हे ४ व४ आक्र २व)। इस्सिंह यिज्ञ (देदः ३१ टो)।

(बुमर १२६)। सिहंद व रिस्मण्डो रिजा पूना, चेटी (वाद्या वादि १११) । सिर्वेडक्ट पुंदि] रबायक रिग्रु। २ वर्षि-

सिद्द पुरि दूरपरितर्ग की एक बार्टि

सर, बड़ी की मलाई। समूरु मोर (दे क XY) 1 सिहंबहिख पू [रे] शतक बच्चा (वड )। सिर्वाक कि [शिक्षण्डिम्] १ क्रियानाचे पीप)। २ र् मपूर-पत्री, मीर (पाय: उप ७२= दी)। १ विप्यू (मुपा १४२)।

सिक्षण देवो सिक्षिण (रमा)। सिक्षर न [रिक्तर] १ पर्वत के अभरका ६२)।२ सस्माप (लाबा१ ६)।३ सपाठार पठाईस दिनों के स्पनास (संबोध ६०)। अत्र वि ["पण] शिवरों से वस्ति (के स्, १व)। सिद्दरि 🖫 [शिक्तरिम्] १ प्रदाक प्रवत (पाम सुपा ४६)। २ वर्षकर वर्वत-विधेय (अर १—पत्र १८ सम १९ ४३) ३ १

र्नेषः कुरू-विरोप (ठा २ ३---पत्र **७** ) ।

**बहु पिठि दिनामय पर्वत ति व** €3) i सिक्षिणी । भी वि शिक्तरिकी निर्मानक सिंहरिक्क । बार्च-क्रिके स्क्री-बीनी यारि ते वनताएक तराहरू मिट्र कारा (दे १ १६४० व १३ वद्या १ ४—वत्र १४८८ पर्व ४ पद्म ६३; कक्षः सन्तः)। सिंदजी | भी [शिका] १ जोटी मार्डक सिक्षा 🕽 पर के गयों का गुल्हा (रेवा १ क्श वस १४% वास्त सामा १ ४**—व**प

रै क बेरोब ११)। २ शास्त्र को ज्वासा (पाम कुमा मन्त्र)। सिद्धान वि [विकासन् ] किनासना क्रिकी-

दुष्क (पडर) । सिद्दि द्व [शिल्यम्] १ घरिन, धान (श्व

रशस्यम पुण प्रश्रेश । १ सङ्गद् मोर (बाम्ह देवर ४२, वर १२। १७३)। ३ यक्त मार्क कुम्ह (वस्त १६ १)। ४ पर्वती १ सहस्र । ६ दुर्धा ७ हेर्नु द्भा : बुद्ध । १ परत । १ विवय-बुद्ध । 1

११ मपूर्णकथा-बूख । १८ वकरे का रोम ।

११ वि शिया-पुक्त (प्रशु १४२)। सिद्धि पूर्वि कुनदूट मुर्गा (देद २८)। सिहिअ वि [स्पृहित] यमिनपित (दुमा) । सिद्धिण पून दिं] स्तन यन (वे ८, ३१ मुर १ १ पाच पड रंग्या मुपा १२ मनि इम्मीर १ सम्मतः १६१)। सिद्गि। द्री [शिम्बनी] पन्द-विशेष (रिय) । मिही (वप) ध्री [सिही] सन्द-विशेष (বিৰ) 1 सी (धरा) ध्री [का] एन्त-विशेष (पिम) । थेवो सिरी। सीअ यह [सद्] १ विवाद करना केर करता। २ वक्रता। ३ पीढ़ित हाता दुखी इत्याः ४ इतना फल सगनाः सीमइ, सीमंति (पि ४६२) मा ६७४) जया सीर्याप धीया (निक ८२) 'सायति य सन्पर्धनाक (नूर १२ २)। यह सार्शत (पाप ४ क मुपा ११ : द्वाप्र ११८) । सीम न [दे] सिस्पन्न मोम (देव १३)। सीअ वि [स्वाय] स्वक्रीय, नित्र का 'सीयन क्षेत्सार्राहसाइरएडुमाएं सोमोसिए। तेव मेसा' (पन १४---पत्र ६६६) । सीअ देवो सिअ = सिव सोवाबीचे (अअ)। सीध वृत [शाद] १ रपर्श-विदेव देश स्वय (छा१—पत्र २४) पत्र ६)। १ दिन पुद्धि (स ३ ४३) । ३ श्रीत-बास (स्वर) । ४ टॅर, बाहा (हा ४ ४--- गर्व २८७ योग पढर उस २ ६)। ५ वर्मे-सिटेन शांत रार्थं का कारण पूत्र कमें (कम्म १ ४१ ४२)। ६ वि शतंत्रत ठेश (वय, मो। रामा १ १ टी—पत्र ४)। ७ प्रे प्रवन नरक का एक वरक-स्टान (देशक ४)। व ब. वार्निधेत वार्निन वा (वंबाप रब)। दिति धनुष्ट्य (यूच १ २ २.२१)। १ व. मूप (याचा) । यर न ["गृह] बहालों का क्योंक्रिक्टिना बहु पर, बहा न है कार्वे सर्व के प्यानिश हो है (रव १)। च्याप्रति [विद्याप] स्तरन क्रकराण

(स्रोधध पूं<sup>\*</sup>(सोकक्र) १ वसमा। २ हिस्सारो स्री (छ ८)। शीतकाल हिम ऋतु (स व ४०)। साओ देखां सिया (क्या कीर सम सीअ देवी सीआ = रोता । प्पसाय पु [\*प्रपात] हह-विशेष जहां शादा नदी पहार 232) I साआण देया मयाण = श्वच्यन (हे २ ८६ पर म पिरतो है (ठा २ ३ — पत्र ७२)। यत्र ७)। सीअ देखो सी आ = सौता (हुमा)। मीआर देशो सिद्धार (एएमा १ १---१३ सीअउरय र् दि शीमारस्क] दुस्म-विधेष £1) 1 'पत्तउरमीयबरए हवड तह जनसए य बोध थे' सीआद्य 🗸 [सत्रपात्रारिशम् ] सँवानीम (क्एल १--पत्र ३२)। ४७ (कम्म ६ २१)। सीअज न [सदन] हेरानो (सम्मत १११)। सीआसीस ध्येन, उत्तर रेगो (ति ४८६) सी अलय न [दि] १ दूप्य-शियो दूप धोहने का पात्र । २ समस्रात, ममान (३ ८ ११) । 18) ı साभर पूरिकिरी १ पान मं विक्र जस सी जाय एक [साइय ] व्यिपन करता, कुत्रार जल-करा (इ.१ १०४ गउक दुमा स्रीयावेद विदार' (यन्त्र १ २३)। मछ) । २ सार् , परन (६१ १६४) प्राप्त सीइआ भा [द] मनी निरुत्तर वृद्धि (रे ar) I < 1x)1 साअरि वि [शाकरिय] शोमर-पुष्ठ (परव)। साइय वि [मझ] सित्र परियाण्ड (व ६६)। सी अस र् [सीवस] १ वर्डवान धवर्तारणी साह में [वे] सोही निभीत (विष्ट (व)। बाब ६ रगरे जिनन्देर (नम ४६ पति)। सोडमाय वि [दे] मुत्रात (६ व. ६४) । २ रूप्य पूर्व-स्थित (नु≅ २ )। १ वि ठंबा (हे व १ दूमा नहर स्वलु ६०)। सारह न दि ] दिमनान का दुरिन ( पर )। मात्रस्य म [सी सन्य] १ देस तपा दर्य । साजसियाधी[धार्यातस्य] १४६१ स्टेप्स न्ह्यायसियं तदानेत्वं विश्वितानि (अव ११--वत्र ६६६) । २ मूजनियोर (यन) । २२ वि १३६)। साजीत देश्र [४] १ दिवहान का दुर्शि । मीउन त्या साउर ( पर ) । सामात्र रण समामा। स्वयं 🖠 र ब्रुप्र-विदेश (र व ४८)। साध्या क्री [र्शना] १ वह बण-नधी (सन २० १२ (६) २ रिजामाय-नामक पुरिशा निजनीयरा (१६) हे संजारगांड हरू की व्यक्तियों देश (4 त)। इनाव 1 (c # परंत्र का एक छित्ररा य मा परंदू व ज का सामामा 🖫 [राष्ट्रा] १ एक वयनच एक र (६४)। ६ वधिय दश्य पर एके या ।। ( सूमारा दशे (ठा ब-नव ११६)। हुद्द व [ हुन्य] एक दव (वे ड) । t-41 (t/) i सामा भा [स गा] १ अस्त्राम, एव एथ मास्वरस्य [र] नयः स्ट स्ट्रिस (स्ट्रिस (राम १ ८६)। २ बल्पे शनुधेर को 16 )1

माता का नाम (पडम २ १०४ सम १६२)। ६ साङ्गन-पद्धति यत में इस यसान से इस्ती मूमि-रेखा (दे २ १ ४)। ४ ईक्कारनास नामक पूजियो (उस १६ ६२ चेदव ७२६) । १ व मील वर्णमास्य बन् पर्नेतों क शिवार-विशेष (इक)। ७ एक ४४०)। ध्रो सा (सूग्य २ १--- १त २ मनुदूर्त समा प्रतिदुल (नूर १२० [मपार] रूग्स-विदेश नही स्टाह्म नव पराइत निरम दे (वं र—१६ ३ ३)। 4 4 1 [ 219] Anfebr (# 4-49 (दा रे के---रेंग करें) इह दश दे क १ रे)। रेक्सिरांत्रका एक दूर(ध

दृं["दरापह] स्रोतका सद्ना (उत्त २ ॑ t)। फास र् ["स्परा] टंड जाहा सरी (प्रापा)। सोआ भी ["भोवा स्नावा] मधी-विरोप (इका ठा १ ४—पत्र १६१)।

सीस सक [शियू] १ वय करना विसा

करता। २ ऐय करता बाकी रखना। ३

विशेष करना । सीसद (हे ४ २३६ पर्)। सीस सक [कमय्] कद्ता । सीसइ (ह ४२ मशि)। सीस म [सास] बालु-विरोप सीसा (दे २ सीस रेको सिस्स=शिष्य (**११** ४% कुमाः र ४७० गुप्ता १ १ — पत्र १ ६) । सींस पूर्व [शीर्ष] १ मस्तक मान्य (स्वप्न ६ प्रापृ ६)। २ स्तरक पुच्छा (धाश २१८६)। ६ छन्द-विरोध (स्वि)। अन [45] शिरध्यत्य (वेश्वी ११)। "पदा की ["पटी] किर की हुई। (dg १०)। पर्वापेक्ष व "प्रक्रिम्पत] संस्था-विशेष महालठा को चीरासी बाब से पुनरी पर को संक्या सम्प्रहो बहु(इक)। पहुंखिल ै श्रीन ["प्रकृष्टिक] संस्था-विशेषः शोर्पप्रह तिकादको भौरासी बाब से पुक्ती पर जो तस्य परव हो वह (इक)। ब्री. आ (अ २,४---पण ८६ सम १ ; सस्यु ११)। पहिल्यंग व [प्रहेकिकाल] संस्था-विशेष पृथिकाको सीरासी सम्बस्त गुलने पर को पंच्या सम्बद्धी वह (ठा २ ४---पण वर्ष म्बु ११)। पूरा पूरव दु [पूरक] मस्तक वा बामरखा (द्यानः तंदुः ४१) । स्पद्ध (घप) । पुन [क्ष्पक] धन्य-विशेष (पिष)। स्वतः पु [शबस] केने वमके भारि से मस्तक को नपेटना (धम १)। सीस" रेपो सास = ग्राष् । सीसचात्र [दे शीर्पेफ] शिरकाण मस्तक मानव (रेट ३४ देश १)। सीसमपुत [व] श्रीतमका पाल, फिराय (स १ ३१ छ)। सीसय रि [च] प्रवट ब्रेंड (रे व ३४)। सीमय व [मासक्र] देवो सीस≖सीव (गरा) । सीसपार्था [तिश्चपा] सीसम ना नाय (पर्छ !--पत्र ३१)। साह् रेको सिरप = साम (राज) ।

सीइ दु [सिंह] १ धारद बन्दु-विशेष क्सरी मृग-एव (पएइ १ १—पत्र ७ प्रामू ६१ १७१)। २ बूझ-विरोप सर्दियने का पह (हे १ १४४ प्राप्त)। १ राग्ति-विशेष मैप से वांचवी राज्य (विचार १६)। ४ एक समुक्तर देवसोच्य-गायी वैत मुनि (सनुर)। ५ एक कैन मुनि, जो सार्य-पर्न के छिन्स वे (कम्प) । ६ मगदान् महाचीर का रिप्य एक मुनि (भव १४—पत्र ६०४) । ७ एक विद्यापर सामन्त स्था (पदम = १६२)। वष्क्रयष्ठि-पूत्र (मुता ३.६)। १.एक देव-विगाम (सम. ६३ देवेम्प्र. १४.) । १ एक कैन ग्राचार्य का रवदीनश्चन नामक भाषार्वे के लिय्य में (एडिस्ट्र) । ११ सन्द विशेष (पिंग) उर न ["पुर] नगर-विशेष (क्या)। इंड पून ["स्त्रस्त] एक देव विमान (सन ६६)। इदि पू [\*इदि] सदल का एक योदा (परम १६ २७)। क्रम्प र् [क्रमें] एक घन्तर्रीय (६०)। रूपणा सी ['क्प्मी] स्टब्स्वियेव (उत्त १६ १) क्रिसर दू क्रिसर] १ प्रास्तरण-विशेष बटिन बम्बन (एाया १ १—पन १३)। २ मोश्क-निशेष (बंत ६) विक्र ४६२)। सङ्ग [ मिति] समितमी तया समितवाह्न नामक इन्द्र का एक-एक सोक्पल (ठा४१—पत्र११०)। गिरि d ["रिगरि] एक प्रसिक्त केन महर्षि (सर बर १४२ दी। प्रिश्) । गुरूत की ["गुरूत] एक बोर-पद्में (गाया १ १६--- रत्र २३६)। **बृह**ु ["बृह] दियाबर वंग्र का एक , यम (परम १,४६)। जस 🕻 विरास 🕽 भारत बजनती का एक पीत (पडम र १)। वाय पूं ["नाव] विद्वर्गन, विद् की क्वंत्रा के पुस्य धाराज (भय)। व्यिक्शीकिय न ["तम्द्रीका] १ विद्वामित । र त्त-त्रिप्टेन (बंद २८) । ज्यसाइ देवो ानसाइ (धव) । दुवार न [\*द्वार] यतनारः यत्र प्रसार ना पुस्त रस्ताना (क्ष १११) । स्य प्र [ध्यत्र] १ विचायरनेस वा एक चना (पत्रम १८, ८५)। २ हरियेल बकार्की क रिवा का नाम (परव ब,१४४) ना देश जाय (परह १

१—पत्र ४३)। निक्रीस्त्रिय, निक्रीस्त्रिय रेखा जिस्सेस्टिय (पत्र २०११ मंत्र २० णुला १ ६—गत्र १२२)। निमाइ नि ['नियादिन] सिंह की दर्धा बैडनेवासा (पुण्य १ व दी)। णिसिक्सा भी ["नपद्या] भव्य पकार्ती हारा मागपर पर्वत पर अनवामा हुमा जैन मन्दिर (दी ११)। पुरुद्ध न ["पुरुद्ध] १३-नम" पोठको वसदी (मूर्यान ७३) । पुरेश्वम व [पुच्छन] पूरपंचित्रका दोइना सिक-बाटन (पर्याह२ ४—नव १५१) । पुष्पिज्ञय वि ["पुष्टित ] १ जिसका पुरुष-चित्र तीह दिया नया हो बहु। २ जिल्ला कुरुव्हिका से बेकर पूत-बदेश--निवान वह की चमड़ी स्थाइ कर सिंह के पुष्प के तुस्य की जाय बहु(बीप)। युग पुर्छ स्मे ["पुर्छ] नवरी-विशेष विश्वयन्त्रेत्र को एक राजवानी (दार १--- नव वः इक) । सह प्र ["मुख] १ यन्त्रशिर-विशेष । २ अपर्वे स्तरेशामी मनुष्य-जाति (ठा ४ २--- १व २२६ इक)। स्य पूर्वित सिंह-पर्यना सिङ्गार सिङ्की तरह मानाज (परम ४४ ६१)। सह पूं [रिय] क्यार देत के दुर्ग वर्षेत्र तयर का एक राजा (यहा)। याह र्दु विद्याद् विद्यापर-पंद्य का एक राजा (परम १, ४३)। बाह्य पू [चाह्न] रावस-वंश का एक राजा (परम ४, २६६)। वाहणा हो ['पाहना] पन्तिम देशे (धन) । विकासगई ई ["विकासगिवि] यमितवति तया यनिताहन समक प्रत्र का एक-एक मोकशाम (अ.४ १---पत्र ११०) इक) । बाभ दून ["बीत] दक देन-निवान (बन ३३)। सेन पू [सन] पोछ्र निनदेव का रिजा एक चर्ना (यन १८१)। २ भगरान् चन्तितनाप का एक क्युपर (शब ११२) । वे राजा भश्चिक्त का एक पुत्र (धनु २)। ८ धना महानेन का एक दूव (तिस १ १--पत्र ४१)। १ प्रेरात धत्र में इरात एक बिनरेन (सन) । नाजा ध्री ["स्राना] एक नसे (स २ ३—नप्र व )। (पनाइजन [पनाहत] शिहानाहत निर्देश वध्य बना हुए पाये को वस्क

देखना (नहा) । ।शम न [ स्सन] पानन-

विदेव विद्वारार बायन मिहाद्वित बासन

धनासन (प्रन) । देखा सिद्ध ।

पाइअसहमङ्ख्या सीह-सुअर वह सुर्यत सुरमात्र (पुर र २११, शाकों ही पविहाध देवी (पृत्रि)। "देखे

सीक्र दिसिँक् दिस्तरकी। भी का (ग्रामा १ १--पत्र ३१)। सीह वृ िसिह वे हि, उत्तय (तम १: परि)। सीइंडय ﴿ [वे] मान्य, मद्यनी (देव २०)। सीहणही हो दि ] १ बूध-विदेव, करीचे वा ग्रह्म। २ करीं संबादन (दे ३४)। सीहपुर नि [सीहपुर] डिह्यूर-संबन्ध (पत्रव XZ X3) : सीवर रेका माजर (इ.१.१८४ कुमा) । सीक्ष्य दें दि बासार, बार को इटि (वे c (3) 1 साहस्र देशो सिद्ध (भए १ १--पत्र १४० इक परन देरे २२) ( र्माइस्टर १ [इ] बन्न प्राप्ति को पूर की का सम्बर्ध है है है है । सद्धांत्रज्ञान्त्रं [१] १ किया वारी । २ नप्रयाजिता नगरी ना मास (१ ११)। सीइविद्यासन पून 👣 उन ना क्या ह्या रंडण जा बेला दायत के बाग्र में मोता है (नव e 3 (1) स्त्रोदी और [सिद्रा] भीनेना, निर्देशी माश (413) मीट्र र्न । सीघ् रिषय सका २ मध-ब्रिटेप (क्लाइ १ १---पत्र १४ दे १ ८६ दय दा १४१ वा ४३)। स व [स] प्रवची रा नुषद्र सम्बद—१ इसेना भाषा (विशेषक मुपनि )। ३ प्रतिकृष, प्रध्यत्वता । ध (१) । १ बनानीयता (ब्रीट्र १६)। ४ महिन्छ क्षेत्रका (सिंग) २ (मा) ६ क्ट्र मृतिगर्भे । सर्वात बर्गाउ (वर् १६२ १ १ १११) ६ समायान (हा 1. (-n t) ग्रायक [स्थ्य] शाला नुपद(११४ tet meit fr to ar), guffe (विता १) वर्णनियानुष कोवन्तां (बामध्य ६) वन्दे मुनार (हे ६ १४१)।

नुपार्यामहा६० १२ वि४६७)। हेड सीर्व (पि ४६ ) । इ. माण्या (घप) ( Y cta) 1 सुभ संब [सु] गुक्ता। बद्ध-सुर्थद (बारवा १६६) । सुम दे सिती दुव चढका (बुर t tः प्रापृ १ जुमा उन)। मुञ्ज पूँ [गुइ] १ पवि-विक्तेय कोना (पहरू १ १—पत्र व्यवस्था ३४ ७ सूरा ३१) । २ रावस्त का मन्धी (से १२ ६६): ३ चरलाधीन एक गामंद चना (पान व १११)। ४ एक परिवाजक (सामा १ र—पत्र १ द)। ४ एक मनार्थ **देश** (पदम २७ ७)। सुधारि (क्टी १ तुना इमा पार्क्यवर (हेर २ हे। भग बार~पत्र ६)। र न बाल-विधेर राज्य बान शास्त्र सान (रिसे we at ax as every to शंदि, बलु)। १ रुम्द, व्यक्ति साराजा। ४ धनोरतन मृत्यान के धानरक करों का मारा-रिकेट । १ बारमा जीव 'से तेल तथा तम्म व नृत्यं सो वा मूर्व तेला (विने १)। ६ धावन शास, विदान्त (माः र्शक्तियम् से ४ २० वस्म ४ ११३ १४ २१ इता भी द)। ज सम्बद्धाः स्वाम्याय (क्षम ११) के ४ २०)। भाग (प्राहण )। "देशकि र् ["देशकिम] पीच्य पूर्व-सर्वो वा जाववार पूर्ति (राज) । नसंघ संघर्ष [स्क्रम्य] १ वंकस्थ का सम्ययन-अनुहारमञ्ज्ञातम् वराज् चंत्र-चन्द्रश (बूबर, ४ । स्ति १ १ — पत्र ३)। २ बाद्धधेकपंत्रं ना मनुद्र १ बास्पूर्व मन-इंव हरिसार (चन) । यात्र देला नाम (स्न २१ टी-पन ३१)। पापि नि [क्रानिन] सक्तान्यस्य साधी का बातकार (मन)। गिर्मारसय अ [ै।निभिन] वॉड-सान का एक घर (संदि)। ।त(६ भे [ार्गप] सूक्त देवनी तिर्द (एए २)। यर 🖠 [स्परिस] दुअव घोर पहुचे धेन-रेप सा जानशर सुनि (छ

१ र)। "(यया और ["(यता] केत

शाखों नी पविद्याभी देवी (पशि)। देखी को ["देपी] वही (मुना १ कुमा) । धन्म पुष्पिरी १ वैन शंक्तांव (स्त २ १ — पत्र १२)। २ शास-जान (मानन)। ६ बायमी रा धम्मवनः शास्त्रम्यास (तुरि) । घर वि धिरी समझ (गुर्ग ६३२: परहर, १—यत्र १६)। नाम पूर िञानी रास्क्रम (स्राप्त र—पर ४६ मम)। नाणि रेखो पाणि (गा १)। निस्सिय रेपो "णिस्मिम (हा २ (-- पत्र ४६)। पंचनी सी [प्रामा] कार्विक माथ की शुक्त प'चर्ची विचि (भाँर)। पुरुष वि [पूर्व] पहले तुला हुण (स्प १४२ दी) । सागर पु (सागर] ऐसव क्षेत्र के एक मानी किनदेश (सम ११४)। सुञ्जाव (स्मृत) याद किया हमा (भग)। सुर्भेष पू [सुगन्य] १ बच्छे क्य पुरुष् (मा१४)। २ वि सुक्को (छ ८, ६२) पुर १ २a) ı सुर्अपि वि [सुगारिक] युक्तर क्यवाला (वे १ ६२ वे ८. व)। रेघो सुर्गीधाः सुभक्ताय वि [स्पादयात] सम्बद्धे तयः पहाह्मा (पूचर १ १४) १६। २ ₹€) ( सुभन्द रियन्द्र] तिर्पेत (स्तृत्र (स्री)। सुध्रय 🕻 [सुत्रन] धन्यन मना ध्यसी (मा २२०० पामा प्रानुबारा गृहर क ४६: धरह) । सुभन व [स्थपन] बोता, रायव (तूक ११)। मुजया की कि विजयन कुटानियेक (t = t=): सुअपुति [सुतनु] १ पुनर गर्परान्धाः। २ ध्ये नाचे महिला (बा २६६: ६०४) 250 Pt 6 et 420) 1 सुभव्य रेखा सुरव्य (ब्राइ १ ) । सुधम वि [सुगम] बुबोब (बाह ११)। मुभर वि [सुद्ध] यो पताराज ने हो वर्ष बहु बरन (स्थि ६६)। मुश्रर पुं [मूचर] बूबर, बयह (रिग t

७—नत्र ७४। नध्य—नुष्यः १११) ।

विकृतित (सामा १ १--- पत्र १६)।

व६३ (कुमा)।

पत्र २१६)।

रखनेवाला (उद)।

मुम्मदि (प्राप्त १४)।

(बस १२ ४३ ४४)।

हुमासी[सुता] पूत्री सदसी(गा६ २३

हुआ (ठौ) यक [शी] रूपन करना सोना।

सुआ 🛍 स्त्रिष्] यज्ञ का छपकरण-विशेष

भी भारि वासने भी कवाची या नलायो

सुत्रान्क्स विस्विद्यया नुबाये —

मनायास से बहुने मोग्य (ठा ४० १ —

सुभावत्त वि [स्त्रायुक्त] सम्बद्धे तरह स्थात

सुर है [शुन्ति ] १ प्रित्रता निर्मेसता

"निरायम्मठिया मुख्यियो प युग्ध शैपीत

मुक्पिक्स" (सूता १६६)। २ वि स्वेट

क्षेत्रेन (कुमा)। ३ पश्चिम निर्मेश्व (धीप

क्लामा१२ महाकूमा)।४ की श#

सुर की [अधि] १ अवस्त प्राक्तर्यन मुनना

(बता १ वर्षु: विदेश्य)। २ वर्ष

मन्तु ४: कुमा) । ४ शाकः सिद्धान्त (संया

की एक ग्रय-महिची (इक) ।

का प्राप्त ४३)।

18) 1

संग सक दि ] सूँक्ता। बहा सूर्यंत (सिरि **1**22) 1

सुंद्रस्य वि [न्यस्तन] बागामी क्स से संबन्ध सुधिअ वि [दे] ब्राट र्युंग हुमा (दे य, रखनेवाला कम होनेवाला (सिंक २४१) ! सर्वे की वि दिया मति (वे ८, १६)। सुई सी [शुक्री] शुरू पत्नी की मादा मैना सुतरजुपार वि [सुद्धजुक्तर] परिस्त संगम में रहतेशाला मुसंयमी (सूच १ १३ ७)। सुउरुपुपार वि [सुश्चुचार] प्रविशय सरम । माचर**ण**भासा (सूच १ १६ ७)। सुप्रमार १ देवो सुकुमाछ (सप्न ६ सुँडमाछ ∫ क्रमा )ैं। सुडरिस पू [सुपुरुव] संस्था मना मावनी

(प्राप्त के १ ८ कुमा)। सरम [ चस ] मानामी रूप (स १६ 4 vt) 1 र्मुक न [ञुक्क] १ मूस्य (ए।या १ ८---पन १३ १ विपार १ — पत्र १३)। २ चुंपी विक्रेम क्रतुपर सकता राज-कर (कम्म १२ टी सुपा ४४७)। ३ वर-पत के पास से कृत्या पत्तवासों को सेने योग्य वन (निपा १ र—पन १४)। ठाण न िस्थानी चूंगी-वर (भम्म १२ टी)। पां<del>ड</del>म वि [\*पालक] **पू**षी पर नियुक्त पत्र-पुरस (मूना ४४०)। देवो सुद्ध = गुरू । सुंका } कुन [दे] कियाद, बात्य पानि का संक्रच ∫ ग्रम् माय (दे द ३६)। सक्ति पुन [के] चुछ-किशेष (पएछ १— ।

सुंक्रिय वि [शीक्तिक] युक्त सेनेवाना चुंचे पर निद्वास पुरूष (उप प्र १२)।

र्सुग देखो सुख = युस्क (ह २ ११३ कुमा)।

कान (या ६४१ बुर ११ १७४ झम्मरा न्ध्रः मुपा ४६: २४७) । ३ वेद-शास (पामः

> प्य ३३)। सुंद्रविय वि [प्रक्रित] विसकी इसी धी नई हो वह (सुपा ४४०)। सुफाणिश पुर्दि । ताव का *बोड़ खेने*नाता ब्यक्ति, पत्रवार चत्रानेवाचा (सिरि ६०६)। सुंभर र [सुत्धर] बच्चक राजनियेग (सुर २ वः पउक्र)।

र्मुक्त देवो सुक्ता≃ गुन्त (संक्रि ११)।

ग्रुइ औ [स्मृति] स्मरक्ष (विषा १ २—पण ।

स्यायण न [शौद्धायन] पोत्र-विशेष (पुरव t (\$\$) 1

(मुवा ११)।

सुंबल म दि ] काला मगक 'पुंठिगुंबबाईंबं (**हुप्र ४१४**)।

सुठ पून [शुष्ट] पर्व-बनस्पवि-विशेष (पदस

113

**१—पन ३३)** । सुंद्रय पुन [हाप्टक] मानन निरोप 'मीचानु

य मुंठएसू य चहुनू य पर्यक्रमु य पर्यक्ति (सुम्रमि ७६)।

संठी भी ज़िष्ठी देंड या सेंड (पमा ११ कुप्र४१४ वेचा १ १)।

सुंह वि [शीण्ड] १ मत्त मद्यप शरू पीने-

बाला (हे ११६ प्राक्ष १ संदिन ६)। २ दस अरुख (कूमा) । देखो सींग्रः।

सुंडा देशो साढा (भाषा २ १ ३ २) मानम)।

सुंबिअ पू [शोण्डिक] क्यवार, बाक देवने नाता (प्राष्ट्र 😝 प्रीक्षि ६) ।

सुंडिया की [शीण्डिका] महिए-पान में घासरिक(दस ६ २ ३ ८)।

सुंबिक देवो सुविज (वे ६ ७१)। सुबिकियो की [सोव्हिकी] क्ववर की की

(प्रयो १ १)। संबार देवी सोंबार (मनि)।

सुत्र र्र [सन्द] राजा राजण का एक मार्गि-नेय चरकूपस का पुत्र (पदम ४३ १०)।

सुंदर वि [सुन्दर] १ मनोहर, बाब, शोमन (परह १ ४ गुपा १२व २१६६ क्या काव ४ व)। २ पू. एक छेठका न्यम (मूपा ६४६)। ६ वैद्युर्वे जित्रदेव का पूर्वजस्मीय नाम (सम १६१)। ४ न. वप-विशेष वैसा,

वीन बिलों का अवादार उपवास (संबोध x )। बाहुर्पु [वाहु] साहवे विनदेव का पुषयम्मीस नाम (सम १६१)। संवरिक वैको संवर (३ २ १ ७)।

संवरिम पूंची- देको संवर (कुछ २२१)। संबंधि भी सिवंधी । क्लम भी (पान १७)

वि १८)। र संपनान् ऋतमधेर की एक पूक्ती (ठा६, २—यभ ३२६। छन १

- भुरुथ देवो सुद्रम ⇒ सूचिक (दे १ ६६)। सुरम ध्यो सुमिण (पुर १ ६२) उप ७२० 2 \$ x x (x) 1 स्पेरिकी [स्कृति] १ पूर्व। २ मक्रन

गरमासः । १ सत्-कर्म (प्राप्ताः पि २ ४) । सुरुगाणिया की [में सुविस्तरिया] मुक्ति

कर्म करनेवासी की (मुपा १७८) । सुरू र [सुचिर] भरकत कीर्यकाल वह

मान (बाहद ४६ ) सुपार १२७ म्प्रा) ।

सक्रमाण विसिद्धांची प्रच्या क्ये करहे-

सम्बद्धाः सम्बद्धाः (विश्व ६) ।

पत्नी (पडन ७४ ६)। ४ सम्बन्धिय (पित्र) । १ त्रकोद्दर, स्रोपना 'मुंदरी सी देवाक्षिया योधानस्य मंबनिपुत्तस्य वस्त-परवर्ती (ज्या)। मुंदर ) व [सीमार्य] पुन्तरका रुटेर मुदिरिम का मनोहरपन (प्राप्त-हे १ ६७-

११२ कि १)।३ **एवल की** एक

बाबा (हे ६ ६६ वह)।

दुमा तुपा ४० ६२२) बस्य ११ थि)। संवन शिस्वी १ ठऌ-विशेष (ठा४ ४---पत्र २०१ तक्ष १ १)। २ तस-विशेष भी बनी हाँ होरी-एस्डी (विश्व ११४)। स्भ १ शिल्मी १ एक पृश्य को सुध्य नामक इन्द्रास्थी ना दुवै-जन्म में पिता था (खाया २ २ - पत्र २११) । २ दानव विधेव (नि १६ १६७ ए) वर्डेसय न

[ निर्दासक] शुस्त्र देशी का एक महत (खावार र) गिसरी की किसी सुक्ता देशी की दुर्व-बन्नीय माठा (खाया २० २)। र्सुभा की [गुन्भा] वीत तामक इन्द्र की एक बटसम्बे (लावा २ २--पत्र २३१)।

मुंसुमा की [मुसुमा] वन सार्यवाह की कवा नानाम (खामा १ १०— नत्र २३४)। सुंसुमार 🕽 [सुंसुकार शिशुमार] १ वर्ष पर प्राप्ती वी एक जाति श्रृंत सोंद या सूसर (शाबा १४,पि ११७)। २ हड्ड-विशेष (मच १६)। ६ वर्गत-विकेष । ४ म. एक प्रस्तान (म ६) रेको सुसुन्मार। सुरु देश सुअ = रूक (तुरा २३४) । व्यक्त । भी [ प्रभा ] मनवान् नृतिविन्ताय की धीवा-

रिविश (विचार १२१)। स्वदर्श[सुत्रवि] चच्छा ववि (का ५ ) न्या) । सुरुद्ध वि [सुद्रण्ड] १ तुप्तर अगुक्राचा । रे मूं एक वॉलन-पूत्र (व्या (६) । ३ एक पोर-नगर्गत (नदा) । सुबन्ध र [सुर स] विवय-धव-विदेश (धार र---सर्व १४) । सूछ पूर

[ कृत] दिवानंबदेव (दक एक) है सुरह देशा सुरद (वड १)। सुध्य १ [सुक्ष्य] एक सम्भूत (नितः '

t t frii) :

सरुप व सिद्धती १ फ्राय (पदार १ २ — पत्र २८० पाद्य)। २ छपकार (से १ ४६)। ३ नि धच्ची तथा विभिन्न (यन)। आणुअ ल्यु, ल्युम विकि ब्रीयुक्त ना नानकार, प्रश्वार की करर करनेवाला (प्राक्टर उप ७६ व टी)। श्रुष्टमस्य वि (श्रुकृताये) प्रत्यन्त इवस्य (मासु १६६)। सुब्द वेबो सुगर (भाषा १६.१)। समञ्जूष समञ्जूष पना भेरिक का एक

पुत्र (निर १ १)। सुधकी भी [सुधकी] एवा मेरिक की एक पत्नी (पीत २६)। सुक्तिम देवो सुक्य (हू ४ १२६: चरि) । सुविद्व वि [सुक्रय] घण्डी तया जीता हमा (पदम ३ ४३)। सुविद्धि पू सिक्टियों एक देव-विभाग (सम सुनिद् नि [सुद्धतिन] १ पुरम-शाली । २ क्कांनाचे (रेप)। सम्बद्धः देशा सुद्धः = युक्तः (हे १,१६) संक्रिका∫ (५१६)। सुदुमार १ वि [सुदुमार] १ वर्षि कोयतः। सुकुमाळ १२ दुन्दर दुनार प्रवस्ताराया ।

सुदुमासिम नि [क] नुबदित, नुबर बना [पा(देव ४ )। सुद्भुव पुन [सुद्भुक्ष] उत्तव दुव (भवि)। सुद्रमुक्ष्म [सुद्रमुम] १ तुम्बर द्वन । २ विजुन्दर पूनगवा (देह १७) जुना)। सुरुमुमिय वि [सुरुमुमिव] विदशे संबद्धे ! वाह पून बाबा हो वह (भूता १६)। सुधेसळ 🛊 [सुरोराक] १ देरात-वर्ष 🛊 एक मारी जिन्दर (श्वम ११४) वन ७)। १ एक देन दुनि (१३म २१, ११)। सुधेसथा ध्ये [सुधरात्य] एक राज्यस्य

(22 1 11 2) 1

(नदा हेर रेक्ट वि १२३ १६)।

६ ३२:पर ७) सम्बंधि (दे ८, te B) ı समापि शिष्टा समाहमा (हे २ ६) शाया १ ६---पत्र ११४ सना; पिंड २७६) मुर्व ६४३ १ २२३३ वास्ता १६६)। सुकान [सुक्रा] १ पूर्वी वेपने की बलापर

बमता राज-कर (खाया १ १--- पत्र १७-कुमात्रया १४० सम्मतः १६६) । २ स्टेन्स विशेष । ३ वर पद्ध के कम्या प्रकारतें की सेने योग्य वन । ४ और को संयोज के किए मियाणाताचन । १ सूच्य (के. २, ११)। वेदो सुन्। स्वारं शिक्ती श्यानियोगं (स.२. १---पण ७०८ सम् १६३ थणना १ )। २ दून-एक देश-विमान (सम ११) देवेला १४१)। ६ म. नीर्यं राधेप्तम भागु-विरोप (ठा ६ १—यम १४४ पर्यंचे १०४१ नवा १ ) । सुक्त पूर्व (शुक्रत) १ वर्छ-विशेष, क्लोब एँप। २ समेव कर्ममासाः स्वेत (दे १ १६) कुबर सम २६)। ६ न, शुभ स्वान-विशेष (मीप)।४ वि विश्वका बंबार सर्वे १३३ व परावर्त करवा से कम रह बना हो। वह (वैद्य १२)। बस्ताल स्त्राजन विमानी तुन व्यान-विशेष (सम १। तुमा १७) घर)। पक्ता पूर्णिया है। विश्वर्षे अन्य की कवा क्यराः वदती है वह बाबा महीना (दव २८ कुना) । २ इति पत्ती । १ काल, कीमा । ४ बक्स, वक बजी (हे २ १६)। पविस्तय वि ["प्रश्चिक] बहु प्रत्या जिवस र्वधार धर्म शुक्त-परावर्त सं कम रह बना हो (ब १ १—नव १३)। इस देवो अस्स (वय)। कैसा देशो संस्या (तय ११) कर—नगरव)। द्येनस नि ["ब्दर्ग] गुल्य धेरपायामा (६एए १०---पत्र १११)। **ब्लसाध्ये (ब्ल्**या) महस्य का सम्बद

बाय-विध्य सुक्तन यहरम-परिखान (पर्स ८ ४---वस १३ )। सुबाह रे देवो सुद्धय (बन १२६) गान सुष्य र १६ १ )। मुक्त बर [शायव ] मुकाव । शास्त्र मुक्तमात्र (एका १ ९--नव ११४) ।

सुद्धापय न [दे] बहाज के सामे का ठैंका काह, सुवाराती में 'सुकाम' (सिरि ४२४)। सुद्धाम न [शुक्राम] १ एक सोकान्तिक देव-विमान (पन १६७)। २ वैद्याच्य पर्वस भी रक्षिण भेरित में स्वित एक विद्यापर नक्र (इक) । सुवित्य देवो सुक्त्य (मर्थि) ।

सुक्तिय रेको सुक्तिम (राज) । मुधिस्त ) देशो सुवा≔शुक्त (मय; सुविद्यान } धीप हेर १६ वंच ४ १६३ वसु १ ८)३ पुर मुक्तिमक्त्वे' (मध्य २ ४६ कम्प सम ४१ वर्मेंसे ४१४)। औ, 'एवो मुक्तियाएं एवे सन्तारां नग्यो कमी (म्रान्ड ७) ।

सुद्रीय दि [सुकीत] सम्बद्धी तरह वरीया हुषा 'सुक्षीयं ना सुविक्षीयं (दस ♦ ४१)। सुरुष देशो सुमा=शूप् । वह सुरुषीत (पा ४१४ वट्या १४६) ।

सुक्स देवी सुख्य = शुक्त (हे २ ४, गा २६३ मा ११। उप १२ टी)।

सुक्छ न [सीस्य] सुब (६प्पः कुमाः साथै रेरे प्रामुर≈ १४३)। सुरुव्य देशो सुद्धव । कर्म, मुश्यवीयंति

(ft 33& 333) I सुक्तिय वि [स्याक्यात] मन्त्री तव्य क्या हुया प्रतिकातः 'तयो सुहबद्वयानंत्रते न ते पुनिक्यमाधि बुद्धिवेशा सञ्चनको वनिनिध्त-मेशो पेसियो पानीसताहरूसो हारी ति बोलू

धर्माप्परं च हारकरेंडियं गमी वासनेडी (मक्त)। सुक्रम (वे) देखो सम्बद्ध = मुद्दमः मुख्यमवरिसो (प्राक्त १२४)।

सुगदेको सुभ ≖ गुरू (उत १७२ स व ६ चर १८ ७ कुम ४३८३ दुमा) ।

मुगइ धो [सुगति] १ प्रच्छी अवि (ठा ३ ६--- पर (४६) । २ सम्मार्थ सम्बद्ध मार्थ (पूर्णन ११४)। ६ कि सब्दी यदिको मात्र (पावन)।

सुर्गेष चेयो सुर्वाष (क्या कुमा चीक गुर ₹, ₹4) ;

सुर्गभा को [सुरान्धा] पविन विदेश का एक विजयक्षेत्र (इक)। सुनंधि रेको सुअधि (धीप)। पुर न ["पुर] नेताम की उत्तर म खि में स्थित एक निदा बर-नवर (६३) ।

सुराण वि [सुराण् ] धन्द्री तरह विननेवासा

सुगम वि [सुगम] १ यस्य परियम से वामा था सके वैसा सुव-सम्ब (घोषमा ७१**)**। २ सुबीब (नेदम १६१) । सुराय वि [सुरात] १ धन्यो पविवासा (ठा

४ १—पत्र २ शहुब १)। २ सुस्य। ३ मन्द्रा ४ प्रणी (ठा४ १ -- पण २ २) राज हेर १७७)। इ.वू दुबरेन (पाम पव १४)। सुराय वि [सीगत] दुब-घक, बौद्ध (सम्मत **१**२ ) i

से हो सके ऐसा(भाषा १ ६ १ ६)। सुगरिट्र वि [सुगरिष्ठ] वर्ति वदा (ब् १६) । सुनिक्त कि [सुपादा] मुख सं प्रदेश करने याग्य (पटम ११ १४) । सुगिन्द दू [सुमीव्म] १ देव माध की

सुगर वि [सुक्रर] मुख-साध्य श्रहम परिधम

पूछिमा(छा ४ २—पद २१३) । २ ग्रस्पुन का उरसव (रे क ११) । सुगिर वि [सु।गर] घच्छी वाखीवासा (पर्)। सुवाह्यि कि [सुवृशेत] क्ल्यात, सुनिहीय है विश्व (सं देश १३)।

सुगी केवो सुर् = गुकी (दुमा) । सुगुत्त र् [सुगुप्त] एक गंत्री का नाम (मद्दा)।

सुगुरु वृं [सुगुरु] चत्तम पुर (दुमा) । सुमा न [व] १ चाल-पुराव (वे व, १६) प्रत)।२वि निविष्य विष्य-पहिता । विवर्षित (देव १६)।

मुगाइ देवो मुगइ (मुच १६१: वं ८१) । सुरगाय समा मुनय - मुगत (ठा ४ १--पन

सुभाइ पर [प + स्] केनच । नुष्पाद्द (बारवा १३६)।

सुमा। व वृ[सुमी च] । वापद्गार देवों के इन्द्र भूतासम्ब के बारव-वैस्थ का बाँवपति

(ठा १ १ — पत्र ३२)। २ भारतसर्वे में होनेवासा नवना प्रतिवासुदेव राजा (सम ११४)। १ राक्षस-नेश का एक राजा एक सक्द्रा-पवि (प्रस्म १, १६) । ४ नवर्षे जिनदेव के पिठा का नाम (सम १६१)। ५ राजा वाति का स्रोटा भारे (पदम १ ६ हेर ४६ १४ ३१)। ६ एक यन ना नाम (सूर १ २१४)। ७ न सनर-निरोध (उत्तरहरी)। सुय (प्रप) देखो सुद् - पुत्र (दे ४ ३६६)।

सुपद्र नि [सुपुष्ट] सम्ब्री ठएइ पिसा हुमा (सम्बद्धी)। सुचरा भी [सुगृहा] मादा-पक्षी की एक वादि जो भपना भौंसता भूव सुरदर बठाडी है (बादूर)। सुपास र् [सुपाप] । एक कुमकर-पुरुव

(सम १४)। २ एक पूरोद्धित का नाम (छर ७२८ टी)। ३ पूर धररकुमार देवलोड इस एक विमान (सम १२)। ४ सान्तक नामक देवसोक का एक विमान (धन १७)। ५ वि मुन्दर घावाजवाता (जीव १ १ भवि)। ६ एक नगर कानाम (विपा२ ८)। सुघोसा 🛍 [सुघोषा] १ शेवर्यत नायक क्ष्मबेंनाकी एक पटयंगी (ठा४ १—नव २ ४) । २ गोतमरानामक यन्त्रवंकी एक पटराशी (ठा४ १—पत्र २ ४)। ३ १४६: मुना ४१) । ४ माय-निरोप (सब

बूबरे जिन-देव (सम १६३) । सुपरिभ न [सुपरित] १ सधवरण तवा-बार (कप्पा गजर) । २ वि सदावरण संपन्न (बढा) । १ घन्छे तरह धानरित (पत्म ७१, १८ ए।या १ १६--- १व 2 X)1

सुचेद दू [सुबन्द्र] ऐरनद वर्ष में प्रशस

**Y4)** (

सुविष्य ) नि [सुयाय] १ सम्बद्धाः व सुचिम्र कि ठामन्त्री मुक्तिलानि (प्रम ६ ६४, ६४ ६२) ठा ४ २—१३ २१) । २ क पून्य (धीरा द्वरा) ।

मुचिर न [मुचिर] प्रत्मन विर काल नुधेर्यं काल (मुरा २ नद्राः प्रानु ६२) ।

**११**४

818	पाइअ <b>स</b> रमङ्ख्या	सुचोदम—सुचंदा
सुचोइक्ष वि [सुचादिए] मेरित (उट १	सुका प्रृं [सूर्य] १ सूच्य, रवि । २ साक का	देन (एतना १ १६—पन ११७)। ६
४४)।	पेड़ा ३ केल-किरोप (हे २ ६४ सल)।	मार्गमुद्रशित सामार्गका किन पक वैन पहुँचि
सुब दि [शोज्य] मक्योब करते गीम्म	४ पूंत. एक क्षेत्र-किसान (सम १६)। क्रेस	(कस्प)।
भूषा ते जिम्हार जिल्हमणं जे नदा न	दुव [कास्त्र] एक देव-विभाग (स्प १४)।	सुद्धुः च सिद्धुः १ सम्बद्धः, खोमधः धुनर
कर्णात (कार्रिक १७) ।	देशस्य दुव [ज्यज] देव-विभाग-दिशेष	सुद्धुः (धानाः भनः स्वतः २६ पुर १
सुद्वा केवी सुत्र = मू ।	(बन १४)। प्यम दुव [प्रम] एक देव	१७८) । २ पष्टित्यः प्रथलः (पुर ४ २४।
सुत्रियित सुत्र सित्रातिकारी (खावा	दिमल (यम १४)। जेस दुव [केरम]	प्राप्तुः १९७) ।
११—गव ६१) ।	एक देव-विभाग (सन १४)। वेष्य दुव	सुद्धितः हेवां सुद्धियः (वाष) ।
सुब्रह ट्रे [सुब्रह] एक विद्यापर-गरेश (पत्रम १ २)। सुब्रस ट्र [सुपरास ] १ एक विनवेन का	[ बर्फ ] केन विभाग विशेष (बार १४)। "सिंग पुन ["ऋङ्ग] एक केन-विभाग (बार १४)। "सिद्ध पुन ["सुद्ध] एक केन-विभान	सुरु पन [स्यू] मार करना । नृबद (आह ६६)।
न्नम (डार्ट) हिस्सी)। २ कि मसली (चा	का बाम (सम १४)। सिरी की की की एक	सुविध्य वि [दे] १ सान्त वका द्वारा (रेन
१६)।	बाइएक-कमा (महानि २)। सिव वृ	१६ वटका द्वारा १७१ १६ वटका द्वारा १
सुप्रसाको [सुनगस ] १ जीव्युने विन	िरीव] एक बाइएक का नाम (महानि २)।	२१)। २ संद्वापित संवयाना (मद्वा)।
देव वी माता (सम. १९१)। २ एक राज	हास पुँहित्स] प्रवार की एक ज्लम	सुम सक [स] पुनना । मुझाइ, युलेश (है ४
पत्नी (स्प. १०६ दी)।	वार्षि (पदम ४६ ११) । सन [सि]	१व: १४१) महा) । गुराज पुरुष, पुरुष
सुसद्ध वि [सुद्धान] मुख्य में निस्तवा स्वास दी	वैदान्त्र की ज्लम-मेरिस में स्मित पूर्व निदासर	(है ११४८) । संग मुखिस्याइ, गुरिस्
सके बहु (एस का के)।	भमर (इक)। "तक्त पुन ["नते] एक केन	स्थानोः सोधियत् सोस्व्यक्तिः कोच्यः,
सुबाई वि [सुजारि] नरान्त वाधिनावा	निमान (तम ११)। देवी सूर, सुरिम =	कोध्यक्तिः सोध्यक्तिः, सोध्यक्तिः, सोध्य-
बारम (महा)।	तुर, सूर्य।	स्थापः सोध्यक्तिः (ति ४३१ सीनः है
सुजान वि[सुन्न] समाना सम्बद्ध जानकार	सुकाम मि [सुद्धात] चुंबल, ध्याना पुत्र	१ (४२)। वर्ग मुखिना, मुन्या, गुम्या,
(मिरि ६१ प्रानु १६१ सुना १८)।	(वब् विव)।	मुन्या, गुलीया (१ ४ २४२) कुमा ग्या।
सुजान वि[सुन्नाव] १ सुन्वर वाहि में	सुरकुषरविस्ता पुत्र [सूर्योत्तरविसंस्क]	विषयक्ष)। वह्न मुखेत मुख्यित सुजमाण
जराध-कृतीन वालदानी (स्प ७२ दी)। २ सम्बद्धी तरहा अस्त्रल मृत्यर कर से स्थान (ठा ४ २—गव २ सोग जीव वे ४ स्वता)। वे क मृत्यर अस्य (साव)। ४ पूर्	एक देव-विभाग (इस १२)। सुरम्ह यक [शुभू ] युद्ध होगा। नुरम्ह (यहा)। एक सुनिश्वहरूप (सम्बन्धी ४)।	सुणेनाण (हेकार ४० दुर ११ २०० थि ४६१ विचार १० दुर २००१)। व्यक्त सुम्मेंत, सुब्बेत सुब्बमाण (दुर ११ १६०० २ ११० से २ १० १,४६)। संस्
एक राज-नुपार (विचा २ व)। र पुन. एक	सुत्रमंत्र वि (दशक्ताम) तुम्बता श्रेष पहता,	सुनिम सुनिक्य सुनिचा सुनेचा,
एक रेज-नियान (विचा २७१)।	मानुम होता न्याचीत वे समुख्यंतः धुर्वत	साम्म, धोठआण सोबमार्थ, सार्व
सुजाया की [सुजाता] १ कालवान सारि	एक रोति (पद्या १ ११)।	सोबा सोब सुबा (सनि ११९ वर्)
नोक्रमता की पश्यक्ति के नाम (का ४	सुरम्बनमा को [सोपना] गुबि (उप व ४)।	है ४ २४१ सि १.६२ हे ४ २६७१२
१—पत्र २ ४ इन)। २ धनाम क्रिक	सुरम्बन म [दे] १ रीप्य, वार्ष । २ वू.	रित्र, कुमा है २, ११३ सि ११४७ १४६,
नो एक कल्पे (प्रत २४)।	स्वत्र कोती (दे १६)।	१८७) । हेड्र. सीर्च (कुमा)। इ. सुग्रेयमा
सुनिद्धा को [सुन्यस्त] यह यहामती यह कुमारी वो केटरुपत में दुधे भी (भीत)। सुनुष्ति को [सुनुष्ति] नुसर दुष्टि (मुना		सीधव्य (स्वानस्य ११ — नत्र १८ छे २ १ पडा सनि १)। सम्बद्धां सुगमः।
१११)।	सुम्भाइ नि [सुन्यायिम्] शुप्र व्यात करने-	सुर्पेष पुं [सुतरुष] १ एक शर्माण (शर्मा)।
मुक्केद्वा देवा मुजिद्धा (एन)।	नाता (तंत्रीय १२)।	२ भ्यमन् शामुक्त्रव को प्रथम निकानश्रा
मुक्कासिज हि [सुनुष] चण्की वच्च देविव	सुम्माइस वि [सुन्यात] सम्बद्ध तदह विक्तित	इंदेरण (यस १४१)। १ तुंब, एक देवनीयान
(तूष १३,२ २६)। मुज्ञांसभ्य वि [मुज्ञापित] कुट्य प्रपित कम्बन् विकारिक (तूष १२,२,२६)।	(चन)।	(धम २६)। देवो सुनंद । सुजंदा ध्ये [सुनन्दा] १ प्रवदाय वार्धधम मी पुस्त धार्विका (क्रम)। २ दृशीव वक्रार्धी

मै परतानी-सोसरा सी-सन (सम १६२) महा) । ३ मृतानन्द पादि इन्हों के खोकरालों की बदयहिषियों के भाग (ठा ४ १-- पत्र २ ४० इक)। सुनक्कास दू [सुनक्षत्र] १ एक पैन पुनि (मनुर)। र मगताम् महावीर वा शिष्य एक मृति (भव १४---पन ६७८)। मुणनसत्ता भी [मुनभ्रता] पदा की दूसरी रात (मुख्य ११४)। सुनग रेनो सुलय (धाषाः वि २ ६)। मुगम न [अयम] मुनना (स १३)। सुनय ) पूंची [शुनक] १ दुसकूर कुछा (ह मुण्यद्वी १ ४२३ गा ४४ ६ व द ६६३ साया १ १—पव ६४. मा १३≈। १७३ पुर २ १ ३ ६ २ ४ मा १६ पुत्र १६६ रमा)। भी.सुत्रह, सुनिआ(हुमाः ना६वर) । २ वृद्धन्त-विशेष (भिष्) । सुणहिद्वया स्व [शुनरी] हुत्ती भाश-हुनहुर (दश्या व६)। सुनायम न [भाषम] सुनाता (विशे २४०३)। सुपाविश्व वि [माधित] मुनाया हुमा (मुपा 4 R) I मुणासीर र् [सुनासीर] एम, रेव-धव (पाधा हम्मीर १२)। सुष्पद्द देवी सुनाभ (एव)। सुत्रिभ रेखो सुत्र। सुणिम वि [सत] नुना हुसा (कुनाः रमण् सुत्यस्मि वि [ सुनपरितम् ] सन्द्रा तपस्ती मुणिअ र् [शीनिक] क्सार (सिर १ ७७)। सुणिकन स्वां सुनिवन (राम)। सुणिप्पक्षंप देवो सुनिष्पद्धंप (चत्र)। सुणिम्सिय वि [सुनिर्मित] बाद क्य से बना इप (क्य) । सुणिन्तुव वि [सुनिकृत] प्रत्यन्त स्वरन (स्थार १--पर १२)। सुजिसंद वि [मुनिश्चान्त] बच्ची वयह पुना हुमा, बहुम्मोन प्राचारनोवरे हो। मुखिसंवे मधि (प्राचा १ व १ २ २ २, २ ₹**₹ ₹**₹} i स्थासुनाय यह [ सुनसुनाय ू ] 'मुन' 'मुन'

यमाय करमा । वह. सुणुसुजार्यत (महा)।

सुण्णान [शून्य] १ निर्वत स्थान (मडब १२४) । २ नि रिक रीता बासी (स्वप्न ११ मत्रक) । ६ निष्यस्म ध्यर्प, निष्प्रयोजन (गतव ८४२: १७२) । ४ म. तप-विशेष एकारान-दव (संबोध १७)। देखा सुप्त । मुण्गञ्चार स्वो मुण्यार (दे १ १४) । ) वि [शान्यत] रूप किया सुण्यविभ रेहुमा (न ११ ४ ) यदक मा 24 248: 4 2): सुण्यार वृ [सुयणे द्वार] मुनार सोनी (रे ४, मुण्ह देखो सण्ह = मूक्स (हे १ ११६-मुज्यसिअ वि [व] स्वपन-शोव सोने की बाब्द्यवासा (दे⊏ ३१ वर्)। मुण्हा की [सास्ता] यो का मत-कम्बन्न (हे १ अर दुमा)। स्तर्वृष्टि] दूसम्, देस (दुया)। उपिय पूं [ क्षपिष्ठ] १ मगवान् श्रहपमनेव । २ महादेव (हुमा) । मुज्या हो [स्तुपा] दुवन्वपू (ए।या १ ७--पत्र ११७ सुर ४ ६८)। सुतणु को [सुननु] मारो की (मुर २ 44) i मुतरं म [सुनराम्] निवित सर्व के परिराम का मुक्क ग्रम्पय (विसे वहरे)। मुनवसिय न [मुनपसिन] नुन्दर हन हपरवर्षा का मुन्दर धनुष्ठान (राज)। (सम ११)। स्तार नि [स्तार] १ प्रतन्त निर्मेष । प्रति-राग क्रेचा । १ सम्बद्धा देखेदाला । पायुष ध्यवाजवासा (हे १ १७७)। सुतारया ) की [सुतारा] १ परवान् मुविधि-सुवास ) नानजी की शायन देवी (संवि १)। २ सुदीव की पली (पदम १ €)। ६ धानुषस्य विशेष (हुमा) । मुठिविक्स वि [सुठिविस] पुत्र हे स्थान करने योग्य (ठा ३ १---गम २६६)। मुनोसभ व [सुनाप्य] मुख से तुष्ट करने योग्य (रस ४, २ १४) । सुस पर [ सूत्रय ] बन्धना । नुसद (नुपा

२३३)।

मुत्त देवा सुभ = भूत - पक्तवमोहिमण-केवन प परोच्छ मध्युत्तं (बीवस १४१)। मुच रेखो सोच - बोतस् (मर्वि)। मुख देवो सोच = भोव (रंमाः भवि)। मुत्त वि [सुप्र] सोया, रुमित (ठा १ २— पत्र ३११, स्वप्न १ ४' प्राप्तु १८ मा २६)। मुक्त वि [मुक्त] १ गुवाद का सं वहा ह्या । २ न सुप्रायित मुक्तर वयन' मुक्तस्य मुक्त-उत्तीष (मुपा ११)। सुचन [मृत्र] पूढा पाया वस-तन्तु (विश १ ६--पत्र वर, मुपा २६१)। र माटक का प्रस्ताव (मोह्र ४६° सुपा १)। ३ शास-विरोप (भग ठा४ ४---पत्र २८३ जी ११)। आर र्रु [स्तर] प्रयम्गर (म्प्रु)। कुंड पुं किण्डो बाब्राण वित्र (पटन ४ ६४) । इंड न [इंट] हिटीय पैन मायप-६ थ (नूमनि २)। गन िं€ी यक्षोपनीत (धीप)। घार पू [धार] वेको हार (नूपा १ मोइ ४=)। प्रासियणिश्जुचि ध्ये ["स्परिकिनिर्युक्ति] सूत्र की क्याका (बल्)। दृह की "सृषि ग्राप्त-पदा (मीर्ग)। हार पूर्विभार] १ प्रवान नट नाटकका मुक्य पात्र (प्रामु १६६)। २ मुद्याद, बहाई (कम्म १ ४८) । सुचिकी [सुच्छि] धोप नॉना (हे२ १६० कुमा)। सङ्ख्यी मित्री विक्रिकेश की प्राचीन राजवाती (स्रामा १ १६--- पत्र मुच्चिक्ये [सृच्छि] गुन्दर वचन मुग्यपितः। "पश्चिमा की [प्रस्पया] एक पैन पूर्ति राचा (क्य-पू ७१ दिः राज) । सुचिय देवो सोचित्र = श्रीविक (वव १)। मुखिय वि [भृतित] सुक्तिका (राज) । स्त्य वि [सूत्य] १ स्वत्य क्यूब्स्तः। २ मुखी (धीन १२ या ४७ वा महा वेहस २६६ इप १ ३१ टी)। सुरुप न [सीरुथ्य] १ तंतुरुको स्वस्वता । २ सुचिपन (पेक्षि १२) कुम १७६) सुपा

रेटा ११टा स ११६८ उप १ रा क्योंकि

**२**२) ।

११२)।

सुविषय वेदी सुद्धिम (पुना ६६२)।

मुरिवर नि [मुस्विर] पांत्रस्य रियर, पांत-

निरुप्त (प्राक्त १६ मुपा ६४०) हुमा) ।

सुयेष वि [सुस्तोक] करवाम (पठम म,

सुर्वती की [सुर्वति] पुन्दर संत्रकानी (कर ७६५ दी) । सुरंसन १ [सुरक्षेत ] १ भक्तान् प्रत्यव 🕏 पिटाका नाव (सन १३१)। २ तीसरे बानुकेन तमा सबदेन के नर्म-द्रुव (सम १५६)। मारतवर्ष में होनेनाका पाचना करावेन (सन ११४)। ४ वरहेन्द्र के हरित-रीम्ब का चविपछि (स्राप्तः, १—पत्रः १२) । इ. एक धन्तक्रम् पूर्ति (बीठ १०)। ६ मेव पर्वत (तुष १ ६ ६ तुण्य १) । ७ एक विकास भेटी (प्रीक्र वि १६) । व देन-विटेच (छ २ ६—-पव ७१) १ विष्युका वक्र (तुषा ६१) । १ वक्नाव् मरनाव का पूर्वप्रधिय नाम । ११ मनशाल् पार्वसम्ब का पूर्वेक्सीव नाम (सम १११)। १२ दून, एक देव-विमान (देवेन्द्र १६६): १६ वि निस्तम कर्तन गुन्दर हो बहु (वि १६)। १४ व. पश्चिम स्वक पर्वत क्षा एक क्रिक्टर (स य—पष ४६६) । सुर्रसणा ध्ये [सुर्श्स्य] १ वस्त्रुवासक एक दूस जिससे बहु हीन संदूष्ट्रीय कहाता है (तन १६) पर्याहर ४—पन १६)। २ मक्शन बहाधीर नी ब्येष्ठ बॉहन का नाम (माना २ १६ ३ कम्प) । ३ वरस्य शाहि स्त्रों के कलनाव मादि नौक्याओं की एक-एक मत्रविद्यों (ठा ४ १- - वश १ ४) । ४ नाम तथा महानाव-मामक पिताचेन्द्री शी सस्मदिपियों के शाव (ठा ४ t—पत्र २ ४)। १ मयदानुद्धपत्रदेव नी दीका धिनिम (विवार १२१) । ६ वनुवे सक्तरेत नी नावा (स्य १६२) । सुर्विस्तान वि [सुर्गाक्षिण्य] वाजिवस्तावा (बम्प ११, सं ३१)। सर्चा हि [सुरभ ] की कार (पूरा Xtu) i सुपरिसण वेंद्रों सुपंक्षण (हेर १६)

सुदाम 🕻 [सुदाम] फ्लैक फ्लॉर्प्स्टी-इन्स में जरमन भारतका का दूसरा कुबकर पुस्त (स्प १६)। सुरारु न [सुरारु] तुन्दर कछ (बहर)। सुरास्त्र दें दि ] बंगम (दे व ३६)। सुबिहु वि [सुरुए] सम्यम् विश्वोदित (ब्र २२६) । सुविष्य धक [सु+दीप] व्यक्तिस्व वपक्का। वहः सुदिष्यतः (मृता ६११)। सुरीह ) वि [सुरीर्घ] परफल बान्स (पुर सरीपर र रेरेफ र १६०)। साम्रीय रि किशिको पुरोक्त ज्ञान सम्मन्ती (तुर t<sup>र २२</sup>) । इसि वि[दर्शित्] परिसाम का विचार कर कार्य करतेशका (# \$1) i सुदुष्टर वि [सुदुष्टर] वो सरम्ब दुष से किमाना धके वह स्रति प्रूरिकन (ज्य द् 24 ) 1 मुदुक्तचि [सुदुक्तार्व] पर्वत दुव हे पीविष (नूर ११)। सुवृक्तिसभ वि [सुबुक्तित] प्रत्यन्त दुःचित (सुपा≒ ४)। सुदुभावि [सुदुर्ग] यहाँ दुश्व हे दश्व किया जासके बहु (पदन ६ ४१)। सुदुवय वि [सुदुक्तमः] पुरितम से विस्ता त्याम हो यके वह, श्रहाशे वि नुबुक्तवी (मा १२)। सुदुत्तार वि [सुदुस्तार] कठिनता से विकास पार किया वासके वह (धीप, पि ३७)। सद्भार वि [सदुर्थर] यात दुःच देशो बारक किया का तके वह (बा ४१। प्रसू सुदुक्तिकार वि [सुदुर्तिकार] प्रति क्रीकाई ये जिवका निवास्य किया का सके बह (मुपा १४)। सुदुष्पिच्य वि[सुदुर्वरो] पविरूप शुक्तिक हे देवने केल्य (पुर १२ १६६) : सुदुब्भेश्च वि [सुदुर्मेर] ग्रीत रुच हे विकास भेरत हो सके वह (का २१९ हो)। सुबुम्यविभा के [दे] क्सकी के (र पस्म २ १७६३ १६ ३ पर १६४३ इत)। < ¥ ) |

सुदुबद् नि [सुदुर्कम] प्रत्यत दुर्तन (एन)। सुद्सद वि [सुदुःसद] शक्त दुव वे सङ्ग कामी योग्य (मुर ६ ११०)। सुरव रू [सुदेय] उत्तम देव (पुरा २५६) । सर पुं[शुद्र] मनुष्य भी धवम काशि चनुर्व वर्षः (विधा १ ४—यत्र ६१ प्रदेश १ ttw q t1) : सुरम र् [शुद्रक] एक राज्य का नाम (नोष् t #2 t 4) i सुदिनी (धप) की [शुद्रा] सूदनातीन से (मिन)। सुद्ध पुँ [दे] योगकः ग्वत्था (दे ८ ३३)। सब वि [शुक्त] १ मूल बञ्चन 'बरवाट् नुद्धपंचिमरतीर सेव्हर्ण बन्म ( मुर Y <sup>१</sup> १३ द्वाच ७३ वैचा ८, ६४) ३ २ ग्रीस्त। १ निर्दोप । ४ केनस, किसी से व्यक्तिपदाः १ व सेवा भूत-समका ६ सरिव मिर्चा (हे १ २६)। ७ वयातार (० दिनों के उपनाव (पंगेष १): द दे क्य-वितेष (स्व)। ीपास की [ तन्यास] कवार-वाम की एक मुच्चीना (ठा ७---पत्र १११) । वृद्ध र्द विश्वी १ भारतसर्व में होनेनाचे सीने विनदेव (तम ११४) । २ एक बनुतर-समी वैन पुनि (मनु२)। ३ एक यन्त्रार्टिंग। ४ क्तमं **प्रकेशनी एक मनुष्य-वार्धि (१७**)। पक्ता है [पश्च] कुनम क्वा (परव ६ २७)। प्पंदु [ फिसन् ] प्रधान धारता (क्य)। प्यवस नि "प्रदेश्यी पनिव भीर प्रवेश के विष् समित (क्य)। व्यवेश वि ["समबर्य] प्रविद्य तथा बेहोपित (पन): बाय र् [बाव] बाय-विशेष सन्द भवत (वी ७)। "वियह त "विदर्ध ज्यत क्व (क्य) । स्टब्स् क्षे विश्वा वर्तदायको एक गुल्क्संग्र (धाक—ात्र 1839 सुर्वेष र्र [सुराम्य] धन्त पुर (बन ४६० की दुव १४० दुम्मा १६३ इस)। सुद्धवास वि [दे] गुब-पूट, गुब बीर पवित्र ₹**4**) ( सुद्धिकी [शुद्धि] १ युद्धता क्लिलियाः र्मिक्स (बम्बच २१ / हुना) । १ स्ता,

७११) ।

(मुपा ४६८) ।

नियस (सुपा ६६३)।

(परम २६ ६२)।

सुद्रोसचित्र-सुपरम

सम्मत्त १७२ कुम्मा १)।

कुर केर (रूप्त ४४ )।

पत्र १) ।

सुरेसिक्स वि [सुद्धैपणिक] निर्वोप यहार भी क्षोज करनेवाला (परह २ १--

सदोधन वृं शिद्धोदनी बुद्धवेन के पिठा का सम । तणम पूं ["तनम] कुळ देव (सम्प १४१) । देवो सुद्धोवण । सुद्रोवित र् [रीद्रोदिन] दुवरेव (पाम)।

सुदोरण देवो सुद्धोशय । पुत्त र् [ पुत्र] सुयम्म १ [सुबर्मेन् ] १ भगवान् महावीर कापहुंबर शिष्म (कुमा) । २ एक वैन मुनि

(निपा २ ४)। १ तीसरे बसदेव के प्रद-एक कैन मृति (पद्मार २०१)। ४ एक बैन पूर्ति का सातवें बत्तदेव के पूर्व-जरूप में पुरुषे (पडन २ ११६)। ४ एक कैनावार्यः तह प्रस्त्रमंत्रवृद्धिः प्रस्त्रनुपार्मः

च बम्मरमें' (सार्व २२) । देखी सुद्दमा । सुना देवो हुन्। = मुमा (कुमा)। सुनंद र् [सुनम्द] १ मारतकर के मानी रसर्वे विनदेश के पूर्वप्रवास माम (सम ११४)। २ एक कैन मुनि (पछम २

२) । केको सुर्पाद । मुनक्सच देशो मुजबस्तच (भग १४--पव

4×43 4×4) 1

सुनविशं भी [सुनर्तिनी] प्रश्री वया पृथ्य क्लबाबी की (मुपा २८१)। भुनक्ण र् [स्तयन] १ सन सक्छ के मधीनस्य एक विद्याबर सामन्त राजा (पराम

प १३३)। २ वि युन्दर योजनवाता (पानम)। स्तिम र् [स्ताम] धमध्यम नवरी 🎙 धनापधनाम का पुत्र (कामा १ १६--पत्र

98Y) 1 सुनिष्ण व [सुनिषुण] १ ध्रस्थत सूक्त (धम ११४)। २ झति बदुर (दुर ४ 

इरागमा (बम ११४)।

सुनिक्य कि [सुनिसुप्र] प्रविक्त विविष्ठ

क्सासा हवा (सुपा ४२३)। सुनिविश्न वि [सुनिविष्ण] परिशय विष्ण (सूर १४ ५वः उत्त)। सुनिम्युड देशो सुविद्युय (४ ४०)। मुनिसाय वि [मुनिशाव] धरम्य वीक्ष (सूपा १४७)। सुनिसिम वि [सुनिशित] स्नर वेको (रह सुनिस्सं व [सुनिःशङ्क] विवर्ष शङ्का र्चीदत (पूपा १ व)।

सुनीविका की [सुनीविका] सुन्दर नीवी---वस-प्रन्यिवाली की (कुमा)। सुनेक्ता की [सुनत्रा] पांचवें वासुदेव की पटधानी (पदम २ १०६)। सुझ न [शूम्य] १ किथी (पुर १६, १४१)। २—वेको सुण्य (प्राप्तु १ : पहाः भयः बाचा सं १८/४मा)। पत्तिया ग्री पश्चिमा] एक वैव पुनि-प्रतिमन

राखा (क्य) । सुस्रवार देखो सुण्जमार (मुपा १६४- वर्मीव **१**२) : सुमार देवो सुज्यार (पुपा १६२)। सुन्दा देवो सुन्दा (वा १४- मनि)। सुप सक [सूख्] मार्जन करना, शोवन

करता । सुपद् (प्राप्त) । सुपद्द व [सुप्रविष्ठ] १ म्याय-मार्थ वें स्थित ।२ प्रतिका-दूर (कुमा १ २**०**) । ३ स्रविद्यम् प्रसिद्धः। ४ विद्यको स्थापनाः विवि

४७३) । ७ मनवान् गुराहश्तान के पिता का

पूर्वक की गई हो यह (दूसा २ ४ ) । ४ र् भगवान् महाबीर के पास दीका लेकर सुचि पालेनाचा एक पृष्ठस्य (येव १४)। ६ येय-विचा का बातकार पायवां स्ट पुस्प (विचार

विदेप (राम)। १ न. एक नक्र का नाम सुनिच्छ्य वि [सुनिद्धय] इद निर्णयवासा सुनिष्पर्कप वि [सुनिष्परकम्प ] धरपन्त

सुनिन्मड वि [ सुनिर्मेख ] प्रक्रिय विमेन सुनिरूविय वि [सुनिरूपित] सम्बद्धे वर्षः

(दुमा) ।

हमाक्को बहु (पश्चम ६४ ४६)। सुपण्य देवो सुप्पन्न (१८४) ।

सुंपन 🕽 📢 🗓

कपित (बाकारे कर ३)। प्रकायम् माधेवित (रह४१)। स्पम रेको सुप्पभ (राव)। सुपम्ह र्षु [सुपस्मम्] १ एक विक्य-क्षेत्र (ठा२ ६—पत्र क्र)।२ द्वनः एक देव-विमानु(सम १३८)। सुपरिकम्मिय वि [सुपरिकर्मित ] कुन्दर

पण २४)।

संस्कारवामा (शाया १ ७--पत्र ११६)। सुपरिक्तिय ) वि [सुपरीक्षित ] पन्नी सुपरिच्छिय । तथा जिसको परीका की पर्दे हो नह (उनः प्राप्तु १४)। सपरिणिहिय ) वि [सपरिनिष्ठिय] धन्त्री सुपरिनिद्विञ 🕽 वर्ष्य निरुष्य (राज्य मन)।

सुपरिष्कुड वि [सुपरिस्कृड] नुस्पष्ट (पडम ४१ २१)। सुपरिसंत वि [सुपरिमान्त] परिदरन पन्न ह्या (पत्रम १ १ ४३)। सुपरुष वि [सुपरुषित ] निक्ने जोर हे रोने का भारम्य किया हो वह (खादा १ १८--

विपार ६—पत्र ८८)। । सपूत्र सिनी एक देव विमान (सम १४: पद २६७)। सुपइट्रिय पि [सुप्रतिष्ठित] प्रश्ली उच्ह

नाम (पुरा ३२) । व माहरव मास का

नोकोत्तर नाम (मुज्य १ ११)। १ पात-

प्रक्रिया-प्राप्त (मन राम)। सुपकावि [सुपक] सक्की बख्द पका हुमा (प्रापृ १ २३ नाट—पुन्सः (४७)। सुपडाय वि [सुपताक] पुन्तर व्यजानाका

सुपरिषुद्ध वि [सुप्रतिषुद्ध] १ सुपर चेति संप्रतिकोषको प्राप्त (प्राप्ता १ ४, २ ३)। २ तुं एक वैन महर्षि (कम्प)।

सुपश्चित्त वि [सुपरिशृत्त ] को धन्त्री क्ष

सुपणिदिय वि [सुप्रणिदित] धुन्दर प्रस्थि मानवासा (पराह २ १--पम १२६)। संपञ्ज रे पु [सुक्ये] यहर पश्ची (नाटः हुत्र

सुपन्नतः नि [सुप्रज्ञसः ] १ सुन्दर कप से

सप्तिक वि [सुर्वावत विदेश (गुरा	सुपेसक वि [सुपेतक] परि पनोहर (उत	केन (सम. ११४)। १ माळवर्षका कामी
1XV) 1	{2, (1)	डीसरा दुसकर पुस्य (सम १११) । ४ इ.पि
	सूच्य सङ [स्वप्] सोना। मुजार (हे २,	कान्त तवा इच्छिई नामक इन्हों के एक-एक
क्षित इपा (नुग ३)।	(02)1	बोकपाब का नाम (ठा ४ १०-पन १६४४
सुपव्य दृ[सुपर्वम्] १ देव । २ न सुन्दर	सुरप पून [सूर्य] सूप आरज विरक्षी का बना	इक)। इ. पून. एक देव-विमान (देशक
वर्ष (क्रिय हर)।	एक पात्र विससे प्रश्न प्रश्लोच बाता है (स्वा	१४१) । इंदर् ["झन्द] इरिकार हवा
सुपसाद्भ वि [सुप्रसादिव] प्रन्ती वया	पणहर र—पन द)। णहनि [निस्त]	हरिसहतामक इन्हों के एक-एक बोक्साब
प्रसम्भाव (र्म्म)।	सूप के मैंने क्यानाता (शाया १ ६—पव	कानाम (ठा४ १—पन ११७)।
· · · · .	१९९)। प्रशा प्रशासी [नमा] रावस	सूर्यमा ही [सुप्रभा] १ तीवरे व्यक्ते भी
सुपसिद्धावि [सुप्रसिद्धा] यति विरूपात्रः (स्वि)।	भी वहित का नाम (प्रक्र ४२)।	माता (सम १४२)। २ वच्छा मानि दक्ति छ
सुपस्स वि [सुवर्ष] पुत्र हे देखने मोस्व (ठा	सुष्पद्द देवो सुपद्दु (एव)।	स खिके कई इन्हों के शोक्यानों की एक
¥ क्—पत्र २१का के र—पत्र २६६)।	सुष्पट्टिय देवो सुपद्दट्टिय (राज)।	एक सहमद्विपी का नाम (स्र ४ १—म
सुपहर्षु [सुपद्य] शुव्र मार्च (इनः सुपा	सुरपद्गण्या ) को सिम्मितका विशय दवक	२ ४) । ६ वनबाहन नामक विश्वावर-नरेत
104)1	सुप्पर्णता ) को [सुप्रतिका] परिष्ण प्यक सुप्पर्का । पर पर्श्यको एक विस्कृताये	की परती (पडम १, १३०)। ४ वनगर स्रवितनाच की बोधा-स्थितिक (विचार १२८)
सुपद्याय न [सुप्रभाव] माङ्गविक प्रावकातः	देनी (राजा इत्र) ।	स्य १११)।
( <b>१</b> .२ ४)।	सुप्पइचियन धौतद्वारक नझ-विशेन (भव	सुरपमूच वि [सुप्रमृत] याते प्रदुर (प्रम
सुपादम मि [सुपापक] मिठिएन पापी (उन्त	द्रपत्र १६१ स्त्रो ४ ४६)।	क्षार्थन । विश्वतियो चल प्रकेर (
(1, ty):	मुप्पंबद्ध वि [सुशक्क] यायान्त प्रयु—	सूरपसण्य ) वि [सुप्रसम्] ध्रश्नव प्रस्त-
सुवास वृ [सुवार्य] १ व्यक्तवर्व में उरुष	सीचा (ऋणू) ।	सुरंगसम ∫ पुर्क (नार—मलती १९१)
ध्रातवे सिन क्लबार्ड (तम ४३ कृष्या गुपा र)। २ म्लबार् स्थ्लनीर के पिटा ना बार्ड	सुप्पविभाजन वि [सुप्रस्थानम्ब] उनकर	মৰি)।
(ब्रा १पन ४११, विचार ४७)। १	पुस्त के किये हुए उपकार को शासनेवासा	सूच्यसार वि [सुप्रसारित] युवा है प्रधारने
एक दूसकर पूक्त का नाम (धम ११)।	(अ.४ ३पत्र४)।	पोम्य (गुवार २१)।
४ मरतवर्ष के भागी क्रीसरे क्लिक ( <b>स</b> म	सुरुपडिधार न [सुप्रतिकार] अस्त्रार ना	सुत्पसारिय वि [सुप्रधारित] पन्नी वध
१११) । १ पैरनत क्षेत्र में उत्पन्त एक जिल-	वस्या, प्रापुपकार (ठा ३ १—पत्र ११७)।	पसा <b>च हुम्म (धीप)</b> ।
देव (सम ११६) । ६ ऐरवत क्षेत्र में प्रापार्यय	सुष्पविषुद्ध देशो सुपविषुद्ध (एव) ।	मुरुपसिद्ध 🖦 मुपसिद्ध (ग्रम १९१) मि
असर्पिकी-नाम में होनेनावे बडाक्षें विनदेन	सुव्यक्तिमा वि [सुप्रतिकान] प्रच्छे तथ	11 ) )
(मस ११८) एवं ७) । ७ मास्त्रक्षीओं सावी		सुरम्भूय वि [सुप्रसृत] सम्यम् कराव (पीत)।
<b>पू</b> षरे जिनकेन का पूर्वजन्तीय न्यूस (तस	सुष्पिक्षण न [सुप्रणिमान] दुम भान	सुव्यकूष (बप) देवी सुव्यमूब (बर्व)।
(1x) (	(झ १ १—नव १२१)। सुरपनिविच केनो सुपनिविच (पण्ड २,	सुप्पादोस ई [दे] सम्बद्धपहोस (मा २७)।
सुपामा को [सुपार्का] एक वैत्र शास्त्री (छ १पत्र ४१७)।	१पत्र १ १)।	सुध्यिय वि [सुप्रिय] बस्कर विव (वर्ष ११
सुपीअ पू [सुपीव] पहोच्य का पायकी	सुप्यम रि [सुप्रज्ञ] कुनर मुद्रिकामा (पूप	द युवा ४६६)।
<b>पुरुते</b> (सम ११)।	( 4 44) i	सुप्परिस 🖦 सुपुरिस (रक्त २४)।
सुपुरत हैन [सुपुत्त] एक देव-दिमान (सम		सुफाणि और [सुफाणि] क्यिमें तक धार्वि
२२)।	(देवेचर १३६ एवं (६४)।	हरामा जान ऐसा ब्युना धारि पान (पूर्व <sup>१</sup>
सुपुंड र्नुन [सुपुच्डू] एक देव-दिमान (बा		¥ ₹ ₹ ) i
१९)। १९)।	धनेनाती एक दिश्वसाधि देनी (झ. ४—पत्र	सुर्वपुर्व [सुरम्य] १ वृत्तरे वर्तात क
4 ) i 27. s Is [27.4] de cestrais (as	र १६७ (क)। सुष्यम ( सुष्यम ) वर्तमान सववविश्वीनस्त	पूर्वपन्धीय माम (सम. १६६) । २ मास्त्रवर्ग
सुपुरिस ई [सुनुक्व] काका साह पुर	र मिं सराय चनुनै कतरेन (यम ७१)। १	का नानी प्रसानी तुमकर (प्रम ११३)।
(\$ 2 ( x) ass xid s)!	मानामी बर्ल्यावसी में देनवाना बीवा क्य	. मुक्तंस पूर्व [सुज्ञासन् ] एक देव-विस्तर्थ (सम. १९)।
		(4.114)

२४ ) ।

(प<u>.</u> १८) ।

सुर्वमण र् [सुत्राद्यण] प्ररास्त वित्र (पि

सुबद्ध वि [सुबद्ध] सब्दी तरह बैंबा हुमा

सुबद्ध (सुबद्ध) १ सोम-बंद का एक प्रवा

**क्ल्पी**य नाम (पठम २ १**६**)।

(पटम ४, ११) । २ पहची बल देव का पूर्व-

सुबक्किट्र वि [सुबक्किप्ट] धविराम बसवान्

सुबहु वि [सुबहु] सदि प्रमुख (छव)। सुबहुत वि [सुबहुत्त कार देवो (बप्पू)। सुबाहु पुं [सुबाहु] १ एक राज-कुमार (विपा २ १ — पद१३)। २ इसी इस्तमसाज की एक कन्या (छाया १, ५—पत्र १४)। सुतृद्धिको [सुतृद्धि] १ मुन्दर प्रका (बा १४) । १ र्षु धम-प्रताभक्त के साव दीका वैनेनकाएक राजा (पतम = १ ३)।३ एक मन्त्री (मश्रा) । सुम्म वि [ग्रुप्त] १ स्टेब, चेत (गुपा १ १)। रेक् एक प्रकार की चौंची (राम ७४)। सुष्म न [शीभूय] एडेबी चेतता (संबोध ₹**₹**) i सुविम पु [सुरमि] १ सुबन्य बुराबू (सम ४१ भन खाया १ १९)। २ वि. सुक्ली दुनम्बुक्त (उस १६ २०- माना १ ६ रे ३)। ३ मनोहर, मनोज मुन्दर (ए।मा १ १२--पत्र १७४)। सुविभवता न [सुभिष्य] मुकास (पुरा 124) 1 मुष्मु भै [सुम्रू] बारी महिला (रंग)। सुम 🖠 [शुम्म] १ भनवान् पार्धवाव का प्रवर्म क्षाचर (स ६--यम ४२६ सम १३)। रेम्परम् नमिनायका प्रमंग पण्डर (सर ११२)। १ एक द्वरूर्त (पदम १७ ८२)। ४ व. चम-कमें का एक मेद (सम ६७- कम्म १२६)। प्रमेक्ट, कम्यासाः ६ वि मंत्रस-बनक मोनसिक प्रशस्त (कम्प मग <sup>कुम्ब १</sup> ४२७ ४३)। घोस दूं [\*घोप] मपराम् पारबेनाम का दिलीय परामर (सम ११)। शुक्स वृ [१तुमुसैन् ] यक्क वंद का एक राजा (पत्रम ४, २६२) । देखी सुद्र = गुम।

सुर्भेकर व[शुर्भेकर] वस्स नामक बोकान्तिक देवों का वियान (राज) । देवो सुद्देकर | सुभग वि [सुभग] १ पानव-वनक (क्रप)। २ सोमान्य-पुष्ठ बक्रम बन-प्रिय (गुरुव २)। ६ म. पष-मिरोप (मूम २ ३ १०० राय बरे)। ४ इस्में विशेष (सम ६७ वस्स १ २६) १ धर्मसं ६२ छै)। सुमगा 🛍 [मुभगा] १ मठा-विधेप (पएए) १—पत्र ३३)। २ मुक्य नामक भूतेन्द्र की एक पटरानी (ठा४ १—पव २ ४ सामा २---पत्र २११ इक)। सुमागा वि [सुभाग्य] भाग्य-गाली जिसका माग्य मण्या हो वह (उद १ ६१ दी)। सुभड देवी सुद्द (गट---मत्त्वती ११८) । सुमणिय वि [सुमणित] क्वन-कुरुस (उप)। सुमद् वृं [सुभद्र] १ इस्ताङ्ग-वंश का एक रावा (परम २० १३६) । र दूसरे वामुदेव हमा बसदेन कं वर्म-पुष (सम १४३)। १ तुन, एक देन-विमान (देवेना १४१)। ४ ४ समर-निरोप (उप १ वर्ष दी)। सुभद्दा की [सुभद्रा] १ दूसरे बनदेव की माता (सम १६२) । २ प्रथम इधेन्सल मस्तः वक्रकर्ती की बाय-महियी (सम १४२)। १ वति नामक इन्द्र के सोम मादि वार्धे सोस-। पाको की एक-एक धरमहिपी का नाम (ठा ४ १---पत्र २ ४)। ४ मूतलस्य सावि इन्हों के कामबास भागक सोकपास की एक-एक सब-महियौ का शाम (ठा ४ र—पत्र २ ४) । १ प्रतिमा-विद्येष एक वत (ठा४ १—पत्र २४)। ६ एम के माई मछा की पानी (पदम २४, १३६) । ७ राजा की एक की क्षी (सीप)। व राजा बेखिक की एक क्षी (संत २३)। १. एक सत्तीकी (पक्षि)। १ एक सार्ववाद-पत्नी (विया १२---पत्र २२)। ११ बस्तुबुध-विशेष जिसके यह शीप जेंबू होप कहसाता है (६६)। सुभय देखो सुमग (मन १२ ६—नत्र मुभरिय वि [मुभूत] मन्त्रो तथा मण हुमा धरपुद, वरिपूर्ण (उन) । मुभा भी [शुभा] १ वैदोवन वसीन्त्र वी एक

सप्त-महिपी (ठा४०१—पद ३ २)। २

एक विजय-क्षेत्र (ठा२ ३ — पत्र द )। ३ रावल की एक परनी (परम ७४ ११)। सुमासिय रेवो सुशासिय (उत्त २ % १ बस १ १७)। सुवासिर दि [सुभाषितः ] सुन्दर कोवने-भारता। इसी. रा(मुपा ४१००)। सुभिक्स रेवो सुविभक्स (उनः सार्थ १६)। मुसिब पू [सुसूत्य] पञ्चा मौकर (पुपा 44x; & 4 44x) 1 समाम वि[सुमीम] पवि पर्यंकर (पुर 🛡 सुधीसण पु [सुधीपम ] यवस का एक स्मट (पदम १६ ६१)। सम्म र् [समून] १ माध्यवर्ष में अराह्म बाठवां चक्रमचीं चना (ठा १ ४---पन **११)। २ घारतवर्ष के भावी दूसरा कुसकर** पुरुष (सम १४३)। भगवान् समरतान का प्रथम बावक (विचार १७०)। सुनुसण दु[सुनूपण] विभोद्यका एक पुष (पत्रम ६७ १६)। सुभागा भी [सुभोगा] धर्मोनोड में छूते बाली एक विश्वद्वमाधी देवी (ठा ८---पव 480 EE) I सुभोयण न [सुभोखन] इत विशेष एकाशन तप (संयोग ४८)। सुम न [सुम] पुष्प थ्रुव (सम्मत्त १६१)। सर र् किर कामध्व (रमा)। सुसङ् पू [सुमति] १ पंचरा जित मनवात् (नम ४३)। २ ऐख्व धेव में होनेवाला दसर्वा कुलकर पूरन (बन ११६)। ३ एक वैन ज्यासक (महानि ४)। ४ वि शुन कृति बासा (परह)। १ वूं एक नैमित्तिक विज्ञान् (नुदर्श १३२)। सुमंगल र् [सुमङ्गस्ड] ऐरात वर्ष में होने बाबे प्रथम जिन्हेंब (सम. १६४)। मुध्यक्त स्मै [मुनङ्गला] १ भगवान् ऋषक

देव की एक पत्नी (प्रस्त ३ १११)। २

मूर्वेबेरीय राजा विजयतावर की परनी (पडन

मुमगा 🖠 [ सुमार्ग ] मध्या चरवा (नुता

थ, ६२) ।

सुमण (वृ[सुमनस ] १६ म इस सुमणस ) (हे र १२ पुन बर)। २ पू रेप भूर (मुरा वदः १३४) । १ ति युन्दर मनवासा, सम्बन् (सूपा ११४) पटन ११, १३ ३७७ १७३ रस्त ३)। ४ हर्पेशन्, मलिक पुढो (ठा३ २—पद १३)। १ पूर, एक देव-विमान (देवेन्त्र १६६)। भदंद्र[भद्र] १ मन्तान् म्यानोर के पास केवा लेकर पुण्डि पाने वाला एक भृहत्त्व (येन १०) । २ यार्व संमृतिनिक्य के एक रिक्स, एक कैव बुनि (कप्प)। मुमणसा 🛍 [सुमनस ] रक्की-विशेष (पस्य १—पद ३३)। सुमणा को सिमनस ी १ भकान करणभ की प्रवस्तिका (सन १६२) पन १)। २ मुधानन यार एवं र एक-एक सोक्यास की एक-९क भड़-जिम्पीका शाम (स्र**४** १—- पत्र २ ४) । १ एका थेखिक की एक नस्थै (येत १३)। ४ एक कम् दुराका नान (इक्)। १ श्रुक्त विद्यानायक स्त्रास्त्री सी एक सम्पन्ती (इक्)। ६ नावतो स्म पूज (सप्न ६१)। सुमयो देवो सुमज (दप पू १०)। सुमजाहर वि [ सुमनाहर ] बरक्त क्तेक्र (सर्हे)। सुमर वड [स्यू] बार करना । नुमरद (हे ४ **७४)। मॉर्व नृत**रिस्मीछ (पि इ.३२)। क्ष्में नुगरिसह (हे ४ ४२६ ति १३७)। **बक्र.** सुमस्त (बुर ६ ६८ वृता ४ पत्रम ७ ११)। बम्ब्र मुमरिक्षेत (परम ४ रंबर वार-नावती ११ )। वंड सुमरिअ सुमरिक्रण (दुवा काव)। देव सुबरम, सुमारखय (वि १६३३ ६७ )। 环 सुमरियम्ब सुभरेयस्य सुमरस्यीभ (नुषा ११३ १ २ २१७- धनि १२ )। सुमर र् [स्मर] कानदेव (शार—केव १) । सुम्बरण ध्येत [स्मरण] बाद, स्कृति (दुवा, हे ४ ४१६ वन आतः नुसा करा १३१ १६० म ११४)। ध्रे जा (द ६० नुगा २२ ) । सुमधः १६ [स्मास्य] बाद दिवाना । वर मुमयवंत्र (१४ १६)

सुमरायिय वि [स्मारित] सन करास हम (बुर १४ ४वा २४१)। समरिख देशो सुमर =स्यू । सुमरिज्ञ दि [स्मृत] बाव किया हुमा (पाप)। सुमस्या हो [सुनस्त् ] प्रवान महाबीर के पाइ की बा देकर पुष्टि पनिवासी राजा में एक भी एक पत्नी (श्रंत २१)। मुमहर वि [सुप्रपुर] यदि मधुर (विपा १ ७—व्द **७७**)। सुमाणस वि [सुमानस] प्रशस्य मनवावा धम्ब (परम १ २ २७)। सुमाणुस र् [सुमानुप] एक्ट, ब्रुप क्टूब्य (भूषा २६१) । सुमास्त्रि र् सुमास्त्रित् एक एक प्रमार (पक्य ६ २२ )। सुमिय पूर्व [स्वय्न] १ स्वय्न स्थला (हे १ ४६। कुमा महाः यक्ति मुर ३ दश ६७) । २ स्रप्त के फन को बठतानैवासा सुद्रक्ष (सम्बद्ध)। पाइय दि विराहको सम्ब कं प्रश्न बदानेश है शाहाँ का बालकार (लाया १ १---वत्र २)। देखी सुवेज । सुमित्त र्षु [सुमित्र] १ भवतभ् पुनिनृक्त-स्त्रामी का पिठा---एक राजा (सम १११)। २ वितीय चक्रमर्सीका निता (यम ११२)। ६ भनुनै सबदेव 🕏 पूर्व भन्य 🖘 नाम (परम २ ११)। ४ एक्ट वसदेव के वर्गपुर --एक फैन पुनि (पडवर २४) । १ एक विक्तिक का नाम (उप ७२० थे) । ६ सच्चा मित्रः सुमित्ताव्य निखदम्मो (तुपा २३४)। मल्यान् इप्रनिवतायको प्रदत्र भिद्या देने गाँवे एक मृद्रस्य का बाम (गम १११) । मुनिचाधी [सुनिया] वस्त्रण रीमज्ञा धीर राजा बर्धरम नी युंड प्रश्नी (पढ्य १४ s) तप्रव र्द [तन्य] बरश्क (न ४ **(%, (\* )**(3)) मुर्माच 🛊 [सीमियि] तूमिश रा प्र--सस्त्रह (गाम 🗚 रेर)। सुमुद्दय वि [सुमुद्दित] वरि दृष्टित (की)। मुमुत्रा केवा मुमुद्दी (निक) । मुमुणि अपि [सुद्धाः] घण्टी तथः बला [मः (रुत २ २)।

सुमुद्द पुर्दिसुस्त्र] १ प्रवदान् भेनिवाव 🖲 🤉 रीमा देकर पुष्टि पशेवासा एक ए<del>क प</del>्र (संत ३) । २ रा<del>जस-वंत</del> का एक सन्धः। <del>र्यका</del>-पति (पत्रम १ २६१)। ६ न. थ विशेष (धवि २)। समुद्दी की [समुद्दी] क्षम्ब-विकेष (रिव) सुमेपा थे [सुमेपा] अर्थ तोक में युनेन एक विस्कृमारी बेनी (क्ष ब---गब ४३०) समेरु पुंसिमेरी येव-पर्वेट (पाक प **₩₹, ₹**<) | सुनेहा देवो सुनेभा (६५)। सुनेहा भी [सुनेधा] मुन्दर दुवि (प 124) 1 सुम्मंत रेको सुण = मु । सुमद् र् व [सुद्ध] देश-विशेष (हे २. ४४ सर दृसिरी १ देन देवता (प्रया€ ४ पत्र ६८ कव्यः जी ३३३ कुमा)। २ रामाकानाम (उप ७६४)। अग [पत] सम्बन्धन (सं १ १)। अन [सरु कर पूत्र (नार) । करवि िंडरिटम् देखनल हाचे (मुपा १०१ क्रीर पु क्रिसिया बहायन (नुपा रहा ≰मि पू [इस्मिम्] बही(दुन र ं कुमर १ [डुआर] मननम् नानुसूध धावन-यथ (पर २६)। हुसुम न[ इसु क्षचंद्र, बींच (वि १४)। शव दू ["ग श्रम्बद्धानी ऐरावास (पाय- के २ <sup>१३</sup> "गिरिय "गिरि मेर वर्षत (गुग ३१:३१४: छए)। तह देशो पर **७६० थे) । सुद्दृृ [\*सुद्द**] १ **११**र (शायाः सूता १७१) । २ नास्तिक वर्ष प्रवर्तक एक ब्राचार्य (मोह ११)। । पूर्विपेष] कोट-विशेष सम्बद्ध (स १ ६ — परंदद याय) । परंग पि १ देर-पश्चिर (<u>दूस</u> ४) । २ देव-रि (छछ)। चनुक्री [यम्] धेर-(नुषा ८१)। याय पु ["पाप] । क्नूप (वा ५०% व दा नूस ११४ अञ्चन [आञ्ज] स्वयाद्य (धर)। ' ध्ये ["नवंर] बेबा नदी (पाद)। वार्ष [नाथ] रण (स बद्ध है)। वर्षी

कुम्मा १४) । ४ पून एक देव-विमान

क्षी "तर्राक्कियी देशानदी (सए)। उद् रेको अन्त (बए) । टामपु ["त्राम] क्षकपुर सुसतान (ती ११)। दास्तन ["बारु] देवदार की सकतो (स ६ ३)। र्षसी की ["प्यंसिनी] विद्या विशेष (पडम १६०) । घणु, घणुद्द न [ भनुप् ] श्य-बनुव (दुमा छए) । नइ देशो गई (धू ७३)। नाह देखो जाइ (एए)। पहु पू ["प्रमु] इन्द्र, देव-राज (पुपा ४ २ चप १८२ क्षेत्र एक)। पुर न ["पुर] रेन पुरो धमरावता स्वयं (पठम १ १ सछ)। पुरी क्षे ["पुरी] बही वर्ष (पाम हुमा)। ैप्पिश्र पुंधियी एक क्या (संत)। यंदी क्ये ["बन्दा] देवी देव-की (से स्, ४)। सबज म "भवन देव-प्राप्ताद (मफ थ**छ) । मंति वृ ["मान्त्रम्] शहर**गठि (पुपा १२६)। संदिर न ["मन्दिर] १ **ऐ**इरा मन्दिर (कुम ४)। २ देश-विमान (भ्रष्त) । मुणि पुं["मुनि] नारव मुनि (मबम १ 🗷) । रसप्प न [ैरसप्त] यवस का एक बधीवा (पठम ४६, १७)। राम पूर्विका इन्द्र (मुना ४४ सिरि रे४)। रिउ पू ["रिपु] देख धनव (गप)। स्रोध पू िस्तर्भ (महा)। स्पेद्य वि ["ग्रीकित] स्वर्गीय (पुण्क ररद)। स्रोग देखी स्रोध (पटन ४२ रेद)। यह दृष्टिपति] १ इना देव-यम (समामुग४४ ४८) इट ४२)।२ स्त्र नामक एक विद्यावर-नरेश (पदन क २७)। वण्य पून [\*वर्ण] एक देव विमान (सम १)। सभू देखो तत्रु (नि ६८०)। यभाक्षी (पर्ली) पुनाग कुछ (पाम)। पर 🛊 ["वर] प्रतम देव (भव)। वरित्र र्दे[परन्द्र] इन्द्र देव-राज (भा ७)। वह की विभू देश हुना, देश (कुमा)। बारण वृ [ बारण ] ऐरावस इस्ती (बन रे११ दी)। संगीय न ["संगीत] ननर पिरोप (परम ६ १६) । सरि की [सिरिन्] समीरनी यद्वा नवी (पडड भ द १६, मुता १३: २८१) । सिहरि हैं [किस्परिम्] मेर परंत (एए)। सुंदर र् [सुन्तर] रमचळवाच-वयर का एक ।

विद्यावर-नरेश (प्रवम व ४१)। सुंद्री की ["सुन्दरी] १ देव-वयु बवाह्नवा (पूर ११ ११६८ मुपा२ )। २ एक राक-पुरी (सुर १० १४३)। ३ एक सक्कुमारी (धिर १३)। "सुर्वा की ["सुरमि] काम-भेतु (रमण १३) । सेंख दु [शीख] मेर-परंत (नुपा १३)। इधि पु दिस्तिन् ऐरावस्त हामी (सं ६ ६) । उद्वर्ष ["सुघ] बज्र (साध) । दिव पु ["स्व] एक भावक का नाम (उना)। दिवी की [गुर्वा] पश्चिम स्वक पर खुनेवासी एक विधा-मुमारी देवी (ठा द---पत्र ४३६ इक)। ारि पू ["रि] चलस्वेश का एक चनाः एक लंबा-पवि (पत्रम ६, २६२) । स्त्रम पुन ["किय] स्वयं (पाम्र पुमः १६८ मुपा १६१) । । विराय द्रं ["विराज] इन्द्र (**३**प १४२ हो)। हिंद दुं [विष] श्त्र (से १४, ४६) । हिस्स्य [ किपिट बही (मुपा ४१) । सुरा हो [सुर्रात] मुख (पर्या १ ४—पत्र **(**□) 1 मुख्य वि [सुरचित] यचकी तक विका ह्मा (पर्सा १ ४--पत्र ६८)। सुरंगमा को [सुराहाना] देव-वद् (मुपा २४१)। सुरंगा भी ["सुरहा] मुरंग वमीन के धीवर का मार्म (डा दू २वः महाः मुपा ४६४) । मुर्रित पूंची [व] कुन्निरोप शिपू कुच सर्ध्यनाकामास्र (रेट,३०)। मुरबंह दूं [व] बक्छ देवता (दे ४, ११) । सुरह र् व [सुष्पू ] एक भारतीय देत को धानकस काठियांगाड़ के नाम से प्रसिद्ध है (सामा १ १६ -- पत्र २ का है २, ६४४ क्षिप २२)। सुरणुषर वि [स्पतुषर] नृष थे करने योग्य (ठा ४, १--पत्र २१६)। सुरत रे देवो सुरय (प्रम १६ ८ ३ सीघ मुंख र शमा १२)। सुरीभ पूर्वी [सुरीभ] । वस्त्व ऋतुः। २ बी मी, देमां (दुस्मा १४) । १ वि नुसन्द-पुष्ट गुर्वकी (सम ६ ३ मा वर्ष कम्पाः)

(रेक्टर १४ )। र्गम वि [<sup>\*</sup>गम] युक्ती (धापा) । पुर म ["पुर] मयर-विशेष (सव)। देशो सुरहि । सुरमणीअ वि [सुरमणीय] घट्यन्त मनोहर (सुर ३ ११२)। मुरम्म वि [मुरम्य] उत्तर देवो (घीप) । सुरय न [सुरत] मैपून धी-वंजीय (मुर १३ २ या १३६, काप्र ११६)। सुरवण न [सुरत्न] पुनरर एल (नुना १२७)। सुयरणा 🛍 [मुरपना] पुनर रपना (मुरा **₹**₹) : सुरस वि [सुरस] १ पृथ्यर रखनावा (ग्राचा t t२—पत्र t७४)। २ न⊾तूस किरोप (दे १ १४)। छ्या की ["छउा] तुननी-मवा (दे ४, १४) । मुरमुर १ [मुरमुर] व्यक्तिक्केव चुर नूर धावान (धोप २०१)। सुरसुर मक [सुरसुराय ] 'नुर नूर' धानाव करमा । वहः सुरसुरंत (ना ७४)। सुरह सक [सुरमय ] मुपन्तित करना । मुख्देर (दुनार प्रानृ ६) । सुरह पुन [सीरम] मुन्तर एन नृश्यू. 'गबोम्बद्ध पुरहो मालईह मझर्स पुरा विद्याचा (भव १२१)। सुरक्ष दे [सुरक] साकेटपुर का एक राजा (महा)। सुर्वा पूर्व [सुर्वभ] १ वर्षत ऋतु (रमा पाम, कप्पू)। २ वैत्र मास (सा १) ३ व वृक्ष-विशेष राज्य वृक्ष्य (माचा २ १ व अको नी वैया (ध्यस्य १३) वर्माव ६४, पास प्रानु १६०)। इ. न नाम-कर्न का एक मेर-जिसक उत्तय संप्राप्ती के हरी ह में मुक्क अध्यव होती है (कम्म १ ४१) । ६ वि गुमन्य-पुष्ठ (उदाः हुमा, या ६१७ वस्य कुर ६ वर्धा १ १ १४४)। हेवो मुर्धम । सुरा की [सुरा] महिरा चक (क्या)। (स पुं [रस] पमुद्र-विशेष (धीव)। मुर्दि ई [मुरन्द्र] १ रतः के स्वामी (मुर २ ११३। यस्य तुपा ४४)। २ एक

सुमणः १ न [सुभनसः ] १६ व 🗫

समणस ) (हे र देश सुर्ग ६६)। १ ई

देशा बेक्ट प्रदि पानेनामा एक एक गयार

देव तुर (तुपाब६) ३३४)। ३ वि सुन्दर मतदावा संवात (मूपा ११४) पटम ११ १६ ३७७ १७) स्वत् १)। ४ हर्षेत्रत् मानमित नुसी (सा १ २—पत्र ११)। १ पुन, एक देन-विभान (देवेन्द्र १६६)। सद प्रिता र भ्रम्यान गहायोर के पास क्षेत्रा बेकर पुष्टि पाने वाला एक पुक्रम (संत १०)। २ सामै संपृतिकिया के एक रिष्म एक कैन मृति (कम)। समजना की [समनन ] रक्की-विकेष (पएछ १--पत्र ११)। सुसया हो [सुमनस ] १ मन्त्रम् कडम की बक्स रिक्या (सम १६२) पत्र हो। १ मुश्रानन्द थादि स्त्रॉ के एक-एक बोक्यान शी ए<del>क-एक शक्त-मदि</del>ष्येका शास (ठा४ १--पत्र १ ४)। १ सना श्रीतक हो एक पत्ती (संत २३)। ४ एक अस्यूक्टका नाम (इक)। १ शक्की पद्मा नामक स्वासी में एक राजवानी (इक् )। ६ भासकी का पुन्न (स्तव्य ६१)। सुमयो केवी सुमण (इप पूरे)। सुमयोद्द वि [ सुमनाहर ] फल्क मध्यहर (क्यप्रक्ष)। सुभर वड [स्यू] सन करना । नुमरह (ह v +v)। वाच सुमरिस्समि (पि दरश)। कर्म पुरक्षिक (दे ४ ४२६, पि १६७)। **यक,** सुमरेश (शुर **१ ६८ श**ुना ४ परम 💌 १६)। समझ. सुमरिखांद (परम र, १ र, ध्वर-पायती ११ )। येष्ट सुमरिक सुमरिकत्य (दुमा काव)। हेक मुमरेषं मुनारखप (नि ४६३) ३७ )। सुमरिक्च समरेषक समरणीथ (सुना ११३ १०२ २१७- ग्राजि १२ ) । सुमर पुं[स्मर] कामदेव (नाट—केत १)। सुमरण श्रेष (स्मरण) यात स्मृष्टि (बूमा \$ x x 54 e2 xus \$24 +15 fx 5 १६७ न ११४)। बी जा(इ.६०; दुषा २२)। मुमराव वक [स्मारय] नाव विकास । वह. मुमराबेर (हुव १६) ।

सुमुद्ध 🛊 [सुमुद्धा | १ धवनान् नेविनान के पाव समराविय वि [स्तारित] याद करावा हुमा | (बुर १४ ४४) । समरिष रेवो समर=स्म । सुमरिश्र वि स्मृत् । यह विमा हुमा (पाम)। समस्या 🛍 सिमस्त 🕽 भवान् शहावीर के नाथ कीवा केवर पुष्टि नानेवाची एका थ सिक की एक मध्यी (बंद २१)। सुमदुर वि [सुमधुर] धवि मदुर (विपा १ च—पद्र ७७) i समायस वि सिमानस्य प्रस्ता मनवाया सम्म (परम १ २ २७)। सुमाञ्जूस र् [सुमानुष] ध्यन, बत्तव मनुष्य (धुपा २३६)। सुमास्त्रि र् [सुमास्त्रिम्] एक राज-द्रमार (तक्य ६ २२)। सुभिय पुरु [स्वप्न] १ स्वप्न क्ष्मा (दे १ ४६ दुनाः मञ्चापिः सुर ३ ६१; १७)। २ स्वयं के प्रत को बदबानैवासा श्राह (स्टन ४१) । पाइय वि [<sup>4</sup>पाठक] स्वय्व छन क्वलेनाने शाझों का बातकार (द्यापा ११ — पत्र २) । देखी संदेखा । सुमित्र र्पुसित्री १ मल्बन् मृतिद्दन स्वामी का रिद्या-एक एका (सम १६१)। २ क्रिक्रीय चक्क्कर्तीका शिक्ता (समा १६२)। ३ क्लूबें बतदेन के पूर्व कम्म का नाम (पडम २ (१) । ४ छठवें बतदेव के धर्मद्रव --एक फैन पुनि (पडम २ २ ४) । ४ एक वरिक का नाव (उप ७२ थै)। ६ घरम् मिक सुमितान विख्यमाँ (युरा ११४)। भन्तान् रान्तितान को प्रवस मिद्रा देनेवादै एक पृक्षक का नाम (छम १६१)। सुभिचाको [सुमित्रा] वश्नल की महा भीर राजा बहारन की एक प्रति (प्रज्ञम २३ ४) । तथय वृ[तसय] सम्बद्ध (से ४ \$X \$Y \$3) 1 सुर्मिच 🐧 [सौमित्रि] मुभवाका पुत्र— बस्स्य (पत्रम ४३ ११)। सुगुइय नि (सुमुद्दित) प्रक्षि-इन्दित (धीप) :

सुमुद्धी देवो सुमुद्धी (पिन) ।

इया (नुपा २०२) ।

सम्बिभ विस्कृति । सम्बद्धे उपा कता

(पंत ३)। २ रायस-नंत का एक राजा, एक चंका-पति (पठम ४, २३१) : १ व इस्य-विदेप (धवि २ )। समृही की [समृत्ती] धन्द-निवेत (र्तिन)। सुमेपा श्रे [सुमेपा] उन्हें बोड़ में खनेवादी एक दिस्क्रमाधे देशी (ठा य—गद ४३७)। समेरु व [समेरु] मद-वर्षा (पाप-पान wx ac): सुमेहा क्या सुमेषा (६५)। सुनेहा की [सुमेथा] दुन्दर दुवि (प्राष्ट ₹**₹**=) | सुम्मंद देवी सुप = पु । सम्बर्ध व सिद्या देश-विशेष (हे २ ४४) । सर प्रसिरी १ केन वेनता (नग्रा १ ४— पद ६० कप्पा भी ३३। कुना)। २ एक रावाकाबाम (३५ ७१३)। अजब िंधनी <del>नव्यत-प्र</del>विद्य ६)। अउ [तरु] क्षम्प कृष्य (नाट) । करवि 🖠 िकाटिन् ] ऐपलक्ष इत्यो (पूरा १७६) । करि वृ किरिन् विशेषमें (बुधा १८१)। इसि पू [इस्भिन्] शह (सूप २ १)। **"इ**मर पू ["इमार] मन्तात् शतुपुरुव स रायन-पद (पर २६)। इसुम ग[इसुम] नवंद बॉन (पि १४)। शब दू [गब] इन्<del>ब इ</del>स्टी: पैरावक्क (प्रमा के २ २२)। गिरि पू "गिरि] मेब पर्वत (पुपा रे ११। ११४ छन्।। ताहरूनो पर (दर ७६= थे) । गुरु पु [गुरु] र शास्त्रीर (प्रधासुपा १७३) । २ व्यक्तिक नद स अवर्तेक एक ब्याचार्ज (सेक्षु ११) । सोव पू विरोप] सेठ-विरोप स्ताने (बान १ ६— वन १६ काव)। यर व िग्रस्टी १ देव-मन्दर (कुत्र v) । २ देव-दिनान (धरा)। "पमृता [ नमृ] केन्देरा (नुधारक)। विवास वृ विभागी स्त्र-ः नुपा १२४)।

ৰপুৰ (বা ५২%)

बास र [बास] श्वास (धार)। वर्ष

क्ये विक्षी देश क्या (काम)। अमा प्र

[नाम] एक (ग ६४ वे)। दर्गगि<sup>न</sup>

१--पत्र ३२ इक)।

4 24)1

1 (203 803)

তত্তে নিতাতি (३४)।

सुविकसाय वि [सुविक्यात] पुत्रविद्ध (पुर

सुविगा की [सुविदा, गुरी] मैंग (उर

सुविज्ञा की [सुविधा] उत्तम विद्या (प्रामू

स्विज्ञ देवो स्मिज् (मुद्द १ १ महा)

वातकार (सर्व दृश्ध मुर १० ६८)।

मुक्षिणह दि [मुचिनष्ट] विवर्षन नष्ट (या

मुविणिविद्यय वि [मुविनिमिव] धन्धी

मुविणिस्मिय वि [ मुविनिर्मित ] प्रन्धी

तरह बनाया हुया (खाया १ १---पत्र १२)।

मुविजीय वि [सुविनीत] १ घठिएम दूर

क्या ह्या (उत्त १ ४०)। २ मस्यन्त

दिनय-पुक्त (दस ६, २ ६)।

(स्रविष प्रामु १२ दः इ.६ दः)।

मुविधि देवा मुर्विद् (सम ४३) ।

2 82 22 1) 1

785) 1

घम)।

रमा)। स्तुति [द्व]स्पन-शक्षा

(इम १)। इमार इं व्यार प्रमार मननपति

देनों की एक जाति (मप सन का)।

कुलप्यशय वे [फुळ्मपाठ] एक हर

न्यां से मुक्लं दूजा नदी महती है (दार

रे—का ७२)। सार पूं["द्यर] सानी

(शामा १ व-पत्र १४ ज्य पुरुष)।

सृदिया की [ यूथिका ] तता-किरोप

(परस १७--पत्र ६२१)। यार देखा

ैगार (मुना १६१)। देको सुवण्य =

सुपन्न वि [सीयर्ज] स्रोने का बना हुसा

सुवनाङ्गा की [दे] रदान करने का

सुकप्प पू [सुबद्र] एक विजय-धेव (ठा २,

सुषयण व [सुषयन] पुन्दर वचन (भव)।

मुष्ट } (धप) वेको सुमर । पुत्रसः, सुर्वेसी

सुवास (व [सुवात] एक देव-विमान (सम

मुनास पु [सुवर्ष] १ मुखर बृष्टि (जा

मुपासभा देशो सुवासिणी (वर्गव १२३)।

मुपासय र् [मुपासय] एक सक-दुमार

सुपासिका 🖈 [ यु सुपासिनी ] विश्वका

मुपाहा प [स्वाहा] देवता को हवित माहि

पाल का मुक्क प्रध्यय (ब्रिट ११७)।

सुविभाजका वि [सुक्यजित] विशेष क्य

पति बोनित हो वह स्रो (सिरि १२६)।

बर्भरे) । २ सन्द-विशेष (जिन) ।

पान-पोटा धारि (इप्र १४ ) ।

नुवस् ।

(इम ४)।

1-48 c ) i

सुंगर (भाग वि रहेंश)।

भुगद्व वेषो सुपद्व (प्रापः) ।

(FITT 2, 1) I

मृथिर वि स्थित् हो स्थपन सोस सोने भी धादतवाता (घोषमा १३३ वे स १८)। मुविरइव वि [मुविरिषत] प्रष्यी हस् पटित मुर्पाटत (उसा २ ६) । मुपराइय वि [मुपिराजित] पुराधित (明日 2 (4)) 1 सुविराहिय ति [सुविराधित] परित्रव विश्वपित (इव)। मुविद्यस वि [सुविद्यस] बुन्दर विद्यासगा (45 年 7月) | मुर्विवश्य वि [मुन्वर्वाचत] सम्बन् विज्ञीबत (उन) । मुम्बिच सक [ मुधि + विष् ] दक्को तरह म्पास्या करना । चंड्र सुविववित (१व)

सुविसर्थ र् [व] म्यभिवारी पूरव (बजा म्विसाय पुन [मुविसात] एक रेव-विनान सुविद्दाणा द्यी [सुविधाना] विद्यानिक्षेत्र (454 0 \$10) i सुविद् पु [सुविधि] १ तबनी जिन बनगान (सम बरा परि)। २ ईस्त्रे मुन्दर मनुहान

(मएइ २ प्र री-पत्र १४६)। ३ म चमध्य देवा सध्यत का एक यान 'चंक्रमते इयह नुविद्-नामानु (प्रस्त स ४)।

(समादेक) । सुविद्वित पुसर बाबरण-

(पर्नर १३११)। सुविसट्ट वि [सुविद्यसित] धन्द्री तथा विश्वित (गुर ३ १११)।

बासा, सरावारी (सम १२४३ मान १ उर स ११ : स्तर्भ १११: " १२)।

सुर्पर वृं [सुपर] १ बहुरात्र का एक क्षेत्र

सुविश्व व [सुवृश्व] । ध्रयन्त पोलाकार । २ सराबारः सम्बद्धाः साबरल (बुर १ २१) । मुक्तियह वि [मुक्तिस्तृत] प्रति विस्तालुक

सुधिरियम व [सुधिर्मार्ज] उत्तर देवो (गुर मुविभाज वि [मुविभाज] विश्वरा विश्वव धनायान हो तक वह (ठा ६, १---पत्र मुविभन्त वि [मुविभन्त विषयी वर्ष

(मंत) । २ हुन. एक दब-शिमान (धन १२)। मुर्पसाय वि [मुविधान] प्रम्क तस विश्वास्त्राप्त (तुर ६ १४६ तुरा २११) ।

शिक्छ (द्याया १ १ थी—पत्र शासीप 10):

मुक्ता भी दिं] एका स्वाव (रे ब

मुर्जुरस रेवा मुपुरिस (१३३) : सुरेष [असे ] मानामी स्मा (हर (१४ पंश पुत्रा) ।

वे क्यांबद (तदु १६)। मुपिमिट्स रि [मुपिस्सिव] पविचय मुन्धित र [मुपिराय] बस्स्त पहर धायप्रस्थित (प्रत २ १३) । (पार-समा ६) । सुंबरव वि [सुविदित] बन्दी तद्य बात । सुविवयसमा वि [सुविवधान] व्यत बहुर (नुसारम )। (at Au x x) 1 मुन्ति व [मुनियू] सन्ता वानवार (मा 1 (25

appeit cfeat (eff ts) :

मुवियाय न [सुविद्यान] बच्छा बान नुवर

मुरेख 🕻 [मुरेब] १ वर्रड-विदेश (ब व क )। रेज नवर-स्टिप्र(वस्त्र प्रत्या)।

विमान-सिदेव (वेकेट १९०)। मुरा की [मुरं] रेशे (दुग) सुरुता देवरे सुरुता (परव ८. १६८) । सुरुग्प वृ [सुग्न] ध्यनिक्षेत्र (हे २ ११%) बर्)। जीन [जी देश-विशेष में ब्रस्प (रुपा) । मुस्ट्रुवि [मुस्ट] धरमत चेवपुक (वस्म 4× 41) 1 सुक्या 🕯 [सुक्या] एक स्त्राणी (साम २—वत्र २४२) । देवो सुन्ददा । मुक्तर वृं [मुक्य] १ पूर्व-निहार के धीमण रिवाकारलं (ठा२ १---पत्र ४४) । रे म सुन्दर का। ३ वि सुन्दर कानाता (बदा: भन)। मुख्या क्षे [मुन्या] १ नुका तदा प्रतिका नामक मुतेनहीं को एक एक मध-नहियो (साथ १—यत्र २४)। २ मुतलस्य नावक इन्द्रकी एक बड़-महियों (इक)। ६ वह रिहानुमाधे रेगै (स.४.१--१व १६ ६--पत्र १६१) । ४ एक कुसकर पानी (तन १२)। ५ मुन्दर कावाबी (परा) १ मुरेस 🛊 [मुस्य] १ रेन-वि स्टः। र उत्तम देव (गुरा ६१४)। मुरसर् [मुरधर] एवं सन्तव (क्य २७ द्वार)। मुग्लार्गाण वि [मुन्ध्यणिन्] उत्तव बधाउ बामा (वर्गीर १८२) । मुनमा वि [मुक्स] धन्द्री द्या दश ह्या (431) 1 सुन्धारि [सुनरप] तथक प्रान्त (शाय १ १-- वय २० उस)। मुलस्म ( रि [मुस्म] पुत्र से बाल हो परे शुरुव र पर (या १२ नुष २, १६,वदा)। मुख्य र् मिन्ध्रमी १ रेड-स्टिश (६६) । मुंदम व [र] दुरुष्कर द राष्ट्र (रे १७)। मुन्मार्थप्रस है को [र] दुल्बी (रे ब, ४ । ) CE) 1 मुन्द्रमा

विकाबर नरेस (प्रस्म ७ २१)। इस ई

िर्च ] एक सक्-पूमार (का १९६) ।

सुरिंदग पू [सुरन्द्रक] विवासेटक देव

सुउसा हो [सुस्धा] १ नवर विनक्षेत्र की प्रवम शिष्मा (सम ११२)। २ समनान् महाबीर की एक माहिका विश्वक कारना धार्क्सप कल में तीर्वकर होगा (ख १--पत्र ४११, सब ११४)। ३ नाव नायक गृह्यति क्षे क्षे (बेव ४) । ४ शक्की एक घड मक्रियी, एक इन्द्रान्द्री (परुम १ २, १६६)। ६ शबपुर के राजा सुन्दर की प्रश्नी (संद्रा) । सुद्ध्या देशो सुद्रभ (तस्त्र ४ **84)** I सुद्धार दं [सुद्धाम ] यन्त्र्य नव्य (नुपा YY4) 1 मुद्री स्वे 🔻 अस्त यास्प्रत हे पिरवी धाय (दे ८ १६) । सुसुन्त १ वर्ग[सुज्युसाय ] भुव' भुव' सुसुद्धार रे प्राचान करना । नुतुनुनायह (के ४१)। वह मुध्युक्ति, मुब्सुक्ति (क्षेत्र ४४४) सहस्र)। मुल्क वि [मुल्का] धरकत पूजा--स्वा (नूप t (1 (1) मुख्राभ देवो सिस्त्रोअ = स्तोड (घरि १६)। मुख्येयव र् [मुख्येपन] एक विदावर-नरेश (पदम १, ६६)। मुख्य व [मुज्रेष्ठ] वर्षि चरत (क्रम्)। सुद्ध र शिक्ष्यों सूच⊬योज शंद (देव १६: पाष) । सुर बक (स्वप् विशेषाः। मुक्द, सुर्विः (हेर ६४० वर् बहारंग)। अपि मुक्स्सं (वि १२६) । वह सुर्यंत सुवमाज (नाय; वे १ २१ मन) । यह सुविक्रज (दश १६)। मुष रेप्रो स = स्व (हे र. ११४ वर् । दुमा) ।

rtt):

< 1 (4) 1

पुरुष्ट (स र १--१३ १)। २ एक

कुंक्या तसरी है (स्व २ ३--पत्र ८ १ एड)। सुबच्हा स्मै [सुबस्सा] १ स्थोबील वै द्द्रेवाको एक दिशा-कुमारी देखे (स ---पत्र ४६७) । २ बीमनस पर्मंत पर प्रतेशाची एक देवी (इक)। सुबळा दू [सुबजा] १ एक विद्यावर-वंटीय धना (परम ४, १६) । २ दुन, एक देन-विभाव (सम २६)। सुवक्रिय वि [सुवर्तित] प्रक्रियम क्षेत्र विमा इपा (धन)। सुबाय व [स्वपन] शमन (धोष बक्त) वेचा १ ४४३ छप ७६२) । सुबळत दू [सूचर्ज] १ वस्त्र वती (उठ १४) ve)। २ भवनर्शत देशों की एक वर्शत (धीर) । ३ धारित्व, नृदं (परव) । कुमार र्षु [कुमार] मरवपति देशों की एक पार्टि (**₹¥**) | सुबच्च दू [के] प्रमुव कृष (वे व २०)। सुबण्ज व [सुवर्ष] १ बोना, हेन (स्वा समुद्धः स्त्रासा १ (४) परक)। २ 🕻 पर्स-वर्ति केर्ने की इक जाति (क्य)। १ डीव्य कर्म-मार्थक का एक बोट (श्रापु १६५) । ४ मुम्दर क्छें। इ. नि मुन्दर वर्छनावा (मन)। भार, कार दृ ["बार] कोन्द्रे, गुगर (व महा)। इस वृ [कुम्भ] प्रवय बतारे के वर्त-पुर एक मैन पुनि (परन २ २ १)। "इसुम न [ इसुम ] नुगर्छ-वृधिका वटा सङ्ग्त (सर ११)। पूस को [कुस] नदी-विक्रेप ( इन २०) इन )। "गुद्धिमा को ["गुडिया) एक राती का नान (गहा)। "सिस्स ध्ये ["शिस्म] एक पदीर्वाव (यी ध राज)। सर र्षु [फिस] कीने की मुत्र (यन) रेखी मुश्र = धूत, तुत (यनि)। दान (खम्मा १ १७—रत २२०)। "रि मुपेश ( मिपेसी १ सम्बाधीतः । २ वि र् ["कार] कोचे (वर व १११)। केवी नुभर पून में उरएन, पातपनो (हे y गुषम - नुष्णे । सुबण्यसिंदु नु [ब] विष्णु (१ 🔻 ) । सुरम्यु र् [सुरस्य] एक विकथ-धेत्र विकरी सुविज्ञन्न वि [सीर्वायक] गुक्तीनव, बो<sup>ने</sup> राज्याची धर्वाचे है (दा २ ३-- पर दर् । प्राप्त का क्वाह्मा (देश १६ मुतब्द व गिरुमी १ प्यार-रेत का 16) 1

मुबच रेको मुख्यच (धन) ।

सुवम व [सुवर्ण] १ स्रोना (सं ४० प्रासू | चे कुन १ कुया) । २ वि सुन्दर सकरनाता | (इम १)। इसार पू ["इसार] मनकाति केर्ने की एक वार्षि (मन सम ८९)। **इ**ज्ञप्पशय र् [फूलपपात] एक सुर पद्मं से पुनर्र्षकुमा मदी बहुतो है (ठा २ १-- व ७२)। गार पू िमारी धोनी (सामा १ व--- पत्र १४ ज्य पुरुष)। 'ज्**रिया धी [ यूथिया ] तता**-विदेष (परुष १७--पत्र ४२६)। सार वेको गार (कुपा १६१)। देवी सुषण्याः = मुख्य । सुवस वि [सीयर्ण] सोने का बना हुया (¶ × ∀) ı सुरमानुस्य की दि दिसम करने का पन-बीटा बादि (दूम १४ )। सुष्प्य 🛊 [सुष्प्र] एक विजय-क्षेत्र (ठा २ र-पव व )। सुवयम न [सुवयम] सुव्दर वयन (भव)। प्तुपुर } (पर) देशो सुमर । गुनरह, गुनरिह सुँगर र (मार्गाः पि २६१)। सुनह देवो सुबहु (प्राप)। सुवाय पूर्व [सुवास] एक देव-विमान (सम t ) i सुवास वृ [सुवर्ष] १ मुक्तर वृष्टि (दर मार्थ)। २ क्रम्बनिरोग (पिम)। सुषासच्यी देवी सुवासिणी (वर्मीव १२३)। सुवासव र् [सुवासव] एव रात-दुवार (First ₹ ४)। सुषासिणी 🛍 🛛 र सुषासिनी 🕽 विसन्ध परि बोबित हो वद की (सिर ११६)। शिक्षा थ [स्थाहा] देवता को हवित गादि धभ्य का पुषक प्रमाय (बिरि ११७)। सुविधालका वि [सुवर्गाजध] विशेष वर्ग वे ज्यानित (तंदू १६)। मुनिमद वि [सुविद्यम्] सरक्त पहर (पार--एमा ६)। सुविषय वि [सुविदित] यच्छी तयह बात (बना दुसार ४)। सुविष्ठ वि [सुविष्] प्रथम बालकार (मा ₹4)1

सुविउत्त वि [सुविधुन्त] प्रति विशास (उद)। सुविक्रम पू [सुविक्रम] मुतानन नामक इला कं हस्ति रीन्य का भवित्रति (स्व ६, १---पत्र २ इक्)। सुषिक्याय वि [सुविक्यात] मुप्रक्रिय (गुर € Ex) 1 सुविगा की [सुकिया, गुर्फ़ी] मैना (उप EUT EUX) ! सुविज्ञा की [सुविद्या] उत्तम विद्या (प्राम् X4) : सुविण रेको सुमिण (मुर ३ १ १ महाः रमा)। स्तुपि ["क्रा]सम्बन्धाक का भागमार (अन पुरेश सुर १ ६ a)। सुविगद्व वि [सुविनष्ट] वित्रपुम नष्ट (वा WY ) 1 सुषिजिष्डिय नि [सुषिनिश्चित] पण्डी त्यक्ष निर्स्तीत (३००)। । सुविजिम्मिय वि [ सुविनिमित ] पन्धे तरह बनाया हुमा (एस्या १ १---पन १२)। सुविष्योग नि [सुविनीत] १ परिस्थ पूर किया हुया (उत्त १ ४०)। २ मध्यत विकय-पूर्ण (दस ६, २ ६)। समित न मिक्क र परक्क नेपाकार। २ सवाचार मन्द्रा मानस्स (सुर १ २१) । स्वित्यव वि [स्विस्तृत] प्रति विस्तायुक्त (ग्रजिप प्रामु १२६३ ह ६६)। मुवित्यिम वि [मुपिस्तीर्थ] उनर देखो (मूर t 420 t2 1) 1 सुविधि वेद्यो सूचिष (सम ४३)। सुविभद्ध वि [सुविभन्न] विश्ववाविभाग धनायां हो सके यह (ठा ४, १--वन 384) I सुविभक्त वि [सुविभक्त] पच्छी सर्व विविद्ध (शाया १ १ थे---पत्र १) भीपः ध्य)। सुविनिक्ष वि [सुविस्मित] प्रतिसम धावर्थन्ति (प्रत २ १३)। सुवियक्तान वि [सुविवक्षन] व्यक्त कार (नुपा १४) । सर्वियाण व [सुविद्यान] यच्या श्रामः नुवर जानकारी ५विकार (बहु १६)।

सुधिर वि [स्वप्तू] स्वपन-शोत सोने सी धारतवासा (मोत्रमा १३३ दे ८ ३१)। सुविरक्ष्म वि [सुविर्याचन] प्रच्यी तरह मिटव सुर्वाटव (चना २ ६)। सुम्बराइय वि [सुविराजित] पुरोन्ति (मुपा ३१)। सुविराहिय नि [सुविराधिव] पाँडरान विद्यमित (स्व)। म्बिखसनि [सुबिद्धस]नुन्दर विसासनामा (सुर १ ११८) । सुमिनइम नि [सुमिन्मित] सम्मम् निर्शाति (ञ्च) । सुविषच सक [ सुवि + विष् ] प्रची तरह म्याच्या करमा । संक्र. सुविविश्वत (१४) (बर्मेंसं १३११) । सुवसङ् वि [सुविकसित] प्रणा वप विक्षित (पुर व १११)। सुविसाय वृं [बे] व्यक्तिवारी पुष्प (बजा €π)ι सुविसाय पुन [सुपिसात] एक वेंब-विमान (सम ३६)। सुविद्याणा की [सुविधाना] विद्यानिक्षेत्र (पदम ७ १३७)। सुविद्धि पु [सुविधि] १ नवर्ग जिन भनवान (सम वश पहि) । २ पूँछी मुन्दर मनुद्रान (पर्या २ प्र टी--पत्र (४६)। ६ न रानचन्द्र तथा सङ्ग्रस्त का एक यानः 'चेक्सर्स् हबद मुबिधि-नामेखं (पटम ८ ४)। मुमिद्धि वि [मुमिद्दित] गुभर वावरण वासा सद्यवाधी (सम १२४) मास १ दत ष १३ सार्थ ११४ ह ६२)। सुषीर पूं [सुर्व र] । यहुराव का एक रीक (मंद)। २ पुन एक बेक-विमान (सम १२)। सुवीसस्य वि [सुवियस्त] बच्छो ठयह विरवासमास (सुर ६ १६६ सुगा २११)। सुदुष्णा को [दे] बकेत सराय (रे व 10)1 सुबुरिस देशा सुपुरिस (परः)। सुपं म [यस ] मामानी तन (हेर ११४३ चंदः दूमा) । मुबक दू" [मुबक] १ वर्षठ-रिरोप (ते ब

सुक्तन [मुक्त] रे तीवा ताम (ती २)। २ रश्क रस्त्री । १ जन-स्मोप । ४ मान्यर । प्रयक्ष कार्न (दे२ ७१)।

सुषा रेको सुच (पर् मार)।

मुख्यंत देशो सुत्र ।

मुस्मत रेनो मुख्यत (छ १ १—त्व ७ )। सुरुपन वि [सुरुपक ] स्कूट, गुस्तप्ट (प्रंत २० धीरा मार-मुख्य २ )।

सुध्यमात्र रेबो सुप्र। सुकान है [सुप्रत] १ भारतार्थ में बरस्य बीत वें जिनदेव पुनिपुत्रत स्वामी (ती क पर १३)। २ ऐरनत नर्थं के एक मानी जिनदेन (बम १२४) । १ एउने जिनदेन के

क्षत्रर (११२)। ४ एक वैन पूर्णियो बीसरे कतरेत के पूर्व पत्म में बुक ये (पटन २ १६२)। १ माठनें बतरेन के वर्त-बुद (परवार २६)। ६ सम्बन्धः पहर्यन्त्रव ना पुरुष भारक (इस्प) । ७ एक क्योरिक्क बदा-इह (राज)। व एक विषय का बाग (बाचा २ १६ ६, बला) । १ व एक

बीम (क्या) । १ वि. सुन्वर क्षाताबा (पव ११)। मिन र् [मिन] एक विश्व का नाम (क्या) । मुख्यया क्षे [मुद्धना ] १ धवनान् वर्णनान की नाता(नव १४१)। २ ए≼ दैन ग्राप्टो (नुर १४, २०७ महा) । सुव्यित्रा भी [व]यम्य, बाह्य (वे सुस रेबासूस शुक्तः व वेडेन व्यक्ति निरमस्य बर्ग्याली न नव्यति (बजा १३४ र्थार) । इ. सुसियम्ब (दुर ४ १२६) । मुस्तर रि [मुस्तर] यदिनंदर (शह

सुर्सु अभि अ रि [सुर्सप्रीमन] प्रवि-निप्रान्तिव (4) 1 गुर्नी प्राध्य [वा] गता-बात वात (वे 14) मुमंदर [मुक्ता द्वी कृत्त प्रम क्या दूसम् वरम्बंवर्षे (बाब X1) : मुर्धानीय वि मिर्मनिविधी बच्छे वय

fers (grt 111):

सुसंपरिमादिय वि [सुसंपरिगृदीत] प्र बच्ची दख प्रकृत दिया हुया (राव ६६)। सर्सापण्य वि सिर्सपिनद्वी भूव यन्धी द्यक्ष वैवा हुमा (स्व) । सुसंभंत व [सुरुआन्त] परिक्रम भाइन (क्तर १३)। संसमित्र वि [सुर्मभूत] प्रमक्के वया संस्कृत (स १८६८ वन ६४८ दी) ।

सुसंसव वि [सुसंसत्त] धनको तथा संगति-बुख (बुर १ २)। मुसबुध १ वि [मुसंबृत] १ परिका सुसंबुद्ध है व्यवस्था २ अवको वर्षा पहला ह्मा (खामा १ १—पत्र ११ वि २१६) । १ विदेशिय । ४ सम्बद्धा (उत्त २ ४२) । ससंद्र्य दि [ससंद्र्य] परिचय चेन्स्वर (पीप)। मुस्त्रज्ञ वि [मुस्त्रज्ञ] वन्द्री तथा तस्यार (नुग्र १११)। सुसम्मप्प रेको सुसमप्प (एउ)।

सुसद् नि [सुसन्द] १ पुन्तर पानानकाता । २ अस्टिब, विकस्तव (सुध १६६) । सुसद्भाग वि सिसंद्याच्य दिन्नोम (क्स)। मसमस्य वि सिममभी गराव परिचय सामर्प्यक्ता (तर १ २१२)।

सुसमदुरसमा । श्री [सुपमदुष्पमा] सन सुसमदुसमा । श्रिकेष पर्वतिश्री सन का तीसराधीर उपस्थित का कोवा धारा (एक छा ३ १—यत्र ७६)। मुसमसुसमा को [मुपमसुवना] काव-किछेन **बर्स्स**रणी का पहुंचा और उत्तवनितीका **पटनी मारा (रक टा १—११ २०)** ।

मुखमा भै [मुपमा] १ कान-किरोप धक-बर्तियो का दूवरा भीर अर्था की का शबका पार्थ (ठा २ १—वद ७६ १६)। २ धन्द विदेव (पिय)। सुमग्राहर एक [मुमग्रा + ह्] यन्यो तथ ष्युष्ण गरमा । नुबन्धाहरे (नूस १ त. २ ) । मुसमाहिम रि [सुममाहित] घन्द्री तस्त बनाविधेरमं (रन ४,१६ उत्त २ ८)। मुसमिद रि [मुरायुद्ध] याका बनुद

(बार--पुष्प १११)।

सुसर वृत [सुस्वर] १ एक देव-वियान (स्व (७)। २ व नामकर्मका एक थेर, विश्वके ज्ञाय से सुन्दर स्वरं की प्राप्ति हो वह कर्न (स्व ६७- कम्म १ २६। ११)। वेली सुस्वर सुनुरः सुसा की [स्पन् ] बहिल भारती (तृप ! ર રથી)ા सुसा देशो सुण्दा = स्तुपा (दुमा)। सुसागय व [सुरवागत] कुबर स्वास्त मुसागर कु [सुसागर] एक रेक्-विगान (सम २)।

सुसाय न [ रमशान ] पुर्वचाद, मरण (खामा १ २---पत्र ७१ है २ ८६) व १६७ मा १४ महा)। सुसामण्य व [सुधामण्य] धन्त्र वापुन (क्या) । सुसाय वि [सुस्तव] स्वाच्छ, सुवर स्वाव नामा (नज्य दश दश ६ १ ६, १२२)। मुसाळ पून [सुराख] एक वेद-विवास (सम ११)। सुसावग ) र् [सुबावक] धन्त्र शावक-मुसाबय र वैत्र बृहत्व (कुमा परित ह २१)। मुसाइय रेवी सुसंहय (प्रवह र ४--११

wt) i सुसादु पू [सुसायु] क्वब दूर्व (श्वा र १—पद १ १ पद)। सुसिध दि [युष्क] पूचा हुवा (तुप २ ४) E# (%) ( मुसिश वि [शापित] नुवाय हुमा (म्पर्ग बन्बा १६ ; दूप १६)। मुसिक्सिम रि [सुशिक्षित] बन्दो वर्ष रिखा की प्राध्य (मा २)। मुसिषिद्ध वि [मुस्तग्ध] शतमा लेइ पुढ (32 / 141) मुस्प्रिय देवी मुख्य = वीस्व्य (वीत १९) ।

मुसिम्न वि [मुश्रीर्थ] पांत बहा हुमा (गुरा रहर)। मुसिर दि [गुपिर] १ तोबा बाली। पूष्प (व्य कर बी: दुम १६२)। २ तुब एक देर-रिवान (दन १७) :

सुसोह वि [ सुरोम ] मन्द्री रोभानाना

मेगसकारी (कुमा)। कस्मिय वि किमिक]

सिक्टि कि [सुरिस्ट] सुर्वमत पति पूब्परक्षती (मनि)। स्त्रम नि [स्त्रम] (सूपा २७५)। संबद्ध (पुर १ वशायेचा १व २६)। मणूब की चाह्यामा (सुपा ३२६)। गर सुसोहिय वि [ सुरोभित ] गोया-संपद मुसिस्स पुं[सुशिष्मः] उत्तम वेता (उप वि [\*इर] भक्तम-बनक (कूमा) । गामा समसङ्घ (उप ७२व दी)। की ["सामा] पक्ष की पांचनी बस्की तका 4 x 3) 1 सुरस भव [ शुप्] सुबना। मुस्ते (नूप सुसील नि [सुसीत] पवि शौवन (दुमा)। पमध्यकी राजि-विकि (सुरुव १ १२११६)। वक्र सुरसंव (स १६८)। ास्थि वि [प्रियन] १ युनेच्यक (मन)। सुसीम न [सुसीम ] बनर-विदेप (उप सुस्समण दु [सुम्ममण] उत्तम साम्र (उन)। २ शूभ धर्मनाचा (स्त्रामा १ १—यत्र ७४)। ७२= द्ये) । सुस्सर नि [सुस्वर] पुन्दर मानाननाचा द्देखो अ (कृमा)। सुसीमा की [सुसीमा] १ भनवाद पचत्रम (मुपा २८१) । देशो सुमर । सुद्दत्त[सुस्द] १ धानन्द वैत्र मना। २ की माला (सम १६१)। २ इस्प्ल बामुदेव सुरसर्ध की [सुस्परा] गीवरिक तथा गीवम्य माराम शान्ति (ठा२ १—पद¥अ०३ की एक परनी (संख १३)। ३ वरस नामक नाम के राज्यवेंओं की एक एक सम्महियों का t—पत्र ११४ मधः स्वया २३ मास् विवय-धेव की एक राजधानी (ठा २ नाम (स्रप्र १—पद्र ४० इक)। १३३ हेर १७७ कृमा)। ६ लिकॉस सुस्सार नि [सुसार] सार-पुक (मनि)। मुच्छि। ४ वि त्रिवेन्द्रिम (विवे १४४६) सुराध न [सुराधि] १ उत्तम स्वमान (पराम ३४४४)। १ सुख प्रद, सुख-जनक (जासा सुरसाबन } देको सुसाबन (क्का मा १२) । सुरसाबन (४ ४४)। २ वि उत्तम स्वमाववासा १ १२—पत्र १७४ मानाः कस्म १ सरावारी (प्राप्तृ व)। यंत्र वि [ वस् ] सुस्सीख केवो सुबीछ (बुवा ११ 🗓 🖙)। ५१)ः ६ धनुकूम (श्रामा १ १२)। ७ क्सकारी (पत्नम १४ ४४ प्रामु १६)। मुची (दृष १६): स्न वि ["द] मुच-सुसूद रेबी ससुन्न (रान)। सुसु ६ [शिक्ष] बज्बा बासक। सार पू शासक (सुर २ ११ सुना ११२) कुमा)। सुस्सुबाय वक [सुसुद्धाय स्रश्चरय्] [मार] क्यकर प्राप्ती की एक जाति इत्तअनि[यत्] युकी (पि ६)। सु सावाज करना शुल्कार करना। संब महिपास्तर मध्य-विशेष (पि ११७)। कर नि किरी मुख-पनक (हे १ १७७)। सुस्सुमाइचा (उत्त २७ ७)। मारिया भी [ मारिका ] बत्त्व-विहेप कामि वि [ कामिम्] सुवास्मित्वो (योव सुस्सू की [यम्] सम् (स १)। (राम ४६) । वेको सुसुमार । ११६)। "रिंध वि [ीर्थम्] वही सर्पे सुस्सस सक [शुभूष ] देवा करना। सुसुम्ब कु [सुसूर्य] एक देव-विमान (सम (माना)। वृति वि मुख-राता (वै मुस्सूश्वर (स्मा महा)। यह सुस्सूसीय tx) i १ व कूमा)। दाय वि [दाय] वही सुरस्यमाण (कुवन १४ भनः पीप)। सुसुमार वृं [सुसुमार] बढबर कन्दु की एक (पडम १ ३ १६२)। प्रसामि सिन्द्री क्र मुस्स्सिद्धं (सी) (ना १६)। णावि (भी २)। देखो सुसु-मारः कोमत (पाप)। यर देवी कर (हे है सुरसूसंज वि [श्रुमूपः] हेवा करनेवामा १७७३ कूमा। सुपा ३)। संस्त्र अधि सुसुर्वय हि [सुसूरा घ] १ धरकत पुरूषी िसन्दर्धा मुख-जनक प्रायंकाल (कप्पू)। (पस्म ६ ४१ मन्ड)। २ 🖞 व्यासम्ब सुरस्साण न [शुभूपण] देवा सुन्ता (इप | बहुवि ["भहु] १ युक्त-वनक (श्रा २०) पुरम् (वस्त्र) । २४७ एन २१)। अम्। सं ६७) । २ दून. एक पर्यंत-शिकार (स सुसुर देवो सुसुर (वर्नीव ११४) विदि मुस्सूसणया रे की [शुभूपणा] करर देवी २ ६—प्य = )। "छण न ["सन] 33× 3×5 3× 18cm) ( सुस्सूसणा र (उच १६, १३ मीन ग्रामा बायन-विरोप पासकी (सुर २, ६ । सुपा सुर्दश्वर वृं [सुशुसङ्कर] स्त्रव का एक भेव र देश—पप १ व)। २७६: इम्म)। "सिया औ ["सिका] (सिंग)। सुस्स्सा को [राष्ट्रया] क्यर ध्वो (बुग मुख से बैठना मुखी स्विति (प्रामू ८%)। सुस्र कृत [सुस्र] एक दव-विमान (सम सुइपरिथआं की वि] दुवी (देव है)। सुद् देनो सोद=युम्। मुद्दः (वण्या १४-सुरोज र [सुराज] १ मुद्रीय का क्यूर (छ मुद्देष्ट वि [मुलकर] नुव-बारक (स्तिर ४ ११ १६ वर)। २ एक मंत्री (विपा पिय) १ सुद् तक [सुसाय\_] तुकी करना। सुद्रद १८ दुमा)। रे ४—पत्र १४)। ३ वटा पत्रवर्तीका सुर्देक्ट वि [शुभकर] १ शूव कारक (दूमा) । (पिन) मुद्देशि (सी) (धनि ८१) । क्ने (सम्)। सुद्ध केलो सुम (६३ २६) ६ । दूगी; २ 🐒 एक वशिक्का नाम (उप ४ ७४१)। सुसेणा की [सुयेजा] एक बड़ी नहीं (ठा सुपा १६ कम १ ६ )। असि ["4] सुर्दभर वि [सुस्तरभर] गुनी (पडड) । % ?-- 4× 8×1) 1

सूर्य रेबी सुन (वर भाग)।

मुब्ब व [गुल्ब] १ तांबा, ताम (की २)। २ रज्जू रखी । ३ वज्ञ-संशोध । ४ वाचार । प्रयक्ष कार्ये (इ.२. ७१)। सुव्यंत रेगोस्य । मुक्यत देश सुम्पा (दा र ३—गर ७)। सुब्धन वि [सुब्धन्त ] सुद्ध, मुन्दर (धेव २ सीसन्तर—कृष्य २०)। मुख्यमात्र देखी मुण । मुख्य (मुप्रत) १ फारावें में उत्पन्न बीधवें जिनवेंच युनियुंबत स्वामी (तो पत्र ३१)। २ ऐरवत वर्षे के एक मात्री बिनरेड (सम १२४)। १ इडिवें जिन्हें के क्षण्यर (११२)। ४ एक देन पूनि यो । हीमरे बनरेर के पूर्व कम में दूर भे (पड़ब २ १६२)। १ साउदे बतोद के वर्त-पुद (प्रकार २६)। ६ सम्राम् पार्यनाथ ना कुद यावद (इस्त) । ७ एक **म्बो**तिस्त महान्दह (रहत)। व एक विश्व का नाम (बाक्ष २ १६. ४, कम) १६ क एक दोन (क्या) ११ वि. गून्दर बत्तवासा (वव ३१)। मिन द दिन्दी पुर दिनद ना काम (कम्म) । मुध्यपा 🗗 [मुद्रश] १ अवसन् वर्गेताव की बाठा (धन १९१)। २ एक बैन काओ (मुर १६, २४७ महा)। मुख्यिकाची [वि]धम्बा माता(वेद वेद)। मुस देवा सूम शुक्र व पंडे व व्हेंति बिरमस बर्गरामे न नन्ति (बजा १३४) र्भंद) । इ. मुसियस्य (तुर ४ १२१) । मुभगद्द रि [मुसंगर] प्रतिनादद्व (प्राप्त मुन् भिश्र वि[मुसंयमित] पक्षिक्रिक्त 15) 1 मुर्न । श्रा ध [द] गरा-बाट वंड (दे 11) मुमं।प्रवि[मुक्तः] यदि कृतः प्रश बता दूताह वरंगुनेवर्ष (नाम 🕫 ५६) । सुर्मार्वावद्व दि [मुर्मार्वादद्व] पश्क हत्त्व fert (fit 111)

मुसंपरिमादिय वि [सुसंपरिगृदीत] वृद यन्द्री वर्षा प्रशुक्त क्या ह्या (यव ६३)। सुसंपित्रद्व वि [सुसंपितद्व] पृथ पर्या दयः वैदा हुमा (एम)। मुसेमंत व [मुख्याम्त] पविकय स्मादुव (बत्तर १३)। मुश्रमित्र वि [सुर्सभूत] पच्छे वर्ष संस्था (स १८६) उप ६४८ दी) । मुसंसव वि [मुसंगत] प्रश्रो तथा संगति-₹)1 नुष्ठ (तुर १ मुम्बुम १ वि [मुसंदृत] १ परिवर, सस्बद्ध । स्वाप्त । २ सम्बद्ध उच्छ पहला ह्या (स्त्रवा १ १--पत्र १६ वि २१६) । ३ विदेशिय । ४ सम्बद्धा (उत्त २, ४२) । मुसंद्य वि [मुसंद्व] परिवर पंत्रिक्ष (पीप) । सुसद्भ वि [सुसद्भ] यन्त्री तथा ध्यक्तर (पुत्त ६३१) । स्सञ्ज्ञाप देवो सुसम्रप्प (एन)। मुसद्द वि [मुशस्त्र] १ मुन्दर ध्यवानकारा । २ प्रक्रिक स्विक्त (दुश १६६)। मुसद्गरप वि [सुमंजारव] नुब-वेध्य (क्स)। मुसमस्य वि [मुनमर्थ] वृक्तक प्रक्रिक धाष्ट्रपंताबा (तर १ २३२) । मुसमदुरसमा १ 🛍 [मुपमटुष्यमा] सन मुसमर्गमा विशेष प्रवर्गिकाय द्म क्षेत्रस्य भीर उद्यक्तियों का भीवाधास (इक्टा२ ६---पत्र ७६)। सुमममुख्या धौ [सुपमसुपमा | कार-फिक्क मनक्षिणी रा पर्मा भीर ब्रस्तिली का धकरा पारा (१६८ हा १—१६ २७) । मुसमा 🗗 [मुप्तरा] १ काफ्निक्टेर पर-बर्तिछी का दूबस भीर उत्पतिकी का पांचरी बार्ष (दा २ ६—१३ ७६) इक) । २ धन्द विशेष (पिष्)। मुममादर सर [मुममा + हू] वच्छे वर्ष म्द्रज रस्ता । मुक्तसपुरे (नूप १ मुसमाद्यि वि [मुसमादिव] यणी वया

बनावियोग्न (स्व १ १ ६) एत १ ४)।

मुमनिद्ध वि [मुसमूत्र] कक्क बनुज

(गर-नृष्य १४१)।

मुसर दुन [मुस्बर] १ एक देव-विपान (का १७) । ए त नामकर्म का एक थेर, निश्ते ब्रह्म से मुन्दर स्वर की प्राप्ति हो वह कर्व (हम ६७- क्रम १ २६: ११)। केते सुस्सर सुमूर। सुसाको [स्वस्] बॉइन मॅक्नी (दूप १, t t t £) i मुसा देवी मुज्या = स्तुपा (कुमा)। सुसागय न [सुस्वाश्त] मुन्दर स्तान्त (भग) । मुसागर र्नुन [मुसागर] एक केन्टियान (समार)। मुखाय न [ रमशान ] दुर्शकर, नाव (सामा १ २---पव ७६ है १ वर्ष छ १६७-धा १४-महा) । सुसामध्य व [सुभागवय] प्रवस्त वादुःश (स्वा) । मुसाव वि [मुस्याव] स्वाच्छि, कुवर स्वरः वाचा (वदम =२) ६६: १ २ १२२) । सुसाछ र्न [सुशाउ ] एक देव-विधान (सम ३१)। सुसावग रे दू [सुधायक] सन्त्र वापक-सुसावय <sup>5</sup> वैन मृहत्व (दुमा<sup>\*</sup> पहित ह २१)। मुमाह्य केते मुसंहत (महा १ ४--ना wt) | सुसाह र् [सुसाधु] उत्तम द्वान (१९६ २ १--पद १ १ चर्ग)। मुसिभ रि [सुरक] नुबा हुवा (बुध रे ४) ₹# **₹₹**) ι मुसिम वि [शापित] नुबाय हुण (गर् का १६ : बुध १३)। मुसिक्तिम वि [मुशिक्षित] धन्धी वय रिक्षाको प्रस्त (वा २)। मुनिषिद्ध वि [मुस्तम्य] पाक्त स्वे 📢

(4x x 448):

रेर-रिमान (बच २०) ।

1 (238

म् सस्य देवो सुर्थ = बीतस्य (वीव ११)।

मुसिम्न वि [सुद्रीर्थ] धरि बहा हुमा (५३

मुसिर वि शिवर र शेला, बाबी । पूर्व

(क्र ७२व की: कुत्र १६२)। १ ईब प्रम

सूच वि [सून] पुना हुया सूबनवासा 'सूय

मूहं सूबहरू मूक्ताये (विचा १ ७---पव

**98**) 1 सूल र् [सूप] राज (पन ६१ टी जना पराहर ६—१२१ सुपा ४७)। गार बार, १र वृं["कार] स्लोक्स (सं १७ कुप्र १६८ १० मासक ११ टी)। "रिएगो की [कारिकी] रहोते स्वातेवाची की (पडम \*\* ( 2) 1 सूत्र देशो सुत्त ⇒तृत्र । सङ्ग्रह [किंड] दूसरा जैन श्रेय-प्रन्त 'श्रापारी सूचमके (सूप २१२० सम १)। वि [सूथक] १ पूचना करनेपाता सुक्षक } (बेस्री ४४) बा ११) पुर २ स्था । २२१)। २ दे पिशुन बस, दुर्वन (मन्द्र १ २—नव २०)। **३ ग्रह १**व बामुख (प्राप्र)। सूमग ) न [सूनक] सूदक, बनन ग्रीर मच्छ स्वय रेबी प्रमुखि (पंचा १३ ६८) वर्ष 1) 1 स्मजन[सूचन] सूचना (इन मुर २ 444) I स्थर दे [शुरूर] सूचर बच्छ (ज्या। विपा १ ६—एव ५३ प्रमी ७)। बद्ध ई [वाद्व] धनारकाम बनस्पति विशेष (पत्र ४) ष २)। स्वरित्र वि [वे] कम-वीकित (दे व ४१ सी। सुर्मारमा ) को [वे] कन-मिका (पुर १६ मुंबर्स रे र, ४१)। स्ट्राह न [दे] क्यांड, यान्य का धीक्ण मंत्र मान (देव ६८)।

[कर] नूचक (क्य ७६व टी)।

गृह (परव २६ वर्) ।

सूर भी [सूचि] देवो सूर (माना सम १४६ सम २७)। सूबअ वि [सूचित] विश्ववी सूबना की वर्ष क्षेत्रह(महा) । २ छक्त, कथित (पाप)। ६ व्यक्तावि-पुक्त (बाय) (वस ४,१ १०)। सृद्ध्य वि [सृत] प्रमृत जिसने बन्ध दिमा हो बह स्थायी। साएं मूरचे वार्वि (दस 2, 2 22)1 स्इअ र् [स्विक] बखो (द्वप ४ १)। सूरेश पु चि] बहराब (६ ८ १६)। सूद्यम [सुप्त] विका क्षेत्र प्रस्थितकण सक्रियमुहर्व काउन्स सम्बंधि (महा) । सूद्रय वि दि सूप्य, सृषिक] भीवा हुसा (बान्य), 'श्रवि सूद्यं वा सुवं वा' (धावा) । सूक्या की [सृविद्य] प्रमृतिकर्ण करनेवामी को (समाच १४३)। सूर्व की [सूची] काना होने की सवादे पूरे (पर्या १ ३ —पण ४४३ मा ३१४३ १ २)। २ परिमाया-विशेष एक ब्रंपुल बन्दी एक प्रदेशवाली में हो (प्रस्पु ११८)। ३ वो तक्यों कं बोदने के कान में बाती एक तरह की पत्तमी भीन (द्याय २७ ४२)। फलस्य व ['फलक] तस्ते का यह हिस्सा, वहां मूची-कीलक समामा गया हो (राय वर)। "सुद्द प् [भुस्र] १ पश्चि-विशेष (पर्या १ १—पत्र a) । २ डीव्हिय कन्तु की एक बाति (परए) १--पत्र ४४)। १ न वहाँ सूची-कोसक तको का केर कर भीतर पुस्ताई वसके समीप की बन्ध (सम ६२)। सुद्द की [दे] गंबरी (रेड ४१)। सूई देखो सूद = मृति (मुना २६४)। सूड तक [ भद्ध सूद् ] भारता दोहता विनाश करना। सुबद (ह ४ १ ६)। कर्म मुक्तिवीतु (पराह १ २--पन २६)। सृष्ट्या म [सूदन] १ घटन रिवास (वडड)। सूब्य क्ष्मे[सूबा] सूबक भूवना <sup>(तिह</sup> २ वि विनासक (पन २७१)। रीका कार्य है। मुखलि २)। कर वि सूष्य वि [सून] पूजा हुमा जूनन से दुन्ता हुसा (पत्रम र १ १४० मा ६६६) स १०१३ स्था को [सुति] प्रस्य प्रवृति कम γα ) l मूर र (परम नेर. क्षा १ ९१ मुना सूण , धौ [सूना] वद-स्वान (निर १ १) रेश)। कमा व विद्यामा प्रश्वन-क्रिया (पुर स्णा रेमा १४० दूव १७१)। बह वै रे र कुत्त ४ )। इर व ["गृह] प्रमृति-['a[a] est (8 2 \* ) |

सुजिय वि [शुनिक] १ पूबन का रोगवाचा बिसका सरीर सूत्र मनाहो वह। र नः मूबन (भाषा)। स्णुद् [स्नु]पुत्र सङ्गन्न (कुष ११६)। स्वक देवो सूअय = मृतक (दन १)। सूप देशो सूभा = सूप (पराह २ १ — पण ₹¥4) 1 सूभग देको सभगः 'मूभव दूभकार्य सूचर तह दूसर नेव (वर्मसं ६२ । व्यवक २६)। स्भग देखों सोभमा (विषय १)। स्मान रेको सुजमास (पर्याः ४--पत्र ७४ सामा १ १--पत्र ४४३ १ १३---पत्र क्या पुर १३ ११६ दुव २२)। सुर तक [ स.अ. ] तोइना भावना। दुष्य (\* Y Z 4) I सुरवि[शूर] १ पसम्मी नोर (छा४ ३--पद २३७। कप्पा गुपा २२२। ४१२, प्रातु ७१) । २ दूं एक स्टब्स (तुस ६२२) । ६ दून एक दे<del>व वि</del>मान (देवेन्स १४३)। सेण वू ["सेन] एक भारतीय देश, जिसकी प्राचीन राजवानी महुरायी (विवार ४६ पठम रूक, ६६३ ती १४३ विक ६६३ सत ६७ टी) । २ ऐरवत वर्ष के एक मानी जिन-देव (सम १६४)। ३ एक विनाबाये (उप ७२८ दी। ४ भववान् मादिनाव का एक पुत्र (दी १४)। सर प्रं स्रि, सूर्य । तूर्व स्व (हे र ६४३ हा २ ६--पन दश बन नुपा २१२, ६२२ क्या हुना) । २ स्टब्स्टॉ निनन्देर का निवा (सम १६१) । १ इस्ताकुनीय का एक राजा (पत्रम १, ६)। ४ एक संबा-पति (पत्रम ४, २६३)। ४ एक धीर का नान (तुरुव ११)। ६ एक राजा (तुरा १११)। ७ एन्टब्स एक भेर (रिव) ८ र्षम एक देव-विमान (सम १)। अर्थ दं तूं ["कान्त] १ मिल-निधेत (मे ६, र श्राप्तम ३ ७३७ पए**छा १—पत्र** ३६ उत्त ७३) । २ दुन एक दन-विमान (देवेन्द्र १४४ तम १ )। कुछ पुन [कुछ] एक देव-दिमान--देर-परन (बन १ )। उन्हरा दुन ["ध्यञ्ज] एक देर-शिनान (सम. १.)। सुद्रगलेको सुसमा(च्यकाभ वा६

विरेवा क्वी (वे ८ १६) । माठ---मामनि २०)। सब्द्री की हि ] तुल धासन्द (दे ८ ६६)। सम्बद्ध (सुभटी योडा (मूर २ २६) हुमा) पर्ह् १७ —पत्र ५२१)। सहय देशो समाग (वण्या १६ वस्ति ६)। মার ৬४ বর )। सहर नि सिहर्त प्रची तया हुएए किया क्षी वी(शक्त १७)। क्सि (स्त्र ७ ४१)। सकाधक सि+भाी बच्चा वयना, "त १७ सम्)। सहस्य मि [सहस्य] १ प्रन्या हामाना, सहाह बोमर्स्य साम (क्रुप्र १४२) । हान की बच्चकवाना हान से रीज-शीप काम साहादेको छूदा≈युगा(स २२ दुमाः स्य)। सम्मत् । [स्मन्ति] पूर्वका रसं पुरुषो' (यत १४२) । करने में समर्थ (धे १२ ११)। २ वाता. रामधीच (मनि)। कारकाश (बाचा २२२,६)। हार द्रै सहिथ प्रसहितम् । र मन्द्रस्ती िहारी केंद्र केन्द्रा (स ७११) । (आराह् १—००४ ७४ दवा)। २ एक , सक [सुरुपय ] १ मुख पान्द्र । वैव महर्रिय (क्षमः पवि) । सहाध १ तक पुत्री करना। महाद, सबद व सिवारी १ लोड । १ मिका बुक्तपद, बुक्तवद, बुक्तवेद (धाँक (महिंद)। या ६१७: वि ११० व वस्ता सुद्धन [सुद्ध्य] १ कुट, दुश्य (दसनि १ १६४३ भविः ३०) । वहः सुद्रार्कतः (स १ १६) । २ देवो समह सुद्रम - सुद्रम (ह ९कः गाट-स्टना ६१)। २. १ श वंड)। सुद्दाव देवी सद्दाव=स्वयव (दा ४ ०; सहस्म र् [सुबर्मन] १ प्रथमन् सहबीर वण्या १)। कापट्रकर किया (विपार १ — एव १)। स्कानज वि [<u>स</u>कायन] पुन-वन्त (ध्रष्ठः २ बाएको विक्लेन का प्रकम रिप्स (सम ह्या (कर २० दीः कयः ग्रीप) । १६२)। ६ एक यक्त का नाम (विधा १ सद्दावय वि [सुद्धायक] उत्तर वेदो (क्वजा १—नव ४ १ २—पत्र २१)। सामि ४६४: मनि)। र् [स्थामिण्] क्लाल्, महाबीर का सुद्वासिव वि [सुभाषित] १ पन्तव एक पट्टबर किया (बर) । केवी सुध्यस्य । (पर्सा: १—पत्र:)। २ व सुन्तर वचन, **⇒**₹) i स्त्रहरूम केवो स्त्रहरूमाः। बद्दः ["पठि] मुख (स ७६१: जूना ११४) । स्टब्र (मक्षा) । सुक्ति मि [सुन्तिम्] पुष-पुक्त (पुना ३११ २२७) । सुर्म्ममाण वि [सुर्म्ममान] यो पन्ही ¥88) 1 म् यः क्लिन्ध-शुक्तक यध्यव (शह) । वर्षा मारा भावा हो वह (पि १४)। स्वि ) प्रसिद्धाः नित्र, कोस्त (स्व ४ सुद्रम्मा ध्ये [सुभर्मा] चपर प्यवि इन्हों की सहिक्षा १--- १४१ शासा १ २---पत्र क्षेत्र शतुर क्षासूचा रामा देव-सम्ब (बन ११, वन)। १ ७ ४१६, ज्ली १६, ब्रुट १ १६४ सुद्धय देवी सुरू-स = दुव-र, गुव-र । क्रिक्)। सुद्धव देवो सुमाग (वस्का बला देवा २७२) मुक्ति वि [सुक्ति] तुवी दुव-दुक (दे २, रुमा) । का की अर्थका कुछ ४ की क्या कुमा) ३ सुद्द वि [सुद्द ] यच्छी तपा को माप सुक्तिम नि[सुक्ति] १ एव (दे२ ५)। क्या हो वह (दुत्र २२६)। २ तुष्टर हिस्साबा (वर्ग २)। सृभ र् [सूर्] रहोस्य (महा)। सुद्द वि [सुध्द] मुख के वाले बोल्ब (बक्र सुद्रिद्र नि सिक्क्षप्री परि वृद्धिः (उन ७२० ₹%)1 an) i सुद्रम पेका सुक्षराय ( बङ् ) । सुद्दिर देवो सुसिरा भगवानेता पुर्वा पेती सहरा में [व सुगृहा] विश्वनिकेत, वृत्तरे मुहिरं व चरजानार्गहें (वर्गीन ११४) (Pr =, 14) i रंग)।

्र 🗗 [मुद्दिरच्या "विपद्म] मुद्धिरणमा सक्रिरिक्या | बनस्पति-विरोग, पुष्प-बन्धन सहिरक्षिया ) क्रब-विशेष (यय ११) एक सुविधीमण वि [सुद्धीमनस् ] कश्च बन्धानु, प्रतिक्तय रार्यमन्दा (सूध १४ ८ सुविधिया केवो सुबेधिः 'त्रविधियं पहिने / सुद्दी वि [सुभी] पॅक्सि, विद्वात (विदिध )। सुरुम वि (पुरुम) १ हारीक सलात क्रेस। २ धीमण (के ११ १, ११ का क्वण भी १४)। देवं भारत वर्षे के एक छनी कुलकर पुरुष (सम ११३) ४ एकेश्रिय वीन-विशेष (छ का करण ४ २ ६)। ६ न, कर्म निरोध (सम ६)। संपराग संपद्मव पुत्र ["संपदाय] र पारिक-विकेष (इ. १, २-- १ १२२)। २ क्टबी कुक-स्थातक (सम २६) । देखो सम्बद्ध, सहस 🕾 सुरूप वि [सुरूव] सच्छी तथा होय विक सुदेष्ठि की दि सम्बद्धेष्ठि पुर, मार्ग्य-मजा (देव, ६६) पामा साँ १ व. २११ REEL SERVE ET 1 KEEL GEV T सुर्दास वि [मुझैपिन] सुवास्थिती (सु<sup>वा</sup> सुभ तक [सुचय ] १ तुचनाकरणः । ९ बानना । ३ क्या करुत्र । सूर्यक्र सूर्याक पूर्मी (निधे १९६०: स १४०; वटा; निर्व ४१७)। कमें सुद्दुल्बद् (वा १२१)। वर्ष-स्पेत स्वयंत (स्टब्स स १६६)। स्नई. मुहेर्जन (शहर ६ १)। इ. सुप्रमण (ह समाय सिंदी र सामीद रव हालोगा (पाय)। १ वि प्रसुद्ध, जिल्ली क्लम दिन हो नहः भु(१ सु)वयोज्य बहुरपं (तूम १ ३ २ ११)। भड⊈र [¶क्रत] द्व<sup>त्र</sup> केन धप-धन्य (सूत्रनि १)।

	वाङ्शसङ्गर्णगर्भ	353
सुप्र-सेम्पंस	४३ स्वर् १)। इंटर् [क्ल्ड]	सेआस देशों सेवाल = रोवान (मे २ ६१)।
सुसुध वि [सुभूत] १ सम्बो तरह मुना	चुतामन्द्र सामक न्द्रक महिष्मसम्म का	सेआउ रेबो सेथा छ = एम्पन्-नाम ।
ह्या । २ सम्ब्री क्षरह बात (वज्या १ ६) ।	व्यक्तिति (दार १—पत्र ६२ <sup>वर्ष</sup> ) ।	सआ उर्व दि] १ योगमा पृक्षिमा। २
१ दू. नेयक प्रत्यन्तिरोग (यस्ता १०६)।	पद्य सङ्घर्ष पित्र श्रेतास्थर जन अन	सानित्य करनेवासा यदा सावि (वे व २०)।
मूरभ । स्को सुमग (सिंव २ है !	का एक संप्रधान (मुना ६४१ मिन २४०४)	६ कृतक राजी करभंगामा गृहस्य (पाध) ।
सूर्व १११ (६१)।	धर्मसं ११ २)।	सेआस्रो ध्री [दे] दुवी, दुव, दुव (दे व २७)।
स सेको सेञ्च≕लेता सक्र पू[पट]	ताका कि एटवान दिसमामी भविष्या अनु	सेआसुज पू [यू] मनीती की बिद्धि के लिए
सत्तावर वेन (सम्मत १३७)।	त्रो इति क्षम्सी सेयकासीस वि वस् वन	इस्स्यू मेस (रे.स. ४४)।
से प [तृ] इन घर्नी का सूचक भग्यन—	श्यामायप्रदेशस <b>इटर्प वा जाव प्रामादिता</b> खः।	सङ्घ व [स्वदित] पर्वांगा (पवि)।
१ बास्य का उपम्यासः। २ प्रस्त (मन १	किटिलाक' (भय ४ ४—पत्र २२३) टा <sub>.</sub>	सेश्रा की [सेनिया] परिमाल-विरंप
रेक्ना)। १ प्रस्तुत वस्तु का परामर्थ	• • — एक ४१४ मए २१) । छिन्न	सहना है से प्रसृति की एक नाप (तेषु २६
(उत्तर ४ वं१)। ४ मनन्दरता (अ	[*बाउ] भविष्य कास (भग उर्च २१,७१)।	उर पूर्वे वे वे मणु रेपरे)।
र•—पणभ्रह्म)।	सेअफर पु [भेयस्कर] स्योतिष्क प्रहु-विशेष	सेंत्र पुत्र [सेतु] १ बांग पुत्र (से ६ १७)
से ) मक [शी] दोना। दंब <sup>समझ</sup> सेन ) (वर्)।	(ह्य २ ६—पत्र ७६)।	क्प २२ कुमा)। २ झालवात कियारी
सन) (यर्)।	सर्वकार व [अयस्पार] थेय करण थेयस्	वृतिसा । ३ कियारी के पानी से सीकने मोरम
सेश्रक [सिन्] सीनना। केम्ब (दे	बा द्रथारण (ठा१०—पत्र ४६४) '	चेत (ग्रीप सामा ११ टोपत्र १)।
Y (())	संबंधर वृ [केताम्बर] १ एक कैन संप्रवाय	े ४ मार्व (धीप स्त्रामा १. १ डी—पत्र १
सेस दु [वे] सक्तित क्लेग (के व ४२)।	(संश्चमत्त १२३ मुना २६६)। २००	कृप्य बरे)। वंच वृ [यम्च] पुन गोपमा
सेअ दू [सेय] १ कर्रम कादा वंक (मूम	क्रकेत कास (पराम ६६ व ) ।	(के ६ १७)। यह वृष्या पुनवासा
३,१३,छामा ११—पत्र ६३)।२	सेअंस पु [भेगांस] १ एक राज-पुनार (वस	मार्थ (से व देश)।
एक प्रकम मनुष्य-जाति 'र्वशासा मृद्धिमा ध्या ने सन्ते पाककमिमातो' (ठा ७—-पम	aul . 2 सामने साम्बद्ध तथा नगरू ज &ा	सेउ वि [सक्य] सेवक सिवन करनेपाता
हेर्ड)। वर्षा न सन्त प्रावेकान्त्रेलः (कः ः	ma ma wh 1/1 (5"	् (इप्प बर्)।   सेप्रय वि [सेपफ] धेवान्दर्स (इप्प ८१)।
,	रूप प्रमान र १०१)। रेको सेजस्य ।	सॅनूर देवी सिंतूर (प्राय संधि १)।
सभ दृ[स्वयु] पद्मीना (या २७८३ वे ४ ४८) दूसा) ।	सेंभंस देशों संभ = भेयम् (ठा ४ ४—पन	संबूद बचा सियुद (बार कार्य र)
समयु[सेक] सेवल सीवना(सै ६१८ मा	ि २६१)।	
ण्ड <b>ः रंगः इतः</b> योगः हर्ने।		सुंभ देखों सिंभ (बक्त रि २६७)।
सेम व [भेयस ] १ सूच कस्याण (भव)	े रव सामा १ १३—यब १व१ नुसा १ ६)। यह दु [पर्य] नीक (धावा रु	सॅभिय रेवा सिभिय (मर पि २६७)।
रेवन । १ बुकि मोल (हे १ १२)।		
वि यांत्र प्रशस्त स्वतिशय शुपा 'हम संज	' १२)। 	ा ४१)। संचलक व [संधनक] विवन विद्वसार
मारि देवा (वंचा १४ कुमा वंच १६)	H39"   3 Law mai (31 34 4 21	् (ताइ २०)। श्वां सभणयः।
र दूं. महोताब का बूसरा मूहर्स (मुख्य १	सामार (-पन रर)। र नि सीचने	सचाण (६व) वं [१यम] धन विधेव

ΨĦ सेम 11)1 में र [सेंड] संकान कान-पूर्व (भग % 1 (x85 KP-4 सम वि [रदन] १ गुक्त सफेर (ए।या १ रे—कारम् समित्र स्टब्स)। २ 🖠 एक शब्द, कुमेश-निकास के दक्षिण दिशा मा । भा (स २, ६--- वम ८१) । वे शक वा <sup>बड-के</sup>ना का प्रस्थिति (६६)। ४ धामन क्रमानमधेका एक संस्था, जिसने सनवान बहाबीर के पाप दीचा सी औ (अ व-पत्र ) 11.

> खाना १ १--पन २२)। २ वि सीचने-संबाग (६व) वृं [१यन] धन विधेष बाला (दुवा) । रखो सचमय । (निन) । रची सेज = ररेन । सेअबिय पि [संबनीय] केस दोग्य, ग्य संब न [क्रिय] रोदान ४६१९न (प्राप्त) । सिक्करो सेपवियस्य किथे (मूच १ र. १ सज्ज रवो सेन्स । यह वृ [ व छ] बबर्ट-सम्मविषा की [क्षेतियम] बन्यार्थ के। स्वामी गृहस्य (पव वश) । प्राचीन राजवानी (विवार १ पद २७१, सर्जभव रही सिम्नेभव (स्पः रहीत १ 1(85 सेजा को [भेगना] बहेरान (नुब १ १)। सेर्जस १ [श्यांस] र ग्याप्री निवेर का ्रशम (सर्वदानमः)। २ एक सम-पूत्र सभा देखों सेवा (नार---वंत ६२)।

831

बीच इ दिविष हाय-विशेष (इक) । देश पु विवा पायामि अस्तिराती-समा में होने-बाते मस्तवर्षं के बूसरे निनवेब (सम १८३)। पन्नति स्रो ["प्रक्रांति] एक केन स्थान्त-इंच (ठा ३ २—पत्र १२६)। परिवेस **द्र** [परिवर्ष] नेव बादि हे होता सूर्व का क्ट-गाकार मेक्स (बस्तु १२)। प्रकास प् [पर्नेत] पर्नेत-निक्टेय (ठा २ **१**—नव त०)। पासा की [पाझ] पूर्व के किरहा से होभवाची रखोई (इत्र ६१)। प्यम र्बन (<sup>\*</sup>प्रम] एक केद-विभाग (धम १)। लाभा प्याची प्रभा १ हुएँ की एक पार-महिपी (इक खामा र-पार २४२)। २ स्यास्त्रवे जिनकेव की कैका-क्रिमिका (सम. १५१)। १ माठवें क्लिके की रीका-रिविका (विकार १२१) । सर्विया 🗱 ["महिद्रा] कारावि-विशेष (राम 👀)। "मास्त्रिया को ["मास्त्रिया] बागरल-सिटेब (भीप)। स्नेस कुन विदेश कि 🖛 🖮 विमान (बग १) । वृक्तय न [धक्तवा] बामूपछ-विकेष (धीप) । बर पू विर] t एक द्वीप । २ एक छन्द्र (युज्ज १९) । "मरोभास १ "वर्णक्रमास्त्री १ द्वीत-मिठेव। २ समुद्र-निरोत (भुष्य १३)। "बाढ़ी की "बाढ़ी" नवा-विशेष (पएछा १---बप ३९)। देत दु [देत] एक एक दुवार (क्य १ ११ हो)। सिंग दुव [श्राह्म] एक देव-विद्यान (सन १)। मिह पृत्र [स्य] एक देव-विमात (सम १)। सिरी की भिी क्षतरें चक्रवर्ती शी¥मैं (सम १६२)। सुअर दु[स्तु] क्षेत्रवर सह (हाट-मृत्य १६२)। स्थ पून [ाभ] एक वैव-विमान (सम १४० पत १६७)। विश्व पूर्व विद्वती एक देव विवान (बन १) । देवी सुद्धाः स्रोग र् [रे] प्रधेप, देपक (दे क्शाय **पृ**[मुराक्कण] एक सना (का १ ३१ थे)। भृश्य पूर्वि भृत्य विग्वर्गक्रिक भूतन, योज (वेक, ४१) वर्षा⊣क्ष ३३ वस्त ३६

**ee, 44**7 2, 9 ) (

सुरद्वप दु [दे] फिन फिस्स (दे षद्)। सर्कि पुंची दि । सम्बन्ध, बुगहर का समय (के द १७- वर् )। २ शौठ-विशेष मधन के समान साक्षतिकाला कीट (देव १७)। ६ तुल-विधेव प्रामसी नामकं दुख (देव १७ शीव ३ ४ एव)। सूरि पू [सूरि] सापार्व (भी १ सङ्)। मृरिभः वि [मग्न] भीज इपा (भूमा)। सुरिभ देवो सुद्धा (३१२१ ४) सम ३६) मन इप ७२ व दी)। इदेव प्र विश्वाची प्रवेशि-नामक राजा का पूच (भन ११ ६--वर ११४ दुन १४६)। क्याओ िंद्रान्ती ब्रोधो एना मैं फ्ली (कुप १४६) । यूग वेकी विवाही सूर्व के दाव चे होनेनाओं रसी**दैं (दू**प ७ )। की गा (कुन ६=)। इस्सा ध्ये [केस्या] सूत्रं की प्रमा (मुक्त १ -- यत ७६) । सि र्नु सिनी १ प्रवम देव बोकका एक देव (श्रम १४) वर्शवि १) । २ पूंत्र एक देव-विमाद । ३ व् सूर्वाम केन का सिहासन (सन १४): "विच d [ । मर्त ] मेर रबंद (मुख्य १) इक) भारत पुँ [ीवरण] मेर पर्नत (मुज्य ४ इक्)। मृरिक्ष १ कि ] स्वतुर पक्ष (१) 'मार्ट पे ष्योपर्श कि सामिञ्च पुरिवास समाममे भं (६३१ )। मृरिस वेदो सुद्धरिस (है १ व)। स्रवरवर्षसम पुन [स्रोत्तराप्तंसक] एक देव-दियात (सम १ )। स्रक्षि रही स्राह्म (एव व ये) । स्रोव पु [स्रोद] एक समूत्र (गुक्त १६)। स्रोदय व [स्रोदय] नवर-विशेष (यस्य t=4) : स्रोपराग पू [स्रापराग] नृरं-भरूक

सुन प्रशासी १ सोहे का सुद्धेरत कारत.

सूची (विदार ६—-वय १३) ग्रीत) । शह-

क्तिंग विद्वा (क्यू १ १---वन १वः

रुवा) । वे सेव-विदेष (बागू १ ६) । ४

(44) 1

(इस १७) । पूर्व केल-विशेष (परम १० ६१)। पाणि पू ["पाणि] मध-निधेप (क्मैश)। घर दूर [धर] दिन महादेन (দিৰ) ১ स्वरुद्धान [दे] पत्नन स्रोटा वालाव (रे स्टस्यारी भी [दे] चएकी पार्वधी (देव सूब्य 🛍 [शूब्य] तूसी बतोध्स वाक्ष्यंत्रः (बा ६४' क्य ११६ दी' बर्वीन ११७)। इय दि [चित विग] सूची पर चडामा ह्या (साम १ १---पत्र १६७) १६६) एव (१४)। स्त्राची हिं] वेश्वा शायका (वे व ¥\$) 1 संद्रिक [स्क्रिन] १ जून-राजालाः 💐 किरको सुबीरों (कि. ६) । २ दे शिला मध्येक (पाम)। स्क्रिया 🛊 [शुक्रिय़] यूनी विकार वर्ष्य को बहाना बाला है (पराह १ र--पक <) ( सुब वुं [सूप] शाब (क्वा; बोब ७१४ वाह ऐसिक्दरेश वंचार १७)। पार, (द व क्रिंद) रहोहवा रहोतं वक्कीगवा बीकर (पत्रम ११३ ७ तुर १६ ३४: का १९)। स्स धक [ शुपू ] सूबना । सूध्य, सूर्वीय, मुसदेरे (हे ४ २६६) प्राष्ट्र ६४८ प्रमा ६७४) \$ \$ (XX) 1 मूसर वि [मुस्पर] १ मृत्यर मानावनामा (मुर १६, ४६) । २ म भानकमें का एक मेर-किससे सुन्दर स्वरं की प्रान्ति हो प्र क्रमें (कर्बंधे ६२ - बाक्क २३: कर्म 📞 २२) : परिश्वादियों स्त्रे [परिवादिनी] एक तर्ज्य की बीखा (क्यूड के ४--वर tvt) t मुसास वि [साच्छ्यास] अर्थ स्वापनामा (₹ १ १६०× <del>द्वा</del>र्ग) । स्सिव वि [शोपित] तुवाब क्या (पुर बहुन मादि का ग्रीक्स मन मायकला कीया रेश रूप हैं।

सुसुध वि[सुमृत] १ मच्यी वया पुना हेका। २ दशकी तरह बात (बण्या १ ६)। ६ 4 विश्वक ग्रन्थ-विशेष (बज्जा १ ६)। सूदम रेखो सुमग (सींख २ स्ट्रेष १११ (६२)। सं रेको सेअ≂सोठ। वडपू["पट] स्वेताम्बर केन (सम्मत्त १३७) । से प [र] इन धर्मों का मुक्क प्रस्मा-१ नावय का उपस्यास । २ प्रस्त (अग. १ १ उथा)। १ प्रस्तुत वस्तु का वरामर्श (बत्त २ ४ वरि)। ४ धनन्तरता (स

१ —वय४६६)। में } यक [शी] क्षेत्राः सेव, सम्बद सेम ( पर्)। सेल एक [सिप्] शीयना। सेमद (है। Y 28) 1

संबद्ध [वे] एएपवि क्लेग (वे स, ४२)। सेअ पू [सेय] १ करेंग कारो वेक (गूम २ १ २० एवस ११ — यत्र ६३)। २ एक सदम मनुष्य-आति 'बंदाका मुद्रिया देया वे धरने पावकरिमासो' (ठा ४---पत्र 121) 1 संअर्थ [स्नेद] पश्चीना (या २७८) दे ४ ४९ कुमा)।

समयु [सेक] सेवल शीवता (मै ६४) ना ७११ हेमा ११: प्रति ११) सेम न [भेयस\_] १ सुच कम्यास (भव)।

२ वर्षा ३ तुष्ठिमोस्य (इ.१. ३२)। ४ नि प्रति प्रयस्त प्रतिसम् सुनः 'इन सेन मोवि सेमा (वंचा ०१४ ड्रमा वंच २६)। १ दू. बहोराव का बुसरा सुप्तं (मुज्य ! (F3 सेम विसिन्न] सक्तम कम्प-पुक्त (सम ६ चन्यत्र २१४) ।

सम वि[स्वत] १ गुनव सक्त्र (णाया १ १—पत्र दक्ष, समि दक्ष क्य)। २ प्र एक इन्द्र, कुर्मव-निकास के ब्रिप्टिंग दिसा का स्का(ठा२, ६—यव तर्)। १ स≢ की

नट-देश्य का समित्रति (६४)। ४ सामन

क्षमा कारी का एक राजा, जिसने भनवान्

महानीर के पास बीका की की (टा द---पत्र

स्य १) ः ६८ ई [स्प्रु] भूतासन्य नामक इन्त्र के महिप-सैन्य का समिगति (ठा १ ए—पत्र १ २३ **१७)** । पड सड र्रु [पट] चेतानर कैन कैन का एक क्षेत्रवास (मुपा ६४१ विस २४०४ मर्गर्स ११ ६)। संभ वि [ एट्यम् ] मापामी भविष्य 'पमू र्गानित केवली सेयकालीय वि तेनु वेद यागासपदेसेसु इत्वं वा भाव यापादिकारी

चिट्ठित्रए<sup>\*</sup> (मग ४ ४---पत्र २२३) झ १०--पत्र ४६४ मसू २१)। फिर्नु ["स्त्रस्तु] भविष्य कास (घप उत्तर ११)। सेसंबर दु [क्रेयस्कर] क्योतिक पह-विशेष (धार १—पत्र ७६)। सेमंद्रार वृं [अयस्कार]क्या-करण 'सेयत्' का उचारण (ठा १०---पत्र ४६४) ।

सेअंबर वृं [केवाम्पर] १ एक केन संप्रशाप (वं २ सम्मत्त १२३ मुना ४६६)। २ व सकेद वक्ष (प्रस्त १६ ३ )। सेअंस पू [केयांस] १ एक चन-द्वमार (क्य १४) । २ चतुर्व नामुदेव तमा बलदेव के पूर्व क्सम के बर्ग प्रस—एक कैन ग्रुनि (सन

१५६ वडम २ १७६)। वेची सेर्जिस । सेअंस देशों सेञ = स्पष् (ठा ४ ४—पत्र २६१) । सेअज न [सेपन] हेरू होवना (कुमा; प्राप ४७ स्त्रमा १ १३—वश्र १८१ः सुना १ ६)। यहपू<sup>["प्रध</sup>] श्रीक (धारा रु १ २)।

स्थलमा १ पृ [संघनक] १ सना वे लिक सेम्रणय } क्य एक हाजा (छा २६४ छ स्तामा १ १ -- पत्र २४)। २ वि. सीयने-बाबा (दुमा) । देवो सेवणय । सेअविय वि [सेवनाय] हेवा योग्य, व्य सिक्बको सेपनियस्य बिर्चि (सूच र ६, र

रोश्चिपम सी [चेत्रविका] वेकमार्व देश की प्राचीन राजवानी (विकार प्राव २७४,

सेधा ध्ये [श्रेयता] तफेरान (गुळ १ १)। सेमा देवी सेवा (नार-वेत १२)।

सेआस रेबो सेवाल = रोबान (से २ ६१)। सेआल देवो सेथ । छ = एप्पत्नपत । सेआछ वृद्धि १ माथ का मुखिया। २ संक्रिय करनेवासा यक्ष भावि (दे व ३६) । **१ हृदण, खे**टी करनवासा यृहस्य (पाप) । सेआब्री की [दे] इन्हें इन इम (वे ८ २७)। सेआलुम ९ [दे] मनीती भी सिजि के विए सल्य बेल (दे ८ ४४)।

सङ्घ द [स्वदित] पर्शना (भनि)। सेइथा ) स्मै [सेविक] परिमाण-विरेय, सेक्सा र बो प्रचित्र की एक नाप (छेतु २६ स्प पू १३७ मणू १४१)। सेउपन सित्ती र बांब प्रच (से ६ १७० कूप्र २२ कूमा)। २ दालवाल कियायै यास्ता । १ कियारी के पानी सं सीकी मोग्म चेत्र (धौप, छाया १ १टी—पत्र १)। ४ मार्गे (ग्रीपः स्त्रमा १ १ टी—पत्र १ कृष्य बहे)। "बीच पुं ["ब"च] पूत बोबता (क्ष. १७)। सहत् [पर्ध] पुस्त्राना मार्ग(से व ३०)। सेठ वि [सेक्तू] धवक विषय करनेवास्य (क्प्प दर्)।

सेंग रेबो सिंग (क्य वि २६७)। सेंमिय रेखो सिंभिय (मफ पि २६४)। सेंबाइय वृं [व] पुटबी नी मानाव (वे व 44) t सेचलय न [सेचनक] सिवड दिवडान (बोर्ड २७) । रेको सेक्षणय । सेवाण (६प) र् [१येन] धन्य-विधेष

(पिन) । रोबो सेण = स्पेन ।

सेत्रय वि [सेयक] सवा-वर्ठी (कप्प ८६) ।

सँदूर देको सिंदूर (प्राप्त संवि १)। सेंघम देखो सिंघम (नित्र वर) ।

सेच न [शैरप] क्षेतपन ठंडापन (प्राप्त) । सेज क्यों सेळा। यह वृ[पात] वस्ति-स्थामी गृहस्य (पण व४) । सेजांसम रेजा सिर्जासम (क्षमा) वसनि १

₹**₹**) ( सेझंस पू [हेबांस] १ प्याय्व जिनके का नाम (सम बच्छे कम्म) । २ एक स्टब्स्य

દ્ય	पा <b>इश्रसदमहण्यनो</b>	संग्यंस—संग
विश्ववे प्राप्तम् प्रार्थनान को स्थुन्य ये ज्ञान्य गएए। करामा मा (इस्ट कूत्र २१२)। व मार्थक्रीय मास का बोकोण्ड माम (सुन १८)। र मार्थक्रम मार्थक्रीय का रिखा स्था (साम १८)। र को सिखा स्थान १८०१)। र को सिखा स्थान स्यान स्थान	सरुर विचये ६ हार्य ६ एक ६ मोहे थीर ११ त्यारे हॉ (चन १६ १)। जिय, यो, जा पूर्व (चन १६ १)। जिय, यो, जा प्रकारिक प्रकार सरुर ११ हुस्ति । ऐक्सियों के मेनून विचेशर (प्रकार थे ५००) मुता ६ हुस्ति वह देशा १६ हार्यों १६ १८, २७ मोहे सीर ४१ त्यारे हो (परन १६ १)। सह प्रिति हेना का मुख्या केना-नायक (क्या परन १० १ छम १०० हुमा ११६)। दिवाह प्र (चिपारी को दुर्विक सर्व (हुन्ना ३५)। सेप्यास्त्र व सिन्यपानी व्यवस्तित्त स्व इन्ने स्वकृत (क्या भी)। संग्रित की सिन्यपानी व्यवस्तित्त स्व इन्ने स्वकृत (क्या भी)।	सेएक ) केवा सेम्ब (है ए, दर वह ; हुवा) सेक प्रेम के प्राह २२)। सेक प्रवृत्त कि प्राह १२)। सेमाजिमा की शिकाशिकां अव्यक्तियेव (है र २२६२ मार्क १४)। सेमाजिमा की शिकाशिकां अव्यक्तियेव (है र २६६२ मार्क १४)। सेम्ब पूर्वा श्लिक्सम् क्रिक सेमा वर्षी (मार्क २३ वि २६७)। सेर कि [स्वेर] स्वकारी स्वयंत्र क्रिक (स्वयं क्रिक

मूक्तना(देव ४६)। सेणिय र किलिकी १ मदब केटकाएक से द्वि इसित् विक्रमा प्रकार प्रस्पात राजा (स्ताया १ १--पद ११ ६७) केंद्र-महाजन (वे ४२, सम ११ काया क्षा रे—वन प्रशास्त्र रहेश स्था वेत १ १---पत्र १६: क्या)। वक्स २, १६३ कुमा)। २ एक वैव सुनि संबिध न कि दूध-विधेष (पर्छ १—पन (क्य) । 11); सेविजा 🖈 [सेविजा] एक 🖣 गुनिसाका संक्षिया और विसेटिशी क्लेब किटी नहीं (क्य)। (याना२१६६)। सेविका) को सिनिका कर का एक सेणिका मेर (मिंग)। सेदि की भिनि देशों सेही = केनी (पर संविध देवा सेणिश (संबोध ६४) । T THE TOTAL OF सेपिया व [सैनिक] बरक्ट विवाही (ब संदिया । ध्वी सेव्हिया (दब ४,१ ३४० सेक्स ( भी ६) । Rat) s से जी बड़ी भिजी देखों से जि (महा) बड़ामा संबो को [भेषी] १ पांक (तम १४२) मदा)। २ एपि (दणु)। ६ धर्यस्य पोल्ल येष्ण केता सिम = नैन्य (वासा १ ४—१० क्षेशकोटी को एक नाम (धालु (७३)। 8×41 4≥±) 1 धेवी सणि । सेल देवो सिल = बिक (इप्र १६)। संभ र् [इयन] १ प्रिक्ष्मीकोच (काम क सेच (घर) देवों सेम = देव (पिंद)। थर केण व्या मैं थ४)। र विद्याबर बरा का एक राजा (प्रक्रम ६, १६)। संसंख वृ शित्रस्थाय । एक प्रक्रिय वर्गत (सम्बद्धाः १६—यम् २२६। वैद्यो । सभ देन्ये सच्या यख्यारमध्यो नच्छे नर्रीत

18)1

फळ बुर १२,१ ४ कि)।

मेलाई इस्थिनवाई (बारा ६ )।

सेजा 🗱 [सना] १ वनशत् संजनतकती

नीमाता (संव १४१)। **१ करकर, ग्रे**न्स

(इ.स.) । १ एक कैन बाली, बो नहिन

स्कूलकः नी व्यक्ति नी (कम्पः पत्रि) । ४ सङ्

छेलड् दू [दे] धरर की एक क्लम आवि (सम्बद्ध २१६)। सेरिय प्रिकृति पूर्व पूर्वम, यामी का केंद्र ( \* # YY) 1 सेरिय केनो सेरिक् (पुण क १६) के क W th सेरिय पूजी वि । शास-विशेष, 'कर्पानिक धेरियाहरूकि (स्थ) । सेरियम प्रवि क्रिय-शिक्षेप (पएश t-पत्र १२)। सेरिक् पूजी सिरिमी में सा महित (पा १७२ ७४२) गार---गुल्ब १३४)। श्री-ही (शम)। धेरी को दिहे । बन्दी धाइनी । २ मन माइन्ति (रेन, १७)। १ रम्मा प्रमुक्ता (सिरि ३१४)। ४ सम्ब-निर्मित सर्वेकी (सव)। सेरीस पूर्व (सेरीस) एक बांव का नान (वी ११) । सेस १ | रीस | १ वर्गत वहार (हे २, ११) प्राप्तः सुर ६ २२३)। २ बाबाला क्लार धेद धेवी सेश्र≔सेंद (देश ३४० लाज (कर १ ३१) । ३ न. शस्त्र**ें स्र समूद्र** वि ६ ३१)। बार वृ [बार] परवर वाले सेम देवो सेह⇒ देह (कीव र—का दर)। माना रिक्सी, दिलाबर (संसू १४६)। सेज व्या सिज = शैल (हे १ १२ : कुन।) साइन पिट्ठी प्लीत में बना हमा पर (कम्प)। जायां को ["कामा] गर्की (रंग)। धंस दु [स्तम्भ] पापास का **बं**मा (कम्म ११a)। पाछ वाल पु ["पाछ] १ पच्छा तथा भूतानम्य गामक इन्द्रों का एक एक सोकपास (ठा ४ रे— पत्र ११७- इक) । २ एक वैनेतर वर्णावसम्बी पुस्स (अस ७ १०—पद १२३)। सन [स] नप्र (से ३ २७)। सिश्रार न [ शिकर] पर्वत का शिक्षर (कप्प) । सुआ ध्ये ["सुवा] पार्ववी (पाध) । सेक्स ) दू [रीस्क] १ एक राजीं (ए।या सेक्स ११ १—पत्र १४० १११)। २ प्तापक्ष (पि १६६) स्त्राया १ १--पन १६४)। पुर न ["पुर] एक नगर (सामा ₹ X) i संख्या न [शैक्षकञ्ज] एक मोन (ठा ७---পদ ३६ আন)। संस्म की [रीका] तीसरी नरक-पूजिकी (ठा ७---पद १८८ एक)। सेवाइक्य पु [शैकादिस्य] बसमीपुर का एक प्रसिद्ध धावा (दी १४)। सेसु पू [ रीज़ ] स्वेप्प-नारक पूप-विशेष (पर्याः १--पन ११)। सेक्स वृ [दे] फिला कृपाड़ी (दे व २१)। सेतेय नि [रीत्रय] पर्वंत में क्लान पर्वंतीय (वमीव १४)। सेक्स पू [रोहेश] मेर पर्वत (विशे १ ६४)। सेक्रंसी की [राक्षशी] मेर की ठए नियन पान्यावस्था, योगी की शर्वोक्तुय्य सनस्था (विशेष ६८ व ६७ सुना ६८८)। सेकादाइ पु [रोकोदायित] एक केनेवर वर्गावलस्थी गृहस्य (सन ७ १०---पण 328) 1 सेंड केंद्रों सेस्ड = रीस भाइ मिल्लाइ वास मर्थ रेक्स मिन पविस्तुरेखें' (बन्धा ११२)। सेक दृ[ये] १ मुक्सियुः। २ तर, बारा (देव, १७) । ३ द्वन्त वर्षा (दुमा है Y \$40)1 सेव पु [रोक्य] एक राजा (लामा १ १६--यम २ म)।

वादिः बन्दु-विशेष (पद्यः १ १--पत्र व) ।

सेक्सि सी [दे] रुद्ध रस्ती (वट २७ ७)। सेव सक [सेव्] १ मासका करणा। २ धापम करना । १ ज्यामीम करना । नेबाइ सेक्ष् (भाषा उब महा)। मुक्त देवित्वा क्षेत्रम् (बाका)। वक्क सेवमाण (सम ३३) भग)। इन्ह्र सेविज्ञंत, सेविज्ञमाण (सुर १२ १३६ कम)। संक्र सेविभ, सेविचा (मार-मृष्य २४४: माना)। इ. सेवयस्य (मुवा ११७ हुमा) सेवणिय (सुपा १६७)। सेवग देवो सेवय (पंचा ११ ४१)। सेमह रेको से = स्वेत । संबंगन [संवन] १ सीना विश्वादेकला (क्य पुरुषे)। २ सेवा (ब्ल प्रेंग, प्रे)। सेवणगा र की [सेवना] सेवा (उत्त २८, संबद्धा र सम व १)। सेवय वि [सेवक] १ सेवा-कर्या (दुप्र ४ २) । २ वृ नीकर, भूष्य (पामा कुम ४ २ सुपा ६३२)। सेवछ न [श्रीवस्त] देवार, देवान, एक प्रकार की पास जो नहियों में सफ्ती है (पास)। सेवाकी [सेवा] १ मञन पर्युपासना भक्ति । २ उपभोगः १ मानगः । ४ माध्यन (हेर ११ कुमा)। सवाड } न [ शीपाछ ] १ सेनार, देवास सेवाक बास विशेष (छप प्र १३६ पास. की ६)। २ दूं एक तामध विश्वको बीतम स्वामी ने प्रतिबोध किया था (हुप २६३)। |दाइ पूं [ ]दायम्] पत्रनान् महानीर क शमय का एक सर्पन पुरुष (मन ७ १०---पत्र ३२६) । सेपाछ पूं [ये] पष्टु बारा कांदी (वे ८४६) सेवाछ दू [श्रीवासिन] एक तारस विसको गीतम स्वामी ने प्रतिबोध किया वा (उप १४२ थे) । संघालिय वि [शैवासिक, व] धेनावनावा रीवाब-पूर्व 'संवाजिवमूमियने फिल्कुसमाणा म वामयामस्मि (मुदर १४)। सेवि वि [संवित्त] सेवा-कर्या (ज्ञा) । सेस्क्रा द्र [रोस्पक] इन्यांखर्व की एक सेवित्त वि [सवित्] अपर देवो (सम १४)।

सेमिय नि [सेपित] निवकी सेना की नर्द हो वह (काष)। सेक्या देवो सेवा (हे २ ८६८ प्राप्त)। सेस दं [ग्रीप] १ क्षेप-माग मर्ग राज (वे २ २८)। २ छन्दका एक भेद (पिंग)। ३ विपविद्यासीका (ठा३ १ थी---पत्र ११४० क्सनि १ १६४' हे १ १८२ मजर)। सह, यई की ["पनां] र सातने बसूदेव की माठा (सम १४२)। २ दक्षिण वर्षक पर एहनेवाली एक विवक्तमारी देवी (ठा ५---पत्र ४३६ इक) । ३ वस्तो-विरोप (पद्या १---पत्र ६६) । ४ मपनान् महानीर को बौद्यिकी—पुत्रीको पूत्री (माचा२ १४, १६)। यन [यत्] यनुमानका ए० मेद (मधु २१२)। । साभ पुं["राज] क्रम्ब-विशेष (पिग) । सेसब न [श्रीक्षय] बास्यामस्या (रे ७ ७६)। सेंसा 🛍 [श्लेपा] निर्मान्य (छर ७२० टी स्रिरि ५५६)। सेसिअ रि शिपित र बाकी बनाया हवा (मा १६१)। २ घलन किमा ह्या कातन किया ह्या (विसे १ २६)। सेसिअ वि [इस्पित] संबद्ध किया हुमा, चिपकामा हुमा (विशे १ ६६)। सेहभड़ [नम् ] पतायत करता, भागना । संहद (हे ४ १७० कुमा)। सेंद्र सक [शिक्षय] १ विवास सीक देनाः २ समाक्ष्माः ते इति (सूप्राः २ १ ११)। कवक सेहिळांत (नुपा १४१)। सेंद्र वृद्धि सेंद्री प्रवर्णसम्बद्धी एक कारि साम्री जिसके शारीर में काटे होते हैं (पश्च १ १—पच≍ः प्रत्यार—पच ६३) । सेंद्र शिक्ष] १ नव-धीवित साबु (नुम रे वे रे वे सम प्रया मीम रहर, १७० वर कर) १ २ जिसको दीसादी पालंबाली हो वह (पद १७)। ३ शिष्य चेसा(मूचार १३)। सेंह् पू [संघ] विद्रि (दवा) । सेह्ब वि [सेघान्छ] पाय-विदेश वह बाद्य जिसमें पतने पर खटा का धरकार किया बाय (स्वा-प्रश्रु २ र--प्रदेश )।

जी याथ **१** ["ती] सेमा-प्रति, परकर

का मुक्किया। 'छेलाशियोर्डि टाडे मेत्रस

विलेक्टर मुख्यस्त्व (पदम १ ७४ मुपा

न ["सुला] बढ्छेना बिसर्ने र हायो र

रव २७ बोड़े घीर ४२ व्यावे ही (पडम

**१६ ४)। बद्द [पिति]** केना का

पुरिक्या केमा-भावक (कम्पा प्रवस ३७ २

दम र⊮-दुना ६६)। दिव**६** व

भिपति ] खी पूर्वोच्छ सर्थ (बुपा ७३) ।

सेणारक व सिन्यपता स्वाधितव स्वा

सेप्पि और भिजि १ पेडि । २ समूह (यहा)।

३ दुम्बदार धारि मनुष्य-वाति (खादा १

संजिभ 4 [अजिक] १ मक्त केट आ एक

प्रकात रामा (खावा १ १--वर ११ ३७।

ब्रास्थ-पन ४३६ सम् ११४३ स्मात् बीत

परुष १, ११: कुमा)। २ एक पैन पुनि

सेजिमा 🛍 सिविस्रो एक 👣 प्रक्रियाना

संविधा ) को [संविधा] क्षत्र का एक संविधा ) भेर (दिव)।

सेपिय र् [सैनिक] तरकरी दिशाही (ब

सेर्भ की [भेदी] रेबो सेप्नि (महास्थाय

सेष्ण केही सिम = फ़ैच (ए।सा १ ---पत्र

सेंच देवो सिश्त = विच (इस १६) (

सेच (घप) रेको संभ = पैर (पिन) ।

संवित देशा सेविम (इंदोव ६४) ।

म नैतृत्व (क्या पीप) ।

{---पद ३७) :

(कम्म)।

(**क**म्म) ।

1 ():

( 44 azz)

यमेरि बर परम १४ २ )। सह

विस्ते मयनाम् प्रादिनाच को रसु-एउ है ब्रम्म पारता कराना वा (रूप- रूप २१२)। ३ मार्पदीर्थ मास का धोकोत्तर नाम (नुज १६) । ४ भनवान् महानीर का निवा शता दिवाने (बाना २ १६ १) । देखी सिक्षय सभैस = सेदांस। सेक्स रेबो सर्थम = धेयन (धारम) । क्षेत्राक्षे शिया १ प्रज विक्रीमा (५ १ १७) दुवा) । २ मकार वट, बब्रिट ज्यापन (पन १४२ पूजार १४)। सर प्रे [वर] **पुड-स्थामी अपामय का मामिक साबु को** रहने के मिए स्थान बेनवाला गृहस्य (योग २४२ पर १११ पंचा १७ १७)। वास्त्र पु [पाठ] शम्बानानाम करनेताला चाहर (मुना २८७) । देखी सिक्सा । सैक्रारिक न दि] क्लोतन विशेष्ठे में

स्वा(स्थान [६] उत्पातन स्थात न मुक्ता (१ र ४१)। सद्धितु [द क्राहिम्] चैन का दुविच ठेऊ महातन (१ ४२ तम ११) खाना १ १—११ १६ छन्।। संदियन [६] हुए-फिटेन (स्टाए १—एन

११)। सदिवाको [दंसेडिरा] स्टेब स्ट्रिंबसी (ध्यार १६६)। सदि भी [भनि] देवो संबी = भेग्री (पूर

के कार १६६)। संदिया। देवी संदिया(दहार १३४ संदेश | दहारी)।

संबो की कियाँ । हार्या १ वर्षा हार १४३। वाहा)। १ एकि (बाजु)। १ सक्का केका कक्षाकोटी को एक बात (बाजु १७३)। देवो संचि। संज ई [इसन] १ वर्षि-विशेष (परस ६,

प्रवास । संग्रा हुँ [इयन] १ पश्चिमिटेव (पटव ८, ७६ दे ७ करा ने ७४)। १ रियावर वर्त मा एक धना (पटव ६, ११)। सात्र देश संज्या (पटव ६, ११)। भागार श्रीयमध्यार (भागा ६)।

भणाई इत्यिक्याई (धार्य ६ )। संवा के [धना] १ क्यान बंबस्तावजी शो नाता (बच १८१)। १ क्यान है

(इम) । १ एक येन बामी, बो महर्ति

स्पूरण्य की विद्रुत की (कप्ता की) । ४ वह

से मुंज कु [राष्ट्रस्था वा १० प्रशिक्ष वर्षण (शास १६—वह २२६१ स्वर्ण)। संदृष्टी सेअम्प्लेद (१४ १४ स्वर्ण १६)। संदृष्टी सेक्ष सेद्र व्हेस १८० स्वर्ण १६६१ सेक्स सेवा सिम्न कर्डन (११ १४ १५ प्रश्ना)

सेव्ह } क्यों सेन्द्र (है २० ४६ वर्ड द्वारा सेव्ह } प्राप्त २२)। सेव्ह दुन [शंक] दुन्दर-विद्य सिंग (शंक १४)। सेनास्थित क्षी [शेक्सकिय] तवा-क्रिय (है १ २३६ प्राप्त १४) सेम्स्सी } की [सम्यों] नेवा दुवि (पन सेम्सी ) का व १३३। हम्मीर १४ २३)।

से मुँही } कर ये व वे वे वे हम्मीर हे भ दे दे )।
सेन्द्र (क्षेट्र (स्त्रीप्पान) कर्य, केन्द्र पर्यों
(माड १२। शि २६ )।
सेर शि [स्तेर] सम्बद्धयों सरावन संग्रम
(स्त्रण क्षा निक्ष दे क)।
सेर शि [सोर] विस्तर (है २ क। दूमा)।
सेर शि [सोर] विस्तर (है २ क। दूमा)।
सेर शि [सेर मी] की मेरेल प्रमा के
बार में प्रकार विकानमार्थ करने माने सरावन
की (क्षा)।
सेराह यु [से] सराव भी एक बतन बार्टि
(समात १९४)।

(हाम्य ११६)। सीरिय पूँ [न] पूर्व कृतक, याद्री का कैत (दे क ४४)। सीरिय केवो सीरिह (तूब व १९ दे क ४४ दे)। सीरिय पूर्व [नि] वास्तरिकेद, 'करवित्रीक वीराय पूर्व [नि] वास्तरिकेद, 'करवित्रीक वीरायक्रमार्थ (वस्त्र)।

वीरामुक्तार्थ (क्यां) सिरिय पु वि क्रमानियेव (नया १— व्य वेशे) सेपिए पु की सिरिया मेंगा बांद्रिय (क्यां १०२-७४२। तस्य-कृष्ण १३३) की. सि (क्यां) सेरी की वि १ वस्ती मतानिय । एक मामानि (क्यां २०)। व रच्या, प्रस्ता (न्यां २६०)। प्र कम्मानिय मंत्री

(पत)। सेरीस दुन [सेरीस] एक योज वा बान (ती ११)। सम्बद्ध [रीख] १ वर्षत स्वात (ते २, १३) मामा नूर ६ २२१)। २ वरामा सम्बद्ध

(कर १ ११)। १ न करवाँ म बहुत है ९, ११)। बार पूं [कार] पायर समे-बाबा किसी किवाबत (बसु १४३)। तोह न [गूर] वर्डत में बना ह्या वर (क्य)। जाया को [जाया] वर्डत

(स्राया १ ६ - पत्र १ ६)। सोगमञ्ज्ञ देवो सोअमञ्ज (दस २ ६)। सोमाइ देखो सुमाइ (उत्त २० ३ परम २६ ६ स २४)। सामाइ (१) यह वि+सी पसरमा फैनमा । सोग्नाहद् (बात्या १८६) । सोच देशो साभ ≈ शृष्। वह सोचंद, सोपमाण (नाट—गुच्या २०१ एएमा १ १--पत्र ४७)। संब्र, सोचिकव इरपगए पारोग्नमश्चिरवर्णेण घोमिवयो रामा (स १६७)। ६ साम्र (उन)। सोपिय वि शिचित देश क्या ह्या प्रधानित (स १४८)। साब देखो साच । सोधं स्रोवा <sup>।</sup> थेवो सुण=धु। सोच्छ" । सोष्यिभ देवी सोरिधज (इक) । स्पेत्रण्या । म [सीखन्य] युवनक सक्तक सोबम र भनगनशी (उप ७२८ ही) सुर १, 11); सोव क्यों सोरिल = तीर्य (प्राप्त १६)। सोरम नि [शोष्य] गुद्धि-योग्य, शोक्नोय (सुमार १ दी)। सोशमन्य वृदि] रजक बोबी (गाम)। देवो सुरमस्य । घोडिम देवो सोडिस (इर्नुर १४)। साबीर वि [शोटीर] देवो सोंबीर = गीमधर (भ्याधीय मोहर ४ क्यू वाद ६६)। धोडीर व [फ़ीटीचें] देखो सोंडीर = शीवडीचें (541) \$ \$ x x \$1 \$\$ a61 ca1 Alle (8) धोड वि [सोड] सहन किया हुम्ब (क्य २९४ मे; बाला १६७)। सोडम् कोड हेको सङ्ग = सङ्ग सोज वि [श्रोण] बात एक वर्णवाता (पाप) । स्रोपेन व [वे सीनन्त] विकाशिका तिपार्व (म्बार ४—नम् ४०) सीर तंदुर )।

सोपहित्र वि [सीनविक] १ धन-पायक। २ कर्तो से शिकार करनेवाता (स २४३)। सोजार देखो सुज्जार (मा १६१ पि ६६ १६२)। सोणि ही भोणि इटी कमर (इप्स उप ११६)। सुत्तगन [सूत्रक] क्टी-सूत्र करवनी (धीप)। सोणिश व [शोनिष] स्वार्ध (रे १ १२)। सोणिम न [शाणित] र्यवर, नून (उवर सोणिम पूंची [शोणिमन्] रकता सामी (विकार≖)। सोणी ही [ब्रोजी] रेजो सोजि (परहार Y---79 €nc €) 1 सोणीम देवो सोणिश = होणित, भूंगी मंससोखीयं स घरते स पनव्य,' (धाना र द द शः पि ७३)। सोण्य न [स्वर्ष] सोना पुनर्छ (प्राष्ट्र व संक्षिप २१)। सोज् देखो सुन्द = सुस्म (पर्:ना ७२६)। सोजहा देवो सुच्हा = सुवा (संक्षि १६८ प्राप्त ३७, या १ ७- काल व६३)। सोत्त न [मोत्र] कान, धवऐन्तिय (धाषा, रमः विक ६०)। सोच देवी साक्ष = मोठव (है २ १ व) वा प्रश् से १ ४० कुमा)। सोचि देवो सचि = गुक्ति (वर्ः का ६४० सोचित्र व [बोत्रिय] वेदाम्यासी वाह्मण (सिंक ४३१, नाट-मृज्य १३४ प्राप) । सोचित्र वि [सीत्रिक] १ पूर्व-निर्मित चुते का बना हुमा (बोनमा बर, बोन ७ १)। २ सूते का व्यापारी (वस्यु १४६)। सोन्तिम प् [शौकिम] शैन्तिय बन्तु-विशेष (14 th-1 thbb) सोरियमर्द्र) भी [गुकिसवती] वैनम सोचिअमई देश की प्राचीन चनवानी (रामः ६७) । सोची की हिं] नहीं (है व ४४ पर्)। सोरिय देव [स्वस्ति] १ एक देव-विमान (क्षेत्र १३३)। २—वेदो सस्य (वीद्र

२१ वार४४ मिम १२८३ नाट—राजा सोस्थिल पू [स्वस्तिक] १ व्योतिक पह-विद्येष (ठा २, १ — पत्र ७व) । २ न शाक-विशेष एक प्रकार की हरित बनस्पति (पएस १--पन १४)। १--रेबो सत्यश्र सोबरियञ्च = स्वस्तिक (पश्क १ ४--पत्र ६६ सामा १ १--पत्र १४)। सोवाम ५ सोवाम विको सोवामि सोदामणी देवो सोध्यमणी (पदम २६ **⊏()** | सोदानि र्वु [सीदामिम्] वनरेत्र के घरक-सीन्य का प्रविपति (ठा ६, १—पत्र **1** (2) ( सोवामिणी देशो सोभामिणी (नाट---मासवी व)। सोदास र् [सौदास] एक राजा (परम २२ वशे। सोघ (शौ) देखों सन्दर् = सीव (पि ६१ ए)। सोपार ) दू. व [सापार, क] ध्य-सोपारच किछेप (पंजम ६० ६४) सुपा २७४) । २ न नवर-विशेष (सार्थ ३६ ही ११) । सार्वप्रय वि [सीवन्धव] सुरुषु रामक कवि न्त्र बनावा ह्या येव (भवत)। सोस धक ब्रिसी शोक्ता चनक्या। तोर्मित (सुरुव १६) मुरुत, बोर्थिन, तोर्थेस (सूरुव ११)। जीन सोमिस्सेटि (सुरुव ११) । बद्ध- सोर्थव (ग्रामा १ १—पन २६३ क्य- धीप) । सोम एक [शोमय] शोमाना शोक्सपुछ करना । प्रोभेद (भन) । नक्क सोभर्यत (पि ४६)। प्रेड सोभिचा (क्य)। सोसमावि [क्रोसक] १ शोसनेवल्ला। २ स्प्रेम्प्रनेवासा (कप्प) । सोभगा रेको सोहमा (स्वय ४१)। सोभण रेको सोहण = स्रोमन (परम ७० १६ स्वय ४१)। सोभा देवो सोहा = रोमा (पाष्ट्र १७) प्रच २१ व क्या मुख्य १३)।

सेव्या को [दिह्मणा] रिज्या सन, नदर्गना वहबंबमारखंखेड्गामो कामी परिवद्दे बरिव (उप)। सेंब्र दू [रोक्सर] १ शिक्षाः 'कनसेंब्र्य' (निक १६१ पाप)। २ सन्द-निरोप (निन)। १ मस्तक-स्वित माबा (बूमा)। **छेद्दर्भ र् [दे] बहराक पश्री (दे ८ ४३)** । संशारिका देवो संभाविका (सण ६३ का ४१२। दुवा हे १ २३६)। सेहाकी की [श्रफार्क्स] बता-विशेष (वे \$**5** ¥)∣ सोबान देशो सोद करियान । नेवालेड (पि

દૌર

सेहाबेचा (१९ १०२) । हेड सेहाबेचय (बन्) । इ. संदावेयस्य (भर १६ ) । सेहानिम वि शिक्षित | विकास हम (भग्द्रहान्सारं १—यण ६ । पि १२६) । सेडि रेडो सिद्धि (घाण) । सेदिम दि [सदिक] र ग्रुक-धन्त्रज्ञा । २ निकास-पंदनी (गुध १ १ २, २)। सेक्टिन वि वि] का क्या ह्या (वे = १)। सो सक् [सू] १ श्रक्त व्यानाः २ पीका करना। सोद (वड्)। सो ) मकस्मिप सिम दुवनाः सोद सोअ र् चोमर (बाला १२७) ब्राङ्ग ६६) ।

३२६) । पनि संद्वानेदिति (प्रीप) । पीत्र

क्रम्प्रा १ मन्दन करना । ४ यक् स्नाव सोभ पर्नातु | १ छोद कल्या २ तुदि करना । सोमद, सोयद सोदित सोदित (से रे रेक्ट रेप का प्राप्त, सम्बद्ध रेक्ट १७३, तूम २ २ १३)। 🕶 सीईट सार्पेष (क्य १४६ की पत्न ११० ६३)। क्वड सोइजीव (स्य) । इ स्रोजनिज्ञ सोमजीम सोइयम्ब (बिध १ ४, तुच ४ श्रम ६ ६६) । देशो सोच ∞ सुन्। सोभ व [सीच] १ शुद्धि, पवित्रता निर्मवता (बायम बीर गुर र ६२, इन ७६० के मुपा २०१) । २ वीचे का समझ्य वर-प्रमा था प्यस्प्यः (कव १२ । नव १३ ; मा ११) । सोअ वं [शोक] प्रक्रोड क्लिकेरी (पूर ९ ११ वहर दुवा बहा)।

सोअन [भोत्र] कत अक्लोकिय (बाका मक्रमीय पुर १ १३)। समय वि मिय] धोनेन्द्रिय-सम्ब (ठा १०---पत्र ४७६) । सोभ 🔄 स्त्रातस ] १ प्रवद्ध (प्राचा का ६६२) । २ किल (भीत) । १ केप (कामा ₹ ≒) : साभव न [स्वयन] रूपन (स्न) । सोबय व [शापत] १ होत, व्यवसीय (सम २ २, ६४, संबोध ४६) । २ दुनि प्रशासन (स १४४)। साभवया ) धी [शोधना] १ स्मर 🖬 सोअजा (धीन धन्म १७४)। १ दीनताः देन्य (ठा ४ १—पन १००)। सोभगक १ सिकुमार्थ नुस्माच्या परि कोमक्टा (इ.१.१ ७ प्राप्त कुमा)।

सोधर द सोदर दिन भार (प्रदो २८) मुपा१६६ रंगा)। स्रोजरां 🛍 [सोदरा] स्नी श्रून (हुमा)। सोभरिम वि [शौद्धरिक] १ रूक्प का विकार करनेवाका (दिना १ ६--- पत्र १४)। २ फ़िक्मफै नुक्सा करनेवादा । ३ असाई (पिंड ११४० वन पूपा २१४)। सोखरिम वि सोदर्भी खोबर, एक अर सै उरला (सूच १ १ १ १)। घोमङ भा सोममङ (बन्द २)। सोअविय कीन [शीच] सूदि, प्रविक्ता (पूच २,१ १७)। इ.स. वा(यावा)। सामन को सम = भ्र सोबामणी ) की सीदायनी भिनी १ सोभामिया दे सिव्ह विवसी (क्ट ११ ७ वक्स ७४ (४) स १२) महार पाम)।

२ एक रिस्कुनायै वेनी (स्कास ४ १---पत **₹₹**#} ; सोइभ व [द्वापित] विन्ता विनार (पूर क १४ तुना २६१)। देशी सोविया। सोइ[ब्यन [धोत्रेम्द्रिय] बक्छेन्द्रव, काव (च्य)। सोइभिम देवी सोगं(प्रभ (स्त्र) । सोड वि[ब्येव्] मुक्तेकम्य (त १० प्रापूर)। सोडणिश्र रेको सोबविश्र (नूप २ २,२४)

वि १६३)।

सोडमङ रेबो सोअमङ (यपि २१६) पुर a, (21) 1 सोंड रेबो सुंड (पाप) । मगर पू [ मन्द्र] यगर की एक वासि (प्रस्ता १---पण ४८)। सोंडा की [शुण्डा] १ पुर, शरू (माना २ १ ६ २) । २ शल्पीकी नाक र्हेंड (च्या)। सोंडिय र् शिण्डिकी सक वेपनेपाना क्सवार (पवि १८४) :

सोडिया की [ग्रुण्डिका] धक स पत्र-क्रिकेट (इस च--पण ४१७) १ सोंडार वि [शीण्डीर] १ तूर, बीर, वयडमी (क्यासूर२ १९४) सूगा । )। २ वर्ष-पुक्त, वर्षित (महा)। सोंद्रार न [शीजदीर्दी] १ पराध्य युख्य । २ वर्ग( दे२ ६६) पर्)। सोंबीरिम पुंची [शीज्बीरिमम्] अनः देवी (मुपा २१२) । सोंद्ध (री) देशो संबंद (पि ब४)। शोक मेडो सुक्त = मुम्ल (पर्)। सोक्स केबो सुक्का≍सीका (शस्त्र राज्य १६≼≀नुपा⊌ः कृमा)। सोक्स क्वो सुक्त = गुन्न ( वर् )। सोग वेदो सोध = दोक (पत्रम २ ४<sup>१८</sup> तुर २ १४ ३ क २१६, प्रानु *च ३३ वर*) । ) व [धीरान्ध्य] १ वयदार सामधिम रे बीबीय दिवों के प्रशास (संबोध ३)। ३ सुवनिवयन, सुसन्ता सोर्ववित्र परिकृतियं देवीयं (सम्मत्त २१ )। धोगिषय ग [सीगम्बद्ध] १ एव विदेय

धन की एक बाधि (सामा १ १—पन १<sup>१</sup>) पर्वतः १-- पर २६ वतः ३६ ४४/ कर्णाः रुम्मा ११)। २ रत्याना नामक नरके पुनिनी का एक सीवन्दिक-राजनाय कार्य (धम १)। १ क्ष्म्यार, शनी में होनेसामा फेटक्सव (तूस २,३१ व राजदर)। ४ पूर्वसकता एक सेट, सपने जिंद भी र्नुवनेवामा नर्नुसक (यथ १ ६४ पूप्पा १२४)। र पूंच एक देश-विदाल (क्षेत्र (४२)। ६ विं नुपन्यामा, नुपनी (स्वार सम्बद्ध ₹₹)1

२१:मा२४४ मि १२८ कट-एका

सोणार रेखो सुण्यार (वा १६१ पि १६)

सोणि धौ [बोणि] क्यै कमर (कप्प उप

१४६)। सुसगन [सूत्रक] कटी-पूत्र

122) I

सोगमञ्जूषेको सोअमङ् (दस २ %)।

सोगाइ केवो सुमाइ (उत्त २० ३) पडम

सोमग्रह (?) यक न्नि + स् ने पसरका

सोप केको सोज=शृज्। यक सोचंत,

सोबसाय (ग्राट-मुख्य २०१ ए।या १ १--पत्र ८७)। पद्ध, 'सोब्बिऊच हुल्यास्

षारीन्यमस्त्रिरक्लेख योगन्त्रियो स्पा (स

सोचिय वि शिचित रहा क्या हमा

फैनना । धोग्याद्वद् (बात्वा ११६) ।

१६७)। कुसाब (उब)।

मधानित (स १४८)।

सोब स्वा साम ।

स्रोगधिया-स्रोभा

२६ ६ : स २४ )।

H) े वेको सुण≖ पुः। सोबा सास्त सोष्यित्र रेको सोत्यिम (१७)। स्रोकण्या । न [सीजस्य] पुक्का सम्भवः। सोबज क्रियमस्यो (उप ७२८ टी मुर २, 1(1) सोख के सोरिख = शीर्ष (प्राप्न १६)। सोक्स वि [शोवम] सूक्षि-मोग्म शोवनीय (तुव १ ६ दी)। सोरक्षय वृद्धि रजक योगी (पाय)। रेको सम्बन्धः । घोडिम देवो सोविस (क्ट्रॉट १४) । संबंदित [सोटीर] देवो सोंबीर = सीराधर (क्या सीम मोहर ४० क्यून बाद ६३)। धोबीर न [बीटीर्य] केने सोंबीर = शीवधीर्य (क्रमा हे ३ ४ %) शुरूष अधायका मक १९)। धोड वि [सांद्र] सहव किया हुआ (इप २६४ थे, पाला ११७) । सोदस्य सोद सोण वि [धाज] साम रख नर्छना (पम्प) 1 सोप्पर म [वे सीनन्य] विकाशिका विपार (मधार ४—-यम ७६ सीप<sup>-</sup> तंदुर )।

करमती (पौप)। सोणिश वू [शील इ] क्यार (१६ ६२)। साणिश्रम शिपिती चीपर, वृत (स्वा सोणिम पूंची [शोजिमम्] एकता बाली (विक्र २८) । सोणी की [भोजी] रेको सोणि (परहर ¥--- 44 (4. €) 1 सोजीअ देवों साजिश्र महोखित, भूंबत मसकोसीचं स्तु छाते स्तु पमक्यू (धाषा १ ददशीका)। सोण्ज व [स्वर्ण] सोना सुवर्ण (प्राप्त व संक्षि २१)। सोज् देखो सुन्द्र = सूक्त (पर् वा ७२६)। सोजहा देवी सुरुहा = स्मुवा (संब्रि १४) प्राष्ट ६७३ सा १. ७० काप्र वर्दे है)। सोच प [मोत्र] सन, शक्सेनाय (पाचा, र्रक्ट विक ६८)। सोत्त रेको सोअ = सोतम (है २ १०) मा इद्राधे १ दद कुमा)। सोचि देवो सुचि = गुवि (वर् कर ६४व सोचिञ १ [बोत्रिय] वेद्यान्याची बद्धास (पिंड ४६६, बाट-पुण्य १६४ प्राप) । सोचित्र वि [सीत्रिक] १ सूव-विर्मित कूरो का बना हुमा (बीवमा ८६, स्रोव ७ १)। २ सूरो का व्यापारी (बस्यू १४३)। सोलिञ र्षु [शौकिक] ध्रीन्त्रम कन्द्र-विशेष (4Km 4-da At) 1 सोविभगर्र ) वी [शुक्तिश्रक्ती] केन्य सोचिभवर कि के प्राचीन पनवामी (स्थः १४)। सोची की दि] गरी (वे ८,४४ वर्)। सोस्यि पुन [स्वस्ति] १ एक वेन-विमान (क्षेत्र १११)। २—क्यो सस्य (वर्षि

सोरियञ्ज पु [स्वस्तिक] १ व्यक्तिक प्रकृ विशेष (ठा२ १---पत्र ७०) । २ न शाक-विशेष एक प्रकार की हरित बनस्पति (पर्ए १-पन १४)। १-रेको सरियञ सोयस्यिञ = स्वस्तिक (पर्या १ ४---पत्र ६८: खाया १ १---पण १४)। सोबाम 🖞 [सोबाम] देवो सोबामि सोबामणी देवां सोधामणी (परम २६ सोदामि प् [सोदामिम्] वनरेन के घरव सीन्य का ग्रामिपति (ठा ४, १---पण 1 R) I सोधामिणी ध्या सोधामिणी (गाट---माचरी ८)। सोदास पुं [सौदास] एक एका (पडम २२ =१)। सोध (ही) देवो सटक् = धीव (पि ६१ ए)। सोपार ) 🖫 ४ [सोपार, 🐐] ध्रः-सोपारय रे विशेष (पंडम १० ६४) सुपा २७१)।२ न नगर-विशेष (पार्व ६६, ची ११) । सोबंधम वि सीवस्थव स्वस्थु गामक कवि का बनाया ह्या श्रेष (मरुक) । सोभ सर्व [ग्रुम] होस्ता वनक्या। धोर्मति (पुण्य १६) भूता. धोसिन्, दोर्मेन् (मुण्य ११)। भूषि पोभिस्वंति (सुण्य ११)। मक सोभंद (सम्या १ १—यन २६७ कम धीम)। सोम सक [शोमय] रोबाना स्रोध-दुख करना। धोमेइ (भन)। नक्क स्प्रेभवंत (पि ४६)। धंड साभिचा (क्य)। सोमग वि [सोमक] १ टोमनेवाला। २ रोपनेवाबा (क्य)। सोममा रेबी सोहमा (स्त्रप ४१)। सोभण देशो सोइण=स्प्रेमन (पडन ७० १६ स्कल ४१)। स्रोमा देवा सोहा = शोगा (प्राष्ट्र १७ उत २१ द कमा गुरुव ११) ।

१ एक देव-विमान, कठवाँ ग्रेडेयक-विमान

साधिय देवो सोडिअ व शोमित (शामा १ १ दी-पत्र १) : स्रोम (स्रोम) १ सन्द्र, बाँद एक अपी-रिष्क महासद् (ठा २ १---एव ७७) विसे १८६३ पठा)। २ भमनान् पास्तेनाम का नोक्सी प्रकुषर (सम १३ ठा ब---पत्र ४२६) । ६ एक प्रसिद्ध श्राम्य-नेश (परम १ २) । ४ कत्र्यं बसकेन और भागुरेन का पिता (ठा १---पत्र ४४०- पत्रम १ १वर)। १ एक विद्यावर वर-पतिः को ज्योति:पुर का स्थामी वा (पद्धन ÷ ४३)। ६ एक ठेठ का नाम (नुपा ११७)। ७ एक बाह्यारा का नाम (खामा १ १६---पत्र ११६) : व पर्यस्त्र, बबोन्द्र सीवर्मेन्द्र तथा रिप्रकेड के एक-एक शोकपाल के साथ (ठा ४ रि—पत्र २ ४ मन ३ ७—पत्र १६४) । ६ क्या-विशेष, धोनवया । १ उसका एवं । ११ घनुत (पत्र ) । १२ मार्थ-मुद्रास्ति हरि का एक क्रियर---वैत्र सुनि (क्म) । १३ पून, देव-विमान-विरोध (क्मेन्ट १६३: १४६ १४६) । १४ वि कीर्तिमान् सरस्यो (कम्प) । काइय वृं [कायिक] धोन सोक्यान का यात्राताची देव (क्या क <del>र न</del>प्र १६४) । "माद्रुण व ["प्रद्रुण] प्रश्ननाद्या (हे ४ ११६) । चौद वे ["थन्द्र] र ऐरवत क्षेत्र में स्त्या तातरें निन-देव (सन १६६) । २ प्रापार्मे हेमफन्द्र ना बीचा बन्द का शाम (कुत्र २१) । अस्त र्ष [ यरास ] एक धना (तुर २ १९४)। लाह केवो साह (एव)। दुन्त र् ्रिची १ एक शu⊈एउ वा नाम (श्वामा १ १६—तम् १६)। २ एक वैश्व दुनि को २३०-बादु-स्थानी का रिपन था (कम्प)। ३ भनवान् बन्द्रप्रज स्वाजीयो प्रवय निवध-राखा पुरस्य (सन १६१)। ४ रामा शतानीक का एक पुरोक्ति (क्लि १६—यम ६)। देव व ्रिय**ो १ सीम नानक बोक्स्प्रम का सा**र्वा-तिक देश (अन ३ ७—-एन १६६)। १ अनवान् वर्धात्र को अवन निर्मान्यता गृहस्य (१४ १६१) । ताइ व [ नाभ ] बीवह देश की मुझीबळ मार्थिक-कृति (वी १३, बम्बत ७६)। त्यम व्यक्त वं [प्रथी

१ विभिन्नों के सोवर्गस का मादि पूक्त बाह् दक्षिका एक दुवं (पत्रम १ २१२)। २ हेळ्बी छताची काएक कैन धावार्वे और प्रेंबकार (कुप्र ११४)। १ चमरेत्र के होस-होत्रपाल ना उत्पाद-पर्वत (हार्⊶पद४६२)। मृद्र्र् [मृति] एक ब्राह्मण का नाम (स्तामा १ १६—पत्र १६६)। मृद्य न ["मृतिक] एक क्रुन का नाम (क्रम्म)। यन 👣 एक गीत बो बौरड धोव की राखा है (हा क--पत्र **११)। व का वि िं**य पाँ कोम-रध पीनेनला (पर्)। 'सिंगे की [ की] एक ब्रह्मश्री (पेट) । संबर १ िसम्बरी एक प्रसिद्ध वैद्याचार्य तथा ब्रम्पकार (संति १४ इतर ४४)। सुरि १ मिरि एक क्लाबार्व प्राध्यका-प्रकरश श केती एक वैनाचार्य (माप ७ )। सोम विसिम्बी १ वरीत, प्रमुप (स्र १ क्षव १२, ६—य**प १७**व)। २ वीरीय, रोक-पीश्च (मग १२,६)। ३ प्रशस्त स्ताप्य (क्स) । ४ जिय-क्रॉन निस्का दर्शन प्रिय मानुस हो वह । १ समोहरू कुम्बर । ६ शन्त था। विवस्ता (योधमा २२) क्या सूपा १व । ६२२)। ७ शोबा-एकः वैक्षिमान् (वं २) । देवो स्रोध्म । सोमइज नि दि] योने भी भारतवाला (रे 4 \$4) 1 सोमंगळ दृ[सीमझ्स्र] शीन्तव क्लुकी एक वादि (बच १६, १२६)। सामपंदिय वि [स्वापनान्तिक स्वाप्ता-नित्र है सोने के बाद दिया बाटा प्रति-क्मल-पानरिवर्त-विदेव । २ स्वय्न-विदेव में किया बाह्य प्रतिक्ष्मक (छ। ६---वन 148) 1 सोमगस र [सीमनस] १ महानिश्चनवे का एक क्षाकार-परंत (हा २ ३--पक् ६६। समार २, वं ४)। २ अवा परेत पर धनेत्रामा एक सहस्तिक देव (अ. ४)। ३ पण का माठवां दिन (गुरूप रे १४) ४ पुंच संस्कृतार वापक द्वार का एक नारि यानिक विवास (झा द--- ५३ ४३०) सीय)।

(क्षेत्रद्र १३७-१४३ पत्र ११४) । ६ सीम-नत-वर्गकाथक क्रिकर (छार ६—वर द )। ७ व सेस्-पर्वत का एक कर (ठार ३—पत्र **ट** )। सोमणस न [सीमनस्य] १ नुबर मन संतर मन (एकं कम)। सोमत्रसा 🛍 [सोमनसा] १ वम् 📲 किलेव, जिससे मह और अनुद्वीप कहनाता है(इक)। २ एक शब्दानी (इक)। १ सौदनत का की एक नापी (व Y) i Y पक्ष भी पांचली चात्र (मुख्य १ सोमणसिय वि सिमनस्पिती १ ५५% मभवाता। २ प्रकल्त मनवाता (क्रम्प) । सोमणस्य देवो सोमणस् = शीवनस्य (इन्द्रः पीप)। सोमगरिसय देवी सोमण्डिस्य (क्या चीन) सामा १ १--पत्र १३)। सामक 🖦 सोअसक (प्राप्त २ ३ १ )। स्रोमहिंद न [दे] कर, के (रे न ४६)। सोमहित र् दि वेक समय (वे व, ४१)। सामा 🕸 [सोमा] १ शक 🕏 बोन वार्षि वार्थे बोक्पालों की एक-एक पटराबी वर श्चय (स्वप्र १—-पत्र २४)। २ स्टब्स् क्लिके की प्रथम किया (सम. १६२) वर्ष १ प्रोध सोकपास की राजवानी (प्रा 1 4-44 (EX) 1 सोमा 🛍 [सीम्या] उत्तर विका (अ १ 🕶 प्रमुख्या भार १--४११)। सामाण न (इससान) मदान, नरनर (र व XX) 1 सामाणस व [सोमानस] सावर्ग हैक्स विवास (पश् ११४)। सामर } केवी सुबुमार (या र ध व सामाज ) ११६ में व वह मान है। रं⊌रः कृषान्नक्ष २ ३ ६ ३ क्रि)। सामाळ व दि] मांस (१ व ४४)। सामिति प सिविति एम प्राप्ता सम्बद् (TE \$2) ( सामित्ति को [मुसिका] करवण की बार्म । पुष र [पुत्र] बस्मका 'क्यबंधिक पूर्वा (परम १ १७) सुर 1 [सुर] यही मर्च (परंच ७२ १) ।

सोमिन पू [सोमिन] एक धारूमा (धंत 1 (3 सामेचि देवी सोमिचि =सीमिति (स **{**3, cc) 1 सामसर र् [सोमेश्वर] धौराष्ट्र का बोमनाप महादेव (सम्मश्च ७१)। सोम्म वि [सीम्य] र छालीय मुक्तर (से १२७)।२ अंधा शोख्या (से ४ α)। रे सैत्व प्रकृतिशाचा, साम्य स्वयानशाचा (धेर. १६ विसे १७३१)। ४ प्रियन्बर्धन विश्वम वर्शन प्रिय अपे बहु । १ विश्वहा पविद्वादा सोम-देवदा ही बहु। ६ पास्वर, क्रन्तिकासाः ७ वृंधुव प्रहाद गुम प्रहा रेक्सम्बद्धिसम्बद्धिः। १ बदुस्बरक्षाः ११ धीप-विशेष । १२ सीम-रस पीनेवासा वाहम्ख (प्राप्त) । वेको स्रोम=सीम्य । सोदिव (या) य सि एव ] वही (बाइ \$ ? **?** ) ; सारह इं सियप्ट ] १ एक भारतीय हेत, बोध्द, कादिमानाई (इक सी ११) । २ वि बोक्ट देश का निवासी (भावक १६)। ६ न बन्द-विशेष (चित्र)। स्प्रेपहिया भी [सीपद्विका] १ एक प्रकार भी निष्टी फिटकिये (माचा२ १६३ व्य ३,१ ३४)।२ एक वेन पुनि-शाका (**\$74**) ! स्रोत्वमः। व [स्रोतमा] पूपका कुछ्यू (विक स्रोरम ११व पुत्र १२६। नाम प्रप छोरम । रबद की । सोरसणी की [सीरसेनी] सूरहेन देश की शाचीन काया प्रकृत माना का एक मेर (fix 40) i सार्य्य देवते सार्त्स (परवा) । सोरिय व [शोर्य] गुरता, परावन (प्राप्त माइ ११) : स्थारिकन [सीरिक] १ दुशावतं केए वी शाचीन राजवानी (इक) । २ एक यक्ष (विपा १ ४-- पत्र ६२) । ब्रस्त पू ["ब्रस्तु १ र्कमच्छीमार का पुत्र (विचा १ १—नव ४३ विपार को। २ युक्त राजा (विपार च~चत्र ८२)। पुर त ["पुर] एक तपर े

(विषा १ ८)। बहिस्सान विषयंसकी एक छ्यान (विया १ ८---पत्र ८२)। सोख्य वि व [योडराम्] १ संद्या-विशेष, धोसङ्ग, १६। २ सोलङ् संख्यानासा (जन व्य, १--पत्र १६४ १६७ ज्या: मुर १ १६ प्राप्त ७७३ पि ४४१)। १ वि सोसङ्बर्ध १६ वॉ (स्टब)। स वि [िश्ली १ सोबहर्वा १६ वॉ (स्त्राया १ १६ -- पत्र रेश्ड सूर रेड २११ पर ४६)। २ समा तार सात दिनों के उपनास (स्वापा १ १--पत्र ७२)। यन ["क] सोलक्कासभूद (बस ३१ १३) । बिहानि "पियाँ बोसह प्रकार का (पि ४११) । सोवसिया की पोडशिका र स-पन-विशेष सीनइ पर्वों की एक नाप (प्रस्तु १४२)। सोज्य देवो सोजस (नाट पनि)। सोज्यायसय प्रीही शंब (रे ८, ४६)। सोझ सक पिच् ने बनाना । सोझार (हे ४ ६ बारवा ११६) । बच्च स्रोद्धेत (विपा ₹ **१---पश** ४३)। सोद्ध सक [श्रिप ] फॅनना । योद्धार (हे ४ १४६: यह् ) । कर्मे, सोक्रिक्वइ (कुमा) । साल कर [इर् सम्+इर्] प्रेरण करता । सोक्रम (शहना १४६ माङ ६६) । सोक न दि । मध (देव ४४)। देवा सुद्ध = सूक्य । सोक् कि [पक्क] पश्राया ह्म्या (जनाः विपा १ २--पश्रक १ स-पश्रक्ष पीप) । स्पेक्टिय कि पिक्की १ पकाया हुमा 'ईनाक सोक्रियं (प्रीप) । २ ग. पूप्प-विशेष (प्रीप) । स्रोध केडी सुव = स्वप् । सीवड, घोषेति (ह १ ६४० चर्चमिक पि १६२)। मोशक्स ) दि सापक्स निमित्त-हारख सीवक्स । संयोग्ध ना कन हो प्रके नह कर्म बायु, धापरा धारि (मुगा ४१२३) YXE) I सोबचिय वि [सोपचित] अवस्य-पूक्त स्क्रीत <u>पुर</u> (कृप्प) । सोयबस्र कु [सीएचेंख] एक वरह का नीन करवा नमक (यस १८ वः चीर) ।

सोमण न स्थिपनी शक्त सोना (इस प्र २१७)। सोयग न [वे] १ वास-गृह, राम्या-गृह एवि मन्दिर (देड ४६ स. ३.६ पाछ)। २ स्वप्तार्थं महा(देव १८)। सावण (धर) देखो सामण्य (म्बि) । सायणिय वि [शौवनिक] १ स्वाय-पत्तक कुत्तों को पावनवामा । २ कुत्तों से शिकार करनेशका (बुध २ २ ४२)। सोषणा श्री. स्वापना विद्यान्वरोप (वि सोषण्य वि [सीयर्थ] स्वर्ण-निर्मित सोने का (महारु सम्मत्त १७३) । सोवण्गमस्तिकामा की [द] मबुमधिका की एक बादि एक दर्भ भी स्थार की मस्त्री (\$ G, Y\$) 1 मोवण्गित्र ) वि [सीवर्णिक] दोने का सामिक्या 🕽 मुक्ले मिटन (प्रति छ। स ४९०)। पश्चम ⊈ ["पर्यंत्र] मेर पर्यंत (पञ्चम २,१४)। सोषण्णेश पूंची [सीपर्जेय] नवलकी। सी. भाइ (पर्)। सोबस्य न वि. १ उपकार । २ वि. स्थमोग्य. **स्पर्भावयोग्य (वे ६, ४३)**। सोबस्थि } वि[सीवस्तिक]श्माङ्गीकक सोबत्यिक । बचन बोबनेवासाः मागव मावि स्वरित-बारक (ठा ४ २—पत्र २१३ भीप)। २ 🛊 क्योतिक महासङ्ख्या (ठा२. १---पत्र ७४)। १ वोनियम कन्द्र की एक बादि (पस्पा !—पत्र ४३)। सोपस्पित्र 🛊 [स्वस्तिक] १ बाधिया, एक मञ्जनविक (धीप) । २ दुन, विच्छाम मानक वबस्तार पर्वत का एक रिजर (इक)। ३ पूर्व रचक-पर्वंत का एक रिक्स (राज) । ४ एक देव-विमान (देवन्त्र १४१) । देको सास्थित्र, सारिपभ ≈ स्वस्तिक। सावम केवी सायण्य (यंत १७ वा २८-सिरि द११: मीर)। सार्वनिश्च देवो सामण्यत्र अ(सामा १ १— पण ६२)। सोवरिभ देवो सामरिश=शौवरिक (नूम ₹ ₹ ₹ ₹ 1

साधिय देखो सोहिज = रोभित (हामा १ १ दी—पत्र १) । साम दूं [सोम] १ पनः चौदः, एक व्यो-क्षिक महाप्रह (हर २ ३---पन ७७) विदे १ ६३ थडाई) । २ भएनान् पार्यनान का पांचवी बद्धावर (सम १३ ठा व-पन ४२६) । ३ एक प्रशिक्त क्षांत्रम-नेश (पडम ४, २) । ४ **चतुर्व बबदेन धौ**र वासू**रेन** का विद्या (क्ष १--पण ४४७- परम २ १०२) । १. एक विद्यावर वर-पतिः को ज्योति-पुरकास्वामी था (पडम ७ ४३)। ६ तक संद्रका सम्म (सुपा ६६७)। ७ एक हाक्का<del>र मा नाम (खाना १ १६—पत्र</del> १३६) । चमरेला, स्तीला तीवर्मेश्र तवा ईसानेह ६ एक-एक बीक्याब के नाम (हा ११४)। १ बदा-विशेष सोमबता। १ उक्का रस । ११ प्रमुख (यह ) । १२ पार्थ-नुद्वस्ति सूरि का एक शिष्य—जैन सूनि (क्रम) । १३ पून, देन-विमान-विरोध (ध्येन्द्र १६६ १४६) १४६) । १४ वि. मीर्तिमान्, यक्तरी (इन्न) । स्वाहम पू िस्वविश्वी द्वीन बोद्धान का प्राज्ञातारी देन (सन ६ ७—पत्र १६६)। सम्बद्धान सिद्धणी क्द्रभारत (१ ४ १६६) । यह व् िंचन्द्री १९एमत त्रांव में उरश्च स्नत्वें जिल-देश (बन ११६) । २ याचार्न हेमचन्द्र नारीचा#मय नामान (कुप्र २१)। उदस र्व विश्वास दिन धना (बुर २ १३४)। जाइ देका माइ ( यज )। इसा पू िंदत्ती t एक ब्लाइएउ मानाव (खाना र १६-- पत्र १६६)। २ एक दैन मूर्ति, यो मह बाह-भवाजी ना स्टिप्स वा (कप्प)। ३ भगतान् चन्द्रज्ञ स्वामीको अवग निस्ना-सन्ता गुप्त्य (सन १११)। ४ याचा रुवानीक का एक वरोदित (विदार १ र--पव ६ )। "इंथ व <sup>वि</sup>द्यो १ क्षेत्र नावक नोका स वा साम⊱ निक्र देर (वर ३ ७—१३ १६१)। २ | भवरान् बपत्रव का प्रवय किशा-काता गृहत्व (नव १६१)। नाइ व [काभ] छोछह देश की नुम्रक्ति नहादेव-कृति (ती १२. कम्बत कर)। एपस "एपद्द व [प्रस]

१ अधियों के सोमनेश का साथि पूक्य वाह बिश्व इंग्इंप्ड पूर्व (प्रस्त २०१ २१२)। २ देखारी रुटाम्टी काएक कैन धावार्यं ग्रीर वंत्रकार (रुप्र ११४) । ३ बमोन्द्र के श्रीम-सोक्यान का उत्पाद-पर्वत (हा १०---वच ४०२)। सृद्ध ["मृति] एक ब्राह्मए का नाम (शास्त्र १ १६ — पत्र १६९)। भूदय न [मृतिक] एक पुन का नाम (कप्प)। यन कि प्रश्रीत, वो कौरत रोव की राखा है (ठा क्--पन ३१)। द्रशा कि यि पा सोन रस पीनेवाचा (पड)। "सिरो की भी एक बाह्याची (बंब) । सुन्तर प्रं िसन्तरी एक प्रशिद्ध कैनाचार्य तथा क्रमकार (संति १४ इबक ४४)। सृरि वृं [सृरि] एक देशाचार, बारावमा-प्रकरश ना कर्ता एक बैगावार्थं (बाप 🕶 )। स्रोम विस्तिस्यी १ वरीड, प्लुप (ठा ६ मय १२ ६---पत्र १७०)। २ मीरोय चैय-चीव (क्य १२, ६)। ३ प्रकार स्ताप्य (क्या) । ४ जिथ-वरौर निश्चका वर्तन प्रिन मस्तुम हो बहु। १ मनोद्वार, सुम्बर । ६ शान्त सा∎दिकासा (योजमा २२) क्नाभूपा १व । १२२)। ७ शोमानुकः दैशियल् (वं १) । देखो साम्स । सामइत्र नि हिं] बोने नी मास्त्रका (दे × 11) 1 सोमंगळ र् [सीमङ्गळ] डीन्त्रिय कन् ही एक नारि (छच ३६ १२६)। सामणंदिय वि स्थिपनान्तिक, स्थापना-नितकी र योगे के बाद किया जाता प्रक्रि-क्मा**ल-—प्राथरिकल-विशेष**ः २ स्वयक-विशेष में किया काला प्रतिकमश्र (ठा ६—पत्र 166)1 मांगगस र् [सीमनस] १ म्यापियः वर्ष काएक वक्तकार-पर्वत (ठा २ ३ — पत्र ६६: तम १२, वं ४)। २ उन्न वर्षेत पर यानेतामा एक महस्तिक देव (वे ४)। ३ पक्ष नामाद्वरादिन (न्या) र्जुन-समस्कारनामक देखाना एक पारि मानिक विवास (का ---पत्र ४३७; सीप)।

५ एक देश-विमान, स्टब्स देवेसक-विमान (देशेला १३७- १४३) पन ११४) । ६ सीय-वस-पर्वत का एक विश्वार (स. १. १. - १० ≈ )। ७ त-मेद-पर्वत काएक दन (ठा२**ः 1—11** सोमणस व स्थिमनस्य । स्वरमक संदार मन (चमः क्या) । सोमनमा 🗗 [सीमनसा] १ जम्मू-इव विशेष विवसे का दीन बस्तुद्रीम कहनात्र है (इक)। २ एक धनवानी (इक)। ३ सीमनस बन की एक बली (वें ४)। ४ पक्ष की प्रविभी स्पन्ति (सुरुव १ १४)। सामणसिय मि सिमनस्पित र एक्ट मनवासा । २ प्रसन्द मनवादा (कप्प) । सामणस्य देखा सोमणस्य = बीमनस्य (क्यः मीप) । स्रोमणस्मिय देवी सोमणसिय (क्या वीक कामा १ १--पत्र १६)। सासक 🗺 साञसक (शह २ ३ १ )। सोमहिंद् न दि स्वर, फेट (र ब, ४१)। सामहित्र वृद्धि विक काछ (देव ४३)। सामा और [सामा] । तक के कोन पादि चारों शोकपाओं की एक-एक प्रश्राती का न्धम (स्र. ४ १ — पन २ ४)। २ शासर्वे विनवेग की प्रथम शिल्या (बाम १६२) पत १)। १ शोम बीकपास की राजवाकी (का ₹ **७—** पत्र १६६)। सोमा सी [सीम्भा] उत्तर क्या (स र 🗝 पण ४७ कः भर १ १—४६६)। स्प्रमाण व [इमसान] नदान, मरवड (६ व सामाणस र् [सोमागस] प्रतर्ग देशक विमान (पर १६४) । सामर ) रेको सञ्ज्ञमार (पा t ध प सामाख 🕽 ३५६) मैं ७३ बंदा प्राप्त है 🕻 १७१३ कुमा प्राक्त २ ३ ३ वा मर्थि) । सामास्त्र कि नांत (के ब, ४४)। सामिति व [सीमिति] राम प्राता करम्ब (दा १४)। सामित्ति 🛍 [सुमित्रा] बदवत वी वस्त्र । पुरा र्ष [ पुत्र] बक्क्स 'रानबोधिन 301 (परव रूप १७) सुन 1 [सुन]

बही मर्च (पडन ७२ ६)

सोहा भी [मोमा] १ धील जनक (वे १ ४८० हुमा। मुग ६१ रोमा)। २ धन्द लेके (स्व)। सेम्ब्रोब कक [सोचय] वक्त कपना। सेम्ब्रोब (व १ हो)भिष्ठ] चन्क कपना हुम्य (व १२)। सोहि भी [मुद्धि, होभिष्ठ]। विवंतन्त (सामा १ - पत्र १ ४ वंशेव १२)। २ पत्नोचना प्रामाविक्य (सीप ७११ ७६७ याचा)। सोहि कि [सोचिम्य] मुस्त्य-क्ष्यां (सीप)।

सोडि वि शोभिम् । शोकोबाबा (संबोब

सोहिर वि [ शोभित ] कोमनेवाबा (या १११) ।
सोहित वि [ शोभावत ] योमनुष्य (या ११४) ।
स्वाहित वि [ शोभावत ] योमनुष्य (या १४४) हर ११४ १ वर्ग हे १ ११६, वर्ग योग एक) ।
सीमारिश वेषों सोमारिश = सीमर्य (वेष) ।
सीमारिश वेषों सामारिश विचार १ तार—
मावती ११६) ।
स्त वेषों सामारिश विचार वि वर्ग १ ।
स्ताह वेषों सामारिश (या ११६) ।
स्ताह वेषों सामारिश (या ११६) ।
स्ताह वेषों सीमारिश विचार १ ।
रिस्ती वेषों सिता = सीमा (या ११६) ।
रिस्ती वेषों सिता = सीमा (या ११६) ।
रिस्ती वेषों सिता = सीमा (या ११८) ।

### ॥ इस विरिपाइमसङ्ग्रहणायनिमः समायद्वद्वनम्यको स्वतीसहयो वर्षनो सम्बो ॥

सोहिल पि [ शाधिव ] युद्ध फिया हमा

सीहित देखों सोइत (ना--राष्ट्र १ ६)।

(पर्णार १ मन)।

### ᇙ

विदेष (प्राप प्रामा) । २ थ इन सबीका पूर्व प्रध्यय-प्रवोदमः से-दिनकु विधार <sup>हे हैर</sup> ६ एं कस्साइस्ह (बाबा २ १ ६१ रै से मि २७६)। व वियोध । ४ द्येप मिन्द्र। ५ तिसद् । ६ प्रसिद्धि । ७ पारपूर्वि ( 2 3 to) 1 र्विको इत्र = स. (हे१ ६७)। ६६ की [इति] इतन यस मारत (बा २०)। प [ ६२ ] इन वर्गों का पूजक क्रमां— रे भेरन (बना) । २ यसम्मति (स्वप्न २१)। **रं**क्य दू [के] राग्रेट-शर्ट-पूर्वक किया बाहा राज-सीवंब (दे = ६१)। ही म. स्त पत्रों का तुषक मध्यय—१ वाकी भ माह्यान (हे ४ २०१ कुमा। पित्र) । २ व्यो का धामन्त्रतः (व ६२२) बागठ (01), र्षंड देवी खेड (हम्मीर १७)।

116

६ ई 😰 १ ४३-स्पाधीय व्यान्तव वर्ण

**"इडल देखो मीडण (मा ११२ - १५ ६०५) ।** ( इंत देशो इंसा (वर्तस २ र ध्य २६ स्ए) क्ट्यू विश्वार)। (तस्य } देता (ण। (ता हुंता य [इस्त] इत सर्वों का मुनेक सम्बद्ध---१ ब्रम्युनम्म स्थीकार (स्था क्रीयः मगः र्वद्र १४ च च्यु १६ : छाया १ १—पत्र च¥)। २ कोमल मामलाग्रा (भय, मणु संद १४३ और)। ३ वास का धारम्य । ४ प्रव्यवदारखः । इ.संप्रेक्णः। **इ. क्रे**रा ७ विसँख (राज) । द **ह**र्या ६ क्षत्रका (च्या) । १ सस्य (स्था) । ति [इन्त] मारनेवाला (प्रापा पक्र पत्रम प्रहे पह हह विशे प्रहाण)। **र्श्तुल देवी इ**ण। हिंग, पहल क्ष्रें स्त वर्षका पूचक सम्बद्ध (हे २, १०१ दुना सामा २०१ १६ १३ स्ट १५ २७४)।

इंदि ब. इत वर्षों का मूचक सम्बद्ध--- ह विपाद, क्षेत्र । २ विकास । ३ परवादाप । ४ मिरचया ५ सस्य। ६ भी प्रद्रस करों (पाधा है २ १वा पह कुमा)। ७ मामन्त्रस संबोधन (चिंड २१) वर्गसं ८४) । इ उपवर्णन (बंचा ६ १२ वन्निन ₹ **₹**0} 2 इस्में देवो वंदा (सर ११ २६४ प्रायाः समार २, वरी । र्श्वस के को इस्स = इस्स (प्राप्त) । इंस र् [इंस] १ पश्चिमीक्षेप (काया १ १—नवस्थानसहार १—नवद कुना प्रानु १६ १६८)। २ रमक, बोबी 'बरब बोबा इवंडि ईसाबा (मूख १ ४ २, १७): ३ संन्यासिनियोग (से १ २६ थीय)। ४ मूर्व रचि (शिर १४७)। १ परित-विरोध हैंसबर्थ नामक रहन की एक-वर्गत (पक्छ १---पत्र २६)। ६ सन्द का एक मेर (पिर)। ७ निर्वीमी राजा। क

सोवरी की [शास्त्ररी] विद्या-विरोप (पूर्व

सोबविषय मि [सोपपचिष] स्पृष्टिक

सोशाञ्ज वि [सोपाय] ज्याव-शब्य (वस्क) ।

सोकाग वृं [धपाक] कार्यका होन (याच

सुपा ३७ । हुम २६२३ वर १ १४) ।

at Y Y-qu tot un th there

साधाना का विद्यापानी निवानिकेन (नूब

स्रोबाज न स्रोपान सिम निस्ती पैती

(समार कारक स्थानुर १६२)।

२ २ २७)।

२२२७)।

पृष्टिन्दर (इस ७२६ धी) ।

सोपरा-सार्ध

सोसणी को दि दिन क्या क्मर (रेव ४१)। स्रोसविज वि [शोपिव] मुकाम हुमा (ह ૧ રૂપ અવો દ सोसाव देवी सोस = होत्रप् । हेव. सोसावह (हो) (सर) । सोसास दि [शेक्स्वाध] उम्मे शस्पुष (वर् )। सोसिभ देवो सोसविभ (हे ३१४ पुर ३ १८६ मधा)ः सोसिक्ष वि [साचिक्रत] देवा किया ह्या सोसिक्ष वि [शोफमत्] शोक दुष्ठ, पुरल रोधवासा (विशा १ ७—पत्र ७३) ≀ सोइ धक द्विभृ] शोस्त्र वसक्ता। प्रोडाइ. सेक्सर सोहीय (दे १ १ **० पान**ट

कुमा) । बह्न. सोहंत सोहमाण (क्या पुर ३ १११) नाट---उत्तर व) । मोद्धक [श्रोमय] शोश पुत्र करना । धोदेश (बना) । सोइ वर्ज क्षिया ] १ कृदि करना । २ बील करना वर्षपद्या करना । ३ छंटोदन करना । सोहेड (सन) । नक्क. 'जुसिमी सनिही च्द्रद्वं सोविंहो सहधं निर्मे (बा १२)। सोबेमाज (क्या विवा १ १--पत्र ७)। क्सक सोहिजीव (उस ७२ थी)। इ-सोइणीय सोइयम्ब (द्वापा १ १६— यव २ २३ शह<del>्य शहू १६</del>; सूरा ६१७) । बंद्र, सोद्द्रशा (बच १६) १) । सोह देवो सत्तह = सीन (बस्य ६१ प्रति

गुडिया की गिटिका बीधाय-प्रश्व

मन्द-वितेष त पंत्रुत धेवी (तुपा १३७) ।

४१ मध्य-सम्बद्धी १३व) ।

सोधंबण र् दि श्रोभाञ्जन] 🕬 फिरेन सिंद्वने का केई (रे ८, १७ क्यू)। स्रोह्म देवी स्रोमम (कण १ टी)। सोइग र्[शोधक] क्षेत्रै एक्ट (इस इ २४१) । रेबी सोहय = श्रोक्त । साइमा व [सीमान्य] १ कुमस्त्रा कोक-दियता (भीप-प्रामु ३६) । ३ वर्षि-प्रियता (दूर १ ११ बाचू १)। १ सूचर कार्य (केर ६ Yes १ )। कापस्त्रका धोषक । र्षु [ अन्यवृक्ष] सम्बद्धिय (पन २७१)। सीह्य देवो सोहग ≈शोधक (का दूर१६)।

सोद्दिगञ्ज वि [सीमागित] प्राप-शावी, सुम्बर मात्रवासा (का द्र ४७) १ ८)। सोइल 🖫 [शोभन] १ एक प्रसिद्ध 👫 मृति ( इम्बन्न ७३ ) । २ वि होमानुन्द मुन्दर (सुर १ १४७) १ १०६, प्राहु १६२)। की मा बी(प्रक्रप्र)। वर न विरोधिताम की प्रतर योजि का एक विदायर-नयर (इक)। सोइए पशिभने १ वृद्धि, स्प्रदे(का ११७ द्वीः बुक्य १ ५ दी कमी)। १ नि गुडि-कार (या ६)। सोइप्पीकी हिं] संपानीती अध्य (देद-₹**७**) ( सोइइ व [सौद्वद] १ मिथ्छा। र क्लूबा (प्रथि २१ सण्दर)। सोवस्य 🔰 सुधना, सुद्रमा-पूर्वार (सम १४) । सोइन्म पू [सीपर्से] प्रकर स्वतंत्र (स्व २, राग वर्षु) । ६०५ ई [ ६६५] युवा देनबोक स्वर्ध-विदेश (महा)। यह 🖠 िपदि प्रथम देशकोड का स्वामी ठडेला (मुग्र ११)। पश्चिसय क्षा [श्वरीसक] एक देव-विमान (सम ६ २३) राज १६) । सामि पू िस्मामिक्] प्रथम देश्योक का स्क्र (सुरा ६१) । सोदम्म भा सुद्ग्या (पहा)। सोइन्सण देशो सोइण = क्षेत्रक 'एक्झेंने **ब्र**पुनकरितं प्रवेद तीक्षण**स्त्र**कोशं (कार्य 4 3 22); सोद्दिमद् रू [सोपर्मेन्द्र] सक, प्र**स्त** 🖛 बोक का स्वामी (महा) । साहरिमय वि सियमिको सेवर्व-देवकोत का (क्ष्मा)। सोहय दि [शोधक] तुम्बन्धतं उपरी क्रणेनाचा (विधे ११६१) । देवो साहरा ¤

सोइस दि [ शोभाषत् ] होया-दुक (दवः

भिषा)।

सोबासिजी वैद्ये सदास्त्रिजी (ऋष) । सोविय वि स्विपित् प्रतास क्ष्म ध्यन्ति भनवविषयनसम् स्टबर्ग होनियो हेर्छ (धूर ४ १४४ ज्य १ ११ हो)। स्त्रेनियक पूर्वा स्त्रिभिवकी करान्यर का रमक (रजर)। की "द्वी (नुपा ७)। स्रोपीर गंग सिौबीरी १ केन-फिलेन (पन रक्श सूखार कर १—-दी)। २ % कास्तिक, कॉमी (ठा ३ १---पण १४४) नाम) । याजन-निरोप बौनीर देख में होता दुष्मा (भी ४) । ४ वष-मिटेन (६८) । स्पेक्टर को [सीक्षर] क्यन धर को एक शुक्रीय (ठा ७--- पत्र १६६) । सोम्ब वि वि] रहिए एउ विस्ता स्ट निर क्या हो नह (दे क ४३)। स्पेस इन [शीपच्] प्रकारा होनल करका वोसद (धर्व)। वह स्रोसर्थत (#PP) L सास वेदो सुस्स । वीचन (है ४ १९१) । स्रोस र् [क्रोप] र स्रोक्छ (पश्चा बानू er) : १ चन्तिवेदः वाह्नचेत्र (बहुय (X) 1 सांसव दूं [दे] फार, रामु (दे व ४१) । मोसजन [शोपज] १ मुख्लाः २ ऋष्टन का एक काए। (कप्पु) । दे वि सोपाध-कर्जी नुषानेरामा (परन ९४, १ दुव ४०)। मासनदा } 📽 [धोपत्रा] कोदछ (आः स्थापना । बता १ १) र

विधेष (गिव)।

(स ६२)।

परेका वाचा) ।

बीक्षेत्र (स. १११) ।

सोहा हो [द्योभा] १ धेरित वनक (स १

Yक्ट द्वपार सूचा ३१ (मा)। २ एन्द

सोक्षय एक [शोधय ] बफा क्याचा

सोदायिय वि शिथित । सन्द क्यम हुमा

सोदि से [नुदि, होपि] १ निर्मेसठा

(सामा १ ५---पत्र १ प्रा संबोध १२) १

२ धामोपमा प्राथमित (योग ७६।)

साहि वि शोधिम्] सुदि-वर्ष (पीप)।

€ र्र [इ] १ व्हान्यानीय व्यव्यान वर्ण विशेष (प्रायः प्राथा) । एवा यस सर्वो का तूपक सब्दम-संबोधना श्वे-विस्तू विसाद दे हंद इ. छ शासाइय्यू (पाचा २ १ ११ १ २० १९ २७४) ( ३ नियोज । ४ क्षेप

निम्या । १ विश्वत्र । ६ प्रसिद्धि । ७ पास्पृति

६६ की [इदि] इनन वभ मारण (भा २७)।

हैं स [हम्] इन धनों का मूचक सम्बद्ध-

रे भ्रेष (क्या) । २ श्रसम्मित (स्वन ११)।

र्वेक्य दु [के] शरीए-सर्श्य-पूर्वेक किया बाटा

(ते घ. स्न श्रवी का सूचक स्थाव—! श्रवी

का पाञ्चाल (हे ४ एवड्। कुमा विय)। र

क्यों का यामन्त्रस्त (स ६२१। सम्मस

(दे २ २१७)।

1 (54)

**६ देवो हा≃ घ. (हे** १ ६७) ।

राम-सीर्वव (दे च ६१)।

र्वंड देवो स्रोड (हम्मीर १७)। 116

चना १३) १ साहि दुन्नी वि] १ मूठ काव । २ मनिष्य दास (देव १८)। सोहिम न [दे] पिष्ट घाटा चामस मारि का भूतं (पर्)। सोदिअ वि [शोभित] योमा-पूक (पुर १ ७२ महाः भीषः भय)। सोद्दिश वि [ शोधित ] युव किया हुना (परमुर १ मन)। सोदित देशा सोदद (नार--शह १ ६) । ॥ इस विरिवाद्भसद्मद्भ्यत्रीमः समाराहत्त्रवेश्यको सत्ततीसहमो तरंगी समत्तो ।।

सोहिर वि [ शोभिवः ] शोमनेवाना (पा सोहि वि [ शोमिम् ] शोमनेगता (वंबोध Yei कम्पू भावे)। दी गी (नाट---488) I सोहित वि [ शोभावत् ] योग-पुक (वा प्रश्नासूर १ ११ स १ स हि**२** १४६ र्वकः मुक्तिः सुधा)। सीअरिअ देखों सोअरिम = सौदर्ग (भंड)। सींघरिश्र म [सीन्दर्य] पून्यका(ह १ १)। सीह देवो सउद्द = सीम (दीम ११ नार-पावदी ११६)। स्स देवो स = स्व (पा २०६)। रैसास रेको सास = पाव (या = १६)। \*हिसरी देशे सिरी = भी (गा १७०) । "स्सअ देखों सेज ≈ स्वेद (पनि २१) ।

동 हुंडण देखो संडण (या ११२) वि ४०४)।

इंत रेको होता (वर्मेंचे २ २ एव २६ सण

क्ष्मपुर्वा रक्ष्म) ।

हतस्य } क्या हण। इंसा ह्या य [इन्त] हा धर्मों का मुक्क प्रत्या-१ सम्पूपक्य स्वीध्नर (यथा धीप) मग लंदुर∽ बसुर्द सम्मार रे—पव ww)। २ कोमच धासम्बक्त (घन; सञ् र्तद्र १४। ग्रीप)। ३ वालय का धारुमः। ४ प्रत्यवदारसः। १ संप्रेपसः। ६ केटा ७ निर्देश (स्त्र)। यहाँ १ सनुबन्धा (राम)। १ सस्म (क्या)। क्षेत्र मि [इन्तु] भारतेतस्य (धानाः भग्र प्रमादा १६८ वर १६८ विचे २६१७)। हित्य देशो द्या। इति स 'शहत करी' सा मर्वे का सुवक mann (E. C. tat gens anen e t ११ १) के वित्रकर)।

इंदियादन वर्षीका सूचक बम्पय—१ विपाद क्षेत्र । २ विकास्त्र । ३ प्रवादापः । Yनिरच्य। ५ वत्य। ६ घो पश्चास कर्षे (पाम हेरु १४ । यह कुमा) । भागनता संगोधन (पित्र २१ वर्गां ४४) । अ इपर्फान (पंचा ३ १२) इस्ति 2 20) I इस्में देवी इदि (दुर ११ २३४) धाचा सूम २ २, वरे)। इसि देवो इस्स = ह्रस्य (प्राप्त)। इस पू दिसा १ पछि-नियेव (शाका १ र---वर प्रकेष प्रमुख्य र र---वर के क्या प्राप्तु १६ १६६)। २ रजक, बोबी 'मरू-योगा इनित इसाना (तुस १ ४ २ १७)। १ सम्यासिनिकेष (से १ २० भौप)। ४ मूर्वं एवं (शिरि १४७)। १ मिरा-विशेष इंसमर्भे नामक रत्न की एक-वादि (पएए १—पव २६)। ६ छन्द का एक येद (पिंच)। ७ निकॉमी राजा। ल

ुख्य दु⊌व)।

दुसः १६१ सिरि ४१ **्था**र सक [आ + कारय ] दुकारमा

बाह्यां करना हुसाना । इनकरा (यहा भृति । इसकारह (मृपा १००)। कर्ने,

हुनकारिकांतु (बुद १ १२६ गुपा २६२)। **गइ. इकारेंत, इकारे**माण (पुर १ ६८) स्तुमा१ १०—यत्र २४ )। संक्र इच्छा रिक्रव इच्छरेडल (दूम १ मुपा २२ )। प्रमेर इनकारावद (मुवा ११व)।

हक्कार सक कि | अर्थ के काता। अर्थ हरका रिज्यंकि (सिरि ४२४) ।

इच्छार पुंहाच्छार] १ पुणलेकों के प्रमय की एक रएकनोति (का ७—पत्र १६व)। र हाइने की पानाव (गुर १ २४६)।

ह्वारण व [आसरण] याह्यम (स २६४) कुत्र ११६)। इक्सरिअ वि आिनारिती प्रकृत (मून २६१ धोष ६२२ धै महा)। इक्टिम दि [दे] होता ह्या—१ वर्षहा इचा 'हरिक्यी करी' (महा)। 'बेस तथी पास्त्वाइतेल्मेखानि इतिकास सम्में (सार्व १ ३)। २ महत्त् (क्रूप्र १४१)। ३ प्रेरित

(सुपा २६१) । ४ सम्बद्ध (वद् )। **इक्टिम वि** [निधिक्क] निवारित (दुमा) । इकोद्ध विद्विपक्तिकत्ति (३ ६)। इक्तुच विदि जिलादित ज्ञासा हुमा करियास (दे ६ ) पत्रम ११७ ४, पाधा

4 4 1 Y ) I इक्सूब वड [तुन् + द्विप ] १ अना करना काला । २ व्हेंन्स । इस्तुबद (है ४ १४४)-त्रभुवरदेशो देशो इत्युवह व कि महासेद्री (विदे ६६६)। इक्लविश्र दि [इस्सित ] स्पाध्य (दुमा) । ह्यां की [हत्या] यत कत (हुत ११७) वर्गनि १७)। स्त र शिक्षा १ मानाल बाबार (या ७६४-मनि)। २ दूरात (गुपा ११ १ **० ६)।** शाह न्यंत्री की [ गर्या ] व्यक्तिपारिकी को दुस्य (नुसाय १ व २)।

इट्टिगा १ थी [इट्टिया] क्षेत्री दुकान (श्रीव

े दर पुता (बद)।

(बब्)। २ ताप (१ व. ७४)। **१डर्ड र् [१डर्ड] '१४-१४'** धानान (सिरि 1 (500 इडाइड नि [वे] बध्न वे प्रदल्त (निपा र १—यत्र शतकार १६—यत्र ११६) । इडि पू (इडि) काह का सम्बन्धिये कार की बेद्दी (छास्त १ २ — पत्र व६) निपार ६--- यत्र ६६३ ग्रीयः क्रम्म १ २६) १ स्तर [के] हाइ, ब्रील (केंद्र स्थ नैंड ३व्य मुक्त १११, मृ १ )। इड १ डिटी १ क्लाल्बर (पाम, पण्ड १ र-पर ४४३ दे १ (१)। २ वस म होते नावी ननस्पक्तिनिक्तं कुरमी अवदूरभी कार्र भागादको व्यक्तमे सङ्ग्रियमा सर्व स्मिति (उत्तर २४ तुमार १ 👫 पर्**स**ं '---पद १४)। इप एक [इस्] १ इव करना। २ जाना विकला। इत्हर हरिएया (दुधाः स्मर्था)। मुक्त. इति तु इत्हीय (बावा हुना)। परि, इतिहो (दुवा) करी इति ण्या, इतिकार, इस्तर, क्ष्मा, इत्या

(देश २४० कुमा प्रापु १६ माचा)।

(सर−रप

इद्ध वि [इष्ट] १ इर्व-दुख, सावन्यितः। २

विस्मित (चर्चा विमार राग्नीमा यत्र)।

१ श्रीरोप रोय-रहितः हिरोग विकालेस व

धमुक्तको धमुबदिशामिन निममेर्छ कामको

(पद ४—पाचा १६२)। ४ राजिसाची

बबात समर्वे तस्छ (क्या)। १ हर् यक-

इट्रसइटुवि [दे] १ श्रीरोप । २ व्यः, च्युर

इंड दि दि हृदे विसका इस्स क्या स्था

इडक १ (मा) देखी हिश्रय = इस्य (प्रता

होशक ∫ रेफेर राजाप नाट—मुम्ब

इंडप्प } दृृं [दे] १ पात्र-विशेष सम

इंडरफ ) सर्वेद का राज । २ काम्ब्रून मानै

का पार्च (चीप)। ३ धामरहाका करहरू

(इस्तर १८३ — पद २७ २०) !

इडहड दूं [दे] १ धनुरान प्रेम (६

(दे व देश) । ३ स्वस्य द्वरा (वह ) ।

दृत (धोप ७१) ।

हर्द्ध देखो भट्ट (या ६१४ ध)।

हो बहा (१ ५६: कम्प)।

48 (4 X ) 12 ( ) 1

किम्छ । ६ परमेघर, परमारमा । १ मध्यर । ११ मन्त्र मिरोप। १२ शरीर-रिपत बादु की भेष्टा-विशेषः। १९ मेद पर्यंतः। १४ वित महादेगः १४ मध् की एक जाति । १६ भेतार महासा। १० विशुद्धाः १३ मन्द वर्षा-विशेष (६.३.१८२)। २. *पर्ते* ६, बहुरिन्धित कन्तु विशेष (ब्हणु १४)। गडम र्द्ीभी एल की एक वास्ति (स्तावा १ १--- १० --- पत परश कम क्त ११ ७७)। तूनी की ['तूनी] क्षित्रीने की पती (सुर १ (बदा ६ १२व)। इत्व दु [\*द्वीप] द्वीप-विशेष (पराम १४ ४१) । स्टब्स्सम वि [स्टब्सम] र शुक्ता ध®त (बंठ)। २ विशव निर्मेत (41 1) | ∉सव र्व [६स६] पुर (पाम नुपा १२०) । इसम र् [र] मानुनग्र-थिय (मन्)। रेगा शसम । (याम)। २ छन्द काएक मेद (पित्र)। (सम्बद्ध २१६)।

हंसा की [इंसी] १ इंड पक्षी की मारा र्षमुख्य र् [ईस] प्रथ की एक उत्तन वार्ति र्दश थ [र्दश] स्न प्रवी का नुवन क्रव्यय-१ संबंधन प्रात्मवस (नुब २३ १ वर्गीव इ.स. उत्र इ.६० दी) । २ तिस्टकार (बस्थ ११ क्षि । ३ वर्ष नवी । ४ वेच क्या । १ प्रस्त (इ.२.२१७)। ह्युन व [ह्युन] प्रमन्तिरेट (स्ट्रु १) । इक वड [नि+पिथ्] क्रियेव करना fritte stell fiet (f v får

वह)। यह हवसाय (कुमः)। द्व तर [व] होस्य —१ पुराला बाह्यत करता। २ वेंच्याकरता। १ व्यवेदना। इन्हर्र (सूना १०१) । यह इन्हेंत (सूर १५,२ १: मुग १६ )। क्या इक्तिप्रजंत (नुता २४३)। धंइ. इक्किय इकिड इक्टिज्ञ (तुर १, २६१ तुना २४०-महा)। इन्द्रा के [र] इंड-१ पुराद कुनाइड सातान । २ व्रच्छा- 'बननी भूचीन बूची न मनि हम्मिदिह, हरिकदिह (है ४ २४४)।

नक इणीत (माचा कुमा) । कनक्र ह्रण्यु,

इपिज्ञमाण, इन्मेंच, इन्ममाण (पूच १

**८२ ६ मा १४ सुर १ १६ वि**पा १

र-पन २४' पि १४ )। संइक्ष्म ह्या,

देत्ण, इंत्णं इत्त्णं इत्रिक्षण, इणिम

(याचा- प्रासू १४७ प्राष्ट्र १४३ नाट) ।

देक दंट हणित (महास्वप पू ४०)।

**इ. इंतब्स** (वे ३ के हे ४ २४४)

माना)। क्ष्म सन [मृ] सुनना । इसक (इ ४ ४a) : ६ण नि [दे] दूर, प्रतिकट (देव ११)। इप केरी हणान 'हरायहराप्यक्रमाररा---(फलर द २३१)। इणि वेका भण = वन (या ७१५। स १)। इपण न [इतन] १ माध्या वस वात (गुपा २४४८ सम्बाह्य (पराह्य २ ४ ⊶ ) पण १४०)। के वि वयस-कटा । वर्षे स्त्री (कुत्र २३)। इजिस वि [इत] विस्कावय किया मया हो वह (या २७) कुमाः प्रास् १६: पिंग) । इणिक देवो इय = हम् । **ए**णिअ वि [कृत] सुना हुवा (कृमा) । हणिव वेको हिमिद (या १६३)। इणिर्वि [इन्तु] वय करनेवामा (पुरा 1 (0 } **प्रिक्**षि । स्र [आहम्पहित] १ प्रविधित दियादिया हमेला (परहे न १-पन १२२)। र सर्वेदा सक तर्महरे (पराहर ६—पद (४८)। एपु वि [वे] सावशेष वाली बना हुन्ना (दे দ ২০ বত । ध्या इंकी [द्राः] चितुक होठ के तीचे का बान, द्वी दोड़ी बाड़ी (भाषा परह १ ४---पत्र ७=)। व्य, स, संत यंत पु [ मत् ] हनुमान, रामकावी का एक मस्यात धनुषर, पर्न तथा सम्बनासुन्दरी म पुत्र (शब्दा १ वहा १७ १२१: ४७ रेर है रे १४६। कुमछ प्राप्त पत्रम ११ १८ थर, २१)। सह स्वर [सि

नमर-विशेष (पत्तम १ ६१) १७ ११८)। य, वंत रेको म (प्रम ४७ २१ १ € उप प्र **१७६)** । (शुनाकी [इतुका] १ द्वशी केशी गरी (समु १)। २ देश-विशेष बाह्य-विशेष (स्था)। हुणू की [हुनू] रेको हुणु (पि १६८: १६९)। इच्छु देश इम = इन् । इत्त देखो इस ≈ हत (पि १६४० १६४)। इचरि देशो सचरि (प २६४)। इसु दि [हर्ष] इरण-क्वां (प्राङ २ )। इस्य देशो इप = इन् । इत्य वि दि] १ श्रीध, वस्ती करनेवाला (वे द ६६)। २ किमि थस्दी (घोप)। इस्ब पून [इस्त] र हाम धरिपताणेण हुत्वं परास्थि बस्त करहेलुं (वस्था १ ६ धाचाक्रमा कृमा व ६)।२ ई क्यक्-क्रिकेप (सम १ ११७) । ६ जीनीस मेपूल का एक परिमाण । ४ हाकी की सुँह (हे २ ४६ प्राप्त)। ६ एक वैन मुनि (कप्प)। कृत्य न ["सम्य] नगर-विशेष (ग्रामा १ १६-- पत्र २२६ विष ४६१)। सम्मान [कर्मम्] हस्त-क्रिया दुरचेहा-विशेष (पूम १ १ १७ ठा १ ४—यव १६२ सम ३३ क्य)। बाह्य बाह्य दे विवाही हाव से ताकृत (धावः कस ४ ६ डि)। पाई सिम कीन [ महिकिक ] संक्या-विदेश शीर्वप्रकान्त्रत को भौराती काम से प्रुखने पर वो संबद्धा सम्भ हो वह (इक) । प्या<u>ह</u>ुद्ध न ["प्राभृत] हान वे दिया हुमा सरहार (दे ६ ७३)। साख्य न [मास्टर] मानप्ण विशेष (ग्रीप) । सङ्गुचण न [कपुस्य] १ इस्त-काचन । २ जोधी (पर्याह १ ३—पत्र ४६)। सीस न [ शीर्ष ] नवर-विशेष (खाया १ १६--यन २ न)। भरम न ["सर्ज] हाय का व्यक्ता (मन) । । यास्र तु [स्ताह] देशो ताह (क्य) । स्टिन वृं [क्लाब] हाव का बहाय भवद (से \$ \$4 gt y wt wa)1 इल्लंकर पूं [इस्टक्कर ] वनस्रविनियोग (बाबा२ १ २)।

इत्यंतु १ पून [इस्तान्तुक] हाम बाबने इस्पेंद्रुय र का काठ प्रावि की कंपन-विशेष (सिंक १७३ विपार ६---पण ६६)। इत्यच्छुइणी की [दे] नव-वपू, नवोहा (दे = 4x)1 इत्यह (मा) देखो इत्स (हे ४ ४४१ जि **428)** 1 इस्थय न [इस्तक] इसाप-धनूह (रह मनसम सूत्र ६१ पत्र ८१)। इत्यस्त पुंचि १ भीता के लिए हाप में शी हुई भीजः। २ वि हस्त-सोस चद्यप हाय नामा (देव ७३)। इस्यक्ष वि [इस्तक] १ वर्चन हायवाना । २ पूँचोर, तस्कर (परहार ३---पत्र ¥\*) i इत्यक्तिज्ञ देखी हरिधक्तिक्ष (राज) । इस्मद्ध नि [वे] जोड़ा से हाव में जिया हुआ ह (4 4 4 ) ) इत्यक्तिअ वि [वे] इस्त्यपसारित, हाम क्षे ह्यमा हुमा (रे व ६४)। इत्यक्षी भी दि इस्त-पूर्वी हान में स्वित प्रासन-निरोप (देव ६१)। इत्थार न [वे] सङ्ग्यस्या भरद (दे ८ ६ )। हत्यायेह पू [इस्त्यायेह] इस्तिपक हाथी कामहावत (विपाद २---पत्र २६)। श्रस्याचार न [बे] स्थायका मश्र (भनि)। इस्थाहस्य की [इस्वाहस्तिका] हाबोहाय-एक हान से दूसरे हान (मा १७६)। हरयाहत्य म जनर देवो (गा २२९ ५८१) क्ष ४६३)। इस्थि पूर्व [इस्तिन्] १ हामी (मा १ ६ कुमा प्रमि १८७)। **ध्ये.** जी (स्रामा १ १---पत्र ६३)। २ दु. तूप-क्रिकेप (दी १४)। आधेइ दें [आधेइ] हानो का महानत (धर्मीव १९) । कम्पा, सन्न तु [कर्म] २ एक मन्तर्सीय। २ वि उत्तका निवासी मनुष्य (इकंठा ४ २—१व १२६)। कृत्य न [किस्प] देवा इत्युक्तप (पन)। गुक्सुस्मद्भ न ["गुक्सुस्मयित] हाथी का राज्य विरोध (राज) । वारापुर क ['नागपुर] नवर-विशेष इस्तिमापुर (का ६४८ की एए)। वापस द वापसी

**६वार र् [हाशार] १ दुवविकों क** समय की एक बर्गम्पीति (ठा ७—पत्र ११०)। २ हॉक्ने की मानाव (गुर १ २४६)। इकारण न [भाग्नरण] पाह्यन (छ २६४) कुप्र ११६)। इकारिभ वि [आसारित] प्रमूत (दुरा २६८ मोग ६२२ टी महा) । इकिम दि दि] होका हुमा—१ चरेका हुमाः (हिन्समी करी (महा)ः 'बेख तयो पास्त्रपाइतेखनेखाचि इक्सिया सम्मं (सर्घ र ३)। २ याक्षा (क्रुप्र १४१)। ३ प्रेरिक (पुषा २६१) । ४ सम्भद्ध (बङ् )।

(परम १४ ४१) । स्वस्ताम वि "स्माम]

१ तुस्य सफेद (यत)। २ विशव निर्मेश

इसय पूर [ इसक ] दूर (पाय मुपा

इस्पर् [रू] मानुपरा-वितेन ( पलु )।

4(सी वर्ष [4(सी देश पदी की सक्त

इसुस्य र् [इस] क्य की एक उत्तन वादि

**र्(हा प [र्(हा] इन पर्ने ना मुक्क प्रथ्य**---

१ संदोदन, भामन्त्रख (मुख २३ १ वर्मवि

११, उप ११७ थे) । २ डिएन्सर (कान ।

११ थे। १ वर्ष वर्ष । ४ देव कुछ । ४

**१5व** न [**१5व**] फारिकेर (धनु १) ।

पर्) । वह इद्यमाण (द्भा) ।

६¶ सक [नि+पिच्] क्रियेव करना

निवारण करता। इतका (हे Y १३४-

इक वत्र [रे] श्रीकरा—१ पुकारता पाहाव

. कला। २ प्रेच्याकलाः १ स्रोक्सः।

इसर्थ (मुना १ १)। यह इस्टेंत (मुर

१४, २ ३: मुरा ११व) । क्यक हृष्टिगर्जन

(नुवा २४३)। योह. इक्टिय दृक्किये

इक्टिज्ज (नुर २, २६१ नुस २४०

EREI ER [4] EFE-? GEIC, PRIBE,

माहान। र बेप्सा 'क्स्बी दुर्साम पुत्ती व

(पाम)। २ घन्द नाएक मेव् (पिन)।

(4 **1**) i

120) 1

देवो श्रीसस्य ।

(सम्मत्त २१६)।

मल (हे ६, २१७)।

यहा)।

**एकि**अ वि [निपिक] निवद्गीत (कुमा)। इक्टोद वि [दे] चमित्रपित (दे ६)। इक्लुच वि [व] जनादित उठामा ह्या करिवास (देश ६) एकम ११७ १ पामा W fty) i इक्सुव इक [एन् + हिस्पू ] १ द्वेश करना क्छना । २ प्रेनना । इस्तुवद (१ ४ १४४)ः ठलुभरदेशे देशे इस्तुवह व कि महासेव' (निर्दे ६६१)। इक्सुविभ वि [४ तम्स] उत्परित (दुवा) । इ.स.ची [इस्या] वच मात (कुन्न ११७) वर्नीद १७) । ब्द्र द्र[ब्द्र] र मात्राख काबार (का ७६४० मनि)। २ दुमन (सुना १६३१ ६)। साह गावी वर्ष [ गर्भा ] व्यक्तिवारिक्षी को उच्य (मुना १ १३ १ २)। इष्टिया १ की [इष्टिका] क्रेटी हुकल (मीव् रिर मुपार ६)।

**इड**प्प ) पृंदि | १ पाद-विरोद, इस्म इंडप्फ र्रे पार्टिका पान । २ शासूच पानि क्स पात्र (सीप) । ३ सामच्छाक्स करहरू (खासा १ १ टी—पत्र १७- ४ ) : इबहरू पूँ वि] १ यनुरान, प्रेन (६ ० ४४ (वड्)। २ ताप (देद, ७४)। इस्टर दे [इस्टर] 'इर हर' प्राचान (विदि 1 (300 **इटाइड** वि [दे] शरनचे श्रदमन (विपार १--पन १ सामा १ १६--पन १६६)। इडि ⊈ इडि केल का करन-विशेष का की बेकी (शासा १ २---पन बद्ध निया १ ६—पन ६६३ शीव कम्य १ २३) । **६३** न [रे] हाइ, प्रतिच (दे व, ४८) र्नं\$ ३ व्यं सुरा १३४६, श्रुष्ट् 🕽 । इड दृं[इठ] १ क्लप्रदार (पाय⊾ पर्छ १ १—पत्र ४४३ वे १ १६) । २ जब म होने-शली बनस्पति-विशेष दुस्ती जनदुस्ती कार्र 'नामाद्रशे व्यवस्थे शहिक्या धनि स्वर्षि (उत्त २२ ४८ सूच २, ६, १८ पर्य !-- तव १४) । इप्पासक[इस्] १ वद करना। २ वाक-वर्षि करता । हराइ हरिहमा (कुमा) मान्य)। नुष्यः इचितुः इतीय (प्राप्तः कृषा)। मार, इन्डिये (रूमा) इन्टे इन्डि ण्या, इतिहरूर हुएछए हुन्या, हुम्मा (है ४ १४४ कुमा प्राप्तु १६ माना)।

हा बहु (१८ ५१) क्य)।

६१३ वि १ ३११ )।

**६३५ )** (मा) देशो श्रियम = हृदय (शक्त

इंडब } १ फे.१ शे प्राप्त गाट—मुम्ब

र्मात हरिमाहित हरिएवहर (हे ४ २४४)।

बह्न हजेत (प्रापाः कुमा) । क्वड हण्णु,

इणिज्ञमान, इस्मंत, इस्ममान (नूम र

२२ ६ मा १४ सूर १ रहा दिया १ र--पण २४ पि १४ )। संइन्ह्रंता, **इ**स्पूप, **इ**स्पूर्ण **इ**स्पूप इतिकल, **इ**ल्पञ (बापा प्राप्तु १४७ प्रमुह १४ माट)। हेक होते. हिप्पित्र (महा उप पू ४०)। इ. इंटब्स (छ १ १ हे ४ २४४ भाषा)। इण सक [स ] मुतना । इत्यद् (हे ४ ६०)। ह्यानि वि] दूर, सनिक्ट (देद ४१)। इय देशो इणानः 'इखक्ष्णपमसमारसः--(परम = २३२)। ह्य देखो भूग= धन (मा ७१६८ व १)। **६७७ न [६**तन] १ साध्या वय, भाव (सुपा २४१८ स्या)। २ विनास (पर्यः २ ४---पश्च १४०)। ६ वि वय-कर्षाकी-णी (हुम २२)। इजिस वि [इत] क्लिका वय किया गया हो वह (था २७) कृता प्रासु १६) पिय)। इत्रिअ देशो हुण = हन् । इणिश्र वि [अस] सुना हुया (कुमा)। इजिद् वेदो द्विजिद (या १६६)। द्देजिर वि [इन्दू] वय करणवाना (मुपा ₹ ¥)1 **इजिइ**णि ) म [अहन्यइनि] १ प्रतिकित इभिद्र्णि । इयेठा (क्या व १२२)। र सर्वमा सब तर्मा (पएइ) र र-पद १/८)। द्यु दि [दे] सावशेष वानी वना हमा (दे द १६: सस्)। ख्युद्धी [स्तु] चितुक होठ के शोचे ना । मान, ट्रूपी ठोड़ी बाड़ी (बाना पराह रै ४—-गत्रभव)। अस्य संस्त सीत्रप्र [सस्] ह्युमान, रामचन्द्रको का एक प्रस्पात प्रमुक्ट, प्रवन तथा प्रश्नानामुन्दियी \$ 551 X2 सापुत्र (परान्धः ११६४ १ रक्ष है दे, १४१३ कुमाः प्राप्ता पदम ११ १७ १८, २१)। सह सदय [सह

नमर-विशेष (पडम १ ६१३ १७ ११व)। य, बंत देखों मं (पडम ४७ २३ ३ श उप प्र ३७६)। [णुयाको [स्तुका] १ दुवी कोवी सकी (समु १)। २ वंद्वा-विदेश बाब्दा-विदेश (त्रमा) । हुणू की [हुनू] रेको हुणु (पि १६८: १११)। हळ्युदेशा इष्य ≔ इत्। हुत देखो ह्य = हत (पि १६४० १९१)। इचरि देखों सत्तारे (वि २६४)। इस्तु वि [इस्तुं] इस्ल-कर्ता (प्राप्त २ )। इत्तूम देखो इण = इत्। इत्य वि [वे] १ शोग जस्ती करनेवासा (वे द ११)। २ किथि वस्सी (मोप)। इस्म पुन [इस्त] १ इत्म धरिमक्रलेण हृत्यं प्रशास्त्रं बस्य वर्णहेर्एं (वन्त्रा १ ६) मापा। कथा कुमा **४ ६) ।** २ **र्दु** नसक निरोप (सम १ १७)। १ वीबीय यंद्रल का एक परिमाण । ४ हामी की मूँड (है २ ४ र प्राप्त)। १ एक दैन मुनि (कस्प)। क्रप्पन [\*सम्य] नगर-विशेष (खामा १ १६---पत्र २२६ विक्र ४६१)। सम्मातः [कर्मन्] इस्ट-क्रिया दुरचेटा-विशेष (पूप १ १ १७ ठा १ ४--पत्र १९२ सम ११, रस)। वाष वास प्रं ["वाष] हाब से ताइन (राज कस ४ ३ टि)। पह जिम और [ प्रहेलिक] चंदना-विशेष सीर्यप्रकामन्त्र को कीराधी बाक सं पुराने पर जो संबत्ता सब्द हो बढ़ (इंड) । प्यातुष्ठ न [प्राञ्चन] इन्त न रिया ह्या बाहार (रे प्राचित्र न ["मासङ] यानरण-विदेव (बीप) । तहत्त्वण न [कपुत्व] १ इस्त-साधव । २ कोधे (वस्त १ ३-पन ४६)। सास न [शीर्व] ननर-निरोप (लामा र १६—रत्र २ व)। भिरगन [।भरण] हान का सहत्ता (मन)। स्पाल तु [ाताह] देको ताह (क्स)। छिप र्वु [।सम्ब]हाब का नहाछ मध्य (प र रहा मुद्द र वर क्या)। ह्त्यंग्र र् [इस्तदूर] नगर्यवनिरदेव (बाबा २१३)।

3\$3 हर्सनु ) पून [इस्तान्दुक] हाम बावने इत्यनुम र का मार्थ मार्थ मा बन्यम-विशेष (पिंड १७३ विपा १ ६---पत्र ६६)। इत्थच्छुहणी भी [दे] मत-वपू, नवोदा (दे = **{X**}! इत्यह (मा) रेबो हर्स (हे ४ ४४३) नि **488)** 1 इत्थय न [इस्तफ] क्नाप्त-समूह (दराः मनस्य सूत्र ३१ पत्र वरे)। हत्यस प्रेडिंदि श्रीका के लिए हाय में सी हुई चीत्र । २ वि हुस्त-साम चत्रन हाव-बाला (वे ८ ७३)। हर्द्यक्ष वि [इस्तक] १ वराव हापशमा । २ वृं चोर, वस्कर (पण्ड १ ३--पक ¥4) I हस्यक्षिक्ष रेको हरियक्षिक्ष (एक)। इत्यक्क कि दि ] क्षेत्र संदाय में धिया हमा (R = 4 ) i इरअक्तिञ वि दि हत्वपदारित, हाप दे ह्यमा हुमा (रे = ६४) । इत्यद्वी धी वि] इस्त-इसी इाव में स्थित मासन-विदेश (दे = ६१)। ह् थार म [वे] बहायता मरद (वे = ६)। इत्थायह व [इस्स्यायह] इत्तिपक हाथी का महावत (विपा १ २ --- पत्र २३)। हरयाबार न वि सहायता यहर (भनि)। इत्याइत्य व्ये [इस्ताइस्तिमा । हानेप्राय एक हाम स कुमरे हाम (गा १७१)। इस्थाइस्थि घ. ज्यर देखी (मा २२६ १८६४ कुक ४६३)। इस्पि द्री [इस्टिम्] १ इस्पी (बा१ ६) दुमा धनि १६७)। सी. जी (शासा १ १---पन ६३)। र पू गुर-विरोध (ती १४)। आधह र् [आरोह] हानी ना महाउठ (पर्ने दि ११)। इत्या इस दू [इस] २ एक सन्तर्द्रीय । २ वि सनका निराधी मनुष्य (इक का ४ २---१व २२६)। कृष्य न [क्स्प] देवा इत्यक्रम (धन)। गुरुगुस्तदय न [ गुरुगुस्त्रयित] हाची का रुक्त विदेश (राव) । जागपुर न [नागपुर] नगर-निधेर इस्तिनापुर (का ६८६ की बछ)। व्ययस र् [वापस]

बीज साधु-विकेष, हामी को मारकर उसके

मांच से जीवत-निर्वाह करने के सिउन्टरम्बा

संग्यासी (चीर मुर्चान ११)। नायपुर

देको मागपुर (मि)। पाछ पुँ [पाछ]

भवतानु महातीर के समय का पातापुरी का

[<sup>\*</sup>पिएपर्स्थ] बनलकि-विरोप (बच १४

युक्त धाना (कप्प)।

विष्पस्य 🕏

११) । मुद्र वृ[मुख्य] १ एक पन्दर्शिय । २ वि. इसना निवासी मनुष्य (ठा ४ २---पत्र २२६३ इक) । स्यम्प न ["सन] सतम हाची (धीप)। राय 🐧 विश्वज्ञी बत्तम शाबी (बुरा४२१)। बाउम दे ["ब्बायूत] महाबत (चीप) वास्त्र रेची पास (कप्प) । विजय न विजयी वैठाव्य नी चतर ! मेणि ना पुरु विद्यादर-नवर (इक)। शीख न र्शियों एक नगर नो समा समस्य की राजकानी को (उप ६४० ही)। सुंहिया रेको सोडिगा (स्व)। सोंड १ [शीण्ड] बीन्द्रिय जन्द्र-विरोप (पर्स् १—त्य ४३)। सीक्षित को ["शुण्डिम] यायन-विदेव (ठा १, १ ही--पन २११)। इरियमचनम् न [व] यह धरतोकन (दे = {X}: इतिपद्मग दि [इस्तीय इस्त्य] इत्यका हाव-प्रकाश (शिक्ष ४२४) । इतिभागातः , न [इतिनानुर] नवर-विशेष इत्थियपुर । (छ १०—पत्र ४७४- पुर इत्थिपाउर १ १२४ महा यस्य मुर इत्थिपापुर<sup>†</sup> १ ६४: शह—राष्ट्र ४४: **년**8) ( इरिथमी देखी इस्थि। इत्यमह र् [द] एव-इच्छे ऐयरण हारी (\$ = \$3) I इस्थियार न दि ] १ इक्याद, राष्ट्र (वर्नेस t २२ ११ ४० म/v) । २ द्वा सहा, ता वनेहि संपर्ध करेडि इन्पियार कि 'रेक कोरबं देवेल वह इत्वियास्टब्स् (य ६६०-11 )1 इप्रिश्निक व [इस्तिकीय] एव वैतनुति दुन (बप्प) ।

द्रियपय र् क्वि दर्भेद (वे क, ६३)।

इस्पिइरिष्ठ र् [रे] देव (रे 🗸 ६४) ।

ह्त्युत्तरा 🛍 [ह्त्वोचरा] व्ययक्रमुको मध्य (रूप)। ह्ल्युद्ध देशो हत्य (दे २ १६४ वर्)। हरबोडी की वि] १ इस्टायरस हाय का द्याभूवस्त्र । २ इस्त-प्रापुत द्वाप से दिना मध्य प्रपद्दार (दे ८ ७३)। हमानेन व कि इस्त-गहरू, पारिश-गहरू (सिरि१३≼)। हव देवी हय = हत (प्राप्तः प्राष्ट्रः १२)। इद् ) पुं दि ] बाजक का मध-पुत्रादि (पिष er i vot) इद्भय दें [बे] इस्स निव्यस (वे ४, ६२)। इदि() व [हाधिक्] १ वेर । २ व्यूकाप हादी (प्राष्ट्र थर) संभ शर नाट-रुष्ट्र १६३ हे २, १६२)। हमार (बन) वि [अस्मवीय] हमाय, हमसे संबन्ध रखनेशस्त्र (भिन्) । इमिर देवो भमिर (पि रेवन)। हम्म सक [हम्] दव करता। हम्मद (है ४ २४४४ कूमा स्थापि ३४४ प्राक्त ६४)। इस्म एक [इस्स् ] जाना। इस्मद (हे ४ १५२) । इस्म म [इस्ये] श्रीःस-ग्रह (से ६, ४१) । इस्म देशो इच = इन् । इम्मार देखो इमार (पिन) । इम्मिज वि [इस्मित] क्ट, क्या इदा (त 444) 1 इस्मिश्रन दि इस्में] पुर, श्रकार, महत्त (दे ६२ पाम गुर ६ १६ । माचा २, २,११)। इम्मीर र् [इम्मीर] विम्म की कैस्वी रुवाम्बे का एक पुगवनात राजा (वी १) हुम्बीर २३३ रिव)। इत्य वि [इत] वा माध क्या हो दह (सी: मे ६ ११। बहा) । माओब 🛊 ["सरक्रेट] एक नियापर-नरेश (परन १ १)। स्स नि शिरा निधन (परम ६१ ७४ च २ १ है १ २ ६, २, १६६, ३४)। ६य 🕻 [६य] बध चोहा (यीव के २, ११ रुक्त)। यद इं विकड़ी एव-विदेश मध के रक जिल्ला कहा रहत (राय ६७)। कण्य कम वृद्धियो १ एक मन्द्रापः।

२ वि, उसका निवासी मनुष्य (इक) ठा ४ २—यत्र २२६) । १ एक धनार्थं केत (पर २७४)। सद्देशिस्ती १ एक मन्द्रीन (इक) । २ एक धनार्य देश (पर २७४) । इय रेको द्विम=इत (महा धनि एन 44) I ह्य देशो हर = महा पेडिसीय दु[पुण्ड रीक् ]पक्रि-विशेष (पर्स्टर १ रि—पव व)। हम देवी मय (या ६०)। इयमार 🖠 द हतमार] क्लोर का बड (पाच)। इट्टब्क [इट] १ इच्छ क्लाध्येनना। १ प्रसम करना, कुछ करना। इरह (हे ४ २६४ वन, मदा)। वर्ग, हरिका, क्षेप्र, श्रुपेसद, श्रीरिण्यद (श्रे ४ २६०-धारना ११७)। यह. इर्रेड (पि ११७)। कन्द्र क्षीरंत, क्षीरमाप्य (या १ ४, दुर १६ 111 युधा ६३६)। संक्र- हरिकाम (मक्त) । केक इस्तितं (मक्त) । इस्ति हेक्स, हेम (सिंह ४४६) ४४६) १ हर बक [मह्] ध्वाल करना केता। हरा ( Y Y E) 1 इर एक [हुन्] धानान करना । इस (दे E 48)1 इर दुं [इर] १ महादेव संकर (नुपा ३६३ कुमा। यहा है १ दश का ६००। ७६४)। २ सम्बन्धित (रिन)। "मेहस न "मेलल] क्या-विधेव (दिरि १६)। सङ्ग्रहा की ["बक्कमा] मीधे, पार्वेदी (तूपा १९७) । **श्रः ∤ हिंद**े हा<sub>र</sub> बहा जवाराय (वे ६ ₹**₹**); इर देखो घर⇔ वृहु "ठावच पहिस्सासन भारत पुरुष सरमा हुरी (बरुजा १ । <del>दुन्</del>याः मुत्रा १६३ हे २ १४४)। इर देखों धर≔ थु। इस्स्ट्रेअक्ट (मे दे इर देखों भर = मर (पडन १ १४३ दुवा ¥13)1 इर रि [ैइर] इरख-कर्स (क्छ)।

हर वि ["पर] चरल क्रिक्स (प्र ११४

182) I

केशबत नामक पुनि का (बत १२)। कंस्मि

इरम्म् भी [इरोतकी १ हरें का पादा। इरहा दिस्त-विशेष हरें (पदा दे र ११ हुमा)। इरण न [इरण] १ दीनना (मुना १८ ४३६ कुमा)। २ वि भीतनेवाला (कुप्र११४४) वर्गीव ६)। इरण न [प्रहण] स्नीकार (कुमा)। इरण व स्मरज ] स्मृति यादः 'प्रतिप्रश्रुविद्यपि क्यमंतुर्येव मं बेसु मुद्द्य मणुर्खेतो । तारण विष्यहारण हरण्डे समामि ए उस्ते धा बुविमा (सा १४१)। "इरण देवो सरज (या १२७ घ)। इरतणु दृ [इरतनु] केत में बोमे इप कें भी मारि के शाबों पर होता वब-विन्दु (क्या वेद्य ३७३) वी १)। इरव् देखो इरय (भव)। इरपण्युअसि [दे] १ स्मृत सार किया [मा। २ शाम के जहेरा से दिया हुआ। (दे **≈ ७४)**। हरय पुं [हुद] बड़ा बसाराय बह (माचा-मन पर्राप्त र स—पन १४६ पता १२ ARINE \$5 45)1 इराइस की [पे] युक्त प्रसंग योग्य मनसर प्रवित प्रस्तावः 'निज्या' च गार्ग महिमा-कृतं च सुरास्त्रं बद् हु । नीर्य व काया घोषिति वाया निश्वस्य **हपा**प (विदे २ ६४)। इपर्वास्य न [इपर्वायवित] प्रदर्भ मानान (प्राहृ १ - यत्र ४१)। इराविभ वि [हारित] हराय हुवा विस्तान प्राप्त किया क्या हो बह (१४४ €)। इरि पुंदि इरि] गुन, तोता (वे क ४६)। इरि वृं [इरि] १ विद्युपुरार-देशों की चीपण रिसाका इन्स्र (ठाउँ ३—वद ८४) । र एक महायत् (ठा २ ३ — पत्र ७४) । ३ शह, देश-धन (कुमा: पुत्र २१ सम्मत २२६ स् ८६)। विष्यु भीक्षस्य (ग ४ ६। ४(१) सुपा १४३)। ३ रामक्त्र (से १ ११)। ६ सिंह मुमेना (से १ ११ कुमाः कुत्र १४६) । ७ वालर, वन्दर (से ४ २५ ६ २२ मर्गवि ४१ सम्मत्त २२२)। द श्रम कोहा (उन १ ६१ टी की या दुन २३ तुक्त ४ ६)। ध्यास्त के साव वैत रीक्षा लेनेवाचा एक राजा (परम 🕬 ४)। १ ज्योतिपरासम्बन्धस्य एक योगः, 'पुस्कृरि विद्ठे गंडविद्वाएं (संबोध १४) । ११ छन्दकाएक मेद (भिम)। १२ सर्पसीय। १३ मेक मध्यकः। १४ चलाः १४ सूर्यः। १६ बामु, पदन । १७ यम जमराजा १६ हुर, महादेव । १६ छन्। २ किय्याः २१ वर्ष-किलेपः। २२ मनुद, मोरः।२३ कोकिस कोयस । २४ भतु हरि नायक एक विद्वान् । २५ पीतारीय । २६ पिक्य वर्णे । २७ ह्यार्रेंगः। २८ वि पीतं वर्णवानाः। २६ पिएस वर्णनाता (दे ६ ९८)। ६ हरा वर्णवाचा 'इरिमाखसरिश्वालियस् (सच्यु ३२) । ३१ पून, महाविमनंत पर्नत का एक शिक्षर (ठा व--१४ ४३६)। ३२ विश्व धाम पर्वेत का एक शिवर (ठा १) इक)। ६३ नियम पर्वेट का एक शिक्षर (ठा ६ — पन ४१४३ इक) । ३४ इत्विप-क्षेत्र का मनुष्य-विशेष (क्या)। अंद पूं ["अग्द्र] स्तराम प्रक्रिक एक राजा (हे २ दका पड़ा यतंत्र हुमा)। अद्गण म [पन्युन] १ चन्दन की एक बादि (से ७ १७) यहरू सुर १६, १४) । २ दू वक तरह का कर बुझ (नुपा बच्छः धरः) । देखो स्पेदण । अण्य देखों औद (एंप्रि १०)। आउ वूंन ['क्षाक] । पोत नर्खनाबी करवानु-विरोप इरतास (ए।या १ १--पत्र २४ की रे पर १११ हुमा उस रेश दा ३६ ४)।२ वृ प्रिनिम्धेष (इ.२ १२१)। रेको बाछ। एस ई किंग्र] १ वसन (बीप ७६६) सूख १ १ महा)। २ एक बर्शस मुनि (बत्त १२) । यसबळ पु [क्षेत्रायमः] कर्यमनामिताम एक पुनि (बर क्यारे १)। वृक्षिण वि [फिर्साय] १ वयसव-संस्थी। २ **इ**रि

न ["काकिश्चन्] नगर-विशेष (दी २०)। क्टब पू विभानती विष्युरहुमार देवों सी दक्षिल दिया का स्म (१६)। क्रीप्रशास, क्षवप्पवाय पु [ सम्वाप्रपाव] एक हर् (ठा२ १—पत्र ७२३ टी—पत्र ७६)। क्टा की किन्ता र एक महा-नदी (ठा २ ३--पन ७२ सम २७ इक)। २ महाद्विमदान् पर्वेत का एक शिक्तर (इक' ठा u--- पत्र ४३६) । किंखि पू किंखि] भारतीय देश-विशेष (क्ष्यू) । यसयञ्ज देखो एसपछ (दूसक ११) । केसि पू [किशिम्] एक जैनपुनि (धुरे४)। गोअ न ["गीत] धम्बन्म एक येद (रिव)। म्मीय र् [मीय] रावस-वंत का एक राजा (परम १.२६ )। पंद र् ["पम्द्र] १ विद्यापर-वंश का एक समा (पटन ४ ४४)। २ एक विदावर-द्रमार (महा)। चंदगर् ["यस्त] १ एक प्रताहर केत भूति (धैत १८) । २ देको अदिया (प्रानू १४२) स ३४१)। ययर न ["नगर] नैताओं को क्षिए-मोरिंड में स्निय एक विचायर-नगर (१४)। तास र्ष ["वास्र] ग्रीप-विशेष (इक)। देवो आछ । दास र् [ व्हास] एक विश्वक का नाम (परम ४ च्यो । पणु न [ धतुप ] एत-बनुव (जा १६७ टी)। पुरी और [पुरी] एन पुधे धमधनको स्त्रमं (मुपा ६३१) । सह र्ष ["भद्र] एक गुनिक्सत जैन सापार्य तथा प्रत्यकार (बेह्य रेश का १ रेश-पूर्वा १)। "मेंच र् ("मन्च) बान्य-विशेष वाद्या पना (भारकायन ११६ सनोव ४६)। मिळा ध्ये ["मंख्य] बूध-विरोत्त (धीत)। यह तू ["पित] बानर-पाँठ गुरीप (दे १ १६) । र्वस दृष्टिया] एक मुत्रक्षिक धनियनुष (क्ष्म प्रम १ २)। यस्तः बास र् ["यप] १ धेव-विदेश (बलू १६१ छ। २ रे-- त्य ६० सम १२ प्रमार २ १ ६३ ६३) । २ पूनः महर्धहनरातः वरोत का एक रियर (ठा ब-- रत ४३६)। ३ निषय पर्नेत का पृष्ट विनार (क्षा र---नव त्रतः इष्)। यादन र् [ वादन] १ मनुष का एक

£%∘	पाइधसद्ग्रहणाची	इतिरम <del>णग</del> ्नसु— <b>इ</b> र
बीद वापुनिधीय, हाथों को मारकर वसके निध के वीवननिविधे करते के विद्यालयामा संस्थानी (धीन सुर्धन १६ )। "तायपुर केने तामापुर (बीन)। नाम दु [ पाम] मारापुर (बीन)। नाम दु [ पाम] मारापुर (बीन)। "विप्यमी की [ विरामी कि सम्मानिकीयेन (बता १४ )। "हु  दु अन्तरीयं। एक उपने एक विषयों अन्तरीयं। पाम विश्वन विषयों अनुसार (बीन)। पाम दु [ पाम] वत्तर कुर्यों (बीन)। पाम दु [ पाम] वत्तर कुर्यों (बीन)। पाम दु [ पाम] मारापुर्वां विषयों मारापुर्वां विषयों। पाम विषयों मारापुर्वं विषयों। विषयों। विषयों विषयों। विषयों। विषयों। विषयों विषयों। विषयों। विषयों विषयों। विषयों। विषयों विषयों।	हालुक्य की [क्योक्स] जनवकालुको स्थाप (हमा)। हालुक केनो हाम (है २ ११४ महा)। हालुक केनो हाम (है २ ११४ महा)। हालुको को [म] १ १९०० महा) हम का विश्वास्त्र के हिंदा साम्याप कर के दिया साम्याप के हिंदा साम्याप के हमा	२ वि छड्ड निवानी प्रमुख (का ठा ४ २ - एक रहर)। व एक प्रमान केंग्र (का रहर)। व का विकास केंग्र (का व का
र—पत्र ४२)। सोविया को ["सुण्यास] सम्बद्धिका (स. १.११—का २११)।	२४४८ कुमा संस्थि १४' प्राप्त ६४)।	हेज (संव ४४६) ।

इस्म एक [ इस्म् ] जान्य । इस्मइ (हे ४

हम्म ५ हिम्मी जैश-प्रद (वे ६,४१)।

इम्मिञ वि [इम्पित] का बना हुन्छ (स

इस्मिम प [वे इस्ये] पृष्ट क्षताब, सङ्ग

(देव ६२ पायः सुर ६, १४ ; बाक्त ६,

इस्मीर ट्रे [इस्मीर] विकास की केप्स्थी

इय नि [इठ] भी मारा क्या हो नह (मीर

चे ६ tt₁ महा)। साओड ⊈[सरक्रीट]

एक विद्यावर-गरेश (पत्रम १ २)। स्म

वि ["रा] नियत (पत्तम ६१ ७४- वा

₹ १ ≹ १ २ €, २ १8%, ₩/):

इ.स. इ. [इ.स.] मच्छ बोहा (बीव, छे २ ११

इमा)। कंट इ [क्यंट] एकश्रिकेश

सप के रंड निक्ष्मा बहा रहन (राम ६७)।

कृष्ण, कम रू [कियों] १ एक बन्तर्शितः

रायाच्ये का एक मुख्यमान राजा (दी १)

253) I

I (FYW

2 2 2 ):

इस्बीर २७) पिन)।

इस्स देशो हण नहता

इम्मार देवो इसार (विव)।

इर पर [फ़ार्] महत्त क्ला केना। हरा

इर दक [हुर्] प्रायम करमा । इस (दे

हर दे [हर] १ बहादेव अंबर (बुता १६६

कुमान्न पर्वते १ ११३ था ६०७३ ७६४)।

र कर्मातेन (पिन)। "मेह्छ व "मेलछ]

क्या-विदेश (विदि १६): बहुद्दा की

िबह्नभा | गोरी, पानंदी (क्या १९७) ।

ब्र्र्स् (द्वाची म्हन्स) क्वास्टर (वे ४

हर वैको पर⇔पूह" "ताबच पहिल्लामामन

वाबर्ग क्ल सब्द हरें (बंबना १ 🔾 कुमा)

दिर केदो घर = पू। इन दिरेशका (ते व

FAL GAI

पुना ६६३: है २ १४४)।

इर वेको भर≃ वर (परन १

इर वि ["इर] इरछ-कर्ता (सछ) ।

ब्र दि [<sup>\*</sup>बर] वारक करनेवाना (श ११४)

( Y T 4):

to wi) i

42):

1) I

¥₹₹) i

REE) I

पायम-विशेष (दा १, १ थै--- १व २१६)।

इतिकापकस्य व वि । वक सबबोकन (दे

इत्यादाग पि [इस्तीय इसय] हाम पर,

इस्थिजंडर , व [इस्तिनापुर] नवर-विशेष

इतिक्यपुर । (ठा १०—पत ४७७ नूर

इस्तिजाहर १ ११% महा, वज्य सुर

इत्थियापुर १ ६४ गाट-एक ७४।

इत्यिमक ई [वे] स्त्र-इच्छी, ऐरावस हानी

क्तियवार न [के] १ क्षियार, शन (कर्मके

t २२; ११ ४० थ4४)। २ द्वा चड़ा<mark>ई</mark>,

'ता क्ट्रेबि संबर्ध करेडि इत्तिकार कि' फिर

नोर्स देवेश सह इत्यिवारकरहाँ (ब ६३७

इरिनसिज र [इस्तिकीय] एक वैत-पुनि

इस्थियम् ﴿ वि] प्यु-पेष (१ व., ६३)।

इप्तियहरिष्ठ र् दि देव (रे ब, ६४)।

क्षान-संक्रमी (पिंड ४२४)।

4 42)1

पंत्र) ।

इत्थियी के इतिया

( C & 11) 1

रुव (क्या) ।

इस्तर्देशो इस-हर≔ इव-वर । इल्ल्ब देवो इवहड=(वे)। (गा २१)। इस्टब्स्ट रेपून दि] १ तुमुस कोलाहस इस्राइथ । शेरपुर (दे द ७४ वे १२ प्रद्)। २ कीतुक कुतुइस (दे ८ ७४° स ७ ४)। ३ त्थरा **हर्वकी** हसफन की जा 'इसइसमी तथ' (पामा स ७ ४)। ४ भौतपुरुष च्यारेठा (वा २१ ७८ )। इत्यक्तिल वि [दे] कम्पित कॉमाहमा (पिम)। इसाय [इस्रा] सबी का सामन्तरण है सबि (हेर १६१ स्वप्त ४ । समि २६ क्रमा मा४३ । मूपा ३४६)। ह्याह्य न [ह्ळाह्य] एक प्रकार का स्थ अहरः विष-विशेष (प्रामु वैष)। इसाइस की [द] बंधियका बाम्हरी वन्त्र मिछेप (१ व ६३)। क्छि द किन् वसराम बसम्म (परम ७ ३५ कुन्न १ १)। इंडिज वि [इंडिक] इस बोवनेवासा इक्क (देर ६७ पाय, प्राप्त बार ७ ६१७ 11 ) 1 **इंडिय रेडो** फ़्रिय (पा ६)। इसिमा भी [इक्किटा] १ व्यवस्ती। २ बाम्ह्रनी जन्त्-विशेष (क्य)। इंडिआर देवो इरि-आस = इरि-ताब (है २ १२१ पद्)। इजिह् पू [इरिज्र हारिज़] १ इस-विशेष (देश २४४ या ०६६)। २ वर्ण विशेष पीमारंवः ६ न नाम-कर्मका एक भेद, विसके स्वय से बीव का शरीर हरती के धमान पीता होता है वह कर्म (कम्म १ ४ )। पत्त पू ["पत्र] पतुरितिय वन्तु की एक चाति (पद्राण १—पत्र ४६)। मण्या प्रतिस्य] मध्यमे की एक वादि (**पर्**क १—पत्र ४७)। इंडिए। भी [हरित्रा] सीपवि-विकेष इन्ही इचिही (हेर बन) २३४ वा १४ व 3×4) 1 इंद्रीसागर ९ [इजिसागर] मस्य की ए≶ मावि (पर्या १—पम ४७) ।

ह्लुअ वि [उधुक] इसका (हर १२२ E PAS) I इस्स्रीव [वे] सङ्ख्या सस्त्राह (वे व ६२)। इस्टेंब [इस्टे] है सका सतीका संबोधन (क्रे २ १६४: क्रुमा) । इञ्च सक [इ] हिसना चसना। हस्तंति (सिट्ठ ६८)। बद्ध इस्ट्रेंग (उवकु २१) सुपा क्ष २२६ वस्त्राप से व ४४)। इस र् [इड] एक धनुत्तर-मामी बैन मुनि (सनुर पढि)। हक्कान [हहक] पथ-विशेष रक नहार (विक २३)। ह्दुपविम वि [दे] स्वरित सीम (पड्)। हद्भुष्टक न [द] १ हतफन हदनदी मीरपुर्व लग्न ग्रीमता (हे २ १०४ स ६२ कूमा)। २ झाडुसता 'सह उदस्ते करियो हस्सप्टबए' (सुपा ६३६)। ३ वि कम्पनकील कॉपता वस्त्रत 'पास द्वियोषि धीवो सहसा इस्सप्तको बाधी (बण्या ६६) । ह्हुएफक्किम वि [वे] १ शीक वल्पी । २ न ब्राकुमता व्याकुचपन (देव १६)। ६ वि व्याकुस (धर्मवि १६) । हडकल देवो हक्कफल (मा ४१)। इक्टफ्रिक्स देवी इक्टफ्रिक्स 'विमत्ती बाहु कोहैए। तो इस्कफ़्लिमी इमंग्(बा १२)। इकाधिय वि [वे] हिलामा हुमा (सुर व इक्टिम वि [दे] दिला हुमा चलित (देव ६२ ध्रीय)। इक्सिर वि [व] वयन-शीस दिवनेवासा (स प्रथम कुत्र १११)। इक्सीस पुंदि यसक मग्रमाकार होकर क्रियों का माच (वे द ६१) प्रवि)। **हतृत्ताल }न** [दे] सोमता असमे लय हसुत्तावस र इनएती में 'प्रतास' (जीव' AT (\* Ea) 1 इकुएक्किय देवो इद्धरफस्मिय (वय १२)। इहोइस केनो इहस्पाछ (स इ ७०) था १६ हे ४ ११६। जा भरत थी पुत्र रेक १७ सहामिक्)।

हस्तेहरिक देवो हस्प्यान्त्रिक (सिर ६६४) **१३४ मणि)**। हक्केहिस पूंके [वे] सच्छ गिर्ययट । भी या (कप्प)। ह्वसक[भू] १ झोना। २ सक मत्त्र करता । इनद हनेद इनंति (हे ४ ६ कृष्या उप महाका ६ १—पन १ ६)-कि इस्तुवाडमणमहियो नमी इवड महरले (बर्मीव १७) इवेटन हवेटना (प ४७१)। बद्ध-हर्वत इयेमाण (पर्)। ह्य देखो भव = मन (उप ४६४)। ह्वण न [ह्वन] होन (वितं १४६२)। इस्मिपुन [इसिस ] र इत की। २ इबसीय बस्तु (स १) ७१४ वस्ति १ 2 Y) 1 इविञापि [व्] प्रक्षित प्रपदाहुमा (रे.४) २२ व ६२)। इस्य नि [हुस्य] इवबीय पदार्थ होम-बोस्य बस्तु (सुपा १६६)। "यह दुं ["सह] ग्रीन माग (स्प ११७ दी: मुपा ४१६: वटा) । बाह् र्दू ["बाह्] वही (बाचा) पाम सम्मत्त २२ व वेणी १६२३ वस ६ ३५)। ह्रच्य कि [अर्थोच् ] १ स्वर, पर के सन्धः 'नो हम्बाए नो पाराए' (मानाः सुम २ १ राद १ रेश २४ २४ २व वेवे)। र स र्द्धिय, बस्बी (सामा १ १—पत्र ११ स्वा-सम १६३ विपार र—पत्र द∵ ती १३ धीप कप्प क्य)। ६ न गृहवास (तूक-क २१६ प्रति।। **इस्य देवो** सम्ब=मन्य (गा ३१ ४ ४२ ४ X#4) I इस पत्र [इस\_] १ ईंसना इतस्य करना । २ एकः उपद्यक्त करना मनाक करना। इसर, हमेर, इसर, इसति इसवि इससे. हृतित्या, हसह, इसामि इत्तमि इसामी इसम् इसम, हसेम हमेनु (हे र १३६) tat dan tan tan tan ११८) दुमा) । हत्तेच इतंतु इततु इतकतु इतब्रीह, इत्तरने इत्तरन इत्तरना (इ.३ १४०; १७३३ १७४, १७६) । भनि हसिद्विह हमिस्यामो, हमिद्दिनो हबिहिस्टा, इचिहिस्टा,

क्य-विशेष (परंख १--पत्र ११)।

इरिज र् [इरिज] १ दिएन भूत (प्रमा)।

२ स्टब्स एक येद (पिंग)। स्वरी धी

[श्री] पुन्दर नेश्वनली की (कप्पू)। रिर

राजा (पत्रम १२, २) ३ २ मधीचर हीप के

धपराचै का यविद्वाता वेद (जीव ३ ४)।

सह देवो सरह(चन)। सेज र् विम्

१ स्टब्रा प्रव्यक्ती राजा (सम ६०३ १६२)।

२ मक्तान् गमिनावनी का प्रवस भावक

(निकार १७०) । स्ताह् वृ ["साह] १

विद्यालगार-देशों की द्वीवान विद्या का श्रव

(बार १ — पत्र ६४० इक)। मान्यनन्त पर्यंत का एक शिवार (ठा र---पत्र ४३४)। श्रुरि पू श्रिरत् ] १ इय र्रंप, कर्ड-किरेव । ९ वि इष्ट रैनवाना (शाया १ १६ पत्र २२×) । १ और युक्त नद्वा-नदी (तय २७-इक दार ३ -- पत्र ७२)। ४ यज्ञ सम वी एक कुन्योग (डा ७—एव ११६)। ववात, प्यनाम पु [प्रपात] एक छह् वहां से इरित् नसी निकतती है (ठा २ ३---यम ७२ दी--यम ७१)। इरि देवो हिरि (सन विश्व उत्त ३२, ( I ) इरिश्र पं विस्ति रे वर्ण-विशेष इस रेंब । रिजि इस क्लंबाला (बीय) सामा ११ टी--पत्र त १ क--वन ११६ खे*व* ४१ मा ६१६) । ३ र्नु एक पार्व अनुस्य-वाति (स ६—पण ३१a) । ४ पून बमापति-रिशेष इस दुल स्थानी (पहरत भीप पाष्ट्रपंत्र २ १ । १---गर १ ₹6 t 1) i इरिभ देशो दिश = इट (नव महा)। इरिअ देखां मरिम = चील (य ११२)। इरिअग ) व [इरितक] औरा व्यक्ति के इरिअय । पत्ती ने बना इसा भीत्रय विशेष (यह २६६: मूम २ है)। ६रिभा स्मे [कारता] पूर्वो, पूर कु<del>छ-वि</del>छेप (4 v 11 t 11) 1 इरिभा देवो हिरि (इमा) । इरिशास रेको द्विर आस । इत्याद्यं थे [र इत्याद्यं] दुर्ग दुर (रेव ६४ काम मत कम्पः मनु १३)। इरिएस १को इरिन्दस । हरिपंदम देखे हरिन्यंदम । इरिपर्ण व [वे इरिवम्तन] ११व देशर (k (x) i

मुं(तिरी सिक् (उप द २१)। विद्यार् [रिधिप] नहीं (हेर रेव )। इरिजंड पु [इरिजाह ] चन वांव (है व **≠1.** 8€) ! इरिजंक्स १ [इरिजाक्क्स] बीचे वयध्य के द्वर्गकैन भूति (पडमेर २ १ १)। इरिजानेसि को इरिजेनमेसि (वज्य क 1 (Y) इरिजी को [इरिजी] १ मारा हिरन हिस्की (पाध) । २ अन्य-विशेष (पिष) । इरिजेनमेसि पू [इरिनैगर्मीधम्] सम के पराधि-धैम्द का सविरक्षि केत्र (ठा ६, १---१२ यंत का इड़)। हरिहा देशो हासहा (श ६७१) । इरिमंब र् [वे] कावा पत्रा पश्च-विशेष (भारतायन १३६ संदोध प्रशा दे ८. ७ वि)। देवी विरिमंत्र । इस्मिमा र् दि नदुर बद्धी बाडी बंश (t e. 51) 1 इरियंदपुर न [इरियम्ब्रपुर] नंतर्गत्वर (पाप्प श्वनवर्गापर)। इरिजी वेचो हिरिजी (क्त १६ १)। इरिज नि ["भरवत् ] भारतावा बोम्प्रनावा (41 X YX) 1 इरिस मक [इ.५] दुवी होता। हरिक्द (दे ४ १६६, प्रका वर् ) भूगिर्मक्य कन्यानो सर्ज्याणीयसम्बद्धते (श्रंबीय ४६)। इरिस सक [इपं] इपं ते पेन बना करता नोमारियं वि स इतिहे मुख्यमारवयो पुर्यो' इस्रत्यम् देशो इस्र स्वार्थः। (इप १२२१६)। दश्रा } देवो द्विता (हे ! बदा प्रेमी इतिस दु [इपे] १ मुखः २ पारूद, प्रशेष, इंस्टरी ( पर्) । इडरप वि [द] वह-मानी वापान (दे मुठी (हेरु १३ मात्र कुमा क्ल) । इ बामुक्त विशेष (बीप) । "उर वृ ["पुर]

एक केर बन्ध (तुवा ६१व) । जि. वि

इरिसम र् [इपेम] स्पेक्ष्म प्रक्रिक एक

[ बर् ] हर्न-पुन्छ (ब्राइ १६)।

बोन (नुसार क) s

इरिसाइय वि [इस्ति] इनेबाः (वन 47 UP) : हरिसास केनो सरिस-18 ≈ हरे-व्ह । इरिसिम वि [इपित] इपेसा प्रार्थन (मीप मनि महाः सरा)। इसी देवों हिंसी (सूच १ १६ ६) वन)। इरीडई रेको इरडई (मार १२)। हरे प [करे] रत पर्नों ना दूवन प्रामा-१ मानेप निया। २ संबादस । ३ फी र व्ह (दिन २२ क्रमाः सं४६ । शि ३१०)। इरेडगी क्वो इरीडई (वंबा १ ९१)। इरेजुरा 🖈 [इरेजुम] विषेत्र समर्थन (बत्तमि ३) । हरेस सक [हुप्] की करण (<sup>हरू</sup>---वेसी ६७)। हरू न [एक] ए. विस्ते देव नोड्ये है (स्वर भीत)। स्वय के जिल्ही हम कोवनाः चपुने समयमिन क्यों 🕏 इसन्तामी बित्ते' (सुवा १३७) २१६) दुर २ ७७)। **इन्।**ल, **इराव ( इराव)** इस के उत्पर का नाम (बना)। भर ई [ पर] क्यरेन राम (गत्स १०—ग १२६३ दे२ ११)। भारण पृ['बारण] समाग्रद, राम (पचम ११७ १)। वाह्य वि [बाह्क] इधीयर इव बोठवेगाला (भा२३)। इर देवी घर (एव ११६८ पर—याचा ४० थीनः इत्र २३७)। । वह ई [। युष] स्तम्ब पप (रम ३ २३ ७६ २६)। **दछ रेको** एक = फन (पुण २२६) पनि विद्य)। इक्क (गा) देवो हिअय = इस्म (बार !!

गार--पुन्द ११)।

₹₹) i

( **२२)** ।

र्ख्याङ र् [दे] धतकत ग्रीएन क्रेमप्र

(\$ 45 din Zan dat us (15)

र्रीह रेप ; द्वाप १६२। स्थिर प्रश्ता समाव

इतक्र देवो इतन्त्र = इव-वर । इट्स्ड देवी हस्ड=(वे)। (पा २१)। इख्युख रेपून दि] १ तुमुक्तः कोलाह्य (ब्युट्य ) शेरपुम (दे द पर है १२ ८६)। २ कीतुक दुरुहस (वे ८ ७४ स ७ ४)। ३ व्यस्य हरूको ह*त्तपन* श्चीवताः 'हमइसमी तरा' (पाधः स ७ ४) । ४ धौरमुक्य चररंठा (वा २१ ७० ) । इस्रक्षिथ नि [र] कमित कोपा हुमा (दिय) १ इस म (इस्य) सबी का मामनाए हे सबि (हेर १६६ स्थण ४ ३ ग्रीम २६ क्रमा ल ४३ : युवा ३४६) । **स्टाइ**ज ग [स्टाइज] एक प्रकार का उप बद्धारः क्यि क्रियेष (प्राप्तु १८)। इंद्राइका की [य] बंघीएका बाम्हरी बालू क्रिकेय (के = ६६)। इक्कि (इक्किन्) बक्रमाम बसमात्र (पराम ७०० ३१८ हुत्र १ १)। इक्किअ वि [हास्तिक] हत बोठनेवाबा क्रमक (हेर ६७ पाम, प्राप्त मा १ ७ ११७ 34 ) 1 **ैहस्मिम रेको फस्मिम (गा ६)**। इस्तिओ की [इक्किस] १ क्रिपक्ती। २ बाम्बुनी कल्तु-विशेष (क्या)। वृक्षिमार देवो इरि-आउ = इरि-टान (है २ १२१: पक्)। इक्टिपुं [इरित्र दारित्र] १ वस-विशेष (हे१ २६४: गा ६६)। २ वर्स विदेप पीकारंगः ६ त नाम-कर्मका एक मेद, विसके प्रस्त से बीम का शरीर इस्ती के समान पीला होता है वह कर्म (कम्म र ४)। पत्त पू ["पत्र] मतुर्धित्रय मनु की एक कार्ति (परुख १—पत्र ४६)। "मण्यस् पूं ["मस्त्य] मझबो को एक बार्डि (पहल १—पत्र ४७)। इसिहा १ की [इरिहा] मीपवि-विशेष, इस्सी इसियो (हे १ बदा २१४) मा १व व १ इस्रीसागर पु [इश्विमागर] पत्त्व की एक

काठि (पएछ १--पत्र ४७)।

ह्युअ वि [संयुक्त] हसका (हे २ १२२ E WYR) I इस्स्य वि [दे] सङ्घ्या सस्या (देद ६२)। (छेंद्र [हुनें] है सचि सबी का संबोधन (इ. ११६ इमा)। हस्त सक [दे] हिमना चवना। हस्संति (सिट्टि ६०)। वक्क स्ट्रॉल (उवक्ट २१ सूपा १४० २२१ वस्त्रा∀ सें⊏ ४४)। इस ट्रं [इस] एक सनुत्तर-मामी कैन मुनि (भनु२ पक्षि)। हक्कान [इ.स.क] पद्म-विशेष रक कहार (विक २३)। इत्तर्पायम वि [दे] खरित शीम (पइ)। ह्दुष्पञ्चन [द] र इतका हस्मी भौरमुक्य स्वर्थशीयता (हेर १७४ स ६२ कूमा) । २ झाड्डबता "झहज्बसरी करिएगं हस्तप्रकाएं (सुना ६३१)। १ वि कम्पनस्थेस कॉपता चक्रवत पास द्वियोगि दीवो सङ्सा इस्सप्तको जामा (बण्जा ६६) । हुदुष्पत्तित्र वि [वे] १ सीम बल्यी। २ न झादुत्तता स्थादुत्ताम (देव १६)। क्षि स्था<u>प्तव</u> (मर्गेषि १६) । ह्वफल देवो ह्टुएफल (ना ४१)। इक्टप्प्रक्रिक रेको इक्टप्प्रक्रिक विमयो बाह सीहेण तो इस्तप्रसियो इमं (बा १२)। इद्याविय वि [पे] हिवासा हुमा (तुर ३ 1 (5 5 इक्किंश कि [वं] दिवाहका पसित (के स (२ इ.म.)। इक्तिर वि [व] बतनशील शिसनेवामा (स र्थंड कुम १८१)। इक्कीस पूर्व [इ] यसक अयस्ताकार होकर क्रियों का बाज (देव ६१ः भवि)। इत्तुचाळ हेन [इं] ध्येत्रता बच्चे सक्त हानुचापस र गुजराती में 'उदायज' (भूतिः TC 12, 45)1 इसुप्करिय केने इसपद्धातम (नव १२)। **इस्ट्रंड देशे इस्टिन्ड (उ**स्ट्रंड ७३) वा १६ हर १६६। वर करेट दी पुत्र हेट १७; महाः परि)।

इक्लोइक्लिश वे**को इड**फ्लिक्लिश (सिरि १९४) **१३८ मणि**)। इक्कोइस्थिय पुंच्चे [वे] सप्टः मिर्पण्टः । भी या (कप्प)। ह्यसक[भू] रहोता। २ छक मत्त्र करना। हबद हबद इविट (दे ४ ६ ३ कृष्य द्वरा महाः ठा १ (—पन १ ६)-कि इत्युवादमणकृष्टियो नसी इवद महुरस् (धर्मीव १७) इतेजन हतेजना (पि ४०१)। बहु- ह्यस ह्येमाण (पर्)। ह्य देखो भय = भव (उप ४९४)। ह्वण न [ह्वन] होम (विसं १४८२)। इदिय पुन [इदिस ] १ इति की। २ इवनीय वस्तु (स १ ७१४ दसनि १ 8 K) I ह्यिअ वि [व] प्रक्षित दुपका हुमा (वे १ २२ ६ ६२)। हुस्य दि [हुस्य] हुदबीय पहार्थ होम-योग्य बस्तु (बुपा १६३) । यह वृं ["बह् ] प्रस्य माग (उप १६७ दीर मुगा ४१६) वरह) । बाह् पूं [वाह्] शही (प्रत्याः पापः सम्मल २२० वर्गी १६२ वस ६ ६४)। ह्रस्त्र वि [अर्थोच् ] १ धवर, पर से मध्य नो इच्याप नो पायप (बावा) सूम २ १ हादाह हर र४" रव देदे)। र म⊾ श्रीम, बल्धे (सामा १ १---पत्र ३१ जना तम १६ विपा १ १---पत्र यः दी १ । बीप कृष्य कव)। ३ न गृहवास (नुक-क २१६ प्रचि)। हरुय देखो सरुव ⇒ अस्म (या १९ ४२ X42) 1 ६स भक् [६स्] १ ऍचना इस्य करना। २ सकः उपहास करना मनाक करना। हमा, हमेर इसए, इसंदि इसदि इसदे, इसिन्या, दुसह, हसामि इसमि हसामी, हवामु हसाम, हराम हतेमु (हे ६ ११६) to title the title time time १५वा पूर्वा) । इस्ट इतंतु इतत्, इतेन्त्र, इतेल्लीह इसके इसेक्ट इसेक्टा (है र ११वः १७६ः १७४, १७६) । मनि इसिहिइ

हमिन्दाबरे, हर्विदियो इतिदिस्ता, इतिदिला

रेश पर १४)। २ वाक्स, आर्थ (पाध)।

३ ध्वस कोबा (भग्नः एक इ., १ ३) कम्प

र, व¥)। ४ ई एक मानाशाला स्वर

(पएस) १९--पत्र ४६) विदे १ ६४):

इस्सव वि [इर्पव] इर्व-कारक 'रोमहरक्का)

इस्सिर देवी इसिए 'पन्तिसरे उच्च वर्ति'

दश्र (प[द्राइ, दा] १ स्त पर्योका

इहहा र तुम्ब सम्पर्स —१ धान्तर (इसी ७४)।

दहा है [हहा] र क्वलें क्ष्मों की एक कार्य

(हे १ १२१)। २ म बेर-पूजक सक्तम

हाय [हा] १त यथी का दुवक सम्बद्ध—

१ विवाद, धेर (सुर १ १६) स्वय्त २७)

बारहेव अद्देश हैं। प्रानु र )। र

तोत्र विजयोरी । ३ शीका । ४ कुरबा, तिम्दा

(देर ६४ २, २१४)। इन इ किन्स्

स्वाकार (रिव)। सब दु [रेव] नही धर्व

सास्क[स] १ लाव करवा≀ २ वर्षि

करमा । १ बीस करमा हीत करमा कम

क्ला। हर (वर्)। क्ले हस्य, हार्यात

(क्का क्वा) दिक्बा (प्रति) दिक्बा (प्रती

१ ७) । क्वड- हार्यत (काबा १ १

री—पव t७१), दीयमाण (क्स्ब) । संह-

शार्ठ (इस्कृ १ ११)- दिवा दिवार्थ

(भाषा १४४१ पि १०४) देख

देवा(दूष १९,३१ व्या १३),

दुवर्धमही (विक वक्) ।

(बच ११ ४० गुब ११ ४)।

२ केर, निवाद (तिरि ११२) :

(स्पिर २१४- ७१४) ।

(37 7 ttt):

हा देखो भा-न्द्री (भारत) । हाभ देवो हा—सक। हामद, हामए (पर्)। हाअ सक [हाक्य ] प्रक्रियार रोग को क्लम करना । हाप्रज (पिट ६४६) । शाम देशो भाभ = भाग (से द दर/वर्)।

हेबाण, हबार्ज (पि १८७)। इ.इस

(स १६१) वंबा ६ २७) शब्दु ६ ४३३)।

**(**ध−**(**(t

महासन्दित बामक देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्रं (ठा२ ६—पव ०३)। समृत [<sup>\*</sup>गत] कता-विशेष (स ६ ६) । रह वृ हाअ वेदो भाय = भात (से ७ ११)। हाम रेबो भाग - मान (छ ६ ११)। [र्रात] रत्य-विक्षेप महासम्बद्ध-विकास का हाड देवो भाग भह पप्रश्रे महत्त्रविपति क्टर विद्याका इन्द्र (ठा२ वे--- वद वद)। हाया तुई भक्तई (बा वक्त)। इस्स वि[हस्य] १ वद्गु औरा (सूम २ १ हांसड देवो इस्ट (चर)।

> हार्फ्य देवो हान्द्रंद । हाइसि की [हाइस्डि] सन्द का एक नेर (पिष) । हाडहर न दि । स्त्रम्य क्रम्य (नव १)। हाडहडा की हिं] वारोपका स एक केंद्र प्रापक्किक किरोब (का १, २---पत्र ११६, निद्{र})।

हाजि की [हानि] बर्ध, प्रत्यन (पनि)। द्याम म वि] इस क्या, इब प्रकार, एक भागभरु′ (प्राकृद१)। हायज र् [हायज] क्वं संकक्षर (क्रीयः श्चित्रणी हो [शुक्तनी] मनुष्य हो स्व स्टब्सी

खाया १ १ धी—पत्र १७)। में बड़मी प्रमत्य (हा १ —पत्र ११६, 😘 t ) i हार सक [हारप ] १ क्षत करवा र

हारना परावस पाना। हारेड हाध्यु (म

महा) । यक हारंस (मृता १६४) ।

हार दें [हार] १ माना मकायह सर में मोठी पावि में माबा (क्य राव १ ६ क्वा कुमा मावि)। २ इत्तर प्रचारस (स्व १) । ६ होप-निरोप । ४ पद्भर-निरोप (बीम ३ ४--पत्र ३६७)। १ हर<del>ण न</del>र्यो भारत हार्ष (धाका १२३३): प्रका<sup>क</sup> [पुर] बहु-किशेप कोहा (धार्म ६६ ११)। "सद्द्र[भग्र] शास्त्रीप का समित्राता एक देव (बीट ६ ४ – <sup>वर्ड</sup>

१९७)। सहासद् र महासद्र हार

द्यीपकाएक समिद्धातादेव (जीव ६,४) ।

महावर वृ ["महावर] हार-पन्नर क प्र

एसाव देशो हास = हास्य । हसावद, हसावेद ( & & tre) : इसिय वि [इसित] १ क्विक क्याड किया क्यादी गर्ह (इन ११३)। २ नः हास्य हैंगी (उन ११४)। इसिम नि [इसिव] हास-माप्त होन (नंद **t tt):** 

(क्रि. १६ ) ज्य १६७ के नुरुष्ट

ta )। <del>एंड</del> इसिक्ज, इसेकज,

इसिएभाप इसिएमाणं, इसेरमाण,

इसेव्याणं इसिकणं (हे १ १६७) पि

१व४ १व१)। हेष्ट इसिर्ट इसेर्ट

(६ । १६७) । इ. इसिअस्य इसेअस्य

इसमीध (महाइ २ ४—पत्र १४६ है

३ ११७ वर् दक्षि १४ नाट<del>-पृ</del>च्छ

इस पक [हुस ] दीव होना कम होना।

इस दृ[इसि] इसम (इन १ ११ दी)।

इसम कीन [इसम] हासन (सी (मन; स्व

३६ २६२ वंचार व)ः बंदि व्या(का

इसइस मक [इसइसाव ] १ ज्लेक्ति

होता। २ तुबबता, "बंबारण्डलु (?) इस

मोदमाद्व द्वमा इध्यदेश (दुवा १ ) ।

नक इसक्सिय (क्यान ३ ३१)। एक

EAR

{{x}}

इ २७६) ।

इस (पेप १, ११)।

इसइधेरुम (चन)।

इसिर वि [इसिन्] इस्त्य-कर्ज ईस्त्रे की बाक्टबाबा (प्राक्त वा १७४) क्या २० की नुर २, व कूना)। और री (क्तर)। इसिरिया को [वे] इस्त (के (दे ८,६३)। इस्स पत्र [हुस ] क्य (न्य, मून होन्य,

बीस होन्य । वह इस्समाण (सींद वर् å) ı

श्रविष्ठायक देव' 'हाएसमूद् हारवर-हारवर (?हार)महाबरा एत्प वो देश महिद्वीमा' (श्रीव ३ ४--पत्र ३६७)। यर द्र विरी १ हार-समुद्रका एक समिश्राता देव। २ श्रीप-विशेष । १ समूत्र-विशेष । ४ हारवर समुक्त क्या एक धनिहाता देव (जोव ३ ४) । बरभइ र् [ बरभद्र ] हारवर-होव का एक प्रमिष्ठायक देश (श्रीत ३ ४)। वरमहाभद्द पू [बरमहाभद्र] हारवर हीप का एक श्रविहाता देव (बीव ३ ४)। बरमहाबर १ ['बरमहाबर] हारवर समुद्र का एक पविद्वायक देव (वीव १ ४)। वराषमास दूं ["वराबभास] १ एक श्रीप। २ एक समूत्र (जीव १ ४)। वरायमास-मद् र् [ वरायभासभद्र] इरवरमास-द्वीप का एक धविहाता देव (बीद ३ ४)। "परायमासमदाभद्र पू "यरायमासमदा-सङ्ग हारवरावभास-द्वीप का एक प्रविद्वारक के (नीप १४)। वरायमासमहाकर प्र [बराबमासमहावर] हारबरामक समुद्र काएक प्रविद्वाता देव (शीव ३ ४)। "परावभासवर् प्र ["वरापभासवर] हार वरावभास-समुद्र का एक प्रविद्वासक देव (बीव १ ४--पद १६७)। बार देवी सार (सुपा १६१ भनि)। शास्त्र वि [शास्त्र] नात-कर्ता (पवि १११)। हारण वि [शारण] असर देखोः 'बस्परथ-कामधीपाल क्षार्च्य कारचे बहस्यार्थ (पूज २६२३ वस्म १ दी)। हारव देवो हार=हाय्य्। हारवह (हे ४ ११)। मनि, हार्चनस्त्र (स १६२)। क्षारविभ वि [क्षारित] शारित (कुमाः गुपा **११२)** । हारा की [के] विका अलु-विशेष (वे व 14)1 हारा देशो भारा (कम ना ७०४)। द्वारिकी द्वारि १ हार, पराजय (का प्र १२)। २ विक, बेस्सि (दुन १४४)। १ प्रत्य-विदेव (पिय)। हारि वि [हारिम्] १ इय्य-कर्वा (विदे १२८६ कुमा)। २ मनोहरू विदावर्षक :

हारिम न [हारीत] १ गोत्र-विदेव को कौरत योग की एक शाका है। २ दूंबी, उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७---पत्र ३१ ४१ क्य)। मान्सगारी वै ["माछाकारी] एक वैन मुनि-धाका (कम)। हारिअ वि [हारित] र हाच हका चुत बादि में पराजित (सूपा १८६ मद्वा मादि)। २ कोमा हुमा हुमाया हुमा (वव १ सूपा 141) हारियद वि [हारियन्त्र] हरियम बा हरिचन्त्र-कवि का बनाया हुआ (पत्रह)। हारिया की [हारीता] एक कैन पुनि-शाका (राज) । रेजो हारिअ-मास्मगारी । हारियायण म [हारितायन] एक योज (कप्प)। हारी की [हारी] केंद्रो हारि - हारि (उन प्रश्च कुत्र १४४ विक्)। हाराय पुँ हिर्ग्रेश र मुनि-विधेष । २ व योत्र-विरोध (राज)। यंध पू विरुधी क्ष-विकेष (विव)। हारोस पं हित्तपा १ धनार्थ का किरोप। २ वि. उस देशा का तिवासी (प्रस्ता १ — पत्र १०)। हास वृद्धि हास्त्री राजा सारवाहन वाया-सप्तरकी का कर्या (वे व ३६ २ ३६, वा ६ मना १४)। हाजा की [हास्प्र] महिरा सक (पाम्स् कुप ४ ७ रमः)। हास्महस्र पूँ विही याबाकार, माधी (वे व हाताहरू पूर्व [हाताहरू] १ वन्दु-विरोध ब्रह्मसर्पे बाम्हरी (दे ६ ६ पाप) या ६२)। बरी वैस (१ ० ७१)। २ प्रीन्त्रय 🛭 बन्द् विदेष (पर्या १~पण ४३)। ३ र्न. स्थावर विय-विकेष (बद्ध १, १ ७-यच्या २ ४)। ४ वूं, एक्छ का एक सुमद (पचम १६ ६३)। शासाह्य **भे [शासाह्य] ए**क मानोविक-मतानुवायित्वे कुम्हारित (मप १४--पत्र (32) I हासित्र रेवो हजिम = हासिक (है १ ६७-प्राप्त)।

शांकिञान [शांकीय] एक वैत पुनि-दुस (<del>क्य</del>) । हाजिद पे [हारित्र] १ हस्से के तुस्य रंग पीनावर्षे (मसूर का प्रस—पत्र २६१)। २ विं पीला, जिसका रंग पीला हो बह (पएस १--पत्र २४: सूच २ १ १४ भया भीष) । ३ दूंत. एक देव-विमान (रेनेन्द्र १६२)। हाडिया की [हाडिका] देवो हरिया (धन) । हाङ्क वि [दे] बीव मत्त (रे ८ ६६)। हाव क्क [हापय ] १ हाति करना । २ व्याय करता । ३ परिचन करता । ४ सोप करना 'वंडिनसामस्यारि हानेह' (वद १) इम्बए (क्ल ४, २३ सद्वि २१ दी) । हाद-इण्जा (एस ८, ४१)। बद्धः शांतितः (विसे 2085)1 हाय पूं [हाय] मुख का विकार-विशेष (पग्रह २ ४~~पण १३२३ मणि)। हाथ वि दि] जवाब हुतवामी वेच से हीड़ने-वाला (वे = ७३)। द्याय देवो माय = भाव (प्रत्यादेख' (प्रस्तू २४) । द्वायण वि [द्वापन] हानि करनेवाला (हे २ ₹₩4) 1 द्वाविर वि [दे] १ अभाकः दुतमानी। २ दौर्फं सम्बा। ६ सन्बर।४ विख्य (देट ષ્ક્ર∖ા हास देवो इस - इप् । वह 'न हासमागा नि पिरं नइण्या (रह 1Y) : द्यास सक [द्यासय] ईंग्राना । स्पेद (हे १ १४६)। कर्म इत्योगर, हासिञ्जद (हे १ ११२) । वक्त दासेंत (थीर) । वसक्र शासिञ्चेत (मुना २०) । शास पुं[शास] १ शास्य ही (धीप प्रथम २ ४२ प्रसामा ११ ११२)।२ इसी विरोप जिस्के उस्त से ईसी माने वह कर्ने (कम्म १ २१:५७) । ६ मर्नशार-साझोक रस-विकेश (मणु १३१)। कर हि [\*कर] हास्य-घरक (नुबा २४१)। स्तरि कि विमरिन् निश्चित्र)।

(परह) ।

२४६)।

(E) 11)

क्रीस्तर्भ (हे वे १६६) १९७ १९६०

१६१) । कर्ने, इसीयह, इस्टिंग्यह, इस्टिंगीत

(हि. १६ ३ १४२) । यह इसंत, इसेंस,

इसमाज (पीण है के १६वा १८१

( वद् )। कस्त्र इसिर्जीय इसीश्रंद,

**र**सीभगाण इसिकामाण इसेकामाण

ta ) । संब इसिकल, इसेकल,

इसिडआज इसिडमार्ग, इसेडमाज

इसेरमाणं, इसिकणं (हे १ ११७) वि

वर ११७ दी सुर १४

ter tet ): ir sfet set इस्स वि [हुस्व] १ वर्द्ध ब्रोटा (सूप २१ (१ ३ ११७) । इ. इसिश्रम्य इसेमस्य १४८ पर १४)। २ वामन, श्रावं (पास्र)। इसमीझ (पदार ४—४व १४६, हे १ मन्त्र कोहा (मकः वंच १, १ ३) कृतम वै १९७३ वर्ड प्रतिवा वेशः नाट<del>ः पुण</del>्या ६ ६४)। ४ ⊈ एक मानानाता स्वर (44) I (भ्रष्ट १६—पत्र ४४६) विशे १ ६८)। (स पन [हुस्] हीत होता क्य होता। इस्सण नि [इर्पेज] हर्ष-कारक 'रोमहस्त्रको इस्टर् (पेप ६, १३)। बुढर्वमहों (निक वर्ष) । इस इं इसि इस्स (उप १ ३१ टी)। इस्टिर देवो इसिर, 'च-इस्टिर एका वीटे' इसन कीन [इसय] हास्य हैंसी (कर; इस (en 11 x de 11 x): १६,२६२ वंदार व)। और, पद (स्व पुरुष्य)। धरर १प [स्टर् स] १ फायरी स **बहरा** ) सूचन प्रव्याः—१ प्राच्ये (प्रयो ७४)। (सहस प्रक [इस्ड्साय ] । ज्लेक्ट २ केर, निवाद (सिरि ६१२) । होता। २ दुवनमा "हमारखानु (१) इस ददा ई [ददा] १ फर्च्य देनों की पुत्र वाति मध्यमञ्जूषा स्थावेष' (पुत्र र (देवे १२१)। १ म केर-सूबक सम्बद यक्र इसइसित (क्पनि १ ३१)। संक्र. (Raft ?&= + + + + + ) | इसइस्रेक्टन (यव)। इसाव देवी हास = हासव । हसावह, हसावेह राम[रा] रन पर्ने का सूचक स≔स्स— १ विपाद, चेर (पुर १ १६: स्वयं २७ (E % tre) i मारहे अर्था है। प्रसूर )। २ इसिम नि [इसिन] ! निस्त्र बन्हार किना खोक विलयीची। १ पीड़ा। ४ कुटारा, लिखा मनादो क्ष (क्य ११६)। २ नः हास्य (देर ६४० २ २१७)। इदेत् इं[कृत्यु] (वी (स्व २२४)। इत्यानभर (स्व) । स्व द [रिय] बहा पर्व इसिम वि [इसित] इस्ट-श्राप्त होन (वेच (पुर २ १११)। X X4): द्यालक [द्रा] र स्थान करन्य। २ वर्षि इसिर वि [इसिए] हास्त-प्रता हंक्ते की क्रमा १ बीग्राक्ता होत्र करना क्रम माध्यनामा (प्राप्त वा १७४) उप ४२० दी क्ला। हाद (पर्)। क्रमें हायद, हार्यात कृमा) । **बी. <sup>\*</sup>री (क्**टड) । (क्क क्य) दिस्यह (महैंच), दिस्यउ (प्रशी पुर २ १ ७) । करह- शायेत (सामा १ १ इमिरिमा की [वे] हाव (छे (वे ६२)। दी-पव १७१) दीयमात्र (फार्क)। संह. इसस पक [हस ] कम होना मून होना हार (बन्द्र ११)- हिंचा हिंचाची बीख दोन्य । वक्ष इस्सम्माण (पूर्वि वर (भाषा १४४ १ पि १८७), हेव **a**) 1 देवा(पूष ११३१ उत्तर ६४),

१२७) । अर्थे इस्टर् (बारवा १२७) है ४ (स १६१) पंचा ६ २७) सब्द्र का बढ़ाई)। हा देखो मा-स्थ (वरह) । हाभ देवो हा—एकः हामद हामर (पर )। इस्स म [इतस्य] १ ईसी (प्राचा १ २ १ हाम वक [हाद्य] मदिवार ऐन को रुपव ७२३ माट—मूच्या १२)। २ र् छराब करता । हायुग्य (पित्र ६४६) । महाबन्दित नामक देनों का विश्वस दिया का हाम देवो साभ ≔ भाष (से ≈ वशः पर्)। **इन्ह** (ठा२ ६—तत्र व≭)। गयन (1) भी पाय = वाठ (से ७ ११)। ["गत] क्या<del>। रिहे</del>च (च ६ १) । रह दू हाअ देखी भाग = भाग (छे १ ११)। रिति रुक् विशेष महाक्रीका निकास का हाउ देशो भारत भन्न भन्न महत्त्रविद्यंति रक्तरिकाम स्वा(स २३—लाब1)। हामा दुई भग्रह (या ४७२)। हांसछ देशे इंसड (चन)। हार्चन देशो शान्द्रन् । हाप्रक्षि की [हाप्रकि] क्षल का एक वेर (Rq) ( द्राडद्रह न [वृ] तत्काच तत्वसः (वव १)। हाडहडा भी हिं] पारीपछा का एक बेर, प्रावस्थित-विशेष (स. १, २—पत्र १११, विषु २ )। हायि ध्ये [हानि] श्रीत क्लबन (स्थि)। हाम थ [दे] इत तत्त्व इव प्रकार, एक 'इस कर्र' (शक्त वरे) । हायण र् हियनी वर्ष तंत्रकर (बीच सानार १ टी—पद ३७)। हायणी थी [हायनी] स्नुष्य भी श्रष्ट स्टाओं में बद्धनों सनस्य (ठा१ --- पत्र ११६, वंद्र 1 )1 द्वार तक [द्वारय ] १ क्वत करका। १ हारना पराभर पाना । शारेत हारत (म महा) । यक दारीत (तुना १४४) । हार दृं[हार] र माना सक्रमण सर की मोठी मादिनी माचा (क्रम्मा धर्वा २ क्का पुना' मारि)। २ इराइः प्रपाइच्छ (वर t) । १ द्वीप-विदेश । ४ समुद्र-विदेश (बीर १ ४—यव १६७)। ४ इरए-कर्क भवतः हार्च (माचा १२३ ४)। पुष्ट 🗗 [पुर] बालू-विक्टेप बोब्रा (बाका ६ ६ ११)। भाद्र पु[सद्रा] इतस्थीप कामक्तिया एक देव (शीव ३ ४ – वर्ग १६७) । बदासद् व सिहासद्र दिए 🗗 प का एक मनिहातादेव (शीव ६ ४) । महाबर पु "महाबर] हार-पशुर क एक

(स−एर

इंदाम, हेबार्ज (पि १०४)। इ हेब

धारिष्ठायक देव 'हारसमूद हारवर-हारवर ('हार)महाबरा एत्प को देवा महिष्टीया' (कीय ३ ४—पत्र ३६७)। यर दूं ["वर] १ द्वार-समुद्रका एक समिष्ठाता केन । २ द्वीय-विशेष । १ समूद्र-विशेष । ४ हारवर समुद्र का एक भ्रमिष्ठाता देव (जीव ३ ४)। ब्रस्मइ र् विसमद्र हारबर-बीप का एक प्रमिष्ठायक देव (वीव ६ ४)। वरमहाभद् वृ [ वरमहाभद्र] हात्वर द्वीप का एक समिहाता देव (बीव ३ ४)। बरमहावर र् [ वरमहावर] हारवर समुद्र का एक प्रथिष्ठायक देव (बीव १ ४)। बरावभास दू ["बराबभास] १ एक डीप। २ एक समुद्र (कीव ३ ४)। बरायमास-मद् र् ["वरायभासमद्र] हारवरामास-द्वीप का एक प्रक्तिहाता देव (जीव ३ ४)। "वरायमासमदाभद् वृ ["वरायमासमदा-सङ्ग ] हारवरावभास-ग्रीप का एक प्रविद्वायक के (बीच १४)। वरावभासमहावर प्र ["बरायमासमहावर] हारवराम<del>ास सप</del>ुर का एक प्रभिष्ठाता देन (जीव ३ ४)। "वरावभासवर व ["वरावभासवर] हार वरावमास-समुद्र का एक ग्रामिष्टासक देव (बीव क् ४---वक **१६७**)। हार देशो सार (सुपा १६१: मनि)।

ब्रास्थ वि [ब्रास्क] नात-कर्ता (प्रमि १११)। हारण वि [हारण] उसर देखोः 'वामस्य-कामधोगस्य हार्च्या कारले दुरसमार्थ (पुष्प २६२) बस्म १ थै)। द्वारम देखो द्वार ≕शारम् । द्वारम (दे ४

३१)। यदि हार्यनसम्बद्ध (स १६१)। हारविभ वि [हारित ] नारित (कुमाः सुपा **११२)** । हारा की [दे] बिया जन्तु-विशेष (वे व

14)1 हारा देवी भारा (भूग या ४८६)।

हारिको [हारि] । हार, परक्य (का प्र १२)। २ विक, मेरिए (कुल १४४)। १

धन्द-विरोप (पिप)। द्वारि कि [द्वारिन्] र इच्छ-कर्य (किसे १२४४, कुमा)। २ मनोहरू विशासर्वक (पड़ड) ।

हारिध न [हारीत] १ गोत्र निशेष को कौरस गोत्र की एक शाका है। २ पूँकी, क्स गोव में उलका (ठा ७---पत्र व्हः) संदि ४६ इन्न)। मान्यगारी व्य ["माखाद्यरी] एक वैस मुनि-शाचा (कप्प)।

हारिश्र वि[हारित] १ हाय हुमा यूव साबि में पराजित (सुपा १११ महाः साबि)। २ औया ह्या प्रमाया हुमा (वव १ सुपा

हारियह वि [हारियन्त्र] हरियम का इरिजन्त-कवि का बनाया हुथा (धनड)। हारिया की [हारीता] एक बैन मुनि-राजा (राज)। रेको हारिअ-माध्यगारी।

हारियायण म [हारितायन] एक कोत (कप्प)। हारी की [हारी] देवो हारि = हारि (उप द्व ५२३ दुन ६४४ पिम)।

हारीय पुं[हारीस] १ मुनि-विमेष । २ म योजनिवदेव (एन)। वस पू विक्यो सम्बनिक्षेप (पिय) ।

हारोस दु [हाराप] १ मनार्थ देश-विधेष । २ वि. उस केश का निवासी (परुष्ण १---पन १६)।

इस्छ दुंदि हास्रो सना धातनम् न पापा-सप्तरतीकाकती (देव ३६) २ ३६, या ६। बका ६४) ।

हाज्य की [हाज्य] महिए, राक (पाम्फ ड्रूप ४ ७ रमा)। हास्मार्क हुँ [वे] माशाकार, माधी (वे व

wx)ι हासाहरू पूंची [हासाहरू] १ वन्यु विशेष, ब्रह्मसर्वे वास्कृती (दे ६ १ ) पान्य) पा ६२)। सी स्मा(देव ७६)। २ त्रीतिस्य बानु विशेष (पएछ १-पत्र ४३)। ३ तून, स्वावर विव-विशेष (दस ६, १ ७-प्रमा २ ४)। ४ ई सक्स का एक पुनार (पदम १६ ११)।

हाजाह्य वो [हायाह्या] एक पानीविक-मतानुवाधिनी कुन्हर्धरन (सम ११--पन 422) I हासिल देवो इक्तिल न्हाबिक (हे १ ९७)

प्राप्त)।

हाळिला न [हाळीय] एक पैन मुनि-नुस (कप्प) ।

हाकिइ पू [हारित्र] १ हस्ये के तुस्य रंग पीका वर्ष्ट (भ्रष्टु १ १ ठा ५ १—पन २६१)। २ वि पीला विख्वार्थयपीना हो बहु (पएए) १—पत्र २४३ सूच २.१ १४ भयः धीप) । ३ पूनः एक देन-विमान (देवेन्द्र १६२) ।

हास्टिया की [हास्टिम्झ] देखो दक्षिया (सब) । हाळुम वि [दे] धीव मस (दे ८ ६६)। हाव सक [हापय ] १ हानि करना । २ त्याय करना । ३ परिषय करना । ४ सोप करना 'वेश्वितसामामारि हानेह' (वद १) हाक्य् (क्ल १ २३ सद्वि २१ दी)। हाद-

इच्या (क्स ८, ४१) । बहु. हावित (विसे 9684) I हाय पूं [हाय] मुख का विकार-विदेव (पराह

२ ४---पव १३२३ मवि)। हाव वि दि विवास हुत्यामी वेन से बौदने वाला (वे ० ७३)।

ह्यय देवो भाष = भाव (सर्वावेस) (प्रकृ २४)। क्षायण वि [द्वापन] हानि करनेवासा (दे २

twa) i हायिर वि [दे] १ वैपाम हुडनामी। २

री चैत्रमा। १ मन्पर।४ विस्तु (देद, wx)ι

हास देवो इस - हव्। वह 'न हासमान्धे वि विरं वहरमा (रत ७ १४)।

द्वास बङ [ द्वासप्] (काना । समेद्र (ह ३ १४१)। कर्म हासीमाः, हासिण्याः (हः ६ १४२)। वक्त हासेंत (धीप)। वक्क शासिज्ञेव (नुपा २७) । द्वास र् [द्वास] १ इतस्य हॅंडी (योग यथ्य

विशेष निधक उदम से हैंसी मार्थ वह कर्म (कम्ब १ २१: ४७) । ३ वर्तमार-शास्त्रेख स्य-विधेव (प्रजु १३१)। कर रि विस्ती शास्त्र-मरक (नुचा १४१)। स्त्रीर कि

["बारिम्] वही (बढर) ।

311

E¥4	पारमस <b>रमर्थ्य</b> ो	शस—दिं
हास र्ष [हास] बय, हानि (वर्षेष्ट ११९४)। हास केवो हास-व्य (वीप)। हासंव्य केवो हास-व्य (वुग ४००)।	स्व तयु (वतर १२ % क्या) । ४ विदेश ।    र प्रदेश । ६ योगय । ७ छोत्र । व स्मृत्य ।    र प्रदेश । ६ योगय । ७ छोत्र । व स्मृत्य ।    र प्रदेश । ६ योगय । ७ छोत्र । व स्मृत्य ।    र प्रदेश । ६ रेशक विद्य है २ १६० )।    रिश्व कि हिन्द है स्मृत्य छोत्र हुया (खाना १ १६ यत्र २११ पत्र १ ४ त्या ।    र प्रदेश । १ विद्यु स्माण्य । १ त्या ६५,    र प्रदेश । १ विद्यु स्माण्य विद्यु स्माण्य ।    र प्रदेश । १ विद्यु स्माण्य विद्यु स्माण्य ।    र प्रदेश । १ विद्यु स्माण्य विद्यु स्माण्य ।    र प्रदेश । १ विद्यु स्माण्य । १ व्या १६५,    र प्रदेश । १ विद्यु स्माण्य । १ व्या १६५,    र प्रदेश स्माण्य । १ विद्यु स्माण्य । १ व्या १६५,    र प्रदेश स्माण्य । १ विद्यु स्माण्य । १ व्या १६५,    र प्रदेश स्माण्य (विद्यु स्माण्य । १ व्या १६५) । १ व्या १६५ । १ व्या १६६ । १ व्या	हिमा के को कि व्यक्ति प्रकृषि महि वर्ण प्रस्ता कि कि व्यक्ति कि विवाद कि व्यक्ति कि विवाद कि व्यक्ति कि विवाद कि व्यक्ति कि विवाद कि विवाद कि व्यक्ति कि विवाद
		-

यम्थ (उप पू र महा)। संक्र द्वितियः । (महा)। देक. हिंकिउं (महा)। दिंदग वि [दिण्डक] १ प्रमण करनेवासा (पंचा १८ a)। २ पसनेवासा (झर्गा १२६) । हिंडण न [हिण्डल] १ परिप्रमण पर्यटन (पडम १७ १० स ४१)। २ समन मि (चर १७)। ३ वि भ्रमण-सीम (दे २ ₹ **६)** i दिंदि की [दिण्डि] परिश्रमका पर्मटन वासुरेवादको द्विती राय-वीसुरमागाण वि । वास्त्रोवि वह हुंता न हुंते यह कम्मये (क्यं १६)। विंडि इं [दिव्हिम्] रावस का एक सुमट (क्टम १६, ३३)। दिंखिय वि [दिण्डित] १ वता हुमाः चमितः पद (महा ६४)। आहाँ पर जाना समा हो पत दिविये मसे थे पामें (महा ६१) । ३ । ने वरि समन, निहार (छामा १ ६ — वय १६४: घोष २५४) । विष्युक् दे दि दिप्युक् याला नीव कमान्दर मान्नोबासा धारमा हिन्दू (मन र २<del>--- (१७७१)।</del> र्विचोळ न [दे] १ चेत में प्रयुक्तों को रोकने की मानान । २ क्षेत्र की एका का मन्त्र (व 48)1 दिवाछ देवो हिंदोछ (स १२१)। दिंबोक्य व [के] १ एलावची एलमाना। र क्षेत्र की एका की धावान कोट में प्रय मानि को रीको का राज्य (देव ३६)। र्षिकोस्क्य भेको विश्वोस (र = ११)। बिंवास पू [बिस्वाक] कुब-विशेष (स्प १ ६१ टीउ कुम्म )। विंत् एक [ प्रब्रू ] स्वीकार करता, बहुछ करना । दिख्य (प्रस्तु ७ ३ वाल्या ११७) । कर्म, विशिक्त (बाव्या १२७) । संस बिंदिकण (प्राष्ट्र कः) बाला (१४०)। र्विशेक एक [हिन्शोक्तम ] सूनता। वहः विदोक्सत (क्यू)। विंदोड पं विक्यों । विशेषा पृथमा रोबा (स्पृ) ।

हिंदोछम न [हिम्दोछन] मूनमा होलन] हिंथिअन [दे] एक पैर से चवने की बाल क्रीडा(देव ६८)। दिसं धकं [हिस्] १ वतं करता। २ पीझ करना । विसद, विसदै (धाषा पत १२१) । मुक्त. हिस्सि (भाषा पत्र १२१) । भूषि विधिस्तर विभिन्ति दिखेडी (पि ११६) धापा पर १२१)। वह द्विसमाण (धापा)। **इ दिस, दिसियव्य (उर १२%) पर्वा १** र—पत्रधः २ र—पत्र र उच्च)। हिंस वि [हिंस] १ हिंसाकरनेवाला दिसक (क्ता क ४, पर्या १ १—यत्र ४, विशे रंभदेश पंचा १ २६ क्या दश्या संप्र ) । प्पदाण प्ययाण न ["प्रदान] द्विता के शाबन-मृत बद्द मारि का राल (ग्रीप चया)। हिंस देशो हिंसा (पदा १ १--पत्र १)। प्येषि वि विधिन् किया को केवनेनासा (ठा ४, १--पत्र ३)। विसंभ ) वि [विसंक] विशा करनेवाका हिंसरा 🕽 (मर्ग्योग "४५२) क्या १६ । २१६ उदः कुत्र २६)। हिंसण न हिंसनी हिंसर 'प्रहिप्स सन विवास कमी (धत्त ४२)। क्रिंसा की [क्रिंसा] र वथ कात (उका महा प्राप्त १४३)। २ वर्ग कल्पन धावि छे बीव को की बाठी पीका, देखती (ठा ४ १---पश् १८५)। हिसा की हिपा विकास का राज्य, अस्पर्धि हुमहिंसे च क्यूरमी केवि कुम्बेता (सुपा (83) I हिंसिय वि [हिंसित] द्विमन्त्राप्त (राज)। हिंसिय न हिपिती धष-तव (परम ६ रूप उद्याप १ र दी)। हिंसी की हिंसी वता-विशेष (पडक)। हिंदू पूर्वि दिला, दिल्हरतल का निसासी (पिप) । ब्रिक्स को चि रजकी थोनिन (६ ८ ६६)। क्रिका की [हिका] रोव-विधेर, दिवसी (सुपा ¥44) 1

विकास व [मे] पद्म कावा (के स ६१)। हिव्बिश्र न [दे] हेपा-रन प्रय-शम्ब (हे द \$**€**) ( हिस्स वेको इर = हु । बिका देशो हा। हिस्सा । य दि इसस् ] परुकत (वहः दिख्यों देद ६० पोम, प्रमी १३ पि tty) : हिंखों म [दे] बामामी कम (दे व ६०)। बिट्ट वि [दे] पाष्ट्रम (दे म ६७)। हिंद्ध केनी हेट्र (सूर ४ २२४, महान्सुपत हिंह को हट्ट = हुए (कर सम्मत ७३)। बिट्रादिस नि [दे] धाकुस (१ व ६७)। दिहिम देवो हेहिम (सिरि ७ ८ पुष्प १ १ कि) ı हिट्टिक देवो हेट्टिक (सम वक) । विर्विष पुं [विविस्त] १ एक विद्यानर रामा (पडम १ २)।२ एक रुमस (केशी १४७) । वे बेस-विशेष (पचम १८ ६१) । दिविंग की [दिविन्ना] एक राखवी विकिन्त एकस की बहिन (हे ४ २११)। हिंडोक्टनय देशा हिंडाक्टम (रे व ४६)। बिक्क वि [वे] बामन चर्च (वे व ६७) : हिविद में [भवित] उठ कवितः कणपा-हुणिया केमरकामा ए मुहम कि दि दे ह (विशिक्तिया (मा १९३)। विष्ण सह [ मह् ] प्रह्म करना । वृह्मपुद (बारबा १५७) । दिण्य (६प) देशो हीप्प (१पन) । विष्ण रेबो सिष्ण (स १९१)। हितम ) (पै) देशो हिसस = ह्या (प्राप्ता विवय । यदं बाम १६, वि २१४ है ४ हेरैं कुमार शक्त (२४)। दिल्थ वि [दे] स्वक्रिय (देट ६७ वस् ६) । र मस्त मय-पीत (देव । का हे २ १२६ प्राप्ता का केवदा ७१३ पुर १६ **१.१। कुमा) । ३ हिम्छित मार्च हम्छ 'हिल्लो** व छ दिल्यों में सदों मरिएवें व न घरिएयें मोर्च (बच १)। दिरमा की [दे] बजा, शरम (दे ब. ६७)।

(विदे २२)।

बर विच इमा (पर्)।

द्विष् य द्विष्टि द्वस्य में दिशि निस्टराज्या

द्वित कि कि सारा किएका हुया किएक

क्रिस न क्रिस र तुपार, मानस्त से विषय

<del>बद-६७</del> (यात्र प्राचाः छे २ ११) । २

करन श्रीष्ट्र (से २, ११)। **१ शी**त

ठंडी बाजा (बह १) । ४ वर्ष, जमा हमा

क्या(कप्य की १)। १ ई अफ्रजी नरक-

विक्री का पहला क्लेन्डक-नरक-स्वान

(देनेन्द्र १२) । ६ ऋत्-विरोप मार्पकोर्य सम

रीवकामधीवा(सर ७२० धी)। इदर्⊈

िकरी बन्द्रमा, बीव (सूपा ११) । "मिरि र्ष गिरि दिनाकत पर्नंत (क्रमाः क्रीकः कका)। भाग 🐧 ["मामन्] चर्चा (कम्म **९ दे**) । तस पुष्मियो विद्यो (अस ६ ३४०)। घर वैद्यो कर (पाम)। व वंत प्रे विस् हे वर्षकर पर्वत-विशेष्ट क्रियको स सहाहिमको (पक्रम १२,१६८) जबाउ कम्भ इक) । र हिमाक्स पर्वत (पि ६६६) । १ राजा धन्यवस्थान्ति का एक पुत्र (यंत्र १)। ४ एक प्राचीन जैन गृथि, को स्कव्याचार्य के रिप्प में, "दिगर्गतकपासमधे वेदे (शृदि ६२) । बाय व विपादी तुवार-वतन (बाना) । सीनछ वं क्रितको इन्छ पुरस्य-विशेष (गुज २ ) । सेळ पु िरीजी दिमाध्यम पर्वेठ (इस २११ टी) । साम पू िमामी प्रश्निकरोप देशन्त प्रानु (शा ६६)। लगी और [स्त्री] दिन-प्रमुद (इप २६७) । । यस र् [ "वस्र] द्विपायम क्षेत्र (नुस १९२) । एका पु [फेल्स] मही धर्मे (पडम १ १६) बरह । हिट वेबी फिट = फिब (हि १ १ वर्ग कुमा) । हिरसी भी दिं] भीन क्यों की नास (दे 14)ı हिरण्य) व हिरण्यी १ रक्त, वांदी हिरम ) (बना केन्न) । २ दुन्हों, बीना

(सापाः कल्प)। ३ इस्स, धन (नुसः १ ३

२ =)। बरायू [फि]यूक देख (दे

४ २३)। गम्ब 🛊 [गर्म] १ आहा।

२ प्रवस निम भगरत् (प्रवस १ ६, १२)।

'क्यद्रियसः वस्त प विष्ण्**राह्यी स्टब्स्स** ग्रहिया । हैसे हिरस्ख्यमधी वयस्य जनपन्न इसनो । (पठम ६ ६६)। हिरि प्रकृ हिं। सम्बद्ध होना । हिरिकानि (समि १११)। द्विरि देखो दिशी (शासा १ १६-- तत्र २१७ वद)। स दि विस्तृ विकास ठाएँक्वा (बल ११ १३) ६२, १ ६ (रिंड १२६)। बेर प विरो छछ-विधेव सक्तवनाया (पाधा उचित ३)। ब्रिरि व [ब्रिरि] पासूक भागू का राज्य (परम हिरिज वि [होत] बण्यित (हे २, १ ४)। दिरिक्षा 🖷 [द्वीका] बण्याः शरप (३९ ७ ६३ दुवा) । दिस्थित [दे] पल्पम, सुप्र दलान (रेट 18)1 हिरिमंत्र र् [के] चल, यल-किशेन (वे व ) । केवो हरिसंग । बिरिजीकी वि]कम्बनितेद (उत्त ३६ दिरिक्म पूर्व वि] बहुड, नट्टी (वे स, ६३)। बिरी की द्विष्टी १ तत्त्वा, शरम (बाला: हे २ १ ४)। २ महायम-क्रुव की श्रविद्यानी वेगी (इन २ १---पण ७२) । ३ क्टर क्षक-पर्वेत वर रानेवाची एक विस्कृतारी केशी (मा ६--पत्र ४९७) । ४ छरपूछ्य नामक किपुक्रोना की एक यह महिनी (ठा ४ १---पण १ ४) । १ स्वत्तिवसम् पर्वतः कारक दूर (इक) : ६ वैत्राहियानीकरीय (द्यामा ११६ — पण ४३)। विरोध वेलो दिस्थि (दे २ १ ४)। हिरे देवी हरे (प्राप्त) । दिस्स स्में [के] प्रशा दाना चवामी पन्धेता चलकापानरकः वाहिंदहिनाये । (प्रमी चं न्यक्तिहर) बाह् विदिलायो हि सम्बाह्म । (इच्छे चं जनमका वंतिकार राजप्रकृत)।

हिस्स ) की [दे] बालुका, बालु, रेवी (दे व हिस्स ) ६६)। हिहिन पुंची [व] फीटनिकेप चैनिक पानु की एक वादि (पदल १—पद ४६)। डिकिरी की विंग मध्यती पम्मले का शास-विदेश (विदार य-नव वर्ष)। ब्रिस्स्री की [वे] बहुए तरन (वे = ६०)। क्रिक्षेडण न विधिष्ठ में प्रतुमों को रोकने की बावाब (देद ६६)। हित केको हम = मु । हिनद (ह ४ २१८) । दिसोदिसा की हिंदियां (वे ब, ६६)। ही प[ही] इन सर्वों का हुक्त प्रकार-र विकास, धानार्थ (द्विति ५७३) । २ दाच (उप ११७ दी) । १ विपाद, केंद्र । ४ शोक रिसरीचे (या १६ क्य ४३६) क्या रेका मन ६७)। ४, फिल्मी (चिरि २६)। ६ कर्माका प्रतिरेकः ७ प्रशासन्त-मात्र का यदिक्य (प्रयु १३१) । ही भेको हिरी (विशेष ६ ६)। सनि [मित्] बण्याधीत तथ्यापु (सूच १ २,२ १०)। हीं य [ ही" ] मंत्रावर-विशेष यात्राचीय (Reft (Rt.)) बीय वि द्वीनी र सूत्र कर्म स्पूर्ण (स्वा) कामा १ १४--- १६)। २ चीक विका 'हर्य नाम किराहरेश' (हे १ १ ४)। ९ पदम, इसका। ४ किया किक्सीय (मातू १२१) व्य ७२ = टी)। ५ प्र मर्वि<del>षावि-निरोध</del> (हेर १९)। आहरू वि [काविक] समम बारि कर, बीच भागिका (इसं ७२ टी)। वाह ई [पादिन्] वर्षादर्भक्तेय (तुपा २०२)। हीन्य वि [ह्याय] भीत (दिना १ २ धी---वव २०)। **इ**म्मान्य**दे** १ (श्री) यः १ विश्वय सावर्षे । हीमादिक र निर्मेद (हे ४ २०२, क्रुया) प्रक्राहर मुच्छार शंर ६)। क्षीयमाण देखो हा । शीयमाध्या १५ [ शीयमानक ] वर्गावद्यान £हीयमालय र्वका एक तेर क्रमधः क्य होता नाता यशिक्षान (छ ६००-पत्र १७ यदि )।

हीर देवी हर = हर (हे १ ११ द्वमा पर्)। हीर दूं हिर्] १ वियम चंग, घसमान घेर (पर्ख १--पन ६७)। २ वारीक दुरिस्त तूरा कर भादि में होती वारिक रेवा (जाव | ३ ४० वी १२)। ३ पून द्वारा मिस विदेव (स २ २ सिरि ११ व्य कन्तु)। ४ इक्क-किट्रेप (पिय) । १ दाता का यग्न भाष (से ४ १४)। श्रीर पूर्व दि] १ सूर्व की करण की रूप मुह बाबा काष्ट्र धादि पदार्थ (दे ८ ७ करा) । २ मस्य (दे कः ७ ) । ३ मान्त मन्त नाम (परह)। शीरंस रेको हर = हं। हीरणा की [वं] बाब, शरम (वे व ६४ वड्)। हीरमाण देखो हर = हु। श्रीस सक [इस्तप**्**] १ घरटा करना, विस्तारकाताः २ मिनाकाताः १ कम्पूर्णन करना पीवृत्ताः। हीताः (स्त्रः मुख

२ ११), होसीत (बस १, १२ प्रामू २१)। यह दीखंड (सहिट्र)। सम्ह हीक्टिजंत हीक्टिजमान (उप प्र १३३ ए।या १ ब--पत्र १४४ प्रामु १६६)। इीर्सियज्ञ (ग्रामा १ ६) दीसियम्ब (पण्डार १—पत्र १ ११ )। क्षीतम्म क्षीन [क्ष्यन] १ मक्द्रा तिसम्बर । २ निन्धा(मुपा१ ४)। की पा(प**छ** २

धीय; स्वास्त १ १ ७ १--पत्र १ सहिर )। हीसा की [दिया] क्यर देवा (कर व्य द २१६ इप १४२ दी)।

क्षीक्रिय कि [क्षीक्रिय ] १ निर्मितः । २

मप्रमानित, विरस्तुत (मुख २, १७ मोच १२व कर: इस ६, १३)। ३ पीड़िय क्यांपव (प्राचा २, १६ ६)। हीसमण व [दं हापत] हेपाल अप—

बोड़े का राज्य (वे ब, ६८) है ४ २५६)। दीकी ) (सी) स विद्युपत का हुर्य-मूचक £ोमीभो } सब्दन (हे ४ २००८ कुमा, आई ६ ३ मोइ ४१) ।

हु य [सहु] रत प्रयों का चोतक प्रस्पय— ¦ र निवय (हे २, १६८ छे १ १४) कुमा, प्राप्त घटा प्राप्त १४)। २ वस्तु विवर्ष (इ.८. १६० कुमान् प्राष्ट्र ७४)। स्वीक् (हे २ ११ स दूर्मा) । ४ संगापना ' (हे २, १६०: कुमा: प्राष्ट्र ७८) । १ विस्मय ब्रायर्च (हे २ ११६- कुमा) । ६ किम्पू परन् (प्रामु ११)। ७ यपि मीर्ज व व्यविसहस्यम्मि व छि (वर्षसे १४ टी)। ८ वास्यकी सोमा (वेवाच ३६)। ट वास्पूर्णि पार-पूरण (परम क १८६) कुमा) । हु } देवो इत्य≖मू। हमाइ, हुन्द्र ईति हुछ । हुइदे, हुददरे, हुएव व्यव, हुदहदे,

हुएक्बहरे (वि ४७६ हे ४ ६१ वि ४६८) ४६६)। यदि हुनवामि होनवामि हुनवं (बत्त २ १२ मुख २,१२)। यक हुँस ( \* 48: 44x) 1 हुम रेको दुण-हु। हुमइ (प्राष्ट्र १९)। वक्क क्रूप्रांत (बारवा १६ )। हुअ वि [हुत] १ द्वीमा हुवा इथन दिया हुमा (मुपा २६३ स ११७ प्राष्ट्र ६८) । २ स होन हरन (सूध १ ७ १२ प्राइ ६१)। यह वृं ["यह] क्रीन मान (ना २११। पाप; सामा १ १—पत्र ६३ गढड)। सि 💃 [सि] घरिन (पढड धन्त्र १४ ३ परि वि १६)। पैसन प्र [शरान] बहे वर्ष (पक हे ४,४० पाम) । हुआ देखो हूम- मृत (प्राप्ता हुमात स्थि क्छ) । हुर्जम देवो सुक्रम, व्यक्तसद्वित हुर्धयद्वीयम

क्ति सुदुर्माचं (मा १२६)। हुआग देखी सुलग (य व दे, पि १वव)। हुं स [ हुम् ] इन सर्वे का मूचक सन्तर-१ समें र प्रका प्रल (हे २, १६०) प्राप्त हुमा) । ३ निशास्त्र (हे २ १६०-रुमा)। ४ तिर्वारिए (प्राप्त रेमा)। १ स्रीकार (या १२ इम ३४६) । ६ हुद्वाद ा राम्य 'हं करति प्रथम' (तुस ४१२) ।

७ प्रनादर (मिरि १६३) । हुंब्स्य पुं [वि] संप्रति, प्रस्तान (वे ८ ७१)। ।

हुंबार वृं [हुक्कार] १ बहुनति-प्रकाशक शस्त्र, २४ या ११६ हो (विशेष्टर स बाल्यानुर)।२ 'हुं द्यावाज 'हुं ऐका शक्त (इ.स. १३३ कर्ती सेंद ६ ४३४)। हुं सरिय न [हुद्वारित] 'हुं ऐसे की हर्दे मानाम (म ३३३)। इफुरच वृ [दे] धंत्रनि, प्रसान (वे व. ७१)। हुंड न हुण्ड] १ शरीर की माइति-किरोप शरीर का बंदब संबयन (ठा ६—पत्र ११७) मुग४४३ १४१)। २ कर्न-किरोप विसके <sub>घरम</sub> से ग्राधेर का भाषमण वर्षे हुए वेड्न--प्रमागु-गून्य प्रम्पवस्थित हो वह कर्म (कम्म १४)। १वि वेड्ड ग्रेमकाश (विपा १---पत्र १)। यसप्पिणा धौ ["स्मिपिया] वर्तमान्यमेव समय (विवार ર ₹)ા हुं की की [दें] चटा (पाप)। हुंबरह दूं [के] बानप्रस्य द्यारत की एक नारि (सीप भय ११ ६--पद ११६, REE) :

सान, बुता (मुख्य २१३) । हुदुस्य दूं दिं] प्रसाह (रे ब, ७ )। हुबुक दुंधी [दे हुबुक्क] बाध-विशेष (धीना क्रम् संस्कृतिक मध्ये। बी. बार (एक मुपा १ : १७१, २४२)। हुबुन पुंचि पदाका व्यवा (वे य, ७ प्रम)।

हुंदूच यह [हुहु + क्व] हूं हूं धारात्र

करता। तक दुरूर्यत (चेदम ४६)।

हुटू देवो होह (धानाः पि दश ११न) ।

हुड पूंदि ] १ मेच मेझा (के ब, ७)। र

"हचदेको पहुच=प्र+भू।

हुदू पूरी [वृ] हाड़ बानी पछ छई, बीव। क्री हां(रें क्ष अंग्रेस २३६) पर ३०)- 'प्रावृत्तं नुपंतेष्ट्रं' (बन्नच १४३)। देखो हाडू । हुम सक 🛐 इसि करता। हुए ६ (इ.४

२८१ मप ११ ६-पत्र ४१६ दुया)। क्मी हुम्बर हुन्तिग्यद हुन्तिग्यए (हे ४ २४२ डूमा)। क्वड हुमिञ्चनाम (मुग्र ६७)। बंब हुजिजन हुजेकम हुनिया (पहः भग ११ १ --- स्व ११६)।

<b>।इञस</b> दमहण्यवी			
घुरदंत = पुर = मार्			

हर्म्यत रेको

गब्	(Ġ	ŧ	

के करा की शब्द किए हुए कुल से निगरत (4 c vt)1 इ.उ.व दिनी रेकारश निमित्त केंद्रे (एन

हषण-हम

२६ ज्वा परह २ २---पन ११४ क्या यक्षत्र भी ११: नहाः वि ११०)। २ यक्ष्यक-बान्य, वंबारमंब बाम्म (उत्त १, ८; मुख १,

 व) । ६ धनुमान का सामन (वर्षेष्ठं भः झ ४ ४ टी--पद २०६) । ४ प्रमाख (मजु)। याय हे विश्व है ? बार्युश बैन सेन बन

इष्टिकार (ठा १०--पन ४६१)। र एक्वार,

वक्तिवाद (सम्म १४ ३१४२)। हेच्या वि हिंतुकी १ हेनुबादको माननेवासा, सर्ववादीः 'जो हेज्यायपस्त्रात्महेजमी मानने य ध्याप्रीमधी (ध्रम्म १४२ जनर १६१) । उर्ड (विसं १२२)।

२ हेलुका, हेलुं में सबन्य रखनेवासा । श्री }ेक्बोदा≃हा।

हेवार्ण 🦠 हेळ रेशो हर 🛮 हु ।

हेक की जिल्हा निर्मेश, इन्सरी में देठें 'नल्योह्योद्धान्म' (नुद १२ ६, वि१७) द्वेर १४१/कृमा मध्य) 'द्वेष्टमी' (मद्वा)। च्चे द्वा (मौपा महा: पि र का ttv) । ोसुद्ध वि सिसा प्रवास्त्रका कियो प्रदे नीचा किया हो वह (निपा १ ६---प्रम ६०) (जिंह ६९६)। लका बढ़ा सीप) ।

दे१ ६६ धनि)। [पणि वि ["अवनी] मद्रापष्ट केत का विनासी अध्यक्त-नष्ट्रम हेदिया । वि शिवस्तानी नीचे का (दन होद्देश है रश्रें परामग्रह र, रत्शास्त्र हेका को दि] १ करा प्रमुह (युगा ३०६) रर )। र बहु सादि केवरे का स्वाद-मकामा (बम्म १२ दी) । इंक्सि } (भाषे) केशे परिस (नि १९१)। हेपिश वि हिं] इन्तर, बॅवां (वह )।

पना(फन १ रे१)। चंद्र दू["चन्द्र]

१२ निज्ञा की वाध्या स्थानी के हैं।

इसे म [इसे] र सुबर्श शोला (प्रकार में ४० थीप श्रीक्ष १७)। २ वद्यसः। ३ मन्ते वर्षे परिमाच्छा ४ दुं नाना बोह्या ५ नि पॅनिय (पॅपिट ७)। ६ 🛊, एक निवासर

इह्अंग र्व (इह्डाइ) चंका-निरुप 'भवव' नो भी राजी साम से प्रतने पर बो र्शक्या कल्म हो बद्द (ब्रा २,४—पन ६ इ.स. इ. इ.स. प्रवी का जुलक सम्बद्ध -- १ संबोधन । २ धाक्कन । ३ प्रमुख स्था (ह २ २१७ दि, पि ७१। ४ ६। मनि)। के<mark>ओ</mark>गकीय न **क्रियक्त**कीन} १ क्व**फे**ट मनका २ समा मी (नार--ध्यक्तिम

हरू अ पून हिन्दु को संस्था-विशेष 'हरूपेन' को की सभी का बार्च हुन्में पर की संक्या सम्म हो बह (ठा२ ४—पन दरः सञ्

जसका निवासी मनुष्य (पब्रह १ १---वव हुण केलो इतिप⇔ होन (दे ११ पत्र)। हुसण वेदो मूसण (बा ६१६) पि १००)।

हम व कि विकार कि भरे)। हुतु पू [हुतु ] क्वर्त देशों की वाद्य (वर्षीन

१४- इमा) ।

४वः नुपा ३**६**) ।

380)1

चसु २४७)।

इष्ट देवो दा≈ हा।

232) 1

क्रिम केवी संधान नेद (फा २)।

देशास 🛊 👣 इस्त-विरोध से निरोधः सार

(¥) हुस्स देवो हुस्स≠हुस्त (श्राचाः धीपः यम्मच १६)। हृद्वभार्षन [हहुक] देवो हहुआ (प्रस् ११ 1 (305 इत्थान पून दिवसानी देवी हुनुस्रीन (पसु ६६: १७६)। हरू व [हरू ] जुन्या-राज्य-विधेप 'हद्वर्य देशा राज्य (द्वे ४ ४२३ जुमा) । हुअ देशो भूम = मृत (द्वे ४ ५४) दुना॰ मा रेश रेश यहा याने रे रे)। हुम वि[मृत] यक्ष्य, शक्यिक (हेर हुआ देवो हुआ व्हुक्त न्यली पंचसये पुरा भक्तमा सिस् हुयो सर्व को हुनेश समानुयोगि तप्तपुर्शेषि खिताममें (रेख २४)। हमार्थे हिम्मी १ एक बनामी केटा २ मि

हुन्त वि कि समिनुक समुखं (वेद ७) हुत्त केवो हुआ = तृत (या १४४ वह६)। हमभा वेदो सुसभा (च ६ ४८ पि १६०)। हुर देवो कुर = स्कुर् । यह 'बंदीप हरतीए' मानि (कुछ ४२ )। हुरद पुढ़ी थि पूछ मारि वे पुत्र हुन पकामा हुया चना वादि बाग्य होसा-होरहा (युवा १८६, ४७३) । हरस्थाय दि नहर (भागा १ शक्त रहे के राज्या हरूबी की [दे] विपादिका चैन निरोद (दे

हुस्र दक्ष [श्चिष्] फॅननाः हुनः (हे ४

हुस तक [ सूज् ] मार्थन-करना, बाद करना।

हुक्षण वि [मार्जन] एक क्रेक्सका (कुम

ह्रास्टिम वि वि देशीय नेवनुष्ठ का

पमग्रह्मीमर्थ (देव ११)। २ नः सीछः,

मन्द्री दुर्रत (क्स्कु १ १--क्स १४ व

[पुनुकि की [वे] क्या राज (सार--मुख्य

इष्ट्रेची की हि सम्बन्ध मिन्द्र-प्रतिप्त

हुव केशो हव = मृत्त तुनांत (हे ४ ६ ३

माम) । मुक्त हुवीस (दुना १ व) ।

यांच इतिस्यात (पि १२१) । वह इति

हुममाण हुमेमाण (पर्)। संह, हुनिक्र

र्मे प्रतान करनेनाली की (देव कर)।

हुन रेजी हुन = हू । हुन्ह (मारू ६६) ।

हुव (प्रव) देखी हुआ = पूर (वरि) ।

हुव (धन) देशा हुआ = हुट (धर्म)।

[8 देवो 338 = प्राप (पवि) ।

(बाट--बेस १७)।

हुब्ब देवो हुण = हु ।

ह्याय न हियन होम (सुपा ६१)। हणिक देवो हळ - इष (मून २१७ मोह 2 %) 1 हेर (४०) वतक भवि)। प्रच देवो इत्र - इत ( हे २ ६६)।

=, **\***{) |

१४३ वह )।

1 (4)

२ २)।

कृषद (हें ४ १ १, पर्)।

१६ ३ वर ७२४ हो) ।

हुस्त्र न (क्षेपज) क्ला (क्या)।

EΫ

सुप्रसिद्ध वैन मानार्यं तमा प्रश्यकार (दे म us सूपा ६१ थ)। १ विक्रम की पतरक्षी राताम्बी का एक पैन मुनि (सिरि १३४१)। साछ न िजार | मुक्लंकी मामा (भीप)। "विजय 🛊 ["विजरु] शिक्स की भीशहरी रातामी का एक बैताबार्य (सिरि १६८ )। पुर न पुरी एक विद्याबर-मगर (१४)। मय वि ["सभ] सोने का बना हमा (बुगा 4 महिस्र वृ [महिमर] मेव पर्यंत (पड़ड)। मास्त्रिजी ही "मास्त्रिजी एड रिक्ट्रमाधी देवी (एक) । स पू [ यम् ] फास्प्रम मास (मुझ १ ११)। स्थिमळ पू िवियस दिक् केन सावार्य (कुम्मा ३३)। ाभ पूं ["भाँ] चौमी नरक-पृथिको का एक नरक-स्थान (निर १ १)। हेर्सत पुंहिसन्त देशातुनीक्टेप मंगीवर स ध्रपहुन तथा पीस या पूस महिना (पाम-धाषाः कम्पः दुमा)। २ शीतकास (दस १ १२)। हेर्मत वि हिंसन्त देशना बनु में उत्तर्थ। (सुव्य १२--पत्र २१६)। हेर्मविभ वि [हे्मन्तिक] उसर देवो (कप्ट मीत या ६६: एव ६८) । इसमा वि [इसक] हिन का, दिन-संबन्धी (ठा ४ ४--पत्र २०७)। इसवड् १ कुन (इसवत) १ वर्ष-विदेश क्षेत्र-हेमवय<sup>्र</sup> विशेष (इक सम १२) व ४—पत्र ह्य १ १ श-पत्र ६७३ વશ્શ ૧ पटम १२ १६)। २ हिमर्बत पर्वत का एक क्रिकार । ३ कूट-विरोध्य (१४०) । ४ वि हिमबंठ पर्वत का (राय ७४' घीप) । १ पू हैमक्त धंत्र का व्यक्तिहाता देव (अ ४---पत्र । R ) i हेम्म रेखो ह्रम (संक्रि १७)। इरसक [रे] १ देखना निरोत्तण करमा। २ काजना धन्नेपस करना। वह इर्रेट (रिय) । श्रंडः श्रुरिक्रय (वर्गेष १४) । इर्रम पूर्वि दे दि श्रमीहरू भसा। २ फिरिश्म बाय-विशेष (दे = ७६)। इरण्यय पुन [इरज्यवत] १ वर्ष विधेय, एक पूर्णसक्कान (इक पत्रम १२१६)। २ व्यक्ति पर्वेत काएक तिकार । वे शिक्यपै पर्वत का एक शिक्षर (इक २१०)।

हेर्राण्यञ 🛊 [हेर्राण्यक] मुक्संकार (छा प्र २१)। हेरभयन देवो हेरण्यत्रमः (ठा २, ३---पत्र ₹5: 58) I इरिश्न पुंदिरिकी प्रम चर, बाबूस (मुवा ¥4¥ X¤4) I इ[र्रेस र्दु दि इरम्ब] विनायक गलेश (व ८ ७२ः पड्)। इस्यास सक हैं] बुद्ध करना पुरसा कानाना। हेक्यावंति (शाया १ ६—पत्र १४४)। इटा भी दिखा रे भी भी श्रष्टार-पंतरको बेटा-किरोप (पाध)। र धनावर (पाधः छे १ ११) । १ मनायास घटन प्रयास सङ्गारी, बरबंदा (से १ ११) क्यू प्रवि ११ पि TOX) I इत्संकी [दे हेला] देन सीम्सा (दे स, ७१ अभ्यूप्रविदेश पि ३७४)। इस्टिय दृष्टिकिक] एक ठएत् की मधनी (बीव १ धी-पण १६)। सुसुस व [वे] कुत सीच (दे ८ ७२)। ह्त्येष्टाकी [वे] दिका दिक्की (वे व છેર)ા इक्कि (बर) थ [इस्र] सबी का यामकण ≝ सींच (हे ४ ४२३ ३०६ वि १ ७)। इचं (परो) रेको हेचं (वि ३१६) । ह्याग र् ह्याक] स्वयान धारत (एक)। इसमण वि चि कार जैना (पर्)। इसा हो हिपा] धरत-राम्ब (मुपा २४०) मा २७)। इसिश न हिपित जनर देवी (दे व ६८) वदस १४ ३ । ग्रीप सङ्घा भवि)। इसिअ न [दे इपित] एक्टि, बीतकार (पद्र)। इंड्रभूअ वि [इ] पुस्त-दोप के द्यान से पहित धोर निर्देश्न, ग्रंड फिन्यु निवायस (ग्रंव १)। हृह्य प्रे [ईह्य] १ एक सना (सन)। २ डिंप पू डिम्प ] एक विदायर सम (पक्य १२)। हा देवो इत्य = पू । होट होयद होयए होपर होति होतरे होपारे (१४९) प्रकृतका सम्माति प्रदेश ४०६)। क्षेत्र होत्रा होएक होएका, होउ (ह व

११८१ १७७ सक ब्राप्ट कि ४६६)। मुका होरमा, हाहोस (कम्पः प्राप्त)। सर्वि शेविक, शीविति शेवामि शादिमि शेरसं होस्सामि होनस्टा, होनसं (हे ३ १६६ १६७ १६६३ प्राप्त पि १२१) हासह (सप) (हे ४ १०व)। कर्म होइबाइ होरुवए, होईपह (पड : पि ४७६) । वह. होंत हामाण (हे वे १८ ४ वश्र. ३७२ कुमा पि ४७६)। संइट होऊल, होऊषं हाथऊण, होइऊष हमिय, होत्ता (वस्त्रः वि दवशः दवशः दुमा) । हेड़ होडं, होचए (महा पि ४७६, कप्प)। इ. होयब्थ (क्या महाः उत्ता प्रामृ १६, 58) 1 हो प [इं] इत यवी का सूचक सम्मय—१ विस्मय, घावर्ष (पापः नाट--मृच्य ११२)। २ सबोबन, पामन्द्रण (संक्षि ४० उप १६७ थि)। होउ वि [होतृ] होम-क्टा (या ७२७)। हाँड देवो हुड (विचार ४ ७)। हाइ पूं [भाष्ठ] हॉउ, घोड (पाचा)। होड़ देवो हुड़ 'तो है बोर्यम होड़गी (गुपा २७७ २७=)। होन्द पूं[होड] मीच चोधिकी वस्तु (ग्रामा १ २—पत्र ८६ पिंड ३०)। होम देवी हुम = हुल (पद २७४ विचार ¥4) ı होत्तिय 🕻 [हात्रिक] १ बानप्रस्य वापसी का एक वर्ष, ग्रानिक्षेत्रिक वात्रशस्य ( ग्रीपा मन ११ ६—यत्र ११४)। २ स. तूल-क्रिकेप (पएक १---पत्र ११)। हाम पुं[होम] हवन यरिन में मन्त-पूर्वक बुत मादि का प्रक्षेप (समि १६६)। होम सक [होसय\_] होम करवा। हेव इ।सिबं(डी द)। होसिअ वि [हासित] इत्तर क्रिया तथा 'मस्टन विश्वकृतन्त्रहरिहोमियो' (स ७१४) । होरंमा ध्ये [होरम्भा] शक्कशिये महा-दस्का, बड़ा डोल (एव ४६) । हारण व [दे] बस्न क्यमः (दे ८,७२.सः

## ( } e#

£\$0	पा <b>इश्रसदमहण्यवो</b>	हुमण-देम
द्वापत व [ दवान] होण (5 वा ६ व) ।  हिणाओं केते हुम = हव ( प्रा दिश के वेहें  र श ।  हुण ते हिंदी धोन्मां के प्रेस ( दे के का वेहें  हे र देव कर महें)।  हुण ते हिंदी धोन्मां के प्रेस ( दे के का वेहें  हे र देव कर महें)।  हुण ते हैं जा हम = हव (वा १४६, -दर्द)।  हुण ते हैं हुण हो ( दे २ दर)।  हुण ते हुण = हुए ( वह केती ह हिली प्रे धार्मा के सुमा मुद्रा प्रा ( दे का प्रत - दुर केता पुर - हुए ।  हुण ते हिंदी हिंदी एक पानि वे कुम कुम न्या प्रमा प्रा का तो ते वाल होंगा—होप्सा ( प्रा  दे दे २ दे का का हिंदी हिंदी एक ते हिंदी होंगा।  हुण ते हिंदी विद्या विद्या हिंदी स्मा केता हिंदी हिंदी होंगा।  हुण ते हिंदी विद्या विद्या केता।  हुण ते हिंदी होंगा हिंदी होंगा है।  हुण ते हुण हुण ते हुण ( ति होंगा है)।  हुण ते हुण हुण ते हुण ( ति होंगा है)।	हुम्यंत केवो पुतर्व = हुर = वार् (वे र १४)।  हुस्स केवो हुस्स = हुस्स (याचा योग धानत ११)।  हुस्स केवो हुस्स = हुस्स (याचा योग धानत ११)।  हुस्स केवो हुस्स = हुस्स (याचा योग धानत ११)।  हुस्स केवो हुस्स = हुस्स (याचा रहे।।  हुस्स केवो हुस्स = हुस्स (याचा रहे।।  हुस्स केवो मूल = हुस्स व्यक्त केवो हुस्स याचा र १६। या याचे १ १)।  हुस्स केवो हुल = हुस्स व्यक्त वे प्रकार प्रकार हिल्ला केवो हुस्स व्यक्त स्ववाधी हुस्स क्या हुस्स केवो हुस्स क्या हुस्स केवो हुस्स क्या हुस्स केवो हुस्स क्या हुस्स केवो हुस्स व्यक्त स्ववाधी हुस्स क्या हुस्स हुस्स हुस्स हुस्स हुस्स हुस्स हुस्स केवो हुस्स व्यक्त १ हुस्स क्या हुस्स क्या व्यक्त स्ववाधी याचा हुस्स हुस हुस्स हुस हुस्स हुस हुस्स हुस हुस्स हुस हुस हुस हुस हुस हुस हुस हुस हुस हु	के प्रश्न की तायु किए हुए हुए से कि कियार (दे ट परे)।  हे द [हार] र काप्य शिकार हिम्में (प्रम्म कर पर क्षा का प्रमु हुए से हुए प्रमु हुए से हुए से हुए से काप्य कर
हुप देवी हुन = हु । हुपह (शाह ६६) ।	हेर्स हो रिजन्म क्षेत्र स्थापन सम्बद्ध स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्था	इतिस } (क्को को एरिस (ति १२१)। इतिस है [र] क्ला ईवां (दर्)। इति हिम्]। दुवर्त कोमा (वका वे ४) कीम ति को। १ वच्छा। धारे प्र वीम ति को। १ ई रामा चोमा। ५ वि वीस (कीम के)। १ ई व्य विकास छवा (वका १ ११)। वेश ई [र्माम]

### इस कोप के विषय में कतिषय सुप्रसिद्ध विद्वान और पत्रकारों के

## कुछ अभिप्राय

# A few Opinions of some Savants & Journalists regarding the PRAKRIT DICTIONARY.

Prof Earnest Leumann (in the journal of Royal Asiatique Society London, July 1924

"During recent years several scholars in India have tried to bring out a Prakrit Dio tonary However no one seems to have succeeded in publishing more than a small specimen only recently, towards the end of 1993, there has appeared a new start, which is no longer a simple specimen, but an elaborate first part comprising no leas than 360 large size pages. In this volume all words beginning with vowals are included. And, if the following parts, which its to embrace the words beginning with consonants, carries on the Dictionary in the same lines, it will be finished in about seven such parts and will contain nearly 2000 pages. On its completion Indian philology will certainly be congratulated from all sides, and Prakrit literature, which is so immensely nich may than be studied as it ought to be in intimate connexion with Sanskrit lore, which has long possessed Lexicographic sids of all kinds.

The title of the forthooming dictionary is Phia-cadda-mahannavo, "the great ocean of Prikrit words. Its compiler is Pandit Hargovind Das T Sheth Lecturer in Prakrit in the Calcutta University

The meaning of the words are given both in Hindi and in Sansknit, and each entry is turnised with references to test passages. Sometimes also the test passages are fully quoted (forming generally a verse called Gäthä or Āryā).

Comprehensiveness and securacy are the qualities most desired in a dictionary As to the first quality I may mention that the texts worked up in the dictionary seem to number about 200 or more. Even in the first ten pages a full hundred Titles are quoted. (Acca, Aji, Api=Annyegadvāra-aŭra, Anta=Anakradasā, Abbi, Aci=Acatanga, And=Acatacellikā, Ava=Avadyaka, and others). And, as to the second quality it may be stated that in the reference mistakes are scarcely detectable. Also arrors in the quoted editions are corrected, as early as the second entry of the first page we are for Pkt. a=Skt. ca, rightly referred to Palima-cariya 113, 14 where the edition has by mistake Avirablo instead of a Virablo,

Consequently I may be allowed to recommend Pandit Sheth's Prikrit Dictionary to all Sanskrit scholars as well as to Sanskrit libraries—and, what will probably do more to secure the final success of the undertaking, to the Government authorities."

होता की [होता] र कारी मा कारी ने की हो रेका (का ४६६) र कारेलिय-ताक में ताक बान (मेंब्र १ रे) । हो तालाव्य ताक (च ६ दे) हो क्ष पुंची [में] र दाया-दिवेग हो में बात्ता ने स्वरूप (कार्ति ४४) 'पावार्च ने कार्यात्रात्री होकिया के [होकिया] होती सा वर्ष पिछेब (सिंडु वन के)। होता केवो हो = पूर हुए केवो वृद्ध (सिंड वर सि १९६ हुएस केवो खुएस = हुएव (सि १९ हुएस केवो खुएस = हुएव (सि १९

श्रम पाइमसङ्ग्रह्ण्यवस्य इयाराहण्डलको प्रतिस्था ४९वा
 स्मतो । स्मतो म स्स्यमधीए पृष्ट र्यवो ॥

### पसरयी [प्रशस्तिः]

वासाइ पश्चिमाए माख्नाचे द्वारिप बङ्गरमो । तस्त्रचर-विभिभाष पुरं पुरार्थ पुराजमङ्ग्यरं। धम-वह-सेथानदेशि विदेशि । तज्ञाणं विश्व-पाय-क्यासेणं बारेज व बास-पास-वेरतं। वक्कत्वका आधी सिद्री सिरिमा**ङ-वंस-वर-**स्वर्ण । धावय-संपत्तीर्थ संपत्तीय पि घेल विश्वपित्ते । भववस-इस-एका बन्म-मणा बन्मपत्ती से चित्रर्थ । वेसि वा वश्रवस्या भावतं स्व-पमा-सञ्चर । सस्य-विसारय-बद्दणायरिएहि विजयभम्म-स्रीह् । गत्रण सोजर्गि तर्वि चेत्रिपि क्लप सल्पार्ण। सण-विट्ट-जड्ड भार्य संसारं सार-विकास जार्यः। पश्चिमित्र पश्चमं अगुभा परमुध-राग-विदेसो। संद्रो क्षय संस्थार्थ णाय न्यायरप्रभाव-विसंयाणे । पाधी-भाषात्र सगद-समयाणी। रमा सिक्सेस कटिकामाप पाप वायरमे अब स्टब्र-किरब-पद्मो **।** क्त्येव विस्तविज्ञाक्यमिन सम्बुक्तमाइ सेपीए। तेज च पामय-मासाविद्याज गंधास विश्वसमाणेज । पाजारसीड वरिसे सिम्बदय-इम-अंड-रवियरयजनीय । क्र्यक्रमाय जापा पाषय-मञ्जू-क्रीक्र-शृंदु-परिग्रविष । तस्स सभदारंगी-प्रामाद संगम्मित्रीह यस्य वहा । धारमं द्वाळणं द्वारिस-भाषाच धा धनव्यसा । वश्यासमञ्ज्ञानेणं सो सहो वस्ति अस्वय विक्रियो । पाईज-पाइआज भासाज बहत्त-भय-भिष्याप । ने रूप अन्य राष्ट्रा सर्थ तनस्मासियो व स-सदाया । जब मेथोन इर्वजा देसि गम्बेज्येण इदयारो । भाज्याजेय सर्वेष भभेष वा एत सिंबि बसस्य ।

गुज्बर-णामा देखो पुरुषं स्महो चि विक्रमाभो ॥१॥ राहणपुरं वि अच्छाइ सच्छान जिलिद-मननार्ण ।।२।। पविसेहर्व पित्र जो जिम्म-ग्रसि-जले बहुम्माओ ॥३॥ वे पुत्र कर्म पविश्वं अवन्यस्त्यमहोक्ट स्थिद् ।।४॥ [ णामेज विभवनेत्रो वृक्तिकवन्त्रमाह-गुज-प्रसिक्ता ॥ ॥ दिण्यो जेव ध्याइ विधाय-इरिधाय अपयासी ॥६॥ [ सीस्प्रद्र-गुप-प्यदाणा पदाणदेवि कि अ शहसि ।।औ इभिट्रओ बुदिहर्चदो ओ ।ाः। **इ**रमर्थियो ऋधीइ विस्थागार्थमा संठिपय ॥९॥ महेसीहिं च्चचमाध्द्रो ॥१ ॥ शक्य-प्रयम्मदार्थ धस्मामो पर्वतिभ-अवंतिभ-सोवसं सोवसं च वाय-पत्तं ॥११॥ विकरत व पार्खियो विसाध्यविज्ञानी कि पत्तमिद्दो ॥१२॥ **स्टजम्भवाय-संसोदणाइ-स्टा**स विष्य-मणी ॥११॥ धम्भास-परिक्लार्स पचोष्य-साम्रेपं ॥१४॥ कापाड परिकाप द्विज्यो दक्ष-क्रमसाय ।।१४॥ पायय-सम्बद्ध-सत्मक्रम्यूष्य-क्रम्यन्य विकित्रको ॥१६॥ विर-प्राच्यत क्षमार्थ भावर जोमास्य विवृद्दाणं ॥१७॥ विविधी स्वयंक्रमे विकासमामी प्रवस्त गंबास ॥१८॥ बरिधे मदय मासे सिय-सन्तमीय समन्ती को ॥१६॥ **मावरि**र्ञ साहिता विकासम्बद्धानुस्ताप ॥२ ॥ भो छहा बहि अस्त्रे बस्य मधि छ प्रमुख्यो ॥२१॥ वगगम्ब-राज-बंशज-प्रज्ञी जिउपी **पिरूपेचा** ॥२२॥ सहरूप<del>य</del>-पारं के गया सबदो व पस समो ॥२३॥ वार्ण **रत्नाध्यय दा**यापदस्य đΤ परिवर्गचेर्प मण्ये धाराध-सारस्य ॥२५॥ र्वसोर्मि<u>त</u> पसार्वद्भारूम समासदा स-मन्द्रा।।२६॥

### इस कोप के विषय में कतिषय सुप्रसिद्ध विद्वान् और पत्रकारों के

## कुछ अभिप्राय

## A few Opinions of some Savants & Journalists regarding the PRAKRIT DICTIONARY

Prof Earnest Leumann (m the journal of Royal Assatique Society London, July 1924

"During recent years several scholars in India have tried to bring out a Präkrit Diotionary However no one seems to have succeeded in publishing more than a small specimen
Only recently, towards the end of 1923, there has appeared a new start, which is no longer a
simple specimen, but an elaborate first part comprising no less than 180 large size pages. In
this volume all words beginning with yowels are included. And, if the following parts which
are to embrace the words beginning with consonants, carries on the Diotionary in the same
lines, it will be finished in about seven such parts and will contain nearly 2000 pages. On its
completion Indian philology will cartainly be congratulated from all sides, and Prikrit literature,
which is so immensely nich may then be studied as it ought to be, in intimate connexion
with Sanskrit lore, which has long possessed Lexicographic aids of all kinds

The title of the forthcoming dictionary is Pais-sadda-mahappavo, "the great ocean of Prakrit words. Its compiler is Pandit Hargovind Das T Sheth Lecturer in Prakrit in the Calcutta University

The meaning of the words are given both in Hindi and in Sansknt, and each entry is furnished with references to test passages. Sometimes also the test passages are fully quoted (forming generally a verse called Gatha or Arya).

Comprehensiveness and accuracy are the qualities most desired in a dictionary. As to the first quality I may mention that the texts worked up in the dictionary seem to number about 200 or more. Even in the first ten pages a full hundred Titles are quoted. (Acou, Aij, Aqu=Annyogadvāra-stūra, Anta=Anakkrd-dasī, Abbi, Aca=Acaringa, Acu=Acar-culika, Ava=Avasyaka, and others). And, as to the second quality it may be stated that in the reference mustakes are scarcely detectable. Also errors in the quoted editions are corrected, so early as the second entry of the first page we are for Pkt. a=Skt. cu, rightly referred to Patima-carlys 119, 14 where the edition has by mistake Avirablo instead of a Virible.

Consequently I may be allowed to recommend Pandit Sheth a Prakrit Dictionary to all Sanskrit scholars as well as to Sanskrit libraries—and, what will probably do more to secure the final success of the undertaking, to the Government authorities.

Sir George A. Grierson, K.CLE., PELD , D LITT , LL.D.

"I must congratulate you on the success you have schieved in compiling this excellent book. I have already been able to make use of it and have found it a help in my work

Jainacharya Shri Vijayendra Sureshwarjee. Itshās-tattva mahodadhi

"A big dictionary named Phia-sadda Mahannavo (पाइस-सार्वास्त्र) is being composed and edited by Nyaya Vyakarana-tittha Pandit Hargovind Das Trikamehand Sheth, Prikrit Lecturer, Calcutta University Three of its parts have already been brought into high. On soung these parts and the work done therein one cannot but say that it is excellent.

We cannot help saying frankly and importially that amidst all dictionaries of the type in existence this Kosha takes its first place. In absence of such a good Präkrit dictionary Präkrit-scholars had great many difficulties. To remove them Pandit Hargovinddas has taken immonse pains in prodoming this work and has put Präkrit-scholars at large to great obligation Pandit Hargovinddas deserves all honour for such a nice work

We are conversant with Fandit Halgovinddes's vast knowledge and originality. It gives us a great pleasure to note that these two things in him have gone a great way to make the dictionary very valuable and useful. We can without the least healtation, say that Fandi Hargovinddes can well stand in the category of high culture. × × × It is the duty of all scholars in the field of learning and specially that of Jain samaj to encourage by extending their helping hand towards such learned man rendering services to Jain literature and Jain Religion."

Dr Gemeppe Tucc, Professor of sanskrit Rome University "The Prakrit Dictionary is very useful in my study

Dr M. Winternitz, Professor of Prague University "Many thanks for the first two parts of the Prakent Dictionary which is very useful to me.

Dr F W Thomas M.A. PH.D., Ohief Librarian, India office London. "I have myself consulted the book and found it useful. It is based upon a very large number of texts.

Prof A. B Dhruva, Pro Vice-chancellor Hindu University Benarcs. "I have seen Mr Hargovinddas Sheth a Prikrit Dictionary It represents a genuine attempt to supply a need which has long been felt and I am sure it will receive the appropriation which it so well deserves.

Dr Simiti Kumar Chatterfi M.A. PLUTT Professor of Calcutta University (in the Calcutta Review February and December 1924). The work is not a mere compilation of glossance. It contains ample evidence of Pandit Sheth suide reading in Präkrit hierature and of his wait labours in the field. ... It will be a very useful publication and no student of Präkrit and of modern Indo-Aryan languages can afford to be without it. The work so far accomplished by Pandit Sheth, is an extremely labourous one requiring not only great scholarship, but also great patience. ... Pandit Sheth ought to receive entire support from all interested in Präkritio and Jain studies.

Those who have had occasion to use this work and can testify to its excellence and usolulness will be pleased to see that it has received proper approciation from competent scholars in the domain of Pakrit and Indian Philology both in India and Europe. The Calcutta University can well be congratulated in possessing such an erudite scholar of Prikrit in Pandit Hargovinddas,

Dr B. M Barua, M.A. D LITT., Professor of Pali, Calcutta University "I can quite understand that the task undertaken by you is a self imposed one and you are sure to render a permanent service in the cause of Indology by completing the same. A handy and at the same time comprehensive Präkrit dictionary has been a long felt desideratum. After going through the printed parts of your lexicon I find reasons to hope that your single-banded labour will go to remove it to a great extent. I have not seen elsewhere an attempt of this kind. What I sincerely wish is the consumanation of the noble task you are engaged upon with the indefatigable zeal and unflinching devotion of a scholar like yourself who has been born and brought up in a religious tradition footing the onliving of Präkrit languages,"

Or I. J. S. Taraporewala B.A., Ph.D. Bar at-law Professor of Comparative Philology Calcutta University — The author has already considerable reputation as a teacher of Prikrit in the University of Calcutta and also as a deep scholar in Jaina Literature and Philosophy For many years he has had the preparation of a Prikrit Dictionary — In contemplation that for that he set about a systematic course of reading in all the various branches of Prakrit Literature—As a result of this enormous amount of labour the Panditji has now given us the first three volumes of his Prakrit Dictionary ——To students of Prakrit this book will supply a greatly felt want and the work is very well done indeed for the general reader. In any case the work is an useful one and should help all earnest students

Prof Vidhushekhar Bhattacharya, M.A. Principal Vishva Bharati Shanti Niketan, Bolour (in the Modern Review April 1925).

The author hardly needs introduction to those who have aquaintance with Yasonjaya Jama Granthamala. His present work is Prakrit-Hindi Dictionary We extend our hearty welcome to it

A Prakrit Dictionary of this kind was a desideratum and every Prakrit lover should feel thankful to Pandit Haragovindadas who has now supplied it. We have not the least doubt in saying that the students of Prakrit will be much benefited by it. It supplies sanskrit equivalents so far as possible quotes authorities and gives references. The words are explained in Hindi, yet the language is so simple that it can be used by any one knowing some vernacular of northern india

Indian Antiquary February 1925 This is the first part of a dictionary of the Präkrit language intended to be completed in four parts. It is a comprehensive dictionary of the Präkrit language giving the meaning of Präkrit words in Hindi. It provides at the same time the Sanskrit equivalents of the Präkrit words. The dictionary as a whole contains about seventy thousand words. The author Pandit Hargovinddas T Sheth, Lecturer Calcutta University has taken care to support the meanings that he gives by quotations from the original sources giving complete references. It removes one of the desiderata for a satisfactory study of the vast Präkrit literature which still remains unexplored but inadequately by scholars Indian and European. It is likely to be of great assistance in promoting this desirable study. The author deserves to be congratulated upon the result of his labours in this good cause. The work is a monument of his learning and effort and it is to be hoped that this industry will be suitably rewarded to encourage him to go on with his work and complete it as originally projected in four parts.

Sir George A Grierson, E.C.L., PH.D., D. LITT, LL.D.

I must congratulate you on the success you have achieved in compiling this excellent book. I have already been able to make use of it and have found it a help in my work.

lainacharra Shri Vijayendra Sureshwaries. Itihas tattva-mahodadhi.

"A big dictionary named Pars sadds-Mahannavo (Waw-twagured) is being composed and edited by Nyaya Vyakarana tritha Pandit Hargovind Das Trikamehand Sheth, Prakrit Lecturer, Calcutta University Three of its parts have already been brought into light. On seeing these parts and the work done therein one cannot but say that it is excellent.

We cannot help saying frankly and impartially that amidst all dictionaries of the type in existence this Kosha takes its first place. In absence of such a good Präkrit dictionary Präkrit-scholars had great many difficulties. To remove them Pandit Hargovinddas has taken immense pains in producing this work and has put Präkrit-scholars at large to great obligation. Pandit Hargovinddas deserves all honour for such a nice work

We are conversant with Fandit Hargovinddas s vast knowledge and originality. It gives us a great pleasure to note that these two things in him have gone a great way to make the dictionary very valuable and useful. We can, without the least hesitation, say that Pandit Hargovinddas can well stand in the category of high culture. × × × 1s is the duty of all exholars in the field of learning and specially that of Jain samaj to encourage by extending their belying hand towards such learned man rendering services to Jain literature and Jain Religion.

Dr Gemeppe Tucci, Professor of sanskrit, Rome University "The Prükrit Dictionary is very queful in my study

Dr M. Winternitz, Professor of Prague University "Many thanks for the first two parts of the Prakrit Dictionary which is very useful to me.

Dr F W Thomas M.A., run. Child Labrarian, India office London. "I have myself consulted the book and found it useful—"It is based upon a very large number of taxts.

Prof. A. B. Dhrava, Pro Vico-chancellor Hinda University Benares, "I have seen Mr Hargovinddas Shath e Prikrit Dictionary. It represents a genuino attempt to supply a need which has long been felt and I am sure it will receive the appreciation which it so well deserves."

Dr Sumit Kumar Chatterji, M. D LITT Professor of Calcutta University (in the Calcutta Receive February and December 1974). The work is not a mero compilation of glossanes. It contains ample oridence of Paulit Shaths wide reading in Prakrit large and his va t labours in the field. ... It will be a very useful publication and no student of Prakrit and of modern Indo-Veyan languages can afford to be without it. The work so far accomplished by Paulit Sheth, is an extremely laborious one requiring not only great scholarship, but also great patience. .... Landit Sheth ought to receive entire support from all interested in Prakritio and Jain studies

There who have had occasion to use this work and can testify to its excellence and usefulness will be plin ed to see that it has received proper appreciation from computent scholars in the domain of Irikrit and Indian Philology toth in India and Europe. The Calentia University can well be congratulated in possessing such an erudite scholar of Präkrit in Panist Hasgorindda.

थोय र् [सोफ] एक देश का नाम (परम ec 44) 1 पोरपक्ष वि [वि] तवस पुग (वे ४ ८ )। वारमण व [ब्युपरमण] दिता प्राणि-वप (पर्याहर १--पत्र ३)। बोरही को दि] १ थावल मास की ट्राक चनुरंशी विधि में होमेवाता एक उत्सव। २ मावल मान की गुज बतुरंगी (है ७ **≈₹)** i वोर्श्वअ व [स्थपरोपित] जो मार रामा पया हो बहु, 'सद्वारिका कुपले दिन्ने बिदरएए बोर्सवधी (बन १)। बोर्स्झा ही दि दि है मय हमा वस (पर 5Y) I बोध सक [शम्] १ मति करना, वसना। २ पुत्रास्ता पतार करना । ३ व्यक्तिम्मण करता, उल्लंपन करता । ४ मक धुनरता पसार द्वाना । बोसद (प्राष्ट्र ७३ है ४ १६२: मद्धाः मर्मसं ७१४) 'कालं वानद' (बुप्र २२४) बोलींत (बजा १४८ वर्गींव १३) । वह पोसंत पोर्लेट (रूमा ग दर् दर पत्रवाद प्रश्वे १४ वर मूचा २२४४ से ६ ६६)। संक्र भाजिजण वासत्ता (महा धाष) । इ. बोस्रेअस्य (क्षेत्र संदर्भ) । प्रयो., सङ्ग पाद्धावित्रं, याद्यप्रें (मूपा १४ : वा १४६ व ?)। देवो बाद = स्वति + स्व । यास देवी बांछ = दे (दे ६ १)। वास्ट्रपट [स्पुप+तुर्] दतस्याः भा पासर्मान (भा)। वास्यविभ वि [गर्मात] प्रतिकानित (रका १४ पुरा ३३४ वा ३१)। यांकिञ । वि[गर] रे वया ह्या (शह वासील रे ७३)। र पुत्रसहूचा जो रंबार हुमा हा वह व्यवीत (बुर ६ ११ वहा) नगरेश नूर १ ११) । रे प्रतिसन्त

रस्तिथ्व (पाम: मुर २ १ इम्र ४१ से १ का ४ ४ वा मा १० २१२। वे हे ४ २५० कुमा मका)। योद्ध सक [आ + ऋम् ] ध्यक्रमण कला। शेस्सद् (परवा १६४) । बोद्धाह पू [बोहाह] देश-स्टिव (स बरे)। योहाइ वि [योहाइ] देश-विशेष में बरान्त (E < !) ! योवास रूं [व] कुरम, बैन (र ७ ७१)। बोसमा र् [ब्युस्सम] परित्यान (विश्व २६ ६) । योसमा ) धक्र [यि+फस्] र विकश्रता बोसङ् 🕽 व्हिसना । २ वड्नो । बोसम्बद्ध बोस्ट्राइ (पड्डिप १६६८ प्राइम् ७६)। बङ्ग बोसहुमाण (भक्त ग्र बरेब)। योसट सक [वि + ग्रासय ] १ विकास करना । २ बहाना । बोतहुइ (पास्ता १४४)। षासङ्घरि [पित्रसित] विकास-प्राप्त (वे ४ २१वः प्राष्ट्र ७७) । धोसट्ट वि [दे] भर कर धानी किया ह्या (tw =t): पासिट्ट नि [पिर्सात] विकास प्राप्त (दुमा) । पासद्व विक्यास्त्र । परिवयः, सोहा हुमा (क्या केंग्र मोन ६ ६ प्रत ६४, रह धाचा २ व १ पैचा रेव ६)। २ वरिष्कार-रहित साम्प्रप्रकृतित (भूम ११६१)। १ नायोरसर्पर्मे स्वित (दय 4. 2 22) 1 मासमिय वि [स्थवरामित] उपरांतित राम्य क्या हुमा धानिय केत्रिया । र्माद्वपरहार्देन् अ उद्येरेति । वेषाम नावस्मा (स ६ थे--१४ १७१) । यासर ) दक [क्युन + सुज् ] परिस्तर पासिर करना पानम । नेनासीमा, वर्धन एक, बोर्ड एक्टिव (पर २३४० पर्क भन

धीत) बोसिरेज बोनिरे (ति २३४)। क वोसिरंत (हुन ८१) । इंड वोसिज, योसिरिका (नुप्रश्व ३ ३ ७ नि २३१)। ह धासिरियच्य (पत्र ४६) । वोसिर वि [स्युत्मर्जन] घोक्नेवाना (स पुर्द्द) । योमिएन र [स्युस्सजन] परिवास (हे २ १७४) मा १२) मारक १७१) ग्रोप ८१) । धासिरिअ देवो वोसट्ट (परम ४ १२ पर्मते १ १ गरा) । वासभ वि [ब्रे] रुजुय-गढ (४ ७ ६१)। बोहित्त न [पहित्र] प्रवहण बहाब शीरा (गा ७४६) । रेघो पाहित्य । बोद्वार न दि] जल-वहन (दे७ ८)। स्पुड र्षु दिं] निद, भट्टप्प (वड् ) । ग्रेद रेखा ६इ = कुन्द (श्राप्त) । ग्राच (पर) देशो यथ = वत (ह ४ १६४) । साम्रास (भाग) 🖠 विभागनासा र स्तार २ निन्दा । १ विस्त्र विस्तृत (प्राष्ट्र ११२) । ध्रागरण (पर) रेखो यागरम (श्राप्त ११२) । प्रांडि (पा) प्रे विमाडि । श्रीकृत व्याकरण भीर कोप का कर्ताएक मूर्ति (प्राकृ ११२)। ग्रांस देवा पास = ध्यास (हे ४ १११: ग्राज ११२ः वडः भूमा) । स्य देवो इप (हे र १६२ कम्पः रक्षा) । का देखा पा = य (शह २६) । श्पम देखो यय = दड (दूबा)। क्यवसिञ्ज देजो पर्वसिय ≠ध्यवदित (प्रवि (3v) i स्याज देखी पाय नध्याज (या २)। ब्यायार बेचो यात्रार - ब्यासर (मा १६)। स्पापुड देघो पातुङ (व्यव २४८) । स्पाद् रेथो पाद् (मा ८८)। स्वित रेपा इत (शह २६)। क्यं व [रें] संसंदर-पूचक यस्तव (शह E ) :